আয়ুৰ্বেদ-সংগ্ৰহঃ।

अध्यक्त उपग्रा

क्रीक्या स्मा क्यार दिन एम.

· Marin Company of the Company of the	. 4.40,		16 500 15 50	V
---------------------------------------	---------	--	--------------	---

विषया है।	The second secon	शक्षाक्षाः ।	Louis 1		* 118	
રવવલાડ્યું	, , , ,	10114141		5	્યા 🕶	
। पंगा वर्षा	ange " right	A24	ক্লোক্রাণি নশাণা	***		
ন্ডোৰারকানি স্থানি	***		BUTTER'S		444	1
শুকাটক্ষমানি	404 " ***		মণিবৰ্ষপূৰ্ণ	100		0
न्ध्र ताम्मविशक्तिः -	***		কুৰ্জ্নীরাংনি মং গ্রি	***	***	
শ্বরণ	***	· · · · ·	रिमक्षाप्राणि मन्त्री	•	A CONTRACTOR	
কঠিশিরা (শিরামাতৃকা 🎾	¥		५०दर-शम र्भाष्ट्री	دم.	\$	
দ্বাপেশ্ব	`a	٠ دى .	कुल्बीयण	317		. 4
SELENIA			प्रशास्त्रकाम् ।	tiere.		*
২শ্বদাস ব্ তিমা স			শিরালক্ষণম্	Ç	- x++	· .¢
		. 5	ধ্যক:	7 * .	* **	, 5
a' fear			ध्याश्राभावसभ्याः	444		13
कः नास्त्रव्यन्ति। विः मणः वि	***		ক্ষিয়ার গ্রেম্য	***	••	
ব্:ক্ষেশাপি	184	•	প্রাবনীউল্মণ, য	• • • •	*2.	e [‡]
क रम्भावकार्या	4**	, (, , , , , , , , , , , , , , , , , ,	याडअपुर्व च चनम	٠٠٠,	• •	4
क सताविष्ठमधी			পিনপ্ৰকৃতিনশ্বশৰ	* , *	• •	×
अन्ता प्रमुखे	A44		(बर्ग क्रक् प्राचानम्	**		8
धानश्चक अर्थनी	499 , 37		(१९६२०) मन	4	***	. 3
₹৸স্ত মশ্বাবি	***	, 34	त्स्वापादांत क्ष्मितः । सन्दर्भ	t	• •	8
अवस्था न	**	• 63	वारद्वाः श्वनम्	*** 1	***	. 1
THE PROPERTY OF	979 34		भिक्का च क्षण			á
रेखर्डिमनानि	119	., 50	প্রহণ্ড অনুনাম্	· **		
पूक् रिमर्ग्य की	***	. 34	भावानगः । प्रशासन्तर	- STT:	1999.	
श्री णम्बासम्प्र ी		. 54	, भाषांगार वन्त्राण	*		
কটাকতরণে মন্দ্রী	*** *	,. 4 2	(भारमाध्यक्तीहामार्थः		*	Y
चित्र सम्मानी	***	** 7*	1	🤏 ·		10.
বৈক্লাক্ষাণি সম্মাণি	*** , ,	8/3	शकुलाग्य	****	***	' '
लाहि अकानि मधीन	***	** 'M'	রনত ব্যাপন্	,		ľ
শ্বাপিন্দাণি	*** *	., 34	क्षमञ् ७ सम	. ***		
with the same of t	***	48	१३७मा संस्करम्	***	· ••	٠,
ভক্তানপ্রাণি	***		लक्ष्मा श्राम्	***	***	
राज्यकानि	•••	38	शास्त्रमां स्वलय	***	***	٠, ١
্যু চপমগ্ৰণ		** **	इर्ड्स्स् १ भी	**	• • •	المج
ুক্ পরম প্রণী	***	' აგ	भाग वस्था	•••	*** . 5	١, ,
<u> </u>	•••	. 54	(मन्त्रः श्वन्	***	*** '	4
स्कृत्रभू भूति	da.	92	अश्रीर श्रक्तपन्	* '''	\$41 1	
শ্বিশ্বরশন্মনী	***	84	अन्दरकाम् 🜾	•	* **	
ভুকাইকে মুখুলী	344	*** * ***	भव्यक्र सम्	****	***	
प् रामनी	5	50	more to select	***	£ 4	
बारगरमार	***	102	1 man & it families		44,	
4 6	*		man and market in the		* ***	
वराक्रमचंद्र	***	*** #3	many many	* **	1.0	۲,
मीराग मारक ६ मर्पानी	***		Annual or management of	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		
कर भर्म ी	***	»·• 😘		1.8	الوائد ألف	
Tarner 1991	٠. اور	***	वार्ड में प्रकार	***	the Mr.	*

वायुद्धम-म्योग्जम्।

111941		4.	74 186
	'नस्ताक्ष्यां।)		+
	man are may heart theme	•	
	(a servent a	* ,	
काय:र्वन।यल्यगम्	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1		भेजांकिः।
+1 14	अर्था । विश्वति भी देशका	•	** 31
Did a come a f	र करेगां वादव र ।	that tall in a R'	•
્રદ્ધારાયન જ. તુલાક ભાગતા કર	भ के प्रश्निक्ष		•
15 c	ं श्रास्तान्त्र स् विकासीत्राहिष्य		• •
78.74 P	ा । बर्ग		
ना पन ूर्य कृत	the sale matri	•	* *
e terr	- 4 74		
יי מיי	g% %		. 21
* \$5 m*4 *	* 1 * . *	-	- "
TETO - 4 t	+ + + + + + + + + + + + + + + + + + +	•	
अर्थ कर्ग क. क. कत्त त्रमूर्वकोत्र केंग्रेपीट कि	* * * *	•	
, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	* 1- 1- 1		4
	(But)	•	•
^{হাপ} শার্বাব প্রকরেন) / 用 h		
শ্ম ন	of 75+3 - 4 + 43		
less a c	~ 5 PP 5	••	** }
4 7112	* ************************************	·,	``
* 1	n attack and	Y	_1
मीर ६ मन ० १ मन्द्र स्ट्रिज क्रन	바 화 1개·영 1	# N	
य अवाप्त र न विस्तरकः	* ~ 3 * T \$111	**	
मी जा सभीम र रागर सभी ।	्री र । प इसिंह		3.
Ain digare r:	Se man is suff		24
नावनेष्ट्रात ६ १ .	18 18 18 18	•	4
ना क्या	21 4 4	••	, ,,
भागत । तथा भागतं	, 4,1	•	
white of the second of	A WILLIAM CONTRACTOR	à y	- 1
क्षण १८ देव कार्याष्ट्रश्चामी किरीत ४५० ०००	a a g isalitel,	• •	**
4 8 4	MA +	4	
1 * 4% 1 * 1 *	אַן ווייד ויון אין אי פון אין אי	1	
* 1 × 1 × 1 × 1	· 中華語 (中華中)		
निविद्यादी	4 401 471 141	•	·
me in, admitted of the	A STORAGE	7.	
maketin statetin telephone the same of the same and the s	- 1 Marie Ma	-	MA.

সতকীকরণ।

এই "সায়নেনে সংগ্রহ" আইনাতুসানে রেকেন্ট্রী করা ইইন। ইংতে এন অনুনদ অনুতা-সাধারণ বিষয় ও প্রাক্তাক্ষকাপ্রান্ত ওবং সালিবেশিত করা ইইয়াছে, এই আমাদের নিজিব ওঐশত্র । সেই সকঃ বিষয় ও উদ্ধ অতা হোন আগারেন গ্রাহ্ত নাই। অত্যাব বিনি আমারের অনুষ্ঠি ব্যান্তির উহা বা হাহার কিয়দংশ গুরাকি করিবেন, তাহাকে আইনাঞ্সারে দওনীয় ইইন্ডে ইবে।

क्षीर नाई रुस्त (मन कोन्डाक्र)

	-	
The state of the s	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	
विवर्गीः।	和直衛門 1	विरंग:।
रक्षत्रभागात्रकतकार्यः ०		
सार्थार मानार देव		च विस्ति भगी।
Brid Gas	312	ेत हे किया नीहरेशा है।
महान्यालकसम्		अदः कलका भाषां वाद्याः
स्वां विकास स्वान	***	\$157.21 \$140.22 40 5.75 ···
	•••	ANALYSIS AND THE STATE OF THE S
अरामकामकामार्थकारीय	1 18	श रुवा मान्यान्य स्थान
तम् ।	•	्राप्त असंस्थान वर्षः
मध्यसम्ब छन्।	\$14 7.00	ATTENDED TO THE PARTY OF THE PA
SHALL SAIL	40 45	
क्रिक्टिक अन्तिः		²⁻⁴ সেবাগুণ- প্রকর্বণ ম
कर्तुराक्ष छन्।	100	
医安阳霉 经营	. h	र के कि कारिक कर के कि के कि
कत्रवर्ग्य सर्	* T2	to the property of the same and
मन्याने मामगाव विद्यापाः		The profession of the second
শূৰ শূৰ্ণা	. 43	niterior and a second s
जार् कि छप वर्षाः छमाः	, a	3 48 6481 5 July 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10
में अमे, विश्वनाथक म		National Control
व्यव रोग्रह		A STATE OF THE STA
नीवाद प्रशाः	2 344	The state of the s
कृष सिमाना		C 17594
विश्वविद्यास्त्र स्थाप	7	A TO
A CONTRACTOR OF THE CONTRACTOR	- 1	1. and
त्र । अवस्थितारा	** *	S S S S S S S S S S S S S S S S S S S
हेर्न द्वारातिक स्थापना इ.स. १८५५ व्यापना	***	Salar de 12
हर्षे प्रवर्शनाय सम्बद्धाः । इ.स.च्या प्रवर्शनाय सम्बद्धाः ।	, , , , , , ,	The state of the s
		The state of the s
कार्य अक्रकाया न	42.55 J	, म्बंनीकरण्डा
The state of the state of the		have been properly and the
	•	
55体 水学(*	3 CF 1967.2	
Man of the	1.7	A CHARLES
(बारकाम् विदे	145 45,	
Wastries:	** 48	
विभिन्न भगराः	ries #g	The state of the s
द्ववश्रीमश्रद्धाः 🐪 🔭 👯	2 is gette	
अन्दर्भ	*** **	वान नाना श्रकतनम
िल्लाहा 🔭 👵	in pr	The state of the s
9.57 <u>6</u> 14	71 ER	THE WAY AND THE WA
तः प्राप्तानिक	200 50	THE STATE OF THE S
Larger of the Control	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	And the street of the street o
יייי די	***	NOT A PROPERTY OF
2-34 DV	314	ATTENDED TO A STATE OF THE STAT
		President
A Company of the Parks		
		Tels autor
	Antigenments and the second se	

STAN

বিষয়া:।		শূঞা	41: 1	বিষয়াঃ।		1.	Ft: I
ঞ্ ক্ষায়া ঃ	•••		२४६	সীসক্ষ্য শোধনবিধিঃ	•••	•••	42A
রেসঃ	•••	•••	२४८	সীসক্সা মারণবিধিঃ		•••	
ন্ত্রসভেদাৎ পুটপাকবিধিঃ	•••	•••	२४६	লৌহস্য নিষেকবিধিঃ	***	•••	465
इस्रविधः		•••	२४७	লোহস্য মারণ বিশিঃ	***	•••	522
-কাব্যক লথবিধিঃ		•••	২৮৬	লৌহসা পুটবিধিঃ	***	•••	465
োবাবাৰ: বানে কাথ্যাদিজব্যব্যবস্থা	•••		১৮৬	লোহভশ্মানুপান্য	•••	•••	422
गाल कार्यामध्यक्त गर्यः हेमविधिः	•••	•••	२४१	মঞ্রভশ্মবিধিঃ	•••	•••	442
रमापाप- ।श् विधिः	•••		২৮৭	স্বৰ্ণদিধাত্নাং সাধারণে। ম	ারণোপায়:	•••	9
-		•••	२७१	জারিতধাত্নাং বর্ণানি	***	•••	٥
ভূলোদক্ষ্	***		२४५	উপধাত্নাং শোধনমারপ্র	কার:	•••	•••
েটবিধিঃ	•••	•••	२४१	স্বৰ্ণমাঞ্চিক্সা শোধনবিধিঃ	•••	•••	৩০০
টকোদক ম্	•••	***	२ <i>७</i> ५ २৮१	সর্ণনাক্ষিকনারণবিধিঃ	•••	•••	•••
লহাদিবিধান্	•••	**		স্বৰ্ণা ক্ষিকভশ্মানুপান্য	•••	***	٠.٠
হূৰ্ণবিধিঃ	• • •	•••	シレケ	তারমাক্ষিকস্য শোধনবিধিঃ	***	•••	٠
চূৰ্ণ্ভ পাকনিষেধঃ	•••	•••	466	ভারমাক্ষিক্স্য মারণ্বিবিঃ	•••	•••	৩০১
। টকাবিধিঃ	••• .	•••	२४४	বিমল প্ৰথিত		•••	৩০১
মণুৰটিকা বিশি	•••	•••	२४७	বিমলভ্সানুপান্য		•••	٥•١
ভাবনা(ব'ধঃ	•••	•••	200	তথাপোধনবিধিঃ		•••	٥٠١
ग! क्यां विश्व	•••	•••	5 A S	কাংস্থান নাতেশ্চ শোধনম	t an tarfer		٥٠:
ভেষজ্যদেবনকালবিধিঃ	•	• • •	~ b >	l ·	। त्रभ, यः यः	***	٥. ١
কারাদিপাকবিধিঃ		***	225	সেণ্রসা শোধনবিধিঃ	***	•••	9.3
বাংসরসসাধন ম্		***	₹~;	শিলাজজুশোধনবিধিঃ	•••	•••	
সেহপাকত সাধারণো বিষ		•••	467	শিলাজভুনে:২নুপান্		•••	٥٠;
তিলতৈলমূৰ্ভাবিধিঃ	•••	***	ં રર	স্থাবিনিগন বিধিঃ	4.	•••	٥. ٢
কটুতৈলমূৰ্ডহাবিধিঃ	•••	•••	₹ 5 ₹	রসপ্রকরণণ্		٠	७०३
এরগুভৈলমূচ্চাবিধিঃ	•••		२ २	রসলক্ষণন্	ŧμ •••	*** &	৩•২
হুতমূচ্ছাবিধিঃ	•••		२२	প্রেদ্যা নিস্গ'দেবি:		***	٥. ٩
মুভ্যুত্থাবাৰ মেহসাধনে কাংধ্যব্ৰাদেঃ গ			२३७	গারদত্ত সপ্ত কঞ্কাঃ		• • • •	9.3
	18241.14	***	428	পারদশু শেংধনবিধিঃ	***	***	9.5
বেহপাকস্ত ক-প্লনিয়ন:	•••	•••	રેરું ક	রদক্ত মুখ্যদোধহরঃ শে ধন	বিধি:	•••	"७
ব্ৰেহপাকপ্ৰ ক্লান্য		• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	₹~€				৩০৩
धाङ्गाः । (शा निक्षिण	E 04	•••	२७६		***	*	٥.٠
হ্বৰ্ভ শোধনবিধিঃ	• • •	•••	, 50 a			• • •	ಅಂಭ
শ্বৰ্ত্ত মান্তৰ্বিধিঃ	***	•••			•••	•••	V.
স্বৰ্ণ ভক্ষা মুপান্		***	ર ≥ હ		***	•••	٥.,١
ৌপ্তে মারণবিধিঃ	***	•••	÷ ৯ ৬	management and		•••	9.1
রৌপ্যভশ্মানুপ:নগ্	•••		२३७	Secretary 77	***	***	٥.
ভ্ৰেম্ম দোৰা:	***	•••	२२५		***	•••	೮.
তাম্বর্খ মারণবিধিঃ	•••	***	4 % 5	E-semplement	***	44.	3.
মারিততা মুক্তাকরণম্	•••		4.00	marrie carteria	***		٥٠,
বঙ্গজ মরেণ্ডিধিঃ	•••	•••	4%	- Cardenavi	***	***	0. (
বঙ্গ ভত্মানুপানগ্	***	•••	२ : •	manus a Actorna		***	٥.
মহাসেড় ঃ	•••	•••	420	i	• • • •		٥.
যুশদশু স্ক্রপন্	***	***	₹क्री	রসপ্ত অনুবাসন্ম্ রসপ্ত বিডুক্থনম্		•••	# 200

		12.	
		ত্ৰাকাঃ।	विवेशक्ष
Service Anna Anna Anna Anna Anna Anna Anna Ann			
हिनुनाम तमावार्ग विव	THE STATE OF THE STATE OF	. O	THE PARTY OF THE P
पर्य अन्य विकास स्थित			ति देश विकास किया त
মেত বাহণাৰিকঃ		515 00 ¥	ल्लबाबर्गविद्याः पूर्वः ।
कर्म असम्बर्ध । वेलि		5 654 C	नवरश्याद नेत्रिक्तीनायमन्त्रिति । पुरस्य १५०० ।
शिन्द्रद्रम् 🦫	***	¥	TISS TO THE TANK OF THE PARTY O
প্রতভক্ষণ পিন্ধি 🛒	949		गुंबद्दानाः गार्वानक्षेत्राविरावध्यवितिः । । । । । । । ।
ুক্ৰম -			र्वकारका (तालामधिक प्राप्तकार)
নসভানকন্ত্ৰ, নিষিক	***		रिक्षणाहरू विकास के किया है कि कि
कश्चनीकद्रविविद			रवमान्न विकि ।
लक्षत्र ४ (भाषमिति दि:	المنافع والمأر مدر		क्षेत्रका प्रमम्
धमाक्ष्य टेडबर् 🐩 👙	***		परिश्रापाः काम्भविष्
प्रकार का जाता कर के किए के किए	See and the second	P. 1	WHIST OF THE HOUSE, AND THE SECOND
हिन्दुलामा धनविधिः	tare to	. 2	CARROLL STATE OF THE STATE OF T
श्रीकरण गर्निकि	***		(द्व राजा निर्मिक्ष क्षेत्र के किस
ধাৰণত কৰিছ	i plane i i ne e e e e		िहर्यक्षित्र विकास
लाक् मारनिर्दित	*** 570	7 ' '	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·
MEBILIONA			वसमुख्याम्बर्गात् । व्याप्त विकास
बहर संबंधितानीनि			राह्मा असमित केराया सिद्धा १५० । १९ १ मेरी १४ १ । विशेषी
शहरका नाधमीविका	go bay and		ने त्रकाना करिया ।
क्षांक्षक्षं भारतम् निष्टिः	* **		estrone conservatar
ana Cara	P44		भरणकाः वीकामाः मानासभागान्तिः 🔑 📉 🕬
হ্রিতাসহারাজপান্ন্ , জন্ম	e de	į v	CH CHICK TONING TO THE CONTROL OF TH
হয়ি ছাক্সপ্তিতেনীয়াক্ষ্ণীয় মনশ্বিকাশেক্ষাইন্তি	And the second	ha 1 7	क्या कर के किए
स्क्रमञ्ज भ्यापस्थित			रेक्ट कर के किया है। किया के क किया किया किया किया किया किया किया किया
THE TOTAL STREET	***	ق في ريو	स्वामार्गसर्वे सर्वे विश्व
त्र व के कि संस्थित के सिंह स्रोक्ष्य संस्थित के स्वाहित के सिंह	***		MARKET THE CONTRACT OF THE PARTY OF THE PART
मास्त्रीमानार मान्याकार			
ह्यकामा अव ्यावितिः	4 111		THE RESERVE OF THE PARTY OF THE
The state of the state of	484 444		
শ্বৰণে ধনবিবি	* *** ***		The second
al Geographic Course	દ્યાનન જિલ્લો 🗎 👑 🤭		The same of the sa
महात्रकर्भाः	der y	, A	的复数形式 (1) 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10
W. Committee	Company of the second	238	Part of the same o
देश्विकदशास्त्रवितिः	The state of the s		100
'কাদীসলোধনবিদিঃ	en agent de la company. La companya de la co		STATE OF THE PARTY
जर्भकाषाच्या हिंदिः	100 mg	The Control	The state of
अर्थका विवर्धनिकः 🛒 🖰	914		
বৰ্হসাত্ৰান্তৰ ক		7.8	englass.
कार्यकालामन्दिनः	344		THE PERSON NAMED IN COLUMN TWO IS NOT THE PERSON NAMED IN COLUMN TWO IS NAMED IN COLUMN TW
क्षाध्यमात्राहितः क्षाध्यमात्राहितः	and September 1965	1 1	and the second s
क्ष्मात्राहित्यासम्बद्धाः क्षात्राहित्यासम्बद्धाः	, 4, 54. 		OTTO TO THE PARTY OF THE PARTY
काराक्षणार लाक्ष्मिः	200		CONTRACTOR OF THE PARTY OF THE
Marchaella Later Part And Allace			And Andrews (

বিষয়া:		•	পত্রাঙ্কাঃ।	विवयाः।			পত্রাঙ্কাঃ।
ডম ক্লব ন্ত্ৰমৃ	•••	•••	७२८	নেত্ৰপরীক্ষা	•••	•••	৩৩৮
বক্ষস্থ	•••		૭૨૬	জিহ্বাপরী কা	•••		৩৩৯
নাড়ি কা যন্ত্ৰম্	•••	•••	७२৫	আশুপরীকা	•••	•••	ಅಲ್ಲ
পাতালযন্ত্রম্	•••	•••	૭ ૨૯	মূত্রপ রীকা	•••	•••	৩৩ঃ
বারুণাযন্ত্রম্	•••	•••	७२७	মলপরীকা	***	•••	08
ভূধরযন্ত্রমূ	•••	•••	७२७	শব্দপরীক্ষা	•••	•••	⊍8 3
তিৰ্যক্পাতন্যস্থ	• • •	***	७२०	স্পর্শপরীক্ষা	•••	•••	-8
ইষ্টকাযন্ত্ৰ	•••	•••	७२१	বৈষ্ঠাদিপাদচভুষ্টয়ন্	•••	• • •	♥8:
কোন্তিকাৰপ্ৰম্	•••	•••	ত২৭	উপদ্ৰবলকণ্	•••	•••	08
কচ্ছপ্রপ্র <u>শু</u>	•••	•••	७२१	অঞ্চিত্তলকণম্	•••	•••	৩৪:
ভণ্ডখল্লযন্ত্র্ ভণ্ডখল্লযন্ত্রম্	•••	•••	७२৮	চিকিৎসালকণম্	•••	•••	.583
म्वानिक्र शंभ्	•••	•••	०२৮	চি কিৎসাস্ ত্ৰম্	•••	•••	৩৪
Z.11 1				দোষধাতুমলানাং বৃদ্ধি		•••	₾8:
রোগিপরী	ক্ষাপ্রক	বণম ।		অতিবৃদ্ধানাং দোষাণাং		•••	৩৪-
	111-11			অভিবৃদ্ধানাং ধাতৃনাং ব		•••	.8
সাধারণপরীকাবি(ধঃ	•••	• • •	৩২৯	অতিবৃদ্ধানাং মলাদীনাং			•8
নাড়ীপ্য্যায়া ঃ	•••	• • • •	95%	অতিবৃদ্ধানাং গোষাদীনা		•••	98
নাড়ীপরীক্ষা	•••	•••	७२३	দোষধাতুমলানাং ক্ষয়প্ত		•••	%8
ষয়স্ত নাড়ীগ'তলকণন্	•••	•••	€3•	ক্ষীণানাং দোষধাত্নাং	লক্ষণা, ৰ	•••	৩ ৪
নাড় <u>ীস্প</u> ন্দনসংখ্যা	•••	•••	৩৩১	মলাদীনাং ক্ষরলকণানি	***	•••	৩৪
দোষজনাড়ীগতিলকণম্	•••	•••	1203	कोशानाः हाशानीनाः	বৰ্দ্ধৰে!পায়ঃ	***	৩৪
মৃত্যুৰাড়ীপরী কা	•••		ಅತಿತ	স্থলকণ্	***	•••	98

ইতি পূর্কাদ্ধ স্চীপ্রম্।

আয়ুৰেদ-সংগ্ৰহ-স্চীপ্ৰম।

TANK THE PROPERTY OF THE COMMON TO SERVICE OF THE PARTY O

পেরাজিস্য 🖟

A SOFT

विश्वार ।	Trust
the second of th	
च त्रापिकातः ।	কিরাতা কিনার্থ্য
क्रमार शार्थिक	শিক্ষলা/বিক্ষণনা
A delegation .	मिक्किपिक्नाक्षः
The state of the s	गरावताच्यकः
ब्हार्किक्शा-शाक्षत्रपरिक्षिः बहुकशानीसम्	বিভ্যবন্ধন বিশ্ব
व्याम् अति।मान् अक्ष्यं रशक्तनः , च	পিডজার-চিকিৎসা ১৫৮
व्यापालकार्याच्या	তিকাদিশাচনয
भारतास्त्रात्त्र । ज्याना । ज	कर्रेजनाविताहरू
ಖೆಂಬೆಳೆ≈್ -	क्रान्स्यतिकवामः । । । । । । । । । । ।
স্থানাল-জ্বাচ্জিৎ্যা ৩৪৪	भेगव भिक्रम्
भाक्य गर्भ स्थाप	अभिन्निक्यामः
American Section Secti	मार्के अभिन्नवाकः क्या विकास विकास
Charles 11 11	3 रदर्शाभरमातः · · · · · ·
भारत्वेशिक्षः	कांत्रकामिकारमा
	नियासिकवाकः अद्
	४६ हो तिस्थातः
निरमार्थात	विराण विकास
Alexandra Company	प्राक्तां विकश्य
বাস্তর্-চিকৎম। ৩৫४	नवनारित्राच्या १०० १०
5277971074	व्यानस्मित्रायः -
कुछ जारिक्सक्स	वाजानका
শঠাতিক্ষার ক	जामाधिका है।
Biggir Farity	मस्योश्यास
क्रिकांकिकराडाः	
सुनिश्वाहिकवाहः	ক্তপ্ত চিকিৎসা
্বাস্ট্রিকার	राष्ट्रवाकिकाक्षर कर्नान्त्रिक
विषा विषयिक्य	नुष्णिको । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।
नक्ष्येणामिक्याबः	the second secon
क्यान व्याप	क्रुक्माणुबंदलहाः
कारकाशानिकवारा	अहाकातालह
अक्रांकियाद.	THE THE THE SAME AND THE STATE OF STATE
वालियोक्षिक्षणः व	वासनिक्षक
TOTAL STATE OF THE	निया विकासका
The first of	The state of the s
the state of the s	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·

বিষয়াঃ।		প্র	विषाः ।	বিষয়াঃ।	প	আহা:
নিদিধিকাদিকবায়:	•••	***	૭૭૨	পথ্যাদিপাচৰম্	•••	৩৬
কটুক্যাদিকাথ:	•••	•••	৩৬২	সন্মিপাতকারলকণম্	•••	৩৬
ভিক্তাপিকবার:	***	•••	065	সন্নিপাতজ্বর-চিকিৎসা		৩৬
ত্ৰিফলাদি :	•••	•••	૭৬૨		•••	
মুক্তান্ত পাচনন্	***	***	૭৬૨	लक्यनम् ५	•••	<u> ৩</u> ৬
ক্টুত্রিকান্তঃ	•••	•••	७७२	কফোৰণে শীতালাদৌ বেদবিধিঃ	•••	. 01
ভূ বিদা দিঃ	•••	***	૭૭૨	নস্থানি	•••	৩৬
বাতপিত্ত ত্ত রলকণম্	•••	•••	৩৬৩	নিগ্রবন্য অষ্টাঙ্গাবলেহিকা	•••	৩৩
বাতপিত্তজ্ব:চিকিৎসা			৩৬৩	व्यक्षत्रभ	•••	৩৬ ৩ ৬
নিদিশ্বিকাদিকবায়:		•••	৩৬৩	কণ্টকাৰ্য্যাদি পাচনমূ		্ত ভূ
নবাঙ্গঃ কাথঃ	•••	•••	৩৬৩	नग्रम्	•••	
छ्फ्,ह्यांपिः काथः	•••	•••	હહુહ	वापनाकः	***	(9)19
वृश्कुणानः वापः वृश्कुणुहार्गाः	•••	•••	৬ ১৩	চতুর্দশাক:	•••	99
यन ्य नापि	***	•••	৩৬৩	वांड्सम्बर्धाः वांड्सम्बर्धाः	•••	.9q
ত্রিকলাদিকধায়ঃ	•••	•••	৩৬৩	शिखसम्बद्धाः । । । । । । । । । । । । । । । । । । ।	•••	۳۵. ۹و
আরখধাদিকবার:	•••	•••	્ક	মৃন্তান্তোগণঃ		99
পঞ্জন্তক্ষায়:	•••	•••	৩৬৪	चाजिःगात्रः	•••	۶۳ 9 ۹
মধুকাদি	•••	•••	৩৬৪	বুহত্যাদিগণঃ	•••	৩ ৭
मुखानिः	•••	***	৩৬৪	महोाप्तिश्रनः · · ·	•••	৩৭
কিরাতাদি:	•••	•••	৩৬৪	বৃহৎকট্ফলাদিঃ	•••	ত ৭
পিত্তপ্রেম্বরলকণ্	•••	•••	ა	বাতোবণসন্নিপাতজন্মলকণ্ম		ত প
পিত্তশ্লেমজ্বর চিকিৎসা		•••	966	বাতোম্বনসন্নিপাভজন-চানুহৎসা	•	59
কণ্টকাথ্য:দিক্ষায়:	•••	•••	৩৬৪	क्ष्रेकना निक्वागः	9	ত্ৰ
श्राह्मा जिल्ला	•••	•••	·5·56	পিত্রোলণ্দ্রিপাত্রর-লক্ষণ্ · · ·		৩৭
অমূতাপ্টক:	•••	***	ওঙ¢	পিভোবণসরিপা্ডজর-চিকিৎসা		ত প
-চাতুৰ্ভম্বৰ-পাঠাসপ্তকৌ	•••	***	৩৬৫	পরবঞ্চাদি	***	હ
वाम, यश्रमः	•••	***	৩৬৫	व्यनामि		
পঞ্চিক্তক্ষায়ঃ	•••	•••	৬৬৫	কিরাতাদিসপ্তকষ্ ···		৩৭
भटिं।नाषि	•••	•••	254	কফোৰণসন্নিপাওজনকণম্ ···	•••	90
কটুকাচূৰ্ণম্	•••	•••	966	ককোত্ণসাম্পাতজরচিকিৎসা	•••	೨೪
वा ंश्रयक त्रलक्षनम्	***	404	৩৬৫	বাতপিভোলণসন্নিপাতজ্বলক্ষণম্	•••	ঙ
	•	•••		বাতপিত্তে বণসন্নিপাতজ্য-চিকিৎসা	•••	હ
বাতপ্লেম্মজ্বর-চিকিৎসা		•••	296	বাতক্রেমান্ত্রসন্ধ্রিপাতক্রনক্ষণম্	•••	© \$
পঞ্কোলম্	***	•••	999	বাতলেখে:বণসন্নিপাতব্য-চিকিৎসা	•••	ত •
निय कि:	•••	•••	660	াপত্তরেমোখণসামুপাত্তর-লক্ষণম্	***	9
क्छ।पिः	•••	***	200	পিন্তরেছোরণসন্নিপাত্তর-চিকিৎসা	•••	৩
দশমূলীকবায়:	***	•••	000	ক্রাৰণসন্ত্রিপাভন্তরে বোগরাকঃ	•••	৩
भारतामा म	•••	***	000	শাতাকা দিত্রয়োদশসন্ত্রিপাডজনেযু		•
मुखा पिः	***		7	শীতাকস্ত চিকিৎসা	***	9
वार्वानिकवांग्रः		•••	945	তন্ত্ৰিকন্ত চিকিৎসা		

বিষয়া:।		প্ত	निकाः।	বিষয়া:।		9	<u> একাং</u>
প্ৰৰাপকন্ত চিকিৎসা			394	নিদিধিকাদি:	•••	•••	٠
রক্তনিষ্ঠীবিন িচকিৎ সা	•••	••	299	গুড়্চাার্ম: (রাতিকরে)	•••	•••	٠
ভূগনেত্ৰন্ত চিকিৎসা	•••	•••	৩৭৪	্যাকাৰঃ	•••	•••	٠
অভি ভাসভ রল কণ ম্	•••	•••	9',8	भौत्रकात निर्मिका पिः	•••	•••	5
অভিস্তাসজন-চিকিৎসা	•••	•••	3 PC	রসাদি ধাতুগতজ রলকণ্	•••	•••	૭
कातगाकिकाथः			৩৭৫	রসাদিধাতুগতজ্বর-চিকিৎস	l. •••		ও
ণারণ)।প্রশা ন- শুঙ্গাদিকা থঃ	•••	•••	900	জুরস্ভোপদ্রৰা:	•••		৩৮
মৃত্ <i>লুক</i> †দিঃ	•••		296	ত্তরোপদ্রব-চিকিৎসা			و
অগ্রস্ত জর-লক্ষণমূ	•••	•••	૭૧૭	খাসে পদ্ৰব-চিকিৎসা	•••	***	•
•			***	মূর্জে।পদ্রব-চিকিৎসা	•••	•••	9
আগন্থজ্জর-চিকি ৎসা	•••	***	৩৭৭	অরুচাপদ্রব-চিকিৎসা		•••	<u>ي</u> د
বিষমজ্ঞারলকণ স্	•••	***	395	ব্যনোপদ্ধ-চিকিৎসা	•••		5
বিষমজ্বজীর্ণজ্ব-চিক	े आ		&PC.	তৃক্ষোপদ্রব চিকিৎসা		•••	9
1414043311043-16.4	,		• ,	ভূকে: শত্রৰ চাক্ৎসা অভিসারোপদ্রৰ-চিকিৎসা	•••	•••	
নহৌষধ:দিপ'চন্ম			593		***	•••	•
भारति विकास	•••	•••	.592	পাঠ:দিপাচনম্	•••	•••	•
ব্যম্ভব্যুক্ত গো দি:	***	•••	293	বিড্ গ্ৰহোপদ্ৰৰ-চিকিৎসা	•••	***	,
। त्काभिः			৩ ৭ ৯	পুশ্পরেচনী শুড়িকা	***	***	೨
उ ंगिः	•••		592	হিকোপদ্রব-চিকিৎসা	•••	***	৩
s र्गा कि:	••.	•••	593	কাসোপদ্ৰব-চিকিৎসা	•••	•••	હ
্হন্ত প্যাদিঃ	•••	•••	⊅ ৮•	দাহোপদ্ৰব-চিকিৎসা	•••	•••	9
শৈশ্ৰ দিঃ	•••	•••	5 b •	চুর্ণপ্রকরণম্	•••	•••	৩৮
। विद्यानि	Dee.	•••	50.				
প্রিক্ষায়াঃ	•••	•••	s৮∙	স্দ শনচূৰ্ণ্	•••	•••	তা
ত্তীয়কজরন্ত্রহাতীনধাদি:	. 19.	•••	4.P.7	आमलका: मिह्र्नम्	•••	•••	౨
हे ो बिक	•••	•••	2 p. 7	জন-ভৈরবচূর্ণম্	•••	•••	•,
ণটোলাদিঃ। ভৃতী রক জরে।	•••	•••	৩৮১	জ্বনাগম গ্রচ্ র শ্	• • • •	***	:
।াসাদিঃ (চভুর্গকে)		•••	'১৮ ১	नवषद्राप्तो तमश्रद्धारः	•••	***	. 51
ন্থানি: (চতু র্থ কে)	•••	•••	367	হিঙ্গুলেখর:	•••	***	:
প্ৰা দিঃ (চতুৰ্থকে)	***	•••	১৮ :	শীতভঞ্চী রসঃ	• • •	***	৩
लिकाधात्रगांनेयः व्यत्यांगाः	•••	•••	৬৮ २	তরণম্বরারি:	•••	•••	2
৸ষ্টা≉ধ্ পঃ	•••	• • •	১৮ ৩	শ্বচ্ছন্দ-ভৈব্ববঃ	***	•••	ঙ
মপর∱ জ তো ধুপঃ	***	***	ও৮৩	সচ্চল-ভৈরবো রসঃ (ম ১:	প্ররে)	•••	57
অজাদিধ্পঃ	•••	•••	১৮৩	নবছরেভাস্থ:	•••	•••	৩
ग्हरमगापिथ्भः		•••	৩৮৩	নবছরেভসিংহ:		•••	98
াহেশরধ্প: [`]	•••	***	৩৮৩		•••		
ণাতপূৰ্বনাহ পূৰ্বজ্বরলক্ষণ মূ	•••	•••	s _b s	मनव्यत्रहत्रव ि	•••	•••	ઝ
গা ওপুরুদাহপূর্বজন্ধ চিকিৎস	1 ···	•••	৩৮৪	নবজরারি-রসঃ	•••	***	ં
ণা ১পুক্ষরে ভন্তাদিকবায়ঃ	•••	•••	৩৮৪	স্কাঞ্জ্পরো দ্বস:		***	98
गे ॰ পূर्वकात वना निकरातः	•••	•••	.248	এ মৃত্যুদ্ধরো রস:		•••	91
গিহপুৰ্বব ৰ রে বিজীতকাদিক্য		•••	૭৮ 8				
নাহপূ ৰ্বজ রে মহাবলাদিকৰা	W: ···	•••	0F8	রত্বগিরিরস:	•••	***	93
জার্থর-চিকিৎসা	• • •	•••	240	নবজরাজুশঃ			98

* - 1,4

বিষয়া: ।	5 703	পত্ৰাশ্ব:।	विषया: ।
THE WAR TO SEE THE SEE			বিষয়াঃ ৷ প্ৰান্ধ
अधिकृता इसी	and the same	524	বাবেশ্বরা হসঃ
स्विवस्त्रा क्यः	موه ا	250	ATAILE III
बद्रावृति :			रवर्ग्यका किया:
बन्दी विका	des 37 chee	49.0	भेक्तक त्रमः
वाश्रमाहिका बदा करहे।	- are " - 171	e 62.	স্থিপতিপ্রো ১সঃ
विश्वतं अद्भारता ।	§ 400 qu-	225	ब्हिमावनीशांबर्यमा तमः
बाइध्राटकपू:	•••	1570 9	প্ৰভাগতপৰো ন্বদঃ
की बीमतनः	Strate see	1024	মেরনুদি:হরদঃ
অলভেশবো রসঃ	***	, ৩৯৭	স্তুক্তরো নদ:
বৈদ্যানাথৰটা	604	929	শিসমিশ;তমৃত্যুঞ্জনো রসং
অভাগমাজ্যভা বস:	344 344	1 243	বহিংশত-ভৈত্ত
इत्काक्षतीत्रगः	***	:25	ষিত্রায়সলিপ: ৬-১৯রবঃ
च बृष्टमक्षती	3 *** ***	5 No.	কালাগ্নিটেন্সবো মূদ্র:
অবনূদিংহোরদ:	gw its ¥ are	: 25	वजुवामल:
किसानको नमः	61.0	224	वृह्मकृत्रोत्राक्षः भगः 🚜
देवस्त्राकाणुसुरवनः	455	2:34	স্ত্রিপতিবভূগানলো হসঃ
গ্লমুরারি:	*** ##*	460	WEST STREET, In Secretary
श्रद्धी विका	*** # * E	440	fire saturas
শীভারিননঃ	*** ***		विकासनिवसः
व्यवहत्रव्या	968		টিস্তামশিরদঃ (নভাকরে)
भिद्धाकर्याम क्याः	***	8	and the state of t
भ ऋ रेकत्वः			কৈলোকাচিস্কামণিঃ
ेक्क			বিতীয়কফকে তুলসং
वस्त्र व्यवस्ताकः	* ***	į.	Minimum Africa arms amount
काश्चनदेखनदः		8	state most in Procure or
कृत् वद:	, , , , , , , , , , , , , , , , , , ,	Ass	PREATERING COMMITTEE
शिक्षणा श्राः	1.000		विकाशासमा वृहः
डेकडक,-द्रमः			भुक्तमा वर्षः भुक्तमा वर्षः
देवत्याकात्यनता वमः	•••		
্নী ভা গ্যবটী	***		वरम प्रवा
5.27 · · · ·	***	8 . 2	वर्तम्डी दमः (विद्यावनावाननग्रमन्ड)
हरते (नडास्टर)	4.00		विश्निष्मियं नेत्रकालामधः
व्यानमध्यती की	***		विजिन्नाम्बद्धाना
भृत्याचाश्रास्त्र अमः		1	मुग्रमाम्बर
मिल्लिशास्टरकार्या अनुः	1 Table 1 Tabl		भंगगाडकालम्ही बन्धः
ग्रहिकालस्या तमः	4		वसम्बद्धारिका स्वत्रम्याती वसः
र हका चारतां का विकास	194°		क्षित्रमृतादिः
विहर परिकालगाना दनाः विहर परिकालगाना दनाः	0	8	ज्यात्मश्रद्धाः अभः
मुख्यभावस्य स्थः	The same of the sa		AND THE PARTY OF T
न्त्रीवर्धकाः न्त्रीवर्धकाः	476 (21,444)	A: 344	म्यान् रकारन तम
পুনারবাদক। সিক্তকসারাঃ প্রানীয়বটিকারা		H . R .	बुद्धकर्मही
श्यक्याहाः गानावनाः भारत	्याच्यः ,	8.4	विक्राचेत्रा द्वयः 🔐 🧀 83

11%

বিষয়া:।		9	ত্রাকা:।	विषय्राः।		9	থকাঃ
অর্কনারীশরো রসঃ	•••	•••	8;8	বৃহৎ-সর্ব্যক্তরহরলৌহম্	•••	•••	ន១
স্বল্পত্রান্ধুশো রস:	•••	•••	879	वृश्य मक्ष्यव्यव्यव्यव्यान्य (म	তান্তরে)	•••	85
ব্যবাহুশো রসঃ (মতান্তরে)	•••	6:9	ত্রৈলোক্যচিন্তামণি রসঃ	•••	***	80
মধামজরাকুশো রসঃ	•••	•••	8 ₹ •	বৃহদ্বিষমজ্বরান্তকো বস:	***	•••	83
মহাজরাজুশো রস:	•••	•••	84•	বৃহজ্জরান্তকলোহম্	•••	•••	8 ?
মহাজ্রাকুশো রস: (মতার	ন্তবে)	•••	800	পঞ্চাননো রসঃ			85
সর্ব্যজ্ঞরাকুশবটা	•••	•••	8<•	শীতভঞ্জী রস:	•••	• • •	4 0
জগারি অল্	•••	***	457	বিক্রমকেশরী রসঃ	•••		80
চলৰাদি লোহ্য	•••	•••	855	মেখনাদো রস:	•••	100	8 3
চূড়ামণিরসঃ	•••	•••	805	শীতারিরস:	***	•••	**
বৃহজ্জরচূড়ামণি :	•••	•••	857	অরশুলহয়ে রস:	***	•••	83
ভার্চ্ড়ান?িঃ	•••	•••	* > >	জীবনাননাত্রম	•••	•••	8
বরান্তকো রস:	•••	•••	4:5	নকরধ্বজঃ	•••	•••	* 5
চিস্তামণিরসঃ	***	•	422	গন্ধককজনীবিধিঃ			8 4
চিন্ত'মণিরসঃ (মতাগুরে)	•••	•••	5÷9	কৌহাসবঃ	• • •	***	8
বুহ জ্বাচিন্তামণিঃ	•••		5+5	অমূত 'রিষ্ঠ:	•••	•••	**
জিপুরারিবস:	•••		425	মুত প্রকরণম্	•••		85
ছরাশ্মিরসঃ	•••	•••	યુગ્રહ્				
ম্বরকালকেতুরুসঃ			4-8	পিপ্লল্যান্তং ঘৃত্য	***	•••	83
মর্কাজকে ভুরন: মরারিরসঃ			8-9	ক্ষীরষট্পলকং যুত্য্	***	•••	**
	•••	•••	858	দশমূলষট্পলকং খুতম্	•••	***	84
্রিনরা জঃ	•••	. ***		বাসাভায়ত্য্	***	•••	84
পূর্ণ গণ্ডেম্ রঃ ,	***	•••	પ્રસ	গুড়ুচা'দি যুতানি	•••	•••	
বি ৰেশ্বররস ঃ	••• •	•••	458	তৈল প্ৰকরণম্	•••	•••	85
ৰুত্বাবোটকরস:	•••	•••	456	অঙ্গাধক-তৈলম্	•••	•••	8
ন্যাহিকারিরসঃ ,	•••	•••	n ÷ €	বৃহদঙ্গারক তৈলম্	•••	•••	84
গতৃৰ্থকারী বৃদঃ	•••	***	***	লাক্ষাদিতৈলম্	1	•••	84
ণাতপিন্ত ান্ত করসঃ	• • •	•••	8 5 €	মহালাক্ষাদি তৈলম্	• • •	***	8.5
ভরকুঞ্গরপারী- <u>ল</u> রসঃ	***	• • •	૪૨ ૭	বৃহৎ পিল্লল্যাদিতৈলম্	•••	***	8
ক্ষতক্রস:	•••	•••	કર હ	ষ্ট্কট্র-তৈলম্		***	84
কল্পত্রস: (মতা ন্ত রে)	•••	••	#૨૧	মহাবট্কট্র তৈলম্	•••		8 1
বিজ্ঞাবলভো রস:	•••	•••	४२१	কিরাতাদিতৈল ম্	•••	•••	88
এজয়মঙ্গলো রসঃ	•••	•••	४२٩	বৃহৎ কিরাতাদি তৈলম্	•••	***	81
ড়াননো রসঃ	•••	•••	おくひ	हम्म मोणिटेलमाणि	***	***	8
দে স্তমালতীর সঃ	•••	•••	स २ ४	অন্তৰ্কাদিতেলাদি	•••	***	8
বিষমজ্বাস্তক-লৌগঃ	•••	•••	846	হ্ শ্বপ্রকরণম্	• • • •	***	8
ুটপাকবিষ ম্ব রা ন্তকো লে	ोरु:	•••	8२४	কীর পাকবিধিঃ	***	***	81
প্লেম্ব শৈলেন্দ্রসঃ	***	•••	852	পথাপথাবিধিঃ	•••	•••	8:
প্ৰতীন্স:	•••	•••	859	নবছরেংপথ্যস্	**4	•••	s
নন্দীবিলাসো রস:	•••	•••	80.	মধান্তরে পথাস্	•••	•••	8
ৰ্গ্ৰাজ বটা	•••	•••	н ७•	পুরাণক্সরে পথ্যম্	•••	•••	8
দৰ্বনমন্ত্ৰ হয় লোহ মূ			863	অ রেংপথ্যমূ			8:

•		١
n	•	ı

			h•				
বিষয়াঃ।			পত্রাঙ্কা:।	বিষয়া:।		প্	ৰাকা:
জ্বাতিসা	রাধিক	ারঃ ।		কঞ্টাদি	•••	•••	8 4
		• - • •		কুটজাদিং	•••	•••	8 0
অরাতিসারনিদানম্	•••	•••	884	ক্রাষণাদি চূর্ণম্	•••	•••	.4 0
জ্বাতিসার-চিকিৎসা			884	থড় যুষঃ	• • •	•••	86
			•	खर्थािक हुर्नभ	•••	•••	80
७ ९ शनवर्षेक म्	***	•••	386	হরীতক্যাদি চূর্ণশ্		••	80
পাঠাদিঃ	•••	•••	980	বাতাতিসারলকণ্য	***	•••	8
क्रेंबार्षिः	•••	•••	કે ઇન્ડ મન્ક	বা হাতিসার-চিকিৎসা			8 (
শাহ্যতথী	•••	•••		পৃতিকাদিক্ষায়:			8.
নাগরাদি:	•••	•••	445				
হ্রীবেরাদিঃ	•••	***	4 X Y	পথ্যাদিক্ষায়: বচ'দিক্ষায়:	•••	•	8
শুড় চাাদি:	***	•••	_		•••	••	> (
উশারাদি	••	••	<i>פה</i> פהה	পিতাতিসারলকণ্য	•••	••	4.0
পঞ্মুল্যাদি	**	•••	2,00	্পিন্তাতিসার চিকিৎস	•••		~ «
বৃহৎপঞ্ন্যাদিঃ ভিন্ন	•••	•		ं श् ष् क ' कि			
বি ৰপঞ্চকম্ কলি স ্বিভিডিক	•••		884	ব্ৰা,পক্ষায়	•••		,
	•••	•••	204	ক্রফল্র্ট্রিকশ্বর	•••	• • •	21
উৎপৰ্মাদিচূৰ্ণম্ ঝোষাদিচূৰ্ণম্	***	•••	- 10	: কিরতেভিভাদি		•••	7.0
বেয়ব্যাৰ্চ্যৰ্ বৃহৎ কুটজাৰলেখ-	•••		ने ही ह	অভিবিধাদি	• • •	•••	8 (
বৃহৎ কুচজাবলেহ- ভন্নান্তরোক্তো বৃহৎ কুচজাব				শ্রেষাতিসারলক্ষণ্	•••	•••	84
् अश्वासाय । (अश्वी शरम ्या			335	শ্লেমাতিসার-চিকিৎস:			<i>c</i>
মূতসঞ্জাবনা বটা	4-170)		740				8 @
সিদ্ধপ্রাণেশরো রসঃ	•••	•••	586	পথ্যাদিক যায়:	•••	• ***	2.6
কনকস্পরো রসঃ	•••	•••	850	ক্রিনিশত্বাদিকষায়ঃ	F11	•••	46
কনকপ্ৰভা বটা			140	চবা: দিকশায়:	•••	•••	4 ;
প্রসম্প্রে রস:	***	•••	8ۥ	পাহাদি চূর্ণম		111	40
শ্বনন্দ্রে। রশ- মৃত্ সঞ্জাবনো রস:		•••	86.	হিপ্স ু দিচ্ প্	***	•••	40
ત્રુકના મહત્તા કરત બુલા બુલા વિધિ:			8 € •	ব্প ্লা দিয়েগঃ	141	•••	Я
(All Callalan				পথ্যাদি চূর্ণম্ তিনোধাতিসারলক্ষণম	• •	•••	٠. (
অতিসার	প্ ষিক্রা	রঃ ।			•••	* * *	40
4104113	411 4 4 1			তিদোষা ভীসার-চিকিং	7]	• •	84
অভিস ারনিদ? ৷ম	***	•••	197	সমঙ্গাদিকবায়ঃ	•••		8.0
অ'বংশক্ষপান্	***	***	80.	পঞ্মুনাবলাদিক্যায়.	•••	•••	8.4
অ্বপৰ্যোরণব্যলকণ্য্		•••	867	কুট্ডপুটপাক:		•••	80
আমাতিসা র-চিকিৎস।	• • •	•••	8 ∉ ₹	ভোনাকপুটপাক:	••	•••	8 0
			822	কু ড জ লেহ:		•••	8 @
ষরশালপর্ণ,দিঃ বুহচ্ছালপর্ণ,দিঃ	•••		803	4 हें ज है क	•••	•••	я с
ধৃহচ্ছালস্থান্দঃ ধাশুপঞ্ক: ধায়াচভুদক	•••		, a s	শোকজাতীসারলকণ্	• • •		80
वाक्षतक्षरः वास्त्रव्यः व रमकामिकायः	•••	•••	308	শোকাদিজাতীসার-চি	Francis and		
१९१क। एक । यः १९ । किकासः			468		4 A		800
	•••	•••	#6B	পৃথিপণ্যাদিকনায়	•••	•••	80
ব্যাক্তানি	• • •	• • •	5 € 8	শোথাতীসার-চিকিৎস			

r

h	1	0
7	/	•

विषशाः ।		পত্ৰাঙ্কাঃ।	বিষয়া:।			পত্রাহ্বাঃ।
ছিদোষজাতীসার-চিকিৎসা	•••	805	(তন্ত্রান্তরোক্ত) আনন্দর্যে	ছরবো রস:	•••	867
পিত্তমেন্মাতীসার-চিকিৎসা	•••	8°9÷	কপুররসঃ	•••	•••	866
भृष्ठापिः	•••	89.	কুট লা রিষ্টঃ	•••	•••	8 5 %
ਸ਼ੑਫ਼ ੑਖ਼ਫ਼ ···		X.50 •	অহিফেন সব:	•••	•••	869
		_	बन्द्र नाश्च∫त्र है:	•••	•••	868
ৰাতন্মেল্লাভীসার-চিকিৎসা	•••	87.	ষড়ঙ্গায়ত্তম্	•••	•••	869
চিত্ৰকাদিঃ	•••	x 15 0	প্ৰদাপৰাবিধিঃ	***	:	\$ 9•
বাতপিত্তাতীসার-চিকিংসা		85•	্ গ্রহণীরে	াগাধিকা	রঃ ।	
कलिक्रोपिः	•••	45.				
প্রমণ্য ক্রম্		35.	গ্রহণীরে:গ্রিদ্নেম	•••	•••	893
রক্তাতিসারলকণম্ · · ·	•••	851	্ গ্রহণীরোগ-চিকিৎসা		• • •	895
রক্তাতিসার-চিকিৎসা	• • •	872	চিত্ৰক গুড়িকা	•••	•••	893
·			বাতজগ্ৰহণীয়োগ-নিদানম্		••	893
ठलन्दर्भः , •••	•••	9 5;	বা ভজ্ঞাহণীরোগ-চি	करमा	•••	89२
কুটজদ:ডিমকন্থ, ••	••	89;	শ'লপণা'দিকসায়ঃ	***	•••	89
রস্প্রেরণ্ড চুর্থ •••	••	8.50	পিতৃজ্ঞহণরে প্রিদ্'ন্ম্	•••	•••	84
ন'র 'য়ণচূর্ম · · ·	•••	155	পিভন্ধগ্রহণীরোগ-চি	কংস:		৪৭৩
অভিদার-সাবারণচিকিৎদা	••	825	िख भिक्यारः			893
বিশ্বাদিঃ		855	डें।कल' भिक्कः	•••	•••	893
পটে'লাদি:	•••	855	নাগর;স্তচূর্ণ্	•••		% 9 %
প্রিয়ঙ্গ দি.		853	ক্ষজগ্ৰহণারে গ্রিদানম্			898
জম্বাদি:	•••	ទ ួម ខ	কফজগ্ৰহণীরোগ-দি	ক ং সা		898
বৎস কাদি:		855	6 कु छ छ क स । इ.८		•••	898
ङ्गीरवज्ञानिः	•••	893	नठगणि हुनभ्	•••		8 9 8
ଜ୍ୟାନ୍ୟ ଓଡ଼ିଆ	•••	ង១៹	রাক্ষাদি চুর্ণন্	•••		890
অহিফেনযোগঃ 🛫 ···	• • •	458	বাত পিত্তজ্ঞহণীরোগ	-চিকিৎসা		898
প্রবাহিকালকণম্ ···	•••	868	মুঙাাদিগুড়িকা		•••	898
প্রবাহিকাচিকিৎসা (আমাশ্যরেগে)	•••	498	বাৰ্ত্তান বাড়কা		•••	896
ल । अर् विद्यार्गः	••	850	বাতনেমজ্ঞহণীরোগ	-fetzerse		890
लवज्ञास्त्रकः "	• • •	850		-1014/1		
অতিসারবারণো রস	•••		কপুরাণি চুর্ণ্ ভালাশাদিবটা	•••	•••	890 1890
वृह्द कनकरमात्रतमः	•••	8 9 5		r Gran	•••	-
পূर्वः <u>त्यावस्त्रो</u> तमः	•••	8 615	পিত্তশেষগ্রহণীরোগ-	DI 4741		১৭৬
অহিফেনবটিকা · · ·	***	র ১৬	ম্যল্যাদি-যোগঃ	•••	***	8 9 4
ञाञाकनामित्रण	•••	8 9 9	दिमायकश्रश्ना नेमानम्		•••	89%
কারণ্যসাগরো রস: · · ·	•••	855	ত্রিদোষজগ্রহণীরোগ-	চাকৎসা		893
প্রাণেশরো রস:	•••	*59	পক্পল্লবম্	•••	• • •	8 9 %
অমৃ গাৰ্বঃ	***	859	সংগ্রহগ্রহণীলকণ্	•••	•••	995
ज् रुत्वयतः	•••	৪৬৭	সংগ্রহগ্রহণীরোগ-চি	কৎসা	•••	৪৭৬
জাতীফলরসঃ •••	•••	8 69	কামচারমভুরষ্	100	•••	894
অভয়নৃসিংহো রসঃ ···	•••	866	চূর্ণ প্রকরণম্			,
আনশভৈরবো রসঃ · · ·	•••	866	पूरा व्यक्तप्रश्		•••	899

' No/0

विषद्माः।		9	াত্রাকাঃ।	বিষয়াঃ।		প্র	এক:
পাঠান্তং চূর্ণ্	•••	•••	899	অগ্নিকুমারো রস:	•••	•••	6.8
কপিথাষ্টকচূৰ্ব মূ	• • •	•••	899	জাতীফলান্তা বটা	•••	•••	8 8
ষল্পক†ধরচূর্ণ্	•••	***	899	জাতীফলান্তা বটিকা	•••	•••	8 8
মহাগলাধরচূর্বম্	•••	•••	899	মহাগন্ধকম্	•••	• • •	8 2
বুহ ণ গঞ্জ ধর্চ র্ণম্			896	শ্ৰীবৈত্যনাথবটিকা	•••	•••	44
যুদ্ধগৰ (৭৯৮৭- বুদ্ধগৰাধরচূর্যমূ	•••	•••	876 876	খদর্পণ বর্টা	•••	•••	8 a
यद्यान । ५३५ ग् यद्यानरका छ १ हुर्गम्	•••	•••	84b	অভ্ৰবটকা		•••	8 %
वृश्वतकाष्ठाः हुर्गम्	•••		896	গ্রহণীকপাটোরদ:	•••	•••	88
তন্ত্রান্তরোক্তং বৃহল্লব ক্ রান্তাং	E ดู รั		892	বিজয়াবটিকা	•••	• • •	83
ৰলনায়িকাচূৰ্ণ্	χιζ			পায্যবলীরসঃ	•••	•••	44
	•••	•••	898	এী নুপতিব ল্লভ ঃ	•••	•••	8 %
বৃ হরায়িকা চূর্ণম্	•••	•••	448	নুহরুপ্রলভ:	••	•••	٠,٠
মা কণ্ডেয় চূৰ্ণম্	•••	•••	800	পূৰ্ণকলা বটিকা		•••	ħ n
এহ ণীশাৰ্দ _্ লচূৰ্ণ্	•••	•••	80•	ব্দুকপাটো রদ:	•••	4.*	'\ 6
জীরকাতাং চূণশ্	•••	•••	80°	বড়বামুখো রসঃ		•••	36
অঙ্গজ্যাদি চূণ্য	•••	•••	80%	>ংস-পোট্টলী	•••	•••	8.
কঞ্চাবলেহঃ	•••	•••	867	গ্ৰহণীবজ্ৰকপাট	***	•••	70
দশমূলওড়:	•••	•••	>1r2	শসুকাদিনটিকা	***	•••	5 Å
कनागि ७५:	• • •	•••	8५२	রাজগলভো সমঃ		•••	8.0
কুমাওগুড়কল্যাণক:	•••	•••	8000	মহারাজনুপবল্লভ	•••	•	4 %
মৃস্তকান্তা-মোদক:		•••	800				
শ্ৰীকামেশ্বর-মোদক:		•••	8৮৩	মহারাজনুপতিবলভো রসঃ	•••	• •	ጎላ
কামেখনো-মোদক:	•••	•••	863	হ্পবটা	•••		d m
নেধী-মোদক:	•••	•••	868	হুগ্নবটা (মভাস্তরে)	•••	•••	7 2
বৃহ ন্মেশ ী-মোদক:	•••	•••	868	লোহপপটা	•••	***	8 %
জীরকাদি-মোদক:		•••	866	স্বৰ্ণপূ তী	•••	• • • •	* *
বৃহজ্জীরকাদি-মোদকঃ	•••	•••	856	পঞ্চায়তপপটা	•••	•••	42
অগ্রিকুমার-মোদকঃ	***	•••	805	রুমপর্ণটা	•••	•••	43
ব্যৱসূদ্ধনিন্ ব্যৱসূদ্ধনিন্	•••	•••	805	বিজয়পর্ণটা	***	• • •	a -
বৃৎচ্চুক্রসন্ধান্য্	•••		806	তম্বান্তরোক্তা বিজয়পর্ণটা	***	• •	Ca
তক্রারিত্তঃ	•••		8 b 9	হিরণ্যগভপোট্টলীরসঃ	***	•••	¢ •
পিশ্বল্যাত্মাসবঃ		•••	859	বিবগভয়তম্	:	•••	¢ +
আয়ামকাঞ্জিক ন্	•••	•••	854	শুক্তীয় ত্ৰ্	***	•••	C • v
				নাগর য়ত্য	• • •	•••	R •
গ্রহণীকপাটো রসঃ	•••	•••	******	চিত্ৰকয়ুত্ৰ	•••	•••	. 9
সংগ্রহগ্রহণাকপাটঃ	•••	•••	8 जिल्हें सम्बद्ध	বিধাদিয়ত্য	•••	•••	« »
গ্ৰহণাণাৰ্ছ লব্টকা	***	•••	હ્યું ક હત્યું	চাকেরিয়ত্	***	•••	¢ •
গ্ৰহণাগড়ে শ্ৰবটিক	•••	•••		মরিচ;তাং গুঙ্ম	***		c -
শ্বর্থাহ্না কপার্বসঃ	•••	•••	9 & •	মহাষ্টপলকং যুত্য			€ •
বৃহদ্গ্রহণীকপাটো রসঃ	•••	***	68€	বিশ্বভেলম			a n
অগ্রন্থিস্ভর'জে। রসঃ		•••	820	গ্রহণামিহিরতৈলম্	•••	•••	¢ •
অ্যিপুনুরসঃ	,		87.	বৃহদ্গ্রহণীমিহিরতৈলম্		•••	06 •

ne/•

বিষয়াঃ।		পত্ত	कि:।	विषयाः ।		পত্ৰ	寒!:
ণাড়িমাতাং তৈলম্	•••	•••	e • %	চ ≉ৎকুঠারো রস:	•••		425
পণ্যাপথ্যবিধিঃ	•••	•••	૯૦૭	শিলাগন্ধকবটকঃ	•••	•••	૯૨૨
				জাতীফলাদিবটা	•••	•••	¢
অর্শেরো	গা।ধক।	রঃ ।		পঞ্চাননবটা	•••	•••	৫२२
			e • 4	নিত্যোদি তর স:	•••	•••	e • >
অর্শোরোগনিদানম্ অর্শোবেশগ-চিকিৎসা	•••	•••	600	অক্টাঙ্গো রসঃ	•••	•••	Q > a
	•••	•••		কাশীসান্তং তৈলষ্	•••	•••	e 2 :
ণৃঙ্গবেরকা থঃ রক্তার্লোলকণম	•••	•••	e::	বৃহৎকাশীদাল্যং তৈলম	• •	•••	¢ 21
•	•••	•••	6:5	পিধন্য:ছাং তেলখ্	•••	•••	¢٥
রক্তার্শন্চি কিৎসা	•••	•••	625	উদক্ষট্পলকং গুত্যু	•••	•••	a =
क्ल ना किक 'थः	•••	•••	G 🕽 🗧	ব্যোষাত্তং মু ৩ম্		•••	e :
অৰগন্ধাদিধ্প.	•••	•••	692	চৰাাদি যুত্ৰ	• •		e s
একমূলা দিধৃপ.	• •	•••	1:0	কুড ল 'ভাৰুডম্	•••	***	^ \$
ধুস্ুর†দিঃ	•••	•••	3 ; 5	হ্ম নিবন্ধকচাক্ষেরীম্ব তম্	•••	•••	e ÷
দেবদালী-যেগেঃ	***	••	370	পুখ্যাপুখাবিধিঃ		2	: 8.0 =
ভ্লাভামূত্যোগ:	***	•••	6:5	6			
করঞ্ রি চূর্ন্	•••	•••	670	অগ্নিমান্দ্যাদি	রোগাহি	কারঃ	l
वनर ा उम: छाठू र्गम्	•••	••	a : 8				
মরিচাদি চ্বশ্	•••	***	a 2 8	অগ্নিমান্য দিনিদানম্	•••	•••	¢ >
সমশকরং চুর্ণম	•••	•••	678	আগ্ৰমান্দ্যাদাচকিৎসা	•••	•••	৫ २ ۰
কপুর স্তাং চূর্ণন্	•••	• •	a 2 4	বড়বানলচূৰ্য	•••	•••	a s
বিজয়চূৰ্ণ্	•••	•••	U . R	- ড্ব'মুখচূৰ্ম্	•••	•••	4:
ନ ୍ ୟୁଟା ୫୯.	•••	•	a ; a	रेमकार'न हुन्य	• • •	***	e =
জ্বি। ছণালে। গুড়া		••	675	। সৈ ল বাজং চুণ্ম		•••	e :
অগ্নন্থিমে (দক'	•••	**	^ . 5	दिय हेकः हुर्गम्		•••	: -
ভলাতকাদি-মে,৮ক.	***	•••	1.5	্ কল া গুনুপচূৰ্ন			2 -
নাগরাদিমোদকঃ "	•••	•••	. 19	বৃহদ্যিমুখচূর্ণন্	•••		2 4
স্বদ্ধ্বণ-মোদকঃ	•••	•••	0:5	ভাশ্বরলবণ্ম	•••	•••	c :
বৃহচ্ছুরণ মোদকঃ	•••	•••	C 2.49	অগ্নিমুগলবণ্ম	••	•••	α:
কাশায়ন-মোদ্কু:	•••	•••	a : 9	ভীক্স গ্রিচিকিৎসা	***	•••	e:
মাণিভয়ো মোদকঃ	•••	***	e:9	আমাজীৰ্ণলক্ষণম্	•••	•••	e ;
প্রাণদা গুড়িকা	•••	•••	a : 9	অ:মাজীর্ণাদিচিকিৎসাবিধিঃ	***	***	œ:
নাগাজ্জনপ্রোগঃ	•••	•••	4 2 1	আমাজীৰ্ণ-চিকিৎসা	•••	•••	૯ ૨
म र् छातिष्टेम्	•••	•••	€ ? ►	বিদ্ধাজীৰ্ণলক্ষণম্	•••	•••	¢,
কুটজলেং:	•••	***	679	বিদন্ধাঞীৰ্-চিকিৎসা	•••	• • •	¢.
মাণশ্রণাত্তং লৌহণ্	•••	•••	679	विश्वकाकी नंगक गम्	• • •	•••	e.
অগ্নমূপং লোহম্	• • •	•••	679	রসশেবাজীর্ণলক্ষণম্	•••	•••	6
' লুপ্ৰভা গুড়িকা	•••	•••	€ ₹ •	বিষ্টৰূরসংশ্যেশীর্ণ-চিবি	(म)	•••	60
রসগুড়িকা	•••	•••	653	পূর্মারমোদ ক্ য্	•••	•••	¢
জীকুমুখে। রসঃ	•••	•••	६२५	শুড়াষ্টকষ্	***	•••	¢
শর্শ কুঠারো রস:	•••		652	विनिष्टेष्टवााबीर्ग विनिष्टेः भा	ठन स्वाम्	•••	e s
চক্রাথ্যো রস:	•••	•••	653	সাধারণচিকিৎসা	•••		60

বিষয়াঃ।		97	গ্ৰহা:।	বিষয়া:।		1	শত্রাকাঃ।
লবকাতিং মোদক্ষ	•••	•••	હહર	প্রদীপনো রসঃ	•••		@ 8 6
ত্রিবৃতাদি মোদক্ষ	•••	•••	৫৩৩	মহোদধিবটা		•••	686
হরাতকীপ্রয়োগঃ	•••	• • •	(৩৩	বিজয়রসঃ	•••	•••	689
অমৃতহরীতকী	•••	•••	৫৩৩	বীরভদ্রাভ্রকম	•••	•••	689
শাৰ্দ্দুলকাঞ্চিক্দ্	•••	•••	৫৩৩	রসরাক্ষদঃ	•••	•••	র গঙ
মৃস্তকারিষ্ট:	•••	•••	8 . 3	ত্রিফলালৌ হ্ম্	•••	• • •	189
কারগুড়:	•••	•••	8.00	বি শোদ্দীপকা ভ্রম	•••		789
বিস্চিকাৰিদানম্	•••	•••	4 26	অগ্নিয়ত্ত্	•••	•••	a * 9
বিস্হচিকা-চিকিৎসা	•••	•••	৫৩৬	অগ্নিকরমূত্র্ পথ্যপথ্যবিধিঃ	•••	•••	289
পঞ্যোগ*:	•••	•••	৫ ১৬		•••	••	3.8▶
বিস্টিকায়া বিশেষচিনি	करभः	•••	લ ૭৬				
উৎক্লেশস্ত লক্ষণম			હ હ ૧	ক্রিমিরে	গোধক	রিঃ	
অলসক[চিকিৎসা			ু ত ৭	6-6-6			
অ াদিত্যরসঃ	•••	•••	র ১৮	কিমিনিদান্ম	••	***	, s. w
বড়বানলরসং	•••	***	द ७৮	ক্রিমিরোগ-চিকিৎসা		•••	000
হ ত†শ্বরুসঃ	•••	***	4 3F	পারসায়াদি চুর্ণম			- a :
বৃহদ্ধুতাশনো রসঃ	•••	•••	201	দাভিমাদিকবার:		••	301
অজীর্ণকন্টকো রসঃ	•••	•••	ে ও৮	মুস্তাদিকধায়	•••		202
এরামবাণরসঃ	•••	•••	ડ ૭৯	পারিভদাবলেহঃ (ইরিদার	હ)	•••	665
অগ্নিকুমারো রস:		•••	6.29	ক্রিমিকালানলো রসঃ		•••	4 € 5
বৃহদ্যিকুমারো র্স		•••	د د ه	ক্রিমিমুকারো রসঃ .		•••	9.00
পাশুপতো রদঃ	•••	•••	zes	ক্রিমিবিনালো রস.			: 0 5
অমু একল্পবটা	•••		۲,	শ্রিমিহরো রসঃ ,		•••	39
অমূতবটা	•••	•••	4 % ●	ক্রিমিরোগারিরস	•••	1	٠.
কুধাসাগরো রসঃ	•••		150	कार्डगर्स्का तमः		• • •	303
ভক্তবিপাকবটা	•••		a * •	জিমিছোরদ:	`	•••	. ৫ ৩
অ্যিতৃভারস:	•••		285	বিড়ন্সলোহ্ম্	•••	***	2.615
পঞ্চিত্ৰটা	•••	• • •	285	কিমিবাতিনী গুড়িকা	•••	•••	49.8
অগ্নিরস:	•••	***	4 8 2	ত্রিফলান্তঃ সুত্র	• • • •	*	3 C 8
বালানলো রসঃ	•••	•••	485	বিড়ক য়তম্	• •	•••	008
अवक ामिविंग	•••	• • •	ુ કર	বিড়ঙ্গতৈলম	• • •	•••	a & 8
বৃহ্ল বঙ্গাদিবটা	•••	•••	485	ধুস্ত ্র-তৈলম্	•••		668
डेक गामिवण	•••	•••	289	পথ্যাপথাৰিখিঃ	•••	•••	€€8,€€€
জাত ফলাদি বটা	• • •	•••	685				
শ্ব্বটা, মহাশ্ব্ৰটা	•••	•••	685	পাণ্ডরে	াগাধিক	ta:	
শ্ৰবটা	•••	•••	685			1	
ম শেশঃটা	• • •	•••	488	পাভুরোগ-নিদানম্	•••	***	966
অজাৰ্ণহন্ধা বটা	•••	1	488	পাণ্ডুরোগ চিকিৎসা	•••	•••	669
व्यक्रीवीवित्रमः	•••	***	488	কলত্রিকাদিকবার:	•••	•••	
ভাশ্বরো রস:	•••	***	48€	नामानिकवात्रः	•••	•••	449
ক্রব্যাদরশ:	• • •		080	লোহভন্মৰোগ:	•••		

विषयाः । हैं	প্ৰাথ: ৷	दिगडीः।			শতান্তা:
भागमानिकानम् 🔆 😶	200 See	क्रांड्यका विकास:	****	30.0	-167
कामना विकित्ना	413	ৰানককাৰ:	***	•••	*51
200		क्रिनाम्बर्ग (मार्क्क	दर्श 🖟	nåe.	495
प्रकाशनिमानम्	•••	arrive to		***	1895
क्षकामा-हिक्रिया	20 . 18 1 1 1 ERS	পউকুমাতাৰুলেই:	. ***		° ःदब्द
The Arrian		ब्रद्याक्षावातहः	***	***	281 9
		क्षां कर्यः	***	***	442
नियक-डिकिटमी	***	বাৰাকুছাওপতঃ	***	444	is deta
the transport for the form	*** C.	र्गामानकः	***	***	194
Mar Ardinas;	19*	স্কের:	***	***	448
		র্জ শিস্তান্তকো র্স:			** *
नगरग-इर्ल्यू	· Res	রসাম চরদ:	***	***	, 48¢
क्रांस्टरेश	THE THE	क्षाबियों स्मः	1644	,	142
वन-वदाकाः स्मिन्द्र	*** \$ # # # # # # # # # # # # # # # # #	কপদকে বৃদ্ধ	44.	***	#54
नी नोहार	### ### ###	শবর্জাং লৌহন	4 * 4	***	4.4.5
प्रश्नाविद्यां क्ष	' 293	मनमंत्रं दे त्लोह्य			
हारम ्यार मेश्रम्	*** ***	ाठम्मापि लोइन्	44,		* 3*414
स्वार्गितमोदय		पक्षमाद्याः जोहन	24.	***	10
र्राप्टेकल्लुद्रः		ष्टे नी जास्त्रः	ا يُرَّ يُوهِ هِ	as the	294
শ্বিবাশিম প্রস্	444 2143	বাৰাশ্বতন্	544	34	499
शिधिक- (नर्ग्यम्कतम् । । । । ।		FAIST US		444	4,14
विनामिन्यक्ष्यम् •••	in the	P প্ৰায়য়তম্			લલ્ય
विकित्रकारत ब्रमः	ुन्छ दुवस्य	शंदवडाकार टेक्सम्	***	An also are	845
機動機能 中。	230	প্ৰদাপৰ্যবৈধিঃ	-	vite ^{nsin} *••	294.443
PROTOFI CALL	· ` `		**	1 . 2 . 13	
श्रासम्बर्कीः (३६०			mbart C.	11.74	
THE THE	6.4	র জি ধন্ম	রাগা।ধ	कार्यः ।	
ृशक्षांनत्ना द्रमः	* 12 750 James*	* ************************************			gira -
न विद्या क्षाः	Section 1 States	রাজ্যক্তক তক্তিনিদান্ত	4 0 4	+** `	: * 1
्रमञ्जूषा पुरुष	\$ 60 C	दोक्यम-हिक्दिशः	• •		47.
শান্তঃ বৃত্যু		गनाव ्रिक्ष्यर नावकिश्व	- 12°E'		15
TWI WOT	200	ব্যব্যয়শোহ-চিকিৎস।	4 400	7/4.9%	4×4
विश्व प्रकृष	646	ৰাণ্ডাৰশোৰ-চিকিৎসা শোকশোৰ-চিকিৎসা	17 BW	**	403
मा-प्रदर्भ		भारतम्बर्गाः नाश्करमः भारतम्बर्गाः	#4*	* * *	19 2012
निवृद्धिकार	*** ****		Dyá	***	220
ग्रिकाविदः	4r. 300	क्राक्ष्माह-तिकिरमा	**	***	16.0
A STATE OF THE STA		ব্রণশাহ-চিকিৎসা	>50	***	120
র্ ক্তপিকু রোগার্	data:	উরক্তিবিদ্যুন্ন "	441-	***	क्ष्म्भ
	TTIME	উক্তক্ষত-চিকিৎসা	441		eru
THE PROPERTY.	989	वका विष्-िम्	·		
ছলিম চিকিৎসা	¢n4	जरकाषितृर्भम्	487		223
to impa:	600	नुमान्त्राकृतिकार्	National Section	er g	12.0
A CONTRACTOR OF THE PARTY OF TH	4	जिन्द्रीपि हुनी	841 "	. den	CH4"
176	38.	and the Kart of		A. A. Same	A. 2.

বিষয়া:।		পত	াকা: ৷	বিষয়াঃ।		পত্ৰ	काः ।
এলাদি চুৰ্ব্	•••	•••	ere	কাসরোগ	গাধিকা	রঃ।	
का ठोकना पिठूर्गभ्	•••	•••	eve	কাসনিদানম্			y
কপুরাক্তং চূর্ণম্	•••	•••	ere	বাতজকাসনিদানম্	•••	•••	.
अश्वनाजः	•••	•••	640	বাতজকাস-চিকিৎসা			1200
ত্রোদশাক:	•••	•••	220		•••	•••	
সিতোপলাদিলেহ:	•••	•••	120	অপরাজিতাদিলেহঃ	•••	•••	6.7
বাসাবলেহঃ	•••	•••	ers	পিত্তজকা সনিদানম্	•••	•••	6. 5
বৃহদ্ বাসাবলেহ:	•••	***	chalcha	পিত্তজ্ঞকাস-চিকিৎসা	•••	••	901
অমৃতপ্রাশাবলেহ:	***	•••	erg	কফজকাসনিদান্য্	•••	•••	6. 2
চাৰ-প্ৰাশ:	•••	•••	err	কফজকাস-চিকিৎসা			७०२
দ্রাকারিষ্ট:	•••	•••	649		• • •	•••	,
यन्त्रा त्रित्नोहम्	•••	•••	643	ক্তজকাস্বিদাৰ্	•••	•••	७∙ २
রামাদিলোহ্য	•••		ara	ক্ষতজ্ঞাস-চিকিৎসা		•	७०७ ′
শিলাজখাদি লৌহ্য	•••	•••	ars	ক্ষজকাসনিদান্য		•••	4.9
বিশ্ববাসি-যোগঃ	•••	•••	649	ক্ষম কাস-চিকিৎসা		• • •	500
কনকহন্দরো রসঃ		•••	62.	কাসক্ত সাধারণচিকিৎসা	•••	**1	5 8
बुङ्किनामुट्या तमः	•••	***	¢ >> •	कंद्रकलानिः	•••	•••	હ• ફ હ• ફ
ক্ষ্যকেশ্রী	•••		•63	২নীতৰ্গদিশুড়িক ।	***		6.8
ক্ষয়কেশরী (মতাস্তরে)		•••	- 63	মরিচাদিগুড়িকা	•••	•••	9.8
চূড়ামণি-রসঃ	•••	•••	269	ম্রিচান্তাং চুর্ণ		***	5 €
মুগাকো রসঃ	•••	•••	(%)	সমশকরচুর্ণ্	•••	•••	9 • €.
মহ+মৃগাক্ষরসঃ	•••	•••	6.20	अना फिर्नि थ्	•••	•••	5 • 6
রাজমূগাকো রসঃ	•••	• • •	६५२	ব্যাঘ্রীইরাতকা 🚜		•••	৬৽৻
মহাত্রবটা	***	•••	6.89	এগ ন্তা হরীতকা		•	5-(
কাঞ্চনাভ্রসঃ	•••	•••	৫৯৩	वृद्धःमावल्यः	•••	***	•• 6
বৃহৎ কাঞ্চনাত্ররসঃ	•••	•••	e 63	ভা লাশান্তঃ চুৰ্ণঃ গুড়িকা	Б 🔐	•••	৬•৬
কলা ণহন্দ রাভ্রম্	***	•••	8 6 2	ধ্মপানবিধিঃ	•••	••.	6.4
রসেক্সগুড়িকা	•••		863	পঞ্চামৃতরুসঃ	***	•••	• 4
বৃহৎ রসেক্রগুড়িকা	***	•••	1 28	. পুরন্দরবটা	••• 🐄	•••	5 · 4
লোকেশরপোট্টলীরসঃ	•••	•••	454	চন্দ্রায়তাবটা (চন্দ্রায়তরস	:)	***	७∙ ₩
হেমগর্ভগোট্টলীরসঃ	•••	•••	262 &62	A141/8041 3410	•••	•••	P . p.
রত্বগর্ভপোট্টলী রসঃ সর্বাঞ্চহন্দরো রসঃ	***	•••	e a s e a s	414X012	•••	•••	% • 6 *
11		•••		काननस्थान-एवत्रवा बनः	•••	•••	6 • 1
পারাশরয়তম্	•••	•••	963	1 10 111 00 11 416	•••	***	৬•ম
অজাপঞ্কম্বতম্	•••	•••	e ৯ 9		•••	•••	***
বল'গৰ্ভ: মৃত্যু	***	•••	643		•••	•••	७∙ ≥
कोवखाकायुटम्	•••	***	699	ভয়াগুড়িকা	***	•••	***
অমৃতপ্রাশয়তম্	***		e > 9	বুংদ্রদেশগুড়িকা	***	•••	42.
11	***	•••		ভাগোন্তরগুড়িকা	•••	0	•>•
বৃহচ্চলনাদি তৈলম্	•••	•••	6 9 4	चुन । प्राप्य न्	***	•••	•>•
পখ্যাপখ্যবিধিঃ	•••	***	espiess	সার্বভৌমরসঃ	***	***	# 23

विवयाः।		প	আৰা:।	विषग्रीः।		9	ত্ৰাহাঃ।
বৃহচ্ছ কারাত্রম্	•••	•••	477	মৃগনাভ্যাদিরবলেহ:	•••	•••	७२१
এ ডামরানন্দা র ম্	•••	•••	622	ठवानि ह्र्वम्	•••	•••	७२१
বিজয়-ভৈরবরসঃ	•••	•••	#2 <i>5</i>	নিদিশ্বিকাবলেহ:	•••	•••	७२१
कामनन्त्रीविनामः	•••	•••	6 25	কল্যাণাবলেহঃ	•••	F4+	७२৮
মহোদধি:	•••	•••	७:२	ভৈরবো রস:	•••	•••	७२৮
সমশর্কর-লৌহম্	•••	•••	670	তামক ভ্রম্	•••	•••	७२४
বসন্ততিলকরস:	•••	•••	670	ব্যাদ্রীয়ত্ত্	•••	•••	७२৮
কণ্টকারীয়ু তম্	•••	•••	630	সারস্বতমূত্য (ব্রহ্মী মৃত্য)	•••	***	459
বৃহৎক টকারাত্বতম্	,	•••	470	ভূকরাজাতাং মৃত্যু	•••	•••	492
দশমূলম্বতম্	•••	***	478	পণ্যাপথ্যবিধিঃ	•••	•••	459
দশমূলাতাং যুত্ৰ	•••	•••	\$ 7.8				1
मन्यूलव्हेशनकः यु ख्य्	•••	•••	6:8	অরোচকা	ধিকার:	1	
চন্দনাপ্তা-তৈলম্	•••	•••	428			•	
বাসাচন্দ্ৰাত্ম-তৈল্	•••	•••	658	অরোচকনিদান্	•••	•••	% ৩
পথ্যপথ্যবিধিঃ	• • •		926	অরোচক-চিকিৎসা	•••	• • •	৬৩০
				नाजिमानि हुर्गम्	•••	•••	4007
হিকাখাসরো	ব্যাধিক	tao :		য্মানাধ্ডেব.	•••	•••	603
। २क वि गर्स	गाविक	125		কলহংসম্	•••	•••	७७२
হিকাখাদনিদান্য			929	তি ভিড়াপা নক ম্	•••	•••	હહર
হিকাঝাস-চিকিৎসা	•••	•••	৬১৭	আর্দ্রকাত্লুকাবলেহঃ	***	•••	৬৩২
स्मश्रामाः	•••	•••	416	রস্বালা	•••	•••	400
चुनदारमाणः मुक्कामिङ्ग्य			ড <i>ুচ</i>	শ্লোচনা ভ্ৰন্	***	•••	600
্ন্ন্যালপুণন্ হরিজাদিচুর্নম্	•••	•••	ط د ق	হ্বানিধিরসঃ	***	***	563
হারপ্রাণ্ডুণন্ ভাগী ওডঃ	•••		620	পথ্যাপথ্যবিধিঃ	***	•••	600 608
ভাগীশকরা		•••	5.		_		
শুশীগুড়যুত্য	,	•••	9 2•	ছর্দ্দি-রোগ	াধিকার	1	
বিজয়বটা	***	•••	હરડ				
ডামরেখরাজম্	•••	•••	657	ছৰ্দিনিদানম্	•••	•••	408
शिक्षला छि: (नोहम्	•••	•••	હરડ	ব:তঃচ্ছদ্দিলকণ্	•••	•••	७७६
মহাখাসারে লোহম্	•••		७ २२	বাতৰচ্ছাদাচাকৎসা	•••	•••	৬৩৫
यामक्ठादता ब्रमः (विविधः)	•••	***	७२२	পিত্ৰজছ দিলকণ্	***	•••	906
খাসভৈরবো রসঃ	•••	***	હરર	পিতজ্জিভিজিৎসা	•••	•••	७ ୬¢
সুযাবর্জো রস:	•••	***	629	क्षक्र क्रिक्स क्षा			908
খাসচিত্তামণিঃ	•••	•••	650			•••	
হিংপ্রাক্তং যুত্তম্	•••	•••	490	কফজচ্চিচিকৎসা	•••	•••	606
ভেজোৰভ্যান্তং মৃত্যু	***	•••	***	ক্রিদোবজচ্ছ দিলকণম্	•••	***	901
ক্ৰকাস্বঃ	•••	***	458	বিদোষ পচ্ছ দি চিকিৎসা	•••	•••	600
পशाभगाविधिः	•••	•••	७२८।७२०	वौक्र्य अविष्कृषित्र कर्मभ्	•••	•••	৬৩৭
				বীভংসজাদিচছাৰ্দ্দচিকিৎসা	•••	•••	400
পরভেদা	ধিকারঃ	1		এলাদি চূর্ণ্	•••	•••	400
1,000		•		इ .स.चः	•••	•••	400
শর্ভেদনিদানশ্	•••	•••	७२७	ব্যবামূত্রদঃ	•••	***	400
শ্বরভেদ-চিকিৎসা	•••	• • •	७२७	- दूगभाकादमः	***	•••	**
							-

পথাপথাবিদি তৃষ্ঠারোগাধিকার: । তৃষ্ঠারোগাধিকার: । তৃষ্ঠারোগাধিকার: । তৃষ্ঠারোগাধিকার: । তৃষ্ঠারোগাধিকার: । তৃষ্ঠারোগাধিকার: । তৃষ্ঠারিকান্দ্র বাতজতৃষ্ঠাচিকিৎসা তৃষ্ঠানিকান্দ্র ক্রুক্তর্কালক্পন্ ক্রুক্তর্কালক্পন্ ক্রুক্তর্কালক্পন্ ত্রুক্তরালিক্ত্রা তৃষ্ঠানিকান্দ্র ক্রুক্তরালক্পন্ ক্রুক্তরালিক্তরা তুষ্ঠানিকান্দ্র ব্রুক্তরালিক্তরা তুর্কালিকান্দ্র ব্রুক্তরালিকিৎসা তুর্কালিকান্দ্র ব্রুক্তরালিকিৎসা তুর্কালিকান্দ্র ক্রুক্তরালিকিংসা তুর্কালিকান্দ্র ক্রুক্তরালিকিংসা তুর্কালিকান্দ্র ক্রুক্তরালিকান্দ্র ক্রুক্তরালিকিক্তরা ক্রুক্তরাল	कि:।	9		विवयाः।	াত্ৰাহ্বাঃ।	•		বিৰয়া:।
প্রধানধাবিঃ ত্কাব্যাপ্থিকারঃ । ত্কাব্যাপ্থানির হ । ত্কাব্যাপ্থানির হ । ত্কাব্যাপ্থানির হ । ত্কাব্যাপ্র হ । তক্কাক্ত্রাচিকিৎসা তক্কাক্ত্রাচিকিৎসা তক্কাক্তরাচিকিৎসা তক্কাক্তরাচিকিৎসা তক্কাক্তরাচিকিৎসা তক্কাক্তরাচিকিৎসা তক্কাক্তরাচিকিৎসা তক্তরাদিক্র হ । ত্কাব্যাপ্র হ । ত্কাব্যাপ্র হ । তক্তরাম্ব হ । ত				अक्षामातः	600	•••	•••	গলকান্তং মুত্তন্
ভ্ৰাব্যাৰ কারঃ। ত্ৰাক্তি কালকণন্ বাতলভ্ৰান্ত কালকণন্ বাতলভ্ৰান্ত কিৎসা ক্ৰম্ভ কালকণন্ ক্ৰমানি ক্ৰমা ক্ৰমানি ক্ৰমানি ক্ৰমা ক্ৰমানি ক্ৰমানি ক্ৰমা ক্ৰমানি ক্ৰমা ক্ৰমানি ক্ৰমানি ক্ৰমা ক্ৰমানি ক্ৰমানি ক্ৰমা ক্ৰমানি ক্	964	•••	•••	· ·	90>	•••	•••	পথ্যাপথ্যবিধিঃ
ক্ষাবিদাৰ বাতল্পত্কাচিকিৎসা বাতল্ভিক্ত্ৰাচিকিৎসা বাতলিক্ষাভিক্ত্ৰা বাতলিক্ষাভিক্ত্ৰা বাতলিক্ষাভিক্ত্ৰা বাতলিক্ষাভিক্ত্ৰা বাতলিক্ত্ৰা বাতলিক্ষা বাতলিক্যা বাতলিক্ষা বাতলিক্যা বাতলিক্ষা বাতলিক্ষা বাতলিক্ষা বাতলিক্ষা বাতলিক্ষা বাতলিক্ষা বা	• 64	•••	•••					-
বাতজভ্জাচিকিৎসা বাতজভ্জাচিকিৎসা তিজভ্জাচিকিৎসা ত্তঃ বাদিচ্বাচিকিৎসা ত্তঃ বাদিচ্বাচিকিৎসা ত্তঃ বাদিচ্বাচিকিৎসা ত্তঃ বাদিচিকিৎসা তিজ্জাকাবা বাদিচিকিংসা তিজ্জাকাবা বাদিচিকিৎসা তিজ্জাকাবা বাদিচিকিংসা তিজ্জাকাবা বাদিচিকিংসা তিজ্জাকাবা বাদিচিকিংসা তিজ্জাকাবা বাদিচিকিংসা তিজ্জাকাবা		18	াগাধিকার	দাহরে		রঃ ।	गा।बका	
বাতজভ্জানিক্ৎসা বাতজভ্জানিক্ৎসা ভিজভ্জানিক্ৎসা ভিজভ্জানিক্ৎসা ভক্জভ্জানিক্ৎসা ভক্জভ্জানিক্ ভক্জভজ্জানিক্ ভক্জভ্জানিক্ ভক্জভালিক্ ভক্জভ্জানিক্ ভক্জভালিক্ ভক্জানিক্ ভক্জভ	469	•••	•••	দাহরো গলকণ ম্	48.	•••	***	ভূকাৰিদাৰখ্
পিউজভ্জাচিকিৎসা ক্ষমভূকাচিকিৎসা ক্ষমভূকাচিকিক্ৎসা ক্ষমভূকাচিকিৎসা ক্ষমভূকাচিকিক্ ক্ষমভূকাচিকিৎসা ক্ষমভূকাচিকিংসা ক্মমভূকাচিকিংসা ক্ষমভূকাচিকিংসা ক্ষম	5e9	•••	•••	দাহবোগচিকিৎসা	98 •	***	•••	
পিউজভ্জাচিকিৎসা ক্ষজভ্জাচিকিৎসা ক্ষজভ্জাচিকি ক্ষজভ্জাচিকি ক্ষজভ্জাচিকি ক্ষজভ্জাচিকি ক্ষজভ্জাচিকি ক্ষজভ্জাচিক ক্ষজভ্জাচিক ক্ষজভ্জাচিক ক্ষজভ্জা	400		•••	व्यनामिकाथः	680	•••	•••	বাভজভৃষ্ণাচিকিৎসা
শিক্তমভূকাভিকিৎসা ক্ষম্ভভূকাভিকিৎসা ক্ষমভূকাভিকিৎসা ক্ষমভূকাভিকিং ক্ষমভূকাভিক্র ক্ষমভূকাভিকর ক্ষমভিকর ক্ষমভূকাভিকর ক্ষমভিকর ক্সমভিকর ক্ষমভিকর ক্ষমভিকর ক্ষমভিকর ক্ষমভিকর ক্ষমভিকর ক্ষমভিক	665	***	•••		68 •	•••	•••	
ক্ষজত্থাচিকিৎসা ক্ষজত্থাক্ষাক্ষ ক্ষজত্থাক্ষ ক্ষজত্থাক্য ক্ষজত্থাক্ষ ক্মজত্থাক্ষ ক্ষজত্থাক্ষ ক্ষজত্থাক্ষ ক্ষজত্থাক্ষ ক্ষজত্থাক্ষ ক্ষজত্থাক্ষ ক্ষজত্থাক্ষ ক্ষজত্থাক্ষ ক্ষজত্থাক্ষ ক্ষজত্থাক্ষ ক	962	***	•••		68 •	•••	•••	পিতত্ত্বভূষণাচি কিৎসা
ক্ষতক্রানিজারক্ত্ত্তালক্ষণ । ৩৪৪ ক্ষতক্রানিজ্যুক্তাতিকিৎসা । ৩৪৪ রসাধি চূর্ণ্ । ৩৪৪ রসাধি চূর্ণ্ । ৩৪৪ রমাধি চূর্ণ্ । ৩৪৪ রুম্বাধিরস: ৩৪৪ কুম্বেশরো রস: ৩৪৪ কুম্বেশনের ভিন্তির । ৬৪৪ কুম্বাবিদানন্ । ৩৪৪ কুম্বাবিদানন্ । ৩৪৮ কুমানিলানন্ । ৩৪৮ কুমানিলানন্ । ৩৪৮ কুমানিলানন্ । ৩৪৪ কুম্বাবিদানন্ । ৩৪৪ কুম্বাবিদানিক । ৩৪৪ কুম্বাবিদানিক । ৩৪৪ কুম্বাবিদানন । ৩৪৪ কুম্বাবিদান । ৩৪৪ কুম্বাবিদানন । ৩৪৪ কুম্বাবিদান । ৩৪৪৪ কুম্বাবিদান । ৩৪৪৪ কুম্বাবিদান । ৩৪৪৪ কুম	963	•••	•••		487	•••	•••	
ক্তভাদিত্যাচিকিৎসা স্ট্রানিলান মূচ্ছাবিলান মূচ্ছাবিল	৬৫৯	•••	•••		685	••-		
ক্ষান্তিক্সাচিকিৎসা ৬৪২ রসাদি চূর্ব্য ৬৪৪ রহাদ্বিরস: ৬৪৪ কুমুদেশরো রস: ৬৪৪ কুমুদ্বেরাগাধিকার: । কুম্চানিলানন্ ৬৪৪ কুমুদ্বিরাগাধিকার: । কুম্চানিলানন্ ৬৪৪ কুমুদ্বিরাগাদিকেরা ৬৪৪ কুমুদ্বিরালানন্ ৬৪৪ কুমুদ্বিরালান্ত্র বির্বালান্ত্র বির্বালান্ত্র বির্বালান্ত্র বির্বালান্ত্র বির্বালান্ত্র বির্বালান্ত্র বুডন্ ক্রালান্ত্র বুজন্ ক্রেলান্ত্র বুজন্ ক্রালান্ত্র বুজন্ ক	402	•••	•••		_		শ্ শ	
রসাদি চূর্ব্দ্ বিদ্যাপরস: ত্রুদ্ধেশরো রস: ত্রুদ্ধেশরের স-চিকিৎসা ত্রুদ্ধিকার: ত্র	৬৫৯	•••	•••	,			1	কভজাদিতৃকাচিকিৎসা
সংহাদিবরসঃ ক্ষুদ্দেশরো রসঃ ক্ষুদ্দেশরা রসঃ ক্ষুদ্দিশরা রসঃ ক্ষুদ্দিশ্বরা রসঃ ক্ষুদ্দিশরা রসঃ ক্রুদ্দিশরা রসঃ ক্রুদ্দিশরা রসঃ ক্রুদ্দিশরা রসঃ ক্রুদ্দিশরা রসঃ ক্রুদ্দিশরা রসঃ ক্রুদ্দিশরা রসং ক্রুদ্দ	৬৫৯	***	•••	কুশান্তাং হৈলং মৃতঞ্চ	•	•••	•••	त्रमाणि हुर्गम्
কুম্বেশরো রস: পথাপথাবিধি: ত ১৪৪ ৬৪৫ মুচ্ছাবিগাধিকার: মুচ্ছাবিগাধিকার: মুচ্ছাবিগাধিকার: মুচ্ছাবিগাধিকার: মুচ্ছাবিগাধিকার: মুচ্ছাবিগাধিকার: মুচ্ছাবিগাধিকার: মুচ্ছাবিগাধিকার: মুচ্ছাবিগাধিকার: অনাবিগালেশ ত ৪৪৫ ত মান্বিভাগ ত ৪৪৫ ত মান্বিভাগ ত ৯৪৫ ত মান্বিভাগ ত মান্)(5 5	••• ৬	•••	পথ্যাপথাবিধি-		•••	•••	মহোদ্ধিরস:
মূর্চ্ছাবেরাগাধিকারঃ। মূর্চ্ছাবেরাগাধিকারঃ। মূর্চ্ছাবেরাগ-চিকিৎসা অমনিলাভলুগন্দক্ষণ অমচিকিৎসা ত্রুমানিলানন্দলন্দ্র ত্রুমানিলানন্দলন্দ্র ত্রুমানিলানন্দলন্দ্র ত্রুমানিলানন্দলন্দ্র ত্রুমানিলানন্দলন্দ্র ত্রুমানিলানন্দলন্দ্র ত্রুমানিলানন্দলন্দ্র ত্রুমানিলানন্দলন্দ্র ত্রুমানিলানন্দলন্দ্র ত্রুমানিলানন্দলন্দর ত্রুমানিলানন্দলন্দ্র ত্রুমানিলানন্দলন্দর ত্রুমানিলানন্দলন্দর ত্রুমানিলানান্দলন্দর ত্রুমানিলানান্দলন্দর ত্রুমানিলানান্দলন্দ্র ত্রুমানিলানান্দর ত্রুমানিলানাল্দর ত্রুমানিলানালান্দর ত্রুমানিলানালালান্দর ত্রুমানিলানালালালালাল্দর ত্রুমানিলালালালালালালালালালালালালালালালালালাল			_	_	•	•••	•••	কুম্দেশরো রসঃ
মূর্চ্ছারোগাধিকারঃ। মূচ্ছানিলানন্ মূচ্ছানিলানন্ মূচ্ছাবোগাধিকারঃ। মূচ্ছাবোগাধিকারঃ। মূচ্ছাবোগাধিকারঃ। মূচ্ছাবোগাদিরোগাধিকারঃ। মূচ্ছাবেলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবেলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিল্বলা মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিল্বলা মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলান্ মূচ্ছাবিল্বলান্ মূচ্ছাবিলান্ মূচ্ছাবিলান্ মূচ্ছাবিলান্ মূচ্ছাবিল্বলান্ মূ		वः ।	াগাধিকার	ভন্মাদরে	386886	•••	•••	পথাপথাবিধি:
মূর্চ্ছারোগাধিকারঃ। মূচ্ছানিলানন্ মূচ্ছানিলানন্ মূচ্ছাবোগাধিকারঃ। মূচ্ছাবোগাধিকারঃ। মূচ্ছাবোগাধিকারঃ। মূচ্ছাবোগাদিরোগাধিকারঃ। মূচ্ছাবেলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবেলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিল্বলা মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিল্বলা মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলানন্ মূচ্ছাবিলান্ মূচ্ছাবিল্বলান্ মূচ্ছাবিলান্ মূচ্ছাবিলান্ মূচ্ছাবিলান্ মূচ্ছাবিল্বলান্ মূ	·9 b •		***	एना किन्। वस्				
মুর্ছাবোগ-চিকিৎসা অমনিজ্যতলাকণ্ অমনিজ্যতলাকণ্ অমচিকিৎসা তিকিৎসা তিকেম্বতন্ ক্লিত্যাদিরোগাধিকারঃ । মদাত্যয়াদিকেশ্য তিত্তমম্বতন্ ক্লিত্যম্বতন্ ক্লেত্যম্বতন্ ক্লিত্যম্বতন্ ক্লিত্যম্বতন্ ক্লেত্যম্বতন্ ক্লেত্যম্বতন কল্লেত্যম্বতন	৬৬২					রঃ।	গাধিকা	মূর্চ্ছারোগ
মুর্ছেন্ত্রাক চিকিৎসা ন্মানিজা-তন্ত্রা-চিকিৎসা সন্ত্রাস-চিকিৎসা সন্ত্রাস-চিকিৎসা সন্ত্রাস-চিকিৎসা সন্ত্রাস-চিকিৎসা ত্রাজালিজকণা মুর্ছেন্ত্রাকানিজিৎসা মুর্লিজনা মুর্ল	৬৬৪	•••	•••					
ভ্রমনিজ্ঞানজ্পণ্য	968	***	•••	নিম্বাদিধ্পঃ		•••		
ভ্রমচিকিৎসা নির্মা-তল্রা-চিকিৎসা সন্ন্যাস-চিকিৎসা স্কুলিজকো রস: ত্বাদ্পজ্ঞারের রস: ত্বাদ্দভ্রমার রস: ত্বাদ্দভ্রমার রস: ত্বাদ্দভ্রমার রস: ত্বাদ্দভ্রমার রস: ত্বাদ্দভ্রমান রস: ত্বাদ্দভ্রমান রস: ত্বাদ্দভ্রমান রস: ত্বাদ্দভ্রমান রস: তব্বাদ্দভ্রমান রস: তব্বা	৬৬৫	444	•••			•••		ভ্ৰমনিক্ৰাত্লগলক্ষণম
নিম্রা-তন্ত্রা-চিকিৎসা সন্ন্যাস-চিকিৎসা স্কর্যাস-চিকিৎসা স্কর্যাস-চিকিৎসা স্কর্যাস-চিকিৎসা স্কর্যাস-চিকিৎসা স্কর্যাস-চিকিৎসা স্কর্যাস-চিকিৎসা স্কর্যাস-চিকিৎসা স্কর্যাস-চিকিৎসা স্কর্যাস্বর্যাদিরোগাধিকারঃ। মদাত্যরাদিরিকিৎসা স্কর্যাস্বর্গাদির স্কর্যাদির স্কর্যান্তন্ত্র্যাদির স্কর্যান্তন্ত্র স্কর্যাদির স্কর্য	୯୯	•••	•••			•••	•••	
সন্ত্যাসনিদান্ত্র কর্মান ক্রমান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান ক্রমান কর্মান ক্রমান ক্রম	৬৬৫	***	•			•••	•••	***
সর্বাস-চিকিৎসা মুহ্ছান্তকো রসঃ অবগ্রাসিল্ড কিবলা অবগ্রাসিল্ড কিবলা অবগ্রাসিল্ড কিবলা অবগ্রাসিল্ড কিবলা মুদ্জান্তর কিবলা মুদ্জান্তর কিবলা অবগ্রামিল কিবলা অবগ্রমিল কিবলা অবগ্রামিল কিবলা অবগ্রমিল কিবলা অবগ্	564	••:	•••				•••	
মুক্তিজকো রসঃ অবগদারিষ্টঃ শ্বাপথারিষ্টিঃ শ্বাপথার্থিঃ শ্বিব্রাপ্তর্থ শ্বাপথার্থিঃ শ্বাপথার্থিঃ শ্বাপথার্থিঃ শ্বাপথার্থিঃ শ্বাপথার্থিঃ শ্বাপথার্থিঃ শ্বাপথার্থিঃ শ্বাপথার্থিঃ শ্বিব্রাপ্তর্থ শ্বাপথার্থিঃ শ্বাপথার্থি শ্বাপথার্থিঃ শ্বাপথার্থি শ্বাপথ	ودوي	•••	•••			***	•••	
অবগন্ধারিষ্টঃ পধ্যাপথারিধিঃ মদাত্যয়াদিরোগাধিকারঃ। মদাত্যয়াদিরেগাধিকারঃ। মদাত্যয়াদিরিকংসা ভব্ ইলাত্যয়াদিমদ-চিকিৎসা ভব্ তেজাদ্রবাদিমদ-চিকিৎসা ভব্ কার্লাভ্যয়ভ্য বিলাল্লাভ্যয়ভ্য ভব্ কার্লাভ্যয়ভ্য বিলাল্লাভ্যয়ভ্য ভব্ কার্লাভ্যম ভব কার	666		•	ভূতাকুশো রসঃ	৬৪৯	•••	•••	
প্রধাপথাবিধি: ১০০০ বিশ্ব বিধি: ১০০০ বিশ্ব বি	666	•••	***	চতুভু হো রস:	48%	•••		
মদাত্যমাদিরোগাধিকারঃ। মদাত্যমাদিরোগাধিকারঃ। মদাত্যমাদিরোগাধিকারঃ। মদাত্যমাদিরিকারা মদাত্যমাদিরিকারা মদাত্যমাদিরিকারা ১০০ ১৯ বিল্লান্তম বুতম ১৯ বিল্লান্তম বুতম ১৯ বিল্লান্তম বুতম ১৯ বিল্লান্তম ১	669	•••	***		1	***		
মদাত্যবাদিরোগাধিকারঃ। মদাত্যবাদিকারাদিকারঃ। মদাত্যবাদিকিকংসা ভে৫২ মহাকল্যাণকং যুত্ম ভে৫২ মহাকল্যাণকং যুত্ম ভে৫২ মহাকেল্যানিকং যুত্ম ভে৫৪ কল্যাক্রাজ্যবিদ্যা ভি৫৪ কল্যাক্রাজ্যবিদ্যা ভি৫৪ কল্যাক্রাজ্যবিদ্যা ভি৫৪ কল্যাক্রাজ্যবিদ্যা ভি৫৪ কল্যাক্রাজ্যবিদ্যা ভি৫৪ কল্যাক্রাজ্যবিদ্যা ভি৫৪ কল্যাক্রাজ্যবিদ্যা ভি৪৪ কল্যবিদ্যা	559	***		পানীয়কল্যাণকং খুত্ৰ	6.1962	••• 1		(न)(ग्राम्))व।व:
মহাকল্যাণকং যুত্র : ৬৬০ মহাজারাদিকিকংসা : ৬৫০ কান্তবাদিমদ-চিকিৎসা : ৬৫৪ কলন্তবাভূণ্য : ৬৫৪ কলন্তবাভূণ্য : ৬৫৪ কলন্তবাভূণ্য : ৬৫৪ কান্তবা মাদকঃ : ৬৫৫ কান্তবা দিমদ	669	***						
নদাত্যরাদিলকণ্ম ৬৫১ ১দাত্যরাদিচিকিৎসা ৬৫১ ৪ইাঙ্গলবণ্ম ৬৫১ কোন্তবাদিমদ-চিকিৎসা ৬৫৪ কলন্তিকাজ্যচূর্ণ্ম ৬৫৪ কলন্তিকাজ্যচূর্ণ্ম ৬৫৪ নাজ্যে মোদক: ৬৫৫ মহাকল্যাণ্যকা ৬৫৫	567	•••	***		- 1	गेतः।	गिर्गार्थव	
বদাতারাদিচিকিৎসা ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত	550	***	•••	চৈত্ৰসম্বত্ৰ	983	•••	•••	াদা ত্য য়াদিল ক ণম্
মহাপেশাচিকং মৃত্য ৬৫৬ কোন্তবাদিমদ-চিকিৎসা ৬৫৪ কলন্তিকাজ্যচূৰ্য ৬৫৪ থলাজ্যে মোদকঃ ৬৫৫ মহাপেশাচিকং মৃত্য ৬৫৪ প্ৰায়ত্ত্ব ৬৫৪ প্ৰায়ত্ত্ব ৬৫৪ প্ৰায়ত্ব্ব ৬৫৪ অপাস্থাবিধি: ৬৬৯৯৮৭ বিক্রিকাল্য ৬৫৫	550	•••	***		MAS		•••	শ্বাভারাদিচিকিৎসা
কোদ্রবাদিমদ-চিকিৎসা কলত্রিকাস্তচ্গ্ এলান্তো মোদক: ত ৩৫৪ ত ত ত ৩৫৪ ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত ত	900	***	•••				•••	पष्टोज नवगर्
কল্ডিকাজ্যচূৰ্ণ্ ৬৫ঃ এলাজ্যে মোদক: ৬৫ঃ নহাকল্যাণ্ডা ৬৫ঃ আপাজ্যার-রোগাধিকার: ।	400	•••	•••				•••	কাদ্ৰবাদিমদ-চিকিৎসা
এলাছো মোদক:	١٩٠	55	•••	পणाभवाविधिः		•••		লিকিব স্থাচুণ্
মহাকল্যাণ্বটা ::: ৩৫৫ অপস্মার-রোগাধিকারঃ।						***	•••	গুলান্ত্রো মোদক:
Madature was	- 11	3: 1	াগাধিকা	অপস্থার-রে		•••	···	হকিল্যাণকটা
Trobust C.		·				• • •	***	ৰেনিবান্তাং স্বতম
	9.	***	•••	व्यापात्रामानाम्	•66	•••		रकाळारेळलम

বিষয়াঃ।			পত্ৰাস্থ	ः। विषयाः।			
কল্যাণচূৰ্বম্	•••	•••		13340-1			পত্ৰাঙ্কা:
त्रमात्रनरेखत्रवः	•••	•••		মাৰাদি তৈলম	***	•••	t bo
স্ভজন্ম প্রয়োগঃ	•••	***		অন্দিত্ত সম্প্রান্তিগ	ৰ্ব্যক্ষণম		the state
ইন্দ্ৰহ্মবটা	٠	•••		আনত-চিকিৎসা	•••	***	
বাতকুলাস্তক:	•••	•••		१७ रुप्रश्च मनिमानमञ्	প্ৰ :•••	•••	6 F1
ভূতভৈরব:	•••	•••	_	৭০ ইনুগ্ৰহক্ত চিকিৎসা		•	6 7
বঙ্গপঞ্চগব্যং মুত্তম্	•••	•••	_	৭৩ মন্তান্তস্তম্ভ নিদানপুৰ		•••	940
বৃহৎ পঞ্চাব্যং মৃত্যু	•••	•••	<u>.</u>	Stantagerer C.C.	11-14-14	•••	446
মহাচৈতসং মৃত্যু		***	<u> </u>	(B) AZ YOU WAR ALEA	***	•••	400
কুমাণ্ডয়ত ম্	•••	***	৬৭	Essetman Colon	***	•••	446
রা ন্ধীয় ত্য	•••	•••	99	A STATE OF THE STA	***	•••	***
পলক্ষান্ত্যং তৈলম্	•••	•••	9 9	3-66	•••	***	9×6
পথ্যাপথ্যবিধিঃ	***	•••	99	£	•••	***	946
				শিরাগ্রহস্ত চিকিৎসা	•••	•••	974
				गृद्धमौलक्रगम्	•••	***	bere
বাতব্য	। शुशिव	ারঃ		গুঙ্গী চিকিৎসা	•••	***	474
21 2				বিশ্বচালকণ্ম্	•••	•••	৬৮৬
বাতবাংখিনিদানম্	•••	***	69 0	অববাছকলক্ষণ্ম	***	***	**
বাতব্যাধি লক্ষণ ম্	•••	***	৬ ૧ ৬	তয়োশ্চিকৎসা	•••	•••	446
বা ত্রাধি-। চাকৎসা	•••	•••	৬৭৬		***	•••	944
কোষ্ঠাদিগতবাতলক্ষণমূ	•••			(TID WAND GG	•••	•••	चपए
কোটাদিগতবাভচিকিৎসা	•••	•••	৬৭ ৭	Signal Structure	1	***	455
ধাতুগতবাতানাং লক্ষণমূ	•••	•••	৬৭৭		•••	***	440
ধাতুগভবাভানাং চিকিৎসা		•••	496	তয়েশ্চি কিৎসা	***	•••	400
শিরাগতবাতল ক ণ্ম্		•••	*12	কলায়থঞ্জস্ত লক্ষণমূ	***		בשט
শিরাগতবাতচিকিৎসা	•••	•••	৬৭৯	কলায়খঞ্জন্ত চিকিৎসা	***	***	
মায়ুসন্ধিগতবাতলকণ্ ম	•••	•••	৬৭৯	বাতকণ্টকলকণ্ম	•••	***	***
মায়ুসন্ধিগতবাতচিকিৎসা		•••	690	বাতক-টকচিকিৎসা	•••	•••	649
ংতুবিশেষেণ বাতব্যাধিৰিং	000	•••	493		•••	•••	440
उदार हिकि रमा		••• .	693	পানদাহলকণম্	•••	***	440
মাকেপকস্ত সামাক্ত লভ্ ণম্	•••	***	6F.	পাদদাহচিকিৎসা	•••	144	000
মপ্তস্ত্ৰক লক ণ্ম		•••	৬৮.	পাদহধলকণ্ম		•••	90,
শতন্ত্ৰকটিকিৎসা	•••	•••	46.	পাদহৰ্চিকিৎসা	•••	•••	646
গেত্রকাচাকৎস। রিচাদিনস্তম	•••	•••	66.		• • •	•••	569
	•••	***	667	মুকমিন্মিনগদগদানাং লক্ষ	াম্	•••	63.
পিতানকলকণ্য্	•••	•••	967	তেৰাং চিকিৎসা	•••	•••	es.
গ পতানকলকণ্য্	•••	***	662	ত্ণীপ্ৰতিত্ণীলকণ্	***		- 11
ম্লান্টিকিৎসা	•••	***	957	ত্নীপ্ৰতিত্নীচিকিৎসা	•••	•••	*».
ন্তরারামবাহ্যারাময়োল কিণ	7	•••	647	আশ্বানপ্রত্যাশ্বানলকণ্		•••	
য়াশ্চিকিৎসা	•••	•••			•••	•••	43.
क् रश्लक ्य	•••	•••	946	তরোশ্চিকিৎসা	***	•••	43.
ন্ধা চিকিৎসা ।	•••	•••	tro 1	ৰাক্সৰট্ৰুলেপ:	•••	***	***
ापिकायः	•••	•••		ষ্ট্রীলাপ্রতান্তীলয়োল কণম	***	•	11
কোদি তৈলম্ -	••	•••		व्यान्तिकश्मा इंद्रान्तिकश्मा	- * *	***	692

)Io/•

विषद्भाः ।		97	বাকা:।	বিষয়া:।			পত্রাঙ্কাঃ
ন্তিবাতত লকণম্	•••	•••	697	মহানারায়ণতৈল ম্	•••	• • • •	9.01
ত্তিবাতন্ত চিকিৎসা	•••	•••	697	সিদ্ধাৰ্থকতৈলম্	• • •	•••	9+0
ৰৌবেপথুলকণ ম্	•••	•••	८६७	হিমসাগরতৈলয	•••	•••	9 • 1
হরোল্চিকিৎসা	•••	•••	७৯२	বায়ৃ চ্ছায়াহু রে <u>ক্র</u> তৈলম্	•••	•••	9-4
ত্রকশুলক্ত লক্ষণম্	•••	•••	હજર	বৃহচ্ছতপুসাদিতৈলম	***	•••	9+
ত্রকশূলন্ত চিকিৎসা	•••	•••	७৯૨	বলাতৈল্	•••	٠,٠	9 - 1
গতব্যাধীনাং কুচ্ছসাধ্যভাগি	7	•••	4 સર	পুশ্বাজপ্রসারণীতৈলম্	•••	•••	9.0
প্রকৃতবাতলক্ষণমূ	•••	•••	৬৯২	ত্রিশতী প্রসারণীতেল ম্	•••	•••	9.5
বাতব্যাধেঃ সাধারণচিকিৎসা		•••	660	সপ্তশতিকপ্রসারণীতৈ ল ম্	•••	•••	9+1
ব্লুরাস্থাদিপাচনম	•••	•••	৬৯৩	একাদশশতিকমহাপ্রসারণীর	চলম্	•••	9.3
মাৰবলাদিপাচন ম্	• • •	•••	७ ८७	অষ্ট্রাদশশতিক প্রসারণীতৈলম		•••	93.
भौ खंगरऋ जः	• • •	•••	৬৯৩	মহারাজপ্রসারণীতৈলম	•••	***	95
ষড়্ধরণো যোগঃ	•••	•••	\$28	বুজপ্রসারণাতৈলম	•••	••	45
বল্লান পিণ্ড:	•••		৬৯৪	মহাকুকুটমাংস-তৈলম্	•••		924
ত্রোদশাকগুগ খেলুঃ	•••	•••	8 6 6	नक्वरेडवर्	•••		9 . 4
व्यापनाम स्मृत्युः भवा प्तिस्थम् <mark>स्वन</mark> ुः		•••	3 a e	মাষতৈল্য			914
শ্বসাদভ শ্ভপু- চতুর্থোরসঃ		•••	246	সঞ্জম ্ধতৈলম্		•••	9 2
চতুমুখো গণঃ টিস্তামণিচতুমুখঃ	•••	•••	৬৯৬	বুংঝাষতৈলম্	•••	•••	92
বিভাগনাম্পুন, বাভগজাকুণঃ		•••	ยลย ยลย	মহামাষতৈলয	***		921
বাত্যজঃকুশঃ বুহ্বাত্যজাকুশঃ	•••	***	95e	নিরামিবমহামাষতৈলম্		•••	936
মুখ্য তিগজাকুশ: মহাবাতগজাকুশ:	•••	•••	929	-			
নহাথতগলাৰুনঃ নদ্মীবিলাসো রসঃ	***		৬৯৭	মহাপ্রসন্ধিতিলং লক্ষাবিলা		•••	950
যোগেলারসঃ	•••	•••	964	শ্রীগোপাল ৈ তনম্	•••	***	9:1
অনিলারিরস:	•••	•••	964	মাষবলাদিতৈলম্	•••	• •••	95
রসরাজরসঃ		•••	466	বাভরাজতৈলম্	• • •	•••	45
চিন্তামণিরসঃ	•••	***	યહ્ન હ	অখগক; তৈলণ্	•••	* * *	931
বৃহদাত্চিস্তাম্পি:	•••	•••	460	মূলকা প্ত হৈলম	•••	•••	۱۲۶
শীতারিরসঃ	•••	•••	466	রুদোনাজ্য হৈলম	•••	•	421
শীতবাতভা সক্ষণমূ	***	***	446	সৈশ্ববাস্থাতেলম্	***	••4	9.21
তালকেশরো রসঃ	***			মজ্জমেহ:	4 17 4	•••	951
	•••	•••	460	চতুঃশ্ৰেহঃ	***	•	93
তানভৈরবী (স্চীবাতে)	• • •	•••	444	অখগৰাস্তঃ মৃত্যু	•••	•••	42
আনন্দভৈরবঃ (বাতলেমণি)	•••	<i>ن</i> ة فة ولا	দশমূলান্তং মৃত্য্	• • •	•••	923
বাতারিরসঃ	•••	***	6€ €	সারশ্বতং মৃত্যু	•••		45
গৰ্জ্জব্যকথনমূ			•	ৰকুলাভাং যুত্ৰ	***	• • •	93.
-		***	7	ছাগলান্তঃ যুত্য	•••	***	9 र
বাতহরতৈল'নাং বিশেষমূচ্ছ	াবি'ধঃ	***	9	বুগ্ছাগলান্তং মুঙ্গ্	***	•••	92
স্ম বিষ্টেত লম্	•••	•••	9	পথ্যাপথ্যবিধিঃ	•••	•••	922192
বিষ্ণুতৈলম্	•••		9				
বৃহিষ্কৃতৈলম্		.	9-5	া বাত র ক্ত	ধিকা	রঃ ৷	
मात्रायग्रेकलम्	•••	•••					ι
•	•••	•••	9-3	বাতরজনিদানম্	•••	•••	93
মধ্যমনারায়ণতৈল ম্	•••	•••	9.0	বাতরক্ত-চিকিৎদা	• • •		9 2 8

১1৩/0

বিষয়া:।		9	ত্রাহ্বা:।	বিষয়া:।		1	শবাহা:।
অমৃতাদিঃ	•••	•••	929	গুঞ্জাভদো রস:	•••	•••	90
বাসাদিঃ	•••	•••	9 🎙 9	অষ্টকট্ব-তৈলম্	•••	•••	98
নবকাৰ্ষিক:	•••	•••	939	कुष्ठाचाः टेडलम्	•••	•••	98
পটোলাদি:	•••	•••	929	महारमक्कवाष्ट्रः टिलम	•••	•••	98
নিস্ব াদিচূৰ্ণম্	•••	•••	929	পणाभणाविधिः	•••	•••	98-198
্ৰফলাগুগ ্গুলু:	•••	•••	924				·
অমৃতাভগ্ওলু;	•••	•••	956	কাগে বা	তাধিক	izro i	
কৈশোরগুগ গুলুঃ	•••	•••	455	વાનવા	01144	1299 1	
রসাত্র গুণ গুলুঃ	•••	•••	922	man and from the same			_
পুনৰ্বাপ্তগ্ৰন্থ	•••	•••	900	আমবাতনিদানম্	***	•••	98
যোগদারামূত:	•••	•••	90.	আমবাত-চিকিৎসা	•••	•••	98
অমৃতভন্নাওকাবলেহ:	•••	•••	900	শহরম্বেদ:	•••	•••	98
বাতরক্তাস্তকো রসঃ	•••	•••	405	রসোনাদিকষায়:	•••	•••	98
थष्ट्रापि लोश्य्	•••	•••	932	রাস্থাপঞ্জন	•••	• • •	98
নাঙ্গলাগ্যং লোহ্য	•••	***	407	রাসাসপ্তক্ষ	•••	***	78 78
তালভশ্ম	•••	•••	१७२	রাসাদশমূলকম্	•••		98
মহাতালেশরো রদঃ	•••	•••	१७२	মহারাস্নালিপাচন্	•••	•••	98
বিশেষরো রসঃ	•••	•••	१७२	শতপুষ্পান্তঃ চুৰ্ম্	•••	•••	18
দাদশায়স:	••	•••	900	হিন্দু ভিং চুর্ন	•••		98
গুড়্চা মৃত্য	•••	••	900	অলমুৰাতাং চুৰ্ম্	•••	•••	98
শ ভাবরীম্বভষ্	•••	••	920	বৈশানর-চূর্ণ্	•••	***	98
অন্তাভাঃ ঘৃত্য	•••	•••	933	পথ্যান্তঃ চুর্ম্	•••	•••	98
গুড় ্ চাট ঃ লম্	•••	•••	908	পুনৰ্বাদি চুৰ্ম্	•••	•••	98
মধামগুড়,চাটেএলম	•••	•••	908	আভাজ্যপূৰ্ণশ্	***	•••	98
বৃহৎ গুড়ু চাতেলম্	•••	•••	908	অজমোদাদিবটক:	•••	•••	98
মহারাজগুড়,চাটে গুলা			908	যেগেরাজগুগ গুলু:	•••	• • •	98
প্রতিম্	•••	•••	106	রুংদ্ বোগরাজ গুগ গুলু:	***	•••	98
মহাক্সপ্রতৈলম্	•••	•••	9.56	শিবাত্তগ্তলুঃ	•••		98
বিষ্তি-পুক-তৈল্ম্	•••	•••	100	সিংহনাদগুগ গুলু:	•••	• • • •	98
মহাপিত-তৈলম্	•••	•••	906	वृश्द निःहनाम छण् छन्:		***	
দশপাকবলাতৈলম	•••	•••	900	বাতারিগুগ গুলু:	•••	•••	18
শারিবাস্ত্রটেতনম্	•••	•••	100	রসোনপিত্তঃ	•••	•••	
শতাহ্বাদি তৈলম	***	• • •	101	মহারসোনপিত্তঃ	•••	•••	98
পথ্যাপথ্যবিধিঃ	:	•••	909	আমবাতগজাসংহো মোদ	5:	•••	
יאור (רבוי ורבוי	:	•••	704	আমবাতারিবটিকা (দ্বিবি	ed)		10
	_			আমবাতেখনো রদঃ	7()	***	76
উরুস্ত	ন্তাধিকা	রঃ।		বাতগজে <u>ল</u> সিংহঃ	•••	•••	44
·				্বতিগলে <u>লা</u> শংখ্য ত্রিফলাদিলৌহম্	•••	•••	96
উক্লপ্ত ভিনিদানমূ	•••	•••	906	वृद्धमात्राष्ट्रः लोहम	***	•••	10
উক্তন্তভ-চিকিৎসা	••	•••	904	বিড়ঙ্গাদিরসলোহ্য	•••	•••	76
ভন্নাতকাদি:	•••	•••	902	পঞ্চাননরসলোহ্য	***	***	96
शिश्रवाणिः	•••		902	গুলীয়তম্	***		96

বিষয়াঃ।			পতাকাঃ।	বিষয়া:।			পত্ৰাঙ্কা:
শৃঙ্গবেরাস্তাং শ্বতম্	•••	•••	160	কোলাদি-মঞুরম্	•••	***	94
কাঞ্জিকষ্টপলম্বত স্	•••	•••	983	গুড়মভূর ম্	•••	•••	96
প্রসারণীতৈল ম্	•••	•••	960	ক্ষীরমপূর্য	•••	•••	94
দ্বিপঞ্মূলান্তাং তৈলম্	•••	•••	960	মভূরবটিকা	•••	•••	16
বৃহৎ সৈদ্ধবাস্তাং তৈলম্	•••	•••	900	তারামভূরগুড়:	•••	•••	94
ৰতীয়-দৈৰবাদ্য তৈলম্	•••	•••	908	শতাবরীমভূরম্	•••	•••	74
বি জয়ভৈ রণতৈলং মহাবিজয়া	ভরবতৈলঞ্চ	•••	9 € 8	বৃহচ্ছতাবরীমভূরম্ (বিবিধ	¥)		9.6
প্রসারণীসন্ধানম্	•••	•••	916	চড়ু:সমম্ভূরম্			14
পথ্যাপথাবিধিঃ	•••	•••	966	त्रम भ् त्रम्	•••	•••	
শৃঙ্গরোগা	ধিকার:	ŀ			•••	•••	94
5,1041.11	111100	•		লোহায়ত্য	* * *	•••	91
<u>পূ</u> শনিদানম্	***	•••	466	ত্রিকলা-লোহম্	•••	•••	94
_			988	সপ্তামৃত-লোহম্	•••	***	94
শূল-চিাকৎসা	•••	•••	989	ধাত্ৰী-লোহম্-(দিবিধম্)	•••	•••	99
ব িজ্ঞাপুললকণ মূ	•••	•••	7 C T	খণ্ডামলকী	•••	•••	م و
বাতজশূল-চিকিৎসা	•••	•••	966	নারিকেলখণ্ড:	•••	•••	٩٠
মৃত্তিকাব্দে:			146	বৃহন্নারিকেলখণ্ড:	•••	***	90
পি ভশূ ললকণ্	•••	•••	965	নারিকেলামৃত্ মৃ	•••	•••	9 9
পিত্তজ্গুল-চিকিৎসা		•••	900	হরীতকীখণ্ড:	•••	***	99
। শুপ্ত শূললকণ্ম্ কফ জশূল লকণ্ম্	•••	400	903	পূগৰভঃ (দ্বিবিধঃ)	•••	•••	99
				नया मिर्विश्	•••	•••	9
কফজশূল-চিকিৎসা	•••	•••	ঀ৬৽	শুলসংহারকং চুর্ণম্	•••	•••	99
আমজশুললকণ্ম্	•••	•••	46.	<u> তি</u> ফলালোহ্য	***		
আমজশূল-চিকিৎসা	•••	•••	990	শর্করালোহম্		•••	• •
চ তু ঃসমচূৰ্ণম্	***	•••	960	देवयानवरमोहभू	***	• • • •	99
चन्द्रज्ञम् ववक्रगभ्	• • •	••	46.	८ ज्ञानस्कारम्		•••	. 94
বাতপিত্তজশুলচিকিৎসা	•••	•••	442	, ,	•••	••	99
পিত্তশ্লেষজশূল-চিকিৎসা	•••	•••	967	শ্লরাজনৌহৃষ্	•••	,	4.
বাতপ্লেমজশূল-চিকিৎসা	•••	•••	443	শূলগজকেশরী	•••	•••	9 9
ত্রিদোষজ-শূললক্ষণম্	•••		965	শূলবক্সিণী বটা	•••	•••	9 9
•		•••		শূলান্তকো রসঃ	•••	•••	9.9
ত্রিদোষজশুলচিকিৎসা	•••	•••	442	ত্রিপুরভৈরব:		`	99
পরিণামশূল-লক্ষণম্	•••	•••	347	শুলহরণযোগঃ	•••		
পরিণামশূল-চিকিৎসা	•••	• • •	৭৬২	,		•••	11
শস্কাদিগুড়িকা	•••	•••	962	শ্রীবিষ্ঠাধরাত্র ম্	***	•••	11
নারিকেলকার:	•••	•••	969	বৃহিদ্যাধরাত্রম্	•••	•••	11
এর ওস গুক শ্	•••	•••	960	গুড়পিললীমুভ্ৰ			
অনুদ্রবৃত্ত-লক্ষণম্	• • •	•••	948	1		•••	99
অয়দ্রবশূল-1চকিৎসা	•	•••	958	পিমলীয়তম্	***	•••	11
শ্বরসগুড়িকা	•••		944	पाधिकर युञ्ज्	•••	***	11
লৌংগুড়িকা	•••			বীজপ্রান্তঃ স্বত্য	***	•••	11
मामूजाकः हुर्वम्		•••	966	मृनशरकतः-रेडनम्			
	•••	•••	946		•	•••	99
বিড়ঙ্গাদি-যোদক:	•••		100	পশ্যাপশ্যবিধি:	•••		73

ンルノ・

উদাবর্ত্ত	ানাহাহি	কারঃ	1	বিষয়†:।			পত্ৰাস্থা
বিষয়াঃ।			, পত্রাস্কা:।	গুৰুকালানলো রুস:	•••	• • •	्राव्याका
উদাব র্জনিদান মূ				ৰুংদ্ গুলাকালানলো রস	•••	•••	,
•	•••	•••	992	শহাগুলাকালানলে রস:	•••	•••	9
উদাবর্ত্ত-চিকিৎসা	•••	•••	992	গুলাপদি,লো রদ:	•••	•••	9
সম্পোজা তভোদাবৰ্ত্তস্ত হ	কণ্ম		95.	নাগেশরে রসঃ	•••	•••	4
সজোজা তন্তোদাবর্জ নি			•	বিদ্যাধরো রসঃ	• • •	***	9;
ফলব্ৰি:	21 7 7 11		96•	শিখিবাড়বো রসঃ	•••	•••	98
অানাহলকণ্ম	•••	•••	950 953	প্রাণবল্লভো রস:	•••	•••	93
আনাহ-চিকিৎসা		•••	703	রদায়ন'মৃত-লৌহম	•••	•••	9 %
		•••	942	ক্রাষণাদায় তম্	•••	•••	9 %
ণিকটকাজা বস্তিঃ	•••		962	ন্ত্ৰাক পায়তম্	•••		٩٨
নারা6চূর্ণ	•••		969	পঞ্পলয়ত্ম্	• • •	•••	۹۶
ख ड़ । हेक भ्	•••	•••	945	ধাত্ৰীষট্পলকং মুত্ৰ	•••		92
বৈষ্ঠাৰ খবটা	•••	• • •	462	ভাগীৰট্পলকং মৃত্যু	•••	•••	٩P
নার্যুগর্সঃ	• • •		903	ক্ষীরষ্ট্পলকং গুত্ত্	***	•••	92
বৃহদিচ্ছাভেদী রসঃ	•••	•••	460	डल ठकर युड्य	***	•••	43
৺কমূল¦তা ং হতুম	• • •	•••	৭৮৩	हर्य। छः युट्य	•••	•••	13
স্থিরাদ্যং স্বৃত্তম্	•••	•••	950	রসেশান্তাং ঘৃত্র	•••	***	92
পশাপশাবিধিঃ	•••	•••	900,463	<u>কারমাণান্তং</u> যুত্থ	•••	•••	9 8
4. ————————————————————————————————————			•	বুশ্চীরাভারিষ্ঠ:	•••	•••	٩a
গুলারো	গাাধকা	43 		পথ্যাপথা,বিধি:	•••	•••	921
গুলা-নিদ'ন্	•••		পদ ন্ত	EZZIO	+6	7 ~ .	
গুনা-চিকিৎসঃ			91-8	হুদোগ	गावकाः	18 1	
বা ১জ ওঞালক শুম্	•••		950	ক্ষোগনিদানম্	***		4 ~ P
বাতজ গুৱা- চিকিংদা	•••	• • •	91-5	বা ৩জসন্তে গলকণম্	• • •	•••	9 % %
୳ଊ୕ୠୠ୷ ୴୳୳		•••	969	বা ভজজ্ঞাগ-চিকিৎস			•
পত্তজ গুন্ম-চিক্তিংস				•		•••	۾ ۾ ۽
ফেজঙ ন্মলক্ষণ মূ	•••	•••	959	^{भिक्र} नामि र् र्वम्	•••	***	466
ক্ ষত্ত গুলা-চিকিৎসা	•••	***	900	পিতজহাদোগলকণ্য	• • •	***	p
	•••	•••	966	পিত্তজন্দ্রোগ-চিকিৎস	•••	•••	b • •
প্জপ্তমালকণ্ম্ *	•••	***	966				
ক্তিৰ গুল্ম-চিকিৎসা	•••	•••	948	কফজহন্দোগলকণ ম্	•••	•••	>••
ক্ত গুলালকণ্ম্	•••	•••	92.	কফজহন্দোগ-চিকিৎদা	•	• • •	b
ক্ত গুন্ম-চিকিৎদা	•••	•••	930	ত্রিবৃতাদিচূর্ণশ্	•••	***	b.2
क्रांपि हुर्गम् (विविधम्)	•••	•••	246	र्देन्द्रना कि हुर्नम्		••	F . 3
गिष हुर्वम्	•••	•••		ত্রিদোবজক্রিমিজহুডোগলকণ	¥	• • •	b.)
वकाणि ह्र्वम्	•••	•••	935		•		
ারাট্টকম্	•••	•••	183	ত্রিদোষজহুদ্রোগ-চিকিৎ	সা	• • •	4.2
ছক্ষার:	•••	•••	982	ক্রিমি জক্তরো গ-চিকিৎসা	•••	•••	b.5
ষ্ট্রীহরীতকী	***	•••		উরো <u>গ</u> হ্নিদান শ্	•••	• • •	b. 5
াছায়নগুড়িক <u>া</u>	•••	•••	955	উরোগ্রহ-চিকিৎসা			Cori
क्पननत्रमः	•••	•••	390		•••	•••	P. 0.0
অবজ্রিন্ট বটিকা	•••	***	920	হুদ্রোগদাধারণচিকিৎদা		***	b.0

विषम् ।		90	1=1=1	<u>,</u> মূত্ৰাঘাত	ধিকারঃ	1	
চকুভাদিচূৰ্ণ ম্	•••	•••	b.6	বিষয়া:।		প	ত্ৰাক া :।
সে'য়ন্ম	•••	•••	٠.٠٥	মূত্রাঘাতনিদানম্	•••	•••	P > 8
নাগাৰ্জ্ক নাজ্য	•••	• • •	٠٠٥	মুত্রাখাত-চিকিৎসা			७ ७७
কলাণফুন্দরো রস:	•••	•••	y • 3	_	•••	•••	P20
চিক্তামণিরসঃ	•••	•••	p • 8	চিত্ৰকাষ্ট্যসূত্ৰ	•••	•••	P.7P
বিশেশররসঃ	•••	•••	r•8	ধান্তগোক্রক: ঘৃত্য	•••	•••	#2p
হাদয়াৰ্থবরস:	•••	•••	▶• 8	ভদ্রাবহং ঘুত্রম্	•••	•••	
পঞ্চাননরসঃ	•••	•••	∀•8	বিদারীয়ত্তম্	•••	•••	P79 P7P
প্রভাকরবটি	•••	•••	V · 8	भिला खिना पिटेटनम्	•••	•••	-
শঙ্করবটী	•••	***	₽•€	উশীরাভাং তৈলম্	***	• • •	V)3
অৰ্জুনমূত্ৰ	•••	•••	b • €	পথ্যাপথ্যবিধিঃ		***	\$ 9.
বলাভাং শুত্ৰু	•••	•••	∀•€	অশ্যরীরে	াগাধিক	ারঃ।	
বল্লভকং যুত্ন্	•••	***	F • 6		•••		∀ ₹•
बत्रः द्वेछिः चुठम्	***	• • • •	b.4	व्यश्रीनिमानम्	•••	••.	
পার্থান্তারিষ্টঃ	•••	•••	b.0	অশ্মরী চিকিৎসা		•••	४२১
পশ্যাপশ্যবিধিঃ	***	***	F . 4	% श्रीमिकाथः	•••	• • •	٣٤:
10110				উষকাদিগণঃ	•••	***	F 2 :
				वक्रगामिकवात्रः	•••	•••	४ २३
মানক	চ্ছাধিক	বিঃ।		वृश्क्वक्रगामिः	•••	•••	F 2 :
20.4	31114	1 40 1		এলাদিঃ	•••	•••	४ ३३
C-1			۶.۹	পাৰাণভেদাত্যং চূৰ্ণং যুতং	p		₩ 24
মৃত্রকু দ্রুছ নিদানম্	•••	•••		কাতীফলাম্বর্গ:	? · · ·	***	₽ २ ١
মূত্রকৃদ্ধ-চিকিৎসা	•••	• • •	404	তিলাদিকারযোগ:	•••	•••	F 24
অমৃতাদি:	•••	•••	b. 9	পাষাণবজ্ঞোরসঃ •	•••	• • • •	b÷4
পুন্নবাজো মিশ্রকঃ	•••	•••	b.9	পা্যাণভিন্ন:	•••		४ ३,
পঞ্তৃণমূলম্			bob	তিবিক্রমো রসঃ	•••	•••	ا جا
শতাবয়াদিঃ	•••		bob	পাৰাণাত্তং যুত্ৰ		•••	৮২
হরীতক্যাদিঃ	•••	•••	b • b	কুশান্তং যুত্ৰ	***	• • •	be
ধাত্যাদিঃ	•••	•••	۲۰۵	বন্ধণাত্তং মৃত্য	•••	•••	⊌ ₹
ৰুহ্মাত্ৰ্যাদিঃ	•••	***	b 7•	বঙ্গণ-মুত্স		•••	⊌ર
चनरह्यापि-व्यानः	•••	•••	h7.	কুলখান্তযুত্ৰ	•••	• • •	৮২
বৃহৎ গোকুরাভ্যলেহঃ	•••	***	F33		***	•••	۲۹
मृताकृष्ट हतः	•••	•••	۲۵۵		!	•••	b٩
मृत्वकृष्क्क्षं स्टब्स् त्रमः	•••	•••	F22.28				be
মূত্রকৃদ্ধ ভিন্ন সংগ্র	•••	444	F28	A CAN LANDERS AND A CANADA	•••		
ক্রিকেতাখো রস:	•••	•••	۶۲۹		াগা ধিক	ারঃ।	
ভারকেশ্বর:		***	F25		41.411.4		•
তারকেবর: বরুণান্ত: ক্রোহ্যু	•••	•••	F75		•••	144	F 3
	•••	•••			***	•••	۲۹
শতাবরীয়তং ক্ষীরঞ্	•••	***	P.74			•••	` ৮২১
হুকুমারকুমারকত্বতম্	•••	•••	F24	10 ((0.1)		•••	
ত্ৰিকটকান্তঃ যুত্ৰ্	•••	•••	> 24	and the state of the state	সো •••	***	V :
नवानियाविधः	***	***	P30 P3	পিন্তৰ প্ৰমেহচিকিৎসা		•••	0

विवद्याः ।			পত্ৰাস্কা:।	विषद्याः ।			পত্ৰাহ্বা:।
ঘল্ডমেহ চিকিৎসা		•	res	মেহমূলারবটিকা	***	•••	F87
ত্রিদোবজমেহ চিকিৎসা	•••	•••	دفء	কামধেত্ব রসঃ	***	•••	485
এলাদিচুৰ্য	•••		FOR	निलाक्षापि वर्ण	***	***	F84
কৰ্কটাৰীজাদিচূৰ্ণশ্	•••	•••	F05	क्लना कि हुर्नम्	***	***	F85
श्राधा मिहर्गम्	•••	•••	৮৩২	माक्किमि हुर्गम्	***	•••	485
কুশাবলেহ:	•••	•••	৮৩৩	প্রমেহ্মিহিরতৈলম্	•••	•••	F85
শিলাকতুপ্ররোগ:	•••	•••	F9 3	ত্ৰিকটকান্ত মৃতং তৈলং ব	ম কঞ্চ	•••	V80
नावमात्रामित्वरः	•••	•••	४७७	দাড়িমান্তঃ মৃত্যু	***	***	F80
গোকুরাদি.গুটা	•••	•••	৮৩৩	বৃহদ্ দাড়িমান্তং মৃতম্	•••	•••	F88
চন্দ্রপ্রভা শুটা	,	•••	P-98	মহাদাড়িমান্তং মৃত্যু	***	***	A88
মেহান্তকো রসঃ		•••	F08	ধাৰম্ভরং ৷ গৃত্তম্	•••	•••	F88
মেহকুলান্তকো রসঃ	•••	•••	₩ 08	শাসনীয়ত্ত্	j	•••	786
পঞ্চাননো রসঃ	•••	•••	⊬ ≎8	(मनमार्काछात्रिष्ठेः	***	***	₽8€
বুহৎ সোমনাধরসঃ	• • •	•••	roe	व्यम्भागतः	•••	•••	F 8 &
মেহকুজরকেশরী রসঃ	•••	•••	Vsa	লোপ্রাসবঃ	•••	***	₽84
(याशीयद्भा ब्रमः	• • • •		> 34	পথ্যাপথ ৰিধি:	•••	***	► 9 ७ ► 8 9
मर्क्शवरती तमः	• •		७ ७०				
বৃহৎ কামচূড়ামণী বসঃ	***	•••	৮৩৬	সোমরো	গাধিক	বরঃ।	
স্থৰ্ক শ		•••	100				
বঙ্গেশ্বঃ	•••	•••	404	সোমরোগনিদানম্	***	***	-8-
মহাবক্ষেশ্বরসঃ		•••	b 36	সোমরোগ চিকিৎদা	• • •	•••	68p
বৃহ্ ষক্ষে শ্বরসঃ	•••		৮৩৭				
वृह्द्यस्य यतः (मङ्ग्रह्मतः)	•••	•••	P09	ত্রিফলাদি-যোগঃ		***	A19
বঞ্চাষ্টকম্	***	,	809	তারকেখরো রসঃ (বিবিধঃ)	***	F19
5 स्क्का		•••	b09	তালকেখনো রসঃ	***	***	A89
চলক\স্থিরসঃ	•••	***	يون ا	গগৰাদি লোহম্	•••	•••	P83
বসস্তকুত্বমাকরো রস:		•••	५० ५	হেমনাধরম:	***	***	P. 8 30
প্রমেংসেতু:			60×	সোমনাশরসঃ	***	•••	re.
হরিশঙ্করো রসঃ			४७ ४	সোমেশরো গ্রসঃ	***	***	
বৃহদ্ধরিশক্ষরো রসঃ '	•••	•••	Pob	বসস্তকুম্মাকরো রস:	***	***	be•
আনন্দভৈরবো হস:		•••	৮৩১	नन्या वीष्ट्रव्	***	***	A6.2
	•••	•••		বৃহত্বাত্রীম্বতম্	***	***	A62
वश्क्रमानिनीयम्बः	•••	***	P.09	কদল্যাদি যুত্ৰ	***	•••	P67
মেঘনাদো রসঃ	***	•••	609	श्याशिधा विधिः	•••	***	467
মেহবক্ত:	•••	•••	¥8•				
মেহকেশরী	***	***	¥8•	প্রমেহপি	़का । ध	কার:	1
विष्कामि लोहः	***	•••	+8 •	প্ৰমেহপিড়কালকণ্			h- 2 2
শুক্ৰমাতৃকা বটী	•••	•••	¥8.		***	***	465
বেদ্বিস্থা বটা			F87	প্রমেহপিড়কাচিকিৎস	1	•••	465
	•••	•••		পিড়কা এলগঃ	•••		١٤٥
ইন্স ৰটা	{	•••	P87	পাঠাত্তং চূৰ্বৰ্	•••	•••	res
চন্দ্ৰপ্ৰভা বটিকা	•••	90	P83	गात्रिवापि ब्लोह्य			res

>4º	

বিষরা:।			পঞ্জাহ্বা:।	বিষয়া:।			পত্রাঙ্গা
মকরধ্বজরসঃ	•••	***	res	শোপোদরারিলৌহম্	•••	•••	v
বৃহচ্ছাামায়ত্ৰ		•••	দৰ ত	পিপ্লল্যান্ত: লৌহম্		• • •	ь
সারিবান্তাসকঃ		•••	1 19	উদরারিরসঃ	***	•••	٠
গৰ্যাপৰ্যবিক্তি	• • •	***	V18	এটবজনাথাদেশবটিকা	•••		b
				ভেদিনী ৰটা	•••	• • •	ь
মেদোরে	ব্যা ধিন	1 02/2		অভয়া বটা	•••	•••	۲
6464163	ררווויו	1 061		চুলিকা বটা	•••	***	ь
মেদোরোগমিদানম্		•••	766	বিন্দৃত্বতম্	•••	***	۲
•				মহাবিন্ <u>ণু</u> ত্য	•••	***	٠
মেদোরোগ-চিকিৎসা	• • •	•••	ree	চিত্ৰকত্বতম্	•••	•••	•
বিড়ঙ্গাম্ভচুৰ্ণ্	•••	•••	₽€\$	নারাচয়ত্য	•••		٧
ব্যোষাপ্তশক্ত প্রয়োগ:	•••	***	F 69	বৃহন্নারাচঘৃত্য	•••	•••	•
অমৃতাদি-গুগ গুলু:	***	•••	be 9	নাগরাদি তৈলং ঘৃতক			ъ
নবক গুগ্ গুলু:		• • •	req	রুদোন-তৈলম্	•••	***	•
বিড়কান্তঃ লোহম্	***	•••	かっか	পথ্যাপথ্যবিধিঃ	•••	•••	٠
লৌহরসায়নম	****	•••	v e br				
ত্ৰণাত্যং লৌংম্	•••	***	₩ u ∪	•			
বড়বাগ্নিলোহম্	•••	•••	₽ € %	প্লাহ্যকু টে	र्गगांध	•†রঃ।	
বড়বাগ্নি-রসঃ	•••	•••	be a	-			
ত্রিফল:ছ্যং তৈলম্	•••	***	P69	প্লীহ্যকুত্বদৰ-নিদানস্	• • •		Þ
মহাসুগৰিটেতলম্	•••		P42	প্লীহযক্বচ্চিকিৎসা	•••	•••	b 4
কাৰ্শ্য-নিদানম্	***	•••	৮৬•				-
কাৰ্শ্য-চিকিৎসা	•••	•••	৮৬•	অর্কলবণম্	•••	•••	ь
অখ গ ৰা তৈলম্	•••	***	৮ ৬ ০	মাণকাদি-গুড়িকা	•••	(, · · · ·	ь
অমৃতাৰ্ব:	•••	***	৮৬৽	বৃহন্মাণকা দিশুড়িকা	•••	***	٠
পশাপথ্যবিধি:	***	***	40.1407	অভয়ালবণম্		•••	٠
				গুড়পিপ্লনী	ţ	***	٠
উদররো	গাধিব	ারঃ।		বৃহদ্ওড়পিশনী	***	***	ь
				छड़ जानि हुन्य	•••	•••	b
উদর্নিদ†ন্	•••	***	P#3	রোহীতক; স্তচ্র্ণম্	***	***	ь
উদর-চিকিৎনা	•••	•••	₽.90	পিশ্লবীবৰ্দ্ধমানানি	💊	***	ь
			>68	গ্রীহাস্তকো রস:	•••	***	ь
কুষ্ঠাদিচ্ৰ্য্	•••	***		मौद्यार्था तमः		***	b
সামূদ্রাত্যং চূর্বম্ পুনর্বাদিকাপঃ	••	•••	৮৬৪ ৮৬৬	লীহণাৰ্দ্ধলো রসঃ	***	***	Þ
गुनग्याभकायः मानम्बद्धः		***		भीशांतित्रमः (चितिधः)	•••	***	b
নাবায়ণ-চূর্ণম	•••		৮৬৭	বাহ্কিভূষণো রসঃ	•••	•••	ь
শ্রারণ-তুশ্শ পটোলাক্তং চুর্ণম	***	• • •	দভ্য দভ্য	মহামৃত্যুঞ্জন্ম-লৌহঃ	•••	•••	ь
বৈলোকান্তদরো রস::		•••	দ ভ দ	লৌহমৃত্যুঞ্জয়ো রস:		•••	ь
ইচ্ছাভেদা রস: (ভিবিধঃ	-	•••	שני ט טפיט	লোকনাথো রসঃ (ছিবিধঃ	:) •••	1**	•
कत्नामतात्रित्रमः	,	•••	ەرەن ھوئ	ৰুহলোকনাথো রস:	•••	•••	Ĺ
জলোদরারিয়সঃ (মতাস্থা	3)	***		তামেশ্ববটা	•••		, , ,
নারাচ্যসঃ	* ,		P#3	চিত্ৰকাদিলোহ:	•••	***	ь
वह्निवमः	•••	•••	⊳ ⊌ ≥	শর্কেশ্বর-লোহশ	•••	•••	a ,

বিষয়া:।		প :	01 41:	বিষয়াঃ।			वांकाः ।
বিজ্ঞাধরো রসঃ	•••	•••	445	स्वर्फनान्त्रः लोश्य	•••	•••	٢٣٩
রসরাজ:	•••	•••	PP0	ণোথারি:	•••	•••	429
রোহীতক-লৌহম্	•••	•••	440	ত্রিনেত্রাখ্যো রস:	•••	•••	644
যকুদরি-লোহম্	•••	•••	bb 0	শোপকালানলো রস:	•••	•••	494
যক্ৎশ্লীহারি-লৌহম্	•••	•••	644	শোপাকুশো	•••	•••	Vay
যক্ৎশীহোদরহরলোহম্	•••	•••	440	পঞ্চিত্রসঃ	•••	• • •	494
বজ্রন্থার্থ	•••	•••	PP8	ক্ষেত্রপালরসঃ	•••	•••	424
মহাদ্রাবকঃ	•••	•••	PP8	হুগ্ননটা (দ্বিবিধা)	• • •	•••	444
মহাজাবকরসঃ	•••	•••	৮৮৫	কল্পভাৰটা (গ্ৰহণীযুক্ত	गर्भ)	•••	644
শर्जावकः	•••	•••	b b•	रेवज्ञनाथवणी (मधिवणी)	•••	•••	F>>
মহাশঙ্খ্যাবক:	•••	•••	৮৮৬	<u> </u>	• • •	•••	499
শব্দ বকো রস:	•••	•••	6.64	कौत्रवर्धे।	**1	***	489
চিত্ৰকপি গ লীয়ত্	•••	•••	444	তক্রমভূরম্ (পাঞুশেংখে)	•••	•••	»·•
পিশ্ললীয় তম্	•••	•••	৮ ৮٩	স্থানিধিঃ পুনর্বাপ্ত॰ গুডুম্ (াশ্ববিধা	· · ·	•••	à
চিত্ৰকত্বতম্	•••	••	664	ু পুনন্ব:জু॰ গুডুন্ (ন্থ:ব্ৰু অভ্নপুনন্বাহুত্ম	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	•••	۶۰۶
বোহীতকগৃত্য	•••	•••	***	্ৰন্ধ কুলবাৰ হ'ব প্ৰকৃত্যান্ত্যং যু•ম্		•••	۷۰۶
মহারোহী ৩ক য়ু ৩ম্	•••	•••	b b b	क्षक करना अर घुन्य क्षेत्री ग्रह्म	***	-	a•>
রোহীতকারিটঃ	•••	•••	666	•	***	•••	
প ण्या तिषिः	•••	•••	17 1 7 17	খলপরঘৃত্ য্	•••	•••	9.0
a shhatma	h-146			চিএকাক্তং ঘূত্য	***	•••	9•2
শোথরোগাধিকারঃ।				মাণকগৃত্য	•••	•••	۶۰۶
				ॶकम्ल¦ छ- टिब्सम् दुब्ब्ब्कम्ला छ -टिब्सम्	•••	•••	<pre></pre>
শোপনিদান্য	•••	•••	644	সমূদ্রশোষণতৈলম্	***	•••	3.5
শোথ-চিকিৎসা		•••	P> 0	(भाषभाषि _द क्ष-रेडलम्	***	•••	3.0
পথ্যাদিকাশঃ	•••	•••	५७२	পুৰ্নবাদিতৈলম্	•••	•••	2.0
সিংহাক্তাদিঃ	***	•••	७७७	-			
भूननवाष्ट्रककाषः '	***	•••	F30	শৈলেয় স্থাতৈলম্	•••	•••	e•4
প্নৰ্বাদি চুৰ্য	•••	***	644	গভীরান্সরিষ্ট:	***	•••	2.0
শোখারি চুর্ণম্	•••	•••	428	পুনর্বান্তারিষ্টঃ	•••	•••	8 • 8
শোপোদরে পুননবালিগুগ	छन्:	•••	864	ত্রিকলান্তারিষ্টঃ	•••	•••	8 • 6
পুনৰ্বাদি-লেহঃ		•••	752	পথ্যাপথ্যবিধি:	***	•••	>∙€
শেগারিমভূরম্	***	•••	p>8	36-34	A16-X1	7. 1	
অগ্নিস্থমভূরম্	•••	•••	₽ ≱8	রুদ্ধিরো	ग।।५क	No	
রসাজমভূরৰ্	•••	•••	Pse	CC			
কংসহরীতকী (দশমূল হ	নীতকী)	•••	rac	বৃদ্ধিরোগ-নিদানম্	•••	***	3.4
কারগুড়িকা	•••	•••	444	বৃদ্ধিরোগ-চিকিৎসা	•••	•••	∂∘6
ক্র্যুৰণাপ্তলোহ্যু	•••		F 36	उ ध्निमानम्			۵۰۵
	•		F20				
জিকট ুাদি লৌংম্	•••	***		ত্রপ্প-চিকিৎসা	***	***	» ?•
শোৰভন্মকৌহম্	•••	•••	674	বিশাদিচ্ৰশ্	•••	•••	*7•
কটুৰাপ্তলোহম্			P84	ভক্তোভরীয়ণ্			

340/o

বিষয়া: ৷		9	াত্ৰাহ্বা:।	विषयाः।		4	পত্ৰাহ্বাঃ।
ম ৰ্ব্যমামূতান্ত্ৰম্	•••	•••	>>>	শ্লীপদরে	াগাধিব	চারঃ।	
বৃদ্ধিবাধিকা বটিকা	•••	•••	922				
ণশিশেষররকঃ	•••	•••	977	द्योभन-निमानम्	•••	•••	>56
रो ठा ^{र्} त्रः	•••	•••	577	শ্লীপদ চিকিৎসা		• • •	৯ २२
महा ७ छ:	•••	•••	\$ 6	भूख ्त्रामित्नभः	•••	•••	264
ণতপুষ্পাপ্ত ন্		•••	516	সিছাৰ্থাদিলেপ:	•••	•••	» \$4
ত্রিবৃতাদি স্বত ম্	•••	•••	>> >	মদনাদিলেপঃ	•••	•••	25€
বৃহন্দপ্ত সূত্ৰ	•••	•••	254	ज्ञीभनातिः	•••	•••	>> 2 8
গন্ধৰ্বহন্ত-হৈত্সম্	•••	***	۵۲۵	কণাদিচুৰ্ণ্	•••	•••	25%
বৃহৎ দৈদ্ বাস্তাং তৈলম্	•••	***	કે ર લ	বৃদ্ধ দারকচূর্ণ শ্	•••	***	≥ ₹ 8
বৃহগ্মন্দার তৈলম্	•••	•••	०८५	পিঞ্চলাতাং চূৰ্ণ্	***	***	≥ ₹:
পথ্যাপ গংবিধিঃ	•••	• *	364,664	কৃষ্ণান্তো মোদক:	•••	• • •	2 5 5
				নিতা ানল রসঃ	•••	• • •	> 20
-lal as \	+	ù-+70		নীপদাজকেশরী	••		» २ (
গলগণ্ডাদি	(याशा।	वकायः		সৌরেশ্বরম্বত্তম্	•••	•••	≥ ₹ (
গলগণ্ড-লক্ষণম			826	বি ড়ঙ্গ দিতৈলম্	• • • •	***	» ? ¢
				পথ্যাপথ্যবিধিঃ	•••	•••	» ₹ ⁴
গ লগ গু-চিকিৎসা	•	• • •	878				
ुची टेडनभ्	•••	•••	254	বিদ্রধি-রোগাধিকারঃ।			
অমৃতান্তাং তৈলম্	•••	•••	a;6	C - C - C - L			
গ্ৰুমালা-লক্ষণম্	•••	***	274	বিজ্ঞধি-নিদানম্	•••	••	» ₹°
গণ্ডমালা-চিকিৎসা			અટલ	বিজ্ৰধি-চিকিৎদা	• •	•••	254
	•••			क्ष्क्रनीरवांगः	•••	***	> ₹
কাঞ্চনারগুগ গুলু:	•••	•••	>>+	বৰুণাদিত্বতম্	•••		≈ + 1
<u>ब्रूब</u> ्मतीरेञ्जम्		***	97.P	পথ্যাপথ্যবিধিঃ	•	***	259120
শাৰোটক-তৈলম্	•••	***	9 29		_		
সিন্দুরাদিতৈলম্	•••	•••	974	ৰণশে	থাধিক	ার: .	
বিশ্ব্যাদিতৈলম্	•••	•••	₽29				
নিশু জী-তৈলম্	•••	***	279	ব্ৰণশোধ-নিদানম্	•••	•••	2 2
অপচী-সক্ষণম্	•••	***	274	ব্রণশোথ-চিকিৎসা	• • •	•••	ನ೨•
অপচী-চিকিৎসা	• • •	•••	२ ०१	শস্ত্রনিক্ষেপাপবাদঃ	•••	•	೬
গুঞ্জাত্যং তৈলৰ	•••	***	*75	ভেদনম্	•••	•••	৯ও
इन्मना फिरेडनभ	***	•••	#7p	िनाष्ट्रेकः	•••	•••	200
ব্যোষাদিতৈলম্	•••	•••	274	ত্রিকলাগুগ ্গুলু:	***	•••	৯৩৫
अ श्विक णम्	***	•••	974	সপ্তাক্তগ তেলঃ	•••	• • •	ನಿತಿ
গ্রন্থি-চিকিৎসা	•••		466	প্ৰপৌগুৱীকান্তঃ মুত্ৰ্	•••	***	৯৩
•				তি ক্তান্তান্ত ম্	***	• • •	06
व्यर्क्त् प्रतक्ष्मभ्य	•••	•••	979	করঞ্জাপ্তায়ত্র	•••	•••	৩৫
অৰ্ন্ব্যুদচকিৎসা	•••	•••	ace.	দুৰ্বান্তঃ তৈলং যুঙঞ	•••	•••	৯৩
গন্ধা দিলেপঃ	•••		3 2•	জাত্যান্তঃ যুতঃ তৈলঞ	•••	•••	99
নু্ছাদিনেক:	•••	•••	25.	গৌরাস্তঃ যুতং তৈলঞ্চ	***	•••	ని కే
রৌজরসঃ	•••	•••	263	বৃহজ্জাতীকান্তাং তৈলম্		•••	>6
পৰ্যাপ থাবিধিঃ	•••		262	বিপরীতমল-তৈলম	•••	***	್ಷಕಾಲ

She

			40	1.			
বিষয়াঃ।		9	ত্ৰাকা:।	वस्त्राः।		— প্ৰ	विकाः ।
ব্রণরাক্ষ্স-তৈলম্	•••		209	খদিরাদিকাশ:	•••	***	a ¢•
বৃহ দ্ রণরাক্ষস-তৈলম্	•••	•••	209	নবকাবিকো গুগ্গুলুঃ	•••	•••	24.
श्याश्याविषिः श्याश्याविषिः	•••	•••	406160E	সপ্তবিংশতিকো গুগ্,গুলু:	•••	•••	at.
				বিড়কারিষ্টশ্	•••	•••	20.
সভোত্রণ	।।বকার	• 1		ত্রণগন্ধাস্কুশো রস:	•••	•••	967
সত্যোত্রণনিদানম্	•••	•••	ત ુર	চিত্ৰবিভাণ্ডকো রসঃ	•••	•••	267
সত্যো ব্ৰণ-চিকিৎসা	•••	•••	८ ०६	ভগন্দরহরো রস:	•••	•••	» ¢ >
অগ্নিদগ্ধত্রণ-চিকিৎসা	•••	•••	तe द	তা্ত্র প্রয়োগ:	•••	•••	≥ € ₹
পাটলী-তৈলম্	•••	•••	>8∙	বিধ্যন্দনং তৈলম্	•••	•••	> € 5
জীরকন্বতম্	•••	•••	8.6	প্ৰাপ্ৰাবিধিঃ	•••	•••	> €
মঞ্জিষ্ঠান্তং শ্বতম্	•••		*8°	উপদংশ	াধিক †ব	[<u>0</u>]	
পথ্যাপথ্যবিধিঃ	•••	•••	> b•		., , , , , ,		
	·+	,		উপদংশ-নিদানম্	***	•••	a ¢ :
अमा	ধকারঃ	1		উপদংশ-চিকিৎসা	•••	•••	200
ভগ্নিদানম্		•••	262	গেপ:	•••	***	200
ভগ্ন-চিকিৎসা	•••	•••	487	ধুপঃ	•••	***	36
লাকাগুগ খুলু:	•••	•••	285	বরাদিশুগ্গুলু:	***	• • •	36
আভাগুগুলু:	•••	•••	285	রদগুগ ভেল্:	•••	***	26
গৰুতৈলমূ	•••		280	ভৈরবরসঃ	•••	•••	a ¢
পথ্যাপথ্যবিধিঃ	• • •	***	88 ajo 8 a	ধ্মঃ	***	•••	3 €
	+6	70 1		রদশেপর:	•••	•••	>6
নাড়ীব্ৰণ	।।वकाः	16 1		ভূনিয়াভাং যুত্ৰ	***	•••	20
নাড়ীব্ৰণ-নিদানম্	•••	•••	886	করঞ্জাং যুত্র	***	•••	94
লাড়ীব্ৰণ-চিকিৎসা		• • •	298	শ্ৰভ:তা রুত্য	••	***	àŧ
গুগ গুৰাদিলেপঃ	•••	***	386	গোজা তৈ লম্	•••	***	26
গুণবতী বৰ্ত্তিঃ	•••	•••	886	কোশাতকা-তৈলম্	•••	•••	
সপ্তাস্তগ গুলু:	•••	•••	284	অ:গারধুমাক্ত-তৈলম্	•••	***	24
খ্যামা-মৃত্যু	***	•••	₩8€	ঞ্বাতাং তৈলম্	•••	•••	24
ৰৰ্জিকান্তঃ তৈলম্	•••	•••	>84	লিঙ্গালকণ্	***		26:
হিংপ্রান্তং তৈলম্	•••	•••	>86	লিকাশ শিচকিৎসা	•••	**2	36
কুম্ভীকান্তঃ তৈলস্	•••	***	286	পথ্যাপথাবিধিঃ	•••	•••	24
ভলাতকান্তঃ তৈলম্	•••	***	>89	শূকদো	ষাণিক	রিঃ।	
নিও তী-তৈলম্	•••	•••	289	मुकरकाव-निकानम्	•••	•••	20
হংসপাদী-তৈপৰ্	•••	•••	>81	मुक्रास्थिनिक्र			26
সৈৰবান্তং তৈলম্	•••	•••	281	मास्त्रीटनम्	***	•••	24
নরাস্থিতৈলম্	•••	•••	284	দাৰ্থতেশ্ প্ৰাপ্থাবিধিঃ	8.1	•••	>4
পণ্যাপণ্য বিধিঃ	•••	•••	>87				
- ভগন্দর	বাধিকা	রঃ।		क्षेरत	াগাাধক	न्यः ।	
७ शम्पद्रनिष नम्	•••	•••	386	कृष्ठेनियानम्	•••	•••	24
ভগব্দর-চিকিৎসা			984	কুণ্ঠ-চিকিৎসা	•••	•••	200

বিষয়া:।		2	ত্রাকা:।	বিষয়াঃ।			পত্ৰাঙ্কা:
ট ন্মন্ত- তৈলম্	•••	•••	৯৬৯	দূৰ্কান্ত-তৈলম্	•••	•••	200
मक्षिकां पिः	•••	•••	21.	অৰ্কতৈলম্	•••	•••	200
অমৃতাদি:	•••	•••	24.	অৰ্কমনঃশিলা-তৈলম্	•••	•••	अ च्छ
পঞ্কৰায়:	•••	•••	290	গঙীরিক:স্তঃ তৈলম্	***	•••	৯৮৫
পঞ্চিৰ্যু (ভিবিধন্)	•••	•••	242	খেতকরবীরাস্ত্যং হৈত্রু	•••	•••	201
অমৃতাগুগ ্ওলু:	•••	•••	245	কৃষ্ণসূপ-ৈত্ত্তম্	•••	•••	સ ન લ
একবিংশতিকো গুগ্গুলুঃ			≥ 9₹	কুঠরাক্স-ভেলম্	•••	•••	च द
পঞ্চিক্তযুতগুণ ভেলু:		•••	290	কুষ্ঠকালানল-ভেলম্	•••	•••	ನರ 1
অমৃতভলাতকম্	•••	•••	*40	বিষতৈলম্	•••	•••	26
মহাভলাতকগুড়:	•••		896	দোমরাজী তৈলন্	•••	•••	200
অমৃতাকুর-লৌহম্		•••	۵۹۵	বৃহৎ সোমরাজী-বৈংলম	•••	• • •	0 d is
তালকেশ্বর: (ছিবিধ:)			و و دره و د	মরিচাপ্ত-তৈলম্	•••	•••	ನಿ ৮
	•••	•••	296	বুহনারিচ:প্র-ভেলম্	•••	• • •	200
মহাতালকেশর:	•••		296	বাসাক্ষ-তৈলম্	•••	•••	n jo
মহাতালেখরো রসঃ	•••	***	344	কলপ্সার-ভৈলম্		•••	22.
ব্ৰহ্মবৃদ্ধ	•••			পূথ্যাসার-ভেলম্	•••	•••	à.
চন্দ্রাননো রস:	•••	•••	399	ষড় বিন্দু-তৈলম	•••		عاة
উদয়ভাগ্ধর:	•••	•••	299	কচছ _{ৰ্} রাক্স-তেলম্	•••	•••	• 5
রসমাণিক্যম্	•••	•••	;; q q	থারথধাতাং তেলম্	••	•••	اعارة
মাণিক্যো রসঃ	•••	•••	200	বিএপঞানন-তৈলন্	••	•••	احاده
পারিভদ্রস:	•••	***	246	খাদরা রষ্ট্রঃ			ילים
কুঠারিরস:	***	•••	***	બચા:બચાર્તિ(ધ:	•••	•••	יט נון פו פונו
কুষ্ঠনাশনো রসঃ	•••	•••	N 95			•	
গলৎকুষ্ঠারিরস:	•••		ñ.4 n	শীতপিভোগ	ৰ্দকোঠা	ধ কার	: 1
কুষ্ঠকালানলো রসঃ বিত্তহরো লেপঃ	•••	***	۵4 م ۵4 م	t			
াৰএহরো লেশঃ কুষ্ঠবিত্ৰনাশনো লেপঃ	•••	***	" r s 6 P s	শাভপিত্তোদৰ্শকোঠ নিদান		•	* *
কুছাৰজনাশনো লোক ৰেতারিঃ	•••	•••	a, a a, e, a	শাতপিত্তো শংকে 12-1	14241	•••	€ 6.4
তি ক্তক শ্বতম্	•••	•••	abo	শ্ৰপ্ৰতলক্ষণম্	***	***	9 %
তিক্তৰট্পলকং মৃত্যু	•••	•••	a च द	রসাদিগুটা	***	•••	44
পঞ্চিক্তম্বতম্		***	94.	হরিদ্রাথও:	•••	•	22
স্থাতজ্জকং যুত্য		•••		বৃহদ্ হরিক্রাগতঃ	***	•••	ă ii
महाथितिकर युख्य	•••	•••	%+>	আর্ডকগণ্ড:	•••	***	a &
সোমরাজীয়ত্য্	•••		\$ tr \$	শ্লেমপি ভাত্তকো রদ:	•••	•••	22
ভূণক-তৈলম্	***	•••	947	বারেখরো রসঃ	•••	•••	2.6
মহাতৃণক-তৈলম্	•••		34:	পণ্যাপথাবিধি:	•••	•••	166
वक्क-टिड्नम्	•••	•••	» b 3	তা য় পিং	ভাধিকা	3 0 1	
করবীরাস্ত-তৈলম্		•••	246		011441	No	
সিন্দুরাজ্ঞ-তৈলন্	•••	•••	इन्ह	অমপিত-নিদানম্	•••	•••	>>
মহাসিন্দুরাভা-তৈলন্	•••	•••	246	অমপিত্ত-চিকিৎদা	•••	•••	3 4 6
छाञ्च रेडनम्	***	•••	940	मनाजः	•••	•••	66
আদিভাপাক-তৈলম্	•••	•••	200	বাসাদিশুগ গুলু:			ach:

২/৽

				-			
বৈষয়াঃ।		•	শত্রাকাঃ।	বিষয়াঃ			পত্ৰাঙ্কাঃ
কফপিত্ত-চিকিৎসা		•••	פיגה	मनाका लगः	***	•••	2 • 2
পঞ্নিম্ব দি-চুর্ণ্	•••	•••	e 66	নবক্ষায় গ্ৰগ্ গুলু:	•••	•••	3.2
दृहरभल: फि-हूर्नभ्	•••	•••	464	অমৃতাদিঃ	•••	•••	> > >
অবিপ্তিকরং চুর্ণ্	•••		266	কালাগ্রিক্রছো রসঃ	•••	***	202
ମ ମ୍ପର୍ଶ ଅଷ୍ଟ	•••	•••	4 هـ ه	ব্যাতাং মুত্য	•••	•••	> > >
वृह९ शिक्षतीथछः			* 66	করঞ্জ-তৈলম্	•••	•••	7.7
ભગીગહ:	***	•••	208	পথ্যাপথ্যবিধিঃ	•••	•••	7 • 7
গও কুখা ওকে হৈবলেছ:	•••	***	~~b	जिरु खड	টাধিকা	30 1	
অভয়াপ্তবলেধঃ	•••	•••	intr	। १५८ वन	INII441	No 1	
সোভাগ্য গুঠা-মোদক:			٠.٠٠	বিকোটনিদান্ন্	***	•••	3.5
শ্যুপিডাপ্তক-মে'দকঃ		•••	みなけ	বিস্ফোট-চিকিৎসা	•••		>•>>
সিতাম গু রণ	.,	•••	200	চতুঃসমষ্		•••	3.3
<u>তিফলামভুরম্</u>		•••	ลคล	ব্ৰণারি-গুগ গুলু:	•••	• • •	2+2
অমুণিভান্তকো রসঃ	•••	•••	6,50	পঞ্ভিক্তক-যুত্তম্	•••		2 • 2
সর্কতোভদ্র-লোহ্য		• , .		মহাপথক-যুত্ৰ		•••	2 . 3
পানীয়ভক্তবটা	,.			পথ্যাপথাবিধি:		• • •	2 = 2
প'নায়ভক্তবটিকা			2000				
পলা শুধাৰতা শুডিকা		•••	. • • >	মসূরিক	ণধিকার	: 1	
কুধাৰতা গুড়িকা			1 = 0 2	মস্বিক:নিদানম			> > >
শল গুদি:			. • • >	মস্রিকা-চিকিৎসা	•••	•••	
লৌং প্রান্ধ		***	3		•••	•••	>
মভুর ও দ্বাং		•••	. 1 . 4	নিম্বাদঃ	•••	***	2 • 21
পারদওকি:		• • • •		कांक्रनामिकां थः	••	•••	3.53
প্ৰাক শুদ্ধি		•••	. • • २	পটোলাদিঃ	••	• • •	3 • 5
বুহৎ-জুধাবতা বটিকা	• • •		: •• ₹	খদিরাষ্টকঃ	•••	•••	:• :
পঞ্চাননগুড়িকা '	•••	,,	: • • •	উষণাদিচ্ৰ্প্	••	•••	>• <:
ভাশবামৃতাভ্রম্		***	> • 8	সর্বতোভদ্রস:	***	•••	3053
भौना विनामः		***	> • • 8	তুল ভো রস	•••	•••) • २ ;
জীরকান্তং যুত্ম্	•••		> • • 8	ইন্দুকলাবটিকা		•••	3.65
পটোলগুঠী মুত্য	***	•••	> • • 8	এলাভারিষ্টঃ			3.44
পিপ্লান্তম্	•••		2008	শীতলাচি কিং শা শীতলান্তোত্ত্বমূ	***	•••	2054
দ্রাক্ষাত্য-মৃত্যু	•••	•••	> • 8	শাতলাণ্ডোত্রশ্ পঞ্চাপথাবিধিঃ	•••	•••	3046
শতাবগায়তথ্		•••	>••4	रान्)।रान्)।प।प-			3-40
নারায়ণ গৃত্ ম্	•••	•••	; ¢	SE INTAL	গাধিকা	3° 1	
জীবি ৰ তৈলম্	•••		> • • €	त्र व्यवस	1111111		
পথ্যাপণ্য[ব্ধিঃ	•••	٠ ١	612	অঙ্গলিকা	•••	•••	> = 20
	_			यव श्रव)	•••	•••	>०२०
্ব বিস্পা	[বসর্পাধিকারঃ।				•••	•••	> > > <
- বিসূপ-নিদানম্	•••		2006	অন্তালজী বিবৃতা	•••	•••	ः ०२०
	•••		_	रेख़ िकां	•••	•••	3.56
বিদৰ্গ্ধ-চিকিৎসা	•••	•••	2004	4011AII			

विषयाः।		প :	। शक्त	विषयाः ।		9	াত্ৰাকা:।
গৰ্দ্ধভিকা	•••	•••	>> २७	ৰতুমণি:	•••	•••	>.09
ब नगर्पड:	•••	•••	>- 20	मोदकम् .	***	•••	>-09
ইবিবেলিকা	•••	•••	> २७	তিলকালক:	•••	•••	3.09
গৰ্মালা	•••	•••	2.50	স্তাড্ছ ম্	•••	•••	3.09
গৰ্মালা	•••	•••	३०२७	वारका नीमिका ह	•••	•••	:.01
অনুশরী	•••	•••	>०२७	ৰিহরিদ্রাপ্তং তৈলম্	•••	•••	دەد:
কক্ষা	•••	***	>-२७	कनक रेजनम्	•••	•••	3.03
পাৰাণগৰ্মত:	•••	•••	5• २ •	মঞ্চিষ্ঠান্তঃ তৈলম্	•••		2002
ৰচ্ছ পিকা		•••	3.29	বলকুকুমাতাং হৈলম্	•••	•••	3.00
বন্মীক:	***	•••	১•২৭	কুকুমান্তঃ তৈলম্ (দিবিধ	꿕)	• • •	5.0518.
প্ৰসিকা	•••	•••	>•२9	বৰ্ণকথ্তম্	•••	•••	· 8 •
অগ্নিরোহিণী	•••	•	১•২৭	পরিবর্ত্তিকা	•••	•••	2.8.
চিয়াং কুনথঞ্চ	•••	•••	>•₹	অবপাটিকা	• • •	•••	2.82
বিবাহিকা	•••	•••	26	নিক্তমগ্ৰহণঃ	•••	•••	2 • 8 2
नक्त्रार्क् पः	•••	***	3•₹₩	স্মিক্স গুদ:	•••	•••	2.82
शाममात्री	•••	•••	2.59	অহিপুতনম্	•••	•••	\$ o 8 2
উপোদিকাকারতৈলয	•••	•••	2.59	পটোলাভাং যুত্য্	•••	• • • •	\$ 8 6 4
কদর্ম	•••	•••	2.49	বুবণকচ্ছু:	•••	•••	>-82
ज्यानकः	•••	•••	>-0-	खनजरमः	•••	•••	\$•8 2
रे ज ण् श न	•••	•••	3.00	চাঙ্গেরীযুত্য্	•••	•••	> 80
লুহাতাং তৈলৰ	•••	•••	2.02	মূৰিকান্তঃ তৈলম্			: 80
আদিভাপাক ঋড়ু চীতৈলম্	***	•••	۷۰۵۶	শুকরদংট্রক:		• • •	১•৪৩
ৰষ্টিদকান্তঃ তৈলম্	***	•••	2002	অমৃতাকুরবটা	`	•••	1.88
महाज्ञाताब-रेजनम्	•••	•••	2.02	চন্দ্রভারস:	•••	•••	>-88
माङ्गकम् साङ्गकम्	•••	•••	7.05	मश्रव्यमाषिटेजम्	•••	•••	> 88
विक् नान्त्रः टिलम्	•••		7.05	কুকু মাদিতৈলম্	•••		>-88
िक्रकेटिनम्	***	•••	•	সহাচরয়ুত্য্	•••	***	>•8€
ভঞ্জাতৈলম্	•••	***)•७२ ১•७२	কারযুত্য	•••	***	3.86
বরভূকরাজতৈন্		***	2000	ৰন্তে কতিচিৎ কুম্ৰবিকা	র': ১	•••	7 - 8 6
প্রপোশুরীকান্তং তৈলম্	•••	•••	2.00	শহ্যামুত্রচিকিংসা	•••	•••) • 8 %
শালভ্যান্তঃ ভৈলম্	•••	•••	2.00	লোমশাতনবিধিঃ	***	•••	2080
ज्ञाना का कार्य ज्ञान		•••		কারতৈলম্ '	•••	•••	3.84
विहित्रज्ञाञ्चः देवनम्	•••	•••	3.00	পথ্যাপথ্যবিধি:	***	•••	3.89
গ্ৰিতম্	***	•••) • 08	য়খার	াগাধিকা	3 9 1	
কেশরপ্রক:			7.08		141144	40	
চন্দৰাক্তং তৈলম	***	•••		ওঠগতমুধরোগ-নিদানম্	•••	•••	>-89
मह नीमरेजनम	•••	•••	7.08	ওঠবোগাণাং চিকি	ংসা	• •	> 8 8
ভূলরালয়তম্	•••	•••	7-05	দত্তবেষ্টপ্তরোগনিদানমূ	••• •••	***	7 · B3
হুৰানগিড়কা		•••	>.00	দস্তবেষ্টগতরোগ-চি	কৎসা	•••	>• 6•
পুৰাৰা শঙ্কা শল্পিৰীক উকঃ	***	•••	3.00	বিদার্থাদি তৈলম্	***	•••	>-64
112414.049	***	•••	>-44	দন্তরোগাশনি-চূর্ণম্	•••	•••	•>•¢

বিষয়াঃ।			পত্ৰাস্বা:।	विवद्राः ।		9	
			1-11-1	विवन्नाः ।			ত্ৰাঙ্কাঃ।
দশনসংক্ষারচূর্ণম্	•••	•••	2.68	ৰজিকাতঃ তৈলন্	•••	•••	5098
ভিহ্নাগতমুখরোগ-নিদানম্	•••	•••	2.48	म नमृतीरेङलम्	•••	•••	>•٩२
জিহ্বারোগ চিকিৎসা	•••	•••	> • @@	विवरेडनम् (विविधम्)	***	•••	५०१२
তালুগতয়োগ-মিলামশ্	•••	•••	>• ee	লন্তনান্তঃ তৈলম্	•••	•••	>•9२
তালুরোগ-চিকিৎসা	•••	•••	>060	জন্বাদ্যং তৈলম	•••	•••	2.45
কণ্ঠগতরোগ-নিদানম্	•••	•••	:- 68	শসূকভৈলম্	•••	•••	3.90
কণ্ঠবোগ-চিকিৎসা	•••		>065	নিশাতৈলম্	***	***	3.90
কালকচূৰ্ণ্	• • •	•••		কুষ্ঠান্তঃ তৈলৰ	•••	•••	3.90
পীতকচূৰ্ণশ		•••	>.6.	मार्क्सामिटे ञ्जम्	***	•••	>-90
ক্ষারগুড়িকা			5.6.	পৰ্যাপৰ্যবিষিঃ	•••	••	2.90
যবকারাদিগুটা	•••		>-%-		N+60-21	t-20 1	
সপ্তচ্ছদাদি:	•••	•••	>-@>	নাসারো	गावक	182	
श र्हानामिः	•••	•••	2002	minutenici mari			2.98
সহকার ভড়িকা	•••	•••	3.45	নাসারোগ-লক্ষণম্	•••	•••	-
স্কুণ্দির⊲টিকা	•••	•••	>•७२	নাগারোগ-চিকিৎসা	•••	•••	> 96
বৃহৎ খদিরবটিকা	•••		:•७२	ব্যোষাভাং চুৰ্ণ্	•••	•••	: 9 %
মুখরোগহরী বট।	•••	•••	১০৬৩	শিগ্ৰ,তৈলম্	•••	•••	3 • 9 %
রসেন্দ্রবর্টা	•••	•••	2.00	বাাদ্রীতৈলম্	•••	•••	2096
সহকারবটা	•••	•••	> • ७७	পাঠাদিতৈলম্	***	***	2.98
চতুমু থোরসঃ	•••	•••	3.60	করবীরান্তাং তৈলম্ শিপরিতৈলম	•••	•••	2.98
পাৰ্বতীয়স:	•••	•••	3.08	চিত্রকতৈল শ	•••	***	2098
সপ্তামৃতরসঃ	•••	•••	7.098	হিন্দান্তং তৈলম্	•••	•••	2.98
1.015 0 No.10	· · ·	•••	3 • 48	চিত্ৰ ৰ হরীত্ৰী	•••		3.98
পথ্যাবটা	•••	•••	>-98	গথ্যাপ খ্যবিধি:	•••	,,,	2.5.
মহাসহাচর-তৈলম্	•••	•••	֥\$8	101101110			
4. MONAL 18 4 00015	***	•••	>•७४	নেত্ররোগ	गिविका	রঃ।	
লাক্ষান্তটেলম্	••	•••	>-90	0 1 40			
বৰুলান্তং তৈলম্	•••	•••	7.44	নেত্রগতরোগ-নিদানস্	***	***	>-4-6
জাত্যান্তঃ তৈলম্	•••	•••	2.00	নেত্রবোগ-চিকিৎসা	•••	•••	2.42
মালত্যা ত্ময়ত্য পথ্যাপথাবিধিঃ		000	3.00	অঞ্চৰবিধিঃ	***	•••	2.00
	<u></u>	•••	>-46194	মুক্তা দিমহাঞ্জনশ্	•••	•••	7.26
• কর্ণরোগা		6		বিশাঞ্চনম্	***	***	2-20
কৰ্ণস্ৰোভোগতরোগ-নিদানষ্	•••	•••	7.00	নয়নশো ণাঞ্জন ম্	•••	***	3.54
কৰ্ণবোগ-চিকিৎদা	••	•••	>•৬৭	বড়ক গুণ গুলু:	•••	•••	>•٣٩
ভৈরবো রসঃ	•••	•••	3.9.	বাসকাদিঃ	•••	•••	7.24
ইন্সৰটা	•••	•••	2-9-	ত্রণগুক্ররীবর্তি:	•••	•••	2.92
সান্ত্ৰিবাদিবটা	•••	•••	2.47	পুষ্পহরী বর্ত্তিঃ	•••	***	2.97
দীপিকাতৈলম্	•••	•••	2.42	দন্তবৰ্তি:	•••	•••	2.97
কা রতৈলম্	•••	•••	2.42	হুখাৰতী বৰ্ত্তিঃ	•••	•••	2.92
অপামশিকারতৈলম্	•••	•••	2.45	চন্দ্ৰোদয়া বৰ্তি:	***	•••	>•>5

विषग्नाः।		পত্ত	कि:।	বিষয়া:।		247	शकाः ।
व्हक्ताम्या वर्षिः	***	***	>-><	শিরঃশুলাদিবজ্ঞরসঃ	•••	•••	2228
রীত ক্যাদিবর্ভিঃ	•••	•••	: • 25	রসচন্দ্রিকা বটা	•••	•••	7770
কুমারিকা বর্ত্তিঃ	•••	•••	7.95	ठ लका खब्मः	•••	•••	: : : : 0
্টিপ্রদা বর্ত্তিঃ	•••	•••	7.95	মহালক্ষীবিলাস:	•••	•••	:::७
হন্দৰাম্মা বৰ্ত্তিঃ	•••	•••	:•>>	মষ্ট্রাক্তঃ মুত্র্	•••	•••	2::0
কাৰণাত্মা বৰ্ত্তিঃ	***	•••	5605	ময়ুর তাং যু হম্	•••	•••	7770
নয়নহথা বৰ্ত্তিঃ	•••	• • •	5.95	বৃহনায়্রং মৃত্যু	•••	***	7778
চলপ্ৰভা বৰ্ত্তিঃ	•••	•••	20%0	শতাহ্বাতাং তৈলম্	•••	•••	2228
পঞ্চশতিকা বৰ্ত্তিঃ	•••	•••	_•৯৩	জীবকাত্যং তৈলম্	•••	•••	7778
ব্যোষাভা বৰ্ত্তি:	•••	•••	೭೯೩೦	বৃহজ্জীবকান্তাং তৈলম্	•••	•••	7278
পি গল্যা ন্তা বৰ্ত্তিঃ	•••	•••	: 033	অপামাৰ্গতৈলম	***	• • •	1558
তারকান্তা বর্ত্তিঃ	***	•••	≥•a∘:	প্রপৌতরীকাল্যং তৈলম্	•••	•••	>>>0
কোকিলা বৰ্তিঃ	•••	• • •	> 50	ষড়্বিন্ট্তেলম্	•••	•••	.::0
সৌগতা ঞ্জ নম্	•••	***	2 - 2 4	গুঞ্গ তিৱন্	•••	***	
নাগাৰ্জুনাবাৰ্ড:	•••	•••	460.	দশমূলতেলম (ভিবেধন)	•••		: 4 2 &
কুঞ্জি: তৈলম্	•••	•••	260	স্থাদশ মূলতৈল্ম্	•••		
পটোলাভাং যুত্য্	•••	• • •	2000	মধ্যমদশমূলতৈলম্	••	••	.::•
শণকান্তং যুত্য্	•••	•••	2 € 50 3	বৃহদ্দশস্লতৈলম্ (ছিবিধ্যু)	• • •	-1-
ভূ স রাজ-তৈলম্		•••	4401	মহাদশমূলতেলম্	***	• • •	::::
গোময়তৈলম্		•••	>∘≥≥	ধুস্ত, রতৈলম্	***	•••	2224
অভিজিতং তৈলম্	• •	•••	660;	क्रकटेडलभ्	•••	• • •	-119
নৃপৰন্ধ ভৈলং স্বতঞ্চ	•••	•••	7099	মহাকনক হৈলম্	••• ,	•••	.::1
ত্রিফলাক্সং যুত্য্	•••	•••	2088	ক্ততেল্য •	•••	•••	.114
মহাতিকলাতা যুত্ৰ	•••	•••	6601	তপ্তরাজতৈলন্ (বিবিধন্)	***	••• 13	56.1518
दिक्लः शुरुग	•••	•••	->00	तृह९ किकिनीर उलम्	•••	• • •	2
<u> কিফলাম্বতম্</u>	***	***		কুমারীতৈলন	•••	***	220
ক্ষতন্ত্রহরো ওগ্রেলুঃ	•••	•••	7708	প भागभागिषिः	• •	***	
ন্য়না মৃত্ম্	•••	•••	::08				
সপ্তামৃত-লৌঽন্	••	•••	7708	অস্থ্যদর্	াগাধি	কার: ।	
নয়নচ শ্ৰলোহম্	•••	•••	"			1 (10)	
ৰেজাশনিরসঃ	***	•••	::•2	অস্থতদররে।গ-নিদানম		•••	159
পথ্যাপথ্যবিধি:	•••	•••	2.06 3	অস্থ্যন্তর্বাগ-।চ্কিৎ	ri e		5525
				मार्क्ता किंक थः		•••	224
শিরো রে	talfer:	क्तांत्रः ।		উৎপলাদিঃ	***	•••	226
ורונאונא	14114	4140 I		ठन्मना जिंहु र्वभ्	•••	•••	275
শিরোরোগনিদানমূ	•••		7708		***		224
িবরোরোগ-চিকৎস	1		22.P		•••	***	334
শিরোবস্থিঃ			11.00	1	,		224
শারিবাদিলেগঃ	•••		2.39		•••	•••	224
অৰ্থনাড়ীনাটকেৰ্য়ঃ	•••	•••	777	!	•••	•••	• 22

বিষয়াঃ।		প্র	वाकाः।	বিষয়াঃ।		9	তাকা:।
া ন্দ্রণালৌহম্	•••	•••	2254	ইন্দুশেধররস:	•••	•••	2288
প্রদরাস্তকর স ঃ	•••		2250	लतः किहुर्वम्	•••	•••	2288
ভ্রাং শুরুসঃ	•••	•••	११२७	গর্ভ6িস্তামণিরসঃ	•••	• • •	7788
দর্কাক্সক্ররঃ	•••	•••	2230	গর্ভবিলাসো রসঃ		•••	>>88
শিলাকতুবটিকা				গর্ভবিনোদরসঃ	•••	•••	7788
রত্বভা বটকা	•••	***	ऽऽ२७	গর্ভপীযুষবল্'রসঃ	• • •	•••	>>84
অশোকযুত্তম্	•••	•••	2259	গৰ্ভবিলাসতৈলম্	• • •	•••	2286
ভাগোৰাতাং যুত্ৰ	***	•••	>>२१	পথ্যাপথাবি(ধঃ	•••	•••	2286
সিত্তকলাণকং সূত্ৰ			3326	অষ্ট্রমন:সমারভ্য গর্ভিণ্যা ত	र १ थ। म्	•••	2284
বিশ্বলভং মৃত্যু	•••	•••	3326				
মুপগাল্পং স্থতম্	•••		3:26	সূতিকারে	াগাধিব	ারঃ।	
বুহচ্ছ তাবরীয়তম্		•••	: > २৮	۲, - ۱ اه.		,,,,,	
হ্যমারাদি-তৈল্য	•••	•••	2222	স্থতিকারোগনিদানম্	•••	•••	228
श्चिग्रक्र्यानि देख्यम्			۵٠.١	স্থাতকারোগ-চিকিৎস	1		>>8'
হিলাদি তৈলশ্	•••		: 2 < 9	वृश्वद्वीतवः हिः	•		118
সুণাকরতৈলম্			: is	अभृ ङ्गानिः अभृ ङ्गानिः	•••	•••	778
লক্ষণারিষ্টঃ			110.	न्द्र∍ाःग• म श् ठद्र¦षि		•••	338
অশোকারিষ্ট:	•••	•••	1150	গ্ৰহস্মান স্তিকাদশমূলম্		•••	778
পত্রাঙ্গাসনঃ		•••	110.	স্থচরাদিঃ	***		228
প্ৰাপ্ৰাবিধি:		•••	>>>>	्रार्थ्यागः (प्रवत्रार्क्ताभिकाभः	•••	•••	228
		above a		বজ্ঞকাঞ্জিকম্	•••	•••	. 328
(यानिक	াপ#ধিক	। इहा		ভটো ९क छ। छ। वत्वरः	•••		778
যোনিব্যাপাগ্লদানম্		•••	2202	পঞ্জীরকগুড়ঃ	•••		>>8
যোনব্যাপচ্চিকিৎসা			2252	সৌভাগাশুঠী (ছিবিধা)	900	•••	>>8
ন্টপুশান্তকো রসঃ		•••	>>08	वृहद भी जाना अधी	•••	***	776
कलचू डम्		•••	: 508	ু ক্রিক জেমে। দকঃ	•••	***	224
ফলকল্যাপগৃত্য্	•••	•••	2208	স্ভিকারিরসঃ (বিধিঃ)	•••	***	224
সোমগৃত শ্ সোমগৃত শ্	•••	•••	2200	কৃতিকান্ধো রসঃ	•••	***	220
নোৰ্যখন্ নীলোৎপলাত্যং মু ঠ্য	111	•••	2200	পুহৎ স্থতিকাবলভো রসঃ	•••	•••	220
বহচ্ছ হাবরীয়ত্ত্		•••	3300	বৃহৎ স্থতিকাবিনোদরসঃ		***	220
युरुष्ट श्रीप्राग्न ७५ यक्तानिमानम्	•••		: 500	স্তিকান্তকো রসঃ		•••	220
বন্ধ্যানিশ্যন্		•••	2200	স্তিকাহরো রসঃ (দিবিধ	:)	•••	220
লক্ষণালোহম্	•••		3309	মহালবটা	•••	***	226
কুমারকল্পশ্রতম্	•••	•••	2209	त्रम्भाषं वः	•••	•••	226
গ্ৰাসকলম ব্যুত্ গ্ৰাজনকভেষজ ম্	•••	•••	2234	মহারসশান্দ্রলঃ	•••	•••	22¢
প্রধাপশাবিধিঃ	•••	•••	3304	ভদ্ৰোৎকটান্তং মৃত্যু	•••	•••	220
				ধাতক্যাদিতৈণম্	•••	•••	226
গাভণীে	রাগাধিক	14%		জীরক'তারিষ্টঃ	•••	***	>>e
গভিণ্যা রক্তশ্রাবাদি	নিকিৎসা		४०८८	স্তিকাকালনিবৃত্তিলকণ্ম	•••	•••	224
المالك الحجملا اللحالد	V T 7 11		2285	পথ্যাপথ্যবিধিঃ		***	220

২।৵•

ন্ত নরে	গাধিক	র ।		विषयाः ।		9	ত্ৰাকাঃ।
বিষয়া:।		9	াঞাকা:।	অরবিন্দাসবঃ সর্কোষধিস্পানস্	•••	•••	2 7 @ s
ভনরোগনিদান ৰ্	•••	•••	2268	भवाभिश्वविद:	•••	•••	2241
স্তনরোগ-চিকিৎসা			>>ee	ירורון וורוייונדוי	•••	•••	2200
এ পণীতৈল ন	•••	•••	2300				
কাশীশাস্ত্যং তেলম্	•••	•••	::00	निय	াধিকারঃ		
ত ভ ত্ৰ টি নিদানম্		•••	>> 0	199	।।पक्षात्रः	1	
ত্তক্ত প্লুটি চিকিৎসা	•••	•••	3306	6-6			
প্রসঙ্গাধিবরান্তরম্	•••	***	>>60	वियमिलानम्	•••	•••	. 6
পশ্যাপথ্যবিধিঃ	•••	•••	2249	ৰিষ-চিকিৎসা		•••	>>90
				विष्ट्डी विदः	•••	•••	229
				অব্বিতাগদঃ		•••	>>94
বালরোগ	गायका	1 68		তাক গ্ৰাপদ:	***	•••	2294
বালরোপনিদানম্	***		1.69	মৃতসঞ্জীবনোহগদ:	•••	•••	3291
	•••		2204	কুলিকাদিনটিকা	•••	•••	2291
বালরোগ-চিকিৎদা		••		ভীমকজোরসঃ (ছিবিধঃ	•		1812296
ভদ্রমৃক্তাদি:	•••	•••	::60	বিষৰজ্বপাতো রস:	•••	•••	2290
হরিজাদিঃ	•••	•••	::••	তভুলীয়য়ু ১ম্	•••	•••	2290
ধাতক্যাদিঃ	•••	•••	2260	শিশবিগ্যুতম্	• • •	***	2390
কৰ্কটাদিঃ	•••	•••	236.	মৃত্যুপাশচ্ছেদি যুত্ৰ	••	•••	2296
বালচতুর্ভন্তিকা	•••	•••	2262	শিরীশারিষ্টম্	•••	•••	2294
রজ্ঞাদিচুর্ণশ্	••	•••	2200	বিবোজ বিত্ত লকণ্ম প্ৰাপ্ৰাবিধি:	***	***	2294
পুৰুৱাদিচুৰ্ণম্ পটোলাদিঃ	•••	•••	7708	भवग्रम्यग्र _{विश्} वः	•••		: 3 94
मात्रिवाणिः	•••	***	2280		•		
	•••	•••	2266				
লবজচতু:সমন্ লাড়িশ্বচতু:সমন্	***	•••	2260	রসায়	নাধিকারঃ	1	
नाष्ट्रकावत्यः वालक्ष्रकावत्यरः	•••		2200				
निवास्त्रामक म्	•••	•••	:206	ঋতুহন্ত্ৰীতকা			2299
मुख्याद्वनभाखकः			2366	কুহুগাওক: লৌহগুগ ্গুলুঃ	•	•••	2297
কুমারকল্যাণো রসঃ	•••	100	2346	লোহন্ত্র নিজ ভৌকলঃ	***	••	2278
বালবোগান্তকো রস: (রামেশরো রস:) · · ১১৬৬			্ৰন্ত তাক্স: ভূক্ত ৰাজাদিচুৰ্বন্	•••		2240	
व्यक्तायुटम्	•••	•••	2369	ভ্ৰমতাঞ্জতমে।ভামতবৰি ভ্ৰমতাঞ্জলতমে।ভামতবৰি		•••	7760
বালচালেরীয়ত্ত্	•••	***	2569	भित्र का	•••	•••);b.
प्रदेशक्रवपृ ख्य्	•••	•••	2569	অষ্টাবক্রবসঃ	***	100	7747
কুমারকল্যাণয়ত্য	•••		2269	বসস্তকু হুমাকরো রসঃ	•••	•••	2242
পিশ্লাতিং মৃত্য	•••	•••	3269	ত্রেলোক্যটিস্তামণিঃ	•••	•••	274:
ক-টকারীয়তন্	•••	•••	2500	বৃহৎপূর্ণচন্দ্রসঃ	•••	•••	336
नाचाविटलम्	***	•••	2204	क्रीमहोनको विमानत्रनः	•••	•••	724
বাজীতৈলন্	•••	••.	220h	কাৰ্শ্যহরলোহম্	***	•••	22**
শৰাপৃশ্গীতৈ লম্			2300	অমৃতাৰ্ণবো রস:	•••	•••	256

२१७/०

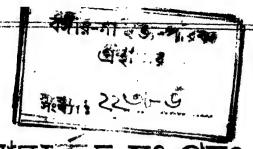
বিষয়া:।			পত্ৰাকা:।	विवज्ञाः।		9	াকাকা:
মকরধ্বজো রসায়ন:	•••	·	3350	কামধেত্ব:	•••	•••	24.
नीनकर्था बनः	•••	•••	2220	वर्ग मिन्मू इष्	•••	•••	25.
মহানীলকণ্ঠো রস:	•••	•••	;; > 0	গোধ্যাত্তং মুত্ৰ	•••	•••	24.
অমৃতসারলোংশ্	•••	•••	2228	বৃহদৰগৰাত্বতৰ্	•••	•••	24.
অত্র সাধ্যসাধনপরিমাণম্	•••	•••	7728	বৃহচ্ছতাবরীয়ত্ত্	•••	•••	54.
" লৌহমারণবিধিঃ	•••	•••	2240	কামদেবগুত্ৰ	•••		3₹•
" স্থালীপাকবিধিঃ	•••	••	2249	পলব্দারতৈল্	•••	•••	34.
" পুটপাকবিধিঃ	•••	•••	7744	মৃতসঞ্জীবনা স্থরা	•••	•••	23.
" পাকবিধিঃ	•••	•••	22FA	नगमनातिष्ठेः	• • •		: 4:
'' অভ্ৰকবিধিঃ	•••	•••	;;>>				
'' লোহভকণবিধিঃ	•••	•••	::>>	বার্থাক	ন্তাধিক	7 0 1	
শিলাজভুরসায়নম্	•••	•••	>>>>	414)	WIII W	OK	
শিবাঞ্ডিকা		•••	2228	নাগৰল্যান্তঃ চুৰ্ন্	•••		: 2:
মহাচন্দ্ৰাদি তৈলম্	• • •	•••	2556	অৰ্জকাদিবটিকা	•••	•••	243
				শক্রবলভো রস:	•••	•••	: 4:
				कामिनोविज्ञावरणा त्रमः			:4:
					ঙ্গাধিকা	8 8 1	
বাঞ্জীকরণভাবশুকতা	•••	•••	::>4	কুব্য নিদানম্	•••	•••	2+2
বাজীকরশানি	• • •	•••	::29	কেব্য-চিকিৎসা	•••	• • •	>5>
ৰারসিং হচূর্ণ ম্		•••	;;22	অমৃতপ্ৰাশম্বতম্	•••	• • •	263
७ एक् या. ७ कम्	••	•••	4411	এ মদনান্দমোদক্ষ্	•••	•••	282
বৃহচ্ছতা বরীমোদকঃ	•••	•••	: < • •	গুক্রজাবনং মোদকম্	***	***	282
রতিবল্লভো মোদক:	•••	***	:200	ত্ৰিকণ্টকাদ্যো মোদক:	•••	•••	545
কামেশরো মোদকঃ	•••	***	75•7	ভৈরবান-দবোগ:	•••	•••	243
মোক্রবা	•••	•••	2602	রদালা	**.	•••	562
কামাগ্রিসন্দীপৰো মোদকঃ	•••	•••	३२•१	কামিনীদৰ্পন্ন:	•••	•••	262
মদনমোদক:	•••	•••	\$ २•२	बद्राहरू भग्नमक वश्नकः	•••	***	252
ধতাত্ৰক ম্	•••	•••	\$2.0	বৃহচক্রোদয়মকরশ্বন:	•••	***	252
স্বহন্দরী গুড়িকা	•••	***	25.0	অনক কুত্যাকর:	***	**1	2521
বানরীবটিকা	•••	•••	\$ 4 . 8	সিম্বতঃ	•••	•••	242
শ্রপান্তরসঃ	•••	•••	34.8	कामनीशकः	•••	***	>57
मकत्रभाषा तमः	•••	•••	24.8	সিদ্বশাশ্যনীকর:	•••	•••	262
মহেশররসঃ	•••	•••	>4•€	পঞ্চশর:	•••	•••	१२५
গৰামৃতরসঃ	•••	•••	24.€	भू न्श्यवा	***	390	247
পূর্ণচক্রো রস:	•••	•••	><- 6	কামাগ্রিসন্দীপনঃ	•••	•••	252
🖣 কামদেবরস:	•••	•••	25.4	इन्समा पिटेलनम्	•••	***	252
কামিনীমদভঞ্জনঃ	•••	•••	>२•७	ভরাতকাদ্যতৈলম্	•••	•••	255
হরশধাক:	•••	***	24.0	অবাগৰাতৈল্য	•••	•••	३२२

२॥०

ফিরঙ্গ রো		মস্তিক্ষয়ায়ুরোগাধিকার:					
বিষয়াঃ।		۶	াঞাকা:।	বিষয়াঃ।		5	শতাকা:।
ফির ক্র রোগনিদানম্	•••	•••	244.	বিঝাদিচূৰ্ণম্	•••	•••	५२२७
ফির স রোগ স্তো পত্রবাঃ	•••	•••	2222	অমৃতাদিমভূরম্	•••	•••	: २२७
অন্ত সংখ্যতাদিলকণ্য	•••	•••	:२२:	পঞ্চামৃতলোহগুগ গুলু:	,,,	•••	:२२७
ফিরঙ্গরোগ-চিকিৎসা	• •	•••	2552	ত্রিবুঙাদি মোদক্ষ	•••	•••	১১২৩
কপূরিরদ:	•••	***	:22:				
म श्रनानिवर्ण	•••	•••	:25:	বৃহদ্ধাজীম্বতম্	•••	•••	5228
ধুমপ্রয়োগঃ	•••	•••	2002	লক্ষীবিলাসতৈলম	•••	•••	3458

ইতি পরার্দ্ধস্ত স্থচীপত্রম্।

সমাপ্তমিদং দূচাপত্তম ।



সায়ুর্বেদ-সংগ্রহঃ।



আয়ুর্বেদাবতরণম্।

° ব্রহ্মদক্দিবোদাসান্থিনে। চ শ্চাপতিন্। চরকাদীন্ মুনীন্ স্কান্ গ্রন্থাদো প্রণমায়ত্ন্॥

আয়ুর্কেদ্যা লক্ষণমাহ—

আয়ুহিতাভিত বাদধনিদান শমন তথা। বিভাতে যাত বিশ্বভিঃ সাভাযুক্তে উচাতে।

যে শাস্ত্র ছারা আরুর হিতাহিত এবং রোগসমূহের নিদান ও প্রশান্তির উপার অবগত হওয়া শায়, সেই শাস্ত্রকে পণ্ডিতগণ আয়ুর্কেদ্বলেন।

আয়ুর্কোদন্য নিরুত্তিমাই—

 কশ্ম'ণি জ্ঞ'হা, টু তেষাং সেবনত্যাগভোমারে গোলংযু-বিশ্বতি তেনের হেতুনা প্রসাপোশ্যক্ষেণিষ্ঠ চ।

এই শান্ত বানা দীৰ্ঘায়ং লাভ হয় এবং
আয়ুবিষয়ক জ্ঞান জন্মে বলিয়া, মুনিগণ ইহাকে
আয়ুবেন নামে অভিহিত করিয়াছেন। আয়ুকেন্দ্র বানা আয়ুকন ও অনায়ুকর দ্রবা, গুণ ও
কর্মা সকল জ্ঞাত হইয়া তাহাদেন সেবন ও
তাগি বারা অর্থাং আয়ুকর দ্রবাদি সেবন ও
আনায়ুকর দ্রবাদি পরিতাগে বারা দীর্ঘায়ুঃ প্রাপ্ত
হওয় গায় এবং এই উপারে অপরেরও আয়ুঃ
জানিতে পারা যায়। শরীর ও জীবের যোগকে
জীবন কহে এবং যোগাবিচ্ছিন্ন কালকে আয়ুঃ
কহা যায়।

ক্রমমাহ-

তত্তাদো ভ্রন্সণঃ প্রাক্তর্ভাব:।

বিধাতাথৰ্কসৰ্ক্ষমানুৰ্বেদং প্ৰকাশন্ত্। অনালা সংহিতাং চক্ৰে লক্ষ্মোকসমীমুকুৰ্ ॥ ততঃ প্ৰজাপতিং দক্ষং দক্ষ সকলকৰ্মস্থ। বিধিৰীনীন্দিং সাক্ষমানুৰ্বেদ্মুপাদিশং ॥

ব্রহ্মা কথেরবেদের সর্বপ্র ভার্কেদশাস্থ প্রকাশ করিবার নিমিত্ত অনামে (ব্রহ্মসংহিতা নামে) লক্ষ-শ্লোকবিশিষ্ট একথানি আর্কেদ-সংহিতা রচনা করিয়াছিলেন। তদনন্তর তিনি সকল কর্ম্মদক্ষ এবং অপ্রতিমবৃদ্ধিশক্তিসম্পন্ন দক্ষ প্রকাপতিকে সমুদ্ধ আযুর্কেদ উপদেশ প্রদান করেন।

व्यथ मक्क आंद्र जीवः।

অধ দক্ষ: ব্রিমাদক্ষ অবৈশ্বৈদ্ধা বেদমায়ুব:।
বেদমামান বিৰাংনো স্থাংশো স্থনসভ্যো ।
তৎপরে কার্য্যদক্ষ দক্ষ প্রজাপতি, স্থ্যাংশসম্ভূত, বিশ্বান্, স্থনসভ্য অধ্যনীকুমারশ্বরকে
আর্বেদ অধ্যন করাইয়াছিলেন।

অথাখিনীস্বতপ্রাত্রভাব:।

দক্ষাদধীত্য দক্রো বিতন্ত্য সংহিতাং বীরাম্।
সকলচিকিংসকলোক-প্রতিগতিবিগৃন্ধরে ধস্তাম্।
দক্ষের নিকট অশ্বিনীকুমারদ্বর আরুর্কেদ :
অধ্যর্বন করিয়া চিকিৎসক-সমূহের জ্ঞানবর্জনের নিমিত্ত স্থনামে (অশ্বিনীকুমারসংহিতা নামে) একথানি সংহিতা প্রস্তুত্ত

বরভূব: শিরশ্ভির: ভৈরনেণ ক্রবাথ তৎ। অধিজ্ঞাং সংহিতং ভক্ষাৎ তৌ কাঠো বজ্ঞজাগিনৌ॥ দেবাস্থররং: দেবা দৈত্যৈ সক্ষতা: কৃতা:। অক্ষতান্তে কৃতা: সন্তো দম্রাজ্যানভূতং মৃহৎ॥

শাস্ত্রে উক্ত আছে বে; ভেরব ক্রোধারিত ইইয়া একার মন্তকচ্ছেদন ক্রিয়াছিলেন,

অধিনীকুমারশ্বর ঐ ছিন্ন মন্তক পুনঃ সংবেজিত করেন; এই কারণে তদ্বদি তাঁহার। সজাংশ-ভাগী হন। আর মহং অছুত ঘটনা ঘটে যে, দেবাস্থর-সুদ্ধে যে সকল দেবতা দৈতাগাণ কর্তৃক ক্ষতবিক্ষত হইয়াছিলেন, অধিনীকুমারশ্বর অসাধারণ ক্ষমতার প্রভাবে সন্তই তাঁহাদিগকে অক্ষত করিয়াছিলেন।

বিদ্ধিণাংগুদ্ভুজন্তভঃ স দল্লাভ্যাং চিকিৎসিতঃ। সোমাল্লিণভিতশক্তভাভাষেৰ সুধীকৃতঃ॥

বক্সধারী ইক্স ভুজগুজুরোগগ্রন্থ এবং চন্দ্র গোমমণ্ডল হুইতে পরিভ্রন্থ ইইরা পাঞ্জীড়িত হুইলো, আখনীকুমাগন্ধর চিকিৎসা করিয়া এই উভয়কে স্বস্থ করিয়া দেন।

বিশীর্ণা দশনাঃ পুষ্পো নেতে। নপ্তে ভগস্য ৮। শ্রনিদো রাজ্যক্ষাঞ্চাবিভাগে তে চিকিৎসিভাঃ॥

হর্ষ্যের দক্তরোগ, ভগদেবের নেএরোগ এবং চন্দ্রের রাজ্যক্ষা হইয়াছিল। ইহারাও অখিনীকুমারম্বয় কর্তৃক চিকিৎসিত হইয়া স্বাস্থ্যলাভ করিয়াছিলেন।

ভাৰ্গৰশ্যবনঃ কামী বৃদ্ধ: সন্ বিকৃতিং গৃত্য ৰীধ্যবৰ্গৰবোপেতঃ কৃত্যেংখিভাগং পুনযু বা ॥

ভৃত্তপুত্র বৃদ্ধ চ্যবন অভিশয় ইন্দ্রিয়াসন্তিন বশতঃ বিক্ষতি প্রতি হইলে অধিনীকুমাংশ্বর কর্ত্তক চিকিৎসিত হইয়া বল বর্ণ ও ব্রুর লাভ করিয়া পুনকার ধৌবন প্রাপ্ত হন।

এতৈকান্তৈক বছজি: কল্মজিজিজাং বরৌ। বন্ধুবতুকু পং পূজাবিক্রাদীনাং দিবৌকসাম।।

এতাদৃশ বছবিধ অসাধারণ কার্য্য দারা বর্গবৈষ্ঠ অবিনীকুমান্দের ইন্দ্রাদি দেবতাগণের অত্যক্ত:পূজনীর হইয়াছিলেন।

বথেক্তপ্রাত্মর্ভাব:।

সংসূশ্য দল্লোরিজ: কর্নাণ্যতানি বছুবান্। আয়ুর্কোদং নিঞ্জবিগং তৌ ববাচে শটীশভি:॥ নাসভৌ সত্যসক্ষেন শক্রেণ কিল বাচিতৌ। আয়ুর্কোদং বর্ধাধীতং দদজু: শতসম্ভবে॥

আয়ুর্বেদাবতরণম্।

নাসত্যাভ্যামধীত্যৈৰ আয়ুৰ্কেদং শতক্ৰত্য । অধ্যাপয়ামাস বহুৰাতেরপ্ৰমুখান্ মুনীন্।।

শচীপতি ইন্দ্র অমিনী-কুমারছরের এই প্রকার অনির্কাচনীয় বিশ্বয়ক্তনক কার্য্য সকল দর্শন করিরা অভিশব আগ্রহপূর্বক তাঁহা-দিগের নিকট আর্কেদশাস্ত্রের উপদেশ পাইবার প্রার্থনা করেন। সভা প্রভিক্ত ইন্দ্র-কর্ত্তক অম্বিনীকুমারছর বাচিত হইয়া তাঁহাকে সমস্ত আর্কেদ শিক্ষা প্রদান করেন। পরে ইন্দ্রদেব অমিনীকুমারছরের নিকট আর্কেদ অধ্যান করিয়া আত্রেয়প্রভৃতি মুনিগণকে উহা শিক্ষা প্রদান করিয়াছিলেন।

্ৰথাত্ৰেয়প্ৰান্তৰ্ভাব<mark>:।</mark>

একদা জগদালোকা গদাকুলমিতস্ততঃ। চিত্তরামাস ভগবানালকো মুনিপুক্তবং ॥ কিং করে।মি ক গচ্ছামি কখং লোকা নিরাময়া:। ভবস্তি সাময়ানে চান ন শক্ষোমি নিরীকিতৃষ্।। দয়'লুরহমভার্থং স্বস্তাবো দুরভিক্রমঃ। এতেশং ছঃখতো ছঃখং মমাপি হৃদয়েহধিকম্।। আয়ুর্কেন: পঠিবাঁসি নৈরজায় শরীরিণাস্। হতি নিশ্চিত। গতবানাতেরবিদ্শালরৰ ॥ তত্র মন্দিরমিশ্রসা গড়া শক্রং দদর্শ সং। সিংহাসনসমাসীনঃ ভুরুমানং হর্বিভি: ॥ ভাসয়ন্ত্র: দিশো ভাস। ভাস্করপ্রতিম: দিবা। আয়ুকেন্দমহাচাযাং শিরোধাযাং দিবৌকসাম্॥ শক্ত ড: নিরী কোন তাজনিংহাসনো করে।। ভদতো পুদ্ধবামাস ভূপং ভূরিতপ্রেশম্॥ কুশলং পরিপপ্রচ্ছ তথাগমনকারণম। স মূনিব ক্তুমারেডে নিজাগমনকারণম। দেবরাক্ত ন রাজাসি দিব এব বতো ভদান। বিধাতা বিহিতো বছাৎ ত্রিলোকীলোকপালক:॥ বাাধিভিব পিতা লোকা: শোকাকুলিতচেতন:। ভূতনে সন্তি সন্তাপং তেবাং হস্তং কুপাং কুরা। 🧍 আয়ুর্কেনে।পদেশং মে কুরু কারুণাতো নুণাম ॥ ওপেতান্ত্র সহস্রাক্ষেহিধ্যাপরাম্বাস তং মুনিব্॥ মুনীপ্র ইলুড: সালমায়ুর্কেদমধীতা সং। " অভিনন্য ভ্যাশীভিরাজগাম পুন্ম হীশ্। অধারেয়ো মুনিশ্রেষ্ঠো ভগব'ন করুণ'কর:।

প্রায়া সংহিতাং চকে নরচক্রাতুকস্থা।

ততোহগ্নিবেশং ভেলঞ্চ জতুকর্পং পরাশরন্।
কারপাণিক হারীতমার্কেলমপাঠরং ॥
তন্ত্রস্য কন্তা প্রথমমগ্নিবেশোহতবং পুরা।
ততো ভেলাদয়ক্তকু: বং বং তন্ত্রং কৃতানি চ ॥
প্রাবয়ামাস্থরাক্রেয়ং মুনিবৃদ্দেন বন্দিতম্ ।
প্রশার চ তানি তন্ত্রাণি ক্রেইাহভূদ্তিনন্দনঃ ॥
বথাবং স্ত্রিতং তন্ত্রাং প্রক্রী মুনরোইভবন্ ।
দিবি দেবর্বরো দেবাঃ শ্রুহা সাধিবতি ভেহকবন্ ॥

একদা মুনিশ্ৰেষ্ঠ ভগবান আত্ৰেয়, জগতেৰ লোককে বার্ণিপীড়িত দেখিয়া, কি করি. কোথায় যাই, কি প্রকারে লোক সকল রোগ-মুক্ত হইবে, এইরূপ নানাপ্রকার চিম্ভা করিতে লাগিলেন এবং ভাবিলেন-মানি যেরপ দয়াল স্বভাব, ভাহাতে আমি কথনই ইহাদিগকে ব্যাধিপীডিত দেখিতে পারিব না, ইহাদের তঃখ দেখিয়া আমার জনর অধিকত্র ছংখিত হই-অতএব দেহিদিগের বাধিশান্তির নিমিত্ত আমি আয়ুর্বেদ অধ্যয়ন করিব। তিনি ইহা স্থির করিয়া **স্থ**রলোকে গমন-পূর্ব্বক ইক্রালয়ে উপস্থিত হইলেন এবং দেখিলেন দেবর্নিগণকর্ত্তক স্কুরমান সূর্যাপ্রতিম তেকোময় আরুর্বেদাচার্যা স্থবশিরোমণি ইক্র দশদিক উজ্জল করিয়া সিংহাসনে উপবিষ্ট আছেন। ত্রিদশাধি-পতি ইন্দ্র প্রভূততপংক্ষণ সেই মুনিপুঙ্গব আত্রে-রকে দর্শন করিবামাত্র সিংহাসন পরিত্যাপ পূর্বক অগ্রদর হইয়া ভাঁহার পূজা করিলেন। ভদনন্তর কুণলবার্ত্ত। এবং আগমনের কারণ জিজাসা করিলে, আত্রের মুনি স্বকীর আগমনের কারণ বিজ্ঞাপন করিতে আল্ভে করিলেন। বলিলেন, হে ত্রিলোকাধিপতি দেব! আপনি কেবল স্বর্গের গাজা নহেন, বিধাতা যত্নের সহিত আপনাকে স্বৰ্গ মৰ্জা ও বসাতল এই জিলোকেরই প্রতিপালনকার্যো নিবুক্ত করিরাছেন। সম্রতি কিতিভালে মানব সকল বাাধিপীডিত ্ৰোকাভিভূতচিত ২ইরা অতিহঃসহ ভোগ করিতেছে। অতএব আপনি রূপাব-লোকনপুরংসর মানবমগুলীর সম্ভাপাপহরণ-রূপ উপকারের নিমিত আয়াকে আরুর্কেদশিকা

প্রদান করুন। দেবরাজ স্বীক্বত হইয়া আত্রেয় मुनिटक आंबुट्र कि अक्षायन कर्ताटेलन। मूनि-শ্রেষ্ঠ আত্তের ইন্দ্রের নিকট পাঠসমাপনানস্তর আশীর্বচন ছারা দেবরাজকে অভিনন্দন করিয়া পুনরায় ভূতলে প্রস্থান করিলেন। অনন্তর মুনিপ্রবর করণানিদান ভগবান আত্রের প্রজা-সমূহের প্রতি ক্রপাপরবশ হইয়া স্বনামে (আত্রেয়-**সংহিতা নামে**) একথানি সংহিতা করেন। তদনস্তর তিনি অগ্নিবেশ, ভেল, জতকর্ণ, পরাশর, ক্ষারপাণি ও হারীতকে আয়ুর্বেদ অধ্যয়ন করান। ইহাণাও প্রত্যেকে স্ব স্ব নামে এক একথানি তন্ত্র প্রণয়ন করেন। তন্মধ্যে প্রথম অগ্নিবেশ, তৎপরে তেলাদি মুনিগণ তন্ত্র প্রণয়ন করিয়া সেই সকল তন্ত্র, ঋষিগণের স্তবনীয় আত্রেয়মুনিকে শ্রবণ কণাই-লেন। আত্রেয় মূলি সেই সকল তম্ব শ্রবণ করিয়া "যথাবং স্থাত্ত হইয়াছে" এই কথ বলিয়া নিরতিশ্য হর্মপ্রকাশ করিলেন এবং সংগ্র দেব্যি ও দেব্ভাগণ্ড ভাহা শ্বণ কাব্য পুল্কিতচিত্তে সাধুবলৈ এলান কবিছে লাখ-লোনা ভাষ্টেড অবিশ্লেষ্ট সভাগ গড় আহল[দিত হটকেন]

অথ ভরদ্বাজপ্রাত্র গিং।

একল ইমবংপাথে দেবালিছিল সহার ।
মূনটো বহরতেথা নামতি কথ্যান্ত ।
ভরষজো মূনিবর প্রথম সন্পালিছা ।
ভরেইকিরান্ত ের বছের সন্পালিছার ।
পূলভোইপানির সিন্তির সার তির্ভু তির সার ।
ধরাতো গোতনং সাক পোনা কৈলেই করিছার ।
ভ্রমায়িক গার্গান্ত কাল্যাপং কলাপোর লি ।
নারনে বামদেবল মার্কভেয়া কলিজনা ॥
শান্তিলার সহকৌভিলার শান্তনেরক লৌনকরে।
আমলায়ন-সাংক্তেরী বিশ্বাহিন্তে পরিক্তির ॥
দেবলো গালবো ধৌমার কাপ্য-ক্তিরারনার্ভি) ।
কাক্ষায়নো বৈশ্বাপর ও শিক্ষা বাদ্যায়ণ ॥

হিরণাকশ্চ লোকাকিঃ শরলোমা চ গোভিলঃ। বৈথানসা বালখিলা স্ত্ৰেবান্তে মহৰ্য: # ব্ৰহ্মজীনসা নিধয়ো ব্যসা নিয়মসা চ। তপসন্তেজসা দীপ্তা হয়মানা ইবাগায়: ॥ স্থোপবিষ্টান্তে তত্ৰ সৰ্কে চক্ৰ: কথামিমাম। ধর্মার্থকামমোক্ষাণাং মূলমুক্তং কলেবরম ॥ তচ্চ সর্বার্থসংসিদ্ধো ভবেদবদি নিরাময়ম। তপঃস্বাধাায়ধর্মাণাং ব্রহ্মরেতারতার্যান ॥ হর্তারঃ প্রস্থারোগা ব্যাহর চ সর্বাচঃ। রোগাঃ কার্শাকরা নলক্ষ্মকরাঃ দেহসা চেষ্টাহরা: पद्यांनी लियगक्तिमः कराकदाः मक्त क्रीणाकदाः । ধশ্মার্থাখিলকামযুক্তিয় মহাবিত্মস্বরূপা বলাৎ প্রাণানাশু হরন্তি সন্তি যদি তে ক্ষেমং কৃত্র প্রাণিনাম। ভৎ ভেষাং প্ৰশমাধ কন্চন বিধিন্চিয়েয়া ভৰচ্ছিৰ ধৈ-গে'গ্যেরিত্রভিধার সংস্কি ভবদ্বাক্ত ম্নিক্তাক্রন। ভু॰ বে'গোল ভগবন । সহস্তনয়নং য'চস্ব লক্ষ্ ক্যা-দ্যিক্সদম্পীত ক গ্ৰহ্মধ্যুক্তী ভ্ৰাম্মে ব্যাস্থ ইফাস্মনিভিয়ে গেল প্রাথিতে বিন্তারিক। ভদদ্ব'রে। মুনিতে ঠো কলাম প্রিদশ লয়ম ।। ংক্রেন্তরণ থকা শুরুমিগণ্ডপান্ম। क्षेत्र'ने न् ८१ छु"तः ज'ाशा किसरीकलम् ॥ স্ট্রসমলি প্রভাগালয়/ব মুদ্রি পতাক, হু'চ্বা, তেপামলিং ড্সম্পুর্যত্ট स्था द्वार एस साम्बित निकास के समस्य । 2 * * * Pa + a * Pa + d やみないみを取り বাংশালা তি সমৎপরাং সর্বাঞাণিভয়কবাং। ्रग'् अवद्यान'श'ण यश्रीतम्कु अर्डीम् ॥ •মূলচে ফলি। সাজ্জম ল্পুৰিদে শাৰক্তি, <u>।</u> জীবেছান্ত্ৰা হিলাম । া, 'হ্মান্ডুপ'রেল ি কনামান্ত্রকলে ১৯বছিল : যাবালিচিরাও সক্ত বিন্দ্রী বিলামিলি। বেৰু বিশ্বস্থা আছে ভবত হোলিব আছে?। कर्म राज्य र का का का के क्राइट के (Бя) युग्रा (I ৬৭' - দেনাৰ্থি কল্মাণি দুগু ভিছিৎিমাঞ্জিতাঃ ॥ रा पर ११ व्यक्ति है श्वाप्तका स्थापना मान्या।

নির্বাধে বে দিবস বচসংখ্যক মহার্ষ হিমালম প্রপতের পার্নদেশে সমাগত ও সিলিত হইয়াছিলেন। প্রথমে মুনিবর ভরবাজ আসিয়া উপস্থিত হন। জ্ঞমে অঙ্গিরা, গর্ম, ম্বীচি, ভৃগু, ভার্মব, পুলস্তা, অগ্নান্ত, অসতি,

ৰশিষ্ঠ, প্রাশ্র, হারীত, গৌতম, সাংখ্য, মৈত্রের, চাবন, জমদগ্নি, आंशा, কাগ্ৰপ, কল্পর, নারদ, বামদেব, মার্কণ্ডের, কপিঞ্জল, कि खिना, अकुरनव, শৌনক, भा खिला. বিশ্বামিত্র, প্রাক্তিত, আখলায়ন, সাস্কৃতা, (स्वन, शानव, शोबा, काश्रा, काश्राम, কান্ধায়ন, े्रङ्गात्र, কুৰিক, বাদরায়ণ, হিরণাক, লাকাকি, শুরুলান, গ্রাভিন, रेवशानम, वाल्शिला ५ अञ्चाल महसिश्ध উপস্থিত হট্যাছিগেন। ই হার দকাল ব্ৰশ্বজ্ঞানেৰ নিবান, ধন 4 नाग्र 37.6.4 আবা তবং তপত্তেকে সূর্যান আল্ল ক্সার সেই স্কল ব্যাধির প্রশাসনাপার श्रामीखा १६६१म खुमाश्रान्तिरे ६६म. १ स्था। এইরপ কণোপ্রথন ক্ষাপ্র ক্রাইন টা ধ্রা, অণ, কান ও মেনের মুগর রহা, 🕞 🕫 यक्ति भौरतील भारक, छोट्ट इंडेटल्ड हे स्थानि চতুর্গ লাভ হইতে পারে। মহেত প্রভাবে ভপরান ,বদানারন, নাম, বন্ধটের বভ ও প্রম্যু: সম্ভাই কিন্তু হয়। তার স্বল ্চেষ্টের ক্রম্যাকারক, বংক্ষরকবিক, স্থানীবিক-(BB)প্রাবক, 🐷 স্পান্য দার্জাক্রমান্টান্রনালক, भाशिक श्रीड़ाञ्चक इतः लक्ष-दर्श-कार-্মান্সের প্রত্য বিশ্বস্থলাও ও আড়ু প্রাণ-বিম্ন শক। একদণ এই বিশো অনেইকাৰী বেগি সংগ্র প্রস্ত হইয়াছে। বনি ইহা তাহা হইলে প্রাণিদিগ্রে সঙ্গল কোণায় ? আপনার: সকলেই মাগা ও পাওত, যাহাতে নোগের শাস্তি ২য়, এমন কোন উপায় চিস্ত কর্মন। অনন্তর সভাস্ত স্কংগ্র ভারম্বাজ মুনিকে বলিলেন-ভগবন! আপুনি য়াগা. আপনি হুরপুরে গম্ন পুরুক সহ্ম-গোচন ইন্দ্র-দেবের নিকট আয়ুর্নেদ শিক্ষা করিয়। আমুন, তাহা হইলে আম্বাও ক্রমে মেই আয়ুর্বেদ অনায়ন করিয়া ব্যাদিভয় হইতে মুক্তিলাভ করিতে পারিব। মুনিগণকর্ত্তক এইরূপে প্রাথিত হটয়া মুনি-

সভ্য ভাষাজ অবপুরে ইন্দ্রভব্নে গ্রান করি-(मन। (मधितना, तुत्रहरू हेम्स (मवर्विश्व-পরিরত হইয়া, নীপামান অগ্নির স্থায়, শোভা পাইতেছেন। ভগবান ইন্দ্র ভরম্বাক্ত মনিকে দেখিবানাত্র সানন্দে তদীয় আগ্ৰন-কশল ক্ষিঞান। করিয়া যথাবিনি তাহাঁব অর্চন করি-্লন। ম্নিস্তুম্ ভরতাজ अगुकुठक तर्डम द्यातः हेन्द्र-(प्रवास ठा छन्ना न খ্যিগুলে প্রার্থনাবাকা তাহাকৈ নিবেদন কবিলেন এবং কহিলেন, পৃথিনীতে উংপন্ন ইইয়াছে। প্রাণি-ভয়ন্ত্র ব্যাপে সকল আপানই যোগা, গতত্ব কুপাতানশন প্রথম আমাকে আরুপ্রেন উপ্রেশ প্রদান করুন। শতক্ত (ইলু) ম্নিবাকো প্রীত ३हेश. যাহা শ্রাব্য-ক্রিরে অর্পাই ঘাহার লিগান সকল প্রতিপালন সং জে — ভাবে নাবেল ইউর সহস্রবর্গ ভারন আত কলিতে পাবে, সেই সাল ্মানুদেদ মৃদ্ধে কে উপদেশ আন্ত্র কৰিবেন। মহান্তি ভবৰাজমূলি ভালে ্রহত, লিন্দ্র ও উয়বজ্ঞান (ব্যয়ক্ষা) অপার 'याहर र र व समस्य अस्तर । धर्मारा अस्तर्यन कतिया बहारवस अतः असः अभूति विकास स्रायः স্বর্য় নিশ্বর ও দীর্ঘদারা হন এবং অক্যান্ত ম্মিগ্রেক্ড মীরেগ্র লীবাসগু Ç भशित्व श्रामाय है ভাষাজ তমুজ নিভজোন-নেত্রে पुरा १६९ ७ कम् एकन मुनेन कात्रश ध्वर ভাষনানারমারে চলিয়া আনেগা ও স্থাক্ষ দীঘায়ঃ লাভ করেন, অক্তার্কীনুনিগণও আয়ু-র্কোনেতি নিয়ম প্রতিপালনে আরোগ্য ও मीर्घजीतन आश्च रन।

অথ চরকপ্রাত্রভাবঃ।

বদা মৎস্ঠাবভারেণ হরিণা বেদ উদ্ধৃতঃ। তদা শেষক তত্রৈব বেদং সাক্ষমবাপ্তবান । व्यथकीखर्गेङः मभागाग्रुदर्वनक लक्क्वान । একদা স মহীবৃত্তং দ্রষ্ট্রং চর ইবাগতঃ । তত্ত্ব লোকান গদৈপ্র স্তান ব্যথমা পরিপীড়িতান্। ন্থলেষু বছষু বাগ্ৰান খ্ৰিয়মাণাংশ্চ দৃষ্টবান্। তান দৃষ্ট্ৰাতিদয়াবুক্তবেষাং ত্ৰঃথেন ছঃখিত। অনন্ত কিন্তুয়ামাস রোগোপশমকারণম । স্ঞিস্তা স স্বয়ং তত্র মুনেঃ পুরেণ বভূব ১। প্রসিদ্ধন্ত বিশুদ্ধন্ত বেদবেদাক্ষবেদিন: ॥ যতকর ইবায়াতো ন জ্ঞাতঃ কেনচিদ্যত । ত্মাচ্চরকনামাসে বিখ্যাতঃ ক্ষিতিমণ্ডলে ॥ স ভাতি চরকাচায়েন দেবাচায়েন যথা দিবি। সহস্তবদনতা'ংশো যেন ধ্বংসো রুজ'ং কৃত্র । আত্রেয়স্ত মুনেঃ শিষা। অগ্রিবেশাদয়োগ্ভবন্। मुनाबी नक्ष्वरेखन्त कृष्टः ७४: अकः अक्रम ॥ তেবাং তন্ত্ৰাণি সংস্কৃত্য সমাঞ্চত্য বিপশ্চিতা। চরকেণাত্মনো নামা গ্রান্ডাভয়ং চরকঃ কুতঃ ॥

যথন নারায়ণ মংস্থাবতার হট্যা বেদের উদ্ধার করেন, তথন অনস্তদেব সূত্র (শিক্ষা, কল্প, ব্যাকরণ, নিকক্ত, ছন্দঃ (জ্যাতিস) বেদ এবং অথক্রবৈদান্তর্গত সমস্ত আয়ুক্রেদ প্রাথ হন। একদা অন্তদেব ভূত্ৰেশ অবস্তা দৰ্শনাথ চররূপে পৃথিবীতে আগমন করিয়া দেখিলেন যে, ভূমগুৰেৰ লোকসকল বাৰিগ্ৰন্ত হইয়া বেদনায় পরিপীড়িত ২ইতেছে এবং নান, স্তানে মনুষ্যাগণ অভান্ত উৎকৃত্তিত ও মিয়ুমাণ হুইয়া রহিয়াছে। তিনি মানবগণকে এইরূপ ছরবস্থা-গ্রন্থ দেখিয়া অভিশর রূপান্বিত ও তাহাদের ছু:খে ছু:খিত হুইয়া বার্ধি-প্রশমনোপার চিন্তা कतिया, मगाक िछान शत (तम-त्वमान्यतमी হুপ্রসিদ্ধ বিশুদ্ধ মুনির পুত্ররূপে স্বরং পৃথিবীতে আবিভূতি হইলেন। ইনি যে চররূপে ভূমগুলে অবতীর্ণ হইয়াছিলেন, তাহা কেহই জানিতে পানে নাই; একারণ ভাঁহার নাম চুৰক বলিয়া বিখাত হইয়াছে। অনন্তের অংশুসম্ভত চরকাচার্য্য মানব্যগুলীর বর্ণার বিনষ্ট করিয়া, যাহাতে বর্ণারশীভিত মানবগণ **স্বর্গস্থ স্থারগুরু বৃহস্পতিতুল্য পূজা হইলেন হিইতে** পারে, গ্রন্থিয়ে তংপর হউন। পরোপ-

এবং আত্রেয় মুনির শিষ্য অগ্নিবেশ প্রভৃতি মুনিগণ স্থনামে যে সকল তন্ত্র রচনা করিয়া-পণ্ডিতবর চরকমুনি সেই সমস্ত তন্ত্রের সংস্কার ও সমাহার করিয়া স্বনামে (চরক-সংহিতা নামে) একখানি গ্রন্থ প্রণয়ন কবেন |

অথ ধন্বন্তরিপ্রাত্তরি ।

একদা দেবরাজন্ম দৃষ্টনিপতিতা ভবি : তত্র তেন নরা দপ্তা বংধিভিন্তি পুণীডিত[া]।। তান দৃষ্টা কলং। তক্ত দয়য়া প্রিপীডিতম। एग् र्म् काप्यः भएतः। धव छ तिस्ताह ह ॥ ধন্বস্তুরে স্থরভাষ্ঠ ভগবন কিন্দিদ্রচাতে। যোগ্যো ভবসি ভূতানামূপকারপরো ভব । উপকারায় লে'কান' কেন কিং ন কুতং পুরা। ত্রৈলোক্যাধিপতিবিশ্বরভূত্রৎস্তাদিরপরণন ॥ ত্রশ্ব হং পৃথিবীং যাতি কাশীমধ্যে নুপে। ভব। প্রতীকারায় রোগাণামাযুরেনদ প্রকাশয়॥ হ ক্যন্তব্য হারশার্কি,লং সর্বর্গভূত হিত্তপ্রাণ । সমস্ত্রন্থবো বেদং ধরস্তবিম্পাদিশং ॥ रामी ज b'सरमा समजिन्माम सराप्रसिद्ध श्रुता ! আগতা পূধিনীং কাস্থ্যাং ভাতো বাহুজনেশ্বনি 🛭 भाषा ७ (मोऽछतर भारता दिलामाम इति किर्मा । ৰ'ল এৰ বিরাঞ্চিভু**ক্চ**চ'র স্মুম্বত তপ_ন॥ যাত্রন মহতা দক্ষা তা কার্যামকর্মোলুপম। ততো ধরস্তরিলে^পকৈঃ কাশিরা**জোহভিদীয়**েছ ॥ হিতায় দেহিনাং স্বীয়া সংহিতা বিহিতামূল। তায়ং বিভাগিনো লোকানু সংহিতাং ভাষপাঠয়ং ॥

একদা দেবরাজ ইন্দের দৃষ্টি ভূমগুলে পতিত হওয়ায় তিনি দেখিলেন, তথায় মনুষা-গ্ৰ কাৰিসমূহ দারা অভান্তে পরিপীডিত মনুষাগণকে বাাগিপীডিত मग्रावणकः रेक्स्रात्वत् अमग्र হটল। তথন দয়ার্দ্রহদয় ইন্দ্র পরস্তারিকে সম্বোদন কৰিয়া বলিলেন হে প্ৰদুৰ্ভেট ভগ-বন ধ্য়ন্তৰে! আপনি গোগাপাত, ক্ষতএর বাধিবিমুক্ত

কারের নিমিত্ত কোন মহাত্মা কি না করিয়া-ছেন ? ত্রেলোক্যানিপতি বিষ্ণুও লোকহিতার্থ স্বয়ং মংস্থাদি বিবিধরূপ ধারণ কবিয়াছেন। অতএব আপনি ভলেকি গমন পূৰ্বক কাণী-ধানে রাজা হইয়া রোগপ্রতীকারার্থ তথায় আয়ুর্কেদ শাস্ত্র প্রকাশ করুন। এই কথা বলিয়া সর্মলোকহিতৈষী স্থরশার্দ্র ইন্দ্র ধ্যম্ভরিকে সমস্ত আয়র্শেদ উপদেশ প্রদান করিলেন। গ্রন্থরি ইন্দের নিকট প্রত্যক্ষকলপ্রদ সায়ুর্বেদ শান্ত্র অধ্যয়ন করিয়া ভূমগুলে আগমনপূর্বক কাশাধানে ক্ষত্রিরবংশে জন্মগ্রহণ করেন এবং ক্ষিতিমণ্ডলে তিনি দিনোনাস নামে অভিহিত হন। দিবোদাস বাল্যাবনি বিষয় বিরক্ত হইয়া 315 কঠোৰ ভপস্থাচরণে কালাতিপাত করিতে থাকেন। কিন্তু বন্ধা বিশেষ চেষ্টা করিয়া সেই বিষয়বিলভা দিবো-দাসকে কাশার রাজপদে প্রতিষ্ঠিত কবেন। ভদব্ধি তিনি কাশিগ্রাজ নামে বিখ্যাত হন। পরে দিবোদাস কাশিরাজ প্রজাহিতার্থ স্বনামে একখানি সংহিতা প্রণয়ন করিয়া সেই সংহিতা বিষ্যার্থী লোকদিণকে শিক্ষা দিয়াছলেন।

অথ স্থশ্রুতপ্রাত্ত্র্তাবঃ।

অধ জ্ঞানদৃশা বিধামিত-শ্রভ্তমোহবিদন্।
অয়ং ধয়য়য়ি: কাঞ্চাং কাশিরাজোহয়ম্চতে ।
বিধামিত্রো মুনিস্তেধু পুত্রং ক্রশতম্ক্রনান্।
বৎস বারাণসীং গচ্ছ বং বিধেমরবল্লভাম্ ॥
তত্র নামা দিবোদাস: কাশিরাকোহন্তি বাহজ:।
সহি ধয়য়য়ি: সাক্রাদায়ুক্রেদবিদাং বরঃ ॥
আয়ুর্ক্লেদং ততাহারীতা নোকোপকৃতিহেতবে।
সক্রপ্রাদিদরাতীর্বমূপকারো মহামথঃ ॥
পিতৃর্করমাকর্ণা ক্রশতঃ কাশিকাং গতঃ।
তেন সার্ক্রং স্ক্রেড্ড মুনিস্কুশতং ববৌ ॥
অধ ধয়য়য়িং সক্রেড্ড মুনিস্কুশতং ববৌ ॥
অধ ধয়য়য়িং সক্রেড্ড মুনিভিব্লভিঃ স্তুত্ম ।
ভগবন্তং ক্রম্প্রেডং মুনিভিব্লভিঃ স্তুত্ম ॥
কাশিরাজং দিবোদাসং তেহপঞ্চন্ বিস্করাহিতাঃ।
বীগতক ইতি সাহ দিবোদাসো বশোধনঃ ॥

কুলনং পরিপপ্রচ্ছ তথাগমনকারণম্।
তততে স্ক্রুলনার কথমানাস্ক্রুরম্ ॥
তগবন্ মানবান্ দৃষ্টা ব্যাধিতিঃ পরিপীড়িতান্।
কলতে। মিয়মাগাংশ্চ জংতাত্মাকং ক্রি ব্যথা।
আময়নাং শমোপায়ং বিজ্ঞাতুং ব্যমাগতাং॥
আয়ুর্কোল তবানত্মানগাপায়ত্ যততঃ।
অসীকৃত্য বচন্তেমাং নূপতিন্তানুপাদিশং ॥
ব্যাপ্যাতং তেন তে বত্তাজ্ঞাদিশং মুদা।
কালিয়াজং ক্যানীভিরভিনন্দা মুদাবিতাঃ ॥
স্ক্রুলতাতাঃ স্থাসাভিরভিনন্দা মুদাবিতাঃ ॥
স্ক্রুলতাতাঃ স্থাসাভিরভিনন্দা মুদাবিতাঃ ॥
স্ক্রুলতাতাঃ স্থাসাভিরভিনন্দা মুদাবিতাঃ ॥
স্ক্রুলতাতাঃ স্থাসাভিরভিনন্দা মুদাবিতাঃ ॥
স্ক্রুলতাতাঃ স্থাসভিরভিনন্দা ক্রিন্তে ॥
স্ক্রুলতাতা স্ক্রুলতাত্ব ক্রুলতাত্বং স্ক্রুলতা বছিবিতঃ।
তথাবি ভংক্রুলতাত্বং স্ক্রুলতা বছিবিতঃ।
তথাবি ভংক্রুলতা নামা বিগ্যাতং ক্রিনিজনে ॥

বিশ্বামির প্রভৃতি মুনিগণ জ্ঞাননেত্রে অব-গ্ৰত হুইয়াছিলেন যে, বারাণদীধামে সাক্ষাং ধবন্তরি জন্মগ্রহণ পূর্বক তথায় রাজপদে প্রতি-ষ্টিত হট্যা সম্প্রতি কাশিরাজ নামে বিখ্যাত হুইয়াছেন। অনন্তর সেই সুনিগণের মধ্যে বিখামিত্র নিজ পুত্র স্থাতকে কহিলেন, বংস স্থ্রুত। ভূমি হরবন্ধভম্ভান বারাণদীধামে গ্রমন কর, তথায় ক্ষত্রিয়বংশসম্ভূত কাশিরাজ-দিবোদাস অবস্থিতি করিতেছেন; তিনি আয়ুর্কোদ্-বিশারদ স্বয়ং ধন্বস্তরি। অভএব তুমি তাঁছার নিকট আৰুর্বেদ অধায়ন করিয়া জগতের মঙ্গল কার্যো বতী হও। যে হেতু সর্মপ্রাণীর প্রতি দ্য়াই তীর্থ এবং পরোপকারই মহাযক্ত। সুঞ্ত পিতার এই বাকা শ্রবণ করিয়া কাশিধামে গ্রমন করিলেন এবং তাঁহার সহিত একশত মুনিকুমার আরুর্কেদ্বাধায়নার্থ গম্ন করিয়াছিলেন। ক্ষত প্রভৃতি মুনিতনরগণ সকলে বিনয়াবনত হইরা বাণ প্রস্থাশ্রমস্থিত প্রবিগণবন্দিত স্থরশ্রেষ্ঠ ভগবান দিবোদাস কাশিরাঙ্গকে দর্শন করিলেন। যশোধন দিবোদাস মুনিকুমারদিগকে স্বাগত (ভভাগমন-বিবরণ) জিজ্ঞাদা করিয়া তাঁহাদের কুশল ও আগমনের কারণ জানিতে ইচ্ছা করিলেন। তাহাতে মুন্তিনরগণ সংশ্রত দারা এই উত্তর প্রদান করিলেন যে, ভগবন্! মানব-গণকে বাাধিপীড়িত ছঃগার্ত্ত ও ফ্রিয়মাণ দেখিয়া

আনাদের সদয় অভাস্ত বাথিত হট্যাকে, ভক্তন্ত আমরা রোগ এখননের উপায় অবগত হরবা । জন্ম ভবংসমীপে উপস্থিত হুইয়াছে, আপান অন্তর্গ্রহ পূর্বক আয়ুরেক্লোপনেশ এলান করিয় আমাদিগকে চরিতার্থ ককন। কাশিরাভ ঠাহাদের বাকে। প্রতিশত হটয়। সমস্ত আযুর্বেদ উপদেশ দিলেন। মুনিতনরগণ স্মৃতিত হইয়া অভি সম্ভপূৰ্বক কাশিৱাজবাৰণাত আয়ৰ্কেলশন্তে সম্বে জ্ঞানলাভ করিলেন। ভুলনম্ব ভারার সকল মনোরথ হটয়। জয়শিকীদ ছার কাশি-রাজকে অভিনন্দন করিয়া নিজ নিজ গুছে গানন করিলেন। গৃহগ্রনামন্তব প্রথানে স্তম্মত পায় खनाता अकशीन उन्न क्षायम करतम। उर्कात ভাহার অভাদগণ্ড প্রতাকে স্ব স্ব নামে এক এক গানি করিয়া তম প্রয়ন করিয়।ভিত্নে। মুক্তকত ভর্থানি বৃত লোকের স্ত-ক্রত হইয়া-ছিল বলিয় ভাছা 'কা'ত প্ৰলে ক্লাভ নাম ভাতি জিও হইরাছে।

অথ বাগ্ভটপ্রাত্র্হাবঃ।

তা কালে কাত্যত তু বাগ্ডাটো ভিষকা বর ।
প্রান্তকান্ত্র প্রনান বর্ত্তার বিবাপরাঃ ॥
প্রস্থাতার বির জন্তা স্থান্তর ধ্রীন্তর ।
ক্রান্তর বর জন্তা স্থান্তর ধ্রীন্তর ।
ক্রান্তর প্রান্তর স্থান্তর প্রতিক্রিকার ॥
প্রবন্ধার ক্রান্তর প্রান্তর প্রতিক্রান্তর ॥
সাংবাশ্ভাটা ভিষ্ণানন অংশ্ভাই বর্বান ওলে ।
তরকার প্রতিক্রান্তর ভাগেতা গ্রেছাত এর চ ॥
সাংব্র । প্রস্ক্রান লোকান্তর্ভাত বর চ ॥
সাংব্র । প্রস্কুল লোকান্তর্ভাত বর চ ॥
সাংব্র । প্রস্কুল লোকান্ত্রান্ত্রতার প্রদর্শিতন ।
ক্রান্তর প্রান্তর স্ক্রান্তর সাংক্রান্তর প্রদর্শিতন ।
ক্রান্তর প্রান্তর সাক্রান্তর সাক্রান্তর প্রদর্শিতন ।

আনন্তন কিছক ল গত হবলে বিতীয় ব্যক্তরি
সদৃশ ভিষয়র বাগ্ডিট জনাগ্রহণ করেন। তিনি
মহালাজ মান্টিরেল লাজসভায় চিকিংসক পদে
প্রিটিত আকিন বিলন চিকিংসাগ্রহ গুল্মন করেন। ংকেত প্রথমমূহেল মলে অস্তাক্ষণালয়
সংক্তিত নামক প্রথম বিশেষ প্রায়ক, ইত চলকস্থান্তালি বিলিক গ্রহ বিশেষ প্রায়ক, ইত চলকস্থান্তালি বিলক গ্রহ কংসা নেকাশে প্রদাশিত
তথ্যাছে মাতি ক্ষান্তা ইছা প্রয়ম ক্রিম জগতের
ব্যান্তা উপক সাক্ষ ক্রিমান্ডান্

इन्द्र श्रि**रक्तिमः श्रद्धः अ**श्रिद्धन्ति । तथ

অথ শারীর-প্রকরণম্।

তত্ৰ গৰ্ভোৎপত্তিক্ৰমমাহ—

চিকিৎসারাং শরীরী হাধিকৃতঃ। স শরীরী বংশাং-পক্ততে, তরোধরিত্থ গর্ভোৎপত্তিক্ষমাহ। ু গর্ভোৎ-পত্তিভূমিক্ত রক্তবলা শ্রী।

দেহীই চিকিংসাতে অধিকৃত, অতএব সেই দেহী যেরূপে উংপন্ন হয়, তাহা অবগত করাইবার নিমিত্ত গর্ভোংপত্তিক্রম বর্ণন করা ঘাইতেছে। শতুমতী স্ত্রী গর্ভোংপত্তির ভূমি-স্থরূপে, একারণ প্রথমতঃ শতুমতী স্ত্রীব লক্ষণ বর্ণিত হইতেছে।

রজন্দলান্তরপমাহ-

ৰাদণাৰংসরাচুদ্ধা পঞ্চাশংসমা: বিয়:। মাদি মাদি ভগৰারা প্রকৃতিত্বাব্রিং আবেং॥ আর্থ্রংশ্রাক্সাদৃত্যু বোড়া রাজ্যা। গাঠগ্রুণ্যোগাস্থাস এব সময়: সূচঃ॥

ন্ত্ৰীলোকের বাদশবৎসর ব্যঃক্রমের পর হইতে পঞ্চাশং বংসর ব্যঃক্রম পর্যান্ত বাতঃ-বতুই প্রতিমানে তিন দিন করিয়া আর্ত্তব (রজঃ) গোনিমুণ ছারা প্রক্রত হয় সেই রজঃআবারন্ত দিবসাবধি ষোড়শ রাত্রি পর্যান্ত অতুকাল, এই কালকে গর্ভগ্রহণের উপস্কুক কাল বলিয়া জানিবে।

গর্ভাশয়স্য সরূপমাহ—

শধানাভাাকৃতিবোঁনিজ্ঞাবর্ত্তা সা চ কীর্ত্তিতা।
তক্তাকৃতীয়ে তাবর্ত্তে গর্ভনখ্যা প্রতিষ্ঠিতা।
বধা রোহিতমংক্তক্ত মুধ্য ভবতি রূপতঃ।
•তৎসংক্তানাং তথারূপাং গর্ভশব্যাং বিদ্ববৃধিত।

জনমর্থ:। গর্জশব্যারা মুখং রোহিত্যৎক্তত্তেব ভবতি। বধা চ রোহিত্যৎক্তত্ত স্থিতির্জনে ভবতি, তথা পিরাশরপকাশন্তমধ্যে গর্জশব্যারা: স্থিতির্জবতি; রূপমণি তত্তেব ভবতি। বধা রোহিত্ত মুখং বর-মাশন্তর মহানিত্যর্থ:।.

যোনির আকৃতি শখনাভির আকৃতিসদৃশ তিনটি আবর্ত্তবিশিষ্ট, এ কার্ত্তব্য ইহাকে আবর্ত্তবিশিষ্ট, এ কার্ত্তব্য ইহাকে আবর্ত্তবিশ্ব বলা যায়। এই জ্ঞাবর্ত্তা ঘোনির ভূতীর আবর্ত্তে গর্ভশ্বনা অবস্থিতি করে। পণ্ডিতগণ সেই গর্ভাশরের সংস্থিতি এবং আকৃতি রোহিত মংস্থের ভূলা বলিরা বর্ণন করেন। রোহিত মংস্থের মুণের ভূলা বলিরা বর্ণন করেন। রোহিত মংস্থের মুণের ভূলা ইহার মুণ্ ও রোহিত মংস্থা যেরূপ জ্লমণো অবস্থিতি করে, গর্ভাশরে ভক্তব্য পিত্তাশয় ও প্রশাসকের মধ্যে অবস্থান করে এবং রোহিতমংস্থের ঘেরূপ মুণ স্বর্ন্নায়ত কিন্তু মুণ-গছ্বর বিস্তৃত্ত, সেইরূপ গর্ভাশরের ও মুণের স্বার অক্লা. মনোর বিস্তৃতি অবিক।

গর্ভাবতরণক্রমমাহ—

ক'মানিথুনসংৰোগে শুদ্দশাশিতশুক্রজঃ। গ্ভঃ সংজাহতে না্ধাঃ স জাতো বাল উচাতে॥

কামাভিভূত দ্বীপুরুবের সংবোগে শুদ্ধার্থব ও শুদ্ধ শুদ্ধান হইলে । তাহা হইতেই শুদ্ধ গর্ভ সঞ্জাত হয়। সেই গর্ভ ভূমিঃ হইলে তাহাকে বালক বলা যায়।

কঠো ত্রীপুংসয়োর্নোগে মকরঞ্জেজবেগতঃ। মেদ্রবোক্তভিসংঘর্ণাচ্ছরীরোত্মানিলাহতঃ। পুংসঃ সর্ব্বদর্গরিক্ষং রেতো জাবয়তেহণ তং। বায়ুমে হনমার্গেণ পাতরতাক্তনাভগে॥ তৎ সংক্রত্য ব্যান্তমূপং যাতি গর্জাশরং প্রতি। তত্ত গুক্রবদায়'তেনার্শ্বনেন যুতং ভবেৎ ।

খতুকালে স্ত্রী ও পুরুষের সংযোগে কাম-বেগবশৃতঃ শিশ্প ও যোনি পুরুগুনঃ সংঘর্ষিত হইলে পুরুষের সমস্ত শারীরিক তেজঃ, বায়ু-কর্ত্তক আহত হইয়া সর্কেশরীরব্যাপী শুক্রকে বিগলিত করে। অনস্তর সেই বিগলিত শুক্র বায়ুকর্ত্তক শিশ্পার দিয়া রমণীর যোনিতে পতিত হইলে তাহা বিবৃত্যুগ গর্ভাশয়ে গমন করিয়া তথায় শুক্রবলগত আর্ত্তবের সহিত একীভূত হয়।

দিনে বাততৈ নিয়তং সক্চতাস্কং যথা।

ক্ষত্যে বাতীতে নায়ান্তি যোনিং সংবিষতে তথা।

ক্ষতে বজোদৰ্শনাৎ যোড়ণনিশাস্থকে ক'লো।
যোনিব্ৰ ধ্বাদ্বাম্।

গেমন দিবসাবসান হইলে পদ্ম সন্ধুচিত হয়, তদ্ধাপ ঋতুকাল (বোড়শনিশাঝ্মক কাল) অতিক্রান্ত হইলে নারীগণের যোনিও (জরায়ুর ম্বার) সন্ধুচিত হইয়া থাকে।

বীজেহন্তব বিষুদা ভিন্নে ছৌ জীনো কৃক্ষিমাগতে। যমাবিত্যভিধীয়েতে ধক্ষেতরপুর,সরৌ ॥ ধক্ষন্তদিতরোহধর্মতে) পুরংসরৌ ধরোঃ। এতেন বমৌ ধর্মাধর্মাভাগিং ভবত ইতার্থঃ।

অভান্তরত্ব বারু খারা বীজ (রেতঃ)
বিভক্ত হইলে স্থীলোকের কুন্দিদেশে ছুইটা
জীবের উৎপত্তি হয়। তাহাদিগকে যুমজ
কহে। এই যুমজ জীব ধর্ম ও অধর্ম হইতে
উৎপন্ন হয়।

আধিক্যে রেতসঃ পুত্রঃ কন্তা স্তাদার্জবেহধিকে। নপুংসকং তয়োঃ সাম্যে যথেচছা গারমেশ্বরী॥

গর্ভাশরে শুক্রের আদিকো পুত্র ও আর্ব্রের আদিকো, কল্যা জন্মে এবং শুক্র আর শোণিডের সাম্যে নপুংসক জন্মগ্রহণ কবিয়া থাকে; ইহা পরমেখনের অভিগাহা-হুসারে সম্পন্ন হয়।

স্তোগৃহীতগর্ভায়া লক্ষণমাহ—

শুক্রশোণিতয়োর্যোনেরস্রাবোহ**ধ এমোন্ত**বঃ। সক্ষিসাদঃ পিপণসা চ গ্লানিঃ <mark>স্কৃত্তি</mark>র্ভগে ভবেৎ ॥

ন্তোগৃহীতগর্ভা নারীর লক্ষণ বলা যাই-তেছে। যথা—যোনি হইতে শুক্ত-শোণিতের আবরোধ, আন্তিবোধ, উক্দেশের অবসরতা, পিপাসা, গ্লানি ও যোনির ক্রি ইয়।

অথ তস্যা এবোত্তরকালীনলক্ষণমাহ—

শুনরোমুর্থককে গৈছে আরোমরাজ্যদ্গমন্তথা। অক্লিপক্ষাণি চাপান্তাঃ সংমীলান্তে বিশেষতঃ। ছর্দরেৎ পথাতুক্ চাপি গন্ধান্ত্রন্তিতে শুভাং। প্রসেকঃ সদনকৈব গণ্ডিগা লিক্স্চতে॥

অতঃপর গর্ভবতী দ্রীর উত্তরকালীন লক্ষণ সকল বলা যাইতেছে। যথা,—স্তন-মুখের ক্বঞ্চ-বর্ণতা, রোমরাজির উদ্গম, অক্ষিপক্ষের সন্ধী-লন, স্থপথ্যসেবনেও বমন, স্থগন্ধ আত্মাণেও উব্বেগ, মুখের প্রসেক (জল-উঠা) এবং শরীরের অবসয়তা।

গর্ভে মাসি মাসি যদুভবতি তদাহ—

গর্ভাশরে নিপতিতং যাদৃক্ শুক্রং তথার্ত্তবম্ ।
তাদৃগের প্রবীভূতং প্রথমে মাসি তিউতি ॥
মঙ্গুং পিরুক্তক্তেংক্তং পঢ়ামানো দিতীয়কে ।
কললন্তমহাভূত-সমুদায়ো খনো জ্বেং ॥
তৃতীয়ে মাসি শিরসো হস্তরোঃ পাদয়োক্তথা ।
পিতিকাঃ পঞ্চ সিধান্তি সুক্ষাকারয়রান্তনোঃ ॥
সর্বাণ্যকাল্যপাকানি চতুর্বে স্থাঃ কুটানি হি ।
হল্মবাক্তভাবেন বাজাতে চেতনাপি চ ॥
তক্ষাচতুর্বে গর্ভক্ত নানা বস্তুনি বাস্থাতি ।
ততা দিহলয়া যং স্থানারী দৌহ্ন দিনী মতা ॥
দৌহ্ন পাক্তরা কুন্তং কৃণিং পঞ্জঞ্চ বামনম্ ।
বিকৃত্যক্ষনক্ষং বা পুরং নারী প্রস্কাতে ॥
বতঃ স্থী দৌহ্ন দং প্রাপ্য বীধারস্তং চিরায়ুব্য ।
পুরং প্রস্কাতে তক্ষাৎ তল্মে বাঞ্ভিতমর্পন্তে ॥

ইক্সিমার্থানসৌ যান্ বান্ ভোক্ত মিছেতি গভিণী।
গর্ভবাধান্তরাৎ ভাসাং ভিষগান্ততা লাপরেং॥
(ভোক্ত মুপ্ভোক্ত মিভার্থ:।)
বেষু যেবিক্রিয়ার্থের দৌরু দি সাবমানিতে।
প্রস্থাতে স্বতং সার্ভিং তব্মিংস্ত মিল্ডের ॥
পক্ষে মানসং বঠে বৃদ্ধিনাতিপ্রবৃধাতে।
সর্বাধান্তান্ত্যাপালানি ভূপং বাক্তানি সপ্তমে॥
ওজোহন্তমে সক্ষরতি মাতাপুত্রো মৃহঃ ক্রমাং।
তেন তৌ মানমুদিতৌ স্তাতাং জাতো ন জীবতি।
ন জীবতান্তমে জাতন্তব্যোজা ন দ্বিরং যতঃ॥
নবমে দশ্যে মাসি নারী বালং প্রস্থাতে।

এক'দশে ছাদশে বা ততোহস্তত বিকারতঃ ॥

গর্ভ, মাদে মাদে দেরপ অবস্থাপর হর, তাহা লিখিত হইতেছে। শুক্র ও শোণিত গভাশয়ে যেরূপ নিপতিত হয়, প্রথম মাসে ঠিক দেইরূপ অবস্থাতেই পাকে। তংপবে দ্বিতীয়মাসে সেই শুক্রণোণিত, বায়ু পিত ও কফ কর্তৃক পচামান হৈইয়া কলল মর্থাং ঘন হয়। তৃতীয় মাসে হস্তবয় পদ্ধর ও মস্তক এই পাঁচটা অবয়বের পাঁচটা পিণ্ড জন্মে . দেই পিণ্ডে অঙ্গের অবয়ব সকল স্কাভাবে থাকে। চতুর্থ সাদে সমস্ত অঙ্গ ও উপাঙ্গ পরিকৃট হয়। এই মাদে ফদয়েব বাক্তভাব হেতু চেতনাও প্রকাশ পার। সেই জন্মই গ্রভ নানা বস্তু বাষ্ট্র। করে। তৎকালে গভিণী विकामशा दश विनशा छाडारक मिक्नी करह। (গর্ভাবস্থায় স্ত্রীলোকের আহার বিহারাদিতে যে অভিলাষ জন্মে, তাহাকে দে স্ক কহা यात्र)। (मोर्क मिनीत (मोर्क में अर्ग ना इटेल সম্ভান কুক কুণি (ফুলো) খঞ্জ বামন বিকৃত-নেত্র বা নেত্রহীন হয়। দৌহ্দ প্রাপ্ত হইলে গর্ভিণী বীর্যাবান দীর্ঘায়ঃ সম্ভান প্রসব করে. অতএব তাহাকে বাঞ্ছিত বস্তু প্রদান করিবে। मोर्क मिनी नातीत एव एवं डेक्सियार**र्थ** अर्थाः রূপ রুস গ্রু স্পূর্ণ বা শব্দ ইহাদের যে কোন বিষয়ে অভিলাষ জন্মে, গর্ভপীড়া জন্মিবার আশক্ষায় তাহা অবশু পূর্ণ করিবে। গভিণীর বে °যে ইন্দ্রিয়ার্থের অভিলাষ পূর্ণ না হয়, গভন্ত সন্তানের সেই সেই ইন্দ্রিরে পীড়া জন্ম।

পঞ্চ गाम प्रम अल्या। यह गाम दक्षि জ্বো। সপ্তমমানে অঙ্গ প্রভাঙ্গ সকল স্পষ্ট-রূপে প্রকাশ পায়। মন্ত্ৰ্য নামে ওজোপতি (সর্ববাতুদার) জন্মে; সেই ওজঃ ক্রমান্বয়ে মুহুমা, হ: মাতা ও পুত্রে সঞ্চরণ করে, অর্থাং মাতার ওজঃ কখন স্স্তানে এবং সম্ভানের ওজ: কখন মাতায় সঞ্চরণ করে। ্সেই জন্মই গভিণী ও গর্ভন্ত সন্তান কখন মান, কখন প্রকৃষ্ণ হয় অর্থাৎ গভিণীর ওজোধাত যথন গভস্থ সম্ভানে সঞ্চরিত হয়, তথন গভিণী মান ও গর্ভন্ত সন্তান প্রকৃত্ব এবং সন্তানেশ ওড়ঃ যগন গভিণীতে সঞ্চরিত হয়, তখন সন্তান মান ও গভিণী প্রফুল্ল হইয়া থাকে। সইন মাসে ওজোধাতুর স্থিরতা না থাকা প্রায়ক্ত ঐ মাসে সন্তান ভূমিষ্ঠ হইলে প্রায়ই বাচে ন: (কিন্তু ভূমিষ্ঠ হইবার কালে যদি ওজোগাতু সস্তানে থাকে, তাহ। ২ইলে সম্ভান বাচিতে পাবে)। নবম দশ্ম একাদশ বা দ্বাদশ মানে সম্ভান ভূমিত হয়, ইহার অধিক বিলম্ব হইলে বুঝিতে হটবে যে, বিকাৰ প্রাপ্ত হটয়াছে বালয়াই সন্তান ভূমিষ্ট হইতেছে না।

গর্ভে যদঙ্গং প্রথমং ভবতি তদাহ—

নিরে। ভবতি চাক্ষপ্ত প্রথমিতাং শৌনকঃ।
নিরক্তেবোপজায়ন্তে প্রধানানীক্রিয়ানি বং ॥
প্রকার জায়াত পূর্বং কুত্রীযোগ্রনদানি ।
বৃদ্ধেশ্চ মনসন্চাপি বচন্তং স্থান্যীরিত্য ॥
পারান্যা ইতি প্রাপ্ত পূর্বং না ভিসমূত্রং।
প্রাণা যার স্থিতো দেহং বন্ধরজ্ঞসন্যুহণ ॥
পারিপাদা ভবেং প্রকার মার্কভেষ্যুন্য মতা।
ক্রেন্য সকলান্টেস্তার প্রিপাদা প্রয়া যতা ॥
প্রথম কায়তে কোজা তিতা স্বাক্সম্বা
ব্রহং কুক্ষয়াশ্স গোত্রো মুনিপুক্র।
স্বর্গাকান্যুপাকানি যুগবং সম্বন্ধি হি।
ক্ষারাপোভারে মতং ধ্রন্তরেরিদ্য ॥

আত্রভাবুদনে ভবন্ধি: বৃগপন্ধাংসাহিনজ্ঞাদরে।
সন্ধান্ত ন পূথক্ পৃথক্ ভস্তরা পৃষ্টাত এব কৃটা: 1
এবং সর্ভসমূহবে খবরবাঃ সর্বে ভবন্ত্যেকদা
দক্ষাঃ স্কাতরা ন তে প্রকটভানারান্তি বৃদ্ধিং গভাঃ ।
মজ্জানর ইভ্যাদিশদেন খক্কেশরমজ্ঞবস্কুরবৃত্তানি
গৃহন্তে।

भौनक बरमन, शर्स्ड चर्छा मखक रहा, কারণ মস্তক্ট প্রধান প্রধান ইন্সিরের স্থান। ক্বতবীর্য্য সুনি কহেন, অগ্রে হান্য জন্মে, যেহেতু ছাদয়ই মন ও বৃদ্ধির স্থান বলিয়া ক্রথিত আছে। প্রাশ্রনন্দন বলেন, অগ্রে নাভি উৎপন্ন হয়, কারণ প্রাণ নাভিদেশে থাকিয়া ও উত্মৰুক্ত হইয়া সমস্ত দেহকে বন্ধিত করে। মার্কণ্ডের মুনির মত এই যে, মানবের সমস্ত ক্রিয়ার সাধক বলিয়া অগ্রো হস্ত-পদই জন্মে। মুনিপুরুব গৌতম বলেন, শরী-রের মধাদেশ হইতেই সকল অঙ্গের উৎপত্তি কোষ্ঠ (প্রীরের মধাদেশ) হয়, অভএব অত্যে জন্মিয়া থাকে। কিন্তু ধ্যম্বরির মত **এই যে, সমস্ত অঙ্গপ্রভাঙ্গই এককালে জন্মে,** সন্মভাবে থাকে বলিয়া প্রথম অবস্থায় বঝিতে পারা বায় না। বেমন অত্যন্ত কচি আমের ত্বক কেশ্র মজ্জাত্বক অঙ্কুর ও বোটা প্রভৃতি এককালে জনাইলেও তাহা অতীব সুক্ষ বিধার পুথক্ অকুভূত হয় ন:; কিন্তু পুট হুইলে সম্ভ বুঝা যায়, গছও সেইরপ পুরু হইলে সমস্ত বুঝা মায়।

অথ গর্ভস্য জীবনোপায়মাহ—

গর্ভন্ত নাভিনাড়া ডু নাড়ী রসবহা ক্লিয়া:। সংলগ্না তেন গর্ভন্ত বৃদ্ধিন্তবৃতি নিত্যশা:॥

গভিণীর রসবহা নাড়ী গর্ভস্থ সম্ভাবের নাভিনাড়ীর সহিত সংলগ্ন থাকে, সেই জন্তই গভিণীর আহার-রস দারা গর্ভস্ত সম্ভাবের শরীর দিন দিন বাড়িতে থাকে। মলারজাদবোগাচ্চ বারোঃ প্রশাসত চ। বাতমূত্রপুরীবাণি ন গর্ভন্থ: করোতি হি।

মলের অলম হেতু এবং পকাশরস্থ বার্র অলমোগ বশতঃ গর্ভস্থ সন্তানের মল মূত্র ও অধোবার নির্গত হয় না

জরারূণা মুখে চছরে কঠে চ ককবেটিতে। বারোমার্গনিরোধাচ্চ ন গর্ভন্ত: প্ররোধিতি।

গর্ভন্থ সন্তানের মুখ জরারু খারা আচ্ছন্ন এবং কণ্ঠদেশ কফ খারা বেষ্টিত থাকার ও বায়ুর মার্গনিরোধ হেতু গর্ভন্থ সন্তান রোদন করিতে পারে না।

নিশ্বাসোচ্ছাসসংক্ষোভ-স্বপ্নান্ গর্ভোহধিগচ্ছতি। মাতৃনিশ্বসিজোচ্ছ্বাস-সংক্ষোভশ্বপ্রসম্ভবান্॥

নাতার নিশ্বাস-প্রশ্বাস-সঞ্চলন ও নিদ্রা ত্বারাই গভত্ত সন্তান নিশ্বাস-প্রশ্বাস-সঞ্চলন ও নিদ্রা প্রাপ্ত হয়, অর্থাং মাতা নিশ্বাসাদি যে যে ক্রিয়া করেন, গভত্ত সন্তানও সেই সেই ক্রিয়া প্রাপ্ত হয়।

সন্নিবেশঃ শরীরণিং দন্তানাং পাতনোন্তবৌ। তলেষসম্ভবো যাচ রোমামেতং স্বভাবতঃ॥

হস্ত পদাদি শ্রীরাবরবের যে সন্ধিবেশ অর্থাং রচনবিশেষ, দস্ত সকলের পতন ও উদ্ভব এবং হস্ত-পদ-তলে রোমের অন্থংপত্তি এই সকল স্বভাবতঃ হইয়া থাকে অর্থাং এই সকল বিষয়ের কোন নিমিত্ত-কারণ নাই জানিবে।

অথ গর্ভবতীক্বত্যাক্বত্যানি।

গভিণী প্রথমাদকং প্রকৃষ্টা ভূষিতা খুচিঃ। ভবেচকু ক্লাবরধর। শুক্লবিপ্রার্কনে রতা ॥ ভোজ্যত্ত মধুরপ্রায়ং স্লিম্বং ক্লড্যং দ্রবং লঘু। সংস্কৃতং দীপনীয়ন্ত নিত্যমেবোপ্যোক্ষরেং॥

গভিণী গভগ্রহণের প্রথম দিন হইতেই প্রস্টুচিত্ত, ভূষণে ভূষিত, শৌচাচারে প্রিত্র-দেহ, শুক্রবন্ত্রধারিণী এবং শুকু ও বাল্লণের সেবার রত হইবে। আর প্রত্যহ মধুররস বিশিষ্ট, স্নিগ্ধ, হানরপ্রাহী, দ্রববছল, লঘুপাক, স্থসংস্কৃত ও অগ্নির দীপ্তিকারক ভোজ্য দ্রব্য ভোজন করিবে।

ভর্মিনী নতু কুর্মীত ব্যারামমণতর্পণম্। ব্যবার্ক ন সেবেত ন কুর্যাদতিতর্পনম্ । রাত্রো লাগরণং শোকং বানস্তারোহণং তথা। রক্তমোক্ষং বেগরোধং ন কুর্যাদ্রংক্টাসনম ॥

গর্ভবতী স্ত্রী ব্যাষাম, উপবাষাদি 'অপতর্পণ, স্পিথ্ধ ভোজনাদি অতিতর্পণ, মৈথুন বা রাত্রি জাগরণ, শোক, যানারোহণ, রক্তমোক্ষণ, মল-মৃত্যাদির বেগণারণ ও উৎকটাসন (উঁচু হইয়া উপবেশন) করিবে না।

দোৰাভিথাতৈৰ্গভিণ্য যো যো ভাগঃ প্ৰশীদাতে। স ম ভাগঃ শিশোন্তম্য গৰ্ভস্কম প্ৰশীদ্যতে ॥

বাতাদি দোষ খারা বা কোনরূপ অভিঘাত খারা গভিগীর যে যে অঙ্গ প্রেপীড়িত হয়, গর্ভস্থ শিশুরও সেই সেই অঙ্গ প্রেপীড়িত হইয়া থাকে।

মলিনাং বিকৃতাকারাং হীনালীং ন স্পূণেৎ জিরম্।
ন জিজেদিসি ছুৰ্গন্ধং ন পজেন্তরনাত্রিরম্ ॥
বচীংসি নাপি শূৰ্যাং কর্ণরোরত্রিরাণি চ।
নামং পর্যবিতং শুক্ষং ভূজীত কুম্বিতং ন চ ॥
টেতাগ্রশানবৃক্ষংশ্চ ভানাংশ্চাপায়শক্ষরান্।
বহিনিক্রমণং ক্রেধং শুক্তাগারক বর্জ্জেং॥

গর্ভবর্তী স্ত্রী, মলিনা বিক্লতাঙ্গী বা হীনাঙ্গী কোন স্ত্রীলোককে স্পর্ণ করিবে না; কোনস্বপ হর্গন্ধ আন্ত্রাণ করিবে না; নয়নের অপ্রিয় বস্তু দর্শন করিবে না; শ্রবণকটু কোন বাক্য শুনিবে না; পর্যুষিত (বাসি) শুক্ষ বা পচা বস্তু ভোজন করিবে না, এবং চৈত্য * ও শ্মশান বৃক্ষ, সর্ব-প্রেকার অষশস্কর ভাব, বহিনিক্রমণ (বাটীর বহির্দেশে গমনাগমন) ক্রোধ ও জনশৃত্য গৃহ বর্জন করিবে।

* পত্ৰকলাখিত যে সৃক্ষ দেবতাধিষ্টিত বলিয়া প্ৰামে
স্থপ্তিত হয়, তাহাকে চৈত্য বলে। বৌদ্ধদিগের দেবালয়বিশেষকেও চৈত্য বলা যায়।

নোচৈজ্ঞ রাম্ন তৎ কুর্ব্যাদ্ বৈন গাঁজে বিনশ্রতি। তৈসাজ্যমোহর্ত্তনক নাত্যর্কং কাররেদপি ॥ নামুমান্তরণং কুর্ব্যামাজ্যুকৈঃ শরনাসনম্। এতাংস্তা নিরমান্ সর্বান বন্ধাৎ কুর্বীত শুর্বিবণী॥

শুর্বিণী স্ত্রী উচ্চৈঃস্বরে চীৎকার বা এমন কোন কার্য্য করিবে না, হাহাতে গর্জ বিনষ্ট হইতে পারে। অত্যর্থ তৈলাভ্যঙ্গ বা হরিজাদি ধারা গাত্রমর্দন করিবে না। কঠিন আচ্ছাদনে আচ্ছাদিত এবং অত্যুক্ত শ্ব্যা ও আসনে শ্ব্যন বা উপবেশন করিবে না। শুর্বিণী স্ত্রী অতি বন্ধ পূর্বক এই সকল নির্মা প্রতিপালন করিবে।

অথ সূতিক:-গৃহাকৃতি:।

'অষ্টহস্ত'য়তং চ'রা চতুইস্ত'বিশালিকম্ । প্র'চীয়'রমুদগ্র'র' বিদ্ধা'ৎ স্থতিকাগৃহন্॥

দীর্ঘ ৮ হাত, প্রস্থ ৪ হাত এবং পূর্ব বা উত্তরে ধার বিশিষ্ট করিয়া স্কুচাক স্থৃতিকাগার নির্দাণ কবিবে।

(মহাভারে)

দশহস্তায়তং চান্ধ পঞ্চস্তবিশালকন্।
প্রাণ্ডারং দক্ষিণভারং বা ক্যাং স্তিক'গৃহন্
মতাস্তবে—স্তিকাগৃহ ১০ হাত দীর্ঘ, ৫
হাত প্রস্থ এবং তাহা পূন্ব বা দক্ষিণভারী করিয়া
নিম্মাণ কবিবে।

অথাসমপ্রসবায়া লক্ষণমাহ—

জাতে হি পিখিলে কুকো মুক্তে হাণয়বন্ধনে। সপুনে জঘনে নারী বিজেরা প্রসবোৎস্থকা। আসন্ধ্রপ্রসবায়ান্ত কটাপৃঠত্ত সব্যাথম্। জবেন্মুক্ত: প্রবৃত্তিক মুক্তে চ মলস্য চ॥

যথন গভিণীর কুন্দিদেশ শিথিল, হাদর বন্ধন মুক্ত †, জঘন কটী ও পৃষ্ঠদেশ বাথাস্ক

† গর্ভন্থ সম্ভানের নাজিনাড়ী মাতার হদয়ে ব**ছ** খাকে, প্রসবকালে উহা ধসিরা বার। হর এবং মল ও মৃত্রের মৃত্র্যুহ্ণ প্রবর্তন হইতে থাকে, তখনই জানিবে, তাহার প্রদব কাল নিকটবর্ত্তী।

তৈলেনাজ্যন্তপাত্রাং তাং সংস্নাতামুক্তবারিণা। ববাগং পাররেৎ কোফাং মাত্ররা ফুতসংযুতার ॥

আসন্ধ প্রস্বা গভিনীকে উত্তমরূপে তৈল মাথাইরা এবং উষ্ণজ্ঞলে স্থান করাইয়া তাহাকে মতসংস্কৃত যবাগু পান করাইবে।

কৃতে!পথানে মৃত্তভিবিস্তীৰ্ণে শৱনে শনৈঃ। আভুগুসক্ষী চোন্তানা নাৱী তিঠেদ্বাথায়িতা ।

বিস্তীর্ণ কোনল শ্যায় বালিশ পার্তিরা তাহাতে প্রস্ববেদনান্বিতা গভিণীকে শোলাইবে এবং তাহার উক্ত্যুর আভূগ সংকোচিত ট করিয়া তাহাকে উত্তানভাবে [চিং করাইয়া] রাথিবে!

অথ জন্মিত্রী।

চতক্ষেংশক্ষনীয়াত প্রাবণে কুণনা হিতাং।
বৃদ্ধাং পরিচরেয়ুস্তাং সমাক্ছিন্ননগাং স্থিতং॥
অপত্যমার্গং তৈলেন সমজ্জা সমস্ততং।
একা তু তাম কুজনে প্রবাহম্বেতি ত'ং বদেং॥
অবাধা মা প্রবাহিতাং প্রবাহম্বেন বাপা যদি।
প্রবাহম্বাং শবৈং পূর্বং প্রগাচক ততং পরন ॥
তত্যে গাচ্তরং গর্ভে যে'নিষারমূশাগতে।
অপরাস্থিতো গ্রে। যাবং পত্তি ভূত্রেল॥

প্রদাব-করান্দ্রীকার্য্যে দক্ষ্, সাহসা ও হিতা-কাজ্জী এরপ চারি জন প্রাচীন স্ত্রীলোককে অর্থাং যাহারা জনেকবার প্রসব করাইরাছে এবং জেনেকবার প্রদাব করাইতে দেখিয়াছে ভাহাদিগকে, গভিণীর পরিচর্য্যা করিতে দিবে। পরিচর্য্যাকালে ঐ সকল স্ত্রীলোকের নথ কাটিতে হইবে এবং ভাহাদের মধ্যে একজন গভিণীর যোনিম্বার উত্তমরূপে ভৈলাভ্যক্ত করিয়া বলিবে, স্কুত্রেণ! কুরুন কর, কিন্তু যদি ব্যুথা না থাকে ভাহা হইলে কুন্থন করিও না। যথন বাথা

উপস্থিত হইবে তখনই কুন্থন করিবে এবং প্রথমে ক্রমে ক্রমে অল্প অল্প বেগ দিবে পরে প্রগাঢ় বেগ দিতে থাকিবে। সম্ভান যখন যোনিম্বারে আসিয়া উপস্থিত হইবে, তথন যতক্ষণ না অপরা (গর্ভবেষ্টক চম্ম) সহিত সম্ভান ভূমিষ্ঠ না হয়, ততক্ষণ প্রগাঢ়তর বেগ দিবে।

অথ ব্যথারহিতায়াঃ প্রবাহণাদ্ বৈগুণামাহ—

মূকং বা বৰিবং কৃ**ক্তং খাসকলেক্যাখিতম** । সূত্ৰে অন্তত্তুং বালমকালে তৃ প্ৰবাহণাখ ॥

গভিণী অকালে অর্থাং প্রাসব বেদনা যথন না থাকে তথন কুন্থন করিলে সন্তান বোবা, কালা, কুন্থ, শিথিলতন্তু এবং শ্বাস কাসক্ষয়ায়িত হয়।

অথ বালস্য জন্মোত্তরবিধিঃ।

अथ वाटन मम्बर्भास् विषये हे निर्देश हुन।। यटेशन कुलनुक्कती-नानकात्रभावाः॥

বালক ভূমিষ্ঠ হইলে, বৃক্তু কুলন্ত্রীগণ কুল-ক্রমান্ত্রদারে যে সকল আচার ব্যবহার করিয়া থাকেন, সেই সকল কার্য্য করিবে।

অথ প্রদূতায়৷ নিয়মানাহ—

প্রস্ত হিত্যাহারং বিহারঞ্চ স্থাচরেও। বার্থামং নৈপুন্ ক্রোধং শীতদেবাং বিবর্জ্জেও॥ মিথাচারাও প্রতিকারা যো বার্থিকপ্রায়তে। ন কুক্তাও সাধ্যোহ্যারা ভবেও তও প্রায়াচরেও॥

প্রদানন্তর প্রস্থা হিতকর আহার বিহার সমাচরণ করিবে। শ্রমজনক কার্যা, মৈথুন, ক্রোধ ও শীতলসেবন পরিবর্জন করিবে। কারণ অস্কুচিত আহার-বিহারাদি দ্বারা প্রস্থতার যে কোন ব্যাধি জন্মে, তাহাই ক্লক্কুসাধ্য বা অসাধ্য হয়, অভএব প্রস্থভার হিতকর আহার বিহারাদি সেবন করা কর্তব্য ।

^{ৰ্}অথ প্ৰদূতায়া নিয়<mark>মসম</mark>য়াবধিমাহ-—

সর্কতং পরিশুদ্ধা স্যাৎ বিশ্বপথ্যারভোজনা। বেদাভাঙ্গপরা নিত্যং ভবেন্সাসমতন্ত্রিতা॥ (সর্ক্তঃ পরিশুদ্ধা অনবস্ট্রন্তুক্রধিরা।)

প্রস্থা স্ত্রী সাবধান হইয়া অল্পরিনাণে স্পথ্য স্লিগ্ধ তবা ভোজন করিবে। একমাদ কাল প্রতিদিন স্বেদ ও অভ্যঙ্গপরায়ণ হইবে এবং সর্মতঃ পরিশুদ্ধ থাকিবে অর্থাং প্রস্কৃত তুই করির প্রেণ্ড করিয়া পরিদ্ধার পরিচ্ছন্ন থাকিবে।

প্রস্তা দার্দ্ধমাসাত্তে দৃষ্টে বা পুনরার্ভ্তে। স্তিকানামহীনা স্যাদিতি ধ্বস্তুরেম তম্॥

প্রসবের দেড়নাস পরে অথবা প্রসবের পরে বখন পুনর্কার রজোদর্শন হইবে, তখন প্রস্তা স্তিকা-নাম-বর্জ্জিতা হইবে অর্থাৎ তখন আর তাহাকে স্তিকা নামে অভিহিত করা হইবে না ।

ব্যপত্রবৃং বিশুদ্ধাঞ্চ বিজ্ঞায় বরবর্ণিনীম্। উদ্ধং চতুভো মালেভো নিয়মং পরিহারতেও ॥

প্রস্থা স্থ্রী উপদ্বরহিত ও বিশুক্ষরীর হইয়াছে বুঝিতে পারিলে চারিমাদের পর প্রস্তোপযোগী নিয়ন পরিত্যাগ করিবে অর্থাৎ তথন ইচ্ছামুরূপ আহার বিহারাদি করিবে।

অথ ধাত্ৰীলক্ষণমাহ---

পীতার যদি বালস্য বিদ্ধাতিপ্রমাতরম্।
হংবিচার্য্য গুণান্ দোৱান্ কুর্য্যাদ্ধাত্রীং তদেদৃশীম্॥
প্রবর্ণাং মধ্যক্ষমং সক্ষীলাং মৃদিতাং সদা।
গুছত্বধাং বছকীরাং সবংসামতিবংসলাম্॥
বাধীনামরসম্ভটাং কুলীনাং সক্ষনাস্থ্যজাম্।
কৈতবেন পরিত্যক্ষাং নিজপুত্রদুলং শিশৌ॥

বালককে শুন্তপান করাইতে যদি ধাত্রী জর্থাৎ উপমাতা নিষ্কু করা আবশ্রুক হর, তাহা হইলে বিশেষরূপে দোষ শুণ বিচার করিয়া এইরূপ শুণাঘিত ধাত্রী নিরোগু, করিবে অর্থাৎ ধাত্রী যেন স্বজাতীয়া, মধ্যবয়স্কা (রবতী), সাধুশীলা, সদা প্রফুল্লচিন্তা, শুক্তগ্না [যাহার শুন্ত বাতাদিত্ত নহে], বহুহগ্না, সবংসা (সম্ভানবতী), অতিবংসলা, স্বাধীনা, অরেই সম্বন্তা, সংকুলজাতা, সংলোকের কন্তা, কাপটাহীনা এবং শিশুর প্রতি পুত্র-নির্বিশেষে ক্লেইকারিণী হয়।

অথ নিষিদ্ধাং ধাত্ৰীমাহ—

শোকাকুলা কুখান্তা চ আন্তা ব্যাধিমতী সদা।
অত্যুচ্চা নিতরাং নীচা স্থুলাতীব ভূপং কুশা॥
গভিণী অরিণী চাপা লবোরতপরোধর।
অজীর্ণভোজিনী চাপা তথা পথাবিবর্জ্জিতা॥
আসন্তা কুমকার্য্যে তু হুংগান্তা চঞ্চলাপি চ।
গতাসাং গুরুপানেন শিশুর্ভবৃতি সাময়ঃ॥

শোকাকুলা, কুধার্ত্তা, পরিশ্রান্তা, সর্বাদা বাাধিবুলা, অতি লম্বাকৃতি বা অতি থবাকৃতি, অতি ফুলাঙ্গী বা অতি কুশাঙ্গী, গর্ভিনী, জর-পীড়িতা, লম্বোন্নতপরোধরা, অজীর্ণভোজিনী, মুপথবের্জিতা, কুদকার্যো আসকা, গ্রংগার্ত্তা ও চঞ্চলচিত্তা; এইরূপ গাত্রীর স্কুন্তপান করিলে শিশু রোগগ্রস্ত হয়।

অথ বালস্য স্তন্যপানবিধিঃ।

তত্র মাতা প্রশক্ষারী চারবরা পুরোম্থী।
উপবিভাগনে সম্যাপ্ত দ্বিশব্দমস্থা।
প্রকাল্যেবং পরিপ্রাব্য মন্ত্রাভাগমভিমন্ত্রিভম্।
উদ্মৃথং শিশুং ক্রোড়ে শনৈঃ সন্ধ্যার্থ্য পাররেব।
(মাতেডুাগলক্ষণং ধাত্রী চ।)

বালককে শুগুপান করাইবার বিধি।— বালকের মাতা বা উপমাতা পরিষ্কৃত বস্ত্র পরিধানপূর্বক প্রশান্তাকী ও পূর্বাভিমুখী হইরা আসনে উপবেশন করিবে। তৎপরে দক্ষিণ স্তন জল দারা প্রকালিত করিরা তাহার
হগ্ধ কিঞ্চিৎ গালিরা ফেলিবে। তদনস্তর
শাস্তবিহিত মন্ত্র দারা অভিমন্ত্রিত করিরা
শিশুকে উত্তরাভিমুখে ক্রোড়ে ধারণ করিরা
ধীরে ধীরে স্তক্তপান করাইবে।

অথান্যত্বে বৈগুণ্যমাহ—

অস্রাবিতং স্তনং বাল্ঃ পিবন্ স্তম্ভেন ভূয়সা। পূর্ণস্রোতা বিষয়াস-কাসৈর্ভন্তি পীড়িতঃ॥

স্তম্পান করাইবার পূর্বে বদি শুনত্র কিঞ্চিৎ পরিপ্রাবিত না করিয়া শিশুকে শুগু-পান করান হয়, তাহা হইলে শিশুর মুখে একবারে অধিক তথ্য প্রবেশ করায় বালকের বমি, খাস ও কাস উপস্থিত হয়।

অথ জনস্যাঃ ক্ষীরাভাবে ধাত্র্যাশ্চা-লাভে প্রকারমাহ—

ক্ষীরসাক্ষ্যতরা ক্ষীরমাজং গব্যমথাপি বা।
দক্ষাদা ভক্তপর্ব্যান্তের্বালেন্ড্যো বীক্ষ্য নাত্ররা॥
ক্ষীরসাক্ষ্যতরেতি—যতঃ শিশোঃ ভক্তমেব সাক্ষ্যং
ভবতি নম্বাদিকম্। আ ভক্তপর্ব্যাণ্ডেরিতি—বাবৎ
ভক্তপানস্য বোগ্যতা তাক্দিতি।

বদি জননীর স্তনে ছগ্ধ না থাকে এবং উপস্কু ধাত্রীও না পাওরা বাঙ্গ, তাহা হইলে শিশু বে পর্যান্ত স্তন্তপানের যোগ্য থাকে, সে পর্যান্ত তাহাকে ছাগছ্গ্ধ বা গবাছগ্ধ উপস্কু মাত্রার পান করাইবে। বেহেতু ছগ্ধপোধ্য শিশুর ছগ্ধই দেহামুক্ল, অল্লাদি তাহাদের সাক্ষ্য নহে।

অথ বালস্যান্ধপ্রাশনসম্যঃ।

যথোক্তবিধিনা বালং মাসি যঠেহট্টমেহপি চ। অন্তঃ সম্প্রাশয়েৎ কিঞ্চিৎ ভতত্ত্বর্দ্ধয়েৎ ক্রমাৎ ॥

ষষ্ঠ বা অন্তম মাসে শাস্ত্রোক্ত বিধানাম্থসারে বালকের অন্ধ্রপ্রাশন করাইবে অর্থাৎ তাহাকে অতি অন্ধ মাত্রায় অন্ধ ভোজন করাইবে। পরে বরোবৃদ্ধি-অন্থুসারে অন্ধের মাত্রা অন্ধ অন্ধ করিয়া বৃদ্ধি করিবে।

অথ বালস্য পরিচর্য্যাবিধিঃ।

বালমকে স্থাং দ্যাল্ল চৈন ভৰ্জন্মেৎ কচিছ।
সহসা নোধয়েলৈ নাযোগামুপবেশয়েং ॥
(অহোগ্যমুপবেশনাসমর্থম্ ।)
নাকৃষ্য স্থাপন্নে ক্রোড়ে ন ক্রিপ্রং শরনে ক্রিপেং।
রোদনের কচিছ কার্য্যে বিধিমাবশুকং বিনা ॥
(আবশুকো বিধিঃ ভেষজদানতৈলাভ্যক্রাম্বর্জনাদিঃ ।)
তচ্চিত্তমমুবর্জিত তং সদৈবালুমোদনেং।
সংস্বিত্মনা এবং নিত্যমেবাভিষ্কতে ॥
বাভাতপতড়িদ্বৃষ্টি-ধুমানলজলাদিতঃ।
নিরোজস্থানতভাপি রক্ষেদালং প্রয়ন্তঃ ॥

বালককে অতি যত্নপূর্বক ক্রোড়ে ধারণ করিবে, যেন তাহার কোন কষ্ট না হয়। তাহাকে কদাচ ভৰ্জন করিবে না। নিদ্রিত থাকিলে হঠাৎ জাগাইবে না। যত দিন বসিতে সমর্থ না হয়, ততদিন তাহাকে বসা-ইবে না। সহদা আকর্ষণপ্রব্যক ক্রোড়ে স্থাপন অথবা অতি শাঘ্ৰ শ্যায় শ্য়ন করাইবে না। विट्य श्रांकन जिन्न अथीर खेरधनानानि কারণ ব্যতিরেকে ভাহাকে কথন কান্সাইবে না। তাহার চিত্তের অমুরূপ কার্য্য করিবে। তাহাকে সর্বাদ। প্রফুল রাখিবে। কারণ মন প্রমুদ্ধ থাকিলে ভাহার প্রীরও দিন দিন বুদ্ধি পাইতে থাকিবে। বারু সূর্য্যাভপ বিদ্যুৎ বৃষ্টি ধূম অধি জল এবং উচ্চ ও নিয় স্থান হইতে বালককে অতি रक्रभुक्तिक त्रका করিবে।

বালস্য সভাবাদ্ধিতান্যাহ—

অত্যক্ষাৰ্থনং প্ৰানং নেত্ৰয়োরঞ্জনং তথা। বসনং মৃত্যু যৎ তচ্চ তথা মৃত্যকুলেপন্ম। জন্মপ্ৰভৃতি প্ৰানি বীলক্ষেতানি সৰ্ক্ষা॥

তৈলাভ্যক্ষ, উম্বর্জন (তৈলাভ্যক্ষর পরে গাত্রে হরিপ্রোদি মর্দ্দন), স্থান এবং নেত্রে অঞ্জনগারণ, কোমল বস্ত্র পরিগান ও চন্দনাদি মৃত অমুলেপন এই গুলি জন্ম হইতেই বালকের পক্ষে বিশেষ হিতকর।

বাল্যাদেরবধিমাহ—

বয়য় তিবিধং বালাং মধ্মং বার্ককং তথা।

ভিবৰোড়শবর্ণজ্ঞ নরো বালো নিগছাতে।

তিবিধং সোহপি ছন্ধালী ছন্ধালালী তথালভুক্।

ছন্ধালী বর্ধপর্যক্তং ছন্ধালালী শরক্ষম ॥

তন্ধ্যক্তরং স্যাদলালী এবং বালপ্রিধা মতং।

মধ্যে বৈড়েশসপ্রত্যোম ব্যামং কবিতো বুবৈং॥

চতুর্ধা মধ্যমো বৃদ্ধিরু বা প্রবিংশতো মতং॥

চতুর্ধা মধ্যমো বৃদ্ধির বা প্রবিংশতো মতং॥

তত্ত ক্রমেণ ক্রমণ স্বাংশ ক্রমাদিকং।

ক্রমাধালিক্রিরবলং ক্রমিধাতুরসাদিকং।

ক্রমাদালিভিং প্রিন্তা বৃদ্ধা ভ্রমিনং।

ক্রমাদালিভিং প্রিন্তা বৃদ্ধা ভ্রমিনং।।

বয়ন ত্রিবিন, য়ণা—বালা মধবেরস ও
বার্দ্ধনা। ১৫ বংশন বয়স পর্যন্ত মন্থ্য বালক
নামে অভিহিত হয়। আহারতেদে বালক আবার
ভিন প্রকার হইয় থাকে, য়ণা—তয়পায়ী ত্থায়ভোজী ও য়য়তোজী। এক বংশর বয়স পর্যন্ত
বালক তয়পায়ী; ২ বংশর বয়স পর্যন্ত তয়ায়ভোজী; তংপারে য়য়ভোজী। ১৬ বংশর হইতে
৭০ বংশর বয়স পর্যন্ত মন্ত্রা মনাম-বয়য় বলিয়
অভিহিত হয়। এই মধামবয়য় বাজি আবার
চারি ভাগে বিভক্ত, য়থা—বর্দ্ধনশীল, ম্বা.
পূর্বীর্যা এবং ক্ষয়াঘিত। তয়াধো বিংশতি
বংশর বয়স পর্যান্ত মন্ত্রা বর্দ্ধনশীল থাকে অর্থাং

তাহাদের অঙ্গ প্রত্যঙ্গাদি সমস্ত বাজিতে থাকে; বিশ বংসর পর্য্যস্ত বুবা, চল্লিশ বংসর পর্য্যস্ত পূর্ণবীর্যা (এইকালে মন্থ্যের রসবক্তাদি সর্প্রকার ধাতু, চক্ষুংকর্ণাদি ইক্রিয়, বল ও উৎসাহ পরিপূর্ণ থাকে)। তংপরে সত্তব বংসব বয়স পর্য্যস্ত মন্থ্যা ক্রমে ক্ষীণ অর্থাৎ এই কালে তাহাদের রক্তরকাদি সমস্ত ধাতু, ইক্রিয়ু বল ও উৎসাহাদি ক্ষীণ হইতে থাকে। রসাদি ধাতু, ইক্রিয়ু, বল ও শুক্রের দিন দিন ক্ষয় হওয়ায় সত্তর বংসরের পর মাংসের শিথিলতা, কেশের পকতা ও মন্তকে টাক্ হয়। বৃদ্ধ মানব কাসখাসাদি পীড়ায় পীড়িত ও সকল কার্যে; অসমর্থ হয়

বাল্যে বিবৰ্জতে শ্লেমা পিত্তং স্যান্ধধ্যমেহধিকম্ । বৰ্ণজ্যকে বৰ্জতে বায়ুৰ্বিচাৰ্য্য তদ্ধাক্রমেৎ ॥

বাল্যবয়সে শ্লেমা, মধ্যবয়সে পিত এবং বার্নক্যে বায়ু বর্দ্ধিত হয়। অতএব বাল্যাদি বয়ক্রেম বিবেচনা করিয়া চিকিৎসা করিবে।

বালাং বৃদ্ধিশহবিমে থা কাবৃষ্টিং গুক্রবিক্রমৌ। বৃদ্ধিং কর্মেন্সিফঞ্চতো জীবিতং দশতো হুদেং ॥

বালা, বৃদ্ধি, কান্তি, মেনা, 'হক্, দৃষ্টি, শুক্রা, বিক্রম, বৃদ্ধি, কশ্মেক্রির, মন এবং জীবন; প্রতিদশ বংসরের যথাক্রমে ইহাদের স্থান হইয়া থাকে অর্থাং দশবংসরে বরুসের পর বালারে স্থান, বিশ্বংসরের পর বৃদ্ধি স্থাস, ত্রিশ বংসরের পর কোন্তির স্থাস, চল্লিশ বংসরের পর মেধার স্থাস, প্রকাশ বংসরের পর অর্করের স্থান, মত্তর বংসরের পর প্রক্রের স্থান, বংসরের পর বিক্রমের স্থাস, নব্বই বংসরের পর বৃদ্ধির স্থাস, একশত বংসরের পর কল্মোক্রয়ের স্থাস, ১১০ বংসরের পর মনের স্থাস, এবং ১২০ বংসরের পর জীবনের হাস হয়।

অথাতঃ শরীরদংখ্যাবাকরণং শারীরং ব্যাখ্যাস্যামঃ।

শুক্রশোপিতং গর্ভাশ্যন্থ সাক্ত তিবিকারসংস্থিতি গর্ভ ইত্যুচাতে। তচ চেত্রনাবন্ধিতং নাধুবিভজতি, তেজ নেং পচতি, আধা কেন্দ্রন্তি, পৃথিবী সংস্ক্রাকাশং বর্জাতি এবং ব্রিভঃ স খনা ইন্ত্রপাদ্জিকালে ব্রাকাশ কর্মানিত সংজ্ঞান লাভতে।

অতঃপর আমর। শরীরসংখ্যাবিবরণ নামক শারীরাধায়ে ব্যাথ্য করিব।

জীবাল্পা ও মহদাদি চতুর্কিংশতিতরের ।
সহিত গভাশরন্থ শুক্রশোণিত, সংমুদ্ধিত হইয়া
গভানামে অভিহিত হয়। বায়ু সেই চেতনাবস্থিত শুক্রশোণিতকে দোষ ধাতু, মল ও অঙ্গপ্রত্যঙ্গবিভাগে বিভক্ত করে, তেজ তাহাকে
পাক করে অর্থাং একরূপ হইতে অন্ত রূপে
পরিণত করে, জল তাহাকে আর্দ্র রাথে, পৃথিবী
তাহাকে সংহতাবয়ব অর্থাং মৃক্তিবিশিপ্ত করে
এবং আকাশ তাহাকে উর্দ্ধ অধ্যঃ ও তির্যাগ্রভাবে
বন্ধিত করিয়া থাকে। এই প্রকারে বন্ধিত
হইয়া গর্ভ ধণন হস্ত পদ জিহ্বা আণ কর্ণ ও
নিত্যাদি অঙ্গবিশিপ্ত হয়, তুপন তাহাকে শ্রীর
নামে অভিহিত করা যায়।

তক্ত পকার্যাপাকানি জাথা হক্তন প্রত: ।
মন্তকাদভিধায়ত্তে শিষ্যাঃ শৃণুত বত্বতঃ ॥
আদামকং শিরং প্রোক্তং তহুপাকানি কুন্তল': ।
তক্তান্তমন্তলুকক ললাটং রুষুগং তথা ॥
নেত্রবয়ং তয়োরস্তর্বর্ত্তেতে বে কনীনিকে ।
দৃষ্টিবয়ং কুকপোলা বেতভাগো চ বন্ধানী ॥
পক্ষাণাপাকে) শব্দো চ কণো তচ্ছকুলীব্যম্ ।
পাণিবয়ং কপোলো চ নাসিকা চ প্রকীন্তিতা ॥
ওঠাধরো চ হক্তাণো মুখং তালু হুনুব্যম্ ।
দক্তাণ্ড দক্ষবেষ্টো চ রসনা চিবুকং গলং ॥

চত্কিংশতি তথ্ব যথা—মূলপ্রকৃতি, মহান্, অংকার,
পঞ্চন্তাত এই আটিটি প্রকৃতি এবং একাদশ ইন্দ্রিয় ও পঞ্
মহাভূত এই মোনটি বিকৃতি; এই সম্লুৱে চতুকিংশতি
তথা

স্কুল নাক্সাহসারে সেই শরীরির অঙ্গ ও উপাঙ্গ স্কল অবগত ইইয়া মন্তক ইইতে সমস্ত অবগব বর্ণন করিতেছি, শিষাগণ! যত্র পূর্বক শ্রবণ কর। যথা—শরীরিন্দ আন্ত অঙ্গ মন্তক। মন্তকের উপাঙ্গ নথা—কেশ, মন্তিক, ললাট, জ্বয়, চকুৰ্ম্ব , নেত্রব্বের অন্তর্বর্তী কনীনিকা-ঘয় (অক্সিতারা), দৃষ্টিম্বর, ক্রফগোলকম্বর, শুরুন গুলম্ব (চকু্ম্ব রের শেতবর্ণ ভাগ), বম্ম ঘ্র (নেত্রছেদ্ম্ব য়), অক্সিপন্স, নেত্রকোণ্ম্বর, শহ্মঘ্র (ললাটের অন্তি) এবং কর্ণম্বর, শঙ্কুলিম্বর (কর্ণের ছিদ্র), কর্ণপালিম্বর, গগুরুর, নাসিকা, ওচ্চ, অধর, স্ক্রণীম্বর (ওঠের প্রান্ত ভাগ), মূথ, তালু, হস্ত্ম্বর (গণ্ড স্থলের উপির ভাগ), দন্ত, দন্তবেষ্ট, জিহ্বা, চিবুক (অধরের অধ্যাভাগ) ও গলদেশ।

দ্বিতীয়মঙ্গং গ্রীবা তু যয়। মুদ্ধা বিধার্য্যতে।
তৃতীয়ং বাহযুগলং তহুপাঙ্গান্তথ ক্রবে ॥
ত্রোপরি মতৌ স্বন্ধো প্রগত্তো ভবতব্বধং।
কন্ষোণিযুগ্মং তদধং প্রকোঠযুগলং তথা ॥
মণিবন্ধো তলে হন্তো তয়োশ্চাঙ্গুলয়ো দশ।
নথাশ্চ দশ তে স্থাপ্যা দশ চেছ্যোং প্রকীর্তিহাং॥

দিতীয় অঙ্গ গ্রীবা, যাহা দারা মস্তক ধৃত হইয়া পাকে। তৃতীয় অঙ্গ বাহুৰ্গল। তাহার উপাঙ্গ বলা যাইতেছে,—বাহুর উপরিভাগে স্কর্ম্বর, স্করের নিমভাগে প্রগণ্ডদ্বর (স্কর্ম ইউতে কূর্পর পর্যান্ত বাহুভাগ), প্রগণ্ডদ্বরের অবোদেশে কূর্পরদ্বর (করুই), কূর্পরদ্বরের নিমে প্রকোঠ্ছ্মর (কূর্পর ইউতে মণিবন্ধ পর্যান্ত বাহুভাগ), মণি-বন্ধমর (করগ্রান্থিয়), করতল্ম্মর, হস্তম্মর, এই হস্তম্বরে পাঁচটা করিয়া দশটা অঙ্গুলি, অঙ্গুলি দশটীতে নথ দশটী ও ছেন্তা নথ (নথের যে অংশ ছেদ্ন করিবার যোগা) দশটী।

চতুর্থমকং বন্ধন্ত ততুপাকান্তথ করে।
ন্তনৌ পুংসন্তথা নার্য্য বিশেষ উভরোরয়ম্॥
বৌবনাগমনে নার্যাঃ পীবরৌ ভবতঃ ন্তনৌ।
গর্ভবত্যাঃ প্রস্তায়ান্তাবের ক্রীরপুরিতৌ॥

হালয়ং পুগুরীকেণ সদৃশং স্থানধামুখম।
লাগ্রগুরিকসতি স্থানজ্ঞ নিমালতি।।
আশরস্তং তু জীবক্ত চেতনাস্থানমৃত্যমন্।
অভন্তমিংগুমোরাধ্যে প্রাণিনঃ প্রস্থান্তি হি।।
চেতনাস্থানমৃত্যমন্তি জনমন্তিপ্রায়ঃ—
"চেতনানামধিষ্ঠানং মনো দেহল্চ সেক্রিয়ঃ।
কেশলোমনধাগ্রান্তমনুজবন্তগৈর্বিনা।।"
ইত্যুক্তবতা চরকেণ সকলং শরীরং চেতনাস্থানমৃত্যম্।
তদপেক্ষরা হালয়ং নিশেবতক্তেনাস্থানমিতি।
কক্ষরোর্বক্ষসং সন্ধী জক্রশী সমৃদ্যক্তে।
কক্ষে উত্তে সমাধ্যাতে তরোঃ স্থাত্থি ব্জ্কণ্যে।

চতুর্থ অঙ্গ বক্ষ। তাহার প্রতাঙ্গ বর্ণন করা যাইতেছে—পুরুষ ও নারী এই উভয়েরই ছুইটি করিয়া স্তন , কিন্তু নারীগণের বিশেষ এই যে, যৌবনকালে ভাহাদের স্তনম্বয় স্থলতন হয় এবং গভবতী ও প্রস্থতা নারীগণের স্তনম্বয় ক্ষীর-(স্তন-ত্র্ম)-পূর্বিত হইয়া থাকে, এরূপ भूत्रत्यत इरा ना । क्नर--- এই উপা**क्र**ी जात्-মুখে থাকিয়া জাগ্রং অবস্থায় পদ্মেৰ স্থায় বিকশিত থাকে এবং নিদ্রিত অবস্থায় মৃদ্রিত হয়। এই আশ্রুটী জীবগণের উৎক্রপ্ট (বিশেষ) চেতনাস্থান, এ কালণ ইহা তমোগুণ দানা অভি-বাপ্তি হইলে প্রাণিসমূহ নিদ্রাভিত্ত হইয়া থাকে। সদয়কে উৎকৃষ্ট চেতনাস্থান বলিবার তাংপর্য্য এই : যে, সমত্ত শরীরই চেতনার স্থান বটে, চরকমুনিও বলিয়াছেন যে, মন এবং ইন্দ্রিয়ের সহিত সমস্ত দেহই চেতনার স্থান , কেবল কেশ, লোম, নখাগ্র ও মলমূত্রের গুণ চেতনার স্থান নহে। কিন্দু সর্কাপেক। ধ্রুয় বিশেষ-চেত্রনাস্থান। কক্ষর (বাত্মুল) ও বক্ষ ইহাদের মন্যদিশ্বর, জক্র (কণ্ঠের উভয় পার্শ্বস্থ অস্থিষয়), কক্ষম্বয় (বগল-ৰর) ও বজ্জপ্ৰয়।

উদরং পঞ্চলকাক্ষং বঠং পার্যন্তরং মতম্।
সপ্ঠরংশং পৃঠন্ত সমস্তং সপ্তমং শুতম্।
ডপাকানি চ কথান্তে তানি লানীহি বত্বতঃ।
শোণিতাক্তায়তে স্থান নামতো সদ্যান্ত।
রক্তবাহিশিরংশাং স মূলং আতো মহবিভিঃ।
সদমীধামতোহধণ মূপ্যুদো রক্তাফনভঃ॥

অধা দক্ষিণতকাপি হলয়াদ্ বক্তঃ স্থিতি:।
তৎ তু রঞ্জকপিওস্য স্থানং শোণিতজ্ঞং মতম্ ॥
অধন্ত দক্ষিণে ভাগে হলয়াৎ ক্রোম তিষ্ঠতি।
জলবাহিশিরামূলং তৃষ্ণাচ্ছাদনকৃষ্ণতম্ ॥
ক্রোম তিলকম্। এতৎ তু বাতরক্তজম্। অতাবৃদ্ধনাগ্ভট:—

***বক্তাদনিলসংযুক্তাৎ কালীয়কসমূত্তরঃ ॥'' ইতি

পঞ্চম অঙ্গ উদর। বর্চ অঙ্গ পশ্বিষয়।
সপ্তম অঙ্গ পৃষ্ঠবংশের সহিত সমস্ত পৃষ্ঠ। তাহাদের উপাঙ্গ সকল বলা যাইতেছে। যথা—রক্ত
হইতে উৎপন্ন প্লীহা হৃদরের অধােভাগে বামপার্দ্ধে অবস্থিতি করে। মুনিগণ কর্তৃক বর্ণিত
হইয়াছে যে, এই প্লীহা রক্তবাহিশিরাসকলের
মূল। সদযের অধােদেশে বামপার্দ্ধে শােণিতফেনছাত কুপ্রুস্ অবস্থিতি করে। সদরের
অনােদেশে দক্ষিণপাথে শােণিতজাত যরুং অবস্থিত, ঐ যক্কং রক্তকনামক পিত্রের স্থান। ক্দরের অণােদেশে দক্ষিণ পাথে ক্লোম থাকে, এই
ক্লোমই জলবাহিশিরাসমূহের মূল; ইহা তৃষ্ণানিবারক। বারু ও রক্ত হইতে ক্লোম জন্মে।
এ বিষয়ে বৃদ্ধ বাগ্ভটও বলেন যে, বায়ুসংশুক্ত
রক্ত হইতে কালীরক (ক্লোম) উৎপন্ন হয়।

নদন্দোণিতয়ে। দ্রে'দ্র্কয়ে।বুপান জনেৎ।
তৌ তু পৃষ্টিকরো প্রোক্তা তঠনস্থত নেদ্যা।
উক্তা: দান্ধান্তয়ো ব্যামাঃ পুংদানপ্রাণি ক্রিভিঃ।
অন্ধনানেন কীনানি নোদিতোহন্তানি নিন্দিশেও।।

্মদ ও রক্তের সারভাগ হইতে বৃক্ষর জন্ম। সেই বৃক্ক তুইটা ২ইতে উদ্রক্ত নেদ্রে পোষণ হইয়া পাকে। অন্ধনাড়ী পুরুষের সাড়ে তিন ব্যাম এবং স্ত্রীলোকের তিন ব্যাম।

উত্কত কটা চাপি ত্রিকং ব্**কিন্ড ব্জন**ণী।
কঙৰাপাং প্ররোহঃ স্থানেট্রোহধনা বীর্যানুত্রোঃ।
দ এব গর্ভস্তাধানং কুর্যান্ত্রভিলারে প্রিয়:।
কথনাভাাকৃতিবোনিক্রাবর্তা দা চ কাতি চা ॥
ভক্তান্তর্তীয়ে ছাবন্তে গর্ভদ্যা প্রতিষ্ঠিতা।
বর্ষণী ভবত সারাহ ককান্তে মান্সমনদাম ॥
বাষ্যবাহিশিরাধানী মটো টেঃ পৌক্ষাব্রে।
ভবত মান্য স্ববহুত সাজং স্থাচ্চতুরস্কুলম ॥

তত্র স্থাবনরভিত্র: শথাবর্জনিভান্ত তা:।
প্রবাহিণী ভবেৎ পূর্বা সার্জান্তুলমিতা মতা ।
উৎসর্জনী তু তর্বা সা সার্জান্তুলসন্মিতা।
ততা অধ্য সংবরণী ভাদেকান্তুলসন্মিতা।
অর্জান্তুলপ্রমাণত বুবৈত পুমুব্য মতম্।
মলোৎসর্গত মার্গোহর পারুদেহে বিনিষ্মিতা,

উপুক (মলাশয়), কটী, ত্রিক (মেরুদণ্ডের নিম্ন দেশ), বস্তি ও বজ্জপদ্বয়, এবং কণ্ডরাসমু-হের মূল-মেট্র, যাহা বীর্যা ও মূত্রের নির্গমন মার্গ। এবং যাহা স্ত্রীলোকদিগের গর্ভাশয়ে গর্ভের আধান করিয়া থাকে। স্ত্রীলোকের যোনি শঙ্খনাভির স্থান্ধ তিনটা আবর্ত্তবিশিষ্ট, সেই আবর্ত্ত যোনির ভৃতীয় আবর্ত্তে গভাণয় অব-স্থিতি করে। কফ, রক্ত, মাংস ও মেদের সার অংশ হইতে মুক্তর (অওওকে বছর) উৎপর হয়, ঐ মুদ্দরয়ই বীর্যবোহি-শিরার আধার এবং উহ। পুরুষত্বকারক। সমস্ত গুদানাড়ীর পরিমাণ সাড়ে চারি অস্কুলি, ভাহাতে শঙ্গাবত্তের স্থায় আকারবিশিষ্ট তিনটা বলি আছে। তন্মধ্যে প্রথম বলির নাম প্রবাহণী, দেড় অঙ্গুলি ইহার এমাণ। তাহার অধোভাগে উৎসক্ত্নী নামক দিতীয় বাল, ইহারও পরিমাণ েড় অঙ্গুল। তাহার অণোদেশে সংবরণা নামক তৃতীয় বলি, ইহার পরিমাণ এক অন্ধুলি। গুণোষ্ঠ অদ্ধান্ধুলি প্রমাণ বালয়া পাণ্ডিতগণ কত্তক বাণ্ড ২ইয়াছে। এই গুহদেশ মণ্ডাগ কার্বার ান্মিত নিম্মিত হইয়াছে।।

ংপুংসং প্রোণৌ শ্বভৌ যৌ ডু.টৌ নিত্রে চিচ বে:বিতঃ।
তরোঃ কুকুলরে জাতাং সক্ষিনী অসম্ভন্ম।
তহপাসানি চ জমো জাত্মনী পিণ্ডিকান্ধান।
জ্ঞানে বে ঘূটিকে পার্থী তলে চ প্রপান তথা।
পাদাবসুলায়ত্তত দশ তাসাং নথা দশ ॥

পুরুষের প্রোথছর, দ্রীলোকের নিতম্বন্ধর; পুরুষের যে উপাঙ্গকে প্রোথ বলা যায়, তাহাকেই দ্রীলোকের নিতম্ব বলা গিয়া থাকে। এই উভয়ের মধ্যে অর্থাৎ প্রোথছয়ের বা নিতম্বন্ধর মধ্যে কুকুন্দর (নিতম্বন্থ আবর্ত্তাকার গর্ভাব্য) অবস্থিত। অন্তমাঙ্গ সক্থিছর। তাহার উপাঙ্গ সকল বলা হইতেছে, বথা—জাত্ম্বর (হাঁটু), পি'ডিকাছর (জাত্মর অধ্যস্থ মাংসল প্রদেশ), জঙ্গাছর (গুল্ফাবধি জাত্ম পর্যান্ত স্থান), ঘূটিকা-ছর (গুল্ফরর), পাক্ষিম্বর (গুল্ফের অধো-দেশ), পদতলম্বর, প্রপদম্বর (পাদাগ্র), তুই পদে পাঁচটী করিয়া দশটী অঙ্গুলি এবং প্রত্যেক অঙ্গুলিতে একটা করিয়া দশটী নথ।

বিভারে। ত ত্বন্। তত থবেংপ্রবৃত্ত প্রক্রণাণিতভাভিপচানানত ক্রীরতেব সন্তানিকা: সপ্ত হচো ভবন্তি। তাসাং প্রথমবিভাসিনী নাম, বা সর্ব্বর্ণান্ধব-ভাসরতি, পঞ্চবিধাঞ্চ ছোমাং প্রকাশয়তি, সা ব্রীহেবিংশ-তিভাগেষষ্টালশভাগপ্রমাণা সিশ্বপন্তকটকাবিষ্ঠানা; ছিতীয়া লোহিতা নাম বেডেশভাগপ্রমাণা তিলকালকভাছবালা-ধিষ্ঠানা; তৃতীয়া বেতা নাম ছালশভাগপ্রমাণা চর্মাললাজ-গল্লীমশকাবিষ্ঠানা; চতুগী তাল্লা নামাইভাগপ্রমাণা বিবিধ-কিলাসক্ষাধিষ্ঠানা; পঞ্চমী বেদিনী লাম ব্রীহিপঞ্চাগপ্রমাণা কুষ্ঠবিসর্পাধিষ্ঠানা; বঞ্চী রোহিনী নাম ব্রীহিপঞ্চাগপ্রমাণা কুষ্ঠবিসর্পাধিষ্ঠানা; বঞ্চী রোহিনী নাম ব্রীহিপ্রমাণা প্রস্থাপচার্ব্রের্মিপাললগভাধিষ্ঠানা; সপ্রমী মাংস্থানী প্রস্থাপচার্ব্রের্মিপাললগভাধিষ্ঠানা; সপ্রমী মাংস্থানী প্রস্থাপচার্ব্রের্মিপাললগভাধিষ্ঠানা; বঞ্চী রোহিনী নাম ব্রীহিক্ষর্মাণা ভগল্ববিদ্র্যাশহিষ্টানা। মন্তর্গে বিচ্নালয় ব্রুম্বিদ্রালয় বিশ্বতিত্রমভাগোন্যত্র্মাণাক্ত অসুটোদরত্রনান্য। ব্যুমত্রং প্রমাণাক্ত অসুটোদরত্রনান্য। ব্যুমত্রং প্রমাণাক্ত অসুটোদরত্রনান্য। ব্যুমত্রং প্রমাণাক্ত অসুটোদরত্রনান্য ব্যুমত্রং প্রমাণাক্ত ব্যুম্বাদ্যান্য ব্যুমত্রাক্তর্মান্য ব্যুম্বাদ্যান্য বিদ্যান্য বিদ্যান

অতঃপর আমন ত্বক, কলা ও ধাতু প্রভৃতির বিস্তার বর্গন কানে। হয় পাক করিলে ত,হার উপর যেমন সন্তানিকা (সর্) জন্মে, গর্ভাশয়স্থ উক্র-শোগিতও সেহালারে পরিগত হইবার কালে বিতাদি স্বার্গ্য প্রেকান্ত প্রকারে প্রচামান হওয়ার, তাংগতে সন্তানিকাবং ত্বক ভব্মিয়া থাকে।

ত্বক্ সপ্তসংগ্ৰাক, তন্মব্যে প্ৰথমা ত্বক্ অব-তাসিনী নামে অ,ভ**হিত, এই ত্বকেই প্ৰাজক** পিত্ত ত্বাসা গোৱাদি সক্ষপ্ৰকাৰ বৰ্ণ অব-ভাসিত হয় এবং পঞ্চবিদ ছায়া ও প্ৰভা *

 ^{*} চায়া ও প্রভা একং, ৬বে ডভয়ের প্রভেদ এই—
নিকটে যে কান্তি লক্ষ্য হয়, তাহাকে চায়া এবং দৃয় হইতে
যে কান্তি লক্ষ্য হয়, তাহাকে প্রভা কহা য়য়।
.

প্রকাশিত হইয়া থাকে। ইহার বেধ একটা যবের বিংশতিভাগের অষ্টাদশ ভাগ। ইহা সিগ্ম ও পদ্মকণ্টক রোগের অধিষ্ঠান-ভূমি। দিতীয়া ত্বকু লোহিতা নামে অভিহিত; ইহার স্থুপতা একটি যবের বিংশতিভাগের যোড়শ-ভাগ। ইহা তিলকালক ফ্রছ্ড ও বাঙ্গ রোগের জন্মভূমি। তৃতীয়া ত্বকু খেতা নামে অভিহিত; ইছার বেধ ঘব-বিংশতিভাগের দ্বাদশ ভাগ। ইহা চর্মানল অক্তগল্পী ও মশক রোপের উৎপত্তিস্থান। চতুর্থী ত্বক তামা নামে অভিহিত; ইহার স্থোল্য যব বিংশতিভাগের অপ্টভাগ। ইহা বিবিদ কিলাস কুষ্ঠের অধিষ্ঠানভূমি। বেদিনী নামে অভিহিত; ইহার বেশ যববিংশতি-ভাগের পঞ্চভাগ। ইহা কুঠ ও বিদর্প রোগের জন্মস্থান। ষষ্ঠী স্বক্রোহিণা নামে অভিহিত; ইহা যববং স্থল। এই ত্বক গ্রন্থি অপচী অর্কাদ শ্লীপদ ও গলগও রোগের আশ্রয়ভূমি। সপ্তমী वक मारमधता नात्म भाग ; देश यवष्रवर कुल । এই ত্বক ভগন্দর বিদ্রধিও অশেরিরাগের উং-উক্ত সপ্তত্বকের মিলিত স্থৌলা, বিংশতিত্যভাগোন ছয় যব অর্থাৎ পাচ যব এবং এক যবের বিংশতিভাগের ষ্টনিশভাগ। ষ্টোদরের পরিমাণ ছয় যব, স্কতনাং সমস্ত অকের স্থলতা প্রায় অমুঠোদরভূলা। অবভাসিনী প্রভৃতি সাত প্রকার স্বকের মে প্রমাণ নির্দিষ্ট হইল, তাহা মাংসল স্থানের ২কেরই জানিবে, এলাটে বা অঙ্গুলাদিতে যে ওক্ আছে, তাহাদের সুলত। ওরাপ নহে।

কলাসরপমাহ—

নাৰুভিন্দ প্ৰতিজ্ঞান্ সন্তঠাংশ্চ জরারুণা।
স্নেমণা বেষ্ট্ৰতাংশ্চাপি কলাজাণাংশ্চ ডাৰ্ বিস্কু: ॥
ধাষাপরাস্তরে ধাডোবাঃ ক্লেন্দ্রেধিতিষ্ঠতি।
স্বেহোমণাভিপক্ত সা কলেত্যভিধীয়তে॥
কলাঃ ধ্বপি সপ্ত সম্বর্গতি ধাঙাশ্যান্তরমধ্যানাঃ।

সপ্ত পাতৃর আশর অর্থাং আশ্রম্বান সাতটি;
কলা সেই প্রত্যেক আশরের সীমাভৃত বলিয়া
কলার সংখ্যাও সাত। কলার স্বরূপ—শরীরে
রসরক্তাদি যে সপ্ত প্রকার ধাতু আছে, সেই সপ্ত
ধাতুর প্রত্যেকটির অবস্থান-স্থানের অস্কভাগে
কলা নামক পদার্থ অবস্থিতি করে। সেই কলা
উভন্ন ধাতুর সীমাম্বরূপ। কলার লক্ষণ—ধাম্বাশরের সীমাভৃত যে পদার্থ সায়ু ছার। আছের,
জরায়ুবং (গভবেষ্টক স্থলীসদৃশ) পদার্থ ছারা ব্যাপ্ত
এবং শ্রেমা ছারা বেষ্টিত, তাহাকেই কলাভাগ
বলিয়া জানিবে, অর্থাং দেহোমা ছারা পক পাতৃর
যে ক্রেদ পদার্থ ধার্যাশর প্রাপ্তে অবস্থান করে,
তাহাই কলা নামে অভিহিত হইয়া থাকে।

তাসাং প্রথমা মাংসধরা নাম, বক্তাং মাংসে শিরারাযু ধমনীমোতসাং প্রতানা ভবভি ।

বৰা বিসমূণালানি বিবছতে সমস্ততঃ। ভূমৌ প্ৰোদকস্থানি তথা মাংসে শিরাদয়ঃ॥

সেই সপ্ত প্রকার কলার মধ্যে প্রথমা কলা মাংসধরা নামে অভিহিত। যে কলাধিষ্ঠিত-মাংসে শিরা সায়ু ধমনী ও স্লোভঃসমূহের প্রতান অর্থাৎ বিস্তার হইয়া থাকে।

আধারভূমিতে পঞ্চোদকস্থ বিসম্পাল যেমন
চতুদ্দিকে বিবর্দ্ধিত হয়, মাংসেও শিরাদির সেইরূপ প্রভান হইয় থাকে। পেল্ল প্রভৃতির
ডাটার সাধারণ নাম বিস, সেই বিসের পঞ্চান্তর্গত
অংশকে মৃণাল কহা যায়)। এহলে আপত্তি
হইতে পারে যে, রস্বাতু প্রথম, রক্তশতু দিতীয়,
মাংস্বাতু তৃতীয়, অতএব মাংস্বয় কলা ভূতীয়া
না হইয়া কির্মণে প্রথমা কলা বলিয়া অভিহিত
হইতে পারে ? ইহার উত্তর—মাংস, র্মাদির
আধার বলিয়া আগারত্ব-হেতু এইরূপ ক্রম নিশিষ্ট
হইয়াছে।

বিতীয়া রস্কধরা নাম মাংসঞ্চাত্যস্তরভক্তকাং শোপিতং বিশেষতক্ষ শিরাম যকুৎমীহেশক ভবতি।

দ্বিতীয়া কলা রক্তনরা নামে অভিহিত। বক্তনবা কলা মাংসাভাস্তরে অবস্থিত, সেই মাংসাভাস্তরস্থ কলার বিশেষতঃ বক্তংগ্রীহাস্তর্গত শিরা সকলে রক্ত অবস্থান কবে। তৃতীয়া মেদোধরা নাম, মেদো হি সর্বজুতানায্ উদরত্বমণ্ডির্চ মহৎক্ত মজ্জা তবতি। ভবতি চাত্র।

ছ্লান্থিব্ বিশেষেণ মজ্জা ওভাগুরাখ্রিতঃ। অধেতরেব্ সর্কের্ সরক্তং মেদ উচাতে।। ওছ্মাংসক্ত যঃ ক্ষেহং সা বর্মা পরিকীর্ভাতে।।

তৃতীয়া কলা মেদোশরা নামে অভিহিত। মেদ প্রাণিদিগের উদরে ও স্ক্রান্থিতে অবস্থিতি করে। স্কুলান্থির অভ্যস্তরে যে স্নেহপদার্থ থাকে তাহাকে মজ্জা কহা যায়।

এন্থলে আপতি হইতে পারে যে, মজ্জাও অন্থিতে অবস্থিতি করে; তবে কেন উহা মেদ বিলিয়া অভিহিত না হয়? এই আপতিগণ্ডনার্থই গণ্ডোক্ত অর্থ, শ্লোকে স্পষ্ট করিয়া
বলা ইইয়াছে এবং মেদ ও মজ্জার অন্থকারী
বিলিয়া উপধাতু-বদারও স্বরূপ উরেধ করা
হইয়াছে। বথা—সুলান্থিসমূহের অভ্যন্তরে যে
স্বেহপদার্থ অবস্থিতি করে তাহাকে মজ্জা এবং
স্ক্লান্থি সকলে যে স্থেহপদার্থ থাকে, তাহাকে
মেদ কহে। মেদ সরক্ত পদার্থ। আব শুদ্ধ
মাংসের যে স্নেহজাগ তাহাই বসা নাতে পবিকীত্তিত হইয়া থাকে।

চতুর্থী শ্লেমধরা নাম, সর্কাস্থিতু প্রাণ্ড্রণ ভবতি। ক্রেডান্ডান্ডে বর্থা জ্বেড চক্রং সাধু প্রবর্ততে। সন্ধয়ঃ সাধু বর্তন্তে সংশ্লিষ্টাং শ্লেমণা তথা।।

চতুর্গী কলা শ্রেম্বরা নামে খ্যাত। ইইঃ
প্রাণিগণের সদ্ধিস্থান সকলে অবস্থিতি করে।
অক অর্থাৎ চক্রছিদ্রান্তর্গত কান্ত (ধুর) তৈলাদি
ক্রেছাভাক্ত ইইলে, শকটচক্র যেমন স্কন্ধর কার্যাকারী হর, শ্রেমা দ্বারা সংশ্লিপ্ত পাকায় সন্ধি
সকলও স্কেরপ বিশ্তি-কার্যাকারী ইইয়ঃ
থাকে।

াক্ষী পূর্বাধ্বর শান যাওকে। ই ন্রম্ভূরিভ্রত প্রশাসমূহা।

বকুৎ সময় ২ কেছিক ব্যৱস্থানি সম্ভিত। উত্তৰস্থা বিভজ্ঞ সলা মল্বরা কলা। পঞ্চমী কলা পুরীষণরা নামে খ্যাত। যাহা
প্রকাশয়ে অবস্থিত হইয়া কোষ্ঠাভাস্তরে মলপদার্থকে বিভক্ত করে, অর্থাৎ মুত্রপুরীষরূপে
বিভাগ করিয়া থাকে। এই পুরীষণরা কলা
যক্ষ্ৎ, প্রীহা, অন্ত্র, উত্ত্ক (মলাশয়) ও গুদনাড়ী
প্রভৃতি সমস্ত কোষ্ঠকে আশ্রয় করিয়া থাকে।
ইহা উত্তক হইতে মলকে পৃথক্ করে।

ষষ্ঠা পিত্তধনা নাম, যা চতুর্ব্বিধমন্নপানমূপযুক্তমামাশরাৎ প্রচ্যুতং পকাশয়োপস্থিতং ধারমতি। অশিতং থাদিতং পীতং লীচং কোষ্ঠগতং নৃণাম্। ভজ্জীয়তি যথাকালং শোষিতং পিত্তভেদা॥

ন গুমী শুক্রধরা নাম, যা সঁক্রপ্রণিনাং সক্রণরীরন্যাপিনী।

যথা পর্যাস সপিপ্ত শুড্ডেকুরুসে বথা।

শরীরের তথা শুকুং নৃগাং বিস্তাদ ভিষধরঃ।

ছাকুলে দক্ষিণে পাথে বিস্তাধিক্ত চাপ্যার:।

মূক্রপ্রোভগথাচ্চুক্রং প্রম্যক্ত প্রবন্ততে।।

কুৎরদেখাশ্রিতং শুকুং প্রম্যক্ত প্রবন্ততে।।

রাবু ব্যাবচ্ছত্তগ্রাপি হবাৎ তথা সংগ্রন্ততে।।

সপ্তমী কলা শুক্রবরা নামে কণিত। ইছা
প্রাণিগণের সর্কানীরবাপিনী। দৃষ্ঠান্ত—ছম্বের
সক্ষাবয়বে ধেমন স্বত এবং ইকুরসে ধেমন গুড়
অবস্থিতি করে, মনুষ্যদিগের সর্কানীরে শুক্রও
তেমন অবস্থান কার্য্যা থাকে। শুক্রের ক্ষরণমাগা- প্রসমাননা হইয়া সানন্দে স্ক্রীসঙ্গম করিলা
হর্ষহেতু সন্ধদেহাশ্রিত শুক্র ব্যন্তিয়ারের অবোভাগে দিক্রিণিয়ার ওই অস্থাল অন্তরে মূত্রমার্গে
উপস্থিত হইয়া ৩০ ইইয়ত ক্ষরিত হয়।

গৃহীতগর্ভাগামার্ত্রবহানাং প্রোতসাং বস্ত্রপিতরক্ষান্তে গর্ভেণ, তল্মাদ্ গৃহীতগর্ভাগামার্ত্রবং ন দৃষ্ঠতে। ততত্ত্বদধঃ
অতিহত-মৃদ্ধ্যাগত্যপরকোপেরীয়মান্যপরেত্যভি–ধীযতে।
শেষকোদ্ধতর্মাগতং প্রোধরাবভিপ্রতিপদ্ধতে; তল্মাদ্
গভিণ্যঃ শীনোম্নতপ্রোধরা ভবস্তি।

গভিণীদিগের আর্ত্তবহ স্রোভংসকলের মুখ গভিষার অবরুদ্ধ হইরা থাকে, তজ্জগুই তাহাদিগের রজোনিংদরণ হয় না তংকালে সেই আর্ত্তব অধংপ্রতিহত হইয়া অধাং নার্গরোধ হেতু
নিংস্থত হইতে না পারিয়া উর্জগত হয়। তাহার অপর অংশ (একভাগ) উপচীয়সান হইয়া অপরা (গভিবেস্টকস্থলী) নামে অভিহিত হয়;
নশেষ অংশ উর্জ্বতর প্রদেশে স্তনে গিয়া উপস্থিত হয়, তজ্জগুই গভিণীদিগের স্তন প্রীনোয়ত হইয়া থাকে।

অস্কঃ লেখণাচাপি যা প্রসাদঃ পরো মতঃ।
তং পচামানং পিত্তেন বায়ুন্চাপানুধাবতি॥
ততোহকাজাণি কায়তে গুদং বন্তিন্চ দেহিনঃ।
উদরে পচামানানামাঝানাক্রস্কারবং॥
কফশোণিতমাংসানাং সারো জিহ্বা প্রজায়তে।
যথার্থমুখণা যুক্তো বায়ুং প্রৌতাংদি দারত্রেং।
অনুপ্রবিশ্ব পিশিতং পেশীনিজ্জতে তথা।
মেদসঃ স্বেহমাদায় শিরাসায়ুষ্মাধুয়াং॥
শিরাণাক মৃদ্রং পাকঃ সায়ুনীক ততঃ থরঃ।
আশ্যাদ্যাস্বেধ্যন করোত্যাশ্যসম্ভবম্॥

রক্ত ও শ্লেমার সারভাগ পিত্তকর্তৃক পচ্যমান এবং বারু কর্তৃক অনুধাবিত হইয়া অন্ত্র
গুদনাড়ী ও বন্তিরূপে পরিণত হয়। বারু দারা
উদ্দীপিত মন্নি কর্তৃক পচ্যমান কফ, শোণিত
ও মাংসের সারভাগ হইতে জিহ্বা উৎপন্ন হয়।
জিহ্বা মলবিমৃক্ত ফর্ণসারবং পদার্থ। পিত্তসংবৃক্ত বারু স্রোতোবিদারণ পূর্বক মাংসে প্রবেশ
করিয়া সেই মাংসকে পেশার আকারে অর্থাৎ
স্বত্রগুচ্ছাকারে পরিণত করে। তাহাকেই পেশী
কহে। বারু মেদের স্নেহপদার্থ দারা শিরা ও
সারু নির্দ্দাণ করে। মৃহপাকে শিরা ও ধরপাকে
সারু জনিয়া থাকে। বারুর অভ্যাসযোগেই
অর্থাৎ পূনঃপূনঃ অবস্থান বশতই ধাদাদির
আশরোৎপত্তি হয়।

রক্তমেদঃপ্রসাদাদ বৃক্কী, মাংসাক্তক্কমেদঃপ্রসাদাদ বৃদ্ণৌ; শেণিতককপ্রসাদজং ক্রদমন, যদাঙারা হি ধমস্তঃ প্রাণবহাঃ। অক্তাধো বামতঃ শ্লীং। ফুপ্কুসন্চ, দক্ষিণতো বক্ৎ রোম চ। তদ্জদরং বিশেষণ চেতনাস্থানমত-প্রস্থিত্যসাবতে সর্কাপ্রাণিনঃ স্বপৃত্তি।

রক্ত ও মেদের সার হইতে বৃক্ক, মাংস রক্ত কফ ও মেদ পদার্থের সার হইতে বৃষ্ণ এবং রক্ত ও কফের সার হইতে সদয় জ্ঞো। প্রাণবহ দমনী সকল এই সদয়কে আশ্রয় করিয়াই প্রবা-হিত হইয়াছে। সদয়ের বাম দিকে প্লীহা ও ফুপফুস্; দ্বিশদিকে যক্তং ও ক্লোম অবস্থিত। সদয়ই চেতনার বিশেষ স্থান। অতএব সদয় ত্যোরত হইলে প্রাণিগণ নিজিত হইয়া থাকে।

কাশ্য স্থ—ব তাশ্যা পিতাশ্যা কোশ্যা ক্রাশ্যা অসাশ্যা প্রশাশ্যা মুক্রাশ্যা স্ত্রীশাং প্রশাস্ত ইম উতি।

আশয় ৮ আটটা, যথা—বাতাশয়, পিন্তাশয়, শ্লেমাশয়, রক্তাশয়, আমাশয়, পকাশয়, মৃত্রাশয়, ও স্ত্রীলোকদিগের গর্ভাশয়।

নাভেবিত্তিসমাত্রঞ্চ কঠদেশাৎ বড়সুলম্। উরস্ত তদ্বিজানীয়াচ্ছেবে ডু জদরং মত্র ॥ উরো রক্তাশয়স্তমাদধঃ শেমাশরঃ স্তঃ। ভাষাশালয়স্ত তদধস্তলিসং চরকোহবদং॥

ভানগু---

নাভিন্তনান্তরং জন্তের। বর্ষাংশয়ং বৃধাং।
আমাশয়াদধং পকাশয়াদুর্ভ্বত বা কলা।
গ্রহণীনামিকা দৈব কম্বিতঃ পাচকাশয়ং।
উর্জ্বস্থাাশরো নাতের্বামভাগে ব্যবস্থিতঃ।
তক্ষোপরি বিলং ক্রেয়ং তদধং প্রনাশয়ং।
গকাশয়ন্ত তদধং স এব তু মলাশয়ং।
তদধং কবিতো বস্তিঃ স তি মূতাশয়ো মতঃ॥

কণ্ঠদেশ হইতে ৬ অঙ্গুলি নিম্নে ও নাজি হইতে এক বিভস্তি উর্জে যে স্থান, তাহাকে উর: কহে। উরোদেশ ভিন্ন অপর অংশকে হানম বলে। উর:স্থল রক্তের আশার, রক্তা-শরের নিম্নে শ্লেমাশার; শ্লেমাশারের নিম্নে আমাশার; পণ্ডিতেরা বলেন, নাজি ও স্তনের মধাস্থলে আমাশার অবস্থিত। আমাশারের নিম্নে ও পকাশরের উর্জে গ্রহণীনামে যে কলা আছে, তাহাই পাচকাশর (পাচকপিন্তাশর), ইহাই অগ্নাশর নামে অভিহিত। অগ্নাশর নাভির উর্জনেশে বামভাগে অবস্থিত। ইহার উপরে একটী ছিদ্র আছে। অগ্নাশরের নিমে পবনাশর, পবনাশরের নিমে পকাশরই মলাশর নামে খ্যাত: অর্থাৎ পকাশরের নিম্ন-জাগকে মলাশর বা উপুক কহা যায়। মলাশরের নিমে বস্তি, বস্তিই মুত্রাশর নামে অভিহিত।

অথ রশ্বাণি।

নেত্রশ্রণনাসান'ং ছে ছে রন্ধু প্রকীরিতে।
মূখমেহনপায়নামেকৈকং রন্ধুমূচাতে॥
দশমং মন্তকে প্রোক্তং রন্ধু শীতি নৃণাং বিছঃ।
শ্রীণামস্কানি চ ত্রীণি স্থনয়োগর্ভবন্ধ নি॥

নেত্র কর্ণ ও নাসিকায় হুই হুইটী করিয়া ছয়টী রক্ষ ; মূথ, লিন্দ ও গুহুদেশে এক একটী করিয়া তিনটা এবং মস্তকে একটি ; সমুদায়ে পুরুষের এই দশটা রক্ষ আছে। স্ত্রীলোক-দিগের এতদাতীত আরও তিনটি অধিক রক্ষ আছে, যথা—স্কনদ্বর ও গভবরা।

অথ স্রোতাংসি।

মন:প্ৰাণাৱগানীয়-দোৰখাতৃপধাতব:।
ধাতৃৰাঞ্চ মলা মূত্ৰং মলমিত্যাদয়তমৌ ॥
সঞ্চয়তি হি বৈম গৈতিগনি স্বোভাংসি সঞ্চত্তঃ।
বহুনি তানি সংগায় পকাতে নৈব ভাবিতৃষ্॥

মন, প্রাণ, অর. পানীয়, দোষ, ধাতু, উপধাতু, পাত্মল, মূত্র ও মল, এট সকল পদার্থ যে সকল মার্গ ছারা শ্বীরে সঞ্চরণ করে, ভাহাদিগকেই স্রোত কহা যায়। শ্রীরে বহুসংখ্যক স্রোত আছে, স্ক্তরাং ভাহাদের সংখ্যাকথন অসম্ভব।

মূলাৎ থাদন্তর দেহে প্রস্কৃত্তন্ত্রীই ঘৎ ব সোভন্তদিতি বিজ্ঞেনং শিরাবস্বীবৃত্তিত্ব ॥ ক্দরগর্ভ হইতে বাহা শরীরাভ্যস্তরে প্রস্থত এবং যাহা অভিবহনশীল অর্থাং মন, প্রাণ, দোষ ও ধান্বাদি অভিবহন করে, তাহাই স্রোতঃ। শিরাধমনীও অভিবহনশীল, কিন্তু স্রোত, শিরাধমনী হইতে স্বতন্ত্র পদার্থ।

অথ কণ্ডরা।

মহত্য: স্বায়বং প্রোক্তাঃ কথারান্তান্ত বোড়া।
প্রসারণাকুঞ্চনরোদু কিং তাসাং প্রয়েজনম্ ॥
চত্রো হন্তরোন্তাসাণ তাবত্য: পাদরোঃ স্থতাঃ ।
গ্রীবায়ামপি তাবতান্তাবত্য: পূঠসক্ষতাঃ ।
ত্র পাদহন্তগতানাং কন্তরাণণ নগং প্ররোজা মেড়াঃ,
গ্রীবাহানমনিবন্ধনানামধোভাগেগতানাং প্ররোজা মেড়াঃ,
গ্রোণিপৃঠনিবন্ধনীনামধোভাগগতানাং বিষঃ (নিত্ত্বমন্তব্য), মুর্জোরবন্ধাহ্যগাধ্যান্ত ।

স্থলতর সায়ু সকলকে কণ্ডরা কণ্ডরা ছারাই আকৃশ্বন-প্রসারণ-ক্রিয়া নিম্পন্ন **रप्र। क**खता > ७ हैं, जनाया 86ी श्खबरम, 85 পদৰয়ে, ৪টা গ্রীবাতে এবং 8 जे श्रष्टामत् । হস্তপদগত কণ্ডরাদিগের প্ররোহ নণ ; প্রীবান महिक अमग्रवसमकाती अत्मार्ग कथातानितान প্ররোহ লিক : কটির স্হিত পুষ্ঠবন্ধনক গো অধোভাগগত কণ্ডরাদিগের প্ররোহ নিতম-মগুল। তদ্বি মুদ্ধা, উরণ, বক্ষা ও জাস-পিণ্ডাদির (বাহমুলাদির) মণ্ডলও উদ্ধভাগগত কণ্ডরার প্ররোহ জানিবে, অর্থাৎ গ্রীবাশ্রিত উর্জগতকওরাচতুষ্টরের প্ররোহ মুর্দ্ধা, পাদাভিত উর্দ্ধগত চারিটা কওরার প্ররোহ উক্নাণ্ডল: পুঠান্দ্রিত উর্দ্ধগত চারিটী কণ্ডরার প্রধােহ বকোমওলুও হস্তাশ্রিত উর্জগত ৪টা কওবার थालां वाल्यन।

অথ জালানি।

নিরন্তররক্রিকরকলিতানি সমৃতিতানি চ জালানীব জালানি।

জালানি তু শির'হায়ু-মাংসাগু,'মুদ্ভবস্থি হি। তানি চম্বারি চম্বারি সর্কাণোব চ বোড়ণ। তানি মণিবজগুল্ফসংখ্রিতানি পরস্করনিবন্ধানি পরস্করসংলিষ্টানি পরস্করগবাক্ষিতানি চেতি বৈর্গবা-ক্ষিত্রিদং শরীরম।

অরমর্থ:। একস্মিন্ মণিবন্ধে একং জালং শিরায়াঃ, অপরং রায়োঃ, ভৃতীয়ং মাংসন্ত, চতুর্বমন্ত্রঃ; এবং চন্থারি জালানি। এতেনেতয়মণিবন্ধগুল্কো চ বাখ্যাতো। গবান্ধিতং বিরটিতনিরস্তরজ্ঞালাকারয়ন্ত্রনিকরপরিকলিভমিতার্থ:।

শিরাদি কোন পদার্থ ওতপ্রোভভাবে অর্থাৎ টানা-পড়েনের স্থায় • অবস্থিত হইলে. ঘন ঘন ছিদ্রসমহবিশিষ্ট জালবং যে আরুতি প্রাপ্ত হয়, ভাহাকেই জাল কহা যায়। শিরা স্বায় সাংস ও অন্থি এই চারিটী পদার্থের জাল উৎপন্ন হয়। ঐ শিরাদি প্রত্যেক পদার্থের চারিটা চারিটা করিয়া সমুদায়ে ধোলটা জাল হইয়া থাকে। এই সকল জাল মণিবন্ধর ও গুলফরর সংশ্রিত, পরস্পর নিবদ্ধ, প্রস্পর সংশ্লিষ্ট ও প্রস্পর গবাক্ষিত (ব্দ্ধীকৃত), এই মণিবন্ধ-গুলফ-সংশ্রিত জাত ধারাই সমস্ত শরীর গবাকিত অর্থাৎ নিরস্তর জালাকাব রস্কবিশিষ্ট হইয়। রহিয়াছে। हेहात वर्ष बहे-बक अक्री मिनत्स ७ अक একটা গুলুফে একটা করিয়: শিরাজাল, একটা করিয়া সায়ুজাল, একটা করিয়া মাংস্জাল ও একটা করিয়া অস্তিজাল, স্বতরাং সমুদায়ে যোলটী জাল অবস্থিত আছে এবং সেই সাল থারাই শ্বীর গ্রাক্ষিত হইয়া রহিয়াছে।

অথ কূচ্চাঃ।

কুর্চাঃ স্থাইন্তরোকে) তৃ তাবজ্ঞে পাদরোরপি।
. গ্রীবারামেক একন্ত মেট্রে সর্ব্বেইপি বটুস্থতাঃ।
কুর্চা অপি শিরারায়ু-মাংসান্তিপ্রভবাঃ স্থতাঃ॥

कृष्ठ इत्रही। यथा—इहे इत्या रही, इहे भारत इहेंही, औरात्र अकडी ও नित्न अकडी। कृष्ठे भारत सात्र गारत अर अस्ट हहेटड উৎপন্ন হর। সুঁচির ভার বলিরা ইহাদিগকে কৃষ্ঠ কহে।

প্রথ রজ্জবঃ।

পৃত্তিবংশক্ষোভয়ত মহতো মাংসরজ্ঞবঃ। ৮ডমো মাংসপেশীৰাং বন্ধনং তৎপ্ৰয়োজনম্॥

পৃষ্ঠবংশের উভন্নদিকে চারিটী অর্থাং তুইটা বাহ্ন ও তুইটা আভ্যস্তব মাংসরব্জু আছে, তাহাদের দারা মাংসপেশী সকলের বন্ধনকার্য্য সম্পন্ন হয়।

.অথ সেবন্যঃ।

্সবস্থা সপ্ত তাসাত্ত ভবেষ্ণ পঞ্চ মন্তকে। একা শেকসি জিহ্বায়ামেকা বিধেন্ন তাঃ কচিৎ।

সেবনী ৭টী। যথ:—মন্তকে ৫টী, লিঙ্গে ১টীও জিহ্বাতে একটী। কদাচ সেবনী বিদ্ধ করিবে না। সেলাই করা স্থানের ন্যায় আরুতি বলিয়া ইহার নাম সেবনী।

অথ সংঘাতাঃ।

চতুদিশাক্র 'ং সজ্বাধিও । তেবাং বিয়ে ওক্ষজাত্র-বঙ্কাণের । এতেনেতরসক্থিবাধ চ বাংগাতে । তিক্শিরসোরেকৈক:। অত্র তুরিকপাদন বভাগীবাছি-ত্রসংখাত্রিক উচতে ।

অস্থিদংঘাত চতুর্দশটা। নথা—হই গুল্ফে
তুইটী, তুই জাকুতে তুইটী, তুই বক্ষণে তুইটী,
তুই নণিবন্ধে তুইটী, তুই কূপনে তুইটী ও তুই
কল্ফে (বগলে) তুইটী, এই ১২টা এবং ত্রিকে
একটা ও মস্তকে একটা, সম্পায়ে এই ১৪টী
অস্থিদংঘাত। এস্থলে ত্রিকপদে বাচম্বর ও
গ্রীবান্তির সন্ধিস্থল বুঝিতে হইবে।

অথ সীমন্তাঃ।

চতুৰ্দ্দশৈৰ সীমস্তাঃ কথিতা মুনিপুক্ষবৈঃ। সংগতিঃ সীবিতা বৈদ্ধ দীমস্তান্তে প্ৰকীৰ্ভিতাঃ॥

সীমস্ত চতুর্দশটী। যে সকল অন্থি ছারা অন্তিসংঘাত সকল সীবিত থাকে, তাহাদিগকে সীমস্ত কহে। অন্তিসংঘাত চতুর্দশটী, স্পত্রাং তাহাদের সংযোজক সীমস্ত ও চতুর্দশসংখ্যক।

অথাস্থাং সংখ্যামাহ—

শল্যতন্ত্ৰহন্ত্ৰিগণ্ডানাং শতক্ৰয়মুদাক্তন্।
তান্তেৰাক নিগজনত তেৰাং কাৰানি যানি চ ॥
সবিংশতিশতস্বস্থাং শাপাক কমিতং বুদৈঃ।
পাৰ্যয়োঃ শ্ৰোণিকলকে বক্ষংপ্টোদ্যেষ্ চ ॥
জানীয়াদ্ভিবংগতেৰ্ শতং সপ্তদশোভ্ৰম্।
গ্ৰীবায়ামুৰ্গাং বিভাদভ্ৰাং ৰাষ্টং ক্ৰিসংবৃত্যম্॥

শল্যতন্ত্রে অস্থিপণ্ড তিন শত বলিয়া পরিগণিত ইইয়াছে। এ স্থলে সেই সকল অস্থিপণ্ডের স্থান নির্দেশ করা যাইতেছে। হল্তে ও পদে ২০ একশত বিংশতি পণ্ড, পার্শ্বয়ে, শ্রোণিফলকে, বিক্ষান্থলে, পৃষ্ঠদেশে ও উদরে ১১৭ একশত সতর পণ্ড এবং গ্রীবার উদ্ধান্য শুণ্ড ব্রায়াষ্টি শণ্ড অস্থি আছি ভালিতে।

তানি শাখাগতান্তাহ—

একৈক তাং পদাকুলাং ত্রীণি ত্রীণি তানি পঞ্চদণ, পাদতলে পঞ্চাছিশলাকান্তদাধারত্বনেকমন্থি এবং বঁটু, কুর্চে বে, গুল্ফে বে, পাঞ্চাবেকং, জলরোধে, জানুজেকমুরাবেকম্; এবং কিংশালুক বিন্ সক্ধনি ভবন্তি। এতেনেতরসক্ষিবাহ্র চ বাংগাতে।

এক একটি প্রাস্থালিতে তিন তিনটি করিয় সম্পারে ১৫টা অভি ২৩; পাঁচটি অভিশলাক ও ভাহাদেশ আনারভূত এক থানি অভি২৩, পদতলে এই ৬ থানি; এবং কুর্চে হই থানি, পাঞ্চি-দেশে এক থানি; জন্মায় হই থানি, জাহতে

এক থানিও উক্তে ১ থানি অর্থাৎ ১টা পদে সমুদারে ত্রিশ থানি অস্থি থাকে। হস্তের অস্থিসংখ্যাও এইরপ জানিবে। স্থতরাং ফুই পদে ও ফুই হস্তে অস্থির সংখ্যা ১২০ একশত বিংশতি।

অথ পাৰ্বাদিগতান্যাহ—

পাৰ্যে বটুজিংশদেনমেকশ্মিন, দ্বিতীয়েংপোনন, শিল্প-ভাগে চ একন্, ভদে একন্, নিতবয়োরেকৈকন্, নিকে একন্, বক্ষপ্রত্যী, পুঠে জিংশৎ, অক্ষকসংজ্ঞ ছে।

এক পার্শ্বে ১৬ থানি, অপর পার্শ্বে ১৬ থানি *, লিঙ্গ বা যোনিদেশে একথানি, গুছ-দেশে একথানি, ছই নিভঙ্গে ছই থানি, ত্রিক-স্থানে এক থানি, বক্ষঃস্থলে আট থানি, পৃষ্ঠ-দেশে ত্রিশ থানি এবং ছই বাছশিরে ছই থানি।

অথ গ্রাবোদ্ধগতান্তাহ—

ত্রীবারাং নব, কণ্ঠনাডাং চম্বারি, হ্যোরেকৈক্ম্, দস্তাং মাজিংশৎ, নাসায়াং জীনি, ভালুক্সেক্ম্, গগুয়োরেক্ক্ম্, কর্ণনোরেকৈক্ম, শির্সি গট।

গীবায় ৯, কণ্টনালিতে ৪, হছুৰয়ে ২, দক্তে ৩২, নাসায় ৩, ভালুতে ১, গণ্ডৰয়ে ২, কৰ্ণন্ত ২, জাৰয়ে ২ এবং সম্ভকে ও গানি অক্তিগণ্ড আছে।

এতান্তবানি পক্ষবিধানি ভবস্তি, তানি যথা— তঙ্গণানি কপালানি স্বচকানি ভবস্তি হি। বলয়ানীতি তানি স্থানলকানি চ কানিচিৎ ॥

এই সকল অন্থি পাঁচ প্রকার, বথা—তক্তন, কপাল, ক্লচক, বলয় ও নলক।

এক এক পার্থে ৩৬ গানি করিয়া উভয় পার্থে বে
 বানি অস্থিদ:পার্য ৪ ইংয়াছে, তাহা প্রকৃত পকে
 বানি করিয়া ২৪ খানি। কারণ এক এক থানি অস্থিই
 পৃষ্ঠ পার্থ ও সমুপ এই তিন দিকেই অবস্থিত বলিয়া
 এক এক থানিকে তিন তিন পানি করিয়া গণনা
 করা ইইয়াছে।

তেষাং স্থানান্যাহ—

অকিকোৰশ্ৰতিষ্ঠাণ-প্ৰীবাস্থ তল্পানি চ।
শিরংশঝকপোলেরু তাবংসপ্রোধজাদিরু ॥
কপালানি ভবস্তোরু দস্তেরু ক্লচকানি চ।
পাণ্যোঃ পার্যব্ধে পৃঠে বক্লোজঠরপার্বু ॥
পাদরোর্বলয়ানি স্থান লকানি ক্রবেহধুনা।
হস্তপাদাঙ্গুলিতলে কুর্চেচ মণিবন্ধকে ॥
বাছজভ্যান্তর চাপি জানীয়ারলকানি তু॥

অন্ধিকোষ, কর্ণ, নাসিকা ও গ্রীবাস্থিত
অস্থিকে তরুণাস্থি: মস্তক, শঙ্ম, কপোল,
তালু স্কন্ধ ও প্রোথ (পাছা) এই সকল
স্থানের অস্থিকে কপাল; দস্তাস্থিকে ক্রুচক;
হস্তম্বর, পার্থার, পৃঠ, বক্ষঃ, জঠর, পারু (গুন্থ)
ও পদ্ধর, এই সকল স্থানের অস্থিকে বলর;
এবং হস্তপদাস্থাল, কূচ্চ, মণিবন্ধ, বাহ ও
জ্ব্যাধ্বর, এই সকল স্থানের অস্থিকে নলক
কহিরা থাকে।

অথাস্থ্যং প্রয়োজনমাহ—

মাংসান্তত্ৰ নিবদ্ধানি শিরাভি: স্নায়্ভিন্তথা । অহীক্যালখনং কথা ন দীর্যন্তে প্তত্তি চ ॥

শিরা ও স্বায়ু স্বারা মাংস সকল অস্থিতে নিবদ্ধ থাকে। অস্থিকে অবলম্বন করিয়া থাকে বলিয়া মাংস সকল দেহ হইতে থসিয়া পড়েনা।

অথ সন্ধয়ঃ।

সন্ধান্ত বিবিধান্চেষ্টাবন্তঃ দ্বিরান্ত। শাখান্ত হবোঃ কটাকে চেষ্টাবন্তন্ত সন্ধান। শেবান্ত সন্ধান: সর্বেব বিজ্ঞেরা হি দ্বিরা বুবৈঃ ॥

. সন্ধি ছই প্রকার—চেষ্টাবান্ও নিশ্চেষ্ট। হল্প, পদ, হন্ও কটি এই সকল স্থানের সন্ধি চেষ্টাবান, অবশিষ্ট সন্ধি সকল নিশ্চেষ্ট।

ক্ষিতা দেহিনাং দেহে সক্ষমেংছ এতে দশ।
শাশাস্থ তেইবাটিক কোঠে হেকোনবাটক: ॥
গ্রীশামা উদ্ধ্যেশে তু জাশাতিতে অকীন্তিত: ।
গ্রথমং পরিগণতে তেমু,শাগাগতা হহ।

দেহিদিগের দেহে ২১০টি সদ্ধি আছে। তন্মধ্যে হল্তে ও পদে ৬৮, কোঠে ৫৯ ও গ্রীবার উদ্ধাদেশে ৮০। এস্থলে হস্তপদের সদ্ধি প্রথম পরিগণিত হইতেছে। যথা—

একৈকছাং পদাস্ল্যাং অরন্তরে ছাবসুঠে তে চতুদিশ। গুল্কজামুবজ্ঞপেষেকৈকঃ। এবং সপ্তদশৈক্ষিন্
সক্ষনি ভবন্তি। এতেনে তরসক্ষিবাহ চ ব্যাখ্যাতে।।
এবমন্তবিটি: শাখাহ্য। অরঃ কটিকপালের, চতুর্বিশতিঃ
পৃষ্ঠবংশে, তাবন্ত এব পার্যরোঃ, অষ্টাব্রসি এবমেকোনবৃষ্টি: কোঠে, অস্টো এবিয়াং, অয়ঃ কঠে, নাড়ীযু হৃদয়রেমকুপাকুসনিবদ্ধাষ্টাদণ, ছাত্রিংশদন্তমুলের, একঃ
কঠমণে। (ঘুণ্টকেতি প্রসিদ্ধে), নাসকার্যক একঃ
কৌ বর্ম মণ্ডলজৌ নেত্রাশ্রেরী, গণ্ডকর্পশন্তেবিকং,
কৌ হনুসন্কৌ, ছাবুপরিষ্টাদ্ ক্রবেঃ, বৌ শন্তায়েশ্বিটা।
পরিষ্ঠাৎ, পদ্ধ শিরংকপালের, একো মৃদ্ধ্যীতি।

প্রত্যেক প্রাঙ্গুলিতে (বৃদ্ধান্ত্রীল ভিন্ন) তিনটি করিয়া ১২টি, বুদ্ধান্তুলিতে ২টি, সমুদায়ে ১৪টি; গুলুফে ১টি; ছামুতে ১টিও বঙ্গুণে ১টি: এইরপে একটি পায়ে ১৭টি সন্ধি থাকে। স্থতরাং ছই পায়ে ৩৪টি। হাতেও এইরূপ ১৭ টি করিয়া ৩৪টি সন্ধি আছে। শাখায় অর্থাৎ হস্কেরে ও পদম্বয়ে ৬৮টি সন্ধি থাকে। কটার কপালান্তিতে ৩টি, পুরুদণ্ডে ২৪টি, উভয় পার্শ্বে ২৪টি, বক্ষান্তলে ৮টি, এই-রূপে কোর্ছে ৫৯টি সন্ধি থাকে। গ্রীবাতে ৮টি, কণ্ডে অর্থাং গলনলিকায় ৩টি এবং হাদয় ক্লোম ও কুপ্ফুস নিবন্ধ নাড়ীতে ১৮টি, দম্ভযুলে ৩২টি कश्चमि अर्थाः शनपुष्टिकात्र र्रों, नामिकाट ১টি, নেত্রদালৈত বন্ম মণ্ডলে ২টি এবং গণ্ড কর্ণ ও শৃদ্ধদেশে এক একটি, স্বতরাং ছই গণ্ডে ২টি, इहे कर्ल २ छि ७ इहे भट्डा २ छ । इन्प्रक्रिट ২টি, জার উপরিভাগে ২টি, শঙ্খের উপরিভাগে ২টি, মন্তকের কপালান্থিতে ৫টি এবং মৃদ্ধায় ১টি। এই ৮০টি দান্ধ গ্রীবার উদ্ধভাগে অবাহত। প্রত্যাং সমস্ত লেহে ২১০টি সন্ধি वार्ड।

এতে দক্ষমোহস্থবিধা শুবারি। ১০ যথা ক কোরো দুখলসামূল্য: প্রতিরগত্বেশনী। কাক্তুও, মন্তব্দ শুঝাবন্তোহস্তস্থ্য: । কোর: গর্জঃ, কলিকেতান্তে। উদ্ধল: প্রসিদ্ধ: সামৃদ্ধ: সম্দৃগ এব সামৃদ্ধ:, বার্থে অণ্। প্রত-রত্যনেন্তি প্রতরো বেলক:। তৃণন্ত তৃণীরক্ত সেবনী হাতিত্ব, পদেবনী। কাকভূথং কাকমুখন্। মণ্ডলং প্রসিদ্ধন্। শথকার্থানা প্রস্তাবর্ত্ত: শথাবর্ত্ত: ব্যানামপ্রকৃত্যঃ সন্ধরো ভবন্তীত্যর্থ:।

আরুতিভেদে ঐ সকল সন্ধি অষ্টবিধ। যথা কোর, উদুখল, সামুদ্যা, প্রভর, তুণ-সেবনী, কাকতুণ্ড, মণ্ডল ও শঙ্মাবর্স্ত। কোর অর্থাৎ গর্স্ত; যাহা গর্জাকার, তাহাকে কোর কহে, কেহ কেহ ইহাকে কলিকা (তদাক্কৃতি) কহিয়া থাকেন। উদুখল ইহা প্রসিদ্ধ, সকলেই জানেন। সামুদ্য অর্থাৎ সম্পুট; যাহা ঠোঙ্গার তার। প্রভর সর্থাৎ বেলক, মহা দ্বারা অস্থি খেলিতে পারে। তুণ-সেবনী অর্থাৎ তুলার সোলাইএর তারে সাক্ষতিবিশিষ্ট। কাকতুণ্ড— কাকমুখসদৃশ। মণ্ডল—গোলাকাব। শঙ্কা-বর্ত্ত—শঙ্কার আরুর্ত্বং।

সঙ্গুলি, মণিবঞ্জ, গুলফ, জান্ত ও কুপরে কোর সন্ধি, কক্ষা (বগল), বক্ষণ ও দন্তে উদ্ধান সন্ধি; ক্ষম, পীঠ, গুল (গুল্জ), ভগ ও নিতকে সাম্দ্র সন্ধি; গ্রীবা ও পুর্বংশে প্রতর সন্ধি; শির ও কটার কপালাস্থিতে তুল-সেবনী সন্ধি, হত্ত্বরে কাকতুও সন্ধি; কণ্ঠ জনর ও কোম নাড়ীতে মণ্ডল সন্ধি, শির ও শৃঙ্গাটকে শঙ্মাবর্ত্ত সন্ধি অবস্থিত।

ব্যস্থান্ত সন্ধয়ো হেলে কেবলাঃ পরিকীপ্তিতাঃ। পেশীবায়ুশিরাণান্ত সন্ধিসংখ্যা ৰ বিস্তাতে॥

এন্থলে কেবল অন্থিসকলেরই সদ্ধি পরি-কীন্তিত হইল। পেশা সারু ও শিরাসমূহের সন্ধি অসংগা, তাহাদের সংগা কর। যায় না।

অথ সায়বঃ।

বারবো বন্ধনানি স্থানে ইমাংসাস্থিমদসাম্। সন্ধীনামশি বং তাক্ত শিরাভ্যঃ স্বৃদ্যাঃ মৃতাঃ 🛭

সারু দারা দেহের মাংস অন্থি মেদ ও সন্ধি সকলের বন্ধনক্রিয়া সম্পন্ন হয়, স্কৃতরাং ইহা শিরা অপেকা হৃদৃঢ় পদার্থ।

স্নায়ুসংখ্যামাহ—

শতানি নব জায়ন্তে শরীরে স্নায়বো নৃণাম্। তাসাং বিবরণং ক্রমঃ শিব্যাঃ শুগুত বন্ধতঃ॥ শ'ধারু বট্শতানি হাঃ কোঠে ক্রিংশচ্ছতবয়ম্। গ্রীবায়া উর্দ্দেশে তু স্ব'গুনাং সপ্ততিঃ স্থতা॥

ানব দেহে ৯০০ শত স্বায়ু আছে, তাহাদের বিবংশ বলিতেছি, প্রবণ কর। হস্তেও পদে ৬০০ শত, কোর্ছে ২৩০, এবং গ্রীবার উদ্ধদেশে ৭০ সংখ্যক স্বায়ু অবস্তিত।

তত্র শাখাগতাঃ প্রাহ্—

একেকজ্ঞা পালান্ত্রনাং ষট্সট্[®]তাবিশন্ত, তাবতা এব তরবুক্তপ্তলমেনু, তবিতা এব জাল্পয়োং, দিশ **জাল্নি,** চয়ারিংশদূরে : দশ বজ্জারে; এবং **সার্থন্তমেক্তিন্** সক্থনি তবিজ, এতেনেতবসক্**থবায় চু ব্যাথ্যাতে।**।

প্রত্যেক পাল্যস্থাতি ছয় ছয়টি করিয়া পাঁচ অঙ্গুলিতে ৩০টি, তল কুচ্চ ও গুলুফ্ দেশে ৩০টি, জজাতে ৩০টি, জান্ততে ১০টি, উক্লেশে ৪০টি, বজ্ঞান ১০টি, এইক্পে ১৫০টি, সায়ু এক পারে থাকে। অপর পায়েও ১৫০টি দেড়শত, এবং হস্তম্বরেও দেড়শত করিয়া ৩০০ সায়ু আছে। সত্রাং তই পদে ও তই হস্তে সমুদায়ে ৬০০ সায়ু অবস্থিত।

অথ কোষ্ঠগতাঃ প্রাহ—

নটি: কট্যাম, অনীতিঃ পৃষ্ঠে, পার্যয়ো: বটিঃ, উর্নি ত্রিংশং। কটিদেশে ৬০, প্রষ্ঠ ৮০, পার্শ্বরে ৬০ এবং বক্ষোদেশে ৩০ সংখ্যক স্বায়ু আছে।

অথ গ্রাবোর্দ্ধগতাঃ প্রাহ—

ষ্ট ত্রিংশদ্ প্রীবারাং, মূদ্দ্দ্দ্ চতুরিংশং। এবং নব মায়ুশতানি ব্যাখ্যাতানি।

গ্রীবাতে ৩৬ ও মন্তকে ৩৪ সংগক স্বায়ু আছে। এই প্রকারে ৯০০ স্বায়ু ব্যাগ্যাত হইল।

অথ পেশ্যঃ।

মাংসপেশুঃ সমাথাকো নৃণাং পঞ্চ শতানি হি। তাসাং শতানি চছারি শাখাস্থ কথিতাক্তথ।। কোঠে বড়ুত্ররা বস্টঃ ক্থিতা মুনিপুঙ্গনৈঃ। গ্রীবায়া উদ্ধ্যান্তান্ত্র চত্ত্রিংশৎ প্রকীতিতাঃ॥

মন্থ্যের মাংসপেশী ৫০০ পাঁচ শত। তন্মধ্যে ছই হয়েও ও ছই পায়ে ১০০, কোচে ৬৬, গ্রীবা ও তাহার উর্দ্ধভাগে ৩৪ সংখ্যক পেশী অবস্থিত।

তত্র শাখাগতাঃ প্রাহ—

একৈকছাং পদাসুলাং তিমন্তিমন্তাঃ পঞ্চদ, দশ প্রপদে, পাদোপরি ক্ষুক্তসন্ধিবিষ্টা দশ, গুল্ফতলোয়েদ শ, গুল্ফজানুনোরস্তার বিংশতিঃ, জাতুনি পঞ্চ উরৌ বিংশতিঃ, বক্ষণে দশ, এবমেক্সিন্ সক্ষনি শতং ভবতি। এতেনেত্রসক্ষিবাহ্রচ ব্যাক্ষাতে।।

প্রত্যেক পদাঙ্গুলিতে তিন তিনটি করির।
পাঁচ অঙ্গুলে ১৫; প্রাপদে ১০; পাদোপরি
কূর্চসন্নিবিষ্ট ১০; পাদতলে ও গুল্ফদেশে ১০;
গুল্ফ ও জাত্মর মধ্যে ২০, জাত্মতে ৫, উরুতে
২০ এবং বক্ষণদেশে ১০; সম্পান্নে ১০০
পেশী ১ পারে অবস্থিত আছে। স্পত্রাং ছই
পারে ২০০ শত পেশী। হন্তর্যেরও পেশীর
সংখ্যা ও অবস্থান সিক পদ্ধয়ের স্থায় জানিবে
অর্থাং প্রত্যেক হন্তে এক এক শত করিয়া
ক্রীরপে ২০০ কুই শত পেশী আছে।

অথ কোষ্ঠগতাঃ প্রাহ—

তিন্ত: 'পারৌ, একা মেঢ়ে, সেবজামেকা, ব্রণয়োছে', কিচো: পঞ্চ পঞ্চ, বন্ধিমুদ্ধনি বে, উদরে পঞ্চ, নাভ্যামেকা, পৃষ্টোদ্ধনিবিষ্টা উভয়তঃ পঞ্চ পঞ্চ দীর্ঘাঃ, পার্বয়োঃ বট্, দশ বন্ধনি, অক্ষকাংসো প্রতিসনতাং সপ্ত, বে ক্ষরাশার্ব্যাঃ, বট্ যক্ৎমীহোঞ্কেনু।

পার্দেশে (গুন্থে) ৩, মেদ্রে ১, সেবনীতে
১, মুক্বরে ২, ছই নিত্তরে পাঁচটি করিয়া দশাঁট,
বন্তিশিরে ২, উদরে ৫, নাভিতে ১, পূর্তের
উর্জভাগে উভয় পার্শ্বে সমিবিট দীর্ঘাকৃতি পাঁচটি
করিয়া ১০ টি, পার্শ্বয়ে ৬টি, বক্ষঃস্থলে ১০টি,
বাহুশির ও স্বন্ধের চতুর্দ্দিকে ৭টি, জদর ও
আমাশিয়ে ২টি এবং নরং প্রীহা ও উত্তক প্রত্যেক স্থানে ছই ছইটি করিয়া ৬টি। এই
৬৬টি পেশী কোঠে অবস্থিত।

অথ গ্রাবোদ্ধগতাঃ প্রাহ—

প্রীবারাং চতপ্রঃ, হয়োরষ্টে), একৈকা কাকলকগলয়েই, ছে তালুনি, একা ডিখ্বায়াম্, ওঠমোছে, বোণায়াং ছে, ছে নেজয়োঃ, গওয়োল্ডভন্নং, কর্ণয়োছে, চতপ্রো লগাটে, একা শিরসীতোবনেতানি পঞ্চ পেশীশতানি।

গ্রীবাতে ৪, ২মুস্থানে ৮, কণ্ঠমণিতে ১, গলদেশে ১, তালুতে ২, জিহুবার ১, ওছররে ২, নাসিকার ২, নেত্রময়ে ২, গণ্ডময়ে ৪, কর্ণরয়ে ২, ললাটে ৪, এবং মস্তকে ১, এই ৩৪টি পেনা গ্রীবার উদ্ধৃভাগে অবস্থিত।

শিরাস্থায় স্থিপর্বাণি সন্ধর্ণচ শরীরিণান্। পেশীভিঃ সংস্তান্তর বলবন্তি ভবস্তাতঃ ॥

শিরা সারু অস্থিপর ও সন্ধি সকল পেশা শারা সংবৃত থাকে। তজ্জ্ঞ ইহারা বলবান্ হয়।

শ্রীণান্ত বিংশতির্মধিকা। ধথা গর্ভাশরে তিশ্রঃ, গর্জজ্ঞিদংশ্রিতাঃ শুক্রার্ত্তবপ্রবেশিস্থান্তিশ্রঃ, যোনাবভাপ্তরতো মুখান্ত্রিতে প্রস্তাত দে, যোনাবেব বহিনির্গতে স্নোতঃপার্থ-দ্মান্ত্রিত বর্ত্ত্রলে (বানিকর্ণিকেতি যাবৎ) দে, শুনয়োঃ পঞ্চ পঞ্চ, যৌবনে তাসাং পরিবৃদ্ধির্ভন্তি। ত্ত্বীলোকদিগের উক্ত পাঁচ শত পেশীর অধিক আর ২০টি পেশী আছে। যথা—গর্ভাশয়ে ওটি, গর্ভচ্ছিদ্রসংশ্রিত শুক্রার্ত্ত্বপ্রবেশিনী ওটি, যোনির অভ্যন্তরমূপে প্রস্থত ২টি, যোনির বহিন্দুর্থে যোনিপথের উভয়পার্থন্ত কর্ণিকাশ্বরে হুইটি এবং শুনন্বরে পাঁচটি করিয়া দশটি পেশা আছে; এই দশটি পেশী যৌবনকালে বর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

পুংসাং পেঞ্চ পুরস্তাদ্ যা: প্রাপ্তা মেহনমুক্জা: । ব্রীণামার্ত্ত ভিষ্কতি ফলমন্তর্গতা হি তাঃ ॥ গালাসন্তাহ— ব্রীণাণ মাণসপেঞ্জিভিহীনানি পঞ্চশতানি । তথা চ ভোজা: । পঞ্পেশাশতান্তের বাবর্জ্বং বিদ্ধি ভূমিপ।

অতশ্চ ভিমো হারতে স্থাণাও শেফসি মুক্তরোঃ।

পুরুষদিগের লিঙ্গে ও অওকোষে যে ৩টি পেশা পূর্বে উক্ত হইয়াছে, লিঙ্গা ও কোষের অভাবে সেই ৩টি পেশী স্ত্রীলোকদিগের গর্ভাশর ব্যাপিয়া অবস্থিতি করে। কিন্তু গমদাস ও ভৌজের মতে স্ত্রীলোকদিগের পূর্বেগাক্ত পাঁচ শত পেশীর মধ্যে ঐ ৩টি কম।

অথ মন্ত্রাণি।

সল্লিপাতঃ শিরাস্বায়্-স্কিমাংসাত্ত্বিসম্ভবঃ। মন্মাণি ভেষু ভিচ্নন্তি প্রাণাঃ থলু বিশেষতঃ॥

শিরা, সায়ৢ, সিয়, সাংস ও অস্থি ইহাদের সম্পাতস্থানকে মর্ম্ম কছে। সেই সর্ম্মস্থানেই জীবের জীব বিশেষরূপে অবস্থিতি করে।

তেষাং সংখ্যামাহ--

সংস্কৃত্যক সভি দেহে মঞালি দেহিলামু।
তান্তেকাদশ মাংসে ফ্রেন্টাবন্ধিই সভি হি । "
মঞ্জীনাং বিংশতিকানি স্নায়নাং সপ্তবিংশতি ।
চম্বানিংশতে তথেকক নিবানন্ধানি তক্ত তু ।
খানিংশতি সক্ষিত্তা তাবন্ধোন ভুক্ষাং ।
খাদশোনসি কৃষ্ণেট প্রদেশে চভুদ্দশ ।
জীবায়া উদ্বভাগে তু সপ্তবিংশক্তানি হি ।

মনুষ্যদেহে সর্কাণ্ডন ১০৭টি মর্ম্ম আছে।
তর্মাধা মাংসমর্ম্ম ১১টি, অস্থিমর্ম্ম ৮টি, সন্ধ্রমর্ম্ম
২০টি, স্নার্মর্ম ২৭টি এবং শিরামর্ম্ম ৪১টি, এই
১০৭টি মন্মের ২২টি পদব্বের, ২২টি হত্তব্বের,
১২টি বক্ষংস্থলে ও কুক্ষিদেশে, ১৪টি পৃষ্টে এবং
৩৭টি গ্রীবার উর্জভাগে অবস্থিত।

তাপ্তেতানি পঞ্চবিকল্পানি মন্মাণি তবন্ধি। তঁদ্যথা— সন্তঃ প্রাণহরাণি, কালান্তরপ্রাণহরাণি, বিশলান্ধানি, বৈকলাকরাণি, রজাকরাণিটিও।

সন্তঃপ্রাণহরাণি স্থাম বাণেটকোনবিংশতিঃ।
মর্মাদেশান্তরন্তিংশং স্থাঃ কালাস্তরমারকাঃ॥
চহারিংশচ্চ চহারি বৈকলাং জনমন্তি হি।
মর্মাস্টকং রুজাকারি বিশলাম্বং ত্রিকং মতম্ ॥

নশ্ম পাঁচ প্রকার। যথা — সন্তঃ প্রাণহর, কালান্তর প্রাণহর, বিশলান্তর, বৈকলাকর ও রুজাকর। যে মন্ম আহত হইলে সন্তঃ (৭ দিনের মধ্যে) প্রাণ নত হয়, তাহাকে সন্তঃ-প্রাণহর; যে মন্ম আহত হইলে কালান্তরে প্রাণ নত হয়, তাহাকে কালান্তরে প্রাণ নত হয়, তাহাকে কালান্তর প্রাণহর; যে মন্ম হইতে শলা উদ্ধত হইবা মাত্র প্রাণহর; যে মন্ম হইতে শলা উদ্ধত হইবা মাত্র প্রাণ তাাগহয়, কিন্তু শলা শত্মল নিহিক্তথাকে, তক্ষণ মহুষ্য জীবিত থাকে, সেই মন্মকে বিশলান্ত্র মন্ম, যে মন্ম আহত হইলে অন্সের বিকলতা জন্মে, তাহাকে বৈকলাকর মন্ম এবং খ্য মন্ম আহত হইলে বিশেষ বিশেষ রুজা (যন্ত্রণা) উপস্থিত হয়, তাহাকে রুজাকর মন্ম কহে।

সন্তঃপ্রাণহর মশ্ম ১৯টি; কালান্তরপ্রাণহর মশ্ম ৩২টি; বৈকলাকর মশ্ম ৪৪টি, রুজাকর মশ্ম ৮টি; এবং বিশলাম্ম মশ্ম ৩টি।

অথ সন্তোমারকাণি মর্মাণি।

পুসাচুকাশুবিপতিঃ শক্ষো কণ্ঠশিরা ওদ্য। জন্মা বিভিনাতী ৮ সভো ছত্তি হতানি চেম।

শৃঙ্গটিক, অধিপতি, শুলা, কণ্ডশিরা, গুল, ফুলয়, বস্তিও নাভি, এই স্কল মুক্স আহিত হইলে সন্তঃ প্রাণ বিনষ্ট হয়। শৃঙ্গাটকাদি সম্ভোমারক মন্ম সকলের অবস্থান লিখিত হঠতেছে।

শৃঙ্গাটকানি।

ছাণভো ত্রাক্ষিজিহ্বাসন্তর্গকাণাং শিরামুখাণাং শিরসে। মধ্যে সংযোগস্থানং, তানি চহ'রি শিরামর্মাণি:চতুরকুল-এনাণ'নি, হতানি সন্তি সন্তোমারকাণি ভবস্তি।

নাসিক। কর্ণ নেত্র ও জিহ্বা, ইহাদের সম্ভর্পক শিরা-সমূহের মৃথ, মস্তকের মধ্যে যে স্থানে মিলিত হইয়াছে, সেই স্থানে যে চারিটা শিরামর্ম উৎপন্ন হইয়াছে, তাহাদিগকে শৃক্ষা-টক মথা কহে। শৃক্ষাটক মথোর পরিমাণ চারি অকুল। সেই স্থান আহত হইলে সম্ভঃ প্রাণ বিনষ্ট হয়।

অধিপতিঃ।

মন্তকস্তাভাররোপরিষ্টাচ্ছিরাসন্ধিপরিতা রোমাবর্ত্তঃ স একঃ। সন্ধিমর্থাক্ষমন্ত্রগ্রমাণং সংস্থামারকম্।

মস্তকের অভ্যস্তরে শিরা ও সন্ধির যে সংযোগস্থান, যাহার উপরিভাগে রোমাবর্ত্ত আছে তাহাকে অধিপতি কহে। অধিপতি সন্ধিসন্ম, ইহাব পরিমাণ অন্ধাঙ্গুল। ইহা সন্তোনারক।

माट्यो ।

ক্রবোর**ভোপরি কর্ণললা**টরোম ধ্যে তেই ছৌ প্রতিমর্পনী সা**র্জাসুলে সম্ভো**মারকে।

ক্রপ্রাপ্তম্বরের উপরিভাগে কর্ণ ও ললাটের মধ্যদেশে শব্দনামক দেড় অঙ্গুলি পরিমিত হুইটি অস্থিয়া আছে। ভাগে সম্ভোমারক।

কণ্ঠশিরাঃ (শিরামাতৃকাঃ)।

এীবারা উভয়পার্ণরোশ্চতগ্রশ্বতত্ত্র: শিরান্তা অষ্টো শিরা-মর্গাণি চতুরস্থলানি সম্মোমরকাণি। গ্রীবার উভর পার্শ্বে যে চারিটি চারিট করিয়া আটটি শিরা আছে, ভাহারা শিরামর্শ্ব; সেই শিরামর্শ্বের পরিমা চারি অঙ্গুলি, ভাহারা সন্তোমারক।

গুদমর্ম্ম ।

গুলং অসিদ্ধন্ একং মাংসমর্থ চতুরস্কুলং সংখ্যামারকম্।

শুষ্থারের অভ্যন্তরে গুল নামক যে নাড়ী আছে, তাহাই গুলম্মা। ইহা চারি অঙ্গুলি পরিমিত মাংসমন্ত্র। গুলমর্ম, সম্ভোমারক।

क्षग्रम् ।

ন্তন্ত্রেম ধ্যমধিষ্ঠায়োরস্তামাশরদ্বারং সত্তরজ্ঞসামধি-ষ্ঠানং জ্লয়ং নামৈকং শিরামন্মেলং চতুরস্কুলং সম্ভোমারকম্।

স্তন্ধরের মধ্যে বক্ষঃস্থলে হানরমর্মা, উহা আমাশরের ধার এবং সত্তরজ্ঞতমোগুণের অধিষ্ঠান। ইহা শিরামর্মা। ইহার পরিমাণ চারি অঙ্গুল, জনয়মর্মা সম্ভোমারক।

বস্থিমশ্ম।

ব্যিন (ভিপ্&কটা-গুদ্ৰজ্ঞপথেকসাম্। মধ্যে ব্যিন্তনুষ্ক্ চ একছারো ভধোমুপঃ॥ মধ্যেমর্মেশ্যে চতুরস্কুলং সভোমারকম্।

নাভি, পৃষ্ঠ, কটা, গুল, বজ্জণ ও লিঙ্গ, ইহাদের মধ্যেস্থলে বস্তি (মৃত্যাশয়) অবস্থিত, ইহার চর্ম্ম পাতলা, দার একটি এবং মুখ অধোদিকে। ইহা সায়্মর্ম, চতুরঙ্গুলপরিমিত ও সম্ভোমারক।

নাভিমশ্ম।

নাভি: প্রসিদ্ধা। শিরামর্শ্রেদং চতুরস্কুলং সম্প্রোমারকম্। নাভি কি সকলেই জানেন, ইহা শিরামর্শ্র, চারি অস্কুলি পরিমিভ, সম্প্রোমারক।

অথ কালান্তরপ্রাণহরাণি মর্মাণি।

বক্ষোম্মাণি সীনম্ভ-তলন্ধিংপ্রশ্রবন্ধয়:।
বৃহত্যে পার্বয়োঃ সন্ধী কটাকডন্ধণে চ বে।
নিত্রাবিতি চৈতানি কালান্তরহরাণি তু।

বক্ষোমর্ম্ম, সীমন্ত, তল, ক্ষিপ্রা, ইক্সবন্তি, বৃহতী, পার্ম্বসন্ধি, কটীক, তরুণ ও নিতম, এই সকল মর্ম্ম কালান্তর প্রাণহর ।

বকোমশ্মণি।

ভানমূলভানরে;হিতাপলপোপভালা, একানি বাকে।মার্মাণি কালভিরমারকাণি।

ন্তন্মূল্বল, গুনরোহিত্বল, অপলাপ্বল ও অপস্তত্ত্বল, এই আটটি বক্ষোমর্মা। ইহারাই কালান্তর্মারক।

স্থনসূলে।

ন্তনমূলে গুনংহারধন্তাদ্ ছাঙ্গুলং বাবদ্ বে শিরামর্থনী, কফপর্বকাঠতয়া কাসবাসাভ্যাং কালান্তরমারকে।

ন্তন্ত্রের অণোভাগে ছই অঙ্গুল পরিমিত যে ছুইটি শিরামার্ক আছে, তাহাই স্তন্মুলমার্ক নামে অভিহিত। এই মার্ক্স আহত হইলে কোঠ কফপূর্ণ হওয়ায় কাস খাস উপস্থিত হইয়া কালাস্তরে প্রাণ বিনষ্ট হয়।

স্তনরোহিতে।

ন্তনরোহিতে তানরোকপ্রি ধাকুলং ধাবদ্ বে মাংস-মর্মনী, বক্তপূর্বকোইত্যা কাসমাসাভ্যাঞ্চ কালাভরমারকে।

ন্তনৰ্মের উপরিভাগে হই অঙ্গুলি পরিমিত বে হুইটি মাংননন্দ আছে, তাহাই স্তনরোহিতমর্দ্দ নামে অভিহিত। সেই মন্দ্রদ্ধ আহত হইলে কোষ্ঠ শোণিতপূর্ণ হওয়ায় কাদ খাদ উপস্থিত হইয়া, কালাস্তরে মৃত্যু হয়।

जनमार्भ ।

অপলাপে) অংসক্টরোরওতাৎ পার্বরোরুপরি থে শিরামর্মনী অন্ধান্তুলে, রজেন প্যতাং গতেন কালান্তর-মারকে।

স্বন্ধকৃত্বয়ের নিমে, পাশ্বরের উপরিভাগে আদ্দাস্ব পরিমিত যে তুইটি শিরামর্ম আছে, তাহা অপলাপ। ইহা আহত হইলে পূম হওয়ায় কালাস্করে প্রাণবিয়োগ করে।

অপস্তম্ভে।

অপস্ততে উভয়তোরসো নাজো বাতবহে শির্মের্নণ অভাকুলে, বাতপূর্বকাঠতয়া কাসখাসাভ্যাঞ্ কালাভার-নারকে।

বক্ষঃস্থলের উভয়পাশ্বস্থ শাতবহ নাড়ীপ্রের অদ্ধান্ত্রল পরিমিত স্থান অপস্তম্ভ্যমন্ম নামে অভি-হিত। এই শিরামন্ত্রপ্র আহত Jহইলে কোর্চ বার্পূর্ণ হওয়ায় কাস ও শাস রোগে রোগির কালাস্তরে মৃত্যু হইয়া থাকে।

মীমন্তাঃ।

সীমন্তঃ শির্সি পঞ্চ সন্ধাঃ সন্ধিমগ্রাণি চতুরকুলানি উন্মাদক্ষ্যিতিরবিনাশৈঃ কালাস্তরমারকাণি।

মন্তকে যে পাঁচটি সন্ধি আছে, তাহাদিগকে
সীমস্তমৰ্প্ম কহে। এই সীমস্ত নানক সন্ধিমন্ম
সকলের প্রত্যেকের পরিমাণ চারি অঙ্গুলি।
সীমস্তমৰ্প্ম আহত হইলে উন্মাদ ভন্ন ও চিত্তবিভ্রম
উপস্থিত হওয়ায় কালাস্তরে প্রাণ বিনষ্ট হয়।

তলানি।

তলানি মধ্যাকুনিমত্নক্ষম হত্তত মধ্যং তলম্, এবমপরত পাদরোক। চ্যারি তলানি মাংসমগ্রাণি ব্যক্তানি রুজাভিঃ কালান্তরমারকাণি।

মধ্যমাঙ্গুলির সমস্ত্রে হস্ততলের মধ্য-ভাগে হুই অঙ্গুল পরিমিত স্থান তলমর্ম্ম নামে অভিহিত। এই তলমর্ম্ম চারিটি, ফ্রণা
ফুই হস্ততলে ফুইটি ও ফুই পদতলে ফুইটি।

তলমর্ম্ম আহত হইলে অত্যক্ত ফ্রনা উপস্থিত

হওয়ায় কালান্তরে প্রোণ বিনষ্ট হয়।

ক্ষিপ্রাণি।

অস্ঠাকুল্যোম থ্য কিপ্রম্। তচ্চ হস্তয়েছে,
পাদরোকে, এবং চছাবি সাধ্মর্মণার্কাকুলাভাক্ষেপকে।
কালাভ্রমারকাণি।

বৃদ্ধান্ত্র ও তরিকটন্থ অঙ্গুলির নধাে
কর্মান্ত্রপ্রিমিত ক্ষিপ্র নামক শিরামর্থ অবস্থিত। সেই ক্ষিপ্রমর্থ চারিটি। ফগ্— ডুই হল্তে ডুইটি, ডুই পদে ডুইটি। ক্ষিপ্রমর্থ আহত হইলে আক্ষেপরোগ উপস্থিত তওয়ায় কালাস্তরে প্রাণবিয়োগ হয়।

ইন্দ্রবস্তয়ঃ।

ইন্দ্রবন্তয়: প্রকোষ্ঠয়োম ধ্যে ছৌ, জজায়োম ধ্যে ছৌ এবং চন্থারি মাংসমশ্রাণি ছাকুলানি; শোণীতক্ষমেণ কালাভরমারকাণি।

প্রত্যেক প্রুকোষ্টেব ও প্রত্যেক জন্সার মধান্থলে এক একটি করিনা যে চারিটি মাংসমন্দ্র আছে, তাহা ইন্দ্রবন্তি নামে অভিহিত। ইন্দ্রবন্তির পরিমাণ ছুই অঙ্গুলি। এই মন্দ্র আহত হুইলে শোণিতক্ষর হেতু কালান্তরে প্রাণবিয়োগ হয়।

রহত্যে।

বৃহত্তা ভন্মূলাত্মজ্ঞ পৃষ্ঠবংশং যাবৎ শিরণমন্ধণী অর্দ্ধালুলে; শোণিতাতিপ্রবৃত্তিনিমিত্রৈপদ্ধবং কালা-ভরমারকে।

্ স্তন্মূল হইতে - ঠিক সমস্তে পৃষ্ঠবংশের উভর পার্শ্বে অর্জাঙ্গুল পরিমিত যে তুইটি শিরামর্শ্ব আছে, সেই মর্শ্বেল্বরই বৃহতীমর্শ্ব নামে অভিহিত। বৃহতীমর্শ্ব বিদ্ধ হইলে অতিশর রক্তনাব জনিত উপদ্রব উপস্থিত হওয়ায় কালাস্তরে প্রাণ বিনষ্ট হয়।

পাৰ্যসন্ধী।

পার্থসন্ধী জ্বনপার্থয়োঃ সন্ধী শিরামর্থনী, অর্ধাঙ্গুলে; শোণিতপূর্ণকোঠতয়া কালান্তরমারকে।

উভয় জঘন ও উভয় পার্শ্বের দক্ষিপ্তলে যে হুইটি অন্ধাঙ্গুল পরিমিত শিরামর্শ্ম আছে, তাহাই পার্শ্বদিন্ধিমর্শ্ম। এই মর্শ্ম আছত হুইলে কোঠ রক্তপূর্ণ হওয়ায় কালাস্তরে প্রাণ বিনষ্ট হয়।

কটীকতরুণে।

কটীকতকণে ত্রিকসন্নিধানে উভয়ত শ্রোণিকাণ্ড লক্ষ্যীকৃত্যান্তিনী স্থিতে অস্থিমন্থানী অন্ধান্ধুলে; শোণিত-ক্ষযাৎ পাঞ্জনিবর্ণন্ধপং কৃত্যা কালান্ত্রমান্ত্রকে।

ত্রিকস্থানের (নেক্সণ্ডেন নিম্ন প্রান্তের)
নিকটে উভর দিকে শ্রৌণিকাণ্ডে অর্ফাঙ্গুলি
পরিমিত যে গুইটি অন্তিমন্ম আছে, তাহাই
কটিকতরূপমর্ম নামে অভিহিত। এই মর্ম্ম
আহত হইলে শোণিতক্ষম হেতু রোগী পাপ্প ও
বিবর্ণ হইয়া কালান্তরে মৃত্যুমুখে পভিত হয়।

নিত্রে।

নিভাষী প্রসিদ্ধে ছো অন্তিমগুণী আন্ধান্ত্রনা : সাধান কাশ্যনাধেণ চৌর্কলেন চ কানাগুরমান্ত্রনা।

নিতর কি তাই সকলেই জানেন, এই নিতরহয়ে অদাকুলি পরিমিত যে জুইটি অস্থিমন্দ্র আছে, তাইটি নিতরমন্দ্রনাথে কপিত। এই মন্দ্র আহত ইইলে অধংকারের শোষ ও দৌর্কলা উপস্থিত হওয়ায় কালান্তরে প্রাধ-বিয়োগ হয়।

অথ বৈকল্যকরাণি i

লেহিভাক্ষাণিজানুকী-কুচণবিটপকুর্পরাঃ।
কুকুন্দরে কক্ষধরে বিধুবে সকুকাটিকে।
অংসাংসফলকাপান্ধ। নীলে মক্তে ফণে তথা।
বৈকল্যকরণান্তাহ্বাবর্তে) ছৌ তথৈব চ।।

লোহিতাক্ষ, আণি, জান্থ, উবর্বা, কৃর্চচ, বিটপ্র, কূর্পর, কুকুন্দর, কক্ষধর, বিধুর, ক্লকাটিকা, অংস, অংসফলক, অপাক্ষ, নীলা, মন্তা, ফণ ও আবস্তু, ইহার। বকলাকর মর্ম। ইহাদের বিষয় লিখিত হইতেছে।

লোহিতাক্ষাণি।

উক্যা উর্জমধাে বক্ষণসন্ধে-লে হিতাকং নাম। তচ ৰে বাহ্বাে, ৰে উর্কোঃ, এবং তানি চুম্বারি শিরামন্মাণ্যন্ধানুলানি বৈকলাকরাণি: তত্ত্ব শোণিতক্ষমেণ পক্ষাঘাতঃ সক্লিসালো বা।

উব্বী নামক মধ্যের উপরে এবং ব্জ্ঞাণস্থির নিমে লোহিতাক নামক বৈকল্যকর মধ্য অবস্থিত। ইং. শিরামন্ম। ইহার পরিমাণ অকাঙ্গুলি। নোহিতাক্ষমন্ম ৪টী। বথা—হই বাহতে ২টা, ছং উরুতে ২টা। এই মন্ম আহত হইলে শোপিতক্ষ হওয়ার পক্ষাবাত বা পায়ের অবসাদ হইয়া থাকে।

আণ্যঃ।

আণয়: জামুন উর্জন্ উভরো: পার্যরোজ্যকুনম্ এক্সিন জামুনি বে, অপর্যমিন বে এবং চতত্র:, তানি মায়ুম্মাণি অন্ধাকুলানি বৈকল্যকরাণি; তত্ত্ব শোণাভি-বৃদ্ধি: সক্থিত্তভূচ।

জামুহমের তেন অঙ্গুল উর্দ্ধে উভয়পার্শ্বে অর্দ্ধান্থুল পরিমিত এক একটি করিল চারিটি আণি নামক বৈকল্যকর মায়ু মশ্ম আছে। এই মশ্ম আহত হইলে অত্যক্ত শোথ ও পারের ত্ত্বকা হয়।

জামুনা।

জামুনী হুজোর্কে!: সন্ধী সন্ধিমগ্রনী। ছাঙ্গুনে বৈমলাকরে; অত্ত পঞ্চা।

জ্জা ও উর্নর সন্ধিষ্ঠানে গুই অসুল পরিমিত জামু নামক বৈকলকের সন্ধিমর্ম অবস্থিত। এই মণ্ড আছত হঠলে শঞ্জতা (খোজা) হয়।

উর্ব্যঃ।

উৰ্ব্য:—ৰে উৰ্ফোম ধ্যে, ৰে প্ৰগণ্ডরোম ধ্যে, এবং চতত্ৰঃ শিরামগানি; একান্ব্যপ্রথানা বৈকলাকারিণাঃ, তত্ত্ব শোণিভক্ষাৎ সক্ধিবাহ্মোঃ শোষঃ। উক্রব্যের মধ্যে দুইটি এবং প্রগণ্ড (করুই হইতে বগল পর্যান্ত) ব্যের মধ্যে দুইটি, সম্নারে চারিটি শিরামর্ম আছে, এই শিরামর্ম উবর্বী নামে অভিহিত। ইহার পরিমাণ এক অঙ্গুলি। এই মর্ম আহত হইলে শোণিতক্ষয় হেতু পায়ের ও বাছর শোষ হইয়া থাকে।

কুর্চাঃ।

প্রণার কুঠা কুলোম থাে তরা কর্মধশচ এবং চছার: স্বায়ুমগাণি বৈকলাকরাণি; ততা পাদরোভামণ-বেপনে ভবতঃ। (কিপ্রভোপ্রিষ্টাভুভয়তঃ কুর্চোনাম)।

পদছরের অঙ্গুষ্ঠ ও তন্ধিকটস্থ অঙ্গুলির মধ্যে
অর্থাৎ ক্ষিপ্রমন্ধ্রের উর্দ্ধ ও অধোদিকে এক
একটি করিয়া চারিটি বৈকল্যকর কূর্চ্চ নামক
সায়ু মর্ম্ম আছে। এই মর্ম্ম আহত হইলে
পাদত্রমণ (পা ঘুরিয়া যাওয়া)ও পাদকম্প হয়।

বিটপে।

বিটপে বে বক্ষণবৃষণয়োম ধ্যে স্থায়ুমৰ্থণী একালুলে বৈকল্যকরে; তত্ত্ব বাঙামল্ডক্রতা বা ।

বজ্জান (কুঁচকিস্থান)ও ব্যণ-(অওকোষ)
ঘ্রের মধ্যে এক অঙ্গুলি প্রিমিত বিটপ নামক
ঘুইটি বৈকলকের সায়ুমর্ম আছে। ইহা আহত
হুইলে মণ্ডতা বা গুক্রাক্সতা হয়।

কূপরো।

কুৰ্পরে) কন্ধোণিজো বৌ সন্ধিমর্প্রণী ছাঙ্গুলে নৈকল্যকরৌ, তত্ত বাছমধ্যে সন্ধোচঃ।

কমুই থমে তুই অন্তুলি পরিমিত কুর্পরনামক তুইটি বৈকল্যকর সন্ধিমর্ম আছে, ইহা আহত ইইলে বাহুর সক্ষোচ হইয়া থাকে।

কুকুন্দরে।

কুকুলরে নিতবকুগকে যে সন্ধিমন্ত্রণী অধীক্ষুলে নৈকলাকরে; দত্ত স্পর্শাক্তানমধ্যকায়ন্ত চেষ্টোপধাতক।

নিত্তকুপে অর্থাঙ্গুল পরিমিত যে সন্ধিমর্থ আছে, তাহাই কুকুন্দরমর্থা নামে অভিহিত। তই নিত্তে তইটি কুকুন্দর। ইহা আহত ছইলে স্পর্শশক্তির জ্বোপ ও অধ্যকায়ের ক্রিয়াহানি ছইয়া থাকে।

কক্ষধরে।

কক্ষধরে বক্ষঃকক্ষ্মোমধ্যে খে স্নায়্মর্থনী একাঙ্গুনে বৈহুলাক্ষ্যে; তত্ত্ব পকাঘাতঃ ।

বক্ষ: ও কক্ষা (বগল) এই উভয়ের মধ্যে এক অঙ্গুলি পরিমিত কক্ষধর নামক ছইটি বৈকল্যকর স্বায়ুম্ম ছই দিকে আছে। এই মূর্ম্ম আছত ছইলে পক্ষাঘাত উপস্থিত হয়।

বিধুরে।

বিধুরে কর্ণপৃষ্ঠভোহধঃসংশ্রিতে কিঞ্চিন্নাকারে ছে স্বায়ুমশ্বী অন্ধান্ধনে বৈকলাকরে তেও বাংধিগায়।

কর্ণবারের পশ্চান্দিকের নিম্নভাগে অদ্ধান্ধুবি পরিমিত বিধুণমন্ম নামক ছইটি বৈকলকের স্বায়ু-মন্ম আছে। এই মন্ম আহত হইলে বারিধা কোলা) রোগ উপস্থিত হয়ণ

क्रकाणिक ।

কৃষাটিকে শিরোগ্রীবয়োগভয়তঃ সন্ধী ছে সন্ধিমর্মণী অর্দ্ধাঙ্গুলে বৈকলাকণ্ণে তত্র শির্কেম্পঃ।

মন্তক ও গ্রীবার সন্ধি ইলে উভয় পাথে আর্কাঙ্গুল পরিমিত ছুইটি বৈকল্যকর সন্ধিমধ্য আছে, তাহাই ফুকাটিকা নামে অভিহিত। ফুকাটিকামশ্ম আহত হুইলে শিরংক্সে উপস্থিত হয়।

ष्यः(म)।

আংসৌ সংক্ষী সায়ুমন্মণী অদ্ধাঙ্গুলে বৈকলাকরে; তত্ত্র বাছস্তম্ভঃ।

সংশে সর্গাৎ রক্তম্ব অন্ধার্ক প্রিনিত বৈকলাকর হুইটি সায়ুমর্ম আছে। তাহাই অংসম্ম নামে অভিহিত। এই মুখ্য আছত হুইলে বাহুত্ত অর্থাই বাহুত্বের ক্রিয়ালোপ হয়।

ष्रम्कनाक।

অংসফলকে .পুঠে:পরি পৃঠবংশমূভর তন্ত্রিকসময়ে । অন্তিমল্লী আদ্ধীসুলে বৈকলাকরে : তক্ত বাংকো: শুক্ততা শোৰণ্ট। (গ্ৰীবারাম্ অংসম্বরক্ত চ সংযোগো যত্র তৎ ত্রিকম্)।

পৃষ্ঠের উপরিভাগে মেরুদণ্ডে যে গ্রিক্সন্ধি আছে (গ্রীবার যে স্থানে স্কন্ধব্যের সংযোগ ইইরাছে), সেই ত্রিক্সন্ধিতে অন্ধাঙ্কুল পরিমিত বৈকল্যকর যে ছুইটি অন্ধিমর্ম আছে, তাহাই আংসফলকমর্ম্ম নামে কথিত। সেই মর্ম্ম আহত ইইলে বাছৰয়ে শৃত্যতা ও শোষ উপস্থিত হয়।

অপাঙ্গে।

অপান্ধো নেত্রহোরত্তৌ শির'মন্দরী অর্দ্ধাঙ্গুলো বৈকল্যকরে তত্তান্ধাং দৃষ্ট্যুপ্রণতো বা।

নেত্রবারে প্রাস্তকে অপাঙ্গ কহে, সেই
অপাঙ্গ অপাঙ্গমার্ম নামে অভিহিত। এই বৈকল্যকর অপাঙ্গ নামক শিরামম্মন্তর অন্ধাঙ্গুল প্রিমিত।
ইহা আহত হইলে আন্ধা বা দৃষ্টিন অপ্যাত
হয়।

নিলে মথে চ।

নালে মতে চ কঠনাড়ীমুক্যতক্ষ্টবো ধমতঃ, ছে নালে ছে মতে। তত্ৰ একা মতা একা নীলা একমিন্ পাৰে, অতা মতা অতা নীলা অপর্মিন্ পাথে। ছে ছে শিরা-মর্থনী ছাঙ্গুলে ত্বকলকরে; তত্র মুক্ত। শিক্ত-অবতা বসাত্রাহিতা চ।

কণ্টনালীণ উত্তর দিকে চারিটি বমনী আছে, ভাহাদেব গুইটিব নাম নীলা ও একটি মন্তা, অপর পার্শ্বে একটি নীলা ও একটি মন্তা, অপর পার্শ্বে একটি নীলা ও একটি মন্তা আছে। নীলা কণ্টনালীর দিকে, মন্তা গ্রীবাব দিকে অবস্থিত। এই গ্রানীচত্তরের প্রত্যেকটিতে ছই অঙ্গুল পরিবিত, য চারিটি দিরাগণ্য আছে, ভাহাই নীলাশর্ম ও মন্তামন্দ্র নামে অভিহিত। এই বৈকলাকর চাবিটি মন্দ্র আহত হইলে মুক্তা, স্বরের বিকৃতি ও রমগ্রহণ শক্তিব নাশ হয়।

ফুণে ।

ফানে আশেমার্গমূভয়তঃ প্রেন্ডোমার্গল্লতিবন্ধে অভান্ত-রতঃ শির মন্ত্রী বৈকল্যকরে, তত্র গন্ধান্ত্রম । নাসিকা রম্ব্রদ্বরের অভ্যস্তরে অর্দ্ধাঙ্গুল পরি-মিত বৈকল্যকর যে হুইটি পিরামর্ম আছে, তাহাই ফণমর্ম্ম নামে অভিহিত। এই মর্ম্ম আহত হুইলে থ্রাণশক্তি বিনষ্ট হয়।

আবর্ত্তো।

আবৰ্জে ক্ৰবোৰপরিনিয়য়োঃ সদ্ধিমর্মণী অর্দ্ধাঙ্গুলে বৈকল্যকরে; তত্তাশ্ব্যং দৃষ্টগুলখাতন্চ।

জর উপরে ও নিম্নে অদ্ধাঙ্গুল পরিমিত ধে হুইটি বৈকল্যকর।সন্ধিমর্গ আছে, তাহাই আবর্ত্ত-মর্গ্ম নামে অভিহিত। এই মর্গ্ম আহত হইলে অন্ধতা বা দৃষ্টির উপবাত হয়।

ত্রথ রুজাকরাণি।

গুল্ফো ছো মণিবজো ছো তথা কুর্চশিরাগিদ চ। রক্তাকরাণ জানীয়ালষ্ট্রেডানি বৃদ্ধিনান।

চুইটি গুল্ক, ছুইটি মণিবন্ধ এবং চারিটি । চুচ্চশিরঃ, এই আটটি রুজাকর মক্ষ। ইহাদের বেবরণ লিখিত।হুইতেছে।

ওলকমাম।

গুল্কে) ঘূণ্টিকে স্লিমশ্বণী দ্বাস্থ্যনী রাজাকরে); তত্র রাজা প'দক্তম্বং পঞ্জত। ব।।

ঘুনিকা অর্থাং গুল্কন্বরে হুই অসুলি পরি-মিত যে হুইটি কুজাকর সন্ধিন্দ্র আছে, তাহাই গুল্কন্দ্র নামে খ্যাত। এই মুদ্র আহত হুইলে অতিশ্য যরণা, থালস্ভন্ত বা শঞ্জতা জ্যো।

মণিবক্ষো।

মণিকানী হত্তকে উদ্ধান দ্বিস্থানী হাৰুলে। কভাকিতো তক হততে জিলান ছিত্যান

হস্ত ও প্রকোষ্ঠের মধ্যে মণিবরু কৈজি) নামক স্থানে হই অঙ্গুলি পরিহিত শীড়াকর য়ে সন্ধিমর্ম আছে, তাহাই মণিবরুমর্ম নামে

অভিহিত। ই**হা আহত হইলে হস্তব্**য়ের ক্রিসা লোপ হয়।

কূর্চ্চশিরাংসি।

কুর্চপিরাংসি পাদসন্ধেরধ উভয়তঃ, একমিন্ পাদে বে, বে চ বিতীয়ে এবং চন্থারি স্নাম্মর্মাণ্যেকাস্থ্লানি রুজাকরাণি: তত্ত্ব রুজা শোকণ্ড।

পদসন্ধির (গুল্ফসন্ধির) নিমে উভয় দিকে
এক একটি করিয়া এক অঙ্গুল পরিমাণে যে হুইটি
পীড়াদায়ক সায়ুদর্ম আছে, তাহাই কূর্চেশিরোমর্ম্ম
নামে অভিহিত। এই কূর্চেশিরোমর্ম্ম এক পায়ে
ছুইটি, অপর পায়ে তুইটি, সমুন্টায়ে চারিটি।
ইহা আহত হুইলে অতাও যরণা ও শোণ উপস্থিত
হয়।

অথ বিশল্যম্পানি।

ভ**ংক্রেপে) রপনী চৈব বিশল্যায়ং জিকং মতম্**॥

· উংক্ষেপ্মশ্ব ছুইটি এবং স্থপনীম্বা একটি সমূন্যে তিনটি বিশ্লায় ম্বা । '

उৎক्रिश ।

উৎক্ষেপ্ত। শৃষ্ধায়ারপরি কেশান্ **যাবং সার্মগ্রনী** অন্ধান্ধলে। তয়োর্নিদ্ধারণ সশল্যো জীবেং পাকাং পতিতপলো বা; উদ্ধৃতপল্যস্ত ফ্রিম্বেড। অতএব বিশ্লামুদ্ধৃত্যপল্যং হন্তীতি বিশ্লাম্মন।

শুখাবনের উপরে কেশ স্থান পর্য্যন্ত অর্দ্ধান্ত প্রিমিত যে হুইটি স্বায়ুমর্ম্ম আছে, তাহাই উং-ক্ষেপ নামক বিশল্যস্থমর্ম্ম। এই মর্ম্ম শল্য ধারা বিদ্ধান্ত ইলে মতক্ষণ ভাষতে শল্য থাকে, ততক্ষণ মন্ত্রম জীবিত থাকে, শলা উদ্ধৃত হুইলে মরিয়া বার, কিন্দু যদি বিদ্ধান্তান পাকাতে শল্য আপনা হুইতে থসিয়া পড়ে, ভাষা হুইলে বাচে। বিশল্য অর্থাৎ উদ্ধৃত্তশল্য ব্যক্তির প্রাণ বিনাশ করে বিলিয়া এই মর্মাকে বিশ্লামুম্ম্ম কছে।

स्थानीयर्थ ।

ছপনী একা জ্বনোম ধাে ।শিরামর্শ্লেদমর্দ্ধাকৃলং বিশন্যস্থা।

জন্ধরের মধ্যে অন্ধাঙ্গুলি পরিমিত স্থপনী নামক বিশল্যন্ন শিরামর্ম্ম অবস্থিত। প্রবিষ্ট শল্য ইহা হইতে উদ্ধৃত হইলে প্রাণবিয়োগ হয়।

মর্শ্বেধনফলম্।

সপ্তরাজান্তরে হতুঃ সন্তঃপ্রাণহরাণি হি। কালান্তরপ্রাণহরং পক্ষে মাসে চ মাধুকম্ ॥

সন্তঃ প্রাণহর মশ্ম আহত হইলে সপ্ত রাত্রির মধ্যে প্রোণ বিনষ্ট হয়। কালান্তর প্রাণহর মর্শ্ম আহত হইলে এক পক্ষ বা এক মাসের মধ্যে মৃত্যু হইয়া থাকে।

সন্তঃপ্রাণহরঞ্চন্তে বিদ্ধং কংলেন মারয়েং। কালান্তরে প্রাণহরমন্তে বিদ্ধন্ত হুংখদন্।।

যে সকল মন্ম সম্ভঃপ্রাণহর, তাহারা যদি অন্তভাগে বিদ্ধ হয়, তাহা হইলে সম্ভঃ প্রাণনাশ না করিয়া কালান্তরে অথাং একপক্ষ বা এক মাসের মুদ্ধো প্রাণসংক্ষর করে। আর ঘাহারা কালান্তরে প্রাণনাশক মন্ম, তাহারা যদি প্রান্তভাগে বিদ্ধ •হর, তাহা হইলে কালান্তরে মারক না হইয়া অত্যন্ত হংশপ্রদ ইইয়া থাকে।

> মণ্মাণাধিষ্ঠায় হি যে বিকারা-মূচ্ছন্তি কাল্পে বিবিধা নরাপাম । প্রায়েণ তে কুদ্রুতসা ভবন্তি বৈজ্ঞেন বজৈরপি সাধ্যমানাং ॥

যে সকল রোগ মানবের মম্মন্থান আশ্রয় করিয়া উংপন্ন হয়, তাহারা বৈশ্বকর্তৃক স্বত্নে চিকিংসিত হইলেও অতি কট্টসাধ্য হইয়া থাকে।

অথ শিরা |

সন্ধিবন্ধনকা রিশ্যো ,দোবধাতুবহাঃ শিরাঃ। নাজাং সর্বা নিবন্ধাতাঃ প্রতর্জ্জ সমস্ততঃ॥ সন্ধিবন্ধনকারিণী এবং দোষ ও ধাতুবাহিনী সমস্ত শিরা নাভিতে সম্বন্ধ। তাহারা সেই নাভি হইতে শাখা প্রশাখা ম্বারা সর্বাবন্ধবে পরিব্যাপ্ত ইইয়াছে।

শরীরং সকলকৈতচ্ছিরাভিঃ পোষ্যতে সদা। প্রণালীভিরিবারামাঃ কুল্যাভিঃ ক্ষেত্রধান্তবং॥

জল প্রণালী ধারা যেমন উন্থানের বৃক্ষ সকল পরিপুষ্ট হয়, কুলা অর্থাৎ ক্ষত্রিম থাত ধারা যেমন ক্ষেত্রের ধান্ত সকল সকল বর্দ্ধিত হয়, ক্র সকল শিরা ধারাও সেইরূপ সমস্ত শরীরের পোষণ ইইয়া থাকে।

প্রমারপার্ক্নাদি-জিয়াছিঃ সত্ত হথানা। নিরা এবোপার্ক্তি তাঃ কাং সঞ্চতানি হু॥

মন্বয়শরীরে সাত শত শিরা আছে। সেই শিরা দারাই সতত দেহের প্রসারণ ও আকুঞ্নাদি কিয়া নিকাহিত হয়।

যথা জনদলে সাক্ষাদ্ দৃগুন্তে এতভাঃ শিরাঃ। তথৈব দেহিনো দেহে বর্তন্তে সকলাঃ শিরাঃ॥

বৃক্ষপত্তে শিরা সকল যেমন সেবনী হইতে শাখা প্রশাখা দ্বারা স্কাবরবে প্রতত হইয়া থাকে, দেহির দেহে শিরা সকলও সেইরূপ ভাবে অবস্থিতি করে।

নাভিন্তাঃ প্রাণিনাং প্রাণাঃ প্রণাঃ ভিরুপারিতা। শিরাভিরারতা নাভিশ্চফনাভিরিবারকৈঃ॥

প্রাণিগণের প্রাণ নাভিতে অর্থাৎ নাভ্যাবরক শিরাসমূহে অবস্থিত। (শিরাসমূহের
প্রাণধারকত্ব শক্তি বিশেষরূপে আছে বলিয়াই
এন্থলে শিরাসমূহকে প্রাণ বলিয়া উদ্দেশ করা
ইইয়াছে।) নাভিও সেই প্রাণকে অর্থাৎ
শিরাসমূহকে আশ্রম করিয়া আছে। চাকার
নাভি যেমন অর অর্থাৎ পাথি সকল ধারা
চতুদ্দিকে ব্যাপ্ত, মন্মেরের নাভিও সেইরূপ
শিরাসমূহ ধারা আর্বত ইইয়া থাকে।

তদ্ যথা-তাসাং খলু মৃগশিরাশ্চরানিংশং। তাসাং দশ বাতক্সাং, দশ পিত্তবহাঃ, দশ শ্লেমবহাঃ, দশ রন্ত-বহাঃ। তাসাং খলু বাতবহানাং বাতস্থানগতানাং সপঞ্চপ্ততিশতং ভবতি। তারতা এব পিত্তবহাঃ

পিন্তস্থানগতা: শ্লেমবহান্তাবভা: শ্লেমস্থানগতা:, রক্তবহা: বকুৎমীহগতাঃ। এবং শিরাঃ সপ্তশতানি ভবস্তি।

শরীরে যে সাত শত শিরা আছে, তাহা- : দের মূল শিরা ৪০টা। তাহাদেরর ১০টা বাতবহ, ১০টা পিত্তবহ, ১০টা শ্লেম্ববহ এবং ১০টী রক্তবহ। বাভস্তানগভ বাভবহ ঐ ১০টী মুলশিরা শাখা প্রশাখা ছারা ১৭৫ সংখ্যক এবং পিত্তস্থানগত পিত্তবহ ১০টা শিরা ১৭৫ সংখ্যক : শেলস্থানগত শেলবহ ১০টা শিরা ১৭৫ সংখ্যক: ও যক্কংপ্লীহগত রক্তবহ ১০টা শিরা ১৭¢ সংখ্যক অর্থাং ৪০টা মূলশিরা হইতে সমূদরে ৭০০ সংখ্যক শিরা হইয়াছে।

ভত্ত খাত্ৰহা একল্মিন সক্ষনি প্ৰক্ৰিংশতিং । এতেনেতরসক্ষিণাছ চ বাংগাটো। বিশেষতঃ কোতে চতুন্তিংশৎ, ভাষাং শ্রোগাণ ওদমেচ্বাসিদার্শগ্র আন্তী, একচহারিংশৎ জন্রণ উদ্ধিং-ভাসাং চতুর্জণ গ্রীনামা, চত্রা কৰ্ন্যোঃ, নব জিহ্বায়াং, যট নাসিকান্মন্, অষ্ঠা নেএ য়াঃ। এবং বাতবহানাং সপঞ্চসপ্ততিশতং ভবতি। এবং বিভাগঃ শেষাণামপি। বিশেষতন্ত্ৰ পিত্তবহা নেএয়োদ'শ, কৰ্ণয়োদে' এবং রক্তবহাঃ, শেশবহাস্ত বে'ড্র আনৈ'হ'ে, কর্ণনােছে। এবং শিরাণাং সপ্তশতানি বাা্থাতানি।

প্রত্যেক পায়ে ২৫টা করিয়া ৫০টা, এবং প্রত্যেক হাতেও ২০টা করিয়া ৫০টা বায়ুবহ শিরা আছে। কোঠদেশে ৩৪টা, তন্মধ্যে নিতম্বহমে, গুছে ও লিঙ্গে ৮টা, এই পার্বে এইটি করিয়া ৪টা, পৃষ্ঠদেশে ৬টা, উদরে ৬টা এবং বক্ষংস্থলে ১০টা। জ্বরুর উদ্ধভাগে ৪১টা, তন্মধ্যে গ্রীবাতে ১৪টা, কর্ণস্থার ৪টা, জিহ্বার ৯টা, নাসিকাম জী ।এবং নেম্বনে ৮টা। এইরুণে ১৭৫টা বাতবহ শিরা নুগত শরীরে বাপ্তি হইয়া আছে। এংরপে বিভাগান্তসারে পিত্তবহ প্রেম্মবহ 'ও গক্তবহ শিরা সকলও দেহে । অবস্থিত আছে। ভবে বিশেষ এই, বাতবং শিরা নেত্রন্থয়ে ৮টা ও কর্ণন্থয়ে ৪টা আছে, কিন্তু পিত্তবহ ও গুৱাবহ শিরা নেত্রম্বরে ১০টা ও কর্ণব্যে ২টা এবং শ্লেম্ববহ শিক্ষা প্রাবাতে ১৬টা

ও কর্ণে ২টা আছে; ইছাদের এইমাত্র প্রভেদ দই হয়। এই প্রকারে ৭০০ শত শিবার বিষয় কথিত ২ইল।

ভিয়'পামপ্রতাঘাতমমোহং বৃদ্ধিকর্মণাম। করে।তাজান গুণাংশ্চাপি স্বাঃ শিরাঃ প্রনশ্চরন্॥ ক্রিয়াণাং প্রদারণাকুঞ্নাদীনাম্, "অমোহং বুদ্ধি-कर्मणाः वृद्धीलियांगाम् मनमः वृद्धानः त्य त्य विवास ब्लानः করোতীত্যর্থঃ। অফান গুণান রসাদিব্যাপন্তারা শরীর-त्भागनामीन ।

বদা ভু কুপিডো বায়ুঃ শিরাঃ স্বাঃ প্রতিপ**ন্ত**ে। তদান্ত বিবিধা রোগা জায়তে বাতসম্ভব:॥

স্বকীয় শিরার স্কারিত বায় শ্রীরের প্রসারণ ও আকুঞ্চনাদি ক্রিয়া সম্পাদন করে; বৃদ্ধিকশ্রের অফোহ অর্থাৎ মন ও বৃদ্ধির স্ব স্ব বিষয়ের জ্ঞানোৎপাদন করে, তান্তর ওসাদ-প্রিচালন স্বার। শ্রীরের পোষণাদি ক্রিয়া সকল ৰে ৰে পাৰ্যাে; ষ্ট পৃ.ষ্ঠ, ভাৰতা এৰ উদ্ধে, দশ বক্ষি, ^{ক্ষা}ক নিয়া থাকে। কিন্তু ঐ বৃত্তি কৃষ্ণিত হইয়া স্থানিয়া সঞ্গ কবিলে বাতজ্নিত বিবিধ বোগের উৎপত্তি হয়।

> অ্রিঞ্ডাময়ণ্ডিমখিলী প্রিমরোগতাম । করে। ভাতান ওপংকাপি পিতৃষ্ট্রিরাক্রের ॥ "আরোগতাং" স্থৈ ভিকরোগালুখণ ভিন। ভাষ্যান গুণাণুঁ মেধাৰুদ্দিদশ্ৰণ জাদৌন্। যদা তু কুপিতা পিত্রং দেবতে স্ববহাত শিরাঃ। তদাক্স বিবিধা রোগা জায়ত্রে পিত্রসম্ভবা: ॥

> স্বৰ্ণায় বিশ্বয় সঞ্চাত্ৰত প্ৰিছ প্ৰতীয়ের উজ্জন্য, সরে কৃতি, আগ্রর দীখি, পৈত্তিক নোগের অন্তংপত্তি এবং মেধা বুদ্ধি ও দর্শন-भङ्गोनि छ। मकन छैरशानन कुरत्। किन्नु धे পিও কুণিত হুইয়া যখন স্থানিকার বিচরণ করে. তথ্য শ্রীবে নানাবিধ পির্জনিত লোগ ম্যান্য্য করিয়া খাকে।

> ব্ৰেংমক্ষেধ্ৰ সন্ধীনাং ব্ৰেফ্যা নলম্বারাগভাম ৷ করে। হাতান ওপাংক(পি বলাসঃ স্বাঃ শিরাকরন্। "অরোগতাং" - কৈল্মিকরে সামুৎপত্তিম্। মুণ্'ন" ব্রপুস্ত'দ'ন। ষণা ভু বু পিড: সেখা স্বাঃ শিরা, প্রতিপ্রতাত । ভলাক্ত পিবিশা রোগা ভারতে **রেখসম্ভ**বাং ।

স্বকীয় শিরায় সঞ্চরিত শ্রেমা শরীরে চিক্কণতা, দল্পি সকলের দৃত্তা, শ্রেমিক রোগের অনুংপত্তি এবং বলপুট্যাদি গুণঃসকল উৎপাদন করে। কিন্তু শ্লেমা ধথন কুপিত হইয়া স্বাশরায় বিচন্দ করে, তথন শ্লেমজনিত বিবিধ রোগ জন্মাইয়া থাকে।

ধাত্নাং প্রনং-শ্বং স্পর্কিন্সসংশয়ন।
শ্বনিরাহ্ম চরদক্তং কুব্যাচোন্তান্ গুণান্পি ॥
"অন্তান্ গুণান্" বলপ্ট্যাদীন্।
যদা তু কুপিতং রক্তং সেবতে শ্বহাং নিরাং।
তদান্ত বিবিধা রোগা জায়ক্তে রক্তস্কবাং ॥

স্বকীয় শিবার সঞ্চিত রক্ত, ধাতুসমূহের পূর্ণতা, দেহের স্থানর বর্গ, স্পর্শপ্তানের পটুতা এবং শরীরের বল-পূট্যাদি গুণ সকল সম্পাদন করে। কিন্তু রক্ত যখন কৃপিত হইরা অশিরায় সঞ্চরণ করিতে থাকে, তথন রক্ত মৃষ্টিজনিত বিবিধ রোগ স্থানয়ন করে।

তত্রারণা বাতবহাঃ পৃথ্যন্তে বায়ুনা শিরাঃ। পিতাত্মধাশ্চ নীলাশ্চ শীতা গৌথঃ দ্বিরঃ কফাৎ। অস্থহাপ্ত তা রক্তাঃ স্থান্ত নাত্যুক্ষশীতলাঃ॥

বাতবহ শিগানমূহ বারু ঘারা পূর্ণ থাকে, তাহা দেখিতে অরুগবর্ণ। প্রত্তবহ শিরা সকল উক্তম্পর্শ এবং তাহা নীলবর্ণ। কফবহ শিবা সকল শাতম্পূর্শ শুকুবর্ণ ও কঠিন। রক্তবহ শিবা সকল নাত্যক নাতিশাল ও রক্তবর্ণ হয়।

অথ ধ্যন্যঃ।

ধনস্তো নাজিতে জাত; শত্তুবিংশ হিসংখ্যা।
দলোর্জনা দশাধোগাং শেবাতির্যাগ্রহাঃ মৃত্যু ।
ত্রোর্জনাং শ্রুপর্শকপরসন্ধর্মধানাক্ত্যান্ত্রা দ্বিত্তুক্ত সিত্ত শিত্তক্ষিত ক্ষিত্ত দিবলৈ নালি বিক্রমন্ত্রা শ্রীরং ধারম্বরি। তাল্ত ক্ষমং গতাল্পি। জায়তে, তাল্পিংশং, ভাসাং মধ্যে বে বাতপিত্তক্ষশোণিতরসান্ বহতঃ তা দশ। জাইাভিঃ শক্ষমন্ত্রপালান্ গৃহাতি প্রকর।
ভাতাং ভাবতে, বাভাং ঘোষতে, বাভাং বিশিতি,
বাভাং জাগরি, বে চাক্রমাহিক্তা, বে ততঃ প্রিয়া বহতঃ;
ত্রনসংক্রিতে তে এব শুক্রং নরক্ত প্রবাভামিতিবহতঃ;

তাত্ত্বতাক্রিংশৎ সবিভাগা ব্যাপ্যাতাং, এতাভিন্নর্জ্বং নাভেরুদরপার্থপৃঠোরঃকন্ধনীবাশিরোবাহবো ধার্যন্তে চাল্যন্তে চ।

ধমনী নাভিদেশে উৎপন্ন, তাহা ২৪টি। তন্মধ্যে দশটি উর্জগামী, দশটি অধোগামী এবং চারিট তির্যাগ্রামী।

উদ্ধাত দশটি প্যানী স্বারা শব্দ স্পর্শ রূপ রুম ও গরের পরিতাহ এবং নিমাস প্রামান জুম্ভা হাচী হাস্থ বাক্যকথন ও রোদনাদি ক্রিয়া সম্পাদিত হয়। এই ধমনী দশটি নাভি হইতে জনুয়ে গ্রিয়া তথায় তিন তিন শাখায় বিভক্ত হইয়া ত্রি-াংসংখ্যক হইয়াছে। এই ৩০টা ধমনীর মধ্যে দুশটি ধন্নী বায়ু পিত্ত কফ গ্ৰক্ত ও রসকে वहन करत व्यर्था र देशालत घरें पि पमनी वांतरक, তুইটি ধ্যানী পিত্তকে, তুইটি কফকে, তুইটি রক্তকে এবং ছুইটি রসকে বহন করিয়া থাকে; এইরপে আটটি ধমনী শব্দ রূপ রুস ও গব্দ গ্রহণ করে। তুইটি ছারা বাক্যকথন, তুইটা ছারা শক্লিংবাবণ, জইটি ছারা নিদ্রা, জইটি ছারা নিদ্রাভঙ্গ, তুইটি ধারা অশ্রবহন, স্ত্রীলোকের স্তনাভ্রিত হুইটি শ্বারা স্তন্তবহন, এবং ঐ হুইটি ধননী থাবা পুরুষের স্তনদেশ হইতে শুক্রবহন কাৰ্যা নিৰ্দ্বাহিত হয়। এই যে ৩০টা ধননী वाशां इहेन, इहास्त्र স্থারাই উপরিস্থিত উদর পার্ম পৃষ্ঠ বক্ষঃ কম গ্রীবা মস্তক ও বাছ গুত এবং চালিত হইয়া থাকে।

অধোগতাঃ প্রাহ—

জ্বোগত'ল্প বাত্মুসপুরীবভক্রান্তবাদীজ্বা বহন্তি।
তাল্প পিরাশ্যাং গতাত্মিরা জায়ন্তে, তাল্লিংশং। তাসাং
মধ্যে ছে ছে বাতপিরক্ষংশাণিতরসান বহুতঃ, তা দশ।
ছে অন্নবহু অপ্লাভিতে, দ্বে তোরবহে, ছে বন্তিগতে
মৃত্রবহে, ছে গুলুক্ত পাছুর্ভাবার, ছে ত্রিসর্গার, তে এব
নাসাংগ্রিম আর্ত্তবং প্রান্তবাহ্য বিস্কৃত্ত। ছে ছুর্লান্ত্রপ্রতিবদ্ধে পুরীবং বিস্কৃত্ত। জন্তাব্দ্যান্তির্যাগ গতানাং
ধ্যনীনাং বেদমর্পয়ন্তি; এতাল্ভিংশং। এতাভিস্থা

নাঙেঃ প্রশানরকটাস্ত্পুরীববন্তিগুদনে দ্রসক্থীনি ধার্যান্তে চালান্তে চ।

অপোগত ধমনী দশটী বাত মূত্র পুরীষ শুক্র এই দশ্চী ধমনী ও আর্ত্তবাদি বহন করে। নাভি হইতে পিন্তাশয়ে গিয়া তথায় তিন তিন শাখায় বিভক্ত হইয়া জিংশংসংগাক হইয়াছে। এই ০০টী ধমনীর মধ্যে দশটি ধমনী বাত পিত্ত কফ শোণিত ও রসকে বহন করে, অর্থাৎ देशातत इरेंगे वायुरक, इरेंगे शिखरक, इरोंगे কদকে, ছুইটি শোণিতকে এবং ছুইটি রসকে বহন করিয়া থাকে। সন্ত্রাশ্রিত তুইটি ধননী অমকে ও তুইটি জলকে, ব্স্তিগত তুইটি মৃত্রকে বহন করে, তুইটি শুক্রের উদ্ভব ও তুইটি শুক্রের ক্ষরণ করে এরং ভাহারাই স্থীদিগের শতু শোপিতের উদ্ভব ও খতুশোপিতের ক্ষরণ করিয়া থাকে। সুলান্তপ্রতিবন্ধ ছইটি ধমনী পুরীষকে निःमात्रण करत्। এवः अविश्व आंग्रेष्टि धमनी, তিব্যগ্গত ধমনীদিগকে স্বেদ অর্পণ করিয়া থাকে। এই ৩০টা ধমনী ছারা নাভির অধঃস্থিত প্রশাস কটা মূল পুরীয় বস্তি গুহু লিঙ্গ ও সক্থি ধুত এবং চালিত হয়।

তির্যাগ্ গতাঃ প্রাহ—

তিব,গ্গতানান্ত চতহণাং ধননীনামেকৈকা শতধা সহস্রপ্ন চোত্ররোত্তরং বিভজ্জে, তান্ত্রসংপোরান্তাভি-রিদং শরীরং গবান্ধিতম্ * বিবন্ধনাততঞ্চ; তাসাং মুখানি রোমকৃপপ্রতিবদ্ধানি, ঘৈঃ বেদমভিবহন্তি রস-কাপি সন্তর্পরন্ত্যন্ত বহিন্চ। তৈরেব চাভাঙ্গপরিমেকাব-গাহালেপনবীর্ঘ্যাণি ছচি পকাঞ্জন্ম প্রনেশরন্তি। তৈরেব লক্ষ্যি ক্রমক্বং বা গুল্লাতি।

তির্য্যগ্রত চারিটি গমনীর এক একটি শত সহস্র শাধায় বিভক্ত হট্যা অসংখ্যেয় হট্যাছে।

শ গবাকো বাতায়নং, বধা গবাকে বহুনি ছিলাণি ভবস্তি তথা অস্মিন্দেহে জালবৎ দিরাঃ ব্যাপ্য তিই-স্তীতি ভাবঃ ॥ বিবন্ধনাততস্। গবাক্ষিতং গবাকাকার-রন্ধ নিকরযুক্তং কুত্মিতার্থঃ। সেই দকল ধমনী ছারা দমন্ত শ্রীর গবান্ধিত বিবন্ধ ও আতত হইয়া নহিয়াছে (অর্থাৎ গবান্ধে যেমন বহুদংখ্যক ছিদ্র থাকে, সেইরূপ এই দেহে ঐ শিরা দকল জালের তায় ব্যাপ্ত হইয়া আছে)। ঐ দকল ধমনীর মুখ রোমকূপে প্রতিবন্ধ। ইহাদের ছারা স্বেদ অভিবাহিত এবং অভ্যন্তরে রম ও বাহিরে ফক্ দন্তর্শিত হয়। আর অভ্যন্ধ, পরিষেক, অবগাহন ও আলেপন, লাজক পিত্ত ছারা মকে পক হইয়া ভাহাদের বীর্যা ইহাদের ছারাই দেহাভান্তরে প্রবিষ্ট হয়। এবং ইহাদের ছারাই কন্মায়া স্তথ্জনক বা অন্থ্ণজনক স্পর্শ প্রতীতি করেন।

ৰথা কভাবতঃ গানি মৃণানেৰু বিদেৰু চ। ধমনীনাং তথা থানি রদো ধৈরভিত্তরেও ॥

যেমন পদ্মের মৃণালে ও বিসে অভাবতঃ ছিদ্র থাকে, ধমনীর অভাস্তরেও সেইরূপ, ছিদ্র আছে। সেই সকল ছিদ্র খারা শরীরে রস সঞ্চারিত হয়। (পদ্মনালের পক্ষয় নিম্নভাগকে মৃণাল এবং উপরিভাগকে বিস কহে)। (রস প্রধানভূত বলিয়া এ স্থলে রসেরই উল্লেণ হইয়াছে, অভএব মভ্যক্ষ পরিবেকা দির বীর্যাও ইহাদের খারা শরীবে প্রবিষ্ট হইয়া থাকে)।

অথ প্রকৃতিলক্ষণমাহ—

সপ্ত প্রকৃত্য়ে নৃণাং বাতাৎ শিক্তাৎ কফাৎ তথা।
সংস্থাৎ সরিপাতাচ তবন্তি ভিৰজাং ৰতে ।
প্রকশোণিতসংবাগে যো দোষস্থাৎকটো ভবেৎ।
প্রকৃতিজায়তে তেৰ তথা লক্ষণমূচ্যতে ।

মন্থান দপ্ত একতি। বথা—বাতএকতি, পিত্তএকতি, শ্লেমপ্রকৃতি, বাতশেমপ্রকৃতি, বাতপিত্তপ্রকৃতি, পিত্তশ্লেমপ্রকৃতি এবং দন্নিপাত-প্রকৃতি। শুক্র ও শোণিতের সংযোগদময়ে উহাতে বাতাদি যে দোষের আধিক্য ঘটে, সেই দোষেবই প্রকৃতি হইয়া থাকে। বাতজাদি প্রত্যেক প্রকৃতি লক্ষ্ণ লিখিত হইতেছে।

অথ বাতপ্রকৃতিলক্ষণম।

গগৈরকোহলকেশন ক্টি রাজিবুকরং কুশং। শীলগো বছবাগ্রুক্ত থগে বিষ্ঠি গচ্ছতি। এবং বিধা সাবিজ্ঞেয়ো বাতপ্রকৃতিকো নবঃ॥

বাত প্রকৃতি ব্যক্তি জাগরক, অল্পকেশবিশিষ্ট, ক্ষুটিতকরচবেদ, রূশ, শ্রহণানী, বহুভাষী ও কৃষ্ণদেহ হয় এবং স্বপ্নে আকাশনার্গে গ্যন করে।

অথ পিত্রপ্রকৃতিলক্ষণম।

পিডপ্রকৃত্তিকো নোকো যাদৃশোহণ নিগন্ততে। অকালগলিতো সৌরা দোধী ধেলা চ বৃদ্ধিনান্ । বঞ্জ ডান্ডাৰ ২০০ ধলে জ্যোতী বি পশাতি। এবংবিধা ভবেষ্যক্ষ বিজ্ঞার একং নবং ।

গিতপ্রতিশ্বতি তেন্ত্র ক্ষণাকার হয়, বাংচ কাণত ২২ চেছে। শিক্ষরতি লোকের একানে কেশ পাকে তেন ব্যক্তি গোরবণ, কোবালু, মধ্যতি, বুদ্দিমান্, বহুভোলী ও ভাষনেএ হয় এবং স্বপ্লাবস্থায় নক্ষত্রাদি জ্যোতিশ্বয় পদার্থ দশন করে।

অথ শ্লেসপ্রকৃতিলকণ্য।

জানকেশ: ক্ষমী স্থুলো বছবীয়ে, মহাবল,। ব্যাল জলাশয়ালোকী শেক্ষপ্ৰকু বিকোন নাঃ।

রেল্প প্রক্তি বাভি প্রান্থ কেশবিশিষ্ট, ক্যানাল, ধূলকায়, বছবার্থ ও মহাবলবান্ হয় এবং ক্ষপ্রে জলাশয় দশন করে।

पृष्टार अकृरो यन क्रमार स्मायवश्य छू। जरिमामराभ सामीबार मन्त्रसिक्ष विस्तरमाम् ॥ যে এক্কভিতে ছই াতে লক্ষণ লক্ষিত হইং । ভাহাকে খন্দপ্রকৃতি এবং যাহাতে বাতাদি ভিন দোষেরই লক্ষণ দৃষ্ট হইবে, ভাহাকে সামিপাতিক-প্রকৃতি বলিয়া জানিবে।

অথ দোষবর্ণনম্।

বংতপিপ্তশ্রেমাণ এব দেহসম্ভবহেতব:। তৈরবাপেন্ধৈরধামধ্যার্ক্সন্নিবিট্রৈ শরীর্মিদং ধাব্যতেহগার্মিব স্থণাভিন্তিস্পতিরতণত িস্থণমান্তরেকে। ত এব চ ব্যাপন্নাঃ প্রলয়হত্বতঃ; তদেভিরেব শোণিত-চতুর্বিঃ সম্ভবস্থিতিপ্রলয়েষপাবিরতিত শরীরং তবতি।

নতেঁ দেহঃ কফ'দ্ভি ন পিডাল্ল চ নাল্ল'ঙাং। শোণিতাদ্পি বা নিডাং দেহ এডেস্ত ধ'ঘাতে॥

বায় পিত ও কফ ইংাদের সাধারণ নাম দোষ। এই দোষতারই দেহোংপত্তির কাণ।
ইহারা আবক্ত থাকিলে বথাক্রমে দেহের অধঃ
মধ্য ও উদ্ধৃতাগে অব্ধিত পাকিয়া দেহকে বারণ
করে। যেরপ স্বস্তুত্র ধারা গৃহ বৃত্হয়, তর্রূপ
ইংগ্রেব ধারা শ্রীর সুত্হয় থাকে। এই
নিমেন্ত শ্রীরেন। একটি নাম বিস্পুন। ইংলাবা
নির্ভ হইলে দেহ বিন্তু হয়। বাহাদি দোসভায়
এবং রক্ত এই চারিটি পদার্থ ধারাই দেহের
উংপত্তি, স্থিতিও ধবংস হইয়া থাকে। কফ,
পিত্ত, বায়ুও বক্ত এই বস্তুত্তয় ভিন্ন দেহ
উৎপন্ন হয় না এবং উৎপন্ন দেই ইহাদের ধারাই
রক্ষিত হইয়া থাকে।

দেখিস্থানায়ত উদ্ধং বক্ষামঃ। তত্ৰ সমাসেন বাতঃ শোণিগুলসংহ্রাঃ। শোণিগুলয়োকপত্তথা নাজেঃ পকা-শুয়া, প্রকামাশ্রমধাং পিত্তস্তা, আমাশুয়া স্লেখনঃ।

অত্যপের দোধ সকলের অবস্থিতি-স্থান লিশিত ২ইতেছে। তন্মব্যে বাষু সামান্ততঃ শ্রোণিও গুঞ্নাড়ীতে অবস্থিতি করে। শ্রোণি ও গুঞ্নাড়ীর উপরিভাগে এবং নাভির নিম্নে পকাশর বর্তমান আছে, সেই পকাশর ও আমাশরের মধ্যে পিতের স্থান।এবং আমাশর শ্রেমার স্থান।

অতঃপরং পঞ্চধা বিভজ্যন্তে দোষাঃ। যথা—

উদানস্থান: সমানোহপান এব চ। বানেকৈতানি নামানি বারো: ভানপ্রভেদত: ॥ কঠে হৃদি তথাধন্তঃ কে: ঠবক্ম লাশরে। সকলেঃ পি শরীবেংসোঁ ক্রেণ প্রনা বসেং ॥

4305---

ক্ষি প্রাণো ওদেংশান: সম'নো নাজিসংছিত:।
উদান: কঠদেশে তাদ্ বাান: সর্বশ্বীরগ: ।
পিতত বক্ৎমীহানো হাদমং দৃষ্টিবক্ পূর্বাজ্ঞ।
লেমণত,র:শের:কঠসনম ইতি প্রেণজ্ঞ। এতানি থনু
দোষাণাণ ভানভিবাপেরানাম।

উল্লিখিত দোষ সকল প্রত্যেকে পাঁচ প্রকারে বিকক। তরধ্যে এক বায়ু স্থান ও ক্রিয়াভেদে পাঁচ নামে অভিহিত হয়। ষ্থা— উদান, প্রাণ, সমান, অপান ও ব্যান। কণ্ঠদেশে উদান, হদরে প্রাণ, নাভিদেশে সমান, গুহু-নাড়ীতে অপান এবং দেহের সর্বাংশেই ব্যান ৰায় অব্স্থিতি করে।

ৰক্তং, শ্লীহা, সদয়, চক্ষুং, স্বক্ এবং পুৰ্ব্বোক্ত স্থান স্বৰ্থাৎ প্ৰকাশৰ ও আমাশয়ের মধ্যস্থল, এই সকল স্থানে পিত্ত অবস্থিতি করে।

বক্ষংস্থল, মন্তক, কণ্ঠ, সন্ধিস্থল এবং পুর্বোক্ত আমাশন্ধ, শ্লেমার স্থান। বাতাদি দোষত্রের যে সকল স্থান নির্দেশ করা গেল, তাহা অবিকৃত দোষেরই জানিবে। ইহারা বিকৃত হইলে শরীরের নানাস্থানে অবস্থিতি করিয়া নানাবিধ ব্যাধি উৎপাদন করে।

তত্ত্ব বায়োঃ সূত্রপমাহ---

দোৰধাতুমলানীনা : নেত: শীব্র: সমীরণা । রজোঞ্জাম্ম: ক্ষা: শীহো কক্ষো লঘুশুলা: ।

অসচ —

উৎসাহোচ্ছ্বাসনিশাস-চেষ্টাবেগপ্রবর্ত্তনৈ:। সমাগ্রতা চ ধাতৃনামিল্রিয়াণাঞ্চ পাটবৈ:। অনুগুণুভাবিকতো হৃদয়েক্রিয়চিত্তপুক্। রজোপ্রণময়: স্ক: শীতে। ককো লবুশ্চল:॥ থরো মুছ্যোগ্র'টী সংযোগ ছভয় র্থকু । দাহকুৎ তেজসা যুত্ত শীতকুৎ সোনসং শ্রম্থ ॥ বিভাগকরণাদ বায়: প্রধানং দেবিদাগ্রহে। প্ৰ-শেষকটীসক্থি-শ্ৰেণ্ডে'তে'-স্থিম্পান্নিভিন্ন ॥ স্থানং বাছন্তা ভ্রোপি প্রাধানং বিশেষ্ট।। উদানো নাম **বন্ত ভু**মুগৈতি প্ৰনোত্ম: । তেন ছাবিতগীহাদি-প্রকৃতিঃ কুপি : ख मः। উদ্ভাজগভান বৈ'গান বিদ্যাতি বিশেষত। (स) व'सु: अ'ल्माम'(मा मूथ' शहर ि त्रव्यक । সেংকং প্রবেশয়তাতঃ প্রাণাত কাপ্রবল্ধতে ॥ প্রায়শঃ কুক্কতে ছটো হিকাম্পাদিক'ন্টাদ'ন্। শামপ্র'শ্যচর: সমানো ব'শ্স-গ্রং ॥ পাংলং পচ্ছি ভজাংশ্চ বিশেষান বিবিন্তি है। স ছটো বছিম্যুন্দ্যতি-স্বিত্তকান করের্ণিত হি॥ প্রাশ্রালয়ে। পান: কালে কর্মতি চপেয়ন। সমীরণঃ শকুমূত্র-ভক্তপর্ভ প্রবায়েধং ॥ কুষত কুঙ্গতে রোগান্ যোরান্ বভিগুলা এরান্। জ্জমেহপ্রমেহাংশ্চ ব্যানাপানপ্রকোপজান ॥ कुष्त्रप्रहाता गाम्ना व्रममःनाहरनाष्ट्रायः । বেদাককশাবণকাপি পঞ্ধা চেষ্টরতাপি। গাত্যপক্ষেপণে। ৎক্ষেপ-নিমেবে (ন্যাবণ 'নিকা: । প্ৰায়: সৰ্বা: জিয়াস্থপিন প্ৰতিবদ্ধা: শ্বীভিগান ৷ **अन्यन्तन(क) ए**टनर् शृहशक वि. तहस्य । ধারণকৈতি পাঞ্চিপ্রেচিপ্রা ্প্রান্ত নতক্ষত ॥ কুষ্ণা স কুক্তে রেগেল প্রায়েশ্য সকলেওগান। **ৰুগপৎ** কুপিডি, এটে (৮২° ভিন্তু সংশ্ৰম্ম 🎚

লোৰ বাঙু ও মলাদি পদার্থসমূহের নেতা বারু, অর্থাং বারু ধারাই শারীরিক পদার্থ সকল স্থানান্তরে নীত হইয়া থাকে। ইহা আশুকারী, রজোগুণভূষিষ্ঠ, হক্ষে, শাতল ,রক্ষ, লাভু ও গতিশাল। ইহা ধারা উৎসাহ, খাস, প্রখাস, চেষ্টা, বেগপ্রবৃত্তি, রসাদি-ধাতুপদার্থের গতি ও নেত্রাদি ইচ্ছিম্বগণের পটুতা সম্যক্প্রকারে সাধিত হয়। অবিকৃত বায়ু ধাষাই হলর, ইক্রির ও চিত্ত বৃত হইয়া, থাকে। ইহা ধরপদার্থ, মৃত্ ও ঘোগবাহী অর্থাং তেজের সহিত সংমৃক্ত হইলে দাহকর এবং সোমসংশ্রমে শাত জনক হয়। বায়ু ধারাই দেহোৎপন্ন পদার্থ (আহারীয় রসাদি) ভিন্ন ভিন্ন আকারে

বিভক্ত হইয়া যথ।যোগ্য স্থানে উপনীত হয়। এই নিমিত্ত লোষজ্ঞরে মধ্যে বায়ুই প্রধান। পকাশয়, কটা, দক্থি, প্রোতঃদমূহ, অস্তি ও ম্পর্শেক্সি এই গুলিই বারুর স্থান: তর্মধ্যে প্রকাশয়ই উহার প্রধান স্থান বলিয়া পরি-গণিত। শ্বাস প্রশ্নাস কালে যে বারু দেহ হইতে নিঃস্ত হয়, তাহার নাম উদান। উদানবার খাবাই ব্যক্তিয়ারণ ও সঙ্গীতাদি ক্রিয়া নির্বা-হিত হট্যা থাকে। ইহা বিকৃত হইলে উদ্ধান্ত-গত রোগ উপস্থিত হয়। বে বায়ু শ্বাস প্রশাস কালে দেহমনে প্রবিষ্ট হয়, তাহার নাম প্রাণ-বায়। প্রাণ্ডবান স্থাবাই আহাবীর দ্বা অল্লালী দিয়া উদ্যান প্রেশিত হয়। এই বায় জীবন-বফাবে প্রাণাল । ইহা দূরেত হইকে হিকা। त सामानि ति हैया छन इसन সমান-বায় জানাশ্য ও প্রকাশয়ের মধ্যে সঞ্চরণ ক: ৷ হচ পাচকা গ্ৰাস্থাত স্থালিত হইয়া আর প্রিপ্রাক্ত এবং ভিজ্ঞাত বস, মূল ও মূজ্র-দেকে প্রথক করে । তথ্য দুখিত ২উলে অগ্রিন মাল্পা, আভিসাধ ও ওর পার উইপার হয়। অপ্রেলন্যু প্রাশ্যে অব্ভিত থাকিয় সম্রে মল, মুত্র, মুক্র, সূত ও আতিব। শতু-্শোণিত) অনোনেচন কৰে, ইছা কুপিত হটলে ব্যন্ত ও ওজনাড়াদং শিত বিবিধ ঘোরতর পীড়া এবং শুক্রনোয় ও প্রামেই প্রছতি নানা त्तान हैरापन द्या वानवानु महास्ट्रि विष्टाप করে। ইহা রস্বহ্ম ও ্রদাদিক্ষরণ-ক্রিয়া নিমাহ কবিয়া থাকে। ইহা ধাবা গতি, অপক্ষেপণ, উংক্ষেপ্ৰ, নিমেষ ও উন্মেষ এই প্রধ্বকার ক্রিয়া সম্পন্ন হর। শরীরিদিগের প্রায় সকল ক্রিয়াই বায়ুসাপেক। বানিবায়ুর কা্যা প্রাম্পান্তন (শরীরেণ চলন), উদানবায়ুর কাষা উত্তহন (রূপ সাদি ইন্দ্রিয়ার্থেন গ্রহণ), প্রাণ্বায়ুর কাষা পূর্ণ (আহাব হারা পূর্ণ করা), সমানবারুব কাষ্য বিরেক অর্থাৎ রস মূত্র ও পুরীষের পৃথক্-করণ এবং অপানবায়ুর

কার্য্য বেগকালে শুক্রমুত্রাদির প্রবর্তন ও অবেগকালে ধারণ। বার্ব্য এই পাঁচ প্রকার কার্য্য কথিত হউরাছে। ব্যানবার্ কুপিত হউলে সর্বদেহগত রোগ উপস্থিত হয়। উল্লি-থিত পাঁচ প্রকার বার্ট্ বুগপং কুপিত হইলে যে নিশ্চরট্ দেহ বিনষ্ট করিবে, তাহাতে আর সংশ্য কি পূ

অথ পিত্তস্য স্বরূপমাহ—

পিত্ত—ত্রীক্ষ (সর্বপ ও মরিচাদিবং), দ্রব, পূত্রি, নীল (আমাবস্থার), পীত (নিরামাবস্থার), উষ্ণ ও কটুরদ, কিন্দু বিদক্ষ পিও ক্ষর। স্থানজনে পিও প্রাচক ও ভ্রাদ্ধক। যথা—পাচক পিত্ত অগ্নাশরে, রঞ্জক পিত্ত যক্ষং ও প্রীহার, সাধক পিত্ত ফ্লাদ্ধক, পাত্র পাত্র করে। পাচক পিত্ত মর্বাহেত্ত করে। পাচক পিত্ত ম্বারা অরের পরিপাক এবং অবশিপ্ত পিত্তগণের অগ্নিবল বিদ্ধিত হয়। ইহা রস মৃত্র ও মল বিরেচন করিরা থাকে। রঞ্জক পিত্ত ম্বারা ভূক্ত দ্রব্যের ব্যব বক্তে পরিপত হয়। সাধক পিত্ত ম্বারা বুদ্ধি মেরা ও স্মৃতি উৎপন্ন হয়। আলোচক

পিত্ত ছারা রূপদর্শন-ক্রিয়া নির্বাহিত হয়। আজক পিত্ত দেহের কান্তিকারক। ইহা ছারা প্রলেপন ও অভ্যঙ্গ দ্রব্যের পাক হইয়া থাকে।

অথ শ্লেম্বণঃ স্বরূপমাহ--

শ্লেমা—শ্বেতবর্গ, গুরু, সিগ্ধ, পিড়িকা, শীতল ও মধুৰ, ইহা বিকৃত হইলে লবণাসাদ হয় ৷ স্থান-ভেদে কদ পাচ নামে অভিচিত্ত इंडेग्रा शांदक । १४० - क्षटर, चतवकर, उन्ना (बर्ग ९ (क्षरण) । उन्नातः (क्रम्म मार्गम कर्म আমিশিয়ে, অবলম্বন কদ্যেন্ কুম্বা কণ্ডে, যেইন মন্তকে ও শ্লেষণ কফ সন্ধিত্তে অন্তিতি করে। ক্লেদন কফ সংহত অলকে কিল এনং উদককাল খারা অস্তান্ত কফস্তানের জলার শতিং ব্রিত করে। অবলম্বন কফ ঘানা ত্রিক (মৃত্তক ও বাছৰয়ের সন্ধি) গুত হয়। রস্নকফ্ এনং রসনা (জিহ্বা) উভয়ই সেখে প্লার্থ ও পরস্পর সরিহিত, এই নিমিত্ত রস্ন কফ ও রসনা এই উভয় ধারাই ক্সজ্ঞান হইসা পাকে। স্বেহন কফ স্নেহপার্থ-প্রদান থারা সমস্ত ইক্রিয়কে তৃপ্ত কলে। ক্লেবণ কদ স্থার। সন্মি मकल मः सिष्ठे थारक।

ইতি প্রায়েগ দোষাণাং স্থানান্তবিকৃতাক্সনাম্। ব্যাপিনামপি জানীয়াৎ কর্মাণি চ পৃথক্ পূথক্ ৫ সকল শরীরব্যাপী অবিক্লত বাতাদি দোষ-দিগের পূর্ব্বোক্ত পৃথক্ পৃথক্ বিশেষ স্থান ও কর্ম্ম সকল জানিবে।

অথ দোষাণাং চয়প্রকোপপ্রশমাঃ।

উক্তেন কুকা রুকান্তা নারো: কুর্কান্ত সঞ্চন ।
শীতেন কোপমুক্তেন শমং স্লিঞ্চান্তরা গুণা: ।
শীতেন বুকান্তালান্তাল্ডা: শমং শীতোপসংহিতা: ।
উক্তেন কোপং নন্দান্তা: কুর্বন্তি লেখণন্ডম্ ।
উক্তেন কোপং তেনৈব গুণা রুকান্তর: শম্ম ।।

क्को पि বা হ'গু': मकल. উষ্ণ:গুণযুক্ত হুইয়া বায়ুৰ চয়, শতিগুণুৰুক্ত হুইয়া বায়ুর প্রকোপ এবং সিঞ্চাদি ওণ, উদংস্কু হটয়া বায়ুৰ প্ৰেশ্য কৰে। আৰু ভাজন্তি পিত্তুৰ সকল শাশ্যক্ত ভটলে গিরের চন, উমচ-গুল্মার হটলে শিল্পের প্রকাপ এক 1 - F শীতিসংসাক্ষ হউরে: (8) (4) বেলাওণ সকল, শত্রাস্ত চইকে ক্ষেত্রার চয়, উষ্ণাংশুক্ত হটকো লেখা,র প্রকোপ এবং রুক্ষাদি ওয়া, উন্তংগুড় ২০০০ চেয়াব প্রশার্থীয়া থাকে ৷

চচে। বুদ্ধি। অধ্যয়েল এচেবা বুদ্ধিহেতুৰু। বিপ্ৰটিওয়েণ্ডঃ চি কে.প্ৰভুৰাৰ্গগামিতা॥ বিজ্ঞানা দৰ্শন ধ্যেমাখাজাং বোগসভ্ৰত। অঞ্নতম সম্ভানন ব্যাসভ্ৰত।

নিজ নিজ প্রান্ত দোষদিব্যার যে বৃদ্ধি
হয়, তাহার নাম চন। দোষের চন হউলে
দোষবন্ধক হেতুতে বিদ্ধেন ও বিপ্রীত গুণে
ইচছা হয়। (মথা বাব্র চন্ন হইলে বায়ুবৃদ্ধক
কক্ষাদিতে প্রমে ও ফিন্নাদি বাত বিপ্রীত গুণে
অভিলাম জন্মে। পিত্রেলার প্রকেও এইরপ বাখা।)। সম্ভানত চন্তপ্র দোষের অতি বৃদ্ধিহেতু যে উনার্গগনন অর্গাং স্বজান ত্যাগ করিয়া স্থানান্তরপ্রাপ্তি, তাহার নাম প্রকোপ।
প্রকৃপিত দোষ নিজ নিজ প্রকোপ- লক্ষণ প্রকাশ করে, সর্থাৎ দোষাদি-বিজ্ঞানীয়াধ্যায়ে প্রকৃতি করে। বিদ্যালয় বহা সকল লক্ষণ
উক্ত হইয়ারে করে যাহা পরে বলা যাইবে,
সেই সকল লক্ষণই উপস্থিত করে; স্বাস্থ্যের
হানি জন্মায় এবং রোগ সকল আনয়ন করে।
বাতাদি দোষ, যথন সাম্যাবস্থায় স্বস্থানে অবস্থিত
হইয়া কোনরূপ রোগ উৎপাদন না করে, তথনই
তাহার প্রশ্মাবস্থা জানিবে।

চয়প্রকোপপ্রশানা বারোপ্রীক্ষাদিনু (এনু । বর্বাদিনু তু পিত্রস্থা এমেনঃ শিশিরাদিনু ॥

গ্রীয়, বর্ষা ও শ্রং এই তিন শতুতে বথাক্রমে বারুর চর প্রকোপ ও প্রশ্ন হর, কর্যাহ
গ্রীয়ে বারুর চর, বর্ষায প্রকোপ ও শ্রংকালে
প্রশ্ন হইয়া পাকে। এইরপ বর্ষ শরুতে বর্ধাক্রমে পিরের চন প্রকোপ
ত প্রশন্ধ এবং শিশির বসস্থ ও গ্রীয় শতুতে
প্রশাব চয় প্রকোপ ও প্রশন হয়।

অথ দোষাণাং কণ্মাণি।

শ্রংসব্যাসব্যধ্যপি-সাদক্রত্যাদভেদন্ম।
সঙ্গাসভঙ্গসকোচ-বর্জ্ডর্বাতর্ব্যান্থ ॥
কল্পপাক্ষয়প্রোটিয়া-শ্রেমপ্রনান্তর্বন্য।
তথ্য কষায়রসভা বর্জ-ভালোভকলোচিপি বা ॥
কল্পলি ব যোর পিতৃত্য দাহরাগোখ্যপাকিতার।
বেদর রেদর ক্রতি: কোঝা সদন্য মুক্তন্য নদঃ ॥
কট্রকাম্যের রেদর বর্জ্য পাতুরারপ্রক্রিতার।
ব্যাস্থা রেহন বিজ্ঞান ভূগী তর্বারব্যানি বর্জ্য বেতা রুদ্ধী ক্রত্যানির্দ্ধী বিদ্ধানীর ।
বর্জাপলেগতৈর্দ্ধিয়া-শোক্ষাপত্যতিনিত্র ।
বর্জাপলেগতির্দ্ধিয়া বিদ্ধানির বিজ্ঞান বিভিন্ন বিভাগতির সম্যারবানক্রয়ের ।
ব্যাবারস্থানিভাগত্তঃ প্রামার্গান্ প্রতিক্ষণম্যা

সন্ধিল্রংস, অঙ্গ-প্রতাঙ্গাদির বিক্ষেপ, বাদ (মুলারাদি বারা তাড়নবৎ পীড়া), স্পর্শাজ্ঞতা, অঙ্গাবসাদ, কুক্(সতত শ্লবৎ বেদনা), তোদ (বিচ্ছিন্নশূলবৎ বেদনা), ভেদ (বিদারণবৎ বেদনা), মল মুত্রাদির অনির্গম, অঞ্চঙ্গ (অঙ্গচুর্বৎ বেদনা), শিরাদির সঙ্কোচ, বর্ত্ত (পুরীষাদির পিণ্ডীকরণ), রোমাঞ্চ, তৃষ্ণা, কম্প, পারুষা, অন্তির সচ্ছিদ্রতা, রমাদির শোষণ, স্পন্দম (কিঞ্চিচলম), বেষ্টন (রজ্জু প্রভৃতিব স্বারা বেষ্টনবং পীড়া) শুল্ভ, ক্ষায়স্থাদ ও শ্রাব বা অরুণ বর্ণ এই সমস্ত বারুর কার্য্যা।

দাহ (সর্বাঙ্গীন তাপ), লৌহিত্য, উষণতা, পাককত্ত্ব, স্বেদ, ক্লেদ, প্রাণ, পচন, অবসাদ, মুচ্চ, মদ্রোগ, কটু ও অন্তর্ন এবং পান্তুর ও অরণবর্ণ ভিন্ন অন্ত বর্ণ, এইগুলি পিত্তের কার্যা।

ন্ধিক্ষন, কাঠিল, কণ্ড, শৈতা, গৌরন, স্রোতোবন, লিপ্ডতা, স্তেমিতা (পাত্রেন অপটুতা, শোপ, অপরিপাক, অতিনিদ্যু, গাত্রেন শ্বেত-ব্যতা, স্বাত্ত ও ন্নথ্যন, এবং চিনকারিতা, (বিলম্বে কার্যানিস্পত্তিতা, এইগুলি স্লেম্বান কার্য্যান

দোৰ্ঘণিগেৰ অংশক্ৰোগ্ৰণ্পী যে স্কল লক্ষণ কলিত হটন, তাহা, বানেবেছা-নিগায়ক বৈশু, অবহিত্চিতে দুশন স্পৰ্শন ও প্ৰশ্ন স্বান্ সমাক্ লক্ষ্য কৰিয়া প্ৰতিক্ষণ বোগিদিগকে দুশন কৰিবে।

> অভ্যান্যথে প্রাণ্ডাতে দৃষ্টি, কথাসিদ্ধিপ্রকাশিনী। বঙ্গানিসদসজ্জান্য ন শক্ষিদের জায়তে ॥

মভাগে অর্থাং মৃত্যুক্তঃ চিকিৎসা-কন্মে প্রবর্তন বশতঃ কন্মসিদ্ধিপ্রকাশক চিকিৎসা বিজ্ঞান জন্মে, কেবল মাত্র চিকিৎসাশাস্ত্র অধ্যয়ন করিলে চিকিৎসাজ্ঞান হয় না। স্বর্বা রয়াদির ভাল মন্দ জ্ঞান ধ্যেন প্রন্থপুনঃ দুর্শন স্থারা হইয়া থাকে, কেবল মাত্র অধ্যয়ন স্থারা হয় না, কার্যাসিদ্ধিপ্রদ চিকিৎসাজ্ঞানও তেমনি অভ্যাসবশ্বই জ্লিয়া থাকে, জানিবে।

থত উদ্ধং প্রকোপানি বক্ষ্যামঃ। তত্ত বলবদ্-বিগ্রহাতিব্যায়ামব্যবায়াধায়ন-প্রপাতন প্রধানন প্রপীড়নাভিযাত-লজ্মনপ্রবন্ধর বিজ্ঞান কাম্বাভার বহুন গঞ্জ কুরঙ্গ বাদাতি চ্যা-কটু-ক্ষামতি জ্ঞান ক্ষ্যু-বীতবীয়া গুক্ষাক-বন্ধুন-বন্ধকান্দালক- কোরদ্ব-খামা ক-মীবার-মুক্তাহসরাচকতারগুকলার্থনিক্পারোন-मनविवसामन्धारम्य, इ.स. १९३ व. १ व. १६ व्यक्तिकान १७०। देवे. १९५ নেগৰিখাতাদিভিবিধে, হবাযুন পকোপন 'পজাৰে!

> স শীতাজ্ঞাবদত্য ধ্যাদ্র ৮ বিশেষতা। প্রাকৃষ্ণ পর্যাঞ্চ চ স্টার্থেরে চ পর্^{সাতি}।।

অভ্যপ্ত যে যে কাশে দোষ সকলেব প্রকোপ হয়, তাহা বিখিত হটতেছে। বলবদ-বিগ্ৰহ (মন্নাদিশ সহিত বাহৰুগাদি \ অতিশ্য ব্যায়াম, অধিক রভিক্রিয়া, অভাস্ত অধ্যয়ন, উচ্চস্থান হইতে প্তন, বেগ্লেগ্ৰ্যন, প্ৰপীড়ন, লগুড়াদি মানা অভিযাত, এখন গভাদি উৎক্রেল ৷, প্রবন ্লাফ্টিয়া লাফ্টিয়া গ্রান , म्ख्त्रभ, नाज्यान ভাববহন, লভাদি গুজু অবং ব্যাও প্ৰাস্থাৰ, আতি লম্ম এবং কট্ তিক্ত ক্ষায় রক্ষ গ্রুপ শত্রায় দ্ব 我不断办。 李强到2年,《新江》 "王爷后"中 প্রায়াক ও লাবার সাজ, মুক্তা, মুক্তা আছুত্র, ছ্ৰেলু, মটৰ, বিষ, এই স্কল দ্ৰা ওক্ষণ উপ্রায় বিষয়াশন ৮০০ বল ে শেভাষ্ট শ্বস্থা প্রিয়ালে স্থার স্কার্ড সাহার্ড স্বর্ড সত্ত্ব (১)জন এবং বার্, সূত্র জে, জন, বলি, খাচ, উল্লাব ও অল এই স্বান্তৰ উপ্ৰিত বেগ পাবল ইত্যাদি কারণে বাল প্রকাপত হয়, বিশেষতঃ ৰাভকালে, মধ ২ইলে, বাসুপ্রাসেব সময়, বৰ্ষাকালে, প্ৰাভাগে, চপ্ৰাপে ও ভুক্ত আর পারপাক হুইলে প্রাংশ প্রাণত হুইল থাকে ।

কে'ধাৰ'কভন্য সৈ পৰ মহিদ্য মেখুনে, 'ওলন ৰ টুত লনণ তীক্ষোঞ্জললুবিদাহি-, তিলতেল- হিলা কে---বু এল -সম্বা-ত্ৰমীছবিতক-শাক-গো,ৰামেৎজ জোবিকম ায়-দ্বিখন ক্ৰিমিকা-यख्योतीतव-अव'विकात' यस्य-कर्ष्याकश्च रिका প্রাক্তাপ্রাপ্তার !

> एक्स्प्रक्षक (लिए कर, इ. विश्वयः) ম্পাতিশ্ব চারিবারি ৭৮ কার্যভারে চারপাতি ৮

(ক্ষে, শ্রেক, জা, প্রভাবক কাষা, উপ-বাস, বিদাহজনক আহারাদি, ভৈগুনোপগুনন : কট অম লবণ তীক্ষ উষ্ণ লগু ও বিদাহী দ্রব্য, িনই কান্দে রভও কুপিত হইয়া থাকে।

তিলতৈল, তিলকক, কুল্খ কলাই, সুৰ্যপ্ মহিনা, হবিত্ৰাক, গাল, মংজ্ঞ, ছাগ ও নেশ ইতাদের মাংস, দার, তক্রকারিকা, দ্বির মাত, ্সারীত, পুরাধিকতি, অমুফল এবং কট্র (সার্বিশিষ্ট দবির তক্র) ভৌজন ও রৌদ্রতাপ ; এই সকল কারণে পিত প্রকোপ প্রাপ্ত হয়। वित्यय इ. डेक स्वा पाना, डेककात, भत्रकात, ম্নাকে, অদ্বাতে ও ভুক্তারের পরিপাকাবস্তায়, পিত্র প্রকৃপিত হট্যা থাকে।

দিব পরার ক্রিম ক্রাম্বর হল পরি হার্ম্ম ওরাপি চিছলান ভিয়ানিক শূনকম্বকনৈম প্ৰকৃতিম দেন্ত। মাধ্যনা ব্যক্তিপ্ত-नित दिनन मिळुप्रेत सर्वाशास्त्र स्वकाताना श्रीनक-न्यार मनन्या-বিসম্পাল-কশেকৰ শুজাচৰ-মধ্যতি ফল-ম্মন্মাধান্ত ৮-कि कि कि कि कि कि कि कि कि कि

> PATE AND STATE OF BEARING PAR BOLL OF FRANKLING SIGNA

कर्ना नाम , ता राज्य ताहित्या, आकरार, अस्त. মন, ১০৫, শতিক কিছে, ওক, পিছিছ ও শেভিমানী লোম নত্ত্ত হয় ও সেয়াৰে অভিশয় ACTIVE A POIL & COMO - ANTO GOOD ! মব, নেমৰ চালো বিশেষ চন্ত্ৰত মাসকলাই, वनवित्रे, अनुस्क, भेटन विदेश, भित्र, एक्क, कुरून (থিচুড়ি , পার্ম, ভড়াদি ইক্ষুণিকার এবং আনুপ ও জলচৰ প্ৰাণীৰ লাংস ও বসা, বিস ্পরাষ্থা ১ ৬৭০. কেন্দ্রে, পানিফল, তাল, নালিকেল্লিম্বুৰ ফল, লাউ, ক্লড়া প্রভৃতি পতাদল, অনিক ভোষ্ট্, অজীর্ণ সত্ত্বে ভোষ্ট্র শতালি, কফগ্রকার্গের কার্ব্য শতিং কৰা হাৰণ শতিকালে, বস্তুকালে, গুকাঞ, শুড়াসে ও আহার করিবামাত্র (ইক্স একুপিত হচ্যা থাকে।

পিওখাৰণ পালৰ চাভীকা জৰ্মায় ধক্ষভিশচ্ছিৰে-লিব স্বপ্ন কে ক্লান্ত্র-শ্রমাণ্ডিনা তাজার্গবিরুদ্ধার্যন্ত্রস্তু-িছির্থক প্রাকাপর প্রসূত্র ।

ও ও কালত পিও প্রকৃপিত হয়, সেই

নিরম্ভর দ্রব স্থিপ্প ও ওকপাক দ্রবালোজন, দিবানিদ্রা, ক্রোধ, অগ্নিদম্ভাপ, স্পাতিপ, পশ্রিন, অভিঘাত, অজীর্ণ, বিক্রমভোজন ও অধ্যান প্রভৃতি কারণে রক্ত প্রকোপ পাপ্ত হয়।

অথাতে! দোশোপক্রমণীরমধানং ব্যাখ্যাজ্ঞানং।

বাতকোপাত্রমাং প্রেচা ক্ষেক্ত সংশোধনা মৃত। ধাইমালবংশাগশনৈ তেও তেও প্রমাননান নির্দেশ করে। তেও প্রমাননান নির্দেশ করে। করি নির্দেশ করে। বিজ্ঞানিক্ষা করে। করি নির্দেশ করে। বিজ্ঞানিক্ষা প্রাচিত্রমান করে। বিজ্ঞানিক্ষা প্রাচিত্রমান করে। বিজ্ঞানিক্ষা প্রাচিত্রমানিক্ষা নির্দেশ করে।

সতঃপর আমরা দোষোপক্রমণীয় (বাতাদি দোষের চিকিৎসা) অধ্যায় ব্যাগা। কবিব। মৃত তৈলালি সেইপান, সেন গ্রোগ, মৃত সংশোরন (আন ব্যাম বিবেচনালি), মর্ত অন্তর্গানি রাহানের ও তিনজন তেলালি, কর্ম ভালেশন, দশন্ত্রালি, ভালেশন, দশন্ত্রালি, ভালেশন, দশন্ত্রালি, ভালেশন, দশন্ত্রালি, ভালেশন, দশন্ত্রালি, প্রার্থি, ভালি, ভালি,

পিওছ্য সাপিব পানং স্বাহুশীহৈ বিবেচনম্।
স্বান্ধতিক্ৰকষায়াণি ভোচনাছোনধানি চ ॥
ক্ৰপান্ধনীত সভানাং প্ৰানাম্পদেবনম্।
কঠে গুণানাং হারাপাং ম্বানাম্বনা ছবিং ॥
কপুর্বন্ধনাশীরৈরক্লেপ্য ক্ষণে কণে।
প্রদোষকক্রমার সৌধা হারি গীলে হিনোলনিবলে॥
অবন্ধন্ধং মিজং পুরুষ সালিকামুক্ষবিদ্।
ছন্দামুবর্তিনী নারী প্রিয়া শীলবিভ্রিতা॥

শীত'স্বধ'র'গর্ভানি গৃহাণাজ্যানদীর্ঘিকাঃ। ফুড়ার্থবিপুলস্বচ্ছ-সলিলাশ্যুসৈকতে॥ সাস্তোজ্জলতীরাস্তে কায়মানে জ্রুমাকুলে। সৌমা ভাষাঃ প্যাস্থিবিরক্ত নিশেষ্ডঃ॥

মতপান, মধুব ও শীতল দ্বা ধারা বিরেচন, নধুর তিভাকষায় দ্বা ভোজন ও মধুব তিভা ক্ষায় ঔষধ সেৰ্ন, ত্ৰাক্ত ত্ৰীতল ও মনোহর গন্ধ সাম্রাণ, কচল্পিত গুণানামক মৃত্যাহার ও মৰক তচন্দ্ৰক। স্তাদি মানাবিধ মণি ৰক্ষঃস্তালে ধারণ, ক্ষণে কংগ কর্পার চন্দন ও পেগার অনুবেপ, লার কাল, চক্রমা, স্ববাববলৈত গৃহ, মনোহর গাম, শীত্ৰ বায়, অন্প্ৰান্থ সিত্ৰ (যাহার মূখে কোন গ্রুপান্ডক রাকেন্দ্রন্ত - প্রসূত্রনার্মনে, মধুবভা্ধী), অস্ট-নৃগ্ধ-৭তন শিশুসন্তান, প্রিয়া স্থীলবিভূষিত, ও বৰী হত, স্থা, নাতলজলধারাবিশিষ্ট গৃহাভাস্তর, উপবন, দীৰ্ঘকা, সোমাভাব, বিশেষতঃ হগ্ধ স্বতের বিক্রেচন, এই সমস্ত প্রকুপিত-পিত্ত-শাস্তির প্রধান উপায়। বোগা নির্মাণিখিত রূপ কায়মানে অর্থাৎ ভূগগ্ৰহে , খড়ে নম্মার । অব্ভিতি কবিয়া উপনি উক্ত রূপে চিকিৎসিত হুট্রেন। ভুন্গৃহ খানি, প্রকাশ্যাদ্রীশর প্রকাশ বাহারল বালুকামর প্রালান কর্মপ্রতা ভারার চত্ত্রিক বুঞ্জে সুশোভত এবং নিকটন্ত স্লিলে প্ল সকল প্রশুটিভ, এইরূপ মনোধ্ব তুণগুছে পাকিয়া চিকিৎসা করাইবেন।

রেশগো বিধিনা যুক্তং তীক্ষং বমনরেচনম্।
আনং রক্ষান্ধতীক্ষোদং কট্তিব্যুক্তবায়কম্ ॥
দীর্ঘকালস্থিতং মজাগরঃ।
আনেকরাপো ব্যায়াম্ভিডো রক্ষং বিমর্জনম্।
বিশেষাধ্যমনং যুবঃ কৌছং মেলোম্বমেষধম্।
ধ্যাপবাসগঞ্যা নিংক্ষয়ং মুধায় চ ॥

শাস্থবিদ্যনোক তীক্ষ বমন ও বিরেচন, কৃষ্ণ থল তীক্ষ উষ্ণ এবং কটু তিক্ত কথায় রসমুক্ত অল. পুরাতন মন্ত, রতিকার্যো প্রীতি, অতি জাগুবণ, নানাপ্রকাব বাায়াম, চিন্তা, কৃষ্ণ মর্দ্দন, বিশেষতঃ বমন, যুষ, মধু, মেনোম্ব ঔষধ, ধূম, উপবাস, গড়ষ ধারণ এবং কষ্টসাধ্য মানসিক ও বাচনিক কল্মেব অনুষ্ঠানজ্নিত ক্লেশ, এই সমস্ত শ্লেমজ্ঞ বিকাৰে স্তৰেব নিমিত্ত হয়।

উপক্রমঃ পূথগ ্লাসাম যোগ্যমুদিশ্র কার্থিত। সংস্কৃষিত্রিপাংক্ষেত্র তং স্থাস্থানিক্ষ্যমং ।

বাতাদি প্রত্যেক দোষ উদ্দেশ করিয়া যে যে
চিকিৎসা কীন্তিত হউল, ধন্দ ও সন্নিপাত স্থলেও
সেই সেই চিকিৎসা মিলিত করিয়া কলনা
করিবে। ধথা—বায়ুও পিতের পৃথক পৃথক্
যে যে চিকিৎসা কথিত হইল, বাতপিতের
সংস্থাও ভাতাই মিলিত প্রয়োগ করিবে, জ্ঞাত্ত
স্থাকে ওসালিপাতেও এইকপ জানিবে।

গ্ৰৈত্ব: প্ৰায়ো মৰুৎপিত্তে বাসন্তঃ কফমাৰুতে। মক্কতো যোগবাহিত্বাৎ কফপিতে তু শাবদঃ॥

গ্রীশ্ম-শতুচর্যা-বিহিত বাতপিত্তসংসর্গে চিকিৎসা করিবে। অর্থাৎ গ্রীম্ম শতুতে रयमन नवन कर्षे अस नाम्रोम छ न्याकिनन ত্যান্ধ্য এবং মধুর জন প্রস্তৃতি সেবা, বাত-পিতুসংসর্বেও সেইরপে প্রায় নবণাদি আজা ও মধুর অঞাদি সেবা ইত্যাদি! বাতরেখাব সংসর্গে বসন্তথ্যভূচর্য্যাক্ত তীক্ষ নশু ব্যন্যদি-কফপিত্তসংসর্গে রূপ চিকিৎসা ক ৰ্বব্য । শরংশ্রত্বর্যাবিহিত চিকিৎসা কর্ত্তব্য । গ্রান্ম অত্যন্ত শাতল সেবা এবং বসন্তে তীক্ষ ব্মন ও নম্ভাদি প্রয়োগ উক্ত আছে, কিন্ত ইহা অভিশন্ন বাতজনক, তবে কেমন করিয়া বার্তপিত্ত ও বাতরেলা সংসর্গে যথাক্রম গ্রীল ও বসত অভুচৰ্যাবিহিত বিধান এইতে পাবে গ ইহার উত্তর এই যে বায় যোগবাহী অর্থাং ধুখন যে দোষৰুক্ত হয়, তুখন সেই দোষেব কার্য্য করে, অতএব পিত্তের সহিত অবস্থিত বাৰুর পিভাচকিৎস৷ এবং কফের স্থিত বায়ুর কফচিকিংসা ভাষা। সন্মিপাতে (ভজেৎ সাধারণং সর্কমিত্যাদি বচনামুসারে)

বর্ষাশভূচর্যাবিহিত চিকিৎসাই কর্ত্তর্য, যেহেতু শাস্ত্রে উক্ত আছে যে বর্ষা শভূতে দোষত্রয়েরই প্রাকোপ হইয়া পাকে।

চর এব ক্ষেদ্রোষণ কুপিশেস্থবিরেশ্বরণ্ । সকলেশপুরুলীয়াংসণ শোষাদোষাবিদেশি গ

চয়কালেই বাঙাদি নোধকে জয় মর্থাৎ ছিন্ন মূল করিবে, কাপকাল প্রভীক্ষা করিবে না। চয়কালের চিকিৎসা থেন কুপিত দোষের মবিরোধী হয়। আর সর্বদোবের প্রকোপ হুইলে যে দোষ বলবান্, ভাহারই চিকিৎসা করিবে। সেই চিকিৎসাও থেন মবশিষ্ট প্রকৃপিত দোষের প্রতিকৃল না হয়।

প্রায়ণত শ্রাধেদারি । কোন্সাম্সাম্পার্থেছ। নাকৌ বিশুদ্ধা ক্ষমিশ্র শ্রাধেদ যোলা একাপ্রেছ

মে চিকিংসা, উপস্থিত বাাধির নিবাৰণ অথচ অন্ত বাাধির উৎপাদন করে, জাহা বিশুদ্ধ চিকিংসা নছে। অতএব যে চিকিংসা কার্ধির শাস্তি করে, অথচ অন্ত দেয়ের প্রকোপ না জন্মায়, ভাষাই বিশ্বর চিকিংসা।

বাংখামাপ্তথ্য প্রস্থার কিংলাদাধি।
কোঠাছে থাকিমাধি দেখামান্ত চাল দোধা বাজি ভথা ৫০৩৮ প্রোগোল্পবিশোলনাথ। বৃদ্ধ্যাভিষ্যালনাথ পাকিছে কোঠা বাংখাত নহাহার॥

ব্যায়াম, উন্মার তীক্ষতা, অহিত দেবন ও বায়ুর শীম্রগামিত্ব এই হেতুচতুইরে দোব সকল, কোষ্ঠ হইতে রক্তাদি ধাতু অস্থি ও সম্মন্থানে, গমন করে এবং স্রোতোমুখের বিকৃতি অর্থাৎ দোমমার্গের মুখবিস্তার, দোষের বৃদ্ধি, ক্ষীরাদি অভিযাননী ভোজন, পাচনাদি ধারা দোষের পাক ও বায়ুর কো দাবেণ এই সকল কারণে দোষ সকল রক্তাদি স্থান ইইতে কোটে গমন করে।

ত এছাক বিলম্বেরন্ ভূয়ো হেতুপ্রতীক্ষিণঃ। তে,ক'লোদিবলং লক্ষা কুপ্যস্তায়া'ও চেম্বপি॥

দোব সকল বক্তাদি হইতে কোণ্ট মাইয়াই বোগোৎপাদন করিতে পাতে নত কাত্র অনু-স্থানে গমনহেতু তাহারত হীনশক্তিক য়া যায়, স্কুতাং রোগোৎপাদক হেতু হেয়ন্তর প্রতীক্ষা করে, স্কুত্রব উভাবা যথন দেশ কাল, দুয়া ও ভুসপাদি থারা লব্ধবল হর, তথনই প্রকীয় স্থানে রোগোৎপাদন করিয়া থাকে।

ত্য'শুস্থানসংস্থেষ্ তদীয়ামবলেষ্চ। এবং ডিকিংসাং স্বামেৰ বলেন'শু।ভিভাবিষ্। অগস্থে নায়েকে'বং স্থানিনং প্ৰতিক্ৰাবা।।

স্মান্ত দ্যে সকল, স্বর্ত প্রক্ত ्वारधारभागम प्रमर्थ म इय. . प्र 'চিকিংল ল কৰিয়া প্ৰয়ে ভাতাদেৱ লিজ ्वान्द्रः छ, नए (भग्नश्रामी) চিকিৎসা কালেব ৷ বিভাষ্থন হাগ্য দায় জন্মৰ হট্যা নিজ नांद्र प्रात 3 1-17 187 P পা - কেয় ভাষাদেশ স্বকীর 50 8 5 **4**74. . 8 . চকি সাকাৰে। বিশ্বা সতা স্থানিদেখিক। প্রতিকার কান্য পরে আগন্ধ সোমের শাস্তি क तित्व ।

বাহান্তব্যার গানা দেবিত বেশিক্ষত্তা ভূরতাশিক্ষন কুমার নেয়ু জ্বকা ৮২ইট্রিলেরিং ক্ষরান । শ্বাহার্তিন্ প্রয়োগের ক্ষরে না কেট্রানাহং জ্বারা কোঠপ্রসাশ্চ যথা সর্বানিকারং।।

তির্যাগ্রত থেষি সকল োগিকে দী্থকাল পীড়া দেয়, অহতেব দেহের অগ্নি ও বলাভিজ বেদা, সত্ত্বৰ হটয়া ভাহাদের চিকিংদা কৰিবে লা; শাস্ত্রবিহিত চিকিংসাত্সারে তির্যাগ্রত দোষের শান্তি কবিবে; অথবা যাহাতে দেছেন পীতা না জাায়, এৰূপ ভাবে তাখাদিগকে ক্রমে ক্রমে কাষ্টে আনয়ন কবিবে। ভাহাব কোঠে আনীত হটলে, ব্যন-ব্রেচনাদি দাবা আসন্ন পথ দিলা অর্থাৎ যে পথ ্য কোষ্টেব निक्रिवडी, अडे अथ काश्मीदाङ দিয়া, ক্রিবে। আমন্তান, নিঃসারিত প্রস্থান, মৃত্রাশয়, ক্রেশয়, ছান্য়, উভুক (ম্লাশ্য়) ও ফুসফুদ ইহাদিগকে কেত

ক্ষেত্ৰোধবনত্ৰংশ-গৌরবানিনমূচভা:। আনস্তাপন্তি-নিতীব-মনসঙ্গালটিক্ষমা:। লিঙ্গং মনানাং সামানাং নিরামাণাং বিপশ্বির:॥

স্রোভোরোধ, বলহানি, দেহভার, বারুর স্তব্ধতা, আলস্ত, অপরিপাক, মুঞ্সাব, পুরী-বাদির অপ্রবৃত্তি, অক্লচি ও গ্লানি, এই সমস্ত নাম অর্থাৎ আমরসমুক্ত দোষের লক্ষণ। নিবাম দোষের লক্ষণ, ইছার বিপরীত।

উন্মণে '২য়বলছেন ধাতুম 'শুমপানিতম। ভূষ্টমাম' শ্যুগতং বসুমামং প্রচক্ষতে।

অপ্লিব অল্পবলয়-্ছতু অপ্লচিত এবং বাতাদি-জুট আমাশরগত বসনামক ্র প্রথম াতৃ, তাহাকেই আম কছে।

অত্যে দেশেষতা এব'ভিছুটোতো'গজোন্যমূর্তনাং । কোডাবেত্যে বিষয়োৰ বদস্যাসদ্যাসম্ভবন ॥

অপব কতকগুলি আচার্য্য বলেন যে,

গমন কোন ধান্ত হইতে বিষের উংপত্তি হর,

তদ্রপ অতি তপ্ত দোষদিগের পরস্পর মৃ**র্চ্ছন**(মিশ্রীভাব , স্বারা আমের স্ক্**ড**ব হইরা গাকে।

অ'মেন ভেন সম্পূতা দে'বা দুয়াক দুখিতা:। স'মা ইত্যুপদি**ভতে** যে চ রোগান্তভূত্বাঃ ॥

বাতাদিশ্বিত ও আমসংৰ্ক্ত ৰে দোৰ ও
দ্যা পদাৰ্থ, তাহাদিগকে সাম কছে। সেই
সাম দোমদ্বা হইতে জ্বাদি ৰে সকল রোগ
উংপন্ন হর, তাহারাও সাম বোগ নামে অভিহিত হইয়া থাকে।

পাচনৈদীপনৈঃ প্রেইগুলান্ বেটালচ পরিক্রজান্। গোধরেচেছাধনৈঃ কালে ব্যাসরং ব্যাবদায়।

জ্ববাদি অধিকাণেক অন্ধ্যুদ্দীপক পাচন এবং স্থেতন ও যথাবিধি স্বেদপ্রয়োগ বারা সেই আমদোষসকল পন্দ্রিত হইলে পর উপযুক্ত সময়ে, রোগির বল বিবেচনা করিয়া মৃত্রু মধ্য বা তীক্ষ বমন-বিরেচনাদি জ্ববা বারা তাহা-দিগকে বর্ণাসন্ত্র পথ দিয়া নিঃসারিত কবিবে। হস্তা 'শু যুক্তং বক্তে ্ণ ক্রমোমাশ্যাক্সলান্। মাণুন্ন চোক্তিজ্জুক্থান প্রাধানাদ শুদেন চ॥

মুণ থার। পীত দ্রা আমাণর হইতে, নাদা-পীত দ্রা উর্জজ্জ হইতে, গুহুথার-প্রযুক্ত দ্রা প্রকাশয় হইতে নলকে আগু নিঃদাবিত কবে।

উৎক্লিষ্টানধ ডক্ষণ বা ন চামান বহতঃ শ্বহম্। ধারয়েদৌষধেদে খিনা বিধুতাক্তে হি রোগদাঃ ॥

বহির্গমনোমুথ আমদোষ সকল বদি স্বরং উদ্ধ বা অধামার্গ দিয়া নির্গত হয়, তাহা হুইলে স্তম্ভন উম্প ছারা তাহাদিগকে বন্ধ করিবে না, কাবণ বহির্গমনোমুথ দোম বিধৃত হুইলে রোগকর হুইয়া গাকে।

প্রবৃত্তান্ প্রাগতো দোবানুপেক্ষেত হিতাশিন:। বিব্যান পাচনৈন্তৈত্তঃ পাচরেন্নির্হরেত বা ॥

দোষ সকল বহির্গমনে প্রবৃত্ত হইলে,
প্রথমে হিতভোজী হইয়া তাহাদিগকে উপেকা
করিবে, অর্থাং কোন প্রকার ধারক ঔষধ
না দিয়া হিতভোজন করিবে। আর দোষ
সকল বিবন্ধ (ঈয়ংপ্রবৃত্ত) হইলে, যথোজ্ঞ
পাচন দাবা তাহাদের পরিপাক করিবে,
কিংবা তাহাদিগকে নির্গত করাইবে।

অথ ধাতবঃ।

এতে সপ্ত স্বরং স্থিতা দেহং দর্ধতি বন্নৃণাস। রসাস্ত মাংসমেদোহস্থিমজ্ঞকাশি ধাতবং ।

রদ, রক্তা মাংদ, মেদঃ, অস্থি, মজ্জা ও শুক্র এই দাতটি পদার্থ স্বয়ং অবস্থিত পাকিরা মনুষাদিগের দেহ ধারণ করে বলিয়া ইহা-দিগকে ধাতু কতে।

অথ রসদ্য স্বরূপমাহ—

সমাক্পকসা ভুক্তনা সারো নিগদিতো রস:। স তু দ্রব: সিত: শীত: বাড়: নিক্ষন্টলো ভবেৎ ॥ ভূতদেবা সমাক্ পরিপক হইলে তাহা হইতে যে সান পদার্থ উৎপন্ন হর, ভাহাকেই রস কছে। রস--- দ্রবপদার্থ, খেতবর্ণ, শীতল, মধুর্রস, সিশ্ব ও গতিশীল।

অথ রসস্য স্থানমাহ—

সক্ষদেহচরস্যাপি রসস্য হৃদরং ख्रुलम्। সমানমক্ষতা পূর্কাং বদরং হৃদরে ধৃতঃ ॥

রস সর্বনেহচারী হইলেও হানরই ইহার বিশেষ স্থান। কারণ ইহা সমান-বারু কর্তৃক প্রথমে হানরেই নীত হইয়া থাকে।

আ'রুজ্ ধমনীর্গনা ধাজুন্ সর্কানরং রসঃ। পুঞ্চি তদ্দ্ বীরের্গাগোতি চ তত্ত্বং ওবৈ:।

ঐ স্নদ্ধগত রস তত্ত্তা ধ্যনীসমূহ ছারা গমন করিরা প্রথমে ধাতু সকলের পোষণ করে, তৎপরে নিজ শাত স্থিম ও পোষকত্ব শুণে সমস্ত শরীরে ব্যাপ্ত হইয়া থাকে।

মন্দৰ্যক্ষিবদক্ষ কটুৰ্বাল্লে। ভবেদ্ৰস:। স কুবাাদ্ বহুলান্ রোপান্ বিষক্তাং করোতাপি ।

অগ্নিমান্দা হেতু রস বিদপ্ত হইলে কটু বা অন্নভাবাপর হয়। এই বিদগ্ধ রস বহুরোগের উৎপাদন এবং বিষের কার্য্য করিয়া পাকে।

অথ রক্তস্য সর্রপমাহ--

যদা রসো বৃক্দ্ বাতি ততা রক্ত্রকপিন্ততঃ। রাগং পাকঞ্চ সংগ্রাপ্য স তবেদ্ রক্তসংজ্ঞকঃ। রক্তং সর্ববশরীরহং জীবস্যাধারমূভ্যম্। ক্রিদ্ধং গুরু চলং স্বাদ্ধ বিদধ্য পিত্তবদ্ তবেৎ॥

আহারজাত রস যথন যক্কতে যার, তথন উহা তত্তত্য রঞ্জকপিত থারা পরিপাক ও লোহিত্য প্রাপ্ত হইয়া রক্তসংজ্ঞা লাভ করে। রক্ত সমস্ত-শরীরেই অবস্থিতি করে। ইহা প্রিথ্প, গুরু, চলনশীল ও মধুররস এবং জীবনের প্রেধান আধার। রক্তও বিদগ্ধ হইলে পিতত্বং অম্বরস হইয়া থাকে।

অথ রক্তস্ত স্থানমাহ--

যকুৎ শ্লীহা চ রক্তক্ত মুখ্যস্থানং তরোঃ বিভষ্।
অন্তত্ত সংস্থিতবতাং রক্তানাং পোবকং ভবেৎ ।
রক্তের প্রধান স্থান যকুৎ ও প্লীহা। এই
স্থানম্বয়ে থাকিয়াই ইহা অক্তস্থানস্থিত রক্তের
পোষণ করিয়া থাকে।

অথ মাংদস্য সরূপমাহ--

শোণিতং স্বাগ্নিনা পৰং বায়ুনা চ ঘনীকৃতম্। তদেব মাংসং জানীয়াং তন্ত ভেদানপি কৰে।

রক্ত স্বকীয় অগ্নি ঘানা পনিপাক প্রাপ্ত ও বায় দারা ঘনীভূত হইলে, তাহা নাংসরূপে পরিণত হয়। নাংসের যে প্রকাবতেদ আছে, তাহাও কণিত হইতেছে।

অথ মাংসপেশীমাহ--

ৰণাৰ্থমুখণা যুক্তো বায়ু খোতাংসি দার্যেং।
অনুপ্রবিষ্ঠ পিশিতং পেশীবিভন্তত তথা।

যথাযথ উত্মযুক্ত বায়ু স্রোকোবেদারণপূর্বক
মাংসে প্রবেশ কবিয়া ভাষাকে পেশীরূপে
পরিণত করে। (স্ক্রোকারে পরিণত মাংসশুচ্ছকে পেশী কহে।)

অথ মেদ্দঃ সরপমাহ—

বন্ধাংসং স্থায়িনা পকং ভবেদ ইতি কথাতে।
তদতীব শুকু নিধাং বদকাষ্যতিবৃংহণমু ।

যে মাংস স্বকীয় অগ্নি দারা পরিপাক প্রাপ্ত
হয়, তাহাকেই মেদ কহা যার। মেদ অতীব
শুকু, স্পিগ্ধ, বশকর ও অতিবৃংহণ।

অথ মেদসঃ স্থানমাহ—

মেদো হি সর্বাস্থতানামুদরেহণু স্থিয়ু স্থিতম। অভএবোদরে বৃদ্ধিঃ প্রায়ো মেদস্বিনে। ভবেৎ ॥ মেদ সর্বভূতের উদরে ও স্ক্রান্থিতে অব-স্থিত, তজ্জান্ত মেদস্বীর উদর নিতাই বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয়।

অগাস্থাং সরূপমাহ—

মেদো বং স্বাগ্নিনা পকং বায়্না চাতিশোবিভন্। তদন্তিসংক্ষাং লভতে স সারঃ সর্ববিগ্রে ।

মেদ স্বকীয় অগ্নি দার: পরিপাক প্রাপ্ত এবং বারু দারা বিশোষিত হইলে, তাহাকেই অস্তি কহা যায়। সন্দাশনীরে অস্তিই সার পদার্থ।

অথ মঙ্জপরপমাহ —

অন্তি বং স্থানিনা পদং তক্ত সাবে। জনেদ্দন ।
বো মেদোৰং পৃথগ ভূতঃ স মক্তেতাভিধীয়তে ॥
স্বকীয় অগ্নি স্বার: অস্তি পানিপাক প্রাপ্ত হইলো, তাহা হইতে যে মেদোবং ঘন সানপদার্থ পৃথগ্ভূত হয়, ভাহাকেই মুজ্জা কহা যায়।

অথ মজ্জস্থানমাহ—

স্থাতিষ্ বিশেষণ মঙ্কা হভান্তবে স্থিত। মঙ্কা স্থাতিব মনোই বিশেষরূপে অবস্থিতি করে।

অথ শুক্রস্থোৎপত্তিমাহ—

রসাজকং ততো মাংসং মাংসারোদঃ প্রজারতে। মেদাসোহত্বি ততো মজ্জা মজ্জা শুক্রপ্ত সম্ভবঃ॥ ফুক্সতেনানেন বচনেন শুক্রং মজসম্ভবমুক্তম্।

রস হইতে রক্ত, রক্ত হইতে মাংস, মাংস হইতে মেদ, মেদ হইতে অস্থি, অস্থি হইতে মজ্জাও মজ্জা হইতে শুক্তের উৎপত্তি হয়।

ইমমেব দলেহং দুৱীকন্তুমাহারাদের্গতিং

পরিপামঞ্চাহ,—

ৰাত্যামাশরমাহারঃ পূর্বং প্রাণানিলেরি ১ঃ। মাধুবাং ফেনভাবঞ্চ বড়ুরুসোহপি লভেত সঃ॥ রস হইতে সকল পদার্থেরই উৎপত্তি কিরুপে হয়, এই সন্দেহ দুরীকরণার্থ আহাবাদির গতি ও পরিণাম কথিত হইতেছে।—

আহারীয় দ্রব্য প্রাণবায়ু কর্ত্বক প্রেরিত হইয়া প্রথমে আমাশরে গমন করে; উহা ছয় রস বিশিষ্ট হইলেও তথায় গিয়া মাধুনা ও ফেন-ভাব প্রাপ্ত হয়।

সন্ধুক্ষিতঃ সমানেন পচত্যামাৰ্যস্থিতম্। ঔদব্যোহয়িৰ্যথা বাহুঃ স্থানীস্থং তোয়চঞুলম্॥

বাহ অগ্নি বেরপ স্থালীস্থ জল ও তপুলকে পাক করে, সমানবায় খাবা সন্ধুক্ষিত জঠাগিও তজ্ঞপ আমাশয়স্থিত ভুক্ত দ্রবাকে প্রিপাক করিয়া থাকে।

আংগরন্ত রসঃ সার, সারহীনো মলদুবং ।
শিরাভিত্তকলং নীতা বন্তিং মূলদুবাগুখাং ।
শেবং কিউল বং তক্ত তৎ পুরীষা নিগস্তানে
মনানবায়ুনা নীতা তৎ তিইতি মলাশায়ে ॥
মূলদোপস্থমার্গেণ পুরীষা গুদমার্গতা।
অপানবায়ুনা কিপ্তা বহিষাতি শরীরতা ।
অপানবায়ুনা কিপ্তা বহিষাতি শরীরতা ।
সাজ্ হাদ্যাং থাতি সমানমন্তাতিরতা ।
সাজু হাদ্যাং থাতি সমানমন্তাতিরতা ।
সাজু বাানেন বিক্তিপ্তা স্কান্ধাত্ন বিসম্বাহ ॥
কেলারেয়ু যুপা কুলাঃ পুন্দিন্তি বিশিধান্ধী ।
তথা কলেবের ধাতুন্ স্বব্যুন্ ব্যুলাত রসা ॥

ভূজ দ্বোর দানাংশ বদ এবং সংক্রান ভাগ মলদ্র, দেই মল্লুবের জলীয়াংশ শির ছারা বৃদ্ধিত নীত হয়, তাহাকেই মৃত্র কতে। আর কিট্টাংশ যাহা অবশিষ্ঠ পাকে, তাহাকে প্রীষ কহাযায়। দেই পুরীষ বায় ছাং মল্ল-শ্যে নীত হটয়, তথার অব্স্তিত করে। পরে দেই মৃত্র ও পুরীষ উপস্কুত সময়ে অপনবার্ ছার্য প্রক্রিষ্ঠ হয়া যথাক্রমে লিক্স ও গুরুছার দিয়া বৃহ্বিত হয়।

সমান-বায়ুকর্জক প্রাবিত হইন্না বস জনরে গমন করে। পরে তাহা ব্যান-বায়ু ছারা বিক্লিপ্ত হইন্না সমস্ত ধাতুকে বন্ধিত করিন্ন থাকে। বেমন কুল্যা-(পরঃপ্রণালী)-সমূহ ছারা ক্লেক্ত্রের ওষ্ধি সকল পুরু হয়, ভদ্ধপ বস ছারাও শরীরস্থ ধাতু সকল পুরু হইন্না থাকে। রসম্ভ তত্র তত্র ত্রিধা বিভজাতে :—

স্থান স্কান্তরনক তত্র তত্র ত্রিধা রসঃ।

বং স্থানাংশ্য পরং স্কান্তরনো বাতি তবানম্।

অরমর্ধ:,—স্থানাংশা বং বাতি যথান্থি চন্তিচটি।
স্কান্তঃশা পরং দিতীরং ধাতুং বাতি। তবানা রসাদিধাতুমনা। তবানা শরীরারস্কান্ত তেজানুসনা বংগীতার্প।

ধাত্যের মানে মন্ত্রারস্কান্ত প্রত্যেকা ক্রমণ্ডে রসঃ।

অহোরারাৎ বয়ং পঞ্চ সান্ধ্যি দঙ্গ তিচতি ।

বপা লৌকিকাগ্নিনা ইক্ষুরসঃ পচ্যতে, তথা শরীরা-রম্ভকক্ত রসক্তান্থিনাহাররসঃ পচ্চতে, পচ্যমানঃ স প্রণা-হোরাতাৎ সার্দ্ধণতঞ্চ বাবৎ প্রাক্তনরস্থা তানেব তিষ্ঠতি। মটো বথা পচ্যমানাদিকুরদারলো নির্গচ্ছতি, তথা পচাহানাদাহার রসাকলো নির্গ**চ্ছ**তি- ম কফ.। ম চ প্রাণানিক্রপ্রিরের ধমনীমার্গেণ শরীরারক্তকং ক্রেনাপাং কফ গল্পা প্রশাতি। তত্ত, সারভূতভাতার-রমঙ্গ ছোঁ ভাগে ভাগে-ছুনা সুক্ষান্চ ; ভাগেছুলা ভাগ শবীরারস্তক রসং পে:যথাঁশ, স্বল্মরীরাধি-জানেন বা'নবাধনা প্রেবিচ্ছা ধননী'ভ, স্করন <u>পোষণ</u>-্লং ন-তৃঠ্যানলোক্ষকভদ্তুপ্নিবারণ্টিভিন্ত ট্রি-बरौरः शका है। इंट সংক্ৰা ভাগঃ প্ৰাণবায়ুৰা ্পনিং শ ধন্নীমার্গের শ্রীরারম্ভকন্ত রাক্তন্ত স্থানা যাচ্ৎ-প্লিকণে গ্রাকেন মহ মিলিংকা জবনি। তুক প্রাস্ত নজ রস্ত্রাগ্রিম পুন প্রয়োল, প্রাটোরারাই সাদ্ধি ন্দ্ৰপ্ৰ য'বহ পোক্তনৰভূপ ভাবেত ^{ভিক্}ি। ভবে<u>ণ</u> যা।-तिस् श्रम, श्रम, श्रमभाभिक्षादिक तिक नाक न तक भवा নিগ্রুটি এখা পুন, পুন প্রচান, লাগ, হাররণ ও আজি বাবা মূলা নিউচ্ছতি। **ওতা রক্তালিনা পচ্যমানাম্মলং** পিত্র নির্গান্ত্তি, ভচ্চ পিতং সমানবায়ুনা গোরিতং ধন্ম প্রীরারভক্ পার্টকাথ্যং সারভূতভাহারর**সভ** ভবন – সুন ক্স্মান্ড; সুলো E : 5 রক্তক গ্রাপ পিত্ৰ বভাগতঃ প্ৰার্থিতকরতা প্রেম্ব্ বানিবাবুনা প্রিতে ধনমান্তিঃ স্কর্ন সকল্মরীবগ্রামি ক্ষিবাণি পুলাভি: • ভা **স্থান্যা ভাগো ব্যান**বায়ুনা পোরিবো বগনীভি শির'ভিশ্চ শরীরারস্তক'ণি মাংস'নি যাতি। ং:া ম¦দাগ্রিনা পুনঃ প্রচাম বি প্রধার বাতাৎ দার্দ্ধনতক বানকাংসেকের ভিষ্ঠতি। ততঃ পচ্যানাৎ •আখারল নির্মছিটি ভলবানেবায়না কিওা বর্ণাবাগতা কণ্বিড্**ড**ক্ডি: ৩৩: न' १५ इन्ड ভ'গো ভাষ্টা—ছুনঃ সুগান, কুলো ভাগো মাংস'নি পুঞাতি। ততঃ সূক্ষো ভ'গো বানিবায়ুনা পেরিতো ধননীভি, শরীরারম্ভকস্থা क् नगूनद्रः (अप्रमः यः€ि। 16.35 মেদদোহ,খিনা পুন, পচামান: পঞ্চাহোরাত্রাৎ मिकिंग्डम यावानामा छन 1 200 ত পচামানাৎ তকাকলো নিৰ্গচ্ছতি প্ৰেদ্যূপ: য চ

শ্বোতঞ্চেব ভিষ্ঠতি। শরীরোম্বণাভিতপ্তকেৎ তদা ব্যানবারুনা পেরিডঃ শিরামার্গৈলে মকুপেজ্যো জিহাদন্তকক মেঢ়াদিমলঞ্ মেদোমল-মিত্যেকে। ৩০. সারভূত্সা রস্সাথে ভাগে ভবত: স্থুনঃ স্কাণ্ড: তত্র স্থানা ভাগো মেদঃ পুঞাতি। **৬দরে তি**ষ্ঠ ব্যানবায়ুনা প্রেরিভঃ স্বোভোষার্গে: কুন্ধান্তিন্তিতাক্তপি মেদাংসি পুঞাতি: কুন্ধো ভাগো ব্যানবাধনা পেরিতো ধননীভি, শিরাভিক শরীরারম্ভ-কাণাম্বীনি ষাতি। তভোহস্থায়িনা পুনঃ পচামান: পঞ্চাহোরাত্রাৎ সার্দ্ধনগুণ য'বনস্থিপের তিইত। তঙঃ পচ্যমান'ৎ হয়। মলো নির্গচ্ছতি। স ৮ ব্যানবায়ুনা শিরাভিগ বিশিশ সাঙ্গুলিধু নগ;স্তনৌ লোমানি ভবস্থি। ততঃ স'রভূশনা বস্ধা ছৌ ভাগৌ ভবর:ে স্থান স্কুন্ড: তুন স্থুলো ভাগোৎস্থীনি পুষ্ঠি হংশা ভাগো বানবাধুনা পেবিভঃ প্রোতো-মার্গেম জ্বজ্বানি স্কু শ্রাভারর'ণি য'তি। ততো মজ্জান প্রচাল (ল. প্রাণ্ড বিংগ্রু গ্রিনা পুন, न किल्डिक যাৰ্মজ্ঞান কিছ্ • , • :.. প্ৰচানাৰ নিৰ্গক্তি। ১৮ না। নবাধনা প্ৰেনি । শিবামাণ্ডেনিয়-ন্যোরাগাল নেববিট চকুনের্ভাচ ভৰ্ডি। ডঙ মারভূতসা ব্যসা স্থে ভাগে। ভবতা-সুলা স্কাশ্চ; ত্ৰ স্থালা ভাগো মজানং পুদ ি, তথা স্থালা ভাগো দ্ৰবাভি শিবাভিশ্চ শুশসা ব্যান গ্ৰেন প্ৰেনিং শ মুনিং সকলনরীর গ্রা শ্র'ব'বম্বকেণ শুফের **সহ** মিশিবের ভবতিঃ ৩০ প্রসামিনা পুনঃ পচাতে, পচামানে একিন্ মলা নাজি। সাহি সহধ্যা এইবর্ণ-तर । १६ म'तहकमा तमम वर्षे छात्र, स्तंड 一翼郡 কুলাল্ড । ত সুনা হল প্র'বাবলক শুর্ণ ষ্তি। 수염 기업은 기업으로

নির্গত হয়, সেইরপ পচ্যান আহা নিৰ্গত হইয়া থাকে: হইতেও মল রস-মলের নাম কফ। কফ প্রাণবায় প্রেরত হটয়া ধমনীমার্গ দিয়া শ্বীরারম্ভক ক্লেদনাণ্য কফে গিয়া তাহাকে পুট করে। জনত্ত্ব সারভূত সেই প্রামান রস হুই ভাগে বিছক্ত হয়—সুল ভাগ ও সৃন্ধ ভাগ। স্থলভাগ শ্বীরাণম্ভক রদেই অবস্থিতি করিয়া ভাহাকে পরিপুষ্ট কবে এবং শুরীরব্যাপী ব্যানবায় স্থান প্রেনিত হইয় ধননীমার্গ দিয়া গমন করতঃ স্নেহনাদি গুণে সকল শ্রীবের পোষণ কবিয় থাকে। অবশিষ্ট ফুলভাগ প্রেরিত হইয়া বানিবায় স্থার শ্বীবাবস্থা বক্তে; স্থান যক্ত্র ও প্রীহায় গ্মন ক্রিয়া ভত্তভা রক্তো স্হিত মিলিত এবং পাচ দিন দেড় দণ্ড কাল তথায় অবস্থিত হইয়া রক্তোয়ার পুনঃ পচ্যমান হয়। ইক্ষুবিকাণ হইটে যেম্য বাণিবাং মল নিৰ্গত **২ই**ণ থাকে, পুনঃপুনঃ প্রমান আহাররস হইতেও সেইরপে বাবংবা। মল নিগ্ত হয়। বক্তাগ্নি হাঃ প্রমান সেই কুলাংশ আবা । ,য মল নিগত হয়, তাহা । নাম পিতু। দেই পিত্ৰ স্মানবায় স্বান: প্রোবত भगनी-পথে नतीना १९४० পাচ দাগা গিয়া তাথাকে পুষ্ট কবে এবং অবশিষ্ট রুদ দ্রা ভাগে বিভক্ত হয়—সুল ও স্কা। ভাগ রঞ্জ গাণা পিও খান রক্তীকৃত হট্যা পরীবাবস্থক বক্তকে 97: वाग्वायु वाग প্রেণিত হইয়া ধমনীপথে গ্রমনপূর্ণক সকল করিয়া পৌধণ শরীরগত রক্তকে অবশিষ্ট সুক্ষভাগ ব্যনবায়ু খা.াা প্রেরিভ হট্যা ধ্যনা ও শিরাপথে শ্রীরাভিচ মাংদে তথায় পাচ দিন দেড কাল অবস্থিত হুইয়া মাংসাগ্নি ছানা পুনঃ পচ্যমান হয়। পচ্যমান সেই আহার রস ব্যানবার বারা কর্ণে প্রক্রিপ্ত হইরা কর্ণমল-রূপে পরিণত হয়। তৎপরে সারভূত সেই রস তুইভাগে বিভক্ত: হয়। যথা--- মূল ও সৃন্ধ। মুল ভাগ নাংসকে পুষ্ট করে এবং স্থন্মভাগ ব্যানবার বারা প্রেরিত হুইয়া ধ্যনীমার্গ খারা শবীরারম্ভক-মেদের স্থান উদরে গমন করে। তথার পাঁচ, দিন দেও দণ্ড কাল অবস্থিত হট্যা মেদ-অগ্নি ধারা পুন: প্রমোন তাহা হইতে যে মল নিৰ্গত হয়. নাম স্থেদ (ঘর্মা)। সেই স্থেদ শীতলাবস্থায় শিরামণেটে অবস্থিতি কবে : किन्छ यनि भेतीरतांचा चाता অভিত্প হল. ভাহা হটলে বানিবায় ধাৰা প্ৰবিত হটয় লোমকপ দিয়া বহিগত হটয়া বায়। জিহবা দক্ষ কক্ষা ও মেচাদির মলকে কেহ কেহ মেলোমল বলিয়া থাকেন। তদনন্তঃ সারভূত সেই রস হই ভাগে বিভক্ত হয় –ছুল ও সংক্ষ। ম্বলভাগ উদ্বে পাকিয়া মেদকে পুষ্ট কৰে এবং ব্যানবার ছাল প্রেবিভ হটয়া স্লেতো-মার্গ দির: গ্রম করত স্কাতি-স্থিত মেদের পোষণ করিয়া পাকে। অবশিষ্ট হক্ষ ভাগ বানিবায় মারা এপ্রিত হটয়া গমনী ও (শর: পথ ছারা গিয়া শরীরাইস্থক অস্থিসমহকে পোষণ করে। ভংপরে সেই অস্থিতে পাঁচ দিন দেড় দণ্ড কাল অবস্থিত হুইয়া। অস্থির উল্লা ছারা পুনঃ পঢ়ামান হয়। মল নিগ্ত হয়, তাহা ব্যানবায় প্রেরিত হইরা শিরাপথ বারা অঙ্গুলীসমূহে ্লামরূপে পরিণত গিয়া নথ ও শ্রীরে হয়। তংপনে সারভূত মেই বস চুই ভাগে বিভক্ত হয়— তুল ও সন্ধা তুল ভাগ অস্থিকে পুষ্ট করে, マツ ভাগ ব্যানবার ধারা প্রেরিত হটয়া স্রোভোমার্গ দিয়া যুক্ত্য-স্থান অন্থরে অভ্যস্তরে গ্র্মন করে। তথায় মজ্জাগ্নি খারা পাঁচ দিন দেড় দত্তে পুনঃ পচ্য-মান হয়। তাহা হইতে যে মল নিগত হয়,

ব্যানবার মারা প্রেরিত হইয়া শিরা-মার্গ দিরা নয়নম্বয়ে গমন পূৰ্ব্বক নেত্ৰবিট (পিঁচটী) ও চক্ষ:মেহ রূপে পরিণত হয়। তংপরে সারভত সেই রস ছইভাগে বিভক্ত হয়--ত্তল ও ক্রা ম্বল ভাগ মজ্জাকে পুষ্ট করে. সৃক্ষ ভাগ ব্যানবায় দ্বারা প্রেরিত হুইয়া ধুমনী ও শ্বাপণে শুক্তের স্থানে অর্থাৎ সকল শ্বীবে, গমন করিয়া শ্রীরার্ভ্ডক ভক্তের সহিত মিশ্রিত হয়। তথায় ভক্রায়িতে পুনঃ প্রচান হট্যা থাকে। শুক্রাগ্নি-পাকে ভাহা হইতে আর মল নির্গত হয় না। যেমন সহস্রবার পোডাইলে স্বর্ণ মলবহিত হয়, সেইরপ আহাববস্ত পুনঃপুনঃ পাকে মল-বহিত ২ট্রা থাকে। প্রমান সারভূত মল-বহিত সেই বস ছুই ভাগে বিভক্ত হয়—স্থল ও হক্ষ। স্থল ভাগ শরীরারম্ভক শুক্রনকে প্রষ্ট করে, স্ক্রন্থ ভাগ ওজোরপে পরিণত হয়।

অথ শুক্রসা সরূপমাহ—

ক্ষিণ দৌমাং সিতং বিশ্বং বলপুছিকরং খুতম্। গভরীজং বপুংসারে জীবস্যাশয় ৬ওম।

শুক্র-ন্সোমগুণায়ক, শুক্লবর্ণ, স্লিগ্ধ, বল ও প্রষ্টিকর, গভের বীন্ধ, শরীরের সার এবং জীবের প্রধান সাম্রয়।

অথ শুক্রুদ্য স্থানমাহ—

যথ। প্রামি সপিস্ত গুড়ালেক্ষুরমে হয়। এবং চি সকলে কায়ে গুক্তং কিন্তৃতি দেহিনাম ॥

শ্বত বেমন ছপ্কোন, শুড় বেমন ইক্ষুরসের সর্বাবিয়ব ব্যাপিয়া অবস্থিতি করে, শুক্তেও সেইরূপ দেহিদিগের সমস্ত শরীর ব্যাপিয়া অবস্থান করে অর্থাৎ শুক্রের কোন নির্দিষ্ট বিশেষ স্থান নাই।

অথ শুক্রস্থ করণমার্গমাহ -

দ্বাঙ্গুলে দক্ষিণে পার্যে বস্তিদারক্ত চাপাণঃ। মূএসোডাপোচ্চুক্রং পুরুষক্ত প্রবর্ততে॥

পুরুষের সর্বাবয়বব্যাপী শুক্র ক্ষাণকালে বন্তিস্থারের অধ্যোভাগে ছই অপুনী অন্তরে দক্ষিণভাগে আসিয়া উপস্থিত হয়। পরে তথা হইতে মুক্রমার্ক দিয়া নির্মাত হইয়া থাকে।

অথার্ত্তবস্থ্য সরূপমাহ

রদাদেব রক্ত স্থীপাং মাদি মাদি এছিং শ্রনেৎ। তব্ধীদ্বাদশাদৃদ্ধং যাতি পঞ্চাশত ক্ষয়ন । মাদেনোপচিতং কালে ধমনীভান্তদার্ভীবস্। ঈৰ্বাদিবণং কুক্তঞ্চ বায়ুযোনিমূপ্য নয়েৎ॥

আহার জাত রদ হইতে থেমন ক্রমে ক্রমে একমাদে পুরুষদিগের শুক্র উৎপন্ন হর, দেই রূপ রদ হইতে স্ত্রীলোকদিগের বজঃ উৎপন্ন হইন্ন থাকে। ক্র রজঃ প্রতিমাদে তিনদিন করিন্ন প্রক্রত হয়। ঘাদশবর্ধ বয়দে স্থ্রীলোকদিগের রজঃপ্রবৃত্তি আরম্ভ ও পঞ্চাশং বর্ধ ব্য়দে উহা ক্ষন্ন প্রাপ্ত হইন্না থাকে। দেই আর্ত্তব-শোণিত একমাদে উপ্লচিত এবং ঈষাঘ্বর্ণ ও কৃষ্ণ বর্ণ হইন্না ধননী ঘানা যথাকালে বাব্র-কর্জ্ক যোনমুখে নাত হয়।

অথ গর্ভগ্রহণযোগ্যার্ভবলক্ষণম।

শশাসক্প্রতিমং বচ্চ বন্ধা লাক্ষারসোপমষ্। ভদার্ভবং প্রশংসন্তি বন্ধাসো ন বিরঞ্জের ॥

শশকের রক্ত বা লাক্ষারসের ন্সায় যে আর্ক্তবের বর্ণ এবং যাহা কাপড়ে লাগিলে ধৌত মাত্রেই উঠিয়া যায়, সেই আর্ক্তবই প্রশস্ত অর্থাৎ গর্ভগ্রহণের যোগা।

অথ ধাতুনাং মলাঃ।

কক্ষ: পিত্তং মল: থেবু প্রস্থেদো নথলোম চ। নেত্রীবিট্টকুবং স্লেহো ধাতৃনাং ক্রমণো মলা:॥ নেত্রজিহলাকপোলানাং জলঞ্চ রমজং মলবিত্যেকে। কফ, পিন্ত, কর্ণাদি-স্রোত্যোগত মল, ঘর্ম্ম, নথ, লোম, নেএবিট্ ও চক্ষ্ণমেহ, ইহারা বথাক্রমে রসবক্তাদি ধাতুসমূহেন মল। কেহ কেহ বলেন, চক্ষ্ণ জিহবা ও গণ্ডদেশ-জাত জলও বস্-মল।

অথোপধাতবঃ।

বনিতানাং প্রস্তানাং ধমনীভ্যাং তনো গতাং।
রস'দেব হি জায়েত ততাং তনযুগাশয়ন্।
তদ্ধমাংসক্ত বা থেহং সা বসা পরিকীর্তিতা।
মেদসত্তাপামানক্ত স্লেহো বা ক্লিতা বসা।

ওঙ্গত সপ্তধাতুনাং ক্রমাৎ সপ্তোপধাতব:॥

শাঙ্গ ধরত্বাহ— তক্ষং রজো বসা বেলো দস্তাঃ কেশান্তবৈৰ চা

প্রস্থা বনিতাদিগের আহার জাত রস স্তক্তবহ পমনীম্বর মার স্তক্তম্বরে উপস্থিত হটরা তথার স্তক্তরূপে পরিণক্ত হর। বিশুদ্ধ মাংদের যে প্রেহতাগ তাহাকে বদা বলা ধার। তাপ্যমান মেনের স্নেহপদার্থও বদা নামে অভিহিত হয়।

শাঙ্গ নির বলেন যে, স্তন্ত, রজঃ, বসা, স্বেদ, দস্ত, কেশ এবং ওজঃ ইহারা যথাক্রমে সাতটি ধাতুর সাতিটি উপনাতু।

অথোজোলকণমাহ—

ওজঃ সর্ব্বশরীরন্থং নিশ্বং শীতং স্থিরং সিতম। সোমায়কং শরীরক্ত বলপুষ্টিকরং মতম।

বলং চেষ্টাপাটবম্। যথ তু স্থক্ষতে "রসাদীনাং শুক্রান্তানাং ধাতৃনাং যথ পরং তেজন্তথ থবোজন্তদেব বলম্" হতি। অত্যায়মভিপ্রায়ঃ। বন্মান্তসাদোজো ভবতি স রসং সর্কান্থানগতথাও তন্তজাতৃবন্মক্সত ইতি সর্কাধাতৃনাং প্রেছং ওলঃ। কীরে মুঠমিব তদেব বলমিতি। তৎকার্য্য-কারণব্যোরভেদোপচারাৎ অভেদকথনক চিকিৎসৈক্যার্থম্।

ওজোণাতু সর্বশরীরে অবাহত। ইহা স্লিগ্ধ, দীতল, স্থিরপদার্থ, শেতবর্ণ, সৌমা এবং শরীবের বল ও পুষ্টিকাধক। এম্বলে বল শব্দের অর্থ চেষ্টা-পট্তা। সুঞ্ত ব্লেন, রস হইতে শুক্র পর্যান্ত গাতুসমূহের : যে পরম তেজোভাগ তাহাকেই ওজ: কহে। সেই ওজোগাতই বল নামে ্র অভিহিত। এস্থলে অভিপ্রায় এই, যে রুস হইতে ওজঃ উৎপন্ন হয়, সেই রুস ক্রমান্ত্রায় যে যে ধাতুতে গমন করে, সেই সেই ধাতু বলিয়া তথন পরিগণিত হয়। সকল ধাতুর স্বেহভাগই ওজ্পদার্থ। তুগ্ধের দর্দাবয়বে যেমন মৃতপদার্থ অবস্থিতি ওজঃপদার্থও সেইরপ সকল কাৰে, স্মেচকপ ধাততে অবস্থিতি করিয়া পাকে। ওজঃ বলের कार्त, अर्थार अक्षः इटो उठे बरलत छिरश्रां হয়। কাৰণৰূপ ওজ: এবং কাৰ্যাৰূপ বল এই উভয়ের চিকিংসা এক বলিয়া, ওজুই বল নামে অভিহিত হইয়া থাকে।

অস্থ্যচ্চ---

ওক নীতং মৃদ্ধ ন্নিধ্বং সাত্রাং আত্ম স্থিরং তথা। প্রসন্ধ্র পিচিছলং ক্**লমে**শজো দশগুণং মৃত্যু।

অপর লক্ষণ। ওজোগাতু ।দশগুণাবিত অর্থাং ইহা গুরু, নাতল, মৃত্, স্লিগ্ধ, সান্ধ (নিবিড়াবয়ব), মধুর রস, স্থিনপ্লার্থ, নির্মান, পিচিত্রল ও সংক্ষা। ওক্ষক তেজা ধাতুনাং গুজান্তানাং পরং স্মৃত্য।
কলমন্ত্রমপি ন্যাপি দেহস্থিতিনিবন্ধন্য।
মন্ত্রপ্রে দেহস্ত তৃষ্টিপ্টিবলোদয়ঃ।
মন্ত্রাংশ নিয়তো নাশো যদ্মিংস্তিঠতি জাবনম॥
নিশ্পাস্তরে যতো ভাবা বিবিধা দেহসংশ্রহাঃ।
ভংসাহপ্রতিভাধৈগ্য-লাবশাস্ত্রমারতাঃ॥

রস ইইতে গুক্র পর্যান্ত সপ্ত গাতুব যে প্রম তেজঃ পদার্থ তাহাই ওজঃ। সদম্ম ওজঃপদার্থের প্রদান স্তান ইইলেও ইহা সর্মান্তির পালী। ওজঃ দেই স্থিতির কা ল। শর্নারে ওজঃপদার্থের বৃদ্ধি হুইলে দেহের ভৃষ্টি পুষ্টি ও বলোদ্য হয়। ওজেব নান হুইলে সকলেটেই নান হয়। ওজই জীবনের অবলম্বন। উৎসাহ, প্রতিভা, নিশা, লাবনা ও স্কুক্রারত প্রাম্থতি দেহাশ্রত বিবিল্ল ভাব, ওজ হুইতেই বিশ্বন হুইয়া থাকে।

ভতঃ স্থুলোভাগো রসো মাদেন পুণ্দাণ গুরং ব্রীণাস্থার্জনং শুক্রণ ভবভি। এতেন প্রাণাং সপ্তনো শাতুরার্জনং শুক্রমন্তনমিতি বেংবিতন।

স্থলভাগ বস একমাসে প্রক্ষের শুক্র এবং স্কীগণের আর্ত্তিব ও শুক্রকাপে পলিণ্ড হয়। ইহাতে ব্বিতে গ্রাক্তি কাদিগোর সপ্তম গাতু আর্ত্তিব ও অধ্যম গাতু শুক্র।

ই ত্যাব্রুনেদ্-সংপ্রহে শাবীর-প্রকরণম্।

অথাতো দ্ৰব্যাদি-বিজ্ঞানীয়মধ্যায়ৎ ব্যাখ্যাস্থাহঃ।

জবাসেব রসাদীনাং শ্রেষ্ঠং তে হি ত্রদাশ্রয়াঃ।
পঞ্জুতান্ত্রকং তথ তু ক্ষামশ্রিষ্ঠার জায়তে ।
তর্মান্ত্রপান্তর্মান্তর্মান্তর্মান্তর ।
তরিব তিবিশেষক বাপদেশস্ত্র ভূয়সা ।

অতঃপর আমরা দ্রব্যাদি-বিজ্ঞানীয় অধ্যায় ব্যাখ্যা করিব। :স, বিপাক, বীর্য্য, ও

প্রভাব, ইহাদের অপেক্ষা দ্রব্যই প্রধান।
মেহেতু দ্রবাকে আপ্রয় করিয়াই সমাদি পদার্থ
অবস্থিতি করে। দ্রব্য পঞ্চতুতাত্মক, তাহা
পৃথিবীকে আগারীভূত করিয়া উৎপন্ন হয়,
কল তাহার উৎপত্তির প্রধান কাংণ এবং

মান্ন প্রন ও আকাশ, ইহারা জব্যের সমবাান্ন-কাবণ অর্থাং ইহাদের সংযোগবিশেষে
জব্যের উংপত্তি হইয়া থাকে। স্থতরাং সকল
জব্যুই পৃথিবী, জল, অন্ধি, প্রন ও আকাশ,
এই পঞ্চভূতের সমবায়ে উৎপন্ন, কিছু এই
পঞ্চ ভূতপদার্থেন আধিক্যান্ত্রসাবে জব্যের
বিশেষ হইয়া থাকে, অর্থাং মাহাতে পৃথিবীব
আধিক্য থাকে, তাহা জলীম ইত্যাদি
বিশেষ বিশেষ সংজ্ঞা হইয়া থাকে।

তন্মারৈকরসং জব্যু ভূতসংখাতসম্বর্থ। . নেকদোবাল্ডতো রোগাল্ডন ব্যক্তো রসঃ শ্বুছ । অব্যক্তা হতুরসং কিঞ্চিন্ত ব্যক্তাহিপি চেষ্যতে ॥

প্রঞ্জ ভূতপ্রার্থের সংযোগে এবোৰ উৎপত্তি হয় বলিয়া উহা একবস্বিশিষ্ট হয় না, অর্থাং অনেকরস্বিশিপ্ত হুইয়া থাকে। আ[ব্কাণ্ড সারে রসের বিশেষ হয়, অধাৎ ঘাহাতে মধুর রসের আবিক। থাকে, ভাহা মধুব ; ধাহাতে পাকে, ভাহা স্থ , অমু রুপের আবিকা 9101 যাহাতে লবণ বংসর আধিকা থ!কে, ল্বণ--ই জানি বিশেষ বিশেষ হয় | য়ে দুবো যে এস স্পষ্টরূপে বসনেন্দ্রিয়েব গ্রাহ হয়, সেই দুবা সেই সম্বিশিষ্ট ব্লিয়া অভি-হিত হইয়া থাকে এবং ভাহাতে যে সকল বস মব্যক্ত থাকে, তাহাদিগকে অমুরস বলা বার। যে রস বাক্তরসাস্বাদনের কিঞ্চিং পরে অন্ত-ভূত ২ন, তাহাকেও অন্তর্ম বলে। দ্রবা সকল একর্সাব্শিষ্ট নয় ব্লিয়া, রোগ সকলও এক-দোষবিশিষ্ট হয় ন।। রহেতু মধুরাদি বস-ভেদে বা লাদি দোষ সকল কুপিত হুইয়া থাকে . স্থতরাং দকল রোগেই তিনোষের 21.419 অধুভূত হয়। তবে যে রোগে যে দোষেব আধিকা থাকে, সেই রোগ সেই ্দাষ্ড: বলিয়া কথিত হয়।

তাথ দ্রাগত-পঞ্চদার্থকের্মাণ্যাত জন্যে রসে। গুণো নাযাং নিপাকঃ শ্রন্তরেন 5। পদার্থাঃ পঞ্চ তিষ্ঠম্মি মং মং কুর্মন্তি কমা 5 ।

দ্রব্যে রস, গুল, বীর্যা, বিপাক ও শক্তি (প্রভাব) এই পাঁচটি অবস্থিত হুইয়া নিজ নিজ কার্যা সম্পন্ন করে।

ততা রসাঃ।

বসার স্বাধ্যমনগণ-ভিজেন্দণক্ষান্ত ।

যত্ লবামান্তি গালে চ যথাপ্রবাণ নানাবচা ।

তন্ত্রাস্তা মান্তত প্রস্তি নারান্তি লানাবচা ।

তন্ত্রাস্তা মান্তত প্রস্তি নারান্তি ক্রেন্ড ।

যে বামা বাণশ্যনা ভবন্তি যদি তেয়ু বে ।
বোক্ষালাগরশেত্যানি ন তে হন্তরে সমাবান্ত ।
বা বামা পিত্রশমনা ভবন্তি যদি তেয়ু বৈ ,

হাক্ষোন্ত্রায়ান ভব্তি যদি তেয়ু বে ।
বে বামা বেলিশ্যনা ভব্তি যদি তেয়ু বে ।
বের্পারবাশ্যান্ত্রামিন ন তে হন্ত্রা বন্ত্রায়ান

মধুৰ, অয়, এবং, ভিজ, কট ও ক্যায় দ্ৰব্যক আশ্ৰা কৰিয়া এই গড়বিধ বস থাকে। শ্রাদের প্রাপ্ত গ্রাফ্টা বল-কর। অর্থাৎ ক্যার অপেঞ্চা কটা, কট অপেঞ্চা ত্ত্ত উত্তে অংশক বৰ্ণ, লবণ অংশকা অয়, অম অপেঞ্সধুৰ ব্যাহার কারে ব্যাহান। দের মধে স্বাত্ত হায় ও এবং বস বাতনাশক, কিন্তু কফ্কান। এবং তিক্ত কট ও ক্যায় কিন্ত ব্যৱসক | সাব তিক ও মধুন বদ পিওনাশক . এবং আয় ल्वन ७ कड़ेत्र , भव्छन ।। র সকল বস বাসুনাৰ কৰে সই সকল বগে বলৈ ঐক লাখৰ ও শৈতা গুণ থাকে, প্ৰেই ইইলে তাহাল বায়ুনালে সমথ হয় ন। যে সকল বন পিত-প্রশাসক, সেই সকল কমে যদি ভাল উষ্ণ ও লগৃহ থাকে, তাহা হটলে তাহারা পিত নাশ করিতে পারে ন।। আব দে স্কল লোখাশ্যক, সেই সকল বাসে যদি .अ. ८५११८४

ও শেত। গুণ পাকে, ভাষা হলিল হাছাবা কক । বিনাশ কৰে না।

भश्रुत्रममा छ। । ।

মধ্নে ভি ন্যা নিংকে বাজপ্তদাবপ্রাছ ।

স্কুষে লাগা নিম্ন কুলেই স্থানিমালি ।

স্কুষে লাগান্ধনাৰ ভ্ৰেইনিমালি লাগান্ধল ।

লাগ্ৰেপ্তা নজে কংগ্ৰাপ্ত কুলা সন্ধান্ধল ।

সম্ভ লাগান্ধল ক্ৰেনিম্নিল ।

সেতে লাগা মন্ধান ব্যানিজনিল ।

সেতা লাগান্ধল বিভাগ নিমালি ।

সিতা লাগান্ধল বিভাগ নিমালিক নিমালি ।

সিতা লাগান্ধল বিভাগ বিভাগ নিমালিক নিমালি ।

সিতা লাগান্ধল বিভাগ বিভাগ নিমালিক নিমালি ।

সিতা লাগান্ধল বিভাগ বিভাগ নিমালিক ন

ুন্ধ শান্তি নি, ব দু তথা ও বৰ প্রদ্নেত্তি বার্থিত করিছে বার্থিত হয় বার্থিত হয় করিছের প্রক্রের প্রক্রের বর্গ কেশ ই জেন ও ওজংপদার্থের প্রক্রের সংক্রের সংক্রের করিছের বিশ্ব প্রিক্রের বিশ্ব প্রিক্রের বিশ্ব প্রিক্রের বিশ্ব প্রিক্রের বিশ্ব প্রায়ের

ইছা অতি মেৰি, হইলে জ্ব, **খাস,** গ্লগ্ৰু, অব্দুৰ, কিনি স্টোলা, জ্বি-দা**লা,** নেহ, চন - বজ্বনিত ব্যক্ষমূহ উংগ্ৰুম গ্ৰুম

बर्गमभा छन।।।।

ব্যাক্ষ্য গাঁচনা ক্ষা । পাত্রেশাবিদ্যা ক্ষ্ম । ব্যাক্ষ্যবাদ্যা কিছিল লা ব্যাক্ষ্য বিদ্যাপ্ত । বিশ্বজ্ঞান্ত স্বধা প্র । ব্যাক্ষ্য নাংকৃষ্টিশ । ক্ষাধ্য ব্যাক্ষ্য স্থাক্ষ্য ক্ষাধ্য ভাল জন্ম। সোহাক্ষ্য ক্ষাধ্য ক্ষাধ্য ক্ষ্য সংখ্যা ব্যাক্ষ্য । বাহুপা ভূষবাসপ্ত শোহাবিক্ষা ক্ষিত্ত বহা ।

ভাগত--প্রিক, কাচজনক, পিত্র শ্রেষ্
ভাগতিপ্রতি, কলু হাখন, উক্ত, ক্রেক্
শাহল রারেবেল ক বংলার ক্রের, হীস্ত্র,
সাবিক, ক্রেন্সেলক । ববন হ আলাই ও দৃষ্টিনাশ্ক সোনাকক, লম্ভুইনল এক আক্রি ও
জ্বানাক্ষাচিক।

্ হান্বস আভ সেবিত ইহলে ভ্ৰম, তৃষ্ণা, লিত, ডিমিরবোশ, কাণ, কাছু, পাছুরোগ, বীস্প, শিল্প, বিশ্বেটি ও কুই লোশ খান্যন করে।

लद्वत्रम्या छ्वाः।

লগণ শাবনো কচা পাচন ক্যাপিডাং ।
পুণস্থা ভাষা কৰা কালে শ্ৰিকামুচ কোন ।
নাম ক্ষাপ্ত কালে কপোবাগলাটিত ২ ।
সংগ্ৰহণুক্ত হিক্ষিণ কাশ পি একে ঠক্ষণ দিনু ২ ।
নাম প্ৰতি ক্ষাপ কাশ পি একে ঠক্ষণ দিনু ২ ।
কালিখন কালি ভালু ভবীসপি হুট্ গান ।
কালিখন কালিখন লাগন । নামন-সিলেচক , কাচ কালিখন ক্ষাপিডাং লাগন । সামন-সিলেচক , কাচ কালিখন, ক্ষাপ্ত কালিকা, প্ৰথম গ্ৰামিক, বাংহার, লেহেব কোলিখন এবং গ্রাম্ভ ও গ্রাম্ভ লোশক, মুখজালোহপালক এবং গ্রাম্ভ ও গ্রাম্ভ

ইফ অতি মেবিত হইলে অক্ষিপাক, রক্ত-পিত্র, কোঠ, ক্ষতাদে উপদ্বব বলী, কেশ শুক্লতা কেশনাশ (টাক্চ, কুঞ্চ, বিসপ্ত ভুক্ষা উপস্থিত হয়।

কট্রসম্য গুণাঃ।

ক কুৰ্কণনত ভাক্ষত বিন্দেন বাহুপিছে ।

এমজনপুর প্রেরই জি মক জুববংপক।

কক্ষ স্থান মত বিশ্বনিক জুববংপক।

কক্ষেন স্থান ক্ষেত্র কি মক জুববংপক।

কক্ষেন মত চান ক্ষেত্র কি বিকর্পে বিশেষ ক্ষিত্র ।

কামমেনে বিস্নামিক ক্ষেত্র ক্ষেত্র কি বিকর্পক।

মোহা প্রকাশকো ক্ষেক্ষা মেনো বাহে বিকর্পক।

মোহা প্রকাশকো ক্ষেক্ষা মেনো বাহে বিকর্পক।

ক্ষা কিন্তি ক্ষেত্র কি ভিন্ন ক্ষ্য ভাবেশ ভিন্ন বিকর্পক।

ক্ষা কিন্তি ক্ষা ক্ষা স্থান বিকর্পতি ।

ক্ষা কিন্তি ক্ষা ক্ষা স্থান বিকরণ ভিন্ন ব্যাক্ষা ভিন্ন বিকর্পতি ক্ষা ক্ষা স্থান বিকরণ ভিন্ন বিকরণ ভাবন বিকরণ ভিন্ন বিকরণ ভাবন বিকরণ ভিন্ন বিকরণ ভিন্ন বিকরণ ভিন্ন বিকরণ ভিন্ন বিকরণ ভিন্ন বিকরণ ভিন্ন বিকরণ ভাবন বিকরণ ভিন্ন বিকরণ ভাবন বিকরণ ভিন্ন বিকরণ ভাবন বিকরণ ভাবন বিকরণ ভাবন বিকরণ ভাবন বিকরণ ভাবন বিকরণ বিকরণ

কট্রদ— উষ্ণবাদ্য, তাক্ষ, বিশ্বন, বাতপিত্ত-বন্ধক ও শ্রেল্প, লগু, আগ্রের, জিনি, কণ্ড ও বিদনাশক, কক্ষ, শুগুইন, মেদ ও স্থোল্যপি-কর্মক, অঞ্জনক নাক মুখ চাথ ও জিহ্বা-গ্রেণ উপ্লেক লোল্য নদ । অগ্রাদ্যাপক, আম-পাচক, বোচক, ভাতশন্ত নাাসকাশোদক, ক্লেদ মেদ বদ্য মজ্জা মল ও মুক্তেব শোষক, স্লোভঃ-প্রকাশক, কক্ষ, মেদ্য ও মলবিব্দ্নতাকারক। ইহা অভিদেবিত হুইলে লাস্থি, দাহ এবং মুখ ভালুও ওতেব শৌষ, কথাদিব পীড়া, মুদ্ধা ও অভদাহ উপস্থিত হয় এবং দেহেব বল ও কান্তি বিনষ্ট ইইয়া থাকে।

তিক্তরসমা গুণাঃ।

তিক্ত। শীতপ্তথামজ্জা-অন্নপিত্তকদান জয়েং।
ক্রিনিকুন্তনিবোৎকেশ-লাহরক্রপদাপকঃ।
কাচ্য ক্ষমরে চিন্তুর কঠন্তক্রবিশোধনা।
না শরোহগিকরো নামা-শোধনো ক্ষমণা লঘু।
দোহতিস্কুল শিরাশ্রনম্যান্তপ্তশন্তিক্য।
কল্যান্ত্রান্ত্রান্ত্রানিক্র

ি ক্রাস শা গুরীয়া, তৃষ্ণা, মার্চ্চা, দ্রা, পিত, কফ, ক্রিম, কুঞ্জ, বিদ্ধা, উৎক্লেশ (নমন-ভাব ।, সাহ ও রক্তাণ্ডির নাশক , গোচক কিয় নিজে অংশাচিষ্ণু, কও ও গুন্তাবিশোনক, বাত-জনক, অগ্নিকস, নাসাশোষক, কক্ষণ ও লঘু।

ইহা অভিসেবিত হইলে শিরংশূল, মন্তাপ্তভু, শ্রান্তি, কম্প, মৃষ্ঠ: ও ভূষঃ জন্মে এবং বল ও গুক্তেশ ক্ষা হয়।

ক্ষার্রস্স্য গুণাঃ।

কৰারো রোপণো গ্রাহা শুগুনঃ শোধনস্থা।
লোপনঃ শীড়ন: সৌম্য শোষণো বাতকোপনঃ ॥
কক্ষণাণিতপিজ্যো কক্ষ, নাঁহো সমুম ৩ঃ।
কক্ষণাদন আমত শুস্তনা বিশ্যনা মত্ত ॥
ভিতৰায়া জাতার হ কঠ বো চ্যাক বিবক্তা ।
সোহতিয়ালো প্রাধান সংগীত কো প্রাক্তির ॥

ক্ষায়রস — ক্ষতপূর্ক, মলসংগ্রাহক, গাত্রক্ষত্তক, ক্ষতপোনক লেখন (ক্ষতের দিংসর
সাংসের নিক্ষাশক) পীড়ক, সৌমান ক্ষত ও সজ্জাদির শোষক বাত্রপকোপক ক্ষ ও সজ্জাদির শোষক রক্ষে, শাত্রন গ্রমু, গ্রহ্মপত্ত নাশক ক্ষম, শাত্রন গ্রমু, গ্রহ্মপাদক, সাম্বশের ক্ষম্ভক ও বিশদক্ষায়িত। ইহা অভিনেনিত ইংলে জিলার জড়তা, কণ্ডলোকের বিষক্ত। হরতাহাদি বায়ুরোগ, উদ্যাধান, সংসীড়া ও আলেপানি উপান্তত হুইয়া পাকে।

মধুরাদ। নামপরে বিশেষ। ।

মধুবং লেখনে প্রায়ে জার্কানিসন্ত্র ।
মুকানি (গারমান ক্রিকানিসন্ত্র জাজন নিনামান
জন্ম পিত্করং প্রেটা বিনা ব্যাস্থান ক্রিমান
লবণ প্রায়েশে ছোল নেনা ন প্রায়েশি ভ্রায়েশে ব্যাস্থান বিনামান
প্রেটা কর্টা ভ্রানিভিত্রব্যাণ ব্যাস্থান বিনামা

মধুনান নামন জাপন নিজেন বহু নাইন ংছে মধুন মানোগ কালেন ব কালে প্রাংশ বালি গছন নাম জালেন বর্ত্তি চোল ও জাপ্রানামে ইয়া গোলালেন কালে। আালকা ও দাছিল তেল গোলালেন কালেন পিত্তকর । সেলাব ভিল্লাপ্রান্থ লব্দান্দ্র মেলোর আহিতক । ও ইল্পেপ্র বালেন প্রাণ্ড ও ভলক ভিল্লাপ্রান্থ বালেক ও ভিল্লালিন

वाश समान ।

লযুগু কন্তবা বিয়ো কক্ষণ্ডাক হ'ে এনং । নভোতুলবিকা হ'ন। বভেবেতে গ্রণ' ক্রুড

ক্ষু, গুৰু কৈয়া কক্ষ ও হা. এই পাচিটি প্ৰকৃত্যালক দৰেবে ওপা সাকাৰের গুৰু লগু, পাগৰীৰ ওপা ওকা থকো ওপা ক্ষিয়া, বায়ুৰ গুণাক্ষ এবং ১০০ব ওপাত্যি।

ग्रंथ श्रमान्छभद्काः छमा ।

त्यू (भि.), ते भिक्षः त्रिक्षः क्षत्रः के । अतः त्रोडदेशः क्षित्रः क्षत्रः क्षेत्रसम्बद्धः । विक्षः व्यक्तित्रः क्षत्रकाक्षित्रं कृषः वत् ,वश्यः । कृष्यः स्थानिकवा क्षत्रः क्षत्रः व्यक्तः । स्थः । त्रोषः विक्षत्रः क्षत्रः । त्रभः । कृष्यः । व्यक्तः । লবুদ্রবা—সূপথা ও কফল্প, ইহা শিল্প পরিপাক প্রাপ্ত হয়।

গুরুদ্রব্য-বাতনাশক, শ্লেমজনক ও পুষ্টি-কারক; ইহা বিলম্বে পরিপাক গ্রাপ্ত হর।

স্থিদ্রস্থা—বাতহর, শ্লেম্বকর, বুষা ও বলকারক।

রুক্তিরা---- ২০% বার্জনক ও কফ্-নাশক।

তীক্ষণৰ - প্ৰায় পিউক্ত, লেখন এবং ক্ষণৰতিনাশক।

হ্বক্তাত ভূ গুণা এতে নিংশতিন্তান্ করে পুণু।

তথ্য ভূ বিশ্বক্তা তাহা এক ছিন্তঃ সর: ।
পিচ্ছিলো নিশন, শিত দক্ষক মুম্বক্তা।
পুল, প্রাণ্ডা হব ত্রক অন্তর্মন্দ্র গুলা গুলা।
ত্র এরল সুবিশ্বক্তাক্তীয়া, গুলা ভক্তা এব।

ত্রতি তাতে নিশ্বতি প্রার গুণ কাপত হুইয়াছে, চেই সকল গুণ লেখিন হুইতেছে।
যথ--- গুণ, লগু, রৈগ্ধ, কঞ্চ, তালি, কঞ্চ, স্থিন, সকল, স্থান, পিছিল, বিশ্ব, শান, উদ্ধ, মৃত, কক্ষণ, স্থান, জ্বা গুণ, আগু, এই সকল গুণ, গ্রেণ, নাম্য গুণ, লগু, রিগ্ধ, কল ও তাজ এই পাচটি গুণো নগ্ন প্রেণ্ড কলা হুইয়াছে, এফণে অবশিষ্ঠ ও না বিশ্ব কলা মাইতেছে।

রক্ষর হেল বিষ বৃদ্ধিত হ বহিংন বি বি বিশ ।
ক্রিন বি হরল বি সবস্থেয় প্রস্থান ।
প্রিক্রেপপুরে বর্লা সক্ষয় প্রস্থান কর ক্রেন্ডেন্ডর নিজে বিশ ন ব্যাবন্ত্র ক্রেন্ডেন্ডর প্রথানুক্ত, ক্রিসেন্ডরেই । প্রশাস্ত্র প্রভারতার বিশ্বন শ্রু হা প্রশাস্ত্র প্রভারতার (প্রেই প্রোচসাম্বর বৃহ । দেশ ক্রেন্ডরা নিজে ক্রেন্ড্রাইন ।
ক্রেন্ডরা ক্রেন্ডরা নিজে ব্রাক্তর্মির (১০ন ২ ।
ক্রিন্ডরা কেন্ডরা নিজে ব্রাক্তর্মির (১০ন ২ ।
ক্রিন্ডরা কেন্ড্রা নিজে ব্রাক্তর্মির (১০ন ২ ॥
ক্রিন্ডরা কেন্ড্রা নিজির্ডরির (১০ন ২ ॥
ক্রিন্ডরা কর্মান্ত্র বিশ্বন্তর্জনির বিশ্বান্তর্জনির বিশ্বান্ত্র

কামল বা কমিল দ্রবান্তের জন খাব তৈলাদে নেথ প্রাথেব সংযোগ ব্যতিরেকেও চিকাণ হয়, তাথাব সেই গুণকো গ্রহা গুণ

करह। खरवात य खन चाता वाबु ७ मन স্তম্ভিত হয়, সেই গুণকে স্থির গুণ বলে। আর যে গুণ ছারা বায় ও মলের নিঃসরণ হয়, তাহাকে সর গুণ কহা যায়। যে গুণ ছারা বস্তু তন্ত্রণ হয় (যাহা ধবিয়া তুলিলে সূতার স্তায় দীর্ঘ হয়। সেই গুণকে পিচ্ছিল গুণ करह। शिष्किल पुता तनकत, खश्रमः साम्रक. লেমজনক ও ওর । (ব ওণ বাব। কেদনাশ श्या. डांहोरक निर्मा खन करहा निर्मा सर्वा ক্ষতবোপক। শতিল গুণ-সুখজনক, মলাদি-भागार्थत सम्बन এवः मर्का एकः। त्यन ও नार নাশক। উষ্ণগুণ—শাত্রপুণের বিপরীত : ইহা পাচক। যে গুণ বারা দেহের এবং স্লোভ সকলের অববোদ হয়, গ্রাহাকে ত্বল গুণ কহে। যে গুণ ছার। দেহের কৃষ্ণ-জিলে বস্ত প্রেশ কলিতে পাবে, ভাহাকে ক্রমা গুণ বলা যায়। দুব গুণ -(ক্রদকর ও नाशी। क्ष ४५- एन छरनत विश्तीक्षी। জলে তেল নিক্ষিপ্ত হটলে যেগন তাহা চত্ত-দিকে শিঘ্র।প্রহর, সেইকপ্র ওপ্রেই আঙ কাসকে।বী হয়, গ্রাহাকে আনু গুণ কলে। য় গুণ বিহাসে কাষ্যকারা, হাহাকে মৃশ্ব গুণ কতে। । । ওপকে আল গুণ ও পিথিল খণ্ড φοι 219 I

ভণপ্রক্তাবাদীপনাদয়ো ভণাঃ সলক্ষণা লিখ্যন্তে।

मलां पिकमनकार यम वक्तर ना लिखिङ मंदलः। ভিৰাধঃ পাত্ৰতি যদ ভেদনং কটুকী যথা। বিপকং যদপকং বা মলাদিজবতাং নয়েৎ। রেচয়ত্যপি ভঙ্গজেয়ং রেচনং তিবুতা যথা। व्यवक्र भित्रदश्यामः वनामृद्धः नव्यर पू वर । वमनः उषि विरक्षयः महनकं कलः वशा श्वामाम विश्वतियमुक्ष्मरक्षा वा मलम्बयम्। (पञ्मरभाषनः उदे छाम् (पवमानीकनः यथा ॥ मीलनः लाहनः यद छाङ्कषाम् प्रवानायकम्। গ্রাহা ১চচ যথা শুষ্ঠা জারক॰ গজপিপ্ললী। (दोक्नाटिन्ड शृंद क्यांग्रदांचयुर्शकांक यम ज्याद । वाङकुर छछनः १२ छ!५ यथा वरमकहुन्हे (को ॥ লিষ্টান্ কফাদিকান্ দেবেকুনুলয়তি যদ বলাং। ছেদনং তদ্ যথা ক্ষারা মরিচানি শিলাজতু। धारून् मलान् वा त्वरूक वित्नारवारिशभरयक यः । (मधनः उप यथा (कोष्टः भीतम्मः नहां यनाः ॥ যক্ষানুদ্রব্যান্তরেৎ স্ত্রীষ্ব হরণ বজৌকরং হি ভং। যথাখগলা মুধলা শকরা চ শতাবর:॥ যশ্মাজুকুসা বৃদ্ধি: স্তাজুকুস, হৈ ংগ্নাং 🔻 যথা নাগ্ৰলাস্তা, স্থানাজ্ঞ ক'প্ৰকন্ধুজন। ত্রপ্রায় 🗝 ভলাত-ফলমজ্যেলানি চ। এতানি জনকানি সং-বেচকানি চ রেতসঃ॥ প্রবর্ত্তনী প্রা শুক্রস্ত (ব্রুন: বৃহত্তাফলম। জা নাফল স্তপ্তনং স্যাৎ কালিকং ক্ষ্যকারি b। রসায়নত্ত ৩৬ জেয়ং যক্ষরাব্যাধিনাশন্। (यथा)--- হর টেকা ক্লদতা চ ভগ্ ভলুক্ত শিলাজতু ॥ পূৰ্বং ব্যাপ্যাথিলং কায়ং ততঃ পাকঞ্চ গচ্ছতি। ন্বায়ি তদ যথ। ভঙ্গা ফেনঞাহিসমূদ্ভবম্। সন্ধিনধাংশু শিধিলান্ যং করোতি বিকাশি তং। বিশোষোটাজক পাতুভো যথ। ক্রমুককোন্তবৌ । नुक्षिः लूम्लिटि यम् जवाः भमकाति अक्टाटि । স্থা প্ৰধানক বৰা মৃত্যুৎ সুৱাদিকন্॥ বাবায়ি ৮ বিকাশি স্থাৎ শ্লেখচ্ছেদি মদাবহম্। আগ্নেয়ং জাবি হুহৰ' যোগবাহি খুতং বিষম্॥ বিপ্ৰায়োগ যদ কৰা। ত্ৰোতে ছোজ্যা দোৰসক্ষম্। নিরজাত প্রাথি তাৎ • দ্যথা মরিচে বচা ॥ ल्पिक्टला प्रशोपनाम् मनाः सम्बत् तमवदाः निवाः। ধত্তে যদুগৌরবং তৎ স্যাদভিষ্যন্দি যথা দধি । निमानि जनाभूकानिमानः क्यार अयो छुवान्। শ্রদি দাহক জনয়েৎ পাকং গচ্ছতি ওচিচরাৎ। পুহাতি যোগনাহি স্তন্যং সংদাগবন্ত গুণান্। পচ্যমানং যথে শুমুজনত গুলাকাস্ব অলাহাদি ।

যাহা দারা আমের পরিপাক হয় না অপচ অগ্নির দীপ্তি হয়, ভাহাকে দীপন বলা যায়।

ষথা—মোরী, (যেমন ক্ষুদ্র দীপাগি চতুদিক্
প্রদীপ্ত করে, কিন্তু স্থালীস্থ তণুলপাকে সমর্থ
হর না, তদ্ধ্রপ দীপন ওণবিশিষ্ট দ্রব্য স্মাহার্যভিলাম জন্মাইতে পারে, কিন্তু সাহার পরিপাক
করিতে পারে না)। মাহা মারা স্যামের পরিপাক
হয়, কিন্তু স্মগ্রির দীপ্তি হয় না, তাহাকে পাচন
কহে। যেমন নাগেশ্বর। চিতা দীপন ও পাচন
এই উভয় গুণারুক্ত।

যাহা বাজালি দোষত্রকে উন্ধ বা অবোমাণী ছাবা নিক্ষাণিত কবে না এবং সমভাবাপন নোষ সকলকেও বৃদ্ধি পাওরায় না অণ্চ বিষম দোষের সমতা কবে, ভাহাকে শমন কহা যায়। সমন ওলাঞ্চ।

বে দ্বা অপক বায় পিও ও এইয়াকে প্রিপাক কবিয়া বায়-বন্ধ ভেল কাত ম্থাকে অবে।নিঃমাবিত কবে, তাহাকে অনুযোমন কহে। যেমন হ্বীতকী।

্য দ্রবা কোষ্ট-শংশ্লিষ্ট পান্তবে। কফ পোন্তবে পানিপাক না করিয়া অগক অবস্থাতেই অবৈ:-নিক্ষাশিত করে, তাহাকে বংসন ক্ষেয়া ধ্যান মোন্দ্রালা।

যে দ্বা স্থাব: গাড় বং শিথিক কিংব বায়: কান্তৃক প্রটিকীকৃত (গুটুলে) মত অনঃপাতিত হয়, তাহাকে ভেদন কহে। যেমন কটুকী।

যাহা পক বা অপক মণাদিকে দ্বীভূত কবিষা অবোনিঃমানিত কবে, গ্রাহাকে এচন কহে, যেমন তেউড়ী।

যে দ্রবা অপক পিড শ্রেয়া ও অমকে বল-পূর্বক উর্দ্ধ নীত কবিয়া মুখমার্গ স্থাবা বহি-নিকাশিত করে, ভাহাকে বমন কহে। যেমন ময়না ফল।

বাহা থাবা সঞ্জিত মল উদ্ধ বা অপোমার্গ দিয়া বহিনিঃসাবিত হয়, তাহাকে সংগোধন বলৈ। যেমন গোষাফল।

যে দ্রবা দীপন ও পাচন এই উভয় গুণসূক্ত এবং উষ্ণত্ব গুণে স্তবশোষক, এহাকে গ্রাহী কছে। যেনে শুঠ, জীরে ও পদাপপ্রবী।

যে দ্ৰবা পৌক্ষা শৈতা ক্ষয়িও ও প্ৰপূপ্ত প্রযুক্ত বায়ুকে উদ্ধাণ্ড কবিয়া অবৈগিমনশীল মলকে স্কৃতি কৰে, তাহাকে স্কন্তন কছে। য়েখন কুড় চি ও শে।।।

যে দ্বা বন্ধ কফাদি মলসমূহকে বলপুৰ্বক উন্মূলিত কৰে, তাহাকে ছেদন করে। সেনন মবক্ষানাদি, মনিচ 'ও শিলাজ' ।

্র দ্বা কেইড গতি ও মল প্রদার্থ সমহকে শোষণপূর্বাক উদ্ধেখিত অগাং ক্রমক্ত করে, ভাহাকৈ গোল (কুণকাৰক) কছে। 7,71 श्रम, देश जब, यह अहे क्यात ।

যদ্রারা স্থায়ের ও প্রাথায়ের হার জার । ক বাজীক ণ কহে। যেমন অবগন্ধ ভালমূলী, শ্ৰ্যা ও শত্ৰুলী।

যাহ, স্বান্য শুক্রের বুদ্ধি হয়, ভাহাকে শুক্রন বলে। যেম্ব গোলেচাকুলে প্রভৃতি এবং वानकुशनीका।

ছক্ষ, মানকলাই, ,,ভলার কল ও মজে। এবং অমিলকা, ইহাল উল্লেখ জনক ও ৮চক অথাং এই সকল দ্ৰব্য প্ৰভাবৰণতঃ ৰাঘ্ৰত স্মাদি উৎ-পাদন পূৰ্বক শুক্ৰ উৎপাদন কৰে এবং আধিক। হেতু উজেব টেচনত গাঁৱে থাকে।

প্রীলোক, শুরেল প্রবৃদ্ধ স্থান প্রচানের দশন শ্রবণ ও স্পশ্নাদি দ্বাব: শুক্তের ক্ষরণ ২চর: থাকে। বৃহত্তীমালও শুক্রটেক। জাতাকৈ: अतिन खन्नकः, कृष्टिसकत् (এবমুজ \ 曹野部日本:1中1

ारे। अन-नारियानक, विश्व भीत्रा কছে। ধ্যম ত্রীতকী, কদস্তা তুল তুল ও 491 50

নিজপুণ প্রকাশ করিয়া অপ্রেপ্ত প্রিপ্তাক প্রাপ্ত

হয়, ভাহাকে ব্যবায়ী কহে। যেমন ও আফিং।

্যান্ব্য বাত সকল হইতে ওজঃপদাৰ্থকে শোষত কবিয়া সান্ধ-বন্ধন সকলকে শিথল করে, ভাহাকে বিকাশী কহে। মেমন গুরাক 3 :कारा संग्रा

যে দ্রবা তমোগুণবছল এবং যাহা বৃদ্ধি-বিনাশক, ভাহাকৈ সদকাৰী (মাদক) কৰে। যেমন স্থরাদি মন্ত।

विभ -वावशि, विकास, (ह्यान)सक, भक्कावी, আগ্রেয়, প্রাণহর এবং যোগবাহী অথাং সাহার সংযুক্তে পাকে, ভাষ্টান্ট গণ গ্রহণ করে।

श अतः क्रकोत तीमा अतः । व्यास्थ्यपृथः হুইটে ব্লিট্টল টোলের স্কর নেট্রন করে, ভাষ্টক প্রদার্থী করে। ্ধমণ মিংচ ও বচা

গ্র দুবা প্রিচ্চিলা ও গুরুত্ব নিবন্ধন বস্বহ শিহা সকলকে ক্রম করিয়া শ্রীবের গুরুর উংপাদন করে, তাহাকে অভিযানশ করে। ্ৰমন দলি।

্য প্রবি ভোজন ক্রেল সামাদ্যাণ, পিপাসা ও সদয়েব দাহ উৎপন্ন হয় এবং মহিচ বিলয়ে পারপাক পায়, ভাহাকে বিলহা কহে।

যোগবাহী এবা, সংস্থিতিবস্থা গুণ স্কল গ্রহণ কবির। থাকে। যেমন ম্ধু, জল, তেল, গ্রহ পার্ল ও লোখাদি। ইহার যাখ্য সহিত প্রভান হয়, তাহাবই ওণ গ্রহণ করে।

অথ বাৰ্য্যম।

एकको र छान दक्षान कुनिर्वाता विका खुरुम । बर मन्त्रकारम्यानीय भूगार ७ इनन व्याम ।

५ डेक अल्ल आनिका ५१० প্রতিক ব্যায়কে স্থিবিধ ব্যান্তা ব্যাল করেন। ্ৰ কৰা সোৰত হয়লে। অন্তোপন্ত শ্ৰীৰে । ধথা-—শতিৰীয়া ও উষ্ণৰীয়া। কাৰণ সম্ভ ্ত্রিভ্রনই স্থিত সোম্প্রায়ক।

বাঁগ্যগুণা ।

एकः ना न्करको ३२४ (भद्य न्छर । अन्तान । में १ - न्यान नका का का का विश्व अन्य ॥ ®'3/55

ত্রনাদ্রণ ভাষতুত্ব গর্নন-স্বেদ্যাহান্ত্রপাঞ্চিতার। শ্মদ ব'তক্ষয়েত্ব, করোতি ভিশিব্র পুনঃ। ञ्चापनः भीतनः अष्ठः भन्नः तक्किन्याः॥

উন্ধ্ৰীয়। বাঙ্গেলাশক, পিত্ৰদ্ধক ভ জীবিত্রকারক। প্রবাধ কাত্রেল্ল-,বাল্যোং- িপিউনারক। বস ইছতে বিপারের भानक ५ शिद्धां सक ।

अग्राफ - डेकर्नीमा जन, उस:, भ्राम्ब ্রদ্ধান ও আলগাত কাকে এক নাংক্রা सामान । भारतीय अविनाक A 79 . মন্ত্ৰপ্তিক এবং এজ-১পত্ৰেৰ প্ৰসন্থাকাৰক।

অথ বিপাকঃ।

জাঠরেণাগ্রিমা গোগাদ যতুদেতি রসাপ্তরম : রসানাং পরিণামাস্টে স বিপাক ইটি স্মৃত: ॥ স্বাহ্ন পঢ়িক নধ্রমলোহয়: পচাতে রসঃ। কটুভিক্তকষায়াণাং পাক: শ্বাৎ প্রায়শ: কট ॥ প্রায়াপদেন রাচিঃ স্থাৎ স্বান্থরয়বিপাক। বিবা ক্ষাথা মধুরা পাকে। 💖 কটুকা মধুরা পাকে।

क2 ा (धरारमारम, ভক্ত জবোৰ ন্যেৰ পারণামে যে বলাম্বর উংপর হয়, হাহা। गाभ विश्वकि । सर्वेत ६ ६वर्ग इ.स्वर विश्वक মধুঃ, অমুন্দের বিপাক অনু এবং কটু তিক্ত ও ক্যাব ওমের বিপাক প্রায়ন্ট কটু হুহয় থাকে। ("প্রায়" শক প্রাজে ব্যাতে হইবে, কোন কোন ছলে ইহার বাহিক্সও হুইয়া থাকে। যুম্ম বাহি মধুৰ-বৃদ্ কিন্তু ভাহাব বিপাক অম। হ্রীতকী ক্ষায়-রুম, ভাহার বিপাক মধুন। শুনী কট্বস, ভাহার বিপাক মধু । ই গ্রাদি)।

বিপাকগুলাঃ ।

লেমকুমধুর: পাকো বাছপিওইরো মত: ' অমুস্ত কুরুতে পিত্তং বার্লেশ্বর্গাপহ:॥

কটা করে'তি প্রনং কফং পিত্র নাশ্যেং। বিশেষ এব বসতে। বিপাকানত নিদ্দিত ॥

মধ্যানিপাক-প্রেয়াকাবক এবং ব্যায়-পিত্র-司(4) 在 1

অন্নৰপাক - পিত্ৰস্ক 54. া বোগ প্রথমক।

কর্লপাক---বাযুজনক ेन्द्रका नामित्र छ छ छ।

অথ প্রভাবঃ।

तम निमाप्ता यूर कथा शिन्छः ७२ श्रष्टा^{लक्}र । দত্ত রসংগ্রেম্বল্যাপ চিএকজ্ঞ বিরেচনী -মধকক্ত চ মুদ্ধীকা হৃত। ক্ষীরক্ত দীপন্য । প্রভাবস্ত যথা ধাত্রী লকুচস্ত রসাদিভি, গ সমাপি কক্ষতে দেখে-ত্রিংখপ্র বিনাশনম । ক5িং তু কেবলং *দু*বাং কশ্ম কুয়া'ং প্ৰছাবত, 🛭 भवः इ.छि निरत्नावन्ता महस्तवोज्ञाते। यथा । তথা নানোয'ধ্যে গেষ ফলং প্রতি প্রভ'ব এব ি অংশ্রংণায়ং, ন তু তাণ রসাদিকপাহেতুনিচারং কর্ত্তবিটা

বস্তুদিগো বস্থাদি বিষয়ে তুলাতা থাক'-্তও য়ে স্তলে তাহাদের স্বতন্ত্র কার্যা দৃষ্ট হয়, তুগার ্মই কা্ষা ভাইদের প্রভাবজ ব্লিয় জাতিব। যেম্ম দন্তা ব্যাদাব্যয়ে চিতা ভুলা হইলেও উহা বিবেচক। এই বিরে-চন কার্যা দস্তার প্রভাবজ জালেবে। জাকা মৌলোর সাইত এবং মত ছুগ্ধের সাইত বসাদি বিষয়ে সমান হুটলেও ডাক্ষা ও সূত অগিব দীপক। আমণকী ডেলোমান্দারের সহিত বমান্ত্রে ওুল ২ইলেও উহা জিনেধিনাশক।

्कान (कान छटन जुना, वस वीर्या छ বিপাক ছা: কাম না কড়িছ কেবল মান প্রভাব থাবাই কাম কবিয়া থাকে। रयम महान्ती मृत मछाक 🎳 ऋति विनहें ह्या (जारान अभीमारक ए अधिका ্কান প্ৰাসক্ষ (ক্তি: নাম প্ৰভাব)।

ইত্যায়ুর্কোদ-সংগ্রহে দ্রব্যাদি-বিজ্ঞানীয়াধারেঃ।

অথ ক্ষেহস্বেদবিধিঃ।

অথাতঃ ক্লেছবিধিমধ্যায়ং ব্যাখনসন্মঃ।

প্রক্রণীতস্বভিদ্ধ-মন্দক্ষক্ষ্মভূত্রস্কর্যন্ত । ওয়ধং স্বেহনং প্রায়ো সিপারীতং বিশ্বক্ষণন্ ॥

অতঃপৰ আমৰ। সেহবিধিনামক অধায় ব্যাগা কৰিব। গুলুক নীত সর স্লিপ্প মন্দ সুদ্ধ মৃত্ব ও দুব, এই সকল গুণযুক্ত যে ঔষধ, তাহা প্রায় সেহন, এবং ইছার বিপ্রীত অর্থাং লঘু উষ্ণ স্থির ক্লক্ষ তাক্ষ হল কঠিন ও ঘন গুণ-বিশিষ্ট দ্রব্যা প্রায় বিরুক্ষণ।

সাপিম জ্ঞা বসা হৈলে থেছের প্রবং মতম। ভ্রোপি চোত্তমং সূপিঃ সংস্কাতস্থাত্রবর্তনাৎ।

যত প্রকাব মেহ প্রন্থ আছে, ত্রামার দ্বত, মৃক্জা, ব্যাধি হৈ এতথি এত। এই দ্বতালি স্লেহচতুইরের মধ্যে আবার তিও স্পোধিকেই। কারণ দ্বত সংস্কারের অন্তর্ভন করে, অর্থাইছা কে এ দ্বাধারে মহিত পাক হয়, তাহালেরই গুণ প্রাপ্ত হয়, অথচ শোত্যানি নিজ্ঞাণ ত্যাগ করে না, কিন্তু ব্যা, মৃক্জা ও তেল ইহার। সংস্কাবগুণ প্রাপ্ত ইইয়া নিজ্ঞাণ ত্যাগ করিয়া থাকে। অত্তব দ্বতই স্ক্রিধিকেই।

পিওল্পাতে ধ্বাপুক্ষিতরল্পা ঘ্রোভরম্।

গত, মজা, বস' ও তেল ইহাদেন পূক্ পূর্বটি ব্যক্তির অনিকতর পিত্তম এবং শূর পরটি আদকতর ইতরম্ন অর্থাৎ বাতলেম-নামক। এ স্তরে ব্যক্তে হইবে যে, পূর্ব পূর্বটি নলায় তেলকে, এবং পন পরটা বলায় মৃতকে লাগ করিতে হইবে। কারণ তৈল কাহারও পুনন্তর্তী নহে, অর্থাৎ

ভৈলের পর কিছুই নাই, এবং শ্বত কাহারও প্রবৃদ্ধী নহে, অগাং ঘ্লাত্রৰ প্রশে অন্ত দ্রবা নাই। অভএৰ 'মণাপুৰা' বলাম বদা পিওয়া, মজ্জা পিত্রতার, মত পির্মান্ত এবং "মথো-255 বাত্রেরার, বসা শ্লেমায়ত্র এবং তেল বতিলেলালতম ৷ কে€ क्ट बहेन्तरथ नाभा करनम त, गीम अ शिख হুইছে ইত্র বলায়, বাত ও কেলা উভয়কেই বঝায়, ভথাপি শ্রোয় সেহ্নিষেণ্ণাকায়, উक्ত भक्जामितक अकरन वाज्य कृषिएंड स्कृत्व, অথবা সদি ইত্র একে শ্লেমারও গ্রহণ হয়, তাহা হটলে ওক মজ্জাদি ক্লেল্লয় না বুঝিয়া দ্বাস্থ্যসংশ্বত গ্রহানি শ্লেমানক ব্রাত इट्रें(व ।

স্থাৎ কৈনং কক বসা কৈলাজালা ক্রেছিলি চা। গ সূত্র অপেক ্তিল, তিলা অপেকা বসং, এবং বসং অপেকা মহলা ওকা:

ষ'ভাঃ ত্রিভিকতুভিজ্যেমকপিরতো মহ'ন্॥

কুইটি সেই থাবা যমক, তিনটি স্নেই থাবা বিবৃত এবং চারিটি সেই থাবা মহামেই সংজ্ঞা হয়। যেমন স্বত বসা, স্বত তৈল বা স্বত মজ্জা যমক-সেই, এইরপে স্বত তৈল বসা বিবৃত-সেই এবং স্বত তৈল বসা মহলা মহামেই।

বেত্যসংশে ধানতারী নার্মেশসক্তিরকার ।
বন্ধনার্পেল্ডুলা ককার কাবাব্রের গ্রন্থ ।
বাং গার্কজন্তিমিন-দারণাঞ্জিবোধিনঃ ।
কেন্থা ন প্রতিমন্ত্রিনি তাকার্মিন্তুলত্বরূপ। ॥
উক্তর্যাতিসার্মান-গলরোগগবে দরৈঃ ।
মূর্ক্চাক্তর্মার ভিনেশ-ত্র্যাম্যতাক পীড়িতার ॥
অপপ্রস্তা যুক্তে চ নক্তে বক্তো বিরেচনে ॥

য়ৃততৈলবসামজ্জ-গুরুবঃ স্থাগথে। তর্ম, ইতি পাঠান্তরম।

নিম্লিখিত ব্যক্তিগণ স্বেহার্ছ অর্থাৎ স্বেহ-ক্রিয়ার যোগা। যথা—যাহাদের স্বেদ (ভাপুরা) প্রদান অথবা বমন-বিরেচনাদি স্থারা সংশোধন ক্রিয়া করিতে হইবে: যাহারা মঞ্চপান স্ত্রীসঙ্গ বা ব্যায়ামে আসক: যাহারা চিম্ভাকারী: যাহারা বুদ্ধ বালক জর্মল রুশ রুক্সনেই অল্পরক্ত বা অল্লণ্ডক: যাহারা বা হার্ড অথবা অভিযান বা তিমির নানক সফিরোগাক্রান্ত এবং যাহারা অতি কপ্তে নেত্রোন্মীলন কবে, ভাহাদিগের স্বেহ ক্রিয়া করা কর্ত্তবা। কিন্তু যাহারা অল্লাগ্নিবা তীক্ষাগ্নি: বাহানা অতি হুল বা অতি হুর্বল; যাহারা উরুস্তন্ত, অভিমার, আমদোষ, গলরোগ, বিষোদর, মচ্ছা, বুমি, অরুচি, শ্লেমা, তৃষ্ণা বা মন্ত দ্বারা পাড়ত এবং মহোর গ্রহ্মাব করে, তাহারা মেহজিয়ার হোগা নহে। এবং নহা ব**ন্তি বা** বিরেচন ক্রিয়া প্রয়ক্ত হইলেও স্নেহক্রিয়া নিষিক।

তত্র ধীক্ষ্ হিমেধারি-কাঞ্জিপাং শক্সতে স্বত্য ।
প্রান্থ নাড়া ক্রমিরোম-মেনেমার করে পিছ ॥
১৯লং লাখনদার্চা থি-কুরকেটেমু দেড়িধু।
বাঙা লাখনদার্ঘী-বারামক্ষীণধাতুষু ॥
কক্ষরেশক্ষমারাধি-বারাস্করিপার্বু ॥
শেষো বসা তু সক্ষারি-মর্মকোর্মকার চ।
ভবা দক্ষারভন্ত নিক্রশারেকার

বাহারা বৃদ্ধি শ্বতি মেধা ও অগ্নি আকাজ্জা করে, তাহাদের পক্ষে সেহকার্য্যে স্বতই প্রশক্ত। যাহারা প্রস্থি নালী-বা ক্রিমি প্রেয়া মেদঃ ও বাত রোগে আক্রান্ত, যাহারা শরীরের লযুতা ও দৃঢ়তা প্রার্থনা করে এবং যাহাদের কোঠ কুর, তাহাদের পক্ষে তৈল প্রশক্ত। যাহারা বাত আতপ পথপর্যটন তারবহন স্ত্রীদক্ষ ও ব্যায়াম ঘারা ক্ষীপধাতু, যাহারা ক্ষক-দেহ, ক্লেশসহিষ্ণ্ ও তীক্ষান্তি, এবং যাহাদের দেহস্রোতঃ সকল বায়্ ঘারা ক্ষন্ধ, তাহাদের পক্ষে বসা ও মজ্জা প্রশক্ত। কিন্তু সন্ধি অন্থিমর্ম্ম ও কোঠ-বেদনায়, দাহ আঘাত ও ং বেদনায় এবং কর্ণ ও শিরোবেদনায় বসাই প্রশক্ত। তৈলং প্রাবৃষি বর্ধান্তে সর্পিরক্তো তু মাধ্যে। ক্ষতো সাধারণে ক্ষেত্র শক্তোহন্দি বিমলে রবৌ॥

বর্ধাকালে তৈল, শরংকালে স্বত এবং বসন্ত-কালে বসা ও মজ্জা, স্নেহনার্থ প্রশস্ত। কিন্তু সাধারণ ঋতুতে, অর্থাং বর্ধণাদি ঋতুলক্ষণ সকল ষ্থন সমভাবে থাকে, তথন এবং দ্বোভাগে ও রেছের সময় স্নেহপ্রয়োগ কর্ত্বা। (সংশোধনেশ পূর্কে সেহক্রিয়া বিধেয়)।

তৈলং ত্বরারাং শীতেৎপি বর্দ্মেহপি চ স্বৃতং নিশি। নিশ্বেব পিত্তে পবনে সংসর্গে পিস্তবতাপি। নিশ্বন্তথা বাত্তকফার্দ্রোগণঃ স্থাঃ পিস্ততো দিবা॥

তৈল ষে কেবল বর্ষাকালেই এবং স্থত বে কেবল শরৎকালেই প্রয়োজ্য, ভাহা নহে . ব্যাধির অবস্থামুসারে যদি দ্বরায় স্নেহজিয়া আব-শুক হয়, তাহা হইলে শীতকালেও তৈল প্রয়োগ করা যাইতে পারে। এইরূপ বায়ুর বা পিত্তের অথবা বাতপিত্ত উভয়ের প্রকোপস্থলে কিংবা ভজ্জনিত রোগে, গ্রীক্ষকালেও রাজিতে স্থত প্রয়োগ করিতে পারা যায়। কিন্তু ইহার মন্ত্রথণ হইলে অর্থাৎ শীতকালে বাজিতে স্থতপ্রয়োগ করিলে শ্লেমজনিত রোগ এবং গ্রীষ্মকালে দিবং-ভাগে তৈল প্রয়োগ করিলে পিত্তজনিত রোগ হইয়া থাকে।

যুক্ত্যাবচারয়েৎ শ্রেহং জন্মান্তান্ত্রন বন্ধিছি:। নস্যাজ্যপ্রনগণ্ডুয-মুদ্ধকর্ণান্ত্রিভপণি:।

ঘুতাদি স্নেহপদার্থ ৰুক্তি অনুসারে ভক্ষ্য-ভোজ্যাদি অন্নের সহিত ব্যবস্থা করিবে এবং বস্তিক্রিয়া, নশু, অভ্যঞ্জন, গণ্ডুষ্ণারণ, মুর্দ্ধতর্পণ (শিরোবস্তি), কর্ণপূর্ণ বা অক্ষিতর্পণে উহা প্রয়োগ করিবে।

ৰাভ্যাং চতুৰ্ভিরপ্তাভিৰ্বামেজীৰ্যান্ত বাং ক্রমাৎ। ব্ৰস্বমধ্যান্তমা মাত্রান্তান্ততল লবীয়সীম্ । কলবেৰীক্য দোৰাগীন্ প্রাণেব তু হুসীয়সীম্। তল্তনে জীৰ্ণ এবাল্লে ব্লেহোহচ্ছা: শুন্ধারে বহু: ॥ শুমনঃ কুন্ধতোহনল্লো মধ্যমাত্রশ্চ শুস্যান্তে ।

্য়েছের য়ে মাত্রা, তই গুছেরে প্রিপাক শ্রণ ভক্ষ (লগ্য মারণ) চাৰি প্ৰবে লীলু হল ভাইল সপলে সাল্ महा बाहि अहा: श्रीनश्रीक श्रीम उक्त हैया কোষাতি জন্ধ কৰিয়া অৰ্থাং নোহ ভেষ্ক কেশ কাল বল্পনীৰ আহাৰ দ্বস্থাট ও প্রকৃষি স্বিংশ ত্রাংগ হস্ত মাধ্য প্রায়োগ প্ৰাজন স্ট্ৰে ক্ৰে अभाग फेब्स साम जात्य। 177,5 \$ অজ্ঞান-কোষ্ট পুরুষ্কে পথ্নেই জানিক মানার ক্লেই সুরুষ ক্রাইলে মনেক স্থাল বিপদ উপস্থিত হঠতে পারে, মেত্রব প্রথমে তুম্ব মারা প্রয়োজ। কিন্তু খণি শোলনের (বিবেচনাদির) নিমিত্ত সেহপান কথাঠতে হয়, ভাষ্ট হইলে প্রা-দিবলীয় আহার জীর্ণ হইবামান বুভুকার অপেক। না ববিষাই বহু প্রিমাণে আছে (বুকব্ল) সেইপান কবাইবে। ফুদার স্থ্য ্মহপান করাইলে তাহা জ্ঠানি ছাল জীর্ হইয়া শোধনকার্ঘা অস্মর্থ হয়। জন্ম বন ভুরম্ব কপিল লেবেল শক্তিব নিমিত্র) क्रमान अवस ভালার (সার্গ হর) মধ্যম মানাল প্রস্থা का १ हरकारण , अरहर সকল প্রস্তুত থাকান, পাত ক্লেই স্বন্ধ্বাবে নাপ্ত হট্য কুণিত ও যেব কাছি কাল্য धाःकः।

র ২৭। রসমন্ত তিও সভতে বিলো (ই এ স চ । বালবৃদ্ধাপিশাসাজ-তেও দ্বিমন্ত নিজ্যি । অত্যেহনিত্যমন্ত্রাপ্ত বিভাগত কেন্দ্র। মৃত্যেক হিলেদেকেন্দ্র কারে চোকে দুবেন্দ্র চ ॥

াংহণের জন্ম মাধ্যের ও মন্তাদির সহিত আতি অল্ল মাতার কেই প্ররোগ করিবে। সেই সভক্ত ব্যবস্থিত থেই বালক বৃদ্ধ পিণাসার্ত্ত মেহমেনী মন্তপ্রো দানস্থনত সেহাভান্ত মন্দানি ধুখা কেশভীত বৃহ্-কোন্ত অল্লেশিয় মুক্ত ও কশ নাজ্জিদের প্রেক্ত এবং উষ্ণকালে হিতকর। বাষ্যা ধন্যচ্চতত পিরেখ ক্ষেত্র তথ্যপাক্ষয়ে । আপ্তোপেনিশ শাধান (তীননাক্ষান ন তু ॥ শানানালনিশ্বাদান পুনক্ষানাননা সিয়েখ । • নেস্প্রান্ত ক্ষিত্র তা তত্ত্ব ন্তু নাক্ষানা

আছে (কেবল । এইপানাগণ উষ্ণ বাবি পান কবিবে। উষ্ণবাবি-অনুপান দহ পীত কেই সহজে পবিপাক হয় এবং স্নেহ্লিপ্ত মুখেনও বিশুলি হটায় পাকে। যদি পীত ক্ষেত্ৰ জীপাজান্দ্ৰেই উপাস্থত হয়, তাহা হটাল প্ৰকাশ উদ্যানগানিক পান কবিবে, তাহাতে উদ্যানগানিক লাচ ও দেহো লগুতা হটবে। কিছু উষ্ণবাধি তেখিব তেল বা ভন্নাতক তৈল পান কবিয়া উষ্ণ বাবি অনুপান কৰা কৰিব নহে।

ভে'জে হয় মাজ্য পাস্তন্ খং পিবন্ পীত্র'নপি।
দেবে শংমন্তিষ্ নিন্ধাতি বিশ্বমন্ত্রন ।
দেশেদেরে পেচারী স্যাদ্ বন্ধানী কপানেছঃ।
ন বেগরে দ্বী বাছে মে-জেনেনাকিইমাতপ্রে ॥
প্রবিত্যান্য নিজন ভাষাত্যাসনসংস্থিতীঃ।
নাচাত্যাকেসেধানাহং-স্থপ্রনর্গংগি চ ॥
যাস্ত্রানি পিবেং হেনি ত্রেস্ত্রাস্ত্রপি ত্রভেং।
সক্রক্ত্রণ প্রামান্য ক্রেন্ত্রন্ধান্তর ।
সক্রক্ত্রণ প্রামান্য ক্রেন্ত্রন্ধান্তর ॥

যে দিবস মেহপান কবিবে, তংপুর্ব দিবদে এবং এইপানদিবনে মেই পান কবিয়া মূলাব্যাদি দবহুত উষ্ণ জাল বা উষ্ণ, দেব, জনভিষ্ণলী (যাই) কফক্র নহে) জল অতি অল্পাত্রার ভোজন করা কর্ত্ত্বা। যতদিন মেহপান কবিবে, ততদিন এবং স্নেহপানের পর আবত ততদিন উষ্ণ বাবি পান করিবে, জীসন্ধ কবিবে না, রাত্রিতে নিদ্রা যাইবে, মল-মূত্রাদির বেগ রোধ করিবে না, এবং ব্যায়াম, জোধ, শোক, হিম, আতপ, প্রবল বায়, যানে গ্রমাগ্রমন, প্রথপ্রাটন, অধিক ভাষণ, দীর্ঘকাল জাসনে উপবেশন, হাতি নীচ বা অতি উচ্চ বালিশে মন্তক্ত স্থাপন, দিবানিলা,

ধুম ও ধূলি ভ্যাগ করিবে; বমন বিরেচনাদি সকল কর্ম্মেই এবং ব্যাধিক্ষীণ ব্যক্তিদের পক্ষেও প্রায় এই বিদি। কিন্তু শমনের জন্ম ক্ষেহপান করিলে বিরিক্তবং নিয়ম প্রভিপালন করিবে ক্মর্থাং বিরেচনে যেমন পেয়াদি ব্যবস্থেয়, শমনার্থ স্বেহপানেও সেইরূপ বিধান কর্ত্ব্য।

ত্রাহ্মচছং মূনে কোঠে কুরে সপ্তদিনং পিবে**ং।** সমাক্ বিধ্বোহখনা যাবদত: সাক্ষ্যীভবেং পরম্॥

কোঠ মুদ্ধ হইলে তিন দিন এবং কুর হইলে সাত দিন পর্যান্ত অচ্চ মেহ পান করিবে। কিন্তু ইহাই যে নিয়ম, তাহা নহে; যতদিন পর্যান্ত মিধলক্ষণ সম্যক্ উপস্থিত না হর, ততদিন পর্যান্ত মেহপান করা কউরা। অতএব সপ্তাহের পরও মেহপান করা কউরা। অতএব সপ্তাহের পরও মেহপান করিতে হইলে, এক এক দিন বাদে বাদে বাবেত করিয়া থাকেন। মিধলক্ষণ প্রকাশের পরও আনক দিন মেহপান করিলে ও মেহ সায়াভিত (অভ্যন্ত) হওয়ায়, তাহাতে কোন ফল দলে না, অর্থাহ সায়াভিত মেহ মালাদি নিঃসারণ করিতে পারে না। (মৃহ্ব ও কুর কোর্ডের বিষয় লিখিত হইল, সংগ্রাহে মধা কোর্ডে ছয় দিন প্রয়ান্ত মেহপানের বিধি আছে)।

অথাতঃ স্বেদবিধিমধ্যায়ং ব্যাখ্যাস্যামঃ।

বেদন্তাপোপনাহোগ্ধ-দ্রবভেদাচ্চতুর্বিধঃ। ভাপোঃগ্রিতপ্রবসন-ফালহন্ততলাদিভিঃ॥

অতঃপর আমরা স্বেদবিধি অধ্যায় ব্যাথা। করিব। তাপ, উপনাহ, উন্ন ও দ্রবভেদে স্বেদ চারি প্রকার। বস্ত্র লৌহফাল ও হস্ততলাদি অগ্নিতথ করিয়া তদ্মারা স্বেদ্ দেওয়াকে তাপস্বেদ কহে।

উপনাহো বচাকিথ-শত।व्यात्मवनाकृष्टिः । श्रोत्कः मभत्त्वर्गत्थन्तः बार्व्यवस्कृताभित्यः ॥ উদ্ভিক্তলবংশ: স্থেহ-চুক্তাত্রপথান হৈছ।
কোনো প্রনে প্রেম-সংস্থান্ত প্রসাদিনিত ।
পিত্রেন প্রকাশ্যেপ্ত সার্বণ পোনে পুনং স্থান উপনাহ:—তপ্রতার বধাতে চল্লপট্টাদিনে ভাষর্থং নামণক্ষোপনাহ হতি। সালেন ইতাক্স চাত্রান্তিরে প্রসিদ্ধং নাম। তপাচ ধ্যন্তরিঃ :—

কাকোল্যাদিঃ স্বাত্মত সকায়্রপ্রাসংযুক্ত।

সানুপোদকমাংসপ্ত সর্বাহেইনম্বিতঃ।

ক্রেণাফঃ স্পত্তলবদঃ সাকার পরিকার্তিতঃ। ইতি উদ্রিক্তন
লবদেং ক্রেচ্কতক্রনাংস্ট্রেরিতি নিস্পি বেদের যোজান্।

কেবল বায়ৰ প্রকোপে বছ, কিন্ন (মদের বক্কাল), গুলুফা, দেবলাল, ধনে (ভিল তিলি মাধকনাই প্রভৃতিও গ্রহণীয়), সমস্ত গ্রহ্রের, রামা, এবংগুমুল, জটানাবৌ ও নাংস ইহাদিগকে শিলাপিট, অবিক-লবণ-মিলিছ, গুলুফি এবং উষ্ণ করিয়া ভুজারা প্রদান করিব। ক্লেগুছে বায়ুব প্রকোপে পুর্ন্থীক্ত স্থানাল গণোক্ত জবোর প্রদান করিব। কেন্দুলিক স্থানাল প্রকোপ প্রাক্তাদি গণোক্ত জবোর পেদ একা ঈর্ম্ব পিত্রক্ত বায়ুব প্রকোপে প্রাক্তাদি গণোক্ত জবোর প্রদান করিবে। সেই স্বেদ্বয়েও লবণ ও মুভাদি মিলিছ করিছে হববে। এইরূপ স্বেদ্ব নাম উপনাহ। তথান্তবে ইহাকে সারণ স্বেদ্ধ কহিয়া পাকে। চলিছ কথান ধ্যান ইহাকে উষ্ণ প্রবাহ প্রাটিস বলে।

ক্ষিপ্ৰাঞ্চলি মুক্তিশ্বপন্তানপুটিছি। অলাভে বা ততিংপত্ৰ কৌশেয়ানিকশাউকেঃ। বাজৌ বদ্ধং দিনা মুফেন্যুঞ্জেয়েনী দিনাকৃতমুখ

কোন অঙ্গে পূকোক প্রেণ দিয়া মৃত্যু,
স্থিম, উষ্ণবীর্ষা ও ছণামুরহিত চল্ম অভাবে
বাতন্ন এরগুপান বা রেশমী বস্ত্র, কিংবা কম্বলাদি
দারা বাধিন্না রাখাকে "উপান্ধ-স্থেদ কহে।
রাত্রিক্বত বন্ধন দিবান্ন পুলিবে এবং দিনক্বত
বন্ধন রাত্রিতে খুলিয়া দিবে।

উন্ধা ভূৎকারিকানোষ্ট্র-কপানোপলপাংশুভিঃ। প্রতক্ষেন বাক্তোন করীব্যাসকাতুরৈঃ॥ অনেকোপায়স্থপেঃ প্রযোজ্যো দেশকালতঃ॥

ইহার অনুবাদ বাতবা;ধিতে দ্রংবা।

ববৰাবৈর ধ্বীজাতসীকু স্থ্বীজাদিছিঃ পিষ্টবিরে-ল প্রিকাকৃতির্ব: বেদনোপার: সা উৎকারিকা।

উৎকারিকা (স্বিন্ন ও পিষ্ট যব-গোধুমাদি খারা নির্দ্মিত মোহনভোগের স্থায় আরুতি-विट्निय), लाहे, शांभ्या, প্রস্তর বা ধূলি কিংবা প্ৰসমূহ, ধান্ত, খু টেচুৰ্ণ, বালুকা বা ভুষ, ইহা-দিগকে নানা উপায়ে সম্ভপ্ত করিয়া বে শ্বেদ প্রদান করা বার, তাহার নাম উন্মন্তেদ। উন্ম-খেদ দেশ, কাল ও দোবামুদারে নানা প্রকারে প্রয়োজিত হইয়া থাকে। যথা—উপরি-উক্ত ব্রবাদিগকে উষ্ণ করিয়া জলে নিক্ষেপ করিলে তাহা হইতে যে উন্না উঠে, সেই উন্না দারা স্বেদ, অথবা গোময়াদিকে পিণ্ডীকৃত ও উষ্ণ করিয়া তদ্যারা স্বেদ দিবে কিংবা ঐ সকল বস্তুকে ক্স্তাদি পাত্রে রাখিয়া, পাত্রের মুখ বন্ধ করিয়া অ্যিসম্ভাপে অতি উষ্ণ করিবে এবং রোগিকে কোন নিবাতদেশে রাখিয়া ভাষার সর্বাঙ্গ কম্বলাদি আবরণে আবৃত করিবে, তংপরে ঐ পাত্রের মুখ ক্রমে ক্রমে খুলিবে এবং তত্ত্বন্ত বাষ্প ছারা ষেদ অর্থাৎ ভাপরা দিবে। এইরপ নানা প্রকারে উত্মন্ত্রেদ দেওয়া হাইতে পাবে।

শিশু নীবণকৈর ৩-ব 'রঞ্জরস'ছে কাং .
শিনীবন'সাবিশা'ক-ম'লচীলীব্যুক্ত ॥
পারভক্তেবচ'ছেল্ট মা'কেন্টানুপ্র'নিকে:
দশ্যুকেন চ পূথ্ন সহিত্যা ব্যামকম্॥
ক্রেনন্তিঃ হ্র'শুজ-বারিক্টার'দিসাধিতেঃ
কৃত্তীর্গলন্তীন ড়িবা পুরস্থি কৃত্তালিতম্।
বাসসাচ্ছাদিতং গানেং স্লিখং সিঞ্ছে ব্যাহ্রুবন ॥

সজিনা, বেণা, ভেরেণ্ডা, করঞ্জা, নিসিন্দা, খেততুলসী, শিরীষ, বাসক, বংশ, আকন্দ, মালতী ও খ্যোনাগাছ, ইহাদের প্রসমূহ, বচাদি গণোক্ত দ্রবসমূহ, আনৃপ ও বারিজ মাংস এবং দশমূল ইহাদের মধ্যে কোন একটি, ছুইটি, তিনটি বা সমস্ত গুলিকে, দোধান্মসারে স্বতাদি স্বেহ্যুক্ত প্ররা, শুক্ত, জল বা ছগ্ধ মারা সিদ্ধ করিয়া, হাঁড়ি গর্গরা অথবা বাশের নলের মধ্যে প্রিয়াস্ক্র্যুক্ত উষ্ণ থাকিতে থাকিতে পীড়িত অঙ্গে

সেচন করিবে। সেচনের পূর্ব্বে সেই পীড়িত আৰু মেহাক্ত ও বস্ত্রাচ্ছাদিত করিতে হইবে।

ভৈরেব বা দ্রবৈঃ পূর্ণং কুঞ্চং সর্ববাঙ্গগৈহনিলে। অবগাহাতুরভিটেদশিঃকুদ্রহাদিরুকু চ ।

সর্বাঙ্গবাত কিংবা অর্শঃ বা মৃত্রকজ্বাদি রোগগ্রস্ত রোগী পূর্কোক্ত স্থগোঞ্চ দ্রবপূর্ণ কোন কুণ্ডে (টবে) অবগাহন করিয়া অবস্থিতি করিবে। ইহাই দ্রবন্দে।

নির্বাতেহস্তর্বহিঃসিম্বো জীর্ণান্ন: স্বেদমাচরেৎ। ব্যাধিব্যাধিতদেশর্জু-বশান্মধ্যবরাবরম্।

সেহপান ও সেহাভাঙ্গ ধারা অস্তরে ও বাহিরে স্লিগ্ধ হইয়া, পূর্বরাহার জীর্ন হইলে, রোগ, রোগী, দেশ ও শতু অনুসারে নিবাত স্থানে হীন, মধ্য বা উৎক্ঠি স্বেদ লহাব।

কলার্ত্তো কক্ষণিং ক্লাক্ষণ কক্ষত্রিপার কন্ধানিকে। আমাশ্যমণতে বংগ্রে কাদে এবাশ্যানিতে। কক্ষপকার তথা গ্রেম পুরুগে স্থানায়তের বৃত্তা।

কদার্ত্ত নাক্তি নাক্ত হুইলা আনাং ব্রহপান ও মেহমদন থালা আন্তর্গাহ্য কিন্তু ন হুইল কক স্বেদ লইবে। ককবতে কক্ষিম অধাং কোন অঙ্গে কক্ত কোন অস্ত্রোক্ত স্বেদ লহবে এবং শুনারলোপে অধাং আমাশলগত বাতে অত্যে কক্ষ স্বেদ লইব গশ্চাং মিল্ল গৈদে ওপোকাশলগত কক্ষে স্বেদ লইব গশ্চাং মিল্ল প্রদান এবং বাল ভুগাল আগ্রেদ, অভ্যান কক্ষ্ণান্তর নিমিত্ত অভ্যেক্ত ও বালুশান্তির জন্ম প্রদান প্রদান প্রদান্তর্য। প্রকাশন বালুব স্থান, কক্ষ্ ভুপাল আগল, অভ্যান বালুশান্তির জন্ম অত্যে মিল্ল প্রদান কক্ষণান্তির জন্ম অত্যে মিল্ল প্রদাহ কক্ষণান্তির জন্ম অত্যে মিল্ল

জারং বজ্ঞাণয়েঃ স্বরং দৃড্ডুক্ত্দয়ে ন বা। শীতপুলকয়ে স্বিশ্লো জ¦তেহঙ্গানাঞ্চ নাজবে। জ্যাচ্ছনৈ মূ'দিতঃ স্নাতস্তঃ শ্রেহবিধিং 'ভজেৎ॥

বজ্ঞাণৰয়ে (কুচ্কিস্তানে) অল স্বেদ.দিবে এবং চকু, মুদ্ধ ও হৃদয়ে অতি অল মাত্ৰ স্বেদ দিবে, অথবা একবারেই দিবে না। যথন শাঁত ও বেদনার ক্ষয় এবং অঙ্গের কোমলতা জন্মে তথনই জানিবে, পুরুষ স্বিন্ন হইয়াছে। স্বিন্ন ব্যক্তির অঙ্গ অন্ন অৰ্দ্ধন করিয়া দিবে এবং ভাছাকে উচ্চোদকে স্নান ও স্নেহোক্ত বিদি পালন করাইবে।

ন বেদ্যেদতিমূল-ক্ষক্ষ্কলম্ছিত চান্।
ভাষনীক্ষতকীপ-কামমন্তাবিকারিশ: ॥
ভিমিরোদরবীসর্প-কুটপোষাঢারোগিণ: ।
শীতমুক্তবিক্ষেত্র-মধ্ন কুতবিক্ষেদনান্।
দক্ষতিক্ষানি-ফোবশোকভ্যাবিতান্।
কৃষ্কাকামলাপাঙ্গু মেছিন: পিতপীড়িতান্।
গাভিশী: পুশিভাং প্রতাং মূত্র চাতায়িকে গদে॥

অভিষ্কুল, রুক্ষ, ছ্র্ম্বল, মূর্চ্ছিত, অন্তনীর, ক্ষতক্ষীণ, ক্ষুণ, মন্তরোগী এবং তিমির (নেত্র-রোগ বিশেষ), উদর বিসর্প কুন্ত শোষ ও বাতবক্ত রোগী, ছগ্ম দি স্নেহ ও মধুপারী, কুতবিরেচন, ক্ষাবাগ্রাদি দ্বাবা দগ্ধগুদ, অতিস্বার বেগে লাইগুদ, গ্রামি ক্রোন শোক ও ভ্যা-

বিত্ত, কুথার্ত, তৃষ্ণার্ত, কামলা, পাণ্ড ও মেহ রোগী, পিত্তপীড়িত এবং গভিনী, ধাতুমতী ও প্রস্থান্ত ত্ত্তী, ইহাদিগকে স্বেদ দিবে না। তবে বধন বিস্কৃতিকাদি বা বিপজ্জনক রোগ হইবে, তথন মৃত্ব-স্বেদ দেওয়া যাইতে পাবে।

বেলো হিতত্বনাগ্নেরো বাতে নেদংককার্চে।
নিবাতং গৃহমায়াসো গুরু প্রাবরণং ভয়ন॥
উপনাহাহবজ্ঞাধ-ভূরিপানং কুধাতপঃ॥

মেদ ও কফার্ত বাতে জনাগ্নেম্ন স্বেদ হিতকর। জনাগ্নেম্ন স্বেদ হথা,—নিবাত গৃহ, ব্যায়ান, কম্বলাদি গুরু আবরণ, ভয়, উপনাহ, মুদ্ধ, জ্রোন, ভূরি মন্তপান, ক্ষুণা ও স্থান্তপ। (উপনাহ হুই প্রকার—আগ্নেয় ও জনাগ্নেয়। পূর্কোক বচ ও কিমাদি ছালা যে উপনাহ, তাহাকে আগ্নেয় এবং সিগ্নোক্ষরীয়া মৃত্ ও হুর্সন্ধরহিত চর্মা, অভাবে বাত্রিং এওপান্দাদ বাবা কোন জন্ধ বাদিয়া বাধ্যক জনাগ্রেম স্বেদ কহে।।

रेन्। गुर्क्तन-मः धार स्वरुखनिविः।

অথ পঞ্চকর্মবিধিঃ।

পঞ্চকর্মাণি।

প্রথমং বমনং পশ্চাদ্বিরেকশ্চামুবাসনন্। এতানি পঞ্চ কর্মাণি নিরুহো নাবনং তথা।

বমন, বিরেচন, অন্থ্বাসন, নির্মহণ ও নাবন (নস্তা), এই পঞ্চকণ্ম চিকিৎসার অঙ্গ ভূত। ইহাদের প্রত্যেকের বিবরণ ধথাক্রমে লিখিত হইতেছে।

তত্র বমনবিধিঃ।

শরৎকালে বসন্তে চ প্রার্ট্কালে চ দেহিনান্। বমনং রেচনকৈব কার্য়েৎ কুললো ভিষক্॥ বনবন্ধং কলব্যাপ্তং জলাসাদিনিপীড়িত্য্। তথা বমনসান্ধাঞ্জ ধীরচিত্তক বাময়েৎ॥ বিবদোবে অন্তরোগে মন্দেহগ্রে। লীপদেহর্ক্ড্রা ভাষোগে কুঠবীসপে মেহেহজীর্জন্মের্চ। বিদারিকাপটীকাস-মাস্পানসর্জির্। অপসারে অরোমাদে তথা রক্তাতিসারিব॥ নাসাতাবোর্জণাকের কর্ণপ্রাবেংথিজিহনকে। গলশুগুটামতীসারে পিত্রশ্রেষণদে তথা॥ মেদোগদেংকটো চৈব বমনং কার্যদ্ ভিষক্॥ (স্কুলরোগে কুষ্টবুশুপানজ্নিতে বাল্প্রারোগ।

শরং বসস্ত ও বর্ষা এই শতুরার, নমন ও বিরেচনের প্রশস্ত কাল। যাহার বল আছে, যাহার দেই কফবাপ্থি, যে বমনবেগাদি ছারা নিপীড়িত, বমন যাহার দেহামুকুল ও যে ব্যক্তি ধীরচিত্ত, তাহাকেই বমন করাইবে। বিষদোয়ে বালকের গুইস্তেগ্রপান-জনিত রোগে, অগ্নিনানের, শ্লীপদে অর্থাং গোল্রোগে, অর্গুনুদি প্রাজ্য (আব্ রোগে), জ্যুদ্রাগে এবং কুর্র বিসর্প মেই অজীর্গ ভ্রম বিদারিক। অপটী কাদ ছাদ পীনস র্দ্ধি অপথার জ্ব উন্মাদ রক্তাতিসার এবং নাসং তাল ও ওর্গাক কর্ব-ভ্রম অবিজ্ঞিকক গলস্বপ্তা অতীসার পিত্ত শ্লেম্বাক্তির ব্যাধি মেদোরোগ ও অ্রুচি এই সকল রোগে ব্যন হিতকর।

ন নামনীয়ন্তিমিরী ন গুলী নোগরী কুশং।
নাতিবুন্ধো গাভিণী চ ন স্থানো ন ক্ষতাভুরঃ।
মদার্জ্ঞো বালবের ক্ষণ্ডং ক্ষবিতশ্চ নিকহিত।
উদাবক্তয়েগুর লী চ ছণ্ডদেও কেবলানিলী।
পা ভুরোগী লিমিবালে প্রনাথ ক্ষবাহিলা।
ক্তেইপাজীবনাবিতা ন্যালি যে বিষ্ণীভিত্য।
ক্ষবায়াপ্রশ্চ তে ন্যাল মধুরকাপ্রশানতঃ।
(ভুক্তক্ষককশ্যনের ভুশ্চ্দিঃ।)

তিমিনরোগ (নেএবাণ: বিশেষ) গুরা ও
জঠন নোগ থাকিলে এবং কুণ, সতিব্দ,
গভিণী স্ত্রী, ভুলকার, ক্ষতনোগী, মদার্ভ, বালক,
কৃক্ষদেহ, কুনিত, নির্মাহত (যাহাদেন নিরহণ
ক্রিয়া—পিচ্কারী দেওয়া হইয়াছে), উদার্বর্জ,
উর্মান্তর্গান্তনাজীয়, তুশ্ছদা (কৃক্ষ ও
কর্কশ অবা ভোজনেও যাহাদের বমন হয় না),
কেবল বায়ু এবল, পা গুরোগী, ক্রিমিনোগী এবং
বাজ্ঞদিত স্বরভেদ নোগাক্রান্ত বাজিকে বমন
করাইবে ন:। কিন্তু যদি উল্লিখিত রোগাক্রান্ত
ব্যক্তিগণ অজীর্ণ ব্যথিত, বিষপীত্তিত ও প্রবল-

কফাখিত হয়, তাহা হ*ইলে* তাহাদিগকেও য**ষ্টি-**মধুব (কাহাবও মতে—মোলফুলের) কাথ পান করাইয়া বমন করান ঘাইতে পারে।

মুকুনারং কুশং বালং বৃদ্ধং ভীক্ষক বাময়েছে।
পার্যান্তা যবাপুং বা ক্ষীরতক্রনধীনি চ ॥
অনাক্ষোঃ প্রেমনৈত্রিকালে বিশ্নুৎক্রেক্স দেছিন'ন্।
বিদ্ধান্ত্রিয়ার বননং দন্তং সম্যুক্ প্রবর্ভতে ॥
বননেপু চ সংক্রিপু সেন্ধবং মধুনা হিতন ।
বীতংসং বননং দন্তাদ্ বিপ্রাতং বিরেচনন্॥

কোনলাক্ষ্য, রুণ, বাগক, রুদ্ধ ও ভীরু ব্যক্তিকে য্বাগু, গুল্প, দ্বি বং তক্ত পান করা-ইয়া বদন করাইবে। প্রথমে অপ্রিয় ও কফ-জনক ভোজা দাবা বদনার্থ ব্যক্তির দোষ সকলকে উংক্রেশিত অর্থাং বহির্নমনোমুণ করাইয়াং, মেহম্বেল প্রয়োগালন্ত্রণ বদনকারক দ্বা প্রোগ করিলে বদন সমাক্ প্রয়ুভ হয়। সর্ব্বপ্রকার বদনকারক উষ্ণরের মধ্যে মধু-দংশুক্ত সৈদ্ধর ছিতকর। অক্লাচজনক দ্বা ব্যন্ত্রিয়া। ক্লাচকর দ্বা বিরেচনার্থ ব্যবস্থেয়।

কাপ্যস্থাক্ত বু চ্বা শুপ্রিয়া জলাচকে।
জন্মভাগবিশিষ্টক বমনেলবচার্য্যেই ॥
কাপ্যানে নব প্রহা জ্যেই মাজা একীস্থিতা।
মধ্যা স্থানা গ্রেছা চ কনীয়্দী ।
বমনে চ বিবেকে চ ভ্যা শোলিভ্যাক্ষণে।
অন্ধ্যমান্ত্রীয়িক্ত ॥

(অর্ক্তায়ে দশপ্রং সার্কষ্ট্রুস্।)

ফার্মদের পরিমিত কাথাদ্রবা ২৬ সের জলে সিক করিয়া ৮ সের অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া সেই জল উপসুক্ত মাত্রার বমনার্থ ব্যবস্থা করিনে। এই কাথ-জলপানের জ্যেষ্ঠ মাত্রা ৯ প্রস্থ, মধ্যম মাত্রা ৬ প্রস্থ, কনিষ্ঠ মাত্রা ০ প্রস্থ। বমন বিয়েচন ও রক্তন্মাক্ষণ ক্রিয়ায় সাড়ে ছয় পলে এক প্রস্থ গণ্য হইয়া থাকে। (এক্ষণকার লোকের অধিবল অভি কম, স্পৃত্রাং কনিষ্ঠ মাত্রা অপেক্ষাও অনেক কমমাত্রায় কাথজল বমনার্থ ব্যবহার্য্য।) ककर्नावत्वशमाः जिललः माजाता उमम् । भवायः विशवः विकार कमीयन्न लवः स्टावर ॥

ন্মনের জন্ম কর চুণ ও অবলেকে। প্রধান মাজা ও পল, মরাম মাজা ২ পর এবং ক্ষিত্ মাজা ১ পল। (একপু মার্বাও একলে ব্যবস্থ ইয় না)।

বঙ্গনে চাপ্ত বেগাঃ স্থান পিডাম্বা উত্তমাপ্ত তে: বছ বেগা স্বামা বেগনেচহার স্কাবরে সভাগে:

ন্দ্ৰেন্দ্ৰ স্থানে স্থান্থ চনাৰ ব্যাহ্নীলে শ্রেষ্ট্রেন্দ্র কলা বার ইন্ট্রেন্দ্রন্ত্রেন্দ্র পিত উপ্লোপি ইন্ট্রেন্দ্রন্ত্র ১ এবন মন্ত্র ও বেন স্থান স্থান ক্রিয় ব্রিয়া উক্ত হয়।

কদং কটুকতীক্ষোদৈং পিতং স্বান্ধনিং ক্ষেত্র ।
সঙ্গান্ধনাক্ষয় সংস্কৃত্য বাধুনা ক্ষয় ।
কৃষ্ণা রাউদ্ধনং সিদ্ধাং ক্ষেত্র কোশহালৈ পিরেব ।
পটোলবাসানিধাংক পিতে শতিকলৈ পিরেব ।
লক্ষেত্রবাতপীড়াখাং সক্ষারং নদনং পিরেব ।
অক্নুল্ডচক্রি পিরেব ক্ষবিধান্দিতঃ ॥
অভীবে কোশপানীয়ং সিদ্ধাং পাঁৱা ব্যেব প্রধাঃ ॥
(বাউদ্বং নদন্দ্যন্ ।)

কট তাল ও উফানীয় দেন থান কফাকে ,

স্থাত্ত ও শত্নীয়া দুনা থানা পিতাক , স্থাত্ত
লগণ অম ও উফানীয়া দুনা থানা বান্দংক্ত
কফাকে ভাল কালিবে। কফালিকে। পিপুল,
ময়নাফল ও সেকব লগণ উমত্যত জলেন সাহত
বাবস্থা কলিবে। পিভাগিক্যে পটোলপত্র
বাসক ও নিমছাল শাতল জলেব সহিত ব্যবস্থেয়।
বাতলৈত্মিক পীড়ায় জ্পোন সহিত ময়নাফল
সেব্য। কফ ও বিষাদ্দিত ব্যক্তির পক্ষে বমনার্থ
আকলম্লচ্ব (২০ মাষা) বাবস্থেয়। অজ্ঞীণ
রোগে উষত্যত জলেন সহিত সৈন্ধবল্বণ পান
কর্তিয়া ব্যন্দ করাইবে।

প্রদেকো হৃদ্এই: কোঠা কঙুছ্ শ্ছন্দিতে ভবেৎ।
অতিবান্তে ভবেৎ তৃন্ধা হিকোলগারো বিসংজ্ঞতা ॥
জিহ্বানিঃসরণ্ঞাক্ষোর গার্তিইনুসংহতিঃ।
রক্তছেন্দিঃ গ্রীবনঞ্জ কঠপীড়া চ জায়তে॥
(হনুসংহতিঃ হ্রোর্মিলন্ম্।)

সসমক্ ব্যনে প্রদেক স্থাং মৃণাদি হইতে জল্মাব, জন্ম-বেদনা, কোঠ । বোল্ভা দশনজনিত শোপেব আয় গাবে মাজুলোং-প্রি) ওকও উপ্তিত হয়। আব সাধিক মালায় ব্যন কবাইলে ভূমান হিলা, উদ্যাব, সংজ্ঞাহীনতা, জিজ্ঞাব বভিনিঃস্বন, চকুর বাবেশ্রন (উল্টাইন সাভ্যান, হকুর্মেব সম্মিল্ল, বক্তব্যন, নিয়বন ও কণ্ডশীড়া হুইমা গাবে।

বমনক্ষাভিষেতে ভিষ্ বুফ দ বিরেচনম্ ব্যব্যন প্ৰবিষ্ঠায়ণ (১,তব্যয়াণ সাস্থান্ত) किक्षाञ्चनवरेनम् एकपृ ७ कोनदरमहिर छ।। ফলাল্যমানি থাদেবত্তত চাল্যেহগ্রে নরা: " 'নক্ষেত্ৰান্ত ভিল্ফাকা-কন্ধলিপ্ত'ং প্ৰবেশয়েৎ। বাবেতেঃক্লিযুতাভাকে পীড়নঞ্পলৈ: শানা॥ ১রুমের্কি সূতঃ (সালে নপ্তঞ্চ.(এমার^{ক্}রজর) বত পিত্রিধানের রক্তরীবমুপাচরেৎ । ধার্কিরসাঞ্জেশেশ র-লাজচক্রবামিভি:। মন্তং কথা পারয়েচ্চ সম্বতকৌদশর্ম । শানাস্থানেন ভ্ৰণাস্থা রোগাঞ্জিসমুদ্ধবা:। জৎকণ্ঠশিরস'ং **ও দ্বিলীপ্ত'**'গ্রহণ ল'খনম।। ক্দপিত্রিন'শশ্চ সমাগ্রাস্থ লক্ষ্ম। ভূতে ভিগ্ৰাহত দীপ্তাব্ৰিং মূলহে ব্ৰিক্শ ক্লিকি कोन्न कोन्ननाम: युद्धा गुवः। (छ.ह. १९)। • লালে দা**ভ**লৌর্লিল কড়#চ রাণ্ট্রীধ্যম ।: মুৰ' হুপ্তা ন প্ৰীড়াইঃ ভন্তভুৱেল কল্যান व्यक्षीपर मोडभानीयः वार्थिन् निष्न स्वीतः রেহাভাঙ্গঞ্জ রেণ্ডঞ্ছ দিনমেক^ত সুধীন্তাজেও।

অধিক ব্যন হইতে থাকিলে মৃত্যবিরেচন বাবস্থা করিবে। ব্যন হেতু জিহ্বা ভিতরে প্রবিষ্ট হইয়া গেলে অম, লবণ, ঘৃত, হ্রন্ধ ও মাংসরসের মিশ্ব কবল প্রস্তুত করিয়া প্রয়োগ করিবে এবং তাহার সম্মুণে অস্তান্ত বাজিকে অম ভক্ষণ করাইবে। জিহ্বা বাহির হইয়া পাড়লে তিল ও লাক্ষা বাটিয়া জিহ্বায় লেপন করিয়া প্রবেশ করাইয়া দিবে। চক্ষ্ উণ্টাইয়া গেলে তাহা স্বতাভ্যক্ত করিয়া এবং ধীরে ধীরে টিপিয়া প্রস্কৃতভাবে স্থাপিত করিবে। হৃত্যুদ্ধি শিথিল হইলে বাতশ্লেমানাশক স্বেদ ও নম্ভ

প্রদান করিবে। অতি বমনে যদি রক্তনিষ্ঠীবন হয়, তাহা হইলে বক্তপিত্ত-বিধানামুগারে চিকিৎসা করিবে। আমলকী, রসাঞ্চন, त्वनात मून, रेथ ७ जन्मन এই मकन सत्तात জলে মন্ত প্রস্তুত করিয়া সেই মন্তু, স্বতু মধ্য ও চিনির সহিত পান করিতে দিবে। তা**হাতে** তৃষ্ণা প্রভৃতি ব্যনোপদ্রব সমস্ত প্রশমিত হইবে। হাণর কণ্ঠ ও মস্তকের ভদ্ধি, অধির দীপ্তি, দেহের লঘতা এবং পিত্ত ও রেমার নাশ এই গুলি সমাক বমনের লক্ষ্ণ। বমনাতে রোগির ক্রুণা হইলে অপরাকে মুগের দান, ষ্ট্রিক বা শালি তঙ্লের অর ও জাক্রমাংসের য়ৰ ভোজন করিতে দিবে। **সুচারুক্স**পে ব্যন্তিয়া সম্পন্ন হুইলে তক্তা, নিজা, মুখ-দৌর্গন্ধা, কণ্ড ও গ্রহণীত্রষ্টিজ্নিত অজীর্ণ কথনই পীড়াদায়ক হইতে পারে না। **বাস্ত** বাক্তি এক দিবদ তুষ্পাচ্য আহার, শীতল অল, ব্যায়াম, দৈখুন, তৈলাদি ম পরিজাগি করিবে।

অথ বিরেচনবিধিঃ।

বিধাবিরায় বাভার দ্যাৎ সমাগ্ বিরেচনম্। অবাস্থক্ত তথঃপ্রস্তো এইণীং ছাদয়েৎ কম: 1 मन्ताधिः शोववः कूर्याञ्चनत्वन वा श्रवाहिकान । অথবা পাচনৈরামং বলাসং পরিপাচয়েৎ । খতে। বসতে শরদি দেহগুলৈ বিরেচয়েৎ। অক্সদাত্যয়িকে কার্য্যে শোধনং শীলয়েদ্ বুধ: । পিত্তে বিরেচনং যুঞ্জাদামোক্ততে গদে তথা। एमार ह उथायात्म कार्डक्षांका वित्नवडः । (जारा: कप्राहिए क्षारि क्षिड़ा नव्यनशाहरेन: I শোধনে: শোধিতা যে তু ন তেবাং পুনস্করে:॥ বালে। ব্রহ্মা ভূশং ক্রিয়াঃ ক্ষতকীণো ভয়াবিতঃ। আন্তত্ত্বাৰ্ত্তঃ স্থলত গভিণী চ নবৰুৱী ॥ ২বপ্রসূতা নরো চ মন্বারি**ন্চ ম্বাতায়ী।** শলাদি গ্ৰুচ ক্লক্ত ন বিরেচো বিজ্ঞানতা। জীৰ্ম্বরী গ্ৰবাচিত্তা বাতরক্তী ভগ**ন্দরী**॥ অর্শঃপাঞ্চরগ্রন্থি-হজোগারুচিপীড়িতা:। বোনিরোগপ্রমেহার্ভা গুল্মমাহরণাদিতা:।

বিজ্ঞধিজিবিকোট-বিস্টোক্ষসংবৃতা:।
কৰ্ণনাসাশিলোবজু-শুদমেট্ৰামরামিতা:।
লীহলোথান্দিরোগার্ডা: ফিমিন্সামানলান্দিতা:।
শুলিনো মুত্রাথাতান্তা বিরেকার্হা নরা মতা:॥

বমনার্হ ব্যক্তিকে প্রথমে স্বেহ দারা স্থিত্ত ও স্বেদ স্থারা স্বিন্ন করণানস্তর ব্যান করাইয়া পশ্চাং তাহাকে বিরেচক ঔষধ সেবন করাইবে। অত্যে।বমন না করাইয়া বিরেচন করাইলে. কফ অবংপতিত হইয়া গ্রহণীকে আচ্ছাদন করে, তাহাতে অগ্নিমান্দা, দেহের গুরুতা অথবা প্রবাহিকারোগ উৎপন্ন হয়। একারণ অগ্রে বমন করান কর্ত্তবা। অগবা পাচক ঔষধ প্রয়োগ ছারা আম ও ককের পরিপাক করাইয়াও বিরেচন দেওয়া ঘাইতে পারে। দেহগুদ্ধির জন্ত বসস্ত ও শর্ৎকালে বিরেচন করাইবে, কিন্তু প্রাণদঙ্কট স্থলে অন্ত শততেও শোধন অর্থাৎ বমন বিরেচন ব্যবস্থা করা যাইতে পারে। পিত্তের আধিক্যে, আমক্রিত পীভায়, জঠররোগে ও উদরাশ্বানে কোঠগুদ্ধির জন্ম বিরেচন কর্ত্তব্য। লঙ্খন বা পাচন দার। দোষ প্রশমিত হইলে বরং তাহা করাচিৎ কুপিত হইতে পারে, কিন্তু শোধন ঘারা শোধিত হইলে দোষ একেবারে নির্দ্মাল হইয়া যায়, ভাহার আর পুনরুত্বের আশক থাকে না।

বালক, বৃদ্ধ, অতিমিগ্ধ, ক্ষতকীণ, ভীক্ন, শ্রান্ত, তৃষ্ণার্ত, স্থুলকায়, গর্ভিণী, নবজ্বরী, নবপ্রস্থতা, মন্দাগ্রিযুক্ত, মদাত্যুররোগাক্রান্ত, শল্য*পীড়িত ও ক্লক ব্যক্তিকে বিরেচন দেওয়া নিষিদ্ধ।

* যে কোন বন্ধ শরীর ও মনের পীড়াদারক, তাহাকেই শল্য বলা যায়। স্বতরাং বহিংস্থ কটকাদি শরীরে প্রবিষ্ট হইয়া পীড়াদারক হইলে তাহাদিগকেও শল্য বলা যাইতে পারে এবং শরীরস্থ রদ রক্ত মাংস অস্থি প্রভূতি পার্য কর্ম প্রভূতি প্রভূতি প্রস্থা পাকে।

জীর্ণজ্ব, গ্রন্থষ্টি, বাতরক্ত, তগন্দা, আর্শং, পাড়, জঠর, প্রান্থ, স্থাজ্যে, আরুচি, যোনিরোগ, প্রমেষ্ট, গুলা, প্রান্থ, রণ, বিজ্ঞান, ব্যন্দা, বিজ্ঞোটক, বিগুটী, কুই, কর্ণবোগ, নাসারোগ, বিনোনোগ, মুখবোগ, গুহুবোগ, মেচ বোগ, শ্লীহজনিতশোপ, নেত্রোগ, ক্রিমিরোগ, অগ্নি ও ক্লারজনিত রোগ, শূল্রোগ ও মু্ত্রাঘাত এই সকল বোগে বিরেচন প্রযোজ।

বছ পিডো মৃত্যু পোডো বছ ক্ষেম্ম চ মধ্যেই।
বছৰ তেওঁ কুৰকোঠো জুনিরেচা ম কথাতে ।
হয়ী মধ্যে মুন্ন কৈ ১৯ মধ্যকাওে এ নধ্যমা।
কুরে ভাল মুন্ন দ্বামু ঠিমধ্যম বীলাক।
মুন্ন কোন্যক্র দ্বাম বিজ্ঞান ক্ষেত্র ক্ষুদ্র ক্যুদ্র ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র ক্য

পিতাবিকা বাজিল কাঠ মৃত্য শ্রেমানিকা বাজিলে কোন্ত মন্য এবং বাংশাকি বাজিল কোঠ জুল হইয়া পাকে। কুলকোন্ত বাজি ছালনেচা অর্থাং সহজে হাহানের বিশেচন হল না। মৃতকোন্ত জন্ম নার্থা মৃত্যুনি চক্ত্ মন্যাকোন্ত মন্য মান্য মান্য বিশেচক ঔষদ বাজিল করিবে। মৃত্যুকান্ত নাজেল জ্বাক্তা, হল ও এতিল মেবনো বা চন হল, মন্যকোন্ত বাজিল ভেটছা, কট্কা ও মোন্দাল স্বানা বিশেচন হল, কুলকোন্ত বাজিল মন্যা নীজেল জাঠা, হেমক্ষীনা (চোক্ত) ও জ্বাপাল প্রান্ত ভীক্ষাবিশ্বেক ঔষদ স্বানা বিলেচন ইইয়া থাকে।

মাজোন্ধন বিধেকজ্ঞ বিশ্বন্দ্ৰেগেই ক্যান্তিনা।
বৈগৈবিশান্তিভিম্বা ইনোজ্য দশ্যেগিকা ।
বিগলং শুন্তম্পান্ত, স্বাম্ক পলা ভবেই।
প্ৰাৰ্থ্যক ক্ষায়াণাং কনীয়ন্ত নিচেন্ন্ ॥
ক্ষমোনকচ্বানাং কথা মন্ত্ৰোলাহালেইটা।
ক্ৰম্মান পলং বালি ব্যান্ত্ৰোগাল্পাক্ষা॥
পিজোন্ত্ৰে নিব্ৰুহ্ণু দ্বাক্ষাৰাপ্ৰিভঃ পিবেই।
ক্ৰিক্সাক্ষাক্ষায়াত্ৰেঃ পিবেদ্ ব্যাহং ক্ষান্তিভঃ ॥

ত্রিবৃৎনৈক্ষর প্রতীনাং চুণ্যমান পিনেরর ।
বাঙার্দ্ধিটো বিরেকার জাজলানাং রমেন বা ॥
এরপ্রটলেং ত্রিফলা-কাথেন বিপ্তথেন বা ॥
যুক্তং পীতং প্রোভিষ্ঠা ন চিরেগ বিভিন্তে ॥
মুক্তারী সেবতী পেলা বিরেকার্থা সিতাযুতা ।
নারিকেলজতোখেন পেলা বা স্বর্ণসিকা ॥
তির্তাং কৌটজং বিজ্ঞাবিশ্বভ্যেত্ম ॥
বির্বৃত্তবালভামুত্ত-শকবোলীলাসন্মান্ ।
বির্বৃত্তবালভামুত্ত-শকবোলীলাসন্মান্ ।
বির্বৃত্তবালভামুত্তবালভামুত্তবালভামুত্তবালভাম্বালালাসন্মান্তবালিলাসন্মান্তবালাসন্মান্

্য মারার বিরেচক উষ্ধ ক্রবন করিলে ৩০ খাব ভেদ হয় এবং শেষবারে কফ নির্গত হয়, ্সই মান্ত্রকট বিরেচনের প্রান্ধ মাত্র বলে। র মৃত্রিয় ২০ ববি ভেন হন, ভ,হ..ক মধ্য াল এবং গাভাচে ১০ ব ব ভেল হ্য, ভাগাকে হান মাল ভছ যায় । বিরেচক ক্ষানের প্রান মাত্র ২ প্রা, মল্মা মাত্র ১ পল ও ক্তিছ মাত, মত অন্ধ প্রা। বিবেচক বস্তু, ्भिष्कि ३ हर्षा अभि मान २ असे, मान शाया होई कर्म कर्षीर काई। अब धर धर धर भाग ১ কণ (২ ভোলা) ৷ লোগির বরদ লোগ ও অগ্নিবলাদি বিবেচনা করিয়া ভিন্ন ভিন্ন মাত্র' ব্যবস্থা কলিবে। বিরেচক করা, মোদক ও চূর্ণ মধু এবং ঘতেৰ সহিত সেবনীয়: (বিবেচক ক্ষায় কৰাও চুৰ্গে ধেরপ মান্ত বিশিত হইল, একণে সেরপ মাত। প্রেচ। কবা যার না। এক্ষণকাৰ। লাকের অগ্নিবল নিতাপ্ত কৃষ্য বলিয়া উদ্ধিতি লগু দারাই একণ্কাব প্রধান মারা।) পিন্তানিকে দ্বাকানগানির সহিত তেউড়ী চুর্ব ; কফাণিকো ত্রিকলান কাথ কা গোমুরের সহিত ত্রিকটু (শু ১, পিপ্ল ও মরিচ) চূর্ণ , এবং বাতালিকো অমুবস অথবা জাঙ্গলমাংসেৰ রুদেব সহিত তেউড়ী সেম্বর ও শুঠ চুর্ণ প্রয়োগ

করিবে। এবওটেতল, দিগুণ তিফলার কাথ বা ছথের সহিত পান করিলে শিজ বিচেনন হয়।
চিনিও ছয়ের সহিত গোলাপছল অথবা নারি-কেল জলের সহিত গোলাপছল অথবা নারি-কেল জলের সহিত গোলামুখী সেবন করিলে। বে চন হয়। বর্ষাকালে জাক্ষার লগেও মধু সহিত তেউড়া, হল্লখন্য পেলে ও তেউড়া, হল্লখন্য শিত্ত কাথের সহিত তেউড়া, ছল্লখন্য মৃত্য, কর্কলার বালা, সক্তচলন ওাবাইমধু সেবা। হেমস্ককালে উফ জলের সহিত তেউড়া, চিতামুল, আক্নানি, জীরা, এলাইচ, বচ ও অর্থকারী সেবনীয়। শিত্ত ব্যস্থ কালে মধুর সহিত পিপুল, ভাঠ, সেম্বন লবণ, গ্রামালতা ও তেউড়া, এই সকল জ্বা বিরেচনার্থ ব্যবস্থা করিবে। গ্রীম্বাকালে তেউড়া ও চিনি সম প্রিমাণে মিলিত ক্রিয়া প্রামাল।

অভয়ামোদকঃ।

অভয়া মরিচং গুন্তী বিভূকামনকানি চ।
পিপ্ললী পিপ্ললীমূলং ক্ল পারং মুদ্রমেন চ।
এতানি সমজাগানি লয়া তু বিশুণা ভবেং :
বিস্তাইগুণা জেরা যড় গুণা চাত্র শকরা ।
মধুনা মোদকান কুলা করমারাপ্রমাণতঃ ।
একৈকং ভক্ষাংগ প্রাতঃ শাতকালু পিবেজলম্ ॥
তাবদ্ বিরিচাতে কল্পযাবহুকং ন সেবতে ।
পানাহারবিহারেমু ভবেরিয়ন্ত্রণঃ দদা ॥
বিষমজ্বমন্দায়ি-পাঞ্কামভগদারান্ ।
জনামকুইগুল্পানি-পাল্পগুল্পান্তান্ ॥
বিদ্যাহীইমেহাংশ্চ যক্ষাণে ন্যুনাহর্ন ॥
বিদ্যাহীইমেহাংশ্চ যক্ষাণে রুনাহ্রন ।
গ্রুপার্থেক্রলন-জ্জোদরক্ষা জবেং ।
সত্যং শীলনাদ্রাং পলিতানি প্রণাশরেং ।
অভ্যানেকরা গ্রেতে রুসায়নবরণ স্বতাং ॥

হবী দক্তী, নবিচ, শুঠি, চাবিড়ক্স, অধ্নক্ষী, প্রিপ্তল, প্রপ্রেক্স, লাকচিনি, তেজপত্র, ্তা, / প্রত্যেক এক এক ভাগা, দস্তীমূল ও ভাগা, / তেউড়ী ৮ ভাগাও চিনি ৬ ভাগা; এই সমূদ্যের \

চুণ একত করিয়া মধুশ সহিত মোদক প্রস্তুত করিবে। মাত্রা—২ তোলা পর্য্যস্তু। অমুপান—শাতলক্ত্র। ইছা সেবন করিয়া যে পর্যান্ত না উক্তর্ত্রে পান বা উক্ষ্যিক্রয়া করিবে, সে পর্যান্ত বিরেচন হইবে। এই মোদক সেবন কর্নে বিষম্ভার, অগ্রিমান্য্য, পাঞ্রোগ, কাস, ভগন্দর, অশা প্রেভৃতি বিবেধ ্রাগের শান্তি হয়।

গীয়া বিরেচনং শীতশ্বলা সংসিচা চকুৰী। প্রগন্ধি কিন্দিদামায় ভাত্মলং শীলয়েদ্ব্য । নিব্যাতকো ন বেগাংশচ ধারয়েম শ্যীত চ। শীলাস্থ ম প্রশেষ কামিনীরং পিবেয়ুছাঃ

বিরেচক ঔষধ পান করিয়া চক্ষ্য শাতল জলে দেটি কবত কোন সুগন্ধি জব্যের আপ্রাণ লইবে; পুন্পুন্: ভাষ্ট্ল চর্মণ করিবে; নির্বাতস্থানে অব্স্থিতি কবিবে। বাছের বেগ উপস্থিত হইলে বেগ ধারণ করিবে না, শমন করিয়া থাকিবে না, কদাচ শীতল জল স্পর্শ করিবে না, পুন্:পুন: স্বযুক্ত ভল পান করিবে।

হর্নিবিজ্ঞ নাভেপ্ত জনতা বুদ্দিশুলর ব্।
পুরীববাতসঙ্গত কথুমঞ্জলগোরবন্।
বিদাহোতর বিরাধানং অমশ্রুদিশত নামতে।
তৎ পূনং পাচনৈং মেহৈং পজ্জা স্নিধ্বক রেচয়েও।
তেনাজ্যোপদ্রবা বাস্তি লীপ্তোহয়িল ঘূতা ভবেও।
বিরেকস্তাতি যোগেন মুর্জা অংশো গুলক চ ।
শূলং কফাতিবোগং জান্মাংস্থাবনসন্মিন্ধন্।
মেদোনিতং জলাভাসং রক্তং বাপি বিনিচাতে।
তক্ত শাতাম্বৃতিং সিক্রা শারীরং তঞ্লামুভিং।
মধুনিশ্রৈজ্ঞা শীতেং কারয়েদ্ ব্যন্থ মৃত্ব।
সংকারহচং কক্ষো দিয়া সৌবীরকেণ বা।
পিটো নাভিজ্ঞলেপন হন্তাতীসারমুক্থন্।
আলক্ষারং রমং বাপি বৈশ্বিরং হারিণং ভবা।
শালিভিং বাইকৈং শ্বরং মুর্নের্থাপি ভোক্তমেং।
শিতিং সংগ্রেকিটিয়াং কুর্যাৎ সংগ্রহণ ভিষক।

বিরেওনজিয়া স্মাক্রপে সম্পাদিত না হইবে নাজিদেশের শুক্তা, কুক্লিদেশে শূলবং বেদনা, মল ও বায়ুর বিবন্ধতা, গাতো কণ্ণ ও

মণ্ডলাকাবচিম্লোৎপত্তি, দেহের গুরুতা, দাহ, আহারে অক্লচি, উদ্বাধান, ভ্রম ও বমি উপ-স্থিত হয়। এরপ স্থানে স্নিগ্ধ পাচন দেবন করাইয়া দোষের পরিপাক করত পুনর্কার তাহার বিরেচন করাইবে। ইহাতে উপদ্ৰব সকলের শান্তি, অগ্নির দীপ্তি ও দেহের লঘুতা আধিক পরিমাণে বি:েচন হইলে মুচ্ছা, গুদল্লংশ, উদরে শুলবং বেংনা ও অভি-শয় কফ্নিঃসর্গ হয় এবং মাংস্থাবন-জ্ঞলবং বা মেদোনিভ অথবা ভবাজলসদশ কিংবা রক্ত ভেদ হইতে থাকে। এরপ অবস্থা উপস্থিত হইলে শীতল জলে রোগির শরীর সিক্ত করত মধুমিশ্রিভ শাতল তওুলোদক পান করাইয়া মৃত্ব বমন করাইবে এবং আমের ছাল, দিধি বা সৌবীরকে বার্টিয়া নাজিতে প্রলেপ দিবে; তাহাতে উত্র অতিদার নিবৃদ্ধ হইবে। পণ্যার্থ— ছাগছম কিংৰ: ভিতির, বটের ও চকে।র প্রভাতি বিদিন পশ্চিম বা হবিপের মাংসের যুষ্ মস্তর কলায়ের যুস, শাল ও ষ্ট্রিক তণ্ণুলের অন্ন বাবস্থা করিবে এবং সলসংখ্রাহি পাতবীয়া দ্রা প্রয়োগ ছারা ভেদ নিবারণ করিবে।

লাগনে মনসজ্ঞান্তলামং গতেহনিলে।
স্বিরিক্তং নরং জ্ঞাতা পাচনং পারয়েরিশি ॥
ইন্দ্রিরাণাং বলং ধূদ্ধে প্রসাদো বহিদীপনম্।
থাতুইর্থাং বরংছৈয়াং ভবেদ রেচনদেবণাৎ ॥
প্রবাত্তনবাং শীতার্ মেহাজ্যকমনীর্শতাম্।
বায়ামং মৈপুনকৈব ন দেবতে বিরেচিতঃ ॥
শালিবিষ্টিকম্নগাজৈর্ঘবাগৃং ভোজয়েব কৃতাম্।
জ্জ্বালবিদ্রাণাং বা রুসৈঃ শাল্যোদনং হিতম্ ॥
বিরেকাত্তীবধে পীতে সমাগ্রো ন বিরিচাতে।
পিবেক্কার্না তর সৈক্বং দোষণান্তয়ে ॥

দেহের লুলুলা, মনের প্রাক্স্প্রালা ও বায়ুর অন্ধ্যান হইলে বুঝিবে যে বিরেচন ক্রিয়া সমাক্ সম্পাদিত হইয়াছে। এবং সমাক্ বিরেচন হইলে রাত্রিকালে সেই বিরেচিত ব্যক্তিকে পাচক ঔষণ সেবন করিতে দিবে। বিরেচন সেবনে ইক্রির সকলের বল, বৃদ্ধিন নিশ্বলতা, অগ্নির দীপ্তি, ধাতুর স্থিরতা ও বরসের স্থের হইয়া থাকে। বিরেচিত ব্যক্তির প্রবাত নেবন, শীতল জলপান, তৈলাদি মর্দ্দন, তৃপাচা দ্রবা ভোজন, ব্যায়াম ও মৈথুন সেবন করা কর্ত্তব্য নহে। শালি ষষ্টিক ও মুল্গাদি শ্বারা ঘরাগু প্রস্তুত্ত করিয়া বিরেচিত ব্যক্তিকে ভোজন করিছে দিবে। ভাহার পাক্ষে হা গাদি জ্বাল প্রস্তুত্ত করিয়া বিজেচির পাক্ষ্য মাংস্কৃত্রর ও লাব-ভিত্তিরাদি বিজির পাক্ষ্য মাংস্কৃত্রর সহিত শালিতগুলের অয়ও হিতকারী। বিরেচক ঔষধ সেবন করিয়া যদি সমাক্ বিরেচন না হয়, তাহা হইলে দোষশান্তির নিমিত্ত উষ্ণ জ্বের সহিত সৈদ্ধব প্রবণ পান করাইরে।

অথাতে বস্তিবিধিনধায়ে

বাখাদামেঃ।

বাতোৰণেৰু নে'বেষু বাতে বা বান্তার্যাতে। উপক্রমাণাং সন্বেষাং সোহগ্রহীন্থিবিধক সং॥ নিরহোহরাসনো বন্তিক্তরন্তেন স'ধ্যেৎ। শুলানাহ্যুড়্মীহ-শুদ্ধাতীসারশূলিন।॥ ক্রীপ্ররেপ্রতিস্থায়-শুক্রানিসমল্যহ'ন্। ব্যাহারীরজোন'শান্ দারণাংশ্চানিলাময়'ন্॥

অতঃপর আমরা বন্তিবিধি নামক অধ্যান্ত্র
বাংশা কবিব। বাতোহণ দেয়ে বা কেবল
বাতে বন্তি ক্রিয়া প্রয়োজ্য। যত প্রকার
চিকিৎসা আছে তর্মনে বন্তি প্রধানতম।
বন্তি ত্রিবিদ ; যথা—নিরহ, অঘাসন (অমুবাসন) ও উত্তরবন্তি। শুলা, আনাহ, গুড়বাত,
প্রীহা, অতিসাব, শুল, জীর্ণজ্ঞর, প্রতিশ্রায়,
তক্রবিবদ্ধ, অধাবায়ুব রোদ, মলবর্জা, ব্রদ্ধ,
অশ্বরী, রজোনাশ এবং অতি দারণ বাতজ্জ বোগ দকল, বন্তি ধারা সাধিত হয়। ক্যান্ত্র
বারা বন্তিপ্রয়োগ ক্রাকে নিরহণ ও মেহখানা
বন্তি প্রয়োগকে অমুবাসন বলে। বন্তি যথন উত্তরমার্গ অর্থাৎ বিঙ্গাদি দারা প্রযোজ্য হয়, তথন তাহাকে উত্তরবন্তি কহে।

আনাত্রপোত্রতিরিশ্ধঃ ক্ষতোরবো ভূশং কুশঃ। আনাতিসারী ব্রিমান্ সংস্কার দত্র বন্ধ। কাসখাস প্রহার্থনী-হিকাগ্রানারবিচন । শূনপায়ু, কৃত্রেবো বদ্ধচ্ছিদ্রদকোদরী। কুলী চ মধুমেহী চ মাসান্ সপ্ত চ গভিণী॥

উরংক্ষত, আমাতিসার, বমি, কাস, খাস, প্রমেহ, অর্শঃ, হিকা, আগ্নান, মলক্ষর, বন্ধোদর, ছিন্দোদর, দকোদর, কুঠ ও মধুমেহ এই সকল রোগাক্রাস্ত ব্যক্তি, এবং অতিস্পিপ্ধ, অতিক্রশ, কতাহার, বমন-বিরেচনাদি ছারা সংগুদ্ধ দেহ ব্যক্তি, ধাহাকে নতা প্রদত্ত হইয়াছে এবং ঘাহার গুহুদেশে শোও হইয়াছে, সেই সকল ব্যক্তি এবং সাত মাস গর্ভিণী স্ত্রী, ইতার: অত্যন্ত্রাস্থ্র অর্থাৎ নিরহক্রিয়ার অ্যোগা। নিরহণের অত্য নাম—আত্থাপন।

আছাগ্যা এব চায়ান্ত। বিশেষাদ্যিবক্য ।
রাক্ষাঃ কেবলবাতান্ত্রী নাজবান্তান্ত এব চা।
বে নাছাগ্যান্ত্রা পাতু-কাক্ষায়েবলীন্যা ।
নির্প্লাধবিড ভেদি-গুৰুবকাস্তবকাশ দ্যান ।
অভিনানিকুবস্তুত-বিনিকেড চানবিংডা ।
পিতে বিসে গ্রেডপচ্যা প্রাণ্ড গ্রাহানিতান ।

শাহার। নির্নাহের ব্রোন্ত ভাহারটে মন্ত্রবাসনের (মহব্যস্তর) উপস্তর কিছ বাহার
মত্যায়, ফুক বা কেবল বাতরোগার্ড, ভাহারা
বিশেষরূপে অন্তবাসনেরই উপরক্ত। আর
যাহারা নির্নাহের মুযোগা, স্ত্ররাং তাহারাই
মন্ত্রাসনের অন্তপস্কু, ভাছির পাড়, কামলা,
মেহ, পানস, নির্নাহা, প্রাহা, মল্ভো, গুককোহতা, কফোলর, মহিরাল, কাশা, স্থেলা,
ক্রিমিকোইতা, আল্রবাত, অপ্রচা, শ্লীপদ ও
গলগণ্ড বোগাক্রান্ত ব্যক্তিরাপ্ত অন্থ্রাসনের
মুযোগা এবং বিব বা সংযোগাদিজ বিষপায়ী
বাজিকাপ্তঃ অন্তবাসনাহ নহে।

তয়োপ্ত নেত্রং হেমাদি-ধাতুদার্কস্থিবেপুজম্। গোপুচ্ছাকারমচ্ছিত্রং গ্রন্থক্তপুত্রনিকামুখম্ । নির্মাহ ও অমুবাসনের নেত্র (নল), স্বর্ণাদি ধাতু, কান্ঠ, অস্থি বা বাল স্বারা নির্মিত হয়। ইহার আকার গোপুছের ন্তায় ক্রমণঃ সক্ষ, কোমল, ঋজু ও গুলিকাসদৃশ মুখ বিশিষ্ট এবং নেত্রের গাত্র ছিদ্ররহিত। ইহা স্বারা ক্রেহ ককাদি গুছে নীত হয় বলিয়া ইহাকে নেত্র (নল) কহিয়া থাকে।

উনেহকে পঞ্চ পূৰ্ণহক্ষিপ্পাসন্ত জ্যাহকুলানি বট । সপ্তমে সপ্ত তাজ্ঞতীে ছাদদে বোড়দে নব । ছাদদৈব পরং বিংশাদ্ বীক্যা বৰ্ষান্তরেষ্ট । বয়োবলশ্বীরাণি প্রমাণম্ভিবর্দ্ধেই ॥

বয়য়, এক বৎসর পূর্ণ ন। হইলে নেত্রের দৈর্ঘা পাঁচি অঙ্গুলি, ছয় বৎসর হইলে ছয় অঙ্গুলি, মাত বংসর হইলে ছয় অঙ্গুলি, মাত বংসর হইলে ছয় বংসর হইলে মাত অঙ্গুলি; ধোল বংসর হইলে নয় অঙ্গুলি এবং কুছি বংসরের পর হইতে ছাদ্ধ অঙ্গুলি। কিন্তু বয়সেব মে মৌমায় নেত্রের দৈয়ে,পরিমাণ নিদ্দিই হইল, ভাহা যে একবারেই বাদ্ধিত হহরে এরূপ নহে, বয়ান্তরে বিবেচনা করিয়:কুয়্ধার্ণ নেত্রের দৈর্ঘা করের বিবেচনা করিয়:কুয়্ধার্ণ বয়স বল ও শরীরের প্রতি লক্ষ্ণ রাণা কর্ত্রিয়া। নেত্রণ পরিমাণ হলে যে অঙ্গুলির উয়েথ করা হইয়াছে ভাহা আতুরের । অঙ্গুলি-পরিমাণ বুঝিতে হইরে।

স্থাসুঠেন সমং মূলে ছোলোনাগে কনিওয়া॥

নেত্রের মূলভাণের স্থলতা, আতুরের অঙ্গুড়ত্ন্য এবং অগ্রভাগের স্তোল্য কনিষ্ঠস্থলি সংশ্। অথবা নিয়লিখিত পরিমাণেও নেত্র-স্থোল্য হটয়া থাকে।

পূর্ণেরস্থেন্সাদার ভদরাজপ্রবাদিতন্। আঙ্কুলং পরন্থ ছিড়াং মূলেইগ্রে বহুতে তু যথ। মূলাং নামং কলায়েক রিশ্লাং কর্মন্ত ক্রমাৎ॥

এক্ষণে ছিদ্র দারা নেতের স্থোলাপরিমাণ কৃথিত হইতেছে। বয়স এক বৎসর পূর্ণ হইলে নেত্রের মূলদেশের ছিদ্র এক অঙ্গুলি হইবে এবং ক্রমে বয়োবৃদ্ধি অমুসারে সিকি পরিমাণে বৃদ্ধিত হইয়া তিন অঙ্গুলি পর্যান্ত হুইবে, অৰ্থাং প্ৰথম বৰ্ষ হুইতে ছয় বৰ্ষ প্ৰয়ান্ত এক অঙ্গুলি, সপ্তম বর্ষ হইতে একাদশ ব্য প্রায় ১০ অঙ্গুলি, ছাদশ ব্য হৃহতে পঞ্চদশ বৰ্ষ পৰ্য্যন্ত ১॥০ অঙ্গুলি, ষোড়ণ বৰ্ষে ১৬০ অঙ্গুলি, সপ্তাদশ বৰ্ষে ২ অঙ্গুলি, অষ্ট্ৰাদশ বৰ্ষে ২া০ অঙ্গুলি, উনবিংশ বর্নে ২॥০ অঙ্গুলি, বিংশতি বর্ষে ২৸৽ অঙ্গুলি এবং একবিংশতি বর্গ হইকে ও অন্ধুলি হইবে। মূলদেশের ছিত্র ০ অজুলিব অধিক হঠাবে না। আর অগ্র-ভাগের ছিদ্র, মৃগ্র, মাধ্য, মটব্য, সিদ্ধ মটব্য ও কল পরিমিত ২টাবে অর্থাং এথম বর্ণ হইতে ছর বর্গ প্রান্ত মুলাবাহী, সপ্তম বর্গ হইতে একাদশ বৰ্গ পৰ্যান্ত মাঘবাহী, ছাদশবৰ্ষ হটতে পঞ্চদশ বর্গ প্রত্তে ম্ট্রবাহী, সোড়ণ বর্গ হইতে বিংশতি বৰ্ণ প্ৰয়ন্ত সিদ্ধ বাহী এবং একবিংশতি বৰ্ষ হটতে কুলবাহী इन्देश ।

মূল ভিলপ্রনাধেন প্রাধ্য ঘটিতক্ষিকন্।
বঙাালো পিটি হং মূলে এখাখাং দ্বাঙ্গুলাজ্ঞবন্।
কাষিকাদ্বিজাং মেনে ব্যাধে হান চ্যোভারেও।
অঞ্জাবিনহিষ্যালানা, বাজা জঙালিও দুচ্দ্।
কাষ্য্যবিজ্ঞানিকি চাজি ভালিও হান্য।
এথিতং সাধু স্তেল স্থসংস্থাপাতেবজন্।

বন্ধি: নেত্র গুহুনাড়ীতে অধিক প্রবিষ্ট না হয়, এইজন্ম প্রান্তভাগে ছত্রাকার একটি কর্নিকা নিবন্ধ থাকে, এবং আঘাত-নিবারণার্থ নেত্রাগ্র, স্তরবন্তি দ্বাবা বেষ্টিত করিতে হয়। বন্ধিপুট-রোজনার্থ নেত্রের মূলদেশেও হুই অঙ্গুল অন্তর আর হুইটি কর্নিকা নিবিষ্ট করিবে। সেই কর্নিকাসক্ত যে ছাগ মেষ মহিষাদির বন্ধি (মূত্রাশয়), তাহা হত্ত দারা উত্তমরূপ বাধিয়া রাখিবে যেন নেত্রে উষধ চালিলে সেই উষধ অনায়াসে বন্ধি মন্যে গিয়া পড়ে; কাঁক্ থাকিলে, উষধ পড়িয়া যাইতে

পারে। বৃদ্ধিং চথা হরী তকা। দির ক্যাস থার। রঞ্জিত ও জ্কুরুরেপে নর্কিত ক্রিবে। উহ মেন দৃত্, নিশ্চিন্তা, এতিরহিত এবং ছর্গন্ধ রহিত, শিলাবিহীল ও পাণ্লা হয়।

বস্তাভাবেৎক্ষণাক্ষ্য বা ভাষেষ্ট্ৰেইণবা ঘনৰ্ ॥

বস্তি। অভানে বনগান (ভাগ ও হারণা-দির অব্যবনিক্ষে) অথব ধনব্য (নোম-জাম। প্রান্ত নিবল্ড হয়।

নিজহমাতা প্রথমে গার্গে। বংসগাৎ পর্য। প্রকুপচন্দি প্রথম বাংশ সভ্রপ্তভাত বংলা প্রকৃতি নাম্যান্ত্র স্থানি কিলা চলা আন্তঃভানিক মান্যান্ত্র ক্রিটা প্রমূল

নিরংহর মার্চ্নপ্রস্থার ও প্রা কিন্তু
এক বংসরের লাল ব্য়স এইছো ২ গালের কম
মান্তা হলবে) এক বংসা হোসের পর বংসন্ত প্রতিবংসর ২ গ্রু করিলের কিন্তু হলব মান্তা প্রতিবংসর ২ গ্রু করিলের কিন্তু হলব মান্তা প্রালম্ভ বিজ্ঞান করিছে বিজ্ঞান করিলের স্থাতিকরের বিজ্ঞান করিক বিজ্ঞান বিজ্ঞান বিজ্ঞান বিজ্ঞান করিক বিজ্ঞান বিজ্ঞান বিজ্ঞান বিজ্ঞান বিজ্ঞান বিজ্ঞান করিক বিজ্ঞান বিজ্ঞান বিজ্ঞান বিজ্ঞান বিজ্ঞান করিক বিজ্ঞান ব

थवासभर निकरण विश्वास मा राज्यवासम्ब

সে যে ব্যব্দানককে, সেব্য মাজ নিন্দিষ্ঠ হইল, সেই দেই ব্যাস অনুব্যিনের মাজা ভাহার চতুৰ্থাংশ হইকে, অর্থার যে ব্যাস নিক্ষেত্র মাজা ১ পল হইকে, মেল নামে অনুবাসনের মাজা ১ ক্ষম অর্থার ২ ভাগ হলকে।

আছাপাং মেটি গা , বজং উদ্ধাং সন্ধানতং পুনা।
জন্মনাধ্য বিজ্ঞা চন্দ্ৰমেৰ কুৰানহাই ॥
শীতে বসতে চ নিবা আন্তৰী কেচিই তাছে হিন্তুলা।
জন্মতান্ত্ৰী চন্দ্ৰীত গ্ৰাহ্মীয়া হিন্তু লগু ॥
অধিধ্যক্ষমানিতং সানুগানিং ল্বাধি চ।
কৃতচংক্ৰমণাং মুক্তনবিশ্বতং শয়নে মুখে॥

নাত্যক্তিতে নাচোক্তীয়ে সংবিষ্ঠং বামপাৰ্যতঃ। সঙ্কোচা দক্ষিণং সক্ষি প্ৰসায়্য চ ততোহগরম্॥

আস্থাপা অর্থাৎ নিরহণার্হ ব্যক্তি মিগ্ধ-श्वित्र, रमनामि दाता १७%, वस्तवन '७ अस्वतामन-যোগা হইলে অগ্রেই অফুবাসন করিবে। কোন কোন আচাৰ্যা শীত ও বৈসন্ত ঋতুতে দিবাভাগে এবং শাত বদস্ত ভিন্ন অহা ঋতুতে রাত্রিকালে অমুবাদন করিতে বলেন (কিন্তু ধন্বস্তরি-মতাবলম্বী আচার্গেরো কোন শতুতেই রাত্রিকালে অন্তবাসন ইচ্ছা করেন না)। অমুবাসনের পুর্দের অভাঙ্গ, স্নান এবং পাদ্হীন (উচিত ভোজনের চতুর্থাংশ কম) লঘু হিত-জনক কিঞ্চিং লিগ্ধ কৃক্ষ ও সানুপান পান ভোজন, পদর্ভে ভ্রমণ ও মল-মুক্র-ত্যাগ এই সকল কার্যা সনাধানপূর্দ্দক, অনতি উচ্চ অনু-চ্ছীৰ্য সুখ্ৰয়ায় বামপদ প্ৰসাবিত ও তাহার উপরে দক্ষিণ পদ সম্ভুচিত করিয়া বাম পাথে শয়ন কবিবে।

অধান্ত নেজং গ্ৰেন্তৰ ফ্ৰিন্তে ক্ৰিন্ত্ৰণ গ্ৰাদ ।

ভাচছাত্ত বজেবদনে বজে হত্তনকম্পন্ন ॥

পূচবংশং প্ৰতি ভাচো নাতিক্ৰাহনিকাল্য হা ।

নাভিবেগং নাবা মন্দং সকুদেব প্ৰণিডিয়েই ।

সনিশেষক কুববীত বায়া শেষে হি তিষ্ঠতি ॥

তদনস্তর ঐ আতুরের গুছাদেশ তৈলাদি

শ্বারা স্বিশ্ব করিবে এবং বস্তির মুখে কুৎকার

দিয়া তাহাতে উঞ্চান বারু প্রবেশ করাইয়া

বন্ধন পূর্বক স্বিশ্বমুখ নেত্র গুহদেশে প্রয়োগ

করিবে। তৎপরে অনতি মন্দ ভাবে সকম্পিত

অনতি-বেগ ও অনতি মন্দ ভাবে সকম্পিত

হত্তে পৃষ্ঠবংশাভিমুখে একেবারে পীড়ন করিবে,

অর্থাৎ চুঁচিয়া লইগা ধাইবে। কিন্তু কিঞ্চিৎ

সেহ অবশিষ্ট রাশিবে, কারণ নেহের শেষ

থাকিলে ভাহাতে বায় গাকিবে।

দত্তে তৃত্ত'নদেহত পাণিনা ভাড়য়েৎ ক্মিচৌ। তৎপাধিতাং তথা শ্যাং পাদতশ্চ তিক্কৎক্মিণেৎ । মেহ প্রদান্ত হুইলে রোগিকে উত্তানভাবে শোয়াইয়া তাহার ফিক্ত্তমে হস্ত ও
রোগিন পার্ফিজ্ম তারা আবাত করিবে এবং
তাহার শ্যা পাদদেশ হুইতে তিনবার উৎক্ষেপ
করিবে।

ততঃ প্রসারিতাক্ষন্ত সোপাধানসা পাকিকে।
আহস্তামুষ্টিনাকণ স্নেহেনাভাজা মর্দ্ধরেৎ ।
বেদনার্দ্ধমিতি ক্রেহো নহি শীঘং নিবর্দ্ধতে।
যোজ্যঃ শীঘং নিব্যুত্তহক্তঃ স্নেহোহতিষ্ঠন্ ন কার্য্যকৃৎ ॥

তৎপরে উপাধান-মৃস্ত শিরস্ক এবং প্রসাবিতদেহ আতুরের পাফিদেশে মৃষ্টি হারা আঘাত করিবে ও তাহাব গাত্র শ্লেহাভাক্ত করিয়া মর্দ্দিন করিবে ও তাহাব গাত্র শ্লেহাভাক্ত করিয়া মর্দ্দিন করিবে থাকিবে। এরূপ করিবার কারণ এই, অঙ্গ বেদনার্ভ হটলে গ্লেহ শাত্র নহির্গত হটলে না। শ্লেহ শাত্র নিবৃত্ত হটলে, অপর শ্লেহ প্রয়োগ করা আবশ্রক; মেহেতু শ্লেহপদার্থ শরীরাভাস্তরে থাকিতে না পারিলে, অনবস্থান বশ্রু উহা শ্লেহনকার্য্যে সমর্থ হয় না।

দীপ্তাগ্নিস্থাগতক্ষেং সায়া**ছে ভো**জয়েলযু ॥

নির্ওমেহ ও দীপ্তাগ্নি ব্যক্তিকে সায়াকে লগু ভোজন করাইবে।

নিবৃত্তিকালঃ প্রমন্ত্রয়ো যামান্ততঃ প্রম্। অহোরাত্রমূপেকেত প্রতঃ ফলবর্ত্তিভিঃ॥ তীকৈপা বন্ধিভিঃ কুয়াদ যক্ষ প্রেহনিকৃত্যে॥

তিন প্রাহ্বর, স্নেহনিবৃত্তির চরম কাল, কিন্তু
তিন প্রাহরের মধ্যে স্নেহনিবৃত্তি না হুইলে স্নেহাকর্ম: বি জন্ম যত্র না করিয়া অহোরাত্র অপেক্ষা
করিবে এবং অহোরাত্রের পব অর্শন্চিকিংসোক্ত
ফলবর্তি অথবা বিত্তিকল্লোক্ত তীক্ষ্ণবৃত্তি প্রয়োগ
ছারা স্লেহাগ্যমনার্থ প্রযন্ত্র কাববে।

জ্বিরীক্ষাদনাগচ্ছন্ ন চেজ্ঞাড়াদিদোবকুৎ। উপেক্ষেত্তৈব হি তভোহধাষিত্রণ নিশাং পিবেৎ। প্রাতনাগরধান্তাল্ডঃ কোফং কেবলেনেব বা।। আতিক ক্ষতাহেতু সেহ নিগত না হইয়া যদি জাড়াও অগ্নিমান্দানি দোষ উপস্থিত না করে, তাহা হইলে উহা নিক্ষাপনের জন্ম যত্র না করিয়া রাজিতে অনাহারে থাকিয়া প্রাদিন প্রাত্তকালে ভাঠ ও ধনের ঈষত্ব হাথ অথবা কেবল উষ্ণ গ্রান করিবে।

অবাসয়েৎ তৃতীয়েংকি পঞ্চম বা পুনন্চ ভষ্। বধা বা বেহপক্তিঃ জাদতোংত্যুৰ্বমাস্কতান্॥ বাায়ামনিত্যান্ দীপ্ৰ'গীন কক্ষাশ্চ প্ৰতিবাসরম্॥

সেই আতুরকে তৃতীয় বা পঞ্ম দিবদে প্রকায় অম্বাদন করিবে। অথবা পাচকাগ্নি বৃথিয়া যতদিনে তাহার সেহপাক হয়, তৃতদিন পরে অম্বাদন প্রয়োগ করিবে। অত্যাধন বাতবিশিষ্ট, ব্যায়ামনীল, দীঝাগ্নি ও রুক্ষবাতু ব্যক্তিদিগের পক্ষে প্রতিদিন অনুবাদন কর্ত্তবা।

ইতি শ্বেহৈস্কিচতুরৈঃ শ্বিংগ্ধ প্রোতে¦বিশুদ্ধয়ে। নিরুহং শোধনং যুঞ্জাদ্মিগ্ধে শ্বেহনং তনোঃ॥

পূর্কোক্ত প্রকারে তিন চারি বার স্নেহবন্তি (অনুবাসন) প্রয়োগ দারা দারীর স্নিগ্ধ হইলে প্রোত্তি দির নিমিত্ত শোধন নিরাহ প্রয়োগ করিবে। কিন্তু স্নিগ্ধ না হইলে শরীরের স্নেহন প্রয়োগ করা করিব।

পঞ্চেংশ ভূতারে বা দিবদে সাধকে শুভে।
মধ্যানে কিঞ্চিদাবৃত্তে প্রযুক্ত বলিমঙ্গলে ॥
অজ্যান্তবেদিতোৎস্ট-মলং নাতিবুভূকিতম্।
অবেক্ষ্য পুঞ্বং দোব-ভেষজাদানি চাদরং।
বন্তিং প্রকল্পয়েইদ্বন্তবিক্তিই সহ্॥

তন্ত্বাদনানন্তর তৃতীয় বা পঞ্চম দ্বিদে,
কিঞ্চিনতিক্রান্ত মধ্যাহ্ণ সময়ে, শুভ পুষ্যানক্ষত্রে
স্বস্ত্যরনাদি মাঙ্গালিক ক্রিয়া করণানন্তব দোঘ,
ঔষধ, সাত্র্যা ও বলাদি বিবেচন। এবং বৈত্বকশাস্ত্রজ্ঞ বহু চিকিৎসকের সহিত প্রাম্শ করিয়া
যত্নপূর্ত্বক স্বেহাভাক, স্বেদিত, ভাক্তমলমূত্র ও
কিঞ্চিৎ বৃভূক্ষিত ব্যক্তিকে ব্যন্তি (নিরহ)
প্রদান করিবে।

কাৰ্য়েবিংশতিপলং দ্ৰব্যস্তাষ্ট্ৰে কলানি চা

বস্তিকজোক্ত জব্যেন বিংশতি পল এবং আটটি মননকল ১৬ গুণ জলে সিদ্ধ করিয়া চতুর্থাংশ অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে এবং মেই কাথ স্থারা নিক্তব কলনা ক্তিবে।

তত কাপাচ্ছতুৰিংশং স্বেহং নতে প্ৰকল্পের। পিত্তে ব্যক্তে চ বঠাংশ্যন্ত্ৰনাংশং ক্যান্ত্ৰিক ॥

বাতাবিকো কাথের সহিত চতুগাংশ স্নেহ,
পিতাধিকো এবং স্বস্থাবস্থার ষ্টাংশ, ককাবিকো অন্তমংশ স্নেহ প্রান্থা কবিবে।
নিরহের পরিমাণ সম্প্রক্ত ২৮ পতা; অতএব
বাতে ৬ পলা; পিতে ও স্বস্থে ৪ প্রান্থা কক্ষে
০ পল সেহ প্রান্তা হট্যা থাকে।

সকলে চাষ্ট্ৰমং ভাগিং কন্ধান্ত তাতি বা যথা। মাত্ৰাজসান্তা কন্ধেঃ প্ৰমাত্ৰ- গুড়স্ক চা ॥ মধুপত্ৰীলিশেষক যুক্তা সৰ্কাং তদেকতঃ। উদ্ধান্তৰ ছবিশেশৰ তপ্ত-ৰজসমতে তথ্য।

কি বাহনিক্যে, কি পিতানিক্যে, কি
কফাধিকো, কি সংগ্রহত, সর্বদাই কল্পের
পরিমাণ অন্তমাংশ অর্থাং ওপল হইবে, অথবা
এরূপ কল্প কল্পনা করিবে, যাহাতে বস্তির অতি
তলতা বা অতি গাড়তা নাহয়। গুড়ের
পরিমাণ ১পল এবং মধু সৈন্ধবাদির (মাংসরস স্থা ছাগমুগ ছগ্ধ ও কাঞ্জক প্রভৃতির)
পরেমাণ বুত্ত অন্তমারে কল্পনা করিবে।
তংপাে বাস্তক্তনার্থ সমস্ত দ্রবা একতা করিয়া
অত্যাধ্য জলবিশেষ্ট কল্পার বাজ্প ধারা উহা
তপ্ত করিয়া হাতা ধাবা আলোড়িত করিবে।

প্রকিপা বজে প্রণয়েৎ প'রৌ নাড়াফণীওলম্। নাতিমিধ্বং ন বা রক্তং নাতিতীক্তং ন বা মৃত্র ॥ নাডাজ্ছসাঞ্জং নোনাট্যাক্তং নাপটু নাতি চ। লবণং তদ্বয়েও প্রতিজ্ঞে তু ত্দিকঃ॥

তদনস্থর নাড়াফ, নাতিমাতল, নাতিমিগ্ন, নাতিকক, নাতিতীক্ষ, নাতিম্ছ, নাতিতরল, নাতিগাঢ়, অন্ন, অনতিমাত, নাল্বণ, অন্তিবকা, নান্য ও নাত্ত ধেটা রাপ **বস্তিতে**পূরিয়া বস্তিনেত্র শুহলেশ প্রয়োগ কবিবে।
বস্তিবিং অপার পাঞ্জিরে নিম্নির বরপে মাত্রা
কল্পনা করেন। ব্যাল

মাজাণ বিশ্বিকাণ এটা বিধেন ক্ষিক্ষেট পুৰক্। কৰ্মজন মাধিনত্ত কাজ নাতে জ্যান্ত সকলে পাণ পেলালন তালনা কৰেছে। মাজিক জ্যাপ কেন্ত্ৰ তাল ক্ষিত্ৰ চন্দ্ৰ । আনগোত নিবনালন তালে ক্ষিত্ৰ দ

ারহ্ প্রযু পার লাপ্রমাণ ও পলা, বিষয়র কার্ম হিন্দ্র লাপ্রমাণ হ প্রা এবং মাণ্য ছবল্য লাপ্না লাকার ২০ পলা। এফাল নিবল লাক্ষ্য সংযোজনাবির বিল্লাল লাক্ষ্য এই স্থান এই চাইলার একটি পালে লগুল লাল্য এই চাইলার কর্ম একটি পালে লগুল লাল্য এই করিব। লাক্ষ্য এই করিব জালা মিলির ক্রিবে। লাক্ষ্য লাক্ষ্য সংযোজন মাণ্য জন্য স্ক্রাপ্রমাণ লাল্য স্বিধা নিক্তের স্মাক্ট উপ্রোধি কর্ম।

ন্ত্ৰত্বা সম্ভৱতিক জ্ব ৮০ এ ৩খন, সংগ্ৰহ ক্ৰিছেপ্ৰ নামিত ৮০ ৮ টো বেটিক তেওঁ ১০

নিক্ষত প্রাধান নার নার উন্তানশারী, ভারনা নিক্ষাবার নার নার জিল্পত তথাল হ্বার প্রকারে কারে র উপ্রেভ তথাল ভিরক্টক (ডিবু) তথা ন্বাভাগে ক্রিবে !

জ্ঞানতে প্ৰয়ন কৰা ভূৱাৰ স্বাচৰে প্ৰস্কা ভাৱাৰকোহিকা বেং-জনান্ত্ৰ নিজ্ঞান ছবিত বিহায়েলে, কোনোকাজা জ্ঞান্ত্ৰ বিজ্ঞান মান্ত্ৰিক কাজান আন্তৰ্ভিত

প্রত্থে পাত কাল এক নৃষ্ঠ। মুহ-ক্রে লেন নিজত আন্তার না হইলে সূত্র হুইবাল স্প্রতিক । আন্তার বাল্য ক্রেই ক্ষাবি (ব্রকানিন) সন্তি ও কাল্ডকাদি ছাবা প্রকল্পিত মিগ্লামন ভিলাবীয়া উষ্পত্প ও অন্ত-লোমকারী অন্তানিজহ বা সদন্দশব্দুক্ত ফলবর্ত্তি প্রয়োগ এবং স্বেনক্রিয়া ও ভন্নপ্রদর্শনাদি উপস্থুক্ত কার্য্য সকল করিবে।

সম্মেন নিবৃত্তে তু বিতীয়ো ্ভিরিষ্যতে। তৃতীয়োহপি চতুর্থোহলি যাব্যা সনিক্তা।

উপস্থৃতি ফলবলি এয়োগাদি যত্ন বাভিরেকে যদি নিরাহ স্বয়ং প্রত্যাগত হয়, কিন্তু নিরাহ প্রয়োগের ফল সমাগ্রুপ প্রাপ্ত হওয়া না যায়, তাহা হইলে দিতীয় তৃতীয় বা চতুর্থ বস্তি প্রয়োগ কলিবে, অথবান্য পর্যান্ত না ফলিরাত হয়, সে পর্যান্ত বন্তি এয়োগ কলা কর্ত্তা বিশ্ব ফলবলি-প্রদান্যান মন্তিবেশ্য দাল মুদ্দি নিরাহ নিস্ত হয়, তাহা হইলে হাল ব্যন্তি প্রয়োগ বিশেষ নহে।

বিত্রিক্তবচ্চ যোগাদান্ বিজ্ঞান্ যোগে ভূ যোজয়েং। কোদেন বারিণা আতং ভুলু ধ্ববদৌননম।

নিরহে বিরিক্তবং থ্যাণাদি আন্নিরে।
নিরহ্যোগ স্থাক্ কৃত হইলে, রোগিকে ঈ্ষত্যুষ্ট জলে: সান করাইয়া অগন ডাঙ্গল্মাংসরসের সহিত আর ভোজন করাইরে। (বাত্বিকার-প্রশানাথই প্রায় নিরহ এথাজে হইছা থাকে, আত্রব নিরহের প্র বাত্রিকারোপ্যোগাঁ মাংসরসের সহিত অয়ই সুপ্রা)।

বিকারা যে নিবছত ভব্ছি এচলৈন লৈ। তে হুগোলাস্মিজত যাত্তি ভুজবতা শুম্ম ॥

নির্ক্ত থারা মল (দোষ) অতি প্রচলিত হওয়তে বে সকল কাণি উৎপন্ন হয়, ঈষত্বক জলে মান ও মাংদানস্কু অন ভৌজন থারা ভাহারা শমতা গাপ্ত হঠনা গাকে। অভএব ভাহা অবশ্য করিব।

অথ বাতাৰ্দ্দিতং ভূষ্য সন্তা এবানুবাসয়েৎ॥

নির্কানন্তর বাতপী,ড়ত নাজিকে সন্তই অনুবাদন করাইবে।

নম্য হীনভিযোগাশ্চ ভক্ত হাং বেংগীতবং ॥ ক্ষেহপানেব ভার অহুবাদনেরও সম্যুগ্

ক্ষেহ্পানের স্থায় অন্ত্রাদনেরও সম্যুগ যোগ, হীনযোগ ও অভিযোগ হইয়া থাকে। কিঞ্ছিৎকালং স্থিতো যশ্চ সপুরীয়ে। নিবর্ততে। সানুলোমানিলঃ শ্বেহস্তৎসিদ্ধমনুনাসনম্॥

যে অমুবাসনের প্রেষ্ঠ, কোঠা ভাস্তরে কিঞ্চিৎ কাল অবস্থিত হইয়াই মলের সহিত নির্নত হয় এবং যাহাতে বাণু অমুলোমগ হইয়া থাকে, তাহাই নিদ্ধ অর্থাৎ সমগে ্যোগ-লক্ষণ অমুবাসন।

এক জীন বা বলাদে ভূ মেগ্রন্তীন্ প্রকল্পেং। পঞ্চ বা সপ্ত বা পিকে নবৈকাদশ বানিলে। প্রনন্ততোগগুলুগাল্য পুনরাস্থাপনং ততঃ॥

কফজ রোগে এক বা তিন, পিওজ রোগে পাঁচ বা সাত, বাতজ রোগে নয় বা এগারটী স্লেহবান্ত (অনুবাসন) প্রয়োগ করিবে। কিন্তু ইছার অধিকও অব্যা অনুবাসন প্রয়োগ করা বায়। অনুবাসনের পা পুনক্ষার আন্তঃ-গন (নিক্স দিবে।

কালপিড়া নিরেপরা যুসক্ষীবরাস্থ কুমার

নির্কাশের পর। বের্লিকে কল পিত ও ব্যব অ. ক্রান্সালে যথাক্রমে স্ম হথা ও মাংস্বসের স্থিত অন ভোজন করাইলে অর্থাং কফ্রানিকে। মুল্যালি স্থের সহিত, পিত্রাবিক্যে ছুগ্নো সহিত ও বাত্রানিক্যে মাংস-রসের সহিত অন ভিজন ক্রিত দিবে।

বা তল্পৌধধনি কাথ্সির তাইসকলৈ মৃতিঃ। বস্তিরেকোহনিলে কিগঃ স্বাহমে ধনুসমানিতঃ ।

বাতবিষয়ে তেউড়া ও সেন্ধবসূক্ত এবং ভেলাদি ছালা পিশ্ব ও সাধামাকলসায়িত, নাতম দশমূলাদিন কাথ ছালা এক বাস্ত (নিক্রছ) প্রযোজ্য ।

ন্ত্রোধাদিগণ কাণে) পল্লকাদিসিতামূতে। পিজে অভিনেই সাজ্জ-কারেকুবসমান্দিকেই।

পিত বিষয়ে তুই ব্যি হিতকর, হার্থ। পদক। দিগণের কর এবং রত তুগ্ধ ইক্ষুরস মধু ও চিনিষ্ক্ত মধুব ও শীতবীর্যা ক্তাঞোধাদিগণের কাপ দারা তুই বস্তি (নির্হ) প্রয়োজ্য।

আরথধাদিনিঃকাথ-বংসকাদিসূতান্তরঃ। ক্লকাঃ সক্ষোদ্রভাতিকাংশক টুকাঃ ককে॥

কফ বিষয়ে ব্লক্ষ, তীক্ষ ও উষ্ণবীর্যা তিন বস্তি হিতজনক। অর্থাং বংসকাদি কল্প এবং মধু ও গোমূত্র সূক্তা, আরথবাদির কটু কাথ ধারা তিন বস্তি (নিরহ) ব্যবস্থের।

ত্রয়ণ্ট সরিপাতেইপি দোধান ছব্তি যতঃ ক্রমাৎ ॥

সলিপাতেও তিন ব্জি হিতকর। থেছে চু তিন ব্জি ছার: বথাক্রেমে বাহাদি তিন দোষ প্রশাসত হয়।

বিভাঃ পর॰ ব্রিমতো নেচ্ছত্যন্তে চিকিৎসকাং। ন তি দোষশচতুর্থেতিত পুনদীয়েত য়ং প্রতি॥

অপর চিকিৎসকগণ ভিনের অধিক বস্তি
ইছে। করেন না। তাঁহারা বলেন যে, যথন
বাা পিও ও কফ এই তিন দোধ ভিন্ন অন্ত
চতুর্গ দোশ নাই, তথন কাহার প্রতি লক্ষা
করিয়া চতুর্থ বস্তি প্রয়েজা হইরে পূ

ডবরেশনং ও দ্ধিকরং দেশেগাংশ শ্রনং এমার। ত্রিবে কল্পয়েল তিনিভাতেতিপ প্রচল্পতে গ

অন্য ব্ৰেষ্টাও ব্ৰেন, দোষের উংক্লেশন (স্বস্থান হুইতে চালন), শোধন ও শুমন, এই ত্ৰিবিধ বস্তিই কল্পনা কভিবে।

সমাঙ্নিকহলিকন্ত নাসস্ভাব্য নিবর্তমেৎ ॥

প্রস্থারের মত। সমাক্ নিরহ লক্ষণ যে প্রাপ্ত না উপাস্থিত হয়, সেই পর্যাপ্ত নির্ব্ত হইবে না, অর্থাং তদব্দি ব্লিপ্রায়েগ কারবে।

প্রাক্ হেছ একঃ পঞ্চার ছাদশাস্থাপনানি চ। সংবাসনান কল্মেবং বস্তঃপ্রিপেনীর হাঃ॥ কালঃ পঞ্চলৈকোহ এ প্রাক্ত হেছেও এইস্তপা। মট্ট পঞ্চলাস্তান্তি। যোগোহটো বস্তরে ১ এ তু॥ ব্যোনিকাং । কেহাল্চ গ্রেহাবাস্ত্রে ক্রেটিং

একণে কথা, কাল ও গোগাখা বাস্তাবিশেষ বলা বাইতেছে। প্রথমে এক ও অস্তে (পঞ্চ-কথাবসানে) পাঁচ স্বেহবন্তি এবং ধানশ নিরূহ ও ধানশ অনুবাসন এই প্রকার ত্রিংশং বাস্ত, কর্ম নামে কথিত। প্রথমে এক ও অন্তে তিন সেহবৃত্তি এবং পাঁচ নিরহ ছারা অন্তরিত ছার সেহবৃত্তি এই প্রকাশ পঞ্চদশ বৃত্তি, কাল বৃলিয়া উন্তে। তিন নিরহ ও তিন সেহ বৃত্তি এবং আভ্যন্ত হুই সেহবৃত্তি, এই প্রকার আট বৃত্তি, মোণ নামে অভিহিন।

(এই অগ ই স্পার্থ কবিয়া বল, ষাইতেছে। ব্স্তি বিশ্বিণ , ২০৮ -কথাব্যস্তি, কলিব্স্তি ও ্যাগ্রাস্ত। কম্মুবস্তি বিশ্রট, কালবস্তি প্ররটি রেও যোগবান্তি আচেটি। কর্মাবান্তর প্রায়োগ-বিধি— প্রথমে একটি স্নেহবস্তি, ভংগবে পর্যায়-ক্রুম একটি নিরহ ও একটি স্নেহবস্তি, এই-রূপে বার্টি নিরহ ও বার্টি মেহব্সি, তদনস্তর উপর্পিরি পাঁচটি মেহবাস্ত। প্রয়োগবিধি-প্রথমে একটি মেহবন্তি, তৎপরে একটি স্নেহবস্তি ও একটি নিরহ, আবার একটি স্নেহবন্তি ও একটি নিরহ, আবার একটি স্নেহ-ৰাস্ত ও একটি নিরহ, আবার একটি স্লেহবস্তি ও একটি নিরহ, আবার একটি মেহবস্তিও একটি নিরাহ, তৎপরে একটি মেহব্'স্ত, তদ্নস্তর উপ্রপিরি তিন্টি স্নেহবৃত্তি। প্রয়োগবিধি-– প্রথমে একটি স্লেহবস্তি, ভৎপরে তিনটি নিরাই ও তিনটি স্নেহব সৈ, শেষে একটি (সহব্স।)

त्यस्विष्टः निक्रस्य वा निकरमवाणिनीलरायः । উৎক্রেলাগ্নিবধৌ স্মেহান্দিকহামাকতো ভয়স ॥

কেবল স্নেহবান্ত অথবা কেবল নির্ম্থ অতিশর বাবহাব করিবে না। কারণ স্নেহ-বাস্ত আত সেবিত হইলে উৎক্রেশ (স্বস্থানস্থ বাতালি লোকেব বহির্গমনোল্ল্যুখ্যা) ও আগ্রিমান্দা জন্ম। নির্কাহন অভিনেবলে বায়ুব একোপ হুইয়া প্রাক্রে।

পর্যান্থিকার একটা স্থানিরাহান ক্রেন্সিটা। বেটারাধান্ত্রিকার রাস্ত্রকার বিদ্যোষ্ঠিৎ ॥

সত্এর নির্ভু ব্যক্তির অন্থবাসন, এবং অনুবাসিত ব্যক্তির নির্হণ কর্ত্তব্য। এইরূপ

স্নেছন ও শোধন মৃক্তি ধারা বস্তিকর্ম সম্পান দিত হইলে, বাতাদি ত্রিদোষই প্রশ্মিত হুইয় থাকে।

ইক্ষা যেহপান্ত মাত্রা বোজিত: সম। । মাত্রাবন্তি: সভ: স্বেহ: শীলনীয়: স্পা চ স। । গালস্কাপভারতী-বাংয়ামাসক্তচিওকে: । বাভভারবালায়ি-নূপেমরহুপাক্ষ্ডি: ॥ ।দাযুদ্ধা নিশ্বীকারো বলা: স্কুমল: হুপ: ॥

্মহ পানের হস্ত্র মারা, অগাং বাহা গুই প্রবে প্রিপাক পাপ্ত হব, তংস্ম মের্হনিষ্টি ব্যিকে মাত্রাব্যি কহে। সেই মানাব্যিট বালক, বৃদ্ধ, পথশ্রাস্ত, ভাল্ফাস্ত, কামিনীসন্ত্র, ব্যায়ামকারী, চিন্তানিল, বাতভ্যবল, অলাগ্নি, রাজা, ধনী ও স্থাদিগের সদা সেবনীয়। মাত্রাবস্তি—দোষন্ন, অনিদন্ত্রণ, বলকর, নলভেদক ও স্থাপ্রদ।

বতো রোগেরু নারীণাং বোনিগর্ভাশয়েরু চ। দ্বিনাস্থাপনগুদ্ধেজ্যো বিদধাদ্বিমুক্তরম্ ॥

ন্ত্রীলোকদিগের (পুরুষদিগের) বস্তিস্থানে রোগ হইলে, অগ্রে ভাহাদিগকে ছই বা ভিন নির্ম্নহ দারা শুদ্ধ করিয়া পরে যোন (শিঙ্গে) ও গভাশয়ে উত্তরবস্তি প্রয়োগ করিবে।

অত্রাসুলমানেন তরেজং থাদশাসুলম। সূত্রং গোপুচ্ছননুল-মধ্যয়োঃ কৃতকর্ণিকম্। সিন্ধার্থকপ্রবেশাগ্রং প্রকং হেমাদিসপ্রবম্। কুন্দাখমারস্মনঃ-পুশ্পুস্তাপ্যং দৃত্য॥

উত্তর বস্তির নেত্র আতুরের দ্বাদশ অঙ্গুলি পরিমিত। ইহা স্বর্ণাদি-নির্দ্মিত, গোলাকার, গোপুচ্ছসদৃশ, মহণ, দৃঢ় এবং কুন্দ, করবীর ও জাতীকুস্থমের বৃস্তোপম। ইহার অগুচ্চিত্র খেতসর্গপ-প্রবেশ-যোগ্য এবং মৃলপ্রদেশে ও মধাভাগে কর্ণিকা স্বির্হিছ।

হস্ত বৃত্তিমূ তুল ঘম ভি । গুড়ি বিকলা বা ॥

নেত্রে মৃত্ ও লগু বাস্থ খোজিত থাকে। উত্তরবাজ্য স্লেহমাত্রা— চারি তোলা, অথবা বল বয়স শরীরাদি বিবেচনা করিয়া সেহমাত্রা কলিত হুইয়া থাকে। অধ স্নাতাশিতভাভ ফেবজিবিধানতঃ।
ধ্যাে হথােপবিষ্টভ পীঠে জাতুদমে মূদে।
কাষ্ট মেচে ক্লিতে চৰ্ছে। শনৈঃ প্রাতাবিশুদ্ধরে।
প্রাং শলাকাং প্রণরেৎ তরা শুদ্ধেহতু দেবনীয়।
আনহনাতাং নেত্রঞ্চ নিক্ষপং গুদবং ততঃ।
পাড়িতেহছর্গতে ক্লেহে স্লেহবন্তিক্রমো হিতঃ॥
(অমু দেবনীং দেবনীয় অমু লক্ষীকৃত্য।)

পূর্ণোক্ত স্নেহবন্তি বিধানামুনারে রোগী মান, ভোগন ও জামুদ্দম উচ্চ মৃছ আদনে ঋজুভাবে স্থাপবেশন করিলে, স্রোক্তো-বিশুর্নির জন্ম অতা তাহার স্তব্ধ ও সরলভাবা-পন্ন লিঙ্গে স্থান্ধ শলাকা ক্রমে ক্রমে প্রবেশ করাইয়া দিবে তংপরে দেবনী লক্ষ্য করিয়া গুহুদেশের ন্যান লিক্ষান্ত পর্যান্ত (প্রায় ৬ অঙ্গুল্) নিজপভাবে নেত্র প্রয়োগ করিবে। নেত্র স্থাপনানন্তব ব্রেপ্ট পীড়ন ম্বানা স্নেহ প্রবিষ্ট হইলে স্নেহব্যির নিয়ম সকল প্রতি-পালন করিবে, অর্থাং হন্ত ও প্রাক্ষি মান ক্রিক্

বস্তীননেন বিধিনা দন্তাৎ ত্রীংশ্চতুরোহপি বা। অনুবাসনবচ্ছেষং সক্ষনেবাক্ত চিন্তয়েৎ॥

এইরূপ নিরমে তিনবার বা চারিবার উত্তরবন্তি ওয়োগ করিবে। উত্তব ন্বান্তর বিধি, নিমেধ, সমাক্ প্রয়োগ ও ব্যাপদাদি সমস্তই অমুবাসনের স্থায় জানিবে।

স্ত্রীণামার্ক্তবকালে তু যোনিগৃ প্লাভ্যপার্ডে: ॥ বিদধীত ভদা ভক্ষাদন্তাবপি চাত্যয়ে। যোনিবিলংশশ্লেরু যোনিব্যাপদ্যুগরে॥

এক্ষণে দ্রীদিগের উত্তরবন্তিক বিধান বর্ণিত হইতেছে। ঋতুকালে গোনি বিরুত পাকে, অপাবরণ হেতু উহা অনার্যাসেই উত্তরবন্তির ক্ষেহ গ্রহণ করিতে দমর্থ হয়, অতএব ঋতু-কালেই উত্তরবন্তি প্রয়োগ করা কর্ত্তরে। কিন্তু যোনিভ্রংশ, যোনিশূল, যোনিব্যাপং ও অস্থ্যদরাদি আতায়িক ব্যাধিতে শতুকাল অপেক্ষণ না করির। অন্য সময়েও বন্তি প্রদান করিবে। নেতং দশাস্থুলং মূলা-এবেশং চতুগস্থান্ ॥ অপতামার্গে বোজাং ভাদ্ খাপুলং মূত্রয় নি । মূত্রকুক্তবিকারেয়ু বালানাখেকমস্থান্ ॥

ন্ত্রীলোকদিগের জন্ত যে উত্তরবস্তি বাবহত হয়, তাহার নেত্র আতুনের দশাস্থ্যপরিমিত, নেত্রাগ্রের ছিদ্র মূল্য প্রিমাণে নেত্র
প্রথশ কণাইবে। মৃত্রকুদ্ধ রোগসমূহে মৃত্রমাণে
হত্ত্ব অঙ্গুলি পরিমিত নেত্রে প্রবেশিত করিবে।
কিন্তু বালিকা,দগের এক অন্ত্র্পি মাত্র প্রয়োগ
করা কর্ত্তন।

প্রকোমধানা মাতা বালানাং শুক্তিরেন চন স্ত্রীদিগের উত্তর শুস্তেত প্রশংহর মধান নাতাঃ ৮ তোলা। কিন্তু বালেকা)দিগের মধান নাতাঃ ৪ তোলা।

উত্ত'নায়াঃ শয়'ন'য়াঃ সমাক্দাক'চা সবংঘিন'। উদ্ধৃতংখ'ল্লিচতুৱ'নহোৱাগতেং যে জ.ম২। বস্তাংক্তিৰাত্ৰমেবঞ্জেহ্মতিংং বিশ্বতিং ॥

বোগিনী, পাদ্যা সন্ধানত কৰিয়া উদ্ধান্ত সমাক্ উত্তানশায়িনী হললে উত্তান স্থানি কৰিব কৰিছিল। অৰ্থ্য কৰিও কৰিছিল। এই প্ৰকাৰ চিনিবাৰ বৃত্তি প্ৰয়োগ ক্তব্য। এই প্ৰকাৰ তিন দিন ক্ৰিবে।

আহমের চ বিভাষা প্রশিদ্ধারে পুরস্তাহম্।।

তিন দিন বিশ্রাম করিয়া পুনসার পুকোজ নিয়মে আবার তিন দিন উত্তরবস্তি প্রয়োগ করিবে।

পকাছিরেকো ব্যাতি ৩ড; পকারিরহণন্। সজ্যো নিকচন্টাঘান্তঃ সপ্তরাজাছিরেচিতঃ॥

উত্তম শুদ্ধি দারা ব্যানত ধইবার এক পক্ষ পরে বিরেচন এবং বিবেচনের এক পক্ষ পরে নিক্সছণ, নিক্সছণের দিনেই অঞ্বাসন এবং বিরেচনের সপ্তাহ পরে অঞ্বাসন কওবাঁ।

ব**ণা কুপ্রভা**দিযুতাৎ তোয়াজাগং হরেৎ পট*া* তথা এবীকু তাজেহার্ছান্তনিহরতে মলানু॥ বস্ত্র যেমন কুমুন্তবর্ণ (কুমুম রং) বুক্ত জল হইতে লোহিত্য মাত্র গ্রহণ করে, বস্তিও তজ্ঞপ ধাতু ও মল ছারা দ্রবীকৃত দেহ হইতে কেবল মলই নির্বাণ করিয়া থাকে।

> শাগাগভাঃ কোগুগভাশ্চ রোগা মর্মোদ্ধ্যক্রব্যব্যস্কাশ্চ। যে সন্তি তেষাং ন তু কশ্চিদস্থো বায়োঃ পরং জন্মনি ছেডুব্রিঃ॥

শাখা কোষ্ঠ মর্ম্ম ও উদ্ধান্ধাদি সর্বাবয়ব-গত যে সকল রোগ উৎপত্ন হর, তাহাদের উৎপত্তি বিষয়ে বায়ু ভিন্ন অন্ত প্রধান কারণ আর কিছুই নাই, অর্থাৎ বায়ুই সেই সকল রোগোৎপাদনের শ্রেষ্ঠ হেড়। (উদ্ধান্ধজ রোগ মুখরোগাদি; সর্বান্ধজ রোগ জবাদি; অব্যবজ রোগ শিবাদি)।

> বিট্যাথপি ও দিমলাচয়'ন' বিজেপস'হ বিকরং সা সন্ধাং। হস্তাতিবৃদ্ধস্থা শনায় নান্ত্ৰণ্ বস্তেবিনা ভেষজমণ্ডি কিঞ্ছিৎ।

বায়ই যে রোগোংপাদনের প্রধান হেতু, ।
ভাহার কাবণ এই—বায়ই সঞ্জিত পুরীম, ।
ক্ষেত্রা ও পিতাদি মলেব বিক্ষেপ ও মংহাবেব
কর্ত্তা। বেই হাতি প্রবুজ বালব শ্যনাথ বাস্তানি
ভিন্ন হাত্র ভাষত হার বিক্ষাই নাই।

ংশ্বাচিক ২ম্ব । ত প্রান্থ ব ২য়। চিক ২ম্ব পি চ বাস্তরেকে: । ভগ্ন নিভাগস্তাবকাবকাবি-রক্তৌমবংহন শিরাধাবেহিপি, ।

(नाय- প्रान-वाय-मां अ1 21814 4119 বলিয়া পণ্ডিতেরা একসাত্র বস্তিকেই স্থাস্ত চিকিৎদার অন্ধেক ব্লিয়া বর্ণন कर्. ग । কোন কোন পণ্ডিত, উহাকে সম্পূৰ্ণ চিকিং-সাই কহিয়া থাকেন। সেইরূপ দোষক ও আগন্তজ বাধিসমূহের উৎপাদক 3633 ঔষধস্বরূপ শিরাব্যথকেও চিকিৎদার্দ্ধ সম্পূর্ণ চিকিৎসাই বলেন।

অথাতে। নদ্যবিধিমধ্যায়ং ব্যাখ্যাদ্যামঃ।

উৰ্দ্ধকক বিকারেষু বিশেষামস্থানিব্যতে। নাসা হি শিরসো ছারং তেন ভদ্মাপা হস্তি তান্॥

অতঃপর আমরা নন্তবিধি নামক অধায় বাংখা: করিব। উদ্ধাজকণত রোগে নস্তই বিশেষ হিতকন। কারণ নাসিকা মন্তকের ছার, সেই নাম ছান দিয়া নতা সমস্ত মন্তকে বাংগু ইইয়া উদ্ধাজকণত ধাবতীয় বোগ নাশ করে।

বিরেচনং পুংহণক শমনক বিধাপি ৩৭ ॥ বিরেচনং শিরংশূল-জাডান্তলগণাবামে। শোকগণ্ডকি মিগ্রন্থি-কুষ্ঠাপন্মারগীনদে।

নপ্ত থিবিন; যথা -বিবেচন রংহণ ও শুমন। তলানে বিবেচন নথা শিবাস্থা, শিবাস্থা ছাড়া, অভিযান (নেত্রবোগ) প্রারোগ, শোধা, গ্রাগণ্ড, গণ্ডনালা, ক্রিমি, গ্রন্থি, কুই, অপস্থার ও পীন্য বোগ নাশ কলে।

ত্তেপ্ বাততে ভূমে প্যাবতে ধ্রপ্ত। নাসংস্থাপ্য বাদসকো কুছে গোধেংবৰ ক্ষেত্ৰ

বৃংহণ নত হ'লা বংতজ শগত ক্যাবেন্ত, স্বৰভন্ধ, নামা ও মুখ্যশাল, বংগ্ৰৈৰি, নেৰোন্ত্ৰীপদ-ৰুদ্ধভা ও অববাহক বোগ নিবা-বিত হইগ প্ৰেক।

শ্বন না একাব্য**ঙ্গ-কেশ্দো**বা;ক্ষর;ভিবু।

ৰখন নশ্ৰ, নীলিকা, বাঙ্গ (কুদ্রোগে উক্ত , কৰ্মসাভ ও অফিনাজি নাগে ভিত্তকৰ ৷

যার হা । যে সিকে: প্রেছেরখারক প্রসাধিতের। কাক্ষারালিভিক্তাচ্যা, মধুপট্নিবরেপি॥

সর্বপ তৈলাদি যে যে স্নেহ যোগার্হ ও শুন্তী মরিচাদি দারা সংস্কৃত এবং বাহ কল ও কাথাদি দারা আাল, তাহাদের দারা এবং ব্যু সৈন্ধব ও আসব দারাও বিরেচন নম্ভ হইয়া থাকে।

বৃংহৃণং ধ্যমাংসোথ রদাসক্রপুরেরপি। শুমনং যোজরেৎ পূর্কেঃ ক্রিরেণ চ জলেন চ ॥ বে সকল পশু-পক্ষী মকদেশে জন্মে, তাহাদের মাংসের কাথ বা তাহাদের রক্ত স্থারা এবং থপুর নামক নির্য্যাসবিশেষ স্থারা ও অতীক্ষ ক্ষেত্ব স্থারা বৃংহণ নস্ত উৎপন্ন হয়। এবং অতীক্ষ স্থতাদি মেহ, মাংসরস, ত্থা বা জল স্থারা শমনাখ্য নস্ত হইয়া পাকে।

মৰ্শন্চ প্ৰতিমূৰ্শন্চ বিধা যেহোইত মাত্ৰয়া।

নস্থাথ স্নেহ, কেবল মাত্রাভেদে মশ ও প্রতিমশ নামে অভিহিত হয়, ইহাতে কোন বস্তুভেদ থাকে ন:। অর্থাৎ মাত্রা অন্ধ্যারে কাহাকেও মশ, কাহাকেও ব: প্রতিমশ বলা গিয়া থাকে। (মশেব মান্য পরে লিশিত হইবে।)

কন্দারিজ গ্রথীডে প্রতীক্ষ দাবিরেচনঃ ।

তীক্ষ কলাদি খাবা অবপীড় নামক নস্ত হয়, ইহাব নামান্তর শিরোবিতেচন।

ধানং বিরেচনশ্চুৰ্ণো যুঞাৎ তং মুধ্বাধুনা। ষ**ড়সু**ল্ৰিমুধ্যা নাচনা ভেদজগৰ্ভয়া। স হি ভূৱিতবং দোষং চ্ৰি**ডাদপক্ষ**্তি!!

মরিচাদির চূর্ণ, বিরেচন নক্ত; ইহার অক্সনাম প্রথান। ঐ প্রথান নক্ত, ছয় অকুল লখা ছই মুখ বিশিষ্ট একটি নলের মধ্যে পূরিয়া নলের এক মুখ নাদাবল্পে লাগাইয়া অকু মুখে কুংকার্চ্ছা নাদাভান্তরে নক্ত প্রবেশ করাইবে। ইহ; চুর্ণ ব্লিয়া ভূরিতর দোষ আকর্ষণ করিতে স্মর্থ।

প্রদেশিশুসুলীপক্ত-দ্বাধান্ত্রসমৃদ্ধ্রেও। যাবং পতভাসৌ বিন্দুদ্ধান্ত্রী ষট্ ক্রেণ তে। মশক্তোংকৃষ্টমধানা মাজতা এব চ ক্রমাৎ। বিন্দুস্বয়োনাঃ কর্মাণ্ডে—

তজ্জনী অঙ্গুলীর প্রবন্ধর স্থেছ মধ্যে ডুবাইরা উদ্ধৃত করিলে, তাহা হইতে বতটুকু স্থেছ পতিত হয়, তাহাই বিন্দুর পরিমাণ। সেইরূপ দশ, আট ও ছয় বিন্দু, যথাক্রমে মর্শের উত্তম, মধ্যম ও অবস মাত্রা। সর্শের মাত্রা অপেক্ষা কল্পাদির মাত্রা ছই বিন্দু নুনে অর্থাৎ কল্পাদির উত্তম মাত্রা ৮, মধ্যম মাত্রা ৬, ও কনিষ্ঠ মাত্রা ৪, বিন্দু। ব্যালয়ের তু নাবনন্ ।
তারমন্ত্রগরকেই-পীত'নাং পাতুমিচ্ছতান্।
ভূকভক্ত-শির্মোত-স্থাতুকামকতাব্দান্।
ভূকভক্ত-শির্মোত-স্থাতুকামকতাব্দান্।
ভূকানাং দত্রভীনাং তথা নাওবছুদ্ধিনে ।
ভূকানাং দত্রভীনাং তথা নাওবছুদ্ধিনে ।
ভূকাতাত্রিকাদ্ ন্যাদেরণ নজং প্রান্ধিনে ।
ভ্রাত্রভাবিদ্ধিনাধ্যাক্ত প্রেম্বিদ্ধিনাধ্যাক্তর ।

নিম্নণিখিত ব্যাক্তান্তে। পক্ষে নস্ত অযুক্তা।
যাহারা জন মন্ত গর ও মেহ পান কবিরাছে,
বা করিতে অত্যন্ত ইচ্ছুক হইরাছে, ঘাহারা অম
ভোজন করিয়াছে, ঘাহারা শিরঃমান করিয়াছে
বা করিতে ইচ্ছুক হইরাছে, ঘাহারেন রক্তরাব
হুইরাছে, ঘাহারা নান পীনান স্থাতিকা শ্বাস ও
কাস বোগান্তি, ঘাহারা বান বিরেচন ও বান্তি
খারা শুন্ধনেহ হুইরাছে, ভাহানের গজে এবং
শতুবিপর্যানাদি ত্দিনে নস্ত প্রনোজন নহে।
কিন্তু বানির বিপক্তনক মুক্তেরু যদি শিল্পই নস্ত প্রদান আবিপ্রক হয়, তবে অবক্ত প্রদেষ।
ক্লেমবোগে প্রতিকোলে, পিত্রোগে মধ্যাছে
ও বাতরোগে অপ্রাত্রে বা রাজিতে নস্ত

স্বস্থার তু পুরুষ্টে শরংক লবসভার । শীতে মধ্যন্দিনে ত্রাস্থা সংক্ষা বর্ধান্ত স্থান্তপে ॥

স্থাবছায়, শনং ও বসন্তকালে পূকারে, শীতকালে (হেমন্ত ও শীত ঋতুতে) মধ্যাহে, গ্রীষ্মকালে সায়াহে এবং বর্ধাকালে রেছিবিশিষ্ট দিনে নপ্ত গ্রহণীয়।

নাতাভিখ্যে শির্মি বিকাষ্ট্রমণ্ডামকে। মহ্যান্তত্তে সরলংগো সায়ং প্রতিদ্ধিন দিনে। একাই/প্রস্থাত সপ্তাহে ৮ তদাচরেও।

হিন্ধা, অপতানক, মন্ত্রান্তন্ত ও স্বরন্ত্রংশ রোগে এবং মন্তক বাতাভিত্ত হইলে, প্রতাহ প্রাত্তংকালে ও সায়ংকালে মন্ত্র লাইবে। এতদ্ বাতীত অন্ত রোগে এক এক দিন অন্তর এক সপ্তাহ মন্ত্র গ্রহণীয়। সপ্তাহের পর মন্ত্র বিধেয় মহে।

বিশ্ববিধান্তমা**দত** প্রাক্তবিত্তকত চ। নিবতিশয়নস্থা জক্রন্ধ বেদয়েং পুনঃ ॥ আপোন্তানজ্জু দৈহস্য পাণিপাদে প্রসারিতে।
কিঞ্চিত্রতপাদস্য কিঞ্ছিদ্ধিনি নামিতে॥
নাসাপুটং পিধারৈকং পর্য্যারেণ নিষ্চেরেং।
উক্ষান্ততথ্য ভেষজ্যং প্রনাত্যা পিচনাথবা॥

নম্ভ গ্রহণের পূর্বক্রিয়া। অগ্রে মেই বারা মন্তক স্লিগ্ধ ও স্বেদ বারা স্থিম করিয়া নল, মূত্র ও দন্তবাবনাদি অবশ্রকরণীয় কার্যা সকল সমাপনানস্তর নিবাত স্থানে শয়ন পূর্দক জক্রর উদ্ধাভাগে পুনরায় স্বেদ গ্রহণ করিবে। তদনন্তর উন্তান (চিং) ও শক্তুদেই ইইয়া ইন্ত পদ প্রসা-রিত্ত, কিন্তু পা কিছু উন্নত ও মন্তক কিঞ্ছিং নামিত করিয়া প্র্যায়ক্রমে এক নাসাপুট টিপিয়া অন্ত নাসাপুটে নল বা কাপানাদিনয় প্রতিত বারা উষ্ণজ্জ-সন্তন্ত ভৈষ্ক্য প্রয়োগ করিবে।

দত্তে পাদতলগ্বন্ধ-২ন্তকর্ণাদি মর্ক্করেৎ। শনৈকচ্ছিত্য নিঠাবেৎ পার্ধয়োক্তয়োক্ততঃ॥

নস্ত প্রদন্ত হইলে পদত্র, রুদ্ধ, হস্ত ও ।
কণীদি ঘর্ষণ করিবে এবং ঘর্ষণানস্তর ক্রমে ক্রমে ।
নাসিকার উভয় রক্ত্রমারা নিষ্ঠীবন করিবে।
আ ভেষজক্ষাদেবং দিক্তির্বা নস্মান্তরেং।
মুর্ছায়াং শীতভারেন সিঞ্চেং প্রিহরণ শিরং।

পূর্বোক্ত ক্রমে নস্য লওয়া হউলে যখন ঔষধক্ষয় হউবে, তথন প্রয়োজন।নুসারে আরও হউ বা তিনবার নস্ত লউবে। কিন্তু যদি ঔষধের তীক্ষতায় মুর্চ্চা হর, তাহা হউলে মস্তক ভিন্ন অপর সমস্ত অঙ্গে শীতল ধারি সেচন করিবে।

বেং বিরেচনসাণ্ড দতাংকাবাতাপক্ষা।
নস্যান্তে বাক্ষতং তিঠেছভানো ধাররেৎ ততঃ ॥
ধূমং পীথা কবোকাপু-কবলান্ কঠভদ্ধরে।
সমাক্ বিধে স্থোচ্ছাস-স্থানোধাকপাটনম ॥

শিরোবিরেচনান্তে দেশ, দোষ ও সাত্মাদি বিবেচনাপূর্মক মন্তকে শ্বেছ প্রয়োগ করিবে এবং শত মাত্রা (প্রায় ২ মিনিট কাল) উত্তানভাবে করপান করিয়া পরে ধূমপান ও কণ্ঠগুদ্ধির জন্ম উন্তন্ধ জলোর করল করিবে। মন্তক সম্যুক্ত রিগ্ধ ইউলে সুখোচ্ছাস, নিদ্রা, জাগনে ও চকুর পটুতা হয়। ক্লকেংকিন্তরতা শোষো নাদাদো নৃদ্যুক্ততা। ক্লিষেংতি কড়ও ক'ণ এদেকাক্লচিপানদালে।

মন্তক ক্ষা হইলে চকুর স্তরতা মুখ ও নাসিকাব শোষ এবং মন্তক শৃন্ত হয়। অতিনিধা হইলে কণ্ডু, দেহভাব, মুখ্যাব, অক্রচ ও পীনস হইলা থাকে।

স্থাৰ বিজেহাক্ষলযুতা-স্বরৰজ্বভিদ্ধায় । স্বাক্তিকৈ গদোলেকে ক্ষানতাতিবিলেচিতে ॥

মন্তক স্থিতিত ২ইলে চকুর লগুতা, স্বর ও মুখের শুদ্ধি; ছবিবিকিক হইলে রোগা-ধিকা এবং অতিধিবিক হইলে কশত। হয়।

প্রতিষ্ঠা, ক্ষতকাম-বালগুদ্ধকার এও। প্রবেশ্যেকজিকজের গ্রান্ত হিছে তথ্য করিছে। মৃত্যুগ্রিকজিলে বিশ্বস্থান । উত্তর্ভারি ইন্দ্রের চাইনিক্রিক্রিক্রিক্রিক্রিক্রি

অকাল বর্ণ হইলেও প্রিম্প নস্ত (ইহা পুলে বলা হইলাছো কাইলি, বালক, বৃদ্ধ ও স্থা বাজি-নিগলে এদান কবিবে। কিন্তু বাহাবা ওঠ-পানিসলোগ,এস্ত, নজপানী, জুর্মল-শ্রোজ ক্রিমিন্ট্রিভ-মন্তক ও কুপিত-প্রচল-দোনাজ্যি, ভাষাদের প্রক্রেউহা ইট নহে, কারণ প্রতিমশের মাজ হান, হান্মাজ স্বারা উহাদের দাবের শাস্তি না হইলা বাং রাদ্ধিই হইল থাকে।

নিশাতভু জিবাভাহ-স্থাধান্ত্রতেতাম্। শিরোহভাজনগভূষ-প্রধাবাঞ্জনকর্চিমায়।। দক্তকাঠসা হাসস্য যোজো:তেহুংমৌ শ্বিকুকঃ।।

রাত্রি দিবা ভোজন, বমন, দিবানিজ্ঞা, পথপ্যটেন, পরিপ্রম, মৈগুন, শিরোহভাঞ্জন (মস্তকে তেল মদ্ধন), গছুষ বাংল, প্রস্রাব, অঞ্জনতাহণ, মলভ্যাগা, দুন্তপাবন ও হাস্ত, ইহানের অস্তে প্রতিমর্শ নস্ত প্রযোজ্য। এই প্রতিমর্শ নস্ত ধিবিন্দু পরিমিত।

পঞ্চ হোওদাং ওদ্ধি গ্ৰমনাশ্লিয় এমাং । দুগ্ৰলং প্ৰায় ডাছো দুষ্টা ৮ মুক্টুমেঃ ॥

উপনি উক্ত পঞ্চন প্রকার কালের মনো রাত্তি দিবা ভোজন, বমন ও দ্বিনিজ্ঞা, এই পাঁচ প্রকার কালের অন্তে প্রতিমর্শ নম্ম গ্রহণ করিলে, স্রোভঃ শুদ্ধি; প্রথপর্য্যটন, পরি-ল্লা, নেথুন, এই গ্রিবিধ কালান্তে প্রতিমর্শ প্রকৃতি হইলে প্রানাশ , শিংবাহভাজন, গভূষ-ধা ণ, প্রসাব, অজ্ञন-গ্রহণ ও মলত্যাগ, এই প্রকৃতিধ কালান্তে উহা যোজিত হইলে, দৃষ্টির ন্ম এবং দন্তবাবন ও হাস্তান্তে গৃহীত ইউলে দক্ষের দৃদ্ভা ও বাব্য শমতা হয়।

ন নজ্মনস্থাপে নাইতিবিচিত্রস্থার। ন চোনারদেশে পুন্য করলো নোনপ্রথমে। ন ক্ষিরান্দ্রমেন ন চাতিকাঞ্চল্পতি ।

সপ্তন বর্ণ ব্যবের পূর্বে এবং অনীতি বর্ণ ব্যসের পরে নতা এহণ, অস্তাদশবর্ণ ব্যবের পূর্বে ধূম্পান, পঞ্চম বর্ণ ব্যবের পূর্বে কবল পারণ এবং দশম বর্ণ ব্যবের পূর্বে ও সপ্ততি বন ব্যবের পরে শুদ্ধি (ব্যন্তি বিবেচনাদি) কার্য্য কর্ত্তর নহে।

আলিয়ামরণং শস্ত, প্রতিমাশির বৃত্তিবং। মাশবিচ্চ গুণান কুলাং ম হি নিত্যোপদেবমাং। ন চাত্র যন্ত্রণা নাশি ব্যাপচো মাশবিচ্যম ॥

বাস্তা ভাষ এতিমশও জন্মবিতি মৃত্যু প্ৰবিস্তাহ হৈ হলক। নিজ সেবন হেতু ইহা মাৰ্শি ভাষ ভাকৰ হয়। কিন্তু ইহাতে বন্ধনা নাই এবং মৰ্শের ভাষাক্তকাতি যে সকল বাপেৎ আছে, ভাষাবিভ ভাষানাই।

তৈলমের চ নম্ভাংর্থ নিত্যাস্ত্যাদেন শস্ততে। শিরদঃ শ্লেমধ্যমত্ব হু হেহাঃ স্বস্থ্য নেতরে॥

মন্তক শ্রেমার স্থান, অতএব সুস্থ ব্যক্তির শ্রেমান তেলই নিতা নভার্থ ব্যবহার করা প্রশাস্ত। অভাভ সেহ শ্রেমাজনক, স্থতনাং নে সকল ব্যবহায় নহে। (নিত্যভাগ হেছু প্রতিম্প বেমন উপকাৰক, তেলের ন্ডাও তেমনই হিছকৰ ভানিবে ।

আৰু ক্রান্টিরক বিশ্ব ওপোৎক্ষাস্থ্য।
মনো চ প্রিমনো চ বিশেষে ন ভবেদ যাদ।
কো মনা সপরাহারং সাপদক্ষ ভাজেং তত।
আচছপানবিচারাপ্যো কুটাবাতাতপশ্বিটা।
আধাসমান্তাবন্তী চ ভন্তব্য চ নির্দ্ধিশং॥

প্রতিমর্শ নম্ভ যদি নিতা সেবন করিলে মর্শের স্থায় গুণকারী হয় এবং টেহাদের উপ-কারিতা বিষয়ে কোন বিশেষ না থাকে, তবে ্য মৰ্শাখ্য নম্ভ দেবনে শাতল জল দেকাদি পরিহার রূপ নানা নিয়ম প্রতিপালন করিতে হয় এবং যাহাতে অক্ষিন্তনাদি বিবিধ ব্যাপত্তি ঘটে, সে মৰ্শ নস্ত কেন লোকে সেবন কবিবে 😢 এ প্রশ্নের উত্তর এই বে, মর্ল আও-কারী, অর্থাং শাঘ্র দোব নির্হরণ করে, প্রতি-মর্শ চিরকারী অর্থাৎ বিলম্বে দোম হরণ করে, অত এব আশু দোষনিহরণ-হেতু মর্শের শুণোং-ক্ষ এবং বিলম্বে দোধনির্হরণ-নিবন্ধন প্রতি-মর্শের গুণাপকর্মতা আছে, উভয়ের এই মাত্র প্রভেদ। অভএব যে বাজি আও স্থো-চ্ছাসাদি উপকার পাইবার ইচ্ছা করে, তাহার মৰ্শনামক ক্ষেহনস্ত-গ্ৰহণট প্ৰয়োজন। এই রূপ স্বেহাধায়োক্ত অচ্ছপান ও বিচারণা, রসায়ন যোগে কূটাপ্রবেশস্থিতি ও বাতাতপাদির অপরিহার-স্থিতি এবং অমুবাসন ও মাত্রাবস্তি চিত্রকারি-নীঘ্রকারিভাদি ইহারাও প্রভিন্ন হইয়া থাকে।

অণুতৈলম্।

जीवसीजनामवाश्वाकनमञ्जूरम्यारभाषीहिमः मार्काष्ड्मभूकमयाश्वमयता * পूख्रास्त्रविषार्थनम् । धावरको स्वर्काः श्वरत्र क्रिमिहतः श्वतः क्राप्टिः त्वपूकः किञ्चनः कमनोस्त्राः । गण्डाः मिरवाश्वमि काषराह ॥

তৈল ক্রমং দশগুণং পরিশেষ্য তেন তৈলং পচেচ্চ সনিলেন:দশৈব বারান্। পাকে ক্ষিপেচ্চ দশমে সমমাজন্ত্বয়ং নশুং মহাগুণমূলস্তাগুতৈলমেতং॥

জীবন্তা, বালা, দেবদারু, মূতা, গুড়ত্বক্, বেণার মূল, অনস্তমূল, রক্তচন্দন, দারুহরি-দ্রাব ত্বক্, মষ্টিনধু, গ্রন্ত্র্ণ, অগুরু, ত্রিকলা, (পাঠান্তরে শতমূলা), পোগুরীক, বিছ,

⁺ ব্রীতি পাঠাত্তরম। । কমলাদ্বলামিতি পাঠাত্তরম।

উৎপল (কুমুদ্), বৃহতী, ক-টকারী, শল্লকী (কুদ্রুকী), শালপাণি, চাকুলে, বিভূপ, তেজপত্র, ছোট এলাইচ, বেণুক, নাগকেশর, পদ্মরেণু (পাঠান্তরে বেড়েলা); এই সকল জব্য সমপরিমাণে লইয়া শত্তুপ বৃষ্টির জলে কাথ করিবে এবং তৈলের দশত্ত্ব থাকিতে নামাইয়া, সেই কাথ ছারা দশ্যাব তৈল পাক কবিবে, দশম পাকে তৈলসম ছাগছ্য় দিয়া উভা পুনং পাক কবিয়ে। এইরূপে প্র

তৈলকে অণুতৈল কহে। এই তৈল নম্ভ-প্রায়োগে শ্রেষ্ঠ। ইহা অণু অর্থাং ফুল্ল ইন্দ্রিয়-শ্রেতে প্রবেশ করে বলিয়া ইহাকে অণুতৈশ কহিয়া থাকে।

খনোরতপ্রন্তক্-স্ক্রীব্দানক্ষ্য:।

দৃচেক্রিয়াস্থানিতা ভযেগুন্দাশালিনং॥

নস্ত্রীল বাজিনিপেশের স্বক্ স্কর প্রীবা মুখ
ও বক্ষঃ, ঘন উন্নত ও নির্মাণ, ঠাক্রয সকল দৃড়

এবং কেশাদি জকাশ্পকতাব্দিত তথ্য।

ই তাবিং মাদ-সংগ্রহে পঞ্চ কর্মানিরিঃ।

অথ দিনচর্য্যা।

ব্রান্ধে মুহুর্ত্তে উন্টিটেই থাছা রক্ষার্থনা যুব্যা।
শরীর্চিন্তা' নির্বৃত্তির কুত্রশাচনিধিত্ত ।
অক্যার্থাপিনি-ক্রপ্তকর ভালিকম।
প্রান্তভূতি বুলা চার্যায়া ক্ষায়ার চুলিকম।
ভক্ষায়ালন্তপ্রক্ষা নত্তমাংসাগ্রবাধ্যনা

স্থ বাজি থকায় জীবন পালনার্থ প্রান্ধ-মূহরে (চারি দও বাজি থাকিতে) শ্যা পরিত্যাগ কবিবে। এবং ভুক্ত দ্রবের জীণা-জীণাদিভাব বিবেচনা কবিয়া মন্মূত্র-ত্যাগাদি শৌচজিয়া নিকাংক্রনালস্তর আবন্ধ, বট, শদির, ওচাকন্ধাও অর্জুনাদি চাতের কিংবা কটু-তিজ-ক্রায়-সমন্ত মন্ত কোন বৃক্ষের কাষ্টিকার অগ্রাহার্থ ই আর্ম্প চর্মণ কবিয়া এরপে দভ্রাণ্ড হিল্পে, যেন দ্ভ্যাংস ঘৃষ্ট না হয়। প্রত্যেক্তির ও আহ্বিয়ন্তে দভ্রাবন বিধেয়।

নাপ্তাদ্জীলন্মধ্যাসকাসজ্বঃদিটা: ভূষাসাপাক্ষার্জনিরংক্রীষ্টা চাহৎ ॥ যে সকল বাজি অজীর্ণ, ব্যন, রাস, কাস, জ্বর, অর্কিড, ত্বরণ, মুখ্পাক, জলোগ, নেত্র-রোগ, শিরোরোগ ও কর্ণরোগে আক্রান্ত, ভাহাদেব পক্ষে দন্তবাবন নিধিক।

সৌবারমঞ্জনং নিতাং তিতমক্ষোন্ততো ভজেৎ। লোচনে ভবতজেন স্থাধ্যমে ঘনপাশানা। বাজানিবার্গ বিমলে মনোজে সম্পাদন্তন।

সোবীরাঞ্জন নেত্রের হিতকর, অতএব নিভাই নেত্রে জ অঞ্জন বাবহার করিবে। ইহাতে চক্ষ্ণ প্রশ্নিষ্ধ, বিল্লাল, মলোহন, স্বন্ধ-দশনক্ষম ও খনপালা-বিশিষ্ট হয় এবং চক্ষুণ বর্ণজির অর্থাং থেতে রুফা ও লোহিত ব্য ক্ষুণজ হুইয়া থাকে।

চকুন্তেজোমাং তদ্য বিশেষাৎ প্রেল্ডো ভয়ন্। বেজিয়েৎ সপ্তরাজেহলাৎ স্থাববার্থে রস্ক্রিন্ম ॥

চক্ষ্ তেজোময় পদার্থ, স্ত্রাং তেজো-বিবোধী শ্রেমা হইতে ইহার অনিষ্টের বিশেষ আশকা। অতএব সাতদিন অস্তর জল-আবণার্থ চকুতে অস্তন প্রয়োগ করিবে।

অভ্যক্ষমাচরেরি লগে সাজরাশ্রমনা হয়।
পৃষ্টিপ্রসাপস্ট্রায়ুলসপ্পস্থায়ন্ত দান্ত রি ু
শির্মান্ত প্রসাধিক বিশ্বেশ শাল্যের ॥
নিত্যগ্রহণকে প্রকল্পার্থায়, তেনা অভ্যাসনশাদেক বি-বিদ্যান্তর্মপি যথোচিত্রমাচরতোহপি না দোষঃ।

নিত্য তৈলাভ্যঙ্গ করিবে (অভ্যাদবশতঃ এক ছই বা তিন দিন অন্তর তৈলাভ্যঙ্গে দোষ নাই)। তৈলাভ্যঙ্গে জরা শ্রান্তি ও বায়ুর নাশ, দৃষ্টির বিমলতা, দেহের পৃষ্টি, আয়ুর রদ্ধি, স্থানিজা এবং জকের সৌন্দর্যা ও দৃঢ়তা হইয়া থাকে। মন্তক, কর্ণ ও পাদদেশে বিশেষ-রূপে তৈল মর্দ্ধন করিবে।

বৰ্জ্যোহভাক কফগ্ৰন্ত-মৃত্যংগুদ্ধাজাণিভি, ॥

যাহারা কফগ্রস্ত, যাহারা অজীর্ণগোক্তাস্ত কিংবা যাহারা বমন-বিংচনাদ শোধনক্রিয়া কবিয়াছে, তাহাদের পক্ষে তৈলাভাঙ্গ নিদির।

লাখবং কণ্মসামর্থ্যং দীপ্তোহ্যিমে দিসঃ ক্ষয়ঃ। বিভক্তবনগাত্রহং ব্যায়ামাত্রপজায়তে॥

ব্যায়াম ছাবা দেছের লঘুতা, কম্মে সামির্থা, জগ্নির দীপ্তি ও নেদ্ধের ক্ষম হয় এবং শ্রীর স্কবিভক্ত ও দৃঢ় হইয়া থাকে।

ৰাভপিতাময়ী বালো বুলোহজাৰী চ ত ভাকেৎ।

বাতরোগী, পিত্তরোগী অথবা বাতপিত্ত-রোগী ইহাদের এবং বালক (মোড়শবর্ষক্ম:-ক্রম পর্য্যস্ত:), বন্ধ (সপ্ততিবর্ষ বয়ঃক্রমের পর)ও অজীর্ণরোগগ্রস্ত ব্যক্তির ব্যায়াম করা কর্ম্মবার নহে।

অর্থ্যক্তা নিষেব্যস্ত বলিভি: ব্রিগ্ধভোজিভিঃ। শীতকালে বসত্তে চ মলমেব ততোহস্থানা। তং কুতামুক্তথং দেহং মর্জিয়েচচ সমস্ততঃ॥

শ্বিদ্ধ-ভোজী ও বলবান্ ব্যক্তি অৰ্দ্ধবলে অৰ্থাৎ শ্ৰান্তি-বোধের পূৰ্ব্ব পৰ্যান্ত ব্যায়াম করিবে। শিত ও বসন্ত শতুই ব্যান্থাম করিবার প্রশন্ত সমন। অত্য শতুতে জল্ল পরিমাণে ব্যান্থাম করা বিধেন। ব্যান্থামেন পব সর্কশিনীর স্তশ্জনক রূপে মর্জন করিবে।

তুদা করঃ প্রত্যকো রক্তাপিতেং শ্রমঃ রমঃ। অভিনারামতঃ কালো জরাক্তাদিট ভারতে॥

অধিক পরিমাণে ব্যায়াম করিলে ভৃষ্ণা, ক্ষয়, প্রতমক, রক্তপিত্ত, শ্রাস্থ্যি, কাষি, কাষ, জ্বর ও বমি রোগ উৎপন্ন হয়।

উত্তর্জনং কফছরং থেদসঃ প্রবিলায়নম্। তিরীকরণমঙ্গানগং ত্রকপ্রস্থাকরং প্রম্॥

ব্যারামানন্তর উপপ্রতন করিবে। (তৈলা-ভাতত শরীরে আমলকী ও হরিদ্রাদি মর্দ্দন করাকে উপপ্রতন কছে)। উপপ্রতন পারা কফের নাশ, মেদের বিহুর, আক্রে দুর্গ ও অক্রের বৈম্লা সম্পাদিত হয়।

দীপ্রণ বৃষামাযুদাং আরম্ভের্বলপ্রদম্। ক্ডুমল্ডাম্থেদ-ভূলাত্ড দ্বৈপাপাুকিং ॥

উদ্ভ্রনানস্তর স্থান করিবে। স্থান স্থার দীপ্তিকর, শুক্রবর্দ্ধক, আয়ুদ্ধর, উৎসাহ ও বল-প্রাদ এবং কও্মল শ্রাস্থি স্থেদ কর্ম্বা দাহ ও প্রাধানাক।

দুসংস্থানঃকায়স্ত প্রিমেকো বলাবিচা। তেনৈব চে'কুম্'ক্সন্ত বলহুৎ কেশ্চকুর'ন ৮

উষ্ণ ভল দান অধংক।রের পরিষেক করিলে শ্রীরেব বলর্দ্ধি হয়, কিন্তু উহা দারা মস্তকের প্রিষেক কবিলে কেশের ও চক্ষ্র বলহানি হইয়া থাকে।

স্থানমন্দি তনেত্ৰাস্ত-কৰ্ণবোগঃতিসাবিষু। অংখ্যানপীনসাজীৰ্ণ-ভুক্তবংস্কু চ গহিতমু।

অন্দিত রোগ, নেত্ররোগ, মৃথরোগ, কর্ণ-রোগ, অতিসান, উদ্যাধান, গীনস ও অজীর্ণ রোগ, এবং আহারেন পরে সান নিষিদ্ধ।

কেশপাশে প্রকৃষ্ণীত প্রসাধকা প্রসাধনম্। কেশপ্রসাধন কেখং বজোজন্তমলাপহম্॥ প্রত্যন্থ কর্মতিকা (চিক্রণী) দ্বারা কেশ প্রসাধন করা কর্ম্তব্য, যেহেতু কেশ-প্রসাধন দ্বারা কেশের হিত্যাধন হয় এবং তত্ত্রস্থাধিন ক্রিমি (উকুন) ও মল দুরীভূত হট্য়া থাকে।

আদর্শালোকনং প্রোক্তং মাঙ্গল্যং কান্তিকারকন্। গৌষ্টিকং বল্যমায়ুবাং পাপালন্দীবিনাশনম্॥

দর্পণে (আরসিতে) বদন-দর্শন মঙ্গলকর, কান্তিজনক, পৃষ্টিকারক, বলকারক, পরমার-বন্ধক এবং পাপ ও অলক্ষী (ক্র্ডাগা) বিনাশক।

জীবে হিতং মিতঞ্জান্তার বেগানীরয়েল্বেরং। ন বেগিতেংকুকার্যাঃ সাামাজিকা সাধ্যমানর্য ॥

ভুক্ত ভাহাব সন্যক্ পরিপাক প্রাপ্ত হইলে, তথন হিতলনক পরিমিত জন ভোজন করিবে। মলমুত্রাদির বেগ উপস্থিত না হইলে বলপুর্বাক বেগ দিবে না এবং বেগ উপস্থিত হইলে উহা ত্যাগ না করিয়া অন্ত কার্য্য করিবে না। আর সাধ্য-লক্ষণাক্রান্ত রোগ উপস্থিত হইলে তাহারও শান্তি না করিয়া কার্য্যান্তরে বাপিত হইবে না।

হুপার্থাঃ সর্ব্বভূতানাং মতাঃ সর্বাঃ প্রকৃত্য়:। তুপক ন বিনা ধকাৎ তলাদ্ধপ্রের ভবেৎ ॥

সকলেই স্থজনক কথা বাজা কেনে, কিন্তু ধৰ্ম বিনা স্থ লাভের সন্তাবন নাই। অভএব সকলেরই ধর্মপ্রায়ণ হওয়া উচিত।

ভক্তা কল্যাণমিতানি সেবেতেতরদুরগঃ॥

কল্যাণজনক কার্য্যে উপদেশাদি প্রানান কবিয়া শাহারা সহায়তা করেন, সেই কল্যাণ-নিজ্ঞাদগকে ভব্তিব সহিত সেক করিবে। তথ্য যাহার: পাপজনক কার্যে স্থায়তা করে, তাহা-দিপকে সংগ্রেভাতারে বর্জন করিবে।

বিংসা ভেরাহাণাকানং গৈগুন্তং পর ন নৃতে। সংভিয়ালাপবাপোদমভিধা দৃগ্রিপট্যরন্। পাপং কর্মেতি দশধা কায়বান্ত্রান্তমন্ত্রভং ॥

হিংসা চৌধা ও গুরুদা প্রনাদি নিষিদ কাম দেবা এই তিবিধ কায়িক পাপ; পৈণ্ডন্ত (প্রভেবকারক বাক্য), কর্কণ বচন, অসত্য কথন ও অসম্বন্ধ বাক্য এই চারি প্রকাব বাচনিক পাপ: প্রাণিববের চিন্তা, প্রস্তাপাদিতে অবহিষ্কৃতা ও নান্তিকতা এই তিবিধ মানসিক পাপ। কান্ত্রিক বাচনিক ও মানসিক এই দশ্বিধ পাপকে কান্ত্রমনোবাক্যে পরিত্যাগ করিবে।

অবস্থিৰাধিশোকান্তানমূব্যেষ্ঠ শস্কিতঃ।

নিরুপায়, রোগী ও শোকার্ত্ত ব্যক্তির মুগা-সাম উপকার কনিবে।

আন্তৰং সভনং পঞ্জেপি কীটপিপী্টিকম।।

অপরেদ কণ দূরে থাকুক, কীট পিপী-লিকাদি কুদ পাণিদিগকেও আত্মবৎ দর্শন কবিবে।

অর্চ্চরেন্দেরগোবিপ্র-রন্ধবৈক্তানূপাতিশীন্।

দেবতা, গো, বিপ্রা, রন্ধ্য, রোজা ও অতিপির অর্চনা করিনে।

বিমুখান নাৰিনঃ কুৰ্যান্ত্ৰভোত নাজিপেং ॥

প্রাথিদিগকে বিমুখ করিবে না, অবমাননা করিবে না এবং কর্কশ্বাকো ভাড়াইয়া দিবে না।

উপকারপ্রধান, স্যাদপকারণরেঃপ্রাচ্চী।

অপকারপর শুক্রর প্রতিও উপকারপর হুইবে।

সম্পদ্বিপথকেকমনা হেত্যোগ্রেথ কলে ন তু।

সম্পনে ও বিপদে সম্চিত্ত হইবে। হেতুতে
নীনি কানি, কিন্তু ফলে জীবা, কারিবে না
আর্থি 'ইনি বিভান্ ও দানানি ধন্মপ্রায়ণ
আদিও কেন ইছার নতন। হইব'' এইরপ
জীবা করা ভাল, কিন্তু কাছারও বিভাও
দানাদির ফলস্কুপ ধন এবং ধনে জীবা। করা
ক্রিবা মহে।

কালে হিতং মিতং জয়'দ্বিসংবাদি পেশলম্। পূৰ্বাবভাষী হুমূথ: সুশীলঃ কুৰুণামৃষ্ট্ৰ:॥ কালে অর্থাং যখন কোন প্রস্তাব উপস্থিত হুইবে, তখন হিত্তনক, পরিমিত, সত্য ও মনোজ থাকা কহিবে। পুর্বালাপী, স্বমুখ (গতজ্ঞকুটি), স্বশ্ল ও আর্ল্,চত্ত হুইবে।

ন কঞ্চিদ'শ্বন, শক্তং নায়ানং কণ্ডচিদ্রিপুম্। প্রকাশয়েশ্বাপন্নান্দ ন চ নিয়েহ তাং প্রকোল

এ ব্যক্তি আমান শত্রু অথবা আমি ইহার শত্রু ইহা কাহাঃও নিকট প্রকাশ করিবে না। স্বকীয় অপমান এবং প্রভূব নিঃমেহতাও কাহাকে বলিবে না।

জনক্তাশয়মালক্ষা যো বনা প্রিতৃষ্টি । তে° তথৈবাতুবন্তেত পরারাধনপঞ্জিতঃ ॥

প্রদেবাভিক্স ব্যক্তি, লোকের প্রকৃতি বৃথিয়া যে যাহাতে মন্তুষ্ট হয়, তাহাব প্রতি দেইরূগ আচ.৭ করিয়া গাকেন।

न शिफ्रप्रिविटिय'नि न देवर्श्यविनागसः ।

বসনাদি ইন্দ্রিয়দিগকে কুংসিত জ্বাদি
খারা নিগ্রাহ বালিবে না অথবা প্রাণোভন দ্রবাদি
খাবাও ইহাদের অভিশয় বিলাস সম্পাদন
করিবে না।

জিলগাঁশুক্তং নারস্তং ভঙেও ভঞাবিরোধ্যন্। অনুস্থাগাঁও প্রান্থিপদ: সন্ধ্যমেষ্ট্রধ্যমাশ্ ॥

যাহ। ধন্ম অর্থ ও কাম এই ত্রিবর্গ-বিবহিত এরপ কোন কার্য্যের অমুষ্ঠান করিবে না এবং এরপ কার্য্য করিবে, যাহা ঐ ত্রিবর্গের কাহারও বিরোধী না হয়। সর্ব্যপ্রকাব আচার ব্যবহারেই মধ্যে। বৃদ্ধি অবলম্বন করিবে। কোন এক বিষয়ে একান্ত আসক্ত হইবে না অর্থাৎ কিছুতেই গৌড়ামি করিবে না।

नोहरत्रामनथभाक्ष-नियालोडिया मलाग्रमः॥

কেশ নথ ও শক্ত যথাবিহিত কত্তিত করিবে এবং চরণ ও মলনির্গম পথ সকল পরিষ্কৃত রাখিবে।

উৎপাটয়েং তু লোমানি নানায়া ন কর্ণাচন। তছ্তপোটনতো দৃষ্টেদে বিবল্যং ছরয়া ভবেৎ । নাসিকার লোম উৎপাটন করিবে না, কেননা নাসিকার লোম উৎপাটন করিলে অতি সম্বর্জ চকুর বলহানি হয়।

রামশীলঃ ক্ষর্ভিঃ ক্রেশোক্ষ্মণৌজ্জঃ। ধারয়েৎ সভতং রম্ব-সিদ্ধমন্ত্র্মধৌষধীঃ।

নিত্য স্থান করিবে। চন্দনাদি স্থগন্ধি দ্রুবো চর্চ্চিতদেহ ও অমুদ্ধত বেশ হইবে, মনোহর উজ্জ্বল বসন পরিধান করিবে এবং রত্ন, নিদ্ধমন্ত্র (ইস্টকবচাদি) ও মহৌষণ সতত ধারণ করিবে।

স'তপত্ৰপদ্ৰাণে বিচরেদ্ যুগমাত্ৰদুক॥

গমনকালে ছত্র ও পদতাণ (জুতা, খড়ম) ব্যবহার করিবে এবং সম্মুখে চারি হস্ত পর্যান্ত স্থানের প্রতি দৃষ্টি রাখিয়া বিচঃশ করিবে।

নিশি চাতায়িকে কাষো দণ্ডী নৌলী সহায়বান্।।

বিশেষ কার্যান্যলোগে গাতিতে গমন করিতে হইলে হল্তে ঘষ্টি ও মস্তকে উষ্ণীষ ধারণপুর্বক সহায়বান্ হইয়া ঘাইবে।

ন'সংসূত্ম্পঃ কুটাং কুতহান্তবিজ্ঞনন। নাসিকাং ন বিকুণীয়ান্নাক্ষমাদিনিখেদ ভুবন। নাকৈশেচটেত বিশুবং নাসীতোংকটকস্থিতঃ।

হস্তাদি দারা মুথ আর্ত না করিয়া হাচিবে
না, হাস্ত করিবে না ও হাই তুলিবে না।
প্রয়োজন না হইলে নাক্ ঝাড়িবে না, বিনা
কাংলে মাটিতে দাগ কাটিবে না, হস্ত পদাদি
দারা বিক্ত ভঙ্গী করিবে না এবং
পদস্বয়ের গোড়ালি গুঞ্ছারে স্থাপন করিয়া
উৎকটভাবে বসিবে না।

দেহবাক্চেতসাং চেপ্তাঃ প্রাক্ এনাছিনিবর্তকেং।
নাজ্জানুন্তিরং তিপ্টেল্লভং সেবেত ন জনম্ ।
তথা চত্তরচৈত্যান্তল্পগন্ধরালয়ান্।
হনাট্রীশৃন্তাগৃহং শ্লামানি দিবাপি ন ।
সক্ষেক্তে নাদিতাং ন ভারং শিরসা বহেং।
নেক্তে প্রতং স্কং দীপ্তামেগানিয়ানি চ ॥
মন্ত্রিক্রস্কান-দানাদানানি নাচরেং॥

শ্রান্তির অর্থাৎ ঘর্মোংপত্তির পূর্বেই কায়িক কার্যা হইতে বিরত বাচনিক ও মানসিক উৰ্দ্ধজামু হইয়া অধিকক্ষণ থাকিবে না। রাত্রিকালে বৃক্ষমূলে, চহর * সমীপে (১ত্বর অর্থাৎ যেখানে গ্রামবাদী লোকেরা মিলিত হইয়া নানাবিধ কথোপকথন করে), চৈতাস্থানে (গ্রামস্থ কোন প্রসিদ্ধ প্রজার বৃক্ষতলে), চতুম্পথে ও দেবগৃছে অবস্থান कतिरव ना। वशुङ्गि वन वः निर्कान श्रान, শুকুগৃহ ও শুশুন এই সকল স্থানে দিবসেও থাকিবে ন।। উদয়কালে, অন্তগমন সময়ে বা গ্রহণ সময়ে সূর্যা দর্শন করিবে না। জল ও দর্পণাদিতে স্থাের প্রতিবিশ্বও দেখিবে না। মস্তক ছারা ভার বহন করিবে না। প্রদীপ্ত আগ্রাশখাদি, বিষ্ঠা প্রভৃতি অপবিত্র खवा वा चरित्र वञ्च भित्रखत मर्नन कदिएव मा। মন্ত বিক্রম্ম, মন্ত চোয়ান ও মন্তের আদান প্রদান করিবে ন।।

পুরেবি ১ তপ্রকল্পনারপক্ষ নিল্ন।
অনুজ্য কর্ণুলার-কাসপ্রধান্ত্রি থ্ন্ন ।
কুলছারান্পনিত্ত-ব্যালদং ছিনিদ নিন্ধ।
হীনানাধ্যাতিনিপুন-সেবাং বিপ্রহম্ভনৈ ।
সক্ষাবভাবহানত্রী-অধাধ্যয়নচিত্তন্ ।
শক্রসত্তগণকৌর্ণ-গণিকাপনিকাশনম্ ॥
গাত্রবন্ত্রনথের তিং হতকেশ্বের্নন্ম্ ॥
ভোরাধিপুজামধ্যের যানং বৃষং শব্দের্ম্ ।
ফ্রাতিসজিং বিশ্রস্থানার বৃষ্ণ শব্দের্ম্ ।
ফ্রাতিসজিং বিশ্রস্থানার স্ত্রিন্তি চাত্রের ।

পূর্ব বায়ু বা সন্মুখ বায়ু, আতপ, ধূলি, তুমার ও অলিগ্রবায়ু। দেবন করিবে না। বক্র দেহ হইয়া হাচিবে না, উল্পার তুলিবে না, কালিবে না, নিজা যাইবে না, আহার ও নেথুন কবিবে না। নদীতীববর্তী কুক্ষছায়া, নূপাছাই বাজি, ১ই অল্বাজ্ঞানি বালি, বাাল্লপদি দংখ্রী, বো-মহিযাদি শৃঙ্গী, ইহাদের সালিগ্য ত্যাগ করিবে। নীচ অসাধু ও অতিনিপুণ দেবা এবং

উত্তমের সহিত বিগ্রহ করিবে না। সায়ংকালে আহার, স্ত্রীসঙ্গ, নিজা ও শান্তচিস্তা করিবে না। শত্রুদত্ত অন্ন, যজ্ঞীয় অন্ন, জনাকীর্ণ স্থানের অন্ন, বেশ্রার অন্ন ও হোটেলের অন্ন ভক্ষণ করিবে না। গাত্র বক্ত ও নথ ছারা বাদ্য করিবে না। গাত্র বক্ত ও নথ ছারা বাদ্য করিবে না। গুমে প্রবেশ করিবে না। দ্বরক্ষণ স্থানে গমন করিবে না। (কেহ কেহ বাখনা করেন, শবের ধুম গ্রহণ করিবে না)। মতে আদক্ত হইবে না। স্ত্রীকে বিশ্বাস করিবে না এবং স্ত্রী হইতে স্বতন্ত্র থাকিবে না।

আ'চায়াঃ সর্ব্বচেষ্টাস্থ লোক এব হি ধীমতঃ। অনুক্ষাং তনেবাতো লৌকিকেহর্পে পরীক্ষকঃ॥

বৃদ্দিমান্ বাত্তি সকল কার্য্যেই লোকের উপদেশ লইয়া থাকেন। অতএব সাংসারিক বিষয়ে লোকের অমুকরণ করিবে।

অন্তিনতানতা ত্যাগঃ কারবাক্চেতনাং দম:। অংথিবৃদ্ধিঃ পরাংথিয়ু প্যাংগুনিভি সদ্বতম্॥

সর্নজীবে দয়া, দান এবং কায়িক বাচনিক ও মানসিক কার্যো শাস্ত ভাব, নিজবোধে পরকার্য্যসম্পাদন এই গুলিই সংসারের প্রধান সদাচার।

নকং দিনানি নে যাগ্রি কথছতম্য সম্প্রতি। ছুংখভাছ্ন ভবতোবং নিতাং স্মিহিতখাতি।॥

এক্ষণে আমার দিন বাত্রি কি ভাবে যাই-তেছে, অর্থাৎ আমি যে স্কল কার্যা করিতেছি, তাহার ফল ভাল হইতেছে কি মন্দ ইইতেছে, যে ব্যক্তি সর্কান ইহা অর্থা করে, তাহাকে কথনও হঃখভাগী হইতে হয় না।

ইত্যাচারঃ সমাসেন যং প্রাপ্রোতি স্মাচরন্। অংযুরারোগ্যমেথ্যাং যশো লোকাংশ্চ শাখতান্॥

এই সকল সদাচার, যাহা সংক্ষেপে কথিত হইল, তদমুসারে চ্লিলে আয়ু আরোগ্য ঐশ্বর্য ও যশ লাভ এবং স্বর্গাদি নিত্যধাম প্রাপ্তি হইয়া থাকে।

[ः] মতাজ্ঞরে রণভূমি।

निजाग्रखः स्थः प्रःथः পृष्टिः कोर्गाः वनावनम् । वृष्का क्रीवका खानमकानः जीविकः न ह ॥

আবোগ্য, অনারোগ্য, পুষ্টি, ক্বশতা, বল, অবল, পুরুষ্থ, ক্লীবছ জ্ঞান, অজ্ঞান, জীবন ও মরণ সমস্তই নিজাধীন জানিবে। অকালেহতিপ্রসঙ্গাত ন চ নিম্না নিবেশিতা। ক্রধায়নী পরা কুর্যাৎ কালরাতিরিবাপরা।

অকালনিজা, অতিনিজা ও অল্পনিজা এই ত্রিবিশ হুষ্ট নিজা, কাল্রাতিব ন্যায় আরোগ্য ও জীবন নাশ করিয়া থাকে। রাত্রৌ জাগরণং ক্লকং শ্রিশ্বং প্রশ্বপনং দিবা।

অরক্ষমনভিব্যাদি স্থাসীনগ্রচনারিতন্। ব রাত্রিজাগরণ রুক্ষ এবং দ্বানিজ্ঞা সিশ্ধ, কিন্তু বসিয়া ক্রিমান রুক্ষ বা শ্লেমাকারী নহে।

ইহাতে বুঝা ঘাইতেছে যে, রংক্ষম হেতু রাত্রি-জাগরণ বাতবর্দ্ধিক এবং সিগ্রন্থ হেতু দিবানিদ্রা শ্লেষ্ণ্যকনক হইয়া থাকে।

গ্রীত্ম বাতচয়াদান-রৌজারা গ্রন্থভাবত: । দিবাশ্বারো হিত্যুংজ্ঞান্ কফ্পিডকরো হি সং । মুক্তবা তু ভাষাধানাধ্ব-মজ্ঞগীভারকণ্মভিঃ। জোধশোকভয়ৈঃ রাভান্ শ্যাহিকাতিমারিণঃ॥ বৃদ্ধবানাবলক্ষণ ক্ষতভূট্শুলগাড়িতান্।

অজীৰ্ণাভিহতে।ক্সভান্নিৰাক্ষণোচিতীনপি। সৰ্ব্ব এতে দিবাক্ষণ দেবেৱন্ সৰ্বাকালিকম্।

ধাতুদামাং তথা ফেবাং গেখা চাঙ্গানি পুষ্ঠি। বায়ুর সঞ্জ, আদানকালের (উত্তরায়ণের)

বার্র সঞ্চর, জাদানকালের (ড ওরারণের)
রক্ষতা ও রাত্রির অল্লতা হেতু প্রীম্নকালে
দিবানিলা হিতজনক। কারণ দিবানিদায়
মিশ্বত্বশতঃ বায়ুর শাস্তি ও রক্ষতানাশ হয়
এবং রাত্রির অল্লতা নিদা সমাক্ রূপ হয়
না। প্রীম্ন ভির মন্ত কালে দিবানিদা অহিতকর অর্থাৎ কফ ও পিত্তকর হইয়া থাকে। তবে
বাহারা অদিক বাক্যকথন, অখাদি-মানারোহণ,
পথপর্যাটন, মন্তপান, স্ত্রীসঙ্গ, ভারবহন ও
ব্যায়ামাদি ধারা ক্রাস্ত; যাহারা ক্রোস্ক, শোক
ও ভয়মুক্ত; যাহারা খাস, হিকা ও অতিসার
গস্ত এবং যাহারা বৃদ্ধ, বালক, ছর্মল, ক্ষীণ,
শ্রাদি ধারা ক্রত, তৃষ্ণার্ভ, শুল্পীভিত, অজীণী,

লগুড়াদি ঘারা আহত, উন্মন্ত ও দিবানিজ: ভাগী, তাহাদের সকল কালেই দিবানিজা প্রশস্ত। কেননা, দিবানিজা ঘারা ইহাদের ধাতুসামা হয়, এবং দিবানিজোথ শ্লেমা ঘারা শ্রীরের পুষ্টি হইয়া থাকে।

বছনেদ কফ'ঃ স্থাঃ স্নেহনিত্য:*চ নাহনি। বিষাৰ্ত্তঃ কণ্ঠরোগী চ নৈব জাতু নিশাস্থপি॥

মেন ও কফবছল বাক্তিদিগেণ এবং যাহারা নিতা মেহপদার্থ দেবন করে, তাহাদের গ্রীষ্ম-কালে দিবানিদ্রা অকর্ত্তব্য । বিষপীড়িত ও' কঠরোগিণ রাক্তিতেও কদাচ নিদ্রা বাওয়া বিধেয় নহে।

অকালশয়ন(আহে-জ্যাক্তমিত্যপীনস্)। শিলেককুল্পাধ্যলাস-পোটোরেধানিমনাত), ॥

অকালে নিদ্রাইলে মোহ, জব, জৈমিতা (অক্সেব নিক্ষাহ্র), পীনস, শিলোরোগ, শোথ, ব্যক্রেগ, মলমুক্টানির প্রথোধ ও অধিমান্ত ইউয় থাকে।

ত্যভ্ৰোপৰাসবমন-স্বেদন বিনমৌগধন।।

অকাল-নিজাজনিত রোগে উপবাদ, ব্যন, - যেন ও সেহনস্তই প্রতিকারজনক উব্ব ।

> যোজয়ের িনিজায়াং তাপ্তং অচছদিনাঞ্জনন্। নাবনং জ্বলমং চিস্তাং বাবায়ং শোকভাতুপ্তঃ। এতিরেব চ নিজায়া নাশঃ গ্রেমাভিসংক্ষয়াৎ ॥

অতিনিদায় তীক্ষ ব্যন, তীক্ষ অঞ্জন, তীক্ষ নহা, উপ্বান, চিন্তা, স্ত্রীসঙ্গ, শৌক, ভর ও ক্রোণ হিতকর। অর্থাং এই সমস্ত ঔষণ দারা শ্লেয়ার ক্ষয় হওয়াতে নিদানাশ হুইয়া থাকে।

নিদ্রানাধানক্ষর্জ-শিরোগৌরবজ্ঞকাঃ। জড়িং গ্লানিজমাগজিনভক্তা রোগাল্চ বাতজাঃ॥

নিদ্রানাশ হইলে অঙ্গমন্দ (গাত্রকুট্টন,), মাথাভাব, হাই উঠা, শরীবের জড়তা, প্রানি, ভ্রম (গো-ঘোরা), অগ্নিমান্দা, তল্লা এবং বাত-জ্বানত রোগ সকল উৎপন্ন হইয়া থাকে। ষধাকালয়কে নির্মাং রাজে) সেলেত সাঞ্চাত।
ভাগাল্যাজ্যালয়কি প্রতিত হ্বাদ্যাজ্যালয়কাল বাত্রিজাগালে
অতএব বাত্রিকালে হ্বাদ্যালয় অভ্যাসভূসাবে নিজ্ হাইবে। হস্তুপি বাত্রি জ্ঞাগ্রণ
অভ্যাস না থাকে, অথচ কান্যান্ত্রেরে রাজে- কাল নিজ হাইবে।

ভাগবণ করিতে হয়, তাহা হইলে মে পরিমিত কাল বাত্রিজাগবণ কর। হয়, পরদিন প্রাতঃ-কালে আনাহার না করিয়া ভাহার আর্দ্ধেক কাল নিজ্ঞাহারে।

इंडा बुर्सन्थाः (नन्द्र्याः ।

অথ ঋতুচর্য্যা রোগার্ৎপাদনীয়াধ্যায় শ্চ।

মাসে ছদা থোম বিজ্ঞান থাম ধান্কতবা স্থার । নিনিবেবের সময়ক একৈবধানাজিমার । নিনিবাজে বিভিক্তেন্ত বিভালেম্ভরম্। আদানেক ভদানতে নৃধার প্রতিদিনা বলম্।

মানাদ হল ছল মানে এক একটি ঋতু গণন বাংলা মথানাম শিশিব বসন্তাদি ছলটি ঋতু হটল বাংক। বল শাল শাল কাল্যন শিশিব, চেত্র বেশাৰ বসন্তা, তোল আলাড় ভালা, আবিশ ভালা বাংলা কাল্যিক শাল এবং অপ্রান্থ লোক উত্তালে পি শালাকাল্য বলা পিয়া পাকে, ব্যাহতু এই কালে অর্থাদেব প্রতিদিন মন্ত্র্যানিকার বলা আলান অর্থাদেব প্রতিদিন মন্ত্র্যানিকার বলা আলান অর্থাদেব প্রতিদিন মন্ত্র্যানিকার বলা আলান অর্থাৎ প্রহণ করেন।

তিমন্ তাত্যবিংগাগ্য ককা মাগিসভাবত।
আদিতাপ্ৰনান সোমান্ কপায়ন্তি গুণান জ্বঃ ॥
তিতন কৰায়ং কটুকো বলিনাহত্ত ক্ষাং ক্ষাং ।
তথ্য বেদিনমানায়েণ্ডনো দ'ক্ষায়নন্ ॥
ব্যাবাদানমানায়েণ্ডনো দ'ক্ষায়নন্ ॥
কৌনায় না যো বা তি কলবান্ হায়তে ববিং ॥
নেগত্যানীয়া কিতে, শান্তভাবে মুকীতলে।
ব্যাবাদিকাক্ষায়ন্তনি ন্ত্ৰ

্ত্র এট আদানকালে মার্গস্কভাববশৃতঃ কুর্য্য-দেব এবং বায়ু অত্যস্ত তীক্ষ উষণ ও কৃক্ষ হুইয়া।

পৃথিবীৰ সৌমাওণ राक्या भाग करत्। মুত্রাং এই কালে ধথাক্রনে তিক্ত ক্ষায় ও কটু স বলবান্ হয়। অর্থাৎ নিশিরে ভিক্ত, বদন্তে কধায় ও গ্রীয়ে কটুঃস প্রবল হটয়া থাকে। আদান কাল আগ্রওণ প্রধান। ব্রাদি শতুরুরকে দক্ষিণায়ন কহে। ইহা বিসর্গ্রাল বিশ্যাপ অভিহিত হট্যা পাকে। যে ছেত চলেন বলবঙা নিবন্ধন এই বিস্থাকাল প্রাণি-হিগকে নিভা বলপ্রদান করে। এই কালে সোমগুণের আহিকা হেতুসেশ চন্দ্র) বলবান এবং ফুর্যা হীনবল হন। এতল বায়ু সেঘ ও বৃষ্টি *ছার৷ পৃথিবী বিগ্*তসস্থাপ হওয়াতে **অমু** লবণ ও মধুর রস যথাক্রমে বলবান ও সিগ্ধ হয় অর্থাং বর্ণাকালে অমু, শরৎকালে লবণ ও ্থ্যস্তক লৈ মধুর বস প্রবল হইয়া থাকে।

শাতেহগ্রাং বৃষ্টিঘর্মেহল্পং বলং মধান্ত শেবরোঃ।

শাত পাতুতে সমুষ্ণোণের বল অধিক হয়, বর্গা ও গ্রীয় পাতুতে জল্প এবং অবশিষ্ঠ পাতুতে মধ্য অধীং নাত্যল ও নাত্যধিক হইয়া থাকে।

হেমন্তশিশিরচর্যা।

বলিনঃ শীতসংরোধাজেনতে এবলোইনলঃ। ভবতাজেজনো ধাতৃন্স পচেবায়ুনেরিছঃ। অতো হিমেইন্সিন্সেবের স্বান্সলবশান্রসান্॥

লোমকৃপাদি মার্গ দকল ক্রত থারা সংক্রম হওয়াতে হেমন্ত ঋতুতে বলবান্ মন্ত্রমাদিগের জঠরালি বহির্গত হইতে না পাবিয়া প্রদীপ্ত ইইলা পাকে। তংকালে যদি অয়পানাদির অয়তা হয়, তাহা ইইলে পাচকালি বায়্প্রদীপ্ত ইইলা রমাদি পাতু সকলকে পাক করে। অতপ্রব হেমন্ত ঋতুতে পাতুপাকবিলোদী মধুশাম লবণ লম সেবন কবিবে।

দৈর্ঘারিশানামেতর্হি প্রাত্তরের বুজুবিলতঃ। অবস্থাকার্য্যং সম্ভাব্য ধ্রেণ্ডেকং নীলয়েন্দু ॥

হেশন্তকালে থাতি বড় হয় বলিয়া প্রাতঃ-কালেই লোক পুড়ুক্ষিত হইয়া থাকে। ভুক্ত দ্রুবা প্রায়ই অজীব থাকে না, অতএব প্রভূষে মল-মূত্রত্যাগাদি অবগু কর্ত্তবা কার্যা সকল সম্পাদন করিয়া দিনচর্য্যোক্ত দন্তধাবন ও অভ্যন্তাদি ক্রিয়া সকল প্রতিপালন করিবে।

বাতলটেরবজাকং মৃদ্ধি তৈলং বিম**দ্ধ**নন্। নিমৃদ্ধং কুশলৈঃ সাংক্ষং পাদাখাতক মৃদ্ধিতঃ ॥

শাতকালে বাতন্ন বলাতৈলাদি মাখিবে।
মক্ষকে বিশেষক্ষপে তৈলমর্দ্দন কবিবে এবং
অভ্যক্ষানস্তর গাত্রদংবাহন করাইবে। নিপুণ
ব্যক্তির সহিত বাহুৰুৰ ও ৰুদ্দকালে পায়ে
পায়ে ক্যাক্ষি করিবে।

কবায়াপজ্তক্ষেহস্ততঃ হাতো যথাবিধি। কুলুমেন সদর্গেণ প্রদিক্ষোহগুরুধ্পিতঃ ।

ব্যায়ামানস্কর লোগ্রাদিক্যায় ধারা তৈলা-প্রন্যন করিয়া যথাবিধি স্নান, স্নানাস্তে কুদ্ধম ও কস্তুরিকা ধারা গাত্র অন্তুলিপ্ত এবং অপ্তরুপুপে ধৃপিত করিবে অর্থাৎ অপ্তরুকার্ত্ত আরতে নিক্ষেপ করিয়া তাহার ধুম গ্রহণ করিবে। রসান্ বিশ্বাম্পাং পুষ্ঠং গৌড্যজ্ঞ হল প্রায়্। গোধ্যপিষ্টমাংসকু-ক্ষীরোপবিকুচার গুজার । নসময়ং বসাং তৈবং শোচকাবো হুপ্রেদক্ষ্। প্রাবারাজিনকৌধের-প্রবেদীকৌরবাত্তম্ ॥ উঞ্চপ্রভাবৈল গুজিঃ প্রাকৃত্য শয়নং ভজেং। বুক্তাকিকিরণান্ স্কেন্থ পাদ্রোগ্য সর্বাদা ॥

হেমন্তকালে স্বিপ্তাস অর্থাৎ ম্ধুবাল্লব্র-সংৰুক্ত দ্বা, পীবরতম্প গুণ মাংশ, নৃতন অন্ন এব গোধুন চুৰ, পিষ্ট, মাৰকলাই, ইকু ও ছগ্ধজাত বিবিদ মুভুগা দ্বা ভুগাণ করিবে। ক্রেড্ডাত অচ্ছম্বাও বীধু প্রভৃতি ম্দির বৃদ্ধ (১৭ংস্কেছ্) এবং ভৈল হস্তপরাদি-প্রকালনার্থ ট্রায়াদক ব্যবহার করিরে। গালিচা, মুগ্রন্থ, পট্টরন্ত্র বা সাটিন অথবা বনাত কল্লানি হারা শ্রা আরুত রাখিয়া ভাহাতে শ্রন কবিবে। শ্রন কালে লঘুভারবিশিষ্ট-উষ্ণ বন্ন ছারা গাত্র আবৃত রাশিবে। অগ্নিসেদ ও স্থাকিরণ यर्थाभवुकः (मत्न कहित्व धदः महंत। भान-ত্রাণ (জুতা) ব্যবহার করিবে।

অন্তমের বিধিঃ কার্বাঃ শিশিরেংপি বিশেষতঃ। তুলা হি শীত্রম্বিকং ত্রোক্ষ্যকালনকালভান ॥

হেমন্তকাল সপেক শিক্তি পতুতে নিত ও জাদানকালত ক্ষেত্ৰ অধিকাচন হন, অত-এব এইকালে পূকোন্ত হৈমন্তক বিধি সকল্ই বাৰ্লান্তপে সেবন*কাবেৰে।

বসন্তচ্য্য।।

ক্দ'শ্চিতে। হি শিশিরে বসম্ভেহকাংগুতাপিতা। হন্তাগ্যিং কুদ্ধতে রোগাংগুতন্তং ধর্মা জয়েৎ॥

শিশিব ঋতুতে কলিপ্তম্ম কলের সঞ্চয় হয় এবং সেই সাঞ্চত কফ বসন্তকালে স্থ্য সন্তাপে দ্বাভূত হইয়া জঠবালিকে নই কবিয়া বিবেধ একার রোগ উৎপাদন করে, অতএব ছাপুর্দক অর্থাৎ সঞ্চয়কালে কফের বিনাশ সাধন কর্ত্তব্য ।

ভাকেব্যন্নভাত্তেল পুরক্ষেশ্চ ভোজনৈ।
ব্যায়ামেগ্রুজনগৈতেতি হা নেখাব্যুজ্বন্।
আন্তেক্তির পুরি-চন্দন ওক্তুল্ন।
পুরাণ্যবনে ব্য-ব্যাসভাগ্রন্মুল্ডুক্।
মহকরেরসোক্ষিশানাপাত্ত প্রয়োপি ।
প্রোভ্যক্ষত্রসার্ক্রান্তির প্রান্তির ।
সোন্তর্তা হত্তান্ ব্যক্তে সভিতঃ গিবের।
নির্দিনাস্বালিউস্সাধ্যায়ীক্ষাধ্বান্।

বসন্তকালে তীক্ষ বদন ও তীক্ষ নস্তাদি গ্রহণ, লগু ও কৃষ্ণ দেবা ভোজন, বারিম, উম্বৰ্তন এবং প্রস্পান পাদ ক্ষাকাষ্ক্রপ মন্ন-ৰুক ভাষা প্ৰেয়ার বিনাশ, সান এবং কর্পা চন্দ্র অন্তর্ক কুদ্ধুম প্রভৃতি স্থানি দ্রব্য লেপন কবিবে। তদনত্ব পুরতিন ধ্র বা গোধৃদের কটি, মধু, জান্ধল দেশজাত পশু (কাবাব্) ভোছন भूलागाः **ग** পক্যাদিব করিবে। এইকালে আত্ররদ-মিশ্রিত, প্রেরদী-কর্ত্তক কিঞ্চিৎ পানান্তর প্রদত্ত প্রিয়াণর-স্ংস্পূর্ণে স্তথ্যীকৃত এবং প্রণায়নীর নয়নে। পলে প্রতিবিধিত হল্প দেবর্থিত আদ্ব অভিন্ত নাধু মাধাক ও মানৰ নামক বাদ্যবেশ সভিত স্মাব্যক বন্ধ शाग करिएव।

গ্রীগ্রচর্যা।

ভীকা শুরতিভীকা শুর্রীন্সে সাধিপাতীর যথ। প্রভারং কায়তে প্রেমা ভেন বাযুশ্য বর্ধতে। অভোহমিন পটুকটায়-ব্যায়ামার্ককরণস্তাজেও॥

গ্রীত্ম ধানুতে স্থানের জগতের স্নেল্পনার্থ (সারাংশ) হরণের নিস্তেই বেন ছাতি ভাগাংশু হট্যা পৃথিবাতে নিপতিত হন। এতারবন্ধন প্রভাহ শ্রেমার ক্ষর ও ধারুর বৃদ্ধি হট্যা পাকে। অত্তবে এই কালে লবে কটু (নাল)ও অস্ক্রান এবং ব্যাস্থান ও স্থান ক্ষরণ প্রিভাগি করিবে।

ভজেনাপুরমেবারং লঘু বিশ্বং হিসং দেবন্।

গ্রীশ্বকালে কেবল মধুব অন্ন, লবু, সিগ্ধ, নাত্র ও দ্বব্দল অংথার করিবে। ১নিংলাথিসিকালে নিগাছজনুন্ সংক্রান্। তেও এল জেলে আনকরণান্তর ছাতৃ জলে ওালক তেওে চিন্নসংযোগে লেহন করিবে। মজান পেলং পেলং বা স্বল্ধং স্বন্ধবারিশা। অক্সপা শোষণাঞ্জা-নাহমোহান্ করোভি তং।

প্রীশ্বকালে মন্তপান নিষিদ্ধ; ধ্রিই পান কবিতে হন, বহজল। মিশাইয়া অতি অন্ধ পরি-মাণে তাথ পান করিবে। নতুবা মন্তপানে শোণ, অস্ট্রাকান, দাহ ও মোহ উপাস্থত হইবে। কুলেন্দ্রনাং শালিকপ্রাজান্তলাং পালঃ॥

কুন্দপুষ্প বা চন্দ্র শুক্তরবর্ণ শালিত গুলের অয় জাদন মাংসাসহ ভোজন করিবে।

ব্র্বাচ্যা: ।

আপে-এর নক্সাদ্ধির সরোগ্রি সালিত।
বিপ্রে দাবৈদ্ধিতি হেগ্রুআন্তিদেশবরে ।
সভ্যতিগ মর্লা সহরে নীত্রেন চ।
পুর্প্রেশ্যেপ্রেন ম্লিনেন চ বারিগে ॥
বাহানির চ মনে ন তেকিতাকোক্ষিয়া।
ভত্ত সাধ্যেপ্র স্ক্রুআন্তিজনক যথ ।

আদৃতি অধাৎ উত্তর রণ্টকালে মকুষ্যের
দেহ রণান্ত এবং অগ্নিও কাল্সভাবে মন্দ হয়।
সেই মন্দ অগ্নি, বর্ণ শভুতে বাতাদি দোষ স্থারা
তাবও মন্দ হইয়া থাকে। এই কালে আকাশ
জলভারণম্বিত মেব স্থারা আছেয়, বায়ু ত্যার
মৃক্ত ও প্রীয়াভাপাপগ্রেম সহসা শাতন জল
ভ্বাপ্প ঘরা অমুপাক ও বর্দম স্থারা মলিন
এবং অগ্নি মন্দ হয়, এই সকল কারণে
বাতাদি দোষ্ময়য়, বর্ষাকালে মুগ্পৎ কুপিত হইয়া
থাকে। প্রপ্রা, বর্ষাকালে মুগ্পৎ কুপিত হইয়া
থাকে। পরপ্রা, বর্ষাকালে মুগ্পন করালা
দাধারণ অর্থাং তিদোষ্যের প্রশাক এবং অগ্নির
উদ্দীপক, সেই সমন্তই সেবন করা কর্তব্যা।
(নিমে সাধারণ বিধি লিখিত হইতেছে)

ঋতুচর্য্য।।

আস্থাপনং শুদ্ধতসূজীণং ধান্তং রসান্ কৃতান্। জাললং পিশিতং যুবান্ মধ্বরিষ্টং চিরস্তনম্। মস্ত সৌবর্চনোঢ্যং বা পঞ্চলোবাব্চ্ণিতম্। দিব্যং কৌপং শৃতঞ্চান্তো ভোজনস্থতিমূর্দ্দিনে। ব্যক্তায়লবণ্যাহং সংশুক্ষং ক্ষেত্রবন্ধ্।

বমনবিরেকাদি থারা শুদ্ধ শরীর হইয়া আক্থাপন (বস্তি), যব গোধ্মাদি পুরাণ ধান্ত, যুত-মরিচ-শুণ্ঠা দিযুক্ত মাংসরস, হরিণাদি জাঙ্গল মাংস, মুদ্গা-দাড়িম্বাদিক্ত যুষ, পুরাতন মধু ও মার্থীক অরিষ্ট, সচল লবণ ও পঞ্চ-কোলচূর্গ্রুক্ত দধির মাত্ত, রৃষ্টির জ্বল, কুপের জল এবং সিদ্ধ জল সেবন করিবে। অত্যন্ত রৃষ্টি-বাদলের দিনে অতি অম লবণ ও যুতাদি স্নেহ্রুক্ত মধুমিশ্রিত লঘুপাক শুক্তব্য ভোজন করিবে। (পিপুল, পিপুল্মুল, চৈ, চিতা ও শুঠ মিলিত এই পাঁচ দ্রব্যকে পঞ্চকোল কহে)।

অপাদচারী স্থরভিঃ সততং ধ্পিতাম্বরঃ। হর্ম্মাপৃঠে বসেধাপা-শীতশীকরবর্জিতে॥ নদীজনোদমস্থাহঃ-স্বপ্নামানাতপাংস্ত্যজেৎ॥

বর্ষাকালে পাদচারী হইবে না, অর্থাৎ
থানে গমন করিবে। স্থান্ধি দ্রবা ব্যবহার
করিবে। সত্ত গুপিত বন্ধ পরিধান করিবে
এবং ভূবাপা শৈত্য ও জলকণাবজ্জিত হর্ম্মাতলে বাস করিবে। আর নদীব জল, উনমন্থ,
দিবানিদ্রা, ব্যায়াম ও আতপ ত্যাগ করিবে।
(জল শ্বারা আলোড়িত, ম্বত মিশ্রিত ছাতুকে
উদমন্থ কহে)।

শরচ্চর্য্য।।

বর্ধাশীভোচিভাঙ্গানাং সহসৈবার্করন্মিভিঃ।
তথ্যনাং সঞ্চিতং পিত্তং ব্যক্তী শরদি কুপ্যতি।
তজ্জরার খৃতং তিব্ধং বিরেকো রক্তমোক্ষণম্।
বর্ষা-শৈত্যাভ্যস্ত ব্যক্তিগণের শরীর, শরৎ
কালে হঠাৎ স্থ্যাকিরণতাপিত হওয়ায়, বর্ষাসঞ্চিত পিত্ত শরৎকালে প্রকুপিত হয়।
অতএব পিত্তপ্রশামনের নিমিত্ত তৎকালে শাস্ত্রবিহিত্ত তিক্তম্বত পান, বিরেক ও রক্তমোক্ষণ কর্তব্য।

তিক্তং স্বাদ্ন কৰায়ঞ্চ ক্ষুধিতোহন্ধং ভজেন্নযু। শালিমুকাসিতাধাত্ৰী-পটোলমধুজাঙ্গলম্॥

এই ঋতুতে ক্ষ্বিত ব্যক্তি, তিক্ত মধুর ক্যায় রসম্ভাল বু অন্ন অর্থাং দাউদখানি চাউল, নূথ চিনি আমলকী পটোল মধু ও জাঙ্গল মাংস ভোজন করিবে।

তপ্তং তপ্তাংগুকিরণৈঃ শীতং শীতাংগুরশ্বিভি:।
সমস্তাদপ্যহোরাত্রমগন্ত্যোদয়নির্বিবন্॥
স্কৃচি হংসোদকং নাম নির্ম্বলং মলজিজ্ঞলম্।
নাভিয়ান্দি ন বা রুকং পানাদিষমূতে প্রম্।

যে জল, সমস্ত দিন সূর্য্যরশ্মি খারা সম্ভপ্ত বা নক্ষত্রাদির কিরণে এবং সমস্ত রাতি চক্র স্থলীতল ও অগস্তা নক্ষত্রোদয়ে নিবিষীক্বত, আয়ুর্কেন তন্ত্রক বেরা তাহাকে হংসোদক ইহা পবিত্র নিৰ্মাল বাভাদি-দোষ-অনভিষান্দী (শ্লেষ্মপ্রাবী नरह) ଓ নাশক পানাদি বিষয়ে এই হংগোদক অক্লক ৷ অমৃত তুলা।

চন্দনোশীরকপ র-মৃক্তান্ত্রখননোজ্জা। সৌধেষু সৌধধনলাত চল্লিকাং রজনীমূপে ॥

চন্দন ও উন্দানামূলেপন, কপূর্ব ও মুক্তা-এথিত মালা বারণ এবং বসন পরিধানে স্থশোভিত হটয়া, প্রাদোষকালে সৌধোপরি সৌধধবলা (খেতবর্ণ) চন্দ্রিকা সেবন করিবে।

তুষারক্ষারসৌহিত্য-দ্ধিতৈলবসাতপান্। তীক্ষমন্তদিবাম্বপ্ল-পুরোবাতান্ পরিত্যজেৎ ।

শরৎকালে নীহার, ক্ষার, পরিতোষ ভোজন, দধি, তৈল, বসা, হুর্যাতপ, তীক্ষ মন্ত্র, দিবানিদ্রা ও পূর্ববায়ু ত্যাজ্য।

শীতে বৰ্ষাস্থ চাপ্তাংস্ত্ৰীন্ বসম্ভেংস্তান্ রসান্ ভজেৎ। স্বাহুং নিদাযে শরদি স্বাহৃতিজ্ঞকবায়কান্ ।

শীত ও বর্ষাকালে মধুর অম ও লবণ রস, বসন্তকালে কটু তিক্ত ও ক্ষায় রস, গ্রীমকালে মধুর রস এবং শরৎকালে মধুর তিক্ত ও ক্ষায় রস সেবন করিবে। শরন্বসন্তরো রক্ষং শীতং বর্ম্মখনান্তরোঃ অন্নপানং সমাদেন বিপরীত্সতোহস্তদা॥

শরং ও বসস্তকালে রক্ষ অন্ধণান, অন্ত অতুতে অর্থাৎ হেমস্ত শিশির গ্রীম্ম ও বর্ধাকালে ম্মিগ্ন অন্ধণান, গ্রীম্ম ও শরংকালে শীতল অন্ধ পান, অন্ত ঋতুতে অর্থাৎ হেমস্ক শিশির বসস্ত ও বর্ধাকালে উষ্ণ অন্ধণান সেবন করিবে।

নিতা সক্রিসভাসে স্কাধিকারতার্তৌ॥

নিত্যই মধুরাদি ছয় রদ সেবনাত্যাস কর্ত্তবা, তবে যে যে শতুতে যে যে রস সেবনের বিশেষ বিধান হইয়াছে, সেই সেই শতুতে সেই সেই রস অধিক পরিমাণে ব্যবহার্যা, বৃঝিতে হইবে।

ৰংখারস্ত্যাদিসপ্তাহাবৃত্যুক্তিরতি স্থতঃ। তত্র পূর্বেন বিধিন্ত্যাজ্যঃ সেবনীয়োহপরঃ ক্রমাৎ। অসাস্ক্যকা হি রোগাঃ স্থাঃ সহসা ভাগশীলনাৎ।

ছই শত্র মধ্যবর্ত্তী সপ্তাহম্বর অর্থাং পূর্বে
শক্র অস্ত্য সাত দিন ও পর শক্র আদি সাত
দিন এই ১৪ দিন শতুসদ্ধি। সেই শতুসদ্ধিতে
ক্রমে ক্রমে পূর্ব-শতুনির্দিষ্ট বিধি ত্যাগ ও পর
শতুনির্দিষ্ট বিধি সেবন অভ্যাস করিবে।
কারণ সহসা অভ্যস্ত ত্যাগ ও অনভ্যস্ত সেবন
করিলে অসাগ্মজনিত রোগ সকল উৎপন্ন
হইতে পারে। অতএব ক্রমে ক্রমে অভ্যস্ত
ভ্যাগ ও অনভ্যস্ত সেবন কর্ত্তর।

रेंडि अफूहर्या।

অথাতো রোগা**সুৎ**পাদনীয়মধ্যায়ং ব্যাখ্যাস্যামঃ।

বেগান্ন ধাররেষাত-বিজ্ঞেকবভূটকুথাৰ্। নিজাকাসভাষৰাস ভৃত্যাভাজ্জিরেতসাৰ্॥

অতঃপর আমরা রোগান্থংপাদনীয় নামক অধ্যায় বাগ্যা করিব। অর্থাং যে সকল বিধি প্রতিপালন করিলে রোগ জন্মাইতে না পারে, সেই সকল বিধি বর্ণন করিব।

অধোবারু, মল, মৃত্র, হাঁচি, তৃষণা, কুবা, নিদ্রা, কাস, শ্রমজনিত নিশ্বাস প্রশাস, হাই, অঞ্জল, বমন ও শুক্র ইহাদের উপস্থিত বেগ কদাচ ধারণ করিবে না। (এই সকলের বেগ ধারণ করিলে যে যে রোগ জন্মিয়া থাকে, তাহা মাধ্ব-নিদানে স্বিশেষ ব্র্ণিত আছে, স্থতরাং এস্থলে লিখিত হুটল না)।

রে'গাঃ সর্ফোহপি জায়তে বেগোদীরণধারণৈ।॥

মল মূত্রাদির বেগ উপস্থিত না হইলে বলপূর্কক বেগ প্রদান ও বেগ উপস্থিত হইলে তাহার বিধারণ করিলে সর্কপ্রকার ব্যাধিই জ্মিয়া থাকে¹

ধাররেৎ তু সদা বেগান্ হিতৈবী প্রেত্য চেহ চ। লোভেয্যাবেৰমাৎসৰ্য্য-রাগাদীনাং জিতেন্দ্রিরঃ॥

যিনি ঐহিক ও পারত্রিক হিত কামনা করেন, তাঁহার জিতেন্দ্রির হইরা সর্ব্বদা লোভ, ঈর্ধ্যা, ধেষ, মাৎসর্ঘা ও রাগাদির বেগ ধারণ করা কর্ত্তব্য ।

ত্যাগঃ প্রজ্ঞাপরাধানামিক্রিয়োপশমঃ স্থৃতিঃ। দেশকালাস্ক্রবিজ্ঞানং সদ্বৃত্তস্থাত্বর্তনম্॥ অনুৎপত্ত্যৈ সমাসেন বিধিরেষ প্রদর্শিতঃ। নিজাগত্তবিকারাশামুৎপন্নানাক শাস্ত্রে॥

অসাম্য আচরণ ত্যাগ, চক্ষ্:-কণাদি ইন্দ্রিরের সংযম, পূর্ব্বাবস্থামরণ (এই করাতে এইরূপ হইল এবংবিধ চিন্তা), দেশ কাল ও আম-স্বরূপ বিজ্ঞান এবং সমৃত্ত্বের অমুষ্ঠান এই গুলি নিজ অর্থাৎ বাতাদি-দোষজ্ঞ ও আগন্তক অর্থাৎ অভিবাতাদিজাত রোগ সমৃত্বের অমুৎপত্তির এবং উৎপন্ন রোগের নিবৃত্তির সহজ উপায়।

শীতোদ্ভবং দোৰচরং বসন্তে বিশোধরন্ গ্রীমজমত্রকালে। ঘনাত্যরে বার্ধিকমান্ত সম্যক্ প্রায়োতি রোগান্ কতুলান্ন জাতু॥

শীতকালের সঞ্চিত দোষ (কফ) বসস্ত কালে; গ্রীম্মকালের সঞ্চিত দোষ (ৰারু) বর্ষাকালে; বর্ষাকালে সঞ্চিত দোষ (পিন্ত) শরৎকালে বিশোধন করিলে ঋতুজনিত রোগ সকল কদাচ উৎপন্ন হইতে পারে না।

> নিতাং হিতাহারবিহারদেবী সমীক্ষ্যকারী বিষয়েখসক্তঃ। দাতা সমঃ সত্যপরঃ ক্ষমাবান্ আংপ্রোপদেবী চ ভবত্যরোগঃ॥

যিনি সতত হিতজনক আহার বিহার করেন; যিনি শুভাশুত বিবেচনা করিয়া কার্য্য করেন; যিনি ইক্রিয়াদি বিষয়ে অনাসক্ত, যিনি দাতা, সর্ব্বজীবে সমচিত্ত, সত্যপরায়ণ, ক্ষনাবান্ এবং যিনি ঋষি প্রশৃতি জ্ঞানবৃদ্ধ আপ্রগণের সেবা করেন, তিনি অরোগী হন।

অর্থেরলভােষকৃতপ্রবন্ধং কৃতাদরং নিত্যমুপারবংস্থ। জিতেন্দ্রিয়ং নামুতপত্তি রোগা-স্তংকালযুক্তং যদি নাস্তি দৈবমু॥ যিনি অপ্রাপ্য বিষয়ে যত্ন না করেন এবং প্রাপ্য বিষয়ে নিত্য আদর করেন, যিনি জিতে-ক্রিয়, তাঁহাকে কোন রোগ আক্রমণ করিতে পারে না, কিন্তু যদি তৎকালে কোন দৈব প্রতিকূল না থাকে; কারণ দৈব প্রতিকূল থাকিলে তাঁহাকেও রোগাক্রান্ত হইতে হয়।

> कालाश्च्यक्:ना विषया मनाब्धा धर्षप्राः क्रियाः कर्ष्य स्थास्विष्ठि । मकः विषयः विणाग छ वृष्टि-ভবिष्ठ धीत्रक्ष माग स्थाय ॥

বাঁহার কাল অমুকূল (হীনমিণ্যাতিযোগ-রহিত), রূপরসাদি বিষয় সকল মনোজ্ঞ, ক্রিয়া সকল স্বধ্মনিরত, ব্যান-বিরেচনাদি-রূপ কর্ম্ম সকল স্বাস্থ্যকর, মন ছন্চিস্তারহিত এবং বৃদ্ধি নির্মাল হয়, সেই বৃদ্ধিমান্ ব্যক্তির সর্বাদাই সুথ অর্থাৎ তিনি কথনও রোগাদিতে আক্রাস্থ হয়েন না।

ই ত্যায়র্কেদ-সংগ্রহে দিনচ্গ্যা ঋতুচ্গ্যা রোগান্তংপাদনীয়াধ্যায়*চ।

অথারিফলক্ষণম ।

অথাতো বিক্কতিবিজ্ঞানীয়ং শারীরং ব্যাখ্যাম্থামঃ।

भूष्णः कलक ध्रमंश्यार्वर्षक कनामानग्रः । .यथां ভবিবাতো निकः विक्रेः मुख्यांच्यां अन्तम ॥

অতঃপর আমরা বিক্কতিবিজ্ঞানীয় শারীর ব্যাথা করিব। পূষ্প যেমন ভাবি ফলের, ধূম যেমন ভাবি অধির, মেঘোদয় যেমন ভাবি বৃষ্টির লিঙ্গ, রিষ্ট-লক্ষণও তজ্ঞপ ভাবি নিশ্চিত মৃত্যুর স্চক। অরিষ্ট: নান্তি মরণং দৃষ্টরিষ্টঞ্চ জীবিতম্ । অরিষ্টে রিষ্টবিজ্ঞানং ন চ রিষ্টেহপ্যনৈপুণাৎ ।।

রিষ্ট বিনা মৃত্যু হয় না এবং রিষ্ট উপস্থিত হইলেও বাঁচে না। অনৈপুণ্যহেতৃ অজ্ঞ লোকের অরিষ্টে রিষ্ট জ্ঞান হয় এবং রিপ্টেও রিষ্ট জ্ঞান হয় না।

কেচিং তৃ তদ্বিধেত্যাৰঃ স্থাবাস্থান্থিবিভেদতঃ।
দোৰাণামণি বাহুল্যান্তিষ্টাভাসঃ সমুদ্ধবেং ।
দ দোৰাণাং শমে শামোং স্থাবাহুত্ত মৃত্যুব ।
কতক গুলি আচাৰ্য্যের মতে রিষ্ট তুই
প্রকার; যথা—স্থান্থি ও অস্থান্থি। দোষসমূহের

আধিক্যে রিষ্টাভাদ প্রকাশ পায়, দেই রিষ্টাভাদ দোষের শমতায় প্রশমিত হয়, কিন্তু স্থায়ি রিষ্ট অবশ্রুই মৃত্যুর জন্ত উপস্থিত হইয়া থাকে।

ন্ধপেক্সিমন্থ রচছায়া-প্রতিচ্ছায়াক্রিমাদির। অক্টেম্বপি চ ভাবেরু প্রাকৃতেম্বনিমিন্তত:। বিকৃতির্ধা সমাদেন রিষ্টং তদিতি লক্ষয়েৎ ।

রূপ, ইন্দ্রিয়, স্বর, কাস্তি, প্রতিবিশ্ব, শারী-রিক বাচনিক ও মানসিক ক্রিয়া এবং অন্ত যে কোন প্রাকৃত ভাব, তাহা হঠাৎ বিশ্বতিপ্রাপ্ত হইলে, সামান্ততঃ তাহাকে রিষ্ট বলিয়া জানিবে।

কেশরোম নিরভাঙ্গং যস্তাভ্যক্তমিবেক্ষতে। **ৰন্তাতাৰ্থ:** চলে নেত্ৰে স্তন্ধান্তৰ্গতনিৰ্গতে ॥ জিক্ষে বিশ্বতসংক্ষিপ্তে সংক্ষিপ্তবিততক্রণী। উদ্বান্তদৰ্শনে হীন-দৰ্শনে নকুলোপমে॥ কপোতাভে অলাতাভে শ্ৰুতে লুলিতপক্ষণী। নাসিকাত্যর্থবিবৃতা সংবৃতা পিড়কাচিতা । উচ্ছ না ক্টিতা মানা যস্তোষ্ঠো যাত্যধাংধর:। উদ্ধং বিতীয়: স্থাতাং বা পকজম্বনিভাবুভো ॥ দ্যা: সশর্করাঃ ভাবান্তাম্রাঃ পুষ্পিতপক্ষিতাঃ। সহসৈব পতেয়ুৰ্বা জিহ্বা জিন্ধা বিদৰ্পিণা। ৰেতা হুছা গুৰু: খ্যাবা লিপ্তা সুপ্তা সকণ্টকা। শির: শিরধরা বোঢ়ুং পৃষ্ঠং বা ভারমায়ন: । হনু বা পিওমাপ্তরং শরুবন্তি ন যক্ত চ। যক্তানিমিত্রমঙ্গানি গুরুণাতিলঘুনি বা ॥ বিষদোষাদ্বিনা যস্য খেভ্যো রক্তং প্রবর্ত্ততে। উৎসিক্তং মেহনং যক্ত বুষণাবতিনিঃস্থতী। অতোহস্তথা বা যশু স্থাৎ সর্বেত তে কালনোদিতাঃ।

যাহার কেশও লোম তৈলাদি একিত না হইয়াও তৈলা দি বারা ্লত্ৰ-চঞ্চল इय, যাহার বেধি ন্তব্ব, অন্তৰ্গত বা বহিৰ্গত, কুটিল সংক্ষিপ্ত বা বিশ্বত এবং সংক্ষিপ্ত বা বিস্তৃত বিভ্ৰান্তদৃষ্টি, হীনদৃষ্টি ব' নকুলদৃষ্টি, কপোতাভ, অঙ্গার বর্ণ, অগ্রন্থাবী ও タオ (বাতাহতবং বিশৃভাল-পক্ষ); যাহার নাসিক! অত্যৰ্থ বিবৃত বা সংবৃত, পিডকা-বাাপ্ত, ফীত ফুটিত ও মান ; যাহার নিয়েছি অধ:কিপ্ত, উর্জোষ্ঠ উর্জন্মিপ্ত ও পক জামফল

সদৃশ; যাহার দস্ত শর্করাব্যাপ্ত, ভাব বা তাত্রবর্ণ, পুশ্গিত (খেত-চিক্কবিশিষ্ট)ও ক্লেদা-ষিত এবং সহসা নিপতিত; যাহার জিহ্বা কুটিল, অতিলোল, শ্বেত বা স্থাববর্ণ, স্তব্ধ, গুরু, শিপ্ত, রসজ্ঞানরহিত ও কণ্টকব্যা**ও** ; যাহার গ্রীবা শিরোবহনে, পৃষ্ঠ পৃষ্ঠভারবহনে, হয়ু (চোয়াল) মুখবিবরস্থ আয়গ্রাস ধারণে অসমর্থ ; যাহার অঙ্গ সকল কারণ বিনা গুরু বা লঘু; যাহার বিষয়ষ্টি বিনা শরীররন্ধ হইতে রক্ত নিংস্থত ; লিঙ্গ উর্জন্মিপ্ত, বুষণ-লিক অধঃকিপ্ত, দ্বয় অধঃপ্রলম্বিত; অথবা বুষণাধ্য উৎক্ষিপ্ত তাহাদের সকলকেই কাল-প্রেরিত বলিয়া জানিবে। অর্থাৎ তাহাদের মতা উপস্থিত।

যক্তাপ্রকাঃ শিরালেখা বালেন্দাকুতয়োহপি বা । ললাটে বস্থিশীৰে বা ষশাসাল্ল স জীবতি। পদ্মিনীপত্রবৎ তোয়ং শরীরে যক্ত দেহিন:। প্লবতে প্লবমানস্থ ৰগাসং তম্ম জীবিতম্। হরিতাভা: শিরা যক্ত রোমকুপাশ্চ সংবৃহা:। সোহমাভিলাষী পুরুষ: পিত্তান্মরণমশুতে ॥ যক্ত গোময়চূর্ণাভং চুর্বং মুদ্ধি মুখেহপি বা। সক্ষেহং মৃদ্ধি, ধুমো বা মাসান্তং তক্ত জীবিত্ৰ ॥ মূর্দ্ধি ক্রবোর্বা কুর্বসন্তি সীমস্তাবর্ত্তকা নবাঃ। মৃত্যুং স্বস্থ্য যড়াত্রাৎ বিরোক্তাদাতুরত তু। জিহন। ভাবা মুখং পৃতি সবামকি নিম**জ্ঞ**ি। থগা বা মৃদ্ধি লীয়তে যক্ত তং পরিবর্জনেং। যশ্র প্রাতাত্মলিপ্রস্তা পূর্ববং শুন্যত্মুরো **ভূশন্।** আংর্ড সর্ব্বগাত্রের সোহর্দ্ধমাসং ন জীবতি॥ অৰুশ্বাদ যুগপদ গাত্ৰে বৰ্ণে। প্ৰাকৃতবৈকৃতো । তথৈবোপচয়গ্লানি-রৌক্ষ্যম্বেহাদি মৃত্যবে। যন্ত ক্ষুটেয়ুরঙ্গুল্যো নাকৃষ্টা ন স জীবতি। ক্ষবকাসাদিষু তথা যক্তাপূৰ্বো ধ্বনির্ভবেৎ। ব্ৰুষো দীৰ্ঘোচতি বোচছ**্বাসঃ পৃতিঃ স্থনভিন্নেব** বা । আলু তানালুতে কায়ে যক্ত গলোহতিমানুষঃ। মলবন্ত্রণাদৌ বা বধান্তং তক্ত জীবিতম ॥

যাহার ললাটে অথবা বস্তির শিরোভাগে অভিনব শিরারাজি বা বালচন্দ্রের ক্সায় বক্ত আক্বতি সমুস্কৃত হয়, কিংবা স্পানকালীন যাহার শরীরে জলবিন্দু সকল নলিনীদলগত জ্ববং অর্থাৎ অনবস্থিতভাবে) স্থিত र्य, তাহার জীবনকাল ছরমান। যাহার শিরা দকল হরিতাভ এবং রোমকুপদমূহ সংবৃত হয়, সৈ অমভোজনাভিলাষী হইয়া পৈত্তিক রোগে প্রাণভ্যাগ করে। যাহার মন্তকে বা মুখে গোময়ত্র্ণ সদৃশ সঙ্গেহ তুর্ণ দৃষ্ট কিংবা মস্তকে ধুম উদগত হয়, তাহার জীবন স্থপ্ত ব্যক্তির মস্তকে বা একমাস। र्का९ त्रीमख वा त्रामावर्ख উद्धठ इरेल, তাহার জীবন ছয় দিন, রোগী ব্যক্তির হইলে তিন দিন। যাহার জিহবা ভাববর্ণ, মুখ ফুর্গন্ধ, বাম চক্ষ্য অন্তঃপ্রবিষ্ট বা মন্তকে কাকাদি পক্ষী উপবিষ্ট হয়, তাহাকে ত্যাগ করিবে। স্নাতামু-লিপ্ত ব্যক্তির সর্বাঙ্গ আর্দ্র থাকাতেও যদি প্রথমে তাহার বক্ষঃ অত্যন্ত শুদ্ধ হয়, তাহা হইলে সে অৰ্দ্ধ মাদও জীবিত থাকিবে না। অকস্মাং যাহার গাত্রে প্রাক্তত ও বৈক্তত বর্ণ, प्रस्त रहोना ७ कार्ना, भानि ७ हर्ष, त्रोका ও স্বেহাদি ৰুগপৎ উপস্থিত হয়, তাহার মৃত্যু উপস্থিত। আকর্ষণ করিলেও যাহার অঙ্গুল মটুকায় না, হাঁচি ও কাদ প্রভৃতিতে যাহার অলোকিক ধ্বনি, যাহার নিশাস অতিদীর্ঘ বা অতিহ্রস্থ, হুর্গন্ধি বা স্থগন্ধি, যাহার সাত বা অস্নাত শরীরে •তথা মলিন বঙ্গে, ত্রণাদিতে অমানুষ গদ্ধ হয় (সুরভি বা অসুরভি), তাহার জীবন এক বংসর।

ভন্ত স্ত হত্য সংস্বাধিক কাষ্য ।
ত্য জন্তি বাতি বৈরক্তাৎ সোহপি বর্ধ ন জীবতি ॥
সততোম হ গাত্রের্ শৈত্যং বক্তোপলক্ষতে ।
শীতের্ ভূপমৌক্যাং বা বেদঃ অক্টোহপাহেতুকঃ ॥
বো জাতশীতপিটিকঃ শীতাকো বা বিদছতে ।
উক্তেরী চ শীতার্জঃ স প্রেতাধিপগোচরঃ ॥
উরস্থানা ভবেদ্ বস্য জঠরে চাতিশীততা ।
ভিন্নং পুরীবং তৃকা চ বুধা প্রেত্তবৈধ্ব সঃ ॥
মৃত্রং পুরীবং নিঠ্যতং গুক্রং বাপ্ত নিম্ক্রতি ।
নিঠ্যতং বছবর্ণং বা বক্ত মাসাৎ স নক্ততি ॥

অঙ্গের অতি স্থরসত্ব হেতু (উকুন)ও মক্ষিকাদি যাহার শরীরে অভি-দর্পণ অথবা দেহের অতি বিরদম্ব হেতু যাহার শরীর ত্যাগ করে, তাহার আফুরাল এক সতত উষণতা বংসর। যাহার বাহ্য অঙ্গে কিন্তু অন্তরে শৈত্য অথবা যাহার বহিরঙ্গে শৈত্য কিন্তু অন্তরে অত্যন্ত দাহ কিংবা হঠাৎ অতিষর্ম্ম বা একবারে ষর্ম্মরোণ হয়, তাহাকে গতাম্ব জানিবে। যে ব্যক্তি কফোছুত পিড়কা-ক্রান্ত অথবা শীতাঙ্গ হইয়া বিদাহ অমুভব করে, যে শীতার্ত্ত হইয়াও উফদেষী হয়, সে ব্যক্তিও মৃত্যুর গোচর। যাহার উষ্ণ, জঠর শীতল, পুরীষ তরল, তৃষ্ণা অধিক-তর হয়, সে প্রেতবং। যাহার মূত্র, পুরীষ, গরের বা শুক্র জলে মগ্ন বা যাহার গরের নানাবর্ণ হয়, তাহার মৃত্যু একমাদের মধ্যেই হইয়া থাকে।

খনীভূতমিবাকাশদাকাশমিব যো ঘনম্।
অনুর্ত্তমিব মূর্ত্তঞ্চ মূর্ত্তং চামূর্ত্তবং শ্বিতম্ ॥
তেজস্বাতেজন্তবাচ শুক্লং কৃষ্ণমদাচ সং।
অনেত্রবোগশ্চলক বহরপমলাঞ্জনম্ ॥
জাগ্রক্রমাংসি গন্ধর্মান্ প্রেতানজ্ঞাংশ্চ তবিধান্।
রূপং ব্যাকৃতি তব্বচ যঃ পশ্যতি স নশ্যতি।

ধে ব্যক্তি আকাশকে ঘনীভূত এবং ঘটপটাদি ঘন বস্তুকে আকাশবং দর্শন করে, যে ব্যক্তি বাতাদি অমূর্ত্ত বস্তুকে মূর্ত্তিমান, এবং মূর্ত্তিমান বস্তুকে অমূর্ত্তবং বোধ করে, যে ব্যক্তি অম্যাদি ভাস্কর বস্তুকে নিস্তেজ, শুক্লকে কৃষ্ণ, আকাশকুম্ম প্রভৃতি অসং বস্তুকে সং, সংবস্তুকে অসং এবং নেত্ররোগাক্রাম্ভ না হইন্যাও চক্রকে বহুরূপ বিশিষ্ট অকলম্ভ দর্শন করে, যে ব্যক্তি জাগ্রদবস্থাতেও রক্ষঃ গন্ধর্ম প্রেত বা তিছা অস্তু প্রাণী ও বিক্বত রূপ দর্শন করে, তাহাকে গতামু জানিবে।

সপ্তৰ্নীণাং সমীপন্থাং যো ন পশুত্যক্ষতীম। প্ৰব্যাকাশগৰ্কাং বা স ন পশুতি তাং সমাৰ্॥ যে ব্যক্তি সপ্তর্থিমগুলের সমীপন্থ অক্লব্ধতী, উত্তর-কেন্দ্রস্থ ধ্রুব এবং আকাশগঙ্গা দেখিতে না পার, তাহার মৃত্যু সেই বংসরেই হয়।

মেদতোক্ষোধনিৰ্ঘোৰ-বীশাপণববেণুজান্।
শূণোত্যভাংক বং শক্ষানসতো ন সতোহপি বা ॥
নিশ্নীতা কণীে শুদুদ্বাদ্ব যো ধুকধুকস্বনম্॥

ষে ব্যক্তি মেখধননি, জলতরঙ্গনির্ঘোষ, বীণা পণব (বাদ্যবিশেষ) ও বংশীর রব বা তৎসদৃশ অক্ত শব্দ শুনিতে না পার, অথবা মেঘধনি প্রভৃতি না হইলেও যে ঐ সকল শব্দ শুনে এবং যে অঙ্গুলি ঘারা কর্ণরস্ক্রম্বর টিপিয়া ধুক ধুক (শব্দবিশেষ) শব্দ অন্তর্ভব না করে, ভাহার মৃত্যু নিকটবর্ত্তা।

তৰ্দগৰ্মসম্পৰ্ণান্ মন্ততে বো বিপৰ্য: ।
সৰ্বশো বা ন যো ৰক্চ দীপগৰ্মং ন জিছতি ।
বিধিনা যক্ত দোবায় স্বাস্থ্যায়াবিধিনা মসা: ।
যং পাংগুনেন কীৰ্ণালো বোংস্থাতং ন নেতি বা ।
অন্তরেশ তপন্তীবং যোগং বা বিধিপূর্বকম্ ।
কানাতাতীক্রিয়ং যক্ত তেবাং মরণমাদিশেৎ ॥

পূর্ন্বোক্ত মেলাদি-ধ্বনিবং, যে ব্যক্তি গন্ধ রদ ও স্পর্শের অদন্তাতেও দতা কিংবা তাহ-দের বৈপরীতা অর্থাং স্থগন্ধকে হুর্গন্ধ, মধুরকে আন ইত্যাদি অন্তত্তব করে, অথবা দর্বদা গন্ধাদি কিছুই বোধ না করে, যে ব্যক্তি তং-কালনির্বাপিত দীপগন্ধ না পায়, শাস্ত্রম্ভুক্তি অন্থলারে প্রস্তুক্ত রদ যাহার রোগের নিমিন্ত এবং অবিধি-প্রস্তুক্ত রদ যাহার স্বাস্ত্র্যের জ্বন্ত হয়, যাহার অঙ্গ ধূলিবাপ্তিবং হয়, যে ব্যক্তি অঙ্গাত ব্রিতে পারে না এবং যে উপ্রত্রপতা বা বিধিপূর্বক যোগ ব্যতিরেকেও অতীক্রিয় বিষয় জানিতে পারে, দেই দকল ব্যক্তির মরণ উপস্থিত জানিবে।

होत्ना नीनः चात्र'श्तादका चक्र क्र'म् शम्शामाश्री ता । महमा त्या निम्मूकम् वा निवक्न म जोवि ॥

যাহার স্বর হীন, অবসন্ন, অব্যক্ত ও গদ্-গদ, কিংবা মে ব্যক্তি বলিতে ইচ্ছুক হইয়া

বিনা কারণে কথা কহিতে পারে না, সে ব্যক্তি রক্ষা পায় না।

শ্বরপ্ত প্রব্বলীভাবং হানিং বা বলবর্ণরোঃ। রোগবৃদ্ধিমযুক্ত্যা চ দৃষ্ট্রা মরণমাদিশেৎ ॥

যাহার স্বরের দৌর্ম্বল্য, বল ও বর্ণের হানি এবং কারণ ব্যতিরেকে রোগের বৃদ্ধি হর, তাহার মৃত্যু নিকটবর্ত্তী জানিবে।

অপদরং ভাষমাণং প্রাপ্তং মরণমান্ত্রন:। শ্রোতারং চাস্ত শব্দক্ত দূরতঃ পরিবর্জ্জেৎ।।

বে বাক্তি আমার মরণ উপস্থিত, আমি আর বাচিব না, এরপ অপস্বর (হীনস্বর, কাতর হরে) কচে, কিংবা এই প্রকার নিজ মৃত্রে, কথা যে প্রস্পানের নিকট শোনে, বৈছ্য ভাহাকে ভাগে করিবেন।

সংস্থানেন প্রমাণেন বর্ণেন প্রভয়াপি বা। ছায়া বিবর্ত্তে বস্তা করেইপি প্রেভ এব সং॥

শবীরের গঠন, পরিমাণ, বর্ণ ও প্রভা শারা বাহার ছারা অর্থাং মৃত্তি অন্তথাসূত হয়, সে বিদি শহও হয়, ভাহা হইলেও তাহাকে মৃত্ত বলিয়া জ্ঞান করিবে। যথ:—সম অঙ্গ বিষম, বিষমাঙ্গ সম, দীর্ঘাঙ্গতি হৢয়, হৢয়াঙ্গতি নীর্ঘ, গৌরবর্ণ কৃষণ, কৃষণবর্ণ গৌর, উজ্জ্বল প্রভা মলিন, মলিন প্রভা উজ্জ্বল, ইত্যাদি বৈপরীত্য ঘটিলে, রোগির কথা দ্রে যাউক, মৃষ্থ ব্যক্তিকেও মৃতবং গণ্য করিতে হইবে।

· জাতপাদশতোয়াদে যা সংস্থানপ্রমাণতঃ। হারাসাৎ সম্ভবভূাকা প্রতিচ্ছারেতি সা পুনঃ। বর্ণপ্রভাশরা যা তুসা চ্ছারৈব শরীরগা॥

শরীরের গঠন ও পরিমাণাম্বরূপ যে ছারা অঙ্গ হইতে, আতপ দর্শণ ও জলাদি স্বচ্ছ পদার্থে পতিত হয়, তাহাকে প্রতিচ্ছারা অর্থাৎ প্রতিবিদ্ব কহে। প্রতিবিদ্ধ, বর্ণ ও প্রভার আশ্রয় নহে, কিন্তু যাহা বর্ণ ও প্রভার আশ্রয় এবং কেবল শরীরগত, অর্থাৎ যাহা প্রতিবিদ্বের স্থায় জলাদিতে যায় না, তাহাই দেহের ছারা। প্রতিচ্ছারা ও ছারার এই প্রভেদ।

ভবেদ্ বস্ত প্রতিচ্ছারা ছিলা ভিন্নাধিকাকুলা। বিশিরা বিশিরা জিন্ধা বিকৃতা বদি বাজধা । তং সমাপ্তার্বং বিজ্ঞান চেলকানিমিভজা। প্রতিচ্ছারাময়ী বস্তু ন চাঞ্চীক্ষ্যেত ক্সকা ॥

যাহার প্রতিজ্ঞায়া লক্ষ্যকারণ বাতিরেকে যদি ছিল, ভিল্ল, অধিক চঞ্চল, নিশ্বস্তক বা বিশস্তক, বক্র, বিক্ত বা অভ্যথাভূত (মন্ত্রের পশ্বাদিবং প্রতিজ্ঞান্না) হয়, অথবা যাহার নয়নে প্রতিজ্ঞানামনী কন্তকা (অক্সপ্ত্রলিকা) দৃষ্ট না হয়, তাহাব আয়য়শেষ হউয়াছে, জানিবে।

থাদীনাং পঞ্চ পঞ্চানাং ছায়া বিবিধলকণা:।
নাভসী নির্মানা নীলা সম্বেছা সপ্রভেব চ ॥
বাতান্ত্রভোহরণা ভাবা ভামরকা হতপ্রভা।
বিশুদ্ধরকা ছাগ্রেয়ী দীপ্রাভা দর্শনপ্রিয়া ॥
শুদ্ধবৈদ্ গ্রিমলা স্থান্ত্রভা কথা।
স্থিরা বিশ্বা থনা শুদ্ধা ভাষা বতা চ পার্থিবী।
বাহনী রোগমরণক্রেশায়াভাং ক্রথোদ্যাঃ॥

আকাশাদি পঞ্চ মহাভূতের, বিবিধ লক্ষণায়িত পাঁচ প্রকার ছায়া হয়। আকাশনা ছায়া নির্মাল, ঈষং নীলবর্ণ, সম্প্রেহ ও সপ্রভা বার্মনী ছায়া রজাযুক্ত, অরুল, শ্রাব, ভন্মবৎ রুক্ষ ও প্রভাহীন। আগ্রেয়ী ছায়া বিশুদ্ধ রক্তবর্ণ, দীপ্তাভ ও দর্শনপ্রিয়। তোয়জা ছায়া নির্মালবৈদ্ধ্যমণিবং বিমল, স্থান্মার ও ম্থাবছ। পার্থিবী ছায়া স্থির, মির্মা, ঘন, নির্মাল, শ্রাম বা খেতবর্ণ। বার্মনী ছায়া রোগ ও মরণের নিমিত্ত হয়, অন্ত ছায়া স্থাবহ ছইয়া থাকে।

প্রভোক্তা তৈজসী সর্কা সা তু সপ্তবিধা স্থতা। বক্তা পীতা সিতা ভাবা হরিতা পাঞ্চরাসিতা। তাসাং বাঃ স্থাবিকাসিভঃ বিদ্ধান্ত বিদলান্ত ঘাঃ। তাঃ গুভা মলিনাক্ষকা সংক্ষিপ্রান্তাগুডোদরাঃ॥

মুনিগণ প্রভাকে তৈজসী বলিয়া বর্ণন করিয়াছেন। প্রভা সাতপ্রকার; যথা—রক্তা, পীতা, খেতা, খ্যাবা, হরিতা, পাগুরা ও শ্রামা। ইহাদের মধ্যে যে সকল প্রভা বিকাসী, স্নিগ্ধ ও বিমল, তাহারা শুভপ্রদ এবং বাহারা মলিন, রুক্ষ ও সংক্ষিপ্ত, তাহারা অশুভঙ্গনক। বর্ণমাক্রামতি ছারা প্রভা বর্ণপ্রকাশিনী।

ছায়া রক্তাদি বর্ণকে আক্রমণ করে, অর্থাৎ বর্ণকে পথাছৰ করিয়া অবস্থিতি করে, কিন্তু প্রাভা বর্ণকৈ প্রকাশ করিয়া থাকে।

আসন্মে লক্ষ্যতে জ্ছারা বিকৃষ্টে তা প্রকাশতে। নাজ্যায়ো নাপ্রভঃ কশ্চিমিশেবাশ্চিক্সন্থি তু। নুশাং ওভাগুভোংপত্তিং কালে জ্বারাপ্রভাগ্রয়াঃ।

ভাষা নিকটে শক্ষ্য হয়, প্রভা দুরপ্রদেশে প্রকাশ পাইয়া থাকে। কোন ব্যক্তিই ছায়াহীন ও প্রভারহিত নহে। ছায়াও প্রভাবিত দৈহিক বিশেষভাব সকল মন্ত্র্যদিগের শুভাশুভাংপত্তি প্রকাশ করিয়া থাকে।

নিক্ষরিব যা পাদো চাতাংসা পরিসপতি। হীয়তে বলত: শবদ যোহরমখন হিতং বহু ॥ বোহলানী বছবিগাতো বহুবানী চালমুক্রবিট। ৰোহলাশী বা * কফেনাৰ্ছো দীৰ্ঘং ঘসিতি চেইতে । দীর্ঘমুচ্ছু, ত যো হুস্বং নিঃবস্ত পরিতাম্যতি। হ্রম্বরু বঃ প্রথমিতি ব্যাবিদ্ধং স্পন্সতে ভূপম ॥ শিরো বিক্ষিপতে কুদ্রুছাদ বোহঞ্চায়হা প্রপাণিকৌ। या ननार्**षेष ऋ**ष्टाचनः अथमकानवकनः ॥ উত্থাপ্যমান: সংমূহেদ যো বলী দুর্ববলোহপি বা। উদ্ধান এব স্বপিতি यः পাদৌ বিকরে।তি চ ॥ শয়নাসনকুড়াদৌ বোহসদেব জিমুক্ষতি। অহাভহাসী সংমূহন বো লেটি দশনচ্ছদৌ ॥ উত্তরোষ্ঠ্য পরিলিহন ফুৎকারাংক করোতি ব:। যমভিদ্রবতি চহায়া কৃষ্ণা পীতারুণাপি বা ॥ ভিৰগ্ভেষজপানাম-গুরুমিত্রবিক্ট যে। বশগা: সর্ব্ধ এবৈতে বিজেয়া: সমর্বজিন: ॥

বে ব্যক্তি নিথিলয়দ্ধ হইয়া পদ্ধয় ঘর্ষণ করিতে করিতে ভূমিতে বিচরণ করে; যে নিরস্কর বহুপরিমাণে হিতজনক অয় ভোজন করিয়াও বলহীন হয়; যে অয়ভোজী হইয়াও বহু মলমূত্র কিংবা বহুভোজী হইয়াও অয় মলমূত্র ত্যাগ করে এবং যে অয়াশী হইয়াও কফ ধারা পীড়িত হয়, দীর্যধাস ফেলেও

বোহননীর ইতি পাঠান্তরম।

পরিলুঠন করে; যে দীর্ঘ উদ্পাদানন্তর হ্রম নিশ্বাস ত্যাগ করিয়া ক্লিষ্ট হয়, যে হ্রস্থ নিশ্বাস-প্রশ্বাস ফেলে, কিন্তু নাড়ী যাহার বিষম-ভাবে আত্ৰয় স্পন্দন করে: যে প্রপাণিক (পাণির পশ্চান্তাগস্থিত অবয়ববিশেষ) বক্রী ক্লত করিয়া কণ্টে মস্তক চালনা করে; যাহার ললাট হইতে ঘর্মা নিংস্কৃত এবং স্থিবন্ধন শিথিল ২য়, বলবানট ভূটক বা গুৰ্মলট হউক, যাহাকে তুলিয়া বদাইলে মোহপ্রাপ্ত হয়, যে পদ**র**য় বিক্ত করিয়া চিং হইয়া নিদ্রা যায়: যে শ্যায়ে আসনে ও ভিত্তি প্রভৃতিতে অসং অর্থাং অবিষ্ণমান বস্তু পাইতে ইচ্ছা করে (বিছানা প্রভৃতি গোঁজে);যে অহাম্ম বিষয়ে হাসে, মৃচ্ছা যায়, দাঁতের মাড়ী ও উপর ওষ্ঠ চাটে, নানাশন্দবিশিষ্ট ফুৎকার করে; কৃষ্ণ পীত বা অরুণ বর্ণ ছায়া যাহার পশ্চালামিনী হয়, যে ব্যক্তি চিকিৎসক, ঔষধ, অন্নপান, গুরু ও মিত্রের দ্বেষ করে: তাহাদের সকলকেই খনের বশবর্তী জানিবে।

গ্রীবাললাটহ্ণদয়ং য**ন্ত বিদ্য**িত শাতলম্। উফোংপরঃ প্রদেশশ্য শরণং ভ**ন্ত** দেবতা॥

যাহার গ্রাবা, ললাট ও হৃদয় দর্মাক্ত এবং শাতল, অপর অঙ্গ উষণ, তাহার রক্ষাক্তা দেবতা অর্থাৎ দেবতা ভিন্ন তাহাকে রক্ষা করিতে বৈত প্রভৃতি আর কাহারও ক্ষমতা নাই।

বোংগুজ্যোতিরনেকাথো ছুশ্ছারো ছুশ্মনা: সদা।
বলং বলিজুতো যক্ত প্রণীতং নেপেজুঞ্জতে ॥
নির্নিমিত্তক যো মেধাং শোভামুপ্রকং শ্রিয়ম্।
প্রায়োততো বা বিজংশং স প্রায়োতি যমক্ষয়ম।

বে গণুজোতি অর্থাৎ অল্পৃষ্টি বা অল্প তেজ এবং ন্যাকুলচিত্ত, বিবর্ণকান্তি ও সদা ছম্মন। হয়, কাক-শৃগালাদি বলিভূক্ প্রাণী বাহার প্রদন্ত বলি ভোজন না করে এবং কারণ ব্যতিরেকে যে ব্যক্তি মেধা, দেহোপচয় ও ধন বা রাজ্যাদি শ্রী প্রাপ্ত, অথবা নেধা প্রভৃতি হইতে বিল্লপ্ত হয়, সে ব্যক্তি যমভবনে গমন করে।

গুণদোৰময়ী ষ**ন্ত স্বস্থ**ন্ত ব্যাধিত**ন্ত** বা। যাতান্তথাকং প্ৰকৃতিঃ ব্যাদান স জীবতি॥

স্বস্থ বা ব্যাধিত যে ব্যক্তির সন্তাদি-গুণ-ময়ী ও বাতাদি-দোষময়ী প্রকৃতি অন্তথাভাব প্রাপ্ত হয়, সে ছয় মাসের অধিক বাচেনা।

ভ'জ: শীলং স্মৃতিস্তাগো বুজ্বলমহেতুকম্। ষড়েতানি নিবৰ্জন্ত ষড়,ভিম সৈম রিষ্তঃ। মত্তবদ্গতিবাকস্প-মোহা মাদাশ্মরিষ্যতঃ॥

মাদের মধ্যে নাহার মৃত্যু হইবে, তাহার ভক্তি, সভাব স্থৃতি, দানশালতা, বৃদ্ধি ও বল বিনা কোরণে অপগত:হয় এবং যাহার এক মাদের মধ্যে মৃত্যু হইবে, তাহার মন্তবৎ গতি, বাক্য, কম্প ও মোহ হইয়া থাকে।

নক্তভালনি বড়হাৎ কেশ্বুঞ্নবেদনাম্।
ন যাতি যক্ত চাহার: কণ্ঠং কণ্ঠমরাদৃতে ॥
প্রেয়াঃ প্রতীপতাং যান্তি প্রেতাকৃতিরুদীয়াতে।
বক্ত নিপ্রাভ্রেমিতাং নৈব বা ন স জীবতি ॥
বক্ত্রনাপ্র্তেহক্ষণাং বিশ্বভক্তমনা ভ্রন্ম ॥
চক্ষ্টাকৃততাং যাতি যমরাজ্যং গমিষ্যতঃ।
থৈঃ পুরা রমতে ভাবেররভিন্তের্ন জীবতি ॥

কেশেৎপাটন জনিত বেদনা যে অন্তর্ভব করিতে না পারে এবং গলরোগ বিনা, থান্ত জব্য যাহার গলাধাকরণ না হয়, ছয় দিনের মধ্যে তাহার মৃত্যু হইয়া থাকে। ভূত্যগণ যাহার প্রতিকৃল হয়, তাহাকে প্রেতাকৃতিই জানিবে। যে সতত নিজা যায় বা একবারও ঘুনায় না, যাহার অঞ্চর স্রোতোম্থ কল, পদবয় অকারণ অতিশয় ঘর্মাক্ত এবং চল্ফুঃ চঞ্চল হয়, তাহাকেও যমালয়ে যাইতে হইবে। ধন জন বান্ধবাদি যে সকল বিষয় পুর্বেজ্ঞানন্দোৎপাদন করিত্ত, সেই প্রীতিপ্রদ বিষয় সকল যাহার ভাল না লাগে, তাহার মৃত্যু উপস্থিত।

সহসা জারতে যক্ত বিকার: সর্বলক্ষণ:। নিবর্ত্ততে বা সহসা সহসা স বিন্ঞাতি॥

যাহার জ্বনাদিবাধি, কারণ বাতীত সহসা সর্মলক্ষণাক্রান্ত হয়, অথবা সর্মলক্ষণাদ্বিত ব্যাধি হঠাং প্রশমতা পায়, তাহান মৃত্যু অচিরে হইয়া থাকে।

শ্বরো নিংস্তি বলবান্ গন্ধীরে। দৈর্ঘরা, ত্রিকঃ।
দশ্রলাপত্রমন্ধানঃ ক্ষীণং শুনং হতানলম।
শক্ষামং সক্তবচনং রক্তাকং হাদি শুলিনন্।
দংগুদ্ধকাস্থ পূর্বাকে যোহপরাক্তেইপি বা ভবেং।
বলমাং স্বিচীনস্তা লেখকাসসমন্তিতঃ।

প্রবল বত হেতৃ বার: উৎপন্ধ যে বলবান্
জর; নজজপভৃতি গভীব-বাহাশ্রী যে
গভীর জর; দীর্ঘকালায়বন্ধী যে দৈর্ঘরাত্রিক
জর এবং প্রলাপ ভ্রম ও খাসমুক্ত যে জর;
বলমাংসবিহীন ব্যক্তির প্রেম্বকাসমূক্ত যে জর;
যে জর পূর্নাত্রে ও অপরাত্রে শুক্ষকাস উংপাদন, করে, তাহা ক্ষীণ, শোগাঁ, হতানি,
অথবা অক্ষাণ, গলবন্ধবচন, রক্তাক এবং
ফ্রদমে শূলবং বেদনাবিশিষ্ট সোগিকে বিনষ্ট
করে।

রক্তপিতং ভূশং স্তং কৃশ্ চিন্ন্র্থেভন।
তাজহারিদ্রহিরতং রূপং রক্তং প্রদর্শয়েৎ॥
রোমকুপপ্রবিস্তং কঠাক্তহদয়ে সক্তং।
বাসসোরঞ্জনং পৃতি বেগবচচাতিভূরি চ।
বৃদ্ধং পাঞ্জরচ্চাদ্ধি-কাসশোধাতিসারিণ্য॥

রক্তপিওঁ রোগে রক্ত যদি অতি লোহিত বা অতি কৃষ্ণ অথবা ইন্দ্রবল্প: প্রভ হয়, রোগী যদি দৃশ্যমান বস্ত তাম হারিদ্র ছরিত বা রক্ত-বর্ণ দর্শন করে, কিংবা রক্তাপিত্তের রক্ত যদি সমস্ত রোমকৃপ হইতে নিংস্থত হয়; অথবা কঠে আন্তেও হৃদয়ে যুগপৎ লিপ্ত হইয়া থাকে; কিংবা ঐ রক্ত যদি ছর্গন্ধী, অতি-বেগেও বহু পরিমাণে নিংস্থত হয় এবং উহা বন্ধে লাগিলে যদি সেই বন্ধ জলে প্রকালন করিলেও দাগ না উঠে, তাহা হইলে রোগির মৃত্যু হইয়া থাকে। অতিপ্রবৃদ্ধ রক্তপিক, পাণ্ডু, জ্বর, বমি, কাদ, শোথ ও অতিদারমুক্ত রোগিকে বিনষ্ট করে।

কাসবাদৌ অরচ্ছদ্দি-তৃষ্ণাতীসারশোফিনম্। যক্ষা পার্বরুজানাহ-রক্তচ্চদ্দিংসতাপিনম।

কাস ও শ্বাস রোগ, জ্বর বমি তৃষ্ণা অতিনাব ও শোথোপদ্রবে উপক্ষত রোগিকে বিনষ্ট করে। যক্ষবোগে পার্মবেদনা আনাহ রক্তব্যন ও স্করদেশে অভিতাপ উপস্থিত হুইলে রোগির মুত্যু হয়।

ছজিবেগৰতী মতশক্লগজিঃ সচন্দ্ৰিকা । । সাঅনিট্পাৰ্জক্কাস-খাস্বভাক্ষজিলী ॥

বমিবোগে বমন যদি মহাবেগে প্রবর্ত্তনান, মৃত্র বা মলগদি ও ময়ুবপিচ্ছবৎ নানাবর্ণ-বিশিষ্ট হয় এবং উহা যদি সরক্তন মল পুষ বেদনা কাস ও শাসাদি উপদ্রবন্ত্তন ও দীর্ঘ-কালস্থায়ী হয়, তাহা হইলে রোগিব মৃত্যু ঘটিয়া থাকে।

ভূঞান্তরোগজলিত[ে] নটি^{প্রি}ইং বিচেতনন্।

ভূষণলৈনে বেগী বদি স্থান্ত বাধি থাবা ক্ষিতদেহ নিংগাবিত-জিহন ও বিচেতন হয়, তাই ইটাল বেগিয়ে মৃত্যু নিকটবর্ত্তী।

बन्दिस्ट्रिकी अर्खः कौन्द टिनश्रष्टानम् ॥

মনা গ্রায়রোগে রোগী অতিশয় শাঁভার্ত্ত, ক্ষীণ ও তৈলপ্রভানন হইলে, তাহার মৃত্যু আসন্ন জানিবে।

অৰ্শাংসি পাণিপান্নাভি-গুদম্কান্তশোকিনম্। হুৎপাৰ্যাক্সঞ্চলাচ্ছৰ্দি-পায়ুপাকজ্বাতুরম্॥

অশোরোগে যদি হস্ত পদ নাভি গুল্ মুক্ষ ও মুখে শোথ এবং হ্বদয় পাশ্ব ও অক্সান্ত অঙ্গে বেদনা, বমি, গুছদেশে পাক ও জ্বর উপস্থিত হয়, তাহা হইলে বোগিৰ মৃত্যু হইয়া থাকে।

অতীসারো বরুৎপিও-মাংসধাবনমেচকৈ:। তুলাতৈলঘুতক্ষীর-দধিমজ্জব সাসবৈ:॥

अनटेडनियम्मःश्रोमा ठिक्काकारः ।

মন্তবৃদ্ধমাপুদ-বেশবারাস্মান্তিকঃ।
অতিরক্তাসিত্রিগ্ধ-পূহাক্ত্যনবেদনঃ॥
কর্বনুরঃ প্রথমন ধাতুন নিপারীবোহপবাতিবিট্।
হন্তরান্ ফ্লিকাফ পো রাজামাংশ্চল্রকৈযু তিঃ॥
কর্বনিযুগ্রাং মুক্তনালং প্রকাশিকার ।
সন্তপ্তপার্থ ব্রক্তীগনরমেবোপবেশরে।
সভ্টারাস্বরক্তিদিনাহানাইপ্রাহিকঃ॥

ভাতিসার রোগে মল যদি মেচকবর্ণ চক্ষণ-চিক্রণ) অথবা যুকুংগও, মাংস্কাবন । জল। এবং তৈল, গুত, ৬গ্ধ, দবি, মজ্জা, বসা, আসব. মश्चिक, काली, शृश, निदंखि अष्टिमाश्म, जन ৰা মধুৰং হয়, কিংবা অতিৰক্ত, অভিকৃষ্ণ, অতিচিক্কণ, তুৰ্বান্ধ, নিশাল, ঘন ও বেদনাখিত হয়, কিংবা নানা ধাতুস্রাবহেতু কলার অর্থাং বিবিধবর্ণ বিশিষ্ট, অথবা পুরীষহীন বা অতি পুরীধ্যুক্ত, ভয়মান্, মাক্ষকাক্রাস্ত, রেখাবিশিষ্ট বা ময়ুরপিচ্ছবং-নানাবর্ণ হয় এবং রোগির যদি গুহুদেশ ও গুদনাড়ী শার্ণ এবং মুক্তনাল (निशिनवन्त्रन), शर्कान्डि मृतवः (वननांत्र्ङ, পায়ু অলিত, : বল ক্ষীণ, যথাভূক্ত মলত্যাগ এবং ভূষণ শ্বাদ জর বমি দাহ আনাহ বা প্রবাহিকা উপস্থিত হয়, তাহা হইলে মৃত্যু অবশ্ৰম্ভাবী জানিবে।

অশ্রী শুন্রধণং বদ্ধমূতং কলার্লিতম্। মেহস্তৃত্দুঃহপিটিকা-মাংসকে ব্রতিসারিণম ॥

অণ্যরীরোগে বৃষণে (কোবে) শোথ,
মূত্র বন্ধ ও ব্যালা ।থাকিলে এবং মেহরোগে
পিপানা দাহ পিড়ক। মাংনপচন ও অভিনার
উপস্থিত হইলে রোগির মৃত্যু হয়।

পিটিকা মধ্যক্তপৃষ্ঠ-ন্তনা সন্তদমূদ্ধগাঃ। পর্কপাদকরন্থা বা মন্দোৎসাহং প্রমেহিণন্ । সর্ককে ম'ংসসকোধ-মাহত্যামন্দ্রীয়ে। বিসর্পম্পাদারোধ-হিকাশাসভ্যক্তিয়ে।

প্রমেছ রোগে পিড়কা যদি মশ্মস্থানে, স্থানর, পৃষ্টে, গুনে, স্বন্ধে, গুহে, মস্তকে, পর্ব-স্থানে, হস্তে ও পদে জন্মে, তাহা হইলে মন্দোৎ-সাহ প্রমেহ-রোগিকে বিনষ্ট করে। আর পিড়কারোগে যদি মাংসপচন, দাহ, ভুষণা, মন্ততা, জন, বিদর্প, মর্ম্মরোধ, হিকা, খাস, ভ্রম ও ক্লান্তি। (দোষজা গ্লানি) উপস্থিত।হয়, তাহা হইলে প্রমেহী কেন, সকলেরই মৃত্যু হইয়া থাকে।

শুলঃ পৃথুপরাণাহো ঘনঃ কুর্ম ইবোল্লতঃ।
শিরানকো অবচছর্দি-হিকামানকলাবিতঃ।
কাসপীনসহুলাস-বাসাতিসারশোধবান্॥

গুল্ম যদি বৃহৎ, নিবিভাবন্নব, কুর্মাবং উন্নত শিরাবাপ্তি এবং জব বাম হিক্কা উদরা-শ্বান বেদনা কাস পীনস ব্যন্ত্রেগ শ্বাস অতি-সাব ও শ্বোথ এই সমস্ত বা ইহাদের কোন কোন উপদ্রবে উপদ্রুত হয়, তাহা হইলে গুল্ম-রোগির জীবনাশা নাই।

বিশ্বত্রসংগ্রহখাস-শোপহিকাজরত্রমৈঃ।
মূর্চ্ছাচ্ছদ্যতিসারৈশ্চ জঠরং হস্তি তুর্বালম্॥
শুনাক্ষং কুটিলোপস্থম্পক্লিতস্থচন্।
বিরেচনকৃতানাহমানাহঞ্গুনঃপুনঃ॥

জঠনরোগে বদি মলমূত্রবিবদ্ধতা, খাস, শোধ, হিকা, জর, ত্রম, মুচ্ছা, বমি, দৌর্বলা ও অভি-সার উপস্থিত হয় এবং রোগির নেত্র ফীত, লিঙ্গ বক্র, ওক্ ক্লেদ্মুক্ত ও পাত্লা, বিরেচন-জন্ম আনাহ বা পুনংপুন: আনাহ, এই সকল লক্ষণ ঘটে, তাহা হইলে রোগির মৃত্যু জানিবে।

পাঙুরোগঃ খ্য়থুমান্ পীতাক্ষিনখ্দর্শনম্। তন্ত্রাদাহারটচছর্দি-মুর্চ্চাধানাতিসারবান্॥

পা গুরোগে যদি শোথ, তন্ত্রা, দাহ, অক্লচি, বমি, মুচ্ছা, আগ্নান ও অভিসায় উপস্থিত হয় এবং রোগির অক্ষি ও নথ যদি পীতবর্ণ হয়, সে যাহা দর্শন করে, তাহাও যদি পীতবর্ণ দেখে, তবে রোগির জীবন সংশয় জানিবে।

অনেকোপদ্রবযুতঃ পালাজ্যাং প্রস্তো নরম্। নারাং শোফো মুথান্ধ্য কুক্ষিকুজাত্রভাবপি। রাজাচিতঃ প্রবংশদিক্ষরশাসাতিসারিণম্॥

পুরুষের শোথ যাদ পা হইতে আরম্ভ করিয়া ক্রমশঃ উর্দ্ধাহে প্রস্থৃত ও জ্বরখাসাদি বহু উপদ্রবস্তুক হয়, তাহা হইলে শোথ পুরুষবাতী এবং স্ত্রীলোকের শোথ যদি মৃথ হইতে আরম্ভ করিয়া ক্রমে ক্রমে পাদদেশে উপস্থিত হয়, তাহা হইলে উহা দ্রীঘাতী; আর কুন্দি বা গুছ হইতে প্রস্তুত শোথ দ্রী ও পুক্ষ উভয়ঘাতী জানিবে। এবং শোথ বদি স্রাবিশিষ্ট ও শিরাব্যাপ্ত এবং রোগী বদি বমি, জ্বর, শ্বাস ও অতিসারোপদ্রবে উপক্রত হয়। তাহা হইলেও আতৃরকে গতাস্থ জ্ঞান করিবে।

ব্যাতিসারে শোফান্তে ব্যপুর্বা তরোঃ করে। ত্র্বাক্ত বিশেবেণ জায়ন্তেইস্তায় দেহিনঃ ।

শোথ রোগের অস্তে বদি জন ও অতিসার অথবা জনাতিসারের অবসানে শোথ হয়, তাহা হইলে এবংবিধ জন, অতিসান ও শোথ দেহিকে বিশেষতঃ গুর্মল ব্যক্তিকে বিনষ্ট করে।

খয়থ্র্বস্ত পাদস্থঃ পারত্রন্তে চ পিণ্ডিকে। সীদক্তঃ সকৃষিনী চৈব তং ভিষক পরিবর্জয়েৎ ॥

যাহার শোথ পাদাশ্রিত, পারের ভিম স্বস্থান-চ্যুত এবং উরুদ্বর অবসয়, তাহাকে পরিত্যাগ করিবে।

আননং হন্তপাদঞ্চ বিশেষাদ্ বস্ত গুবাতি। শুরতে বা বিনা দেহাৎ স মাসাদ্ যাতি পঞ্চতাম্॥

যাহার মুখ ও হাত পা বিশেষরূপে শুফ হয়, অথবা দেই বিনা মুখ ও হাত পা বিশেষ-রূপে ক্ষীত হয়, সে রোগী এক মাসের মধ্যেই পঞ্চত পাইয়া থাকে।

বিদর্প: কাদবৈবর্ণ্য-জ্বনুর্ফ্ছাক্তক্সবান্। জ্ঞমান্তশোষস্থলীদ-দেহদাদাভিদারবান্।

বিদর্প রোগে কাদ, বৈবর্ণ্য, জ্বর, মূর্চ্ছা, অঙ্কমর্দ্দ, ভ্রম, মূখশোষ, বমনবেগ, অবদন্ধতা ও অতিদার উপস্থিত হইলে রোগিকে ত্যাগ করিবে।

কুঠং বিশীর্যমাণাকং রক্তনেত্রং হতধরম্। মন্দায়িং জন্ধভিজ্বিং হস্তি ভূঞাতিসারিণম্।

কুঠরোগে অবল ক্ষীয়নাণ, নেত্র রক্তবর্ণ, অবর বিনষ্ট, অবি মনদও ক্রিমি সঞ্জাত হুইলে এবং তৃষ্ণা ও অভিসার জন্মিলে, রোগির মৃত্যু হর।

বায়ুং সুপ্তস্তাং ভুগ্নং কম্পালোপরজাতুরম্।।

বাতবাধিতে ত্বক্ স্পর্শানভিজ্ঞ, অঙ্গ বক্র, এবং কম্প, শোধ ও বেদনা প্রভৃতি উপদ্রব উপস্থিত হইলে বাতবাধি অসধ্য জানিবে।

বাতাত্রং মোহমূজীয়-মদস্বপ্রজরাধিতম্। শিরোগ্রহাঙ্গচিখাস-সকোচকোটকোধবং ॥

বাতরক্ত রোগে মোহ, মুর্চ্ছা, মদ, স্পর্শান-ভিজ্ঞতা, জর, শিরোবেদনা, ব্দর্গচি, শ্বাস, অঙ্গসক্ষোচ, স্ফোটক ও মাংসপচন উপস্থিত হুইলে রোগিকে ত্যাগ করিবে।

শিরে'রোগাক্সটিখ'স-মোহবিড় ভেসতৃত ভ্রমে: । শ্বস্থি সক্রমের্ড ক্ষীণ-স্বরধাতুবলানলন্॥

স্বা, ধাতু, বল ও অগ্নি ক্ষীণ হইলে, সকল বোগই নিরঃপীড়াদি উপদ্রব অর্থাৎ নিরো-রোগ, অরুচি, খাস, মোহ, মলভেদ, তৃষ্ণা ও ভ্রমাদি আনম্বন করিয়া রোগিকে বিনষ্ট করিয়া থাকে।

বাতবাধিরপন্মারী কুষ্ঠী রক্ত্যুদরী করী। শুন্মী মেহী চ তান্ কীণান্ বিকারেহঙ্গেহপি বর্জয়েৎ ॥

বাতরোগী, অপস্মারী, কুষ্ঠী, রক্তপিন্তী, উদরী, ক্ষারোগী, গুল্মী ও মেহী ইহারা যদি ক্ষীণ হয়, তাহা হইলেও রোগিরে বল অয় হইলেও রোগিকে ত্যাগ করিবে, অর্থাৎ ঐ দকল রোগে ক্ষীণতাই প্রধান অরিষ্ট লক্ষণ জানিবে এ

বলমাংসক্ষয়ন্তীত্রো রোগবৃদ্ধিররোচক:। যস্যাতৃরক্ত লক্ষ্যন্তে ত্রীন্ পক্ষান্ ন স জীবতি॥

যে রোগির বল ও মাংসের **অতিকর,** রোগের বৃদ্ধি ও অরুচি দৃষ্ট হইবে, সে তিন পক্ষও জীবিত থাকিবে না।

বাভাষ্টালাতিসংবৃদ্ধা তিষ্ঠপ্তা দারণা হৃদি। তৃষ্ণয়াজিপরীতভা সংস্থা মুক্ষাতি জীবিতম্ ॥

বাতাগীলা অত্যন্ত বড় হইয়া জনয়ে **অব-**স্থানপূৰ্দক বিশেষ কষ্টদায়ক হইলে বোগী তৃষ্ণাভিত্তত হইয়া সম্বই প্ৰাণত্যাগ করে। শৈৰিলাং পিণ্ডিকে বায়ুনীতা নাসাঞ্চ জিন্ধতাম । কীণ্ডাৰম্য মঞ্চে বা সন্তো মুক্ষাতি জীবিতম্ ॥

বিক্বত বায়ু, পায়ের ডিমকে শিথিল, নাসিকাকে বক্র এবং মন্তানামক শিরাধয়কে বিস্তারিত করিয়া শীঘ্রই ক্ষীণ রোগির প্রাণ বিনষ্ট করে।

শাভিগুদান্তরং গণা বজ্জংশী বা সমাত্রয়ন্। গৃহীয়া পায়ুহদয়ে ক্ষীণদেহক্ত বা বলী । মলান্ বন্তিশিরোনাভিং বিবধ্য জনয়ন্ রক্তম্। কুর্বন্ বজ্জণয়োঃ শুলং তৃকাং ভিন্নপুরীষতাম্। শাসং বা জনয়ন্বায়ুগুহারা গুদবজ্জণম্॥

অথবা বলবান্ বায়ু, নাভি ও গুদনাড়ীর
মধ্যে গমন, বা বজ্জগদ্বাকে (কুঁচ্কি-স্থান)
আশ্রম কিংবা গুহুদেশ ও হাদরকে অবলম্বন
করিয়া গুর্দিন রোগির প্রাণ বিনাশ করে।
অথবা ঐ কুপিত বায়ু পুরীষাদি মলকে বস্তিমুগেও নাভিন্তলে বিবন্ধ এবং দারুণ বেদনা
উপস্থিত কার্য়া কিংবা বজ্জাণ্ডেশ শূলাৎপাদন, তৃষ্ণা ও মলভেন্নপ উপদ্রব আনিয়া,
বা গুদনাড়া ও বজ্জাণ্ডেক আশ্রম করিয়া
শ্বাবাৎপাদন পৃথকে জান রোগিতেক শ্রম্থই
মৃত্যুমুথে পাতিত ক্রিয়া থাকে।

বিভণ্ড পশু কিলোনি গৃহীজোরশ্চ মারুত:। শুনিভজাতং শশু সজো মুকাতি ভারীবিত্ত দ

বায়, লোগিব পাথাস্থি সকলেব অগ্রভাগ বিস্তারিত, ধক্ষঃস্থল পীাড়ত, দেহ স্থি।মত এবং ≪নত্রম্বয় বিক্ষানিত কবিয়া স্পট সূত্র আনিয়ন করে।

भश्मा खतमञ्जाभङ्गा ५७६। तलकः । तिरक्षमाकं मक्तानाः पुरुषाक्रभः ।

মৃনুষ্ বাং ভাব সহস এরস এপে, ভ্রুণা, মৃচ্ছা, বলকা ও সন্ধিবিশেন, এই সবাল লকা উপস্থিত হঠায়া থাকে। অর্থাৎ হঠাৎ জ্ব-সন্তাপাদি উপস্থিত হওৱা, সূত্য লকাণ বিজ্ঞানিধে।

ib. গোসর্গে বদনাদ্ ২ন্ত বেদঃ এচাবতে ভূশ্য। ক্ল লেপন্ধরোগতগুড়া তুল ভং ভক্ত জীবিত্য। প্রলেপক জরে উপত্ত ব্যক্তির বদি প্রত্যুবে মুখমণ্ডল দিয়া অত্যক্ত বর্ম নিঃস্ত হয়, তাহা হইলে উহার জীবন হল ভ জানিবে।

প্রবালগুড়িকাভাসা যক্ত গাত্তে মস্বিকাঃ। উৎপক্ষাণ্ড বিনশ্রন্তি ন চিরাৎ স বিনশ্রন্তি ॥

যাহার শরীরে প্রবালের গুঁড়ার **ফ্রায়** মস্থরিকা দকল উৎপন্ন হইয়া দহসা বিলন্ধ প্রাপ্ত হয়, তাহার মৃত্যু অচিরে হইয়া থাকে।

মস্ববিদলপ্রথান্তথা বিক্রমসন্নিভা:। অন্তর্কস্তো: কিণাভান্চ বিফোটা দেহনাশনা:।

যে সকল বিস্ফোট মস্থকলাই সদৃশ, প্রবালসন্নিভ, অন্তমুখবিশিষ্ট বা শুষ্ক ত্রণবৎ, তাহারা দেহনাশক।

কামলাক্রেম্ থং পূর্ণ: শন্তাম্ম্ ক্রমাংসভা। সম্বাসক্তাক্তভাকে চ যক্ত ভং পরিবজ্ঞে।

বাহার নেত্রদয়ে কামলা, মুখ উপচিত, শুজামাংস শািপ্ল, ত্রাস স্ঞাত **এবং অঙ্গ** উষ্ণ ভাহাকে পরিভাগি কবিবে।

व्यक्तमानपुर्वातकः विष्ठष्टः । त्ममाव्यस्यः ।

যাহার বিঘ্রত্ত অধীং ঘর্ষণজ্ঞাত ব্রণ ত্বক্-সমাজিত এবং ডাহা বিনা কারণে অমুধাবন-ল হয় অর্থাং ক্রমাগত বাড়িতে থাকে, চহাকেও ভাগি করিবে।

চন্দনোশারমদিরাঃ কুণপাঃ পদ্মগন্ধরঃ। শেবালকু উলিগা-কুন্দশালিমসীপ্রভাঃ। সম্ভন্দ হানিকুত্মাণঃ প্রাণনাশকরা ত্রণাঃ।

যে সকল বল ব কত) চনদন, বেপার মূল ব সদিবাৰ জ্ঞায় গদ্ধবিশিষ্ট, অথবা শবহর্ণনী ব পদ্মগদি, বাহারা শেবালের জ্ঞার আরুতি-বিশেষ্ট বা কুকুটশিখাকার, কুন্দ বা শালিবং শুল ব স্থানিত্র, বাহারা অন্তর্গ্ত কিন্তু বহিংশাতল, ভাহারা প্রাণ্নাশক।

যো বাংকো ন শ্বায় ভাঃদ্র দাহায় পিত্তকঃ । কফজো ন চ স্বায় মন্ত্রক্ত ক্ষতে ন যঃ ॥ অচুর্বক্ত, ব্রুটিটো যতাকস্মাচ্চ দৃষ্ঠতে। রূপং শক্তিদাভাদানাং সর্বাংস্তান্ বর্জ্তরেৎ এবান্॥ ষে এণ বাতজ কিন্তু বেদনার্থিত, পিত্তজ্ব কিন্তু নাহর্থিত, ক্ষমজ্ঞ কিন্তু পূধর্থিত, মর্মাজ্ঞ কথচ যন্ত্রণার্থিত এবং অচুর্ণ (বাহাতে চুর্ণ ঔবধ প্রদন্ত হয় নাই) কিন্তু চুর্ণবাধ্বিবং এবং বাহাতে অকন্মাৎ শক্তি (অস্ত্রবিশেষ) ও ধ্বজ্ঞাদির ক্ষপে দৃষ্ট হয়, সেই সমস্ত এণ পরিবর্জন করিবে।

বিগ্ম অমাক তবহং ক্রিমিণক ভগন্দরম্ ।

যে ভগন্দর হইতে মল, মূত্র, বারু এবং ক্রিমি নির্গত হয়, তাহা পরিত্যাজা।

ষ্ট্রন্ জামুনা জামু পাদাব্তুমা পাতয়ন্। বোহপাস্ততি মুহুর্বজুনাতুরো ন স জীবিতি।

বে রোগী জান্ত ছারা অপর জান্ত বিলোড়ন এবং পদছর উত্তোলন করিয়া ক্ষেপণ করে, ও মুক্সুভি: বক্তু, সঞ্চালন করিয়া থাকে, সে রোগী বাচে না।

দক্তৈশ্ছিলন্ নথাগ্রাণি তৈক কেশাংস্থানি চ।
তুমিং কাঠেন বিলিখন্ লোইং নোষ্ট্রেণ তাড়য়ন্॥
ক্ষারোমা সাক্রম্বঃ শুক্তরামা জারী চবঃ।
মুক্রমন্ মুতঃ ক্ষেড়ন্ শব্যাং পাদেন হতি যঃ।
মুক্তিভাণি বিশ্বরাতুরো ন স জাবতি॥

যে রোগী শৃষ্টনোমা, গাঢ়-মূত্রপশীল এবং
শুক্ষ কাস ও জরাক্রাস্ত, সে যদি দন্ত ধারা নথ,
কেশ ,বা তৃণ কাটে, কাষ্টিকং ধারা ভূমিতে
দাগ পাড়ে, চিলের উপা চিল মারে, মূহ্মুহঃ
হাসে, মূহ্মুহঃ ধ্বনি করে, শ্যায় পদাঘাত
করে এবং মুখনাসাদি ছিদ্র সকল হস্ত ধারা
স্পর্ল করে (কেহ ছিদ্র শব্দে পরাপরাধ্যোষণা
এইরূপ অর্থ করেন , তাহা হইলে তাহাকে
গ্রাম্ম জানিবে।

মৃত্যবে সহসাপ্তস্ত তিলকব্যঙ্গপিপ্লবঃ। মুখে:দন্তনথে পূস্পং জঠরে বিবিধাঃ শিরাঃ।

রোগির মুখে যদি সহসা তিলক, ও। ব্যঙ্গ-সমূহ উৎপন্ন হয়, নথে ও দস্তে যদি পুশ (শুল্ল চিহ্ন) প্রকাশ পায় এবং উদরে যদি

নানাবর্ণের ও নানা আকারের শিরা **জ**ন্মে, তাহা হইলে তাহার মৃত্যু জানিবে।

উদ্বাসং গতে: আগং শুনোপহতবক্ষণম। শর্ম বান্ধিগছন্তং বুদ্ধিমান্ পরিবর্জ্জেও।

ষাহার শ্বাস উর্দ্ধগত. গাত্র উন্মবিহীন ও বক্ত্রণাধ্য শূলবং বেদনার উপহত হয় এবং নানাপ্রকার প্রতিকারেও যাহার স্থায়ভব হয় না, বৃদ্ধিমান্ চিকিংসক সে রোগিকে প্রিক্ত্যাগ ক্রিবে।

বিকারা যদ্য বর্দ্ধন্ত প্রকৃতিঃ পরিইায়তে। সহসা সহসা তপ্ত মৃত্যুহরতি জীবিতম্॥

যাহার রোগ সহন। বান্ধিত এবং স্বভাব সহনা পরিবর্ত্তিত হয়, মৃত্যুও তাহার জীবন সহসা হবণ করে।

বন্দিশু"তুরং বৈজ্ঞ, সম্পাদিশিতুনৌষধম্। যতমানো ন শক্রোতি ছলভিং ওভা জাবিতম্ ।

্ৰভ যে বোগির উদ্দেশ্যে **ঔষৰ প্ৰস্তত** কলিতে ধন্নবান্ হইনাও কুতকাৰ্য্য **হইতে না** পারেন, তাহাব জাবন জ্লভি।

বিজ্ঞাতং বছশঃ সিদ্ধং বিধিনচাবচারিতম্ । ন সিধাতৌষধং বস্তু নাতি তক্ত চিকিৎসিতম্ ॥

ষে ঔষধের গুণকন্মাদি বিশেষরূপে জানা আছে, যাহা একোগ কার্যা অনেকবার ফল পাওরা গিয়াছে, সেই ঔষরও যথাবিধি প্রয়োগ করাতে যাহার রোগ নাশ না হয়, তাহার আর অহ্য চিকিৎসা নাই, জানেবে।

ভবেদ্ যথ্যৌষধেৎত্র বা কল্যানানে বিপযায়ঃ। অক্সাদু নর্বাস্থাদে স্বাস্থাহিদি ন স জাবতি ।

যাহার ঔষধ বা অন্ন সম্পাদনে হঠাৎ গন্ধ-বর্ণাদির বিপ্যায় হটে, রোগির কথা দুরে যাউক, সে স্কম্ব হইলেও রুগা পান্ন না।

নিবাতে দেশ্ধনং যক্ত জ্যোতিকাপুগেণাম্যতি। আতুরক্ত গৃহে যক্ত ভিন্তত্তে বা পততি বা। অতিমাত্রমত্তাণি তুল ভং তক্ত জীধিতম্॥

যে রোগের নিবাতগৃহে। অন্নি, কাঞ্চাদি ইন্ধন সত্ত্বেও নির্দ্ধাণ হয় এবং যে রোগির। গুহে পাত্রাদি অতিমাত্র ভাবে বা পতিত হয়, তাহার জীবন চল ভ।

্যং নরং সহসা রোগো তুর্বলং পরিমুক্তি। সংশয়ং প্রাথমাতেয়ো জীবিতং তক্ত মন্ততে।

যে তুর্মল ব্যক্তির রোগ সহসঃ প্রশমতা প্রাপ্ত হয়, আত্রের ঋষি, হাহার **फ**ौरन সংশয়পির মনে করেন।

কথয়েন্দ্রৈব পৃষ্টে ছিলেবং মন্ত্রণং ভিষক। গতাদোব দ্বিতাণাং ন চেচ্ছেৎ তং চিকিৎসিত্ম ।

বৈশ্ব জিজাসিত হইলেও মুমুষু রোগির বন্ধবান্ধবের নিকট মৃত্যুর ছঃশ্রাব্য কথা বলা উচিত নহে এবং গভাস্থ রোগির চিকিৎসা কবাও বৈছেন উচিত নতে।

যমদ ছপিশাচাত্তৈয়ৎ পরাক্তরপাক্ততে। ছন্তিরৌবধনীয়ানি তত্মাৎ তং পরিবর্জন্তে ॥

ঔষধের বীর্যাহানক মুমুত ও পিশাচাট্ন ভূত্যোনিগণ যথন গতার কোগির উপাসনা

অর্থাৎ যাহার মৃত্যু হইবে, তাহার।নিকট যম-দৃত ও পিশাচাদি ভূতগণ সর্বদ। গতায়াত করে, প্রতরাং তাহাকে । কানক্রমেই রক্ষা পারা যায় না।

आयुर्स्त्रमण्यः क्रयः यमायुष्क अधिष्ठिम । রিষ্ট্রজানাদতশুস্মাৎ সর্কাদের ভবেদ ভিষক॥

যথন আয়ুর্কেদেন সমস্ত ফল, আয়ুর্কেদেজ বৈছে প্রতিষ্ঠিত, তথন সর্নদাই অরিষ্ট-জ্ঞান-বিষয়ে বৈছেন লক্ষপ্রতিষ্ঠ হওয়া কর্ত্তবা।

মরণং প্রাণিকাং দপ্তমায়:প্রণোভয়ক্ষয়াও। ভ্যোরপ্রক্ষয়াদ্ত্রং বিষমাপরিহারিণামা।

আয়া ও পুণা এই উভয়েব কয়েই প্রাণি-গণেৰ মৃত্যু দুষ্ট হয়, কিন্তু যাহারা **বিষম** (অফুচিত) আহাৰ বিহাৰাদি প্রিভাগে না কেনে, তাহাদের আয়ঃ ও পুনা ক্ষর না 'হইলেও মৃত্যু ২ইয়। থাকে। অতএব বিষদ আহার-করে, তথন তাহাকে পরিবর্জন করিবে। বিহারাদি দর্মণা পরিত্যাগ করা কর্ত্তবা।

ইতাব্রের্দ-সংগ্রহেছ রিষ্টলক্ষণম।

ত্রথ চরকোক্তপঞ্চাশন্মহাক্ষায়াও।

অথ ষট্কঃ ক্ষায়বর্গঃ।

জীবক্ষভকৌ মেদা মহামেদা কাকোলী কার-কাকোলী মুকামাযপর্বো ভারতা মধুক্মিতি দুশেমানি জীবনীয়ানি ভবস্থি।

জীবক, ধ্বভক, মেদা, মহামেদ: কাকোলী, कीतकारकाली, मुगानि, गर्शान, कोवडी छ যষ্টিরধু এই দশটা জীবনার।

ক্ষীরিণী-শঞ্জবকবলকে কে ল'ক্ষীরকাকোলী-বাট্যায়নীভটোদনীভানদাজীপয়ভাষ্যগন্ধা ইতি দুশেমানি বুংহণীয়ানি ভণন্তি।

को करे, इस शही, (वर्ष्णा, कारकानी, ক্ষীরকাকোলী, শ্বে হবেড়েল!, পীতবেছেলা, বনকাপাস, খেত্রিদারীকন্দ ও বাজতাভক এই **দশ**টी तुःश्लीग्र।

মুস্তকু ইচরিদ্রালাক্ষর রিদ্রাবচাতিবিধাকটুরোহিণী-চিত্রক চিরবিশ্বভেমব 🖭 **হতি দলেমানি লেখনীয়ানি** उन्दिश् ।

মুতা, কুড়, হরিন্ডা, দারুহরিন্তা, বচ, আতইচ, কট্রুলা, চিতা, করঞ্জ ও খেত বচ এই দণ্টি লেখনীয়।

স্থবহাৰ্কোকৰ্কাগ্ৰিম্পী-চিত্ৰাচিত্ৰকচিত্ৰবিভ্ৰশন্তিনী-শকুলাদনীস্থৰ্কিটিগ্য ইতি দশেমানি ভেদনীয়ানি ভবস্তি।

তেউড়ী, আকন্দ, এরগু, ভেলা, দন্তী, চিতা, করঞ্জ, শুজানী (চোনকাচ্কী , কট্কী ও স্বৰ্গকীরী এই দশটিকে ভেদনীয়গণ বলে।

মধুকমধুপণীপৃশ্লিপর্বাংশ্ঠকী-সমঙ্গা-মে'চরদ-ধাতকা-লোগ্র-প্রিয়ঙ্গু-কটফলানীতি দশেমানি সন্ধ্যানীয়ানি ভবস্তি।

যষ্টিমধু, গুলঞ্চ, চাকুলে, আক্নাদি, বনা ক্রাস্তা, মোচরদ, ধাইফুল, লোধ, প্রিয়ন্ত্র ও কট্ফল এই দশটি দন্ধানীয় (ভগ্নগংগোজক)।

পিল্লনীপিল্লনীমূলচবাটেজকশৃলবের হবে অসম্বিচা-জমোদাভলাতকান্তিহিলুমিয়াসা ই'ত দংশ্মানি দীপ্নী-য়ানি ভবন্তি।

পিপুল, : পিপুলমূল, চৈ, চিতা, ভাঠ, অমবেতস, মরিচ, যমানী, ভেলার আটি ও হিং এই দশটি দীপনীয় (অগ্নুদ্দীপক)।

ইতি প্রথমসূক্ত ক্ষায়বর্গ: ।

অথ চতুষ্ণঃ ক্ষায়নগাঃ।

ঐন্যুষভাতিরসগ্পোক্তাপ্যস্তাখগদ্ধান্ত্রণরে*হিনী-বলাতিবলা ইতি দশেমানি বল্যানি ভবন্তি।

রাথালশশা, আলুকুনা, শতমূলী (যষ্টিমধু), মাষাণি, ক্ষারকাকোলা, অশ্বগন্ধা, শালপাণী, কট্কী, বেড়েলা ও গোরক্ষচাকুলে এই দশটি বলকারক।

চন্দনতুক্সপ্যকোশীরমধ্কমঞ্জিঙাদারিবাপয়স্তাদিতা-লতা দশেমানি বর্গানি ভব্তি।

রক্তচন্দন, পৃহাগ পদ্মকার্ড, বেণার মূল, বাষ্টমধু, মাঞ্জ্ঞা, অনস্তত্ত্ব, ক্ষীরকাকোলী, চিনিও দুর্বা এই দশটি বর্ণকারক।

সারিবেকুম্লমধ্কপিঞ্গলীদ্রাকাবিদারীকৈট্যাহংস-পাদীবৃহতীকটকারিকা ইতি দশেনানি কণ্ঠানি ভবস্তি।

অনন্তমূল, ইক্ষুমূল, যষ্টিমধু, পিপুল, দ্রাক্ষা, ভূমিকুল্লাণ্ড, কট্ফল, গোরালে-লতা, রহতী, ও কণ্টকারী এই দশটি কণ্ঠা অর্থাং স্ববর্দ্ধক।

অ'ম'মাতক-নিক্চ-করমর্দ্দকারায়বেতসক্বলবদর-দ'ড্যিমাতুলুজান'তি দশেমানি জন্তানি ভবস্তি।

আয়, আমড়া, মানাব, কাঞ্জ, আমরুল, অমবে চন, বড়কুল, কুল, দাড়িম 'ও ছোলঙ্গ-লেবু এই দশ্টি জন্ম অর্থাং কুচিকর। ইতি প্রথমচতুদ্ধ ক্ষয়েবর্গ: ॥

অথ ষট্কঃ কষায়বর্গঃ।

ন'গ্ৰ-চিত্ৰকবিচক্ষ্কা' গুড্চীকা'ৰুভ-পিল্লী-পটোল'নীতি লশেমানি ভূপিছানি ভৰতি।

শু ঠ, চ, চি হা, বিড়ঙ্গ, মূর্না:, গুলঞ্চ, বচ, মূহা, পিপুল ও পটোল এই দশটি তৃপ্তিত্ব (তৃপ্তি অর্থাং ভোজনে অনিচ্ছা, তক্মশক)।

কুটজ-বিজ্ঞচিত্ৰক-নাগরাতিবিবাজ্যা-ধ্যবাসক-নাক্ষ-হরিদ্রাবচ্চিন্যানীতি দশেমানি অর্শোল্পানি ভবন্তি।

কুড়্চি, বেলশুঠ, চিতা, শুঠ, আতইচ, হীতকী, জনালভা, দারুহরিদ্রা, বচ ও চৈ এই দশ্টি অশোনাশক।

থদিরাভয়ামলক-ছ্রিজা**রগ্ধন-সপ্তপ্রির্থধ-কর্নীর-**বিভূলজা তাঁপ্রবালা ইতি দশেমানি কুষ্টন্নানি ভবস্তি।

খাদির, হণী তর্কী, আমলকী, হরিদ্রা, ভেলা, ছাতিম-ছাল, সোদাল, করবী, বিভৃঙ্গ ও জাতীফুলের কচিপাতা এই দশটি কুঠম।

চন্দ্ৰ-নলদ-কৃত্যালনক্তমালনিম্বকুটজসৰ্বপ-মধুকদারু-হরিদ্রামুস্তানীতি দশেমানি কণ্ডুম্বানি ভবডি।

রক্তচন্দন, জটামাংদী, সোঁদাল, করঞ্জ, নিম, কুড্চি, সর্ঘপ, ষষ্টিমধু, দাক্তহরিক্রা ও মুতা এই দশটি কণ্ণনাশক।

অক্ষীবমরিচগণ্ডীরকেবৃকবিড়ঙ্গনিগুণ্ডীকিণিহীশ্বদংট্রা-বুষপর্নিকাপুপর্নিকা ইতি দশেমানি ক্রিমিল্লানি ভবস্তি।

সজিনা, মন্চি, শমঠশাক, কেঁউ, বিড়ঙ্গ, নিসিন্দা, অপামার্গ, গোক্ষ্র, বামুনহাটী ও ইন্দুরকাণী এই দশটিকে ক্রিমিম্নগণ কহে। হরিক্সামঞ্জিষ্ঠাত্মবহাত্তান্ত্রনাপালিন্দী-চন্দনকতকশিরীয-সিন্ধুবারপ্লেমাতকা উ্তি দলেয়ে নি বিষয়ানি ভবস্তি।

হতিকা, মঞ্জিন্না, বান্ধা বা হাপ মালী চোট এলাইচ, শ্রামাল গ্রাহ সন্তত্তন্ত্বন নিম্মালীফল, শিরীষ, নিমিন্দা ও বছবার এই শ্রেট বিষ্কাশক। ২তি দ্বিতীয়বটকা ক্ষায়বর্গন।

অথ চতুষ্ণঃ কনায়বর্গঃ।

বীরণশালিষষ্টিকেক্স্নালিকাদর্ভবুশকাশগুলেৎকটকত্ত -মুলানীতি দংশমানি অস্তলনানি ভবস্তি।

বেণার মূল, শালিবার্য্য, রুইট্রান, ইক্-বালিকা, উলুখড়, কুশ্যুল কেশের মূল, ভদ্র-মূতা, ইকড্মূল ও গন্ধভূগ্যুল এই দশটি স্তন-হগ্রজনক।

পাঠামহৌবধস্থরদারুস্ভমূর্বাগুড়ুটীবংসকজকরাত-তিজকটুরোহিণীশাবিবা ইতি দকেমানি ভত্তশোধনানি ভবভি ।

আক্নাদি, শুঠি, দেবলাক, মুক্ত, মুর্ব্বত, শুলঞ্চ, ইল্রব্ব, চিরতা, কট্কা ও অনস্তমূল এই দশটি শুক্তাশাবক।

জীবকর্বস্তক্তাকোলাকা ক্রাক্তাকালা ব্যাদিশ বিশ্বীন বিশ্বীন ক্রাক্তাকালাকালা হৈছি দলেমানি শুক্রজননানি শুব্জি।

জীবক, ঋষভক, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, মুগানি, মাধাণি, মেলা, প্রগাছা, জটামাংসী ও কাঁক্ড়াশৃঙ্গী এই দশটি শুক্রবর্দ্ধক।

কুষ্টেলবালুককট ফল-সম্মতেন-কল্মনির্য্যাসেকুকাওে-কিনুকুরকবন্ধকোশারালিতি দংশমানি গুক্রশোধনানি ভবতি ।

কুড়, এলবালুক, কর্ফল, সমুদ্রফেন, কদমের আটা, ইফু, থাগড়ো, কুলেখাড়া, আকল ও বেধাৰ মূল এই দুশটি শুক্রশোধক।

ইতি খিতীয়চতৃক্য কৰায়বৰ্গ: ।

অথ সপ্তকঃ কষায়বর্গঃ।

স্থীকামধুকমধুপণীমেদাবিদারীকাকোলীক্ষীরকাকোলী-জীবকজীবস্তাশালপর্ণা ইতি দংশমানি মেহোপগানি ভবন্তি।

জাক্ষা, যষ্টিমধু, গুলঞ্চ, মেদা, ভূমিকুমাও, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, জীবক, জীবন্তী ও শালপাণী এই দশটিকে স্নেহোপন (সেহকার্যে। ব্যবহার্যা) গণ কহে।

শে**ভাঞ্চন**কৈর**তার্ক বৃশ্চীরপুনন**নায**বভিন্নকৃত্তপদার-**বদরাগীতি **দশেমানি স্বে**দোপগ'নি ভবস্তি।

সজিনা, এবও, আকন্দ, খেত পুনর্নবা, তেও পুনর্নবা, যব, ভিল্, কুল্খ-কলায়, মাধ-কলায় ও কুল এই দশটি স্বেদোপগ অর্থাৎ স্বেদ-কার্যে ব্যবহার্য।

মধ্মধ্ককোবিদারকর্দ্ দারনীপবিত্রলবিশ্বীশণপূশী-সদাপৃশ্গীপ্রত্যকৃপুশ্য ইতি দশেমানি ব্যনোপগানি ভবস্তি।

মধু, যষ্টিমধু, গ্রন্ত-কাঞ্চন, খ্রেত-কাঞ্চন, কদম, জনবে হস, তেলাকুচ, শ্রপুপী, আকন্দ ও অপামার্গ এই দশটি বসনোপ্য:

ঞাক্ষাকাগ্রাপরাবকাভয়ামলকবিভা একরুবলবনরকর্বজু-পালুনাতি দশেমানি বিরেচনে,প্রানি ভবস্থি।

জাকা, গান্তারী, প্ররাধক, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, বড় বদর, ছোট বদর (কুল), শেয়াকুল ও পীলু এই দশটি বিরেচনোপগ (বিরেচন-কার্যো প্রযোজ্য)।

ত্ৰিবৃথিঅপিপ্লনীকুণ্ঠসৰ্বপ্ৰচাৰৎসক্ষলশতপুপামধুৰ-মদনফলানীতি দশেমান্তাস্থাপনোপগানি ভৰম্ভি।

্রভউড়ী, বেল, পিপুল, কুড়, সর্বপ, বচ, ইন্দ্রবন, গুল্ফা, যৃষ্টিমধু ও মদনফল এই দশটি অস্থোপনোপন (নিরহ-কার্যো এযোজা)।

রারাহ্রদার্রবিজ্ঞাদনশতপূপ্পাতৃশ্চীরপুনর্বাশ্বদাঙ্কীয়ি-মন্ত্রজ্ঞানাকা ইতি দশেমানি অনুবাসনোপগানি ভর্তি।

গালা, দেবদারু, বেল, ময়নাফল, শুল ফা, খেত-পুনর্নবা, রক্তপুনর্বা, গোক্ষুর, গণিয়ারি

ও শোনা এই দশটি অমুবাসনোপগ (স্তেহ-বন্ধি-কার্য্যে প্রয়োজ্য)।

জ্যোতিমতীক্ষকমরিচ-পিশ্লনীবিড়ক্সশিগ্র,সর্বপাপা-মার্গতঞ্লবৈতামহাবেতা ইতি দর্শেমানি শিরোবিরেচনো-পগানি ভবস্তি।

লভাফটকী, হাচুটী, মরিচ, পিপুল, বিড়ক, সজিনা, সর্যপ, আপাংবীজ, খেত-অপরাজিতা ও নীল অপরাজিতা এই দশট শিরোবিরেচনাপগ (শিরোবিরেচন-কার্য্যে প্রয়োজা)।

इंडि मथुकः कवायुर्जाः ॥

অথ ত্রিকঃ ক্যায়বর্গঃ।

জমু ামপলবমাতুলু কামবুদরদাড়িমবববষ্টিকোশীরমূলাজা ইতি দশেমানি ছৰ্দ্দিনিগ্ৰহাণি ভবস্তি।

জামপাতা, আমপাতা, ছোলন্স লেবু, অমুকুল, দাড়িম, যব, যৃষ্টিমধু, বেণামূল, সৌরাষ্ট্রয়ন্তিকা ও থৈ এই দণ্টি বমননিবারক।

নাগর্থব্যবাসক্মন্তপর্বটকচন্দন্কির তৈতিক্তকগুড়, চী-হীবেরধান্তকপটোলানাতি দশেমানি ত্ঞানিগ্ৰহাণি ভবস্থি।

শুঠ, ছরালভা, মৃতা, কেত্পাপ্ডা, রক্তচন্দন, চিরতা_{র শুলঞ্চ, বালা, ধনে ও} পলতা এই দশটি তফা-নিবারক।

শটীপুশ্বমূলবদরবীজকণ্টকারিকাবহতীবৃক্ষক্ষহাভয়া-পিশলীছরালভাকুলীরশুক্র্য ইতি দশেমানি হিকানিগ্রহাণি ভবস্থি।

भंगे, कूफ, कूलत अंछि, कण्डेकाती, বৃহতী, পরগাছা, হ্রীতকী, পিপুল, ত্রালভা ও কাঁক্ড়াশৃঙ্গী এই দশটি হিক্কা-নিবারক। ইতি ত্ৰিকঃ কৰায়বৰ্গঃ॥

অথ পঞ্চকঃ ক্ষায়বৰ্গঃ।

প্রিয়ঙ্গ, নম্ভান্তা স্থিকট পলো এমোচরসসমকাধাতকী-পুষ্পাপদ্মাপদ্মকেশরাণীতি, দুশেমানি পুরীষ্সংগ্রহণানি ভৰম্ভি।

প্রিয়ন্ত্র, অনস্তম্ভ 21.11 কেল শোনা, লোঞ্জ, মোচংস, ব্যাক্রা, হাইফুল, বামুনহাটা ও প্রাকশ্য এই দশটি পুরীষ-সংগ্রাহক অথাৎ কলে মলের গাওলকালক।

জমুশলকীত্রকজুরামধুকশাব্দনী শ্রীবেক্টডুক্টগৃৎপরক্ষেত্র भनिजनक्षा देखि मरमभानि भूतीविष्यक्षनीवानि **ख्वस्ति**।

জামের ছাল, শল্লকীত্বক্, আল্কুনী, যষ্টি-नवनी उत्थां हो. मध्य दिका, মধু, মোচরস, ভৃঁইকুম্ড়া, উৎপল ও তিল এই দশটি পুরীষ বিরজনীয় (যশ্বারা পুরীষ দোষমুক্ত হইয়া প্রকৃত বর্ণ প্রাপ্তা হয়)।

জন্মগ্ৰুবটকপীতনোড়,প্ৰাৰ্থভলাতকাৰ্যস্তক-সোমবনা ইতি দশেমানি মূত্ৰসংগ্ৰহণানি ভব্সি।

জাম, আম, পাকুড়, বট, আমড়া, যক্ত-ডুমুব, অশ্বৰ্থ, ভেলা, অমুকুচা ও খদির এই দশটি মৃত্রসংগ্রাহক।

পল্মোৎপলনালনকুমুদ্সৌগন্ধিকপুগুরীকশতপ্রমধুক-প্রিয়ঙ্গুধাতকীপুস্পাণীতি দশেমানি মূত্রবিরজনীয়ানি ভবস্থি।

পदाम् केरंद खज्ञन्, छेरं भलम् केरबोलम्, निनमी**रक्रकर** কুমুদং কুৰুয়া ইতি লোকে দৌগন্ধিকং গৰ্বভপুস্পাভি-ধানমতান্তহরভি চন্দ্রোদরবিকাশি, পুগুরীকং ষেতপন্মৰ, (ইতি ফুল্ডফুব্ৰন্থানে ড্ৰণাচাৰ্যাকুতা টীকা)।

পদ্ম (ঈহৎ শুক্রপদ্ম), উৎপল (ঈবৎ नीलभा), निलन (क्रेयर इंट्रिश्म), क्रमूह (খেতোৎপল), সৌগন্ধিক (অত্যন্ত হুগন্ধ-बुक नीलार्भन), भूखतीक (খেতপদ্ম), শতপত্র (শতদল পদা), ষষ্টিমধু, প্রিয়ঙ্গু ও ধাইফুল এই দশটি মুত্রবিশোধক অর্থাৎ মুক্তার প্রকৃত বর্ণকারক।

বুক্ষাদনীখদংখ্রাবস্থকবশিরপাবাণভেদদর্ভ-কুশকাশ্-গুক্রেৎকটমূলানীতি দশেমানি মূত্রবিরেচনীয়ানি ভবঙ্কি।

পরগাছা, গোকুর, ব্কফুল, रुष्ट्र रूप्ड, পাথরকুচা, শর, কুশ, কেশে, শুলঞ্চ অ'কিড়মূল এই দশটি মূত্রবিরেচনীর। ইতি পঞ্চক: ক্ষায়বৰ্গ: ।

श्र शं शक्तः क्यायुवर्गः

দ্রাক্ষা ভরামলক-পিশ্ননী-মূরালভা শুক্তীকণ্টকারিকা-খুক্তীরপুন্দর্বাতঃ মলক্য ইতি দশেমণনি কাসহরাশি ভবতি।

কিন্মিন্, হরীতকী, আখলকী, পিপুল, ছরালভা, কাফ্ডাশৃঙ্গী, কণ্টকারী, খেত-পুননবা, রক্তপুনন্বা, ও ভূটি আমলা, এই দশটিকে কাসহর গণ কহে।

শ্টীপুধরমূল।রবেডসৈলা-হিব্র, গুরুস্থরসা-ভামলকী-শ্লীবস্তাচন্তা ইতি দশেমানি খাসহরা নি ভবন্তি।

শটী, কুড়, জমবেতস, এলাইচ, হিং, জগুরু, তুল্দী, ভূঁই আফলা, জীবস্তী ও শছা-পুলী এই দশটি খাসহর।

পাটলাগ্রিমন্থবিদক্ষোনাককাল্মধ্যকউকারিকাব্হতীশাল-পণীপুলিপণীগোক্রকা ইতি দশেমানি শোবহরাণি ভবঙি।

পারুল, গণিয়ারি, বেল, শোনা, গান্তারী, কণ্টকারী, বৃহতী, শালপাণী, চাকুলে ও গোকুর এই দশটি শোগনানক।

শারিবা-শর্করা-পাঠা-মঞ্জিণ্টা ক্রাক্ষাপীলুপর্যবকাজ্যা-মলকবিজী ১কানীতি দশেমানি অঞ্চরাণি ভবস্তি।

অনন্তমূল, চিনি, আকনাদি, মঞ্জিছা, জাক্ষা, পালু, ফল্দাফল, হবীতকী, আম-লকী ও বহেড়া এই দশটি জন্মাশক।

ক্রাক্ষাথর্জ্নুর্সিরালবদরদাড়িনকশ্বপরবক্ষেকা ইতি দশেমানি শ্রমহরাণি শুবস্থি।

জ্রাক্ষা, খেজুর, পিরাল, কুল, দাড়িম, কাকডুমুর, ফল্মাফল, ইকু, যব ও যেটেগান এই দশটি শ্রমহর।

ইতি পঞ্চ ক্ষায়বৰ্গ: ।

অথ পঞ্চকঃ ক্ষায়বৰ্গঃ।

লাজাচন্দনকাশ্মধ্যক্ষলমধুকশর্করানীলোৎপলোশীর-শারিবাশ্ডড় চীক্সীবেরাণীতি দশেমানি দাহপ্রশমনানি অবস্থি। ৈ, খেতচন্দন, গান্ধারীফল, ঘটিমধু, চিনি, নীলোৎপল, বেণামূল, অনস্তমূল, গুলঞ্চ ও বালা এই দশটি দাহপ্রশমক।

ভগরাপ্তর-ধ্যাক-শৃরবেরভূতীকবচাকণ্টকারিকান্থি-মন্থ্যোনাকপিনতা ইতি দশেমানি শীভগ্রশমনানি কবস্তি।

শিউলীছোপ, অগুরুকান্ত, ধনে, **৩১,** মমানী, বচ, কণ্টকারী, গণিয়ারি, শোনা ও পিপুল এই দশটি শাতপ্রশমক।

তিনুক্ণিগ্রাল-বদর্থদিরকদর-সপ্তপর্ণাধ্বর্ণার্জুনা-সনারিমেদা ইঙি দশেমাস্থাদদিগ্রশমনানি ভবস্থি।

গাব, পিয়াল, কুল, থদির, পাপড়ি থদির, ছাতিম, লতাশাল, অর্চ্জুন, পীতশাল ও ওয়ে-বাব্লা এই দশটি উদদ্বোগনাশক।

বিদারীগন্ধাপুলিপণীবৃহতীকটকারিকৈরগুকাকোলী-চন্দনোশীরৈলা-মধুকানীক্তি দশেনাগুলমর্দ্ধ-প্রশমনানি ভবতি।

শালপাণী, চাকুলে, বৃহতী, কণ্টকারী, এরগুমূল, কাকোলী, চন্দন, বেণামূল, এলাইচ ও মষ্টিমধু এই দশটি অঙ্গমৰ্দ্যনাশক।

পিশ্বলীপিশ্বলীমূলচব্যচিত্রকশৃঙ্গবেরমরিচাজমোদাক গন্ধালাজীগণ্ডীরাণীতি দশেমানি স্থাপ্রশমনানি **ভবন্ধি**।

পিপুল, পিপুল্মূল, চৈ, চিতা, ভাঠ, মরিচ, যমানী, বন্যমানী, জীলা, ও শালিঞ্চ (শমঠ) শাক এই দশটি শূলপ্রশমক।

ইতি পঞ্চক: কৰামবৰ্গ: ॥

অথ পঞ্চকঃ ক্ষায়বৰ্গঃ

মধুমধুকক্ষিরমোচরসমূৎকপাললোধ্রগৈরিক**িন্নসূ**শক্রালাকা ইতি দশেমানি শোণিতস্থাপনানি ভবস্তি ।

মধু, যষ্টিমধু, কুন্ধুম, মোচরস, পোড়ামাটী, লোধ, গেরিমাটী, প্রিম্নন্ধু, শর্করাও থৈ, এই দশটি রক্তশোধক।

শাল-কট্*কল-কদ*ৰপগ্ৰকভুলমোচরস্পিরীবব**র্চনিল** বালুকাশোকা ইতি দশেমানি বেদনাছাপনানি **ভবভি**। শাল, কট্মল, কদম, পদ্মকার্চ, প্রাগ, মোলরস, নিরীব, বেতস, এলবানুক ও অশোক এই দশটী বেদনাস্থাপক অর্থাৎ বে স্থলে বেদনার নিরুত্তি হইলে বিপত্তি ঘটবার সম্ভাবনা ইছা ধারা তথায় বেদনা রক্ষিত হইয়া থাকে।

হিন্দু কৈটবাারিমেদবচাচোরকবরঃস্থাপোলোমীজটিলা-পলকবাশোকরোহিণা ইতি দলেমাণি সংজ্ঞাস্থাপনানি ভবজি ।

হিন্ধু, কট্কল, বিট্থদির, বচ, চোর-কাঁচ্কী, ব্রন্ধীশাক, ভূতকেশী (ভূঁইকেশ), কটামাংসী, গুগ্গুলু ও কট্কী এই দশটি সংজ্ঞান্থাপক।

ক্রন্সীবন্ধীশতবীর্গাসহত্রবীব্যাৰোখাবাথাশিবারিষ্টা-বাট্যসুন্দীবিশ্বক্সেনকাস্তা ইতি দলেমানি প্রজাস্থাপ-নানি ভবস্তি।

রাথানশশা, ব্রহ্মীশাক, দুর্না, খেতদুর্না, পারুল, আমলকী, হ্রীতকী, কট্কী, বেড়েলা ও প্রিরন্ধু এই দশটী প্রজান্থাপক অর্থাৎ গর্জচ্যতিনিবারক।

অমুতাভরাধাত্রীমুক্তাবেতাজীবস্তাতিরসামপুকপণী-ছিরাপুনদ বা ইতি দশেমানি বর:ছাপনানি ভবছি।

গুল্ফ, হ্রীতকী, আমলকী, রালা, বেত অপরাজিতা, জীবস্তা, শতমূলী, থান-কুনী, শালপাণী ও পুনর্মবা, এই দশটি বৌবনভাপক।

> ইতি পঞ্চকঃ কৰারবর্গঃ । ইতি চরকোজ্ঞপঞ্চানকাক্ষায়াঃ ।

ष । সুশ্রুতোক্তসপ্তবিংশলাণাঃ।

विमाबीगकामिगनः।

বিদারীগন্ধা নিদারী সহদেবা বিষদেবা বদট্টো পুথক্পণী পভাবরী সারিবা কুক্ষসারিবা জীবকর্বজ্জক। মহাসহা কুক্ষসহা বৃহত্যো পুনন্দৈরতে। হংসপাদী ইশ্চিকাল্যবন্ধী চেডি । বিদারীগনাদিররং গণ: পিশুনিলাগহ:। শোষগুলাকমর্জার্জ-শাসকাসবিনালন:।

শালপাণী ভূঁইকুমড়া, বেড়েলা, গোরন্ধচাকুলে, গোন্ধর, চাকুলে, শতমূলী, অনপ্তমূল,
ভ্যামালত: ভাঁবক, খনভক, মাষাণী, মুগানী,
বৃহতী, কটেকারী, পুনর্বক, এ ওমূল, গোরালে
লতা, বিহুটী ও আলকুশী ইহাদিগকে বিদীনীগন্ধাদিগণ কহে। ইহা পিন্ত, বায়ু এবং শোষ,
ভক্ষ, অলম্ভ, উদ্ধান ও কাস্বিনাশক।

व्यात्रयधानिश्वः।

আর ধ্বমদনগোপবোন্টাকুটজপাঠাক টকীপাটলামুর্ব্বেক্রবনগুপর্বনিব-কুকুটক-দাসীকুকুটক গুড়ু হাচিত্রকলাল ভাকরঞ্জমপটোলকিরাতিতিক্তকানি ক্রবনী চেতি।
আর ধ্বাদিরিত্যের গণঃ ক্রেম্বিবাপহঃ।
মেহকু ঠক্রবনী-কভ্যের বিশোধনঃ।

সোনাল, মরনাকল, শেরাকুল, কুড্ চি, আক্নাদি, কানাবেগুণ, (মতাস্তবে গোকুর), পাকল, মুর্না, ইন্দ্রবব, ছাতিমছাল, নিমছাল, পীতবিণ্টা, নীলবিণ্টা, গুলঞ্চ, চিত্তা, মহাকরঞ্জ, করঞ্জ, ডহরকরঞ্জ, পল্তা, চিরতা ও করোলা, ইহাদিগকে আরগ্রধাদিগল কহে।
ইহা দারা শ্লেমা, বিষ, মেহ, কুঠ, জর, বমি ও কণ্ডু বিনষ্ট এবং ত্রণ শোধন হয়।

ব্রুণাদিগণঃ 1

বরুণার্প্তগলশিগ্র মধুশিগ্র তর্কারী-মেষশৃঙ্গীপৃতিকনক্তন মানমোরটান্তি-মন্থসৈরীয়কছয়-বিশ্বীক্তকবিশির চিত্রকশতা-বরীবিশ্বাসশৃঙ্গাদর্ভা বৃহতীন্তর্কেতি। বঙ্গণাদির্গণো কেন কক্ষেদোনিবারণঃ। বিনিহ্ছি শির:শুল-গুলাভাক্তরবিক্রধীন্

বক্ষণ, হোগলা, সজিনা, রক্তসজিনা, জয়ন্তী, মেষশিঙ্গী, ডহণকংজ্ঞ, কর্ঞ্জ, মূর্বা মূল'(ইক্ষুমূল-), গণিয়ারী, নীলাঝণ্টী, পীতবিশ্চী, তেলাকুচা, আকন্ম, গ্রুপিপ্ললী, চিচ্চা, শত-মূলী, বেলগুঠি, মেড়াশিক্ষী, কুশমূল, বৃহতী ও কণ্টকারী ইহাদিগকে বন্ধণাদিগণ কহে। ইছাতে কফ, মেদোরোগ, শিরংশূল, গুল্ম এবং অভ্যান্তরবিজ্ঞধি নিবাগিত হয়।

বীরতর্বাদিগণঃ।

বীরতর্মহচরধঃ-পর্ভবৃক্ষাদনী গুল্রানক কুশকাশাস্থ-ভেদকায়িমছ-মোরটা-বহুক-বদির-ভন্তৃক-কুরুক্টকেন্দীবর-কুপোতবন্ধাঃ খদান্ত্রা চেতি।

বীরতর্বাদিরিতোৰ গণো বাতবিকারমুৎ।
শশরীশর্করামূত্র-কৃষ্ণ্রহাঘাতরজাপহ:

উলুম্ল, (অর্জ্কুন্মূল), নীলঝিণ্টী, পীতঝিণ্টা, শর, পরগাছা, ভদ্রমুক্তক (গুলঞ্চ), নল, কুশ, কাশ, পাষাণভেদী, গণিয়ারী, ইক্ষুমূল, আকন্দ, গজপিপ্ললী, শোনা, পীতাঝণ্টী, নীলোৎপল, বন্ধী ও গোক্ষুর ইহাদিগকে বীরতর্কাদিগণ কহে। ইহা ব্যবহারে বায়ুবিকার, অল্মরী, শর্করা, মূত্রকছে ও মূত্রাঘাত নিবারিত হয়।

मानमात्राफिशनः ।

সালসারাজকর্পদিরকদরকালস্ক্রম্কভূর্জ মেষশুসী-তিনিশ-চন্দন-কুচন্দন-শিংলপা-শিরীবাসনধ্বার্জ্ন-তালশাক-স্কুমালপুঠীকাশকর্ণাগুরুণি কালীয়কঞ্তি।

সালসারাদিরিতোষ গণঃ কুঠবিনাশনঃ। নেহপাঙ্গাম্মহরঃ কফ্মেদোবিশোষণঃ।

সাল, অসন, খদির, শ্বেতখদির (পাপ্ট্রী খদির), তমাল, অপারি, ভূজপঞ্জ, মেড়াপূর্জী, তিনিশ, চকন, রক্তচন্দন, শিংশপা, শিরীয়, পিরাসাল, ধব, অর্জ্জুন, তাল, শেশুণ, করঞ্জ, ভহরকরঞ্জ, লতাসাল, অগুরুকাঠ ও কালীয়কাঠ ইহাদিগকৈ সালসারাদিগণ কহে। ইহা কুঠ, মেহ, পাণ্ডু, কহ্ব ও মেদোরোগ্র-নিবারক।

त्राक्षामिशनः।

বোএসাবররোএপলাশকুটন্নটাশোকফঞ্জীকট্রুলেল-বালুকশরকীজিলিনীকদহুসলে কলনী চেতি। এব রোনাদিরিভাতে মেদ্যক্ষহরো গণঃ। বোনিজাবহরঃ অভী এশ্যোবিষ্বিনাশ্যঃ ॥

লোধ, সাবরলোধ, পলাশ, শোনা, অশোক, বামুনহাটা, কারফল, এলবালুক, শন্তকী, জিজিনী, কদম, সাল ও কদলী ইহা- দিগকে রোঞাদি গণুকতে। ইহা ব্যবহারে মেদোরোগ, কফ ও যোনদোষ নষ্ট হয়। ইহা ভন্তী, ত্রণশোধক ও বিষনাশক।

অর্কাদিগণঃ।

অর্কালর্করঞ্জন্মনাগদন্তীময়ুরকভাগীরাক্রেন্দ্রপূসী-কুত্রবেতামহাবেতাবৃশ্চিকাল্যলবণান্তাপসবৃক্ষণ্টেতি। অর্কাদিকো গণো হেন ককমেদোবিবাপত্তঃ। ক্রিমিকুটপ্রশমনো বিশেষাদ্রণশোধনঃ॥

আকল, খেত আকল, করঞ্জ, ডহরকরঞ্জ, হাতিগুঁড়, আপান্ধ, বামুনহাটী, রাম্না, ঈশলান্ধলা, ভূঁই কুমড়া, কাল ভূঁই-কুমড়া,
বিছুটী, অলবণ বৃক্ষ ও ইন্ধুদীবৃক্ষ ইহাদিগকে
অকাদি গণ কহে। ইহা কফ, মেদোরোগ,
বিষ, ক্রিমি ও কুষ্ঠ রোগনাশক এবং ব্রণরোগে
বিশেষ উপকারক।

স্থরসাদিগণঃ ।

স্বসাধেতস্বসাকণিজ ক্ষাৰ্জ্জকভূ**ন্থণস্থগন্ধকস্ম্**কালমাত –কাসমন্ধ-ক্ষাক-খব্যপুন্থা-হিড্ন্স-কট্ কল-স্বসী-নিস্ত জি--কুলাংজা-দুক্--কৰ্ণিকাঞ্জী--প্ৰাচীবলকাকমাচ্যো-বিষমৃষ্টিক-ক্ষোভ

স্থরসাদিগণো: কেয় কফজৎ কিছিসদন। প্রতিক্রায়াক্রচিখাস-কাসগ্রে। এগশোধনঃ॥

ত্লসী, খেত তুলসী, কুলপত তুলসী, বাব্ই তুলসী, গদ্ধত্ব, লাক তুলসী, বন বাব্ই তুলসী, কাল তুলসী, কালকাম্বনে, হাঁচুটী, আপাঙ্গ, বিড্ঞা, কামফল, স্বরদী, নিসিন্দে, কুলেথাড়া (কুক্সিমা), ইন্দ্রকাণী, বাম্নহাঁটী, প্রাচীবল, কাকমাচী ও বিষম্ভি (কুঁচিলা) ইহা দিগকে স্বরদাদি গণ কহে।। ইহা কফ, ক্রিমি, প্রতিপ্রায়, অফ্চি, খাস ও ক্লাস নাশক এবং ব্রণশোধক।

युक्तकामिशनः।

মুক্তপলাশধৰচিত্ৰকমদনবৃক্ষশিংশপাৰ্ক্তৰ কাল্লিফশ্ন-, চেতি ।

म्हकानिर्गत्नाः (कर त्यत्नाश्वः: शुक्रत्नायश्वः । स्वानीः भाषुरताश्वः मर्कताश्वरिनामनः ॥ ঘণ্টাপারুলি, পলাশ, ধব, চিতা, ধুত্রা, শিংশপা, মনসাসিজ ও ত্রিফলা ইহাদিগকে মুক্কাদি গণ কহে। ইহা ব্যবহারে মেলো-রোগ, গুক্রদোষ, মেহ, অর্শঃ, পাণ্ডু, শর্করা ও অশারী নিবারিত হয়।

शिश्रमाक्तिशनः।

পিশ্লনী-পিশ্লনীনূল-চব্যচিত্রক—শৃক্লবেরমবিচহন্তি-পিশ্লনীহরেণুকৈলাজমোদে<u>ল্</u>রযক—পাঠা—জীরক—সর্থপ—মহা-নিক্ষক—হিন্দু-ভাগী—মধুরসাতিবিবাবচানিড্সানি কটু-রোহিণী চেতি ।

পিন্নলাদিঃ কফহরঃ প্রতিশ্রায়ানিলারুটী:।
নিহন্তাদীপনো গুলা-প্রভূতামপাচনঃ ট

পিপুল, পিপুলমুল, চৈ, চিতা, শুঁঠ, মরিচ, গন্ধপিপ্লী, রেণুকা, এলাইচ, যমানী, ইন্দ্রথব, আক্নাদি, জীরা, সর্বপ. বোড়ানিমফল, হিং, বামুনহাটা, মুর্বা, আতইচ, বচ, বিড়ঙ্গ ও কট্কী, ইহাদিগকে পিপ্লল্যাদি গণ কহে। ইহা ব্যবহারে কফ, প্রতিগ্রায়, বায়, অফচি, গুলা ও শূল বিনপ্ত হয়। ইহা আমপাচক ও অধিদীপক।

এলাদিকে। গণঃ।

এলাতগরকুঠ-মাংসীধ্যাসকত্বপাত্রনাগপুস্পপ্রিয়ঙ্গু-হরেপুকা-ব্যান্ত্রনপ-শুভি-১গুটেথীপেয়ক-শ্রীবেষ্টক-চোচচোরক-বালক-গুগ গুলু-সর্গুর্ম-কুন্দুরকা গুলু-স্পৃকোশীরভন্ত্র-দাককুকুমানি পুরাগকেশরঞ্চি।

এলাদিকো বাতকফৌ নিহস্তাদ বিষমেব চ। বৰ্ণপ্ৰসাদনঃ কণ্ড্-পিড়ক'কোঠনাশনঃ॥

এলাইচ, তগরপাত্নকা, কুড়, জটামাংসী, গন্ধ**তু**ণ, গুড়ম্বক, তেজপত্ৰ, নাগকেশরপুষ্প, প্রিয়ন্ত্র, রেণুকা, ব্যাঘ্রনথী, नगी, मद्धा-পুষ্পী (মনসাসিজ), গেটেলা, সরলকাষ্ট্র, (নবনীতখোটা), দারুচিনি, চোরনামক বালা, शक्तवा, গুগ্রলু, ধুনা, শিলা-রস, কুন্দুরু-খোটী, অগুরু, পিড়িংশাক, বেণামূল, দেবদারু, কুন্ধুম ও নাগেশ্বর; ইহা-मिशटक धनामि शंग करह। इंहा वावहात्र করিলে বায়ু, শ্লেমা, বিষদোষ, কণ্ডু, পিড়কা ও কোঠ নিবারিত এবং বর্ণ প্রসন্ন হয়।

- বচাদিগণো হরিদ্রোদিগণশ্চ

বচামুন্তাতিবিবাভয়াভক্ষনান নাগকেশরক্ষেতি। হরিদ্রাদারহরিদ্রাকলসীকৃটজবীজানি মধুকক্ষেতি। এতে) বচাহরিদ্রাদী গণে) বক্তবিশোধনো। আমাতিসারশমনো বিশেষক্ষাবপাচনো॥

বচ, মুতা, আত্ইচ, হ্রীতকী, দেবদার ও নাগকেশর ইহাদিগকে বচাদি গণ কহে। হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, পৃশ্লিপণী, ইন্দ্রব ও বাষ্ট্রমধু ইহাদিগকে হরিদ্রাদি গণ বলে। এই বচাদি এবং হরিদ্রাদি গণ স্তনত্থ-বিশোধক, আমাতী-দার-নাশক ও দোবপাচক।

श्रामानिशंगः।

গ্রামামহাগ্রামাত্রিস্পতাশখিনীতিলককম্পিলকরমাক-ক্রম্কপ্ত্রেশেশী-প্রাক্ষারাজস্ক্ষ-করঞ্জর-শুড্**ট্রা-স্থলা-**চ্ছগলান্ত্রীস্থাঃ স্থলগক্ষারা চেতি।

উক্তঃ গুমাদিরিতোধ গণো গুলাবিধাপহঃ। আনাহোদরবিভূভেদা তথোদাবর্জনাশনঃ।

অনন্তমূল, প্রামালতা, তেউড়ী, দন্তী, চোরপুলী, লোদ, কমলাগুঁড়, ঘোড়ানিম, মুপারি, ইন্দ্রকাণী, গ্রোমুক্, সোদাল, করঞ্জ, ডহরকরঞ্জ, গুলঞ্চ, নবদালিকা (নেয়ালী), বাজতাড়ক, মনসাদেজ ও স্বর্ণক্ষীরী, ইহা-দিগকে শ্রামাদ গণ কহে। ইহা গুল, বিষ্দোষ, আনাহ, উদর ও উদাবর্ত্ত নাশ করে এবং ভেদক।

বৃহত্যাদিগণঃ।

বৃহতীক টকারিকানুটজফলপাঠা মধুকঞেতি। পাচনীয়ে। বৃহত্যাদিগণং পিতানিলাপহং। কন্দারোচকহলাস মূত্রকুক্তক্লাপহং।

বৃহতী, কণ্টকারী, ইন্তাবৰ, আকনাদি ও বৃহিমধু, ইহাদিগকে বৃহত্যাদ গণ কছে। ইহা ব্যবহারে পিত্ত, বায়ু, কক, অকচি, বমনভাব ও মৃত্যকুফ্টু নিবারিত হয়।

পটোলাদিগণঃ।

পটোলচন্দনকু চন্দনমূর্ব্বাগুড় চীপাঠা: কটুরোছিলী চেতি। গটোলাদির্গণ: পিন্ত-কফারোচকনাশন:। এরোপশমনো এণ্যন্দ্রদিকগুবিবাগতঃ। শাৰ্তা, চন্দন, রক্তচন্দন, মুর্বা, গুলঞ্চ, আৰ্দাদি ও কট্কী, ইহাদিগকে পটোলাদি গণ কৰে। ইহা পিন্ত, কফ, অরোচক, জর, ব্যমি, কণ্ডু ও বিষদোষ নাশক এবং ব্রণের হিতকর।

कारकानग्रामिश्रा

কাকোনা শীরকাকোনীজীবকর্যতক্মৃদ্দাণশীনাবপশী-বেলাক্ষাবেদা জিল্লক্ষাক্কটশৃদ্দীতুগা নীরীপক্ষকপ্রপৌত রীক্ষিন্তবিশ্ববীকাজীবড্যো মধুককেতি।

कारकान्याक्तियः शिख-त्यानिञानिननायमः। कवित्वः दुःस्त्या दुवाः सम्मक्तिकारामः।

কাকোনী, কীরকাকোনী, জীবক, ধ্ব-ভক, মুগানী, মাধাণী, মেদা, মহামেদা, গুলঞ্চ, কাঁক্ডাপুলী, বংশলোচন, পদ্মকাঠ, পুগুরিয়া, ধদ্ধি, বৃদ্ধি, জাকা, জীবন্তী ও ষষ্টিমধু ইহাদিগকে কাকোল্যাদি গণ কহে। ইহা রক্তপিত্ত ও বায়ু নাশক এবং জীবনবৰ্দ্ধক, বৃংহণ, বৃষ্যা, গুৱা ও শ্লোকর।

ঊষকাদিগণঃ।

উৰকৰৈক্ষৰশিলাজতুকানীসৰয়হিতুনি তুৰ্ককেতি। উৰকাদিঃ ককং হন্তি গণো মেদোবিশোৰণঃ। অপানীশৰ্কনামূত্ৰ-কুক্তমগুলাশনঃ।

কারষ্ডিকা, সৈদ্ধবলবণ, শিলাজতু, খেত-হিরাকন, লোহিত হিরাকন, হিস্কু ও তুতি; ইহাদিগকে উবকাদি গণ কহে। ইহা কফ, মেদোরোগ, অশ্মরী, শর্করা, মৃত্রক্ষছ্র ও গুল্ম রোগ নাশক।

मात्रियानिशंगः।

বারিবাদগুকচন্দ্দপথ্যক কাশ্মরীকলমধ্কপূশাশুদৌরকেতি।
সারিবাদিঃ শিপাসাদ্ধো রক্তপিভহরো গণঃ।
পিতক্তরপ্রশাসনো বিশেষাক্ষাহনাশনঃ ঃ

অনন্তমূল, বাইমধু, রক্তচন্দন, পদ্মকাঠ, গাছারী ফল, মৌলমূল ও বেণামূল, ইহা-দিগকে সারিবাদি গণ কৰে। ইহা ব্যব-ছারে শিপাদা, রক্তশিত্ত, পিডজের ও দাহ বিনত্ত হয়।

ब्रखनामिश्रगः ।

অঞ্জন-রুসাঞ্জনমাগপূষ্ণপ্রিরজুমীলোৎপলনদদদিন-কেলরাণি মধুকণেতি। অঞ্জনাদিগণো হেব রস্ত্রপিতনিবর্ত্ণঃ।

বিবোপশমনো ধাহং নিহন্ত্যাভান্তরং তথা।
অঞ্চন, নাগাঞ্জন, নাগাকেশর, প্রিরস্থু,
নালোৎপল, বেগামূল, পল্লকেশর ও বৃষ্টিমধু,
ইহাদিগকে অঞ্চনাদি গশ কহে। ইহা রক্তপিত্ত,
বিষ ও আভ্যন্তর দাহ বিনাশক।

পরুষকাদিগণঃ ।

পান্নথকন্ত্ৰাক্ষাক্ৰটকলম্বাভিমরাশ্লাদনকভক্ষলশাক্ষলানি ক্ৰিকলা চেতি।

পর্বকাদিরিতোর গণোহনিলবিনাশনঃ। মূত্রদোষহরো হচ্চঃ পিপাসালো রুচিপ্রদঃ॥

ফল্সা. কিদ্মিদ্, কার্ফল, দাজিম, ক্ষীরণী, নির্দ্দলীফল, দেগুণফল, (সার্ফল), আমলকী, হ্রীতকী ও বহেজা, ইহাদিগকে পক্ষমকাদি গণ কহে। ইহা বাংনাশক, মৃত্র-দোষহর, হুছা, পিপাসানাশক ও ক্রচিপ্রদ।

थियन चर्छा में गर्ग ।

প্রিরসু-সমঙ্গা-থাতকী-পুলাগরস্তচন্দনকুচন্দনমোচরস-রসাঞ্জনকুস্তীকপ্রোতোহঞ্জনপলকেশরবোজনবঙ্গো দীর্ঘ-মূলা চেতি।

অষ্ঠা ধাত্কীকুত্ম-সমঙ্গা--কট্ ধমধুকবিৰপেলিকা-রোএসাবররোপ্রপালালন্দীবৃক্ষা: পলকেশরকোড । গণৌ প্রিয়ঙ্গ ষ্ষঠাদী পকাতীসারনাশনৌ । সন্ধানীয়ে হিতৌ পিত্তে প্রপানাঞ্চাপি রোপনৌ ।

প্রিয়ন্থ, বরাহজোস্তা, ধাইফুল, নাগকেশর, রক্তচন্দন, বকমকাষ্ঠ, মোচরস, রসাঞ্চন, টোকাপানা, কালস্মা, পদকেশর, মঞ্জি ও শ্রামানতা, ইহাদিগকে প্রিয়ন্ধ্যাদিগণ কৰে।

আক্নাদি (পুদিনা), ধাইফুল, ব্রাহ-ক্রান্তা, শোনা, বাষ্ট্রমধু, বেলঙাঁঠ, লোধ, সাবরলোধ, পলাণ, ভুঁতগাছ ও পদ্মকেশ্র, ইহাদিগকে অফ্টাদি গণ কহে।

এই প্রিয়ন্ধানি ও অম্বর্গানিগণ প্রাতীসার নাশক, পিউনাশক, ভয়সংবোদক ও এণরোপক।

ग्राथा मिन्।

. শুরোধেড়ি, স্বাস্থ্যক্ষপ্রকাপীত্মককুভারকোণার-চোরক-পত্রকস্থ্যপিয়াল-মধুকরোহিণী-বঞ্জকদম্বদরীতিন্দ্কী-শলকী-রোএসাব্ররোএভলাতকপতাল। নন্দীবৃক্তভি। শুরোধাদির্গণো এণাঃ সংগ্রাহী ভয়সাধকঃ। রক্তপিক্তরো দাহ-মেদোম্বো যোনিদোম্বরু

বট, ৰজ্জুমুর, অৰখ, পাকুড়, ৰাষ্টমধু,
আমড়া, অৰ্জুন, আত্ৰ. কোণাত্ৰ (কেওড়া),
চোরকাঁচকী, তেজপাতা, বড় জাম, কুদে জাম,
পিয়াল, মৌল, কট্কী, বেতস, কদম, কুল,
গাবমল, শল্লকী, লোধ, সাব্রলোধ, ভেলা,
পলাৰ ও মেড়াশিন্ধী, ইহাদিগকে অগ্রোধাদি
গণ কহে। ইহা ত্রণা, সংগ্রাহী, ভয়সাধক,
রক্তপিত্ত, দাহ, মেদোরোগ ও যোনিদোধনাশক।

छंफ् ह्या निगनः।

ওড়্চীনিস্কুস্তম্কচন্দনানি প্রকক্ষেতি। এব সর্ক্ষরান্ হস্তি ওড়্চ্যাদিস্ত দীপন:। হুলাসারোচকবমী-পিপাসাদাহনাশন:।

গুলঞ্চ, নিম্ছাল, ধনে, চন্দন ও পদ্মকৃষ্ঠি, ইহাদিগকে গুড়ুচ্যাদি গণ কছে। ইহা ব্যব-হারে সর্ব্যঞ্জার জ্বা, হালাস, অরোচক, ব্যি, পিপাসা ও দাহ,বিনষ্ট হয়। ইহা দীপন।

উৎপলाদिशनः।

উৎপল-রক্তোৎপল-কুম্দসৌগ ক্ষককুবলক্ষপুঞ্জীকাণি মধুককেতি।

উৎপলাদিরয়ং দাহ-পিত্রক্তবিনাশনঃ। পিপাসাবিষয়ক্তোগ-চছর্দ্দিমূর্চ্ছার্ট্রা গণঃ।

উৎপলং নীলোৎপলম্। রজোৎপলং লোহিতোৎ-পলম্। কুমুদং খেতোৎপলম্। সৌগন্ধিকং নীলোৎ-পলাকারবর্ণমূৎপলং ফুগন্ধি চ। কুবলয়মীয়লীলধব্লম্। পুভরীকং খেতপল্লম্। মধুকং যৃষ্টিমধ্।

নীলোৎপল, রক্তোৎপল, খেতোৎপল, সৌগন্ধিক (স্থগন্ধবিশিষ্ট নীলোৎপল), কুব-লয় (ঈষয়ীলাভ খেতোৎপল), খেতপল্ল ও बंधियम्, हेरानिगरक छैरलनानि गण करह। हेरा मार, तकलिङ, लिलामा, विवरणाव, कर्णाण, विच ७ मृष्टी नामक।

युखानिशनः।

ম্তা-ছরিল্লা-দারত্রিলাহরীত্তকামককবিতীতকভূঠ-হৈমবতী-বচাপাঠাকটুরোহিণা-শাল প্রাভিবিবালাক্রি-ভল্লা-ভকানি চিত্রকঞ্চেত।

भव मुखानिको नामा शनः त्रसनिक्षयः। विनित्तावस्त्रः चळ-लावमः शाहमख्या ॥

মূতা, হরিজা, দারুহরিজা, হরীজনী, আমলকী, বহেড়া কুড়, স্বর্ণক্ষীরী, বচ, আক্-নাদি, কট্কী, বড় কর্মচা, আতইচ, এলাইচ, ভেলা ও চিতা ইহাদিগকে মুন্তাদি গণ কৰে। ইহা শেমনাশক, বোনিদোবহারক, বজ-শোধক এবং পাচক।

बिक्ला !

र्त्राङ्कामनक्विङीङकानि जिस्ता। जिस्ता क्रमणिङ्गो प्रश्कृष्ठेविनामनी। इक्षा मीभनो टेक्य विवसस्वत्रनामनी॥

হরীতকী আমলকী ও বহেড়া, ইহাদিগকে ত্রিফলা কহে। ত্রিফলা কহু, পিত, মেহ, কুছ ও বিষমজ্বর নাশক এবং চকুষ্য ও দীপন।

ত্রিকটুকম্।

শিল্পনীমরিচশৃক্ষবেরাণি ত্রিকটুক্র ।
ত্র্যোপণং ক্ষমেণাদ্বং মেহকুঠন্বপামরান্।
নিহন্তাদ্বীপনং শুলা-শীনসাগ্যক্ষতামপি ॥

পিপুল, মান্ত ও শুঠ, ইহাদিগকে ত্রিকটু কহে। হহা ব্যবহারে কফ, মেদোরোগ, মেহ, কুঠ, চর্মরোগ, গুলা, পীনম ও মন্দান্ধি বিনষ্ট হইয়া থাকে।

व्यायनका मिशनः।

শাসনকীহরীতকীপিরল্যন্তিত্রৰ্থক্তি।
শাসনকাদিরিত্যের গণঃ সর্বান্ধরাগরঃ।
চন্দ্রো দীপনো ব্যাঃ ক্লারোচকনাশনঃ।
আমলকী, হরীতকী, পিপুল ও চিত্ত ইহাদিগকে আমলকাদি গণ কতে। ১৯ সকল প্রকার জ্বর, কফ ও অরোচক নাশক এবং চক্ষু, দীপন ও বৃষ্য।

ত্রপু দিগণঃ।

অপুরীসভাত্ররজভত্তৃষ্ণলৌহস্বর্ণনি লোহমলকেতি।

সংগ্রুপ্ নাদিরিভোগ গর্কিমিহরঃ পরঃ।
পিশাসাবিবহুজোগ-পাঞ্চুমহ্হরস্তর্থা।

রঙ্গ, সীস, তাত্র, রৌপ্য, কাস্তলৌহ, স্বর্ণ ও লৌহমল (মণ্ডর), উহাদিগকে ত্রপ্যাদিগণ কৰে। ইহা গরদোষ, ক্রিমি, পিপাসা, বিষ-দোষ, সন্দোগ, পাঞ্জ ও মেহ নাশক।

लाका फिशन ।

লাক্ষারেনত-কুটজাখনার-কট্ফলহ্রিজাখরনিখসপ্ত-চ্চুদ্দ্যালভ্যন্তারাম্বাণা চেতি।

ক্ষায়ভিক্তমধুরঃ কফপিতাতিনাশনঃ। কুঠন্তিমিহরদৈব ছুষ্টব্রণবিশোধনঃ।

লাক্ষা, জম্বীর, কুড় চি. করবী, কার্যফল, হরিন্তা, দারুহরিন্তা, নিম, ছাতিম, মালতী ও বলাডুমুর, ইহাদিগকে লাক্ষাদি গণ কহে। ইহা ক্ষাম, তিক্ত, নধুণ, কফ ও পিত্তজনিত পীড়া নাশক, কুঠ ও ক্রেমি নিবারক এবং হুষ্ট রুণ শোধক।

সল্পঞ্মূলম্।

ত্রিকটকবৃহতীধরপূধক্পর্ব্যে বিদারাগনা চেতি কনীরঃ। ক্বান্নতিক্তমধুরং কনীরঃ পঞ্চম্লকম। বাতমং পিতশমনং বৃংহণং বলবর্জনম্।

গোক্ষুর, বৃহতী, কণ্টকারী, চাকুলে ও শালপাণি, ইহাদিগকে স্বরপঞ্চন্ত কহে। ইহা ক্ষায়, ভিক্ত, মধুর, বায়নাণক, পিত্তপ্রশমক, সুহ্বণ ও বলবর্দ্ধক।

মহৎ পঞ্চশূলম্ ।

বিশাগ্রিমন্ত্রিত্ত কপাটলাকা প্রবিক্তেতি মহৎ।
সভিক্তং কন্ধবাতমং পাকে লগ্নিদীপন্ম।
মধুরানুরসকৈব পঞ্চন্তং মহৎ স্মৃত্যু॥

বেল, গণিয়ারি, শোনা, পারুল ও
।

ইহা তিক্তরদ, কফ ও বার্নাশক, পাঁকে সমু, অগ্নিদীপক ও মধুরামুরদ।

দশমূলন্

অৰয়োদ শমূলমূচাতে।

গণ: খাসহরো হেষ কফপিন্তানিলাপহ:। আমস্ত পাচনশ্চৈব সর্ব্বজ্ঞরবিনাশন:।

মিলিত বল্পঞ্মূল ও মহৎপঞ্মূলকে দশমূল কহে। ইহা খাদহৰ, কফ পিত ও বায় নাশক, আমপাচক এবং দৰ্মজ্বনাশক।

वल्लां शक्ष्मृलः क छ क शक्षम् लकः।

বিদারাসারিবারজনীগুড়,চ্যোহজশৃঙ্গী চেতি বলীসংজ্ঞ:।

করমন্দ-ত্রিকটকসৈরায়ক-শতাবরীগৃধনথ্য ইতি
কটকসংজ্ঞ:।

রক্তপিত্তহরো হেতে। শোক্তরবিনাশনৌ। সর্বমেহহরো চৈব শুক্রদোষবিনাশনৌ।

শালপানী, অনস্তম্ল, হরিজা, গুলঞ্চ ও মেড়াশিক্ষী; ইহারা ব্রমীপঞ্চম্ল।

করম্চা, গোকুর, নীলঝিণ্টী, শতম্লী ও কালিয়াকড়া, ইহারা কণ্টকপঞ্চমূল।

উক্ত কণ্টকসংগুক এবং ব্য়াসংজ্ঞক গণ-ত্বয় রক্তপিত্ত, শোথ, সর্বপ্রকার মহ ও জ্ঞুক দোষ নিবাবক।

তৃণপঞ্মূলম্ ।

কুশকাশনলদর্ভকাণ্ডেক্ষুকা:ইভি তৃপ্সংজ্ঞকন্ ।

মৃত্রদোষবিকারক্ষ রক্তপিত্তং তথৈব চ।

অস্তঃ প্রযুক্তঃ ক্ষীরেণ শীজ্ঞমেব বিনাশরেৎ ।

এবাং বাতহরাবাদ্যাবস্তাঃ পিত্তবিনাশনঃ ।
পঞ্চকে) প্রেম্মশননাবিতরে পরিকীর্জিতে ।

এভিলে পান্ কষারাংশ্চ তৈলং স্পাহিষি পানকান্ ।
গবিক্তা বশাস্তারং ক্র্বীত মতিমান্ ভিষক্ ।

কুশ, কেশে, নল, উলুবড় ও থাগড়া (কাৰার মতে ইকু), ইহাদিগকে তৃণপঞ্চমূল কহে। এই তৃণপঞ্চমূল হয়ের সহিত প্রস্কু ইইকে সম্বর মুদ্রদোষ ও রক্তপিত বিনাশ করে।

বলাদি যে পাঁচ প্রকার পঞ্মূল কৰিব হইল, তাহাদের মধ্যে প্রথম ছইটা অর্থাৎ বা ও মহৎ পঞ্চমূল বাতনাশক, শেষোক্রটি অর্থাং ভূগপঞ্চমূল পিত্তনাশক এবং অস্তা তূইটি অর্থাৎ বল্লীপঞ্চমূল ও কন্টকপঞ্চমূল শ্লেমপ্রশমক।

বৃদ্ধিমান্ চিকিৎসক অবস্থা বিবেচনা করিয়া পুর্বোক্ত গণসমূহ দারা প্রালেপ, কষায় কিংবা তৎসহ দ্বত ও তৈল পাক করিয়া প্রারোগ করিবেন।

ইতি প্ৰশতোক্তসপ্ততিংশদুগণাঃ।

অথ সংশমনে। বর্গঃ।

বাতসংশ্যনে। বর্গঃ।

ভন্তদার-বৃষ্ঠহরিদ্রাবরণ-মেষণৃষ্ঠাবলাভিবলার্জগল-কন্ধুরাশরকী-কুনেরাক্ষী-বারতর-সহচরাগ্রিমন্ত-বৎসাদন্তার-ভাল্লভেদকালর্ক কিশতাবরী-পুনন্বাবস্থক-বিদর-কাঞ্চনক-ভাগী-কার্পাসী-বৃশ্চিকালা-পত্র-বদর-বদর-বল-কুল্থ-প্রস্তুতীন বিদার্গান্ধাদিশ্চ দে চাত্তে পঞ্চমুন্নো সমাসেন বাতসংশ্যনো বর্গঃ।

দেবদারণ, কুড়, হরিদ্রা, বরুণ, মেড়াশৃঙ্গী, বেড়েলা, গোরক্ষচাকুলে, নাল্মিন্টী, আলকুনা, গল্লকী, পারুল, অজ্ঞু, হাড়যোড়া, থেত আকন্ম, গণিয়াবি, গুলঞ্চ, এরগু, হাড়যোড়া, থেত আকন্ম, আকন্ম, শতমূলী, পুন্নবা, গজ্পিপ্লা, বেতো-শাক, লালকাঞ্চন, বামূন্হাটী, কাপান, বিছুটা, চন্দনবিশেষ, কুল, যব, বড় কুল ও কুন্থকলার প্রভৃতি জব্য, বিদারীগন্ধাদি গণ এবং স্বন্ধ ও বৃহৎ পঞ্চমূল, ইহাদিগকে বাতসংশমন বর্গ কহে।

পিত্রসংশমনো বর্গঃ।

চন্দন-কুচন্দন-হাবেরোণীরমঞ্জিপারস্থাবিদায়ীশতা-বরী-গুল্লা--শৈবাল-কংলার-কুম্দোৎপল-কদলী-কন্দনীদুর্বা-মূর্বাপ্রভূতীনি কাকোল্যাদিস্ত প্রোধাদিস্থপস্কমূল্যিভি স্বাসেন পিত্তসংশ্যনো বর্গঃ।

চন্দন, রক্তচন্দন, বালা, বেণার মূল, মঞ্জিন, ক্ষীরকাক্লা, শালপাণী (ভূমিকুমাও), শঙ্মূলী, ভদ্রমূতা, শেওলা, কহলার, কুমূদ, উৎপল, কদলী, পদ্মবীজ, দূর্মা ও মূর্মা প্রভৃতি দ্বব্য, কাকোল্যাদি ও মুগ্রোধাদি গণ এবং ভূণপঞ্চন্দ্র, ইহাদিগকে পিতসংশ্যন বর্গ কহে।

কফসংশমনে। বৰ্গঃ।

ক'লেমকাগুল ভিলপণী-কুষ্ঠহরি দ্বাশীতশিবশৃতপুশাসরলং-রামা-প্রকীয্যোদকীযোগুদী-সুমনংকাকাদনী-লাল লকীহস্তিকণ্মুঞ্জ'তকলাম জকপঞ্চতীনি বলীকটকপঞ্চমুল্যো পিগল্যাদির হিত্যাদিনু ক্কাদিবচাদিঃ স্বসাদিরার্থধাদিরিতি সমানেন ক্লসংশ্যনো বর্গঃ। তত্ত সর্বাণ্যেবীযধানি বাাধাগ্রিপুক্ষবক্ষান্তভিস্মীক্ষ্য বিদ্যাং।

কালীয়ক (চল্মনিশেষ), অগুক্কান্ট, রক্তন্দন, কুড়, হরিদ্রা, শৈলজ, গুল্ফা, সরলকান্ঠ, রালা, নাটা, ডহব করমচা, ইঙ্কুনী, জাতী, গুল্পা (কুঁচ), জিশ্লাঙ্গলা, এরও, মুল্লাতক ও বেণাব মূল প্রভৃতি দ্রবা, বমী ও কণ্টকদংক্তক পঞ্চমূলীছর, পিপ্লগ্রাদি, ভ্যাদি, মুক্লাদি, বচাদি, স্থবসাদি ও আরথখ্যাদি গণ, ইহাদিগকে কফ্সংশ্যমন বর্গ কহে। সকল ঔষধই বাাবি অগ্নি বোগী ও বলের প্রতি লক্ষা বাধিরা প্রয়োগ করিবে।

ইত্যায়ুর্বেদ-সংগ্রহে চরকোক্তপঞ্চাশন্মহাক্যায়াঃ, স্থঞ্জেভাক্ত-সপ্তজিংশদ্র্গণাঃ, সংশ্মনবর্গন্চ।

व्य प्रवाखन-প্रकर्मम्।

অথ হন্ত্ৰীতক্যাদিবৰ্গঃ।

অথ হরীতকী।

হরীতক্যভয়া পথা। কারস্থা পুতনামূতা। হৈমবত্যব্য়থা চাপি চেতকী শ্রেয়সী শিবা। বয়ঃস্থা বিজয়া চাপি জীবস্তী রোহিণীতি চ॥

হরীতকী, । অভয়া, পথ্যা, কায়স্থা, পূতনা, অমৃতা, হৈমবতী, অব্যথা, চেতকী, শ্রেমনী, শিবা, বয়াস্থা, বিজয়া, জীবস্তী ও রোহিণী, এইগুলি হরীতকীর নাম (পর্যায় শন্দ)।

বিজনা রোহিণী চৈব পুতনা চামুতাভরা।
জীবস্তী চেতকী চেতি পথ্যারাঃ দপ্ত জাতরঃ ।
অসাবুবুতা বিজয়া বৃত্তা সা রোহিণী স্মৃতা।
পুতনান্থিমতা পুজা কথিতা মাংসলামূতা ।
পঞ্চরেথাংভরা প্রোক্তা জাবস্তা স্বর্ণবর্ণনিই।
জিরেথা চেতকী জেয়া সপ্তান মিয়মাকৃতিঃ ।

হরীতকী সাত জাতীয়, বণা—বিজয়, রোহিনী, পুতনা, অনৃত , অভয়া, জীবন্ধী ও চেতকী। ইহাদের মধ্যে বিজয়ার আকৃতি অলাব-(লাউ)-সদৃশ গোলাকার। রোহিনী সম্পূর্ণ গোল। পূতনার আকৃতি স্কা, কিন্তু বৃহৎবীজমুক্ত। অমৃতা মাংসল অর্থাৎ শস্ত্র-বহুল ও ক্ষুদ্রবীজ-বিশিষ্ট। অভ্যা পাঁচটা রেখা বিশিষ্ট, জীবন্ধী স্বর্ণবর্ণ এবং চেতকী ভিন্টী রেখা বিশিষ্ট হইয়া থাকে।

বিজয়া সঞ্চরোগের রোহিণী তণরোহিণী।
প্রক্রেপে পুতনা যোজ্যা লেংধনার্থেইছ তা হিতা॥
অন্ধিরোগেইজয়া শস্তা জীবন্ধী সর্করোগজং ।
চূর্ণার্থে চেতকী শস্তা যথাযুক্তং প্রযোজ্যেও॥
সেতকী বিবিধা প্রোক্তা দেতা কৃষণ চ বর্ণতঃ।
বড়স্বাযতা শুক্লা কৃষণ চেকাস্ক্রা মৃতা॥
কাচিশ্বাদনাত্রেণ কাচিদ্গন্ধেন শুকরেছে।
কাচিৎ স্পর্নেক্রিবা॥

বিজয় সর্লবোগে প্রশন্ত। রোহিণা রণবোপক মর্থাং ইহ। দ্বারা ক্ষত প্রায় ইঠে।
প্রলেপ কার্মা প্রনা প্রনা প্রাজা। অমৃতঃ
হরীতকী, ভেদাদি সংশোধন-কার্ম্য ব্যবস্থেয়।
অভয় নেত্ররোগে প্রশন্ত। জীবন্তী সর্বরোগবিনাশক। চেতকী হরীতকী চুর্গার্থ ব্যবহার্মা।
এই সম্নায় বিবেচনা কবিয়া রোগ-বিশেষে
হরীতকী-বিশেষ প্রয়োগ করিবে। চেতকী
হরীতকী শুক্র ও ক্রক্ষ ভেদে ছই প্রকার,
তমধ্যে শুক্রবর্ণ চেতকী ছয় অস্থাল পরিমিত
এবং ক্রক্ষর্যে চেতকী এক অস্থাল পরিমিত
হইয়া থাকে। কোন হরীতকী ভক্ষণ করিলে,
কোন হরীতকীর গদ্ধ আন্রাণে, কোন হরীতকীর প্রশেশ ও কোন হরীতকীর দর্শনে ভেদ
হইয়া থাকে।

চেত্রকীপাদপচ্ছারামুপদর্প ত্ব যে নরা:।
ভিত্তত্তে তৎক্ষণাদের পশুপক্ষিদ্বগাদর:॥
চেত্রকা তু গৃতা হল্তে যাবৎ তিঠিতি দেছিন:।
তাবদ্ ভিত্তেত বেগৈন্ধ প্রভাবান্নাক্র সংশার:॥
তৃক্ষাপ্রস্কুমারাণাং কুশানাং ভেষজ্বিযাম।
চেত্রকী প্রমা শস্তা হিতা ক্থবিরেচনী॥
সপ্রনামপি জাতীনাং প্রধানা বিজয়া স্থতা।
ক্থপ্রয়োগা ক্লভা সর্ব্রোগেন্থ শস্ততে॥

মনুষ্য কিংবা পশু পক্ষী মূগ প্রভৃতি যে কোন প্রাণী চেতকী হরীতকী রক্ষের ছায়ায় গমন করে, তাহাদের তৎক্ষণাৎ ভেদ হয়। এই হরীতকা যতক্ষণ হাতে করিয়া থাকা যায়, ততক্ষণ ইহার প্রভাবত্তের প্রবলবেগে ভেদ হইতে থাকে। তৃষ্ণার্ভ, স্কুমার, রুণ ও ঔষধ-ছেমী ব্যক্তিগণের স্থা-বিরেচনার্থ এই

চেত্রকী হরীত্রকী অভ্যস্ত প্রশস্ত। এই সাত জাতীয় হরীত্রকীর মধ্যে বিজয়ানামিকা হরী-ত্রকীই শ্রেষ্ঠ, কারণ ইহা স্থাসেবা, স্থানভা ও সর্বরোগে হিত্তকর।

হরতিকা প্রকরণ হলধণা তুররা প্রম্।
ক্ষেকা দাপনা মেধ্যা স্বাহ্নপাকা রসায়নী।
চকুরা লঘুরাযুষা বংহণী চাতুলোমনা।
বংসকাসপ্রমেহার্শি-কুঠ্পোথোলরক্রিমান্।
বৈষ্ণ্যগ্রহণীরোগ-বিবন্ধ নিষ্ক্রন্।
ভুন্মাপ্রান্ত্রক্রিকি-চিজকেভুক্ত সময়ন ।
বাম্পান্ত্রক্রিকি চিজকেভুক্ত সময়ন ।
বাম্পান্ত্রক্রিক ম্বালাক্র নাপ্রের।
সাল্রবিম্পুক্তেক ম্বালাক্র নাপ্রের।

হ্ৰীড্কী প্ৰদেস বিশিষ্ট অহাং ইছা মধ^ৰ, আল্ল, কিন্তুন, কট ও কৰ্যাৱস্বত্ত , ইহাতে ধারণ বস নাই। এই পাঁচে প্রকার বসের ম্পেটেইটেও কথায় ক্ষেণ্ট আ্দিকা থাকে। াক, উফাৰীয়া, অগ্নিদীপ্রিকার, মেৰ।**জনক, মনুব-বিপাক** (পাকে মধুৰ রস), শ্লায়ন, চকুৰ হিতকৰ, স্মৃত আল্লায়ৰ, ৰুং**হণ** '^৭ অ**মূলো**মন মুখাদিব ভারঃপ্রবারক)। হরীতকী দেবনে খাস, কাস, প্রমেহ, অর্শঃ, কুষ্ঠ, শোণ, উদর, ক্রিমি, স্বরবিক্কতি, গ্রহণী-রোগ, মলবিবন্ধতা, বিষমজ্ঞর, প্রথম, আগ্রান (পেট প্রপা), তৃষ্ণা, ছদি, হিকা, কণ্ড, সন্তোগ, কামলা, শূল, আনাহ, প্লাহা, যকুং, অশারী, মৃত্রকুছে ও মৃত্রাগাত বিনষ্ট হয়।

ষাত্তজ্ঞকনাত্ত্ব পিত্ত সং ক্ষাসং তু সা।
কট্তিজ্ঞকনাত্ত্বালয় হ'বাতহাচিত্ৰ ।
পিতত্ত্ব কট্ক'ন্নহাষাতক্ত্ব কথা শিবা।
প্রজাবাদ্যোহস্ত তথা সিদ্ধাং বং তথ প্রকাশতে ॥
হেতৃত্তিঃ শিবাবোধার্ম্ম ন পূর্বং ক্রিয়তেইধুন ।
কথা স্তাহং গুটাং সামাং দুষ্টমাশ্রয়ন্তেন ১: ।
বহস্তো নেতি চিন্তাং ধন্তৌলকচন্নোব্ধা ॥

হরীতকী, স্বাড় তিক্ত ও ক্যায় রসবিশিষ্ট বলিয়া পিত্তনাশক। কটু তিক্ত ও ক্যায় রস-বিশিষ্ট বলিয়া ক্ষ্ণনাশক এবং অম্রসবিশিষ্ট বলিয়া বায়্নাশক। এস্থাণে জিল্কান্স হইতে পারে যে, কটু ও জাম বস থাকাতে হরীতকী কেন পিত্তজনক ও বাতকর না হয় ? এতৎ
সম্বন্ধে ইহাই প্রসিদ্ধ আছে যে, প্রভাবরূপ
অচিন্তা শক্তি ঘারাই হরীতকী উক্তবিধ ফল
দর্শাইয়া থাকে। ইহার কারণ নির্দেশ করা
অসন্তব, তবে শিষ্যবোধের জন্ম ইহা বলা
যায় যে, কোন কোন জব্য, গুণে সমান হইয়াও
আশ্রমভেনে ভিন্ন প্রকার কার্য্য প্রদর্শন করে,
যেমন আমলকী ও ডেলো মান্দার; এই উভর
বন্ধ বসাদিতে কুলা হইয়াও কার্য্যে পার্থক্য
দর্শাইয়া থাকে অর্থাৎ আমলকী ত্রিদোব্দ্দ
কিন্তু ডেলো মান্দার ত্রিদোব্দ্দকনক।

গগৈলো মাজনি স্বাস্থ্য স্বাস্থ্য নাম বাবস্থিত।

রাজ ভিজাপ্ত কটুবজি, জু জুবারা রাম, ॥

নবা বিদ্যাং গনা রারা ভিন্তা জিলা চাম প্রসি।

নিমাজেই সা প্রশাস্তা চাক্লিক ভিন্তাপ্রসা।

নগানিজাব্যুক্তরা ভবেক ক দ্বিক্রি।

বরাইকারে কালে যাত্র দ্বাংশ ভবেক্কার্কারত।

হুনাঁতকান মন্তার মধুব রস, স্নায়ুতে অন্ন রস, রছে চিত্তরস, জনে কটু রস ও অস্থিতে (অ'টিতে) ক্যার রস বিশ্বমান আছে। যে হুরাতকা নৃত্ন, স্নিয়, কঠিন, গোলাকার, গুরু এবং যাহা জলে নিকেপ করিলে ডুবিয়া, বায়, তাহাই প্রশস্ত ও অত্যক্ত গুণকারক। যে হুরীতকা পুর্বেজি নৃত্নাদি গুণবিশিষ্ট ও ফুই ক্য ভারবিশিষ্ট, তাহা স্বাপেক্ষা শ্রেষ্ঠ।

চিকাতা বন্ধরতাথিং পেবিতা মলশোধিনী।
বিলা সংগ্রাহিনী পথা ভূপা প্রোক্তা ক্রিলোকত্ব "
ডক্মালিনী বৃদ্ধিবলেন্দ্রিয়াণাং নিক্স্বিলনী পিত্তক্ষানিলানাম।
বিলংসিনী মৃত্তশক্ষালানাং হরীতকী ভাবে সহ ভোজনেন॥
অন্নপানকৃতান্ দোধান্ বাতপিত্তকফোত্তবান্।
হরীতকী হরতাাও ভূক্জোপরি ঘোজিতা॥
লবপেন কফং হস্তি পিত্তং হস্তি স্বার্করা।
স্তেন বাত্জান্ রোগান্ স্বব্রোগান্ ওড়াবিতা॥

হ্নীতকী চর্গ করিয়া সেবন করিলে অগ্নির্দ্ধি হয়, পেষণ করিয়া দেবন করিলে মল শোধিত হয়; সিক করিয়া থাইলে মল সংগ্রহ করে ও ভর্জন করিয়া (ভাজিয়া) দেবন করিলে ত্রিদোষ নষ্ট হয়। আহারের সহিত হরীতকী থাইলে বৃদ্ধি বল ও ইন্দ্রিয়ের বিকাশ, পিন্ত কফ ও বায়ুর নাশ এবং মৃত্র পুরীষ ও শারীরিক মলসমূহের বিনির্গম হয়। আহারান্তে হরীতকী দেবন করিলে বায়ুপিত কফ ও অন্নপানজনিত পীড়াসমূহ নিবারিত হয়। হরীতকী লবপের সহিত সেবনে কফ, চিনির সহিত সেবনে পিন্ত, মৃত সহ সেবনে বাতজ রোগ ও গুড়ের সহিত সেবন করিলে সর্বপ্রকার রোগ বিনষ্ট হয়।

সিদ্ধুখনকরাগুসী-কণামধুগুড়ৈঃ ক্রমাং । বর্ষাদিকভারা প্রাপ্তা রসারনগুণৈষিণা ॥

রসায়নেচছু ব্যক্তি বর্ষা ঋতুতে সৈক্ষ লবণের সহিত, শরৎকালে চিনি সহ, হেমস্ত-কালে শুঠচূর্ণ সহ, শীত কারে পিপুল চূর্ণ সহ, বসম্ভকালে মধু এবং গ্রীষ্মকালে শুড় সহ হরীতকী সেবন কলিবেন। উহাকে ঋতু হরীতকী বলে।

অধ্বাতিখিয়ে। বলবজ্জিতত বক্ষঃ কুণো লঞ্চানক্ষিতত । পিত্তাধিকো গৰ্ভকতী চ নারী নিম্ভাবত শ্বত্যাং ন খাদের।

পথশ্রান্ত, তুমলা, কৃষ্ণ, কৃষ্ণ, উপনাস ছার। ক্ষীণদেহ, পিত্তপ্রধান নাতু, গভবতী স্থী এবং । ধাহার রক্তমোক্ষণ করা হরীতকী-দেবন নিষিক।

অথ বিভাতৰঃ ৷

বিভীতকপ্রিলিজ্য গুদেষ্য, কন্দদেশ্ব স । কলিজমো ভূতবাসস্থা কলিমুগালয়। । বিভীতকং স্বান্ত্রপাকং কমান্ত্রং কমাণি হয়ং ইক্ষবীবাং ভিমলানাং ভেদনং কাসনাশনস্ । রক্ষা নেত্রভিঙ কেন্তাং ক্ষিনিক্স্নালনা । বিভীতক্ষা ভূটভান্তি ক্ষান্ত্রাণি ভদ্ভণঃ ।

वाक्षा

বিজীতক শেক ত্রিলিঞ্চ; আফ, কংকেন, কলিজম, ভুতবান ও কলিবুগালয় এই শুলি বিজীতকা (বহেড়া)শব্দের পর্য্যায়। বহেড়া— মধুর-বিপাক, কষাররস, কফ-পিন্তনাশক, উষ্ণবীধ্য, শীতস্পর্শ, জ্বেক, কাসনিবারক, ক্লুক, নেত্র ও কেশের হিতকর এবং জ্বিমি ও স্বরনোব-প্রশমক। বহেড়ার মজ্জা—পিপাসা, বমি, কফ ও বাতহারক, লঘুপাক, কমাররস ও মদকারক। আমলকীর মজ্জাও বহেড়া-মজ্জার স্তার গুণবিশিষ্ট।

অথামলকম্ ।

ত্রিষামনকমাখ্যাতং ধাত্রী তিব্যক্তামূতা।
হরীতকীসমং ধাত্রী-কলং কিন্ত বিশেষতঃ॥
বক্তপিতপ্রমেহন্নং পরং বৃষ্যং রসারনম্॥
হত্তি বাতং তদয়বাৎ পিতং মাধুর্গাশেতাতঃ।
ককং রক্ষকবারবাৎ ফলং ধাত্র্যান্তিদোষ্টিলং।
মজ্জান্ত হরতি প্রান্তিং তৃষাং দাহং বৃষিং প্রমন্॥
বস্ত বস্তু কলক্তেহ বীর্ষাং ভবতি বাদৃশন্।
ভক্ত তক্তেব বীর্ষাণ মজ্জানম্পি নিদ্দিশেং॥

আমলকী।

ছামলক কল ত্রিলিক্ষ। আমলক, গাত্রী, তিষাকলা ও অমৃতা এই গুলি আমলকীর নাম। ইহা হরীতকীর নাম গুলাবিশিষ্ট বিশেষতঃ ইহা রক্তাপত্ত ও প্রেমেহনাকক, ব্যা এবং রসায়ন। আমলকী অমরস-বিশিষ্ট বিলিয়া বায়, মধুর-রস ও শৈত্যগুণাবিত বলিয়া পিত এবং রক্ষ ও ক্ষায় রস বলিয়া কফ নাশ করে। অতএব আমলকী ত্রিদোধনাশক। ইহার মছলা শ্রম, তৃষ্ণা, দাহ, বমি ও ভ্রম নিবারক। যে যে ফলের যে বে গুণ, তাহাদের মছলার ও সেই দেই গুণ আছে, জানিবে।

অথ শুৰ্গী।

শুন্তী বিধা চ বিখন্ধ ন'গরা বিধ্যন্তবন্ধন্ । উষপাং কট্ডন্তব্ধ শ্বাবেরং মহৌবধন্ ॥ শুন্তী রচ্চামবাভাগ পাচনী কটুকা লঘুঃ। বিকোকা মধুরা পাকে কফ্লাভবিবদ্ধস্থ ॥ বৃষ্যা অধ্যা বনিখাস-শ্বকাসকল্ময়ান্ । হস্তি নীপদশোধাশ-স্থানাহোদরমারভান্ ॥ আরেরত্বশৃত্রন্ধাৎ ভোরাংশং পরিশোষ্য বং। সংগৃত্যাতি মলং তং তু গ্রাহি শুঠাদরো বধা । বিবন্ধভেদিনী বা তু সা কথং গ্রাহিণী ভবেং। শক্তিবিবন্ধভেদে ভাদ্বতো ন মলপাতনে।

180

শুরী, বিশ্বা, বিশ্ব, নাগর, বিশ্বভেষজ, উষণ, কটুভদ্র, শুঙ্গবের, মহৌষণ, এইগুলি শুরীশব্দের পর্যায়। শুঁঠ—আমবাতনাশক, ক্রচিকারক, পাচক, কটু; লযু, প্লিগ্ধ, উষ্ণ, পাকে মধুর, কফ বায় ও বিবন্ধ (মলাদির রোধ) নাশক, বলকারক, স্বরবর্দ্ধক, বমি খাস শূল কাস হুদ্রোগ শ্লীপদ শোথ অর্শঃ আনাহ উদর্রোগ ও বাত বিনাশক। আগেয়-গুণবাহলা হেতু যে প্রবা আভাস্তরিক জলী-য়াংশ শোষণ করিয়া মলপদার্থকে সংগ্রহ করেঃ তাহাকে গ্রাহী কহে, যেমন ওঞ্জী প্রভৃতি। এখানে আশকা হইতে পারে যে, গুর্তী বিবন্ধন্ন অর্থাৎ মলরোধ বিনাশক হইয়া তাহা কি প্রকারে গ্রাহী হইতে পারে? তত্ত্তরে ইহা বক্তব্য যে, ভুগীর বিবন্ধ নাশে শক্তি আছে, কিজ মল-নিঃসারণে শক্তি নাই।

অথাৰ্দ্ৰকম।

আর্ত্রকং শৃক্ষনেরং ক্সাং টুকট্ডন্তং ভথাতিকা।
আর্দ্রিকা ভেনিনী গুলী তাকোন্দা দীপনা মতা।
কটুকা মধুরা পাকে কক্ষা বাতকলগহা।
বে গুণাং কথিতাঃ গুঠান্তিংপি সম্ভ্যান্তকেহথিলাঃ।
ভোজনাত্রে সদা পশ্বং লবণার্ত্রকজন্ম।
অবিসন্দীপনং রচাং জিহ্নাকঠবিশোধনম্।
কুঠপাঞ্বানরে কৃষ্ট্রেছ রক্তপিতে ব্রংগ ক্ষরে।
দাহে নিদাবশ্বনোন্ন প্রিত্নার্ত্রকম্।

আদা ।

আর্দ্রক, শৃঙ্গবের, কটুভদ্র ও কৈট্রিকা এইগুলি আদার নাম। ইহা ভেদক, গুরু, তীক্ষ, উষ্ণ, আমিকারক, কটু, বিপাকে মধুর, কৃষ্ণ, বায়ু ও কফনাশক। শুনীর যে সমস্ত গুণ উল্লিখিত হইয়াছে, তৎসমস্তই আর্দ্রক আছে। ভোজনের পূর্বের আদা ও লবণ

ভক্ষণ বিশেষ হিতকর। ইহাতে অগ্নির দীপ্তি, আহারে ফ্লচি, জিহ্বা ও কণ্ঠ বিশোধিত হয়। কুঠ, পাণ্ড, মৃত্রকুদ্ধু, রক্তপিত্ত, রণ, জ্বর ও দাহ রোগে এবং গ্রীম্ম ও শরৎকালে আর্দ্রক হিতকর নহে।

অথ পিপ্ললী।

পিন্ননী মাগধী কৃষ্ণ বৈদেহী চপলা কণা।
উপকুল্যোবণা শৌণ্ডী কোলা স্থাৎ তীক্ষতভূলা।
পিন্ননী দিপনী বৃষ্যা স্বাহ্নপাৰা মসায়নী।
অফ্লা কটুকা মিন্ধা বাতলেখহরা লঘুং।
পিন্ননী রেচনী ইন্তি স্বাসকানোদরন্ত্রান্
কুঠপ্রমেহগুল্মার্শঃ-সীহশুলামমার তান্।
আর্ ক্ষপ্রমার্শঃ-সীহশুলামমার তান্।
আর্ ক্ষপ্রমার্শঃ-সীহশুলামমার তান্।
পারপ্রশমনী সা তু শুলা পিত্রপ্রকাশিনী।
পিন্ননী মধুসংযুক্তা মেদঃকফ্লিনাশিনা।
স্বাসক্ষরহরা বৃষ্যা মেধার্ঘিবর্দ্ধিনী।
কার্শার্মান্দ্যে চ শস্ততে গুড়পিন্ননা।
কার্শার্মান্দ্যে চ শস্ততে গুড়পিন্ননা।
কার্লাগ্রাহিষাস-হৎপাঙ্কিমিরোগমুহ।
বিভগং পিন্ননীচুণাদ্ গুড়োহত্র ভিষ্কাং মতঃ।

পিপুল।

পিপ্লদী, মাগদী, ক্বফা, বৈদেহী, চপলা, কণা, উপকুল্যা, উষণা, শৌগুী, কোলা ও তীক্ষতভূলা এইগুলি পিপুলের নাম। পিপ্ললী—অগ্রিদীপ্তিকারক, বৃষা, মধুর-বিপাক, রসায়ন, অরুঞ্চ, কটু, স্লিগ্ধ, বাতশ্লেম্মনাশক, গণু, রেচক এবং ইহা খাদ, কাদ, উদর, জর, কুঠ, প্রমেহ, গুলা, অর্শা, প্লীহা, শূল ও আমবাত বিনাশক। আর্দ্র (কাচা) পিপ্ললী—কফকারক, স্লিগ্ধ, শিতল, মধুররস, গুরু ও পিন্তনাশক, কিন্তু শুক্ষ পিপ্ললী

পিপ্ললী মধুস্থ সেবন করিলে মেদোরোগ, কফ, খাদ, কাদ ও জর নিবারিত এবং বল, মেদা ও অগ্নি বর্দ্ধিত হয়। ইহা গুড়ের সহিত দেবনে জীণজর, অগ্নিমান্দা, কাদ, অজীর্ণ, অক্লচি, খাদ, হুলোগ, পাগুরোগ ও ক্রিমি নষ্ট হয়। এ স্থলে ভিষগ্রগণ ২ ভাগ গুড়

ও ১ ভাগ পিপ্ললীচূর্ণ একত মিশ্রিত করিয়া দেবন করিতে উপদেশ প্রদান করেন।

অথ মরিচম্ ।

मजितः: (वज्ञकः कुकः नृष्यः ध्याश्वन्यः । মরিচং কটকং তীক্ষ্ণ দাপনং কফবাতজিব। **উঞ্চ পিত্তকরং রুক্ষং খ্যেশুল্ক্রিমীন হরে**। তদার্ক্রং মধুরং পাকে নাত্যুষ্ণং কটুকং 'গুরু। কিঞ্চিত্তীকুত্তণং শ্লেম-প্রদেকি স্থাদপিত্রন্য ॥

अधिक ।

ম্রিট, বেল্লড়, ক্লক্ উর্গাও ব্যাপ্তন এইগুলি মশিচেৰ প্ৰধ্য। ইঠ কট, ভীজ, ভাবিক্ষ ইহ, প্রচ্∸ক্ষ্ড ুল্ল দ্বাবিক্। অধিনীপক, কফ ও বাধুনাশ্র উম্ভ, পির্ক্র ক্ষ, খাস, শুল ও ক্ষিমি বিনাশক। তাদ मिनि। भारक मधन-तम, धमछनः, कर्, धनः, কি পিং-ত্ৰীক গ্ৰ-বিশ্বি । এমান্সোবক। ইহণ পিবজনক ন্তে।

অথ পিপ্ললামূলম।

अश्विकः शिक्षलीमृत्रमृष्ठपः एतिका निवः। **मीशनः शिश्रकीमृतः क**हरूर शाहनः वस् ॥ রু**ক্ষং পিত্তকর: ডেদি ক**ফব'টে'দরাপ্রম। আনাহসীহত্তবাহুং ক্রিমিখ সক্ষয় প্রথ্য

भिश्रमध्य ।

গ্রাছক, উহণ ও চটকাশিবঃ এই গুলি পিপুলমূলের নাম। हेटा অগ্নিদীপক, কট, উন্ধ্য, পাচন, লঘু, কৃষ্ণ, পিত্তকর, ভেনক এবং ইছা কফ বাত উদর আনাহ গ্রীহা গুলা ক্রিমি, খাস 'ও কর বিনাশক।

অথ চতুর্বাযণ্ম ।

জ্যাৰণ সক্ৰামূল্য ক্থিতঃ চ্তুৱাংশম। বোষকোৰ ওপাং প্রোক্তা অধিক লৈচকুক্ষাণে 🛊

53479 T

স্থাতগণেক্ত ত্রিকটুর সহিত অগাৎ ভঠ পিপুল ও মরিচের গহিত পিপ্লীমূল মিন্সিত

করিলে তাহাকে চতুর্যণ কহে। ত্রিকট ও চতুরুষণ তুলা গুণকারক, ত্রিকট ্যুব অপেকা চতুরুষণের গুণ প্রবল।

অথ চব্যম্।

ভবেচ্চবাস্ত চৰিকা ক্থিতা সা তথেখা।। কণামুলগুণং চৰাং বিশেষ'দ গুদুজাপহমু॥

751

চৰা, চৰিক ও টেম্প এই ভিন্টি চৈএব নাম। ইং পিপ্নেলের জায় ওলাবলিই,

অধ গ্ৰহপিয়ন। 1

हातकार, कल का या वापना हार निवास । কলিবত এক কাড়ো ১৩ছেন, বাশস্ত্রত মা ৪ প্রজকুমণ কর্ম সংক্রেছেন্দ্র গঞ্চনন্দ্রিনী। ভূপাঃ নিরাস্থা শাসারে তা স্বাহ্য হয় জুমী সার

515 (21876) 1

প্রভিত্তের চারকাফলকে গ্রন্থ প্রদী कररन। काशवली, त्यानवधा, त्यावशी छ বশিব এইওলি গজ্পিঘ্লাব নাম। ইহা কট্রদ, বায় ও শ্রেমাশক, অগ্নিব্দ্ধক ও উষ্ণ-বার্য। ইহা অতীদার, বাস, কঠনোগ ও জিমি নিবারক।

অথ চিত্ৰকঃ।

চিত্রকোহম্ভনাম। চ পীলো ব্যাল**ন্তরোষ**ণাং। টিত্রক, কটুক; পাকে বহিন্তুৎ পাচনো লঘঃ ৷ রকোকে। গ্রহণীক্ট-লোঘার্শাক্তিমিকাসমুৎ। नामाधकता जाहा तानमं अविभिन्न ।।

15 5: 1

চিত্রক, পাঁঠ, ব্যালভি উদণ এবং আগ্ন-বাচক সমস্ত শব্দ, চিতাৰ প্ৰয়ায়। ইহা পাকে কট্, অগ্নিকারক, পাচক, লগু, রুক্ষ্ উষ্ণ ও গ্রাহী। চিত্রক—গ্রহণী, কুঠ, শোথ, অর্শঃ, ক্রিমি, কাদ, বাতলেমা, বাতার্শঃ, দেয় ও পিত্রপ্রশমক।

অথ পঞ্কোলগ্।

পিপ্রলীপিপ্রলীমূল-চবাচিত্রকনাগগৈ।
পঞ্চিত্র কোলমাত্রং হং পঞ্চকোলং তত্ত্বতে ।
পঞ্চিত্র হং ক্রচিত্র ১২।
তীল্পেং পাচনং শ্রেষ্ঠং দীপনং কফবাতমুং।
গুলাগ্রীভোদরানাই-শ্রুরায়ং পিত্রকাপনম।

পিপুল, পিপুলমুল, চে, চিত্রামূল ও শুঠ এই পাঁচটি করা মিলিত হঠনা কোল মর্থাং তোলক পরিমাণে ব্যবস্থাত হয় বলিয়া ইহাকে পঞ্চকোল বলে। ইহা বলে ও পাকে কটু, কুচিকারক, তাম্বি-উফ্যোগা, মতান্ত পাচক, মানিশিকারক, কফ, বাষু, গুলা, প্লীহা, উদ্ব, আনাহ ও শল প্রশাসক এবং পিত্রথকোপক।

व्यथ यष्ट्र मगम् ।

প্ৰকোলা সম্বিচং ষ্ট্ৰণমূল্ঞ্ডম। প্ৰকোলগুণং ৩২ তু ক্ষমুদাং বিধাপহুদ্ধ।

উ, প্রথিত পঞ্চলালের সহিত্যাকি মিলিও হইলে তাহাকে হড়ুগণ কহে। ইহার গুল পঞ্চকোলের তুলা। অনিকন্ত ইহারুক্স, উঞ্চ বীর্ষা ও বিষনাশক।

অথ যমান।।

যবানিকোগ্ৰপদা চ বন্ধন চাজনোদিকা। দৈবোক্তা দাপ্যকা দাপ্যা তথা স্থাদ্ যবসাহবয়া॥ যবানী পাচনী পঢ়া তীক্ষোকা কট্কা নঘুঃ। দাপনা চ তথা তিক্তা পিওলা গুড়াশুনদ্ধ। বাতপ্ৰোদ্যানহ-গুড়াগ্ৰাহকিমিপ্ৰগ্ৰ্॥

(योग्रान ।

যবানিকা, উগ্রগন্ধা, বন্ধানভা, অজমোদিকা, দীপ্যকা, দীপ্য ও যবদাহবয়া, এই করেকটি যমানীর নাম। ইহা পাচক, রুচিকর, তীক্ষ,

উষ্ণ, কটু, লঘু, অগ্নিদীপক, তিব্ধরস, পিত্ত-জনকংএবং ইহা শুক্র, শূল, বাতয়েয়া, উদর, আমহি, শুলা, প্লীহা ও ক্রিমি বিমাশক।

অপাজমোদা।

অজমোদা ধরাখা চ মাযুরী দীপাকং তথা। তথা ক্রক্ষকুণা প্রোক্তা কারেবী লোচমক্তকা। অজমোদা কটুগীলা দীপনা কফ্বাতমুৎ। ইফা বিদাহিনী হত্তা ব্যা বলক্ষী লঘুং। নেত্র'ময়জিমিস্ফ্রিক্ট্বিক্ট্রেডা হুছেৎ।

ব্নব্যানী।

সজমোলা, শুরাঝা, মায়ুরী, দীপ্যক,
ব্রহ্মকুণা, কারবী ও লোচমস্তকা, এইগুলি
সজমোদান (বনষমানীর) নাম। ইহা কটু,
তীক্ষ, দীপক, কফ ও বায়ু নাশক, উষ্ণ, বিদাহী,
স্বন্ধ্য, বলকর, লঘু এবং নেত্ররোগ, ক্রিমি,
বািন, হিস্কা ও বস্তিরোগ বিনাশক।

অথ পার্কাক-য্বানা।

भारतमोदयवानी जू यवानात्रमृत्ती खटेवः । विस्तर्याद भारती अध्या आहिला सामिनी खकः ॥ अवामानी यमानी ।

পারদীক-যমানী যমানীসদৃশ গুণকারক। বিশেষতঃ ইহা পাচক, ক্রচিকর, ধারক, মাদক ও গুরু।

অথ শুক্লজীরঃ কৃষ্ণজারঃ কালাজাজী চ।

জীবকো জবণোহজাঞী কণা প্রাদ্যার্থজীবকং।
কৃষ্ণজীবং স্থান্ধত তথৈবোলাবেশোধনঃ।
কালাজাঞী তু সুষ্বী কালিকা চোপকালিকা।
পূথীকা কাববা পূখা পূথং কৃষ্ণোপকৃষ্ণিকা।
উপকৃষ্ণী চ কৃষ্ণী চ বৃহজ্জীবক ইত্যপি।
জীবকজিতয়ং স্লন্ধং কটুবং দীপনং লঘু।
সংগ্রাহি পিততাং মেধাং গর্ভাশয়বিভাদিকং।
জবন্ধং পাচনং বল্যং বৃষ্যং ক্ষচাং ক্ষাপহন্।
চন্দুবাং প্রনাধান-ভল্মজ্জাতিসাবহৃৎ।

জীরা।

জীরক, জরণ, অজাজী, কণা ও দীর্ঘজীরক
এইগুলি শুরুজীরাব নাম। রুঞ্চজীর, স্থান্ধ ও
উদ্গারণোধন এই গুলি রুঞ্চজীরার নামান্তর।
কালাজাজী, স্ববনী, কালিকা, উপকৃষ্ণিকা,
পূথ্বীকা, কারবী, পূথ্বী, পূথ্ব, রুঞ্চা, উপকৃষ্ণিকা,
উপকৃষ্ণী, কৃষ্ণী ও বৃহজ্জীরক এইগুলি
বৃহজ্জীরার পর্যাায়। এই তিন প্রকার জীরাই—
কৃষ্ণা, কৃষ্ণী ও গুলুজারক এইগুলি
বৃহজ্জীরার পর্যাায়। এই তিন প্রকার জীরাই—
কৃষ্ণা, কৃষ্টা, উষ্ণ, দীপন, লঘু, সংগ্রাহক, পিত্তকর, মেধাজনক, গভাশয়বিশোধক, জরনাশক,
পাচক, বলকব, বৃষ্য, কৃচিকর, কফহর, চৃষ্ণ্যা
এবং ইহা বায়ুজ্ঞা উদরাগ্যান, গুল্ম, বমি ও
অতিসারহারক।

অথ ধান্তাকম।

ধান্তাকং ধানকং ধান্তাং খানা ধানেম্বকং তথা।
কুনটা ধেনুকা ছত্ত্বা কুস্তুসুক্ত বিতুনকন্ ।
ধান্তাকং ত্বাং স্নিধ্মসূত্বাং মূতাকং অতু।
তিক্তং কটুক্তবীয়াঞ্চ দীপনং পাচনং স্মৃত্যু।
অন্তম্মং রোচকং প্রাহি স্বাহ্ন পাকে তিলোমসূত্র।
ভূকাদাহবনিধাস-কাসকার্নাক্রিমিপ্রগ্ব।
আর্জিন্ত তদ্ভবং স্বাহ্ন বিশেষাব্ পিত্তনাশনন্য।

ध्या ।

ধান্তাক, ধানক, ধান্ত, ধানা, ধানেমক, কুনটা, ধেমুকা, ছত্রা, কুন্তবুদ্ধ ও বিভূমক এইগুলি ধনিয়ার পর্য্যায়। ইহা ক্যায়রস, স্লিয়, অর্য্য, মৃত্রজনক, লঘু, তিক্ত, কটু, উষ্ণবীর্য্য, অয়িদীপ্তিকারক, পাচক, জরনাশক, রুচিকর, ধারক, পাকে মধুব, ত্রিদোষনাশক এবং ভূকা দাহ বমি খাস কাস কার্ল্য ও জিমি নিবারক। কাঁচা ধনেও উক্তপ্রকার অণবিশিষ্ট, বিশেষতঃ ইহা খাহ এবং পিত্তনাশক।

অথ শতপুষ্পা মিশ্রেয়া চ।

শতপূপা শতাহা চ মধ্রা কারবী মিসি:।
অতিচহতা সিতচ্ছতা সংহিতচ্ছত্রিকাপি চ ॥
ছত্রা শালেয়ণালীনে মিজেরা মধ্রা মিসি:।
শতপূপা লঘুন্তীকা পিডকুদ দীপনী কটু:॥
উচ্চা অরানিলয়েম-ত্রণশূলাকিরোগহান বোনিশ্লকুৎ॥
মিজেরা তদ্ভণা প্রোকা বিশেষাদ বোনিশ্লকুৎ॥
অধিমান্যহেরী হত্তা বছবিট্জিমিশ্লহান।
ক্ষামান্যহেরী কাসাব্দবিভ্রমিশ্লহান। হরেৎ।

গুলুফা ও মৌরী।

শতপূপা, শতাহ্বা, মধুরা, কারবী, মিসি, অতিচ্ছত্রা, সিতচ্ছত্রা ও সংহিতচ্ছত্রিকা এই গুল গুল্ফার নাম। ছত্রা, শালেয়, শালীন, মিশ্রেয়া, মধুরা ও মিসি এইগুলি মৌরীর পর্যায় শব্দ। গুল্ফা—লঘু, তীক্ষবীর্যা, পিত্তক্ব, অফ্রিনীপক, কটু ও উষ্ণ। ইহা জ্বর, বায়ু, মেয়, ত্রগ, শূল ও চক্ষ্রোগ নাশক। মৌরীর গুণও গুল্ফার স্থায় জানিবে। বিশেষতঃ ইহা মোনিশূলনিবারক, অগ্নিমান্দ্রনাশক, হৃত্ত, মলবহুতা, ক্রিমি ও শূলনাশক, কৃক্ষ্ক, উষ্ণবীর্যা, পাচক, কাস বিমি শ্লেমা ও বায়ুনাশক।

অথ মেথিকা বনমেথিকা চ।

মেৰিকা মেৰিনী মেৰী দীপনী বছপ্তিকা। বেধনী গন্ধবীজা চ জ্যোভিৰ্যন্ধলা তৰা । বন্ধনী চন্দ্ৰিকা মন্থা মিত্ৰপূশা চ কৈরবী। কুকিকা বহুপণী চ পীতবীলা মূনীক্সকা । মেৰিকা বাতশমনী প্লেমন্ত্ৰী অৱনাশিনী। কুচিপ্ৰদা দীপনা চ বক্তপিত্তপ্ৰকোপিনী। ততঃ অৱস্কুণা বন্ধা বাজিনাং বা তু পুজিতা।

মেথিকা, মেথিনী, মেথী, দীপনী, বছ-পত্রিকা, বেধনী, গন্ধবীজা, জ্যোতিঃ, গন্ধফলা, বন্ধবী, চন্দ্রিকা, মন্থা, মিশ্রপূষ্ণা, কৈরবী, কুঞ্চিকা, বহুপর্ণা, পীতবীজা ও মুনীক্রকা এই ভালি মেথীর নাম। ইহা বায়ু শ্লেষা ও জ্বর

মেথী ও বনমেথী।

নাশক, রুচিপ্রদ, অগ্নির দীপক এবং রক্ত ও পিতের প্রকোপক। বনমেধী ইহা অপেকা অন্ধ্রগুবিশিষ্ট। ইহা বাজীদিগের পক্ষে হিতকর।

অথ চক্রশূরম্।

চল্রিকা চর্মহন্ত্রী চ পশুমেহনকারিকা।
নিদিনী কারবী জ্ঞা বাসপুষ্পা হ্রবাসরা।
চল্রুশুরং হিতং হিকা-বাত্যেখাতিসারিণান।
অসপ্রতিগদদেধি বসপুষ্টিবিবর্জনম্।

হালিম।

চক্সিকা, চর্মাহন্ত্রী, পশুমেহনকারিকা, নন্দিনী, কারবী, ভদা, বাসপুষ্পা ও সুবাদবা এইগুলি চক্রশূরের (হালিমেন) নাম। ইঙ্গা হিক্কা, বায়ু, শ্লেষা ও অতিদাররোগে হিতক্ব, বল ওপ্রষ্টি বিবর্দ্ধক এবং বাতবক্ত-নাশক।

অথ হিন্ধু।

সহপ্রবেধি জতুকং ন'জ্ঞীকং হিন্ধু রামঠন্। হিন্ধুকং পাচনং কচ্যং তীক্ষং না অলাসভং । শূলক্তমোদন'নাং-জিমিয়া পিত্তবর্জনন্॥

E 1

সহস্রবেদি, জ ঠুক, বাহলীক, হিঙ্গু ও বাহ এই কয়েকটি হিঙ্গু ন দাম। হিং-—উঞ্চ, পাচ-া, রুচিকারক ও ভাঞ্জ; ইহা বায়ু শ্লেষা শূল গুলা উদর আনাহ ও ক্রিমনাশক এবং পিছবদ্ধক।

অথ বচ।।

ৰচোগপৰা ষড় গ্ৰন্থা গোলোমী শতপৰ্বিকা।
কুক্সপত্ৰী চ মঙ্গলা জটিলোগ্ৰা চ লোমশা ।
ৰচোগ্ৰপৰা কটুকা ভিজেন্ধা বান্ধিবহিন্ত ।
বিবন্ধাধানশূলয়ী শকুন্মত্ৰবিশোধিনী।
অপসায়ককোন্ধাদ-ভূতজন্ত্ৰনিলান্ হয়েৎ॥

45 1

বচা, উগ্রগন্ধা, ষড্গ্রন্থা, গোলোমী, শত প্রিকা, কুদ্রপত্রী, মঙ্গল্যা, জটিলা, উগ্রা ও

লোমশা এই গুলি বচেব প্যায় শক। বচ— উগ্রগদ্ধবিশিষ্ট, কটু, তিক্ত, উষ্ণ, বমন ও অগ্নিকারক। ইহা দেবনে বিবন্ধ, উদরাগান, শূল, অপসার, কফ, উন্মাদ, ভূতদোষ, ব্রিফা ও বায় বিনষ্ট এবং মল-মূত্র শৌধিত হয়।

অথ পারসীকবচা।

পারদীকনচা শুরা প্রোক্তা হৈমবতীতি সা। হৈমনত্যাদিতা তথ্যতাহ হস্তি বিশেষতঃ॥

খুরাসানী বচ।

খুবাদানী বচকে পাবদীক বচ ও হৈমবতী বলে। ইহা শুকুবর্ণ ও উক্ত বচের ক্যায় গুল-বিশিষ্ট, বিশেষতঃ ইহা বায়ুনাশক।

অথ মহাভুরা বচ। ।

যসা। লোকে কুলিজন ইতি নামান্তরম্,—

হপকাপুএগন্ধা চ বিশেষাৎ কফক সভুৎ।

হপ্ৰরম্ভকরী কটা ৬২ক ইম্থগোধিনা॥
অপরা হুগলা খুলগড়ি; যদা বোকে নহাভরতি নাম,—

হুনগড়িং হুগলান্ত। গুলা ভানা গুলা ॥

মহাত্রী বচকে কোকে কুল্ঞান বলে,
ইহাব অপব নাম হলেনা। হলেনা—উগ্রামবিশিষ্ট, বিশেষতঃ কফকাসনাশক, হার্ককালক, ক্চিক্ব এবং হান্য কট ও মুখ শোষক।
ছলগ্রেভি-বিশিষ্ট হল্লা বচকে মহাত্রী বলে।
ইহা হলেনা অপেকা হীনভ্পবিশিষ্ট।

অথ দ্বীপান্তরবচ।।

ষীপাস্তরবচা কিঞ্চিত্তিক্তোঞা বহিলীপ্রিঞ্ছ । বিবন্ধামানপুনায়ী শক্ষা, তাবিশোধিনী । বাতবাধিনপন্মারমুম্মাদং তমুবেদনামূ। বাপোহতি বিশেষে। ফিরক্ষাময়নাশিনী ॥

তে।পচিনী।

দ্বীপান্তনে উৎপন্ন হয় বলিয়া তোপচিনীকে দ্বীপান্তন বচ কহে। ইহা ঈষং তিক্ত, উষ্ণ-বীৰ্ষা, অগ্নিদীপ্ৰিকানক ; বিবন্ধ উদনাগ্ৰান ও শুল নাশক, মল ও মুত্র বিশোপক, বাতব্যাধি অপশার উন্মান ও গাত্রবেদনা নিবারক এবং বিশেষতঃ ফিরক্সবোগ নাশক।

অথ হবুষাদ্বম্।

ভরগে প্রথমং ফলং মংস্কাস্পং বিস্তাপন্য, বিভীন-স্থাবালসদৃশং মংস্কাপন্য। তবোনামানি ভাশাক— স্বুমা বপুরা বিশা প্রাথাফলা মতা। সংস্কাপনি স্থানি বিশ্বা ব্যাক্তনাশিনী। স্বুমা দীপনী ভিজা মৃদুকা তুবরা ভ্রমঃ। পিজোসরসমীলাশো-গ্রহণীগুলাশ্রহং। প্রাণ্যেচদশুলা পোজা ক্লোভ্রমণ্য ক্রোরপি।

इत्या प्रदेशकातः जनाया अथम कल মংস্তের আরু ও আমগকবিশিষ্ট, বিভীয় কল অশ্বধ্দলসদুৰ 😗 মংস্তাগনাবিত। প্রথম প্রকারের নান হবুষা, বপুষা ও বিক্রা এবং ঘিতীয় প্রকারের নাম অশ্বথফলা, মংস্ত-शका, शोहरुखी, दिवशी '9 श्वां अकना निनी। ब्रुषा—चाधनीशिकांत्रक. टिक-क्षांत्रत्रन, गृह. ें €। উষ্ণ, 'গুরু এবং পিত্তোদনবোগ, বাভাৰ্ণ:, গ্ৰহণা, 'গুলা ও 취약 하는 사기 শেষোক্ত হবুমানও এই গুণ, কেবল উভয়েন আকাৰ বিভিন্ন।

অথ বিডঙ্গঃ

পুংসি ক্লাবে বিড়কঃ স্থাৎ ক্রিমিগ্রে জন্তুমাননঃ : তপুলক তথা বেলমমোথা চিত্রতপুলা । বিড়কং কটু তীক্ষোকং ক্লকং ঘদিকরং বঘু। শুলাঝানোদরলেম-ক্রিমিবাতবিবকাত্ব ।

বিডঙ্গ ৷

বিজ্ঞানক পুংলিক ও ক্লবিলিক। ইছাব অপর নাম ক্রিমিন্ন, জন্তনাশন, তঙুল, বেল্ল, অমোঘ: ও চিত্রতভূলা। বিজ্ঞা—করু, তীক্ষ, উক্ষবীর্যা, ক্রম, অগ্রিকারক ও লঘু এবং ইছা শুলা, উদ্যাধান উদ্যাধ্য, ক্লেমা, ক্লেমা, ক্রিমা, বিভ্রা নাশক।

অথ তুরুরুফলম্।

ভূৰুল: দৌরভঃ সৌরে! বনজঃ সান্ধুজোংবজঃ।
ভূৰুল প্রবিভংগুতিক্তাং কটু পাকেহিপি ভৎ কটু ॥
কক্ষেণ্ডাং দীপনং তীক্তং কচাং লঘু বিদাহি চ।
বাত্রেথাক্ষিকণে ঠি-শিরোকগ্রেকতাক্রিমীন্।
কুঠবুলাকভিবাস-মীহক্ষক্রাণি নাশ্রেৎ।

. 76

ভূষ্ক, সারভ, সোন, বনভ, সাহছ ও অন্ধক এই করেকটি ভূষ্কর পর্যার শব্দ। ইহা ভিক্ত-কটু-রস, পাকে কটু, কৃক, উক্থ-বীয়া, দীপন, ভৌক্ষ, কচিকর, লঘু ও বিদাহী এবং ইহা বাভরেন্ডা, চকু: কর্ণ ওঠা শিরো-রোগ, শবীবের শুকুত্ব, জিমি, কুঠ, শুল, অক্চি, শাস, শ্লীহা ও মৃত্যক্তভ্র নিবারক।

অথ বংশরোচন।।

ভাষংশরে চনা বাংশী তুগাকীরী তুগা গুভা।
তক্কীরী বংশজা গুলা বংশকীরী চ বৈশবী।
বংশজা গুংহণী ব্যা বলা বংশী চ শীতলা।
তুগার স্কর্বাস-ক্ষণিস্তাপ্রকামলাঃ।
বংবং বুঠং বেশং পাঞ্চ ক্যায়। বাত্রক্তেজিং॥

বংশলোচন।

বংশরোচনা, বাংশা, তুগাক্ষীরী, তুগা, শুভা, থক্কারী, বংশজা, শুভা, বংশকারী ও বেশবী এই সকল বংশলোচনের নাম। ইহা বংহণ, শুক্রবর্দ্ধক, বলকারক, স্বাহ্ন, শাতল ও কষার এবং ইহা তৃষ্ণা, কাস, জব, শ্বাস, ক্ষম, রক্তাপিন্ত, কামলা, কুঠ, ত্রণ, পাঞ্চ, ও বাভক মুক্রক্ষম্ভ প্রশমক।

অথ সমুদ্রফেন:।

সমুদ্রক্ষেন: কেন-৯ হি তীরোহন্ধিকফন্তথা। সমুদ্রকেন-চকুষ্যো লেখন: শীতল: সর:। ক্রামো বিহপিত্তঃ: কর্ণকৃষ্ণক্রয়েঃ ॥

সমূদ্রকেন. কেন, হিণ্ডীর ও অদ্ধিকক এই গুলি সমূদ্রকেনের নাম। ইছা চক্ষুর হিতকারক, লেখন, শাতল, সারক, ক্যার রস ও লঘু এবং বিষদোষ, পিন্ত, কর্ণরোগ ও কল-হারক।

অথাফীবর্গঃ।

জীবকৰ্তকো নেদে কাকোলো ধন্ধিংকি। অষ্টবৰ্গোইউভিৰ্ত্তবাঃ কথিতক্তরকাদিতিঃ॥ অষ্টবৰ্গো হিমঃ স্বাহুত্বংবণ শুকুলো শুকুঃ। ভগ্নদন্ধানকুৎ কাম-বলাসবনবৰ্দ্ধনঃ। বাশ্চপিত্তাপ্ৰতৃত্বদাহ-জনমেহক্ষয়প্ৰণুৎ॥

জীবক, ধ্বস্তক, মেদা, মহামেদা, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, ক্ষমি 'ও বৃদ্ধি এই আটিটি দ্রব্যের সংযোগকে চরকাদি নুনিগণ অইবর্গ বিলিয়া থাকেন। অইবর্গ— শতল মধুর, পৃষ্টিকারক, শুক্রজনক, 'গুরু, ভ্যাসন্ধানকাসক, কাম্বদ্ধিক, কফ্রনক, বলকারক এবং ইহ' বাত, রক্তপিত্ত, পিপাস, দাহ, জন, মেহ ও ক্ষয় নাশক।

তত্ৰ জীবকৰ্ষভকে।।

জীবকৰভকে। তেনো হিমাজিলিগবেন্ডনে। ।
রসোনকন্দবং কন্দো। নিসারে হজ্পবেনে। ।
জীবকঃ কুচ্চকাকার ধ্যভা বৃষণুক্ষবং।
জীবকা মধুরঃ শুক্ষো হুদ্বাস্ক, কুচ্চলীবক, ॥
ক্ষমভা ব্যভো ধানো বিষাণীশ্রাস্ক হতাপি।
জীবক্ষতকী বল্যো শাতে শুকুকম্পন্তা।
মধুরে পিত্তদাহাত্র-কাশাবাত্সম্মাপ্রে। ॥

জীবক ও ধনভক।

জাবক ও খ্যভক হিমালয়-শেখরে উছুত হয়। ইহাদের কল রুগোনের স্থায়, ইহারা সারহান ও ক্লপ্রাবাশন্ত। জাবকের আকার রুষশৃপের কর্চক সদৃশ। খ্যভকের আকার রুষশৃপের স্থায়। জীবক, মধুর, শৃন্ধ, হুস্বান্ধ ও ক্রেটিশার্থক এই গুলি।জীবকের।প্র্যায় এবং খ্যভ, ব্যভ,।শীর, বিষাণী ও হলাক্ষ.।এইগুলি।খ্যভকের।নামান্তর। এই টুই দ্বা— বলকারক, শতবা্ধা, ক্রেক ও কফ্বর্দ্ধক, মধুররদ এবং ইহা পিত্ত, দাহ, রক্তর্ন্তি, কুশ্ভা, বাষু ও ক্ষরনোগপ্রশমক।

অথ মেদামহামেদে।

মহামেদাবিধা কন্দো মোরস্থাদে। প্রজারতে।
মহামেদাবনৌ নেদা স্থাদিত্যুক্তং মুনাখরৈঃ॥
শুরার্জকিনিভঃ কন্দো লঙ্জোঙাঃ ফ্পাঙ্কুরঃ।
মহামেদাভিধো জ্ঞেয়ো মেদালাভুমিব এবেং।
বঃ দ মেদেভি বিজ্ঞেয়ো জিজ্ঞাসাঙ্ভপরৈজনৈঃ॥
স্বন্ধপানী মণিছিলো মেদা মেদোভবাধবরা।
মহামেদা বফ্ছিছো জিনতী দেবতামণিঃ॥
মেদাধুগং শুরু স্বাং শুভুককাবহুম্।
বংহণং শাভনং পিত্ত-রক্তবাত্জারগুণুং॥

্মেদা 'ও মহামেদা।

মহামেদা নামক কলা মোরজা প্রভৃতি স্থানে জন্মে। প্রধান প্রধান দ্রানিগণ কহেন বে, মহামেদাকেতে মেদা জনিয়া থাকে। এই কলা ও কার আছুর বর্গ। মেদা ওক্রবর্গ কলাবিশেষ। ইহাকে নথ ঘাবা ছেদন কলিলে মেদোবাতুর স্থায় আঠা নির্গত হয়। হল্পেনা, মাণচ্ছিলা, মেদাভানা ও অধ্বরা এইগুলি মেদার এবং মহামেদা, বহাছেলা, জিল্ডা ও দেবতামাণ এইগুলি মহামেদা, বহাছেলা, নামান্তব। মেদা ও মহামেদা—গুরু, বাচ, গুকুজনক, স্তন্ত্র্যুবর্দ্ধিক, কক্ষকারক, পৃষ্টিকার, শাতলা, রক্জপিত্রনাশক ও বাত্রাক্রিনাশক।

व्यथ कारकालाकां तकारकारला ।

জায়তে ক্ষীরকাকোলী মহানেদোভবছাল।
বাদ্র স্থাৎ ক্ষীরকাকোলী কাকোলী তাব কায়তে॥
পাসরীসদৃশ্য কলাং সক্ষারং প্রিয়গন্ধনান্।
সা প্রোক্তা ক্ষারকাকোলা কাকোলী নিসমূচ্যতে।
ব্যা স্থাৎ ক্ষীরকাকোলা কাকোলাগুলি তথা ভবেৎ।
এয়া কিন্দিন্ ভবেৎ কুফা ভেদোহয়মুভয়োরলি॥
কাকোলী বায়সোলা চ ধীরা কায়ছিকা তথা।
সা তারা ক্ষারকাকোলী বয়ুত্র ক্ষারবলিক।।
কথিতা ক্ষারিকা ধারা ক্ষাবত্রা প্রাথনী॥
কাকোলীযুগনং শীতং শুক্রবং দুবং তবং।
বৃংহণং বাতলাহাত্র-পিত্রশাব্দ্রবাপহ্যু॥

কাকোলী ও ক্ষীরকাকোলী।

যে স্থলে মহামেদা জন্মে, কাকোলী ক্ষীর-কাকোলীও সেই স্থলে জন্মিরা থাকে। ক্ষীর-কাকোলী গত্মলী কলের স্থার, ছেদ করিলে আঠা নির্গত হয় এবং ইহা একপ্রকার মনোহর গন্ধবিশিষ্ট। কাকোলী, ক্ষীরকাকোলীর লক্ষণমুক্ত, কিন্তু ইহা কিছু ক্ষুবর্গ এই মাত্র উভয়ের প্রভেদ। কাকোলী, বায়সোলী, ধীরাও কারস্থিকা এইগুলি কাকোলীর এবং শুক্লা, ক্ষীরকাকোলী, বয়ঃস্থা, ক্ষীরবাল্লকা, ক্ষীরণী, ধারা, ক্ষীরশুক্লা ও পার্মস্থলী এইগুলি ক্ষীরকাকোলীর নাম। এই উভয় জবা—শাত্রীধ্য, শুক্রকনক, মধুর, শুক্র ও পৃষ্টিকারক এবং ইহা বাত, দাহ, রক্তপিত্ত, শোষ ও জর নাশক।

অথর্কির্কা |

শব্দির বিশ্ব কলে। বি ভবতঃ বে শেষামনে ।
বেতলামান্তিত কলে। লতাজাত, সরস্কুর,
সা এব স্ববিদ্ধান উদ্ধান হৈ লোক বি ।
তুলামান্ত্রমান স্ববিদ্ধান উদ্ধান চা লা
ইন্ধিস্ত দক্ষিণ বিজ্ঞান লোক বি ।
স্বানি স্বানি বিদ্ধান ক্রিনি লা
ক্রিনি বিলালী বিজ্ঞান চলতা জন্মান্ত্রমান ক্রিনি বিলোক্রিনি ভালনা চলতা জন্মান্ত্রমান ক্রিনি লা
বিজ্ঞান করা মান্ত্রমান চলতা ক্রিনি ভালনা লা
বিল্লিক প্রদান ক্রিনি লা
বিল্লিক প্রদান করা
বিল্লিক করা
বিল্লিক করা
বিল্লিক বিল্লিক

419 5 m

শদি ও গৃদ্ধি কোশবানক প্রদেশে উৎপদ্ধ হয়। ইং প্রেডলোমবৃক্ত, ছিদ্রবিশিষ্ট, বাতাজ্ঞাত কল্পবিশেষ। ঋদি ও গুদির প্রজেল এই যে, ঋদি তুলার প্রান্থির আয়ে আর্কাভারিশিপ্ত ও ইংকা কল বামাবত, কিন্তু গৃদ্ধি ফল দমিলাবর্ত্ত। যোগ্য, সিনি ও ক্র্মী এই তিনটি ঋদি ও বৃদ্ধির প্রয়ায়। ঋদি—বলকারক, ত্রিদোষ—মাশক, শুক্রজনক, মধুলারস, গুরু, আয়ুক্দিক, ক্রেষ্য্রপ্রদ্ধ এবং মৃষ্টা ও রক্তপিত বিনাশক।

রুদ্ধি—গর্ভপ্রাদ, শাতবীর্যা, বংহণ, মধুর ও শুক্রকারক এবং ইহা রক্তপিত ক্ষত কাস ও ক্ষয় প্রশমক। এই অপ্টবর্গ রাজগণেরও অভ্যান্ত ছম্প্রাপ্যা, তজ্জ্ঞ চিকিৎসকগণ প্রায়ই ইহার প্রতিনিধি দ্রবা গ্রহণ করিয়া থাকেন।

অথ যষ্টিমধু।

বন্তীমধূ তথা ষষ্টিম ধূকং ক্লীতকং তথা।
অক্সৎ ক্লীতনকং তৎ তু ভবেৎ ভোমে মধূলিকা॥
বন্তী হিমা গুৰুঃ স্বাধা চক্ষ্যা নলবৰ্ণকুৎ।
ক্লিমা গুৰুলা কেন্তা স্বৰ্যা পিন্তানিলাইজিৎ।
এণশোথবিষছাৰ্দি-ভূষাগানিক্যাগহা॥

যষ্ট্রীমধু, যষ্টি, মধুক ও ক্লীতক এইগুলি যষ্ট্রীমধুর নামান্তর। জলজ ষষ্ট্রীমধুর নাম ক্লীতনকও মধুলিকা। যষ্ট্রীমধু—শীতল, গুরু, মধুন-রস, চক্ষ্ব হিতকর, বলকারক, বর্ণপ্রসাদক, অম্প্রেম, গুরুকারক, কেগু, স্বরবদ্ধক এবং ইছা পিও, বার ও রক্তর্ম্ভ নিবারক, এণশোথ, বিষদোয় ব্যি, ভ্রা, মানি ও ক্ষা প্রশাসক।

অথ কাম্পিলঃ।

কাম্পি**নঃ কর্কশশ্চন্দ্রো রক্তাঙ্গো**রে চনে।হণি চ । ক।ম্পিনঃ **কন্দপিন্তান-ক্রিমিগুলো**দরএণ ন্ । ইস্তি রেচা ক**টুফশ্চ মেহানাহবিবাখ**নুহ ॥

ক্যলাপ্ত ড়ি।

ক। স্থিন, কর্কশ, চন্দ্র, রস্তাপ্স ও রোচন
এই গুলি কুনলাপ্ত ড়ির পর্য্যায়। কমলাপ্ত ড়িল
এরচক, কটু ও উষণ এবং ইহা কফ পিত্ত
রক্তহিষ্টি জিমি গুলা উদর এণ মেহ আনাহ
বিষ ও অশারী নাশক।

অথারগ্বধঃ।

ধারথধা রাজ্যকঃ সম্পাক্ষত্রসূতঃ। জারেবতো ব্যাধিঘাতঃ কৃত্যালঃ স্থর্গকঃ। কণিকারো দীর্ঘকলঃ স্বর্ণাস্থ্য স্বর্ণভূষণঃ। জারথধা গুরুঃ স্বান্থ্য দীতলং সংসনোজ্যঃ॥ ব্দরক্রোগপিতাত্র-বাতোদাবর্ত্তপুলরুং ॥ তৎকলং ত্রংসনং ক্রচাং কুঠপিত্তককাপহস্ । ব্যার ডু সভতং পধ্যং কোঠগুজিকরং পরস্ ॥

সোনাল।

আরথধ, রাজবৃক্ষ, সম্পাক, চতুরজুল, আরেবত, ব্যাধিবাত, ক্রতমাল, স্বর্ণক, কর্ণিকাব, দীর্ঘকল, স্বর্ণাক্ষ ও স্বর্ণভূষণ এই-শুল সোন্দালের পর্যায় শব্দ। সোন্দাল—শুক্র, মধুর, শীতল ও স্থাবিরেচক এবং ইহা জ্বর, হুডোগা, রক্তপিত্ব, বায়ু, উদাব্ভ ও শূলনাশক। সোন্দাল কল—বিরেচক, ক্রচিকর এবং কুন্ত পিত্ত ও কফ নাশক। উহা জ্বরে বিশেষ হিতকর ও কোঠশুদ্ধিকারক।

অথ কটুরোহিণা।

কটা, তু কটুকা তিক্তা কৃষ্ণভেদা কটুন্তরা।
অশোকা মংশুশকলা চক্রাকা শক্রাদনী।
মংশুপিন্তা কাঙ্কংহা রোহিনী কটুরোহিনা।
কটা, তু কটুকা পাকে তিক্তা কক্ষা হিমা লঘুঃ।
ভেদিনী দীপনী হুল্লা কক্ষ্পিত্ত্বরাপহা।
প্রমেহখাসকাসাত্র-দা হুকুষ্টক্রিমিগ্রণ্ড।

কট্কী।

কট্নী, কচুকা, ভিক্তা, ক্বন্ধভেদা, কটুঙ্করা, অশোকা, মংশুশকলা, চক্রাঙ্গী, শকুলাদনী, মংশুপান্তা, কাগুকুহা, রোহণী ও কটুরোহিণী, এইগুলি কটুকীর পর্য্যায়। ইহা কটুবিপাক, ভিক্তা, ক্লম্ম, শীত্রীধ্যা, লঘু, ভেদক, অন্নিশিন ও হল্প। কট্কী—কফ, পিত্ত, জ্বর, প্রমেহ, শ্বাস, কাস, রক্তদোষ, দাহ, কুঠ ও ক্রিমি-রোগ নই করে।

অথ কিরাততিক্তঃ।

কিরাততিক্ত: কৈরাতঃ কটুতিক্ত: কিরাতকঃ। কাণ্ডতিক্তোংনার্থ্যতিক্তো ভূনিবো রামসেনকঃ॥ কিরাতকোংক্তো নৈপাল: সোংগ্র্তিক্তো অরান্তকঃ। কিরাতঃ সারকো রুক্ত: শীতলন্তিক্তকো লঘুঃ॥ সন্নিপাতত্ত্বস্থাস-ককপিন্তাপ্ৰদাহমুৎ। কাসশোপত্যাকৃষ্ঠ-জন্ত্ৰণক্ৰিমিপ্ৰণুৎ।

চিরতা।

কিরাত্তিজ, কৈরাত, কটুতিজ, কিরাতিক, কাণ্ডতিজ, আনার্য্যতিজ, ভূনিম্ব ও রামসেনক এইগুলি চিরতার পর্য্যায়। নেপাল-দেশে অপর একপ্রকার চিরতা জন্মে, তাহাকে অর্কতিজ ও জনাস্তক বলে। চিরতা—সারক, কক্ষ, শাতল, তিক্তরস ও লঘু। ইহা সেবনে সমিপাতজর, খাস, কফ, পিন্ত, রক্তর্ম্ভি, দাহ, কাস, শোগ, পিপাসা, জর, কুন্ত, রণ ও ক্রিমিন্ত হয়।

অথ যবতিক্তা।

বৰ্ণভিক্তা মহাতিকা খেতবুছা তু শব্দিনী। হক্ষপুপা তিক্তলা বাবা তিকা খণখিনী। তিকামা লগনী কচা৷ ৱেচনী ৮ বিবাস্ত্ৰত। ক্ৰিমিকুউজ্জাৱতী ।

কালমেন।

ষবভিজ্ঞা, মহাভিজ্ঞা, শ্বেভবুহ্না, শব্দ্বানী, স্ক্রপুষ্পী, ভিজ্ঞফলা, যাবী, ভিজ্ঞা ও যশব্বিনী এইগুল কালমেবের নাম। কালমেব— ভিজ্ঞান্তর প্রমদীপক, ক্রচিকর ও রেচক। ইহা বিষদোষ, রক্তফুষ্টি, ক্রিমি, কুঠ ও জর নাশ করে। বালকদিগেন পক্ষে কালমেব স্ক্রলপ্রদ।

অথেব্রুযবঃ।

উক্তং কুটজনীজন্ত বৰ্ণান্দ্ৰবৰং তথা। কলিক্লকাপি কালিক্লং তথা ভক্তৰবা অপি ॥ কচিদিন্দ্ৰক্ত নামৈব ভবেৎ তদভিধানকম্ ॥ ইন্দ্ৰবং ত্ৰিদোৰদ্বং সংগ্ৰাহি কটু শীতলম্। অৱাতীসাৱনকাশ:-ক্ৰিমিবীসৰ্পকূল্পং। দীপনং গুদকীলাশ্ৰ-বাতাশ্ৰন্ধেশ্বলুজিং॥

কুটজবীজ, যব, ইদ্রাযব, কলিঙ্গ, কালিঙ্গ ও ভদ্রযব এইগুলি কুড়্(চ-বীঞ্জের নামান্তর। কথন কথন ইক্রবাচক সমস্ত শব্দই ইহার পর্য্যায় বলিয়া গৃহীত হয়। ইক্রযব—ত্রিদোধ-নাশক, সংপ্রাহী, কটু, শীতল ও অগ্নিদীপক এবং ইহা জ্বর, অতিসার, রক্তার্শঃ, ক্রিমি, বীসর্প, কুন্ত, অর্শঃ, রক্তদোষ, বাতরক্ত, কফ ও শ্রনাশক।

অথ মদনঃ।

মদনশ্ছর্দন: পিণ্ডো নটঃ পিণ্ডীতক্তথা।
কর্ন্টনা মর্লক: শল্যকো বিষপুষ্পক: ।
মদনো মধুরন্তিকো বীর্ব্যোকো লেগনো লঘু:।
বান্তিকৃষ্টিদ্রধিংর: প্রতিশায়রণান্তক:।
কক্ষ: কুঠকদানাহ-শোণগুল্যবাগধহ: ;

সয়না।

মদন, ছর্দন, পিগু, নট, পিগুনিক, কর-হাট, মরুবক, শল্যক ও বিষপুপুক এইগুলি ময়নার পর্য্যায় শব্দ। ময়না—মধুব-তিক্তরদ, উষ্ণবীর্যা, লেখন, লঘু, ব্যনকারক ও রক্ষ, এবং ইহা বিদ্রাদি, প্রতিশ্রায়, রণ, কুঠ, কফ, আনাহ, শোগ ও গুলার্থনাশক।

অথ রাম।।

রাসা যুক্তরদা রক্তা স্থবহা রসনা রস।।
এলাপণী চ স্থবদা স্থান্ধা ভারদী ওপা ।
রাস্ত্রমপাচনী ভিক্তা গুরুষণ কফবাতজিং।
শোধণাসমনীরাস্ত্র-বাভশ্লোদরাপথা।
কাসজববিঘাণীভি-বাভিকামর্যমগ্রিং॥

রামা, বুক্তরসা, রক্তা, স্থবহা, রসনা, রদা, এলাপণা, স্থরসা, স্থগদ্ধা ও প্রেমনী এইগুলি রামার নামান্তর। ইহা আমপাচক, হিলু, শুরু ও উষ্ণবীর্যা। রামা—কফ, বারু, শোথ, খাস, বাত্তসক্ত, বাতশূল, উদর, কাস, জ্বর, বিষ, ভশাতি প্রকাশ বাত্রেরণ ও সিশ্ব বিনষ্ট করিয়া গাকে।

অথ নাকুলা (রাম্লাভেদঃ)।

নাকুলী সুরসা নাগ-সুগন্ধা গন্ধনাকুলী। নকুলেষ্টা ভুজন্থাকী সূৰ্ণাক্ষী বিষনাশিনী॥ নাকুলী তুবরা ভিক্তা কটুকোকা বিনাশয়েদ। ভোগিল্ভাব্দিকাণু-বিষম্বরক্ষিত্রশান্॥

নাকুলী, স্থবসা, নাগস্থগন্ধা, গন্ধনাকুলী,
নকুলেষ্টা, ভুজন্মাকী, সর্পাক্ষী ও বিষনাশিনী
এইগুলি নাকুলীৰ পর্যায় শব্দ। নাকুলী—
ক্ষায়-তিক্ত-কটুবস ও উষ্ণবীর্য্য এবং ইহা
সর্প, মাকড্সা, বৃশ্চিক ও ইন্দুরেব বিষ, জর,
ক্রিমি ও এণ-বিনাশক।

অথ মাচিকা i

মাচিকা গ্রন্থিক স্থলি তথা চাহালিকাথিক। মুর্বিদলা কেনা সহস্রা বালমূলিকা !!
মাচিকামা রমে পাকে ক্যার। শীতলা লঘুঃ।
প্রাতীসারপিতামা-ক্ষক্তীম্যাপ্রা !!

মাচিকা, প্রস্থিকা, অম্বন্ধা, অম্বালিকা, অম্বিকা, ময়ুর্বিদলা, কেনা, সহস্রাও বালমূলিকা এইগুলি মাচিকান নামান্তর। ইহা
অমরস, পাকে করায়, নাতলাও লঘু।
মাচিকা—প্রভাগান, রক্তপিত, কফ ও
কণ্ঠরোগ বিনাশ করে। ইহা হিন্দুখানে
মোইয়া নামে প্রালিধ।

অথ তেজবর্তা।

েজ্বিনী তেজৰতী তেজোহন তেজনী তথা। তেজ্বিনা কমধাস-কাসাম্ভাময়বাতহ্ব । পাচয়কা কট্ডিকা কচিবছিপ্লীপিনী॥

, ভজ্বল্।

ভেজারনী তেজবতী, তেজোহবা ও তেজনী এই গুলি ভেজবতীর নামাস্তর। তেজবতী—পাচক, উন্ধ্রীয়া, কটু, ভিক্ত, ক্লচিকর, আমুনীপান এবং ইহা কফা, শ্বাস, কাস, মুখ্যোগ ও বায়ুনাশক।

অথ জ্যোতিপ্রতা।

জোতিমতী তাং কটতী জোটেলা কসুনীতি । পারাবতপদী পণা। লতা প্রোক্তা ককুন্দনী । জ্যোতিমতী কটুতিজা সরা কফসমীরজিং। অত্যকা বামনী তীকা বহিবুদ্ধিয়তিগুৱা।

न डोक्टेकी।

লোভিন্নতী, কটভী, জ্যোভিক, কন্ধুনী, পারাবভপনী, পণ্যা, লতা ও ককুন্ধনী এইগুলি শতাকট্কীর পর্য্যায়। ইহা কটুতিক্ত-রস, সারক, কক্-বার্নাশক, অতি উষ্ণবীর্য্য, ব্যনকারক, তীক্ষ এবং অগ্নি বৃদ্ধি ও স্থৃতিপ্রদা।

অথ কুষ্ঠম্।

কুঠং বোপান্ধরঞ্চাপ্যং পারিভব্যং তথাৎপলম্। কুঠমুকং কটু খাত্ব গুফ্সং ভিক্তকং লঘু। হস্তি বাতাপ্রবীদর্প-কাদকুঠমকংক্টান্॥

কুড়।

কুন্ন, আপা, পারিভবা ও উৎপল এই গুলি এবং রোগবাচক সমস্ত শব্দ কুড়ের পর্ণার। কুড়—উঞ্চবীশা, কটুভিত্ত, মধুবরস, শুক্রজনক, লমু এবং ইহা বাভবক্ত, বিদপ্ত, কাদ, কুন্ন, বায়ু ও কফনাশক।

অথ পুষ্ণরসূলম।

উক্তং প্ররম্পন্ত পৌরবং প্রবঞ্চ তব। পল্পাত্রঞ্জানীবং কুঠভেদ্মিমং জন্তঃ॥ পৌরুমং কটুকং ভিক্তনুকং বাতকক্ষরান্। হস্তি শোধাক্ষতিবাসান্ বিশেষাৎ পার্যনুক্তং॥

পুদরমূল, পৌদর, পৃদর, পদ্মপত্র ও কাশ্মীর এইগুলি পুদরমূলের পর্য্যায়। ইহ। কুড় বিশেষ। পুদরমূল—কটুতিকাস, উষ্ণবীধা এবং ইহা বায়ু, কফ, জ্বর, শোথ, অফ্রচ ও শাস নাশক। পার্শুলে ইহা বিশেষ হিতকর।

অথ সর্ণক্ষারা চোকঞ্চ

কটুপর্ণী হৈমবতী হেমক্ষারী হিমাবতী। হেমাহবা পীতমুগা চ তল্মলং চোকমুচাতে॥ হেমাহরা রেচনী শিক্তা ভেদিন্ত্যংক্রেশকারিণী নি মিক প্রবিধানাত-কফপিন্তাপ্রকৃষ্ঠপুৎ ॥

কটুপর্ণী, হৈমবতী, হেমক্ষীরী, থিমা-বতী, হেমাহরা ও পাতত্ত্বা এইগুলি বর্ণ-ক্ষীরীর নাম। ইহার মূলকে চোক বলে। ইহা রেচক, তিব্রুরদ, তেনক, উংক্লেপজনক এবং ক্রিমি, কণ্ডু, বিদদোদ, আনাহ, কক, বক্তপিত্র ও কুঠনাণক।

অণ কর্ক দৈর্দ্ধ।

শূলা কৰ্কটশূলা চ সাথে কুলীরবিদাণিক। । অজশূলী তু চলা চ কৰ্মট গ্যা চ কীৰ্ভিতা। শূলা কৰামা তিজেকো কক্বাতকরজ্বান্। খালে'জ্বাতভূটকাস-হিকাক্চিমমীন হরেও।

কাক্ড়া শুক্ষী।

শৃঙ্গী, কর্কটশৃঙ্গী, কুলীর্ববিষাণিকা, অজশৃঙ্গী ও চক্রা এইগুলি কাঁক্ড়াশৃঙ্গীর পর্যান্ধ
এবং কাঁক্ড়ার যে যে নাম প্রথিত আছে,
ইহাও দেই দেই নামে অভিহিত হইরা
পাকে। কাক্ড়াশৃঙ্গী—কর্মার, তিক্ত ও উষ্ণ
বার্যা। ইহা কফ, বায়ু, ক্ষর, জ্বা, শাস,
উর্জ্বাত, ভ্রুণ, কাস, হিক্কা, অক্চি ও ব্যি
নাশ করে।

অথ কট্ফলঃ।

কট্কল: সোমৰক্ষত কৈটব্যং কুম্বিকাপি চ।
শ্রীপর্নিকা কুমুবিকা ভদ্রা ভদ্রবতীতি চ।
কট্ফলন্তবরন্তিক: কট্বাতকক্ষরান্।
হস্তি বাদপ্রমোহার্শ:-কাদক্তামরার্কী:॥

কায়ফল।

কট্ফল, সোমবক কৈট্র্যা, কুন্তিকা, শ্রীপর্ণিকা, কুমুদিকা, ভদ্রা ও ভদ্রবতী এই গুলি কায়ফলের নাম। কট্ফল—ক্ষার ভিক্ত ও কট্রস এবং ইহা বায়ু, কফ, জর, শ্রাস, প্রমেহ, অর্শঃ, কাস, কণ্ঠরোগ ও অরুচি বিনাশক।

অথ ভাগী।

ভাগী ভ্রভবা পরা ফল্লী রান্ধণবাইকা।
রান্ধণান্ধারবলী চ থরশাকশ্চ হঞ্জিকা ।
ভাগী ক্ষমা কট্ভিতা ক্রচ্যোকা পাচনী কযুঃ।
দীপনী তুবরা গুলারস্ক্রমাশরেদ্ প্রবন্ধ।
শোগকাসকফ্রাশ-শীনসভ্রমাক্রতান ॥

বামুনহাটী।

ভাগী, ভৃগুভবা, পদ্মা, দক্সী, বোদ্ধান বৃষ্টিকা, বাদ্ধানী, অঙ্গাববন্ধী, ধরণাক ও হঞ্জিকা এইগুলি বাদ্দহাটীর নাম। বাদ্দা-হাটী—ক্লুক, কটু-তিত্তকষায়বস, ক্রচিকর, উষ্ণবীধ্য, পাচক, লগু, অগ্নিদীপ্তিকর এবং ইহা বেক্তগুলা, শোপ, কাস, কক, শ্বাস, পীনস, জব ওবায়নাশক।

অথ পাষাণভেদঃ।

পাষাণছেদকোহখাছো গিরিভিন্তিরবোজনী। অধ্যভেদো হিমন্তিক্ত: করায়ো বন্তিশোধন: । ভেদনো হতি দোষাশো-গুলাস্ক্রেণাক্ষেক্ত। বেশনিবোগান প্রমেহাংশ্চ প্লাইশুরুবণানি চঞ্

হিম্সাগ্ৰ।

পাষাণভেদক, অথায়, গিবিভিং ও ভিন্ন যোজনী, এইগুলি হিমসাগবের নামাস্তর। হিমসাগব—শাতবীর্যা, তিক্তকষাররদ, বন্তি-শোধক, ভেদক এবং ইহা ত্রিদোষ, অর্শঃ, গুলা, মৃত্রকুছ্ক, অথারী, হাদোগ, যোনিরোগ, প্রমেহ, প্লীকা, শুল ও এণরোগ নিবারক।

অথ ধাতকী।

বাহক। ধংতৃপূপী চ তামপূপী চ ক্ঞরা। গুভিক্ষা ব**হুপূপী চ বজিম্বালা চ সা খতা** গ ধাহকী কটুকা শীতা মদমূহ তুৰৱা লতু: । ভূঞাপীসারপিতাপ্র-বিৰক্তিমিবিদর্গ**িব** ॥

वाङ्क्ष ।

ধাতকী, নাতুপুশ্লী, তাত্ৰপুশ্লী, কুঞ্জরা, স্থাভিক্ষা, বহুপুশ্লী ও বহ্নিজ্ঞালা এইগুলি পাইফুলের নামান্তব। ধাইফুল—কটু, শীত-বীর্য্য, মদকারক, কধার, লঘু এবং ইহা ভূষণা, অতীসার, পিত্ত, রক্তন্নষ্টি, বিষদোব, ক্রিমি ও বিদর্প প্রশমক।

অথ মঞ্জিষ্ঠ।।

মঞ্জিতা বিক্সা জিলা সমলা কালমেৰিকা।
মভুকপণী ভভীরী ভঙী বোজনবল্পপি ॥
রসায়জ্ঞকণা কালা বজালী রক্তবাইকা।
ভঙীতকী চ গভীরী মঞ্বা ব্রুরঞ্জিনী ॥
মঞ্জিতা মধ্বা ভিক্তা কবালা স্বর্বকৃত্ব।
ভক্তককা বিবলেশ-শোধ্যোজ্ঞাকিকর্ণক্রক্
ব্রুট্টেসারক্তাপ্র-বিস্প্রণ্যেক্তব্

মঞ্জিষ্ঠা, বিকসা, জিঙ্গা, সমন্ধা, কালমেমিকা, মঞ্কপণী, ভণ্ডীরী, ভণ্ডী, মোজনবন্ধী, নসায়নী, অরুণা, কালা, রক্তান্ধী, রক্তমষ্টিকা, ভণ্ডীত্রকী, গণ্ডীরী, মঞ্মা ও বন্ধরক্তিনী, এইগুলি মঞ্জিষ্ঠার পর্যান্ধ শক্ষা । ইছা
মধুর-ভিক্ত-ক্ষান্থরস, শুরু ও উক্ষবীয়া এবং
অরবন্ধক ও বর্ণকারক। মঞ্জিষ্ঠা ব্যবহারে
বিষদোষ, প্রেয়া, শোথ, বোনিরোগ, নেত্র ও
কর্ণনোগ, প্রত্যাত্রসার, কুন্ত, বক্তগৃষ্টি, বিসর্গ,
রণ ও মেহ নাশ হয়।

অথ কুহন্তম্।

স্যাৎ কুহন্তং বহিংশিথং বজনপ্লক্ষিত্যপি।
কুহন্তং মধুরং রুকং বহিংকুদ গোচনং মতন্॥
বিশ্বেদোৰশমনং কটুকং গুরু পিওলন্।
ক্রিমিকদ্ বাতলং ক্রন্তং ব্রুক্তিককংপটন ॥

कुर्यगक्ष ।

কুম্ন্ড, বহিংশিথ ও বন্ধরঞ্জক এই তিমটি কুম্ম-ফুলের পর্য্যায়। কুম্মফুল—মধুর বস, কুম্ম, অগ্নিকারক, ক্রচিকর, মলমুজের দোব-নাশ্ব, কটু, উষ্ণবীধ্য, গুম্ব, পিত্তকর, বার্ম্বনক এবং ইহা ক্রিমি, মুজ্জুম্ব, রক্তপিত ও কফ্নিবারক।

অথ লাকা।

লাকা প্ৰকাৰলৈকো যাবো বৃক্ষাময়ে জতুঃ। লাকা বৰ্ণা ছিমা বলা পিন্ধা চ তুবরা লবুঃ ॥ অনুকা কন্সভিত্তি-হিভাকাসক্তরপুং। এনোরংক্ষ এবসপ-ক্রিমিকুঠাগদাপ্তা। অসক্তকো গুলৈক্তন্ত্বিশেষ্ট্ বাক্ষনাশনঃ॥

31

লাক্ষ্য, প্রক্ষমা, অন্তর, যাব, বুকানির ও ততু এইগুলি লাক্ষার নামান্তর। ইহু বর্ণকর, শীতল, বলবর্জক, স্থিপ্প, ক্ষান্ত, লঘু ও অমুক্র। ইহা বাবহারে কফ, নক্তপিত্র, হিন্ধু, কাদ, জন, ত্রণ, উরঃক্ষত, বীস্প, ক্রিনি ও কুট্রোগ বিনিষ্ট হয়। অল্ডেক্ড লাক্ষান্ত্রপ্রক্তর, বিশেষতঃ বাল (মেচেতা) বোগ্নান্ত্রণ ও

অথ হরিদ্র।

হারটো কাঞ্চনী পীতা নিশংখা। বরবাধিনী। ক্রিমিয়া হলটী ঘোষিৎ-প্রিচাত র্যাবিদ্যানিনী । হারটো কটুকা ভিক্তা ক্রেম্পে: কফ্পিয়েন্ত । বর্ণনা স্থানোয়ামহাত্র-পোর্পাণ, এবশপ্রান

र्ल्य ।

হরিন্তা, কাঞ্চনী পীছা, বাব্রনি। ক্রিমিয়া, হলদী মোলিমাপ্রমাণ্ড হর্মনান্ত্রনী এইগুলি এবং বাব্রেনাচক সমস্ত শব্দ হরিদ্রার নাম। হরিদ্রা—কট্টিভিন্নাস, কক, উষ্ণবান, কক-পিরনাশহা, ঘণালব এবং ইয়া গোলেফ, মেহ, বক্তম্বিতি পোষা, পাল্লাণ্ড ব্যাবাহানাশক।

অথ বনহরিদ্র। আত্রগান্ধহরিদ্রা চ।

অরণাহলরীকলঃ কুঠব (তাজনপেনঃ। আ অগন্ধিহরিদ্ধা ধা ধা নীতা লংগুলা মৃতা। পিত্তহুমধুরা তিজা স্কাকভুনিনা নিমী॥

'বনহবিদ্রাও ক্রাফ-আলা।

বন-হরিদা। কন্স, কুঠ ও বাতরক্ত রোগে বাবস্থের। আমগান হবিদ্রা অর্থাং আম-আদা-শীতবীর্বা, বার্জনক, পিন্তনাশক, মধুং-তিক্তরদ এবং কণ্ট্নাশক।

অথ দারুহরিদা।

দাব্বী দাক্তরিদ্রা চ পঠিছা পর্জনীতি চ। কটকটেরী পীতা চ তবেৎ ক্রেন পঠন্দারা। নৈন কালায়ক: প্রেক্তেম্বা কালেয়কে হিপি চ। পীতক্রণ করি ক্রন্ত কিন্তানিক ক্রীতকন্। দাব্বী নিশান্তশা কিন্তু নেত্রকর্ণাম্পরোগরুৎ।

ানবা, দারুহতিত্র পজ্জন্তা, পর্জ্জনী, ক্রেকটেনী, পিডা পচপ্রেচা, কালীয়ক, কালেযুক্, পিড্জ হরিদ্রা, পাডানাক ও পীতক
এই ওলি দারুহতি দাব নামান্তর। দাকুহরিদ্রা
সাধানণ হতিদ্রার ভায় গুণকারক, অধিকন্ত
ইহা নেত্রবোগ, কর্ণরোগ ও মুখরোগ
বিনাশক।

অথ বসাজনম্।

লাকীকাথনমং ক্ষাক পাদং পাজ্যা ধনা ধনন্।
পা রমান্তনাখাং তারবায়ের পারমং হিত্যু॥
রমান্তনা তার তিং লা রমান্তনা তাক্ষাজমু॥
নমান্তনা করিশার-নিধানতাবিকারকুং।
নমান্তনা করিশার-তিতা চেলনং তাগোলারকুং॥

লাকং িছার ক.প ও তথা সমভাগে একতা পাক কবিয়া পালবিশেষ থাকিতে নামাইলে সেই যনাত্ত দ্বাকে সোঞ্জন কছে। বসাঞ্জন, ভাক্ষবিশাৰ নদগভিও ভাক্ষবিজ এইগুলি বসা-জ্ঞানৰ প্রিয়ি শক। ইছা নেত্রের প্রম হিত্রু কেট্ন উষ্ট্য স্থায়ন, ভিত্ত, ছেলন, ব্রুলেয্য্য ক এবং বিছা প্রেয়া, বিষ্টোষ্ট্য নেত্রিকাৰ নিবাবক।

অথ বাক্চা।

আংশ্বনো বাবুটা দশহ যোগবানী সুপ্ৰিকা।
প্ৰিলেগা বৃদ্দনা যে । প্ৰিকাটিত চা
সোধবনা কাৰদেশা দুটবা চা প্ৰক্ৰিটা।
বাবুটা নবুৱা ভিতা কটুবাকা বসামনী ।
বিষ্টুজন্মিনা কান সহা শ্ৰেমান্ত্ৰিত্ব।
ক্ৰুকা হজা খানকুলি-নেহজ্ববিদ্যাপ্ৰত্ব ।
তৎক্ৰং পিত্ৰৰ কুটাক্কানিকহ্বংক্ট্।
কেগুং খুটাং বিম্মান-কানশোধাসপাভুষু ।

সোমশজী।

রাজার নাম। ইহা মধুর-ভিক্তবদ, কটু- তর্তিব্ধ-ভিফরীয়া, কটুভিক্তরদ, বিপাক, সোমন, সেভুন্তিক শাত্র, কাচ- ত্রিপ্রস্থাপক এবং ইহা কারক, সারক, রুক্ষ, হস্ত এবং শ্লেম, রস্ত-াপন্ত, খাস, কুড মেহ, জন্ন ও জিমি বিনা-শক্। সোমরাজীবীজ -পিত্রবদ্ধক, কটুরস, কেশের হিতকর, হাকের উপকাবক এবং ইহা ক্ষ্ত, ক্ষ্যু, বায়ু, ব্যি, খাদ, কাদ, শোণ, আম ও পা উরোগপ্রমশক।

অথ চক্রমর্দ্ধঃ।

हरू महिः अध्यक्षाति राज्या त्रवलाहनः। পদ্মাটঃ স্থাদেভগঞ্চকী প্রাট ইতাপি॥ চক্রমদ্দো লয়ঃ স্বাহু রক্ষঃ পিতঃনিবাপঽঃ। হাজা হিমঃ কফখাস-কুষ্ঠদকে ত্রিমীন হয়েও ॥ হস্তায়ং তৎফলং কুষ্ঠ-কণ্ডদক্র বয়ানিলান। অব্যক্ষস্থিয় স-নাশ্মং কটুকং খ্রাচন।

ठ क्रान्स I

চক্রমন্ত্র, পাপুরাটি, দক্ষন্ত্র, মেষকোচন, পদাট, এড্গছ, চক্রী ও পুঞাট এইগুলি, **ठाकुरम्ब**द गाग। ठाकुरम - १९९, श्रीष्ठ, कुक, হুছ, হিম এবং ইহা পিত্ত, বায়ু, কফ, খাস, কুঠ, দক্র ও ক্রিনি বিনাশক। চক্রমদের क्ल-स्थ, व है जवर देश कुई, कधु, मक्र, বেষদোষ, বায়ু, গুলা, কাস, ক্রিনি ও শ্বাস নবা:ক ৷

অথাতিনিষ: !

বিষা ছতিবিষা বিশ্বা শুক্রী প্রতিবিষারুণা। শুকুকন্দা চোপবিষা ভঙ্গুবা ঘণবল্লভা ॥ বিষা সোমগ কটু স্তপ্তা পাচনা দীপনা হয়েৎ ক্ষপিতাতিসার ম-বিষ্কাসন্মিক্রিমান।

আক্রাক

অবস্তুজ, বাকুটী, সোমবাজী, প্রপণিকা, বিষ, অভিবিধ, বিষ, শৃঙ্গী, প্রভিবিধা, শা-শেখা ক্ষাধ্যা সোধা প্তিক্লী সেমে- অকণা, ডক্কনা, উপবিষা, ভঙ্গুকা ও যুগ-বল্লী, কাল্যমনী ও কুওলা, এই প্ৰতি নিম্মান বল্লভা, এই সকল অভিবিয়াৰ প্ৰসিদ্ধ নাম। কফ, পিত্র. অতিসার, আমনোয়, বৈন, কাস, বমি ও ক্রিমিবিনাশক।

অথ লোপঃ পটিকালোপ্তশ্চ।

लोडां खबरिस्ती हैं के भावती भावनख्या। দ্বিতীয়: পটিকালোপ্র: ক্রমুকঃ স্থলবন্ধল: I জীর্ণতো বৃহৎপত্র: পট্টী লাক্ষাপ্রসাদন:। লেংগ্রো গ্রাহী লঘ: শীতকক্ষা: কফপিডমুৎ। ক্ষায়ো রক্তপি**ভা**সগ্র্রাতীসারশো**ণহ**ৎ ॥

लाम 'अ अधिया लाम ।

লোধ, তিব, তিরীট, শাবর ও গালব, এই কয়েকটি লোধের প্রসিদ্ধ নাম। োধ, ক্রমক, সুল্বজ্ব, জীর্ণতা, বহৎপতা, পূর্বা ও লাকাপ্রসাদন এই কয়েকটি পটিয়া-লোধের প্রসিদ্ধ নাম। লোধ-বারক, লঘু, শীতবীৰ্ষা, চক্ষুৱ হিতকাণক, ক্ষায়ুৱস এবং ইহ। কদ, পিত্ত, রক্তপিত্ত, রক্তদোষ, জ্বর, অতীসাৰ ও শোথবিনাশক।

অথ লগুনঃ।

লঙ্বন্ত সুসোৰঃ ভাতগ্ৰগ্ৰে মহৌৰধম। कड़िर्देश (अष्टकनमन्त यन्त्वरहेश ब्रह्मानकः ॥ পঞ্ছিক রদৈয় জেন রদেনায়েন বৰ্ণ্ডি ১:। তক্ষান্তসোন হতাজো দ্রবাণাং গুণবেদিভি: ॥ কটুকলঃপি মুনেরু িজঃ পত্রে সংস্কেতঃ। নালে ক্যায় ডাক্স্টো নালাগ্রে লবণঃ স্মতঃ॥ বীজে তু মধরঃ প্রোক্তো রসম্ভদগুণবোদভি, । त्राम'को दुःश्रा दुगः खिर्याकः भ'ठन मत्र.॥ রসে পাকে চ কটুকত্মকা মধুরকো মত। ভঃসধানকৎ কঠো ও.ন. পিত্র' বুদ্ধ। বলবর্ণকরো মেধা-ছিতো নেজো রসায়ন: ।

জনোগলীপ্ৰবক্ষিশ্ব-বিবন্ধগুলাক্ষিকাসশোকান্। জুন মিকুটানলসাদজ্জ-সমীরণখাসককাংক হস্তি ॥ মজুং মাংসং তথায়ক হিতং লগুনসেবিনাম। ব্যারামমাতপং রোষমতিনারং পরো ওড়ুম্। রসোনমগ্রন্ পুরুষজ্যজেদেতান্ নিরস্তরম্॥

লগুন, রসোন, উগ্রাগন্ধ, মহৌষধ, অবিষ্ট, মেক্তকন্দ, যবনেষ্ট ও প্রদানক, এই করেকটি রশুনের প্রদিন্ধ নাম। প্রস্থান—মধুর, লবণ, তিক্তা, কটু ও কয়ায়, এই পঞ্চ রসমুক্ত; ছয় রসের মধ্যে কেবল ইছা অম্লরস-বিহীন; অতএব একটি রসে উন (হীন) বলিয়া দ্রবাগুণবিং পণ্ডিত্যাণ ইছাকে রমোন নামে অভিহিত করিয়াছেন। রমোনের মুলে কট্রন, পরে তিক্তরম, নালে ক্যায়রম, নালের অএভাগে লবণরস এবং বীজে মধুররস ভাছে।

রশুন—পৃষ্টিকর, শুক্রবর্দ্ধক, স্লিগ্ধ, উষ্ণবীর্যা, পাচক, সারক, কটু-মধুন রস, কটুবিপাক, তীক্ষবীর্যা, ভগ্নসন্ধানকারক, কণ্ঠশোদক, গুরু এবং পিত্ত ও রক্তবর্দ্ধক, বলকন, বর্ণ প্রসাদক, মেধাজনক, চক্ষ্ণ হিতকারক, রসায়ন এবং ইহা হজোগ, জার্ণজ্ঞর, কুন্ফশূল, মলাববন্ধ, গুল্ম, অক্ষচি কাস, শোগ, অর্শঃ, কুট, অগ্নিমান্যা, ক্রিমি, বায়ু, শ্বাস ও কফ নাশক।

রসোনসেবী বাক্তির পক্ষে মন্ত, মাংস, এবং অমুদ্রব্য ইিডজনক। কিন্তু বাায়াম, রৌদ, ক্রোধ, অধিক জল, গুগ্ধ ও গুড় এই সকল রসোনভোজী ব্যক্তির পক্ষে অহিতকর, মৃতরাং উহা পরিত্যাজ্য।

অথ পলাণ্ডঃ।

পলাঙ্যবনেষ্ঠশ্চ তুর্গন্ধো মুথদূষকঃ। পলাঙ্গু বুবৈজ্ঞে য়ো রসোনসদৃশো গুণৈ: ॥ স্বাদ্ধ: পাকে রসেংসুষণঃ কফকুরাতিপিওলঃ। হরতে কেবলং বাতং বলবীযাকরো গুরুঃ॥

পেঁয়াজ।

পলাণ্ড্ৰ, যৰনেষ্ট, ছৰ্গন্ধ ও মুখদুষক, এই সকল পৌয়াজের প্ৰাসিদ্ধ নাম। পলাণ্ড--- রসোনের ভার গুণৰ্ক ; বিশেষতঃ মধুবরস, মধুরবিপাক, শীতবীর্যা কফকারক ও নাতিপিত্ত-কর। ইহা কেবল বায়্নাশক। পেঁরাজ বলকারক, বীর্যুবর্দ্ধক ও গুরু।

অথ ভন্নতক্ষ।

ভলাতকং ত্রিষ্ প্রেক্তমক্ষেত্রকর রেছিক:।
তথৈবাগ্নিমুখা ভলা বারবৃক্ষণ শোককুৎ।
ভলাতককলং পকং স্বাত্রপাকরমং লঘু।
ক্যায়ং পাচনং ব্রিদ্ধং তীক্ষোক্ষং ছেদি ভেদনম্।
ক্যায়ং পাচনং বিদ্ধং তীক্ষোক্ষং ছেদি ভেদনম্।
ক্যায়ে বহিকরং হস্তি কক্ষরাতরগোদরম্।
ক্টার্শোগ্রহণিগুল-শোক্ষানাহজ্বনিমান্।
১লাজা মধুরো বৃংদ্যা বৃংহণো বাতপিত্রং।
বৃত্তমাকদকা স্বাত্র পিত্রং কেপ্তমপ্রিকুং।
ভল্তিকং ক্যায়েকং শুক্রকং মধুরং গলু।
বাতরেগ্রেদরনোত-কুষ্ঠাপোক্রিমিরণান্।
হস্তি গুল্মবৃদ্ধিন-ক্ষিম্নাক্রিমিরণান্।

্ভল |

ভ্রাতক শৃক্তিন লিকেই ব্যবহৃত হয় ৷ অকৃষ্ণ অ'গ্লক, অগ্লিম্থী, ভল্লী, বীংবৃক্ষ ও শোফরুং এই কয়েকটি ভন্নাভকের নামান্ত।। ভল্লাত্ত্যের পাকাফল—মধুরানপাক, লঘু, কয়ায়-মধুর রস, পাচক, মিগ্ধ, তীক্ষ, উষ্ণবার্গা, ছেদা, ভেরক, মেধাজনক, আগ্ন-কারক এবং ইহু কফ, বায়ু, ব্রণ, উদর, কুষ্ঠ, অর্শঃ, গ্রহণীরোগ্য, গুলা, শোথ, আনাহ, জুর ও ক্রিমি বিনাশক। ভয়া একের মজ্জা—মধুনরম, শুক্রবর্ত্ত, পুষ্টিকারক এবং হহা বায়ুও পিত্ত ভল্লা তকবুস্ত-মধুররস, কেশের উপকারক এবং অগ্নিবন্ধক। ভল্লাভক-ক্ষায়-মধুর-রুস, উষ্ণবীয়া, শুক্রবদ্ধক, লঘু এবং ইহা বায়ু, শ্লেখ্না, উদুর, আনাহ, কুঠ, অর্শঃ, গ্রহণীরোগ্য, গুলা, জর, শ্বিত্র, অগ্নিমান্যু, ক্রিমি ও ব্রণ নাশক।

অথ ভঙ্গা।

ভঙ্গা গঞ্জা মাতৃলানী নাদিনী বিজয়া জয়া। ভঙ্গা ককহয়ী তিজা গ্রাহিণী পাচনী লঘু:॥ তীক্ষোকা পিন্তলা মোহ-মদবাৰ্যক্লিবৰ্দ্ধিনী। মদনোক্ষীপনী নিজ্ঞা-জননী হৰণায়িনী॥ ধনুঃস্তম্ভং জলকাসং বিস্কটীঞ্চ মদা ত্যৱস্। প্ৰস্কৃতিং ব্যৱসোধি হন্তাপত্যপ্ৰস্কৃতিকং।

সিদ্ধি।

ভঙ্গা, গঞ্জা, মাতুলানী মাদিনী, বিজয়া, ও জয়া, এই কয়েকটি সিদ্ধির পর্যায়। সিদ্ধি—
কফনাশক, তিব্রুরস, গারক, পাচক, লঘু,
তীক্ষ্ণ, উষ্ণবীর্যা, পিত্রবর্দ্ধক, মোহজনক,
মদকারক এবং স্বর ও অগ্নিবর্দ্ধক। ইহা
কামোদ্দীপক, নিদ্রাজনক, আনন্দ্রদায়ক এবং
ধ্বস্থেন্ডভ, জলত্রাস, বিস্ফুচী, মনাত্রয়, অধিক
রক্তর্যাব ও প্রসববাধা নিবারক।

অথ খাখসং।

তিলভেদ্ধ খনতিকঃ গ্রাথসকারি স জ্জুর ।
ভাবে গ্রেসকলেন্দুত্বং বর্ধরং শিক্তরং জনু ।
গ্রাহি তিক্তং কমায়ক বা ত্রুব বা কাস্তরে ।
শাত্রাং শোষকং কল ২০ (৮ বা ক্রান্তর)
মৃত্রে তিক্তর ক্রান্তর (মুব্ন ব্রুবন ব্রুবন

3511

ভিলভেন ধ্যাতল ও থাখন, এই কয়েকটি পোন্তকালৰ (চেড়ীর) নামান্তব।
পোন্তকলের ধ্যাল—শীতবীর্যা, লঘু, ধারক,
ভিক্ত-ক্ষান-চল, নায়বন্ধক, করুল্ল, কাসনাশক,
ধাতুশোষক, ক্লক, ননকালক, স্বর্বন্ধক,
মোহজনক ও ক টকালিক। ইং: দীর্ঘকাল দেবনে প্রকাল - শহর।

र्वाभि हित्त :

উক্তং থসকলক্ষারমাকুক ক্রিন্ত ক্রম।
আফুকং শোষণং গ্রাফি ক্রেমনং বাতিপিত্রক।
আক্রেপশমনং নিজা-জননং মদক রি চ।
বেদনং বেদনাক্রম মুলাতাসারমুখ পরম ।
কাসখাসাতিসারখং শোণতক্রতিবারণম্।
তথা থসকলোভুতং বন্ধলং প্রায়মিতাপি ॥

আফিং।

পোন্তফলের ক্ষীরকে (আঠাকে) আফুক ও অহিফেন বলা যায়। আফিং—শোষণ-কারী ধারক, কফনাশক, বায়ুবর্দ্ধক, পিত্তকারক, আক্ষেপ-নিবারক, নিদ্রাজনক, মাদক, বেদজনক, বেদনাশমক এবং ইহা মুত্রাতীসার, কাস, খাস, অতিসার ও রক্তত্রাব নিবারক। ধসফলের বন্ধলও অহিফেন-তুলা গুণকারী।

অথ থাথদবীজম্।

উচাত্তে থসবীজানি তে থাৎসতিলা অপি। থসবীজানি বলানি বুষাণি স্বগুরূণি চ। শময়ত্তি কফং তানি জনয়তি সমীরণম্॥

গোস্তৰ্শনা।

খদবীজ ও গাশস্তিল, এই জুই**ট পোন্ত-**দান্ত নামান্তৰ মাত্ৰা পো**ন্তদান বল-**কালে, শুক্ৰবসক, মতিশ্য গুকু, কফনাশক ও ব্যাস্থান ।

অথ নৈদ্ৰবন ।

সৈন্ধবোহস্ত্রী শীতশিল সংগ্রিমন্ত সিন্ধুজন। সৈন্ধবং অবশং স্থাত্র দিলাম প্রাংক্ত সমূ। স্রিপ্তাং ক্লচাং ছিমং বুয়াল প্রস্তুং নেত্রাং ত্রিদেয়িক্ত ॥

্সদ্ধব শব্দ প্রংভিন্ন ও ক্রান্তলিক এই তুই লিক্ষেট ব্যবস্থাত হল। নিত্রনিব, মাণিমন্থ ও দিব্বুজ, এই কয়েকটি সৈদ্ধব লবণের নামান্তর। সেন্ধব লবণ—মধুররস, অগ্নিপ্রদিশিক, পাচক, লঘু, মিগ্র, ফুচিকারক, নাত্রীধা, গুক্রবর্ত্বক, সুক্ষাস্রোতোগামী, চকুর হিতক্স এবং জিদোধ-নান্ব।

অথ রোমকম।

শাকস্করীয়ং কথিতং গুড়াখাং রৌমকং তথা। গুড়াখাং লগু বাওম্বন্ডাঞ্চং ভেদি পিত্তলম্। গ্রীকং ব্যবায়ি ক্ষকণভিষ্যালি, কটুপাকি চ ॥

শান্তারিলবণ।

শাকল্পরীয়, গুড়াখ্য ও রৌমক, শান্তারি-লবণের এই কয়েকটি নাম প্রেসির। শান্তারি-লবণ—লঘু, বায়ুনাশক, অত্যন্ত উষ্ণবার্থার, ভেদক, পিত্তবৃদ্ধক, তাল্প, ব্যব্দার, স্পন্ন-স্রোত্যোগামী, অভিযান্দী ও কট্টবিগাক।

অথ সামুদ্রম।

সামুদ্ধ যথ তু লবণমকানং বনিরঞ্ তথ।
সমুদ্রকাং সাগরজাং লবগোদ্ধিসভবম্ ।
সামুদ্ধ মধুরং পাকে সভিজ্ঞান মধুবং ভাক।
নাত্যকাং দীপনা ভোদি সকারমবিবাধি চ।
সেম্বাং বাতত্থ তীক্ষমকাকাং নাতিবা লাম ।

পাঙ্গালবণ।

সামুদ্রগবণ, অক্ষাব, বশির, সমুদ্রহ, সার-রক্ত ও লবণোদ্রিসন্তব, এই স্বল্প পান্ত -লবণের নামান্ত । পান্সালবণ — মধু বিপানি, ক্রম্ম ভিক্ত-মধুর-রম, ওল, নাত্যে, নাত-শাতল, অগ্নিপ্রদাপক, ভোলন স্থার, অবিদাহী, কক্ষ্যাবক, বাঙ্গা বাজ এবং অরক্ষ।

অথ বিড়ম্।

নিড়ং পাকক কতকং তথা প্রানিড়নাম্বন্। বিড়ং সক্ষারমূদ্ধাধ্য কফ।ভান্থলোমনন্। । দীগনং লঘু তীক্ষোগং রক্ষং রচ্যং ব্যবংশি চ। বিবন্ধানাহবিষ্টত-হুজ্পুগোরস্থুলমুং

বিটুলবণ।

বিড়, পাক, কতক, দ্রাবিড় ও আহার, এই করেকটি বিট্লবণন নামাগুর। বিট্লবণন কারস্কুল, উর্জাত কফের ও অবোগত বায়ুর অফুলোমকারক, অগ্নিপ্রদিনিপক, লঘু, তীক্ষ, উষ্ণবীর্য্য, রুক্ষ, রুচিকারক, ব্যবায়ী এবং ইহা বিবন্ধ, আনাহ, বিইন্ড, হুদ্রোগ, শবীরের গুরুত্ব ও শূল নাশক।

* ভিছিং কফসধো বাতং সঞ্চারয়েদিতার্থঃ ॥

অথ সৌবর্তলম্।

সৌণর্চনং ক্সাক্রেচনমন্দং পাক্যঞ্চ তন্মতম্। নচকং রোচনং ভেন্দি দীপনং পাচনং পরম্॥ স্থামহং বাতমুমাতি-পিত্রাং বিশাদং লঘু। উল্পানগুদ্ধিনং স্ক্রোং বিবন্ধানাইশুক্রিবে॥ সচলপ্রবা।

সৌবর্চন, কচক, সক্ষ ও পাক্য, এই কয়েকটি সচললবর্ণের নামাস্তব। সচললবণ—ক্রচিকারক, ভেনক, অগ্নিদীপক, অভান্ত পাচক, স্থিন্ধ, বায়ুনাপক, নাতিপিত্তকার, বিশদগুণসূত্র, লঘু, উদ্যারিশুদ্ধিকাবক, স্থান্থোভোগানী এবং বিবন্ধ, আনাহ ও পূল্বিনাধ্ক।

चाथ टे खिन्य।

উভিনং পাংগুলননং যাত তং ভূমিতঃ স্বধ্য । জানং ওক কটু (লগ্নং শাতলং নাভনানন্॥

পা। উল্বেশ।

গাভেলনং ভূনে হইটে স্বরংগ উৎপন্ন ২০। উ.চ জনন ইহান নামান্তন। উল্লেখন লন্দ-স্মাস্থ্য, ওলা, কট্রসা, স্বিশ্ব, শিভ্রীষ্ট্য এবং নায়ুনানক।

অথ চলকায়ণ্।

চণকল্লেকমত্যুক্তং দীপানং দম্ভইবণায়। লবণান্ত্রনং রচাং শুলাজাপনিবন্ধনুৎ॥

চণকার্য—আতশন উপনৌধা, অন্তির দীপক, দন্তংগিলাক, ঈধং লবগারসমুক্ত অমবস, ক্লচিকাকে এবং ইহ' শৃল, অজীর্ণ ও বিবন্ধ নাশক।

নরসারঃ।

নরসারো নুসারশ্চ নুসাদর ইতি ক্ত.।
পট্: প্রতিশীলানাং প্রাবণঃ শোধক্ষমিঃ॥
বক্দোবে জরে শ্লীস্থ শিরংশুলেহর্ব, দাদিষু।
তনরোগে রক্তপিতে কাসে ভগ্নামরে তথা।
বোনিবাপিৎস্ক চ জেরো নরসারঃ কুথাবহং॥

নিশাদল।

নরসার, নৃসার ও নৃসাদর এইগুলি
নিশাদলের পর্যায়। নিশাদল—লবণাস্থাদ,
ইহা প্রবর্তনশীল শারীরিক পদার্থসমূহের
(কফ পিত্ত মল মূত্র স্থেদাদির) প্রাবক,
শোর্থন্ন ও শীতল। যক্তং-দোষ, জ্বর, প্লীহা,
শিরংশ্ল, অর্ক্র্ন্ন প্রভৃতি রোগে এবং জনরোগ,
রক্তপিত্ত, কাস, ভগ্নরোগ ও যোনিব্যাপংরোগে নিশাদল প্রয়োগ করিতে হয়।

অথ যবঙ্গারঃ, সর্জ্জিকাঞ্চারঃ, হুবর্চ্চিক*চ।

পাক্য: কারো বনকারে। যাবশ্কো বনাগ্রক:।
ক্ষিক্রকাপি শুত: কার: কপোত: স্থবর্চক:॥
ক্ষিত: বজ্জিকাভেদো বিশেষজ্ঞৈ: স্বর্চিক:॥
বক্ষারো লঘু: বিশ্বঃ স্ব্যুল্মা বহিনীপন:॥
নিহন্তি শুলবাভাম-শ্লেমখাসগলাময়ান্।
পাও,শোগ্রহণাগুল্মানাহসীহক্ষাময়ান্॥
ক্ষিজ্জিকালগুণা ভ্সাবিশেবাদ্ গুল্মশূলহ্ব।
স্বর্চিকা ক্ষিজ্জানদ্ বোদ্ধবা গুণতো জনৈ:॥

যবক্ষার, সাচিক্ষার ও সোবা।

পাক্য, ক্ষার, যক্ষার, যাবশূক ও যবাগ্রজ, এই করেকটি যবক্ষারের নামান্তর। স্বর্জিকাক্ষারকে ক্ষার, কপোত ও স্থথবর্চক বলে। পণ্ডিতগণ বলেন যে, স্থবচ্চিক স্বজ্জিকাক্ষার-জেনমাত্র। যবক্ষার—স্বযু, মিধ্ব, অতিস্ক্ষা-শ্রোতোগামী, অগ্নির দীপক এবং ইহা শূল, বায়ু, আমদোষ, কফ, শ্বান, গলরোগ, পাণ্ডু, অর্শা, গ্রহণী, গুলা, আনাহ, প্লাহা ও ফল্রোগ বিনাশক। স্বর্জ্জিকাক্ষার—যবক্ষাব অপেক্ষা কিঞ্চিৎ অপ্তপ্তশন্তু; বিশেষতঃ ইহা গুলা এবং শূলবিনাশক। স্বর্জিকা—স্বর্জ্জিকাক্ষারের তুল্যু গুণাযুক্ত জানিবে।

অথ টঙ্গণম।

সৌভাগাং টক্লণং ক্ষারো ধাতুদ্রাবক্ষ্চাতে টক্লণং বহ্নিকৃত্যক্ষং কক্ষন্থ বাতপিন্তক্ৎ । স্ত্রীপুশালননং বল্যং মুদুগর্ভবিকর্ষণম্ ॥

সোহাগা।

সৌভাগা, টলণ, কার ও ধাতুদ্রাবক, এই কয়েকটি সোহাগার নামান্তর। সোহাগা— অগ্নিবর্দ্ধক, কৃক্ষ, কফন্প, রজ্ঞ:প্রবর্ত্তক, বল-কারক, মূঢ়গভাকর্ষক এবং বায়ু ও পিত্তবর্দ্ধক।

অথ ক্ষার্দ্ধং কার্ত্রয়ঞ্চ।

স্বজ্ঞিকা বাবশ্কন্চ ক্ষারন্বয়মূলাক্ষতন্। টক্রণেন যুতং তৎ তু ক্ষারক্রয়মূলীরিতন্। মিলিতত্তুক্তগুণকুদিশেবাদ্ গুলাক্রৎ পরন্॥

স্বাজ্ঞিকাক্ষার এবং যবক্ষার এই উভয়কে কারঘন্ন বলে। এই ক্ষার্থন্নের সহিত সোহাগা মিশ্রিত করিলে তাহাকে ক্ষারত্ত্বর বলে। এই তিনটি ক্ষারের যে।যে গুণ পৃথক্ পৃথক্ উক্ত হইয়াছে, ছইটি অথবা তিনটি ক্ষার একত্ত্ব মিলিত হইলেও তাহারা সেই সেই গুণকর হয় জানিবে, বিশেষতঃ মিলিত ক্ষার্থন্ন বা ক্ষার্ব্য গ্রাম্থলারোগ নালের পক্ষে অতি উপযোগী।

অথ কারাফক্ম।

পলাশবজ্ঞিশিংধরি-চিঞার্কভিলনালজা:। যবজঃ স্বজ্জিকা চেতি ক্ষারাষ্টকমুদাহুতম্। ক্ষারা এতেংখিনা তুল্যা গুলাগুলহুরা ভূশম্॥

পলাশ, সিজ, আপান্ধ, তেঁতুল, আকন্ধ, তিলনাল ও যব, এই সাত দ্রব্যের ক্ষার এবং স্বজ্জিকাক্ষার এই আটটিকে ক্ষারাষ্টক বলে। ক্ষারাষ্টক—অগ্নিগুণবিশিষ্ট; ইহা গুলা ও শূল-বিনাশের পক্ষে শ্রেষ্ঠ ঔষধ।

অথ চুক্রম্।

চুক্রং সহস্রবেধি স্থান্তসায়ং শুক্তমিত্যপি। চুক্রমত্যয়মুক্ষক দীপনং পাচনং পরম্॥

শূলগুক্মবিবন্ধান-বাতল্পেন্ডরং সরস্। বমিতৃকাক্সবৈরগু-হৎপীড়াবন্ধিনান্দ্যহৎ। অমবেতস।

চুক্র, সহস্রবেধি, রসাম ও শুক্ত, চুক্রের এই করেকটি পর্য্যায়। চুক্র—অত্যস্ত অম-

রসর্ক, উষ্ণবীর্য্য, অগ্নিসন্দীপক, অভিশর পাচক, সারক এবং ইহা শূল, গুল্ম, বিবন্ধ, আমদোব, বারু, কফ, বমি, তৃষ্ণা, মুখের বিরস্তা, হলোগ এবং অগ্নিমান্যা বিনাশক।

ইতি হরীতক্যাদিবর্গঃ।

অথ কপ্রাদিবর্গঃ।

অথ কর্পুরঃ।

পুংসি ক্লীবে চ কপুরঃ সিতাত্রো হিমবালুক:।
ঘনসারশ্চক্রসংজ্ঞো হিমনামাপি স স্মৃতঃ ॥
কপুরঃ শীতনো ব্যাশ্চকুযো লেখনো লঘুঃ।
ফ্রান্ডিম ধুরন্তিকঃ কফ পিত্রবিষাপহ: ॥
দাহতৃষ্ণান্ডবৈর্গ্ত-মেদোদৌর্গদ্ধানাশন:।
আক্রেপশননো নিজাজননো ঘর্মবর্দ্ধন: ॥
বেদনাহারকঃ কাম-শান্তিরুক্তুক্মেহহৃৎ ॥
কপুরো বিবিধ: প্রোক্তঃ পকাপকপ্রভেদত:।
পকাৎ কপুরতঃ পাত্তরস্ক্

কর্পুর শব্দ প্ংলিকে ও ক্লীবলিকে ব্যবহৃত হইরা থাকে। সিতাত্র, হিমবালুক ও ঘনসার এই গুলি এবং চক্রবাচক ও হিমবালুক ও ঘনসার এই গুলি এবং চক্রবাচক ও হিমবালক সমস্ত শব্দ কর্পুরের পর্য্যার। কর্পুর—শীতবীর্য্য, গুক্রবর্দ্ধক, চক্লুর হিতকারক, লেখনগুণবিশিষ্ট, লঘু, স্বগন্ধি, মধুর-তিক্ত-রস, নিদ্রাজনক, ঘম্মবর্দ্ধক, কামশাস্তিকারক এবং ইহা কফ, ।পত্ত, বিষ, দাহ, ।পপাসা, মুখের বিরস্তা, মেদোদোষ, হুগদ্ধ, আক্ষেপ, বেদনা ও গুক্রমেহনাশক। কর্পুর আক্ষেপ, পক্ ও অপক্লভদে হুই প্রকার। তন্মধ্যে পক্ক কর্পুর অপেকা অপক্ক কর্পুর অধিক গুণাবিশিষ্ট।

অথ চীনাক-কর্পুরঃ।

চীনাকসংজ্ঞঃ কপুরঃ কক্ষরকরঃ স্মৃতঃ। কুঠকভূবমিহরতথা তিক্তরসন্চ সঃ॥

চীনাক নামক কর্পুর কফনাশক, ভিজ্ঞ-বস এবং ইহা কুষ্ঠ, কণ্ডু ও বমি নাশক।

অথ কন্ত্রী।

মুগনাভিমু গমদ: কথিতন্ত সহপ্রভিং।
কন্ত, রিকা চ কন্তুরী বেধমুখ্যা:চ সা স্মৃতা ॥
কামরপোন্ধবা কুঞা নৈপালী নীলবর্ণযুক্।
কামার কপিলছোরা কন্তুরী ত্রিবিধা স্থতা ॥
কামরপোন্ধবা শ্রেষ্ঠা নৈপালী:মধ্যমা ভবেং।
কামারদেশসভ্তা কন্ত্রী হুধমা মতা ॥
কন্ত, রিকা কটুভিন্তা কারোন্ধা শুক্রলা শুক্র:।
কন্তবাতবিষ্ট ক্লি-নীতদেশিক্যদোষ্ঠং ॥
আক্লেপহর্শী স্বেদ-কনন: কামদীপন:।
হিকালো মুত্রলো বলা: কিঞ্জিদকর: স্তঃ ॥

মৃগনাভি, মৃগমদ, সহস্রভিৎ, কন্তুরিকা, কন্তুরী ও বেধম্থা এই কয়েকটি কন্তুরীর প্রাসদ্ধ নাম। কামরূপী, নৈপালী এবং কাশ্মারী ভেদে কন্তুরী ভিন প্রকার। তন্মধ্যে কামরূপী কন্তুরী কৃষ্ণবর্ণ, নৈপালী নীলবর্ণ, এবং কাশ্মীরী কন্তুরী কপিলবর্ণ। যে সকল কন্তুরী কামরূপে জন্ম, তাহারাই শ্রেট। নেপাল প্রদেশে যাহা উৎপন্ন হন, তাহা মধ্যন এবং কাশ্মীন দেশে যাহা জন্মে তাহা নিক্ষা। কন্তুরী—কটু-তিক্ত-রম, কার্মুক্ত, উষ্ণবিধ্যি, শুক্তবর্দ্ধক, গুরু এবং ইহা কফ, বায়, বিষদোষ, বিমি, শীত, তুর্গক ও শোষরোগ নাশক। অধিকন্ত ইহা আক্ষেপনাশক, স্বেজনক, কামোদ্দীপক, হিক্কানিবারক, মৃত্রপ্রবর্ত্তক, বল্লারক ও কিঞ্জিং মানক।

অথ লতাকস্ত, রিকা।

লভাকত, নিকা তিতা ধ.ৰী বৃষ্যা হিমা লযু:। চকুষ্যা ছেদনী লেখ-ভূঞ্বিভাগভানগছৎ।

লভাকত,রিকা—ভিক্ত-মধুর-রগ শুক্ত-বর্দ্ধক, শীতবীর্যা, লগু, চক্ষুর হিত্তধাবক, ছেদক, শ্লেমন্ন, পিপাসানাশক এবং বন্তিগত-রোগ ও মুখনোগ নাশক।

व्यथ शहानी।

গল্পমার্জ্ঞারবীকস্ত বি্যাকৃৎ বফ্টাইছং। কণ্ডুকুষ্ঠহরং নেত্রাং সুধ্যা পেনগ্রন্থ ॥

গ্রুগোকুল বাজ।

শট্টাশা—বার্যাবদ্ধক, চফুর হিত্তকাবক।
 স্থান্ধি এবং ইছা কফ বারু কণ্ট কুট বন্ধ ও
শরীরের তুর্গন্ধনাশক।

অথ চন্দ্ৰম্ :

শ্রীপঞ্জ চন্দান না স্ত্রী ভদ্রশ্বী জিলপুর্ণিকঃ।
গন্ধানো মলয়জন্ত বা চল্লফারিক সংলা
কাদে চিক্তাং করে গাঁতং ছেদে রক্তাং তদে। সিতন্।
গ্রান্থকোটরসংযুক্তং চন্দানং লোক্ষ্মান্তর ॥
চন্দানং শাঁতধাং রক্তাং তিক্সাহলাদানং লাঘু।
শ্রমশোববিষ্যান্তর ত্বাংপিতারাবাংকুর ॥

চন্দন শবা ুংলেঙ্গে ও নপুংসক লিঞ্চে ব্যবহাত হয়। শ্রীখণ্ড, চন্দন, ভদ্রশী, তৈল-পর্ণিক, গন্ধসার, নগমজ ও চন্দ্রহাতি এই করেকটি চন্দনের প্রসিদ্ধ নাম। বে চন্দনের আঝাদ ভিক্ত কম পীতর্বর্ণ, যাহা ছেদন কবিলে তেবর্গ ও উপরিভাগ খেতবর্ণ এবং প্রস্থিত বেটিটা সংমৃক্ত, সেই চন্দন উৎক্ষয়। চন্দন—শতব্যায় ক্ষ্ণ, ভিক্তরস, আফ্লাদ-জনক, লগু এবং ইহা শ্রাস্তি শোষ বিষ মেলা ভৃষ্ণ।পত রক্তনেষ ও পাই বিনাশক।

অথ পীতচন্দন্ম।

কারীয়কস্ত ক'লীয়ং পীতাভং হরিচেলনম্। হরি প্রয়ং কালসারং তথা কালামুসার্য্তম্। কালীয়কং রক্তগুণং বিশেষ**ায়াসনাশন**ম॥

কালীয়ক, কালীয়, পীতাভ, হরিচন্দন, হরিপ্রিয়, কালসার ও কালামুসার্থ্যক, এই গুল পীতচন্দনে। প্রসিদ্ধ নাম । পীতচন্দন হক্তচন্দন ভূথ, গুণনায়ক, বিশেষতং ব্যক্ত-(মেচেড, সংশ্রু।

অথ রত্ত চন্দন্য।

রভাগনমালোতং রভাকং ক্ষচদনম্। তিনপূর্বং রক্তনামে তথ প্রালক্ষাং ঋথম্॥ রভং শাতং ওর আরু চছনিত্তাপ্রশিক্তথং। তিতং নে বৃধ্যং ক্ষাত্রগ্রিষাপ্রম্॥

ভতন্দন, হভাঙ্গ, ক্ষুদুচন্দন, তিলপর্ণ, বতন্দান ও এবালফল, এই কয়েকটি রক্ত-চন্দনের প্রাথিই নাম। রক্তচন্দন—শীতবীধ্য, ওরু, তিজ-মধুর-রস, চক্ষুর হিতকর, ওজ-বর্দ্ধক এবং ইছা, নমি, তৃষ্ণা, রক্তপিত্ত, জর, এণ ও নিধ নাধক।

অধ পত্ৰস্ম।

পতকং রক্তমার্থ প্রকং রঞ্জনং তথা।
পঠরঞ্জকম্বাটিং পত্রক কুচন্দনম্॥
পতকং মপুবং শতং পিতলেগুরণাব্রুং।
হরিচন্দন্দের্থ কিংশাধাদাহনাশনম্॥
চন্দনানি তু সর্বাণি সদৃশানি রসাদিভিঃ।
গন্দেন তু বিশেষাহৃতি পূর্বাং শ্রেষ্টহুমো ওবাং॥

वकर कार्रे।

প্রশ্ন বন্তমান, প্রশ্ন ন্থন, পট্রপ্রক, প্রায় কুচন্দন, এইগুলি ,বিক্মের প্রায়। বক্ম -- মধ্বন্স, নাত্নীয়, পিত ,প্রা বন্ ভারতমাশক; ইহা ত্রিচন্দ্রের ভূত। গুল-ক্রিক, বিশেষ্ড, নাত্নশ্রক।

সন্প্ৰাকৃতি চলাকেই ব্যালিতি ভুলা, কেবন গানা বিভিন্ন ইংগালের মধ্যক্তি পূদ্দ পুদ্ধতি চলান ভাণাতে ভাষে।

অথাগুরু।

অন্তক প্রবরং লোভ বাজাকং যোগজং তথা।
বংশিকং কিনিচাং বালি কিনিজগ্ননায়কন ॥
অন্তর্নকং করু হচাং তিজং তীক্ষণ পিতান।
লঘু কর্ণাক্ষিয়োগল্প শীতবাতকক্ষপ্রবুধ ॥
কৃষণ শুণাধিকং তিং তৃ বৌহ্বদ্বাবি নাজতি।
অন্তর্কপ্রতবং ক্ষোভ্রসনা প্রতা।

অগুরু, প্রবণ, লোহ, বাছাই, যোগজন বংশিক, ক্রিমিজ, ক্রিমিজন ও জনাবিতি, এই ছাল অগুকা নামান্তা। অগুক— ট্যান বার্যা, কেটু-ভিন্তানক, চাঞা ছিত্কাশক, চাঞা, পোরবন্ধক, লাগু এবং টাই: ক্লানোগা, চলাবোগা, লাভ বার ও কন নাশক। ক্রান অগুকাশ অনিক গুলবিশিন্তা, লাভ লা কেলিলা দিলে লোহের ভারে মন্ত্রইয়া যার। অগুরু ইইতে উৎপন্ন সেইও ক্রম্ভ অগুরুর ভার গুলবিশিন্তা।

অথ দেবদার ।

দেবদাক খাতং দার ভ্রদার্বিক্রদার চ।
নন্তদার ফ্রিকিনং কিলিমং শ্রত্রহঃ ॥
দেবদার লথু রিঞ্চ ভিত্রোঞ্চ কটুগাকি চ।
বিবন্ধাশ্বানশোধান-তন্ত্রাহিকাজরাগ্রনিৎ।
প্রমেহপীনসংক্র্যা-কাসকভ্রদ্যীরসূৎ ॥

দেবদার, দারু, ভদ্রনারু, ইন্দ্রদারু, মস্ত-দারু, ক্রাকিলিম, কিলিম ও হ্রান্ত্রুন্থ, এইগুলি দেবদারুর পর্যায়। দেবদারু—লঘু, স্লিগ্ধ, ভিক্ত, উষ্ণবীর্য্য, কট্রপাক এবং ইছা বিবন্ধ, ভাষান শোধ, আমদোষ, তন্ত্ৰ; হিকা, জব, ভালোষ, প্ৰনেহ, পীনস, শ্লোষা, কাস, কণ্ডুও নায়ু নাই কৰে।

অথ সরলঃ।

সন্ত্র পী চরকা স্থাং তথা প্রস্তিদাককা। সংক্রা মধ্যজ্ঞিক টুপকৈরমো লগুঃ । বিধ্যাক্ষা কর্ণকঠান্দি-রোগরকোহরঃ স্মৃত্য । কড়ানিলকেলেগ্ড-কাসমচ্চ বিশাসকঃ ॥

সরলকার্ছ।

স্বলা পাত্রক ও স্বভিনার, এই ক্ষেত্র স্বলাক দি স্বলাক কৈ প্রসিদ্ধ নাম। স্বলাক কিছে নাম। স্বলাক কিছে নাম কিছে কিছিল কিছে কিছি কিছিল কিছিল

গণ ৩গরম।

বালভ্যানা স্থর বুলি শ্যুষান্তম্। ধানাবিওত্থবং দওত্তী চ্বতিশ্যা ত্যাধ্যন্তম্ভ ব্যাত্তি স্থিকং লগুক্তম। বিষ্ণাসাধ্যান্ধ-রোগদোষভ্যাপ্রমুখ

তগ্রপাত্ক।।

তগরপাত্মকা ত্রই প্রকার। এক প্রকারের প্রধান —কালাস্থার্মন, তগর, কুটিল, নঘুর ও নছ। অপর প্রকারের পর্যায়—পিশুতগর, দণ্ডহন্তা ও বহিণ। এই উভর প্রকার তগরই উন্ধরীয়া, মধুররস, স্লিগ্ধ, লঘু এবং ইহা বিষ, অপস্থার, শুল, অক্ষিরোগ ও ত্রিদোয়নাশক।

অথ পদ্মকম্।

পদ্মনং পদ্মগনি স্থাৎ তথা পদ্মাহ্মন্তম্।
পলকং তুবরং তিজং শীতলং বাতলং লঘু ।
বীদর্পদাহবিন্দোট-কুঠনেমাপ্রপিন্তমুৎ।
গর্ভদংস্থাপনং স্বচাং বমিত্রগত্রাপ্রপুৎ॥

अमाकाई।

পদ্মক ও প্রাথকি এবং পদ্মবাটক শব্দ-এইগুলি প্রাকাঠেব নামান্তর। প্রাকৃতি— ক্যায়-ভিক্ত-রম, নীত্রীর্গা, বায়ব্দ্ধক, এথু, গভ্নশুস্থাপক ও ক্রচিকাবক এবং ইছা বিস্প, দাহ, বিক্ষেটি, কুন্নী, কন্দা, রক্তপিতি, ব্যি, রব্দ ভাপপাস, নাশক।

অথ গুণ্ওলুঃ।

ওগ্ওল্দে বিধৃপশত ভটায়েং কৌশিকং প্রা।
ান্তাল্থাকং জাবে মহিদক্ষে পালহয় ।
মহিদক্ষো হলানালঃ কুমৃদ্য পল ইত্যাপ।
হিষ্ণ্যা: পঞ্চমা জেয়ে। গুণ্ডলোঃ পঞ্চ জতায়ঃ ॥
ভূজাঞ্জনসবর্গন্ত মহিবাক ইতি স্মৃতঃ।
মহানালন্ত বিজ্ঞেয়ঃ স্থনাসমলক্ষণঃ॥
কুমুদ্য কুম্দাভঃ ভ্রাৎ পল্লো মাণিকাস্ত্রিভঃ।
হির্ণ্যাপান্ত হেমাভঃ পঞ্চাবাং লিক্সীরিতম্॥

গুণ গুলু, দেবপুপ, জটার্, কৌশিক, পুর, কুছ, উলুগল, মহিবাক্ষ ও পলঙ্কন, এই কয়েকটি গুণ গুলুব পর্যায়। ইহা পঞ্চ প্রকাব, য়য়া—মহিবাক্ষ, মহানাল, স্মুদ্দ, পদা ও হিবলা। তম্মানা মহিবাক্ষ গুণ গুলু বনা ও অঞ্জনসদৃশ বর্ণ, মহানাল গুণ গুলুব নামাত্ত্রক্ষ লক্ষণ অর্থাং ইহা অত্যন্ত নীমাবর্ণ, কুমুদাধ্য গুণ গুলু কুমুদ্দের ত্যায় আভাবিশিষ্ট, পদ্মজাতীয় গুণ গুলু মাণিকাত্ল্য আভাবৃত্তি এবং হিরণাাধ্য গুণ গুলু ম্বর্ণ সদৃশ বর্ণবিশিষ্ট; পঞ্চ প্রকার গুণ গুলুর এই পঞ্চপ্রকার লক্ষণ ক্ষিত হইল।

মহিবাকো মহানীলো গজেল্রাণাং হিতাবৃত্ত। হয়ানাং কুমুদঃ পল্লঃ স্বস্তারোগ্যকরে) পানী ॥ বিশেষেণ মনুষ্যাণাং ক্রকঃ পরিকীতিতঃ। ক্রাচিম্নিংগক্ষণ্ড মতঃ কৈন্চিম্নগ্রম্পি ॥

মহিষাক ও মহানীল, এই তুই জাতি ও প্রে হ'ড়ে পকে হি কুনক। অর্থদিগের পক্ষে কুম্দ ও পদ্ম এই তুই জাতি মঙ্গলকর ও আবোগ্যজনক এবং কনক (হিলগাখ্য)

ওগ্ওলু মন্ব্যগদের পক্ষে বিশেষ হিতকারক; কথ্য কথ্য মহিষাক্ষ গুগ্ওলুও মন্ত্রের হিতকালী ইয়াঃ

ন্ত্রগানিশদন্তিকো নার্যোক্ষ পিত্রকা সরঃ।
করার কট্টকা পাকে কট্ট কলো লবুং পরা।
ভাগদানস্প্রদান হক্ষা স্বরো রসায়নঃ।
দীপনং পিছিলো বল্যা কফবা তরণাপটীঃ।
কেনোমহাখানাতাংক রেলকুঠামমার হান্।
পিড়কাপ্রন্থিনাকাশো-গভনালাকিমীন করেং।
নাপুর্যাছেনাম্বাহং কষায়ন্ত্রাক পিত্রা।
তিন্তরাৎ কফ্রিং তেন ভগ্তেপুরু সর্বলোবনা।
ম নবো বংহাগো বৃষাং পুরাণস্বতিলেপনং।
করার কাক্ষান্ত্রাণ প্রাণস্কতিলেপনং।
করার কাক্ষান্ত্রাণ প্রাণস্কতিলেপনং।
করার কাক্ষান্ত্রাণ প্রাণস্কতিলেপনং।
করার কাক্ষান্ত্রাণ প্রাণস্কতিলেপনং।
করার কাক্ষান্ত্রাণ প্রাণস্কতিলেও।
ক্রেমা ভর্মিককলেতা ভ্রক্রান্ত্রান্ত্রিভিত্র।
ক্রেমা তীক্ষমজীবৃধি বানায়ং শ্রমমাতপম্।
স্তাং বাবং ভ্রেকং সমাগ্রণাপী পুরসেবকঃ॥

গুগ্গুলু—বিশাদ, তিজ্ঞ-কটু-ক্ষায়-রস, উষ্ণবীধা, পিত্তবর্দ্ধক, সারক, কটুবিপাক, কৃষ্ণ, অত্যস্ত লথু, ভগ্গসন্ধানকারক, গুক্রবর্দ্ধক, স্ক্রমেতোগামী, স্বরপ্রসাদক, রসায়ন, অগ্নিদীপক পিচ্ছিল, বলকারক এবং ইহা কফ বাঢ়, তথ অগচী, মেদোদোষ, প্রমেহ, অশ্বর্দ্ধী, বাত্তরোগ্য ক্লেদ, কুঠ, আমবাত, পিড্কা, গ্রন্থি, শোগ অর্শঃ, গপ্তমালা ও ক্রিমিবনাশক।

গুগ্গুলু মধুরতা দারা বায় নই করে, ক্ষায় রস দারা পিত্ত নই করে এবং তিব্দ রস দারা কক নই করে। স্বতরাং গুগগুলু তিদোষ-নাশক্। ন্তন গুগ্গুলু—মাংসবর্দ্ধক ও গুক্ত-জনক। প্রাতন গুগ্গুলু—অত্যন্ত লেখন-গুণযুক্ত।

নূতন গুগ গুলু দ্বিশ্ব, স্ববৰ্ণ বৰ্ণ, প্ৰকলম্ফল-নদৃশ, স্থানি ও পিচ্ছিল এবং প্ৰরাতন গুগ গুলু গুল, তুর্গন্ধবৃক্ত, বিক্লুত্বর্ণ ও বীধ্যবিহীন।

নে বাজি গুগগুলু সেবনে ফল প্রার্থনা করেন, তিনি অমুদ্রবা, তীক্ষদ্রবা, অজীর্ণ ভোজন (বা অপক দ্রবা জন), মৈণুন, পরিশ্রম রৌজ, মন্ত ও ক্রোধ সমাক্রপে পরিত্যাগ করিবেন।

অথ সরলনির্য্যাসঃ।

শ্রানাসঃ সরলপ্রাবঃ শ্রীবেষ্টো সৃক্ষধূপকঃ। শ্রীনাসো মধুরভিক্তঃ সিম্বোব্দস্তবরঃ সর:॥ পিত্তনো বাতমূর্দ্ধাব্দি-স্বররোগকফাপহ:। রক্ষোত্মঃ স্বেদদৌর্গকা-যুককভূরণপ্রণুৎ॥

তার্পিণত্তিল।

শীবাস, সরলস্থাব, শীবেষ্ট ও রক্ষর্পক, এই করেকটি সরলবৃক্ষরসেব (তাপিণতৈবের) নামান্তর। তাপিণ—মধুর-তিক্ত-ক্ষায় বস, রিগ্ধ, উষ্ণবীর্ঘ্য, সারক, পিতৃবন্ধক, বক্ষোয়, এবং বার্রোগ, শিরোরোগ, চক্ষুরোগ, স্বব-তেন, কফ, মন্ম, তর্গদ, যুক (উকুলাদি ক্রীট), কড় ও বেগনাশক।

অথ রালঃ।

বালক শাস্ত্রিকাদেতথা সঞ্জন সং ।
নেবগুপো বক্ষপুপতথা সক্রেদণ্ড সং ।
নালো হিমো গুলুক্তিক, ক্যানো গ্রাহকে। ব্রেং।
নোবাপ্রস্থোন্স্পি-অর্ডণ্ডিপাদিকা।
গ্রহুত্রান্ত্রিক্যা শ্রী-শূলা হাসার্থাশ্য

. ধূনা।

রাল, শালনির্যাস, সজ্জরস, দেবধূপ, ধক্ষধূপ ও সর্ববদ, এইগুলি ধূনান নামান্তর। ধূনা—শাতবীর্যা, গুরু, তিন্তু-ক্ষায় রস, ধারক এবং ইহা ধাতাদি দোধএয় বক্তকৃষ্টি, স্বেদ, বীস্প অব, রণ, বিপাদিকা, প্রহদোষ, ভগ্নবোগ, অধিদক্ষক্ত, অলক্ষী, শ্ল ও অতীসার নাশক।

वाश कुन्मूत्रः।

(হগনিজনং পলকীনিয়াসঃ)।
কুলুরজ মুকুলঃ স্থাৎ হগনিং কুল ইংগি।
কুলুরুর বুরজিক্তাল্বচাঃ কর্ত্রেৎ।
অরজেনহালকী-মুখরোগকফানিসান

(কুন্দুর স্থগন্ধি জব্যবিশেষ, ইছ: শল্পনী-নির্যাস)। কুন্দুরু, মুকুনা, স্থগন্ধ ও কুনা, এই করেকটি কুন্দুরুর পর্যায়। কুন্দুরু— মধুর-ভিজ্ঞ-কটু-রস, তীক্ষ্ণ, চন্দ্রের হিত্তকারক এবং ইহা জর, ঘন্ম, গ্রহদোষ, অলক্ষ্মী, ংম্থারোগ, কফ ও বায় নাশক।

যথ শিহলকঃ।

শিংসকস্ত তুরুদ্ধ শুন্বতে। যবনদেশজঃ। কপিটেলঞ্চ সংখ্যাভজ্ঞা চ কপিনামকঃ। শিংসকঃ কটুকঃ স্বাহ্ন ফ্রিমোকঃ গুক্রকান্তিকুৎ। বুলাঃ কঠাঃ স্বেদকুণ্ঠ-জন্মাংগ্রহণ্পঞ্জ।

শ্রিনারস ম্বলনেশে উৎপন্ন হয়। এই নহতু ইহাকে কুক্স বলে। শ্রুলক, কাপ-তৈথা এবং কাপবাচক সমস্ত শুল শিলারদেব নাম। শিলাশে—কট্ট-মধুল বল, স্মিন্ধ, উষ্ণ-বীষা, শুক্রজনক, কান্তিব্দ্ধক, প্রস্তিকারক, কণ্ডশোবক এবং ইহ, ঘণ্ম, কুন্ন, ভাল, দাহ ও গ্রহদায় নাশক।

অথ জাতিকলন্।

জাতীকলং জাতীকোশং মালভাকলামতাপি। জাতীকলং রুদে তিব্রুং তীকোকং রোচনং লঘু। কটুকং দাপনং গ্রাহি স্বয়ং কেথানিলাব্রুম্। নিহন্তি মুখনৈবক্ত-মললৌকাকুমভাং। কিমিকাসক্মিখাস-শোষণীনসহাদকে।। ভাষকেলা।

গাতীকল, জাতিকোশ ও মালতাফল, এই করেকটি জাতীকলের পর্যায়। জায়কল—। তন্ত-কটু-রদ, তাড়, উফলীয়া, রাচকারক, লাড়, আয়ান দীপক, মলসংগ্রাহক, স্বরপ্রদাদক এবং হহ কফ বায়, মুখের বিবদতা, মলের দোর্গন্ধ ও কফবর্ণতা, ক্রিমি, কাদ, বাম, শ্বাদ, শ

অথ জাতীপত্ৰী।

জাতীক্ষক ত্বক্ প্রোক্তা জাতীপত্রী ভিষেধরৈ:। জাতীপত্রী লঘু: স্বাছ: কটুন্সা ক্লচিবর্ণকুৎ। কক্ষকাসবমিশাস-ভূকাক্রিমিবিবাপহা। কক্ষুবৈশক্ষজননী ভিক্তা দৌর্গন্ধাহারিশী।

জৈত্ৰী।

চিকিৎসকগণ জাতীফলের ত্বক্কে জাতী-পত্রী (জয়িত্রী) বলিয়া থাকেন। জৈত্রী—লঘু, তিজ্ঞ-মধুর-কটু-রস, উষ্ণবীর্ঘ্য, ক্লচিকারক, বর্ণপ্রসাদক, মুখ-বৈশপ্তকারক এবং ইহা কফ, কাস, বমি, শ্বাস, ভৃষ্ণা, ক্রিমি, বিষ ও দৌর্গন্ধা বিনাশক।

অথ লবঙ্গম।

লবলং দেবকুত্বনং শ্রীসংজঃ শ্রী প্রস্থানকণ্। লবলং কটুকং তিজ্ঞাং লয়ু নেত্রহিতং হিমন্। দীপানং পাচনং ফচাং কফ্পিক্রাপ্রনাশকুং। ভূকাং ছাদিং তথাগ্রানং শূলমাভ বিনাশকেং। কাসং খাসক হিকাক ক্যাং ক্পেয়তি এলক।

লবন্ধ, দেবকুসুম, জীসংজ্ঞ ও জীপ্রসনক.
এই কয়েকটি ধ্বন্ধের পর্যায়। লবন্ধকটু-ভিজ্ঞ-রম, ললু, চকুর হিতকর, শাহব্রা, ক্রিন দীপক, পাচক, ক্রিকাবক এবং ইহা
কফ, পিন্ত, বক্তদোষ, ভ্রম্ভা, বাম, উদ্বাধান, ব্র্যা, কাস, ধান, ব্রমা ও ক্র্যাবাগ আন্ত
বিনাশ করিয়া থাকে।

ञथ दुरेनवाः।

এলা স্থলা চাবৰলা সুখালা। নিব্নাটা চা ভাটেলা বৃহদেশ চাচলবালা চানিন্দী। । প্রজেলা কটুকা পাকে লনে চানলকুল্য। কাক্ষোলা ক্ষেপিও।এ-কভুৰ সভ্যাপহা। হ্যাসবিষ্যান্ত-শিরোকগ্রাকিশ্রামন্ত্র।

বড় এলাইচ।

এলা, সুনা, বচলা, পৃথ্বীকা, গ্লিপ্টা, ভট্রেলা, বৃহলেলা, চন্দ্রবালা ও নিষ্টি এই করেকটি বড় এলাইচের নাম। বড় এলাইচ— কটুরস, কটুবিপাক, অগ্নিবর্দ্ধক, লঘু, ক্লক, উষ্ণবীর্য্য এবং ইহা কফ, পিন্ত, রক্তদোব, কণ্ডু, শ্বাস, তৃষ্ণা, হাল্লাস, বিষদোব, বস্তিগত-রোগ, মুখলোগ, শিরোরোগ, বমি ও কাস নষ্ট করে।

व्यथ मृत्काला।

সংক্ষাপকুঞ্চিকা তৃথা কোরন্ধী জাবিড়ী ক্রটিঃ। এনা হক্ষা কফৰাদ-কাদার্শোমূত্রকুক্তহন্তং। রসে তু কটুকা শীতা লখুী বাতহরী মতা !!

ছোট এলাইচ।

ক্ষা উপকৃষ্ণিক:, হুখা কোরস্বী, জাবিড়ী ও জটি, এই কয়েকটি ছোট এলাইটেক প্রসিদ্ধ নাম। ছোট এলাইট—কফ, শ্বাস, কোম, হশঃ, মূত্রকুদ্ধু ও বায়ুনাশক। ইহা কটবন, শতবাম এবং অঘু।

অব জরপ্রিয়ম।

ক্ষরাপ্রায়ং বৃত্তক্তরং তথা ধুশননং মতন্। সেক্ষোৎসারণনায়েয়ং মূলকৃদ্ধিকরং তথা । উপস্থিকনেইব ভিক্ষেইং কুলাক্ষণন্। ব্যাহরদানমণীংসি কুক্তকেকাপি নিনাশরে ।।

কাবাব চিনি।

ত্তবৰ্ত্তিয় ও বৃত্তফল এই ছুইটি কাৰাবতেনৰ নামান্তৰ। ইহা বাতপ্ৰশাসক, কফ
তেনসানৰ আগ্ৰেয় ও মূত্ৰবৰ্ত্তক তবং ইহা
নাৰণ উপস্থিক মেহ, শুক্তমেহ, শেতপ্ৰৱ,
ভাশা ও মূত্ৰক্তজ্জ বিনাশক।

গ্ৰথ স্বক্পত্ৰয়।

কেল-এল বৰাঙ্গৰ ভাল্ভুঙ্গৰ চোচৰ ভৰোৰকট্ম।
গৈতা লখুকা কট্কৰ কাছ তিকঞ্চ বৃদ্ধকন্ম।
লিভাগৰ কফৰা এখা কভা মাঞ্চিনাশনম।
হাৰভিৱোগৰাতাৰ্শঃ-প্ৰিমিণীনসভাক্তৰ ।

তজ্।

ঘক্পত্র, বরাঙ্গ, ভূঙ্গ, চোচ, উংকট ও ঘচ এই করেকটি তজের নাম। ইহা লঘু, উষ্ণবীর্ঘ্য, কটু-মধুর-তিক্ত রস, রুক্ষ, পিত্ত-বর্দ্ধক এবং ইহা কফ, বায়ু, কছু, আসদোষ, অরুচি, হাজোগ, বভিঙ্গতরোগ, বাভঙ্গনিত অর্শং, ক্রিমি, পীনস ও শুক্রনাশক।

অথ স্বক্।

ত্ব ৰাষী তু গুড়ত্ব ভাৰ তথা দাকসিতা মতা। উত্তা দাকসিতা ৰাষ্ট ডিকা চানিলপিওছৰ। ক্ৰভিঃ গুলুলা বলা মুগুণোধত্যগিংগ।

माक्तिन।

ষ্ক্, স্বাধী, গুড়খন, গারাসতা, এই ক্ষেকটি দার্চিনির নামান্তর। দার্চিনি—
মধুর-ভিত্ত-রুস, বাজন, পিওনাশক, হুগ্রি,
শুক্রবর্দ্ধক, বলকারক এবং ইং৷ মুধ্ধোষ ও
ভ্যাবিনাশক।

অথ পত্ৰকম্।

পানং ভ্যালপত্রক চথা স্থাৎ প্রনামকম্। পত্রকং মধুরং কিধিতে ভাগ্রোকং পিচ্ছিলং লযু। নিংপ্তি কফবাতাশো-সঞ্চান্চিপানসান্।

(35,99)

পত্র ও তমাণপত্র এবং পত্রপর্যাক্তিক শক্তি তেজপত্রের পর্যাক্তি। ১৩জপত্র—কি ঞং মধু বিরুদ্ধ তীক্ষ, উষ্ণবীধা, পিচ্ছিল, লগু এবং ইহা কক্ষ, বায়, হার্লং, গল্লাস, হার্লংচ ও শীনস বিনাশক।

অথ, নাগকেশরঃ।

নাগপুষ্ণঃ স্মতো নাগং কেণরো নাগকেশরঃ।
চাম্পেরো নাগকিঞ্জকঃ কথিতঃ কাঞ্চনাহরঃ।
নাগপুষ্ণং করারোকং ক্লফং নদ্যানপাচন্দ্।
অরকভূত্রামের-চ্ছদ্দিহলাসনাশন্দ।
দৌর্গদ্যকুষ্ঠবীসর্প-ক্ষপিত্রবিবাপহ্য॥

নাগেশ্বর।

নাগপুষ্প, নাগ, কেশ্র, নাগকেশ্র, চাম্পের, নাগকিঞ্জন্ধ ও কাঞ্চনবাচক পদা নাগেশ্বরের প্যার। নাগেশ্বরপুষ্প—ক্ষায়রস, উদ্যবীর্ঘা, রুক্ষ, লঘু, আমপাচক এবং ইহা জ্বা, কছু, ত্যা, স্থেল, ব্যিন, জল্লাস, তুগ্রু, বীস্পা, কফ, পিও ও বিষনাশক।

অথ ভিজাতচাতুজ্ঞাতকে।

হাগলাপতকৈজলৈক্ষিত্ৰজান্ধিত জিলাতকম্। নাগকেশবদংৰুজং চাতুজ্জাতকমূচাতে , এছবং বোচনংকৃষ্ণং তীক্ষোকং মুগুলক্ষতং , বসু পিডাগ্রিকুদ্বগাং ক্ষুবাতবিয়াগুহুম ।

বিজাতক ও চাতুক্লিক।

ওড় থক্, এলাইচ ও তেজপাএ, এই তিনটি সন্তাগে একঅঞ্চিকাবলে হাহাকে জিছাতক বা ত্রিস্থানি কহে। এই জিছাতকের সহিত্ নাগকেশন সংখ্যা কালে ছাহাকে চাড়ু জ্যাতক বলা হায়। এই উভ্যইলাকে, লামু, পিয়া ব্যাক, উষ্ণবীয়া, মুখ্ছুৰ্গন্ধনাশক, লামু, পিয়া ব্যাক, মহিকাবক, বৰ্ণপ্ৰদাদক এবং কফ বায়ু ও বিষ্ণাশক।

অথ কুকুমম্।

বৃদ্ধং মুখেন রক্তং কাখারং পীতকং বরষ্।
সংক্ষাচং লিজনং গরং বাহলাকং শেলি তাভিন্দ্।
কাখারদেশকে কেত্রে কুপুনং যন্তবেদ্ধি ।
বুজাকেশরমারভং পরগনি ১ছজনম্ ।
বেজনকলনমারভং পরগনি ১ছজনম্ ।
কেতকালকায়ভা তর্মান প্রুন্দেশরম্ ।
কেতকালকায়ভা তর্মান প্রুন্দেশরম্ ।
কুপুনং পারসাকে ব্যাব্দি ক্রিকিন্
বিশ্বং কিন্তবিং ত্রেম্বং প্রভাকেশবেশ্ ।
বুজুমং কিন্তবং ব্রাম্বং বিশেক্ষ্রেশক্ষাভিং ।
তিক্তং বামহরং ব্রাহ বাস্কলোষ্ড্রাপ্রম্ ॥

क्षियन्द्रान् ।

কুৰুন, পুস্থা, রক্ত, কাশ্মার, পীতক, বব, সঙ্কোচ, পিশুন, নীর, বাহলীক এবং ন্যোগত

कुकुरमत श्रमाय। त्य कुकुम বাচক প্রদেশে জন্মে, তাহা ক্সাকেশর-কাশ্যীর বিশিষ্ট, বক্তবর্গ ও পদ্মগন্ধি; সেই **উ**रक्षे । य कुम् वास्तीक शामर करन তাহা পা ধরবর্ণ, কেতকীপম্পের স্থার গরস্ত ও স্থলকেশর-বিশিষ্ট, সেই কুষ্কুম মণ্ডা এবং পারস্থাদেশে যে কুল্কম উৎপর হয়, তাহা মধুব ত্যায় গন্ধসূক্ত, ঈষং পাণ্ণরবর্ণ ও স্থলকেশর-সংৰক্ত: ইহাট সকাপেক। নিক্ট। কুম্বন তিক্ত-কট্রস, প্লিগ্ন, বর্ণপ্রসাদক :54: শিরোরোগ, রণ, ক্রিমি, বগি. 7(5) নিচোষ নিবারক।

অথ গোলোচন

বেশবে মনা ভূ মঙ্গলা কলা কোনা চাবে জেন। গোলেছনা হিমা ভিতৰ বহু মঙ্গলকাইখন। বিশ্বাসন্ধান্তৰে আদ বভাৱ বজাৰাপছৰ।

্গালেচিনা, মঞ্চনা, বন্দা, গ্রানী ব ব্যাচনা, এই গ্রি গোরেচিনার প্রামক নাম। গোরোচনা - শুরামান, তিওলার ব্যাকরণ-ক্ষমা, মঞ্জার্মক, কান্তিবদ্ধক এবং ইং বিল, আলগ্রী, গ্রহদোষ, উল্লাদ, গ্রভাব, ক্ষত ও রক্তদোষ নিবারক।

অথ নথদ্বরম্।

নগং ব্যাল্ডনগং বাাল্লাব্ধণ হচ্চক্রকারকুন্ন নগং ব্যাল্ডনগং গোড়ব কেহচুবিনাসিনী।
নগ্ৰহণ প্রকল্পনা হাস্ত্রক্রচিত্র ।
ক্ষুক্ত প্রকল্প বিভিন্ন ক্ষুদ্র প্রব্যবিধাসহম।
আনক্ষামু স্টোচনাক্তর প্রবেবনাসহম।

नाम अन्यो ।

নগকে বাজনিক বালিপুর ও চক্রকারক এবং স্বেচন্দ্রক নথা, হয় ও ইট্রিলাসিনী বলো নথ ও নথা এই উভ্যন-ভাহদোষ, কক, বায়, রজদোস, এর, কুঠ, বন, বিষ, অধানী ও মুখে তুর্মনাশক, ন্মু, উন্ধ্রায়া, গুক্রবর্দ্ধক, বর্ণকাবক, মধুর-কট় রদ এবং কট্-বিপাক।

অথ বালকম্।

বালং ই'বেববাহটোলীচাং কেশাস্থনান চ। বালকং শীতলং রুক্ষং লঘু দীপ্নপাচনম্। গুলাকং শীতলং রুক্ষং লঘু দীপ্নপাচনম্।

বালা।

বাল, হুংনের, বহিষ্ঠ ও উদীচ্য এইগুলি এবং কেশ্বাচক ও অস্থ্ৰাচক শেন্ধ, বালাব নাম। বাল:—শিত্ৰীগা, কৃষ্ণ, লগু, অগ্নি প্ৰদীপক, পাচিক এবং ইষ্কা সন্তাস, অক্চি. বাসপ, সদ্যে, সাম্যানিক ও অতীসার্মাশক।

अभ यात्राभ

তাদ্বারণং বারেওক বারেজ ব্ছমূলকম্। বাবণং প্রান্ধ শীতং স্তম্ভনং লয়ু ভিক্তকম্। মধ্রং অরমূদ্বাতি-মলজিৎ কফ্পিত্সৎ। ভূগাপ্রিবিধাম্পনিক্তলাকরগাপ্তম।

(A6)

বীশে বাতেক, বীশ ও বছমুলক, এই করেকটি বাশেরে প্রসিদ্ধ নাম। বেশা—পাচক, শাতবীযা, লগু, স্তত্ত্বকারক, মধুর ও ভিজনস এবং ইহা বমন, হুর, মত্ততা, কফ, পিন্ত, স্থা, রক্ত, বিশ্ব, বীসপ্, মুত্রকুছু, দাহ ও বংনাশক।

অথোশীরম।

ব,রণস্থাত তু ২ন্তা শুক্তিশারং মনসঞ্চ হও। অনুধালক প্রবাধ সমস্থাকিকমি গ্রাপি। চলারং পাচনং শাতং শুস্তনং লঘু তিক্তকম্। মবুরং অরগ্যাতিক্সংযুক্ত কম্পিক্তকং। চুধ্বিবিশ্বনাস্পান্তাক্ত ক্রতাপ্রক্ষ্ম। বেশামূল।

বেণাৰ মূলকে উশার বলে। এল৮, অতুণাল, মেৰা ও সমগ্রিক, এই কয়েকটি উশবেধ নামান্তর। বেণান মূল—পাচক, শাংবীয়া, শুক্তনকানক, লগু, তিক্তনমুধুন-বদ গ্রহ হৈছি।, বাস, সত্ততা, কফ, পিড, ভূমণ, বভ্রদোষ, বিষদোষ, বীদর্প, দাত, মূলকুজু ও রণ নাশক।

অথ জটামাংসা।

এটানংসী উত্তজটা এটিলা চ তপশ্বিনা। মাংসী তিক্তা ক্ষায়া চ মেধ্যা ক'ন্তিবলপদা র ঝালা তিমা বিদোষাস্থ-লাংলাসপ্তিত্ত । লেগনাক্ষকত'ণ তত্তি অবং চল্লোম্ভলং গদম।

क्रहेश्यांश्मी।

জটানাংসা, ভূতজটা, জটিলা, তপ্রেনা ও মাংসী এই করেকটি জটানাংসীর পর্যায়। জটামাংসী—তিক্ত-মধুর-ক্ষায় রস, মেগ-জনক, বলবদ্ধক, কান্তিকারক, শীতবীর্ষ এবং ইহা ক্লিন্স, রক্তফুষ্টি, দাহ, বীস্পতি কুঠ-বোগ নিবারক। জটামাংসী গাতে লেপন ক্রিলে কক্ষতা, দ্বা ও চন্দ্রোগ বিনষ্ট হয়।

অথ শৈলেয়ন্।

শৈলেয়ন্ত শিলাপুশাং বৃদ্ধং করোত্মদায়াবম্। শেলেয়ং শিতলং শ্বতাং কফপিত্তংরং লতু। কঞুকুঠাশারীদাহ-বিবহাদ্ওদরক্তানং ॥

रेभटलग्न ।

শৈলেয়, শিলাপুষ্প, বৃদ্ধ ও কালামুসার্যকে, এই কয়েকটি শিলাপুষ্পের প্রসিদ্ধ নাম। শিলাপুষ্প—শাতবীয়া, ফার্ম্মার্থী, লঘু এবং ইহা কফ, পিত্ত, কণ্ডু, কুন্ঠ, অনুনী, দাহ, বিষদোষ এবং গুহুদেশ হইতে বক্তস্থাব নিবারণ করে।

অথ মুস্তকো নাগরমুস্তকশ্চ।

মৃত্তকং ন জিয়াং মৃত্তং ত্রিবু বারিদনাসকম্। কুক্লবিক্লক সংখ্যাতোহপরঃ ক্রোড়ঃ ক্সেরুকঃ॥ ভাগ্রাপ জনা চাতথা নাগ্রম্ভক: । প্রাং কটু হিনং গ্রান্তি ভিত্তং দৌপনগাচনম : ক্যান্ত ক্ষাপিত্রতে ভূড্ অগ্রান্তিসম্ভাত ॥ গ্রাণ্ডেশেশ যজোত মূজকং তৎ প্রশাস্তে । তথাকি মূমিভিত প্রোক্তং বরং নাগ্রমৃত্তক ॥

মৃতঃ ও নাগরমূতা।

মৃত্তক শক্ষ প্রংলিক্ষে ও নপংসকলিক্ষে এবং
মৃত্ত শক্ষ তিন লিক্ষেই বাবজ্য হয়। মেনপ্রায়েক শক্ষম্য এবং কক্ষাবিক মৃত্তকের
নানান্তা। লাগ্রিম্তাকে ক্রোড়, কসেকক,
ভদ্রমণ্ড, ওলা ও নাগ্রমণ্ডক ব্যে। মৃত্যা—
কট্-ভিক্তকেশার বস, শাভবীয়া, বাবক,
ম্মিন লিপক পাচক এবং কক, পিত্ত, বজলোগ, ভ্রাং জা, অক,চ ও ক্রেমি বিনাশক।
যে মৃত্তক অনুপ্রেশ জয়ে, তাহাই প্রশন্ত।
মন্প্রেশসমূত নাগ্রম্ভক তাহা অপেক্ষা
শ্রেষ্ঠ বলিয়া কথিত হইরাছে।

অথ শটী।

কর্রো বেধমুগান্ট দ্রানিড্য কল্পকঃ পটা। কর্চব্রো দাপনো কচাঃ কাইক্সিক্ত এব চ। এগজিঃ কট্পাকঃ জাং কুঠানোরণকামনুং। ডবেগ লবুহরেচছ্বানং ওলবা এককাকুমানু। শ্রগঙং গওমালামপটাং মুখ্যালিকং।

ì

কচ্চুর, বেরমুখা, জাবিড়, কল্লক ও শটা এই কয়েকটি শটাব পর্যার। শটা—অগ্নি-দীপক, রাচকাবক, কটু-তিক্ত নস, স্থান্তমুক্ত, কটুবিপাক, উষ্ণবীর্য্য, লবু এবং ইহা কুছ, সশঃ, রণ, কাস, খাস, গুলা, বায়ু, কফ ও ক্রিমি নাশক। ইহা ধারা গলগও, গওমালা, সপচা ও মুখেব জড়তা নিবারিত হয়।

অথ মুরা।

মুরা গন্ধকুটা দৈত্যা স্থরভিন্ধালপণিকা। মুরা তিক্তা হিমা স্বাধী লথ্বী পিক্তানিলাপহা। ক্ষরাস্থ্তুতরকোত্মী কুঠকাসবিনাশিনী॥

মুরামাংদী (একান্ধী)।

মুরা, গন্ধকৃটি, দৈতা।, সুরভি ও তাল-পণিকা, এই কয়েকটি মুনামাংসীন নাম। ইহা তিক্তমধুকালম, শীল্লীর্মা, লগু, নক্ষোয় এবং পিন্ত, বালু, ক্ষা, রক্তনোন, ভ্রাবেশ, কুড় ব কাসবোল নালুক।

অথ গ্রহণলাশী।

্ সুগন্ধিদ্রবাসিদং কাশ্মীনে প্রসিপ্তন্ ।

শূসা পলাশী বড় গ্রন্থা পুর তা গন্ধমূলিকা।

গান্ধারিকা গন্ধন্ধ্ব্যু পুথপলাশিক।

ভবেলগন্ধপলাশী তু কবারা গাহিনী লমুন।

ভিন্তা তীকাত কটুকানুকান্তমনন্তিনা।

শোধকাসরণবাস-শ্লসিধ্বাহাপ্তা।

धक्रवांगी।

গদ্ধপলানী কান্দ্রীনদেশক প্রথম দ্রবা বিশেষ। শসী, পলানী, বজ্ঞানা, প্রতা গদ্ধালিকা, গাদ্ধারিকা, গদ্ধবধু, বধু ও পুরুপলানিকা, এই কয়েকটি গদ্ধপলানীর পর্যায়। গদ্ধপলানী—ক্যায়-ভিক্ত-কটু-রম, ঘলসংগ্রাহক, লগু হাল্ল, সম্বান্ধ, শ্রাধ্য নোধক এবং ইহা শোগ, কাস, ব্যাধ্য,

অথ প্রিয়সুর্গন্ধপ্রিয়সুশ্চ।

প্রিয়ঙ্কু: ফলিনী কান্তা লগা চ মহিলাহয়।
গুলা গন্ধকলা জামা বিষক্দেনাস্থনাপ্রিমা।
প্রিয়ঙ্কু: শীতলা তিকা তুবরানিলাপিওকং :
রক্তাভিযোগদৌগনা-বেদদাইজ্বগণহা ।
ব্যাহিজান্তাভিমারশ্বী বজুজান্তানিনানিনা।
ক্রমন্ত বিষমোহশ্বী তহলগন্ধপ্রিয়ন্ত্বনা ।
ক্রমন্ত বিষমোহশ্বী তহলগন্ধপ্রিয়ন্ত্বনা ।
ক্রমন্ত বিষমোগ্রান্ত্বকং ক্রমাং শীতলং গুলা।
বিষয়াগ্রান্তব্বং সংগ্রাহি ক্রমপিত্রজিং ॥

প্রিয়পু ও গদ্ধ প্রিয়পু।

থেয়দু, ফলিনা, কাস্তা, লতা, গুজা, গন্ধকলা, আমা, বিশ্বক্সেনা ও অঙ্গনাপ্রিয়া এবং মহিলাবাচক শব্দ থিয়দুর নাম। প্রিয়দু— শাতবার্য্য, তিক্ত-ক্ষার-বৃদ্দ এবং বায়ু, পিন্ত, বজাদিকা, দৌগজা, স্বেদ, দাহ, জ্ব, ব্যন্ত, লাস্থ্য, গতিদাব, সংশ্ব জড়তা, গুরা, তৃষ্ণ, বিষদোষ ও মোই নালক। গলপ্রিষ্কৃত্ত উক্ত প্রকান জন্মতুর ক্রান্তনা প্রস্কৃত্ত ক্রান্তনা, রুক্ত, শিতবার্য্য, গুলা, বলবর্জক, বারক, বিরক্তনক, আধানকারক এবং বারক, বিরক্তনক।

অথ রেণুকা।

রেণুক, রাজপুত্রা চ নন্দিনী কপিলা দ্বিভা,। ভশ্মগদ্ধা পাঞ্পুত্রা পাতা কৌত্রা হরেণুকা ॥ রেণুকা কটকা গ'কে হিজামুগণ কটুল খুঃ। পিত্রলা দীপনী মেধাা পাচনী গর্ভপাতিনী। ন্দাসন'তবৈক্লবা-ভূটকঞুবিশ্বদাহন্ত্র।

রেণ্কা, নাজপুত্রী, নন্দিনী, কপিলা, খিজা, ভ্রগন্ধা, পাগুপুত্রী, কৌজী ও হরেণুকা, এই করেকটি রেণুকান পর্যার। রেণুকা—কটু-বিপাক, ভিত্ত-কটু-বল, অনুষ্ণ, লগু, পিজ-বছক, আন্তলাপক, নেনাজ্ঞনক, পাচন, গভ্রমাব এবং কক ও বায়ুব প্রকোপ নিবারক, ভ্রমা, কণ্ড, বিয় ও চাহ নাশক।

অথ গ্রন্থিপর্ণ ।

প্রস্থিপনং প্রস্থিক কাকপুশান্ত গুচ্ছকম্।
নালপুশাং স্থান্ধক ক্ষিতং তৈলপর্থকম্।
এত্তিপর্ণ তিভাতীকং কটুকং দীপানং লঘু।
কফব'তবিষ্যাদ-কঞুদোর্গনানান্।

গেটেলা।

গ্রন্থিপর্ণ, গ্রন্থিক, কাকপৃষ্প, গুচ্ছক, নীল-পুষ্প, স্থান্ধ ও তেলপর্ণক, এই কন্ধেকটি গেটেলার নাম। গ্রান্থপর্শ—তিক্ত-কটু-রদ, তাক্ষ, উষ্ণবীর্যা, অগ্নিনীপক, লমু এবং ইহা কফ, বার, বিষ, খাস, কণ্ধু ও তুর্গন্ধ নাশক।

অথ স্থোগেরকম্।

স্থোণেয়কং বহিবহং শুক্ববর্ধ কুরুরস্।
শীর্ণ রোমশুকঞাপি শুক্রপুপাং শুক্তদম্॥
স্থোণেয়কং কটু স্থাত্র তিক্তং রিশ্ধং ত্রিলোকত্বং।
মেধাশুক্রকরং ক্লচাং রাক্ষোন্থাং অরক্তন্তিব।
হাত্য কুঠাশ্রভুদ্দেহ্-নোর্গক্যতিলকালকান্॥

্হোনেয়ক গ্রহিপর্ণের ক্ষপন জাতি, ইহা কিঞ্চিং স্থানমূক্ত)। বহিবই, শুক্রর, কুরুর, নির্প, নোমগুরু, শুকপুষ্প ও শুক্তদ্ধ, এই কয়েকটি স্থোপ্যকেন প্রসিদ্ধ নাম। স্থোপ্যেক—কট্নারু—িত্ত-বন, মিন্ধ, ত্রিদোষ নাশক, মোরাজনক, শুক্রাক্ষক, কচিকারক ও প্রেছি, নাই, দিনির্দ্ধি, কুঠ, প্রক্রান, ভূষণ, নাই, দিনির্দ্ধি ও ভিল্লাক্য নাশক।

অংশ ভাইন্শ্স।

ভাজীনসূত্র পার চার বাত্রাগিবস্থা সংখ্যা হয় যু হয় । জালীব্য রাষ্ট্র নিজে বি গোলাব্যার সিলাবি । বিহুস্থার গোলা যা বৃহিত্যন পেরাজি বি

5 7 48 51

্নিনিং, পানার ও এরাপত্র, এইপ্রলি ভালাশপত্রের নামান্তর। নালাশপত্র—গন্ধ, ভালা, উহারীয়ে এবং ইহা পান, কান, কান, বান্ধ, অক্লাচ, গুলা, আন্দোর অন্ধিমান্তর জন্মকোর নাশক।

অথ ক্ষোলম্।

ককোনং কোলকং গোজং তথা কোষদনং স্বৃত্যু । ককোনং দলু ভীলোকং ভিত্ত হস্তাং বাচিপ্রাদ্য । আস্তাদৌর্গন্তানিকাধীয়ে গোলকাধীয়াবাকাহং ।

কাক্লা।

কছোল, কোলক ও কোষকল, এই কয়ে-কটি কাক্লার প্রাসিদ্ধ নাম। কছোল—লমু, তীক্ত্য, উষ্ণবীর্যা, তিজ্ঞাস, হাদয়গ্রাহী, কচিজনক, মুখ-ছর্গন্ধনিবানক এবং ইছা ছাদ্রোগ, কফ, বান্তবাগ ও অন্ধতা নষ্ট করে।

অথ গন্ধকোকিলা গন্ধমালতী চ।

ব্ৰিজোকা কক্ত্ৰৎ তিন্তা স্থানা গন্ধকোকিলা। গন্ধকোকিলয়া তুল্যা বিজ্ঞেয়া গন্ধমানতী॥

গদ্ধকোকিলা ও গদ্ধমালতী।

গন্ধকোকিলা—স্নিগ্ধ, উষ্ণবীৰ্য্য, ভিক্তবস, ককত্ব ও স্থাকি। গন্ধমালতীও গন্ধকোকিলার তুল্য গুণস্থভা।

অথ লামজ্জকম্।

লামজ্ঞকং ক্রনালং স্থাদম্পালং এবং এছু। ইন্তকাপথকং সেনাঃ নান্যঞ্জিদাইক্স্ ॥ নামজ্ঞকং হিমং ভিজং অনু দোষত্রয়াপ্রজিৎ। ধ্যামগ্রেন্ড্রু নাম্পিতাপ্রোগ্রুৎ॥

ल् गड्डक

লোমজ্ঞক উ-ারের প্রায় পীতবর্ণ এক-প্রকান হল)। প্রনাল, অমৃণাল, লব, লঘু, ইপ্তকাপথক, নেব্য, নলা ও অবদাহক, এই করেকটি লামজ্ঞকের নামান্তা। লামজ্ঞক— শাহবীয়া ভিক্তবাদ, লগু, 'নিলোধনাশক এবং ইহা রক্তালোক চপ্রবোধ, যাম্ম, মূত্রকুছু, লাহ ও রক্তাপিত্রনাধক।

অথ এনবালুকম্।

এনবালুকনৈনেয়ং হুগদ্ধি হরিবালুকম্। এববালুকনেলালু ক্লিথপাত্রমীরিতম্ ॥ এলালু কটুকং পাকে ক্ষায়ং ^{গা}তেবং লঘু। হস্তি কণ্ডুরণ্ডদ্দি-তৃট্কাসান্ধটিকজ্লঃ। বলাসনিবপিশ্রাপ্র-কুঠনুগদ্ফিমীন্ ॥

এলবালুক।

(এলবালুক কঙ্কোল সদৃশ ও কুড়ের স্থায় গন্ধবিশিন্ত।) এলবালুক, এলেয়, স্থান্ধি, হরি-বালুক, এঘবালুক, এলালু ও কপিথপত এই কয়েকটি এলবালুকের পর্যায়। এলবালুক— কটুবিপাক, ক্যায়রস, শীতবীর্যা ও লঘু। ইহা কণ্ড, ব্রণ, ব্যি, ভ্রমা, কাস, অক্লচি, ছদ্রোগ, কফ, বিষ, রক্তপিত, কুঠ, বহুমূত্র ও ক্রিমি নাশ করে।

অথ কৈবৰ্ত্তমুস্তকম্।

কুটন্নটং দাসপূরং বালেয়ং পরিপেলবম্। প্রবগোপ্রগোনর্দ-কৈবর্ত্যস্তকানি চ ॥ মুম্ভাবৎ পেনবপূটং শুক্রান্ডং স্থাবিত্রকম্। বিত্রকং হিমং তিক্তং কবায়ং কটু কান্তিদম্ ॥ কফপিন্তাপ্রবীসপ-কুঠকভূবিবপ্রপূৎ ॥

(ইয়ন্ত বিভুন্নকনামে। বৃক্ত ত্বক্ মুক্তাকৃতিঃ।)

কৈবৰ্ত্তমূতা।

কুটরট, দাসপূন, বালেয়, পরিপেলব, প্রব, গোপুর, গোনদ্ধ ও কেবর্জমৃত্তক, এই কয়েকটি উহার (কেওট মৃতার) প্রসিদ্ধ নাম। বিভূমক—
মৃত্তকসদৃশ কোমলাবরণ-বিশিষ্ট ও শুক্রবর্ণ।
ইহা—শীতবীর্ষা, তিব্ত-ক্যায়-কটু-রস, কান্তি-প্রদ এবং কদ, পিত্ত, রক্তগৃষ্টি, বিদর্প, কুই, কণ্ড ও বিষ প্রশমক।

অথ স্প্ৰকা

শ্পূৰ্বাস্থ্য, একানা দেবা মুক্তমালা এবা লাকু সন্দ্ৰান্ত, বধ্য কোটিবৰা লঙ্কাপ্ৰকেতালি । শুক্তম স্থামী হিমা কুলা হিন্তা নিখিলালে বকুই । কুটকভূবিবধেদ-সাহানী অৱব্যুক্তম ।

শ্পৃক্ক, অন্তন্ধ্, বান্ধানী, দেবী, মক্রমানা, লভা, লগু, সমুদ্রান্তা, বধু, কোটি, বনা ও লক্ক: পিকা, এই কয়েকটি পিড়িংশাকের প্রাসিদ্ধ নাম। পিড়িংশাক — নধুব-তিক্ত-রস. শীক্ত-বীর্যা, শুক্রবদ্ধক, ত্রিদোষনাশক এবং ইহা কুঠ, কড়, বিষ, ঘন্ম, দাহ, অন্তন্মী, হ্লব ও প্রক্তক্র ব্যাধি বিনাশক।

অথ পর্ণ টী।

পপটা রখনা কুখা জতুকা জননা জনী। জতুকুখণায়িদংশেনা জতুকজনবভিনা। পর্পটা তুবরা তিকা শিশিরা বর্ণকুলঘু:। বিষত্রণহরী কণুকফ্পিতাম্মকুষ্ঠমুৎ।

(পর্পটা একপ্রকার স্থান্ধদ্রব্য; ইহা উত্তর প্রদেশে জনো।) পর্পটা, রঞ্জনী, কৃষণা, জতুকা, জননী, জনী, জতুক্ষণা, অগ্নিদংস্পর্শা, জতুকাং ও চক্রবর্ত্তিনী, পর্পটার এই কয়েকটি নাম প্রসিদ্ধ। পর্পটা—ক্ষায়-ভিক্তরস, শীতবীর্যা, সৌন্দর্য্য-বর্দ্ধক, লঘু এবং ইহা বিষ, ত্রণ, ক গু, ক ফ, রক্ত পিত্ত ও কুঠবিনাশক।

অথ নলিকা।

নলিকা বিক্রমলতা কপোতচরণা নটা। ধমশুপ্রনকেশী চ নির্মাণা স্থাবিরা নলী। নলিকা শীতলা লঘ্টা চঙ্গুব্যা কফপিত্তক। কুক্তমান্ত্রবাতত্কাপ্রনাপ্রা।

নেলিকা এক প্রকার গন্ধদ্রবা; উত্তর-প্রদেশে প্রসিদ্ধ। ইহার আক্কৃতি প্রবালসন্দ্র)। নলিকা, বিদ্রুমলতা, কপোত্তরণা, নটা, ধমনী, অঞ্জনকেনা. নির্ম্বধা, স্থাধিরা ও নলী, এই কয়েকটি নলিকার (নালকে) নাম। নলিকা— নাত্রীর্যা, লগু, চক্ষুব হিত্তরর এবং ইহা কফ, পিত্র, মৃত্রকুদ্ধ, অন্যারী, বাস্থ, পিপাসা, রক্তদোষ, কুয়, কাছ ও জব বিনাশক।

অথ প্রপোগুরীকম্ ৷

প্রপোগুরীক পৌগুর্বাং চক্ষুবাং পৌগুরীয়কম্। পোগুণাং মধুরং ভিক্তং ক্ষামং গুজুলং হিম্মু। চক্ষুবাং মধুরং পাকে বর্ণাং পিত্তক্ষপ্রণ্থ।

প্রপৌগুরীক, পৌগুর্যা, চক্ষ্মা ও পৌগু-রীয়ক, এই কয়েকটি পুগুরীয়কের প্রসিদ্ধ নাম। পৃগুরীয়ক-মধুর-ভিক্ত-ক্ষায়-রস, শুক্রবদ্ধক, শাতবীর্যা, চক্ষ্ম হিতকারক, মধুর-বিপাক, বর্ণপ্রসাদক, পিতম্ব এবং কফহারক।

ইতি কপুরাদিবর্গঃ॥

অথ গুড়্চ্যাদিবর্গঃ।

অথ গুড়ুচী।

গুড়্চা মধুপণী জাদমূতাংম্তবলরী।

হিলা ছিল্লম্ব। ছিলোগুবা বংসাদনীতি ১ দ জীবন্ধী তদ্বিকা সোমা সোমবলী চ কুওলী।
চক্রমাদনী বাবিশল্যা চ রসায়নী।
চক্রমামা বয়ংছা চ মগুলী দেবনির্ফিতা ॥
গুড়্চী কট্কা তিকা সত্বপাকা রসায়নী।
সংগ্রাহিশী কবায়োকা লখ্নী বল্যাগ্রিদীপনী ॥
দোৰক্রমানভূড্ দাহ-মেদকোসাংক্ত পাভুতান্।
কামলাকুঠবাতাত্র-অর্ক্রিমিবমীন্ হরেও;
গ্রমেহ্বাসকাসাক্তিক ক্রাক্রেগবাত্রহুৎ॥

গুলুক ।

গুড়ুচী, মধুপণী, অমৃতা, অমৃতবন্ধনী, ছিলা ছিলকহা ছিলোছনা বংলাদনী, জীবস্তা, তদ্বিকা, সোনা সোনবন্ধী কুণ্ডলী, চক্র-লক্ষণিকা, বীবা, বিশলতে, বসায়নী, চক্রহাসা, ব্য়ংহা, মণ্ডলী ও দেব্দিব্যিতা, এই শুলি গুলক্ষেব প্রায়ে।

গুলঞ্চ—কটু-তিক্ত-ক্ষায়রস, মধুরবিপাক, রসায়ন, মলসংগ্রাহক, উষ্ণবীর্য্য, লযু, বলকর, অগ্নিদীপক এবং ইছা ত্রিদোষ, আম, তৃষ্ণা, দাহ, মেদ, কাস, পাগু, কামলা, কুন্ঠ, বাত-রক্ত, জ্বর, ক্রিমি, বমি, প্রমেহ, খাস, অর্শঃ, মুক্তকচ্ছু, বায়ু ও হুল্রোগ নাশক।

অথ তামূলম্।

তামূলবলী তামূলী নাগিনী নাগবলরী।
তামূলং বিশদং ক্ষতাং তীক্ষোকং তুবরং সরম্॥
বক্তং তিক্তং কটু ক্ষারং রক্তপিত্তকরং লঘু।
বল্যং প্রেমাক্তদৌর্গন্য-মলবাতশ্রমাপহ্ম॥

পান 1

তাম্লবন্নী, তাম্লী, নাগিনী ও নাগবল্লরী এই কয়েকটি তাম্লের নামান্তর। তাম্ল— বিশদগুলামুক্ত, ফুচিকারক, তীক্ষ, উষ্ণবীর্যা, ক্ষায়-ভিক্ত-কট্ট-রস, সারক, বশীকরপক্ষম, কারস্কুক, বক্তপিওজনক, লগু, বলকারক এবং ইহা কফ, মুগত্র্গর, মল, বায়ুও শ্রাস্থিনাশক।

অথ গান্তারী।

গান্তারী ভদপণী চ জ্ঞাপণী মনুপ্রিকা।
কান্মীরী কান্মরী হীরা কান্মনাঃ পীতরোহিণী ।
কান্মরী তুবরা ডিজা বিয়োকা মনুরা গুকা
কান্মরী তুবরা ডিজা বিয়োকা মনুরা গুকা
দীপনী পাচনী মেধা ভেনিনী অমশোবজিং।
দোবত্যামশুলাশো-বিষদাহজ্বরাপহা।
তৎকলং বৃংহণং সুমাং গুকা কেগুং রসামনম।
বা প্রিভ্যারন্ত-ক্রম্ভবিক্রং।
কান্তি পাকে ভিমা হিমা ভুববানা বিশ্বনিক্রং।
কান্তি পাকে ভিমা হিমা ভুববানা বিশ্বনিক্রং।
কান্তি পাকে ভিমা হিমা ভুববানা বিশ্বনিক্রং।

গামার।

ভদপনী জীপনী মধুপণিক, কামারী, কাশরী, হারা, কাশরা, হারা, কাশরা, পীতবাহিনী, রুষ্ণবস্তা, মধুবদা ও মহাকুস্থামকা এই কয়েকটি
গান্তারীর নামান্তর। গান্তারী—কষায়-ভিক্তমধুব-রদ, উষ্ণবীধা গুলু, অগ্নির দীপক,
পাচক, মেরাজনক, ভেদক এবং ইহা আন্তি,
শোষ, ত্রিদোষ, ভ্ষণ, আমদোষ, শূল, অশঃ,
বিষ, দাহ ও জরনাশক।

গান্তারীফল—পুষ্টিকারক, শুক্রবর্দ্ধক, শুরু, কেশের হিতকারক, রসায়ন, মধুর-বিপাক, শীতবীর্ঘা, স্লিগ্ধ, কষায়ান্ত্ররস, শোধনকারক এবং ইহা বায়ু, পিত্ত, পিপাসা, রক্তছ্টি, ক্ষয়, মৃত্যাবরোধ, দাহ, রক্তপিত্ত ও ক্ষত-বিনাশক।

অথ পাটলিঃ, ঘণ্টাপাটলিশ্চ।

পাটলিঃ পাটলামোঘা মধুদ্তী ফলেকহা। কৃষ্ণবৃত্তা কুবেরাক্ষী কালস্থাল্যলিবল্লভা ॥ তাত্রপূপী চ ক্ষিতাপরা স্থাৎ পাটলা সিতা।
মুক্কো মোক্ষকো ঘটাপাটলি: কাঠপাটলা ॥
পাটলা তুবরা ভিক্তানুকা দোৰত্ররাপহা।
অন্তচিষাসগোধাত্র-চহুর্দিহিকাভূবাহরী ॥
পূপাং ক্ষায়ং মধুরং হিমং ক্ষন্তং ককাত্রনুৎ।
পিতাভিসারকং কঠাং কলং হিকাত্রপিত্তকং ।
(কালছালীতাত্র কাচছালীতোকে)।

পারুল ও ঘণ্টাপারুল।
পাটলি, পাটলা, অমোঘা, মধুদূতী,
ফলেকুনা, কুফারন্তা, কুবেরাক্ষী, কালস্থালী বা
কাচস্থালী, অলিবল্পভা ও তাত্রপুষ্পী, এই
ক্ষেক্টী পার্নলের নামান্তর। অপর একজাতি
পারুল আছে, তাহা খেতবর্ণ। মুক্ষক, মোক্ষক,
ঘণ্টাপাটলি ও কান্তপাটলা উহাব পর্য্যায়।
পারুল—ক্ষায়-তিক্ত-রুস, অনুষ্ঠ, ত্রিনোম্বন্ন
এবং ইহা অক্সচি, খাস. খোথ, রক্তামুন্তি, ব্যি,
হিক্কা ও ভৃষ্ণা নাশক।

পার্যনের পুষ্প — ক্যাস-ম্বুর-রস, শাত-বীর্য্য, হনেরপ্রাহী এবং কফ রন্তদেশ্য পিত ও অতিসার নাশক এবং কণ্ডশোবক। পার্যনের কল—হিকা ও রক্তপিত্তনাশক।

অথাগ্রিমন্তঃ :

অগ্নিমন্তে জয়: স ক্ষাক্তেপ্নি প্ৰিকারিকা। জয়া ভয়ন্ত' ওকারা নাদেরা বৈএয়ন্তিকা। অগ্নিমন্ত: ময়পুত্রন্থায়োগ্য ক্ষাবাতসং। পাঞ্চুৎ কটুকন্তিভন্তবরে। মধুরোগ্রিদ: ।

গণিয়ারি।

অগ্নিমন্থ, জন্ম, জ্রীপর্ণী, গণিকানিক।, জন্মা, জন্মন্তী, তর্কারী, নাদেরী ও বৈজন্মন্তক। এই কন্দেকটি গণিয়ারির নামান্তর। গণি-ন্থারি—শোণন্ন, উষ্ণবীর্য্য, কটু-তিক্ত-ক্যান-মধুর-রস, অগ্নিবর্দ্ধক এবং ইহা কফ বায়ুও পাঞ্বাগ নিবারক।

অথ শ্যোনাকঃ।

ভোদাকঃ শোষণক ভান্নটকট্বস্টুক্ঃ। মঞ্কপৰ্ণপতোৰ্ণ-শুকনাসকুটন্নটাঃ । দীর্ঘন্তাহরলুশ্চাপি পৃথ্পিত্ব: কটন্তর: ।
ভোনাকো দীপন: পাকে কট্কস্তবরো হিম:।
গ্রাহী তিজোহনিলপ্রেম-পিত্তকাসপ্রণাশন: ।
টুন্টুক্ত ফলং বালং ব্লক্ষং বাতকফাপহ্ম।
হস্তাং ক্যায়মধ্রং রে'চনং প্রবু দীপনম্।
ভন্মার্শ-ক্রিমিছং প্রোচং ভক্ষ বাতপ্রকোপণম্।

শোনা ৷

শোনাক, শোষণ, নট, কট্বন্ধ, টুণ্ট্বুক, মন্থুকপর্গ, পত্রোর্গ, শুকনাস, কুটয়ট, দীর্ঘবৃস্ত, অরলু, পৃথ্শিষ ও কটন্তব এই কয়েকটি শোনা-পর্যায়ক শব্দ। শোনাক—অগ্নি-প্রদিশক, কটুবিপাক, কবায়-ভিক্ত-রস, শীত-বীর্ঘন, ধারক এবং বালু কফ পিত্ত ও কাস নাশুক।

শোনার অপক করা - রুপ্স, সাংগ্রা, কফ-ধারক, সমাজাহী, কমার-মধুনির, ফুচি-কারক, বসু, আন্ত্রান্ত্রিক এবং ইহা প্রবা, আশং ও ক্রিনি নার্ব। সান্ত্রিক্স - প্রক ও বাস্ত্রিক্স কর্মন।

অগ শালপণা।

শালপণী জিনা মৌন্যা : ৭পণা গান্তা ওহা। বিদ্যালিগলা দাযালা দ্যপত্রাংগুমতাপি ॥ শালিপণী গলজ্ঞদি-জনখানাতিদারজিৎ। শোবদোমত্রহলা বৃংহণ্যুকা হদায়নী॥ তিকা বিষহলা স্বাহ্য ক্ষতকাসক্রিমিপ্রণ্ড॥

नानशानी।

শালপণী, স্থিরা, সোম্যা, ত্রিপণী, পীবরী, গুইা, বিধারিগল্পা, দাঘালী, দীঘপতা ও অংশুমতা, এই করেকটি শালপাণীর পর্য্যায় শব্দ। শালপাণী—পৃষ্টিকারক, রসায়ন ও তিক্ত-মধুর-রস। ইহা দ্যীবিষ-সেবনজনিত দোষ, ব্যুম, জ্বল, ব্যুম, অত্যাসার, শোষ, তিদোৰ, বিষ, ক্ষত, কাস ও ত্রিমি নাশক।

অথ পুশ্নিপণী।

পৃথিপণী পৃথক্পণী চিত্রপণ্ডিব্ পণ্যপি। ক্রোষ্ট্,বিল্লা দিংহপ্চ্ছী কলসা ধাবনিগুঁহা ॥ পৃথিপণী তিদোষদ্বী বৃৰোক্ষা মধুরা সরা। হস্তি দাহজ্ঞরবাস-রক্তাতীসারতৃড্বমীঃ॥

চাকুলে ৷

পূলিপর্ণী, পৃথক্পূর্ণী, চিত্রপর্ণী, অভ্যি-পর্ণী, ক্রোষ্ট্রবিন্না, সিংহপুছনী, কলসী, ধাবনি, ও গুহা এই কয়েকটি চাকুলের প্রসিদ্ধ নাম। চাকুলে—ত্রিদোযনাশক, শুক্রবর্দ্ধক, উষ্ণবীর্যা, মধুররস, সারক এবং দাহ, জন, শ্বাস, রক্তাতীসার, তৃঞ্চা ও ব্যি নাশক।

অথ বৃহতী।

বার্জাকী কুজভাটাকো মধতা বৃষ্ঠী কুলী। হিঙ্কুলা বাস্ত্রিকা সিংহী মঙোটা জুজাধ্যিনী॥ বৃষ্ঠা প্রাধিনী ক্ষয়ে প্রচনী ক্ষরাভারত। কট্টিজাজাবৈরজভারতারেকাশিনী। ক্ষরা কুঠজারবাস শ্রকাশ বিজ্ঞান্ত্রিত।

বাত্তাকী, কুলু প্টাকা, মহতা, বৃহতা, কুলী, হিঙ্গুলা, নাট্রকা, দিংহাঁ, মহোটা ও ছপ্রধর্মিণা, এই করেকটা বৃহতীর প্যায়ে। বৃহতী—বারক, সদয়গ্রাহী, পাচক, কটু-তিক্তরদ, উষ্ণবীয়ে এবং ইহা কফ, বায়ু, মুখের বিরম্ভা, মল, অর্ক্চি, কুঠ, জন, শ্বাস, শুল, কাম ও জাগ্রনান্দ্র নাশক।

অথ কণ্টকারা।

কণ্টকরে। তু ছ-ম্পশা কুলা ব্যালা নিদিছিক।
কণ্টালিকা কণ্টাকিনা ধাননা বৃহতী তথা ॥
কুলারাং কুলভণ্টাকাং বৃহতীতি নিগন্ততে।
খেতা কুলা চন্দ্রহানা লক্ষণা ক্ষেত্রদূতিকা ॥
গঙ্কদা চন্দ্রভা চন্দ্রগা লক্ষণা ক্ষেত্রদূতিকা ॥
কণ্টকারা সরা তিন্তা কটুকা দাপনা লবুঃ ॥
কুক্ষোঞ্চা পাচনী কাস-খাসম্মরককানিলান্ ।
নিহন্তি পীনসং পাখ-গাড়াজিমিহলাময়ান্ ॥
তয়োঃ ফলং কটু রসে পাকে চ কটুকং ভবেং।
শুক্রন্ত রেচনং ভেদি তিন্তং পিভাগ্রিকুল্লবু ॥
হন্তাৎ কফমন্থৎকভ্—কাসমেদ্কিমিন্দ্ররান্ ।
তথ্ব প্রোভা সিতা কুলা বিশেবাদ গর্ভকারিনা ।
কণ্টকারী, ত্রুপশান, কুলা, ব্যালা, নিদি-

কণ্টকিনী,

ধাবনী

धिका, कछी निका,

বৃহতী, কণ্টকারীর এই করেকটি পর্যায়। বৃহতী ও কণ্টকারী এই উভয়ই বৃহতী-পদবাচা। খেত কণ্টকারীকে খেতা, কুলা, চন্দ্রহাসা, লক্ষণা ক্ষেত্রদৃতিকা, গর্ভদা, চন্দ্রহা, চন্দ্রপূপা ও প্রিয়ন্ধরী বলে। কণ্ট-কারী—সারক, তিন্তা-কটু-রস, অগ্নিপ্রশাসক, লঘু, কক্ষ, উষ্ণবাসা, পাচক এবং ইহা কাস, খাস, জর, কক্ষ, বায়, পানস, পার্ভশ্য, ক্রিমি, ও হাজোগ নিবারক।

রহতীয়নে ফল-কটু-তিন্ত-রস, কটু-বিপাক, গুজনাবক, ডেদক, পিতবর্দ্ধক, অগ্নি-কারক ও পুণ্, এবং ইছা কান্ত, বাগু, কণ্ণু, কাস, মেদ, জিমি ও জা মান্তা। ধ্রতকটকারীও উজরুপ ওণমুত, বিশেষত, ইহা গেইএদ।

অণ গোফুরঃ।

াৰ্পুৰ ক্ৰাক কৰি কাত হিন্দটো স্বাহ্নকটকঃ।
গোকটকো গোলুনাকা বন্দুদান ইতাপি।
গলস্বা খনাই ত তথা বাংকিল্লান্তিন ।
গোজুলা নতিল বাহ্বলচ্চ্ ব্তিনোধন ।
মধুরো দীপনো হয়: পুতিনাজানাই ।
প্রেৰাদ্ধনি ন বাহুক হাছেগেবাইছাং।

গোক্ষ্য, ফুবক, ত্রকটক, স্বাহ্রকটক, গোকটক, গোকটক, গোক্রক, বনশৃস্পটি, পলঙ্ক্ষা, ধদংখ্রাও ইক্ষ্যান্তন), এই কমেকটি গোক্ষ্রের পর্যায়। গোক্র—শতিবার্থা, মরুর রস, বলকারক, মুত্রাগ্র-শোক্ষা, গাইর দাপক, শুক্তবিদ্ধান্ত এবং ইং। অন্যন্ত্রী, প্রমেষ্ট্র, কাস, কাস, তাশ, মূত্রক্ষ্রু, হালোগ ও বায়্নাশক।

অথ জাবন্তা।

জাবপ্তা জাবনা জাবা জাবনীয়া মধুপ্রবা।
মঞ্জানামধেয়া চ শাক্তপ্রেচা প্রস্থিনী ॥
জাবপ্তা শাতনা অভ্যাপ্রিয়া পাব্তরাপ্রা।
রসায়না বলকরা চকুবাা প্রাহিনী লঘুঃ॥

क्रीवर्श, क्रीवर्नी, क्रीवा, क्रीवनीन्ना, मधू-व्याव, मन्नवान, भाकत्व्यक्षी ও পत्रस्निनी, এই কয়েকটি জীবন্তীর পর্য্যায়। জীবন্তী—শীত-বীর্য্য, মধুররস, স্লিগ্ধ, ত্রিদোষনাশক, রসায়ন, বলকারক, চকুর হিতকারক, ধারক এবং লঘু।

অথ মুকাপণী।

মূলগণণী কাকপণী স্থাপণ্যৱিক। সহ। ।
কাকমূলগা চ সা প্রোক্তা তথা মার্জারগন্ধিক। ॥
মূলগণণা হিমা স্কুকা তিকা বাজুন্চ শুকুরা।
চকুরা কতশোগন্ধী গ্রাহিণী জ্বদাকর্থ।
দোব্যরহরী লখী গ্রহণশোহতিসার্জিৎ।

মুগানী।

মৃদ্গপণী, কাকপণী, স্গ্পেণী, অল্পিকা, সহা, কাকম্বলা ও মার্ক্সারগদ্ধিকা, এই করেকটি মুগানীর প্রসিদ্ধ ন'ম। মুগানী— শীতবীর্ঘা, কৃক্ষ, তিক্ত-মধুর-রস, শুক্রবর্দক, চক্ষুর হিতকারক, গারক, লঘু এবং ইহা ক্ষত, শোথ, জর, দাহ, ত্রিদোষ, গ্রহণীরোগ, আর্শঃ ও অতীসার বিনাশক।

অথ মাষপণী।

মাৰপণী স্ব্যপণী কাৰোজী হয়পুচ্ছিক পাণ্ডুলে মিলপণী চ কৃষ্বস্তা মহাসহা। মাৰপণী হিমা তিক্তা কক্ষা শুক্রবলাসকুং। মধুরা গ্রাহিনী শোগ-বাতপিত্ত্বরাশ্রজিং।

মাধাণী।

মাষপর্ণী, স্থ্যপর্ণী, কাম্বোজী, হয়পুচ্ছিকা, পাপ্ত, লোমশপর্ণী, ক্ষাবৃদ্ধা ও মহাসহা, এই করেকটি মাষাণীর নামান্তর। মাষপর্ণী— শীতবীর্থ্য, তিব্ত-মধুর-রস, রুক্ষ, শুক্রবর্দ্ধক, কফকারক, ধারক এবং ইহা শোগ, বায়ু, পিব্তজ্বর ও রক্তদোষ বিনাশক।

व्यथ क्षक्रतरक्रत्रक्षे।

শুক্র এরও আমণ্ডশ্চিত্রো গন্ধর্বহস্তকঃ। পঞ্চান্সুলো বর্জমংনো দীর্ঘদণ্ডো ব্যত্ত্বকঃ॥ বাতারিত্তরণন্ডাপি কবুক্ল নিগন্তাতে। রক্তোহপরো কবুকঃ স্থাহকবুকো কবুন্তগা॥ বা' অপুচ্ছেল্ড বাঙারিক্ডঞ্জন্ত নিপারক।
এর ওয়ুগ্নাং মধুরমুকং গুরু বিনাশরে ॥
শুলশোপকটাবন্তি-শিরংশীডোদরজ্বান্।
এরপ্তপারং বাতন্ত্রং ককলি মিরিনাশনম্।
ম্তকক্তহরকাপি পিতরক্তপ্রকোপণম্ ॥
বাতা্যাগ্রদলং গুলা-বন্তিশুল্ডরং পরম্।
কক্ষাতিরিমীন্ হন্তি বৃদ্ধিং সপ্তবিধামপি ॥
এবওচ্লমত্যকং গুলাশ্লানিলাপতম্।
যবুংমীতোদরাশোন্তং কট্কং দীপানং পরম্॥
ধ্রমজ্বা চ বিড্ডেলী বাত্রেক্ডেশ্লাপতঃ ॥

খেত ভেরেও: ও লাগ ভেরেও:।

শুক্র এবওকে 'শ্বেত ভেরেওাকে)
আমাও চিত্র, গন্ধর্মহন্তক, পঞ্চাসুল, বর্জমান,
দীর্ঘদণ্ড, বাড়ম্বক, বাডারি, তরুণ ও রুবুক বলে। রক্ত এরওকে (লাল ভেরেওাকে)
রুবুক, উরুবুক, রুবু, বাড্মপুড্চ, বাডারি, চঞ্
ও উত্তানপত্রক কহে।

শুক্র ও রক্ত এই উভয়বিধ এরওই মধুব-রদ, উষ্ণবীর্যা ও গুরু। ইহারা শূল, শোথ, কটীশূল, বস্তিশূল, শিরশূল, জঠর, জ্বর, ব্রপ্ত, কফছ্ষ্টি, আনাহ, খাদ, কাদ, কুঠ, আন্মানোষ ও বায় নাশ করিয়া থাকে।

এরগুপত্র—বাষু, কফ, ক্রিমি ও মৃত্রকছ্ণুনাশক এবং রক্তপিত্ত প্রকোপক। এরগুবৃক্ষের অগ্রভাগন্থ কোমলপত্র—গুল্ম, বস্তিশূল,
কফ, বাষু, ক্রিমি ও সপ্তবিধ বৃদ্ধিরোগনাশক।

এরওফল—অত্যস্ত উষ্ণবীর্য্য, ^{ক্}কটুরস, অগ্নির দীপক এবং ইহা গুলা, শূল, বায়ু, যক্তং, প্লীহা, জঠর ও অর্শোরোগ নাশক।

এরণ্ডের মজ্জা—মলভেদক এবং বায়ু, কফ ও জঠররোগ নিবারক।

অথ শুক্ররক্তার্কে।।

খেওার্কো গণরূপঃ স্থান্মন্দারো বহুকোহপি চ। খেতপুস্পঃ সদাপুষ্ণাঃ স চালকঃ প্রতাপসঃ ॥ রক্তোংপরোংর্কনামা স্থাদর্কপর্নো বিকারণ:।
রক্তপুষ্পাঃ শুরুফলন্তথাকোতঃ প্রকীপ্তিতঃ॥
কর্করং সরং বাত-কৃষ্ঠকপুবিরবান।
নিহন্তি সীহগুলার্শ:-লেমোদরশক্ৎক্রিমীন্॥
কার্ককুস্থমং বৃরাং ললু দীপনপাচনম্।
করোচকপ্রসেকার্শ:-কাসখাসনিবারণম্॥
রক্তার্কপুষ্পাং মধুরং সতিক্তং
কুষ্ঠক্রিমিয়ং কফনাশনক।
অর্শোবিবং * হস্তি চ রক্তপিতং
সংগ্রাহি শুলে খরণো হিতং তং॥
ক্রীরমর্কস্ত তিক্তোক্ষং প্রিধং সলবণং লঘু।
কুষ্ঠগুলাগ্রহরং শ্রেষ্ঠমেতদ্ বিরেচনম্॥
বেত আকল্প ও লাল আকল্প।

খেত আকলকে খেতার্ক, গণরূপ, মন্দার, বস্থক, খেতপুষ্পা, সদাপুষ্পা, অলর্ক ও প্রতাপদ বলে। রক্ত আকলকে অর্কপর্ণা, বিকীরণা, রক্তপুষ্পা, শুক্রফল ও আন্ফোত কহে। স্থানিক সমস্ত শব্দই ইহার পর্যায়। খেত ও রক্ত এই উভয়বিধ আকন্দই সারক এবং বায়, কুঠ, ক গু, বিষ, ব্রণ, গ্লীহা, গুলা, অর্শা, কফ, উদর ও পুরীয়ক্তিমি বিনাশক।

খে আকন্দের পুষ্প— শুক্রজনক, লঘু,
অগ্নিব দীপক, পাচক এবং ইহা অক্লাচ, প্রদেক
(কলাদি আর). অশঃ, কাদ ও খাদ নিবারক।
রক্ত আকনের পুষ্প—মধুবতিক্ত-বদ ও
ধারক এবং ইহা কুও, জিনি, কফ, অশঃ, বিষ
(পাঠান্তবে—ইন্দুবের বিষ) ও রক্তপিত্ত
নাশক। ইহা গুল্ম ও শোথের পক্ষে হিতকারক।
আকন্দের আটা—তিক্ত-লবণ-রদ, উফ্লিট্য, ক্মিয়, লঘু এবং ইহা কুঠ, গুল্ম ও
উদ্বরোগ নাশক, আকন্দের আটা শ্রেপ্ত

অথ সেহুগুঃ।

বিরেচক ।

সেহও: সিংহতুও: স্থাৰজী বজ্ঞস্মাংপি চ।
প্ৰা সমস্তমুধা চ পুক্ জিয়াং স্থাৎ বুংগী ওড়া।
সেহওো বেচনস্তীকো দীপন: কটুকো গুৰু:।
শুলামান্তীলিকাখান-ককগুলোদরানিলান্॥

আথোবিবমিতি পাঠান্তরম।

উন্নাদমোহকু ঠার্শঃ-লোধমেদোহখাপাঞ্তাঃ। বর্ণশোপজ্ঞানীহ-বিষদ্বীবিষং হরেৎ ॥ উক্ষবীর্থাঃ অুহীক্ষীরং স্লিক্ষক কট্কং লঘু। গুল্মিনাং কুন্তিনাকাপি তথৈবোদররোগিণায়। হিত্যেত্রিরেকার্থে বে চাক্ষেদীর্থরোগিণাঃ॥

মনদাসিজ।

সেহত্ত, সিংহত্ত, বজ্ঞী, বজ্ঞজন, স্থা, সমস্তহ্থা, স্কুক্, সুহী ও গুড়া, এই করেকটি মনসা বৃক্ষের পর্য্যায়। মনসাবৃক্ষ (সিজবৃক্ষ)—বিরেচক, তীক্ষ, অগ্রির দীপক, কটুরস ও গুরু এবং ইহা শূল, আম, অগ্রীলিকা, উদরাধান, কফ, গুলা, জঠর, বায়ু, উন্মাদ, মোহ, কুষ্ঠ, অশঃ, শোথ, মেদ, অগ্রারী, পাণ্ডু, ব্রণ, শোথ, জর, প্লীহা, বিষ ও দুবীবিষনাশক। মনসাসিজের আটা—উষ্ণবীর্য্য, স্নিগ্ধ, কটুরস ও লেঘু। ইহা গুলারোগির, কুষ্ঠরোগির, উদররোগির ও চিররোগির পক্ষে হিতজনক বিরেচক ঔষধ।

অথ শতিলা। সেহুণ্ডেদঃ।

শতেতা সপ্তলা সারা বিমলা বিছুলা চ সা । ৩থা নিগদিতা ভূরিফেনা চপ্সক্ষেত্রপি॥ শতিলা কটুকা পাকে বাতলা শীতলা লঘুঃ। তিন্তা শোধকফানাহ-পিজোদাবর্ত্তরক্তজিৎ॥

শাতলা মনসার জাতিবিশেষ। সপ্তলা, সারা, বিমলা, বিছলা, ভূরিফেনা ও চর্ম্মকষা, এই কয়েকটি শব্দ শতিলার পর্য্যায়। শাতলা— তিব্রুরস, কটুবিপাক, বায়ুবদ্ধক, শীতবীর্য্য ও লঘু এবং ইহা শোগ, কফ, আনাহ, পিন্তু, উনাবর্ত্ত ও বক্তছ্টি নাশক।

অথ লাঙ্গলী |

কলিহারী তু থলিনী লাঙ্গলী শক্পৃশ্যাপি। বিশলাগ্নিশিথানন্তা বহিনকা চ গর্ভকুৎ ॥ কলিহারী সরা কুষ্ঠ-শোফার্শোব্রণশ্লজিৎ। সক্ষারা শ্লেমজিৎ তিক্তা কটুকা তুবরাপি চ। তীক্ষোঞা ক্রিমিক্সম্বাণী পিওলা গর্ভপাতিনী॥

केन लोकनः।

কলিহারী, হলিনী, লাঙ্গলী, শক্রপুষ্পী, বিশ্বা, অগ্নিশিং। অন্তা, বহিবকু! ও গ্রন্থা, এনজা, বহিবকু! ও গ্রন্থা, এই কমেন্ট উল্লাঙ্গলাব নামান্ত্র। উল্লাঙ্গলাব লামান্ত্র। উল্লাঙ্গলাকলা---সাবক আন্তর্গ ভিক্ত-কটু কমান্ত্রন, ভাগিং, উম্পান্তির লঘু, পিত্রকিক বিশ্বা ইয়া কুঠি শোগ, অন্তঃ ত্রণ, শূল, কফ. ভিক্তিমি ও গ্রন্থানক।

অথ শ্বেতরক্তকরবারে)।

করবীর খেতপুপাঃ শত্র প্রেইখনারক। বিতারো রজপুপাক চঙালো লগুড়গুলা করবীরবাং (১জং ক্যাসং কটুক্থ বং। ত্রণলাঘকুরেত্র-কোগ্রেইখণাগ্রহ্॥ বীধ্যোকং ক্রিকিপুরং ভাষ্টের (ব্যাক্সতম।

(भग्नत्वी अ मानकावी।

ক্রবীন, খেতপুলা, শ্রকুন্থ ও অধ্যারক, এই ক্য়েক্টি খেতকবনা, এবং নক্রপুলা, চঙাত ও লেওড়, এই ক্রেক্টি ব্রুক্তরীর নামান্তর। খেতকানা ও ব্রুক্টিরী এই উভয়ই তিজ-ক্যায়-ক্ট্-ান, এনে। লগুল-সম্পানক, উফ্লীয়া এবং নহা নেল্যোপ, কুই, এণ, জিল্ম ও কড় বিনাশক। ইহা ভ্রুণ ক্রিয়া ব্রের প্রার শ্বীবের অভিত সম্পানন ক্রিয়া থাকে।

অথ ধুস্তুরঃ।

ধুন্তবে ধুকুপুত্, বাজ্যান্ত কানকাইয়ে।
দৌৰকা কিতবস্ত্না মহামোহ। শিবপ্ৰিয় ।
মাতুলো মদনশ্চান্ত ফলে মাতুলাকুক্তঃ ।
ধুন্ত্বো মদবশা ইন্যাত্ৰকার চন্ত্ৰ ।
ক্যায়ো মবুর্ন্তিকো সুকালিকাবিদাশকঃ ।
উয়েবা গুকুর্বিধ্রানকগুল্লিমিবিধাশকঃ ।

धुकृता ।

ধৃষ্কর, ধৃষ্ট, ধৃষ্ণুর, উন্মন্ত, দেহিক কিতব, ভূরী, মহামোহী, শিবপ্রিয়,

মাতৃল ও মনন, এই কয়েকটি এবং কনকবাচক সমস্ত শব্দ ধুত্রার পর্যায়।
ইহার কলকে মাতৃলপুত্র কহে। ধুত্রা—
মদকাবক, বর্ণপ্রসাদক, অগ্রিবর্দ্ধক, বায়্জনক,
ক্যান মধুবাতক বন, উষ্ণবীধ্য, গুরু এবং
ইহা মুকা ও লিক্ষা নামক ক্রিমি (উকুনাদি
কাটাবশেষ), জা, কুন্ত, বন, কফ, কড়, ক্রিমি
ও বিষ্নাশক।

অথ বাসকঃ।

বাসবো বাশিকা বাসং ভিষয়। তা চ সিংতিকা।
সিংগ্রেষ্ঠা বাজিদন্তঃ আদিটক বাইট্রাবকা ॥
আট্রাবো ব্যা নামা সিংগ্রেশ্চ সাম্প্রতঃ
বাসকো বাতকুৎ স্বতঃ কফ্পিন্তাপ্রনাশনঃ ॥
ভিজ্ঞাবকো হত্যো বাসুক শিত্তভূর্ত্তিহৎ ;
বাসকা সম্বাসক্ষিত্তিদ্ধি নহক্টক্যাপ্রতঃ ;

বাসক, বাশিক।, বাসা, ভিষ্মাতা, সিংহিকা, সিংহাজ, বাজিদজা, আটক্ষ, আটক্ষ, আটক্ষন, আটক্ষন, ইম ও সিংহপর্য, এই ক্ষেকটি বাসকের পর্যায়। বাসক—বায়ুজনক, স্বাবজক, ভিক্তক্ষায় বস, হদয়গ্রাহা, লগু, না চবার্যা এবং ইহ' কফা, এজাগাও, ভ্রমারোগ, ম্বাস, কাস, জন, বান, প্রমেহ, কুঠ ও ক্ষয়গ্রোগ নাশক।

অথ পর্পটঃ।

প্ৰতিটো ব্যতিক্ৰণত স্মৃতঃ পৰ্যতিক্ৰণ্ড সং। ক্ষিতঃ পাংগুপ্যায়গুণা ক্ৰচনামকঃ॥ প্ৰপাটো হতি পিভাগ্ৰ-জ্ৰমত্কাক্ষকান্। সংগ্ৰাতী শতিক্ৰাজ্ঞান দাহমুখাতলো লঘুঃ॥

ক্ষেত্পাপ্ড়া।

্পপট, বরতিক্ত, পপটিক এবং পাংশু-প্র্যার ও কবচ নামক শব্দ, ক্ষেত্পাপ্ড়ার নামান্তর। ক্ষেত্পাপ্ড়া—পিন্ত, রক্তদোষ, ভ্রম, তৃষ্ণা, কক্ষ, জর ও দাহ নাশক, ধারক, শাতবীর্য্য, তিক্তরুস, বারুবৃদ্ধক এবং লঘু।

অথ নিম্বঃ।

নিব: তাৎ পিচুমন্দত পিচুমন্দত তিজক:।

অন্ধি: পারিভয়ত হিলুমির্ব্যাস ইতাপি ।

নিব: নীতো লঘুর্রা হা কটুপাকোহরিবাতমূৎ।
অক্ষয়: প্রমত্টুকাস-অরাকটিক্রিমিপ্রপূৎ।
বর্ণপিভককভেন্দি-কুঠকনাসমেহমূৎ।

নিবপত্রং শ্বতং নেত্রাং ক্রিমিপিত্রবিবপ্রপূৎ।
বাতসং কটুপাকক সর্বারোচকক্রস্তুৎ।

নিবকলং রমে তিক্তং পাকে তু কটু ভেদনম্।
নিবকলং রমে তিক্তং পাকে তু কটু ভেদনম্।
নিবকলং রমে তিক্তং পাকে তু কটু ভেদনম্।

निम ।

পিচ্মর্দ, পিচ্মন্দ, তিক্তক, অরিষ্ট, পারিভদ্র ও হিন্ধুনির্য্যাদ, এই কয়েকটি নিম্নের পর্যায়। নিম—শীতবীর্য্য, লঘু, ধারক, কটু-বিপাক, অগ্নি ও বায়ুনাশক, অহ্নন্ত এবং ইহা শ্রাম্ভি, তৃষ্ণা, কাদ, জর, অরুচি, ক্রিমি, রণ, পিত্ত, কফ, বিমি, কুট, হুলান ও প্রমেহনাশক। নিম্বপত্র —চকুর হিতকারক, বায়ুবর্দ্ধক, কটু-বিপাক এবং ইহা ক্রিমি, পিত্ত, বিষ, দর্মপ্রকার অরুচি ও কুটনাশক। নিম্নকল—তিক্তরদ, কটুবিপাক, ভেদক, স্নিগ্ধ, লঘুপাক, উষ্ণবীষ্য এবং ইহা কুট, গুল্ম, অর্শঃ, ক্রিমি ও প্রমেহ নাশক।

অথ মহানিষঃ।

মহানিদ্ধ: শৃতো দ্রেকা রম্যকো বিষম্টিক: ।
কেণামুট্টনিদ্দকত কামু কোহকীব ইতাপি ॥
মহানিদো হিনো ক্লকন্তিকো গ্রাহী কবারক: ।
কক্পিত্রমচ্ছার্দি-কুঠন্ডলাসরক্তাক ।
প্রমেহদাস্কুলাপি-মুট্টিকাবিধনাপন: ॥

ঘোড়ানিম।

দ্রেকা, রম্যক, বিষমৃষ্টিক, কেশামৃষ্টি,
নিম্বক, কাশু ক ও অক্ষীবু এই করেকটি মহানিম্বের পর্যাধ । মহানিষ্ধ—শীতবীর্য্য, রুক্ষ,
তিক্ত-ক্ষাধ-রস ও ধারক এবং ইহা কফ,
পিত্ত, ভ্রম, বমি, কুঠ, হ্যমাদ, রক্তদোধ,
প্রমেহ, খাদ, গুলা, গুলা; ও ইন্দুরবিষ নাশক।

অথ পারিভ দঃ।

পারিভলো নিষ্তরম স্থার: পারিজাতক:। পারিভতোহনিলরেম-গোধমের:ফ্রিমিপ্রগৃৎ ॥ পত্রত্ত পিত্রোগন্ধ: কর্ণবাধিনিনাশনম্॥

পালিধা।

পারিভদ্র, নিম্বতক্ব, মন্দার ও পারিকাতক এই করেকটি পালিধার পর্য্যার। পারি-ভদ্র—বার্, কফ, শোথ, মেদ ও ক্রিমি বিনা-শক। পারিভদ্রপত্র—পিত্তজ্ব রোগ ও কর্ণ-রোগ বিনাশক।

এথ কাঞ্চনারঃ।

কাঞ্চনার: কাঞ্চনকে। গণ্ডারি: শোণপুষ্পক:।
কোবিদারক মরিক: কুন্ধানে। যুগপাত্রক:।
কুণ্ডনী তাত্রপুষ্পকাশস্তক: স্বল্লকেশরী ॥
কাঞ্চনারে। হিমো গ্রাহী তুবর: প্রেম্থপিন্তসুং।
ক্রিমিকুঠন্তরংশ-পশুমানারণাপহ:॥
কোবিদারোহপি তবং জাৎ তরো: পুষ্ণং লযু স্মৃত্যন্।
ক্রুকং সংগ্রাহি পিন্তাত্র-প্রদর্কর্যকাসকুং॥

লাল কাঞ্চন ও শ্বেত কাঞ্চন।

কাঞ্চনার, কাঞ্চনক, গণ্ডারি ও শোণপূপাক, এই কয়েকটা লাল কাঞ্চনের নামান্তর।
কোবিদার, মরিক, কুলাল, র্গপত্রক, কুণ্ডলী,
তান্রপূপা, অশাস্তক ও স্বরকেশরী এইগুলি
খেত কাঞ্চনের নাম। কাঞ্চনার—গীতবীর্যা,
ধারক, ক্ষার্যাস, কফন্ম, পিন্তনাশক এবং
ইহা ক্রিমি, কুঞ্চ, গুদত্রংশ, গণ্ডমালা ও এশনাশক। খেত কাঞ্চনও লাল কাঞ্চনের স্তান্ত্র
গুণস্ক্ত। ঐ উভয়ের পূপা—লঘু, কক্ষ্ম,
ধারক এবং পিত্ত, রক্তদোষ, প্রদর, ক্ষম ও
কাসরোগনাশক।

ৰ্থ শোভাপ্তনঃ শ্ৰামঃ খেতো রক্ত শ্রু ।
লোভাপ্তনঃ শিত্র তীক্ত গৰকাকীবনোচকাঃ।
তৰীক্ত খেতসভিচং মধুশিত্র, সলোহিতঃ।
নিপ্ত,: কটু: কটু: পাকে তীকোকো মধুনো নবু:।
নিপলো রোচনো কক্ত কার্বিকো নিধানকং ।

সংগ্রাহী শুক্রলো হল্ক: শিক্তরক্তপ্রকোপণ:।
চন্দ্রা: কফবাতয়ো বিজ্ঞধিবরপুক্রিমীন্ ।
মেদোহপচীবিষদীহ-শুন্দগগুরণান্ হরে ।
বেত: প্রোক্তপ্রণো ক্রেরো বিশেবাদাহকুত্ববে ।
দ্রীহানং বিজ্ঞধিং হস্তি ব্রণম্ব: পিজরক্তক্ত ।
মধুশির্য: প্রোক্তন্তনো বিশেবাদ্দীপন: সর:।
শিগ্র্য ক্রনপ্রাণাং স্বরুল: পরমার্ত্তিহ ।
চন্দ্রাং শিগ্রুজং বীজং তীক্ষোধ্ধং বিবনাশনম্।
অর্বাং কফবাতমং তর্গ্রেন শিরোহর্তিম্ব ।

সজিনা।

শ্রাম খেত ও হক্তবর্ণ ভেদে সজিলা তিন প্রকার। শোভাঞ্জন, শিগ্রু, তীক্ষণস্কক, অক্ষীব, মোচক এইগুলি সজিলার পর্য্যায়। সজিলার বীজকে খেতমরিচ বলে এবং রক্ত সজিলাকে মধুশিগ্রু বলিরা থাকে। সজিলার গুণ যথা— ইহা-কটু-মধুর-তিক্ত-রস, কটুবিপাক, তীক্ষ, উষ্ণবীর্য্য, লথু, অগ্নির দীপক, কচি-কারক, ক্লক, ক্ষারযুক্ত, বিদাহী, ধারক, গুক্র-বর্জক, হাদরগ্রাহী, রক্তপিত্ত-প্রকোপক, চক্ষুর হিতকর এবং ইহা কফ, বায়ু, বিজ্ঞাধি, শোণ, ক্রিমি, মেদোদোষ, অপচী, বিষ, প্লীহা, গুল্ম, গ্লগও ও এণ নাশক।

খেত শোভাঞ্চনও উক্তগুণবিশিষ্ট; বিশেষ্টঃ ইহা দাহজনক এবং গ্লীহা, বিদ্যাদি, বণ, পিত্ত ও রক্তদোষ নাশক।

রক্ত-শোভাঞ্জনও উক্তগ্রস্ক ; বিশেষতঃ ইহা অগ্নিপ্রদীপক এবং সাগ্রক। সজিনার বঙ্কল ও পাত্রের স্ববস বেদনা প্রশাসনের পক্ষে শ্রেষ্ঠ।

সজিনার বীজ —চক্ষুত্র হিতকর তীক্ষ, উষ্ণবীর্যা, বিষয়, অনুষ্য এবং কফ ও বায়ু নাশক; ইহার নম্ম লইলে শিরোগোন নষ্ট হট্যা থাকে।

> জ্ঞথ শ্বেতপুষ্পা: নানপুষ্পা। অপরাদ্ধিতা।

আম্মোতা গিরিকণী স্থাবিষ্ণুকারাপরাজিতা। অপরাজিত্তে কট মেধ্যে শীতে কঠো স্থৃষ্টদে। কুষ্ঠমূত্ৰতিদোৰাম-লোপপ্ৰপৰিবাপহে। কৰায়ে কটকে পাকে ভিজে চ শ্বভিৰুদ্ধিদে।

খেতপুষ্প ও নীলপুষ্প ভেদে অপরাজিতা

ছই প্রকার। আন্দোতা, গিরিকণী ও বিষ্ণু
ক্রান্তা, এই করেকটা অপরাজিতার নামান্তর।
খেতপুষ্পা ও নীলপুষ্পা, এই উজর প্রকার
অপরাজিতাই ভিজ্ঞবিপাক, ক্যার-কটুরস,
মেধান্তনক, শীতবীর্য্য, কণ্ঠশোধক, চক্ষুর
প্রসন্নতাকারক, স্তিশক্তি ও বৃদ্ধি বর্জক এবং
ইহা কুঠ, মুত্রদোষ, ত্রিদোর, আমদোষ, শোধ,
রণ ও বিষদোষ নাশ করে।

অথ সিন্দুবারঃ।

সিন্দ্বার: বেতপুশ: সিন্দ্ক: সিন্ধ্বারক: ।
নীলপুশী তু নিঞ্জ লিকালী স্বহা চ সা।
সিন্দ্ক: মৃতিদন্তিক্ত: ক্বার: কটুকো লঘু: ।
কেঞা নেত্রহিতো হন্তি প্রশোধামমারতান্ ।
ক্রিমিকুটার্মটারেখ-ম্বরান্ নীলাপি তবিধা।
সিন্দ্বারদনং জন্ত-বাতরেখহরং লঘু॥

निशिक्षः।

খেতনিসিন্দার নাম—সিন্দ্বার, খেতপুলা, সিন্দুক ও সিন্ধ্বারক। নীল সিন্দ্বারের নাম নীলপুশী, নিগুওী, শেফালী ও স্ববহা। খেত সিন্দ্বার (নিসিন্দা)—স্তি এদ, তিক্ত-ক্ষায়কট্-রস, লঘু, কেশের ও চক্ষ্র হিতকারক এবং ইহা শূল, শোগ্র, আমদোষ, বায়ু, জিমি, ক্ষু, অরুচি, কফ ও অর্নাশক। নীল সিন্দ্বারও খেত সিন্দ্বার সদৃশ গুণদায়ক। সিন্দ্বারপত্র—লঘু এবং ইহা জিমি, বায়ু ও কফ নাশক।

অথ কুটজঃ।

কৃটজঃ কৃটজঃ কৌটো বৎসকে। গিরিমলিকা।
কালিকঃ শক্রলাথী চ মলিকাপুলা ইতাপি।
ইন্দ্রো যথকলঃ প্রোজ্যে বৃক্ষকঃ পাঞ্জুমন্মা।
কৃটজঃ কটুকো ক্লো গাপনস্তবরো হিমঃ।
অংশীহতিসারপিকাপ্র-ক্ষত্কামকৃট্যুব।

কুড় চি।

কুটজ, কুটজ, কোট, বংসক, গিরিমল্লিকা, কালিঙ্গ, শক্রণাথী, মল্লিকাপুন্প, ইন্দ্র, যবফল, রৃক্ষক ও পাণ্ডুরক্রম, এই করেকটি কুড়্চির সংস্কৃত নাম। কুড়্চি—ক্ষায়-কটুনস, রুক্ষ, অপ্লিন দীপক, দাঁতবীর্যা এবং ইহা অপ্লা, অতিসার, পিত্ত-রক্তদেবি, কক, তৃষ্ণা, আম-দোষ ও কুঠ নাশক।

অথ করঞ্জঃ।

করপ্পে নক্তমানত করপ্রতির্বিক:।

যুতপূর্বকরপ্রোহক্ত: প্রকার্যা: পৃতিকোহপি ৮ ॥

স চোক্ত: পৃতিকরপ্র: সোমবক্ষত স স্মৃত:।
করপ্র: কৃকিস্তালো বার্যােশো বোনিদোবহাং।
কৃঠোদাবপ্তিপ্রশার্শো-রণক্রিমিকলাপহ:॥
তৎপত্র: কফ্বাতার্শা-ক্রিমিশোবহাং পরম্।
ভেক্স: কট্কং পাকে বার্যােক্য পিন্তর: লযু॥
তৎকর: কফ্বাতন্ত্র: মেহার্শাক্রিমিকুঠপ্রিৎ।
যুতপূর্বকরপ্রোহপি করপ্রসদ্লো গুলা:॥

করন্ত্র ও নাটাকরন্ত ।

করঞ্জ, নক্তমাল, করজ ও চিরবিৰক, এই কয়েকটি করঞ্জের পর্যায়। য়ভপূর্ণ নামক অপর এক প্রকার করঞ্জ আছে, চলিত ভাষার তাহাকে নাটাকরঞ্জ কছে। প্রকীর্যা, পৃতিকরঞ্জ ও প্ৰিক, সোমবন্ধ তাহার कत्रब-कट्टेत्रम, जीक, উक्कवीर्या পর্যায়। এবং যোনিবাপিং, কুন্ঠ, উদাবর্ত্ত, গুলা, অর্শঃ, ব্ৰণ, ক্ৰিমি ও কফ নাশক। কৰঞ্জপত্ৰ-কফ, বারু, অর্শঃ, ক্রিমি ও শোপ রোগে বিশেষ হিতকর। ইহা ভেদক, কটুবিপাক, উষ্ণবীধ্য, পিতত্ত্বৰ্দ্ধক এবং লঘু। করঞ্জফল-কফ, বায়ু, প্রমেছ, অর্শঃ, ক্রিমি ও কুন্ন বিনাশক। গ্বত-পূর্ণকরঞ্জ করঞ্জ সদৃশ গুণমুক্ত।

অথ করঞ্জী।

উদকীয়াকুতায়োহক্তঃ বড় গ্রন্থা হস্তিবাস্থাী। মকটা বায়সী চাপি কয়ন্ত্রী করভন্তিকা। কর্ম্প্রী স্তম্পনী তিক্তা তুবরা কটুপাকিনী। নাব্যোকা বমিপিতার্শ্য-ক্রিমিকুঠপ্রমেহজিৎ ॥

ভহরকরঞ্জ।

অপর এক প্রকার করঞ্জ আছে, তাহাকে ভাষার ডহবকরঞ্জ বলে। উদকীর্যা, বড় গ্রন্থা, হাস্তবারুলা, মর্কটা, বারুলা, করঞ্জী ও কর-ভাঞ্জকা উহার পর্য্যার। ডহরকরঞ্জ—ভাজক কারক, ভিক্ত ক্ষার রদ, কটুবিপাক, উষ্ণ-বীর্য্য এবং ব্যান, পিত্র, অশাং, ক্রিমি, কুঠ ও প্রমেহ বিনাশক।

অথ গুঞ্জা খেতা রক্তা চ।

বেতা প্রস্রাচেটা প্রোক্তা কৃষ্ণনা চাপি সা স্মৃতা।
রক্তা সা ককেচিকা জ্ঞাৎ কাকপত্তী চ রক্তিকা ॥
কাক্রেনী কাকপীলু: সা স্মৃতাঙ্গারবদ্ধনী।
ক্ষান্থ্যত্ত কেগুং জ্ঞাদ্ বাহপিওজ্ঞরাপহ্য্ ॥
মুগশোবভ্রমন্থাস-ভূকামদ্বিনালন্।
নিত্রাময়হরং বৃষ্ধে বলঃং কঙ্গুণং হরেং।
ক্রিমান্ত্রপুঞ্জানি রক্তা চ ধ্বলাপি চ ॥

খেতকুঁচ ও রক্তকুঁচ।

শেত ও রক্তবর্ণ ভেদে কুঁচ হুইপ্রকার। তন্মধ্যে খেঁতবর্ণ কুঁচকে উচ্চটা ও ক্ষ্ণুলা এবং রক্তবর্ণ কুঁচকে কাকচিঞ্চী, কাকণস্তী, রক্তিকা, কাকাদনী, কাকপীলু ও অঙ্গার-বন্নরী বলে। এই উভ্র প্রকার গুঞ্জাই—কেশহিত, গুক্রবর্দ্ধক, বলকারক এবং বায়ু, পিজ, জা, মুখ্যোয়, লুম, খান, ভূষ্ণা, মত্তচা, চক্ষুরোগ, কণ্ণ, বণ, ক্রিমি, ইক্স্লুপ্ত ও কু্র্ভারোগ নাণক।

অথ কপিকচছঃ।

কপিকজুৱাস্বগুপ্তা বৃষ্যা প্রোক্তা চ মর্কটা।
জ্বারা কণুরাহব্যকা ছ:স্পর্শা প্রাবৃষ্যানী।
লাকলী শৃক্লিকী চ দৈব প্রোক্তা মহর্বিভিঃ।
কপিকজুভূ শং বৃষ্যা মধুরা বৃহহ্ণী গুলুঃ।
তিক্তা বাওহরী বল্যা ক্ষপিতাপ্রনাশিনী।
ভবীজং বাওশমনং শুজং বাজীকরং পরম্ ৪

আলকুশী।

কপিকচ্ছু, আত্মগুপ্তা, ব্যা, মর্কটা, অজ্বরা, কণ্ডুরা, অব্যঙ্গা, ছংস্পর্শা, প্রাব্যারণী, লাঙ্গলী ও শৃকশিখী, এই করেকটি আলকুশীর পর্য্যায়। আলকুশী—অত্যস্ত শুক্রবর্দ্ধক, মধুর-তিব্রুবস, মাংসবর্দ্ধক, গুরু, বার্নাশক, বলকারক এবং কফ, পিত্ত ও রক্তদোধনাশক। আলকুশীর বীজ্ঞও—বার্নাশক এবং অত্যস্ত শুক্রবর্দ্ধক।

অথ মাংসরোহিণী।

মাংসরোহিণাতিরছা বৃত্তা চর্দ্মকৰা কুশা। প্রচারবর্না বিক্ষণা বীরবত্যাপি কথাতে। স্তাঝাংসরোহিনা বুরা। সরা দে!বত্ত্যাপথা।

চামারক্ষা।

অতিক্ছা, রক্তা, চন্দ্রকষা, কুণা, প্রহার-বন্নী, বিকশা ও বীরবতী, এই কয়েকটি মাংসরোহিণীর প্রস্তায়। মাংসরোহিণী—র্ষা, সারক এবং ত্রিদোষ্ম।

অথ টক্ষারী।

ট**ক।রা বাতজিৎ** ভিক্তা রেখছী দ'পনা লঘুঃ। শোপোদরব্যধাহরা হিত' কোঠবিস্পিণান্।

টেপারী।

টদ্ধারী-—বাতন্ন, তিব্রুরসমুক্ত, কফনাশক, আমির দীপক, লঘু, শোথ ও উদৰ রোগ-নাশক এবং কোঠ ও বিদপ্রোগে হিত্তুকর।

অথ বেতসঃ।

বেজনো নম্রকঃ প্রোক্তো বানীরো বালুলন্তব: ।
অত্রপুপাক বিছলো রবঃ শীতক কার্ত্তিত: ॥
বেজন: শীওলো দাহ-শোগার্শোযোনিকক্প্রণুও ।
হত্তি বীসর্পক্তভাত্ত-পিত্তাব্দ্রীকফানিলান ।

বেত।

বেতস, নত্রক, বাণীর, বঞ্জুল, অভ্রপুষ্প, বিহুল, রথ ও শীত, এই কয়েকটি বেতসের

পর্য্যার। বেতস—শীতবীর্য্য এবং ইহা দাহ, শোথ, অর্শঃ, যোনিব্যাপৎ, বিসর্প, মৃত্তক্ষ্ণু, রক্তপিত্ত, অশ্বরী, কফ ও বারু নাশক।

অথ জলবেতসঃ ৷

নিকুঞ্চকঃ পরিব্যাধো নাদেয়ো জলবেতসঃ। জনজো বেতসঃ শীতঃ কুন্ঠহৃদ্বাতকোপনঃ॥

নিকৃঞ্চক, পরিব্যাধ ও নাদের এই তিনটী জলবেতদের পর্য্যায়। জলবেতস—শীতবীর্য্য, কুঠরোগত্ন এবং ইহা বাযুপ্রকোপক।

অথেজ্জলঃ ।

ইফলো তিজ্জ**্চাপি নিচুনণ্চাদ্মগ্রত্ত**পী। জলবেতসবদ্ধেত্তো হিজ্জাহন্ত্র, বিষাপ্তঃ॥

হিজল।

ইজ্জল, হিজ্জল, নিচুল ও অন্ধৃত, হিজ্জন বক্ষের এই কয়েকটি পর্যায়। হিজ্জল—জল-বেতসের তুলা গুলায়ুক্ত, বিশেষতা ইছা বিষয়।

অথাক্ষেঠিঃ।

আছোটো (ঠা) দীৰ্ঘকীলঃ স্তাদকোলশ্চ নিকোচকঃ।
আছোটকঃ কটুন্তীক্ষঃ বিধোকস্তবনো লয়ুঃ॥
রেচনঃ ক্রিমিশুনাম-শোফগ্রহবিষাপহঃ।
বিসপককপিন্তাম-মূনিক ছিবিষাপহঃ॥
তৎফলং শীতলং স্বান্ধ গ্রেমন্ত্র: বৃংহণং গুরু।
বন্ধাং বিরেচনং বাত-পিওলাহক্ষয়াশ্রজিৎ॥

আকেড।

মঙ্গেটি (অড়োঠ). দীঘকীল, অঙ্কোল ও নিকোচক, এই ওলি আকোড়ের পর্য্যায়। আকোট- কটু-কধান-রম, রিশ্ব, তীল্ল, উথা-বীর্য্য, লঘু, বিরেচক এবং ইহা ক্রিমি, শূল, আমদোষ, শোপ, গ্রহদোষ, বিষ, বিমর্থা, কফ, পিত্ত, বক্তদোষ, ইন্দুর্বিষ ও সর্থবিষ-বিনাশক। আফোটফল—শীত্রীর্য্য, মধুর রস, কফল্ল, শরীকের পৃষ্টিকারক, গুরু, বল- কারক, রেচক এবং ইহা বা^ন, পিত্ত, দাহ, ক্ষয় ও রক্তদোষনাশক।

অথ বলাচতুষ্ট্যুম্।

বলা বাট্যালিকা বাট্যা দৈব বাট্যালিকাপি চ।
মহাবলা শীন্তপূশা সহদেবী চ দা স্মৃতা ॥
ততোহস্তা তিবলা ক্ষাপ্রোক্তা ক্ষাতিকা চ দা।
গাক্ষেক্ষকী নাগবলা দৈবা ব্রম্বগবেধ্কা ॥
বলাচত্ত্তয়ং শীন্তং মধ্রং বলকান্তিক্তং ।
বিন্ধং গাহি সন্ধীরাত্র-পিত্যাপ্রক্ষতনাশনন্ ॥
বলামূলতচন্ত্রং শীন্তং সন্ধীরণার্করন ।
মূত্রাতিদারং হরতি দৃষ্টমেতর সংশয়ং ॥
হরেক্ষহাবলা কৃষ্টাং তবেষাতান্ত্রোমনী ।
হস্তাদ্তিবলা মেহং প্রদা দিত্যা সম্ম ॥

বেভেলা।

वना ठाति शकात , गथा - वना, भश्वना, অতিবলাও নাগবলা। বলাকে বাটা।লিকা বাটা ও বাটালকা; মহাবলাকে পীতপুষ্পা ও সহদেবী: অভিবলাকে শ্ব্যপ্রোক্তা ও কঙ্কতিকা, এবং নাগবলাকে গাঙ্গেরুকী ও ছ্রম্বগবেধুকা বলে। এই চ্ছুদিন বলাই শাত্রীয়া, মধুর-রদ, বলবদ্ধক, কান্তিকারক, ন্দিগ্ধ, ধারক এবং বায়ু, রক্তপিন্ত, রক্তদোষ ও ক্ষতনাশক। বলামূলের ছালচুর্গ এয়াও চিনির সহিত পান করিলে নিশ্চয়ই মুল্রাতীয়ার বিনষ্ট হয়। মহাবলা চূর্ণ ছগ্ধ ও চিনিব সহিত পান করিলে মৃত্রকুছ্ত প্রশমিত এবং বিপথ-গামী বায় স্বপথগামী হয়। অতিবলা-চূর্ণ ছগ্ন ও চিনির সহিত পান কবিলে প্রমেহ নিবারিত হইয়া থাকে।

অথ লক্ষ্যণ।

পুত্রকাকাররক্তার-বিন্দৃত্তিসাঞ্চিতা সদা। লক্ষণা পুত্রজননী বস্তগন্ধাকৃতিভূবেৎ। কমিতা পুত্রদানজং লক্ষণা মৃনিপুক্ষনৈঃ॥

লক্ষণা পুত্রকাকার অন্ন অন্ন রক্তবিশ্তে চিহ্নিত এবং বনযমানীর স্থায় ইহার আকৃতি। ইহা নিশ্চয়ই পুত্রোৎপাদক বলিয়া মুনিগণ-কর্তৃক কথিত হইয়াছে।

অথ সর্গবল্লী।

স্বৰ্ণৰত্নী রক্তফলা কাকাছুঃ কাকবল্লরী। স্বৰ্ণনলা শিরংগীড়াং ত্রিদেখান হস্তি ভ্রম্ন। ॥

স্বৰ্ণবন্ধী গ্ৰক্তফলা কাকায়ু: ও কাকবন্ধরী, এই কয়েকটি স্বৰ্ণবন্ধীর পর্যায়। স্বৰ্ণবন্ধী শিবোবোগ ও তিদোন নাশক এবং ইহা স্তম্বৰ্ণক।

অথ কার্পাসী।

কাপাসা তৃডিকেরী চ সমুক্রান্তা চ কথ্যতে। কাপাসকা লগ্ন কোনা মধুরা বাতনাশিনী । তংগলাশং সমারত্বং রক্তকৃত্তবর্দ্ধন্য । ৩২ কর্ণপিড়কানাদ-প্যথাববিনাশন্য । তথ্যসং অস্তদ্ধ ব্যাং শ্লিক্ষা কফকরং প্রক্ষা

কাপান।

কার্পাদী, ভূণ্ডিকেরী ও সমুদ্রাস্তা, এই করেকটি কার্পাদের প্রয়ায়। কার্পাদ—লগু, দ্বং উষ্ণবীর্যা, মধুররস ও বায়ুনাশক। কার্পাদপত্র—বারুনাশক, রক্ত ও মূত্রবর্দ্ধক, এবং ইহা কর্ণপিড়কা, কর্ণনাদ ও কর্ণ-পূ্য-প্রাবের শাস্তিকারক। কার্পাদবীজ—স্তন্তমনক, শুক্রবৃদ্ধক, মিন্ধ, কফ্কারক এবং গুরু।

অথ বংশঃ |

বংশপ্রক্ষার কথারপ্রচিমারস্থাক্ষার ।
শহপক্ষা শহকলো বেগুনস্বপ্রতেজনাঃ ॥
বংশং সরো হিমঃ স্বাহু, কথারো বজিলোধনঃ ।
ছেদর কফপিড্রাঃ কুঠাপ্রবাশোধাজির ॥
তংকরীরঃ কটু: পাকে রুসে ক্লোও জন্ম সরঃ।
কথার: কফকৃৎ স্বাহুর্বিদাহী বাতপিত্তলঃ ॥
তদ্যবান্ত সরা ক্লোও ক্যায়াঃ কটুপাকিনঃ ।
বাতপিত্তকরা উদ্ধা বক্ষ্মুলাঃ কফাপহাঃ ॥

বংশ, ছক্দার, কন্মার, ছচিদার, ভূগধ্বজ, শতপর্বা, শতফল, বেণু, মস্কর ও তেজন, এই করেকটি বংশের পর্যায়। বংশ (বাঁশ)—
সারক, লাভবীয়া, মধুর-ক্ষায়-রস, মৃত্রাশরশোধক, ছেনন এবং কফ, পিন্ত, কুই,
রক্তহৃষ্টি, ত্রণ ও শোণনাশক। বংশাদ্ধর—
মধুর-কটু-ক্যায়-রস, কটু-বিপাক, কৃষ্ক,
ওরু, সারক, বিদাহী এবং কফ, বারু ও পিন্তবর্দ্ধক। বাশের ফল—সারক, কৃষ্ক, ক্ষায়রস,
কটুবিপাক, বারু ও পিন্তবর্দ্ধক, উষ্ণবীর্যা,
মৃত্ররোধক ও কফ্নাশক।

অথ নলঃ।

নলঃ পোটগলঃ **শৃন্ত-মধ্যক ব্যনন্ত্রণ।** নলন্তু মধুর্ছিক্তঃ ক্ষায়ং ক্ষয়ক্তজিং। উলেণ ক্ষন্তিযোক্তজি-দাহপিত্রিসপাঙ্গং॥

নল, পোটগল, শৃত্তানদ্য ও ধমন, এই করেকটি নলের পর্যার। নল—মধুন তিক্ত-ক্ষায়-রস, উক্ষবীধ্য এবং ইহা কফ, রক্তদোষ, ছড্রোগ, বন্তিগত দোষ, যোনিবাপেং, দাহ. পিত্ত ও বীসপ নাশক।

অথ ভদ্রমুঞ্জে। মুঞ্জ×চ।

ভক্ষমূপ্ত: শরে। বাণভেজনক্ষেত্রইন:।
মূপ্লো মূপ্লা হকো বাণঃ প্থনদর্ভঃ হমেথস:।
মূপ্লক্ষত্ত মধুরং তুবরং শিশিরং তথা।
দাহত্বশনিসর্পাম-মূত্রকুক্তাক্ষিরোগজিও।
দোবত্রহরং বুবাং মেথলাস্পযুজ্যতে॥

রামশর ও শর !

ভদ্রারকে (রামশরকে) শর, বাণ, তেজন ও ইক্সবেষ্টন বংল এবং ম্ঞ্জকে (শরকে) মুখারক, বাণ, ভূলদার্ভ ও প্রমেশল কাছে। এই উভর প্রকার শরই মধুর-ক্যার রস, শীতবীর্য্য এবং দাহ, তৃষ্ণা, বীসর্প, আম, মুম্মুক্ত , নেত্ররোগ ও ত্রিদোঘনাশক এবং ভক্রবর্দ্ধক। ইহা মেখলার জন্ম বাবক্ত হয়।

অথ কাশঃ

কাণ্য কালেকুরন্দিই: স প্রাণিকুরসন্তথা। ইক্বালিকেকুগলা চ তথা পোটগলঃ স্থান: ॥ কাশ্য প্রারম্ভিক্ত স্বাহ্নপাকে। হিন্যা সরঃ। মুক্তির ক্রাথানাহাত্র-ক্যাপিত্ত ব্যাসিত ।

(ক্ৰে)

কাশ, কাশেকু, ইকুরস, ইকুবিলকা, ইকুগন্ধা ও পেটিগল, এই করেকটি কেশের পর্য্যার শব্দ। কেশে—মধুর-ভিক্ত রস, মধুর-বিপাক, শীতবীর্যা, সারক এবং ইহ। যুত্তক্বচ্ছু, অশ্যরী, দাহ, রক্তদোন, ক্ষয় ও পিরজনিত রোগ বিনাশক।

হাথ এরকা।

এরকা গুল্রযুলা চ শিবিগু ল্রা শরীতি চ। এরকা শিশিরা বৃষা চকুবা বাত্যকাপিনী। মৃতকুক্তশেরীদাহ-পিগুশোণিতনাশিনী॥

হোগ্লা।

এরকা, গুলুমূলা, শিবি, গুলুলা ও শবী, এই কয়েকটি এরকাব পর্যায়। এরকা (হোগলা)—শাঁতবীর্যা, গুকুজনক, চকুর হিত-কারক, বারুব প্রকোপক এবং ইহা মূত্রকুছু, অগানী, দাহ, পিত্ত ও রক্তনোষ নাশক।

थ कु भवग्रं।

কুশো দর্ভন্তথা বৃদ্ধি: স্বচ্চাটো যজ্ঞ ভূষণঃ। ভতোহক্ষো দীর্ঘপত্র: স্থাৎ ক্ষুরপত্রন্তথৈব ৮॥ দার্ভন্তর তিদোবন্ধ: মধুরং ভূবরং হিমস্। মৃত্রকুক্তরাশ্বরীভূষণ-বন্তির কুপ্রদরাশ্রন্তি ॥

季4 1

কুশ তৃইপ্রকার। তন্মধ্যে এক প্রকারের প্রায়ান—কুশ, দণ্ড, বহি, স্বচাপ্র ও বছল্ভ্রশ। অপর প্রকারের প্রায়ান—দীর্ঘপত্র ও কুরপত্র। এই উক্তয় প্রকার কুশই—ত্রিদোযনাশক, মধুর-ক্রায়-রম, শান্ত্রীধ্য এবং ইহা মুত্রকুছু, অশ্যরী, ভৃষ্ণা, বস্থিগত রোগ, প্রদর ও রক্ত দোষ নাশক।

অথ কন্তৃ।ম্।

কল্পং রৌহিনং দেব-জন্ধং সৌগন্ধিকং তথা। ভূতিকং ধ্যাম পৌরঞ্চ ক্রামকঃ ধ্যাগন্ধিকম্ ॥ মৌহিষং ভূবরং ভিক্তং কটুপাকং বাপোহতি। হুৎকণ্ঠব্যাধিপিভাল্ল-শূলক;সকফজ্জান্॥

রামকর্পর।

কঙ্গ, রৌইষ, দেবঁজ্ঞা, সৌগন্ধিক, ভৃতিক, ধ্যাম, পৌর, শ্যামক ও ধ্মগন্ধিক, এই কম্বেকটি কঙ্গের পর্য্যায়। কঙ্গ (রামকর্পূর)—ক্ষায়-তিজ্ঞ-রস, কটুবিপাক এবং ইহা হচ্ছোগ, কগুরোগ, পিত্ত, রক্তদোষ, শূল, কাস, কফ ও জ্বনাশক।

অথ ভূতৃগম্।

গুহুৰীজন্ধ ভূঠীকং কুগন্ধং নামুক প্ৰিয়ন । ভূকুৰাৰ ভবেচ্ছতো ম;লাভূণকনিতাপি । ভূকুৰাং কটুকং তিজ্ঞং তীক্ষে,ক্ষং রেচনং লযু । বিলাহি নীপনং ক্লক্ষনেত্ৰাং মুৰণোধনম্ । অবুবাং বহুবিট্কঞ্পিত্যক্ত প্ৰদূৰণম্ ॥

গৰুত্ব।

গুহবীর, ভূতীক, স্থার, জমুকপ্রির, ভূত্ব, ছত্র ও মালাত্ব, এই করেকটি গন্ধতুলের পর্যার। ভূত্ব—কটু-ভিক্ত-রন, তীক্ষ, উষ্ণ-বার্যা, বিরেচক, লগু, বিদাহী, আগ্রর দীপক, রুক্ষ, নেত্রের অহিতকর, মুথ-শাবক, অর্ষা, মলবর্দ্ধক এবং ইহা পিত্ত ও রক্তের ছষ্টিকারক।

व्यथ नीलपृद्ध।।

নীলদুৰ্বা সংখ্যান্ত ভাগিবা শতপৰ্বিকা।
শশং সহস্ৰবীষ্যা চ শতবলী চ কীৰ্ত্তিতা ।
নীলদুৰ্বা হিবা তিকা মধুমা তুবরা হরেৎ।
কক্ষিতাশ্ৰবীসৰ্পন্তুকাদাহত্যামন্মান্।

নীলদুর্কা, কহা, অনস্তা, ভার্গবী, শত-পর্কিকা, শব্দ, সহস্রবীর্যা ও শতব্দী, এই ক্ষেকটি নীলদুর্কার পর্যায়। নীলদুর্কা— শতবীর্ষা, ভিক্ত-মধুর-ক্ষায় রস এবং ক্ফ, পিন্ত, রক্তদোষ, ১্বীদর্প, ভৃষণ, দাহ ও চর্মরোগ নাশক।

শ্ব শ্বেতদূর্বা।

দুৰ্কা শুক্লা ভূ গোলোমী:শতনীয়া চ কথাতে:। শেতদুৰ্কা কৰায়া শু:९ স্বাধী ত্ৰণা চ कीरमी ॥ ভিক্তা হিমা বিসৰ্পায়-ভূটপিত্ৰকদাহকৎ ॥

গোলোমী ও শতবীর্য্যা, এই হুইটি খেতদূর্মার নামান্তর। খেতদুর্মা—ক্ষায়-তিব্ধমধুর-রস, ব্রণনাশক, ওজোবর্দ্ধক, শাতবীর্য্য
বেং ইহা বিদর্প, রক্তদোষ, তৃষ্ণা, পিত্ত, কফ ও
দাহ নাশক।

অথ গণ্ডদুৰ্বা।

গওদুৰ্কা তু গঞ্জালী মংক্তাক্ষী শকুলাক্ষক:। গঙদুৰ্কা হিমা লোহ-দ্ৰাবিণী আহিণী লঘু:॥ তিজা কৰায়া মধুৱা বাতকৃৎ কটুপ কিনা। দাহতৃকাবলাসাত্ৰ-পিততুষ্ঠ অৱাপহা॥

গওদুর্কা।

গণ্ডালী, মংস্তাক্ষী ও শকুলাক্ষক, এই কমেকটি গণ্ডদুর্বান নামান্তর। গণ্ডদুর্বা—
শীতবীশ্য, লোংজাবক, ধারক, লঘু, ভিক্ত-ক্ষায়মধুর-রস, বাযুবর্দ্ধক, কড়বিপাক এবং দাহ, ভৃষণ,
কফ, কুন্ত, রক্তপিত্ত ও জ্বরনাশক।

অথ বারাহাকনঃ ।

বার: হাকন্দ এবাজেন্দ্র কারালুকো, মতঃ।
অনুপে স ভবেদ দেশে বরাহ হব লোমবান্।
বিদারা স্বান্ধন্দা চ সা ডু কোট্রা সিতা গতা।
ইন্দুগনা কারবলী ক্ষারভারা সংখিনী।
বারাহবদনা গৃষ্টিব দরেতাপি কথাতে।
বিদারী মধুরা বিদ্ধা বৃংহণা অভ্যক্তরা।
নীতা স্বায়া মুক্রনা চ জাবনা বলবণদা।
ভক্তঃ পিত্যাপ্রপান-দাহান্ হস্তি রসায়নী।

চামার আলু। বারাহীকন্দ অনুপদেশে উৎপন্ন হয়। উহাতে শুকরের ক্যায় লোম থাকে। বিদারী, ষাত্রকলা, ক্রোষ্টা, সিতা, ইক্সুগন্ধা, ক্ষীরবন্নী, ক্ষীরগুলা, পর্যাঘনী, বারাহবদনা, গৃষ্টি ও বদরা, এই করেকটি বারাহীকন্দর (চামার-আলুর) পর্যায়। বারাহীকন্দ-মধুব-রস, স্থিম, পৃষ্টিকারক, স্তম্ভনক, শুক্রজনক, শীত-বীর্যা, স্বরবর্দ্ধক, মৃত্রকারক, ওজোবর্দ্ধক, বলকারক, বর্ণপ্রসাদক, গুক্র, রসায়ন এবং ইহা পিত্র, রক্তদোষ, বারু ও দাহ নাশক।

অথ সুষলীকন্দঃ |

তালমূলী তু বিশ্বন্তি মূবলী পরিকীর্ত্তিও। মূবলী মধুরা ব্যা বীয়োকা বংংগা গুৰু:। ভিজ্ঞা রসায়নী হস্তি গুদজান্তানিলং তথা।।

जानगृनी ।

মুধলী তালমূলীর পর্যাায়। তালমূলী—
মধুর-তিক্ত-রস, শুক্রবর্দ্ধক, উষ্ণবীর্যা, পৃষ্টিকারক, গুরু, রসায়ন এবং ইছা অর্শ: ও
বার্নাশক।

অথ শতাবরী মহাশতাবরী চ

শতাবরী বহুপ্রতা ভীক্রিন্দীবরী বরা।
নারার্গা শতপদী শতবীয়া চ পীবরা।
মহাশতাবরা চান্তা শতম্পূর্যক্ষিণটকা।
সহপ্রবীয়া হেতুক ক্ষাপ্রোক্তা মহোদরী।
শতাবরী শুক: শীতা তিকা বাদী রসায়নী।
মেধাগ্নিপুষ্টদা প্রিদ্ধা নেত্র্যা শুক্মাতীশার্জিৎ।
শুক্তবাক্রী বন্যা বাতপিত্তাপ্রশোধ্জিৎ।
মহাশতাবরী মেধ্যা হল্যা ব্যা রসায়নী।
শীতবীয়া বিহন্ত্যর্শো-গ্রহণীনয়নাময়ান।

শতমূলী ও মহাশতমূলী।

শতাবরী, বহুস্কতা, ভীক্ষ, ইন্দাবরী, ব্রী, নাবারণী, শতপদী, শতবীর্য্যা ও পীবরী এই করেকটি শহমূলীর পর্য্যায়। শতমূলী, উর্দ্ধ-কৃষ্টিকা, সহস্রবীর্য্যা, হেতু, ঋষ্যপ্রোক্তা ও মহোদরী, এই করেকটি মহাশতাবরীর নামা-স্তর। শতাবরী—গুরু, শাতবীর্য্য, তিক্ত-মধুর-রস, রসারন, মেধা, অগ্নি ও পৃষ্টিকনক, স্নির্ম্ব, চকুর হিতকারক, শুক্রবর্দ্ধক, স্তম্মুদ্দনক ও বন্দারক এবং ইহা গুলা, অভিসার, বায়ু, পিত্ত, রক্তদোষ ও শোথনাশক। মহাশতাবরী—শীতবীর্যা, মেধাদ্দনক, হাদয়গ্রাহী, শুক্রবর্দ্ধক, রসায়ন এবং অর্শঃ গ্রহণী ও নেত্রবোগ নাশক।

অথাপ্রগন্ধা।

গন্ধান্তা বাজিনামাদির ধগন। হয়াহ্বরা। বরাহকণী বরদা বলদা কুণ্ঠগন্ধিনী॥ অখগন্ধানিলয়েম-খিত্রশোপক্রাপহা। বল্যা রদায়নী তিক্ত-ক্রায়োকাতিশুক্রলা॥

অশ্বসন্ধা।

মধগন্ধা, অধাহ্বয়া, বরাহকর্ণী, বরদা, বলদা ও কুষ্ঠগন্ধিনী, এইগুলি এবং যে সকল শব্দের আদিতে অধ্বাচক শব্দ ও অন্তে গন্ধ শব্দ থাকিবে, সেই সমস্ত শব্দ অধ্বগন্ধার পর্যায়। অধ্বগন্ধা—বায়, কন্ধ, ধিত্ররোগ, শোথ ও ক্ষমরোগ নাশক, বলকারক, রসায়ন, তিক্তকবায় রস, উন্ধবীর্য্য এবং অত্যন্ত ভক্তবদ্ধক।

অথ পাঠ।।

পাঠাম্বঠাম্বঠকী চ প্রাচীনা পাপচেলিকা। একার্টানা রমা প্রোকা পাঠিকা বরতিকিকা। পাঠোকা কটুকা তীকা বাতলেমহরীৡলঘু:। হস্তি শুলম্বরচ্ছদি-কুঠাতীসারহজ্ঞা। দাহকভূবিষশাস-ক্রিমিগুলগরত্রণান্॥

আক্নাদি।

পাঠা, অষ্ঠা, অষ্ঠকী, প্রাচীনা, পাপ-চেলিকা, একার্টালা, রেসা, পাঠিকা ও বর-তিক্তিকা, এই ক্ষেকটি আক্নাদির পর্যায়। আক্নাদি—উফবার্গা, কট্রস, তীক্ষ্ণ, লবু এবং ইহা বায়ু, কফ, শূল, জা, বিমি, কুঠা, অভিসার, হুজোগ, দাহ, কণ্ণু, বিষ, খাস, ক্রিমি, গুল্ম, গরদোষ ও এণ নাশক।

অথ শ্বেতত্রির্ৎ।

খেতা ত্রিবৃৎ ত্রিভণ্ডী স্থাৎ ত্রিবৃতা ত্রিপুটাপি চ। সর্ব্বাসুস্থৃতিঃ সরলা নিশোত্রা রেচনীতি চ। খেতা ত্রিবৃদ্রেচনী স্থাৎ স্বাস্থ্রকণা সমীরহৃৎ। কক্ষা পিত্তব্যর্গ্রেখ-পিত্তশোখোদরাপ্রা।

খেত তেউড়ী।

খেতা ত্রিবৃৎ, ত্রিভণ্ডী, ত্রিবৃতা, ত্রিপুটা, সর্পান্মভূতি, সরলা, নিশোতা ও রেচনী, এই করেকটি রেত তেউড়ীর নামান্তর। থেত-তেউড়ী—বিনেচক, মধুব-বস, উষ্ণবীর্গা, কক্ষ এবং ইহা বায়, পিতৃত্ব, কফ, পিতৃ, শোগ ও উদ্বন্ধানাশক।

অথ কুক্তিরং।

িক্তি (মান্তচ্চা চ প্রিন্দী চ ক্রেণিকা। মধ্বাকলা কলো কৈছিল কালমেদিকা। গুমো নির্বাহ কেটা হীনাভগা তার্ডারেচনা। মুক্তাদ্ধেম্বাভি ক্তেব্রেক্থাকাবিশা।

क्रक (उडेंधी।

শ্রানা ত্রিং, অর্চন্দা, পানেনা, স্থানিকা, নহর্বনেনা, কালা, কৈবিকা ও কালমেবিকা, তাই ক্যেকটি ক্লম তেউড়ী গ্রানার। ক্লম তেউড়া অপেনা কিঞ্চিং হানপ্তণ; ক্লম্ভ ইহা তাক্লাবিরেচক এবং মূর্চ্ছা, দাহ, মত্ত্য, ভান্তিও ক্টনোবকারক।

অথ, লঘুদ তাঁ বৃহদ তা চ।

লগুদন্তা নিশল্যা চ স্থাছ্ছ্মবংগণিপি।
তথৈরওফলা শীলা প্রেন্থটা থুণ্পিয়া ।
বারাগালী চ কথিতা নিক্স্কন্ট মকুলকঃ।
জনতা সম্বর্গ চিত্রা প্রত্যক্পণ্যকপণ্যপি।
ব্যোপচিত্রা ভারোধী প্রাক্রেল্যাথুপর্যাপি।
দতীক্ষাং সরং পাকে রসে চ কটু দীপন্য ।
গুদাক্ষ্মান্মশূলার্শ-কগুরুত্তবিদাহতুব।
তান্ধোধং হতি পিতার্ল-ক্ষ্ণেণোদ্যক্রিমীন্।
ক্ষুদ্রভাক্তন্ত স্থান্ধ্রং রসপাক্ষাে।
শাতনং স্ট্রিম্মান্নগ্রশোধক্ষাপ্য্য ।

(দন্তী গৃই প্রকার। তন্মধ্যে যাহার পত্র উড়ুম্বর-পত্র সদৃশ, তাহাকে লগুদন্তী এবং যাহার পত্র এরগুপত্র সদৃশ, তাহাকে বৃহদন্তী বলে)। বিশল্যা, উত্তম্বরপর্ণী, এরগুফলা, শীঘা, শুেনঘণ্টা, ঘুণপ্রিয়া, বারাহাঙ্গী, নিকুন্ত ও মকুলক, এইগুলি লগুদন্তীর পর্য্যায়। শুবন্তী, সম্বরী, চিত্রা, প্রত্যক্পর্ণী, অর্কপর্ণী, বৃষা, উপচিত্রা, গুলোধী, প্রত্যক্ষেণী ও আগুশ্লী এই কয়েকটি গৃহদন্তীর পর্য্যায়।

দন্তীষর—সারক, কটুরস, কটু-বিপাক, অগ্নির দীপক, তীক্ষ, উফবীর্গ, এবং ইহা অশোবলি, অন্মরী, শূল, অশঃ, কণ্ণ, কুঠ, বিদাহ, পিও, বক্তদোম, কফ, শোপ, উদর ও ক্রিমি বিনাশক। লখুদন্তীব ফল—মধুবরস, মধুব-বিপাক, শতবীক্ষ, মলমুক্রিয়ারক এবং গ্রাদেনি শোপ ও কফনাশক।

व्यथं जराशानः ।

.জয়পালে। দতীবীজং বিখ্যাহং ভি**ন্তিড়ী**ফলম্। জয়পালে। গুৰুঃ শ্লিমো বেচা পিতৃক্ফপ্ৰিঃ ।

জয়ণাল, দস্তানীজ ও তিন্তিড়ীদল, এই কয়েকটি জয়পালের প্রনায়। জয়পাল—গুরু, সিগ্ধ, রেচক এবং পিত্ত ও কফনাশক।

অথেক্রবারণীদ্বয়ম্।

ব্ৰন্দীপ্ৰবাৰণ চিত্ৰা গৰাকী চ গৰাদনী। বাৰুণী চাপৰাপ্যকা দা বিশালা মহাকলা। বেতপুপা মৃগাকী চ মৃগৈৰ্বাক মৃগাদনী। গৰাদনীবয়ং ভিক্তং পাকে কটু সৰং লঘু। বীৰ্যোঞ্চং কামলাপিত্ত-কক্ষ্মীহোদরাপহম্। বাসকাসাপহং বুঙ-গুনুগুহিৰণপ্ৰণ্ । এমেহমূচ্গৰ্ভাম-গওাময়বিষাপহম্॥

রাখালণ্ণা।

ক্রন্ত্রী, ইন্দ্রবারণী, চিত্রা, গবাক্ষী, গবাদনী ও বারণী. এইগুলি রাথালশশার পর্য্যায়। অপর এক প্রকার রাথাল শশা আছে, তাহার নাম—বিশালা, মহাফলা, শ্বেতপূজা, মৃগাক্ষী, মৃগৈর্বাক ও মৃগাদনী। ঐ থিবিধ ইন্দ্র বাক্ষনীই—তিক্তরস, কটু-বিপাক, সারক, লঘু, উষ্ণবীর্গ্য এবং কামলা, পিন্ত, কফ, প্লীহা, উদর, শ্বাস, কাস, কুন্ন, গুলা, গ্রন্থি, ব্রন, প্রমেহ, মৃচ্গার্ভ, আমদোন, গলগাও ও বিষ নাশক।

ज्य माला।

নালা তু নীলিনা তুলি কালা দোলা চ নীলিকা।
রঞ্জনী গ্রাফলা তুচ্ছা গ্রামাণা মধুপণিকা।
ক্লাভকা কালকেশা চ নীলপুশা চ সা শ্বাতা।
নীলিনী রেচনা তিন্তা কেন্ডা নোহভাগাপ্য।
উকা হস্তাদরপ্রাহ-বাতরক্তক্ষণানিলান্।
আমবাতমুদাবর্ত্তং মদক বিষয়ক্ষত্ম।

नौन।

নীলী, নীলিনী, তুর্না, কালা, দোলা, নীলিকা, রঞ্জনী, প্রীফলী, তুঞ্চা, প্রামীণা, মধুপর্ণিকা, ক্রীতকা, কালকেনা ও নীলপুষ্পা, এই কয়েকটি নীলের পর্যায়। নীলী—রেচক, তিক্করম, কেশের হিতকারক, উষ্ণবীর্যা এবং ইহা নোহ, ত্রম, উলর, প্রাহা, বাতরক্ত, কফ, বায়ু, আমবাত, উদাবর্ত্ত, মনরোগ ও উদ্ধৃত বিষ্
নাশক।

অথ শরপুঙাঃ।

শরপুঝ: স্নাহশক্রনীনীরকাকুতিক স:। শরপুঝো যকুৎসাহ-গুলারণবিষাপহ:। ডিক্ত: কযায়: কাসাস্ত্র-খাসজ্বররো লগুঃ॥

প্লীহণক্র, শবপুজার নামান্তর। ইহার আকৃতি নালীবৃক্ষ সদৃশ। শরপুজ্—িতিক্ত-ক্ষায়-রস, লবু এবং ইহা যকুং, প্লীহা, গুলা, বুণ, বিষ, কাস, রক্তদোব, খাস ও জ্বা নাশক।

অথ যবাসে! তুরালভ: চ।

যাসো যবাসে! হুঃশর্শো ধ্রবাস: কুনাশক:।

ছরালভা হুরালভা স্মুদ্রাভা চ রোদনী।
গান্ধারী কছুরানভা ক্রান্ধা হুরভিগ্ন!।

যাস: সাহ: সরন্তিক্তস্তবর: শীতনো লঘু:। কলমেদোমদলান্তি-পিতাস্কৃত্ঠকাসজিৎ। তৃশ্বিসপ্বাতাশ্ৰ-সমিজ্বরহর: মৃতঃ। যবাসপ্ত গুণেস্থলা বুধৈককা ছ্রাল্ডা॥

যবাস ও তুরালভা।

যাস, যবাস, হঃম্পাশ, প্রয়াস, কুনাশক, ত্রালভা, ত্রালভা, সমুলান্ত: রোদনী, গান্ধারী, কচ্চুবা, অনস্তা, কথারা ও ত্রভিগ্রহা এই করেকটি একপ্রনায়ক শুন্ধ। যবাস—মধুর-ভিত্ত-ক্ষায়-রস, সাবক, শাত্রীয়া, গ্লু এবং ইহা কক, মেদ, মন্ত্রা, ভ্রান্তি, পিন্ত, রক্ত, কুঠ, কাস, তৃষ্ণা, বিস্থা, বাতরকা, বমি ও জরনাশক। ত্রালভাও যবাসভুলা গুণ্যুক্ত:

অথ মুণ্ডা মহামুণ্ডা চ।

মুখী ভিক্ষুরপি প্রোক্তা শ্রাবণী চ তপোধনা।
শ্রবণাহ্বা মুখিডিকা তথা শ্রবণশীর্কা।
মহাশ্রবিণিকান্তা তু সা স্থতা ভূকদিকা।
কদমপুশিকা চ জানবাধাতিতপাধনী ।
মুখিডিকা কটু: পাকে বাংগাদেশ মধুরা লঘু:।
মেধা গঙাপচীকুজ-ভিনিবোন্তর্ভিপাভূত্ব।
গ্রাপদাক্ষ্যপ্রার-গ্রীহনেদো ভদাভিত্ব।
মহামুখী চ ভত্ত ল্যা গুণেকত্ব। মহামুখী চ ভত্ত ল্যা গুণেকত্ব। মহামুখী চ

ग् अती अ धूं है कहता।

মৃত্তী, ভিক্ষু, প্রার্থনী, তপোধনা, প্রবণাহ্বা, মৃত্তিতিকা ও প্রবণশার্থকা, এই কয়েকটি মৃত্তিরীর পর্যায়। মহাপ্রাবণিকা, ভূকদিহকা, কদমপ্রপিকা, অব্যথা ও অতিতপস্থিনী এইগুলি ভূইকদম্বের পর্যায়। মৃত্তিতিকা—কটুবিপাক, উষ্ণবার্থ, মধুর-রদ, লগু, মেগাজনক এবং ইহা গলগত, অপচা, মৃত্রকজু, ক্রিমি, যোনিরোগ, পাঞ্গু, শ্লীপদ, অক্লাচ, অপস্থার, প্লীহা, মেদ ও গুহুত্ব ব্যাধি বিনাশক। মহামৃত্তীও মৃত্তীর স্থায় ওণপুক্ত বলিয়া মহর্ষিগণ কর্ত্বক উক্ত

অথাপামার্গঃ।

অপামার্গন্ত শিবরা হৃধ:শল্যো ময়ুরক:।
মর্কটা দুগ্র হা চাপি কিশিহী ধরমঞ্জরী ॥
অপামার্গ: সরস্তীক্রো দীপনন্তিক্তক: কট্:।
পাচনো রোচনন্দর্ভিনক্তমেদোহনিলাপহ:।
নিহস্তি হৃদ্ধাধার্শ:-কঙ্গুলোদরাপটী:॥

আপাং।

অপামার্গ, শিশরী, অনঃশল্য, ময়রক, মর্কটা, ছগ্রাহা, কিলিহা ও খরমঞ্জরী, এই কয়েকটি আপাঙ্গের পর্য্যায়। অপামার্গ—
সারক, তীক্ষ্ণ, অগ্নির দীপক, তিক্ত-কটুরস, পাচক, রুচিকারক এবং ইহা বমি, কফ, মেদ, বায়ু, হুদ্রোগ, আগ্রান, অশঃ, কড়, শূল, উদর, ও অপচী বিনাশক।

অথ রক্তাপামার্গ:।

রক্তোহজ্যে বশিরো বৃত্ত-কলে। ধ্যাগবোহপি চ। প্রত্যক্পণী কেশপণী কথিতা কপিপিঙ্গলী ॥ অপামার্গোহরণো বাত-বিষ্টুজী কফক্ দ্বিমঃ । রক্ষঃ পূর্বস্তবৈন্যুনঃ কথিতো গুণবেদিভিঃ ॥ অপামার্গকলং স্বাহ্ন রবে পাকে চ হুর্জরম্ । বিষ্টুজি বাতলং রক্ষং রক্তপিতপ্রসাদনম্ ॥

লাল আপাং।

বশির, বৃত্তফুল, ধামার্গব, প্রাত্ত্রক্পণী, কেশপণী ও কপিপিপলী, এই করেকটি রক্ত অপামার্গের পর্যাার। রক্ত অপামার্গ—বায়-বদ্ধক, বিষ্টম্ভকারক, কফকর, শাত্ত্বীর্য ও কৃক্ষ। ইহা শ্বেত অপামার্গ অপেক্ষা কিঞ্চিৎ অল্ল গুণযুক্ত।

আপাংবীজ—মধুররস, মধুর-বিপাক, ত্বপাচ্য, বিষ্টজী, বায়বদ্ধক, ক্রণ এবং ইহা রক্তপিত্ত প্রসাদক।

অথ কোকিলাকঃ।

কে।কিলাক্ষন্ত কাকেকুরিকুরঃ ক্রকঃ ক্রঃ। ভিক্: কাভেকুরপুরত ইকুগন্ধেকুরালিকা॥ কুরক: শীতলো বৃষা: সাদমপিত্তলন্তবা। তিকো বাতামশোপাশ্ম-তৃষ্ণান্যচানিলাম্মজিৎ॥

কুলেখাড়া।

কোকিলাক, কাকেকু, ইকুর, কুরক, সুর, ভিকু, কাণ্ডেকু, ইকুগলাও ইকুবালিকা, এই করেকটি কোকিলাকের প্রধায়। কোকিলাক (কুলেখাড়া)—শাতবীর্যা, শুক্রবর্দ্ধক, মধুর-অম্ল-ভিক্তরস, পিত্রবদ্ধক এবং ইহা আমবাত, শোগ, অন্যারী, তৃষ্ণা, অরুচি ও বাতরক্ত নাশক।

অথাস্থিসংহারঃ।

এন্থিনানন্থিসংহারা বজাঞ্জী বান্থিশৃথক।।
অন্তিসংহারকঃ প্রোক্তো বাতক্ষেম্বরে স্থিযুক।
উদ্ধান সরা ক্রিমিল্লক জুলাস্থাইক্ষিরোগজিও।
কল্পাং পাড়ল বুরু বাঃ পাচনা পিউলঃ স্বতঃ।
কাণ্ডং ত্বপ্ বিরহিত্যন্থিশুগুলায়া
মাবাদ্ধং ভিদলমকক্ষকং তদক্ষন্।
সম্পিষ্ঠং তদকু ততন্তিলগু তৈলে
সম্পন্ধ ব্যক্ষাতীৰ বাংহারি॥

হাড়ভ**াঙ্গ**।

গ্রহিমান, অন্থিসংহারী, বহাগী ও আন্থশৃজ্ঞালা, এইগুলি হাড়ভাঙ্গার পর্যায়। ইহা
বাতপ্রেমাশক, ভগ্ণ-অন্থির সংযোজক, উষ্ণবীধ্য, সারক, ক্রিমিয়, অশোনাশক, চক্ষ্রোগে উপকারক, রুক্ষ, স্বাহু, লঘু, বলকারক, পাচক ও পিত্রজনক। ইহার ত্বক্
কোলিয়া কাণ্ডের চূণ অর্জ মাষা ও তুষরহিত
দাইল সিকি মাষা একত্র পেষণ করিয়া তিলতৈলে পাক কবত বটক প্রস্তুত কবিবে, এই
বটক অতিশ্য বাত্নীশক।

অথ গন্ধপ্রসারণী।

প্রসারণ রাজবলা ভদ্রপণী প্রতাপনী। সর্বণা সার্বণ ভদ্র। বলা চাপি কটভ্রা ॥ প্রসার্বণী ওক্স যা। বলসন্ধানকুৎ সরা। বীষ্যোপা বাতহুৎ তিকা বাতর্জুক্দাপ্র।॥

গন্ধভাত্তে।

প্রসারশী, রাজবলা, ভদ্রপর্ণী, প্রতাপনী, সরণী, সারণী, ভদ্রা, বলা ও কটন্তরা, এই করেকটি গন্ধভাহলের পর্য্যায়। গন্ধভাহলে— শুরু, শুক্রজনক, বলকারক, ভ্রমংযোজক, সারক, উন্ধ্রবিধ্য, বাতন্ন, তিন্তর্ম, এবং ইহা বাতরক্ষ ও কফনাশক।

অথ শারিবাদ্বয়ম।

(ক্ৰঃশারিবা) ইয়ং জম্বৰৎপত্ৰা সগন্ধা কলঘণ্টিকা। কৃষ্ণা তু শারিবা ভ্যামা গোপী গোপবণুক্ত সা॥ (শুরশারিবা)

্ডির-শারবা)
ইয়মণি জহুকবংপ্রা ভ্রমণভা ব্রত্ভিন্তি।
ধবলা শারিবা গোপা গোপক্সা কুশোদনা ।
ক্ষোমা গোপবলী লতাকোতা চ চন্দন। ।
ভ্যামাপদেন কুকা খেতাপি শারিবা কগতে, শাবতেন
শারিবানাতে সারিবাপদন্ত প্রযুক্তরাং। তদ্যগা—
শারিবারাং নিশি ভাষা ভামেটি ইরিতাসিতাবিতি।
সারিবাযুগলং সাদ্ধ বিদ্যং ভক্রকরং ওরং।
অধিনান্দ্রিভিযাস-কাসামবিধনাশন্ম।
দোবত্ররাপপ্রদ্র-ক্রাণ্ডাস্যনাশন্ম।
বেদনং মৃত্তকুদ্বলাং পরা ব্রাং ব্যায়ন্ম।
উপদংশিকরে গছা স্বর্ধচ্ছবিকার্ড।
ভামবাতং বাত্রভং গ্রেলিগংক্টনশ্রেই।

শ্রামালতা ও অন্তুম্ব।

সারিবা ছুই প্রকার, রুফা ও খেত। এই উভয়বিদ শারিবার সাধাবে নান প্রানা এবং তল্পদে রুফা শারিবার পত্র জামপজের জায়, ইহা স্থান্ধি। কলখন্টিকা, গোপী ও গোপ-বর্গ ইহার প্রধায়।

শেত শানিবার পত্রও জামপত্রের স্থায়। এই লভার অভ্যন্তরে ত্থের স্থায় পদার্থ-বিশেষ থাকে। ইছার পর্য্যায়—ববলা, গোপী, গোপক্সা, রুশোদ্রী, ক্ষেটা, গোপব্রী, লভাক্ষেতা ও চন্দ্রনা।

শারিবাম্ম—সাচ, স্নিগ্ন, শুক্রজনক, শুকু, ত্রিদোমনাশক, সম্মকাবক, মৃত্রকর,

বলবৰ্দ্ধক, ব্যা ও রসায়ন। অগ্নিমান্দ্য, অক্লচি, খাস, কাস, আমজ রোগ, বিয়দোষ, রক্তপ্রদর, জরাতীসার, ঔপদংশিক-বিষজাত বিবিধ বিকার, সকল প্রকার চন্মরোগ, আমবাত, :বাতরক্ত ও অবিধি-পারদসেবন জাত রোগ সমস্ত ইহা ধারা প্রশাসত হয়।

অথ য়তকুমারী !

কুমারী গৃহকতা চ কতা মৃতকুমারিকা।
কুমারী ভেদিনী শীতা তিকা নেত্রা রসায়নী ॥
মধ্রা বৃংহণী বল্যা ব্যা বাতবিষ্প্রপূহ।
গুলালীহযকুদৃত্দ্ধি-কক্ষরহরী হরেব।
এখাশ্বিদক্ষবিশ্বোত-পিত্রক্তহগাময়ান্ ॥

কুমারী, গৃহকল্পা, কল্পা ও গুতকুমারিকা, এই কয়েকটি গৃতকুমারীন নামান্তর। গৃত-কুমারী—ভেদক, শাতবীগা, তিল্ত-মধুর-রম, চক্ষুর হিতকারক, রমায়ন, পুষ্টিজমক, বলকর, শুক্রবর্দ্ধক এবং ইহা বাল্য, বিষ, শুলা, প্রীহা, বঙ্কং, বৃদ্ধি, কল, জন, গ্রান্ত, সাম্লিগ্ধ, বিশ্লোট, বক্তপিত ও চক্ষরোগ, নাশক।

অগ প্রেতপুনর্নবা।

थूनसंता (यहम्मा आ**यद्यी मोर्चशक्ति।** कर्मेः करायां पुत्रमा शो**ष्ट्रकीशनी श्री।** आयां निवसरक्षयः स्त्री अस्तीकाश्यस्य ॥

গুননবা, বেতমূলং শোগনা ও দীর্ঘ-পত্রিকা, এই কল্পেকটি বেত পুননবান নামা-স্তর। বেত-পুননবা—কটুরস, কষায়ানুরস, পাঞ্-বোগন্ন, আনির আন্তঃ দীপক এবং ইহা শোথ, বালু, গুবদোষ, কফা, এব ও উদ্যুৱোগ নাশক।

এথ রক্তপুনর্নব।।

পুনন্বাপরা রক্তা রক্তপুপো শিলাটিকা। শোপমা গুজবধা দুর্মকেতুঃ কঠিলকঃ। পুনন বারুণা তিওা ফটুপাকা হিনা লঘু।। বাতলা গ্রাহিণী রেম-পিতরক্তবিনাশিনা। অপর একপ্রকার পুনর্না আছে, তাহা রক্তবর্ণ। রক্তপূষ্পা, শিলাটিকা, শোধমী, কুদ্রবর্যাভূ, র্যকেতৃ ও কঠিয়ক, এই কয়েকটি রক্ত-পুনর্নার পর্য্যায়। রক্ত-পুনর্না—তিক্তনরদ, কটুবিপাক, শাতবীর্য্য, লণু, বায়ুবর্দ্ধক, পারক এবং ইহা কফ, পিত্ত ও রক্তমৃষ্টি-বিনাশক।

অথ ভঙ্গরাজঃ।

ভূপরাজে। ভূপরজো মার্কনো ভূপ এব চ।
অপারক: কেশরাজো ভূপার: কেশরপ্রন: ॥
ভূপার: কটুকন্তাকো কক্ষোণ: ককবাতত্ত্ব।
কেশুব্রচ: ক্রিমিখাস-কাসলোপামপাভূম্ব, ॥
দড্যো রসায়নো বলা: কুঠনেত্রশিরোহর্ভিড্ব, ॥

ভীমবাকু ৷

ভূম্বাজ, ভূম্বজ, মার্কব, ভূম্ন, অম্পারক, কেশরাজ, ভূম্পার ও কেশরঞ্জন, এই কয়েকটি ভীমরাজের প্যায়। ভীমরাজ—কটুরদ, তীক্ষ্ণ, কক্ষ্ণ, উষ্ণবীধা, কেশের ও ভ্রেকর হিতকারক, রদায়ন, বলকাবক, দন্তের দৃঢ়তানম্পাদক এবং ইহা ক্রিমি, খাদ, কাদ, শোথ, আদদোয, পাড়, কুঠ, নেত্রবোগ, শিরোরোগ ও বাত্রোগ্রাব নাশক।

অথ শাপুন্পা ।

শণপূষ্ণী আতা দটা শণপুষ্পমমাকৃতি। শণপুষ্ণী কটুন্তিভা বামিনী বক্ষবিভজিৎ ॥

শণপূষ্পীর অপর নাম ঘণ্টা, ইহার **আন্ধৃতি** শণপূষ্পার আর। শণপূষ্পী—কটু-ভিক্ত-রম বমনকারক এবং কফ ও পিত্ত নাশক।

অথ ত্রায়মাণা।

বলডকা এবিমাণা ভাষতা গিরিজাওনা। ভাষতী তুবরা ভিত্তা নরা পিওকফাপহা। স্করহন্তোগগুলাশো-ভ্রমশুলবিম্বগুণ্ড।

বলাডুমূর।

বলভদা, আরমাণা, আরন্তী, গিরিজা ও অফুজা, এই কয়েকটি বলাডুমুরের পর্যায়। আরমাণা (বলাডুমুর)—ক্যায়-ভিজ্ঞ-রস, সারক, এবং ইহা পিন্ত, কফ, জর, ফুদ্রোগ, গুলা, অর্শঃ, ত্রম, শূল ও বিষ প্রশমক।

অথ মূৰ্বা।

নুৰ্বা মধ্রদা দেবী মোরটা তেজনী জবা।
মধ্লিকা মধুশ্রেণী গোকণী গীলুপণ্যপি ॥
মুৰ্বা দরা গুল্ল ৰাছজিলা পিতঃশ্রমেহনুৎ।
জিদোবতৃশাহন্দোগ-কগুলুইজ্বাপহা ॥

मृता।

মূকা, মধুনগা, দেবা, মোরটা, তেজনী, ক্রবা, মধুলিকা, মধুলেনী, গোকর্ণী ও পীল্পানী, এই কয়েকটি মুর্কার প্রধার। মুর্কালারক, গুরু, মধুর-ভিক্ত-রস এবং ইহা পিত্ত, রক্ত, প্রমেহ, ত্রিদোব, ত্রুলা, হুজোগ, ক গু, কুষ্ঠ ও জরনাশক।

অথ কাক্যাচা।

কাকমাচী ধ্বাজ্ঞমাচী:কাকাহ্বা চৈব বায়সী। কাকমাচী ত্রিদোষন্ত্রী থ্রিংঞ্চান্ত্র স্বত্তক্রদা। তিক্তা রসায়নী শোখ-কুঠার্শোগ্ররমেইজিব। কটুর্নত্রহিতা হিল্পা-ছর্দ্ধিহন্ত্রোগনাশিনী।

কাকমাচী, ধ্বাজ্ঞমাচী, কাকাহবা ও বাগ্নদী, এই কেয়েকটো কাকমাচীৰ পৰ্যায়। কাকমাচী— তিদোদনাশক, শ্বিষ্ক, উষ্ণবীৰ্ষা, স্বৰপ্ৰসাদক, ভক্ৰবৰ্দ্ধক, ভিক্ত-কটু-বস, বসায়ন, চক্ষুৰ হিত-কর এবং ইহা শোপ, কুন্ত, অশঃ. জন, প্রমেহ, হিন্ধা, বমি ও শুদ্রোগনাশক।

অথ কাকনাস।।

কাকনাসা তু কাকাকা কাকতুওফলা চ সা। কাকনাসা কথায়োঞা কটুকা রসপাকয়োঃ। কদদী বামনী ভিক্তা শোণাশংখিজেবুঠগুং॥

কাকঠুঁটী।

কাকনাদা, কাকাঙ্গী ও কাকতুগুফলা, এই কয়েকটি কাকঠ টার পর্যায়। কাকনাদ!— কষায়-ভিক্ত-কটু-রদ, উষ্ণবীর্য্য, কটুবিপাক, ক্ষনাশক, ব্যনকারক এবং ইহা শোপ, অর্শঃ, শ্বিত্র ও কুষ্ঠরোগ নাশক।

'অথ কা**কজ**ন্ত

ক।কঞ্জা নদীকান্তা কংকতিক্তা হলোমশা। গারাবতপদী দাসা কাকা চাপি প্রকীন্তিত: ॥ কাকজ্ঞা হিমা তিক্তা কষায়া কক্পিন্ডজিৎ। নিহস্তি এরপিন্তাপ্র-প্রণকগুবিশক্রিমীন্ ॥

(कडेब्राइका।

কাকজন্মা, নদীকান্ত: কাক্তিক্তা, স্থানামশা, পার্যাবতপদী, দাদী ও কাকা, এই ক্ষেকটি কাকজভ্যান পর্যায়। কাকজভ্যা—
শাতবীয়া, তিক্ত-কথায় রস এবং ইহা কফ, পিও, জব, বক্তপিত, রণ, কড় বিষ ও কিমি নাশক।

অথ নাগপুৰ্জা।।

নাগপুষ্ণী ষেতপুষ্ণা নাগিনী রানদূতিক। নাগিনী রোচনী ভিক্তা তীক্ষোধন ক্ষপিতত্ত । বিনিহ্'ভি বিষয় শুলা যোনিদোষবনিক্রিমীন্॥

नागश्रुष्मी।

নাগপুন্দী, খেতপুন্দা, নাগিনী ও রাম-দ্তিকা, এই করেকটি একপর্যারক শদ। নাগপন্দী—কচিকারক, তিজ্ঞরদ, তীক্ষ্ণ, উষ্ণ-বীর্ষা এবং ইহা কল, পিও, বিষ, শ্লা, সেংনি-দোষ, বিষি ও জিলি নাশক।

অথ মেষশুর্ক।।

মেৰশৃঙ্গী বিষ্ণী স্তানেষ্বল্লাডশৃঙ্গিকা। মেৰশৃঙ্গী ৰূদে ভিক্তা বাতলা খাদকাসভং। ককা পাকে কটু: কুঠ-এণপ্রেমাকিশ্লমূৎ ॥ মেষশৃদ্ধীফলং তিক্তং কুঠমেহককপ্রপূৎ। দীপনং শ্রংসনং কাস-ক্রিমিত্রণবিবাপহন্।

মেড়াশৃঙ্গী।

মেষশৃঙ্গী, বিষাণী, মেষবল্লী ও অজশৃঙ্গিকা, এই করেকটি এক পর্যাশ্বক শব্দ। মেষশৃঙ্গী— ভিক্তরস, বায়বন্ধক, ক্লক্ষ, কটুবিপাক এবং ইছা শ্লাস, কাস, কুন্ত, ব্ল, কফ ও অক্লিশল।নালক। মেষশৃঙ্গীর ফল—ভিক্ত-রস, অগ্নির দীপক, ব্রংসমপ্তল্মক্ত এবং ইছা কুন্ত, প্রমেহ, কফ, কাস, ক্রিমি, রণ ও বিষ-দোস নালক।

অগ হংসপদা

२२मगः हो २ मगमा कोँग्रेमाचा विला, किला। २ मगमा १५ करः बोला २ छि उक्तरिष्ठवर्गन्। विमालनेशिक्सावन जालका विलाधिकाः

গোৱালে লন্তা।

হংসপাদী, হংসপদী, কটিমাতা ও ত্রিপা-দিকা, ইহারা একার্থবাচক শব্দ। হংসপদী— গুরু, শীতবীয়া এবং রক্তদোয়, বিদ, এশ, বিসপা দাহ, অতীসারা, লৃতাবিদ, ভূতাবেশ ও অগ্রিরাহিলী রোগ বিনাশক।

অথ সোমলত।।

সোমবলী সোমলতা সোমকীরী বিজ্ঞান। সোমবলী ত্রিদোবমী কট ভিত্রা রসায়নী।

সোমবর্ত্তী, সোমলতা, সোমক্ষীরী ও ছিজপ্রিয়া, এই কয়েকটি সোমলতার নাম। সোমলত:—বিদোদনাশক, কটু-তিক্ত রস এবং ব্যাসন্ত্র

অথাকাশবল্লী।

আকাশবর্রা তু বুধে, ক্ষিতানরবর্রী। থব্রা প্রাইন্ধী তিক্তা শিচ্চিল্যক্যানরাপহ।। তুররায়িকরী প্রস্তা শিক্তার্মাননাশিনী॥

আলক লতা।

আকাশবন্নীকে পণ্ডিতগণ অমরবন্নরীও বলিয়া থাকেন। আকাশবন্নী (আলক লতা)— ধারক, তিব্ত-ক্ষার-রস, পিচ্ছিল, অগ্নি-বর্দ্ধক, সন্থ, নেত্ররোগন্ন এবং পিত্ত কফ ও আম নাশক।

অথ পাতালগরুড়ী।

জিলিছিটো মহামূলঃ পাত্রেগ্রস্কুড়কের। ভিলিভিট: প্রং বুষা: কফর: প্রনাপ্ত । পাত্রিলারকভী।

ছিলিহিন্ট, মহামূল ও পাতালগরুড়, এই কয়েকটি একপর্য্যায়ক শব্দ। পাতালগরুড়ী— অত্যন্ত শুক্রবর্দ্ধক এবং কফ ও বায়ু নাশক।

অথ বন্দা

বন্দা বৃক্ষাদনী বৃক্ষ-ভক্ষা বৃক্ষক্ত'পি চ। বন্দাক: স্তান্ধ্যান্তিক্ত ক্ষায়ো মধ্রে। রংস ॥ মান্সল্য: কফবাতাশ্র রক্ষোব্ধনিষপহ: ॥

বাদর।।

বন্দা, বৃক্ষাদনী, বৃক্ষভক্ষনা ও বৃক্ষানহা, এই ক্ষেত্ৰটো বন্দার প্র্যায়। বন্দাক (বাদ্বা)— নিতবীর্যা, তিক্ত-ক্ষায়-মধুর্-ব্লম, সঙ্গলকর, রক্ষোত্ম এবং ইহা কফ বায়, রক্তদো্য, বণ ও বিষ্দোষ নাশক।

অথ বটপর্ত্তা ।

বটপত্রী তু কশিতা মোহিজৈরাবতী বুবৈঃ। বটপত্রী ক্ষায়োকা যোনিমূত্রগদাপহা॥

বড় পাথগ্ৰুচি।

মথ হিঙ্গুপত্রী।

হিন্দুপত্রী তু কবরা পৃথ্বীকা পৃথুকা পৃথু:। হিন্দুপত্রী ভবেক্রচা তীক্ষোকা পাচনী কটু:। ক্ষম্ভিক্সখিবনার্শ: শ্লেমগুলাবিলাপহা॥

র'াধুনী।

হিন্ধুপত্রী, কবনী, পৃথুীকা, পৃথুকা ও পৃথু এই করেকটে রাধুনীর নাম। হিন্ধুপত্রী, (রাধুনী)—ক্রচিকারক, তীক্ষ ও উষ্ণবীর্ধা, পাচক, কটুরস এবং ইহা সন্দ্রোগ, বস্তিগত-রোগ, বিবন্ধ, অর্শঃ, কফ, গুলা ও বায়ু নাশক (ইহার পত্র হিন্ধুণ পত্র সদৃশ)।

অথ বংশপত্রা।

বংশপত্রী বেণুপত্র' পিণ্ডা হিঙ্গুং শিবাটকা। হিঙ্গুপত্রী গুণৈস্কলা৷ বংশপত্রী চ কীভিন্তা॥

বংশপত্রী, বেণুপত্রী, পিণ্ডা, হিন্ধু ও শিবাটিকা, এই কয়েকটি একার্থবাচক শব্দ। বংশপত্রী—হিন্ধুপনীর তুল্ব গুণদায়ক।

অথ মংস্থার্ফ।

মংগু'ক্ষা বাহ্নিকা মংস্ত'নন্ধা মংস্ত'দনীতি চ। মংস্তাক্ষ' গ্ৰাহিণা শীভা কুঠপিডকফ'স্ৰভিং ॥ লঘুস্তিক্তা কম'য়। চ স্ব'দ্বা কট্ৰিপাকিনা ॥

মংস্থাকী, বাহ্লিকা, মংস্থানাও মংস্থান দুনী, এই কয়েকটি একার্থবাচক শব্দ। মং-স্থাকী—মলসংগ্রাহক, শীতবীর্যা, লম্বু, ভিক্ত-ক্ষায়-মধুর-রস, কটুবিপাক এবং ইহা কুছ, পিত্ত, কফ ও রক্তদোষ নাশক।

অথ সপাকী |

সর্পাকী স্থাৎ তু গঙালী তথা নাড়াকপালকঃ। সর্পাকী কটুকা তিজা সোকা ক্রিমিনিক্স্তনী। বৃশ্চিকোন্সুরসর্পাণাং বিষদ্মী এণরোপিণী॥

গন্ধনাকুলী।

সর্পাক্ষী, গণ্ডালী ও নাড়ীকপালক, এই কয়েকটি সর্পাক্ষীর পর্যায়। সর্পাক্ষী (গন্ধ-

উঞ্চৰীৰ্যা, লাকুলী -- কটু-ভিক্তন্মা, 39-রৌপক, ক্রিমিন্ন এবং ইহা বৃশ্চিক, ইন্দ্র ও অতীসার ও যোনিরোগ নাশক। সূর্পের বিষ নাশক।

অথ শৃদ্ধপুত্ৰী।

শমপুপী ভূ শঝাহ্বা মাজন্যকুহমাপি চ। **শন্ধপুষ্পী সরা মেধ্যায়ুন্যা মানসরোগহাৎ ॥** রসায়নী কৰায়োকা স্মৃতিকান্তিবলাখিদা। দোবাপত্মারভূতাত্রী কুঠাক্রমিনিয**্রগু**ৎ ।

শঙ্খাতলী ৷

শহাপূজী, শহাহ্বাও মাঙ্গলাকুসুনা, এই ক্ষেক্টি শৃঙ্গান্ত্লীর পর্যনায়। শৃঙ্গপুশী— স্থারক, নেগাজনক, আয়ুষ্কর, রসায়ন, ক্যায়-ক্লা, উষ্ণবীৰ্যা, শ্বতিজনক, কাস্থিবৰ্দ্ধক, বল-প্রদায়ক, অধির দীপক এবং ইহা নানসিক ব্যাধি, ক্রিদোষ, অপস্থার, ভূতদোষ, অলক্ষ্মী, কুষ্ঠ, ক্রিনি ও বিধ নাশক।

व्यथार्कशृष्ट्या।

অর্কপুষ্পী ক্রুরক্ষা পরভা জলক। মুকা। অব্পূপা ক্রিমিরেশ্ব-মেত্রিন্তবিকার্জিৎ ॥

অর্কপুপী, কুরকর্মা, প্রস্থা कांत्रका, এই কয়েকটি অর্কপুষ্পীর পর্যায়। অৰ্কপুশী—ক্ৰিমি, কফ, মেহ ও মনোবিকার নাশক।

वर्थ नक्जानुः।

লক্ষালুঃ ভাত্মীপতা সম্প্ৰাঞ্চলিকারিকার রক্তপাদী নদকারী নামা ধনিরিকেতাপি। লজানু: শাতনা ভিক্তা কথায়া কম্পতিজ্ঞিৎ। রক্তপিত্তমতীসাংং বোনিরোগান বিনাশদেৎ 1

লক্ষাবতী লভা। ৰজালু, শ্মীপত্ৰা, সমকা, অঞ্চলিকারিকা, भी, नगवाती ७ अमित्रका, अहे क्ष्मकाँ प्राप्तक पर्य । नकान-निवनीयाः

ক্ষায়-রস এবং ইছা ক্ষ, পিন্ত, খুক্তপিন্ত,

অথ অলম্ব্যা।

অলমুষা খরত্বক চ তথা মেদোগলা শ্বতা ৷ অলমুবা লঘুঃ স্বাহঃ ক্রিমিপিত্তকফাপহা ॥

ফুল শেলা।

(भारतांशना, अह অলঘুষা, প্রাপ্তক करमक्ति এकार्शवाहक भना। अलबुक-नेपु, মধুররদ এবং ইহা ক্রিমি, কফ ও পিত নাশক।

অথ তুগ্ধিকা।

ড বিকা স্বাছপণী স্থাৎ কীরা বিক্লীরিণী তথা। ছান্ধকোঞা ওন ককা বাতনা গর্ভকারিনী। পাছকীরা কটুন্ডিক্তা স্ট্রমূত্রমলাপ্রা অ'ত্রবিষ্টক্তিনী বৃষ্যা কককুঠজিনিপ্রণ্ৎ।

कीत्र है।

ভূগ্মিকা, স্বাছপর্ণী, ক্ষীরা ও বিক্ষীরিণী, এই কয়েকটি একপর্য্যায়ক পন্ধ। श्चक -উষ্ণবীৰ্যা, গুরু, রুক্ষ, গর্ভজনক, বায়বৰ্দ্ধক, কটু-তিক্ত-মধুর-রস, সাহকীর, ন্লমূত্র-সংগ্রাহক, বিষ্টম্ভী, শুক্রবর্দ্ধক এবং ইহা কক কুৰ্ছ, ক্ৰিমি নাশক।

वर्थ पृत्राप्त्रमकी।

ভূম্যামলকিকা প্ৰোক্তা শিবা তা**মলকীতি** চ। বছপজা বহুফলা বহুবীৰ্যাজটাপি চ ॥ উূধাত্ৰী বাতকুৎ তিজা ক্ৰায়া বধুনা হিনা। পিপাসাকাসপিভাত্র-কক্ষকভূকতাপহা।

क् इ-जामना।

ভূম্যামলকিকা, শিবা, তীমলকী, বছপ্ৰা, त्रका, बहरीया ७ वहज्ञी, धरे क्यू की इं दे-याम्या नाव्यक्तर, একার্থবাচক শব্দ। তিক্ত-ক্ষার-মধুর-রস, नेजवीर्ग जबर পিশাসা, কাস, বক্তপিত, করু, কয় ত

অথ ব্ৰাহ্মী মণ্ডকপৰ্ণী চ।

রান্ধী কপোতবকা চ সোমবল্লী সরস্বতী।
মঞ্কপর্ণী মঞ্কী স্বন্ধী দিবা। মহৌষধী ॥
রান্ধী হিনা সরা তিক্তা লবুমে ধা চ শীতলা।
ক্ষায়া মধুনা স্বান্ধী স্বান্ধী ।
স্বা্ধা স্বৃতিপ্রদা বৃষ্ঠ-পাঞ্মেহাস্থকাসজিৎ।
বিষ্ণোপ্সবহরী তথ্যঞ্কপর্ণিনী ॥

বান্ধী ও থলকুড়ী।

রাজী, কপোতবঙ্কা, সোনবল্পী ও সংস্থতী এই করেকটি ব্রাজীন পর্যায়। আন মঙকপর্ণী, মঙুকাঁ, দ্বাং ও মহোষদাঁ, এই করেকটি মঙুকপর্ণীর নামান্তর। রাজী—সারক, শতেনার, তিজ্জ-ক্যায়-মধুর-রম, লগু, মেধাজনক, ক্রেণি, তিজ্জ-ক্যায়-মধুর-রম, লগু, মেধাজনক, ক্রেণি, কার্লী, মধুরবিপাক, আয়ুন্ধর, ক্রেণায়ন, স্বর্থজক, স্কৃতিপ্রদ এবং ইহা ক্স, পাঙু, মেহ, বজুনোর, কার্লী, বিষ, শোধ ও জব নাশক। মঙুকপ্রণিও নাজাব প্রায় গুণকাবক।

यश (मांगश्रा।

দেশা চ দেশেপুতা চ করেপুতা চ কাণ্ডিং। । দেশপুতা গুৰুঃ স্বাদৃ-শ্লাকা বাতপিওড়ং : সতাশ্বনগা স্বাদু-পাকা কট্ৰী চ ভেদিনা . ককামকামলাশেখি-তমক্ষাসন্ত্ৰিং ।

ঘল্বসিয়া।

দ্রোণা, দ্রোণপুষ্পী ও ফলেপৃষ্পা, এই করেকটি দলদসিয়ার পর্যাার। দ্রোণপুষ্পী—
গুরু, লবণ-মধুর-কটু রস, রুক্ষ, উষ্ণবীর্য্য,
বায়ুও পিত্তবর্দ্ধক, তীক্ষ্য, মধুরবিপাক, ভেদক
এবং কফ, আমদোষ, কামলা, শোণ, তমকশাস
ও ক্রিমি নাশক।

অথ স্থবৰ্চলা।

স্বর্চনা স্থ্যভক্তা বরদা নদরাপি চ। স্থ্যাবর্ত্তা রবিশীতাংপরা ক্রমস্কর্ত্ত ভা॥ হ্বর্চনো হিমা ক্রকা স্বাত্নপাকা সরা গুল:। অপিত্রনা কটু: ক্ষারা ক্রিন্তক্ষনাত্রিক । অস্তা তিক্তা ক্যায়োঞ্চা সরা ক্রকা নতু: কটু:। নিহন্তি ক্ফপিত্রাশ্র-যোনিক্রক্রিমিপাভূতা:॥ নিক্ষোটকুঠকেহাশ্র-যোনিক্রক্রিমিপাভূতা:॥ ভড়্ভড়ে।

স্বর্চনা দুর্গভেক্তা, বরদা, বদরা স্থানিবর্তা ও ববিশ্রীতা, এই করেকটি প্রথম প্রকার হুড়্ভড়ের পর্যার। ইহা শীতবীর্যা, রুক্ষ, মধুববিপাক, সারক, শুরু, সক্ষাবকটুরস, বিইন্তা এবং কফ ও বায়ুনাশক; ইহা পিত্তকর নহে। দিতীয় প্রকার হুড়্ভড়ের পর্যায়—রক্ষমুহ্লভা। ইহা ভিক্ত-ক্ষায়-কটু-রস, উষ্ণবিদ্যা, সারক, রুক্ষ, লঘু এবং ইহা কফ, রক্ত-পিত্ত, শ্বাস, কাস, অকচি, জ্বন, বিক্ষোট, কুঠ, মেহ, রক্তদোষ, গোনিব্যাপং, ক্রিমি ও পার্গবাগ নাশক।

অথ বন্ধ্যাকর্কেটিকী।

'জ্য'কলোটকা দেবা কন্সা যোগেখনীতি । । নাগানিনজ্পননা বিষক্টকিনা তথা । বজ্য'ককে'টকা লগু কদনুদ্ এণশোধিনী। স্পতিপ্তবী তীক্ষা বিষপ্তিষ্ঠানিলা ।

তিৎক।ক্রোল।

বন্ধাককোটকী, দেবী, কন্তা, যোগেশ্বরী, নাগারি, নক্রনমনী ও বিষক্টকিনী, এই ক্ষেক্টি তিংকাঁকরোলের পর্য্যায়। বন্ধা-ককোটকী—লঘু, ব্রণশোধক, তীক্ষ এবং কফ, দর্পদর্প, বিদর্প ও বিষ নাশক।

অথ মার্কণ্ডিক।।

মাকণ্ডিকা ভূমিবল্লী মাক্তী মূছরেচনী । মাক্তিকা কুঠহরী উদ্ধাধকোরশোধিনী। বিষদ্ধবিদ্যাসমী গুমোদরবিনাশিনী।

কাক্রোল।

মার্কণ্ডিকা, ভূমিবন্ত্রী, মার্ক**ণ্ডী ও মূহ-**রেচনী, এই কয়েকটি মার্কণ্ডিকার পর্যায়। মার্ক গুকা--বমন বিবেচন ক্রিয়া খাবা উদ্ধানঃকায় শোধন করে। ইহা কুট, বিষ, তুর্বন্ধ, কাস, গুলাও উদ্বরোগ নাশক।

অথ দেবদালী।

পেবদালী তুবেণী স্থাং কন্টি। চ গ্ৰাগণী।
দেবতাড়ো বুত্তকোশস্তথা জীমত ইতালি।
প্যতাপরা গরশপনা বিষয়া গ্রনাশিনী।
দেবদালী রমে তিন্তা ক্যাশিবোফপাড়তাং।
নাশয়েদ্ বামনী তিলা ক্যাহিনালিমিজ্বান্।
দেবদালীক্তবং তিক্তং কিমিশেজবিনাশনম্।
শংসনং গুলাশ্বশ্বমন্যায়ং বাতজিৎ গ্রম্।

যোষা।

দেবদালী, বেণী, কর্কটী, গরাগরী, দেবতাড়, বস্তকোণ ও জীমূত, এই কয়েকটি দেবদালীর পর্য্যায় । ইহা ঘোষাভেদ। অপর
প্রকার পাতবর্ণ দেবদালী আছে, তাহার
পর্য্যায়—খরম্পর্শা, বিষদ্মী ও গরনাশিনী ।
দেবদালী—তিক্ত-রস, বমনকারক, তীক্ষ্ণ এবং
ইহা কফ, অশাঃ, শোখ, পাড়, ক্ষয়, হিকা,
ক্রিমি ও জরনাশক।

নেবদালীফল,— তিক্তরস, অংসমগুণারুক এবং ইছা কফ, ক্রিমি, গুলা, সূল, সাণা ও বার মাণক।

অথ জলপিপ্ললী।

জনপিপ্সলাভিহিতা শারদী শকুনাদনী।
মংস্তাদনী মংস্তাদনী লাক্সনীতাপি কীর্দ্ধিতা।
জনপিশ্বনিকা হুলা চকুব্যা শুক্রনা নযুঃ।
সংগ্রাহিণী হিমা ক্লমা রক্তদাহরণাপহ।।
কটুপাকরম। স্বচ্যা ক্ষায়া ব্রুক্সিমিনী।

কাচ্ছা যাস।

জলপিপ্রলী, শারদী, শকুলাদনী, মৎস্থাদনী, মৎস্থাদনী, মৎস্থাদনী, মংস্থাদনী, মংস্থাদনী করে বিভাগদনী একার্থবাচক শক। জলপিপ্রলী—হাদরগ্রাহী, চকুর হিত্তবারক, গুক্তব্র্দ্ধক, লঘু, ধারক, শীতবীর্য্য, কুক্ষ,

কট্-ক্যায়-রম, কট্বিপাক, ক্রচিকারক, অগ্নি-বন্ধক এবং রক্তদোষ, দাহ ও ব্রণ নাশক।

অথ:গোজিহ্বা।

গোজিহন গোজিকা গোঙী দার্কিক। খরপ্রিনী। গোজিহন বাডলা শীতা আছিলী কফ্পিন্তত্ব ॥ এন্ডা প্রমেহকাসাশ্র-রণজ্বছবী লগুঃ। কোমলা ভুববা তিকা স্বাচ্পাক্রসা শ্বতা॥

গোজিয়া শাক।

গোজিহ্বা, গোজিকা, গোভী, দার্বিকা ও ধরপর্ণিনী, এই কয়েকটি একপর্য্যায়ক শক। গোজিহ্বা (গোজিয়া শোক)—বায়বর্জক, শাতবীব্য, ধারক, কফ-পিত্তনাশক, হৃদয়গ্রাহী, লগু, কোমল, তিক্ত-ক্ষায়-মধুরু-রুস, মধুর্বিপাক এবং মেহ, কাস, রক্তদোষ, রুণ ও জ্বরনাশক।

অথ নাগদমনা।

বিজ্ঞেয়। নাগদমনী বলামোটা বিষাপহা। নাগপুশী নাগপতা নহাযোগেশ্বনীতি চ ॥ বলামোটা কটুন্তিকা লঘুঃ পিন্তকফাপহা। মৃত্ৰকুক্তবান বন্ধে। নাগয়েজ্ঞাজগৰ্জভন্ম। উদরাশ্বানশমনী কোঠশোধনকারিণী। সর্ব্বগ্রহশ্রশমনী নিংশেষবিষনাশিনী। কয়ং সর্ব্বতি কুক্তে ধনদা সম্ভিপ্রদা।

नांशपना ।

নাগদমনী, বলামোটা, বিষাপহা, নাগপুলী, নাগপতা ও মহাযোগেধারী, এই কয়েকটা নাগদনার পর্যায়। নাগদনা—কটু-তিক্ত-রম, লঘু, কফপিত্তনাশক, কুক্লোম্ম এবং ইহা মৃত্রক্ষছ্ক, ব্রণ ও জালগদিভ নিবারক, উদরাধান-প্রশমক, কোষ্টবিশোধক, বিষনাশক ও গ্রহদোষ নিবারক। নাগদনা সর্বত্ত জয়কারক এবং ধন ও স্থমতিপ্রদ।

অথ বেল্লন্তরঃ।

বেলস্তরো জগতি বীরতরঃ প্রসিদ্ধঃ ৰেতাসিতারুণবিলোহিতনীলপুপা:। স্তাজাতিত্বাকুসুম: শমিসুকাপত্রঃ স্থাৎ কণ্টকী বিজলদেশজ এব বৃক্ষঃ। বেনন্তরো রদে পাকে তিক্তত্তকাকফাপহ:। মুত্রাঘাতাশ্বজিদ গ্রাহী যোনিমূত্রানিলার্জিজিৎ। বীরতক ।

বেন্নস্তর, ইহা জগতে বীরতক নামে প্রসিদ্ধ। ইহার পুষ্প খেত, ক্লফ, অরুণ, গাঢ়লোহিত বা নীলবর্ণ হয়; আকৃতি জাতিপুষ্পসদৃশ; পত্র শমীপত্রের ক্রায় হক্ষ। এই বৃক্ষ কণ্টকারত, ইহা জল্পিরহিত স্থানে জনো। বেল্লন্তর বৃক্ষ রসে ও পাকে ভিক্ত, ইহা মলসংগ্রাহক এবং ভূকা, কফ, মূত্রাঘাত, অশানী, যোনিনোগ, মূত্রাগ ও বায়ুরোগ নাশক।

অথ ছিক্ন।।

किक्नो करकर ठीका किक्ना छ। १५० था। ছিকনী কটুকা ক্লচ্যা তীক্ষোফা বহিপিতকং। বাতরভহরী কুষ্ঠ-ক্রিমিবাতকফাপহ। 🛊 अठ्डी।

ছিকনী, ক্ষবকুং, তীক্ষা, ছিকিকা ও ঘাণ-ছ:খদা, এই কয়েকটি একার্থবাচক শব্দ। হাচুটী-কটুরস, ৰুচিকারক, তীক্ষ, উষ্ণবীর্ঘ্য, অগ্নিবৰ্দ্ধক, পিত্তজনক এবং ইহা বাত্ৰক্ত, কুষ্ঠ, ক্রিমি, বার ও কফ নাশক।

অথ কুকুন্দরঃ।

বুকুন্দর: পী ৩পুম্প: কুকুনদামু ছচ্ছদ:। কুকুন্দরঃ কটুন্তিভো **অ**রবন্ত কফাপহ**ে**। রক্তপিভ্রমতাসারং দাহং যোরং নিহন্তি ৮। ত্যুলমান্ত্ৰং নিশ্বিপ্তং বদনে মুগশোষ্ঠ্ৰং ! \$\$1-(9 | 4 | 1

কুরু পাব, পীতপুষ্প, কুরুরস্রুও মৃত্যুদ্ধ, এচ কয়েকটি কুকুরশোকার প্রধার। কুকু- ইহা পিও, কদ ও অতিমার নাশক।

ন্দর—কটু-তিক্ত-রস এবং জর, রক্তদোষ ও কফ নাশক। ইহা দারা রক্তপিত্ত, অতিসার ও বোর দাহ প্রশমিত হয়। কুকুন্দরের কাঁচা মূল মুখে রাখিলে মুখণোষ নিবারিত হইয়া থাকে।

অথ ক্রদর্শনা।

रफर्मा मामवहा हक्ष म्या मधुभिक्। । স্বৰ্শনা অ'ছক্ষণ কফ্ৰোগ্স্ৰবতিছিং॥

পদা 'গুলঞ্চ।

স্দশনা, সোম্বলী, চক্রাহ্বা ও মধুপণিকা, এই কয়েকটি একপ্র্যায়ক শ্রু। স্তদর্শনা— মধুৰৰস, উফাৰীয়া এবং কফ, শোণ ও বাতৰক্ত নাশক।

অথাখুপণী।

बायुलनी बायुकनी अनिक। अपनास्ता। আখুকণা কটুন্তিক্তা কযায়। শীতলা লমুঃ। বিপাকে কটুক। মূক্ত কফাময়তি মিপ্রপুৎ।।

इन्द्रकानी।

আগুপণী, আগুকণী, পণিকা ও ভূদরী-ভবা. এই কয়েকটি একপর্যায়ক শব্দ। कर्गी-कर्ने-डिख-कशंत्र-तम, भावतीया, नयू, কটুবিপাক এবং ইহা মূত্র, কফ ও ক্রিমিরোগ-নাপক |

অথ সয়ুরশিখ। ।

न्यवाद्यानेया जा आ मध्यादिभविष्टण । बालकर्शिक्षा वार्ष शिवतामा (स्मानिहरू ।

ময়র শ্বা. সহসাহি ও মর্ছেদা, ক্ষেক্টি মনুবাশিখার নাম। মনুবাশিখা—লগু;

केंचि अड़ हार्गिष्यर्शः॥

তাথ পুষ্পবর্গঃ।

অথ কমলম্।

বা পুংসি পদ্মং নলিনমরবিন্দং মহোৎপলম্।
সহপ্রপত্রং কমলং শতপত্ত্রং কুশেশরম্।
পক্ষেক্ইং তামরসং সারসং সরসীক্ষম্।
বিসপ্রস্কাজীক-পুদরাভৌক্ষাণি চ॥
কমলং শীতলং বর্গুং মধুরং ক্ষপিভজিং।
তৃষ্ণালালাশ্রবিশোট-বিষবীসর্পনাশনম্॥
বিশেষতঃ সিতং পদ্মং পুঙরীক্ষিতি স্মৃত্যু।
রক্তং কোকনদং জেলং নিজনিনীবরং পুত্ম॥
ধবলং কমলং শতং মধুরং কফ্পিভজিং।
তশ্মাদরগ্রণ শিক্ষিদ্জদ্ ব্তেক্থলা দিকম্॥

পদ্ম।

পদ্ম, নামন, অর্নিন্দ, মহোৎপ্র, সহপ্র পদ্ম, কমল, শতপ্র, কুলেশ্য়, প্রেক্থ, তামন্বস, সাবস, সরসীরক, নিমপ্রতন, রাজীন, প্রের ও আছোকহ, এই করেকটি একপ্রনিষ্ক শক্ষা কমল—শাতবার্যা, বর্গপ্রাদিক, মধুররম এবং ইহা কফ, পিতৃ, তুর্যা, নাহ, রক্তনোর, বিজ্ঞোটি, বিল ও নামল নাশক। বেতুপ্রাকে পুপ্রেনীক, বক্তনারকে কেনিকাদ এবং নীলপ্রাকে ইন্দাবিক কংল। বেতুপ্রাক্ষা বিজ্ঞোক্তি, মধুব-ব্রম এবং ইহ্ ক্রাপ্রের লিক্সির্বাক্তিন প্রত্নির্বাধিক কংল। বেতুপ্রাক্ষা বিজ্ঞোব্যা, মধুব-ব্রম এবং ইহ্ ক্রাপ্রের লিক্সির্বাক্তিন প্রত্নির্বাধিক প্রত্নির্বাক্তিন বিজ্ঞান্তনার প্রাক্তিন প্রত্নির্বাধিক প্রত্ন

অথ পদ্মিন।।

ন্লনাল্মলোংফুল-ফলৈ, সমুদিতা পুন, । পদ্মিনী প্রোচাতে প্রাক্তিবিদিন্তাদিক সা প্রা । গিম্বিনা নীজনা গুববী মরুৱা লবণা চ সং । পিউপ্তিক্কক্ষ্মজন্মা বাত্রিস্তভ্রকাদ্বিণী ॥

মূল, নাল, পাত্র, পুশু ওফল এই সমন্ত আংশসংৰুক্ত পলকে পণ্ডিভগণ পদ্মিনী, বিসিনা, নলিনী ও কমলিনী প্রভৃতি সংজ্ঞা দিয়া থাকেন। পদ্মিনী—শীতবীর্য্য, গুরু, মধুর-লবণ-রস, রক্তপিত্তনাশক, কফদ্ব ও রক্ষ। ইহা বাতজনক ও বিষ্টুকারক।

অথ পদাস্থ নবপত্রাদি।

মংবর্জিকা নবদলং বাওকে শস্ত ক নিকা।
কিঞ্জন কেশর প্রোক্তো সকরনে রস শ্বত ।
গ্রমালং মৃশালং জ্ঞাং তথা বিস্মৃতি গ্রহম।
নাবর্জিবা হিমা তিতা কবায়া দাহত্ট্প্রপূর দ মূল্যক্তেভ্রেদ্যা বি-রাজ গিত্রিনা শিনী।
প্রাক্ত কর্মি তিতা ক্ষায়া ম্বরা হিনা।
মূপ্রেশজ্ঞানবুরী তুকা ক্ষায়া ম্বরা হিনা।
মূপ্রেশজ্ঞানবুরী তুকা ক্ষায়া ম্বরা হিনা।
মূপ্রেশজ্ঞানবুরী তুকা ক্ষায়া মান্ত্রিনা নিকাশ শতিবা ব্যা ক্ষায়া মান্ত্রিনা ব্যা ক্ষায়া মান্ত্রিনা শতিবা ব্যা ক্ষায়া মান্ত্রিনা স্থাবিকাশ শত্রিনা ক্ষায়ালয় বিশ্ববিদ্যা সংগ্রাহিনা মান্ত্রিনা স্বার্থিনা স্কাশিকাশ শত্রিনা ক্ষায়ালয় বিশ্ববিদ্যা মান্ত্রিনা স্বার্থিনা স্বার্থিনা স্বার্থিনা বিশ্ববিদ্যা স্বার্থিনা স্বার্

পদ্যের নৃত্তন পত্রকে সংবর্ত্তিকা, বীজ-কোষকো কণিকা, কেশরকে কিঞ্জন্ধ, পুশ্প-বদকে মক ল এবং নালকে মৃগাল ও বিস ব্যাহ্যায়।

সাৰ, লগত — তেওকাৰ, তেওকাৰণ কয়, এল বৈ চিচ পিলিলা, তেওকাৰু, ভাইক ৰাণ্য একভিনিভাৰত শিক্ষা

পাল। কৰিকা—ভিজ্ঞ-কথায়-মধুব-রস, শতবীয়া, মুখবৈশন্তকারক, লগ্নু এবং ইহা ভূষা, বভাদোয়, কদ ও পিত্ত নাশক।

কিঞ্জন্ধ —শাত্রীয়া, জ্ঞান্দ্রক, ক্যায়ানস, বাবক এবং ইছা কফ, পিত্ত, পিপাসা, দাহ, বক্তাশা, বিষ ও শোধ নাশক।

গুণাল--শতিবীমা, শুক্রবদ্ধক, ওরু, গুষ্পানি, মধুরবিপাক, গুগুবদ্ধক, বায়ুদ্ধনক, কফকারক, মলসংগ্রাহক, মধুর-রস ও রুক্ষ এবং ইহা পিত্ত, দাহ ও রক্তফুষ্টি নাশক। পদ্মের মূলও মৃণানতুল্য গুণযুক্ত।

অথ স্থলকমলম।

পল্লচারিণ্যতিচরাব্যথা পল্লা চ শারদা। পলামূকা কটুন্তিক্তা কৰায়া কক্ষবাতজিৎ। মূত্রকুক্তবাত্মশূলন্ত্রী শাসকাসবিবাপহা॥

স্থলপদা।

পদ্মচারিণী, অভিচরা, অব্যথা, পদ্ম। ও শারদা, এই কয়েকটি একপ্র্যায়ক শ্প। তলপদ্ম—অনুষ্ণ, কটু-ভিক্ত-ক্ষায়-নদ এবং ইহা কক, বায়ু, মূর্কুজু, অশারী, শুল, শ্বাস, কাস ও বিষ নাশক।

অথ কুমুদম্।

(बंडर कुनलग्नर (ब्रांकर तुपूष्ट उकतवर ७२)। कुमूम्ट लिष्टियर बिक्षर प्रतृता अविकि मीउलम् ।

(25)

খেতকুমূনকে কুবলর, কুমূন ও কৈরব কহে। কুমূন--- পিডিছল, সিগ্ধ মধুর্-রস, আফলাদজনক এবং শাতবীয়া।

অণ কুমুদিন।।

নুষ্ধনা কোনোকা লানি নুদ্দলালৈ চা। ষা পুৰ্বাদিষকাজেলানা সৃষ্দিৰা বুধৈলে প্ৰিভাবে ভ্ৰাল প্ৰোভান কুষ্দিভাকে তে স্বৃতাল।

ऋं मी।

কুমুঘতী, কৈব্রিকা ও কুমুদিনা এই কয়েকটি একপ্র্যায়ক শক। মূলাদি সর্বাঙ্গের সহিত একত্র মিলিত কুমুদকে কুমুদিনী বলা ধায়। পূক্রে পদ্মিনীর যে সকল গুল বর্ণিত ২ই-য়াছে, কুমুদিনীরও সেই সকল গুল জানিবে।

অথ কহলারম্।

সৌগধিকস্ত কম্পারং হলকং রক্তসন্থাকন্। কহলারং শীতনং গ্রাহি বিষ্টুন্তি গুরু রুক্ষণন্॥

नानम मी।

সৌগন্ধিক, কহলার, হল্লক ও রক্তসন্ধাক, এই কয়েকটি কহলারের প্যাায়। কহলার— শাতবীয়া, দাবক, বিষ্টম্ভী, গুরু ও রক্ষ।

অথ বারিপণী শৈবালঞ্চ।

বালিপণী বৃত্তিকা ভাটেছনালা লৈক্সণ হয়। বালিপণী হিনা ভিজা লগা সালী দলা নদুল। দোষজয়ধনী কক্ষা শোনিত্তল্পশাসকয়। শোৰালং ভুবলং ভিজাং মৰ্যং শাহৰ লগা। লিখাং দাহতুৰাপিত্ৰ-শত্তাবাৰ সাব্যা।

পানা ও শেওলা ।

জলকুত্তীকে বারিপ্রাী ও বুল্ডিকা বলে এবং শেওলাকে শেবাল ও শেবল বলা যায়। জলকুত্তী (পানা)—শাভবাষা, ভিজ্ঞ-মধুর কট্রস, লগু, সাবক, লিলেম্মানক, রুক্ষ, এবং ইহা রক্তর্তী, জব ও শোসনাশক। শোবাল (শেওলা —ক্ষান-ভিজ্ঞ-মধুর-রস, শাভবীয়া, লঘু, লিগ্ধ এবং ইহা দাহ, পিপাসা, পিত, রক্তর্তী ও জব নাশক।

অথ শতপত্রা।

শুক্ৰা এ কেন্সুকাৰ পিকা নাৰকেশ্ব। সংক্ৰিয়াৰ পদ্ধানা কামৰ বুলাকিশ্বলাক শুক্ৰাৰী হিমা স্কুলা আহিলা গুৰুতা কনুত। শোৰক্ৰয়াম্ৰজিম্বৰ্ণা তিকা কট্ৰীচ পাচনীক

শ্বেত গোনাপা

শতপত্তী, তর্মণী, কণিকা, চাক্রকেশরা, মহাকুমারী, গন্ধান্য লাক্ষা, রুফা ও অভি-মঞ্জুলা, এই কয়েকটি একপ্রয়ায়ক শুক্ষা শ্বেত-গোলাপ—শাতবীষ্য, হৃদয়গ্রাহী, গাবক, শুক্ত-বন্ধক, লযু, ত্রিদোষনাশক, রক্তদোষ্ম, বর্ণ-প্রসাদক, তিক্ত-কটু-রুম এবং পাচক।

অথ বাসন্তী।

নেপালী কথিতা তজ জৈঃ সপ্তলা নবমালিফা। বাসন্তী শীতলা লগ্নী তিন্দা দোষত্ৰয়াপ্ৰজিৎ ॥

নবমল্লিকা।

নেপালী, সপ্তলা, নবমালিকা ও বাসন্তী এইগুলি নবমন্নিকার পর্যাায়। বাসন্তী—শাত-বীষ্য, লঘু, তিক্ররস, এবং ইহা ত্রিদোষ ও রক্তদোষ নাশক।

অথ বার্ষিকী।

জ্ঞাপদী ষট্পদানন্দ। বংশিকী মৃক্তবন্ধনা। বাৰ্ষিকী শীতলা লগুৰী ভিডাং দেখিতয়াপ্ল।। কৰ্ণাক্ষিমুগ্ৰেগৈয়া হতেলং তদ্প্ৰণা শ্ৰম।

বেলকুল ।

জীপদী, যট্পদানন্দা, বাবিকী ও মুক্তবন্ধনা, এই কয়েকটি বেলফুলের প্রধায়। বেলফুল—শাত্রীর্যা, ললু, ভিক্তর্ম, ত্রিদোষ-নাশক এবং ইহা কর্ণরোগ, চক্ষ্রোগ ও মুখ-রোগ নাশক। ইহার তৈলেরও উক্তর্মপ গুণ জানিবে।

অথ জাতী স্বৰ্ণজাতী চ।

জাতিজাতী চ হ্মনা নালতী নাজপুনিকা।
চেত্তকী ক্ষ্মগ্ৰাৰ চ দা পাতা স্বৰ্জাতিক।
জাতাযুগা তিজমূল: ছুবৰং লঘু দোষতিং।
শিলাংকিমূলদন্তাতি-বিষৰুঠানিলাশতিং।
তৎকুট্টালং এগং কুঠং হস্তি নেজাময়ং তথা।

জাতি (চামেলা)।

নাতি, জাতী, হ্বমনা, মানতী, নাজ পুলিকা, চেতকী ও জ্জুগন্ধ, এই কয়েকটি জাতীর মাম। পীতব্য লাতীকে স্বণজাতী বলে। উভ্য প্রকাব জাতীই—তিক্তক্ষায়-রস, উক্ষবীয়া, ল্যু, রিদোমন্ন, এবং ইহা শিরোরোগ, নেত্রোগ, মুখরোগ, দস্তরোগ বিষ, কুষ্ঠ, বায়ু ও রক্তদোষ নাশক। ইহার কুটাুল (কুঁড়ি)—এণ, কুষ্ঠ ও নেত্ররোগ নাশক।

অথ যৃথিকা।

যুথিকা পণিকাষ্ঠা দা পীতা হেমপুলিকা। যুথীযুগং হিমং তিক্তং কটুপাকরসং লঘু॥ মধুনং পুনরং হৃত্যং পিওল্পং ক্লেবাতলম্। এণাসমূগ্দস্তাক্ষি-শিরোবোগবিষাপহম্॥

यूं हेकून।

যুথিকা, গণিকা ও অন্তর্গা, এই কয়েকটি যথীর নামান্তর। পীতবর্গ যুথীপুস্পকে হেম-প্রাম্পিকা বলে। যথীপুস্পীছন্ধ—শাতবীর্য্য, তিজ্ঞ-কটু-মধুন-কষার রস, কটুবিপাক, লঘু, গ্রুম-গ্রাহী, পিন্তনাশক, কফ ও বাযুজনক এবং ইং। এন, রক্তদোষ, মুখবোগ, দেউরোগ, নেউরোগ, বিরোরোগ ও বিষ নাশক।

অথ চম্পকঃ।

চাংম্পেরশ্চম্পকঃ প্রোক্তো হেমপুষ্ণক স শৃতঃ। এতস্ত কলিকা গন্ধ-ফলীতি কপিতা বুধ্যে॥ চম্পকঃ কটুক**ন্তিক্তঃ ক্**ষায়ো মধুরো হিমঃ। নিষক্রিমিহরঃ কুফ্ল-কফবাতঃপ্রপিত্তিগুং॥

চাপা।

চাপের, চপক ও হেমপুপা, এই কয়েকটি
চাপাকুলের নামান্তর। চাপার কলিকাকে
পণ্ডিতগণ গন্ধকলী বলিয়া থাকেন। চাপা—
কঢ়-ভিক্ত-ক্ষায় মধুব রস ও নাত্রীধা। ইহা
বিষ, ক্রিমি, মূলকুচ্ছু, কফা, বায়ু ও রক্তপিত্ত
নাশক।

গ্ৰথ ব্ৰুক্তঃ।

বরুনে। সনগদশ্চ সিংহকেশ্যকস্তথা।
বকুলপ্তবরোহফুক, কচুপাকরসো গুরুত।
কক্ষাি এবিসম্মি ক্রিমিনস্তগদাপহ ॥
সবুর্ঞ্চ ক্যায়ঞ্চ বিশ্বর সংগ্রাহ্নি বাকুলম্।
শ্বিরক্রান্ধ দত্ত'নাং নিশ্বর ফলমূচ্যতে॥

বকুলগাছ।

বকুল, মধুগদ্ধ ও সিংহকেশর এই কয়েকটি একপর্য্যায়ক শব্দ। বকুল—কটু-ক্যায়-রস, কটুবিপাক, অনুষ্ণ, গুরু এবং ইহা কফ, পিন্ত, বিষ, শ্বিত্ত, ক্রিম, গ্রিত্ত, ক্রিম, থিত্ত, ক্রিম, বিশ্বত্ব স্থিরতাকারক।

অথ বকঃ।

শিবমলী পাশুপত:একাঞ্চালা বকো বহুঃ। বকোহসুষঃ কটুন্তিক্তঃ কফপিত্রিবাপহঃ। বোনিশূলতুবাদাহ-কুঠণোধাশুনাশনঃ।

পদাবক।

শিবমন্ত্রী, পাশুপত, একাষ্ট্রীলা, বক ও বন্ধ, এই কয়েকটি বক-পুশ্পের নাম। বক-পুশ্প—ঈষত্বন্ধ, কটু-তিক্ত-রস এবং ইহা কফ-পিত্ত, বিষ, যোনিশ্ল, পিপাদা, দাহ, কুষ্ঠ, শোগ ও রক্তদোষ নাশক।

অথ কদসঃ।

কদম্বঃ প্রিয়কে। নাপো বৃত্তপুশো হলিপ্রিয়ঃ। কদম্বো মধুরঃ শীভঃ ক্যায়ো:লবণো শুরু:। সরো বিষ্টুকুকুশুশী কফস্তম্ভানিলপ্রদঃ॥

কদম্ব, প্রিয়ক, নীপ, বৃত্তপূষ্প ও হলি-প্রিয়, এই কয়েকটি কদম্বের পর্য্যায়। কদম্ব— মধুর-ক্ষায়-লবণ-রস, শীতবীর্য্য, গুরু, সারক, বিষ্টম্ভকারক, রুক্ষ এবং ইহা কফ, স্তম্ম ও বায়ু জনক।

অথ মল্লিক।।

মন্নিকা মদয়ন্তী চ শীতভীরশ্চ ভূপদী। মন্নিকোঞা লঘুবু ব্যা তিক্তা চ কটুকা হরেৎ। শাতপিতাক্সদৃখ্যাধি-কুঠাকচিবিবরণান্॥

মল্লিকা, মদয়স্তী, শীতভীক ও ভূপদী, এই কয়েকটি মল্লিকার পর্য্যায়। মল্লিকা- পুশা—উষ্ণবীর্য্য, লঘু, শুক্রবর্দ্ধক, তিজ্ঞ-কটু-রম এবং ইহা বাযু, পিন্ত, মুখরোগ, চক্রোগ, কুন্ন, সকচি, বিষ ও রণ নাশক।

অথ মাধবী।

মাধবী স্থাৎ তু বাসন্তী পুগুকো মণ্ডকোহপি চ। অভিমূকো বিমুক্ত কামুকো ভ্রমবোৎসব: ॥ মাধবী মধুনা শীতা লগ্নী দোগত্রয়াপহা। মুদ্যকা ক্যায়া চুদ্যক্ষাপ্যাগ্যা

নাধবী, বাসন্তী, পৃগুক, মণ্ডক, অতি-মৃক্ত, বিমৃক্ত, কামৃক ও ভ্রমরোৎসব, এই কয়েকটি মাধবীশ পর্যায়। মাধবীপূষ্প— ক্যায়-মধুররস, শাতবীর্যা, লঘু, ত্রিদোধনাশক, মদগন্ধ এবং দাহ, শোষ ও রণ নাশক।

অথ কেতকঃ স্থৰ্গকেতকী চ।

কেতকঃ সচিকাপুপো জম্বঃ দকচছদ:। প্ৰৰ্ণকেতকী হন্তা লগুপুপা হুগন্ধিনী। কেতকঃ কটুকঃ স্বাহুল ঘুন্তিতঃ কদাপহ:। উষ্ণা তিক্তন্যা জ্বেমা চকুষ্যা হেমকেতকী।

কেয়াকুল।

কেত্রক, স্চিকাপৃষ্প, জমুক ও ক্রকচচ্ছন, এই কয়েকটি কেয়াফুলের পর্য্যায়। স্থবনি কেত্রকী উহার ভেনমাত্র। লঘুপুষ্পা এবং স্থগ-দ্ধিনী স্থবন্ধেত্রকীর নামান্তর। কেত্রকী— কটু-মধুর-তিক্তনরস, লঘু এবং কফনাশক। স্থবন্দেত্রকী—তিক্তরস, উষ্ণবীর্য্য ও চক্ষুর হিত্রকারক।

অথ কর্ণিকারঃ।

কর্ণিকারঃ পরিব্যাধ্য পাদপোৎপল ইতাপি। কর্ণিকারঃ কটুন্তিকস্তবরঃ শোধনো লঘুঃ॥ রঞ্জনঃ হুধদঃ শোধ-শ্রেমান্ত্রণকুঠজিৎ॥

ছোট সোন্দাল।

কর্ণিকার, পরিব্যাধ ও পাদপোৎপ**ল**, এই করেকটি ছোট সোন্দালের পর্যায়। কর্ণি- কার—কট্-তিজ্ঞ-ক্ষায়-বন্ধ, শোধন (ব্যন-বিবেচনাদি) কাবক, লগু, বঞ্জক, স্থাপ্রদ এবং ইং শোগ, কন্দ, রক্তদোধ, এণ ও কুষ্ট নাশক।

অথাশেকঃ।

আশোকো হেমপুশশ্চ বঞ্জস্তা এপরর। ।
কল্পেলিঃ পিডিপুশশ্চ গৰুপুশ্পো নটস্তথা ॥
আশোকঃ শীতল্পিত্রো গাহা বর্গাঃ ক্ষায়কঃ।
দোগাপটীত্যাদাহ-ক্রিমিশোষ বিষয়েজিৎ ॥

অনোক, হেনপন্স, বজ্ব, ভামপন্নব, কদ্ধেনি, পিডিগুল, গ্রুপণা ও নট এই ক্ষেক্টি অনোকের প্যায়। অনোক— নাত্রীগা, তিক্ত-ক্ষায়-ব্য, গারক, বর্ণপ্রদাদক প্রং ইছ। ক্রিনে, অপ্রচী, পিপাদা, দাহ, ক্রিনি, শোষ, বিষ্ধাণ বক্তনোস্থানিক।

অথায়াটনঃ !

অন্তেহ্মটন্য প্রোজন্তথাধ্চক ইতা্লি। কুন্নটকো বৰ্ণপুৰ্ণ ন এবেট্ডিন মহাসহয়। অন্তট্ন ক্ষাযোগ বিধান স্বাধনত ভিছকয়।

আয়না (বাণপুষ্পা, কাটিবিংশন।
আয়াত, অয়ানি, অধাতক, কুরণ্টক,
বর্ণপুষ্প ও মহানহ, এই কয়েকটি আয়নার
পর্য্যায়। অয়াটন—ক্যায়-মধুর-তিক্তরস
উষ্ণবীর্যা ও স্থিয়।

তাথ সৈরেয়ঃ।

সৈরেহক: খেতপুপাঃ সৈরেহা কটস'রিকা। সহাচরঃ সহচরঃ স চ ঝিটাপি কপাতে॥ কুরুটকোংএ পাতে স্থান্ততে কুরুবক: শুভঃ। নীলে বাণা শ্বংগ্রন্থতো দাসী আর্তিগল চ সঃ॥ সৈরেয়া কুঠব'তাশ্র-কন্দকগুবিষাপহা। ভিড্যোকো মধ্রেইনয়া শ্বেধাঃ কেশরঞ্জনঃ।

নাটি।

সৈরেয়ক, খেতপুষ্পা, সৈরেয়, কটসারিকা, সহাচর, সহচর ও ঝিন্টী এই কয়েকটি ঝিন্টীর

পর্যায়। পীতঝিণ্টীকে কুরণ্টক, রক্তমিণ্টীকে কুরুবক, নীলমিণ্টীকে বাণা, এবং নীল ও পীতমিণ্টীকে দাসী ও আর্ত্তগল বলে। মিণ্টী—কুঠ, বায়, রক্তদোষ, কদ, কণ্ডু ও বিষ নাশক, তিক্ত-মধুর-রস, উষ্ণবীর্যা, ঈষং অম, স্বিশ্ব ও কেশ্রঞ্জক।

অথ কুন্দম্।

কুন্দস্ত কমিতং মাগ্য" সদাপুষ্পঞ্চ তৎ স্মৃত্য । কুন্দং শাতং লঘু শ্লেম-শিবোক্ষয়িষপিত্তগৎ ॥

季月1

কুন্দ, মান্য ও সদাপুপা, এই কয়েকটি কুন্দের নাম। কুন্দপুপা—নীত্রীর্যা, লগু এবং কফ, শিবোবোগ, বিষ ও পিত্তনাশক।

गर गुरुकुन्मः।

মৃচুকুলাঃ ক্ষাত্ৰকশিচত্ৰক প্ৰতিবিধুক । মুচুকুলাঃ শিৱাপীড়া-পিভাস্থিবাশান ।

মৃচ্কুল, ক্ষাবক্ষ, চিত্রক ও প্রতিবিষ্ণুক, এই কয়েকটি মৃচ্কুলোর পর্যায়। মৃচ্কুলা— শিবোরোগ, রক্তপিও ওংবিষ নাশ্ব।

অথ বন্ধুকঃ।

वसूरको वसूजीवन्ट तरङो माधार्क्टिकाश्लीट । वसूकः कककृष शोही वाङ्गिखहरता लघूः ॥

বাধুলি।

বন্ধুক, বন্ধুজীব, রক্ত ও মাধ্যাহ্হিক, এই কয়েকটি বাধুলির পর্য্যায়। বন্ধুক—কফ-কারক, ধারক, বাতন্ন, পিত্তনাশক ও লগু।

অথ ওড়ুপুষ্পম্।

গুডুপূপাং জপা চাম্ব ত্রিসন্ধ্যা সংক্রণা সিতা। জপা সংগ্রাহিণী কেণ্ডা ত্রিসন্ধ্যা কফবাতজিৎ॥

वंद क्या

ওড়পুশা, জপা ও জিন্দ্রা, এই ওলি জবাহুলের পর্যায়। জবা দিবিধ; খেত ও লোহিত। জবাপুশা-খারক, কেলের হিত-কারক, কম্ব ও বায়ু নাশক।

অথাগস্তিঃ।

অথাগন্ত্যো বজসেনো মুনিপুল্পো মুনিক্রম:।
অগতিঃ পিতকক্ষিততুর্বক্রেরা হিম:।
রুক্ষো বাতকর্মিক্তঃ প্রতিভায়নিবারণ: ॥

वक्कृत।

অগন্তা, বন্ধনেন, মুনিপুষ্প ও মুনিক্রম, এই ক্ষেকটি বকপ্রেলর পর্যায়। বকপ্র্যান পিন্ত, কফ, চতুর্থকজন ও প্রতিশ্রায় নাশক। ইহা শাতবীর্যাপ্রক্রক, বায়বর্জক ও তিক্তরস।

অথ তুলসাঁ শুক্লা কৃষণ চ।

তুলদী স্বরদা প্রামাণ ফ্লভা বহুমঞ্জরী।
অপেতয়ান্দদী গৌরী শূলদ্বী দেবছুন্দৃভিঃ।
তুলদী কটুকা ভিক্তা স্বস্থোকা দাহশিওকৃৎ।
দীপনী কুঠকুক্সাপ্র-পার্শার্ককৃষকাতজিৎ।
শুরুণ কুঞা চ তলদী শুণেশ্বল্যা প্রকীর্ভিতা।

তুলনী, স্থানা প্রাম্যা, স্থলভা, বছ-মঞ্জরী, অপেতরাক্ষনী, গৌরী, শূলদ্বী ও দেবকুন্তি, এই করেকটি তুলনীর পর্য্যার। তুলনী—কটু-তিজ্ঞ-রস, হৃদর্গ্রাহী, উষ্ণবীর্য্য, দাহজনক, পিত্তকারক, স্বাম্নীপক এবং ইহা কুঠ, মূত্রকুদ্ধ, রক্তদোব, পার্শন্তা, কক ও বাহুনালক। অক্তন্ত্রী ও ক্লভুলনী উক্তর্হ তুল্যগুণবিশিষ্ট।

वर्थ मत्र्यकः।

बाद्यक्षेत्रम् वक्ष्यत्वा वक्ष्यकानि एकः । क्ष्मे विकासकानि संदर्गनः नवीतनः । দরদায়িতনো হায়ভীক্ষোকা শিক্তনো নত্ন। বৃশ্চিকাদিনিবলেশ-বাতকুঠিক্রিদিপ্রপূৎ। কটুপাকরসো রহাভিজো রকঃ প্রথমিকা।

মান্ত, মন্ত্ৰক, মন্ত্ৰং, মন্ত্ৰ, কৰি, কৰি, আৰু প্ৰস্তুপ ও সমীরণ, এই করেকটি মন্ত্ৰুক্ত নাম। মন্ত্ৰক-পূতা—অনিৰ্ভ্ৰক, হৃদয়গ্ৰাহী, তীক্ষ, উষ্ণবীৰ্ণ্য, পিত্তৰ্ভক, বন্ধু, কটুবিপাক, কটু-তিক্ত-রেস, নাচিকারক, ক্ষ্মু, ও প্রগদ্ধি এবং ইহা বৃশ্চিকাদির বিষ, ক্ষ্মু, বুঠ ও ক্রিমিনালক।

অপ দমনকঃ ৷

উক্তো দমনকো দাখো মুনিপ্তেজগোধন:।
গালোৎকটো প্রক্ষজটো বিনীতঃ কুলপত্রক:॥
দমনস্তবর্জিজো হজো বৃহাঃ কুগন্ধিক:।
গ্রহণিবিবকুঠার্জ-ক্ষেকুজুতিবোবজিৎ ॥

· (माना।

দমনক, দান্ত, মূনিপুত্র তপোধন, গন্ধেৎকট, বন্ধজট, বিনীত ও কুলপত্রক, এই
ক্রেকটি দমনক-প্লেব নাম। দোনা—
ক্বার-তিক্তাস, হৃদরগ্রাহী, শুক্রবর্দ্ধক ও
সগন্ধি এবং ইহা গ্রহণী, বিষ, কুঠ, রক্তদোধ,
ক্লেদ, কণ্ণ ও ত্রিদোধনাশক।

पथ वर्वजी।

বর্ষরী ত্বরী তুলী ধরপুণাক্রগন্ধিক। ।
পর্ণাসন্তর কৃষ্ণে তু কঠিঞ্জরক্ঠেরকৌ ॥
কালমারঃ করালক নালুকঃ কুকারিকা। ।
তর করেহর্জকঃ প্রোক্তো বটপত্রভতোহপর: ॥
বর্ষরীত্রিভারং ক্লফং শীতং কাছু বিলাহি চ ॥
তীক্ষং ক্লচিক্রং হল্পং নীপনং ললুপার্কি চ ।
পিত্তবং ক্লবাতাশ্র-কুঞ্জিনিরিক্রাংক্র ॥

বাব্ই তুলনী।

বর্মনী, তুবনী, তুলী, খ্রপুপা, অজ-গ্রিকা ও পর্ণাস এই ক্ষরেকটি বর্মনীর (বাবুই তুলনীর) নাম। ক্টিজর, তুঠেনক, কালমার, করাল, মালুক ও ক্লফমিরকা, এই কটুরস, করেকটি ক্লফন্ল্রিন পর্যায়। অর্জ্জক গুক্ত- ম্রিনীপ বর্জরীর নাম। অন্ত জাতীয় বর্জরীকে বটপত্র কহে। এই ত্রিবিধ বর্জরীই—ক্লক, শীতবীর্গা, নাশক।

কটুরদ, বিদাহী, তীক্ষ, রুচিকারক, ফদরগ্রাহী, অগ্নিদীপক, লবুপাকী, পিত্তবৰ্দ্ধক এবং ইহা কন্ধ, বান্তু, বক্তভৃষ্টি, কণ্ণ, ক্রিমি ও বিষদোষ নাশক।

ইতি পুশাবর্গ:।

অথ বটাদিবর্গঃ।

অথ বটঃ।

বটো রক্তকলঃ শৃঙ্গী স্থাগোধঃ স্বৰ্ধনো ধ্ৰবঃ। ক্ষীরা বৈশ্রবণাবাসো বছপাদো বনস্পতিঃ ॥ বটঃ শীতো শুরুগ্রাহা কক্ষপিতত্রণাপহং। বর্ণো বিসর্পদাহন্ধঃ ক্যামো যোনিদোবহুৎ॥

বট, রক্তফল, শৃঙ্গী, গ্যগ্রোধ, স্বন্ধজ, ধ্রুব, ক্ষীরী, বৈশ্রবণাবাদ, বহুপাদ ও বনম্পতি, এই করেকটি বটের নাম। বট—শী বীর্দা, গুরুদ, মারক্ত, বর্ণ প্রসাদক, কমায়বদ এবং ইহা কফ, পিত্ত, এব, বিস্নাণ, লাভ ও যোনি-দোষনাশক।

অথ পিপ্ললঃ।

বোধিক্র: পিন্নলোহৰখন্চলপত্তো গ্রহাশন:। পিন্নলো ভূর্জন: শীত: পিন্তনেমত্রণাশ্রজিৎ। শুক্ষন্তবরকো নুক্ষো বর্ণ্যো বোনিবিশোধন: ঃ

ভাৰাখা।

বোধিক, পিপ্লল, অথখ, চলপত্র ও গজাশন, এই করেকটি অখথের নাম। অথখ—
ফুশাচ্য, শীতরীর্যা, পিত্তন্ন, কফাপহারক, ব্রণ
ও রক্তদোষ নাশক, গুরু, কষার্বস, রুক্ষ,
বর্ণপ্রসামক এবং যোনিবিশোধক।

অথ পিপ্সলভেদঃ।

পারীবোংস্কঃ পলাশক কণিচ্তঃ কমগুলু:। গর্মজ্ঞাতঃ কলরালঃ কণীতনস্থার্যকঃ॥ পারীবো ত্রজ্জরঃ বিশ্বঃ জিনিগুক্তকফপ্রদ:। ফলেংয়ো মধুরো মূলে ক্যায়ঃ শাত্রমজ্জকঃ॥

পলা#পিপুল।

পারীষ, প্রশাশ, কপিচ্ত, কমগুরু, গর্দ্ধতাও, কন্সরাল, কপীতন ও স্পার্শ্বক, এই
কয়েকটা প্রশাশপিপুলের নাম। পারীষ—
ছম্পাচা, স্লিগ্ধ এবং ইহা ক্রিমি, শুক্ত ও কফজনক। ইহার ফল মন্ত্র-রস, মূল
ক্যায়রস এবং মজ্জা মধুব-রস।

व्यथ नकीं त्रकः।

নন্দীবৃক্ষোংৰখন্ডেনঃ প্ৰরোহী গজপাদণঃ। ছালীবৃক্ষঃ কয়তরঃ কীরী চ স্থাদনন্দতিঃ॥ নন্দীবৃক্ষো লঘুঃ খাছুডিকস্তব্যর উক্ষকঃ। কটুগাকরসো গ্রাহী বিৰ্পিত্তকগাশ্রন্থিৎ॥

গয়া অশ্বথ।

নন্দীবৃক্ষ, অশ্বখন্তেদ, প্ররোহী, গল্পদিপ, স্থালীবৃক্ষ, ক্ষয়ত্তদ্প, ক্ষীরী ও বনম্পত্তি, এই করেকটি নন্দীবৃক্ষের নাম। নন্দীবৃক্ষ— লঘু, মধুর-তিক্ত-ক্ষার-কটু রস, উঞ্চবীর্য্য, কটুৰিপাক, ধারক এবং ইহা বিষ, পিত্ত, কফ ও রক্তদোষ নাশক।

অথেতিষরঃ।

উত্নস্বরো সম্ভকলো বজালো হেমছগ্রক: । উত্নস্বরো হিমো রুক্ষো গুরু: পিত্তক্ষাপ্রজিৎ । মধুরম্ভবরো বর্ণ্যো এণশোধনরোপণ: ॥

गळाडुमून ।

উত্থন, জন্ধদল, যজ্ঞান্ধ ও হেমছগ্ণক, এই কয়েকটি যজ্জুমুরেন সংস্কৃত নাম। যজ্জুমুব—শীতধীর্যা, কুন্দ, গুরু, পিন্ত কফ ও রক্তবৃষ্টি নাশক, মধুব-ক্যায়-াস, বণ প্রসাদক, রণশোবক ও বণরোপক।

অথ কাকোত্রস্বরিক।।

কাকোপ্রস্থরিকা কল্পম লপুর্জগনেকনা। মলপুঃ অস্কুক্ তিন্তা শীওলা তুবরা জ্বেৎ। কফপিত্তরণখিত্র-কুঠপাণ্ড্রশক্ষিমলাঃ।

কাকডুমুর।

কাকোগ্রহারক।, ফর্চ, মলপু ও জননেদলা, এই করেকটি কাকভুমুবের নাম। কাকভুমুর— গুপ্তনকারক, ভি্তু-ক্যায় রস, শীতবীর্য্য এবং ইহা কফ, পিন্ত, ব্রণ, শিত্র, কুঠ, পাতু, অশঃ ও কামলা নাশক।

অথ প্লকঃ।

মক্ষো জটা পকরী চ পকটা চ ব্রিয়ামণি। মক্ষ: কৰায়: শিশিরো এণযোনিগদাপং:। দাহপিত্রকফামন্ত্র: শোশহা রক্তপিত্রস্থ।

পাকুড়।

প্লক, জটা, পকরী ও প্রকটী, এই করেকটি পাকুড়েন নাম। পাকুড়—কবায়-রদ, নাঁতবীধ্য এবং ইহা এণ, যোনিরোগ, দাহ, পিন্ত, কফ, রক্তদোষ, শোথ ও রক্তপিত্তনাশক।

অথ শিরীষঃ।

শিরীবো ভড়িলো ভড়ী ভড়ীরক্ত কপাওন:। শুকপুপ্প: শুক্তরুর্দু দুপ্প: শুক্রিয়:॥ শিরীবো মধুরোধ্যুক্তিক্তক্ত তুবরো লবু.। দোরশোধ্বিদর্শন্ত: কাসত্রধ্বিরাপ্য:॥

শিরীষ, ভণ্ডিন, ভণ্ডী, ভণ্ডীর, কপীতন, ভকপুশা, ভকতরু, মৃত্বপুশা ও ভকপ্রিয়, এই করেকটি শিরীষ বৃক্ষের নাম। শিরীষবৃক্ষ— মধুর-কষার-ভিক্ত-রম, ঈষত্ক্ষ, লঘু, এবং ইছা দোষত্রয়, শোথ, বিদপ্র, কাদ, রণ ও বিষ নাশক।

व्यथं कातितृकाः शकवद्यनकः।

শ্তথ্যধাত্ত্বরাখখ-পারীব্যক্ষপাদপা।
প্রথতে কাঁরিলো বৃক্ষান্তেনাং এক প্রধাননান্ত্র কীবিক্ষা হিমা বর্গা গোনিরোগরণাপহাঃ। রক্ষাং ক্যায় নেদোলা বিস্পান্যনালনাল শোপনিত্রকাশদ্ধাঃ স্বস্তা ভগ্নান্তিবোগকা।। ত্বাংপার হিমং আহি এগুণোন্ত্রিপার্থ। বিষ্টভান্মানজিং তিক্তং ক্যায়ং লযু লেখনন্।। (কেচিং তু পার্বাস্থানে শিরাস্থা, বেত্সমপরে পঠন্তি।)

বট, যক্ত ভূমুন, অশ্বথ, পারীম (পলাশ-পিপুল) ও পাকুড়—এই পাঁচটিকে ক্ষীরিবৃক্ষ এবং ইহাদের বন্ধলকে পঞ্চৰকল বলা যায়। (পারীষম্বলে কেহ শিরীষ, কেহ বা বেতসও বলিয়া থাকেন।)

ক্ষীরিবৃক্ষ-শাতবাধ্য, বর্ণপ্রসাদক, কৃক্ষ, ক্যায়রস, স্তন্তজনক, ভগ্নান্তিসংযোজক এবং ইহা যোনিরোগ, এণ, মেদোদোন, বিদর্প, শোথ, পিন্ত, কফ ও রক্তদোধ নাশক।

পঞ্চবঝন—শাতবীয়া, নারক এবং এণ, শোথ ও বিদর্গ নাশক।

ক্ষীরিবৃক্ষের পত্র—শাত্রীধ্য, ধারক, গায়ু, তিক্ত-ক্ষায়-রস, শেখন এবং ইহা কফ, বারু, রক্তদোর, বিষ্টম্ভ ও উদরাগ্রান নাশক।

অথ শালঃ।

শালন্ত সৰ্জ্ঞকাৰ্শ্যাৰ-কৰ্ণিকাঃ শক্তসন্বয়ঃ। অৰকৰ্ণঃ কৰায়ঃ স্তাদ্ত্ৰণবেদককক্ৰিমীন্। অধুবিক্ৰধিবাধিৰ্ব্য-বোনিকৰ্ণিদান্ হরেৎ॥

শাল, সর্জ্জ, কার্শ্য, অশ্বকর্ণিকা ও শশুসম্বর, এই করেকটি শালের পর্য্যার। শালবৃক্ষ— ক্যায়রস এবং ইহা ত্রণ, দশ্ম, কফ, ক্রিমি, ত্রশ্ন, বিদ্রধি, বাধির্যা, যোনিরোগ ও কর্ণরোগ নাশক।

অথ শালভেদঃ।

সর্জ্জকোহস্যোহজকর্ণ: শ্রাচ্ছালো মরিচপত্রক:।

অন্ধর্কন: কটুন্তিক্ত, করায়োকো বাংপাইভি:

কন্ধপাণ্ডশ্রুতিগদান মেহকুন্তবিষ্যাণান্॥

ঝাজিশাল।

সজ্জক, অজকর্ণ, শাল ও মরিচপত্রক, এই কয়েকটি একার্থবাচক শব্দ। সর্জ্জক,—কটুতিক্ত-ক্ষায়-রদ, উষ্ণবীর্ঘ এবং ইহা কফ,
পাণ্ড, কর্ণরোগ, প্রমেহ, কুষ্ঠ, বিষ ও এণ
নাশক।

অথ শাকরকঃ।

শাক: প্রকচপান, স্থাৎ বিরম্পানো গৃহণ। । ধরপার: শ্রেষ্ঠকান্ত: শরপানো হস্ত্নোপান। ॥ শাকবৃক্ষঃ সর: স্বান্ধ্য হিপিওশ্রমাপাই:। কথার: কফগ্রন্তাকা বলো জ্বর্ণনো ম ৩:॥

সেগুনগাছ।

শাক, ক্রক্চপত্র, স্থিরদার, গৃহক্রম, গ্রপত্র, শ্রেষ্ঠকান্ত, শরপত্র ও অর্জ্জ্নোপম, এই গুলি একপর্য্যায়ক শব্দ। সেগুনগাছ— মধুর-ক্ষায়-রদ, সারক, রুক্ষ, বলকর এবং ইহা জ্বন, দাহ, কৃষ্ণ, পিত্ত গুলুম নাশক।

অথ শলকা।

भवकी श्रम्भक्षको । स्वशं स्वर्धा त्रमा । मरहरूनी कून्नूकको महको ४ वहत्ववी ॥ नन्ने जूरता नीजा शिख्यमचाजिमात्रकिः । त्रक्कशिख्यगंदती शृष्टिकृष मम्लेतिजा ॥

শল্পকী, গজভক্ষ্যা, স্ববহা, স্থরভী, রাসা, মহেরুণা, কুন্দুরুকী, সল্লকী ও বছ্সবা, এই করেকটি একপর্য্যারক শব্দ। শল্পকী—ক্ষার রস, শীতবীর্য্য, পৃষ্টিকারক এবং ইহা পিন্ত, ক্ষ, অতীসার, রক্তপিত্ত ও প্রণ নাশক।

অথ শিংশপা।

শিংশপা পি**ছিলা** শ্যামা কৃষ্ণসারা চ সাপ্তর্গ: । কপিলা সৈব মুনিভিভিন্মগর্ভেতি কাঁব্রিডা ॥ শিংশপা কটুকা তিকা ক্ষায়া শোৰহারিণা । উষ্ণবীথা হরেন্দেদ:-কুষ্ঠমিরনমিন্রিনীন্ । বিষ্টরগরেণদাহাম্-বলাসান্ গর্ভপাতিনী ॥

1931

শিংশপা, পিচ্ছিলা, শ্রামা, ক্রম্পানা, অগুরু, কপিলা ও ভত্মগভা, এই কয়েকটি একপ্রানিক শক্ষা শিংশপা—কটু-ভিত্ত-ক্যার-রস, উষ্ণবীর্থা, গ্রন্থাহক এবং ইহা শোষ, মেদঃ, কুঠ, বিহা, বানি, ক্রিমি, বিভি-বেদনা, বল, দাহ, হক্তদোব ও ক্ষ নাশক।

অথ ককুভঃ।

ককুলে। হুট্ননামাপো নদাসজ্ঞ কাঁজিত। । হুজ্জাবীবস্থাক বাব্ৰু ঘবতা, খুতা। ককুত, শাতলো হাত্তা কতক্ষ্মবিধাশ্ৰভিৎ। মেদোমেহবণান্ হাত্ত তুৰৱা কফ্পিওজং॥

অর্জুন।

ককুত, নদাসজ্জ, ইন্দ্ৰ্য্য, বীবপ্ৰজ, বীব ও বৰণ এবং অৰ্জ্ব-প্যায়েক সমস্ত শব্দ, ককুত বৃক্ষের নাম। অৰ্জ্জ্ব—শাতবাধা, সদমগ্রাহী, ক্ষায়-রম এবং ইহা ক্ষত, ক্ষয়, বিষ, রক্তদোষ, মেদোদোষ, প্রমেহ, এণ, ক্ষম ও পিন্ত নাশক।

অথাসনঃ ।

বীজক: পীতদারক্চ পীতশালক ইতাপি। বন্ধুকপূপা: প্রিরক: সর্জ্জককাসন: স্মৃত: । বীজক: কুঠবীসর্প-দিত্রমেহগুদক্রিমীন্। হ**ভি রো**মাশ্রপিত্তঞ্চ ব্যাঃ কেগো রসারন: ।

পিয়াশাল।

বীক্সক, পীতসার, পীতশালক, বন্ধুকপুশা, প্রিন্নক, সর্জ্জক ও অসন, এই কয়েকটি এক-পর্য্যান্ত্রক শব্দ। পিন্নাশাল—কুষ্ঠ, বিসর্প, খিত্র, প্রমেষ্ঠ, গুহুক্তিমি, কফ ও রক্তপিছ নাশক এবং ইহা চন্দ্রেন হিতকারক, কেশের উপকারক ও ব্যায়ন।

অথ খদিরঃ।

খদিরো রক্তমারণ্চ গায় গ্রী দন্তধানন:।
কণ্টকী বালপজেন্চ বৃত্তশালান্ট যক্তিয়ঃ ।
খদিরঃ শীতলো দন্তাঃ কণ্ডুকালান্টপ্রপূহ।
ভিক্তঃ ক্যায়ো মেদোল্লঃ ক্রিনিমেহজ্জরণান্।
খিত্রশোধানপিতাল্ল-পাঞ্কুতক্যানয়ান্।
বৃত্তিকালান্টলারং প্রদুক্ত বিনাশ্যেৎ ।

*17310 l

খদিব, বাজসাব, গারত্রী, দন্তবাবন, কণ্টকী, বালপত্র, বন্তব্যাবিও বাজিয়, এই কয়েকটি খাদরের প্রয়ায়। খাদর—পাববার, দন্তের হিতকারক, তিজ্ঞ-ক্ষায়-রস এবং ইছা কণ্ডু, কাস, অরুচি, মেদোদোধ, জিল্ল, প্রমেহ, জ্বর, বণ, গ্লিজ, লেগুৰ, আমদোব প্রস্তু, বজ্জনাব ও প্রদর নাশক।

্ৰথ শ্বেতগদিরঃ।

খদির: খেতসারোহক্তঃ কদর: সোমবৰ্কর। কদরো বিশদো বর্ণো মুখরোগকলাঞ্জিৎ ॥ পাপ ভূড় খন্তের ।

থদির, খেতসার, কদর ও সোমবন্ধক, এই কয়েকটি পাপুড়ি খয়েরের নাম। খেত- খদির—বিশদ, বর্ণপ্রসাদক এবং মুখরোগ, রক্তদোষ ও কফনাশক।

অথেরিমেদঃ।

ইরিবেশে বিট্থদির: কালক্ষেলাহরিমেদক:। ইরিমেদ: ক্যায়োকো মুগদন্তগদাপ্রজিৎ। ইন্তি কঞ্বিদেশম-ফ্রিমিকুন্তবিত্রণান্॥

গুরে-বাব্লা।

ইরিমেদ, বিট্থদির, কালন্ধন্ধ ও অরি-মেদক, এইগুলি গুমে-বাব্লার নাম। ইরি-মেদ—ক্ষান-বস, উক্তবীর্গা এবং ইহা মুখরোগ, দস্তরোগ, রক্তদোধ, কড়, বিদ, কম্বন, ক্রিমি, কুষ্ঠ ও বিধ্জ অত নাশক।

অথ রোহিতকঃ।

রোহীতকো রোহিতকে। রোহী **দাড়িমপুশকঃ।** রোহীতকা সীহদাতী রক্ষা রক্তপ্রসাদনঃ ॥

রোড়া।

রোহীতক, রোহিতক, রোহী ও দাড়িম-পুষ্পক, এই ক্ষেকটি। একপ্র্যায়ক শব্দ। বোহীতক-শ্লীহনাশক, ক্ষাহিকারক এবং রক্তন্ত প্রসাদক।

व्यथ वक्तृ मः।

বন্ধুন: কিছিবাল: তাং কিছিবা :: সণাতক:।
স এব ক্ষিতন্তল জৈরাভা ষ্চুণদমোদিনী ॥
বন্ধুল: ক্ষমুদ্রোহা কুচক্রিমিবিষাপহ:।
বন্ধুলত তু নিবাদো গ্রাহী পিভানিলাপহ: ॥
রন্ধাতীসারপিভাল-মেহপ্রদ্রনাশন:।
ভগ্নশ্বায়ক: শীত: শোণিতক্রতিবারণ ॥

বাব,লা।

বৰ্বুল, কিছিয়াল, কিছিয়াত, পীতক, আছা ও ষট্পদমোদিনী, এই কয়েকটি বাব্-লার পথ্যায়। বাব্লা—ধারক। ইহা কফ, ফুঠ, ক্রিমি ও বিধ নাশক। বাব্লার আঠা— মলসংগ্রাহক, পিত্ত ও বায়ুনাশক, শীতবীর্য্য ও ভশ্নসন্ধায়ক এবং ইহা রক্তাতিসার, রক্তপিত, মেহ, প্রদর ও রক্তমাব নিবারক।

অথারিষ্টকঃ।

ন্দরিষ্টকন্ত মালল্য কুকরণোহর্থসাধম:। রক্তবীজ্য পীতকেন্য কেনিলো গর্ভপাতন:। অরিষ্টকব্রিদোবল্লো এইব্রিকার্ডপাতন:।

तींछ।

অরিষ্টক, মাঙ্গল্য, রুক্তবর্ণ, অর্থসাধন, রক্তবীজ, পীতকেন, ফেনিল ও গর্জপাতন এই গুলি কাঁটার সংস্কৃত নাম। আরিষ্টক (বাঁটা)—জিদোধ-নাশক, গ্রাহদোমন্ন এবং গভপাতক।

অথ পুত্রজীবঃ।

পুত্রজীবো গর্ভকরো ষ্টিপুশোহর্থসাধকঃ। পুত্রজীবো গুরুষ্ যো। গর্ভদঃ গ্লেমবাতহ্নৎ। স্টেমুত্রমলো ক্লো হিমঃ স্বাছঃ পট্টঃ এটুঃ।

জিনাপুতা।

পুরজাব, ণ্ডকর, যষ্টিপ্রাপ ও অর্থসাধক,.
এই করেকটি জিয়াপুতার সংস্কৃত নাম। পুত্রজাব—গুরু, শুক্রবর্দ্ধক, গর্ভপ্রদ, কফন্প, বাতনাশক, মলমূত্র-নিঃসারক, রাক্ষ্ক ও শাত্রবাম্য
এবং মধুর-লবণ-কটু-রস।

অথেসুদঃ।

ংৰুদোহৰারপুক্ষক তিজ্ঞকন্তাপদক্ষন। গ্ৰন্থ: কুউভূতাদি-গ্ৰহ্ণধিবজিনীন্। হন্তাক: বিএশূলয়ন্তিককঃ কটুপাকবান্।

इक्ती।

ইঙ্কুদ, অন্নারবৃক্ষ, ভিক্তক ও তাপসক্রম, এই কয়েকটি একপর্যায়ক শব্দ। ইঙ্কুদী— কুষ্ঠ, ভূতাদি এইদোষ, এণ, বিষ, ক্রিমি, ৰিত্ৰ ও শূল নাশক; ইহা উষ্ণবীৰ্য্য, তিব্ৰুরস এবং কটুবিপাক।

অথ জিঙ্গিনী।

জিজিনী ঝিজিনী ঝিজী স্থনিৰ্য্যাসা প্ৰয়োদিনী। জিজিনী মধুৱা সোধা কৰায়া এণশোধিনী। কটুকা এণহুদ্ৰোগ-বাতাতীসাৱহুৎ পটুঃ। ভ্ৰমালশালৰ্জ্বদ্যো দাহবিক্ষোটহুৎ পুনঃ।

জিলিনী, নিলিনী, নিলী, স্থানিয়া ও প্রামোদিনী, এই করেকটি জিলিনীর নাম। (জিলিনী, শাললীজাতীয় বৃক্ষতেল।) জিলিনী—মধুর-ক্ষায়-কটু-লবণ-রস, উক্ষবীয়া ও বণশোধক। ইহা রণ, হুদ্রোগ, বায় ও অতীসার নাশক। জিলিনী তুমাল ও শালেব ভার গুণবিশিষ্ট এবং দাহ ও বিক্ষোট-নাশক।

অথ তুণী।

ত্নী ভূনক আপীনন্ত পিক: কচ্ছপত্ৰ। । বংঠাকে কাৰ্লনো নদিবৃষ্ণ নন্দৰ । তুনী নজ বটু পাকে কৰাতা মন্নো লঘু । ভিজো গ্ৰাহী হিমো বুয়ো ন্ৰুকুইাপ্ৰভিডি ॥

তুঁদ গাছ।

গুণী, তুমক, আপীন, ভুণিক, কচ্চপ, কুঠেরক, কান্তলক, নান্দর্ক ও নন্দক, এই করেকটি তুঁদগাছের পর্য্যায়। ভূণী—রও-বর্ণ, কটুবিপাক, ক্যায়-মধুর-ভিক্ত-রম, লগু, বারক, শাত্রীগা, শুক্রবদ্ধক এবং এণ, কুষ্ঠ ও রক্তপিও নাশক।

অথ: ভূৰ্জ্জপত্রঃ।

ভূজ্জণাত্র, খৃতো ভূজ্জ্জন্মী বছলবধন। । ভূজ্জো ভূতগ্রহরেখ-কর্ণরাক্তিরক্তজিৎ। করায়ো রাক্ষমন্ত্রত মেদোবিষহরঃ পরঃ॥ ভূর্চ্ছপত্র, ভূর্চ্ছ, চন্দ্রী ও বহুলবন্ধণ, এই কন্মেকটি ভূর্চ্ছপত্রের নাম। ভূর্চ্ছপত্র—কষায়-রদ; ইহা ভূতগ্রহ, কফ, কর্ণরোগ, রক্তপিত্ত, রাক্ষদ, মেদোদোষ ও বিষ নাশক।

অথ পলাশে। হস্তিকর্ণপ্রশাশন্ত।

পলাশ: কিংশুকং পর্বো যজ্ঞেয়ে রক্তপুশক: ।
কারশ্রেটো বাতপোশো বক্ষদক: সমিছর: ॥
পলাশো দীপনো বৃষা: সরেটকো রবপ্তশ্রুজিও ।
ক্যায়: কটুক্তিক্ত: লিছো। শুদ্ভরোগদিং ॥
ভগ্নস্কানকুদোর-গ্রহণ্য-গিলিনীন্ হরেও ।
তৎপূশ্বং স্বান্থ পাকে তু কটু ভিতাং ক্যায়ক্ম ॥
বাতনং ক্ষপিভাগ্র-কুছেভিদ্গ্রাট্র শীতলম্ ।
ভৃত্তদাহশমকং বাত-রক্তর্ভিহরং পরম্ ॥
ক্লং লম্মং মেহার্শং-জিমিবাতক্যাপ্র মৃত্ ॥
তদ্ভেদে তাৎ কিংশুলুক: কিঞ্লো হত্তিকর্ণক: ।
হস্তিকর্ণ: পরং বৃদ্যা মেধার্থলবর্জনং ॥

পলাশ ও হস্তিকর্ণ পলাশ।

পলান, কিংশুক, পর্গ, যান্তর, রক্তপূর্ণক, কারশ্রেষ্ঠ, বাতপোথ, ব্রহ্মকৃষ্ণ ও সমিন্বর, এই করেকটি একপর্যায়ক শব্দ। পর্লাশ—স্মিনদাপক, শুক্রবন্ধক, সারক, উফারীয়া, বর্ণনাশক, গুলার, ক্যায়-কট্ট-ভিন্ত-রম, সিম্ম, গুলারত রোগনাশক, ভ্রমনানকারক এবং ইহা বাতাদিদোষ, গ্রহণীরোগ, আর্শ: ও ক্রিমিনাশক।

পলাপপুষ্প—স্বাহ-ভিক্ত-ক্ষায়-াস, পাকে
কটু, বায়ুবৰ্দ্ধক, ধারক, শীতবীগ্য এবং ইহা
ক্ষ, রক্তপিত্ত, মূত্রক্ষ্ণু, পিপাসা, দাহ, বাতরক্ত ও কুঠ নাশক।

পলাশফল—লঘু, উষ্ণবীর্য্য, কটুবিপাক, কৃক্ষ এবং ইছা প্রমেহ, অর্শঃ, ক্রিমি, বায়ু, কৃষ্ক, কুন্ধ, গুল্ম ও উদ্যান্য নাশক।

আর এক প্রকার বৃহৎ-পত্র পলাশ আছে, তাহাকে হস্তিকর্ণ পলাশ বলে। কিংগুলুক, কিঞ্ল ও হস্তিকর্ণ এই তিনটি হস্তিকর্ণ পলাশের পর্য্যায়। ইহা অত্যন্ত বৃষ্য এবং মেধা আয়ু: ও বল বর্দ্যক।

অথ শালালিঃ।

শাব্যনিস্থ ভবেমোচা পিচ্ছিল। প্রনীতি চ।
রক্তপুশা স্থিরায়ুশ্চ কটকাঢ়া চ ভ্লিনী ॥
শাব্যনী শীতলা স্থানী বসে পাকে রসারনা।
শোব্যনা পিত্রবাতাত্র-হারিশী রক্তপিন্তরিং ॥
শাব্যনীপূর্পশাকন্ত স্থতসৈন্ধবসাধিত্য।
প্রদরং নাশয়ত্যের হুংসাধ্যক্ষ ন সংশয়ং ॥
রসে পাকে চ মধুরং ক্ষায়ং শীতলং শুক্র।
কক্ষপিন্তাবিভিদ্ গ্রাচি বাতলক প্রকীবিত্য॥

শিমূল।

শাঅলি, মোচা, পিচ্ছিলা, পূরণী, রক্তপুষ্ণা, স্থিরায়, কণ্টকাচনে ও তুলিনী, এই কয়েকটি শিম্লের নাম। শিনুল—শাতবীর্য্য, মধুবরস, মধুরবিপাক, রসায়ন, কফকানক এবং ইহা পিত্ত, বাতরক্ত ও রক্তপিত নাশক।

শিম্ল ফুল— এত ও দৈশ্বৰ সহ পাক করিয়া সেবন করিলে তঃসাধ্য প্রদর রোগ নষ্ট হয়। ইহা মধুর-কধায় রদ, মধুর-বিপাক, শাতবীর্যা, গুরুপাক, সংগ্রাহী, বাত-জনক এবং কফ, পিত্তত্তি ও বক্তত্তির নাশক।

অথ মোচরসঃ।

নিৰ্ব্যাসঃ শাক্ষলেঃ পিচ্ছা শাক্ষনীবেষ্টকোহপি চ। মোচান্রাবো মোচরসো মোচনির্ব্যাস ইত্যপি ॥ মোচান্রাবো হিমো গ্রাহী কিমো বৃষ্যঃ ক্ষায়কঃ। প্রবাহিকাতিসারাস-ক্ষপিন্তান্রদাহমুৎ ॥

মোচরস (শিমুলের আঠা)।
শাল্মলির নির্য্যাসকে মোচরস বলে।
পিচ্ছা, শাল্মলীবেষ্টক, মোচাম্রাব, মোচরস ও
মোচনির্য্যাস, এই কয়েকটা মোচরসের পর্য্যায়।
মোচরস—শাতবীর্ঘ্য, ধারক, স্থিয়, শুক্রবর্দ্ধক,
ক্ষায়-রস এবং ইহা প্রবাহিকা, অভিসার,

আমদোষ, কফ, পিত্ত, রক্তমৃষ্টি ও দাহ নাশক।

অথ কুটশা**ন্ম**লিঃ।

কুৎসিতঃ শাক্ষানিঃ পোজো রোচনঃ কুটশাক্ষানিঃ। কুটশাক্ষালিকভিতঃ কটুকঃ কন্ধবাতস্থ । ভেত্যকঃ গ্রীহজঠর-বক্দ্ গুলাবিবাপহঃ। ভূতানাহ্বিবন্ধাশ্র-মেদঃশূলক্ষাপহঃ॥

"* বক্তরোহিতক।

কুৎসিত শাল্মলিকে রোচন ও কৃটপাল্মলি বলে। কুটপাল্মলি—তিজ্ঞ-কটু-রস, ভেদক, উষ্ণবীর্যা এবং ইছা বাতরোগ্মদোষ, প্রীহা, উদর, যক্তং, গুলা, বিষ, ভূতগ্রহ, আনাহ বিবন্ধ, রক্তদোষ, মোঃ, শুল ও কফ নাশক।

वश भवः।

ধবো ঘটো নন্দিতরুঃ প্রিরো গৌরো ধুরকরঃ। ধবঃ শীতঃ প্রমেহার্শঃ-পাঙ্পিতকফাপতঃ। মধুরস্তবরস্তক্ত ফলক মধুরং মনাক্॥

পাওরা।

ধব, ঘট, নন্দিতক, হিন, গৌন ও ধুরন্ধর, এই কয়েকটি ধবরক্ষের পদায়। ধব—শীত-বীর্যা, মধুর-ক্ষায়-নদ এবং ইহা প্রমেহ, অর্শা, পাঞ্চ, পিত ও কফ নাশক। ইহার ফল— অস্ত্র মধুর-রস।

অথ ধৰঙ্গঃ !

ধবঙ্গন্ত ধনুবৃদ্ধি গোত্রবৃক্ষঃ স্থতেজনঃ। ধবঙ্গঃ কফপিন্তাশ্র-কাসকং তুনরো লঘুঃ। বুংহণো নলকৃত্রশক্ষঃ সন্ধিকৃদ্ নণরোপণঃ॥

ধামনাগাছ।

বৰঙ্গ, ধমুর্ক, গোত্রবৃক্ষ ও সতেজন এই ক্ষেকটি ধামনার পর্য্যায়। ধ্বন্ধ—কফ, পিত, রক্তদোয ও কাশ নাশক, কষার্বস, লযু, শরীরের উপচয়কাবক, বলবর্দ্ধক, ক্লন্ধ, ভগ্ন-সন্ধানকারক ও ব্রণবোপক।

অথ করীরঃ।

করীর: কৃষরোহপত্রো গ্রন্থিলে। মঞ্ভুক্ছ: । করীর: কটুক্জিজ: স্বেছামেণ ভেদন: শৃতঃ । দুর্নামকক্ষাতাম-গরশোপত্রণপ্রপুৎ ।

করীর, ক্রকর, অপত্র, গ্রন্থিল ও সরুভূরুহ এই করেকটি এক পর্যায়। (ইহা সরুভূমি-জাত উদ্ধ্রপ্রিয় তীক্ষকটকাঘিত রক্ষবিশেষ্ট্র) করীর—কটু-তিক্তরস, ঘর্মকারক, উষ্ণবীর্যা, ভেদন এবং ইহা অর্শঃ, কফ, বায়ু, আমদোষ, গরদোষ, শোণ ও ব্রণ নাশক।

অথ শাংখাটঃ।

শাখোটং পীতফলকো ভূতাবাসং গ্রচ্ছদ:। শাখোটো রক্তপিভাশো-বাংলেখাতিসারজিৎ॥

শেওড়া গাচ।

শাংখাট, পীতফলক, ভূতাবাস ও খরচছদ, এই কয়েকটি একপর্য্যায়ক শব্দ। শেওড়া— রক্তপিত্ত, অর্শঃ, বায়ু, কফ ও অতীসার নাশক।

তাথ ব্ৰুডা

বরুণো বরণঃ সেতৃত্তিকশাকোহমিদীপনঃ। বরুণঃ পিত্তলো ভেদী শ্লেমকুছংশিমারুতান্। নিহন্তি গুল্মবাতাপ্র-ক্রিমীংক্টোফোইগিদীপনঃ। ক্যামো মধুর্তিক্তঃ কটুকো ক্লফকো লঘুঃ॥

বরশা, বরণ, সেতৃ, তিক্তশাক ও অগ্নিদীপন, এই কয়েকটি একপর্য্যায়ক শব্দ। বরুণ—পিতত্তবর্দ্ধক, ভেদক, উষ্ণবীর্য্য, অগ্নিদীপক, ক্যায়-মধুর-ভিক্ত-কট্-রস, রুক্ষ, লুঘু এবং ইহা কন্ধ, মূত্রকচ্ছু, অশ্যরী, বায়ু, গুল্ম, বাত্তরক্ত ও ক্রিমি নাশক।

অথ কটভা ।

কটভী বাছপুলাক মধ্রেণু: কটভর:। কটভী তু অমেহার্লো-নাড়ীএণবিবক্রিনীন্। হস্তাকা কফুঠনী কট্রুকা চ কীর্ত্তি। • ংফল ডদ্ধণ জেনং বিশেষাৎ কফগুক্রহৎ॥ কাঁটা-শিরীয়।

কটভী, স্বাহ্নপুষ্পা, মধুরেণু ও কটগুর, এই করেকটি কাটা-শিরীবের পর্যায়। কটভী— প্রনেহ, অর্শঃ, নাড়ীবণ, বিষ, ক্রিমি, কফ ও কুঠনাশক, উষ্ণবীধ্য, কটুরদ এবং কক্ষ। কটভীর ফলও উক্তর্মপ গুণষ্ক্ত, বিশেষতঃ কফ ও গুক্ত নাশক।

অথ (মাকঃ।

শোকস্ত নোককোগণ জন্দ গোলীয়ো গোলিহস্তথা। স্বার্থান্তঃ ক্ষার্রুসো ছিবিধা স্বেত্রুককা ॥ শোককঃ কটুক্ভিডো গ্রাছাঞ্চা ক্ষণতিসং বিষ্যেদোভ্যাক্ড্-বিভিন্নক্ষিমিন্তজ্ঞায়ং ।

ঘণ্টাপার লি

নোক্ষ, মোক্ষক, গোলীড়, গোলিহ, ক্ষারশ্রেষ্ঠ ও ক্ষারবৃক্ষ, এই ক্ষেক্টি ঘণ্টা-পার্লার নান। ইহা ধেত ও ক্ষম্বর্ণ ভেদে ছই প্রকার। মোক্ষক—কটু-তিব্রুরস, গারক, উষ্ণবীগ্য এবং ইহা কফ, বায়ু, বিষ, মেদঃ, গুলা, কণ্টু, বৃষ্টিবেদনা, ক্রিমি ও শুক্রনাশক।

অথ জলশিরীযিক।।

শিরীষিকা টিণ্টিণিকা ছর্ম্বলাম্বশিরীষিকা। তিলোষবিষক্ঠাশো-ক্রী বারিশিরীষিকা।

कलभितीय।

জলশিরীষের পত্র শিরীষপত্রের স্থায়, ইহা জলে জন্মে। শিরীষিকা, টিন্টিণিকা, তুর্মলা ও অন্থশিরীষিকা এইগুলি উহার নামান্তর। অন্থশিরীষিকা—ত্রিদোষ, বিষ, কুঠ ও অর্শঃ বিনাশক।

वाश मानी।

শমীলৈক কলা তুৱা কেশছন্ত্রী শিবাকলা।
মঙ্গলা চ তথা লক্ষ্যী: সান্ধিকা সূতা ॥
শমী তিকা কট্: শীতা ক্য চনী লগু: ॥
কক্ষাস সান-কুঠাৰ্শক্ষিত্র ।

শ হিগাছ।

শমী, জুফলা, তুক্কা, কেশহন্ত্রী, শিক্ষাকলা, সঙ্গল ও লক্ষ্মী, এই কয়েকটি শমীর পর্য্যায়। কুদ্র শমীকে শমীর বলে। শমী— ভিক্ত-কট্ট-কয়ায়-রস, শাভবীর্যা, রেচক, লঘু এবং ইহা কফ, কাস, ভ্রম, শ্বাস, কুন্ত, অর্শঃ ও ক্রিমি নাশক।

অথ সপ্তপূর্ণ ।

সপ্তপর্বো বিশালস্ক্ শারদো বিদমচ্ছদ: । সপ্তপর্বো এপরেম্ব-বাতক্তাপ্রভাস্তভিৎ। দীপনঃ থাসগুলাফ্ল: বিধ্যোকস্থানর: সর: ॥

ছাতিম্।

সপ্তপর্ণ, বিশালস্বক্, শারদ ও বিষমচ্ছদ, এই করেকটি ছাতিমের নাম। ছাতিম—এণ, কফ, বায়, কুষ্ঠ, রক্তদোধ, 'ক্রিমি, স্থাস ও গুলা নাশক, অগ্নিপ্রদীপক, স্লিগ্ধ, উষ্ণবীগ্য, ক্যায়রস এবং সারক।

অথ তিনিশঃ।

তিনিশঃ শুন্দো নেমী রখজ্ব পুন্তুপা। তিনিশঃ শ্লেমপিতাশ্র-মেদঃকুঠ্মমেহজিও। তুবরঃ বিফলাহম্মে এণপাঞ্জিমিপ্রগুৎু।

জাক্লগাছ।

তিনিশ, শুন্দন, নেনী, রথজ ও বঞ্ল, এই কয়েকটি জারুলের পর্য্যায়। তিনিশ— ক্যায়-রস এবং ইহা কফ, পিতু, রক্তনোয়, মেনঃ, কুঠ, প্রমেহ, খিত্র, দাহ, ত্রণ, পাণ্ডু ও

অথ ভূমীসহঃ।

ভূমীসহো ছারদার্ক্রদার: ধরচ্ছদ:।
ভূমীসহস্তু শিশিরো রক্তপিন্তপ্রসাদনঃ।

ভূমীসহ, ধারদারু, বরদারু ও খরচ্ছদ, এই কয়েকটি ভূমীসহের নামান্তর। ভূমীসহ— শীতবীর্বা এবং রক্তপিত্রপ্রসাদক।

শেফালিকা।

শেষালী কটুভিজোকা রক্ষা বাতকদাপহা। জন্মী দীপনী বল্যা সন্ধিবাতবিনাশিনী॥ শিউলী।

শিউলিপাতা—কটু-তিক্ত রস, উষ্ণবীর্য্য, ক্লক্ষ, বায় ও কফনাশক, জ্বরন্ন, অগ্নির দীপ্তি-কারক, বলজনক ও সন্ধিবাতবিনাশক।

ইভি বটাদিবর্গ:॥

অথাত্রাদিফলবর্গঃ।

অথায়ঃ।

আন্ত্রক,তো রসালোগসো সহকারে!ংতিসৌরভঃ। কামাকো মধুদত ত নাকল: পিকবল্লভ:।। আত্রপুষ্পমতীসার-কফপিতপ্রমেহমুৎ। **অস্থ্য ছাইহরং** শীতং রাচিক্রদ্গ্রাহি বাতলম ॥ আদ্রং বালং ক্রায়ায়ং ক্লচ্যং মাক্লভপিত্তকৃৎ। ভরণস্ত ভদতায়ং রক্ষং দৌষত্রয় প্রকৃৎ 🛭 আম্মানং হুচা হীন্ম তপেহতিবিশোবিত্ম। অসং স্বাদু কৰায়ং স্তান্তেদনং কফবাতজিৎ। भक्छ मधुत्रः वृष्ठाः विश्वः वलक्षेथ्रमम् । শুরু বাতহরং হৃত্যং বর্ণাং শীতমপিত্তলম্।। কবায়ামুরসং বহি-দ্রেমণ্ডক্রবিবর্দ্ধনম্। তদেব বৃ**ক্ষ্যম্পকং গু**রু বাতহরং পর্ম 🛚 মধুরাম্লরসং কিঞ্চিন্তবেৎ পিত্তপ্রকোপণম্। আস্রং কৃত্রিমপক্ত ভদ্তবেৎ পিত্তনাশনম 🛭 রসম্ভারত হীন্দাঝাধ্যাচ্চ বিশ্বেত:। উষিতং তৎ পরং রুচ্যং বল্যং বীর্যাকরং লঘু 🖁 শীতলং শীঘ্রপাকি শুাদ্বাতপিত্তরং সর্ম। ভদ্নসা গালিভে। বলো ভক্সব ভিষয়: সর: ॥ অহত্যন্তপ্রেভিটীন ব্রহণঃ কলবর্দ্ধনঃ। তক্ত খণ্ডং গুরু প্রং রোচনং চিরপাকি চ। মধুরং বৃংহণং বলাং শাতলং বাতনাশনম্। বুবাং বর্ণকরং কাছ ছক্ষাত্রং গুরু শীতলম্॥ বাতপিত্তরং স্লচ্যং বৃংহণং বলবর্দ্ধনম।

মন্দানলকং বিষম্ভনঞ্

রক্তাময়ং বৃদ্ধগুণেদরক।
ভামাতিযোগো নয়নাময়ং বা
করোতি তক্ষাদতি তানি নাতাং ।
এতদরামবিষয়ং মধুরামপরং ন তু।
মধুরস্ত পরং নেত্রহিতহান্তা গুণা বতঃ॥
গুঠান্ত্রসোহস্পানং ক্যাদামাণামতিভক্ষনে।
জীরকং বা প্রধান্তবাদ মহ দৌবন্তনেন চ॥

অম।

আন্ত্র, রুকাল, সহকার, অতিসৌরভ, কামাল, মধুদ্ত, মাকলা ও পিকবল্পভ, এই করেকটি আন্ত্রের পর্য্যায়। আন্তর্পুষ্প (বোল)—
অতীসার, কফ, পিত্ত, প্রমেহ ও রক্তদোষ
নাশক, শাতবীর্য্য, ক্রচিকারক, ধারক এবং
বায়ুবর্দ্ধক।

কচি আম—ক্ষায়-অন্ত্রংস, ক্রচিকারক এবং বায় ও পিত্ত বর্জক। তরুণ আদ্র অর্থাং কাঁচা আম—অত্যস্ত অন্তবস, রুক্ষ, ত্রিদোষজনক ও রক্তদ্যক। কাঁচা আমের ছাল ফেলিয়া কাটিয়া রৌক্রে শুক্ষ করিলে ভাহাকে আমপেনী (আদ্রচর) বলে। আম- চূর—অম-মধুর-কণায় রস, ভেদক এবং কফ ও বায়ু নাশক।

পাকা আম-মধুর রস. বুষ্য, স্পিগ্ৰ, বলকর, স্থপপ্রদ, গুরুপাক, বাতম, হুল্ম, বর্ণ-প্রসাদক, শীতবীর্যা, কষায়ামুরস এবং অগ্নি, কফ ও শুক্রবর্দ্ধক। ইহা পিত্তকর নহে। গাছপাকা আম—মধুরামুরস, গুরুপাক, অতাস্ত বায়ু-নাশক, কিঞ্চিৎ পিত্তকর। ক্বত্রিয় পক্ব আত্র-অমুরস-বিহীন ও মধুররস বলিয়া উহা পিত্ত-নাশক। প্রায়িত আত্র অর্থাৎ পক্ত আত্র বাসি হইলে তাহা অতি ক্রচিকারক, বলপ্রদ, বীর্যবের্দ্ধক, লঘু, শাতবীর্য্য, শান্ত্রপাকী, বায়ু-পিত্রনাশক ও সারক হইয়া থাকে। পরু আমের গালিত রস—বলকারক, গুরুপাক, বায়ুনাশক, সারক, অহ্নস্ত, তৃপ্তিজনক, অত্যস্ত পুষ্টিকারক এবং কফবদ্ধক। আম খণ্ড খণ্ড করিয়া লইলে ভাহা গুক, ক্রচিকারক, চির-পাকী (অর্থাং বিলমে পরিপাক হয়), মধুর রস, শরীরের উপচয়কারক, বলকর, শীতবীর্ঘা ও বায়ুনাশক। চুগ্ধ-সংযুক্ত আয়—গুক্রবর্দ্ধক, বর্ণপ্রসাদক, মধুর রস, গুরু, শাত্রীয়া, বায়ু-রুচিকারক, পৃষ্টিকারক এবং পিত্তনাশক, বলবর্দ্ধক।

অতিশয় আন তক্ষণ করিলে অগ্নিমান্দরে, বিষমজ্বর, রক্তগ্রুষ্টি, বন্ধ-শুদোদর ও চক্লুরোগ উৎপন্ন হয়, সতএব অভাস্ত আনভক্ষণ নিষিদ্ধ। কিন্তু এই নিমেন অমানসমূক্ত আন সম্বন্ধে জানিবে, মধুররসমূক্ত আন সম্বন্ধে কারিভাদি গুণ উক্ত হইরাছে। অতিরিক্ত আন ক্ষমণ করিলে শুন্তার কার্থ পান অথবা সচল লবণের সহিত জীবা সেবন কর্ম্বরে।

আত্রাবর্তঃ।

পৰ স্ত সংকারত পটে বিস্তারিতো রস:। দক্ষপ্রকো মুহুর্কত আমানগু ইতি স্বাস্তঃ। আত্রবিউত্থাদছন্দি-বাতপিত্তংরঃ সরঃ। রচ্যঃ স্থ্যাংগুভিঃ পাকাল্লবৃন্দ স হি কীর্ত্তিতঃ॥

আমট (আমদত্ব)।

স্থপক আত্রের রস প্রাক্ডায় ছাঁকিয়া কোন কাপড়ে বিস্তারপূর্বক লেপন করিয়া রোদ্রে রাখিবে, শুক্ষ হইলে পুনরায় ঐরূপে লেপন করিবে, এই প্রকার প্রমং পুনঃ লেপন করিয়া শুক্ষ করিবে। যখন পুরু হইবে, তখন আয়াবর্গু প্রস্তুত হইল জানিয়া কাপড় হইতে পুথক্ করিয়া লইবে।

আমাবর্ত্ত (আমসর)— ভূষণ, বমি, বারু ও পিত্ত নাশক, সারক এবং রুচিকারক। ইহা স্থ্যসন্তাপে পক হওয়ায় লবু হইয়া পাকে।

অথাত্রবীজম্।

ন্তামনীতাং কথাবং স্তাচ্ছিদ। তাদাৱনাশনম। প্ৰদয়ক মধুৱং তথা সদয়দাহতুং ॥

আমবীজ—ঈষং অম্লনংযুক্ত কথার মধুর রস, ইহা বসি, অতিসার ও হৃদয়ের দাহনাশক।

হুথ নবপল্লবম্।

আত্রস্ত পর্যবং রচ্চং কম্বপি**স্ত**বিনাশনমূ ।

নব আত্রপল্লব—ক্চিকাবক এবং কফ ও
পিত্র নাশক।

অগান্তাতকঃ ৷

জামাতকঃ পীতনশ্চ সক্টান্তঃ কপীতন । আমাতসমং বাতস্থা গুরুবং কাহিকুৎ সরস্থা পৰুত্ত তুৰৱং স্বাপ্ত কাহে পাকে হিমং স্মৃতম্। তুৰ্পণা শ্লেম্বলং স্নিম্বাং বৃদ্ধা বিস্তৃত্তি বৃংহণম্। শুকা বলাং মৰুৎপিত-কাতদাহক্ষা স্থান্তিৎ।

সাগ্ড়!।

আয়াতক, পীতন, মকটাম ও কুপীতন এই কয়েকটি আম্ডার সংস্কৃত নাম! অপক আপ্রতিক—অমরস, বায়্নাশক, গুরু, উষণবীর্য্য, রুচিকারক ও সারক। পক আপ্রতিক—
কষায়-মধুর-রস, মধুরবিপাক, শীতবীর্য্য, ভৃপ্তি
কারক, কফবর্দ্ধক, স্নিশ্ধ, শুক্রবর্দ্ধক, বিষ্টুড়ী,
পৃষ্টিকর, গুরু, বলকারক এবং ইছা বায়ু, পিত্ত,
ক্ষত, দাহ, ক্ষয় ও রক্তদোধনাশক।

অথ রাজাত্রঃ।

নাজামন্তম্ব আস্রাতঃ কানাক্ষো রাজপুত্রকঃ। রাজাসং তুবরং স্বাতু বিশাদং শীতলং শুরু। গাহি রুক্ষং বিবন্ধাগ্ম-বাতকৃৎ কফপিত্রমুৎ।

রাজাম, টক্ষ, আমাত, কামাহর ও রাজ-পারক, এই করেকটি রাজানের নামান্তর। রাজাম—ক্যায়-মধুন নস, বিশদ (অপিচ্ছিল), শীতবীসা, গুল, ধারক, রুক্ষ, বিবন্ধ ও আধান জনক, বারুবদ্ধক, ক্রুত্ম ও পিওনাশক।

অথ কোশাত্রঃ ৷

কোশাম ৬কঃ কুজামঃ ত্রিমিরকঃ হকোশকঃ। কোশামঃ কুঠগোমান্র-পিত্তবপককাপংঃ। তৎকলং গ্রাহি বাত্রময়োকং তক্ত্র পিত্তনম্। প্রস্তু দীপনং ক্লচাং কল্পুক্ কফ্বাতসুৎ।।

(केडक)

কোশান্ত্র, কুদান্ত্র, ক্রিমির্ক্ষ ও প্রকোশক, এই কয়েকটি কেওড়ার নাম। কোশান্ত্র— কুষ্ঠ, শোথ, রক্তপিত্ত, রণ ও কফ নাশক। কোশান্ত্রের অপক ফল—ধারক, বায়ুনাশক, অম্লন্ত্র, উষ্ণবীর্যা, গুরু ও পিতত্ত্বর্দ্ধক। কোশান্ত্রের পক ফল—অগ্রিনীপ্রিকারক, ক্ষচিজনক, লঘু, উষ্ণবীষ্য এবং কফ ও বায়ুন্নাশক।

অথ পন্সঃ।

প্ৰদ্য কটিকিফল, প্ৰশোহতিবৃহ্ৎফল:। প্ৰদ্য শীতুলং প্ৰদ্য দ্বিষ্কা পিন্তানিআপ্ৰদ্য । তর্পণং বৃংহণং স্বাহ্ন মাংসলং প্রেম্বলং ভূশম্।
বলাং শুক্রপ্রদং হস্তি রক্তপিত্তক্ষতত্রপান্ ।
আমং তদেব বিষ্টুন্তি বাতলং তুবরং শুক্ত ।
দাহকুমধুরং বলাং কক্ষমেদাবিবর্জনম্ ।
পনসোত্তবীজানি ব্যাণি মধুরাণি চ।
শুক্রণি বজবিট্কানি স্প্রমুত্তাণি সংবদেং ।
ক্রজা পনসজো বুব্যো বাতপিত্তক্ষপহঃ ।
বিশেষাৎ পনসো বর্জ্যো শুলিভিম শবহিন্তিঃ ।

কাটাল।

পনস, কণ্টকিফল, পনশ ও অতিবৃহৎফল এই করেকটি কাঁটালের সংস্কৃত নাম। পাকা কাঁটাল—শীতবীর্গা, প্রিশ্ব, তৃপ্তিকারক, পৃষ্টি-জনক, মধুর-রস, মাংসবর্দ্ধক, অত্যন্ত কফকর, বলকারক, শুক্রজনক এবং ইহা পিন্ত, বায়ু, রক্তপিত্ত, ক্ষত ও এণ নাশক। অপক-কাঁটাল (এচোড়)—বিষ্টন্তী, বায়ুবর্দ্ধক, ক্যায়-মধুর-রস, শুরু, লাইজনক, বলকারক এবং ইহা কক ও মেদের বর্দ্ধক। কাটালের বীজ—শুক্র-ক্ষ্কক, মধুর-রস, শুরু, মলরোধক ও মূত্র-নিঃদারক। কাটালের মজ্জা—শুক্রবর্দ্ধক এবং ইহা বায়ু, পিত্ত ও ক্ফনাশক।

গুলারোগাক্রান্ত ও মন্দাগ্নিস্কুক ব্যক্তির পক্ষে কটোল অধিতকর।

অথ লকুচঃ ।

লক্চ কু দুপন্নো লিকুচো ড্ড বিডাপি।
আমং লকুচমুক্ত গুল কিন্তুলুক ওপা।
মধুবক ভখায়ক দোনতিত্য়বক্তক ।
উজাগিনাশন বাপি নেত্ৰোবিভিড গুডমু।
ইপাৰং তৎ তু মধুব্যয়কানিলপিডকুৎ।
কুস্বহ্নিকৰা কুচাং বুয়াং বিষ্টম্বক ডং॥

ডেলো মান্দার।

লকুচ, কুদ্রপনস, লিকুচ ও ডহু, এই করেকটি ডেলো মালারের নাম। অপক ডেলো ভিষ্ণবীধা, জরু, বিষ্টুকারক, মরু-রামরস, তিলোধজনক, রক্তকারক, ভারুম, অধিনাশক ও চকুর অহিতকর। পাকা ডেলো—অম্ন-মধুর-রস এবং ইহা বারু, পিত্ত,

কফ, অগ্নি ও বিষ্টম্ভ কারক, ক্রচিকর 3 ভক্রজনক।

অথ কদলী।

কদলী বারণা মোচামুসারাংওমতীকলা। মোচাফলং স্বাস্থ্ৰ শীতং বিষ্টুক্তি কফসুদ্গুরু। স্পিমং পিতাশ্রভূড় দাহ-ক্ষতক্ষ্মনীর্জিৎ। পকং স্বাত্র হিমং পাকে স্বাত্র বৃষ্যঞ্চ বৃংহণম্। কুতৃকানেত্রগদহন্মেহত্বং ক্রচিমাংসকুৎ ॥ মাণিকামর্ত্তামৃতচম্পকাদ্যা— ভেদাः कपना। तश्त्वाश्री मिख ।

উক্তা গুণাত্তেপধিকা ভবস্তি। নিদোৰতা ভালঘুতা চ তেখাম্॥

কদলী, বাবনা, মোচা, অধুসার। ও সংশু-गडीक्ला, अंहे करत्रक है। कर्नीत नाम। कला-मधुत-तम, बाटवीया, विष्यी, कक्ब, শুরু, মিগ্ধ এবং ইহা রক্তপিত্ত, গিপাসা, দাহ, ক্ষত, ক্ষা ও বায়ু নাশক। পাকাকলা--মধুন-বস, শতিবীগ্য, মধুনবিপাক, শুক্রবদ্ধক, পুষ্টিজনক, ক্রচিকারক, মাংস্বর্দ্ধক এবং ইহা কুনা, ভুন্না, চকুনোগ ও প্রমেহ নাশক।

মাণিকা, মর্ত্তা (মর্ত্তমান), অমূত ও চম্পকাদি জাতিভেদে কনলী অনেক প্রকার; সেই সকল কদলীতে উক্ত গুণ সকল বাচলা-ক্রপে অবস্থিতি করে। ভাষারা স্থান্ত कम्ली अल्लकः शिक्षात्र । वत्र ।

অথ চিভিটম্।

চির্ছিটং দেতুত্বধ্বক হলা গোরক্ষকর্কটী। চিভিটা মধুরং রক্ষঃ গুরু পিত্তকফাপিংশু। অনুসং গ্রাহি বিপ্তত্তি প্রস্তু শক পিওলম্।

কাকুড় ও ফুটী।

চিভিচ, গেমুগ্রম ও গোনফকটা, এই ক্ষেক্টি চিভিটের নাম। অণক ि वि वि িব কুড়)--- মধুররস, ক্রন্ফ, 'গুরু, পিওয়, ক্ষনাশক, ঈষ্ণ উষ্ণ, ধারক ও বিইন্তকারক। এই ক্রেকটি তরমুজের নাম। অপক তরমুজ

পাকা চিভিট (ফুটা)—উষ্ণবীৰ্য্য এবং পিত্ত-বৰ্দ্ধক।

অথ নারিকেলঃ।

गातिकाला पृष्कला लावनी कुर्छनीर्वकः। पुत्रः क्रमान्द्रित पुर्वत्राजः महायनः ॥ नात्रिरकनकनः भीठः छर्छतः विश्वत्माधनम्। বিষ্টুন্ডি বৃংহণং বলাং বাতপিত্তাপ্ৰদাহতুৎ ॥

বিশেষতঃ কোমলনারিকেলং নিহস্তি পিত্তরপিতদোষা ন। তদেব জীর্ণং গুরু পিত্রকারি বিদাহি বিষ্টুঞ্জি মতং ভিষগ ভি: । उक्रांखः नी उत्तर क्ष्युः मीथनः खळनः नग्। পিপাসাপিন্ডজিৎ স্বাছু বস্তিশুদ্ধিকরং পরম। নারিকেলপ্ত তালভ্ত পঞ্চরভ্ত শিরাংসি তু। क्यांग्रजिक्षमवत-तुर्व्यानि श्वकृति ह ॥

নারিকেল।

नातित्कन, पृष्कन, नाकनी, कर्कनीर्घक, ভুষ্ণ, সন্ধান্ত, ভুণরাজ ও সদাকল, এই কয়েকটি নারিকেলের প্রাায়। নারিকেল-ফল---শীতবীয়া, গুম্পাচা, বঞ্চিশোনক, বিষ্টুন্তী, পুষ্টি-কারক, বলকর এবং ইহা বাত, পিন্ত, রক্ত-দোষ ও দাহ নাশক। কোমল নারিকেল-পিত্ত-জর ও পিত্তজনিত সমস্ত রোগনাশক। নারিকেল পরিণত হইলে গুরু, পিতত্তবদ্ধক, বিদাহী ও বিষ্টম্বী হয়। ডাবের জল—শাতল, স্বয়গ্রাহী, অগ্নির দীপক, শুক্রবর্দ্ধক, লঘু, পিপাদানাশক, পিওল, সধ্ব-রদ এবং বস্তিশোবক।

নারিকেল, তাল ও খর্জার **₹₹**₹ (মেতী) ক্ষায়-মধুর-রস, শিশ্ব, পুষ্টিকর ও ওরে।

অথ কালিন্দম।

कालिकः कुकवोकः छा । कालिकक छवर्ड लग्। কালিন্দং গ্রাহি দৃকপিত্ত-শুক্রহাচ্ছীতলং শুক্ল। পৰ প্ৰ সোকং সঞ্চানা পিওলং কমনা একিং ॥ ৩৭মুজ ।

কালিন্দ, ক্লফবীজ, কালিঙ্গ ও প্রবন্ত্র,

ধারক, শাতল, গুরু এবং ইহা দৃষ্টি পিত্ত ও গুক্র নাশক। পদ তরমুজ—স্বং উষ্ণ, কিঞ্চিৎ ক্ষারবিশিষ্ট, পিত্তকারক এবং কফ ও বার্নাশক।

অথ থৰ্ক্ত জম্।

দশাস্থ্য পক্ষং কপান্তে চদওণা অধ। পক্তি জং মূলণং বলাং কোঠগুছিকিবঃ গুরু॥ জিক্ষং কাত্তরং শীতং বৃষং পিতানিলাপহম। তেবু মুক্তান্ত্রমধুরং সকারক রসাগুরেও। রক্ত পিত্তকরং তৎ জু মুক্ত ক্তিকরং পরম॥

. খণমুজ।

ধর্ম কে দশাসুল বলে। ধর্ম জ— মুজ-কারক, বলকর, কোইনোনক, ওল, স্লিপ্ধ, মধুর-রস, শাতবীয়া, ওজেবর্জক এবং পিন্ত ও বায়ু নাশক। যে সকল ধর্ম সক্ষার-অম-মধুর-রস, তাহান, বক্তপিও ও মৃতক্ষ্ম কারক।

অথ এপুদন্।

জপুৰং কটিকিফলং স্থাবাসঃ স্থাতলন ॥ জপুৰং লগু নীলক নবং তৃটুক্সমদাহনিং । স্থাত্ত পিঙাপহং শীতং রক্তপিঙ্গরং প্রন্॥ তিৎ প্ৰসম্পূৰণ জ্ঞাৎ পিতলং কফবাতস্ত্ৰ । তথ্যিৰ মূলবং শীতং ৰক্তং পিখাস্কৃত্তি ।

44

ত্রপ্রয়, কণ্টকিফল, স্থাবাদ ও স্থাত্র, এই করেকটি শশাব প্রায়ার। কচি শশা—
নীলবণ, লগু, মধুব-রস, নাওনীর্যা এবং ইহা
পিপাসা, ক্রন, দাহ, পিও ও সক্তাপিও নাশক।
পাকা শশা—অম্ব্রস, উফ্ফবীর্যা, পিওবর্দ্ধক,
ক্ষ ও বারু নাশক। শশাব বীঞ্—মূঞ্জাবক, শাতবীর্ষা, রক্ষ এবং পিওদোর, রক্তাদোর ও মৃত্রুজ্ নাশক।

অথ গুবাকঃ |

খপ্র: প্রা প্রশা গুনাকঃ ক্রম্কোহত ড়।
কলং প্রীফলং প্রোক্তম্ছোরক তদীরিতম।
প্রং গুরু হিমং ক্লফং ক্রায়ং ক্লপেভজিং।
মোহনং দীপনং ক্রমান্তবৈরক্তনাশনম্।
আদ্র: তদ্ওক্তিবাদি বিচ্চৃষ্টিহরং স্বতম্।
বিলং দোষত্রচেছদি দুড়মধ্যং তত্ত্তমম্।

প্রপারি।

শপুন, পুনী, পুন, গুবাক ও জ্রুমুক, এই কয়েকটি প্রপারির পর্যায়। ইহার ফলকে পুনীকল ও উদ্বেগ বলা যায়। পুনীকল—গুরু, শীতবীর্যা, রুক্ষ, কয়ায়-রস, কয়য়, পিত্তনাশক, মদকারক, ময়িপ্রদীপক, ক্রচিকারক এবং মুখের বিরস্তানাশক। অপক্ষপারীফল—গুরু, অভিবানদী এবং অয়ি ও দৃষ্টি নাশক। স্বিয় পুনদল—ত্রিনোনাশক। বে পুন্দলেব নবভোগ কঠিন, তাহাই লেষ্ঠ।

অথাতৃপ্যম্ ৷

আ কুপাং গঙ্গাক্রক বছরীজমপি খৃতম্ ॥
আত্পাং তৃপ্তিক্রনং বলপ্টিকরং পরম্।
শীতরং স্বাত্ প্রত্ন বাত্পিত্রপাশনম্।
রক্তিটিপ্রশননং দাহন্তং রক্তব্দন্য।
ক্রেক্তিপ্রশননং বাস্তাংক্রেশনিলা চন্দ্র।

মাতা।

আ গুণা, গণ্ডগাত্ত ও বছবীজ, এই কয়েকটি আতাৰ পৰ্য্যায়। আতা—ভৃপ্তিজনক,
বল ও পৃষ্টিকারক, শীতল, মধুন-রস, হৃত্ত,
বক্তবর্দ্ধক ও প্রেল্লজনক। ইহা বাত-পিও,
বক্তকুটি, দাহ, ভৃষ্ণা, ব্যি ও ব্যন্ধেগনিবারক।

অথ পারেবতম্।

পারেশতন্ত্র রৈশতনারেশতক্ষণ কিঞ্চ রৈশতক্ষ্। নধুকলনমূতকলাপ্যং প্রবেতকঞ্চ প্রাহ্যম্। পারেশতন্ত্র মধুরং ক্রিমিবাতহারি পুরাং ভূষাজ্ঞানিদাহহনক হল্পম্। মূর্জ্ঞান্তমশ্রমনিশোবিনাশকারি
থিক্কঞ্চ ক্রচামূদিতং বছবীব্যদায়ি।
মহাপারেবতঞ্চান্তং ব্যর্পারেবতং তথা।
সম্রোণিজং থারিকঞ্চ রক্তরৈবতকঞ্চ তং ॥
বৃহৎ পারেবতং প্রোক্তং দ্বীপজং দ্বীপথর্জ্বে।
মহাপারেবতং গৌল্যং বলকৃৎ পৃষ্টিবর্জনম্।
বৃষ্যং মুর্জ্ঞান্তম্প পুর্ব্বোক্তাদ্বিধিকং স্তুবৈঃ॥

পেয়ারা।

পানেব হ, নৈব হ, আনেব হ, নৈব হক, মধুফল, অমৃতফল ও পারেব হক, এই সাতটা পোরার পর্যায় শব্দ। পোরার!—মধুর রস, বলকারক, সদয়গ্রাহী, স্পিথা, ক্ষতিকর ও শুক্তজনক এবং ইহা ক্রিমি, বায়ু, তৃষ্ণা, জব, বিদাহ, মুর্চ্চা, লম, শ্রম ও শোষ বিনাশক। আর এক প্রকার পেয়ার। আছে, ভাহা অতি রহং ও গোলাকার। মহাপারেব হু, স্বর্ণপারেব হু, সামাণিছ, থারিক, র ক্রারেব হক, রহং পারেব হু, খীপজ ও খীপথ শ্রুর, এই গুলি বড় পেয়ারার পর্যায়। ইহা বলকাবক, পৃষ্টিকর, সৃষ্য, মুর্চ্ছা ও জ্বনাশক এবং ইহা পুর্বোত্ত পেয়ারা অপেক্ষা অধিক গুণবিশিষ্ট।

অথ পারীশফলম্ ।

পারীশং শীতলং ক্ষচাং দীপনং পাচনং সরষ্। মধুরং রক্তপিওস্থং বিশেষাদশসে হিতম্। পারীৰক্ষীরযোগেন শ্লীহা গুল্মল্চ নশ্যতি॥

পেপে।

পেপে—শীতবীর্ব্য, ক্ষচিকর, অগ্নিদীপক, পাচক, সারক, মধুর-রস ও রক্তপিত্তনাশক। ইহা আর্শোরোগে বিশেষ উপকারক। পোণের ছই এক নোটা আঠা, কলা বা অন্ত কোন দ্রব্যের মধ্যে পূরিয়া সেবন করিলে প্লীহা ও গুন্ম বিনষ্ট হয়।

অথ বহুনেত্রম্।

বছনেত্রফলঞ্চায়ং ক্রিমিশ্বং মধুরং সরম্। বল্যাং বাতহরং ক্লচ্যং শ্লেমলং তর্পণং গুরু ॥

আনারদ !

আনারসের সংস্কৃত নাম বছনেত্র। আনা-রস—অম্ল-মধুর-রস, ক্রিমিনাশক, সারক, বলকারক, বাতনাশক, ক্রিজনক, শ্লেম্মকারক, তৃষ্ঠিপ্রদাও গুরুপাক।

অথ তালঃ।

ভালপ্ত লেপ্যপাক্ত স্থাৎ তৃণরাজো মহোরত: ॥
পাকং তালকলং পিত্ত-রক্তরেশবিবর্দ্ধন্ম ।
কুর্জনং বহুমুক্তক তল্লাভিব্যালি শুক্রদ্ম ।
ভালমজ্ঞা তু তঞ্চণ কিঞ্জিন্মদকরো লঘু: ॥
লেখলো বাতপিভন্ন: সংবহো মদুর: সরঃ ।
ভালজং তরণং ভোগেমতীব মদুর্ন্নাতম্ ।
কান ভূতং তরা তু স্থাৎ পিভক্ষা তদোসকর ॥

ভাল।

তাল, লেখাপত্র, ভূণরাজ ও মহোরত, এই কয়েকটি তালের পর্য্যার। পকতাল—
পিত্র, বক্ত ও কফ বর্দ্ধক, তুপ্পাচ্য, বহুমূত্রজনক এবং ইহা তন্দ্রাজনক, অভিষ্যানী ও গুক্রবর্দ্ধক। তালের কোমল মজ্জা—কিঞ্চিং মদকারক, লঘু, কফবদ্ধক, বাতম্ব, পিত্রনাশক, স্নিগ্ধ, মধুররস এবং সারক। তালের নূতন রস (তাড়ী) সত্যন্ত মত্তাজনক। তাহা অগ্লীভূত হইলে পিত্রদ্ধক ও বাত্ত্রিনাশক হইয়া থাকে।

অথ বিন্তঃ।

বিবঃ শান্তিল্যেশন্বে মাল্র শ্রীফলবেপি।
বালং বিষকলং বিষ-কর্কটা বিষপেবিকা।
গাহিনী কফবাতাম-শুলমী বিষপেবিকা।
বালং বিষকলং গ্রাহি দীপনং পাচনং কটু॥
কবারোঞ্চং লবু মিশ্বং তিক্তং বাতকফাপহম।
পকং গুরু তিদোবং স্থান্ত দুর্জ্জরং পৃতিমারতম্।
বিদাহি বিষ্টঞ্জরং মধুরং বহিংমান্যাকৃৎ॥

(वन ।

বিল, শাণ্ডিল্য, শৈলুর, মালুর ও শ্রীফল, এই কয়েকটা একপর্য্যায়ক শব্দ। কচিবেলকে বিঅককটী ও বিজপেনিকা বলে। কচি বেল—
ধারক এবং ইহা কদ বায়, আমদোষ ও পূল্
নাশক। অন্তবচনোক্ত গুল যথা, কচি বেল—
ধারক, অগ্নির দীপক, আমের পাচক, কটুকমার ভিক্ত-রস উক্ষরীন্য, লনু, স্নিগ্ধ এবং
ইহা বায়ু ও কদনাশক। পাকা বেল—গুরু,
বিদোষজনক, তুষ্পাচা, পূত্রায়ুজনক, বিদাহী,
বিষ্ট্রভকারক, মধু-বরস ও অগ্নিনান্সাকর।

তাথ কপিখঃ।

কলিখন্ত দৰিখঃ স্থাৰ তথা পূপকলঃ প্ৰত:। কলিপ্ৰিয়ো দৰিক্ষণ্ডৰা দন্তশ্টোহলি ৮ ॥ কলিখনামং সংগ্ৰাহি কৰায়ং লঘু লেখনম্। প্ৰবং গুৰু ভূৰাহিকা-শমনং বাহণিড্ৰিই। স্থাদমং ভূবরং কঠ-শোধনং গ্ৰাহি ছক্ষরম্॥

কয়েৎ বেল।

কপিথা, দধিখা, পূষ্পাফল, কপিপ্রিয়, দধিফল ও দন্তশঠ, এই কয়েকটি কয়েৎবেলের
সংস্কৃত নাম। অপক কয়েৎবেল—ধারক,
ক্যায়রস, লঘু ও লেখনগুণারুক। পাকা
কয়েৎবেল—গুরু, অম্ল-ক্যায়-রস, কণ্ঠশোধক,
ধারক, হুস্পাচ্য এবং পিপাসা, হিন্ধা, বায়ু ও
পিত্তনাশক।

অথ নারঙ্গঃ।

নারকো নাগরক: ভাৎ তক্তগজো মুধ্পির:। নারকং মধুরায়ং ভাদীপনং বাতনাশনম্। অপরভ্যমত্যকং হুর্জরং বাতক্ৎ সরম্।

নারাঙ্গীলের।

নারন্ধ, নাগরন্ধ, অক্রপন্ধ ও মুণপ্রিয়, এই কয়েকটি নারান্ধী-লেব্র নাম। নারান্ধী-লেব্—অস্ত্র-মধ্র-রস, অগ্নির দীপক ও বায়-নাশক। অপর এক প্রকার নারান্ধী লেব্ আছে, তাহা অতাস্ত অমবস, উক্ষৰীৰ্যা, ছম্পাচ্য, নায়ুনাশক ও সাবক।

অথ মঙ্জফলম।

কীটাবাসো মজজলন গ্রাহি বলাং অরাপহেন্। শোণিতপ্রতিহাং হাঁও মুগদন্তগতান্ গদান্। খেতপ্রদেশমাণাংসি যোনিকলাং স্বদারণাম্। গ্রহিদাবং নহাগোরং গ্রহনীং স্পরাহিকাম্।

মাজুফল।

কীটাবাদ ও মজ্জনল এই ছুইটী মাজুফলের নাম। মাজুফল—গ্রাহী, বলকারক, জ্বন্ন ও রক্তস্থাব্যোধক। ইহামুখ ও দন্তগত রোগ, খেতপ্রদ্ব, অশঃ, যোনিকন্দ, অতিসাব, গ্রহণা ও প্রবাহিকা রোগ নাশক।

অথ তিন্দুকঃ।

তিলুক: কৃষ্ণক: কাল-স্বন্ধক শিতিসারক:। স্তাদাম: তিলুক: গ্রাহি বাতল: শীতল: ললু। পক: পিতপ্রমেহাত্র-শ্রেমন্ত্র: মধুর: ওক ॥

5

তিদ্ক, শুর্জ্জক, কালম্বর ও শিতিসারক, এই করেকটি গাবের সংশ্বত নান। অপক গাব—ধারক, বায়বর্দ্ধক, শাতবীর্য্য ও লঘু। পাকা গাব—মধুর-রস, গুরু এবং ইহা পিত্ত, প্রমেহ, রক্তদোষ ও কফ নাশক।

অথ কুপীলুঃ।

তিন্দুকো যন্ত কথিতো জলদো দীর্ঘপত্রকঃ।
কুপীগুঃ বুলকঃ কাল-তিন্দুকঃ কালপীগুকঃ॥
কাকেন্দুবিষতিন্দুক তথা মর্কটতিন্দুকঃ॥
কুপীলু শীতলং তিক্তং বাতলং মদকৃষ্ণমু।
পরং ব্যধাহরং গ্রাহি কক্পিভাত্যনাশ্রম॥

कॅं हिना।

ভিন্দুক, জলদ, দীর্ঘপত্রক, কুপীনু, কুলক, কালভিন্দুক, কালপীলুক, কাকেন্দু, বিষভিন্দু ও মর্কটিভিন্দুক এই কয়েকটি কুঁচিলার পর্যায়। কুঁচিলা—শীতবীর্য্য, তিক্তরস, বায়ুবর্দ্ধক, মদকারক, লঘু, বেদনানাশক, ধারক এবং ইহা কফ, পিত্ত ও রক্তর্মষ্ট নাশক।

জম্ব:।

জবুত্ত হয়ভিপতা নীলকলা ভামলা মহাক্ষা।
রাজাহাঁ রাজফলা শুকভিয়া মেগমোদিনী চ নবাহা।
জবুক্ত তুবরো গ্রাহী মধুরপাচকঃ।
মলভজকরো রক্ষো রুচিকৃৎ পিওদাহহা।
লক্ষা কঠাঃ ক্রিমিষাস-শোষাতীসারকাসহা।
রক্তদোষং কফং চৈব রবং চৈব বিনাশয়েৎ।
ফলক তুবরং চায়ং মধুরং শীতলং মতম্।
রক্তাং রক্ষং গ্রাহকং চ লেখনং কঠানুষকম্।
মলভজকরং বাতকারকং ককপিতেম্ব।
ভাষানকারকং গ্রাহা বিশেষামুদ্দহহা।
ভদক্ররা হিমা রক্ষা গ্রাহকাখানকারকাঃ।

জাগ।

জম্বু, স্থ্রভিপত্তা, নীলকলা, গ্রামলা, মহাস্কন্ধ, রাজাহা, রাজ্ফলা, শুকাপ্রা ও মেঘমোদিনী এই নম্বটি জানের পর্যার।

জামছাল—ভাষ্য-কবায়-মধুর-রস, সংগাহী,
পাচক, মলস্কম্ভক, রুক্ষ, রুচিজনক ও কণ্ডের
হিতকারক এবং ইহা পিন্ত, দাহ, ক্রিনি, খাদ,
শোষ, অতীসার, কাস, রক্তদোষ, কফছ্টি ও
বল বিনাশ করে। জামফল—অস্ত্র-মধুর-কষায়-রস, শাতবীর্য্য, রুচিজনক, রুক্ষ, প্রাহক,
লেখন, কণ্ডদ্বক, মলস্কম্ভক, বায়্জনক,
উদরাধ্যান-কারক ও কফপিত্ত-নাশক। ইহার
মজ্জা—মধুর রস, প্রাহী, বিশেষতঃ মধুমেহনাশক। জামের অঙ্কর—শীতবীর্য্য, রুক্ষ,
মলসংগ্রাহক ও উদরাধ্যানকারক।

অথ ক্ষুদ্ৰজমূঃ।

কুত্ৰজন্ম প্ৰসাপতা নাদেয়ী জলজনুকা।
জন্ম সংগ্ৰাহিনী ককা ককপিভাগ্ৰদাহজিৎ ॥

ছোট জাম।

কুডজন্ব, সংক্ষপতা, নাদেয়ী ও **ক্ষাজন্ত্**ন, এই কয়েকটি কুডজন্বর পর্যায়। কুডজন্ব— ধারক, রক্ষ এবং ইহা কফ, পিন্ত, রক্ত**ত্তি** ও দাহ নাশক।

অথ ফলেন্দ্র:।

কলেন্দ্র: কৰিতো নন্দো রাজজপুন হাকলা:। তথা স্বাভিপত্রা চ মহাজপুরপি স্বহা। রাজজস্কুলং স্বাহ্ন বিষ্ঠপ্তি গুরু রোচনন্॥

গোলাপজাম।

ফলেন্দ্র, নন্দ্র, রাজজন্ব, মহাফলা, স্থরভি-পত্র ও মহাজন্ব, এই কন্ধেকটি একপর্য্যায়ক শব্দ। রাজজন্ব (গোলাপজাম)—মধুর-রস, বিষ্টপ্রী, গুরু ও ক্চিকারক।

व्यथ वनता ।

পুংগি দ্রিগ্রাক্ত কর্মপুর্বদরী কোলমিতাপি।
ক্রেনিলং কুবলং খোণ্টা পৌবীরং বদরং মহৎ ॥
আজপ্রিয়া কুহা কোলী বিষমে ভ্রমকন্টকা।
পাচামানং স্মধুরং দৌবীরং বদরং মহৎ ॥
দৌবীরং বদরং শীতং ভেদনং গুরু গুজলম্।
বৃংহণং পিন্তদাহাত্র-ক্রমন্ত্র্লানিবারণম্॥
দৌবীরং লঘু সম্পাকং মধুরং কোলমূচ্যতে।
কোলস্ত্র বদরং গ্রাহি ক্রচামুক্তক বাতলম্।
কর্মপুত্রকরকাপি গুরু সারকমীরিতম্।
কর্মজ্য কুত্রবদরং ক্রিডং পূর্বস্পত্নিভি:॥
আয়ং স্থাৎ কুত্রবদরং কর্মাং মধুরং মনাক্।
ক্রিমং গুরু চ্ তিক্রক বাতপিন্তাপহং স্থতম্।
গুরুং ভেত্যগ্রিকং সর্বং লঘ্ ভ্রম্বামাপ্রিৎ ॥

কুল ৷

কর্কন্ধ শব্দ, পুংস্ত্রী উভর লিক্ষ্ট হয়। কর্কন্ধ, বদরী, কোল, ফেনিল, কুবল, ঘোণ্টা, সৌবীর ও বদর এই গুলি বড় কুলের এবং অজপ্রিয়া, কুহা, কোলা ও বিষমোভয়কণ্টকা, এই কয়েকটি ছোট কুলের পর্যায়। কুল অনেক প্রকার, তাহাদের লক্ষণ ও গুণ বলা যাইতেছে—

বে কুল পচামান অবস্থাতেই মধুর-রস হয় এবং আয়তনে বৃহৎ, তাহাকে সৌবীর বদর বলে। উহাকে চলিত ভাষায় নারিকুলে কুল বলা যায়। নারিকুলে কুল—শীতবীর্যা, ভেদক, গুরু, শুক্রবর্জক, পৃষ্টিকারক এবং ইছা পিন্ত, দাহ, কব্রুদোষ, কর ও পিপাসং নাশক।

্য বদরী সৌধীব বদর অপেক্স কিঞ্চিং ছোট সর্থাৎ মধ্য প্রমাণ এবং বাহা সম্যক্ষ্
পাকিলে মধুর-বস হয়, গ্রহাকে কোল বলে।
কোলাখ্য বদর—খারক, ক্ষিকারক, উষ্ণবীর্য্য,
বাষুবন্ধক, কফচনক, পিত্তকাবক, গুরু

ক্ষুত্র বদরকে কর্কদ্ধ বলা যায়। কর্কদ্ধ— ক্ষাবং মধুব-ক্ষায়-ভিজ্ঞ-রসাঘিত অমনস, স্নিগ্ন, শুক্র এবং বায়ু ও পিত্তনাশক।

শুক্ষবদরী—ভেদক, অগ্নিবৰ্দ্ধক, লঘু এবং ইফা পিপাদা ক্লাস্তি ও রক্তদোষ নাশক।

অথ পানায়ামলকগু।

প্রাচীনামলকং লোকে পানীয়ামলকং স্কঃম্র প্রাচীনামলকং দোক-এয়ভিজ্ঞর্থাতি চ ॥

পানী আমল।।

প্রাচীনামলককে লোকে পানী-আমলা বলে। প্রাচীনামলক—ত্তিদোষনাশক ও জরম্ব।

व्यथ लवली।

ক্লন্ধমূলা লবলী পাঞ্ কোমলবৰুলা। লবলীকলমত্মাৰ্শ-কফপিত্তহ্বঃ গুলা। বিশাদং রোচনং ক্লকং স্বাছন্ধঃ ভূবরং রূদে ঃ

লোগাড়।

স্থান্ধনূলা লবগী, পাওু ও কোমলবন্ধলা, এই করেকটি একপর্য্যায়ক শব্দ। লবলী- কল—অশারী, অর্শঃ, কফ ও পিত্তনাশক, শুরু, বিশদ, ফুচিকাবক, কক্ষ এবং অল্ল-মধুর-কবার-নস।

অথ কর্মর্দ্রঃ।

করমদিঃ হ্যেশঃ ভাৎ কৃষ্ণপাককলন্তথা।
সন্মান্ত্র্যুক্তা বা তু সা জেরা করম্পিকা ॥
করম্পিকারময়ং গুলু ত্বাহয়স্।
উল্পং ফ্রিকরং গোজাং মন্তাপিত্রকক্প্রদম্ন।
• থ প্রাং মধুবং ক্রাং জবু পিত্রসমীর্জিক দ

কর্মচা ।

করম্দা, স্থানা ও ক্ষাপাককল, এই কয়েকটি করম্চার সংস্কৃত নাম। অপর এক প্রকার করম্দি আছে, ভাহার ফল, ইছা অপেক্ষা ছোট; তাহাকে করম্দিকা বলে। এই ছিবিধ করম্দিই অপক অবস্থায় অস্ত্রস্থা, গুরুপাক, পিপাসানাশক, উফবীর্য্য, ক্ষচিকারক এবং রক্ত-পিত্ত ও কফ জনক। পক্ক অবস্থায় মধুররস, ক্লচিকানক, লঘু এবং পিত্ত ও বায়ু নাশক।

মথ পিয়ালঃ।

পিয়ালপ্ত খনস্থলকানের বহুলবজন: । রাজাদনতাপ্রদেষ্ট: সরকাদর কুপাট: ॥ চার: পিত্তকফা প্রদ্নতংফলং মধ্রং গুরু । শ্লিকং সরং মরুৎপিত-দাহত্তরত্বাপাহন্ ॥ পিয়ালমজ্জা মধ্রো বৃষ্যা পিতানিলাপহ:। হত্তোহতিছুজ্জর: শ্লিধো বিষ্টুঞ্চী চামবর্জন: ॥

পিরাল, থরস্কন্ধ, চার, বহুলবন্ধল, রাজাদন, তাপদেই, সন্ধকক্র ও ধরুপট, এই কয়েকটি একপর্য্যায়ক শব্দ। পিরাল—পিত্ত, কফ ও রক্তদোব নাশক। পিরালফল—মধুর-রস, গুরু, সিগ্ধ, সারক এবং ইহা বায়ু, পিত্ত, দাহ, ব্যর ও পিপাসা নাশক। পিরালমজ্জা—মধুর-রস, গুরুবর্জন, গুরুব্রস, গুরুবর্জক, পিরুদ্ধ, বায়ুনাশক, হাদয়-গ্রাহী, অভিশয় হুম্পাচ্য, দিগ্ধ, বিইন্ধী এবং আমব্দ্ধক।

অথ ক্ষীরিকা।

রাজাদনঃ কলাধাকো রাজন্তঃ ক্রীরকাপি চ। ক্রীরকারা: কলং বৃষ্যং বল্যং স্থিধং হিমং গুরু। তুকামুক্তামদন্তান্তি-করদোহত্রয়াশ্রজিৎ ॥

রাজাদন, ফলাধ্যক্ষ, রাজন্ত ও ক্ষীরিকা, এই করেকটি একপর্য্যায়ক শব্দ। ক্ষীরিকা-ফল—ভক্রবর্দ্ধক, বলকারক, দিয়া, শীতবীর্য্য, গুরু এবং ইছা পিপাদা, মূর্চ্ছা, মন্ততা, ভ্রান্তি, ক্ষম, ত্রিলোম ও রক্তদোধ নাশক।

অথ বিকশ্বতঃ।

বিকদতঃ জ্রবাবৃদ্ধো গ্রন্থিনঃ স্বাত্তকটক:। স এব যজনুক্ষক সংটকী ব্যাত্তপাদপি। বিকদ্ধতদলং পঞ্চং মধুবং সর্বদোষজিং॥

.বঁচী।

বিকন্ধত, হ্রুবাবৃক্ষ, গ্রন্থিল, স্বাহ্নকণ্টক, যজ্ঞবৃক্ষ, কণ্টকী ও ব্যাঘ্রপাৎ, এই করেকটি বেঁচীর সংস্কৃত নাম। পাকা বিকল্পতফল— মধুররস; ইহা বাতাদি সমস্ত দোঘনাশক।

অথ কমলবাজম।

পদ্মবীজন্ত পদ্মাক্ষং গালোড্যং গদ্মকর্কটা। পদ্মবীজং হিমং স্বাহ্ন করারং তিক্তকং গুরু॥ বিষ্টান্তি বৃষ্যং রুক্ষঞ্চ গর্ভসংস্থাপকং পরম্। কক্ষবাতকরং বৃল্যং প্রাহি পিন্তাপ্রদাহনুৎ॥ পদ্মবীজা।

পদ্মবীন্ধ, পদ্মাক্ষ, গালোভ্য ও পদ্মকর্কটী, এই করেকটি একপর্যায়ক শব । পদ্মবীন্ধ— শীতবীর্ষ্য, মধুর-ক্ষায়-তিক্ত-রদ, গুরু, বিইন্তী, গুক্রবর্দ্ধক, রুক্ষ, গর্ভসংস্থাপক, কফজনক, বায়ুবর্দ্ধক, বলকারক, ধারক এবং ইহা পিন্ত, রক্তদোষ ও দাহ নাশক।

অথ মথান্ব ।

মধারং পদ্মবীক্রান্তং পানীয়কলমিত্যপি। মধারং পদ্মবীক্রন্ত গুগৈগুলাং বিনির্দিশেৎ॥

মাথ্না।

মথার, পদাবীজ্ঞাভ ও পানীরক্ষল, এই তিনটি একপর্য্যারক শব্দ। মথার—পদ্মবীজ-সন্থ ওপকারক।

অথ শুঙ্গাটকম্।

শৃক্ষাটকং জনকলং ত্রিকোশকলমিতাপি । শৃক্ষাটকং হিমং স্বাহ্ন গুরু বৃষ্যং কবারকম্ । আহি শুক্রানিললেম-প্রদং পিশুপ্রদাহমুৎ ।

পানীফল।

শৃস্বাটক, জলফল ও ত্রিকোণফল, এই করেকটি পানীফলের সংস্কৃত নাম। পানীফলে—শাতবীর্যা, কষায়-মধুর-নস, গুরু, পুষ্টি-কারক, ধারক, গুরুজনক, বায়ুব্দ্ধিক, কফ-কারক, এবং ইহা পিত্ত রক্তদোষ ও দাহ-নাশ্রন।

অথ কুমুদবীজম।

উक्टः दूम्परीज्ञ दूरेशः टेकत्रविशीयनम्। ভবেৎ কুমুৰভীবীকং স্বাত ক্লকং হিমৎ গুরু ।

পণ্ডিতগণ, কুমুদ্বীজকে কৈর্বিণীফল বলিয়া থাকেন। কুমুদ্বীজ—মধুর্-রস, কক, শীত্বীর্যা ও গুরু।

অথ মধুকঃ।

মধুকো গুড়পুলা জামধুপুলো মধুসর:।
বানপ্রস্থা মধুঞ্জীলো জলজে তু মধুলক:।
মধুকপূলা মধুরং শীতলং গুরু বৃংহণম্।
বলগুকুকরং প্রোক্তং বাতপিগুবিনাশনম্।
ফলং শীতং গুরু স্বাত্ন গুকুলাং বাতপিগুরুং।
অন্ত্যাং হস্তি তুকাল্ল-দাহ্বাস্ক্তক্ষান্।

त्योन ।

মধুক, গুড়পুলা, মধুপুলা, মধুম্বা, বানপ্রাপ্ত ও মধুষ্ঠীলা, এই কয়েকটি মৌল বৃক্ষের নাম। জলজ মৌলকে মধুলক বলে। এই উভয়ের পুষ্প — মধুর-রস, শাতবীর্যা, গুরু, পৃষ্টিকারক, বলপ্রদ, শুক্রবর্জক এবং ইহা বায়ু ও পিন্ত নাশক। মৌলফল—শীতবীর্যা, গুরু, মধুর-রস, শুক্রবর্জক ও অহন্ত এবং ইহা বায়ু, পিন্ত, পিপাসা, রক্তদোষ, দাহ, শাস, ক্ষত ও ক্ষয়-নাশক।

অথ পরুষকম্।

পক্ষকত্ত পক্ষমদান্তি চ পরাপরস্। পক্ষকং কষায়ামমামং পিততকরং লঘু ॥ তৎ পকং মধুরং পাকে শীতং বিষ্ঠতি ব্ংহণস্। ক্ষতাত্ত পিত্তদাহাশ্ৰ-অৱক্ষয়সমীর কং ॥

ফলসা।

পর্যক, পরুষ, অল্লাস্থিও পরাপর, এই করেকটি একার্থনাচক শবা। অপক পর্যক-ফল—অন্ন-ক্ষায়-রস, পিত্তবদ্ধক এবং লঘু। পক পর্যক ফল—মধুরবিপাক, শীতবীর্যা, বিইন্তী, পৃষ্টিকারক, হৃদয়গ্রাহী এবং ইহা পিত্ত, দাহ, রক্তদোষ, জন, কর ও বায়ুনাশক।

অথ তুদঃ।

তৃদক্ত,লন্দ পুথন্চ কুমুকো এজনার চ। তুলং পরুং গুরু হ'ছ হিমং পিত্ত'নিলাপুচুষ। তদেবামং শুরু সরহয়েলং রক্তপিতকুৎ॥

331

তুদ, তুল, পূগ, ক্রম্ক ও ব্রহ্মাঞ, এই ক্রেকটি একপর্যায়ক শব্দ। পাকা তুঁতফল—
শুক্ত, মধুর-রস, শাতবীয় এবং পিত্ত ও বায়ুনাশক। অপক ভূঁতফল—শুক্ত, সারক, অম
রস, উষ্ণবীহ্য এবং রক্তপিত্তকারক।

অথ দাড়িমঃ।

দাড়িন: করকো দস্ত-বীকো লোহিতপূপক:। তৎকল: ত্রিবিধা স্বাদ্ধ স্বাদ্ধাং কেবলায়কন্॥ তৎ তু স্বাদ্ধ ত্রিদোবদ্ধং তুড়্দাইজ্ঞারনাশনন্। ক্ষংকঠমুধরোগদ্ধং তর্পণং প্রক্রদং পদু॥ কৰারানুরসং গ্রাহি কিন্ধং মেধাবলাবহন্।
স্বাদ্মং দীপনং ক্রচাং কিঞ্ছিৎ পিত্তকরং লবু।
অন্নক্ত গিভজনকমনং বাতকদাগহন্॥

দাড়িম, করক, দন্তবীজ ও গোহিতপুশক, এই কয়েকটি দাড়িমের নাম। দাড়িম ফল রস-ভেদে তিন প্রকার; যথা—মধুর, অয়মধুর ও অয়। তম্মধ্য মধুর দাড়িম—বায়ু, পিন্ত, কল, পিপাদা, দাহ, জর, হলোগ, কণ্ঠগত রোগ ও ম্থরোগ নাশক এবং ভৃপ্তিকারক, ভক্রবর্দ্ধক, লঘু, ঈষৎ কয়ায়রস, ধারক, সিয়া, মেধা ও বলবর্দ্ধক। অয়মধুর দাড়িম—অয়িদীপ্তিকারক, কচিকারক, কিজিৎ পিত্তবর্দ্ধক ও লঘু। অয় দাড়িম—পিত্তবর্দ্ধক, অয়রস, কফ ও বায়ুনাশক।

অথ বহুবারঃ।

বছবারস্থ শীতঃ স্থাত্রন্ধানো বছবারকঃ।
শেলুঃ প্রেমাতকন্টাপি পিচিছনো সূতবৃক্ষকঃ॥
বছবারো বিষক্ষোট-ত্রণবীসর্পকৃষ্ঠমুৎ।
মধুরস্থবর্মিস্তঃ কেঞ্চন্ট কফপিত্তহাৎ॥
কলমামস্ত বিষ্ঠমি রক্ষাং পিত্তক্ষাম্মজিৎ।
তৎ পকং মধুরং শ্লিম্বাং শীতনং গুরু॥

চাল্ডা।

বহুবার, শাঁত, উদ্দাল, বহুবারক, শেলু, ক্রোতক, পিচ্ছিল ও ভূতুর্গক, এই কয়েকটি চাল্তার নাম। বহুবার—বিষ, স্ফোটক, ব্রণ, বীসর্প, কুঞ, কফ ও পিত্তনাশক, মধুরকষায়-ভিক্তরস, ইহা কেশের হিতকারক। অপক বহুবার ফল—বিইন্ডী, রুক্ষ এবং পিত্ত, কফ ও রক্তদোষ নাশক। পাকা বহুবারক্ষল—মধুররস, স্লিগ্ধ, কফ্লানক, শীত্তবীষ্যাও গুরুষ।

অথ কতকম্।

পর: প্রদাদি কতকং কতং কতকলঞ্চ তৎ। কতকন্ত কলং নেত্রাং জঙ্গনির্মালতাকরম্ । বাতরেম্মান্তরং শীতং মধুরং তুবরং গুরু ॥

निर्मानीयम ।

পর:প্রসাদী, কতক, কত ও কতফল, এই কয়েকটি নির্মালীফলের নাম। কতকফল—চক্ষুর হিতকর, জলের নির্মালতাকারক, বাতন্ন, কফ-নাশক, শীতবীর্য্য, মধুর-কষায়-রস ও গুরু।

অথ দ্রাকা।

ন্ধাকা ৰাত্ৰকলা প্ৰোক্তা তথা মধুরসাপি চ।
মুখীকা হারহুরা চ গোন্তনী চাপি কীর্ন্তিতা ॥
দাক্ষা পকা সরা শীতা চকুষ্যা বৃংহণী গুরুঃ।
ৰাত্ৰপাকরসা বর্থা তুবরা স্টুরুক্তিপ্রদা।
হন্তি তুকাক্ষরখাস-বাতবাতাপ্রকামলাঃ।
কুক্তবাপ্রপিত্রসংমোহ-দাহশোমদাত্যমান্ ॥
ভামা স্বরন্থা গুরুষী সৈবামা রক্তপিত্রকুং ॥
ব্যা ভালোন্তনী দ্রাকা গুরুষী চ কদপিত্রকুং ॥
ভ্রাকা পর্বতিজ্ঞা লগুই সামা গ্রেমামপিত্রকুং ।
ভ্রাকা পর্বতিজ্ঞা লগুই সামা গ্রেমামপিত্রকুং ।
ভ্রাকা পর্বতিজ্ঞা বাদুক্ তাদুশী করমান্দিকা ॥

কিস্মিদ, আঙ্কুর।

দ্রাকা, স্বাহ্রুলা, মধুরসা, মুদ্রীকা, হার-হুরা ও গোস্তনী, এই কয়েকটি ভাক্ষার পর্য্যায়। পাকা দ্রাক্ষা-সারক, শতিবীর্য্য, চকুর হিতকর, শরীরের উপচয়কারক, গুরু, মধুরবিপাক, ক্ষায়-মধুন-রদ, স্বত্রাদানক, মলমুত্রনিংদাবক, কোঠে বায়ুজনক, শুক্রবন্ধক, কফকারক, পুষ্টি ও ক্রচিজনক এবং ইহা পিপাদা, জব, খাস. বায়ু, বাত্ৰজ্জ, কামলা, মৃত্ৰক্বচ্ছু, রক্তপিত্ত, মোহ, দাহ, শোষ ও মদাতায়রোগ নাশক। অপক দ্রাক্ষা—অপেকার ত অল-গুণৰুক্ত, রক্তপিত্রকারক। অমুর্দ ও গোন্তনী দ্রাক্ষা অর্থাং মনকা—গুক্রবর্দ্ধক, গুরু, কফ ও পিত্তনাশক।

অন্ধ-বীজ্পংৰুক্ত ছোট দ্ৰাক্ষা অৰ্থাৎ যাহাকে কিস্মিদ্ বলে, উহা—মনকার তুল্য গুণবিশিষ্ট।

পর্বতজা জাক্ষা—লবু, অমরস এবং কফ ও অমপিত্তকারক। করমর্দ্দিকা পর্বতজ্ঞা দ্রাক্ষার ।তুল্য গুণ-কারক।

অথ কুদ্রখন্জ্রী পিণ্ডখন্জ্রী চ।

ভূমিধর্জ্জুরিকা স্বামী ছুরারোহা মৃত্যুক্ত্বনা ।
তথা ক্ষমন্ত্রনা কাক-কর্বটা স্বাহ্মন্তকা ।
পিওথর্জ্জুরিকা ত্বতা সা দেশে পশ্চিমে ভবেৎ ।
থর্জ্জুরা গোন্তনাকারা পরন্ধীপাদিহাগতা ।
কারতে পশ্চিমে দেশে সা ক্ষোহারেতি কীর্ত্তাতে ।
থর্জ্জুরাত্রিতরং শীতং মধুরং রসপাকরোঃ ॥
বিধাং ক্ষচিকরং ক্তমুং ক্ষতক্ষরহরং গুরু ।
তপণং রক্তপিত্তমং পৃষ্টিবিষ্টত্তক্রদম্ ॥
কোঠমাক্রতহ্বলাং বাতিবাতক্ষপাহম্ ।
ক্রাতিসারক্ত্রকা-কাস্বাসনিবারকম্ ॥
মদম্ভ্লিককংপিত-মত্যোভ্তগদাত্তক্ ।
মহন্তিক গুণোরলা স্বলগুজ্জুরিতক্রত্বা স্বতা ॥
থর্জ্জুরীতক্রতারন্ত্র মদ্পিওকরং ভবেৎ ।
বাতয়েম্বহরং ক্ষচং দীপনং বলগুক্রকুৎ ॥

থেজুর, পিওথেজুর ও সোহারা। ভূমিধর্জুরিকা, স্বাদী, হ্বারোহা, মৃহচ্ছদা, সন্ধাননা, কাকককটা ও স্বাহুমন্তকা, কয়েকটি ক্ষুদ্র খর্জ্জুরীর নাম। অপর প্রকার থর্জ্জুর পশ্চিম প্রদেশে জন্মে, উহাকে পিও । জার এক প্রকার । জার এক প্রকার । জ্জুর দ্রাকার ভার আক্রতিমান, উহা হইতে আগত, এখন পশ্চিম প্রাদেশে জন্মে, যাহা হিন্দী ভাষায় সোহারা নামে প্রসিদ্ধ। এই তিনপ্রকার খর্জ্জুর—শীতবীর্য্য, মধুরবিপাক, স্নিগ্ধ, ক্লচিকারক, ছদয়গ্রাহী, ক্ষত ও ক্ষয়নাশক, গুরু, ভৃপ্তিকর, রক্তাপক্ত নাশক, পুষ্টিকর, বিষ্টম্ভী, গুক্রবর্দ্ধক, বলকারক এবং ইহা কোষ্ঠগত বায়ু, বমি, বায়ু, কঞ্চ, জ্বরু, অতীসার, কুধা, তৃষ্ণা, কাস, খাস, মত্ততা, মুচ্ছা, বাতপৈত্তিক ও মদাত্যয় রোগ নাশক। কুদ্রথর্জুরিকা অপেকারত অরগুণবিশিষ্ট। রস—মন্ততাজনক, পিত্তকারক, থব্জুরের বাতম্ব, কফনাশক, ক্ষতিজনক, অগ্নির দীপক, বলকর এবং শুক্রবর্দ্ধক।

অথ হ্নেপালী (পিণ্ডথর্জ্জুরীভেদঃ)

হ্বনেপালী তু মুদ্রলা দলহীনকলা চ দা।
হ্বনেপালী প্রমন্ত্রান্তি-ল'হমূচ্ছাত্রপিত্তরং ॥
হ্বনেপালী, মৃত্লা ও দলহীনফলা, এই
কয়েকটি একপর্য্যায়ক শব্দ। হ্বনেপালী
(পিশুখর্জ্জ্ব-বিশেষ)—প্রান্তি, ভ্রান্তি, দাহ,
মৃচ্ছা ও রক্তপিত্ত নাশক।

অথ বাতাদঃ।

বাতাদো বাতবৈরী স্থান্নেরোপমকলন্তথা। বাতাদ উক্ষঃ স্থানিকো বাতদ্বঃ গুকুকুদ্গুরুঃ। বাতাদমজ্জা নবুরে। ব্যাঃ পিতানিলাপহঃ। বিশোকঃ কফকুন্নেরো রক্তপিত্তবিকারিশাম্। বাদাম।

বাতাদ, বাতবৈরী ও নেত্রোপমকল, এই করেকটি বাদামের নাম। বাদাম—উঞ্চবীর্ষা, সিগ্ধ, বায়ুনাশক, শুক্রবর্দ্ধক ও গুরু। বাদামের মজ্জা—মধুর-রস, শুক্রবর্দ্ধক, পিত্তন্ধ, বায়ুনাশক, স্বিগ্ধ, উঞ্চবীর্ষ্য এবং কফকারক। ইহা রক্তপিভরোগির পক্ষে হিত্তনক নহে।

অথ সেবম্।

মুষ্টিগ্রমাণং বদরং সেবং সিবিভিকাফলম্। সেবং সমারপিডস্বং বৃংহণং কফকুদ্ওক। রসে পাকে চ মধুরং শিশিরং রুচিগুক্রকুং॥

সেউফল।

মৃষ্টি প্রমাণ, বদর, সেব ও সিবিভিকা ফল এই করেকটি সেউফলের পর্য্যায়। সেবফল— বাতম, পিত্তনাশক, পুষ্টিকারক, কফজনক, শুরু, মধুররস, মধু বিপাক, শীতবীর্ব্য, ক্লচিকারক এবং শুক্রবর্দ্ধক।

অথায়তফলম।

অমূতকলং লঘু বৃধাং সুস্বান্ন ত্রীন্ হরেদ্ দোৰান্ : দেশেৰু মূল্যলানাং বহুলং ভরভাতে লোকৈঃ ॥ (বৃহদক্ষান-কাবিলপ্রভৃতিরু দেশেরু নাসপাতি ইতি অসৈক্ষ্ম) ।

নাসপাতি।

বদক্দান কাবুল প্রভৃতি দেশে অমৃতকল, নাসপাতি নামে প্রসিদ্ধ। অমৃতকল—লঘু, শুক্রবর্দ্ধক, স্থবাহ, ত্রিদোষনাশক। ইহা মোগলদেশে অধিক পরিমাণে পাওয়া যায়।

অথ পীলুঃ।

পীলুগু ড়কল: শ্রংমী তথা শীতকলোংগি । পীলু শ্লেমসমীরম্বং পিওলং ভেদি গুলুমুৎ। স্বাতু তিক্তঞ্চ যৎ পীলু তন্নাত্যকং তিদোবহাৎ।

পীলু, গুড়ফল, প্রংসী ও শীতফল, এই কয়েকটি একার্থবাচক শব্দ। পীলু —কফন্প, বাযুনাশক, পিতত্তবদ্ধক, ভেদক ও গুল্মনাশক। মধুন-তিক্ত-রসায়িত পালু ত্রিদোষনাশক। তাহা অতি উষ্ণবীগ্য নহে।

অথাকোটঃ।

পাঁলু: শৈলভবোহক্ষোট: কর্ণরালন্চ কীর্দ্তিত:। অক্ষোটকোচণি বাতাদ-সদৃশঃ কক্ষণিগুকুৎ। আখরোট।

অক্ষোট ও কর্পরাল এই ছইটি, পর্ব্বত-জাত পীলুর (আর্থ্রোটের) নাম। আর্থ্ রোট—বাদামের তুলা গুণদায়ক, ইহা কক ও পিত্ত কাবক।

অথ বীজপূরঃ।

বীজপুরে মাতুলুঙ্গো ক্লচকঃ ফলপুরকঃ। বীজপুরকলং স্বাত্ন রসেহয়ং দীপনং লঘু॥ রক্তণিত্তরং কঠ-জিহ্বাহদয়শোধনব্। খাসকাসাক্রচিহরং হৃত্তং তৃঞ্চাহরং স্থৃতম্।

টাবালেবু।

বীজপূর, মাতুলুঙ্গ, রুচক ও ফলপূরক, এই কয়েকটি টাবালেবুর নাম। টাবালেবু— অম্ল-মধুর-রস, অধির দীপক, লঘু, রক্তপিত্ত- নাশক, কণ্ঠ জিহবা ও হানয় শোধনকারক, জনমগ্রাহী এবং ইহাখান, কাস, অফুচি ও পিপাসা নাশক।

অথ মধুকর্কটী।

বীজপ্রোংপর: প্রোক্তো মধুরো মধুকর্কটা। মধুকর্কটিকা বাধা রোচনী শীতলা গুরুং। রক্তপিতকঃখংস-কাসহিকাজমাপ্রা।

বাতাবি লেব।

শগু এক প্রকাব বীজপুর আছে, তাহাকে মধুর ও মধুকর্কটা বলে। মধুকর্কটা (বাতাবিঃ)—
মধুরণদ, রুচিকারক, শাতবীর্গ্য, গুরু এবং
ইহা রক্তপিত্ত, ক্ষা, খাদ, কাদ, হিকা ও
অম নাশক।

অথ জন্বীরদ্বয়ম।

खाक्कदीरता प्रख्याती जक्क-अकीत-अक्कताः। क्रमोत्रम्मः कर्मप्रः तांउद्धम्पतिवकस्यः॥ मृतकामकरकांदरत्रम-ऋक्षिक्कांप्रतासकिःः। आक्चरेवत्रकक्र-शीकां-विश्वःमा क्रमोन् इरतः। ब्रह्मक्षवेतिका उत्तर कृष्णकक्षित्वनांतिकी॥

জন্বীর, দস্তশ্ত. জন্ত, জন্তীর ও জন্তল, এই কয়েকটি জন্বীরের নাম। জন্বার (গোড়া-লেব্)—উন্ধারীর্যা, গুরু, অন্নরস এবং বায়ু, কফ, বিবন্ধ, শূল, কাস, কফোৎক্রেশ, বমি, পিপাসা, আমনোম, মুখের বিরস্তা, হৃৎপীড়া, মন্দায়ি ও ক্রিমিনাশক। ক্ষুদ্র জন্বীরও উক্ত-প্রকার গুণদায়ক, ইহা ত্রকা ও বমি নাশক।

. অথ নিস্থঃ।

নিশৃ: স্ত্রী নিশুকং ক্লীবে নিশুকমপি কীর্জিতম্। নিশুকমন্ত্রং বাতন্ত্রং দীপনং পাচনং লঘু।

আকাচচ---

নিপুকং ক্রিমিসমূহনাশনং তীক্ষমমুদ্রগ্রহাপাহম। বাতপিত্তককপুলিনে হিতং কট্টনট্রন্নিরোচনং পরম্॥ ত্রিদোববফ্লিক্যবাভরোগ-নিশীড়ি তানাং বিৰবিহ্বলানান্। গলগ্রহে বন্ধগুদে প্রদেয়ং বিস্ফিকায়াং মূনয়ো বদৃদ্ধি । কাগুজী ও পাতিলেব ।

নিছু নিষ্ক ও নিযুক, এই তিনটি একার্থ-বাচক শব্দ। নিছু শব্দ স্ত্রীলিঙ্গ এবং নিছ্ক ও নিজ্ক শব্দ ক্লীবলিঙ্গ জানিবে। নিষ্ক—অস্ত্র-রস, বাহ্বনাশক, অগ্রের দীপক, পাচক ও লঘু।

নিষ্— ক্রিমিনাশক, তীক্ষ, অন্পরস, উদর-ভোগনাশক। ইহা বায়্ পিন্ত, কফ ও শূল-বোগো হিতকব; যাহাব একেবারে ফ্রাচ নষ্ট হইয়াছে অথবা। যাহার ক্রম্ভ্রমাধ্য অক্লাচরোগ জনিয়াছে, তাহার পক্ষে উক্ত লেবু হিত-জনক। ইহা ক্রিদোষ, অগ্নিমান্যা, বাতরোগ, বিষয়েষ্টি, গলরোগ, বন্ধগুদ ও বিস্টিকারোগে প্রযোজ্য।

অথ মিষ্টনিষ্টঃ।

মিষ্টনিমুক্তনং স্বাত্ন গুরু মারুতপিত্তমুৎ। গররোগবিষধাংসি কফেংক্রেনি চ রক্তহাৎ। শোবারুচিতৃবাচ্ছর্দি-হরং বল্যঞ্চ বৃংহণম ।

কমলা লেবু।

ামন্ত্রনিশ্বকল—মধুবরদ, গুরু, কফোং-ক্লেণী এবং ইহা বায়ু, পিন্তু, গরদোষ, বিষ, রক্তদোষ, শোষ, অরুচি, পিপাদা ও বমি নাশক। ইহা বলকারক ও পৃষ্টিজনক।

অথ কর্মারঙ্গম্।

কর্মরক: শিরালঞ্চ বৃহদরো ক্রজাকর:। কর্মরক: হিমং গ্রাহি সাধ্যম: কক্ষবাতহৃৎ ॥

কামরাঙ্গা।

কর্মবন্ধ, শিরাল, বৃহদম ও কৃদ্ধাকর, এই করেকটি কামরাঙ্গার সংস্কৃত নাম। কাম-রাজা—শীতবীর্য্য, ধারক, অম্ল-মধুর-রস এবং কৃদ্ধ ও বায়ু নাশক।

অথায়িক।।

অমিকা চুক্রিকামী চ চুক্রা দস্তশঠাপি চ।
অমা চ চিঞ্চিকা চিঞা ভিস্তিড়ী কাচভিস্তিড়ী।
অমিকামা শুরুবাত-হরী পিত্রকাত্রকৃৎ।
পকা তু দীপনী রুকা সরোকা ককবাতমুৎ।

েওঁতুল।

অমিকা, চুক্তিকা, অমী, চুক্রা, দস্তণঠা, অমা, চিঞ্চিকা, চিঞ্চা, তিস্তিড়ী ও কাচতিস্তিড়ী, এই কয়েকটি তেঁতুলের সংস্কৃত নাম। কাচা তেঁতুল—অম্বরস, গুরু, বায়ুনাশক; ইহা রক্ত পিত্ত ও কফজনক। পাকাতেঁতুল—অমির দীপক, রক্ষ, সারক, উষ্ণবীর্যা। ইহা কফ ও বায়ুনাশক।

অথ শ্লেচ্ছাশ্লিকা।

(प्रष्टामिका भारतीक-कलः **उ**द्धांहनः मत्रम् ॥

আলুবোগারা।

মেচ্ছামিকা ও পারদীকফল, এই হুইটা আলুবোথারার নাম। আলুবোথারা—ক্রচিকারক ও অল্ল বিরেচক।

অথায়বেতসঃ।

ভাদন্ধবেতসন্ত, কং শতবেধি সহস্কং।
জন্ধবেতসমতান্তং ভেদনং লঘু দীপনম্।
কন্দ্রোগশূনগুলান্তং পিততাং লোমহর্ষণম্।
কুক্ষং বিগ্ম্ এদোবন্ধং দীহোদাবর্জনাশনম্।
হিকানাহার্সচিষাস-কাসাজীর্বমিপ্রপূহ।
কন্দবাতাময়ধ্বংসি চ্ছাগমাংসক্রবন্ধকৃহ।
চণকান্ধগুণং জ্ঞেয়ং লোহস্টীক্রবন্ধকৃহ।

रेथकन।

অমবেতস, চুক্র, শতবেণী ও সহস্রমুৎ, এই চতুরমের রহিত । এই কয়েকটি অমবেতসের পর্য্যায়। অম- তাহাকে পঞ্চাম বলে।

বেত্রস—সত্যন্ত অমানস, ভেদক, লঘু, অধির দীপক, পিত্তবর্দ্ধক, রোমহর্বজনক এবং ফক্ষ। ইহা হুদোগ, শ্ল, গুলা, প্রীধনোধ, মৃত্রদোধ, প্রীহা, উদাবর্ত্ত, হিক্কা, আনাহ, অক্রচি, শ্বাস, কাস, অজীর্ব বিমি, কফরোগ ও বায়ুরোগনাশক। ইহা ছাগমাংসের দ্রবস্বস্পাদক অর্থাং ইহা ধারা ছাগমাংস সহজে দ্রবীভূত হয়। অমবেত্রস চণকাম সদৃশ গুণকারক; ইহা ধারা লোহস্ক্রীও দ্রবীভূত হয়।

অথ বুকায়্য।

বুক্তাস্ক্লং তিথিড়ীকঞ্চ চুক্তং স্থাদমবৃক্ষকম্। বৃক্ষাসমামনমোঞ্চং বাতস্থং কফপিত্তলম্ ॥ পদস্ত গুলু সংগ্ৰাহি কটুকং তুবরং লঘু। অম্লোক্ষং রোচনং কৃক্ষং দীপনং কক্ষবাতক্তং। তৃষ্ণার্শোগ্রহনীগুল্ম-শুলহুদ্রোগজন্তুজিৎ॥

মহাদা।

বৃক্ষাম, তিন্তিড়ীক, চুক্র ও অমুবৃক্ষক, এই করেকটি মহাদার পর্যায়। অপক বৃক্ষাম—
অমুরস, উষ্ণবীর্য্য, বায়ুনাশক, কফকাবক ও পিতত্ত্বর্দ্ধক। পক বৃক্ষাম—গুরু, ধারক, কটুক্ষায় অমুরস, লঘু, উষ্ণবীর্য্য, কচিকারক, কৃক্ষ্য, অগ্রির দীপক, কফজনক ও বায়ুষ্দ্ধক এবং ইহা পিপাসা, অশঃ, গ্রহণী, গুলা, শূল, ছড়োগ ও ক্রিমিনাশক।

व्य हरूत्रम्भकामर्यालकनम्।

অন্নবেতসবৃক্ষান্ন-বৃহজ্জবীরনিম্বুকৈ:। চতুরন্নং হি পঞ্চান্নং বীজপুরযুক্তভবেৎ ॥

অমবেতদ, বৃক্ষাম, বৃহজ্জন্বীর ও কাগ্জী-লেবু এই চারিটার সংযোগকে চতুরম এবং এই চতুরমের রহিত টাবালেবু সংষ্ঠ করিলে তাহাকে পঞ্চাম বলে।

इं ि कनवर्गः॥

অথ ধাতৃপধাতু-রসৌপরদ-রত্নোপরত্ন-বিধোপবিষবর্গঃ।

অথ স্বৰ্ম।

স্বৰ্ণং ক্ষৰণং কনকং হিরণাং হেম হ'টকম্।
তপানীয়ঞ্চ গাল্পেয়ং কলধো তথা কাঞ্চন্দম্ ।
চামীকরং শাভকুন্তং তথা কাঞ্চন্দত তথ।
ডাশ্বন্দং জাভরূপং মহারজত্মিতাপি ।
দাহে রক্তং সিভং লেদে নিক্ষে কুন্তুমপ্রভন্।
তারগুলোড নিভং ক্ষিং কোমলং গুরু হেম সং ।
তেচে তং কঠিনং কৃন্তং বিরুৎ কোমলং গুরু হেম সং ।
দাহে চেছুদেহ সভং শুভং ক্ষে ত্যজ্যাং লঘু শুট্ম ।
দাহে চেছুদেহ সভং খেতং ক্ষে ত্যজ্যাং লঘু শুট্ম ।
প্রার্থ তিক্তঞ্চ তুররং পাকে চ স্বান্থ পিচ্ছিল্ম ।
প্রার্থ তিক্তঞ্চ তুররং পাকে চ স্বান্থ পিচ্ছিল্ম ।
স্বান্ধ্রং কাণ্ডি-নাগ্রিশ্রন্ধিবিষ্ক্র ।
বিরুদ্ধিক্রেম্বান্ধিন বিদ্যান্ধিবিষ্ক্র ।
বিরুদ্ধিক্রমান্ধ্রান্ধিন বিদ্যান্ধিবিষ্কর ।

বলং স্থাইত এবতে স্বাণাই বোগৰজান পোষ্টাইত কংগ্ৰে। অস্টোলকার্যাব সদা প্রন্থ মন্ত্রাকাষ ক্যাই ॥ অসমান্ত্রালিত স্থাই বলং বার্যাই মাধ্যেই। কর্যাতি বে গান্ডায়াক ভাস্তাইত এতে ।

(Field)

স্থাৰ্ল, কৰাক, হিন্তা, হেন, হটিক. ভপনীয়, গাঞ্জেয়, কলমৌত, কাঞ্চন, চানীকর, শাতক্ত, কার্ডধর, জামুনন, জাতরপ মহারজত, এই কয়েকটি স্বর্ণের পর্যায়। স্বৰ্ণ পোডাইলে রক্তবর্ণ. (ছদন শ্বেতবর্ণ, কষে কুদ্ধন্দদ্শ: ব|হা তামাবজ্জিত, স্নিগ্ধ, কোমল ও ভার্যক্ত, সেই স্বৰ্ণ উৎকুষ্ট। যে স্বৰ্ণ খেতবৰ্ণ, কঠিন, রক্ষ, মলসংৰুক্ত ও জ্ঞরবং; যাহা F3 कतिरल ७ (इमन कतिरल अभिडवर्ग, ক্ষে খেতবর্ণ, খাঘু ও দলে পুরু থাকিলেও পাত করিবার সময় ফাটিয়া যায়, তাহা ত্যাজ্য। यूवर्ग — भैठवीया, एकवर्षकं, वनकातक, अतः, রদায়ন, মধুর-ভিক্ত-কষায়-রদ, মধুরবিপাক,

পিচ্ছিল, পবিত্র, পৃষ্টিকারক, চক্ষুর হিতকর, মেনাজনক, স্মরণশক্তি ও বৃদ্ধিপ্রাল, সনম্ব্রাহী, মায়ুদ্দর, কান্তিজনক, বাক্যের শুদ্ধি ও স্থিরতা সম্পাদক এবং ইহা স্থাবর-বিষ, জঙ্গম-বিষ, ক্ষয়, উন্মাদ, ত্রিদোষ, জর ও দক্ষারোগ নাশক। স্মবিশুদ্ধ ও অসমক্ জারিত স্থা সেবন

সবিশুদ্ধ ও অসমাক্ জারিত স্থা সেবন করিলে বলবীশা নাশ, বছরোগোর উৎপত্তি, গ্রানি এবং মৃত্যু পর্যাস্ক উপস্থিত হয়। অভ-এব উহা শোধন ও জারণ কবিয়া ব্যবহার কবা উচিত।

অথ রজতম্।

কপান্ধ বছাতং ভারং চল্লক'ন্তি সিত্রগ্রহণ।
গুরু বিদ্ধাং মৃত্র বেতং লাহে চেন্ডদৈ অনক্ষমন্।
বর্ণচিং চল্লবং অক্তং কপাং নবস্তুপং গুডুম্।
কঠিনং রাজ্যমং স্থাপং বক্তং প্রাত্তালক লায়।
লাহচ্ছেদ্বনৈনিটা কপাং ওঈং প্রকাতিতম্।
বাপাং শীতং ক্ষায়ানা পাত্রপাকরসং সরম ॥
বয়সং স্থাপনং বিশ্বং লেখনং বাত্রপিউজিং।
গুরুহাদিকরোভাংকে নাশ্রহাচিরাদ গ্রম্ম॥

ভারং শরীরস্ত করে:ভি ভাপং বিধাংসনং যচছতি ভাগনাশম। ব'যাং বলং হস্তি তলোক পুষ্টিং মহাগদান পোষয়তি ফুশুদ্ধম্॥

রূপা।

রূপ্য, রজত, তার, চক্রকান্তি ও সিতপ্রভ, এই কয়েকটি রূপার পর্যায়। যে রৌপ্য গুরু, চিরুণ ও কোমল, যাহা দগ্ধ বা ছেদন করিলে গুত্রবর্ণ, যাহা আঘাতসহ অর্থাং পাত করিতে ফাটিয়া না যায়, যাহা চল্রের স্থায় বিপুল প্রভা সম্পন্ন ও স্বচ্ছ, তাহাই উৎকৃষ্ট। যে রৌপ্য কঠিন, ক্লুত্রিম, ক্লুক্র, রক্তবর্ণ, পীত্রদলমুক্ত, লঘু এবং যাহা দগ্ধ, ছেদন ও আঘাত করিলে বিক্নতাক্তি হয়, তাহা মপক্ষা । ক্রপা—শীতবীর্য্য, অন্ত্র-ক্ষায়-মধুর-রস,
মধুরবিপাক, সারক, বয়ংস্থাপক, মিগ্ধ, লেখনগুণস্ক্ত। ইহা বায়ু, পিত্ত ও প্রমেহ প্রভৃতি
রোগ শীঘ্রই বিনষ্ট করে।

আশোধিত রোপ্য শরীরের ধ্বংসকারক ও তাপদ্দনক; ইহা শুক্র, বল, বীর্যা ও শরীরের পুষ্টি বিনাশক এবং মহং রোগ সমূহের উৎপাদক।

অথ তাত্রম্।

তামনোন্দ্ৰরং শুল্মন্দ্ৰরমণি শ্বতম্।
রবিপ্রিয়ং রেচ্ছমূণং স্থাপথায়নামকম্।
জবাকুস্মসকাশং বিশ্বং মৃত্ ঘনকমম্।
লোহনাগোন্ধ বিতং তামং মারণায় প্রশাস্ততে।
কৃষণং ক্লমতিন্তনং খেতকাপি ঘনাসহন্।
লোহনাগযুতকেতি শুলং হন্তং প্রকীভিতম্।
তামং করায়ং মধ্রক তিন্তুসমুক্ত পাকে কটু সারকক।
পিতাপহং লেখহরক শীতং তল্লোপণং জ্ঞান্ত্র লেখনক।
পাঙ্দরাশোজ্যরুঠকাস-খাসক্ষান্ পীনসমমপিতম্।
শোগং নিমিং শুল্মপাকরোতি প্রাহং পরে বৃংহণমন্ত্রমত্ত একা দোবা বিষ্ ভামে স্থতকেইটো ল্যা বিনিং।
বিরেকঃ স্বেদ উৎক্রেনা মুর্জ্যা নাহোহকটিন্তবা।

তা মা।

তাম, ঔন্দ্বর, শুব, উন্দ্বন, রবিপ্রিয় ও নেচ্ছম্থ এবং স্থাপ্যায়ক সমস্ত শব্দ তাত্রের প্যায়। যে তাম জবাপুষ্পের ভায় বর্ন-বিশিষ্ট, চিক্কণ, কোমল, ঘাতদহ এবং লোহ ও দীসক বর্জিত, তাহা অতি উৎক্ষ্ট। যাহা কৃষণ অথবা খেতবর্ণ, কুক্ষ, অত্যন্ত স্তব্দ, লোহ ও দীস মিশ্রিত এবং আঘাত লাগিলে যাহা ভাঙ্গিয়া যায়, তাহা অপক্ষ্ট। তাম—ক্ষায়-মধুর-তিক্ত-অম্ল-রস, ক্টুবিপাক, সারক, পিত্ত ও শ্লেমা নাশক, শীতবীর্য, ত্রণবোপক, লম্ম, লেখন গুলুক্ত ও অল্ল বংহণ; এবং ইহা পাপু, উদর, মর্শঃ, জ্বা, ক্রাচ, কান, ঝান, ক্রম, পীনস, অম্লপিত্ত, শোথ, ক্রিমি ও শ্ল প্রশমক। অলোধিত তাম—বিষ্ অপেকাও

অত্যস্ত অনিষ্টোৎপাদক, বেছেতু, বিষে একটি দোষ, অবিশুদ্ধ তাত্রে—ত্রম, বমি, বিরেচন, স্বেদ, বমনবেগ, মূর্চ্ছা, দাহ ও অরুচি এই আটটি দোষ বিশ্বমান আছে; অত্তর্রদ উহা মথাবিধি শোধন ও জারণ করিয়া দেবন করিবে।

অথ বঙ্গম।

রঙ্গং নকং এপু প্রোক্তং তথা পিচ্চটিম তাপি।
কুরকং নিশ্রকঞাপি দিনিধং বঙ্গমৃচ্যতে ॥
উত্তরং কুরকং তত্র মিশ্রকত্ত্বরং মতম।
রঙ্গং লঘু সরং কক্ষমৃত্যং মেহকফক্রিমীন্।
নিহন্তি পাঞ্ছং স্থাসং চক্ষ্মাং পিন্তলং মনাক্॥
সিংহো বথা হন্তিগণং নিহন্তি তথৈব বঙ্গোহিশিলমেহবর্গম্।
দেহস্ত সৌথাণ অবলেশ্রিয়বং নরস্ত পুষ্টং বিদ্যাতি নুন্ম॥

রাঙ্।

রঙ্গ, বঙ্গ, অপু ও পিচেট, এই কয়েকটি বজের পর্যায়। বঙ্গ গুই প্রকার; যথা—
কুরক ও মিশ্রক। তন্মধ্যে মিশ্রক অপেকা
কুরক বঙ্গ উত্তম। বঙ্গ—লগু, সারক, রুক্ষ,
উষ্ণবীর্য্য, চকুর হিতকর, ঈষৎ পিস্তবর্দ্ধক
এবং ইহা প্রমেহ, কফ, ক্রিমি, পাণ্ডু ও খাস
রোগ নাশক। সিংহ, বেরূপ হস্তিসমূহ
বিনাশ করে, বঙ্গও তদ্ধপ সমস্ত প্রমেহ নষ্ট
করিয়া থাকে। ইহা শরীরের স্থ্যায়ক,
ইক্রিগণের প্রবিধায়ক।

অথ যদদম্।

যদাং রক্তসদৃশং রীতিহেতুশ্চ তরাতন্। যদাং তুবরং তিজং শীতলং কন্দপিত্তং। চক্ষাং পরমং মেহান পাঞ্ছং যাসঞ্চ নাশরে।

431 I

দন্তাধাতু বঙ্গ সদৃশ, ইহা পিততের উপা-দান কারণ। দন্তা--ক্ষাদ্গ-ভিক্ত-রস্,ু শীত- বীর্য্য, চক্ষুর হিতসম্পাদক এবং ইহা কফ, পিন্ত, প্রমেহ, পাওু ও খাসরোগ নাশক।

व्यथं मीमग्।

দীসং ব্ৰঞ্চ ব্ৰঞ্চ বোগেষ্টং নাগনামকৰ্।
দীসং ব্ৰহণ্ডণং জ্বেয়ং বিশেষাক্ষেত্নশানক্।
নাগন্ত নাগণততুল্যবলং দদাতি
ন্যাধিং বিনাশয়তি জীবনমাতনাতি।
বহিং প্ৰদীপয়তি কামবলং করোতি
মৃত্যুঞ্চ নাশয়তি সন্ততসেবিতঃ সঃ॥
পাকেন হীনৌ কিল বঙ্গনাগো
কুঠানি গুলাংশ্চ তথাতিকষ্টান্।
কণ্ডং প্ৰমেহানিলসাদশোধভগন্দৱাদীন্ বুকুতঃ প্ৰযুক্ত্যে।
('নাগনামকম্' নাগং ভুজক্ষ ইত্যাংদি।)

সীসক।

সীদক, ত্রঞ্জ, বপ্র ও যোগেন্ট এবং নাগ-বাচক সমস্ত শব্দ সীদকের পর্য্যায়। সীদক— বঙ্গের তুল্য গুণকারক। ইহা প্রমেহ রোগে বিশেষ উপকারী। এই সীদক জারণপুর্বক সভত দেবন করিলে শতনাগের তুলা বল এবং রোগসমূহের নাণ, জীবনীশক্তির বৃদ্ধি, অগ্রির দীপ্তি, কাম ও বলের বৃদ্ধি হইয়া থাকে। ইহা ধারা মৃত্যু পর্যন্তে নিবারিত হইতে পারে।

অজারিত বঙ্গ ও দীদক দেবন করিলে অতি কইতম কুঠ, গুলা, কণ্ড, প্রমেই, বায়-রোগ, অবদল্লতা, শোথ ও ভগন্দরাদি রোগ উৎপন্ন হয়।

অথ লোহম।

লোহোহরী শস্ত্রকং তীক্ষং পিওং কালায়সায়নী।
গুরুতা দৃষ্টতোৎক্লেম: কথালং লাহকারিত। ॥
অথালোব: স্ত্রুগলো দোবা: সপ্তায়সম্ভ তু।
লোহং তিক্তং সরং শীতং মধুরং তুবরং গুরু॥
রুক্তং বয়ন্তঃ চকুরাং লেখনং বাতলং জয়েও।
কথাং পিশুং গরং শুলং শোঝার্শ:র্লাছপাণ্ডুতাঃ।
মেলোমেহলিমীন্ কুঠং তৎকিউং তম্বনে হি॥

ব ওবকুঠামরমৃত্যুদং ভবেদ্জন্ত্রোগশ্লে) কুরুতে২খারীঞ।
নানারজানাঞ্চ তথা প্রকোপং করোতি হলাসমগুদ্ধনাইন্।
কুমাগুং তিনতৈলঞ্চ মানারং রাজিকাং তথা।
মন্ত্রমারস্কাপি ত্যজেলোহস্ত দেবকঃ।

লৌহ।

लोह अद्वौनित्न अर्थाः भूः नित्न उ क्रीव-লিঙ্গে ব্যবহাত হয়। লোহ, শস্ত্রক, তাক্ক, পিণ্ড, কালায়দ ও আরদ, এই কয়েকটি লৌহের পর্য্যায়। লোহের সাতটি দোষ; যথা— গুরুতা, কঠিনতা, উৎক্লেদকারিতা, মুর্চ্চাজন-কতা, দাহকারিতা, অন্মদোষ এবং হুর্গন্ধ। লোহ—ভিক্ত-মধুর-ক্যায়-রস, সারক, শাত-वीर्या, खक्र, क्रक, वयःश्रापक, हक्रत हिडकातक, লেখনগুণযুক্ত, বায়ুবৰ্দ্ধক এবং ইহা কদ, পিত্ত, গরদোষ, শূল, শোথ, অর্শঃ, প্রীহা, পাড়তা, মেদ, মেহ, ক্রিমি ও ক্র্ররোগ নাশক। লোহেব মল অর্থাৎ মণ্ডুর লৌহতুলা ওণদায়ক। অশোপিত লৌহ সেবন করিলে যত্ত্ব, কুন্ত, হুদ্রোগ, শুণ, অথানী, হুয়াস ও বিবিধ রোগের প্রকোপ ২য়। ইহা ছারা মৃত্যু পর্যান্তও হইয়া থাকে।

লোই-সেবী ব্যক্তি কুমাও, তিলতেল, মাবার, সর্বপ, মন্ত্র ও অনুরসমূক্ত দ্রব্য প্রবিভাগি করিবেন।

অথ সারলোহ্য ।

কনা সুচ্ছিখবাকারা বাক্ষান্তানেন লেপনের । লোহে স্থান প্রাণি তৎ সারম্ভিধীয়তে । লোহং সারাহ্মের হন্তাদ এইনীমতিসারকম্ । অন্ধ্যনাঙ্গরে বাতং শূলক গরিশান প্রাণ্ডি । ভূমিক সীনসং পিত্র শ্বাসং কাসং বাপোহতি ।

সারলেই।

অমানেপন করিলে যে লোহাঞ্জঞ্জ পর্কতাশ্বরের ক্সায় ক্ষ্মাগ্র হয়, তাহাকে সারলোহ বলা যায়। সারলোহ—গ্রহণী, অতীসার, অদ্ধাঞ্চ ও সর্কাঞ্চগত বাত, পরিণামশূল, বমি, পীনস, পিত্ত, খাস ও কাস নাশক।

অথ কান্তলোহম।

যৎপাতে ন প্রদানতি জলে তৈলবিদ্যু প্রতপ্তে
হিন্ধুপঁশাং তাজতি চ নিজং তিজতাং নিম্ববন্ধ ।
তপ্তং হুগাং জবতি শিগনাকারকং নৈতি জুনিং
কৃষণকে: স্থাৎ সভলচণকঃ কান্তলোহং তছুভন্ ॥
ভিন্মোদনাশিংশুলামমানাতং জগলবন্ ।
কানলাশোপ্রুষ্ঠানি করাং কান্তময়ো হ্রেং ॥
গাহানমম্পিওপ যকুচাপি শিবোরগুন্ ।
সব্বান্ লোগান্ বিজয়তে কান্তলোহং ন সংশ্যঃ ।
বলং বাগাং বপুংপুষ্টিং বুক্ততেগ্রিং বিবন্ধরে ॥

কান্তলেং।

নে লোহপাতে জল উত্তপ করিয়া সেই জলে তেলবিন্দ নিক্ষেপ করিলে তাহা প্রস্থত না হয় এবং বাহাতে হিন্দু ভাজিলে হিন্দু নিজ গন্ধ তাগি করে, নিম্ববন্ধ কিন্দু করিলে তাহাব তিব্দুতা থাকে না, হয় তথ্য করিলে নাপিয়া উঠে অথচ পড়িয়া দায় না এবং বাহাতে ছোলা ভিজাইয়া রাশিলে সেই এচালা ক্রম্বর্ণ হয়, হাহাকে কাগুলোহ বলে।

কাপ্তবেই ছল, উদৰ, স্থান, শুল, সাম দোষ, আমবাত, ভগন্দর, কামলা, শোগ, কুছ, ক্ষয়, গ্রীহা, অমপিত, যক্ত, শিরোবোল প্রেছাত সমস্ত কোল বিনাশ করে। ইহা বল, বীয়া, পৃষ্টি ও অগ্নিকারক।

অথ মণ্ডরম্।

প্রায়নানক্ত লোইক্ত মলং মঞ্চুরমূচ্যে:। লোহসিংহানিকা কিটাং সিংহানক নিগস্তাত। বলোহম বদুগুণং তথাক্তং তথকিট্রসপি তদুগুণমু।

লৌহ পোড়াইবার সময় তাহা হইতে থে মল নিগত হয়, তাহাকে মড়র বলে। লোহ-সিংহানিকা, কিট্ট ও সিংহান, ইহার। মঙুরের পর্য্যার। মঞ্ব---লোহসদৃশ গুণ- ৰুক্ত। যে লোহের যেরপ গুণ, তজ্জাত মঙ্রেরও তদ্ধপ গুণ জানিবে।

অথোপধাতবঃ।

সপ্তোপধাতবং অর্থ-মান্দিকং তারমান্দিকম্
তুথং কাংক্তঞ্চ রীতিশ্চ সিন্দুরক্ শিলারুতু ॥
উপধাতুর্ সর্কের্ তভদ্ধাতুগুণা অপি।
সপ্তি কিস্কের্ তে গৌণান্তভ্যমণাল্পভাৰতঃ ॥

উপধাতুও সাতটি; যথা—শ্বর্ণমান্দিক, তারমান্দিক, তুঁতিয়া, কাসা, পিন্তল, সিল্র, এবং শিলাজতু। যে যে থাতুর যে যে গুণ বর্ণিত হইয়াছে, তাহাদের উপধাতুরও সেই সেই গুণ জানিবে, কিন্তু তদপেক্ষা অনেক অল্প, যেহেতু উপধাতুতে মূল গাতুর অংশ হাত হল পশিলাদেই থাকে।

অথ সর্ণমাক্ষিক্য।

বর্ণমালিক মালা হৈ তালাজং মধুমালিক ম্।
তালাং নাশিকধাতুশ্চ মধ্যাতুশ্চ মালা বিশ্বিক্ষা ক্ষানা ক্ষানা

ন্দ্ৰ নোপং জয় কড়ী কিনোয়সপি নীশয়েও । নন্দানলয় বলগোনিমুলাই বিষ্ঠান্ত গোলেজগান সকুপান্। তথেৰ মালাই লগপুৰিবিকাক কৰোতি ভাগীলেওজ্জনত ।

ভাপাজ, মৰুমাঞ্চিক, তাপ্য, মাঞ্চিকধাতু ও মধুবাকু, ইহারা ধর্ণমাক্ষিকের পর্যায়। স্বৰ্ণ ক্ৰিক **স্বর্ণধাত্**র উপধাতু। স্বণের কিঞ্চিৎ সংশ মিশ্রিত আছে বলিয়া ইহাকে স্বৰ্ণমান্দিক সর্গমা কিকে বলে। স্বর্ণের গুণ কিঞ্চিং পরিমাণে অবস্থিতি কবে, এ কারণ স্বর্ণের অভাবে ইহা ব্যবহার করা যাইতে পারে। স্বৰ্গ ক্ষিক স্বৰ্ণ অপ্রধান, স্বতরাং **अं**वर् অপেক

হওয়াই সম্ভব। কিন্তু স্বর্ণমান্ধিকে যে স্বর্ণের গুণমাত্র অবস্থিতি করে এরপ নহে, অস্তান্ত দেব্যের সংশ্লেষ থাকা প্রস্তুক্ত অপরাপর গুণও ইহাতে আছে। স্বর্ণমান্ধিক—মধুর-তিক্ত-রস, শুক্রবর্দ্ধক, রসায়ন, চক্ষুর হিতকারক এবং ইহা বস্তিবেদনা, কুন্ঠ, পাও, প্রমেহ, বিষ, উদর, অর্শঃ, শোথ, ক্ষয়, কও ও ত্রিদোষ নাশক। অবিশোধিত স্বর্ণমান্ধিকক—মন্দান্নিকারক, অত্যন্ত বলনাশক ও বিষ্ট্রী। ইহা চক্রোগ, কুন্ত, গওমালা ও বেণরোগ উৎপাদন করিয়া থাকে।

অথ তারমাঞ্কিম্।

তারমাসিকমন্তাই তৃত্ত বেশিক্তাই প্রমান কিঞ্চিত্রতাই তার তারমান্তিকমারিতম্ব । অনুকলতরা ততা ততাই নিজ্ঞাই স্মৃত্য । ন কেবলং রূপা গুলা বর্ত্তে তারমান্তিকে। দ্রব্যান্তরক্ত সংস্থাই সন্ত্রেহিশি গুণা যতঃ॥ স্বান্ত্র পাকে রূপে কিঞ্চিই তিজই কুষ্টাই রাম্যনম্ব। চক্তর্যাই বিশ্বিককুক্তি পাঞ্লেই বিশেলবান্। শর্মী, শোহই ক্ষয়ই কিন্তুলই বিশেলবান্ স্কুটান্। গুণাই বলই নিম্পাই বিশ্বিত হালিক্তিনিদ্ধাত্রম্ব স্কুটান্।

ভারমাক্ষিক নুমপার উপনাতু, ইহা রূপার ! ভুল। গুলসূত্র কিঞ্চিং ক্লপা সংশ্লিষ্ট থাকা গ্রন্থ বহাকে ভারমান্দিক বলে । M111 মপেকা অপুনানতা হেতু গুণেও 'গ্ৰহ অপেক্ষা অপ্রধান। ভারমাক্ষিকে মে, কেবল নাপার গুণ সকল অবস্থিতি করে এরূপ নহে, অগ্রান্ত ক্রোর সংযোগ হেতু ইহাতে অগ্রান্ত ! গুণও আছে। তারমান্ধিক--কিঞ্চিং তিক্ত-মধুররস, মধুরবিপাক, শুক্রবর্দ্ধক, রসায়ন, চক্ষুর হিতকারক এবং ইহা বস্তিরোগ, কুন্ন, পাণ্ড, প্রমেহ, বিষ, উদর, অশঃ, শোথ, ক্ষয়, কণ্ড ও ত্রিদোষ নাশক। অবিশুর স্বর্ণমাক্ষিক যেরপ মন্দাগ্রিজনক, অতিশন্ন বলনাশক, বিইন্ডী पदः निक्रतांग, कूछेरतांग, ग**एमां**गा ७ डा-

রোগ উৎপাদন করে, অবিশুদ্ধ তারমাক্ষিকও তদ্ধপ কার্য্যকারী জানিবে।

অথ তুথাম্।

তুথং বিতুর্নকাপি শিথিত্রীবং ময়ুর্কম্।
তুথং তামে।পথাতুহি কিঞ্জিমেন তদ্ভবে ॥
কিঞ্চিত্রামগুণং তদ্ধি বক্ষামাণগুণক ৩৫।
তুপকং কটুকং কারাং কবারং নামকং লঘু॥
লেখনং ভেননং শীতং চকুবাং কক পিত্ত সং।
বিষাশ্রকৃষ্ঠকগুলং অপনকাপি ভদ্ধান॥

9 (51

তুথা, বিভুন্নক, শিশিগ্রাব ও মনুরক, ইহাবাড় তিয়ার প্রারে। ভূতিয়া ভাষেব উপনাত। কি প্রিং-ভাগাংশ থাকা প্ৰবন্ত ইহার গুণ তামের কুলা, কিন্তু অপ্রধানতা হেতু ইহাতে ভাষেব গুণ সকল অভি অল পরিমাণে আছে, এবং বক্ষামাণ অপুরাপুর ণ্ডণ সকলও ইহাতে অব্তিতি করে। তু'তিয়া — দক্ষার কটু-কনায় রদ, ব্যন্কাবক, লঘু, লেখন গুণৰু জ, ্ভেদ্ক, শাত্ৰীয়া, হিতকারক এবং ইহা কফ, পিত্ত, বিষ, অশারী, কুঠ ও কণ্ডুনাশক। থপবও ভূতিয়ার আয় গুণকারক।

অথ কাংস্তম্।

্রাম বপুদ্দাগাহিং কাংস্তং থেরিক কংসকন্ ।
উপধাতু চনেৎ কাংস্তং দ্বয়েগুরবিরস্করো: ॥
কাংস্তম্ভ তু গুলা ক্রেয়া, দ্বয়েলিসদৃশা কনিঃ ।
সংশোগন্ধপ্রভাগে তন্তান্তেহপি হলার স্থান ।
কাংস্তং ক্রায়ং তিক্তোকং কেপন, নিশ্দং সরম্।
গুরু নেএহিতং ক্লং ক্যাপিত্ররং পরম্॥

কাদা।

তাম ও বঙ্গ এই উভন্ন বাতৃর সংযোগে কাসা প্রস্তুত হর, একারণ উহাকে উভন্ন ধাতৃরই উপধাতৃ বলা যাইতে পারে। কাংশু, ঘোৰ ও কংসক, এই কয়েকটি কাঁসার সংস্কৃত নাম। কাঁসার গুণ, তাহার উপাদান কারণের তুশ্য জানিবে, কিন্তু দ্রব্যব্বের সংযোগ-প্রভাবে ইহাতে অক্সান্ত গুণও অবস্থিতি করে। কাসা—কষায়-তিব্দ্ধ-রস, উষ্ণবীর্য্য, লেখন, বিশদ, সারক, গুরু, চক্ষুর হিতকর, রক্ষ এবং ইহা কফ-পিত্তনাশক।

অথ পিতলম্।

পিত্তপন্থারকুটং স্থানারো রীভিশ্চ কথাতে। রাজরীতির ক্ষরীতিং কপিলা পিকলাপিচ ॥ রীতিরপাগণাতুং স্থাৎ ভারক্ত যদনক্ষ চ। পিত্তলক্ষ গুণা জ্যেরাং ক্যোনিসদৃশা জনৈঃ। সংযোগজপ্রস্থানেণ ভক্তাপাক্তে গুণাং স্মৃতীং। রীতিকাযুগলং ক্লকং ভিক্তক লবণং বসে। শোদনং পা ভুরোগন্নং ক্রিনিন্নং না ভিলেগনম্ ॥

পিত্ৰল ও রাজপিত্রল ৷

পিত্তল, আরক্ট, আর ও রীতি, এই করেকটি পিত্তলের পর্যাার। রাজপিত্তলকে রাজরীতি, কপিলা, রন্ধরীতি ও পিন্ধলা বলে। পিত্তল তামা ও দক্তা এই উভর ধাতুর উপধাতু। পিত্তলের গুল, গাহাব উপাদান কারণের তুলা, কিন্তু সংযোগপ্রভাবে তাহাতে অপরাপর গুলও অবস্থিতি করে। উভর্যবিধ পিত্তলই—রন্ক, ভিক্ত-লবণ-রস, শোননকারক, পাণ্ড্রোগ ও ক্রিমি নাশক। ইহা অতিশ্য লেখনগুণবৃত্ত নহে।

অথ সিন্দুরম্।

সিন্ধ রক্তরেণুক নাগগতক সীসজন।
সীসোপনাতুঃ সিন্ধা গুণৈত্ব সীসবন্তন্।
সংযোগজনতভাবেণ তজাপাতে গুণা: বৃতা: ।
সিন্ধান্ত্ব বীসপন্তুক্তকভূবিবাপংম্।
ভাসনানজননং ব্ৰশোধনৱে।পণন্।

দিন্ব, রক্তনেগু, নাগগভ ও সাদজ, এই ক্ষেকটি দিন্ত্রের প্রার । ইহা সীদকের উপগাতু, এ কারণ উহার গুণ দীদকের ন্যায় । এবং অপগ দ্রোর সংযোগ হেতু ইহাতে অস্থান্ত গুণও অবস্থিতি করে। দিন্ত্র—উষ্ণ-বীর্যা, বীদর্শন্ধ, কুণ্ঠ ও কণ্ণ নাশক, বিষাপ-

হারক, ভগ্নদ্ধানকারক, ব্রণশোধক এবং ব্রণরোপক।

- অথ শিলাজতু।

নিলাথে বর্দ্দন্তথা ধাতুসারং ধরাধরাঃ ।
নিবাসিবং প্রাধ্নত তাজসারসং তচতুর্বিধম্ ।
দৌবর্ণং রাজতং তাজসারসং তচতুর্বিধম্ ।
শিলাজধৃত্রিজতু চ শৈলনিব্যাস ইতাপি ॥
গৈরেরমন্মাজকাপি গিরিজং শৈলধাতুজম্ ।
শিলাজং কটুতিভোকং কটুপাকং রমায়নম্ ॥
ছেদি যোগবহং হস্তি কফমেদোহশ্মান্দর্করাঃ ।
মূত্রকুক্তং ক্ষয়ং খাসং বাতার্শাংসি চ পাঞ্তাম্ ॥
অপন্মারং তথোলাদং শোধরুঠোদরক্রিমীন্ ।
দৌবর্ণত্ত গ্রাপুশ্পর্কং তবতি তদ্রসাং ॥
মধুরং কটু তিজক শীতলং কটুপাকি চ ।
রাজতং পাঞ্রম শীতং কটুকং বাতুপাকি চ ॥
তাত্রং ম্যুরকঠাতং তীজমুক্ক জারতে ।
লোহং কট্যুক্কাতং তথ তিজং লবণং ভবেং ।
নিপাকে কটুকং শীতং সর্বশ্রেষ্ঠমূদাক্তম্ ॥

প্রাথভূতে হ্যাকিনগমন্ত পর্বত হইতে যে নাত্র দান বিগলিত হয়, তাহাকে শিলাজত বলা যায়। শিলাজত চারিপ্রকার, যথা—দোবর্গ, রাজত, তাম ও আয়স। আজজতু, শৈলনির্যাস, গেরেয়, অন্যঙ্গ, গিরিজ ও শৈলনাত্ত, তই কয়েকটি শিলাজতুর পয়্যায়। শিলাজতু—কটু-ভিতরস, 'উষ্ণবীয্য, কটু-বিপাক, রসায়ন, ছেনী, যোগবাহী এবং ইহা কফ, মেনং, অন্যরী, শকরা, মৃত্রক্তর, কর, শ্বাস, বায়, অন্য, সাতু, অপ্রান, উন্মান, নোগ, কৃত্ত, উদর ও ক্রিমি নাশক।

সেংবৰ্ণ-শিলাজতু—জবাপুশোর গ্রাম বৰ্ণ-বিশিল্প, কটু-ভিক্ত-মধুররস, - শীতবীষ্য এবং কটুবিপাক। রাজত শিলাজতু—পাঙুবর্ণ, শীতবীষ্য, কটুরস ও মধুরবিপাক। তাত্র শিলাজতু—নমূরকণ্ঠাভ, তীক্ষ এবং উষ্ণবীষ্য। লৌহ-শিলাজতু—জটায়র পক্ষ সদৃশ আভাবিশিষ্ট, ভিক্ত-লবণরস, কটুবিপাক এবং শাতবীষ্য। এই লোহ শিলাজতুই স্কাপেকা শ্রেষ্ঠ।

ভাথ ব্রসঃ।

রসারনাথিভিলে কি: পারদো রহুতে যত:।
ততো রস ইতি প্রোক্তঃ স চ ধাতৃরপি শুতঃ ॥
পারদো রসধাতৃক রসেক্রণ্ড মহারসঃ।
চপলঃ শিববীর্ঘঞ্চ রসঃ প্রতঃ শিবাহরঃ ॥
পারদঃ বডুসঃ শ্রিশ্ধবিদোবয়ো রসায়নঃ।
বোগবাহী মহাব্যঃ সদা দৃষ্টবলপ্রদঃ ॥
সক্ষামরহরঃ প্রোক্তো বিশেষাৎ সর্বকৃত্তং ॥

পারা।

রসায়নার্থী ব্যক্তিগণ কভুকি পারদ আসা-দিত (সেবিত) হয় বলিয়া ইহাকে রস বলে। পার্দকে পাতৃও বলা যায়। পারদ, রস্ধাতৃ, রুসেন্দ্র, মহারস, চপল, শিববীর্যা, রস ও স্থত এবং শিব-বাচক যাবভীয় শব্দ পারদের পর্যার। পারদ-মধুবাদি ছ্য়-রস বিশিষ্ট, পিয় ত্রিদোষনাশক, রসায়ন, যোগবাহী, <u>অত্যন্ত</u> শুক্রকারক, **চ**ক্র বলপ্রদ '9 স্ক্রোগ নাশক। বিশেষতঃ ইহা স্ক্রপ্রকার কুটনাৰক।

অথোপরসাঃ।

গলো হিশ্বনজ্জানকশিলাঃ স্রোভোগঞ্জনং টকণং
রাজাবর্ত্তক্ত্বকৌ কটিকরা শথং গটা গৈরিকন্।
কাসীসং রসকং কপদ্দিকভাবোলাক করুঠকং
সৌরাষ্ট্রী চমতা অমী উপরসাং স্বত্ত কিঞ্চিদ্পটণাঃ ॥
গল্ধক, হিশ্বল, অজ্র, হ্রিভাল, মনংশিলা,
স্রোভোগ্রেন, সোহাগা, রাজাবর্ত্ত, চুষক,
কট্কিরি, শুখা, খড়ি, গেরিমাটা, হীরাকস,
ধর্পর, কড়ি, বাবুকা, বোল, কন্তুঠ ও সৌরাষ্ট্রমৃত্তিকা, এই সকল দ্রব্যে রসের কিঞ্চিং গুণ
আহে বলিয়া ইহাদিগকে উপরস্ব বলা যায়।

व्यथ हिन्नुलम्।

হিন্দুলং দরদং রেচ্ছং চিত্রাক্ষং চূর্ণারদন্। দরদ্বিবিধঃ প্রোক্তর্কারঃ গুকতুওকঃ। হংসপাদক্তীরঃ ভাদ্ওপরাক্তরেজ্রন্॥ চর্মার: গুরুবর্ণ: তাৎ স পীত: গুক্তুগুক:।
ক্রাকুত্মসকাশো হংসপাদো মহোরম: ॥
তিক্তং ক্রায়ং কট্ হিলুকং তারেনাময়ন্নং ক্রুপিরহারি।
হ্রাস্কুট্মরকামলাশ্চ শীহামবাতে) চ গ্রং মিহস্তি॥
উদ্বিধানস্ক্রা তু ভমক্ষরপাচিত্য।
হিলুকং তক্ত সত্র গুক্তমের ন শোধ্যেং॥

श्चित्र ।

হিঙ্গুল, দরদ, শ্লেচ্ছ, চিন্তাঙ্গ ও চুর্ণপারদ, এই গুলি হিঙ্গুলের পর্য্যায়। হিঙ্গুল তিন প্রকার, যথা — চর্মান, শুকতৃগুক ও হংসপাদ। ইহারা উত্তরোত্তর যথাক্রমে গুণদায়ক মর্থাৎ চন্মার অপেকা শুকতৃগুক গুণদায়ক, শুকতৃগুক অপেকা হংসপাদ নামক হিঙ্গুল অধিক গুণদায়ক। চন্মার মেতবর্ণ, শুকতৃগুক পীতবর্ণ এবং হংসপাদ জ্বাপুশসদৃশ লোহিতবর্ণ। হংসপাদ হিঞ্গুলই সর্ব্বোৎকৃত্ত, স্কৃতবাং ঔষণার্থে ব্যবহার্য্য।

শোধিত হিঙ্গুল—তিক্ত-কথায়-কটু-রস, এবং ইহা চক্ষ্রোগ, কফ, পিত্ত, হুল্লাস, কুঠ, জ্বর, কামলা, প্লীহা, আমবাত ও গ্রুদোধনাশক।

উদ্ধপাতনের নিয়মান্ত্রদারে ডমঞ যন্ত্রে হিঙ্কুল পাক করিলে তাহা হইতে বে রস প্রস্তুত হয়, তাহা স্বভাবতই বিভদ্ধ, স্বতরাং পুনরায় তাহার এলাধন করিবে না।

অথ গন্ধকঃ।

গন্ধকো গন্ধিকশ্চাপি গন্ধপাৰাণ ইত্যাপি।
সৌগন্ধিকশ্চ কথিতো বলিব্লবসাপি চ ॥
চতুন্ধী গন্ধকঃ প্রোক্তো রক্তঃ পীতঃ সিতোংসিতঃ।
রক্তো হেমক্রিরাক্তরুং পীতশ্চেব রসারনে ॥
ব্রণবিলেপনে শেতঃ কৃক্তঃ শ্রেষ্ঠঃ ক্ষুত্র জঃ।
গন্ধকঃ কটুকন্বিক্তো বার্য্যাকশ্ববরঃ সরঃ॥
পিত্তলঃ কটুকন্ত পাকে কণ্ডুবিসর্পজন্ধনি ।
হন্তি কুষ্ঠকর্মীহ-কক্বাতান্ রসারনঃ॥
অশোধিতো গন্ধক এব কুষ্ঠং
করোতি তাপং বিবনং লরীরে।
সৌধ্যক রপক বলং তথোঁকঃ

গুক্রং নিহজ্যেব করোভি চাত্রম ॥

("মেষ্ঠঃ" হেমক্রিয়াদিরু সর্বত্ত প্রশন্তভর:।)

গদ্ধক, গদ্ধিক, গদ্ধপাষাণ, সৌগদ্ধিক, বলি ও বলবসা এই করেকটি গদ্ধকেব নাম। পদ্ধক বর্ণভেদে চারিপ্রকার, ঘথা—রক্ত, পীত, শ্বেত ও ক্রফবর্ণ। স্বর্ণসংক্ষার বিষয়ে লোহিত-বর্ণ, রসায়নকিয়াতে পীতবর্ণ এবং ব্রণবিলে-পন কার্যো খেতবর্ণ গদ্ধক প্রশস্ত। ক্রফবর্ণ গদ্ধক, স্বর্ণসংক্ষারাদি সমস্ত কার্য্যে সর্বাপেকা প্রশক্তরর। ইহা অত্যক্ত হম্প্রাপ্য।

গদ্ধক—কট্ট-তিক্ত-কধায়-বদ, উষ্ণবীধ্য, শাৰক, পিত্তবদ্ধক, কটুবিপাক ও বদায়ন এবং ইহা কণ্ড, বীদপ, জিমি, কুৰ্ছ, ক্ষয়, প্ৰীহা, কফ ধ্ব বায়নাশক।

অপরিগুদ্ধ গন্ধক— কুচজনক, দেহেব সম্ভাপ কারক এবং ইছা সোধ্য, কপ, বল, ওজোগাড় ও জক্ষের নাশক এবং রক্তপ্তি কারক।

অথাভাষ্।

পিলাকং দৰ্ম, বং নাগত বছ্রকেতি চতুর্বিশ্য। সুক্ত্যয়ে বিনিক্তিং পিনাক দলসক্ষম। ध्यकाना डक्पर ७७ गर् १ ई अभायकम्। पर्क यञ्जीनिकि छ उत्तर र पक्त अध्यनिम ॥ গোলকান্ বহুশঃ বুদ্ধা স প্রান্মৃত্যুপ্রদাযকঃ। नाशक नाशवम् वरका कृशकातः अनिमुक्ति ॥ ত্ত্রক্তিমবক্তর বিদধাতি ভগন্দর্ম। वश्रक वश्रवर जिल्हेर ज्यारशो निवृष्ठः अरवर । সৰ্বাচ্ছের বরং বন্ধং ব্যাধিবাদ্ধকাসভাত্ত । अञ्चयक्षत्रोगलायः वहमसः स्रीपिकम्। एकिगाजिक्दर वज्ञमद्म्मक्ष्ण्यपम्। ব্দবং ক্যায়ং মধুরং ফ্লীতমায়ুক্তরং গাতৃবিবর্তনক। रकार जिलावर अगरमङ्के भीरहामस्अविविद्यास्योः मह রোগান হস্তি ভ্রচয়তি বপুরীধাবৃদ্ধিং বিধতে তাক্ষণ্যাতাং রময়তি শতা ৰোবিতাং নিভামেব। बीधावुकान जनबाँउ ऋछान् विक्रोतः निरस्कूनान् ৰুটোভীতিং হবতি সভতং সেবামানং মৃতাত্ৰৰ । शीखाः विवरङ विविधाः नहांगाः कुष्टेर काराः शोकुशनक व्यक्तिम् । মুখপার্ব্রাড়াঞ্চ করোভাগুৰ-मस्यामितः अन्डांशनः छार ।

পিনাক, দদ্ম, নাগও ব্যাঞ্জী চারি

চার অন্ত আছে। তন্মধ্যে পিনাক

অগ্নিতে নিকেপ করিলে দলদক্য হয় অর্থাৎ স্তবকাকানে সমস্ত বিক্ষিপ্ত ছইয়া পড়ে। অজানতা প্রবক্ত উহা ভক্ষণ করিলে মহাকুঠ-বোগ উৎপন্ন হয়। দদির নামক অল অন্নিতে নিকেপ কবিলে, ভাহা গোল গোল আকৃতি-বিশিষ্ট হটয়া ভেকেন আৰু শব্দ কৰে। এই ছাতীয় অভ্র ভক্ষণ করিলে মৃত্যু পর্যান্ত ঘটে। নাগা : অগ্নিতে নিকেপ কবিলে সর্পের কুৎকার সদৃশ শব্দ হয়, উহা ভক্ষণ কৰিলে নিশ্চয়ই ভগন্দববোগ জন্ম। বজাত্র অগ্নিতে নিক্ষিপ্ত হইলে বজ্ঞো আয় স্থিনভাবে অবস্থিতি করে, কোন প্রকাব বিক্ষতি প্রাপ্ত হয় না। উহা পকার অন হইতে উৎকট। অসা স্কল বজাল - বাাধি, বাৰ্দ্ধক। ও অকালমুক্তা নিবাৰক। উত্তৰদেশীয় প্ৰতজাত অলু অত্যন্ত সংধান ও গুলাষক। দক্ষিণ পর্বতভাত অনু মরাস্থ্য পর ও অল্পত্ৰৰ ক।

অল—ক্ষায়-মধুব-বদ, শীত্বীর্যা, আক্ষর, ধাতুবর্দ্ধক এবং ইহা নিদোষ, রণ, প্রমেহ, কুট, গ্রীহা, উদব, গ্রন্থি, বিষ ও ক্রিমিনাশক।

ন্ধানিত অন নিত্য সেবিত ছইবে তাহা বোগনাশক, শবাবেব দৃচতাসম্পাদক, বীষ্য-নদ্ধক, দীঘায়ঃ ও সিংহেন ভায় বিক্রমশালী পুত্রজনক, অকাল-সূত্যোশকণ ও রতিশক্তিন বর্জক।

অশোনত অত্র—মানবগণের নানাবিধ পীডাজনক এবং ইহা কুঠ, ক্ষয়, পাঞ্চ, শোধ, হালত ও পাথগত বেদনা উৎপাদক। অসিত্ত অত্য ও শ্বীবের সন্তাপ উৎপাদক।

অথ হরিতালম্। 🤟

হবিতালত আৰুং ভাগালং তালক্ষিতাপি।
ক্ষুদ্ৰিতালং হিগা পোঞ্চং প্ৰাথাং শিশুসংক্ষমন্। সক্তবারাজ্যং ওগৈং শ্রেষ্ঠং জতো হীনন্তণং পারম্।
কর্ণবর্ধং শুলু বিদ্যাং সপ্রকালস্থান্তবং।
স্বালাখ্যং তালকং বিজ্ঞান্ত শ্রানাস্থান্তবং।
বিশান্তং শিশুস্থান্ত শ্রানাস্থাক্ষ ।

ত্রীপুষ্পাহারকং স্বলগুণং তৎ পিওতালকষ্।
হরিতালং কটু শ্রিগ্ধং কবারোক্ষং হরেছিবম্।
কপুকুষ্ঠান্তরোগাশ্র-কফপিওকচনগান্॥
হরতি চ হরিতালং চাক্ষতাং দেহজাতাং
স্কৃতি চ বহুতাপানকসক্ষোচপীড়াম্।
বিতরতি কফবাতৌ কুঠরোগং বিদ্যাদিদ্যশিত্যশুদ্ধং মারিতঞ্চাপাসম্যক॥

হরিতাল, তাল, আল ও তালক, এই কয়েকটি হরিভালের নাম। হরিভাল ছই প্রকার, পত্র হরিতাল ও পিও হরিতাল। তন্মধ্যে আন্থ অর্থাং পত্রাশ্য হরিতাল গুণে শ্রেষ্ঠ ; পিণ্ডসংক্তক হরিতাল উহা অপেকা হরিতাল-সুবর্ণবর্ণ, পতাখ্য অৱগুণৰক । অভের স্থায় স্তরসম্মিত, ভারবতল, স্নিগ্ন, শ্রেষ্ঠ গুণদায়ক ও রসায়ন। পিণ্ডাশ্য হরিতাল— গুর**হীন,** পিণ্ডবদুশ, স্বন্নসত্ত ও অলপ্ডণৰ্জ, রজোনাশক। হরিতাল-কট-লঘ এবং ক্ষায়-রদ, ক্মিগ্ধ, উষ্ণবীর্যা এবং ইহা বিষ, কণ্ড, কুন্ঠ, মুখরোগ, রক্তদোষ, কফ, পিত্র, কেশ ও ব্রণ নাশক।

অশোধিত ও অসম্যক্ মারিত হরিতাল শরীরের লাবণ্যনাশক, বাত্রেশ্বর্দ্ধক এবং ইহা বছবিব সম্ভাপ, আক্ষেপ ুও কুষ্ঠরোগ উৎপাদক।

অথ মনঃশিলা।

সনঃশিলা মনোগুপ্তা মনোহনা নাগজিহিকো।
ক্রিপালী কুনটা গোলা শিলা দিবাৌবধিঃ শৃতা ॥
মনঃশিলা গুরুবর্গা সরোকা লেখনী কটুঃ।
তিক্তা স্নিধা বিববাস-কাসভূতকফাশ্রুব ॥
মনঃশিলা মন্দবলং করোতি জন্তং প্রবং শোধনমন্তরেণ।
মলামুবকং কিল মুক্রোধং সশর্করং কৃষ্ণগদঞ্চ কুষাং ॥
মনাছাল।

মনোগুপ্তা, মনোহবা, নাগজিছিবকা, নৈপালী, কুনটা, গোলা, শিলা ও দিব্যৌষধি, এই করেকটি মন:শিলার নাম। মন:শিলা— গুরু, বর্ণকর, সারক, উষ্ণবীর্য্য, লেখনগুণযুক্ত, কটুভিক্তরস, স্লিগ্ধ এবং ইছা বিষদোধ, শ্বাস, কাস, ভূতদোষ, কক ও রক্তদোষ শ্লাশক। অবিশোধিত মনঃশিলা সেবনে বলহানি হয় এবং নিশ্চয়ই ক্রিমি, মলম্ক্রোধ, শর্করা ও মৃত্রক্ষদ্ভুরোগ উৎপন্ন হইয়া থাকে।

পীতিকা।

শীতিকারণনাগক সা স্তাদ্ এগনিস্পনী।
মুদ্রাশক্ষা।

পীতিকা ও অরুণনাগ, এই চুইটি মুদ্রা-শভোর নাম। ইহা ঈষৎ পীত বা অরুণবর্ণ। মুদ্রাশঙ্খ ক্ষত নিবারণার্থ ব্যবহৃত হুইয়া থাকে।

অথ সৌবারম্।

অপ্লনং বামূনকাপি কপোতাপ্লনমিতাপি।
তৎ তু প্রোত্যেপ্পলং কৃষ্ণক সৌবীরং বেত্নীবিতম্।
বন্দীকশিবরাকারং ভিন্নমন্তনসনিতম্।
বৃষ্টিত্ত গৈরিকাকারমেতৎ প্রোত্যেপ্পলং সূত্র্য।
প্রোত্যেপ্পলম্ম ভেন্নং সৌবীরং তৎ তু পাঙ্রম্।
প্রোত্যেপ্পলং স্থাতং আছু চকুষ্যং কফপিভুমুৎ ॥
ক্যারং লেখনং প্রিমং গ্রাহি চ্ছাদিবিবাপহন্।
সিশ্বক্ষাপ্রচালীতং সেবনীরং সদা বুধৈঃ।
প্রোত্যেপ্পল্যোং প্রেষ্ঠং প্রোত্যেপ্পলং সূত্য।
কিন্ত হব্যেপ্পল্যোং প্রেষ্ঠং প্রোত্যেপ্পলং সূত্য।

নীলফ্রন্মা ও খেতস্থা।

অঞ্বন, যামুন ও কপোতাঞ্চন, এই তিনটি স্রোত্যেংশ্বনের অপর নাম। কৃষ্ণবর্ণ অঞ্চনকে স্রোত্যেংশ্বন এবং শ্বেতবর্ণ অঞ্চনকে সোবী-রাশ্বন কহে। স্রোত্যেংশ্বন বল্লীকের শিখর-তুল্য আকৃতি বিশিষ্ট, তাঙ্গিলে অভ্যন্তরদেশে অঞ্চনসদৃশ আভা প্রকাশ পায় এবং ঘর্ষণ করিলে গেরিমাটীর ন্থায় বর্ণ দৃষ্ট হয়। সোবী-রাশ্বন স্রোত্যেংশনের তুল্য, কিন্তু পাপুর্ণ।

স্রোতোহঞ্জন—মধুর-ক্যায়-রদ, চকুর হিত-কারক, কফন্প, শাত্তবীর্যা, পিত্তনাশক, লেখন-গুণসুক্ত, ন্নিগ্ধ, ধারক এবং ইহা বমি, বিষ, সিদ্ম, ক্ষয় ও রক্তদোষনাশক। সৌবীরাঞ্জনও স্রোতোহঞ্জনসদৃশ গুণদায়ক, কিন্তু এই দিবিদ অঞ্জনের মধ্যে স্রোতোহঞ্জনই উৎকৃষ্ট।

অথ টক্ষণঃ।

টকণোহগ্রিকরো রুক্ষ: ককছো বাতপিত্তকৃৎ ॥
(অয়মূপরসন্থাৎ পুনক্ত: ।)

সোহাগা।

সোহাগা—অগ্নিবৰ্জক, ক্লফ এবং ইহা কফন্ন ও বাহপিত্তজনক।

অথ স্ফটা।

ক্ষটা চ ক্ষটিকা প্রোক্তা বেতা গুজা চ রঙ্গদা। দুচ্রঙ্গা রঙ্গদৃচা রঙ্গাঙ্গাপি চ কথাতে॥ ক্ষটিকা তু ক্যায়োফা বাতপিত্তকক্ষ্রণান্। নিহস্তি বিত্রবীসর্পান্ যোনিসঙ্গোচকারিণী॥

ফটকিবি।

ক্টী, ক্টিকা, খেতা, ভুলা, বঙ্গনা, দূত্রকা, রক্ষদ্তা ও রক্ষাকা এই কয়েকটি কট্কিরির নাম। কট্কিরি—কথায়-রস, উষ্ণবীশ্য, যোনিসংশ্লাচক এব ইহা বায়, পিত্ত, কফ, ব্রণ, খিত্র ও বীসপ্রোগ নাশক।

অথ রাজ।বর্তঃ।

রাজাবর্ত্তঃ কটুন্তিক্তঃ শিশিরঃ পিওনাশনঃ। রাজাবর্ত্তঃ প্রমেহযুশ্ছর্দ্ধিহিকানিবারণঃ ॥

রাজাবর্ত্ত (ক্ষাটকবিশেষ)—কটু-ভিক্ত-রস, শীতবীর্য্য, পিত্তনাশক এবং ইহা প্রমেষ্ঠ, বমি ও হিল্লা নিবাবণ করিয়া থাকে।

হথ চুম্বকঃ

চুম্বকঃ কান্তপাষাণো যঃ কান্তো লোহকৰকঃ।
চুম্বকো লেখনঃ শাতো মেদোবিষগরাপছঃ । শ

যে কান্ত দারা লৌহ আরুষ্ট হয়, তাহাকে কান্তপায়াণ ও !চুম্বক বলে। চুম্বক—লেখন, শীতবীর্য্য এবং ইহা মেদ, বিষ ও গ্রদোষ নাশক।

অথ গৈরিকং স্থবর্ণ-গৈরিকঞ্চ।

গৈরিকং রক্তধা**ভূক্ত** গৈরেরং গিরি**জং তথা।** স্বর্ণ-গৈরিকস্বস্তও ভতো রক্ততরং হি তৎ॥ গৈরিক্ষিতরং মিশ্বং মধুরং তুবরং হিমন্। চক্ষবাং দাই**থিত**াত্র-কক্ষ্টিকাবিষপেইম্॥

গেরিমাটী।

গৈরিক, রক্তনাতু, গৈনেষ ও গিরিজ এই কয়েকটি গেরিমাটীর সংস্কৃত নাম। গৈরিক হুই প্রকার—সামান্ত গৈরিক ও স্থবর্গ গৈরিক। সামান্ত গৈরিক অপেক্ষা স্থবর্গ-গৈরিক অধিক রক্তবর্গ। এই উভয় প্রকার গৈরিকই—স্নিগ্ধ, মধুর-ক্ষায়-রস, শীভবীর্য্য, চক্ষুর হিতকারক এবং ইহা দাহ, পিন্ত, রক্ত-দোষ, কফ, হিক্কা ও বিষ নাশক।

অথ খটা গোরখটা চ।

খটিকা কঠিনী চাপি লেখনী চ নিগন্ধতে। থটিকা দাহজিচ্ছাতা মধুবা বিষশোপজিৎ ॥ লেপাদেতদ্ভণা প্ৰোক্তা ভক্তিতা মৃত্তিকাসমা। গটা গৌরখটা যে চ গুণেজ্ঞলা প্রকীর্জিতে॥

🕷 খড়ী।

খটিকা, কঠিনী ও লেখনী, এই করেকটি
খড়ীর সংস্কৃত নাম। খটিকা—মধুররস ও শীতল;
ইহা লেপনে দাহ বিষ ও শোথ নপ্ত করে।
ভক্ষণ করিলে মৃত্তিকার ভায় গুণদায়ক হয়।
খটিকা তুই প্রকার। সামাভ্য খটী ও গৌরখটী, ইহারা উভয়েই তুলাগুণ।

অথ বালুকা।

বালুকা সিকতা স্ক্র-শর্করা শীতলাপি চ। বালুকা লেখনী শীতা ব্রংগারঃক্রতনাশিনী॥ বালুকা, সিকতা, স্ক্রণর্করা ও শীতলা, এই কয়েকটি বালুকার নাম। বালুকা— লেখন, শীতল এবং এণ ও উরঃক্ত বিনাশক।

অথ খপরীতুথম্।

থপরীতুথকং তুথাদক্তৎ তত্ত্রদকং স্মৃত্য । যে গুণাস্থ্যকে প্রোক্তান্তে গুণা রদকে সূত্র ॥

খর্পরীতুথক তুঁতিয়ার ভেদমাত্র। রসক ইহার নামান্তর। তুঁতিয়ার যেরূপ গুণ পুর্বে বর্ণিত হইয়াছে, ইহারও তন্ত্রপ গুণ জানিবে ।

অধ কাশীশম্।

কাশীশং ধাতৃকাশীশং পাংশুকাশীশমিতাপি।
তদেব কিলিৎ পীতত্ত পুপাকাশিশমূচাতে।
কাশীশময়ন্থক ভিক্তঞ্চ ত্বরং তথা।
বাতশ্লেমহরং কেঞা নেত্রকভূবিবপ্রণ্
ন্ত্রক্তহাশারীবিত্রনাশনং পরিকীর্থিতন্।

হীর কন্।

কানীশ, ধাতুকানীশ ও পাংশুকানীশ, এই ক্ষেকটি হীরাক্সের সংস্কৃত নাম। কিঞ্চিৎ
পীতবর্ণ কানীশকে পুষ্পকানীশ বলে। হীরাক্স—অম্ন-তিক্ত-ক্ষায়-রস, উষ্ণবীধ্য, কেশের হিতকর এবং ইহা বায়ু, কফ, নেত্রকণ্ডু, বিষ, মৃত্রক্তন্তু, অশারী ওশ্বিত্ররোগ নাশক।

অথ সোরাষ্ট্রী।

সৌরাষ্ট্রী ভূবরী কাব্দী মৃতানকস্থরাইজে। আচ্নকী চাপি সা খ্যাতা মৃৎস্না চ স্থরমৃত্তিকা। ফটিকানা গুণা: সর্কে সৌরাধ্যা অপি কীর্ত্তিতাঃ।

সৌরাষ্ট্রমৃত্তিকা।

সোরাষ্ট্রী, তুবরী, কাজ্জী, মৃতানক, স্থরাইজ, আঢ়কী, মৃৎসা ও স্থরমৃদ্ধিকা, এই কয়েকটি সোরাষ্ট্রার নাম। কট্কিরির যে গুণ উক্ত হটয়াছে, সোরাষ্ট্রমৃদ্ধিকাতেও সেই সকল গুণ অবস্থিতি করে।

অথ কৃষণমৃত্তিকা।

কৃষ্ণ ক্তনাহাত্র-প্রদর্গেমণিজনুৎ।
কৃষ্ণমৃত্তিকা—কৃত, দাহ, রক্তদোদ, প্রদর,
কৃষ্ণ ও পিত্ত নাশক।

তাথ চু**ণ**ম্।

চূর্ণোহন্ত্রী চূর্ণকং বাভ-শ্লেমমেদ্য-প্রশান্তিকৃৎ,। হস্তান্ত্রপিত্তং শূলঞ্চ গ্রহণীক্ প্রণং ক্রিনীন্।। চতুক্দমিতে চূর্ণে ভোগে পঞ্চ শরাবকে। ক্রিপ্তে চূর্ণোদকং তৎ জ্ঞাৎ প্রহর্ময়সংস্থিতম্। সম্ভূমাং চূর্ণসলিলং মধ্মেহে হিতং মতম্। অম্নসিত্তে চ শূলে চ পণ্যমপ্যোবধক তৎ ।

591

চুণ ও চুণক এই ছুইটি চুণের সংস্কৃত নাম।
চুণ—বাতমেয়া, মেদোরোগ, অম্পিও, শূল,
গ্রহণী, রণ ও জৈমিরোগ নট করে। ৮ তোলা
পরিমিত চুণ, দশ সের জলে ছুই প্রাহর
ভিজাইয়া রাখিলে চুণোদক প্রস্কৃত হয়। এই
চুণোদক ছপ্কের সহিত মিশ্রিত করিয়া পান
করিলে মধুমেহরোগে উপকার হয়। ইহা
জমপিও ও শূলরোগে পথা ও উষধ।

वर्थ कर्मगः।

কৰ্দ্দমো গাহণিডান্তিশোগন্ধ: শীতল: দর: ।

কদ্দম—দাহ, পিন্তজ রোগ ও শোগনাশক ;
শীতবীধ্য এবং সারক ।

অথ বোলম্।

বোলং গদ্ধরসং প্রাণ-পিওগোপরসাঃ সমাঃ। বোলং রক্তহ্বং শীতং মেধ্যং দীপনপাচনম্ ॥ মধ্বং কট্ভিক্তক দাহবেদক্রিদোষ্টিৎ। জ্বরাপন্মারকৃষ্ঠত্বং গ্রভাশয়বিশুদ্ধিকৃৎ ॥

गन्नद्वान ।

বোল, গন্ধরদ, প্রাণ, পিণ্ড ও গোপরদ, এই ক্রেকটি বোলের পর্য্যায়। বোল—রক্ত নাশক, শীতবীর্য্য, মেধাজনক, অগ্নির দীপক, পাচক, মধুর-কটু-ভিক্ত রস, গর্ভাশর-বিশোধক এবং ইহা দাহ, স্বেদ, জিদোব, জ্বর, অপস্মার ও কুঠ নাশক।

वाश कक्कुछ्रम्।

কৰুঠং কালকুঠক বিরক্তং রলদায়কম্। কৰুঠং রেচনং ভিজং কটুকং বৰ্ণকারকম্। ক্রিমিলোখোদরাখান-গুলানাহকফাপহম্।

কালকুঠ, বিরঙ্গ ও রঙ্গদারক, এই করেকটি কন্ধুঠের নাম। কন্ধুঠ—রেচক, তিক্ত-কটু-রস, উষ্ণবীর্য্য, বর্ণপ্রদ এবং ইহা ক্রিমি, শোথ, উদর, আগ্বান, গুলা, আনাহ ও কফ নাশক।

অথ রত্নানাং নিরুক্তিঃ।

ধনার্থিনো জনাঃ সর্কে রমন্তেহক্মিছতীব বং। ততো রত্নমিতি প্রোক্তং শক্ষণান্তবিশারদৈঃ॥

ধনাতিলাধী সমস্ত লোকই রত্ন প্রাপ্ত হইরা আনন্দিত এবং উহাতে অত্যপ্ত রত হর, এ কারণ শব্দশাস্ত্রবিং পণ্ডিতগণ উহাকে রত্ন বলিয়া থাকেন।

অথ রতানাং নিরূপণম।

রঞ্জ গাঁকস্মতঃ প্রুপ্স-রাগো মাণিকামের ৮। হস্রনালন্ড গোমেদন্তথা বৈদৃষ্ঠামিত্যপি ॥ মৌজিকং বিজ্ঞানন্ডতি রম্বাছ্যক্তানি বৈ নব ॥

রত্ন নয়টি, ষথা—হীরা, গারুত্মত (পায়া), পুশরাগমণি, মাণিক্য (পল্লরাগ), ইন্দ্রনীল (নীলকাস্তমণি), পোমেদ, বৈদুর্য্য, মুক্তা ও প্রবাল।

व्यथ शैत्रकः।

शेतकः পুংসি বজ্ঞোছন্ত্রী চন্দ্রো মণিবর্ত্ত্বিক সং। স তু বেড: মুডো বিজো লোহিত: কলিয়া মুডা।। পীতো বৈশ্বোহসিত: শুদ্রকতুর্ব্বর্ণান্মকন্দ সঃ। রুশারনে মতো বিপ্র: সর্বসিদ্ধিপ্রদারক: I কলিয়ো ব্যাধিবিধাংসী লরামুত্যহর: শুত: । বৈক্ষো ধনপ্ৰদ: গ্ৰোক্তত্ত্বা দেহত দাচ কিং । পুদ্রো নাশরতি ব্যাধীনু ব**র:ভঙং করো**তি চ । शःश्रीनशःमकानीह कक्कीग्रानि कक्केप: I ञ्जूडाः कनमण्युनीत्त्रस्मायूका वृश्स्त्राः । পুরুষান্তে সমাখ্যাতা রেখাবিন্দুবিবর্জিতা: । রেখাবিন্দুসমাযুক্তা: বড্রন্সান্তে দ্রিয়: স্মৃতা:। ত্রিকোণাশ্চ সুদীর্ঘান্তে বিজ্ঞেরাশ্চ নপুংসকা: । তেহপি স্থা: পুৰুষা: শ্ৰেষ্ঠা রসবন্ধনকারিণ:। ত্রিয়: কুর্কন্তি কায়ত্ত কান্তিং দ্রীণাং স্থপঞ্জনা: । নপুংসকান্ত্ৰীৰ্ব্যা: স্থাৱকামা: সন্ত্ৰাৰ্জ্জিতা:। जित्रः **द्वी**छाः अनोङताः क्रीतः क्रीत्व अत्यानस्तर । সর্বেজ্য: সর্বাদা দেয়া: পুরুষা বীযাবর্দ্ধনা:। অভদ্ধং কুক্তে বজ্লং কুন্তং পাৰ্থব্যথাং তথা। পাভার্তাং পান্ধরত্বক ভাষাৎ সংশোধ্য মারহেৎ।

হারক, বজু, চক্র ও মণিবর, এই করেকটি হীরার নাম। হীরক বর্ণভেদে চারিপ্রকার. যথা—শ্বেতবর্ণ, রক্তবর্ণ, পীতবর্ণ ও ক্রম্ভবর্ণ, এই চারি প্রকার হীরক যথাক্রমে ব্রাহ্মণ, ক্ষল্রিয়, বৈশ্ব ও শূদ্র জাতি বলিয়া অভিহিত হয়, অর্থাৎ শুকুবর্ণ হীরক বান্ধণ, হীরক ক্ষল্রিয়, পীতবর্ণ হীরক বৈশ্র এবং ক্লফ্ডবর্ণ হীরক শুদ্র নামে কথিত হইয়া থাকে। তথাগ্রে কাৰ্যো ব্ৰাহ্মণ (শ্বেতবৰ্ণ হীরক) প্রশস্ত, ইহা সমস্ত ক্রিয়ীতে সিদ্ধিদায়ক: ক্ষত্রিয়ন্ত্র'তি (রক্তবর্ণ) হীরক রোগনাশক এবং জ্বা ও অক্লিম্ভা নিবারক , জাতীয় (পীতবৰ) হাঁবক সম্পত্তিপ্ৰদায়ক ও मृह्डा-मन्त्रामक वरः (রুক্ণবর্ণ) হীরক রোগনাশক ও বরঃস্থাপক। छी, प्रः 13 নপুংসকভেদেও হীরকের হইয়া थारक। প্রকারভেদ श्री---(य স্থান্থর-গোলাকার, সম্পর্ণফলপ্রাদ, জ্যোতির্ম্মা, বুহত্তর এবং রেণা বা বিন্দুবিহীন, ভাহাকে পুংজাতি; যে হীরক রেখা বা বিন্দু সমন্বিত ও ষ্টুকোণ, তাহাকে দ্বীজাতীয় এবং যে হীরক তিনটি কোণ সম্ঘত্ত ও স্থাীর্ঘ,

তাহাকে নপ্ংসক জাতীয় বলে। এই ত্রিবিধ হীরকের মধ্যে রসবন্ধনকারিদিগের পক্ষে প্রস্বজাতীয়ঃ হীরক উৎক্স্ট, স্ত্রীজাতি হীরক স্ত্রীদিগের শরীরের শোভাসম্পাদক ও স্থধ-প্রদারক এবং নপ্ংসক জাতীর হীরক বীর্য্য-বিহীন, স্তরাং অকর্মণ্য। স্ত্রীলোকদিগকে স্ত্রীজাতীয় হীরক ও ক্লীবলোকদিগকে নপ্ং-সক-জাতীয় হীরক প্রয়োগ করিবে। প্রং-জাতীয় হীরক সকলেরই ব্যবহারোপ্যোগী ও বীর্যবর্দ্ধক।

আশোধিত ও অমারিত হীরক—কুঠ, পার্শবেদনা, পাণ্ড্ ও পঙ্গুছ উৎপাদক; অত-এব উহা শোধনমারণপূর্মক ব্যবহার করা কর্ত্তব্য।

অথ মারিতবজ্ঞগাঃ।

আয়ু: পুটিং বলং বীষাং বর্ণং দোখাং করোতি চ।
সেবিতং সর্ধরোগন্ধং মৃতং বজ্ঞং ন সংশয়ং ॥
মারিত হারক সেবন করিলে পরমানুং,
শরীরের পুষ্টি, বল, বীর্য্য, বর্ণ ও স্থুখ বৃদ্ধি হয়
এবং সমস্ত রোগ নষ্ট হইয়া থাকে।

অথ হরিমাণিঃ।

গ'রশ্বতং সরকত্মশাগতো হরিশ্বণিঃ।
গাক্ষত, মরকত, অশাগর্জ এবং হ্রিন্মণি, এই ক্যেকটি পারার নাম।

ত্ৰথ মাণিক্যম্।

মাণিক্য পদ্মরাগ: স্থাচ্ছোপরত্বক লোহিত্য।

মাণিক্য, পদ্মরাগ, শোণরত্ব ও লোহিত,
এই করেকটি মাণিক্যের পর্য্যায়।

অথ পুষ্পরাগঃ।

পুশারাগো মঞ্ছণি: ভাষাচশতিবলভ: ।
পুশারাগ, মঞ্ছ্মণি ও বাচশ্শতিবল্লভ, এই
করেকটি পুশারাগ মণির নাম।

व्यथस्तीनः शास्त्रम्ह।

নীলং তথেক্রনীলঞ্গোমেদ: শীতরত্বকৃষ্ ।
নীল ও ইক্রনীল, এই ছইটি ইক্রনীলমণির
এবং গোমেদ ও পীতরত্ব, এই ছইটি গোমেদ
মণির নাম।

অথ বৈদুর্য।ম্।

বৈদ্যাং দূরজং রঙ্গং স্থাৎ কেতুগ্রহবলভম্ ॥

বৈদ্র্য্য, দ্রজ, রত্ন ও কেত্এহবন্নভ, এই গুলি বৈদ্র্য্যানির।পর্য্যায়।

অথ মোক্তিকম্।

মৌকিকং শৌক্তিকং মুক্তা তথা মুক্তাকলঞ্চ তথ।
শুক্তিঃ শুঝো গলকোড়া ফণী মংস্তল্চ দৰ্দ্দ্ র: ॥
বেশুরেতে সমাখ্যাতান্তক জৈমে ীক্তিকবোনর:।
মৌক্তিকং শীতলং বৃষ্যং চন্দ্রয়ং বলপৃষ্টিদম্ ॥
মুক্তা কৰারা ৰাষী চ বলপৃষ্টিপ্রদায়িনী।
বৃষ্যা নেত্রহিতা রাজ-ক্মন্ত্রী বিবনাশিনী।
ব্রীগাং কান্তিরতিকরী ধারণাদ্ গ্রহ্পাপনুং ॥

मुका।

মৌক্তিক, শৌক্তিক, শুক্তা ও মুক্তাফল, এই করেকটি মুক্তার পর্যায়। শুক্তি, শুঙা, গজক্রোড়, সর্প, মংশু, ভেক ও বেণু, এই কয়েকটি মুক্তার যোনি অর্থাৎ উৎপত্তিস্থানু। মুক্তা—শীতবার্য্য, শুক্তবর্দ্ধক, চক্ত্র হিতকারক, বলকারক ও শরীরের পৃষ্টিসম্পাদক এবং ইহা কয়য়-মধুররস, বল ও পৃষ্টি কারক, রুষ্য, চক্ত্র হিতকর, বিষ ও রাজ্যক্ষা নাশক। ইহা জ্রীদিগের কান্তি ও রতি বৃদ্ধি করে। মুক্তা অকে ধারণ করিলে গ্রহদোষ ও পাপের নাশ ইয়।

অথ প্রবালঃ।

প্রবালোহরী ভৌমরত্ন: রক্তাকারো লতামণি:।
বিক্রমোহকারকনণী রক্তাকান্তোধিবলভো ॥
প্রবালো মধুরোহন্ত কবায়ক সরো হিম:।
চক্ষা: কফপিভাদি-দোবছ: কাসনাশন: ॥
ধৃতোহসৌ বোবিতাং বীর্যা-কান্তিকৃত্নতিবর্দ্ধন:।
পাপালক্ষীপ্রশমনো গ্রহদোবনিবর্ধণ:॥

शना ।

ভৌমনত্ব, রক্তাকান, লতামণি, বিজ্ঞম, অঙ্গারকমণি রক্তাঙ্গ ও অভ্যোধিবরন্ত, এই গুলি প্রবালের পর্যায়। প্রবাল—মধুর-অম-ক্যায়রস, সারক, শাতনীর্গ্য, চক্ষুর হিতকর, ক্ফপিন্তাদি দোষনাশক ও কাসহর। প্রবাল অক্ষে গারণ করিলে স্ত্রীলোকদিগের বীর্ষ্য, কাস্তি ও রতি বর্দ্ধন করে। ইহা পাপ অলক্ষ্মী এবং গ্রহদোষ নাশক।

অথ রত্বানাং গুণাঃ ।

রন্ধনি ভক্ষিতানি স্থান ধৃনাণি সরাণি চ।
চকুষাণি চ নীতানি বিষয়ানি ধৃতানি চ।
মঙ্গলানি মনোজ্ঞানি গ্রহদেশিংবাণি চ।
মাণিকান্তর্কণো স্ব্রাতমনলং মুক্তাফলং নীতেগান্
মাহেরক্ত তু বিদ্নান নিগদিতঃ দৌমাক্ত গারুদ্ধাত্ত্বন্
দেবেজ্যক্ত চ পুশারাগমস্বরাচাযাক্ত বজ্ঞং শনেনীলং নির্মানমন্ত্রানিগদিতে পৌমেদবৈদুশ্যকে।

শোণিত সমস্ত রত্নই ভক্ষণে মধুর, সারক, চকুর হিতকারক, শাতবীর্য ও বিষনাশক।
অঙ্গপৃত রত্ন-নজনজনক, মনোক্ত এবং গ্রহ-দোষ নাশক।

রবিগ্রহেণ প্রতীকারার্থ মাণিকা, সোম-থ্রহের প্রতীকার নিমিত্ত প্রজাত ও নির্মূল মুক্তাফল, মঙ্গলগ্রহের প্রতীকার নিমিত্ত প্রবাল, বৃষ্ণাহের সন্তোষার্থ পায়া, বৃহস্পতির সন্তোমার্থ প্রজাবার্গ, গুক্তের সন্তোমার্থ হীরক, শনিগ্রহের সন্তোমার্থ নিম্মল ইক্রনীলমণি, রাহ-গ্রহের সন্তোম নিমিত্ত গোমেদ এবং কেতৃগ্রহের সন্তোম কন্ত বৈদ্ব্য মণি ব্যবহার করিবে।

অথোপরত্রানাং নিরূপণম।

উপরত্নানি কাচল্চ কপুরাক্ষা তথৈব চ। মুক্তাশুক্তিত্বশা শহ্ম ইত্যাদীনি বহুক্তপি॥

কাচ, কর্পুরাশ্ম, মুক্তাগুক্তি ও শব্ধ প্রভৃতি অনেক প্রকার উপরত্ব আুছে।

শুণা যথৈব বন্ধানামুপরত্বেব্ তে তথা। কিন্ত কিঞ্চিৎ ততো হীনা নিশেবে ছয়মুদাক্ত ।

রত্বের যেরূপ গুণ বর্ণিত হইন্নাছে, উপ-রত্বেরও গুণ তজপ জানিবে। কিন্তু বিশেষ এই যে, রত্ন অপেকা উপরত্নে ঐ সকল গুণ কিছু ন্নভাবে অবস্থিতি করে।

অথ বিষাণি।

বিষয় গরলং কেন্তুওন্ত ভেদার্দাহরে। বংসনভাঃ সহারিত্র: সক্তুকক প্রদীপনা । সৌরাষ্ট্রিক: শুলিকক কালকুটন্তবৈব চ। হালাহনো প্রশ্নপুরো বিবজেদা অমী নব ।

বিষ, গরল ও ক্ষেড়, এইগুলি বিষের পর্য্যার। বিষ নয় প্রকার, যথা—বংসনাভ, হারিজ, সক্তুক, প্রদীপন, সোবাষ্ট্রিক, শৃঙ্গিক, কালকুট, হালাহল ও বন্ধপুত্র।

অথ বৎসনাভঃ।

সিকুবারমদৃক্পত্রো বৎসনাজ্যাকৃতিত্তথা। যৎপার্থে ন তরোর দ্বিবিৎসনাজ: স ভাবিত: ।

যে বিষর্ক্ষের পত্র নিসিন্দাপত্রের ভূল্য ও যাহার আকৃতি বাছুরের নাভির ক্সায় ছয় এবং যে বিষর্ক্ষের পাশ্ববর্তী মুক্ষদমূহ বৃদ্ধি প্রাপ্ত হয় না, তাহাকে বংসনাভ বিষ-ক্লা যায়।

অথ হারিদ্র:।

হরিক্র তুলামূলো বো হারিক্র: স উদাহ্বত: ॥

যে বিষর্কের মূল হরিজার মূল সদৃশ, ভাহার নাম হারিজ বিষ।

অথ সক্তুকঃ।

यम्थस्थः मङ्क्राकरेनव भूर्वप्रशः म मङ्कः ।

ৰে বিষর্কের গ্রন্থিনমূহ সক্তব্যুক্ত্ব্যু চূর্ণ পদার্থ ছারা পরিপূর্ণ থাকে, ভাহার নাম সক্তবুক।

व्यथ अमी भनः।

বৰ্ণতো লোহিতো ষ: ক্সাদ্ লীপ্তিমান্ দহনপ্ৰত:।
নহাদাহকর: প্ৰৈৰ্ধ: কৰিত: স অদীপন: ॥
যে বিষ রক্তবর্ণ, দীপ্তিশীল ও অধির আর প্রভারুক্ত এবং যাছ। সেধিত ইইলে অত্যন্ত দাহ উপস্থিত হয়, তাহাকে প্রদীপন বিষ বলে।

অথ সোরাষ্ট্রকঃ।

সুরাষ্ট্রবিষয়ে বঃ স্থাৎ স সৌরাষ্ট্রিক উচ্চতে ॥ সৌরাষ্ট্রিক বিষ স্মুরাষ্ট্র দেশে উৎপন্ন হয়।

অথ শুঙ্গিকঃ।

ৰশ্মিন্ গোশৃঙ্গকে বন্ধে ছক্ষং ভবতি লোহিতম্। স শৃঙ্গিক ইতি প্রোক্তো জব্যতব্বিশারদৈ:॥

জব্যতত্ত্বিশারদ্বীণ বলিয়া থাকেন—যে বিষ গোশৃঙ্গে বাধিলে সেই গাভীর হ্রগ্ধ রক্ত-বর্ণ হয়, তাহার নাম শৃক্ষিক বিষ।

অথ কালকুটঃ।

দেবাস্বরণে দেবৈর্হতক্ত পৃথুমালিন: । দৈতাক্ত ক্ষিরাজ্ঞাতক্তকরবর্থসন্ত্রিত: ॥ নির্বাস: কালকুটোহক্ত মুনিভি: পরিকীভিত: । স হি কেত্রে শুক্লবেরে কৌকণে মলরে ভবেৎ ॥

প্রবাদ আছে, দেব-দৈত্যের বৃদ্ধে দেবতা কর্ত্তক আহত পৃথুমালী দৈত্যের যে রক্ত পতিত হইয়াছিল, ঐ রক্ত হইতে অশ্বথর্কা-

ক্ষতি একটি বিষকৃক্ষ উৎপন্ন হয়, সেঁই বিষ-বৃক্ষের নির্য্যাসকে মূনিগণ কালকৃট বলিয়া থাকেন। উহা শৃঙ্গবের, কোকিণ ও মলম দেশে উৎপন্ন হয়।

অথ হালাহলঃ।

গোন্তনাভদলো শুচ্ছন্তালপত্রচ্ছদন্তপা। তেজসা বস্তু দক্রন্তে সমীপন্থা ক্রমাদয়ঃ। অসৌ হালাহলো জেয়ঃ কিছিন্ধায়াং হিমালয়ে। দক্ষিণাজিতটে দেশে কোকণেহপি চ জায়তে॥

যে বিষর্ক্ষের ফল জাক্ষা সদৃশ ও গুচ্ছা-কার এবং বাহার পত্র ভালপত্রবৎ, ধাহার তেজে নিকটস্থ রক্ষাদি সমস্ত দগ্ধ হইয়া ধার, তাহাকে হালাহল বিষ বলে। ইহা কিছিদ্ধা, হিমালয়, দক্ষিণ সমুদ্রের তীরভূমি এবং কোকণ প্রদেশে উৎপন্ন হয়।

অথ ব্ৰহ্মপুত্ৰঃ।

বর্ণতঃ কপিলো য: তাং তথা ভবতি সারতঃ।
ব্রহ্মপুত্রঃ স বিজ্ঞেয়ে জায়তে মলয়চলে ॥
ব্রাহ্মপা পাতৃরন্তের ক্রিয়ো লোহিতপ্রভঃ।
বৈতঃ পীতোংসিতঃ শুদ্রো বিব উক্তল্ড ক্রিয়ে: ॥
রসায়নে বিবং বিপ্রং ক্রিয়ে: দেহপৃষ্টয়ে।
বৈতং কুষ্ঠবিনাশায় শুদ্রং দন্তাবধায় হি ॥
বিবং প্রাণহরং প্রান্তের বিকালি চ।
আরেয়ং বাতককহন্বোগবাহি মলাবহম্ ॥
তদেব যুক্তিযুক্তর প্রাণদায়ি রসায়নন্।
বোগবাহি ত্রিদোবমং বংহণং বীযাবর্জনম্ ॥
বে মন্তর্পা বিবেহণ্ডকে তে স্থাহীনা বিশোধনাং।
তমাদ্বিবং প্রয়োগের শোধয়িছা প্রযোজয়ে ॥

ত্রস্বপুত্র নামক বিষর্ক্ষের বর্ণ এবং সার-ভাগ কপিলবর্ণ। উহা মলয় পর্মতে উৎপন্ন হইয়া থাকে।

জাতিতেদে এই বিষ চারিপ্রকার। যাহা পাঙ্রবর্ণ তাহা ব্রাহ্মণ, যাহা রক্তবর্ণ তাহা ক্ষত্রিয়, যাহা পীতবর্ণ তাহা বৈশ্র এবং যে বিষ কৃষ্ণবর্ণ ভাছা শৃত্তকাতি। তন্মধ্যে ব্রাহ্মণজাতীয় বিষ রসায়ন কার্য্যে, ক্ষত্রিয় শরীর-পোষণে ও বৈঞ কুষ্ণবিনাশনে প্রশন্ত।
শৃত্তজাতীয় বিষ প্রাণনাশক।

বিষ—প্রাণনাশক, ব্যবান্ধিগুণমুক্ত (অগ্রে উহার গুণ সমস্ত শরীরে ব্যাপ্ত হইয় পরে পরিপাক হয়), বিকাশিগুণান্বিত (ওজোধাতু শোষণানস্তর সন্ধিবন্ধনসমূহকে শিথিল করিয়া দেয়), অগ্রিগুণাধিক্যপ্রাদ, বাতয়, কফনাশক, বোগবাহী (যে জব্যের সহিত মিলিত হয়, তাহার গুণ গ্রহণ করে) এবং মন্ততাজনক। (তমোগুণাধিক্য প্রযুক্ত বৃদ্ধিবিনাশক)।

ঐ বিষ যদি বিবেচনার সহিত উপবৃক্ত মাত্রায় প্রযোজিত হয়, তাহা হইলে উহা প্রাণপ্রদ, রসায়ন, যোগবাহী, ত্রিদোষদ্প, পৃষ্টিকারক ও বীগ্যবর্জক হইয়া থাকে। অবিশুদ্ধ বিষের তীব্রতর যে সকল অনিষ্ট-জনক হগুল বর্ণিত হইয়াছে, শোধন করিলে তাহার বীগ্য কমিয়া যায়। অতএব বিষ প্রয়োগ করিতে হইলে শোধন করিয়া প্রয়োগ করা কর্ত্তব্য়।

. 4

অথায়ত্য।

নেপালগুলী নৈপালী চামূতং বিষনামকম্।
আমূতং তিজকটুকং মেজং মুক্রলমের চ ।
আগ্রেয় বেদনাম্মক সাদনং শূলনাশনম্।
অভিগাতরুজং হান্ত বীসর্পং কফছান্ গদান্ ॥
বাতজান্ নিথিলাংশ্চাপি সন্নিপাতোত্তবং অরম্।
আমবাতং মহাবোরং হুজোগমপি দারুপার্ ॥

মিঠাবিষ।

নেপালশৃঙ্গী, নৈপালী, অমৃত ও বিষ্বাচক
সমস্ত শব্দ মিঠাবিষের নামান্তর। মিঠাবিষ—
তিক্তকটুরস, স্বেদজনক, মূত্তকারক, আগ্নেয়,
বেদনানাশক, অবসাদক ও শূলনাশক।
ইহা দ্বারা অভিঘাতজ বেদনা, বীসপা, কফজ
ও বাতজ রোগসমূহ, সন্নিপাতজ জ্বা, উংকট
আমবাত ও দার্কণ জ্লোগ নই হইয়া থাকে।

অথোপবিষাণাৎ নিরূপণম।

खर्ककोतः च्होकोतः नाक्रनो कत्रवीत्रकः। खक्काहित्कता भृत्युतः मत्थाभविषकांच्यः॥

আকলের আটা, মনসাসিজের আটা, দ্বশলাঙ্গলা, করবী, কুঁচ, অহিফেন ও ধুস্ত,ুর এই সাতটি উপবিষ।

ইতি ধাতৃপধাতু-রসোপরস-রক্লোপরত্ন-বিষোপবিষবর্গঃ।

অথ ধান্যবৰ্গঃ।

অৰ পালিধান্ত ব্য লক্ষণম্। কজনন বিনা ভলা হৈবভা: লালয়: ছতা:।

বে সকল হৈমন্তিক ধান্ত কণ্ডন অর্থাৎ ছাঁটন ব্যতীভণ্ড ক্ষেত্রবর্ণ, তাহাদিগকে শালি ধান্ত কৰে।

অথ তেষাং গুণাঃ।

भागता मधुताः विका वन्ता वकाकक्रियः। क्यांत्रा नवत्य क्राः य्या वृद्याक वृद्ययाः। स्रतानितक्याः सेठाः शिष्ठश्च मुजनास्य।।

ना जिसर्कन खन ।

শালিবান্ত সমূত্—মধুব-কবার-বস, স্বিষ, বলকাবক, মলের কাঠিন্ত ও অরতা কাবক, লগুলাকী, ক্লডিকব, স্ববপ্রসাদক, গুক্রবর্জক, প্রিকারক, বাবু ও কলেব কিঞিং বর্জক, শীতবীর্বা, পিত্তনাশক ও মূত্রবর্জক।

অথ ব্ৰক্তশালেগু গাঃ ।

রক্তণালিবৰতের বর্জে বর্ণারিবোবজিং। চলুব্যো মূত্রলা বর্ণা শুক্রলতত্ত্ অবাগহ: । বিবরণধাসকাস-বাহ্দুদ্বকিপ্রক্রিন:। ভাষাক্রাজ্যতগা: শাস্ত্রকা মহদাদর:।

शांकेसभा नित्र खन ।

শালিগান্তের মধ্যে রক্তশালিগান্তই শ্রেষ্ঠ।
ইতা বলকারক, বর্গানাক, বিবোধনাশক,
চকুর হিচক্তর, মূরকার্যক, বর্গাক, তক্ত ক্রাক্ত, আছিলীপক ও পৃষ্টিকারক এবং ইহা পিথানা, অর্থ, বিবদোব, ত্রণ, খান, কান ও লাভ বিবারক। মহালালি প্রভৃতি থাক,
রক্তশালি অপিকা ক্রম ক্ষাক্তর।

ৰথ বৃত্তিকানাং লক্ষণং গুৰুষ্ট

গভন্থা এব বে পাকং খাজি'তে বাইকা মহাঃ। বাইকা মধুরাঃ শীতা কখনো বছনচ্চনঃ। বাতপিতপ্রশাসনাঃ শালিজিঃ নদুশা গুলৈঃ।

বৃষ্টিক ধান্তসমূহেব লক্ষণ ও খাণ ।
গর্ভক অবস্থাতেই ক্রেগ ধান্ত পক হর,
তাহাকে বৃষ্টিক ধান্ত কহে। ইহা মধুর্বস,
শীতবীর্ঘ্য, লঘু, মলবোধক, বাবু ও শিত্তমাশক
এবং ইহা শালিবাত্তের ভার আগবুক।

" অথ ষষ্টিকারা গুণা:।

ষষ্টকা প্ৰবরা তেবাং লক্ষ্ট বিন্ধা জিলাৰজিং। বাবী মুখী প্ৰাহিনী চ বললা অৱহারিক্ট। রক্তশালিগুণৈজন্যা ততঃ বলগুণাঃ পরে ।

বাটিধাক্তেব ৰুণ।

বৃষ্টিক-ধাক্সমৃত্ব মধ্যে বাটিনান্ত শ্রেও।
ইহা লগু, লিগু, ত্রিদোবনাশক, স্বান্ত, মৃত্ববিগ্য, মলসংগ্রাহক, বলপ্রদ, অবনাশক এবং
ইহা রক্তশালিব ভার শুলবুক। অভান্ত বৃষ্টিক
ধান্ত সকল ইহা অপেক্ষা অলগুল।

व्यथ भ्क्षाच्छनीः। व्यथे चरः।

ববং কথারো গঁগুরং পীতলো লেখনো বৃদ্ধং ।
রণের তিলবৎ পাখ্যো লাকেং নেখানিবর্তনং ।
কটুপাকেংনভিন্নতী অব্যো বলকরো ভলং ।
বছবাতমলো বর্গ-ছৈর্গকারী চ পিছিলং ৪
কিচ্ববান্যক্তমেদ-পিরনেদঃআপাদনং ।
পীন্সবানকাসোদ-ভক্ত লোহিতত্ত্তিপুৎ ॥
ববের প্রণা

য্ব—ক্ষার-মধুর-রস, শীক্ষুস, শোধন, এবজ্ঞ মন্ত্রীর্ড, প্রশারে ভিলেব ভার হিতকর, রুক্ষ, মেধা ও অগ্নিবর্দ্ধক, কটুবিপাক, অনভিষান্দী, স্বরপ্রসাদক, বলকারক, গুরু, বায়ু ও মলের অভিশয় বর্দ্ধক, বর্ণপ্রসাদক, শরীরের স্থিরভাসম্পাদক, পিচ্ছিল এবং ইহা কঠরোগ, চল্মনোগ, শ্লেষা, পিন্ত, মেদঃ, প্রীনস, শ্লাস, কাস, উব্লস্তম্ভ, রক্তদোষ ও ভুষ্ণা নাশক।

অগ গোধুমস্ম গুণাং !

পোধুনো মধুন শীতো বাতপিত্তরে গুরু । কক্তক্রপ্রদৌবল্য নিশ্বঃ সন্ধানকৎ সর । জীবনো বৃংহণো বর্ণো প্রণ্যোরচ্যঃ স্থিরস্কর্ও ॥ (কক্প্রদো নবীনো ন তু পুরাণঃ)।

গোধুমের গুণ।

গোধ্য—মধুররস, শীতবীর্য্য, বাতপিন্ত-নাশক, গুরু, কফজনক, শুক্রবর্দ্ধক, বল-কারক, সিগ্ধ, ভগ্নসন্ধানকারক, সারক, আয়ু-কর, পৃষ্টিকারক, বর্ণপ্রসাদক, ব্রণরোগে হিত কর, রুচিজনক এবং ইছা শরীরের স্থিরতা-সম্পাদক। (নৃতন গোধ্মই কফকারক, পুরাতন গোধ্য কফকর নহে)।

অথ মুদ্গান্ত তণাঃ।

ম্লো ক্লকো লঘুর্থ হি কম্পতিহরে। হিম:।
বাহরজানিলো নেত্রো জরছো,বনজন্তথা ॥
ম্লো বহুবিং ভামো হরিত: গীতকন্তথা।
বেতো রক্তন্ত তেবান্ত পূর্ব: পূর্বো লঘু: মৃত:।
হরকানিকরপাক্ত এব এব গুণাধিক:॥

মুগের গুণ i

মুদ্য — কৃক্ষ, লঘু, মলসংগ্রাহক, কৃষ্ণপিত্ত-হারক, শাতবার্য্য, মধুররস, অল্পবার্ব্দ্ধক, চক্ষুর হিতকপ ও জ্বনিঝাক। বনজ মুগও এইরপ ওপর্তা। শ্রাম, হদিত, পীত, খেত ও রক্তবর্ণ ভেদে নানা প্রকার মুগ আছে। ইহারা পূর্বাস্থক্যে লঘু অর্থাৎ রক্তবর্ণ মুগ অপেকা খেতবর্ণ মুগ লঘু, খেতবর্ণ মুগ অপেকা পীতবর্ণ মুগ লঘু ইত্যাদি। কিন্তু ক্ষশ্রত বলেন, হরিশ্ব মুগই সর্কাপেকা শ্রেষ্ঠ। চাকাদি মুনিগণেবও সেই।মত।

অথ মাষস্ত গুণাঃ।

মাবো শুক্ত স্বাধুপাক: স্বিন্ধো স্বচ্যোহনিলাপত:।
উক্ত সম্প্রপথো বলাঃ শুক্রনো বৃংহণঃ পরঃ॥
ভিন্নমূত্রমলঃ স্বক্ষো মেদঃপিত্তককপ্রদঃ।
শুদকীলান্দিত্বাস-পদ্ভিশুলানি নাশরেৎ।
কক্পিত্তকরা মাধাঃ ক্ষপিত্তকরং দ্বি।
কক্পিত্তকরা মংখা স্থাকং ক্ষপিত্তক্র।

মাষকলারের গুণ।

মাষকলার—গুরু, মধুরবিপাক, শ্লিগ্ধ, ক্লচিকারক, বায়ুনাশক, উষ্ণবীর্থ্য, ভৃপ্তিকর, বলকারক, শুক্রবর্দ্ধক, শরীরের অত্যন্ত উপচয়কারক, মলমুত্রনিঃদারক, স্বস্তবর্দ্ধক, মেদোজনক, কফ-পিত্তবর্দ্ধক এবং ইছা অর্শোবলি, অর্দ্ধিত, খাদ ও পরিণামশূল নাশক। মাষকলার, দিধি, বেগুল ও মংস্ত এই চারিটি দ্রব্যই কফপিত্ত-কারক।

অথ রাজমাষস্থ গুণাঃ।

রাজমাবো গুরুঃ স্বাহুপ্তবরন্তর্পণ: সর:। রুক্ষো বাতকরো রুচ্য অস্তো ভূরিবলপ্রদ:॥ বেতো রক্তন্তথা কুক্সিবিধ: সংপ্রকীর্তিত:। বো মহাংক্তের ভবতি স এবোক্তো গুণাধিক:॥

বরবটীর গুণ।

বরবটী—গুরু, মধুর-ক্ষার-রস, তৃপ্তি-কারক, সারক, রুক্ষ, বাতবর্দ্ধক, রুচিপ্রাদ, স্তম্মনক ও অতীব বলকারক। ইহা খেত, রক্ত ও ক্বফ ভেদে তিন প্রকার হয়। তাহার মধ্যে যে গুলির দানা বড়, সেই গুলিই উৎ-ক্তুই জানিবে।

অথ মদূরগুণাঃ।

মপুরো মধুরঃ পাকে সংগ্রাহী শীতলো লঘুঃ। ককপিন্তাশ্রজিদ্রুকো বাতলো জরনাশনঃ॥

মস্থরের গুণ।

মস্র-মধুরবিপাক, মলসংগ্রাহক, শীত-বীষ্যা, লঘু, ফক্ষ, বাতকর এবং ইহা কফ, পিও, রক্তদোষ ও জ্বরনাশক।

অথাতকীগুণাঃ ।

আঢ়কী তুবরা ককা মধুরা শীতলা লযুঃ। গ্রাহিণী বাতজননী বর্ণা। পিত্তকফাপ্রজিৎ॥

অড়হরের গুণ।

অড়হর—কধার-মধুর-রস, শতবীর্বা, রক্ষ, লথু, মলসংগ্রাহক, বার্ত্ত্রনক, বর্ণপ্রসাদক এবং পিত্ত, কফ ও রক্তগ্রষ্ট নাশক।

অথ চণকগুণাঃ।

চণক: শীতলো কক্ষা পিত্তরন্তককাপক:।
লঘু: কধারো বিষ্টপ্তী বাতলো এরনাশন:।
স চাক্ষারেশ সংভৃষ্টপ্তেলভৃষ্টশ্চ তদগুণা:।
আর্ক্রভুষ্টো বলকরো রোচনশ্চ প্রকীর্বিতঃ।
শুক্রভুষ্টোইতিকক্ষণ বাতকুষ্ঠপ্রকোপন:।
শ্বিল্প: পিত্তকক্ষং হস্তাৎ স্পাং ক্ষোভকরো মতা:।
আর্ক্রোইতিকোমনো কচা: পিত্তরক্ষহরো হিমা:।
কবারো বাতলো গ্রাহী কক্ষপিত্তরো লঘুঃ।

ছোলার ত্রপ।

ছোলা—শীতবীর্য্য, ক্লফ, লঘু, ক্ষার্র্য্য, বিষ্টম্ভী, বাতজনক এবং ইহা পিত্ত রক্তদোষ ক্ষ ও জ্বর নাশক। অঙ্গার্ভ্ট এবং তৈলভ্ট ছোলাও উক্তবিদ গুণার্ক্ত। ছোলা জলে ভিজাইয়া ভাজিলে বলকারক ও ক্লচিজনক হয়। গুকভর্জিত ছোলা অত্যন্ত ক্লফ, বাতপ্রকোপক ও কুঠজনক। সিদ্ধ ছোলা পিত্ত ও ক্ল নাশক। ছোলার হপ অর্থাৎ ভাল উদ্বের ক্লোভকারক। অপক ও ক্লোমলতর ছোলা—ক্লচিকারক, শীতবীর্য্য, ক্ষার্র্য্য, বায়ু-

বৰ্দ্ধক, মলসংগ্ৰাহক, লঘু এবং ইহা রক্তপিত্ত, কফ ও পিত্ত নাশক।

অধ কলায়গুণাঃ।

কলায়ে। মধুব: খাছু: পাকে ক্লক্ত শীতল: ॥

মটরের গুণ।

ম্টর—মধুব্বস, মধুর্বিপ।ক, রক্ষ ও শীত্রীয়া।

অথ ত্রিপুটগুণাঃ।

ত্রিপুটো মধুরন্তিকস্তররে। রক্ষণো ভূগন্। কক্ষপিত্ররের রুচ্চো গ্রাহক শীতেলন্তর। কিন্তু গঞ্জবপকুর-কারী বাতাতিকোপনঃ॥

খেলারীর ওপ।

থেদারী—মধুর-তিক্ত-ক্ষায়-রদ, অতীব কৃষ্ণ, ক্ফপিন্তনাশক, ক্রচিকারক, মলদংগ্রাহক ও শীতবীধ্য এবং ইহা ঋঞ্চা ও পঙ্গুতা কারক এবং অতান্ত বায়ুবর্দ্ধক।

অথ কুলখগুণাঃ।

কুলথঃ কটুকঃ পাকে কৰায়ঃ পিত্তরক্তকুৎ। লঘুৰ্বিদাহী বার্যোক্ষঃ স্বাসকাসকদানিলান্ । হস্তি হিকাশ্মরীশুক্ত-দাহান্ঃহান্ সপানসান্। বেদসংগ্রাহকো মেদো-জ্বক্রিমিহরঃ পরঃ।

কুলখ কলায়ের গুণ।

কুলথকলায়—কটুবিপাক, ক্ষায়রস, রক্ত-পিন্তকারক, লযু, বিদাহী, উষ্ণবীর্য্য, ঘর্মরোধক এবং ইহা শ্বাস, কাস, কফ, বায়ু, হিকা, অশ্যরী, শুক্র, দাহ, আনাহ, পীনস, মেনোরোগ, জর ও ক্রিমি নাশক।

অথ তিল্পেণাঃ

তিলো র**সে কটুন্তিন্তো** মধুরস্তবরো গুর':। বিপাকে কটুক: স্বা**ছ:** মিগোক: কফপিন্তনুৎ॥ বলাঃ কেন্তো হিমাপর্শবাচঃ জন্তো এণে হিতঃ।
দক্ত্যোহন্ধমূত্রকৃদ্ গ্রাহী বাতম্বোহয়িমতিপ্রদঃ॥
কৃষ্ণঃ শ্রেষ্ঠতমন্তের্ শুক্রলো মধ্যমঃ সিতঃ।
অত্যে হীনতরাঃ প্রোক্তান্তর ক্রৈ রক্তাদ্যন্তিলাঃ॥

তিলের গুণ।

তিল—কটু-তিক্ত-ক্যায়-মধুররস, গুরু, কটু
ও মধুরবিপাক, স্লিগ্ধ, উষ্ণবীর্ঘা, কফপিত্তনাশক, বলকর, কেশু, শীতলম্পর্শ, চর্মের
হিতকর, স্তম্ভবর্জক, ত্রণে হিতকর, দস্তের
দৃঢ়তাসম্পাদক, অস্তম্ক্রকারী, মলসংগ্রাহক,
বাতত্ম এবং অগ্নিকর ও বুদ্ধিপ্রদ। কৃষ্ণতিল
দুর্বাপেক্ষা শ্রেট, ইহা শুক্রকর। শুক্রতিল
মধ্যমগুণবৃক্ত। রক্তাদিবর্ণ তিল অপেক্ষাকৃত
অস্ত্রগুণবৃক্ত।

অথাতসীগুণাঃ।

অতসী মধুরা স্লিদ্ধা গুলী চোদন বলপ্রদা ।
পাকে কট্টী চ ভিক্তা চ কফবাত্রনাপহা ।
পৃষ্ঠশূলফ শোপফ পিত্রং গুলং দৃশং ওয়েং।
পর্ণমস্তাঃ কাসকফ-বাতন্ত্রদ্ বীজকং তথা ॥

মসিনার গুণ।

সদিনা—ভিক্ত-মধুব-রদ, স্থি, গুরু উষ্ণবীষ্য, বল এদ, ক টুবিপাক এবং এই কফ, বাত, পৃষ্ঠুল, শোগ, পিও, শুক্ত, নেএরোগ ও এণরোগ নাশক। এণে মদিনাপ পুল্টিদ্ দিশে বিশেষ উপকার দশে। মদিনাপত্র, কাদ, কফ ও বার্নাশক। মদিনাবীক্ষও উক্তপ্রকার গুণুষ্ক।

অথ সর্ধপগুণাঃ ৷

সর্বপঃ কটুকঃ মেহস্তম্ভক্ত কদমক: ।
গৌরস্ত্র সর্বপ: প্রাক্তেঃ সিদ্ধার্থ ইতি কপাটে ।
স্বশন্ত রুমে পাকে কটুঃ ব্রিক্ষঃ সতিক্তক: ।
তীলোক: কক্ষবাভ্রো রক্তপিভাগ্নিবর্জন: ॥
রক্ষেভ্রো জয়েৎ কভুং কুঠকোঠকিনিগ্রহান্ ।
বধা রক্তম্বা গৌরঃ কিন্তু গৌরো ব্রো মতঃ ॥

সরিষার গুণ।

সর্ঘপ, কটুক, স্নেছ, তন্তুভ ও কদম্বক এই গুলি সরিষার নাম। গৌরসর্ঘপকে পণ্ডিত-গণ সিন্ধার্থ কছেন। সর্ঘপ—তিক্ত-কটু-রস, কটুবিপাক, নিশ্ধ, তীক্ষ, উষ্ণবীর্ঘ্য, কফবাত-বিনাশক, রক্তপিত্ত ও অগ্নিবর্দ্ধক, রক্ষোম্ন এবং ইহা কণ্ডু, কুঠ, কোঠ, ক্রিমি ও গ্রহদোষ নাশক। রক্ত ও গৌর বর্ণভেদে সর্ঘপ ছিবিধ। উভয় সর্ঘপই প্রায় তুল্যগুণ, তবে রক্তসর্ঘপ আপেকা গৌরসর্ঘপ শ্রেষ্ঠ।

অথ রাজিকগ্রিণাঃ।

রাজী তু রাজিকা তীক্ষ-পঞ্চা কুজ্ঞনিকান্ত্রী।
কবং কুতাভিজনকং ক্রিমিংৎ কুফসর্বপং॥
রাজিকা কফপিত্তন্ত্বী তীক্ষোকা রক্তপিত্তক্তং।
কিঞ্চিক্ষানা হলেৎ।
অতিতীক্ষা বিশেষেণ তথৎ সকাপি রাজিকা।

রাইসর্যপের গুণ।

রাজী, রাজিকা, তীক্ষগন্ধা, কুজ্জনিকা ও
আহ্বরী, এইগুলি রাইস্বর্ধের এবং কব, কুতাভিজনক, ক্রিমিহৃৎ ও ক্রফ্সর্বপ এইগুলি ক্রক্ষবর্ণ রাইস্বর্ধপেন নাম। রাইস্বর্ধপ—কফপিত্তয়ন্তর্কারক, কিঞ্চিৎ ক্রক্ষ্ণ, ক্রিপানক এবং ইহা কণ্ডু, কুঠ, কোঠ ও ক্রিমি নিবাবক। ক্রফ্সর্বপাও উত্বিধ গুণন্ত, বিশেষত ইহা অতিতীক্ষ।

অথ নূতন-পুরাতন-ধান্ত-যব-গোধুমাদীনাং গুণাঃ।

ধান্তং সকাং নবং স্বাহ গুরু প্রেম্মকরং স্থতম্।
তৎ তু বংবাদিতং পণ্যং যতো লঘুতরং হি তৎ ॥
বংবাদিতং সক্ষান্তং গৌরবং পরিমুক্তি।
নতু ভাজতি বীগ্যং বং ক্ষান্মুক্ততেং পরম্ ॥
এতেমু যবগোধুম-তিলমায়া নবা হিতাং।
পুরাণা বিরমা ক্ষান তথাগুণকারিশঃ॥

(পুরাণা বর্ষদাছপরি-স্থিতা: । ববাদরো নবা: স্বস্থান্ প্রতি হিতা: । পথ্যাশিনান্ত পুরাণা হিতা: ।)

> নৃতন ও পুরাতন ধান্ত, যব ও গোধ্ম-প্রভৃতির ঋণ।

ন্তন ধাঞ্চ মধুররস, শুরু ও শ্লেমকর।
সংবৎসরোধিত ধাঞ্চ লঘু ছয় বলিয়া স্পথা।
সকল ধাঞ্চই একবংসরের পুরাতন হইলে
গুরুত্ব পরিত্যাগ করে, কিন্তু নিজ বীর্য্য পরিত্যাগ করে না। একবংসরের পর ক্রমশঃ
বীর্যা ত্যাগ করিতে থাকে।

যব, গোধুম, তিল ও মাষকলায় নৃতন হিতকর, প্রাণ অর্থাৎ চুই বৎসর অতিক্রম করিলে বিরস ও কৃক্ষ হয় এবং পূর্ব্বিৎ গুণ থাকে না। (নৃতন যব-গোধ্মাদি স্ফুদেহী ব্যক্তির এবং প্রাতন যবগোধ্মাদি পথ্য-ভোজিদিগের পক্ষে প্রশস্ত)।

অথ:কুদ্রধান্যন্।

কুমধান্তঃ কুথান্তক তৃণধান্তমিতি শ্বতম্। কুমধান্তমন্ত্ৰাং তাৎ কৰান্তঃ বাযু লেখনম্॥ মধুনং কটুকং পাকে ককক ক্লেক্লেৰকম্। বাতকুদ্ বন্ধবিটকক পিত্ৰসক্তকদাপহম্॥

ক্দুগান্ত, ক্বান্ত ও ত্ণধান্ত, এই তিনটি একাথবাচক শব্দ । ক্দুদ্ধান্ত—ঈষহ্বদ, ক্ষান্ত্ৰমর্ব ব্দ, কটুবিগাক, লালু, লেখনগুলগুক্ত,
কক্ষ, ক্লেদশোসক, বায়ুবৰ্দ্ধক, মলবোধক এবং
পিত্ত, বক্ত ও কক্ষ নাশক।

অথ কঙ্গুঃ।

ত্তিয়াং কন্মূপ্রিয়ন্ধু ৰে কৃষ্ণা রক্তা দিওা তথা। পীতা চতুৰিধা কন্মুন্তাদাং পীতা বরা স্থতা। কন্মূন্ত ভয়সন্ধান-বাতকুদ্বংহলী গুলং। রাক্ষা প্রেমহরাতীব বাজিলাং গুণকুদ্ভূণন্॥ काड्नीशन वा काड्नीमाना।

কঙ্গুণান্ত চারি প্রকার, যথা—কৃষণ, রক্ত, খেত ও পীত। ইহাদের মধ্যে পীতবর্ণ কঙ্গুই শ্রেষ্ঠ। প্রিয়ঙ্গু ও কঙ্গু এই ছুইটী ইহার পর্য্যায়।

কাও নীদানা—ভগ্নহানের সংযোজক, বাত-জনক, বৃংহণ, গুরুপাক, কুক্ষ, অভিশয় শ্লেম-নাশক ও অশ্বগণের বিশেষ হিতকর।

অথ শ্রামা।

শ্রাম'কঃ শোষণো ক্লকো বাতলঃ কফ্পিওছং ॥ শ্রামা ধান ।

ইহা শোষণ, রক্ষ, বাতজনক ও কফ-পিত্রনাশক।

অথ কেদেবঃ।

কোন্তৰ: কোন্তদ্ব স্থাকুদ্বালো বনকোন্তৰ:। কোন্তবো বাতলো গ্ৰাহী হিম: পিত্তককাপহ:। উদ্দালন্ত্ৰ ভবেদ্বশো গ্ৰাহী বাতকরো ভূশম্॥

কোদো ধান্ত।

কোদ্রব ও কোরদ্ধ এই ছুইটী কোদো-ধানের এবং উদ্দাল ও বনকোদ্রব এই ছুইটী বনজ কোদোধান্তের নামান্তর। কোদো ধান্ত— বাজজনক, সংগ্রাহী, শাতল ও পিত্ত-কফনাশক। বনজ কোদ্রং—উষ্ণবীধ্য, গ্রাহী এবং অত্যস্ত বাজজনক।

অথ প্রনালঃ।

শবনালো হিমা স্বান্ধ-লোহিতঃ খেমপিওজিৎ। অব্যান্তৰরো ক্ষম রেপকৃৎ কবিতো লঘুঃ। দেশান বা জনার।

ইহা শীতণ ও মধুর-ক্যায়-রস, লোহিত-বর্ণ, শ্লেম-পিতনাশক, অব্ধ্য, কক্ষ, ক্লেদ-জনক ও লগু।

ইতি বান্তবৰ্গঃ॥

অথ শাকবৰ্গঃ।

অথ শাকানাং গুণাঃ।

প্রায়: শাকানি সর্বাণি বিষ্টজীনি গুরুণি চ।
ক্লকাণি বহবর্চাংসি স্টাবিশ্বাকাননি চ।
শাকং ভিনন্তি বপুরন্থি নিহন্তি নেত্রং
বর্ণং বিনাশরতি রক্তমধাপি শুক্রম্।
প্রজ্ঞাক্ষর্ক কুক্তে প্রভিত্তক নৃনং
হন্তি স্থাতং গভিনিতি প্রবন্ধতি তল জাঃ ।
শাকেরু সর্বেষ্ বৃষ্টি রোগা-

শাকেৰু সক্ষেত্ৰ বসাও বোগা-তে হেতবো দেহবিনাশনায়। তত্মাদ্ব্ধ: শাকবিবৰ্জন ও কুয়াং তথায়েযু স এব দোব:॥

শাকের সাধারণ গুণ।

প্রায় সমস্ত শাকই বিঠন্তী, গুরু, রুক্ষ, অতিশয় মলজনক এবং মল ও বারু নিঃসারক। শাক শরীর ও অস্থি নাশ করে, নেত্র, বর্ণ, রক্ত, গুক্তন, প্রজ্ঞা, প্রতি ও গতি বিনষ্ট করে। এবং ইছা অকালে বার্দ্ধক্য জন্মাইয়া থাকে। শাকে সমস্ত রোগ বাদ করে, স্মৃতরাং ইহা শরীর বিনাশের হেতু, অতএব স্থবৃদ্ধি ব্যক্তিশাক পরিত্যাগ করিবেন। অমেও প্রায় এই সকল দোব বর্ত্তমান থাকে।

অথ বাস্ত কৰ্মস্য গুণাঃ।

বান্ত,কৰিত্যং স্বান্ত ক্ষারং পাকে কটুদিতন্। দীপনং পাচনং স্কচাং লয়ু গুক্রবনপ্রদন্। সরং প্লীহাশ্রপিন্তার্শানক্ষিদোবত্তরাপহন ॥

বেতো শাকের গুণ।
বেতো শাক ছই প্রকার, উজ্ঞা প্রকার বেতো শাকই—মধুররদ, কারব্জু, কটু-বিপাক, অগ্নি-প্রদীপক, পাচক, ক্রচিপ্রদ, গলু, শুক্র ও বলকারক, দারক এবং ইছা শ্লীহা, রক্তপিত্ত, অর্শাং, ক্রিনি ও ক্রিদোয় নাশক।

অথ পোতকীগুণাঃ।

পোতকী শীতনা মিদ্ধা ধেমনা নংত্রপিত্তমুৎ। অকঠ্যা পিচ্ছিলা নিদ্রাগুক্রনা রম্ভপিত্তমিৎ। বলদা রাচকুৎ পশ্যা বৃংহণী ভৃপ্তিকারিশী॥

পুঁইশাকের গুণ।

পুইশাক—শীত্রীর্যা, স্পিন্ধ, শ্রেষ্কর, বাষ্ ও পিত্র নাশক, কণ্ঠের অহিতকর, পিচ্ছিল, নিদ্রাজনক, শুক্রবিদ্ধক, রক্তপিত্তনাশক, বলকর, ক্লচিগ্রাদ, স্থাথা, পৃষ্টিকারক ও তৃথিজনক।

অথ তণ্ডুলীয়গুণাঃ।

তপুলীয়ো লঘু: শীতো রুক্ষঃ পিডকফাশ্রজিৎ। স্ষ্টমূত্রমলো রুচ্যো দীপনো বিষহারক:॥

চাপানটে শাকের গুণ।

চাপানটে—লঘু, দাঁতবার্থা, রুক্ষ, মলমূত্র-প্রবর্ত্তক, রুচিকর, অগ্নিপ্রদীপক এবং ইহা পিত্ত, কফ, রব্রুছাই ও বিষ নাশক।

অথ পালক্যা গুণাঃ ৷

পালজা বাতলা শীলা প্লেমনা ভেদিনী গুরুন। বিষ্টুন্তিনী মদখাস-পিছরজুবিবাপহা ॥

পালও শাকের গুণ।

পালঙ্শাক—বা তজনক, দী ত্রীধ্য, দোম-কর, ভেদক, শুরু, বিইন্তী এবং ইছা মদরোগ, শ্বাস, রক্তপিও ও বিষদোধ বিনাশক।

অথ কালশাকগুণাঃ।

নাড়িকং কালশাকক আদ্ধাকিক কালকম্। কালশাকং সরং ক্ষচাং বাতকুৎ কফশোধহৎ। বল্যাং ক্ষচিকরং মেধ্যং রক্তপিত্তরং হিমম্॥

ক বিশাকের গুণ।

নাড়িক, আদ্ধাক ও কালক এই তিনটি কালশাকের প্রায়ে। কালশাক—মশানির প্রবর্ত্তক, ক্ষচিকর, বায়ুজনক, কৃষ্ণ ও শোথ নাশক, বলকারক, মেধার্দ্ধিকর, রক্তপিত-নাশক ও শীতবীর্যা।

অথ পট্টশাকগুণাঃ।

নাড়ীকো রক্তপিত্তয়ো বিষ্টুন্তী নাতকোপন: । পাটশাক—রক্তপিতনাশক, বিষ্টুন্তী বাতপ্রকোপক।

অথ কলস্বীগুণাঃ।

কলখী **তথ্যনা** প্রোক্তা মধুরা গুজকারিনী।
কলমী শাকের গুণ।
কলমীশাক—শুনত্ত্বাজনক, মধুররস ও

অথ লোণীরহল্লোণীগুণাঃ।

লোণী ককা স্থাও ধবাঁ ব্যতপ্রেম্বরী পট়্।
আর্লোম্বী দীপনী চামা মন্দায়িবিবনাশিনী ॥
ঘোটকারা সরা চোকা বাতকুৎ ককপিন্তন্তং।
কগ্লোবরণঞ্জন্মী বাসকাসপ্রমেক্স্থ।
শোধলোচনরোগে চ বিতা তক্তিক্রনাল্ডা॥

ছোট ও বড় মূলে শাকের গুণ। ছোট মূলে—কৃক, গুরু, অগ্নিনীপক, অন্ধ-রস, লবণাস্থাদ এবং ইছা অর্শোরোগ, বায়ু, শ্লেম্মা, অগ্নিমান্দ্য ও বিষদোষ নাশক।

বড় লুণে,—অমান, সারক, উঞ্চবীর্যা, বাতবর্দ্ধক এবং ইহা শোথ ও নেত্ররোগে হিতকর। ইহা ধারা কফ, পিত, চর্মরোগ, ত্রণ, গুল্ম, শাস, কাস ও প্রমেহ রোগের শান্তি হয়।

অথ চাঙ্গেরীগুণাঃ

চাজেরী দীপনী কলা ক্লোকা ক্কবাত্ত্ৎ। শিবলায়া গ্রহণশি-প্রতিসারনাশিনী॥

আমক্রের গুণ।

আমরুল—অগ্নিদীপক, রুচিকর, রুক্ষ, উষ্ণবীর্য্য, পিত্তকর, অমুরস এবং ইহা কন্ষ, বাত, গ্রহণী, অর্শঃ, কুঠ ও অতিসার নিবারক।

অথ চুক্রাগুণাঃ।

চুকা ওয়তরা স্বাধী বাতস্থী কফপিওকুং।
কল্যা লঘুতরা পাকে বৃস্তাকেনাতিরোচনী।
চকাপালভের গুলা।

চুকাপালঙ্— অত্যয়-মধুর-রস, বাতম্ব, কফ ও পিত্তকারক, রুচিপ্রদ ও লঘুপাক। ইহা বেগুণের সহিত পাক করিলে বিশেষ ফুচি-জনক হয়।

অথ হিলমোচিকাগুণাঃ।

শোধং কুঠং কফং পিত্তং হরতে হিলমোচিকা।
হেলেঞ্চাশাক—শোথ, কুঠ, কফ ও পিত্ত
নাশক।

অথ স্থানিষগগুণাঃ।

লাকো জলাখিতে দেশে চডুপ্পত্রীতি চোচ্যতে। স্থনিবরো হিমো এংহী মেদোদোষত্ররাপহ:॥ অবিদাহী লঘু: খাহু: কবারো ক্লফ্টপন:। বুবো কচ্যো অৱবাস-মেহকুটঅমপ্রবৃৎ॥

স্বাণিশাকের গুণ।

স্মৃণিশাক—সজল প্রদেশে উৎপন্ন হয়। ইহার চারিটি দল, ডক্ষক্স ইহাকে চতুস্থলী বলে । স্বৰূণি—শীতবীর্য্য, মলসংগ্রাহক, অবি-দাহী, লঘু, ক্ষার-মধুর-রস, ক্লক, অগ্নিদীপক, বীর্যাকারক, ক্রচিপ্রদ এবং ইহা মেদোবোগ, ত্রিদোষ, জ্বর, খাস, মেহ, কুষ্ঠ ও ভ্রম নিবারক।

অথ দূলকপত্রগুণাঃ ।

शांत्रनः तम् क्रात्रांकः शकः मृतकः नरम् । त्यद्गिकः जिलांगव्यमिकः कष्शिखदुः ॥

মুলার পত্রের গুণ।

মূলার ন্তন পত্র—পাচক, লঘু, ক্লচিকর ও উষ্ণবীর্য। ইহা তৈলাদি স্নেহের সহিত সম্যক্রপে পাক করা হইলে ত্রিদোষনাশক, কিন্তু সিদ্ধ না হইলে ক্ফপিত্বর্দ্ধিক হয়।

অথ যবানীশাকগুণাঃ।

যবানীশাক্ষাশ্বেরং রুচ্যং বাতক্ষপ্রণুৎ। উষ্ণং কটু চ ভিক্তঞ্চ পিত্তলং লঘু শূনকৃৎ॥

যোরান শাকের গুণ।

যোমান শাক—অগ্নির্ছিকর, রুচিকর, বার্ ও কফ নাশক, উষ্ণবীধ্য, কটু-তিক্ত-রস, লঘু, পিন্তর্দ্ধিকর ও শূলজনক।

অথ পটোলপত্রগুণাঃ।

পটোরপতাং পিত্তম্বং দীপনং পাচনং রুঘু। ক্রিদ্ধং বুবাং তথোকক অরকাসক্রিমিপ্রগুৎ ॥

পলতার গুণ।

পল্তা-পিত্তনাশক, অগ্নিনীপক, পাচক, লঘু, প্লিশ্ব, শুক্রকর, উষ্ণবীর্য্য এবং ইহা জ্বর, কাস ও ক্রিমিরোগ নিবারক।

व्यथ काममर्मक्षाः।

কাসমৰ্দদলং ক্লচাং ব্ৰাং কাসবিধাশ্ৰমুৎ। মধুরং কফবাতন্তং পাচনং কঠলোধনম্। বিশেষতঃ কাসহরং পি**তন্ত**্রাধকং লঘু॥

কালকাসিন্দের গুণ।

কাসমদ্দ পত্র—ক্ষতিজনক, বৃষ্য এবং কাস, বিষণোস, রক্তর্ষ্টি, কফ ও বাষুব শাস্তি কারক। ইহা পাচক, মধুবরস, কণ্ঠশোধক, সংগ্রাহী ও লঘু এবং বিশেষতঃ কাস ও পিত্তর্ষ্টি নাশক।

অথ চণকশাকগুণাঃ।

ক্লচ্য° চণকশাৰং সাাণ্ড্ৰব্জরং কদবাতক্ৎ। অম° বিষ্টম্পনকং পিতিসুদপ্তশোধহ্বৎ॥

ছোলাশাকের গুণ।

ছোলাশাক—ক্রচিপ্রদ, ছম্পাচা, কফ-বাতবৰ্দ্ধক, অন্নরদ, বিষ্টম্বী এবং ইহা পিত্ত ও দক্তশোপ নিবারক।

অথ কলায়শাকগুণাঃ ৷

কলায়শাকং ভেদি স্থালগু তিক্তং ত্রিদোষ্ডিৎ ।

মটরশাকের গুণ।

মটরশাক—ভেদক, লঘু, তিজ্ঞারস ও ত্রিদোষ নাশক।

অথ সর্বপশাকগুণাঃ ৷

কটুকং সাৰ্ধপং শাকং বছমুত্ৰমলং গুৰু। অমুপাকং বিদাহি স্তামুক্তং ক্লক্ষং ত্ৰিদোৰ্যজ্ঞিৎ। সক্ষারং লবণং তীক্ষং স্থান্ধ শাকেষু নিন্দিত্য ॥

সর্থপশাক—ঈষং ক্ষারমৃক্ত লবণ-কটু-মধুর-রস, মলমূত্রবর্দ্ধক, গুলু, অন্নবিপাক, বিদাহী, উষ্ণবীর্য্য, কক্ষ, তিদোষনাশক ও ভীক্ষবীর্যা। ইহা সমস্ত শাক হইতে নিক্ষ্ট।

অথ ভদ্রবল্লাগুণাঃ।

জনবলী শীতভাক্তপূ মিমণ্ডোহইপাদিকা। ত্ৰণং তথাসকং নাডী-ত্ৰণমেধা বিনালক্তে।

হাপরমালীর গুণ।

ভদ্রবন্ধী, শীতভীক্ষ, ভূমিমগুও অইপাদিকা এইগুলি হাপরমালীর পর্য্যায়। হাপরমালী— ভয়, ক্ষত ও নাড়ীরণে প্রযুক্ত হয়।

অথ হস্তিশুণ্ডীগুণাঃ।

হত্তিনী হত্তিগুণ্ডী চ গুণ্ডী ধুসরপত্রিকা। গুণ্ডী কট্টী তথোকা চ সন্নিপাতব্যৱস্তুৎ ॥

হাতীওঁডার গুণ।

হ**ন্থিনী, হত্তিকতী, গুণ্ডী ও পুদরপত্রিকা,** এই **গুলি হাতীওঁ** ড়ার পর্য্যায়। হাতীওঁড়া— কটু, উষ্ণ ও সমিপাতজ্জনাশক।

অথ মুক্তবর্চ্চোগুণাঃ।

মুক্তবর্চান্তথা রুজা বান্তিক্চ বিরেচনী।
কাসধাসগর্মী চ জরহাৎ কফবাতমুৎ ।
এতজাঃ স্বরুসঃ পীতঃ কফোৎসারী চ বামনঃ।
পায়ুলেপারলোৎসারী ক্ষো বালের যুক্তাতে ॥
মুক্তব্যী, মুক্তব্যী বা বিভালহাঁচির গুল।

মুক্তবচ্চা ও কজা এই হুইটি মুক্তবর্ষীর
পর্য্যায়। মুক্তবর্ষী—বমনকারক, বিরেচক ও
বাতলেমনাশক। ইহা কান, খান, জর ও
বিষরোগে গুষুক্ত হয়। ইহার রস পান
করিলে কফ নির্গত ও বমন হইয়া থাকে।
মুক্তবর্ষী বাটিয়া গুঞ্দেশে লেপন করিলে
বিরেচন হয়। শিশুদের পক্ষে ইহা বিশেষ
হিতকর।

অথাগন্তিপুষ্পস্ত গুণাঃ।

অগন্তিকুহুমং শীতং চতুর্থকনিবারণম্। নক্তাক্যনাশনং তিক্তং ক্যারং কটুপাকি চ। শীনসঙ্গোদিভন্নং বাতন্তং মুনিভিম তমু॥

বৈকপ্লের গুণ। বকপ্ল—শীভবীর্ঘ্য, চতুর্থক জ্বরনাশক, রাজ্যাদ্য্য-(রাভ্যকাণা)-নিবারক, তিজ্ঞ-ক্ষার রস, কটুবিপাক এবং ইহা পীনস, শ্লেমা, পিত্ত ও বাত প্রমশক।

অথ কদলীপুষ্পগুণাঃ।

কদল্যা: কুসুমং স্লিক্ষং মধুরং ভূবরং গুরু। বাতপিত্তহরং শীতং রক্তপিতক্ষরপ্রপুৎ ॥

যোচার গুণ।

মোচা— স্বিদ্ধ, মধুর-কথার-রস, গুরু, শীতবীর্ঘ্য এবং ইহা বায়, পিন্ত, রক্তপিন্ত ও ক্ষয় বিনাশক।

অথ শোভাঞ্জনপুষ্পগুণাঃ।

শিগোঃ পূপান্ত কটুকং তীক্ষোকং স্নায়্শোপকৃৎ। ক্ৰিমিক্ত কফৰাতন্ত্ৰং বিজ্ঞানীকগুলালিত। মধলিগ্ৰোক্তনিভিতং রক্তপিত্রপ্রসাদনম ॥

শজিনাপুষ্পের গুণ।

শজিনাপূষ্প—কটুরদ, তীক্ষ, উষ্ণবীর্ষ্য, স্নায়ুশোথকারক এবং ইহা ক্রিমি, কফ, বায়ু, বিজমি, স্নাহা ও গুলা নিবারক।

রক্তণজিনাপুপা—চকুণ হিতকর এবং রক্তপিতেরও প্রসাদক।

অথ কুষাগুগুণাঃ।

কুমাওং বৃংহণং বৃষ্যং গুরু পিতাত্রবাতত্বং। বালং পিত্তাপহং শীতং মধ্যমং কককারকম্॥ বৃদ্ধং নাতিহিমং বাহু সক্ষারং দীপনং লঘু। বৃদ্ধিগুদ্ধিকরং চেতো-রোগন্ধং সর্বদোর্ঘিও॥

কুম্ড়ার গুণ।

কুম্ড়া—পৃষ্টিকারক, শুক্রবর্দ্ধক, শুকু এবং ইহা রক্ষপিত ও বার নাশক। কচিকুম্ড়া— পিত্তনাশক ও শীতবীর্যা। মধ্যম (মাঝারি) কুম্ড়া,—কফকারক। পক কুম্ড়া—নাতি-শীতল, সক্ষার-মধুররস, অধিনীপক, লঘু, বস্তিশোধক এবং চিত্তবিক্তি ও সর্বাদোধ-প্রশমক।

অথালাবগুণাঃ।

মিষ্টং তৃষীকলং হস্তাং পিতন্তেমাপহং ভক্ষ। বৃষাং কৃতিকলং প্রোক্তং খাতুপুটিবিবর্কনিষ্ ।

লাউদ্ধের গুণ।

লাউ—মধুররস, হত্ত, গুরু, গুরুকারক, ক্লচিপ্রদ, ধাতু ও পৃষ্টিবর্দ্ধক এবং ইছা পিন্ত-শ্লেমনাশক।

অথ কুটুতুষী।

ইক্ষাক: কট্তৃৰী ভাৎ সা তৃষী চ মহাকলা। কট্তৃৰী হিমাহকভা পিত্ৰকাসবিবাপহা। শিক্তা কটবিশাকা চ বাতপিত্ৰজ্বান্তক্ৎ॥

তিত্লাউয়ের গুণ।

ইক্ষ্বাকু, কটুতুখী, তুখী ও মহাফলা, এই ক্ষেকটি ভিতলাউয়ের সংস্কৃত নাম। ভিতলাউন্দের সংস্কৃত নাম। ভিতলাউ—শীক্তবীর্যা, অক্রচিকারক, তিক্তরস, কটুবিপাক এবং ইহা পিত, কাস, বিষ, বাষু ও পিত্তক্র বিনাশক।

অথ কর্কটীগুণাঃ।

কর্কটী শীতলা রক্ষা গ্রাহিণী মধুরা ওক্ষ:। রুচ্যা পিত্তহরা সামা পথা তৃষ্ণাগ্রিপিতরৎ ॥

বড় কাঁকুড়ের গুণ।

অপক বড় কাকুড়— নীতল, রক্ষ, মল-সংগ্রাহক, নধুররস, গুরু, রুচিপ্রদ ও পিত্ত-নাশক। পাকা কাকুড়— ভ্যান, পিত্ত ও অধিকারক।

অথ চিচিগুঞ্গাঃ।

চিচিতো বাতপিভয়ো বল্যঃ পথ্যো ক্লচিপ্রদঃ। শোবিণেহতিহিতঃ কিঞ্চিত্তবৈদ্যানঃ পটোলতঃ॥

চিচিকের হণ।

চিচিঙ্গে ফল—বাতপিত্তনাশক, বলকারক, পথ্য ও রুচিপ্রদ। ইহা শোষরোগির পক্ষে অত্যক্ত হিতকর। চিচিঙ্গে পটোল অপেক্ষা অৱস্থেণযুক্ত।

व्यथं कांत्रत्वस्थाः।

কারবেলং ছিমং ভেদি লঘু ভিজ্ঞমবাতলম্। অরপিডককাশ্রমং পাঙ্মেহজিমীন্ হরেং। তম্তণা কারবেলী ভাষিপেৰাদীপনী লঘুঃ।

করোলা ও উচ্ছের গুণ।

করোলা—শীতবীর্য্য, ভেদক, লবু, তিজ্ঞ এবং ইহা জর, পিন্ত, কফ, রক্ত পাণ্ণ, মেহ ও ক্রিমি নাশক। ইহা বাতকারক নহে। উদ্ভেব গুণ করোলার ন্তান্ন, বিশেষতঃ ইহা অগ্নি-দীপক ও লবু।

অথ মহাকোশাতকী।

মহাকোণাতকী প্রোক্তা হতিযোগা মহাকলা। ধামার্গবো ঘোষকক হতিপর্শক স স্মৃতঃ। মহাকোশাতকী নিশ্বা রক্তপিতানিলাপহা ।

धूं धूरनत खन।

মহাকোশাতকী, হস্তিঘোষা, মহাফলা, ধামার্গব, ঘোষক ও হস্তিপর্গ, এই কয়েকটি মহাকোশাতকীর নাম। মহাকোশাতকী— স্থিয় এবং বক্তপিত ও বায়ু নাশক।

অথ ধামার্গবঞ্জনাঃ ।

রাজকোশাতকী শীতা মধুরা কঁফবাতলা। পিরন্ত্রী দীপনী বাস-অরকাসক্রিমিপ্রগৃৎ ॥

(चांयांकरलत (विकात) छन।

বিক্সা—শীতল, মধুররস, কফবাতকারক, পিত্তনাশক, অগ্নিদীপক এবং ইহা খাস, অর, কাস ও ক্রিমি নিবারক।

व्यथ भटोन्यभाः।

পটোলং পাচনং কৃষ্ণং বৃষাং লব মিদীপনস্। বিষয়োকং হন্তি কাসাত্র-অরদোবত্রমক্রিমীন্। পটোলক্ত ভবেমূলং বিরেচনকরং ক্রবাং। নালং প্লেমহরং পত্রং শিতহারি কলং পুনঃ। : দোবত্রমহরং প্রেক্তং তবং তিক্তা পটোলিকা।

পটোলের গুণ ৷

পটোল—পাচক, হল্ক, শুক্রকারক, গল্প, অমিদীপক, মিঝা, উন্ধ্ববিদ্য এবং ইহা কাস, রক্তনোব, জ্বর, ক্রিমি ও জিদোব নাশক। ইহার মূল উৎক্লন্ত বিবেচক, নাল (ওাটা)— কক্ষম এবং পত্র—পিত্রনাশক ও কলা (পটোল) ত্রিদোবম। ভিত্রপটোলিকাও উক্তবিধ গুশবুক্ত।

অথ বিশ্বীফলগুণাঃ ৷

বিশ্বীকলং স্বাভূ শীতং গুলু পিত্তাপ্রবাত্তিও। স্তম্ভনং লেখনং স্কুচাং বিবন্ধাধ্যাধ্যকারকম্ ।

কুন্দুরুকীর গুণ।
বিদ্যাদল—মধুবরদ, শাত্রীগা, গুরু,
বক্তপিত্তপ্রশমক, বাযুনাশক, গুজ্ঞনকাবক,
বেশ্বন, কুচিপ্রদ এবং বিবন্ধ ও আগ্নান কারক।

অগ শিষ্ঠাগুণাঃ।

শিশ্বীদ্বরক মধুরং রমে পাকে হিমং গুরু। বঙ্গাং দাহকরং প্রোক্তং লেম্বনং বাতপিস্তুজিৎ ।

শিমেব গুণ।

শিন—ছুই প্রকার। এই ছিবিধ শিমই আশ্বাদে ও পাকে মধুর্বস। শিম—শীতবীর্য্য, গুরু, কলকারক, দাহজনক, শ্লেমবর্দ্ধক ও বাঙপিত্তনাশক।

অগ রশ্চিকালীগুণাঃ।

বৃশ্চিকালী বৃশ্চিপত্ৰী বিষয়ী নাগদন্তিকা। দৰ্পদংগ্ৰামৰা কালী চেট্ৰপুনৰপুট্ছিকা। কট্ৰী ভিক্তা বৃশ্চিকালী হাণ্বক্ত,পরিশোধিনী। নলকুত্ৰন্ত্ৰপাত্ত্বা কাসবাসপ্ৰণাশিনী। বিষয়ী বোচনী বৃহ্নিশাকুক্ত্বৰাশিনী।

বিছুটার গুণ।

্র্নিচকালী, বৃশ্চিপত্রী, বিষন্নী, নাগদন্তিকা, সপদংষ্ট্রা, অমবা, কালী ও উদ্ভব্দরপুদ্ধিকা, এই দকল বিচুটীর নাম। বিছুটী—কট্

তিক্তরদ, হাদরশোধন, মুখপরিকারক, বল-কারক, বিষয় ও রুচি প্রদ। বিছুটী—র ক্রপিও, কাদ, খাদ, অগ্নিমান্দ্য ও জ্বর নিবারক।

অথ শোভান্তনফলগুণাঃ।

শোভাঞ্জনকর: ৰাছ কবার: ককপিন্তমুৎ। শুলকুঠকরবাস-গুৰাসনীপন: পারম্।

সজিনা ভাটার গুণ।

ইহা মধুব-কধায়-রদ, স্মতীর অগ্নিদীপক এবং কফ, পিত্ত, শূল, কুষ্ঠ, কর, শ্বাস ও গুলা বিনাশক।

অথ রুতাক গুণাঃ।

বৃদ্ধকে স্বাস্থ্ৰ তীক্ষোকং কটুলাকমণিজনম।
অৱবাত্তবলাসম্ম দাপনং জ্ঞানং লগু ॥
ভদ্বাকং কছণিছন্তঃ বৃদ্ধ: পিত্তকরা গুরু ।
বৃদ্ধাকং পিঙল - কিন্ধিনস্থারপারিপাটিত্য।
কক্ষেদ্রোহনিলানম্মতার্থং লগু দীপনন্।
ভদেব হি:গুরু বিদ্ধাং সতৈলং লবণান্বিতম্ ॥
অপরং শেতবৃক্তাকং ককুটাগুসমং ভবেং ।
ভদৰ্শান্ত বিশেষেণ হিতং হীনক পুৰ্বতঃ ॥

্ব গুণের গুণ।

विद्यन-मधुत्रतम, जीक्न, डिक्स्वीर्या, कर्ने-বিণাক, অপিত্তকর, অমিদীপক, শুক্রজনক, লঘু এবং ইহা জা, বায়ু ও লেমবিনাশক। কচি (বেছণ-কফ ও পিত্তনাশক। পাকা অসারদগ্র S 34 বেগুণ--পিওকারক বেগুণ-কিঞ্চিং পিত্তকর, অভান্ত লঘু, অগ্নি-দীপক এবং ইহা কফ, মেদঃ, বাযু ও আম-দোষের শান্তিকারক। 447.739 পোড়া) লবণ ও তেল মিশ্রিত হইলে. গুরু ও সিদ্ধ হয়। কুকুটাণ্ডের আয় আর এক প্রকার খেঠ বেগুণ আছে, তাহা পূর্কোক্ত বেশুণ হইতে হীন গুণসূক্ত, কিন্তু অশোরোগে বিশেষ হিতকারক ৷

অথ ডিণ্ডিশ-শাকগুণাঃ।

ডিঙিশো ক্ষচিকৃদ্ ভেদী শিন্তপ্লেমাশহং স্মৃতঃ। স্থানীতো বাতলো ক্ষমো মৃত্রনশ্চাম্মরীহরঃ।

টেডশের গুণ।

চেঁড়ণ---ক্রচিকর, ভেদক, পিত্তশ্লে-নাশক, শীতবীর্য্য, বাতবর্দ্ধক, রুক্ষ, মূত্রজনক ও অশ্মরীপ্রশমক।

অথ কর্কেটিকীগুণাঃ।

কর্কোটা মলহুৎ কৃষ্ঠ-হুলাসাক্ষতিনাশিনী। খাসকাসজ্জান্ হস্তি কটুপাকা চ দীপনী।

কাঁকরোলের গুণ।

কাকরোল—মল, কুন্ন, হারাস, অরুচি, খাস, কাস ও জ্বরনাশক এবং ইহা কটু-বিপাক ও অগ্নিদীপক।

অথ বিদারীকন্দগুণাঃ।

বিদারী মধুরা স্নিগা বৃংহণী শুশুশুজ্দা। শীতা স্বর্গা মুক্তনা চ জীবনী বন্দবর্ণদা। গুরুং পিতাশ্রপবন-দাহান্ হস্তি রসায়নী।

ভূ'ই কুনড়া।

ভূমিকুমাণ্ড—মধুররস, মিগ্ধ, পৃষ্টিকারক, দীতবীর্য্য, স্বরবর্দ্ধক, মূত্রকারক, গুরুপাক, স্তন্ত, শুক্র ও বলের বর্দ্ধক, বর্ণপ্রসাদক, জীবনী-শক্তিবর্দ্ধক ও রসায়ন। ইহা পিত্ত-দোষ, রক্তহৃষ্টি, বায়ুবিক্কৃতি ও দাহ নষ্ট করে।

অথ পূরণগুণাঃ।

ण्ताना भेताना क्षमः कवाग्रः कष्ट्रे वर्षः।
विदेशी विनामा क्षप्रः कमान्यः क्ष्यत्व अयुः॥
विनामान्यः त्राः श्रीरुख्याविनानानः।
সংক্ষোং কন্দলাকানাং শুরণুঃ শ্রেষ্ঠ উচ্চতে ।
সন্ধান বস্তুলিভানাং কুঠানাং ন হিতো হি সং।
সন্ধানবোগসম্প্রাপ্তঃ শুরণো গুণবঙ্কঃ।

ওলের প্রণ ।

ওল—অমিনীপক, রক্ষ, কষার-কটু-রস, কণ্ডকারক, বিষ্ঠন্তী, বিশদগুণবৃক্ত, রুচিকারক, লঘু এবং ইহা কফ, অর্শঃ, প্লীহা ও গুল্ম বিনাশক। বিশেষতঃ অর্শোরোগে স্থপণ্ড। সর্ব্যপ্রকার কন্দ্রশাকের মধ্যে ওলই শ্রেষ্ঠ। কিন্তু দক্র, রক্তপিত্ত ও কুর্চরোগে ইহা হিত-কর নহে। সন্ধানযোগ-প্রাপ্ত শ্রণ অধিক গুণারক।

অথালুকগুণাঃ।

भागूकः भीठनः मर्काः विक्षेष्ठि भधूबः छङ्गः। रहेम्बमनः क्षमः छुक्तिः बक्तिशिल्यः। कुषानिनकतः वनाः वृद्याः खुश्चिविक्रमः॥

আলুব সাধারণ গুণ।

আলু—শীতবীর্য্য, বিষ্টম্ভী, মধুররস, গুরু, মলমূত্রনিংসারক, রুক্ষ, গুপাচ্য, রক্তপিত্ত-নাশক, কফানিলবদ্ধক, বলকারক, গুক্রজনক ও গুন্তা বর্দ্ধক।

অথালুকীগুণাঃ।

অ'লুকী বলকুৎ স্লিধা গুৰ্বী **হুৎক্চনাশিনী।** বিষ্টঞ্জনারিণী তৈলে ললিতাতি**রুচিপ্রদা**॥

লাল ভালুব গুণ।

লাল আলু--বলকারক, স্পিগ্ধ, গুরুপাক, সদয়গতকফনালক ও বিইন্তী। ইংগ তৈলে ভাজিলে অভ্যন্ত ক্রিকর হয়।

অথ মূলক গুণাঃ।

লযু মূলং কটকং গু-দিচ্যং লগু চ পাচনম্॥
দোৰতায়ংগং স্বয়ং স্কঃমাসনিমাননম্।
নাসিকাকপ্তরোগন্ধ: নয়নাময়নাশনম্।
মহৎ তদেব ক্লোকং গুলু দোৰতায়প্ৰদম্।
মেহসিদ্ধং ওদেব স্থাদ্দোৰতায়বিনাশনম্॥

ল্যু

युनांत्र खन।

মূলা, ছোট ও বড় ছই প্রকার। তন্মধ্যে ছোট জাতীর মূলা—কটু, উষ্ণবীর্য, কচিকর, লঘু, পাচক, ত্রিদোষনাশক, স্বর-প্রসাদক এবং ইছা জ্বর, শ্বাস, নাসিকারোগ কণ্ঠরোগ, ও নেত্ররোগ-বিনাশক। বড়জাতীর মূলা—ক্ষ্ণ, উষ্ণবীর্যা, গুরু ও ত্রিদোষবর্দ্ধক। ইছা তৈলাদিতে সিদ্ধ করিয়া সেবন করিলে ত্রিদোষনাশক হয়।

অথ গুঞ্জনগুণাঃ।

গৃঞ্জনং মধুরং তীক্ষং তিক্তোঞ্চং দীপনং লঘু। সংগ্রাহি রক্তপিতাশো-গ্রহণীকঞ্চবাতজিৎ ॥

গান্ধরের ওণ।

গাজর—মধুর-ভিক্ত-রদ, তীক্ষ, উষ্ণবীগ্য, অলিদীপক, লঘু, মলসংগ্রাহক এবং ইছা রক্ত-পিত, অর্শঃ, গ্রহণীরোগ, কফ ও বায়ু নাশক।

व्यथ कमनीकन्मखनाः ।

শীতলঃ কদলীকন্দো বল্যঃ কেন্সোংস্প্রস্থিত। বহ্নিকৃদাহহ;রী চ মধুরো ক্রচিকারকঃ॥ কদলীকন্দের 'শুণ ।

কদলীকন্দ—গ্রান্তবীষ্যা, বলকর, কেশু, অমপিত্তনাশক, অগ্নিবদ্ধক, দাহনাশক, মধুর-রস ও ক্রিকারক।

অথ কদলীদণ্ডগুণাঃ।

বোনিদোবহরো দণ্ডঃ কাদল্যোহস্থপরং জয়েব। রক্তপিত্তহরঃ শীতঃ স্কুচ্চোহয়িত্রবর্জনঃ ॥ ্থোডের গুলা।

খোড় — শাতবীর্য্য, রুচিজনক, অগ্নিবদ্ধক, এবং ইহা যোনিদোয, অস্থানর ও রক্তপিত্ত-নাশক।

অথ মাণকন্দগুণাঃ।

মাণক: শোধকচোত: পিভরক্তহরো লঘু:।
মাণকচুর গুণ।
মাণকচু,—শোথহারক, শাতবীর্য্য,

এবং ইহা পিত্ত ও রক্ত নাশক।

অথ কসেক্তগাঃ।

কসেরক ছয়ং শীতং মধুরং তুবরং গুরু। পিত্রশোশিতদাহন্ত্রং নয়নাময়নাশনন্। গ্রাহি গুক্রানিনরেখাক্রতিক্তকরং ক্ষতম্

কেশুরের গুণ।

কেশুর ছই প্রকার। দ্বিধ কেশুরই শাত্রীয়া, মধুর-ক্যার-রস, শুরু, মলসংগ্রাহক, শুক্রবর্দ্ধক, বারু ও ক্লেমাজনক, অরুচিকারক, স্তম্ভবদ্ধক এবং ইহা পিও, রক্ত, দাহ ও নেত্র-রোগ নাশক।

অথ সংসেদজশাকানি।

উক্তং সংবেদজং শাকং ভূমিচ্ছন্নং শিলীক্ কম্।
কিতিগোমরকাঠেষু বৃক্ষাদিষু তছ্কবেৎ ॥
সর্বের্ক সংবেদজাং শীতা দোবলাং পিচ্ছিলাশ্চ তে।
গুরবশ্ছদিতিসার-অরশ্রেমাময়প্রদাং ॥
বেতাং ক্টিন্থলীকাঠ-বংশগোরক্ষমন্তবাং ।
নাতিপোষকরান্তে হাং শেষান্তেলো বিগ্রিভাং ॥
ভূতিছাতা ।

ভূমিতে, গোময়ে, কাঠে ও বৃক্ষাদিতে স্বেদজশাক উৎপন্ন হয়। ভূমিচ্ছন্ন ও শিলীক্ষক উহার পর্যায়। সকল প্রকার স্বেদজশাকই—শাতবীর্যা, তিদোষজনক, পিছিল, গুরু এবং ইহা বমি, অতীসার, জব ও কফরোগ জনক। যে সকল ছত্রক শুচিপ্রদেশে, কাঠে, বংশে, গোময়ে ও বৃক্ষে সমূহূত হয় এবং যাহা শ্বেত্বর্ণ, তাহা অতিশন্ন দোষকাবক নহে, তদ্ভিম্ন অপর সমস্য ছত্রকই দোষকর।

ইতি শাকবর্গঃ।

अथ गारमगरम्यवर्गः।

অথ মাংসম্ভ নামানি গুণাশ্চ।

মাংসন্ত পিশিতং ক্রব্যমামিবং পদলং প্রন্ম।
মাংসং বাতহরং সর্বাং বৃংহণং বলপুষ্টকুং ।
বীণনং গুরু ক্ষাঞ্চ মধুরং রস্পাকরোঃ ।

মাংদের সাধারণ নাম ও গুণ।

মাংস, পিশিত, ক্রবা, আমিষ, পলল ও পল, এইগুলি মাংসের নামান্তর। সমস্ত মাংসই—বায়ুনাশক, বৃংহণ, বলবদ্ধক, পৃষ্টি-কারক, ভৃপ্তিকারক, গুরুপাক, হৃত্ত, মধুর-রস এবং মধুর্বিপাক।

অথ মাংসভেদঃ ৷

মাংসবর্গা বিধা প্রোক্তো জাকলানুপভেদতঃ । মাংসবর্গ ছুই প্রকারে বিভক্ত ; যথা— জাকল মাংস ও আনুপ মাংস।

অথ জাঙ্গলসা লক্ষণং গুণাশ্চ ৷

মাং সবর্গোহ র জন্মানা বিলক্ষান্য গুলা প্রদার ।
তথা পর্নম্যা জেলা বিজিরাং প্রতুলা অপি।
প্রসহা অপ চ প্রাম্যা অস্তো প্রাস্কলাত্য ।
কলাকের মধুরা প্রকান্তবরা লাববন্তথা।
বল্যাকে বৃংহণা ব্রা দীপনা দোবহারিবঃ।
মুক্তাং মিন্সিনছ ক্লিপ্রমেন্থ্রান্ গণান্।
রীপদং সলগতক নাশ্যতানিলাময়ান ॥

खानन भारतित नक्तन ७ 'छन ।

জান্দলজাতি আট প্রকার,—জুলবাল, বিলম্ব, গুহাশয়, পর্ণমৃগ, বিদ্ধিন, প্রাহৃদ, প্রসং ও গ্রাম। জান্ধ মাংস—ক্ষায়-মধুর-রস, কৃষ্ণ, প্রণু, বলকর, রংহণ, সৃষ্ণ, অমি-দীপক ও তিদোষনাশক। ইহা মুক্তা, মিমিনজ, গদগদত্ব, অর্জিত, বধিরতা, অরুচি, বমি, প্রমেহ, মুখগত ়িরাগ, শ্লীপদ, গলগণ্ড ও বাতব্যাধিতে। প্রশস্ত ।

অথানূপস্য লক্ষণং গুণাশ্চ।

কুলেচরাঃ প্রনাশ্চাপি কোশস্থা। পাদিনন্তথা।
মংস্থা এতে সমাখ্যাতাঃ পকধানুপজাতরঃ ঃ
আনুপা মধুরাঃ বিদ্ধা শুরবো বহিন্দাদনাঃ।
শ্লেমলাঃ পিচ্ছিলাশ্চাপি মাংসপুরিপ্রদা ভূলম্।
১থা হিষ্যালিনতে তি প্রায়ঃ পণ্য হমাঃ মৃতাঃ॥

আনুপমাংদের লক্ষণ ও ওণ

ক্লেচর, প্লব, কোশন্ত, পাদা ও মংস্ত, এই পাঁচ প্রকার আন্প মাংস। আন্প মাংস—মধুররস, স্লিগ্ধ, গুরুপাক, অপ্রিমান্সং-কারক, শ্লেম্লবর্দ্ধক, পিচ্ছিল, মাংসবর্দ্ধক, পৃষ্টিজনক, অভিযান্দ্রী ও স্থপণ।

অথ বর্ত্তকমাংসগুণাঃ ।

বর্ত্তকে হৈয়িকরং শীতো অবদোষজ্ঞয়াপহং। হঙ্গটা শুপুদো বলো বস্তুকাল্লণুণা ওচঃ॥

বটের মাংসের গুণ।
ব্রক—-অগ্নিকারক, শাঁতবীর্যা, ক্লাচিকর, শুক্রনদ্ধক, বলকর এবং হহা ছব ও জিলোধ-নাশক। স্বীব্রক উহা অপেকা অ**ন্ধর্ক**।

অথ লাবমাংসগুণাঃ |

লাবা বিভিনবর্গেনু তে চতুর্বা মতা বুধে:।
পাংগুলো গৌরকো বাপি পৌতুকো দম রম্ভবা ॥
লাবা বহিকরাঃ প্রিদ্ধা গরস্বা প্রাইক। হিতাঃ ।
পাংগুলঃ রেম্বলগ্রেষ্ বীয়্যোকে;হনিজনাশন:।
গৌরো লানু চরে। কফো বহিকারী তিলোমজিং ।

পৌঙ্ক: পিন্তকুৎ किक्षित्रपूर्वाठककाणहः।
सर्वा तद्मिलद्या क्रमाममस्ता हिमः॥

नावमाः रमत्र खन ।

বিদিরবর্গের মধ্যে লাবপকী চারি প্রকার;
—পাংশুল, গৌরক, পৌপুক ও দমর্ম। লাবমাংস—অগ্নিদীপক, মিন্ধ, বিষয়, সংগ্রাহী ও
অপথ্য। পাংশুললাবের মাংস—হোমকর, উক্ষবীয্য
ও বায়নাশক। গৌরলাবের মাংস—অতিশর
লঘু, রুক, অগ্নিকারক ও ত্রিদোর্শাশক।
পৌপুক লাবমাংস—পিতকারক. কিঞ্চিৎ লঘু
ও বাতলেমনাশক। দম্রলাবমাংস—শীতবীর্য্য,
রক্তপিত্ব ও কলোগের নাশক।

অথ কুফ-গোর-তিত্তিরিগুণা:।

ঠিভিরিঃ কৃষ্ণবর্ণ: শুচিতত্রোহপ্রো গৌরতিন্তিরিঃ। তিভিরিবলদো গ্রাহী হিকাদোবত্ররাপহ:। বাসকাসম্বরহরত্তমাদ্ গৌরোহধিকো গুণৈ:॥

তিত্তিরি পক্ষী ছই প্রকার। তদ্মধ্যে ক্লঞ্চবর্ণ তিত্তিরিকে ক্লঞ্চতিত্তিরি ও চিত্রবিচিত্রবর্ণ তিত্তিরিকে গৌরতিত্তিরি কহে। তিত্তিরি— বলপ্রদ, মলসংগ্রাহক এবং ইহা হিক্কা, ত্রিদোম, ম্বাস, কাস ও জা নিবারক। গৌর তিত্তিরি ইহা অপেকা অধিক গুণ্যক।

অথ হারীতঃ।

হারীতো রক্তকণ্ঠ: স্থাদ্ধরিতোগণি স কণ্যতে। হারীতো রক্ত উষ্ণত রক্তপিতকদাপহ:। বেশবরকর: প্রোক্ত ঈবহাতকরক্ত স:॥

হরিয়াল, হত্তেল যুবু।

হারীত, রক্তকণ্ঠ ও হরিত, এইগুলি হারীতপক্ষীর নাম। হারীতমাংস—ক্লক, উষ্ণ, রক্তপিত্ত-শাস্তিকর, কফগ্ন, ঘর্মকারক, শ্বরবিশুদ্ধিকারক ও অব্ধ বায়ুক্তনক।

অথ চটকপ্তণাঃ।

ক্লিক: শীতনা নিধা খাড়া গুৰুককপ্ৰণ:। সন্ধিপাতহয়ে। বেশু-চটককাভিগুকুলা ॥

চড়াই পক্ষীর গুণ।

চড়াই—শীত্রীধ্য, লিখা, মধুররস, ওজ-জনক, কফকারক ও সন্নিপাত প্রশমক। পৃ**র্চটক** অত্যন্ত শুক্রবর্দ্ধক।

অথ কুকুট-বন্যকুকুট-গুণাঃ।

কুকুটো বৃংকাং বিশ্বো বীধ্যোকোত্নিলজ্ ওকঃ।
চকুৰাঃ গুকুকককুদ্ বল্যো কক্ষ কৰায়কঃ।
আরণ্যকুট্টা বিশ্বো বৃংধণঃ শ্লেখলো গুকুঃ।
বাতপিতক্ষয়ব্মি-বিৰম্ভরনাশনঃ॥

মোরগ, মূর্গী ও বয়মূর্বীর খা।
মূর্গী—পৃষ্টিকারক, স্নিগ্ধ, উষ্ণবীর্য্য বাষ্নাশক, গুরু, চকুর হিতকর, গুরুবর্দ্ধক, কককারক, বলকর, রুক্ষ ও ক্যায়রস। বনজাত
কুরুট—স্নিগ্ধ, পৃষ্টিকারক, শ্লেমবর্দ্ধক, গুরু
এবং ইহা বাষু, পিত্ত, ক্ষয়, বমি ও বিষম্ভর
নিবারক।

অথ পারাবতগুণাঃ।

পারাবতো গুরু: ক্রিকো রক্তপিভানিলপছ:। সংগ্রাহী শীহলক্ষর ক্রৈ: ক্ষিতো বীর্যাধর্মন:॥

পায়রার ৩৪৭।

পান্ধরা—গুরু, নিশ্ব, রক্তপিত্তনাশক, বাতম, মলসংগ্রাহক, শীতবীর্য্য ও বীর্য্যবৰ্দ্ধক।

অথ পক্ষাওস্য গুণাঃ।

নাতিবিশ্বানি ব্যাণি বাছপাকরসানি চ। বাতমান্ততিজ্ঞানি গুরুণাঞানি পক্ষিণাম ।

পক্ষি-ডিম্বের গুণ।

পশ্চিত্ব—অনতিমিন্ধ, বলকর, মধুর-রস, মধুববিপাক, বাতম, অত্যন্ত শুক্রবর্দ্ধক ও শুরু।

অণ ছাগ্যাংসগুণাঃ।

ছাগমাংসং লঘু মিন্ধং স্বাকুপাকং তিলোকস্থ।
নাতিশীতমদাহি ভাং স্বাক্ত পীনসমাশনম্।
পরং বলকরং ধ্রুচং কৃংহণং বীর্যাক্ষনম্।
অজারা অপ্রস্থতারা মাংসং পীনসমাশনম্।
ওচকাসেংক্রটো পোবে হিতমগ্রেন্চ দীপনম্।
অজাপ্রভন্ত বালভ মাংসং লঘুতরং শুভম্।
ক্রজং ব্রহরং ভেচং ক্রখনং বলনং ভূশম্।
মাংসং নিচ্চাপিতাওভ ছাগভ কফকুদ্ওল।
শ্রোত্তভিক্রিকরং বলাং মাংসনং বাতপিতক্থ।
বৃদ্ধভা বাতলং ক্রক্ষং তথা ব্যাধিষ্তভা চ।
উর্জ্ঞাক্রিকারন্নং ছাগানুওং ক্রিপ্রদম্॥

ছাগমাংদের গুণ।

স্থিদ্ধ, মধুরবিপাক, ছাগমা•স---লম্ব, অন্তিশীতল, অদাহকর, ত্রিদোষনাশক, মধুররস, পীনসনাশক, বলকর, অত্যন্ত ক্ষচিপ্রদ, পুষ্টিবৰ্দ্ধক ও বীৰ্য্যকাৰক। অপ্রস্থতা ছাগীর মাংস-পীনসনাশক, অগ্নিদীপক এবং ইহা গুৰুকাস, অক্ষচি ও শোষরোগে হিতকর। কচি ছাগমাংস-অত্যস্ত লঘু, হৃত, জরহারক, সুখপ্রদ ও অত্যন্ত বলদায়ক। খাদী-ছাগের মাংস-ক্ৰুজনক, গুৰু, শ্ৰোতঃশুদ্ধিকাৰক, বলপ্রদ, মাংসবদ্ধক ও বাত পিত্তনাশক। বৃদ্ধ এবং ব্যাধিমৃত ছাগের মাংস-বাতজনক ও কৃক। ছাগমুগু — উর্দ্ধজক্রণত রোগনাশক ও ক্রচিপ্রদ।

অথ মেষমাংসগুণাঃ।

মেবক্ত মাংসং পুটো স্তাৎ পিত্তরেম্বকরং গুরু। তক্তিবাগুবিহীনক্ত মাংসং কিঞ্চিন্নযু স্বতম্ ॥

মেষমাংদের গুণ। মেষমাংস—পুষ্টিকারক, পিত্তশ্লেঘবর্দ্ধক ও গুরু। থাসী মেষের মাংস কিঞ্চিং লঘু।

অথৈড়ক গুণাঃ।

এড়কন্ত পলং জেরং মেবামিবসমং ওগৈ:। মেদ: প্তেছাত্তবং মাংসং ছত্তাং বৃহাং শ্রমাপহম্। পিত্তলেমকরং কিঞিদ্ বাতব্যাধিবিনালনম্।

ত্রস্বা মাংসেব গুণ।

ছমামাংস—মেষমাংসসদৃশ গুণবিশিষ্ট। ইহার পুচ্চোন্তব মেদ ও মাংস—স্থা, গুক্ত-জনক, শ্রমনাশক, কিঞ্চিং পিত্রশ্নের্দ্ধক ও বাতব্যাধি নাশক।

অথ হরিণমাংসঞ্ডণাঃ ।

হরিণঃ শীতলো বন্ধ-বিগ্যুতো দীপনো লঘুঃ। রসে পাকে চমধুরঃ হুগনিঃ সন্নিপাত্তা॥

হরিণ মাংদের গুণ।

হরিণমাংস— গীতবীগা, মলমূত্ররোধক, অগ্নিনীপক, লগু, মধুররস, মধুরবিপাক, হুগদ্ধি ও সন্নিপাতনাশক। (হরিণ—তাম্রবর্ণ)।

অথ কুরঙ্গমাংসগুণাঃ।

क्तरका दृःहर्गा वनाः नीउनः शिख्छम् छङ्गः। भगूरता गांडसम् धोही किक्षिरकककतः सुटः ॥

কুরঙ্গমাংস—বৃংহণ, বলকারক, শীতবীর্যা, পিত্তনাশক, গুরুপাক, মধুররস, বাতনাশক, সংগ্রাহী ও কিঞ্চিৎ কফকারক। (ঈষং তাত্রবর্ণ ও রহংকায় হরিণকে কুরঙ্গ বলে)।

অথ ক্সন্থাংসগুণাঃ।

অকু: বাছল ঘুর্বল্যো বুব্যো দোবত্রয়াপহ: ॥

গুছু মৃগমাংস—মধুররদ, লঘু, বলকারক ব্ব্যু ও তিলোষনাশক। (অনেক-শৃঙ্গশুক্ত হরিণকে গুছু বলে)।

অথ শশমাংসগুণাঃ।

লন: শীতো লঘুগ্র হি রংক: স্বাছ: সরা হিচ: । বছিকুৎ কদপিতছো বাতসাধারণ: স্বৃত:। অরাতিসারশোবাশ্র-বাসামরহরণ স:। খরগোশমাংসের গুণ।
খরগোশ-মাংস—শীতবীর্য্য, লঘু, সংগ্রাহক,
ক্লক, মধুররস, সর্পথা হিতকারক, অগ্নিকারক,
কক্ষ, পিত্ত, সর্পবিধ বায়্বিকৃতি, জ্বর, অতীসার, শোষ, রক্তন্তি ও শাস রোগ নাশক।

অথ কছপমাংসগুণাঃ।

কচ্ছপো বলদো বাত-পিত্তমুৎ পু:স্বকারক:

কচ্ছপমাংসের গুণ। কচ্ছপমাংস--বলবর্দ্ধক, বায়ুও পিত্ত নাশক এবং পুংস্কারক।

অথ সজোহতস্য মাৎসম্ভ গুণাঃ । সজোহতভ্ত মাণসং ভাদ ব্যাধিঘাতি ধবায়তম্ বয়ভং বংহণং সাত্মসভাধা তৰিবৰ্জ্জায়েং॥

টাট্কা মাংসের গুণ।
সম্মেহত জীবের মাংস অমৃতের স্থায়
ব্যাধিনাশক। ইহা বয়ংস্থাপক, পুষ্টিকারক এবং
সাক্ষ্য। প্যর্থিত (বাদি) মংব তাজ্য।

অথ সাংসানাং স্থানভেদে গুণভেদঃ।

বিহলের পুমান শেষ্ঠঃ বী চতুপ্পাদজাতির।
পরান্ধং লঘু পুংসাং স্সাৎ স্ত্রীণাং পূর্বান্ধনাদিশেং এ
দেহমধ্যং গুরুপ্রান্ধং সর্বেবাং প্রাণিনাং স্মৃত্রম।
পক্ষপাদ বিহল্পানাং তদেব লঘু কথাতে ॥
গুরুপ্রানি সর্বেবাং গুরুগী প্রীবা চ পদিশাম।
উরঃস্কলোদরং কুকী পাদৌ পালী কটা তথা ॥
পৃঠত্বপ্রকৃদজাণি গুরুগীহ বথোওরম্ ॥
লঘু বাতকরং মাংসং প্রসানাং ধাস্তচারিণাম্।
মহস্তাশিনাং পিত্তকরং বাতত্বং গুরু কীর্তিতম্ ॥
ফলাশিনাং প্রেমকরং লঘু ক্ষমুনীরিতম্ ॥
বৃংহ্রণং গুরু বাতত্বং তেবামেব পলাশিনাম্ ॥
তুল্যলাতিবল্পদেহা মহাদেহের প্রক্রতাঃ।
অঞ্চদেহের শৃক্ততাঃ।
অঞ্চদেহের শৃক্ততে তথৈব স্ক্রন্দাহিনঃ ॥

পক্ষিগণের মধ্যে পুরুষক্ষাতির এবং চতু-পদ প্রাণিদিগের মধ্যে স্ত্রীজাতির মাংস

শ্রেষ্ঠ। পুরুষ জাতীয়ের দেহের নিয়ার্ছ ও ন্ত্ৰীজাতির দেহের উর্দাংশ লঘু এবং প্রায় সমস্ত প্রাণিরই দেহের ম্বাভাগ গুরুপাক হয়। পক্ষিজাতির দেহের यथार्थ मर्खन পক্ষকেপ হেতু লঘু হইয়া থাকে। পক্ষিগণের व्यथ ७ धौरा खना लागिम्हिनत रकः हम, क्रक, छेमत, कूकि, भर, इन्छ, कठी, भृष्ठं, ख्रक, অন্ত্ৰ এইগুলি यकुर ও উত্তরেতির গুরু। ধান্যভোজী পক্ষিদিগের মাংস লঘুপাক বাতজনক। সংস্থানী পক্ষীর পিত্রজনক, বাতম ও গুরুপাক। ফলভোজী পক্ষীর মাংস (শ্রমকর, ল্মপাক ও কক। মাংসানী পক্ষীর মাংস, বুংহণ, গুরু ও বায়-নাশক। বৃহংকাদ প্রোণি,দিগের মধ্যে ভজ্জা-তীয় কুদ্রকায় প্রাণির মাংস হিতকর এবং অলমেহ প্রাণিদিগের মধ্যে যেটি অপেকারুত সুলকার, তাহার মাংদ প্রশস্ত।

অথ মংস্যসামান্যগুণাঃ।

মৎক্তান্ত বৃংহণাঃ সর্ব্বে গুরুবং গুক্রবর্ধনাঃ।
বল্যাঃ সিধ্দোকস্থরাঃ কফপিত্তকরাঃ স্থতাঃ।
ব্যায়ামাধ্বরতানাঞ্চ বাতার্ভানাঞ্চ পূজিতাঃ।
মৎসাপিনো ন বাধ্যে রোগা বাতসমূভ্বাঃ।

মংস্থের সাধারণ গুণ।

সকল মংশুই সাধারণতঃ পৃষ্টিকারক, গুরু, গুরুবর্দ্ধক, বলকারক, স্পিন্ধ, উষ্ণবীর্ঘ্য, মধুর-রস ও কফপিত্রজনক। ব্যায়ামণীল, পথশ্রাম্ভ ও বাতার্ত্ত ব্যক্তিগণের পক্ষে মংশু হিতকর। মংশ্রাণী মানব বাতজ্রোগে আক্রাম্ভ হন না।

অথ বুহনাৎস্যগুণাঃ।

महाश्रमाना अवतः अञ्चला वस्तर्कतः ।

বড় মংশু—গুরু, শুক্তজনক ও মল-রোধক।

অথ ক্ষদ্রমংস্থঞণাঃ।

কুদ্রমৎস্যান্ত লযবো গ্রাহিণো গ্রহণীহিতা: ।

কুন্ত মংগু—লমু, মলসংগ্রাহক ও গ্রহণী-রোগে হিতকর।

অথ রোহিতমংস্থঞণাঃ।

রোহিতঃ সর্বমংক্যানাং বরো বুয়োহর্দ্দিতার্দ্ধিত। ক্যায়াসুরদঃ স্বাহুব তিয়ো নাতিপিতকুৎ। উদ্ধিনকণ্ডান রোগনে ক্যানোহিতমুওকুম্।

রোহিতমৎস্থের গুণ।

সর্বপ্রকার মংক্রের মধ্যে রোহিত মংস্থ শ্রেষ্ঠ। ইহা ব্যা, অদিতরোগনাশক, ঈবং ক্যারবুক্ত মধুররস, বাতম ও অনতিপিত্ত-কারক। রোহিতমুগু—উর্জজ্জগত রোগ নিবারক।

অথ কাতলমংস্ঞগাঃ।

কাতলো শুরূপাকী তাৎ স্বাছুরুকল্রিদোবসুৎ 🛭

কাংলামাছের গুণ।

কাংলামাছ—গুরুপাক, মধুরুরুদ ও উষ্ণ-বীর্যা। ইহা ত্রিদোষনাশক।

অথ মৃদ্গিলমংস্তগ্ৰণঃ।

মৃদ্যালক ভূবৈকে নঃ প্রান্থে রোছিত্সংক্তবং ॥

মিরগালমংক্রের গুণ।

মিরগাল মাছও প্রায় রুইমাছের ভূল্য গুলকারক।

व्यथः शाहीनश्राः।

পাঠীন: মেম্মলো বল্যো নিয়োলু: পিলিতালন: । দূৰয়েক্ষণিয়ং পিতং কুঠরোগং করোতি চ ॥

বোয়াল মাছের গুণ।

বোয়াল মাছ—গ্লেমকর ও বলকারক। ইহা ধারা পিত ও রক্ত দ্বিত এবং ক্রম্প্রোগ

উৎপর হয়। বোয়ালমাছ নিজাশীল ও মাংস-ভোজী।

অথ শুঙ্গীমৎস্যগুণাঃ।

শুকী জুবাতশমনী বিন্ধা সেমপ্রকোপণা। রুসে তিজা ক্যায়াচ লগী স্বচ্যা স্থতা বুগৈঃ।

শিক্সি মাছের গুণ।

শিঞ্চি মাছ---বাতশাস্তিকারক, স্নিশ্ধ, শ্লেম-প্রকোপক, তিক্ত-ক্ষায়-রস, লঘু ও কৃচিকারক।

অথ ইল্লিশমংস্ত গুণাঃ।

ইলিশো মধুর: বিন্ধো রোচনো বহিংবর্জন:। পিতহুৎ:ককতুৎ কিঞ্চল্যুর্ ব্যোহনিলাপহ: ॥

ইলিশ মৎস্তের গুণ !

ইলিশ—মধুররদ, স্নিগ্ধ, মূধরোচক, অগ্নিবর্দ্ধক, পিন্তনাশক, কফকারক, কিঞ্চিৎ লঘু, বলকর ও বায়ুনাশক।

অথ ভাকুটমংস্থ্ৰপাঃ।

ভাকুটো:মধুর: শীভো বৃধা: সেমকরো গুরু:। আমবাতকরো ক্জো বাতপিত্তরো মত:।

ভেটুকী মাছের গুণ।

ভেট্কীমাছ—মধুররস, শীতবীর্য্য, ওজ-কনক, দ্লেমকর, গুরু, আমবাতজনক, ক্লচি-কারক এবং ইহা বায়ু ও শিত্ত নাশক।

অথ সিলিন্দমৎস্তঞ্গাঃ।

সিলিন্দ: রেমলো বল্যো বিপাকে মধুরো গুরু:।
বাঙপিওহরো হল্য আমবাতকরক দ:।

দিশন মৎস্থের গুণ।

সিলন মংগ্র—লেখকর, বলবর্দ্ধক, মধুর-থিপাক, গুরু, বাতপিত্তনাশক, হৃত্ত ও আম-বাতকারক।

অথ শকুলীমংস্তগ্ৰাঃ।

শক্লী আহি**ণী হন্তা** মধ্রা ত্বরা স্বতা ।

শাল্মাছের গুণ।

শালমাছ-মলদংগ্রাহক, জন্ম ও ক্যার-

মধুররদ ।

অথ গর্গরমংস্কুগাঃ।

গর্গরঃ পিত্তলঃ কিঞ্চিদ্:বাভঞ্জিৎ:কফকোপনঃ ॥

গাগর মংস্তের গুণ।

গাগর মাছ—কিঞ্চিৎ পিত্তজনক, বাত-নাশক ও কফপ্রকোপক।

অথ কবিকামৎস্যগুণাঃ।

কবিকা মধুরা রিশ্বা ককন্ম। রুচিকারিণী। কিঞ্চিৎপিত্তকরী বাত-নাশিনী বহিংবর্দ্ধিনী।

কই।মাছের গুণ।

কই মাছ—মধুররস, শ্লিগ্ধ, কফপ্রশমক, ক্লচিকারক, কিঞ্চিং পিত্তকর, বায়্নাশক ও অথিবর্দ্ধক।

অথ বিশ্বমৎস্যগুণাঃ।

বর্ষিমংক্তো গুরুর্রা: কবারো রক্তপিতহা ॥

বাইন মাছের গুণ।

বাইন্ মাছ—গুরু, গুরুবর্দ্ধক, ক্যাররস ও রক্তপিত্তনাশক।

আড়িমৎস্যগুণাঃ।

আডিসংক্রো গুলা রিকো বাতরেমপ্রকোপন: ।

আড়্ মাছের গুণ।

আড়্মাছ—গুরু, ন্নিগ্ধ এবং বায়ু ও শ্লেরপ্রকোপক।

व्यथ मन् खत्रम् भारताः।

মদশুরো মধুর: স্থিকঃ সংগ্রাহী শুক্রলো গুরু: ॥

মান্তর মাছের গুণ।

মাণ্ডরমাছ—মধুবরস, দ্বিগ্ধ, মলসংগ্রাহক, শুক্রকারক ও গুরু।

অথ ত্রিকণ্টকমৎস্যগুণাঃ।

ত্রিকট: পিত্তহা ক্লে দীপন: কক্টিলবু: ।

টেন্ধ্রামাছের গুণ।

টেক্রা মাছ—পিতনাশক, ক্লক, অগ্নি-দীপক, ককনাশক ও লগু।

অথ প্রোষ্ঠীমৎস্যগুণাঃ।

প্রোষ্ঠী তিক্তা কটু: স্বাহ্ণ শুক্রলা কন্ধবাতঙ্গিৎ। নিধান্তক ঠরোগন্ধী রোচনী চ লঘ: মৃতা॥

পু ঠীমাছের গুণ।

পুঁঠীমাছ—তিজ্ঞ-কটু-মধুর রস, শুক্রজনক, কফবাতনাশক, স্নিন্ধ, মুখগত ও কণ্ঠগত রোগ-নাশক, মুখরোচক ও লঘু।

অথ বৃহচ্ছফরীমৎস্যগুণাঃ।

বিশ্বাক্তক ঠরোগন্ধী শ্রেণ্ডা প্রোধী প্রকীর্ত্তিতা।

বড় পুঁঠীমাছের গুণ।

বড়পুঁঠী—স্লিগ্ধ, মুখগত ও কণ্ঠগত রোগ-নাশক।

অথ ভল্লকীমৎস্যগুণাঃ।

छहको मधुतः: नीरजा: वृषाः समयकरता खतः ।

ভেলেমাছের গুণ। ভেলেমাছ—মধুররস, শীতবীর্য্য, শুক্রজনক,

শ্লেদ্মবদ্ধক।ও গুরু।

অথ চিত্রফলমৎস্যগুণাঃ।

विकारता छनः वादः विका वृत्वा वलशमः ॥

চিত্রমাছের গুণ।

চিত্রন্থাছের ওব। চিত্রন্থাছ— শুক, মধুররস, স্থিয়, শুক্র-জনক ও বলপ্রান।

অথ কুলিশম্ৎস্তগুণাঃ।

कूलिला प्रश्रुता रुष्ठाः कवासा पीलसा प्रडः। वनाः त्रिस्तां नयुर्वाही हिटला वाटल ६ साहकः॥

বেলেমাছের গুণ।

বেলেমাছ—ক্ষার-মধুররস, হস্ত, অগ্নি-দীপক, বলবৰ্দ্ধক, স্লিগ্ধ, লঘু, মলসংগ্রাহক এবং ইহা বায়ুরোগে হিতকর ও ক্লচিজনক।

অথ বায়ুষমৎস্তগুণাঃ।

বাধ্বে। মধ্রে। ব্বো বৃংহণো ধাতৃবর্দক:।
কাল্বোস্মাছের গুণ।
কাল্বোস্মাছ—মধুররস, গুক্রজনক, পৃষ্টিকারক ও ধাতৃবদ্ধক।

অথ শকুলমংস্তঞ্গাঃ।

শকুলো মধুরো গ্রাহী কক্ষা পিতাপ্রজিদ গুরুঃ।
শোল্মাছের গুণ।
শোল্মাছ—মধুররস, মলসংগ্রাহক, রুক্ষ,
রক্তপিত্তনাশক ও গুরুঃ।

অথ চিঙ্গড়মৎস্যগুণাঃ।

চিক্ষড়স্ক গুরুগ্রাহী মধুরো বলবদ্ধন:। মেদঃপিতাশ্রজিদ রুয়ো রোচনঃ কফবাতল:।।

চিঙ্গ,ড়ীমাছের গুণ।

চিঙ্গ ড়ীমাছ—গুরু, মলসংগ্রাহক, মধুররস, বলবদ্ধক, শুক্রজনক, ক্রচিকর, কহুবাভবর্দ্ধক এবং ইহা মেদ, পিত্ত ও রক্তদোষ নাশক।

অথ শকলীমংস্থগোঃ।

শকলা বোহিতাকারা ভূমো প্রায়শ্চরত্যমৌ। গুলী পাকে চমধুরা ভেদিনী দোষকোপনা॥

পিপ্লেশেকমংক্তের গুল।

পিপ্লেণোল—রোহিত মংগ্রের স্থার আক্রতিবিশিষ্ট। ইহারা প্রায়ই ভূমিতে বিচ- রণ করিয়া থাকে। এই মংশু গুরুপাক, মধুরবিপাক, ভেদক ও দোষপ্রকোপক।

অথ চন্দ্ৰকমৎস্যগুণাঃ।

हम्मकखन**िवान्तो भधूदा वलवर्षनः** ॥

চাদামাছের গুণ।

চাদামাছ—অনভিষ্যন্দী, মধুররস ও বশবন্ধক।

অথ চম্পকুন্দমৎস্যগুণাঃ।

চম্পক্রণা শুরুর্ ব্যো মধুরো বাতপিত্তজিৎ। শুক্রনো বলকুৎ প্রোক্তঃ কেহনঃ শ্লেমকোপনঃ॥ চাপিলা (ধ্যু রা) মাছের শুণ।

শ্বরামাছ—গুরু, পুষ্টিবর্দ্ধক, মধুররস, বাতপিত্তনাশক, শুক্রজনক, বলকারক, স্নেহন ও শ্বেরপ্রকোপক।

অথ দণ্ডিকমংস্তঞ্।:।

দণ্ডিক: কফজিৎ গ্রিক্তা বাতপিশুহরো লঘু:। ডানুকুনিমাছের গুণ।

ডান্কুনিমাছ—ভিজ্জরস, লঘু এবং ইছা কফ, বায় ও পিত্রনাশক।

অথ মলঙ্গীমংস্তগ্ৰাঃ।

ৰণৰী মধুৱা হজা বাভন্নী প্লেমলা শুরুল।

মৌরলামাছের গুণ।

মৌরলা—মধুররস, হৃত্ত, বাতনাশক, শ্লেখ-কারক ও গুরু।

অথ ফলিমৎস্তত্ত্বাঃ।

क्तिः चाइछ तः जिस्का वनकृष्कृक्वकृतः।

ফলুইমাছের গুণ।

ফলুইমাছ—মধুররস, গুরু, ঝিঝ, বল-কারক ও শুক্রবর্ধক।

অথ খলিশমৎস্যগুণাঃ।

খনিশ: কথিতো বল্যো বাতপিত্তকলাপহ:।
কক্ষো লযু: শূলহর: কিঞ্চিদামবিনাশন: ॥
থলিশ মাছের গুণ।

থলিশমাছ---বলকারক, রুক্ষ, লনু এবং ইহা বারু, পিন্ত, কফ, শুল ও কিঞ্চিং আম বিনাশক।

অথ গডকমৎস্যগুণাঃ।

গড়কো মধুরো ক্লফ: কবার: শীতলো লযু: ॥ গড়ই (ল্যাটা) মাছের গুণ।

ল্যাটামাছ—ক্ষায়-মধুর-রস, রুক্ষ, শীত-বীর্য্য ও লঘু।

অথ পর্বতমংস্তগ্রণঃ।

পর্বতো বাতহা নিষঃ শুক্রনো বলবর্দ্ধনঃ ॥

পাব্রামাছের গুণ।

পাব্দামাছ—বাতনাশক, স্নিগ্ধ, শুক্র-জনক ও বলবৰ্দ্ধক।

অথ বাচমৎস্যগুণাঃ।

বাচঃ স্বাছণ্ড কঃ বিশ্বঃ শ্লেমনো বাতগিভঞিৎ ॥

বাচামাছের গুণ।

বাচামাছ—মধুররস, গুরু, স্নিগ্ন, শেল্পকর ও বাতপিত্তনাশক।

অথ গবাটীমংস্পগুণাঃ।

गवाहाकीर्वकनमी असी समाध्यकाशनी ॥

পাঁকালমাছের গুণ। পাঁকালমাছ—অজীর্থকারক, গুরু ও শেষপ্রধ্যাপক।

অথ মংস্থা ওপ্তৰাঃ।

মংস্তগর্জো ভূশং বৃষ্ণঃ বিশ্ধঃ পুষ্টিকরো লঘুঃ।
কফমেদঃ প্রনো বলো প্লানিকুলেহনাশনঃ॥
নাছের ডিনের গুণ।
মংস্তডিস্ব—অত্যস্ত শুক্রকর, স্লিগ্ধ, পুষ্টিকারক, লঘু, বলবর্দ্ধক, প্লানিকারক, মেহনাশক এবং কফ ও মেদ বদ্ধক।

অথ শুক্তমংস্যগুণাঃ।

শুক্ষৎক্তা নবা বল্যা ছুর্জ্জরা বিড় বিবন্ধিনঃ ।
শুক্টীমাছের গুণ ।

ন্তন শুক্টা মাছ—বলকারক, ছুসাচ্য ও মলবন্ধতাকারক।

অথ দগ্ধমৎস্যগুণাঃ।

দক্ষমৎস্পো গুণৈ শ্ৰেষ্ঠঃ পুষ্টিকৃদ্ বলবৰ্দ্ধনঃ । পৌড়ামাছের গুণ । :

পোড়া মাছ—পৃষ্টিকারক ও বলবর্দ্ধক। ইহা গুণে শ্রেষ্ঠ।

অথ কূপাদিজমৎস্মগুণাঃ।

কৌপমংস্তাঃ শুক্রমূত্র-কুঠলেখবিবর্জনাঃ।
সরোজা মধুরাঃ শ্রিমা বলা বাতবিনাশনাঃ।
নাদেরা বৃংহণা মংস্তা গুরবোহনিলনাশনাঃ।
রক্তপিত্তকরা বৃষ্যাঃ শিক্তমালার ক্রমের্কসং।
চৌঞ্লাঃ পিত্তকরাঃ শ্রিমা মধুরা লখনো হিমাং।
ডাড়াগা গুরবো বৃষ্যাঃ শীতলা বলমূত্রদাঃ।
ডাড়াগাবহিমরেরা বনাযুম ভিদ্করাঃ॥

কুপাদিজ মংশ্রের গুণ।

কুপজাত মংশু—শুক্রবর্দ্ধক, মৃত্রকারক, কুষ্ঠ ও শ্লেম জনক। সরোবরজাত মংশু— মধুররস, স্বিশ্ব, বলকর ও বারুনাশক। নদী**কা** ত মংস্থা--বুংহণ, গুৰু, বায়নাশক, রক্তপিত্তকারক, গুয়া, শ্লিগ্ধ, উষ্ণবীর্যা ও অর পুরীয়জনক। চৌঞ্জাত মংশ্র—পিতজনক,

মংশ্ৰ-গুৰুপাক, বুষ্য, শীতল, বলজনক যুত্তকারক। নিঝ বজাত মংস্তের ক্রায় গুণকারক, অধিকন্ধ ইহা দ্বিশ্ব, মধুররস, লঘু ও শীতবীর্যা। তড়াগদাত । আয়ু বৃদ্ধি ও দৃষ্টিশক্তি বৃদ্ধি করিয়া থাকে।

ইতি মাংসমংস্থাবৰ্গ:।

অথ বারিবর্গঃ।

অথ পানীয়গুণাঃ।

পানীয়া ভ্রমনাশনা ক্রমহরা মুক্ছাপিপাসাপহা **ज्ञाञ्चर्षिविवश्वक्षककाः निजारतः उर्शनम् ।** अखाः श्वश्चत्रमः बाजीर्गममकः निवाः दिवः गीवनः लगुष्ट्रः त्रमकात्रगंख गिन्छः शीयुवरक्कीरिनाम् ।

कदलत ख्रा

জন-অম, ক্লান্তি, মুচ্ছা, পিপাদা, তক্ৰা, বমি, বিবন্ধ ও নিদ্রা নাশক, বলকর, তৃপ্তি-অজীৰ্ণপ্ৰশমক, কারক, হান্ত, অবাক্তরস, সর্বদা হিতকর, শীতল, লঘু ও সকছ; ইহা মধুরাদি ছয় রসের কারণ। প্রাণিগণের পকে ইহা অমৃতস্বরূপ।

অথ করকাজলম্ম গুণাঃ ৷

দিবাবাৰ ব্লিসংযোগাৎ সংহতাঃ বাৎ পডজি বাঃ। পাৰাপৰওনচাপন্তা: কারকোহমতোপনা: 1 कब्रकाकः क्रमः ब्रम्कः विनमः श्रुक्र 5 श्रिवम् । দারুণং শীতলং সান্ত্রং পিত্তহৎ ককবাতকুৎ। কৃতিমা ভু দৃষৎ প্রোক্তা করকাসদৃশী গুণৈ:।

করকাজলের ও বরফের ভণ। দিবাবায় ও তেজঃ সংযোগে যে জল পাৰাণগণ্ডবৎ সংহত হইয়া আকাশ হইতে পতিত হয়, গ্রহাকে করকা বা শিলাবৃষ্টি বলা

যায়। শিলাজল অমৃতের স্কায় গুণকারক। ইহা কৃষ্ণ, বিশদ, গুরুপাক, স্থির গুণ, অভিশয় শাতল, কঠিন, পিত্তনাশক ও কফবায়বৰ্দ্ধক। কুত্রিম শিলা অর্থাৎ বর্ষণ্ড প্রোর এইরূপ গুণবিশিষ্ট

অথ রষ্টিজলম্ম গুণাঃ।

বাৰিকং তদহর ষ্টং ভূমিস্থমহিতং জলম্। তিরাত্রস্থিতং তৎ তু প্রসন্ধনমূতোপমন্।

সম্বোর্ষ্ট ভূমিপতিত বৰ্ষাকালে কিন্তু উহা তিন রাত্রি পরে অহিতজনক। নিৰ্মাণ ও অমূততুলা হইয়া থাকে।

অথ জলস্ত পানবিধিঃ।

অতাসুপানার বিপচ্যতেহরং নিরস্থানাচ্চ স এব দোব:। তসানরো বহিবিবর্দ্ধনার মৃহর্দ্ধ্রবারি পিবেদভূরি॥

জলপান-বিধি।

অতাধিক জলপান করিলে অথবা একে-বারেই জলপান না করিলে অন্ত পরিপাক হয় না। অতএব আহারকালে বারংবার অল্প অন করিয়া জলপান করিবে; ইহাতে অম্বি বর্দ্ধিত रुव ।

অথ শীতসকলপানস্য বিষয়াঃ।

মূর্চ্ছ।পিজৌক্যদাহের বিবে রক্তে মদাত্যরে। প্রমে অনে বিদক্ষেইয়ে তমকে বমধৌ তথা। উর্দ্ধণে রক্তপিত্তে চ শাতমন্তঃ প্রশাস্ততে ।

শীতল জলপানের বিষয়।

মৃষ্টারোগ, পিত্তপ্রকোপ, তাপাদিহেতুক উষ্ণতা, দাহ, বিষদোর, রক্তদোর, মদাতার, প্রম, ভ্রম, ভুক্তস্বব্যের বিদগ্ধতা, তমকশাস, বমি ও উদ্ধগরক্তপিত্তে শাতল জল পান প্রশস্ত।

অথ শীতলজলপাননিষেধঃ:৷

পার্যপুলে প্রতিষ্ঠারে বাতরোগে গলগ্রহে। আশ্বানে ন্তিমিতে কোঠে সন্তঃগুজো নবজরে। অঙ্গচিগ্রহণীগুল-খাসকাসের বিজ্ঞথা। হিকারাং স্নেহপানে চ শীতামু পরিবর্জরেৎ॥

ূশীতলংজলপান নিষেধ।

পার্শুল, প্রতিশ্রায়, বাতরোগ, গলগ্রহ, উদরাগ্মান, স্তিমিতকোষ্ঠ, সম্থোবমনবিরেচনাদি শোধন ক্রিয়ার পর, নবজ্বর, অক্লচি, গ্রহণী, গুল্ম, শ্বাস, কাস, বিদ্রধি ও হিকা প্রভৃতি রোগে এবং মুহাদি স্নেহপানের পর শীতল জল পানং করিবে না।

অথাল্লজনপানস্য বিষয়াঃ।

ব্দরোচকে প্রতিষ্ঠায়ে মন্দেহগ্নৌ শ্বরণৌ করেই। মুধ্পানেকে জঠরে কুষ্ঠে নেত্রামরে ব্যরে। এণে চ মধুমেহে চ পিবেৎ পানীরমজকম।

. অল্ল জলপানের বিষয়।

অরোচক, প্রতিশ্রার, মন্বামি, শোধ, কর, মুখলাব, উদররোগ, কুঠ, নেত্ররোগ, জর, বণরোগ ও মধুমেহ রোগে অর পরিমাণে জল পান করিবে।

অথ জলপানস্যাবশ্যকতা।

তৃকা গরীরদী বোরা সন্তঃপ্রাণবিনাশিনী। তত্মান্দেরং তৃকার্ডার পানীরং প্রাণধারণুম্ । তৃবিতো নোইমারাতি মোহাৎ প্রাণান্ বিমুক্তি। ততঃ দর্কাকবস্থাস্থ ন কচিদবারি:বারয়েৎ ।

জলপানের আবশ্রকতা।

অতি হু:সহ প্রবল পিপাসা সন্তঃপ্রাণঘাতিনী, অতএব ত্যার্স্ত ব্যক্তিকে প্রাণগারণার্থ পানীয় প্রদান করিবে। ত্যার্স্ত ব্যক্তি
পানীয় জল না পাইলে মোহপ্রাপ্ত হয় ও মোহ
হেতু প্রাণত্যাগ করে। এই জন্তঃ সকল
অবস্থাতেই ত্যিতকে জল দিবে, কখনও তাহা
নিবাল করিবে না।

অথ প্রশন্তং জলম্।

অগন্ধনব্যক্তরসং স্থলীতং তর্ধনাশনম্। অচহং লঘুচ হাত্যঞ্চ তোরং গুণবন্ধচাতে ॥

প্রশস্ত জলের লক্ষণ।

যে জলে কোন প্রকার গন্ধ নাই এবং
মধুরামাদি কোন রস ব্যক্ত নাই, যাহা
অতিশয় শীতল, ভূকানাশক, স্বন্ধ, লঘু ও
হাষয়গ্রাহী, সেই জল।গুণকারক।

অথ নিন্দিতজলম।

পিচিছলং ক্রিমিলং ক্লিম্নং পর্গ-শৈবালকর্দমে:।
বিবর্গং বিরসং সাক্রং ছর্গন্ধং ন হিতং জলম্ ॥
কলুবং ছরমজোজ-পর্গনীলীত্ণাদিভি:।
ছর্দ্দেশজমসংস্পৃষ্টং সৌরচাক্রমরীচিভি:।
আনার্ভবং বার্ধিকন্ত প্রথমং তচ্চ ভূমিগম্।
ব্যাপন্নং পরিহর্ভব্যং সর্কলোবপ্রকোপণম্ ॥
তৎকুর্গাৎ স্নানপানাভ্যাং ভূকাম্মানোদরজ্বান্।
কাস্যিমান্যাভিব্যন্দ-ক্রপ্রভাদিকং তথা ॥

নিশিত জল।

যে জল পিচ্ছিল, ক্রিমিবিশিষ্ট, পত্র শৈবাল ও কর্দমাদি খারা ক্লিয়, বিবর্গ, বিরস, খন ও ছর্গন্ধকুকু; যাহা জলজ পত্র নীলিকা ও ভূগাদি খারা আচ্ছন্ন এবং কলুষিত; যাহা কুদেশজাত,
সুষ্য ও চল্লের কিরণ খানা অসংস্পৃষ্ট; যাহা
অসমমে অর্থাৎ পৌষমাঘাদি কালে বৃষ্ট,
সন্তো ভূমিপতিত ও ব্যাপন, তাহা পনিত্যাগ
করিবে। কারণ এই জল ক্রিনেনের প্রকোশক।
ক্রি প্রকার জল স্নান ও পানার্থ ব্যবহার
করিলে ভৃষ্ণা, উদরাধানা, উদর, জর, কাদ,
অন্নিমান্দ্য, অভিষ্যন্দ্রামক নেত্ররোগ, কণ্ণ ও
গ্লগণ্ড প্রভৃতি বিবিধ রোগ উৎপন্ন হয়।

অথ তুষ্টজলস্য নির্দ্দেষিকরণোপায়ঃ।

নিশি চঞ্চাপি পানীয়ং কাঁথত স্থাতাপিতন।
স্থাৰ্থং বজাতং নোহং পাষাণং সিকতাং মূদন ॥
ভূশং সন্তাপ্য নিৰ্বাপ্য সপ্তধা সাধিতং তথা।
কপু বজাতিপুৱাগ-পাটলাদিম্বাসিতম ॥
শুচিসাক্রপটলাবৈঃ কুজজন্তবিবিজ্ঞিত্য।
শুচ্ছং কনক্মৃত্তাত্যৈঃ শুদ্ধং স্তাদ্দোববিজ্ঞিতন ॥
পর্ণমূলবিসপ্রস্থি-মুক্তাকনকলৈবলৈঃ।
গোমেদেন চ বজেণ কুর্যাদমুপ্রসাদনম্ ॥

তষ্ট জলের নির্দ্দোষীকরণ।

ছুইজল অগ্নিতে দিছ বা রোদ্রে তপ্ত করিবে কিংবা স্বর্ণ, রোপ্য, লৌহ, প্রস্তর, বালুকা অথবা মৃত্তিকা অত্যস্ত তপ্ত করিয়া উক্ত জলে নিমজ্জিত করিবে এইরূপ সাতবার করিবে। পরে কর্পূর, জাতিপূজা, পুরাগ ও পাটলাদি পূজা ছারা স্ক্রান্ত করিয়া পরিষ্কৃত ঘন বন্ধে ছাকিবে। ইহা ছারা ক্ষুদ্র জিমি সকল বহির্গত হইয়া ঘাইবে। অনস্তর কনক-মুক্তাদি জলপ্রসাদক দ্রব্য ছারা স্বচ্ছ ও

দোষবৰ্জ্জিত করিয়া লইবে। জলপ্রসাদক দ্রব্য ঘণা—পর্ণমূল, মৃণালগ্রন্থি, মুক্তা, স্বর্ণ, শৈবাল, গোমেদ (মণিবিশেষ) ও পরিষ্কৃত বস্ত্র।

কালবিশেরে বিহিতজল বিশেষঃ।
পোবে বারি সরোজাতং মাথে তৎ তু তড়াগজম।
ফাল্পনে কৃপসভূতং চৈত্রে চৌঞ্জং হিতং মতম্।
বৈশাথে নৈঝ'রং নীরং জ্যৈটে শত্তং তথোজিদম।
জাবাতে শত্ততে কৌপং প্রাবণে দিবানেব চ।
ভাত্রে কৌপং পায়ং শত্তমাধিনে চৌঞ্জনেব চ।
কার্ত্রিকে মার্গনিয়ে চ জলমারেং প্রশক্ততে।

কালবিশেষে। বিহিত জলবিশেষ।

পৌদনাদে সরোবরের জল, নালে তড়া-গোর জল, ফাস্তুনে কুপের জল, চৈত্রে চৌঞ্চের জল, বেশাথে নিঝারের জল, জ্যোন্ত উদ্ভিদের জল, আষাঢ়ে কুপের জল, শ্রাবণে নেঘের জল, ভাদ্রে কুপের জল, প্রাথিনে চৌঞ্চের জ্বল এবং কার্ত্তিক ও অগ্রহায়ণ নাদে সকল জলই প্রশস্ত।

অথ পীতস্য জলস্য পাককালঃ।
আমং জলং জীৰ্য্যতি বামমাত্ৰং তদৰ্জমাত্ৰং শৃতশীতলঞ্চ।
তদৰ্জমাত্ৰন্থ শৃতং কছুক্কং পদ্মপ্ৰপাকে তদ্ধ এব কালাং॥

পীতজ্বের পাককাল।
কাঁচা জল একপ্রহরে পরিপাক হয়।
গরম জল শাতল করিয়া পান করিলে অর্দ্ধ প্রহরে এবং তাহা গরম অবস্থায় পান করিলে সিকি প্রহরে পরিপাক হয়। জল পরিপাকের এই তিনটি কাল নির্দিষ্ট আছে।

ইতি বারিবর্গ:।

তাথ হ্রশ্বর্গঃ।

অথ গোত্তপ্মস্তা গুণাঃ।

গ্রাং ছুক্ধং বিশেষে মধুরং রসপাক্ষোঃ।
শীতনং গুজুকুৎ বিশ্বং বাতপিত্তাপ্রনাশনম।
দোষধাতুমনমোতঃ-কিঞ্চিৎরেদকবং গুরু।
ব্যাসমন্তবোগাণাং শান্তিকং দেনিবাং সদা।

গ্ৰাহ্ৰেৰ গুণ।

গ্রাহ্র — মধুব্রস, মধুববিপাক, শতবীর্ঘা, স্থান্থ কারক ও মিগ্ধ। ইহা দোষ, পাতু, মল ও মোতঃসমূহের কিঞ্চিং রিয়তাকারক, শুরু এবং বায়ু, রক্তপিত্ত, জরা ও সমস্ত বোগের পাস্তিকারক।

অথ মহিধীত্বগ্নগুণাঃ ৷

মাহিষণ মধুৰং গৰ্যাই স্লিখাং গুজকর ওক। নিদ্রাকরমভিষানি কুবাধিকাকরণ হিম্ম্॥

মাহিষ জ্যার গুণ।

মাহিষ হ্রম –গব্য তথা অপেক। মধুব্বস, স্নিধ্ব, শুক্তকারক, গুরু, নিদ্রাকাবক, অভিযান্দী, কুবাবদ্ধক ও শীতবীর্যা।

অথ ছাগীত্বপ্ৰণাঃ।

ছাগং ক্ষায়° মধুরং শীত° থাহি তথা লঘু। রক্তপিভাতিসারদ্বং ক্ষয়কাসম্বরাগহম্॥ অজানামলকায়ডাৎ কটুতিক্তাদিসেবনাৎ। স্তোকাস্পানাদ্ ব্যায়ামাৎ সর্বব্যোগাপহ° বিজঃ॥

ছাগহগ্ধের গুণ।

ছাগছগ্ধ—কমার-মধ্ররদ, নীতবীর্য্য, মল-সংগ্রাহক, লঘু এবং ইহা রক্তপিত্ত, অতিদার, ক্ষয়, কাদও জর নানক। ছাগের অল-কায়ত্ত্তে এবং তাহারা কটু ভিক্ত প্রভৃতি জব্য ভোন্ধন, অন্ন জল পান ও বাায়াম করে বলিয়া তাহাদের ত্ত্ত সর্মরোগনাশক হট্যা থাকে।

ত্রথ মেধীত্রশ্বগ্রণাঃ।

লাবিকং লবণং স্বান্ত প্রিম্যোস্থ্যাত্মরীপ্রণুৎ। অস্তত্ত্ব তর্পণ কেন্দ্রং গুরুপিত্তকফ্রদ্রদ্য। প্রক্ষাক্ষেত্রিলোপ্ততে কেবলে চানিলে বৰ্ষা॥

ভেড়ার চ্যের গুণ।

ভেড়ার হ্র্য়—গ্রবণ-সধুররস, স্পির্ক, উষ্ণ-বীগ্য, স্থারীছাবক, অন্তপ্ত, তৃপ্তিজনক, কেশের হিতকাবক, গুরু ও শুক্রবর্দ্ধক, পিত্ত ও কফ্ষ-কারক এবং ইছা বাহজ কাস ও বায়ুরোগে হিতকর।

অথ ঘেটিকীছ্রমগুণাঃ।

কক্ষোক বড়বাক্ষারং বলাং শোষানিলাপহম। জন্ম পট় লঘু সাত্র সর্কাষেকশ্যক তথা।

ঘোটকীছমেন গুণ।

ঘোটকীত্ত্ব—কৃক্ষ, উষ্ণ, বলকারক, শোষ-রোগ-শান্তিকর, বায় , অম-লবণাস্থাদ, লঘু ও স্বাহ। অথপ্তিতক্ষ্ব বিশিষ্ট সমুদায় প্রাণীর ত্ত্বত্ব এইরূপ।

অথ গৰ্দভীত্ৰশ্বগ্ৰণাঃ।

यामना ट्याः मामः लनगः क्रिकीश्विक्रः। कक्षकामद्वः नाल-त्वाभग्नः भक्ष्णिभन्नः॥

शर्क जीव्हा अन ।

গৰ্দ্ধভীত্থ — অম-লবণরস, ক্রচিছনক ও অগ্নিবৰ্দ্ধক এবং ইহা খাস, বায়ু, কফ, কাস ও বাল্যাবস্থার রোগনাশ করিয়া থাকে।

অথোদ্রীত্রগুণাঃ।

উত্তঃ দ্বদ্ধং লযু স্বাহ্ন স্বৰণং দীপনং তথা। ক্ৰিমিকুষ্ঠকফানাহ-শোখোদরহরং সরম্ ॥ উদ্ভীতক্ষেব গুণ ।

উষ্ট্রাহ্গ্ধ—লবু, স্বাহ্ন, লবণাস্বাদ, দীপন ও সারক। ইহা পান করিলে ক্রিমি, কুঠ, কফ, জানাহ, শোপ ও উদর রোগ নিবারিত হয়।

অথ নারীত্রগ্রন্তণাঃ।

নাধা। লঘু পথং শীতং দীপন বাতপিওজিং। চক্তমুলাভিয়াত্র ন্তানেচাত্রের বিলয়

नातीक्रक्षत छन।

নারীজ্ম—ল্যু, শাতল, দীপন, বায়, পিও এবং চক্ষু:শূল ও অভিযাত নাশক। ইত: নস্ত ও আশ্চোতন জিয়ার শ্রেষ্ঠাপযোগী।

व्यथ धारताका मिन्न भ छनाः।

ধারোক্ষং গোপয়ো বলাং লগু নাতং প্রধাসমস্।
দীপনক জিনোবছা তদ্ধায়ানিনিকা তত্তেং।
ধারোকাং শস্ততে গবাং ধারানীতিত মাহিষ্য।
শুতোক্ষমাবিকাং পথাং শুতনীতমজাপরঃ ॥
আনং কারমভিষ্যানি ভিকল্পোমবর্জনন।
জেরং বর্কামপথায় গবামাবিকালিছ।
নারীক্ষীরস্বাম্যের হিতং নজু শুতং হিমে।
শুতোকাং কফবংতছং শুতনীত র পিত্তুং।
অর্জোদকং কারনিউমামালপুতরং পরঃ ॥
জনেন রহিতং হুগমতিপকং যথা যথা।
তথা তথা ভকা বিশ্বং বৃষ্যং ব্যবিবন্ধনম্॥

পানোক গবা তথা—বলকাবক, লগু, শীতল.
অমৃততুলা, অগ্নিদাপক ও ব্রিদোমনাশক।
থাতীদোহন কালে হয় সভাবতঃ গবম থাকে,
ভাহাকে গারোক তথা কছে। গারোক গব্য
তথাই প্রশন্ত, কিন্ত ই তথা শীতল হইলে ভাহা
পরিভাগি ক্রিবে। মাহিষ তথা দোহনের
পর শীতল হইলে গুণকারী হয়, মেষীত্থা
শৃতোক অবস্থায় (জ্ঞাল দেওয়ার পর শীতল না
হওয়া পর্যান্ত) এবং ছাগীতথা ভাল দেওয়ার পর

ধারোফাদিছুগ্নের গুণ।

শীতল হইলে গুণকারক হয়। গব্য ও মাহিষ

গগ্ধ ভিন্ন সমন্ত কাঁচা গৃগ্ধ—অভিধ্যন্দী, গুল,

শ্লেমা ও আমবর্দ্ধক এবং অপথ্য। নারীগৃগ্ধ
কাঁচাই হিতকর, ইহা সিদ্ধ অহিতকর। আল

দেওয়া গৃগ্ধ গরম অবস্থায় পানু করিলে কফ ও

বার এবং শীতল ক্রিয়া পান করিলে পিন্ত নট

হয়। অর্দ্ধেক জল ও অর্দ্ধেক হুণ একত্র পাক

করিয়া গৃগ্ধাবশেষ পাকিতে নামাইলে তাহা

অভান্ত লগু হয়। জলহীন গৃগ্ধ যত অধিক
পাক করা যায়, তত্ট তাহা গুল, মিগ্ধ,
বীগ্যকারক ও বলবদ্ধক হয়।

অথ সন্তানিকা-গুণাঃ।

সম্ভানিকা গুৰু: শাভা বৃষ্যা পিডাম্মনাতমুৎ। তপনা বংহনী মিধন বলাসবলগুজুলা॥

ছথের সরের গুণ।

ত্থেব সর—শুকু, শীতবীর্ষা, রতিশক্তি-বদ্ধক, রক্তপিত্তনাশক, বাতম, তৃপ্তিকর, পৃষ্টিকারক, মিগ্ধ এবং ইহা কফ, বল ও শুক্র-জনক।

অথ খণ্ডাদিযুক্তছ্বপ্দ গুণাঃ।

গঙেন সহিত° এ%° কককুৎ প্রন্পেংম্। সিতাসিতোপল'যুক্তং শুকুলং জিমল'প্রম্। সগুডং মুকুকুকুকুম্বং পির্লেমকরং প্রমাঃ

খণ্ডাদি-মিশ্রিত ছথের গুণ।

খণ্ডৰুক্ত হ্থা—কফকারক ও বায়ুনাশক।

চিনি ও মিছনী সংৰুক্ত হথা শুক্তজনক ও

তিলোধনাশক। গুড় মিশ্রিত হথা মুত্রকুদ্রনাশক এবং পিত্ত ও ক্রেয়া বহ্নক।

অথ ছগ্নসেন্নন্ত সময়বিশেষে গুণাঃ।

বৃষাং বৃংহণমখিদীপনকরং পূর্ব্বায়ুকালে পয়ো মধ্যাহে ডু বলাবহং কক্ষরং পিত্তাপহং দীপনম্। বালে বৃদ্ধিকরং ক্ষয়েহকয়করং বৃদ্ধের্ রেতোবহং রাত্রৌ পণামনেকদোবশমনং চকুর্ছিতং সংস্কৃতম্ । বদন্তি পেয়ং নিশি কেবলং পয়ে
ভোজাং ন তেনেহ মহৌদনাদিকয়ৄ।
ভবেদজীবং ন শয়ীত সর্বাধা
কীয়য় পীতয় ন শেয়মুৎয়য়েৎ।

বিদাহীক্ষমপানানি দিবা ভূঙ্জে হি যররঃ। তিদাহপ্রশান্তার্থং রাজে। কীরং সদা পিবেৎ ॥ দীপ্তানলে কৃষ্ণে পৃথ্যসি বালে বৃদ্ধে পঞ্চপ্রিয়ে। মতং হিততসং দুধাং সন্তাল্ডনক্ষাং যতঃ॥

সময়বিশেষে ছগ্ধপানের গুণ।

প্রকারে হয় পান করিলে শরীরের পুষ্টি, অধির দীপ্তি ও শুক্রের বৃদ্ধি হয়। মধ্যাহে দেবিত হ্রগ্ধ বলকারক, কফহারক, পিত্তনাশক ও অগ্নিনীপক। বাল্যাবস্থায় গ্রন্ধপান করিলে প্রীরের প্রাষ্টি, ক্ষারোগে চগ্ধ পান করিলে ক্ষরের নিবারণ, বুদ্ধাবস্থায় এথ পান করিলে ভুক্তের বন্ধন এবং রাজিতে গ্রন্থ পান করিলে পরীরের হিভ্যাধন, নানাদোষের নাশ ও রাতিকালে সন্না-চকুর কোতির্ভি হয়। দির সহিত ছগ্ধ পান না করিয়া, কেবলগাত্র ত্ত্র পান করিবে। অজীণ-আশসায় কণ শ্রন করিবে না। হুগ্ধ পান পাত্রে অবশেষ রাখা উচিত নহে। যে ব্যক্তি দিবদে বিদাহী অন্ন পান ভোজন করে, তজ্জ-নিত বিদাহশান্তির নিমিত্ত তাহার রাত্রিকালে কেবল হুগ্ধ পান করা উচিত। রুশ, বালক, বুদ্ধ, চথাপ্রির ও দীপ্তানল ব্যক্তির পক্ষে হগ্ধ বিশেষ হিতকারক; যেহেতু হুগ্ধ সেবনে সন্তঃ শুক্রবৃদ্ধি হইয়া থাকে।

অথ মথিতস্থ হুগ্ধস্থ গুণাঃ।

ক্ষীরং গন্যমথাজং না কোকং দণ্ডাহতং শিনেৎ। পঘু বৃষ্যং শ্বরহরং নাতপিত্তকক্ষাপহম্।।

মথিত হুগ্ধের গুণ।

মধিত ঈষত্বৰ গধ্য কিংবা ছাগছৰ, লঘু, বৃষ্য এবং জ্বর, বায়ু, পিত্ত ও কফনাশক।

় অথ নিন্দিতং ছগ্ধম্।

विवर्गः विजयकां प्रः दुर्गकाः গ্রন্থিতং পরঃ। वर्क्षत्रभव्यवन-युक्तः कुक्ते कितृष् य छः॥

যে হ্রা বিবর্ণ, বিরস, অন্নরসাঘিত, হুর্গন্দ্রন্ত ও প্রথিত (ছার্ক্ড়া ছ্যাক্ড়া) এবং যাহা আন অথবা লবশদংস্কু, তাহা পরিত্যাগ কনিবে; কারণ এতাদুল হ্রা দেবনে কুঠ প্রভৃতি রোগ জনো।

শীযূষকিলাটক্ষারশাকতক্রপিণ্ডমোরটানাং লক্ষণানি গুণাশ্চ।

কীরং তৎকালগুড়ারা ঘনঃ পীয়ন্দ্রে।

নষ্টহুদ্ধক প্রক্ত পিও: শ্রেড়ে কিলাটকঃ ॥

অপক্ষের ব্যন্তঃ কীরশাকং হি তৎপর: ।

দ্যা তদেশ বা নসং হুদং বদ্ধং হুদংস্যা ॥

দরভাগেন হানং যথ হুদ্পিও: স্পুচ্চে ।

নঙ্গুদ্ধভুবং নীরং মোনচং জেজ্জ্ডোহুর্নীং ॥

পীযুরক বিলাচন্চ কীরশাকং হুপের চ।

তর্গপিও হুলে বুলন বৃংহ্না বল্লজ্জানাং ॥

ভরবঃ শেখলা হুক্তা বা হুপ্তিবিনাশনাঃ ।

দী প্রায়ানাং বিনিজাবাং বিদ্রো চাভিপ্জিতাং ॥

মুখ্পোষ্ট্রাদাহ-রক্তপিভ্জুর্গ্রগৃহ ।

ল্যুবলকরো ক্ষেচা মোনটা ভাহ সিহাযুতঃ ॥

সম্ভাপ্র গাভার ঘন ছগ্ধকে পায়ুব কহে। ন্ট্রুগ্ধকে পাক করিয়া পিণ্ডাকার করিলে তাহাকে কিলাট বলে। অপকাবস্থাতেই যে ত্রথ্য নষ্ট হয়, তাহাকে ক্ষীরশাক বলে। দুধি বা তক্রের সংযোগে যে হগ্ধ নষ্ট হয়, তাহা পরিষ্কৃত ব্যস্ত্র বারিয়া দ্রবাংশহীন করিলে তাহাকে তক্রপিও (চানা) কহা যায়। নইত্রধ সম্ভত জলকে জেজজড় মোরট বলিয়া আখা প্রদান করিয়াছেন। পীয়ৰ কিলাট ক্ষীরশাক ও তক্রপিও ইহারা—বৃষ্ রংহণ, বলবদ্ধক, শুরু, শ্লেম্বকর, হুন্ত ও বাতপিত্ত, মাশক। যাহাদের অগ্নি প্রদীপ্ত, যাহাদের নিদ্রা হয় না, তাহাদের গক্ষে এবং বিশ্রধিরোগে ঐ সকল দ্রব্য অতি পূজিত। মোরট (ছানার জল) মুণাশেষ-ভৃষ্ণা-দাহ-রক্তপিত ও জর-নাশক। চিনি সংযুক্ত করিয়া থাইলে ইহা---লমু, বলকর ও রোচক হইয়া থাকে।

ইতি ছৰবৰ্গঃ।

অথ দধিবৰ্গঃ।

অথ দ্ধিগুণাঃ।

দর্কিং দীপনং নিশ্ধং কষায়ানুরসং গুরু। পাকেংলং প্রাহি পিতাস্ত্র-শোপমেদঃকদপ্রদম্ দ মূত্রকুক্তে প্রতিষ্ঠায়ে দীতকে বিষমক্ষরে। স্তীসারেংক্টো কার্শ্যে শস্ততে বলগুকুক্থ ॥

मित्र खन।

দণি—উষ্ণবীর্ধা, অগ্নিদীপক, স্নিগ্ন, কথা-সাম্বান, গুরু, অস্কবিপাক, নলসংগ্রাহক এবং ইহা বক্তপিত্ত, শোথ, মেদ ও কফ বর্দ্ধক। দবি—মুএকুজু, প্রতিশ্রান, শাতক-জর, বিনম জন, অভিসার, অরুচি ও কার্শানোগে প্রশস্ত। ইথাবল ও শুক্রবর্দ্ধক।

অথ গোদ্ধিগুণাঃ।

গবাং দৰি বিশেষণ স্বাহ্ন বলাং রংচিপাদন। প্রবিজং দীপানং ক্রিন্ধং পৃষ্টিকৃৎ প্রনাপ্তম। উক্তং দ্রামণেষাপাং মধ্যে গ্রাং গুলাবিক্য।

গ্ৰাদ্ধির গুণ।

গবাদনি—কতি মধুররস, বলকারক. ক্লচিপ্রদ, পবিত্র, অফ্লিদাপক, ফ্রিন্ধ, পুষ্টি-কারক ও বায়ুনাশক। সকল প্রকার দ্বির মধ্যে গবাদনিই শ্রেষ্ঠ।

অথ মাহিষদধিগুণাঃ।

মাহিবং দধি ফ্লিক্ষং শ্লেমলং বাতপিওতুংা। বাছুপাকমভিষ্যান্দ বুষ্যং ভৰ্বপ্ৰদূৰকম্ ।

भारिय मित्र खन।

মাহিষদনি—অভিশয় রিশ্ধ, শ্লেম্মকারক, বাতপিত্তনাশক, মধুরবিপাক, অভিযানী, উক্রকারক, গুরু ও রক্তদূষক।

व्यथ ছोर्गमधिखनाः।

আজং দ্যান্তমং প্রাহি লঘু দোষত্রাপহম্। শক্তে খানকাসাশঃ-কর্মতার্ভু দুদীপনম্॥

ছাগ দধির গুণ।
ছাগদধি—মত্যস্ত সংগ্রাহী, লঘু, ত্রিদোষ-নাশক, অগ্নিদীপক এবং ইহা খাস, কাস, অর্শঃ, ক্ষয় ও কার্শ্যবোগে প্রশস্ত।

অথ শর্করাদিসহিতদ্বিগুণাঃ।

স্থাকরং দ্বি শেষ্ঠং তৃসংপ্রিতামদাহজিৎ। সম্ভদ্ধ বাতমুদ্ বৃষ্ধাং বৃংহ্ণং ভপণং শুক্স।

চিনিও গুড় সংবক্ত দিবে গুণ।
চিনিমিশ্রিত দিবি— শ্রেও এবং ভূনগ,
বক্তপিও ও দাহ নাশক। গুড়বুরু দিবি—
বাতনাশক, গুক্তজনক, পৃষ্টিবন্ধিক, ভূপ্তিকাবক ও গুরুপাক।

অথ রাত্রো দধিভোজননিষেধঃ।

ন নজং দাগ ভূঞ্জীত ন বাপাল্তশক্রম্। নামুল্যপেং নাক্ষোড়ং নোকং নামনকৈবিনা॥ শস্ততে দ্বি নো রাজ্যে শস্তকাসূত্তাম্বিতম্। রজপিত্তক্ষাংগুরু বিকারেমু তু নৈব তৎ।

রাত্রিতে দধি ভোজন নিষেধ।

রাজিতে দিনি ভোজন করিবে না।
তাত্ত সময়েও হাত, চিনি, মুদ্দাগৃষ, মধু বা
ত্যামনকীর রস ইখাদের কোন একটির সহিত
মিশ্রিত না করিয়া দিনি গাইবে না।
অর্থাৎ ঐ সকল দ্ব্য সংযুক্ত করিয়া
দ্বিপান করিবে। অন্ত্যাদি স্বান্ধা উষ্ণ
করিয়া দ্বি পান করিবে না। গ্রন্থান্তরেও

উক্ত আছে, রাত্রিতে দিদ প্রশস্ত নছে, কিন্তু মৃত ও জলসংষ্কৃত করিয়া পান করিলে দোষ হয় না। রক্তপিত্ত ও কলেণি রোগে দিদি সেব্য নহে।

ष्यथ मत्रश्च मखन्मह लक्षनः छन्। मह।

দগ্রন্থ,পরি যো ভাগো ঘন: মেহসমন্বিতঃ।
স লোকে সর ইভুাজো দগ্রে। মণ্ডন্ত মারিতি ॥
সর: স্বাত্মগুরুর বৈরা বাতবক্তিপ্রণাশন:।
মোহয়ো বন্ধিপ্রশমন: পিত্রশ্রেমবিবর্দ্ধন:॥
মন্ত্র ক্রমহর: বলাং লঘু ভক্ত:ভিলাবকৃৎ।
প্রোতোবিশোধনং হ্লাদি ক্ষভুকানিলাপাংম্।
অব্যাং প্রীণনং শীঘ্রং ভিনত্তি মলসক্ষম্।

দ্বির সর ও মাতের জ্ঞান।

দধির উপরিত্ত মেহদমন্বিত ঘনীভূত পদাথকে দদির সর বলা যার এবং দদির মগুকে
মন্ত বা মাত্ বলে। দধির সর—মধুররস,
গুরুপাক ও শুক্রবর্দ্ধক। ইহা বায়ুও অগ্নি
নাশক। ঐ সর অমরসান্বিত হইলে বস্তিশোধক এবং পিও ও কফের বদ্ধক হইরা
থাকে। দদির মাত্—ক্রান্তিনাশক, বলকারক, লগু, অয়াভিলাম্ভনক, স্রোভ্রস্ফ্রের
শোধনকারক, আহ্লাদ্ভনক, কফ্ন্ন, পিপাসানাশক, বাতাপহারক, অর্য্য ও প্রীভিজনক।
ইহা শিন্তেই সঞ্চিত মল বিরেচিত করিরা থাকে।

ইতি দ্বিবর্গঃ।

অথ ভক্রবর্গঃ।

অথ তক্রম্।

ণোলন্ত মপিতং ভন্নমুদ্ধিচ্ছচিছ্ক।পি চ। সমরং নির্ফলং থোলং ম্বিত্তুমরোদক্ষ । **७**कः পामकलः প্রোক্তন্দ্রিদ বন্ধনারিকম । ছচিছকা সারহীনা স্থাৎ স্বচ্ছা প্রচরবারিক। ॥ शालक **मर्क**तायुक्तः छटेनात्क ग्रः तमालनः। বাতপিত্তরং গোলং মথিতং কফপিত্তমুৎ॥ তকং প্রাহি কথায়ামং স্বাহ্নপাকরসং লয় ! वीरमाकिः हीशनः वृषाः श्रीगनः वाटनागनम् ॥ গ্রহণ্যাদিমতাং পথাং ভবেৎ সংগ্রাহি লাঘবাৎ ॥ কিঞ্চ স্বান্তবিপাকিত্বার চ পিত্তপ্রকোপণম। ক্ষায়োক্ষাবিকাশিত্বাদ্রৌক্ষ্যাচ্চাপি ক্ষাপংম ! ন তক্রসেবী বাধতে কদাচির তক্রদন্ধা: প্রভবন্তি রোগা:। যুগা ফুরাণামমূতং সুখায় তথা নরাণাং ভবি তক্রমাহ: 🛭 উদ্ধিৎ কফকুৰলাং শ্ৰমন্থ প্ৰমং মতম্। ছচিছকা শীতলা লগ্য পিভ্ৰূমতৃৰাহরী। বাতসুৎ কম্বন্ধুৎ সা তু দীপনী লবণাম্বিতা ॥

খোল, মথিত, তক্ত্ৰ, উদশ্বিং ও ছচ্ছিকা, এই পাটেটি হকের ভেল। তথ্যনো সরের : স্হিত নিজ্ঞাল দ্ধি মন্ত্ৰ করিলে ভাহাকে সরবিহীন নিক্তা যোল 4761 : মন্ত্রন করিলে ভাষাকে মথিত বলে। র্থাংশ জলের সহিত দিবি মন্তন করিলে তাহাকে তক্র ও অদ্ধাংশ জলের সহিত দবি উদিখিং এবং মন্তন করিলে তাহাকে পরিমাণে জল মিশ্রিত করিয়া মন্থন করিলে যে স্বচ্ছপদার্থ থাকে, তাহাকে বলা যায়।

চিনিসংযুক্ত ঘোল রসালের প্রায় ওপ-কারী। খোল—বায়ু ও পিত্ত নাশক। মথিত—কফ ও পিত্ত নাশক। তক্ৰ—পারক, কষার-অন্ত-মধুর-রস, মধুরবিপাক, লগু, উষ্ণ-বীর্যা, অগ্নিনীপ্তিকারক, শুক্তবর্দ্ধক, ভৃপ্তিজনক ও বায়ুনাশক। ইহা প্রহণী প্রভৃতিরোগগ্রস্ত ব্যক্তিদিগের পক্ষে হিতকর; পরস্ত তক্রে লঘু বলিয়া ধারক; বিপাকে মধু। হয় বলিয়া তাহা পিত্তপ্রকোপক নহে; ক্ষায়ত্ব, উষ্ণত্ব, অবিকাশিও এবং ক্ষতা হে ঠু তক্রকফ নত্ত করিয়া পাকে।

তক্রসেবনকারী ব্যক্তিকে কোন ক্লেণ অনুভব করিতে হর না এবং তক্র সেবন করিলে কোন রোগগ্রস্তও হুইতে হয় না। পণ্ডিভগণ বলিয়া গাকেন, যেমন অনুভগান দেবগণের স্থাবহ, ভদ্দপ ভক্রপান মানব-গণেব স্থাপ্রদূহয়।

উদ্ধিং—কফ্ৰদ্ধক, বলকারক এবং অতান্ত শ্রান্তিদাশক। ছচ্ছিকা—শাত্রীর্যা, লঘু, কফ্কারক এবং পিত্ত, শ্রম, পিপাদা ও বায়ু নাশক। উহা লবপদংসূত্র হুইলে অধিনীপ্তিকারক হুইয়া থাকে।

অথোদ্ধতয়তক্তোকোদ্ধতয়তামুদ্ধ ত-য়তানাং তক্তাণাং গুণাঃ।

সমৃদ্ধৃত্যুতং ওঞাং পণাং লঘু নিশেষতঃ। ভোকোদ্ধৃতং খুতং ওখাদ্ভক্ষ বৃষ্যং কফানহন্। অমুদ্ধৃত্যুতং সাম্রং গুরু পৃষ্টিকফ প্রদা

য়ে তক্রের মৃত সমাক্ উদ্ধৃত করা হ'টমাছে, তাহা অত্যপ্ত হিতকর ও লম্ব। যে
তক্রের মৃত অস্ত্র পরিমাণে উদ্ধৃত করা হয়,
তাহা উহা অপেক্ষা গুরু, পৃষ্টিকারক এব'
কফজনক। যে তক্র হ'টতে একেবারে মৃত
উদ্ধৃত করা হয় না, তাহা ঘন, গুরু, পৃষ্টিকারক
ক্রেবং কফজনক হইরা গাকে।

অথ দোষবিশেষে ব্যাধিবিশেষে চ তক্রবিশেষাঃ।

বাতেইয়ং শক্ততে তক্তং গুণ্ঠীদৈশ্বনংযুতন্।
পিত্তে স্বাস্থ্য দিতাযুক্তং দব্যোধমধিকে ককে।
হিন্দুজারযুক্তং গোলং দৈশ্বনেন চ সংযুত্ম।
গুনেদতীব বাতশ্বমশোহতিসারহাৎ পারন্।
ক্রিদং পৃষ্টিদং বলাং বৃত্তিশুলবিনাশনন্।
মুত্রকুক্তে তু সঞ্চং পাঞ্রোগে সচিত্রকন্॥

বায়ুপ্রশান্তির নিমিত্ত শুগী ও সৈদ্ধবসম্মিত অন্তর্গমুক্ত তক্র প্রশস্ত্ত বিভিন্ত গোল
ব্যবহার্য। কফ-উপন্থার নিমিত্ত তিকটুসংস্কু গোল প্রগোজা। হিন্তু জীরা ও
সেশ্বর সংস্কু গোল—অত্যন্ত বায়ুনাশক,
ক্রচিজনক, প্রষ্টিকারক, বলপ্রদ, বন্তিগত শূলনাশক; ইহা অশ্বঃ ও অতীসার বিনাশের
পক্ষে শেষ্ঠ। মৃত্রক্ষুরোগে গুড়ের সহিত
এবং পাপুরোগে চিতামুলের সহিত ঘোল
প্রযোজা।

অথাপকতক্রগুণাঃ ৷

্তক্ষামং কফং কোঠে হ**ন্তি** কঠে করোতি চ। গীনসখাসকাসাদৌ প্রদেশ প্রযুক্ত্যতে ।

অপকত্ত্র-কোষ্ঠগত কফনাশক, কিন্তু কণ্ঠগত কদের বৃদ্ধি করিয়া থাকে। পক তক্র-পীনস, খাস ও কাস প্রভৃতি রোগে প্রযোজ্য।

অথ তক্র্যুস্বননিমিতানি।

শাওকালেংগ্রিমানের চ তথা বাতাময়ের চ।
অঞ্চৌ প্রোতনাং রোধে তকং স্থাদমৃতোপমন্ ।
তৎ তু হস্তি গরক্তদ্ধি-প্রদেকবিষমন্তরান্।
পাঞ্মেদোগ্রহণ্যশো-মৃত্রগ্রহজগন্দরান্ ।
দেহং গুলামতীদারং শ্লামীহোদরাক্তীঃ।
দিত্রকোঠগতবাধীন্ কুঠলোধত্বাকিমীন্।

শীতকাল, মন্দাগ্নি, বাষুরোগ, অক্রচিরোগে এবং প্রোক্তঃ দকল করে হইলে কক্র অমৃতের ন্যায় উপকার করে। ইহা গরদোষ, বমি, প্রেদেক, বিষমজ্ঞার, পাণ্ডু, মেদ, গ্রহণী, অর্শঃ, মূত্রাঘাত, ভগন্দর, প্রয়েহ, গুলা, অতীদার, শূল, প্রীহা, উদর, অক্রচি, শ্বিত্র, কোঠগতরোগ, কুঠ, শোণ, পিপাদা ও ক্রিমি বিনষ্ট করিয়া থাকে।

অথ তক্রন্থাবিষয়াঃ।

নৈৰ তক্তং ক্ষতে দ্যাগ্ৰোঞ্কালে ন তুৰ্বলে। ন মুক্তাল্যদায়ের ন বেগেগ রক্ত'পত্তে ॥ । ক্ষতরোগে, গ্রীষ্মকালে, গ্রন্ধল ব্যক্তিকে, মূর্চ্ছারোগে, ভ্রমরোগে, দাহরোগে এবং রক্ত-পিত্তে তক্রপ্রয়োগ করিবে না।

অথ গব্যাদীনাং তক্রাণাং বিশিষ্টা গুণাঃ।

যান্মজানি দ্বীষ্ঠান্তী তদ্পুণং তক্রমাদিশেং। গব্য দবি প্রান্থতি আটি প্রকার দবিব যেরূপ গুণ কথিত হইয়াছে, তত্তক্তাত তক্তেরও সেই সেই গুণ ফানিবে।

ইতি তক্রবর্গঃ।

অথ নবনীতবৰ্গঃ।

অথ নবনীতস্ত নামানি গুণাশ্চ।

মুক্ষণং সরজং হৈয়ঙ্গবীনং নবনীতকম্। নবনীতং হিতং গব্যং বৃষ্যং বর্ণবলাগ্নিকুৎ॥ সংগ্রাহি বাতপিতাসক্স্পল্যাশোহর্দিতকাসজৎ। তদ্ধিতং বালকে বৃদ্ধে বিশেষাদমূতং শিশোঃ॥

মৃক্ষণ, সরজ, হৈয়ঙ্গবীন ও নবনীত, এই ক্য়েকটি একপর্য্যায়ক শব্দ। মাথন ইহার-গচলিত নাম।

গব্যনধনীত—হিতজনক, পুষ্টিকারক, বর্ণপ্রদাদক, বলকারক, অগ্নিবর্দক, ধারক এবং
ইহা বারু, রক্তপিত্ত, ক্ষয়, অর্শঃ, অদ্দিত বারু
ও কাদ নালক। নবনীত বালক ও বৃদ্ধ
দকলেরই উপকারী, বিলেষতঃ ইহা শিশুর
পক্ষে অমৃততুল্য।

অথ মাহিষনব্নীত গুণাঃ।

নবনীতং মহিষ্যাপ্ত বাতলেম্বকরং গুরু। দাহপিত্রশ্রমহরং মেদ:গুরুবির্দ্ধনম ॥

মাহিষ নবনীত—বায়ুবৰ্দ্ধক, কফকারক, গুরু, মেদোধৰ্দ্ধক, শুক্রজনক এবং ইহা দাহ, পিত্ত প্রশ্ন নাশক।

অথ পয়দো নবনীতম্ম গুণাঃ।

ছন্দোখং নবনীতত্ত চক্ষাং রক্তপিওতুৎ। বুবাং বলামতিরিশ্বং মধুরং গ্রাহি শীতলম।

তুগ্ধোদ্ধৃত নবনীত—চক্ষুর হিতকারক, রক্তপিত্ত নাশক, গুক্রবর্দ্ধক, বলকারক, অভিশন্ন মিগ্ধ, মধুররস, ধারক ও শীতবীর্ষ্য।

অথ সূত্রঃসমুদ্ধতনবনীতগুণাঃ।

নবনীতন্তু সন্তাস্থং স্বাছ প্রাহি হিসং লবু । মেধ্যং কিঞ্চিৎ ক্যায়ান্ত্রমীযন্তনাংশসংক্রমাৎ ॥

স্থ্য উদ্ধৃত নবনীত—মধুর রস, ধারক, শীতবীর্যা, লঘু ও মেধাজনক। অল তক্রোংশ-সংষ্কৃত গাকায় এই নবনীত কিঞ্চিৎ ক্ষায়ায় বস হইয়া থাকে।

অথ চিরন্তননবনীতগুণাঃ।

সক্ষারকটুকায়খাচছদি।শঃকুষ্ঠকারকম্। শ্রেখলং গুরু মেদক্তং নবনীতং চিরস্তনম্॥

বহুকালোংপন্ন নবনীত—গুকু, কফকারক ও মেদোবর্দ্ধক এবং ইহা ক্ষারসংস্কৃত কটু-অন্তরস বলিয়া বমি, অনঃ ও কুষ্ঠরোগ উৎপাদন করিয়া থাকে।

ইতি নবনী এবর্গঃ।

অথ য়তবৰ্গঃ।

অথ যুতশু নামানি গুণাশ্চ।

গতমাজাং হ্বিঃ স্পিঃ কথাতে তদ্ধ্ব। প্রপ গতং রস:য়নং থাত চকুবাং বহিদীপন্ম । শীত্রীথাং বিদানকা!-পাপপিন্তা নিলাপহম । অপ্লাতিবাদি কান্তো;জন্তে:জোলাবণাবৃদ্ধিকুৎ । অসম্ভিক্রং মেধ্যমায়ুবাং বলকৃদ্ধ্র । উদাবর্জ্জরোলাদ-শ্লানাহ্রণান্ হরেৎ । শ্লিকাং কক্ষকরং রক্ষঃ-ক্ষরনীস্প্রিজ্ঞুৎ ॥

ঘুত, আজ্য, হবিং ও সর্পিঃ এই ক্ষেক্টি
একপর্য্যায়ক শব্দ। ছত—নসায়ন, মধুররস,
চক্ষুর হিতকারক, অগ্নির দীপক, শাতবীর্যা,
অল্প অভিষ্যন্দী, কান্তিজনক, ওজোধাতুবর্দ্ধক,
কেজন্বর, লাবণ্যবর্দ্ধক, বৃদ্দিজনক, স্বরবর্দ্ধক,
স্মৃতিকারক, মেধাজনক, আযুদ্ধর, বলজনক,
শুক্র, স্মির্যু, কফকর, রক্ষোদ্ধ এবং ইহা বিষ,
অলক্ষ্মী, পাপ, প্লিত্ত, বায়ু, উদাবর্ত্ত, জ্বর, উন্মাদ,
শূল, আনাহ, ব্রণ, ক্ষয়, বীসর্প ও রত্তদোষনাশক।

অথ গ্রায়তশ্য গুণাঃ।

গণ্যং যুতং বিশেষেণ চকুষাং বৃষ্যমগ্রিকৃৎ।
স্বাত্রপাকরসং শীতং বাতপিত্তককাপথ ।
মেধালাবণ্যকান্ত্যোজন্তেজাবৃদ্ধিকরং পরস্।
অলক্ষীপাপরক্ষোত্মং বয়সং স্থাপকং গুরু॥
বল্যং পবিত্রমায়ুষ্যং স্থাক্সল্যং রসায়নম্।
স্পাক্ষং রোচনং চারু সর্কান্তেয়ু গুণাধিকম্॥

গবাঘ্ত—চক্ষ্র অত্যস্ত হিতকর, শুক্রজনক, অধিবর্জক, মধুররস, মধুরবিপাক,
শীতনীধ্য, বাতম, পিন্তনাশক, কফাপহারক,
মোগজনক, লাবণাবর্জক, কান্তিপ্রান, ওজোগাতুবর্জক, অত্যস্ত তেজক্ষর, অলক্ষ্মী-(দোর্ভাগ্য)
বিনাশক, পাপহারক, রক্ষোদ্ম, বয়:স্থাপক, গুরু,
বলকর, পবিত্র, আযুক্ষর, মঙ্গলজনক, রসায়ন,
সুগন্ধ, ক্চিকারক ও মনোজ্ঞ। ইহা সমস্ত প্রত

অথ মাহিষয়তগুণাঃ।

মাহিষ**ন্ত যু**তং আছু পিত্তরক্তানিলাপহম্। শীতলং শ্লেম্বলং বৃদ্যং শুকু মাছু বিপচ্যতে ॥

মাহিষ স্থাত—মধুবরস, রক্তপিত্তম্ন, বায়ু-নাশক, শীতবীর্য্য, কফকারক, শুক্রবর্দ্ধক, গুরু এবং বিপাকে মধুব।

অথ ছাগয়তগুণাঃ।

আজমাজাং করোতাগ্রিং চকুৰাং বলবর্দ্ধময়। কাসে খাসে করে চাপি হিন্দ পাকে ভবেৎ কটু।

ছাগন্বত— অগ্নিবর্দ্ধক, চক্ষ্য হিতকারক, বলবর্দ্ধক, কটুনিপাক এবং ইহা কাদ, শ্বাদ ও মন্দ্রোগে হিতক্ষ।

অংগাই্ট্রয়তগুণাঃ।

উষ্ঠং কটু গুড়ং পাকে শেষনিনিবিধাপহম্। দীপনং কফৰাতমং বুইগুলোদবাপহম্।

উষ্ণায়ত—কটুবিপাক, অগ্নিনীপ্তিকারক এবং ইহা শোদ, ক্রিনি, বিষদোধ, কফ, বায়ু, কুঠু, গুড়া ও উদ্যুদ্ধোধাশক।

অথাবিকঘুতগুণাঃ।

পাকে লগ্ ।বিকং স্পিঃ সন্বরোগবিনাশনন্। বৃদ্ধিং করে।তি ডায়ানামন্ত্রাশকলাপংন্। চকুস্যাগ্রিধুক্ষণং বাতদোধনিবারণম্॥

মেষীয়ত—লমুপাক, সর্পরোগয়, অন্থি-বর্দ্ধক, চক্ষুর হিতকানক, জঠরাগ্নির উত্তেজক এবং ইছা অশানী, শর্করা ও বাতদোষনাশক।

. অথ নারীঘ্নতগুণাঃ।

কক্ষেথনিলে যোনিদোযে গিত্তে রক্তে চ ওদ্ধিতন্। চকুষামাজ্যং প্রাণাং বা স্পিঃ শু'দম্ভোগমন্॥

নারীগুশ্বজাত দ্বত—চক্ষুর হিত্তকর এবং ইহা কফ, বায়ু, যোনিব্যাপৎ, রক্তগৃষ্টি ও পিত্তে হিতকারক; ইহা অমৃততুল্য গুণকারী।

অথাশ্বীয়তগুণাঃ

বৃদ্ধিং করোতি দেহাগ্রেল বু পাকে বিষাপহম্। ভর্পণং নেত্ররোগদ্বং দাহমুবড়বাস্থতম্ ॥

ঘোটকীত্রগ্ধজাতম্বত--দেহ ও অগ্নিবৃদ্ধি-কারক, লগুপাক, ভৃপ্তিকর এবং বিষদোষ, নেত্ররোগ ও দাহরোগ নাশক। (গর্দ্ধভ প্রভৃতি একশদ জন্তুর ম্বত্তও উক্তবিধ গুণামুক্ত)।

অথ তুগায়তস্ম গুণাঃ।

গুড়ং ছগ্ধভদং গ্রাহি শীতলং নেত্রগোগছৎ। নিহস্তি পিতুদাহাস্ত্ৰ-মদমূচ্ছাত্রমানিলান ॥

হগ্ধমন্থনোড়ত ঘ্রত—ধাবক, শীতবীর্য্য এবং ইহা নেত্রবোগ, পিত্ত, দাহ, রক্তদোষ, মদরোগ, মূর্চ্ছা, জন ও বাসু নাশক।

অথ:হাস্তনদধিজঘৃতগুণাঃ।

গুনিপ্র স্থানজ্যাবিং তৎ স্থা ছৈয়ক্ষরীনকম্। হৈয়ক্ষরীনং চফুব্যং দীপনং প্রচিকৃৎ পরম্। বলস্পুবংশং সুষ্যং বিশেষাজ অরনাশন্ম।

গতদিবসীয় স্বত্তক হৈয়ঙ্গবীন বলা নায়। হৈয়ঙ্গবীন—চঙ্গুর হিতকারক, অগ্নির দীপক, অত্যস্ত ক্রচিকর, বলবৰ্দ্ধক, পৃষ্টিকারক ও শুক্রবৰ্দ্ধক। ইহা জ্বে অত্যস্ত উপকার করে।

অধ পুরাণয়তশ্য গুণাঃ।

বর্ধাদুদ্ধিং ভবেদাজাং পুরাণং তৎ ত্রিদোষসুৎ। মূচ্ছার্টবিবৌন্মাদাপন্মারতিমিরাপহম্ ॥ যথা যথাপিলং সর্পিঃ পুরাণমধিকং ভবেৎ। তথা তথা গুটণঃ বৈঃ ধৈরধিকং তত্নাক্তহম্ ॥

সংবংসরোষিত ম্বতকে পুবাতন ম্বত বলা যায়। পুবাতন ম্বত— জিদোমনাশক এবং ইহা মূচ্ছা, কুন্ঠ, বিষ উন্মাদ, অপস্মার ও তিমির-রোগ নপ্ত করিয়া থাকে। উপরি উক্ত সমস্ত ন্মভূট মত অধিক পুৰাতন হটবে, গ্ৰুট ভাৰাদের গুণের আবিকা হটবে।

অথ নৃতন্ত্য স্তস্ত্য বিষয়াঃ। যোজনেরননেবাজা ভোজনে ভর্পনে জমে। বলক্ষে পাঙ্রোগে কামলানেত্রগোয়োঃ।

ভোজন, তর্পণ, শ্রম, বলক্ষয়, পাওবোগ, কামলা ও নেত্রবোগে ন্তন ঘত ব্যবহার ক্রিবে। অথ ঘতপ্রয়োগস্যাবিষয়াঃ।

রাজ্যগণ্নি নালে ১ বুজে প্রেমাকুতে গদে। রোগে সামে নিইত্যাঞ্চ বিবনে চ মদাতায়ে। অবে ১ দ্ছনে নন্দে ন স্পিকিত মন্ততে॥

রাজ্যক্ষা, কফ্জরোগ, আমস্কন্ত রোগ, বিস্টিকা, বিবন্ধ, মদাত্য্য, স্থা ও মন্দাগ্নি, এই সকল রোগে এবং বালক ও বৃদ্ধ ব্যক্তির পক্ষে সূত উপকাবী নহে।

ইতি ঘূতবৰ্গঃ॥

অথ মূত্রবর্গঃ।

অথ গোসূত্রগুণাঃ।

গোমুরং কটু তীক্ষোঞ্চ-ক্ষারং তিক্তং ক্ষায়ক্ম।
লগু গিলীপনং মেধাং পিতকুৎ ক্ষণাওহাৎ ।
শুনগুলোদরানাং-কঙ্ ক্মিপুররোগজিৎ ।
কিলাসগদবাতাম-বন্ধিস্কুকুরু কামনন্।
কাসংশ্বাপহং লোপ-কামলাপাপুরোগজ্বং ॥
কভুকিলাসগদশুলম্থাকিরোগান্
ভ্রাতিসারম্জদাময়্মত্রোধান।

শুলাতিসারমক্রদাময়নুত্ররোধান।
কাসং সকুঠজঠরজিমিপাঙ্রোগান্
গোনুত্রমেকমপি পীতমপাকরোতি।
সর্বোহপি চ মুজের গোনুত্তং গুণতোহধিকম্।
অতোহবিশেহাৎ কপনে মৃত্যং গোনুত্তমূচতে।
প্রীহোদরখাসকাস-শোধনচোত্রহাপহন।
দুনগুলাকুজানাহ কামলপাঙ্রোগছন।
কযায়ং তিক্ততীক্ষণ পুরণ্ণে কর্ণশূলকুও।
গোনুত্ত—সক্ষার কটুন্তিক্ত-কন্ম্বন্ধ,

তীক্ষ্ণ, উষ্ণবীষ্যা, লগু, অগ্নিদীপ্তিকারক, মেগা-জনক, পিতত্তবন্ধিক এবং ইহা কফ, বায়ু, শূল, গুলা, উদৰ, আনাহ, কড়, নেত্রবোগ্য, মুখ্যোগ্য,

কিলাসরোগ, আমবাত, বস্তিরোগ, কুঠ, কাস, খাস, শোথ, কামলা ও পাঞ্রোগ নাশক।

প্রভাস্করে কথিত হইয়াছে যে, গোম্ত্র পান করিলে কণ্ডু, কিলাস, পূল, মুখরোগ, ্রক্তরাগ, গুলা, অতীসার, বাতরোগ, মূ্ত্রা-থাত, কাস, কুন্ঠ, উদর, ক্রিমি ও পাঞ্রোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

সকল মূত্র হইতে গোমুত্রই শ্রেষ্ঠ, অতএব বে হলে বিশেষ নির্দিষ্ঠ না করিয়া কেবল "মূত্র" বলিয়া কথিত হইবে, সে হলে গোমুত্র প্রনোজ্য বলিয়া বুঝিতে হইবে। প্রস্থান্তরেও উত্তঃ আছে বে, গোমৃত্র—কষায়-ভিত্ত-রস, তাক্ষ এবং ইছা প্লীহা, উদর, শ্বাস, কাস, শোথ, মলবদ্ধতা, শুল, গুলুরোগ, আনাহ, কামলা ও পাঙ্রোগ নাশক; গোমৃত্র কর্ণে পূল করিলে কর্ণশূল বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ইতি মূত্রবর্গঃ॥

অথ তৈলবৰ্গঃ।

অথ তৈলস্থ সরপনিরূপণম্।

তিলাদিলিগ্ধবন্ত্নাং মেংক্তৈলমুদাক্তম্। তৎ তু বাতহরং সক্রং বিশেষাৎ তিলসন্তবম্॥

তিল প্রভৃতি সিগ্ধ দ্রব্যের স্নেহকে তৈল বলা যায়। সকল প্রকান তৈলই বায়ুনাশক, কিন্তু তিলোহন তৈল বায়ুনাশের পক্ষে সর্বা-পেকা শ্রেষ্ঠ।

অথ তিলতৈলগুণাঃ।

डिल्टेडल: खक्र देखगा-वलनर्गकतर मत्रम । वुषाः विकालि विनमः भवतः तमशाकरशाः ॥ সৃত্যং কযায়াতুরসং ভিক্তং বাতকফাগ্রুম। बौर्सारगाकः हिमः अर्थं तुःइगः तक्किपिट्राः ॥ লেখনং বন্ধবিগা ক্রং গ ভাশয়বিশোধনম্। দীপনং বুদ্ধিদং মেধ্যং বাবায়ি এণমেহতুং 🛭 শোত্রেষা নিশির:খুল-নাশনং লঘতাকরম্। ষ্ট্যং কেশ্ৰঞ্চ চকুৰামভাকে ভোজনেহন্সধা। ছিন্নভিন্নচাতোৎপিষ্ট-মথিতে কভপিচিতে। ভগ্নকৃটিতবিদ্ধাগ্নি-দন্ধবিশ্লিষ্টদারিতে ॥ তথাভিতহতনিভূ গ্ৰ-মুগব্যাম্বাদিবিক্ষতে। বস্তে পানে ২মুদং ক্ষারে নস্তে কর্ণাকিপরণে। সেকাভ্যসাবগাহের ভিলতৈলং প্রশস্ততে॥ (নতু বুংহণলেপনয়োঃ কথং সামানাধিকরণামি গ্রাচ) क्रणानिष्ठ्रहेशननः (अ)ः मरङ्गाठरत्रम्यमा । त्रमाध्यस्य कोनीः क्याफिङोश्रवित्रस्य **टिव् अत्वर्धः मत्रव-मोन्ना**विक्षद्वभक्तिः। ভৈলং ক্ষমং রসং নেতুং কুশানাং ভেন বৃংহ্ণমু॥ ব্যবাশ্বিস্থলভীকোক-সরহৈমে দসঃ ক্ষম। শবৈ: প্রকুরুতে তৈলা তেন লেখনমীরিতম । ক্রতং পুরীবং বধ্নতি শ্বলিতং তৎ প্রবর্ত্তরেৎ। গাহকং সাবককাপি তেন তেল্যদীরিত্য ॥ খুত্ৰকাৎ প্ৰং প্ৰুং হাননীয়াং প্ৰজায়তে। তৈলপক্ষপক্ষ বা চিন্তু'য়ি গুণাধিক্ষ 🛊

তিলতৈল—শুরু শরীরের স্থিরতা দম্পা-দক, বলকারক, বর্ণপ্রসাদক, সরগুণায়িত,

উক্ৰজনক, বিকাশি-গুণ্মজ, বিশদ্পুণ্যিত, ঈষং ক্ষার সংশুক্ত মধুর-ভিজ-রস, বিপাক, ফুশ্মাগারুদারী, বাতম, কফ্নাশক, উষ্ণবীয়া, স্পার্শাতিল, পুষ্টিকারক, রক্তপিও-জনক, লেখন-গুণযুক্ত, মলমুত্ররোধক, শোণক, অগ্নিদীপ্তিকর, বৃদ্ধিপ্রদ, মেধাজনক, ব্যবায়ী, এণয়, মেহনাশক, কর্ণ-যোনিশূল ও শির:শূলাপহারক এবং শগ্রীরের লযুত। সম্পাদক। তিলতৈ**লাভাঙ্গে** কেশের ও চক্ষর হিত্যানন হয়. কিন্তু ভোজনম্বারা অহিতঃ হইয়া থাকে। ছিল, ভিল, স্নিচাত, উৎপিষ্ট, ম্থিত, ক্ষত, পিচ্চিত, ভগ্ন, স্ফুটিত, বিন্ধ, অগ্নিদগ্ধ, বিশ্লিষ্ট, বিদারিত, অভিহত ও নিভূমি এবং মূগ ও বাাঘ প্রভৃতি কওঁক বিক্ষত ব্যক্তিদিগের পক্ষে উপকারী। বাস্তক্রিয়াতে, পানে, অন্নসংস্থারে, নন্ডে, কর্ণপুর্ণে, অকিপুংগে, পরিবেকে, অভাঙ্গে ও অবগৃহিনে ভিল্ডতল প্রশস্ত।

এন্থলে প্রশ্ন হইতে পাবে বে, এক বস্তুতে কিরপে বৃংহণ ও লেখন এই ।বিরোধী গুণ থাকিতে পারে ? তহন্তরন্থলে বলা যাইতেছে যে, যংকালে কক্ষদ্রব্যাদি। সেবন দ্বারা শরীরন্থ বায়ু দ্যিত হইয়া স্রোতঃসমূহকে সঙ্কোচিত করে, তখন সম্যক্ প্রকারে রস প্রবাহিত হইতে পারে না, স্থত্যাং রক্তাদি বৃদ্ধি হওয়ার প্রতিবন্ধকত। প্রস্কুত শরীরের ক্ষণতা হইয়া থাকে। সর্ব্দ্ধ হওয়ার প্রতিবন্ধকত। প্রস্কুত শরীরের ক্ষণতা হইয়া থাকে। সর্ব্দ্ধ হওয়, বিশ্বর ও মৃত্ব ওল থাকা প্রস্কুত ভিলতেল স্বোতোমালে প্রবেশ করিয়াল রস্বহ্ন প্রতিব্যাহিকর প্রস্কুত ভিলতেল প্রস্কুতির্ব্বিক্র ইইয়া থাকে।

ব্যবায়ী, স্ক্র, তীক্ষ, উষ্ণ ও সরগুণ ছারা তৈল ক্রমে ক্রমে মেদোধাতুর ক্ষয় করিয়া থাকে, একারণ, তৈলকে লেখন গুণসম্পন্ন বলা যায়।

তৈল ব্যবহার দারা পুরীষ শীঘ্র ক্রন্ধ হয়, একাবণ উহাকে গ্রাহী এবং ম্বালিত মল বিরেচিত হয়, একারণ উহাকে সারক বলা ঘাইতে পারে।

পৰুত্বত এক বংসরের অধিক হইলে হীন-বীৰ্য্য হয়, কিন্তু তৈল পৰুই হউক বা অপকই হউক, যত অধিক। দিন স্থায়ী হইবে, ততই তাহার গুণাধিক্য হইবে।

অথ সার্ধপতেলগুণাঃ।

দীপনং সাৰ্বিং তৈলং কটুপাকরসং লবু। লেখনং স্পর্নীয়োকং চীক্ষং পিডাম্রদূষক। কক্ষমদোহনিলাশোদ্ধং শিরকের্ণামগ্রাপহম। কডুকুটজিমিয়িত্র-কোঠছ্টপ্রপ্রপূৎ। তম্মাজিকয়োজ্ঞৈ বিশেষামানুকুফ্রকুৎ।

সর্থপতৈর — স্মান্ত্রী প্রকারক, কর্তুরস, কর্তুবিপাক, লযু, ক্লভাকারক, উষ্ণপাণ, উষ্ণবীর্যা, তীক্ষ ও বক্তপিত প্রকোপক। ইহা কফ, মেদ বায়ু, অর্পাং, শিবোরোগ, কর্ণবোগ, কণ্ণু, কুন্ঠ, ক্রিমি, থিত, কোঠ ও চুইরণ নাশক। ক্লম্ভ ও আরক্ত রাইস্র্পসমূহ তেল উক্তরপ গুণসম্পন্ন, কিন্তু ভাষা মূলকুদ্রুকারক।

অথ তুবরীতেলগুণাঃ।

তীলোকং তুনরীটেলং লগু গ্রাহি কলাপ্রিৎ। বছিকুদ্বিহান কভুনকুঠকোঠজিমিপ্রগুৎ। মেদেকাবাসহকাসি এশলোশহরং পরম্।

বাইসরিষার 🕭 🕫।

তুবর্গীতেল—তীক্ষ, উষ্ণেবীর্থ্য, পঘু, ধারক, অগ্নিবর্দ্ধক এবং ইহা কফ, রক্তদোষ, বিবদোষ, কণ্ডু, কুন্ঠ, কোঠ, ক্রিমি, মেদোদোষ, ত্রণ ও শোধ নাশক।

অথাতসীতৈলগুণাঃ।

অতসীতৈলমাগ্নেয়ং স্নিক্ষোক্ষং কফপিওকুৎ।
কটুপাকমচকুবাং বলাং বাতহরং গুরু।
মলকুজসতঃ স্বাহ গ্রাহি ত্ব্য দোষহৃদ্দন্য।
বন্তো পানে তথাভ্যঙ্গে নন্তে কর্বন্ত পুরবে।
অনুপানবিধো চাপি প্রবোজ্যং বাতশাস্তরে॥

মসিনাতৈল।

মদিনার তৈল—অগ্নিগুণবছল, স্নিগ্ধ, উষ্ণবীর্য্য, কফ ও পিতৃবর্দ্ধক, কটুবিপাক, চকুর অহিত্রকারক, বলজনক, বায়ুনাশক, গুরু, মলবর্দ্ধক, মধুররস, ধারক, ত্বগ্লোধনাশক ও ঘন। বস্তিক্রিয়াতে, পানে, অভ্যঙ্গে, নস্ত্যে, কর্ণপূর্ণে, অন্পানে ও বায়্শান্তির নিনিত্ত ইহা প্রযোজ্য।

অথ কুচন্ত্ৰভাগে।

প্রস্কৃতি লম্ম জাতুষণ শুরু বিদাহি চ। ১লু জামিছিতে, বুলাং এজনিতিব ই গ্রেম ॥

ক্**ন**্যবীজের তেওঁ I

কু জুই বল সমুরস, উক্ষবার্য্য, প্রবং বিদ্যাহী, চকুর অভিতর্গন , ক্রব্যারক এবং বক্তপিত্র ও কফ **ওাদায়ক।**

অথ খদবীজতৈলগুণাঃ ৷

ি । স্তু পদবাহানাং বল্যং বৃষ্যং শুক স্মৃত্যু । ব' • ১৭ কম হজাতিং সাহ্পাকবদক ৩৭॥

গোস্তদানার তৈল।

্রান্তের তৈল—বলজনক, পুষ্টিকারক, শুরু, বায়ুনাশক, কফন্ন, শীতবীধ্য, মধুরবস এবং মধুন(বলাক।

অথৈর গুতিলগুণাঃ।

এনওতৈলং তীক্ষেকং দীপনং পিচ্ছিলং গুরু। বৃহাং মুচাং ব্য়ংছাপি মেধাকান্তিনলপ্রদম্ । কবারাত্রসং ক্ষেং বেনিগুক্র বিশোধনম্।
বিশ্রং স্বান্ত্র রেসে পাকে সতিক্ষং কটুকং সরম্।
বিশ্রমন্ত্ররমের পাকে সতিক্ষং কটুকং সরম্।
বিশ্রমন্তরমের পালানাক্র বিশাবিদ্ধান্ত্র ।
হতি বাতেগোলিতবিড় বন্ধ-প্রপ্রশোলামবিক্রমীন্।
আমবাতগজেন্দ্র লরীরবনচারিশঃ।
এক এব নিহস্তার্যক্ষরগুলেক্সরী।

ভেরেণ্ডার তৈল—তীক্ষ, উষ্ণবীর্য্য, অগ্ন-গুরু, পুষ্টিকারক, দীপ্রিকারক, পিচ্ছিল, চুর্মের হিত্যম্পাদক, বয়ঃস্থাপক, মেধাজনক, কান্তি ও বলপ্ৰাদ. **क्रे**षर ক্ষায়দংৰুক্ত মধুর-ভিক্ত-কটুরস, স্থা, যোনি ও ওক্ত-শোধক, আনগন্ধি, মধুববিপাক, দারক এবং ইহা বিষমজ্ঞা, সন্দোগ, পৃষ্ঠ ও গুহাদিগত শূল, বাতোদর, আনাচ, গুলা, অধীলা, কটী-গ্রহ, বাতরক্ত, মলবদ্ধতা, এল, শোগ ও অপক বিদ্রুদি নাশক। এই এবগুটেল কেশরীই শ্রীর বনচারি-আমবাতরূপ **ሕ** গজেন্দ্রের একমাত্র নিহস্তা।

অথ রালতৈলগুণাঃ।

তৈলং সর্জ্রনোভূতং বিশোট্রণনাশনম্। কুঠপামাজিমিহরং বাতলেখাময়াপহম্।

ধুনার তৈল।

ইহা বিন্দোট, রণ, কুন্ন, খোদ্পাচ্ডা, ক্রিমি ও বাতলেম জন্ম রোগ বিনাশ কবে।

শীতাংশু-তৈলম্।

কপুরিতৈলং বৈপেরং দৌগন্ধিকরথৈলকম্।
শীতাংগুটতলং পর্নেথিং শ্রাবিতলমণি স্মৃতম্ ॥
শীতাংগুটতলথাক্ষেপ-শমনং বার্নাশব্দ।
বেদনং শুলহাচোগ্রং জ্বন্ধং কফমুৎ পরম্ ॥
আমবাতে তথাগ্রানে জ্বে চ শির্মো পদে।
দস্তরোগে চ ভবে চ হিপেরং পরিযুল্লাতে ॥

কাজিপুট তৈল।

কর্পুরতৈল, বৈপেয়, সৌগন্ধিক, এলক,
শীতাংশুতৈল, পর্ণোপ ও শ্রাবতিল, এই শুলি
কাজিপুট তৈলের সংস্কৃত নাম। কাজিপুট তৈল—আক্ষেপনানক, বার্শান্তিকর, স্বেদজনক, শূলপ্রশমক, উগ্রবিধ্য, জ্বর ও কফ নাশক। ইহা আমবাত, উদ্বাধান, জ্বর, শির্ণীড়া, দন্তবোগ ও ভগ্নোগে প্রযোজ্য

অথ সর্ববৈত্রপঞ্জণাঃ।

তৈলং স্বয়োনিগুণকুদ্বাগ্ভনেসাগিলং মতম্ । অতঃ শেষজ্ঞ তৈলক্ত গুণা জেয়াঃ স্বয়োনিবং॥

বাপ্ভট বলেন, যে যে দ্রব্য হইতে যে যে তেল উৎপন্ন হয়, সেই সেই তৈল তত্তদ্ দ্রব্যে গুণাত্মকারী হটন্না থাকে, অতএব যে সকল তৈলেব গুণ উল্লিখিত হইল না, তাহাদের গুণ উপাদান-কাবণের তুল্য ব্রিতে হটবে।

ইতি তৈলবৰ্গঃ।

অথ সন্ধানবৰ্গঃ।

অথ মগ্ৰম্ ৷

মন্তা: বহুবিধং প্রোক্তং তন্ত্রাম মদিরা হুরা। বারণীরা মহানন্দা তহুকারণমাণিকা: ॥ অমৃতা মাধ্বী মন্তা মদনা মোদিনী মধু। হলিপ্রিয়া দেবস্থা কামিনী কপিনীতাপি॥

ग्या

মদিরা, স্থরা, বারুণী, ইরা, মহানন্দা, তর্ব, কারণ, মাণিকা, সন্তা, নাধরী, মন্তা, মদনী, মোদিনী, মধু, হলিপ্রিয়া, দেবস্থা, কামিনী ও ক্পিনা প্রভৃতি শক্ষ, মন্তের প্র্যায়। মন্ত অনেক প্রকার, তন্মধ্যে নিমে ক্তকগুলির বিবরণ লিখিত হইতেছে।

অণ গোড়া।

ধাতকী গুড়মুগা দা গোড়ী দা মদিরোচ্যতে। তীক্ষোকা মধুরা গোড়ী বাতন্ত্রী বলপিতকুৎ। কাস্তিত্তিকরী পথাা বহিকামপ্রদাপনী॥

ধাইফুল ও গুড় প্রান্থতি ধারা সন্ধান-ক্রিয়োক্ত নিষমান্ত্রসারে প্রস্তুত মদিরাকে গৌড়ী বলে। গৌড়ীমদিরা—তীক্ষ্ণ, উফবীর্যা, মধুবরস, বায়্নাশক, পিত্তকর, বলপ্রদ, কাস্তি বর্দ্ধক, তৃপ্তিকর, পথা, বিশ্বিদ্ধক ও কামো-দ্বীপক।

অথ মাধৰী।

মধ্বাদিবিহিতা যা তু মাধ্বী সা মদিরোচাতে। নাত্যকা মধুরা মাধ্বা পিত্তানিলনিতদনী। কমেলাপাণ্ডগুলার্শ:-এমেহগীহ্লাতিনী॥

মধু প্রভূতি ছানা প্রস্তুত মাদরাকে মাধবা বলা ধায়। মাধনা—মনতি উষণ্ড, মনুরবদ এবং বায়ু, পিড, কামলা, পাতু, গুলা, মনা, প্রমেষ্ ও প্লীহা রোগ নাশক।

অথ পৈঠী।

কুতা বছবিধৈৰ ছিলঃ পৈষ্টাভি মদিকোচাতে।
কট্না বাতকফহন জীকা গোডীসমা চ সা ।
বছবিদ বাস্তা স্থানা প্ৰস্তুত মদিনাকে পৈষ্টা বলে। ইহা কটু ও অমাস্থাদ, বাতলেম্বাশক, তীক্ষবীৰ্যা ও গোডীৰ স্থায় ওপৰিশিষ্ট।

অথ কাদসরা।

কাদখনীতি কথিতা নানাজব্যক্ষথগা। কাদখনী হুমধুন। এমপিত্রগ্রণাশিনী। নানা সেব্যক্ত মদিরার নাম কাদখনী। ইহা সুমধুন, প্রান্তিহর ও পিওয়।

অথ মাধুকী।

মধুকপুপাজতো যা মাধুকী সা নিগছাতে। মাধুকী মাদিনী বলা পুষ্টিকুৎ কংমবৰ্জনী।

মউলফুল হইতে প্রস্তুত স্থরাকে মাধুকী বলে। ইহা মাদক, বলকর, পৃষ্টিকারক ও কামবদ্ধক।

অথ মৈরেয়ী।

মালুরমূলং বদরী শক্ষা চতথেব চ। এহামেকত্র সন্ধানালৈরেয়ী মদিরা মতা। মৈরেয়ী বাতহৃদ্ বল্যা অরম্বা বহিদীপনী।

বিষমূল, কুল ও চিনি ইহাদের সন্ধান-ক্রিয়া ধারা প্রান্ত সদিরাকে মৈরেয়ী বলে। মৈরেয়ী প্রা—বাযুনাশক, বলকর, জ্বায় ও জ্বিপ্রাদীশক।

অথ মাৰ্দ্বীকম্।

মূদ্দীকান্তিঃ কৃতং মৃত্যুং মাদ্দিক্ষিতি চোচাতে।
মাদ্দিক্ষিবিদাহিশ্বামুর্'ৰ হততথা।
রক্তপিতেংপি সু ১তং বুধৈন প্রতিষ্ঠিত ॥
মধুরং তদ্ধি কৃত্যুং ক্ষায়ানুরসং লঘু।
লগুপাকি সুরং শোহ-বিষয়ধ্বনাশনাশ ॥

মৃদ্বীকা (প্রাক্ষা) কৃত যে মল্প, ভাহাকে মার্দ্বীক বলে। ম.দ্বাক—মধুবরদ, রুক্ষ, ক্যায়ানুনদ, লঘু, লঘুপাকী, দারক, শোষ ও বিষমন্ত্রন নাশক। ইহা অবিদাহী ও মধুন-রদান্বিত বলিয়া পান্তকোর রক্তপিভ্রোগেও প্রয়োগ কবিয়া থাকেন।

অথ সর্বেষাং স্করাণাং সামান্যগুণাঃ।

রোচনং দীপনং হস্তং শ্বরবর্ণপ্রদাদনম।
শ্রীণনং বৃংহণং পলাং ভয়শোক এমাপিচন ।
শ্বাপনং নষ্টনিক্রাণাং মুকানাং বাগ বিবেশনন্।
নোধনকাতিনিস্তাণাং বিবন্ধানাং বিবন্ধত্য।
বধ্যক্ষপরিরেশ-ছ:খানাঞ্চাবনোইনম্।
পরং বাজীকরং মন্তং শ্রীতিসংঘোগন্ধনম ॥
বহুত্বংক্ষ চন্ডান্ত বিবেশেপ্রত্য চ।
বিশ্রামো জীবলোকস্ত মন্তং যুক্ত্যা নিষেবিত্য ॥

মত্তের সাধারণ গুণ।

মঞ্চ—নোচক, অগ্নিদীপক, হ,ভ, স্বর-পরিক্ষারক, বর্ণপ্রদানক, প্রীতিজনক, রংহণ, বলকর, ভয় শোক আজি নিবারক, নই নিজ্বান্তিগণের নিজাপ্রাদারক, বাক্শান্তি-বিহীন-দিগের বাক্যপ্রবর্ত্তক, অতি নিজাশীল ব্যক্তিগণের নিজানিবারক, মলাদি-রোধ-পাঁড়িত বাক্তিদিগের বিবন্ধনাশক, বধ বন্ধ ও ক্রেশোং-পাদক-কার্যহেতুক হুংশের বিশ্বারক, আতিশন্ত্র বাজীকর ও প্রীতিধন্ধক। বহুত্ত্ব, ক্ষত ও শোকোপহত চিত্ত ব্যক্তির, যথাবিধি নিবেবিত মছই, তত্তদ্-হুংশেক বিশ্বারক ও কিরৎকাল বিশ্রামপ্রদ।

পীয়মানত মন্তক বিজ্ঞাতব্যাক্সয়ো মণাঃ। প্রথমো মধ্যমোহস্তান্ত লক্ষণৈতান্ নিশাময়॥

প্রহর্ষণঃ প্রীতিকরঃ পানারগুণদর্শকঃ। বাজগীতপ্ৰহ[†]সানাং কথানাঞ্চ প্ৰণৰ্ভকঃ॥ ন চুবুদ্ধিশ্বতিহরো বিষয়েদ ন শব্জিজ্ব । অপনিম্বাপ্রবোধক প্রথমঃ স ফুগো মদঃ॥ কিমুক্তেনাত্র বছনা যথ প্রথং প্রথমে মদে। প্ৰস্থাপনা জগভাত কচিদেৰ ন দুখতে। মুছ: স্মৃতিমু ছাম হিং বাজো সজ্জতি বা মুখ্য। বক্তাবক্তপ্রলাপন্ট প্রচলায়-১মব চ। স্থানপানারদাংকথো যোজনা স্বিপ্রারা। लि**कार्यकोनि कोनो**सामानिष्टि मशास माम ॥ अपे अपे शास्त्र क्षेत्र क्ष মদমে'হারুভমনা জীবন্নপি মুডোপমঃ। রমণীয়ান স বিষয়ান ন বেতি ন হুকজনম্। যদর্থং পীয়তে মন্তাং র'তং তাক ন বিন্দতি। কাষ্যাকাৰ্য্যং স্থুখং ছু.খং লোকে যচ্চ হিতাহিত্য। यनवर्ष्ट्या न জানাটি কে'হবস্থা" তাং এজেদ বুধঃ॥ মজে!পহতবিজ্ঞানো বিমুক্ত: সান্ধিকৈও ²ণে:। স দ্বাঃ সর্বভুতানাং নিন্দ্যকাগ্রাফ এব চ॥

পীর্মান-মগুরুত মদাবস্থা তিন প্রকার

দৃষ্ট হয়। অল্ল উত্তেজনাবস্থাকে প্রথম মদ,

তাহা অপেকা অধিক মন্ততাবস্থাকে মধ্যম
বা ঘিতীয় মদ ও সংজ্ঞাহানি অবস্থাকে অস্ত্যা
বা তৃতীয় মদ বলা যায়। পীর্মান মঞ্চের
এই তিন প্রকার মদের (মন্ততাজননী
শক্তির) বিষয় ক্রমশঃ বর্ণিত হইতেছে।

প্রথম মদ হগোংপাদক, প্রীতিজনক, পান ভোজনের সংক্র ক্রিয়াসাধক, বাছ গীত হাস্ত ও বিবিধ কথার প্রবর্ত্তক, ইহা দ্বারা বৃদ্ধি ও গুতিশক্তির কিছুমাত্র বৈলক্ষণ্য হয় না এবং কাষ্যসম্পাদনাদিতেও শক্তির লোপ হয় না। ইহাতে প্রথমিদ্রা ও প্রথ-প্রবেধ হয়। ফলতঃ প্রথম মদে যেরূপ প্রথ স্থাত হয়, জগতে তাহার তুলনা নাই।

বিতীয় মদে মৃত্যুত্ই 'য়তি ও মৃত্যুত্ই
মোহ উপস্থিত হয়। কখন কখন ঐ য়াভ
অর্থাৎ চৈত্ত্যাবস্থা সন্যক্ ব্যক্ত হইয়া প্নকার
লীন হইয়া যায়। মৃত্য ও অযুক্ত প্রলাপ,
য়্মলিতভাবে চলিয়া বেড়ান এবং অবস্থান

পান ভোজন ও প্রস্পর সন্তাষণ বিষয়ে সবিপ্র্যায় যোজনা এই সকল অবস্থা উপস্থিত হইয়া থাকে।

তৃতীয়মদ্পাপ্ত ব্যক্তি ভগ্নকাঠের স্থায়
নিজ্ঞিয় এবং মোহাবৃতচিত্ত হইয়া জীবিত
গাকিয়াও মৃতসদৃশ হইয়া পড়ে। সে ব্যক্তি
রমণীয় বিষয় সমস্ত বা বন্ধুজন কিছুই জানিতে
গারে না এবং যে উদ্দেশে মহাপান করা যায়,
সেই রতিও লাভ করিতে সমর্থ হয় না। যে
অবস্থায় কার্দ্যাকার্দ্য, স্থা-তৃংথ ও হিতাহিত
জ্ঞানের নাশ হয়, কোন্ বৃদ্ধিমান্ ব্যক্তি সেই
অবস্থা প্রাপ্ত হইতে ইজা করেন ? মহাপান
হেতু হত্জান ও সম্বন্ধান বিমৃত্ত ব্যক্তি সকলের
নিকট দৃষ্য, নিন্দনীয় ও অগ্রাহ্ণ হইয়া থাকে।

মুখকণীক্ষিরোগে**র বেদ**নারাং জনাময়ে। রুদ্ধৌ ত্রণে তথা জয়ে বহিন জিং প্রযুজ্যতে ।

মুখরোগ, কর্ণরোগ, নেত্ররোগ, বেদনা, স্তনগোগ, বৃদ্ধিরোগ, ত্রণরোগ ও ভগস্থানে মতের বাহ্য প্রয়োগ করা যায়।

তাথ সীধঃ।

ইক্ষো: প্রক্রির সিদ্ধ্য সীধ্য প্রবর্গত । আনেত্তিবের যথ সীধ্য স চ শাতরসং শ্বতং ॥ সীধ্য প্রকর্ম শেত । শাতরসং শ্বতং ॥ সীধ্য প্রক্রম শেত শেত শ্বতং না বাচলো হরে ॥ বিবদ্ধাশ্বানশোকার্শ্য-প্রমেহান্ দ্বৈশ্বিকাম্যান্। তত্মাদ্ধ্য প্রশাসন শীত-রসং পৃষ্টিবলগুলা ॥

দিকা।

পক ইক্রস ধারা প্রস্তুত সীকুকে পকরদ-দীধুও অপক ইক্রস ধারা প্রস্তুত সীধুকে শীতরস-দীধু বলা যায়। এই ছইরের মধ্যে পকরস দীবুই শ্রেষ্ঠ। উহা স্বরপরিষ্ঠারক, অগ্নিকর, বলবর্দ্ধক, শরীরের বর্ণজনক, বাহ-পিত্তকর, হাছ, স্থাস্থিকবারক ও রোচক এবং ইহা বিবন্ধ, আগ্লান, শোথ, অর্শঃ, প্রমেহ ও

শ্লৈত্মিক ব্যাধিসমূহে উপকারক। শীতরস-দীধু, পকাদ-দীধু অপেক্ষা অল্লগুণবিশিষ্ট। ইহা পৃষ্টিকর ও বলবর্দ্ধক।

অথ গুড়গুক্তম।

গুড়াখুনা সভৈলেন কন্দশা**ক**ফলৈন্তগা। সন্ধিতঞ্চায়তাং যাতং গুড়গুক্তং প্রচক্ষতে॥

গুড় মিশ্রিত জল, তিলতৈল, নানাবিধ কন্দ, শাক ও ফল এই সমুদায় দ্রব্য সন্ধিত হইয়া অমুতা প্রাপ্ত হইলে তাহাকে গুড়গুক কহা যায়।

অথাদবারিষ্টয়োলকণম্।

ষদপকোষধাস্থ্তাং সিদ্ধং মত্তং স আসবং।
অরিষ্ট কাপসাধ্যঃ স্তাৎ তয়োম নিং পলোমিতম্।
আধান্য স্বর্যা সমাগ্রবাণি বিবিধানি চ।
সপ্তাহান্তে পরিপ্রান্য রসং নপ্তেণ গালয়েৎ।
এবোহরিষ্টাভিধানেন ভিষগ্ভিং পরিকীর্তিতঃ।
অনিষ্কৃত গুণা তেয়ো বীজন্তব্যক্ত নং সমাং।

আসব ও অরিষ্ট লক্ষণ।

অপক ঔষণ ও জল ধারা দিদ্ধ মগুকে
আগব কংহ এবং কাথদিক মণ্ডের নাম
অরিষ্ট। স্থবাতে দ্রব্য দমস্ত আলোড়িত
করিয়া দপ্তাহাত্তে তাহা ছাঁকিয়া দ্রবাংশ
লইতে হয়। দেই দ্রবাংশকে অরিষ্ট করে।
যে যে দ্রব্য স্থরাতে মিশ্রিত করা ধায়, ভাহাদের গুণ অরিষ্টে পাওয়া ধায়।

অথ কাঞ্জিকস্য সাধনং গুণাশ্চ।

তুলামিতং বৃষ্টিকতভূলঞ্চ প্রগৃহ চান্ধং বিধিবদ্ বিধায়। দ্রেণেইছসি কিপ্তমণ ত্রিথামা-ন্তং সপ্ত রক্ষেৎ পিহিতং প্রবন্ধাৎ। ততন্ত কন্ধং সকলং নিরস্তেৎ তৎ কাঞ্জিকং কণ্যত আরনালম্। তদ্ ভেদি তীক্ষং লঘু পাচনঞ্চ দাহজ্বরন্ধং কক্বাতনাশি। কাঞ্জিকং রোচনং স্কুচাং পাচনং বৃহ্ণিদীপন্য। শূলাজীপবিবলম্বং কোষ্ঠগুদ্ধিকরং পরস্। ন শুবেৎ কাঞ্জিকং যত্র তত্র জালিঃ প্রদীয়তে॥

কাঁজি।

সাড়ে বার সের ষষ্টিক তণ্ণুলের অয় প্রাপ্তত করিয়া ৬৪ সের জলে ডিজাইয়া একটি আচ্ছাদিত পাত্রে সাত দিন রাখিবে। পরে অয় সকল ছাঁকিয়া ফেলিয়া ফ্রন্সিত ভাবেরাখিবে। ইহার নাম কাঞ্জিক। কাঞ্জিকের অপর নাম আরনাল। ইহা ভেদক, তীক্ষ, লগু, পাচক, দাহজ্বর নাশক, কফর ও বায়ু-শান্তিকারক। কাজি—মুখরোচক, ক্রচিজনক, পাচক, অয়প্রশাপক, শ্লম, অজীর্ণনাশক, বিবদ্ধাপহারক এবং অত্যন্ত কোড্রনামক। কাজি যে ভালে অপ্রাপ্ত হইবে, সেহলেতৎপরিবর্জে জালি প্রদান করিবে।

অথ ধান্তালন্।

প্রস্থা স্থানিক ধান্ত জ্ঞানী প্রস্থান্থ ক্ষিপ্রের ।
আধার ভাওং সংক্রধ্য ভূমের্গতে ব্রনিধাপরের ।
পকাদধ সমৃদ্ধ তা বর্ষপৃত্ধ করিয়ের।
ততো জাতরসং যোলাং ধান্তারং সর্ক্রণ হয় ।
ধান্তারং শালিচুর্নাত কোলবাদির তং ভবের ।
ধান্তারং ধান্তাযোনিকার প্রাণনং লঘু দাপনম্।
অর্গতো বা হরোগের হিতনাস্থাপনে চ তর ।

পান্সায়।

সত্ব আশুবাত /২ সের কুটিত করিরা একটি পাত্রে /৮ সের জলে ভিজাইরা সেই পাত্রটি আর্ত করত ভূগর্ভে পুঁতিরা রাখিবে, পক্ষান্তে পাত্র উদ্ধৃত করিয়া ছাঁকিয়া লইবে। ইহার নাম ধাতাম। শালি ও কোদ্রবাদি ধাতা হইতেও ধাতায় প্রস্তুত হয়।

ধান্তাম ধান্ত হইতে প্রস্তুত বলিয়া তৃপ্তিপ্রাদ, লঘু ও অফিনীপক। ইহা অক্রচি ও বাতরোগে এবং আফাপনে প্রযোজা।

অথ শ্যামপণীগুণাঃ।

লেখারি গিরিভিচ্ছা ম-পণ্যতক্রী ব্রিয়ামুভে। লেখারিপত্রং কক্ষত্র ছেদনং বলবর্দ্ধন্য। প্রতিষ্ঠারহরং প্রোক্তং জ্বনন্নং কামদীপন্য। কাসসংহরণং বহি-দীপনং জাডানাশন্য। ফাণ্টোহস্ত সিত্রা যুক্তঃ সেন্যো নৈর্পনামিচ্ছতা॥

5 1

রেয়ারি, গিরিভিং, গ্রামপর্নী ও অতন্ত্রী
এইগুলি চার সংস্কৃত নাম। ইহার পত্র—
কফল, স্বেধ্ছনক, ব্যবদ্ধক, গ্রেভিগ্রায়-নিবানক,
কান্দ্রীপক ও শরীরের জড়চানাশক। ইহার
কান্ট চিনির সহিত মেননে শরীর নীবোর
হইরা থাকে।

ই। ত সন্ধানবৰ্গঃ।

অথ মধুবর্গঃ।

তাথ মধু।

মধুমাজিকমাধ্বীক শেশ দ্যার্থানীরিতম্।
মিকিকাবরটাভূক-বাস্তপুশ্বরেশান্তবম্॥
মধু শীতং লযু স্বাছ্ম রকং গ্রাহি বিলেপনম্।
চকুষাং দীপানং অব্যাং ত্রণশোধনরে পণম্॥
সৌকুমার্যকরং স্কাং পরং প্রোতোবিশোধনম।
কর্মান্তরমং হলাদি প্রদাদঘনকং পরম্॥
বর্গাং মেধাকরং বৃষ্যং বিশদং রোচনং হরেও।
কুষ্ঠান্টকাসপিন্তাপ্র-কক্ষেহরমজ্মিন্।
মেদস্কাবমিশাস-হিকাতিসামবিভ্রহান্।
দাহক্ষক্ষাংশ্বং তু যোগবাঞ্জ্বাতসম্॥

মধু, মাক্ষিক, মাধ্বীক, ক্ষৌদ্র, সারঘ্য, মক্ষিকাবাস্ত, বরটীবাস্ত, ভূঙ্গবাস্ত ও রসোম্ভব, এই কয়েকটি মধুর নামান্তব। মধু-শীতবীর্য্য, লঘু, ঈষৎকষায়সংষ্কৃত মধুররস, রুক্ষ, ধারক, ক্রশতাকারক, চক্ষুব হিতকারক, অগ্নির দীপক, স্বরবর্দ্ধক, ত্রণশোধক, ত্রণরোপক, শ্রীরের কোমলতাসস্পাদক, স্ক্সজোতোগামী, শ্রোতঃসমূহের বিশোধক, আহলাদজনক, অত্যন্ত প্রসন্নতাকারক, বর্ণ প্রসাদক, মেধাজনক, শুক্র-বৰ্দ্ধক, বিশদপ্ৰণৰুক্ত, ক্ষচিকারক, যোগবাহী, কিঞ্চিৎ বায়ুবৰ্দ্ধক এবং ইহা কুষ্ঠ, অৰ্শঃ, কাস, রক্তপিত, কফ, প্রমেহ, ক্লান্তি, জিমি, পিপাসা, ৰমি, খাস, হিকা, মেশ:, অতীসার, মলবন্ধতা, দাহ, ক্ষত ও কয়-রোগ নাপক।

অৰ মধুভেদাঃ।

মান্দিকং আমরং কৌজং পৌতিকং ছাত্রমিক্সী।
আর্ঘ্যমোদালকং দালমিতাটো মধুলাতয়: ।
জাতিতেদে মধু আটি প্রকার, বথা—
মান্দিক, আমর, ক্ষোন্ত, পৌতিক, ছাত্র,
আর্ঘ্য, উদ্দালক ও দাল।

অথ মাক্ষিক্য।

নশিকাঃ পিঙ্গ-গিপ্ত নহত্যো মধুনশ্লিকাঃ।
ভাভিঃ কৃতং তৈলবৰ্ণং মান্দিকং পরিকার্তিতম্ ॥
মান্দিকং মধুৰু শ্রেষ্ঠং নেআমন্নত্রং লঘু।
ক'নলাশ্লিকতখ'দ-কাদক্ষাবিনাশ্নম ॥

পিঙ্গলবর্ণ বৃহথ সন্ধিকাকে মধুমন্ধিক।
বলে; ভৎকত তৈলবর্ণ মধুকে মান্ধিক বলা
যায়। মান্ধিক মধু দকল মধু হইতে শ্রেষ্ঠ।
ইহা লঘু এবং নেত্ররোগ, কামলা, অর্শঃ, ক্ষত,
শ্বাস, কাম ও ক্ষয়রোগ বিনাশক।

অথ ভামরগ ।

কিঞ্চিৎ প্রক্রৈং প্রসিদ্ধেতাঃ নট্পদেভোংগিভিকিতম্। নির্ম্মলং ক্ষটিকভিং ঘৎ তম্মধু ভ্রামরং স্কৃতম্ । জামরং রক্তপিতম্বং মুক্তলাচাকরং গুরু। স্বাম্নপাকমভিযান্দি বিশেষাৎ পিচ্ছিলং হিমম্॥

প্রাসিদ্ধ ষ্ট্রপদ-লমর অপেক্ষা কিঞ্চিং স্ক্রা কার লমরগণ কর্ত্তক সঞ্চিত ক্ষটিকভুল্য নির্মাণ মধুকে লামর মধু বলে। লামর-মধু—রক্তপিত্ত-নাশক, মূত্ররোধক, গুরু, মধুরবিপাক, অভি-যান্দি, অত্যন্ত পিচ্ছিল ও শীত্রীয়া।

অথ ক্ষোদ্রম্।

মকিকাং কপিলাং স্ক্লাং ক্ৰাখ্যান্তংক্তং মধু।
ম্নিভিঃ কোন্তমিত্যক্তং তৰ্ধাৎ কপিলং ভবেং।
তথ্যমাক্ষিকবং কৌন্তং বিশেষান্তহানানম্।
কপিলবৰ্গ স্ক্ল মক্ষিকাকে ক্ৰা বলে;
তৎকৃত মধুই কোন্ত বলিয়া মুনিগণ কৰ্তৃক উক্ত ইইয়াছে, ইহা কপিলবৰ্গ। ক্ষোন্তমধু— মাক্ষিক-মধুর ভায় গুণৰুক্ত, বিশেষতঃ ইহা প্ৰমেহনাশক।

অথ পোত্তিকম্।

কৃষ্ণা যা মশকোপমা লঘুতরাঃ প্রায়ো মহাণীড়িকা-বৃদ্ধায়াপ্তরুকোটয়াপ্তরগতাঃ পূলাসবং কুর্বতে। তান্তজ জৈরিহ পৃত্তিকা নিগদিতান্তাভিঃ কৃতং সর্পিব। তুনাং যম্মধু তদ্বনেচরজনৈঃ সংকীংক্ততং পৌত্তিকম্ ॥

পৌত্তিকং মধু ক্লকোঞ্চং পিন্তলাহাম্রবাতকৃৎ। বিদাহি মেহকুদ্রুদ্ধং গ্রন্থাাদিক্ষতশোষি চ॥

মশকের ভার ক্ষুদাকার, ক্ষবর্ণ ও অত্যন্ত পীড়ানারক এক প্রকান মধুমক্ষিকা বৃহৎ বৃক্ষের কোটরাভ্যন্তরে মধু সঞ্চিত করে, পণ্ডিতগণ উহাকে পৃদ্ভিকা বলিয়া থাকেন। তৎকভ্রক উৎপন্ন হতের ভার মধুকে বনেচর গণ পৌত্তিক মধু প্রকার থাকে। পৌত্তিক মধু ক্ষক, উফবীগা, পিওবদ্ধক, রক্তদ্বক, নাহনদক, বানাহি, প্রমেই ও মূত্রক্ত্রনাশক এবং গ্রন্থি প্রভৃতি ক্তংশাষক।

অথ ছাত্রম্।

বর্মান্ত কণিলাগে পানার পারের হিম্বরতা বন্ধ। কুর্বান্তি চছ বকাকারণ এজন ছাখ্য মধু প্রত্য দ ছাত্রং কলিলগীতং তাবে পিন্দ্রিবার শীতবার তবং। স্বান্ত্রপাকং ক্রিমিথিব-রক্তপিতপ্রমেহজিব। জ্বস্ত্রপাহিবিষ্ঠবলতপ্রপক্তপাধিকম্।

কপিল ও পীতবর্ণ এক প্রকার মঞ্চিকা আছে, তাহারা প্রায়ই হিমালয় প্রদেশের বনে ছত্রাকার মোচাক প্রাস্ত্রত করে; ঐ চাক্ হইতে উৎপন্ন মধুকে ছাত্রমধু বলা যায়। ছাত্রমধু—কপিল-পীতবর্ণ, পিচ্ছিল, শীতবীযা, গুরু, মধুরবিপাক এবং ইহা ক্রিমি, শ্বিএ, রক্তপিত্ত, প্রমেহ, লম, পিপাদা, মোহ ও বিষদোষ নাশক। ছাত্রমধু—তৃত্তিকর ও অধিক গুণবিশিষ্ট।

অথার্য্যনু।

মধুকরুক্ষনিধ্যাসং জরৎকার্কাশ্রমোন্তসম্। প্রকার্যার্থ্য ভদাখ্যাতং বেতকং মালবে পুনঃ॥ তীক্ষপুথান্ত বী: পীতা মক্ষিকা: বট্পদোপর্সা:।
আর্ব্যান্তান্তংকুতং বং তদার্ব্যমিত্যপরে জন্ত:॥
আর্ব্য: মধ্বতিচকুব্য: কফপিত্তরং পরম্।
কবারং কটুকং পাকে তিক্তঞ্চ বলপৃষ্টিকুৎ॥

জরৎ কারু মুনির আশ্রম-জাত মধুক রক্ষের
নির্যাদকে আর্ঘ্য বলা বায়, মালবদেশে
উহাকে শ্রেডক বলিয়া থাকে। কেহ কেহ
বলিয়া থাকেন যে, তীক্ষতুগুবিশিষ্ট পীতবর্ণ
বইপদদদ্শ এক প্রকার মক্ষিকা আছে, তাহাকে
আর্ঘ্য কহে, তৎক্বত মধুই আর্ঘ্য নামে অভিহিত। আর্ঘ্যমধু—চক্ষ্র অত্যন্ত হিতকর,
কফ ও পিত্র ধিনাশক, ক্ষায়-তিক্ত-রদ,
কটুবিপাক এবং বল ও পৃষ্টিবদ্ধক।

অংথীদালকণ্।

প্রানে বর্মাকনগ্যস্থাঃ কলিলা, সন্নকীটকাঃ।
কুর্বান্তি কলিলং মন্ধ্র ওৎ স্তাদৌদ্দালকং মন্ধ্র।
উদ্দালকং ক্ষচিকরং স্বয়ং কুঠবিষাপহন্।
ক্ষায়নুক্ষশ্লক কটুপাকঞ্চ পিত্তুৎ॥

কপিলবর্ণ কুদ্রকার এক প্রকার মক্ষিক।
আছে, উহারা প্রায়ই ক্র্যাক (উইএর টিপী)
মন্যে বাদ করে, এই মাক্ষিকা দ্বাবা কপিলবর্ণ
অন্ন পরিমিত যে মধু প্রস্তুত হয়, তাহাকে
ঔদ্ধালক বলা যায়। উদ্ধালক মধু—রুচিকারক, স্বরবর্দ্ধক, কুঠ ও বিষদোষ নাশক,
অন্নক্ষায়-রস, উষ্ণবীষ্যা, কট্রিপাক এবং
পিত্তবর্দ্ধক।

অথ দালম্।

সংক্রতা পতিও পুন্দাদ্ যথ তু পত্রোপনিস্থিতন্।
মধুরায়কবারক তন্দালং মধু কীত্তিতন্।
দালং মধু লঘু প্রোক্তং দীপনীয়ং ককাপহম্।
কবারামুরসং ক্লকং ক্লচাং ছন্দিপ্রমেহজিৎ।
অধিকং মধুনং ক্লিফং বৃংহণং গুরুভানিকম্।

যে মরু পূর্প হইতে করিত হইরা পজে-পরি স্থিত হইতে থাকে, তাহাকে দালমধু বলা যায়। দালমধু—অস্ত্র-ক্ষায় রস, কিন্তু তাহার ক্ষার্রস অল্প মধুর্বস অধিক। ইছা লঘুপাক, অগ্নির দীপ্তিকারক, কফন্ন, কৃক্ষ, রুচিকর, বমি ও প্রমেহ নাশক, সিশ্ধ ও পুষ্টিকারক এবং গুরুভার অর্থাৎ ওজনে ভারী।

অথ পদামধু।

অরবিন্দাহতঃ শীতো মকরন্দোহতিবৃংহণঃ। ত্রিদোহণমনঃ সর্ব-নেত্রাময়নিস্থনঃ॥

পদ্মমধু—শীতবীর্যা, অতিশন্ন বৃংহণ, ত্রিদোষনাশক ও ইহা সর্ব্যপ্রকাব চক্ষুরোগের শান্তিকারক।

অথ নবপুরাণমধুগুণাঃ।

নব" মধু ভবেৎ পুট্টা নাতিলেখহরং সরম্।
পুরাবং পাহকং ককং মেদোদ্বমতিলেধনম্।
নধুনঃ শক্রায়াক গুড়জালি বিশেষতঃ।
একসংবৎসারেহতীতে পুরাবিজং অুচং বুলৈ।।

নূতন ও পুণাতন মধুব ওণ।

ন্তন মধু-পৃষ্টিকারক ও সারক। ইং।
তাদৃশ কফনাশক এং২। পুরাতন সধুপারক, রক্ষ, মেদোনাশক ও অত্যন্ত কণ্তাকানক। পণ্ডিতগণ বলিয়া থাকেন যে, মধু
চিনি বিশেষতঃ গুড় সংবংসর অতিক্রান্ত হইলেই
পুরাণ্ড প্রাপ্ত প্রাপ্ত হা

অথ মধুনঃ শীতলদ্য গুণাধিক্য-মুফতায়া নিষেধঃ।

বিবপূষ্ণাদপি রসং সবিবা অমরাদয়: । গৃহীত্বা মধু কুর্ব্বন্তি ডচ্ছীতং গুণবন্ধধু ॥ বিবাধয়াৎ ডদুফস্ত জব্যেণোক্ষেন বা সহ । উম্পার্ডক্যোক্ষকালে চ শ্বতং বিবসমং মধু ॥

সবিষ ভ্রমরগণ বিষাক্ত পুষ্প হইতেও রস আহরণ করিয়া মধু প্রস্তুত করে, অতএব মধু শীতলই গুণকারক। বিষসন্বন্ধ থাকার উষণ মধু অথবা উষণ দ্রবোর সহিত্ত মধু সেবন করিবে না। উষণার্ভ ব্যক্তির পক্ষে মধু সেবন বা উষণাল মধু সেবন নিষিদ্ধ, কারণ উহা বিষের ভায় অপকার করে।

অথ মধূচিছ্ঠিম্।

ময়নস্থ সধ্চিছ্ঠং মধুশেষক সিক্থকম।
মধ্বাধারো মদনকং মধ্বিতমণি গুতম্।
মদনং মৃত্র স্থাম্মাং ভূতন্ব: এগরোপণম্।
ভগ্যসকামক্রাত-কুঞ্নীস্প্রভাজিং।

মোম্।

মরন, মর্চ্ছিষ্ট, মপুশেষ, সিক্থ, মধ্বাধার, মদনক ও মধ্বিত, এই করেকটি মোমের সংস্কৃত নাম। মোম্—কোমল, স্লিগ্ধ, ভূতাপ-সারক, ব্রপ্রোপক, ভগ্নসন্ধানকারক এবং ইহা বায়ু, কুন্ন, বীসপ ও রক্তনোষ নাশক।

ইতি সধুবর্গঃ।

অথেক্ষুবর্গঃ।

व्यर्थकुः।

ইক্ৰীৰ্যজ্ঞে প্ৰোক্তৰণ ভূমিরসোহপি চ। গুড়মূলোহসিপত্ৰক তথা মধুত্ব: মৃত: ॥ ইক্ষবো রক্তপিওয়া বল্যা বৃষ্যাঃ ককপ্রদা:। ৰাত্রপাকরসাঃ সিধা গুরবো মূত্রলা হিমা:॥

ইক্লু, দীর্ঘজ্ঞদ, ভূমিরস, গুড়মূল, অসিপত্র ও মধ্তৃণ, এই করেকটি শব্দ ইক্লুর পর্যাায়। ইক্লু—রক্তপিত্তনাশক, বলকারক, শুক্রবর্দ্ধক, কফকারক, মধুররস, মধুরবিপাক, স্বিগ্ধ, গুরু, মূত্রবর্দ্ধক এবং শীতবীধ্য।

অথ বালযুবরুদ্ধেকুগুণাঃ।

বাল ইকু: কঞ্চং কুয়াকেদোমেহকরক্ত সঃ। যুবা তু বাতহৃৎ স্বাত্তনীৰভীক্ষত পিত্তনুৎ। রম্ভণিতহুলো বৃদ্ধঃ ক্ষতহুদ্ধনীয়কুৎ॥

কচি ইক্স্—কফকারক, মেনোবৰ্দ্ধক ও প্রমেহজনক। মধ্যম ইক্স্—বায়নাশক, মধ্ব-রস, ঈষৎ তীক্ষ ও পিত্তনাশক। বৃদ্ধ-ইক্স্—বল ও বীর্যা বৰ্দ্ধক এবং ক্ষত ও রক্তপিত্ত নাশক।

অথ দন্তপীড়িতেকুরসম্ভ গুণাঃ।

দন্তনিশ্বীড়ি শক্তাকো রসঃ পিভাশ্রনাশনঃ। শক্রাসমবীযাঃ স্কাদ্বিদাহী ক্ষপ্রদঃ।

দস্তচর্কিত ইক্ষুরস—রক্তপিত্তনাশক, চিনির স্থায় বীর্যাবান্, অবিদাহী এবং কফবদ্ধক।

অথ যন্ত্রপীড়িতেকুরসস্য গুণাঃ।

মূলাগ্রজন্তগ্রন্থাদি-পীড়নান্মলসঙ্করাৎ। কিঞ্চিৎকালবিধৃত্যা চ বিকৃতিং বাতি বাস্ত্রিক:। তসাবিদাহী বিষ্টুড়া গুরু: ভাদুবাস্ত্রিকো রস:।। যন্ত্রনিন্দীড়িত ইক্ষুরদ—মূল, অঞ্জাগ, জন্ধ ও গ্রন্থি প্রভৃতির সাহত ইক্ষু নিন্দীড়িত হওয়ায় ও তাহাতে মলাদি সংষ্কু থাকার এবং কিছুকাল পাত্রে থাকাপ্রযুক্ত বিস্কৃতি প্রাপ্ত হইয়া থাকে, একারণ যন্ত্রনিন্দীড়িত ইক্ষুরদ, বিদাহী, বিহুদ্ধী এবং গুরু হয়।

অথ পয়্যষিতেক্ষুরসস্য গুণাঃ।

রসঃ প্যুবিভো নেটো হুলো বাতাপহো গুরুঃ। কফপিওকরঃ শোষী ভেদনশ্চাতিমূললঃ।

বাসি ইন্দুরস---অহিতকারী, অন্ধরস, বায়ুনাশক, গুরু, কফ ও পিত্ত বর্দ্ধক, শোষজনক, ভেদক এবং অত্যস্ত মৃত্রবর্দ্ধক।

অথ পরুস্যেকুরসম্য গুণাঃ।

পরে। রসো গুরু: বিশ্ব: স্তীক্ষ: ককবাত্ত্ৎ।
শুলানাহপ্রশমন: কিঞ্চিৎপিত্তর: স্মৃত:॥

অগ্নিপক ইক্রস—গুরু, স্লিগ্ধ, অত্যস্ত তীক্ষ, কিঞ্চিংপিত্তবৰ্দ্ধক এবং ইহা কফ, বায়ু, গুলা ও আনাহ নাশক।

অথেকুরসবিকারাণাং গুণাঃ।

ইক্ষোবিকারাস্তৃড় দাং-মুচ্ছ পিস্তাত্রনাশনাঃ। শুরবো মধুরা বল্যাঃ ত্রিধা বাতহরাঃ সরাঃ। ব্যা মোহহরাঃ শীতা বৃংহণা বিক্হারিণঃ॥

ইক্ষ্বিকার—গুরুপাক, মধুররস, বলকারক, থিন্ধ, সারক, গুক্রবন্ধক, শীতবীর্ঘ্য, পুষ্টিকারক এবং ইহা পিপাসা, দাহ, মূর্চ্ছা, রক্তপিত্ত, বায়ু, মোহ ও বিষদোষ নাশক।

অথ ফাণিতম্।

ইক্ষো রমস্ত থা পকা কিঞ্চিলাটো বছদ্রন:।
স এবেকুবিকারের খাতা কাণিতসংজ্ঞরা।
ফাণিতং গুর্বভিদ্যান্দি বৃংহণং কফগুকুকৃৎ।
বাতণিত্তশ্রমান্ হস্তি মুত্রবস্তিবিশোধনম্॥

মাৎগুড়।

কিঞ্চিৎ গাঢ় ও বছদ্রব বিশিষ্ট পক ইক্ষ্রসংক ফাণিত কছে। ফাণিত—গুরু, অভিব্যন্দি, পৃষ্টিকারক, কফ ও শুক্রবর্দ্ধক, বাতন্ন,
পিত্তনাশক, শ্রুমাপহারক এবং মূত্র ও বস্তিশোধন কারক।

অথ মৎস্য গু।

ইকো রসো যঃ সম্পক্ষো ঘনঃ কিঞ্চিদ্রবারিতঃ। মন্দং বং জ্ঞানতে ভক্ষাং তরুংগুঙী নিগজতে॥ মংজ্ঞঙী ভেদিনী বন্যা লগ্যী পিত্তানিলাপথ।। মধুরা বৃংহণী বৃষ্যা রক্তদোষাপথা খৃতা॥

সারগুড।

ঈষং দ্রবভাবাপন্ন গাঢ়তর পর্ক ইকুরসকে মংস্তণ্ডী (সারগুড়) বলে। ইহা ভেদক, বলকারক, লঘু, মধুবরস, শরীরের উপচয়-কারক, শুক্রবর্দ্ধক এবং ইহা পিত্ত, বায়ু ও রক্তদোষ নাশক।

অথ গুড়স্য লক্ষণ্ গুণা *চ।

ইক্ষো রসো ব: সম্পনে। জায়তে লোট্রবদ্দৃদ্। স শুড়ো গৌড়দেশে তু মংস্থাবে শুড়ো মতঃ । শুড়ো ব্যো শুরুঃ রিজো বাতলো মুক্রণোধনঃ। নাতিপিশুহরো মেদঃ-কফ্রিমিবলপ্রদঃ।

ইকুরস অগ্নিশংমাগে পরিপাক হইর। লোষ্ট্র (মৃৎথণ্ড) সদৃশ কঠিনাকারে পরিণত হইলে, তাহাকে ওড় বলে। গোড়দেশে মৎ-শুণ্ডীকেও ওড় বলিয়া থাকে। ওড়—ওজ-বর্দ্ধক, গুরু, রিশ্ব, বায়ুনাশক ও মুব্রশোধক, ইছা অতিশ্য পিওনাশক নহে এবং ওড়— মেদঃ, কফ, ক্রিমি ও বলপ্রদায়ক।

🐠 অথ পুরাণগুড়স্য গুণাঃ।

গুড়ো জীর্ণো লবু: পথ্যোহনভিয্যন্দ্যগ্নিপুষ্টকুৎ। পিওছো মধুরো বুয়ো বাতস্তোহসকপ্রসাদন: ॥

পুরাতন শুড়—লঘু, হিতকর, অনভি-যানী, অগ্নিবর্দ্ধক, পুষ্টিকারক, পিত্তনাশক, মধুররদ, শুক্রবর্দ্ধক, বায়্নাশক এবং রক্তের প্রদয়তাকারক।

অথ নবীনগুড়স্য গুণাঃ।

স্তড়ো নবঃ ক্ষশ্বাস-কাসন্তিনিকরোহয়িকৃৎ॥
প্রেমাণমাশু বিনিহন্তি সদাদ্রকেণ
পিত্তং নিহন্তি চ তদেব হরাত্কীভিঃ।
শুষ্ঠা সমং হরতি বাত্মশেষ্মিথং
দোষত্রমুক্তরুকারায় নমে! গুড়ার॥

ন্তন গুড়— কফ, শ্বাস, কাস, ক্রিমি এবং জ্বি বদ্ধক। আফুকের সহিত গুড় সেবন করিলে কফ নষ্ট হয়, হরীতকীর সহিত সেবন করিলে পিত্ত বিনষ্ট হয় এবং জ্বীর সহিত সেবিত হইলে বছবিধ বাতরোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে; অতএব গুড় ত্রিদোধনাশক।

ত্রথ থণ্ডগুণাঃ।

পওস্ত মধুরং বৃধাং চকুনাং বৃংহণং क्षिम्। বাতপিতহরং স্লিধ্বং বলাং বাতিহরং পরম্॥

খাড়গুড়—মধুররস, শুক্রবর্দ্ধক, চক্ষুর হিতকারক, শরীরের উপচায়ক,। শীতবীর্ঘ্য, বায়ু ও পিত্ত আশক, স্লিগ্ধ, বলকারক এবং ব্যন নাশক।

অথ শর্করাগুণাঃ।

পওন্ত দিকতারূপং ক্ষেতং শকরা দিও। দিতা সমধ্রা কলা বাতপিভারদাহরুং। মুখ্যাক্ষণিজ্বান্ হতি স্থাতা শুক্রকারিণী ॥

অতি শ্বেতবর্ণ বালুকাকার পণ্ডংক শক্ষা অথবা সিতা বলে, প্রচলিত ভাষার ইহাকে চিনি বলা যায়। চিনি—অতিশয় মধুররস, ক্ষচিকারক, শীতবীর্য্য, শুক্রবর্দ্ধক এবং ইহাঁ বায়ু, রক্তপিত্ত, দাহ, মূর্চ্ছা, বমি ও জ্বর নাশক।

অথ পুষ্পসিতাসিতোপলয়োগুণাঃ।
ভবেৎ পুষ্পমিতা শীতা রস্কুপিত্তইরী লঘুং।
সিত্যেপলা সরা লখু। বাতপিত্তহরী হিমা॥

ফুলচিনি ও মিছরি ।

পুষ্পাসিতা (ফুলচিনি)—শীতবীর্য্য, রক্ত-পিত্তনাশক এবং লখু। সিতোপলা (মিছরি) সারক, লখু, শীতবীর্য্য এবং ইহা বায়ু ও পিত্তনাশক।

ইতি ইক্ষুবর্গঃ।

অথ কৃতান্নবৰ্গঃ।

অথ ভক্তম।

সুধী তাংস্তণ্ডুলান্ ক্ষী তাংস্থোয়ে পঞ্চ গুণে পচেছ। তম্ভস্কং প্রশ্রুতঞ্চোকং বিশদং গুণবন্মতম্। ভক্তং বহ্নিকরং পণ্যাং তর্পণং রোচনং লঘু। অধী তম্প্রতং শীতং গুর্বাক্ষ্ণাং ক্ষপ্রদম।

জন্ম ।

ভঙুল উত্তমরূপে বৌত করিয়া ফীত হইলে তাহা পাঁচগুণ জলে পাক করিবে। স্থাসন্ধ হইলে ফুল গালিয়া ফেলিলে তাহাকে অন্ন বলা যায়। ঈষত্য় অন্ন বিশদ ও অধিক গুণবান্। অন্ন –অগ্নিহর্মক, পথা, তৃপ্তিজনক, ফুচিকর ও লঘু। অপৌত তঙুলের মণ্ডযুক্ত অন্ন—শীতবার্যা, গুরু, অরুচিকারক ও কফপ্রদ।

वय मानी।

দালী তু সলিলে সিদ্ধা লবণার্জকহিঙ্গুভি:। সংযুক্তা স্থানামী স্থাৎ কথ্যন্তে তদ্গুণা অব । স্থা বিষ্টম্ভকো রুক্ষ: শীতস্ত স বিশেষত:। নিস্তবো ভুষ্টসংসিদ্ধো লাঘবং স্থতরাং এজেৎ।

দাইল।

দাইল্ জলে সিদ্ধ করিয়া লবণ, আর্দ্রক ও হিন্ধু প্রভৃতির সহিত পাক করিলে, তাহাকে স্প (দাইল্) কহে। দাইল্—বিইন্তী ও ক্রফ এবং ইহা অতিশয় শাতবীর্য্য। তুম রহিত দাইল্ ভাজিয়া সিদ্ধ করিলে অধিক লঘু হয়।

অথ কুশরাগুণাঃ।

ত্তুলা দালিসংমিশ্রা লবণ'র্জকহিকুভি:। সংযুক্তাঃ সলিলে সিদ্ধাঃ কুশরা কথিতা বুধৈ:॥ কুশরা শুক্রলা বল্যা শুক্তঃ পিত্তক্তপ্রদা। দুর্জিরা বৃদ্ধিবিষ্টভ-মলমুক্রী শ্বহা॥

थिठुड़ी।

চাউল ও দাইল্ একত্র লবণ, হিঙ্গু, আর্দ্রক প্রভৃতির সহিত পাক করিলে থিচুড়ী প্রস্তুত হয়। ইহা শুক্রজনক, বলকর, গুরু, পিন্তু ও কফবর্দ্ধক, তুপাচ্য এবং বৃদ্ধি, বিষ্ঠন্ত, মল ও মৃত্রকারক।

অথ ক্ষীরিকা।

গুদ্ধেংগপকে হ্রমে তু ঘৃতাক্তাংগুঞ্জান্ পচেং।
তে সিদ্ধা কীরিকা খ্যাতা সসিতাল্লাযুতোন্তা।
কীরিকা হুর্জনা প্রোক্তা বৃংহণী বলবর্দ্ধিনী।
বিইন্তিনী হরেং পিন্ত-রক্তপিভাগ্নিমান্তান্।

পায়দ।

নির্জ্জল হগ্ধ অর্দ্ধপক করিয়া তাহার সহিত মৃত্যক্ষিত তওুল পাক করিবে। ঐ তণ্ডুল উত্তমরূপে সিদ্ধ হইলে তাহাতে চিনি এবং
মৃত সংষ্কু করিলে পান্তস প্রস্তুত হয়।
পান্তস্পাচ্য, পৃষ্টিকারক, বলবর্দ্ধক, বিষ্টুন্তী
এবং ইছা পিত্ত, রক্তপিত্ত, জঠরামি ও বার্
বিনাশক।

অথ নারিকেলকীরা।

নারিকেলং তনুকৃত্য চিছুন্নং পয়সি পো: ক্লিপেং। সিতাগব্যাজাসংযুক্তে তৎ পচেন্দু হুনায়িনা। নারিকেলোভবা কারী নিধা শীতাতিপুষ্টদা। গুকৌ স্বমধ্রা বৃষ্যা রক্ত পিন্ডানিলাপহা॥

অমৃতকেলি।

নারিকেল ক্রিয়া লইয়া তাহা গোহুগ্ধ, চিনি ও গবান্বত সহ একত্র মৃত্ব অগ্নির উত্তাপে পাক করিলে যে খান্ত প্রস্তুত হয়, তাহাকে নারিকেলক্ষীরী বলে। নারিকেলক্ষীরী নিশ্ব দীতল, অতিশয় পৃষ্টিকারক, গুরু, মধুরবদ, গুকুবর্দ্ধক এবং ইহা রক্তপিত্ত ও বায়ু নাশক।

অথ লোপত্রী।

পোধুমা ধবলা ধোঁতাঃ কুটিতাঃ গোষিতান্ততঃ।
প্রোক্ষিতা বন্ত্রনিশিষ্টান্টালিতাঃ সমিতাঃ ন্মৃতাঃ ॥
বারিণা কোমলাং কুছা সমিতাং সাধু মর্দরেং।
ছন্ত্রচালনমা কুছা লোশ্ত্রীং সমাক্ প্রসাররেং।
অধাসুধ্বটনৈতান বিস্তৃতং প্রক্রিপেছিই:।
মূদ্রনা বহ্নিনা সাধাাঃ সিদ্ধা মওক উচ্যতে।
অধ্যা সিদ্ধান্থনেন সতক্রন্টকেন বা।।
সওকো বৃংহণো ব্রো বল্যো ক্রটিকরো ভূলম্।
পাকেহণি মধুরো গাহী লবুদে বিক্ররাশইং।

খেতগোধুম ধৌত ও কুটিত করিয়া শুকাইয়া লইবে। তৎপরে তাহা ছাটিয়া যন্ত্রে পেষণ
পূর্বক চালিয়া লইলে যে সামগ্রী প্রস্তুত
হয়, তাহাকে সমিতা (ময়দা, স্থাজ) বলে।
ময়দা জল ধারা কোমল করিয়া উত্তমরূপে
মর্দ্দন করিবে এবং তাহার লোপ্ত্রী (লেচী বা
লোই) প্রস্তুত করিয়া হস্ত চালনা ধারা সম্যক্

রূপে শ্রীদারিত করিবে। তৎপরে সেই দ্রব্য একটি অধােম্থ ঘটের উপরে বিস্তারিত করিয়া মূহ অগ্নির উত্তাপে পাক করিলে যে সামগ্রী প্রস্তুত হয়, তাহাকে মণ্ডক (লাপ্ত্রী) বলে। এই মণ্ডক হয় ম্বত ও গুড়াদি ইক্লু বিকারের সহিত অথবা স্থাসিদ্ধ মাংস ও তক্রবটকের সহিত ভক্ষণ করিবে। মণ্ডক—পুষ্টিকারক, শুক্রবর্দ্ধক, বশকারক, অত্যস্ত ক্লচিজনক, মধুর-বিপাক, মশ্রোধক, লগু ও গ্রিদােমনাশক।

অথ পোলিকা।

কুন্যাৎ সমিতয়াতীব ভয় পর্ণটিকা ভতঃ। স্বেদ্য়েভপ্তকে তান্ত পোলিকাং জগছুব্ঁুধাঃ। তাং খাদেরপিকাযুক্তাং তন্তা মণ্ডকবদ্ঞণাঃ।

পাত্লা কৃটির গুণ।

ময়দার অতি পাত্লা পপটা প্রস্তুত করিয়া অর্থাৎ পাত্লা করিয়া বেলিয়া তপ্তকে (তাওয়ায়) সেঁকিয়া লইলে তাহাকে রুটা কহে। ইহা মোহনভোগের সহিত ভক্ষণ করিবে। এই রুটির গুণু মণ্ডকের ভায়।

অথ লপ্সিকাগুণাঃ।

সমিতাং সর্পিবা ভূষ্টাং শর্করাং প্রাস ক্ষিপেৎ। তল্মিন্ খনীকৃতে জনেম্বকং মরিচাদিক্য। সিবৈবা লঙ্গিকা খ্যাতা ভণানক্ষা বদাম্যহম্। লঙ্গিকা বৃংহণী বৃষ্যা বল্যা পিত্তানিলাপহা। শ্রিষা লেখকরী ভব্নী রোচনী তর্পণী প্রম্।

মোহনভোগের গুণ।

মরদা বা স্কলি মতে ভালিয়া তাহাতে হ্রাও চিনি দিয়া পাক করিবে। ঘনীভূত হইলে তাহাতে লবক ও মরিচ প্রভৃতি মদলা প্রক্ষেপ দিলে মোহনভোগ প্রস্তুত হয়। ইহা পৃষ্টি-কারক, শুক্রজনক, বলকর, বাতপিত্ত-বিনাশক, ব্রিষ্ক, শ্লেম্বরর, গুক্র, ক্রচিজনক ও তৃপ্তিকারক।

অথ রোটা।

শুদ্ধোগৃম্চূর্ণেন কিঞ্চিৎপৃষ্টাঞ্চ পোলিকাম।
তপ্তকে বেদয়েৎ কৃত্বা ভূগ্যক্ষারেহণি তাং পচেৎ॥
সিদৈরা রোটকা প্রোক্তন গুণানস্তাঃ প্রচন্দ্রত।
রোটকা বলকৃক্রচা বৃংহণী ধাতুবর্দ্ধনী।
বাতন্ত্রী কফকৃদ্গুবর্দী দীপ্তানীনাং প্রপুক্রিতা॥

শুক্ষ গোধ্য চূর্ণ করিয়া তন্দারা কিঞ্চিং পুরু পোলিকা প্রস্তুত করত তপ্তকে (তাওয়ায়) সেক্ষুমা অঙ্গারের অগ্নিতে পাক করিবে, এইরপৈ সিদ্ধ দ্রব্যকে রোটা বলা যায়। রোটিকা—বলকারক, কচিজনক, শরীরের উপচয়কারক, গাতুবর্দ্ধক, বায়ুনাশক, কফ-কাবক এবং গুরু। ইহা প্রবলাগ্নি-মানবগণের পঙ্গেক বিশেষ উপকারী।

অথাঙ্গারকর্কটা ।

শুদ্রোধুমচুর্বন্ত সাস্থু গাচং বিমন্দ্রেং। বিশায় বটকাকারং নিধুনিঃগ্রে শনৈঃ পচেং॥ অক্সারকর্কটা ভোষা বৃংহ্নী শুক্লা লঘুং। দীপনা কফায়বুলা পানস্থাসকাসজিং॥

শুদ্ধানুম্চূর্ণ অল্ল জালেব সহিত গাঢ়ভাবে মর্দন এবং ভাহা বটকাক্ষতি করিয়া নির্দ্দ আগ্লিডে অল্লে অল্লে দিন্ধ করিবে। এইরূপে যে সামগ্রী প্রস্তুত হয়, ভাহাকে অঙ্গারকর্কটী বলে। ইহা শরীরের উপচয়কারক, শুক্রবর্দ্ধক, লমু, অগ্লির দীপক, কফকারক, বলবর্দ্ধক এবং পীনস, খাস ও কাসরোগ বিনাশক।

व्यथ (वर्ष्टेनिक।।

মাষপিষ্টিকরা পূর্ব-গর্ভা গোধ্মচূর্বত:।
রচিতা রোটিকা সৈব প্রোক্তা বেষ্টনিকা বুধৈ: ।
ভবেছেইনিকা বল্যা বুঝা কলানিলাপথা।
ভকা সন্তর্গনি গুনবী বুংহুলা গুনুলা পরম্ ।
ভিন্নমূত্রমলা অক্ত-মেদঃপিত্তককপ্রদা।
ক্রমনীলান্দিতবাস-পক্তিশুলানি নাশরেং ।

मानशूती।

ময়দার মধ্যে মাষকলায়ের দাইল বাটা দিয়া যে রোটকা প্রস্তুত করা যায়, তাহাকে পণ্ডিতগণ বেষ্টনিকা (দালপুরী) বলিয়া থাকেন। বেষ্টনিকা—বলকারক, ধাতুপোষক, ফুচিজনক, বায়ুনাশক, উষ্ণবীর্য্য, ভৃপ্তিজনক, গুরু, শরীরের উপচয়কারক, অত্যস্ত শুক্রবর্দ্ধক, মলভেদক ও মৃত্রপ্রবর্ত্তক, স্তনহগ্ধজনক, মেদোবর্দ্ধক, পিত্ত-কারক, কফপ্রদ এবং অর্শঃ, অর্দিত, খাস ও পরিণাম শ্লবিনাশক।

অথ পর্ণ টী।

ধ্মসীর্চিতা হিন্ধু-হরিদ্রালবণৈযু তাঃ।
জীরকস্বজ্জিকাভ্যাক তনুকুতা চ বেলিভাঃ॥
পর্ণিটান্তে সদাকার-ভূটাঃ পরমরোচকাঃ।
দাপনাঃ পাচনা কক্ষা গুকুবঃ কিকিদীরিতাঃ॥
মৌক্ষাক তদ্পুণাঃ প্রোক্তা বিশেষালগবো হিতাঃ।
চণকক্ত গুণৈযু জাঃ পর্পটাক্ষেদকোকে।
সেহভুগান্ত চে সর্বে ভ্রেযুম্ম ধ্যনা গুণোঃ॥

পাপব।

ধ্মসার (মাধকলাই চ্র্রের) সাহত হিন্ধু, হরিদ্রা, লবণ, জারা ও স্বর্জিকা মিলত করত অতিশয় পাত্লা করিয়া রোটা বেলিয়া উহাকে অঙ্গরের অগ্নিতে পাক করিলে যে সামগ্রী প্রস্তুত হয়, তাহাকে পর্পটী বা পাপর বলা বায়। পাপর—অতিশয় ম্থরোচক, অয়িপ্রাপীক, পাচক, রুক্ষ ও কিঞ্ছিং গুরু। মুগের দাইল বারা যে পাপর প্রস্তুত করা বায়, তাহাও ধ্মসীকৃত পাপরের ভায় গুণকুত, বিশেষ এই য়ে, মৃদ্গকৃত পাপর উহা অপেক্ষা লবু ও হিতজনক। ছোলাবার যে পাপর প্রস্তুত হয়, তাহা ছোলার গুণকুত। উপরি উক্তমর্ক প্রকার পাপরই ম্বতাদি স্বেহবারা ভাজিয়া লইলে তাহা মধ্যগুণকুত হইয়া থাকে।

অথ পূরিকা।

মাধাণাং গিষ্টিকাং যুজ্যান্ত্ৰপাৰ্ক্ত হিন্তুভিঃ।
তথ্য পিষ্টিকয়া পূৰ্বা সমিতাকুতপোলিকা ।
তত্তিপ্ৰেল পকা মা পূৰ্বিকা ক্ষিতা বুবৈঃ।
কচ্যা স্বাধী শুকুং মিন্দা বল্যা পিত্ত অন্যক্তি।
চকুত্তেগ্ৰেজ্য চোদা পাকে বাত্ৰিলাশিনী।
তবৈৰ মুখ্যকাৰ্যি চকুষ্যা ব্ৰক্তপিত্ত হ'।

কচ্বী।

মানকলায় বাটিন। তাহাব সহিত লবণ, আদে ও হিন্তু মিলিত করিবে, তৎপরে উতা মমদার মধ্যে পুরিয়া পিঈক প্রস্তুত করিয়া তৈল ধারা পাক করিবে, তাহাকেই পণ্ডিতগণ পুরিকা বা কচুরী বলিয়া পাকেন। কচুরী—মুখরোচক, মধুররস, গুরু, স্নিগ্ধ, বলকারক, রক্তপিতের দ্যক, পাকে উষ্ণ, বায়ুনাশক এবং চক্ষুর তেজোহারক। উহা তৈল ধারা না ভাজিয়া মৃতপক করিলে চক্ষুর হিতকারক এবং রক্তপিত্তনাশক হইয়া থাকে।

অথ মাধবটকাঃ।

মাষাণাং পিষ্টিকাং যুক্তাং লবণার্ক্ত হিন্ধু ভিঃ। কুম্বা বিদ্যাদ্বটকাংস্তাংগ্রেলের পটেচছনৈঃ। বিস্তুপা বটকা বলা বৃংহণা বীর্যাবর্জনাঃ। বাতাময়হরা কটা বিশেষাদ্দি ভাপহাং। বিবক্তভেদিনঃ শ্লেম-কঃরিণে!্ভটাগ্রিপুঞ্জিদ্যঃ।

বড়া।

মাধকলারের দাইল ভিজাইয়া উহাকে পেবণ করত লবণ, আদা ও হিঙ্গুমিশ্রিত করিয়াবড়া প্রস্তুত করিবে, অনস্তর তৈল দ্বারা মৃহ অগ্রির উত্তাপে পাক করিয়া শুক্ত হুইলে নামাইবে, ইহাকে বটক অথবা বড়া বলা বায়। বড়—বলকারক, শরীরের উপচায়ক, বীগ্য-বর্জক, বায়ুরোগনাশক, ক্রচিকারক, বিশেষতঃ ইহা অন্ধিতবায়ুনাশক, বিবন্ধভেদক, কৃষ্ণকারক এবং তীক্ষাগ্রির পক্ষে হিতকর।

অথ মাষবটী।

সাধাণাং পি**ষ্টিকা হিন্তু**-সনপার্দ্রক**স°** ক্ষৃতা। তথা বিনচিতা বত্তে বটিকাঃ সাধ্যশোষিতাঃ ॥ ভাৰ্ক্তিংশুপ্ততৈলৈতা অথবাস্থ্যনোগতঃ। নটকক্ত গুণৈযুক্তা জ্ঞাতন্যা ক্ষচিনা ভূণন্ ॥

বডী।

ভূষণ হিত মাষকলায়েব দাইল পেষিত এবং তাহা হিন্তু কৰে ও আলার সহিত মিশ্রিত করিয়া একখান। বঙ্গে তাহার বড়ী বিভাগ করিবে, পরে সেই সকল বড়ী উত্তমন্ত্রপে শুদ্ধ করিয়া তপ্ততৈবে ভাচিয়া লইবে অথবা জলের সহিত সিদ্ধ করিবে। এই মাষবটক—বটক ভূলা গুণস্থত এবং মতান্ত ক্রচিকারক।

অথ কুমাওকবটী।

কুমাওকবটা জ্ঞেয়া পুর্ব্বোক্তবটিকাগুণা। বিশেষাৎ পিত্রক্তন্ত্রী লখুী চ ক্থিতা বুধৈঃ॥

কুম্ড়া বড়ী।

কুম্ ছাবড়ী পুৰোক্তি মাষবড়ীর স্থায় গুণ-মুক্ত। বিশেষ এই যে উহা রক্তপিত্ত নাশক ও ল ।

অথ মুকাবটা।

মূল্যানাং বটিকা তৰ্জ্ঞচিতা সাধিতা হিতা। প্ৰথা ক্লচা তথা লঘ্ মূল্যস্পগুণা স্বৃতা।

মূগের বড়ী, পূর্কোক্ত মাধবড়ী প্রস্তুতের ও পাকের বিধানামূদারে প্রস্তুত ও পাক করিবে। ইহা হিতকর, ক্রচিজনক, লঘু এবং মূগের দালের ন্তায় গুণদায়ক হয়।

অথ শুদ্ধমাংসগুণাঃ।

পাকপাতে যুতং দস্তাৎ তৈলঞ্চ তদভাবতঃ। ততা হিসুহরিয়াঞ্চ ভর্জরেৎ তদনস্তরম্॥ ছাগাদেরস্থিরহিতং মাংসং তৎ খণ্ডিতং ধ্রুবম্। ধৌতং নিশীলিতং তন্মিনু যুতে তদ্ভর্জমেন্টনৈঃ॥ সিদ্ধবোগাং জলং দকা লবণস্ত পচেৎ ততঃ।
সিদ্ধে জলেন সম্পিয়া বেশবারং পরিক্ষিপেৎ ॥
অনেন বিধিনা সিদ্ধাং শুদ্ধমাণসমিতি স্মৃতধ্।
শুদ্ধমাংসং পরং বৃধ্যং বল্যং ক্লাঞ্চ বৃংহণম্।
ক্রিদোষণ্যকং শ্রেষ্ঠং দীপনং ধাতুবৰ্ধনম্॥

পাকপাত্রে ঘুত কিংবা মতের অভাবে তৈল দিয়া হিন্ধু ও হরিদ্রা ভাজিবে। পবে ছাগাদির অস্থিবিহীন মাংস খণ্ড খণ্ড করিয়া গৌত করিবে। অনস্তর উহা নিও ডাইয়া এ মতে বা তৈলে মূহ অগ্নিব উদ্ভাপে ভাজিয়া শইবে। তৎপণে ঐ মাংস সিদ্ধ হইতে পারে. এরপ জল ও যথাযোগ্য লবণ দিয়া পাক করিবে, পাক সিদ্ধ ২ইলে বেশবার (বাটুনা) প্রবিয়া নিকেপ জলের সহিত ভাহাতে করিবে; এইরূপ প্রস্তুত মাংসকে শুদ্ধমাংস যায়। শুন্ধাংস—অভান্ত শুক্রবর্দ্ধক, বলকারক, কৃটিকর, শরীরের উপচয়কারক, ত্রিদোষপ্রশমক, অগ্নিপ্রদীপক এবং ধাতু-পোষক।

অথ তলিতমাংসম্।

শুদ্ধমাংস্বিধানেন মাংসং সমাক্প্রসাধিতম্। পুনন্তদাজ্যে সংভূষ্টং তলিতং গ্রোচ্তে বুধিঃ। এনিতং বলমেধাগ্রি মাংসৌজংগুকুবৃদ্ধিকৃৎ। ভূর্পণং লঘু স্থাক্ষিং বোচনং দৃঢ্তাকরম্॥

শুদ্ধমাংস থেকপে প্রস্তুত করিতে হয়, সেই নিয়মে মাংস স্থাক্ সিদ্ধ করিয়া প্রথায় ভাহা ঘতে ভাজিয়া লইলে পাণ্ডভগণ ভাহা-কেই ভলিতমাংস বলিয়া গাকেন। ভলিত-মাংস—বল, থেবা, অগ্নি, মাংস, ওজোবাওু ও শুক্র বৃদ্ধিকারক, ভৃপ্তিজনক, লবু, সিন্ধে, মাটি-কর এবং শ্রীরের দৃঢ্ভাসম্পাদক।

অথ শূল্যমাংসম্।

কালগঙাদিমাংসানি গ্রথিতানি শলাকরা। মুডং সলবৰ্গং দ্বা নিধূমে দহনে পচেৎ। তৎ তু শুলামিদং প্রোক্তং পাককর্মবিচক্ণে।। শুলাং পলং মুধাতুলাং রুচাং বঞ্চিকরং লগু। কমবাত্রর বলাং কিঞ্ছিৎপিওকরং হি তৎ ।

ছাগলাদির যক্তং প্রাভৃতি কোমল মাংসে

মত ও লবণ মিশ্রিত করিয়া তাহ। শলাকার

এথিত করত ধুমুরহিত অগ্নিতে পাক করিবে।
ইহাকে পাকবিদ্ব্যক্তিগণ শূল্য-মাংস বলিয়া
থাকেন। শূল্যমাংস—অমৃতত্লা, ক্রচিজনক,
অগ্নিবর্দ্ধক, লঘু, বলকারক, কফ্মু, বায়ুনাশক ও
কিঞ্চিং পিওজনক।

অথ মাংসশুঙ্গাটকম্।

শুদ্ধাংসং তনুকুতা কপ্তিতং স্বেদিতং জলে।
লবন্ধ হিন্দুলবন-মরিচার্জকসংগৃত্যু ॥
এলাজীরকধাঞাক-নিস্বুসনন্দিত্য।
ঘতে হুগলে তদ্ভুষ্টং পূর্ণং প্রোচাতে বুদেঃ ॥
পূলাটকং সমিত্যা কৃতং প্রণপ্রিতন্।
পূলং স্পিষি সংভূষ্টং মাংসশ্কাটকং বদেং ॥
মাংসশ্কাটকং ক্ষাং ব্যুক্তিং ববকৃদ্ধক।
বাতপিন্তিহরং পূর্ণং ক্ষম্মং বীয়াধন্ধন্ম॥

ভদ্ধমাংসকে হলারপে ৩৩৩৩ করিয়া জল ছার। সিদ্ধ করিবে এবং লবন্ধ, হিন্ধু, লবণ, মরিচ, আদা, এলাচ, জীরা, বনিয়া ও লেবুর রস ভাহাতে মিলিভ করিয়া গ্রায়তে ভাজিয়া লইবে, পণ্ডিভগণ ইহাকে পূরণ বলেন। এই পূরণ অন্তর্নিহিত করত। ময়দার শৃসাটক (শিসাড়া) প্রস্তুত করিয়া ভাহা রতে ভাজিয়া লইবে, তাহাকেই মাংসশৃস্পাটক বলে। মাংসশ্রুদ্ধিক—ক্ষচিপ্রদ, শ্বীবের উপচয়কারক, বলজনক, গুরুদ্ধাক, বাসু ও পিত্তনাশক, জ্বুদ্ধনক, কথাপহারক এবং বীগ্রেহ্কন।

অর্থ নাংসরসঃ ।

সিদ্ধমাংসরসো রাচার জ্ঞাখানকগ্নপের। প্রীণনো বাহলিগুল্প কাণানাগরবেহসাম্ । বিশিষ্টভাগনলান জ্ঞানাং শুদ্ধিক জিল্পান্। খুড্যোজোবলহীনানাং শুরুকাণকতোরসান্। শুক্ততে অরহীনানাং দুট্যাযুগ্রবণার্থিনাম্ ॥

মাংসরস—ক্রচিকারক, প্রীতিজনক এবং উহা শ্রান্তি খাদ কর বায়ও পিত্ত নাশক। অল্লগুক্রাব শিষ্ট, বিশ্লিষ্ট বা ভগ্ন ক্ষীণ অথবা সন্ধি অথবা ব্যন্বিট্রেচনাদি ছারা শুদ্ধ বা পক্ষে প্রশস্ত। যাহাদিগের শোধনেচ্ছদিগের শ্মরণশক্তি. ওজোধাত ও বল হীন হইয়াছে; যাহারা জনবোগে ক্ষীণ, উরক্ষত রোগাক্রাস্ত, হীনস্বর এবং ঘাহারা দর্শন ও শ্রবণশক্তির প্রাথর্যা ও দীর্ঘায়ঃ পাইতে ইচ্ছা করে, তাহাদের পক্ষে মাংসরস হিতকারক।

প্রকারাঃ কথিতাঃ সন্তি বহবো মাংসসম্ভবাঃ। গ্রন্থবিস্তারভীতেন্তে মরা নাত্র প্রকীর্স্তিতাঃ ॥ প্রসাচার্য্যাণ মাংস্পাক করিবার বছবিধ বলিয়াছেন, কিন্তু গ্রন্থবিস্তার প্রকারভেদ ভয়ে এম্বলে সেই সকল প্রকারভেন কথিত ছইল না।

অথ মণ্ডঃ।

সমিতা মর্দ্দরেদাজ্যৈজ্বেনাপি চ সম্বয়েৎ। তন্তান্ত বটিকাং কুড়া পচেৎ সর্পিষি নীরসম 🖡 এলালবঙ্গক পু র-মরীচাজ্যেরলক্ষতে। মজ্জবিতা সিতাপাকে ততত্ত্বক সমন্ধরে । অয়ং প্রকারঃ সংসিদ্ধৌ মণ্ড ইতাভিধীয়তে ॥ মওস্ত বুংহণো বুৰো। বলাঃ সুমধুরো গুরুঃ। পিন্তানিলহরো রচ্চা দাপ্তাগ্মন'ং মুপুজিতঃ। সমিতাশর্করাসর্পিনিশ্মিতা অপরেচপি বে। প্রকারা অসুনা তুলান্তে: পি চেৎ তদগুণা: সুতা: 🛭 গলা ৷

প্রথমতঃ মুত মারা ময়দাকে মাথিয়া পশ্চাৎ অল্ল জল ঘারা মন্দ্রন প্রবক উহার বটক প্রস্তুত করিবে। পরে সেই সকল বটক ঘুত শারা পাক করিবে, তদ্দনন্তর তাহা এলাচ, লবন্ধ, কপুর ও মরিচাদি দারা স্থানীকুত চিনির রুদে নিম্ম করিয়া কিছুক্ষণ পরে উদ্ধৃত করিবে। এই প্রকারে সাধিত দ্রব্যকে ম্ভ (গজা) वना शारा मध-मतीरतत উপচয়কারক, শুক্রবর্দ্ধক, বলকারক, স্থমিষ্ট, ওক, পিত্তম, বায়ুনাশক ও ক্ষচিজনক। ইহা তাহাকে শটক বলে) ঐ রোটী লেপন করিয়া

প্রবলাগ্নি মানবগণের পক্ষে অতাস্ত উপকারী। মরদা, চিনি ও ঘত ছাবা এইরূপে অফ্রান্স যে সকল খাত প্ৰস্তুত হয়, সেই সকল খাত্ৰও মণ্ডের ন্যায় গুণদায়ক জানিবে।

অথ কর্পুর-নালিকা।

যুতাঢায়া সমিতয়া কুথালম্বং পুটং ততঃ । লবক্সোৰণৰূপ র-যুত্য়া সিত্য়ান্বিত্য । পচেদাজ্যেন সিকৈষা জ্ঞেয়া কপুরুমালিকা। मार्डन मृत्री खात्रा खरेगः कश्रुतमालिका ॥

ঘুতবৃত্ন ময়দার ঠোঙ্গা প্রস্তুত করিয়া তন্মধ্যে লবন্ধ, মরিচ, কর্পর ও চিনি পুরিয়া (মুখবন্ধ করত) ঘতে পাক করিবে, ইহাকে কর্পুর্নালী বলা যায়। কর্পুর্নালী-মণ্ডসদুশ গুণকারক।

অথ ফেনিক।

সমিতায়া ঘুড়াচাায়া বর্ত্তিং দীঘাং সমাচরেৎ। তাজ সন্নিহিতাং দীর্ঘাং পীঠস্তোপরি ধার্মেৎ। বেল্লয়েন্দ্ৰলনেনৈতা যথৈকা পৰ্পটা ভণেৎ। তত•ছ, ব্লিকয়া তান্ত সংলগামের কর্তমেৎ। ভতপ্ত বেলয়েন্ডয়: শট্রকেন চ লেপয়েৎ। শালিচর্ণং যুক্ত তোয়ং মিশ্রিতং শট্রকং বদেৎ ! ততঃ সংবৃত্য তল্লোপ ত্রীং নিদ্ধীত পুথক **পুথক।** পুনতাং বেলয়েলোগ ত্রীং যথা স্থান্যওলাকৃতি: । তত্ত্বাং স্থপচেদাজে: ভবেষুষ্ট পুটা: । পুগন্ধয়া প্রক্রিয়া ভদুদ্ধন্দ্রমান্তরে ॥ সিদ্ধৈশা ফেনিকা নামী মণ্ডকেন সমা ওণৈঃ। ভঙঃ কিঞ্চিল্লযুরিয়ং বিশেষোহয়মুদাহ ১ঃ॥

थाका ।

মুত্বছল ময়দা খারা দীর্ঘারতি বাতি প্রস্তুত করিবে, গণে ঐ দীর্ঘাক্তি বাতি একথান পিড়ির উপর স্থাপত করিয়া বেলন ছারা বেলিয়া একখানি রোটা প্রস্তুত করত তাহাকে কর্তনপূর্বক পুনরায় ছরী স্বারা সংলগ্নভাবে বেলিতে লইবে, তৎপরে শট্টক ছারা (শালি-ত গুলচুৰ্ণ, মৃত ও জল এফত্র মিশ্রিত করিলো সংবৃত করত থণ্ড খণ্ড করিয়া কাটিয়া পুনরায় পৃথক্ পৃথক্ ভাবে মণ্ডলাকার করিয়া বেলিয়া লইবে। পরে ঐ রোটী ঘতে পাক করিলে ফাটা ফাটা গর্ত্তের ক্যায় হইবে, উহাকে স্থগন্ধ-মুক্ত চিনির রসে নিমগ্ন করত উদ্ধৃত করিয়া রাখিবে। এইরপে যে সামগ্রী প্রস্তুত হয়, তাহাকে ফেনিকা বা খাজা বলে। ইহার শুণ মণ্ডকের তুলা, বিশেষ এই বে, মণ্ডক অপেক্ষা খাজা কিঞ্চিং লঘুগুণমুক্ত।

অথ শকুলী।

সমিতারা খৃতাক্তারা লোপ্ত্রীং কুরা চ বেলয়েং। আজ্যে তাং ভর্জরেং সিদ্ধা শক্লী ফেনিকাগুণা ॥ লুচী।

মুঙাক্ত ময়দার লোপত্রী (লেচি) প্রস্তুত করত বেলিয়া উহাকে স্তুত দারা ভাজিরা লইবে। এইরপে সাণিত দ্রব্যকে শঙ্গুলী (লুচী) বলা যায়। শঙ্গুলী থাজার ভাষ গুলকারী।

অথ মুদ্গমোদকঃ।

মুলানাং ধৃষ্দীং সমাক্ গোলয়ে নিশ্বলাখুন। ।
কটাহস্ত স্বতক্তোঞ্ছং নাম রং স্থাপায়েও ততঃ ॥
ধুম্দীন্ত জ্বীভূতাং প্রক্ষিপেজ বাদ রোপরি ।
পাততি বিন্দবন্তমাৎ তান্ প্রকান্ সমুজ্বেং ॥
দিতাপাকেন সংযোজ্য কুলান্ধিতেন মোদকান্।
লগুর্হা তি নিবেশ্যন্ত্র সাজ্য শীতে। ক্চিল্লাং ।
চমুদ্যো ক্রেজনান্ত্রণা মুলানোদকঃ ॥

মতিচুর।

ম্পাকৃত ব্যদী (মৃগ জনে ভিজাইয়া উহার তৃষ নিদ্যাণত করত রৌদ্রে শুফ করিয়া বন্ধে পেষণ করিলে তাহাকে ম্পাকৃত ধুম্দী বলে) নিশ্মণ জল ধারা দ্রুব করিয়া গুলিবে, পরে কড়াতে মৃত চড়াইয়া তাহার উপরি ভাগে একখান নাঝ্রি ধারণ করিবে। তদনস্তর (শ্বত স্মাক্ উষ্ণ হইলে) ঐ দ্রবীভূত ধ্মদী ঝাঝ্রিতে ফেলিবে, তাহা হইতে যে বিন্দু বিন্দু অংশ কড়াতে পত্তিত হইবে, তাহা

উত্তমরূপে ভাজা হইলে তুলিয়া লইবে। তৎপরে ঐ ভজ্জিত পদার্থ চিনির রসে ফেলিয়া হস্ত ছারা তাহার মোদক প্রস্তুত করিবে। ইহাকে মুদ্গমোদক বা মতিচুর বলে। মতিচুর—লখু, ধারক, ত্রিদোধনাশক, মধুররস, শীতবীর্ঘা, ক্রচিজনক, চক্ষুর হিতকর, জ্বরম্ন, বলজনক এবং তৃথিকর।

অথ বেশন-মোদকঃ i

এবমেৰ প্ৰকারেণ কাৰ্য্যা বেশনমোদকাঃ। তে বল্যা লগবঃ শীতাঃ কিঞ্চিদাতকরাত্তথা। বিষ্টান্ধনো অরম্বান্চ পিত্তরক্তকচাপহাঃ॥

বেশনের মিঠাই।

মূল্যমাদক প্রস্তুত করিবার প্রণালী যেরপ লিখিত হইরাছে, বেশন দারা মোদক প্রস্তুত করিবার প্রণালীও দেইরূপ। বেশন-মোদক—বলকারক, লগু, শাতল, কিঞ্চিং বায়ুব্দ্ধক, বিষ্টুন্তী এবং জ্বা, রক্ত্রপিত্ত ও কফ্নাশক।

অথ কুণ্ডলিন।।

ন্তনং ঘটনানীয় তজান্তঃ কুশলো জনঃ।
প্রস্থার্কপরিমাণেন দগ্ধায়েন প্রলেপয়েং॥
বিপ্রস্থাং সনিতাং তত্র দধ্যায়ং প্রস্থান্দিতম্।
ঘতমর্কণরাবক গোলয়িয়া ঘটে ক্ষিপেং॥
আতপে স্থাপয়েং তাবদ্যানদ্ব'তি তদন্তাম্।
তততং প্রকিশোং পানে সচ্ছিল্লে ভালনে তুতং॥
পরিলামা পরিলামা তং সন্তত্তে গুতে ক্ষিপেং।
পুনঃপুনন্তদাবৃত্তা) বিদধ্যামাওলাকৃতিম্।
তাং ক্পকাং ঘৃতারীছা সিতাপাকে ভ্রম্ভবে।
কর্প্রাদিক্সকং স্থাপিয়েংগান্তরং তত্ত।॥
এবা কুপ্রনিনা নামা পুতিকাত্তিবল্ঞা।
বাতুবৃদ্ধিকরী বুনা ক্ষচা চেক্রিয়তগানী॥
ভিলিপী।

পাকনিপুণ ব্যক্তি একটি নৃতন হাড়ী আনাইয়া তাহার মধ্যদেশ, অদ্ধপ্রস্থ পরিমিত অম দি শারা লেপন করিবে। তৎপরে ছই প্রস্থ ময়দা, একপ্রস্থ অমদধিও অদ্ধিসের ম্বত এক্ত চট্কাইয়া ঐ ইাড়ির মধ্যে নিক্ষেপ করিয়া রৌদ্রে স্থাপন করিবে। রৌদ্রসন্তাপে উহা অমন্থ প্রাপ্ত হইলে একটা পাত্রে মৃত চাপাইবে, মৃত সম্যক্রপে তপ্ত হইলে একটি ছিন্তবিশিষ্ট পাত্রে করিয়া ঐ অম পদার্থ ঘ্রা-ইয়া ঘ্রাইয়া মণ্ডলাক্বতি করত ঐ তপ্ত মৃতে প্রশংপুনঃ নিক্ষেপ করিবে। তাহা স্থপক হইলে উন্তোলন করিয়া কর্প্রাদি-স্থগন্ধীকৃত চিনির তরল রসে নিম্ম করিয়া উদ্ধৃত করিবে। তাহাকেই কুণ্ডলিনী বলে, ভাষায় জিলিপী বলা যায়। জিলিপী—পৃষ্টিকারক, কান্তি-জনক, বলপ্রাদ, গাতৃবর্দ্ধক, বৃষ্য, কাচিকারক এবং রসনেজ্রিরের ভৃপ্তিসম্পাদক।

অথ জালিঃ।

আমমাত্রফলং পিষ্ট রাজিকালনগালিতম্। ভূষ্টবিসুমুতং পুতং যোলিতং শ্বালিরুচাতে॥ জালিব্রতি জিহ্বায়াঃ কুঠছং কঠশোধিনী। মন্দং মন্দন্ত গাঁতা সা রোচনী বহ্নিবাধিনা॥

আচার।

অপক আত্রকণ পেষণ করত উহাতে সরিষা, লবণ ও ভাজাহিন্দু মিলিত করিয়া পবিত্ররূপে চট্কাইয়া লইলে তাহাকে জালি বলা যায়। জালি—জিহবার কুণ্ডবনাশক ও কণ্ডশোলক। ইহা তাল অল্ল করিয়া সেবন করিলে কুচিজনক এবং অগ্রিদীপক হইয়া থাকে।

অথ যবশক্তবঃ।

ৰবজাং শক্তবং শীভা দীপনা লগনং সরাং।
কফপিওংরা ক্লমা লেখনান্চ প্রকীতি ৩)ঃ ॥
তে পীতা বলদা ব্যা বৃংহণা ভেদনান্তথা।
তপণা মধুরা কচ্চাং পরিণামে বলাবহাঃ॥
কফপিওঅমকুৎভূড্-এণনেতাময়পেহাঃ।
অশ্ভা বর্মানাহাক্ত-রামায়ভিশ্রীদিণাম।

যবের ছাতু—শাতবীর্ষা, অন্নির দীপক, শন্থ, সারক, কফ ও পিত্ত নাশক, কৃক্ষ ও শেখন গুণযুক্ত। উহা তর্গ ক্রেরে সহিত মিলিত করিয়া পান করিলে বলদায়ক, শুক্র-বর্দ্ধক, শরীরের উপচয়কারক, ভেদক, ভৃপ্তি-কারক, মধুররস, রুচিকর ও উত্তরোত্তর বলবর্দ্ধনশীল হয় এবং কফ, পিন্তু, শ্রান্তি, ক্র্বা, পিপাসা, ত্রণ ও নেত্ররোগ বিনাশক হইয়া থাকে। রৌজ, দাহ, পণপর্য্যটন ও বাায়াম পরিপী, ভৃত ব্যক্তিগণের পক্ষে ধরের ছাতু বিশেষ উপকারী।

অথ চণক্যবশক্তবঃ।

নিস্তানন্দর্শকৈভূ ঠিস্তুলাংশৈক যবৈঃ কৃতা:। শক্তব: শক্তর'সপিদু ক্রা গ্রীমেংভিপুজিতাঃ।

তুষরহিত ভাজা ছোলা ও ভাজা যব তুলাংশে লইরা যে ছাতু প্রস্তুত করা যায়, তাহাতে চিনি ও গ্রত সংস্কুত করিয়া গ্রীম-কালে ভক্ষণ করিলে অতিশয় উপকার, হয়।

অথ ধান।।

যবাস্ত নিস্তবা ভূঠা: স্মৃতা ধানা ইতি প্রিয়াম্। ধানা: হাছ জন্ম ক্ষাস্ত্ট্প্রদা শুরবন্দ তা:। তথা মেহককছেদ্দি-নাশিস্তঃ সম্প্রকীপ্তিতা:॥

ভূষবিবহিত ভাজা যবকে পানা বলে। ধান:—ছম্পাচা, কৃষ্ণ, পিপাসাজনক, গুরু এবং প্রমেহ, কফ ও বমি নাশক।

অথ লাজাঃ।

যেবাং হাতত্বলান্তানি ধাজানি সতুবাণি চ।

উষ্টানি স্ফটিভাজালন জিনিভি সনীমিণাঃ ॥
লাকাঃ হমে পুরাঃ শীহা লগনো দীপনাশ্চ তে।
বিজন্তমলা ককা বলাঃ পিত্তকস্ভিত্যঃ ।
হক্ষিতীসারবাহাকে মেহমেদগুরাপহাঃ ॥

(41

যে সকল ধান্ত হইতে তওুল উৎপন্ন হয়, সেই সকল সতুষধান্ত ভক্তন করিকল ফুটিয়া বে ভক্ষন প্রস্তুত হয়, তাহাকে পণ্ডিভগণ লাজ বলিয়া থাকেন; ইহাকে ভাষায় থৈ বলা যার। বৈ—মধুররস, শীতবীর্য্য, লঘু, অগ্নি-দন্দীপক, মলমুত্রের অল্পতাকারক, রুক্ষ, বল-কারক এবং ইহা পিত্র, কফ, বমি, অতীসার, দাহ, রক্তদোধ, প্রমেহ, মেদ ও পিপাদ। নাশক।

অথ কুল্মামঃ।

অগ্ধবিদ্ধান্ত গোধুমা অক্সেল চণকাদর:। দু আগা ইতি কথাতে সদশান্তের পভিতে:। কুঝাৰা গুৱনো ককা ব'তনা ভিননচচদং॥

नृष् निर्माना ।

গোধুম অথবা ছোলা প্রভৃতি দ্রব্য অর্জসিদ্ধ করিলে যে সামগ্রী প্রস্তুত হয়, স্থানান্ত্রবিশারদ পণ্ডিতগণ তাহাকে কুলাষ বলিয়া
থাকেন, ভাষায় ইহাকে ঘুষ্ নিদানা বলা
যায়। ঘুষ্ নিদানা—গুরু, রুক্ষ, বায়ুব্র্দ্ধক এবং
মলভেদক।

অথ তিলপিষ্টম্।

পলনম্ভ সমান্যাভং সৈক্ষনং ভিলপিষ্টকম। পলসং মলকৃদ্বুবাং বাভন্থং কক্পিন্তকুৎ। বু-হণঞ্চ গুরু মিধ্বং মৃত্য[ধিক্যমিবর্ত্তিম্॥

তিলকুটা।

তিলকর এবং গুড়াদি ইক্ষ্বিকার মিশ্রিত কণত যে সকল ভক্য প্রস্তুত করা হয়, ভাহাকে পলল বা তিলকুটা বলে। পলল— মলবর্দ্ধক, গুক্রজনক, শবীরেন উপচয়কারক, গুকু, স্নির্ম, পিত্রশেষবর্দ্ধক এবং বায় ও মৃত্যাধিক্য নাশক।

অথ তণ্ডুলঃ।

তঙ্লো মেংজস্বয়ং স**ঃ**নবস্বতিছ্জবিং।
চাউল—মেহ্ম ও ক্রিমিনাশক, কিন্তু নূতন চাউল অতিশয় **হুপাচ্যে।**

ইতি কুতান্নবৰ্গঃ।

ইত্যায়ুর্কেদ-সংগ্রহে দ্রব্যগুণপ্রকরণম্।

অথ পরিভাষা-প্রকরণম্।

অব্যক্তানুক্তলেশোক্ত-সন্দিগ্ধার্থপ্রকাশিকাঃ । পরিভাষাঃ প্রকথ্যন্তে দীপীভূতাঃ স্থনিশ্চিতাঃ ॥

অন্ধকার স্থানে দীপ থেমন সকল বস্তুর প্রকাশক হয়, তদ্ধপ আয়ুর্বেদ শাস্ত্রে যে সকল বিধি অব্যক্ত অন্থক্ত বা ঈষধ্যক্ত অথবা সন্দেহ্যুক্ত, পরিভাষা তাহাদের প্রকাশক হইঃ। থাকে।

অথ মানসূত্রম্।

ন মানেন বিনা যুক্তির্জব্যাণাং জায়তে ক্চিৎ। অতঃ প্রয়োগকার্যার্থং মানমক্রোচ্যতে ময়া। তৎ তুমতভেদানানাবিধং ভবতি।

মানপরিজ্ঞান ভিন্ন কথনই ভেষজ দ্রব্যের যোগক্রিয়া সম্পন্ন হইতে পারে না, অতএব প্রয়োগকার্ग্যার্থ পরিভাষিক পরিমাণ লিণিত হুইতেছে।

এতিছিময়ে ভিন্ন ভিন্ন মত আছে, তন্মধ্যে বাহা সচরাচর ব্যবহৃত হটন্না থাকে, তাহাট এস্থলে লেখা যাইতেছে।

অথ মানপরিভাষা।

ষট্দর্থপর্যবেশ্বনা গুল্পেকা তু যবৈস্তিভিঃ।
নাষন্ত পঞ্চভিঃ বড় ভিততথা সপ্তভিনন্তিভিঃ।
দশভিক দিশভিক্ট রক্তিভিঃ বড় বিধা নতঃ ॥
চরকক্ত তু নাবন্ত দশগুলাভিরেব চ।
চরকক্ত তু চার্দ্ধেন কুক্রক্ত তু নাবকং॥
মাবৈক্টভূর্ভিঃ শাণঃ স্তাদ্ধরণ তরিগভাতে।
চকঃ স এব ক্ষিভন্তদ্বং কোল উচ্যতে।
কুম্বকো বটকক্তৈব ক্রজ্বণঃ স নিগভাতে।
কোলব্যক্ষ ক্র্যঃ স্তাৎ স প্রোক্তঃ পাণিমাণিকঃ।
অকঃ পিচুঃ পাণিতলং ক্ষিকিৎ পাণিক্ট ভিন্দুক্ম্॥
বিড়ালপদক্ষ্কিব তথা বোড়শিকা মতা।
করমধ্যো হংসপদং স্বর্গং কবড্গ্রহঃ॥

উড়ুম্বরশ্চ পর্য্যায়ৈ: কর্ম এব নিগস্তাতে 🛭 স্থাৎ কর্মান্ডামর্দ্ধপনং শুক্তিরষ্টমিকা তথা। শুক্তিভ্যাক পলং জ্ঞেয়ং মৃষ্টিরাখ্রং চতুর্থিকা। প্রকুঞ্চ: বোড়শী বিলং পলমেবাত্র কীর্ত্তাতে ! পলাভ্যাং প্রস্থ হিজে রা প্রস্তঞ্চ নিগস্তাত। প্রস্তিভাগ্রপ্তলিঃ স্থাৎ বুডবেংহর্মশরাবকঃ ॥ অষ্ট্ৰমানঞ্চ স জ্বেয়ঃ কুড়বাভ্যাঞ্চ মাণিকা 🛊 শরকোহষ্টপলং তদজ্জেরমত বিচক্ষণৈঃ॥ শরাব'ভা'ং ভবেৎ প্রস্থাত কুঃপ্রক্রিপাচক্ষ। ভাজনং কংসপাত্তেচ চতুঃমন্তপলঞ্চ তৎ॥ চতুর্ভির্'টকৈর্দোণঃ কলসো লবুণে।চর্মুণ: । উন্মানশ্চ ঘটো রাশির্চ্চোণপয্যায়সংক্রিতঃ॥ দ্রোণাভাাং সূ**র্ণ**কুম্ভৌ চ চতুঃবছিশনানক।। স্বৰ্ণাভ্যাঞ্চ ভবেন্দ্ৰোণী বাহো গোণাঁ চ সা শ্বহা 🛭 গোণীচতুষ্টয়ং খারী কথিতা স্ক্রবৃদ্ধিভি,। চতুঃসহ্ত্রপলিকা বরবতাধিকা চ সা॥ পলানাং ছিমহত্রঞ্চ ভার একঃ প্রকীর্ত্তিতা। তুলাপলশতং জ্ঞেয়ং সর্ব্বত্রৈষ নিনিশ্চয়া। মাষ্টকাক্ষবিথানি বুডবং প্রস্থ অ!৮ক: । ব'বিজেণী থারা চেতি যথেছৈচচ্চুত্রণ'ী॥ হ*ঙ্গালিমানমারভ।* বংবং সোংথ কুড়বাছি ভি. । ধ্বাজিওপাদবাবি! ভাবনান সম্ সমন্। श्रष्टां किमानमाताच्या विश्वशः एक्ष्यताकेरहार । মানং তথা তুলায়ান্ত দিগুণং ন ব'চৎ স্মতন ॥

অগ্রচ--

কুড়বে মাণিকায়াঞ্চ তুলামানে তথৈব চ। পলোলেথাগতে মানে ন বৈগুণ্যামিংখ্যতে॥

অপর্ঞ---

কুড়নেংপি কচিছিঃ মধা দত্তীমূতে শ্বতম্। অনিত্যা পরিভাষেত্রং মধাদর্শনমূচাতে ॥ অক্টো পলানি কুড়বো নারিকেলে চ শস্ততে । শুক্তরবান্ত যা মাত্রা আর্ফ্রন্ত দিগুণা হি সা। শুক্ত শুক্তবাক্তরাং তমাদর্কং প্রযোজ্যেৎ ॥

অস্থাপবাদঃ।

বাসানিস্বপটোলকে ভকিবলাকুমাণ্ডকেন্দীবরী-বৰাভুকুটজামগন্ধসহিতান্তাঃ প্রতিগন্ধামূতাঃ। মাংসং নাগবলা সহাচরপুরা হিন্দ্বার্ত্তকে নিত্যান। গ্রাহ্যান্তৎক্ষণমেব ন দ্বিগুণিতা যে চেকুজাতা ঘনা।॥

৬ সর্ঘপে ১ ঘব, ৩ ঘবে ১ গুঞ্জা (রতি), ৫ রভিতে ১ মাধা হয়, কিন্তু কোন মতে ৫, কোন মতে ৬, কোন মতে ৭, কোন মতে ৮, কোন মতে ১০ ও কোন মতে ১২ রভিতেও মাষা পরিগণিত হইয়া থাকে। চনকের মতে ১০ রতিতে, স্বশ্রুতের মতে ৫ রতিতে মাধা: কিন্তু একণে ১২ রতি অর্থাৎ 🗸 আনায় মাষা ধরা যায়। ৪ মাষায় > শাণ: শাণকে ধরণ ও টক্ষ কহে। ২ শাণে ১ কোল (তোলা), কোলের অপার নাম ক্ষুদ্রক, বটক ও দ্রজ্ঞা। २ (कार्ल > कर्न, कर्तन नामान्डन-भाग-মাণিক, অক্ষ, পিচ, পাণিতল, কিঞ্চিং, পাণি, ভিন্দুক, বিভালপদক, যোড়শিকা, করমধ্য, হংদপদ, সুবর্ণ, কবড়গ্রহ ও উড়ম্বর। ২ কর্ষে লৰ্দ্ধপল, অদ্ধপলকে গুলি ও অইমিক। কহে। ২ শুক্তিতে ১ পল, পলের পর্যার—মৃষ্টি, আম, চতুর্থিকা, প্রকৃঞ্ধ, যোড়শী ও বিল। ২ পলে ১ প্রস্তিবা প্রস্তা। ২ প্রস্তিতে ১ অঞ্জী, অঞ্জলর পর্যায়—কুড়ব, অদ্ধশরাব ও অষ্ট-মান। ২ কুড়বে ১ মাণিকা, অর্থাৎ ১ শরাব বা অটপল। ২ শ্রাবে ১ প্রস্থ। ৪ প্রস্থে ১ আডক, ইহার অন্ত নাম—ভাজন, কংস, পাত্র অর্থাৎ চতুঃষ্টিপল। ৪ আঢ়কে ১ দ্রোণ, দ্রোণের পর্যায় যথা—কলস, লবণ, অর্মণ, উন্নান, ঘটও রাশি। ২ জ্রোণে ১ স্প্রা কুন্ত, অর্থাৎ চতুঃষষ্টি শরাব। ২ স্পে ১ দ্রোণী বা বাহ বা গোণী। ১ গোণীতে ১ থানী ৪০৯৬ পল। ২০০০ পলে > ভার। ১০০ পলে ১ ত্লা। মাষ, টক্ষ, অক্ষ, বিব, কুড়ব, প্রস্থ, আতক, রাশি, জোণী ও থারী, ইহারা নগা-ক্রমে চারি চারি গুণ অধিক অর্থাৎ ৪ মাষায় ১ টক্ষ. ৪ টক্ষে ১ অক ইত্যাদি।

গুঞ্জা ইইতে কুড়ব পর্যাস্ত দ্রব কি আর্দ্র (কাঁচা) কি গুদ্দ সকল দ্রব্যেরই পরিমাণ সমান সমান। কিন্তু প্রস্থ ইইতে দ্রব ও আর্দ্র বস্তু বিশুণ পরিমাণে গৃহীত হইয়া থাকে, অর্থাৎ কোন দ্রব বা কাঁচা বস্তু ১ প্রস্থ লইতে বলিলে ১ প্রস্থ (/২ সের) না লইয়া ২ প্রস্থ (/৪ সের) লইতে হইবে; কিন্তু তুলা মানের দ্বিগুণ কথন গৃহীত হয় না।

শাস্ত্রাস্তরোক্তি, যথা—কুড়ব, মাণিকা, তুলাও পলের উল্লেখ থাকিলে দ্বিগুণ গ্রহণ করিবে না।

কিন্তু কুড়ব পরিমাণেরও কখনও (ছঙ্জ গ্রহণ করা যায়। যেমন দন্তীম্বতে বিগুণ লওয়া গিয়া থাকে। স্কুতরাং পরিভাষা অনিত্যা। শাস্ত্রদর্শনামুসারে কার্য্য করা কর্ত্তব্য। নারিকেল গ্রহণে কুড়ব স্থলে ৮ পল লইতে হইবে।

শুক্দব্য শুকু ও তীক্ষ বলিয়া আর্দ্রিদ্রের অর্দ্ধেক লওয়া কর্ত্তব্য।

ইহাৰ অপবাদ।—বাদক, নিম, পটোল, কেতকী, ক্ষেড়লা, কুয়াও, শতমূলী, পুননবা, কুড্চি, অনগদ্ধা, গদ্ধভাগলে, গুলঞ্চ, মাংস, গোলক্ষাকুলে, নাটা, গুগ্গুলু, হিন্ধু, আদা ও ইকুজাত গুড়াদি, ইহার। আমাবস্থাতেই গ্রহণীয়, অথচ ইহাদের দৈগুগা লংয়া যায় না।

অথ দ্রব্যাণামুপযুক্তানুপযুক্তত্বম্।

গুদ্ধ নবীনং বদ্দ্ৰব্যং যোজাং সকলকৰ্ম্ন । আৰ্দ্ৰিন্ত বিগুণং দক্ষাদেৰ সৰ্বন্ত নিশ্চয়ং ॥ প্ৰাণাভিনবাল্যেৰ প্ৰশক্তানি ক্ৰিয়াবিধো । ক্ষতে প্ৰভণ্ডকুলীপ্ৰ-ধান্তক্ষাবিতস্বতং ॥

ঔষণার্থ ন্তন দ্রবা শুল করিরা গ্রহণ করিবে, আদু হইলে শ্বিগুণ লইতে হইবে। গুড়, ঘুড, মধু, ধনে, পিপুন ও বিড়ঙ্গ ভিন্ন অভাত সমস্ত দ্রাই, সকল কার্য্যে ন্তনই প্রশাস্ত।

বেহং সিন্ধো গুড়াদিক গুণহীনোংকতো ভবেং। বেহাজাঃ পূর্ণবাধাঃ হারা চতুম সিতঃ পরম্॥ অকাদৃদ্ধং যুতং পকং হীনবীর্থ্যমাপুরাং। তৈলে বিপ্যারং বিজ্ঞাৎ প্রেক্সকেবিশেষতঃ॥ (তৈলমত তিকভবং ন সম্পাদিবেহসামাজ্ঞপরম্)।

কাগ্যচ্চ---

গুণহীনং স্বেদ্ বর্ষাদৃদ্ধং তদ্ধপমৌষধ্য।
মাসন্বরাৎ তথা চূর্বং হীনবীবাদ্ধমাপুরাৎ ।
হীনাধং গুড়িকালেকৌ লভেতে বৎসরাৎ পর্য।
হীনাধ প্রায় তিতৈলাগ্রাশচত্ম সোধিকান্তথা ॥
ভ্রণ্যে লবুপাকাং প্রনিবীয়া বৎসরাৎ পর্য।
পুরাণাং স্বান্ত বিষ্কৃতি আস্বা ধাতবো রসাং ॥
(হীনাধ স্বায় তিতৈলান্তা ইতি তৈলমক কট্তেলং
তারিশাদিতদশক্ষতৈলাদি চ জ্ঞেয়ং নাজ্যৎ; অকাদৃদ্ধং

পক সেই পদার্থ ও পক গুড়াদি এক বংসরের পর গুণহীন হয়। সেহাদি পদার্থ (মৃহ
লৈ বসা ও মজ্জা) ১৬ মাস পর্যন্ত পূর্ণবীর্যা থাকে। পক্ষয়ত এক বংসরের পর হীনবীর্যা হয়। কিন্তু পক বা অপক তৈলে ইহার
বিপর্যায় দৃষ্ট হয় অর্থাৎ এক বংসরের পর ইহা
বিশেষ গুণকর হইয়া থাকে। তৈল শব্দে
এখানে তিলতৈল বুঝিতে হইবে। সেহাদি
সদৃশ সমস্ত ঔষধই এক বংসরে নির্বার্য্য হইয়া
যায়। চূর্ণ ঔষণ সকল গুইমাস এবং গুড়িকা
লেহ ও লমুপাক ঔনধী সকল এক বংসব
পর্যান্ত পূর্ণবির্যা থাকে। পক সার্যপ্রতিল ও
ভিশ্লিখানিত দশম্লাদি তৈল এক বংসবের
পর আর বীষ্যাবিশিষ্ট থাকে না। আসব, বাতুদুর্যা ও পার্ন প্রাত্ন ইইলেই ভাল হয়।

ন্যাধেরযুক্তং গদন্তবাং গণোক্তমপি ৩৭ চাং ২। অনুক্রমণি যুক্তং যদ যোজন্তে তল তদ্বধং ॥

কোন গণের মধ্যে যে সকল দ্রব্যের উল্লেখ থাকে, তাহার মধ্যে যদি কোন দ্রব্য ব্যাধির পক্ষে অবুক্ত হয়, তাহা হউলে, বৃদ্ধি-মান্ চিকিংসক তাহা ত্যাগ করিবেন এবং গণোক্ত না হইলেও যদি কোন দ্রব্য ব্যাধির পক্ষে উপষ্ক্ত হয়, তাহা গ্রহণ করিবেন।

गएभिवक्तताङ्गज्ञर्गम्।

नातः छार अभितानीनाः नियानीनाक वद्यतम् । क्तळ नाडिमानीनाः अधीलातन्द्रनख्या ॥ বে স্থলে ঔষধ দ্রবাদি গ্রহণের বিশেষ উল্লেখ না থাকিবে, তথায় খদিরাদির সার, নিম্বাদির ছাল, দাড়িমাদির ফল ও পটোলাদির পত্র গ্রহণ কহিবে।

শাঙ্গ ধরস্থাহ---

জ্ঞোধ'দেস্কটো এ'ফ'ং সার: ভাষীজকাদিতঃ। তালীশাদেক পত্রাণি ফলং জাৎ তিফলাদিতঃ।

শাঙ্গ পরও বলিয়াছেন—বটাদি কৃক্ষের হক্, বীজকাদির (সাল ও আসন প্রভৃতি কৃক্ষের) সার, ভাল¦াদির পত্র ও ত্রিফলাদির ফল গ্রহণীয়।

অগ্রচ্চ—

মহান্তি যানি মূলানৈ কাঠগালি বানি চ। তেৰান্ত বৰুলং গ্রাহ্ন ব্রুম্লানি কুংমুশ:॥ নির্দ্দেশঃ জ্ঞায়তে তল্পে দ্রব্যাণাং বজ যাদৃশ:। তাদৃশঃ সংবিধাতব্যঃ শাস্থাতাবে প্রসিদ্ধিতঃ॥

যে সকল মূল বৃহৎ ও যাহাদের অভ্যন্তরে কাঠ আছে, সেই সকল মূলা কাঠভাগ ভাগে কবিয়া দ্বক্ই গ্রহণ করিবে, কিন্তু পুদ্র মূর হইলো সকল অংশই লাহবে। শান্ধে অনুক্ত স্থলেই দ্রব্যাদি গ্রহণের ইকাপ নিয়ম জানিবে, কিন্তু পান্ধে যে যে দ্রবেলে যে যে অঙ্গ গ্রহণ করিবার বিশেষ নির্দেশ থাকিবে, নেই সেই অঙ্গই অবশ্য লাইতে হইবে; যেমন অমৃতাদি পাচনে নিম্বপত্র লাইবার উল্লেশ আছে, তথায় নিমের ছাল না লাইয়া নিমের পত্রই গ্রহণীয়।

ফলের পরিপক্ষ যদ গুণবৎ তত্ত্বদাস্থতন্।
বিষাদয়তা বিজ্ঞেয়নামং তদ্ধি গুণাধিকন্॥
কলের সরসং যৎ স্থাদ্ গুণবৎ তত্ত্বাজ্তন্।
দ্রাধাবিধানানাং ফলং গুলং গুণাধিকন্।
ফলড়লাগুলং সর্কং মন্থানম্পি নির্দিশেৎ।
ফলং হিনাগ্রিছ্ববাত-ব্যালকটোদিদ্ধিতন্॥
কালজং কুভূমিগ্রং পাকাতীতং ন ভক্ষেরে॥
(পাকাতীতং পাক্মতিক্ষা ক্রিতন্)।

বিন্ন ভিন্ন সমূদার ফলই পাকিলে গুণদারক হয়, কিন্তু বিন্দক অপকই বিশিষ্ট গুণকারক। সকল ফলের মধ্যে সরস ফলই গুণদারক, কিন্তু দ্রাক্ষা, বিন্ন ও শিবাদির অর্থাৎ হরী-তকী আমলকী প্রভৃতির শুক্ষ ফলই গুণকর হুইরা থাকে।

যে যে ফলের যে যে গুণ উক্ত হইল, সেই সেই ফলের মজ্জারও সেই সেই গুণ জানিবে।

ধে সকল ফল হিন, অগ্নি, দৃষিত বায়ু, হিংস্ত্ৰজন্ত ও কীটাদিকৰ্ত্তক দূষিত, অথবা অকালজাত কিংবা কুভূমিতে জাত বা অতিশয় প্ৰভাগ্ৰহুত ক্লিন, তাহা ভক্ষণ ক্ৰিবে না।

গোপালত পদবাধি মালাকারবনেচর ন্। গৃহা নামানি জানীয়াছেয় বানাঞ্বালতঃ ॥

শারে যে সকলটু ভেয়জের উল্লেখ আছে, তাহাদের নাম—রাখাল, তপন্ধী, ব্যাধ, মালাকার ও বনেচরনিগকে ভিজাসা করিয়া পরিচয় করিয়া লটবে।

শরতাপিলকত্মার্গং গ্রাতাং সরসমৌববম্। বিরেকবমনার্থক বসস্তাত্তে সমাধ্যেৎ॥

শবৎকালে সমস্ত : কার্য্যের নিমিত্ত সরস ঔষণ সকল উদ্ধত করিবে। বমন ও বিরে-চনার্থ ঔষণ সকল বসম্ভের অবসানে আহরণীয়।

অথ ঋতুভেদে দ্রব্যাঙ্গগ্রহণম।

মূলানি শিশিরে গ্রীছে পঞ্জং বর্ষাবসন্তয়েঃ। তব্কন্দৌ শরদি কীরং বপর্কুকুমং ফলম্। হেমতে সারমোষধ্যা গৃহীয়াৎ কুশলো ভিষক্।

শাত ও গ্রীক্ষকালে মুগ, বর্দা ও বসন্ত বাতুতে পত্র, শনৎকালে ছক্ কলা ও ক্ষীন (আটা), হেমন্তে সার এবং বে যে অতুতে যে যে ফল ও পুলা জন্মে, সেই সেই অতুতে সেই সেই ফল ও পুলা এহণ কনিবে।

অথ সামান্সোক্তে দ্রব্যগ্রহণম। পাত্রোক্তৌ চাপি মুৎপাত্রমুৎপলে নীলমুৎপলম্। শক্তাসে গোময়রসশ্চলনে রক্তচলনম । সিদ্ধার্থ: সর্বপে গ্রাফো লবণে সৈদ্ধবং মতম্। মূতে গোমূত্রমাদেরং বিশেষো যত্র নেরিত: ॥ পয়:দর্পি:প্রয়োগেরু পন্যমেব প্রশস্ততে। বিয়ণ্ডভূপদে গ্রাহ্যা: পুমাংসো বিহুগের চ ॥ জাজলানাং বয়ঃভানাং চর্মলোমনথাদিকম। হিত্বা গ্রাহ্যং প্রমাংসং সাম্বিকং গঙ্গ: কুত্ম ॥ পক্তবামাজমাংসঞ্চ বিধিনা স্বততৈলয়োঃ। হিছা স্ত্রীং পুরুষকাপি ক্লীবং ভত্রাপি দাপয়েৎ ॥ শুগালবহিণোঃ পাকে পুমাংসং তত্ত্ব দাপয়েৎ। ময়রী জম্বকী চছাগী বীৰ্য্যহীনাঃ সভাবতঃ । কংশিরাজমতেনৈর চছাগমের নপ্রংসকম। অভাবাদপ্রত্যক্ষার বন্ধবৈক্ষোপদেশতঃ ॥ বন্ধা চ্ছাগা বিপক্তবা নতু শাস্ত্রন তং চরেৎ '

স্থান'ং মৃত্রং গ্রাং তাক্ষ্ণ নতু পুংসাং বিধীয়তে ।

কীরমূত্রপুরীয়াণি জীণাহারে তু সংহরেৎ ॥

পিওাত্মিকাঃ প্রিয়ো বত্মাৎ দৌমা'শ্ব পুরুষা মতাঃ।

হলে বিশেষ উল্লেখনা পাকিবে, তথায় পাত্র শব্দে সংপাত্র, উৎপল m7 51 নীলোংপণ, পুরীষরদে **जन्**दन গোমমুরস, রক্তচন্দ্র, সর্ঘপে খেতসর্ঘপ, লবণে সৈন্ধব-লবণ এবং মূত্র বলিলে গোমূত্র বুঝিতে ইইবে। ত্ম ও য়ত প্রয়োগে গবাই প্রশস্ত। জন্তুর মধ্যে স্বীজাতি, পক্ষির মধ্যে পুংজাতি গ্রাহ্য। মত তৈল পাকে বয়:প্রাপ্ত জাঙ্গল পশুদিগের চন্ম রোম ও নথাদি ত্যাগ করিয়া ৰওৰভীকৃত মাংস সকল অস্থির সহিত **গ্রহ**ণ कतिरव। भक्त ह्यूक्श्रम পশুরই স্ত্রীজাতি গ্রাহ্ন, কিন্তু ছাগলের নপুংসক গ্রহণীয়। শৃগাল ও মগুরের মাংস পাক করিতে হইলে পুংজাতির মাংদ লওয়া কর্ত্তব্য, কারণ ময়ুরী, শুলালী ও ছাগা ইহানা সভাবতঃ বীৰ্যাহীনা। नभूश्मक छांगल ना शहिता जदः জাপেকা করিবারও সময় না থাকিলে, 15 বৈছ্যেরা করিতে উপদেশ দিয়া বন্ধা ছাগী এইণ লইতে হইলে গাভীরই থাকেন। গোমতা লইবে, কারণ স্ত্রীজাতি পিভাত্মিকা

তাহাদের মৃত্র তীক্ষ, পুংজাতি সৌমা অতএব গাভীর মৃত্রই প্রশস্ত। যাহাদের ছগ্ধ মৃত্র ও পুরীয় লইতে হইবে, তাহাদের আহার জীর্ণ হইবার পরে ঐ সকল অব্য লইবে, অজীর্ণসত্বে লওয়া কর্ত্তবা নহে।

অথাকুক্তো দ্রব্যগ্রহণম্।

কালেংফুক্তে প্রস্তাতং স্থাদকেংফুক্তে জটা ভবেৎ। ভাগেংফুক্তে তু সাম্যাং প্রাং পাত্রেংফুক্তে তু মুন্ময়ম্। জবেংফুক্তে জলং বিস্তাৎ সর্ববৈত্রবং নিনিশ্যয়ঃ॥

কালের বিশেষ উল্লেখ না থাকিলে প্রজাত, উদ্ভিদের কোন্ অঙ্গ লইতে হইবে বলা না থাকিলে মূল, দ্রব্যসমূহের ভাগ অন্তক্ত হইলে সকলের সমান সমান ভাগ, পাত্রবিশেষের অন্তক্তিতে মূল্য পাত্র এবং দ্রব্যসমূহের উল্লেখ না থাকিলে জল ব্বিতে হইবে। সর্ব্যক্তি এই নির্ম জানিবে।

অথাভাবে দ্রবাগ্রহণম্।

কণাচিদ্ দ্ৰবামেকং বা যোগে যতা ন লভাতে। তত্তদ্প্রণযুত্তং দ্রব্যং পরিবর্ত্তেন গুজাতে 🛭 মধু যত্ৰ ন বিজ্ঞেত তত্ৰ জীৰ্ণপ্ৰডো মতঃ। পুরাতনগুড়াভাবে রৌদ্রে যামচতুষ্টরম্। সংক্ষং নৃতনং গ্রাহ্য পুরাতনগুড়ৈষিণা। ক্ষীরাভবে ভবেক্ষোলেগা রসো মাসর এব বা ॥ **দিতাভাবে তু** গঙঃ স্থাচ্ছাল্যভাবে চ **বাই**ক:। **অসম্ভবে চ ক্রাক্ষারা গান্তারীকলনিব**ত্ত ॥ ন ভবেদ দাড়িমো যত বৃক্ষায়ং তত্র দাপয়েৎ। সৌরাষ্ট্রমূদভাবে চ গ্রাহ্ম! পক্ষ্ম পর্ণটা ॥ নতং তগরমূলং স্থাদভাবে সিহলীজটা। প্রয়োগে যত্র লৌহ: স্তাদভাবে তন্মলং বিহু: ॥ मबन: एक बर्गा यः म हि मिष्क्रीर्थ छहाएछ । তত্ৰ সিদ্ধাৰ্থকাভাবে সামাজসৰ্বপো মতঃ॥ চবিকা-গজপিপ্পলো) পিপ্পনীমূলবৎ স্মৃতে। অভাবে প্রিপর্ণাশ্চ সিংহপুচ্ছী বিধীয়তে ॥ নিতাং মুঞ্জাতকাভাবে তালমন্তকমিবাতে। কুকুমস্তাপাভাবেংপি নিশা আতা ভিষ্গ্ৰহৈ: 🗈 মুক্তাভাবে শুক্তিচূর্ণং বজাভাবে বরাটিকা। (বজে বৈক্রান্তমিব্যতে।)

কৰ্কটশৃঙ্গিকাভাবে মাৰাস্থ চেব্যতে বুধৈ:।

ধান্তকাভাবতো দত্যাচছতপু**ল্পাং ভিষণ বুরঃ** ॥

বারাহীকন্দকাভাবে চন্দ্রকারাল্কো মতঃ। মুর্কাভাবে হচো গ্রাহা জিবিস্থা ব্রুবতে সদা ॥

ঔষণ প্রস্তুত করণে যদি কোন দ্রব্যের হয়, তাহা হইলে তদ গুণ-বিশিষ্ট অপর দ্রব্য গ্রহণ করিবে। যথা—মধুর অভাবে পুরাতন গুড়, পুরাতন গুড়ের অভাবে নৃতন গুড় চারি প্রহর রৌদ্রে শুষ্ক করিয়া ব্যবহার করিবে। ছঞ্জের পরিবর্তে মুলা বা মহর যুষ, চিনির অভাবে খাঁড়, শালি ধান্তের অভাবে ষষ্টিক ধান্ত, দ্রাক্ষার অভাবে গান্তারী দাড়িমের পরিবর্ত্তে বুক্ষায় (মহাদা), সৌরাষ্ট্র মৃত্তিকার অভাবে পঙ্কপর্ণচী, তগরপাহকার মভাবে শিউলীছোপ, লোহের অভাবে মণ্টুর, শেতসর্বপের অভাবে সামান্ত স্বিধা, চৈ ও গজপিপ্ললীর অভাবে পিপুলমূল, অভাবে শালপাণী, মুঞ্জাতকস্থলে তালমাতি, কুছুমের অভাবে হরিদ্রা, মুক্তার অভাবে ঝিসুক চূর্ণ, হীরকের অভাবে বৈক্রাস্ত (চুণি কিংবা কড়ি), কাক্ডাশুঙ্গীর অভাবে মাধামু, ধনের অভাবে গুল্ফা, বারাহীকন্দের অভাবে চামার আলুও মুর্কার অভাবে জিঙ্গিনীব ত্বক্ গ্রহণীয়।

স্থবর্ণমথবা রৌপাং যোগে ষত্র ন লভ্যতে। ত্ত্ৰ লোহেন কন্মাণি ভিষক কুৰ্বাাদ বিচক্ষণঃ। অভাবাৎ পৌন্ধরে মূলে কুঠং সর্বত্ত গুছতে। সামুদ্রং দৈশ্ববাভাবে বিভং বা গৃহতে এথৈ:। পুপাভ:বে ফলকামং বিভ ভেদে বিভাতঃ ফলম্। ভলাতকাসহত্তে তু রক্তচলন্মিশতে॥ রাক্ষান্ডাবে চ বন্দাকো জীরাভাবে চ ধায়কম্। কপুরস্তাপ্যভাবেচপি হুগন্ধং মুক্তমিষাতে॥ तमाञ्चनक हाञ्चारको मान्तीकांबर अरव:करवर । भाषा । त्या का का वाद्या । त्या का विश्वास জীবর্কর্যন্তকাভাবে গুড়ুটী 🚁 বিদারিকা । কদ্ধাভাবে বলা গ্রাহা বৃদ্ধাভাবে মহাবলা।। কাকোলীগগলাভাবে নিক্সিপেন্দ শতাবরীয়। রোহিতকয়চোংভাবে পিচুমর্দান্ত গৃহতে॥ দেয়া মৃণমদ;ভাবে পৃতিকা তদ্গুণা বুধৈ;। কপোতং সর্বামাংসানাং তুল্যং গুণকর: স্মৃত্যু ॥ মাংসকাথাপরিপ্রাপ্তো যুষো মৌদ্যা: প্রদীয়তে। (धवा: अज्ञाहतरमाग्रा: कीत: कुरवनाताखनम् ॥

যত্র যদ্দ্রবামপ্রাপ্তং ভেষজে পরপূর্বক:। গ্রাহ্ণ তদ্পুণদাম্যাৎ তুন তত্র কাপি দুষ্ণমূ।

এইরপ স্থবর্ণ অথবা রৌপোর অভাব श्रुंटल लोर, পুষরমূলের অভাবে দৈন্ধৰ লখণের পরিবর্ত্তে সামুদ্র বা বিটুলবণ, উদরাময়ে বিলফল, ক চিফল, পূপাভাবে ভেলা অসহ হইলে শক্তচন্দন, রামার অভাবে বাদরা (পরগাছা), জীরার অভাবে ধনে, কর্পুরের অভাবে স্থান্ধি মূতা, রসাঞ্জনের পরিবর্ত্তে দারুহরিদ্রার কাথ, মেদের অভাবে অশ্বগন্ধা, মহামেদের অভাবে অনন্তমূল, জীব-কের পরিবর্ত্তে গুলঞ্চ, শ্বভকের পরিবর্তে ভূমিকুন্নাণ্ড, শন্ধি স্থলে বেড়েলা, ্গারকচাকুলে, কাকোলী ও ক্ষীরকাকোলীব অভাবে শতমূলী, রোহিতক ছালের পরিবর্ত্তে নিমছাল, মুগনাভিত্র পরিবর্তে খটানী, সকল মাংদের স্থলে কপোতমাংস (যেহেতু কপোত মাংস সমস্ত মাংসের গুণপ্রদ) মাংস্থুষের অভাবে মুগের যুব এবং সকল ছুগ্ধেন পরিবর্ত্তে প্রের্ড-বৎসা গাভীর হ্রন্ধ প্রদান করা ঘাইতে পারে। কোন ঔষং প্রস্তুত করিতে হইলে যে সকল দ্রব্যের প্রয়োজন হয়, তাহার নধ্যে কোনটির অভাব হইলে তদগুণ-বিশিষ্ট পূর্ম্ববর্ত্তী বা পঃবন্তী কোন দ্রব্য প্রয়োগ কিছুমাত্র দোন হয় না।

সগ্রাচ্চ —

লবণে দৈশ্ববং প্রোক্তং চন্দনে রক্তচন্দনম্।
চূর্ণলেহাসবংস্কৃথঃ মাধ্যা ধবলচন্দনৈ।
কষায়লেপরোঃ প্রায়ো যুদ্ধাতে রক্তচন্দনম্।
পরঃস্পিঃপ্রয়োগেষু গব্যনেব হি গৃহতে।
শক্তদে গোময়কং মূত্রে গোমুঞ্মিষ্যতে।

এইরূপ লবণ বলৈলে সৈন্ধব লবণ এবং চন্দন বলিলে রক্তচন্দন বুঝিতে হইবে। কিন্তু চূর্ণ, লেহ, আসব ও স্নেহে শেওচন্দন, এবং ক্যায় ও প্রলেপে রক্তচন্দন প্রযোজ্য। হগ্ধ, ঘৃত, পুরীষ-রস ও মূত্র উক্ত ইইলে তওদ ক্রব্য গ্রাহ্মতে হইবে।

অথ পঞ্চ ক্ষায়া:।

স্বরসণ্ড তথা ককঃ কাথণ্ড হিমকান্টকৌ। জেরা: কবারা: পঠেণতে লগব: স্থার্থপোন্তরম্॥

ক্ষায় পাঁচ প্রকার। যথা—স্বরস, করু, কাথ, হিম ও ফাণ্ট। ইহাদের মধ্যে পূর্ব পূর্বটি অপেক্ষা পর পরটি যথাক্রমে লযুতর।

অথ সরসঃ।

সন্তঃকৃষ্ণজন্তব্যক্ত বন্ত্ৰয়শ্বাদিশীড়নাৎ। যোরসন্তভিনিয়াতি সরসঃ স প্রকীন্তিতঃ॥

আর্দ্র দেব্য দক্ষঃ কৃটিত করিয়া বস্ত্র কিংবা যন্ত্রাদি শ্বারা নিষ্পীড়ন করিলে তাহা হইতে যে রস নির্গত হয়, তাহাকে স্বর্গ করে।

অগ্রচ্চ--

আদায় শুদ্ধং দ্রবাং বা স্বরদানামসম্ভবে। জনে২ইগুণিতে সাধ্যং পাদশিষ্ঠক গৃহতে॥

অথবা যদি কাঁচ। দ্রব্যের স্থান পাওয়া না যায়, তাহা হইলে শুক্ত দ্রব্য ৮ গুণ জ্বলে সিদ্ধ করিয়া পাদাবশিষ্ট গ্রহণ করিবে। ইহা স্বংসের তুল্য।

অপরঞ্চ---

কুড়বং চূর্বিত ফ্রবাং ক্লিপ্তঞ্চ দ্বিপ্তণে জলে। অধ্যোরাকং স্থিতং তমাদ ভবেদ বা রস উত্তমঃ ॥

কিংব। অদ্ধানের পরিমিত চূর্ণ থিওণ জলে নিক্ষিপ্ত করিয়া এক আহোরাত্র রাখিলে যে রস নিংস্ত হয়, ভাহাও উত্তন স্বরস সদৃশ ওণকর।

অথ স্বরসভেদাৎ পুটপাকবিধিঃ।

পুটপকত কৰতে বরসো গৃগতে বত: ।
অতন্ত পুটপাকানাং বৃত্তিরতোচাতে ময়া ॥
অব্যমাপোধিতং জন্-বটপতাদিসম্পুটে।
বেইয়িছা ততো বন্ধা দৃদং রক্ষাদিনা তথা ॥
মৃদ্দেপং বাসুলং ক্যাদিববাস্কিনাত্রকম্।
দহেৎ পুটাপ্তরা ছয়ো বাবদেপত রক্ততা ॥

পুটপক করের স্বরদ গৃহীত হয় বলিয়া পুটপাকের নিয়ম বলা যাইতেছে। ঔষধ দ্রব্য কুটিত করিয়া জাম বা বটপত্রাদি দ্বারা বেষ্টিত ও রচ্ছ্ দিয়া দৃঢ়রূপে বন্ধ করিয়া মৃত্তিকা দ্বারা এক বা ছই অঙ্গুলি পুরু লেপ দিয়া শুদ্ধ করিবে এবং অগ্নিতে পোড়াইবে। পরে অগ্নির তাপে মৃত্তিকা-লেপ লোহিতবর্ণ হইলেই পুটপাক দিদ্ধ হইয়াছে, জানিবে।

অথ কল্পঃ।

জন্মার্জং শিলাপিষ্টং শুক্ষং বা জলমিন্ডিম্। তদেব স্থাবিতঃ পূর্বেরঃ কল ইত্যাভিধীয়তে ॥ আবাপান্থণ গক্ষেপস্থক্ত গান্যায় উন্নতে। কলে মধু সূতং তৈলং দেখা দি স্থানা নয়া। দিতাং গুড়ং সমং দক্ষাদ জনা দেখাশ্চত গুণাঃ॥

কাঁচা অথবা সজ্ল শুদ্ধ দ্বা শিলায় পেষণ করিয়া লইলে তাহাকে কন্দ্র কহে। আবাপ ও প্রক্ষেপ এই ছুইটি কল্পের পর্যায়। কল্পে শ্বত মধু ও তৈল দিতে হুইলে বিগুণ। চিনি ও শুড় দিতে হুইলে কল্পের সমান এবং দ্রবপদার্থ দিতে হুইলে চারিগুণ দিতে হয়।

অথ কাথবিধিঃ।

পানীয়ং বেড়েশগুণং কুলে জবাপলে কিপেৎ।
মুৎপাতে কাৰ্য্যেদ্ গাঞ্চাইনাংশাবশেষিতন্ ।
কৰাদৌ তু পলং বাবদ দক্তাৎ বোডশিকং জলন্।
তহস্ত কুড়বং বাবৎ তোয়নষ্টগুণং কিপেৎ।
চতুও গ্ৰহণোজ্বং বাবৎ প্ৰস্থাদিকা জলন্।
ডেক্ডলা পাফ্যেন্ত্ৰীনান্ কোকং মুন্ধনিলাবিতন্।
শুতঃ বাৰ্থ কৰ্মকে নিসূৰ্বিহং সানিগক্তাতে।

কৃষ্টিত এক পল দুবা ষোল গুণ জল সহ সিন্ধ করিয়া অন্তমাংশ অবশিষ্ঠ থাকিতে নামা-ইবে। দুৰের পরিমাণ কর্ম হইতে পল পর্যন্ত হইলে জলের পরিমাণ ষোলগুণ, পল হইতে কুড়ব পর্যান্ত ৮ গুণ এবং কুড়বের পর প্রস্থ পর্যান্ত ৪ গুণ জল দিয়া মৃত্র অবি সন্তাপে সিন্ধ করিবার বিদি। শৃত, ক্রায় ও নিযুহি এই তিন্টি শক্ষ কাথের পর্যায়।

পানে কাথ্যাদিদ্রব্যব্যবস্থা।

দশরক্তিকমানেন গৃহীত্বা ভোলকত্বরম্।
দত্বান্তঃ যোড়শগুণং গ্রাহ্যং পালাবশেষিতম্॥
পানীয় পাচনের নিয়ম।

দশ রতিতে যে মাষা, তাহারই আট মাযায় তোলা ধরিয়া সেইরূপ ছই তোলা ঔষণ দ্রবা ১৬ গুণ অর্থাং অর্জনের জলে সিদ্ধ করিয়া পাদাবশেষ অর্থাং প' অন্ধ পোয়া থাকিতে নামাইবে। (।কিন্ত ইদানীস্তন চিকিৎসকণণ ১ ভোলা ও ১ টাকার ওজন সমান করিবার নিমিন্ত ২২ রতিতে মাধা ধরিয়া থাকেন ।।

কাপে কিপেৎ সিতানং নৈশ্চতুর্থ ষ্টমবেত নে। বাতপিত্র কতেকে বিপরীতং মধু শুত্র । জীরকং ওপ্তলুং কারং লবণক শিলাজতু। হিন্ধু নিকটুককৈর কারে শানোলিত কিপেৎ। কীরং তৃতং ওড়ং তৈবং মূত্রকান্তন্ হল তথা। কধং চুর্ণাদিকং কাপে নিক্ষিপেৎ কর্মস্মিত্র ॥ তত্ত্রোপবিশু বিশ্রান্তঃ প্রসন্নদনেস্কণঃ। ওবধং হেমরজত-মুভাজনোপরিস্থিতম্। পিরেৎ প্রসন্নদ্বয়ং পাঁড়া পাত্রমধােমুখ্য । বিধায়াচ্যা সলিলং ভাষ্ণাত্রপ্রেশ্জ্যেৎ॥

কাথে চিনি প্রাক্ষেপ দিতে হইলে বাত-জনিত রোগে চারি অংশের এক অংশ, পিত্ত-জনিত রোগে আট অংশের এক অংশ ও কফ-জনিত রোগে ১৬ অংশের একাংশ চিনি বাং-হার কবিবে, কিন্তু মধু প্রয়োগ সম্বন্ধে ইহার বিপরীত অগাং বাতজনিত রোগে মোল অংশের এক অংশ, পিতৃজনিত রোগে চারি অংশের এক অংশ, মধু প্রয়োগ করিবে।

জীরা, গুগাগুলু, যবন্ধার, লবণ, শিলা-জুগু, হিন্ধু ও জিকটু (শুঠ, পিপুল, সরিচ) এই কয়েকটি, কাথে প্রয়োগ করিতে হইলে এক পাণ (॥০ ভোলা) মাত্রামু প্রয়োগ করিবে।

ছগ্ধ, সূত, গুড়, কেল, মূত্র জ্ঞাবা সভী কোন প্রকার স্তবস্থার, কিংবা কর ও চুর্ণ প্রভৃতি কাথে প্রকেপ দিতে হইলে এক কর্য (২ তোলা) পরিমাণে দিবে।

প্রাণপ্ত ভাবে উপবেশন পূর্বাক নেত্র ও বদনের বিক্কতি না করিয়া প্রাক্তরান্তঃকরণে স্বর্ণ, রোপ্য বা সৃত্তিকানিশ্মিত পাত্রে ঔষণ সেবন করিবে, তদনস্তর ঔষণের পাত্রটিকে অধােমুখে রাখিয়া জল ছারা মুখ-প্রকালন-পূর্বাক ভাছুলাদি মুখশােধক দ্রব্য চর্মণ

অথ হিমবিধিঃ।

কুলং জব্যপলং সমাক্ বড় ভিনীরপলৈঃ ই,্ডম্। নিশোষিতং হিমঃ স ভাং তথা শীতক্ষায়কঃ ॥

কুটিত এক পল দ্রব্য ছয় পল জলে সমস্ত রাত্রি ভিজাইয়া রাখিলে তাহাকে হিম ব। শতক্ষায় কহে।

প্রদঙ্গান্মন্থ বিধিঃ।

জনে চতুপালে শীতে কুমং প্রবাপলং কিপেং। মুৎপাত্তে মন্ত্রেম চচ দ্বিপলং পিবেৎ॥

মৃত্তিকাপারে ১ পল কুটিত দ্রব্য চারি পল শাতল জলে ভিজাইল উত্তমকপে মহন করিল লইলে মহ প্রস্তুত হয়। ইহাও শাতকবার ফুল্য। মাত্রা—২ পল।

অবান্তরভেদাৎ তণ্ডুলোদকম্।

তঞ্লং ক্রাণঃ কৃষা পলং গ্রাহাং হি তঙ্লাং। চতুপ্ত পং জলং দেয়ং তঙ্লোদককশ্বি। শীতক্ষায়মানেন তঙ্লোদককল্পনা॥

এক প্ল পরিমিত আতপতগুল স্ক্রচ্ণ করিয়া ৪ প্ল জলে ভিজাইয়া রাখিলে তথু-লোদক প্রস্তুত হয়। ইহাব মাত্রা—শীত-ক্যায়েব ভায়।

অথ ফাণ্টঃ।

কুনে স্তবাপলে সমাগ্ জলমূকং বিনিক্ষিপেং। মুংপাত্তে কুড়বোন্ধানং ততন্ত্র প্রাবয়েং পটাং। সোহরং পুতো দ্রবঃ কান্টো ভিরগ ভিরভিনীয়তে ॥

কুটি ১ পল দ্রব্য মৃৎপাত্তে অর্জনের উষ্ণ জলে কিয়ৎক্ষণ ভিজাইয়া ছাঁকিয়া লইলে ফাণ্ট প্রস্তুত হয়।

প্রদঙ্গান্তকোদকম্।

অন্ত্রনাংশশেষে চতুর্থেনার্ককেন বা।
অথবা বথনেনৈ সিদ্ধুক্ষাদকং ভবেং॥
শ্রেমামবাতমেদোম্ম বস্তিশোধনদীপনম্।
কাসধাসম্বরান হস্তি পীতমুক্ষাদকং নিশি॥

অগ্নিসন্তাপে জল সিদ্ধ করিরা অন্তমাংশ, চতুর্থাংশ কিংবা অদ্ধাংশ অবশিষ্ট থাাকিতে নামাইলে অথবা কেবল কিছুক্ষণ সিদ্ধ করিলে তাহাকে উন্ফোদক বলা যায়। ইহা শ্লেমা, আমবাত ও মেদোরোগনাশক এবং বন্তিশোধক ও অগ্নিনীপক। রাত্রিকালে ইহা পান করিলে খাদ, কাদ ও জর বিনষ্ট হয়।

কাথাদেরবান্তরভেদাল্লেহাদিকমাহ—

কাথাদেবং পুনঃপাকাদ্ অনবং সা রসজিয়া।
সোহনলেহণ্ট লেহণ্ট প্রাণ ইত্যুচ্যতে বুধৈঃ।
সিতা চতুগুণা কাম্যা চুণাচ্চ বিগুণো গুড়ঃ।
দ্রবং চতুগুণং দদ্মাদিতি সর্বক্র নিশ্চয়ঃ।
স্থপকে ডক্তমবং স্থাদবলেহেহপাস্থ মজ্জনম্।
স্থিরহং পীড়িতে মুদ্রা গন্ধবর্গন্যান্তবঃ।

কাথাদিকে পূনঃ পাক করিলে যে ঘন পদার্থ জন্মে, তাহাকে অবলেহ, লেহও প্রাণ বলে। চিনি দিয়া অবলেহ প্রস্তুত করিতে হইলে চূর্ণের চতুগুণ চিনি, গুড় সংযোগে জ্বস্তুত করিতে হইলে চূর্ণের বিশুণ গুড়ও দ্রবপদার্থের সহিত গ্রস্তুত করিতে হইলে সর্কার চূর্ণের চতুগুণ দ্রবপদার্থ দিয়া পাক করিবে। অবলেহু স্থাক হইলে ভদ্ধবিশিষ্ট হয়, জলে নিক্ষেপ করিলে স্থির হইয়া থাকে (গলিয়া যায় না), চাপিলে মুদ্রাবৎ চিহ্ন এবং উপস্কু গদ্ধ, বণ ও রদের উৎপত্তি হয়।

অথ চূর্ণবিধিঃ।

অত্যন্তশুকং যদ্দ্রব্যং ক্পিষ্টং বস্ত্রগালিতম্। তৎ স্থাচতুর্গং রলঃ কোদক্তস্ত পর্যায় উচাতে ॥

অত্যন্ত শুক্ষর উত্তমরূপে পেষণ করিয়া বিদ্রে চাঁকিয়া লইলে চূর্ণ প্রস্তুত হয়। রজ্ঞ ও কোদ, চূর্ণের পর্যায়।

চুর্ণস্থ্য পাকনিয়েশঃ।

প্রারো ন পাকশ্চ্বানাং ভূরিচ্বস্ত তেন হি।
আসন্ত্রপাকে প্রজেপ: ব্যক্ত পাকনাগতে।
(আসন্ত্রপাকে উপন্তিতপাকে নতু পাকমাপন্নে,
তথা অতিপ্রচুরচ্বানাং প্রবেশো ন স্তাদিতার্থঃ। ব্যক্ত
চ্বস্তু পাকান্তে কত্র্ধদশানাং প্রক্রেপ ইতি)।

চূর্ণ ঔষণের পাক করা উচিত নহে, কারণ পাক ধারা চূর্ণ ঔষধ নির্বীধ্য হয়। কিন্তু চূর্ণ যদি অধিক হয়, তাহা হইলে মোদকাদি দ্রব্যের আসরপাকে অর্থাৎ পাকসমাপ্তির কিঞ্চিৎ পূর্বের প্রক্রেপ দিবে, কারণ তাহা না হইলে চূর্ণ সকল ঔষণের সহিত সম্যক্ প্রকারে মিশ্রিত হইবে না। চূর্ণপদার্থ যদি অল্প হয়, তবে পাক সমাপ্ত হইলে স্বৈছ্ক মোদকাদির সহিত মিশ্রিত করিবে।

অথ বটকাবিধিঃ।

বটকা ঋথ কথান্তে তন্ত্ৰাম বৰ্টকা বটা।
মোদকো গুড়িকা পিণ্ডী গুড়ো বাৰ্জিন্তপোচ্যতে ॥
লেহনৎ সাধ্যতে বক্ষো গুড়ো বা শৰ্করা তথা।
গুগ গুলুবা-ক্ষিপেৎ তত্ত্ব চূৰ্ণং ভান্নিৰ্জ্বিতা বটা ॥
(তত্ত্ব বহ্নিদিন্দ্ৰে গুডাদৌ)

কুর্যাদবছিসিন্ধেন কচিদ্ গুগ গুপুনা বটান্।

জবেণ মধুনা বাপি গুটিকাং কারয়েদ্ বৃধঃ ॥

সিতা চতুগুণা দেয়া বটানু বিগুণো গুড়ঃ।

চূপে চূপসম: কার্যো গুগ গুলুম ধু তংসমন্।

জবেজ বিগুণং দেয়ং মোদকেরু ভিষধরৈঃ ॥

এক্ষণে বটকার বিষয় বলা যাইতেছে।
ভাহান পর্যায়—বটকা, বটী, মোদক, গুড়িকা,
পিণ্ডী, গুড় ও বর্ত্তি। মোদকপাকের নিয়ম
প্রায় অবলেহের ন্তায়। প্রথমতঃ গুড়, শর্করা
অথবা গুগ গুলু অগ্নিতে পাক করিয়া আসম
পাকে চূর্ণ ঔষদ সমস্ত প্রক্ষেপ দিয়া ভদ্মারা
বটকা প্রস্তুত করিতে হয়। কথন কথন
গুগ গুলু অগ্নিতে পাক না করিয়া কেবলু,
কোন ত্রব পদার্থ ও মধু দাবা মন্দন করিয়া
গুড়িকা করা যায়। মোদকে চুর্নের চতুগু কি
চিনি ও দিগুণ গুড় দিতে হয়। গুগ গুলু
ও মধু, চুর্নের সমান এবং দ্রবপদার্থ চুর্নের
দিগুণ।

অথাণুবটিকাবিপিঃ।

ধাধানীনাম্ভিদাং বা চূর্ন্তে দ্বাং গ্রহণ।
অনুক্তে তোরবোগেন বিমন্দ্য বিদধীত চ ॥
যবসর্বপগুঞ্জাদি-প্রমাণা বটিকা ভিষ্ক।
অনিন্দিষ্টবটা সিন্দো প্রায়ো স্তঞ্জান্তিক। ২০1।
তৎসেবনং স্থাদোষসন্ত্র্পানেন শেষ্যতে ॥

পাতৃ উপপাতৃ ও উত্তিদেন চূর্ব শাক্ষ্রোক্ত জবপদার্থ বারা অথবা অন্তুক্ত হলে কেবল জল বারা বিশেষরূপে মর্ক্রন ক্রিয়ান্যবা, মর্বল ও গুঞ্জা পরিমিত বঁচা ক্রিনে। কিন্তু যে হলে বঁটীর নির্দিষ্ট পরিমাণ না থাকিবে, ভথার প্রায় গুঞ্জা--(রতি)--পনিমিত বুঝিতে হইবে। ইহা দোষ বিবেচনা ক্রিয়া যথা-যোগ্য অনুপানের সহিত প্রয়োগ ক্রিবে। এই বিটকাকে অনুবাটকা বা বঁটা কুছে।

অথ ভাবনাবিধিঃ।

জনেণ যাবতা সম্যক্ চুৰ্ণং সর্কাং প্লুতং ভবেং।
ভাবনায়াঃ প্রমাণস্ত চুর্ণে প্রোক্তং ভিষমনৈ:॥
ভাব্যজব্যসমং কাথাং কাথানস্টগুণং জলম্।
অষ্টাংশশেষিতঃ কাথো ভাব্যানাং তেন ভাবনা॥
দিবা দিবাতপে শুদ্ধং কাতৌ বাতৌ নিবাসরেং।
াহং ভাবনাবিধিঃ॥

যে পরিমিত জবে চূর্ণ সকল সিব্ধ হয়,
চূর্ণের ভাবনাজিয়ায় দবের তাহাই পরিমাণ
জানিবে। কাথ খাবা ভাবনা দিতে হইলে
কাথা দবা ভাবা দবের (ধাহাকে ভাবনা
দিতে হইবে) সমান পরিমাণে লইয়া আঁটগুণ
জল খারা সিদ্ধ করিবে এবং অন্তমাংশ থাকিতে
নামাইয়া সেই কাথ খারা ভাবনা দিবে।
চূর্ণ দব্য জল বা কাথাদি দ্রবপদার্থে ভিজাইয়া
প্রতিদিন রৌদ্রে শুদ্ধ এবং প্রতি রাজিতে
শিশিরসিক্ত করাকে ভাবনা কহে। বিশেষ
বিধি না থাকিলে ৭ দিন জ রূপ ভাবনা
দেওয়া বিধি।

অথ মাত্রাবিধিঃ।

মাত্রারা নান্ত্যবস্থানং দেবিমগ্রিং বলং বরঃ।
ব্যাধিং দ্রবাঞ্চ কোঠক বীক্ষা মাত্রাং প্রবোদ্ধরেও।
উত্তমন্ত পলং মাত্রা ত্রিভিক্টাকৈশ্চ মধ্যমে।
অধ্যন্ত পলংক্ষন স্লেকংপৌবংধবু চ।
(পলমত্র দৌশ্রুভমিতি শুরদা। দৌশ্রুভপলং
১:কল্তাক্ষপলম। ত্রিভির্কৈরিতি চরকন্ত ত্রিভিত্তোলৈঃ।
প্রাক্ষেনিতি চরকে ক্রেণ্ডেন, যুগপ্রভাবা ক্ষমন্তা

ণ্ৰ সৰ্বের, অভ্যুব জগন্সা মাত্রা সংব্ৰব্যং দাভব্যা।)

মাত্রার কোন নির্দিষ্ট পরিমাণ নাই; বাতাদি দোষ, অগ্নি, বল, বয়:ক্রম, ব্যাধি, দব্য ও কোষ্ঠ বিবেচনা করিয়া উপষ্কু মাত্রা প্ররোগ করিবে। তবে স্নেহপদার্থ, কাথা-পদার্থ, স্বরস, গুড়িকা ও কাঞ্জিকাদি ঔষধে মাধারণতঃ যে মাত্রা নির্দিষ্ট আছে, তাহা লিখিত হইতেছে। প্রবলাগ্নিবল ব্যক্তির পক্ষে—মাত্রা ১ পল, মধ্যমাগ্নিবল ব্যক্তির পক্ষে—ত তিন অক্ষ, এবং অধ্যাগ্নিবল ব্যক্তির পক্ষে—ত তিন অক্ষ, এবং অধ্যাগ্নিবল ব্যক্তির পক্ষে—ত তিন অক্ষ, এবং অধ্যাগ্নিবল ব্যক্তির পক্ষে—অর্দ্ধপল নির্দিষ্ট। কিন্তু বৃদ্ধবৈশ্বগণ এই স্থলে সৌশ্রুত মান ব্যবহার করিয়া থাকেন।

সুশ্রতের ১ পল চরকের অর্দ্ধপল, অভএব এস্থলে সুশ্রুতের একপল চারি ভোলা। ভিন অক্ষ ভিন ভোলা, অর্দ্ধপল ২ ভোলা। কারণ স্থাতের ৫ রতিতে মাধা এবং চরকে ১০ রতিতে মাধা; অতএব স্থাতের পরিমাণ অপেক। চরকের পরিমাণ বিগুণ। কলিবুগে সকলেরই অগ্নিও বল অতি অন্ধ, ভজ্জাত সকলেরই পক্ষে ব্যায়ত অর্থাৎ অন্ধ মাত্রা প্রযোজ্য।

গুলামান্তং বসং দেবি হেম জীর্ণ ভক্ষরেং।
াবং নিগুল্পকং প্রোক্তং ববিজ্ঞার্পং বিশুল্পকম্ ॥
বৌহাত্রনাগবন্ধানাং ধর্ণগ্রস্ত শিলাজতোঃ।
বড়গুল্পাপমিতা মানো মলোপরসমাবিকম্ ॥
কাংগুলিগুলমোর্মানাং ভক্ষেৎ তাজ্ঞানিবং।
যবমানাং বিষং দেবি গুল্পামান্তক্ত কুন্তিনে ॥
বজ্ঞং যবসম্মিতং তালকং যবসপ্তকম্।
ভাগে বৃদ্ধা ভিষণ্যভাগ প্রাধ্যা মান্তেতি কীর্ত্তিতা ॥

এছলে শোধিত এবং জারিত ধাখাদির মাতাও সজ্জেপে কথিত হইতেছে। শোধিত পারদ ও জারিত স্বর্ণের মাতা ১ রতি, রোপ্যের মাতা ৩ রতি, তাদ্রের মাতা ২ রতি এবং লোহ, অল, সীসক, বঙ্গ, থর্পর ও শিলাঙ্কতুর মাতা ৬ রতি। মল-াতু ও উপরসের মাতা ১ মাযা। কাঁসা ও পিতলের মাতা ২ রতি। বিষের মাতা ২ যব, কিন্তু কুট্রোগিকে ১ রতি পরিসিত দেওয়া ঘাইতে পারে। হারক ২ যব মাতায় এবং হরিতাল ৭ যব মাতায় ব্যবস্থত হয়। সাধারণ ভাবে ইহাদের মাতা কথিত হুইলেও বিবেচক ভিষক্ বল, বয়্বস্ব ও অয়াদিলক্ষা করিয়া মাতা বিস্তির করিবেন।

অথ ভৈষজ্যদেবনকালবিধিঃ।

অভক্তং পূর্কাভক মধ্য ভক্তং সভক্ত মন্। ভক্তোপরিষ্টাৎ সামূলাং * ভক্ততেবাভরেহণি চ ॥ গ্রাসে গ্রাসান্তরে চৈব মূহগ্মূ ছবিতি স্মৃতাঃ। কালা দলৈতে ধীমভিরৌবধক্ত সমাসতঃ॥ বলিনো মহতো ব্যাধেরভুক্তে ভেষকং হিতম্।

* সামুদ্দাং ভেষজং বিভাদরস্থাভাবসানয়ো:॥

সর্বব্যাধিহরং পথাং পূর্বজ্ঞ মহৌবধন্।
মধ্যকারগতান্ রোগান্ মধ্যজ্ঞং নিইন্তি চ ॥
সক্তমং সুকুমারাণাং বালানামৌবধিবান্।
ভক্তোপরিষ্টাচ্ছত্তক উর্জ্যক্রবিকারিণান্ ॥
সক্ষরে বর্চসাং মূলগং দীগুাগ্রিবলিনাং হিতম্ ॥
ভক্তরোরস্তরে জ্বেং ভোজনন্তরমধ্যতঃ।
ভচ্চ নিতাং প্রযুক্তীত মধ্যদেহবিকারিণান্॥
গ্রাসে প্রামান বাহাসক্রধিরামপি ॥
গ্রাসাপ্তরে হিতং নিতাং কুঠমেহবিকারিণান্॥
মুকুর্তং বাসকাস-ভ্রমার্জন্ধিরোগিণান্॥

অভক্ত, পূর্বভক্ত, মধাভক্ত, ভক্তানন্তর, সামুদ্রণ, ভোজনমধ্যবর্ত্তী, প্রতি-গ্রাস, গ্রাসান্তর ও মৃত্র্যু,ছঃ এই দশ প্রকার ঔষ্ণসেবনের কাল নিদিও হইয়াছে। বোগী বলবান এবং ব্যাধি প্রবল হইলে অর্থাৎ **ঔষ্ধদেব**ন হিতকারী। অনাথরে পূর্বভক্ত অর্থাং আহারের পূবে ঔষধ সর্বব্যাধিনাশক ও হিতজনক। মধাভক্ত (ভোজনের মধাকালে সেবিত) ঔষধ মধা-দেহগৃত রোগনাশক, সভক্ত (অল্লের সহিত সেবিত) ঔবন স্কুমান প্রকৃতি, ঔষণবেষী ও প্রক বালক দিগের হিতকর। ভক্তানন্তর অথাং ভোজনের প্ৰ সোৰত ঔষ্ধ জাকুরোগে প্রশস্ত। কেছিগত বিবন্ধ রোগে এবং দীপ্তামি ও বলবান রোগিব পক্ষে সামুদ্য মনাদেহ সম্বর্জীর ঔষধ হিতকর। ঔষধদেবন ভোজনম্বয়ের মধো হিতকর। হীনাগি ব্যক্তির পক্ষে প্রতিগ্রাসে ঔষধদেবন উপকারী। কুঠ ও মেহ রোগাক্রাস্ত ব্যক্তির পক্ষে গ্রাসাস্তরে সেবিত ঔষধ খাদ, কাদ, ভূষণ ও বমি রোগে বারংবার ঔষধদেবন আবশ্যক।

অন্তচ্চ —

জ্ঞেয়: পঞ্চবিধঃ কালো ভৈৰজ্যগ্ৰহণে নৃণান্। কিঞ্চিৎ শ্ৰোদয়ে জাতে তথা দিবসভোজনে। সায়ন্তনে ভে'জনে চ মুগুলচাপি তথা নিশি॥

* ভোজনের জানি ও অতে সেবিত উবধকে সামৃশ্য কহে।

শান্ত্রাস্করে ঔষণ-দেবনের কাল পাঁচ প্রকার উক্ত হইয়াছে। ষথা—সূর্য্যোদয়ের কিঞ্চিৎ পরে, দিবা-ভোজন-কালে, :সায়ং-ভোজন-কালে, মূর্ন্মূহুঃ ও রাত্রিকালে।

অথ প্রথমকালঃ।

প্রায়ঃ পিত্তককোদ্রকে বিরেকবমনার্থয়োঃ। লেখনার্থে চ ভৈষজাং প্রভাতেহনরনাহরেও ॥

পিত্ত ও শ্লেমার প্রকোপে এবং বিরেচন ব্যন ও লেখনার্থে প্রাত্তকালে আহার না করিয়া ঔষণ দেবন করিতে হয়।

দ্বিতায়ঃ কালঃ।

ভেষজাং বিশুণেহপানে ভোজনাক্তে প্রশক্তরে।
অঙ্কটো চিজভোটজান্ট মিশ্রং ক্রচিরমাহরেৎ ॥
সমানবাতে বিশুনে মন্দেহগ্রাবভিদ্যাপনন্ ।
দন্তাদ্ ভোজনমধ্যে চ ভৈষজাং কুনলো ভিষক্ ॥
ন্যানকোপে তু ভৈষজাং ভোজনাস্তে সমাহরেৎ ।
ভিকালেপককান্পানু পুৰুষ্যস্তে চ ভেজনাং ॥

অপান বায়ু দ্যিত হিইলে ভৌজনের অগ্রে উষদ দেবন পুলস্ত। অকচিতে নানা প্রকান থাখের সহিত সিল্লিত করিয়া ক.চ-জনক উষ্ধ সেবনার। স্থান বায়ু দ্যিত এবং অগ্রিমান্দা হইলে অগ্রিদীপক ঔষ্ধ ভৌজনজিয়ার মধ্যে সেবন করিবে। বানি বায়ু প্রকৃপিত হইলে ভৌজনের শেষে এবং হিক্কা, আক্ষেপক ও কম্পে ভৌজনের প্রথমে ও পরে ঔষ্ধ্যেবন করিতে হয়।

তৃতীয়ঃ কালঃ।

উদানে কুপিতে বাতে শ্বরভঙ্গাদিকারিনি। গ্রাসগ্রাসাপ্তরে দেয়ং ভৈষজ্যং সান্ধ্যভোজনে। প্রাণে প্রভুক্তি সান্ধ্যভাত ভুক্তপ্রাপ্তে প্রদায়তে। উষধং প্রায়শো ধারেঃ কালোহয়ং স্তাৎ তৃতীয়কঃ॥

স্ববভঙ্গাদিকারক উদান বায়ু কুপিত হইলে সায়ংভোজনের প্রতিগ্রাসাস্তরে ঔষধ সেবনীয়। প্রাণবায় প্রকুপিত হইলে সান্ধ্য ভোক্তনের পর ঔষধ সেব্য ।

চতুৰ্থঃ কালঃ !

মূহমু গ্ৰন্থ ভূচিচৰ্দ্দি-হিকাখাসগৱেষু চ। সামঞ্চ ভেষজং দ্যাদিতি কালশুত্ৰকঃ।

ভূষণ, বমি, হিকা, শাসরোগ ও বিষদোধে মূল্মুহিঃ অন্নের সহিত ঔষধ প্রধ্যোজা।

পঞ্চমঃ কালঃ।

উদ্ধান বিকারেমু লেখনে প্রাহণে তথা।
গাচনে শমনে দেয়মনম্ম ভেষদ্ধানিশি॥
উদ্ধানজ্পাত রোগে এবং লেখন, বৃংহণ,
গাচন ও শমনাথে রাত্তিতে উধন প্রায়েজ্য ও
লক্ত্যন ব্যবস্থেষ্ট।

অথ কীরাদিপাকঃ।

দ্রব্যাদষ্টগুণং ক্ষারং ক্ষারাৎ ভোয়ং চত্ত পুনু। ক্ষীরাবশেষ, কন্তব্যঃ ক্ষীরপাকে হয়ং বিধিঃ॥ ক্ষীরমস্বারনালানাং পাকো নাস্তি বিনান্তমা। সমাক পাকং ন গচছন্তি তথাৎ ভোয়ং চতুগুণম্। (এ১ৎ তু वहनः (कवनकी बाहिशकशाहनाम) ঘু ১তৈলাদিপাকে কারপঞ্চ মুল্যাদৌ নাগ্যতা : ধ্বান্তরমন্ত্যেব। ৈজ।দিপাকে চতুগুৰ্ণং গারনেবান্তি ন তত্র দ্রবান্তরমন্তি তত্র কণ্ঠোক্তহাৎ পরিভাষা ন প্রবর্ত্ততে যথা অব্যক্তানুক্তলেশোক্ত-**শূলিদ্ধার্থপ্রকাশিকা** ইভাভিপ্ৰেতা বাাখ্যেয়মিতি छत्रवः ।)

যে দ্রব্যের সহিত ক্ষীর পাক করিতে হইবে
তাহার ৮ গুণ হগ্ধ ও হুগ্ধের চতুগুণ জল একত্র
পাক করিয়া হগ্ধ অবশিষ্ঠ থাকিতে নামাইবে।
জল ব্যাতরেকক হগ্ধ, দ্বিমস্ত ও বাজির পাক
ইয় না, ভজ্জ্য চারিগুণ জল দিয়া পাক
করা বিধি। স্বত ভৈলাদিতে যে হগ্ধ পাক
করিতে হয়, সে স্থলে এ নিয়ম নহে; কেবল

ক্ষীরাদিসিদ্ধ পাচন অর্থাৎ ক্ষীরপঞ্চমূল্যাদি পাচনের পক্ষে এই নিয়ম জানিবে i

যুহতৈলাদিষোগে চ যদ্জব্যং পুনরুচ্যতে। ভাতবাং তদিহাচাধ্যৈতাপতো দ্বিশুণেন হি॥

ন্বত তৈল অথবা অপর যোগাদিতে যদি কোন দ্ব্য হুই বার উক্ত হয়, তাহা হুইলে সেই দ্ব্যের ছুই ভাগ লইতে হুইবে।

অথ মাংসরসসাধনম্।

জন্যতো দ্বিগুণং মাংসং স্বৰ্গতো দ্বিগুণং প্রঃ। পাদস্থং সংস্কৃতং তোৰ ষড়জো যুব উচ্চতে। পলানি দ্বাদশ প্রস্কৃতি সংস্কৃতি। মাংস্কৃতি বটকং ব্যাহ প্রমুক্ত তার এবে।

ঔষণ দ্রব্যের সহিত মাংসরস প্রস্তুত করিতে হইলে দ্রব্যের দ্বিগুণ মাংস ও সকলের দ্বিগুণ জল দিয়া একত্র পাক করত চতুর্থাংশ অবশিষ্ট থাকিতে নামাইলে মাংসরস প্রস্তুত হয়। মাংসরস থাকত নামাইলে ১ প্রস্তুত্ত হয়। মাংসরস থাকত করিতে হইলে ১ প্রস্তুত্ব করিতে হইলে ৬ পল মাংস (চারিসের জলে) পাক করিয়া উত্তমরূপে চটুকাইয়া ছাকিয়া লইবে। আর অতি তরল মাংসরস প্রস্তুত করিতে হইলে ১ পল দিদ্ধ মাংস পেষণ করিয়া বটক করিবে, পরে সেই বটক সকল মুভাদিতে ভাজিয়া পুরুব্ব জলে পাক করিয়া বচ্চতর রস প্রস্তুত করিবে।

অথ স্নেহপাকস্থ সাধারণো বিধিঃ।

আনে সঞ্চারয়েৎ কাথং ছন্ধং কদং তত: পরম্। ডক্তোংক্তৎ পুরভিদ্রবাদেষ মেংবিধিম তঃ॥

সেহপাক করিতে হইলে প্রথম কাথ, তৎপরে হগ্ন ও তারপর কক্ষ সহ তেলাদি পাক করিবে। শেষে ছাকিয়া গদ্ধদ্রব্য সহ পাক করিবে।

অথ তৈলমুৰ্চ্ছা-বিধিঃ।

----:

ত্রাদে তিল-তৈলমুর্চ্ছা।

কৃষা তৈলং কটাহে দৃঢ়তরবিমলে মন্দমন্দানলৈন্তৎ
পকং নিক্ষেনভাবং গতমিহ তু যদা শৈত্যযুক্তং তদৈব।
মঞ্জিষ্টারাত্রিলোগ্রৈর্জনধরনলিকৈঃ সামলৈঃ সাক্ষপথ্যঃ
স্চীপুপান্তিনু নীরৈক্ষপহতিমন্দিতৈর্গন্ধবোগং জহাতি ॥
তৈনক্ষেন্দুকলাংশিকস্ত বিক্সাভাগোহপি মুর্চ্ছাবিধা
বে চাজে ত্রিফলাপয়োদরজনীইবিরলোগ্রাহিতাঃ।
স্চীপুপবটাবরোহনলিকান্তক্তান্চ পাদাংশিকাসর্গন্ধং বিনিহন্ত তৈলমক্ষণং সদগন্ধমাকুর্বতে॥

দুঢ়তর লৌহকটাহে মন্দ মন্দ অগ্নি দারা তৈল পাক করিবে। যথন ঐ তৈল নিম্ফেন হইবে, তথন চুন্নী হইতে নামাইবে, অল শাতল হইলে পেৰিত হরিদ্রা জলে গুলিয়া ক্রমণঃ তৈলে দিবে। পরে পেষিত সজল ক্রমে ক্রমে তাহাতে নিক্ষেপ করিবে। তৎপরে লোধ, মুতা, নালুকা, আমলা, বংহড়া, হরীতকী, কেয়ার মূল, বটের ঝুরি ও বালা এই সকল জবা জল সহ শিলাপিষ্ট করিয়া তৈলে দিবে। পুনরায় ঐ তৈলে তাহার চতুগুণ জল দিয়া, পাক করিবে এবং কিঞ্চিৎ জল অবশিষ্ঠ থাকিতে : নামাইয়া ৭ দিন তদবভায় রাখিবে। হরিজা ও মঞ্জিষ্ঠা প্রভৃতি জব্যসমূহকে মুর্চ্ছা-দ্ৰব্য কছে।

উক্ত দ্রব্যের পরিমাণ এই, তেলের বোড়শাংশ মঞ্চিচা এবং অপরাপর দ্রব্য মঞ্জি-চার চতুর্থাংশ; অর্থাৎ যদি তৈল ১৬ সের হয়, তাহা ইইলে মঞ্চিচা ১ সের ও অক্যান্ত দ্রব্য এক পোয়া করিয়া হওয়া আবশ্রক। মূচ্ছাক্রিয়া ঘারা চর্গন্ধ নিবারিত হইয়া তৈল স্থান্ধ ও অরুণবর্ণ হয়। তৈলের সহিত কাথাদি পাক করিবার সময় মূচ্ছাদ্রব্য সমস্ত হাঁকিয়া ফেলিবে।

অথ কটুতৈলমূর্চ্ছা।

বর:ছারজনীমুন্ত-বিশ্বদাড়িমকেশরৈ: ।
কুকজীরকত্রীবের-নলিকৈ: সবিজ্ঞীতকৈ: ।
এতৈ: সমাংশৈ: প্রস্থে চ কর্ষমাত্রং প্রয়োজরেৎ ।
অঙ্কণাদ্বিপদং তত্র তোরক্ষাড়কসন্মিতম্ ।
কটুতৈলং পচেৎ তেন ভামদোবহরং পরম্ ।

পূর্মোক্ত প্রণালীতে কটুতৈলও মূর্চ্ছিত করিবে অর্থাৎ তৈল নিজেন হইলে প্রথমে হরিদ্রা, তদনস্তর মঞ্জিষ্ঠা দিয়া, পরে আমলা, মৃতা, বেলছাল, দাড়িমছাল, নাগকেশর, ক্বম্ব-জীরা, বালা, নালুক ও বহেড়া এই সকল মূর্চ্ছিনদ্রব্য পূর্মবিং দিবে। /৪ সের তৈলে মঞ্জিষ্ঠা এক পোয়া ও অস্তান্ত প্রত্যেক জবা ২ তোলা মাত্রায় নিক্ষেপ করিয়া ১৬ সের জলে পাক করিবে।

অথৈরগুতৈলমূর্চ্ছ।।

বিকসা মুক্তকং ধাস্তং তিকলা বৈজয়ন্তিকা । ক্রীবেরবনধর্জ্জুর-বটগুঙ্গানিশাসুগম্॥ নলিকা ভেষজং দেয়ং কেতকী চ সমং সমম্। প্রস্তে দেয়ং গুক্তিমিতং মূর্জ্জনে দধি কাঞ্জিকম্॥

এরগুটেরলের মৃচ্চাদ্রব্য যথা—মঞ্জিল,
মৃত্র, ধনে, ত্রিফলা, জরস্তীপত্র, বালা, বনথর্জুর, বটের ঝুরি, হরিদ্রা, দারহরিদ্রা, নলিকা,
কেয়ার ঝুরি, দবি ও কাজি প্রত্যেক ৪ তোল,
তৈল চারি সের। মঞ্জিল প্রভৃতি স্বারা পূর্কবৎ মৃচ্চা করিবে।

অথ সূত্ৰুন্ধা

পথাধাত্রীবিভাতৈর্জলধররজনীমাতুলুক এবৈশ্চ স্তব্যেরেতেঃ সমক্তঃ পলকপরিমিতের নমন্দানলেন। আজাপ্রস্থং নিকেনং পরিচপলগতং মৃচ্ছয়েকৈপ্তরাজ-ন্তমাদামোপদোবং হরতি চ সক্তমং বীবাবৎ সৌধাদায়ি।

পূর্ববং দৃঢ়কটাহে মন্দ মন্দ অগ্নিতে স্থত পাক করিলে স্থত যথন নিচ্ছেন হইবে, তথন প্রথমে হরিন্তা, তৎপরে ছোলঙ্গ লেবুর রস, তদনগুর ইরীতকী, আমলা, বহেড়া ও মুতা এই সকল দ্রব্য পূর্ববং ঘতে নিক্ষেপ করিবে। চারি সের ঘতের মূর্চ্ছন করিতে হইলে মূর্চ্ছাদ্রব্য সকলের প্রত্যেকের পরিমাণ ১ পল, পাকার্থ জল ১৬ সের।

স্নেহসাধনে কাথ্যজলাদেঃ পরিমাণম ।

নিক্ষিণ্য কাথ্যেৎ ভোরং কোধ্যক্রব্যাচ্চতুপ্ত গ্ম। পাদশিষ্টং গৃহীত্বা তু মেহং ভেনেব সাধ্যেৎ ॥ চতুপ্ত গং মুক্তমব্যে কঠিনে২ইগুণং জনম্। মুন্নাদিকাশ্যসংঘাতে দন্তাদইগুণং প্যাঃ। অভ্যস্তকঠিনে দ্রব্যে নীবং মোড়শিকং মতম্॥

অন্তক্তংল মেহপাকার্থ কাথ প্রস্তুত কৰিবাৰ নিয়ম যথা—কাথ্য করা কোমল হইলে চারি গুণ জলে, কঠিন অথবা নাতিমৃত্র নাতিকিঠিন হইলে আট গুণ জলে এবং অতান্ত কঠিন হইলে ১৬ গুণ জলে দিদ্ধ করিয়া চতুর্থাংশ অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া দেই কাথে স্নেহ পাক করিবে। কাথ স্নেহের চতুগুণ হয়, এইরপ হিদাব করিয়া কাথ্য দ্রব্য লইবে।

写到65--

কর্বাদিত: পলং যাবৎ ক্ষিপেৎ বেড়িশিকং জলম্। তদুধ্বং বুড়বং যাবদ্ধবেদষ্টগুণং পদ্ধঃ ॥ প্রস্থাদিতঃ ক্ষিপেন্সীয়ং গারীং যাবচ্চতুগুণম্। তুলাদ্রব্যে এলদ্রোণো দ্রোণে দ্রবাতুলা মতা ॥

অপরে বলেন—কর্ম হইতে পল পরিমিত কাথ্য দ্রব্য ১৬ গুল জল, তদুর্দ্ধ কুড়ব পর্য্যস্ত ৮ গুল জল এবং এন্ত হইতে থারী পর্য্যস্ত চারি গুল জল দিয়া কাথ প্রস্তুত করিবে। আর অমুক্ত স্থলে তুলাপরিমিত অর্থাৎ ১২॥। সের কাথ্যে দ্রোণ পরিমিত অর্থাৎ ৬৪ সের জলের উল্লেখ থাকিবে, তথায় ১২॥। সের কাথ্য দেশ্যে হইবে, ইহা বুরিবে।

অনির্দ্ধিষ্টপ্রমাণানাং কেহানাং প্রস্থ ইয়তে। জলমেহে বিধানাঞ্চ প্রমাণং যত্ত নেরিতম্॥ তত্র স্তাদৌষণাৎ ক্রেহঃ রেহাৎ তোরং চতুগু⁶ণম্। ক্রেহসিকৌ ত্রবেহসুক্তে সর্ব্বত্রান্তলতুগু⁶ণম্। গক্তব্যাপি চেচ্ছন্তি কক্ষতার্কাংশিকানি চ

কি পরিমাণে স্নেহ পাক করিতে হইবে, তাহার বিশেষ উল্লেখ না থাকিলে, চারি সের পরিমাণে স্নেহ পাক করা বিহিত এবং জল, স্নেহ ও কল্পব্যের পরিমাণ উল্লেখ না থাকিলে কল্প দ্রেরের চতুগুর্গ জল লওয়া আবগুক। আর কোন্ দ্রবপদার্থ লারা স্নেহ পাক করিতে হইবে, তাহা লিখিত না থাকিলে ব্রামতে হইবে হে, সর্বত্রই ৪ গুণ জল লারা স্নেহ পাক করিতে হইবে। স্নেহপাকে কল্পের অর্দ্ধেক গল্পব্য প্রদান করিতে হয়।

বেংগাকবিধো যত্ত্র ক্ষীরমেকস্ত কথ্যতে। ভোরাদীনামনিদ্দেশে ক্ষীরমের চতুর্গুর্ণান্। জব্যাস্থ্যরেশ যোগে তু ক্ষীরং স্লেহসমং বিদ্ধঃ॥

সেহপাক বিষয়ে যদি জলাদি অন্ত দ্রবপদার্থের উল্লেখ না থাকিয়া কেবল একমাত্র
ছগ্নেরই উল্লেখ থাকে অর্থাৎ যদি কেবল ছগ্ন
দিয়াই ক্ষেহ পাক করিতে হয়, তাহা হইলে
ক্ষেহের চারিগুণ ছগ্ন দিতে হইবে। আর
যদি জলাদি অন্ত দ্রবপদার্থের উল্লেখ থাকে,
তবে স্নেহের সমান্যন্ত্রগ্ন দেওয়া কর্ত্ব্যা।

অগ্রচ্চ-

স্বরদক্ষীনাক্সলাঃ পাকো যতেরিতঃ কচিৎ। জলং চতুপ্ত গং তত্র বীধ্যাধানার্থমাবপেৎ । ন মুক্তি রসং দ্রবাং কীরাদিভিন্নপস্কতম্। সমাক্ পাকো ন জায়েত তমাৎ তোমং চতুপ্ত পদ্।

কেছ বলেন, যে স্থলে স্বরস হগ্ধ বা দধি
দিরা স্নেছ পাক করিতে বলা থাকে, তথার
জ্বলের উল্লেখ না থাকিলেও, স্নেছের বীর্য্যাধানার্থ উক্ত হুগ্ধাদির সহিত চতুগুল জল
দিয়া স্নেছ পাক করা কর্ত্তব্য । কারণ কেবল
হুগ্ধাদি ছারা স্নেছ পাক করিলে, তাহাদের
গাঢ়তা প্রস্তুক্ত কল্পদ্রব্যের রস ভালরপ
নিঃস্তুত হয় না, স্কুতরাং স্নেছের পাক সমাক্

প্রকারে নিষ্ণার হয় না। অতএব অমুক্ত স্থলেও চারিগুণ জল দেওয়া অতি আবশুক। পঞ্চ প্রভৃতি বত্র স্থার্ডবাণি মেহসংবিধৌ। তত্র মেহসমাক্ষাহরব্বাক চক্তাচ্চতৃগুণিমু ।

সেহপাক বিষয়ে যেখানে চারির অধিক দ্বপদার্থের উল্লেখ থাকিবে, তথায় প্রত্যেক দ্বপদার্থ স্নেহেব সমান, আর এক হইতে চারি পর্য্যন্ত প্রত্যেক দ্বপদার্থ।সেহের চারি-গুণ দিতে হ'ইবে।

অসুকাগরনৈয়ত পুণক্ মেহস্ত সাধনম্। কক্ষ্যাংশং তত্ত দতাচ্চতুর্বং বঠনসুমুম

কেবল জল মানা স্লেছেব পাক করিতে হইলে কলের পরিমাণ স্লেছেব চতুর্থাংশ ও কাথ মারা ক্লেছের পাক করিতে হহলে কলের পরিমাণ স্লেছের ষ্ট্রাংশ এবং স্পাস মারা স্লেছের পাক করিতে হইলে কল্পের-পরিমাণ স্লেছের অষ্ট্রমাংশ লইনে।

ছমে দল্লি নদে তক্ৰে কৰো দেয়োহষ্টমংশিকঃ। কৰাক সম্যন্ পাকাৰ্থং তোৱমত চতুগুৰ্ণম্। (কৰাৎ কৰ্মন্তব্যাকতুগুৰং চোয়ং পেষণাৰ্থন্।)

ছগ্ধ দিধি স্বরস ও তক্র দারা সেহ পাক করিতে হইলে, করুদ্রব্য সেহের অন্তমাংশ এবং করুদ্রব্য পেষণার্থ কল্কের চতুগ্রুণ জল দিতে হইবে।

কাথেন কেবলেনৈব পাকো যন্তোদিতঃ কচিৎ। কাথ্যজ্বস্থা ককোহপি তত্ত সেহে প্রযুক্তাতে। কক্ষানস্থা যেহঃ স সাধ্যঃ কেবলে দ্রবে॥ (কেবলে দ্রবে কাপেতরেন্মিন্ স্বসাদিরূপে।)

কেবল কাথ ছারা দেখানে স্বেহপাকের বিধি থাকে, তথায় বুঝিতে হইবে দে, এ কাখ্যেরই কল্প ছারা স্বেহ পাক করিতে হইবে। কল্প ব্যতিরেকেও স্নেহ পাক করা যায়, তথায় কেবল দ্রব ছারা অর্থাৎ স্বর্মানি ছারা পাক করিতে হইবে।

পুষ্পকৰম্ভ যা মেহস্ততা ভৌয়ং চতুগুৰ্ণিম্। ক্ষেহাৎ মেহাইনাংশক পুষ্পকৰ্মং প্ৰযুক্তাতে॥ সেহপাকে পূষ্প বৃদ্দি কল্পনা হয়, তাহা হুইলেও স্নেহের চুতুওণি জল দিবে এবং পূষ্ণ-কল্প:সেহের অষ্টমাংশ লইবে।

আদৌ কৰঃ প্ৰদাতন্যো গৰুদ্ৰাং ভত প্ৰম্। তৈলমূভায়ে দাত্ৰাং শিহলকং কুমুমং নথম্। গৰুচন্দ্ৰকপূৰ্বেলাবীজং লবসকম্॥

অত্যে কল্প।ক, তদনস্তর গঞ্জবা ধারা পাক করিয়া তেল নামাইবে। পরে শিলা-বস, কুফুম, নখী, খেতচন্দন, কর্পূর, এলাইচ ও লবস এই গঞ্জবাওলি তাহাতে প্রক্লেপ দিবে।

অথ সেহপাকস্ত কাণ্নিয়মঃ।

মূজি জ্ঞাং সপ্ততি, সিদ্ধা রাজিতিরু ধসত্মতা। ব্রীহিপাণ্ডসংগ্রাং পাকং সন্তঃ সিধ্যতি ন'ত্যপা। ক্তাং পাকঃ প্রমো দ্বান্ত্যং প্রমাদেও তিহুছিং। দ্বিকাজিক ত্রাণাং সিদ্ধো ভগতি পঞ্চিং। মূত্রাদীনামেকরাজাং তেতঃ কক্ষন্ত সপ্ততিঃ। গ্রাদীনামেকরাজাং তেতঃ কক্ষা সপ্ততিঃ।

তৈলাদিন মৃচ্ছাজিয়া ৭ দিনে সিদ্ধ হয়,

মথাৎ মৃচ্ছাজ্বা সমস্ত পাকানস্তর ৭ রাজির

গর ছাঁকিয়া ফেলিবে। অনস্তর ব্রীহি প্রস্তৃ
তির কাথ সহ ও তৎপরে মাংসাদির কাথের

সহিত শ্লেহপাক কর্ত্তর। ইহাদের সহিত

এক এক দিবদের মধ্যেই পাক সম্পন্ন করা

উচিত। পরে হয় সহ হুই দিন; স্বরস ও
কাথের সহিত ও দিন; দাব, কাঁজি ও তক্রের

সহিত ৫ দিন এবং মৃত্রাদির সহিত ১ দিন

পাক করা নিয়ম। তৎপরে কম্পাক, ইহা

৭ সাত দিনে সম্পন্ন করিতে হয় অর্থাৎ কল্প
পাকের ৭ দিন পরে উহা ছাকিয়া ফেলিতে

হয়। সর্ক্রপশ্চাং গ্রুপাক, গ্রুদ্রেরর সহিত

পাক পাঁচ দিনে সম্পন্ন হয়।

অথ স্নেহপাকপরিজ্ঞান্য।

বর্ত্তিবৎ গ্রেহকধঃ স্থাদ্ যদাস্কুল্যা বিবর্ত্তিত:। শব্দহীনোহয়িনিক্ষিণ্ডঃ ক্লেহঃ সিদ্ধো ভবেৎ তদা।। যদা কেনোকামন্তৈলে ফেনশান্তিক সর্পির।
বর্ণগন্ধরদোৎপত্তিঃ স্নেহঃ সিন্ধো ভবেৎ ভদা ॥
স্বেহপাকল্লিধা প্রোক্তো মৃত্রম ধ্যঃ ধরন্তথা।
ঈবৎপরসকন্তন্ত বেহপাকো মৃত্রভবেৎ ॥
নধ্যপাকস্ত সিন্ধিক কন্ধে নীরসকোমলে।
ঈবৎকটিনকক্ষক স্নেহপাকো ভবেৎ ধরঃ ।
তদুর্দ্ধি দক্ষপাকঃ স্তাদাহকুরিভারোজনঃ।
আমপক্ষক নিক্রীয়ো বহিমান্যকরো শুরুঃ॥

কল্পদার্থ অঙ্গুলি ধার। পাকাইলে বখন বাতির স্থায় হয় এবং অথিতে নিক্ষেপ করিলে শক্ষহীন হয়, তখন স্নেহপাক সিদ্ধ হইয়াছে জানিবে। যখন তৈলে ফেনোদগ্য এবং মতে ফেন নিনৃত্ত হয় এবং মণোপরুক্ত গন্ধ, বর্ণ ও রসেব উংপত্তি হয়, তখন জানিবে স্নেহপাক নিম্পন্ন হইরাছে। স্নেহপাক তিন প্রকার ,— মৃত্যু, মণ্য ও খার। কল্পদ্রবা ঈথং স্বর্স পাক্ষিণে মৃত্যু, নীরস অগচ কোমল পাক্ষিলে মণ্য ও ঈথং কঠিন থাকিলে খার পাক জানিবে। তাহারী অতিরিক্ত পাককে দগ্ধপাক কহে, দ্গ্ধপাক দাহকর ও নিম্পান্তার ও গুরু।

মন্তার্থং সাট্টমন্ত্রত পাচকা মধ্যমঃ সর্ব্যক্ষত্ব। অভ্যক্তার্থ্য এরঃ তেওঁ ক্রেয়ালেবং ক্রেটিভম্ ॥

নস্থাগ মৃত্বপাক, অভ্যঙ্গাথ খরপাক, এবং মন্যপাক সকল কন্মেন্নই উপযোগী। স্বততৈলগুড়াদ্বীংক সাধ্য়েকৈবাসরে। প্রকৃষ্ণস্কামিতাব্যুতে বিশেষাদ্পুণস্ক্ষ্ম্॥

ম্বত, তৈল ও গুড়াদির পাক একদিবদে সমাপন করিবে না। ম্বতাদি উবিত অর্থবি অধিক দিন সিদ্ধ হইলে বিশেষ গুণকর হইয়া থাকে।

অথ ধাতুনাং সংখ্য। নিক্লজিশ্চ।
প্রধ্ রূপ্যঞ্ ভাত্রক বঙ্গং যশদমেব চ।
সাসঃ লোহক সায়ৈতে ধাতবো গিরিসম্ভবাঃ॥
বনাপালিতথালিত্য-কাশ্যাবল্যজ্বাময়ান্।
নিবাধ্য দেহং দুখতি নৃণাং তদ্ধাতবো মতাঃ॥

স্বর্ণ, রৌপ্য, তাত্র, বন্ধ, দন্তা, দীদক ও লোহ এই সাতটী ধাতু পার্ববিত্যপ্রদেশস্থ আকর হুইতে উৎপন্ন হুইয়া থাকে। ইহারা বলী, পালিত, থালিত্য, রুশতা, হুর্ববিতা ও জর প্রভৃতি পীড়া নিবারণ করিয়া দেহ ধারণ বা রুক্ষণ করে বলিয়া ইহাদিগকে ধাতু কহে।

সকল ধাতুই জারণ করিবার পূর্বেন শোপন করিয়া লওয়া আবশুক। তজ্জন্ত প্রথমতঃ স্বর্ণের শোধনবিধি কণিত হইতেছে। স্বর্ণশোধনের নিয়মান্ত্রসারে রোপ্য প্রভৃতি ধাতু এবং মাক্ষিক প্রভৃতি উপধাতু সকলও শোধন করিয়া লইবে)।

অথ স্বর্ণস্থ শোধনবিধিঃ।

পত্তলীকৃতপত্তানি হৈয়ো বফ্ষো: প্রতাপয়েৎ। নিবিঞ্চেৎ তপ্ততপ্তানি তৈলে তত্তে চ কাঞ্জিকে। গোসূত্তে চ কুলখানাং কবায়ে চ ত্রিধা ত্রিধা। এবং হেয়ঃ পারেষাঞ্চ ধাতুনাং শোধনং ভবেৎ॥

স্থানাধনের নিয়ম নথ! — স্থানির অতি পাত্লা পাত্ প্রস্তুত করিয়ে অগ্নিতে উত্তপ্ত করিবে এবং তপ্ত তপ্তই উহা নথাক্রমে তৈলে, তক্রে, কাজিতে, গোম্ত্রে ও কুল্থকলায়ের কাথে নিষক্ত করিবে। অর্থাং এক এক বার পোড়াইবে, আর এক এক বার তৈলাদিতে নিক্ষেপ করিবে। এইরূপ তিনবার করিলেই স্বর্ণ শোধিত হইয়া থাকে।

অথ স্থবর্ণস্থ মারণবিধিঃ।

শুদ্ধস্তদমং স্বৰ্ণং থলে কৃত্বা তু গোলকন্। উদ্বাধো গদ্ধকং দ্বা সর্বপুল্যং নিরুধ্য চ ॥ তিংশদ্বনোপলৈদে মং পুটাম্মেবং চতুর্দ্দশ। নিরুপং জায়তে ভন্ম গদ্ধো দেয়ং পুনঃপুনঃ॥

শোধিত স্বর্ণপত্র কাঁচি স্থারা উত্তমরূপে স্ক্র স্ক্র করিয়া কাটিবে। পরে ঐ স্বর্ণের সমান শোধিত পারদ দিয়া একত্র মাড়িয়া একটি গোলক করিবে। একথানি কটোরিয়ায় ঐ গোলক স্থাপন করিয়া গোলকেব নীচে ও উপরে তৎ-পরিমিত গদ্ধকচ্ব প্রক্রেপ দিবে এবং আর একণানি কটোরিয়া তাহার উপর চাপা দিয়া উভয় মুখ মৃত্তিকা ধারা লেপন করিয়া ৩০ খানি বনঘুঁটের অগ্নিতে পুটপাক দিবে। শীতল হইলে উদ্ধত করিয়া প্রকায় পারন সহ মন্দিত ও গদ্ধক দারা আচ্ছন্ন করিয়া পুটপাক দিবে। ১৪ বার এইরূপ ক্রিয়া করিলে স্বর্ণ নিক্কথ ভন্ম হইবে।

অথ স্থবৰ্ণভদ্মানুপান্য।

মৎস্যপিত্ত যোগেন খৰ্গং তৎকালদাহজিং।
ভূকৰোগানে তদ্বুষ্যং ছুধ্যোগাদ্ বলপ্ৰদৃষ্ ।
পুন্নবাযুত্য নেঞাং যুত্যোগে রসায়নন্।
স্থত্যাদিকূদ্ বচাযোগাদ্ কান্তিকুৎ কুকুনেন চ ॥
পয়সা রাজ্যক্ষয়ং নিবিষা চ বিষং হরেং।
ভঞ্জীনবক্ষমরিটেজিদোষোম্মাদ্নাশকুং ॥

শ্বণভদ্ম, মংশুপিত্ত সহ সেবিত হইলে তৎকাল-দাহনাশক, ভীমরাজ রসের সহিত সেবিত হইলে বীর্যাকন, গুল্লযোগে বলপ্রদ ও রাজ্যক্ষনাশক, পূন্নবারসযোগে দৃষ্টিবর্দ্ধক, শ্বভযোগে রসায়ন, বচযোগে বৃদ্ধি স্কৃতি ও মেধাকর, কুদ্ধুমযোগে কান্তিকারক, নির্দ্ধিষী (সুস্তক সদৃশ ভূণবিশেষ) যোগে বিষহারক এবং শুঠ, লবঙ্গ ও মরিচের সহিত সেবিত হইলে ত্রিদোব ও উন্যাদনাশক হয়।

অথ রোপ্যস্ত মারণবিধিঃ।

বিধায় পিষ্টিং স্থতেন রজতক্ষাথ মেলয়েং। তালং গদ্ধং সমং পশ্চাক্মদিয়েন্নিষ্কুক্তবৈং। দ্বিত্রিপুটৈর্ভনেদ জন্ম যোজ্যমেবং রসাদিবু ৪

রোপ্যের অতি পাত্লা পাত্পারদের সহিত উত্তমরূপে মর্দ্দন করিয়া পিণ্ডাকার করিবে। পরে রোপ্যের সমপ্রিমিত হরিতাল ও গন্ধক একত্রে লেবুব রদে মাড়িরা উহা দারা উক্ত রৌপাপিও স্বর্ণমারণের বিধি অমুসারে পুটপাক দিবে। এইরপ ছই তিন পুটেই রৌপ্য ভস্ম:হইয়া যাইবে।

অথ রোপ্যভন্মানুপান্য।

সিত্যা হতি দাহান্তঃ বাতপিতঃ ফলত্রিকাং। ত্রিস্থান্যা প্রমেহাদি রজতঃ হত্যসংশয়ম ।

রজতভন্ম চিনি সহ সেবিত হইলে দাহাদিনাশক, ত্রিফলাযোগে বাভপিত্তহর, ত্রিস্থগন্ধি (এলাইচ, দারুচিনি, তেজপত্র) যোগে প্রমেহাদি গোগ নিবারক হয়।

অথ তাত্র্য।

'ন বিষং বিষণিত্যাহস্তান্ত্ৰণ বিষমূচাতে। একো দোৰো বিষে ছটো দোষাস্তানে একীর্স্তিতা: । অমো মূর্চ্ছা বিদাহক্ত উৎক্লেণঃ শোষবাজ্যা:। অক্লচিক্তিষ্ঠসন্থাপ এতে দোষা বিষোপনা:॥

বিষকেই কেবল বিষ বলে না, অশুদ্ধ ভাষাও একটি ভয়ঙ্কা বিষ। কানে বিষে-কেবল একটি দোষ আছে, অশুদ্ধ ভাষে ভ্ৰম, মূৰ্চ্ছা, দাহ, বমন, শোষ, বমননেগা, অক্চিও চিত্তসম্ভাপ এই আটাট বিষোপন দোষ দৃষ্ট হইয়া থাকে।

অথ তাত্রস্থ মারণবিধিঃ।

জন্বীররদসংপিষ্ট-রদগন্ধকলেপিতন্। তাত্রপত্রং শরাবন্ধং ত্রিপুটৈস্কিরতে গ্রুবন্। স্তাভাবে ভিষণ যুক্তা। বাতা হিঙ্গুলদর্পয়েং।

কজ্জলীক্ষত পারদ ও গন্ধক গোঁড়া লেবুর রসে মর্দ্দিত করিয়া তাত্রপত্রে লেপ দিয়া শরাব মধ্যে তিনবার পুটপাক দিবে, তাহাতে তাত্র জারিত হইবে। রসগন্ধকের অভাবে চিকিৎসক বৃক্তি অনুসারে অর্থাৎ লেবুর রসের সহিত হিশ্বল মাড়িয়া তাত্রপত্রে লেপ দিয়া পুট পাক করিবে। তাহাতেও তান জারিত হইবে।

মারিততাত্রস্থামূতাকরণম্।

অধ সংমারিতং তাদ্রমস্লেনৈকেন মাররেৎ। তদু গোলং শুরণক্তান্তা রুদ্ধা সর্বত্রে লেপরেৎ। শুক্ষং গঞ্জপুটে পাচ্যং সর্বব্রোগহরুং ভবেৎ। বান্তিং ভ্রান্তিং বিরেকঞ্চন করোতি কদাচন।

জারিত তামের অমৃতীকরণ করা নিতান্ত আবশ্রক, তাহা হুইলে কখন বমি, দম ও বিশ্বেক হুইবে না এবং উহা সর্পরোগহর হুইবে। অমৃতীকরণের নিয়ম এই—উক্ত প্রকারে জারিত তাম কোন একটা অম রস খারা মন্দন করিয়া গোলাকার কবিবে এবং সেই গোলক একটা ওলেব গভে নিহিত করিয়া তাহার চতুদ্ধিকে মৃত্তিকার লেপ দিয়া শুদ্ধ করিয়া গলপুটে পাক করিবে।

অথ বঙ্গস্ত মারণবিধিঃ।

বঙ্গং পর্ণরকে কৃষা চুলাং সংস্থাপয়েৎ স্থাঃ।
দুবী ভূতে পুনন্ত সিংলচ্ বিজ্ঞোনি দাপয়েং॥
প্রথমং রজনীচুবং দিতীয়ে চ যমংনিকাম্।
তৃতীয়ে জীরকঞ্চিব ততল্চিকাস্বস্তব্য ।
অব্ধবকলোথক চুবং তত্র বিনিক্ষিপেং।
এবং বিধানতো বঙ্গং প্রিয়তে নাত্র সংশয়ং॥

খোলায় বা লোহকটাহে প্রয়োজন মত বঙ্গ দিয়া অগ্নির উত্তাপে দ্রবীভূত করিবে। পরে বঙ্গের সমপরিমিত হরিদ্রাচূর্ব, যমানী-চূর্ব, জীরাচূর্ব, তেঁতুলছালভক্ম ও অশ্বথছালভক্ম জমশ: তাহাতে নিক্ষেপ করিবে এবং ক্রমা-গত হাতা দ্বারা নাড়িবে। এইরূপে বঙ্গ ভক্ম হইলে ধৌত করিয়া তাহাকে অঙ্গারশ্যু করিবে।

* চিঞ্চাত্বগুত্তবমিতি চিঞ্চারাত্বগুভুত্ম, এবমখণ-ব্দলোন্তবং কারং প্রদেয়মিতি রসেক্রটীকা।

অথ বঙ্গভন্মানুপান্য।

কপুর্যার্দ্ধং মুখগন্ধনাশং জাতীকলৈঃ পুষ্টকরং নরাণাম ॥ তুলসীপত্রসংযুক্তং প্রমেহং নাশয়েদ্ ধ্রুবম্। মুতেন পাভৱোগক টক্কণৈও আনাশক্ষ্ ॥ হরিদ্রয়া রক্তপিত্তং নধুনা বলবৃদ্ধিকৃৎ। খণ্ডয়া সহ পিতৃত্বং নাগবল্লা চ বন্ধনম । পিশলা চাগ্ৰিমান্দান্তং নিশনা চোর্ছবাসকং। हम्लक्षत्रस्मित कुर्वकः नागरम क्ष्वम ॥ নিসুকস্বরসেনাচ্যং দেহে দহনশান্তয়ে। কন্তুরীসহ বক্ত ভক্শাদ বার্যান্ত ৪নম্॥ थितकाभाषार्थन वर्षात्राभविनासक्रः। পুগীফলস্ত সাৰ্ভন্ন চাজীৰ্ণ নাৰ্ণয়েৎ কৰাংী লশুনৈর্বা তভুপীড়াং নাশয়ের।অ সংশয়:। সমুদ্রকলসংযোগালিগু ভা সহ ভক্ষণাৎ 👣 কুঠং নাশয়তে কিপ্ৰাং সিংহ্নাদে মুগা ইব। আঘাটজটিলাযোগাৎ বওরং নাশরেদ গ্রুবম ॥

কপুরের সহিত সেবিত **হইলে** বঙ্গভন্ম মুণদৌর্গন্ধ্য, তুলদীপত্রের সহিত প্রমেহ, মতের সহিত পাণ্ণরোগ, সোহাগান খৈএর সহিত 🤏 📆 , হরিদার সহিত রক্তপিত্র ও উদ্ধাস, খাঁড়ের সহিত পিতত্তি, পানের সহিত নলমূজ-বিবন্ধ, পিপুলের সহিত অ্থমান্দ্য, চম্পকরদের সহিত ছর্গন্ধ, লেবুর রুসের সহিত দেহতাপ, খদির কার্ডের কাথের সহিত চর্দ্মরোগ, স্থপারির সহিত অজীণ, রক্ষনের সাহত বাতবাাধি, সমুদ্রকল ও নিসিন্দার সহিত কুসরোগ এবং অপামার্গের সহিত সেবিত হইলে ক্লেব্য নাশ করে। ইহা জায়ফলের সহিত সেবিত হইলে পুষ্টিকর, মধুণ সহিত বলবর্দ্ধক এবং কন্তরী সহ সেবিত হইলে বীর্যাস্তম্ভকর হয়।

অথ মহাসেতুঃ।

এক: স্তো বিধা বঙ্গং সর্ব্বাদ্দিগুণগন্ধক:। কুপীপকো মহাদেত্বঙ্গস্থানে২পবা বিধু:॥

এক ভাগ পারদ, ছই ভাগ বঙ্গ ছয় ভাগ গন্ধক একত্র মর্দন করিয়া স্বর্ণবঙ্গ প্রস্তুত্ত করিবার নিয়মামুসারে পাক করিলে মহাদেত্ প্রস্তুত হয়। বঙ্গের অভাবে কর্পূর দেওয়া যাইতে পারে। (ইহা মেহ রোগের অভি উৎক্কাই ঔষধ।)

অথ যশদস্য সরূপম্।

গশদং সিরিজং তক্ত দোষাঃ শোধনমারণে। বঙ্গক্তের হি রোজব্যা গুণাংস্থ গণয়ামণে॥ গশদং তুররং তিক্তং শাতকং কফপিত্তত্তং। চকুষাং প্রসং মেহান্ পাডুং খাসঞ্চ নাশ্ডেং॥

দ্যাধাত পর্কত্ত । ইহার দোব এবং শোদন নারণ বঙ্গের আয়। জারিত দস্ত — ক্ষায়-তিক্তরস, শাতল, কফ্পিতনাশক, চকুর বিশেষ উপকাবক এবং ইহা মেহ, পাড় ও শাস্রোগ নাশক।

অথ যশদস্তাসুপান্য।

পুরাণগোলতে নেত্রাং তামুলেন প্রমেহজিৎ। অগ্নিমন্থেনাগ্নিকরং ত্রিস্থাকৈক্রিদোবজিৎ।

দক্তা পুরাতন গব্য খাতের সহিত সেবিত হইলে নেত্রের হিতকর, তাম্থ্রের সহিত সোবিত হইলে মেহনাশক, গণিয়ারির সহিত সেবিত হইলে অগ্নিক্স, ত্রিমুগদ্ধ অর্থাৎ এলা-ইচ, দাক্ষচিনি ও তেজপত্রের সহিত সেবিত হইলে ত্রিদোশহর হয়।

অথ সীসকস্ত শোধনবিধিঃ।

তক্ষ সাহজিকা দোবা বন্ধপ্তেব নিদর্শিতা। শোধনঞাপি তত্তেব ভিষগ,ভিগদিতং পুরা॥

নীসকের স্বাভাবিক দোষ এবং শোধন-বিধি বঙ্গের স্থায়।

অথ সাসকস্ত মারণবিধিঃ।

দীসকং স্ববক্ষারং লৌহপাত্তে বিপাচিত্র। কারং পুন:পুনদে গ্রং যাবদ্ ভক্ষত্বমাধ, ছাং । রক্ষবর্ণং ভবেদ্ যাবং ভাবন্ম, ছবিনা পচেৎ । লোহপাত্রে সীসক ও যবক্ষার একত্র পাক করিবে। সীসক যে পর্যান্ত ভন্ম না হয়, সে পর্যান্ত পুনংপুনং যবক্ষার: দিবে এবং যতক্ষণ রক্তবর্ণ না হয়, ততক্ষণ মৃত্র অগ্নিতে পাক করিবে। পাক সমাপ্ত ২ইলে ভন্ম সকল জল ছারা গৌত করিয়া পুনরায় মৃত্র অগ্নিতাপে শুক্ষ করিয়া লাইবে। এই প্রাক্রিয়া ছাবা: সীসকভন্ম পীতবর্গ হুইবে।

जशरिखवाशतः प्रिंशः।

নাগং থর্পরকে নিধায় কুনটাচ্ণং দলীত ফতে। নিস্নীরস্থাককেন গুটিতং ভস্মাভবেৎ সহন্য।

কোন পাত্রে নীসক রাখিয়া তাহাকে
আগ্নসন্তাপে গলাইবে। দ্রবীভূত হইলে
উহাতে মনঃশিলা চূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া অনবরত
নাড়িবে এবং ধূলেবৎ হইলে নামাইবে।
পরে শীতল অবস্থায় উহার সহিত গন্ধক চূর্ণ
মিশ্রিত করিয়া লেবুব রবে উত্তমরূপে মাড়িয়া
পুটপাক কবিবে। তাহাতে দীসক রুঞ্গবর্ণ
ভন্মরূপে পরিণত হইবে।

অথ লোহস্ত নিষেকবিধিঃ।

যথে। দিতেন বিধিনা লোহপত্তং বিশোধ্য চ।
নিবিক্টোইদোষাণাং বিদাশায় ভিষম্বরঃ ॥
কারারনালগোমূত-ত্রিকলাকাপবারিণি।
লোহমূক্ষং মনাকৃতপ্তং ত্রেধা ত্রেধা বিধানতঃ ॥
নিবেকে ত্রিফলা লোহাৎ কর্ত্তব্যাষ্টপ্রণা সদা।
চতুপ্ত শং ফলাং ভোয়মক্কভাগাবশেষিতম্।
কীরাদিত্রয়নানন্ত লোহাদ্ দ্বিগুণমিব্যতে ॥

যথোক্ত প্রকারে লৌহপত্র বিশোধিত কারয়া তাহার নিষেকজিয়া কর্ত্তরা। শোধিত লৌহ বারংবার ঈশং উষ্ণ কারয়া যথাজ্যম ছগ্ধ, কাঞ্চিক, গোমূত্র ও ত্রিফলার কাথে তিনবার করিয়া নিক্ষেপ করিবে। নিষেক কার্যো ত্রিফলার কাথ পস্তত করিবার নিয়ম এইরূপ—লোহের অপ্টশুণ ত্রিফলা এবং ত্রিফ-লার চতুগুণ জল, একত্র সিদ্ধ করিয়া অদ্ধাবশেষ থাকিতে নামাইবে। হুয়, কাঁজি ও গোমৃত্র লোহের দিগুণ পরিমাণে নিষেকার্থ গ্রহণ করিবে।

অথ লোহস্ত মারণবিধিঃ।

বিশোধিতসয়শ্চ্র্ণ গোম্তেণ বিমর্দ্ধরেৎ শতশ**ন্তৎ পুটেছকে**) মৃতমেবং ভবেদ্ গুলম্ I

বিশোধিত । লোহচূর্ণ গোমূত্রসহ মর্জন করিয়া : ০০ এক শতবার গজপুটে পাক করিবে; ইহাতেই লোহ ব্যবহারোপ্যোগী জন্ম হইবে।

অথ লোহস্ত পুটবিধিঃ।

শতাণিস্ত সহপ্রাপ্তঃ পুটো দেরো রসায়নে।
দশাদিশতপ্যান্তো গদে পুটবিধিন তিঃ ॥
বাজীকশ্বণি বিজেয়ঃ পঞ্চপঞ্চশতাধিকঃ।
পুটান্দোযবিনাশঃ স্তাৎ পুটান্দেব গুণোদয়ঃ ॥
বিষয়তে চ পুটান্দোহং পুটাংস্তশ্বাৎ সমাচরেৎ।
যথা যথা প্রদীয়স্তে পুটাঃ প্রহবো যদি।
তথা তথা বিবর্জন্তে গুণাঃ শতসহপ্রশঃ ॥

রসায়নের জন্ম একশত হইতে - সহস্ৰ পর্যান্ত লোহের शृष्टेशांक मिर्द। রোগ-নিবারণের জন্ম দশ হইতে একশত পর্যাম্ভ এবং বাজীকরণার্থ সহস্রাধিক পুট প্রশন্ত। (কিন্তু কোন মতে বাজীকরণের জন্ম দশ হইতে পাঁচণত পট দিবারও বিনি আছে।) পুটপাকেই লোছের দোষ বিনাশ, পেটপাকেই গুণের উদয় এবং পুটপাকেই জারণ হইমা থাকে, অভএব, অনিক সংখ্যক দেওয়া নিতান্ত কর্ত্তবা। যত অধিক পার্মাণে পুটপাক দিবে, গৌহেব শক্তিও ৩৩ পরিমাণে অর্থাৎ শত সহস্র গুণ বৃদ্ধি হইবে।

অথ লোহভস্মানুপানম্।

শূলে হিন্দু মুতামিতো মধুনুতো কৃষ্ণা পুরাণজ্বরে বাতে সাজ্যরসোনকঃ খসনকে ক্ষোমামিতং ক্রোবণম্।
শীতে ব্যাললতাদলং সমরিচং মেহে বরা সোপলা দোবাণাং ত্রিতয়েহমুপানমূদিতং সক্ষোমার্দ্রোদকম্।
মুতেন বাতিকে দেরং মধুনা পিত্তকে জ্বরে।
শ্রেমপিত্তে চার্দ্রকে নিক্ত'গুটা শীতবাতকে ॥
শুঠী বাতে দিতা পিত্তে ককে কৃষ্ণা ত্রিজাতকম্।
সক্ষিরোগে বরা মেং প্রোক্তং লোহানুপানকম্॥

শ্লণোগে লৌহভদ্মের অনুপান—হিং, মৃত ও মধ্। পুরাণ জরে পিপ্পলী। বাতরোগে মহ ও রহন। শ্বান রোগে মধু ও জ্যানণ (শুঁঠ, পিপুল ও মরিচ)। শাতে ব্যালপত্র (বছুটা)ও মরিচ। মেহে ত্রিফলা ও চিন। সন্নিপাতে মধু ও আলার রম। বাতজ্ঞরে আলার রম। শাতবাতরোগে নিসিন্দা। বাতে শুটা। পিত্তে চিনি। কফে পিপুল। সন্ধিরোগে ত্রিজাতক (মিলিত এলাইচ, তেজপত্র ও দাক্রচিনি)। মেহ রোগে ত্রিফলা।

অথ মণ্ডরম্।

শারমানন্ত লোহত সলং মণ্ড্রমূচাতে।
শতোর্জমূত্রমং কিউং মধ্যঞাশীতিবর্ধকম্।
অধমং বৃষ্টিববীরমতো হীনং বিষোপমম্।
ভক্তায়ো উত্তমপুরং সন্তবা গোজলে কিপেৎ।
চুণীকুতা প্রযোক্তনং পুটাদ্ ২ছওণং ভবেৎ।

লোহ পোড়াইবার সময় তাহা হইতে যে
মল নির্গত হয়, তাহাকে মণ্ডুর কহে। শতাদিক বর্ষের মণ্ডুর শ্রেষ্ঠ, আণাতিবর্ষীয় মণ্ডুর
মধ্যম, বৃষ্টিবর্ষীয় মণ্ডুর নিক্রন্ত এবং ইহা অপেকা অল্লাদনের মণ্ডুর বিষোপম। ভল্গা (হাপর, আগুনকর। জাতা) খারা প্রদীপ্ত অফিতে মণ্ডুর পোড়াইয়া জন্মায়য়ে সাত্রার গোমুত্রে নিক্ষেপ ক্রিবে। পরে সেই মণ্ডুর চূণ ক্রিয়া প্রটুপাক ক্রিবে।

অগ্রচ্চ —

গোমুত্রে ত্রিফলা কাখা তৎকাশে সেচয়েচ্ছনৈ:।
লৌহকিটাং স্বতপ্তত্ত্ব যাবজ্জীবাতি তৎ স্বয়ম্ ॥
তজ্জীবা প্রাহয়েৎ পেষাং মপুরঞ্চ প্রবোজরেৎ।
স্বলৌহং যদগুণং প্রোক্তং তৎকিটাপি তদ্পুণম্॥
ম্বণান্তভাবে লৌহং ভান্মপুরং তদভাবতঃ।
যে শুণা মারিতে লৌহে তে শুণা মুশুকিটকে।
তন্মাৎ সর্বত্ত মপুরং রোগণান্ত্যৈ প্রবোজরেৎ।

গোমুত্রে ত্রিফলা সিদ্ধ করিয়া সেই কাথে
মুতপ্ত মগুর পুনংপুনঃ নিক্ষেপ করিবে।
এই ক্রিয়া ছারা মগুর জীর্ণ হইলে ভাহা পেষণ
করিয়া ঔষধার্থে ব্যবহার করিবে। যে লৌহের
যে গুণ, তাহার মলেরও সেই গুণ জানিবে।
মর্ণ ও রৌপোরে মভাবে লৌহ এবং লৌহের
অভাবে মগুর প্রোগ করিবে। জারিত
লৌহের যে গুণ, জারিত মগুরেরও সেই
গুণ; অতএব রোগশান্তির জন্ম সর্মত লৌহেন
স্থান মগুর প্রয়োগ করা ষাইতে পারে।

অথ স্বৰ্ণাদিলোহান্তানাং ধাতুনাং

সাধারণো মারণোপায়ঃ।

শিলাগন্ধার্কছন্ধ ক্রাঃ স্বর্ণাতাঃ সববধাতবঃ । দ্রিরন্তে ছাদশপুটেঃ সত্যং গুরুবচো যণা ।

স্বৰ্ণ হইতে লোহ প্ৰয়ন্ত সমূদায় বা গুর মারণের সাধারণ উপায় এই—মনঃশিলা গন্ধক ও আকল্পের আঠার সহিতু উত্তমরূপে মাড়িয়া গজপুটে ১২ দাদশবার পাক করিবে।

অথ জারিতধাতুনাং বর্ণানি।

বৰ্ণং চম্পকৰৰ্ণাভং কুঞ্চত্বং তারতান্সয়োঃ। কাংস্তং ধুসরবৰ্ণং স্তান্নাগ্য গারাবতপ্রতঃ। বন্ধং গুজ্ত্বখায়াতি তীক্ষং গুম্বুফালাপন্ন। অনকং চেষ্টিকান্তং স্তান্ধানুকাং বৰ্ণনিৰ্ণন্ধ।

জারিত ধাতুবর্ণ।

জারিত স্বর্ণ চম্পকপূস সদৃশ, রৌপ্য ও তাম রুঞ্চবর্ণ, কাংক্ত ধুসরবর্ণ, সীসক পারা-বতবর্ণতুল্য, বঙ্গ শুভ্রবর্ণ, লৌহ জম্ফ্লসদৃশ অর্থাৎ স্পিগ্রহ্মশু এবং অন্ত ইউকবর্ণ সদৃশ হয়।

অথোপধাতুনাং শোধনমারণপ্রকারঃ।

অথ স্বৰ্ণমাক্ষিকস্থা শোধনবিধিঃ

মাক্ষিকসা তারো ভাগা ভাগৈকং সৈদ্ধবস্য চ।
মাতৃলুক্তর্তবর্ধাথ স্বস্থীরক্ত ক্রবৈ: পচেৎ ॥
চালরেমোহকে পাত্রে বাবৎ পাত্রং ক্রনোহিতম্।
ভবেৎ ততন্ত্র সংশুদ্ধিং বর্ণমাক্ষিকস্বন্ততি ।

তিন ভাগ স্বর্ণমাক্ষিক ও এক ভাগ সৈদ্ধন লবণ, টাবা অথবা গৌড়ালেবুর রসে মর্দ্দন করিয়া লৌহ পাত্রে পাক করিবে। পাককালে ক্রমাগত নাড়িতে হইবে। লৌহ পাত্র যথন লোহিত্তবর্ণ হইবে, তথন জানিবে স্বর্ণমাক্ষিক বিশুদ্ধ হইয়াছে।

অথ সর্ণমাকিকমারণবিধিঃ।

কুলখন্ত কৰায়েণ ঘৃষ্ট্ৰ তৈলেন বা পুটেৎ। তক্ৰেণ বাৰুম্ত্ৰেণ মিয়তে স্বৰ্ণমান্দিকম্॥

পূর্ব্বোক্ত প্রকারে শোধিত স্বর্ণমান্ধিক, কুলথ কলাইরের কাথে বা তিল তৈলে অথবা তক্রে কিংবা ছাগমতে মন্দন করিয়া পুটপাক করিলে জারিত ইউবে।

অথ সর্গনিকিকভ না**নুপানন্।**অনুপানকো এটাক বেন সংগ্ৰহ হি মা**জি**কন্।
ত্রিকলা, ত্রিকট্ট, বিড়ঞ্জ, স্বত ও মধু এই
সকল অর্থনিকিকের অনুপান।

অথ তারমানিকক্স শোধনবিধিঃ। কর্কোটমেবশৃদ্যুথের্জবৈর্জনীরজৈদিন্য। ভাবদেশতথে তীব্রে বিমলা গুণ্ডতি ধ্রুবম্।

কাকরোল, মেড়াশৃঙ্গী ও গোঁড়ালেবুর রুদে ভিজাইয়। এক একদিন প্রথার রৌদ্রে ভাবনা দিলে রৌপামান্দিক বিশোধিত হয়।

অথাস্থ মারণবিধিঃ।

বর্ণমান্দিকবদ বৈছ্যো মারয়েৎ তারমান্দিকম্। অর্ণমান্দিকের স্থায় ইহার মারণক্রিয়া জানিবে।

অথ বিমলগুদ্ধিঃ।

জন্মীরক্ত রসে ন্বিল্লো মেধশূলীরসৈত্তথা। রস্তাতোরে বিপাচ্যো বা বস্ত্রং বিমলগুদ্ধয়ে॥

লেৰুর রসে বা মেষশৃঙ্গীরসে কিংবা কদলী-মূলরসে দোলাগন্তে একাদন পাক করিলে বিমলের বিশুদ্ধি হয়।

অথ বিমলভস্মানুপানম।

বিষব্যোষবরাজ্যেন বিমলঃ সেবিতো যদি। ভগন্দরাদিকা রোগা নৃণাং গচ্ছপ্তি ছুন্তরাঃ॥

পদ্মকেশর, ত্রিকটু, ত্রিফলা ও গ্রতের সহিত বিমল সেবিত হইলে ভগন্দরাদি ছন্চিকিৎস্ত রোগ সকল নাশ করে।

অথ তুত্থস্ত শোধনবিধিঃ।

ভ্ৰম্বারজরসৈঃ পিন্তং তুগং লঘুপুটে পচেৎ।
ত্রিদিনং মন্তুনা ভাবাং ততো যোগেরু যোজন্তে ॥
গোড়ালেবুন রসে মদ্দন ও লঘুপুটে পাক
করিয়া তিন দিন দ্ধির মাতে ভাবনা দিলে
তুতে বিশোধিত হয়।

অথ কাংস্থস্থ রীতেশ্চ শোধনমারণবিধিঃ।

কাংগুপিওলমোঃ শুদ্ধিসূ তিশ্চ ভাষ্ডবদ্ ভবেদ্ ॥ কাসা ও পিত্তলের শোধন ও মারণ্**ত্রণা**লী ভাষ্ডের স্থায় জানিবে।

অথ সিন্দূরত্ত শোধনবিধিঃ। ছক্ষায়বোগততত বিত্তিগদিতা বুধৈঃ।

পণ্ডিতেরা বলেন বে, ছগ্ধ ও অমরসে ভাবনা দিলে সিন্দুরের বিশুদ্ধি হইয়া থাকে।

অথ শিলাজতু-শোধনবিধিঃ।

শিলাঞ্জু সমানীয় কুলং থগুং বিধায় চ।
নিক্ষিপ্যাত্যুক্ষপানীয়ে যানৈকং স্থাপরে প্রধীঃ ।
মন্দ্রীয়া ততো নীরং গ্রুখান্ বস্থগালিতম্।
স্থাপিয়া ৮ মুৎপাতে ধারয়েদাতপে বৃধঃ ।
উপরিস্থা ঘনং যথ স্থাৎ তথা কিপেদভাগালেকে।
এবং পুনাপুননীতং দিমাসাভাগাং শিলাজতু ।
ভবেথ কাযাক্ষমাং বছেল কিপ্তা লিকোপমাং ভবেথ।
নিধ্যিক ততঃ শুকাং সক্ষেত্য যোজ্যেথ।

শিলাজতু অতি সৃক্ষণ ও খণ্ড করিয়া এক প্রথ্য কাল অত্যুক্ত জলে ভিজাইয়া রাখিবে। পরে তাহা উত্তমরূপে গুলিয়া বল্প ধারা ছাকিয়া কোন মৃৎপাত্রে হাপন পূর্বক রোজে রাখিবে এবং দেই জলের উপর যে পদার্থ ভাসমান হইবে, তাহা অহাপাত্রে রাখিবে। এইরূপে পুনংপুনং গৃহীত শিলাজতু অগ্নিতে নিক্ষিপ্ত হইলে লিক্ষবং উচ্ছেদিত হয় এবং উহা হইতে ধুম নিগত হয় না। এইরূপ শিলাজতু সক্ষকার্যো প্রয়োজ্য।

অথ শিলাজভুনোহমুপানম্।

এল:পিপ্লিসংগৃক্তং মাষমাজন্ত ভদ্বেং।

মূলকুচ্চং:মূলরোখং হস্তি মেহং তথা ক্ষম।

অলাইচ ও পিপ্লিসংগৃক্ত > মাষা পরিফিত শিলাজতু সেবন করিলে মূত্রকচ্ছু, মূত্রবোদ, মেহ ও ক্ষম প্রোগ নিবারিত ইয়।

অথ সত্তবিনির্গমবিধিঃ।

লাকামীনাপয়ন্দাগং টক্ষণং মুগপুককণ্। পিণ্যাকং সম্পাং শিগ্ৰ,গুপ্তোণা গুড়সৈন্ধন্। ব্ৰতিভাষ্তং কৌদ্ৰং যথালাভং বিচূপ্য়েং। এভিবিমিশ্ৰিতাঃ সৰ্ব্বে ধাতবো গাঢ়বহিনা। মুবাগ্বাতাঃ প্ৰজায়ন্তে মুক্তসধা ন সংশয়ঃ॥ লাক্ষা, গগুদ্ধ্বা, ছাগছগ্ধ, সোহাগা, হরিণশৃঙ্গ, তিলকত্ব, সর্বপ, 'সজিনাবীজ, কুঁচ, উর্ণা,
শুজ, সৈন্ধবলবণ, যবতিক্রা, ম্বত ও মধু
ইহাদের মধ্যে যতগুলি পাওয়া যায়, তৎসমুদায়
একত্র চূর্ণ ও মর্দ্দন করিয়া কোন ধাতুর সহিত
মিশ্রিত ও মুবামধ্যগত করিয়া তীব্র অগ্নিতে
সম্ভপ্ত করিলে, ধাতু হইতে থাদ সমস্ত পৃথগ;
ভূত হইয়া যায়।

অথ রসপ্রকরণন্।

অথ রসলক্ষণম।

অন্ত: মুনীলো বহিরুজ্জলো যো মধ্যাহস্থ্যপ্রতিম-প্রকাশ:। শক্তোহথ ধুন্ন: পরিপাওরক্চ চিত্রো ন যোজ্যো রসকর্মসিন্দৌ।।

যে পারদের অন্তর্ভাগ নীলাভ এবং বহি-র্ভাগ মধ্যাক্ত কুর্যাসম উজ্জল, ঔষধকার্য্যে তাহাই প্রাশস্ত। যাহা ধূম বা পাণ্ডর, অথবা বিবিধ বর্ণ বিশিষ্ট, তাহা পরিত্যাক্ষা।

অথ পারদস্য নিস্গা দোষাঃ।

নাগো বজো মনো বঞ্জিলাঞ্চলাঞ্চ বিষং গিরিঃ।
অসকান্ত্রিম হাদেয়ে নিম্পাঃ পারদে ছিতাঃ ॥
এগং কুঠং তথা মৃক্ছিাং দাং বীষাস্তানাশনম্।
নরণং জড়তাং জেটিং কুববস্থাতে এমানুধান্ধ
ভাষাক্রমকা সংক্ষান্ধ বিদ্যাদ ভিষ্ণা বিষয়।
তালাক্রমকাতং সাক্ষান্ধোষ্যুক্তো রসো বিষয়।

নাগ, বন্ধ, খল, বহিং, চাঞ্চল্য, বিষ, গিরি ও অসহাগ্নি এই আটটো পারদের স্বাভাবিক দোষ। এই অষ্টবিদ দোদ যথাক্রমে রণ, কুষ্ঠ, মুর্চ্ছা, দাহ, বীর্যানাশ, মরণ, জড়তা ও স্ফোটক এই সকল রোগ উৎপাদন করে অর্থাৎ নাগ দৌষে রণ, বন্ধ দোষে কুষ্ঠ ইত্যাদি ক্রমে ৮টি দোষে আটটি রোগ জন্মিয়া থাকে। অন্তর্র পারদ শোষিত না করিয়া

কদাচ ঔষধার্থ ব্যবহার করিবে না। শোধিত পারদ সাক্ষাৎ অমৃত্যরূপ ও দোমযুক্ত পারদ বিষবং অনিষ্টকারী জানিবে।

অথ সপ্ত কঞ্চকাঃ।

পন্ন টা পাটলাঁ ভেদা দ্রাবা মলকরী তথা। অন্ধকারা তথা ধ্বাংকী বিজেয়াঃ সপ্ত কলুকাঃ॥

পর্পটা, পা**ট**লাঁ, ভেনী, ভাবী, মলকরী, অন্ধকানী ও ধ্বাংক্ষী এই সাতীঃ পারদের কঞ্*ক*্লোয়।

অথ পারদস্ত শোধনবিধিঃ।

সোবিনিশেষ্টকাধ্য-জন্ম নিপ্তিরাদিনম্।
মন্দিতঃ কাঞ্চিকৈথোঁ তো নাগদোবং রমস্তাজেৎ ॥
বিশালাক্ষাঠচুর্বেন বন্ধদোবং বিমুক্তি।
রাজবুক্ষো মলং হস্তি চিত্রকো বহিন্দুযণম্ ॥
চাধলাং কৃষ্পুস্কুর্সিফলা বিবনাশিনা।
কটুনারং গিরিং হস্তি অস্থান্তিং নিকণ্টকঃ ॥
প্রতিদোবং কলাংশেন তও্তসূর্বং সক্তক্ম্।
৬ন্ধ্তান্তাকারনালেন মৃৎপাত্রে কালরেং প্রাঃ।
এবং সংশোধিতঃ পতঃ সপ্তক্ষক্রব্যুতঃ ॥

পানদের আট প্রকার দোয়ের প্রত্যেক দোষ নিবারণার্থ যে যে পদার্থ উল্লিখিত হই-তেছে, তাহাদের সহিত প্রত্যেক বার ঘৃত-কুমারীর বস মিশ্রিত করিতে হইবে। পদার্গ-পরিমাণ ্যন মুক্তকুমা বীর সহিত পারদেব যোড়শাংশ হয়। যদিও পার দের এক এক দোষ দুরীকরণার্থ নিদিষ্ট পদার্থ খারা এক এক দিন মদ্দন কারবার বিধান আছে, তথাপি বুদ্ধ বৈশ্বগণ প্রত্যেক বাবে সাত সাত দিন কারা মর্দন করিতে উপদেশ থাকেন। প্রভাকবার উষ্ণ কাঞ্জিক স্থানা বৌত কারেয়া শুইবে ৷ এফাণে যে দোষ পরিস্থানার্থ যে দ্রবেরে স্থারা ালখিত হই-মদ্ধন করিতে হটবে. ভাইা হরিদ্রাচুর্ণ, इंडेकहर, ্মন্লোম্, (3.5 I

ক্ল ও গৌড়া লেবুর রস ছারা মর্দনে নাগ দোষ; রাণাল শশা ও ধলা আঁকড়ার মূলের ছাল চূর্ণ ছারা মর্দনে বঙ্গদোষ; সৌলাল ফলের মহলা ছারা মন্দনে মলনোষ, চিতামূলের চূর্ণ ছারা মন্দনে বহিলোষ; ক্রঞ্বুজুবু ছারা মন্দনে চাঞ্চল্য দোষ; ত্রিকলাকাণ ছারা মন্দনে বিষলোষ; ত্রিকট্ ছারা মর্দনে গিরিদোম ও ত্রিকটক (কণ্টকারী, রুহুতী ও গোক্ষ্ন) ছারা মন্দনে অসহাগ্রিদোষ নিবারিত ২ইয়া থাকে। ইহাতে পার্দের অস্ট্রেদায় ও সন্ধ কঞ্ক দ্বীকৃত হয়।

অথ মুখ্যদে। শহরঃ শোধনবিধিঃ।

মলশিখিবিৰনামানো রসস্য নেস্পিকা দোষাং। পৃহক্**তা হরতি** মলং তিফলাফিং চিতকো বিষণ ২স্তি। তন্মাদেভিমিশৈবারান্ সংম্ক্রেৎ সপ্ত॥

পারদের যে আট প্রকার দোনের উল্লেখ করা হইরাছে, তন্মদ্যে মলদোষ অগ্নিদোষ ও বিষদোষ এই তিনটা প্রধান অর্থাৎ বিশেষ অনিষ্টকারী। অতএব অস্ততঃ এই তিন দোষের শান্তি করা নিতান্ত কর্ত্তর। মুভ-কুমারীর দার: মলদোষ ত্রিফলা দার। অগ্নিদোষ ও চিতা দারা বিষদোষ নষ্ট হয়। অতএব উক্ত দোষত্রের নিবারণের জন্ম মুতকুমারা, ত্রিফলাচ্ব ও চিতামূল চুর্ব প্রত্যেক দ্রব্য দারা সাতবার করিয়া পারদ মন্দন করিবে।

অথ সর্ব্বদোষহরঃ সংক্ষিপ্তশোধনবিধিঃ।

কুমারিকাচিত্রকরক্তসর্বপৈ: কুটতঃ কষায়ৈবৃহিতীবিমিঞিটিত:। ফলত্রিকেণাপি বিমর্দ্দিতো রসো দিনত্রেং সর্ব্বমলৈ(বিম্চাতে॥

ন্বতকুমারী, চিতা, রক্তসর্ধপ, রুহতী ও ত্রিফলা ইহাদের কাথে পারদ তিন দিন মার্দিত হুইলে সর্বদোষবিমুক্ত হয়।

অথ রসস্থান্টকর্মাণি।

ব্যেদনং মৰ্দ্দনকৈৰ মূৰ্জনোত্থাপনং তথা পাতনং বোধনকৈৰ নিয়মনমতঃ প্ৰম্। দীপনকেভি সংস্কারাঃ স্তস্যান্ত্রী প্রকীর্জিচাঃ॥

স্থেদন, মর্দ্ধন, মৃচ্ছন, উত্থাপন, উর্দ্ধাদি-পাতন, বোধন, নিরামন ও দীপন এই আট প্রকার পারদের সংস্কার। শোধনানস্তর পার-দেব এই অইবিধ সংস্কাব করা কর্ত্তবা।

(अपनग्।

রসং চতু ও'নে বয়ে বন্ধা দোলাকুতং পচেং। দিনং বোধিববাৰ্ছি-কন্তাককে সকংক্ষিকে। নেক্ষেশ্বংগনুত্তাৰ্পনিদং বেদনমূচ্যতে ॥

একথানৈ স্থাক্ড। চারিভাজ করিয়া তথারা পারদকে বাদিবে এবং একটী হাড়ী, কাঞ্চিকপূর্ণ করিয়া তাহাতে শুঠ, পিপুল, মরিচ, হরীতকী, বহেড়া, আমলকী, চিতা ও ঘতকুমারীর কন্ধ স্থাপন করিবে। পরে ঐ হাড়ীরঃমুখে একটা কান্তিকা রাখিয়া তাহাতে উক্ত পারদ পোট্টলী বাধিয়া হাড়ীর মধ্যে ঝুলাইয়া একদিন দোলাযম্মে পাক করিবে। ইহাতে পারদের খোধনানস্তর যে দোষ থাকে, তাহা নিবারিত হয়।

यर्पन्य ।

গৃহধুমেষ্টকাজাজী-দমোণাগুড়দৈকবৈঃ সকাঞ্চিকঃ ষোড়শাংশৈম ৰ্জনং ত্ৰিদিনং শুভম্ ॥

ঝুল, ইষ্টকচ্ণ, ক্লফর্জারা, মেবরোম ভন্ম, গুড়, দৈদ্ধব ও কাঞ্জিক এই দকল দ্রব্য মিলিত পারদের ষোড়শাংশ লইয়া তদ্ধারা উক্ত পারদ মদ্দন করিবে।

मृ हिन्यू।

অব্যভিচরিত-ব্যাধি-বাতকত্বং মুর্চ্ছনা। ক্রাবণত্রিকলাবদ্যা-কন্দে: কুক্রাবয়াবিতৈঃ। চিত্রকোর্ণানিশাকার-কম্মার্কনকন্দ্রবৈঃ॥ স্তং কুতেন দূৰেণ ব'ব'ন্ সপ্তাভিমন্দিয়েও। উত্থং সংমৃতি ১: স্তস্তানেও সপ্তাশি কঞ্কান্॥

যে ক্রিয়া থারা পারদের নিশ্চয় ব্যাধিঘাতিনী শক্তি উৎপন্ন হয়, তাহার নাম মুচ্ছনা।
৺ঠ, পিপুল, মরিচ, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া,
বল্ধাককোটকীমূল, কণ্টকারী ও রুহতী ইহাদের
কাথ, মেষলোম এবং চিতা, হরিদ্রা, যবক্ষার,
মৃতকুমারী, আকন্দপন্ন ও ধুতুরা ইহাদের রস
থারা ৭ বার মর্দন করিলে পারদের কঞ্কদোষ
বিদ্রিত হয়।

উত্থাপনম্।

মর্দ্ধরেৎ কন্সকান্তরিক্ত,পিটভরাজিপাদিকে। পাতরেৎ পাতনাবন্ধে ইথম্থাপনং মতন্।

পারদের চতুর্থাংশ হরিদ্রাচূর্ণ ও রতকুমারী-রদ এই উভয় দ্রব্য খারা পারদকে মর্দন করিয়া পাতনাযন্ত্রে নিহিত করিবে। ইহাকে পারদের উত্থাপন কহে।

অথ বিবিধপাতনম্।

উদ্ধপাতনম্।

ভাগাপ্রয়ো রসস্যাক্তাগমেকং বিমর্দ্ধরেং।
জন্মীরন্ত্রবযোগেন যাবদায়াতি পিওতান্।
তৎ পিওং তলভাওস্থমূদ্বভাওে জলং কিপেং।
কুরালবালং কেনাপি ততঃ স্কৃৎ সমুদ্ধরেং।
উদ্বাতনমিত্যুক্তং ভিষগ্ ভিঃ স্কুণোধনে।

তিনভাগ পারদ ও একভাগ তাম একত্রে গোড়া লেবুর রদে মদন করিয়া পিগুকার করিবে। ঐ পিগু একটা হাঁড়ীর মধ্যে স্থাপন করিয়া আর একটা হাড়ী উর্দ্ধমুণে তাহার উপর চাপা দিবে এবং উভয়ের সমিস্থল মৃত্তিকা দারা এরপভাবে লিপ্তা করিবে, যেন ভাহার অভ্যন্তর হইতে ধুম বহির্গত না হয়। অনস্তর উহা চুন্নীর উপর স্থাপন করিয়া নিম্ন- ভাণ্ডে অগ্নিসন্তাপ ও উদ্ধৃতাণ্ডে জল দিবে।
জল উদ্ধৃ ইইলে তাহা ফেলিয়া দিয়া শীতল
জল প্রদান করিবে। এইরূপ জল পরিবর্ত্তন
আবশ্যুক। এই প্রক্রিয়া ঘারা নিম্নভাণ্ডস্থ
পারদ উদ্ধৃতাণ্ডের তলদেশে সংলগ্ন ইইবে।
ইহাকে উদ্ধৃপাতন কহে।

অধঃপাতনম্ ৷

জিকলাশিগ্র শিখিভিল বিণাস্থরিসংযুক্তঃ।
নইং পিটং রসং কুমা লেপারেদ্র্ভাজনম্॥
গাতো দীইগুরধঃপাতমুগলৈন্তমা কার্য়েং।
যথে ভূধরসংজে তু ততঃ প্তেই বিশুধাতি॥

ত্রিক্লা, সজিনাবীজ, চিতা, সৈন্ধব ও রাইসর্বপ ইহাদের সহিত পারদ মন্দন করিবে। মন্দন করিতে করিতে যথন উহা পদ্ধবং হইবে, তথন তন্ধারা ভূপরসন্তের উর্দ্ধস্থ স্থালী লিপ্ত করিবে। ঐ যন্ত্র ভূগর্ভে নিখাত করিয়া উপরিভাগ প্রদীপ্ত অন্ধার দ্বারা আকীণ করিবে। এই প্রক্রিয়া দ্বারা উর্দ্ধভাগু সংলগ্ন পারদ নিম্পাত্রস্থ জলে পতিত হইবে। ইহার নাম অধ্বংপাতন।

তির্য্যকৃপাতনম্।

গটে রসং বিনিক্ষিপ্য সজলং ঘটনক্সকন্।
তিয়াত মুগং দংগ্রাং কৃত্বা তথ্পং রোধ্য়েৎ প্রধীঃ ।
রসাধো জালয়েদ্যিং গবেৎ প্রতা জলং বিশেৎ।
তির্যাকপাতন্মিত্যুক্ত সিজৈনাগ্রাজনাদ্যিঃ ॥

একটা ঘটে শোধিত পারদ ও অপর ঘটে জল রাখিরা তির্য্যগ্ভাবে স্থাপন পূর্বক উভর ঘটের মিলিত মৃথধয়ে মৃত্তিকা ধারা লেপ দিবে। পরে যে ঘটে পারদ আছে, তাহার নিমে জাল দিবে। ইহাতে ঐ পারদ অপর ঘটস্থ জলে পতিত হইবে। ইহাকে তির্য্যক্পাতন কহে।

(वांधनम्।

कमर्पत्रतेनन नर्पःमकएरमनः ख्रतममा त्रममा शन्ताम् । बीषाश्रक्षाप्त ह स्कृतिराज त्यास्त्रा जतन रमस्तरहर्गार्स्ड ॥ উদ্ধাদিপাতনের থারা পারদ ষণ্ডভাবাপন্ন হয়। পরে বাষ্যানিকের জন্ত পারদকে ভূর্জ-পত্রে বদ্ধ করিয়া দৈন্ধবলবণ মিশ্রিত জলে দিন্ধ করিয়া লেইবে। ইহাতে পারদের যণ্ড-ভাব দুরীভূত হইয়া বীর্য্যবন্তা জন্মে। ইহাকে পারদের বোধন কহে।

नियायनम् ।

সৰ্পাকীচিঞ্চিকাবন্ধাাভূঙ্গাজকনকাসুভিঃ। ত্ৰিদিনং মন্দিতঃ সতো নিয়মাৎ স্থিরতাং ব্রজেৎ।

গন্ধনাকুলী (রামাতেন), তেঁতুল ছাল, তিংকাঁকরোল, ভীমরাজ, পদ্ম ও কনকধুতুরা, ইহাদের কাথে নিয়মপূর্দক ও দিন মদ্দন করিলে পালদ ভিরতা প্রাপ্ত হয়। ইহাকেই নিয়ামন কহে।

দিপিনম্।

কাসাসং পঞ্চলবৰ্ণং রাজিকা মন্ত্রিচানি চ।
ভূপিগ্র্বীজ্যেকজ উঙ্গণেন সম্মিত্র ॥
ভালোডা কাঞ্জিকে দোলগেন্দে পাকাদ্দিনৈপিভিঃ।
ভাগন জায়তে সমাক্ স্তরাজক্ত জারণে ॥
অথবা চিদকপাবেঃ কাঞ্জিকে বিদিনং পচেং॥

হীরাকস, পঞ্চলবণ, রাইসর্থপ, মরিচ, সজিনাবীজ ও টঙ্গণ ইহাদিগকে মন্দিত ও কাঁজিতে আলোড়িত করিয়া নিয়মামুসারে তিনদিন পারদকে দোলাযক্তে পাক করিবে। অথবা চিতার কাথ ও কাঁজি একত্রিত করিয়া তৎসহ দোলাযক্ত্রে ৩ দিন পাক করিবে। ইহাকে দীপন কহা যায়।

অনুবাসনম্।

দীপিতং রসরাজন্ত জন্ধীররসসংখুত্ম। দিনৈকং ধারয়েদ্ ঘর্মে মৃৎপাত্রে বা নিলোভবে॥

পূর্বোক্ত প্রকারে দীপিত পারদকে গোড়ালেবুর রসের সহিত সংযুক্ত করিয়া মৃত্তিকা কিংবা প্রস্তর পাত্রে স্থাপন পূর্বক এক দিন রোচ্ছে রাথিলে, তাহাকেই পারদের অ**মু**বাসন ক**হে**।

বিডুকথনমৃ।

বিড়মত প্রবক্ষামি সাধ্যেদ্ ভিষজাং বরঃ।
শব্দুর্লং রবিক্ষীরৈন্চাতপে ভাবয়েদিনম্ ॥
তৰ্ম্বারিরের্জাবৈর্দিনকং ধ্মসারকম্।
হ্বর্চলমজামূলেঃ কাধ্যং যামচতুষ্টয়ম্ ॥
কন্টকারী চ সংকাধ্যা দিনেকং নরমূত্রকৈঃ।
সর্জ্জিকারতিন্তিট্লিকং কাসীসঞ্চ শিলাজতু ॥
জন্মীরোপ্তবৈর্ভাবাং পৃথক্ বামচতুষ্টয়ম্ ।
বৈশালবীজং জগ্জীনং মূলকানাং ক্রবৈর্দ্দিনম্ ॥
বৈদ্ধবং উপপং গুঞ্জা শিগ্রু মূল ধ্বৈর্দ্দিনম্ ।
গ্রহৎ সর্কাং সমাংশন্ত মর্দ্দিং জন্মীরজৈনিবঃ ॥
তপেগালং রক্ষয়েদ যন্ত্রাদি বিড়োহয়ং বংড়বাললঃ।
গ্রেন মর্দ্দিরং পতং গ্রসতে তপ্তথলকে।
বর্গাভাগীনি লোহানি যথেষ্টানি চ মারয়েং ॥

বিড প্রস্তুত করিবার প্রণালী কথিত হই-তেছে। শঙাচৰ আকন্দ আঠায় ও গোডালেবুর রুসে এক দিন রৌদ্রে ভাবনা দিবে। সৌবর্চ্চললবণ ছাগমূত্ৰে ও কণ্টকারী নরমূনে একদিন সিদ্ধ করিয়া কাথ প্রস্থত কবিবে। সাচিক্ষার, তেঁতুলছাল, হীরাক্স ও শিলাজতু ইহাদিগকে গোড়ালেবুর রুদে ৪ প্রহরকাল পুথক পুথক ভাবনা দিবে। জয়পালবাজের শাস মূলার রসে এবং সেম্বব লবণ, সোহাগার থে ও গুঞ্জা সজিনামূলের ছালের রুদে এক দিন ভাবনা দিবে; পরে এই সমস্ত দ্রব্য সমাংশ লইয়া গোড়ালেবুর রুদে মর্দ্দন করিয়া গোলাকার করিবে। এই গোলক যত্নপূর্বক রক্ষণীয়। তপ্তথরে সহিত পারদ মর্দন করিলে সেই মদিত পারদ যথেষ্ট স্বৰ্গ, লৌহ ও অত্ৰাদি ধাতু সকলকে গ্রাস করিয়া জারিত করে।

অথ হিঙ্গুলা দ্রসাকর্ষণ বিধিঃ। নিম্বপত্ররসৈঃ শেষাং হিঙ্গুলং হামমাত্রকম্। জনীরাণাং জবৈর্ধাধ পাতাং পাতনবন্তকে। তং হতং যোজরেৎ পশ্চাৎ সপ্তকঞ্কবর্জিতম্। (নিম্বপক্রশাসরধর। এখীবরদাৈ হিন্তুলং যাস-মাত্রকং মন্দ্রবিদ্যা তদুংহণ্ডিকামধ্যে নিধায় তত্ত্বপরি উদ্ভানং শ্রাবং দহা লেপ্যিড়া চ তত্র পরাবে ক্রিংশদারং জলং দেয়া । উষ্ণং হেয়া। এবজ্ঞাকারেণ পতঃ শ্রাবপৃঠে লগ্না দ্বণগণনিনিম্মুক্তশ্চ ভবেৎ, স নিশ্বলঃ প্তঃস্বর্বকার্যান্ত্র বোজাঃ।

হিঙ্গুলকে নিম্বপত্রেরে অথবা গোড়া-লেবর রমে এক প্রহন কাল মর্দ্দন করিয়া একটা ইাড়ির মনো স্থাপন করিবে এবং সেই হাড়ির মুখে একখানি শরাব উদ্ধান ভাবে চাপা দিয়া উভ্রের স্মিস্থলে লেপ দিরে। অনস্তর শরাব উপর কিঞ্ছিৎ জল দিয়া হাড়িব নিম্নেজাল দিবে, শরার জল উষ্ণ হইলেই তাহা ফেলিয়া দিয়া প্নরায় শান্তল জল দিবে। এইরপে ত্রিশ বার জল পরিবর্ত্তন করা আব্দ্রুক। ইহাতে হিঞ্কুলন্থ পারদ উর্দ্ধে উঠিয়া শরার পুঠে সংলম্ম হইবে। সেই পারদ নাগাদি অন্তদোষ ও সপ্তাকঞ্ক ব্যক্তিত হইয়া থাকে। ইহা স্ক্রিক্সে প্রযোজ্য।

অথ ষড়্গুণবলিজারণবিধিং।

পতপ্রমাণং সিকতাথাবন্তে দরা বলিং মুদ্যটিতেহলভাওে।
তৈলাবশেবেহতা রসং নিদধ্যান্মথার্দ্ধকারং প্রবিলোক্য ভূয়ঃ ॥
আবড়্গুণং গক্ষকমন্তমন্ত্রং
কিপেদদৌ জীর্গনির্বলী স্থাৎ।
রসের্ সর্কের্ নিযোজিতোহয়নসংশয়ং হস্তি গদং জবেন ॥

বালুকাযন্ত্র মধ্যে একটা মুনায় পাত্ত পারদের সম পরিমিত গন্ধক রাখিয়া পাক করিবে। গন্ধক গলিয়া তৈলের স্থায় হইলে উহাতে পারদ নিক্ষেপ করিবে। ক্ষণ পরে পুনরায় তাহাতে গন্ধক চুর্ণ দিবে। এবং ঐ গন্ধক গলিয়া গেলে আর কিঞিৎ গন্ধক দিবে। এইরূপে পারদের গন্ধক প্রদত্ত হইলে পর বালুকাষ্ট্র নামাইয়া ভাণ্ডটা তুলিয়া লইবে এবং তাহাতে একটা

ছিজ করিরা পাবদ নিক্ষাণিত কবিবে। এই রূপ প্রক্রিয়ার নাম ষড় গুণবাল (গন্ধক) জাবণ, এইরূপে বিশোধিত পারদ নিক্ষোয় ও সর্ব্ব-রোগন্থ। এই ষড়গুণবালিজারণ পারদের বিশেষ মুচ্ছা জানিবে।

অথ রসস্থ মারণবিধিঃ।

পূণক্ সমং সমং কৃষা পারনং গন্ধকন্তথা।
নরসারং প্রসারং শাটিকং যামমাত্রকম্।
নিম্বসেন সংমধ্যি কাচক্প্যাং নিবেশরেও।
মুখে পাষাণগটিকাং দলা মুদাং প্রলেপরেও।
সপ্তিমু ত্তিকাবলৈঃ পৃথক্ সংশোষ্য নেষ্টরেও।
সাক্ষেয়াং মুদং স্থান্যং কৃপিকাং তাং নিবেশরেও।
প্ররেও সিকতাপুরৈরাগলং মতিমান্ তিমক্।
নিবেশ্য চুল্লাং দহনং মন্দং মধ্যং ধরং ক্রমাও।
প্রভাল্য হাদশং যামং স্বাস্থানিতং সমুদ্ধরেও।
ক্রোবার তু মুক্তাভমূর্জন্ত্রং বলিং ত্যেওেও।
ক্রাধন্ত্রং বস্সিন্টরং স্প্রোগের্ বোজরেও।
তথ্য রস্সিন্টরম্।

সমান সমান প্রিমাণে পার্ল, গন্ধক, নিশাদল, ঝল ও ফটকিরি এই সকল জবা লেবর রুসে এক প্রাহর মাড়িয়া কাচকূপী অর্থাৎ বোতল মধ্যে রাণিবে। পরে বোতলের মুখে এক খণ্ড খড়ি দিয়া **মন্তিকালিপ্ত** বস্ত্রথণ্ড ধারা সেই বোতলটা প্রালপ্ত করিবে। প্রবেপ শুক্ষ হইলে ক্রমণঃ সাত বার ঐ প্রকার লিপ্ত ও শুদ্দ করিবে। অনম্ভর একটী ছিদ্রবিশিষ্ট হাঁডির মধা ভাগে ঠিক ঐ ছিদ্রের উপরেই ঐ বোতল স্থাপন করিয়া বালুকা ছারা বোতলের গলদেশ পর্যান্ত পূর্ণ করিবে। তংপরে সেই হাড়ি চুগ্নীর উপন বদাইরা তাহাকে ১২ প্রহর ক্রমশঃ মন্দ, মধা ও খর অগ্নিসম্ভাপে পাক করিবে। এইরূপে পাক ক্রিয়া সমাপ্ত হইয়া শীতল হইলে বোতল ভাঙ্গিয়া উর্দ্ধলয় মুক্তাভ গন্ধক ত্যাগ করিয়া অধংস্থ রসসিন্দর গ্রহণ করিবে। এই রসসিন্দুর मर्करताल श्राह्म ।

অথান্যঃ প্রকারঃ।

নাগবলীর সৈত্ত গৈ ককে। টাকনগর্ভিওঃ।
মুখ্রাসংপুটে পকঃ সতো বাতোর ভন্মতান্ত পানের রসে পারদ মান্দত করিয়া কাকাবাল মূলের গভে ভাপন পূর্বক এক মুমার
মূখার পুটপাক কবিলেই ভন্মরপে পরিণত
ইইয়া থাকে।

অথ কপূ ররসম্ভ বিধিঃ।

শুদ্ধস্তদমং কুষ্যাৎ প্রত্যেকং গৈরিকং সুধী:। ইষ্টিকা খটিকা ভদ্বৎ স্ফটিকা সিম্বান্ধন্ম চ ॥ ব্যাকং কারলবণং ভাওরঞ্জকয়ন্তিকা। সর্বাণ্যেতানি সংচুর্ণ্য বাসসা চাপি শোধয়েৎ ॥ अभिकृर्दिभृ देश रहार योजन योजन्छे प्रम्। তচ্চুৰ্সহিতং পৃতং স্থালীমধ্যে পরিক্ষিপেৎ॥ হক্তাঃ স্থাল্যা সূথে স্থালীমপারা। ধাররেৎ সমান্। সবস্তার দি ভগুদা মুদ্রয়েদনয়োমু পম্ 🛚 मः भाषा मूखरहत् जुरशं जुनः मः भाषा मूखरा । সম্যাগ বিশোষা মুদ্রাং ভাং স্থালীং চুক্র্যাং বিধাররেৎ ॥ অগ্নিং নিরপ্তবং দ্যাদ্ যাব্দিনচভুষ্যম্। अञ्चादतार्शात्र ७५ राज्यः तटकम् राञ्चापद्धिनम् ॥ नाम्बरक्याप्टियम् सन्त्रभृष्टकालीशकः तसम्। কপু বৰুৎ ক্ষবিমলং গুলুমান্ত গুণানত্ত্ৰম ব ংদ্ দেবকু**ত্ব**সচন্দ্রকল্ড_ররাকুকুমেয় রুম । থাদন হরতি কিরক্ষণ বাং।ধিং সে:পদ্রবং সপদি। विन्नि वरङ्गों खिर शृष्टिर वीगार वनर विश्वन्।

কর্পুন রস প্রস্তুত করিতে ইইলে অথ্রে পরিদের সংক্ষিপ্ত শোদন করা কন্তব্য । গারদের সমপরিমাণে গেরিমানি, ইষ্টক, খড়ি, ফট্কিরি, সেন্ধবলবণ, উন্নীমৃত্তিকা, কারী-লবণ, ভাণ্ডরক্তক মৃত্তিকা অর্থাৎ লালমানি, এই সকল দ্রব্য চূর্ণ করিয়া বস্ত্র ছাবা ছাকিয়া লইবে। এবং এই সকল চূর্ণ ছাবা পারদকে এইবে। এবং এই সকল চূর্ণ ছাবা পারদকে এইব কাল উত্তমন্ধপে মন্দন করিবে। অনস্তর সেই চূর্ণ সংবলিত পারদ একটা স্থালীব মধ্যে রাখিয়া সেই স্থালীর মূখে আর একট হালী উপুড় করিয়া চাপা দিবে। উত্তর মৃথের মিলন স্থল কুটিত বন্ধ ও মৃত্তিকা ছাবা

রময়তি রম্ণাশতকং রসকপূরিস্ত সেবকঃ সতভ্যু ॥

লিশু করিয়া শুকাইয়া লাইবে, এইরপে ছুই
তিন বার লিশু ও শুক্ক করিয়া উহাকে চুয়ীর
উপর স্থাপন করিবে এবং চারি দিন নিরন্তর
অগ্নিস্তাপ দিয়া পঞ্চদিনে অহোরাএ অঙ্গারোপরি স্থাপন করিয়া রাখিবে। পরে
অগ্নি নির্বাণ হুইলে উদ্ধালীগত কপুরবং
শুল রস গ্রহণ করিবে। ইহার গুণ অতি
উৎক্ট। ইহা লবঙ্গ, চন্দদ, কস্তুরী ও কুছুমের
সহিত সেবন করিলে সোপদ্রব কিরন্তর্গাধি
(গর্মি রোগ) সম্বর প্রশমিত হয় এবং
ইহা দারা অগ্নির দীপ্তি, দেহের পৃষ্টি, বল, বীধ্য
ও রতিশক্তির বৃদ্ধি হইয়া থাকে।

অথ সিন্দুররুসঃ।

শুদ্ধপতক্ত গৃথিয়াদ্ ভিনগ্ ভাগচতুষ্ঠয়ন্।
শুদ্ধগদ্ধ ভাগেকং তাবং কুক্রিমগদ্ধকন্ ।
অথবা পারদক্তার্দ্ধং শুদ্ধগদ্ধকানের হি।
তরোঃ কঞ্জলিকাং কুর্যাদ্দিনমেকং বিনর্দ্ধরেং॥
মৃত্তিকাং বাসসা সার্দ্ধং কুর্য়েদ্ভিবস্থতঃ।
তবা বার্ত্তিয়ং সমাক্ কাচকুপীং প্রলেপরেং॥
মৃত্তিকাং পোৰ্যিয়া তু কুপাাং কঞ্চলিকাং ক্যিগেং।
কা কুপীং বালুকাব্যের স্থাপরিহা বসং প্রেং ॥
অগ্রিং নিরস্তবং পক্ষাদ্ বাল্দিনচ কুর্যমা।
গৃথীয়াদুর্দ্ধনংলগ্রং সিন্দ্রসদৃশাং রসম্॥

শোষিতপারদ ৪ ভাগ, শুদ্ধ গন্ধক : ভাগ ও ক্লতিম গন্ধক ১ ভাগ অণবা পারদের অন্ধ ভাগ শুদ্ধ গদ্ধক, একদিন মন্দ্ৰন করিয়া কজ্জলী করিবে। এবং কুটিত বস্ত্রখণ্ড মৃত্তিকার সহিত মিশ্রিত করিয়া তাহা ঘাণা একটা কাচকুপী ণিপ্ত কবিবে। লেপ শুষ্ক হটলে পুনরায় উহা ছারা লিশ্ব করিবে, এইরূপে ভিন বার লেপ পরে উহার মধ্যে ঐ দিরা শুক করিবে। পূৰ্বাবৎ বালুক যন্ত্রে कड्डली রাখিয়৷ নিবস্তর ৪ চারিদিন অগ্নিসস্তাপ স্থাপন পূৰ্বক দিবে, এইরাপে পাক সমাপ্ত হইলে কুপীর উদ্দেশ্বর সিন্দুরসদৃশ রস এইণীয়।

অথ পীতভম্মনে। বিধিঃ।

মৰ্দ্দরেদ্ রসগন্ধে চ হস্তিগুণ্ডীক্রবৈদ্ চূন্।

ভূধানিকারদৈর্বাপি পর্যান্তঃ দিনসপ্ততঃ ।

বিহ্বর বালুকাবন্তে মুবারাং সন্নিবেশরেৎ।

দিনমেকা দহেদর্যো মন্দং মন্দং নিশাবধি ।

এবং নিপাপ্তাতে পীতঃ শীতঃ সত্তন্ত গুলতে।

পর্বপণ্ডন তদ্পপ্তাং জন্দরে ক্রেয়তাং মম ।

কুবে ধং কুরুতে পুর্বমুদরাণি বিনাশরেৎ।

হরাণাং নালনং শ্রেষ্ঠতাবৎ জীহুপকারকঃ ।

হদরোৎসাহজনকঃ হ্রানাশনতংপরঃ ।

বল গ্রানঃ সদা দেহে জরানাশনতংপরঃ ।

অক্তক্রাদিকং দোবং সববং নাশরতি ক্রণাং।

এত্যান্তঃপরঃ স্ততা রসাৎ সর্ববিক্রম্পরাৎ ।

পারদ ও গন্ধক সমভাগে লইয়া হাতিভাঙার অথবা ভূই আমলার রসে সাতদিন
প্যান্ত মৰ্দ্দন করিয়া একটা মূখায় স্থাপন
পূর্বিক বালুকা গন্ধে একদিন মন্দ মন্দ অগ্নিসন্তাপে পাক করিবে। ভাহাতে পারদ ভগ্নীভূত
ও পীতবর্ণ হইবে। ইহা পানেব সহিত
গুল্পাপরিমাণে সেবা। এই পীতভ্যা ক্ষুণাকারক,
উদর ও জর বোগের মহোম্বন, জাঁ ও স্থানায়ক,
হদয়োৎনাহজনক, দলপদ, জরানাশক এবং
অঙ্গভ্যাদিরোগের আভু নিবাবক। ইহা
ভাতিভাই ঔষণ, ইহাকে স্বাঙ্গিন্ত্ব রস্প্
করে।

অথ কুফরেসঃ।

লৌহপারে বংশবা তামে পলেবং এজগজনম।
মুদ্বপ্লিনা ক্রন্তে তিম্মিন্ গুদ্ধপ্রপ্রতিপ্রতিষ্ঠা প্রনাধ্যন ।
ক্রিপ্তা, প্রতিষ্ঠা প্রনাধ্যন তিম্বেশির চি চ'লরেব।
হত্যেবং গজবন্ধন্ত স্বর্ধবোগেয় বেংজরেবং ।

লোহ অথবা তাত্র নিশ্মিত পাত্রে পল শুদ্ধ গন্ধক রাখিয়া মৃত্ অগ্নিতে পাক করিবে। গন্ধক দ্রবীভূত হইলে, তাহাতে ও পল শোধিত পারদ নিক্ষেপ করিয়া লোহার হাতা ছারা প্রংপুনঃ নাড়িবে এবং কিরৎক্ষণ পরে গোময়ের উপর স্থাপিত একথানি কদলীপত্রে

উহা ঢালিয়া অপর একটা কদলীপত্র-বেষ্টিত গোময়পোট্টলী দারা চাপিয়া ধরিবে, এইরূপে কুষ্ণরুদ প্রস্তুত হইবে। ইহা দর্বরোগে প্রযোজ্য।

খেতং পীতং তথা রক্তং কৃষ্ণগেতি চতুর্বিধন্। লক্ষণং ভত্মপ্রতানাং শ্রেষ্ঠং স্থান্তরেরান্তরম ।

খেতভন্ম (রদকর্পূর), পীতভন্ম, রক্তভন্ম (রদসিন্দুর) ও ক্বফভন্ম এই চতুর্কিন পারদভন্ম যথাক্রমে উদ্ধরোত্তর শ্রেষ্ঠ।

অথ রসতালকস্ম বিধিঃ।

রসো গন্ধন্তাকক রওশতা সমাংশতঃ।
সংমদ্যি সিকতাবন্ধে পচেদ্ বামচতুষ্ট্রম্ ।
পীতাভং জায়তে পাকাদ রসতালকসংক্রিতম্।
অরম্বং দীপনং বঙ্গোঁগাল্ডখনমূর্ম ।
হস্তাষ্টাদশকুন্তানি বিনিধং বাতশোণিতম্।
বলামার্শ্বং মেধ্যং পরমেত্দস্যেনম্ ॥

শোধিত পারদ, গন্ধক, হরিতাল ও লালদাক্ষ্ক এই চারি তবা দমান পরিমাণে
গ্রহণ করিয়া একত্র উত্তমরূপে মন্দন করিবে।
পরে উহা একটা কাচকুপীন ভিতর পূরিয়া
(রুসনিন্দ্র পাকের হার) বালুকায়রে ৪
প্রহর পাক করিবে। এই প্রক্রিনার পীতবর্ণ
রুসতালক নামক ঔন্ধ প্রস্তুত হইবে। ইহা
পাককালে অতি অল্প অংশ বোতলের গলদেশে
লগ্ন হর এবং অবশিষ্ট দমন্তই বোতলের নিজে
প্রেয়াপাকে। রুসতালক— অর্ম্ব, অগ্নিসন্দীপক,
বাধান্তস্তক, কুঠ ও বাভাক্ত নাশক, বলকাবক,
আযুদ্ধর, মেনাজ্নক ও বসারন। ইহা এক ধ্ব
মাতার ব্রেহাগে।

অথ কজ্জলাকরণবিধিঃ।

শুদ্ধ: রসং গণ্যকণ সমং সংমন্ধ্রেদ্ধিন্য।
নিশ্চন্ত্রং কজ্ঞলী চুকং ততো যোগেদু যোজারেও।
পূর্থণ, যোগেদু যতোত্তো সমৌ পারদগন্ধকো।
তত্ত্ব ভাগন্ধরং যোজাং কজ্জনস্তেতি নিশ্চয়ঃ ।
যাবান্ ভাগনিকঃ স্ততাৎ তাবস্তং গদ্ধকং পুনঃ।
জিপেদ্ যোগে বিধানকো না এ কাষ্যা বিচারণা।

ৰত্ৰ স্তোহৰিকো যোগে গন্ধপাৰাণতে। ভবেং। তত্ৰ তথাৰতঃ কুৰ্বাদাদাবেৰ হি কজ্ঞসমূ॥

শোধিত পাবদ ও শোধিত গন্ধক সমান পরিমাণে লইয়া উহাকে একদিন উত্তমরূপে মর্দন করিবে, পারদকণা অদুশু হইয়া উহা কজলসদৃশ হইলে ঔষধ-কার্ছ্যে প্রযোজ্য হইবে। কোন ঔষধে যথন সমপরিমাণে পারদ ও গন্ধক লইবার ব্যবস্থা থাকিবে, তথন বৃদ্ধিতে হইবে যে, গুইভাগ কজ্ঞলী গ্রহণ করিতে হইবে, এবং যে ঔষধে পানদ অপেক্ষা গন্ধকের ভাগ অধিক উক্ত থাকিবে, তথায় পূর্মবং কজ্জলী লইয়া অতিরিক্ত গন্ধকাংশ যোগ করিলেই চলিবে।

মনে কর, কোন উন্দে একভাগ পারদ ও তুইভাগ গদ্ধক লইবার বিধান আছে, তথায় তুইভাগ কজ্ঞলী ও একভাগ গদ্ধক লইলেই চলেব। কিন্তু যেখানে গদ্ধক অপেকা পারদের ভাগ বেশা থাকিবে, সেধানে অত্যে সেই পরিমিত পারদ ও গদ্ধক লইয়া কজ্ঞলী প্রস্তুত করা কত্তবা।

্থথ গন্ধকস্ম শোধনবিধিঃ।

কৌহপ'কে নিনিক্ষিপা স্থতনগ্রো প্রতাপচেৎ। হ'প্ত স্থাত তৎসমানং ক্ষিপেদ গন্ধকান রজঃ। বিক্ষাতং গন্ধকা দৃষ্ট্য হন্ধমধ্যে নিনিক্ষিপেৎ। এবং গন্ধকাপ্তদ্ধি: গুলি স্বকাধ্যাসু োক্তথেৎ।

একখানি লৌংনিক্ষিত হাতায় কিকিং
ঘত দিয়া ক্ষমিতে উত্তপ্ত করিয়া ভাহাতে গন্ধক
চর্গ নিক্ষেপ করিবে, গন্ধক দ্রবীসূত হুইলে উহ।
ছপ্তে চালিবে, এই প্রক্রিয়া ছারা গন্ধক
বিশুদ্ধ হয়, এইরূপ বিশুদ্ধ গন্ধকই সন্মকার্য্যে
প্রযোজ্য।

অথ গন্ধকম্ম তৈলম্।

অর্ককারে: সুহীকীরৈর্বন্তং লেপান্ত সপ্তধা। গন্ধকং নবনীতেন পিয়ু বিসং প্রলেপয়েৎ। তৰ্যন্তিৰ লিভা দণ্ডে ধৃতা ধাৰ্য্যা অংধামুখী। তৈলং পভত্যধঃপাত্তে গ্ৰাহুং যোগের যোজনেং॥ অব্যক্ত—

আবর্ত্তমানে পয়সি দকা গন্ধকজং রজঃ। ভজ্জাতদ্বিজং সর্পির্গন্ধতৈলং বদস্তি হি। গন্ধতৈলং গলংকুঠং হস্তি লেপাচ্চ ভক্ষণাৎ॥

গদ্ধক হইতে তৈল প্রস্তুত করিবাব নিয়ন
—আকন্দ অথবা দিজের আঠায় এক খণ্ড বস্ত্র
দাতবার দিক্ত করিবে এবং নবনীতের দহিত
গদ্ধক পেষণ করিয়া দেই গদ্ধক দারা উক্ত
বস্ত্রখণ্ড লিপ্ত করিবে। পরে গদ্ধকলিপ্ত বস্ত্র
কোন কাঠের দণ্ডে জড়াইয়া একটা বাতি
প্রস্তুত করিবে। ঐ বাতি অগ্নিতে জালাইয়া
কোন ভাণ্ডের উপর অবোমৃণে ধরিবে।
ভাহা হইলে উহা হইতে বিন্দু বিক্ত তৈল
ভাণ্ড মধ্যে পতিত হইবে। ইহারই নাম
গদ্ধক তৈল।

অন্য প্রকার-

ত্র আবর্ত্তন করিবার সময় উহাতে গন্ধক চূণ প্রক্ষেপ দিবে এবং সেই হ্রমজাত দধি মন্থন করিয়া ন্মত প্রস্তুত করিবে। সেই ন্মতকেও গন্ধক-তৈল বলিয়া থাকে। গন্ধক-তৈল লেপন বা পান করিলে গলংকুইও নিবারিত হয়।

অথ গন্ধকানুপানম।

মে|চাফলেন এগ্দোবং চিত্রকণ মহাবলন। ভাটিন্যক্ষায়েণ ক্ষকাসান্ জ্যেদ্ ভূশন। মন্দানলম্বং জয়তি ক্রিফলাকাথসংস্কন। উদ্বান্সকলান্ বোগান্ হস্তি শীল্পাধক।॥

শুদ্ধ গদ্ধক সেবনের অন্নপান। বিশুদ্ধ গদ্ধক কদ্লীর সহিত সেবিত হইলে চল্ন-রোগ, চিতার সহিত সেবিত হইলে বল-হীনতা, বাসককাণের সহিত সেবনে স্থাকণ ক্ষয় ও কাস, ত্রিফলাকাণের সহিত সেবিত হইলে অগ্নিমান্য ও উদ্ধাহণত যাবতীয় রোগ নিবারিত হয়।

অথ হিঙ্গুল-শোধনবিধিঃ।

অন্নৰ্গজবৈ: পিষ্ট্ৰা দরদো মাহিবেণ চ। দুন্ধেন সপ্তধা পিষ্ট: গুদ্ধীভূত্যে বিশুধাতি।

অগ্রচ্চ—

মেষীহুদ্ধেন দরদময়নগৈরিভাবিত্য। সপ্তবারং প্রবড়েন শুদ্ধিমায়াতি নিশ্চিত্য।

অমবর্গ ও মাহিষ হগ্ধ দার। অথবা অম বর্গও মেযীহগ্ধ দারা সাতবার ভাবনা দিলে হিসুল বিশুদ্ধ হয়।

অথাত্রশোধন-বিধিঃ।

কৃষ্ণালকং ধ্যেদ্ বড়ে) ততঃ ক্ষানে বিনিক্ষিপেৎ। ভিন্নপত্তর তৎ কৃষ্ণা তড়ুলীয়াময়োর্দ্রনৈঃ। ভাবয়েদষ্ট্যামং তদ এবমলং বিশুধাতি॥

কৃষ্ণান্ত অগ্নিতে পোড়াইরা ত্রে নিক্ষেপ করিবে। পরে চাহার গুরগুলি পৃথক্ পৃথক্ করিয়া নটেশাকের ও কোন প্রকার অন্ন-জবোর রসে আট প্রহর ভাবনা দিলে অন্র বিশুদ্ধ হয়।

অথ ধাতাভক স্থা বিধিঃ।

পাদাংশশালিসংযুক্তমন্ত্রং বন্ধাপ কথলে।
বিরোজ্য স্থাপরেন্দ্রীরে তৎ ব্লিন্তং মন্দরেৎ করৈঃ ।
কথলাপ্যলিতং স্কাং বাবুকাসদৃশক যথ।
তদধান্তান্ত্রমিতি প্রোক্তমন্ত্রগাসদৃহর ।

যে পবিমিত শোধিত অন্ত্র, ভাহাব চতুথাংশ শালিবাক্ত লইয়া উভয়কে এক এ কথনে
বন্ধ করিয়া তিনদিন জলো ভিজাইয়া বাখিবে।
পরে তাহা হস্তথারা মন্দ্রন করিলে কথন
হইতে অভি স্থায় প্রান্ত্রা সদৃশ যে অল কণা নিগত হইবে, তাহারই নাম বালাল্র,
ভাহাই মারণযোগ্য।

অথাভ্রমারণবিধিঃ।

গবাং মৃত্তেও ধাষ্ঠাত্রং মর্দায়িরা পুনঃপুনঃ। শরাবসংপুটে রুদ্ধা পুটেদ্ যত্নাৎ সহত্রশঃ। ধান্যাত্র গোমুত্রে মর্দ্দিত ও শরাবপুটে ক্লদ্ধ করিরা পুন:পুন: পুটপাক করিলে ভত্ম হইবে। সহস্রপুটিত অল বিশেষ গুণকারক এবং ইহাই ঔষণার্থে ব্যবহায়।

তথাভকস্তামূতীকরণ্য i

নিফলায়াঃ কৰায়ক্স গলান্তাদায় যেড়েশ। গোত্মতক্ষ পলান্ডটো মৃত্যক্রক্স পলান্দশ। একীকৃত্য লৌহপাত্রে পাচদেয়,ভুনাগিনা। তদেব জীর্থমাদায় সর্করোগেরু যোজয়েৎ।

ত্রিফলার কাপ ১৬ পল, গব্য স্বত ৮ পল, জারিত অভ ১০ পল, এই সমস্ত জ্বা একত্র লোহপাত্রে মৃত্র অগ্নি ছাবা পাক করিবে। পাক সমাপ্ত হইলে সেই অমৃতীকৃত অভ চুর্ল কবিয়া স্বলোগে ব্যবহার করিবে।

অথাত্ৰভদ্মানুপানানি।

অভ্ৰকণ্ড নিশাগুড়াং পিপ্লনীমধুনা সহ। বিংশতিক প্রনেহাণাং নাশয়েন্নাত্র সংশয় ॥ অভ্ৰকঃ হেমসংযুক্তং ক্ষয়রোগবিনাশনম্। নৌপাছেমাজৰ শ্বেৰ ধান্তবৃদ্ধিৰ বং প্ৰাম্ ॥ অত্যক্ষ হরীনকট ওড়েন সহ যোগিত্য। ণলাশকর্যা যুক্তং রক্ত্রিক্সিন্স্য । লিবটু বিফলাফের চাতুজাতিং সশর্করম্। মধুনা লেহয়েৎ প্রাতঃ ক্যার্ল,পাওনাশনম্॥ ওড়ুচাদ্রখও!ভাাং মিমিতং মেহনাশনন্। এলাগোকুরভূষা বী-সিতাগবোন মিত্রিওম্। প্রতিঃসংসেবনাল্লিড্যং মেহকু,ক্রেবিনাশনন্। পিপ্লামশুসংযুক্তং জমজীর্থরাপ্রম্। भवुभिकला। मुख्य ५ष्टिश्रष्टिकतः मध्य । মুকাসভ্যুতং বেলম এগানাঞ বিনাশনন্॥ ভলাতকৰুতং বোমে অৰ্থেলোকনিবাৰণম। बांशंबर (शोकतर खांशी शंशबर ध्रयूना सह। व्यवश्वामुख्य भाष्यभाष्ट्रभागिनियात्रणम् ॥ চাতুর্জাতং সিভা চাজং পিত্তরোগনিকারণম্ । कृष्मिलाः शिक्षला (कोन्द्रः क्षित्रदर्गाभनिनात्रगम । ন্ৰকারযুভ্ঞাত্রম্মিবৃদ্ধিকরং পর্ন। মূতাগতিমূতকু ফ্রেমখারীমপি নাশ্যেৎ ॥ গে!ক্টারক্টারকনাভ্যাৎ বলবৃদ্ধিকরং পর্য । বিজয়ারসসংযুক্তং শুক্রস্তম্বরং পরন। লবক্ষধ্যংগুভাং গাতুর্দ্ধিকরং পরম্ 🛭

গোক্ষীরশর্করাযুক্তং পিজরোগবিনাশনম্।

অক্রকং বিধিসংযুক্তং পধ্যবোগেন যোজিতম্।
বেলবোবসম্বিতং ঘূতপুতং বলোলিতং সেবিতং
দিব্যালং ক্ষয়পাঞ্সংগ্রহণিকাশূলঞ্ কুষ্ঠাময়ম্।
সর্ববাসগদং অনেহমক্ষতিং কাসাময়ং তুর্ধরং
মন্দাগ্রিং জঠরবাপাং পরিহরেচ্ছেবাময়ান্ নিকিতম্।
বলীপলিতনাশঃ স্থাজীবেচ্চ প্রদাং শতম্।
নাতঃ প্রতরং কিঞ্জিরাম্জুবিনাশনম্॥

হরিড়াচুর্ণ পিপুল ও মধুসহ সেবন করিলে বিংশতিপ্রাকাব প্রমেষ্ট এবং স্বর্ণ-ভশ্ম সহ সেবিত হইলে ক্ষয়রোগ নষ্ট হয় ৷ ইহা নোপভেম্ম ও স্বৰ্ণভন্ম মহ সেবিত হইলে বাতুপোষক হইয়া থাকে। হরীতকীচূর্ণ ও গুড়সহ কিংবা এলাইচচুর্ণ ও চিনি সহ সেবন করিলে রক্তপিত্ত এবং ত্রিকটু, ত্রিফলা, চাতুর্জ্ঞাত, চিনি ও মধুসহ সেবন করিলে ক্ষয়, অর্শঃ ও পাও বোগ নষ্ট করে। মেহ রোগে গুলঞ্চের সার ও চিনি সহ, মৃত্রকচ্ছ-বোগে প্রাভঃকালে এলাচ, গোন্ধর, ভূঁই-আমলা, চিনি ও গ্রাহ্র সহ; লম ও জীর্ণ-জ্বরে পিপুলচুর্ণ ও মধু সহ; দৃষ্টিহীন হারোগে ত্রিফলার কাথ ও মধু সহ; ত্রণবোগে মুর্নাকাথ সহ; অশোরোগে ভেলার মুটি সহ; বাত-বার্বিতে ভাঠ, পু্দ্রব্যুল, বামুনহাটা ও স্থা-গনা ইহাদের কাথ ও মধু সহ; পিতছঙ্গিতে চাতুৰ্জ্ঞাত ও চিনি সহ; শ্লেমজনোগে কার-ফল, পিপুল ও মধুসহ এবং মূত্রাঘাত, মূত্র-ক্রছ, অন্মরী ও অগ্নিমান্দ্যরোগে সমস্ত কারের প্রয়োগ করিবে। ইহা অত্ৰ ভশ্ম ভূমিকুল্মাণ্ড চূর্ণ ও গব্য হগ্ধ সহ সেবন করিলে বলবৰ্দ্ধক, সিদ্ধির রস বা কাণ সহ সেবনে শুক্রস্তম্ভক, লবঙ্গ ও মধু সহ পাতৃবর্দ্ধক এবং গব্য-ছগ্ধ ও ্চিনি সহ পিত্তরোগনাশক হয়। ইহা যথোপযুক্ত পথ্য সহ নিয়মিতরূপে সেবন করিলে বিবিধরোগ নষ্ট করে। বিভঙ্গচূর্ণ, ত্রিকটুচুর্ণ ও স্বত সহ ২ রতি মাত্রায় অত্রভন্ম সেবন করিলে ক্ষয়াদি বছবিধ রোগ প্রশমিত হইয়া পাকে। ইহা খাবা বলী, পলিত, জবা ও মৃত্যু নই হইয়া থাকে।

অথ তালকস্ম শোধনবিধিঃ।

'প্রদ্ধাং স্থাৎ তালকং স্বিন্ধ কুমাণ্ডসলিলে ততঃ। চূর্ণোদকে ততন্ত্রেলে ভত্মাভূতো ন দোবকুৎ।

হরিতাল দোলায়রে প্রথমতঃ কুমাণ্ডের জনে তদনস্তর চুণের জলে, তৎপরে তৈলে ক্রমশং এক প্রহর কাল পাক করিয়া লইলে বিশোধিত হয়। এইরূপে শোধিত হরিতাল চুর্ণ দোষকর নহে।

জ্যাদ-

তালকং বংশপত্রাগাং চূর্ণোদকবিভাবিতম্। সপ্তভিবাসরৈঃ শুদ্ধং ততঃ কশ্মণি যুক্তাতে ।

বংশপত্রাণ্য হরিতাল চূর্ণের জলে সাত দিন ভাবিত করিয়া লইলে বিশুদ্ধ হুইবে। এই প্রকারে শোধিত হবিতাল সকল কার্মে প্রয়োগ করা যায়।

অথ তালকস্ত মারণবিধিঃ।

সদলং তালকং শুদ্ধং পৌনন্বরসেন তু।
পলে বিমর্দ্ধিয়েদেকং দিনং পশ্চাছিশোষয়েং ॥
ততঃ পূন্নবাক্ষারৈঃ স্থাল্যা অর্দ্ধং প্রপুরয়েং ॥
তার তপ্লোলকং ধরা পূন্তেনৈর প্রয়েং ॥
আকঠং পিঠরং তক্ত পিধানং ধারয়েয়ুগে ।
স্থালীং চুল্লাং সমারোপ্য ক্রমাছিল্লং বিবর্দ্ধরেং ॥
দিনাক্তন্তরশৃ্তানি পঞ্চ বহিং প্রদাপয়েং ।
এবং তন্ত্রিয়তে তালং মাত্রা তক্তৈর রক্তিকা।
অনুপানাক্তনেকানি বধাযোগ্যং প্রযোজয়েং ॥

শোধিত বংশপত্রাথ্য হরিতাল পুনর্মবারদে এক দিন মর্দন করিয়া শুদ্ধ ও গোলা ফুতি করিয়া লইবে এবং একটী স্থালীর অর্দ্ধ-ভাগ পুনর্মবান্ধার বারা পুর্ণ করত তাহাতে ঐ হরিতালপিও স্থাপন করিয়া তাহার উপর পুনর্মবার ক্ষাররাশি নিক্ষেপ করিয়া স্থালীর মুখে একথানি শরাব স্থাপনপূর্ব্বক লেপ দিয়া ক্লম্ব

করিবে এব ঐ স্থালী চুলিকার উপর স্থাপন করিয়া নিরন্তর পাঁচাদন হাথাতে অগ্নিসম্ভাপ দিবে। অগ্নি যেন ক্রমণঃ হীব্রতর হয়, এই প্রাক্রেরা দারা হরিতাল জারিত হইবে। ইহার মাত্রা—১ রতি। ব্যাধি ও অবস্থামুসারে নানাবিধ অমুপানের সহিত সেবা।

অথ রসমাণিক্যম্।

ভালকং বংশগ্রাগং কুমাওসলিলে কিপেং।
সপ্তধা বা ত্রিধা বাপি দগ্না চামেন বা পুনঃ ॥
শোষ্য়িতা পুনং গুদং চূর্ণয়ে তঙুলাকৃতি।
ততঃ শরাবকে পাত্রে প্রাপয়েং কুশলো ভিষক ॥
বদরীপয়বোঝেন কন্দেন লেপয়েছিয়ক।
অঙ্গাভমধংপাত্রং ভাবছলা প্রদীয়তে॥
অঞ্গাভমধংপাত্রং ভাবছলা প্রদীয়ত ॥
অঞ্জাভিমংপাদেদ সতলামরম্পিত্র।
ত্রাক্তিরিতয়ং গাদেদ সতলামরম্পিত্র।
সংপ্রা দেবদেবেশং কুটরোগাছিম্চতে।
ফুটিতং গলিতং যুচ্চ বাতরকং ভগলারম্ ॥
নাড়ীত্রপং ত্রাণ রোগান্ ক্রান্ হন্তি ক্লাক্রপান্।
নাসাক্তসভ্বান্ রোগান্ ক্রান্ হন্তি ক্লাক্রপান্।
প্রাক্রিক চ্যাগ্রং বিক্লোটং মণ্ডলং তথা।

বংশপত্রাণ্য শোধিত হরিতাল কুম্ডার জলে সাতবার কিংবা তিনবার ভাবনা দিবে এবং দাণ বা কোন অমুরসেও পুনর্মার সাত-বার কিংবা তিন বার ভাবনা দিতে হইবে; পরে তাহা শুক্ষ করিয়া তণ্ণাকৃতি করিবে, তদনস্তর ঐ হরিতাল ১ থানি শরাবে স্থাপিত ও অপর একথানি শরার ম্বারা আচ্চাদিত ক্রিয়া উভয় শ্রাবের সন্ধিস্থান কুলপত্রের কল্প দারা রুদ্ধ করিবে। তংপরে ঐ শরাব-পুট বালুকাষ্ট্রে স্থাপন করিয়া যে পর্য্যন্ত পাতেব নিম্নভাগ অরুণবর্ণ না হয়, সে পর্য্যন্ত উহাতে मिर्टि। **भौ**ठम इंडेरम (मिथ्रि অগ্নিসস্থাপ হইয়াছে। ইহার নাম রস-উহা মাণিক্যাভ মাণিকা। দেবাদিদেব মহাদেবের পূজা করিয়া মৃত ও মধুর সহিত এই রসমাণিকা ২ রতি মাত্রার সেবিত হইলে দলিত গলিত কুঠ, বাতরক্ত, ভগন্দর, নাড়ীব্রণ,

দংশ, বিচর্জিকা, মুখবোগ, নাসারোগ, দারুণ-ক্ষত, পুগুরীক, চদ্মাখ্যরোগ, বিক্ষোটক ও মণ্ডল প্রভৃতি বিনষ্ট হয়।

অথ হরিতালভস্মানুপানম।

সর্পরক্রবিকারের দেয়ম! মহরিদেয়। ।
প্রহালাহলজীরাভানিপানারহরং পরম্ ॥
সমুদক্ষলেশেকো দকোদরবিনালনম্ ।
দেবদালারদৈয়্ কিং ভগন্দরহরং পরম্ ॥
কিরক্সদোষজং রোগং জাতং হস্তি প্রস্তুরন্ ।
বাসপ্রিভলং কঞুং পানাবিশেটকং তথা ।
বাতরক্ত মৃতান্ব্রোগানভানিপ বিনাশ্যেং ॥

হবিতালভন্ম আন-আনান সহিত সেবিত হইলে সর্পথকার রক্তরিকার, মন্ত ও জীরার সহিত সেবিত হইলে অপ্রার, সমুদ্র-ফল্যোগে জলোদর এবং ঘোষালতা যোগে ভগন্দর, ফ্রিক্সরোগ (গর্মী), বীস্প, মণ্ডল, কণ্ড (চুলকনা), পানা (থোস্পাচ্ডা), বিন্দোটক ও বাতরক্তক্ত বিবিন বোগ নাশ করিয়া থাকে।

অথ হরিতালাচ্ছে,তুর্বার্য্যাকর্ষণবি ধিঃ।

তিযাক্পাতনযন্ত্রেণ এলে ভগ্নীকৃতে ৩৩। লভাতে খেতবীর্যাং যথ তন্মানা সর্বপোক্ষিতা। ভদন্তীর্থ জনং হতি কান্তিপুষ্টবলপ্রদম্য।

তির্যুক্পাতনমন্ত্র হরিতাল ভ্রম্ম করিলে তাহা হইতে এক প্রকার শেতবীর্গ্য পাওয়া যায়, চলিত ভাষায় ইহাকে সেঁকো বলে। ইহার মাত্রা—> সর্গপ। ইহা ব্যবহার করিলে জ্বর ও অজীর্ণ বিনষ্ট এবং কান্তি, পুষ্টি ও বল বর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

অথ মনঃশিলা-শোধনবিধিঃ।

চূৰ্ণতায়ৈম নোগুপ্তা সপ্তক্ৰমে। বিভাবিতা। শুদ্ধিমায়াতি নিতরাং ততঃ কর্ম্মণি যুদ্ধানে ॥

গিলিত কুঠ, মনঃশিলা চুর্ণ করিয়া চুণের জলে ৭ বার ছুইরণ, উপ- ভাবনা দিলে শুদ্ধ ইইয়া কার্যোপনোগাঁ হয়।

অথাঞ্জন-শোধনবিধিঃ।

নীলাঞ্জনং চূৰ্বায়থা জম্বারজবভাবিত্র্। দিনৈক্মাতপে শুক্ষং শুদ্ধং বোগেরু যোলয়েৎ।

স্থাকে চূর্ণ করিয়া গোঁড়ালেবুর রসে ভাবিত করিয়া একদিন রৌদে শুফ করিলে বিশুদ্ধ হয়।

অক্সচ্চ--

ত্রিফলাবারিণা শোধাং গুদ্ধং গুদ্ধিমূচ্ছতি। ভূক্করাজরদৈর্বাপি স্বোহ্নদৌবারকং গুচি॥

ত্রিফলার কাথে অথবা ছীমরাজের রসে ভাবনা দিলে স্রোতোহঞ্জন ও সৌবীরাঞ্জন বেশুক হয়।

অথ টক্ষণশুদ্ধিঃ।

গোনমেনার তইকঃ গুদ্ধিনায়াতাসংশয়ন্। অথবা বফিংখেগেন স্ফৃটিতঃ গুদ্ধতাং ব্রজেৎ। টক্ষণোহয়িকরো ক্লফে কক্ষো বাতপিতকুৎ।

সোহাগা গোমরে আরুত কার্য়া রাখিলে জগরা আগতে পোড়াইয়া থৈ কবিয়া লইলে বিশোধিত হয়। শেষোক্ত নিয়মই প্রচলিত। ইহা অগ্নিকর, রুক্ষ, কফ্নাশক এবং বায়ু ও পিত্ত জনক।

অধ রাজাবর্ত্ত-শোধনমারণবিধিঃ।

গোবিলো মাতুলুকায়-শৃকবেররদেন চ। বিশুধাতে মিয়তে ৮ পুটিতো না এ সংশয়ঃ॥

টাবালের ও আদার রসে গোবিন্দমণি অর্থাং রাজাবর্ত্ত ভিজাইয়া রাখিলে বিশুক হয় এবং বিশোষিত রাজাবর্ত্ত পুটপাকে জারিত হইয়া থাকে।

অথ সর্ব্বোপরসানাং সাধারণ-শোধনবিধিঃ।

স্থাবিৰ্ধে বজ্ঞকশ: কদলী দেবদালিকা। শিগ্ৰ; কোশাতকী বন্ধা কাক্ষাচী চ বালকম্॥ এবামেকরসেনৈর ত্রিক্ষারৈল বিশৈ: সহ।
ভাবরেদমনবৈর্গক দিনমেকং প্রযত্নতঃ॥
১৩: পচেচ্চ তদ্দ্রাবৈদে লাযত্রে দিনং মুখী:।
এবং গুধাতি তে সর্বেধ প্রোক্তা উপরসা হি বে॥

সমুদয় উপরস শোধনের সাধারণ বিধি
লিখিত হইতেছে। হুড়্হড়ে, শকরকন্দ আলু,
কদলীমূল, ঘোষালতা, সন্ধিনা, ঝিঙ্গা, তিক্ত
কাঁকরোল, কাকমাচী ও বালা ইহাদের মধ্যে
কোন একটার রস এবং যবক্ষার, সাচিক্ষার,
সোহাগার থৈ, পঞ্চলবণ ও অমবর্গ এই সমুদায়
ঘারা একদিন ভাবনা দিয়া ঐ সকল জব্যের
সহিত একদিন দোলায়ন্তে পাক করিলে
সকল উপরস বিশুদ্ধ হয়।

অথ চুম্বক-শোধন-মারণ-বিধিঃ।

অগন্তাপত্রতায়েন ভাবয়েরোহকর্বকন্।
দোলায়য়ে পচেদ যুক্তা ত্রিফলাসলিলে ততঃ ॥
গোমুত্রেণ ততঃ পিষ্ট,া বরাকাখেন বা ভিষক্।
পুটেৎ তং সপ্তধা তেন মৃতিরক্ত প্রজায়তে ॥
এবং শুদ্ধো মৃত্যে বলাো পৃষ্টিকৃদ্ বীর্যবর্জনং।
অর্য্রের রক্তজননো রক্তপিতং ক্ষয়ং তথা ॥
প্রমেহান্ বিংশতিং হক্তি কাসান্ খাসান্ স্লায়ণান্।
শুক্রেরেং রজাদোবং রেবাং ক্রদরবেপনম্॥

চুম্বককে অগ্রে বকপত্তের রদে ভাবনা দিয়া পরে ত্রিফলার কাথে দোলাযম্ম বিধিপূর্বক পাক করিবে। তদনস্তর গোমূত্র বং
ত্রিফলার কাথের সহিত মিলিত করিয়া ৭ সাত্র
বার পটুপাক করিবে। ইহাতে চুম্বক
হইবে। এইরূপে শোধিত ও মৃত চুম্বক বল
ও পৃষ্টিকারক, বীধ্যবর্জক, জরম্ম, রক্তজনক
এবং ইহা রক্তপিত্ত, ক্ষম, বিংশতি প্রকাব মহে,
স্থারক্ত কাস ও শ্বাস, শুক্তদোৰ, রজোণোষ,
ক্রৈব্য ও হংকম্প নিবারক।

অথ স্ফটিকশোধনবিধিঃ।

ক্ষটিকা নিৰ্মালা খেডা শ্ৰেষ্ঠা স্থাচেছাখনং কচিৎ। ন দৃষ্টং শাস্ত্ৰতো লোকা বচ্চাবুৎকুলম্বন্ধি হি॥ নির্মাল ও শ্বেতবর্ণ ফট্কিরি শ্রেষ্ঠ; ইহার শোধনবিধি শাস্ত্রে দৃষ্ট হয় না। কিন্তু লোকে ইহাকে অগ্নিতে শুটিত কবিয়া বাবহাব করে।

অথ শঙ্কাশোধনবিধিঃ।

ভাষে: সকাঞ্জিকঃ শংখা দোলাবিনঃ স্বভাগতি। অস্ত্রবর্গ ও কাজি। দিয়া দোলাযথে স্বিন্ন কবিয়া লইলে শুভা বিশুদ্ধ।ইয়া।

ত্মথ মোক্তিকশুক্তের্জনশুক্তেশ্চ শোধনবিধিঃ।

শোধনং শখাবৎ ক্রস্তা মৃতিঃ প্রোক্তা কপর্দ্ধবৎ । মৌক্তিক-শুক্তি ও জল-শুক্তির শোধন শঙ্খের স্তায় এবং মারণ কপর্দ্ধকের স্তায় জানিবে।

অথ সমুদ্রফেনশুদ্ধিঃ।

সমুজফেন: সংপিটো নিমুতোরেন গুণাতি ।

সমুজফেন কাগ্জি লেবুব বসের সহিত
পেথা করিয়া লইলে বিশোধিত হয়।

অথ খটিকা।

খটকা দ্বিবিধা জ্ঞেরা খেতা চ মলিনা ভূখা। মুছুপারাণসদৃশী খটা শুভাধিকা মতা॥

খড়ি ছই প্রকার; এক প্রকার খেত ও অপর প্রকার মলিন। খেত খড়ি মৃত্পাধাণ-সদৃশী ও উৎকৃষ্ঠা।

অথ গৈরিক-শোধনবিধিঃ।

গৈরিকন্ত গবাং ছুকৈর্ঘবিতং গুঙ্কিস্চছতি। অথবা কিঞ্চিলাজ্যেন ভৃষ্টং গুদ্ধং প্রজায়তে। গবাজুগ্ধে ঘর্ষণ করিলে অথবা গব্য ঘতে ভাজিয়া লইলে গৈরিক বিশোধিত হয়।

অথ কাদীস-শোধনবিধিঃ।

সকদভূদ্ধ'দুণা সিদ্ধং কাসীসং নিশ্বলং ভবেং ॥ ভূচ্মরাজনসে একবার সিদ্ধ করিলে হিরাকস বিশোদিত হয়।

অথ গর্পর-শোধনবিধিঃ।

দোলাধ্যস্থহপি গোমূত্রে সপ্তাহং পর্পরং পচেৎ। তক্ত শ্বন্ধিভবেদেবং শুদ্ধং যোগের যোজ্যেৎ॥

দোলায়প্তে গোমূত্র সহ সাত দিন পাক করিলে ধর্পর বিশুদ্ধ হয়। এইরূপ বিশো-ধিত ধ্পরত মারণ্যোগ্য। (ধর্পব তুত্তির প্রকারভেদ্)।

অথ খপ্রমারণবিধিঃ।

পর্ণরং লোহপা ক্রন্থং চুল্লাং দক্ষা বিপাচয়েৎ ॥ গলিতে সৈন্ধবং চুর্বং দক্ষা দক্ষা বিমন্দরেৎ। ভূষঃ পলাশদণ্ডেন যাবদ্ভস্মীভবেৎ তু তৎ॥

লোহপাত্র কবিয়া চুনীর উপরে অন্ধ-জালে ঋপনি পাক করিবে। গলিয়া গেলে ক্রমে ক্রমে ভাহাতে দৈন্ধবচুণ প্রদান করিবে এবং ভন্মীভূত না হওয়া পর্যন্ত পলাশ-দণ্ড খারা উহা আলোড়িত করিবে। ইহাতে ঋপন ভন্ম হইবে। (বুন বেছাগণ ইহাতে ভূঁইকদম্বের রস্ব দিতে বলেন।)

অথ থপরিস্থাত্রপান্য ।

পুরাণগোত্ততে নেত্রাং তাম্বুলেন প্রমেহজিৎ। অগ্রিমস্থেনাগ্রিকরং ক্রিস্রগন্ধৈস্ত্রিদোষজিৎ॥

থর্পর প্রাতন স্থাতর পাহত সেবিত হইলে চকুর হিতকর, তাম্ব্লের সহিত প্রমেহ-নাশক, গণিয়ারির সহিত অগ্নিকর ও ত্রিস্থ-গদ্ধির (এলাইচ তেজপত্র ও দাক্ষ্চিনি) সহিত সেবিত হইলে ত্রিদোষনাশক হয়।

অথ কপৰ্দক-শোধনবিধিঃ।

বরাটা কাঞ্জিকে স্বিন্না যামাচ্ছুদ্ধিমবাপ্ন্নাৎ। কাঁজিতে এক প্রাহর সিদ্ধ করিলে কপর্দ্ধক (কডি) বিশোধিত হয়।

অথ কপৰ্দ্দক-মারণবিধিঃ।

অঙ্গারায়ে স্থিতা স্থাতা সমাক্ প্রোৎফুলিতা মণা। স্বাঙ্গশীতা মৃতা সা তু পিষ্টা সমাক্ প্রযোজ্ঞে ॥

অঙ্গারাগ্নিতে কপদ্দক দক্ষ করিলে যথন তাথ। পুড়িয়া গৈয়ের মত ইইবে, তথন জানিবে উহা জারিত হইরাছে। ঐ জারিত কপদ্দক শীতল হইলে সম্যক্ প্রকাবে পেষণ করিরা উব্দার্থ প্রয়োগ কবিবে।

ष्यं कङ्ग्रष्टे-(भाषनिविधः।

কমুঠং কাজিকে সিলং সমোজ্জিনগাল্পাং । কাজিতে এক গ্ৰহণ সিদ্ধ কারিলৈ কমুক্ত বিশোধিত হয়।

অথ সোরাষ্ট্রী-শোধনবিধিঃ।

যবিতা গণ্যত্থেন শৌরাষ্ট্রী গুদ্ধিমাপুরাও।
গব্য ত্থ্যে পেষণ করিয়া লইলে সৌরাষ্ট্রী
মৃত্তিকা শৌবিত হয়।

অথ সর্ব্বরত্বানাং শোধনবিধিঃ।

গুধাতামেন মাণিকাং জয়স্কা মৌজিকং তথা।
বিদ্রমং কারবর্গেণ তাক্ষাং গোছন্ধকঃ গুচি।
পূস্পরাগং সৈন্ধবে চ কুলথকাথসংযুতে।
তপুলীয়ন্ধলে বজ্ঞং নীলং নীলীরসেন চ।
রোচনান্তিক গোমেদং বৈদুর্যাং ক্রিফলার্কবেঃ।
এঙাক্ষেতেযু সংস্থিয়াগুণ্ড গুধান্তি দোলয়া।

অমানদে মাণিক্য (পদ্মরাজ), জয়ন্তীর রদে মৌক্তিক, ক্ষীরবর্গে প্রবাল, গোছ্যে গারুত্বত, দৈদ্ধববুজ কুলখকাণে পুষ্পরাগ, নটেশাকের রদে হীরক, নীলের রদে নীল- কান্তমণি, গোরোচনার বলে গোমেদ, ত্রিফ-লার কাথে বৈদ্র্য্যানি, দোলাযন্ত্রে স্বিল্ল করিয়া লইলে এই সকল রত্ন আগু বিশোধিত হর।

অথ রত্মারণবিধিঃ।

কুলথক্সবসংপিষ্টেঃ শিলাতালকগন্ধকৈঃ। বজ্ঞং বিনাশুরত্নানি শ্রিয়স্তে২স্টপুটেঃ থলু ॥

মনঃশিলা, হরিতাল ও গন্ধক ইহাদিগকে কুলথকাথে পেহণ করিয়া তদ্ধারা হীরক ভিন্ন অস্তান্ত রত্নকে আটবার পুটপাক দিলে নিশ্চয়ই জারিত হয়।

অথ হারব স্থাবিশেষশোপনবিধিঃ।

বুলগকৈ জবকাৰে কোলায়প্তে বিপাচয়েই। বাজীকক্ষতেই বজহ জিদিনই ভূমিক্তৰাতি॥

হীরককে কণ্টকারীমূলের অন্তনিহিত করিয়া কুলখ কলাই ও কোদোধান্তেব কাথে দোলা-যথ্রে তিনদিন পাক করিলে উহা বিশোধিত হয়।

অথ হীরকমারণবিধিঃ।

হিঙ্গুদৈদ্ধনসংযুক্তে কাণে কৌলখনে ক্ষিপেং। তপ্ততপ্তং পুনৰ্বজ্ঞং ভনেদ্ ভন্ম তিনপ্তধা॥

হিন্ধু ও সৈদ্ধব সংযুক্ত কুলখকলায়ের কাথ একটা পাত্রে রাখিবে, এবং হীরক অগ্নিতে পোড়াইয়া তপ্ত থাকিতে থাকিতে উক্ত কাথে নিক্ষেপ করিবে। এইরপ একুশবার করিলেই হীরক জারিত হইবে।

অথ শেষরক্লানাং সাধারণ-শোধন-মারণবিধিঃ।

স্বেদয়েন্দে।লিকায**ে জ**য়ন্তা; স্বর্গেন চ। নশিমুক্তাপ্রবালানি যামৈকং শোধনং ভবেৎ॥ কুমার্ব্যা তঙুলীরেন স্বস্তেন চ নিষেচরেৎ। প্রত্যেকং সপ্তবেলঞ্চ তপ্ততপ্তানি কুৎস্রশ:॥ মৌজিকানি প্রবালানি তথা রত্বাস্তশেষতঃ। কুণাদ্ বিবিধধর্ণানি প্রিয়ন্তে নাত্র সংশয়:॥

হীরক ভিন্ন অক্সান্ত রত্নের শোধন ও মার-ণের সাধারণ নিয়ম এই—দোলাযন্ত্রে জন্মন্তী পত্রের রসে এক প্রহর পাক করিয়া লইলে মণি মুক্তা প্রবালাদি রক্ত সকল বিশোধিত হয়। এই-রূপে শোধনানস্তর তাহাদিগকে অন্নিতে পোড়া-ইয়া তপ্ত তপ্ত মৃতকুমারীর রসে, নটে শাকের রসে ও স্তন্ত্রের যথাক্রমে ৭ বার করিয়া নিষিক্ত করিলে জারিত হয়।

অথোপরক্রানি।

বৈক্ষান্তং পেন্ধোজাপ্যক কাচঃ ক্ষটিকমেন চ। নীলপীতাদিমপ্রোগ্প্যক্তে বিষহরা হি যে। বহ্যাদিস্তস্কনা যে চ তে সর্কোহপি পরাক্ষকৈঃ। উপরম্বেদু গণিতা মণ্যো লোক্ষিঞ্জাঃ।

বৈক্রান্ত, পেরোজ, কাচ, ক্ষটিক ও নীল পীতাদি বর্ণের কোন কোন মলি এবং যাহারা বিষহর, যাহারা জন্মাদির স্তন্তকারক, সেই সকল লোকবিণান্ত মণিকে ব্যাপরীক্ষকেরা উপরত্ন মধ্যে গণনা করিয়া গাকেন।

অথোপরত্নানাং সাধারণ-শোধন মারণবিধিঃ।

রত্বনজোগরতানি শোধকেরারছেৎ তথা।
উপরত্বের সাধারণ শোধন ও মারণ রত্বের ভার জানিবে।

অথ বৈক্রান্তস্থ্য বিশেষশোধনং মারণঞ্চ i

নেজান্ত নজনচ্চোনাং মারণাশ্ব বস্ত তথ । ব্যন্তেশ বথ সেচাং তপ্তং তিপ্তবা । ব্যক্তিশ বথ সেচাং তপ্তং তিপ্তবা । বঙ্গা নুষাপুটে পাচানুষ্ঠ চিপ্তবৈং পুনং ॥ লিপ্তবা ক্ষা পুটে পাচাং সম্প্রা ভন্মতাং নগেও। ভন্মত্তক বৈক্রান্তং বক্সস্থানে নিযোক্তাং । (বৈক্রান্তশোধনমারণাদিকমাহ-বৈক্রান্তমিতি। বৈক্রান্তং দক্ষহীরকং, তদ্বক্রবচ্ছোধনীরং মারণীরক। মতান্তরে তু একবিংশতিবারং খাতং তদ্ হয়মূত্রেণ সেচরেৎ, ততঃ উত্তরবারুণা। মূলপত্রকলপুন্দাবক্রলরপং পঞ্চার্কং নিশিষ্য গোলকং কৃষা তক্ষধ্যে তৎ সংস্কৃত্বং বৈক্রান্তং নিধায় ম্বাপুটে পচেৎ। এবং বারং বারং কুর্যাৎ, বাবদ্ ভক্ষতাং বাতি)।

বৈক্রান্তের (দগ্ধ হীরকের) শোধন ও মারণ হীরকের স্থায় জানিবে। মহাস্তরে—বৈক্রা-স্তকে একুশবার পোড়াইবে এবং প্রত্যেক বার অব্যযুত্রে নিষিক্ত করিবে। অনস্তর রাখাল-শশার মূল পত্র পূষ্প ফল ও বন্ধল এই পঞ্চাঙ্গকে পেষণ করিয়া পিণ্ডাকার করিবে এবং পিণ্ড-মধ্যে ঐ শোধিত বৈক্রাস্ত নিহিত্য করিয়া মুষা-পুটে পাক করিবে। যে পর্যান্ত না ভন্মীভূত হয়, সে পর্যান্ত বার বার এই প্রণালীতে পাক

অথ বিষ্ণোধনবিধিঃ ৷

কৃষা চণকসংস্থানং গোনুৱেভাবয়েৎ আহম।
অথবা বৈক্ষলে কাথে বিষং প্লাভি পাচিত্যু।
দোলায়াং ক্রিকলাকাথে ড্যান্ট্রেড পাচিত্যু।
দোনুৱেপূর্বপাতে চ দোলায়ন্তে বিষং পচেছ।
দশতোলকমানেন চালো বেজ্যো দিবানিশ্যু।
বিষভাপাংশুলকবং স্থলানু কৃষ্যা তু ভাজনে।
তিত্র গোনুৱকং দর। প্রতাহং নিতানুত্নমু।
দোহায়ং ক্রিনিয়া দুং ধুষা তীরাভপো ভতঃ।
প্রয়োগ্যু প্রযুগ্যত ভাগমানেন ভিষ্যু।

বিষকে চণকের স্থায় খণ্ড খণ্ড করিরা গোমুত্রে অথবা ত্রিফলার কাথে তিন দিন ভাবনা দিলে বিশোধিত হয়। কিংবা দশ তোলক পনিমিত বিষ ত্রিফলার কাথে বা ছাগাছয়ে বা গোমুত্রে দোলায়নে এক দিন পাক করিয়া লইলেও বিশোধিত হয়। অথবা বিষকে চণকের স্থায় খণ্ড গণ্ড করিরা মুৎপাত্রে তিনদিন গোমুত্র ভিঙ্কাইরা রাখিবে, কিন্তু প্রতিদিন নূতন নূতন গোমুত্র দিতে হইবে। তিন দিনের পর উহা উদ্ধৃত করিয়া প্রচণ্ড রৌদ্রভাগে শুষ্ক করিয়া লইবে, এই রূপে শোধিত বিষ উপযুক্ত পরিমাণে প্রযোজ্য।

অথ তেষাং মারণবিধিঃ।

সমটঙ্কণসংপিষ্টং মৃতনিজুচাওে বিষম্ ।

সমপরিমিত সোহাগার সহিত পিষ্ট উক্ত বিষকে জারিত বিষ বলে।

প্রদঙ্গাৎ কুষ্ণদর্পবিষ-শোধনম্।

বিবেৰু জন্সমাধ্যের আহং নাগোন্তবং বিষম্।
হতি চৈব মহাশ্রেষ্ঠং ত্রিদোষক্ষপশং ক্রমাৎ ।
দীপনং কুনতে সন্তো বাড়বাগ্নিসমোপমম্।
সন্নিপাতপ্রতীকার-প্রভাবপ্রভুক্ততে ।
নাগোন্তবং যথাপ্রাপ্রং বিষং গোম্ত্রসংযুত্ম্।
ভাতপে ত্রিদিনং শুক্ষং নিহিতং বাধ্যধুগ্ ভবেং ।

জঙ্গন বিষের মধ্যে রুফসর্পোন্তব বিষ্ট গ্রাহ্য। এই বিদ ত্রিদোষনাশক, অগ্নির দীপ্তিকণ ও সল্লিপাতবিনাশক। ক্রফসপ্রবিধ গোমুত্রে সংস্কৃত করত তিনদিন রোজে শুক্ষ ক্রিয়া গ্রহলে বিশুদ্ধ ও বীধ্যকর হয়।

মতাস্তরম্--

থুনো বলবং ঠা গ্রাহ্ণ কুক্তসর্পান্ বিষং নবস্ ।
ততঃ সাৰপগৈতেনে সংগ্লুতং পরিশোবরেৎ ।
পর্ণতোরেমু নিতরোজ্ঞলনীপত্রজৈ রনৈঃ ।
কাবেনাপি চ কুঠক্ত ভাবরেৎ তৎ তিধা তিধা ।
তদেব সর্কাশ যোজ্যং নাবিজ্জং কদাচন ।
বিষমপাস্থতকৈবং মৃতসঞ্জীবনং পরস্ ।

বুবা ও বলবান্ ক্লফদর্পের নৃতন বিষ গ্রহণ করিতে হয়। অর্থাৎ ধাহার বিষ এক বার গৃহীত (ভাঙ্গা) হইয়াছে, পুনর্বার গাহার বিষ লইবে না। সর্পবিষকে প্রথমতঃ সার্বপতিলে আপ্লুত করত শুক্ষ করিয়া লইবে। তংপরে পানের রসে, বকরক্ষের ছালের বা পত্রের রসে, তুলসী পত্রের রসে ও কুড়ের কাথে যথাক্রমে ওতিন বার করিয়া ভাবনা

দিলে উহা বিশুদ্ধ হইবে। এইরপে বিশোধিত বিষই সর্বাথা প্রযোজ্য। অবিশুদ্ধ বিষ কদাচ ব্যবহার্য্য নহে। বিষম্ব থাকিলেও শোধিত বিষ অমৃতস্বরূপ এবং সন্নিপাতাদি জ্বরে মৃত-কল্প ব্যক্তিও ইহা শ্বারা জীবিত হইরা থাকে।

অথে পিবিষাণাং শোধন বিধিঃ।
পঞ্চাবের গুদ্ধানি দেয়ান্ত্রগবিষাণি চ।
উপবিষ সকল পঞ্চাব্য স্থানা শোধন করিয়া
প্রয়োগ করিবে।

অথ জৈপালাদীনাং:কতিপয়ানাং

বিশেষশোধনম্

देनपोनः निख्यः कृषा ५८% मोनागुरः १८६९ । व्यक्तिस्टाः पत्रिज्ञाना गुक्षाकः तमकन्त्रानि ॥

তুষরহিত জয়পাল বিধা বিভক্ত করিয়া তদন্তর্গত জিহ্বাসদৃশ পাত্লা পতা বাহির করিয়া ফেলিবে এবং দোলায়য়ে গোত্থা সহ পাক করিয়া লইবে। ইহাতে জয়পাল বিশোধিত হয়।

অথ লাঙ্গলী-শুদ্ধিঃ।
লাঙ্গলিমায়াতি দিনং গোমুলভাবিতা।
একদিন গোমুত্রে ভাবনা দিলে লাঙ্গলী
বিশোধিত হয়।

অথ ধুস্তুর-শোধন[ি]ববিঃ।

ধৃত্ববীজং গোম্ত্রে চতুর্গামোবিতং পুনঃ। গণ্ডিতং নিজ্বং কৃষা বোগেরু বিনিবোজয়েৎ ॥

ধুতুরার বাঞ্জকে নিস্তম ও খণ্ডিত করিয়া চারিপ্রহর গোমূতে ভিজাইয়া রাখিলে বিশোধিত হয়।

অথাহিফেন-শোধনবিধিঃ।

অহিফেনং শৃঙ্গবের-রসৈতাবাং নিসপ্তধা। শুদ্ধং যুক্তেযু যোগেযু যোজয়েৎ ত্রিধানতঃ 🏽

আদার রসে একুশবার ভাবনা দিলে অহিফেন শোধিত হয়, এইক্লপে শোধিত অহিফেন মগাবিধি প্রয়োপ করিবে।

অথ মাতৃলানী-শোধনবিধিঃ।

বপ_্নতক্ষায়েণ ভঙ্গাং সংশ্বেত্য শোষয়েং। গোচুগৈভাবনাং দ্বা শুদ্ধাং সর্বাক্ত যোজয়েৎ ।

বাব্লার কাপে মাতৃলানী (দিদ্ধিকে)
বিল্লাও শুদ্ধ করিবে। তদনন্তব গোজ্থে ভাবনা
দিল্লা শুদ্ধ কিলা লাইলোই উহা বিশোবত হয়।
বিশোধিত বিজয়া উষ্ধার্থ প্রোজ্য।

অথ বিষমৃষ্টি-শোধনবিধিঃ।

কিকিলজোন সংভ্ঠো বিষয়্টবিভ্যাতি॥ কিঞ্জিৎ অত ছার। ভাজিরা লইলে কুঁচিলা বিশোধিত হয়।

অথ দারুম্যাদীনাং শোধনবিধিঃ।

দাক্ষুমারজশঝাদীনাং শোধনং হরিতালজেব জেয়ন্।

দাক্ষুজ ও লাল দাক্ষুজ প্রভৃতিব শোধন
হবিতালের ভায় জানিবে।

অথ গোদন্ত-শোধনবিধিঃ।

গোদন্তং তমনো যথে গোমরোপরি সংস্থিতে।
নাগবলীদলে ক্ষিপ্ত1 পচেদ্ যাসচতুষ্টয়ম্ ॥
তথ্যেন বিধিনা চূর্ণং সৃহীতা পরিশোধিতম্।
মন্দেহগ্রাবতিসারে চ জ্বে জীর্ণে বলক্ষয়ে ॥
কুঠেষু কফরোগেষু শীনদেহপি চ বৃদ্ধিষু।
যথাবাধানুপানেন মাত্রয়া চ প্রজেয়ে ॥

ডমরুমন্ত্র কিছু গোময় ও ঐ গোময়োপরি একটি পান গ্রন্থিয়া, ভতুপরি গোদস্কস্থাপন পূর্বকৈ ৪ প্রাহর পাক কবিবে। এই প্রকারে বিশোধিত গোদন্ত-চুর্ণ উপষ্ক্ত অন্নপানের সহিত সেবিত হইলে অগ্নিমান্দা, অতিসার, জীর্ণজ্ব, দৌর্কালা, কুণ্ঠ, ককরোগা, পীনস ও বৃদ্ধিবোগ নিবাধিত হয়।

অথ ভল্লাতকস্ম শোধনবিধিঃ।

ভন্নাতকানি প্রকানি সমানীয় ক্লিপেজ্জনে। মক্জন্তি বানি ভত্তৈব শুদ্ধার্থং তানি বোজমেৎ। হস্তকাচুর্ণনিকরের্যব্ণান্তির্বিধং ভবেং।

পক ভ্রাতকের ফল সকল জলে নিক্ষেপ করিলে যে গুলি ডুবিয়া ধাইবে, সেই গুলিই শোধনযোগ্য। ইংকড়র্ল ছালা ভাইাদিগকে ঘর্ম কবিনে ভাহালা নিস্কিষ্ট হট্যা বিশুর হট্যে।

অব্যক্তেরাং বাজানাং সাধারণ-শোপনবিধিঃ।

বীজ্বালে সমাদায় রৌজ্বজে বিশেষ্ট্রেই। প্রবংসক্ষরপুর্জেন দ্বেগ যত্নতঃ কুরীঃ। অপামার্গক্ত বা ভোষেবার্কিক্য-বীজ্যোধনম্॥ মৃতীস্ক্রমা।

হৃদ্ধদারকবীজন্ত পদং দোলাকুত পচে ।

হৃদ্ধপূর্ণেদু পাবেষু তকঃ শুদ্যতি নিশ্চিত্রম্ ॥
এপামার্গকষায়েন নিস্থানীজং নিশোধরেছে ।

শিশু কার্পাসবীজানি চাপামার্গক্ত বীজকম ॥
ঘর্মেন শোধনং তেবাং ন দক্তাং সেন্ধবং ততঃ ।

শিক্তা কোষাতকা দক্তা পটোলী চেন্দ্রবাঞ্জী ॥
কটুতুথী দেবদালা কাকতুণ্ডা চ শুদ্যতি ।
ধান্ত্রাফলরসেনের মহাকালক্ত শোধনম্ ॥
করঞ্জযুগ্রায়েনিজং ভূক্ষরাজেন শোধরেছ ।
গুঞ্জাদিসব্ববীজানাং নর্যুক্তির পটুং বিনা ॥

বিদ্ধড়কের বীজ ঈষৎ সৈশ্ববৰুক্ত জলে অথবা অপানার্গের কাথে সিক্ত করিয়া রৌজে শুক কাররা লইলে বিশোধিত হয়। অথবা হগ্ধপূর্ণপাতে দোলায়য়ে পাক করিয়া বিশ্ব-ড়কবীজ শোধিত কবিবে। লেবুব বীজ, সজিনাবীজ, কার্গাদবীজ ও অপামার্গবীজ

অপামার্গের ক্লাথে ভিজাইয়া রোদ্রে শুক করিয়া লইলে বিশুদ্ধ হয়। কিন্তু ইহাতে লবণ দিতে হইবে না। কটকী, খেত ঘোষা-বাজ, দন্তীবীজ, বিঙ্গাবীজ, ব্ৰা বাজ, তিৎ লাউবাজ, ঘোষাবীজ, কাকঠ টাবাজ ও মাকালফল, ইহানা আমলকাৰ রুদে এবং নাটা কর্থবাজ, 51-1-ভহরকরপ্পরীজ ও বাজের রুসে শোবিত হুইয়া থাকে। 'হাবে গুঞ্জাদি সর্মপ্রকার বীজকে কেবল নরমূত্র দ্বারা শোধন করিতে হয়; গ্রণ দিতে হয় না।

অথ গুগুগুলু-শোধনবিধিঃ।

কাথে হি দশমূলক্স চোকে প্রক্রিপা গুগ্গুনুম। আলোড়া বস্ত্পুতং তং চগু চপ্রিশোমিতম। ঘুতাক্তং পি,ভিতং কুমাক্ষিমায়াতি গুগ্গুলুঃ॥

অগ্রচ্চ---

অমৃতারাঃ ক্যারেণ শোধয়িরাথ গুণ্ডুলুন্। গুরীয়াদাতপে গুঞ্চ তথাবকরবজ্জিতম।

অগ্রজ--

ছুগ্ধে বা ত্রিফলাকানে দোলাযন্ত্রবিপাচিতঃ। বাসদা গালিতো গাঞা সব্যক্তমন্ত্র গুগগুলু ॥

গুন্তলুর কেশ ও মলাদি বিক্ষেপপূর্বক উহাকে উন্ধ দশমূলের কাপে নিাক্ষপ্ত ও লালোড়িত করিয়া বন্ধে টাকিয়া প্রচণ্ড । ফুর্যা-ভাপে শুকাইয়া- ঘুভাক্ত করিয়া পিণ্ডাক্কতি করিবে। ইহাতে গুন্তলু বিশোধিত হয়। অথবা গুল্পকাথে নিষিক্ত করিয়া সুর্যাভাপে শুক্ত করিয়া লইলেও ইথা শুদ্ধ হয়। কিংবা গুন্তলুকে গোছুদ্ধে বা ত্রিফ্লা-কাথে দোলা-মঙ্গে পাক করিয়া বন্ধ দারা ছাকিয়া লইলেও শোধিত হইয়া থাকে।

অথ নথা-শোধনবিধিঃ।

চণ্ডীগোমন্নতোরেন যদি বা ঠিস্তিড়ীজলৈ:। নথং সংকাপয়েদেভিয়লাভে মূন্ময়েন ডু॥ পুনরদ্ভ্য প্রকাল্য ভর্জয়িদা নিষেচয়েং। গুড়পণ্যাপুনা ছেবং গুণাতে নাত্র সংশয়ং॥

(চণ্ডী মহিষী। উল্লং হি—মহিষা সোচাতে চণ্ডী সৌবজী চ নিগন্ততে হ'ত। জন্তা গোমাং নলমিতার্থ:। কিন্তু গোমরেনাপ্যুংখেদ উক্তঃ, নগাহ—গোবিট্কাঞ্জিক-চিক্কিলাপুথেমিটি। তিন্তিড়ীজনৈরিতি ভিন্তিড়ীকল-দলিলৈরিতার্থ:। অলাভে মুম্মরেনেতি কুলমুন্তিকা-মিশ্রিক্তলেনেতার্থ:।)

মহিষেব পুরীষ-নিঃস্থত রদে বা কাচা তেঁ গুলের রদে অথবা কৃষ্ণ-মৃত্তিকাজলে কিংবা গোনয়-রদে নথী সিদ্ধ করণানস্তব ভাজিয়া গুড় ও হরী ত্রকীব জলে ভিজাইয়া লইলেই ইহা বিশুক হয়।

অথ হিঙ্গ-শোধনবিধিঃ।

থকারছে লৌহপাতে সমূতে রামঠং কিপেং। চালবেং কিঞ্চিদারক্ত-বর্ণং বোগেষু বোজরেং॥

প্রদীপ্ত অঙ্গাবের উপর লৌহপাত্র স্থাপন কবিষা তাহাতে কিঞ্চিং ন্বত দিয়া হিন্দু ভাজিয়া লইবে। নাড়িতে নাড়িতে যথন ঈষং রক্তবর্ণ হইবে, তথনই নামাইতে হইবে। এইরূপে শোবিত হিন্দু ঔষবার্থ প্রযোজ্য।

অথ নরসার-শোধনবিধিঃ।

নরসারো ভবেচ্ছুদ্ধন্ট,র্ভায়ে বিপাচিঙঃ। দোলায়ন্ত্রেণ যত্ত্বেন ভিষ্ণ,ভিযোগসিদ্ধয়ে।

চুণের জলে দোলাযন্তে নিশাদলকে পাক করিয়া লইলে উহা বিশোধিত হয়।

অগ্রচ্চ---

নরদারং বিনিক্ষিপ্য ভোয়েংত্যুক্ষে বিমন্দ্য চ। পৃথুনা বাদদা চাপ আব্য়েদ্থিলং জলম্ ॥ শীতীভূতে জলে তম্মিন্ পৃহামাৎ তমধোগতম্। এবং বিশোধিতং সর্ব্ধ-কাথ্যেমু:পরিযোজয়েৎ ॥

নিশাদল অভ্যুক্তজ্বলে মর্দ্দন করিয়া মোটা কাপড় দারা ছাঁকিয়া ঐ জল কোন পাত্রে রাখিবে। জল শীতল ২ইলে দেখিবে, উহার তলায় নিশাদল দানা রূপে সংযত হইয়া সঞ্চিত হইয়াছে। এইরূপে বিশোধিত নিশা-দলই সর্বাবর্ধি প্রযোজ্য।

অথ রসাঞ্জনশোধনবিধিঃ।

তোয়েংডুাঞে পরিক্ষিপা জবীকুয়াদ্ রসাঞ্জনম্। বাসসা প্রাবিদ্বিথা শোষয়েদ্ ভান্ধরন্মিনা। এবং নিশোধিতং সর্ক্য-কাষ্যেদ্ পরিযোজয়েছ। বিশুদ্ধং নাশয়েদ ব্যাধীন নাবিশুদ্ধং কদাচন।

অত্যুক্ত জলে রসাঞ্চন দ্রব করিয়া বস্ত্রে চাকিয়া রৌদ্রে শুদ্ধ কবিবে। ইহাতে রসা-ঞ্জন বিশুদ্ধ হয়। বিশুদ্ধ রসাঞ্জনই ঔষধার্থ ব্যবহার্যা।

অথ য :কারঃ

ববশৃকভাদে ক্ষারে কিন্তু। প্রস্থোবিতে জলম্। জোগমানমগান্তত্তৎ সকারং পৃথুবাসসা॥ ত্রি:সপ্তকৃত্তো বিস্তাব্য পচেৎ তীত্রেণ বছিনা। নিশেষে সলিলে ভশ্মিন বৰকারে!হবশিব্যতে॥

গবেন শুক (শ্রা) দগ্ধ করিরা তাহার /২ সের পরিমিত ভন্ম লইয়া ৬৪ সের জলে গুলিবে এবং একথানি মোটা কাপড় ছাবা ক্র ভাল একুশবাব ছাকিয়া লইয়া কোন পাত্রে তীব্র আগতে পাক করিবে। জল নিঃশেষ ছইলে পাকপাত্রে যবক্ষার অবশিষ্ট থাকিবে।

মতাস্থরম্।

গলাতীরমূদং বিলোডাসলিলে সংস্রাব্য বস্ত্রেণ চ তোমেহিন্মংস্থারাশিজমনিধিলং নিক্ষিপ্য তৎ তাপমেৎ। ভূমোহিন্মন্ পরিগালিতে চ বিধিনা গাটাকৃতে বহিনা বাবকারকণাঃ পরস্পরমূতা জায়ন্ত ইত্যভূত্য ॥ অক্তমা অপি মৃত্তিকাঃ সলবণা ভূমেবিগৃঞাস্থনা সংলোড্যোন্ডিদজমভিঃ পরিপচেদ্ বিস্থাব্য মন্থাৎ ততঃ। এতেনাপি চ লভাতে স্থবিমলঃ প্রাথদ্ ব্যক্ষারক-তঃ সংশোধ্য বিধানতো বিমলধীযোগেরু দ্ভাদ্ ভিষক্॥

গলাতীরের কিংবা অন্তস্থানের লবণাক্ত মৃত্তিকা জলে গুলিয়া তাহার সহিত তৃণ জ্বখবা অন্ত কোন উদ্ভিদ্-ভন্ম মিশাইয়া একত্ত পাক করিবে। কিয়ৎক্ষণ পাকের পর তাহা হাঁকিয়া পুনর্বার তাঁত্র অগ্নিতে পাক করিবে, এইরূপ প্রক্রিয়া স্বারা জল নিংশেষ হইলে যবক্ষারের কণা সকল নিমে সঞ্চিত হইবে। কেহ কেই ইছাকে সোৱা বলিয়া থাকেন।

অথাস্ত শোধনবিধিঃ।

অত্যক্তসলিলে কারং প্রবীক্ষাদ্ বিমর্জ্য তথ্।
শীতীভূতে জলে তামন্ গৃষ্টীয়াৎ তমধোগতন্।
এবং সংশোধিতঃ কারঃ শীতলো অর্বেণজং।
উপস্থিকমেংই চ খাসকুদ্রেই ফ্লাক্ষণে।
মহরিকায়াং রোমান্তি-অরে শোপে ক্রতেইস্কি।
আমনতে চ পিতালো ক্রন্তেইনিধপি শহাতে।

অভ্যক্ষ জল সহ উক্ত যবক্ষার মদন করিয়া তাহাকে জবীভূত করিবে। পরে জল শীতল হইলে তাহার নিমসন্ধিত যবক্ষার গ্রহণ করিবে। যবক্ষার শীতবীর্য্য ও জরবেগনাশক। ইহা ঔপসর্গিক মেহ, শ্বাসক্ষন্ত্র, মস্থরিকা, রোমান্তীজ্বর (হাম্ জ্বর), শোথ, রক্তপ্রাব, আমবাত রক্তপিত্ত ও মৃত্রক্ষন্ত্র প্রাচাত বিবিদ রোগ নিবারণ করিয়া থাকে।

অথ পুটপাকবিধিঃ।

মহাপুটম্।

গন্ধীরে বিস্থতে কুণ্ডে **বিহুত্তে চতুরত্রকে।**বনে!পলসহক্ষেণ পুরিতে পুটমৌষধম্।
কোঠে রুদ্ধং প্রয়ত্তন গোবিঠোপরি ধাররেং।
বনোপলসহত্রাধ্বং কোঠিকোপরি নিক্ষণেং॥
গাহ্নং বিনিক্ষণেং তার মহাপুটমিতি স্মৃতম্॥

সংপ্রতি বাছাদিব মারণোপ্যোগী পুট্রের কাওত ইইতেছে।

দৈর্ঘ্য, প্রস্থ ও গভীরতা সকল দিকেই ছুইহন্ত পরিমিত একটি চতুকোণ গর্ত্ত কাটিয় তন্মধ্যে ১০০০ থানি বিলঘুটে রাথিয়া সেই ঘুঁটের উপর পুটনৌষধগর্ভ মুধা স্থাপন করিয়া তত্পরি আর ৫০০ ধানি বিল্পুটে চাপা দিয়া অগ্নি প্রদান করিবে। গর্ত্তস্থ সমূদ্র পুটে ষথন পুড়িয়া ভন্মীভূত হইবে, তথন উহা হইতে মুষা বাহির করিয়া লইবে। এইরূপ পুটকেই মহাপুট কহে।

গজপুটম্।

সপাদহন্তমানেন কুণ্ডে নিমে তথায়তে।
বনোপলসহ্যেণ পূর্ণে মধ্যে বিধারয়েৎ ॥
পূটনজ্বাসংগ্রুণাং কোন্তিকাং মুজিতাং মুখে।
অধাহর্জানি করন্ডানি অর্জান্মগরি নিক্ষিপেৎ ॥
এতদ্ গজপুটং প্রোক্তং খ্যাতং সর্বপুটোত্তমম্।
সাধারণনরাঞ্জানা জিংশদক্রনকো গজঃ ॥

দৈর্ঘ্য, প্রস্থ ও গভীবতা সকল দিকেই ৩০ অঙ্গুলি পরিমিত (২৪ অঙ্গুলে এক হাত হয়। সপাদ হস্ত অর্থাৎ ত্রিশ অঙ্গুলি পরিমিত) একটি চতুক্ষোণ গর্ভ থনন করিয়া, তাহাতে ৫০০ থানি বিল্যুটে রাখিয়া সেই যুটের উপর পূর্কবিৎ পট্নোষধ-বিশিষ্ট মুধা স্থাপন করিয়া তত্ত্পরি আর ৫০০ থানি বিল্যুটে চাপা দিয়া অগ্নি প্রদান করিবে। যথন সমুগায় যুটে পুড়িয়া ছাই হইবে, তথন তাহা হইতে ওসধ বাহির করিয়া লইবে। এইরূপ প্রের নাম গজপুট। এস্থলে গজের পরিমাণে, প্রমাণ ব্যক্তির ৩০ মঙ্গুলের পরিমাণের সমান।

অগ্রচচ---

গজপ্রমাণগভীরং শুবিরং ক্রমণস্ততম্।
বিত্তিদ্বিত্তমুখ্য ত্রিবিত্তিতলং তথা ॥
এবং বিধায় বজেন বিশিরস্কর্ত্তরীরবং।
তক্ত পাদত্রয়ং সমাক্ প্র্রিখা বনোপলৈঃ ॥
ভৈষজ্য-কোন্তিকাং তত্র স্থাপন্তিমা ততঃ প্রাঃ।
বনোপলৈঃ সংবৃণ্যাদেতদ্ গজপুটং স্থৃতম্।
(অত্র পাদোনহত্তম্যমাণো গজঃ॥)

আর একপ্রকার গজপুট লিখিত হইতেছে। একগন্ধ অর্থাৎ ১৮০ হস্ত পরিমিত
গভীর এমন একটা গর্ত্ত করিবে, যেন তাহার
মুখভাগের ব্যাদ ২ বিত্তিত এবং ক্রমশঃ
বিস্তৃত হইয়া তল ভাগের ব্যাদ ৩ বিত্তি

হয়। অর্থাৎ একটা বাশের কোঁড়ের মন্তকটা কাটিয়া ফেলিলে বেরূপ হয়, এই গর্ত্তের আক্রতিও দেইরূপ হইবে। গর্ত্তের তিনভাগ বিল ঘূটে ধারা পূর্ণ করিয়া তাহাতে ঔষধগর্ভ মূখা স্থাপন করিবে। পরে তাহার উপরিভাগে পুনর্কার কতকগুলি বিলঘূঁটে চাপা দিয়া গর্ত্তের অবশিষ্ট সিকিভাগ পূর্ণ করিবে। তৎপরে উহাতে অগ্নিপ্রদান করিবে। এস্থলে ১৮০ পোণে তই হস্তে ১ গজ শ্বত হইরা থাকে। এইরূপ গঙ্গপুট্ই এতদেশে প্রচলিত।

বরাহপুটম্।

অরত্নিমাত্রকে কুণ্ডে পুটং বর্গ্রন্থচাতে॥

যে গর্ত্তো সকল দিকেরই পরিমাণ এক অর্ক্তিমাত্র (মুট্য হাত), সেই গর্ত্তে যে পুট দেওয়া যায়, তাহাকে বরাহপুট কহে।

কোকুটপুটম্।

বোড়শাঙ্গুলকে খাতে কণ্ঠাছিং কৌৰ্টং পুটম্।

শে গর্তের সকল দিকের পরিমাণই ১৬ অঙ্গুলি, তাহাতে যে পট্ দেওয়া যায়, তাহাকে কোক্টপুট্বলা থায়।

কপোতপুটম্।

খৎ পুটং দীয়তে খাতে ফ্টুসংপোর্বনোপলৈ:। কপোতপূটনেতৎ তু কথিতং পুটপন্তিতৈ:। (এতদেব লযুপুটনালা খ্যাতম্।)

গর্ত্তে ৮ থানি বিলঘুঁটে ধারা যে পুট প্রদান করা যায়, পণ্ডিতেরা তাহাকে কপোত-পুট কহেন। ইহাই লঘুপুট নামে খ্যাত।

গোবরপুটম্।

বৃহদ্ভাওস্থিতৈযন্ত্রে গোবরৈদীরতে পুটম্। তদ্ গোবরপুটং প্রোক্তং ভিষণ্ডিঃ স্তভন্সকৃৎ। গোষ্ঠান্তর্গোপুরক্ষং ওক্চ্ণিতগোময়য়।
গোবরং তৎ সমাধাতং ব্যিকং রসসাধনে ॥

একটি বৃহৎ হাড়ীর মধ্যে ঔষধযন্ত্র স্থাপন করিয়া গোবর ধারা পুট্প্রদান করিবে। ইহা-কেই গোবরপুট কহে। এই পুটে পারদ ভন্ম করা যায়। গোষ্ঠমধ্যক্ত যে সকল গোসন্ত্র গরুর পুরে কুটিত হন্ন, তাহা শুদ্ধ ও চুর্ণিত করিলেই তাহাকে গোবর কহা যান্ন। রস-সাধন বিষয়ে এই গোবরই বিশেষ উপ-ধোগী হইরা থাকে।

ভাগুপুটম্।

বৃহদ্ভাগেও তুবৈঃ পূর্বে মধ্যে ম্বাং বিধানরেং। কিন্তু;াগ্নিং মুক্তমেদ্ ভাওং তদ্ ভাওগুটুম্চ.তে ॥

তুষপূর্ণ একটা বৃহৎ হাড়ীতে মূখা স্থাপন ও অগ্নি প্রদান করিয়া হাড়ীটি মূদ্রিত করিবে। ইহাকেই ভাওপুট কহে।

ইতি পুটবিধি:।

অথ যন্ত্ৰবিধিঃ।

কবচীযন্ত্রন্।

নাতিহ্নস্থাং কাচকুপীং ন চাতিমহতাং দৃচ্যু । বাসসা কর্দ্দমাক্তেন পরিবৃত্য সমস্ততঃ ॥ সংলিপ্য মৃত্যুৎসাজিঃ শোষয়েদ ভাতুরখিনা । নিধার ভেষজং তত্তঃ মুধ্যাচ্ছাদয়েৎ ততঃ ॥ ক্রিক্তা দৃচ্যা বাপি পচেদ্ যক্তে বিধানতঃ । ক্রেটাযুদ্ধমতদ্ধি রুসাদিপচনে মত্ম ॥

নিভাস্ত ছোটও না হয়, অত্যপ্ত বড়ও না হয়, এইরূপ একটি মাঝারি শক্ত বোতলের সর্ব্বাবয়ব কর্দমাক্ত নেক্ড়া দাবা বেষ্টিত এবং কোমল মৃত্তিকা দারা পরিলিপ্ত করিয়া স্থা-তাপে শুক্ত করিবে। পরে ইহার অভ্যক্তরে ঔষধ্যেব্য নিহিত করিয়া বালুকাদি যন্ত্রে বণা-বিধানে পাক করিবে। আবশ্রক হইলে বোতলের মৃথ ধড়ী দারা ক্লক্ক করিবে। ইহার

নাম কবচীযন্ত্র। ইহা ধারা পারদাদির পাক-ক্রিয়া নিম্পাদিত হয়।

বালুকাযন্ত্রম্।

ভাতে বিভত্তিগন্ধীরে মধ্যে নিহিতকুপিকে। কুপিকাকপ্রপর্যান্তং বালুকাভিশ্চ পুরিতে॥ ভেষজং কুপিকাসংস্থং বহ্নিনা যত্ত পচাতে। বাযুকায়প্রেড্নির যন্ত্রং ভত্ত বুধৈঃ স্বৃত্তম্ ॥

এক বিভন্তি গভীর, এমন একটি হাড়ীর
মধ্যে ঔষণগর্ভ কৃপিকা স্থাপন করিরা সেই
হাড়ীতে বালুকা নিকেপ করিবে। যথন
বালুকা থাবা কৃপিকাম গলা পর্যান্ত পূর্ণ হইবে,
তথন এ হাড়ী চুল্লীর উপর ব্যাইরা নিমে
জ্বাল দিয়া ঔষণ পাক করিবে। ইহাবই নাম
বালুকাবল্ল।



ং(বালুকাযম্বের প্রতিরূপ।)

লবণযন্ত্রম।

অন্ত:কৃত্রসালেপাৎ তামপাত্রমুপ্ত চ।
লিপু মুল্লাপেনৈর সন্ধিং ভাবতলম্ভ চ॥
তন্তাব্ধং পট্নাপুষা কারিবনা পূর্ববৎ প্রচে।
এবং লব্ধবন্ধং ক্রাদ্ রসক্ষণি শহুতে॥
•

একটি তাত্র নিশ্মিত হাড়ীর স্বভাস্কঃ ভাগ পারদ ধারা প্রশিপ্ত করিবে। ঐ হাড়ীর মুখে সম্ম একটি হাড়ী স্থাপন করিয়া উভয়ের দদ্ধিস্থলে মৃত্তিকা ও লবণ বারা লেপ দিবে। পরে উপরিস্থ হাঁড়ি লবণ বা ক্ষার বারা পূরণ করিয়া জাল দিবে। ইহার নাম লবণযন্ত্র।



(লবণযক্তের প্রতিরূপ।)

দোলাযন্ত্রম।

ন্ত্রব্যাব ভাণ্ডস্ত পূর্য়িত্বার্ক্রনাত্রকন্। পুরেণ লম্বরেৎ কাষ্টে বন্ধা ভেষজপোট্রলীস্। খেনয়েচ্চান্তরগড়াং দোলাযম্ভান্য শুভস্।



(দোলাযমের গতিরুপ।)
দ্রবদ্বা দারা একটি হাড়ীর অর্নাংশ পূর্ণ
করিয়া গ্রাড়ীর মুখে একটি কাষ্টিকা রাখিবে।
পরে সেই কাষ্টিকায় বন্ধ একগাছি সত্তে পাচ্য

ঔষধ পোট্টলী বাদ্ধিরা হাঁড়ীর মধ্যে ঝুলাইরা রাখিবে। তদনস্তর ঐ হাঁড়ী চুন্নীর উপর বসাইরা নিমে জ্বাল দিবে। এইরূপ যক্তকে দোলাযন্ত্র কহে।

বি**ছাধরযন্ত্রম্**।

আধঃস্থাল্যাং রসং কিন্তু । নিদ্যাৎ তমুখোণরি।
স্থানীমূজ্যুণীং সন্যঙ্ নিরুধ্য মূজুধুৎময়।
উদ্বাল্যাং জলং ক্ষিপু । কুল্যানারোপ্য বছতঃ।
অধতাজ্ঞালয়েদহিং যাবং প্রহরপঞ্চম্।
সাক্ষীতং তথা যত্বাদ্গুলুয়ান্তমমূজ্যম্।
বিজ্ঞাধ্যাভিধং ব্রুমেতং তজ্ঞুক্তর্লাহতম্।



(বিস্তাধরষদ্রের প্রতিরূপ।)

একটা গড়ীর মধ্যে পারদ রাশিয়া ঐ হাড়ীন উপর অপর একটি হাড়ী উর্দ্ধান্থ কনিয়া বদাইয়া, উভয়েন দান্ধাহন কোমল মৃত্তিকা দানা প্রালিপ্ত করিয়া, উহা চুল্লীর উপর বদাইবে। উপরের হাড়ীতে জল থাকিবে। নিমে ক্রমাগত ৫ প্রহর জ্বাল দিবে। উপরের হাড়ীর জল।গেরম হইলেই ফেলিয়া দিয়া পুনর্কার শীতল জল দিবে। এইরূপ বারংবার জল পরিবর্ত্তন করা জাবশ্রুক। পরে অমি নির্মাণ হইয়া যথন সম্দায় শীতল হইবে, তথন উপরের ইাড়ীর তল-সংলগ্ন পারদ অতি যত্নপূর্মক গ্রহণ করিবে। এই ষয়ই বিজ্ঞা-বর যন্ত্র নামে অভিহিত। (গ্রন্থান্তরে ইহা পাতালযন্ত্র নামে অভিহিত।)

(अन्नयञ्जम्।

সঃস্থালীমূথে বচ্ছে বস্তে খেন্তাং নিধার চ। পিধার পচাতে যন্ত্রং ভদ্যন্তং খেদনং:খুতম্ ॥



(त्यनगरस्य अधिकार्गः)

একটা জলপূর্ণ স্থালীব মুখ বস্ত্র ছারা বর্ক করিয়া সেই বক্সের উপর স্বেছ্য দ্রব্য রাখিয়ঃ এবং শরা ঢাকা দিয়া অগ্নিতে পাক করিতে হয়। এইরূপ যন্ত্রকে স্বেদনযন্ত্র বলে।

ডমরুযন্ত্র ।

বস্ত্রং ভমক্লসংক্ত: ভাৎ তৎস্থাল্যামু ক্রিতে মুখে ।

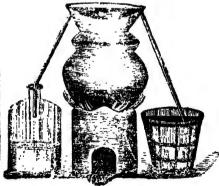
ভনক্ষর বিভাগর ধরের কার, তবে ইহাতে উপরিস্থ হাড়ী, অধোমুথ হইরা থাকে অর্থাৎ চুইটী হাড়ীর মুথই পরস্পর মিলিত হুইরা থাকে।



। (ডম্রুখন্তের প্রতিরূপ।)

বক্যন্ত্রম।

ভাগেও চার্ক্সপার্থন স্থবাৎ স্থাপাং প্রবন্ধতা । তন্ত্রপ দিনলীয়ন্ত্রং সংস্থাপা চ নিরোধয়েও ॥ পশ্চামানাগিং প্রজ্ঞানা কলং দর্ভান্ত্রক । তৎ তপ্তং নলিকাদারা নিংসার্থ্য চ পুনংপুনং ॥ নিচন্থনলিকারক্তে, ভাওং স্থাপাং দিতীয়কম্ । ত্রিয়র্ক্তি সংধার্থো গৃহায়াং তং বিশেষতা ॥ ব্রম্বন্ধিং গ্যাতং তেজায়ন্ত্রাভিষ্ক তৎ ॥



(বকষত্রের প্রতিরূপ।) একটা ইাড়ীর অর্দ্ধভাগ ভেষজ্জুব্য দারা পূর্ণ করিয়া তাহার মুখে অপর একটা দ্বিনল-

বিশিষ্ট পাত্র স্থাপিত এবং উহাদের সংযোগস্থল কোমল মৃত্তিকা ছারা উত্তমরূপে প্রালপ্ত করিবে। ঐ পাত্রের যে নলটি বারা বাষ্প পরিচালিত হইবে, সেই নলটি নিম্নেও যেটি ছারা জল নিঃসারিত ছইবে. সেইটি উপরে সংযোজিত করিবে এবং ভাহাদের প্রাস্তম্বয় এক একটি পাত্রমধ্যে নিহিত করিয়া রাখিবে। তৎপরে উপরিস্থ পাত্রে জল রাখিয়া নিম্নস্থ হাঁড়িতে মৃহ মৃহ জাল দিবে। অগ্নিসন্তাপে জল উষ্ণ হইলেই ভাহাতে শীতল জল ঢালিয়া উষণ জল নল ছারা পুনঃপুনঃ নিঃদারিত করিয়া ফেলিবে। এইরূপ ক্রিয়া ছারা ভেষজদ্রব্যেন বাষ্প সকল উথিত এবং তাহা শৈতাসংযোগে অক অর্থাৎ আরকরূপে পরিণত হইয়া নল ছারা আসিয়া আধারভাওে সঞ্চিত হইবে। ইহাকেই বকবন্ধ বা তেজোযন্ত্র বলা যায়।

নাডিকাযন্ত্র ।

বিনিধার ঘটে জবাং কনীরাংসমধোমুপ্ন।
ঘটমন্তং মুখে তক্ত স্থাপরিবোভয়ের প্র।
মন্ত্রমুক্তিঃ সমালিপা নাড়িকাং বিনিবেশয়েও।
যন্ত্রমুক্তিঃ সমালিপা কাড়িকাং বিনিবেশয়েও।
আধারভাওপযান্তং তত্নচ্ল্যাং বিধারয়েও।
অধন্তাভালয়েও বহিং বাবদ্ বাম্পো বিনেদম্বঃ॥
স্থানাধারগতং নির্দ্ধলেও রসমূত্রমন্।
মাড়িকায়য়মেত্রি মুনিভিঃ পরিকণতিত্য॥

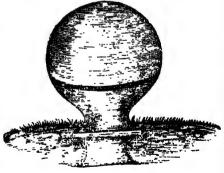


(নাড়িকাষক্রের প্রতিরূপ।)

একটি কলদে ভেষজদ্র রাথিয়া একটা ক্ষুদ্র কল্য তাহার মুখে উপুড় করিয়া চাপা দিবে এবং কলসম্বয়ের পরস্পর সংলগ্ন মুখৰয় কোমল মৃত্তিকা দ্বারা উত্তমরূপে প্রশিপ্ত করিবে। ঐ যন্ত্র হইতে একটি কুগুলীরুত নল শীতল জল পূর্ণ একটি রুহৎ দ্রোণী ভেদ করিয়া গিয়া আধারভাণ্ডে উপস্থিত হইবে। তৎপরে চন্নীব উপর যন্ত্র বদাইয়া নিমে জ্বাল দিবে। কলসস্থ ভেষঞ্জদ্রবোর বাষ্প নল ইহাতে পরিবেষ্টন করিয়া এবং জলদোণীর শৈত্যসংযোগে ঘনীভূত হইয়া আধারভাওে সঞ্চিত হইবে। ঐ পরিক্রত রস গ্রহণীয়। এই যন্ত ভারা মৌৰি গোলাপ আরক চোয়ান হইলা থাকে। ইহার নাম নাড়িকানন্ত।

পাতালযন্ত্র ।

হস্তপ্রমাণং নিমঞ্চ গর্জং কুলা প্রয়ন্তঃ।
তিন্মিন্ ভাওক সংস্থাপ্য তথাক্তং পাত্রমাহরেও।
তিনিন্দোষধর্গক দ্বাক্তক শ্বাবক্ষ।
মুখে সংস্থাপ্য চিছ্নানি কুছা চৈর শ্বাবকে।
শ্বাবসহিতং পাত্রং গর্জতা তার্জন ক্রমেও।
সন্ধিলেপং ততঃ কুলা গর্জনাত্রং সমুদ্ধরেও।
পশ্চান্থিক প্রজ্ঞান্তা পাত্রং মুক্তা সমাহরেও।
পশ্চাৎ তৎপাত্রমধাত্রং পাত্রং যুক্তা সমাহরেও।
তদপ্তংক্তক তও তৈরং গৃত্রা। ছিমিপুলকম্।
পাত্রাণানিদং যন্ত্রং ভাষ্তাং শস্কুনা হয়্ম॥



(পাতালযন্ত্রের প্রতিরূপ।)

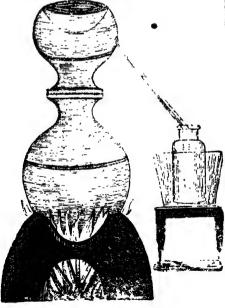
এক হত গভীর। একটী গর্ন্ত খনন করিয়া তাহাতে একটী ভাণ্ড স্থাপন করিবে এবং অপর একটি হাড়ী ঔষধ দ্রব্যে পূর্ণ করিয়া তাহার মুখে একথানি সচ্ছিত্র শরাব চাপা দিবে। পরে এই হাঁড়ীটি গর্জন্থিত ভাণ্ডের উপর উপুড় করিয়া স্থাপন পূর্বক উভয়ের মুখ, মধ্যন্থিত শরাবের সহিত মিলাইয়া তাহাদের সন্ধিস্থলে লেপ দিবে। তাহার পর মৃত্তিকা দারা গর্জে পূর্ণ করিয়া উপরিস্থ হাড়ীর উপর অগ্নি প্রজ্ঞালিত করিবে। পরে অগ্নি নির্বাণ হইয়া হাড়ী শীতল হইলে, গর্জস্থ ভাণ্ড উত্তোলন করিয়া তাহার মধ্যন্থিত ঔষধ গ্রহণ করিবে। ইহাকে পাতাল-যন্ধ কহে।

বারুণীযন্ত্রম ।

ইন্দে হোরসমানুজং জলপ্রে;শীবিবজ্ঞিতম্। ভোরসংবেটিভাধারসজুনাজীসন্থিতম্। যন্ত্রং তদ্বাঞ্গীসংজ্ঞং সুরাসাধনক্ষণি।

অগ্রচ্চ--

বীজ-দ্রবাং ঘটে দ্রা সংছাপ্তাংনন তর্থন।
দ্বা মুখং বিলিপ্যাথ নাড়ীং বংলাদিসপ্তবংম।
বন্ধানারগাং কুড়া আবয়েদ্ বিদিনা রসম্।
বাহ্ণীবন্ধমেত্তি জুরাসংসংধনে তুলমা।



(বারুণীযম্মের প্রতিরূপ ।)

উদ্ধিথিত নাড়িকাবন্ত্র, উর্দ্ধে জলসংৰুক্ত ও সরল নল বিশিষ্ট হইলে ভাহাকে বারুণীযন্ত্র কহে। বারুণীযন্ত্রে নাড়িকা যন্ত্রেণ ন্তায় জোণী থাকে না। এই যন্ত্রের আধার-ভাগু জল-পাত্রের উপর সন্ধিবিষ্ট থাকে। এই যন্ত্র শারা হরা প্রস্তুত করা যায়।

অন্তপ্রকার বারুণীযন্ত্র-

একটি কলদে ভেষজদ্রব্য রাথিয়া অন্ত একটি কুদ্র কলস তাহার মুখের উপর উপুড় করিয়া চাপা দিয়া উভয়ের মুখ-সন্ধি মৃত্তিকা দারা প্রালপ্ত করিবে এবং বাঁশ প্রভৃতি কোন দ্রুবের নলের এক মুখ ঐ কলসে ও অন্ত মুখ আধারভাণ্ডে সংগোজিত করিয়া ঐ আধারভাণ্ড কোন জলপাত্রে হাপন করিবে। এইরূপ যত্ন দারা সহজে স্থান চোয়ান যায়।

ভূধরযন্ত্রমৃ।

যন্ত্রং তমর্লচ্বাথ তুলাং বিজ্ঞাধ্যের বা।
তুগত্তে তৎ সমাধায় চোর্ছমাকীয় বহিনা।
অধ্যস্ত্রাং জলং ক্ষিপ্ত,1 স্তকং তজ পাত্যেৎ।
এতদ ভ্রব্যথ্য তাৎ স্তসংকারকর্মণি।



(ভূধর্যজ্ঞের প্রতিরূপ)

ভূধরমন্ত্র, জনক বা বিভাধন মন্ত্রের ভায়। ইহার নিম স্থালীতে জল থাকে। এই যদ্ধ ভূগতে নিহিত করিয়া উর্দ্ধে অগ্নি প্রদান করিতে হয়। ইহা দ্বাবা পারদের অদঃপাতন ক্রিয়া নিসাদিত হয়।

তিৰ্য্যকৃপাতনযন্ত্ৰম্।

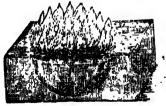
গটে রদং বিনিক্ষিপা সঞ্জলং ঘটনপ্রকম্।
তিয়াঙ মুখং ধরোঃ কৃতা তযুগং রোধয়েৎ স্থাই।
রদাধো আলয়েদরিং নাবৎ কৃতো জলং বিশেৎ।
তিথাকপাতনমিত্যক্তং দিকৈনিগার্জ্ঞনাদিভিঃ॥



(তির্যাক্পাতনবন্ধের প্রতিরূপ।)
তৃইটি ঘট তির্যাগ্ভাবে রাখিরা উভ্যের
মুখ একত্রিত করিয়া উভ্যরপে প্রলিপ্তা
করিবে। ঘটমুরের একটিতে পারন ও অপরটিতে জল থাকে। পারদাগার-ঘটে: নিম্নে
আল দিতে হয়। অগ্রি-সন্তাপে পারন মিতীয়
ঘটে গিয়া সঞ্চিত হয়। এই ক্রিয়াকে
তির্যাক্পাতন কছে এবং এই বন্ধকে তির্যাক্পাতন যম্ন কহা যায়।

ইফকাবন্ত্রম্।

মধ্যে গঠ্ঠসমাযুক্তামিষ্টকাং কার্য়েং ভিষক্।
গঠে চৈন সমাধার ভক্তাং স্তাদিকং অসেৎ ।
দ্বোপরি শরাবঞ্চ সন্ধিং মূলনগৈলিপেৎ।
তদুদ্ধে সিকতাং কিঞ্চিদ্দরা দেরং পুটং লঘু॥
ইষ্টকাযুদ্ধমেত্রি জার্য়েদ্ গক্কাদিকম্॥



(ইষ্টকাষম্ভের প্রতিরূপ।)

একখানি ইইকের মন্যাংশে গর্গু কুরিয়া তাহাতে পারদাদি নিক্ষেপ করিবে। পরে ঐ ইইকথানি ভূগর্গুে স্থাপন করিয়া সেই ইইকের গর্গ্গে একখানি শরা চাপা দিবে। শরা ও ইইকের সংযোগ স্থানে লবণমুক্ত মৃত্তিকার লেপ দিবে। পরে শরার উপরে কিঞিং বালুকা দিয়া লঘু পুট দিবে। ইহার নাম ইইকাবন্ত্র। এই যঙ্গে গন্ধকাদি জারিত হইয়া থাকে।

কোষ্ঠিকযন্ত্রগ্ ।

বেণ্ডুলাঙ্গুলবিস্তীৰ্ণ হস্তমাত্ৰায়তং সমস্। ধাতুসম্বনিপাতাৰ্থং কোষ্টিকং প্রিকীপ্তিতন্ । বংশপ্রিরমাধুক-বদরীদারুসম্ভবৈঃ। প্রিপূর্ণং দৃঢ়াঙ্গাইররধোবাতেন কোষ্টকে। মাত্রমা আলমার্গেন আলমেচ্চ ছতাশনম্॥

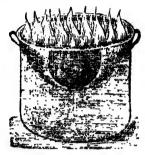


(কে:हिक्यছের প্রতিরূপ)।

কোন্তিকষন্ত্ৰ ১৬ অঙ্গুলি বিস্তীর্ণ ও এক হস্ত আন্নতন বিশিষ্ট হইয়া থাকে। এই যন্ত্ৰ-সাহায্যে ধাতু সকলের মলাদি দ্রীকৃত করা যায়। বংশ, খদির, মৌল বা কুলকাষ্ঠের অঙ্গার ঘারা এই যন্ত্রের উপরিভাগ পূর্ণ করিয়া ভন্তাদি ঘারা অধোভাগে বায়ু সঞ্চালনে উপরিস্থিত অঙ্গার-উদ্দীপ্ত করা যায়।

কচ্ছপযন্ত্ৰম্।

জলপূর্ণাক্রধ্যে দ্বা থর্গরস্ক বিস্তীর্ণম। তদুপার রুস্বিভিঃ স্থাপাঃ স্থানে মুদঃ মুডাাম্॥ লবুলোহকোটরিকয়া কৃতপট্ট্য ৎসন্ধিলেপমান্বার। দেয়া ততুপরি সিকতা চৈকান্ধুলিপরিমাণাপি। তৎ গপরং পুয়াক্ষারকবনোপলেনোপচিত্রম্॥



(কচ্ছপ্যান্তর প্রতিরূপ।)

কোন জলপূর্ণ পারে একটি বিস্তীর্ণ থপর বা পাত্র ভাসাইয়া, তাহাব উপর একটি মুবা স্থাপন করিয়া, তাহাতে পারদাদি রাখিবে। পরে সেই মুবাটী একটি লোহনির্দ্দিত পাত্র দারা আবরিত করিবে। সন্ধিস্থানে লবণ-মৃত্তিকার লেপ দিয়া সেই পাত্রকে বালুকা দারা এক অঙ্গুলি পরিমাণে আচ্চাদিত করিবে। তাহার পর যে পাত্রটী ভাসান ইইয়াছে, তাহার অবশিষ্ঠ ভাগ বিলঘুঁটে ও অঙ্গারে আরত করিবে। এই যক্ষকে কচ্ছপ্রস্থার বলে।

তপ্তথল্মস্ত্র ।

লোহো নবাঙ্গুলঃ খলো নিয়ত্ত্বে চ ষড়ঙ্গুল:।
মর্দ্দকোহষ্টাঙ্গুলদৈচন তপ্তথালাভিধোহপায়ন্।
কুত্বা থলাকৃতিং চুল্লীমঙ্গানৈ: পরিপ্রিতান্।
তঙ্গাং নিবেশিতং থলং পার্থে ভল্লিকরা ধ্যেৎ।



(প্রথম প্রকার—ভপ্তগল্বজ্বের প্রভিরা**ণ**।)

অগ্যচ্চ-

অজাশকৃৎত্যাগ্নিঞ্চ ভূগার্ক্ত ত্রিতরং ক্ষিপেৎ। ওক্তোপরি স্থিতং ধরং তথ্যধানিতি স্মৃতম্ ॥

তপ্তথম—লোহনিশ্মিত, নয় অমুল দীর্ঘ ও ৬ মসুল গভার হইবে। ইহার ঘর্ণনীর (নোড়ার) পরিমাণ আট অসুল। খলাকৃতি একটা চুল্লী প্রস্তুত করিয়া ভাহাতে অস্পারামি রাখিবে, পরে তহপরি খল্ল স্থাপন করিয়া ভান্তিকা (জোভা) দালা অমি প্রদীপ্ত করিবে। ইহার নাম তপ্তগল্প।

ন হাস্তর—একটি গর্ত ছাগবিষ্ঠা ও তুষ থারা পূর্ণ করিয়া ভাষাতে অগ্নি দিয়া ভত্পবি ঘন স্থাপন করিবে।



('ঘতীর প্রকার—ভপ্রথম্বক্ষের প্রতিকাণ ৷)

অণ দৃষা-নিরূপণম্।

অন্মা তু কর্ত্ববা গোন্তনাকারস্থিত।

নৈব ছিদ্রাঘিতা মধ্যে গন্তীরা সারগ্যেতিতা।
বৌ ভগনী তুষদক্ষত একা বল্মীকযুত্তিকা।
লোহকিউত্ত,ভাগৈকং খেতপাষাণভাগিকম্॥
নরকেশসমং কিঞ্চিছাগীকীরেণ পেষয়েও।
সামন্ত্রং দৃচং মদ্যাং তেন মুবাং স্থসম্পূটাম্॥
শোষ্ত্রিয়া রসং কিপ্রু 1 তৎককৈঃ সংনিরোধ্যেও।
বক্তম্বা সমাধ্যাতা সম্যক্ পারদ্যাধিতা।

অন্ধন্য বন্ধ গোন্তনাক্ষতি করিতে হয়।
এই মুবাই মধ্যে দচ্ছিদ্র হুইলে গন্তীরা দারণা
বন্ধের কার্য্যোপযোগী হুইয়া থাকে। (সারণা—
পারদশোধনের যন্ধবিশেষ)। অর্দ্ধির তুষ ২
ভাগ, উন্ধীমৃত্তিকা ১ ভাগ, মগুর ১ ভাগ ও
খেতপ্রন্তর্ব ১ ভাগ, এই দকল উপাদানের
দহিত কিছু মন্ধাকেশ মিশ্রিত করিয়া ছাগ-

তুর্মে ২ প্রহারকাল উত্তমরূপে মর্দ্দন করিয়া মুয়া নির্দ্দাণ করিবে। অনস্তর উহা শুকাইয়া লইবে। মুয়ার মধ্যে পারদ রাণিয়া তাহার উপর অপর একটি মুয়া (মূচী) চাপা দিয়া

উভয়ের সংযোগস্থল, ঐ মূ্যা-নিশ্মাণের পূর্বোক্ত উপাদান দ্রব্য স্থারাই সংক্রম করিবে। এই অস্কমূ্যাই বক্তমূ্যা নামে খ্যাত।

উতি যদ্ধিতি।

ইত্যায়ুর্কেদ-সংগ্রহে পরিভাষা- প্রকরণন্।

অথ রোগিপরীক্ষা-প্রকরণম।

সাধারণপরীক্ষাবিধিঃ।

দর্শনপ্রিপ্রধৈক্তং প্রীক্ষেত রোগিণম্। আয়ুরাদি দৃশা প্রশাক্তীতাদি প্রথতঃ প্রম্॥ (তেন্দুল্লং নেড্রিজ্বামুনাদীনাং কর্ত্বাম্।)

দর্শন, স্পর্শন ও প্রশ্ন, এই তিন প্রকারে রোগিকে প্রীক্ষা করিবে। দশন ধারা রোগিক আয়ুঃ ও রোগের সাধ্যাসাধ্যমাদি, স্পর্শন ধারা শতেখফ-গৃত্ত-কাঠিন্তাদি ও নাড়ী-প্রাক্ষণ; এবং প্রশ্ন ধারা উদ্বের লাঘব বা গৌরব, ভূফা বা অভ্যন্তা, ক্ষুধা বা অক্ষ্মা ও বলাবলাদির প্রাক্ষা করিবে। নেএ, জিহ্বা ও ধ্যাদির দশন কর্ত্ব্য।

তত্রাদো নাড়ীপরীক্ষামাহ—

অথ নাড়ীপর্য্যায়াঃ।

বায়ুন জি রসা হিংকা ধননী ধামনী ধরা।
তথ্ঞী জীবনজানা শকাঃ পথ্যায়বাচকাঃ।

দায়, নাড়ী, রুসা, হিংস্রা, ধমনী, ধামনী, ধরা, তম্বকী ও জীবনজ্ঞানা এই শক্তালি নাড়ীর নামাম্বর জানিবে।

মথ পরীক্ষাপ্রকারঃ।

নাডামঙ্গুরুষ্বাধঃ স্পুশেদক্ষিণগো করে। জ্ঞানাথং রোগিণো বৈজ্ঞোনিজদক্ষিণপাণিনা॥

চিকিৎসক, রোগজ্ঞানার্থ নিজ দক্ষিণ হস্ত ধারা, পুক্ষরোগির দক্ষিণ করের ধৃদ্ধান্ত্র্লিস্থ মূলের ঠিক নিম্নভাগে নাড়ী স্পর্শ করিবে।

ন্ত্র গাং ভিষধবোসহন্তে বামে পাদে চ যত্নতঃ। পান্তেন সম্প্রদায়েন তথা স্বামুভনেন চ ॥ প্রীক্ষেত্রসক্রাস্কাসের জায়তে॥

স্ত্রীলোকের বাম হস্তে ও বামপদে
নাড়ী পরীক্ষণীয়া। পরীক্ষাকালে শাদ্রোপদেশ
ও রোগাঁ কিরূপ সম্প্রদারের লোক, ইহা
বিবেচনা করিয়া স্বকীয় অনুমান দারা অতি
যরপূর্বক রোগ নিশ্চয় করিবে। পুনঃপুনঃ
দর্শন দারা যেনন রত্ন পরীক্ষা করিতে সমর্থ
হওয়া যায়, নাড়ীপরীক্ষাও তদ্ধপ অভ্যাদায়ত্ত
ভানিবে।

নংপুং সকস্ত তু স্থীপুংসয়োরয়তর রাকাবপ্রকটতামপেক। পরীক্ষা কাঝা । স্থানপুংসককেদ্ বামে, পুংনপুংসককেদ্ দক্ষিণে ইতার্থাঃ।

নপুংসকদিগের আকার-ভেদামুসারে নাড়ী পরীক্ষা কর্ত্তব্য, অর্থাং নপুংসক স্ত্রীর আকৃতি বিশিষ্ট হইলে বাম হস্তে; পুরুষের আকৃতি বিশিষ্ট হইলে দক্ষিণ হস্তে পরীক্ষা করিবে আঙ্গুষ্ঠপ্ত তু মূলে যা ধমনী জীবনা ক্ষিণী। তক্ষা গতিবলা ছিদ্যাৎ স্থাৎ ছংগঞ্চ দেহিনাম্।

অঙ্গুঠমূলে যে জীবসাক্ষিণী ধমনী আছে, তাহারই গতিবিশেষ ছারা মানবের সাস্থ্য ও অস্বাস্থ্য জানিবে।

প্রাতঃকৃতসমাচারঃ কৃতাচারপরিগ্রহম্।
ক্থাসীনঃ ক্থাসীনং পরীক্ষার্থম্পাচরে ।
সন্তঃরাতিন্ত কুপ্তন্ত কুপ্তৃকাতপশালিনঃ।
ব্যাঘামশান্তদেহস্য সমাঙ্নাড়ী ন বুধ্যতে ।
তৈলাভাকে রতেরস্তে ভোকনান্তে তথেব চ।
উদ্বেগাদির নাড়ী চ ন সম্যাববুধ্যতে ॥

প্রোতঃকালে নাড়াপরাকার্থ চিকিৎসক ও পোতঃক্রতাদি বেগো উভয়েই প্রাত:কালই পৰ্ম্বক স্থাপনিষ্ট হইবেন। (এই কালে নাডীপরীকার প্রশস্ত কাল। গুণা হকালে থাকে। নাডী পিগ্ৰভাবাপন্ন হয়, সুতরাং জরবেগ-নাডী উষ্ণতায়িতা সন্দেহ উপস্থিত হইতে পারে। আর সায়াহে নাড়ী ধাবমানা হয়, তজ্জ্ঞ নাড়ীর যায় না)। সতঃকাত, হথ, অবস্থা ব্বা কুৎপিপাদার্ত্ত, আতপক্লাম্ভ ও ব্রায়াম মারা नाष्ट्रीय नगाक्त्राप জানা প্রান্তদেহ ব্যাক্তর गा। (जनाचाककारण, র ি ক্রিয়ার পর, ভোজনাতে ও উত্তথাদিব সময়ে নাড়ার প্রক্রত গতির বিপর্যায় ঘটে, স্ক্রবাং এই সকল সময়ে নাডা প্রীকাকরা করিবান্থ।

> নব্যেন সাচিধ্তক্পরিভাগভাগা-পাঁড়াাথ দক্ষিণকরাসুলিকাত্রেণ। অসুঠমূলমধি পশ্চিমভাগমধ্যে নাড়া প্রভঞ্জনগডিঃ সততং পরীক্ষা॥

নাড়ীপরীক্ষাকালে পরীক্ষক স্থায় বাম কর দারা রোগির কুপরভাগের অর্থাৎ করুয়ের মন্যুন্থিত নাড়ীটি আপীড়ন করিমা, রোগিব পরীক্ষণীয় হস্তটা বক্ররূপে ধারণপূর্বক নিজ দক্ষিণ হস্তের তর্জনী মর্যা এবং অনামিকা এই অঙ্গুলিক্রর দারা, রোগির অঙ্গুঠমূলের অধোভাগে (যে স্থলে কুজ গ্রান্থ আছে, তাহার প্রাস্তভাগ হইতে হুই অঙ্গুলি পরিমিত স্থলে)

নাড়ী পরীক্ষা করিবে। (রোগ হইবে কি না ইহা জানিবার নিমিত্ত স্থস্থ অবস্থাতেও নাড়ী পরীক্ষা করা বিধেয়। দক্ষিণ হস্ত ঘারা নাড়ী পরীক্ষা করা সাধারণ নিয়ম, তবে নিজের নাড়ী নিজে পরীক্ষা করিতে হইলে বামহস্ত ঘারা, স্ত্রীলোক পরীক্ষক হইলে দক্ষিণ হস্ত ঘারা পরীক্ষা করিতে পারা যায়; যৎকালে নাড়ী পরীক্ষা করা বায়, সেই সময়েও যেন নাড়ীর আপীড়ন না থাকে, এতদ্বিষয়ে মনোযোগ করা কর্ত্ব্য।)

নারতারং পরকৈত ধৃতা ধৃতা বিমুক্তরেও। বিমুক্ত বহুধা বুদ্ধা রোগব্যক্তিং বিনির্দিশেও ॥

একবার দেখিলে নাড়ীপরীক্ষা ভালরপ হয় না; ভজ্জন্ত অতি বিবেচনাপূর্বক এক একবার নাড়ীপরীক্ষা করিবে ও ছাড়িয়া দিবে। এইরূপ তিনবার করিয়া রোগের ভন্ত নিরূপণ করিবে।

অঙ্গুলীত্রিতরৈঃ স্পৃষ্ট্র ক্রমান্দোযত্ররোদ্ভবাম্। মন্দাং মধ্যগতিং জীক্ষাং ত্রিভিন্দোবৈদ্ধ লক্ষয়েও॥

ক্রমান্বরে তর্জনী মধ্যমা ও অনামিকা দোষজ্ঞাপক এই তিনটা অঙ্গুলি দ্বারা নাড়ী স্পর্শ করিয়া, দোষতেলামুসারে ভাহার মন্দ, মধ্য ও তীক্ষ গতি লক্ষ্য করিবে। অর্থাং নাড়ার মন্দ গতি দ্বারা কফপ্রকোপ, মব্যগতি দ্বারা বাতপ্রকোপ এবং তীক্ষণতি দ্বারা পিত্ত-প্রকোপ বিবেচনা করিবে।

পিতে ব্যক্তা মধ্যমায়াং তৃতীয়াঙ্গুলিগা কফে। বাতেথধিকে ভনেম'ড়া প্রব্যক্তা তর্জনীতলে॥

পিত্তকোপে নাড়ীর গাত মধ্যাঙ্গুলিতে কফকোপে অনামিকায় এবং বাতকোপে এর্জনীতলে প্রব্যক্ত ইইয়া থাকে।

অথ সম্বস্থ নাড়ীগতিলক্ষণম।

ভূলতাগমনপ্রারা স্বস্থা স্বাস্থ্যময়ী শিরা। প্রাতঃ বিশ্বময়ী নাড়ী মধ্যাচ্ছে২পুরন্ধতাবিতা। সামাচ্ছে ধাবমানা চ রাড্রো বেগবিবর্জ্জিতা। ভূ-লভার (কেঁচোর) গতির ঝায় স্বস্থ-নাড়ীর গতি। স্বভাবতঃ নাড়ী প্রাতঃকালে স্বিগ্ধ, মধ্যাহে উষ্ণ, সাম্বাহে ধাবমান ও রাত্রিতে বেগবিবর্জিত থাকে।

व्यथ नां छी ज्ञानन ना भागा।

ষষ্ঠা শাকান্ত মাত্রাভিঃ ষট্পঞ্চাশদ্ ভবন্তি হি।
শিশোঃ সন্তঃপ্রস্তুত্ত পঞ্চাশং তদনত্ত্বমূ।
চন্ত্রারিংশং ৬৬ঃ শেকাঃ ষট্ তিংশদ্ যৌবনে ৬৬ঃ।
প্রোচ্টেত্রকোনতিংশং ফার্ব দিকেচংগ্রেষ চি বিংশভিঃ।
প্রেমিংভিছ্বিরক্ত ফারেকতিংশদঙ্গেরম্।
যে'ষিতাং পুরুষাণাঞ্চ শাকান্তর্লাঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ।
প্রেচানাং রম্পীনান্ত ছাধিকাঃ সন্মতা বৃধৈঃ।
দশগুর্বকরোচ্যার-কালঃ প্রাণ্ড ষড়াছাকৈঃ।
তৈঃ পলং সাধু ড তংবস্টা দও ইত্যভিধীয়তে।

নাড়ীর স্পন্দন-সংখ্যা লিখিত এক্ষ হইতেছে। ৬০টা গুরুবর্ণ উচ্চাবণ কৰিতে ষ্ট সময় লাগে, তাবং প্রিমিত কালে অর্থাৎ ১ পলে সন্তঃপ্রস্থাত বালকের নাড়ীর স্পাদন সংখ্যা ৫৬ বার। তৎপরে বয়োবৃদ্ধি অনুনারে উহার হাদ হইতে থাকে। ক্রমে ৫০ ও ৪০ বার হইয়া যৌবনকালে ৩৬ বার হয়। প্রোঢ়াবস্থায় ২৯ ও বান্ধিকো ২৮ বার মাত্র স্পলান ইইয়া থাকে। পরে অতি বুদ্ধ অবস্থায় পুনর্ব্বার বুদ্ধি হইয়া থাকে, তখন স্পন্দন-সংখ্যা ৩১ বার। বন্নসভেদে যে সকল স্পন্দন সংখ্যা লিখিত **২ইল, তাহা স্ত্রী পুরুষ উভয় জাতি**রই **বি**ষয়ে জানিবে। উভয় জাতির স্পন্দন-সংখ্যা সমান, কেবল প্রোঢাবস্থায় স্ত্রীজাতির নাড়ীর স্পন্দন मः था। পुरुष्ति (भव अप्रका २ वांत अधिक. পুরুষদিগের অর্থাৎ প্রোচ रश्नाम् नामः था। পতিপলে ২৯ বার ও প্রোঢ় স্থীদিরোর ৩১ বার জানিবে।

একটা গুরুবর্ণ উচ্চারণ করিতে হত সময় লাগে, তাহাকে এক মাত্রা বা নিমেষ বলা ধায়। ১০ মাত্রায় এক প্রাণ, ৬ প্রাণে

১ পল ও ৬০ পলে ১ দও হয়। অতএব ১ মাত্রা কাল এক পলের ৬০ ভাগের একভাগ অর্থাৎ এক বিপল।

অথ দোষজন। ভাগতি-লক্ষণম।

বাতং পিত্তং কফং দ্বন্ধং সন্ধ্ৰিপাতং তৰৈব চ। সাধ্যাসংঘাবিবেকঞ্চ সৰ্বং নাড়া প্ৰকাশয়েং ॥

বাতজ, পিত্তজ্ব, প্লেমজ, ধন্দ্বজ্ব, সান্ধি-পাতিক এবং সাদ্যাসাধ্য প্রাভৃতি যাবতীয় রোগভেদ, নাড়ীগতি ধারা প্রকাশিত ইইয়া থাকে।

বাতাৰজগতিন জি পিতাহংগ্ৰা চাগ'নি'। ক্লান্ত্ৰান্ত্ৰিয়া সনিপাহাদাইদ্ভান্ত

5.列为--

বাহারজগতা নাড়া চপলা পিত্রস্তিনী। ত্রিয়া লেখবতা জেনা মিলিতে মিলিতা ভবেং॥

বাতকোপে নাড়ার বক্রগতি, পিওকোপে লাফাইয়া লাফাইয়া যাওরাণ ভায় চঞ্চলগতি, শ্লেমকোপে মন্দর্গতি এবং ছিলোব বা ত্রিদোষ-প্রকোপে ভত্তদোষাত্মসারে সিপ্রগতি হয়। সন্মিপাতেও জ্বতগতি হইয়া থাকে। সর্পরনৌকাদিগতিং বদন্তি বিব্বাং প্রভন্তনেন নাড়াম্। পিত্তে চ কাকলাবক্তেকাদিগতিং বিত্তঃ হ্রধিয়া। রাজহংসম্যুরাণাং পারাবতকপোত্যোঃ। কুরুটাদেশতিং ধতে ধমনী ক্ষমস্বিনী॥

বায় খারা নাড়ীর গতি সপ ও জোকাদির গতির স্থায় বক্র, পিত্ত খারা কাক, লাব ও ভেক প্রভৃতির স্থায় লক্ষ্মানা, এবং শ্রেম খারা রাজহংস, মন্ত্র, পারাবত, কপোত ও কুকুটাদির স্থায় দোলায়মানা ও সূত্যনশ হইয়া থাকে।

মূহঃ দৰ্পগতিন াড়ী মুহুৰ্জেকগতিক্তথা। হৰ্জনীমধামামধে বাতপিজেহ ধিকে ক্টা। বজুমুংগ্লুত্য চলতি ধমনী বাতপিজতঃ।

বাতপিক্তাধিকে নাড়ী মূহুম্মূহঃ সর্পের স্থায় বক্রগতিতে ও মুহুম্মূহঃ ভেকের স্থায় উল্লক্ষনগতিতে ভর্জনী ও মধ্যমাঙ্গুলিস্থলে ক্ষুট্তরভাবে প্রকাশিত হইয়া থাকে।

সর্পহংসগতিং তদ্বাত-শ্লেমবতীং বদেৎ। অনামিকারাং তর্জ্ঞ্জাং ব্যক্তা বাতকফে ভবেৎ। বহেদক্রক মন্দক্ষ বাতলেমাধিকড্ডঃ।

বাতশ্রেমাধিক্য নাড়ী, কথন সর্পের স্থায় বক্রগতিতে, কথন হংদের স্থায় মন্দর্গতিতে অনামিকা ও তর্জ্জনীতলে: প্রব্যক্ত হইয়া থাকে।

মজুকাদিগতিং নাড়াং মৃথুরাদিগতিং তথা। পিত্তপ্রেমমুজুতাং প্রবদস্তি মহাধিয়া॥ মধামানামিকামধ্যে স্টুটা পিত্তকক্ষেহধিকে। উৎপ্লুডা মন্দং চলতি নাড়ী পিত্তকক্ষেহধিকে॥

পিত্তলেমানিকে। নাড়ী, কথন মঙ্কাদির স্থায় উল্লফ্ন-গতিতে, কথন ময়্রাদির স্থায় মন্মমন্স-গতিতে, মধ্যমাও অনামিকায় প্রবাক্ত ভাবে প্রকাশিত হয়।

কাইকুটো বপা কাইং বৃট্টতে চাহিবেগত:।
বিহা ছিলা তথা নাড়ী সন্নিপাতে ভবেদু প্রবৃদ্ধন্।
অনুলিতিহমেংপি ভাং এবাকা সন্নিপাতত:।
কাট্ঠোকরা পক্ষী যেমন থাকিয়া থাকিয়া
অভিক্রতবেগে কাঠ কুটুন করে, তজপ সান্নিপাতিক নাড়ী থাকিয়া গাকিয়া ভিন অকুলিতেই জ্বভবেগে আঘাত ক্রিতে পাকে।
ক্রাচিম্নাগা নাড়ী ক্রাচিম্নাগা ভবেং।
ভিনোশপ্রভবে নোগে বিজ্ঞোচ ভিষ্যুন্বলৈ:।

সানিপাতিক রোগে নাড়ী কথন মন্দ মন্দ, কথন শাঁঘ্ৰ শীঘ্ৰ গমন করে। বন বং ধাতুমাগোভি তদা নাড়ী তথাগতিঃ। তথা হি হথসাধ্যক নাড়ীজ্ঞানেন:বৃধ্যতে॥ নাড়ী যথন যে ধাতু প্রাপ্ত হয়, তথন থদি সেই ধাতুর প্রকৃতি অমুদারে গমনাকরে, তাহা

হইলে ব্যাধি স্থাসাধ্য জানিবে। স্পন্তে চৈকমানেন তিংশছারং বদা বরা। স্থানেন তদা নুনং রোগী জীবতি নাম্ভবা।

নাড়ী যদি স্বস্থানে থাকিয়া এক প্রকার গতিতে ত্রিশবার স্পন্দিত হয়, তাহা হইলে নিশ্চয়ই রোগী রক্ষা পাইবে। ভুক্ত বাস্তম্ভ চ মেদ্ররম্ভ নিজারতক্তাতি তথা রিরংসো:। ক্যাকুলক্তাতিহথে রতক্ত ছৌল্যং দধানা শিধিলং প্ররাতি॥

মেদস্বী ব্যক্তির এবং আহারান্তে, বমনান্তে, নিদ্রান্তে, রমণান্তে ও স্থুখভোগান্তে, নাড়ী স্থুল হইয়া শিথিল ভাবে গমন করে। বহুকফবিশিষ্ট ব্যক্তির নাড়ীও ঐক্লপ জানিবে।

অথ জ্বপূর্ব্বরূপে।

অস্বগ্রহণে নাড়ীনাং জায়স্তে মন্থরাঃ প্রবাঃ। মবঃ প্রবলতাং বাতি জ্বদাহাভিভূতয়ে।

জ্বোৎপত্তির পূর্বে অর্থাৎ অঙ্গে বেদনা উপস্থিত হইলে, নাড়ী ভেকাদির স্থায় লাফাইয়া মন্থ্যভাবে ২০০ বার গমন করে। দাহজ্ব উপস্থিত হইবার পূর্বে নাড়ীর ঐ প্রকার গতি ধারাবাহিক হইতে থাকে।

জনবেগে চ ধমনী সোধা বেগণতী ভবেং। জন প্রাকাশ হউলে নাড়ী উষগ ও বেগবতী হয়।

বাতজ্বরে।

সেম্মা হক্ষা হিবা মন্দা নাড়ী সহএবাতজা। পুলা চ ব িশ শীঘা স্পন্নতে তীব্ৰমাক্ষতে॥

বার্ব সঞ্চরকালে বাতজর হইলে নাড়ী সোম্যা (অকঠিন), ফুল্ম, স্থিরা (অর্থাং বিলম্বে বিলম্বে ইহার স্পন্দন উপলব্ধ হয়), মন্দা অর্থাৎ স্পন্দন উপলব্ধ হইলেও অস্পন্দ-গতি হইয়া থাকে। বার্র প্রকোপ কালে বাতিকজর হইলে নাড়ী ফুল, কঠিন ও শীঘ-গতি হয়।

বক্রা চ চপলা শীত-পর্ণা বাতব্রের ভবেৎ ।

বাতজ্ঞরে বমনী শাতল এবং সপ জণৌ-কাদির ভায় বক্ত অথচ চপল গতি বিশিষ্ট হউয়া পাকে।

পিত্তজ্বরে।

ভূতা চ সরলা দীর্ঘা শীঘা পিত্তম্বরে ভবেৎ। শীঘ্রমাহননং নাডাাঃ কাঠিস্যাচ্চ চলা তথা।

পিতের সঞ্চয় কালে পিতত্তর হইলে, নাড়ী পরিপূর্ণা, সরলা (গ্রন্থিন্মা অর্থাৎ জাড়্যাদি-রহিতা), দীর্ঘা ও শীঘ্রগামিনী হয়। পিতের প্রকোপকালে পৈত্তিকত্তর হইলে নাড়ী কঠিনা হইয়া এরূপ ক্রতবেগে গমন করে, বোধ হয় যেন উহা ভেদ করিয়া উদ্ধে স্পান্দন করিতেছে।

কফছরে।

নাড়া হয় গ্ৰামনা শাহলা লেখকোপতঃ ॥

কফের প্রকোপকালে শ্লৈত্মিক-জর হুটলে, নাড়ী তন্তুর, স্থার অতি স্কুন, মরালা-দির স্থায় মন্ত্রগতি ও উন্ধোদক-দিক্ত রজ্জুর স্থায় শাতল হুইয়া থাকে, অর্থাৎ জর-সম্বন্ধতে নিতান্ত শাতল হয়না।

মন্দা চ স্থান্থনা শাতা পিচ্ছিলা লেমনে ভবেৎ।
কফ্র জ্বনে নাড়া, শাতল ও পিচ্ছিল হয়,
এবং স্থিনভাৱে মন্দ মন্দ গমন করে।

বাতপিত্তত্বরে।

চঞ্চা তরলা ছুলা কঠিনা বাতপিওজা।

বাতপিত্ত জবে নাড়ী চকল (অর্থাং বানবের স্থায় সদা অস্থিবগতি), তরল (অর্থাং কদাচিং দোলায়মানগতি) এবং স্থল ও কঠিন হইয়া থাকে।

অগ্রচ্চ---

বক্রা চ ঈ্বচ্চপলা কঠিনা বাতপিত্তজা। অপর লক্ষণ।

বাতপৈত্তিক নাড়ী বক্র, **ঈয়চ্চপ**ল ও কঠিন **হ**ইয়া থাকে।

বাতশ্লেমজুরে।

ঈষচ্চ দৃষ্ঠতে তৃষ্ণা মন্দা স্থাৎ শ্লেম্ববাতজা। নিরম্ভরং পরং রুক্ষং মন্দ্রেম্মাতিবাতলা। রুক্ষবাতভবে তম্ম নাড়ী স্থাৎ পিওসরিচা।

বাতমোত্ম-জরে নাড়ী ঈষত্বত ও মন্দগতি হয়, কিন্তু যদি শ্লেষার ভাগ অল্প এবং বায়ুর ভাগ অধিক হয়, তাহা হইলে নিরস্তর খরবেগ ও রুক্ষ হইয়া থাকে। আর রুক্ষ-বাতে নাড়ী পিণ্ডাক্কতি অর্থাৎ বর্জুলাক্কতিপ্রায় হয়।

পিত্রশ্লেপ্তজ্বরে।

স্ক্রাণীতা স্থিয়া নাড়া পিওলেখনমূহণা। পিতৃশ্লেস-জনে নাড়ী স্ক্রা, শাঁতণ ও মন্দ্রেগ হয়।

প্রসঙ্গান্ত-

মধ্যে করে বংশান্তা বদি সন্তালিতা এলন্। তদা নূনং মতুশ্যক্ত কৰিবাপুরিতা মলাঃ ॥

নাড়ী যদি সন্তাপিত হইয়া মন্যমাঙ্গুলি স্থলে বহন।করে, তাহা হইবে নিশ্চয় জানিবে যে, ক্ষিরকোপে বাতাদিঃদোব পূর্ব হইয়াছে।

অথ মৃত্যুনাড়ীপরীকা।

মন্দং মন্দং শিধিলশিথিলং ব্যাকুলং ব্যাকুলং বা দ্বিমা দ্বিমা বহুতি ধমনী যাতি নাশক কুলা। নিতাং স্থানাৎ স্থলতি পুনরপাজুলিং সংস্পৃদেদ্ যা ভাবৈরেবংবিধবছবিধৈঃ সন্নিপাতাদসাধ্যা॥

থে সানিপাতিক নাড়ী কখন মন্দ মন্দ ভাবে, কখন শিথিল শিথিল ভাবে, কখন ক্রন্তব্যক্তির স্থায় ব্যাকুলভাবে, কখন থাকিয়া থাকিয়া, কখন অদৃশুভাবে, কখন বা অভি স্ক্রভাবে গমন করে এবং যাহা স্থান অর্থাৎ অস্ত্র্যুল হইতে কখন চ্যুত হইয়া পুনর্বার তৎস্থান স্পর্ণ করে, তাহা মৃত্যুনাড়ী জানিবে। পূর্বং পিত্তগতিং প্রভঞ্জনগতিং প্রস্থাণমাবিজ্ঞ হীং সন্তানজমণং মূহবিদধতীং চক্র দির্কামিব। ভীব্রম্বং দণ্ডীং কদাচিদপি বা স্ক্রম্বনাত্ম হীং নো সাধ্যাং ধ্যনীং ব্যক্তি মূন্য়ো নাডীগতিজ্ঞানিনঃ ।

নাড়ী যদি প্রথমে পিত্তগতি, পরে বান্ গতি, তংপরে দ্বোদ্দাতি ধারণ কবে, এবং চক্রাদিস্থিত বস্তুর স্থার মূহর্মুন্তঃ প্রাম্যাণা হয়, এবং কথন তীব্রভাবে ও কথন ক্রন্তাবে গমন করে, তাহা হইলে দেই নাড়ী প্রাণ-ঘাতিনী জানিবে।

মহাদাহেহপি শীভাং শীভাহে ভাপিতা শিল। । নানাবিধগতিয়ত ভত্ত সভাল সংশয়: ।

যাহার শরীরে অভান্ত দাহ, কিন্তু নাড়ী শীতল এবং যাহার দেহ শাতন, অগচ নাড়ী উষ্ণ, কিংবা যাহার নাড়ীর গঠি নানাপ্রকাব ভাহার মৃত্যু নিশ্চয়।

ভারপ্রবাহম্ছাভয়শোকপ্রম্কারণ র'ড়া। সংম্ছিতাপি গাচং পুনরপি সা জীবিতং ধরে ॥ পতিত সন্ধিতো ভেদী নষ্টপ্রক্ত বং পুনান । শাস্তি বিষয়ত্তভান কিবি বুতুঃকারণ্ম ॥

ক্রমাগত ভারবহন ও মৃদ্র্যা, তর, শোক ইত্যাদি আগন্ত কারণে নাড়ী অতি নিঃপ্রন্থ হইলেও মৃত্যুর সম্ভাবনা নাই। ঐ নাড়ী পুনর্মার উদিত হইরা চেতনা আনয়ন করে। আর উচ্চ স্থান হইতে পতন, ভগ্নাস্থির সম্মান (হাড় বসান), মলভেদ ও অতিনৈগুন হারা শুক্রক্ষয়, এই সকল কারণে নাড়ী স্পন্দ্রীন হইলেও ভাহাতে মৃত্যুর আশহা করিবে না।

স্থানহীনে শোকে চ হিমাকান্তে চ নিৰ্গলাঃ। ভবস্তি নিশ্চলা নাডো ন কিঞ্চিৎ তত্ৰ দূৰণম্।। উচ্চস্থানাদি হইতে পতিত, শোক বা

উচ্চস্থানাদি হইতে পতিত, শোক বা হিম ধানা অভিভূত হইলে, নীরোগ নাড়াও স্পন্দহীন হইয়া থাকে, কিন্তু ভাহাতে মৃত্যুব আশকা নাই।

ক্ষণাদ সচ্ছতি বেগেন শাস্ততাং লভতে ক্ষণাৎ। সপ্তাহাল্পরণ: তম্ভ যঞ্জনং শোধনজ্ঞিত্য ॥

যাহার নাড়ী জভবেগে গমন করিতে করিতে তৎক্ষণাৎ আবার শাস্তবেগ হয়, তাহার জীবন একসপ্তাহ কাল জানিবে। কিন্তু তাহাৰ অঙ্গে শোপ থাকিলে এ নিয়ন খাটিবে না।

হিমনদ্বিশদা নাড়ী অনুদাহেন তাপিনাম্। ত্রিদোষম্পর্নাং ভজতাং তদা মৃত্যুদিনতায়াৎ ॥

সালিপাতিক জ্বনাহে সন্তপ্ত ব্যক্তিদিগের নাড়ী যদি ত্যাবের ভার শীতল ও নির্মালহয়, তাহা হইলে তিন দিনের পর তাহাদের মৃত্যু জানিবে।

নিরাপনা দক্ষিণে পাদেশতথা চৈষা বিশেষভঃ। মুগে নাড়া বহেরিতাং ততো দিনচতুষ্টাম্॥

পুরণের দক্ষিণপদেও দক্ষিণ বারে স্কৃতরাং জীর বাষপদে ও বাষকরে যে নাড়ী পরীক্ষ-লীয়া, হাহা যদি উভয় স্থানেই মুখে অথীং ভজ্জনীনিবেশস্থান বহন করে, তবে লোগা চাবিদ্নি মাত্র জীবিত থাকিবে।

জংতি য**ত খ**ত্তানং ঘৰাৰ্ছন্তি নাড়িকা। ন স ডাৰিতমালে'তি জিদিন'চাত্ত্যে মৃতিমু॥

যাহার নাড়ী যবাগনার সন্থান ভ্যাগ করে, সে রোগা রক্ষা পায় না। তিনদিনের মরোই ভাহার মৃত্যু হুইয়া থাকে।

গতিঃ অসরকভোষ বহেদেকদিনের তু।

ধাধার নাড়ীর গতি জমরের ন্তার, অর্থাৎ স্থার বেমন উড়িবার সমর ক্ষণকাল এক স্থানে স্থিন থাকিয়া গুন্ গুন্ করিয়া চলিয়া যার, পরক্ষণেই আবার সেই স্থানে আসিয়া গুন্ গুন্ করিতে থাকে, তম্বং যাহার নাড়ী পুন্ংপুন্ ঐ ভাবে যাতায়াত করে, তাহার জীবন এক দিন মাত্র।

কলে ৰ প্ৰদেশত নিতাং পুনল'গতি চাঙ্কুলো। মনো ঘাদশগামানাং সভুত্তিবতি নিশ্চিংমু॥

যাহার নাড়ী ভজ্জনীনিবেশ স্থলে সর্বদা স্পান্দিত হয় না, এক একবার মাত্র অঙ্গুলিতে লাগে, ভাহার মৃত্যু স্বাদশ প্রহরের মধ্যে জানিবে। ত্বিতা নাড়ী মূপে ২ক্ত বিহ্যাদ্যোত ইবেক্ষ্যতে। দিনৈকং জীবিতং তক্ত দ্বিতীয়ে খ্রিয়তে গুবস।

যাহার নাড়ী মূলস্থানে মধ্যে মধ্যে এক একবার বিজ্যংক্তরণের স্তায় নিরীক্ষিত হয়, ভাহার জীবন একদিন মাত্র জানিবে, বিতীয় দিনে অবশ্রুই তাহার মৃত্যু হয়।

স্বস্থানবিচ্যুতা নাড়ী যদা বহতি বা ন বা। জালাচ হৃদয়ে তীবা তদা জ্বালাবধিস্থিতিঃ॥

যাহার নাড়ী স্বস্থান অর্থাৎ অঙ্গুঞ্নুল্ হইতে বিচ্যুত হইয়া থাকিয়া থাকিয়া এক একবার স্পন্দিত হয়, বা না হয়, এবং হাদয়ে তীব্ৰ জ্বালা থাকে, তাহার লীবনেব স্থিতি দেই জ্বালাবিন্য জানিবে, অর্থাৎ ভাষার জ্বালা নিবৃদ্ধি ও মৃত্যু এক সন্মেই ইউয়া থাকে।

অস্ত্ৰুলতো বাঞে দাসুলে যদি নাড়িক। প্ৰহ্যাদ্ধান বহিমু জুবং গানীয়াচ্চ বিচক্ষণা ॥

যদি নাড়ী অন্ধুসূল অর্থাৎ তর্জনী-নিবেশ স্থল ত্যাগ করিরা, মধ্যে। ও অনামিকা এই অন্ধুলিম্বরে উপলব্ধ হয়, তাথা হইলে অর্দ্ধ-প্রহরের পর কোগির মৃত্যু জানিবে।

সান্ধন্যাঙ্গুলাদ্ বাভো যদি তিষ্ঠতি নাড়িকা। প্রহরেকাদ বহিন্তিত্ব জানীয়াক্ত বিচক্ষণাঃ॥

যদি নাড়ী অঙ্কুইন্ল হইতে সাধ অঙ্কুল অন্তরে, অর্থাং কেবল অনামেকার। শেয়াদ্ধি-হালে স্পান্দিত হয়, তবে এক প্রহরেব প্র গোগের মৃত্যু জানিবে।

পাদা**সুনগতা** নাড়া চঞ্চনা যদি গচ্ছতি। ত্রিভিপ্ত দিবদৈ**তঞ** মৃত্যুবেব ন সংশয়ঃ॥

যদি নাড়ী সমস্ত ভর্জনী ও ম্যামাঙ্গুলির প্রথম অংশমাত্র ব্যাপিয়া চঞ্চলভাবে স্পান্ত হ হয় এবং মধ্যমার অবশিষ্ট পাদত্তয়ে ও অনা-মিকার সর্বাংশে সম্পূর্ণ অন্তপ্রশ্বর থাকে, তবে ভিন দিবসের মধ্যে রোগির মৃত্যু নিশ্চয়।

পাদাস্কুলগতা নাড়ী কোষণ বেগবতী ভবেৎ। চতুভি:দবদৈওঞ্চ মৃত্যুরেব ন সংশয়:॥

নাড়ী যদি ঈমহন্ত ও বেগবতী হইয়া পূর্মবৎ সমস্ত ভর্জনী ও মধ্যমার একচতুর্থাংশ পর্যান্ত ব্যাপিয়া শানিত হয়, তাহা হইলে চারি দিবসের মধ্যে রোগির মৃত্যু জানিবে। পাদারুলগতা নাড়ী মন্দমন্দা যদা ভবেং। পঞ্জিদিনসৈত্ত ইত্যুভ্বতি নান্ত্ৰা

যাহার নাড়া পূর্কাবং সম তর্জ্জনা ও মধ্যমার একচতুর্থাংশ পর্যান্ত ব্যাপিয়া মন্দ মন্দ ভাবে স্পন্দিত হয়, তাহার মৃত্যু নিশ্চয়ই পাঁচ দিবদের মধ্যে হইবে, জানিবে। স্বস্থানচাবনং বাবদ ধ্যক্তা নোপজায়তে।

শ্বস্থানচ্যবনং বাবদ্ ধমস্তা নোপজায়তে। তৎস্থচিক্ষ্য সংস্থেচপি নাসাধ্যম্মনিতি স্থিতিঃ॥

নাড়ী বে পর্যান্ত স্বস্থান অর্থাৎ অনুষ্ঠমূল থোগ না করে, কিংবা যে পর্যান্ত স্বস্থানে থাকার চিহ্নমাত্রও উপলব্ধ হয়, সে পর্যান্ত অসান্য মনে না করিয়া চিকিৎসা কবিবে। ভত্তমার সেক ইবাভিবেগা

বান্তি নালো হি যথানিগানাল।
ভূতজ্বে নাড়ীর গতি সমুদ্রগানিনী শ্রোত্রতীর ভায় বেগবতী হইয়া থাকে। আগ্রচ সন্তাপ থাকায়, উঞ্জলসিক্ত রজ্জুর

জায় নাড়ী উষ্প্ৰপূৰ্ণ হয়। ক্ৰম-|হিকেন ৰচন প্ৰদূৱে ক্ষাণান্তগামা বিষম্ভৱেণ। হিচায়কে নাথ ভূচায়-চুয়ো গচ্ছতি ভণ্ডা জমিবৎ ক্ষেপ॥

একাহিক বিষমন্ত্রে নাড়া কখন অনুষ্ঠ
মূল হইতে ক্রিক্সদূরে গমন করে, আবাব
ফলকাল পরেই সম্থানে আসিয়া উপস্থিত
হয়। ঘতীয়ক, তৃতীয়ক কিংবা চতুর্থক জরে
নাড়ী সন্তপ্ত হইয়া ক্রমে ভামির স্থায় গমন
করে। এইক্রপ অসাধ্য লক্ষণের ভাব দৃষ্ট
হইলেও অসাধ্য মনে করিবে না, কারণ এই
অবস্থায় নাড়া উষ্ণ পাকে; অসাধ্য হইলে
উষ্ণ পাকে না।

জোধজে সঙ্গলগ্নাকা সমাঙ্গা কামজে **ভ**রে। উচ্চা বেগধরা নাড়ী গুরকোপে প্রজারতে ॥

কোৰজ জবে নাড়ী খেন অন্ত নাড়ীতে সংলগ্ন হটয়া গমন করিয়া থাকে। কামজ জবে নাড়ী খেন অন্ত নাড়ীর সহিত একীভূত হটয়া ধাবিত হয়। এবং জরপ্রকোপবশতঃ উহা উষ্ণ ও বেগবতী হটয়া থাকে। উদ্বোধকালের ভয়চিত শ্রমের চ। ভাবে কীণ্যতির্বাডী জাতবা বৈদ্যুদ্ধমৈঃ।

উদ্বেগ, ক্রোধ, ভয়, চিস্তা, শ্রম ও অভি-লাষাদি অবস্থাবিশেষে নাড়ীর গতি ক্ষীণ হইরা থাকে।

জনে চ রমণে নাড়ী ক্ষীণাঙ্গা মন্দ্রগামিনী। জন্তে কামার্ভিকপেণ ভণস্তি নিকলাঃ শিরাঃ॥

জ্বের সবস্থার ব্রীদক্ষ করিলে নাড়ী ক্ষীণ ও মন্দর্গতি এবং কামাতুর হইলে বিকলা হয়, অর্থাৎ ইষ্টবস্ত প্রাপ্ত না হইলে লোকে যেমন ইতস্ততঃ চঞ্চলভাবে গমন করে, জ্বরে কামাতুর হইলে নাড়ীও তেমনই চঞ্চলভাবে প্রবিত হইয়া থাকে।

বাংয়ামে জমণে চৈব চিন্তায়াং ধনশোকতঃ। নানাপ্রকারগমনা শিরা গছতে বিজ্ঞাে

শ্রমজনক কার্য্যে, জনগে, অন্যয়নাদি চিস্তায় ও ধননাশ জন্ত শোকে, বিজর অব-স্থাতেও নাড়ীর গতি নানা প্রকাব হইয়া থাকে।

প্রদন্ধদাহ-

পুষ্টিক্তেলগুড়াহারে মাংসে চ লগুড়াকুতিঃ। ক্ষীরে চ স্তিমিতা বেগা মধুরে ভেকবদ্গতি:॥ রস্থাগুড়বটাহারে রক্ষণ্ডকাদিভোকনে। বাতপিতার্ত্তিরূপেণ নাডী বহুতি নিষ্কুম্ম ॥ মধুরে বহিগমনা ভিজে স্যাদ্ ভূলতাগতিঃ অমে কোকা প্রবগতিঃ কটুকে ভূজসন্নিভা। কষায়ে কঠিনা মানা লবণে সরলা ফুডা। এবং ছিত্রিচতুর্যোগে নানাধর্মনতী ধরা॥ অন্ত্রৈক নধরায়ৈক নাড়ী শীতা বিশেষত:। চিপিটেড ইদ্রবৈশ্ব হিরা সন্দতরা ভবেৎ। কুখাগুনুলকৈকৈব মলমলা চ নাড়িকা। भारमार श्वितवहा नाष्ट्री कृत्य नीला वलोबमी **॥** खरेड: कौरंतन्त्र भिरिट्टेन्ट श्विता मन्मवदा खरवर । জ্বেংতিকঠিনা নাড়া কোমলা কঠিনাশনে। জবজবাসা ক:হিছে কোমনা কঠিনাপি চ। কুদ্রে পূথগ গ্রন্থিলেব পুষ্টে পুষ্টেব জায়তে।

তৈলাদি মেহ পদার্থ ও গুড নাড়ী স্থূল হয়। মাংদাহারে নাড়ী লগুডের থায় কঠিন ও উঁচু হইয়া স্পন্দন ছগ্ধাহারে মন্দগতি: শর্করাদি ভৌজনে ভেকবৎ প্লবগতি হয়। রম্ভা ওড়েও বড়া এবং রক্ষ (নিঃমেহ) ও চিপিটকাদি দ্ৰব্য ভোজনে নাড়ী বাহপৈত্রিক রোগের ভাষ ক্ষন স্পৃথতি, ক্খন কা ভেক গতি হইরা থাকে। নিই রুগে নাডী সমুরের ভার, তিক্তরদে কেঁচোর ভার, অমুখনে ঈধ-5ক হইয়া ভেকের স্থায়, এবং কট্ট-সে ফিন্সাব প্রায় গমন করিয়া থাকে। ক্যায় রুসে নার্ছ। कठिन ७ ज्ञान (कड़वर), बद्दारम माज ७ জতগতি হয়। এইরপ তই তিন বা চারি প্রকার দ্রব্য ব্যপং সেবন করিলে নানাবিধ গতিবিশিষ্ট হয়। তুমা 'ও মধুলান দ্রব্য ভোজন করিলে নাড়ী অত্যন্ত শীতল, চিপিটক ও ভুঠ (ভাজা) দ্রবা খাইলে স্থিরা ও নন্দগতি হয়। কুমাও ও মূলা ভোজনে নাড়ী মন্দগতি হইয়া থাকে। ছগ্মপানে শাতল ও বলব তী এবং গুড়, ক্ষার ও পিষ্টকাহারে নাডা স্থির ও মন্দর্গতি হইয়া থাকে। মা'সভৌজনে নাড়া ভিরগতি, দ্রবদ্রো নাড়া আতি কঠিন কঠিন দ্ৰা কে গল দ্রবদ্রবের কাঠিন্য থাকিলে নাড়ী কোমনর হয়, কঠিনও হয়। কুদ্র দ্রব্য ভক্ষণ করিলে নাড়ী পূথক ও গ্রন্থিক হয়। পুষ্টিকর জবে। নাড়ী পুষ্ট হইয়া থাকে।

আজীর্ণে কু ভবেরাড়ী কঠিনা পরিতো হুড়া।
প্রসনা তু জাতা গুল্ধা পরিতা চ প্রবর্ততে।
পকালীর্ণে পৃষ্টিহীনা মন্দং মন্দং বহেৎ তু যা।
লগী ভবতি দীপ্তায়েশ্তথা বেগবতী মতা॥

অপক ও পক উভরবিধ অজীর্ণ রোগেই নাড়ী কঠিন হয়, এবং উভয় পার্শ্বে মন্দ গমন করে। স্বজীর্ণ হইলে নাড়ী কোমণ জড়তাশৃত্য ও ক্রতগামিনী হয়; পকাজীর্ণে নাড়া পৃষ্টিহীন হয়, এবং মন্দ মন্দ গমন करत। भीश्राधि वाक्तित नाज़ी नघु ও বেগ-वजी रहेंग्रा थारक।

অগ্নিমান্দ্যধাতুক্ষয়জ্ঞানম্।

মন্দাগ্রে: ক্ষাণধাতোন্চ নাড়ী মন্দতরা ভবেৎ। মন্দেংগ্রে শীততাং বাতি নাড়ী হংসাকৃতিত্তথা॥

অগ্নিমান্দ্য ও পাতৃক্ষর হইলে বমনী অতিশয় মন্দ্রগামিনী হয়। অগ্নিমান্দ্যে নাড়ী শীতল ও হংসের ভার গতিবিশিষ্ট হইয়া থাকে।

প্রসঙ্গ দাহ--

লগ্নী বহতি দীপ্তাগ্মন্তবা বলগতী মতা।
দীপ্তাগ্নি বাজির নাড়ী বলবাতী এবং লগু,
তার্থাৎ পুষ্টুও নহে, ক্ষাণ্ড নহে।

পাদেন হংসগমনা করে মভুক্ষংপ্রবা। ১৬/গ্রেম কতা দেহে তথ্যা গ্রহণাগদঃ ।

যাহাব পাদস্থ নাড়ী ২ংসের স্থায় এবং করস্থ নাড়ী ভেকের স্থায় গমন করে, তাহার অগ্নিমান্দ্য বা গ্রহণীরোগ বৃদ্ধিতে হইবে। ভেদেন শাখা গ্রহণীগদেন নিকীযারূপা স্থতিসারভেদে। বিলাক্ষরাখ প্রবা ক্লাচিদামাতিসারে পুথুরা জড়া চ।

সংগ্রহগ্রহণীবোগে ভেদান্তে নাড়ী শাস্ক-বেগ, অতিসারে ভেদের পর নির্বাধ্য অর্থাৎ অতি মন্দগামিনী, বিলম্বিকারোগে তেন হইলে ভেকের ক্লার প্লবগামিনী এবং আমাতিসারে ভেশান্তে নাড়ী স্থুল ও জড়বৎ হইন্না থাকে।

নিরোধে মৃত্রশক্তোবিড্, গ্রহে থিতরাশ্রিতে। বিস্টিকাভিভূতে চ ভব্তি ভেকবৎ ক্রমাঃ।

কেবল মল বা মৃত্র অথবা মলমৃত্র উভয়ই কক্ষ হইলে, কিংবা ইচ্ছা পূর্বক কক্ষ করিলে, অপবা বিস্ফচিকা, অশ্যরী ও মৃত্যক্ষছ্ক প্রভৃতি ঘারা উদর বিষ্টক হইলে, নাড়ীর গতি ভেকের স্থায় হয়, এবং বিষ্টক্ত হেতৃ নাড়ী বক্র ও স্ক্ষম ইইয়া থাকে। আনাহে মৃত্রকুচ্ছে চ ভবেন্নাড়ীগরিষ্ঠতা॥

আনাহ ও মূত্রকুছুরোগে নাড়ী গুরু (ভার)ও কঠিন হয়।

> বাতেন শুলেন মঙ্গংগনেন সদাতিবকা হি শিরা বহস্তী। আলাময়ী পিত্তবিচেষ্টিতেন সামেন শুলেন চ পৃষ্টিরূপা॥

বাতশ্লে বায়ুর প্রেখর তা বশতঃ ধননী সর্মনাই অতিশয় বক্রগতিতে গমন করে। পিত্তশ্লে উহা জালাময়ী অর্থাৎ অতিশয় উষণ হয় এবং আমশুলে নাড়ী পুষ্টিৰুক্তা হইয়া থাকে।

প্রমেহে গ্রন্থিকাপা সা স্কুতপ্তা চামদৃষিতা॥

প্রমেহ রোগে নাড়ী গ্রন্থিরপা অর্থাৎ মধ্যে মধ্যে •গাঁইটের ক্সার অন্তভূত হয় এবং উহাতে আমদোষ থাকিলে নাড়ী সর্বাদা উষ্ণ থাকে।

উৎপিৎহরপা নিষ্টি®ক!লে বিষ্টভঙ্গেমন চ বক্ররপা। ঋত্যর্থবাতেন অধঃ ক্ষুরস্তী উত্তানভেদিন্তসমাপ্তিকালে ।

বিবেভয়ণ করিলে মথবা সর্পাদি কর্তৃক
দি ইইলে, বিষ যখন শরীরের মধ্যে ব্যাপ্ত ইইয়া
অরিইলক্ষণ প্রকাশ কবে, তখন নাড়ী
অপরিনিষ্ঠরূপে অর্থাং চঞ্চলভাবে গমন
করে। বিইন্ত ও গুলারোগে নাড়ীর গতি
বক্ত হয়, কিন্তু বাজাবিক্যবশতঃ অধ্যাদিকে
স্পানিত হইয়া তিয়াগ্ভেদিনী ইইয়া থাকে।
সম্পূর্ণ লক্ষণ প্রকাশ হইবার পূর্বেন নাড়ী
উন্তানভেদিনী ইইয়া (চিং ইইয়া) লতার
ভায় উদ্ধামিনীও হয়। কথন কখন বা
তিয়াক ও উদ্ধাধিভাবেও গমন করে।

গুলেন কম্পোহণ পরাক্রমেন পারাক্তদ্যের গতিং করোতি। (উন্মাদাদাবপ্যেৰমের ক্রমঃ)।

গুলারোগে নাড়ী চঞ্চল হয় এবং পারা-বতের ন্যায় প্রবলবেগে ঘুরিতে ঘুরিতে গমন করে। উন্মাদাদিরোগেও নাড়ীর গতি এই-রূপই হইয়া থাকে। ব্রণেহতিকটিনে দেহে প্রয়াতি পৈ',ত্তকং ক্রমণ্। ভগন্দরামুরূপেন নাড়ী এপনিবেদনে। প্রয়াতি বাভিকং লগ' ন'ডী পাবকরূপিনী॥

ব্রণরোগের অপকাবস্থায় নাড়ীর পৈতিক গতি হয়। তগন্দার ও নাড়ীব্রণ লোগে ধমনী অতিশয় উষ্ণ হয় এবং বাতিকনাড়ীর স্থায় গম্ম করে।

বাধ্যা শলাভিহ্না জড়ে।
বেগাবরোধাকুলিবনা ভূম।
গতিং বিধতে ধননী গলেক্রমরালমালেব কফোবণেন ।

বমন করিলে, কিংবা শাস্ত্রদি থারা আহত হইলে, অথবা মলমূত্রাদির বেগ ধারণে কাতর হইলে, নাড়ীর গতি, কফপ্রকোপ হেতু গজেন্দ্র ও নরালাদির ভার হইরা থাকে অর্থাৎ নাড়ী স্থল ও মন্দর্গামিনী হইরা থাকে।

দোৰদাম্যাক সাদৃশ্যাদকুকাঞ্ছ কলাৰপি। জ্ঞাতব্যা ধ্যনীধ্ৰী যুক্তিভিকাকুমানতঃ।

জ্বাদি কতকগুলি রোগে নাড়ীর কিরূপ অবস্থা হয়, তাহা বলা হইল, তাহাই লক্ষ্য করিয়া ভিষক্ যুক্তি ও অনুমান থারা অনুক্ত রোগস্থলেও নাড়ীর কিরূপ অবস্থা হইবে, ভাহা বৃঝিয়া লইবেন, অর্থাং ক্থিত রোগের বা দোষের সহিত অনুক্ত থে রোগের বা দোষের সাদৃগ্য থাকিবে, তাহাতেও নাড়ীর অবস্থা তদ্রপই হইবে, জানিবে।

যো রোগিণঃ করং স্পৃষ্ট্র। স্বকরং কালয়েদ্ বদি। রোগান্তস্য বিনশ্বন্তি পকঃ প্রকালনে যথা॥

প্রকালন দারা পক যেরপ অপনীত হয়, সেইরপ বৈদ্ধ যদি রোগির হস্ত দেখিয়া নিজ হস্ত ধৌত করেন, তাহা হইলে রোগির রোগও অপনীত হইয়া থাকে।

উপদংহারমাহ—

কচিৎ প্রকরণোল্লেখাৎ কচিদৌচিত্যমাত্রতঃ। কচিদ্দেশাৎ কচিৎ কালাৎ সম্বীর্ণসদনির্দয়ঃ॥ নাড়ীপরিচয়দ্বরং প্রায়শো নৈর দৃষ্ঠতে।
তেন ধান্তা গ্রামাজার বহ ৩২ সমাধ্যমুক্তমৈঃ ॥
কলে পলে চান্তরীকে প্রসিদ্ধা বসা বা লাত।
নিবলপমানমত্র স্যাহ প্রাসদ্ধন্তবিদ্ধার হল
নাগ্রপঠনদ্বাপি শব্দবাপনাদিপ।
প্রশাদিভিরভাসাদের নালীবনেকভাব ল
নাড়ীপা চরিয়ং সমাগভাপননৈর সমাতে।
নাড়ীপরিচয়ো লোকে প্রায়ঃ পুরোন জায়তে ॥
নাড়ীপতিরিশা সমাগ্যোগভাসবদেকতঃ।
নাজ্যপা শ্বাহে জ্ঞাভুত বৃহশ্পতিস্বার্লি॥

কোন হলে শাস্থলিগিত প্রকরণান্ত্রণাবে, কোথাও বা উপযুক্তভান্ত্রণাবে, কখন বা দেশ এবং কাল অনুসাবে সঞ্চীণ বোণ সকল নির্ণন্ত ক্রিতে হয়।

নাড়ীপরীকার উপায় অতিহক্ষ, অতএব ধুইতা পুর্বক আমি যাহা বলিলাম, বৃদ্ধিমান ব্যক্তিগণ তাহাতে সমাধান করিবেন।

জলচন, স্থলচর ও খেচির গণের, জলে স্থলেও অন্তরীকে বাহার বেরপে গতি নিজিট আছে, সেই সেই গতিই এই নাড়ীপরীকাব উপমানস্থল হইবে। কেবল নিবস্তর অন্যয়ন ও অধ্যাপনা শামা নাড়ীজান হর না, পুনঃ-পুনঃ নাড়ীম্পর্শনরূপ অভ্যান ধানাই ইহাতে ব্যংপত্তি জন্মিয়া পাকে।

সমক্ প্রকারে নাড়ীজান কেবল অভ্যায় বারাই জন্মে, তথালি নাড়ীজান, অভি ব্যাসাপেক্ষা

্বোগাভাবের ভাষ একাগ্রচিত্ত ইইয়। নাড়ীজ্ঞান অভ্যাস করিতে হয়, নতুবা বৃহ-স্পতিতুল্য বৃদ্ধিমান্ হইলেও নাড়ীজ্ঞানবিষয়ে বৃংপত্তিলাভ করিতে পারা যায় না।

অথ নে এপরাক্ষা।

নেত্রং স্যাৎ পবনাক্রন্ধ ধুরবর্ণং তথাঞ্চন্য। কোটরান্তঃপ্রবিষ্টক তথা ন্তর্কবিলোকন্ম। হরিদ্রাধন্তবর্গং বা রক্তং বা হরিতং তথা। দীপদ্বেবি সদাহক নেত্রং স্যাৎ পিত্তকোপতঃ। চকুৰ্বন সৰাইলাং স্বিশ্বং স্থাং সলিলয়, তম্।
তথা ধনলবৰ্ণক জ্যোতিহাঁনং বলাবিত্ৰম্ ।
বে এং দিদোষবাইলাং স্থান্দোমব্যলক্ষণম্।
বিদোষলিকসক্ষেন তথারয়তি বোগিণম্।
তলামোহাকুলে ভামে নিতৃ গ্লে চাতিকক্ষকে।
রক্তবর্ণ চ সততং বিকৃতে ঘোরতারকে ॥
কণাত্রমীলিতে চৈব ক্ষণাদেব নিমীলিতে।
বিলুপ্তকৃষ্ণতারে চ বহুবর্ণে চ তংক্ষণাং।
ভবতো নয়নে চেখং সন্নিপাতে বিশেষতঃ॥

বার্থাকোপ ইইলে চক্ষ্য কৃষ্ণ, বৃষ্ণ বা ঘনণবর্ণ, কোটরগত ও স্তর্নৃষ্টি; পিন্ত-েকোপে চক্ষ্য রক্ত, হরিত বা হরিদ্র। বর্ণ, নাপালোকদেশী ও দাহবিশিষ্ট; কফানিক্যে মিনা, জলানুত, ষেত্রণ, জ্যোতিহাঁন ও নানিত্র, দোবহাপ্রকোপে তত্তালোধবর-নামনান্ত, দোবহাপ্রকোপে তত্তালোধবর-নামনান্ত এবং সন্নিপাতে (জিনোম-প্রকোপে) চক্ষা ক্লাকুলত, মোহস্কত, শামবর্ণ, কোট্রাত, অতি কৃষ্ণ, রক্তরণ, সত্ত বিক্লত, যোকারাবিশিন্ত, ক্লাক্ষ্যেতার এবং ক্ষণে ক্লে ব্রুবির বর্ণাবশিষ্ট হয়।

অথ জিহ্বাপরাক।।

শাকপত্রপ্রভা ক্ষে ক্ট্না রসনানিলাং। রক্তা শ্রাবা ভবেং পিতালিপ্রার্জা ধবলা কফাং॥ পরিদধা গরপশা কৃষ্ণ দোষত্রেহবিকে। সেব দেখিব্যাবিক্যে দোষভিত্যকক্ষণা॥

বানুর প্রকোপে জিহ্বা শাকপত্রপ্রভ, কক্ষ ও কুট্ন (ফাটা ফাটা) হয়। পিত্ত-প্রকোপে রক্ত বা শ্রাববর্গ, কফপ্রকোপে বিশ্ব, আদ্র ও শ্বেতবর্গ, দোমঘরপ্রকোপে তত্তদোমঘরলক্ষণমুক্ত এবং ত্রিদোমপ্রকোপে দর্মবং ক্ষরবর্গ ও কন্টকবং শ্বস্পর্শ হয়।

অথাস্তপরীক্ষ।

বাতে জন্মান্তং স্তাং পিতে তিজং **ক্ষে মরু।**হল্যান্ত **ছ**ল্ডান্ড ক্ষেয়াং সন্নিপাতে তিলি**সক্ষ**।

মুখ বাতদোবে লবণ, পিতলোবে তিজ্ঞা,

ক্ষানোৱ মধুর এবং **ছিদোব-প্রতলাপে ত**জ-

দোষাত্মসারে ছই রস ও ত্তিদোষ-প্রকোপে তিন রদের অন্তত্তব বিশিষ্ট ছয়।

অথ মৃত্রপরাক।।

পাশ্চাত্যরজনীযানে ঘটিকানাং চতুষ্টরে।
উথাপ্য রোগিণং বৈত্যো মূত্রোৎসর্গক কাররেং ॥
আগুধারান্ত সন্তাজ্য মধাধারাসমূত্রবন্।
উত্তে কাচনরে পাত্রে কৃতং মূত্রং পরীক্ষরেং ॥
ভাশ্বরোগরবেশারাং প্রকাশস্থানকে পুত্র ।
লোলয়িয়া পুনঃ সমাক্ ততো মূত্রং পরীক্ষরেং ॥
ভূণেনাদার তৈলপ্ত বিনদুং মূত্রে বিনিক্ষিপেং ।
ভাগত্তে সূত্র্দা যত্র বিকারঃ সোহন্তি পিত্তজঃ ॥
বিশ্বং জ্যাবাক্ষণচ্ছারং বাতান্য তাং প্রজারতে।
ভাবদুদ্ধি শ বর্গাতি তৈলবিন্দুর্গুং তথা
মূত্রং প্রেম্পি জারেত সমং প্রলবারিণা ॥

অগ্রচ্চ ---

বাতেন পাওরং মূজং সক্ষেন্থ কলরোগিণাম। রক্তবর্ণং ভবেৎ পিত্তে দ্বল্যজে মিশ্রিতং ভবেং ॥ সিদ্ধার্থ তৈলসদশং মূত্রং স্তাদামপিত্তরে। তৈলবিক্তথা কিন্তঃ স্থাববুদ্দশংযুতঃ ॥ নাভপিতে। ভবং মূঞং জ্ঞাতব্যক ভিষম্পরৈ:। ৈতলবিন্দুস্থপা ক্ষিপ্তকত্দিকু বিসপ্তি॥ শ্লেমবাভোম্ভবং মূত্রং দৌবীরেণ সমং ভধ।। পাঞ্জং শ্লেমপিত্তে চ পিতে চৈন পরীক্ষয়েৎ ॥ স্ত্রিপাত্তন কৃষ্ণক বহুবর্ণক জায়তে। তৈলতুল্যং ভবেমূত্রং নিতাং সহজপিত্তগম।। কফাং প্রলপানীয়-ভুল্যং মূত্রং প্রজায়তে। সহবাতোম্ভবং মূত্রং থে ১ং রক্তং প্রজায়তে ॥ বাতলেখোদ্ভবং মৃত্রং ঘনং খেতং প্রজায়তে। তৈলতুল্যং ভবেনু রং পিত্তলেমসমূদ্ভবন্॥ রক্তবাতেন রক্ত: স্থাৎ কৌহস্ত: পিত্ততো ভবেৎ। অংশ বছলমারক্তং মূত্রমালোক্যতে যদা। বদন্তি তদতীসার-লিঙ্গং ভলিঙ্গবেদিনঃ। জলোদ্রভবং মূত্রং ভবেদ্ যুতকণোপসম্। अक्ष मृजममः मृजः कीर्वक्रममूख्यम्। মূত্রক কুকভাং যাতি ক্ষররোগো যদা ভবেং। ক্ষররোগোন্তবে খেডসসাধ্য: ভচ্চ নির্দ্দিশেৎ। প্রবর্ত্তর বদা মূত্র স্থিক্ষা হৈলসমপ্রভম্ 🛭 আহার উদরস্থত জীর্ণং ষাতি ভদা কিল। ভর্ত্তং পীত্রমধ্যে রক্তা মূত্রং চেল্লোসিণো ভবেং॥ পিত্তপ্রকৃতিসম্ভত-সন্নিপাতি ককণ্ম। বাতাধিকে সন্নিপাতে কৃষ্ণমধ্য ভবেৎ তথা 🛭

কলাধিকে সন্নিপাতে গ্রন্থখাং ভবেৎ তদা । বস্তেকুরসসন্ধাশং মৃত্রং নেত্রে চ গিঞ্জরে। রসাধিকাং বিজানীয়ান্ নির্দ্ধিশেৎ তত্র লক্ষণম্।

মূত্রপরীকা।

বৈষ্ণ, চারিদণ্ড রাত্রি অবশিষ্ঠ থাকিতে নোগিকে উত্থাপিত করিয়া মূত্র ত্যাগ করা-ইবে। প্রথম মূত্রধারা গ্রহণ করিবে না। মধ্য অবস্থায় যে মূত্র নির্গত হইবে, তাহা নির্দ্মণ কাচপাত্রে রাখিয়া পরীক্ষা করিবে।

সুর্ব্যোদয় হইলে, প্রকাশ্ত স্থানে বৃত ঐ মূত্র সম্যক্রপে পুনঃপ্রঃ আলোড়িত করিয়া প্রীকা করিবে।

একবিন্দু তৈল তৃণ শ্বারা উঠাইরা মুত্রে নিক্ষেপ করিবে, যদি উহাতে বৃশুদ জন্মার, তবে ঐ রোগ পিডজনিত জানিবে।

বাতিক দোবে মৃত্র শ্লিঞ্ক, শ্লাব (ক্রম্বপীত)
ও অরুণবর্ণ হইরা থাকে এবং মৃত্রের মধ্যে
তৈলাবন্দু নিক্ষেপ করিলে, মৃত্র তৈলাবন্দুকু
হইয়া, বিন্দু আকারে উপরিভাগে
উঠিতে থাকে।

শ্রেষ্ণাবে মূত্র প্রলজ্জের (চোবার জ্লের) তুল্য অর্থাৎ বোলা মৃত্যুষ্ণাধাকে।

গ্রাণাত্র—

বাহদোষে মূত্র পাগুরবর্গ, প্রেল্যদোষে কেনযুক্ত, পিত্তদোষে ১ক্তবর্গ ও ঘদ্জদোষে মিশ্রবর্ণ শক্ষিত হইয়া থাকে।

আমপিত্ত-জনিত রোগে, মৃত্র খেতসর্থপ-তৈলের তুল্য হইয়া থাকে।

তৃণ থারা তৈলবিন্দু মূত্রে নিক্ষিপ্ত ইইলে, যদি তৈল ভাবিবৰ্ণ বুৰুদুৰ্ক্ত হয়, তবে চিকিৎসাবিশানদ পণ্ডিতগণ উক্ত মূত্রকে বাছপিও দোষে দুখিত বলিয়া জানিবেন।

তৈশবিন্দু উক্তর্মণে নিক্ষিপ্ত হইলে যদি সৌবীরের (কাজির) স্থায় দৃষ্ট হয় এবং চতুর্দিকে বিসপিত হইয়া পড়ে, তবে মৃত্র বাতরোমদোষে দৃষিত বালয়া জানিবে। পিত্ত বা শ্লেমপিত্তদোষে মূত্র পাণ্ড্রবর্ণ হইরা থাকে।

সারিপাতিক দোষে মৃত্র, ক্বঞ্চ অথবা বছ-বর্ণযুক্ত হইয়া থাকে। পিন্ত প্রকৃতি ব্যক্তির মৃত্র সর্বাদর্শনা তৈলতুল্য হয়। কক্ষপ্রকৃতির মৃত্র প্রশান জলের তুল্য আবিল হয়। বাত প্রকৃতির মৃত্র খেত এবং রক্তবর্ণ হইয়া থাকে। বাত শ্লেম-প্রকৃতির মৃত্র ঘন এবং খেতবর্ণ হইয়া থাকে। বিভাগেম-প্রকৃতির মৃত্র বক্তবর্ণ হয়, রক্তপিত্ত প্রকৃতির মৃত্রের বর্ণ কুষ্ণম ফুলের আম হয়। বথন কোন ব্যক্তির মৃত্র অধিক এবং অবোভাগে আরক্ত দৃষ্ট হয়, তথন অভীসার-চিহ্নবেভা পণ্ডিতগণ ভাহাকে মৃত্রাতিসার বলিয়া থাকেন।

জলোদর রোগে মৃত স্বতকণার ভাষ হয়। জীর্ণজ্বে মৃত্র অজামূত্রের ভাষ হয়।

ক্ষয়বোগ কালে মূত্রের বর্ণ ক্ষকতা প্রাপ্ত হয়। ক্ষয়বোগে মূত্র যদি খেতবর্ণ হয়, তবে তাহা অসাধ্য শানিবে।

উদরস্থ আহার জার্ণ হইলে মূত্র সিথা এবং তৈলের তুল্য প্রভায়ক্ত হয়।

যদি কোন রোগির মূত্র উদ্ধানে পীত এবং অবোভাবে রক্তবর্ণ দৃষ্ট হয়, তবে তাহা পিতপ্রধান সমিপাতের লক্ষণ ভানিবে।

বাভাবিক। সঞ্চিপাডে মূত্রের বর্ণ মধ্যে ক্ষেবর্ণ হয়। ক্ষাবিকা সংলপাতে মূত্রের মধ্য ভাগ শুক্রবর্ণ হয়গাথাকে। যাহার মূত্র ইক্ষু-রদের ভাগ এবং নেত্রহন পিলল্বর্ণ হয়, ভাহার রসাধিক্য জানিবে।

অথ মলপর্রাকা।

বাতত চ মলং কুকং ততঃ পিততে পীতবিট্। রক্তবর্ণং মলং কিঞ্জিলং খেতং কফোন্তবম্। আমং বা শ্লেমজং প্রাছমিশ্রিতং দ্বন্দুজং বদেং। অপকং তাদজীর্ণে তু পকং স্বান্তমলং তবেং। অতায়ে) পীড়িতং শুদ্ধং মন্দায়ে) তু দ্রবীকৃত্য । দুর্গনাং চন্দ্রিকাযুক্তমসাধাং মননক্ষণম্ ॥

মলপ্রীকা।

বার্প্রকোপে মল ক্লফবর্ণ, পিত্ত প্রকোপে পীত বা ঈবং রক্ত বর্ণ এবং কফ প্রকোপে খেতবর্ণ হইয়া থাকে। এই কফোদ্ভব মলের অপর নাম আম। ছই দোষের লক্ষণবিশিষ্ট মলকে ঘণ্ডজ কহে। অজীর্ণে অপক, জীর্ণে বছে, অত্যামি রোগে শুক্ষ এবং অগ্লিমানের মল পাত্লা হইয়া থাকে। মল অত্যন্ত তুর্গন্ধ বা চন্দ্রিকাষ্ক্ত (মনুবিপিচ্ছাবং) হইলে শেগিকে অসাধ্য জানিবে।

তার শক্ষপরীক্ষা।

গুরুষরো ভবেৎ প্রেমা কুটবস্থা চ পিডল । উভাভাগে রহিটো বাঠ্য স্বরহক্তিব লক্ষরে ॥ ক্ষেম্মান স্বর গুরু, পিত্তে স্পষ্ট এবং বারুতে নাতিগুরু ও নাতিস্পষ্ট হয় ।

ভাগ স্পাশপরীক্ষ:।

বিভয়েগি ভবেহকো বাভয়েগী চ শিভ্যা।
আজিত স ভবেং শ্লেমা স্পর্শতব্দের লক্ষ্যাং ।
পিত্তবোগী উপস্পেশ্, বাভরোগী শীতলস্পর্শ এবং ক্ষরেগ্যী আজিস্পূর্শ হয়। এই

গুলি স্পর্ণ হাবা পরীক্ষা করিবে।

ত্বথ বৈদ্যাদি-পাদ-চতুক্টরম্।

ভিষগ, জবামুপস্থাতা রোগী পাদচ**ভূষ্টরম্**। গুণবৎ কারণং জ্ঞেয়ং বিকা**রস্ঠোপশা**স্তয়ে॥

চিকিৎসক, ঔষধ, পরিচারক এবং রোগী এই চারিটি চিকিৎসা-ব্যাপারের অঙ্গ বলিয়া ক্থিত হয়।

শ্রতে পর্যাবদাভত্বং বহুশো দৃষ্টকর্মতা ।: দাক্ষাং শৌচমিতি জেন্তং বৈজ্ঞে শুণচতুষ্টরম্ ॥ আয়ুর্বেদ-পারদর্শিতা, বহুদর্শিতা, ক্রিয়া-নৈপুণ্য ও পবিত্রতা, বৈত্যের এই চারিটি গুণ থাকা আবশ্রক।

প্রশন্তদেশসম্ভূতং প্রশন্তেছহনি চোদ্ধূতন্। অন্ধ্যাত্রং মহাবীর্যাং গদ্ধবর্ণরসাধিতম্ ॥ উত্তিজ্ঞাপরিকুঞ্জং শুদ্ধং ধাছাদিকং তথা। স্থীক্ষা কালে দত্তক প্রাহঃ প্রস্থাবিধ্য ॥

প্রাশস্ত দেশে উৎপন্ন, প্রাশস্ত দিবসে উদ্ধৃত, অল্পনিমিত, মহাবীর্যাসম্পন্ন, গন্ধ-বর্ণ-রস-বিশিষ্ট ও কাঁটাদি কর্তৃক অক্ষুপ্ত উদ্ভিক্ষ এবং শোনিত দাতু প্রভৃতি বর্থাসমন্ত্রে প্রেষ্ট্রক হইলে উৎকৃষ্ট ঔষণ বলিয়া নিদিষ্ট করা যায়।

উপচারজ্ঞতা দাক্ষামনুরাগক্ষ ভর্তনি। নৌচক্ষেতি চতুর্থোহয়ং গুণঃ পরিচরে জনে॥

জাপকত্বক রোগাশামাত্রস্ত গুণা মতাঃ॥

শুদ্রানাভিজ্ঞ, কার্য্যকুশল, প্রভুভক্ত ও শুচি ব্যক্তি শ্রেষ্ঠ পরিচারক বলিয়া কথিত হয়। শুভিনিক্ষেশকারিত্মভারত্মশাপি চ।

বে নোগী আপনার পীড়ার পূব্ব র্ভান্ত শ্বনণ করিয়া নির্দ্দেশ করিতে পারেন, এবং গিনি রোগের বর্ত্তমান অবস্থা বিশেষরূপে জ্ঞাত করাইতে সমর্থ ও বে রোগী হীনসাহস

দৃষ্টকর্মা চ শাব্রজ্ঞান বৈত্যা নি**দ্ধিভাজনা।** একাঙ্গহীনো ন প্লাঘ্য এক পক্ষ ইব দিকঃ ॥

না হয়, সেই রোগাই প্রকৃত চিকিৎসাযোগ্য।

দৃষ্টকন্মা ও শাক্ষজ্ঞ বৈছাই শ্রেষ্ঠ, এই উভয়ের কোন একটার অভাব হইলে বৈছা, একপক্ষ-বিহীন পক্ষীর স্থায় অকর্মণ্য হইয়া থাকেন।

শাস্ত্র: গুরুষ্থোদীর্ণমাদায়োপাস্ত চাদকুৎ। বঃ কর্মা কুরুতে বৈচ্চঃ দ বৈচ্চোহত্যে ভু ভস্করাঃ॥

যে বৈষ্ণ নিয়মিত গুরুর নিকট আয়ুর্বেদ শাস্ত্র অধ্যয়ন ও পুনঃপুনঃ অভ্যাস করিয়া চিকিৎসা-কার্য্যে প্রবৃত্ত হন, তিনিই যথার্থ বৈষ্ণা, অন্তকে তম্বর বলিয়া জানিবে। আয়ুৰ্বেদং চিকিৎসাক জ্যোতিষং ধর্মনির্ম্। বিনা শান্তেণ যো এয়াৎ তমাছত্র হ্লাতকম্॥

যে ব্যক্তি শাস্ত্র অধ্যয়ন না করিয়া আয়ু-র্বেদ, চিকিৎসা, জ্যোতিব ও ধর্মশাস্ত্র এই সকল বিষয়ের উপদেশ প্রদান করে, তাহাকে ব্রহ্মঘাতক বলিয়া জানিবে।

কুচেলঃ ককণ েন্তক কুগ্ৰামী স্বয়মাগতঃ। পঞ্চ বৈত্যা ন পঞ্জাতে ধ্যন্তবিসমা যদি ।

ম্লিন-ব্যন-পরিধারী, কর্কশভাবী, স্তব্ধ কুগ্রামবাদী এবং স্বরং আগত (বিনা আচ্বানে সমাগত) এই পঞ্চ প্রকার বৈদ্ধ চিকিৎদা-বিবরে প্রস্তরিকল্প হইলেও কথনই সন্মানার্হ হইতে পারেন না।

উৎপ্রজভাগ্নিশায়নেং ন বৈজ্ঞা পরিশয়তে। ভ্রমাৎ পুত্রদেশক পালয়েদ(ভূবং ভিদক্॥

বোগী স্বয়ং চিকিৎসকের হত্তে আপনাকে সমর্পণ করিবেন এবং বৈশ্বকে কোনরূপ আশঙ্কা করিবেন না। সেই হেতু চিকিৎসকও রোগীকে পুরুবর নায় পালন কবিবেন।

ধর্মার্থকামমোক্ষাণ নারোগান গুলমুত্তমধ্য রোগান্তকাপহস্তার: শ্রেয়দো জীবিতক্ত চ ॥

আরোগাই বন্ম, অর্থ, কান ও নোক এই চতুর্ব্বর্গ লাভের প্রধান উপান, বাানি সেই চতুর্ব্বর্গপ্রদ আরোগ্যকে এবং ঐহিক মধল ও জীবনকে বিনষ্ট করে।

ব্যাধ্যো ছিবিধাঃ প্রোক্তাঃ শারীরা মানসাম্তথা। শারীরা হারকুঠান্তা ডিঝাদান্তা মনোভবাঃ ॥

ব্যাধি ছাই প্রকার , যথা --শারীরিক ও মানসিক। জ্বর বা কুষ্ঠ প্রভৃতিকে শারীরিক এবং উন্মান প্রভৃতিকে মানসিক ব্যাধি বলে।

লোবাণাং সাম্যমারোগ্যং বৈষম্যং বাাধিক্চাতে। স্থসংজ্ঞকমারোগ্যং বিকারো ছংখ্যেব চ॥

বায়ু পিন্ত ও কফ এই দোষপ্রয়ের সম-তার নামই আরোগ্য এবং ইহাদের বৈষম্যই ব্যাধি বলিয়া কথিত হয়। আরোগ্যের নামাস্তর স্থ, ব্যাধির নামাস্তর তুঃখ। সাধ্যোহনাধ্য ইতি ব্যাধিধিধাতোহপি পুন্ধি ধা। স্থ্যাধ্যঃ কৃদ্ধসাধ্যো যাপ্যো বন্দাপ্ৰতিক্ৰিয়: ॥

সাধ্য ও অসাধ্য ভেদে ঐ ব্যাণি ছুই প্রকার। এই সাধ্য ও অসাধ্য প্রভাবেক আবাধ দ্বিবি হইয়া থাকে, যথা স্থ্যসাধ্য ও কুচ্ছুসাধ্য, এই ছুই প্রকারই সাধ্য। যাপ্য এবং যাহা উব্যাদি দ্বারা অপ্রতিকার্য্য এই উভয়কেই অসাধ্য কহা যায়।

যাপাত্তং যাতি সাধান্ত গাপোন গছে গ্ৰসাধাতান । জীবিতং ইন্তাসাধান্ত নৱস্তাপ্ৰতিকান্ত্ৰিণঃ ।

উপেক্ষিত হইলে সান বাগিই যাপা এবং যাপাও অসান ২৭। অসান বাগি জীবন হবণ করে।

অংগাপদ্ৰলক্ষণম্ ।

রোগারস্তকদোষত প্রকোগাত্পজায়তে। যে'গুড়ো বিকারঃ সাবধৈরপুরুব ২ংগুদিতঃ ।

নোগোৎপাদক দোষের অধিকতর **প্রকোপ** জনিত দে সকল অক্তান্ত বিকাশ উৎপন্ন হয়, তাহাকে পণ্ডিতগণ উপদ্রব নজিয়া থাকেন।

অথারিন্টনকণম ।

রোগিনো মরণং যত্মদিবগুণ্ডাবি মক্ষাতে। ভলক্ষণমরিষ্ঠা প্রাভিত্তশালি ভল্ডাতে।

্যে লক্ষণ খারা বোগির মৃত্যু স্থির নিশ্চয় বুঝিতে পারা যায়, তাহাকে অরিষ্ট অথবা রিষ্ট বুলা যায়।

অথ চিকিৎসালকণম।

শা ক্রিয়া নাগিংরণী সা চিকিৎসা নিগজতে।
দোষধ'তুমলানাং যা নাম্যকুৎ সৈব রোগঞ্জ।
ক্রিয়াত কর্মা। বাাধিহিয়তেগনয়েতি হাাধিহরণী।
করণাধিকরণয়োশ্চেতি স্ত্রেণ করণাথে পুট্।)
তথা চ—

যাভিঃ ক্রিয়ান্ডিজায়ন্তে পর্বারে ধাতবঃ সমা:। দা চিকিৎসা বিকারাণাং কর্ম তদ্ভিষজাং মতম্। যা ভূনীৰ্বং শসন্তি নাক্তং ব্যাধিং করোতি চ। সা ক্রিয়া ন তু যা ব্যাধিং হর অক্স্মূনীরয়েৎ। (ক্রিয়াক চিকিৎসা।)

যে জিয়া ব্যাধিনাশিনী এবং দোষ, বাতু ও মলের সমতাকারিণী, সেই জিয়াকে ক্রেকংসা বলা যায়।

্য ক্রিয়া ধারা শারীরিক পাতুসমূহ সমতা পাপ্ত হয়, সেই ক্রিয়াকেই ব্যাধির চিকিৎসা বলে এবং ঐরূপ চিকিৎসাই চিকিৎসকদিগের অভিমত।

মে চিকিংসাম্বানা উৎপন্ন রোগ নষ্ট হয়,
এবং অন্ত প্রকাশ বোগ-উৎপত্তিব প্রতিবন্ধকতা জন্মার, সেই জিয়াই চিকিংসা শব্দের
বাচা। কিন্তু যে জিয়া মানা এক নোগের
প্রশন হইয়া অন্তরোগের উৎপত্তি হয়, তাহাকে
চিকিংসা বলা গাইতে পাবে না। এ স্থলে
কিন্তা। শুকের অর্থ চিকিংসা বলিয়া জানিবে।
বর্জ্যাধার্মেহগোগাদ্ যথা দীপন্ত সংস্থিতিঃ।
বিজ্যাধি চ দক্তিয়মকালে প্রাণ্যক্ষ্যঃ॥

ব্যক্ষাপ চ দৃষ্টেমকানে আগ্ৰানক্ষ্য । যেরূপ প্রদীপে বৃদ্ধি ও তৈল সংস্কৃত উহা নিক্ষাণ হইতে পারে, তদ্মপ আগ্রানস্কৃত কারণবশ্ভঃ মন্তুদেবে প্রাণ নাশ হয়।

यान्यसम्बद्धः सञ्चलका विश्वतः । यान्यसम्बद्धः स्थलिका ।

এটাৰপ্তস্থ নৈজাং না নৈজ্য প্ৰভ্ৰন্য । ব্যাধির স্বৰূপ অবগত হওয়া এবং বেলনা অৰ্থা**ৎ উপস্থিত** কটেব নিবানণ কৰাই চিকিৎসকের চিকিৎসক্ষ, ইহানা আবং-

যাদৃচিছকো নুমুষু 'চ বিহীনঃ করণৈ চ যঃ। বৈরী চ বৈজ্ঞবিদেষী আদ্ধাহীনঃ সশক্তিতঃ॥ ভিষজামনিরমাশ্চ নোপক্ষম্যো ভিষ্থিদা। এতাকুপাচরন্ বৈজ্ঞো বহুন্ দোষানবাপ্ল,রাং॥

প্রদাতা নহেন।

ব্রুপ্রচারী, মুমুরু, ইন্দ্রিয়পজি-বিহীন, বৈরী, বৈজ্ঞান্তারী, শুরুরু, ইন্দ্রিয়পজি-বিহীন, বৈরী, বৈজ্ঞান্থী, শুরুরিন, শঙ্কিত ও চিকিৎসকের অবাধ্য, এতাদৃশ ব্যক্তিগণকে বৈজ্ঞের চিকিৎসা করা বিধেন্ন নহে। কারণ ইহা-দিগকে চিকিৎসা করিলে বৈজ্ঞাকে বহুদোষভাগী ইইতে হয়।

যাবৎ কণ্ঠাগতাঃ প্রাণা বাবন্নান্তি নিরিঞ্জিয়ঃ । তাবচ্চিকিৎসা কর্ত্তব্যা কালস্ত কুটলা গতিঃ ॥

যে পর্যান্ত প্রাণ কঠগত থাকিবে, ংয পর্যান্ত ইন্দ্রিশন্তির নাশ না ২ইবে, সেই পর্যান্ত চিকিংসা করা কর্ত্তব্য।

জাতমা একিকিংকস্থ নোপেক্ষোওনত্মা গদঃ। বৃচ্চিশপ্তবিষয়কাঃ স্বালাগি বিকরোজনে) । স্বা স্বান্ধন বড়েন ভিছ্পতে তরুণগুরুঃ। সু এবাতিপ্রবৃদ্ধপ্ত চিছ্পড়েহতিপ্রস্কুতঃ।

ব্যাণি উংপন্ন হইবা মাত্র চিকিৎসা করিবে,
সামান্ত বলিয়া উপেক্ষা করিবে না, কারণ
সামান্ত ব্যাণিও অগ্নি, শন্ত ও বিষের প্রায় অন্ত্র
পরিমিত ২ইলেও মহান্ বিকার উপস্থিত করিতে
পারে। যেরূপ ক্ষুদ্র কৃষ্ণ অন্ত্রায়াসে
ছিন্ন হয়, কিন্তু বৃহৎ হইলে অতিপ্রায়ন্ত্রও তাহা
ভেদন করা হক্ষর হইন্না উঠে, ব্যাণিদিগের
পক্ষেও তদ্ধপ।

অথ চিকিৎসাসূত্রম্।

অস্বস্থে বেন বিধিনা স্বস্থে ভ্ৰতি নানক:। তমেন কাৰজেদ নৈজ্যো যতঃ স্বাস্থ্যং মদেখিতম্। নে উপায় ঘারা অস্বস্থ মানব স্বাস্থ্য লাভ কবে, চিকিংসক নেই উপায় অবলম্বন করি-

অথ দোষধাতুমলানাং বৃদ্ধিনিদানম্।
ভত্তদুন্ধিকরাহার-বিহারাতিনিবেবণাথ।
দোষধাতুমলানাং হি বৃদ্ধিকভা ভিষণ ববৈঃ॥

বেন। কাৰণ স্বাস্থ্য সৰ্মনাই অভীপ্ৰিত।

মে দকণ আহার ও বিহার, বাতাদি দোষ, রসাদি ধাতু এবং মলের বৃদ্ধি করে, সেই দকল আহার বিহারের উপযোগাধিক্যই উহাদের বৃদ্ধিব কারণ।

অথাতিবৃদ্ধানাং দোষাণাং লক্ষণানি।

বাতে বৃদ্ধে ভবেং কার্শাং পাঞ্চবাকোঞ্চকামিতা।

গাতং মলং বলঞ্চান্ধং গাত্তজুতিবিনিম্মতা।

বিষ্কুত্তবেত্ৰগাত্ৰাপাং পীতম্বং কীণমিক্রিয়ন্।

শীতেছাতাপমুৰ্ছাঃ স্থাঃ পিতে বৃদ্ধেইন্ত্ৰয়া॥

বিড়াদিশৌক্ল্যং শীতত্বং গৌরবঞ্চাতিনিজ্ঞতা। সন্ধিশৈথিল্যনুৎক্লেদো মুখসেকঃ কদেহধিকে॥

. বারু অধিক বর্দ্ধিত কইলে শরীর ক্কণ ও পক্ষম (ধরম্পর্শ), উষণাভিলাম, মলের গাঢ়তা, দৌর্বল্য, গাত্রমূর্ত্তি (লোমাঞ্চ) ও নিজাহীনতা এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়। পিত্ত অধিক বৃদ্ধিত হইলে ফল, মৃত্র, নেত্র ও গাত্র পীত্রর্ণ, ইক্রিয়সমূহ ক্ষাণ, শীতাভিলাম, সন্তাপ, মুর্চ্ছা ও মৃত্রাজ্ঞতা এই সকল লক্ষণ এবং কফ অতিবৃদ্ধিত হইলে মলমূত্রা-দির শুক্লতা, শৈত্য, গাত্রগৌরব, নিজাধিকা, দক্ষিনমূহের শৈথিলা, উংক্লেদ ও মৃণপ্রসেক এই সকল লক্ষণ লক্ষিত হইয়। থাকে।

অথাতির্দ্ধানাং ধাতৃনাং লক্ষণম্।

রসে বৃদ্ধে>মবিছেলো জায়তে গাত্রগৌববন্। মূণপ্রসেকশ্ছর্দিশ্চ মূচ্ছর্গ সাদো অম: কফ: ॥ প্রবৃদ্ধ: কৃথিরং কুর্যাদ গাত্রমারক্তবর্ণকন্। লোচনক তথা রক্তং শিরাং পুরয়তেহপি চ॥

可到55—

রক্তর কুকতে বৃদ্ধং বিস্পিনীইবিদ্ধীন্।
কুঠং বাতাপ্রকং শুসং শিরাপূর্ণইকামলে ।
গাত্রাগাং গৌরবং নিশ্রো মদো দাংশ্ট জ'রতে।
ব্যঙ্গারিসাদসংমে'ই-নক্তর্যু নেত্রমূত্রতাঃ।
শুদ্দমেট্রাক্তপাকার্শ-পিড়ক'মণকাস্তর্য।
শুদ্দমেট্রাক্তপাকার্শ-পিড়ক'মণকাস্তর্য।
শুদ্দমেত্রকুত্রমুখান্ নক্তপ্রতিরেচনৈঃ।
মাংসবৃদ্ধর গভৌঠ-ফিশুপস্থোক্রাহ্র্য।
ক্রন্তরের্গার কুকতে বৃদ্ধিং তথা গাত্রক্ত গোরবন।
উদ্বে পার্বরের্শিহ্ব কাস্বাসাদ্যক্তথা।
দৌর্গন্যঃ ক্লিক্টা গাত্রে মেদোর্গন্ধ ভবেদিতি।

অনুচ্চ---

প্রক্ষাং কুরুতে মেদঃ শ্রমমজেইপি চেষ্টিতে।
ভূট্ৰেদগলগণ্ডোঠ-বোগমেহাদিজন চ ॥
খাসং ক্ষিপ্ত কুঠরগ্রীবা-শুনানাং লম্বনং তথা।
বৃদ্ধান্তারীনি কুর্কান্তি অন্ধীক্তমানি চান্থির।
আচরন্তি তথা দন্তান্ বিকটান্ মহততথা ॥
মজ্জন্তারী সমস্তাঙ্গ-নেত্রগোরবমাচরেও।
শুক্রাখারী শুক্রন্তা শুক্রভাতিশ্রবর্তনম্ ॥
অন্ধবিবেষ, গাত্রের শুরুতা, মৃথপ্রসেক,
ব্যমি, মূচ্টা, অব্সাদি, ভ্রম, কফাদিকা এইগুলি

অতিরদ্ধ রসের লকণ ৷ রক্ত হইলে সমস্ত শরীর ও নেত্রদ্ব রক্তবর্ণ, শিরা সকল রক্তপূর্ণ, এবং বিসর্প, প্লীহা, বিদ্রধি. কুষ্ঠ, বাতরক্ত, গুল্ম, কামলা, নিদ্রা, মন্ততা, দাহ, ব্যঙ্গ, অগ্নিমান্দ্রা, মোহ, ত্বক্ নেত্র ও মূত্রের রক্তবর্ণতা, পাক, মেচপাক, আশুপাক, অর্শঃ, পিড়কা, मनक, इंजनुश्च, अञ्चल, अञ्चलत्, পদে সন্তাপ, এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়। রক্তসূজিজনিত রোগ স্কল বিরেচন মার। প্রশাসিত হইয়া থাকে। **অতিব্**রিত इंडेर्न श्रुफन, (পাছা), উপস্থ, উরু, বাহু 'ও সকল স্থান মাংসক ও গাত্রগারৰ এবং মেদ আতবর্দ্ধিত হউলে উদর ও পাধ্বয়ের বৃদ্ধি, কাসশ্বাসাদি পীড়া, গাত্রের দৌর্গন্ধা ও স্লিগ্ধত: থাকে। কেহ ব্লেন, মেদ হইলে অল পরিশ্রনেই শ্রান্তিবোধ, পিপাসা. গলগও, ওছরোগ, মেহাদি ও শাস রোগ জন্মে, এবং ফিক্, জঠর, গ্রীবা ও স্তনাধ্য় শ্বিত হয়। অস্তি ব্রিক্ত অস্থিসমূহে অন্ত অস্তির উৎপত্তি হয় এবং দত্ত সকল বৃহৎ ও বিকট হট্য। থাকে। মজ্জুর্জি হইলে সমস্ত অঙ্গ ও নেত্রখন ভার বোধ হয়। শুক্রবৃদ্ধি হইলে শুক্রাধারী ও শুক্রের আ याव रहेग्रा शांदक।

অথাতির্দ্ধানাং মলাদীনাং লক্ষণানি।

মলপ্রদ্ধাবাটোপো জায়তে এইরে ব্যথা।

দত্রে বৃদ্ধে মৃত্যু রেমাথানং ব্রিবেদনা ॥
থেদে বৃদ্ধে তু দৌর্গন্ধাং ছচি কঙ্শ জায়তে।
আর্ত্তবাতিপ্রবৃদ্ধি: ম্যাদ দৌর্গন্ধাং বিবে ভবেৎ॥
অঙ্গমন্দিক জায়েত লিঙ্গং স্যাদার্ত্তবেহুরিকে।
ন্তব্যোরতিশীনত্বং ক্ষীরপ্রাবো মৃত্যু হঃ।
তোদক তত্র ভবতি ভঞাধিকাস্য লক্ষণম্।
উদরাদিপ্রবৃদ্ধিস্ত বৃদ্ধে গর্ভেইভিজায়তে।
থেদক্ষ গর্ভব্যাং স্যাৎ প্রসবে ব্যসনং মৃহৎ।

মল বন্ধিত হইলে আটোপ (উদবে বেদনার সহিত গুড় ভুড় শক্ষ) ও পেটে বাণা; নূত্র বন্ধিত হইলে বারংবাব মৃত্ত্তাগা, আগান ও বন্ধিলেশে বেদনা; স্বেদ বন্ধিত হইলে গাত্রেব দৌর্গন্ধা ও কন্তু; আর্ত্ত্ব বন্ধিত হইলে আর্ত্ত্বের অতিমাব, তাহাতে গুর্গন্ধ, এবং মঙ্গমন্দি; স্তত্যাধিকো স্তন্ধয়ে অতি পীনতা, বারংবার হক্ষমাব ও স্তন্ধয়ে স্ফটা-বেশবৎ বেদনা; গর্ভ বন্ধিত হইলে উদরাদির কৃত্তি, গার্ভিণীর স্বেদ ও প্রাস্থ্যে বিপত্তি এই স্কল্ লক্ষণ সংগটিত হয়।

অথাতির্দ্ধানাং দোষাদীনাং হ্রাসন্।

গ্ৰন্থাসকরাধার-বিধারপরিসেবলৈ।
দোৰধাতুমলানাং হি হ্রাসো নিগদিতো নৃণাধ্।
পূর্বঃ প্রেবিহিতিস্কাহাদ্ বর্ষক্ষেকি পরং পরম্।
ডক্ষাদ্ভিগ্রুক্ষানাং ধাতুনাং ভাসনং হিত্যু॥

যে সকল আহার বিহার দারা দোষ ধাতৃ
ও মলসমূহের হাস হয়, সেই সকল আহার
বিহার সেবন করিবে। পূর্নপূস্ম দোষাদি
আত ব্দ্ধিত হইলে পর পর দোষাদিকে
বাদ্ধিত করিয়া থাকে, এক্ত্রেড অভিপ্রদ্ধা
দোষাদির হাস করা শোলঃ।

দোষধাতুমলানাং-ক্ষয়স্ত নিদানানি।

জনান্মান্নসনাকোধ-শোকচিত্ত।ভর্ত্তানে:। জতিব্যবায়ানশনাত্যপ্নংশোধনৈরপি । বেগানাং ধারণাচ্চাশি সাহ্সাদ্ভিঘাতত:। দোষাণাম্থ ধাতুনাং সলানাঞ্চ ভবেৎ ক্ষয়:॥

অসা খ্যা অন্নভোজন, সর্বদা ক্রোব, শোক, চিস্তা, ভন্ন, পরিশ্রম, অভিরিক্ত মৈথুন, উপ-বাস, অভিরিক্ত বমন ও বিরেচনাদি সংশোধন, বেগধারণ, সাহস ও অভিঘাত, এই সকল কারণে দোষ ধাতু ও মলসমূহের ক্ষর হয়।

(उघार कीशानार लक्षणानि।

বাতক্ষয়েংল্লচেষ্টয়ং সন্দ্ৰাক্যং বিসংজ্ঞতা। পিত্তকরেইথিক: শ্রেমা বহ্নিমান্দাং প্রভাকর:॥ সৰুয়: শিপিলা মূর্জা রৌক্যাং দাহঃ কফকয়ে। হৎপীড়া ক**ঠ**শোষক ত্বন্ শূক্তা ভূড়্রসক্ষয়ে 🛭 শিরা লখা হিমায়েচ্ছা ত্রুপারুষাং করেহস্ক:। গভৌঠকন্ধরাক্ষল-বক্ষোজঠরসন্ধিষু॥ উপস্থাপপিভীব ওকতা গাত্রককতা। ত্যেদো ধনতাঃ শিপিলা ভবেরুম বিসমংক্ষরে ॥ গ্রীহাভিঃদ্ধিঃ সদ্ধীনাং শুস্ততা তত্ত্বক্ষতা। প্রার্থনা বিশ্বমাংসম্ভ লিকং ভাষেদ্স: করে॥ व्यक्तिमानः उत्नी तोकाः नथनस्यक्रिस्या । অস্থিক্ষে পি**লমে**ভদ বৈত্যৈঃ স**র্বৈ**রুদ্ধিত্য ॥ শুক্রার হং পর্বাভেরপ্রেনি: **শুভারমন্তিনি**। লিসায়ে : নি জায়তে নরাণাং মঞ্জসংক্ষয়ে॥ শুক্রকণে রতেংশক্তিবাধা শেক্ষদি মুঞ্চযোত। চিরেণ শুকাসকঃ স্থাৎ সেকে রক্তাভগুক্তা ॥

বায়-ক্ষয় হটলে আল্ম বাক্যায়তা ও আধিকা সংজাহীনতা: পিত্তক্ষে শ্লেমার অগ্নিমান্য ও প্রভাহীনতা এবং কফক্ষ হুটলে মুচ্ছা, শ্বীর রুক্ষ, দাহ ও সন্ধি সকল भिश्वित इया त्रायात्र इवेटल कारत दाननी, কণ্ঠশোষ, ত্বকে শৃন্তভাবোদ ও পিপাম। ; রক্ত-ক্ষাে শ্রাসমূহ ৯৭. শতিল দ্বোও অস্ত্র দ্বো ইচ্ছ। এবং মকের পরুষতা 1 513. গ্লদেশ, স্বন্ধ, বক্ষঃ, উদর, স্মিস্থল, উপস্থ, প্রোগ (পাছা) ও পিণ্ডীতে (পায়ের ডিম) শুক্ষ হা, গাত্রের কৈক্ষতা, স্কীবেধবদ বেদনা এবং ধমনী সকলের শিথিলতা এই গুলি মাংসক্ষয়ের বুদ্ধি, সন্ধিদমূহের শৃক্ততা, প্লীহার শ্রীরের রুক্ষতা, ক্মিগ্ধনাংদে অভিলাষ, এই গুলি মেদ:ক্ষ্যো লক্ষণ। অস্থিসমূহে শূল, শ্রীরের রুক্ষতা, নথ ও দত্তের ক্ষয়, এইগুল অস্থিকরের লকণ। শুক্রের অন্নতা, প্র**ভে**ন, তোদ, অস্থিসমূহে শৃষ্মতাবোধ, এই মজ্জক্ষয়ের এবং রমণকার্য্যে অসামর্থ্য, লিক্ষে ও কোষে বেদনা, বিলম্বে শুক্রকরণ অন্ন রক্তমিশ্রিত ভক্রসাব, এই সকল ভক-ক্ষরের লকণ।

অথ মলাদীনাং ক্ষয়লক্ষণানি।

পুরীষক্ত করে পার্শ্বে হলরে চ ব্যথা ভবেং।
সশব্দস্যানিলস্যোদ্ধগমনং কুকিসংবৃতি:
মৃত্রকরেংলম্ত্রবং বতৌ তোদক জায়তে।
বেদনাশন্তার রৌকাং চকুনোরপি ককতা ॥
ন্তর্কাক রোমকুপা: স্থাল কং বেদকরে ভবেং।
আর্ত্রবস্যা ককালে চাভাবন্তস্যালভাবনা ॥
জায়তে বেদনা যোনৌ লিকং স্যাদার্ভবক্তরে।
আভাব: বলতা বা স্যাৎ শুক্তস্য ভবতন্তথা ॥
মানৌ পরোধরাবেত্রকেশং শুক্তস্যক্তরে।
আনুরতো ভবেং কুকিস্ভিস্যাম্পন্দনং তথা ॥
ইতি গভক্তর প্রাক্তিক কুণং সম্দাহতম ॥

মলক্ষম হুইলে পার্থিয়ে ও হৃদয়ে বেদনা,
বায়র সশপে উর্জাগন ও উদরের সংস্কাচ;
মৃত্রুক্ষম হুইলে মৃত্রের অল্লতা ও বস্তিদেশে
স্চীবেধবং বেদনা; স্বেদক্ষমে ঘর্মাভাব,
ছুক্ ও চক্ষ্ম রের কৃক্ষতা ও রোমকৃপ সমৃহুর স্তর্জা; আর্ত্রক্ষয়ে অতুকালে অতু না
হুওয়া বা অল্ল হুওয়া ও যোনিতে বেদনা,
স্তম্মকয়ে স্তন্তের অভাব বা অল্লতা ও স্তনহুয় য়ান; এবং গর্ভক্ষম হুইলে কুক্ষিদেশের
অমুন্নতি ও গর্ভের অস্পন্দন, এই সকল লক্ষণ
প্রকাশ পায়।

অথ ক্ষীণানাং দোষাদীনাং বৰ্দ্ধনোপায়ঃ ।

দোৰধাতুমলক্ষীণো বলক্ষীণোহণি মানব:।
তত্তৎসংবৰ্দ্ধনং বত্তদমণানং প্ৰকাক্ষতি
যদ্বদাহারজাতত্ত ক্ষীণ: প্ৰাৰ্থমতে নর:।
তস্য তস্য স লাভেন তত্তৎক্ষ্মমণোহতি ॥
ওজন্ত বৰ্দ্ধতে নৃণাং হৃষ্টিক্ষাং বাছভিত্তপা।
বৃবৈয়রক্তৈবিশেবাৎ তু ক্ষীরমাংসরসাদিভিঃ ॥

দোষ ধাতু মল বা বল ক্ষীণ হইলে তত্তৎদোমাদির বর্দ্ধক অন্ধ এবং পানীয়ে আকাজ্জা
জন্মে। স্কুতরাং তত্তৎ দোষ ও ধাতু প্রভৃতির
বর্দ্ধক অন্ধপান প্রদান করিলে তাহাদের ক্ষয়
নিবারিত হইনা থাকে। স্থানিশ্ব ও মধুবরস
দ্রব্য এবং ব্যাদ্রব্য বিশেষতঃ ক্ষীর ও মাংসংস্প্রভৃতি সেবনে ওজঃ বর্দ্ধিত হয়।

অথ সম্বলকণ্য।

সমদি(ব: সমাগ্রিক সমধাতু: সমক্রিয়:। প্রসন্নারেন্দ্রিমনা: স্বস্থ ইত্যভিধীরতে॥ (সমক্রিয়: শরীরাতুরূপক্রা। আয়াত্র শরীরমু।)

যাহাদের বাতাদি দোষ, অগ্নি ও ধাতু সকলের সমতা আছে, যাহারা সমক্রিয় অর্থাৎ শরীরের অন্থরূপ কার্য্যকারী, এবং শাহাদের শরীর ইক্রিয় ও মন প্রসন্ন, তাহাদিগকে সুস্থ বলে।

তন্ত্রাস্তরেহপি—

বিশু, আখিলদোষধাতুসমতা কাজ্মালগানে ক্লচিভুজিং জীথাতি পুষ্টরে পরিণতিঃ অপাববোধে স্থান্
গুরীতে বিষয়ান্ যথাঅনুষ্ঠিতান্ বৃদ্ভিং মনোবৃদ্ভিতঃ
অস্থ্যাভিচিতং চতুর্দশ্বিধং জ্যোরিদং লক্ষণম্ ॥
(ব্রুচিঃ শ্রীরকান্তিঃ)।

মল, মৃত্র, বাতাদি দোষ ও রসাদি ধাতুসমূহের সমতা, অন্ন ও পানীয়ে অভিলাব, রুচি,
(শরীরের কান্তি), ভোজন, ভুক্তদ্রব্যের পরিপাক, তজ্জ্যু পুষ্টি, স্থাথে নিদ্রা ও জাগরণ,
ইন্দ্রিয় সকলের যথোপস্কু বিষয় গ্রহণ ও
মনোযোগের সহিত কার্য্য, এই চহুর্দ্ধন প্রকার
স্বস্থব্যক্তির লক্ষণ।

ইত্যায়ুর্বেদ-সংগ্রহে রোগিপরীক্ষা প্রকরণম্।

সমাপ্তমিদং পূৰ্বাদ্ধ্য।

আয়ুর্বেবদ-সংগ্রহঃ।



অথ চিকিৎসা-প্রকরণম্।

অথ জ্বরাধিকারঃ।

দক্ষাপমানসংকুদ্ধ-রুদ্রনিখাসভবঃ। অবোহটধা পুখগ্রুদ্ধ-সংঘ্ঠাগরুজঃ খুডঃ॥

জরোৎপত্তি—মহাদেব, দক্ষাপমানে অতি
কুদ্ধ হইয়া দীঘ নিশাদ ত্যাগ করেন, সেই
নিশাদ হইতেই জরের প্রথম স্থাষ্টি হয়।
জর আট প্রকার, যথা—পৃথগ্জ অর্থাং বাতকি,
পিতত এও শেরজ ; শুণ্ডজ অর্থাং বাতপিত্তজ,
বাতশেশ্বজ ও পিত্তশেশ্বজ এবং দলিপাত্তজ ও
আগস্কজ।

অথ জুরসংপ্রাপ্তিঃ।

মিথ্যাহারবিহারাভ্যাং দোষা গ্রামাশরাশ্রয়া:। বহিনিরস্ত কোঠাগ্রিং জ্বরদাঃ স্থারদানুগা: । অবিহিত আহার-বিহারাদি ধারা বাতাদি দোষ কুপিত হইয়া আমাশয় নামক স্থানে গমন করে, তথায় আমরসকে দৃষিত ও কোষ্ঠের অধিকে বাহিরে নিক্ষিপ্ত করিয়া জব উৎপাদন করে। অগ্নি বাহিরে নিক্ষিপ্ত হয় বলিয়াই ত্বক্ উষ্ণ হইয়া থাকে।

অথ জুরলকণম |

বেদাবরে।ধঃ সন্তাপঃ সর্বাক্ষগ্রহণং ভথা। যুগপদ্যত্র রোগে চ স স্করো বাপদিশুতে ॥

যে রোগে, একদা সম্মরোধ, সন্তাপ ও সর্মাক্ষবেদনা লক্ষিত হয়, তাহার নাম জর। "কিয়ু সন্তাপই জ্বের প্রধান শক্ষণ"। অথ জ্বরচিকিৎসা-সাধারণবিধিঃ।

অংশাংশং যত্ৰ দোষাণাং বিবেক্ত্ং নৈব শত্ৰুয়াৎ। ক্ৰিয়াং সাধায়গীং তত্ৰ বিদ্ধীত চিকিৎসকঃ॥

যে স্থলে দোষেব (বায়ু, পিত্ত, কফের) প্রাবল্য কিংবা ঋরতা ব্ঝিতে পারা না যায়, সে স্থলে সাধারণ বিধি অমুসারে চিকিৎসা করিবে।

নবজ্বে দিবাকপ্ল-মানাভ্যক্স।মমেথুন্ম। ক্রোধপ্রবাতব্যাধাম-ক্ষাগ্লাংক বিবর্জ্জিয়েও॥
ফান্টাদীনাং প্রয়োগস্ত ন নিশিক্ষ কদাচন॥

নবজ্জরে দিবা-নিদ্রা, স্নান, তৈলাদি-মদ্দন, গুরু অনু-ভোজন, মৈথুন, ক্রোধ, প্রবল বায়ু সেবন, ব্যায়ান ও ক্যার পরিবজ্জন ক্রিবে। কিন্তু ফান্টা।দর প্রয়োগ কোন অবস্থাতেই নিষিদ্ধ নহে।

ন বিরস্তান পূর্বাহে নাভিয়ালি কলাচন।
ন নকং ন গুরুপ্রারং ভূঞ্জাত তরুণজ্বা॥
পরিবেকান্ প্রদেহাংশ্চ রেহান্ সংশোধনানি চ।
দিনাস্বর্গং ব্যবায়ঞ্চ ব্যায়ামং শিশিরং জ্বান্॥
ক্রেংধ-প্রবাত-ভোজানি বজ্ঞাতে তরুণজ্বা।
শোষ্চছ্দিসদান্ মূর্ভা-প্রমত্থণতারোচকান্।
প্রাপ্রেব্যানহান্ পরিবেকাদিসেবনাং॥

বিভাজন, প্রাতে ও রাজিতে ভোজন, মেলার্দ্ধিকানক এবং গুনপাক ভোজন করা তরণজ্বরে কর্ত্তবা নহে। জলাভিষ্টেক, গাত্রে চন্দনাদি প্রবেপ, মেহপান,, অভ্যঙ্গ, সংশোধন অর্থাৎ বমন বিরেচন বস্তি ও শিরোবিরেচন-রূপ সম্যক্ শোধন, দিবানিদ্রা, মৈপুন, ব্যানাম, শীতলজল, ক্রোধ, অধিক বায়-দেবন ও ভোজ্য জব্য, তরণজ্বরী এই সমুদর পরিবর্জ্জন করিবে। উমিথিত নিষিদ্ধ ক্রিয়া পরিত্যাগ না করিলে মুখ্পোষ, বমি, মন্ত্রা, মৃদ্ধা, ল্রম, তৃষ্ণা ও অর্ফাচ এই নকল উপদ্রব উপস্থিত হয়।

সামান্ততো জ্বরী পূর্বং নির্কাতে নিলয়ে বদেৎ। নির্কাতমায়ুরো বৃদ্ধিমারোগাং কুরতে বতঃ॥ ব্যজনস্থানিলভূঞা-ভেদমুচ্ছাশ্রমাপহঃ। নবজ্বরী ভবেদ যত্নাদ গুরুষ্ণবসনাবতঃ॥

জরাক্রাস্ত ব্যক্তি বায়ুশৃন্ত গৃহে বাস করিবে; কারণ তদ্ধারা আয়ুর বৃদ্ধি ও আরোগ্য লাভ হয়। বায়ুর প্রয়োজন হইলে পাথা দ্বারা বাতাস করিবে। পাথার বায়ু— তৃষ্ণা, ঘম্মনির্গম, মুচ্ছা ও শ্রম অপনোদন করে। তরুণ জ্বরে স্থুল ও উষ্ণ বত্তে শরীর আরুত করিয়া রাখিবে।

দোৰেহল্লে লজ্বনং পাণ্যং মধ্যে লজ্বনপাচনম্। প্ৰভূতে শোধনং তচ্চ মুলাছমূলয়েক্মলান্॥

পীড়া অন্নদোধবিশিষ্ট হইলে শুদ্ধ লঙ্গন, মধাবিধ অর্থাং কিঞ্চিং আদক দোষবিশিষ্ট হইলে লঙ্গন ও পাচন এবং প্রাভূত দোষ বিশিষ্ট হইলে নেশান (বিরেচনাদি) ব্যব-স্থের। শোদন ক্রিয়াম্বারা মন্য সমস্ত একেবারে নিশ্মূল অর্থাং দেহ হইতে নিস্তেত হইয়া যায়। (কিন্তু রোগির অবহা ও বলাবল বিবেচনা করিয়া এবং যে যে স্থলে শোধন নিমেন ভাহার প্রতি দৃষ্টি রোগিয়া বমন বিরেচনাদি শোধন ক্রিয়া কতেন।)

আনাৰয়তো হয়প্তিং সামো নাগাৰ পি**ধাপয়ন্।** বিদ্যাতি **অ**বং দোষত্তা _এজন্মান্তে ॥

আমন্ত দোষ (বার্ পিত ও কফ)
আমাশয়ন্ত হইয়া আগ্রিমান্য ও শরীরের
রসবহ এবং ঘণ্ণবহ পথ সকলকে অবরোধ
করিয়া জরোৎপাদন করে। এই জন্য নবজ্বরে
উপবাদ দেওয়া উচিত।

জনবস্থিতদোষাগ্রেল[্]ড্যনং দোষপাচন্ম। জনমং দাপনং কাজাককািকচিলাখনকারকম্॥

দোষ ও অগ্নি স্বস্থানে অবস্থিত না হওয়াতে জর উৎপন্ন হয়, এই এপ অবস্থায় লঙ্ঘন দিলে দোষের পরিপাক, জরনাশ, আগ্নির্ছি, ভোজনে ইচ্ছা, ক্লচি ও শরীরের লঘুতা জন্মিয়া থাকে। প্রাণাবিরোধিনা চৈনং লঙ্গনেনোপপাদয়েৎ। বলাধিষ্ঠানমারোগ্যং যদর্থোহয়ং ক্রিয়াক্রমঃ॥

রোগির বল বিবেচনা করিয়া উপবাস করাইবেন। বলক্ষয়কারী লব্দন অমুচিত, কারণ বলাধানই আরোগ্যের প্রধান অব-লধন; এবং আরোগ্যের জন্মই এই চিকিৎসা-ক্রম উক্ত হইয়াছে।

বাতমূত্রপুরীষাণাং বিসর্গে গাত্রলাফনে। হনব্যাদগারকণ্ঠাস্ত-শুদ্ধৌ তক্রাক্রমে গতে॥ বেদে জাতে ক্লটো চাপি কুৎপিপাসাসহোদয়ে। কৃতং লজ্বনমাদেশুং নির্ব্যুপে চান্তরাগ্রনি॥

যথন অপোবায় মল ও মূত্র প্রবর্তিত, গাত্র লঘু, হানয় উলগার কণ্ঠ ও মূথ বিশুদ্ধ, হলা ও কান্তি অপগত, যথা উছুত, জুলা ও ভ্লার সহিত কাচি সঞ্জাত এবং চিত্র প্রসাম হুইবে, তথানই জানিবে, রোগিকে যথোপস্কু উপবাস দেওয়ান হুইয়াছে, আবা অধিক গুলুবনের প্রয়োজন নাই, তথন বলবক্ষার নিমিত্র আহারাদির ব্যব্যা করিবে।

পৰ্কভেদে। হস্কৰ্মণত কাসঃ শোষো মুখপ্ত চ। কুৎ প্ৰণ'শোহক্ষতিস্থল দৌৰবল্যং শোৱনে ক্ৰয়োঃ । মনসঃ সন্ত্ৰমোহত শিক্ষাৰত প্ৰমো কদি। দেহা ফিবলহা নিশ্চ লঞ্চনেহতিকুতে ভবেৎ ॥

খাল্বরাক্ত উপবাসে বোগির হন্তাদিতে থাল্বরা, সর্কাননীরে বেদনা, কাস, মুখলোষ, অকুষা, অকুষা, অকুষা, ত্রগা, দশন ও প্রবণ শক্তির স্থাস, ননের চাঞ্চল্য ও উদ্গারাদির বাহুল্য, মোহ এবং শ্রীরের ত্র্বলতা ও আন্নির তেজোছাস হইয়া যার।

কফোৎক্রেশঃ সহরাসঃ গ্রীবনঞ্চ মুক্তমু হঃ। কণ্ঠাস্তহদয়াগুদ্ধিগুদ্ধা স্থাদ্ হীনলজ্বনে ॥

উপবার অপূর্ণ হইলে কদোৎক্রেশ (বসনের নিমিত্ত কফের উপস্থিতি), হুলাস (রা বমি বমি করা), মৃত্যুক্ত: গ্রীবন (হুদর হুইতে কফ নির্মা), তল্লা এবং কণ্ঠ মুখ ও হাদরের অবিশুদ্ধতা প্রভৃতি শক্ষণ দৃষ্ট হয়। ব্যরে লক্ষনমেবাদানুপদিষ্টমূতে ব্যরাৎ।
ক্ষানিলভয়কোধ-কামশোক্সমেনিক্র

ধাতৃক্ষরতজ্বর, নিরাম বাতজ্ব এবং ভর, ক্রোধ, কাম, শোক ও শ্রমজনিত জর ভিন্ন অন্ত জ্বরের প্রথমাবস্থায় উপবাদ দেওয়া কর্তব্য।

তৎ তু মাকতকুত্ঞা-মুখণোষভ্রমান্বিতে। কার্যাং ন বালে ন বুদ্ধে ন গভিণ্যাং ন তুর্বলে॥

কিন্ত বার্ত্রান্ত এবং কুধা, ভ্রকা, মুখশোষ ও ভ্রমার্ভ ব্যক্তিকে, বালক, বৃদ্ধ, গর্ভিণী ও হুরুলকে উপবাস দেওয়াইবে না। বিবেচনা-পূর্দ্মক তাহাদিগকে লঘু পণ্য দিবে।

সংখ্যাভুক্তস্থা বা জাতে হ্বরে সম্বর্ণণোথিতে। নমনং বমনার্হস্থা শত্তমিত্যাই বাগ্ভটঃ॥

বাগ্ভট কহিয়াছেন, আহাব বা স্নানাদি করিয়া জ্ব হাইলে, রোগী যদি বমনার্হ হয়, অর্থাং শিশু, জ্বল ও গভিণী না হয়, ভাহা হুইলে ব্যান করানই প্রশস্ত।

কফপ্রধানাত্ত্রিষ্ঠান্ দোষানামাশয়স্থিতান্। বৃদ্ধা অরকরান্কালে বম্যানাং বমনৈংরেও ॥

আমাশগ্রন্থ কফপ্রধান জন্তকারক দোষ
সকল যদি উৎক্রিপ্ত অর্থাৎ স্বস্থান হইতে
বহির্গমনোমুণ এবং নােগাঁও যদি ব্যনধােগ্য
হয়, তাহা হইলে নথােপষ্ক সম্যাে ব্যন
করাইবে।

অনুপস্থিতদোষাণাং বমনং তঙ্গণে জ্বরে। হুদ্রোগং খাদমানাহং মোহঞ্চ কুরুতে ভূশম্ ॥

উপরোক্ত কারণ ব্যতীত নবজ্বরে ব্যন করাইলে হুদ্রোগ, স্বাস, আনাহ (মলমূত্র-রোধক রোগ) ও মোহ জ্বিয়া থাকে।

যথন্ত, প্ৰকণানীয়ং পিৰেং কিঞ্চিন্নিয়ন্। তৃকা গ্ৰীয়দা ঘোৱা সভঃপ্ৰাণবিনাশিনী। তন্মান্দেয়ং ভূমান্তায় পানীয়ং প্ৰাণধারণম্ ॥

যে যে শ্বৰুতে যে যে প্রণালীমতে জল পাকের ব্যবস্থা আছে, তদ্ধপ জল সিদ্ধ করিয়া রোগিকে অন্ধপরিমাণে খাইতে দিবে। (অথবা সকল খতুতেই অদ্ধাবশিষ্ট বা ত্রিপাদাবশিষ্ট করিরা জল প্রদান করিবে)। অতিশয় তৃষ্ণায় জল না থাইলে মৃত্যু পর্যাস্ত ঘটিয়া থাকে। অতএব রোগিকে প্রাণগারণোপযোগী অন্ধ জল পানাকরিতে দিবে।

ভ্যাতে সলিলং চোকং দক্তাদ্ বাতকফজ্রে। মজ্যোথে পৈত্তিকে বাপি শীতলং ভিক্তকৈ: 'শৃতমু॥

বাতশ্রেপ্তজ্বর তৃষণানিবারণার্থ রোগিকে উষণ জল পান করিতে দিবে। মন্তপানজনিত বা পৈত্তিক জ্বরে, নিম্নলিখিত ষড়ঙ্গ অথবা মুস্তক প্রভৃতি তিক্তদ্রবোর সহিত জল সিদ্ধ করিয়া, ঐ জল শিতল হইলে পানার্থ প্রয়োগ করিবে। (ইহাতে অগ্নির দীপ্তিও পরিপাক-শক্তি বৃদ্ধিত হয়)।

অথ ষড়ঙ্গপানীয়ম্ ।

মুক্ত পর্পতিকোশীর-চন্দনোদীচ্যনাগরেঃ। শুতশীতং জলং দৃত্যাৎ পিপাসাজ্বরশান্তয়ে।

মূতা, ক্ষেৎপাপ ড়া, বেণার মূল, রক্ত-চন্দন, বালা ও শুঠ মিলিত ২ তোলা কুটিয়া /৪ সের জলে দিদ্ধ করিয়া /২ সের থাকিতে নামাইবে এবং বস্ত্রে ছাঁকিয়া লইয়া রোগিকে পান করিতে দিবে। ইংগতে পিপাদাজ। প্রশামত হইবে।

জরিতং বড়হেহতীতে লগ নুপ্রতিভোজিতম্। পাচনং শমনীয়ং বা কযায়ং পারয়েৎ সূত্রম্। সপ্তাহাৎ পরতোহস্তকে সামে জাৎ পাচনং করে। নিরামে শমনং ভকে সামে নৌবধনাচরেৎ॥

ছয় দিনের পর অর্থাৎ জরের সপ্তম দিবসে রোগিকে লঘু পণ্য দিরা, তৎপর দিন পাচন বা শমন ক্ষায় পান করাইবে। অর্থাৎ সাত দিনের পর যদি রসের পরিপাক না হয়, অর্থচ মল-মৃত্যাদির প্রের্বিভ হয়, তাহা হইলে পাচন ক্ষায়, আর যদি মল মৃত্যাদির নিঃস-রণ এবং রসেরও পরিপাক হয়, তাহা হইলে শমন ক্ষায় ব্যবস্থেয়। কিন্তু যদি রসের পরিপাক ও মলমৃত্যাদির নিঃসরণ, উভয়ই

না হয়, তাহা হইলে জরম্ম কোন ঔষধ প্রয়োগ না করিয়া যাহাতে দোষের পাক ও মলমূত্রের প্রবৃত্তি হয়, এরপ করাম ব্যবস্থা করিবে। (রোগ যদি অতি ভরম্বর বা আশু মারাত্মক হয়, তাহা হইলে অচির জবিতকেও লঘুবীয়া ঔষধ দিবার বিধান আছে, তথার সপ্তাহ কাল অপেক্ষা করিতে হইবে না। ১৬ গুণ জল ঘারা কাগা সিদ্ধ করিয়া (অফুক্ত স্থলে কাথা দেবা গুই তোলা লইবে) চতুর্থাংশ থাকিতে নামাইবে, তাহাকে কনান, কাথ বা পাচন বলা যায়)।

অথামপচ্যমানপকজ্বর-লক্ষণানি।

নান প্রদেক। হলাস-ফলয়া শুদ্ধালোচকা।
ভেলালভাবিপাকাত-বৈরভং গুক্গাত্তা।
কুরাশো বহুমূত্রখং শুক্তা বলবান্ গুরং।
আমন্ত্রভা লিকানি ন দভাত্তিত ভেষজ্য।
ভেষজং হাসদোবভা দুয়ো জলরতি জাস্য।

চিকিৎসার জন্ম জরের অপক, পচ্যমান এবং পক লক্ষণ বিবেচনা করিবে। লালান্সাব, বমনোছেগ, হাদরের অগুদ্ধি অর্থাৎ বক্ষঃস্থলে শ্লেমাধিক্য, অরুচি, তন্ত্রা, আলস্তু, অপরি-পাক, মুখের বিরস্তা, গাত্রগুরুতা, ক্ষুণানাশ, মূএবাছল্য, শরীরের স্তব্ধতা ও অতিশয় জর-বেগ এই সকল লক্ষণ জরের অপকাবস্থায় দৃষ্ট হয়। অপক্জরে ঔষণ সেবন করা বিধেয় নহে, ঔষণ সেবন করিলে জরের বেগ আরও বর্দিত হয়।

ভারনেগোং বিকায়শা প্রলাপ: খসনং ভাসঃ। সলপ্রবৃত্তিকংক্রেশঃ পচামানস্ত লক্ষণ্য ।

অত্যন্ত জরবেগ, তৃষ্ণা, প্রনাপ, খাস, ত্রম, মলনিগম ও বমনবেগ এই সমন্ত লক্ষণ জরের পচ্যমান অবস্থায় দেখা যায়।

কৃৎ ক্ষামতা লঘুজং চ গাত্রাণাং জনমার্দ্ধনম্। দোষপ্রবৃত্তিরটাহো নিরামজনককশম্॥

ক্ষা, শরীরের ক্বণতা, গাত্তের লঘুতা, জ্বরের মৃত্তা, বায়ু পিন্ত কফ ও মলের নিঃসর^{্গ}, এবং অষ্টাহকাল এইগুলি জ্বরের পক লক্ষ্ণ। বনি হং লজ্বিতং কালে যবাগুভিক্নপাচরেৎ। যপাকৌশধনিদ্ধাভিন গুপুকাভিনাদিতঃ॥

রোগির অবস্থা বিশেষে কখন ব্যন. কথন উপবাদ, কথন কথন ব্যন ও উপবাদ, এই সকল ছারা সমাকরূপে দোষের পরিপাক হুটলে আহার দেওয়া কর্ত্তব্য, কিন্তু একেবারে গুরুদ্রবা ভোজন করিতে না দিয়া মণ্ড, তৎপরে বরাগু (পেয়া ও বিলেপী এই যবাগৃ এন্থলে যথাক্রমে ম্বিষ হইবে) দেওয়া উচিত, অপিচ যে যে জবে বে যে ঔষণের *বিধি আছে, সেই সেই দোষের প্রকোপ ব্রিয়া ঔষধ স্থারা অথবা ্বে যে দোষের পাচক, সেই বে নে ঔষধ সেই ঔষধ ছাবা উক্ত মণ্ডাদি সিদ্ধ করিতে इटेर्द ।

লাজপেয়াং স্থজরাং পিপ্ললীনাগরৈঃ শৃতাম। পিবেজ্বী ক্রহরাং কুমানলাগ্নিনাদিতঃ॥

কুধার্ত জ্বরোগী অগ্নির অন্নতা হেতু প্রথমে পিপুল ও শুঠের কাথে প্রস্তুত লাজপেয়া (থেএর মণ্ডা) ভক্ষণ করিতে পারিবে, বেহেতু ভাহা জ্বনাশক এবং অনায়াসেই জার্ণ হয়।

পেয়াং বা রক্তশালীনাঃ পার্যবন্তিশিরোরজি। খনংট্রাকন্টকারীভ্যাং সিদ্ধাং জরহরাং:পিবেৎ ॥

রোগির পাশ্বরে, ব্স্তিদেশে (মুঝাশরে) ও মস্তকে বেদনা থাকিলে, গোকুর ও কটেকারী এই উভয়া-ঔষধের সহিত রক্তশালি (দাউদ্থানি) তথুলের 'পেয়া' প্রস্তুত করিয়া তাহাকে আহার করিতে দিবে। ইহা বারা জ্বনাশ হয়।

কোঠে বিবন্ধে সক্ষজি পিবেৎ পেয়াং শৃতাং জ্বরী। মুদ্ধাকাপিশ্বলীমূল-চব্যচিশ্রকনাগরৈঃ॥

যদি জ্রাক্রাস্ত রোগির কোঠ বদ্ধ থাকে এবং বেদনা অমুভূত হয়, তাহা হইলে, তামা, পিপুলের মূল, চে, চিতা এবং শুঠ, এই দকল দ্রব্যের সহিত 'পেয়া' প্রস্তুত করিয়া পান করিতে দিবে।

পঞ্মুন্যা নঘীয়ন্তা গুৰুৱা। তান্ত্যাং সধান্তরা। কণরা সুনপেরাদি-সাধনং স্তাদ্যপাক্রমষ্ । না ১পিত্রে নাতককে ত্রিদোনে রেম্মপিত্তরে। বনাগুঃ স্তাৎ ত্রিদোনন্ত্রী ন্যান্ত্রীত্বঃন্দর্শগোকুরৈঃ।

বাত পি ভ্রজরে লঘুপঞ্চমূলের সহিত, বাতশ্লেম্মজরে বৃহৎ পঞ্চমূলের সহিত, সাল্লিপাতিক
জরে লঘু ও বৃহৎ উভ্রের অর্থাৎ দশমূলের
সহিত এবং পিত্রশ্লেম্মজরে ধনে ও পিপুলের
সহিত যুয় পেয়াদি পাক করিয়া রোগিকে
আহার করিতে দিবে। কটেকারী, ছরালভা
ও গোকুর ইহাদেব সহিত সিদ্ধ পেয়াদিও
বিদোবর।

কথাৰিং বা কণা প্ৰতিয়াঃ কৰ্মনত্যন্ত বা পলস্। বিনীয় পাচয়েদ্যুক্ত্যা বারিপ্রহেন চাপরাম্॥

কন্দ্-সাধ্য ধবাগু প্রস্তুতের পরিভাষা, যথা—
সিপুল ও শুঠ প্রভৃতি তীক্ষ দ্রব্য ছই
তোলা (মধ্যবীর্যা দ্রব্য ৪ তোলা)
এবং মৃত্বীর্গ্যসম্পন্ন দ্রব্য ৮ তোলা গ্রহণ
করিয়া কৃষ্টিত করত চারিসের জলের সহিত্ত
সিদ্ধ করিয়া কন্ধসাধা যবাগু পাক করিবে
এবং যতাপে রোগির অগ্নির বল অধিক থাকে,
তবে বিবেচনাপুর্ন্বক উক্ত নিয়মে আবশ্রক
মত ৮ আটসের কি তদ্ধিক জল শ্বারা যথাএরোজন ববাগু প্রস্তুত করিয়া ব্যবহার করিতে
পারিবে।

ষড়ঙ্গপারভাষৈর প্রায়ঃ পেরাদিসক্ষতা।

কাথদান্য বনাগৃ প্রস্তুত করিতে হইলে পূর্ব্বে বড়ঙ্গপানীয় প্রস্তুত করিবার বিধান ব্যেরপ কথিত হইয়াছে, সেই নিয়মামুদারে কাথ প্রস্তুত করিয়া তদ্বারা ববাগু প্রস্তুত করিবে।

ষবাগ্রীটিভাছক্তাচ্চতুর্ভাগকৃতাং বদেং।

রোগাঁ যে পরিমিত তণ্থলের অন্ধ আহার করিতে পারিবে, তাহার চারিভাগের একভাগ তণ্ডল ঘারা যবাগু প্রস্তুত করিবে। তণ্ডল-গুলি অর্দ্ধিকরিয়া লণ্ডয়া আবশ্বক।

আয়ুর্কেদ-সংগ্রহঃ।

সিকথকৈ-বৃহিতো মণ্ড: পেয়া সিকণসমন্বিতা। যবাগৃধহৈ সিক্পা স্থাভিলেপী বিরলম্বা ॥

যবাগূ তিন প্রকার; মণ্ড পেয়া ও বিলেপী; যাহাতে দিক্থক (দিটা) নাই অ্পচ তর্ল, সেই যবাগুকে মণ্ড কহে। যে গ্ৰাগুতে পিকৃথক অল্ল এবং ভরণভাগ অধিক, তাহাকে পেরা কহে; যাহাতে সিকৃথক অধিক ও তরল পদার্থের ভাগ অল্প থাকে, সেই য্বাগ্ৰু বিলেপী কহে।

অন্নং পঞ্চপ্তৰে সাধাং বিলেপী তু চতুগুৰে। মঙ্শত্রদশগুণে যবাগঃ বড়্গুণেহস্কসি। অস্তাদশত্তের তোয়ে মুদঃ শাঙ্গ ধরেরিত: ॥

তওুলের পরিমাণ যত, তাহার পাঁচওণ জল দিয়া অন পাক করিতে হয়। নয়প্তণ জল मिया वित्नशी. উনিশগুণ জল দিয়া মণ্ড, একাদশ গুণ জল দিয়া পেয়া এবং আঠারগুণ जन निया युष भोक कतिरव।

পাংশুধানে যথা বৃষ্টিঃ ক্লেনয়ত্যতিকর্দমম্। ত্পা লেখনি সংবূদ্ধে গ্ৰাগ্য লেখাৰ্কনী ॥

বুটি পতিত হইলে ধূলিরাশিতে (যম্ব অতিশয় কদ্ম জন্মে, সেইরূপ প্রবল শ্লেষা-বস্থায় যবাগু দেবন কবিলে শ্লেত্মা বৰ্দ্ধিত হইয়। থাকে।

মলাতায়ে মন্তানিতো জীমে পিত্তকফাধিকে। উ**র্জ**ণে রক্তপিত্তে চ যবাগ্রহিতা **অ**রে॥

বাক্তির জ্বরেগে নিতা মদা তায়গ্রাপ্ত মন্তপায়িবাক্তির জ্বন, গ্রীম্মকালীন পিত্রশেষজ্ঞরে এবং উর্দ্ধগরক্তপিত্রাক্রান্ত ব্যক্তির জরে যবাগূ অতিশয় অহিতকারী।

তত্ৰ তৰ্পণমেবাগ্ৰে প্ৰদেয়ং লাজশকুভি:। क्तां श्रेटः कलत्रेमयुक्तः ममधुमक्त्रम् ॥ দ্রবেণালেড়িভান্তে স্থান্তর্পণং লাজশক্তবং ॥

পূর্কোক্ত জরে যবাগূ না দিয়া দ্রাকা দাড়িম প্রভৃতি জন্মানক ফলের রসে লাজচুর্ণ (থৈএর গুড়া) এবং মধু ও চিনি

গিশ্রিত করিয়া আলোডন করত করিতে দিবে। এইরূপ আহারকে তর্পণ কছে। अध्याभवामानिलाक हिट्छा निछाः त्रामिनः।

मुक्तायुरवीवनकाशि (नग्नः कक्तमञ्जूद्य । স এব সিতয়া যুক্ত: শীতঃ পিতত্তরে হিতঃ॥ রসো মাংসরসং, তেন উপসিক্ত ওদনো রসৌদনং।

পরিশ্রম, উপবাস ও বায়ুজন্ম জ্বরে মাংস রদের সহিত অন সিক্ত করিয়া আহার করিতে

দিবে। ক্ষজরে মুল্নসূমের (মুগের **ভাইলে**র যুনের) সহিত অন্ন বাবস্থেন। পৈত্তিক জ্বরে মুদ্দাযুষসংস্কুক্ত অল্ল শীতল করিয়া চিনি সহ-

বক্তপালা। দয়ঃ প্রাঃ প্রাণাঃ ষ্ট্রকৈঃ সহ। যবাথোদনলাজার্থে অরিতানাং জ্বাপ্তা:॥

যোগে আহার করিতে ৮েওয়া কর্ত্তনা।

পুরাতন রক্তশালি (দাউদ্খানি) প্রভৃতি ধান্য ও ষ্টিক (ষাইট্) ধান্য জ্বনাশক। অতএব ইহা ছারা যবাগু অন্ন ও খৈ প্রস্তুত করিয়া জররোগিকে আহার কবিতে দিবে।

মুক্টামলকযুষস্ত বাতপিস্তামকে হি 🥺 । হ্রস্থার যুগস্ত কদবাতা মকে হিতঃ। নিম্বকুলকবৃষ্ণ হিডঃ পিত্রক্রিকে 🛊

বাতপৈত্তিক জনে আ্বলকীর সভিড সিদ্ধ মুগের যুধ এবং বাতলেম্মনরে কচিয়লার সহিত সিদ্ধ মুগের যুষ এবং পিত্রক্লেজরে নিয় ও পলতার সহিত দির•মুগেব যুব হিতকাবী।

মুলান্ মহরাংশ্বাকান্ কুলখান্ সমুকুইকান্। আহারকালে যুষার্থে অবিতায় প্রদাপয়েৎ॥

জররোগিকে মুগ, মহুর, ছোলা, কুলখ-কলার ও বনমুগ এই সকল দাইলের যুষ প্রস্তুত করিয়া সেবন করিতে দিবে।

পটোলপত্রং বার্দ্তাকুং কুলকং কারবেলকম্। ককেটিকং পূপটকং গোজিহ্বাং বালমূলকম্। পত্ৰং শুডু,চ্যাঃ শাকাৰ্যে অবিতায় প্ৰদাপয়েৎ॥

পটোলপত্র, বাৰ্ত্তাকু, পটোল, করলা, গোজিয়াশাক, ক্ষেত্রপাপ ড়ো, কাঁকরোল,

কচিমূলা ও গুলঞ্চের পত্র, এই সকল দ্রব্য



পাক **করিয়া জ**ররোগিকে আহার করিতে দিবে।

অনিতো হিতমগীধান যন্তপাক্তার চির্ভবেৎ। অন্নকালে হুতুঞ্জানঃ ক্ষীয়তে ব্রিয়তেহপুরা॥

জনরোগির আহারে অরুচি হইলেও তাহাকে অনাহারে না রাণিয়া বা কুপথ্য ভোজন না করাইয়া হিতকর দ্রব্য ভোজন করাইবে। কারণ কুধার সময়ে আহার না করিলে বা কুপথ্য আহার করিলে তাহার শ্রীরক্ষয় এবং মৃত্য পর্যন্তে হইয়া থাকে।

অঞ্চা মাতুলুঙ্গন্ত কেশরং সাজাদৈশ্বন্। ধাত্রীক্ষাদিতানাং বা কথ্যান্তেন ধাররেং॥

অরুটে উপস্থিত হটলে টাবালেরুর কেশর, গত ও সেরুব সংযোগে মুখে ধাবণ করেলে লপ্য আমলকী, জাক্ষা ও চিনি এই সকল দ্বোর কন্ধ মুখ্যবা কাথেলে অরুটি নষ্ট হট্যা থাকে।

সাততাং ঝালভাবাধা পশ্যং ক্ষেত্ৰমাগতন্। ক্ষন্বিবিভিত্তৈতেঃ প্ৰিয়ত্বং গ্ৰয়েং পুনঃ ॥

রোগর পক্ষে যাহা স্থপণা, ভাহা যদি
প্রপ্নঃ ভোজন করাতে অথবা বিস্নাদ
১৫মাতে রোগি। অথিয় হয়, ভাহা হইলে
বন্ধনাস্ত্রের বিবানাস্থ্যারে বিবিদ প্রকার
করানা করিয়া যাহাতে উহা মুখপ্রিয় হয়,
এরাণ করিয়া পাক করত রোগিকে ভোজন
করিতে দিবে।

खित्र अत्रम्खः वा निनात्य छान्यसम् । अस्य कारित्रसम् ।

জরাক্রাস্ত অথবা জরমুক্ত রোগিকে দিনাস্তে (অপরাক্তে) লঘু ভোজন করাইবে। কারণ তৎকালে শ্লেমক্ষয় হওয়াতে অগ্লির উমা ও বল ক্ষিত হইয়া থাকে।

পাঁতামূল জিবতঃ কাংণাহজীণী ভূকঃ পিপাদিতঃ।
ন পিবেদৌষধং জক্তঃ সংশোধনন্থেতরং ॥

জলপানের অস্তে ও উপবাদের পরে সংশোধন বা শমন ঔষধ সেবন করা বিধেয় নহে। আর ক্ষীণশরীর, অন্ধীর্ণ-রোগগ্রন্ত, ভূক ও পিপাসার্ত্ত ব্যক্তির পক্ষেও সংশোধন বা শমন ঔষধ সেবন অবিধেয়।

> বীগ্যাধিকং ভবতি ভেবজমন্নহীনং হন্তাৎ তদামন্নমসংশ্যমাশু চৈব। তদালবৃদ্ধযুবতীমৃত্রভিশ্চ পীতং মানিং পরাং নমতি চাশু বলক্ষক।

আহারের পূর্বে ঔষধ দেবন করা কর্ত্তব্য, বেহেতু অন্নহীন ঔষধের বীর্য্য অধিক প্রাকাশ পায়, সূত্রাং ভদ্মারা শীঘ নিশ্চরই রোগ নষ্ট হইয়া থাকে। কিন্তু এই ব্যবস্থা বালক, রুদ্ধ, মূর্তী ও কোমলান্দ ব্যক্তিদিগেব পক্ষে প্রান্ত মানি উপস্থিত হয় ও ব্লক্ষয় হইয়া থাকে।

অনুলোমোহনিলঃ সাস্তাং কুং ভ্রণ হ্রমনক্ষতা। লগুড়মিন্রিয়োগাবি-শুদ্ধিরীণৌ বিধাকৃতিঃ।

ঔষণ উত্তমরূপে জীর্ণ হইলে বায়ুর অমু-লোগতা, শরীরেন স্কৃষ্ণতা ও লগুডা, মনের প্রাক্তনা, ক্ষুণা ও পিপাদার উদয় এবং ইন্দ্রিয়ের নিম্মলতা ও উদ্যারের শু.দ্ধি হইয়া থাকে।

রুমো দাহোৎক্ষদদনং জমে। মুর্চ্ছা শিরোঞ্জা। অরতিবলহানিক সাবশেষৌষধাকৃতিঃ।

ঔষধ উত্তমরূপে জীর্ণ না হইয়া, কিঞ্চিৎ অবশিষ্ট থাকিলে শরীরের ক্লান্তি দাহ ও অবসন্নতা হয় এবং ভ্রম, মূর্চ্ছা, শিরংপীড়া, চিত্রচাঞ্চলা ও দৌর্মলা জন্মিয়া থাকে।

ঔষধশেৰে ভুক্তং পীতঞ্চ তথোষধং সপোষহল্লে। ন করোতি গদোপশমং প্রকোপয়ত্যগুরোগাংক্ট ।

ঔষণ উত্তমরূপে জীর্ণ না হইতেই আহার করিলে অথবা অন্ধ সম্যক্ পরিপাক না হইতে হইতেই ঔষণ সেবন করিলে, পীড়ার উপশম হয় না, প্রভাত অক্তান্ত রোগের উৎপত্তি হইরা থাকে। শীড্রং বিপাকমুপ্যাতি বলং ন হিংস্তাৎ অন্নাবৃতং ন চ মুছর্বদনান্নিরেতি। প্রাগ ভুক্তসেবিতমপৌষধমেতদেব দতাচে বৃদ্ধশিশুভীক্ররাস্কনাভাঃ।

বৃদ্ধ, শিশু ও ভাকস্মভাব ব্যক্তি এবং জ্বীলোকদিগেব পক্ষে আহারের অব্যবহিত পুর্বেই ঔষধ সেবন করা কর্ত্তবা। তাহা হইলে সেই সেবিত ঔষধ শাদ্র পরিপাক প্রাপ্ত হয়, স্ত্তরাং ইহাতে বলহানি হয় না, এবং ঐ ঔষধ, ভক্ষিত দ্রবা দ্বানা আনুত পাকাতে পুনঃ-পনঃ মুণ্ দ্বানা নির্গত হহতেও পারে না।

অথ জ্ব-পূর্ববলক্ষণম্।

ভামোহরতিবিবর্ণন্ধং বৈরক্ষং নয়নপ্লবং।
ইচ্ছান্তেমী মৃছকাপি শীতবাতাতপাদিষু ॥
জ্ঞান্তমন্দো শুক্তা রোমহর্ষোহকচিন্তম:।
অপ্রহ্মন্দ শীতক ভবতাৎপৎস্ততি জ্বরে ॥
সামান্ততো বিশেষাং তু জ্ঞাতার্থং সমীরণাং।
পিতান্তমন্যোদ হিং কফাদনাক্রচির্তবং ॥
রূপেনন্তত্বাভান্তি সংস্কৃতির ক্রং বিদ্ধং।
সর্ক্রিক্রস্মাবায়ঃ সর্ব্দোষ্প্রক্রোপ্রে ॥

বিনা পবিশ্রমে শ্রান্তিবোধ, চিত্তের অন্থি-রতা, শ্রীরের বিবর্ণতা, মুখের বিবস্তা ও চকুৰ রের সজলতা, শীত বাত ও আতপাদিতে বারংবার ইচ্ছা বারংবার ধেষ, হাই উঠা. अन्नर्वात नहीत जाहरतात, तामाक, अकृति, অন্ধকারদর্শন, আনন্দাভাব ও অধিক শীত এই সকল লক্ষণ বা ইহাদের কতকগুলি, দর্অ-প্রকার জন হইবার পূর্বের প্রকাশিত হয় বলিয়া ইহাদিগকে জ্বরের সামাত্ত পূর্ব্বরূপ বলা যায়। আর বাতিকজ্ঞর হইবার পুরের উক্ত সামাত্ত পূর্বারূপের সহিত অত্যস্ত জৃস্তা (হাই উঠা). পিতজ্ঞরের পূর্বের নয়নের দাহ, কফজর হইবার পূর্বের অন্নে অকৃচি বাতপিত্তজ্বরের পুর্বের জ্ঞা ও চকুদ হি, বাতমেমজনের পূর্বে জ্ঞাও অনে অকৃচি, পিত্তশেলজনের পূর্বে চকুদহিও আনে অকৃচি

এবং সান্নিপাতিক জর হইবার পূর্বে জ্ঞা,
চকুর্দাহ ও অন্নে অক্লচি এই লক্ষণগুলি
প্রকাশিত হয়। ইহাদিগের দারা ভাবি-বাতজাদি বিশেষ বিশেষ জ্বরের উপলব্ধি হয়
বলিয়া ইহাদিগকে বিশিষ্টপূর্ববরূপ বলে।

অথ জ্বপূর্ব্বরূপ চিকিৎসা।

পূর্কারপে প্রযুক্ষীত জ্বরশু লবুভোজনম্। লক্ষনক বথাদোসং বিরেকং বাতিকে পূনং॥ পায়ায়েৎ সপিরেবাচ্ছং পৈত্তিকে জুবিরেচনম। মৃদ্র গাচ্ছর্কান তথাৎ কক্ষজে জুবিধীয়তে॥ দ্বন্দ্রে জুবয়াং কুর্য্যাদবুকা সর্কান্ত সক্ষজে॥

জ্বের উপক্রমে দেষের ন্বলাবল ও রোগির অবস্থা ব্রিয়া লঘু ভোজন বা উপবাদ দেওয়ান অথবা বিরেচন কর্তব্য । বাতিকজ্ববের পূর্ববিস্থায় বিশুদ্ধ স্বত পান, পৈত্তিক জ্বেরর পূর্ববিস্থায় বিরেচন এবং শ্রৈশ্মিক জ্বেরর পূর্ববিস্থায় উক্র উভয়বিধ ও ক্রিনোষড় জ্বেরর পূর্ববিস্থায় উক্র উভয়বিধ ও ক্রিনোষড় জ্বের পূর্ববিস্থায় তিবিধ ক্রিয়াই ব্যবস্থেয়।

অথ সাধারণ-জুরচিকিৎসা।

ধান্যপটোলম্।

দিপনং কদবিচ্ছেদি বাতপিভান্থলামনম্।

শব্দং পাচনং ভেদি শৃতং ধাক্তপটোলয়োঃ ।

ধনে ও পটোলপত্রের কাথ জরন্ন, পাচক,
ভেদক, অগ্নির উদ্দীপক, কফনাশক ও বাতপিত্রের ,অমুলোমক। ইহা সাধারণ জরে
প্রযোজ্য।

রুশ্চীরাদি।

বৃশ্চীর-বিদ্ধ-বর্ণাভূ-পয়ং সোদকমেব চ। 🛶 পচেৎ ক্ষীরাবশেষং তৎ পেয়ং সর্ববন্ধরাপহম্॥

খেতপুনর্নবা, বেলম্লের ছাল ও রক্তপুন-র্নবা মিলিত ২ ভোলা লইয়া ১৬ ভোলা হ্র্ম ও ৬৪ ভোলা জলে সিদ্ধ করিয়া, হ্র্য অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া, রোগিকে পান করাইলে সকল প্রকার জ্ব বিনষ্ট হয়।

গুড়ু চ্যাদিঃ।

গুড়ুটী ধাক্তকারিষ্টং পদ্মকং রক্তচন্দনম্। এব সক্ষান্ অরান্ হস্তি গুড়ুচ্যাদিজ দীপনঃ। গুলাসারোচকচ্ছেদ্দি-পিপাসাদাধনাশনঃ।

গুলঞ্চ, ধনিয়া, নিমছাল, পদ্মকাষ্ঠ ও রক্ত-চন্দন; ইহাদের কাথ পান করিলে সর্বপ্রকার জন, নমনবেগ, অক্রচি, বমি, পিপাদা ও দাহ দুনীভূত হয়। ইহা অগ্নির দীপক।

আর্থবাদিঃ।

আবল্পধান্তিকমুক্ততিজা-হরীতকীভিঃ কপিতঃ কদায়ঃ। মানে সনুলে কফবাতিপিজে অবে হিতো দীপনপাচনশচ॥

সোদালের আঠা, পিপুল্মুল, মৃতা, কট্কী ও হণাতকী; এই কাথ রোগিকে পান করাইলে আমনোয় ও সন্ধান্ধবেদনা সংযুক্ত তিলোযসংস্কুজর বিনষ্ট হয় এবং ইহা অগ্নিপ্রদীপক ও প্রিপাচক।

পথ্যাদি (আরোগ্যপঞ্চম ।।

পথ্যারথধতিক্তাত্তিবৃদামলকৈঃ শৃতং তোয়ম্। পাচনং সারকমুক্তং মুনিভিজীর্ণশ্বরে সামে ।

ংরীতকী, সোদাল, কট্কী, তেউড়ী এবং
আমলকী এই পাচটাকে জলে সিদ্ধ করিলে
যে ক্যায় প্রস্তুত হয়, তাহাই পথ্যাদি।
মূনিরা বলেন, আমহুক্ত জীর্ণজ্বির এই ক্যায়
পাচন ও সারক। (উপরি ক্থিত আর্থ্যাদি
ও পথ্যাদি এই হুইটি ক্যায়কে আরোগ্যপঞ্চক ক্রে)।

মুক্তপর্ণটকং নাগরাদি চ।

পন্ত: ব জরে করারং বা মুন্তপপটকং পিবেৎ। সনাগরং পপটকং পিবেদা সহরালভম্ ॥

ক্ষেত্পাপ্ড়া ও মূতা, অথবা শুঠ, ক্ষেত্পাপ্ড়া ও হরালভা, ইহার কাথ পান করিলে অর বিনষ্ট হয়।

শিংশপাদ।

উদকান্দ্রিগুণং ক্ষীরং শিংশপোশীরনেব চ। তৎ ক্ষীরশেষং ক্ষরিতং পেয়ং সর্ববিজ্ঞরাপহন্ ।

জল হইতে দ্বিগুণ হ্রান্সহ শিশুকার্চ ও বেণার মূল সিদ্ধ করিয়া হ্রান্ধ অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া পান করিবে। ইহা সকল প্রকার জরনাশক।

অথ বাতজ্ব-লক্ষণম্।

বেপথুর্বিধমো বেগঃ কঠোঁঠগরিশোষণম্ । নিদ্রানাশঃ কবন্তকো গাতাগাং রৌক্যমের চ ॥ শিরোহদ্যাত্রকথন্ত্র-বৈরক্তং কাচ্বিট্কতা। শুরাধ্যানে জুম্ভণক ভবতানিলকে অরে॥

বাতিক জরে—কম্প, বিষন বেগ অর্থাৎ জরাগনেব বা জবর্দ্ধন কালের বিষমতা ও ঔষগাদির বিষমতা এবং কণ্ঠ ও ওঠের শোষ, আনদ্রা, ক্ষবস্তম্ভ (হাচি না হওয়া), দেহের কক্ষতা, সমস্ত গাত্রে বিশেষতঃ মস্তকে ও হাদ্রে অবিক বেদনা, মুখেন বিরমতা, মলের কঠিনতা, উদ্বে শূল্বেদনা ও আগ্নান এবং জ্ঞা (হাই উঠা) এই সমস্ত লক্ষণ দৃষ্ট হয়।

অথ বাতজুর-চিকিৎসা।

বিষাদিপক্ষুলশু কাথঃ স্থাধাতিকে ভরে। পাচনং পিপ্লবীমূল-গুড়ুটীবিশ্বজাংগবা॥

বেল, শ্রোনা, গান্তারী, পারুল ও গণি-রারি এই পাঁচটি গাছের শিকড়ের ছাল মিলিত ২ তোলা; অথবা পিপুল্মুল, গুলক ও শুঠ মিলিত ২ তোলা, /া। ত অর্দ্ধনের জলে সিদ্ধ করিয়া /০/০ অর্দ্ধ পোয়া থাকিতে নামাইয়া পান করাইলে বাতিক জর নষ্ট হয়।

বিবাদিপঞ্চমূলী চ গুড়্ব্চামনকে তথা। বৃশ্বস্থুকুসমো হোৰ কথায়ো বাতিকে জনে 🛭 পুর্ন্ধোক্ত বিন্ধাদি পঞ্চমূল, গুলঞ্চ, আম-লকী এবং ধনিয়া সমভাগে মিলিত ২ তোলা লইয়া কাথ প্রস্তুত করিবে, এই কাথ সেবনে বাতিকজ্বর বিনষ্ট হয়।

শুষ্ঠ্যাদিপাচন্য।

বিশ্বভেষজকৈরাত-কুক্সবিশশগুড়্চিকা:। পাচনং স্মৃত্যমতেষাং দেয়ং প্রনজে অরে ॥

বাতিকজরে দোষের পরিপাকার্থ শুঠ, চিরতা, নাগরমূতা ও গুলঞ্চ, এই পাচনটি ব্যবস্থা করিবে।

গুড়্চ্যাদিপাচনম্।

ভড়্চীপিপ্ললীমূল-নাগরৈঃ পাচনং স্থৃতম্। দক্তাবাতজ্ঞরে পূর্ণ-লিকে সপ্তম্বাসরে ।

বাতিক জ্বের সপ্তম দিবসে সম্পূর্ণ লক্ষণ প্রকাশ পাইলে গুলঞ্ পিপুলমূল ও শুঠ ইহা-দের পাচন প্রয়োগ করিবে।

শঠ্যাদিক্যায়ঃ ।

শঠীনিশাদ্বাং দাক শুঠী পুকরমূলকম্।
এলা শুড়্টী কটুকা পপটিশ্চ যবাসকঃ।
শুক্ষী কিরাতিভিক্ত দশমূলং তথৈব ৮।
কাথমেবাং পিবেৎ কোমং সিন্ধুচুণ্যুতং মরঃ।
অরান্ সক্ষান্ দশ্তং হস্তারাত কাব্যা বিচারণা।

শঠী, হারদ্রা, দারহেরিন্তা, দেবদার, ও ১, কুড, এলাইচ, গুলঞ্চ, কট্কাঁ, ক্ষেত্পাপড়া, হরালভা, কাক্ডাশুলাঁ, চিরতা ও দশমূল, ইহাদের ঈষত্বক কাথে সৈত্ত্ব লবণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে বাতাদি সক্ষপ্রকার জ্ব সহর প্রশম্ভ হয়।

पर्व्या भिक्यांग्रह ।

দর্ভং বলা গোকুরকং পচেৎ পাদাবশেষিত্য।
শকরাত্তসংযুক্তং পিবেছাতঞ্জাপহ্যু॥

দর্ভমূল (কুণ কাস বা উলুমূল), থেড়েলা ও গোক্ষুর মিলিত ২ তোলা, জল /॥॰ অর্দ্ধ সের; শেষ /৮/৽ অর্দ্ধ পোয়া। এই কাথে প্রিচিনি ও মৃত প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে বাতিক জর বিনষ্ট হয়।

बिक्ना मिक्यायः।

শ্রীকলং সর্বতোভদ্রা কামদৃতীচ শোপক:।
তর্কারী গোকুর: কুজা বৃহতা কলশা দ্বিরা।
রামা কণা কণামূলং কুষ্ঠং শুকী কিরাতক:।
মুদ্ভাবলামৃতাবালং দ্রাক্ষা যাস: শতাহ্বিকা।
এবাং কাশো নিহন্ত্যেব প্রভন্পকৃতজ্বরম্।
শোপদ্রবন্ধ ঘোগোহয়ং সর্ব্যোগবর: মুত:।

বেলছাল, গান্তারীছাল, পারুলছাল, খোনাছাল, গণিয়ারিছাল, গোকুর, কণ্টকারী, বৃহতী, চাকুলে, শালপাণি, রামা, পিপুল, পিপুল্মুল, কুড়, শুঠ, চিরতা, মৃতা, বেড়েলা, গুলঞ্চ, বালা, দ্রাক্ষা, ত্রালভা ও শুল্ফা; ইহাদের কাথ পান করিলে দোপদ্রব বাতিকজ্বর নিশ্চয়ই নিবৃত্ত হয়। ইহা একটি শ্রেষ্ঠ যোগ।

ভূনিম্বাদিক্ষায়ঃ ।

্ ভূমিধমুস্তাজলক উকারী-ম্মামূতাগোকুরনাগরাণাম্। সশালপণীম্মপৌদ্যাণাং কাগং পিনেছা তেওফারার্ড, ॥

চিরতা, মৃতা, বালা, কটকারা, বুহতী, গুলকা, গোক্র, গুড়ি, শালপারে, চাকুলে ও কুড়, ইহাদের ক্যায় পান কলিলে বাতিক জন প্রশ্যিত হয়।

ত্রাণভাদিকধায়ঃ।

ছরালভানাগর(১জপাঠা-শঠীবুধৈরওজ্ডাক্ষায়ঃ। পাতঃ সণুবং শংধেংজ্রক স্থাসকাসং প্রন্থস্তম্।

বাতিক জার গাত্রকাম্ভানি, কাদ ও খাদ থাকিলে ছবালভা, ভাঠ, কট্কা, আক্নাদি, শঠী, বাদক ও এরগুমুলের ধাথ পান করিতে দিবে।

বিশ্বাদিক্যায়ঃ।

বিশাসূতাগ্রাহিকসিকতোয়ম্ মকজ্জরঃ স্তাৎ পিবতঃ কুতোহয়ম্। কাথোহধ বুস্তম্বদেবদাৰ-কুন্দ্রোযধ্যে পাচনমত্র চাৰু॥

পঞ্চमूल्यां किक्यांयः।

शक्षम्लीवलाजाकाकूनतेथः मह श्लीकरेतः । कार्या क्षांक्षितःकम्लाः शर्व्यत्वस्य म् ॥

বৃহৎ পঞ্চমূল (বেলছাল, শোনাছাল, গান্তারীছাল, পাক্ষণছাল ও গণিয়ারি ছাল), বেড়েলা, রাম্বা, কুলএকলাই ও কুড়, ইহাদের কাথ পান করিলে শির:কম্প, সন্ধিষ্ণবেদনা ও বাতিক জব নিবারিত হয়।

কণাদিকষায়ঃ।

কণারসোনামূতব্রিবিখা-নিদিন্ধিকাসিন্দুকভূমিনিখে:। সম্প্তকৈরাচরিতঃ ক্যায়ো হিতাশিনাং হস্তি গদানিমাংস্ত। অবং মক্রংকোপসমূভবং তথা বলাসজ্ঞানলমন্দতাক। কঠাবরোধং হদয়াবরোধং স্বেদ্ধ হিঞাক হিমন্থনোহান।

পিপুল, রস্থন, গুলঞ্চ, শুঠ, কণ্টকারী, নিসিন্দা, চিরতা ও মৃতা, ইহাদের কাথ পান ও স্থাপা ভোজন কবিলে বাতিকজ্ঞর, কফজ্ঞর, অগ্নিমান্দ্য, কণ্ঠ ও শ্বদর্যোধ, লক্ষ্ম, হিকা, হিমান্দতা ও মৃদ্ধা প্রশামিত হর।

কাকোল্যাদিক্যায়ঃ।

কাকোলী বৃহতী মুম্ভা বৃষ্ঠং দার বৃষা মতা। শুঠাকাৰঃ সিতাযুকো হতি বাত্ত্বরং পরন্ধ

কাকোলী, বৃহতী (বা কণ্টকারী), মৃত্য, কুড়, দেবদাক, বাদক ও ভাঠ ইহাদের কাথে চিনি অক্ষেপ দিয়া পান কবিলে বাতজ্ঞর বিনষ্ট ২ইয়া থাকে।

গ্রন্থ্যাদিক্যায়ঃ।

গ্রন্থিকং পর্ণটা বাসা ভাগী বিশ্বা গুড়ুচিকা। এভিঃ সুসাধিতং ভোক্ন তীত্রবাতজ্বরাপ্তম্ ॥

পিপুলমূল, ক্ষেতপাপ ড়া, বাসক, বাসুন-হাটী, শুঠ ও গুলঞ্চ, ইহাদের কাথ তীব্র বাতজ্বর নাশক।

শালপর্ণাদিকষায়ঃ।

শালপণী বলা দ্রাহ্ম গুড়ুহ্চী সারিব। তথা। আসাং কাবং পিবেৎ কোকং তীব্রবাতক্ষরচিছদম্ । শালপাণি, বেড়েলা, দ্রাক্ষা, গুলঞ্চ ও অনস্তযুল, ইহাদের ঈবহুফ কাথ সেবনে তীত্র বাতজর নিবারিত হয়।

শতপুষ্পাদিঃ।

শতপূষ্পা বচা কুঠং দেবদার হরেণুকা। কুন্তসুকণি নলদং মৃত্তকৈবাও সাধ্যেৎ। কৌজেণ সিত্রা চাপি যুক্তঃ কাথোহনিলায়কে॥

শুল্ফা, বচ, কুড়, দেবদাক্ষ, রেণুক, ধনে, বেণামূল ও মৃতা, এই সকল দ্রব্যের কাথ, মধু ও াচনির সহিত সেবন করিলে বাতজ্বর বিনষ্ট হইয়া থাকে।

কাশ্মর্যাদিক্ষায়ঃ.

কাশ্মরীদারিবাজাক্ষা-ভারমাণাসভাভবঃ। কথায়: সগুড়: পীতো বাতজ্বরবিনাশনঃ।

গান্তারী, অনন্তমূল, দ্রাকা, বলাডুমূর ও গুলঞ্চ, ইহাদের কাথ পুরাতন গুড়ে**র সহিত** পান কবিলে বাতজ্ব নিবারিত হয়।

কিরাতাদিক্ষায়ঃ।

কিবাতাপামূতোদীচ্য-সুহতীন্বয়গোঞ্টরঃ। সম্ভিন্নাকলসীবিটনঃ কাথো বাত্তব্যপ্তঃ॥

চিরতা, মূতা, গুলঞ্চ, বালা, বৃহতী, কণ্টকারী, গোক্ষ্র, শালপাণি চাকুলে ও শুঠ, ইহাদের কাথ বাতজ্ঞনাশক।

পিপ্লল্যাদিকষায়ঃ।

পিপ্লনানারিবাজাক্ষা-শতপূম্পাহরেণুভিঃ। কৃতঃ ক্যায়: সগুড়ো হস্তাৎ প্রনঞ্জরম্ ।

পিপুল, অনস্তম্ল, জাক্ষা, গুলফা ও রেণুকা ইহাদের কাথে পুরাতন গুড় প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে বাতজর প্রশমিত হয়।

মরিচাদিকষায়ঃ।" "

মরিচং কচকং শুগী কিরাতঞ্চ হরীতকী। পিগলী কটুকী চৈব বাতজ্ববিনাশনম্।

মরিচ, লবণ, শুঁঠ, চিরতা, হরীতকী, পিপুল ও কট্কী, ইহাদের কাথ বাতজ্বন নাশক।

শতাবরীম্বরসঃ।

সজ্যো বাতজ্বং হস্তি শতাবর্বামৃতারদঃ। সমাসাৎ সগুড়ঃ পীতো বলহীনস্ত দেহিনঃ॥

শতমূলী ও গুলঞ্চের রদে, পুরতিন গুড় প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে হর্মল রোগিরও সম্মই বাতিকজব উপশমিত হয়।

অথ পিত্তজ্ব-লক্ষণম্।

বেগন্তীকোহতিসারণ্ট নিজাল্পং তথা বিমি। কঠোঠমুখনাসানাং পাকঃ বেদশ্চ জায়তে। অলংপো বজুকট্ঠা মুৰ্চ্ছা দাংহা সদস্থা। পীতবিগ্মুক্তনেত্ৰং পৈতিকে জম এব চ।

পিওজ্বে—তীক্ষবেগ, অভিসারবং এরণ-মলভেদ, জন্ধ নিদ্রা, বান, এবং কথ ওট মুখ্ ও নাদিকার পাক অর্থাং এট দকল স্থানে কত হওয়া, আব ঘণ্টানগম, প্রভাপবাক্যান কথন, মুখ্তিক্তা, মুচ্চা, দাং, মন্ত্রা, পিপাসা এবং মল মূত্র ও নেক্রেল পীতবর্ণতা ও গাত্রমুখনি এই দকল নিক্ষিত হয়।

অথ পিত্তজ্ব-চিকিৎসা।

তিক্তাদি পাচনম্।

তিক্তামূস্তায়ৰৈঃ পাঠাকট্ফলাজ্যাং সংহাদকম্। প্ৰকং সশ্ক্রং গাঁতং পাচনং পৈত্তিকে অনে॥

পিত্তজ্বে—কট্কী, মুতা, ব্ৰতগুল, আক্-নাদি ও কট্ফল, ইহাদের কাথ চিনির সহিত পান করিলে দোষের পরিপাক হয়।

क ऐकलां ि शांठनम् ।

কট্ফলেব্রথবাষ্ঠা-ভিক্তামুখ্যৈ: শৃতং জলম্। পাচনং দশমেহলি স্থাৎ তীত্রপিতক্ষরে নৃণাম্।

তীব্র পিজজ্জরের দোষপাকার্থ দশমদিবদে কট্ফল, ইক্রমব, আকনাদি, কট্কী ও মৃতা ইহাদের কাথ দেবন করিলে বিশেষ ফল দুর্শিয়া থাকে।

ত্রঃস্পর্শাদিকযায়ঃ।

ছু:শ্শৰ্শ-বাসা-কটুকা-হরেণু-প্রিয়ঙ্গু-ভূনিস্কৃত: ক্যায়:। পীতো হি পিত্রপ্রতার সদাহং অরং জয়েদান্ত সিতাসমেত:॥

ত্রালভা, বাসক, কট্কী, রেণ্ক, প্রিয়ন্থ ও চিরতা ইহাদের কাথে চিনি প্রক্ষেপ দিয়া পান কবিলে সদাহ পিঙ্জব প্রশমিত হয়।

পর্পটাদিক্ষায়ঃ।

একঃ পূৰ্ণ চকঃ শ্ৰেষ্ঠঃ পিতৃত্বকুৰিনাশনঃ। কিং পুন্বদি যুক্ত্যেত চলনোদীচানাগরৈঃ।

একমাত্র ক্ষেত্রপাপ্ডাব কাণই পিডজর নিবারণের শ্রেষ্ঠ উবন, তাহার সহিত্যদি রভচন্দন, বালা ও শুঠ যোগ করিয়া কাণ করা যার, সেই কাণ যে অবগ্রাই পিওজর নিবারণ করিবে, ভাহাতে আর সন্দেহ কি?

ভাক্ষাদিক্ষায়ঃ।

জাকা ব্রাতকী মূপা কট্কা রুতমালক।
প্রাচন্ট কুতঃ কাপ এবাং পিত্তর্গপ্তঃ॥
মূপ্শোবপ্রলাপান্তর্গতিক্রিমপ্রণ্থ।
পিপানা-রক্তপিভানাং শুমনো ভেগনো মতঃ॥

লাক্ষা, হরীতকী, মৃতা, কট্কীও ক্ষেত্ত-পাপ্ড়া ইহাদের কাথে সোদালের আঠা প্রক্ষেপ দিল্ল পান করিলে পিতজ্ঞরও তত্ত্ব-দ্রব মুখ্নোষ, প্রলাপ, অন্তদহি, মুর্চ্ছা, ভ্রম ও পিপাসা নিবারিত হয়। ইহা ভেদক ও রক্তপিতের প্রশ্যক।

পটোলাদিকষায়ঃ।

পটোলযবধান্তাক-মধুকং মধুসংযুত্য । ইন্ডি পিঙজ্বরং দাহং ভূকাঞাভিএমান্দিনাম ॥

পিতজ্বরে দাহ ও প্রবল পিপাসা থাকিলে পটোলপত্র, যব, ধনে ও যষ্টিমধু ইহাদের কাথে মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিতে দিবে।

খ্রীবেরাদিকষায়ঃ।

্রীবেরচন্দ্রোশীর-ঘনপর্পটিসাধিতম্। দক্ষাৎ তু শীভলং বারি তৃড়্বৃদ্ধিজ্ঞারদাইনুৎ 🛙 বালা, রক্তচন্দন, বেণার মূল, মূতা ও ক্ষেত্রপাপ্ডার কাথ, শীতল করিয়া পান করিলে পিতজ্জা, উগ্র পিপানা ও দাহ প্রশমিত হয়।

कलिश्रां निशांठनम्।

ক্রিক্সং কট্দলং মৃত্যং পাঠ। কট্করোহিণী। পূবং মশর্কর্য পীতং পাচনং পৈত্তিকে অন্তর ॥

ইন্দ্ৰৰ, কট্ফল, মৃতা, আক্নাদি ও কট্কা, ইহাদের কাপ চিনি মিশ্রিত করিয়া দেবন কবিলে প্রতিকজ্ঞানে দেবিপাক হয়।

বিশ্বাদি-ক্ষায়ঃ।

বিষাম্বপৰ্ণটোশীর-ঘনচন্দনসাধিত্য। দক্তাৎ স্থশীতলং বারি ভূট্ছর্দ্দিজনদাহত্তুৎ॥

শুঠ, বালা, ক্ষেত্রপাপ্ড়া, বেণার মূল, মূতা ও রত্তন্দনের কাথ শীতল করিয়া সেবন করিলে পিভজব, পিপাসা, দাহ ও বমি নিবারিত হয়।

গুড় চ্যাদিকশায়ঃ।

গুড় চী ভূমিনিধক বালং বারণমূলকম্।
লমু মৃগুং ত্রিবৃদ্ধানী জাকা বামা চ পর্ণটঃ ॥
এমাং কাথো হ্রত্যের গুরু পিত্রকুতং ক্রতম।
সোপদ্রমণি প্রাত্তিপীতো মধুনা সহ॥

শুলক, চিবতা, বালা, বেণার মূল, অপ্তর-কার্চ, মূতা, তেউড়ী, আমলকী, প্রাক্ষা, বাসক ও ক্ষেত্রপাপ ড়া এই সকলের কাথ প্রাত্তকালে মধুসহ সেবন করিলে উপদ্রব-সংযুক্তাপিওজর বিনষ্ট হয়।

কিরাতাদিকষায়ঃ।

কিরাতামৃতধান্তাক-চন্দনোশীরপর্পটিঃ। সপন্মকৈঃ কৃতঃ কাঝো হস্তি পিত্ততবং অরম্॥ দাহত্কাশ্রমাকটিম্ৎক্রেশং বমপুং ক্রমম্॥

চিরতা, গুলঞ্চ, ধনে, রক্তচন্দন, বেণার মূল, ক্ষেত্রপাপ্ড়া ও পদ্মকান্ঠ ইহাদের কাণ পান করিলে পৈত্তিকজ্ঞর, দাহ, তৃষ্ণা, শ্রান্তি, অরুচি, বমনবেগ, বমি ও ক্লান্তি (দোষজ-গ্লানি) নিবারিত হয়।

দ্রাকাদিকষায়ঃ।

পাক চন্দনপদ্মানি মুস্তাতিক্তামূতাপি চ।
ধানী বালমূশীরঞ্চ লোধেন্দ্রবনপপটাঃ ॥
পন্যকং প্রিম্বৃশ্চ যবাদো বাসকস্থপা।
নবুকং কুলকং চাপি কিরাতো ধান্তকং তথা ॥
এবাং কাথে। নিহন্তোর জ্বং পিত্রসমূপিত্রম্।
ভূসাং দাহং প্রপাপঞ্চ রক্তপিতং জ্বাং ক্রমম ॥
দুখাং ছলিং তথা শুলং মুগশোষনরোচক্রম।
কাসং শ্বাসক ক্রাসং নাশ্রেরাত সংশ্রঃ ॥

ডাক্ষা, রক্তচন্দন, পদ্মকার্চ, মুতা, কট কী, গুলঞ্চ, আমলকী, বালা, বেণার মূল, লোধ, ইন্দ্রযব, ক্ষেতপাপ্ড়া, ফলসা, প্রিয়ঙ্গু, ত্রা-লভা, বাসক, নষ্টিমধু, পটোলপত্র, চিরতা ও ধনে ইহাদের কাথ পান করিলে নিশ্চয়ই পিতজ্ব এবং তৃষ্ণা, দাহ, প্রলাপ, রক্তপিত, লম, ক্রম, মৃচ্ছা, বমি, শূল, মুখ্ণোষ, অক্লচি, কাস, শ্বাস ও বমনবেগ প্রশাসত হয়।

যবপটোলমু ৷

পটোল্যব্নিঃরাথো মধুনা মধুরীকৃতঃ। তীএপিভ্ছরামনী পানাভুড় দাহনাশনঃ॥

পি ভদ্ধর যদি প্রবল হয়, এবং তাহাতে যদি ভূষা ও দাহ পাকে, তাহা হইলে পটোল পদ্ম ও যবের চাউল মিলিত হুই তোলা, আর্দ্ধ দের জলে দিদ্ধ করিয়া অর্দ্ধপোয়া থাকিতে নামাইয়া উহাতে অর্দ্ধতোলা মধু প্রক্ষেপ দিয়া দেবন করিতে দিবে।

তুরালভাদিকষায়ঃ।

ত্বরালভাপপটকপ্রিয়সু-ভূনিম্ববাদা-কটুরোহিণীনাম্। জলং পিবেচ্ছর্করয়াবগাঢ়ং তৃষ্ণাশ্রপি**ভন্মরদাহযুক্তঃ।**

হরালভা, ক্ষেতপাপ্ড়া প্রিরক্স, চিরতা, বাদক ও কট্কী, ই্থাদের কাথে চিনি প্রক্ষেপ দিয়া উহা মধুরীকৃত করিয়া পান করিলে তৃষ্ণা, রক্তপিত্ত, জর ও দাহ প্রশমিত হয়।

ধান্যশর্করা ।

বুমিতং পদ্মাকজলং পাতঃ পীতং সশর্করং পুংসাম্। অন্তর্জাহং শুমুষ্ঠাচিনাদ্দুর্থক্তম্পি॥

পিতৃত্বরে যদি প্রবল অন্তর্গাই থাকে,
তাহা হইলে ৪ তোলা ধনে, ১৬ তোলা ধনে
(ব্যবহার অর্থনাত্রার) সন্ধার সময় ভিজাইয়া রাখিরা প্রাতে সেই বাসি জল চিনির
সহিত পান করিতে দিনে, তাহাতে প্রবল
অন্তর্গাই প্রশমিত হইবে।

আথ্রাদিকাণ্টঃ।

আত্রজমূকিসলয়ৈব চিশুক্তরোইকৈঃ। উশীরেণ কৃতঃ কাণ্টঃ সংগীলো ফরনাশনঃ॥ পিপাসাচ্ছদ্যতীসারান্ মুক্সাং অযতি হুত্তরান॥

আম ও জানেব কচিপাতা, বটশুক বিটের অবিকাদত পত্র) এবং বটাত্বর ও বেণার মূল, ইহাদের ফাণ্ট (কষার বিশেষ) প্রস্তুত করিয়া তাহাতে মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে পিত্তজ্ব, পিপাদা, বিমি, অতিন্দার ও প্রবল মূচ্ছণি উপশমিত হয়।

শতধোতগ্বতম্।

শতধৌ গ্রন্থতন্ত লেপতো দবথুন শিম্পৈতি তৎক্ষণাৎ। অথবা পিচুমর্দ্দপত্রজ-ম্বন্সপ্রোণিত-ফ্লেনলেপতঃ।

শতবৈতি মৃত অথবা নিমপাতার রস কেনাইয়া দেই ফেনা গাত্রে মাধাইলে তৎ-ক্ষণাৎ দাহ নিবারিত হয়।

পলাশন্ত বদ্ধা বা নিষ্ম মৃত্বপল্লবৈঃ। অন্নপিটেঃ প্রলেপোংসং হস্তান্দাহবৃতং অরম্।

্ পলাশ, কুল বা নিমের কচি কচি পাতা কাঁজিতে বাটিয়া গাত্রে মাথাইলেও দাহজ্ব প্রশমিত হয়।

মৃতভূষীয়পিষ্টা চ ধাত্রী লেপাচ্চ দাহত্বৎ। আমলকী স্বতে ভাজিয়া কাঞ্জিকের সহিত পেষণ করিয়া মন্তকে ুপ্রলেপ দিলে দাহ নির্বৃত্তি হয়।

জিহ্বাতালুগলক্লোম-শোবে মূর্দ্ধি তু দাপরেৎ। কেলরং মাতুলুকত মধ্নৈজবসংযুত্ম । জিহ্বা, তালু, গল ও ক্লোম শুক হইলে টাবালেবুর কেশর, মধু ও দৈদ্ধবের সহিত সংৰুক্ত করিয়া মস্তকে প্রলেপ দিলে তালু-শোব প্রভৃতি নিনারিত হয়। (এস্থলে ব্ঝিতে হইবে নে, জীর্ণ জরেই এইরূপ ব্যবস্থা হইয়া থাকে, কারণ তরুণ জরে প্রদেহাদির নিবেধ আছে)।

পিতক্রেণ তথক ক্রিয়াং শীতাং সমাচরেৎ। উত্তানস্থাক গভীরতাত্র-চাংক্তাদিপাকং বিনিধার নাজৌ। তকাসুধারা বছলা প্রক্তী নিহন্তি দাংং স্থাবিতং স্থাীতা।

পিতৃত্ব-সপ্তপ্ত নোগিন পক্ষে শীতল ক্রিয়া কর্ত্তব্য । পিতৃত্বনিকে উপ্তানভাবে (চিং করিয়া) শোৱাইয়া তাহার নাভির উপরে একটি বড তাম বা কাংস্থ পাত্র স্থাপন করিয়া তাহাতে শীতল জ্লুগারা পাত্তিত করিবে। এইরূপ করিলে আণ্ড দাহ নিবারণ হইবে।

অমপিষ্টে: হুশীতৈর 1 পলাশতক্রজৈদিহেৎ। বদরীপল্লবোপেন ফেনেনারিষ্টক্স। বা ॥

পলাশ বৃক্ষের কচি পত্র কাঞ্জিকের সহিত বাটিয়া প্রলেপ দিবে। অথবা কুলের বা নিম্বের কচি পত্র কাঞ্জিকের সহিত নম্বন ক্রিয়া ভত্তপন ফেনা লইয়া রোগির গাত্রে মুর্দ্দন করিলে নাড় দাহশান্তি হয়।

অথ গোতক্রসংসিক্ত-শীক্তলীকৃতবাসসা। কাঞ্চিকার্দ্রপটেনাব-শুঠনং দাহনাশনম্।

পিত্তপ্রকোপহেতু প্রবল দাহ হইলে গব্য তক্তে অথবা কাঞ্জিতে বস্ত্র আর্দ্র করিয়া গাত্রে জড়াইয়া দিবে, ভাহাতেও দাহ নিবা-রিত হইয়া থাকে।

অথ কফজ্র-লক্ষণম।

ন্তেমিতাং ন্তিমিতো বেগ আলক্তং মধুরাক্তরা।
গুরুমুত্রপুরীবন্ধং ন্তন্তস্থান্তিরপাপি চ।
নাত্যুকগাত্রকা চ্ছার্দিরক্সাদোহবিপাকিতা।
গৌরবং শীতমুৎক্রেদো রোমহর্বোইতিনিক্রতা।
এতিগায়োহর্কটিঃ কাসঃ ক্যন্তহেশাত গুরুতা।

কক্ষ্রে, স্তৈমিত্য (শরীর আর্ত্রিরার্ত বং প্রতীতি), জরের মন্দ্রেগ, আলস্ত, মুখমাধুর্যা, মল মূত্র ও নেত্রের শুক্লবর্ণতা, শরীরের স্তর্কতা, ভুক্তবান্ ব্যক্তির স্তায় অলে অনভিলায়, গাত্রেব নাজ্যুঞ্জতা, বমন, অঙ্গাবসাদ, অপরিপাক, শরীরে ভারবোধ, শিতামুভব, বমনভাব, রোমাঞ্চ, অতিনিদ্রা, প্রভিশ্যায় (মুখ নাসিকা হইতে জলপ্রাব), অক্রচিও কাস এই সকল লক্ষণ প্রকাশিত হুইয়া থাকে।

অথ क्यञ्जूत-िहिविद्भी।

মাতৃলুঙ্গশিফান্তং কণা দিকঞ।

ম'তুলুক্স-িফা-বিখ-এ'ক্যাগ্রন্থিকসম্বন্ধ। কফজরেইমু সক্ষারং পাচনং বা কণাদিকম্॥

টাবালেবুর মূল, শুঠ, ব্রাক্ষীণাক ও পিপুল মূল, ইহাদের কাথে যবক্ষার প্রক্ষেপ দিয়া, সেই কাথ অথবা পিপ্রল্যাদিগণের কাথ কফ-জনে প্রয়োগ করিবে, তাহাতে আনলোমের প্রিপাক হইবে। পিপ্রল্যাদিগণ পুর্মিণণ্ডে মুশ্রভাক্তগণে লিখিত ইইয়াছে।

मधु शिश्रनी ।

ক্ষোপেকুল্যাসংযোগঃ খাসকাসন্ধরাপইঃ। শীহানং হস্তি হিকাঞ্চ বালানাঞ্চ প্রশস্ততে॥

কফল্পরে কাদ, খাদ, প্রীহা ও হিক্কা থাকিলে পিপুলচূর্ণ মধুর সহিত অবলেহ করিতে দিবে। ইহা বালকদিগের পক্ষেও প্রশস্ত।

পিপ্লল্যান্তবলেহঃ।

পিপ্লনীং ত্ৰিফলাঞাপি সমভাগাং অরী নিহন্। মধুনা সর্পিবা বাপি কাসী বাসী ফুলী ভবেৎ। কট্ফল ত্রিবলেই । (চাতুর্ভন্নাবদেহিকা।)
কট্ফলং পৌদরং শুঙ্গী কৃষ্ণা চ মধুনা সহ।
বাসকাস-অবহুরো নেহোহরং কন্দনাশনঃ॥

ককজরে কাস ও শ্বাস থাকিলে পিপুল-চুর্ণ ও ত্রিফলাচ্র্ণ সমভাগে লইয়া সধু বা ঘুতের সহিত, অথবা কট্ফল, কুড়, কাঁকড়া-শৃঙ্গী ও পিপুলচ্র্ণ তুল্যাংশে লইয়া মধুর সহিত লেহন করিতে দিবে। তাহাতে উক্ত উপদ্রব নিবারিত হইবে। কট্ফলাম্বলেহকে চাভ্ডদ্রাবলেহিকাথ কহে।

উদ্ধ্যক্রপরোগন্ধী সংগ্রং **স্তাদবলেহিকা।** এধেংরোগহরী যা ডু সা পূর্বং ভেন্তেনমন্তা॥

উর্জ্ জ্রুগত অর্থাং বক্ষঃ ও গ্রীবাদন্ধির উপরিভাগস্থ রোগনাশার্থ অর্লেছ সামং কালে এবং জ্রুর অধোগত রোগনিবারণার্থ ভোজনের পূর্বের সেবন করঃ কর্ত্তবা।

क्ति। श्रीवर्तार्थः। (क्षृक्तामित्तरः।)

কট্দলং পৌগৱং শৃঙ্গী যমানী কারবী তথা। কট্রেয়ঞ্চ সর্বাণি সমভ'গানি চুর্ণরেৎ । আদ্রুকস্বরদৈলিফারাধুনা বা কফজ্রী। কাসখাসাক্ষচিছ্দি-শ্রেমানিলনিক্সয়ে।

কফজরে কাস, খাস, অরুচি, বমি এবং শ্রেমা ও অনিল ছষ্টি নিবারণার্থ কট্ফল, কুড়, কাঁক্ড়াশৃঙ্গী, যমানী, রুষ্ণজীরা ও ত্রিকটু (শুঠ পিপুল মরিচ), ইহাদের চুর্ল, সমভাগে লইয়া আদার রস বা মধুব সহিত অবলেহ করিতে দিবে।

সিন্ধবারকাথঃ।

সিন্ধুবারদলকাথং কণাটাং ককজে অরে। জন্মান্দ বলে কীণে কর্ণে চ পিছিতে পিরেৎ ॥

কফজরে জজ্বার দৌর্বল্য ও শ্রবণশক্তির অল্পতা হইলে, নিসিন্দাপাতার কাপে পিপুল্চ্ণ প্রক্রেপ দিয়া পান করিতে দিবে।

বাসাদিক্ষায়ঃ।

বাদাকুলামূতাকাথঃ কোন্তেণ অরকাদহৎ।

বাদক, কণ্টকারী ও গুলঞ্চের কাথ মধুব সহিত পান করিলে কফজর ও তত্পদ্রব কাস প্রশমিত হয়।

নিম্বাদিক্ষায়ঃ।

নিধবিষামূতাদার-শঠীভূনিখপৌদরম। পিরল্যো বহুতা চেতি কাথো হস্তি কক্ষরম্॥

নিমছাল, শুঠ, গুলঞ্চ, দেবদাক, শঠী, চিরতা, কুড়, পিপ্পলী ও বৃহতী ইহাদের কাথ ককজননাশক।

মরিচাদিক্ষায়ঃ।

মরিচং পিঞ্চলীমূলং নাগরং কারবী কণা।

- চিত্রকং কট্টকলং কুষ্ঠং সহগদ্ধি বচা শিবা॥

কন্টকারী জটা শৃঙ্গী যমানী পিচুমন্দিকঃ।

এবাং কাণো হরতোব অবং দোপদ্রবং ককাৎ॥

মরিচ, পিপুলমূল, শুঠ, ক্বফজীরা, পিপুল, চিতা, কট্ফল, কুড়, মূতা, বচ, হরীতকী, কন্টকারী, জটামাংগা, কাক্ড়াশৃঙ্গী, যমানা ও নিম, ইহাদের কাথ পান কাবলে কফজর ও তাহার উপদ্রব প্রশমিত হয়।

নিদিগ্ধিকাদিক্ষারঃ।

নিদিশ্বিকাভিন্নরুহোপকুল্যা বিখোষধৈঃ সাধিতমমূপীত্ম। হতি অর্থাসকলসকাস-শূলাগ্রিমান্দাং জঠরানিলঞ।

কণ্টকারী, গুলঞ্চ, পিপুল ও শুঠ ইহাদের কাথ পান করিলে, কফজর কাস, খাস, শূল, অগ্নিমান্দ্য ও উদরের কুপিত বারু বিনষ্ট হয়।

কটুক্যাদিকাখঃ।

কটুকং চিত্রকং নিম্বং হরিজ্ঞ:তিবিষে বচাম্। কুঠমিন্দ্রববং মূর্ববাং পটোলঞাপি দাধিতম। পিবেম্মরিচসংযুক্তং দক্ষৌক্রং কৈমিকে অবে॥

কট্কী, চিতা, নিমছাল, হরিদ্রা, আতইচ, বচ, কুড়, ইন্দ্রমৰ, মুর্বা ও পল্তা, ইহাদের কাথে অল মরিচচুর্ণ ও অধিক পরিমাণে মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে কফজন বিনর্গ হয়। কোন কোন ভদ্রকারের মতে কট্কী হইতে বচ পর্যস্ত একটি যোগ, এবং কুড় হইতে পল্তা পর্যান্ত বিতীয় যোগ অর্থাং অর্দ্ধ অর্দ্ধ শ্লোকে এক একটি যোগ।

তিক্তাদিকষায়ঃ।

তিজ্ঞানিথবিধাযোগ-শক্রাহ্যাভিঃ শৃতং ভলম্। পিথেৎ কফজর হতি হিকা-কাস-সময়িতন্॥

কট্কী, নিম, আতইচ, শুঠ, পিপুল, মরিচ ও ইক্রমব, ইহাদের কাণ পান করিলে হিকা ও কাদসংষ্ক্ত কফজ্ঞা বিনষ্ট হয়।

ত্রিফলাদিঃ।

ত্রিফলাপটোলবাসা-চ্ছিন্নক্ষাতিক্ররোহিণীবড়্এস্থা:। মধুনা রেম্মসমূবে দশমূলীবাসকক্ষ বা কাব: ।

হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, পল্তা, বাদক, গুলঞ্চ, কট্কী ও বচ, অথবা দশমূল ও বাদক; ইহাদের কাথ মধুর সহিত দেবন করিলে কফজর নিহত হয়।

মুন্তান্ত-পাচন্ম।

মুস্তং বৎসক্রাজানি ত্রিফলা কটুরোহিণা। প্রবক্তি চঞ্চাত কক্ষর-বিনাশনঃ॥

মুতা, ইন্দ্রবর, হরীতকী, আমলকী, বহেছা, কট্কী ও ফল্বার কাথ পানে কফজর বিনষ্ট হইয়া থাকে।

কটুত্রিকান্তঃ।

কটুতিকং নাগপূপাং হরিদ্রা কটুরোহিণী। কৌটজঞ্চ ফলং ইস্তাৎ সেবামানং কফস্বর্ম।

শুঠ, পিপুল, মরিচ, নাগকেশর, হরিদ্রা, কট্কী এবং ইন্দ্রব ; ইহাদের কাথ কফ-স্কানেক দেবন কানেতে দিবে।

ভূনিম্বাদিঃ।

ভূনিথমিথপিপ্ললঃ শঠী শুঠী শতাবরী। শুড়ুটা নুহতী চেতি কাথো ২ম্মাৎ কক্ষরম্ ॥ চিরতা, নিমছাল, পিপুল, শঠী, ওঁঠ, শত-মূলী, গুলঞ্জ ও বৃহতী ইহাদের কাথ সেবনে কফজর নিবারিত হয়।

অথ বাতপিত্তজ্ব-লক্ষণম।

তৃকা মূর্চ্ছা ভ্রমো দাহঃ স্বপ্নাশঃ শিরোরজা। কঠান্তশোবো বমণু রোমংর্ধাংস্কৃতিস্বন:। পর্বজ্ঞেদন্ট জুভা চ বাতপিত্তকরাকৃতিঃ ।

তৃষ্ণা, মৃচ্ছা, গাত্রঘূর্ণন, দাহ, নিদ্রানাশ, মন্তকবেদনা, কণ্ঠ ও মুথের শোষ, বমন, নোমাঞ্চ, অরুচি, অন্ধকার দর্শন, পর্বভেদ (পর্বস্থানে ভঙ্গবম্বেননা) ও জ্ন্তঃ এইগুলি বাতপিত্ত-জনের লখান।

অথ বাতপিত্তজ্বর-চিকিৎসা।

নিদিগ্নিকা!দক্কাথঃ।

নিদিশ্ধিকাবলারাঝা-ক্রাণ্যাণাম্ভাষ্টভঃ। মতাবিদলৈ: কাণো বাঙলিভ্রার জয়েও ॥

কণ্টকারী, বেড়েলা, রামা, বলাডুমুর, জনক ও মহরকলায় (কাহাব মতে গ্রামা-নতা), ইহানের কাথ পানে বাতপিত্তম্বর প্রশম্ভিত্য।

নবাঙ্গঃ কৰায়ঃ।

বিশাস্থতাৰ ভূনিখিঃ পক্ষুলীসন্থিতৈঃ। কৃতঃ কৰায়ো হস্ত্যান্ত বাতপিতোত্তবং জন্ম॥

শুঠ, গুলঞ্চ, মূতা, চিরতা, শালপাণি, চাকুলে, বৃহতী, কণ্টকারী ও গোকুর, ইহাদের কাথ আশু বাতপিত্তজ্ব নষ্ট করে।

গুড়্চ্যাদিঃ কাথঃ।

গুড়্হীনিম্বধ্যাকং পল্লকং রক্তচন্দনন্। এব সর্বান্ অরান্ হস্তি গুড়্চাদিক্ত দীপনঃ। হলাসারোচকচ্ছের্জি-পিপাসাদাহনালনঃ। গুলঞ্চ, নিমছাল, ধনে, পদ্মকাষ্ঠ ও রক্ত-চল্দন মিলিত ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ তোলা, শেষ ৮ তোলা। এই গুড়ুচ্যাদি ক্ষায় পান করিলে অগ্নির দীপ্তি এবং সকল প্রকার জর, হামাস (বমির বেগ), অরুচি, বমি, পিপাসা ও দাহ নিবারিত হয়। দোহ ও পিপাসা অধিক থাকিলে বৃদ্ধ বৈস্তর্গণ এই কাথ শীতল করিয়া মধুসহ সেবন করিতে বলেন)।

র্হদ্ভড়ুচ্যাদিঃ।

ভড়্চী চলনং পদ্ম-নাগরেক্স্যবাসক্ষ্।
অভয়ারগ্রেদিটিচ-পাঠাধান্তাক্লেবাহিণী ॥
ক্যায়ং পারয়েদেতং পিশ্পলীচুর্বংযুত্য।
কাসখাসম্বান্হক্তি বিপাসাদাহনালনঃ॥
বিধান্তানিলবিষ্ঠতে তিলেব্যপ্তান্তানিত ৮॥

ভন্ঞ, রস্কচন্দন, পদ্মকান্ত, শুঠ, ইক্সবব, হরাণভা, হরীতকী, দোঁদাল, বালা, আক্নাদি, ধনে, মৃতা ও কট্কা, ইহাদের ক্যায়ে পিপ্লাচিত ॥০ ভোলা একেপ দিয়া পান ক্রিলে কান, খান, জ্বর, পিপাদা ও দাহ নষ্ট হয়। মল মৃত্র ও বায়ু স্তম্ভিত ইইয়া থাকিলে ইহা এয়োগ কারবে। সান্নিপাতিক হলেও ইহা ছারা উপকাব হয়।

घनठन्पना मि।

ঘনচন্দনপূর্ণটকং কটুকস্তম্বুণালপটোলদলং সঞ্জন্ম। শুভশীতসিভাম্বয়ি পিত্তহরং জ্বরছন্দিভূবাস্বাচিদাহুহরমু॥

মৃতা, হক্তচন্দন, ক্ষেতপাপ্ডা, কট্কী, বেণার মূল, পটোলপত্র ও বালা মিলিত ২ তোলা, পাকার্থ জল ৩২ ভোলা, শেষ ৮ তোলা। প্রক্ষেপ—চিনি॥ তোলা, শাতল হইলে পান করিবে। ইহাতে জ্বর, পিন্ত, বমি, ডুফা, অফুচি ও দাহ নিবারিত হয়।

ত্রিফলাদিকষায়ঃ।

ত্রিফলাশাব্যলীরাস্ত্রা-রাজবৃক্ষাটর্রষকৈ:। শুভুমন্থ হরেৎ তুর্ণং বাতপিত্যোদ্ধবং ভ্রম্ 🛭 ত্রিফলা, শিম্লমূল, রান্না, দোদালফল ও বাসক, ইহাদের কাথ বাতপিত্তত্বরনাশক।

আরথধাদিকষায়ঃ।

আরথৰদলং মৃত্যং বহীমধুক্ষেব চ। উদীরমভ্যা চৈব হরিন্তা দারসাহরো। পটোলং পিচুম্দল্য গুড়ুটী কটুরোহিনী। এযাং পীতঃ কযারঃ স্তামাতপিস্তভবে অবে।

সোণালফল, মুতা, ষষ্টিমধু, উণীর, হরী-তকী, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, পল্তা, নিমছাল, গুলফ ও কট্কী; ইহাদের কার্থ বাত-পিত্তমরে হিতকর।

পঞ্চদ্রক্ষায়ঃ।

ওড়েচী পর্ণটং মূল্তং কিরাতং বিশভেষজন। বাতপিতভরে দেয়ং পঞ্চজুমিদং ওভন্।

শুলক, ক্ষেত্রপাপ্ড়া, মৃত্যা, চিবতা ও শুঠ, এই পঞ্*ত*ন্দ্রে কাণও বাত্রপিওজ্ঞে প্রশস্ত।

মধুকাদি।

মধুকং শারিবে জাকা মর্কং চলবের্। কাশ্মরীং প্রকং লোঙাং জিফ্রাং প্রকেশন্ধ ॥ প্রক্রমকং ম্থালক অসেত্ত্বনারিনি। মধুলাজসিতাযুক্তং তৎ পীতম্বিতং নিশি । বাতপিত্ত্বরং দাহ-ভূকামুক্তাবিভিন্ন। শ্মরেশ্রক্রপত্ত্ব জীমতানির মাক্ষরং॥

যষ্টিগধু, অনন্তন্ন, প্রানালতঃ, দ্রাক্ষা, মৌলফুল, রক্তচন্দন, নীলোৎপল, গান্থারী-ফল, পদ্মকাষ্ঠ, লোধ, ত্রিফলা, পদ্মকেশর, ফল্সা ও বেণার মূল এই সকল দ্রব্য নোট ২ তোলা লইয়া কৃটিত করিয়া রাত্তিতে চালুনি-জলে ভিদ্ধাইয়া রাথিবে। পরনিন প্রাভঃকালে তাহাতে মধু চিনি ও থৈ-চূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিবে। তাহাতে বাতপিতজ্বর, দাহ, ত্য়া, মুর্ফা, বমি, গাত্রঘূর্ণন ও রক্তপিত্ত নিবারিত ইইবে।

মুন্তাদিঃ।

মুক্তপর্ণ টকোৎপল-কিরাতোশীরচন্দনাৎ কর্ম:। শর্কররা ৮ দীয়তে বাতপিত্তক্সরে বছরা দ্বকুদল:॥ মূতা, ক্ষেত্তপাপ্ড়া, নীলস্থ দি, চিরতা, স্থান্ধি বেণার মূল ও রক্তচন্দন, ইহাদের কষার চিনি সহ পান করিলে বাতপিক্তন্তর বিনম্ভ হয়। বছবার ইহার ফল প্রত্যক্ষ করা গিয়াছে।

কিরাতাদিঃ।

কিরাতভিক্তামলকীশঠীনাং দ্রাক্ষোষণানাগরকামুতানাম্। কাথঃ স্থশীতো গুড়সংযুতঃ ক্তাৎ সপিত্তবাতজ্ঞরনাশহেতুঃ ॥

চিরতা, আমলকী, শঠা, দ্রাক্ষা, পিপুল, শুঠ এবং গুলঞ্চ, এই কাথ শীতল করিয়া গুড়সহ সেবন করিলে বাতপিত্তজ্বর আণ্ড নিবারিত হয়।

অথ পিত্রশ্লেমজ্র-লক্ষণম্।

লিপ্ততিক্তান্ততা তল্লা মোহং কাদোংকচিস্থনা। মুত্রনাহো মুছঃ শীতং পিত্তপ্রেমজ্বাকৃতিঃ॥

পিত্ত গ্লেজনে মুখ দেখা খানা বিশ্ব ও পিত খানা ভিক্ত হয় এবং ভক্রা, মুচ্চা, কান, অক্রচি, তৃষ্ণা ও মুচ্ছা হৃদ্যাই এবং মৃচ্ছা ভিন্ন শীত এই সকল লক্ষণ লক্ষিত ইইনা পাকে।

অথ পিত্তশ্লেষজুর-চিকিৎসা।

কণ্টকার্য্যাদক্ষারঃ।

কটকাষামূতা ভাগী নাগরেন্দ্রধবাসকম্। ভূনিবং চন্দনং মুস্তং পটোলং কটুরোহিণী॥ ক্যায়ং পায়য়েদেতং পিত্তলেম্বরণাহম্। দাহতুকাকচিচ্ছিদ্ধি-কাসকংপার্থশূন্দুং॥

কণ্টকারী, গুল্ঞ, বামুন্হাটা, শুঠ, ইন্দ্র-যব, জ্রালভা, চিরতা, রক্তনদন, মূতা, পল্তা ও কট্কী; ইহাদের কাথ পিডক্লেমজ্বম এবং দাহ, তৃষ্ণা, অর-চি, বমি, কাস স্থান্ন ও পাছালুল নালক।

পটোলাদি:।

পটোলং চন্দ্ৰং মুৰ্বা তিক্তা পাঠামৃতা গণঃ। পিউলেমারুচিছ্জি-অরকভূবিবাপহঃ ।

পশ্তা, রক্তচন্দন, মুর্কা, কটকী, আক্ নাদি ও গুলঞ্চ, ইহাদের কাথ পিত্তশ্লেমজ্জর এবং অফুচি বমি কণ্ডু ও বিষদোষ নিবারক।

অমৃতাষ্টকঃ।

আমুতেক্রববারিষ্ট-পটে লং কটুরোহিনী। নাগরং চলনং মূস্যং পিল্পলীচূর্ণবং যুত্র । আমৃতাষ্টক ইত্যেব পিত্তলেম্বজ্ঞরাপহঃ। ক্ষানারোচকচ্ছলি-পিপানাদাহনাশনঃ॥

গুলঞ্চ, ইন্দ্রথব, নিমছাল, পল্তা, কট্কী, গুঠ, রক্তচন্দন ও মৃতা, ইহাদের কাণে অর্দ্ধ তোলা পিপুন্চ্ প্রক্ষেপ দিরা পান করিলে পিত্তশ্লেক্ষর, ব্যন্তেগ, ব্যন্, অক্রচি, পিপাসা ও দাহ নিধারণ হয়।

চাতুর্ভদ্রক-পাঠাসপ্তকৌ।

কিরাতং নাগরং মুস্তং গুড় চীঞ্চ কফানিকে। পাঠোদীচামূশালৈস্থ সহ পিতাধিকে পিনেৎ।

পিত্তশ্লেমজরে যদি শ্লেমার আদিক্য থাকে, ভাহা হইলে চির ডা, শুঠ, মূতা ও ওলঞ্চ এই দ্রবাচ তুইরের কাথ, এবং পিতাধিক্য থাকিলে পাঠাসপ্তক অর্থাং এই দ্রবাচতুইরের সহিত আক্রাদি, বালা ও বেণার মূল এই তিনটি যোগ কবিয়া ভাহার কাথ পান কবিতে দিবে।

বাসাম্বরসঃ।

সপত্রপুপাসায়া রসঃ ক্ষেত্রিসিভার্তঃ। কক্ষপিত্তরং হস্তি সাম্রপিতং সকামলন্॥

পিভ্রেশ্বজ্ঞরাক্রান্ত রোগির যদি রক্ত-পিত্ত থ কামলা দোষ থাকে, তাহা হইলে পত্ত পূপা সহ বাসকের রস বাহির করিয়া তাহাতে মধু ও চিনি প্রক্রেপ দিয়া পান করিতে দিবে।

পঞ্চতিক্তকষায়ঃ।

কুন্তামৃতাভ্যাং সহ নাগরেণ সপুকরকৈব কিরাততিক্তম। পিবেৎ ক্যায়ন্তিহ পঞ্চিক্তং জ্বঃং নিহন্তাষ্ট্রিবং সম্প্রমুগ্র

কণ্টকারী, গুলঞ্চ, গুঠ, কুড় ও চিরতা এই পঞ্চতিক্তের কাপ সেবন করিলে অষ্টবিধ জ্বর সমাগ্রুপে নিবারিত হয়।

পটোলাদি।

পটে!লযবধস্তাক-মূল্যামলকচন্দ্ৰম্। পৈতি:ক শেশপিত্তোগে জ্বে তৃট্ভর্দিনাইমুৎ ॥

পিত্ত স্থা পিত্তশ্লেষ্ক জরে তৃষ্ণা, বমি ও দাহ থাকিলে, পল্তা, যব, দনে মুগ, আমলকী ও রক্তচন্দ্রের কাথ পান কবিতে দিবে।

কটুক।চূর্ণম্।

সংকর্মক্ষা তাং কটুকীকোক্ষনারিগা। গাঁহা জ্বং জ্যেজ্জঃ পিত্রেখসমূত্রন্য ।

কট্কীচূর্ণ ১ তোলা ও চিনি ১ তোলা একত্র করিয়া উষ্ণ জলের সহিত পান করিলে পিত্রশ্রেজন বিনষ্ট হয়।

অথ বাতশ্লেগজ্ব-লক্ষণম্।

ত্তৈনিতাং পর্কাণাং ভেলো নিজাগৌরবমের চ। শিরোগ্রহা প্রতিষ্ঠায়ং কাসং ধেদাপ্রবর্তনম্। সন্তাপো মধ্যবেগশ্চ বাতলেম্মঞ্জাকুতিঃ।

স্তৈমিত্য (শরীর আর্ড্রব্যাবৃত্রৎ প্রতীতি), পর্কভেন, নিজাদিকা, শিরোবেদনা, প্রতিশ্রার, কাস, সর্কশিরীরে ঘর্মা, সম্ভাপ, জরের মধ্যবেগ অর্থাৎ নাতিতীক্ষ নাতিমৃত্ব বেগ এই শুলি বাতক্লেমজরের লক্ষণ।

অথ বাতশ্লেমজুর-চিকিৎসা

কফণা হন্ধরে খেলান্ কারয়েজক্ষনির্মিতান্। মোতদাং মার্দ্ধবং কৃতা নীতা পাবক্যাশয়মূ। হতা বাতক্ষত্তভং খেলো অরমপোহতি । থপরভূষ্ট-পটস্থিত-কাঞ্জিকসিজ্জো হি বালুকাবেদঃ।
শমরতি বাতকলামর-মন্তকশুলাকভকাদীন্।
বীক্ষ্য বেদবিধিং কুখাং বেদনং বালুকাদিভিঃ।
সর্ববাক্ষে যদি বা যত্র বেদনা সংগ্রজায়তে॥
শীতশুলব্যপর্যে শুস্তগৌরবনিগ্রহে।
সংজাতমার্দ্ধনে বেদে বেদনাদ্বিরতিম তা॥

বাতনে জ্বরে রোগিকে ক্লম স্বেদ দিবে, তাহাতে প্রোতঃ দকল মৃত্ব, অগ্নি স্বস্থানে প্রত্যাগত এবং বারু ও শ্লেমার স্তব্ধতা বিনষ্ট ইইয়া জব নিবারিত হয়। খোলায় বালুকা তাজিয়া বস্ত্রে বন্ধনপূর্বক কাজিতে সিস্ত করিয়া স্বেদ প্রদান করিলে, বাতশ্লেমজনিত পীড়া, মস্তকশূল ও অঙ্গভঙ্গাদি নিবারিত হয়। যদি সর্বাঞ্জে বা কোন অঙ্গবিশেষে বেদনা থাকে, তাহা ইইলে বেদনাস্থানে বালুকাংসদ দিবে। শত, শূল, স্তব্ধতা ও গাত্রগোরব নিবারিত ও প্রোতঃ দকলের নৃত্তা ইইলে স্বেদজিয়া রহিত কানিবে।

ত্রিদোবন্ধে বেনমুনারগতি তওপ্রমোরালক্রপ্রেশানৈত্য।
বাতিক, গ্রৈপ্মিক, বাত্রেপ্সিক, সান্নি-পাতিক ও আমজবে স্তর্জাতা, মুদ্ধা ও গাঁওবেদনা
শাস্তির জন্ম স্বেদ্জিয়া কর্ত্তব্য।

পিয়লীভিঃ শৃতং তোয়মনভিব্যন্দি দীপন্য : বাতলেমবিকারমুং লীলম্বর্বিনাশন্য :

২ তোলা পিপুলের স্বাথ দেবন করিলে বাতশ্রেমরোগ এবং প্লীহজর নিবারিত হয়। ইহা অনভিয়ালি ও অগ্নির দীপক।

মৃত্তনাগরভূনিম্বং ত্রয়মেতৎ ত্রিকারিক্যু। কফবাতাসশমনং পাচনং শ্বরনাশন্য।

মূতা, শুঠি ও চিরতা, এই তিনটি দ্রব্য প্রত্যেকে ২ তোলা পরিমাণে লইয়া কাথ প্রস্তুত করিবে, সেই কাথ বায়ু, শ্লেষা ও স্থামদোধের শমক, পাচক এবং জ্বনাণক।

পঞ্কোলম।

পিশ্বনীপূল-চব্যচিত্রকনাগরৈ:।
দীপনীয়: শৃত্তা বর্গ: কফ'নিলগদাপহ: ।
কোলমাত্রোপবে'গিখাৎ প্রকোলমিদং শুত্র ॥

পিপুল, পিপুলমূল, চৈ, চিতা ও ওঠ, ইহাদের কাথ সেবন করিলে বাতদ্রেমরোগ নই এবং অঘি প্রদীপ্ত হয়। কোল অর্থাং তোলক পরিমাণে প্রযোজিত হয় বলিয়া, ইহার নাম পঞ্চকোল।

ানস্বাদিঃ।

নিধামূতাবিধদার কট্ফলং কটুকা বচা। কৰামং পায়য়েদাশু বাতপ্রেম্মন্ত্রাপহম্। পর্কজেদশিরঃশূল-কাসারোচকপীড়িতম্॥

বাত শ্রেত্র পর্বভেদ, শিঃশূল, কাদ ও অক্চি থাকিলে নিমাদি অর্থাং নিমছাল, গুলঞ্চ, গুতি, দেবদাক, কট্ফল কট্কী ও বচ, ইছাদের কাপ ব্যবস্থা ক্তিব।

कुर्फािनः।

ফুড়'মৃতানাগরপুজগ্রেজ্য কুডঃ কধার: কফমার্গতোন্তরে: সম্বাসকাসার্গ্ধিপার্থকক্করে জরে থ্রিদায়প্রভবের্গি শস্ততে॥

কণ্টকারী, ওরঞ্চ, শুঁঠ ও কুড়, ইহাদের ক্ষায় সেবন করিনে বাতক্লেমারণ জ্বর, শ্বাস, কাস, অঞ্চিও পাইশূল নিবাহিত হয়। ইহা সাহিপাতিকজ্বেও প্রবস্তা।

मभुना-क्यांशः।

দশ্দুলারসং পেয়ঃ কণাযুক্তঃ ককানিলে। অবিপাকেহতিনিক্রায়াং পার্থকক্ষাসকাসকে।

বাতক্ষেত্ৰরে যদি বাতাদি দোষের সম্যক্ পরিপাক না হর এবং অতিনিদ্রা, পার্ন্শুল, খাস ও কাস থাকে, তাহা হইলে দশম্লের কাথে পিপুলচুর্ব প্রকেপ দিয়া পান কবিবে।

পটোলাদি।

ভূক'ৰিতে বাতকফার্দ্ধিশূলে নশ্বাসকাসাক্ষচিহিত্ বিবল্পে। হিতঃ জলং দীপনপাচনক পটোলগুন্তীব্যসিধানীনান্।

বাতনেম্মজ্জরে তৃকা, বেদনা, কাল, খান, আফ্রচি ও মলবন্ধতা থাকিলে, পল্তা, শুঠ, যব ও পিপুলের :কাথ প্রয়োগ করিবে। এই কাথ স্থির দীপক ও দোষের পাচক।

भुष्ठानिः।

মৃত্তং পর্ণটক: শুক্তী শুড়ুহী সত্রালভা। ককবাতারুচিচ্ছদ্দি-নাহণোবজরাপহ:॥

এই জ্বরে অফ্রচি, বমি, দাহ ও শোষ থাকিলে মুতা, ক্ষেত্রপাপ্ডা, শুঠ, গুলক্ষ ও হুলাকভার কাথ দেবন করাইবে।

দাৰ্ব্বাদি-ক্ষায়ঃ।

দার ।পিঁচভাগ, জ-বচাধাল্য ককট্ কলৈ। ।
সাভয়াবিষপুতীকৈঃ কাপো হিসুমধ্যকটা ।
কলবাতস্বরে পিতো হিকাশোবগলগথান্।
ভাষকাসপ্তদেকাংশ্চ হ্তাও তরুমিবাশনিঃ॥

বাতয়েয়য়বে হিকা, শোষ, গলংকারা, কাদ, খাদ ও মুখপ্রদেক থাকিলে দেবনার কেমতপাপ্ডা, বাদুনহাটা, মৃতা, বচ, ধনে, কট্কল, হরীতকী, শুঠিও নাটাকরঞ্জ, ইহা-দের কাথে হিং ও মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিতে দিবে। বঞ্জপাতে যেমন তর বিনই হয়, এই কাথ পানেও তক্রপ বাতয়েয়য়বা এবং হিকাদি উপদ্রব সকল বিনই হইয়া থাকে।

পথ্যাদি পাচন্য্।

পথা: কুন্তবরী মুপ্তা গুটা বটু হণপর্ণ টম্। সকট্ফলনচা ভাগী নেবাহ্বং মধু-হিঙ্কুমং। কফ্রা একরেবের কুন্ফিগ্রংগ্রেননাঃ। কঠাময়াঞ্জম্মধু-মানকাসারিবচ্ছতি॥

হরীতকী, ধনে, মুতা, শুঠ, গন্ধত্ণ, ক্ষেত-পাপ্ডা, কট্ফল, বচ, বামুনহাটী, দেবদাক, ইহাদের কাপে মধুও হিদু প্রক্ষেপ দিয় পান করিলে বাতলৈখিক জ্ব। ও তদাহ্বস্থিক কৃষ্ণি হাদয় ও পার্থবিদনা, গলরোগ, মুখ-শোধ, কাদ ও খাদ বিনষ্ট হয়।

অথ সারিপাতিকজ্ব-লক্ষণম্।

কণে দাহঃ কণে শীতমন্থিদদ্দিশিরোকরা।
সাঞাবে কলুমে রঙে নিভূগ্যে চাপি লোচনে ॥
সক্ষান সক্ষান কণে বিকঠিঃ শুকৈরিবাব্তঃ।
ভক্রা মোহঃ প্রলাপন্য কাসঃ খাদোহকুটির্জ্ঞাঃ॥

পরিদ্ধা থকলাশা জিহ্বা প্রন্তাক হা পরস্।

ঠীবনং রক্তপিত্তক ককেনো থিপ্রিতক্ত চ ॥

শিরসো লোঠনং তৃঞা নিজানাশো ক্রদি বাখা।
বেদম্ত্রপ্রীবাগাং চিরাক্ষর্পনমলশঃ ॥
কৃশবং নাতিগাত্রাগাং প্রতহং কঠকুজনন।
কোঠানাং ভাবরক্তানাং মণ্ডলানাঞ্চ দর্শনম্॥
মুকরং স্রোত্রসাং পাকো শুরুত্বমুদ্রক্ত চ।

চিয়াৎ পাক্ত দোবাগাং সম্পিতিজ্বনাকৃতিঃ ॥

সরিপাত্রেরে কণে কণে দাহ, কণে কণে শীত, অস্থি স্থিতি ও মন্তক বেরনা, চকুর্বর অশ্রপূর্ণ আবিল (খোলাটে) রক্তবর্ণ বিক্ষা-রিত্ব: অভি কুটিল, কর্ণপ্রয় নানা প্রকার भक्त अ (वहनोवि•िष्टे, क्छ (यन भुक (याका-দির শোঁয়া) দাশ আবৃত, তক্ৰা, মূৰ্চ্ছা, প্রলাপভাষণ, কাস, শান, অক্চি. জিহবা অলারবং কুফবর্ণ এবং গোজিহবাসদৃশ খংস্পূৰ্ণ, অঙ্গ সকল অত্যস্ত শিথিল, মুখ হইতে কফের সহিত রক্ত বা পিত্তের অলো-জিলাৰ, ইত্ততঃ শিরশ্চালন, তৃষ্ণা, নি**জানাশ,** হৃদ্যে ব্যুথা, দীর্ঘকালাস্তে মল মুত্র ও ঘর্ষের অতি অল পরিমাণে নির্গম, দৌষপূর্ণত হেতু শ্রীরের নাতিরুগর, কণ্ঠে নিরম্ভব অব্যক্ত শব্দ, খান বা রক্তবর্ণ কোঠের (বোল্ডা-দ্রষ্ট হানো আর শোথেন) ও মণ্ডনাক্তি চিহ্ন সমূহের উৎপত্তি, আত অল্ল কথন, মুখনাগাদ ল্রোতঃ সকলের পাক, উদৰে ভারবোৰ, রসপূর্ণস্ব হেতু বাতাদি দোষের অতি বিলম্বে পরিপাক, এই দকল লক্ষণ প্রকাশিত হইয়া থাকে।

অথ সন্নিপাতজ্বর-চিকিৎসা।

লজনং বালুকাষেদো নক্তং নিষ্টাবনং তথা। অবলে:হা২ঞ্জনজৈব প্রাক্ প্রযোজ্যং ত্রিদোবজে। সন্নিপাতজ্ঞরে পূর্ববং কুর্যাদামকফাপহম্। পশ্চাৎ প্লেম্মণি সংক্ষাপে শময়েৎ পিত্তমারুতে।

স্থিপতি ছারে প্রথমে লজ্মন, বালুকাছেন, নহা, নিষ্ঠীবন, অবলেই ও অঞ্জন প্রযোজা। এই জবে অত্যে আম অর্থাৎ অপক আহাররস ও কফ দমন করিয়া পশ্চাৎ পিও ও বার্র শমতা করিবে।

ल्ड्यन्य ।

তিরাজং প্রকাজং বা দশরাজ্যপাপি বা।
লক্ষনং সন্নিপাতের কুর্যাখারোগ্যদর্শনাৎ ।
দোষাণানের সা শক্তিল ক্ষনে বা সহিষ্টা।
ন হি দোষক্ষে কশ্চিৎ সহতে লক্ষনাদিকন্।
(আদি-কাৎ বালুকাক্ষোদিগ্রহণন্।)

সন্নিপাতজ্বরে তিন দিন, পাঁচ দিন, দশ

নিন অথবং যতদিন না আবোগ্য দশন হয়,
তত দিন উপবাস করা কর্ত্তব্য। বে প্রয়ন্ত

দোষের শক্তি থাকিবে, সে পর্যান্ত বোগী
উপবাস সহা করিতে পারিবে। দোষের কর

হইলে আর উপবাস ও বালুকাম্বেনাদি সহিতে
পারিবে না।

কফোল্বণে শীতাঙ্গাদো।

ন স্বেৰণাতিরেকেও সন্মিপাতঃ প্রশাসতি।
তক্ষামূহক্ষু হৈ কার্যাং স্পেনং সন্মিপাতিনাম্ ॥
সন্মিপাতে জলমন্তো নরাপাং বিগ্রহো ভবেও।
বিনা বহুণুপচারেও কন্তং শোষনিত্বং ক্ষাং ॥
প্রয়োগা বহুবং সন্তি সবিষা নিনিংগা ক্ষাণি।
বহুণুগ্রাণং বিনা প্রায়ো ন বান্যং দর্শমন্তি ে ॥
প্রতিক্রিয়াবিধাবেবং বস্তু সংজ্ঞা ন জায়তে।
পাদতলে ললাটে বা দহেলোইশলাক্যা ॥

সর্বাঙ্গ শীতল শ্লোৰণ সন্নিপাতজ্বে হইলে, স্বেদক্রিয়া ব্যতিরেকে সন্নিপাতের শান্তি হয় না। অতএব সালিপাতিকজরে মুহসুহ: স্বেদ প্রদান করিবে। সলিপাতে মহুষ্যদিগের অগ্নি-ক্ৰিয়া ব্যতি-দেহ জলময় হয়, সূত্রাং শোষণ করিতে বেকে কে তাহা স্ত্রিপাতজ্বরের, স্বিষ ও নিবিধ্ব বছবিধ ঔষধ আছে বটে, কিন্তু অগ্নির তাপ বাতিরেকে নিজ নিজ वौर्या अमर्भन ভাহার৷ প্রায়ই করিতে সমর্থ হয় না। নানা প্রকার প্রতিকার क्योग्ड क्वरहर

পদতল বা ললাট অগ্নিসম্ভপ্ত লৌহণলাকা দারা দগ্ধ করিয়া দিবে।

নম্ভানি।

দৈশ্বং খেতমনিচং সপপং কুঠমেন চ।
বস্তম্ত্রণ সংপিষ্য নস্তং তল্ঞাবিনাশনম্ ॥
নধ্কসারসিজ্প-বচোবণকণাঃ সমঃ ।
লক্ষং পিষ্টাপ্তসা নস্তং কুর্যাং সংজ্ঞাপ্রবোধনম্ ॥
বড় মুছিলৈন্তবন্ধাঃ সমর্কসারঃ
পিষ্টাঃ সমেন নরিচেন জলোঃ কর্কেঃ।
নস্তং নিবারয়তি শীঘনচেতনবং
তেল্রাপ্রলাপসাহিতং শিরসো গুরুষম্ ॥
লগুনং মরিচং পিষ্টং নস্তং স্যাংৎ লেমনাশনম্ ॥
সিংকুট্কংগুজজল-পানাল্লসাল্প্যল্লন্ড।
ছংসাধনসন্নিপাতঃ প্রবলোহপ্যাংখন শ্রমেতি ॥
মাতুকুস্টেকরসং কোঞ্চং ক্রিবংগা্হিতম্।
অন্তর্গার্টকরসং কোঞ্চং ক্রিবংগা্হিতম্।
তেন প্রত্যাতে লেমা প্রভিন্নক প্রান্চতে।
শিরোক্রমক্ঠাস্য-পার্থকক চোপ্রামাতি ॥

সৈধ্ব লবণ, সজিনাবীজ, শেতসৰ্বপ ও কুড়, প্ৰতোক সমানভাগে লইয়া ছাগমূত্ৰে পেংণ করিয়া নম্ভ লইলে তন্ত্ৰ। নিবাবিত হয়। (ইতি সৈম্বাদি নম্ভ)।

মৌলসার, সৈর্বব, বচ, মরিচ ও পিপুল সমভাগে ঈথহ্য জলের সহিত উত্তমরূপে পেষ্ণ করিয়া নহা লইলে সংজ্ঞালাভ হ্য। (ইতি মধুকসারাদি নহা)।

পিপুলমূল, দৈদ্ধৰ, পিপুল ও মৌলসার
ইহাদের সমভাগ চুর্ব এবং সমুদ্য চুণের সমপরিমিত মরিচচুর্ব ক্ষত্ত জলে পেখণ করিয়া
নস্ত লইলে অচেতন্ত্র, তক্ত্রণ, প্রলাপ ও
ধ্বিরাভরত্ব আভ নিবাধিত হয়।

র হান ও মরিচ পেষণ করিয়া নশুরূপে বাবহার করিলে কফনাশ হয়। কালকুরুটের ডিন্নমধ্যন্থ তরলাংশ পান করিলে বা কাহার নশুলইলে অথবা অঞ্জন দিলে হঃসাধ্য প্রবল স্থাপাতও আশু প্রশ্নিত হয়।

টাবালেবুর রস, আদার রস^{ন্ত্}ও ত্রিলবণ (সৈন্ধব, বিটাও সচল) ঈষভঞ করিয়া নশু প্রদান করিবে, অথবা দিন্ধিস্থানোক্ত তীক্ষ নশু প্রয়োগ করিবে, তাহাতে শ্লেমা তরল হইয়া নির্গত এবং মন্তক হৃদর কণ্ঠ মুখ ও পার্গুদেশের বেদনা প্রশমিত হইবে।

নিষ্ঠীবনম্।

আর্দ্রক্ষরসোপেতং দৈশ্ববং সক্ট্রেয়ৰ। আকঠং ধাররেদাতে নিজীবেচচ প্নংপুনং ॥
তেনাপ্ত হানরাচেলুমা মন্তাপার্যনিরোগলাং।
লীনোহপ্যাকৃষ্যতে গুলো লাঘবকাগত লাহতে ।
পর্কান্তেদা করো মূর্জা-নিজাকাসগলামরাঃ।
মুথান্দিগৌরবং জাভামুংক্রেদকোপশামাতি ।
সকুদ্দিতিচতুং কুর্যাদ্ দৃষ্ট্, দোষবলাবলম্।
এতদ্ধি পরমং প্রান্তেদ্বিকাং সমিপাতিনাম্ ।
আর্দ্রক্ষরসমুক্ষং কৃষ্যা সৈন্ধবাদিচ্র্গম্কুর্পং দ্বা
নিজ্যনম্পুদিশন্তি বৃদ্ধাং ॥

দৈদ্ধব লবণ ও ত্রিকটু (শুঠ পিপুল মরিচ) আনার রসে মিশ্রিত করিয়া আকণ্ঠ মুখে ধারণ ও পুনংপুনং নিষ্ঠীবন করিবে। এই ক্রিয়া থারা রোগির হানয়, মহা, পার্প্র, মন্তব্ধ ও গলদেশ হইতে, অতি লীন ও শুক লেমাও আরুই হইয়া উঠিয়া যাইবে। তাহাতে দেহ লঘু হইবে এবং পর্মভেন, জা, মুচ্ছা, নিদা, কাদ, গলরোগ, মুণ ও নেত্রের গুরুতা, গরীরের জড়তা ও বমনভাব প্রশমিত হইবে। দোষের বলাবল বিবেচনা করিয়া একবার, ঘইবার, ।তিনবার কিংবা চারিবার পর্যান্তব্ধ নিষ্ঠীবন করা যাইতে পারে। ইহা সন্ধিপাত-রোগে শ্রেষ্ঠ ঔষধ।

বৃদ্ধ বৈষ্ণগণ ঈষত্য আদার রদে উপযুক্ত পরিমাণে সৈন্ধবাদি চূর্ণ মিশ্রিত করিয়া তাহা ব্যবহার করিয়া থাকেন।

वंकोन्नावर्शनका।

क्ट्रेक्कर (भोकतर मृत्री त्यांतर यांत्रक कात्रती। सन्दर्भोकुटर टेट्ट्यपूना मह लहरतर ॥ এवायलहिका हन्ति महिलांटर स्वतंत्रनम् । हिकार यांत्रक कात्रक कर्षद्रांत्रर निवष्ट्टि ॥ উদ্ধিগপ্রেমহরণে উকে খেলাদিকর্মণি। বিরোধাকে মধু তাক্ত্যা কার্বোবার্ডককৈ রসৈঃ॥

কট্ফল, কুড়, কাঁক্ড়াশৃঙ্গী, শুঠঁ, পিপুল, মরিচ, ত্রালভা ও ক্ষঞ্জীরা, এই সকল দ্রব্য উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া মধুর সহিত অব-লেহন করিলে স্থারুল সম্লিপাত, হিকা, খাস, কাস ও কর্গরোগ নিবারিত হয়। উর্দ্ধণ শ্লেম-হরণার্থ স্বোদি উষ্ণক্রিয়া কর্তব্য হইলে, মধুর পরিবর্ত্তে আদার রস দিয়া অবলেহ প্রস্তুত করিবে। কারণ মধু ও উষ্ণতা পরস্পর বিরোধী।

অঞ্জনন।

(শিরীযাগঞ্নন্।)

শিরীবনীজগোমৃত্র-কুম্পামরিচসৈন্ধনৈঃ। অঞ্চনং স্থাৎ প্রবোধায় সরসোনশিলাবচৈঃ।

শিরীষবীজ, পিপুল, মরিচ, সৈন্ধব, রহ্মন, মন:শিলা ও বচ গোমুত্রে পেষণ করিয়া অঞ্জন দিলে রোগির চৈত্র হয়। (কোন কোন মতে শিরীষবীজ হইতে সৈন্ধব পর্যান্ত একটি যোগ এবং রহ্মন হইতে বচ পর্যান্ত আর একটি যোগ।)

অহরাহরেপতঙ্গস্ত বিট্চুর্ণং মধুসংযুতম:।
অঞ্জনাদ্ বোধয়েমুধীং তক্রিতং সন্লিপাতিনম্ ।

আরম্বলার নাদি মধুর সহিত মাড়িয়া অঞ্জন দিলে মৃচ্ছিত, তক্তিত, সালিপাতিক রোগির চৈত্ত লাভ হয়।

কণ্টকাৰ্য্যাদিপাচন্য।

কটকারীদ্যং শুটী ধাক্তকং স্থানাক চ।
এতিঃ শৃতং পাচনং স্থাৎ সর্ব্বজ্ঞবিনাশনম্।
কণ্টকারী, বৃহতী, শুঠি, ধনে ও দেবলাক,
ইহাদের পাচন সর্বজ্ঞবাশক।

मन्यूलग् ।

বিৰভোনাকগান্তারী-পাটলাগণিকারিকাঃ :
দীপনং কন্ধবাতন্থং পঞ্চমূলমিদং মহৎ
দালপণী পৃশ্বিপণী বৃহতীন্ধরগাক্ত্রন্

বাতশিভাপহং বৃষাং কনীয়ং পঞ্মূলকম্ ॥
উভয়ং দশমূলং হি সম্নিপাতজ্বাপহম্।
কাদে বাদে চ তলায়াং পাৰ্শুলে চ শস্ততে।
পিল্লীচ্ণসংযুক্তং কণ্ঠহন্যহ্নাশনম্ ॥

বিন্ন, গোলা, গান্তারী, পারুল ও গণিয়ারি
নিলিত এই পাঁচটিকে বৃহৎ পঞ্চমূল কছে।
ইহা অগ্নির দীপক ও বাতদ্রেম্মনাশক। আর
শালপাণি, চাকুলে, বৃহতী, কণ্টকারী ও
গোকুর মিলিত এই পাঁচটিকে ব্রন্ন পঞ্চমূল
বলে। ইহা বাতপিত্তনাশক ও বৃষ্য। এই
উভয় পঞ্চমূল মিলিত হইলে তাহাকে দশমূল
কহা যায়। দশমূলের কাণ পিপুলচ্নের
সহিত সেবন করিলে সমিপাতজ্বর, কাদ, খাদ,
ডক্রা, পাশ্রশ্ল এবং কণ্ঠ ও হাদয়ের বেদনা
নিবারিত হয়।

দ্বাদশাঙ্গঃ।

দশমূলীকষায়ন্ত সপৌন্ধরকণাবিতঃ। সন্নিপাতে অবে দেয়ঃ খাসকাসসমবিতে॥

কাস ও খাদ উপদ্ৰবৰ্ক সন্নিপাতজ্বে পূৰ্ব্বোক্ত দশমূল এবং কুড় ও পিপুল, এই খাদশাক কাথ ব্যবস্থা করিবে।

চতুর্দশাঙ্গঃ।

চিরজ্বরে বাতককোরণে বা ত্রিদোষজে বা দশমূলমিখা:। কিরাততিক্তাদিগণং প্রযোজ্য: শুজার্থিনে বা ত্রিবতাবিমিখা:॥

দীর্ঘকালের জরে বা বাতলেন্মোরণ সান্ধিশাতিকজনে পুর্বোক্ত দশম্শ এবং কিরাততিব্রুলি গণ অর্থাৎ চিরতা, মুথা, গুলঞ্চ ও
ভাঠ, এই চতুর্দিশালের কাথ প্রয়োগ করিবে।
বিরেচন আবশ্রুক হইলে সেই কাথের সহিত্র
উপষ্ক মাত্রায় তেউড়ীমূল চূর্ণ (ছয়
আনা বা অর্দ্ধ ভোলা) মিশ্রিত করিয়া পান
করিতে দিবে।

বাতশ্লেষ্মহরোহফীদশাঙ্গঃ।

দশমূলী শঠা শৃঙ্গী পৌধনং সমুরাজভম্। ভাগী কুটলবীজক পটোলং কছুরোহিনী। অন্তাদশাক্ষ ইতোষ সন্নিপাতজ্ঞরাপহ:। কাসহন্তাহপার্যান্তি-খাসহিকাবমীহর:॥

বাতপ্রেমাবণ-সন্নিপাতজ্বরে, হৃদরে ও পার্শ্বে বেদনা এবং কাদ, খাদ, হিন্ধা ও ব্যি থাকিলে পুর্ব্বোক্ত দশমূল শঠী, কাঁক্ড়াশৃঙ্গী, কুড়, ত্ররালভা, বামুনহাটা, ইক্রবর, পল্তা ও কট্কী, এই অষ্টাদশাঙ্গের কাথ ব্যবস্থা করিবে।

পিত্রশেষহরোহফীদশাঙ্গঃ।

ভূনিস্বদাক্ষদশমূলমহৌষধান্ধ-তিক্তেন্দ্রনীজধনিকেভকণাক্ষায়ঃ। তন্ত্রপ্রকাপক্ষনাক্ষচিদাহম্যেহ-খাসাদিষুক্তমণ্ডিলং অরমাশু হবি ॥

চিরতা, দেবদারু, দশমূল, শুঠ, মুতা, কট্কী, ইন্দ্রগব, ধনে ও গজপিপ্ললী, ইহাদের ক্ষায় পান করিলে তব্রা, প্রলাপ, কাদ, অক্চি, দাহ, মোহ ও শ্বাদাদি উপদ্রবযুক্ত জব স্বাশু বিনষ্ট হয়।

মুন্তাতো গণঃ।

মুন্তপপিটকোশীর-দেবদান্ধনহোষধন্।
ক্রিফলা ধ্যবাসন্ট নীলা কম্পিলকব্রিবৃৎ ।
কিরাততিক্রকং পাঠা বলা কট্করোহিলা।
মধুকং পিল্লানুকং মুন্তান্তো গণ উচ্যতে।
অপ্তাদশান্ধমুদিতমেতবা সন্নিপাতনুৎ।
গিডোন্তরে সন্নিপাত হিতকোক্তং মনীবিভিঃ।
মন্তান্তক্তে উরোবাত উরংপার্থনিরোক্রতে।

মূতা, ক্ষেত্রপাপ্ড়া উশীর, শেষদারণ, তঠঁ, হরীতকী, বহেড়া, আমলকী, ত্রালভা, বননীল, কমলাগুঁড়ি, তেউড়ী, চিরতা, আক্নাদি, বেড়েলা, কট্কী, মষ্টিমধু ও পিপুল্নুল, ইহাদিগকে মুস্তাল্ড গণ বলা যায়। ইহার অন্ত নাম অটাদশাঙ্গ। ইহা সন্নিপাতজ্বনাশক। পিত্রপ্রধান সন্নিপাত জ্বে, মহ্যাল্ড উরোঘাতে এবং স্থান্য পার্গ ও শির্ণান্ত ব্নানায় ইহা বিশেষ-হিতকর।

ৰাত্ৰিংশাঙ্গঃ।

ভাগীভূনিখনিখা বনকটুকবচা বোাৰবাসাবিশালারামানতাপটোলী-মুর চক্সরজনী-পাটলাতিন্দুকৈক।
ব্রামানবিভিত্নটা ত্রিব ডমতিবিধা-পুক্রজারনালৈবা'লাসিংহীকলিকৈ জিকলগঠিবুতৈঃ ক্রিভন্তলাভাগৈঃ।
বাগো থাত্রিংশনামা ত্রিভির্ধিকদশান্ সন্নিপাতান নিহন্তি
দূবং কাসাদিহিকা-খননগদক্ষাশ্মানবিধ্বংসকারী।
উক্তন্তভাস্তর্মী গলগদক্তিং সর্বসন্ধিগ্রহার্ডিং
বাংলোখান্ নিহন্তান্মুগরিপুরিহ চেদ্ রোগন্ধানং তথৈব।

বামুনহাটী, চিরতা, নিম, মৃতা, কট্কী, বচ, গুঠ, পিপুল, মরিচ, বাসক, রাখালণসা, রামা, গ্রামালতা (বা অনস্তমূল), বিশ্লো, দেবদাক, হরিদ্রা, পাকল, গাব, ব্রাহ্মীশাক, দারুহরিদ্রা, গুলঞ্চ, তেউড়ী, আতইচ, কুড়, বলাড়ুমুর, কন্টকারী, বৃহতী, ইল্রথব, হরীতকী, বহেড়া, আমলকী ও শসী, এই ৩২টি প্রব্যের কাথ পানকরিলে ত্রমোদশ প্রকার সামিপাতিক জব, শূল, কাস, হিকা, খাস, উদরাগান, উবস্তম্ভ, অন্তর্গি, গলরোগ, অক্ষৃচি ও সন্ধিসমূহের বেদনা প্রভৃতি নিবারিত হয়।

ব্রহত্যাদিগণঃ।

বৃহত্যৌ পুষর ভাগী শঠা শৃঙ্গী দ্বরালন্ত।
বৎসকস্থ চ বীজানি পটোলং কটুরোহিণা ।
বৃহত্যাদিগণ: প্রোক্তঃ সন্ত্রিপাতজ্বরাপহ:।
কাসাদিখু চ সর্কেষ্ দের: সোপদ্রবেষ্ চ ॥

বৃহতী, কণ্টকারী, কুড়, বামুনহাটী, শঠী, কাক্ড়াশৃঙ্গী, গুরালভা, ইন্দ্রবন, পল্তা ও কট্কী এই বৃহত্যাদিগণের কাথ পান করিলে মান্নিপাতিক জ্বর এবং তত্তপদ্রব কাসাদি নিবারিক হয়।

भछ्रामिन्।

শটা পুৰুষ্ণুক্ৰ ব্যাস্থ্য শৃঙ্গী ছুৱাকতা। গুডুটো নাগরং পাঠা কিরাতং কটুরোহিণা। এব শট্যাদিকো বৰ্গঃ সন্নিপাতব্দরাপহঃ। কাসক্ষরহপার্বার্ডি-বাসে তত্ত্যাঞ্চ শক্ষতে।

শটী, কুড়, কণ্টকারী, কাক্ড়াশৃঙ্গী, ছরা-শভা, গুলঞ্চ, শুঠ, আক্নাদি, চিরতা ও কট্কী। এই শট্যাদিগণের কাথ সমিপাত- জ্ঞরনাশক এবং কাস শ্বাস হৃদ্ব্যথা পার্শ্বেদনা ও তন্ত্রা রোগে হিতকর।

त्रश्कर्षेकनामिः।

কট্ক । ক্লেচি পাঠা পুদ্ধ । জাজিপপটেই।
শুদ্ধীকলিক ধক্তাকং এটা ভূককণ । হব্য ।
তিক্তাভয়াষ্টকরাতং ভাগী রামঠকং বলা।
দেশমূলী কণামূলং নিঃকাণ্য কাথমূত্যম্ ।
হিল্পার্ডকরণোপেতং সমিপাতবিনাশনম্।
গলপতং গওমালাং স্বরভেদং গলাময়ান্।
কর্ণমূলোভবং শোধং হন্তাদ্ধ্যমুখাময়ান্।
কন্যতন্ত্র কাসং তথা হন্তি শিরোগদান্।
শিরোগ্রুত্বং বাধিগ্যং নিহন্তি ক্ল্বাতিকম ॥

কট্কল, মৃতা, বচ, আক্নাদি, কুড়, ক্ষজীরা, ক্ষেতপাপ্ড়া, কাক্ডাশৃঙ্গী, ইন্তব্ব, ধনে, শটী, ভূঙ্গরাজ, পিপুল, কট্কী, হরীতকী, বালা, চিরতা, বামুনহাটা, ধলা আঁকড়া, বেড়েলা, দশম্ল ও পিপুলমূল ইহাদের কাথে হিং ও আদার রস মিশ্রিত করিয়া সেবন করিলে সায়িপাতিক জর, গলগও, গওমালা, স্বরভেদ, গলরোগ, কর্ণমূলশোথ, হত্তগ্রহ, ম্থারোগ, বাতশ্রেজ্বর, কাস, শিরোরোগ, শিরোভ্রন্ত্র ও কফ্রাতজ্জ ব্ণির্তা বিনষ্ট হয়।

বাতোল্পণ-সন্নিপাতজ্ব-লক্ষণম্।

সদ্ধান্থিশিরসাং শূলং প্রলাপো গৌরবং ভ্রমঃ। বাতোৰণে স্ঠাদ্ ধানুগে তৃঞাকঠাকগুক্তা ॥

দদ্ধি অন্থিও মন্তকে শূলবন্ধাণা, প্রলাপ, দেহের গৌরব, ভ্রম, পিপাসা এবং কণ্ঠ ও মুখের শুক্ষতা এই সকল লক্ষণ বাতোবণ-হীন-পিরশ্রেম সান্নিপাতিক জ্বের প্রকাশিত হয়।

বাতোল্বণ-সান্নপাতজ্ব্ব-চিকিৎস।।

পঞ্চমূলীক্ষায়ঞ্চ দক্ষাঘাতোত্তরে অবে। ভূলোকং বা স্থোকং বা দৃষ্ট্যা দোষবলাবলম্ ॥

বাতোত্বণ সন্ধিপাতজ্ঞরে দোষের বলাবল বিবেচনা করিয়া অত্যক্ষ বা ঈষহক্ষ বৃহৎপঞ্চ-মূলের কাথ প্রয়োগ করিবে।

कर्कनामिकशायः।

কটুকলান্বচাপাঠা-পুদরালাজিপর্ণটি: ।
দেবদার্কভয়াশৃঙ্গী-কণাভূনিন্বনাগরৈ: ।
ভাগীকলিজকটুকা-শঠীকটভূণধান্তকৈ: ।
সমাংশৈ, সাধিত: কাধো হিঙ্গার্ককরসৈর্ভ: ।
কর্ণমূলোদ্ভবং শোধং হস্তি মন্যাগলাক্রম্ ।
কর্কবাতজ্বং শাসং কাসং হিকাং হসুগ্রহম্ ॥
গলগঙং গঙ্কমালাং স্বরভেদং ক্কাজক্ম্ ।
শিরোগুরুত্বং বাধির্যাং বৃদ্ধিক ক্কমেদদেশা: ।

কট্ফল, মৃতা, বচ, আক্নাদি, কুড়, ক্ষজীরা, ক্ষেতপাপ্ড়া, দেবদারু, হরীতকী, কাক্ডাশৃঙ্গী, পিপুল, চিরতা, ভাঁঠ, বামুন-হাটা, ইক্রঘব, কট্কী, শঠা, কট্ড়ণ (মাহর-কাটিবিশেষ) ও খনে ইহাদের কাথে হিং ও আদার রস প্রক্ষেপ দিয়া উহা সেবন করিলে বাতোৰণ ও কফোষণ সল্লিপাত জর এবং কণ্মূল-্শেথ, খাসকাশ্দি রোগ সকল প্রশমত হয়।

পিভোৰণ-সন্নিপাতজ্ব-লকণম্।

রক্তবিশ্বতো দাহং বেদন্ত্রণা বলক্ষয় ।

মূচ্ছা চেতি ত্রিলোবে জালিকং পিত্তে গরীয়দি ॥

মল ও মূত্রের রক্তবর্ণতা এবং দাহ, ঘর্মা,
তৃষ্ণা, বলক্ষয় ও মূত্র্যা এইগুলি পিত্রোরণ
দালিপাতিক জ্বের লক্ষণ ।

পিভোল্বণ-সন্নিপাতজ্বর-চিকিৎসা।

-:*:-

পর্মধকাদি।

পারবকাণি ত্রিফলা দেবদার সকট্ফলণ্। চন্দনং পল্পকঞ্চৈব তথা কট্করোহিণা। পুলিপণীশৃতক্ষেভিক্লবিতং শীতলং জলন্। পিজোন্তরে নুশামেতং সন্ধিপাতে চিকিৎসিঙ্গ।

ফল্মা, ত্রিফলা, দেবদারু, কট্রুল, রক্ত চন্দন, পদ্মকান্ত, কট্রকীও চাকুলে, এই সকল দ্রব্য সমভাগে লইয়া রাত্রিতে জলে ভিন্ধাইয়া পর্টিন প্রাতে তাহার কাথ করিবে এবং সেই কাথ শীতদ হইলে প্রয়োগ করিবে। ইহা পিতোৰণ সন্নিপাতজ্বরে শ্রেষ্ঠ ঔষধ।

ठन्मना मि

চন্দনং পদ্মককৈব তথা কটুকরোছিণী। পূৰক্পণীসমং সিদ্ধমূহিতং শীতলং জলন্। পিজোন্তরে নূণামেতৎ সন্নিপাতে চিকিৎসিতম্।

রক্তচন্দন, পদ্মকাঠ, কট্কীও চাকুলে, এই দকল দ্রব্য পূর্ব্বৎ রান্তিতে ভিজাইয়া পরদিন প্রাতঃকালে কাথ করিয়া শীতল অব-স্থায় প্রয়োগ করিবে। তাহাতেও পিভোরণ দলিপাত জর নিবারিত ইইবে।

কিরাতাদিসপ্তকম ।

কিরাততিজ্বং মৃত্তং গুড়ুচী বিশ্বভেষজম্। পাঠোদীচাং মৃণালঞ্চ শৃতং পিতাধিকে পিবেৎ ॥

পিত্তাধিক সন্নিপাতজ্বরে, চিরতা, মুতা, গুলঞ্চ, শুঠ, আক্নাদি বালা ও মূণাল, ইহাদের কাথ হিতকর।

কফোল্বণ-সন্নিপাতজ্ব-লক্ষণম্।

আলভার চিহ্নাস-দাহব্যারতিজনৈ:। কফোষণং সনিপাতং তন্সাকাদেন চাদিশেৎ॥

আলস্ত, অরুচি, ব্যনবেগ, দাহ, ব্যি, অস্থিরতা, ভ্রম, ওক্রা ও কাস, এই সকল লক্ষণ কফেবিগ সালিপাতিক জ্বরে প্রকাশ ইইয়া থাকে।

কফোল্বণ-সন্নিপাতজ্ব-চিকিৎসা।

কফোলণ সন্নিপাতজ্ঞরে পূর্ব্বোক্ত বৃহত্যাদি ও বৃহৎকট্ ফুলাদির কাথ প্রয়োগ করিবে।

বাতপিভোত্বণ-সন্নিপাতজ্ব-লক্ষণম্।

ভ্রমঃ পিপাসা দাহক্ত গৌরবং শিরসোহতিক্রক্। বাতপিভোষণে বিদ্যালিকং সন্দক্ষে ব্যরে। ভ্রম, পিপাদা, দাহ, শরীরে ভার বোধ ও মন্তকে অভিশয় ব্যথা, এই গুলি বাতপিভোরণ হীনকফ দন্নিপাতিক জনের লক্ষণ।

বাতপিতোল্পণ-সন্নিপাতজ্বন-চিকিৎসা।
বাতপিত্তরং বৃষ্যং কনীয়ঃ পঞ্চমুলকম্।
তৎকাথো মধুনা হস্তি বাতপিতোলণং অবম্॥
বাতপিত্তোলণ সন্নিপাতজ্ঞ্বে, বাতপিত্তহর ও বৃষ্য অল্পঞ্চমুলের কাথ মধুর সহিত
প্রয়োগ করিবে।

বাতশ্লেমোহুণ-সন্নিপাতজ্ব-লক্ষণম।

শৈতাং কাসোহকচিন্তন্ত্রা-পিপাসাদাহকদ্বাথাঃ। বাতন্ত্রেন্মোদ্ধণে ব্যাথৌ লিকং পিতামুগে বিহুঃ॥

শৈত্য, কাস, অক্লচি, তন্ত্রা, পিপাসা, দাহ ও হৃদয়ে ব্যথা, এই সমস্ত লক্ষণ বাতকফোৰণ হীনপিত্ত সামিপাতিক জ্বরের জানিবে।

বাতশ্লেস্মোল্বণ-সন্নিপাতজ্ব-চিকিৎসা।

কিরাততিক্তকং মুস্তং গুড়্ চী বিশ্বভেষজন্। চাতুর্ভদ্রকমিত্যাহর্বাতনেশ্বোবণে ব্রুরে॥

বাতমেশোলণ সন্নিপাতজ্বে চাতুর্ভদ্রক অর্থাৎ চিরতা, মুচা, গুলঞ্চ ়ও শুঠ, ইহাদের কাথ ব্যবস্থা করিবে।

পিত্রশ্লেষোল্ন্ন-সন্ধিপাতজ্ব-সক্ষণ্য ।

৮দিঃ শৈত্যং মুহদ হিস্তৃকা মোহোহস্থিবেদনা। মন্দবাতে ব্যবস্থান্তি লিঙ্কং পিত্তককোৰণে॥

ব্যন, শৈত্য, মূহক্ষুহর্দাহ, তৃষ্ণা, মোহ ও অস্থিবেদনা এই লক্ষণ গুলি পিত্তশ্লেষোৰণ হীন-বাত সাল্লিপাতিক জরে প্রকাশ পাইয়া থাকে।

পিত্তশ্লেষ্মোন্থণ-সন্নিপাতজ্ব-চিকিৎসা।

পর্ণটিং কট্ছলং কুঠমূলীরং চন্দনং জলম্। নাপরং মুক্তকং শৃক্ষী পিন্নলোবাং শৃতং হিতম্। ভূকাদাহাগ্রিমান্দোর্ পিজনোমোৰণে জন্মে॥ ক্ষেত্রপাপ্ড়া, কট্ফল, কুড়, উশীর, রক্তচন্দন, বালা, শুঁঠ, মুতা, কাঁক্ড়াপুলী ও পিপুল ইহাদের কাথ পিত্তশ্লেষ্ট্রেণ সন্নিপাত ব্বরে তৃষ্ণা দাহ ও অগ্নিমান্দ্যে হিতকর।

(সারিপাতিক জরে দোষএরের মধ্যে একের হীনাবস্থা অপরের মধ্যাবস্থা ও অক্টের প্রবলাবস্থা দৃষ্ট হইলে, সাধারণ সরিপাতজ্বর-চিকিৎসোক্ত দশমূল, চতুর্দশাঙ্গ ও অষ্টাদশাঙ্গ প্রভৃতি কাথ বিবেচনা করিয়া প্রয়োগ করিবে।)

ক্র্যুন্থণ-সন্নিপাতজ্বরে-

-:4:--

যোগরাজঃ।

নাগনং ধাষ্ঠকং ভাগী পল্লকং রক্তচন্দনম্। পটোলং পিচুমৰ্দক্ত ত্রিকলা মধুকং বলা॥ শর্করা কটুকা মৃত্যা গজাহবা ব্যাধিঘাতক:। কিরাতস্তিক্তমমৃতা দশম্লী নিদিন্ধিকা॥ যোগরাজো নিহস্তোষ সন্ত্রিপাতজ্বরাপহ:। সন্ত্রিপাতসমুখানং মৃত্যুমপ্যাগতং জয়েৎ॥

শুঠ, ধনে, বামুনহাটা, পদ্মকাষ্ঠ, রক্ত-যষ্টিসধু, পটোলপত্র, নিম্ব, ত্রিকলা. **ठभान**, বেড়েলা, কট্কী, মূতা, গজ্পিপ্লী, সোন্দাল, চিরতা, (ছই ভাগ গ্রহণার্থ মূলে কিরাত ও তিব্রু পুথকু পঠিত হইয়াছে, অতএব চিরতা ২ ভাগ मन्यून ७ क्लेकांत्री नहर्व।) खनक, ইহাদের কাথে চিনি প্রক্ষেপ দিয়া দেবন <u> তিলোখোৰণ</u> সন্মিপাতজ্ঞর করিলে তাহা নিবারিত করে।

শীতাঙ্গাদি-ত্রয়োদশসন্নিপাতজ্বরেষু শীতাঙ্গস্থ চিকিৎসামাহ—

ভাষগুলং জীরকব্যোষভাগী ব্যাসী শুঠী পৃষ্করং গোরুলেন। দিছং সন্তঃ শীতগাত্রাব্ধিমোহশাসপ্রেমোদ্রেককাসান্ নিহস্তি। কর্কোটিকাকন্দরত্তঃ কুলখঃ কুঞাবচাকট ফুলকুক্জীরৈঃ। কিরাততিক্তানলকট ফুলাসুপখ্যাভিক্লম্বর্তনমত্ত শশুম্। শীতাঙ্গ চিকিৎসা—আকলমূল, জীরক, তুঠ, পিপুল, মরিচ, বামুনহাটী, ক'টকারী, তুঁঠ ও কুড়; এই সকল দ্রব্য মোট ২ তোলা মাত্রায় গ্রহণ করিয়া ৩২ তোলা গোমুত্রে সিদ্ধ করিবে এবং ৮ তোলা শেষ থাকিতে নামাইবে। ইহা সেবন করিলে শীতগাত্রতা, মোহ, খাস, শেয়োন্তেক এবং কাস আগু বিনষ্ট হয়।

পীতঘোষার মূল, কুলখকলাই, পিপুল, বচ, কটফল, কফজীরা, চিরতা, চিতার মূল, কটফল, বালা ও হরীতকী এই সকল দ্রব্য সমান ভাগে গ্রহণ ও স্ক্ষা চূর্ণ করত গাতে মদন করিবে।

অথ তন্দ্রিকশু চিকিৎসা।

কুদায়তাপৌষ্করনাগরানি শৃতানি পীতানি শিবাযুতানি। শুকীকণাগন্তিরসোষণানি নন্তেন তল্রাবিজয়োষণানি।

কণ্টকারী গুলঞ্চ কুড় শুঠ এই সকল জব্য মিশিত ২ তোলা গ্রহণ করিয়া ৩২ তোলা গ্রহণ করিয়া ৩২ তোলা গ্রহণ পাক করত ৮ তোলা থাকিতে নামাইবে এবং তাহাতে হরীতকীচুর্প প্রক্ষেপ দিয়া পান করিবে। আর শুঠ, পিপুল, বক-পুশারস ও মরিচ, এই সকল জব্য সমভাগে একত্র বাটিয়া নাসাতে নস্ত দিবে। ইহাতে তক্তা নষ্ট হয়।

অথ প্রলাপকস্ম চিকিৎস।।

সভগরবরভিজ্ঞারেবতাজোদভিজ্ঞা-নলদত্রগগদাভারতীহারহরাঃ। মলয়জদশমূলীশব্দপুশীস্পকাঃ প্রলপনমূপহন্তাঃ পানতো নাতিদ্রাৎ॥

তগর, কেতপাপ্ড়া, সোঁদাল, মৃতা, কট্কী, নলদ (লামজ্জক—নির্গন উনীর, তদলাভে বেণার মূল), অর্থগন্ধা, ভারতী (ব্রহ্মাষ্টি), হারহুরা (দ্রাহ্মা), থেতচন্দন, দশমূল ও শঙ্খপুস্পী (শঙ্খিনী লতা); এই সকল দ্রব্যের কাথ প্রস্তুত করিয়া পান করিলে প্রশাপ নষ্ট হয়।

অথ রক্তনিষ্ঠীবিনশ্চিকৎসা।

রোহিষধম্ববাসকবাসা-পর্পটগন্ধলতাকটুকাভিঃ। শর্করয়া সমমের ক্রায়: ক্ষতনিষ্ঠীবিন উল্পত্নপায়: ॥

রোহিষ (গদ্ধতৃণবিশেষ), ছরালভা, বাসক, ক্ষেত্পাপ্ড়া, গদ্ধলতা (প্রিয়ঙ্গু) ও কট্কী; ইহাদের কাথ ছাঁকিয়া তাহাতে চিনি প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে রক্তবমন নিবৃত্ত হয়।

পত্মকচন্দ্ৰনপপটমুন্তং জাতিকজীবকচন্দ্ৰবারি। ক্লীতকনিম্বযুত্যং পরিপক্ষং বারি ভবেদিহ শোণিতহারি।

পদ্মকান্ত, বত্তচন্দন, কেতপাপ্ডা, মুতা, জাতীপুষ্প, জাবক, চন্দন, গন্ধবালা, যষ্টিমধু ও নিমছাল, ইহাদের কাথ প্রস্তুত করিয়া সেবন করিলে রক্তোদগম নিবারণ হইয়া থাকে।

ভুগ্নে এশ্র চিকিৎস।।

তুর্সগন্ধা লবণোগ্রগন্ধা-মধ্কসারোষণমাগধীভিঃ। বস্তাস্বস্তুসিলফুনাধিতাভিনস্তং কুলাং ভুগ্নদুশং করোতি॥

অখগন্ধা, দৈন্ধবলবণ, বচ, মৌলদার, মরিচ, পিপুল, শুঠ ও লম্পন তুলভোগে লইয়া ছাগমুত্রে বাটিয়া নাসিকাতে নস্ত দিলে ভুগনেত্র রোগের উপশম ২য়।

অথাভিন্যাসজ্ব-লক্ষণম্।

জয়ঃ প্রকুপিতা দোবা ভরঃশ্রোতোহতুগানিনঃ।
আনাভিবৃদ্ধা এপিতা বৃদ্ধান্তিয়মনোগতাঃ।
জনমন্তি মহাঘোরমভিজ্ঞাসং অরং দৃঢ়ম্।
শতৌ নেত্রে প্রস্তুপ্তিঃ স্যার চেষ্টাং কাঞ্চিদীহতে।
নচ দৃষ্টির্ভবেং ভক্ত সমর্থা রূপদর্শনে।
ন আগং নচ সংস্পর্ণং শব্দং বা নেব বৃধ্যতে।
শিরো লোঠয়তেহভীক্ষমাহারং নাভিনন্দতি।
কুপ্রতি তুন্তাতে চৈব পরিবর্জননীহতে।
অরং প্রভাবতে কিঞ্চিদ্ভাস্তাসং স উচ্যতে।
প্রত্যাধ্যাতঃ স ভুয়িষ্ঠা কন্দিদোবাত সিধ্যতি।

অত্যন্ত কুপিত বাতাদি দোষত্রয়, ধ্বক্ষ:-স্থলস্থ স্বোতঃসমূহে গমন করিয়া আমরসের সহিত মিলিত হইয়া চক্ষ্:কর্ণাদি জ্ঞানেজিয়
ও মনকে বিক্কৃত করত অতি কঠিন ও ভয়য়র অভিন্তাস নামক সম্লিপাতজন উৎপাদন
করে। এই জরে রোগা নিশ্চেষ্ট এবং দর্শন
স্পর্নন শ্রবণ ও ভাগ শক্তি রহিত হয়,
কাহাকেও চিনিতে পারে না ও কাহারও শক্
ব্বিতে পারে না। সর্মদা মস্তক সঞ্চালন,
কুয়ন ও পার্শপরিবর্ত্তন করিতে থাকে।
কিছুই আহার করিতে চাহে না, নিরস্তর
স্চীবেধবৎ বেদনা অমুভব করে। কথা ত
কহেই না—বদি কহে, তাহাও অতি অল্ল।
এই রোগা বিশেষরূপে ত্যাজ্য, কদাচিৎ কেহ
বা এই ভয়য়র জর হইতে মৃক্তিলাভ করে।

অভিন্তাদজৰ সান্নিপাতিক জরেরই প্রবল অবস্থাবিশেষ মাত্র। এই জরে রোগী দর্মদাই নিদ্রাভিত্ত হইয়া থাকে। অভিন্তাদ এবং দন্নিপাতজর ক্ষীণধাতুগত হইলে তাহাকে হতৌজা কহে। স্কুশতে উক্ত আছে—

নিজ্ঞোপেত্ৰমতিস্থাসং কাণং বিভাষ্টে জসম্॥

অভিন্তাসম্ভ তং প্রাহুধতৌজনমধাপরে। সন্নিপাতকরং কুছেমসাধ্যমপরে জগুঃ।

সেই অভিন্তাদ জঃকেই কেহ কেহ হতৌজা কহেন। দশ্লিপাতজগ কৃদ্ধুদাধ্য, কেহ কেহ অসাধ্যও বলেন।

অথাভিত্যাসজ্বর-চিকিৎসা।

সন্নিপাতে প্রকল্পম্বং প্রলপম্বং ন বৃংহরেৎ। তৃকাদাহাভিত্ততেহপি ন দ্বভাচ্ছীতলং জলন্।

সন্ধিপতিজ্ঞরে যে রোগী প্রশাপ বাক্য কহে ও কম্পিত হয়, তাহার পক্ষে বৃংহণ (সন্তর্পণক্রিয়া) নিষিদ্ধ এবং সে যদি তৃষ্ণা ও দাহে অভিভূত হয়, তাহা হইলেও তাহাকে শীতক জল পান করিতে দিবে না।

কারব্যাদিঃ কাথঃ।

কারবীপুঞ্জৈরও-আয়স্তীনাগরামৃতা:।
দশম্লা শঠী শৃঙ্গী যাসো ভাগাঁপুননবা:।
তুল্যা মৃত্রেণ নিঃকাধ্য পীতা: মোতোবিশোধনা:।
অভিযাসম্বরং শোরমাণ্ড ম্বস্তি সমৃক্ষতম্।

ক্ষজীরা, কুছ, এরগুমূল, বলাডুমূর, শুঁঠ, গুলঞ্চ, দশমূল, শটা, কাঁক্ড়াশুঙ্গী, ছরালভা, বামূনহাটী ও পুনর্নবা মিলিত ২ ভোলা, গোমূত্র ৩২ তোলা, শেষ ৮ ভোলা; এই কাথ পান করিলে স্রোতঃ সকল বিশুদ্ধ এবং অতি উৎকট অভিন্তাস জব নই হয়।

শুঙ্গাদিকাথঃ।

শৃঙ্গীভার্গ্যভয়।জাজী-কণাভূনিস্বপর্ণটেঃ।
দেবদান্তবংকু ঠ-বাসকট্কলনাগরৈঃ।
মুন্তবন্তাক-বিশ্বনাগরৈক্তি।
হিত্তিপিলন্যপামার্গ-পিন্তব্যাক্তিকাফলৈঃ।
বিশ্বনার্গ্যারিই-শটাবাকুটিকাফলৈঃ।
বিভূল্মজনীদার্ক্তি-শটাবাকুটিকাফলৈঃ।
বিভূল্মজনীদার্ক্তি-শটাবাকুটিকাফলৈঃ।
মানাংগৈবিহিতঃ কাথো হিল্পার্ট্যকরসাম্বিতঃ।
অভিন্তাসম্বরং যোরং হস্তি তলাফ তৎক্ষণাৎ।
প্রমোহং কর্ণশূলক সন্নিপাতাংস্করোদশ।
হিকাং শাসক কাসক তথা সর্বাকুপ্রবান্।

কাঁক্ডাশুক্রী, বামূনহাটী, হরীতকী, কুঞ-জীরা, পিপ্ললী, চিরতা, ক্ষেত্রপাপ ড়া, দেবদাক, বচঁ, কুড়, ছরালভা, কট্ফল, ভুঠ, মুভা, ধনে, कढेकी, हेन्य्यव, व्याकनानि, द्वपूक, श्रुक्तिश्रमी, আপাং, পিপুণমূল, চিতা, রাখালখনা, সোন্দাল, নিম্ব, শুঠা, সোমরাজীবীজ, বিড়ঙ্গ, হঞ্জিলা, দারু-हतिका, गर्भानी ७ वनग्रभानी, देशालत कार्थ हिः ও আদার বস প্রক্ষেপ দিয়া তাহা পান করিলে উৎকট অভিন্তাদ জা ও ত্রয়োদশ প্রকার কৰ্ণশূল, সরিপাতজর এবং তন্ত্ৰা, মোহ, উপদ্ৰব হিকা, খাদ, কাদ অখ্যান্ত প্রশমিত হয়।

মাতুলুঙ্গাদিঃ।

মাতুলুকাশ্ৰভিদিন বাদ্দীপাঠোকুব্কল:। কাণো লংগম্তাঢোহিভিন্তাদানাহণুকুত্। টাবালের্, পাষাণভেদী, বিষম্ল, কণ্ট-কারী, আক্নাদি ও এরগুম্ল, ইহাদের কাথে সৈন্ধবলবণ ও গোম্ত্র প্রক্ষেপ দিয়া তাহা পান করিবে। তাহাতে গোরতর অভিন্তাস জব, আনাহ ও শ্ল রোগ বিনষ্ট হইবে।

কণ্ঠরোধকফশাস-হিকাসস্লাসপীদ্ধিতঃ। ২1তুলুসার্ক্রসং দশমূলাস্কসা পিবেৎ॥

কণ্ঠরোধ, কক, খাদ, হিকা ও সম্রাদ রোগে পীড়িত হইলে দশমূলের কাথে টাবালেবুর ও আদার রদ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিতে হুইবে।

বেদোলামে অবে দেঃশ্চু গৌ ভৃষ্টকুনপঞ্জঃ।
ঘৰ্ষেজ্জিহাং জড়াং সিন্ধু-ক্রায়ণা: সাম্বেতসৈ: ॥
উচ্চুছাং ক্ষুটিতাং জিহাং দ্রাক্রা মধুপিষ্টরা।
লেপমেৎ সম্বতশাস্তং সম্লিপাতাত্মকে অবে ॥

সন্নিপাত জরে ঘর্ম হইলে কুল্প কলাই ভাজিয়া তাহার চূর্ণ গাত্রে মাথাইবে। জিহ্বার জন্ধতা হইলে থৈকল, সৈন্ধব লবণ, শুঠ, পিপুল ও মরিচ একত্র চূর্ণ করিয়া তন্ধারা জিহ্বা ঘর্ষণ করিবে। জিহ্বা শুন্ধ গুতাক্ত করিয়া মধুপিই কিদ্মিদ্ শারা জিহ্বা লেপন করিবে।

কাকজন্মজটা নিজাং জনয়েচ্ছিরসি স্থিতা। কাকজন্মার (কেউয়া ঠেঙ্গার) মূল মৃস্তকে ধারণ করিলে রোগির নিজা হইবে।

সন্নিপাতজ্ঞরন্তান্তে কর্ণন্তে হ্পারণ: ।
শোধ: সঞ্জারতে তেন কল্চিদেব প্রমৃচ্যতে ।
রক্তাবসেচনৈ: প্র্রং সর্পি:পানৈল্ড তং জরেব ।
প্রদেহ: কফ্বাতদ্রৈর্বসনৈ: ক্বলগ্রহৈ: ।
কুল্থকট্রুলে শুন্তী কারবী চ সমাংশিকৈ: ।
কুখোলৈলে পনং দন্তাৎ কর্ণমূলে মৃহসুর্ভ: ॥
গৈরিকং পাংশুদ্ধং শুন্তী বচাকট্কলকাঞ্জিকম্ ।
কর্ণশোধ্যরো লেপ: সন্নিপাতজ্ঞরে নৃপাম্ ॥
কর্ণশোধ্যরা লেপ: সন্নিপাতজ্ঞরে নৃপাম্ ॥
কর্পনিশ্রকম্লানি চাগ্রিমন্থং তথৈব চ ॥
সনাগরং দেবদাক্ষ চব্যচিত্রক্পেবিতম্ ।
প্রানেপ্রমিন্ধং শ্রেষ্ঠং গলে ব্যপ্রশাবন্ধ্ ।

সন্নিপাত জ্বরাবসানে কর্ণমূলে স্থলাকুণ শোথ হয়, সেই শোথে কর্লাচিৎ কেহ রক্ষা পায়।

কর্ণমূলে শোথ হুইলে প্রথমে জলোকা দারা রক্তমোক্ষণ করাইবে এবং প্রঞ্চতিক্ত দ্বত বা ত্রিফলায়তাদি পান করিতে দিবে। বাতপ্রেমায় প্রলেপ, বনন ও কবল ব্যবস্থা করিবে। কুলথ কলাই, কট্ফল, শুঠ ও কৃষ্ণজীরা, এই সকল দ্রব্য সমভাগে লইমা (অগ্নিস্থিন সিজপত্র রসে) পেষিত ও স্লেশেষ্ট করিয়া কর্ণমূলে মূল্য্র্ভিঃ প্রলেপা দিবে।

গেরিমাটী, পাঙ্গালবণ, শুঠ, বচ ও কট্ফল, এই সকল জব্য সমভাগে কাঁজিতে
পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলেও কর্ণমূল-শোথ
নিবারিত হয়। দশমূলের স্থান্য প্রলেপও
বিশেষ উপকারী। টাবালেবুর মূল, গণিরারি, দেবদারা, শুঠ, চৈ ও চিতামূল সমাংশে
পেষণ করিয়া পূর্ববং প্রলেপ দিলে গলশোথ
প্রশমিত হয়।

অথাগন্তজুর-সক্ষণম্।

অভিবাতাভিচারাভ্যামভিষক্বাভিশাপত: ।
আগন্ধর্জায়তে দোবৈষধাপং তং বিভাবয়েং ।
ভাবাস্থতা বিষকুতে তথাতীসার এব চ।
ভক্তাক্রচিঃ পিপাসা চ তোদন্দ সহ মৃর্চ্ছরা ।
ভব্যধিগদ্ধকে মুর্চ্ছা শিরোক্রশ্বমপুত্তপা ।
কামজে চিন্তবিভ্রংশন্তভ্রালক্তমভোজনম্ ॥
হৃদরে বেদনা চাক্ত গাত্রঞ্চ পরিগুয়াতি ।
ভরাৎ প্রলাপ: শোকাচ্চ ভবেৎ কোপাচ্চ বেপথুঃ ॥
অভিচারাভিশাপাভ্যাং মোহস্তৃক্ষা চ কারতে ।
ভূতাভিষক্ষাপ্রধ্যো হাস্তরোদনক্ষ্পানম্ ॥
কামশোকভ্রমাধায়ুং ক্রোধাৎ পিতং ত্রেরা মলাঃ ।
ভূতাভিষকাপ্রবিধ্যান্তি ভূতসামান্তলক্ষাণঃ ॥

আগন্তুজ্ব। শস্ত্র লোষ্ট্র মৃষ্টি বা লগুড়াদি ধারা আঘাত, অভিচার অর্থাৎ নিরপরাধ ব্যক্তির মারণার্থে শ্রেনাদি যাগবিশেষ, অভিষক্ষ অর্থাৎ ভূতগ্রহের ও কামাদির সম্বন্ধ এবং ব্যাহ্মণাদির অভিশাপ, এই সকল কারণে আগন্ত জান উৎপন্ন হইরা থাকে। উপৰ্ক্ত অভিবাতাদি যে যে কারণে বাতাদি যে যে দোষের প্রকোপ হয়, সেই সেই কারণোড়ত আগন্ত জারেও তত্তদোষের অন্তবন্ধ থাকে।

বিষক্ত জবে—মুখের শ্রাববর্ণতা, অতি সার, অল্লে অফ্রচি, পিপাসা, অঙ্গে স্থচীবেধবৎ বেদনা ও মুচ্ছা ইইয়া থাকে।

ওমধিবিশেষের আছাণে যে জর হয়, তাহাতে—মুচ্ছা, শিরোবেদনা ও বমি এই সকল লক্ষণ প্রকাশ পাইয়া থাকে।

অভিমত কামিন্তাদির অপ্রাপ্তি জন্ত যে কামজ জন হন, তাহাতে—চিত্তরংশ, তন্ত্রা, আলহা, অনুচি, হদরে বেদনা ও গাত্রশোষ এই সকল লক্ষণ প্রকাশিত হয়। এবং ভর শোক ও কোপ জনিত জরে প্রলাপ ও কম্প হটনা থাকে।

অভিচার ও অভিশাপ জনিত জরে— মোহ ও তৃষ্ণা এবং ভূতাভিষক্ষত্ত জরে উ। ধ্য-চিত্তা, হাস্ত, রোদন ও কম্প ইইয়া থাকে।

কামজ, শোকজ ও ভয়জ জরে—বায়ুর প্রকোপ, ক্রোধজ জরে পিত্তের প্রকোপ এবং ভূতাভিষদ্ধ জরে বাত, পিত্ত, কক, এই তিন দোষেরই প্রকোপ হইয়া থাকে। আর যে ভূতগ্রের আশ্রেরে জর হয়, সেই ভূতের হাস্ত রোদনাদি যে লক্ষণ, তাহাও প্রকাশ পায়।

অথাগন্তজ্বর-চিকি ৎসা।

অভিযাতজ্ঞরে যুঞ্জাৎ ক্রিরাম্কবিবর্জিতাম্। ক্যায়ং মধুরং শ্লিক্ষং যপাদোৰমথাপি বা ॥

অভিযাত জন্ম আগন্তজ্ঞরে উষ্ণবর্জিত ক্রিয়া, ক্ষায় মধুর ও প্রিয় দ্রব্যের উপযোগ এবং বাতাদি যে দোষের লক্ষণ প্রকাশিত ইইবে, সেই দোষের চিকিৎসা কর্ত্তব্য। षाञ्चितात्राञ्चिनात्मात्षो स्वत्त्रो हामापिना स्वत्त्र । पानवस्वात्रनाञ्चित्रस्माञ्ज्ञस्मीएको ॥

অভিচার (শ্রেনাদি বজ্ঞ দারা নিরপরাধের মারণ)ও অভিশাপ হইতে জ্বর
হইলে হোম, প্রায়শ্চিত্ত, বলি ও মৃদ্ধলামুঠানাদি দারা এবং উৎপাত ও গ্রহবৈত্তল্য
হৈতু জ্বর হইলে দান, স্বস্তায়ন ও অতিথিসংকার প্রভৃতি দারা তাহার প্রতীকার করা
কর্ত্তর।

ওদধিগন্ধবিৰজৌ বিষপিত্তপ্ৰবাধনৈ:। জয়েৎ কৰায়ৈম তিমান সৰ্বাগন্ধকৃতৈভিষক ।

ওৰধিগন্ধ ও বিষ জনিত আগন্তজন, বিষ ও পিত্তনাশক ঔষধ দানা এবং নিম্নলিখিত দৰ্মগদ্ধকত ক্ষান্ন দানা নিবানিত ক্রিবে।

চাতুর্জাতককপূরিং কলোলাগুলুকুমুম্। লবঙ্গদহিতকৈব সর্বব্যক্ষং বিনির্দিশেৎ ॥

চাতুজাত (দাক্ষচিনি, এলাইচ, নাগ-কেশর ও তেজপত্র), কর্পূর্ব, কাঁক্লা, অঞ্জুর, কুঙ্কুম ও লবঙ্গ, ইহাদিগকে সর্বাগন্ধ কহে।

ক্ৰোধ্যে পিউজিৎ কাম্যা অৰ্থা: সন্থাক্যমেৰ চ। আন্বাসেনেষ্টলান্ডেন বায়ো: প্ৰশমনেন চ। হ্বলৈন্ড শসং বাজি কামশোকভবজাঃ॥ কামাং ক্ৰোধজ্বানাশং ক্ৰোধাং কামসমূত্ৰঃ। যাতি ভাজ্যামূহাভ্যাঞ্চ জ্বশোকসমূত্ৰঃ॥

ক্রোধন্ধ জরে পিত্তনাশক চিকিৎসা, কাম্য অর্থ প্রদান ও হিতবাক্য কথন এবং কাম শোক ও ভয় জনিত জরে আখাসপ্রদান, ইষ্ট-বন্ধলাভ, বায়ুর প্রশমন ও হর্ষোৎপাদন কর্তব্য। কামোদয়ে ক্রোধজর, ক্রোধোন্ধে কামজর এবং কাম ও ক্রোধের উদয়ে ভয়ুক্ষ ও শোকক জন নিবারিত হয়।

ভূতবিস্থাসমুদ্দিষ্টের্বকাবেশনতাড়নৈ:।
জ্ঞেদ্ভূতাভিবকোথং মননোক্তৈক মানসম্-ঃ

বন্ধন, আবেশন ও তাড়ন (মন্ত্রপূত সর্বপাদি ধারা অভিহনন) ধারা ভূতাবেশজনিত জ্বর এবং সাস্থনা ধারা মানসিক জ্বর প্রশামত করিবে।

অথ বিষমজ্র-লক্ষণম্।

দোষোহলোহহিতসভ্তো অরোৎস্টপ্ত বা পুন: ১ ধাতমভাতমং প্রাপা করে।তি বিষমভারম ॥ (সম্ভতং সভতাক্তেছান্ডভীয়কচত্ৰ্কান ।) সম্ভতং রসরক্রয়: সোংস্থেতা: পিলিডাভিত:। মেদোগতততীয়েংফি অন্থিমজ্জগতঃ পুন: ॥ কুণ্যাচ্চতুর্থকং ঘোরমস্তকং রোগসঙ্করম । সপ্তাহং বা দশাহং বা হাদশাহমথাপি বা। সম্ভা গোংবিস্থা প্রাৎ সম্ভাত স নিগম্ভতে । অহোরাত্রে সভতকো হৌ কালাবন্তর্ভতে। অন্তেদ্ধান্ধরের বাত্রককালং প্রবর্ত্ততে ॥ তৃতীয়কম্বতীয়েহছি চতুর্বেহছি চতুর্থক: ॥ কেচিন্ততাভিষকোত্মং ক্রবতে বিষমজ্ঞরম। कक्षितार जिक्जाही शृश्वाटककात्रकः। বাতপিত্তাক্তিরোগ্রাহী ত্রিবিধঃ স্থাৎ তৃতীয়ক: ॥ **इड्डॉका प्रनंबिंड क्षडावः विविधः खतः।** ক্রজাভাাং দ্রৈশ্বিক: পূর্বাং শিরন্তোহনিলসম্ভব: ॥ বিষমজ্ঞর এবাস্তশ্তর্থকবিপর্যার: ! মধোহহনী অরয়ত্যাদাবতে চ নুঞ্তি। निजाः मन्त्रवाता क्रकः नुनकात्रन मीपि । ত্তকার: প্রেম্মভূমিটো নরে। বাতবলাদকী। প্রলিম্পন্নিব গাত্রাণি ঘর্ষেণ গৌরবেণ চ। মন্দ্রবারবিলেপী চ স্থীত: স্থাৎ প্রলেপক: ॥

যথাবিধি চিকিৎসা না করিয়া যদি কোন উত্তাবীর্দ্য ঔদধাদি ধারা হঠাং জর নির্ব্ত করা হয়, তাহা হইলে জরোৎপাদক কুপিত বাতাদি দোষ সম্পূর্ণরূপে প্রশান্ত না হইয়া জনতিবল হইয়া পাকে; পরে আহার বিহা-রাদির জনিয়ম ঘটলে দেই জনতিবল দোষ প্রক্ষার বলবান্ হইয়া রসরক্তাদি কোন ধাতৃকে আশ্রম করিয়া বিষম জর উৎপাদন করে। (কথন কথন প্রথম হইতেই বিষম জর ইইতে দেখা যায়)। ইহা সম্ভত, সতত, তাত্তে-ছাক, ভৃতীয়ক ও চতুর্থকাদি নামে অভিহিত।

বাতাদি দোষ যে যে ধাতৃকে আশ্রম করিয়া যে যে জব উৎপাদন করে, তাহা লিখিত হইতেছে;—নোষ রসস্থ হইয়া সস্থত, রক্তস্থ হইয়া গতত, মাংগা,শ্রত হইয়া অফ্রে-ছাক, মেদোগত ধইয়া তৃতায়ক এবং আস্থ-মক্তগত হইয়া চতুর্থক জর উৎপাদন করে। এই চতুর্থক জ্বর অতি ভয়ঙ্কর, যমরূপী ও নানারোগদম্বল।

যে হ্বর সাত দিন, দশ-দিন বা হাদশ দিন নিয়ত ভোগ করে, ভাহার নাম সম্ভত।

যে জন দিবারাত্রের মধ্যে ছুইবার অর্থাৎ দিনে একবার ও রাত্ত্রিতে একবার কিংবা কেবল দিনেই ছুইবার অথবা রাত্ত্রিতেই ছুই বার হুইয়া থাকে, তাহার নাম সভতক (ছৈকালিক)।

যে অব দিবারাত্রেব মধ্যে একবার মাত্র হটয়া থাকে, তাহার নাম।অফ্টেজ্যুক্ষ।

যে জার প্রতি তৃতীয় দিনে অর্থাৎ একদিন মস্তর হয়, তাহাকে তৃতীয়ক এবং যাহা প্রতি চতুর্থ দিনে অর্থাৎ হই দিন অস্তর হইয়া থাকে, তাহাকে চতুর্থক কহে। কেহ কেহ ভূডাভি-যদোগ জারকে বিষয়জার কহিয়া থাকে।

ভূতীয়ক জার পিত্তশ্লেষ্মাৰণ হইলে উং-পর হইবার সময় প্রথমে ত্রিক (কটী ও মেরুনজ্ঞের সদ্ধি) স্থানে, বাতশ্লেষ্মাৰণ হইলে পৃঠ্ঠে এবং বাতপিত্রোলণ হইলে মন্তকে বেদনা জামাইরা থাকে। চতুর্থক জার শ্লেষ্মোলণ হইলে অগ্রে জন্মাইরা থাকে। কর্মাইরা পরে শর্কাশরীরে ব্যাপ্ত হয়।

যে জর, মধ্যের ছই দিন ক্রমাগত ভোগ করিয়া আদি ও অস্ত ছই দিন বিরত থাকে, তাহাকে চতুর্থক-বিপর্যায় কহে। চতুর্থক-বিপর্যায়ও বিষম জর।

বাতবলাসক জরে, রোগী শ্রেম্ম-বহল, জড়প্রার, ক্লুনেই, শোথবিশিষ্ট ও অবসর হয়।
এই জর নিত্যই মন্দ মন্দ ভাবে হইয়া থাকে।
প্রলেপক নামে আর এক প্রকার জর আছে,
তাহাতে রোগির শরীর ঘর্ম ও গৌরব ধারা
লিশ্ববং বোধ হয়, এই জর মন্দ মন্দ ভাবে
ইইয়া থাকে, ক্লেম্ব জরকালে শীতামুভব হয়।
এইরূপ জর বন্ধা রোগে ইইয়া থাকে।

অথ বিষমজ্ব-জীর্ণজ্বর-চিকিৎসা।

বিষমাণ্ড অরা: সর্বে সন্মিপাতসমূম্ভবা:। অধোৰণক্ত দোৰক্ত তেবু কাৰ্ব্যং চিকিৎসিতন্।

সকল প্রকার বিষমজ্ঞরই সান্নিপাতিক, ভাহাদের মধ্যে যে জ্বরে থে দোবের আধিক্য দেখিবে, সেই দোবেরই চিকিৎসা করিবে।

বাতপ্রধানং সর্পির্ভিবিভিভিঃ সানুবাসনৈঃ।
বিরেচনঞ্চ পরসা সর্পিবা সংস্কৃতেন চ ॥
বিষমং তিক্তশীতৈশ্চ জরং পিত্তোত্তরং জয়ে ॥
বমনং পাচনং রুক্তমরপানঞ্চলত্ত্বনম্।
কর্মায়োঞ্জ বিবমে অন্তে শত্তং কলেভিয়ে ॥

বাত প্রধান বিষমজ্বনে স্থতপান ও ক্লেছ-বাস্ত ব্যবস্থা করিবে। পিত প্রধান বিশমজ্বরে গুল্পান বা বিহেচক- ঔষধ-সিদ্ধ স্থত পান দারা বিরেচন করাইবে এবং ভিক্ত ও শীত-বীষ্য দ্রবা প্রয়োগ করিবে। কফপ্রধান বিষমজ্বরে ব্যান, পাচন, ক্লেক অর পান, ল্জ্যন এবং ক্রমায় ও উষণবীর্ষা ঔষধ প্রশৃস্ত।

মহোষধাদি পাচনম্।

মহৌৰধগ্ৰন্থিকতালপৰ্ণী-মাৰ্কভিকারথধ্বালপথ্যাঃ। সক্ষারমেষ্য বিৰম্ভবে চ হিতং শৃতং পাচন-রেচনঞ্চ 🖟

ভুঠ, পিপুলমূল, তালমূলী, মাকণ্ডিকা (লভা বিশেষ, কাকরোল ভেন), সোন্দাল, বালা ও হ্রীভকী, ইহাদের কাথে যবক্ষাব প্রক্ষেপ দিয়া পান করিতে দিবে। ইহা পাচক ও রেচক এবং বিষমজ্বর হিতকর।

भरदेशनामिः।

পটোলবটীমধুতিজনোহিণী-ঘনাভরাভিবিব্যব্দলঃ। কৃতঃ ক্যায়ন্ত্রিকলাখুতাব্বৈঃ পুগক্পুগগ্বাবিষমক্সরাপকঃ।

পল্তা, ষ্টিমব্, কট্কা, মৃতা ও হ্রীতকী ইহাদের কাথ, তিফলা, গুলঞ্চ ও •বাদক এই সকল জবোর কাথ কিংবা নিশিত সমন্ত জবোর কাথ বিষমজ্বনাশক।

বিষমজ্বরন্থ-ভার্গ্যাদিঃ।

ভাগীপৰ্ণটিবিষবাসককণাভূনিম্বনিম্বায়তামুন্তাধ্যকভেষকৈত দশভিনিম্বন্তি সক্ষিত্ৰান্।
নীৰ্ণান্ ৰাভুগতাংগুৰাভিবিষমান্ সোপজবান্ দাৰণান্
কাৰোহনং যদি কুলুবাসরমিদং দ্যাদ্ বমাত্রকিতা ।

বাম্নহাটী, ক্ষেত্পাপড়া, শুঠ, বাসক, পিপ্লনী, চিরতা, নিম, গুলঞ্চ, মুতা ও হুরালভা, মিলিত এই দশটা দ্রব্যের কাথ পান করিলে সর্বপ্রকার জীর্গন্ধর, ধাতুগতন্ত্রর ও সোপদ্রব উৎকট বিষমন্ত্র প্রশমিত হর।

মধকাদিঃ।

মধুকং চন্দনং মৃত্তং ধাঁতা ধাত্তমূণীরকম্। ছিল্লোডবং পটোলক কাখ্য সমপুনকর । অবমন্তবিধং হস্তি সম্ভতান্তং হুদারুণম্। বাহিকং গৈতিকদৈৰ ধিন্নিকং সালিপাতিকম্।

যষ্টিগধু, রক্তচন্দন, মুতা, আমলকী, ধনে, বেণার মূল, গুলম্ব ও পটোলপত্র। পূর্ববং কাথ; গুল্ফেপ—সধু ২ মাষা, চিনি ২ নাষা। ইহাতে অষ্টবিধ জর ও সম্ভতাদি স্থদারুণ জর বিনষ্ট হয়।

মুস্তাদিঃ।

মুস্তামলকগুড়, চী-বিখৌষধকণ্টকারিক;কাথ:। পীতঃ সকণাচূর্ণ: সমধুর্বিধমজ্বরং হস্তি॥

মৃতা, আমলা, গুলঞ্চ, শুগী ও কণ্টকারী, ইহাদের পূর্ববং কাথ; প্রক্ষেপ—পিপ্লচ্ণ ২ মাষা, মধু ২ মাষা। ইহা বিষয়জ্ঞরনাশক।

ভার্গাদিঃ ৷

ভাগ্যন্দপণ্টকপুদ্ধনুশ্ববের-পথ্যাকণাহদেশমূলকুত: কবায়:। মড্যো নিহন্তি বিষমজ্ঞসন্ত্রিপাত-জীর্ণজ্ঞবন্ধযুশীতকবহিংসাদান্।

বাম্নহাটা, মৃতা, ক্ষেত্পাপ্ডা, কুড়, শুঠ, হরীতকা, পিপ্লনা বিল্ল, খোনা, গান্ধারী, পারুল, গণিয়ারি, শালপাণি, চাকুলে, বৃহতী, কন্টকারী ও গোকুর, ইহাদের পূর্ববিৎ কাণ। ইহা বিষমজ্ঞর, সাল্লিপাতিক জ্ঞর, জীর্ণজ্ঞর, শোধ, শীত ওংঅগ্নিমান্দ্য নিবারণ করে।

রুহদভার্গ্যাদিঃ।

ভাগী পৰ্যা কট্: কুঠং পপীং মৃত্তকং কণা।
অমৃতং দশৰূলক নাগৰং কাগৱেদ্ ভিষক্ ॥
ছন্তি ৰাভুগতং সৰ্কাং বহি:ছং শীতসংৰুতম্ ।
সহতান্তঃ অৱং বোরং মন্দায়িদ্মবোচকন্ ।
দীহানং বক্তং গুলাং শ্বরপুঞ্ বিনাশরেং ॥

বামুনহাটী, হরীভকী, কটুকী, কুড়, ক্ষেত্রপাপ্ডা, মুতা, প্রপ্রে, গুলঞ্চ, দশমূল ও ওঠ, ইহাদের ক্ষায় পোন করিলে ধাতুগত সততাদি ঘোরতর জ্বর, বহিঃস্থ ও শীত সংষ্ক্র জ্বর এবং মন্দায়ি, অরুচি, প্লীহা, যক্ত্বৎ, গুলা ও শোথ নষ্ট হয়।

मार्खानः।

দাসীদাককলিকলোহিতলতাশ্যামাকপাঠানঠী-শুগোলীরকিরাতকুঞ্জরকণাত্রায়স্তিকাপদ্ধকৈ:। বক্তীধাক্তকনাগরাক্ষদরলৈ: শিরা স্থাসিংহীশিবা-ব্যান্ত্র পপটদর্ভমৃত্যকটুকানস্তামৃত্যপুক্তর: ॥ ধাতুস্থং বিষমং ত্রিদোষজনিতকৈকাহিকং ঝাহিকং কামে: শোকসমূত্তবক বিবিধং তং ছর্দ্দিগুক্তং নৃণাম্। শীতো হস্তি ক্ষমোত্তবং সত্তকং চাতুর্থকং ভূতজং বোগোহরং মুনিভিঃ পুরা নিগদিতো জীর্ণজ্বরে ভুন্তরে।

নীলঝিন্টী, ংদেবদারং, ইক্রযব, ন্রিপ্তা, আমালতা, আক্নালি, শসী, শুজী, উদীর, চিরতা, গজপিপ্ললী, বলাডুমুা, পদ্মকান্ত, হাড়যোড়া, ধনে, শুঠ, মৃত্যা, সরলকান্ত, সজিনার ছাল, বালা, বৃহতী, হরীতকী, কণ্ট-কারী, ক্ষেতপাপ্ড়া, কুশম্ল, কট্কী, অনস্ত-মৃশ, শুলঞ্চ ও কুড়; ইছাদের কাথে॥০ তোলা মধু প্রক্ষেপ দিয়া সেবন করিলে ধাতুস্থ বিষম জর, ত্রেদোক্জনিত জর, একাহিক ও ব্যাহিক জর, কামজর, শোকজনিত জর, বমি সহিত জর, কামজর, শোকজনিত জর, বমি সহিত জর, কামজর, লোকজনিত জর, বমি সহিত জর, কামজর লবারিত হয়।

मार्क्यामिः।

দাব্দীক্লিকমঞ্জিষ্ঠা-ব্যামীদাক্লগুড়, চিকা:। ভূধাত্রী পর্ণটং খ্যামা তগরং ক্রিপির্যুকী। কুমা নিধং খনং ব্যাধিনাগরং পদ্মকং শঠা।
নানাটন্নবং সরলং ত্রারমাণাখিসজিকন্ ।
ভূনিখারুকরং পাঠা কুশং কটুকরোহিনী।
মাগথী থাক্তকভিত কাবং মধুৰুতং পিবেং ।
বাতিকং পৈত্তিকঞাপি দৈয়িকং সান্নিপাতিকন্।
ভক্তমং বিবমং যোরং সততান্তাং ফুলারুপন্।
ভক্তমং বিবমং যোরং সততান্তাং ফুলারুপন্।
সর্বজন্ম নিহস্তাণ্ড তথা চ দৈর্থরাত্রিকন্ ।
নীতং কম্পাং ভূপং দাহং কার্শ্যং ঘর্মক্রতিং বিমন্।
এইনীমতিসারক কাসং খাসং সকামলন্ ।
প্রান্ধিং হন্তি প্রমেহানপি বিংশতিন্ ।
সীহানন্মমাংসক যকুতক হলীমকন্।
পূধগ্ দোবাংক্ত বিবিধান্ সমন্তান্ বিবমজ্বান্ ।
তান্ সর্ববান্ নাশ্রত্যান্ড বৃক্ষমিক্রাণনির্বধা ।

দারুহরিদ্রা, इस्वत, मधिका, कण्डेकांती, ভুমাামলকী, কেতপাপড়া, मियनोक, खनक, খ্রামালতা, শিউলীছোপ, গজপিপ্ললী, কুদ্রা, নিমছাল, মুতা, কুড়, শুন্তী, পদ্মকাষ্ঠ, শুঠী, রাম বাসকমূল, সরলকাষ্ঠ, বলাডুমূর, হাড়যোড়া, চিরতা, ভেলার মুটি, আক্নাদি, কটকী, পিপুল ও গনে, ইহাদের পূর্ববং কাথ; প্রকেপ মধু॥০ ভোলা। এই ক্ষায় পান করিলে বাতিক, পৈতিক, সায়িপাতিক, হণ্ডল, সভতক প্রভৃতি হুদারণ বিষমজ্ঞা, অন্তঃস্থ, বহিঃস্থ, ধাতুস্থ, দৈর্ঘরাত্রিক, এই সকল জর; শতে, কম্প, অত্যন্ত দাহ, কার্শ্য, ঘর্মানর্গম, ব্যম, গ্রহণী, অতিসার, কাদ, খাদ, কামলা, শোঘ, শোখ, অগ্নিমান্দ্য, ৬.ষ্টবিধ ·15 বিংশতি প্রমেহ, প্লীহা, অগ্রমাংস, যক্তং ও হলীমক ইত্যাদি নানাবিধ রোগ, বজাহত বক্ষের স্থায় নষ্ট হয়।

পঞ্চক্ষায়াঃ।

কলিকক: পটোলন্ত পত্ৰং কটুকরোহিনী।
পটোলং শারিবা মৃত্তং পাঠা কটুকরোহিনী॥
নিত্তং পটোলং ত্রিকলা মৃত্তীকা মৃত্তবংসকৌ।
কিরাতভিক্তমমৃতা চন্দনং বিশ্বভেষপ্রম্।
ভড্ডোমলকং মৃত্তমন্ধ্রোকসদাপনাং॥
ক্ষারাঃ শমরত্যান্ত পঞ্চ পঞ্চিধান্ জ্বান্।
সম্ভতং সভতাভোজ্যান্ত্তীরকচতুর্বকান্॥

ইক্রম্বর, পল্তা ও কট্কীর কাথ সম্ভত্ত জর; পল্তা, অনস্তম্ল, মুতা, আক্নাদি ও কট্কীর কাথ সতত জর; নিমছাল, পল্তা, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, লাক্ষা, মুতা ও ইক্রম্ববের কাথ অন্তেগ্র্যক জর; চিরতা, গুলঞ্চ, রক্তচন্দন ও শুঁঠের কাথ ভৃতীয়ক জর; এবং গুলঞ্চ আমলকী ও মুতার কাথ চতুর্থক জর নাশ করে।

তৃতীয়কজ্বরন্ধ-মহোষধাদিঃ।

মহৌৰধামৃতামৃত্ত-চন্দনোশীরধান্তকৈ:। কাৰস্থতীয়কং হন্তি শর্করামধুযোজিতঃ॥

শুঠ, গুলক, মুতা, রক্তচন্দন, উনার ও ধনে, ইহাদের কাথে চিনি ও মধু প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে তৃতীয়ক (একদিন অন্তর) জব এশমিত হয়। (ইহা সিদ্ধফল)।

উশীরাদিঃ।

উশীরং চন্দনং মুক্তং গুড়ুচী ধাক্সনাগরম্। অস্তনা ক্ষিতং পেয়ং শর্করামধুযোজিতস্। মধ্যে তৃতীয়কে দেয়ং তৃঞাদাহসম্বিতে ॥

স্থানিক জরে তৃষ্ণা ও দাহ পাকিলে উনীব, রক্তনশন, মৃতা, ওলঞ্চ, ধনে ও ওঁঠো কাথ, চিনি ও মধুসংস্কৃত করিয়া পান করিতে দিবে।

পটোলাদিঃ। (ভূতীয়কজরে)

পটোলারিইগ্রীকা: শ্রামাক্ত্রিফলা বৃষ:। কাথ ঐকাহিকং হন্তি শর্করামধুযোজিতঃ।

পল্তা, নিমছাল, কিস্মিস্, শ্রামালতা, ত্রিফলা ও বাসকের কাথ চিনি ও মধু প্রকেপ দিয়া পান করিলেও ভূতীয়ক জর প্রশ্মিত হয়।

वामानिः। (ठडूर्थक)

বাসাধাত্রীস্থিরাদার-পথ্যানাগরসাধিতঃ। সিতামধুযুক্তঃ কাথশচাতুর্থিকবিনাশনঃ। বাসকছাল, আমলকী, শালপাণি, দেবদারু, হরীতকী ও শুঠ, ইহাদের কাথে চিনি ও মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিতে দিবে, ভাহাতে চতুর্থক জ্বর নিবারিত হইবে।

মুস্তাদিঃ। (চহুৰ্থকে)

মৃত্তাপাঠাশিবাক্ষাথকাতৃর্যিকজ্বরাগহ:। ছন্দেন ত্রিকলা পীতা হস্তি চাতুর্থকং জরম্ ।

মূতা, আক্নাদি ও হরীতকীর কার্থ, কিংবা ছধ্মের সহিত ত্রিফলা কাথ (বা কন্ধ) পান করিলে চাতুর্থিক জ্বর প্রশমিত হয়।

পথ্যাদিঃ। (চতুর্থকে)

প্ৰাান্থিরানাগরদেবদার-ধাত্রীবৃধৈরুৎক্ষিতঃ ক্রায়ঃ। সিতোপলামাক্ষিকসংপ্রযুক্তশ্চাতুর্গকং হস্তাচিরেণ শীতঃ॥

হবীতকী, শালপাণি, ভুঁঠ, দেবদারু, আমলকী ও বাসক, ইহাদের কাথে চিনি ও মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে চতুর্থক জর আভ নিবারিত হয়।

অজাজী গুড়সংযুক্তা বিষমক্ষরনাশিনী। অগ্নিসাদং জয়েৎ সম্গ্বাতরোগাংক নাশয়েৎ ॥

কৃষ্ণজীরাচুর্ণ ॥ তোলা, পুরাতন গুড় অর্দ্ধ তোলা একত্র মিশ্রিত করিয়া সেবন করিলে বিষমজ্জর, অগ্নিমান্দ্য ও বাতরোগ বিনম্ভ হয়। (চক্রদত্ত বলেন, কৃষ্ণজীরা অস্ত্র ভাজিয়া লইবে)।

> রসোনকবং তিলতৈলমিশ্রং বোহখাতি নিত্যং বিষমজ্বরার্ত্তঃ। বিষ্টাতে সোহপাটিরাজ্বরেণ বাতাময়ৈশ্চাপি হুঘোররূপৈঃ।

রস্থন (দগ্ধ করিয়া তাহা) তিলতৈলের দহিত বাটিয়া প্রতিদিন দেবন করিলে শীঘ্র বিষমজ্জর ও ভয়ন্কর বাতরোগ নিবারিত হয়।

গুড়প্ৰগাঢ়াং ত্ৰিফলাং পিবেৰা বিষমাৰ্কিড: ।

হরীতকী বহেড়াও আমলকী, সমভাগে চূর্ণ করিয়া সর্বসমান পুরাতন গুড়ের সহিত সেবন করিলে বিষমজর বিনষ্ট হয়। मूनिकाधात्रनामग्रः श्रायाशीः।

কাকজবা বলা ভাষা ব্ৰহ্মণঙী কৃতাঞ্জলিঃ।
পৃত্মিপৰ্ণী তুপামাৰ্গতথা ভূজবজোহটনঃ ।
এবামভাতমং মূলং পুবোণোচ্চ্,তা বছতঃ।
রক্তস্ত্রেশ সংবেটা বন্ধমৈকাহিকং জ্বেং।

কাকজভ্বা, বেড়েলা, খ্রামালতা, বামুন-হাটা, লজ্জাবতী লতা, চাকুলে, আপাং ও ভূঙ্গ-রাজ, ইহাদের মধ্যে কোন একটি গাছের মূল প্রানক্ষত্রে তুলিয়া লাল স্তায় বাজিয়া হস্তে ধারণ করিলে ঐকাহিক জর নিবারিত হয়।

অপামার্গজটা কট্যাং লোহিট্ড: সপ্ত চন্তভি:। বন্ধা বাবে রথেন্ড, র্ণং অরং হস্তি তৃতীয়কষ্॥

রবিবারে আপাদের মূল, সাতগাছি লাল স্তা দিয়া কটাতে বাথিলে শান্ত তৃতীয়ক জর নষ্ট হয়।

উলুকদক্ষিণং পক্ষং সিতস্থত্তন বেষ্টয়ে**ৎ**। বিধীয়াদ্ বামকৰ্ণে তু হুরতৈয়কাহিকং জ্বরম্।

পেঁচার দক্ষিণ পক্ষ সাদা স্থতায় বান্ধিয়া বাম কর্ণে ধারণ করিলে ঐকাহিক জর প্রশমিত হয়।

কর্ণটক্ত বিলোজু চমুদা গুভিলকং কৃত্য। একাহিকং অরং হস্তি নাত্র কায্যা বিচারণা।

কাঁক্ডার গর্ত্তের মৃত্তিকা দারা তিলক করিলে ঐকাহিক জর নিত্তত হয়।

কর্ণন্ত মলজালেন বৃধিং কৃত্বা প্রবন্ধতঃ । আলয়েৎ তিলতৈলেন কন্দ্রলং এ।২ফেচ্ছনৈ:। অঞ্লয়েয়েত্রগুলং আহিকজনশান্তয়ে॥

কর্ণের মল লইয়া বর্ত্তিকা করিয়া তিল-তৈলের পহিত জালাইয়া তাহাতে কজ্জল প্রস্তুত করিবে, চকুত্বয়ে ঐ কজ্জলেণ অঞ্জন লইলে জ্রাহিক জর শাস্ত হয়।

মূলং জয়ন্তা: শিরসা ধৃতং সর্বজ্ব পিছন্ ।
(জয়ন্তা: শেতজয়ন্তা ইত্যুপদেশ: ।)

খেত জমস্তীর মূল মন্তকে ধারণ করিলে সর্বপ্রকার পুরাতন জর প্রশমিত হয়।

শিরীবপুপাররসো রজনীবয়সংবৃতঃ। মৃক্তং সর্গিঃস্থাবোগান্ডরং চাতুর্থিকং জয়েৎ । শিরীষ কুস্থমের রসে হরিজা ও দারুহরিজা বাটিয়া ঘত সহযোগে নক্ত গ্রহণ করিলে চাতুর্থক জর বিনষ্ট হয়।

চাতৃর্থিকহরং নতাং মুনিক্রমদলাখুনা।

বকপত্রের রসের নম্ম লইলেও চাতুর্থক **জর** নিবারিত হয়।

> লৈ শ্ৰমণ্ডনরজঃ পুরুষাত্রপং গুল্লাকবং সন্থরভীপরসা নিপীতম্। আদিতাবারভবপালিদিনে নরাণাং চাতুর্থিকং হর্তি কট্টমণি কণেন।

রবিবারে পালার দিবনে বিশুদ্ধ হরিতাল শুক্লবৎসা গাভীর ছগ্নের সহিত উপস্কুল (১রভি) মাত্রায় সেবন করিলে ছঃসাধ্য চাতুর্থক জ্বা নষ্ট হয়।

খেত|ক্করবীরস্ত চাহিস্তাং মূলনুদ্ধরেৎ। পাঁতং তভুলতোয়েন পৃথক্ চাতুর্থনাশনম্।

অখিনীনকতে খেত আকলের কিংবা করবীর মূল উদ্ধৃত করিয়া ৬ রতি **মাত্রায়** চালুনি জলে বাটিয়া পান করিলে চতুর্থ**ক** জর প্রশ্মিত হয়।

আল্লেটিজসহত্রেণ দলেন স্থক্তাং পিবেং। পেনাং ঘৃতপ্রতাং অন্তর্শকহনীং আহম্।

আমর্বলের সহস্রটি পত্রের সহিত দ্বিত্ব তণ্ডুলের পেয়া প্রস্তুত করিয়া স্বত সহ তিন দিন সেবন করিলে চাতুর্থক জ্বর প্রশমিত হয়।

कांकमाठीस्वरः मूलर कर्ण वश्वरः निशास्त्रम् । निरुष्टि नोज সন্দেহো यथा स्टर्शामग्रस्यमः ॥

কাকমাচীর মূল কর্ণে বান্ধিলে, স্র্য্যোদয়ে স্বস্কার বিনাশের ভায়, নিশ্চয়ই রাত্তিষ্কর বিদূরিত হয়।

মূলকং কেশরাজন্ত কুতা তৎ সপ্তথন্তক্য। আর্ক্রকৈঃ সহ ভুঞ্জীত সর্কাব্ধরবিনাশনম্॥

ভূজরাজের মূল সপ্ত খণ্ড করিয়া এক এক খণ্ড আদার সহিত ভক্ষণ করিলে সর্বপ্রকার পুথাতন জর নষ্ট হয়।

কৃষ্ণাম্বরদূঢ়াবন্ধ-গুগ-গুলুকপুচছজঃ। ধুপশ্চাতুর্বিকং হনাংৎ তমঃ সুযা ইবোদিতঃ॥ ভূঙ্গরাজাদির রদে বস্ত্র ক্রাঞ্চরণ করিয়া ভাহাতে গুগগুলু ও পেচকের পুক্ত দৃঢ়রূপে বান্ধিয়া ভাহার ধূপ (ভাগ্রা) প্রদান করিলেও চাতুর্থক জার বিনষ্ট হয়।

অফ্টাঙ্গধূপঃ।

পলক্ষা নিম্বপত্ৰং বচা কুঠং হ্রীতকী। সর্বপাঃ স্ববাঃ স্পিধুপিনং জ্বরনাশন্ম।

গুণ গুলু, নিম্নপত্র, বচ, কুড়, হরী চকী, খেতসর্থপ, যব ও ঘৃত এই অপ্নাঞ্চর ধূপ ভোপ রা) প্রদান কবিলে বিষমত্বর প্রশাস্ত হয়।

অপরাজিতো ধূপঃ।

পুরধ্যামবচাসজ্জ-নিস্বাকাগুরদারুভিঃ। সর্বজ্ঞরহরো ধূপঃ কার্যোহরনপরাজিতঃ।

গুরুপ্তলু, গন্ধতুল, বচ, ধুনা, নিম্বপত্তা, আকলা, অগুরুপ দেবদারু, এই সকল জ্বন্য একতা করিয়া ভাহার ধুপ প্রদান করিলে সর্বপ্রকার পুরাতন জর নিবারিত হয়।

অজাদি-ধূপঃ।

অজারাকর্মরোনাণি বচাকুষ্ঠপলহবা:। নিম্পতাণি মধুচ ধুপনং অরনাশনম্॥

ছাগের চমাও লোম এবং বচ, কুড়, গুগ-গুলু, নিমপাতা ও মধু, এই সকল জুব্যের ধুপ বিষমজ্ঞনাশক।

महत्त्वा मि-धूभः।

महरम्बीरहां छा-नाक्नी छिः अध्णनम् । अरमरहां बर्खनः कूर्यारम् छिरी खन्नां छर्यः॥

গন্ধভাহলে, বচ, মূতা ও রালা, ইহাদের ধুপ, প্রদেহ বা উত্বর্তন বিষমজ্ঞরনাশক।

মাহেশ্বর-ধূপঃ।

হিলুকং দেবকাঠঞ জীনেষ্টং যুতমেব চ।
গব্যান্থানি তথা খ্যামং নিৰ্মান্যং কটুরোহিনী ।
সর্বপং নিম্বপত্রাণি পিচছাহিককুকং তথা।
মার্জ্জারবিষ্ঠা গোশৃকং মদনক্ত ফলানি চ ।
বে বৃহত্যো বচা চৈব কার্পাসান্থিত্বান্তথা।
ছাগগোমান্থবিট্ চৈব হস্তিদক্তবেশ্ব চ ।

এতৎ সর্বাং সমাজতা চ্ছাগম্ত্রেণ ভাবরেৎ।
উদ্ধ্যে তু সংকুটা স্থাপয়েন্যুন্নয়ে ওতে।
আগমাত্রেণ ধ্পোংসং দীরতে যত্র বেশানি।
ন তত্র সর্পান্তিষ্ঠন্তি ন পিশাচা ন রাক্ষমাঃ ।
এব মাহেবরো ধূপঃ সর্বব্ধরবিনাশনঃ ॥
ঐকাহিকং ভাহিকঞ্ ত্রোহিকঞ্চ চতুর্বক্।
এবনাদীন্ অরান্ সর্বান্ নাশরেরাত্র সংশয়ঃ ॥
ওঁ নমো ভগবতে কলার উমাপত্রের সম্পানার
নিদ্দকেশরার ইতি মন্ত্রেণাভিমন্তরেৎ।

হিন্দুল, দেবদারু, সরলকান্ঠ, গব্যন্থত, গরুর
অন্তি, গরুত্বল, নিবনির্দ্ধালা, কট্কী, খেতদর্পপ, নিম্নপত্র, সমুবপুত্র, সাপের খোলস,
বিড়ালের বিন্ঠা, গোশৃন্ধ, মদনফল, বৃহতী,
কণ্টকারী, বচ, কাপাসবীজ, তুম, ছাগাবিষ্ঠা,
শুগালবিন্ঠা ও হস্তিরস্ত ; এই সকল দ্রব্য ছাগমূত্রে ভাবনা দিয়া উদুখলে কুটিয়া মৃত্তিকাপাত্রে
স্থাপনপূর্কক তাহার ধূপ প্রয়োগ করিবে।
সেই ধূপ গ্রহণ করিলে ঐকাহিক, খ্যাহিক,
ব্যাহিক ও চতুর্পকাদি সর্বপ্রকার বিষমজ্বর নপ্ত
হয়। যে গৃহে ধূপ প্রবান করা যায়, ভাগায়
সর্প, পিশাচ ও রাক্ষর থাকিতে পারে না।

অথ শীতপুর্ব্ব-দাহপূর্ব্ব-জ্বলক্ষণম্।

বিদ্দেশ্য নামে দেহে শ্লেমপিতে বাবছিতে।
তেলার্ক্ক: শীতলং দেহে চার্কিলেক্ষং প্রজায়তে ॥
কারে ছন্তং বদা পিতং শ্লেমা চাত্তে বাবছিত:।
তেনাক্ষণং শরীরক্ত শীতকং হন্তপাদয়ো:॥
কারে শ্লেমা বদা ছন্ত: পিতকাতে বাবছিতন্।
শীতক্ষং তেল সাত্রাণামুক্ষণং হন্তপাদয়ো:॥
ফক্রো শ্লেমানিলো শীতমাদৌ জনয়তো অরে।
তরো: প্রশাস্তরো: পিতরুল্ভে দাহং করোতি চ॥
করোত্যাদৌ তথা পিত্তং ফ্কুন্থং দাহমতীব চ।
তিম্মিন্ প্রণাত্তে শিতরো কুক্সত: শীতমন্তত:॥
ভাবেতে দাহশীতাদি-অরৌ সংসর্গন্ধী মৃত্তে।॥
দাহপ্রক্তরো: কন্ত: কুক্সসোধ্যতনক্ত সঃ॥

যদি আছার-রস পরিপাক না হইরা দুষিত হয় এবং যদি হট পিত্ত ও হট শ্লেমা বিভাগায়-দারে অর্থাৎ হরগৌরীরূপে কিংবা নরসিংহ-আকারে শরীরের অর্ধার্ক ভাগে অবস্থিত থাকে, তাহা হইলে যে ভাগে পিত্ত থাকে, দেহের দেই ভাগ উষ্ণ এবং যে ভাগে শ্লেমা থাকে, দেই ভাগ শীতল হয়।

বদি ছট পিত কোঠে এবং শ্লেমা হতে ও পাদে অবস্থিতি করে, তাহা হইলে রোগির শরীর উষ্ণ ও হস্ত পদ শীতল হয়। আর বদি ইহার ক্রিপর্যায় ঘটে, অর্থাৎ কোঠে ছট শ্লেমা ও হস্ত-পদে ছট পিত্ত অবস্থিতি করে, তাহা হইলে শরীর শীতল ও হস্ত পদ উষ্ণ থাকে।

যদি হন্ত শ্লেষা ও হন্ত বায়ু ত্বকৃত্ব অথবা ত্বগুরুত রসস্থ হয়, তাহা হইলে অগ্রে শীত জনাইয়া পরে জর উৎপাদন করে এবং কিছ ক্ষণ পরে যথন ঐ শ্লেমানিলের বেগ কমিয়া ষায়, তথন শেবে পিত্ত দাহ উপস্থিত করিয়া থাকে। ইহাকে শীত-পূর্ম জর কহে। আর সেই প্রকারে হুষ্ট পিত্ত যদি ত্বকম্ব বা বগুগত রসম্ভ হয়, তাহা হইলে অগ্রে দাহ জন্মাইয়া পরে জর উৎপাদন করে, ক্রমে ঐ পিত্ত মন্দবেগ হইলে শেলা ও বারু, শেষে জনাইয়া থাকে। ইহাকে দাহ-পুর্ব জর करह। এই দাহ-পূর্ব্ধ ও শীতপূর্ব্ধ জরবরকে সংসর্গক বলিয়া জানিবে অর্থাৎ ইহা দোষপুরের वा भाषाबारमः नम्बद्ध উৎপन्न इटेग्रा शास्त्र। এই জাৰায়ের মধ্যে দাহ-পূর্বে জা অতি কপ্তপ্রদ ও কছুসাধ্যতম।

অথ শীতপূর্ব্ব-দাহপূর্ব্ব-ছরচিকিৎসা।

শীতপূৰ্ব্বজ্বন্ধে – ভদ্ৰাদিকধায়ঃ।

ভদ্রাধন্তাকণ্ডক্টাভিও দুটামুখপদ্মকৈ:।
নক্ষদনক্তিখ-পটোলব্বপৌকরৈ:।
কটুকেক্সববানিই-ভাগীপর্শটকৈ: সমন্।
কাৰং প্রাতিনিবেবেত সর্বাশীভব্যাপহম্।

কট্কল, ধনে, ভ'ঠ, গুলঞ্চ, মুভা, পল্মকাঠ, রক্তক্ষন, চিরভা, পলভা, বাসক, কুড়, কট্কী, ইক্রম্বন, নিমছাল, বামুনহাটীও ক্লেডপাপ্ডা, ইহাদের কাথ প্রাতঃকালে সেবন করিলে সর্ব্বপ্রকার শীতজ্ব নিবারিত হয়।

শীতপূৰ্বজ্বন্ধে— ঘনাদিকষায়ঃ।

যননিম্বনহৌষধামূতা-কট্বার্জাকিপটোলবৎসকৈ:। বিহিতং মধুনা যুতং পিবেৎ কিল শীতক্ষরশান্তয়ে শৃতম্॥

মুতা, নিমছাল, ভাঁঠ, গুলঞ্চ, তিৎবেগুন, পল্তা ও ইক্রমন, ইহাদের কাথ মধুর সহিত পান করিলে শীতজর প্রশাস্ত হয়।

দাহপুৰ্বজ্জনে— বিভীতকাদিক্ষাহঃ।

বিভীতো ব্যাধিগাতশ্চ কটুকী ত্রিবৃত্যভয়া। কাথো হয়ং ভূষাদাহ-বিষমজ্জরনাশকুং॥

বহেড়া, সোন্দাল, কট্কী, তেউড়ী ও হরীতকী; ইহাদের কাথ পান করিলে দাহপূর্ব বিষয়জর এবং তৃঞা নিবারিত হয়।

দাহপুৰ্বজ্ঞান-

महावला किया वः।

মহাবলামূলমহোবধাজ্যাং কাথো নিহস্তাবিষমন্ত্রং হি। শীতং সকম্পং পরিদাহযুক্তং বিনাশয়েল বিঞিদিনপ্রয়োগাৎ॥

পাতালগরুড়ী লতার মূল ও আতইচের কাথ এই তিন দিন সেবন করিলে দাহ শীত ও কম্পর্ক বিষয়জ। বিনপ্ত হয়।

বাতরোথকরোকা তাৎ ক্রিয়া বাতবলাসকে । জীপকরে কফে স্ফীণে দাহত্ফাসমন্বিতে। পয়: পীযুষসদৃশং তরবে তু বিষোপময়। চন্দনাত্তঃ হিতং তৈলং শোষাধিকারকীর্দ্রিতম্। তথা নারায়ণং তৈলং জীপকরহরং পরম্।

বাতবলাসক-জরে বাতমেশ্ব-জ্বরোক্ত চিকিৎসা করিবে। ক্ষীণকফ-জীর্ণজ্বের দাহ ও তৃষ্ণা থাকিলে গব্যহ্তগ্ন পান করিতে দিবে, জীর্ণজ্বের হথা অমৃতত্ন্যা, কিন্তু নৃতন জ্বে উহা বিষোপম। শোষাধিকারোক্ত চন্দনাদি তেল ও নারায়ণ তৈল জীর্ণজ্বরের শ্রেষ্ঠ ঔষধ।

অথ জীর্ণজ্বর-চিকিৎসা।

পিশ্বনীচূর্ণসংযুক্তঃ কাশন্তিরক্তেন্ডিবঃ। জীর্ণজ্বকক্ষবংসী পঞ্চযুলীকৃত্যোহপরা॥ পিশ্বনীমধূসংমিশং গুড়ুচীক্ষরসং পিবেৎ। জীর্ণজ্বকক্ষীক্ষকাসাবোচকন্দ্রম॥

গুলকো কাথে অথবা সংংপদ্মুলেব (বেলছাল, গ্রেণাছাল, গামা। ছাল, পাফল-ছাল ও গণিয়ানি ছালে।) কাথে ০'০ মান। পিপুলচ্ব প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে জীর্ণজন ও কক বিনপ্ত হয়। গুলকোর স্বরদ, পিপুলচ্ব ও মধু সংষ্কু করিরা দেবন করিলেও জার্ব-জন, কক, প্লীহা, কাস ও অকচি নিবারণ হটয়! থাকে

নিদিগ্নিকাদিঃ।

নিদিখি-কানাগরকায়তানাং কাথং পিবেক্সিলিভিপিন্ধনীকম্। জার্ণজনানোচককাসন্ত্র-খাসানিমান্দ্যান্দিত্রীনসের্॥ হস্তু,জ্পাসমং প্রায়ং সায়ং ৫০নোপযুজ্যতে। এতদ্রাভিজ্যের সায়মন্ত্রণা প্রাক্তিয়াতে। পিত্যস্ত্রক্ষে সন্তাজ্য শিঞ্জীং প্রক্রিপায়বু॥

কণ্টকারী, শুঠ ও গুলঞ্চ, ইহাদের কাথে ছই নাষা পিপুলচ্ব প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে জীবজ্বর, অরুচি, কাস, শূল, যাস, স্থিমান্দ্য, অন্দিত ও পীনস রোগ প্রশমিত হয়। ইহা উর্জা রোগ নিবারণ করে বলিয়া সায়ংকালে সেবনীয়। রাতিজ্ঞারে এই কাথ সায়ংকালে, মন্তর প্রাতঃকালে সেব্য। পিত্তপ্রধান স্থলে পিপুলচ্বের পরিবর্জে মধু প্রক্ষেপ দিবে।

> কাতিজ্বনে— গুড়চাদিঃ।

গুড় চীম্পুভূনিখং ধাতী কুছা চ নাগরস্। বিবাদিপঞ্চলঞ্চ কটুকেন্দ্রবাসকম্। নিশাভবং জরং বাত-কঞ্চপিত্তসমূদ্ভবম্। চিরোপং ক্লভং হঙি সকণং মধুসংমূতম্॥

শুলঞ্চ, মুতা, চিরতা, আমলকী, কণ্ট-কারী, শুঠ, বেলছাল, খ্রোণাছাল, গান্ধারী-ছাল, পারুলছাল, গণিয়ারিছাল, কট্কী, ইক্রমব ও ত্রালভা, ইহাদের কাথে পিপুল-চ্র্ণিণ আনা ও মধু ২ মাষা প্রক্ষেপ দিয়া তাহা পান করিলে বাতজ, পিত্রজ, কদজ, হন্দ্র ও চিরোৎপর বাধিজা নিবারিত হয়।

जाकानिः।

ছাক্ষান্তা শহী শৃক্ষা মুখকং বজুচন্দনন্।
নাগারং কটকা পাঠা জ্নিদ্ধ: সম্ব্রালভঃ ॥
৬শারং ধান্তকং পাঝং বালকং কটকাহিকা।
পুদ্ধবং পিচুম্দিশ্চ দশাষ্টাক্ষ্মিদং খুতন্॥
ভাৰিক্ষবাৰ্চিধাস-ক্ষেধ্যপুন্শিন্দ্॥

জীর্ণজনে কাদ, খাদ, শোথ ও অকৃচি থাকিলে, দাকা, গুলন্ধ, শুলন, দটা, কাঁক্ড়াশৃঙ্গী, মৃতা, রক্তন্দন, গুঠ, কট্কী, আক্নাদি, চিবতা, ত্রালভা, উণীন, ধনে, পল্মকাষ্ঠ, বালা, কণ্টকারী, রুড় ও নিম্ন, এই অষ্টাদশাঙ্গের কাথ প্রয়োগ করিবে।

প্লীহ**ন্ত**ের—

নিদিনিকাগণঃ পথা তথা বোহীতকো মতঃ। কাথং কথা ক্ষিপেৎ তত্ৰ যবক্ষারং কণাযুত্য। এতত্ত্ব পানমাত্রেণ শ্লীহক্ষরবিনাশনম্। (নিদিককাগণঃ—অন্ধপঞ্চন্দ্য।)

নিদিন্ধিকাদিগণ (শালপাণি, চাকুলে, বৃহতী, কণ্টকানী ও গোকুর), হরীতকী ও রোড়া, ইহাদের কাথে যবকার ২ মাযা ও পিপুলচুর্ণ ২ মাযা গুক্ষেপ দিয়া পান করিতে দিবে; তাহাতে গ্লীহজন নিবারিত হইবে।

অন্থিককটপঞ্চাক্সং শুণ্ঠা চিরজ্বরপ্রণ্থ।
অন্থিককটন্ত মূল্যকলপত্রপূপফলং সংক্ষা পোট্টলীং
বন্ধা দক্ষা রসং গৃহাত্বাতঃ (২ তোলা) শুণ্ঠা পেয়ঃ।

হাড়কাক্ডার মূল ছাল পত্র পূষ্প ও ফল কুটিয়া পুটুলী বান্ধিয়া পোড়াইবে । ইহার নিঃস্থ রস ২ তোলা লইরা শুঠচ্ব প্রক্ষেপ দিয়া পান করিবে, তাহাতে বছকালের **অ**র নিবারিত হইবে।

গুড়ুটা পৰ্নটো ভেক-পণী চ হিলমোচিকা। পটোলং পুটপাকেন রস এবাং মধুগুড়া। বাতপিভজবং হস্তি চিন্নোগম্পি দাক্ষ্ম।

গুলাঞ্চ, ক্ষেত্পাপ্ড়া, থানকুনী, হেলেঞ। ও পাল্তা পুটপাকে ইহাদের রস বাহির করিয়া কিঞ্চিং মধু দিয়া ঐ রস ২ তোলা পান করিলে দীর্ঘকালোংপর দারুল বাহপিত্ত-জর নিবারিত হয়।

मधुनी मर्त्वकत्रकृष्टकालीमलाका तमः॥

শেফালীপত্রের রস মধূদিরা পান ক<িলে সর্বপ্রকার অবর উপশ্মিত হয়।

অথ রসাদিধাতুগতছর-লক্ষণম।

শ্বসতা ফদরোৎক্রেশ: সদনং চর্দারোচকো।
রসত্ত্বে তু অরে লিক্সং দৈক্তঞ্চাক্তোপজারতে ॥
রক্তনিষ্ঠীবনং দাহো মোহশ্চদ্দনবিজ্ঞয়ে।
প্রলাপ: পিড়কা তৃষ্ণা রক্তপ্রাপ্তে অরে নৃণাম্ ॥
পিঙিকোবেইনং তৃষ্ণা স্টরমুজপুরীষতা।
উত্থান্তর্দাহবিক্ষেপৌ গানিঃ স্যান্ত্রাংসগে জরে ॥
ভূশং বেরস্ত্রা মূর্চ্ছা প্রনাপন্দার্দ্দরের চ।
দৌর্গজারোচকৌ গানিমেে দিন্তে চাসহিক্তা॥
ভেদোহস্থাং কৃজনং খাসো বিরেকশ্চন্দিরের চ।
বিক্ষেপণক গাত্রাণানেতদন্থিগতে জরে ॥
তমঃপ্রবেশনং হিকা কামঃ শৈতাং বমিন্তবা।
অন্তর্দাহো মহাখাসো মর্মচ্ছেদশ্চ মজ্জগে ॥
মরণং প্রাপ্নাং তক্র শুক্রস্থানগতে জরে।
শেকসঃ শুক্রতা মোক্ষং গুকুন্থ তু বিশেষতঃ ॥

রসাদি সপ্তধাতৃগত জবের লক্ষণ—জর বিশেষরূপে রন-ধাতৃকে প্রাপ্ত হইলে, দেহের শুকুতা, বমনভাব, অবসান, বমি, অকৃচি ও ক্লান্তচিত্ততা এই সকল লক্ষণ প্রকাশিত হয়।

জর রক্তগত হইলে, মুখ হইতে জন্ধ জন্ন রক্তোদিগরণ, দাহ, মোহ, বমন, বিভ্রম, প্রালাপ, পিড়কা (ব্রণ বিশেষ) ও তৃষণা এই সকল লক্ষণ লক্ষিত হয়। জব মাংসগত হইলে, জন্তথামাংসণিও অর্থাং পারের ডিনে দণ্ডাদি স্থারা পীড়নবং বেদনা তৃষণা, মল-মূত্রের অতিপ্রবৃত্তি, বাহিরে তাপ, অন্তরে দাহ, হস্তপদাদি সঞ্চাদন ও গ্রানি এই সকল লক্ষণ দৃষ্ট হয়।

জ্ব মেদোগত হইলে, অতিশয় ধর্ম, পিপাদা, মূর্চ্চা, প্রলাপ, ব্যন, শ্রীরে ফুর্গন্ধ, অক্তি গ্রানিও অসহিষ্ণুতা, এই সকল লক্ষ্ণ প্রকাশ পায়।

জব অভিগত ১টলে, অস্তিসমূহে ভঙ্গবং বেদনা, কুছন, শ্বাস, মলকেচন, বমন ও হাত-পাংছোড়া, এই সকল লক্ষণ লক্ষিত হয়।

জর মজ্জাগত হইলে, অন্ধকারদর্শন, হিন্ধা, কান, শীত, বমি, অন্তর্দাহ, মহাধান ও হৃদয়-চ্ছেদবৎ বেদনা, এই সকল লক্ষণ প্রকাশিত ইয়।

শুক্রগত **জ**রে পুরুষাঙ্গ জড়বং স্তব্ধ অথচ তাহা হইতে বিশেষরূপে শুক্র ক্ষবিত হয়। এই জ্বে রোগির মৃত্যুই হইয়া থাকে।

অথ রসাদিধাতুগতজ্ব-চিকিৎসা।

রসংস্থ চ অরে তপ্মিন্ কুর্যাদ্ বমনলজ্বনে।
সেকসংশমনালেপ-রক্তমোকাত্ত্বগণতে ॥
তীক্ষান্ বিরেকাংশ্চ তথা কুর্যান্থাংসগতে অরে।
মেদন্তে রেচনং স্বেদো বমনঞ্চ প্রশস্ততে।
অস্থিতে মর্দনং বেদো মক্ষপ্তকগতং ত্যকেৎ।

জর রস্থাতুগত হইলে বমন ও লজ্মন;
রক্তগত হইলে জলদেক, সংশমন, প্রেলেপন ও
রক্তমোক্ষণ; মাংসগত হইলে তীক্ষ বিরেচন;
মেদোগত হইলে বমন, বিরেচন ও স্বেদ;
অস্থিত হইলে মর্দন ও স্বেদ কর্ত্তব্য; কিন্তু
জর মজ্জগত বা শুক্রগত হইলে তাহা পরিভাগি করিবে।

রসরক্রাজিতঃ সাধ্যো মাংসমেদোগতশ্চ যঃ। অন্তিমজ্জগতশ্চাপি শুক্রম্মন্ত ন সিধ্যতি । রস রক্ত মাংস ও মেদোগত অব সাধা; অস্থি-মজ্জগত জবও কদাচিৎ সাধা হইতে গাবে। কিন্তু শুক্রগত জব কথনই সাধা হয় না।

অথ জরস্যোপদ্রবাঃ।

খাসো মূর্জ্যক্ষটিশ্চর্দ্দি-তৃষ্ণাতিসারবিড্এবাঃ। হিন্নাকাসাক্ষাক অরক্ষোপদ্রবাদশ ॥

শাদ, মূর্চ্ছা, অরুচি, বমি, তৃষ্ণা, অভিদাব, মলবদ্ধতা, হিন্ধা, কাস ও দাহ এই ১০ দশটি অবের উপত্রব।

সঞ্জাতোপজনো বাংধিতাজো ন জ্ঞান্তি, কিংসকৈ:।
ব্যাথে শান্তে প্রণজন্তি সজ্ঞা সর্কেংপুলিদ্রবা।
ভাষে বাংকুশলা সোহত জয়েৎ পূর্বমুপজনম্।
ভিষ্য বোংকুশলা সোহত জয়েৎ পূর্বমুপজনম্।
তেখপি প্রচুরেমু প্রাত্ত নাশরেষাত্তকারিণম্।
মূলবাধিং জয়েৎ পূর্বং জেয়ো যোবা ভবেদ্ বলী।
ভাষিরোধেন বা কুর্যাছভুছেমারপি চ কিয়াম্।

ব্যাধির শান্তি ইইলেই উপদ্রবের শান্তি ইইয়া থাকে, অভএব উপদ্রব । সকল প্রকাশ ইইলেও চিকিৎসকের ব্যাদি ত্যাগ করা কর্ত্রবা নহে। অভএব অত্যে যত্ত্রপুদ্দক রোগের প্রতীকার করা উচিত। যে চিকিৎসক অনভিজ্ঞ, সেই প্রথমে উপদ্রবের শান্তি করিতে চেষ্টা করে। যদি প্রচুর উপদ্রব উপস্থিত হয়, তাহা ইইলেও অত্যে সকলের প্রতিকারচেষ্টা না করিয়া তাহাদের মধ্যে যেটি আশু বিপজ্জনক, প্রথমে তাহারই শান্তি করিবে। ব্যাদিসকর স্থনে অত্যে মূল ব্যাদি বা যেট বলবান্ সেইটির প্রতীকার করা কর্ত্রব্য়। যদি মূল ব্যাদির ও উপদ্রবের শান্তি একেখানেই করা আবশ্রক হয়, তাহা ইইলে উভয়ের এরপে চিকিৎসা করিবে, যেন পরস্পর-বিরোধী না হয়।

অথ জুরোপদ্রব চিকিৎসা।

খাদোপদ্রব-চিকিৎস।।

দিংহী ন্যাম্মী ভাম্মূলী পটোলী শৃষী ভাগী পুৰুৱং রোহিণী চ। দাকং শঠা। শৈলমন্যান্ত নীকং শাসং হন্তাৎ দক্ষিপাতে দশাকঃ ।

র্হতী, কণ্টকারী, গুরালভা, পটোলপত্র, কাক্ড়াশৃন্ধী, বামুনহাটী, কুড়, কট্কী, শটী ও শৈলমলীর বীজ (কৈকেয়া, হিন্দুস্থানে প্রাসিদ্ধ), এই দশান্ত কাথ খাসোপদ্রব-নিবারক।

মধুনা কৃষণকট্দল-ককটশৃঙ্গীভবং চূৰ্বন্। খাদাময়ে মহোতো লীচা লোকঃ হুখী ভবতি ॥

পিপুল, কট ফল ও কাঁক্ড়াশৃঙ্গী, ইহাদের চুর্ণ মধুর সহিত লেহন করিলে উগ্রাধাদ প্রশ-মিত হয়।

বক্তোপলাগ্নিতাপিত-বাত্রস্থাগ্রেণ পঞ্জরে দাইঃ। অপহরতি খাদাময়ন্দংশরং ভাষিতং মূনিভিঃ।

বিলঘুটের অগ্নিতে দাত্র উত্তপ্ত করিয়া
তাহার অগ্রভাগ ছারা পাজ্রায় দাগ দিলে
খাদ নিবারিত হয়।

মূর্চ্ছোপদ্রব-চিতিৎসা।

আদ্রকন্ত রসৈনতং মুর্ছায়ামাচরেরর:। অঞ্জনক প্রযুক্তীত মধুসিন্ধুলিলোবলৈ:। শীতান্তদান্দিদেক: হুরভিধুপ: হুগন্ধি পুশ্পক। মুদ্ধতালবৃত্তবাতঃ কোমলকদলীদলশ্শ:।

জনে মূচ্ছা হইলে আদার রদের নত এবং দৈশ্বৰ লবল, সনঃশিলা ও মরিচচুর্ণ এই দ্রবাত্রয় মধুন সাহত মিলাইয়া ভাহার অঞ্জন দিবে। আর চক্তে শাতল জলসেক, মুরভিব্প প্রদান, স্থগন্ধি পুষ্পাত্রাণ, মৃহ মৃত্ ভালর্ক্ত বাজন ও কচি কদলীপত্র স্পর্শ মৃচ্ছাপনোদনে প্রশন্ত।

অরুচ্যপদ্রব-চিকিৎসা ।

चक्रको छू गृत्रदरतजनतरिकः त्यारेकः निकृतेकः करनः। निकृत्याजुन्नोकनत्कगत्रवात्रगर राख्यः॥

ক্ষরে অক্লচি উপস্থিত হইলে. সৈশ্ধব-'লবণের সহিত আদার রস গরম করিরা তাহা অথবা সৈন্ধবের সহিত টাবালেবুর কেশর মুখে ধারণ করিবে।

অরুচৌ মাতুলুক্সত কেশরং সাজাসৈধ্বম। ধাত্রীক্লাকাসিতানাং বা কৰ্মান্তে তু ধারয়েং॥

ত্বত ও দৈদ্ধবের সহিত টাবালেবুর কেশর বা চিনির সহিত আমলকী ও দ্রাক্ষার কর মুখে ধারণ করিলে অরুচি নিবারিত হয়।

বমনোপদ্রব-চিকিৎস।।

কাৰো গুচ চা: সমধু: স্ণীত: পীত: প্ৰণান্তিং বমনত ক্যাং। বিশ্লিকাণাং মধুনাবলীচ়া সচলনা শ্ৰুৱাছিতা বা ।

গুলঞ্চের কাথ স্থাতিল করিয়া মধুর সহিত পান করিলে বমনোপদ্রবের শান্তি হয়। মধু, চন্দন অথবা চিনির সহিত মক্ষিকার বিষ্ঠা লেখন করিলেও ব্যন নিবারিত হইয়া থাকে।

ত্যঞ্চপদ্ৰব-চিকিৎসা।

দম্ভশঠবীজপুরক-দাড়িনবদরৈঃ সচুক্রকৈবদনে। নেপো জয়তি পিপাসামধ রজতগুটা মুধান্তঃছা।।

করেংবেল, টাবালেব্, দাড়িম, কুল ও মহাদা (অমুদ্রর বিশেষ), এই সকল জব্য বাটিয়া মুখে লেপ দিলে, অথবা রজত গুটিকা মুখান্তান্তরে ধারণ করিলে পিপাসা দুরীভূত হইয়া থাকে।

শীতং পদ্ধ কৌজুবৃতং নিশীতমা কণ্ঠগাবেব তত্ত্বমেচ । তৰ্বপ্ৰক্ৰপ্ৰশাদ্ধ বজে, দ্মাদ গদকৌজবটাপ্ৰদাজান ।

প্রবল পিপাসা শাস্তির জন্ত, শীতল জল মধুর সহিত আকণ্ঠ পান করাইয়া তৎক্ষণাৎ বমন করাইবে। কুড়, বটাছুর ও থৈ চূর্ণ মধু মিশ্রিত করিয়া মুখে ধারণ করিলেও পিপাসার শাস্তি হয়।

অতিসারোপদ্রব-চিকিৎসা।

वरत्रावनीवरत्रकवात्रिवाद-विषष्ठता निश्वविद्याः मविद्याः । स्वतःक्ष्णितात्रः प्रतिष्ठः सम्रष्टि विद्याप्रकावरत्रकवाद्विवादाः ॥

গুলঞ্চ, কুড্ চিছাল, মৃতা, চিরতা, নিম-ছাল, আতইচ ও শুঁঠ, ইহাদের কাথ অথবা শুঠ, গুলঞ্চ, কুড় চিছাল ও মৃতা, এই সকল জব্যের কাথ পান করিলে ওরায় অভিসারোপ-জব নির্ভি পায়।

পাঠাদিপাচনম্।

পাঠামুতাপপটমুম্ভবিধা-কিরাততিক্রেন্দ্রথবান্ বিপাচ্য। পিবন্ হরত্যেব হঠেন সন্ধান জ্বরাতিসারানপি ছর্নিবারান্॥

আক্নাদিমূল, গুলঞ্চ, কেতপাপ ড়া, মূতা, আতইচ, চিরতা ও ইক্রমণ; এই সকল জব্য মোট ২ তোলা, ৩২ তোলা জলে সিদ্ধ করিয়া ৮ তোলা থাকিতে নামাইবে। ইহা পান করাইলে ভয়ানক জ্বাতিসার নিবৃত্তি পাইয়া থাকে।

বিড্তাহোপদ্রব-চিকিৎসা।

বিড্ভাহে বাতজিৎ কন্ম কুয়াদতাকুলোমনম্। মলং প্রবর্তমেদাত তীক্ষাভিঃ ফলবর্তিভিঃ।

জ্বরে মলবিবদ্ধতা উপদ্রব উপস্থিত হইলে বায়ুর অমুলোমক ও শান্তিকর ক্রিয়া সকল করিবে এবং গুহে তীক্ষ কলবর্ত্তি প্রয়োগ ধারা মল নির্গত করাইবে। ময়নাফলাদি ঔষধ ধারা যে বর্ত্তি প্রস্তুত হয়, তাহাকে ফলবর্ত্তি কহে।

পথ্যারখধতিক্তা-ত্রিবৃদামলকৈ: শৃতং তোয়ম্। জীর্ণব্বরে বিবন্ধে দম্ভাদাধের বিড্ গ্রহ: শামেও।

জীর্ণজ্বরে মলবদ্ধতা থাকিলে হরীতকী, সোন্দালের আঠা<u>কট</u>কী, তেউড়ী ও আম- লকী, ই**হাদে**র কাথ পান করিতে দিবে, তাহাতে মলবিবদ্ধতা দুর হইবে।

পুষ্পরেচনী গুড়িকা।

দেবদালী ষ্ণপূষ্ণং গুড়েন গুড়িকা কুতা।
গুদমধ্যে প্রদেবের পাতরেচ্চ মহাগদ্য।
অংশচ সামমারাতি পুনঃ সা দীয়তে গুদে।
প্রক্ষাল্য বারিণা চৈনাং বারং বারং প্রদাপরেৎ।
গুনেন ক্রমবোগেণ মলমামং বিরেচন্য।
জারতে সকলং দেহং গুদ্ধবর্গং নিরাময়ন্।

ঘোষাকল ও সোন্দাল সমভাগে একত্র গুড় দিয়া মন্দন করিরা লম্বাকৃতি বটক প্রস্তুত করিবে। এই বর্ত্তি গুহুদেশে প্রদান করিরা নির্গত করিলে আম নির্গত হইবে। পুনরায় উক্ত বর্ত্তি জলে ধৌত করিয়া গুহু-দেশে প্রদান করিবে, এইরূপ বারংবার করিবে। ইহাতে আম ওমণ নির্গত হইরা শরীর নিরাময় ওবর্ণ বিশুদ্ধ হইবে।

হিকোপদ্রব-চিকিৎসা।

নীরেণ সিপুথরজোহতিস্কাং নজক নূনং বিনিহতি হিকাস্। শুড়ী হঠালা সিত্রা সমেতা বুপোহধনা হিকুসমুদ্ধনশ্চ ।

জরে হিন্ধা হইলে, জলের সহিত সৈদ্ধব-চুণের অথবা চিনির সহিত শুজাচুণের নতা কিংবা নাসিকায় হিন্দুর ধুম গ্রহণ কারবে।

অশ্বথবন্ধনং শুদ্ধং দশ্ধং নির্ববাপিতং জলে। তজ্জলং পানমাত্রেণ হিকাং ছর্দ্দিঞ্চ নাশয়েও॥

অশ্বর্থগাছের শুক্ষ ছাল দগ্ধ ও তাহা জ্বলে নির্বাপিত করিয়া সেই জল পান করিলে হিকা ও বমি নিবারিত হয়।

एक्कायपूत्रीवक ध्रुपा शिकार निवातस्य । व्यक्ति मर्काञ्चिकारेक्व यागताकृत्रभौतिङः ॥

শুক্ষ আৰপুৱীষের ধুম গ্রহণ করিলে সান্ধি-পাতিক হিকাও নিবারিত হয়।

কাসোপদ্রব-চিকিৎসা।

कारम क्यां क्यांमूलः क्लिक्रम्मलः त्रजः। मित्रिक्टविकः जिक्रांच्यसूना वा वृंवात्रमम्॥

জ্বরে কাসোপদ্রব উপস্থিত হইলে পিপুল,
পিপুলমূল, বহেড়া ও ওঁঠ, ইহাদের চুর্ণ মধুর সহিত লেহন কিংবা বাদকের রস মধু সহ
পান করিলে কাসোপদ্রব নিবারিত হয়।

বিজীতকং শ্বভাজ্যকং গোশকুৎপরিবেটিতম্। বিশ্লমদ্যৌ হরেৎ কাসং গ্রুবমাঞ্চবিধারিতম্।

ম্বতাভাক্ত বহেড়া গোবরের মধ্যে পুরিয়া অগ্নিতে দিন্ধ করত সেই বহেড়া মুখে ধারণ করিলে কাদোপদ্রব বিনষ্ট হয়।

বিভাতকত্বস্থারিচং লবঙ্গং সংশ্বং সমানং ধনিরস্ত সারম্। বন্ধুলজকাবকুতা বটায়ং মুখস্থিতা কাসহরা কণেন ।

বংড়ার ছাল, মরিচ ও লবঙ্গ প্রত্যেক সমভাগ, সর্বসম খনির; এই সকল জব্য বাব্লার কাথে বটা করিয়া মুখে ধারণ করিলে আশু কাসোপদুব নিবারিত হয়।

দাহোপদ্ৰব-চিকিৎসা।

দাং। ধিকারলিখিতং দাহে কুয়া। চিকিৎসিতন্। পারং অরাবিক্লভ্রং যন্ত্রা নাজো অবরো যতঃ ॥

দাহোপজব-নিবারণার্থ দাহাধিকারোক্ত চিকিৎসা কারবে; পরস্ত সেই চিকিৎসা যেন অরের অবিরোধী হয়, যে হেতু জর ও দাহের মধ্যে জরই প্রধান নাগু।

অথ চুর্গ-প্রকরণম্।

হৃদর্শন-চূর্ণম্।

कानीश्रक्ष त्रस्मी (प्रवर्गाय वर्ग चन्म् । सम्बाधित प्रविद्या अधिकः वानकः गर्गि । भिन्नः मांगवी मूर्वा कृष्टेनः मध्यष्टिका ॥ भिन्नः प्रविद्या वर्षेत्रः मध्यष्टिका ॥ भिन्नः प्रवर्गाभीतः करः मौत्राष्टिका ॥ বমান্ততিবিবা বিশং মরিচং গলপত্রকশ্।
ধাত্রী শুড়ুটা কটুকং সচিত্রকপটোলকম্ ।
কলসী চৈব সর্বাণি সমভাগালি কারতেং।
সর্বন্ধান্ত চার্ছিন্ত কৈরাতং সংপ্রকলবেং ॥
এতং সুদর্শনং নাম অরান্ হস্তি ন সংশ্যঃ।
পূথগ্লোবাংশ্চ বিবিধান্ সমন্তান্ বিবমজ্বান্।
থাকুতং বৈকৃতকৈব সৌমাং তীক্ষমধাপি বা।
অন্তর্গতং বহিঃস্থক নিরামং সামমেব চ॥
অরমন্তবিধং হস্তি সাধ্যাসাধ্যমধাপি বা।
নামাদেশোন্তনকৈব বারিদোবভবং ওপা॥
বিক্রন্তব্রভংকং অরমান্ড ব্যপোহতি।
মীহানং বকৃতং গুলং হস্ত্যবন্ধাং ন সংশ্যঃ॥
বধা সুদর্শনং চক্রং দানবানাং নিস্ক্রন্থ।
তথা অরাণাং সর্ক্রোমিদনেব নিগপ্ততে।

ক্বকাগুরু (অভাবে অগুরু), হরিন্দ্রা, দেব-দারু, বচ, মুতা, হরীতকী, ছরাবভা, কাক্ডা-শৃন্ধী, কণ্টকারী, শুঠ, বলাডুমুর, মেতপাপ্ড়া, নিমছাল, পিপ্ললীমূল, বালা, 4 ST. **পिश्रनी,** गूर्का गून, कुफ् (िहान, यष्टिभ्यू, मिन-बीज, संपि, हेज्यव, अठ्यूनी, नांतरहिकां, तुक्कान्यन, शत्रकार्थ, मत्रनकार्थ, खेनीत, माक-চিনি, সৌরাইয়ন্তিকা, শালপাণি, আত্ইচ, বেলছাল, ম্বিচ, গন্ধভান্তলে, আম-লকী, গুলঞ্চ, কট্কী, চিতামূল, পল্তা ও চাকুলে, এই সমুদায় জ্বোর চূর্ণ সমভাগ এবং এই সমষ্টির অন্ধাংশ চিরতাচূর্ণ একতা মিলিত করিবে। ইহার নাম স্পশনচূর্ণ। প' আনা হইতে আব তোলা প্যান্ত। সেবনে বাতিক পৈত্তিক শ্লৈষ্মিক ঘন্দ্ৰজ ও সান্নিপাতিক জন, সর্ব্যপ্রকান বিষমজন, প্রাকৃত ও বৈক্বত জ্বর, সৌম্য কিংবা তীক্ষবীর্য্যোথিত জ্ব, অন্তর্বেগ বা বহিঃস্থ জ্ব, व्यथवा जनामायक व्यत ७ विक्रक- उर्ध-तमवन-জনিত জর প্রভৃতি সর্বপ্রকার সাধাসাধা জর এবং প্লীহা, ষক্ষৎ ও গুলা আলু উপশ্লিত হয়।

> আমলক্যাদি চূর্ণম্। আমলং চিত্রকং পথ্যা পিন্ধনী দৈরুবং তথা। চূর্ণতোহরং গণো জেন্ধঃ সর্ববিধ্বনাশনঃ। ভেনী ক্ষতিকরং ক্লেম্ব-কেন্তা দীপনপাচনঃ।

আমলকী, চিতা, হরীতকী, পিপুল ও সৈন্ধব, ইহাদের সমতাগচ্প সর্ববিধজ্জরনাশক এবং ভেদী, ক্লচিকর, শ্লেম্বন্ধ, অগ্লিকর ও পাচক।

জ্ববৈ-চূর্ণম্।

নাগরং ত্রায়মাণা চ পিচুমর্দ্ধো ছুরালভা। পথ্যা মুস্তং বচা দারু ব্যাত্রী শুঞ্চী শতাবরী । **पर्य है: भिश्रली मृत्यः विभावा भूभतः गति ।** मुन्ती कृष्णे इतिए**ष्ट ए**व लाक्ष्ठन्मनमूक्षकम् ॥ कृष्टिका कनः वदः स्ट्रीमध्कितिकम् । শেভাঞ্জনং বলা চাতিবিদা চ কটুরোহিণা।। মুমলী পদ্মকাঠক বমানা শালপূর্ণিকা। মরিচকামুতা বিবং বালং প্রফা প্রটা 🛭 তেজপত্রং হচং ধানী পুলিপণী পটোলকম্ প্ৰকং পারদং লৌহ্যভাকণ মনঃশিলা। এতেষাং সমভাগেন চুৰ্ণমেৰ বিনি দিশেৎ। ভদদ্ধং প্রক্ষিপেৎ ভণ চূর্ণং ভূনিম্বদম্ভবন্॥ মাজামশু প্রযুক্তীত দষ্ট্রা দোৰবলাবলম্। চূর্ণং ভৈরবসংজ্ঞন্ধ অরান্ হস্তি ন সংশয়ঃ। प्रशासारक विविधान मम्खान दिवमस्वतान्। ধন্দজানু সমিপাতোখানু মানসান্পি নাশয়েৎ॥ প্রাকৃতং বৈকৃতকৈব সৌম্যং তীক্ষ্মধাপি বা। অন্তগতং বহিস্থেক নিরামং সামমেব ৮॥ অরম্প্রবিধং হস্তি সাধ্যাসাধ্যং । সংশয়: । নানাদেশোগুলকৈর বারিদোযভরং তথা। বিরুদ্ধভেষ্ডাওবং অরমাও ব্যপোহতি॥ এগ্রিমান্দাং যক্তরীহ-পাপ্তরোগমরোচকম্। উদরাণ্যস্ববিদ্ধ রক্তপিত্রং ত্বগাময়ম ॥ খয়পুঞ শির:শুলং বা তাময়রুজাপছম্। অরভৈরবসংজ্ঞস্ক ভৈরবেণ কুতং শুভন্।।

শুঠ, বলাডুমুর, নিমছাল, ছ্রালভা, হরীতকী, মুতা, বচ, দেবদারণ, কণ্টকারী, কাঁক্ড়াশৃঙ্গী, শতমূলী, ক্ষেতপাপ ড়া, পিপুল-মূল, রাধানশশার মূল, কুড়, শঠা, মুর্বামূল, পিপুল, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, লোধ, রক্তচন্দন, ঘণ্টাপার্কলি, ইক্রথব, কুড়্ চিছাল, যাষ্ট্রমপু, চিতামূল, সজিনাবীজ, বেড়েলা, আতইচ, কট্কী, তালমূলী, পদ্মকাঠ, যমানী, শালপাণি, মরিচ, গুলঞ্চ, বেলশুঠ, বালা, পঙ্কপর্ণটী, তেঞ্চপত্র, গুড়ুছ্ক্, আমলকী, চাকুলে, পটোল- পত্র, গন্ধক, পারদ, লোহ, অভ্র ও মনঃদিলা, এই সকল জবেরের চ্র্ণ সমভাগে গ্রহণ
করিবে; পরে সমষ্টিচুর্নের অন্ধাংশ চিরতাচ্র্ন
ভাহার সহিত উত্তমন্ধপে মিশ্রিত করিতে
হইবে। দোনের বলাবল বুঝিয়া ইহার মাত্রা
প্রয়োগ করিবে। মাত্রা--০০ আনা হইতে
। অন্ধিতোলা। ইহার নাম জরভৈবব চ্র্ন।
এই মহৌষণ সেবনে স্থনশন্চ্রের বন্ধায়বাদে
লিখিত সম্বিবিদ হার উপশ্যিত হ্র, অধিকস্থ
উদর, অন্তর্গন্ধ, পাড়, বক্তাপিত, চন্দ্রেরাগ,
শোগ, শিরঃশ্ল, বাত্রাদি ও বাতিক শূল
প্রভৃতি প্রশ্যিত হয়।

জ্বরনাগময়ুরচুর্ণম্।

লৌহাত্রটঙ্গণং তামং তালকং বঙ্গদেব চ। ওদ্বস্তং গদ্ধকণ শিগুনীজং ফলত্রিকন্॥ চন্দ্ৰাতিবিধা পাঠা বচা চ রজনীবন্ধন। উশীরং চিত্রকং দেব-কাঠঞ সপটোলকম । जीवकर्षञ्जाञाञ्चालीभः तःभालाहमा । কণ্টকার্য্যা: ফলং মূলং শতী পত্রং কটু ত্রয়ম্ ॥ গুড়ুচীৰবধন্তাকং কটুকা ক্ষেত্ৰপৰ্ণটা। मुखकः वानकः विवः यष्टीमधु ममः ममम्॥ ভাগাচত তুও পিং দেয়ং কৃষ্ণ জীৱস্ত চুৰ্ণকম্। তৎসমং তালপুষ্পক চুর্ণ দণ্ডোৎপলাভবম ॥ কৈরাতং তৎসমং দেয়ং তৎসমং চপলাভবম। এতচ্চুর্বং সমাখারিক জ্বনাগ্রাক্ষ্॥ প্রাতম বিনিতং গাতাং বুকুরা বা কটিবর্দনন্। मञ्जानिकतः इति माधामाधाः न मःगतः॥ ক্ষােত্রক ধাতৃত্বং কামলােকেছিবং অরম। দাহশীতজ্বরং ছোরং চাতুর্থাদিবিপর্যয়ম্। कोर्नक विषयः मर्तरः भौशानमूनतः छवा। কামলাং পাগুরোগক লোধং হন্তি ন সংশয়:॥ ভ্ৰমং ভূঞাঞ্চ কাদঞ্ শূলানাহে। ক্ষয়ং তথা। যকুতং শুন্মশূলক আমবাতং নিহন্তি চ॥ ত্রিকপৃষ্ঠকটীজাত্র-পার্থানাং শুলনাগনন্। অতুপানং শীতজলং ন দেয়মুক্ষবারিণা ॥ .

লোহ, অন্ত্র, সোহাগা, তাম, হরিতাল, বঙ্গ, পারদ, পদ্ধক, সন্তিনাবীজ, হরীতকী, আমলা, বহেড়া, রক্তচন্দন, আতইচ, আক্-নাদি, বচ, হরিছো, দারুহরিছা, উণার, চিতামূল, দেবদারু, পল্তা, জীবক, ধ্বতক,

ভালীণপত্ৰ, কুষ্ণজীরা. বংশলোচন, কণ্ট-কারীর ফল ও মূল, শঠী, তেজপত্র, ভুঁঠ, পিপুল, মরিচ, গুলঞ্চের চিনি, ধনে, কট্কী, ক্ষেত্র-মুঙা, বালা, दिनहान, यष्टिमधुः প্রত্যেকের চূর্ণ ১ ভাগ, ক্লফজীরা চুর্ণ ৪ ভাগ, ডানকুনি শাকচুৰ্ণ ৪ তালজটাকার ৪ ভাগ, ভাগ, চিরতার্ট্ ৪ ভাগ, সিদ্ধিচুর্ণ ৪ ভাগ। সকল চুর্ একতা মিশ্রিত করিয়া ইহাতে নানা প্রকার বিষমজ্ঞব, জীর্ণজ্ঞর এবং গ্লীহা, উনর, কামলা, পাঞ্জ, শোগ, শূল, কাস, আমবাত, বকুংও ক্ষয় প্রভৃতি রোগ বিনষ্ট হয়। অনুপান-শীতল জল। মাত্র-১ মাধা হইতে ২ মাধা।

नवक्षत्राटनो त्रमञ्जटशांभः।

ন দোখাণাং ন রোগাণাং ন পুংসাঞ্চ পরীক্ষণম্। ন দেশস্থ ন কালস্থ কার্যাং রসচিকিৎসিতে॥

রস-চিকিৎসার দোষের সামতা-নিরামতা, রোগ, ব্যক্তি, দেশ ও কাল, ইহাদের কিছুই বিচার আবশ্রুক করে না।

সর্কশারাধিতত্বজ্ঞা ন জানাতি রসং বদা। সর্কং তজ্ঞোপযাস্য ধর্মহীনো যপা বৃধঃ॥

সমুদায় শান্তের মর্থ অবগত হইয়াও বদক্রিয়ায় অনভিজ্ঞ থাকিলে, ধর্মহীন পণ্ডিতের ভায় উপহাদাম্পদ হইতে হয়।

অনুপানৈ রসা বোজ্য। দেশকালাত্মসারিভিঃ।
দোষদ্মে ধূনা বাপি কেবলেন জলেন বা ॥
(রসা ইত্যুপলকণমূ, অন্যান্যপি ভেষজানি বোগ্যানুপানৈদে গানি)।

রস্থটিত ঔষধ সকলের অন্থপানার্থ দেশ, কাল ও দোষের বলাবল অন্থপারে দোষদ্ম দ্রুব্য বিধান করিবে; অথবা মধু কিংবা কেবল জল সহ ঔষধ সেবন করিবে। অক্সান্থ ঔষধের পক্ষেও এই নিম্নম।

বে রসাঃ পিন্তসংযুক্তাঃ প্রোক্তাঃ সর্বত্ত শঙ্কুনা। জলসেকাবগাহাক্তৈবলিনতে তু নানাধা। রসজনিত্রিদাহে শীততোরাভিবেকো মলরজঘনসারালেপনং মন্দ্রবাতঃ। তরুণদধি সিতাচ্যং নারিকেনীফ্লাভো মধুরশিশিরপানং শীত্রস্তুচ্চ শক্তম্॥

শস্তুপ্রোক্ত যে সকল রস মৎস্তাদির পিত্ত ধারা ভাবিত, সেই সকল রস সেবনের পর জলসেচন ও অবগাহন ক্রিরা করিলে ঔষধের বল বর্দ্ধিত হয়। রস সেবনে বিদাহ উপস্থিত হইলে গাত্রে শীতল জলাভিষেক, চন্দনাদি অম্বলেপন, মন্দ মন্দ বায়ু সেবন, শর্করা সংস্কৃতি টাট্কা দ্ধি সেবন, ভাবের জল পান, মধুর ও শীতল পানীয় এবং অন্তান্ত শীতক্রিয়া হিতকর।

হিঙ্গুলেশ্বরঃ।

তুল্যাংশং মর্দরেৎ থলে পিশ্বলীং হিন্দুলং বিষম্। বিশুল্লা মধুনা দেয়া * বাতক্ষরনিবৃত্তয়ে॥

পিপ্লী, হিঙ্গুল ও বিষ সমভাগে জলে
মর্দন করিয়া ২ রতি (ব্যবহার অর্দ্ধরতি)
মাজায় বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহা মধুর
সহিত সেবন করিলে বাতিক অ্বর উপশ্যিত
হইয়া গাকে।

শীতভঞ্জী-রসঃ।

রস্থিকুলগন্ধক জৈপালং সন্মিতং ত্রিভি:।
দন্তীকাথেন সংম্প্রি রসো অরহর: পর:।
আর্ত্রিকস্বরসেনাথ দাপরেদ্ রক্তিকাব্রম্।
নবঅরং মহাঘোরং নাশরেদ্ যামমাত্রত:।
শুর্করাদ্ধিভক্তক পথাং দেরং প্রবন্ধত:।
শীততোরং পিবেচ্চাতু ইকুম্পারসো হিত:।
শীতভক্লীরসো নামা সর্ব্যরক্লাক্তক্থ।

পানদ, গন্ধক ও হিন্দুল প্রত্যেক ১ ভাগ, জন্মপালবীজ ০ ভাগ, একত্ত দম্ভীকাথে ভাবনা দিয়া ২ রতি মাত্রায় বটিকা করিবে। অমুপান— আদার রস। ইহা সেবনে মহাঘোর নবজর উপশমিত হয়। ঔষধসেবনাম্ভে ইক্ষু, মুগের বুব কিংবা শীতল জল সেবন করা কর্ত্তব্য। চিনি ও দধির সহিত অন্ধ পথ্য দিবে।

ভঞ্জান্ধং সধুনা দেৱনতি কচিৎ পাঠ:।

তরুণজুরারিঃ।

কৈপালগন্ধং বিৰপারদঞ্চ তুলাং কুমারী ব্যৱসেন মন্দ্যম্ ।
ত্বস্ত বিশুলা হি সিভোদকেন খ্যাতো রসোহরং তরুণ ত্বরারি: ॥
দাতব্য এষোহহনি পঞ্চমে বা
বঠেহপবা সপ্তম এব বাপি।
ভাতে বিরেকে বিগত ত্বরঃ স্থাৎ
পটোলমূলগান্ধুনিবেবপেন॥

জয়পাল, গদ্ধক, বিষ ও পারদ স্মভাগে
লইয়া মুভকুমারীর জনে মধন করত ২ রতি
প্রমাণ বাটকা কবিবে। অন্তপান—চিনির
জন। জরুশজ্বাবি নামক এই ঔষধ জারের
পঞ্চম, নষ্ঠ অথবা সপ্তন দিবসে প্রযোজ্য।
ইহা সেবনে বিরেচন হইলে জরত্যাগ হইবে।
পথ্য—পটোল ও মৃদ্গযুব্।

সচ্ছন্দভৈরবঃ।

ভাষ্ত্রতার বিবং হেয়: শতধা ভাবিতং রগৈ:।
ভঞ্জার্জ: সন্নিপাতাদি-নবজন্বন্ধনং পরস্।
আর্জাপুশক্রাসিলু-যুত: অচ্ছলতেরবা:।
ইক্সাকাসিতৈকার দ্বি পথাং করে।
(হেয়: বন্ধরন্ত)

তাত্রতম ও মিঠাবিব সমতাগে লইয়া ধুত্রার রদে শতবার ভাবনা দিয়া আদ রতি পরিমাণে বটা করিবে। ইহা আদার রস, চিনি ও সৈন্ধব সহ সেবন করিলে নবজ্জর ও সন্ধিপাতাদি জ্বর নিবারিত হয়। পথ্য—ইক্ষ্, ডাক্ষা, চিনি, শশা ও দ্বি প্রভৃতি।

প্রচছ্কি ভৈরবে। রসঃ।
পির্মনীং জাভিকোষক পারদং পদ্দকং বিষম্।
বারিণা মর্দ্দরেৎ থলে রক্তিকার্দ্ধং প্রবোজরেৎ ॥
ক্ষেত্রকান্তর্বান নির্মিতঃ।
ক্ষেত্রকাং মহাথোরং নাশরেরাক্ত সংশয়ঃ॥

পারদ, গদ্ধক, মিঠাবিষ, জন্মিত্রী ও পিপ্ললী, সমভাগে জলে মর্দন করিয়া অর্দ্ধ- রতি পরিমিত বটিকা করিবে। এই ঔর্বিদ দেবনে নবজ্বর নিবারিত হয়। (অবিরাম জরে অফ্রকভিরব ধারা জ্বরবিচ্ছেদ হইয়া থাকে।)

নবজ্বরভাক্ষ্ণঃ।

সগন্ধটকং রসতালকঞ্ বিমন্ধ্য সংভাবর মীনপিতৈঃ। দিনবরং বলমিতং প্রদক্তাল্ বৃত্তাক হকৌদনমেব পধ্যম। নবৰবেজাকশনামধেরং কণেন ফর্মোলগ্যমাতনোতি ।

সোহাগা, গন্ধক, পারদ ও হরিতাল সমভাগে লইয়া মার্দিত করত রোহিতমংক্রের
পিত্তে হ দিন ভাবনা দিবে। মাত্র:— ২ রতি।
পথা—বেগুন, ঘোল ও অয়। এট নবমরেভাঙ্কুশ সেবনে অল সমরেব মরে।
ধ্যম্মোদ্যম ইইয়া নবজা প্রশাতি হয়।

নবজ্বরেভসিংহঃ।

গুদ্ধস্তত্তথা গদ্ধং লৌহং তামক সীসকন্।
মনিচং পিপ্ললাং বিখং সমভাগানি কাবরেং ॥
অন্ধভাগং বিখং দ্বা মন্দিরেদ্ বাসর্বর্ম।
শৃক্ষবেরামুপানেন দ্ব্যাদ্গুপ্পাদ্মং ভিষক্ ॥
নবজ্বে মহাঘোরে ধাতুস্থে গ্রহণীগদে।
নবজ্বেভিসংহাহয়ং স্ক্ষরকুলাস্তক্ৎ ॥

পারদ, গন্ধক, লোহ, তাম্র, দীদা, মরিচ,
পিপুল ও শুঠ প্রত্যেক সমভাগ, বিষ অর্দ্ধ
ভাগ (কেহ কেহ বলেন সমষ্টির অর্দ্ধেক বিষ)।
একত্র জলে তুই দিন মন্দন করিয়া ২ রতি
প্রমাণ বটিকা করিবে। অন্তপান—আদার
রদ। ইহাতে ঘোরতর নবজর প্রভৃতি রোগ
নষ্ট হয়।

নবজ্বরহরবটী।

রসগজৌ বিবং শুকী পিশলী মরিচানি চ। পথ্যা বিভাতকং ধাত্রী দন্তীবীজক শোধিতম্ ॥ চূর্ণমেবাং সমাংশানাং লোণপুশীরসৈঃ পুটেৎ। বটাং মার্যনিভাং কুর্যান্ ভকরেৎ নৃত্যে করে। পারদ, গন্ধক, বিষ, ওঁঠ, পিপুল, মরিচ্ন হরীতকী, বহেড়া, আমলকী ও শোধিত দন্তীবীজ, এই সমস্ত দ্রখ্য সমতাগে চূর্ণ করিয়া দ্রোণপুষ্পীর (বলম্পিয়ার) রসে মর্দ্ধন করিবে এবং প্টপাক করিয়া মাষকলায়ের ভাষা বিটকা প্রস্তুত করিবে। ইহা নৃত্ন স্বরে প্রযোজ্য।

নব ছরারিরসঃ।

গ্রকভাগো রসো ভাগ-ব্যক্ত গুরুগজকন্। গ্রুগজ এয়ো ভাগা-চতুর্ভাগা হিমাবতী । জৈপালকপকভাগো নিষ্কুববিমর্দিত:। ক্রিমিল্ল প্রমিতা বটা: কাব্যা: সর্বজ্বরুচিছন:। গুরুগেরেগ দাত্রায়া বটিকৈকা দিনে দিনে। গ্রুগরের তথাগাঁগে সমে বা বিষমেগণি বা। নিহস্তাসো জ্বং সর্বাং দাবো বন্ধিবানল:।।

পারদ ১ ভাগ, শোধিত গদ্ধক ২ ভাগ, বিষ ০ ভাগ, স্বর্ণকারী ৪ ভাগ, জন্মপাল ৫ ভাগ; এই সমস্ত জব্য কাগ্জি লেবুর রুদে মর্দন করিয়া বিড্সের ভাগ বটিকা প্রস্তুত করিবে। আদার রুদের সহিত প্রত্যহ ১ বটা দেবন করিলে সর্ব্ধপ্রকার জন্ম বিভিন্ন হয়। ইহা সম বা বিষম জন্ম, জীর্ণজন ও অজীর্ণে প্রয়োগ করিবে।

সর্বাঙ্গস্থন্দরে। রসঃ।

শুদ্ধত্ব গদ্ধ বিষণ জনপালকন্।
কটুত্রমণ তিকলা উপণক সমাংশকন্॥
অন্ত মাত্রা প্রযোজব্যা শুপ্পাত্রসমা ততঃ।
সংক্রের জনরোগের সামবাতে বিশেষতঃ॥
নাশক্ষেছ্ ামকাসক স্থাসাদং বিশেষতঃ।
বক্ষণা নিশ্বিতঃ পূর্বং রসঃ সর্বাক্ষমন্য॥।

শোধিত পারদ, গন্ধক, বিব, জন্মপাল, ঠে, পিপুল, মরিচ, আমলকী, হরীতকী, বহেড়া ও সোহাগার থৈ; এই সমস্ত দ্রব্য সম্ভাগে এক্ত জলে মর্দ্দন করিয়া ও রতি প্রমাণ বটকা:প্রস্তুত করিবে। ইহাতে সর্ক্- শ্বীধজন, খাদ ও কাদ বিশেষতঃ আমবাত ও অগ্নিমান্দ্য নিবাবিত হয়। এই ঔষণ পুর্বের ব্রহ্মা কর্তৃক নিশ্মিত হইয়াছিল।

শ্রীমৃত্যুঞ্জয়ো রসঃ।

বিষ্ঠেকস্তথা ভাগো মরিচং পিপ্লৌকণঃ। গৰ্মকক্স তথা ভাগো ভাগ: ক্সটেঙ্গণস্থ নৈ । সর্বত্য সম্ভাগ: স্থাদ দ্বিভাগং হিন্দুলং ভবেৎ। **हर्नस्त्रर अञ्चमस्या कू मूल्यमानाः नर्ताः छ**रतः ॥ জ**ন্বীরক্ত** রদেনাত্র হি**ঙ্গুলং** ভাবয়েছিমক। রসন্চেৎ সমভাগঃ স্তাদ্ধিস্থলং নেষ্তে তথা 🛚 গোমূত্রশোধিতঞাত নিষং সৌরবিশোধিত্য। মধুনা লেছনং প্রোক্তং সর্পক্ষরনিবার্থে । प्रशासकाञ्चलात्म्य वार्**क्त**निवर्दशः । আর্দ্রকন্ত রসৈ: পানং দারুণে সারিপাতিকে 🕫 জ্বীররস্যোগেন অজীর্ণজ্বনাশন:। অজাজীগুড়সংযুক্তো বিষমজ্বনাশন: 🛭 তীব্রব্ধরে মহাঘোরে পুরুষে যৌবনাখিতে। পূর্ণমাত্রা প্রদাতব্যা পূর্ণং বটাচভষ্টয়ম ॥ ন্ত্ৰীবালবৃদ্ধকীণেৰু চাৰ্দ্ধমাত্ৰা প্ৰকীৰ্ভিচা। অতিকাণেহতিবৃদ্ধে চ শিশৌ চাল্লবয়ক্তপি । তৃর্যামাত্রা প্রদাতব্যা ব্যবস্থামারনি শিচ্ছা। নব**ত্ত**রে মহাঘোরে যামৈকারাশরেজ্জরম ॥ মধার্ম্বরে তথাজীর্ণে ত্রিরাত্রান্নাশয়েদ প্রণম। (অক্ষীণে চ কফাভাবে দাহে চ বাতপৈত্তিকে। সিতাং দ্যাৎ প্রয়েশ নারিকেলামু নির্ভয়ম ॥) অরং মৃত্যুঞ্জরো নাম রদঃ সর্কাছরাপহঃ। অরুপানবিশেষেণ নিহন্তি সকলানু গদান্॥

বিষ ১ ভাগ, মরিচ ১ ভাগ, পিপ্পলী ১ ভাগ, গদ্ধক ১ ভাগ, সোহাগার থৈ ১ ভাগ, হিঙ্কুল ২ ভাগ; এই সমস্ত দ্রব্য একত্র জল সহ উত্তমরূপে মর্দ্দন করিয়া মুগপরিমাণে বটিকা করিবে। এস্থলে জম্বীবরদে হিঙ্কুল ভাবনা দিয়া লইতে হইবে। যদি এই ঔবদে ১ ভাগ পারদ মিশ্রিত করা যায়, তাহা হইলে হিঙ্কুলের আবশ্রুক হইবে না। বিষপ্ত গোম্ত্রে ভিজাইয়া রৌজে শুক্ত করিয়া লওয়া আবশ্রুক। ইহার অমুপান—সাধারণতঃ মধু। বাতজ্বরে দধির মাত, সন্ধিপাতে আদার রস, অজীব জ্বের জম্বীররস, বিষমজ্বের ক্রক্ষজীরার

চূর্ণ প্র প্রাচন গুড়। ইহার পূর্ণমান্তা ৪ বটা।
কিন্তু ন্ত্রী, বালক ও বৃদ্ধদিগের অর্জনাতা
২ বটা এবং অতি বৃদ্ধ, অতি শিশু ও অতি
ক্ষীণ রোগির পক্ষে > বটা। (যদি কফাধিক্য
না থাকে এবং নোগা ক্ষীণ না হয়, তবে
ডাবের জল ও চিনি সহ সেবন বিধেয়;
তদ্ধারা বাতপৈত্তিক দাহ নিবারিত হটবে।)
এই মৃত্যুপ্তর রস সম্ববিধ জ্বরনাশক।

রভ্লগিরিরসঃ।

শ্বন্ধত সমং গধ্বং মুগুলাজ্ঞাটকম।
প্রত্যেক প্রত্তাগ্রে আবি প্রতাহিকম্।
লোহার্দ্ধং মুগুলিলাগ্রং মন্দ্রেদ্ভুক্তজন্ত ।
পর্পটারসনৰ পাচাং চুর্নিতং ভাবরেৰ পৃথক্॥
শির্বাসকনিগু জী-নচাগ্রিভুক্তকে:।
ক্তায়্বাজয়য়ৗভিম্ নিব্রনীস্থাজিকে:।
ক্তায়াল জবৈভাবাং প্রতিবারং নিধা নিধা।
ক্তা লমুপুটে পাচাং বালুকাযক্তমধ্যগম্॥
যহং নির্পা বছেন স্বাক্তনিতং মুদ্ধরেং।
চুর্গং নবন্ধরে দেয়ং মাযনাত্রং রস্ভা বৈ॥
ক্তাধান্তসমাযুক্তং মুহুর্ভারাশ্রেজ্বন্।
অয়ং রম্বানিনিম রসো গোগন্ত বাহকঃ॥

বিশুর্রপারদ ১ ভাগ, গন্ধক ১ ভাগ, তাম ১ ভাগ, অল ১ ভাগ, ।বর্ণ ১ ভাগ, লেছি অর্মভাগ, বৈক্রান্ত দিকি ভাগ, এই সকল দ্রব্য ভূঙ্গরাজরদে মর্দন ও পর্পটীর ভায় পাক করিবে; পরে চূর্ণ করিয়া নিমলিখিত দ্রব্য সকলের রঙ্গে ক্রমে (প্রভ্যেকের রঙ্গে ও বার) ভাবনা দিবে; যথা—সন্ধিনা, বাসক, নিসিন্দা, বচ, চিতা, ভূঙ্গরাজ, ভূকদম্ব, কণ্ট-কারী, গুলঞ্চ, জয়ন্তী, বকপুষ্প, ব্রহ্মীশাক, চিরতা ও য়তকুমারী। অনন্তর মুখাতে রুদ্ধ করিয়া বালুকাযন্ত্রে লঘু পাক করিবে এবং শীতল হইলে ঔষধ উদ্ধত করিবে। ইহা নবজরে ব্যবস্থেয়। মাত্রা—> মাষা (ব্যবহার ২ রিত্ত)। অন্ধুপান—পিপুল ও ধনের কাথ। ইহা সেবনে অতি সম্বর নবজর উপশ্যিত হয়।

নবজ্বাকুশঃ।

ক্রমেশ বৃদ্ধান্ রসগন্ধহিন্দুলান্ নৈকুন্তবীজান্তথ দন্তিবারিণা। পিষ্ট্রান্ত গুঞ্জাভিনবজ্বরাপহা জলেন সার্দ্ধং সিত্যা প্রবোজিতা।

পারদ ১ ভাগ, গদ্ধক ২ ভাগ, হিন্ধুল ত ভাগ, জয়পালবীজ ৪ ভাগ, এই সকল দ্রব্য দন্তীমূলের কাথে (দন্তা: তভাগ, ৮ গুণ জলে দিন্ধ করিয়া চতুর্থাংশ অবশিষ্ঠ থাকিতে নামা-ইবে, সেই কাপে) মর্দ্দন করিয়া ১ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা সেবনে নবজর উপশ্যিত হয়। অমুপান—চিনির জল।

অগ্রিকুমাররসঃ।

মরিচোগ্রাকু উনুজ্য: সংক্রেরণ সমং বিষম্।
পিটুরা চার্জরনেনের বটিকা রক্তিকামি তা ॥
আমন্ত্রের প্রথমতা শুঠা চ মর্পিটুরা।
আর্জকন্ত রমেনাপি নিগু গ্রান্ড কমন্তরে ॥
গীনমে চ প্রতিক্তারে আ্রকন্ত চ বারিগা।
অবিনান্দ্রে নেকেন শোপে সদশম্বকঃ॥
গ্রহণাং সহ শুঠা চ দশম্বাতিসারকে।
সামে চ ধানাগুটান্ডাং পরে চ কুটজং নরু॥
সন্নিপাত্ত্ররারন্তে পিল্লার্জকবারিগা।
কটকায়া রসৈঃ কাসে খাসে তৈলগুড়ামি তম্॥
পীতা বটান্নয়ং রোগা আন্তাং সম্প্রভৃতি।
সর্ক্রোমের রোগাপানাম্যোব্রশান্তরে॥
অবিন্তিক্রো নালা বিপ্যাত্যেইপ্রিক্সারকঃ॥

মরিচ ২ মাধা, বিচ ২ মাধা, কুড় ২ মাধা, মূতা ২ মাধা, বিচ ৮ মাধা। আলার রসে পেষণ করিয়া ১ রতি প্রমাণ বঁটা প্রস্তুত্ত করিবে। অনুপান—আমজরে প্রথমাবস্থায় উটাচ্লের সহিত মধু, কফজরে আলার রস বা নিসিন্দাপত্তরস, পীনস ও প্রতিশ্রায় রোগে আলার রুস, অগ্নিমান্দ্যে লবঙ্গচ্ল, লোগে দশম্লের কোথ, এইলারোগে উটাচ্ল, আজ্ব-সারে দশম্লের কাথ, আমাতিসারে বনে ও উটার কাথ, পকাতিসারে কুড়্চিকাণ ও মর্, স্মিপাতজরের প্রথমাবস্থায় পিপুল ও আলার

রস, কাসে কণ্টকারীর রস, শাসে সর্থপতৈল ও পুরাতন গুড়। তুইটি বাটকা সেবনে রোগী স্বাস্থ্য প্রাপ্ত হয়। সকল রোগে আমদোষ শান্তির নিমিত্ত এই ঔষণ প্রবোজ্য। ইহা দার্য অগ্নিবৃদ্ধি হয় বলিয়া ইহার নাম অগ্নি-কুমার রস।

চণ্ডেপ্ররো রসঃ।

রসং গধাং বিষং তামং নর্দ্ধরেদেক যামক মৃ।
আর্দ্রিক স্বরদেশন কর্দিরেং সপ্তবারক মৃ॥
নিপ্ত গ্রাঃ কর্দের পশ্চার্মদ্বের সপ্তবারক মৃ॥
অক্তর্পার্ক রদেশন দভা হস্তি অবং ক্ষণাং।
বা তরং পিত জং প্রেম-ছিলোযজমপি ক্ষণাং॥
প্রাতলজলে সানং ভূসার্থে ক্ষীরভোজন মৃ।
আরক পনসকৈ ব চন্দনা গুরুলেপন মু॥
এতৎসনো রসো নাস্তি বৈস্তানাং ক্রদরক্ষঃ।
এম চণ্ডেম্বো নাম সর্ক্ষরকুলা ত্তুং॥

পারদ, গন্ধক, বিষ ও তাত্র, এই কয়টি দ্রব্য সমভাগে লইয়া এক প্রহর কাল মর্দ্দন করিবে। পরে আদার রসে ৭ বার ও নিসিন্দা পাতার রসে ৭ বার ভাবনা দিয়া ১ রতি প্রমাণ বটকা করিবে। অমুপান—আদার রস। স্নানাদি শৈত্য ক্রিয়া ও হ্ঝাদি সেবন করিবে। ইহা সেবনে সর্বপ্রকার জবু আশু নিবারিত হয়।

জয়াবটা।

নিষং ত্রিকটুকং মুস্তং হরিতা নিপপত্রকম্।
বিভ্রন্থাইমং চূর্বং ছাগমুত্রেঃ সমং সমধ্।
চর্ণকাভা বটা কাগ্যা স্থাক্তরা যোগবাহিকা।
ক্রয়ানটিকারাং এরস্তান্লচূর্বং জুল্যাংশং দেয়ন্, যোগবাহিকথাং, এবং জয়প্তানটিকারান্দি।

বিষ, শুঁঠ, পি গ্ল, মান্চ, মূহা, হরিন্তা, নিমপাতা ও বিজ্ঞ্ব প্রত্যেকের চুণ সমভাগ, জয়স্তামূলচুর্ণ সর্ন্তমান, একতা ছাগমূত্রে ভাবনা দিয়া চণকপ্রমাণ বটিকা কারবে। ইহা যোগবাহিকা। অমুপান-বিশেষে জরাদিশ সর্বব্যাগন্থ।

জয়ন্তী বটিকা।

বিবং পাঠাখগন্ধা চ বচা তালীশপত্ৰকম্ । মরিচং পিয়ালী নিখমজামূত্ৰেণ তুলাকম্ । বটিকা পূৰ্ববং কাৰ্য্যা জয়ন্তী বোগবাছিকা ॥

বিষ, আক্নাদি, অশ্বগন্ধা, বচ, তাকীশপত্ৰ, মরিচ, পিপ্পলী ও নিমপাতা, প্রত্যেক
সমতাগ, সর্কাসমান জন্মন্তীমূলচূর্ণ; ছাগমুত্রে
পেষণ করিয়া পূর্কবং (জন্নাবটিকার স্থায়)
বটিকা করিতে হইবে। এই বটিকাও যোগবাহিকা, অন্ধুপানবিশেষে জ্রাদি সর্কারোগন্ধ।
যথা—ছগ্ধ সহ সেবনে পিন্তজ্জর, মরিচচূর্ণ ও
মধু সহ সেবনে সান্ধিপাতিক জন্ন নই হয়,
এইরূপ বঝিতে হইবে।

যোগবাহিক। জয়া জয়ন্তা।

জয়ন্তী বা জরা বাথ ক্ষীরৈঃ পিতক্ষরাপহা। মুক্লামলকৰুৰেণ পথাং দেয়ং ঘৃতং বিনা ॥ জয়ন্তী বা জয়া বাধ সক্ষোদ্রা মরিচাৰিতা। সরিপাতজ্বরং হস্তি রসন্চানন্দভৈরব: ॥ জয়ন্তী বা জ্য়া বাধ বিষমজ্জনুদ ঘুতৈ:। সর্ব্যাহর মধুবোর্টার্গবাং মুত্রেণ শাতকম্। চন্দৰত কষায়েণ ব্ৰহ্মপিভজ্মাগংগ। कद्रशी वा क्या वाश माकिरकत ह काम बिर ॥ क्यारों वा क्या वाब कीरेतः পाश्विनामिनी । জয়ন্তী বা জয়া বাপ তভুলোদকপানতঃ । অশারীং হস্তি নো চিত্রং মৃত্যকুদ্রেং হলারণম্য জয়ন্তী বা জয়া বাধ গোমুক্তেণ সূতাং পিলেৎ ॥ হস্ত্যাণ্ড কাৰণং কুঠং তলেপেন চ তদ্ধবৃষ্ ! দিনিকং কেতকীমূলং পিষ্ট্রা ত্যেরেন পায়য়েং 🗈 জয়ন্তী বা জয়া বাৰ মেহং হন্তি জুলান্দ্রম্। जबस्री वा जबा वाच मधुना मर्गतरमञ्जू । লোধ্রং মুম্ভাভয়া তুল্যং কটুফলঞ্চ জলৈ: সহ। কাথয়িতা পিবেচ্চাতু মধুনা সর্বমেহতুৎ ॥ জয়ন্তী বা জয়া বাধ গুড়ৈ: কোকজলৈ: সহ। তিদোবোখং হরেদ গুলাং রদো বানন্দভৈরবঃ 🕨 कब्छी वा क्या वाब इच्छि एको छनम्बर्म्। ব্যমন্ত্রী বা করা বাপ তক্রেণ গ্রহণাপ্রগৃৎ ॥ खब्रको वा बदा वाथ द्रमकानमर्छद्रवः। বন্ধপিতে ত্রিদোবোথে শীততোরেন পারয়েৎ **!** कश्रको वाक्या वाच ज्ञानार्विनाकानूर । অয়ন্তী বা জহা বাধ মুষ্ট্ৰা তন্যেন চাঞ্চনম ! **প্রাৰণ:** সর্বলোষোত্ম: মাংসবৃদ্ধিক নাগমেৎ 🎚

জয়ন্তী বটা বা জয়া বটা ছগ্নের সহিত করিলে পিতজ্ব নিবারিত হয়। ইহাতে মুগের অথবা আমলকীর যুষ পথা দিবে, কিন্তু উক্ত যুবে ত্মত প্রদান করিবে না। জয়াবাজয়ন্তী বটীও আনন্দভৈর্ব রুদ মধু এবং মরিচের গুড়া সহ সেবন করিলে সন্নিপাতজ্ঞর নিবারিত হয়। এই জয়া ও জয়ন্তী বটী শ্বত সহ বিষম জবে, মধু ও ত্রিকটু চূর্ণ সহ সর্বপ্রকার জরে, গোমূত্র সহ শীত-জরে, রক্তচন্দনের কাথ সহ রক্তপিত্ত জরে. মধু সহ কাসরোগে, হয় সহ পাণ্ডরোগে এবং তণ্গলোদক সহ অশারী ও মৃত্রক্ষুরোগে প্রয়োগ করিবে। ইহা গোমূত্র সহ সেবনে বা প্রলেপে কাকণ কুষ্ঠ বিনষ্ট হয়। ৮ মাষা কেয়ার মূল জল সহ বাটিয়া তৎসহ এই ঔষধ-ষয় সেবন করিলে হুরামেখ শমিত হয়। এই ঔষধ**দ**য় মধু সহ সেবন করিলে অথবা এই ঔষধ সেবনের পর লোধ, মৃতা, হরীতকী ও কটফল সমভাগে কাথ প্রস্তুত করিয়া এবং তাহাতে মধ্ব প্রক্ষেপ দিয়া সেবন করিলে সর্বাপ্রকান মেহ বিনষ্ট হয়। জয়া বটী ও জয়ন্তী বটা বা আনন্দভৈরব রস গুডুমিপ্রিত ঈষ্ডুষ্ণত্বল সহ সেবন করিলে ত্রিদোষজ্ঞনিত গুলা নিবারিত रहा, जनगतितादन चें ठेडूर्न যহ, গ্রহণারোগে গোল সহ ঔষধ্যয় সেবন কর।ইবে। অনন্দভৈরব রস, জ্য়া বা জ্যুন্তী বটী শাতল জল সহ সেবন কৰিলে জিনোহ-জনিত রক্তপিও রোগ নিবারিত হয়। উষপন্ধয় ভূঙ্গরাঞ্কের রস সহ সেবন করিলে রাত্র্যন্ধতা এবং স্তনহুগ্ধে ঘুর্বণ করিয়া চক্ষুতে অঞ্জন দিলে সর্কদোযোগ চকুঃ স্রাব ও মাংসকৃত্রি নিবারিত হয়।

ত্রিপুরভৈরবো রসঃ।

বিষটক্ষবলিয়েচ্ছ-দস্তীবীজং ক্রমাশ্বর । দস্যানুমর্শ্বিতং যামং রস্প্রিপুরজ্বরঃ॥ বলো ব্যোৰেণ চাৰ্ক্ত রসেন সিডয়াথবা।
দত্তো নবজনং হস্তি মান্দ্যামানিকশোথহা।
হস্তি শূলং সবিষ্টজমর্শাংসিক্রিমিজান্ গদান্।
পথাং তক্রেশ ভোক্তবাং রসেহস্মিন্ রোগহারিণি॥
(রেচ্ছং ডাঞ্জং হিন্দুক্রিয়িত্তভ্রেণ)

বিষ ১ ভাগ, সোহাগা ২ ভাগ, গন্ধক ৩ ভাগ, তাদ্র বা হিঙ্কুল ৪ ভাগ ও দন্তীবীজ ৫ ভাগ; এই সমস্ত দন্তীর কাথে এক প্রহর মর্দন করিয়া ২ রতি প্রমাণ বাটকা করিবে। অমুপান—আদার রস; অথবা শুঠ, পিপুল মরিচ এই ভিন জব্যের কাথ ও চিনি। ইহা সেবনে নবজ্বর, মন্দাগ্রি, আমবাত, শোথ, শূল, বিইন্ড, অর্মাঃ ও ক্রিমিজ রোগ সকল নিবারিত হয়। তক্রের সহিত পথ্য প্রয়োগ করিবে।

জ্বধূমকেতুঃ।

ভবেৎ সমং ক্তসমূদকেন-হিকুলগদ্ধং পরিমন্তি বজাৎ। নবমবে বল্লমিতং তিঘণ্ডমানোদ্ধামং অৱব্যকেতু:॥

পারদ, সমুদ্রফেন, হিন্ধুল ও গন্ধক, এই সমুদায় সমভাগে গ্রহণ করত আদার রসে ১ দিন কাল মাড়িয়া ২ রতি মাত্রায় বটিকা করিবে। ইহা নবজরের উৎকৃত্ত ঔষধ।

জীরামরসঃ।

शक्तकः लातमः छूनाः मन्नितम जिल्हः ममम् । वीकः निकृषकः मक्ताः मस्रोकात्यन यामकम् । ष्टिस्तकः मृत्विष्टसानितमामस्तरः कत्यः ॥

পারদ ১ ভাগ, গন্ধক ১ ভাগ, মরিচ ১ ভাগ, জন্মপালবীজ ১ ভাগ, একত্র করিয়া দস্তীর কাথে ১ প্রহর মর্দন করিবে। মাত্রা— ২ রতি। ইহা সেবনে আমজ্বর, শূল, বিইন্ত ও বায়রোগ উপশ্যিত হয়।

প্রচণ্ডেশ্বররসঃ।

অমৃতং পারদং গধ্ধং মর্দ্ধরেৎ প্রহরন্ধরম্। শিক্ষুবাররনৈঃ পশ্চাদ্ভাবরেদেকবিংশতিন্॥ তিলপ্রমাণং দাতব্যং মবজ্ববিনাশনম্। উল্লেখ্যে মন্তকে তৈলং তক্রঞ্চাপি প্রদাপয়েং। অমুপানমার্ক্রসঃ প্রচতেশ্বরুগজ্জেকঃ।

বিষ, পারদ ও গন্ধক সমভাগে লইরা ছই প্রহর কাল মর্দন করিয়া নিসিন্দা পাতার রসে ২১ বাব ভাবনা "দিবে, পরে তিলপ্রমাণ বটিকা করিবে। অমুপান—আদার রস। মন্তকের উদ্বেগ থাকিলে তৈল মর্দ্দন করাইবে এবং তক্রসংৰুক্ত পথ্য দিবে। ইহা নবজ্বরের উংক্কট্ট ঔষধ।

বৈগ্যনাথবটী।

শাণং গদ্ধমণো রসস্ত চ তথা কৃত্বা ছয়ো: কক্সনাং
তিক্তাচূৰ্ণমধাক্ষমেন দকলং নৌদ্রে তিধা ভাবরেৎ।
পশ্চাৎ তৎ স্থানীরসেন নতুবা কাথেহমঙ্গে ত্রৈকলে
সংশোষ্যা গুড়িকা কলায়সদৃশী কার্যা বৃংধ্যক্ততঃ।
জ্ঞাত্বা দোষবলং রসেন স্থ্যবীপত্রক্ত পর্ণস্ত বা
এক্ষিত্রিচতুঃ ক্রমেণ বটিকাং দক্তাৎ কছুকান্থনা।
ছস্তি শূলনিচয়ং নক্ষরং পাভুতামক্ষচিশোধসক্ষম।
রেচনে চ দ্বিভক্তভোজনং বৈজ্ঞনাধ্যক্ষমাররেচনম্।

পারদ ॥ • আধ তোলা, গন্ধক ॥ • তোলা উত্তমরূপে মর্দ্দন করিয়া কজ্জলী করিবে। অনস্তব কট্কীচূর্ণ ২ তোলা মিশ্রিত করিয়া উচ্ছেপাতার রুদে অথবা ত্রিফ্লার কাথে তিনবার ভাবনা দিয়া মটর প্রমাণ বটিকা করিবে। অমুপান—পানের রুস কিংবা উচ্ছেপাতার রুস ও ঈমত্বত জল। দোবের বলাবল বিবেচনা করিয়া ১টা হইতে ৪টা পর্যন্ত বটিকা সেবনের ব্যবস্থা করিবে। ইহা সেবনে যে কোন প্রকার শূল, নবজর, পাতু, অক্লচিও শোথ নিবারিত হয়। ইহা বালকদিপের স্থাবিরেচক ওবা।

প্রতাপমার্তণ্ডে। রসঃ।

বিবহিকুলজৈপাল-টক্ষণং ক্রমবর্ণিত্র। রসঃ প্রতাপমার্ততঃ সজ্যো অরবিনাশনঃ।

আয়ুর্বেদ-সংগ্রহঃ i

বিষ ১ ভাগ, হিঙ্গুল ২ ভাগ, জন্মপাল ৩ ভাগ ও সোহাগা ৪ ভাগ; এই সমস্ত একত্র জলে মর্দন করত ১ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা সেবনে সম্বর জর নিবারিত হন্ন।

উদকমঞ্জরীরসঃ।

হতো গন্ধন্তপণ: সোৰণঃ জানি দেভৈন্তন্য শর্করা নংগুলিভৈঃ। ভূরো ভূয়ো ভাবয়েচ্চ তিরাত্রং বরো দেয়ঃ শৃঙ্গবেরজ্ঞ বারা ॥ সম্যক্তাপে বারিভক্তং সভ্জং বৃত্তাকাচ্যং পথ্যমত্র প্রদিষ্টম্ । ভাহ্নারো ইন্তি সামং প্রভাবাৎ পিভাধিক্যে মুদ্দি, বারিপ্রয়োগঃ॥ (শর্করাত্র বিষম্। ভাত্ত শকরাস্থানে মন্শিলায়াং চক্রশেপ্রো ভবতি।)

পারদ ১ মাবা, গন্ধক ১ মাবা, সোহাগার থৈ ১ মাবা, মরিচ ১ মাবা ও মিঠাবিদ ৪ মাবা, সমুদায় একত্র করিয়া তিন দিশে (২৪ প্রহর) রোহিতমংক্রের পিত্তে ভাবনা দিবে ও মর্দ্দন করিবে। ২ রতি প্রমাণ বটা। অনুপান— আদার রদ। ঔষধ দেবন করিয়া অধিক গরম বোধ ইইলে বারিভক্ত (ভিছাভাত্) তক্র ও বেগুল পথ্য দিবে। পিতাবিক্যে মন্তকে জলের।পটি দিবে। ইহা ঘারা আমজর শীঘ্র নষ্ট হয়। (ইহাতে মিঠাবিষের পরিবর্তে মনঃশিলা দিলে চক্রশেখর রদ হয়।)

অমৃতমঞ্জী।

হিন্দুলং মরিচং টঙ্গং পিপ্ললা বিধনের ৮। জাতীকোরং সমং সর্ববং জন্বীরান্ডিবিন্নিজিতন্। গুঞ্জাদ্বাম এয়ং বালি এদেয়ং সান্নিপাতিকে। কাস্থানৌ জন্মতান্ত সর্বব্দাবনিশিনঃ।

হিঙ্গুল, মরিচ, সোহাগার থৈ, পিপুল, বিষ ও জায়কল প্রভাকে দ্রব্য সমভাগ, জয়ীরের রসে মর্দ্ধন করিয়া ২ বা ৩ রভি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহা সেবন করিলে সারিপাতিক জর, কাস, খাস ও অক্সান্ত সর্ব-প্রকার:জর বিনষ্ট হয়।

জ্বনু সিংছে। রসঃ।

পারদং গদকং তালং ভলাতকন্তবৈধন চ।
বক্তীক্ষীরসমাযুক্তমেকতা চ বিমর্দ্ধির ।
দত্তিকাভাজনে স্থাপ্যং মুদ্রিতবাং বিচক্ষণে:।
অগ্নিং প্রধানরেং তত্র প্রধন্মসংখ্যা ॥
শাতলং পরায়েং তত্র ভাবনা চ প্রদানতে।
ভূকরাজরসৈরতা গভদুক্রভিদে রসে: ॥
চিত্রকন্ত রসেনাপি ভাবনা দায়তে পুন:।
পশ্চাং ভচ্চুর্বন্দেরপ্রাং কুপিকায়াঞ্চ ধারয়েং॥
অব উৎপজ্যতে যক্ত চতুর্বে চাপরে পুন:।
মানৈকন্ট রসো। দেয়তংকগারানাব্যেজ্বন্ ॥
আর পাত্তে পনং পন্যং দেয়ং মুক্টোচনং প্য।
আর পাত্তে পনং পন্যং মুক্টোচনং প্য।

পারদ, গগ্ধক, হরিভাল ও ভেলা, এই
দকল জব্য একত্র মনদাসিজের আঠায় মাড়িয়।
মৃৎপাত্রে স্থাপন পূন্দকে ২ প্রহর কাল পুটপাক
করিবে। পরে শাতল হইলে তুলিয়া ভীমরাজ,
গেটে দুর্দ্ধা ও চিতার রুসে তিন দিন তাবনা
দিবে এবং চূর্ণ করিয়া রাখিবে। এই চূর্ণ
১ মাষা পরিমাণে চাতুথকাদি জরে প্রয়োগ
করিবে। জ্ব নিবারিত ইইলে মৃদ্যসূষ, জয়
ও হ্রা পথ্য দিবে।

অচিন্তাশক্তী রসঃ।

নদগন্ধকয়োথা হিং প্রভ্যেকং মাবক্ষ্যম্।
ভূপকেশাগানিও জি-নভ্কীপত্রহেনরাং॥
খেতাগরাজিতামূলং শালিককাশমানিবন্।
খেতাকং স্বর্গমেং গল্প-শিলায়ামন্ধানতং॥
প্রভ্যেকং স্বর্গমেং গল্প-শিলায়ামন্ধানতং॥
প্রভাবিক্ষার্ক্ষ দ্বা নিচমাযকন্॥
নেপালতামদ্র্যেন দৃষ্টা ৩২ কল্পজাতি।
নিটা মূল্পোপমা কায়া ছংগ্রন্থেল ভূ রক্ষিতা॥
প্রথমে বিটকান্তিরেঃ কুথা নবশ্রাবকে।
ভতঃ প্রদর্শিং স্কাং পূজ্যিয়া প্রশম্য চ॥
নানিণা পোলায়য়া ভূ পাতুং দেয়ক রোগিলে।
বেদোপবাদর্গতি ক্লান্তে চাত্যবলে ভ্রা॥
ভিত্তিরেইক নটাব্র্মাং বটানেকাং ভূতীয়কে।
যাবস্থ্যো বটিকা দেয়াস্তাবজ্ঞনশ্যাবকম্॥

তৃষ্ণারাঞ্চ রসং দজাজ্জাক্ষলানাং জলং যথা।
লুনাপদ্ধিসংযুক্তং ভক্তং ভোজ্ঞাং যথেপি এন্ ।
লানপক্ষিরসো দেয়ঃ সংস্কৃতঃ সৈন্ধবাদিভিঃ।
পণ্যমন্ত্রিনলং নাক্ষ্য বাবিভক্তরসং তথা।
শিরশ্চলনশুলাদে তৈলং নারায়ণাদি চ॥

পারদ ২ মাধা, গন্ধক ২ মাধা, কজ্জলী করিয়া ভঙ্গরাজ, কেশরাজ, নিসিন্দা, থানকুনী, গিমা, খেত অপরাজিতার মূল, শালিঞ্চ, কাঁটানটে ও খেতত্ত্ত্ত্ত্, ইহাদের প্রত্যেকের ৪ মাষা করিয়া স্বর্স লইয়া ভাহাতে মিলিত কৰিবে। পশ্চাং স্বৰ্ণমান্ধিক ১ মাৰা ও মরিচ ১ মাষা সংশ্বন্ধ করিয়া ভাত্রপাত্রে ামুত ছার: মাড়িয়া মুগ প্রমাণ বটিকা কবিবে । করিবে। পরে ভাষায় CF উপবাদে ক্লান্ত এবং নবজ্ঞাব C378 3 এই ঔষণ ছৰ্মল ব্ৰোগিব 5/737-আত উৎক্রইকল্লায়ক। প্রথম দিবসে ০ বটা. ধিতীয় দিবলৈ ২ বটা ও তৃতীয় দিবলৈ ১ বটী শীতল জল সহ সেবন করাইবে। ভৃষ্ণা উপ-স্থিত হইলে শাত্ৰজল ও জাঙ্গল পশু বা লাব-পক্ষী প্রভৃতির মাংসের বস সেবন করিতে দিবে। পথ্য--দ্বি ও অগ্ন। শিক্তকণ্প ও শিরংশল থাকিলে বিবেচনা পূর্দক নারায়ণাদি रेडन मखरक मर्फन विस्त्र ।

ত্রৈলোক্যভুষুররসং।

স্তার্কপন্ধচপলা জরপালতিকা পথ্যা ত্রিবৃচ্চ বিষতিন্দুকজং সমাংশম্। সংমর্দ্ধা বজ্ঞিপয়সা মধুনা বিষ্ণুঞ্জ-জৈলোকাডুমুর রসোহভিনবন্ধরম্ম: । (অত্র বিষতিন্দুকজং মধুরতিন্দুকফলজম্।)

পারদ, গন্ধক, তাম্র, পিপুল, জন্নপাল, কট্কী, হরীতকী, তেউড়ীমূল ও কুঁচিলা সম-ভাগে লইন্না সিজের আঠার মর্দন করিন্না তুই রাত প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা মধু সহ সেবন্দে নবজর নিবারিত হয়।

গদমুরারিঃ।

রসবলিশিললৌহব্যোষ হামাণি তুল্যা-ক্তপ সদরদনাগং ভাগমেতৎ প্রদিষ্টম্। ভবতি গদমুরারিশ্চান্ত গুঞ্জাদ্বরং বৈ ক্ষপয়তি দিবদেন প্রোচ্মামন্ত্ররাপাম্ ॥ ব্যু শিলা মনঃশিলা, ছান্দসভাদ্ হুবাঃ।

রদ, গন্ধক, মনঃশিলা, লৌহ, ভাঁঠ, পিপুল, মরিচ, তাম, হিঙ্গুল ও সীসক, এই সকল দ্বা জলে মর্দান করিয়া ২ রতি প্রমাণ বাটকা প্রস্তুত করিবে। ইহা সেবন করিলে কঠিন আমজন অতিশীল প্রশামত হয়।

স্বরত্মী বটিক।।

একো ভাগো রসাচ্ছুদ্ধাকৈলেয়: পিঞ্লী শিবা।
কাকারকরভো গলঃ কটুতৈলেন শোধিতঃ ॥
ফলানি চেন্দ্রবারুণ্যাশত ভাগমিতা অমী।
একত্র মন্দ্রিয়েত্ব্নিন্দ্রবারুণিকারকৈঃ ॥
মাবোমিতাং বটাং কৃষা দ্যাং সংগ্রাহ্মরে বৃধঃ।
ছিল্লারসাম্পানেন অরম্বী বটকা মতা॥

শোধিত পারদ ১ ভাগ, শৈলজ, পিপুল, হরতিকী, আকরকরা, কটুতৈলে শোধিত গন্ধক ও রাথালশশার ফল, এই সকল জব্য প্রত্যেক ৪ ভাগ, একত্র রাথালশশার রসে দর্দন করিয়া ১ মাষা পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। অনুপান—গুল্প রস। ইহাতে সম্ভোজ্র নিবারিত হয়।

শীতারিরসঃ।

পারদং গন্ধকং শুদ্ধং টক্ষণঞ্চ সমং সমন্।
পারদাদ্দিগুণং দেয়ং লৈপালং তুববর্জ্জিতন্।
টেকাবং মরিচং চিকাত্বগ্রুত্ম শর্করাপি চ *।
প্রত্যেকং স্থতকং তুলাং জন্ধীরেম দিয়েদিনন্।
বিশ্বস্ত্রপ্রতারেন বাতক্রেম্মন্তরাপহং।
রদং শীতারিনামারং শীতক্ষরহরং পরঃ।
(* শীতারিরদে শর্করা বিষন্)।

পারদ ১ ভাগ, গন্ধক ১ ভাগ, টব্রুণ ১ ভাগ, খোসাবিহীন জয়পাল ২ ভাগ, সৈন্ধব ১ ভাগ, মরিচ ১ ভাগ, তেঁতুলের ছালভন্ম ১ ভাগ, বিষ ১ ভাগ, এই সকল দ্রব্য একত্র জ্বীররসে একদিন মর্দন করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা বাতশ্লেমজ্বরের ওু শীতঙ্গরের উৎক্ষ্ঠ ঔষধন অমুপান—উফজ্ব ।

क्तरती वरी।

সীসকং রসসিন্দ্রং হরিতালং বিষং সমম্ , একত মর্দ্ধরেৎ সর্বাং স্বাধান্তাং বটাং চরেৎ ॥ অরবিচেছদকালে চ সিত্রা সহ ভোজরেং। বিজিবটাপ্রয়োগেণ অরশান্তিন সংশ্রং॥

শোধিত সীসক, হরিতাল, বিষ এবং রস-সিন্দ্র সমভাগে লইয়া জলে মদ্দন করত সর্বপের ন্যায় বটিকা প্রস্তুত করিবে। জ্বর-বিচ্ছেদ কালে (তুই ঘণ্টা অন্তর) একটি কারিয়া ২০ টা বটা চিনির সহিত প্রয়োগ করিলে জ্বরশাস্তি হয়।

সান্নিপাতিক-জ্বনদৌ।

মোহান্ধ দূর্য্যোর**নঃ**।

গজেশে লগুনাজোভিম জিয়েদ্বামমাত্রকম্। তক্তোদকেন সংযুক্তং নস্তং তৎ প্রতিবোধয়েৎ । মরিচেন সমাযুক্তং হস্তি তন্ত্রাপ্রলাপকম্।

গন্ধক ও পারদ সমভাগে লইয়া রম্থনের রসে এক প্রহর মর্দ্ধন করিবে। রম্পুনের রসের সহিত ইহার নম্ভ দিলে রোগির চেতনালাভ হয়। মরিচ সংযোগে ইহা তক্রা ও প্রলাপ নাশ করে।

নস্থতৈরবঃ।

মৃতস্তার্কতীক্ষায়িং টক্ষণং ঝর্পরং সমস্। সম্বোদসর্কল্পনেন দিনং সংমর্দরেদ্ দৃদৃদ্ । অর্কন্দীরমূতং নক্ষং সন্নিশাতহরং পরস্ ॥ রসদিন্র, তাম, লৌহ, চিতা, সোহাগার থৈ, থর্পর এবং ত্রিকটু, এই দকল দ্রব্য একদিন আকলের আঠায় উত্তমরূপে মর্দন করিবে। আকলের আঠার সহিত ইহার নম্ম দিলে সমিপাতজ্ব নিবারিত হয়।

উনাত্তরসঃ।

রসং এন্ধক তুলাংশং ধুন্ত,রকলজৈর্ক্রনৈঃ।
মন্দরেন্দিনমেকন্ত তুলাং ত্রিকটুকং ক্রিপেং॥
উন্মন্তাংগ্যা রসো নাম নক্তে স্থাৎ সন্নিপাত্রিকং।
সন্নিপাতার্গবে মগ্রং বোহভূদ্ধরতি রোগিণম্।
কর্ত্তেন ন ক্রতো ধর্মঃ কাঞ্চ পুজাং ন সোহইতি॥

পারদ ও গন্ধক সমভাবে (কজ্জলী কবিয়া)- ধুভূশকলের রবে একদিন মর্দ্ধন করিবে। পবে তাহার সমান গ্রিকটুচূর্ব মিশা-ইবে। এই ঔরধের নম্ভ হ'হণ কাংলে পার-পাতজ জ্বর নিবারিত হয়। যে ব্যক্তি সামি-পাতিক রোগিকে রোগমুক্ত করিতে পাবেন, তাহার কোন্ হর্ম না করা হয় এবং তিনি কোন্ সম্মানেরই বা অযোগ্য প্

বমনপ্রয়োগঃ।

কুমারীমূলকথৈকং পিবেৎ কোফজনেন হি। বমনেন জরং হস্তি বিষমং স্কৃতিরওন্ম ।

স্বতকুমারীর মূল ২ তোলা ঈবহুষ্ণ জলের সহিত পান করিলে বমন ২ইয়া বহুকালের বিষম্জর নিবারিত হয়।

অঞ্জনভৈরবঃ।

স্ততীক্ষকণাগন্ধমেকাংশং জয়পালকম্। সংক্রিগুণিতং জন্ধ-নারিণা চ মুণেষিতম্। নেত্রাঞ্জনেন হস্ত্যান্ড সর্ক্রোপক্রবমুদ্ধতম্॥

পারদ, লৌহ, পিপুল ও গন্ধক, প্রত্যেক দ্রব্য সমভাগ, মিলিত সমস্ত দ্রব্যের ৩ ওণ জরপাল ; একত্র মিশাইয়া জামীরের রক্তি মর্দন করিবে। এই ঔষধ ঘষিয়া নেত্রে অঞ্জন দিলে দর্ব্ধ প্রকার উপদ্রবদংশুক্ত দানিপাতিক জ্বর নিবারিত হয়।

কুলবধৃঃ।

গুদ্ধস্থতং মৃতং নাগং মৃতং তাদ্রং মন:শিলা।
তৃথকং তক্ত তুল্যাংশং দিননেকং বিমন্দ্রেং।
রিদেশ্যেভরবারুণ্যাশ্রণনাত্রা বটা কৃতা।
সন্নিপাতং নিহস্ত্যাগু নক্তমাত্রেণ দারুণ্য।
এষা কুলবধুন্যি জলৈছু গ্লী প্রদাপরেং।
(অত তক্ত তুল্যাংশ্মিতি একভাগতুলাম্। যক্তাপি
নক্তমিত্যুক্তং ত্থাপাঞ্জনেন ব্যবহরন্তি বৃদ্ধাঃ।)

রদিদ্র, দীদক, তাত্র, মনংশিলা ও তুঁতে, প্রত্যেকটা তুল্যাংশে লইম রাণালশশার স্বরদে এক দিবদ মদদন করিয়া চণকপরিমাণ বটিকা করিবে। জলে ঘর্ষণ করিয়া ইহার নস্তা লইলে সন্নিপাতজ্ব নিবারিত হইবে। (মুলে নস্তের উল্লেখ থাকিলৈও বৃদ্ধ বৈছগণ কুলবধুরস অঞ্জনার্থ প্রয়োগ করিয়া থাকেন।)

ঙ্গীবেতালো রসঃ।

রসং গন্ধং বিনদ্ধৈব মরিচালং সমাংশিক্ষ ।
মন্দরেচিছলয়া তাবদ যাবজ্ঞায়েত কছলম ॥
গুল্পার্ক্তমানে হরেদ্বাদশসংক্রক্য ।
সাধাসাধ্যং নিহন্তাপ্ত সন্নিপাতং ফ্লারুপ্য ॥
দরপত ক্রিদুলি যন্ত লোচনে ভাগতারকে ।
চলিতে চেল্লিয়গামে বেতালং বিনিযোজ্যেং ॥
য়ানেশু:লিগুদেহেনু মোহগ্রেস্থে দেহিশু ।
দাতুমইতি বেতালং যনদূতনিবারকম্ ॥
(চলিতে খবিষয়গ্রহণাশতে ।)

পারদ, গন্ধক, বিষ, মরিচ ও হরিতাল তুল্যাংশে গ্রহণ করিয়া জলে মর্দন করত ১ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা সেবনে সাধ্যাসাধ্য দ্বাদশপ্রকার সান্নিপাতিক জর ও ডজ্জনিত মুঠ্ছাদি উপশমিত হয়।

ব্রহারস্থরসঃ।

রসাত্রং গন্ধকং তালং হিঙ্গুলং মরিচং তথা। টক্রণং সৈন্ধবোপেতং সর্বাংশমমূতং তথা। সর্বপাদসমোপেতং মহিবীপিত্তমর্দিতম্। ব্রহ্মরক্ষে, প্রযোক্তবাং সন্ধাসক্ষানসক্ষমে। সহপ্রকলগৈঃ স্থানং কেপনং চন্দ্রনাদিভিঃ। ইকুমূলারসং ভোজাং তক্রভক্তং ব্রেপিতম্।

পারদ, গন্ধক, অভ্র, হরিতাল, হিন্তুল, মরিচ, সোহাগার থৈ ও সৈন্ধবলবণ প্রত্যেক তুল্যাংশ, সর্ব্বসমান বিষ; এই সমুদয় দ্রব্য, সমষ্টিব চতুর্থাংশ মহিন্নীপিত্ত দ্বারা মর্দ্দন করিবে। ব্রহ্মারন্ধ্রে একটু ক্ষত করিয়া এই ঔসধ লাগাইবে। ইহাতে সান্নিপাতিক বিকারে অজ্ঞানতাদোষ বিনষ্ট হয়। মন্তকে প্রচুর শীতলজল সেক করিবে ও রোগিকে ইক্ষুপ্রভৃতি ঠাণ্ডা জিনিষ ব্যবহার করিতে দিবে।

বৈলোক্যস্থলরে রসঃ।
বসগন্ধকরাম বিশ্ব প্রত্যাকং কজ্ঞলীকৃতে।
পক্রক মুবলী টেব পুন্ত বকেশরাজকন্।
দেবদালী জয়ন্তী চ তথা মঞ্কপর্শিকা।
এবাং পত্ররসৈং শাগৈং শিলায়াং প্রয়েৎ পুনং।
শোষ্মিয়া বটা কান্যা স্থনেকা রাজিকোপমা।
জিনোষজং জরং হন্তি তথা প্রলকোষ্টকন্॥
১প্তে তু নারিকেলস্থ জলং দেমং প্রমন্থতঃ।
ব্রোক্যস্থলরে নাম স্থিপি ১২নে রসঃ॥

কজ্লা ২ মাধা (। আনা) বহিয়া
কুড় চি, তালমূলী, ধুড়া, কেণ্ডরে, ঘোষালতা,
জয়স্তী এবং থানকুনী, ইহাদের প্রত্যেকর
পাতার অর্জতোলা পরিমিত রসে ভাবনা
দিয়া শেতসর্যপ্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা
সেবনে সান্নিপাতিকজ্ঞর প্রশ্মত হয়। এই
ঔষধ সেবনে গরম বোধ হইলে নারিকেলের
জল থাইতে দিবে।

সোভাগ্যবটী।

সোভাগ্যাসূতজীরপঞ্চলবণব্যোবাভয়াক্ষামলানিক্চল্রাঅকগুদ্ধগদ্ধকরসানেকীকৃতান্ ভাবরেৎ।
নিপ্ত তীযুগভূকরাজকরবাপামার্গপত্যোরসংপ্রত্যেকবরসেন সিদ্ধগুড়িকা হক্তি ত্রিলোবোদয়ন্ ।
বেবাং শীতমতীব দেহমধিলং ব্যেকজবার্তীকৃতং
নিদ্রা ঘোরতরা সমস্তকরণব্যামোহমুদ্ধং মনঃ।
শূল্যাসবলাসকাসসহিতং মূর্জারচীভূজ্বরং
তেবাং বৈ পরিহত্য মৃত্যুবদনাৎ প্রত্যানকেক্জীবনন্।

সোহাগার থে, বিষ, জীরা, দৈন্ধব, করকচ, বিট, দচল ও দান্ডার লবণ, শুঠ পিপুল,
নারচ, হরীতকী, বহেড়া, আমলকী, অস্ত্র,
গন্ধক ও বদ, এই দকল দ্রব্য একত্র মর্দন
করিয়া নিদিন। (ব স্তরে একদিলিকা) পরে
ভূকরাজ, কেণ্ডর্লে, বাদক ও অপামার্গ, ইহাদের পাতার রুদে ভাবন। দিয়া (২ রতি)
পারিমাণ বিটকা করিবে । ইহা দেবনে ঘার
নিজ্ঞাদি উপদ্রবন্ত্রক সান্নিপাতিক বিকার নিবারিত হয় ।

ठको।

রসং গদ্ধং বিষধৈ ধৃত্বং মরিচং তথা।
শোধিতক তথা তালং মান্দিকক সমাংশিকস্॥
দত্তীকাৰেন সংভাব্য শুঞ্জামাত্রা তু চক্রিকা।
সাধ্যাসাধ্যান নিহস্তাতি সম্লিপাতাংস্তরোদশ॥

পারদ, গন্ধক, বিষ, ধুত্রাবীজ, মরিচ, হরিতাল ও অর্ণমাক্ষিক, প্রত্যেক তুল্যাংশ গ্রহণ করিয়া দস্তীর কাথে ভাবনা দিয়া : রতি মাত্রায় বটিকা করিবে। (অমুপান—আদার রস)। ইহা সেবনে সাধ্য এবং অসাধ্য তুয়ো-দশ প্রকার সালিপাতিক জর নিবারিত হয়।

ठकी।

(মতান্তরে।)

শক্তো: কণ্ঠবিভূষণং সমরিচং তালং তথা পারদং দেবীবীজযুতং ফুশোধিতমিতং জৈপালবীজোত্তমন্। দন্তীমূলযুত্তং সমাগধিকলং সর্বং: সমাংশং নয়েৎ তৎ সর্বাং পরিমর্দ্ধা চার্কুজরসৈপ্ত প্রাপ্রমাণং রসন্। দন্তাদ্যোরতরে ত্রেরোদশবিধে দোবে চ চক্রাস্থ্যং ভক্রাদাহসমন্বিতে চ ত্বরা সম্পীভিতে মানবে।

বিষ, মরিচ, হরিতাল, পারদ, গন্ধক, জয়পালবীজ, দ্সীমূল ও পিপুল, এই সমুদায় ক্রব্য সমভাগে গ্রহণ করিয়া আদার রসে ভাবনা দিয়া ১ রতি মান্তায় বাটকা করিবে। ইহা সেবনে তক্সা, দাহ ও পিপাসা মুক্ত অয়োদশ প্রকার সন্নিপাত নিবা-রিত হয়।

আনন্দভৈরবী বটী।

বিবং ত্রিকটুকং গদ্ধং উদ্পাং মৃতশুলকম্।
প্রস্তুত্ত চ বাজানি হিন্দুলং নবমং স্মৃতন্ত্র
এতানি সমভাগানি দিনৈকং বিজয়ারদৈঃ।
মর্দ্দরেচাশকান্তা তু বটিকানকভৈরবী।
ভক্ষরিখা পিবেচাকু রবিমূলকধারকম্।
সব্যোধং ইতি নো চিত্রং স্বান্তাতং স্কারণম্য।

বিষ, শুঁঠ, পিপুল, মরিচ, গন্ধক, সোহা-গার শৈ, তাম, ধুত্রার বীজ ও হিন্নুল, এই সম্দয় তুল্যাংশে লইয়া সিদ্ধির কাথে ভাবনা দিয়া চণকবৎ বটিকা করিবে। অমুপান—শুঁঠ, পিপুল ও মরিচ চূর্ণ সংৰুক্ত আকল্মমূলের কাগ। ইহা সেবনে দাকুণ সমিপাত নিবারিত হয়।

য়তোখাপনে। রসঃ।

শুদ্ধং স্তং দ্বিধাগদ্ধং শিলা চ বিষহিদ্পুলন্।

মৃত * কান্তাত্ৰতান্ত্ৰায়কালকং মান্দিকং সমন্॥
আন্তেত্ৰসদ্ধীন-চাঙ্গেরীণাং রসেন চ।

নিশু গুহুণ্ডিগুণ্ডোশ্চ জবৈন দ্বিং দিনজ্ঞয়ন্।

কক্ষা তু ভূধরে পাচ্যং দিনাপ্তে তৎ সমৃদ্ধরেও।

চিত্রকন্ত ক্ষারেণ মন্দিরেও প্রথমন্ত্রমন্ত্রইও।

সাম্প্রাক্রপান স্তান্ত্রস্থাপানে রসে।

প্রাক্রপান স্তান্ত্রস্থাপানে রসে।

পি:ড়তং সন্নিপান্তন গতং বাপি যমালন্ত্রন্।

তৎক্ষণাজ্ঞীণয়ত্যের পঞ্চাং ক্ষারেঃ প্রযোজ্ঞরেও।

(* কান্ত্রিনিত অল্বিশ্বণন্।)

পারদ ১ ভাগ, গন্ধক ২ ভাগ, মনঃশিলা, বিষ, হিন্দুল, অভ্র, তাত্র, লৌহ, হরিভাল ও স্বর্ণনাক্ষিক প্রত্যেক এক এক ভাগ, এই সমৃদ্য একএ করিয়া অমবেতস, গৌড়ালেব, আমকল, নিসিন্দা ও হাতিওঁড়া, ইহাদের প্রত্যেকের রূপে ৩ দিন করিয়া ভাবনা দিয়া ভূদর্যমে এক দিবস পাক করিবে। পরে চিভামূলের কাথে এই প্রহর কাল মর্দান করিয়া মাষকলায় সদৃশ বটা করিবে। অমুপান—কর্পুর, হিন্ধু ও ত্রিকটুচুর্ল সংযুক্ত আদার রস। ইহা সেবনে খোর সমিপাত জন্ধ উপশ্যতি হয়।

সন্ধিপাতভৈরবো রসঃ।

হিসুলভা বিশুদ্ধভা সার্দ্ধকোলচতুষ্ট্রম্।
গক্ষকার বিষদ্যাপি প্রত্যেকং তোলকদ্বয়ম্।
সমাযকদ্বাদৈন কনকাৎ ভোলকজ্রয়্।
মাযেকাধিকভোলৈকং টঙ্গণার তথৈব চ।
সংমন্দ্র জন্মীররদৈর্বটান্ছায়াবিশোবিভাঃ।
ওঞ্জৈকপরিমাণান্ত কারয়েৎ কুললো ভিষক্॥
একান্ত ভক্ষমেৎ তাসাং গোলারিদ্বার্দ্রকভবৈঃ।
ঘোরে তেলেবে দাতবাঃ সন্নিপাতকভিন্নবঃ।

হিশুল ৪॥০ তোলা, গন্ধক ২ তোলা

> মাধা, বিষ ২ তোলা ২ মাধা, ধুতুরাবীজ

০ তোলা, সোহাগার থৈ ১ তোলা ১ মাধা,
এই সকল জব্য গোড়ালের্ন রসে মর্দন করিয়া

১ রতি মাত্রায় বটিকা করিবে এবং তাহা ছায়াতে
৩% করিয়া লইবে। অনুপান—আদার রস।

ইহা স্বেনে বোরতন স্যাপাত জ্ব উপশ্যিত

হইয়া থাকে।

সূচিকাভরণো রসঃ।

র্নগন্ধকনাগণ বিষং স্থাবরজঙ্গনম্।
নাৎস্যবারাহ্নায়্র-চ্ছাগপিত্তৈক ভাবরেং।
স্চিকাভরণো নান ভৈরবেণ প্রকার্তিতঃ।
স্চিকাগ্রেণ দাতব্যঃ সন্ত্রিপাতকুলাস্তকঃ॥
(মাত্রেয়া আর্দ্রকরনেন খাদেং। সাতিসারে সন্ধিগাতে বিশেষতো দেয়ঃ।)

পারদ, গন্ধক, সীসক, কাঠবিষ ও রুষ্ণসপবিষ; এই সমুদ্য একএ করিয়া রোহিত
মংস্তের পিতে, শুকরের পিতে, ময়ুবের পিতে
এবং ছাগপিতে যথাক্রমে ভাবনা দিয়া কুদ্র
সর্বপ প্রমাণ বটিকা করিবে। অন্তপান—আদার
রস। ইহা সন্নিপাতের উৎকৃষ্ট ঔষধ। (অতি
সারসংষ্ক্র সন্নিপাতে এই ঔষধ বিশেষ ফলপ্রদ। ঔষধ সেবনাস্তে মস্তকে শাতল জল
দিবে এবং অভাভা শৈতা ক্রিয়া করিবে।)

সূচিকাভরণো রসঃ।

(মঙান্তরে।)

অমূতং গরলং দার সর্ববেডুলাক হিন্দুলন্। পঞ্চিত্তেন সংমধ্যে সর্বপান্তাং বটাং চরেৎ । বটিকা স্থানিকাশ্রেণ সন্নিপাতকুলান্তকুৎ। তিলফ তিলতৈলক ভোজনং দ্বিভক্তকম্। (সহস্রশো দৃষ্টকলেয়ং বটিকা)।

কাঠবিষ, কৃষ্ণসপ্তিষ ও দারমুক্ত প্রত্যেক ১ ভাগ ও হিন্দুল ৩ ভাগ ; একত্র করিয়া রোহিতমংস্থা, বরাহ, মহিষ, ছাগ ও ময়ুর, ইহাদেব পিত্তে ষথাক্রমে এক এক দিন ভাবনা দিয়া সর্বপাক্ততি বটিকা করিবে। অমুপান— ভাবের জল। ইহা সেবনাস্তে তিলতৈল মর্দ্দন ও অহ্যান্ত শীতলক্রিয়া করা বিধেয়। এই স্তিষধ সেবনে বিকারগ্রস্ত মৃতপ্রায় রোগিকে স্বস্তু ইইতে দেখা গিয়াছে।

র্হৎসূচিকাভরণে। রসঃ।

রদগন্ধকনাগলে বিশং স্থাবরক্ষণন্।
মাংসামাহিষমায়ন-ক্ষাগপিত্তৈবিভাবরে ॥
স্টিকাভরণো নাম ভৈরবেণ প্রকীপ্রিতঃ।
দাওবাঃ স্টিকাল্রেণ সমঃপেটাজনেন চ ।
ক্রেমানগামিপাতে বিস্চামতিদারকে।
ক্রিমােবলে তথা কাসে দাপায়েহ কুশলো ভিষক্ ॥
পমঃপেটাশতং দক্তাদ্ ভোজনং দক্তিককন্।
তথা স্থাজ্জিতং মাংসং লেপনং তিলচন্দনৈঃ।
বোগিণাে যহ প্রিমং দ্রবাং তলৈ তচ্চ প্রদাপায়েহ ॥
পারদ্, গামক, সীদা, অল্, কাঠবিষ

পারদ, গন্ধক, সীদা, অত্র, কাঠবিষ ও ক্লফদর্পবিষ তুলাংশে গ্রহণ করিয়া পূর্ববিং ময়ুর ও ছাগ পিত খারা মংস্ত্র. মহিষ, ভাবনা দিয়া সর্ঘপাক্ততি বটিকা করিবে। অনুপান—নাবিকেলজন। ইহা সেবনে ত্রিদোষ**জগু** ত্ৰয়োদ শ প্ৰকাৰ স্লিপাত. উপশ্যিত কাস, বিহুচিকা ও অভিসার সেবন করাইয়া রোপির এই ঔষধ গাত্রে ভিলভৈল ও চন্দনাদি লেপন করিয়া দিবে এবং নারিকেল, দ্বি ও রোগির প্রিয় আহার্য্য সকল সেবন কবিতে দিবে।

মৃতসঞ্জীবনে। রসঃ। গুদ্ধস্থাং বিধাসধাং বলে ৩ং কজনীকৃতম্।

অভ্রনৌহকদ্বোর্ভন্ম তাত্রভন্ম সমং সমস্থ।
বিষতালবরাটা চ শিলা হিন্দুলচিত্রকম্।
হবিত্তভী চাতিবিধা জ্যেষণং হেমমান্দিকস্থ।

চূৰ্ণং বিমন্ধরেদ্রোবৈরার্জকস্য বিনত্তরস্থ।
নিশু তীবিজয়াত্রাবৈত্রিদিনং মর্দরেৎ পুনঃ ।
কাচকুণ্যাং নিবেস্থান্থ বালুকাবন্তকে পচেৎ।
বিবামান্তে সমৃদ্ধৃত্য মর্দরেদার্জকন্তবৈঃ ।
মৃতসঞ্জীবনো নাম রসোহয়ং শহরোদিতঃ।
মৃতোহপি সমিপাতার্জো জীবত্যেব ন সংশয়ঃ ॥
(নাতঃ পরতরঃ কন্টিৎ সমিপাতহরো রসঃ ॥)

পারদ ১ ভাগ, গন্ধক ২ ভাগ, কজলী করিয়া ইহার সহিত অভ্র, লৌহ, তাম্র, বিষ, হরিতাল, কড়িভম্ম, মনঃশিলা, হিঙ্গুল, স্বর্ণ-মাঞ্চিক, চিতামূল, হাতিভাড়ার মূল, আতইচ, ভঁঠ, পিপুল ও মরিচ (কাহারও মতে ত্রিকটু মিলিত > তোলা) প্রত্যেকেই গন্ধকতুলা; व्याना, निमिन्ता এवः मिकि टेटाएत তিন দিন করিয়া ভাবনা দিয়া ও।মদন করিয়া কুট্টিতবন্ধ ও মৃত্তিকা দ্বার: সংশিপ্ত কাচকুপীতে (শিশিতে বা বোতলে) উপরি লিখিত ঔষধ স্থাপন করিয়া বালুকায়ন্তে চুই প্রহর কাল পাক করিবে। পরে ঔষণ বাহির করিয়া আদার রসে পুনরায় ভাবনা দিয়া (১ রতি প্রমাণ) বটকা করিবে। (আবগুকবোধে ২ রভি যাতাতে সেবনীয়। ঔষধদেবনে অভিবিক্ত গরম হইলে শীতলক্রিয়া বিনেয়।) ইহা সেবনে মৃত্থায় সন্নিপ্তিগ্ৰস্ত রোগীও সুস্তা লাভ করে। (সন্মিপাভন্ন ঔষধের মধ্যে এইটি শ্রেষ্ঠ।)

পানীয়-বটিক। ।

রসমাবকচথারি ইষ্টকাঞ্চওকে গ্রহঃ।
শোধায়া ততঃ লোধাং তীক্ষপর্নে তথার্থকে
শ্বর্ধপুরুরমন্ত্রে চ বৃদ্ধদারক্সবে তথা।
কক্ষকানিজসত্ত্বে চ রসশোধনন্ত্রম্॥
গন্ধকং রসভুপান্ত প্রকাল্য তভুলামুনা।
কৃষা তৈলসমং দর্ব্ব্যাং নির্ব্বাপ্য চিত্রকক্সবে॥
ছাভ্যাং কজ্ঞলিকাং কৃষা নৌহচুর্পদ্য মাবকম্।
ম্বর্ধনাক্ষিকমণি তত্র লৌহসমং দদেং॥
কৃষা কটকবেধান্ত তাত্রং কজ্জললেপিতম্।
মুহর্জং ধমাতজ্ঞারং ক্রন্ডং চুর্গ্ত্বমাধ্যাং॥
একীকৃত্য তু তৎ সর্বং ততঃ প্রস্তর্বান্তন।
মর্দ্ধিরং ভাত্রমাধ্যাং॥
বিশ্বিত্বতা তু তৎ সর্বং ততঃ প্রস্তর্বান্তন্ত্র।
মুব্রিকং ভাত্রমাধ্যাং॥

প্রথমে কেশরাজন্চ দ্বিতীয়ে গ্রীমমুলর:। তৃতীয়ে ভূঙ্গরাজক চতুর্থে ভেকপর্ণিকা। পঞ্চমে চ নিফুন্দার: যঠে চ রসপুর্ত্তিকা। সপ্তমে পারিভক্তক অষ্টমে রক্তচিত্রক: । শক্ৰাপ্ৰঞ্চ নবমে দশমে কাক্ষাচিকা। একাদশে তথা নীলা ছাদলে হস্তিগুভিকা। অমীবামৌবধানান্ত প্রত্যেকন্ত পলক্রবম । মৰ্দিয়েৎ তু প্ৰয়ত্ত্বেন ছাদশাহেন সাধক: । ততঃ পারদমানস্ত দকা ত্রিকট্গুণ্ডকম্। বটিকাং রাজিকাতুল্যাং ছায়াগুলাং সমাচরেৎ । ততঃ শস্কলে পাত্রে কর্ত্তব্যা বটিকা ভিন্নস্ । শরাবে শ্রাপাত্তে বা কুতা সলিলগোলিতম্ ১ অত্যন্তদোষত্র্টায় জ্ঞানশৃস্থায় রোগিণে। উষ্টবোনিং সমভাৰ্চ্চা প্ৰদন্তাদ বটিকান্বয়ম। ঢৰুয়েৎ তং ততঃ পশ্চান্তরং স্থলপটাদিভিঃ। মলমুক্রাগমাৎ সন্তঃ স সাধ্যো ভব্তি ফ্রতম্ ॥ দধারম্ভ ততো দত্যাৎ পিবেদ্বারি যথেচছয়া। দস্তাদ্বতিহরং তৈলমভ্যঙ্গায় সদৈব হি । চিরহ্বরে পিবেছারি পঞ্চমূলাপ্রসাধিত্য। গ্রহণ্যাং রক্তপাতে চ পিবেদতিবিষাং গদা ॥ পিবেৎ পর্পটকং বারি খোনে কম্পজনে ভথা। তথা হ্বরাতিস'রে চ জীরকসা জলং পিবেৎ॥ মন্দাগ্রে কামলায়াক সংগ্রহগ্রহণাগদে। कारम श्रीरम मना क'शा शानीवविका दिवस ॥

পারদ ৪ माया थहता अथग्टः ইहेक्र्प মৰ্দ্দ কবিবে। পরে ইউকচ্ব ফেলিয়া দিয়া কামরাঙ্গা, আদা, কনকপুতুরা, **বীজতাড়ক**-মূল ও গুতকুমারী, ইংলের প্রত্যেকের রুসে মদ্দম করিবে। অপর পাতে ৪ মাষা গন্ধক ভণ্ণদলে প্রকালন করিয়া লৌহপাত্রে অগ্নি সম্ভাপে গলাইবে; গালত গন্ধক চিতাপাতার রস দিয়া নির্মাপিত করিবে। অনস্তর উক্ত পারদ ও ৪ মাষা গন্ধক একতা কজ্জলী করিয়া স্ক্ষ ও শোধিত তাম্রপত্রে ঐ কজ্জলী লেপন করিবে। কজ্জলীলেপি ত তাহাপত্র পাক করিলে মুহর্তুমধ্যে ভশ্ম হইয়া যহিবে। লোহ ১ মাধা, স্বৰ্ণমাঞ্চিক ১ মাধা ও উক্ত প্রকারে ভশ্মীভূত তাম ৪ নাবা একত্র তাম দত্তে মর্দ্দন করিয়া কেন্ডরে, গিমে শাক, ভূপ-রাজ, থুলকুড়ি, নিসিন্দা, লভাফট্কী, নিম-পাতা, লাল চিতা, সিদ্ধি, কাকমাচী, নীলর্ফ র হাতিশুঁডা, ইহাদের প্রত্যেকের ১ পল রসে যথাক্রমে ১২ দিন ভাবনা দিবে। পরে তাহাতে ত্রিকট্টুর্ল ৪ মাধা মিশ্রিত করিয়া উত্তমরূপে মৰ্দন পূৰ্বক রাইসৰ্বপাক্ততি বটিকা করিবে। সান্নিপাতিক জ্ব অজ্ঞানাবস্থায় তুই সেবন করাইবে। ঔষধ-সেবনান্তে বাটকা বাতহর তৈলাদি মর্দন ও শরীর করিবে। ইহার অতুপান—চিব্লুরে মুলীর কাথ, রক্তগ্রহণীতে আতইচের কাথ, ক্ষেত্রপাপূড়ার বোরতর কম্পজ্বরে রস ও জরাতিমারে জীরা ভিজার জল।

অনাথনাথো জগদেকনাথঃ জ্বীলোকনাপঃ প্রথমঃ প্রসন্ধঃ।
জগাদ পানীয়বটাং ক্পট্বীং তানেব বক্ষামি গুরুপ্রসাদাৎ ।
জয়াকস্বরসংক্র নিগু ভৌ বাসকং তথা।
বাট্যালকং করঞ্জন্ত স্থ্যাবর্ত্তকচিত্রকো ॥
বন্ধাবনকার্পাসাক ভ্রুত্রাজং বিনিক্ষিপেৎ।
দল্ভী চ ত্রিবৃত্তা চৈন তথারথধপত্রকন্ ॥
সহদেবামরং ভাটী তথা ত্রিপুরভটিকা।
মভুকপ্রী পিমল্যো ভোগপুল্যকবায়না।
ভ্রম্তাকনী কেবরাজন্তপা যোজনমন্ত্রিকা।

সিদ্ধফলায়াঃ পানীয়বটিকায়া বিধিঃ।

আসারণেতি বিগ্যাতো ধুকুরং কনকন্তথা।
ত্রেলোক্যবিজয়া চেব তথা বেতাপনাজিতা।
প্রত্যেকং কাধিককৈব রসমাকুষ্য ভাজনে ॥
একেকথ রসং দরা মর্দ্যয়েকৌহনওতঃ।
চঙাতপে চ সংশোষা ক্ষীরং তরে পুনঃ ক্ষিণেও ॥
সুহীকীরকার্কভ্রমং বইছম্বং তবৈব চ।
প্রত্যেকং কাধিকং দরা মর্দ্যয়েচে পুনঃপুনঃ॥
স্মর্দ্দিতক তং জ্ঞারা যমা পিগুত্মাগতন্।
মন্যাণ্যতানি সংচূর্ণ বস্ত্রপুতানি কাররেও॥
দক্ষবীরকাতিবিযাং কোচিলামন্ত্রকং তথা।
পারদং শোধিতকৈব গন্ধকং বিষমাধুরম্॥
হরিতালং বিষধিধন মাক্ষিকঞ্চ সনঃশিলা।
প্রত্যেকক্ষ চত্রাবং সর্বং চণীক্রতক্ত তং ॥

প্রক্ষিপ্য মন্দরেৎ সর্বাং শোষয়িতা পুনঃপুনঃ। সুমন্দিতক তং দৃষ্ট্র চাঙ্গেরীস্বরসেন চ॥

উত্থাপ্য ভেষজং দষ্ট্রা যদা পিগুড়মাগতম।

তিলপ্রমাণা শুড়িকা: কারয়েরতিমান্ ভিষক ॥

ত্রিদোষজনিতো বৈষ্ণ-মুক্তোহপি বহুসমত:।

सञ्चरेनदीनुकारयरिः शङ्कारखा मौनपर्यनः ।

সংপ্রা করণাধারং প্রণম্য চ থসপ্ণম্।
শরাবে বারিণা মৃষ্ট্রা বিংশতিং বিটকাঃ পিবেং ॥
গীততদ্ভেরজং পশ্চাদ্ বলৈরাচ্ছাদরেররম্।
রসলগ্যং বপ্ত্রু ছিল দন্তাছারি স্পীতলম্॥
শরাবপ্রতিমং বারি পাতবাঃ প্রংপুনঃ।
সন্নিপাতজ্বকৈর দাইকৈর স্থাক্রণম্বাং জরেং।
ম্বরেরাগবিবল্লে জু দাতবাঃ ক্রারশব্তম্॥
পাক্তবক্তকাথং দাতবাঞ্জ পুনংপুনঃ।
পানীয়বটিকা হোবা লোকনাথেন নির্মিতা ॥
লোকানাম্পকারায় সর্বসিদ্ধিপায়িনী॥

জয়ন্তী, আকন্দ, নিসিন্দা, বাসক, বেড়েলা, ডহরকরঞ্জ, হড়্ছড়ে, চিতা, বামুনহাটী, বন-কার্পাস, ভূঙ্গরাজ, দস্তী, তেউড়ী, সোন্দাল-পত্র, ডানকুনি, অমরকন্দ, ভাট, বড় ভাট, থানকুনি, পিপ্লণী, গজপিগ্লণী, ঘলঘসিয়া, কাকমাচী, কুচ, কেগুর্ত্তে, হাফরমালী, আলান্ধু, কনকধুভূরা, সিদ্ধি ও খেত অপরাজিতা: ইংদির প্রভাকের স্বর্ধ মথাক্রমে এক এক কর্ব (২ তোলা) লইয়া প্রস্তরপাত্তে লোহ-দণ্ডে মৰ্দ্দিত ও আতপে শুক করিয়া লইবে। পরে উহার সহিত ক্রমে সিজের আঠা, আক-ন্দের আঠা ও বটের আঠা২ তোলা পরি-নাণে মিশ্রিত মর্দন করিয়া করিবে এবং পিণ্ডাক্বতি করিবে। অনস্তর পারদ॥• আধ-ভোলা গন্ধক ॥০ আধ ভোলা একতা কজ্জলী করিয়া ঐ পিণ্ডের সহিত মর্দন করিবে। পরে দগ্ম হীরক, আতইচ, কুঁচিলা, অত্র, শুলী-বিষ, হরিতাল, গরল, স্বর্ণমাক্ষিক ও মনঃশিলা প্রত্যেক ৪ মাধা (॥০ তোলা) করিয়া লইয়া পূর্বোক্ত দ্রবেরে সহিত মিলিত করত আম-রুলের রসে মন্দন করিবে ও তিলপ্রমাণ বটিকা করিবে। ২•টা বটিকা আদার রদে বা জলে গুলিয়া সেবনের নিয়ম কথিত আছে, কিন্ত এখনকার সময়ে ২৷৩ বটিকা সেবন করান হয়। এই ঔষ্প সেবন করাইয়া পুন:পুন: শীতল জল পান করিতে দিবে। সালিপাত্তিক **জ**ব ও অন্তান্ত রোগ সত্বর বিনষ্ট

হয়। মৃত্রক্বচ্ছু থাকিলে হগ্ধ ও পঞ্চভূণমূলের পাচন সহ এই ঔষধ সেবনীয়।

প্রাণেশ্বরো রসঃ।

শুদ্ধপুতং তথা গদ্ধং পুতার্দ্ধবিষসংযুত্ধ। * সমস্তং মর্দ্ধরেৎ তাল-মূলীনীরৈজ্ঞাহং বৃধঃ ॥ পূরয়েৎ কপিকান্তল্চ + মুদ্রয়িত্বা বিশোষয়েৎ। সপ্তভিমু ব্রিকাবল্রৈবে ইয়িতা ত শোবয়েৎ। পুটেৎ কুন্তীপ্রমাণেন স্বান্ধনীতং সমুদ্ধরেৎ। গৃহীত্বা কপিকামধাশ্রিদ্ধরেচ্ছ দিনং ততঃ। অজাজী জীরকং হিন্তু-সর্জ্জিকটিঙ্গণৈযু তম : ত্তগ ভব: পঞ্চলবৰ্ণং যুদকারো যুমানিকা । মরিচং পিম্বলী চৈব প্রভাকক সমাংশতঃ। এবাং ক্যায়েণ পুনর্ভাবয়েৎ সপ্তধাতপে ॥ নাগবল্লীদলযুত্তং পঞ্চপ্তঞ্জং রদেশ্বর্ম। দ**ন্তান্নবন্ধনে ত**ীব্রে কোফং বারি পিরেদ্য 🖟 প্রাণেখরো রসো নামা সমিপাত্রকেপ্রতি । শীত**ত্তরে** ধাহপুর্বে**র গুলে** শুলে ক্রিদোবতে ॥ বাস্থিতং ভৌজনং দন্তাৎ কুথাক্তব্দনলেপন্ম। ভাগে।দ্রেকস্ত শমনং বলাধিষ্ঠানকারকম। ভবেচ্চ নাত্র সন্দেহঃ স্বাস্থ্যক লভতে নবঃ॥

পারদ ও গন্ধক প্রত্যেক ১ তোলা, বিয ॥• আধ তোলা, এই সকল দ্রব্য তালমলীর রসে ৩ দিন মর্দ্দন করিবে। পরে মৃত্তিকালিপ্ত বন্ত ছারা কাচকুপিকা সাতপুরু বেষ্টন করিয়া ঐ কৃপিকায় ঔষধস্কাপন করত মুখ বন্ধ করিবে এবং করিয়া লইবে। পরে কুন্তীপুটে ঐ কুপিকা রাখিয়া পুট দিবে। শীতল হইলে কৃপিকা উদ্ধৃত করিয়া ঔষণ বাহির করিয়া লইবে। অনন্তর ক্ষজীরা, জীরা, হিঙ্গ, সাচিক্ষার, সোহাগার থৈ, গুগুগুলু, লবণ, যবকার, যমানী, মরিচ ও পিপুল, এই সকল দ্রব্য মিলিত ঔষধের সমভাগ লইয়া ইহা-দের সর্বসমষ্টির দশগুণ জুণে অট্টমাংশ কাথ করিয়া তাহা খারা ৭ বার ভাবনা দিয়া পাঁচ মতি প্রমাণ বটিকা করিবে। পানের সহিত সেবা। ইহা সন্মিপাতজবের উৎক্রই ঔষণ। তীব নবজ্বরে উষ্ণছল সহ দেবনীর। যে জরে প্রথমে

মৃতাত্রং বিষদংযুত্তিতি বা পাঠঃ ।
 কুপিকেতি কাচকুপিকা ।

দাহ হইয়া পরে শীত হয়, সেই জ্বান্তর প্রাণেশর ব্যবস্থেয়। ইহা শারা অন্তান্ত অনেক রোগ উপশমিত হয়। এই ঔষধ সেবন ক্রাইয়া রোগির আকাজ্জান্ত্যায়ী ভোজন দিবে এবং তাহার গাতে চন্দ্রনাদি লেপন করাইয়া দিবে। তাহাতে ভাপাধিক্য নিবাবিত ও বল বর্দ্ধিত হইবে এবং রোগী স্বাস্থ্য লাভ করিবে।

রসরাজেন্দঃ।

পলং শুদ্ধন্ত শুভ্যা পলং তাত্রমন্ত্রোক্তর ।
অত্রং নাগং পলং বঙ্গং পলং গন্ধকতালকম্ ॥
পলং শুদ্ধবিশং চূর্যং সর্ব্রন্ধেকত্র কারপ্রের ।
মন্দিয়ের কারনাচাশ্রুত আর্দ্রিকসা রসেন চ ॥
মারসারীরিমানের-চছুলামান্ত্রিপিপ্রকৈঃ ।
মন্দিয়ের রসরাজেন্দো ধরপ্রবিপ্রকাশিতঃ ॥
শুলামারের রসরাজেন্দো ধরপ্রবিপ্রকাশিতঃ ॥
শুলামারের রসরাজেন্দো বিতর বারি মন্তর্কে ॥
শুলারো যদা দাহন্তদা দেয়া চ শকরা ॥
ভোত্রম দ্বিসংযুক্তং বারনেকপ্ত দাপরের ॥
সম্পরের হতঃ কামঃ কেশবেন চ দানবাঃ ।
পাবকেন যধা শীত্রমনেন চ তথা অরঃ ॥

পারদ, তাত্র, লোহ, অল্ল, দীদা, ৰঙ্গ, গদ্ধক, হরিতাল ও বিষ, এই সমুদায় প্রত্যেক ১ পল করিয়া লইয়া, একত্র কাকমাচীর ও আদার রসে মর্দ্ধন করিয়া রোহিত মৎস্থা, বরাই, ময়ুর, ছাগ ও মহিষ, ইহাদের পিত্তে যথাক্রমে ভাবনা দিবে, পরে ত্রিকটুর কাথে মন্দন করিয়া ১ রতি প্রমাণবাটকা করিবে। অনুপান—তুলগা পাতার রস। ঔষধ সেবনাস্তে রোগির মস্তকে শীতল জল ঢালিবে এবং অত্যস্ত দাহ উপস্থিত হউলে ঢিনির পানা ও একবার নাত্র দবির সহিত জয় ভোজন করিতে দিবে। এই ঔষণ সেবনে দাল্লিপাতিক জয় উপশ্যিত হয়।

সেন্শৈত্যারিরসঃ।

ভাত্রগুঠাকমুলানি দিনিকাণি পূথক্ পূথক্। একাতঃ পঞ্চৰণাং পলং পিষ্টুা পুটং দদেং। গন্ধেশশঝ্ভস্মানি বেদনিক্ষমিতানি চ।
দেবদালীরসৈঃ পিষ্টু়া ত্রিদিনং কেন্দিপিত্ততঃ ॥
বেদশৈত্যাপকুত্তার্থং বলমাত্রাং প্রযোজ্যেৎ।
দগ্গ স্থান্দর্যেৎ পাত্রে জলবোগং সমাচরেৎ।
পথাং মৃতং সিকু মুদ্যা ইকুঃ গর্জ্জুরগোন্তনী॥

তামভন্ম, শুঠ ও আকলমূল প্রত্যেক ২ তোলা, পঞ্চলবণ নিশিত ৮ তোলা, একত্র মর্দন করিয়া পুটপাক দিবে। পরে তাহার সহিত পারদ, গল্পক ও শহাভন্ম প্রভাবে ৪ ভোলা নিশাইয়া গোষালতার রস সহ পেবণ কবিয়া মনুরের পিত্রে তিন দিন ভাবনা দিতে হইবে। এই ঔষধ ১ রতি মাত্রায় দারে বহিত সেনন করিলে, রুগপং ঘন্দনির্গম ও শীতামূভব নিবারিত হয়। গরম বোধ হইলে মন্তবেক লবণ, মুদ্রমুষ, ইক্ষু, থর্জ্বের ও দ্রাক্ষা।

পঞ্বক্তুরসঃ। '

গাংখাশটক্ষমরিচং বিষং ধৃস্ত রজের্ডবিং। দিনং বিমর্দ্দিতং শুদ্ধং পঞ্চবক্ত্যো ভবেদ্ রঙ্গঃ॥ আর্ত্তিকস্ত জবেবিশ্ব দাতব্যো রক্তিকামিতঃ। সন্ধিপাতক্ষরে দেয়ো গোৱে তদ্দোধনাশনঃ॥

গন্ধক, পারদ, গোহাগার খে, মচিচ ও বিদ, এই সকল জবা ধুভূরামূলের রসে ১ দিন মদন করিয়া ১ রতি পরিমাণে আদার রস সহ সেবন করিলে ঘোর সন্মিপাতিক জব ও তদ্যায় নিবারিত হয়।

সন্ধিপাতসূর্য্যো রসঃ।

হিন্দুলং গন্ধকং ভাষং মরিচং পিগলী বিষম।
তথ্য কনকবীজঞ্চ প্রকচ্পানি কারমেৎ ॥
বিজয়পানতোরেন ফ্রিদিনং ভবেরেৎ স্থীঃ।
বিশুঞ্জং পর্বপত্তন অর্ককাথং পিবেদকু ॥
নিহন্তি সন্নিপাতোখান্ গদান্ ঘোরান্ স্থদারণান্।
বাতিকং গৈতিকধ্যেব ক্রেম্মিকফ বিশেষতঃ ॥

হিঙ্গুল, গন্ধক, তাম্র, মরিচ, পিপুল, বিষ, উঠ ও কনকধুতুরাবীজ, ইহাদের প্রত্যেকের চুর্ণ সমভাগে লইয়া সিদ্ধির কাথে তিন দিন ভাবনা দিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। অমুপান—পানের রস ও আকন্দের কাথ। ইহা সেবনে ঘোরতর সন্নিপাত উপশ্মিত হয়।

ब्रिट्सियनोश्रात्रमृर्या। तमः।

রসেন গন্ধং দ্বি ৪৭ং কুশামু-রদৈবিমর্দ্ধাইদিনানি ঘর্মে। রসাইভাগস্বমূতক দন্তাদ্ বিমন্দরেদ্ বঞ্চিরসেন কিঞ্চিৎ ॥ পিত্তিক্স সম্ভাবিত এম দেয়স্ত্রিদোবনীছারবিনাশস্থাঃ ॥

১ ভাগ পারদ ও হ ভাগ গন্ধক একত্র কজ্জলী কণিয়া ৮ দিন চিতার রসে মর্দ্দন ও রৌদ্রে শুক্ষ করিবে। পরে পারার ৮ ভাগের ১ ভাগ বিষ উহার সহিত মিশাইয়া চিতার কনে অল্ল মর্দ্দন পূর্মক পঞ্চ প্রকার পিত্ত ছারা (মংস্তা, শ্কর, মনূর, ছাগ ও মহিষ ইহাদের পিত গ্রহণীয়) ভাবনা দিবে। ইহা সন্ত্রিপাত-জরে প্রযোজ্য। ত্রিদোষর্মপনীহার-বিনাশনে এই ঔষধ স্থ্যিসদৃশ।

প্রতাপতপনো রসঃ।

গন্ধকং হিঙ্গুলং তালং ক্তকং লোইট্রুপন্।
থপরং:দ'টিকাক্ষারং নাঞ্জিঠং হিঞ্পুলং সমন্॥
রাসন মন্দিতং পিঙং নিগু গুইতিগুওরোঃ।
অন্তবামং পচেৎ কুপ্যাং নিরুধ্য সিকতাহ্বয়ে॥
ততঃ দিদ্ধং সমাদায় রাজকামার্ট্রকেণ চ।
সন্ত্রিপাতিনিনাশায় প্রতাপতপনো রামঃ।
দ্বিভিত্তং তথা দুদ্ধং ছাগমাংসক ভোজরেং॥

গদ্ধক, হিঙ্গুল, হরিতাল, পারদ, লোহ, দোহাগার থৈ, থর্পর, সাচিক্ষার, মঞ্জিচ্চ্প ও হিঙ্গুল, প্রত্যেক তুল্যাংশে গ্রহণ করিরা নিসিন্দাও হাতিশুঁড়ার রসে মর্দ্ধন করিবে। পরে অন্ধ্যুয়ায় স্থাপন করিয়া বালুকাযন্ত্রে অন্ধ্রপ্রহর পাক করিবে। পাক সমাধা হইলে ওয়া উদ্ধত কারয়া লইবে। অন্ধ্যান—আদার রস। ১ রতি মাত্রায় দেবনীয়। ইহা সেবনে সাত্রিপাতিক জা নিবারিত হয়। এই ঔষধ্বেরী রোগিকে ছগ্ধ দধি সহ আন্ধ এবং ছাগমাংসরস প্রভৃতি পথ্য দিবে।

ঘোরনুসিংহরসঃ।

ভাগৈকং মৃতবাস্থ্য দিভাগং মৃতনৌহকম্।

অভাগং মৃতবাস্থ্য চতুর্ভাগং মৃতাজকম্॥

মান্দিকং রসগন্ধৌ চ তথা শুদ্ধা মনঃশিলা।
চন্বার্য্যেতানি তাস্ত্রপ্রত্যেকং তুলামের চ ॥
গরলঞ্চালতুলাং স্থাং তিকটুশ্চালতুলাকঃ।
এতং সর্বাসমং দেয়ং বিষমাখাং (বিষমুষ্টং) তথৈর চ ॥
এতং সর্বাসমং দেয়ং বিষমাখাং (বিষমুষ্টং) তথৈর চ ॥
এতং সর্বাস্থ্য দিওগং কালকুটকম্।
মাংস্তমাহিব্যানুর-চ্ছিপিতৈর্বিভাবরেং॥
চিত্রক্ত দ্রবেশের প্রত্যেকং যামমাত্রকম্।
স্বপাভা বটা কার্যা শোর্যেদাতপে ততঃ॥
দাপরেদ্ বটিকামেকাং প্রত্যেদিটারসেন চ।
অন্যোদশসন্নিপাতে বিস্ক্রামতিসারকে।
তিনোরক্তে তথা কাসে দাপরেং কুলনো ভিষক।
প্রাপেটাশতং দন্তাদ্ব ভোজনং দ্বিভক্তকম্।
ঘোরনুসিংহ্নামামং রসানামুভ্যো রসঃ॥

তান ১ ভাগ, লৌহ ২ ভাগ, বঙ্গ ৩ ভাগ, জ্বন্ধ ৪ ভাগ, স্বর্গান্ধিক ১ ভাগ, রস ১ ভাগ, গন্ধক ১ ভাগ, রস ৯ ভাগ, গন্ধক ১ ভাগ, ক্ষকপ্রনিব ৪ ভাগ, তিকটু ৪ ভাগ, কুটিলা ২২ ভাগ ও কাঠিবিব ৮৮ ভাগ; এই সকল দ্রব্য একত্র মর্দান করিয়া বোহিত্যংস্ত, মহিম, ম্যুর ও শুক্র ইহাদের পিতে এবং চিহার রসে এক-শুক্র ইহাদের পিতে এবং চিহার রসে এক-শুক্র ইহাদের পিতে এবং চিহার রসে এক-শুক্র করিয়া জ্বে জ্বে। ভাবে। দিবে। জ্বন্ধর বর্ষীয়া জ্বে। ভাবে। জ্বের সহিত এক এক বটিকা প্রযোজ্য। ইহা দারা জ্যোদশ প্রকার সন্নিপাত, বিস্তৃচিকা ও অতিসার প্রভৃতিরোগ বিনষ্ট হর।

মৃত্যুঞ্জয়ে। রসঃ।

স্তং গন্ধকটকণং শুভবিবং ধৃত্যুববাজং কটুন্
নীত্বা ভাগবণোত্তর্গি গুণিতঞ্জোন্ধতমূলাবুনা।
কুর্যান্মাববটাং স্থগাতস্থলাং স্বান্ অবান্ নাশরেদেব জ্ঞীনিবশাসনাৎ প্রজনিতঃ স্থল্চ মৃত্যুক্তরঃ।
নারিকেলসিতাযুক্তং বাতপিতজ্বরং জ্বেৎ।
সধুনা লেমপিত্তোখং অবং সংনাশ্যেদ্ প্রথম।
সরিপাতজ্বরং ঘোরং নাশরেদ্যর্জনীয়তঃ।

পারদ ১ ভাগ, গন্ধক ২ ভাগ, সোহাঁগার থৈ ৪ ভাগ, বিষ ৮ ভাগ, ধৃতুরাবী**জ ১**৬ ভাগ, ত্রিকট মিনিত ৩২ ভাগ, এই সম্পায় ধুতুবা মূলের বদে একতা মুদ্দন করিয়া মায়প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা সেবনে সর্মপ্রকার জ্বর উপশ্যিত হয়। ভাবের জল ও চিনি সহ বাত-পৈত্তিক জ্বর, মধুসহ পিত্তশ্লৈগ্রিক জ্বর এবং আদাব রস সহ সেবনে সরিপাত্ত্বর নিবারিত হয়।

শ্রীসন্নিপাত-মৃত্যুঞ্জয়ো রসঃ।

বিষং স্তুকগালে**)** চ পিত্তং ম**্ভু**ম্যুরয়ে!:। আজবারাহপিতে চ মহিদ্যান্চাপি যোজয়েং॥ হরিতালক সন্যোধং বানবাবীজসংযতম। অপামার্গং চিত্রমূলং জয়পালঞ্চ কল্পড়েং। এতৎ সকং সমাংশেন অলামুক্তে। মন্দ্রেং। भारत्व मनुनी कांगा विधिका मिखिका, बरेनः ॥ মহাজ্বরে মহাশীতে মহাশীতজ্বরেহপি চ। মক্ষণতে সন্নিপাতে বিস্ফাং বি**ৰম্ভ**রে ॥ অসাধ্যে মানবে যুঞ্জাদৈকাহজ্জনাশিনা ৷ জ্লোদরে শিথিলাকে নাসাপ্রাবে চ পীনসে # অজীর্ণে মুর্চ্ছনাভাবে শ্লেমভাবেংতিত্রর্জ্জযে। শোপকামলপাণ্ড্রাদি-সর্বরোগাপহারক:। সনিপাতমুক্তাঞ্লয়ো জ্ঞানজ্যোতিঃপ্রকাশকঃ। ভঙ্গরাজবদেনায়ং রসরাজ্য প্রদায়তে ॥ निक्षी धनिष्क्रमशास्त्र वश्वत्रमभाद्राकः। প্রায়েদঃ অধুমাতের ওপায়তে চিহ্নমাদ্রম । মৃচিছতঃ পতিতো ভূমৌ দথমানঃ পুন.পুনঃ। এবং 6कर मगालाका यानेसक्काभाषात ॥ পথাং যদয়চিতে রোগী ভাদাতব্যং প্রযন্ত্র:। দখ্যোদনং শাতজলং দাতব্যং তদ্বিচক্ষণে:॥ এবং মহারসঃ শ্রেষ্ঠঃ শস্তুনা প্রেক্সিডো ভূবি। কৃপয়া সক্ষতৃতানাং জানজ্যোতি:প্রকাশক:।

বিন, পারদ, গন্ধক, মংস্থপিন্ত, ময়ুরপিন্ত, ছাগপিন্ত, শুকরপিন্ত, মহিনীপিন্ত, হরিতাল, শুঠ, পিপুল, মরিচ, আলকুনাবীঙ্ক, আপাঙ্কের মূল, চিতামূল ও জয়পাল, এই সমুদায় দ্রবা নিলাতে পেষণ করিয়া ও ছাগমূত্রে মর্দদকরিয়া মাসকলাই প্রমাণ বটিকা করিবে। অনুপান—ভূকরাজের রস। ইহা সেবনে সর্ব্ব-শ্রকার জয় বিনষ্ট হয়। বিশেষতঃ প্রভূত শাতমুক্ত সামিপাতিক জ্বরের ইহা উৎকৃষ্ট ঔষধ।
অপরস্ক ইহা ধারা ভলোদর, অজীর্ন, পাঞ্চু,

প্রভৃতি নানাবিধ রোগ প্রশামত হয়। ঔষণ দেবন করাইয়া রোগিকে নোটা কাপড়ে আরত করিয়া নির্জ্জন ও নির্ব্বাত স্থানে রাখিবে। যথন দেখিবে, রোগী মুহুর্স্কৃত্য মূর্চ্ছিত হইয়া ভূমিতে পড়িতেছে ও তাহার গাত্রে অপর্যাপ্ত দাহ হইতেছে, তথনই বৃঝিতে হইবে যে, রোগী ব্যাধিমুক্ত হইয়াছে। তৎকালে রোগির আকাজ্জামুবায়ী পথ্য দিবে। দিধ সহ অন্ন এবং শীতল দ্রব্য প্রভৃতি নির্ভয়ে ব্যবহার করান যাইতে পারে।

সন্মিপাতভৈরবঃ।

রসং বিষং গদ্ধকঞ্চ হরিতালং ফলতয়ম্। জয়পালং তিবুৎ স্বৰ্ণং ভাষ্মদীদাজলীহক্ষ্॥ व्यक्तीदः नाजनी ह वर्गमक्तिकत्वर ह। সমং ক্রতা রসেনৈবাং ত্রিংশপ্রারক মন্দরেৎ । অর্ক: খেতোহলমুমা চ সুর্য্যাবর্ত্তক কারবী। काक अख्या (नानकक कुछै: त्याविकिक उम् ॥ স্থামণিক সকান্তো নিগু গুট মহাজ্ঞটা। ধন্ত, রদন্তী পিলালো। দশাস্তাক্ত, মদং ভ্রুম ॥ রস্তুল্যং প্রদাতব্যং দরা ভোয়ং চতুগুণম্। শিক্টৈকগুণতোয়েন ভাবনাবিধিরিষাতে । ভাৰনায়াং ভাৰনায়াং শোষণং মুহুরিষাতে। তত্ত বটিকাং ক্রছা ভৈরবায় বলিং দদেও। রগোহয়ং শ্রীনমিপাত-ভৈর্বো অরনাশন:। সর্বোপদ্রবসংযুক্তং ব্দরং হস্তি ন সংশয়:॥ সন্নিপাতধ্বং হস্তি জীর্ণ বিষমং তথা। ত্রকাহিকং স্থাহিকক চাতুর্থকমপি প্রবন্ ॥ क्रवक कलालाखायः मर्कालायमभाकृतम् । ভৈরবস্থ প্রসাদেন জগদানন্দকর্বী।

সর্বং চূর্বং সমং কৃষা অর্কমূলাদিপিপ্পনীমূলান্তানান্দিন্তালানাং মিলিজা রসাদিসামগ্রীতৃল্যানাং চতুপ্ত গজলৈকগুণশিষ্টকাথেন ত্রিংশদ্বারমাতপে ভাবনীয়ম।
প্রতিবারং বড়েন শোষমিজা কলারপ্রমাণা বটিকাঃ কৃষা
ব্যাধ্যসূত্রপমার্ক্রসেন জরিপে দক্ষাৎ। বিরেকাদনন্তরং
প্রীজীরকভোরপ্রক্রালিতমরং দক্ষাৎ। অঞ্জাতে বিরেক্তে
পুনরপি রসং দক্ষাৎ। ব্যাধিনিবৃত্তে কণা্চিদ্ বাতপীড়ারাং বাত্চিকিৎসা কার্য্যা।

রস, বিষ, গন্ধক, হরিতাল, বহেড়া, আমলকী, হরীতকী, জ্বয়পালবীজ, তেউড়ীমূল,
ধুতুরাবীজ, তাদ্র, সীসা, অত্র, লৌহ, আক-

ন্দের মাঠা, লাঙ্গলী ও স্থানাক্ষিক, এই দকল দ্রব্য সমভাগে লইয়া নিমলিখিত ভাব্য দ্রব্য সকলের কাথে ৩০ বার করিয়া ভাবনা দিয়া মটরপ্রমাণ বটিকা করিবে। ভাব্যন্তব্য হথা— শ্বেত আকলমূল, মৃণ্ডিনী, হড় হড়ে, ক্ষম্বলীরা, কাকজভ্বা, শ্রোণাছাল, কুড়, শুঠ, পিপুল, মরিচ, বৈচ, রক্তস্থ্যমণিপুষ্প, শেত স্থামণিপুষ্প, নিসিন্দা, কন্দ্রকা, ধুতুরা, দক্তী ও পিপুলমূল। এই ঔবধ সেবনে সিম্নিপাতজ্বর নিবারিত হয়।

দ্বিতীয়সমিপাতভৈরবঃ।

পারদং গন্ধকং তালং বংসনাভং ত্রিভি: সমষ্।
দারশুষক গরলং সর্বক্ত সমহিসুলম্ ।
মূদ্যপ্রমাণাং বটিকাং কারয়েং কুপলো ভিষক্।
সন্নিপাতে বটানেকামার্ক্রছাবৈ: প্রদাপরেং ।
রম্যে মহাপ্রভাবে হং সন্নিপাত্ত ভৈরব: ।

পাবদ ১ ভাষা, গন্ধক ১ ভাগা, হরিতাল ১ ভাগা, বংসনাভ ৩ ভাগা, দাবমুদ্ধ ১ ভাগা, কৃষ্ণদপবিষ ১ ভাগা, হিন্দুল ৮ ভাগা, এই সম্পান দ্রব্য একত্র জলো মদ্দান করিয়া মুদ্দা-প্রমাণ বটিকা করিবে। অন্ত্রপান—মাদার রস। ইহা সেবনে স্থিপাতিক জ্যা উপশ্যিত হয়।

কালাগ্নিভৈরবে। রসঃ।

শুদ্ধত্বং বিধাগদ্ধং মর্দ্ধেদ্ গোক্ষুরন্ধবৈং।
ভাবিতথ বিশোব্যাথ চুর্বিদেতিচিদ্ধন্ ।
চুর্তুলাং মৃতং তাজং তাজাদুটাংশিকং বিষম্।
হিঙ্গুলং রসভাগঞ্ ছো ভাগো কনকন্ত চ ॥
বাণভাগোহত গোদত্তো বাণভাগা মনংশিলা।
টঙ্গুণং নেত্রভাগঞ্চ অতুভাগঞ্চ বর্ণরম্।
অক্ষভাগঞ্চ জৈপালং নেত্রভাগং হলাহলম্।
মাক্ষিক্ঞাগিভাগঞ্চ লৌহং বঙ্গুঞ্চ ভাগকম্।
সর্বান্ প্রোদরে কিন্তু। ক্ষীরেপার্কস্য মর্দ্ধিরেং।
চণমাত্রাং বটিং কুছা বলং জ্ঞাভা প্রবোজরেং ॥
সর্বাং ত্রিদের্বিজ ইপ্র বলং জ্ঞাভা প্রবোজরেং ॥
সর্বাং ত্রিদের্বিজ ইপ্র বলং জ্ঞাভা প্রবোজরেং ॥
সর্বাং ত্রিদের্বিজ ইপ্র বলং জ্ঞাভা প্রবোজরেং ॥
স্বাং ত্রিদের্বিজ ব্যাং জ্ঞাবার্যাগঞ্চ কাররেং॥।

পধ্যং শাল্যোদনং দেয়ং দধিভক্তসম্বিত্য। কালাগ্নিভৈন্নবো নাম রসোহয়ং ভূরিপ্জিতঃ।

শোধিত পারদ ১ ভাগ ও গন্ধক ২ ভাগ একতে কজ্জলী করিয়া তাহা গোক্ষররদে মৃদ্ধিত, ভাবিত ও শুক করণানম্ভর অতি हिका हुन क दिया नहेरत । ये हुन मह हुन जूना তাম, তাত্রের অষ্টাংশ বিষ, হিন্দুল ১ ভাগ, ধৃত্যাবীজ ২ ভাগ, গোদস্তহ্যিতাল ৫ ভাগ, মন:শিলা ে ভাগ, সোহাগাৰ থৈ ৩ ভাগ, থপরি ৬ ভাগ, জয়পাল ১ ভাগ, হলাহল ত ভাগ, স্বৰ্ণাক্ষিক ৩ ভাগ, ৰ্ণোই ১ ভাগ ও বঙ্গ ১ ভাগ, এই সমুলায় দ্রব্য একত্র আকল্পের আঠায় মর্দ্দন করিয়া পশ্চাং দশমূলের কাথে ও পঞ্চমূলের কাথে ক্রমে এক এক প্রহর মর্দন করিয়া চণকপ্রমাণ বটিকা कतिरव। इंश সেবনে স্থলারুণ সলিপাত উপশ্মিত হয়। ঔষণ দেবন করাইয়া রোগিকে পুর্দ্ববৎ দধ্যন্ন প্রভৃতি পথ্য দিবে এবং শৈত্য ক্রিয়া করিবে।

বড়বানলঃ।

কাস্তক স্তাং হরিতালগদ্ধং সমুদ্রফেন লবণানি পঞ। নীলাঞ্জনং তুপক্ষেব রূপ্যং ভন্মপ্রবালানি বরাটকান্চ॥ বৈক্রান্তশস্ক্রমমুদ্রত ক্র সর্বাণি চৈতানি সমানি কুর্যাৎ। পুতং ভবেদু স্বাদশভাগকঞ न्य कार्य विभिन्न विभन्नियाक ॥ দিনত্রয়ং বহিন্দরসৈম্ভভণ্ট নিবেশয়েৎ তাম্রজসম্পুটে তৎ। मना ह मः निभा त्रमः भूरहे उन-রসম্ভত: স্যাদ্ব্রবানলাথা: ॥ তৎপাদভাগেন বিষং নিযোজা কুশানুতোয়েন পচেৎ ক্ষণং তৎ। বাতপ্ৰধানে চ কফপ্ৰধানে নিবোজয়েৎ জ্যুষণচিত্রযুক্তম ॥ দোৰ ক্রয়োখেহপি চ সরিপাতে বাতাধিকস্থাদিহ সূতকোক্ত:॥

কান্তলোহ, পারদ, হরিভাল, গন্ধক, সমুদ্রকেন, পঞ্চলবণ, নীলাঞ্জন, উূতে, রূপা,

প্রবাদ, কড়ি, বৈজ্ঞান্ত, শম্ক ও সমুদ্রের বিশ্বক ভম্ম; এই সকল দ্রব্য সমানপরিমাণে লইবে এবং স্বাদশভাগ পারদ লইরা সিজেব আঠা ও আক্ষেরে আঠা সহ মর্দ্ধন করিবে। অনন্তর চিত্তামূলের রসে তিন দিন মর্দ্ধন করিয়া তামপুটে রুদ্ধ করিবে; পরে মৃত্তিকা ঘারা লেপন করিয়া প্রটপাক দিবে। অনন্তর উক্ত উয়ব গহ সিকি ভাগ বিষ মিশাইবে এবং চিত্তামূলের রসে ভাবনা দিয়া পুনুঃ পাক করিবে। মাজা—২ হইতে ৪ রতি। ইং ঘারা সাগিপাতিক জ্বর্ণ প্রভৃতি উপশ্মিত হয়। অমুপান—চিত্তার রস্ব ও প্রিকটুচুর্ণ।

রুহদ্বভ্বানলে। রসঃ।

প্তকং গদ্ধককৈ হরিতালং মনঃশিলা।
অত্রকং বংসনাভক দাক ভাজনজং বিষম্॥
জৈপালাং সার্দ্ধাতকং সকং সংচূর্ণ মন্ধিরেং।
মাংসামাহিবমায়ুর-চ্ছাগপিত্তৈর্বিভাবরেং॥
বিটকাং শীততোয়েন কুর্যাদ্ গুল্লাপ্রমাণতঃ।
বড়বানলনামায়ং নারিকেলজনেন বৈ।
ভক্ষরেং স্থিপাতাতির মৃত্যুন্তসাম্বী ভবেং।

পারদ, গন্ধক, হবিতাল, মনঃশিলা, অল্ বংসনাভ, দারমুজ, কালস্প্রিষ প্রত্যেক এক এক ভোলা, জ্য়পালবীজ ১৫০ টা, এই সমূদ্য চূর্ণ একত্র মদন করিয়া মাংস্থা, মাহিষ, মায়ব ও ছাগ পিত্তে ভাবনা দিবে এবং শাতল জলে মাড়িয়া ১ রতি প্রমাণ বটিক। করিবে। অনুপান—ভাবেব জল। এই ঔষধ সেবনে ঘোরসমিপাতে মৃত্যুক্থে পতিত রোগীও সাস্থালাভ করে।

সন্নিপাতবড়বানলো রসঃ।

রসাষ্টকোহমুতং সপ্ত স্যাৎ ব'ঠা গন্ধতালয়ো:।
দটোবীজানি বড়ভাগাঃ পঞ্জাগন্ত টক্সণম্ ॥
চডারি ধুর্ত্তবীজ্পা ব্যোবস্য ক্রিচন্নো ভবেৎ।
এডানি বজিমূলস্য কাপেন পরিমন্ধ্যেৎ॥
আর্কিস্য রসেনাপ দেয়ং গুপ্পাধ্যং হিচম্।
বড়বান্ধ্স জ্রেহিয়ং স্থিবা চহরঃ পরঃ॥

পারদ ৮ ভাগ, বিষ ৭ ভাগ, গন্ধক ৬ ভাগ, হরিতাল ৬ ভাগ, দন্তীবীজ ৬ ভাগ, সোহাগার থৈ ৫ ভাগ, ধুভূরাবীজ ৪ ভাগ ও ভাঁঠ, পিপুল, মরিচ প্রত্যেক ৩ ভাগ, এই সমুলায় চিতামূলের কাথে মর্দন করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। অমুপান—আদার রস। ইহা সন্মিপাতের উৎকৃষ্ট ঔষধ।

সচ্ছন্দনায়কঃ।

(™অভিন্তানে।)

স্থাবর্ত্তক নিও প্র জুলনা গিরিকণিক। ।
প্রাবর্ত্তক নিও প্র জুলনা গিরিকণিক। ।
কার্ননার্ত্তক বহিং বিজয়। এইয়া নহ ।
কার্ননার্ত্রক বহিং বিজয়। এইয়া নহ ।
কার্নার্ত্তর পশ্চাদ বালুকার্য্তরণ দিন্য ।
বিপচেচনু বিভং পানেনাব্রেক্যার্ত্তরকার ।
বিপ্র প্রীদশ্রানাং ক্যায়ং সোন্ধং পিবেং ।
অক্স্যানং নিহন্তাপ্র রমঃ। ব্যক্তন্তনায়কঃ ।
ভাগীত্রমেন মুলাঞ্চ প্রায়ত্ত প্রায়ার্যেং ॥

পারদ, গদ্ধক, লোহ ও রোপা তুল্যাংশে লইয়া নিম্নলিখিত জবোর রদে তিন দিন করিয়া ভাবনা দিবে; যথা—হুড় হুড়ে, নিসিন্দা, তুলদী, খেত অপরাজিতা, খেত চিতামূল, আদা, রক্ত চিতামূল, দিন্ধি, হবীতকী, কাকমাচী ও পঞ্চাতামূল, দিন্ধি, হবীতকী, কাকমাচী ও পঞ্চাতামূল, পারে অপ্পম্বায় স্থাপন করিয়া বালুকাযম্ভে একাদন পাক কবিবে। আদার রদ দহ ইহার চুর্ল মাযা পরিমাণে দেবনীয় (বাবহার ২ রতি)। পশ্চাৎ মবিচ চুর্ণাংযুক্ত নিসিন্দার পাতা ও দশমূলের কাল পান করিবে। এই ঔষদ দেবনে অভিন্তাদ নামক দ্যাপাতজ্ঞব নিবাবিত হয়। ছাগীতের ও মূল্যায় বোগিকে পণ্য দিবে।

সিংহনাদরসঃ।

নৌহপাত্ৰগতে গৰেন্দ্ৰোনিতে তত নিকিপেৎ। শুদ্ধসূতং সমঞ্চাত্ৰং ভাগীদ্ৰাবং তলোঃ সমস্॥ নিগু গ্রাঃ গলবোথক তৃথং + তৃলাং প্রদাপরেৎ।
পচেন্যুদ্বলিনা তাবং বাবকুকং দ্রবং ধ্বম ।
বিবণাদগৃতঃ দোহনং সিংহনাদরসোত্তমঃ।
শুপ্তামাতঃ প্রদাতব্যঃ সম্লিপাতজ্বরাজ্ঞকঃ।
শুপ্তামাত পিবেদ্ বাাধী-কাবং প্রকৃপিতম্ ॥

+ তুলামিতি রসেন্দ্রগৃতঃ পাঠঃ।

লোহপাত্রে ২ তোলা গন্ধক রাখিরা তাহা অগ্নিসন্তাপে গলাইরা, উহাতে পারদ ২ তোলা, অল ২ তোলা, তুতে ২ তোলা (রমেক্সার-সংগ্রহের মতে তুতে দিবার প্রয়োজন নাই), বামুনহাটীর রদ ৪ তোলা ও নিসিন্দা পাতার রদ ৪ তোলা নিক্ষেপ করিবে এবং মুছ অগ্নিতে পাক করিতে থাকিবে। যখন দেখিবে প্রব শুদ্ধতা প্রাপ্ত ইইরান্ডে, তখন নামাইয়া তাহাতে অদ্ধতোলা বিদ মিশ্রিত করিবে এবং একত্র চুর্ণ করিয়া লাইবে। ইহার মাত্রা—> রতি অয়ুপান—কুড়চুর্ণসংরুক্ত কল্টকারীর কাণ। ইহা সেবনে সম্লিপাতজ্বর উপশমিত হয়।

চিন্তামণিরসঃ।

রদ্বিধগন্ধকটকণ-ভাষ্মযবক্ষারকং ব্যোধন্।
ভালকফল ক্রয়ঞ্চ ক্ষেজিং দ্বা শতং বারান্॥
সংমধ্য রক্তিকমিতা বটিকাঃ কুয়াদ ভিষক্ প্রাক্তঃ।
ভাজীপিষ্টেন চ সমমেকাং দ্বে বাধবা ভিশ্রঃ।
সংপ্রাপ্ত নারিকেলা-জলমন্পেরং প্রয়ুঞ্জীত।
ভেদানন্তরমেব প্রকালিভভক্তং তক্রম্প্রোজান্।
শেষাং সেন্ধবজারং তক্রং প্রাক্ত প্রযোজবান্।
প্রশম্ভি সন্নিপাত্ত্বরং তথা জীবং বিষম্প্ত ॥
সাহানকগ্রানং কাসবাসং বহিমাল্যন্।
চিন্তামণা রুসোহয়ং কিল নিয়তং ভেরবেণ নিন্দিষ্টঃ।

পারদ, বিষ, গদ্ধক, সোহাগার থৈ, তাম, ববকাৰ, ও ঠ, পিপুল, মরিচ, হরিতাল, বহেড়া, আমলকী ও হ্রীতকী, এই সমুদায় একশত বার মধুতে মর্দ্দন করিয়া > রতি প্রমাণ বটকা করিবে। আবশ্রক বোবে > টা ইটি বা ৩টী বাটিকা শুর্তীচ্ণ সহ সেবন করিয়া ভাবের জলপান করিবে। ভেদ হইলে অল গৌত করিয়া তক্র সহ পথ্য দিবে এবং শেষে সেন্ধব লবণ

করাইবে। ইহা সেবনে সন্নিপাতজ্বর ও অক্তান্ত রোগ উপশমিত হয়।

চিন্তামণিরসঃ।

(মতাস্তরে)

ত্তং গন্ধকমত্রকং স্বিমনং স্তার্মভাগং বিষম্
তত্রাংশং জরপালময়মৃদিতং তদ্গোলকং বেটিতম্।
পত্রৈম প্রভুজকবনিজনিতৈনিক্ষিপা খাতে পুটম্
দবা কুকুটসংজ্ঞকং সহ দলৈ: সংচূর্ণা তত্র ক্ষিপেং ॥
ভাগার্মং জরপালবীজমমৃতং তন্ত্র্লামেকীকৃতম্
ভক্ষা নাগরসিক্চিত্রকযুতং সর্কান্ জরান্ নাশরেং।
শূলং সংগ্রহণীগদং সঞ্জর্জার দধ্যরসংসেবিনাম্
তাপে সেচনকারিণাং গদবতাং স্তক্ত চিন্তামণে:॥
ভ্যামের রসো দেরো মৃতকল্পে গদাতুরে।
সরিপাতে তথা বাতে তিদোবে বিষমজ্বরে ॥
ভাগ্রমান্দ্যে গ্রহণাঞ্চ শূলে চাতিস্কৌ তথা।
শোধে ত্বম দি চাখানে বাতে সামে নবজ্বরে ॥

পারদ ১ তোলা, গন্ধক ১ তোলা, অভ্র ১ তোলা, বিষ ॥০ তোলা, জয়পাল ।০ আনা ; এই সকল দ্রব্য গোড়ালেব্র রসে মর্দিত ও গোলাকার করিয়া তিনটি পান দিয়া বেষ্টন ও কুটিত বন্ধমিশ্রিত মৃত্তিকা দ্বারা লেপন করিয়া কুকুটপুটে পাক করিবে। শীতল হইলে তুলিয়া ঐ পান তিনটির সহিত সমুদায় চুর্ণ করিয়া পুনর্কার জয়পাল অর্দ্ধ তোলা ও বিন অর্দ্ধতোলা মিশ্রিত করিবে এবং জল সহ নাড়িয়া ১ রতি প্রমাণ বিটকা করিবে। গুঠচুর্ণ, সেন্ধব গবণ ও চিতার পাতার রসের সহিত মাজিয়া সেবন করাইবে। ইহাতে সকল গুকোর জর ও অক্সান্ত অনেক পীড়া উপশ্যিত হয়।

ত্রৈলোক্যচিন্তামণিঃ।

রসভন্ম ক্রয়ো ভাগা বিভাগক ভূজসনন্।
কালকৃটক বড়ভাগং ভাগৈকং তালকং তথা ।
গোদস্তং গগৰং ভূবং শিলাগন্ধকটকণন্।
অরপালোরান্তদন্তী করবীরক লাকলী ।
পলাশমূলকৈনীরৈঃ সপ্তথা ভাবিতং দৃদন্।
চিত্রেমূলকবারেণ চার্জকস্য চ বারিণা।
মাৎসামাহিবমায়্র-জ্বাগবারাহডৌভুভন্।
প্রত্যেকং দশধা মুর্জাংশবারাহডৌভুভন্।

ধান্তব্যাং বটাং কুর্যাচ্ছুদ্ধবন্তেপ ধারমেৎ।
দাতব্যকামুপানেন নারিকেলােদকেন চ ॥
তাস্থাক ততো দত্যাদ্ ভক্ষাং শীতােপচারকম্।
তিলতৈলং সদা আনং যুতমংস্তাদিভাজনম্।
শীতাায়ং দ্ধিসংযুক্তং পুরাণাারক ভক্ষমেং॥

রদসিন্দ্র ৩ ভাগ, সর্পবিষ ২ ভাগ, কাঠ
বিষ ৬ ভাগ, হরিতাল ১ ভাগ, গোদস্ক, অল্র,
তুঁতে, মনঃশিলা, গন্ধক, সোহাগার থৈ, জয়পালবীজ, ধুত্রাবীজ, দস্তীমূল, করবীর মূল ও
ঈশ লাঙ্গলা প্রত্যেক এক এক ভাগ, এই সম্দয় দ্রব্য পলাশমূলের রসে ৭ বার ভাবনা
দিয়া চিতামূলের কাথ, আদার রস, মংস্থাপিন্ত,
ময়রপিন্ত, মহিষীপিন্ত, ছাগপিন্ত, বরাছপিন্ত
ও ঢোঁড়াসাপের পিন্ত, ইহাদের প্রত্যেকের
পিত্ত ছারা দশবার মর্দ্দন করিয়া ২ ধান পরিমিত বটিকা করিবে। অমুপান—ভাবের জল।
এই ঔষধ সেবনেও শৈত্যক্রিয়া এবং মৃত
মংস্থাদি ভোজন বিধেয়। এই ঔষধ ছারা
সরিপাত নিবারিত হয়।

কফকেতৃ রসঃ।

দক্ষশন্তা ক্রিকট্কং উঙ্গণ সমভাগক ।
বিষক পঞ্ছিন্তনাম দৈতোয়েন মদরেৎ ।
বারক্রাং রক্তিকাক বটাং কুর্যাদ্বিচন্দণঃ ।
প্রাতঃ সারক বটকা-ব্যনার্ক্রবারিশা ।
কককেতুঃ কঠরোকা শিরোরোগঞ্চ নাশরেৎ ।
গীনসং কফকেণ্ট ভা সারিপাতং স্থলাকশ্য ।

শন্ধভন্ম, ভঠ, পিপুল, মরিচ ও সোহাগার থৈ, প্রত্যেক এক এক ভাগ, বিষ ৫
ভাগ; এই সমুগর একত্র আদার রুদে ০
বার মর্দন করিয়া ১ রতি প্রমাণ বটিকা
করিবে। অনুপান—আদার রুদ। ইহা সেবনে
কর্মজন্ম কঠনোধ, শিরোধোগ ও দারুল সমিপাত
নিবারিত হয়।

দ্বিতীয়ঃ কফকেতৃ রসঃ।

টঙ্গণং মাগধী শঝং বৎসনাভং সমং সমস্। আর্ক্রন্তরসেনাথ দাপরেদ্ভাবনাত্রয়ম্। গুঞ্জামাত্রং প্রদাতবাদার্ত্তকম্বরসৈর্ত্তন্। পীনসে মাসকাসে চ শিরোরোগে গলগুছে ॥ ককরোগান নিহস্তাা ও কককেতুরয়ং রসঃ॥

সোহাগার থৈ, পিপুল, শধ্যতম ও কাঠবিষ;
এই দকল থব্য সমভাগে চূর্ণ করিয়া আদার
রসে ০ বার ভাবনা দিয়া > রতি প্রমাণ
বটিকা করিবে। অফুপান—মাদার রস।
ইহা পীনসাদি কফরোগনাশক।

স্বল্লকস্তুরীভৈরবো রসঃ।

হিসুলঞ্চ নিবং টক্সং জাতীকোষদলং তথা। মরিচং পিশলী চৈন কন্তুরী চ সমাংশিকা। রক্তিষ্মং ততঃ পাদেৎ সম্নিপাতে হলাকণে॥

হিঙ্গুল, বিষ, সোহাগার থৈ, কৈত্রী, জায়ফল, মরিচ, পিপুল ও মৃগনাভি প্রত্যেক দ্রব্য তুল্যাংশে গ্রহণ করিয়া জল দিয়া মর্দদন করিবে এবং ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। এই ঔষধ সালিপাতিক জবে ব্যবস্থেয়।

বৃহৎকস্তূরী**ভৈ**রবে। রসঃ।

মৃগমদশ্শিস্থা৷ ধাতকী শুকশিমী রজতকনকমৃক্তা বিদ্রমং লৌহপাঠ::। ক্রিমিরিপুগনবিখা বারিতালালধা এ ब्रनिष्णवनिष्ठिः कञ्चवीरेखब्दनाश्यम् ॥ কন্ত,রীভৈরবঃ থাতিঃ সর্বজনবিনাশনঃ। আর্দ্রকসা রুসৈঃ পেরে। বিষম্ভরনাশনঃ ॥ ছন্দুজান্ ভৌতিকান্ বাপি অরান্ কামাদিসস্থবান্। অভিচারকৃতাংলৈতৰ তথা শত্রুকৃতান্ পুন:। নিহস্তাদ ভক্ষণাদেব ডাকিক্সাদিযুতাংকথা # * বিষচৰ্জীরকাভ্যাং মধুনা সহ পানত:। আমাতিদারং গ্রহণীং জরাতীদারমেব চ। অগ্নিদীপ্তিকর: শাস্তঃ কাসরোগনিকৃন্তনঃ। ক্ষপয়েদ্ ভক্ষণাদেব মেহরোগং হলীমকম্ ॥ জীৰ্ম্বরং নৃতনং বা দ্বিকালীনক সম্ভত্ম। প্ৰবিশুং ভৌতিকং বাপি হস্তি সৰ্বান্ বিশেষতঃ। ঐকাহিকং দ্ব্যাহিকং বা জ্যাহিকং চাতুরাহিক্য। পাঞাছিকং ষ্ঠ্যংস্থং পাক্ষিকং মাসিকং তথা। সর্বান্ জ্বান্ নিহস্ত্যাশু ভক্ষণাদার্জকদ্রবৈ: ॥

* ইতঃ পরং সাদ্ধচতুঃপ্লোকং কচিদ্ধিকং দৃগুতে।

মৃগনাভি, কর্প্র, তাম্র, ধাইমুল, আলকুশীবীজ, রৌপ্য, স্বর্ণ, মুক্তা, প্রবাল, লৌহ,
আক্নাদি, বিড়ঙ্গ, মুতা, শুঠ, বালা, হরিতাল,
অত্র ও আমলকী ইহাদের প্রত্যেকের চূর্ণ
সমভাগে গ্রহণ করিয়া আকল্ম পাতার রসে
মর্দ্দন করিবে এবং ১ রতি মাত্রায় বটিকা
করিবে। অন্পান—আদার রস। ইহা
সেবনে সর্ব্বপ্রকার জর ও বছবিধ রোগ
উপশমিত হয়।

শ্লেষ্মকালানলো রসঃ।

হিশ্বনান্তবং কৃতং গৰ্কা মৃতত। মকন ।

তুপং মনোহা তালক কটকলং ধূৰ্ত্বীজকন ॥

হিশ্ব সমান্দিকং কুঠং তিবৃদ্দতী কট্তিকন ।
ব্যাধিণাতকলং বলং টলণং সমভাগিকন ॥

নুহীক্ষারেল বটিকাঃ কারমেং কুললো ভিষক ।
বিজ্ঞায় কোঠং কালক যোজমেদ রক্তিকাং ক্রমাৎ ॥
বাতলেম্বনি মন্দেহটো পিত্তলেমাধিকেহপি চ।
ভীৰ্তিরে চ খ্যাথে সম্মিণাতে ককোলণে ॥
বলাসপ্রবলং ত্যকা খাতুং বাতাক্ষকং নমেং।
সেবনাৎ সর্ক্রোগ্যঃ প্রেম্কালানলো রসঃ ॥

হিন্দুলোথ পারদ, গন্ধক, তাম, তুঁতে, মন:শিলা, হরিতাল, কট্কল, ধুতুরাবীজ, হিন্দু, স্বর্ণমান্দিক, কুড়, তেউড়ী, দন্তী, তুঁঠ, পিপুল, মরিচ, সোন্দাল, বন্ধ, সোহাগার থৈ, এই সমুদায় একত্র সিজের আঠায় মর্দ্দনকরিয়া ১ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা সেবনে কফোবণ সন্ধিপাত প্রভৃতি নানাবিধ রোগ উপশ্যিত হয়।

श्रीकामान्या त्रमः।

রসং গন্ধং মৃঙাত্রক টঙ্গণক মনঃশিলা। হিঙ্গুলং গরলং দান্ধ-বিবং তাদ্রক তৎসমম্। বিড়ালপদমাত্রস্ত সর্বাং শুদ্ধং বিচুর্ণয়েৎ। ভাবনায় চ দাতবাং লাঙ্গলীমূলকং তথা।। ঘোষামূলং তথা দেয়ং মূলং লোহিভচিত্রকম্। অপুপাকলভূথাতী-মূলং অমরক্তকম্। *
বরাহমহিবো চছাগো মর্রো মংস্থ এব চ।
এতেবাক দদেৎ পিত্তমার্ককক্ষ রসেম চ।
প্রত্যেকং মর্দ্দিতং শুদ্ধং কণ্মাত্রাপ্রমাণতঃ।

ভ্রমরোহত ভ্রমরেষ্টা ভাগীতার্থ:।

পারদ, গন্ধক, অভ্র, সোহাগার থৈ, মনঃশিলা, হিঙ্গুল, রুক্তসপ্রিষ, দারুমুজ বিষ ও
ভাত্র প্রত্যেকে ১ কর্ষ (২ তোলা) মাত্রার
গ্রহণ করিরা হক্ষ চূর্ণ করিবে। পরে নিমলিখিত ভব্য ছারা ভাবনা দিয়া কণিকা মাত্রার
বটিকা করিবে। ভাব্যদ্রব্য যথা—লাজলীমূল, বোষালতার মূল, রক্তিচার মূল, কচি
ভূই আমলা, বামুনহাটা ও আকক্ষের মূল,
হাগাদি পঞ্চপিত্ত এবং আদার রস। এই ঔষদ
সেবনে সান্নিপাতিক বিকার প্রশমত হয়।

মৃতসঞ্জীবর্না।

গুড়ং দ্রোণসমং আহা: বৰ পুদ্ধং পুরতিনম্। বাবরীম্বচমাদায় দাপয়েৎ পলবিংশতিম্ ॥ দাড়িমং বুষমোচঞ্চ বরাক্রান্তারুণা ওবা। **অখগন্ধা-দে**বদার বিষ্মোণাকপাটলা: ॥ শালপণী পুথিপণী বৃহতীব্যুগোক্রম্। বিশালা বদুরী চিক্রং স্বয়ংগুপ্তা পুনর্নবা ॥ এবাং দশপলান ভাগান কুটুয়িরা উদ্ধলে । হুগভীরে চ মৃদ্ভাতে তোয়ন্টগুণং ফিলেৎ # **छड्मःरशांबनः कृषा** এटेटः मःशृत्रस्पत्यः । মুখে শরাবকং দত্তা রক্ষয়েদ্ দিনবিংশভিম্ 🛭 विष्मानियमानु द्वः ज्वानीमानि मानरार । পুগপ্রভূষরঞ্চাত্র কুট্টয়িতা বিনিক্ষিপেৎ। ধৃন্ত্রং দেবপুষ্পঞ্চ পথকোশীরচন্দনম্। শঙপুশা ধমানী চ মরিচং জীরকছয়ম্॥ শঠী মাংসী অগেলা চ সজাতীকলমুম্ভকন্। প্রস্থিপণী তথা শুস্তী মেখী মেখী চ চক্রম্। এষাং খিপলিকান্ ভাগান্ কুট্টিয়া বিনিকিপেং । মৃন্মরে মোচিকাযন্তে ময়ুরাধ্যেহপি বস্তুকে ॥ यशाविधि शकात्रन हालभः मानद्रम् तृषः। বৃদ্ধিমান সৌজলং কুতা উদ্ধরেদ নিধিবৎ হরাম্ । এতরতাং পিবেল্লিভাং বথাধাতুবয়ক্রেমম্। (सरुपांड रकतः शृष्टि-वलवर्गाधिवकेनम् ॥ সন্নিপাতে ধরে যোরে বিস্ত্যাঞ্চ মুচন্ম হৈ।। শীতে দেহে প্রযোজ্যেরং মূতসঞ্চীবনা হরা॥

বৎসরাধিক পুরাতন গুড় ৩২ সের, কুটিত বাব্লাছাল ২০ পল, দাভিন্ছাল, বাসকছাল, মোচনস, বরাক্রাস্তা, আতইচ, অশ্বসন্ধা, দেব-দাক, বেলছাল, খ্যোণছাল, পাকলছাল; শাল-পাণি, চাকুলে, বুহতী, কণ্টকারী, গোকুর, রাখালশশার মূল, কুল, চিতামূল, আলকুশাবীজ ও পুনর্নবা, ইহাদের প্রত্যেক কুট্টিত ১০ পল, জল ২১৬ সের, এই সমুদায় একত্র একটী গভীর মংপাতে (জালার ভিতর) রাাথয়া শরাব হারা মুখ বন্ধ করিবে। ১৬ দিবস পরে উহাতে কুটিত স্থারি ৭ দেব, ধুভুরামুল, লবঙ্গ, পদ্মকাঠ, উনার, রক্তচন্দ্র, শুলুফা, गमानी, महिष्ठ, जीता, त्रक्षकीता, नर्भा, करें।-মাংসী, ওড়ুত্বক, এলচিচ, ছার্যাল, মুডা, গেটেলা, ৬ চ. মেথা, মেখ্যুদ্ধী ও খেতচন্দ্ৰ প্রত্যেক্ত পল, এই সমুলায় কুটিত করিয়া প্রক্ষেপ দিয়া পুনার্য জালার মুখ ব্যু করিয়া পরে ঐ সমুদায় রাখিবে। অনন্তব ৪ দিন চয়াইয়া মন্ত প্রেপ্তত যথাবিধানে বক্ষয়ে কবিবে। বল, অগ্নি ও বয়ক্রন অনুসারে মাত্রা নিদ্ধাংগ কবিবে। ইহা সেবনে যোর সন্নিপাতজ্ব ও বিস্তৃচিকা প্রভৃতি নানাবিধ নোগ উপৰ্মিত হয়। অপকন্ত ইহা দারা দেহের কান্তি, বল, পুষ্টি ও দৃচতা সাধিত হয়।

রসেশ্বরঃ।

রদেন গন্ধং বিশুণং গৃহীত্বা তৎপাদভানং ববিভারহের।
ভন্মীকৃতং যোজয় মন্দিরাপ দিনত্রাং বন্ধিরদেন ঘর্মে।
বিষক দ্বাত্র কলাপ্রমাণমজাদিপিত্রৈ পরিভাবরেচে।
বন্ধরন্ধান্ত দ্বীত বহি-কটুতয়ার্জন্বরসপ্রযুক্তন্য।
তৈনেন চাভাত্রবপুন্ত কুয়াং স্থানং এনেনের প্রশীতনেন।
যাবন্ধসন্ধৃ ভ্রমহন্ত শীতং মৃত্রং পুরীষক শরীরকম্পঃ॥
গান্ধো মনীচ্চা পরিজারতেহন্ত মরীচপণ্ডং দ্বিভক্তকক।
অবং দ্বাভাত্রম্য পাকং দিনাস্টকং স্থানমিদক প্রাম্॥
ব্যবন্ধানিক্তান্ধান্য। স্থিপাত্র্য্য ইতি সংক্ষা।

রম ৮ ভোকা, গণ্ণক ১৬ ভোলা, তায় ২ তোলা, রৌপ্য ২ তোলা, স্বণ ২ তোলা; এই সকল ক্ষর্য চিতার গ্রেস তিন দিন ভাবনা দিয়া ও মদন করিয়া তাহাতে যোড়শাংশ বিষ মিল্লিত করিবে। পরে ছাল প্রভৃতি পঞ্চ পিতে ভাবনা দিয়া ৪ য়তি প্রমাণ বাটকা করিবে। অনুপান—আদার রস, চিতার রস, এবং ত্রিকটুচুর্ণ। ইহাতেও পুর্কবং দবি ও অয় প্রভৃতি পথা দিবে এবং রোগিকে উত্তম রূপে তৈল মাধাইয়া স্থাতল জলে এরপে লান করাইবে, যেন ভাহাতে গেগির কম্প এবং মলমুত্রাদির প্রবৃত্তি হয়। ক্রমাগত ভাইাহ স্থানিদি করাইবে।

অর্কমূর্ত্তীরসঃ।

লোহাষ্ট্ৰকং মানিতমৰ্কভাগং স্কৃতং দ্বিভাগা দ্বিত্তপঞ্চ গদ্ধম। বিমৰ্দ্ধংগদ্ বফিনসেন ভাগো দিনক্ৰয়ঞ্জ বিষং কলাংশ্ম॥ বিক্ষিপা পিতৈঃ পরিভাবিতোহয়ং রমোহক্ষমুভিভবতি ত্রিদোধে॥

ভাষত্ত পাত্রে তু দিনৈকমাত্রং নিষ্বদেনাপিচ পিত্তবর্গাঃ।
কুম্বার্জিকাপেন রমেন স্ত্তির্বোবনাবানল এব সিদ্ধাঃ।
গুপ্তাহ্বং ক্রোমণযুক্তমত্ত দদত চিত্রার্জরদেন বাগি।
নাসপ্টেই চাপি নিবোক্তনীয়া গুপাত্ত শুনীমন্তিন যুক্তা।
বিদ্যাহ্বাধানে জ্ঞারাদির্গাং পুনরপি ভাবরেং,

তদা বিদেষিদাবানলো ভবতি।।

শোহ, লৌহের অষ্টাংশ তাথ, তুই ভাগ পারদ, তুই ভাগ গল্পক; এই সমুদার একত্র করিয়া তিন দিন চিতার রমে মন্দন করিবে। পরে নোড়শাংশ বিষ নিশ্রিত করিয়া পঞ্চলার পিত্ত ধারা ভাবিত করিয়া পঞ্চলাম "মর্কমূর্ত্তি রম"। আর যদি ইহাকে তামপাতে স্থাপিত করিয়া পুনর্কার লেবুর রম, পিত্তবর্গ, কণ্টকারী ও আদার রম, এই সকল ধারা ভাবনা দেওয়া যায়, তাহা হইলে "ত্রিদোষদাবানল" রম প্রস্তুত হয়। মাত্রা— ২ রতি। অমুপান—ত্রিকটুচ্পদংমুক্ত চিতার রম অথবা আদার রম। ইহা > রতি মাত্রায়

ভাঁঠ ও মরিচ চুর্ণ সহ নভার্থে ব্যবহাত হয়।

ত্রিদোষ-দাবানল-কালমেঘঃ।

जारमन वकः निमग्न **5 मा**गः तरेमः स्वर्गः व्यविकावश्याम । शक्तम कोटर महासम मर्कर পুটে মৃতং গোলর তুলাভাগন ॥ उत्तायुटः विश्वनंक नकः তৃথক গকেন সমানভাগ্য। নিম্বণতোয়েন বিমর্দ্ধা সর্বাং গোলং প্রকৃত্যাথ মূদা বিলিপা ॥ शृहेक पञ्चाश विभक्तरेयनः প্ৰেন জ্বলান কুলাজুনীরে:। নিষঞ্চ দত্বাপ কলাপ্রমাণ-মীষং কুশানুখরদৈঃ প্রেৎ ত ॥ গিত্তৈত্বপা ভাবিত এব পদ-ক্রিদোষদাবানসকালনেয়:। বলং দদীতাস্য চ পূৰ্বযুক্ত্যা দ্যহান্তরে তং মধ্পিশ্বলীভি:।। ম্কাশ্চ শালার্মিছ প্রশন্তং পূৰাং ভবেৎ কোক্ষিদং দিনায়ে ॥

হরিতালের সহিত বঙ্গ, মন:শিলার সহিত নীসক, রুসের সহিত স্বর্ণ ভাত্র ও রৌপপেত্র, গন্মকের সহিত লৌহ জারণ করিয়া পশ্চাৎ হিঙ্গুলের সহিত সমুদায় দ্রব্য পুটে পাক করিবে। ইহাদের সকলের স্থান ভাগ লইবে। এবং তংপরিমিত পারদ, দ্বিগুণ গন্ধক বিগুণ ভূতে, এই সকল দ্রব্য বেবুব রসে মৃদ্দিত ও গোলাকার এবং মৃত্তিকা স্বারা अनिश्व कतिया यथानियस्य भूतेभाक कतिस्व। অনস্তর উহাতে সমান গন্ধক দিয়া চিতার রুসে মুদ্দন করিবে, পশ্চাৎ উহাতে যোড়শাংশ বিষ মিশ্রিত ও চিতার রুদে সিত্ত করিয়া পাক পরে মংস্তাদির পিত্তে ভাবনা দিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। **দাহ-**প্রধান জ্বরে মধু ও পিপ্রলীর স**হিত সেবনীয়।** অপগ্রাফ্র রৌগিকে মুগের ডাল ও শালি ত গুলের ঈষ্ত্রফ অন্ন ভোজন করাইবে।

প্রীপ্রতাপিলক্ষেশ্বরো-রসঃ।
অপামার্গদ্য মূলানাং চূর্ণং চিত্রকমূলজৈঃ।
বন্ধনৈম দিয়িখা চ রসং বক্ষেণ সালয়েং ।

তেন স্তসমং গন্ধমত্রকং পারদং বিষম্। টক্লণং তালককৈব মৰ্দ্দমেদদিনসপ্তক্ষ ॥ जिपिनः भूषलीकरेमार्जावराष्ट्र पर्भावक्रिकरम् । মুবাঞ্চ গোন্তনাকারামাপূর্য্যোপরি চক্তরেৎ। সগুভিদ্ ভিকাবল্রৈর্বেষ্টমিম্বা পুটেল্লযু। রসতুল্যং লৌংভন্ম মৃতবঙ্গমহিতথা i मध्कमात्रक्रमार (त्रपूक्र खन खन्र मिलाम् । চাম্পেরক সমাংশং ভাদ ভাগার্ত্বং শোধিতং বিষয়। তৎ সর্বাং মর্দ্ধয়েৎ খল্লে ভাবয়েদ বিষনীরত:। আতপে সপ্তধা তীত্রে মর্দ্দয়েদ্ ঘটকাব্যুম্ । কটত্রয়ক্ষায়েণ কনকন্ত রুসেন চ। कलखशक्याराण म्निप्नातरमन ह । সমুদ্রফেননীরেণ বিজয়াপত্রবারিণা। চিত্রকন্ত ক্যায়েণ আলামুখ্যা রসেন চ। প্রত্যেকং সপ্তধা ভাবাং তহুৎ পিক্তৈশ্চ পঞ্চি:। সক্ষে সমভাগেন বিবেণ পরিধৃপয়েৎ ॥ বিমদ্য এক্ষয়িতা চ রক্ষরেৎ কৃপিকোদরে। গুল্লৈকং বহ্নিনীরেণ শৃক্ষবেররদেন বা ॥ দুষ্ঠাচ্চ রোগিণে তীব্র-মৌচাবিশ্বতিশাস্তরে। ক্ষুরেণ তালুমাহতা ঘর্ষরেদার্জনীরতঃ॥ **ला**न्यदेख वना नखाखना क्यानम् विधिम् । সেচয়েশাস্থবিদ বৈজ্ঞো বারাং কুম্বশতৈর্নরম্। ভোজনেচ্ছা বদা তহ্ম জায়তে রোগিণ: পরম। দধ্যোদনং সিতাযুক্তং দতাৎ তক্ৰং সঞ্জীরকম্॥ পানে পানং সিতাজাতং যদিচ্ছেত দদীত তৎ। এবং কুতে ন শান্তি: স্থাৎ তাপস্থ চ রুজস্ত চ। गठन्यः हन्मनत्रमालिभनः क्रम नीउलम्। যু**থিকাম্**লিকাজাতী-পুলাগবকুলাবুতাম ॥ বিধার শ্যাং তত্রন্থং লেপনৈশ্চলনৈমু ছ:। হাবভাববিলাসোকৈ: কটাক্ষচঞ্চলেকণে: 🛭 পীনোভ ক্রকুচাপীভৈ: কামিনীপরিরস্তণৈ:। त्रभावीना निमाला रेक्टर्गा ब्रोदनः व्यवना भृटेटः ॥ পুণ্যলোককথাজ্যৈক সন্তাপহরণং কুল। দন্তাদ বাতেরু সর্কের সিন্ধুজৈ: সহ বহিংভি: । দন্তাৎ কণামাক্ষিকাভ্যাং কামলাহয়গাভুষু। তত্তকোগামুপানেন সর্ব্বরোগেরু যোজয়ে। অয়ং প্রতাপলক্ষেশঃ সন্ত্রিপাতহ্রঃ পর: ।

কৃষ্টিত আপাঙ্গের মূল ও চিতামূলের বন্ধল
একতা মর্দন করিয়া বস্ত্রে নিষ্পীড়ন পূর্বক
ভাহার রদ বাহির করিয়া লইবে। পশ্চাৎ
ঐ রদের সমান পরিমাণে রদ, গন্ধক, অভ্র,
বিষ, সোহাগার থৈ ও হরিতাল, এই সকল
দ্রব্য লইয়া ঐ দ্রব্যের দহিত মিলিত করত
৭ দিন মর্দন করিবে। পরে ৩ দিন তালমূলীর

রদে ভাবনা দিয়া রৌদ্রে শুক্ষ করিয়া লইবে। তৎপরে উহা মুষামধ্যে স্থাপন করিয়া মৃত্তিকা সহিত বস্ত্রদারা ৭ পুরু বেষ্টন করিয়া লঘুপুটে পাক করিবে। আর লৌহ, বঙ্গ, দীদক মউলসার, মৃতা, রেণুকা, গুগাগুলু, মনঃশিলা, নাগেশ্বর, প্রত্যেকে রদের সমান, অদ্ধভাগ বিষ, এই সকল জব্য খলে মর্জন করিয়া শৃদ্ধীবিষের কাথে সাত বার তীব্র রৌদ্রে ভাবনা দিয়া ফুই দও কাল মর্দন করিবে। তদনস্তর ত্রিকটর কাথে, ধুতুরার রদে, ত্রিফলার কাথে, বকপুষ্প-রসে, সমুদ্রফেনের জলে, সিদ্ধি ভিঙ্গার জলে, চিতার কাথে ও ঈশ্লাঙ্গলার রসে এবং পঞ্ পিত্তে প্রত্যেকে সাত্রার করিয়া ভাবনা দিবে. পরে সকলের সমান পরিমাণে বিষ মিলিত করিয়া একত্র মদন করিবে, পশ্চাং লিখিত পারদাদির সহিত এই মার্দ্দিত দ্রবা সমস্ত মিলিত করিয়া যথানিয়মে কাচ কৃপিকায় স্থাপন করিবে। ইহা ১ রতি পরিমাণে চিতার অথবা আদার রদের সহিত দেবনীয়। দেবনে অসমর্থ ইইলে, রোগির তালুদেশ কুরের ছাল ক্ষত করিয়া ঐ স্থানে আদার রসের সহিত এই ঔষধ ঘর্ষণ কারবে। এই ঔষধ সেবন করাইয়া রোগিকে দধ্যয়, চি.ন ও জারকচুর্ণ মিশ্রিত তক্র প্রভৃতি যথেপিত আহার্য্য প্রদান করিবে। তাহাতে তাপও কজার শান্তিনা হইলে রোগির গাত্রে চন্দনাদি লেপন ও ভাহার আহলাদজনক ইচ্ছামত শ্লোকোক্ত জ্ঞান্ত ক্রিয়া সম্পাদন করিবে। ইহা উপস্কু অমু-পানের সহিত সর্বরোগে প্রযোজ্য।

মুগমদাসবঃ।

মৃতসন্ত্ৰীবনী আহা পঞ্চাশংপলসন্মিতা।
তদক্ষং মধু সংগ্ৰাহ্মং তোমং মধুসমং তথা ।
কন্ত বীকুড়বং তত্ৰ মন্ত্ৰিচং দেবপূষ্পকম।
জাতীকলং পিপ্ললী ত্বগ ভাগান্ ত্বিপলিকান্ ক্ষিপেং ।
ভাতে সংস্থাপা ক্ষমা চ নিদ্ব্যান্ত্ৰাসমাত্ৰকম্।
বিস্টিকামাং হিকামাং তিলোবপ্ৰভবে ক্ষেত্ৰ।
নীক্যা কোঠং বলকৈব ভিবত্ত মাত্ৰাং প্ৰবোজনেং ।

মৃত্যঞ্জীবনী ৫০ পল, মধু ২৫ পল, জল ২৫ পল, মৃগনাভি ৪ পল, মন্ত্রিচ, লবল, জায়-ফল, পিশ্ললী ও গুড়ুম্বক্ প্রত্যেক ২ পল; এই সম্পায় একত্র করিয়া আবৃত্তপাত্রে এক নাস রাখিবে, পরে দ্রবাংশ ছাকিয়া লইবে। ইহা যথাযোগ্য মাত্রায় বিস্ফিকা, হিক্কা ও সান্নিপাতিক জরে প্রযোজ্য।

यश-जीर्ग-विषय-खतारमी

জুরমাতঙ্গকেশরী রসঃ।

পারদং গক্ষককৈব হরিতালং সমাক্ষিকন্।
কটুত্রমং তথা পথ্যা ক্ষারে ছৌ সৈক্ষবং তথা ॥
নিষক্ষ বিষম্ক্রেক বীলং চিত্রক্ষেব চ।
এবাং মাবনিতো ভাগো প্রাহ্ম প্রভিত্রসংস্কৃতঃ ॥
বিমানং কানককলং বিবকাপি বিমাধিকন্।
নিশু তীক্ষরসেনাপি লোবমেৎ তৎ প্রবন্ধতঃ ॥
নার্ক্ষরহরা চৈবা ভোদনী পোবনাশিনী ॥
আমান্ত্রিপ্রশাননী কামনাপাড়ুরোগ্রা।
বিক্লীন্তিকরা চৈবা ভঠরামন্ত্রাগ্রা।
উক্লোকানুপানেন দাত্রা। হিতকারিনী।
ভাবিতো লোকনাপেন অসমাংক্সকেন্য়ী॥

পারদ, গদ্ধক, হরিতাল, স্বর্ণাক্ষিক, শুঠ, পিপুল, মরিচ, হরীতকী, গবক্ষার, সাচিক্ষার, দৈদ্ধবলবণ, নিম্ববীজ, কুঁচিলা ও চিতামূল প্রত্যেক > মাধা, জরপালবীজ ২ মাধা ও বিষ ২ মাধা; এই সকল জব্য যথাযোগ্য লোধনাদি করিয়া ও একত্র মাজিয়া নিসিন্দা পাতার রসে ভাবনা দিতে হইবে। ১॥০ দেড় রতি প্রমাণ বটিকা করিয়া উষ্ণ জল সহ সেবন করিতে হইবে। ইহা ব্যবহারে সর্বপ্রপ্রার জ্বর, আম, অজীর্ণ, কামলা, পাপুরোগ ও জঠররোগ উপশমিত হয়। ইহা ভেদক, অধির দীপক ও দোষনাশক।

রসমঙ্গলোক্তো জ্বমুরারী রসঃ i

শুদ্ধত শুদ্ধান বিষধ দরদং পৃথক্।
কর্মনাণং কর্বার্কিং লবক্সং মরিচং পলম্।
শুদ্ধান কর্বার্কিং লবক্সং মরিচং পলম্।
শুদ্ধান কর্বার্কিং পলম্বর্মিতং তথা।
শিল্প কর্মকর্মিকক ভাররেদ্দিভিকন্তবৈ:॥
সপ্রধান ততঃ কার্যা শুদ্ধী গুল্পামিতা শুদ্ধা।
ক্রম্মারিনামান্তং রশে অন্তক্সংস্তকঃ।
ক্রম্মারিনামান্তং রশে অনুক্সংস্তকঃ।
ক্রান্ত্রান্ত্রী প্রশ্নে চামবাতেংল্লপিডকে।
ক্রান্ত্রান্ত্র ক্রমেনাতেংল্লপিডকে।
ক্রান্ত্রাং সন্ধিক্রান্তরাপে চব্যাতরোপে চিরোশিতে।
ক্রান্ত্রাণ্ড্রাণে চবাতরোপে চিরোশিতে।
ক্রান্ত্রাণ্ড্রাণে বিদ্ধান গ্রন্তির্মিতঃ।

পারদ, গন্ধক, বিষ ও ছিঙ্গুল প্রত্যেক ২ তোলা, লবঙ্গ ১ তোলা মরিচ ৮ তোলা, ধুত্রাবীজ ১৬ তোলা (এই স্থলে কেও কেন্দ্র জ্বপাল ১৬ তোলা), তেউড়া ২ তোলা; এই সকল দ্রব্য চূর্ণ করিয়া দন্তীর কাথে ৭ বার ভাবনা দিয়া ১ রতি প্রমাণ বাটকা করিবে। ইহা সেবন করিলে সকল প্রকার জ্বর, অজীর্ণ, বিইন্ত ও আমবাত প্রভৃতি নষ্ট হয়।

শ্রীজ্বমুরারি:।

হিকুলঞ্বিষং ব্যোষং উক্তণং নাপরাভয়।

জয়পালসমাযুক্তং সভো জ্ববিনাশনম্।

(সর্বচ্পসমং জয়পালচ্প্ন, সর্বং পিট্রা কলারপ্রমাণা বটা কার্যা।)

হিঙ্গুল, বিষ, শুঠ, পিপুল, মরিচ, সোহা-গার থৈ, শুঠ ও হরীত দী এত্যেক সমভাগ, সর্বসমষ্টির সমান জয়পালবীজ চূর্ণ, জলে মন্দন করিয়া মটর প্রমাণ বটিকা করিবে। অমুপান— আদার রস। ইহা সেবনে সম্ভঃ জর নির্ভ হয়।

চন্দ্রশেখরে। রসঃ।

ওদ্বস্তং সমং গদাং মরিচং টকণং তথা। চতুন্তলা শিলা ৰোজ্যা মংস্তপিত্তেন ভাবরেৎ । জিদিনং মৰ্দমেৎ তেন রশেংবং চল্রশেধর:। বিজ্ঞানার্দ্রকলানৈ দে গ্নং শীতোদকং হৃত্য । তক্রভক্তক বৃত্তাকং পথাং তত্ত্র প্রদাপয়েৎ। ত্রিদিনাৎ শ্লেমপিড়োপ্যস্ত্যুগ্রং নাশয়েক্ষরন ।

পারদ ১ ভাগ, গন্ধক ১ ভাগ, মরিচ ১ ভাগ ও সোহাগার থৈ ১ ভাগ; সর্ব্বসমষ্টির সমান শৌধিত মনঃশিলা একত্র মিশ্রিত করিতে হইবে। পরে রোহিত মংশ্রের পিত্তে ভাবনা দিয়া এবং ৩ দিন মর্দ্দন করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। অমুপান—আদার রস ও শীতল জল। ইহা সেবনে অত্যুগ্র পিত্ত-শেক্ষজ্বর তিনঃদিনের মধ্যে আরোগা হয়।

জুরভৈরবো রসঃ।

ত্রিকট্রিফলাটঙ্গ-বিবং গন্ধকপারদম্।
জৈপালঞ্চ সমং মর্দ্ধাং দ্রোপপুশীরসৈদিনম্॥
তামুলেন সমং প্রাতঃ থাদেদ্ গুঞ্জামিতাং বটাম্।
মূল্যসূবং শিথরিনী পশ্যং দেয়ং প্রযন্ততঃ ॥
নবন্ধরং ত্রিদোবোপং জীর্ণক বিবমন্ধরম্।
দিনৈকেন নিহন্ত্যাপ্ত রসোহয়ং অরভৈরবঃ॥

শুঠ, পিপুল, মরিচ, বহেড়া, আমলকী, হরীতকী, সোহাগার থৈ, বিষ, গদ্ধক, পারদ ও জয়পাল, এই সমুদার সমভাগে লইয়া একতা ঘলবসিয়ার রসে > দিন মর্দ্দন করিয়া > রতি প্রমাণ বাটকা করিবে। অন্তুণান—পানের রস। ইহা সেবনে ত্রিলোম্বন্ধ নবন্ধর জীর্ণজ্বর ও বিষমজ্বর অতি সত্থব উপশামত হয়। রোগিকে মুদ্গাযুষ ও শিখ্রিণী (সরবং) পথা দিবে।

স্বচ্ছন্দভৈরবে। রসঃ।

সমভাগাংশ্য সংগৃহ পারদামূতগৰকান্।
জাতীকসন্ত ভাগার্জং দ্বা কুর্বাচ্চ ক'ল্লনীন্॥
সর্বার্জং পিপ্লনীচূর্বং থল্লম্বিরা নিধাপমেও।
গুল্লৈকং বা বিশুঞ্জং বা নাগবল্লীনলৈ: সহ॥
ভার্জকন্ত রনেনাপি জোণপুস্গীরনেন বা।
শীত্রুরে সরিপাতে বিস্কৃতাং বিষম্ভরে॥

পীনসে চ প্রতিষ্ঠায়ে অরেহজীর্ণে তথৈব চ। নলেহাল্লী বমনে চৈব নিরোরোগে চ দারুলে। প্রযোক্তো ভিদলা সম্যাগ্রসং স্বচ্ছদ্দভৈরবঃ ॥

পারদ ৪ ভাগ, বিষ ৪ ভাগ, গদ্ধক ৪ ভাগ ও জায়কল ২ ভাগ, দর্বদমষ্টির অর্দ্ধেক পিপুলচ্র্ণ মিশ্রিত করিয়া ১ বা ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহার অনুপান—পানের রদ আদার রদ, অথবা ঘলঘদিয়া পাতার রদ। ইহা দেবনে জ্বর, শীতজ্বর, দরিপাতজ্বর, বিষমজ্বর, মন্দায়ি, অজীর্ণ, বিস্টিকা, পীন্দ ও শিরোরোগ উপশ্যিত হয়।

জুরকেশরী।

শুদ্ধস্ত: বিষং ব্যোষং গৰং ত্রিফলনেব চ।
জয়পালং সমং কৃষা ভূসতোয়েন মর্দ্দিয়েং ॥
গুপ্পানারা বটা কার্যা বালানাং সর্বপাকৃতিঃ।
নারিকেলামুনা চাপি সর্বব্রেরিনাশিনী ॥
নারিকেলাজুনা চাপি পিত্ত্বরিনাশিনী ॥
সরিচেন প্রবৃত্তা সা সরিপাত্ত্বরাপহা।
পিশ্লনীজীরকাভ্যাঞ্চ দাহজ্ববিনাশিনী।
ক্রকেশরিনামায়ং বসো অর্বিনাশনঃ॥

বিশুদ্ধ পারদ, বিষ, শুঠ, পিপুল, নরিচ, গন্ধক, হরাতকী, আমলকী, বহেড়া ও জ্বর-পালবাজ; এই সকল দ্রবা সমভাগে লইমা ভূঙ্গরাজের বদে মজন করত ১ রাত মাত্রায় বটিকা করিবে, কিন্তু বালকের পক্ষে সর্বপ প্রমাণ। ইহা ৬ তোলা ভাবের জলসহ সকল জ্বরে প্রয়োগ করিতে হয়। পিতত্তরে চিনির সহিত, সন্নিপাতে মরিচের সহিত এবং দাহ-জ্বরে পিপ্ললী ও জীরা সহ সেবন করিতে হইবে।

বিছাধরো রসঃ।

রসো গন্ধস্তাক্রং ত্রিকটু কটুকাটঞ্চণবর্ন-ত্রিবৃদ্ধীহেমপ্রামণিবিষমেতৎ সম্মিদম্॥ সমস্তৈস্থলাং প্রান্থ বিষলজয়পালোভবরজ ততঃ মুকুক্ষারেণ প্রশুণমূদিতং দক্তিস্লিলৈঃ॥ দ্বিগুঞ্জাস্য প্রৌতং জরতি বটিকা সামসতুলস্ অরং পাঙ্হ গুলাং গ্রহণিগুদকীলোন্তবরূক:। মকুচ্চুলাজীর্ণং প্রবসমপি সামং ক্রিমিগদম্ বিবন্ধং শ্লীহানং যক্তহমপি বিজ্ঞাধররস:॥

পারদ, গন্ধক, তাত্র, শুঠ, পিপুল, মরিচ, কট্কী, সোহাগার থৈ: বহেড়া, আমলকী, হরীতকী, তেউড়ীমূল, দস্ভীবীজ, ধুন্তুরবীজ, আকলমূল ও বিষ, এই সমুদায় দ্রব্যের সম-ভাগ চুর্ণ লইয়া সর্বসমষ্টির সমান জয়পালচুর্ণ মিশ্রিত করিবে। অনস্তর সিজের আঠায় ও দস্তীর কাথে ভাবনা দিয়া এবং মর্দন করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা সেবনে সামজর, পাণ্ড, গুলা, গ্রহণী, গুদকীলোদ্ভব-শ্ল, বাযুজ্ন্য প্রবল শূল, অজীর্ণ, ক্রিমি, কোইবদ্ধতা, প্রীহা ও ধকুং নিবারিত হয়।

অর্দ্ধনারীশ্বরো রসঃ।

রসগজানুতকৈব সমং শুদ্ধক টঙ্গণ ।
মর্দ্ধিয়ে থাসমধ্যে তু যাবং সাথে কজ্ঞলপ্রভন্ ।
নকুলারিমুখে ক্ষিপুঃ সদা সংবেপ্তয়ের ইঃ।
ছাপরেন্দুন্মরে পাতে উন্ধানে লবণং ক্ষিপেং ।
ভাগ্রবন্ধু নিক্ষাাথ চতুয়ামং হঠা হিনা।
আঙ্গনিতং সমৃদ্ধ্য পলে কুলা তু কজ্জনাম্ ॥
ভঞ্জানাত্রং পদাতবাং নস্যক্ষণি যেত্রেং।
বামভাগে অরং হন্তি ভংক্ষণালোককৌতুক্ন্ ॥
কুর্মান্দকিশভাগেন চারোগাং নিশিতং ভবেং।
গোপ্যান্দ বিশ্যতমং প্রোভ্যান্দকিশভাগেন হারোগাং নিশিতং ভবেং।
গোপ্যান্দ বিশ্যতমং প্রোভ্যান্দকিশভাগেন নাম রমোহয়ং ক্ষিতো ভূবি॥

পারদ, গন্ধক, বিন, সোহাগার থৈ,
একত্র মর্দন করিয়া কজ্জলবং করত ক্রম্থদর্পের মুখে প্রিয়াও কাদা থারা লেপন
করিয়া লবণপূর্ণ মৃভাণ্ডের মুখ আবদ্ধ করিয়া
তীক্ষ অগ্নিতে ৪ প্রহর কাল পাক করিবে।
ইন্তাণ্ড দীতল হইলে ঔষধ বাহির করিয়া
প্রক্রীর মর্দ্ধন করিয়া কজ্জলী করিবে। ইহা
১ রতি মাত্রার নস্তার্থে ব্যবহার্য্য। ইহার
নম্ভ লইলে অতি আশ্চর্য্যরূপে তৎক্ষণাং

বামাঙ্গের জার দূরীভূত হইরা দক্ষিণাঙ্গের জার নিবারিত হয়। ইহা অভি গুহুতম ঔষধ।

সল্লজ্বাস্কুশো রসঃ।

রসন্ত বিশুণং গন্ধং গন্ধতুল্যঞ্ টক্রণম্।
বসতুলাং বিবং যোজ্যং মরিচং পঞ্চধা বিবাৎ ॥
কট্মলং দন্তীবীজঞ্ প্রত্যেকং মরিচোক্সিতম্।
ব্যাকুশো রসো নাম মনিক্রেদ্যামমাক্রকম্।
মানৈকেণ নিহন্ত্যান্ড ব্রং জীণং ক্রিদোবজম্ ॥
(অক্ত মাধামাক্রাং শক্রয়া সংনীয় গিলিখা কিঞ্ছিৎ
ভবং পিরেও।

পারদ : ভাগ, গন্ধক ২ ভাগ, সোহাগার থৈ ২ ভাগ, বিব ১ ভাগ, মরিচ ৫ ভাগ, কট্-ফল ৫ ভাগ, দন্তীবীজ ৫ ভাগ, একত্র জল সহ এক প্রহর মদন করিয়া এক মাবা পরি-মাণে চিনির সহিত গিলিয়া একটু জল পান করিবে। ইহা সেবনে জীর্ণজ্ব ও সাগ্রিপাতিক জ্ব নিবারিত হয়। ইহা বিরেচক ঔষধ।

সল্লজ্বাফুশো রসঃ।

(মতান্তরে)

ভূদ্ধত্তং তথা গলং বীজং কনকস্থবন্।
মহৌষধং উল্পাক ছবিতালং তথা বিবন্ ॥
ভূল্পরাজাত্বনা সর্বং মর্জমিছা বটাং চরেৎ।
গ্রন্থালাং খাদেৎ তাং যথাদোবামুপানতঃ ॥
এব জ্বরাকুশো নামা বিষম্জ্বনাশনঃ।
জ্বাতিসার্যন্দাগ্রীন্ নাশ্রেদ্বিক্লভঃ॥

পারদ, গদ্ধক, ধুত্রাবীজ, শুঠ, সোহাগার থৈ, ছরিতাল ও বিষ, প্রত্যেক সমভাগে লইয়া ভূঙ্গরাজের রসে মর্দ্দন করিয়া একরতি প্রমাণ বটিকা করিবে। দোষ বিবেচনা করিয়া অমুপান বিধান করিবে। ইহা সেবনে বিষমজব, জরাতিসার ও মন্দামি সম্বর দুরীভূত হয়।

মধ্যমজ্বাকুশো রসঃ।

ভদ্ধং প্তং তথা গদ্ধং কৰ্মানং নয়েদ্বৃধ্ঃ।
মহৌবধং টালপক ধ্বিশাসং তথা বিষ্
রুসাদিং মৰ্দ্ধং বাং ক্সরাজরসেন তু।
ত্রিদিনং ভাষনাং দর। চতুর্ব ব্টিকাং ততঃ ।
কুর্যাচনক্মাত্রাক শিল্পামধুসংবৃত্য।
এব ক্রাকুশো নাম বিষম্ভরনাশনঃ ।
(মহৌবধাদীনাং চতুর্ণি প্রত্যেকং রুসার্জন্।)

পারদ ২ ভোলা, :গন্ধক ২ ভোলা, শুঠ
১ ভোলা, সোহাগার থৈ ১ ভোলা, হরিভাল
১ ভোলা ও বিষ এক ভোলা, এই সকল দ্রব্য
একত্র মর্দন করিয়া ভূঙ্গরাজের রসে ও দিন
ভাবনা দিবে। চতুর্থ দিবসে চণকপ্রমাণ
বটিকা করিবে। অনুপান—পিপুলচ্ব ও
মধু। ইহা সেবনে বিষমজর উপশ্যিত হয়।

মহাজ্বাঙ্কুশো রসঃ।

ভদ্মত বিবং গলং ধ্স্তবীজং জিভিঃ সমন্।
চতুৰীং দিগুণং ব্যোষ-চূৰ্ণং গুঞাৰয়ং হিতন্।
জম্বীকত চ মজ্জাতিরার্জকত রসৈযু তিন্।
মহাজ্বাকুশো নাম অরাষ্টকনিস্পনঃ॥
(ব্যোষং নিলিডা দিগুণম।)

পারদ ১ ভাগ, গন্ধক ১ ভাগ, বিষ ১ ভাগ,
ধুতুরাবীজ ৩ ভাগ, ভাঁঠ পিপুল মারিচ মিলিত
১২ ভাগ (প্রত্যেক ৪ ভাগ), একত্র মন্দন
করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। গোড়াশেবুর শাঁদ ও আদার রদ অমুপানে দেবনীর:। ইহা সেবনে সর্বপ্রকার জ্বর নিবারিত হয়।

মহাজ্বাফুশো রসঃ।

(মভান্তরে)

পারদং গন্ধকং তামং হিন্ধুলং তালমেব চ।
লৌহং বলং মান্ধিকঞ্ থর্পরঞ্চ মনংশিলা ॥
অর্থমন্ত্রং গৈরিকঞ্চ উল্পং রাপ্যমেব চ *।
সর্ব্বাণ্যোলী তুল্যানি চুর্ণায়িতা বিভাবরেও ॥

* মৃতাভ্ৰকং গেরিকঞ্চ টঙ্গণং দন্তীবীলকমিতি রসেন্দ্রধৃতঃ পঠিঃ। জ্পীরতুলসীচিত্র-বিজয়তিভিভীরসৈ:।
এভিদিনতারং রৌত্রে নির্জনে থরগছরে।
চপনাত্রাং বটাং কুবা জ্বারাগুকান্ত কাররেং।
মহাশ্রিকনমা চৈবা সর্কান্তর্বনাদিনী।
একলং বশ্বলকৈব চিরকালসমূত্রবন্।
ইকাছিকং ব্যাহিকক জিলোব প্রভবং অরন্।
চাতুর্যকং তথাতুরোং জলদেবসমূত্রবন্।
সর্কান্ অরান্ নিহন্ত্যাও ভাকরতি মরং বর্ধা।
মহাজ্বান্তুলো নাম রসোহরং বুনিভাবিতঃ।

পারদ, পদ্ধক, তাম, হিসুণ, হরিতান, লোহ, বল, বর্ণনাক্ষিক, থর্পর, মনঃশিলা, বর্ণ, অন্ত্র, গিরিমাটী, সোহাগার থৈ ও রৌপ্য ইহাদের প্রত্যেকের চূর্ণ সমভাগে লইরা গোঁড়া-লেব, তুলসীপাতা, চিতামূল, সিদ্ধিপাতা ও তেঁতুলপাতা ইহাদের রসে তিন দিন ভাবনা দিয়া চণকপ্রমাণ বটিকা করিবে ও ছায়াতে শুক্ষ করিয়া লইবে। ইহা সেবনে সর্ব্পপ্রকার জ্বর উপশমিত হয় এবং আয়র অত্যন্ত বৃদ্ধি হয়। জ্বরনাশক ঔষধের মধ্যে ইহা একটী শ্রেষ্ঠ ঔষধ।

সর্ববজ্বাকুশবটা।

শুদ্ধতং তথা গদ্ধং মরিচং নাগরং কণাম্।
ছচং জৈপালকং বুঠং ভূনিস্থং মুস্তকং পৃথক্ ।
চূর্ণয়িত্তা সমাংশন্ত কজ্ঞল্যা সহ মেলয়েও।
নিশু গ্র্যাঃ স্বরসে চাপি আর্দ্রকল্প রসে তথা ।
ভাবনাং কারমিত্বা তু বটিকাং কারয়েও ।
বটিকাং ভক্ষমিত্বা তু বটিকাং কারয়েও ।
বটিকাং ভক্ষমিত্বা তু বহুবং ইঞ্চ কারয়েও ।
বথা জ্বরাকুশবটী সর্বজ্জরবিনাশিনী।
পৃথগ্র পোষাংশ্চ বিবিধান সমস্তান্ বিষমজ্ঞরান্ ।
ভাকৃতং বৈকৃতং বাপি বাতলেমকৃতং তথা।
অন্তর্গতং বহিঃস্থক্ নিরামং সামমেব বা।
জ্বরমন্ট্রবিধং হন্তি বৃক্ষমিত্রাশানিবিধা।

পারদ এবং গদ্ধক সমভাগে লইয়া কজ্জনী করিবে। পরে ভাহাতে মরিচ, শুঠ, পিপুল, জন্মপালের ছাল, কুড়, চিরতা ও মুতা, ইহাদের চুর্ণ প্রত্যেকে পারদের সমান মিশ্রিত করিয়া নিসিন্দাপাতার রসে ও আদার রসে ভাবনা দিয়া > রতিপ্রমাণ বটিকা করিবে। এই বটী সেবনান্তে বন্ধাদি ছারা গাত্র আচ্ছাদন করিরা দিবে। ইহা সেবনে অষ্টবিধ জ্বর, প্রাক্তত ও বৈকৃত জ্বর, বিষমজ্বর প্রভৃতি সর্বপ্রকার জ্বর নিবারিত হয়।

জরারি-খন্দ্রয়।

আবং তামং রনং গলং বিবকৈব সন্থ সন্থ।
বিশুপং পৃথিবীলক ব্যোবং পঞ্চণং ৰতন্ ।
আইকত রনেনৈব বটা কাব্যা বিশুলিকা।
জন্পানং প্রবোজবাং বধাদোবানুসায়তঃ ।
আবং অরারিনামেদং সর্বজ্ঞরবিনালন্য।
বাতিকং পৈতিককৈব রৈত্মিকং সারিপাতিকম্ ।
বিবনাধাং অরং হস্তি ধাতুহং বিবনঅরম্ ।
রীহানং বকুতং গুলমগ্রমাংসং সলোধক্য ।
হিলাং বাসক কাসক মলানলমরোচক্য ।
নাশরেরাত্ম সন্দেহো বৃক্ষিপ্রাশনির্থণা ।
ব্য তামান্যতে তামব্রানে টলং গ্রাহ্যমিত্যুপদেশঃ।

অত্র, তাম, পারদ, গন্ধক ও বিষ প্রত্যেক এক এক ভাগ, ধুতুরাবীজ ২ ভাগ, শুঠ ৫ ভাগ, পিপুল ৫ ভাগ, মার্রচ ৫ ভাগ, একত্র আদার রসে মর্দন করিয়া ২ রতি পরিমাণ বটকা করিবে। দোষাদি বিবেচনা পূর্বক অমুপান ব্যবস্থেয়। ইহা সেবনে বাতিক, পৈত্তিক ও শ্লৈম্মিক জর, সান্নিপাতিক জর, বিষমজর, ধাতুগত জর, প্লীহা, যক্ত্বং, গুলা, অগ্রমাংস, শোথ, হিকা, খাদ, কাদ, মন্দাগ্নিও অক্লচি প্রশমিত হুইরা থাকে।

চন্দনাদিলোহম্।

সক্তেদ্দন্ত্রীবের-পাঠোলীরকণাশিবা-নাগরোৎপলধাত্রীভিত্তিমদেন সমন্বিত্য । লৌহং নিহন্তি বিবিধান সমন্তান বিষমন্ত্রান্ ॥ তিবাদং মুন্তকচিত্রকবিড়ঙ্গম । সর্ব্যসমমিতি বাদশ-ক্রবাসমং লৌহং । রক্তিব্যং মধুনা লিহেৎ, পশ্চাৎ মুন্তান্ত্রবর্ণং কর্ত্তব্য বৃদ্ধোপদেশাৎ ॥

রক্তচন্দন, বালা, আক্নাদি, উণীর, পিপুল, হরীতকী, শুঁঠ, শুঁদীফুল, আমলকী,

মূত্রা, চিতার মূল ও বিভঙ্গ, এই সমস্ত সমপরি-মাণে লইরা সর্বসমষ্টির সমান লোক মিশ্রত ও জলে মর্দ্দিত করিরা ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইছা সেবনে জীর্ণজ্বর ও বিষমজ্ব সত্তর প্রশমিত হর। বৃদ্ধ বৈষ্থাপণ উপদেশ দেন বে, ঔবধদেবনাস্তে মৃত্তক চর্বণ করা কর্ত্বর।

চুড়ামণিরসঃ।

মৃতং স্তং প্রবাদক আহি তারক বলকম।
তথং মৃত্যা তীক্ষমতং সর্বনেকত্র বোলয়েং ॥
আলেন পিটু । বটিকা কার্যা বরপ্রমাণতঃ ।
ধাতৃহং সরিপাতোবং আরং বিবমসন্তবন্ ॥
কামশোকসমৃত্তং ত্রিলোবজনিতং তথা ।
কাসং খাসক বিবিধং খুলং সর্বাসসন্তবন্ ॥
নিরোরোগং কর্ণশূলং দন্তপুলং সলগ্রহন্ ।
বাতপিত্তসমৃত্তাং গ্রহণীং সর্বসন্তবান্ ॥
আমবাতং কর্টাপ্লমন্তিমান্দ্যং বিস্তৃতিক ন্।
অশাংসি কামলাং মেহং মৃত্যক্তভাদিকক বং ॥
তং সর্বাং নাশ্রতাত বিক্তক্রমিবাস্থ্যান্।
চূড়াম্নিরসো হেল নিবেন পরিকীতিতঃ ॥

রসসিন্দ্র, প্রবাল, অর্ণ, রৌপ্য, বঙ্গ, তাম,
মুক্তা, লৌহ ও অত্র, এই সকল দ্রব্য জলে
মাজিরা ২ রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে।
এই ঔষধ সেবনে ধাতৃস্থ, সরিপাতজ, কামশোকোন্ড্রু, ত্রিদোষজনিত ও বিষম জ্বর,
কাস, খাস, সর্বাজগত শ্ল, শিরোরোগ, কর্ণদস্তশ্ল, গলগ্রহ, বাতপিত্তজ গ্রহণী, আমবাত,
কটাশ্ল, অগ্নিমান্দ্য, বিস্তৃচিকা, জর্শ: ও মেহ
প্রভৃতি নানাবিধ রোগ নিবারিত হয়। এই
চূড়ামণি রস শিবনিশ্বিত।

র্হজ্বরচ্ড়ামণিঃ।

হ্বৰ্ণসিল্ম বৰ্ণ লোহং তারং মুগাওজম্। জাতাক্লম জাতাকোবং লবকক ত্রিক্টকম্। কপুরং গগনকৈব চোচং মুবলতালকম্। প্রত্যেকং কর্মানত্ত তুরকক বিকার্ধিকম্। বিক্রমং ভাষাস্তক মৌজিকং শাক্ষিকং তথা। রাজপট্টং শিথিলীবং সর্বাং সংচূর্ণ্য বস্তুতঃ॥

- আয়ুর্কেদ-সংগ্রহঃ।

খনে তু চূৰ্নাদার ভাবরেৎ পরিকীর্তিতৈ:। নিশ্ব তীক্ষ্ণিকাবাসা-রবিমূল্তিকটকৈ:। অরমষ্টবিধং হন্তি সাধ্যাসাধ্যমধাপি বা ।

স্থাসিল্র, স্থা, লোহ, রোপ্য, মুগনাভি, জারকল, জৈত্রী, লবঙ্গ, গোকুর, কর্পুব, অত্র, দারুচিনি, তালমূলী ও হরিতাল প্রত্যেক হই তোলা, গন্ধক, প্রবাল, রসিন্দ্র, মুজা, স্থানাকিক, কান্তপাষাণ (চুম্বক পাথর)ও তুঁতে, প্রত্যেক ৪ তোলা, একত্র মর্দ্দন করিয়া নিসিন্দা পাতা, বামুনহাটী, বাসকহাল, আকন্দমূল ও গোকুর, ইহাদের প্রত্যেকের স্বরদে অথবা কাথে সাতবার করিয়া ভাবনা দিতে হইবে। (এক রতি নাত্রার বটিকা করিবে)। ইহা সেবনে সাধ্যাসাধ্য অইবিধ জর উপশ্যিত হয়।

ভাকুচ্ডামণিঃ।

স্বৰ্ণং রসসিন্দ্রং প্রবালং বসমেব চ।
লোইং ভাশ্রং তেজপত্র-যনানীবিশ্বভেষজন্ ॥
সৈন্ধবং মরিচং কুঠং থদিরং বিংরিজকন্ ।
রসাঞ্জনং মাজিকঞ্চ সম্ভাগক কার্যেৎ ॥
বারিণা বটিকা কার্যা। রক্তিন্বয়প্রনাণতঃ ।
ভক্ষেৎ প্রাত্রন্ধার সর্বভারকুল। স্তুক্ ।

ষণ্, রসসিন্দ্র, প্রবাল, বঙ্গ, লোহ, ভাএ, তেজপাত, ধমানী, শুঠ, সৈন্ধবলবণ, মরিচ, কুড়, খনির, হরিন্দা, দারুহরিন্দা, রসাঞ্জন ও ষর্ণমাক্ষিক: এই সমুদার সমভাগে লইয়া জলে মর্দন করত ২ রতি প্রমাণ বৈটিকা করিবে। ইহা প্রাতঃকালে সেবনীয়। এই ঔষধ সেবনে সর্ব্যকার জর দ্রীভূত হয়।

জরান্তকো রসঃ।

ভাষরো গন্ধক: শর্পেরা দেবী বিহঙ্গতীক্ষকম্। শোণিতং গগনকৈর পুন্সকঞ্চ মহৈশ্বরম্ । ভূনিশাদিগগৈর্ভার্যাং মধ্না গুড়িকা দৃঢ়া। চাতুর্ধকং ভূতীর্ক জ্বরং সম্ভতকং তথা। ভামজ্বরং ভূতকৃতং সর্ব্বর্মপোহতি । তাত্র, গন্ধক, পারদ, সৌরাষ্ট্রমৃত্তিকা, খর্ণমাহ্মিক, লোহ, হিঙ্গুল, অল্র, রসাঞ্জন ও স্বর্ণ
এই দকল দনাংশে লইয়া ভূনিম্বাদিগণের
কাথে (চিরতা, দেবদারু, শুঠ, মুতা, কট্কী,
ইন্দ্রথব, ধনে, গজাপপ্পলী ও দশ্মূলের দশ
খানা) ভাবনা দিয়া (২ রতি প্রমাণ) বটিকা
করিবে। অনুপান—মধু। ইহা দেবনে
দর্মপ্রকার আমজ্জর, তৃতীয়ক ও চতুর্থক জ্বর,
ভূতোথ জ্বর প্রভৃতি দূরীভূত হয়।

চিন্ত।মণিরসঃ।

রসং গলং বিবং পৌহং ধৃত্তীজন্ত তৎসমশ্।
দ্বৌ ভাগৌ তা অবছেশ্চ ব্যোগচূর্ণক তৎসমশ্।
দ্বন্ধীয়ন্ত চ মজ্ঞাভিরার্ক্তর রগৈগুত্য্।
দ্বিপ্তলাং বটিকাং থালেজ্বরশশু ব্যপোহতি ॥
বাতিকং পৈতিকলাপি লৈজিকং সালিপাতিকশ্।
ক্রাইকং দ্ব্যাহিকক চাতুর্থকবিপর্যায়ন্॥
অসাধাকাপি সাধাক অইকেবাভিছ্তরম্।
অহিমান্সেংগাঞ্জীর্নে চ আগ্রানেহনিলসন্তবে ॥
অভিসানেহনিলতে ১ চৈব অরোচকনিশীজিতে।
অরান্ সন্ধান্ নিহন্ত্যান্ত ভাস্বরন্তিমিরং যথা॥
চিন্তামণিরসো নাম সর্ব্বস্বর্গোহকঃ॥
ভিন্তামণিরসো নাম সর্ব্বস্বর্গোহকঃ॥
ভিন্তামণিরসো নাম সর্ব্বস্বর্গোহকঃ॥

পারদ, গন্ধক, বিষ, লোহ, ধুস্তুরবীজ, প্রত্যেক এক এক ভাগ; ভাত্র, চিতা, ভাঠ, পিপুল, মরিচ প্রত্যেক ২ ভাগ, গৌড়ালেবুর শস্তে ও আদাব রুসে একত্র মর্দ্ধন করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা সেবনে বাতিক পৈত্তিক শ্লৈত্মিক সান্নিপাতিক ঐকাহিক দ্বাহিক চাতুর্থিক চাতুর্থকবিপর্যায় অসাধ্য ও সাধা প্রভৃতি সর্ব্বপ্রকার জর এবং তহপদর্গ—অগ্নিমান্দ্য, অজীৰ্ণ, বাভাগান, অতিসার ও অকৃচি প্রভৃতি অতি সত্বর দূরীভূত হইয়া থাকে।

চিন্তামণিরসঃ।

(মহাস্তরে)

রসং গদ্ধং মৃতং ভাষং মৃতমন্ত্রং ফলত্রিকম্।
ক্রোষণং দন্তীবীজঞ্চ সনং থলে বিমর্দ্ধিং ॥
দ্রোগপুশীরদৈর্ভাবাং গুদ্ধং তহুপপালিতম্।
চিস্তামণিরসো হেল হর্জার্পে শক্ততে সদা॥
ক্রেমন্ট্রিধং হন্তি সর্বানুলনিস্দন্ধ।
ক্রেমন্ট্রেধং বা দিয়সার্দ্রকবারিশা।

পারদ, গন্ধক, তাত্র, অন্ত্র, বহেড়া, আমলকী, হরীতকী, শুঠ, পিপুল, মরিচ ও দক্ষীবীজ; এই সকল দ্রব্য প্রত্যেক সমানাংশ লইয়া বল্বসে পাতার রবে মর্দ্দিত ও ভাবিত এবং ছায়াতে শুফ কবিয়া বটিকা করিবে। মাত্রা—১ রতি বা ২ রতি। অন্তপান—মাদার রদ। অজীর্ণষ্কু জরে প্রশস্ত। ইহা সেবনে অষ্টবিধ জর ও সর্ব্যেকার শ্লব্যোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

বৃহজ্জরচিন্তামাণঃ।

রসগন্ধকলোহানি তামং তারং হিরণ্যকম্।
ছিরিতালং বর্পরঞ্চ কাংক্তং বঙ্গঞ্চ বিক্রেমম্॥
মৃস্থামান্ধিকলাশীশং শিলা চ উঙ্গণং সমম্।
কপুরঞ্চ সমং দ্বা ভাবনা সন্তম প্রকন্।
ভাগী বাসা চ নিগু ভী নাগবলী জয়ন্তিকা।
কারবেলং পটোলঞ্চ শক্রাশনং পুনন বা ॥
আর্দ্রক্ক ততো দত্তাৎ প্রত্যেকং বারসপ্রকম্।
চিন্তামণিরসো নাম সর্বজ্ববিনাশনং ॥
বাতিকং পৈত্তিককৈব গ্রৈমিকং সালিপাতিকম্।
দক্ষেৎ বিষমাপ্যক্ষ ধাতৃত্বধ্ব জ্বাং জ্বাং ॥
কাসং খাসং তথা শোধং পাতুরোগং হলীমকম্।
শ্লীহানমগ্রমাংসক্ষ যকুতঞ্চ বিনাশরেৎ॥

পারদ, গন্ধক, লৌহ, তামু, রৌপা, স্বর্ণ, হরিতাল, ধর্পর, কাঁসা, বঙ্গ, প্রবাল, মুক্তা, বর্ণমান্দিক, হিরাকস, মনঃশিলা, সোহাগার থে ও কপূর এই সমূলার সমভাগে লইয়া নমলাখত প্রত্যেক জব্য বারা সাতবার করিয়া ভাবনা দিতে হইবে। ভাবনাদ্রব্য ব্য:—বামূনহাটী, বাগক, নিসেন্দা, পান, জয়স্তা, করেলা, পটোলপত্র, দৌইপত্র, পুননবা ও আদা; ইহা

দের যথাসম্ভব স্থরস অথবা কাথ। (১ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে)। ইকা সেবনে সর্ব-প্রকার জর (বাতিক, পৈত্তিক, শ্লৈত্মিক, সান্নি-পাতিক ও বিষমজন), কাস, শ্বাস, শোগ, পাতুরোগ, হলীমক, প্রতি, যক্তং ও সপ্রমাংস প্রশমিত হয়।

ত্রিপুরারিরসঃ।

ত তাশমুণসংগুদ্ধং রসং তামঞ গন্ধকম।
নিহননং বিষদৈব সর্বাং কুর্যাৎ সমাংশকম্।
রসার্ধং মৃতরূপ্যক শৃক্ষবেরামুম্বিতম্।
বিগুঞ্জং মধুনা দেয়ং সিত্যান্তরসেন বা।
ব্রুরস্ট্রিধং হস্তি বারিদোযভবং তথা।
মাহানমুদ্রং শোধনতীয়ারং বিনাশরেং।
রোগানেতান্ নিহন্তা গু শক্ষরম্পুরং যথা।

হিষুলোথ পারদ, গন্ধক, তান, গৌহ, অন্ন ও বিষ প্রত্যেক সমানাংশে লইয়া।তাহাতে পারদের অন্ধাংশ রৌপ্য মিশ্রিত করিবে, পরে আনার রদে মর্দন করিয়া ২ রতি মাঝায় বটিকা করিবে। অনুপান—চিনি, মধু অথবা আনার রদ। ইহা দেবনে অন্তাবধ জ্বর, প্লীহা, উদর, শোথ ও অতিবার প্রশমিত হয়।

জুরাশ্নিরসঃ ।

রসং গন্ধং দৈন্ধবঞ্চ বিষং তাত্রং সমং ভবেং।
সর্বাচ্পদমং লৌহং তৎসমং চূর্ণমন্তকম্ ॥
লৌহে চ লৌহদণ্ডে চ নিগু গুোঃ স্বরদেন চ।
মর্দ্দরেদ্ যত্তঃ পশ্চান্দরিচং স্তত্ত্লাকম্ ॥
পর্ণেন সহ দাতব্যে। রসো রক্তিকসন্মিতঃ।
সর্বাত্রহরঃ শ্রেটো জ্বাশ্ হন্তি স্পার্কণান্॥
কাসং স্থাসং মহাঘোরং বিষমাথাং জ্বরং ব্যিম্।
ধাতুত্বং প্রবলং দাহং জ্বরং দোষত্রয়েত্তবম্॥

পাবদ, গদ্ধক, দৈন্ধবলবণ, বিষ ও তাম প্রত্যেক দমানভাগ, দর্জদমষ্টির দমান লোহ ও লোহদম অভ্র একত্র মিপ্রিত করিয়া লোহ-খলে লোহদও বারা নিদিন্দাপাতার রদে মর্দদন করিবে। পুনর্কার পারদত্ব্য মরিচ্চুণ মিশ্রণ এবং মন্দন করিয়া ১ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। অনুপান—পাদের রস। ইহা সেবনে বিষমজ্ঞব, ধাতৃস্কুর, প্রবলদাহ, ত্রিদোষজ্ঞব, খাস ওকাস সহর উপপ্রিত হয়।

জুরকালকেতুরসঃ।

প্লসং বিষং গন্ধকতাত্রকঞ্চ মনঃশিলাক্ষরতালকঞ্চ। বিমন্দ্র বক্ত্রীপরসা সমাংশং গঙ্কাক্ষরং তত্র পূটং বিদধ্যাৎ॥ বিভঞ্জমস্যৈব মধুপ্রযুক্তং জ্বরং নিহন্তাইবিধং মহোগ্রন্থ। পুরা ভবাক্তে কথিতো ভবেন নৃণাং হিতার জ্বরকালকেতৃঃ।

পারদ, গন্ধক, বিষ, তাম, মনংশিলা, ভেলার মুটি ও হরিতাল প্রত্যেক সমভাগে লইন্না সিজের আঠায় মর্জন করত গজপুটে পাক করিবে। মাত্রা—২ রতি। মধু সহ সেবনীয়। ইহা সেবনে অষ্টবিধ জন নিবারিত হইনা থাকে।

জরারিরস:।

দরদবলিরদানাং শুবনাগান্তকাণায়
শুক্তগবিটি নিনানাং সর্ব্বেক্তর বোজান।
বিনিনন্পদলোগৈর্জাবিতং শোবরেৎ তং
দিবসদশসমাথ্যে রজিকৈকাক কুর্বাৎ ॥
একৈকাং ভক্ষেদক্ত চার্ককত রসৈমু তান।
দক্তমানো অবং হস্তি অবারিঃ স নিগন্ততে।
সর্বশ্রনাশী চ কদপিশ্বনিশানাঃ ॥

হিন্দুল, গন্ধক, পারদ, তান্ত, সীসক, অন্ত, সোহাগার থৈ, বিট্লবল ও মনঃশিলা, এই সম্দার জব্য প্রত্যেক সমভাগে লইরা সোন্দাল পাতার রসে ১০ দিন ভাবনা দিবে, অনন্তর ১ রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। অমু-পান—আদার রস। ইহা সেবনে সম্ভই জর নিবারিত হয়। পরস্ত ইহা সর্বপ্রকার শৃণ রোগের উৎক্ষই ঔবধ এবং বৃদ্ধিত কম্বপিত্তের বিনাশক।

শ্রীরসরাজঃ।

ভাগৈকং রসরাজস্য ভাগাত হেমমাজিকাং।
ভাগধাং শিলারাত গালকস্য এরো মতাঃ॥
তালকাই।লগ ভাগাঃ শুখং স্যাদ্ ভাগপঞ্চক্য।
ভলাতকাং এরো ভাগাঃ সক্ষেক্ত চূর্ণরেং॥
বজ্ঞীকীয়ল্তং কৃষা দৃঢ়ে মুন্ময়ভালনে।
বিধার স্পূলাং মুদ্রাং পচেদ্ বামচতুইরম্।
ভাগাততুইরকাস্য পর্বিশ্বেন দাপরেং।
রসরাজঃ প্রসিদ্ধোহ্যং অবমইবিধং জ্বেং।

পারদ ১ ভাগ, স্বর্ণমান্ধিক ১ ভাগ, মনঃনিলা ২ ভাগ, গদ্ধক ০ ভাগ, হরিত্রীল ১৮
ভাগ, তাম ৫ ভাগ ও ভেলা ০ ভাগ; এই
সম্দায় একত্র চুর্ল করিয়া সিচ্ছের আঠার
আপ্লুত করিবে; পরে একটা স্থদ্ট মৃদ্ধাণ্ডের
মধ্যে ঐ ঔষধ গুলি বাধিয়া শরাব শারা
ভাণ্ডের মুথ বন্ধ করিয়া উত্তমন্ধপে লেপ
দিবে। অনন্তর চুল্লীতে স্থাপন করিয়া ৪
গ্রহর কাল পাক কারবে। শাতল হইলে ঔষধ
উদ্ধৃত করিয়া মর্দন করিবে। ইহা ৪ রতি
মাত্রায় পানের সহিত সেবন। ইহা সেবনে
অইবিধ জ্বর উপশ্যিত হয়।

পর্ণথাড়েশ্বরঃ।

সমাংশং মর্দ্ধরেৎ থরে রসং গন্ধ: শিলাং বিষম্। নিশু তীব্দরসৈর্ভাব্যং ত্রিবারঞ্চার্ডকদ্রবৈং । শুদ্রৈকং জন্মরেৎ পর্ণে অরং হান্ত মহাস্কুতম্ ॥

পারদ, গন্ধক, মনঃশিলা ও বিষ সমভাগে লইরা নিসিন্দা পাতার রসে ও আদার রসে ৩ বার করিয়া ভাবনা দিয়া ১ রতি মাত্রায় পানের সহিত সেবন করিবে। ইহা সেবনে অতি আশ্চর্যারূপে জর উপশ্যিত হয়।

বিশ্বেশ্বররসঃ।

পারদং রদকং গলং তুল্যাংশং মন্দরেয়সে।
 অবপলে ত্রাহং পশ্চারেসে কোলক্ষ্রজে॥

নিদিন্ধিকারসে কাক-মাচিকারা রসে তথা। বিশুপ্তাং বা ত্রিগুপ্তাং বা গোকীরেণ প্রদাপরেং। রাত্রিকরং নিহন্ত্যান্ত নামা বিষেশরো রসঃ।

পারদ, গন্ধক এবং থর্পর সমভাগে লইয়।
অধ্বয়ন্ত্রর রসে, কুলম্লের রসে, কুলটকারীর
রসে ও কাচমাচীর রসে প্রভ্যেকে ও দিন
করিয়া ভাবনা দিতে হইবে। পরে ২৩
১ত প্রমাণ বটিকা কলিয়া গ্রাত্ত্র সহ সেবন
কারতে ২ ত্রজ্রের পাত

मुजारचां हेरक। तुमः।

পারদো গন্ধকশ্চিন ত্রিকারং লবণত্রয়ন্।
তথা গুলুবংসনাভক প্রত্যেকক্স বিমানিকন্
কুকোরঙ্গটানীরৈ হাবছেং সপ্রবারকন্।
গোক্রেরুকমারীয়-করঞ্চি বভেজিকা— ॥
ভুকুকনকবলীভিত্রিকলাবুহতীরসৈঃ।
মার্কিতা বটিকা কার্যা কুক্সনাকরমারভা ॥
ততো বটীবরং দ্বা যক্তেঃ শাট্যাদিভিব্ ভিঃ।
রসঃ সর্বব্রবং হস্তি কণ্যাতার সংশয়ঃ॥

পারদ্ধ, গন্ধক, সাচিকাব, যবকার, সোহাগার শৈ, সেন্দ্রন্বণ, বিট্লবণ, সচল-লবণ, গুগ গুলু ও বিষ প্রত্যেক > মাষা লইয়া ক্ষণপুত্ধরম্লের রদে সাতবার ভাবনা দিবে। পরে গোক্ষর, ইক্রযেব, কাটানটে, ডহরকরঞ্জ, চিতামূল, লতাফট্কী, ভূমিবিণ্টা, ত্রিফলা ও রহতী, ইহাদের যথাসন্তব কাথে ও স্বরসেমর্দন করিয়া > রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহার ছই বটী সেবন করিবে। বটিকা সেবনের পর বন্ধাদি ধারা সর্ব্ধ শরীর আচ্ছাদিত করিয়া দিবে। এই ঔষধ সেবনে সর্বপ্রকার জ্বর স্বাভি সম্বর বিনষ্ট হয়।

ত্ত্যাহিকারী রসঃ।

রসগন্ধশিলাতালং সংর্কারতিবিধা সমা। রসন্ত বিশুণং লৌহং রৌপ্যং লৌহান্দ্রি সন্মিতন্॥ পিচুমর্দ্ধরসেনাপি বিশ্বকান্তারসেন চ।
সর্বাং সংবর্দ্ধা বটিকাঃ কুর্যাদ্ গুঞ্জাতরোগ্মিতাঃ ॥
হস্তাদতিবিবাকাথ-সংযুতোহয়ং রসোগ্রমঃ।
ন্যাহিকাদীন্ জ্বান্ সর্বান্ রক্ষাংসীব র্ব্বহং ॥

পারদ ১ ভাগ, গন্ধক ১ ভাগ, মনঃশিলা ১ ভাগ, হরিতাল ১ ভাগ, আতইচ ৪ ভাগ, লোহ ২ ভাগ ও রেগগ অর্দ্ধভাগ, এই সমুদার নিমছালের রুসে এবং অপরাজিতার স্মর্দ্দিন করিয় ৩ রুভি প্রাণে ব ১ ফ করিবে। অনুপ:ন—আতইচের কাথ। ইহা সেবনে ত্রাহিকাদি সর্পপ্রকাব বিদমজর উপশামত হুইয়া গাকে।

চাতুর্থকারী রসঃ।

রসগন্ধকলী হাত্র-হরিতালং সমাংশিক্ষ্।
রসার্দ্ধপুত্র বিং হেন সর্বাং পল্লোদরে ক্ষিপেও।
কৃষ্ণপুত্র বাস মুনিপুশারসেন চ।
ভাবায়িয়া বটা কাথা বিশুপ্তারসেন চ।
চম্পক্রাব্যোগেণ সেনিতোহয়ং রসেবর:।
চাতুর্যকানীন্ নিশিলান্ নিহ্নাবিষম্বরান্।
(ত্রাহিকারিশ্চাতুর্যকারিশ্চ রসো অন্ধবিয়ন্তো
প্রব্যান্ ইতি বৃদ্ধবৈস্তা:।)

পাবদ, গন্ধক, লোই, অল ও হরিছাল প্রত্যেক সমভাগ, স্বর্ণ পারদের অর্ধভাগ; এই সম্নায় একত্র করিয়া ক্ষণ্ণ্ডুরা ও বক-ফুলের রদে মর্দান করত ২ রতি প্রমাণ বটকা করিবে। চাঁপাছালের রদ ইহার অমুপান। ইহা দেবনে চাতুর্থকাদি সর্ব্যঞ্জকার বিষমজ্জর উপান্ধিত হয়। (বিজ্ঞ চিকিৎসকেরা উপরি উক্ত আহিকারি ও চাতুর্থকারি এই ছুইটি ঔষধ জ্বরবিরামে দেবন ক্রিতে ব্যবস্থা দেন)।

বাতপিভান্তকরসঃ।

মৃতস্ চাত্রমুম্ভার্ক-তীক্ষমান্ধিকতালকম্। গন্ধকং মন্দরেং তুলাং বাইদ্রান্ধামৃতারদৈ:॥ ধাত্রীশতাবরীদ্রাবৈর্দ্রনৈ: কীরবিদারিকৈ:। দিনং দিনং বিভাব্যাথ দিতাকৌরমূতা বটা॥ মাৰমাত্ৰা নিহন্ত্যাশু বাতপিভজ্জরং ক্ষয়ম্। দাহং তৃক্ষাং ভ্ৰমং শোবং বাতপিন্তান্তকো রসঃ। দিতাকীরং পিরেচাতু বষ্টকাশসিতাবুত্রম্ ॥

শোধিত পারদ, গদ্ধক, অন্ত, মৃতা, তাম, লোহ, স্বর্ণমান্ধিক ও হরিতাল, এই সকল দ্রব্য সমভাগে একত্র করিবে এবং ঘষ্টিমধু, কিস্মিস্, গুলঞ্চ, আমলকী, শতমূলী ও ভূইকুম্ডাইহাদের প্রত্যেকের রুদে এক একদিন ভাবনাদিয়া মামপ্রমাণ বটকা করিবে। অন্তপান—চিনি ও মধু! ইহাতে বাতপৈত্তিক জ্বর, ক্ষয়, দাহ, তৃষ্ণা, ভ্রম ও শোষ প্রশমিত হয়। এই ঔষধ সেবনের পর শকরামিশ্রিত হ্যাকিংবা ঘষ্টিমধুর কাথে চিনি প্রক্ষেপ দিয়াতাহা পান করিবে।

জরকুঞ্জরপারীন্দরসঃ।

মৃচ্ছিঙং রসকবৈধকং তদক্ষি জারিতাত্রকম্বী
তারং তাপাঞ্চ রসজং রসকং তাদ্রকং তথা ॥
মৌজিকং বিক্রমং লৌহং গিরিজং গৈরিকং শিলা ।
গন্ধকং ক্রেমসারঞ্চ পলার্দ্ধক্য পৃথক্ পৃথক্ ॥
ক্ষারানী স্থরবন্ধী চ শোধায়ী গণিকারিকা ।
ঝাটামলা জ্যোংপ্রিকা চ সতিজা তু প্রদর্শনা ॥
অগ্নিজিহন পৃতিটেলা অর্পপণী প্রস রবা ।
প্রত্যেকবরসং দ্বা মর্দিশেং ত্রিদিন'বিধি ॥
ভক্ষরেৎ পর্ণথভেন চতুপ্ত প্রাপ্রমাণতঃ ।
মহাগ্রিকারকো রোগ-সকরম্মং প্রয়োগরাট ॥
সন্ততং সততাত্যেত্যাস্ততার্যকচতুর্পকান্ ।
অরান্ সর্বান্ নিহস্ত্যাপ্ত ভাস্করন্তিমিরং যথা ।
কাসং বাসং প্রমেহক্ষ সশোধাং পাড়কামলাম ।
গ্রহনীং ক্যরোগঞ্চ সর্বোগজ্বসংযুত্ম ।
অরহনীং ক্যরোগঞ্চ সর্বোগজ্বসংযুত্ম ।
অরহনীং ক্যরোগঞ্চ সর্বোগজ্বাহ্যে প্রথিতীতনে ॥

মৃচ্ছিত পারদ ২ তোলা, অত্র ১ তোলা, ক্রপা, স্বর্ণমান্দিক, রসাঞ্চন, থর্পর, তাত্র, মৃক্তা, প্রবাল, লোহ, শিলাক্রতু, গেরিমাটী, মনাপেলা, গন্ধক ও স্বর্ণ, ইহাদের প্রত্যেক ৪ তোলা; এই সমুদায় একরে মিশ্রিত করিয়া নিম্নলিখিত প্রত্যেক জবোর স্বর্গে তিন বার করিয়া তাবনা দিবে। (প্রথমে পারদ ও শিক্ষককে কজ্জলী করিয়া পরে অন্তান্ত জব্য

মিলিত করিতে হইবে।) ভাবনান্তব্য ষ্থা—
ক্ষীক্ষই, তুলদীপত্ত, পুনর্ববা, গণিরারি, ভূই
আমলা, ঘোষালতা, কট্কী, পদ্ম ভলঞ্চ, ঈশ্লাললা, লতাফট্কী, মুগানিঃ ও গদ্ধভাহলে।
ইহা পানের সহিত ৪ রতি মাত্রায় সেবন
করিলে সর্বপ্রকার জর, খাস, কাস, প্রমেহ,
সপোথ পাওু কামলা, গ্রহণী, উপস্তবর্ক্ত
ক্ষররোগ ও রোগসন্ধর অতি আশ্চর্যারূপে
উপশ্যিত ইইয়া থাকে।

কল্লতর-রসঃ।

রসং গদ্ধং বিষং তাত্রং সমভাগং বিচুর্নিছে।
ভাবয়েৎ পঞ্চতিঃ পিতৈঃ ক্মশঃ পঞ্চবাসরম্।
নিপ্ত প্রান্তরনের মন্দ্রেছে সপ্তবাসরম্।
আর্ক্রিক্সা রুকেনের ভাবগেচ্চ ক্রিধা পুনঃ ॥
সর্বপাতা বটা কাটা। ছায়রা পরিনোধিতা।
ততঃ সপ্তবটা যোজা বাবন ক্রিপ্তণা ভবেৎ ॥
বয়েহিছিদোধকং বৃদ্ধা প্রযোজ্যা ভিষজাং ববৈঃ।
অনুপানকোঞ্চলনং কজ্জনীপিপ্রনীযুত্ম্ ॥
পানাবশেষে প্রস্বাপ্য ববৈরাচছাদয়েররম্।
ফ্রাজ্যাগমনং যাবহ তত্যে রোগাৎ প্রমৃচ্ছে ॥
রোগিণং স্বাপ্রিয়া তু জ্যেরুহে স্পিতঃ ॥
রোগিণং স্বাপ্রিয়া তু জ্যেরুহে স্পিতঃ দিব।
এই ক্তেপ্রনাম রসং প্রমন্তর্লভঃ ॥
অন্থোং চিরকালে খং জার্ক বিষম্পরম্।
হয়ি জ্বা ভিসারে চি প্রহণ্ণ পাতুকামলাম্।
শ্বেং স্থাস্কাল্য চি প্রহণ্ণ পাতুকামলাম্।
শ্বেং স্থাস্কাল্য চি প্রস্বাক্রনরে ভ্যা ॥

পারদ, গদ্ধক, বিষ ও তাস, ইহাদের চুণ সমভাগে লইয়া পঞ্চপিত্ত (ব্রাই, ছাগ, মহিষ, কুইমাছ ও মগুর, ইহাদের পিত্তকে পঞ্চপিত্র কহে) দারা যথাক্রমে ए फिन, নিহিন্দা পাতার রসে ৭ দিন, আদার রসে ৩ দিন দিয়া সর্ধপাক্ততি বটিকা ছায়াতে শুক্ষ করিয়া শইবে। দোষ, অগ্নি ও বয়স বিবেচনা করিয়া উপস্কু মাত্রায় ক্রমণঃ ২১টা পর্যাস্ত বটিকা দেবন করাইবে। বটিকা সেবনাম্ভে ঘশোদাম পর্যাস্ত বস্তাচ্ছা-দিত হইয়া রোগী শয়ন করিয়া থাকিবে। ঘশোদগমের পর শ্যা তাগ ক রিয়া किकि मि পান

অমুপান—কজ্জলী, পিপুলচ্ব ও উঞ্চলল। ইহা দেবনে অসাধ্য ও চিরোখিত জীর্ণজ্বর, বিষমজ্ঞর, জ্বর, অভিসার, গ্রহণী, পাণ্ডু ও কামলা উপশমিত হয়। খাদ, কাদ ও শূল-মুক্ত রোগিকে এই ঔষধ দেবন করাইবে না।

কল্পতরু-রসঃ।

(মভান্তরে)

ভদ্ধং শদ্ধরপ্রক্রমকতুলিতং মারারিনারারজতত্ত্বং তাবছুমাপতিক্টুটগলালকারবস্তু শুত্রম্ ।
তাবত্যের মনঃশিলা চ বিমলা তাবং তথা টল্পন্
ভগ্তী ছাক্ষমিতা কণা চ মরিচং দিক্পালসংগাক্ষকম্ ॥
বিবাদিবত্ত্বি শিলোপরিষ্টাদ্ বিচূর্ণয়েছাসসি শোধয়েচে ।
তত্ত্ত্ব থমে রসগলকো চ চূর্ণক তদ্যামযুগং বিমর্দ্যম্ ॥
কল্পত্রনামধেয়ো বথার্থনানা রসঃ ভ্রেটঃ ।
সমারণয়েমগদান্ হরতে মালাক্ত শুতা ভ্রম্পেনা ॥
আর্দ্রকেশ সমমেব ভ্রম্পিতো হন্তি বাতক্ষসপ্রবং অসম্ ।
খাসকাসমুখসেকশাততা-বহ্নিমান্দ্যবিস্টান্ট নাশয়েও ॥
নক্ষেনাখেব হরতি শিরোহার্ডিং ক্ষবাত্তাম্ ।
মোহং মহাত্তম্পি চ প্রলাপং ক্ষব্যুগ্রহ্ম্ ॥

াবশুদ্ধ পারদ, গরুক ও বিষ প্রত্যেক এক অক-(২ তোলা)-পরিমিত। বিশুদ্ধ শিলা, তারমান্দিক ও সোহাগা প্রত্যেক ২ ভোলা, ভাঁঠ ও পিপুল প্রত্যেক ৪ তোলা এবং মরিচ ২০ তোলা পরিমাণে লইতে হইবে। পারদ ও গন্ধক ভিন্ন আর সমস্ত বস্তু প্রথমতঃ শিলাতে চুর্ণ করিয়া বস্ত্রে ছাঁকিয়া লইবে। ণরে উক্ত চুর্ণ পারদ ও গন্ধক সহকারে ২ প্রহর কাল মাজিয়া লইবে। মাত্রা—এক কুঁচ। ইহা একটী প্রধান ঔষধ। ইহার নাম যেরপ, গুণাও ভদ্ৰ। ইহাতে বাতজ্ব মেমজ ব্যাধির শান্তি হয়। এই রস আদার রণের সহিত দেবন করিলে খাস, কাস, মুখ-প্রদেক, শৈত্য, অগ্নিমান্দ্য, বিস্ফুচিকা এবং বাতজ ও শেমজ জরের শান্তি হয়। ইহার নস্ত লইলে কফজ ও বাতজ শিনঃপীড়া, মহা-মোহ, প্রলাপ এবং ক্ষবগুগ্রহের শান্তি হয়।

বিভাবল্লভো রসঃ।

রসদ্ধেচ্ছশিলাতালাশ্চক্রন্ধার্যকভাগিকাঃ।
পিষ্ট্ বিতান্ স্ববীতোরৈন্তাত্রপাত্রোদরে ক্ষিপেৎ ।
ক্ষাং শরাবে সংরুধ্য বালুকাষন্তগং পচেৎ।
ক্টিন্তি ব্রীহয়ো বাবৎ তচ্ছিরঃস্থাঃ শনৈঃ দনৈঃ।
সংচূর্গা শর্করাযুক্তং দ্বিবলং গুক্তায়েৎ ততঃ।
বিষমাখ্যান্ ধ্বরান্ হস্তি তৈলান্নাদি বিবর্জ্জেবেং।

পারদ ১ ভাগ, তাত্র ২ ভাগ, মনঃশিলা ৩ ভাগ, হরিতাল ১২ ভাগ, উচ্ছেপাতার রসে একত্র মর্দন করিয়া তাহা তাত্রনির্ম্মিত পাত্রে রাখিবে। পরে উহা শরার মধ্যে নিহিত ও মুখ ক্রন্ধ করিয়া বালুকায়ন্ত্রে করিয়া পাক করিবে। শাতল হউলে ওসং বাহির করিয়া ভাহা চূর্ণ করিবে। পাকপরিজ্ঞানাথ বালুকায়ন্ত্রের উপর কতকগুলি ধাক্ত স্থাপন করিবে, যখন ধাক্ত-শুলি ফুটিয়া উঠিবে, তখনই জানিবে, পাক সমাপ্ত হইয়াছে। ইহার মাত্রা—৪ রতি (ব্যবহার ২ রতি)। অন্তপান—চিনি। ইহা সেবনে বিষমজ্বর মাত্রই উপশ্যিত হয়। এই ঔষধ সেবনকালে তৈলাভ্যক্ষ ও অম্লাদি ভোজন নিষেব।

শ্রীজয়মঙ্গলো রসঃ।

হিঙ্গুলসম্ভবং সূতং গন্ধকং টঙ্গণং তথা। ভাসং বঙ্গং মাক্ষিকঞ্চ দৈদ্ধবং মরিচং ভথা। সমং সর্বাং সমাহত্য বিগুণং স্বর্ণভশ্মকম্। তদর্দ্ধং কান্তলোহক রূপাভস্মাপি তৎসম্ম । এতৎ मक्दर विद्वांश ভावस्त्र कनकञ्जतिः । भ्यानामाद्यकानि मन्यूनत्रम्य ह ॥ কিরাততিক্তকলাথৈপ্রিবারং ভাবয়েৎ স্থাী:। ভাবয়িখা ততঃ কার্যা গুঞ্জান্বর্মিতা বটী।। অতুপানং এযোক্তব্যং জীরকং ন্দুসংযুত্র। জীর্ণ বরং মহাখোরং চিরকালসমূত্তবম ॥ জরমষ্টবিধং হ'ন্তি সাধ্যাসাধ্যমধাপি বা। পুথগ, দোষাংশ্চ বিবিধান্ সমস্তান্ বিষমস্করান্। মেদোগতং মাংসগতমন্থ্রিমজ্জগতং তথা। অন্তৰ্গতং মহাঘোরং বহিঃম্বন্ধ বিশেষভঃ ॥ নানাদোষোদ্ভবকৈব অন্ন: গুক্রগত: তথা। ৰিখিলং অৱনামানং হস্তি আঁশিবশাসনাৎ ॥ জয়মকলনামায়ং বৃদঃ জীশিব্নিব্রিতঃ। বলপুষ্টিকর্লৈচব স্বর্বরোগনিবর্হণঃ #

হিঙ্গুলোখ পারদ, গন্ধক, সোহাগার থৈ,
তাত্র, বন্ধ, স্থানাক্ষিক, সৈদ্ধব লবণ ও মরিচ
প্রত্যেক প আনা, স্থানা ও আনা, (মতাস্তরে ২
তোলা) লোহ প আনা ও রোপ্য প আনা;
থাদের চুর্ণ একত্র করিয়া ধুতুরাপত্রের
রসে, শেকালীপত্রের রসে, দশমুলের কাথে ও
চিরতার কাথে প্রত্যেকে তিনবার করিয়া ভাবনা
দিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। অমুপান—
জীরাচুর্ণ ও মধু। ইহা সেবনে যে কোন-প্রকান
রের জরই হউক না কেন, নিশ্চয়ই আক্রোগ্য
হইবে। ইহা বল এবং পৃষ্টির জন্তাও উৎকৃষ্ট ঔষধ।

যড়াননে। রসঃ।

আরং কাংক্সং মৃতং তাসং দরদং পিপ্পনীং বিষম্।
তুল্যাংশং মর্জনেং পল্লে যামক গুড়্চীরসৈঃ ।
মধুনা মর্জনিয়া তু গুঞ্জামাত্রং লিহেৎ সদা।
অরে মন্দানলে চৈব বাতপিত,অরের্ চ॥
অরে বৈষমাতরুণে জীর্ণজনে বিশেষতঃ।
মূল্যারং মূল্যবৃংং বা তত্রুক্তক্রক কেবলম্॥
নারিকেলোদকং দেরং মূল্যপথাং বিশেষতঃ।
বড়াননো রসো নাম সক্ষেরকুলান্তরুং॥

পিত্তল, কাংস্তা, তাম, হিঙ্গুল, পিপুল ও বিষ, ইহাদের সমভাগ লইয়া ১ গ্রহর কাল গুলঞ্চের রসে মর্দান করিয়া ১ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। অনুপান—মধু। ইহা সেবনে সাধারণ জ্বর, বাতপিত্তজ্বর, তরুণজ্বর, বিষমজ্বর, জীর্ণজ্বর ও মলাগ্রি উপশমিত হয়। এই টিকা সেবনের পর রোগিকে মুগের যুষ, তক্র ও নারিকেল জ্লাপথ্য দিবে।

বসন্তমালতারসঃ।

বর্ণং মুক্তা দরদমরিচং ভাগরন্ধা প্রদিষ্টম্ ধর্শক্তাটো প্রথমমথিলং মর্দ্দিয়েন্যুক্ষণেন। যাবং ক্ষেহো ব্রজতি বিলয়ং নিমুনীরেণ ভাবন্ গুঞ্জাৰক্ষং মধুচপলরা মালতী প্রাগ্রসন্তা। সেবিতেরং হরেৎ তুর্ণং জীর্ণক বিষমশ্বরম্। ব্যাধীনক্তাংক কামাদীন্ প্রদীগ্রং কুরুতেংনলম্।

স্থৰ্গ ১ ভাগ, মৃক্তা ২ ভাগ, হিৰুল ৩ ভাগ, মরিচ ৪ ভাগ, এপর ৮ ভাগ; এই সম্লায় প্রথমতঃ কিঞ্চিৎ মাখন সহ মর্দন করিয়া পাতিলেবুর রসে তাবং কাল মর্দন করিবে, যাবৎ মাখনের স্নেহ ভাগ বিলুপ্ত না হইয়া যার। ২ রতি পালমাণে এই ঔষধ পিপুলচ্ব ও মধু সহ সেবন করিতে দিবে। ইহা সেবনে জীবজ্জর, বিষমজ্জর ও কাস প্রভৃতি অস্তান্ত রোগ উপশমিত এবং অগ্নি প্রাম্থীপ্ত হয়।

বিষমজ্বরান্তকলোহঃ।

পারদং গন্ধকং তুলাং তুতার্ধং জীর্ণতান্ত্রকম্।
তান্ত্রতুলাং মান্দিকঞ্চ লৌহং সর্বসমং নরেং ।
অয়স্ত্যাঃ স্বরদেনৈর কোকিলাক্ষরদেন চ।
বাসকান্ত্র পর্নরাঃ পঞ্ধা চ বিমর্জয়েং ॥
পৃথক্ কলারমানাজ্ঞ বটিকাং কারয়েদ্ বৃধঃ।
বিষমজ্বরাখনামায়ং বিষমজ্বরনাশনঃ॥
বহিনীপ্রিকরো হুল্যঃ প্রাইগুন্মারনাশনঃ।
চকুরো বৃংহণো বৃষ্যঃ শ্রেষ্ঠঃ সর্ববন্ধলাপহঃ॥

পারদ ২ ভাগ, গদ্ধক ২ ভাগ, তাম্র ১ ভাগ, স্বর্ণমাক্ষিক ১ ভাগ, লৌহ ৬ ভাগ, এই সমুদার জয়স্তীপাতার রুদে, কুলেখাড়ার রুদে, বাসকের রুদে, আদার রুদে ও পানের রুদে যথাক্রমে পাঁচবার করিয়া ভাবনা দিয়া মটার পরিমাণ বটিকা করিবে। ইহা সেবনে বিষমজর, গুলা ও প্রতিকারক।

পুটপাকবিষমজ্বান্তকো লোহঃ।

হিন্দুলসম্ভবং সৃতং গন্ধকেন স্থকজ্ঞলন্।
পর্ণটারসবৎ পাচাং স্তাজ্বি, হেমভত্মকন্॥
লৌহং তাত্রমত্রকক রসস্য দ্বিগুণং তথা।
বঙ্গকং গৈরিককৈব প্রবালক রসার্দ্ধকন্॥
*
মৃক্তা শহুং † শুক্তিভত্ম প্রদেরং রসপাদিকন্
মৃক্তাগৃহে চ সংস্থাপা পূট্পাকেন সাধ্যেং॥
শুক্তারং প্রাত্তর্শয় দ্বিগ্রন্থলানতঃ।
অনুপানং প্রযোক্তবাং কণাহিন্দু সমৈদ্ববন্।

- বল্পকৈব প্রবালক রসার্ক্ষ বিনিক্ষিপেদিতি
 রসেক্রগৃত্য পাঠঃ। ব্যবহারস্থ পূর্কেশৈব।
- † মৃক্তা শৰ্মাসত্যত্ত মৃক্তাশৰ্মাসতি কেটিৎ পঠন্তি. ব্যবহরতি চঃ

শ্বনাষ্ট্রবিধং হস্তি বাতপিত্তককোন্তবন্।
দীহানং বকুতং গুলং সাধ্যাসাধ্যমণাপি বা ।
সম্ভতং সততাথ্যক বিষমজ্বনাশনন্।
কামলাং পাঙ্রোগক লোণং মেহমরোচকন্।
গ্রহণীমামদোবক কাসং স্থাসক তত্র তং।
নৃত্রকুক্তাতিসারক নাশংয়দবিকল্পতঃ।
শ্বিদ্ধান্তবিধান্তবিধানিতঃ।
বিষম্পরাভকো নামা ধ্বস্তবিপ্রসাদনঃ।

হিন্দুলোখ-পারদ এক তোলা, ১ তোলা, উত্তমন্ধপে কজ্জলী করিয়া পর্পটীর স্তান্ত্র পাক করিবে, ইহার সহিত স্বর্ণ দিকি তোলা; লৌহ, অত্ৰ, তাম্ৰ প্ৰত্যেক ২ তোলা; বঙ্গ, গেরিমাটা রেদেক্রনারের মতে গেরিমাটী দিতে হয় না), প্রবাল প্রত্যেক অর্দ্ধ ভোলা; মক্তা, শৃঙ্খ ও বিষয়কভন্ম প্রত্যেক ২ মাধা; এই সমুদায় দ্রব্য জলে মদান করিয়া ঝিয়কে পুরিয়া উপরে মাটিব গেপ দিবে। পরে ঐ বিত্তক ২০০০ থানি ঘুঁটিয়ার মধ্যস্থ করিয়া পুট দিবে এবং শাতল হইলে ঔষণ গ্রহণ করিবে। মাত্রা—২ রতি; অর্পান—পিপুল-हुन, हिश्रु ७ (मन्नव नवन। देश (मवत्न मर्क প্রকার জ্বর, পাতু, কামলা, প্লীহা, যকুৎ, শোথ, মেহরোগ, অকৃচি ও গ্রহণী প্রভৃতি বছবিধ রোগ সত্তর উপশ্যিত হয়।

क्षिश्रारेनात्नखन्मः।

গন্ধকং পারদকালং ক্রোবণং জীরক্ষয়ন্।
শঠী শৃঙ্গা যমানী চ প্করং রামঠং তথা ॥
দৈশ্বং যাবশৃক্ষ টঙ্গণং গজপিপ্রলী।
জাতীকোবাজমোনে চ নৌহং যাশুলবঙ্গকন্।
খুল্ত রব:৬ং কৈপালং কট্ফলং চিত্রকং তথা।
থেত্যেকং কাবিককৈবাং মক্চ্বং প্রকারেং ॥
পাবালে বিমলে পাত্রে যুষ্টং পাবাণমূল্যরৈঃ।
বিষম্পরসং দ্বা চাকচিত্রকদন্তকাঃ ।
শিগরী কাঞ্লিকাবাসা নিজ্পী গণিকারিকা।
খুল্ত রক্ষ্মীরক্ পারিভ্রেকশিপ্রলী ॥
কন্টকার্যান্তর্গোলের মূলান্তভানি দাপরেং।
থ্রাং মূলরসং দ্বা যুষ্টমাতপশোষিত্রন্।
গুঞ্জাপ্রমাণ বটিকাং কার্য়েং কুশলো ভিষক্।
চ্যুন্বিধ্বটীং থানেং নিত্যমার্ক্রকারিশা ॥

উক্তোয়ামুপানেন শ্লেমবাধিং ব্যপোহতি।
বিংশতিং লৈমিকাংকৈন শিরোরোগাংক দারুণান্।
প্রমেহান্ যিংশতিকৈব পঞ্চত্মনিস্থনঃ।
উদরাণায়বৃদ্ধিকাপ্যামবাতবিনাশনঃ।
পঞ্চ পাঙ্গাময়ান্ হস্তি ক্রিমিস্থোল্যাময়াপহঃ।
সোদাবর্ত্তঃ করং কুঠং গাত্তেকভা্মরাপহঃ।
শেমামরিকুপারেতো রসেক্রো মুনিভাবিতঃ।
শ্লেমামরিকুপারেতো রসেক্রো মুনিভাবিতঃ।
শ্লেমানরিকুপারেতো নাম রসেক্রগুড়িকা মুতা।

গন্ধক, পারদ, অভ্র, শুঠ, পিপুল, মরিচ, জীরা, কুফজীরা, শঠী, কাঁকড়াশুঙ্গী, যমানী, পুষরমূল, (অভাবে কুড়), হিঙ্গু, দৈন্ধবলবণ, যবক্ষার, সোহাগার থৈ, গব্দপিপ্ললী, কৈত্রী, वनयमानी, लीट, ছत्रानला, नवक, धुक्रतावीक, জয়পালবীজ, কটফল ও চিতামূল ২ তোলা ; এই সমুদার দ্রব্য একত্র প্রস্তর খলে মৰ্দ্দন করিয়া বিল্ল, আকন্দ, চিতা, দন্তী, আপাং, লঘ জীবস্তী, বাসক, নিসিন্দা. গণিয়ারি. ধুতুরা, ক্লফজীরা (ইহার কাথ গ্রহণীয়), পিপুল ও কণ্টকারী, মুলের ও আদার রুসে ভাবনা দিয়া ছায়াতে শুক্ষ করিয়া লইবে এবং ১ রতি পরিমাণ বটিকা করিবে। অমুপান—আদার রস ও উষ্ণ জল। জর, শিরোরোগ, শোমক বিকার প্রভৃতি বছবিধ রোগ ইহা ছারা উপশ্মিত হয়।

পর্ণটীরসঃ।

শুদ্ধস্থ বিধাপক্ষ মর্দ্য ভূকরসেন চ।
মৃতং তামং নৌহভক্ষ পাদাংশেন তরোঃ কিপেৎ ॥
নৌহপাত্রে চ বিপচেচালয়েৎ লৌহচাট্না।
তৎ কিপেৎ কদনীপত্রে গোময়োপরিদংস্থিতে ॥
পশ্চাচে চূর্নমেৎ থলে নিগু গ্রা ভাবয়েদ দিনম্।
লয়ন্তাত্রিকলাকস্থা-বাসাভাগীকট্রিকৈঃ ॥
ভূকায়িমূলমুগুভির্ভাবয়েন্দিনসপ্তকম্।
অক্সারে: স্বেদয়েৎ কিঞ্চিৎ পর্পট্যাব্যো মহারসঃ ॥
চতুগু ক্লামিতো ভক্ষাঃ সম্যক্ রেমম্বরং লয়েৎ।
পথ্যাশুঠ্যমুভাক্যব্যমুক্তানং প্রযোজয়েৎ ॥

শোধিত পারদ ১ ভাগ, গদ্ধক ২ ভাগ একত্র কজলী করিয়া ভীমগাজের রসে মর্দ্ধন

করিবে। পরে মিলিত পারদ ও গন্ধকের চতুর্থাংশ পরিমাণে জারিত তাম ও লৌহভন্ম লইয়া উক্ত কজ্জলী সহ একত্র লৌহপাত্রে পাক করিবে এবং কোন লৌহদও ছারা বারং-বার নাডিবে। গলিয়া বেশ মিশ্রিত হইলে গোময়োপরি কদলীপত্র স্থাপন করিয়া তাহার উপর ঢালিয়া যথানিয়মে পপটী করিবে। ঐ পর্শটী খলে চুর্ণ করিয়া নিসিন্দা-পত্তের রসে এক দিন ভাবনা দিবে। জন্ধনী, ত্রিফলা, ত্মতকুমারী, বাসক, বামুন-হাটী, ত্রিকটু, ভুন্ধরাজ, চিতামূল ও মুখ্রিরীর রদে ৭ দিন ভাবনা দিয়া অঙ্গারাগ্নিতে শুষ করিয়া শইবে। ইহা ৪ রতি পরিমাণে বাবহার করিলে শ্লৈষ্মিক জর সমূলে বিনাশ প্রাপ্ত হয়। এই ঔষধের অনুপানার্থ হরীতকী, ভুঠ ও গুলকের কাথ বাবহার করিবে।

लक्गीविलारम। तमः।

পল কৃষ্ণাজচুৰ্বস্ত তদক্ষ্মী রসগৰকৌ। তদর্ম: চন্দ্রস:জন্ম জাতীকোষফলে তথা ॥ বৃদ্ধারকবাজক বীজং ধৃন্ত,রকন্স চ। ত্রৈলোক্যবিজয়াবাজং বিদারীমূলমেব চ ॥ শারারণী তথা নাগ-বলা চাতিবলা তথা। ৰীজং গোকুরকস্তাপি নৈচলং বীজনেব চ। এতেষাং কার্ষিকং চূর্ণং পর্ণপত্ররসৈঃ পুনঃ। নিপিষ্য বটিকা কাৰ্ব্য ত্ৰিগুঞ্জাফলমানত: । নিহস্তি সন্ধিপাতোপান গদান ঘোরাংকতুর্বিধান্। বাতোখান পৈত্তিকাং দৈচৰ নান্ত্যত্ৰ নিয়মঃ কচিৎ ॥ কুষ্ঠমন্তাদশাখ্যঞ্ প্রমেহান্ বিংশতিং তথা। নাড ব্রণং ব্রণং খোরং গুদাময়ং ভগন্দরম । মীপদং কফবাতোত্থং রক্তমাংসাশ্রিভঞ্চ যং। মেলোগভং ধাতুগভং চিরজং কুলম্ভবৰ ॥ গলশোধমন্ত্রবৃদ্ধিমতীসারং সুদারণন্। আমবাতং সর্ব্যেপং জিহ্বান্তন্তং গলগ্রহম্ ॥ উদরকর্ণনাসান্দি-মুখবৈকৃত্যনেব চ। কাৰ্মণান্যক্ষাৰ্শঃ-ছৌল্যদৌৰ্গন্ধ্যনাশনঃ। मर्कण्वाः निद्रःण्वाः श्वीगाः अविक्षनः। বটিকাং প্রাতরেকেকাং থাদেরিতাং যথাবলম্ । অতুপানমিছ প্রোক্তং মাংসপিষ্ঠং পরো দণি। বারিভক্ত রাসীধু-দেবনাৎ কামরূপধুক॥

বুদ্ধোহপি তঙ্গণশাধী ন চ গুক্রস্ত সংকর:। ন চ লিক্ষপ্ত শৈথিলাং ন কেশা যান্তি পক্তাম । নিতাং প্রাণাং শতং গছক মন্তবারণবিক্রমঃ। বিলক্ষযেজনী দৃষ্টিজায়তে পৌষ্টকঃ পরঃ। প্রোক্তঃ প্রয়োগরাজোহয়ং নারদেন মহাজনা। রুমো লক্ষাবিলাসম্ভ বাস্থদেবে জগৎপতৌ। অভ্যাসাদ যক্ত ভগবান লক্ষনার'ষু বল্লভঃ॥ রসগন্ধককপু রজাতীকোষজাতীকলানাং প্রত্যেকং পলার্কং বৃদ্ধদারকবীজাদীনাং নবদ্রব্যাণাং প্ৰতোকং কৰ্ম ইতি ভট্টাদিবাবহারঃ। রাঢ়ীয়ান্ত রস-গন্ধকরোমিলিতা পলার্দ্ধং, কপুরস্ত রসগন্ধকার্দ্ধং কর্বং, জাতীকোষকলয়োমিলিতা 44: বৃদ্ধদারকবীজাদিনব-জবাাণাং মিলি**ৱা কৰ ই**তাছিঃ।

অভ্র ৮ ভোলা, পারদ, গন্ধক, কপুর, জৈত্ৰী জায়ফল, প্ৰত্যেক ৪ তোলা, বিশ্বত্ব-বীজ, ধুতুরাবীজ, দিধিবীজ, ভূমিকুলাওমূল, শতমূলী, গোরক্ষচাকুণের মূল, বেড়েলা মূল. গোকুরবীজ, হিজলবীজ প্রত্যেক ছই ভোলা; (মতাস্তরে--পারদ, গন্ধক, কপূর্ব প্রত্যেক ২ তোলা, ভৈত্ৰী ও জায়ফল প্ৰত্যেক ১ ভোলা, বীজভাড়ক প্রভৃতি নয়টি দ্ৰব্য ২ তোলা), এই সমুদায় পানের রলে একত্ত মর্দ্ধন করিয়া ০ রতি প্রমাণ বটকা করিবে। ইহা অনুপানবিশেষে প্রযুক্ত হইলে সর্ব্যঞ্জার জর ও নানাবিধ রোগ উপশ্যিত ধাতৃক্ষয়ে মাংসপিষ্ট ও इक्षां पि वावत्त्रम् ।

মহারাজবটী।

রসগন্ধকমন্ত্রক প্রত্যেক্ত কর্মসাল্লতম্।
বৃদ্ধদারকবঙ্গক লৌহং কর্থার্থকং ক্ষিপের ॥
অর্ণ ভারাং কপ্যারক প্রত্যেকং কর্মপাদিকম্ ।
শক্রাশনং বরী চৈন বেতসর্জ্ঞনবঙ্গকম্ ॥
কোকিলাক্ষং বিদারী চ মুবলী শুক্ষপিত্রিকম্ ।
জাতীফলং তথা কোবং বলা নাগবলা তথা ॥
মার্ব্যামিতং ভাগং ভালমূল্যা রসেন চ।
পিন্ত্রী চ বটিকা কান্যা চতুও ক্লাপ্রমাণতঃ ॥
নপুনা ভক্ষরেং প্রাত্বিশনজ্ঞরশান্তরে।
ধাতুত্বংক্ত জ্বরান্ সর্কান্ হস্তাদেব ন সংশায়ঃ ॥

বাতিকং পৈত্তিককৈ ব লৈছিকং সান্নিপাতিকন্।
জ্বাং নানাবিধং হস্তি কাসং নাসং ক্ষাং তথা ।
বলপুষ্টিকরং নিভাং কামিনীং রময়েৎ সদা।
ন চ শুক্রং ক্ষাং বাতি ন বলং হ্রাসভাং ব্রজেৎ ।
উর্দ্ধাং লেছজং হস্তি সন্নিপাতং ক্ষাকণন্।
কামলাং পাশ্রোগন্ধ প্রমেহং রক্তপিত্তকন্।
মহারাজবটা গাতা রাজবোগা। চ সর্বাদা।

পারদ ২ তোলা, গন্ধক ২ তোলা, অল ২ তোলা, বিদ্ধান্ধকারীজ, বঙ্গ ও লৌহ প্রত্যেক অদ্ধ তোলা, স্বর্গ, তাম, কর্পূর প্রভাগেক অদ্ধ তোলা, দিদ্ধিরীজ, শতমূলী, শ্রেতপুনা, লবঙ্গ, কুলেখাড়া, ভূমিকুলাও, তালমূলী, আলক্ষাবীজ, জায়ফল, জৈত্রী, বেড়েলাও গোরমান্দাকুলে প্রতাকে দিকিতোলা পরিমিত; এই সম্পায় একত্র তালমূলীর রাসে মর্দান করিয়াও রাতি প্রমাণ বাটকা করিবে। ইহার অনুপান—
মধু। ইহা সেবনে দর্শপ্রকার জ্ব এবং কাস ও খাস প্রভৃতি বছবিধ বোগ উপশ্যিত হয়।
অধিকম্ব ইহা দেহের বলও পুষ্টি সাধন করিয়ার রিতশক্তি ব দ্বিত করে।

সর্ববজ্বহরলোহম।

চিত্রকং ত্রিকলা ব্যাসং বিভূক্তং মুন্তকং তথা।
শ্রেয়সী পিললামূলমূশারং দেবলার চ॥
কিরাতাতক্তকং বালং * কটুকা কটেকারিকা।
শোভাঞ্জনন্ত বীজঞ্চ মধুকং বংসকং সমম্ ॥
লোহতুলাং গৃহাত্বা তু বটিকাং কারয়েদ্ভিষক্ ॥
সর্ব্বেরহরং লোহং সর্বাজ্ঞরকুলাস্তকুৎ ॥
বাতিকং পৈত্তিকং প্রেম-ছল্ডজং সারিপাতিকম্।
জীর্ণজ্বরুক বিষমং রোগসঙ্করমেব চ ॥
প্রীহানমগ্রমাংসক যক্তঞ্চ বিনাশয়েও।
সর্ব্বেরহরং লোহং চন্দ্রনাপেন ভাবিতম্ ॥
* বালমিত্যত্র পাঠেতি রসেন্দ্রসারসংগ্রহণ্ডঃ পাঠঃ।

চিতামূল, বহেড়া, আমলকী, হরীতকী, ভঁঠ, পিপুল, মথিচ, বিড়ঙ্গ, মূতা, গজপিপ্পলী, পিপ্পলীমূল, উনান্ত, দেবদারু, চিরতা, বালা (পাঠান্তরে আক্নাদি), কট্কী, কণ্টকারী, সজিনা বীজ, যষ্টিমধু ও ইক্রমব প্রত্যেক

সমভাগে লইয়া সমষ্টি যত হুইবে, সেই পরি-মাণে লোহ মিশ্রিত করিবে। পরে জল সহ মর্দন করিরা (১ রতি প্রমাণ) বটিকা করিবে। ইহা সেবনে সর্ববিশ্রকার জব, প্লীহা, যক্তং ও অগ্রমাংস নিবারিত হয়।

র্হৎ সর্বজনহর পেহম্ ।

বিপলং জারিতং লৌহং রসং গন্ধং বিভোগকম্।
তোলকং ত্রিফলা ন্যোষং বিচক্তং মুক্তকং তথা ॥
ভোগসী পিপ্লীমূলং হরিছে বে চ চিত্রকন্।
মার্জিকপ্ত রসেনৈর বটিকাং কারয়েদ্ ভিষক্॥
ভঞান্তরাং বটাং কুয়া ভক্তরেদার্জকক্রবিঃ।
সর্বনেরহরং লৌহং সর্বজ্ঞরবিনাশনম্॥
বাত্রিকং পৈত্রিকক্তিব হৈত্রিকং সাল্লিপাতিকম্।
বিষমজরক্তােথ-জরং প্রীহানমেব চ॥
মাসজং পক্ষভক্তিব তথা সংবংসরােথিতম্।
সর্বনিন্ জরান্ নিহস্তাাত্র ভাকরন্তিমিরং বথা॥

লোহ ১৬ তোলা, পারদ ২ তোলা, গন্ধক ২ তোলা, বংড়া, আমলকী, হরীতকী, ওঁঠ, পিপুল, মরিচ, বিড়ক্ষ, মুতা, গন্ধপিপ্লী, পিপুলীমূল, হরিজা, দাকুহারজা ও চিতামূল প্রত্যেক ১ তোলা; এই সমুনায় একজ আনার রসে মর্দন করিয়া ২ রতি প্রমাণ বিটকা করিবে। অন্থপান— আদার রস। ইহা সেবনে সর্বপ্রকার জর ও প্লাহা নিশ্চয়ই উপশামত হইয়া থাকে।

বৃহৎসর্ববন্ধরহরলোহম্।

(মহান্তরে)

পারদং গদ্ধকং শুদ্ধং তাম্রমজ্ঞ মান্দিকম্।
হিরপাং তারতালঞ্চ কর্মেকং পৃথক্ পৃথক্ ॥
মৃতকান্তং পলং দেবং সর্বমেকাকুতং শুশুম্।
কল্যমাণৌবধর্তাবাং প্রত্যেকং দিনসপ্তকম্ ॥
কারবেল্লরসেনাপি দশমূলরসেন চ ।
পপটিশু কর্মানেশ কাথেন তৈকলেন চ ॥
গুডুকাঃ শ্বরসেনাপি নাগবলীরসেন চ ।
কাক্যাটীরসেনেব নিগু গ্রাঃ শ্বরসেন চ ॥
পূন্নবার্কিকাক্যোভিভাবনাং প্রিকল্প চ ।
রিজ্কাদ্বিক্রমেণ্ব বটিকাঃ কারবে্দ্রিক্রক্ ॥

পিল্লানী গ্রন্থ কর বাহিকা অরনাশিনী। জবমষ্টবিধং হস্তি চিরকালসমূত্তবম্॥ विविधः नानिप्तारमायाः मानाप्तारमाखनः एथा। সত্ত দিজ্যং হতি সাধাসাধানপাণি বা ৮ ক্ষাভ্ৰণ ব'ত্তু কা**মশোকভ**ৰ ওগা! ভত্ত বেশক্ষরকৈর কক্ষদে বভবং তথা ৮ অভিগাতজ্ববৈদ্বম্ভিচাবসমূভ্বম। श्रुक्तिमान सहाधाति विश्वमक जिल्लामान्य । মীতপুৰৰ চাত্ৰলৈ বিষয়ং শীৰণে চাৰণ। পালগ্ৰহার বা বা বা বা বা Make the straight with a Markett fra Lorda Parente Lea 의 하나 가사이다 구환경기장 어때 등하다 이 사는 나 1 শালারং তক্রসহিতং ভোজ্ঞের ছলসংযুত্য ॥ ककात्रभूर्वकः मन्त्रः वर्ष्क्रनोग्नः विस्थरहः। মৈথুনং বৰ্জায়েৎ তাবদ যাবন্ধ বলবান ভবেৎ। সর্বজ্বরহরং লৌহং তল ভং পরিকীর্ত্তিতম ॥

পারদ, গন্ধক, তাম, অলু, স্বর্ণমান্ধিক, মুর্ণ, রৌপা ও বিশুদ্ধ হরিতাল প্রত্যেক ২ ভোলা, জারিত কান্তলৌহ ৮ তোলা, এই সমু-দার দ্রবা একত্র করোলাপাতার রসে, দশমূলের কাথে, ক্ষেত্রপাপ্ডার কাথে, ত্রিফলার কাথে, গুল্পের রুদে, পানের রুদে, কাকমাচীর রুদে, নিসিন্দাপাতার রসে এবং পুনন্ব ও আদার রুদে ক্রেফ ক্রেড ভাবনা দিয়া ২ রতি প্রমাণ विकिश किंद्रिय । এই मरशेयर स्मवत्न य-কোন প্রকার জবই হউক না কেন, সপ্তাহেব মধ্যে নিবারিত হইবে এবং ইহাতে অগ্নিমান্দ্য, পাণ্ডু, প্লীহা ও কাসবোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে। অমুপান-পুরাতন গুড় ও পিপুলচ্ব। শাল-তণ্ডুলের অন্ন ও পান্তরা প্রভৃতি পক্ষিনাংস সম্পূর্ণ বললাভ না করা পর্যান্ত পথ্য। নিষিদ্ধ । কুম্মাণ্ড, কাক্রোল মৈথনাদি প্রভৃতি ককারাদি নামক দ্রব্য অপণ্য।

ত্রৈলোক্যচিন্তামণিরসঃ।

ভাগত্রয়ং স্বর্গভন্ম দ্বিভাগং তারমন্ত্রকন্। কৌহাৎ পঞ্চ প্রবালঞ্চ মৌজ্বিকং তারদন্মিতন্॥ ভাষাগুকা বটা কাৰ্যা ছাগীতুকামুপানতঃ ।
ছায়াগুকা বটা কাৰ্যা ছাগীতুকামুপানতঃ ।
ক্ষাং হস্তি তথা কাসং গুলাগাপি প্ৰমেছনুৎ।
জীৰ্মজন্তনকাৰ্যানুমানন্ত নিরন্তনঃ।
স্কারোগহনকাপি বালিদোশনিবানাঃ

স্থাত ভাগ, রোপা ২ ভাগ, অত্র ২ ভাগ, লোহ ৫ ভাগ, প্রবাল ১ ভাগ, মুক্তা ৩ ভাগ ও ল স্থান ১ জন ১ জন ১ জন কাল ১ জন ১ জন ১ জন ১ জন শাং — হাল ১৯। ১২ সেবলে ক্যারোগ, কাল, গুলা, প্রবাহ, উল্লাদ ও জীর্ণজ্ঞা প্রভৃতি উপশ্যিত হয়।

রুহদিষমজ্বান্তকে। রুমঃ।

ভদ্মতং তথা গদ্ধং কাৰ্য্যেং কৃষ্ণ্ড্ৰান্ ।
মৃতস্তুতং হেম তাৱং লোহনভ্ৰপ তাপ্ৰক্ৰ ॥
তালসন্ধং বঙ্গভ্ৰম নৌজিবং সপ্ৰবালকন্ ।
স্বৰ্ণমান্তিককাপি চুৰ্ণহিছা বিভাবহেং ॥
নিপ্ত তা নাগবলী চ ক্ৰেমাটা সপপটা ।
ডিফেলা কাৰ্যেটাৰ দশ্তুৰ পুনৰ বা ।
ভড্টী ব্ৰকভাপি সংস্থানকৰণজ্ক ।
এতেৰাক বসেনিৰ ভাৰতে নিদিনং পুৰক্ ।
ভঞ্জামানং বটাং কুল্ডেগজ্বিং ব শলো ভিষক্ ।
পিজনাওড়কেনিৰ লিংহাত বটিকাং ভঙান্ ॥
অৱমন্তিবং ইন্তি নিনামং সংযোগত ৩ থা ॥
সততাদিক্ষাং ইন্তি সাধাসোধান্যৰা প্ৰা ।
ভিত্তিতাত ভচাৰোখং জান্ত্ৰাং বিশেষতঃ ॥

কজলী, রসাসন্ব, স্বর্গ, রৌপা, লৌহ, কল, তাম, হারতালভন্ম, বঙ্গ, মুক্তা, প্রবাল ও স্বর্ণাক্ষিক; এই সম্দার সমভাগে গ্রহণ করিয়া নিমলিখিত দ্রব্যসমূহের যথাসম্ভব স্বর্মে বা কাথে তিন দিন করিয়া ভাবনা দিবে। ভাবনাদ্রব্য যথা,—নিসিন্দা পাতা, পান, কাকমাচী, ক্ষেত্রপাপ্ডা, ত্রিফলা, করোলাপাতা, দশমূল, পুনর্গবা, গুলঞ্চ, বাসকছাল, ভূজরাজ ও কেগুর্কে। এক রতি প্রমাণ বটকা।

অনুপান—পিপ্ললীচূর্ণ ও পুরাতন ওড়। ইহা সেবনে সর্বাপ্রকার জর উপশমিত হয়।

বৃহজ্বরাস্তকলোহম্।

রসং গন্ধং ভোলকক জাতাকোবকলে তথা। হেমভন্ম ত পাদৈকং তোলার্দ্ধং রূপ্যক্রেহকম ॥ অবং শিলাজত চৈব ভুঙ্গরাজক মৃস্তকম। কেশরাজমপামার্গং লবকঞ্ ফলত্রিকম ॥ नताक्रवक्रवरिष्ठ शिक्षलीयुलस्यव ह । रिमक्त क विरुदेश व छड्ड होह र्श्य ह ॥ क छकाती तरमानक था खकः जीतक व्यम । क्लानः (प्रवक्तिक प्रदेशीलयवासन B # কিরাততিককং বালং তোরকঞ্সমাহরেও। ৰিভোল: মরিচং দেরং ভাবরেদার্<u>দ্</u>রকৈরদৈ: । মাবার্দ্ধং ভক্ষরেৎ প্রাতম ধুনা মধুরীকৃত্য। জরং নানাবিগং হস্তি শুক্রস্থং চিরকালজম। সাধাসাধাবিচারোহত নৈব কার্যো ভিষ্থরৈ:। অন্তথ তিগতকাপি নাশয়েলাত সংশয়: # ভূতোথং শ্রমজঞাপি সন্নিপাত্ররং তথা। অসাধাঞ্চ জরং হস্তি দলা সর্বোদয়ন্তম: । शक्रफ मगालाका यथा मर्भः भनाग्रह । তথৈশক্ত প্রসাদেন জর: नীজং পলায়তে। वलपर शृष्टिनदेकत मन्त्राधिनाननर शत्र । বীর্যাক্তঞ্জকরঞ্চৈর কামলাপাভরোগতুৎ। সদা ত রমতে নারীং ন বীর্যাং ক্ষরতাং এছেও। প্রমেহং বিবিধকৈব বিবিধাং গ্রহণীং তথা ॥ অতুপানবিশেষেণ সর্বব্যাধিং বিনাশয়েৎ॥

(বৃহজ্জরাস্তকলোঁহে তোলক্মিতি রদাদিকলাস্তং প্রত্যেকং তোলকভাগম, হেমন্তম তু পাবৈক্মিতি এক-ভাগাপেক্ষরা পাদৈকন্। বরাক্ষবন্ধলং গুডুক্। গুডু্চী-চুর্গমিত্যক্ত গুডু্টীসন্তমিতি ব্যবহর্ষি বৃদ্ধাঃ। রসোনং রসোনকলং তচ্চ ছন্ডেন পরিশোধিতং গ্রাহ্মন্। ভাবত্বে-দার্দ্ধক্রবৈর্তি আর্থ্রকর্ষাঃ মপ্তবারং ভাবত্বেং।)

পারদ ১ তোলা, গদ্ধক ১ তোলা, দৈত্রী ১ তোলা, জান্বফল ১ তোলা, স্বর্ণ দিকি-তোলা, লৌহ অর্ধতোলা, রৌপ্য অর্ধতোলা, অত্র, শিলাকতু, ভূকরাজ, মৃত্রা, কেন্তুর্পে, আপাং, লবজ, বহেড়া, আগলকী, হরীতকী, দাক্ষচিনি, পিপুলমূল, সৈন্ধবলবণ, বিট্লবণ, শুলকের চিনি, কন্টকারী, রহ্মন, ধনে, জীরা,

ক্ষজীরা, বক্তচন্দন, দেবদারু, দারুহরিন্তা, ইক্রথব, চিরতা ও বালা প্রত্যেক ১ তোলা, মরিচ ২ তোলা, এই সম্পায় চূর্ণ একত্র করিয়া আদার রসে সংখাহ সন্ধানাস্তে অর্জমাষা (ব্যবহার ২।৩ রতি) পরিমাণ বটিকা করিবে। প্রাত্যকালে মধু সহ সেবনীয়া ইহা সেবনে সর্বপ্রকার জর উপশমিত ও বলবীর্যাদি অসাদারণ রূপে বর্জিত হয়।

পঞ্চাননো রুসঃ।

শস্তোঃ কঠবিভূনণং সমরিচং নৈত্যেন্দ্ররক্তং রবিঃ,
পক্ষো সাগরলোচনং শশিমুগং ভাগো>কসংখ্যাভিতঃ ।
থলে তং পরিমন্দ্রিতং রবিজলৈপ্ত প্রক্ষাত্রং দদেও।
সিংহোহয়ং জ্বরদন্তিদর্শদলনঃ পঞ্চাননাথো রসং ॥
পথাক দেয়ং দ্বিভক্তকক সিন্ধুয়পখ্যামধুনা সমেত্রম।
গন্ধানুলেপ্যে হিমতোর্গানং ছন্ধক দেয়ং শুভদাত্বিক ॥

বিষ ২ তোলা, মনিচ ৪ তোলা, গন্ধক ৩ তোলা, হিন্দুল ১ তোলা, তাম ২ তোলা, সম্নায়ে এই ১২ তোলা দ্রব্য আকলমুলের রসে মন্দন করিয়া > রতি প্রমাণ বাটকা করিবে। ইহা সেবন করিলে প্রবল জ্বর নাশ হয়। এই ঔষণ সেবন করাইয়া শীত-ক্রিয়াদি কর্তব্য ।

শীতভঞ্জীরসঃ।

পারদং রদকং তালং তুথং টকণগন্ধক।
দর্বনেতং সমং শুদ্ধং কারবেরা রগৈদ্দিন ॥
মর্দ্ধারে তেন কন্দেন তামপাজোদরং নিপেং।
অকুলার্দ্ধার্দ্ধানে তং পচেং দিকতাহয়ে ।
বাজে বাবং ক্টেন্ডাব ব্রীহয়ন্তক্ত পৃষ্ঠতঃ।
তামপারং সম্ভূতা চ্বারেম্রিটো সমম্ ।
শীতভক্লীরদো নাম বিশুসং বাতিক্সার ।
দাতবাং পর্বধ্রেন মুহুর্জারাশয়েক্ষরম্॥

অত রসকং থর্ণরম্। গুদ্ধভার্ম ষ্ট্তোলকং তেন নির্মিতং ভারথলং প্রভোকং ভোলমিতেন পারদাদিষদ্ধ, ফ্রোণ লিপ্তম্ অধােমুখং কুছা ছালাাং সংস্থাপ্য পাতা। স্থরেণাচ্ছাপ্ত বদবীপত্রককেন সন্ধি: নির্মণ্ড ট উপরি বালুকাভিঃ ছালীং পরিপুণ্ড ভত্নপরি ত্রীধীন্দকা চুলাং নিবেশ তাবদায়িশ্বালা দাতবা। ঘাবদ্ বীহরো ন কুটন্তি, কুটিতেরু তেরু বীহিরু রসঃ সিন্ধো ভবতি। পশ্চামারিচচ্ণ নট্ডোলকম্ সর্কমেকীস্টো চূর্ণয়িত্বা অক্ত দ্বিগুঞ্প পর্বথাওন সহ ভক্ষারে দিহাপদেশঃ।

৬ ভোলা পরিমিত বিশুদ্ধ তামে একটা থল প্রস্তুত করিবে। অনস্তর পারদ, থর্পর, হরিতাল, ভূঁতে, সোহাগার থৈ ও গন্ধক এই ছয় দ্রবা প্রত্যেক ১ তোলা পরিমাণে লইয়া করোলাপত্র-(উচ্ছেপত্র)-রুদে মর্দন ক বিয়া ভদ্মারা প্রব্যেক্ত ভাত্রথলের উদরভাগ সিকি অঙ্গুল পরিমাণে লিপ্ত করিবে। একটী হাডীর সধ্যে অধোমুখে উপরিভাগে অপর 짱이리 ক বিষ্ণা তাহার முகுடு পাত্র চাকা **जिया** বদরীপত্র-কল্বে সন্ধিন্তল লিপ্ত করিবে এবং তাহা বালুকা ঘারা পূর্ণ করিয়া উপরিভাগে কতকগুলি ধাঞাদি নিক্ষেপ করিবে। পরে উহা চ্নীর উপর স্থাপন করিয়া আল দিবে। উপরের হাড়ীর ধান্ত সকল কুটিলে চন্ত্ৰী হইতে উহা নামাইয়া ঔষণ উদ্ধার করিয়া উহার সহিত ৬ ভোলা মরিচচুর্ণ মিশ্রিত করিবে। ইহা ছুই রভি পরিমাণে পানের সহিত দেবনীয়। ইহা দেবন করিলে মুহূর্ত মধ্যে বাতিক জ্বর নষ্ট হয়।

বিক্রমকেশরীরসঃ।

গুৰমেকং বিধা তারং মর্দ্ধরেদ্ বিধিবদ্ ভিষক্ ॥ পশ্চাদ্ বিষং রসং গদ্ধং মেলব্লিছা তু ভাবরেৎ। একবিংশতিবারাংশ্চ কিম্পাকবন্ধরেটবেং॥ রসঃ শিদ্ধং প্রদাতব্যো গুল্লামাত্রো ম্বরাস্তক্ধ। সর্ব্ববহুরঃ খ্যাতো রসো বিক্রমকেশরী॥

ভাষ > ভোলা, রৌপ্য ২ ভোলা, উত্তমরূপে মর্দন করিয়া ভাহাতে বিষ, পারদ, গন্ধক
প্রত্যেক > ভোলা পরিমাণে মিশ্রিক করিয়া
মর্দন করিবে। পশ্চাৎ লেরুমূলের বর্জনের
রূপে ২১ বার ভাবনা দিরা > রভি পরিমিত
বটিকা করিবে। ইহা দেবন করিলে সর্বাধ্বার জর নষ্ট হয়।

(यधनारमा त्रमः।

তারং কাংকং মৃতং তাজং দ্রিভিজ্ঞাক গজকম।
কাপেন মেঘনাদস্য পিষ্টা কলা পুটে পচেব ॥
বড়্ভিঃ পুটৈ র্জনেব সিন্ধো মেঘনাদো অসাপতঃ।
ভক্ষের পর্বপত্তন বিষমজ্ঞানাশনঃ ॥
অস্য মানা বিশুলা স্থাব পথাং ছুল্লোদনং হিতম।
নাগরাতিবিষামুত্ত-ভূনিস্বায়তববসকৈঃ ॥
সর্বাব্যাতিসারস্বং কাথমস্যানুপায়রেব।
ভর্মণং বা অসা জীবং ভূকাং দাব্য নাশায়েব ॥

রূপা, কাঁসা, তাম প্রত্যেক ১ তোলা, গরূক ৩ তোলা, একত্র লাল কাঁটানটের কাথে মাড়িয়া ৬ বার গরুপুটে পাক করিবে। মাত্রা— ২ রতি। পানের সহিত সেবনীয়। ইহাতে বিষমজ্ঞর নই হয়। পথ্য— হগার । জ্বরাতি- সারে গুলী, আতইচ, মূতা, চিরতা, গুলাঞ্চ, কুড় চিছাল মিলিত ২ তোলা, অর্দ্ধদের জলে, সিদ্ধ করিয়া অর্দ্ধপোয়া থাকিতে নামাইয়া সেই কাথ অন্থপানে ঔষধ (মেঘনাদ রস) সেবন করাইবে। ইহাতে তরুণজ্ঞর, জীর্ণজ্ঞর, তুষণা ও দাহ নিবৃত্ত হয়।

শীতারী রসঃ।

কুমাওকারচ্রে দকতিলজপুথক্পাচিত ওছতালং
তুলা পতেন পিট্র তি পিবসমসকুৎ কারবেলদ্রবে ।
কিন্তা তৎ ধণরান্তদিনপতিপিতিত রক্ষ্মপান্তাহত তানারক্ষ চুর্পাণাগুড়লবণপটাম্ভিরপান্তরালম্ ॥
তদ্বালুকাপুর্বিটে বিদ্যাক্ষনে পচেৎ তাবছপ্রাম্বা ।
বীছিবিবর্ণজমুপৈতি যাবৎ ভতক্ত শীতং বিদ্যাত চুর্ম্ ॥
সিদ্ধ ভচ্চ সমাদলীত তুলসীতোরেন বলোমিতং
পশ্চাৎ ক্ষোদ্রকাশিতাজ্ঞাপয়সা কৃত্যামুপানং গদী।
ভূজীতাশ পরোভয়মুশ্লস্ভিতং সাজ্যক হক্তায়্ণাং
তাপং কালবংশন স্থিতসয়ং শীতারিনামা রসঃ ॥

কুমাওকার, চুণের জল, তিলের কার;
এই সমুলায় বারা ক্রমে ক্রমে হরিতাল পাক
করিয়া তাহার দহিত সমপরিমিত পার্দ মিশ্রিত ও ক্রোলাপাতার রসে তিন দিবস

আরং কাংসাম, অত্তং কাংসামিতি চ বছবিধপাঠোহস্য পুত্তকান্তরে দুপ্ততে।

ক্রমাগত পেষিত করিয়া শার্মীবে স্থাপিত করিবে। ঐ শারাব তাম্রপাত্রে আচ্ছাদন করিয়া হরীতকীচুর্ণ, গুড়, লবণ, থড়ে ও মৃত্তিকা ঘারা রক্ত্রজাগ লেপন করিয়া বালুকাযম্ভ্রে পাক করিবে; যম্ভ্রের উপরি স্থাপিত ধান্ত ফুটিত হইলে পাকক্রিয়া সম্পাদিত হইবে। শাতল হইলে ঔষধ উদ্ধৃত করিয়া চুর্ণ করিবে। ইহার মাত্রা—২ রতি। তুলদীপত্রের রসে মাড়িয়া মধু, পিপুলচুর্ণ, চিনি, মৃত ও হুয়া মিশ্রত করিয়া দেবন করাইবে। পথ্য—হয়া অয়, মুগের যুদ্ধ ও মৃত। ইহাতে সঞ্চিত জর নষ্ট হয়।

জ্বশূলহরো রসঃ।

নসগন্ধকয়ে পুথা কজ্জীং ভাগুমধ্যগান।
তত্তাধাৰণনাং তাস-পাত্তীং সংক্রম্ম পোষয়ে ।
পাদাসুক্রমাণেন চুলাং কালেন ওাং দহেও।
মাষন্ত্যং ত্রসপাত্তাং সনাগরেং ।
চূর্ণমেন রক্তিন্গলং তৃতীয়ং বা বিচক্ষণঃ।
তাসুলীদলযোগেন দ্পাৎ সর্ক্রমেন্স্ম্ম ॥
জীরদৈন্ধবসংলিপ্ত-বজ্জায় ক্রিণে হিতম্।
বেদাদ্যমো ভবতোব দেবি সর্কেন্স্ পাপাত্ত ।
চাতুর্বকাদীন্ বিষমান্ নবমাগামিনং জ্বন্।
সাধারণং সন্নিপাতং জয়তোব ন সংশন্তঃ।

রস ও গন্ধক সমভাগে লইয়া কজ্জনী করিবে। ঐ কজ্জনী দারা একটি তামপাত্র পাদাস্থ্ঠ-পরিমাণ প্রলিপ্ত করত অপোন্থে ভাওমণ্যে হাপিত করিয়া আচ্ছাদন করিবে। দিয়া পাক করিবে। দীতল হইলে এই কজ্জলীলিপ্ত পাত্র চুর্ণ করিয়া যত্বপূক্ষক রক্ষা করিবে মাত্রা—২০০ রতি। জীরক ও সৈম্বৰ লবণ চক্ষণায়ে পানের সহিত উষণ সেবনীয়। ইহাতে চাতুর্থকাদি সর্ব্যপ্রশ্ব হর।

জীবনানন্দাভ্রম।

ৰ জ্ঞাক্ৰং মারিতং কৃতা কৰ্বযুগ্মং বিচুণিতম্। জীৱং কনকবাজ্ঞ কৰং বাসারসেন চ॥ কটকারীরদেনৈব ধাত্রীমৃত্তরদেন চ।
তথ্নচাঃ বরদেনৈব পলাংখেন পৃথক্ গৃথক্ ॥
মন্দিরিত্বা বটা কার্য্যা গুঞ্জামাত্রা প্রবাঞ্জিতা।
বিবমাথ্যান্ জরান্ সর্কান্ সীহানং বকুতং বমিন্ ॥
রক্তপিতং বাতরক্তং গ্রহণীং বাসকাসকো।
অক্তিং পুলক্ষাসাবশীংসি চ বিনাশয়েৎ॥
জীবনানন্দনামেদমজ্রং বুষ্যং বলপ্রদন্ধ।
রসায়নবরং শ্রেষ্ঠমগ্রিসন্দীপনং পরম্ ॥

অত্র ৪ তোলা, জীরা ২ তোলা, ধুত্রাবীজ ২ তোলা; একত্র চূপ করিয়া বাসক,
কণ্টকারী, আমলা, মূতা ও গুলঞ্চ ইহাদের
প্রত্যেকের ১ পল পরিমিত যথাসম্ভব রসে বা
কাথে পৃথক্ পৃথক্ মর্দন করিয়া ১ রতি প্রমাণ
বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ সেবন
করিলে নানাবিধ জব ও রক্তাপত্ত প্রভৃতি
রোগ নই হয়।

মকরধ্বজঃ।

বর্ণদলং প্রকের রসেক্রঞ্ প্রান্তক্ষ্।
রসক্ত বিভগং গঞ্জং তেনৈর কজ্জাকুত্য্।
কুমারিকারিস হাব্যং কাচপাত্রে নিধাপরেও।
বালুযন্ত্রে চ সংস্থাপ্য ক্রমান্ দিনক্রয়ং প্রেছে।
বালুমান্তং প্রদান্তার পূপারণরজ্ঞাসম্ম।
ব্রমান্তং প্রদাতব্যমহিবলীদনেন চ॥
ক্রমান্তালেক জরামরণনাশনম্।
জন্পানবিশেষের করোতি বিবিধান্ গুণান্॥
ম্বাং ক্রিদেব্রজং যোরং মন্দাগ্রিয়মরোচকন্।
জন্পান্ত বিবিধান্ রোগান্ নাশ্যেরাক্র সংশহ্তঃ।

অতি পাত্লা বর্ণপত্র ৮ তোলা, পারদ ৬৪ তোলা, শোধিত গন্ধক ২২৮ তোলা। প্রথমতঃ বর্ণপত্র ও পারদ একত্র মাড়িয়া পরে গন্ধক দহ মিশ্রিত করিয়া, উত্তমন্ধপে কজ্জলী করিবে। অন্তর্গ উহা ম্বতকুমারীর রসে মন্দন করিয়া একটি দমতল বোতলে পূরিয়া বোতলটি কুটিতবন্ত্র ও মৃত্তিকা দ্বারা লিপ্ত করিয়া বালুকাষত্রে ও দিন পাক করিবে। ও দিনের পর শাতল অবস্থায় উষদ উদ্ধত করিয়া লইবে। ইহার মাত্রা এক যব।

অমুপানবিশেষে ইহা ছারা বছবিও রোগ প্রশমিত হয়। ইহা জ্বের উৎফুই ঔষধ।

গন্ধক-কজ্জলী-বিধিঃ।

কটেকারী সিদ্ধারতথা পুতিকরঞ্জক্।
এতেবং রসমাণায় কৃত্রা থর্লরপথকে ॥
প্রক্রেপাং গন্ধকং তত্র আলং মুন্ধন্তিনা দদেং।
গন্ধকে বেহুডাপরে তৎসমং পারদং কিপেং॥
মিশ্রীকৃত্য ততো ছাড্যাং কৃতং ত্রুবতারয়েং।
আমন্দরেং তথা তৎ তু যথা সাহি কজ্জপপ্রত্য ॥
তহন্ত রক্কিকামসা মাষকং জীরকস্য ৮।
মাষেকং লবণস্যাপি পর্বে কুল্মুকং পিবেদত্ব।
ফর্ন্দরাং শর্করয়া দ্যাৎ সামে দ্যাৎ তথা শুড্মু॥
কর্মে ত্রিগোডাং ক্রান্ধ প্রদ্যানকম্।
সক্রান্তাভাগ্ ক্রেন্দর্শনিকম্।
রক্তরাভাগ ক্রেন্দ্রন্তবং জলম্।
সক্রান্তিভ তথা দ্যাত্রভ্রুবতবং জলম্।
সক্রান্তিভির্কালয়ং গ্রুকাপি প্রবোধ্রেং॥
ভারুবু দ্ধিক্রলায়ং মুন্তকাপি প্রবোধ্রেং॥

कण्डेकाती, निमिन्सा ও नाहाकत्र इहा-একটি মাটির খোলায় চল্লিকার স্থাপনপূর্ব্ব ক তাহাতে গন্ধকচৰ্ণ নিক্ষেপ করিয়া মৃত্যুত জ্বাল দিবে, গ্রন্ধক দ্রবীভূত হইলে গ্রুকস্মান পানদ নিকেপ করিবে, উভয়ে মিশ্রিত হইলে সত্তর নামাইয়া मक्त कतिया कड्जनी कतिर्व। এই कड्जनी এক রতি, জীরকচুর্ণ ৮০ আনা, গৈন্ধবলবণ ০'• আনা একত্র করিয়া একটি পানের সহিত সেবন করিবে। ঔষণ সেবনের পর সলিপাত অবে উফজল, বমিতে চিনির পানা, আমে পুরাতন গুড়, ক্ষররোগে ছাগহুগ্ধ, রক্তাতীনাবে কুড্চিমুলের ছালের কাথ, রক্তবমনে যজ্ঞ-ডুমুরের রস সেবন করিবে। এই গন্ধককজ্জনী সর্ববোগহর ও আয়ুবর্দ্ধক। ইহা অন্ত্যাব-স্থাতেও সংজাজনক।

লোহাসবঃ।

নৌচচূৰ্ণং ত্ৰিকটুকং ত্ৰিকলঞ্চ ব্যাদিকা। বিভূকং মুম্বকং চিত্ৰং চতুঃসংগ্যপলং কিলেৎ ॥ চুণীকৃত্য ভর্তঃ ক্ষোদ্রং চতুংবাইপদং পৃথক্। :
দক্ষাদ্ গুড়তুলাং তক্র জনলোপবরং তথা।
দুজভাণ্ডে বিনিক্ষিপ্য নিদ্যাক্ষাসমাক্ষেম্।
লোহাসবমম্ং মর্জ্যঃ সিবেদ্বাইকরং পরম্।
পাঙ্খন্থগুল্মানি জঠরাণার্পসাং ক্ষলম্।
মীহামমং অরং জীপ্র কাসং খাসং ভগন্দরম্।
ভবোচকঞ্চ গ্রহণীং হাজোগক বিনাশবেং।

লোহচ্প, শুঠ, পিপুল, মরিচ, বহেড়া, আমলকী, হরীতকী, যমানী, বিড়ঙ্গ, মুতা ও চিতামূল প্রত্যেক ৪ পল, মধু /৮ সের, গুড় সাড়ে বার সের, জল ১২৮ সের; এই সমুদ্র স্বতকুন্তে স্থাপন পূর্বক মুথ আবদ্ধ করিয়া একমাস কাল রাথিয়া দিবে, ইহাকে লৌহাসব কহে। ইহা সেবনে জীর্ণজ্বর, প্লীহা, পাঞু, লোথ, গুল্ম, উদর, অলোবেদনা, কাস, শ্বাস, ভগণনর, অরোচক, গ্রহণী ও হ্লোগ উপশমিত হন।

অমৃতারিষ্টঃ।

অমৃতারাঃ পলগতং দশমূলাশতং তথা।
চতুর্দ্রোণে জলে পজুণ কুয়াৎ পাদাবশেষিতম্।
শীতে তন্মিন্ রনে পূতে গুড়প্ত ত্রিতুলাঃ কিপেৎ।
অজাজীবে'ড্শপলং পপটিমা পলম্বান্।
মপ্তপণং ত্রিকটুক মৃত্তকং নাগবে গরম্।
কটুকাভিবিষে চেপ্র-বর্ষ পলমন্মি চম্।
একীকৃতা কিপেড্র ওে নিনধ্যক্সাম্ম কন্ম।
গম্ভারিষ্ট ২০০াম সক্ষেণকুলাগুকুং॥

গুলঞ্চ সাড়ে বার সেন, মিলিত দশমূল সাড়ে বার সের, ২৫৬ সের জনে সিদ্ধ করিয়া ৬৪ সের অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া ছাঁকিয়া লইবে। অনস্তর ঐ কাথে ৩৭॥ সের গুড় মিশ্রিত করিবে এবং রুফ্ডজীরা /২ সের, ক্ষেত্রপাপ্ড়া /৷ পোয়া, ছাতিমছাল, শুঠ, পিপুল, মরিচ, মুতা, নাগেশ্বর, কট্কী, আত: ইচ, ইক্রঘব, প্রত্যেক ১ পল নিক্ষেপ করিয়া আবদ্ধমূথ ভাতেও এক মাস কাল রাখিবে। ইহাতে অরিষ্ট প্রস্তুত হইবে। ইহা দেবনে দর্মব্যকার জ্বর উপশমিত হয়।

অথ ঘৃতপ্ৰকর্ণম।

আরাঃ ক্যায়ৈর্বমনৈল জ্যানৈল পুভোজনৈঃ। কৃষ্ণক্ত যে ন শামান্তি সর্পিন্তেবাং ভিষণা জিতম্॥

পূর্ব্বোক্ত ক্ষার পান, ব্যন, লজ্জ্বন ও লঘু ভোজনাদি ধারা ক্লক্ষতাহেতু ঘাহাদিগের জ্বরের শাস্তি হইতেছে না, তাহাদিগের পক্ষে মত পান বিধেয়।

নির্দ্দশাহমপি জ্ঞায়া কফোন্তর্যনাল্যিতন্। ন সর্পি: পারয়েৎ প্রাক্তঃ শমনৈত্তমূপাচরেৎ ॥ যাবপ্রস্থাদশনং দন্তাগ্রাংসরসেন তৃ। বলং হুলং নিরাহায় দোষাণাং বলরুক্ত তং॥

(চরকে দশাহের পর ঘুতপান ব্যবস্থা লিখিত আছে, এস্থলে তাহার অপবাদ ব্যবস্থা হইতেছে।) দশাহ অভীত হইলেও বদি কফ প্রবল থাকে এবং নিয়্মিত রূপে লজ্মন করান না হইয়া থাকে, তাহা হইলে ঘুতপান ব্যবস্থে, নহে, দে স্থলে জরের লঘুতা পর্যাস্ত শমন ঔষদ হারা চিকিৎসা করিবে এবং আহারার্থ মাংদের রদ পথা দিবে। কারণ মাংদরদ ভোজনে বলস্থি হইলে হুট বাতাদি দোষভ্রম্ব নিগুহীত হইয়া থাকে।

মাংসার্থমেণলাবাদীন্ যুক্ত্যা দন্তাদ্বিচক্ষণঃ।
কুকুটাংক ময়রাংক ভিত্তিরিক্রোক্তবর্তকান্।
ভরক্তথার শংসন্তি অসে কেচিচিচিকৎসকাঃ।
ক্তবনেনানিলবলং অনে যত্তবিকং ভবেৎ।
ভিষ্ণু মানোবিক্রজো দত্তাৎ তানপি কালবিৎ।

আহারার্থ এণ (মৃগবিশেষ) ও লাবাদি পক্ষির মাংস ব্যবস্থা করিবে। কুকুট, ময়ূর, তিতির, বক ও বটের পক্ষির মাংস, গুরু ও উষ্ণ বলিয়া কোন কোন চিকিৎসক আহারার্থ বিধি দেন না। কিন্তু লত্মন প্রকুক্ত জ্বরে যদি বায়র বল অধিক হয়, তাহা হইলে বিজ্ঞ চিকিৎসক বিবেচনা করিয়া ঐ সকল মাংস ব্যবস্থা করিবেন।

পিপ্লল্যাদ্যং য়তম।

পিপ্রলাক্তন্থন যুক্তমুশীরং কটুরোহিণী।
কলিক কাণ্ডামলকী শারিবাতিবিষা হিরা॥
ডাক্ষামলকবিশ্বানি আরমাণা নিদিন্ধিকা।
দিন্ধতৈয় তং সভ্যো অরং জীর্ণমপোহতি॥
করং বাদক হিকাঞ্চ নিরংশূলমরোচকন্।
অক্ষাভিতাপমগ্রিঞ্চ বিষমং সংনিষ্ঠভিত।
পিপ্রন্যাভিমিদং কাপি তত্ত্বেকীরেণ পচাতে॥

বথাবিহিত মূর্চ্ছিত ঘৃত /৪ দের, জল ১৬ দের (কেহ কেই ছগ্ধ ১৬ দের দিতে বলেন)। করার্থ—পিপুল, রক্তচন্দন, মূতা, উনার, কটকী, ইক্রযব, ভূই-আমলা, অনস্তমূল, আতইচ, শালপাণি, দ্রাক্ষা, আমলকী, বেলশুঠ, বলাডুমুর ও কণ্টকারী ইহাদের সর্ব্বসমষ্টি /১ এক দের ম্বাবিধানে পাক সমাপ্ত করিবে। মাত্রা—অদ্ধ তোলা হইতে ২ তোলা। ইহা সেবনে জীর্ণজ্বর ও কাস প্রভৃতি উপশ্যতিহয়।

ক্ষীরষ্টপলকং মৃত্যু।

পঞ্চোলৈঃ সদিষ্টেং পনিকৈং প্রদা সমস্। সপিঃপ্রস্থং শৃতং দীহ-বিষমজ্ঞরগুলামুং॥ অত্র প্রবাস্তরেহমুক্তে কীরমের চতুগুলিম্। দ্রবাস্তরেণ যোগে হি কীরং প্রেহসমং ভবেৎ॥

মৃচ্ছিত গবান্বত /৪ সের, হ্ব ১৬ সের।
কল্পার্থ—পিপুল, পিপুলমূল, চই, চিতা, শুঠি ও
সৈদ্ধব লবণ প্রত্যেক ১ পল; পাকার্থ জল
১৬ সের। ইহা সেবনে, বিষমজ্জর, গুলা ও
প্রীহা উপশ্যতি হয়।

দশৰূলষট্পলকং যুত্য।

দশন্নীরসে দর্শি: সক্ষীরে পঞ্চকে!নকৈ:। সক্ষারৈহন্তি তৎ সিদ্ধং জ্বরুনাসাগ্রন্দভা:। বাতপিত্তক্ষব্যাধীনৃ শ্লীহানঞাপি পাভুতাম্॥ দশমূল /৬ সের, পাকার্থ জল ৪৮ সের, শেষ ১২ সের। কল্প করা যথা—পিপুল, পিপুল-মূল, চই, চিতামূল, শুঠিও যবক্ষার প্রত্যেক ৮ তোলা। হগ্ধ /৪ সের, ত্মত /৪ সের। যথাবিধি পাক করিবে। ইহাতে বিষমজ্জ্যাদি রোগ বিনষ্ট হয়।

বাসাগগ্ৰতম ।

বাসাং শুড়ুটাং ত্রিকলাং আরমাণাং ববাসকম্। পজ্বা তেন কবারেন পয়সা বিগুণেন চ । পির্মনীমূলমূদ্বীকা-চন্দনোৎপলনাগরেঃ। কন্দীকৃতিশ্চ বিপচেদ্ সূত্য জীর্বজ্বরাপহ্ম ॥:

বাদক, গুলঞ্চ, ত্রিফলা, বলাডুমুন ও তুরালভা এই দকল কাথ্য দেবা মিলি ১/৪ দের, পাকার্থ জল ৩২ দের, শেষ ৮৮ দের। কজার্থ— পিপুলমূল, জাক্ষা, রক্তচন্দন, নীলোৎপল ও ওঁঠ মিলিত /১ দের। হ্থা/৮ দের, ঘৃত /৪ দের, বথাবিহিত নিয়মে পাক করিবে। (পাক বিষয়ে মতভেদ আছে, কাহারও মতে উক্ত কাথ ১৬ দের ও হ্থা/৮ দের, এই ২৪ দের জবে ঘৃত পাক করিবে)। যখন শেষ পাকের লক্ষণ সম্যুগ্রুপে প্রকাশ পাইবে, তথন নামাইয়া ছাকিয়া লইবে। ইহা দেবন করিলে জীর্ণ জর বিনষ্ট হয়।

গুড়্চ্যাদি-য়তানি।

গুড়ুচাঃ কাথকভাভাং ত্রিফলায়া বৃষস্থ চ। মুখীকায়া বলায়াক সিদ্ধাঃ স্বেহা অন্তচ্চিদঃ ॥

গুলঞ্চ, ত্রিফলা, বাসক, দ্রাক্ষা ও বেড়েলা এই পাঁচটি দ্রব্যের প্রত্যেকের কাপ ও কর দারা সাধিত পঞ্চ প্রকার স্বত্তত জ্বরনাশক।

অথ তৈলপ্ৰকরণম্।

-:::--

আন্তাৰাংশ প্ৰদেহাংশ সম্বেহান্ সাবগাহনান্। বিজ্ঞা শীতোক্ষকৃতান্ দত্যাজ্বীপ্ৰৱে ভিষক্ । তৈরাপ্ত প্ৰশামং বাতি বহিম গিগতো জ্বাঃ। লভতে স্থমকানি বলং বৰ্ণত জায়তে ।

জীর্ণজ্বরে অভাঙ্গ (তেলাদি মর্দন), প্রলেপ, মেহ ও স্থানাদি, এই সকল হুলবিশেষে শীতল ও হুলবিশেষে উষ্ণ ব্যবস্থা করিবে। অভাঙ্গাদি ধারা বাহুমার্গগত জর আশু প্রশমিত এবং শরীর স্কৃত্ব ও বলবর্ণাদি সম্পন্ন হয়।

অঙ্গারক-তৈলগ্।

মূকা লাকা হরিছে দে মঞ্জিষ্ঠা দেন্তবারণী। বৃহতী দৈদ্ধৰে বুঠং রাজা মাংসী শতাবরী। আরণালাচকেনৈব তৈলপ্রস্থং বিপাচয়েছ। তৈলমকারকং নাম সক্ষমধাবনাশনম্॥

যথাবিধ মূচ্ছিত তিল তৈল /৪ সের, কাঞ্জিক ১৬ সের। কন্ধার্থ— মুর্বামূল, লাক্ষা, হরিদ্রা, দারুহবিদ্রা, মঞ্জিষ্ঠা, রাখালশশার মূল, বৃহতী; সৈন্ধব লবণ, কুড়; রাঙ্গা, জটানাংসী ও শতমূলী মিলিত /১ সের; ঘথানিরমে পাক করিবে। পাকশেষ হইলে তৈল ছাকিয়া লইবে। (পরে তাহাতে কপূর, শিলারস ও নথী প্রত্যেক ২ তোলা মিশ্রিত করিয়া রাখিবে।) এই তৈল মর্দ্দনে সকল প্রকার জর উপশ্যিত হয়।

বুহদঙ্গারক-তৈলম্।

শুসমূলাদিক ভালের কৈ রকারকভাচ।
পাকং তৈলং জ্বরুরং শোঝপাও নুমরাপহম্।
বৃহদক্ষারকা তৈলং জলমত চতুগুপ্ম ।
(শুদমূলাদিয়থা--- শুকমূলক বর্ষাভূদাক রামামহৌষ্ট্রেঃ) ।

মূৰ্চ্ছিত তিলতৈল /৪ সের। পাক।র্থ—কাজি ১৬ সের। কন্ধার্থ—শুক্ষমূলা, পুননবা, দেবদার্ফ, রামা, তথ্য এবং অলারক-তৈলোক্ত সমুদায় কক্ষেত্রা, সর্বাদাষ্টিতে /১ সের, পাকার্থ জল ১৬ সের। পাকশেষ হইলে তৈল ছাকিয়া লইবে। এই তৈল মর্দনে জর, শোগ ও পাণ্ড্ রোগ প্রশমিত হয়।

नाकािं तिल्लाम्।

লাকাহ্রিজামঞ্চিঠা-কলৈতৈলং বিপাচিত্র। বড় গুণোনারনালেন দাহশীতজ্বাপহন্।

মৃত্তিত তিলতৈল /৪ সের। কাঁজি ২৪ সের। কল্বার্থ-লাকা, হরিদ্রা ও মঞ্জিঠা মিলিত /১ সের; যথাবিধি পাক করিবে। এই তৈল ব্যবহারে দাহ ও শীত্মর প্রশমত হয়।

মহালাক্ষাদিতৈলম্।

লাক্ষারসাচকে প্রস্থা তৈলক্ত বিপচেদ ভিষক। মস্তাচকসমাযুক্তং পিষ্ট্র চাত্র সমাবপেৎ। न ० भूल्यार इतिकाक भूत्रार कुकेर इत्त्रपुक्रम् । কটুকাং মধুকং রাজামখগন্ধাঞ্চ দ'র b I मुख्यार हम्भारकत पुत्रशक्तमन्नि कर। ৮বেরেরের ওবিদিদ্দভাঙ্গারী ক্রাপির্যু ॥ विषयां थान् सर्वान् मक्तानात्यन अनगर नत्यर । কাসং স্থাসং প্রতিশ্রায়ং কণ্ডাদৌর্থক্যগোর্থম্ 🛭 चिक्षुं हेक्की बूजर शांकाशार कुछनर उसा । পাপালকাপ্রশ্যনং সক্র্যাহবিদাশন্যু॥ অবিভাগে নিশ্মিতং শ্ৰেষ্ঠং তৈলং লাক্ষাদিকং মহৎ। লাকায়াঃ ষড় গুণং ভোরং দক্ত্বৈক্বিংশবারক্ষ । পরিপ্রাব্য জলং গ্রাহ্থ কিংবা কাথং বথোচিত্রম । লাকা /০ সের, জল ১৮ সের, লাকাং কুট্টরিয়া দোলায়ত্বেণ একবিংশতিবারান্ পরিপ্রাব্য তব্বলং গ্রাহ্ন্ ১৬ সের, বদবশিষ্ঠং তৎ ত্যাজাম্।

মৃত্তিত তিলতিল /৪ সের, লাক্ষার কাথ ১৬ সের (লাক্ষা /৮ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। অথবা লাক্ষা /৩ সের, জল ১৮ সের, লাক্ষা উত্তমরূপে কুটিত করিয়া ঐ ১৮ সের জলে মিশাইয়া তাহা দোলায়ত্রে ২১ বার ছাকিয়া সেই লাক্ষাক্ষল ১৬ সের শইবে।) দধির মাত্ ১৬ দের। কন্ধার্থ—
শুল্ফা, হরিন্তা, মুর্নামৃল, কুড়, রেণুক, কট্কী,
খিটিমধু, রামা, অখাগন্ধা, দেবদাক্ত, মুতা ও
রক্তচন্দন প্রত্যেক ২ তোলা। যথাবিধি পাক
করিবে। তৈলপাক সমাপ্ত হইলে তাহাতে
বিধানাম্নারে শিলারস, দনগী ও কর্প্র
প্রত্যেক ২ তোলা পরিমিত মিশ্রিত করিয়া
রাখিবে। এই তৈল মর্দনেশ্বর্মপ্রকার জর ও
অভাত রোগ প্রশমিত হয়।

त्रश्भिना। मिरेजनम् ।

শিপ্তনী মৃত্তকং থাতাং সৈকবং ত্রিকলা বচা।

যমানী চাজমোদা চ চন্দনং পুকরাহরেম্।

শাসী জাকা গৰাকী চ শালপৰী ত্রিকটকম্।
ভূনিয়ারিষ্টপত্রাণি মহানিষং নিদিক্ষিকা।
ভঙ্চুটী পৃত্তিপাৰিই বৃহতী দল্পীচিত্রকৌ।
দালগাঁ হরিমা বৃক্ষাং পর্পটং গজশিন্সলী।
এতেযাং কাবিকৈঃ ককৈছেলপ্রস্থাং বিশাচয়েং।
দ্বিকাপ্রিক ভক্তিল নাভুলুকরসৈত্রপা।
ব্রেহমাত্রাসমৈরেভিঃ শনৈমু ঘ্যিনা প্রচেং।
দিল্লমেত্র প্রযোজনাং জীর্ভবমপোহতি॥
একজং কল্পর্কেশ দেখিত্রসমৃত্রম।
সার্জা সভ্তান্তেরীয়কচতুর্বকান্।
সার্জান প্রক্রিক বিরক্ষালান্বন্ধিনম্।
সর্কান্ ভান্ নাশ্যভাগ্র পিপ্রসাপ্তিমিণং শুক্রম্।
সর্কান্ ভান্ নাশ্যভাগ্র পিপ্রসাপ্তিমিণং শুক্রম্।

কল্বার্থ—পিপুল, মুতা, ধনে, দৈলব লবণ, হরীতকী, আমলা, বহেড়া, বচ, যমানী, বন্যানী, রক্তচন্দন, পুদ্ধমুল (অভাবে কুড়), শঠী, দ্রাক্ষা, রাধালশশার মূল, শালপাণি, গোক্ষর, চিরতা, নিমপাতা, ঘোড়ানিমছাল, কন্টকারী, গুলঞ্চ, চাকুলে, বহুতী, দন্তীমূল, চিতামূল, দারুহরিদ্রা, হরিদ্রা, মহাদা, ক্ষেত্ত-পাপ্ডা, গজপিপ্ললী, ইহাদের প্রত্যেকের ২ তোলা। মুচ্ছিত তিলতৈল /৪ সের, দধির মাত, কাজি, তক্র, টাবালেব্র রস, প্রত্যেক /৪ সের। তৈল পাক সমাপ্ত হইলে স্থগজের জন্ম স্থাজিক্রব্য নিক্ষেপ করিবে। এই তৈল ব্যবহারে সর্ব্ধ প্রকার জন্ম নিবারিত হয়।

ষট্কট্বরতৈ**লম্।**

স্থাচিকানাগরকুঠমূর্বা-লাকা;নিশালোহিত্যটিকাভিঃ। তৈলং মনে বড়গুণতক্ষিদ্ধমভাঞ্জনাচ্ছীতবিদাহনুৎ স্থাৎ॥ (দল্প: সমারকস্থাত তক্রং কটুরমিষ্যতে।)

কন্ধার্থ—সাচিক্ষার, শুঠ, কুড়, মূর্বাম্ল, লাক্ষা, হরিদ্রা, মঞ্জিটা মিলিত /১ সের। মূচ্ছিত তিলতৈল /৪ সের, তক্ত ২৪ সের। এই সম্দারে যথাবিধি তৈল পাক করিবে। ইহা মর্দানে শীত ও দাহসুক্ত জ্বর নিবারিত হয়। এই স্থলে সারবিশিষ্ট দ্বির তক্ত ব্যবহার্য।

মহাষট্কটুরতৈলম্।

শুক্তারনালৈদ ধিমস্ততকৈঃ ফলাবুডাগেন সমং হি তৈলম্।
কুন্ধাদিককৈমু প্রবিদ্ধিদ্ধিমশুপ্রকাশ বাতকক্ষরাণাম্।
ক্রকাদিককিমু প্রবিদ্ধিদ্ধিমশুপ্রকাশ বাতকক্ষরাণাম্।
নিবারণং তদ্বিমন্ত্রবাণাং তৈলক্ত বট্কটুরকং মহৎ স্তাৎ।
ক্রকাদিগণো বধা—

কুঞাচিত্রকষড় গ্রন্থা বাসকং বিকসা খনন্। গ্রন্থিকলে চাতিবিদা নেগুকঞ্চ কটু জয়ন্॥ খমানা গোন্তনী ব্যাখী ভূনিখা বিবচননন্। ভাগা ভামা শিবা ধাজী দ্বিরা মুর্বা সফীরকা॥ সধপং হিন্দু কটুকী বিভূপঞ্চ সমাংশক্ষ। গ্রহ কুঞানিকো নাম গণে। অরবিনাশনং॥

মৃদ্ধিত তিল তৈল /৪ দেব, শুক্ত /৪ দেব, কাঁজি /৪ দেব, দিবে মাত্ /৪ দেব, তক্ৰ /৪ দেব, গোড়ালেবুর রদ /৪ দেব। কল্কার্থ—ক্ষণদিগণ যথা—পিপ্লা, চিতামূল, বচ, বাসকছাল, মজিষ্ঠা, মূতা, পিপুলমূল, এলাইচ, আতইচ, রেণুক, শুঠ, পিপুল, মরিচ, যমানী, দ্রাক্ষা, কণ্টকারী, চিন্নতা, বেলছাল, রক্তচন্দন, বামুনহাটা, অনস্তমূল, হরীতকা, আমলা, লালপাণি, মুর্কামূল, জীরা, দর্যপ, হিন্তু, কট্কী ও বিড়ঙ্গ এই সমুলায় মিলিত /১ দেব। তেলপাক সমাপ্ত হইলে গন্ধপ্রব্য মিলিত করিবে। এই তৈল মন্দ্রেন স্ব্র্থপ্রকার জ্বর

কিরাতাদিতৈলম্।

মূচ্ছিত কটুতৈল /৪ দেব, দিধির মাত /৪ দেব, কাজি /৪ দেব, চির তার কাথ /৪ দেব। কজার্থ—মুক্ষিমূল, লাক্ষা, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, মঞ্জিষ্ঠা, রাথালশশার মূল, বালা, পুক্রমূল, (অভাবে কুড়), রাস্না, গজপিপ্রলী, শুঠ, পিপুল, মরিচ, আক্নাদি, ইক্রমব, দৈরুবলবণ, দচললবণ, বিট্লবণ, বাসকছাল, শেত আকনেশর মূল, শ্রামালতা, দেবদার ও মাকালফল মিলিত /১ দেব। এই তৈল মদ্দে দর্মপ্রকার জ্বর, পাঞু ও শোগ প্রভৃতি নানা প্রকার বোগ প্রশ্নিত হয়।

রহৎ কিরাতাদি তৈলম।

কৈরাতক্ত তুলামানং জলদ্রোণে বিপাচয়েৎ।
কটুতৈলক্ত পাত্রাজিং তেনৈব সাধয়েতিবক্॥
মুর্কালাক্ষয়কাশ্ব: কাঞ্জিকং দ্বিমস্ত চ।
এহানি তৈলকুল্যানি কন্ধানে হাংশ্চ সংপ্রেছ ॥
ভূনিছা শ্রেয়মী রালা কুঠা লাক্ষেক্রলাল্লী।
মঞ্জিঠা চ হরিছে দে মুর্কা মধুকমুন্তকন্॥
বর্ধান্ত: মৈজবা মাংমী বৃহতী চ তথা বিভূন্।
ব্লীবেরং শতমূলী চ চলদাং ক ্যাহিণী॥
হয়গলা শতাহরা চ রেপুকা স্বরদান্ত চ।
উশারং পল্লকং গভাং পিপ্রলা চ বচা শঠী।
ফলত্রিকং ব্যাক্তি বে শৃক্ষী গোল্লর এব চ।
পর্নো) বে তরুণীমূলং বিভূক্তং জীরক্ষয়ম্॥
নহানিদ্দেক হবুয়া যবকারো মহৌষধ্য।
এবং কর্ষছাং ক্ষিপ্তা সাধয়েরায়ুত্রক্তিনা॥

যথাহিবর্গং বিনিহন্তি তাক্ষ্যে।
নগা চ ভাষাংগুনিরক্ত সন্দান।
তথৈব সর্কাং জ্বরবর্গনেতদভাসনাত্রেণ নিহন্তি তৈলন ।
সম্ভতং সভতাদীংশ্চ নিখিলান্ বিবমশ্বরান্।
লীহাজিতান্ সন্দোধান্ বা প্রমেহং অবমেব চ ॥
অগ্রিঞ্চ কুক্তে দীপুং বলবর্গকরং ১,৪০০।
গাঙাদীন হস্তি রোগাংশ্চ কিরাভাক্তাননং বৃহৎ ।

কটু তৈল /৮ সের। কাথার্থ—চিরতা ১২॥ সের, জল ৬৪ সের, শেন ১৬ সের: মুর্বামূল /৪ দের, জল ৩২ দের, শেষ /৮ দের, লাক্ষার কাথ ৮ সের; কাঁজি ৮ সের; দধির মাত /৮ দের। কন্ধার্থ—চিরতা, গজপিপ্ললী, রামা, কুড়, লাক্ষা, রাখালণশার মল, মঞ্জিষ্ঠা, इतिका, नाक्ट्रिका, सुकीमूल, यष्टिमधु, सूछा, পুনর্মনা, দৈন্দ্রব্যবণ, জটামাংসী, বুহতী, বিট্-নবণ, বালা, শতমূলী, রক্তচন্দন, কটকী, অখ-গন্ধা, গুল্ফা, ডেগুক, দেবদারু, উনার, পদ্ম-कार्ब, भरन, शिक्षनी, वह, भंद्री, खिकना, यमानी, বন্যসানী, কাঁকড়াশুলী, গোক্তুল, শালপণি, চাকুলে. मछीमूल, विष्क, बीतां, कृष्ण्कीतां, ঘোডানিমের ছাল, হর্ষা, ওঁঠ ও বরকার প্রত্যেক ও ভোলা। পাক শেষ হুইলে যথাবিদি গ্রদ্র প্রদাতবা। এই তৈল সর্পথকার জীর্ণ জ্বের অতি উৎকট্ট ঔষণ।

চন্দনাঅমগুর্কাজং তৈলং চরবক ঠিন্দ।
তথা নারায়ণং তৈলং জীপ্তরংরং প্রন্।
চরকোক্ত চন্দনাত ও অগুর্কাত তৈল
অথবা নারায়ণ তৈল শীর্ণজ্ঞরের শ্রেষ্ঠ ঔষধ।

इन्मनामि रिज्ञामि ।

চন্দন-শৈলেয়ভন্ত শিয়কালাত দাৰ্যাভণ্ডী-কালীয়ক-পান্ধনারকালীয়-শারিবা-মধুকপ্রপোণ্ডরীক-নাগ-শুম্পার্দাচ্যবন্য পান্ধকালীয়-শারিবা-মধুকপ্রপোণ্ডরীক-নাগ-শুম্পার্দাচ্যবন্য পান্ধান্ধনান-কুমুদ-নৌগন্ধিক-পুণ্ডরীকশতপত্ত-বিষ-ন্থালশালুকলৈবাল--ক্শেক্ষকানস্তাক্পকাশেকু-দর্ভগরনল-শালিমূল-জম্ব-বেত-বেতস-নানীর- গুল্রা-কক্সান্ধামকর্ণ-ক্ষন-বাত্তপোণ-খাল-ভালধ্বতিনিশ-খদির-কদর-কদ্ম-কাশ্র্যাকলসর্জ্জ-শ্লক্ষ্পীতবাড়্প্রাম্থ – স্তাত্ত্যাধ – সোধ্র- ধাতকী-দূর্কেংকট — শৃক্ষাটক — সঞ্জিষ্ঠা-জোতি মহী-পৃথ্যন্ত্রীজনোপণদন-বদর-কোবিদার--ক্ষণ্ডী-লোতি মহী-পৃথ্যন্ত্রীজনোপণদন-বদর-কোবিদার--ক্ষণ্ডী-রোহিণ্ডী--প্রকারিইকশত-পর্বা-শীত-কৃষ্টিকা-নহাবানি-শীত-পাকোদনপাকী-কালাগলোপয়প্তা-বিদারী-জাবক্ষত্তক — কুষ্ট্রসহা-নেদামহানেদা--মধ্রম্বানেপ্রান্তা-তৃণশৃত্ত-মোচরসাটিরকক—বকুল-কৃটজপটোল— নিষ্ণাত্মলারিকেল-পর্যক্রীজা-পিবলে—প্রিয়ক্ষ্ণ্ডী-মধ্কালামপ্রেমাঞ্চনীতবাবানি মহালাভ্তমীয়ধানাং ক্ষার্ম কার্যে । তেন ক্ষায়েশ বিশ্বপিতপ্রদা তেষ্ট্রেন চ ক্ষেত্র ক্ষা-মাজ্যাত্রম মুদ্বিনা সাধ্যেৎ তৈল্য । শতং তৈল্মভালাদের সংস্তাদাহ্জরমপ্রমন্তি, এতেরেব চোবধাং ক্ষণ্ডান্ডিং ক্রণিতিং প্রক্রিকার । এতেরেব চ শৃত-শীতং সলিলমবগাতপ্রিনে কার্যেৎ। এতেরেব চ শৃত-শীতং সলিলমবগাতপ্রিনে কার্যেৎ। এতেরেব চ শৃত-শীতং সলিলমবগাতপ্রিনে কার্যেৎ। এতেরেব চ শৃত-শীতং সলিলমবগাতপ্রিনে কার্যেৎ।

রক্ত চন্দন, শৈলেয়, খেতচন্দন, শৈলজ, ভণ্ডী, কালীয়কাষ্ঠ, বামুনহাটী, পদ্মকাষ্ঠ, উনীর, ভানালতা, ষ্টিম্বু, পুগুরীয়া কভি, নাগেশ্বর, বালা, বলা গণ (পঞ্চা-নাহাক্যায়োক্ত দুশটি বল্ছিত দ্বা), ইম্যাহিত প্ল, নীলোৎপ্ল, নলিন (সহস্রপত্র পদ্ম), কুমুদ, সেগৈলিক (ফু'দি), খেতপল, শতপত্র পল, বিস, মূণাল (পদাদিন কন্দপ্রভব কুদ্র মুণাল), শালক, শৈবাল, কেণ্ডা, অনন্তমূল, কুণমূল, কাণমূল, ইক্ষুল, উলুমূল, শ্রমূল, নলমূল, শালিধান্ত মূল, জামছাল, বেত, বেতস (পানীয়ামলক), বানীর (বেতসভেদ), গুলঞ্চ, অর্জ্বন, অশন (পীতশাল), ত্ৰকৰ্ণ (সূদ্ৰশাল), নেমিবুক্ষ, কিংগুক, শাল, তাল, ধব, তিনিশ, থদির, খেত शनित, कनन्न, शास्त्रीयिक, प्रमायना শাল বুক্ষ, পাকুড়, আমড়া, যজ্ঞভুমুর, অশ্বণ, বট, লোধ, ধাইফুল, দুর্মা, ইকড়, শিঙ্গেড়া, মঞ্জিষ্ঠা, লভাফ্টকী, পদাবীজ, খেঁচ, কুল, রক্তকাঞ্চন, কদলী, মৃতা, নিম, শতপর্কা (দুর্কাবিশেষ), কুন্ডাড় লতা (কুমুরে লতা), শতমূলী, গান্তারী, রক্তমুপ্তিরী, খেতমুপ্তিরী, क्ट्रेकी, (वर्फ्णा, नील विक्ट्री, नीली, भीड-বেছেলা, ক্ষীরকাকোলী, ভূমিকুখাও, জীবক, ঋষ্ডক, মুল্গপর্ণী, মেদা, মহামেদা, খ্যাপ্রেছন (পীতবেড়েলা বা আলকুলী), মন্লিকা, মোচর্ম, বাদক, বকুল, ৰুড় চি,

শিমুলছাল, নারিকেল, পল্ডা, নিস্ছাল, খর্জ্জর, মৃথীকা, পিয়াল, প্রিয়স্থ্র, ধ্রনবৃক্ষ, আলকুণী, গোল এবং অন্তান্ত শতবীৰ্য দ্ৰবা; এই সমস্ত ঔষধের মধ্যে ধাহা পাওয়া যায়, তৎসমদয় সংগ্রহ করিয়া তাহার কাথ করিবে: এই কাথ এবং ইহার অন্ধ পরিমিত তিল-তৈল, তৈলের ম্বিগুণ গাব্য হগ্ধ ও উক্ত দ্রব্য সমূহের কল্প (তৈলের চতুর্থাংশ) যথাবিধানে মত অগ্নিতে পাক করিবে। এই তৈল মর্দ্ধনে সম্প্রঃ দাহজর প্রশ্মিত হয়। ঐ সক্ষ দ্বা উত্তমরূপে করিয়া শরীরে ভাছার প্রলেপ দিলেও দাহজর নিবারিত হয়। ঐ সকল দ্রব্যের সহিত জল সিদ্ধ করিয়া সেই জলের অবগাহ ও পরিষেক করিলেও দাহজর প্রশমিত হয়।

অগুৰ্ব্বাদি তৈলাদি।

অগুরু-কুন্ঠ-—তগর—নলদপত্রশৈলেয়ক—ধ্যামকহরেণুক-স্থৌপেয়কক্ষেমকৈলাবরাঙ্গ—দলপুরতমালপত্র—ভৃতিকরৌ হিষ-সরল-শল্পকী--দেবদাকবিমন্তবিঅংশাক--কাম্মযাপটিলা--পুনর্বাবৃহতীকটকারিকাবৃশ্চীর—শালপণীপৃথিপণী—সাধ-পূর্ণী—মুক্সপূর্ণী—গোক্তরকৈরঙ—শোভাঞ্জনকবরুণার্কচিরবিল-তিল্কশ্সীপুদ্ধরমূলগভারোকবৃক---প্ত,রাক্ষারাশ্মস্তকশিত্র,-মাতৃলুক্স-মূমকপণী-ভিলপণী--পীলপণী--মেষশুক্সাহিংসাদত্ত-শঠৈর বৈতক-ভন্নতিকাকোতক-কার্ডার মণ্ডা-কাক ভৈ-ষ্ট্রাকর্জ-ধান্তকাজমোদাপুর্বাকা- সুমূর্থস্থরস্কর্মকর্জীর-কঠেরক-কালমালক-পর্ণাসক্ষবকক্পিজ্মক-ভৃত্ণ-শৃক্ববের-পিপ্ললী-সৰপাখ-গন্ধারামাক্তাবরোতাবলাভিবলা- গুড় চী-শতপূস্পাশীতবলীনাক্লী---গৰ্মনাক্লীৰেতাজোতিমতীচিত্ৰ-কাধাণ্ডামচাক্সেরীতিল-ব্দরকুলখনাবাণামেবংবিধানামস্থে-वाक्षाकवीवानाः यथाना स्थानाः कवाग्रः काद्रायः। তেন ক্ষায়েণ তেষামের চ কক্ষেন স্থরাসৌবীরকভ্রো-দকমৈরেয়মেদকদ্ধিমগুরিনালকট্রপ্রতিবিনীতেন পাত্রং বিপাচয়েৎ, তেন স্থোদেন তৈনেনাক ভিপায়িবং অরিতং সততমভাজাৎ। তম্ম শীতবর: প্রণামাতি। এতৈরের চ শৃতং ফুণোঞ্চং সলিলম্বগাহার্থং পরিবে-কার্থক প্রযুদ্ধীত শীতক্ষরপ্রশমনার্থমিতি।

কৃষণগুদ্ধ, কুড়, তগরপাদিকা, বেণা, তেজপত্র, শৈলেরক, গন্ধভূণ, রেণুক, গোটেলা, হাজ্যা, বড় এলাইচ, প্রিয়ঙ্গুপত্র, গুগ্গুলু, শুমালপত্র, যমানী, রোহিষ (কঙ্গুণ বিশেষ),

সরলকার্চ. শিলারস. গণিয়ারি, দেবদারু, বেলছাল, খ্যোণাছাল, গ'ভারিছাল, পাকুল-ছাল, পুননবা, কণ্টকারী, বৃহতী, খেত পুনর্মনা, শালপাণি, চাকুলে, মাধাণি, মুগানি, গোকুর, এরপ্তমূল, সজিনা, বরুণ, আকন্দ, করঞ্জ, লোদ, শসী, পুষ্ণর মূল (অভাবে কুড়), দুর্কা, রক্তএরগুমূল, বক্ষম, রঞ্জনবুক্ষ, লোহচুর, রক্তসজিনা, মাতুলুঙ্গ, দন্তী, রক্ত-চন্দন, পীলুপর্ণী, মেষশৃঙ্গী, কালিয়া কড়া, জম্বীর, হাতিশুঁড়া, ভেলা, হাপরমালী, শ্বেত-দুর্বা, আলকুশী, মাক্ড়া গাব, শর্মুল, ডহ্র-করঞ্জ, ধনে, বনযমানী, ছোট এলাইচ এবং স্বযুধ-স্থান-করক-কণ্ডীর-কুঠেরক ও কাল-মালক এই সকল বিশেষ তুলদী, হাঁচুটি, (ফুলসী ভেদ), উলুমূল, 😴 ঠ, পিপুল, সর্বপ, অশ্বগন্ধা, রামা, কুহা (স্বনাম খ্যাত), বটাবরোহ, বেড়েলা, পীত বেড়েলা, खनक, खन्का, भाउरही, नाकूनी, शक्तनाकूनी, ষেতাপরাজিতা, জোভিমতী (ঘোষাতেন), চিতা, আলকুণা, ৷ আমকুল, তিল, কুল, কুলুখ ও মাষকলায় এই সমস্ত এবং এই প্রকার অক্তান্ত উফবীর্যা ঔষণ সমূহের মন্যে ধাহা পাঁ হয়৷ যায়, তাহাদের ক্ষায় ও ক্ল এবং স্থবা, সৌবীরক, ভূযোদক, মৈরেয়, মেনক, দ্ধিমণ্ড, কাঞ্জীক, কটুব (তক্ত); এই সকল দ্রব্য পরিভাষারসারে যথানাত্রায় লইয়া যথা-বিধানে ইহাদের সহিত ১৬ সের তৈল পাক করিবে। পরে এই তৈল ঈবহুফ করিয় উষ্ণাভিপ্ৰায় অৰ্থাং শ্বান্ত জ্বিত ব্যক্তিকে নিতা মদ্দন করিতে দিবে। দকল উত্তমরূপে পেষণ ও কাহা ঈষত্য করিয়া শাত্রহারত ব্যক্তির গাত্রে মাথাইবে। এবং উক্ত জবা সমূহের : সহিত জল সিদ্ধ করিয়া সেই জলের পরিষেক ও সেই জলে রোগিকে সান করাইবে। তাহাতে শীতজ্ঞর প্রশমিত হইবে।

যবচ্ণান্ধিকুড়বং মঞ্জিঙান্ধপলেন তু। তৈলপ্রস্থ: শতগুণে কাঞ্জিকে সাধিতো জয়েৎ॥ শ্বং দাহং মহাবেগমঙ্গানাঞ্চ প্রহর্ণভুৎ॥

তিলতৈল /৪ সের, যবচ্প /। পোষা, মঞ্জিষ্ঠা ৪ তোলা, ৪০০ সের কাঞ্জিক দারা যথাবিধি পাক করিবে। এই তৈল ব্যবহারে জর ও তদামুষ্ক্লিক দাহ, মহাবেগ ও অঙ্গের প্রহর্ষ গা শিহরিয়া উঠা । প্রশম্ভ হয়।

সক্ষকাঞ্জিকসংসিদ্ধং তৈলং শীতাস্মৰ্দ্দিতম্। জ্বলাহাপহং লেপাং সজ্যো বাতাস্থাইকং ॥

তিল তৈল /৪ সের, করার্থ—ধুনা /১ সের, ১৬ সের কাজি ধারা পাক করিবে।
এ পক তৈল শীতল জলে উত্তমরূপে মন্থন করিয়া গাত্রে মাথিলে হ্লাও তজ্জনিত দাহ এবং বাতরক্ত জনিত দাহ নিবারিত হইবে।

অথ চুঞ্চ্ৰকর্পম্।

জার্গজ্বে কন্দে ক্ষাণে ক্ষানং স্থাদমূচোপমম্। তদেব তেবংগে পীতং বিষয়জ্জি মানবম্॥ চতুগুণানাজ্ঞা চ শৃতং জ্বাহরং পায়ঃ। ধারোদং বা পায়ঃ শীতং পীতং সত্যো জ্বারং জয়েং॥ ভেষ্ডাসিদ্ধমপি-যদাং—— ক্ষাণাং সার্কেয়াং পায় প্রশাসনং পার্ম।

জীর্ণজ্বাণাং সর্কেষাং পয়ঃ প্রশমনং প্রম্। পেরং তহুকং শীতং বা যথাক্ষমৌষধেঃ শৃতম্।

জীর্ণজ্বরে কফ ক্ষীণ হইলে হগ্ধ অমৃত সদৃশ হিতকর হয়। কিন্তু তরুণ জ্বরে হগ্ধ বিষবৎ প্রাণনাশক হইয়া থাকে। চতুপ্তর্ণ জ্বলের সহিত সিদ্ধ করিয়া হগ্ধ পান করিলে স্বানিবৃত্ত হয়। ধারোক্ষ বা শীতল হগ্ধ পানেও সত্তঃ জ্বর প্রশমিত হইয়া থাকে। হগ্ধের সহিত যথায়থ ঔষধ সিদ্ধ করিয়া তাহা উষণ বা শীতল অবস্থায় সেবন করিলে সমুদায় জীর্ণজ্বরের শাস্তি হয়। কাসাৎ খাসাৎ শির,শুলাৎ পার্থপুলাচ্চিরজ্বাৎ। মূচ্যতে জ্রিতঃ পীড়া পঞ্মূলীশূতং পরঃ॥

স্বল্ল পঞ্চমূলী ২ তোলা বল্লে বন্ধন করিয়া হুগ্রেব সহিত সিদ্ধ করিয়া সেবন করিলে কাস, খাস, শিরঃশূল, পাশুশূল ও বহুকালের জ্বর উপশ্মিত হয়।

ক্ষীরপাকবিধিঃ।

দ্রব্যাদপ্তগুণং ক্ষীরং ক্ষীরাজোয়ং চতুগুণিম্। ক্ষীরানশেষঃ কর্জন্যঃ ক্ষীরপাকে ওয়ং বিধিঃ॥

ছগ্ধপাকের নিয়ন এই—যে দ্বারে সহিত ছগ্ধপাক করিতে হইবে, তাহার অষ্টগুণ হগ্ধ এবং ছগ্গেন চহুগুলি জল, সমুদায় একত্র পাক কবিবে। জল নিশ্রেষ হইলে পাক সমাপ্ত হইবে।

ত্রিকটকবলাব্যান্ত্রী-গুড়নাগ্রদা,ধত্ম। বচ্চোম্ত্রবিকল্প: শোধন্মরহরং প্রঃ॥

গোক্র, বেড়েলা, কণ্টকারী, শুঠ মিলিও ১ তোলা, হৃদ্ধ ১৬ তোলা, জল ৬৪ কোলা। হৃদ্ধাবলেন পাক করিবে, প্রক্ষেপ গুড়॥। তোলা। ইহা সেবন করিলে কোষ্ঠবন্ধতা, মুত্ররোদ, শোর্থ ও জন নই হয়।

गाँउर व्यक्तिः कात कोत्रः यथात्रस्मीत्रवेषः गृङ्ग्।

ৰ্ক্তিযুক্ত অৰ্থাৎ যে দোষের যে ঔষধ, সেই দোষে সেই দ্রব্যসহ হুগ্ধ পাক করিয়া তাহা যথেক্ত অথবা পৈত্তিকে ও বাতপৈত্তিকে শীতল এবং বাতিকে ও বাতশৈগ্রিকে উষ্ণ অবস্থায় পান করিতে দিবে।

এরওম্লসিদ্ধং বা ছারে সপরিকভিকে :৷

জরে পরিকর্ত্তিকা অর্থাং গুছদেশে কর্ত্তনবং বেদনা থাকিলে এরগুমূলদিদ্ধ হগ্ধ উপকারী।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

নবজ্বরেহ্পথ্যম্।

স্থানং বিরেকং স্থরতং ক্যায়ং ব্যায়ামমভাঞ্জনমন্থি নিজান্। হুধং যুতং বৈরুদমানিষক তক্রং স্থরাং বাছ গুরু ক্রবক। আরং প্রবাতং ভ্রুমণং ক্রুম্ক ভাজেৎ প্রস্থাৎ তরুণঅরার্ডঃ।

ন্নান, বিরেচন, মৈথুন, কথান্থ রস, ব্যান্থাম, অভ্যন্ত, দিবানিন্তা, হ্রাধ্ব, ম্বত, দাল, মংস্থাদি, ভক্র, স্থরা, মধুররস, গুরু ও তরল দ্রব্য, অন, পূর্ববায়ু বা প্রবল বায়ু সেবন, লমণ ও ক্রোধ এই সকল তরুণজ্জরে বত্নপ্রবাক বর্জন করিবে।

মধ্যজ্বরে পথ্যম্।

পুরতিনাঃ ষ্টিকশালয়ক বার্ত্তাকুশোভাঞ্জনকাররেলন্ । বেক্রাগ্রমাষ'ঢ়ফলং পটোলং কর্কেটিকং মূলকপুতিকে চ ॥ মুলৈসম প্রেশ্চণকৈঃ কুলখৈম কুষ্টকৈবা বিহিত্ত সূম্য । পাঠামূতাবান্তকতগুলীয়-জীবন্তিশাকানি চ কাক্মাচী ॥ জ্ঞাক্ষপিথানি চ দাড়িমানি বৈক্ষতান্তেব পচেলিমানি। লঘুনি সান্থ্যানি চ ভেষজানি পথ্যানি মধ্যজ্ঞিগামমূনি॥

পুরাতন বেটে ধান্ত ও শালিগান্ত, বেগুন, সজ্বন ডাটা, কবোলা, বেতের মন্তানা, কেলেকোড়া, পটোল, কাক্রোল, ছোটমূলা, নাটার ডগি, মৃগ, মহুর, ছোলা, কুল্থকলাই ও বনমুগ ইহাদের যুব, আক্নাদি, গুলঞ্জ, বেতোশাক, কুদ্র নটে শাক, জীবন্তী শাক, কাক্যাচী, কিস্মিদ, কলেত্বেল, দাড়িম, বৈচি, এই সকল জব্য এবং স্বয়ংপক, লঘু ও সামাজেব্য মধ্যজ্বিদিগের প্রা।

পুরাণজ্বরে পথ্যম।

বিরেচনং ছ'র্জনমঞ্জনক ন''স্তাক ধ্মোহপানুবাসনক। সিরাব্যায়: সংশমনং প্রবেহোহ-ভাঙ্গাবগাহ: শিলিরোপচার: ॥ এণ: ক্ৰিছো হরিণো মর্রো
লাব: শশন্তিতিরিক্র্টো চ।
ক্রোণ: ক্রল: প্ৰতক্ষকার:
কপিঞ্জনো বর্তককালপুচেছা।
গবামজায়াশ্চ পরো স্বতঞ্চ
হরীতকা পর্বতনিব রাজ:।
এরওতৈবাং সিতচন্দনক
জ্বাণি স্বাণি প্রেরিতানি।
ক্যোৎমান্তিয়ালিজনমপ্যরং স্থাদ্
গণ: প্রাণ্ডবিগিং ক্থায়।

বিরেচন, ব্যান, অঞ্জন, নহা, গুমপান, পিচকারী, সিরাবেধ, রোগোপশমক ঔষধ সেবন,
প্রালেপ, তৈলানি অভ্যঙ্গ, অবগাহন, শিশির
সেবন, এবং ক্রক্ষার, হরিণ, চড়ুই, ময়ৢর, লাব,
শণ, তিত্তির, হুরুট, বক, কুরঙ্গ, চিত্রহরিণ,
চকোর, চাতক, বটের, কালপুচ্ছ এই সমস্ত
প্রাণির মাংস, প্রয় ও ছাগছগ্ধ এবং ঘত, হরীতকী, পর্বতের ঝরণার জল, এরগুতৈন, শ্বেতচন্দন, জ্যোৎস্মা, প্রিয়জনের আলিঙ্গন ও মধ্য
জরোক্ত দ্রবা সমূহ প্রাতনজরে হিতজনক

জ্বেহপথ্যমু

নমিবেগং দপ্তকাষ্ট্রমসাগ্রামতিভোজনম্।
বিক্লাক্সরপানানি বিদাহানি গুরুণি চ ।
ছষ্টাপু ক্ষারমহানি পত্রশাকং বিক্তৃকম্।
নলদন্ত চ তাপুলং কালিকং তৈকুচং ক্ষান্ম।
আগতিবংক্তর বিশ্যাকং ছত্রকং পিষ্টবৈকৃতম্।
অভিযানানি চেতানি অগিছঃ পরিবর্জ্যেৎ ।
ন্যায়ামকং ব্যবারক স্থানং চ ত্রমণানি চ।
অব্যুক্তান বেবেত যাব্রো ব্যবান্ ভ্রেৎ ।
ন্যাব ব্যবারক ব্যবারা ব্যবান্ ভ্রেৎ ।
ন্যাব ব্যবারক ব্যবারা ব্যবান্ ভ্রেৎ ।
ন্যাব ব্যবারক ব্যবারা ব্যবান্ ভ্রেৎ ।
ন্যাব ব্যবান্ক ব্যবারা নিয়াবিদ্যান বিশ্বক্

সনমুকুল এবা ভোজন অভিভোজন, বিরন্ধ বিদাহী ও গুরুজ্বল আহার, দুষিত জল পান, কারদ্রন, অন্ত, শাক, অজুবিত শহা, লেবু, পান, তামুত, তেলোমানার, আড্মংয়, তিলকর, বেঙ্গছাতা, পিঠক ও অভিষ্যন্দজনক জবা ভোজন জ্ববিত ব্যক্তি ব্যক্তন ক্রিবে এবং বাগ্রাম, মৈগুন, মান ও ভ্রমণাদি কার্য্য জ্বা মুক্তির প্র বলবান্না হওয়া পর্যান্ত আচরণ ক্রিবে না।

ইত্যায়ুর্কোদ-সংগ্রহে জরাধিকারঃ।

অথ জুরাতিসারাধিকারঃ।

অথ জুরাতিদার-নিদান ।

পিন্তজ্বে পিন্তভ্নোহতিসার-তথাতিসারে যদি বা জ্বাঃ স্থাৎ। দোষস্থ দৃশ্যস্থ সমানভাবা-জ্বনাতিসাবঃ ক্ষিতো ভিষ্ণা,ভিঃ ।

জ্বাতিসার একটি স্বতন্ত্র রোগ নহে। জব্ধ ও অতিসার এই উভন্ন রোগের সন্মিলনকে জ্বাতিসার কহে। যথা—

যদি পিতৃত্বরে পিতৃত্বত অভিসাব অথবা অভিসার রোগে জব উপাতৃত হয়, ভাহা হইলে, দোষ ও দ্যা পলার্থের সমভাহেতু ঐ মিলিভ রোগকে জ্বাভিষার কহা বায়।

শ্বরাতীসারয়েরজ্ঞ নিদানং যথ পুথকু পুর ह। ২৭ আজেরাতিসাবেজ তেন নাবেল্ডিং পুন্ত গ্র

জব ও অতিসাবের পৃথক্ পৃথক্ যে নিদান বলা ইইরাছে; দেই উভরবিধ মিলিত নিদানই জবাতিসারের জানিবে, অর্থাং যে যে কারণে জর ও অতিসার হয়, সেই কাবণ্ডন মিলিত হইরাই জরাতিসার রোগ আন্যন করে। অতএব এহলে তাহার আর প্রক্রেণ করা হয় নাই।

অথ জ্বাতিসার-চিকিৎসা।

অরাতীসারয়েরজন ভেষজং ধৎ পুথক্ পূপক্।
ন এমিলিএয়ে। কাষামজোজং বদ্ধরেদ্যতঃ॥
আমো অরহরং ভেদি ভঙ্গনস্থতিসারত্থ।
অতোহজোজবিক্ষাধান কিনাং তৎগবংগরম্॥
তেওকো প্রতিক্রবাত বিশেষোজনিকিৎসিত্য।।

জন ও অভিসাব বোগে বে পৃথক্ পৃথক্ ঔষণ উক্ত হইরাছে, জ্বরাভিসার বোগে, সেই উভয়বিধ ঔষণ মিশিত করিয়া প্রয়োগ করিবে না, করিলে পীড়ার রাদ্ধ হইবে। কারণ জ্বন্ন ঔষণ প্রায় ভেদক, কিন্তু অভিসার্ম ঔষধ ধারক, স্মৃত্রাং পরস্পান বিরুদ্ধ বলিয়া জরহর ঔষধ মারা অভিসারের বৃদ্ধি এবং অভিসারনাশক ধারক ঔষধ মারা জ্বের বৃদ্ধি হইয়া থাকে। অভ্এব জ্বাভিসারে যে বিশেষ চিকিৎসা উক্ত হুইয়াছে, তাহাই অব-লম্বন করিয়া রোগেব প্রভিকার করিবে।

ত্তরাতীসারিণামাদে। কুণ্যালজনপাচনে। প্রায়ন্তানামসকলং বিনা ন ভবতো বতঃ।

জ্বাতিসাররোগির পক্ষে প্রথমে এজ্বন এবং পাচক ঔনধ ব্যবস্থা করিবে, কারণ জ্বর ও অতিসার এই উভর রোগই আম অর্থাৎ অপক রসসম্বন্ধ ব্যতিরেকে প্রায়ই উৎপন্ন হয় না। লজ্বন ও পাচন ধার। আম রসের প্রপাক হওরায় রোগের লাঘ্ব হয়।

অরাতিস'রে পেয়'দি ক্রমঃ স্তান্ধ্বিতে হিত্য।

জ্বাতিসারে লজ্মিত ব্যক্তির পক্ষে পেয়াদিক্রম হিত্তনক, অর্থাং প্রথমে লজ্মন দেওয়াইয়া পরে উপযুক্ত পেয়া ও মণ্ড প্রভৃতি লগু পথা ব্যবস্থা কবিবে।

উৎপলষট্কম্ ।

জরাতিমারী পেধাং বা পিবেৎ সামাং পূরাং নরঃ। পুশিপণীবলাবিক-মাগ্রোৎপ্রবাক্তকৈঃ॥

জ্বাতিসারবে। গিকে, চাকুলে, বেড়েলা, বেল্ড ঠ, ভাঁঠ, নীলোংপল ও পনে এই ছয়টি দ্বোর সহিত পেয়া পাক কবিয়া, ভান্ধ সেই পোনা অথবা দাড়িমাদির রসে উহা ঈষদ্মী-কুত কবিয়া পান করিতে দিবে।

পাঠাদিঃ।

পাঠেন্দ্ৰবভূমিখ-মৃত্তপণ্টক (মৃত)ে। জয়স্ত্ৰামমতীসাগ্ৰং সন্ধ্ৰং সমধ্যেধ্যা ॥ জ্বাতিসারের আমাবস্থায় আক্নাদি, ইক্রাযব, চিরতা, মূতা, ক্ষেতপাপ্ড়া, গুলঞ্চ ও গুঁঠ ইহাদের কাথ ব্যবস্থা করিবে। তাহাতে সক্ষর আমাতিসার প্রশমিত হইবে।

কুটজাদিঃ।

কুটজো নাগরং মৃত্তমমূতাতিবিধা তথা। এভিঃ কুতং পিৰেৎ কাথং অৱাতিসাৱনাশনম্॥

কুড়্চিছাল, শুঠ, মুতা, গুলক্ষ ও আতইচ ইহাদের কাথ দেবনে জ্বাতিদার নষ্ট হয়।

ধান্যশুষ্ঠী।

ধ্যাকং বিশ্বসংযুক্তমামশ্বং বহিনীপানন্। বাত্রেশ্বজ্ঞারহরং শূল'তীসারবাশনম্।

জরাতিসারে প্রথম অবস্থার আমদোষের পরিপাক ও অগ্নির উদ্দীপ্তি জন্ম ধনে ও ভাঠের কাথ প্রয়োগ করিবে। ইহা ঘারা বাতশ্লেজনর, অতিসার ও উদ্বের কান্ডানি প্রশমিত হর।

নাগরাদিঃ।

নাগরাভিবিষামুন্ত-ভূনিস্বায়্তবৎসকৈ:। সর্ব্যক্ষরহর: কাষ্য সর্ব্যতীসারনাশন:॥

শুঠ, আতইচ, মুতা, চিরতা, গুলঞ্চ ও ইন্দ্রুব ইহাদের কাথ সর্বপ্রেকার জন ও অতি-সার নাশক।

र्शिट शामि ।

হ্র'বেরাতিবিষমুক্ত-বিজ্ঞাগরধান্তকৈঃ। পিবেৎ পিচ্ছাবিবন্ধন্নং শূলদোধানপাচনম্। সরক্তং হস্তাতীসারং সঞ্জরং বাপ বিজ্ঞান্ত

বালা, আতইচ, মৃতা, বেলগুঠ, গুঁঠ ও ধনে ইহাদের কাথ পান করিলে মলের পিচ্ছিলভা, বিবন্ধতা, শূল (পেট্কান্ডানি) ও আমদোষ নিবারিত হয়। ইহা ধারা সরক্ত সজর বা বিজয় অভিসার বিনষ্ট হইয়া থাকে।

গুড়্চ্যাদিঃ।

গুড়্চাতিবিবাধান্ত-গুঞ্চীবিধান্দবালকৈ:। পাঠাপুনিষকুটজ-চন্দনোশীরপন্নকৈ:। ক্ষার: শীতলঃ পেরো জ্বরাতীসারশান্তয়ে। হুলাসারোচকচ্চজি-পিপাসাদাহনাশনঃ॥

গুলঞ্চ, আতইচ, ধনে, শুঠ, বেলগুঠ, মুতা, বালা, আক্নাদি, চিরতা, ইন্দ্রথব, রক্তচন্দন, উণীর ও পদ্মকাষ্ঠ; ইহাদের কাথ শীতল করিয়া পান করিলে জ্বাতিসার, বমনবেগ, অরুচি, বনন, পিপাসা ও দাহ নিবারিত হয়।

উশীরাদি।

ড় শীরং বালকং মুন্তং ধন্তাকং বিশ্বভেষজম্। সমঙ্গা ধাতকী লোধং বিলং দীপনপাচনম্॥ গুড়ারোচকপিচছামং বিবন্ধং সংগ্রিবেদনম্। সংশাধিতমতীমারং সন্ধরং বাপ বিজ্ঞরম ॥

উশীর, বালা, মুডা, ধনে, ভিঠি, বরাক্রাস্তা, ধাইফুল, লোধ ও বেলগুঠি, ইহাদের কাথ পান করিলে অগ্নির দীপ্তা ও আমদোধের পরিপাক হয়। ইহা দারা সাভিবেদন, সরক্তা, সজর ও বিজ্ঞার অভিসার, অক্চি ও মলের পিডিগ্রন্থা এবং বিবন্ধতা বিনষ্ট হয়।

পঞ্চল্যাদি।

পক মূলীবলাবিজ-ওড় চামুজনাগলৈ।
পাঠাভূনিখাইবৈর কুটজাফক্ফালে: শৃতম্॥
হল্ডি স্কানতীসারান্ জ্রদোকং বানিং তথা।
সম্লোপ্ডবং খাবং কামং হ্যাৎ হ্যারপন্॥
(বজালি "প্রুমানীত সামাস্তাৎ যোজা। পৈতে

(যন্তাপ "পঞ্চনুলীতু সামান্তাৎ যোজা। পৈতে কনী: মসী। মহতী পঞ্চনুলী তু বাতলেখোজনে হিতা" ইতি বুলেনোজন্ তথাপাত্ৰ স্বন্ধশঞ্চানেৰ ব্যবহান্তি বৃদ্ধা:।)

স্থাপকমূল, (শালপাণি চাকুলে, বৃহতী, কণ্টকারী ও গোকুর), বেছেলা, বেলগুঠ, গুলঞ্চ, মৃতা, গুঠ, আক্রাদি, চিরতা, বালা, কুড় চিছাল ও ইল্ল্যব এই সকল জব্যের কাথ সর্ব্যপ্রকার অভিসার, জ্বর, বমি, শূল এবং স্থলারুণ খাস ও কাস বিনপ্ত করে। (যদিও স্থাপক্ষমূল পিত্তাধিকো এবং মহৎ পঞ্চমূল বাতম্মোদিকো অর্থাৎ পৈত্তিক অভিসারে স্থাপক্ষমূল এবং বাতমৈয়িক অভিসারে মহৎ পঞ্চমূল ব্যবস্থের, তথাপি বৃদ্ধ বৈন্ত্যণ এন্থলে ব্রাপ্ত ক্ষম্পাই ব্যবহার করিয়া থাকেন।)

বুহৎপঞ্চমূল্যাদিঃ।

পঞ্চমূলীপূক্ষবের-শৃক্ষটিকঞ্চীং ঘনম্।
জন্মাড়িমপত্রক বলা বালং গুড়ুহিকা।
পঠো বিষং সংকা চ কুটজ হুকুজনং তথা।
ধান্তাকং ধাতকীকাখং বিষাজীর কসংযুত্য।
পিনেজ্য তিসাবে চ সরক্তে বাপারক্তকে।
অপি বোগশতৈতাকে চাস ধ্যা সর্বার্রপক্ত।

বেলছাল, শ্রোণাছাল, গাভারীছাল, পাকলছাল, গণিরারিছাল, শুঠ, পানিফল-পত্র, কাঁচড়া, মুতা, জামপাতা, দাড়িমপাতা, বেড়েলা, বালা, গুলঞ্চ, আক্নাদি, বেলশুঠ, বরাক্রান্তা, কুড় চিছাল, ইন্তব্ব, ধনে ও ধাই-ফুল, ইহাদের কাপে আত্ইচ চূর্ণ ২ নামা ও জীরক চূর্ণ ২ নামা প্রক্রেপ দিয়া তাহা পান করিলে সরক্ত বা রক্তবিহীন জ্বাতিসার বিনষ্ট হয়।

কলিকাতিবিধা গুড়ী কিরাতামুখনাদকন্।
অরাতিসারসন্তাপং নাশরেদবিকল্পতঃ ।
বংসকন্ত ফলং দাক্ত রোহিণী গজ্পিপ্রনী।
বন্ধই। পিপ্রনী ধান্তং বিবং পাঠা বমানিকা।
ভাবপ্যেতী সিদ্ধবাগে) গোকার্জি গভিতাদিতে ।
অর্ভিসারশন্তা বিশেষাক্ষ্যিনাশ্রী।

ইন্দ্র্যব, আত্ইচ, শুঠ, চিরতা, বালা, হ্রালভা। অথবা ইন্দ্র্যব, দেবদারু, কট্কী, গল্পপ্ললী। কিংবা গোকুর, পিপুল, ধনে, বেলপ্রঠ, আক্নাদি ও যমানী। এই যোগ-জয়ের কাথ জ্বাতিসাব ও দাহ নিবারণার্থ প্রয়োগ করিবে। ইহারা সিদ্ধ্র্যল। নাগরায়তভ্নিস্থ-বিশ্ববালকবৎসকৈঃ।

সমুস্তাভিবিষোশীরৈও রাতিসারসজ্জন্য।
ভুঠ, গুলঞ্চ, চিন্নভা, বেলভুঠ, বালা,
ইন্দ্রবর, মুডা, আতইচ ও উণীর ইহাদের
কাথ জ্বাভিসারনাশক।

মৃত্তকবিখাতিবিধা-পাঠাভূনিখনৎদকৈঃ কাথঃ। মকরন্দগভিষ্জে জ্বরাতিসারে) জয়েদ্ ঘোরে)।

মূতা, বেলভ ঠ, আতইচ, আক্নাদি, চিরতা ও ইক্রবৰ ইহাদের কাণে মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে ঘোর জ্বাতিসার নিবৃত্ত হয়। যনজনপাঠাতিবিদা-প্রশোৎপলধান্তরোহিনীবিবৈ: । সেন্দ্রববি: কৃতনক্ষ: সাতীসারং অরং জয়তি ।

মুতা, বালা, আক্নাদি, আতইচ, হরাতকী, নীলোৎপল, ধনে, কট্কী, শুঠি ও ইন্দ্রব ইহাদের কাথ জ্বাতিসারনাশক।

বিল্পপঞ্চম।

শালপণী পৃথিপণী বলা বিৰং সদাট্রিমম্ । বিৰপক্ষকিত্যেতৎ কাথং কৃষা প্রদাপরেৎ ॥ অতিসারে করে চছজাংং শস্ততে বিএপঞ্কম্॥

জ্বাতিসারে বমি থাকিলে শালপাণি, চাকুলে, বেড়েলা, বেলগুঁঠ ও দাড়িম্ফলের ফুক্ ইহাদেব কাথ ব্যবস্থা করিবে।

কলিঙ্গাদিগুড়িক।।

কলিকবিৰ জন্ম-কপিখং সরসাঞ্চনম্।
লাক্ষাং হরিছে হ্রীবেরং কট্ফলং গুকনাসিকাম্।
লোগ্রং নোচরসং শুঝাং ধাতকীং বউপ্তক্ষম্।
পিটু । তপুলতোয়েন বটকানকসন্মিতান্।
হায়াগুকান্ পিবেৎ কিপ্রং অরাতীসারশান্তয়ে।
বক্তপ্রসাদনা স্তেতে শুকাতীসারনাগনাঃ॥

ইক্রবর, বেলশুঠ, জামের ও আমের জাটির শহু, করেতবেলের পাতা, রসাঞ্চন, লাক্ষা, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, বালা, কট্ফল, চামারকষা, লোধ, মোচরস, শহাভত্ম, ধাইফুল ও বটের শুক্ষা; এই সকল ক্ষর্য সমভাগে লইয়া তণ্ডেলর জলে পেষণ করিয়া ২ ভোলা (ব্যবহার ২ মাষা) পরিমাণে শুড়িকা প্রস্তুত ও ছারায় শুক্ষ করিয়া সেবন করিবে। ইহা দারা জরাতিসার, রক্তাতিসার ও উদরের কাম্ডানি নিবৃত্ত হয়।

উৎপলাদিচূর্ণম্।

উৎপলং দাড়িমস্বক্ চ পদ্মকেশরমেব চ। পিবেৎ তণ্ডুলভোয়েন অরাতিসারশাস্তয়ে॥

নীলোংপল, পদ্মকেশর ও দাড়িমফলের ত্বক্ একত্র পেষণ করিয়া ত গুলোদকের সহিত পেবন করিলে জ্বাতিদার প্রশমিত হয়।

ব্যোগাদিচুর্ণম্।

বোদে বংশদনী এক নিধ্ভূনিখনা কৰম।

চিত্ৰকং দ্বোহিণীং পাঠাং দাক্লীমতিবিবাং সমান্।

লক্ষ্ণীকতং সাধ্য দেক্লা বংশক্ষতঃ।

সক্ষেক্ত সংগুলা পিবেত এলবারিণা।

সংগ্লাক বিভিন্ন হব পাচনং আহি ভেষজন।

ভূমাক্ষিপন্ন জনা বিদ্যালনান্ন।

প্রান্ধ এইনাদোষং ভ্লাং প্রাহানমেব চ।

কামলাং পাভূরোগক ব্য়পুক বিনাশমেং॥

বোষ (শুঠ পিপুল মরিচ), ইন্থ্যব,
নিমছাল, চিরহা, ভীমরাজ, চিতামূল, কট্কী,
আক্নাদি, দারুহরিদ্রা ও আতইচ প্রত্যেক
সমভাগ, দর্কাসমষ্টিভূলা কুড় চিমুলের ছাল চূর্ণ;
এই দকল দ্রব্যের স্কাচ্ণ ভঙ্গোদকের
(চালুনি জলেব) সহিত পান অথবা মধুব
সহিত লেহন কবিবে। ইহা পাচক ও ফল
সংগ্রাহক। ইহা ধারা জ্বাতিসার ও গ্রহণী
প্রভৃতি রোগ নির্ভ হয়।

রুহৎ কুটজাবলেহঃ।

কুটজন্বনপলশতং কলচোণে বিপাচমেং।
তেন পাদাবশ্যেক শক্ষা পলবিংশতিন্।
দল্লা পাজ্বা লেহপাকে চুব্নিনানি নিন্ধিপেং।
পানা সমক্ষা বিলক ধাতকী মৃত্তকং তথা।
দাত্তিনাতিবিয়ালোধং শাললাবেইসর্জন্ম।
নসাঞ্জনং ধাত্তকগুতিনার বালকং তথা।
প্রান্তকারোং কর্মাংশং নিন্ধিপেং পাকবিদ্ভিষক্।
দীতে চ মধুনস্তত্র কুড্বার্জং বিনিন্ধিপেং।
সর্বজ্ঞসমতাসারং গ্রহণাং সর্বজ্জিপীন্।
সক্তল্লতং জ্বং শোকং ব্যিনশোগদং ভ্যান্।
জন্মপিত্তং তথা শ্লমগ্রিমান্দাং নিয়ন্ততি।
(অতিসারে গ্রহণাধ্য দুইফলোহম্ন্)।

কুড় চিম্লের ছাল ২২॥ • সের, জল ৬১
সের, শেষ ১৬ সের এই কাথ ছাকিয়া লইয়া
ভাহার সহিত চিনি / ২॥ • সের মিশ্রিত কবিয়া
পাক কহিবে। লেহবৎ গাঢ় হইলে নিমলৈখিত চুর্ণ সকল প্রক্ষেপ দিয়া নামাইবে।
প্রক্ষেপ দ্রব্য ষ্থা,—আক্নাদি মূল, বরাক্রান্তা,
বেলশুঠ, ধাইকুল, মূতা, দাড়িমকলের অক্,

সাতইচ, লোব, মোচ্বস, শ্বেত্পুনা, বঁসাঞ্জন, বনে, উনীর ও বালা এই সকল জবোর প্রাত্যেকের চূর্ণ ২ ভোলা। নীতল হইলে /া৹ পোষা মধু নিশ্বিত করিয়া ভাতে রাখিবে। ইহা সেবন করিলে সলপ্রকার অভিসার, গ্রহণী, বক্তবার হব, শোগ, বিনি, অর্নাঃ, ভ্রহা, ভার্মির প্রভাবি ও গ্রামিনা প্রশানত হয়। মাজা—> ভোলা। অনুপান—- ছাগ্ত্যা বা তঙ্গোদক।

তন্ত্রাক্তো বৃহৎকুটজাবলেহঃ।

(গ্রহণীগতে জাবলেইঃ।)

বৃট্যব্ৰু প্লশতং মলজোণে নিপাচয়েৎ। তেন পানাবশেষেণ শক্ষাপ্রস্থকং পচেৎ গ ভ:তা লেফে ঘনাভুতে চুৰ্ণানামানি দাপয়েৎ। লবজং জীবকং মৃন্তং ধাতকী বিশ্বব'লকম 🕸 এলা পঠো হচেং পুন্ধী আতীক্ষমধুরিকাং। শ্বন ভিবিষাক্ষারং কাকোলা চ রদাঞ্জন্ম । भाषालीतनेक १ पृष्टिः समन्ता ताङ्ग्हम्भम् । বটগুলং গদিরদ জন্মান্সলবং তথা।। এন'মজ সমং ভূর্বং প্রাক্ষণেৎ পাকবিদ্ভিষক। পিছেৰ ভারিতে শীতে মধুনঃ বুডবং ভাদেৰ 🛊 খাদয়েং কংমাত্রন্ত অনুপানবিধিং শুদু। অনুপ্রানং প্রদাতবাং দ্বিমন্ত স্থান্ধ্য, 🖟 Dम्ल्यक्रकानी मुल- खनम् १ क्यमी न ६३ । ভক্ষেৎ প্রতিরূপ'য় সংগ্রহ্মহণাং জাবং ॥ রোগং রক্তাতিসারক চিরকালসমূছ, বম্। প্রকাপক্ষতীমারং নানাবর্ণং স্বেদ্ন্যু 🛭

(শোপাতীমারে কেবলে বাতিমারে গ্রহণ্যাঞ্ দৃষ্টকলোহয়ম্)।

কুড় চি মুলেব ছাল ১০॥০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৯ সের। এই কাথের সহিত চিনি ১২ সের মিশ্রিত করিয়া পাক কবিবে। লেহবং ঘনীভূত হুইলে লবঙ্গ, জীরা, মুগা, বিগিন্ধুল, বেলগুঠ, বালা, বড় এলাইচ, আক্রাদি, দাকাচিনি, কাক্ডাশুঙ্গী, জারকল, মৌরি, ইন্দ্রব, আহুইচ, যবজার, কাকোলী, রসাঞ্জন, মোচরস, যটিমধু, বরাজার, রক্তচন্দন, বটের গুঙ্গা, খদির, জাম-

পত্র ও জানপত্র ইহাদের প্রত্যেকের চুর্গ হ তোলা প্রিমাণে প্রক্রেপ দিয়া নামাইরে। শাতল হইলে সা• অর্দ্ধ দের মধু মিপ্রিত করিয়া ভাতে রাখিবে। মার্কা ২ তোলা পর্যন্তে। অমুপান—দরির মাত, ছাগছয়, চম্পক-মূলের রস বা কদলামূলের রস ২ তোলা। প্রাতঃকালে সেবনীয়। ইহা ছারা চিরোখিত রক্তাতিসার, শোপ ও জর প্রভৃতি নিবারিত হয়।

মুত্রসঞ্জীবনী বটী।

মাগধী বংসনভেদ তথে প্রনাক ভিস্কৃত্য।
মুতস্থীবনা আনা এজধাররসমন্দিতী ॥
মূলকজ্ঞ চ ব'লানাং নটিকা তুলাক্সিণী।
পানাধা শিততে ধেন জ্বাতীসারনাশিনা।
বিস্তাং স্থিপাতে চ অরে ট্যোরিসাভিত্তার॥

পিপ্লী ১ ভাগ, বংসনাভ (কাছবিষ)
১ ভাগ, হিসুল ২ ভাগ, এই দেবাএর জামীর
লেবুণ রসে উওসকাপে শড়িয়া মূলার বীজতুলা
বটিকা কাবে। সেই বন শাতল জল সহ
সেবা, ইহা জাতিগানাশক। বিস্টিকা ও
দারণ স্মাপতিজ্বাও নৃতস্ক্রবিনা প্রায়া।

সিদ্ধপ্রাপেশ্বরে। রসঃ।

গদ্ধেশাল পুৰা। তেন ভাগনভাটে ভাগিকৰ।
মাত্যাক্ষেণ্ডালের প্রোব লাগানি চা।
বরাকোলেল্বালেনি ছিলাইাটিয়বানিকাই।
মহিলু নাজমারণ শতপূপা পুচুর্বিতা ॥
সিদ্ধাণেয়র স্ত, প্রানিনাং প্রাণায়ক,
নাবৈকং ভল্লালেন্ত নাগবন্ধীননৈত্বি ।
উল্লোকনাত্বানিক দ্ভাং তত্র পলত্রম্।
জ্বাতিসারেহহিস্তৌ কেবনে বা জ্বোহাপি চা।
বাবে ত্রিদোষ্টে বোগে গ্রহ্মান্ত্যান্তে।
বাতবোগে চাশুলে চাশুলে চাপ্রিণায়নে॥

গন্ধক, পালে ও অল্ল প্রত্যেক ৪ নাধা, দক্জিকার, সোহাগার থৈ, ঘরক্ষার, পঞ্চলবণ, তিফলা, তিকটু, ইন্দ্রন, জীরা, ক্ষজীরা, চিগ্রমূল, যনানী হিন্দু, বিভঙ্গ ও শুল্ফা, প্রত্যেক চুর্ব ১ নাধা; এই সকল দ্রব্য একত্র

মদ্দন করিয়া ১ মাখা পরিমাণে বটা কবিবে। অনুপান—গানেব বস। ঔষণ দেবনাস্তে উষণজ্ঞলপান ব্যবস্থের। ইহা মতি প্রবল জ্বা-তিসার ও গ্রহণী প্রভৃতি রোগে প্রযোজ্য।

কনকস্তন্দরো রসঃ।

হিন্দুলং মরিচং গন্ধং পিপ্ললী টক্ষণং বিষয়।
কনকন্ত চ বীজানি স্থাংশং বিজয়াজবৈঃ ॥
মন্দিয়েদ্ যামমাত্রে চপমাত্রা বটা কুতা।
ভক্ষণ'দ্ গংলীং হস্তি রহঃ কনকন্তন্দরঃ ॥
অমিনান্দাং অরং তীর্মতিশারক নাশ্যেং।
পূষ্যং দধ্যাদনং জ্ঞান্ বদা ভ্রেটাননং চরেং ॥

হিঙ্কুল, মনিচ, গদ্ধক, পিপুল, সোহাগার কৈ, বিষ ও পুজুরবীজ: এই সকল দ্রবা সমভাগে লইয়া সেকিপত্র ভিজান জলে এক প্রহা মদ্দন করিয়া চনকপ্রমাণ বটিকা প্রস্তুত কারবে। ইহা দেবনে গ্রহণী, ভীব্রজন, অভিন সার ও অগ্রিমান্যা বিনষ্ট হয়। পথ্য—দ্ধি বা তক্রো সহিত্যাল।

কনকপ্ৰভা বটী।

প্ৰণ । জং নতিওং মরাজ পালং কৰা উদ্ধিন্ধ বিষদ । প্ৰং জ্বাডি দ্বিন্ধ বিদ্যা গুজাপ্ৰমাণ ং বটকাং বিদ্যাং । ধ্যাতিমাবগ্ৰনাং ক্ষাত্ৰি-মালাং নিংস্থাং কনকজ্ঞেষ্য । দ্যা দিনং প্ৰামন্ত্ৰবারি মাংসং ভজেং তিত্তিবিদাবকানাম ॥

ধুত্রার বীজ, মরিচ, গোয়ালিয়া লতা, পিপ্লা, সোহাগাব থৈ, বিষ ও গদ্ধক, এই সকল জবা সিধিপত ভিজান জলে এক দিবস মধ্যন করিয়া গুঞ্জা প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা কনকপ্রভা নামে আভ্রহণ, জব ও অগ্রিমান্দ্র নিবাধিত হয়। পথা—দ্বি, অন্ন, অনুষ্ণ জব ও ভিত্তির প্রভৃতি পক্ষির মাংস।

গগনস্থনরো রসঃ।

उत्रभः मन्नर शक्षमञ्चकक मनः मन्नर ।
इक्षिकाम अदमदेनत जावराक्र किन नाम ॥
विश्वकर मनुना प्रमः दश्यमञ्ज्ञेष्ठ नवाकम् ।
विविधः नागराज्ञेष्ठः खता श्रीम तम्भवनम् ॥
भवार करः रास्कानामम्बर निनामासरः ।
विश्विक करा । एक बदमा श्रीमानस्मतः ॥

সোহাগাব শৈ, হিস্কুল, গন্ধক ও অল সমপ্রিমাণে গ্রহা ক্ষীক্ষ্ত্র রসে তিন দিন ভাবনা দিয়াও মন্দ্রন করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটী করিবে। অমুপান—খেতধ্না ২ রতি ও মধু। ইহা সেবনে প্রবল জ্বাতিসার, নানা-প্রকার রক্তরাব ও আমশূল নিবারিত হয়। ইহা অধিবৃদ্ধিকর। প্রথা—তক্ত ও ছাগত্র।

মৃত্রসঞ্জীবনে। রসঃ।

वमशक्ती मानी धारको एउभानः नियः किरायः। मक्त्रज्ञाः मुरुक्षाञ्चः भक्ताः ध्रुषु ब्रहेकर्द्धाः ॥ সর্পাক্ষাক জনেয়ামং ক্ষায়েণ। ও ভাবয়েৎ। ধাতকাতিবিধা মুক্তং শুর্তী জীরকবালকন ॥ য়নানা ধ'ক্সকং বিভাং পাঠা পথা। কণ'ৰিত্য। কুটজ্ঞ হচং বীজং কপিথং বালদ'ড়িমন। প্রত্যেক: করমাজ: স্তাৎ কৃট্টিত: র'থয়েক্জলৈ:। **ठळु**र्थ कलः पद्धा यांतर शामांवरणि डम् ॥ व्यानन जिमिनः छाताः भूत्वां छः मिन डः तमम्। ৰুদ্ধা তথালুকাষম্বে ক্ষণং 🕆 মুদ্বগ্ৰিনা পচেৎ ॥ মুত্রসঞ্জীবনো নাম চাপ্ত গুঞ্জাচতুষ্ট্রম্। দাতবামকুপানেন চাসংগ্যমপি সাধ্যেৎ॥ যটপ্রকারমতীসারং সাধ্যাসাধ্যং জয়েদ ধর্ম। নাগরাতিবিশা মুক্তং দেবদার কণা বচা॥ यमाना वालकः श्राप्तः कृष्ठेणक्क इती करी। धा छको ल्यारो विकः शांठा भागतमः मभन्। চ্ৰিতিং মধুনা লেজ্যলপানং স্থাবহ্য । ः কণ্মিতি দণ্ডচত্ত্রম।

পারদ ১ ভাগ, গন্ধক ১ ভাগ, বিষ দিকি ভাগ এবং সর্বভুলা জারিত অন। পরের রদেও গদ্ধনাকুলীর রদে এক প্রহর मफन कतिर्द ; ध्वर शहिक्न, जा १९६, मुठा, ভঠ, জীরা, বালা, সুমানী, ধনে, বেলভঠি, আকনাদি, হ্বীতকী, পিগলী, কুড়াট্র ভাল, ইন্দেষ্ব, কয়েত্বেল ও কচি দাভিগ, এই ১৬টা দেবা প্রত্যেক ২ তোলা পরিমাণে লটয়া কুটিত ও চারিগুণ জলে দির করিয়া চত্রথাংশ থাকিতে নামাইবে: সেই কাণে উপরি উক্ত মাৰ্দিত পারদাদি দ্বা তিন দিন ভাবনা দিয়া উহা একটি মুৎপাত্রে রাণিয়া পাত্রের মধ শরার স্বারা আচ্ছাদিত করত সন্ধিন্তলে লেপ দিয়া, মহ অগ্নি ছারা চারিদ্ও বালকায়ন্তে পাক করিবে। এই ঔষধ মতসঞ্জীবন রস নামে অভিহিত। মাজা—৪ রতি (বুদ্ধবৈভের ব্যবহার ১ রতি) ৷ ঔষ্ধ সেবন ক্রিয়া শুঠ, আতইচ, মুতা, দেবদাক্ত, পিপুল, বচ, যথানী, বালা, বনে, কুড়্চিব ছাল, হ্বাতকা, বাহ-ফুল, ইক্সবৰ, বেলগুঁত, আকনাদি ও মোচবদ প্রত্যেকের চুর্ণ সমভাগে লইয়া মধুর সাহত লেহন করিবে। এই ঔষ্ অনুপান মেবন করিলে স্থোসাধ্য স্কল প্রকাব অতিসার নিবৃত্ত হয়।

व्यथ প्रशाप्त्रशाविधः।

জরাতিসারের বিশেষ কোন পথ্যাপথ্য নির্দ্ধিষ্ট নাই। জর ও অতিসারোক্ত পথ্যা-পথ্যই বিবেচনা করিয়া ব্যবস্থা করিবে। ইত্যায়র্কোদ-সংগ্রহে জরাতিসারাধিকারঃ।

ইত্যায়ুর্কেদ-সংগ্রহে জ্বাতিসারাধিকাব:।

অথাতীসারাধিকারঃ।

অথাতীদার-নিদানম্।

শুক্ৰিভিন্নিধ্যক্ষেক্ষ-জনস্থলাভিনীতলৈঃ।
বিক্ষাধাশনাজীবৈবিষ্টেশলাপি ভোজনৈঃ।
ক্ষোত্যেরভিষ্টজন্চ মিপ্যাযুক্তবিবৈউলৈঃ
শোকাদছপ্তীস্থনতাতি-পানৈঃ সান্ধ্যুক্তবিবৈউলৈঃ।
জলাভিরমণেবেগ-বিঘাতেঃ ক্রিমিদোষতঃ।
নুগাং ভবভাভীসারো লক্ষণং তক্ত বক্ষাতে।
সংশ্যাপাং ধাতুরগ্নিং প্রবৃদ্ধঃ
শকুন্মিশো বাযুনাগংপ্রণ্মঃ।
সরভাভীবাভিসারং ভনাতব্যাধিং যোবং মৃত্ বিধং তং ববজি।

গুরু, মতিরিশ্ব, মতিরুক্ষ, মতি উষ্ণ, মতিদ্র, মতিত্বণ ও মতিশাতল তাবা ভোজন। বিরুদ্ধ ভোজন (ক্ষারমংস্তাদি একত্র ভোজন), মনশেন মধাং পূর্দাদনাহার জ্ঞার্প না হইতে প্নভোজন, মধক মন্ন ভোজন ও বিষমাশন এবং বমন বিবেচন মন্ত্রাসন ও নিরহার্থ মেহাদি ক্রিয়ার মতিযোগ কিংবা মিধ্যাযোগ, স্থাবর বিষ ভক্ষণ, ভয়, শোক এবং তুই জল ও তুই মন্ত্রের অতিপান, সান্ত্র্যবিপ্যায় মর্থাং মনভ্যুম্ভ ও দেহের প্রতিকৃল আহার বিহারাদি, শীত গ্রীল্লাদি শতুর ব্যতিক্রম, অদিক জলক্ষীড়াদি, মলমুত্রাদির বেগধারণ ও ক্রিমিদোধ, এই সকল কাশলে অভিসাব বোগ জন্মিরা থাকে।

শ্বীবস্থ দ্যিত রস, বক্ত, জ্বল, স্বেদ, মেদঃ ইএ, কফ, পিত্ত ও বস্তাদি জ্বীয় পাতৃ সকল, স্মিকে মন্দীভূত কবিয়া মলেব স্থিত মিলিত ব্বায় কণ্ডক অধ্যতপ্রিত হুইয়া অতিশয় বিস্তে হ্য ব্লিয়া ইহাব নাম অভিসাব।

আমপকক্ষং (হওা নাতিসারে ক্রিয়া যতঃ। শতঃ সঙ্গাচিমারেশু জেয়া প্রাসলক্ষ্য ॥ সকল প্রকার অভিসারেই অগ্রে আন ও পরু লক্ষণ অবগত হওয়া আবগ্রক। কারণ অভিসার রোগের আমাবস্থার ও পরুবস্থার ক্রম অবলম্বন বাজীত চিকিৎসাই চলিতে পারে না। যদি আম ও পরের ক্রম ত্যাগ করিয়া চিকিৎসা করা যায় অর্থাৎ আমাতিসারে ধারক ও পর্কাতিসারে ব,জ্যনাদি পাচক ঔষধ প্ররোগ করা যায়, তাহা হইলে মহৎ অনিষ্ট ঘটিয়া থাকে। অতএব অত্রে আন ও পরু লক্ষণ জানা কর্ত্তর।

আমপক লক্ষণম।

মজ্জ গ্রামা গুরুত্বাদ্ বিচ্ পর্কা হুৎপ্রতে জলে। বিনাতিজ্বসংবাত-শৈত্যক্রেপ্রস্থান্ত ।

আমাতিসারে প্রীষ, জলে নিজিপ্ত হইলে গুরুষহে মগ্ন হইয়া যায় এবং প্রাতিসারে মগ্ন হয় না। কিন্তু প্রীষ অভ্যন্ত জব, অধিক সংহত, অভ্যন্ত শীতল বা কদদূ ষত হইলে প্রীষ প্রীষ্ জলের সহিত একীভূত হইয়া যায়।

व्यामभकत्यातभत्नकग्र।

नकृष् प्रगन्धि माःहोपन्तिष्ठश्राविष्यमिकनः । विभवे अ निवासक ककार शकक सन्दर्भ ॥

আমাতিসাবে উদর খবে। স্বেদ্ন গুড়
গুড় শব্দ, কান্ডানর সহিত এল গল
গলনির্গন লাল: ছাল মূথ পরিপূর্ণ ও মলে
ছর্গন হইয়া থাকে; নিরাম অবস্থায় ইহার
বিপ্রীত হয়। কফাতিসাবে ককের গুরুষপ্রস্কু সুকাবস্থাতেও পুরীষ জলে মগ্লহয়।

ন তু সংগ্রহণং দতাৎ পূর্বমামাতিসারিণে ।
দোষা হাদৌ রখ্যমানা জনমন্ত্যাময়ান্ বহন্ ।
শোপপাও ময়নীহ-কৃত্তবোদরজরান্ ।
দওকালসকাথান-গ্রহণ্যশোগদাংক্তথা ॥

আমাতিদারের প্রথমাবস্থায় ধারক ঔষধ প্রয়োগ করিবে না। কারণ ধারক ঔষদ ঘারা দোষ-সকল রুদ্ধ হইয়া শোথ, পাণ্ডু, গ্রীহা, কুষ্ঠ, গুল্মা, উদর, জ্বর, দগুক, অলসক, আধান, গ্রহণী ও অর্শঃ প্রভৃতি বহুরোগ উৎপাদন করে।

ক্ষীণধাতুবলাপ্তস্ত বহু:দাবোহতিনি স্ততঃ। আমোহপি শুন্তমীয়া স্তাৎ পাচনামানণং ভবেৎ।

কিন্তু অভিসাররোগে বদি অদিক পরিমাণে মল ভেদ ও দোষের প্রেবল প্রেকোপ দৃষ্ট হয় এবং ভাহাতে বদি রোগির ধাতু ও বল ক্ষীণ হয়, তাহা হইলে আসাবস্থাতেও ধাবক ঔষধ প্রেরোগ করিবে; কাবণ ভখন কেবল পাচক ঔষধ দিলে অগ্নিক মলনিঃসবণ হতু রোগির মৃত্যুও ঘটিতে পারে। অভএব আমও স্তম্ভনীয়।

পৰে হিনক্ত নীসারো এইণামাজিবাদ্ হল। প্রবর্ত্তত তলা ক'ব্যা সিল্লং সাংসাহিকো বিধিঃ ।

গ্রহণানাড়ীর মুছতাবশতঃ প্রাতিসারে যথন অনবরত প্রীণ নির্গত ব্য, তথন শ্ল ধারক ঔবগালি প্রোগ কংবে।

অথামাতীসার-চিকিৎস।।

আমে বিলম্পনং শহুসাংগো পাচনমের বা : কাথ্যকানশন্তান্তে প্রদুবং এঘু ভোজনম্ ॥

আমাবস্থার প্রথমতঃ বিশিষ্টরূপ লক্তন ও পাচন ব্যবস্থেয়। লক্তনের পর মণ্ড ও পেরাদি ত্রব অথচ লঘু পথা প্রাদান করিবে। (অতিসারে যে ত্রবপদার্থের নিষেধ আছে, তাহা ত্রাদি অথিহিত জব্য জানিবে, পেরাদি নিষিদ্ধ নহে।) लब्बनस्मकः मूक्वा व हान्नामखीर त्वरकः विनः । समूनीर्वातम्बद्धाः समग्रहि ७९ शाह्यज्ञाशि ॥

সবল রোগির পক্ষে অভিসাররোগে একমাত্র লজ্জন বেমন উপকারী, এরূপ উপকারী ঔষণ আর দিতীয় নাই। লজ্জন দারা অভিবৃদ্ধ দোষের প্রশম শুন্ত পরিপাক উচ্চয়ই হইয়া থাকে।

ব্রীবেরশৃঙ্গবেরাভাাং মুস্তপপটকেন বা। মুস্তোদীচাশৃতং ভোরং দেরং বাণি পিপাসবে। মুক্তেংশকালে কুৎক্ষামং তযুগুরানি ভোজরেও।

অতিসাররোগির পিপাসা থাকিলে বালা ও শুন কিংবা মূতা ও ক্ষেত্রপাপ ড়া অথবা মূতা ও বালা, ইহাদের দ্বারা সিদ্ধ জল পান করিতে দিবে। এবং : কুলাশান্তির জন্ম উপযুক্ত ভোজনকালে লঘু অন্ত প্রদান কবিবে।

ভূমধ্যিক্ষা, গোলা লাজানা। শুজনোগতিসাগাই তালে। বস্তুপুলামাজা পোলা চালকামুখন ॥

পূলে যে দ্রব অথচ এলু পথা নিবার বিদি ক্সিত হইসাছে, ভাষা এই—

বন্ধানাণ শালপর্যাদি বা গান্ত্রপঞ্চাদি উষরে সিদ্ধা পোনা, হৈত্য চাড়া, বস্ত্রপ্রজন্ম মণ্ডা, পোনা ও মন্তর্যুগ কভিনারে হিতকর।

ভিন্নী পিত। খর¦ এখা এগুটা সাধ বিপ্যায়াৰ। শতানামা ও উটোত ভূচতার এগহিকা।

শৈএৰ ছাতু যাদ ১য়০ব্যুক্ত হইয়া কঠিন পিণ্ডাকার হয়, ভাহা বহলে গ্রহা গুরুপাক হুহুয়া থাকে, কিন্তু যদি অনিক ভ্রুমংযোগে উহাকে অনুনেহ্বং করা নায়, ভাহা হইলে ব্যু ইইয়া শাল্ল পার্বাক প্রাপ্ত হয়।

यहाँ भानभूगां पिः ।

শালপণীবলাবিলৈ পৃত্তিপর্বাচ সাধিতা। দাড়িমায়া হিতা পেয়া পিভ্রেখাতিসারিবান ।:

পিতক্ষেমাতিসারির পঞ্চে শালপারি বেড়েলা, বেল্ড ঠ ও চাকুলে মারা সার্বিত এবং দাড়িমের রসে ঈষদমীক্বত পেয়া হিতকর।

ষাক্তপঞ্চকসংসিজো ধাক্তবিশ্বকুতোহণবা। আহারো ভিষজা যেজ্যো বাতগ্রেখ তিসারিণাম্। বাতপিতে পঞ্চন্ত্র্যা কমে লা পঞ্বেলকৈলে।

বাতরেখ্যাতিসারিকে শান্তপঞ্চকের সহিত অথবা কেবল গনে ও শুঠ এই উষধব্বের সহিত পেরা পাক করির। আহার করিতে দিবে। বার্তপিরাতিসারিকে পঞ্চকারের সহিত পেরা প্রিকালিকে পঞ্চকারের সহিত পেরা প্রস্তুত করের। আহারাথ দিবে। বিনেশ্রুত, মূতা, বারা ও বেরগ্রুতি, এই পাঁচটিকে ধান্তপঞ্চক এবং শাল্পানি, চাকুলে, বৃহতী, কন্টকারী ও গোজু এই পাঁচটকে সর্পঞ্জুল আর পিপুল, পির্লিক্ন ১ ৮০ ও শুঠ এই পাঁচটিকে পঞ্চল। কছে।

तृश्ष्ट्रालयर्गापि।

শালপণী পৃথিপণী বৃহাতী কন্টৰ (বিকা। বলাৰদংট্ৰাবিখানি গাবানগোগাল লে। এতদাহারদহে (চেনা লেড নন্ধানিবান্ন

শালপাণি, চাকুলে, রহতা, কণ্টকারী, বেড়েলা, গোল্য, কেন্ড্রি, আক্নালি, শুঠ ও ধনে, এই সকল ঔববের সাইত সাগিত পেয়া, সকল প্রকার আভিসাক্রাভিব পক্ষেট হিত্তমনক।

ধ্যজ্ঞানীচাৰ্তং চোঞ্চ ভূকাবাহাতিবাহত্ত্ব। জাজ্ঞানেৰ সংগ্ৰহত্যা বিদ্ধনাহাত্ৰহ ।

অতিসার রোগির বৃদি তৃষ্ণ ও দাহ থাকে, তাহা হইলে ধনে ও বাধা, অথবা দনে, বালা ও আক্নাদি, ইহাদের সহিত পেয়া পাক করিয়া আহারার্থ চিবে।

ভোকং ভোকং বিবন্ধং বা সন্ত্রং যোহতিসাধ্যতে। অভয়াপিশ্বলীকলৈঃ কুপোলেন্তং বিরেচয়েৎ।

অতিসাররোগে যাহাব অল অল অথবা বিবন্ধ (গুট্লো) মল নির্গত হয় এবং উদরে কাম্ডানি থাকে, ভাহাকে হরীতকা ও পিপুর বাটিয়া ঈষত্য করিয়া বিরেচনার্গ সেবন করিতে দিবে।

ধাত্যপঞ্চকং ধাত্যচত্ত্ৰক্ষ ।

ধান্তকং নাগরং নুস্তং বালকং বিব.৭৫ চ। আমশ্রবিবন্ধন্নং পাচনং বহিনীপন্য। ইদং ধান্তচভূদং ক্তাৎ পৈত্তে ৬টাং বিনা পুনঃ॥

সতিসাররোগে আমণ্ল ও মলের বিবন্ধতা নিবারণার্থ এবং দোষপাক ও বহিনীপনার্থ বাস্তপঞ্চকর কার্থ পান করিছে দিবে। কিন্তু পিত্রাতিসারে ধান্তপঞ্চক না দিয়া বাল্ডচতুক্ষ প্রয়োগ করিবে। ধনে, শুঠ, মুহা, বালা ও বেলশুঠ, এই বান্তপঞ্চকের শুঠা হল অবাশ্রুষ্টী চাবিটিকে বাল্ডচতুদ্ধ করে।

নগেরাতিবিযানুজৈরথবা থাজনাগ্রের। তৃষ্ণাতিসারশূলগ্রং পাচনং দাপুনং নিল্।

অভিসাবে ভ্ষণ এবং ভিতৰ শুখ্ৰং বেদনা পাকিলে, শুঠ, আভিচি, মুখ্য অথবা দনে ও শুঠি ইছাদের ক্ষণি প্রয়োগ করিবে। এই কাপ্তম লাগু এবং আম্বান্তব্য পাচন ও অধিব দীপক।

পাঠাবৎসক্ৰীয়, নি হুৱা একো এই বিধন্। এজাসসমূৰ নমতীয়, বং সান্ত্ৰন্ত্। কজা একং সপিতিক বচ্চা এগা, ১ চ প্ৰবন্ত্ৰ

আক্নাদি, ইন্থাৰ, ইনাইকা ও শুঠ ইহাদের কাথ সেবন কানো আগজ্ঞ আহিসার ও বেদনা এবং সককাপত মনভেদ নিবারিত ইইয়াথাকে।

পয়স্থাৎকাথ। মুস্তা বা বিংশতিং ভারক র যাঃ। ক্ষীরাবশিষ্ঠং তৎ পীতেং হস্তাশামং ধরেদনন্।।

২০টা মুতার পারিমাণ ধণ, তাহার ৮ গুণ ছাগীতৃয় ও ছাগীতৃমেন ৪ গুণ জল একত্র করিয়া, তাহাতে ঐ ২০টা মৃতা দির করিবে; যথন জল শুক্ষ হইয়া ত্থাবিশেষ হইবে, তথন উহা নামাইয়া এবং মৃতাগুল ফোলয়া দিয়া ঐ হগ্ধ পান করিতে দিবে। ইহাতে আম ও তজ্জনিত বেদনা দুরীভূত হয়।

বৎসকাদি-কাথঃ।

বৎসকাতিবিষাগুটা-বিশ্বহিঙ্গুববংখুদৈ:। চিত্ৰকেণ যুক্তঃ কাপ আনাতীসারনাশনঃ॥

ইক্রয়ব, আত্ইচ, শুঠ, বেশশুঠ, হিসু, যব, মৃতাও রক্তচিতা; ইহাদের কাথ সেবনে আমাতীসার নষ্ট হয়।

পথ্যাদি-ক্ষায়ঃ |

গণা।দারুবচামুক্তেনাগরাতিবিযাথিতৈঃ। আমাতিদারনাশায় কাপমেভিঃ পিবেরুরঃ।

আমাতীসারনাশার্থ হরীতকী, দেবদারু , বচ, মৃতা, শুঠ ও আতইচেণ কাথ পান কবিতে দিবে।

यमार्गान ।

যমানীনাগৱোশীর-ধনিকাতিবিধাযনৈ:। বালবিভ্ছিপণীভিদীপনং পাচনং ভবেৎ ॥

অগ্নির দীপ্তি ও আমের পরিপাক অন্ত ষমানী, শুঠ, উনীন, ধনে, আতইচ, মুতা, কচি বেলগুঠ, শালপাণি ও চাকুলের কাথ প্রয়োগ করিবে।

কলিঙ্গাদি।

কলিঙ্গান্তিনিষা হিঙ্কু পণ্যা দৌনচ্চলং বচা। শূলস্তম্ভবিষদন্ধং পেরং দীপনপাচনম্ ॥

ইন্ধ্যৰ, আঠইচ, হিন্ধু, হ্রীতকী, সোবচ্চল লবণ ও বচ, ইহাদের কাথ পান কবিলে শুলবৎ বেদনা, ওছ ও মলের বিবন্ধতা নাণ এবং আগ্রিব দীপ্তি ও আমনোগের প্রপাক হইয়া থাকে।

কঞ্চাদি।

কক্তনাড়িমজস্থু-গঙ্গাটকপাত্রীবেরন্। জলধুরনাগবস্থিতং গঙ্গামপি বেণিনীং কক্ষাৎ।।

কাচড়াগত্র, দাড়িমপত্র, জামপত্র, পাণি-ফলপত্র, বালা, মুন্তা, ও জুঠ ইছাদের কাথ সেবলে ছতি বেগবান ছালিদাব রক্ষ হয়।

कुछे अमि ।

কুটজং দাড়িমং মৃশ্বং ধাতকী বিশ্ববালকম্।
লোপ্রচন্দনপাঠাশ্চ ক্ষায়ং মধুনা পিবেৎ ।
সামে শ্লে চ রক্তে চ পিচ্ছান্তাবে চ শক্ততে।
কুটজাদিরিতি খাতেঃ সর্বাচিনারনাশনঃ।
(বহুণো দুইফলোইয়ম্।)

ইন্দ্ৰৰ, দাড়িম ফলের হক্, মুতা, বাইফুল, বেলগুঠ, বালা, লোগ, রক্তচন্দন, আক্নাদি মিলিত ২ তোলা, জল বাত দেব,
শেষ ০০ অৰ্দ্ধ পোৱা। প্ৰক্ষেপ—মধু অৰ্দ্ধ
তোলা। ইহা আম, শূল (কাম্ডানি), রক্তস্ত্রাব ও মলের পিচ্ছিলতা নিবারণ করে।
ইহা অতিসারের উৎকুই উষ্ধা।

ক্র্যেখণাদিচ্পম।

জাৰণাতি বিষাহিন্ধু-গলাংসী বচলাভয়া। ।
গীত্যেকেনান্তসা হক্তালামা গাসারমূজতম ॥
অথবা পিশ্বলীমূল-পিশ্ব গীছধ চিত্রকান্।
সৌনচ্চলনচান্যেখ-হিন্ধু প্রতিনিষাভয়াঃ ॥
পিনেব শ্লেমাতিসার জেলচ্বিত্যকাকবারিশা।
হরিন্তাদিং বচ্ছিং বা পিবেদ্যেম্ বুদ্ধিমান্।
বড্যুন্ধবাগুণ্ পিপ্ললাদিং প্রেণ্ডেব্যে ॥

প্রবল আমাতিসারে শুঠ, পিপুল, মরিচ, আত্ইচ, হিন্তু, বেড়েলা, সচল লবণ ও হরীতকীচ্প অথবা পিপ্পলীমূল, পিপ্পলী, গজ্ঞ-পিপ্পলী ও চিতা ইছাদের চ্ব, শ্রেমাতিসারে সচল লবণ, বচ, শুঠ, পিপুল, মরিচ, হিন্তু, আত্ইচ ও হবীতকীর চুণ সমভাগে লইবা উক্ষ জলেব সহিত পান কবিতে দিবে। স্থান্দি জ্ঞান আমাতিসারে স্থান্তাক্ত হরিজাদি বা বচাদি গণের কাপ এবং স্থান্তাক্ত পিপ্পলাদি গণের সহিত খড়লম ও যবাগু প্রয়োগ করি বেন। (হরিমাদিগণ নথা— হবিমা, দার্কহিব পা, চাকুলে, ইন্দ্রণ ও স্থিমিয়া। বচাদি গণ বপা— বচ, মৃতা, আত্ইচ, হরীতকী, দেবদার ও

ৈচ, চিতা, শুঠি, মরিচ, ভোট এলাইচ, যমানী, ইক্রযব, আক্নাদি, রেণুক, জীরক, বাম্ন-হাটী, মহানিম, হিঞ্জু, কট্কী, এবস্বদ্প, বিভঙ্গ, আত্ইচ এবং মুর্কা)।

श**ु**गुगः।

ক্রন্থ কপিনিচাঞ্চেনা মরিচাঞ্জালিচিকাকে।
 ক্রপক্ত অন্তন্তাহরময়্প কাম্বলিকোহপরঃ।
 দশ্যের বিশ্বাসম্প্রিক।

শভ্যুষ্পাকে বিধি। খোল দি সের, করেতবেল ও আমকলশাক প্রত্যেক চারি বা ছয় তোলা এবং মরিচ, ক্রঞ্জীরা ও চিতা সম্বায়ে ২ তোলা; এই সকল দ্রেরের সহিত্র কাচা মুগের ভাল পাক করিলে যে য়য় হয়, তাহাকে শভ্যুষ কহে। এই শভ্যুষকে দ্রি ধাবা অম্লীকৃত এবং লবণ, তৈল, তিল ও মায সংযুক্ত করিয়া পাক করিলে কাম্বলিক নামক য়য় পঞ্জত হয়।

क्थां भिष्ट्रभ्य ।

ওঠা প্রতিষ্ঠিজু-মুস্তিকটএটিকটকঃ। চুণ্যুক্তাসুনা পীলমামানীসাবনাশন্য ॥

শুঠ, মাত্টিচ, হিন্ধু, মুতা, ইলুম্ব ও চিতা, ইহাদের চুর্ব উষ্ণ জলের সহিত পান কবিলে আলাতীয়ার নিবারিত হয়।

হরীতক্যাদিচুর্ণ য়।

হরী তকা প্রতিবিধা দিকু সৌবর্চনং বচা। হিন্দু চেতি কুডং চূর্ণং পিবেডকেন বারিণা॥

হরীতকী, আতইচ, দৈন্ধব ও দৌবর্জন লবণ, বচ এবং হিন্ধু, ইহাদের চুর্বও উষ্ণ জলের সহিত সেবন করিলে স্থামাতিদার নিবৃত্ত হয়।

অথ বাতাতাদার-লক্ষণম্।

অরণং ফেনিলং প্রক্ষমন্ত্রমন্ত্র মূহঃ। শক্ষামং সরুক্শকং মারুতেনাতিসাধাতে ॥ বাতাতিসারে, অরুণবর্ণ, কেনবুক্ত, রুক্ষ ও অপক মল, গুহুদারে শব্দ ও বেদনা জন্মাইয়া অতি অল অল অথচ মৃত্যুক্তি নির্গত হয়।

অথ বাভাতীসার-চিকিৎসা।

পৃতিকাদি-কদায়ঃ।

পৃতিকে। মাগৰী শুদ্ধী বলা ধান্তং হ্ৰীতকী। পক্তান্থনা পিৰেৎ সায়ং বাতাতীসাৱশাস্তয়ে ॥

বাতাতিদারণান্তির জ্ঞাকরঞ্জ, পিপ্ললী, শুঠ, বেড়েলা, ধনে ও হরীতকী, ইহানের কাপ দায়ংকালে ব্যবস্থা করিবে।

পথ্যাদি-ক্ষায়ঃ।

পথা দাক বচা শুঠী মুন্তা চাতিবিধামূহা। কাৰ এবাং হয়েৎ পীতো বাহাভাসবেমুখণ্ম।

প্রবল বাভাভিদাবে হরীতকী, দেবদার, বচ, শুঠ, মূতা, আতইচ ও গুলঞ্চ ইহাদেব পাচন প্রয়োগ করিবে।

বচাদি-ক্ষায়ঃ।

বচা চাতিবিদা মুন্তং বাজানি কুটজন্ত চ। শ্ৰেষ্ঠং ক্ষায় এতেষংং বাতাতীদারশাস্তয়ে ॥

বচ, আতইচ, মূতা ও ইন্দ্রন, ইহাদের কাথ বাতাতিসাবের শ্রেষ্ঠ ঔষধ।

পঞ্চুলীবলাবিখ-ধাস্তকোংপলবিজ্ঞ । বাতাভীসারিলে দেয়াস্তাক্ণাস্তত্যন বা॥

বায়ুজনিত অতিসারে বৃহং বা স্বন্ধ পঞ্চন্ত এবং বেড়েলা, শুঠি, ধনে, উংপণ ও বেলগুঠি এই সকল দ্রব্য তক্র, কাঁজি বা জল স্থারা সিদ্ধ করিয়া সেই কাথ প্রয়োগ করিবে। (তক্র ও কাঁজি শ্বারা কাথ প্রস্তুত করিতে হইলে তাহাতে অদ্ধ পরিমিত জল প্রদের)।

অগ পিভাতীসার-লক্ষণম।

িন্ত । গ্ৰহ্ম নাজন(লোটিকং বা ভূষ মুদ্ধে দাৰপ কোপপল্লন্॥

পি নালি, মল পীত, নীল বা লোহিত বৰ্ণ হয়। ইনাকে তৃষ্ণা, মৃষ্ঠা, দাহ এবং গুহৰালে জালা ও কত হুইয়া থাকে।

অথ পিত্তাতীসার-চিকিৎস।।

मधुकामि ।

মধুকং কট্ফলং লোগ্ৰং লাভিম্প্ত ফলয়টো। পিঙাতিসারে মধ্যকেং পালয়েও ভঙ্কাস্মা।

পিডা,তথাবে ধটিমধু, কট্দল, লোধ এবং দাড়েমের কাই ফলাও ব্রল ইহাদের চূর্ব মধুমিঞিত কবিয়া চালান জলের সহিত পান কারতে দিবে।

বিভাদি-কথাই।

নিলপ্রায়ন ছেন্দ্র ব'লক ভিবিয়াকুছ। ক্ষালো চ্ডালে যাতে। সামগুলিত সমূহ্রণ্ড।

আমাপিত,ড.মারে নেন্ডুঠ, ইন্দ্যন, মুভা, বালা ও আভাত ইংলিক কাথ প্রয়োজন।

व हे कना हि-कवावः।

কট্ নে িংবিসংখ্যাদ-বংসকং নাগরাখিত্য। শতং পিতাতালাল্যা দ্ভবাং মধুসংযুত্য ॥

কট্ফল, আজ্বিচ, মৃত', ইক্সমৰ ও ওঠি, ইহাদের কাথ কিঞ্জিং মধুর সহিত পান কবিলে পিডাটিমাধ নিবৃত্ত হয়।

কিরাততিক্রাদি।

কিরা হতিজকং মৃত্যং বংসকং সরসঞ্জনম্। পিতাতীসারারাগন্ধং সংস্কৌত্রং বেদনাপহম্॥

চিরত। মৃত্য, ইল্ম্যব ও র**নাঞ্চন ইহাদের চুর্ণ** তঞ্লোদক ও মধুস্ত সেবন করিলে পিভাতীসার প্রশাসত হয়।

অতি বিষাদ।

সংগাঁছ :িবিষ নিছ্ । বংসকত কৰা স্বচন্ । গড়লোৰকসংযুক্তং পেন্ন বিভাগিনারতং ॥ আতুইচ. কড চিতাল, ইক্লনৰ চৰ্ব

আতইচ, কুড়্চিছাল, ইন্তুলন চুর্ণ, মধু-সংস্কু করিয়া চালুন্ন জলের স্থিত সেবন করিলেও পিডাইসেরে নিবারেত হয়।

অথ লোগাতিমার-লক্ষণম্।

প্রেরং সাধিক কেম্বর্যা কেম্বর্যার বিশ্বর্য দিনের ১৪ বার্যা হওয়ার ১

ক্ষজানত অভিসাবে শুকুবর্ণ, গাচ, ক্ষ-মিশ্রিত, আনগানি ও শুভান মল নিংস্ত হয়। ইহাতে বেণি বেণা প্রিভ হঁচন থাকে।

অথ শ্লেমাতীসার-চিকিৎসা।

প্রথানিক্ষার্থ ।

भवातिक हेन १८५१-१८६५ पुरुष २५४१ त । मनाऽदेश स्वर ४०४० सरास तो ७१ प्रकीर छाणिस ॥

হলীদকা, চিচা, পটুকা, আক্লাদি, বচ. মূতা, ইন্ধা দে বাঁদি ধানে দাখে বা কল ক্ষোভিদাস নিম্নাদ করে।

ক্রিশত্রাদি-করাংঃ।

লিমিশত বস্থিত হোধ লাগ্ৰহণীৰ । এখাং লাগ্ৰাছিকা, লঙাগ্ৰাস্থে বলাসলো।

বিভূন্ধ, ৪চ. ১৭০ খাঁও, আক্নাদি, ৭**নে ও** কট্যুক উভাদের দ্বাস গোডাভাগারে প্রযো**জ্য**।

हवाकि-कगायः।

চবাং সাট্তিবিং মৃত্যু নাত্রনিত্তং সন্ধিরম্। বংসকত্বকৃত্তাং পথা। তইন্দিলেখাতিসালতুং॥

চৈ, আভিইচ, মুহা, কচি বেল্ভাঠ, ভাঁঠ, কুড্চির ছাল ও ফল এবং হণীতকী ইহাদের কাপ পান কলিলে শ্লেমাতিসার ও ব্যি নিবৃত্ত হয়।

পাঠা দি চুৰ্ব।

পাঠা বচা ত্রিকট্কং কৃষ্ঠং কট্করোছিনী। উক্তাস্থনা বিনিম্বস্তি ক্লেমাতীসারনুষ্ণাম্॥

আক্নাদি, বচ, ভ ঠ. পিপুল, মরিচ, কুড় ও কটুকী, ইহাদের চুর্ণ উষণ জলের সহিত পান করিলে প্রবল শ্লেমাতিদার নিবারিত হইরা থাকে।

हिन्नामि हुर्गम्।

হিন্দু সৌবর্চ্চলং ব্যোধমভয়াতিবিধা বচা। শীতমুকান্থনা চূর্ণং লেখাতিসারনাশনম্।

হিং, সৌষর্চন লবণ, ওঠ, পিপুল, মরিচ, হরীতকী, আতইচ ও বচ, ইহাদের চুর্ণ উষ্ণ জলের সহিত সেকন করিলেও লেম্মাতিসার বিনষ্ট হয়।

ববব লাদিযোগঃ।

বক্ষুপত্রং সংপিষ্টং রাত্রৌ জীরদ্বয়ং হিতম্ । কর্মনাত্রং ভবেদ্ভক্ষ্যং ক্ষাভিসারদাশনম্ ॥

বাব্লাপাতা, জীরা ও কৃষ্ণজীরা, বাটিরা ২ ভোলা পবিমাণে রাত্রিতে ভক্ষণ করিলে শ্লেমাতিসার নিবারিত হয়।

পशानि हुर्गम्।

পথ্যা পাঠা বচা কুঠং চিত্রকং কটুরোহিণী। চুর্পুঞ্চান্তসা পীতং ক্লেমাতিসারনাশনম্॥

হ্রীতকা, আক্নাদি, বচ, কুড়, চিতা ও কট্কী, ইহাদের চূর্ণ উষ্ণজ্জলের সহিত পান ক্রিলে শ্লোতিমার প্রশাস্ত হয়।

অথ ত্রিদোষাতীসার-ল**ক্ষণম্**।

বরাহস্কেহমাংসাস্থু-সদৃশং সর্ক্রপণিম্। কুক্সস্বাধ্যমতীসারং বিস্তাদ্ দোষত্রয়োত্তবম্।

সান্নিপাতিক অতিসারে, উক্ত বাতজাদি ত্রিবিধ অতিসারেরই লক্ষণ সকল উপস্থিত হয়; অধিকন্ত ইহাতে মল শৃকরের চর্ব্বিবৎ বা মাংস প্রক্ষালন-জলের স্থায় হইয়া থাকে। এই ত্রিদোষজ্ঞ অতিসার অতি কইসাধ্য।

অথ ত্রিদোষাতীসার-চিকিৎস। ।

সমঙ্গাদি-ক্ষায়ঃ।

সমস্পাতিবিবামূতা বিষং ট্র'বেরধাতকী। কুটজ্বক্ষলং বিবং কাথ: সর্বাতিসাক্ষ্যুৎ ।

বরাহক্রাস্তা, আতইচ, মুতা, শুঠ, বালা, ধাইফুল, কুড্চির ছাল ও ফল এবং বেলশুঁঠ, ইহাদের কাথ পান করিলে ত্রিদোষজ্ঞ অতি-সার নিবৃত্ত হয়।

পঞ্চনলীবলাদি-ক্ষায়ঃ।

পঞ্মূলীবলাবিব-ছড়্চীমুন্তনাগরৈ:। পাঠাভূনিববর্হিঠ-কুটজন্কলৈ: শৃতম্। স্কাজং হস্তাতীসারং অরঞ্চাপি তথা বমিম্। স্পূলোপদ্রবং বাসং কাস্ফাপি স্থান্তরম্।

পঞ্চমূল (পিন্তাধিক্যে স্বল্গ পঞ্চমূল এবং বাত ও কফাধিক্যে বৃহৎ পঞ্চমূল), বেডেলা, বেল শুঠ, গুলঞ্চ, মূলা, শুঠ, আক্নাদি, চিনতা, বালা এবং কুড় চিন্ন ছাল ও ফল ইহাদের কাথ পান করিলে তিলোষজ অভিসার, জ্বর, বমি, শ্লোপদ্রবস্ক্র শ্বাস ও স্বারুণ কাস প্রভৃতি উপদ্রব প্রণামত হয়।

অবেদনং অ্সম্পক্ষ দীপ্তায়েঃ ক্তিরোপিডম্। নানাবর্ণমতীসারং পুটপাকৈক্ষপাচরেৎ॥

বেদনাহীন এবং দীর্ঘকালোৎপন্ন ও নানা-বর্ণ বিশিষ্ট পকাতিসারে অগ্নির দীপ্তি থাকিলে পুটপাক ঔষধ ব্যবস্থেয়।

কুটজপুটপাকঃ।

রিক্ষং ঘনং কুটজবন্ধনজন্ত ধন-মাদার তৎক্ষণমতীব চ পোশবিধা। জন্থুপলাশপুটত গুলতোরসিক্ষং বন্ধং কুশেন চ বহির্ঘনপন্ধলিগুন্। স্থান্ধিমতদব্দীতা রসং গৃহীধা কৌমেণ বুকুষতিসারবতে গ্রদ্মাৎ। কৃষণাত্রিপুত্রমতপূজিত এব যোগ: সর্বাতিমারহরণে স্বয়মেব রাজা॥ পরসক্ত শুরু,ত্বন পূটপাকপলং পিবেৎ। পূটপাকক্ত পাকে।২য়ং বহিবক্ষণবর্ণতা॥

কীটাদি কর্ত্ক ভাক্ত নহে এরপ সরস ও প্রক্র কৃড় চি মুদের ছাল 'লইয়া সন্থঃ কৃটিত এবং তাহা তঙ্লজলে সিক্ত করিয়া জামপত্র দারা বেষ্টন এবং কুশ দারা বন্ধন করিয়া বহি-ভাগে মৃত্তিকার ঘন প্রলেপ দিয়া আগ্নিতে পুটপাক করিবে। বহিংস্থ লেপ যখন অক্লণ বর্ণ হইবে, তখন অগ্লি ইইতে বাহির করিয়া উহার বস নিঙ্ভাইয়া কিঞ্ছিং মধুর সহিত (২ তোলা পরিমাণে) সেবন করাইবে। ইহা সর্বপ্রকার অভিসারের প্রধান ঔব্ধ।

শ্যোনাক-পুটপাকঃ।

ত্ত্পিগুং দীর্থবৃদ্ধা কাশ্মীরপজ্বেষ্টিতম্। মুদাবলিগুং স্কৃত্মমারেশবক্লয়েং । স্বিন্নমূদ্তা নিশ্মীতা রসমাদার যত্তা। শাতীকুতং নধুযুতং পার্যেত্দরাময়ে॥

শোনাছাল পেষণ করিয়া পিণ্ডাকার করিবে এবং ঐ পিণ্ড গান্তারীপত্রে পূর্ববং বেইন, কুশ ধারা বন্ধন ও মত্তিকা ধারা লেপন করিয়া পুটপাক করিবে। ইংা উত্তমরূপে দিন্ধ হইলে অগ্নি হইতে উদ্ধৃত করিয়া নিড্ডাইয়া রস বাহির করিবে। ঐ রস শাতল হইলে, মধু সহ পান করিতে দিবে। ইহাতে স্কল্পেকণ উদ্রাম্ম প্রশ্মিত হয়।

কুটজলেহঃ।

শতং কুটজমূলস্য কুধং তোয়ার্কনে পচেং।
কাপে পাদাবশেষেংশ্মিন্ লেহং পুতে পুনঃ পচেং॥
সৌবর্চনথবকার-বিভূসৈদ্ধবপিন্ধলী-।
ধাতনীক্রযবাজাজী-চূর্বং দক্ষা পলবয়ন্॥
লিহ্নাদ্ বদরমাত্তং ভক্তিতং ক্ষোডেশ সংযুতন্।
পকাপকমতীসারং নানাবর্বং সবেদনন্।
ছক্বারং গ্রহণীরোগং জয়েচেবে প্রবাহিকান্॥

কুড় (চর ছাল ১২॥ • সের কুটিয়া ৬৪ সের জলে সিদ্ধ করত ১৬ সের থাকিতে নামা- ইয়া চাঁকিয়া লইবে। ঐ কাথ পুন্দার পাক করিয়া লেহবং গাঢ় হইলে, উহাতে সচল-লবণ, গনকার, বিট্লবণ, সৈন্ধবলবণ, পিপ্পলী, গাইফুল, ইন্দ্রব ও জীরা ইহাদের চুর্ণ ১৬ ভোলা প্রক্ষেপ দিয়া নামাইয়া লইবে। ১ ভোলা (ব্যবহার ॥০ ভোলা) মাঝায় মধুব সহিত লেহনীয়। ইহাতে পক্ষ, অপক্ষ, নানা-বর্ণ ও বেদনায়ক অভিসার, ছ্রিবাগ্য গ্রহণা এবং প্রবাহিকা নিবারিত হয়।

কুটজান্টকঃ।

ত্লামপার্কাং গিরিমনিকায়াঃ সংক্রতা পক্তা রসমাদদীত। ত্রিমন স্থপুতে পলসংমিভানি প্রকানি পিষ্টা সহ শালাকোন। পাঠাং সমস্বাতিবিবাং সম্ভাং বিঅঞ্পুপাণি চ ধাতকীনাম্। প্রক্রিপা ভূয়ো নিপচেৎ তু তাবদ पर्की **अरम**नः खत्रमञ्ज यात्र ॥ পীতন্ত্রমৌ কালবিদা জলেন মণ্ডেন বাজাপয়সাথ বাপি। নিহস্তি সর্বস্থিতিসারমূগ্রং কুষ্ণং সিতং লোহিত্সীতকং বা 🛚 দে'ষং এছণা; বিবিধক রক্তং পিতং তথৰ্শিংসি সশোণি থানি ৷ অস্তুদরকৈবমসাধারণং নিহস্তাবভাং বুটলাইকোহয়ম্॥

(তুলাক্সব্যে জলফোণো ক্রেণে এব্যতুলা মতা ॥)
মনাক্ দক্ষীপ্রলেপাবস্থায়াং শাক্ষলাদিচুর্বং প্রক্ষেপান,
শাক্ষলাদীনাং প্রত্যেকং পলমানজম্। শাক্ষলং শাক্ষলীনিষ্যাসঃ, অগ্নিমান্দো কোকজেলন শৃতশীতেন ইত্যক্ষো;
ব্যিত্তে জনমণ্ডেন, রক্তে চছাগছক্ষেন ইতি ভাকুদাসঃ।

কৃড়্চির কাঁচা ছাল ১২॥ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। ঐ কাথ ছাঁকিয়া লইয়া পুনর্কার পাক করিবে, লেহবং. ঘন হুইলে, তাহাতে নিম্নলিখিত প্রবা সকলের চূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া নামাইবে। প্রক্ষেপ্য দ্রবা যথা—মোচরস, আক্নাদি, বরাহক্রাস্তা, আত-ইচ, মূতা, বেলশুঠ ও ধাইফুল, প্রত্যেক চূর্ণ ডোলা। ইহা সেবন করিলে সর্বপ্রকার অতিসার, রক্তার্শ:, রক্তপ্রনর ও অনেক প্রকার রোগ বিনষ্ট হয়। অমুপান—অগ্নিমান্দ্রে ঈষত্ব্যু অথবা শৃত-শীতল জল,- বস্তিদোষে অক্সমণ্ড এবং রক্তস্রাবে ছাগীত্রা।

অথ শোকজাতীসার লক্ষণম।

তৈতি ভাবি: পোচতোহলাশনস্থ বাপোন্না বৈ বহিনাবিশু জন্তো:। কোন্ঠ: গড়া কোভয়েও তক্ত রক্ত' তচ্চাধন্তাও কাকণন্তীপ্রকাশন্। নির্গচ্ছেছৈ বিড়্বিমিশ্র: থবিড বা নির্গদ্ধ: বা গদ্ধবদ্ব।তিসার:। পোকোৎপন্নো ছন্টিকিংক্তাহতিমাক্ত রোগো বৈজ্ঞৈ কই এম প্রদিষ্ট:॥

যে ব্যক্তি ধনক্ষ বা বন্ধ বিয়োগাদি-জনিত শোকে কাত্র ও তজ্জ্য অলাহারী, তাহার শোকজ বাষ্প (নেত্র-গল-নাসাদিগত জল) ও উন্মা (দেহতেজঃ) কোঠে পূর্বক জঠরাগ্রিকে মন্দীভূত কারয়৷ রক্তকে স্থান হইতে চালিত করে। সেই গুঞ্জাফল-(কুঁচ্) সদৃশ লোহিতবর্ণ রক্তন, মল মিশ্রিত অথবা মলবৃহিত হুইয়া গুহুৰার দিয়া নির্গত হয়। উহা মল-মিশ্রিত হইলে গুর্মাও মল-রহিত হইলে নির্গদ্ধ হইয়া থাকে। এই শোকোংপর অতিসার অতীব ছাশ্চিকিৎস্ত ও কষ্টপ্রদ। কারণ শোকাপনোদন ব্যাতরেকে কেবলমাত্র ঔষধ খারা কিরূপে ব্যাধির শান্তি হইবে ? রোগোংপাদক হেতুর পরিভাগি ভিন্ন কেবল ঔষণ ছারা কোন বাাণিই প্রশমিত হইতে পারে না।

অথ শোকাদিজাতীসার-চিকিৎসা

ভয়শোকসমূভুটো জেয়ো বাডাভিসারবৎ । তদ্মৈবিভিহরা কাষ্যা হয়বাঝাসনৈঃ ক্রিয়া ।

ভয়জ ও শোকজ অতিসারের চিকিৎদা বাতাতীসারের ভায় জানিবে। এই উভয়- বিদ অতিসারে পূর্ব্বোক্ত বাতহরা ক্রিয়া এবং হর্বোৎপাদন ও আখাসন কর্ত্তন্য।

পৃশ্বিপর্ণ্যাদি-ক্ষায়ঃ।

পৃঙ্গিপৰীবলাবিৰ-ধান্তকোৎপলনাগৱৈঃ। বিভূলাতিবিষামুক্তা-দান্তপাঠাকলিলকৈঃ। মরিচেন সমাযুক্তং শোকাতীদারনাণনম্॥

চাকুলে, বেড়েলা, বেলগুঠ, ধনে, উৎপল, শুঠ, বিড়ঙ্গ, আতইচ, মূতা, দেবদারু, আক্ নাদি ও কুড় (চর ছাল, ইহাদের কাথে মরিচের শুড়া প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে শোকাতি-সার নিবারিত হয়।

অথ শোথাতীসার-চিকিৎস।।

শোধন্নী দুখনাঃ পাঠা জ্ঞীকলাতিবিৰাঘনাঃ। ক্ষিতাঃ সোদ্যাঃ পীতাঃ শোধাতীসারনাশনাঃ ।

শোথদ্বী (পুননবা), ইক্রবর, আক্নাদিমূল, বেলক্তঠ, আতইচ, মূতা, প্রত্যেক ঔষধ
২৭ রতি পরিমাণে গ্রহণ করিয়া ৩২ তোলা
জলে পাক করিয়া ৮ ভোলা শেষ রাখিয়া
মরিচচুর্ণ ১০ রতি সহ পান করিবে। ইহাতে
শোথাতীসার নষ্ট হয়।

বিড়কাতিবিধা মৃত্যং দার পাঠা কলিকক্ষ্। মবিচেন সমাযুক্তং শোখাতিসালনাশনম্॥

অতিসারে যদি শোগ হয়, তাহা হইলে বিড়ঙ্গ, আতইচ, মুতা, দেবদার, আক্নাদি ও ইক্রযব, ইহাদের কাথে মবিচচুর্ব প্রক্ষেপ দিয়া তাহা পান করিতে দিবে।

অথ হিদোষজাতীসার-চিকিৎসা।

্দিদোগলকণৈবিস্তাদভীমারং দিলোষজম্। তেখাং চিকিৎসা জ্যোজন বিশিষ্টা চ নিগস্তাত । বে অতিসারে ছই দোবের লক্ষণ প্রকাশ প্রার, তাঁহাকে দিনোযক অতিসার বলা বার। স্বতম্ব অত্যাবের চিকিৎসা কথিত হইরাছে একণে দিনোয়ক অতিসারের বিশেব চিকিৎসা বলা যাইতেছে।

অথ পিত্তশেগাতীসার-চিকিৎসা।

युष्ठानिः।

मुखा नांजिविया मुक्ता वहां ह क्रेक: नमः। अवाः क्यांग्रः नरकोजः शिखःसभाजिनात्रक्रः।

মৃতা, আত্ইচ, মুর্বা, বচও কুড়্চিছাল, ইহাদের ক্যায় মধুর সহিত পান ক্রিলে পিজ্যেখ্যাতিসক্ষানিবাবিত হয়।

সমঙ্গ দিঃ।

সমলা থাওকী বিদ্যামান্তাভোজকেশনম্। বিদ্যং মোচরসং লোধ্রং কুটজন্ত ফলন্থটো ॥ গিবেৎ ভঙ্গুলভোয়েন কবায়ং কন্দেবে বা। প্রেমপিভাভিসারন্থং রক্তং বাধ নিযক্তি ॥

বেড়েলামূল (বা বরাহজান্তা), ধাইফুল, বেলশুঠ, আমের আঁটিও পদ্মকেশর; কিংবা বেলশুঠ, মোচরস, লোধ, কুড়্চির ছাল ও ফল, ইহাদের ক্যায় অথবা তপুলোদকের সহিত ইহাদের ক্য পান ক্রিলে পিড্রেমা-তিসার ও রক্তর্যাব নিবারিত হয়।

কুটজাতিবিবা মূলং হরিজাপর্ণিনীবরম্। সক্ষৌজণকরং শক্তং পিত্তরেবাতিসারিণাম্॥

পিত্তশ্রেষাতিসারে কুড্, চির ছাল, আতইচ, মূতা, হরিদ্রা, দারুহবিজা, শালপাণি ও চারুলে ইহাদের কাথে মধু ও চিনি প্রক্রেপ দিরা শানার্থ ব্যবস্থা করিবে।

অথ বাতশ্লেগাতীসার-চিকিৎসা।

চিত্ৰকাদিঃ।

চিত্ৰকাতিবিৰা মুক্তং বলা বিৰং সমাপরম্। বংসকত্বকলং পৰ্যা বাতলেমাতিসারস্থা ।

চিতা, আওইচ, মুতা, বেড়েলা, বেলগুঁঠ, গুঁঠ, কুড়্চির ছাল ও ফল এবং হরীতকী, ইহাদের কাথ বাতরেমাতিসারনাশক।

অথ বাতপিত্তাতীসার-চিকিৎসা

किन्द्रां पि:।

কলিঙ্গককা মৃন্তং লাক্ত সাভিবিবং সমন্।
কৰং তৰুলভোয়েন পিবেৎ পিজানিলাময়ী ॥
বাতপিজাতিসারপ্রস্ত রোগিকে ইক্ত্রুবর,
বচ, মুতা, দেবদাক ও আতইচ, এই সকল
ত্রুব্য সমস্ভাগে লইয়া তগুলোদকের সহিত্ত
উত্তমরূপে বাটিয়া পান কারতে দিবে।

व्ययभाष्यम् ।

শিশ্বনীং নাগরং ধান্তং ভৃতিকঞ্চান্তরাধ্য বচাম্।
রীবেগভত্রমুন্তানি বিশ্বং নাগরধান্তকন্ ।
পৃতিপণী খণাছা চ সমঙ্গা কণ্টকারিকা।
ভিত্রঃ প্রমণা বিহিনাঃ ধ্যাকার্টেরভিসারিণান্ ॥
কলে পিতে চ বাতে চ ক্রমানেতাঃ প্রকীন্তিতাঃ।
সংজ্ঞা প্রমধ্যা জ্ঞাতব্যা বোগে পাচন্দীপনে ॥

কফোৰণ অভিসারে পিপুল, শুঠ, ধনে, যমানী, হরীতকী ও বচ মিলিত ২ তোলা; পিভোৰণ অভিসারে বালা, মুতা, বেলগুঠ, শুঠ ও ধনে মিলিত ২ তোলা; বাতোৰণ অভিসারে চাকুলে, গোকুর, বরাহকোস্থা ও কণ্টকারী মিলিত ২ তোলা; যথানির্থম কাথ করিলা প্রয়োগ করিবে। এই যোগতারকে শাস্ত্রে প্রমধ্যা কহে। যথা—পিপ্লাাদি প্রমধ্যা, ছীবেরাদি প্রমণ্যাও পৃদ্মিপর্ণ্যাদি প্রমণ্যা। ছীবেরাদি প্রমণ্যাই ধান্তপঞ্চক। প্রমণ্যা শব্দটী বেম্বণান্ত্রের একটি পারিভাষিক সংজ্ঞা।

শ্বথ রক্তাতাসার-লক্ষণম্। শিষকৃতি বলাতার্থ: দ্রবাণালাতি গৈভিকে। তলোপনায়১২১১ ক: বজাতিসার উবণ: ।

পৈত্তিক অভিদার হইলে বা হইবার অব্যবহিত পূর্ব্বে যদি অভ্যন্ত পিত্তকর দ্রব্য সকল নিরস্তর আহার করা বার, ভাহা হইলে অভি প্রবল রক্তাভিদার জন্মে।

অথ রক্তাতীসার-চিকিৎসা।

গুড়েন থাদিতং বিলং রক্তাতীসারমাশনম্। আমশুলবিবক্ষয়ং কুকিরোগবিনাশনম্॥

রক্তাতিসাবে যদি আমশ্ল ও মলের বিবন্ধতা থাকে, তাহা । ছইলে দগ্ধ বেল গুড়ের সহিত থাইতে দিবে।

শলক বদর জন্পালাকাক্ত জ্নন্তঃ। গাঁতাঃ ক্ষীরেণ মধ্বাচ্যঃ পুৰক্ শোণিতনাশনাঃ।

শল্লকীমূলের ছাল, কুলছাল, জামছাল, পিয়ালছাল, আমছাল বা অর্জ্ন্নছাল, বাটিরা ছাগছগ্ধ ও মধু সহ ভক্ষণ করিতে দিবে। ইছারা প্রত্যেকেই রক্তাতিসারনাশক।

চন্দনকল্কঃ।

শীতং মধ্সিতাযুক্তং চলদং তণুলাখুনা। মক্তাতিসারজিজক্ত-পিতত্ত দাহমেহত্তং ॥

মধু, চিনিও চন্দন এই তিন দ্রব্য একতা তথুল জলের সহিত পান করিলে রক্তাতিসার, রক্তপিত্ত, ভুফা, দাহ ও মেহ নষ্ট হয়।

কুটজদাড়িম-ক্ষায়ঃ।

ক্ষারো মধুনা পীতন্ত্রচো গাড়িমবংসকাৎ। সভ্যো লয়েগতাসারং সরক্তং ছুনিবারকম্ ॥ কচি দাড়িম কলের। তক্ ও কুড় (চছাল ইহাদের কাথ মধুসংখুক্ত করিয়া পান^{ক্ষা}করিলে ছনিবার রক্তাতিসার সঞ্চানিবারিত হয়।

কৰ্।অংশসকামান্ত পানবানধ কুট্ৰংগ্ৰং। সংগৃহ বয়সং তেষামঞ্জাকীয়েণ বোলয়েং। তং পিবেমাধুনা যুক্তাং সকাতিসায়নাশনম্।

জামের, আমের ও আমলকীর কটি পত্র একতা হেঁ,চরা, ভাহার রস, মধু ও ছাগত্ত্বের সহিত সেবনেও রক্তাতিসার নিবারিত হয়।

বিৰং ছালপয়:সিদ্ধং সিতামোচরসাম্বিতম্। কলিকচৰ্ণবংযুক্তং রক্তাতীসারনাশনম্॥

কিঞ্চিং জলমিশ্রিত ছাগছঝে বেলগুঠ
সিদ্ধ করিয়া তাহাতে চিলি, মোচরস ও ইন্দ্রযবের চুর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া লেহল করিবে:। বৃদ্ধ
বৈজ্ঞের ব্যবহার এই যথা—বেলগুঠ ৮ মাষা,
চিনি ১ মাষা, মোচবস ও ইন্দ্রযবচ্প মিলত
১ মাষা এবং বেলগুঠ সিদ্ধ হটবার উপস্কু
ছাগীছঝা। ইহাতে রক্তাতিসার নিবৃত্ত হয়।
জাঠাখুনা ভঞ্নীয়ং শীতঞ্চ স্যিতামধু।

কাটানটের মূল ২ মাধা, চানুনি জলের সহিত পেষণ করিয়া উহাতে ।চান ও মধু মিশ্রিত করিয়া পান করিলে রক্তাতিসার বিনষ্ট হয়।

পীতা শতাবরীককং প্রদা কীরভূগ ভয়েও। রক্তাতীদাবং পীতা বা তরা দিকং মুখ্য নরঃ।

শতমূলী ছাগছথের সহিত বাটিয়া সেবন করত, হ্রা পান করিলে অথবা উহার কাথ ও কল্প সহ দ্বত পাক করিয়া সেই মৃত পান করিলেও রক্তাতিসার প্রশায়ত হয়!

কুটলছক্কৃত: কাখো ধনীজ্ত: স্ণীতন:। লেহিতোহতিবিবাযুক্ত: সর্বাতীসারত্বর ভাবে

বথানিয়মে কুড়্চিছালের কাথ করিবে; সেই কাথ পুন:পাক দারা ঘনীভূত করিয়া ভাছাতে আতইচচুর্গ প্রক্ষেপ দিয়া লেহন করিতে দিলে সর্মপ্রকার অভিসার প্রশমিত হয়। ইছা প্রবল রক্তাভিসারের একটি মহৌষ্ণ।

ক্টজন্ত পলং প্রাচনাইভাগন্ধলে শৃত্ম।
তথৈব বিপচেৎ ভূয়ো দাড়িমোদকসংয্তম্ ॥
যাবচৈত্ব লসীকাভং শৃতং তছ্কপকলয়েৎ।
তন্তাৰ্ধকৰ্মং তব্দেশ পিবেম্বকাতিনারবান্।
অবশুসর্গীয়োহপি মৃত্যোগাতি ন গোচরম্ ॥

কুড় চির ছাল ১ পল, ৮ পল জলে সিদ্ধ করিয়া ১ পল থাকিতে নামাইবে; এবং ঐ কাপের সহিত উক্ত নিয়মে প্রাপ্তত দাড়িমের কাথ সংবৃক্ত করিয়া পুনর্কার পাক করিবে, যখন খনীভূত হইয়া লদীকাভ হইবে, তখন নামাইবে। উহার ১ তোলা তক্রের সহিত সেবনীয়। ইহাতে অবশু মরণীয় রক্তাভিসাররোগাঁও রোগমুক্ত হয়।

কঞ্জিলামাং কৃষ্ণানাং শর্করাজাগসংযুতঃ। এংজেন প্রসা পীতঃ সজ্যো রজং নিযুক্তটি॥

ক্ষণতিল বাটিয়া তাহার সহিত চতুর্থাংশ চিনি মিশ্রিত করিয়া ছাগলুয়ের সহিত সেবন করিলে সম্ভঃ রক্তাতিসার প্রশমিত হয়।

পরস্তার্ক্ষাদকে চ্ছাগে ঐবেলেংপলদাগরৈ: । পেরা রক্তাতিসারত্বী পৃত্তিপর্ণা চ সাধিতা ॥

অর্দ্ধেক জল বিশিষ্ট ছাগগুম্মে বালা, উৎপল ও মৃতার অথবা কেবল চাকুলের সহ পোয়া পাক করিয়া সেই পোয়া পান করিলেও রক্তাতিসার নিবারিত হয়।

রসাঞ্জনাদি চুর্ম্ ।

নসাঞ্চনং সাতিবিবং কুটজন্ত ফলং স্বচন্। ধাতকীং শৃঙ্গবেষক পিনেৎ ততুলনানিগা । কৌত্তবৃত্ত প্ৰণুদ্ধি রক্তাতিসারমূবণম্। মন্দং দীপরতে চাগ্রিং শূলকাপি নিবভ্রেৎ ।

রদাঞ্চন, আতইচ, ইক্সবব, কুড় চিছাণ, ধাংফুল ও শুঠ এই দকণ দ্রবা চূর্ণ করিয়া তণ্ণ-ক্ষণ ও মধুর সহিত সেবন করিলে প্রবদ রক্তাতিসার নিবারিত, অগ্নি প্রদীপ্ত ও আমশুণ নিব্ত হয়। শিংকাথ্য মূলমমলং গিরিমলিকারাঃ

সম্যক্ পলছিতয়মস্থততুঃশরাবে।

তৎপাদশেবসলিলং থলু শোষণীরং

কীরে পলছয়মিতে কুশলৈরজায়াঃ ।

প্রক্ষিপা মাৰকানটো মধুনস্তত্ত্ব শীতলে।

রক্তাতিসারী তং লীচা নিক্লজামধিগচছতি॥

কুড় চির ছাল ২ পল, জল /৪ সের, শেষ /১ সের, এই কাথে ছাগহগ্ধ ২ পল মিশ্রিভ করিয়া উহা পুনর্কার পাক করিবে। পরে হগ্ধাবশেষ হইয়া শীতল হইলে উহাতে মধু ৮ মাধা প্রক্ষেপ দিয়া পান করিবে। ইহাতে রক্তাতিসার প্রশমিত হয়।

বটারোহন্ত সংপিন্য স্নক্ষং তঙ্গলবারিণা। তং পিরেৎ ভক্রসংযুক্তমতীসারকজাপহম্॥

বটের ঝুরি চালুনি জলে উত্তমরূপে পেষণ করিয়া তক্র সহ পান করিলে অভিদার রোগ নিবারিত হয়।

উত্মলজলপিষ্ট'জোঠমূলককণাদ্ধপানমপহরতি। স্ব্রীসারএইণীলোগসমূহণ মহাগোরম্।

আঁকিড়মূল ত গুলজদো পেষণ করিয়। ১ তোলা পরিমাণে পান করিলে সক্ষঞ্চার অতি-সার ও প্রবল গ্রহণীরোগসমূহ প্রশমিত হয়।

কৰ: কোমলবক্ল-দলাৎ পীতে হৈতিসারহা।।

বাব্লার কচিপাতা বাটিয়া **থাইলেও** অতিসার বিনষ্ট হয়।

বিশ্ল্যকরণীকাথশ্চাথবা কুল্বজেজঃ। ব'রয়েছে 'ণিতবাবং রক:তিদ্বিমূখণ্ম॥

্যন্তী আয়াপানার পাতার কাথ বা কুকুর-শৌকার কুক্নিমে) পাতার রস পান করিলে রক্তমাব ও প্রবল রক্তাতিসার নিবারিত হয়।

পান্ধা সক্ষর কোন্তং চলনং তভ্লামুনা।
দাংহ তৃষ্ণাং প্রমেহক সজ্জো রক্তং নিয়চ্ছতি ॥
নবনাতং মধুণতং নিহেবা সিহয়া সহ।
নাগকেশরসংযুক্তং রক্তসংগ্রহণং পরম্॥
মধুপাদং সিতান্ধাংশং নবনীতং চতুক্তপুষ্॥

রক্তাতিসারে দাহ তৃষ্ণা ও প্রমেহ রোগ গাকিলে চিনি, মধু ও খেতচন্দন জগুল জলেব সহিত সেবন করিতে দিবে, ইহাতে ঐ সকল উপদ্রব জরায় নিবাবিত হইবে। অথবা মধু ১ মাধা, চিনি ২ মাধা, নবনীত ৪ মাধা, কিংবা নাগকেশর ৪ মাধার সহিত নবনীত ২ ভোলা ভক্ষণ করিলে রক্তভেদ নিবারিত হয়।

নারায়ণ-চূর্ণম্।

শুড়ুটা বৃদ্ধদারঞ্চ কুটজস্ত কলং তথা।
বিশ্বঞাতিবিধা চৈন ভূকরাজ্ঞধন নাগরম্।
শক্রাশনস্ত চূর্বঞ্চ সর্বমেকতা মেলয়েং।
চূর্বমেতং সমং গ্রাচং কুটজস্ত থচোহপি চ।
শুড়েন মধুনা বাপি লেহয়েদ্ ভিবজাং বরং।
বোধং রক্তমতীদারং চিরজং কুজয়ং তথা।
আরং তৃঞ্জাঞ্চ কাদঞ্চ পাপুরোগং ক্লীমকম্।
মন্দানলং প্রমেহক শুদজঞ্চ বিনাশয়েং।
এতয়ারায়ণং চূর্বং শ্রীনারায়ণভাষিত্য।

শুলঞ্চ, বিশ্বজ্ববীজ, ইন্দ্রযব, বেলশুঠ, আতইচ, ভূঙ্গরাজ, শুঠ ও দিদ্ধিপত্র প্রত্যেক চূর্ণ সমান, কুড় চির ছাল দর্মকূর্ণসমান; এই সমুদায় একত্র করিয়া শুড় কিংবা মধুর দহিত সেবন করিলে রক্তাতীদার, শোণ ও জর প্রভৃতি নানা রোগ নষ্ট হয়।

গুদদাহে প্রপাকে বা পটোলমধুকাখুনা। সেকাদিকং প্রশংসান্ত ছ্যাগেন প্রদানি বা। গুদলংশে প্রকণ্ডবা। চিকিৎসা তংগ্রকার্তিতা।

শুখনেশে দাহ ও প্রশাক পাকিলে (গুঞ দেশ পাকিলে) শল্তা ও যষ্টিমধুর কাথ অথবা ছাগছগ্ধ থারা শুখ্যারে পার্ষেকাদি করিবে; এবং ক্ষ্রোগে শুদ্রংশের যে চিকিৎসা উক্ত হইবে, ভাহাও করিবে।

অথাতিসারসাধারণ-চিকিৎসা।

विखानिः।

বিঅচ্তান্থিনিব চুহ: পীত: সক্ষোদ্রশর্কর:। নিহস্তাচ্হপ্রতীসারং বৈধানর ইবাহতিন ॥ অতিসারে বমনোপদ্রব থাকিলে বেলগুঠ ও আমের আঁটির কাপ প্রস্তুত করিয়া সেই কাপ চিনি ও মধুর সহিত পানু করিতে দিবে।

शरहोनां निः।

পটোলগৰ**ণ্ডাক-কাপঃ পীতঃ স্থাতিলঃ।** শক্রামধৃসংযুক্ত-ছবিতীসারনাশনঃ॥

পটোল, যব ও ধনের কাথ শীতল করিয়া সেই কাথ মধুও চিনির সহিত পান করিলে অতিসার ও বমি নিবারিত হয়।

थियत्रभाषिः।

প্রিয়ন্ত্রনম্ভাথ্যং পারয়েৎ তু যথাবলম্। তৃফাতিসারছদ্দিদ্বং সংক্ষান্তং তঙ্গাসুনা॥

অভিসারে তৃষ্ণা ও বনি থাকিলে প্রিয়ন্ত্র্, রসাঞ্জন ও মূতা চূর্ণ করিয়া তাহাতে মধু মিশাইয়া তণ্ড্লোদকের সহিত পান করিতে দিবে।

জম্ব দিঃ।

জন্মপলবোশীর-বটশুকাবরোহকম্।
রসঃ কালে হেধবা চুর্বং ক্লোফের সহ যোজিতম্।
ছদ্দিং অরমতীসারং মুর্জাং তৃক্ষাক্ষ তৃক্যাম।
নাশয়তাটিরাদ্ধিতি ক্রতিং বানেকহেতৃকাম।

জামের ও আমের কচিপাতা, উশার, বটগুঙ্গ ও বটের ঝুরি ইহাদের রস, কাথ অথবা চূর্ণ মধুর সহিত সেবন করিলে বমি, জ্বর, অভিসার, মূর্চ্ছা ও দারুণ পিপাসা বিনষ্ট হয়। ইহা ধারা নানাকারণ-জাত, অভিসারও প্রশমিত হইয়া থাকে।

বংসকাদিঃ।

সবৎসকঃ সাতিবিধক বিধঃ সোদীচাম্পুক কুতঃ ক্ষায়ঃ। সামে সশ্লে চ সণোণিতে চ চিরগুরুপ্তেথণি হিতোখতিসারে॥

ইক্রয়ব, আতইচ, বেলগুঠ, বালা ও মুতা ইছ্। দের কাথ পান করিলে আম, শূল ও রক্তবিশিষ্ট দীর্ঘকালোংপন্ন অতিগারও নিবারিত হয়।

द्यारवद्गानिः।

ক্রীনেরধাতকীলোগ্র-পাঠাল**জাল্বংসকৈ:।**ধায়কাতিবিবাধুত-গুড় চাবি**বনাগরৈ:।**কৃতঃ ক্যায়: শমরেদাতসারং **চিরোখিত্য।**অরোচকামপুনাপ্র-অরম্বা: পাচনা শ্বতঃ।

বালা, ধাইকুল, লোধ, আক্নাদি, লজালু-লতা, ইক্লায়ব, ধনে, আতইচ, মৃত্যা, গুলঞ্চ, বেলগুঠ ও গুঠ, ইহাদের কাথ চিন্নজ অতি-সার, অনুচি, আমশূল, বক্তথাব ও জ্বনাশক এবং দোষপাচক।

দশৰূলশুগী।

দ : মূলীকর'য়েণ বিশ্বনক্ষসমং পিবেৎ। অরে চৈবাভিসারে চ সংশাপে এত্নীগদে॥

দশমূলের কাথে ২ তোলা ভঠচুৰ প্রক্ষেপ দিয়া তাহা পান করিলে জ্বর, অভিসার, শোথ ও প্রহণীরোগ নিবাহিত হয়।

অহিফেনযোগঃ।

অহিফেনং হুসংভৃষ্টং থ**র্পরে মুত্তবঞ্চিনা।** প্রক্রতিসংরশমনং **ভে**ষজং **নান্তঃতঃ** পরমু॥

মৃত্ব অ, মতে অহিফেন উত্তমরূপে ভাজিয়া পক্ষাতসারে প্রয়োগ করিবে। ইহার তুলা অ, তদার-নিবারক ঔবধ আর নাই। মাক্রা—> বা॥ গভি। শিশুদের । দিকি রতি বা তাহার কম। অমুপান—ছাগীত্ম বাজল।

জ'ৰ্পেণ্ডাপমং ক্ষাব্রমতিসারে বিশেষতঃ। ছাগং তদ্ ভেষজৈঃ সিদ্ধং দেরং বা বারিসাধিতম্॥

পুরাতন উদরাময়ে ছার্ম অমৃতত্ত্বা, বিশেষতঃ অতিসাংল্প ঔষধের সহিত দিদ্ধ ছাগত্ত্ব জীপতিসারের পরম ঔষধ। অথবা ছাগত্ত্ব তিন গুণ জলের সহিত দিদ্ধ করিয়া ত্থাবিশেষ থাকিতে নামাইয়া দেই ছার্ম পান করিলেও বিশেষ উপকার হয়।

কুন্তানবালং হৃদৃদ্ধ পিষ্টেরামলকৈভিবক্। আর্দ্রকব্যসনাথ পূর্দেরাভিমণ্ডলম্। নদীবেগোপমং ঘোরমভীসারং বিদাশরেং। আমলকী বাটিরা রোগির নাজির চতু-দিকে বৃত্তাকারে আলি দিয়া তদ্মধাজাগ আদার রসে পূর্ণ করিবে। তাহাতে নদী-বেগোপম অতিসার নিব্রভ হটবে।

তথা জাতীকলং পিষ্ট্ৰা নাভৌ দ্স্তাৎ প্ৰদেশনম্। ছনিবারমতীদারং বারয়তানিবারিতম্ ॥

ঐরপ জারফল বাটিয়া নাভিন্থলে প্রলেপ দিলে ছনিবার ও আনবারিত অভিসার নিবা-রিত হয়।

আত্রত বন্ধনং পিটাং কাঞ্জিকেন প্রযন্ততঃ। নাজিং সংলেপরেৎ তেন কন্ধেন মতিমান্ ভিষক্। নদীবেগোপমং ঘোরমতাসারং নিবারারৎ॥

আনের ছাল কা:জতে বাটিয়া নাভিদেশে প্রালেপ দিলেও অভিবেগবান্ প্রবল অভিসার প্রশমিত হয়।

অথ প্রবাহিকালক্ষণম।

বায়ু: প্রবৃদ্ধো নিচিতং বলাসং মূদতাধস্তাদহিতাগনস্ত। প্রবাহংহোহলং বছলো মলাক্তং প্রবাহিকাং তাং প্রবাধি তজ্ঞাঃ॥

অহিতাখারে একু,পত হইরা সঞ্চিত কক্ষকে মলের সহিত অল্লে আল্লে বারংবার অধ্ব-প্রেরণ করে। এই শোগে প্রবাহণ অর্থাৎ কুছন ছারা সমল কফ বিংসারিত হয় বাল্যা পাশুতেরা ইহাকে প্রবাহিকা কাহরা থাকেন।

অথ প্রবাহিকা-চিকিৎসা।

(আমাশয়রোগ।)

বালং বিলং গুড়ং তৈলং পিপলা বিশ্বভেষজন্। লিহাছাতে প্ৰতিহতে সমূলঃ সপ্ৰবাহিক: ।

প্রবাহিকা রোগে পেটের কাম্ড়ানি ও বারু বিবন্ধ থাকিলে ক্চবেল-পোড়া, গুড়, তিলতৈল, পিপুল ও শুঠ এই কয় দ্রব্য মিশ্রিত করিয়া ভক্ষণ করিলে উপকার দর্শে। পুৰুসা পিশ্বনীককং পীতো বা মরিচোত্তবং । আহাৎ প্রবাহিকাং হস্তি চিরকারাস্বভিনীয় ।

পিপ্লনীচূর্ণ অর্জতোলা অথবা মরিচচূর্ণ ২ মাষা, অর্জ পোলা ছথের সহিত তিন দিন সেবনে করিলে দীর্ঘকালজাত প্রবাহিকা নিবা-রিভ হয়।

্ৰুকঃ ভাৰানবিবানাং তিলককণ তৎসমঃ। দয়: স্বায়ঃ কেহাঢ়াঃ থড়ো হভাৎ প্ৰবাহিকাম্।

কচি বেলপোড়ার শশু এবং তংসম নিত্র তিলক্ষ সমভাগে লইয়া দধির সরে অমীক্ষত এবং মেহসংষ্ক্ত করিয়া সেবন ক্ষিতে প্রবাহিকা রোগ নষ্ট হয়, ইহার নাম ধ্যুবোগ।

वित्य वर अपूर लाखर टिनर निकार ध्वांश्ल ।

বেলভাঠ, মরিচ, ইকুগুড় ও লোধ, এই সকল প্রব্য সমভাগে লইরা ভিলতৈলের সহিত লেহন করিলে প্রবাহিকা প্রশমিত হয়।
দগ্ধা সমান্দেশ সমান্দিকেশ ভূঞীত নিশ্চারকণীড়িতত্ত।
ক্তন্তপ্রকুপারুখিতেন বালি কারেশ শাতেন মধ্মতেন।

প্রবাহিকারোগী সদার দ্বি (যাহা হইতে নবনীত উদ্ধৃত হয় নাই) ও মধুব সহিত, অথবা তথ্য মবো অতথ্য কেপ করত সেই তথা শীতল হইলে মধু মিশ্রিত করিয়া তাহার সহিত, পূর্বোক্ত বিবাদি সেবন করিলেও প্রবাহিকা নিবারিত হয়।
ভাস্মতীসারবদাদিশেচ্ছ লিক্ষ ক্রমণামবিপক্তাঞ্॥

প্রবাহিকার লক্ষণ, চিকিৎসা এবং আম ও পদ্ধ লক্ষণ অভিসাবের স্থায় জানিবে। বৃদ্ধিমানু চিকিৎসক বিবেচনাপুর্বক জতি-সারের স্থায় ইছার চিকিৎসা করিবে।

लक्जां खर्यां गः।

कृष्टेबर नाष्ट्रियरेक्व कनलीत्माट्स्य ह । कक्षेर कालमूलो ह क्यु ब्रायास्त्रित गर । मृनाटेक्र वहमूना गर्कारक्तर्य ह । बनार नगणनान् काशान् गरम्ब ह शृथक् शृथक् । कलाताय विशक्त्यार वावर शानावरणविक्म । कमात्र शृनात्रवार्या शक्यां नवर्योद्यात्मश्नम् । তত্র প্রক্ষেপণার্ধার দ্রব্যমেতৎ স্বচূর্ণিতম্।

লবকং জীরকং জাতী-ফলকাতিবিবা সমম্ ॥
এলা মধুরিকা চৈব খদিরং ভূক্ষমেব চ।

শাশালীমোচকং বিবং সর্জ্জন্ত রসমেব চ ॥
এতেবাং পালমানেন চাল্রকং পালমেব চ ।

সর্ব্বেক তত্র নিক্ষিপ্য গুড়িকাং কাররেন্তিষক্ ॥

লবকাল্রক্যোগোহরং রক্তাতিসারনাশনঃ।
শোধাতীসারশমনঃ সর্ব্বশূলনিস্পনঃ॥

কুড় চিছাল, দাড়িমফলের ছাল, মোচা, কাঁচ ড়াদাম, তালমূলী, জামছাল, আমছাল, পানিফল, বটের শৃঙ্গ ও শালছাল প্রভ্যেক দশ দশ পল লইয়া ৬৪ সের জলে পাক করিয়া ১৬ সের অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে; পরে সেই কাথ চাঁকিয়া লইয়া পুনর্কাব পাক করিবে। হাতায় লাগে ওরূপ গাঢ় হইলে তাহাতে লবঙ্গ, জীরা, জায়কল, আতইচ, এলাইচ, মোরি, খদির, দার্লচিনি, মোচরস, বেলগুঠ, ধুনা ও অত্র প্রভ্যেকের ১ পল পরিমিত চুর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া গুড়িকা প্রস্কৃত কবিবে। এই ঔষধ সেবনে রক্তাতিসার, শোথাতিসার এবং সর্ক্ প্রকার শূল নিবারিত হুইয়া থাকে।

লবঙ্গদ্রাবকঃ।

লবঙ্গাতিবিষা মৃন্তং পাঠা বিষং সধাত্যকন্।
ধাতকা মোচকং জার-লোগ্রমিশ্রুবং তথা ॥
বালকং সর্জ্জকঃ শৃঙ্গা সৈজবং নাগরং কণা।
বাট্যালকং যবক্ষারগহিকেনং রসাঞ্জনন্।
এতেয়াং জুলাভাগানি লবজানি প্রদাপয়েও।
খাখসীস্বরসেনৈর ভাষয়েং সপ্তবারকম্॥
লবঙ্গজাবকং নাম সর্পরোগের খোজয়ং।
গ্রহণাং চিরজাং হস্তি সশোগাং পাভুকামলান্।
অতীসারং নিহন্ত্যান্ত সামং নানাবিধং তথা।
মন্দাত্যিং নাগরেচছীগ্রমন্নপিত্তং প্রদাক্ষণন্।
নরাশাঞ্ছিভার্থায় বিষানিত্রেন নিশ্নিতঃ॥

লবন্ধ, আতইচ, মুতা, আক্নাদি, বেলগুঠ, ধনে, ধাইকুল, মোচরস, জীরা, লোগছাল, ইক্সবৰ, বালা, ধুনা, কাক্ড়াশৃদ্ধী, নৈন্ধব, শুঠ, পিপুল, বেড়েলা, ববক্ষার, অহিকেন ও রসাঞ্জন প্রত্যেক সমন্তাগ, সর্বসমষ্টিতুল্য লবন্ধ, এই সকল দ্রব্য পোশুর্টে ড়ির রসে ৭ বার ভাবনা দিবে। এই গ্রহজ্ঞাবক নামক ঔষণ সেবনে লোকোদ্মিখিত অভিসার ও গ্রহণী প্রভৃতি রোগ সকল নিবারিত হয়।

অতিসারে রসপ্রয়োগঃ।

অতিসারবারণে। রসঃ।

मत्रमः कुछक्প् तः मूख्य्यवनगःष्ठम् । मक्ताजीमात्रममनः शोधमीकीमखाविष्म् ।

শোধিত হিমুক, পক কর্পুর, মৃতা ও ইক্র-যব, এই সকল দ্রব্য আফিং-ভিজা জলে ভাবনা দিয়া এক রতি মাত্রায় সেবন করিলে সর্ব্যকার অতিসার নিবৃত্ত হয়।

ব্রহৎকনকম্বন্দরো রসং।

ওছস্তং সমং গৰাং মরিচং টক্ষণং তথা।
অৰ্থনীক্ষং সমং মৰ্দ্ধাং ভাগীফ্রাবৈদিনাৰ্দ্ধকম্ ।
সূত্ৰজুলাং মৃতঞ্চাত্ৰং রসঃ কনককুলার:।
অন্ধ্র গুঞ্চাব্যং হস্তি পিতাতিসারমুগ্রকম্ ।

শোধিত পারদ ও গদ্ধক, মরিচ, সোহাগার থৈ ও কাল ধুতুরাবীজ প্রত্যেক দ্রব্য সমভাগে লইয়া বামুনহাটীর রসে ২ প্রহর কাল মর্দ্দন করিবে। পরে পারদের সমান জারিত অভ্র মিশাইয়া লইবে। ইহা ২ রতি পরিমাণে উগ্র পিস্তাভিসার রোগে প্রয়োগ করিবে।

र्श्निटकाष्ट्या द्रमः।

ভক্ক তালকং লোহং গগনক পলং পলম।
কপুরং পারদং গকং প্রত্যেকং বটকোলিতম্।
কাতীকোবমুরাপাত্রং শঠিতালীশকেশরম্।
ব্যোবং চোচং কণামূলং লবকং শিচুসন্মিতম্।
ভক্ষেৎ প্রাতক্ষায় গুরুদেবছিলার্চকঃ।
নানাক্ষপমতীসারং গ্রহণীং সর্কর্মপিনীম্।
অয়পিত্রং তথা শূলং শূলক পরিশামক্ষম্।
বসায়নবস্কারং বাজীকরণ উদ্ধন্ধঃ।

শোধিত হবিতাল, গৌহ ও অল্ল, আত্যেক এক এক পল; কর্পুর, পারন ও গদ্ধক প্রত্যেক ৮ মাষা; জয়িলী, মুরামাংসী, তেলপাল, শাঁঠা, তালীশপাল, নাগকেশার, শুঠা, পিপুল, মরিচ, দাফ্রচিনি, পিপুলমূল ও লবক প্রত্যেক হ ভোলা। এই সকল জ্বা একল মাদ্দন করিয়া (২ রতি মালায়) প্রাতঃকালে সেবন করিলে নানাপ্রকার অতিসার, সর্বপ্রকার গ্রহণী, শূল ও পরিণামশূল নিবারিত হয়। ইহা শ্রেষ্ঠ রসায়ন ও বালীকরণ ঔষধ।

व्यहित्यनविका।

অহিফেনং স্থর্জুরং স্বষ্ট্র ওঞ্জৈকমাত্রকম্। রক্তশ্রবমতীসারমতিবৃদ্ধং বিনাশমেৎ ॥

আফিং ও পিওথর্জ্ব একত্র মর্দন করিয়া ১ রতি মাত্রায় সেবন করিলে অতি প্রবল অতিসার ও রক্তশ্রাব নিবারিত হয়।

জাতীফলাদিবটী।

জাতীকলঞ্চ ধৰ্জ্বসহিকেনং তথৈব চ।
সম্ভাগানি সৰ্বাণি নাগবলীরসেন চ ।
বলমাতা বটা কাৰ্যা। দেৱা তক্রাসুপানতঃ।
অতিসারং জরেদ যোরং বৈখানর ইরাইতিম ॥

জারফল, পিওথৰ্জ্র ও আফিং সমভাগে লইরা পানের রসে মর্দন করিরা ৩ রতি প্রমাণ বটকা প্রস্তুত করিবে। অনুপান—ভক্র। ইহা সেবনে অগ্নিতে আহতির ক্রার বোর অতিসার প্রশমিত হয়।

কারুণ্যসাগরো রসঃ।

ভন্নস্তাদি, ধা গৰুং তথা বিষং মৃতাজকন।
দিনং সাৰ্থগতৈলেন গিটু। বামং বিপাচরেও ।
রসৈম কিবন্লোখৈ: পিটু। বামং বিপাচরেও।
ত্রিকারপঞ্চন্ত-বিষর্গোবাদিকীরকৈ: ॥
স্বিভূলৈক্সনাভাগৈররং কাঞ্চণ্যসাগ্র:।
সাব্দুলৈক্সনাভাগৈররং কাঞ্চণ্যসাগ্র:।
সাব্দুলৈক্সনাভাগের ভিষক্ স্ক্ষাতিসারকে ॥

সৰ্জ্জ বিৰূষে বাপি সশুলে গোণিতোন্তবে । নিবাৰে গোথবুকে বা গ্ৰহণ্যাং সান্নিপাতিকে : অনুপানং বিনাপ্যেক কাৰ্যাসিদ্ধিং করিব্যতি ॥

রস্সিন্দর ১ ভাগ, গন্ধক ২ ভাগ, জারিত অত্র ঘুইভাগ, এই সমস্ত দ্রব্য একতা সর্বপতৈলে একদিন মৰ্দন করিয়া একপ্রহর কাল বালুকা-ষত্তে অথবা মুংকপট লিপ্ত পুটে পাক করিবে। পরে ভুসরাজমূলের রস দিয়া মাড়িয়া পূর্লবৎ 'এক**প্র**হর কাল পাক করিবে। ইহার সহিত জিকার (যবকার, সাচিকার ও সোহাগা-ক্ষার), পঞ্চলবণ (কাল লবণ, সৈন্ধব, করকচ, বিট্ ও সচল লবণ), বিষ, ত্রিকটু (শুঠ, পিপুল, মরিচ), চিতা, জীরা ও বিড়ক্স সম-ভাগে (প্রত্যেক রস সিন্দুরের প্রস্তুত করিবে। মিশাইয়া মাষপ্রমাণ বটিকা এই ঔষধ সেবনে সজর বা বিজ্ঞর, শোণিতোদ্ভব, নিরাম অথবা শোথস্কু সর্ব-প্রকার অতিসার ও গ্রহণী বিনষ্ট হয়। অমুপান বিনাও ইহাবারা কার্যাসিদ্ধি হয়।

श्रारमध्या तमः।

রসগন্ধকমন্ত্রক চিঙ্গণং গতপুপাকম্ ।

বনানী জীরকাথাঞ্চ প্রত্যেকং কর্বযুগ্মকম্ ।

কর্বমেকং ববক্ষারং হিন্দু পটুকপাঞ্চকম্ ।

বিদ্যুক্তন্ত্রবং সার্জ্জ-রসকঞ্চায়িসংক্তিতম্ ।

ন্বট্টনা কার্য্যা নামা প্রাণেখরো রসঃ ॥

পারদ, গন্ধক, অত্র, সোহাগার থৈ, ভল্ফা, ধমানী ও জীরা প্রত্যেক ৪ তোলা; যবক্ষার, হিন্তু, পঞ্চলবণ, বিড়ন্ত, ইন্ত্র্যব, ধুনা ও চিত্রা প্রত্যেক হুই তোলা; এই সকল প্রব্য জলে উত্তমরূপে মর্দন করিয়া হুই রতি প্রমাণ বটী করিবে। ইহা সেবনে অতিসার

অয়তার্ণবঃ।

হিসুলোথো রমো লৌহং গন্ধকং টসণং শঠী। ধান্তকং বাদকং মৃত্তং পাঠা জীরং ঘুণপ্রিয়া । প্রত্যেকং তোলকং চূর্ণং ছাগীক্ষীরেণ পেষ্টিভন্।
মাধিকা বটিকা কার্যা রসোহরম্মৃতার্পর: ॥
বটিকাং জক্ষরেৎ প্রাতর্গহনামলভাবিভাম্।
ধাস্তলীরকপ্রেণ বিজয়াপাবীকতঃ ॥
মধুনাচ্ছাগছকোন মণ্ডেন শীতবারিণা।
কললীমোচকরসৈঃ কঞ্চকজ্রবেশ বা ॥
অতীসারং জরেছপ্রমেকজং জন্মকং তথা।
দোষপ্ররমম্মৃত্তমুপ্সর্গমম্বিভম্ ॥
প্রায়ে বহিজননো গ্রহণাপোবিকারম্থ ।
অমপিত প্রশমনঃ কাস্মাে তিপ্যনাপনঃ ॥
মাস্তিরিকারকপ্রেণিতি স্ববোনিস্বাং প্রচুরভরং মুদ্দাং
প্রস্তিব্যা

হিঙ্গুলোথ পারদ, গন্ধক, লৌহ, সোহাগার থৈ, শঠী, ধনে, ধালা, মুতা, আক্নাদি, শীরা ও আতইচ, ইহাদের প্রত্যেক এক তোলা; ছাগছথ্যে পেষণ করিয়া এক মাষা পরিমিত বটিকা করিবে। ধনে, জীরা ও মুগের (একঅ) যুষ, সিদ্ধি, শণবীজচুর্গ, মধু, ছাগছগ্ম, মণ্ড, শীতল জল, কদলীপুম্পের (মোচার) রস অথবা কাঁচড়ার রসের সাহত প্রাতঃকালে সেব্যা। ইহা শ্বারা সর্কপ্রকার অতীসার ও মুনের লিখিত রোগ সকল বিনষ্ট হয়।

ভুবদেশ্বরঃ।

সৈদ্ধবং ত্রিফলাকৈব বমানীং বিশ্বপেশিকাম্ । গৃহধুমং গৃহীতা চ প্রত্যেকং সমভাগিকম্ ॥ জলেন মর্দ্দিয়া তু মাবমাত্রাং বটাং চরেৎ। থাদেৎ ভোরাত্মপানেন সর্কাতীসারশান্তরে ॥

সৈন্ধবলবণ, ত্রিকলা, ধমানী, বেলগুঁঠ ও গৃহধুম (ঝুল) এই সকল জব্য সমভাগে গ্রহণ করিয়া জল দিয়া মৰ্দন করত একমাৰা প্রমাণ বটী প্রস্তুত করিবে। অনুপান—জল। ইহাতে স্ক্রপ্রকার অভিসার উপাধ্যিত ইয়া

জাতীফলরসঃ।

পারদান্ত্রকসিন্দ্রং পকং জাতাফল সম্ । কুটজন্ত ফলবৈগৰ ধুৰ্ত্ববীজানি টলণম্ ॥ বোশবং মুক্তাভরা চৈব চূত্ববীজং তথৈব চূ। বিশ্বকং সক্ষরীজঞ্চ দাড়িমীফলব্দলম্ ॥ এতানি সমভাগানি নিক্ষিপেৎ থলমধাতঃ ।
বিজয়াশ্বরেসনৈন মর্জায়েৎ লক্ষ্ট্রিতম্ ।
গুলাফলপ্রমাণাস্ত বটিকাং কারয়েদ্ভিষক্।
একাং কৃট্ডমূলজন-ক্ষাম্যান প্রযোজ্যেৎ।
আমানিকভ্ঠেন রক্তগ্রহণিকাং জ্যেৎ।
শুসীধান্তক্ষানেন চাতিসারং নিহন্তাসে।
ভাতিফলর্সো ফের গ্রহণিগ্রহারকঃ।

পারদ, অত্র, রদদিদ্র, গন্ধক, জারদল, ইক্রবন, ধুতূরাবীজ, সোহাগার থৈ, ত্রিকট্ট, মুতা, হরীতকী, আফ্রকেশা, বেলগুঠ, শালবীজ, দাড়িনফলের খোদা, এই সকল জব্য সমভাগে লইরা দিছিপত্র-ভিজা জলে মর্দনকবিরা একরতি প্রমাণ বঁটা করিবে। অমুপান—কুড় চিমুলের ছালেব কাথ। ইহা সেবনে আমাতিদারের নাণ ও অগ্রির দীপ্তি হয়। রক্তগ্রহণীতে বেলগুঠের কাথ ও মধু অমুপানেব সহিত এবং ভতিদারে ভুঠ ও ধনের কাথের সহিত এই বঁটা প্রযোজ্য।

অভয়নুসিংহো রসঃ।

দরদক বিবং ব্যোগং জীরকং টঙ্গণং সমম্।
গঙ্গকঞাজকলৈ ভাগৈকং শুদ্ধত্তক্ম ॥
আক কং সর্কাত্তনাং জান্তন্ত্রেম্ব্রুক্তবৈঃ।
তাককং ভক্ষেতাই জীরকং সধ্না সহ ।
তিলোধোধাভীসারং সজ্বং বাধ বিজ্ঞরম্।
সর্কারপমতীসারং সংগ্রহত্তইণীং জ্যেও।
রসোহভয়নুসিংহে হয়মতীসারে স্পৃতিতঃ।

ক্ষিল, বিষ, ত্রিকটু (শুঠ পিপুল মরিচ), জীরা, সোহাগার থৈ, গন্ধক, অত্র, পারদ প্রত্যেক সমানভাগ, সর্বসমান আফিং; এই সকল দ্রব্য লেবুর রসে মর্দ্দন করিয়া ১ রতি প্রমাণ বঁটা করিবে। জীরাভাজার প্রভাগ প্রমাণ বিত্তা বিদোধক অতিসার ও সংগ্রহগ্রহণীরোগ নিবারিত হয়।

আনন্দভৈরবো রসঃ।

দরদং মরিচং উজমমূতং মাগধীসমম্। শক্ষপিষ্টস্থ গুট্পেকং রসমানন্দভৈরবন্॥ লেহরেমধুনা চানু কৃটজন্ত ফলছচো:।
চূর্ণিতং কর্ণমাত্রন্ধ তিদোবোখাতিসার্ক্তিৎ ।
দধ্যমং দাপরেৎ পধ্যং দখাকং তক্রমেব চ।
পিপাসারাং জলং দেয়ং বিজ্ঞা চ ছিতা মিশি।

হিন্দুল, মরিচ, সোহাগার ধ্রৈ, বিষ ও
পিপুল এই সকল ক্ররা সমভাগে লইরা
উত্তমরূপে মর্কন করিরা একরতি প্রমাণ বাটকা
করিবে। ঔষধসেবনাস্তে ইক্রমবর্চ্প ও কুড় (চিমূলের ছালচ্ণ মধুর সহিত লেহন করিবে।
ইহাতে ত্রিদোষণ অতীসার উপশমিত হয়।
পথ্য—ছাগতক্র, ছাগদিধ ও অন্ন প্রস্তুতি।
পিপাসা হইলে জল দিবে। রাজিতে সিদ্ধি

(তন্ত্রান্তরোক্তঃ) আনন্দভৈরবো রসঃ।

হিকুলঞ নিদং নোধাং উক্লণং গন্ধকং সমন্।
জন্মীররসসংযুক্তং মর্দায়েদ্ যামকন্ধ্যন্ ॥
কাসখাসাতিসারের গ্রহণাং সামিপাতিকে।
অপামারেংনিলে মেহেংপাজীর্ণে বহিমান্দাকে।
গুঞ্জামারেঃ প্রদাতব্যো রস আনন্দতৈরবং।
(যন্ধান্দ্যন্পানং দেয়ন্)।

হিশ্বল, বিষ, ত্রিকট্ট, সোহাগার থৈ ও গন্ধক, এই সকল দ্রব্য সমভাগে লইয়া জামির লেবুর রসে ছই প্রহর মর্দ্দন করিয়া একরতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। অক্তীসার, গ্রহণী, অজীর্ণ ও অগ্নিমান্দ্য প্রভৃতি রোগে ইহা প্রযোজ্য। ব্যাধি অনুসারে অনুপান ব্যবস্থা করিবে।

কর্পর-রসঃ।

হিঙ্গুলমহিফেনঞ্ মৃস্তবেন্দ্রবাং তথা।
জাতীফলঞ্ কপুরিং সর্বাং সংমর্জ্য যত্নতঃ।
জালেন বটকা কার্য্য ছিন্তঞ্জাপরিমাণতঃ।
জ্বাতিসারিণে চৈব তথাতীসাররোগিণে।
গ্রহণীবট্প্রকারে চ রক্তাতিসার উল্পে।
(জ্বা কেচিৎ টঙ্গণমপ্যেক্তাগমিচ্ছস্তি।)

হিল্ল, অহিফেন, মৃতা, ইস্রায়ব, জায়ফল ও কর্পুর; এই সমুদায় দ্রব্য সমভাগে জলের সহিত মর্দান করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। (কেহ কেহ ইহার সহিত ১ ভাগ সোহাগার থৈ মিপ্রিত করেন)। জ্বাতীসার, জ্বভীসার, রক্তাতীসার ও গ্রহণী রোগে ইহা প্ররোগ করিবে।

কুটজারিষ্টঃ।

তুলাং কুটলমূলক মৃদ্বীকাৰ্কতুলাং তথা।
মধ্কপূলকালাব্যোভাগান্ দশপলোশ্মিতান্ ॥
চতুর্ট্রোণেহস্তম: পক্তবা লোণকৈবাবলেবিতম্।
ধাতক্যা বিংশতিপলং গুড়ক্ত চ তুলাং ক্ষিপেৎ ॥
মাসমাত্রং স্থিতো ভাঙে কুটলারিইসংক্রিতঃ।
করান্ প্রশম্যেৎ সর্কান্ কুর্যাৎ তীক্ষং ধনপ্লয়ম্।
হুর্কারাং গ্রহণীং হস্তি রক্তাতীসারমূল্ণম॥

কুড় চি-মূলের ছাল ১২॥০ সের, জাক্ষা ১৬।০ সের, মউলফুল ১০ পল, গান্তারীছাল ১০ পল, পাকার্থ জল ২৫৬ সের, শেষ ৬৪ সের; এই কাথে গাইফুল ২০ পল ও গুড় ১২॥০ সের মিশ্রিত করিয়া আর্তপাত্রে এক মাস রাশিবে। পরে উহা ছাকিয়া লইবেঁ। এই অরিষ্ট পান কবিলে ছনিবার গ্রহণী রক্তাতীসার ও সর্ব্বপ্রকার জ্বর প্রশমিত এবং অমি তীক্ষ হয়।

অহিফেনাসবঃ।

জুদাং মধ্কমন্ত্রন্ত শুভে ভাওে পরিন্দিপে । ফণিকেনন্ত কুড়বং মৃন্তকং পলদন্দিতম্ । - জাতীফলকেন্দ্রবং তথৈলাং তত্র দাপরে । . ক্লভা ভাওং মাসমাত্রং বত্তঃ পরিরক্ষরে । হন্তঃ চীদারমত্যত্রং বিস্ফটমপি দাকণাম্ ।

মউলফুলের মস্ত ১২॥॰ সের, অহিফেন ৪ পল, মুতা, জায়ফ্ল, ইন্দ্রযব ও এলাইচ, প্রত্যেক ১ পল। এই সকল দ্রব্য একটি আর্ত্তপাত্রে একমাস রাখিয়া পরে দ্রবাংশ ছাকিরা লইবে। ইহা সেবনে উগ্র অভিসার ৪ প্রবল বিস্কটী রোগও নিবারিত হয়।

বববূল্যাভরিষ্টঃ।

ভুলাছয়ত্ব বন্দুলাশ্চভুর্টোণে জনে পচেং।
জ্রোণশেষে রসে শীতে গুড়ন্ত ত্রিভুলাঃ ক্ষিপেং॥
ধাতকীং বোড়শপলাং কুঞাঞ্চ দ্বিপাংশিকাম।
জাতীকলানি ককোলং ঘগেলাপত্রকেশরম্॥
লবকং মরিচকৈব পলিকাম্যুপকর্মেং।
মাসং ভাতে স্থিতত্ত্বের বব্যুলারিষ্টকো জ্রেং।
ক্ষাং কুঠমতীসারং প্রমেহ্বাসকাসকান॥

বাব লার ছাল ২৫ সের, পাকার্থ জল ২৫৬
সের, শেষ ৬৪ সের। গুড় ৩৭॥০ সের,
ধাইফুল ১৬ পল, পিপুল ২ পল, জায়ফল,
কাঁক্লা, গুড়ত্বক্, এলাইচ, তেজপত্র, নাগেশ্বর,
লবক ও মরিচ প্রত্যেক ১ পল। এই সমস্ত
দ্বব্য একত্র করিয়া ১ মাস আর্তপাত্রে
রাখিবে, পরে ছাঁকিয়া লইবে। ইহা সেবন
করিলে অতিসার ও মূলের লিখিত রোগ সকল
প্রশমিত হয়।

গ্রহণ্যাং যে রসা পাচ্যান্তেংতিসারে নিবোজিতা:। হত্যা: সর্ব্বমতীসারং শিবস্তাজা বিশেষত:॥

গ্রহণীরোগে যে সকল রস উক্ত হইবে, তৎসমুদয় প্রযুক্ত হইলে সর্বপ্রকার অভিসার বিনষ্ট হইয়। থাকে। ইহা শিবের আজা।

রানাজ্যকাবগাহাংশ্চ গুরুত্বিধাতিভোজনম্। ব্যায়ামমগ্রিসন্তঃপমতীসারী বিবর্জ্জেৎ ।

অতিসাররোগী স্নান, তৈলমর্দ্দন, জ্বলাব-গাহন, গুরু ও প্রিগ্ধ দ্রব্য ভোজন, অতি-ভোজন, ব্যায়াম এবং অগ্নিসম্ভাপ পরিভ্যাগ ক্রিবে।

ষড়ঙ্গয়তম্।

বংসকন্ত চ বীজানি দার্বব্যাশ্চ ছচ উত্তমাঃ। পিশ্ললী শুলবেরঞ্চ লাক্ষা কটুকরোহিণী। বড়্ভিরেতৈয়ু তং সিদ্ধং পেয়ামণ্ডাবচারিতম্। অতীসারং জয়েচ্ছীয়ং ত্রিদোবমপি দাশ্লণম্। ইক্সবৰ, দাৰুহরিদ্রার ত্বক্, পিপুল, ও ঠ, লাক্ষা ও কট্কী, এই ছরটী দ্রব্যের সহিত বথাবিধানে মত পাক করিয়া সেই মত উপ-মুক্ত মাজার, পেরা ও মণ্ডের সহিত সেবন করিলে অতি উৎকট জিলোবজ অতিসামও শীল্ল নিবারিত হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

অতীসারে পথ্যানি।

বমনং লজনং নিজা পুরাণাং গালিবটিকাং।
বিলেপী লাজমণ্ডশ্চ মপুরতুবরীরসং ।
শংশণলাবছরিণ-কণিঞ্জলভবা রসাং।
সর্বের কুজমবাং শৃঙ্গী থরিলো মধুরালিকা ॥
তৈলং ছাগয়ুতকীরে দ্বি তক্রং গবামপি।
দ্বিজং বা পরোজং বা নবনীতং গবাজরোঃ॥
মবং রভাপুশকলং কোজং জমুফলানি চ।
ভবাং মহার্কিকং বিষং শালুকঞ্চ বিকল্পতম্ ॥
কপিথং বকুলং বিষং শালুকঞ্চ বিকল্পতম্ ॥
ভালকং কঞ্চলগং চাজেরী বিজয়ঙ্গণা ॥
ভাতীকলঞ্চ হীবেরং জীরকং গিরিমলিকা।
কুজমুক্র মহানিষ্ণঃ ক্যারং সকলো রসং।
ভল্পানানি সর্বাণি দীপনানি লঘুনি চ॥

বর্মন, লঙ্গন, নিজ্ঞা, পুরাতন আমন ধাজের ও ষেটেধাজের তঙুল, বিলেপী, থৈরের মণ্ড, মসুর ও অড়হরের যুষ; শশক, লাব, রুঞ্চদার, হরিণ ও চাতক পক্ষির মাংস; শিক্ষী, থলিসা, মৌরলা ও অজ্ঞাক্ত কুল্ড মংশু; তিলতৈল, ছাগছগ্ধ ও ছাগল্পত, গব্য-দ্বিধ, গব্যতক্র, গাভীর কিংবা ছাগীর হুগ্ধজাত বা দ্বিজ্ঞাত মাধন, অচিরজাত মোচা ও কলা, মধু, জামফল, চালিতা, আম আদা, ভুঠ, শালুক, বৈচি ফল, কয়েতবেল, বকুলফল, বেল, গাবফল, অম ও মিই দাড়িম, কচি তাল,

কাঁচড়াদায়, আমরুল শাক, সিদ্ধি, রক্তবর্ণ-শাক, জারফল, বালা, জীরা, কুড়্চিছাল, ধলে, ঘোড়ানিম, সর্বপ্রকার ক্যার রস এবং সর্বপ্রকার লঘুও অফিনীপক অন্ধশান অতীসাররোগে হিতকর।

অভিদারে পথ্যানি।

বেদোহঞ্জনং ক্ষরিনোক্ষণমন্থানং কানং ব্যবায়মপি জাগরধ্যনক্ষ। অভ্যঞ্জনং সকলবেগবিধারপঞ্চ কক্ষণাসাজ্যমশলঞ্চ বিক্ষমন্ত্রম। গোধ্যমাব্যববান্তক্ষকাক্ষাচীনিশাবকলমধুশির্মুরসালপুগম্। কুমাঞ্জুবিবদরং শুক চান্নপানং তান্থ্রমিকুশুড্মজ্যমুপোদিকা চ ॥ আক্ষান্তবেসকলং লণ্ডনঞ্চ মার্ট্রী হুষ্টাম্ব মন্ত্র গৃহবারি চ নারিকেলম। সংক্রেহনং মৃগমদোহথিলপত্রশাকং কারং সরাণি সকলানি পুনর্বা চ ॥ এর্বাক্ষকং লবণমন্ত্রমানিবের্ ॥

ষেদক্রিয়া, অঞ্চলপ্রেয়াগ্য, রক্তমোকণ, অধিক জলপান, স্নান, মৈথুন, রাজিজাগরণ, নভাগ্ৰহণ, তৈলাদি অভ্যন্ত, মল-মুত্রাদির বেগধারণ; এবং রুক্ষ, অনভান্ত ও সংযোগবিক্ল জব্য, গোধুম, শাষকলাই, ব্ৰ, বেভোশাক, কাকমাচীশাক, শিম, আলু প্রভৃতি কন্দ, সজিনার ডাঁটা, আম, স্থপারি, কুমাণ্ড, লাউ, কুল, গুরু অন্ন পান, তামূল, ইকু, গুড়, মন্ত, পুঁইশাক, দ্রাক্ষা, থৈকল, শশুন, আমলকী, দ্বিত জল, দধির মাত, नातिरकन, (महत्वा, কাঁজি, ্যুগনান্তি, বাবতীয় পতা শাক, কার্ডব্য, বিরেচক জব্যু, পুনর্নবা, কাকুড়, লবণ ও অয়দ্রব্য অভিসার-রোগে অপথ্য জানিবে।

डे डारो**ड् ट्वंन-मरश्रादश्डिमा**ताधिकातः ।

অথ এহণীরোগাধিকারঃ।

-*()**()*-

व्यथ शह्मीरतांग-निमानम्।

অতিসারে নিবৃত্তি হলি মন্দার্গ্রের ছিতালিন:।

কুল: সংস্থিতো বহিতা হলীমভিদ্বরেং॥

একৈকল: সর্কাশক লোবৈরতার্গ্যুক্তিত:।

সা মুটা বহুলো ভুক্তমামনের বিমুক্তি॥
পাকং বা সক্তমা পৃতি মুক্তিরিক মুক্তরিব।
গাহলীবোগমান্ত্র্যান্ত্রিবিনিলো জনাঃ॥

অতিসার রোগ নিবৃত্তি পাইরাছে কিছ অগ্নির বল ভালরূপ হয় নাই এরূপ অবস্থার, যদি কুপথ্য করা হয়, তাহা হইলে অঠয়গ্নি অধিকতর তুর্বল হইয়া, গ্রহণীনামক নাড়ীকে স্ক্রিভাভাবে দুবিত করে।

সেই গ্রহণী নাড়ী, অগ্নিমান্দ্য-কুপিতবাতাদি পৃথক্ পৃথক্ দোষে বা মিলিভ

ক্রিদোষে ত্রন্তা হইরা, ভূক্ত স্তব্যকে অপক অবহার অথবা অতি ত্রন্ত্রন্ত্রন্ত পক অবস্থার
বারংবার নিঃসারিত করে। গ্রহণীরোগে
মল কখন বা বদ্ধ কখন বা তরল হয়। এবং
উদর ব্যথা করিতে থাকে। গ্রহণী নাড়ী হাই
হইরা এই রোগ হয় বলিয়া আারুর্কেদবেক্তারা
ইহাকে গ্রহণী রোগ কহিয়া থাকেন।

অথ গ্রহণীরোগ-চিকিৎসা।

গ্রহণীমান্তিতং দোবমজীবিদ্বপাচরেৎ।
চক্তবৈদ্বীপনীবৈশ্চ সদাতীসারক্তেবলৈঃ।
দোবং সামং নিরামঞ্চ বিস্তাদ্রাতিসারবং।
অতিসারোজবিধিনা তঞ্চামঞ্চ বিপাচরেৎ।

প্রহণী-(অগ্নধিষ্ঠান নাড়ী)-গত রোগে অন্ধীর্ণের প্রায় চিকিংসা কর্ত্তবা। অতিসারের ক্রার ইহাতে লোবের সামতা ও নিরামতার প্রতি দৃষ্টি রাখিবে এবং অতিসারোক্ত বিধানা-মুসারে গক্তম ও অগ্নিদীপক ঔবধ প্ররোগ দারা গ্রহনীগত লোবের পরিপাক করিবে। শরীরাত্মগতে সামে রসে লক্ষ্রপাচন্য। বিজ্ঞামাশগ্রাহীয় পঞ্কোলাদিভিত্তিম। দ্যাৎ পোষ্টি লগুমং পুনরোগাংক দীপনাদ্॥

অপক বন শরীরব্যাপক হইলে, জ্বঞ্জেরোগির আমাশা বিশুদ্ধ করিরা পরে লঙ্কন পাচন এবং পঞ্চকোলাদিযুক্ত পেয়াদি লছু পথা ও অ্যা উদ্দীপক যোগ সকল ব্যবস্থা করিবে।

কপিথবিবচাঙ্গেরী-ভক্রদাড়িমসাথিত।। পাচনী গ্রাহিণী পেয়া সবাতে পাঞ্চমুলিকী।

করেংবেল, বেল, আমরুলণাক ও দাড়ি-মের থোলা, এই সকল দ্রব্য ৮ তোলা লইরা তক্তের সহিত পেরা প্রস্তুত করিরা গ্রহণী-রোগিকে পথ্য দিবে। বাতপ্রধান গ্রহণীরোগে স্বল্ল পঞ্চমূল সিদ্ধ পেরা হিতকর। ইহা পাচক ও মলসংগ্রাহক।

গ্রহণীদোষিণাং তক্রং দীপনং প্রাহি লাখবাৎ। পথাং মধুরপাকিস্থার চ পিত্তপ্রকোপণম্ ॥ কবারোক্ষবিকাশিশ্বামৌক্ষাটেক্রব ককে হিতম্। বাতে স্বাহয়সাক্রবাৎ সম্ভক্ষমবিদাহি তৎ॥

গ্রহণীরোগে তক্র বিশেষ উপকারী।
ইহা লঘু বলিয়া অগ্নি: দীপক, মলসংগ্রাহক
ও স্থপথা। পাকে মধুররদ হয় বলিয়া তক্র পিতপ্রকোপক নহে। ইহা ক্ষায়রস, উষ্ণগুণ্মুক্ত, বিকাণী ও ক্লক্ষ বলিয়া ককে হিতক্র।
এবং মধুর, অন্ন ও ঘন বলিয়া বায়্নাশক।
সম্ভোকাত তক্র বিদাহী নহে।

চিত্ৰকগুড়িক।।

চিত্ৰকং শিপ্পলীমূলং ৰৌ ক্ষারৌ সবণানি চ। ব্যোবং হিল্পনোদাঞ্চ চ্যাঞ্চৈকত চূর্ণন্নেই। শুড়িকা মাডুলুকজ দাড়িমজ রসেন বা। কুতা বিপাচমত্যামং দীপয়ত্যাশু চানলম্। সৌবর্চ্চলং সৈদ্ধবঞ্চ বিড়মৌন্তিদমেব চ। সামুদ্রেণ সমং পঞ্চ লবণাস্তত্ত্ব যোজরেও ॥

চিত্রামূল, পিপুলমূল, ধবক্ষার, সাচিক্ষার, পঞ্চলবণ (সৈন্ধব, সচল, বিট, ঔদ্ভিদ ও কর-কচলবণ), ত্রিকটু, হিং, বনবমানী ও চৈ; এই সকল একত্র চূর্ণ করিয়া টাবালেবুর বা অন্ন-লাভি্ষের রসে মর্দন করিয়া (১ মাষা পরি-মাণে) গুড়িকা প্রস্তুত করিবে। ইহা আম-পাচক ও অগ্নিনীপ্তিকারক।

> ওঠীং সমুস্তাতিবিবাং গুড়ু চীং পিবেজ্ঞানে ক্ষিতাং সমাংশান্। মন্দানলত্বে সত্তামতায়া-মামাত্বকে গ্রহণীগদে চঃ

অগ্নিমান্দ্যে, আমকোঠে ও আমগ্রহণীতে ভাঁঠ, মুতা, আতইচ ও গুলঞ্চ, ইহাদের কাথ পান করিতে দিবে।

ধান্তকাতিবিবোদীচ্য-বমানীমুক্তনাগরম্। বলা বিপণী বিলঞ্চ দক্তান্দীপনপাচনম্ ।

অগ্নির দীপ্তি ও দোষের পরিপাকার্থ ধনে, আতইচ, বালা, যমানী, মুতা, ভাঠ, বেড়েলা, শালপাণি, চাকুলে ও বেলভাঠ, ইহাদের কাথ ব্যবস্থা করিবে।

অথ বাতজগ্ৰহণীরোগ-নিদানম্।

কট্তিজ্ঞকরারাতি-রুক্সংগ্রন্থভোজনৈ:।
প্রমিতানশনাত্যধন-বেগনিগ্রহ্মৈপুনৈ:।
মারুতঃ কুণিতো বহিং সংস্থান্ত কুরুতে গদান্।
তল্ঞায়ং পচ্যতে কুথে শুক্তপাকং পরাক্ষতা॥
কণ্ঠাজনোর: কুথ তুঞা তিমির: কর্ণরো: খন:।
পার্বোরুবজ্ঞপানীবা-রুপভারু বিস্তৃতিকা॥
ছৎপীড়াকার্শ্যমৌবল্যং বৈরুতং পরিক্তিকা।
গৃদ্ধি: সক্ষরসানাক মনস: সদনং তথা॥
জীর্বে জীর্যাতি চাগ্নানং ভুক্তে আন্তাম্পুনিতি চ।
স বাতক্রমজ্জোগ-সীহাশকী চ মানব:।
চিন্নাদৃদ্ধংখ ক্রবং শুক্ত ত্থামং শক্তক্ষবং।
পুনঃপুনঃ স্ত্রেষ্ঠিঃ কাসখাসার্দ্ধিতোহনিলাং॥

অভিশন্ন কটু, ভিক্তা, ক্যায়, ক্লম ও সংযোগাদিবিক্ল ভোজন (যেমন ৰূগপং

ক্ষীর-ম-জ ভোজন ইত্যাদি), অল ভোজন, উপবাস, অধিক পথ পর্য্যটন, মলমূত্রাদির বেগধারণ ও মৈথুন, এই সকল কারণে বায়ু কুপিত হইয়া পাচকাগিকে দূষিত করত বাত-গ্রহণী রোগ উৎপাদন করে। এই রোগে ভক্ত দ্রব্য, অতি কপ্তে এবং অন্নর্যে পরিপাক পার। ইহাতে শরীর রুক্ষ, কগুও मुश एक, क्यां. क्षा, पृष्टिक्तीर्वना, करन भक्ष धदः भाष. छक्, বঙ্গণ (কুঁচ,কিস্থান) ও গ্রীবাদেশে নিরম্ভর বেদনা, বিস্ফিকা অর্থাৎ ভেদ বমি, হৃৎপীন্তা, শরীরের ক্বশতা ও দৌর্বব্যু, মুখের বিরস্তা, গুহুদেশে কর্ত্তনবৎ পীড়া, মধুরাদি রসমূক্ত দ্ৰব্য ভোজনেই স্পৃহা, অবসাদ এবং কাস ও খাস, এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়। বাত্ৰগ্ৰহণীরোগে, ভুক্ত জব্যের পরিপাক হইবার সময় বা পরিপাক হুইলে উদরাখান হয়। কিন্তু আহার করিলে স্বাস্থ্য বোধ হইগ্ন থাকে। ইহাতে রোগী বাতগুলা, হুদোগ ও প্লীহা রোগের व्यानका करत এवः कथन प्रव, कथन वा १९४८ ফেনবিশিষ্ট অল্ল অল্ল অপ্ল মল্ল. সহিত অতি কঠে পুনঃপুনঃ বা বিলম্বে বিলম্বে ত্যাগ করিয়া থাকে।

অথ বাতজগ্রহণীরোগ-চিকিৎসা

জান্ব। তু পরিপক্**ক বাতজং গ্রহণীগদন্।** দীপনৈর্জেবলৈ: পকৈ: সর্পির্জি: সমুপাচরেৎ ॥

বাতজ গ্রহণীরোগ পরিপক হইয়াছে, ইহা লক্ষণ দারা জানিয়া, অগ্নির উদ্দীপক ঔষধপক দ্বত সেবন করিতে দিবে।

শালপণ্যাদিকষায়ঃ ।

শলপণীবলাবিশ-ধান্তগুতীশৃতং পন্ন:। আধানশূলসহিতাং বাতকাং গ্রহণীং করেব।

শালপালি, বেড়েলা, বেলগুঠ, ধনে ও শুঠ ইহাদের কাথ পান করিলে বাডজ প্রাহুলী বোগ এবং তত্পদ্রব—উদ্বাধান ও শূলবদ্-বেদ্না প্রশ্নিত হয়।

অথ পিতজগ্রহণীরোগ-নিদানম।

কট্,জীৰ্বিদাজয়-কারাজ্যৈ পিত্রমূখনম্। আধাবয়ন্ধতানলং জলং তপ্তমিবানলম্॥ মেংজার্থং নালপাতাভং পীতাভঃ সার্থতে দ্রবম্। পুতায়োলাবহুৎকঠ-বাহারচিত্ত্রিতঃ॥

কটু, অজীণ, বিনাহী (নে আহাবে বিদাহ জ্যো), অম, কান, লবণ, তীক্ষ ও উষ্ণ দ্বা দেবন ঘারা প্রেক পিত্ত, প্রতপ্ত জ্বেন আম, অ্থিকে আপ্লাধিত ক্রিয়া নই করে *; শহাতেই পিত্তজ্ঞানীরোগ জ্যো।

পিতৃগ্রহণীনোগী হুগন্ধস্ত সমোলার, ধ্যকণ্ডের দাহ, অক্লাচ ও পিপাদার কাত্র হয় এবং নীল বা পীত্রবর্ণ দ্রব মল ত্যাগ করে, আর তাহার শ্রীব পীতাভ হইন যায়।

পিত্ত গ্রহণীরোগ-চিকিৎসা।

তিক্র দি-ক্ষায়ঃ।

িক্তামাহীৰধর্মান্তনধাতকীতিঃ প্ৰশোদ্ধৰাজ্যনকৌটভভঙ্গুরাতিঃ। কাথো হরেছছ,বিধং এংগাবিকারং বিত্যেন্তবং সপ্তদশুলমা এপাবুদ্ধম্॥

কট্কী, ভঠ, রসাঞ্জন, বাইফ্ল, হণীতকী, ইন্দ্ৰব, মুতা, কুছ্চছাল ও আত্ইচ, ইহা-দের কাগ সেবন করেলে নানা প্রকার অতি-প্রবল পে ত্তক গ্রহণিরোগ ও তত্বপদ্রব—গুছ-শুল প্রশ্যিত হয়।

এত্বলে আগতি ইইতে পারে বে, পিত আগ্রেয়
গগর্গ অথবা পিত্তই অগ্নি: অতএব পিত্তবোগে অগ্নি
বিভিন্ন ইইয়া কেন বিনষ্ট ইয় ? তজ্জয়ট বকা ইইবিশ্ব প্রতিপ্র জল উম্পন্তগবুক ইইয়াও বেমন অবাধিকাবিশ্ব অগ্নিকে নিকাপিত ক্রিয়া থাকে।

প্রীফলাদিককঃ।

শ্রীফলপনাটু ককো নাগরচূর্বেন মিঞ্জিত: সঞ্চঃ। এইনিগদমত্যগ্রং ভক্তপ্রা তু শীলিতো জন্মতি।

কিঞ্চিং গুড় ও শুঠের প্রভার সহিত বেলগুঠ, দেবন এবং তক্রপান করিলে, অতি উতা গ্রহণীরোগ প্রশ্মিত হয়।

নাগরাছা-চুর্পম।

নাগরাতিবিধাম্তাং ধাতকীঞ্ রসাঞ্জনম্।
বৎসকত্ত্কলং নিঅং পাঠাং তিন্তকরোছিণীম্॥ ।
পিবেৎ সনাংশকং চূর্বং সক্ষোত্তং তঙুলাস্থনা।
পিত্তরে গ্রহনিপেবে রক্তং বল্টোপবেগতে ॥
অর্শাংক্তথ গুলাস্থনং লাবেচৈচন প্রবাহিকাম্।
নাগরাজানিদং চূর্বং ক্লাত্রেয়েণ ভাষিত্র্॥
শীতক্ষায়েনানেন তঙুলোদকক্ষনা।
কেংপাস্তর্পতায়েন প্রাছক্তগুলভাবনাম্॥

পৈতিক গ্রহণীরোগে রক্তেদ হইলে ভাঁঠ, আত্ইচ, মুতা, ধাইফুল, রসাঞ্জন, কুড়ুচির ছাল, ইন্দ্রবন, বেলওঁঠ, আক্নাদি ও
কট্কা, ইহাদের চূর্ণ সমভাগে লইয়া তাহাতে
কিঞ্চিং মরু প্রকেপ দিয়া ওগুলানকের সহিত
সেবন করিবে। ইং ধানা ফর্মা গুহুলুল ও
প্রবাহিকা নিবানিত হয়। কুটিত তভুল ও
বা ৮ গুণ জালে আনকক্ষণ ভিজাইয়া পরে
ভাঁকিয়া লইলে তভুলোদক প্রস্তুত হয়।
মাগ্রা—॥০ আধ্তোলা প্যতা।

অথ কফজগ্রহণীরোগ-নিদান্।

গুক্তি নির্মাণী হাদি-ছোইন কতি জোজনাং।
ভূক্তমান্ত প্রচার করে ।
ভূক্তমান্ত প্রচার করে করিছে ।
ভঞ্জার প্রচার করে করিছে ।
ভালের মন্ত্রত গুলিম্বরং গুলিহুং গুরু ।
ভূত্তী মধুর উল্লার সদনং গুলু ইণ্ম্।
ভূত্তী মধুর উল্লার সদনং গুলু ইণ্ম্।
ভূত্তী মধুর উল্লার সদনং গুলু ইণ্ম্।
ভূত্তী মধুর উল্লার সদনং গুলু ইণ্ম্য

অতিশয় গুরু, নিগ্ধ, শীতল, পি**ন্ধিন ও** মধুরাদি দ্রব্য ভোজন, **অভিভোজন এবং** দিবা ভোজনের অব্যবহিত পরেই শরন, এই সকল কারণে কফ কুপিত হইয়া অগ্নিকে নষ্ট করিয়া লৈথিক গ্রহণীরোগ উংপাদন করে। এই লৈথিক গ্রহণীরোগে ভুক্ত দ্রবা অভিকষ্টে পরিপাক পায়, মৃথ শ্রেলা ঘারা লিপ্তা ও মিষ্ট হইয়া থাকে, রোগী শ্রুমকে ঘনদ্রব-পদার্থ ঘারা পূর্ব বিলয়া মনে করে, এবং রুশ না হইলেও তুর্বল ও অলস হইয়া থাকে। এতঘাতীত ব্যন্থেগ, ব্যন্থ, অরুচি, কাস, স্থাবন, পীনস, উদরেব অরুতা ও গুক্তা, বিক্তুত ও মধুর উল্পার, অবস্মতা, মীতে প্রীতির অভাব এবং আম ও শ্রেল্যকুক্ত, ওক (বাহা জলে ভুবিয়া যায়) ও ভাক্ষা ভাক্ষা মলভেদ এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়।

ক্রফজগ্রহণীরোগ-চিকিৎসা।

চাতুর্ভদ্র-ক্ষায়ঃ।

গুড় চাতিবিধাগুগী-মুলৈঃ কাপঃ কুতো জয়েৎ। আমানুষকাং গ্ৰহণীং প্ৰাহা দীপনপাচনঃ।

গুল্ঞ, আতিইচ, শুট ও মূতা, ইহাদের কাথ আমএহনীনোগনাশক, তঃল মলের সংগ্রাহক, অধির দীপক ও দোনের পাচক।

भंजानि-इर्गग्।

শসীব্যোশভয়াঃ ক্ষারে এছিকং বীজপুরকম। লবণাশ্লাস্থনা পেয়ং লৈখিকে গ্রহণিগলে ।

শ্লৈত্মক গ্রহণীরোগে শঠী, ভুঠ, পিপুল, মরিচ, হরীতকী, যবকার, সাচিকার, পিপুল-মূল ও বীজপুরক (ছোলঙ্গলের), ইহাদের চূর্ণ লবণ ও অধ্যবদের সহিত দেবন কবিবে।

রামাদি-চর্ণম।

রারা পথ্যা এটা ব্যোগং ছো ক্ষারো ব্যানি চ। এছিকং মাতুলুক্ক সমমেকত চূর্ণয়েং। পিবেদুক্ষেন ভৌয়েন কৈন্মিকে গ্রহণীগদে॥

রান্না, হরীতকী, শঠী, শুঠ, পিপুল, মরিচ, ধ্বকার, সাচিকার, পঞ্চলংগ (দৈয়ব, করকচ,

বিট্, সচল ও কাললবণ), পিপুলমূল ও টাবা-লেব, ইহাদের চূর্ণ সমভাগে লইয়া উষ্ণজলের সহিত পান করিলে কফগ্রহণীরোগ নিবারিত হয়।

সমূলাং পিপ্ললীং কারে । কা পঞ্চলবণানি চ।
মাতুলুকাভয়ারাকাঃ শসীমরিচনাগরম্ ।
কুষা সমাংশং তচ্চুৰ্ণ পিবেৎ প্রাতঃ ক্থানুনা।
শ্বেখিকে গ্রহণীদোষে বলবৰ্ণায়িবর্জনম্।
এতিরেবৌষধাঃ সিদ্ধং সপিঃ পেয়ং সমাধ্যতে ॥

পিপূল্মূল, পিপূল, ববক্ষাব, সাচিক্ষাব, বৈদ্ধবলবণ, বিট্লবণ, সচললবণ, উদ্ভিদ ও সমুদলবণ, টাবালেবর মূল, হণীতকী, রামা, শুসী, মরিচ ও শুঁঠ এই সকল জব্যের চূর্ণ সমপরিমাণে উক্ষ জল সহ সেবন করিলে গ্রেম্বিক গ্রহণারোগ বিনপ্ত এবং বল বলঁ ও অথি বৃদ্ধিত হয়। পিংল্মূলানি উপরি উক্ত ঔষ্ণের সহিত গ্রত পাক করিয়৷ দেই গ্রত পান করিলে বাতিক গ্রহণিবাগ প্রশ্মিত হইমা থাকে।

কুড়েছণ কঠিনত্বেন ষঃ পুরীষং বিমুক্তি। সন্মৃতং লবণং তদ্য পায়য়েৎ ক্লেশাস্তয়ে॥

যে রোগী কাঠিগ্রহেত্ অতি করে মল ভ্যাগ করে, ভাহাকে লবণমিশ্রিত গ্রায়ত পান করিতে দিবে।

বিড়ং যমানী বিষ্টম্ভে পিলেছকেল বারিণা। মল বিষ্টৰ হইলা থাকিলে ঘোয়ান ও বিট্লবণ উষণ্ডলের সহিত খাওলাইবে।

বাতপিত্তজগ্রহণীরোগ-চিকিৎসা

মুগ্রাদি-গুড়িকা।

মূতী শতাবরী মূতা বানরী ছব্দিকামূতা।
ব্যষ্টকং দৈদ্ধবং তুল্যং স্কাচ্পং প্রকারেৎ ॥
চূপ্সা বিগুপং ঘোলা। বিজয়া মূছভক্ষিতা।
যুত্তিক্ষে প্রচেদ্ভাতে তুকাং দশগুণং গ্রাম ॥

বাবৎ পিশুত্মাপন্না ভাবকুৰ্যিনা পচেৎ। এডক্মধুমুতং হস্তাদ্ গ্ৰহণীং বাতপিওজাম্॥

বড় থূলুকুড়ি, শতমুলী, মৃতা, আলকুণীবীজ, ক্ষীকই, গুলক, যষ্টিমধু ও সৈন্ধ ;
ইহাদের চূর্ণ সমভাগ, অল্ল ভাজা সিদ্ধিচূর্ণ ,
বিশুণ ; এই সকল তাব্য দশগুণ গব্যহুগ্নের সহিত ঘতাক্ত ভাণ্ডে পাক করিবে; যতক্ষণ না পিগুকোর হয়, ততক্ষণ অল্ল, অল্ল জ্ঞাল দিবে। পাক সমাপ্ত হইলে উহা মধুন সহিত সেবন করিতে দিবে, তাহাতে বাতপিওজগুহণীরোগ প্রশমিত হইবে।

বার্ত্তাকুগুড়িক:।

চতুংপলং সুহীক:ওাং ত্রিপলং লগণতয়াৎ। বান্তাকুকুড্বশ্চাকাদটো বে চিত্রকাং পলে। দগ্ধঃ রসেন বান্তাকোন্ত ড্রিকা ভোজনোন্তরাঃ। ভূক্তং ভক্তং পচন্ত্রান্ত কাসখাদাশসাং হিতাঃ। বিস্টিকাপ্রতিগ্রায়-সম্বোগগান্ধ তা মতাঃ।

সিজের ভালের মজা ৪ পল, সৌবচ্চল, সৈন্ধব ও বিট্ এই লবণত্রর ৩ পল, শুক্ষ বেগুন অর্দ্ধমের, আকন্মমূল ৮ পল, চিতামূল ২ পল, এই সমূলায় একতা অন্তর্গুমি দগ্ধ ও বেগুনের রসে মন্দিত করিয়া শুড়িকা করিবে। আহা-রাস্তে সেবনীয়। ইহা সেবন করিলে ভুক্ত অন্তর পরিপাক এবং নিস্চিকা প্রভৃতি রোগের নাশ হয়।

বাতশ্লেষজ্ঞ গ্রহণীরোগ-চিকিৎসা।

বাতপ্রেমাধিকে যোজ্যা কুটজাপ্তবলেছিকা। পর্ণটারসগুঞ্জাষ্টো লিংহমধ্বাজ্যকেন বা । সহিন্দু জীরকং বোষং নিধার্ম্মুভক্ষেদ্য । এংগাং কদবাতোখাং শময়েৎ তক্তভোজনে ।

বাতশ্রেষারণ গ্রহণীরোগে কুটজাদি অব-লেহ ব্যবস্থা করিবে। অথবা ম্বত ও মধুর সহিত ৮ রক্তি পপটা-রস ক্ষেত্রক করিতে দিবে। লেহনাতে হিং, জীরা, শুঠ, পিপুল ও মরিচ চূর্ণ ২ মাধা পরিমাণে থাওয়াইবে , এবং তক্র পান করাইবে । তাহাতে বাতলেম্মজ গ্রহণী রোগ প্রশমিত হইবে ।

কপূরাদি-চূর্ণম্।

কপূরস্তাবশং রামা লবণানি হরীতকী।
সঞ্জিকারং ববকারং মাতুলুকং সমং সমন্।
চূর্ণমূকাস্থা প্রাং বলবর্ণায়িবর্জনন্।
কৈমিকং গংলাদেং স্বাতক বিনাশ্যেৎ।

কপূর, ভাঠ, পিপুল, মরিচ, রাম্বা, পঞ্চলবণ, হবীতকী, সাচিক্ষার, ববজার ও টাবা-লেব, ইহাদের চুর্ণ সমভাগে লইলা উফজলের সহিত পোন করিলে, বাতরেল্পজনিত গ্রহণী-দোস নই হয়। ইহাবল বর্ণ ও অগ্নির বদ্ধ ।

তালাশাদি-বটা।

তালাণপত্রতিবিকাসরিচানাং পলং পলস্।
কুকাত্রমূলারের বে পলে শুকীপলং তারম্।
চাতুর্কাত্রমূলারক করাংশং স্বাচ্পিতন্।
চুর্ণক্ত ত্রিগুলের গুড়েন বটিকা কৃতা।
শুক্রেই তু পলার্দ্ধক বাত্রেশ্যোথিতে গলে।
উৎকটাং গ্রহণাং ছর্দ্ধিং কাসং খাসং জরাকটা।
শোষগুলোগরং পাড়ং তালাগাজেন নাশরেই ।
মন্ত্রম্বরসারিষ্ঠ-মন্ত্রপোয়াপরোহনুপাঃ।

তালীশপত্র, চৈ ও মরিচ প্রত্যেক এক পল, পিপুল ও পিপুলমূল প্রত্যেক ২ পল, ওঠ তিনপল এবং চাতৃর্জাত (দারুচি.ন, এলাইচ, নাগেশ্বব ও তেজপত্র) ও বেণা-মূল্ প্রত্যেক ছই ভোলা। ইহাদিগকে উত্তমরূপে চূর্ণিত ও তিন তথা গুড়ের সহিত মর্দ্দিত করিয়া বিটিকা করিবে। ইহা দেবনে বাহক্ষেক্সনিত উংকট গ্রহণীরোগ, এমি, কাদ, শ্বাদ, অব, অক্রচি, শোগ, গুলা, উদরবোগ ও পাতৃ-রোগ প্রশামত হয়। এই বটিকা দেবনান্তে মত্ম, মূল্যাদির থ্য ও মাংসরদ প্রভৃতি অনুপান করিবে।

পিত্তশ্লেমজগ্রহণীরোগ-চিকিৎসা

मुक्ता मि-(याताः।

भूवतीः श्वारात् उटेक्ववशा उञ्जानरेकः । कर्षकः वाकाराकः भूवा श्वाराकः ।

তক্রে বা ত গুণোদকে তালমূলী পেষণ করিয়া ২ তোলা পরিমাণে সেবন করাইবে। পথা—তক্র ও অয়।

व्यथ जिलाय श्रह्मी-निमानम्।

পূপথাতাদিনিদিষ্ট-হেতুলিক্সমাগমে। ত্রিদোবং নিদ্দিশেদেবং তেখং বক্যামি ভেষজম।

উপরি উক্ত বা ১জা দি গ্রহণীরোগের কারণ ও লক্ষণসমূহ একত্র মি লভ হইলে তাহাকে সামিপাতিক গ্রহণীরোগ বলা য,য়।

ত্রিদোষজগ্রহণীরোগ-চিকিৎসা।

সর্বজারাং গ্রহণান্ত সামাত্যে বিধিরৈষ্ঠতে চ

জিদোষজ গ্রহণীরোগে সাধারণ বিধি আশ্রয় করিবে। অর্থাৎ বাতিক পোত্তক ও ল্লোগ্লক গ্রহণীরোগে পৃথক্ পৃথক্ যে চিকিৎসা উক্ত হুইয়াছে, বিবেচনাপুর্বাক সেই সমুদার মিলিত করিয়া প্রয়োগ করিবে।

পঞ্চপল্লবম ।

ৰমুলাড়িমশূলাট-পাঠাকশ্বটপলবৈ:। পৰুং পযুৰ্গবিতং বাল-বিবং সগুড়নাগৱষ্! হস্তি সৰ্বানতাসাৱান গ্ৰহণীমতিহন্তৱাম্।

জাম, দাজ্ম, পানিফল, আক্নাদি ও কাঁচ্ডা, ইহাদের পল্লব সহ কচি বেল জলে সিদ্ধ করিয়া, পর্নিন ঐ বাসি বেল ওড় ও কিঞ্চিৎ ভাঁঠচুর্নের সাহত ভক্ষণ করিলে সর্বা-স্থাকার অভিনার ও প্রধল গ্রহণীরোগ প্রশমিত হয়। (বেল ভোজনানস্তর ঐ বেল-সিদ্ধ জল

অমুপান করিতে বৃদ্ধ বৈপ্রেগা উপদেশ দিয়া থাকেন। রক্তথাকিলে ও ১চুণ দিবে না)।

অথ সংগ্রহগ্রহণী-লকণ্ম।

আন্তর্কনমালজং দৌর্বলাং সদনং তথা।

দ্রবং খনং সিতং হিন্ধং সকটাবেদনং শক্ত্র।

আমং বহু সপৈ,চ্ছলাং সশক্ষং মন্দ্রেলন্য।
গক্ষালাসাক্ষালাহালা নিত্যং বাগাল মুক্তি।

দিবা প্রকোপো ভবতি রাজৌ শান্তিং প্রজেচ সা।
ছবিজ্ঞো ছাল্চিকংজা চিরকালামুব্ধিনী।

সা ভবেদামবাতেন সংগ্রহগ্রহণী মতা।

সংগ্রহগ্রহণীরোগে কাহারও মাসাস্তর, কাহারও পকাস্তর, কাহারও দশাহাস্তব, কাহারও নাহারও বা নিতা নিতাই দ্রব, যন, শেতবর্গ, স্পিথ্ধ, পিচ্ছিল ও বছপরিমিত অপক মল (দন্কা ছেদ) হয়। ভেদ ইইবার কালে শব্দ হয় এবং উদ্বেও কটিদেশে মন্দ মন্দ বেদনা ইইরা থাকে। তথ্যতীত অন্তর্কুজন (পেট্ডাকা), আল্ফ, দৌর্কগ্র ও অস্পাবসাদ এই সকল লক্ষণ, ও উপস্থিত হয়। সংগ্রহগ্রহণী রোগ ছিনিজ্জের, ছাশ্চিকিৎস্ত ও দীর্ঘকানস্থায়ী। আম ও পার্থীর ইহার উৎপত্তি হয়।

मर अर अर अर निर्देश ।

মধ্যমূদ সংগীত করে। বাগবিদিদে সংগ্রহণতি হয়ি তথেও বুহতী তথ্য

মস্থরকলায়ের যুদ অথবা ভক্তের সহিত ভূঁঠ ও বেলগুঁঠের কক্ক কিংব! চুহতী সেবন ক্রিলে সংগ্রহগ্রহণী নই হয়।

কামচারমণ্ডরম্।

লোহকিউরজো লোহে ভ্স্করাজরস।য়ৢত্ম । লোহস্বস্ক: রঙো বাবৎ কুঞাচুর্গার্দ্রংযুত্ম ॥ ভাত্যাং তুলো। ভুড়ো দেয়: সংগ্রহাইনাহরম্ । আমবাতায়পিভ্সাং রস্প্রাগ্রকারকম্ ॥ কামচারপ্রয়োগোঁহরং যোগসিন্ধেন কীর্দ্তিতঃ। মস্তর্বিবায়ণ কালো হাতুপানে প্রশক্ততে । (কিঞ্জিৎ রসপর্পতীং প্রক্ষিণ্যাপি করেয়ন্তি বৃদ্ধাঃ)।

লৌহপাতে মধুর চুর্ণ ভূকরাজরসে মর্জন করিয়া চুর্ণ করিবে। তাহার অর্জাংশ পিপুল-চুর্ণ একত মিশাইয়া উভয়ের সমভাগ গুড় মিশ্রিত করিবে। ইহা সেবনে সংগ্রহ-গ্রহণী, আমবাত, অন্ন পর প্রভৃতি রোগ নিবাক্তত হয়। তমুপান—মস্থা কলায় ও বেলভাঠের কাথ। (বৃদ্ধ বেভগণ এই ঔমবে কিঞ্ছিং রস্পপটি মিশ্রিত করিতে বলেন)।

অথ চুর্ণ-প্রকরণয়।

পাঠান্তং চুর্য্।

পাঠাথিযানলব্যে ষ-এত্ত্ত্বাভিমধাতকী।
কটুকাতিবিধাম্ত্তা-গানগাভূনিধাবংসকৈঃ ॥
সক্রেরভিঃ সমং চুবং কোটজং তভুলাত্ত্বা।
সক্ষোত্তক পিবেচ্ছালি-ছ্রাতিসামশূরবান্।
চন্দ্রোগ্রহ্বাবায়ায়োচকানলসাদ্রিৎ ॥

অাক্নাদি, বেলন্ডঠ, চিতামুল, তিকটু, জামের আঠি, দাভ্যের বাঁজ, ধাইফুল, কট্কী, আতইচ, মৃত্য, দাক্তরিদ্রা, চিরতা ও ইল্লেব, ইহাদের প্রত্যেক চুর্ণ সমান, কুড়্চি-মুলের ছাল চুর্ণ স্বল্পমান, এই সম্দান উত্তমরূপে একতা মিশ্রিত করিবে। তত্ত্লজ্ল ও
মধুর সহিত সেবনীয়। ইহাতে বমি, জরাতীসার ও গ্রহণীরোগ প্রভৃতি বিনষ্ট হয়।

কপিখাষ্টকচুর্ণম্।

যমানীপিপ্পানীমূল-চাতুজাতকনাগরৈ।
মারিচায়িওলাজাজী-খাজাসীবর্চলৈ সমৈ: ॥
বৃক্ষায়ধাতকীকৃষা-বিবলাড়িমতিলুকৈ:।
বিভাবে: হড়গুণানিতৈঃ কলিখাইওবৈ: কুতঃ ।
চুণোহতিসার্গ্রহণা-ক্ষত্ত্বালনাম্যান্।
কাসং খাসাজিচিং হিকাং কলিখাইনিং জয়েং॥

যমানী, পিপুলম্ল, চাতুজাতক (দাকচিনি, এলাইচ, তেজপত্র, নাগকেশর), ওঁঠ,
মরিচ, রক্তচিতাম্ল, বালা, । কৃষ্ণজীরা, ধনে ও
সচল লবণ এই সকল দ্রব্যের চূর্ণ প্রত্যেক
সমভাগ : বুকায় (মহাদা), ধাইফুল, পিপুল,
বেলভঁঠ, দাড়িম ও গাব, এই সকল দ্রব্যের
চূর্ণ প্রত্যেক তিন তিন ভাগ ; চিনি ছয় ভাগ
ও করেতবেল চূর্ণ আট ভাগ ; এই সমন্ত চূর্ণ
মিশ্রিত করিয়া উপষ্কু মাত্রায় সেবন করিলে
অতিসার, গ্রহণী, ক্ষম, গুল্ম, গলরোগ, কাস,
শ্বাস, অফুচি ও হিল্কা নিবারিত হয়।

সল্লগঙ্গাধর-চুর্ণম্।

মুস্ত সৈদ্ধনশুক্তী ভিধ তিকীলোগ্রবৎসকৈঃ।
বিষমে চরসাভ্যাঞ্চ পাঠে প্রস্থাববালকৈঃ ।
আত্রবাজমতি বিষা লক্ষা চেতি স্কচ্পিত্ম।
ক্ষোপ্রত শুলতে য়াভ্যাং জয়েৎ পাঁখা প্রবাহিকাম্।
সর্ব্বাতি সার্বামনং সর্ব্বাপুলনিস্পনন্।
সংগ্রহ্ গ্রহ্ণীং হস্তি স্তিকাত্কমেব চ।
এত দুগঙ্গাধকং চুর্বং সরিদ্বেগাবরোধকম্॥

মূতা, দৈদ্ধবলবণ, শুঁঠ, ধাইফুল, লোধ, কুড়্চিছাল, বেলগুঁঠ, মোচরদ, আক্নাদি, ইক্রয়ব, বালা, আদ্রকেণা, আতইচ ও বরাহ-ক্রান্তা, এই দকল দমভাগে চূর্ণ করিয়া মধুও ত গুলঙ্গলের সহিত দেবনীয়। ইহাতে গ্রহণী অতীদার ও স্তিকারোগ নই হয়।

মহাগঙ্গাধর-চুর্ম ।

বিবং শূক্ষাটকদলং দাড়িনং দলমেব চ ।
সম্স্তাতিবিবা চৈব সক্ষ্যেতশ্চ ংতকী ॥
মরিচং পিপ্ললী শুঠী দাবলী শুনিস্বনিশ্বকম্ ।
জম্ম রুমাঞ্জনকৈব কুটজন্ত ফলং তথা ॥
পাঠা সমকা স্থাবেরং শাহ্মলীবেইমেব চ ।
শক্রাশনং শুক্ষরাজ-চূর্ণং দেরং সমং সমম্ ।
কুটজন্ত শুচন্দ্র্বিং স্বক্ষ্রিক্স নতম্ ।
এতদ্ গক্ষাধরং নাম মহচ্চ্বিং মহাগুণ্ম ।
নানাবর্ণমতীসারং চিরজং বহর্মপিণম্ ।
হুর্বারাং গ্রহণীং হস্তি শুক্ষাং কাসক হুর্জন্ম্ ॥
হুরক্ষ বিবিধং হস্তি শোষ্টেব স্থাক্ষণম্ ।

আকৃচিং পাঞ্রোগঞ্চ হস্তাদের ন সংশয়।

হাণীছকেন মডেন মধুনা বাধ লেংমেং।

বেলগুঠ, পানিফলপত্র, দাড়িমপত্র, মুতা,
আতইচ, খেতধুনা, ধাইফুল, মরিচ, পিপুল,
ওঠ, দারুহরিদ্রো, চিরতা, নিমছাল, জামছাল,
রসাঞ্চন, ইন্দ্রথব, আক্নাদি, বরাহক্রাস্তা,
বালা, মোচরস, সিদ্ধিপত্র ও ভুঙ্গরাজ ইহা
দের প্রত্যেকের চুর্ণ সমান, কুড়্চিম্লের
ছাল চুর্ণ সর্কান—হাগহুয়, অন্ধ্রথ
বা মধু। ইহা জ্বাতিসার ও গ্রহণী প্রভৃতি
রোগের মহৌষণ।

রুহদ্গঙ্গাধর-চুর্ণম্।

বিবং মোচরসং পাঠা ধাতকী ধাক্তমেব চ।
সমকা নাগরং মৃত্যং তথৈবাতিবিষং সমস্ ॥
অহিকেনং লোপ্তবঞ্চ দাড়িমং কুটলং তথা।
পারদং গক্ষককৈব সমভাগং বিচূর্ণয়েং ॥
তক্রেন থাদয়েৎ প্রাতক্তর্নং গকাধরং বৃহৎ।
অরমষ্টবিধং হন্তাদতীসারং স্বন্থয়ন্ ॥
গ্রহ্নীং বিবিধাকৈব কোঠবা বিহরং পরস্ ॥

বেলগুঁঠ, মোচরদ, আক্নাদি, ধাইরুল, ধনে, বরাহক্রাস্তা, গুঁঠ, মুতা, আতইচ, অহি-ফেন, লোধ, কচি দাড়িয় ফলেব ছাল, কুড় চি ছাল এবং পারদ, গন্ধক (কজ্জলী) প্রত্যেক সমভাগ। এই সকল চূর্ণ একত্র মিশ্রিত করিবে। অমুপান—তক্র (বা আতপতপুলোদক)। ইহা সেবন করিলে জর, গ্রহণী ও অতিসার প্রভৃতি পীড়ার শাস্তি হয়। (মাত্রা—এক আনা পর্যন্তঃ।)

র্দ্ধগঙ্গাধর-চূর্ণম্।

মুন্তারলুকন্তন্তীভিধ তিকীলোগ্রবানকৈ:।
বিলমোচরসাভ্যাঞ্চ পাঠে প্রথমবংসকৈ: ॥
আন্তর্নীকং সমক্রাভি-বিবাযুক্তেক চুর্নি হৈ:।
মধুভঞ্চপানীয়ং গীতং হন্তি প্রবাহিকান্ ॥
হন্তি সর্বানতীসারান্ গ্রহণিং হন্তি বেগতং।
বৃদ্ধং গ্রাধারং চুর্নং ক্ষম্যান্ গ্রিবাণবাহিনীন্ ॥
মুন্তা শোলা ক্ষাঠে মাইক্রল লোগ ব

মৃতা, শোনা, ভ'ঠ, ধাইফুল, লোধ, বালা, বেলভ'ঠ, মোচগ্ৰস, আক্নাদি, ইক্ৰযৰ, কুড় চি- ছাল, আম্রবীজ, বরাহক্রাস্তা ও আতইচ, এই সকল জব্য সমভাগে চুর্ণ করিয়া চাউলবোত-জল ও মধু সহ সেবন করিলে এবাহিকা, সর্বপ্রকার অভিসার ও গ্রহণী প্রভৃতি রোগ নিবারিত হয়।

সল্ললবঙ্গান্তং চুর্ণম্।

লবকাতিবিয়া মৃত্যং বিশ্বং পাঠা চ শাল্মনী।
জীবকং ধাতকীপুশাং লোগ্রেক্সযববালকম্।
ধাতাং সাজ্জরসং শৃক্ষী পিপ্রলা বিশতেবজম্।
সমকা যাবশ্কক সৈদ্ধাং সরসাঞ্জনম্।
এতানি সমভাগানি প্রক্ষ্চ্গানি কারয়েং।
শাংরেরিমান্যাক সংগ্রহ্গাহ্নীং জ্যেনং॥
নানাবর্গমতীসারং সন্দোপাং পাভ্কমেলাম্।
ইন্মটালিকাং হত্তি কারং শানং অরং বিমন্
হলাসমন্ত্রপিত্রক সশ্লং সারিপাতিকন্।
সর্বরোগং নিহত্তাও ভাস্করিতিবিরং যুগা।

লবন্ধ, আতইচ, মুতা, বেল উঠ, আক্নাদি, মোচরদ, জীরা, ধাইফ্ল, লোধ, ইক্রযব, বালা, ধনে, ধূনা, কাঁক্ড়াপূন্ধী, পিপুল,
ভঠ, বরাহক্রান্তা, যবক্ষার, দৈন্ধবলবণ, রমাএন; এই দকল দুব্য সমভাগে লইরা উত্তমক্ষপে চুর্ণ ও মিশ্রিত করিবে। (অফুপান—
তঞ্লের জল ও মধু, বা ছাগ্রন্ধ)। ইহাতে
অধিমান্দ্য সংগ্রহ্থাহণী প্রভৃতি রোগ নই হয়।
(মাক্রা—২০ বতি হইতে ২০ রতি প্র্যুস্ত)।

রুহ্লবঙ্গাতাং চুর্ণম্।

লবঙ্গাতিবিষা মৃন্তং পিপ্ললী মরিচানি চ।
দৈদ্ধবং হবুষা ধান্তং কট্ফলং পুদ্ধরং তথা।
জাতীকোষদলাজাজী-সৌবর্চলগ্রসাঞ্জনম।
ধাতকী মোচকং পাঠা পত্রং তালীশকেশরম্॥
চিত্রকণ্ট বিভূটেগর ভূপুর্কবিষ্মের চ।
দ্বংগলাপিপ্ললীমূলমজ্ঞাদা বমানিকা॥
সমঙ্গা বংসকঃ শুঠী দাভিদং ববশুকজম।
নিশ্বং সন্দ্রম্ভাইকর জন্মান্তং উপ্লবং তথা।
গ্রীবেরং কুটজাইকর জন্মান্তং উপ্লবং তথা।
গ্রীবেরং কুটজাইকর জন্মান্তং উপ্লবং থা।
গ্রাম্বরং কুটজাইকর জন্মান্তং উদ্বেশ্বিক।
আক্রং পুটিতং লৌহং শুদ্ধানি কারয়েং।
মসুনা বা লিহেচতুর্বং পিবেৎ তঞ্লবারিণা॥

সর্কাদোবহর কৈব প্রহণাং হাতি ছাত্ররাম্।
বাতিকীং পৈত্তিকীকৈব লৈখিকীং সামিপাতিকীম্ ॥
পকাপবমতীসারং নানাবর্ণং সবেদনম্।
কুফারুণাক্ষণীতঞ্চ মাংস্বাবনসন্ধিতম্ ॥
অন্নান্তক্ষক্ষণাধ্যিং কাসং খাসং বৃদ্যিং তথা।
অন্নাপতং তথা চিকাং প্রমেহক ইলীমকন্ ॥
পাঞ্রোগঞ্চ বিষ্টত্তমর্শাংসি বিবিধানি চ।
মীহগুল্মোদ্রানাহ-শোপাতীসারণীনসান্ ॥
আম্বাতং তপাজীর্ণং সংগ্রহগুর্হণীং জ্বেং।
উদ্বং প্রদর্কেব লবসান্তামিদং শুন্ম ॥

লবন্ধ, আতইচ, মুতা, পিপুল, মরিচ. সেন্ধব, হবুষ, ধনে, কটুফল, কুড়, জৈত্রী, জায়ক্ল, कुवः कीता. अठन नवन, तमाञ्चन. ধাইফুল, মোচশ্স, আক্নাদি, তেজপত্র, ভালীশপুর, নাগেধা, চিভাযুল, বিটলবণ, তিতলাট, বেলভুঠ, গুড়ুহুক্, এলাইচ, পিপুল-मृत्, वनश्मामी, यमानी, वताहकास्त्रा, हेस्यव. ভঁত দাভিন ফলের অক্, বৰকার, নিমছাল, ধুনা, সাচিকার, সমুদ্রফেন, সোহাগার থৈ, বালা, কুড়্চিমূলের ছাল, জামছাল, আমছাল, কটকী, এবং শোধিত অভ্ৰ, লৌহ, গন্ধক ও পারদ প্রত্যেক চর্ণ সমভাগ। অত্পান—মধ্ বা ত গুলোদক। ইহাতে উৎকট গ্রহণী, সর্বা-পুকা 1 অভিনাব ও প্রদর প্রভৃতি রোগ ন্ট হয়।

তন্ত্রান্তরোক্তং বৃহল্লবঙ্গান্তং চুর্ণম্।

লবকং জীরকং কোট্টী দৈদ্ধাং ত্রিক্পাণ্ধিকন্।
জ্ঞান্ধান্ধানী চ মুন্তকং সকটুত্রাম্ম ।
ত্রিকলা শতপূপা চ পাঠা ভূনিঅগোকুরম্ ।
জাতীকোষফলে দাবশী নলদং চন্দনং নুরা ॥
শতী মধুরিকা মেণা টক্ষণং কৃষজীরকম্ ।
কারছয়ং বালকঞ্ বিঅং পৌকরকং তথা ॥
চিত্রকং পিয়লীমূলং বিড়কং সধনীয়কম্ ।
য়সাত্রপদ্ধকং লোহং সমং সর্বাং বিচ্পিতম্ ॥
উক্ষোদকামুপানেন মন্দাগ্রেদীপানং পরম্ ।
শীততোরাত্রপানিবা বৃদ্ধা দোষপতিং ভিষক্ ॥
আমাতিসারগ্রহীং চিরকালোখিতামপি ।
শ্বং বিষ্টজ্ঞানাহং বিস্টাং শোধকামলে ॥
হলীমকং পাড়ুরোগং ছন্তি কাদং বিশেশক্ষঃ ।
লবলান্তং মহাচুর্ণ শক্রাস্থিতং পিবেৎ ॥

আশ্বানং শনরেচ্ছীত্রং লবকস্তানুপানতঃ। অশিস্তাং নির্মিতং ফ্রেডলোকারুগ্রহুহেতবে ॥

লবন্ধ, জীরা, রেণুক, দৈয়ব, গুড় বক্, তেজপত্র, এলাইচ, বন্যমানী, যমানী, মুতা, তিকটু, তিফলা, গুল্ফা, আক্নাদি, চিরতা, গোক্ষর, জৈত্রী, জায়ফল, দায়হরিদ্রা, নলদ (বেণার মূল, কেহ কেহ বলেন জটামাংসী), রক্তচন্দন, মুরামাংসী, শঠী, মৌরি, মেধী, সোহাগার থৈ, রক্ষজ্জীরা, যবন্ধার, সাচিন্ধার, বালা বেলগুঠ, কুড়, চিতামূল, পিপুল্মূল, বিড়ঙ্গ, দন এবং পারদ, গন্ধক, মজ, লোহ, প্রত্যেক সমভাগে চুর্ণ ও মিল্রিড করিয়ালইবে। দোবের অবস্থা বিবেচনা করিয়ালইবে। দোবের অবস্থা বিবেচনা করিয়ালর্করা, লবঙ্গ, শীতল জল বা উক্ষজ্লের সহিত্ব সেবন করিতে দিবে। ইহাতে গ্রহণী অভিস্বাব প্রভৃতি মূলোক্ত নানা রোগ নই হয়।

ঁসল্লনায়িক।-চূর্ণম্।

ত্রিশাণং পঞ্চলবণং প্রত্যেকং ক্রারণং পিচু:।
গন্ধকার্মানকা হৃত্তেই চহারো মানকা রনাং ॥
ইঞ্জালনাং পলং শান-ত্রিতয়াধিক্ষিন্তে।
থাদে আছি কুতাচ্ছাণমন্ত্রের কাঞ্চিক্ম ॥
মানকাদিক্রেন্ট্রেন্সন্ত্রোজ্ঞাং রসায়নম্।
অত্যন্তারিকরকৈতদ্ ভোজনং সর্বক্ষিক্ম।
প্রসিদ্ধরোগিনী-নারী-প্রাক্তং চূর্ণং রসায়নম্॥

পঞ্চলবণ প্রত্যেক ১॥ তেলা, ত্রিকটু প্রত্যেক ছই তোলা, গদ্ধক ১ তোলা, পারদ অর্দ্ধ তোলা, দিদ্ধি পত্র ১॥ তোলা; এই সকল উত্তমরূপে চুর্ণিত ও একত্র মিপ্রিত করিয়া লইবে। মাত্রা—১ মাধা হইতে আরম্ভ করিয়া ক্রমণঃ অর্দ্ধতোলা পর্যান্ত বর্দ্ধনীয়। অহপান—কাজি। ইহা অত্যন্ত অগ্নিবর্দ্ধক ও গ্রহণীরোগনাশক।

বৃহন্নায়িকাচূর্ণম্।

চিত্ৰকলিকলা ব্যোষং বিড়ঙ্গং রজনীব্যন্। ভলাতকং সমানী চ হিঙ্গু লবণপঞ্চক্ম ॥ গৃহধুমো বচা কুঠং খনমজকগন্ধকম্।
ক্ষান্তন্ত্ৰকাজমোদা পান্তদো গজপিললী ॥ *
আমীবাং চূৰ্পকং যাবং তাবজ্বলাদনত্ত চ।
আজাৰ্চ্চা নায়িকাং প্ৰাত্তেগিলিনাং কামন্ত্ৰপিনীম্ ॥
বিড়ালপদমাত্ৰত্ব ভক্ষন্তেলত গুণ্ডকম্।
মন্দাণ্ডিকাসত্ৰ্ৰণম-সীহপাণ্ড্ডিনঅৱান্ ॥
প্ৰমেহণোধবিষ্টভ-সংগংগ্ৰহণীং জন্তেং।
সৰ্ব্বাতীসান্তহনণ স্কশ্সনিস্দ্ৰমম ॥
আমবাতগদোজ্ভেদি স্থিকাভক্ষনাশনম্।
নচ তে ব্যাধয়ং সন্তি বাতপিন্তকক্ষেত্ৰনাং ॥
বান্ ন হত্তাদংমী সিন্ধো গুণ্ডকো নায়িকাক্ষতং।
বাৰ্থান্নমাৰমভাল-মানং পিশিতভোজনম্ ॥
কাজিকামং সদা পথাং দক্ষমীনন্তৰা দ্বি।
কাঠমপ্যাদ্বে তত্ত ভক্ষণাদ্বাতি জীৰ্থিয়ে ॥

চিতামুল, ত্রিফলা, ত্রিকটু, বিভুঙ্গ, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, ভেলার মুটী, যুমানী, হিন্ধু, পঞ্চ-লবণ, ঝুল, বচ, কুড়, মুতা, অভ, গন্ধক, ষব-কার, সাচিক্ষার, সোহাগা, বন্যমানী, পারদ ও গজপিপ্ললী, (কোন কোন গ্ৰাম্থে ইন্সাম্ব, আতইচ, ধনে চৈও জায়কল এই কয়টি অধিক দ্ৰব্য লুইতে বলা হইয়াছে), ইহাদের প্রত্যেকের চুর্ণ সমান এবং সিদ্ধিচুর্ণ সর্ব্বসমান ; উত্তম রূপে মিশ্রিত কবিয়া লইবে। ইহার মাত্রা—বিভালপদ অর্থাৎ ২ তোলা। (বুদ্ধ বৈশ্বগণ চারি আনা হইতে আট আনা পথ্যস্ত ব্যবস্থা দেন)। পথ্য — জলদৌত অন্ন, মাধকলায়, অভ্যঙ্গ, স্নান, কাঞ্জিক, দধি, মাংস ও দগ্ধমৎশ্র প্রভৃতি। ইহা দেবন করিলে অতিশর অগ্নিদীপ্তি হর এবং গ্রহণী প্রভৃতি विनष्टे इरेश थाटक।

মাৰ্কণ্ডেয় চুৰ্ণ ম্।

শুদ্ধস্তক গদ্ধক বিস্কৃত্য টক্ষণং তথা। ব্যোক্য জাতীকনকৈন লবক্সং তেজপত্রকম্॥ এলাবীজ্ঞা মৃশ্তকক চিক্রকং করিপিপ্লনী। মাগরং সজলকাজং বাতকাতিনিবা তথা। শিগ্র্জং শাক্ষানী চৈব অহিফেনং পলাশকম্।
এতানি সমভাগানি লক্ষ্ড্রানি কাররেও॥
থাদেদক্ষাৎ প্রতিদিনং সাহকং সিত্রা সহ।
সংগ্রহয়ারীং হস্তি সম্পাগ্রিক বিশেষ চঃ। ৬
থাতুবৃদ্ধিবরোতৃদ্ধি-বলপুষ্টায়িকারকম্।
মার্কভেয়নিদং চুর্গং মহাদেবেন নিশ্রিতম্॥

শোধিত পারদ, গন্ধক, হিঙ্গুল, সোহাগা, জিকটু, জাভিফল, লবঙ্গ, তেজপত্ত, এলাইচ, মুতা, চিতা, গজপিপ্ললী, শুঠ, বালা, অত্র, ধাইফুল, আত্তইচ, সজিনাবীজ, শিমুল, অহি-ফেন ও পাশাণ, এই সকল দ্রব্য সমভাগে চূর্ণ করিয়া চি.ন সহ প্রতিদিন ১ মুখা পবি-মাণে সেবন করিবে। ইহাতে সংগ্রহগ্রহণা ও অগ্রিমান্দ্য নিবারিত হয়। ইহা পাতুবর্দ্ধক ও পুষ্টিকারক।

গ্ৰহণীশাৰ্দি,লচুৰ্ব্।

রসগন্ধকলোই। অং হিন্দু লগণপঞ্চম্।
হরিছে পাকলকৈব বচা মুস্তবিভূপকম্।
ত্রিকট্ ত্রিকলা চিত্রমজনে দা হয় নিকা।
গজোপকুলা কারাণি দবৈধা গুণপুরকন্য।
এতেবাং কার্কিকং চূর্ণং বিভ্রুত্বিকং সমন্।
মাষ্ট্রমিনং চূর্ণং পাবি শুলবারেশা।
ভক্ষমেৎ প্রাত্রকথার গ্রহণান্দনন্য।
অগ্রিক কুক্তে দাগুং বড়বান, সাম্ভন্য।
স্বাতীবারশমনং ভূকা অর্বিনাশনন্।
প্রাপ্রকাতীসারশমনং ভ্রাভ্রুত্বিনাশনন্।
আমাতিসারম্পিলং বিশেষাচ্ছুর্পু, জারং।
অসাধাং এইণ্রাং হতি পাভুপুত্রমজ্ব ন্।
অহণীশার্দ্ধিকং চূর্ণং সর্বরোগ্রুত্বন্ত্রন্ম্।
অহণীশার্দ্ধিকং চূর্ণং সর্বরোগ্রুত্বভ্রুত্বম্য।

পারদ, গল্পক, লৌহ, অত্র, হিন্ধু, পঞ্চলবণ (দৈল্পক, সচল, বিট্, দামুদ্র ও কাল লবণ), হলিদ্রা, দারহলিদ্রা, কুড়, বচ, মুতা, বিড়ঙ্গ, শুঠ, পিপল, মারচ, আমলকী, বনানী, গল্পকী, বক্লার, সাচিক্ষার, সোহাগার থৈ ও গৃহধ্য (ঝুল), এই দকল দ্রব্য প্রত্যেক ২ ভোলা। দর্কচ্পের দ্যান দিছিচ্প। একত্র মিশ্রিভ করিয়া ২ মাষা পরিমাণে শালিভ গুলোদক

ইতঃ পরং "কলিকাভিবিষা ধান্তং চন্যং জাতীকলং ক্ষম্" ইতাধিকঃ পাঠঃ কচিং।

সহ প্রাত্তকালে সেবন করিলে গ্রহণী, অগ্নিনাল্য, জর, তৃষ্ণা, নানাবর্গ ও নানাবিধ বেদনাল্য ক্রপকাপক সকল প্রকার অতীসার, বিশেষতঃ আমাতীসার, শোণ, অসাধ্য গ্রহণীরোগ, গাড়, প্লীহা ও পুরাতন জর বিনষ্ট হয়।

জীরকাচ্যং চূর্ণম্।

জীরকং উঙ্গণং মৃতং পাঠা বিখং সধান্তক্য।
বালকং শতপুষ্পা চ দাড়িমং কুটজং তথা ॥
সমন্ত্রা ধাতকীপুশং ব্যোষ্টেশ্ব ক্রিজাতকম্।
মোচরসঃ কলিজ্ঞ বোম গন্ধকপারদৌ ।
বাবস্ত্যোলি চূর্ণানি তাবজ্যাতীশলানি চ।
বতৎ প্রাশিতমাক্রেণ গ্রহণাং ছন্তরাং জয়ে ॥
অতীসারং নিহন্ত্যাপ্ত সামং নানাবিধং তথা।
কামলাং পাঞ্রোগঞ্চ মন্দাগ্রিঞ্ বিশেষতঃ।
জীরকান্যমিদং চূর্ণমগন্তেন প্রকাশিতম্॥

জীরা, সোহাগার খে, মুতা, আক্নাদি, বেল্ডুঠ, বনে, বালা, ওল্ফা, দাড়িমফলের ছাল, কুড় চিমুলের ছাল, বরাহক্রাস্তা, ধাইফুল, ক্রেক্টু, গুড়্ত্বক্, ভেজপত্র, এলাইচ, মোচরস, ইক্র্যব, অত্র, গন্ধক, পারদ প্রভ্যেক সমভাগ চুণ; চুণসমষ্টির সমান জারকল চুণ। এই সম্পায় একত্র উভ্যারপে শিশ্রত করিয়া লইবে। এই চুণ সেবনে ছনিবার গ্রহণীরোগ ও অতিসার প্রভাত নানাবিদ রোগ নষ্ট হয়। মাত্রা—৩ রতি।

অজাজ্যাদি-চূর্ণ্।

পলখন্দমজাজ্যান্ত পলৈকং ববশ্কজন্।
অন্তুদং বিপলং জ্ঞেরং ফণিফেনপলং তথা।
অক্সুলভবং চূৰ্ণ চতু:পলমিতং স্মৃতন্।
অজাজ্যাদিকমেতব্দি হস্ত্যপ্রং গ্রহণাগদন্।
মরন্তুমৰ নীরক্তমতিসারং ফ্লাক্স্পন্।
অ্বাতিসারং শ্বরেৎ বিস্টীং ঘোররপিণান্।

জীরা ২ পল, যবক্ষার ১ পল, মূতা ২ পল, অহিফেন ১ পল, আকলমূল ৪ পল, এই সমুদায় চুর্ণ একত্র মিশ্রিত করিবে। ইহা সেবন করিলে সরক্ত অথবা বক্তহীন অতি-সার, জ্বরাভিসার, গ্রহণী ও বিস্তৃচিকা রোগ উপশ্মিত হয়। মাত্রা—২ রতি।

কঞ্চাবলেহঃ।

প্রস্থে পচেৎ কঞ্চতালমূল্যোঃ

সিতার্ব্রপ্রং শৃতপাদশেষে।

ততাহক্ষমাত্রাণি সমানি দন্ত্যাৎ
চুর্ণানি বীরো বিবিবৎ তদেবাম্ ।

সমকা ধাতনী পাঠা বিবং মৃত্তাপ পিল্পনী।
শাকলাদিবিবাকারে-সৌরচলব্যান্ত্রনামান্ত্র।
শাললীবেইককৈর সর্বাহ্য বিধাপিয়েই।
শিতে চ মগুন্লচাত্র কুডবার্দ্ধর বিনিক্ষিপেই।
শাললীবেইককৈর স্বাহ্রিকলিকপেই।
শালামিত্রকার শাহরেই সংবাহ্রিকলিকপেই।

স্বাহিসারং শাহরেই সংবাহরিকলিকিবাই।
বিকারান্ কোঠজান্ ইন্তি ইন্যাই শুন্মরোচকম্ ॥

কঞ্চতালমূল্যোং প্রত্যেকই মান্ত জল শং ১৬ শেষ
শং ৪, সিতাইপলং দ্বা পজ্বা সমঙ্গাদিচ্বিতকেপঃ, শীতে
মধুপলচতুইয়মিতি গোপাল্যাসঃ, মধুন্য পলব্যমিত্যনা।

কাচ্ডাদাম /১ সের, তাণমূলী /১ সের, ১৬ সের জলে পিন্ধ করিয়া /৪ সের থাকিতে ছা।কয়া লইবে। ঐ কাথে চিনি /১ সের দিয়া পাক করিয়া সিকি অবাশ্র থাকিতে ভাহাতে ব্যাক্রাস্তা, ধাইফুল, আক্-নাদি, বেলশুঠ, মুতা, াপপুল, দিদ্ধিপত্ৰ, আত-हेठ, यदकात, महललदन, तमाञ्चन ७ (মाहतम, প্রত্যেকের চুর্ণ ২ তোলা করিয়া ইহাদের নিক্ষেপ করিবে! পাকশেষে শীতল হইলে মধু এক পোয়া (মতান্তরে অর্চদের) মালত কার্যা লইবে। ইহার মাত্র', দোষ বল ও কাল বিবেচনা করিয়া ব্যবস্থা করিবে। ইহাতে অতীসার, সংগ্রহগ্রহণা, অমূপিত্ত, উদররোগ, কোঠজ-বিকার, শূল ও অক্লচি নিবারিত হয়।

দশমূল-গুড়ঃ।

দশমূলীপলশতং জলজোণে বিপাচয়েৎ। তেন পাদাবশেষেণ পচেদ্ গুড়তুলাং ভিষক্ ॥ আর্কিক্ষসপ্রহা দ্বা সৃত্যবিদা ততঃ।
লেহীভূতে প্রদাতসাং চূর্বমেবাং পলং পলম ॥
পিপ্ললী পিপ্ললীমূলং মরিচং বিশ্বভেষজ্য।
হিল্পু ভলাতককৈ বিভ্রমজনোদকন্।
ভৌ কারো নির্কং চলাং পকৈব লবণানি চ।
দল্ম ক্রম্বিতং কুড়া লিগ্নে ভাতে নিধাপারেং।
কোনাত্রং ভতঃ খাদেং প্রাতঃ প্রতিক্ষণঃ।
হাতি হলানলং শোক্ষমামলাং গ্রহণীনপি।
ভানেং স্বস্তেবং শুলং সাইনিমূলরং হথা।
মালানলভবং বোগং বিক্রম্বং গুদকানি চ।
ক্রাং চিরন্তনং হস্তি দেমিশ্রং ভাতুমানিব।।

দশমূল নিলিত ১২।০ সের, জল ৬৭ সের, শেব ১৬ সের। এই কাথে পুরাতন গুড়, ১২॥০ সের ও আদার রদ /৪ সের, একত্র করিয়া মৃত্র অভিতে পাক করিবে। লেহবং ঘন হইলে পিপুল, পিপুলমূল, মরিচ, গুঠ, হিঙ্কু, ভেলার মুটা, বিড়ঙ্গ, বনধমানী, ঘবকার, দা!চমার, চিতামূল, চৈও পঞ্চলবণ, এই দকল দ্বোর প্রত্যেকের ১ পল পরিমাণে নিক্ষেপ করেয়া উত্তমরূপে আলোড়ন করিবে। পাক ২ মাপ্ত হইলে স্লিয় ভাও মধ্যে রাখবে। মৃত্র —১ তোলা। ইহাতে আল্লমান্য, আমজ গ্রহণী, প্লীহা ও জন প্রভাত অনেক লোগ নিবারিত হয়।

ক গোণ-গুড়ঃ।

প্রস্তারেণামলকীরসন্ত গুদ্ধত দ্বাদ্ধিতুলাং গুড়ত।
চুণীকৃতিএ পিকজীরচন্য-ব্যোধেতনুক্ষাহবুৰাজনোলৈঃ।
বিড়লসিলু ক্রিকলামনানী-পাঠা গ্রিধান্যেন্চ পলপ্রমাণেঃ।
দক্ষা ক্রিব্চতুর্পলানি চাষ্টানষ্টে চ তৈলক্ত পচেদ্ বথাবং॥
তং ভল্গমেদককলপ্রমাণং যথেষ্টচেষ্টং ক্রিফানিযুক্তম্।
আনেন সর্ক্রে গ্রহণাকিবারাং স্থাসকাসকরভেনশোধাং॥
শাম্যন্তি চারং চিরমন্তরগ্রেইতক্ত পুংস্কৃত্ত চ বৃদ্ধিহেতুঃ।
ন্ত্রাণাক্ষ বল্গাময়নাশনোহয়ং কল্যাণকো নাম গুড় প্রেকিষ্টা।

ত্রিবৃতাং ভর্জয়য়য়য় মনাক্ তৈলে চিকিৎসকা:। অজ্যেক্তমানস:ধর্মাৎ ত্রিহুগদ্ধি পলং পূথক্॥

আমলক। রস ১২ সের, পুরাতন গুড় /৬। । সের, তিল তেল ৮ পল, তেইড়ী চুর্ণ ৮ পল। প্রথমে তেইড়ীচুর্ণ উক্ত তেলে ঈষং ভাল্লয়া লইবে। পরে সেই তেউড়ীসমন্বিত তৈল, খামলকীর বস ও গুড় একত্র পাক করিবে। পাক সিদ্ধ এইলে ভাষাতে পিপুলমূল, জীবা, চৈ, ত্রিকটু, গজপিপ্ললী, হবৃষ, যমানী, বিড়প্প, সেন্ধবলবণ, ত্রিফলা, যমানী, আক্নাদি, চিভা মূল, বনে, গুড়থক্, তেজপ্র ও এলাইচ ইছাদের প্রত্যেকের চুর্গ ১ পল, গরিমাণে নিক্ষেপ করিবে। মাত্রা—াত ভোলা। এই গুড় সেবনে সকল প্রকার গ্রহণীলোগ, খাস, কাস, স্বরভেদ ও শোথাদি রোগ নই হয়।

কু সাওওড় কলা। । 4: ।

বুখাওকানাং কচানাং স্থানিমং নিক্লন্বচান্। সপি,প্রস্থে পলশতং ভাত্রপারে শবৈঃ পচেৎ। পিश्रनी शिश्रनीयूनः हिज्ञाता शिष्ठिभिश्रनी । ধান্তকানি বিভঙ্গানি বহ'নী মরিচানি চ।। ত্রিফলা চ'ভবোদা চ কলিজাজাজা দৈন্দবন্। একৈক**ন্ত** প্রকেব ত্রিবুদ**র্**পলং ভবেং ॥ তৈলস্য চ পলাক্সপ্তৌ গুড়পঞ্চাশদেব 💆 -প্রস্থৈতঃ সমেতন্ত্র রসস্থামলকস্থা চ। যদা দক্ষীপ্রকেপস্ত তদৈনমকতারয়েৎ। যথ শৈক্তি গুড় ং কুয়াৎ কৰকধাৰ্দ্ধমানতঃ॥ তানেন বিধিনা চৈব প্রযুক্ত স্ত জয়েদিমান। ত্রকারান গ্রহণীরোগান বু গ্রাফ্রণাভগ্রুবান । জন্মান'ই হাজাগ-গুলোদরবিস্থ চিকাঃ। কামলাং পাণ্ডুরোগাংশ্চ *প্র*েমহাংকৈর বিংশতিম ॥ প্লীংশনং বাতরক্তঞ্চলচগ্রহলীমকান্। কফপিন্তানিলান্ সকান্ প্ররচাংক ব্যপোইতি॥ वाधिकीमा वश्यकामाः अपु कीमान्त (य नदाः। তেষাং ব্যাশ্চ বলাশ্চ ব্য়স্থোপন এব চা গুড়কুম্বাণ্ডকো নাম বন্ধানাং গর্ভদঃ পরঃ॥

স্থপন ক্রাও শস্ত ১২॥০ সের, স্বত /৪
সেব। পিপুল, পিপুলমূল, চিভামূল, গজপিপ্লী, ধনে, বিড়ঙ্গ, যমানী, মরিচ, তিফলা,
বন্যমানী, ইন্দ্রবৰ, কৃষ্ণজীরা, সৈন্ধব লবপ্রত্যেক ১ পল, তেউড়ীমূল ৮ পল। তিলতৈল ৮ পল, গুড় ৫০ পল, আমলকীর রস ১০
সের। এই সমুদায় দ্রব্য যথাবিধি পাক
করিয়া ঘন হইলে নামাইবে। মাত্রা—১
ভোলা। এই ঔষধ সেবনে গ্রহণী প্রভৃতি
বিবিধ রোগ উপশ্যিত হয়।

মুস্তকান্তে। মোদকঃ।

ত্রিকট্ ত্রিফলা চিত্রং লবকং জীরকব্যন্।

যমান্ত্রী বে মধুরিকা নাগবন্ধান্তরং তথা ।

শতপুশা বরী ধান্তং চাতুর্জাতং তথা তুলা।

মেণী জাতীফলং গ্রাহং প্রত্যেকং কর্মস্মিতন্।

মৃত্তকং বট্পলং দেরং সিতা চ বিশুণা ম ।

গ্রহণীং হস্তাতাসারং মন্দাগ্রিহ্মরোচকম্ ।

অজীর্নমানদোবক্ষ বিস্তামিপি দারুণাম্।

পৃষ্টিং দেহত্ত জনমেদ্বনবর্ণাগ্রিবৃদ্ধিকৃৎ।

বলাপলিতদৌর্বলাং ক্ষপ্রেৎ কুণ্ডামিপি ॥

ত্রিকট্ট, ত্রিফলা, চিতামূল, লবন্ধ, জীরা, ক্ষেজীরা, যমানী, বম্বমানী, মৌরি, পান, গুল্ফা, শতমূলী, ধনে, গুড়হক্, তেজপত্র, এলাইচ, নাগেধর, বংশলোচন, মেলা ও জায়ক্ষ প্রত্যেক ২ তোলা, মুতা ৪৮ তোলা, চিনি সর্বাধিগুণ অর্থাৎ ১৯০ তোলা। ম্থাবিধি পাক কবিয়া মোদক প্রস্তুত করিবে। মাত্রা—আব তোলা ইইতে ১ তোলা। নীতল জলের সহিত সারংকালে দেব্য। ইহা সেবনে গুহণী, আত্রনার, মন্দাধি, অক্রচি, অজীর্ণ, আমদোষ ও বিস্টিকা রোগের নাশ, শ্বীবের পৃষ্টি এবং বল, বার্যা ও অধ্বির বৃদ্ধি হয়।

শ্রীকামেশ্বরো মোদকঃ।

সমাত্রারিতম্ভকং কটফলং কুঠাবগন্ধায়তা (मर्थ) (माहत्रामा विनातिम्यत्र) (श्वक्तकरकक्तः । রম্ভাকন্দশতাব্বী ভ্রমুদা মাবান্তিলা ধাস্তকং **হৈমী নাগ**বলা কচুরমদনং জাতীকলং সৈঞ্চবমূ॥ **छात्री कर्कर्रे गुक्रकः जिक्र्येकः** क्षोत्रवयः विजयः চাত্র্জাতপুনর্বা গ্রহণ। দ্রাক্ষা শুর্রা বালক্ষ্ । শাৰ্মলাত ছিফলতিকং কপিছনং নাজং সমং চুর্ণয়েৎ চৰ্বাংশা বিজয়া সিতা দ্বিগুণিতা মধ্বাজ্যয়োঃ পিণ্ডিতম ॥ কৰাংশা শুডিকাৰ্দ্মকৰ্ষমণনা দেবা৷ সদা কামিভিঃ সেব্যং ক্ষীরসিতং স্থবাধ্যকরণং গুডে২পারং কামিনাম। বামাবশুকর: হুথাভিহুখদো বহুবেনাদ্রাবণঃ ক্ষীণে পুষ্টিকরঃ ক্ষতক্ষয়হরো হস্তান্ত সর্বান্যান্। কাসখাসমহাভিসারশমন, কামাগ্রিসন্দৌপনো ছর্নামগ্রহণী প্রমেহনিবৃহলেমা ডিবেক পণুৎ। নিত্যানন্দকরো বিশেষকবিতাবাচাং বিলাসোদ্ধনং থতে সর্বান্তণং মহান্তিরম্ভিবালো নিভান্তোৎসবঃ ॥

অত্যাদেন নিহপ্তি মৃত্যুপণিতং কামেখনো বৎদরাৎ সর্কেখাং হিতকারিণা নিগণিতঃ গ্রানি তানাপেন সং। বৃদ্ধানাং মদনস্ত বর্জনকরঃ প্রৌচাঙ্গনাসঙ্গমে সিংহোহয়ং সমৃদৃষ্টিপ্রতায়করো ভূপৈঃ সনা সেবাতাম্। ভ্রান্তরেক্ত মহাকামেখরসংগ্রা।

জারিত অল্ল, কট্ফল, কুড়, অশ্বগন্ধা, গুল্ঞ, মেণী, মোচাস, ভূমিকুমাও, তাল-मुनी, त्राकृत, कूल्याम्। वीज, শতমূলী, যুমানী, সাহকলাই, ভিল্ভভুল, ধনে, इन्टन, भारकार्दन, भवनाया, मधनावन, জায়ফল, সৈধন, বামুনহাটা, ক।ক্ডাশুলী, ত্রিকটু, জীরা, কুঞ্জীরা, চিতামূল, গুড়্যকু, তেজপত্র, এলাইচ, নাগেখা, পুনর্না, গজ-[ମମ୍ମଣ] দ্রাক্ষা, শুঠা, বালা, শ্যুলমূল, ত্রিফলা ও আলকুণাবীজ প্রত্যেক ১ তোলা। সিদ্ধিচুর্ ৪৫ তোলা, চিন ১৮০ (তোলা। পাকযোগ্য জল দিয়া বখাবিবি পাক কবিবে। শাতল হইলে গ্ৰত বা নধু দিয়া মোদক বান্ধিবে। মাত্রা অন্ধতোলা। মোদক ভক্ষণাত্তে কিঞ্চিৎ ছগ্ধ ও চিনি ধাইবে। ইহাতে কাস, গ্রহণী ও অভিনারাদি বিবিদ ধ্যাপের পান্তি এবং ই জিয়েশ জিলা বুলি হয় :

কামেশ্বরো মোদকঃ।

ধাত্রীদৈদ্ধবকুঠকট্ফলকণা শুক্তীখনানীৰয়ং
ষষ্টাজীৱক্ত্যুগ্ৰাপ্তকশটাপুদ্ধীবচাকেশ্বমু।
ভালীশং নিস্থান্ধিকং সমন্বিচং প্ৰয়াজনোভিঃ সমং
চুণীকুতা মনাক্ স্বৰীজনহিতং ভূষ্টা ভূ শকাশ নমু ।
সক্ষোং বিশুলাং সিতাং স্বিনলাং
যপুণ্ ভিষ্য নিস্মিগেৎ,
কোটদ্রন্দানি মুক্তঃ প্রশাস্ত্রনিসন
ক্যাৎ শুভান মোদকান্।
কপ্রৈরবচ্বিতানপিহিতান্ দ্বা তিলান্ শুজ্ঞিতান্

গোপ্যোহরং কিভিন্ততে মিত্রিয়ং পাযভিনামগ্রতঃ ।
কাথিয়াধিংরং কভক্ষরহয়, কুঠাপাহো বৃংহণঃ
দ্বীণাং ভোষকরো মুখ্চাভিকরং শুক্রায়িবৃদ্ধিপ্রদ্ন।
কাসধাসবলাসরোগনিচয়প্রথান্যনা প্রাণিনাং
প্রোক্রো বন্ধান্তেন স্বর্থক্য কামেশ্বরো মোদ্কঃ ॥

গ্রহগণপরিহীন: সর্ববশার প্রবীণ:
কলিতবিষলকীন্তি: প্রাপ্তকন্দর্শস্থিত:।
বিগতসকলভীতিগীতবাদ্যালনীতিগুবভি পুবি স দেবো বেন পুক্ত: প্রয়োধ ।
রহসি যুবভিবেলাসন্পূটাবর্বহর্ষাদ্
গময়তি যুবভীনাং কেলিকৌত্হলেন।
যদি কথমপি পুক্তো ভোজনাদাবধান্তে
স্বয়তরভসমুকৈন প্রকামং প্রকামম্ ।
ক্মান্নব্যুহস্পতিন্তপ্রিয়া বন্মাৎ সদা বীর্যাবান্
বন্মান্নব্যুহলা ক্রিবিতা সংজায়তে দীলয়া
শ্রীমন্তি: প্রতিবাদরং ক্রিভিত্রেল সংসোবাতাং মোদক:।
এর গ্রহণামিপি প্রশন্ত:।

আমলকী, সৈশ্বব, কুড়, কট্ফল, পিপুল, र्डं रे, यमानी, वनयमानी, यष्टिमधु, जीता, कुरू-জীরা, ধনে, শঠা; কাঁক্ড়াশৃঙ্গী, বচ, নাগেবর, তালীশপত্র, গুড়ত্বক, তেজপত্ৰ, এলাইচ. মারচ, হরীতকী ও বহেড়া প্রত্যেক চুর্ণ স্ম-ভাগ, সকলের সমান ঈষৎ ভজ্জিত সবীঞ্চ-সিদ্ধিচুর্ণ, সর্বাসমষ্টির দ্বিগুণ চিনি। প্রথমে পাকযোগ্য জল দিয়া চিনি পাক করিবে, গাঢ় हरेल जामनकी हुन अ अ अ अ जिल्ला किता পাক সম্পন্ন হইলে কিঞ্চিৎ ঘৃত ও মধু দিয়া এক ভোলা প্রমাণ মোদক করিবে। পরে ভালা তিলচুর্ণ ও কপুরি খারা অধিবাসিত করিবে। ইহা সেবন করিলে গ্রহণী প্রভৃতি নানাবিধ রোগের শাস্তি এবং বল বীর্য্য ও রভিশক্তির বৃদ্ধি হয়।

মেথীমোদকঃ।

ত্রিকটুত্রিকলামুন্তা-জীরক্ষয়ধাক্তক্য।
কট্টকলং পৌজরং শুলী যমানী সৈত্ধবং বিভূম্ দ ভালীশকেশরং পত্রং ছগেলা চ ফলং তথা।
জাতীকোষলবঙ্গঞ্জ মুরা কপুরিচন্দনম্ ॥
বাবস্তোভানি চূর্ণানি ভাবদেব ভূ মেধিকা।
সংচূর্ণ্য মোদকঃ কার্য্যঃ পুরাতনগুড়েন চ ॥
স্থাতেন মধুনা কিঞ্চিদ্ থাদেদগ্রিবলং প্রতি।
জ্মিঞ্চ কুক্তে দীপ্তং সামে মেদে মহৌববম্ ॥
বলবর্ণকরো হেব সংগ্রহগ্রহগাহরঃ।
ক্রমেহান্ বিংশতিং হস্তি মুত্রাঘাতাংক্তবাশ্ররীম্ ॥ পাঞ্রোগং তথা কাসং বন্ধাগং হস্তি কামলান।
ন্তনৌ চ পভিতে গাঢ়ো ভাতাং ভালকলোপমৌ ।
দৃষ্টপ্রসাদনকৈব নরাণাকৈব পুত্রদঃ।
ভাবিতঃ কামদেবেন্মবিশীযোদকসংক্রকঃ।

ত্রিকটু, ত্রিফলা, মুডা, জীরা, ক্লঞ্চনীরা, ধনে, কট্ফল, কুড়, কাঁক্ড়াশৃঙ্গী, যমানী, সৈন্ধন, বিট্লবণ, তালীখপত্র, নাগেশ্বর, তেজ-পত্র, গুড়ত্বক্, এলাইচ, জারফল, জয়িত্রী, লবঙ্গ, মুরামাংসী, কর্পুর ও রক্তচন্দন; এই সকল জব্যের চুর্ণ প্রত্যেক সমজাগ, চুর্ণ সমস্টির সমান মেথীচুর্ণ। সকল চুর্ণের ছিগুণ প্রাত্তন গুড়। উপস্কু জল দিয়া পাক করিবে। পাক সমাপ্ত হইলে কিঞ্চিৎ স্বৃত্ত ও মধু মিলিত করিয়া রাখিবে। ইহা অমিকারক এবং সংগ্রহগ্রহণী প্রভৃতি নানা রোগের মহৌষধ।

রহন্মেথীমোদকঃ।

ত্রিকলা ধ'শুকং মৃন্তং শুন্তী মরিচণিপ্পলী।
কট্দলং দৈন্ধবং শূন্সী জারকগ্ধপুদ্ধর ।
বয়নী কেশরং পক্রে তালীশং নিড্মের চ।
জাতীকলং জ্পেলা চ জ্যিক্রী-দূলবক্ষক্ ॥
শতপুপা মুরামাংসী বৃষ্টান্ধুকপক্ষম্ ।
চব্যং মধুরিকা দাক সর্ব্বেমেতৎ সমং শুবেৎ ॥
বাবস্তোতানি চূর্ণানি তাবক্ষাত্রা তু মেধিকা।
সিতরা মোদকং কার্য্যে যুত্তমাক্ষিকসংযুত্তঃ ॥
শক্ষমেং প্রাতক্ষধার বধাদোবাক্ষপানতঃ ।
হস্তি মন্দানলান্ সর্ব্বানামদোবং বিশেষতঃ ॥
মহাধিজননং ব্যুমামবাতনিক্ষনম্ ।
গ্রুণ্ডোবিকারন্ধং মীহপাপুগলপহম্ ॥
প্রমেহ'ন্ বিংশতিং হস্তি কাসং খাসক দাক্ষণম্ ।
হর্জ্যতীসার্গমনং সর্ব্বাক্ষিবিনাশনম্।
মেধীমোদকনামেদং প্রস্কলিম্নের তম্ ॥

ত্রিফলা, ধনে, মুতা, ওঠ, মরিচ, পিপুল, কট্ফল, সৈদ্ধৰ লবণ, কাক্ডাশৃঙ্গী, জীরা, কুজজীরা, কুজ, ধমানী, নাগেশ্বর, ভেজপত্র, তালীশপত্র, বিট্লবণ, জ্জায়ফল, গুড়ত্বক, এলাইচ, জয়িত্রী, কপুর, লবজ, শুল্ফা, মুরামাংসী, যষ্টিমধু, পদ্মকাষ্ঠ, চৈ, মৌরি ও দেব-

দার প্রত্যেক চুর্ণ সমান; সর্ব্ধসমান মেথীচুর্ণ। চুর্গসমন্তির বিগুণ চিনি। পাকযোগ্য
জল দিয়া পাক করিবে। নামাইয়া কিঞ্চিং
মুত্তও মধু মিলিত।করিয়া লইবে। প্রাতঃকালে সেবনীয়। দোষাদি বিবেচনা করিয়া
অমুপান ব্যবস্থা করিবে। মাত্রা—অর্দ্ধ
তোলা। এই মোদক সেবনে অগ্নিমান্দ্য ও
এহণী প্রভৃতি নানা রোগ নষ্ট হয়।

জोतकामित्यामकः।

রকুর্ণীকৃতং জীরং পলাষ্টক্ষিতং শুভ্যু। তদর্মং বিজয়াবীজং ভব্জিতং বস্ত্রপুতক্ষ ॥ व्यक्तर्गः उथा तक्रमज्ञकः कर्गमानछः। মধরিকা চ তালীশং জাতীকোযফলে তথা। ধান্তকং ত্রিফলা চৈব চাতুর্জাতলবঙ্গকম। रेनलबर हम्मरन एवं ह मांत्रों आका गठी उथा। हेक्रनः कून्नुक्रवेद्यी जुना करकालनालकम्। গাঙ্গেরান্তিকটুলৈব ধাতকী বিষমর্জ্নম্ 🛊 শতপূষ্পা দেবদার কপুরিং স্প্রিয়ঙ্গুক্ম। জীরকং শামনকৈব কটকা পদ্মনালুকে। এষাং কৰ্বসমং চৰ্বং গৃহীয়াৎ কুশলে। ভিষক। শক্রামধুনাজ্যেন মোদক্ষ বিনিপিত্ন । থাদেৎ কৰ্ষমং তম্ম প্ৰত্যহং প্ৰাভক্ষপিত:। শীততোৱানুপানেন সর্ব্বগ্রহণিকাং জয়েৎ॥ আমদোৰাবতে পিত্তে বঞ্চিমান্দো তথৈব চ। রক্রাতিসারেহতিসারে প্রযোজ্যঃ বিষম্বরে। সশব্দং যোরগম্ভীরং হস্তি সজো ন সংশয়:। অন্নপিত্তকুতং দোষমুদরং সর্বারাপিণম্। সর্বাতিসারশমনং সংগ্রহগ্রহণীং জয়েৎ। **একজং খলজং** চৈব দোবতায়কুঙং ভথা।। विकादः काष्ठेबदेश्य रुखि मूलमरत्राठकम्। ভাষিত: কুঞ্চনাণেন জ্পুনা: হিতকারণম্॥ जीवकर्न म । विकशावीकर्नः म । जोशामिनानूका-ভাষাং প্রত্যেকং কর্ম: ১, সর্ববিশুণা সিতা, যুত-মধ্ভাাং বন্ধনম্ ।

শ্লুকুর্ণিত জীরা ৮ পল, ঘুতভর্জিত ও বন্ধগালিত সিদ্ধিবীজ চুর্ণ ৪ পল, লৌহ, বঙ্গ, অন্ত্র, মৌরি, তালাশপত্র, জরিত্রী, জারফল, ধনে, ত্রিফলা, গুড়ত্বক্, তেজপত্র, এলাইচ, নাগেধর, লবঙ্গ, শৈলজ, খেতচন্দন, রক্তচন্দন, কটামাংসী, দ্রাক্ষা, শঠা, সোহাগার থৈ,
কুন্দুকথোটি, ষষ্টিমধু, বংশলোচন, কাঁক্লা,
বালা, গোরক্ষচাকুলে, ত্রিকটু, ধাইকুল, বেলতঠ, অর্জ্জনছাল, শুল্কা, দেবলাক, কর্পুর,
প্রিয়ন্থ, জীরা, মোচরস, কট্কী, পদ্মকাষ্ঠ
ও নালুকা ইহাদের প্রত্যেকের চুর্ণ > কর্ষ;
সকলের সমষ্টির দিগুণ চিনি। পাকনেষে
কিঞ্চিং ম্বত ও মধু মিলিত করিয়া মোদক
প্রেম্ভত করিবে। ২ তোলা পরিমাণে (ব্যবহার—
॥০ তোলা) প্রাত্যকালে সেবনীয়। অমুপান—
শীতল জল। জীরকাদি মোদক সেবন করিলে সর্কপ্রকার গ্রহণী ও অমুপিতাদি নানা রোগ নষ্ট হয়।

রহজ্জীরকাদি-মোদকঃ।

জীরকং কুঞ্চজারক কুষ্ঠং ওঠা চ পির্মণী। মরিচং ত্রিফলা ছক্ ১ পত্রেমেলা চ কেশরম ॥ खड़ा लवकर रेगलियर हन्तनर (च हहन्तनम्। কাকোলী ক্ষারকাকোলী জাতাকোষফলে তথা। ষ্ঠী মধুরিকা মাংসা মৃন্তং সচলকং শঠী। ধান্তকং দেবতাড়ক মুৱা দ্রাক্ষা নথা তথা 🛭 শতপুষ্পা পদাকঞ মেথা চ হুরদাক চ। সজলং নালুকা চৈব সৈন্ধবং গজপিপ্ললী। কপুরিং বনিতা চৈব কুলুখোটাং সমাংশিকাম । লোহক ত্রকবঙ্গানাং দ্বিভাগং তত্র দাপরেৎ। এতানি সমভাগানি লক্ষ্ট্ণানি কারয়েং। न**र्कार्नमभः (एश्र. ५) हेका** तक हुर्नकम् ॥ সিতা বিশুণিতা দেয়া মোদকং পরিকল্পয়েৎ। যুতেন মধুনা মিখাং মোদকঞ্চ ভিষ্থর: ॥ ভক্ষেৎ প্রতিরুখায় যথাদেষবলানলম। গব্যং সশ**র্কর**ঞ্চিব অনুপানং প্রযোজয়েৎ 🛭 অশীতিং বাতজানু রোগাংশ্চন্থারিংশচ্চ পৈ**ত্তিকান্**। সর্বাংস্তান নাশয়তাতি বৃক্ষমিক্রাশনিষ্থা। নানাবৰ্ণমতীদারং বিশেষাদামসম্ভবন্। **मूलमहेविधः इक्टि व्यामीत्रागः हित्राख्यम् ॥** জীর্ণজরক সততং বিষমধ্রমেব চ। ন্ত্ৰীণাকৈবানপত্যানাং ছকলানাঞ্চ দেহিমাৰ। পুষ্পকৃৎ পুত্রকুটেচব বলবর্ণকর: পর:। পুতিকারোগমত্যুগ্রং নাশরেন্নাত্র সংশয়ঃ॥ প্রদর্থ নাশয়ত্যান্ত স্থ্যন্তম ইবোদিত:। দাহং সার্বাঙ্গিকঞৈৰ বাতপিভোখিতঞ্ তৎ। ভারং সর্বগদোচেছদী জীরকাতো হি মৌদক: ।

জীরা, ক্লফজীরা, কুড়, শুঠ, পিপুল, মরিচ, ত্রিফলা, ।গুড়ম্বক্, তেজপত্র, এলাইচ, নাগেশ্বর, বংশলোচন, লবঙ্গ, শৈলজ, রক্ত-**इन्स्न, त्यं उहन्स्न, कांटकांनी, कींत्रकांटकांनी.** कशिजी, जात्रकन, यष्टिमधु, त्योति, कठायाःत्री, मूडा, महनन्त्र, भंठी, ধনে. মুরামাংদী, দ্রাকা, নখী, শুল্ফা, পল্মকান্ঠ, (मयी, त्मवनां क्र, वांना, नांनुका, टेमक्कव नवन, গজপিপ্ললী, কর্পর, প্রিয়ঙ্গ, কুলুকুথোটী, ইহাদের প্রত্যেকের > ভাগ, লৌহ, অভ্র ও বঙ্গ প্রত্যেক ২ ভাগ। সমুদায় চর্ণের সমান ভৰ্জিত জীরক চুর্ণ। স্বাসমষ্টির দ্বিগুণ চিনি। চিনি পাক করিয়া উপযুক্ত সময়ে চূর্ণ সকল নিক্ষেপ করিয়া নামাইয়া শীতল হইলে খুত ও মধু দিয়া মোদক প্রস্তুত করিবে। প্রাতঃ-কালে গব্য হগ্ধ ও চিনির সহিত সেবনীয়। করিলে অভিসাব, প্রদর ও ইহা সেবন স্থতিকাদি নানা রোগ নষ্ট হয়।

অগ্রিকুমারমোদকঃ।

উশীরং বালকং মৃত্যং তুক্ পাত্রং নাগকেশরম্।
জীর্ষয়ক শৃঙ্গী চ কট্কলং পুঞ্চরং শঠা ।
ত্রিকটু বিশ্বকং ধাত্তং কাভীকললবক্ষকম্।
কপুরং কান্তলোহক শৈলজং বংশলোচনা ॥
এলাবীকং কটামাংসী রামা তগরপাত্রকম্।
সমকাতিবলা চাত্রং মুরা বক্ষং তলৈব চ ॥
অন্ত চুর্ণসমা মেণী চুর্ণার্জং বিজয়ারকঃ।
শর্কমেম্পুমংযুক্তং মোদকং পরিকল্পরেং ॥
কর্বমেকং প্রমাণক্ত ভক্ষরেং প্রতিক্ষণিতঃ।
শীত্রোয়ামুপানেন আজেন পরসাণবা ॥
গ্রহণীং ছন্তরাং হন্তি শ্বাসং কাসমতীব চ ।
আমবাত্রমানুশানেন গুলিক বিষমং জ্বরম্ ॥
বিবল্ধানাহশ্লক যকুৎমীহেনিরাণি চ ।
হন্তাষ্টাদশ কুঠানি গ্রহণ্যদোধনাশনম্ ॥
উলাবর্জগুমরোগোদ্যামন্বিশাশনম্ ॥

বেণার মৃল, বালা, মৃতা, গুড়বণ, তেজ-পত্র, নাগেখন, জীনা, ক্রফজীনা, কাঁক্ড়াশৃঙ্গী, কট্ফল, কুড়, শঠী, ত্রিকটু, বেলগুঁঠ, ধনে,

জায়ফল, লবন্ধ, কর্পূর, কাগুলোহ, শৈলজ, বংশলোচন, এলাইচ, জটামাংদী, রামা, তগরপাহকা, বরাক্রান্তা, গোরক্ষচাকুলে, অন্তর, মুরামাংদী ও বন্ধ ইহাদের প্রত্যেকের চুর্ণ দমভাগ; এই দকল চুর্ণের দমান মেথীচুর্ণ। দকল চুর্ণের অর্দ্ধেক শোধিত দিন্ধিপত্রচুণ। দকল চুর্ণের থিপ্তণ চিনি। পাকের পর মধু মিলিত করিয়া মোদক প্রস্তুত করিবে। শীতল জল অথবা ছাগহুগ্রেব দহিত প্রাত্তকালে (অন্ধ তোলা পরিমাণে) দেবনীয়। ইহা দেবন করিলে অতি কঠিন গ্রহণীরোগ, খাদ, কাদ, আমবাত, অগ্নিমান্দ্য, জীগ্রুর ও গীহা প্রভৃতি নানা রোগ নিবারিত হয়।

সল্লচুক্র-সন্ধানন্।

যমস্বাদি শুটো ভাণ্ডে সপ্তড়কৌদ্রকাঞ্জিকম্। ধাতারাশৌ তিরাত্রস্থ শুক্তং চুক্রং তহুচাতে। বিভণং শুড়মধ্বারমালমস্প ক্রমাদ বিছঃ॥

পাংস্কৃত ভাতে ওজ্ > ভাগ, মধু ২ ভাগ, কাজি ৪ ভাগ ও দিবি মাত (অথবা তক্র কিংবা নিদ) ৮ ভাগ মিশ্রিত করিয়া ধাতারাশির মধ্যে ও দিবস রাখিলে উহা বিস্কৃত ২ইয়া যায়। ঐ বিস্কৃত বস্তুর নাম শুক্ত বা চুক্র। (উক্ত মিশ্রিত জব্য কেবল গ্রীত্ম শুত্তে ও দিন ধালারাশির মধ্যে রাখিবে। অলাল শুকুতে বৃহচ্চুক্রের নিয়মামুসারে নিদিপ্রকাল রাখিতে হইবে।)

র্হচ্চু ক্রসন্ধানম্।

প্রস্থা তণ্ডুলতোয়তস্ত্রৰজলাৎ প্রস্থৃত্রেরং চায়তঃ
প্রস্থার্দ্ধং দ্বিতোহয়মূলকপলাস্তান্তী গুড়াদ্ নানিকে।
মাস্টো শোধিতশূলবেরশকলাৎ দে দিন্ধুলাল্যো প্রাধি কুন্দোয়ণয়োনিশাপলযুগং নিন্দিপ্য ভাপ্তে দৃঢ়ে।
বিদ্যোধিয়োনিশাপলযুগং নিন্দিপ্য ভাপে পৃটে।
বিদ্যোধিয়ালিশিনিহিতং জীল্ বাদরান্ স্থাপিত।
বামে ভারম্বরাত্রের চ চতুবো বর্মান্ত পুশাগমে।
বট্ শীতেইট্রিনান্সভংগরমিদং বিস্তাব্য সংচূর্ণ্যং
চাতৃজ্জাতপলেন সংহত্রিদং শুক্তক চুক্রক তৎ।

হস্তাদ্বাতককামদোধজনিতান্ নানাবিধানানথান্ ছন্মোনি চ শুলগুলাকাঠবান্ হত্বানলং দাঁপয়েং ॥

একটি দুঢ় স্থিপ্প কলনে তণ্ডুলোদক /৪ সের, কাজি বার সের, অমু দুধি /২ সের, কাজির অধঃস্থ সিটি 🖒 সের ও গুড় 🗷 সের একত্র নিক্ষিপ্ত করিয়া ভাহাতে ত্বকরহিত খণ্ড খণ্ড ेमक्रवनवन, जीता, मतिह, আলা : '২ সের, পিপুল ও হরিদ্রা প্রত্যেক ছই পল: এই সকল প্রদান করিয়া শরাব ঢাকা দিয়া উত্তমরূপে লিপ্ত করিয়া ধাতা বা যবাদি রাশির অভাস্তবে ন্তাপিত করিবে। গ্রীপ্রকালে डिनमिन. न्तरकारण जिन्नान, वर्षाकारण ८ मिन, वनछ-কালে ৬ দিন ও শতেকালে ৮ দিন পর্যাস্ত ধান্তাদির মধ্যে রাখিবে। অনস্তর ধান্তরাশির অভান্তৰ হইতে ভাও উদ্ধৃত ক্রিয়া এবং দ্বাংশ ছাকিয়া তংদহ গুড়ম্বক, তেজপত্র, এলাইচ ও নাগেশ্বর প্রত্যেক ২ তোলা উত্তম-রূপে চুর্ণিত ও মিশ্রিত করিয়া লইবে। ইহার नाम तुरु ७ उन वा तुरु हुका। এই ७४० মন্দাগ্নি প্রভৃতি নানাবিধ বোগ নষ্ট করে।

তক্রারিষ্টঃ।

বনাজানসকং পশ্যা মরিচং ত্রিপলাংশিকম্। লবণানি পলাংশানি পঞ্চ চৈকত্র চূর্ণয়েং ॥ তক্রকংসাত্মতং জাতং তক্রারিষ্টং পিবেররং। দীপনং শোষগুল্মার্শ-ক্রিমেহোদরাপহম্॥

যমানী, আমলকী, হরীতকী ও মরিচ প্রত্যেক ও পল, পঞ্চলবণ প্রত্যেক এক পল; একত্র চূর্ণিত ও ১৬ সের তক্রের সহিত।মিশ্রিত করিয়া ৪ দিন রাখিবে। ইহার নাম তক্রা-রিষ্ট। ইহা সেবন করিলে অগ্নির দীপ্তি এবং শোপ ও গুলা প্রভৃতি নানা রোগ নই হয়।

পিপ্লল্যান্তাসবং।

পিপ্ললী মরিচং চব্যং হরিক্লা চিত্রকো ঘনঃ। বিড়ক্ষং ক্রমুকো লোগ্রঃ পাঠা খাত্রোলবালুকম্ । উনীরং চন্দনং কুটং লবঙ্গং তগরং তথা।
মাংসী, সংগলা পত্রক প্রিয়স্থ নাগকেশরম্ ॥
এবামর্দ্ধপান্ ভাগান্ স্ক্রচ্নীকুতান্ শুভান্।
জলপ্রোগন্ধরে কিন্তা, দিতাং গুড়তুলাত্রম্ ॥
পলানি দশ ধাতক্যা আকা বৃষ্টিপলা ভবেৎ।
গতান্তকত সংবোজ্য মূলো ভাগে বিনিক্ষিপেং ॥
ভাগা গতরসং সর্বাং পার্রেদগ্যপেক্রা।
ক্রাং গুলোদারং কাশাং গ্রহীং পাঙ্তাং তথা।
ক্রাংগুলোদারং কাশাং গ্রহীং পাঙ্তাং তথা।

পিপুল, খরিচ, ৈচ, হরিজা, চিতামূল, মৃতা. বিজ্ঞা, স্থপারি, লোধ, আক্নাদি, আমলকী, এলবালুক, বেণার মূল, বক্তচন্দন, কুড়, লবজা, তগরপাহকা, জটামাংসী, গুড়ত্বক, এলাইচ, তেজপত্র, প্রিয়ঙ্গু ও নাগেশ্বর প্রত্যেক চুর্ব ৪ তোলা, জল ১২৮ সের, গুড় ৩৭॥০ সের, ধাইফুল দশ পল, জাক্ষা ৬০ পল ; এই সম্বায় একত্র মিশ্রিত করিয়া মৃত্তিকাপাত্রে একমাস রাখিবে। পরে উহার জবাংশ ছাঁকিয়া লইবে। অগ্নির বল বিবেচনা করিয়া মাত্রা স্থির করিবে। ইহা পান করিলে গ্রহণী প্রভৃতি অনেক বোগের শান্তিহয়।

আয়ামকাঞ্জিক্ম।

বাটান্ত দতাদ্ যবশক্ত,কানাং পুথক পুথক চাচকসংমিতন্ত্র। মধ্যপ্রমাণানি।চ মুলকানি দন্তাচ্চতু:বৃষ্টি স্ক্রিতানি॥ खार्गश्**छमः** भाग घटि ऋसीट দলাদিদং ভেষজজাতবৃক্তম। ক্ষারব্যং তুমুরুবন্তগন্ধা धनीयकः ज्ञान् विष्टिमकवक ॥ मो वह लः हिन्नु निवारिकांक हवाक मछाम् दिशलश्रमानम्। ইমানি চাম্থানি পলোমিতানি বিজ্ঞৰ্জরীকুতা ঘটে কিপেচ্চ॥ কুক্ষামজাজীমূপকু ঞ্চিকাঞ্চ তথাসুরীং কারবিচিত্রকঞ্চ। পক্ষ স্থিতোহরং বলবর্ণদেহ-বয়ন্দরোহতীববলপ্রদেশ 🛭

কান্ জীবমামীতি যতঃ প্রবৃত্তভংক জিকেতি প্রবদন্তি তর জাঃ।
অয়োমকান জ্বন্যক্ত ভক্তমাধামিকেতি প্রবন্তি টেনন্ ॥
দকে বেবং জ্ব্যানথ প্রিছান্য্
ভক্তোগমানাইমরোচকক ॥
মন্দাগ্লিতাং কোঠগতক শ্লামর্শোবিকারান সভ্যান্ত্রীংক ॥
বাভান্যানাক্ত নিহন্তি স্কান্
সংস্বামানং নিহন্তি স্কান্

(নিশ্ববদরদলিত্বনে চতুর্দণগুণজনদানাৎ সাধিতো মগু: বাট্য: তক্ত প্ল ৬৭ যবশক্তর্প ৬৪)।

নিজ্ঞষ কুটিত যব চতুর্দিশ গুণে জলে সিদ্ধ করিলে যে মণ্ড প্রস্তুত হয়, তাহাকে বাট্য কছে। সেই বাট্য 👉 সের, মবের ছাতু 🎶 সের, ১মধাবিধ মূলা (১ ও ১ ও) ৬৪ টা; এই সমুদায় এব্য পরিস্কৃত কপদে রাথিয়া তাহাতে ৬৪ সের জল দিয়া পশ্চাৎ লিখিত দ্রব্য সকল নিক্ষেপ করিবে। যথা—যবকার. সাচিকার, তুমুক, বনগ্যানী, ধনে, সৈন্ধৰ, সচল লবণ, হিন্তু, বংশপত্ৰী ও চৈ ইহাদের প্রত্যেকের চুর্ণ ২ পল; পিপুল, জীরা, সুলক্ষজীরা, রাইদর্যপ, স্ক্রক্ষজীরা, ও চিতামূল ইহাদের প্রত্যেকের চুর্ণ এক প্র। এই সমুদায় মি শ্রত করির! ১৫ দিবস কলসের মধ্যে রাখিবে। ঐ বিকৃত বস্তকে আয়াম-কাঞ্চিক কহে। আয়াম শব্দের অর্থ একপ্রহর কাল, এক প্রহরের মধ্যে ভুক্ত বস্তুকে জীর্ণ করে বলিয়া ইহার নাম আয়ামকাঞ্জিক। ইহা সেবন করিলে অগ্নিমান্যা, অকৃচি ও আনাহ প্রভৃতি নানা রোগ নিবাবিত হয়।

রসপ্রয়োগঃ।

প্রহণী কপাটো রসঃ।
রসগন্ধকরোশ্চাপি জাতীফলনবসরো:।
প্রত্যেকং শাণমানক প্রস্কৃতীকৃতং শুভষ্।
প্র্যাবর্ত্তরসেন বিষপত্রসেন চ।
শৃক্ষ্টকন্ত পত্রাণাং রসেং প্রত্যেকণা পলৈ:।

চণ্ডাতপেন সংশোষা বটিকাং কারমেণ্ডিবক্। বিৰপজ্জনেনৈব দাপজ্জেন্তিকাৰ্যন্ । দশ্ধা চ ভোজনীয়ক গ্রহণীরোগনাশন:। পাঙুরোগমতীসারং শোধংঃস্কৃতি তথা জরম্। গ্রহণীকপটেনামা রসঃ প্রমত্স ভি:॥

পারদ, গন্ধক, জায়কল, লবক, ইহাদের প্রত্যেক ॥ তর্জতোলা; একত্র উত্তমরূপে চুর্ণিত করিয়া হুড়্হুড়ে বিহুপত্র ও পানীফল পত্র ইহাদের প্রত্যেকের একপল পরিমিত রসে বথাক্রমে মর্দ্ধন করিয়া প্রচ্তু রৌক্রে ভঙ্ক করিয়া চুই রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। বিহুপত্ররদের সহিত সেবনীয়। প্রা—দ্বির সহিত জার। এই ঔষধ সেবন করিলে গ্রহনারেরাগ, অভিসার, পার্ভুরোগ, শোর্থ ভার প্রভৃতি প্রশমিত হয়।

গ্রহণীকপাটো রসঃ।

চলপন্দারগন্ধাশ্য-রমো জাতীফলং তথা।
বিবং থদিরসারশ্চ জীরকং খেতধুনকম্ ॥
কপিহন্তকবীজঞ্চ:তথৈব বকপুপাকম্ ।
এযাং শাণং সমাদায় প্রস্কুর্গনি কাররেং ॥
বিলপত্রকর্পাস-ফলং শালিকছ্মিকা ।
শালিকমূলং বুটজ-স্বচং কঞ্চপত্রকম্ ॥
সক্রেয়াং স্বরুসনেব বটিকাং কাররেদ্ভিবক্ ।
রক্তিকৈকপ্রমাণেন থাদংগদ্ দিবসত্রয়ম্ ॥
দাধনস্ত ততঃ পেয়ং পানাত্রগ্যাপতঃ ।
অপি যোগশতাকান্তাং গ্রহণামূক্তা, জরেং ॥
আমশূলং অরং কাসং খাসং শোধং প্রবাহিকাম্ ।
রক্তপ্রকর্ম জবাং কাগাং নৈবাত্র যুক্তিতঃ ॥
কৃষ্পবিভিন্নংস্যঞ্চ দ্ধি তক্রক শক্ততে ।
জ্ঞান্থা বারোঃ কৃতিং তত্র তেলং বান্ধি প্রদাপরেং ॥

সোহাগার থৈ, যবক্ষার, গন্ধক, পারদ, জায়ফল, বেলগুঠ, পারিদ, জায়ফল, বেলগুঠ, পারিদ, জায়া, খেতধুনা, আলকুশাবীজ ও বকপুষ্প ইহাদের প্রত্যেকের অন্ধ তোলা পরিমাণে একতা চুর্ণ করিয়া বিব-পত্ত, কার্পাসকল, শালিঞ্চ, ক্ষীক্ষই, শালিঞ্চন্দ্র, কুড় চিছাল ও কাঁচ ড়াপত্তের যধাসম্ভব রসে ও কাথে মর্দ্দন ক্রিয়া ১ রতি প্রমাণ বাটিকা প্রস্তুত করিবে। তিন দিবদ ঔষধ সেবনীয়;

ঔষধ সেবনের পর অর্দ্ধ পোরা দ্ধির মাত্ পান করা কর্ত্তরা। রক্তম্পাবকর দ্রব্য সেবন করিবে না। ইহাতে বায়ুর কার্য্য দেখিলে বিবেচনা পূর্ম্বক তৈল-জল ব্যবস্থা করিবে। এই ঔষধ সেবন করিলে আমশূল, গ্রহণী ও আমাশর প্রভৃতি রোগ নই হয়।

সংগ্ৰহ গ্ৰহণীকপাটঃ।

भुका अवर्गः तमभक्तिन-ম**লং কপাদিহিমুততুলাভ**াগং। সবৈদঃ সমং শহাকচ্ৰ্মত ভাবাঞ্গলেগ[ি]ত্বিষাস্থােণ ॥ গোলক কড়া মতকপ্টছা সংপাচা ভাতে দিবসার্দ্ধকক। দর্কাক শাতো রদ এম ভাবে।। मुख्यु ब्रवाकः (मृ मलीफ्रोतन्त ॥ লৌহস্য পাংশ প্ৰিভাবিতশ্চ সিছে। ভবেৎ সংগ্রহণীকবাট, । নাতোরনায়াং ম রচাজায়ক। পিতে।ভবারাং মধ্পিপ্লল ভিঃ ॥ কফে'ব্রোয়াং বিজয়'বদেন কটাব্যেশ গোৰুতো গ্ৰহণা মা कराष्ट्रात एर्निम महेश्रक एत স্মাতিসারেইক্টিপীনসে চা মেহে চ কুড়েছ গতধাতুবৰ্দ্ধনে গুঞ্জাৰ্যক^{ানি}। নহাম্যন ।

মৃক্তা, স্বর্ণ, পারদ, গন্ধক, সোহাগার থৈ,
মল, কড়িভন্ম, বিষ প্রত্যেক ১ তোলা; শুঙাভন্ম আটতোলা; এই সম্নায় একত্র কারয়া
আইচের কাথে ভাবনা দিয়া গোলাকৃতি
করিয়া হুই প্রহর পুট্পাক দিবে। অগ্নি
নির্বাণ হুইলে পর শাতলাবস্থায় ঔষধ উদ্ধৃত করিয়া লোহপাতে রাথিয়া ধুতুরা, চিতা ও
তালমূলীর রসে ভাবনা দিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। অন্ধুপান—বাতাদিকো মৃত্,
নরিচ; পিভাদিকো মধু, পিপ্ললী; এবং কফ্রদিক্যে সিদ্ধিভিদ্ধা জল বা মতসংবৃক্ত ত্রিকটু।
ইহা সেবন করিলে সংগ্রহগ্রহণী ও মতাদার প্রভৃতি বিবিধ রোগ উপশ্যিত হয়।

গ্ৰহণীশাৰ্দ্দূলবটিকা।

জা তীফলং দেবপুপ্সজাজীকুউটক্বণম্।
বিদ্বং অপেলা ধুকুবং ফণিফেনং সমং সমন্।
প্রদারণীরসেনের সংম্পা বটিকা কুতা।
ধর্মাদোলালুপানেন সেবিতা গ্রহণীং হরেং॥
নানাবনিরভীসারং দাক্ষণাঞ্জ প্রবাহিকাম্।
নামা গ্রহণীশক্ষিল-নটিকা গ্রাহণী প্রম্॥

জায়কল, লবন্ধ, জীবা, কুড, সোহাগার শে, বিট্লবণ, গুড়ন্বক, এলাইচ, ধুতুরাবীজ ও অহিফেন প্রত্যেক সমভাগ, গন্ধভাহলের রসে মাড়িরা ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। অন্তর্পান—লোমানুসারে বেলগুঠের কাথ প্রভৃতি। ইহা সেবন করিলে গ্রহণী, অতীসার ও প্রবাহিকা রোগ প্রশমিত হয়।

গ্রহণীগজেন্দ্রবটিক।।

নদাককলোহানি শৃষ্ট সপর্যেঠ্য।
শঠী হালাশমূন্তানি ধান্তভাগকদেশবন্ ॥
ধাতকাতিবিধা শুটা গৃহধুমে। হরাতকা।
ভরাতকং তেজপত্রং জাতাফললবস্থকন্ ॥
ছগোলা বানকং বিজ্ঞান কারিতা ॥
গহনানন্দনাপেন ভাষিতেরং বসায়নে।
বটা গাজনানন্দাভেলং শ্রীমতা লোকবস্থা ॥
গহনানন্দনাপেন ভাষিতেরং বসায়নে।
বটা গাজনান্দাভেলং শ্রীমতা লোকবস্থা ॥
গহলং বিবিধাং হতি জ্বাতিমারনাশিনী।
বলবর্ণগ্রিজননী সেবিতা চ চিরায়ুযে ॥
শুলগুলাম্পিতাংশ্য কামলাঞ্চ হলীমকন্।
কণ্ডং কুঠা বিস্পাধ্য গুলজাবাক্যান্দাভাত।
বয়োহাগ্রালমাবীক্ষা যুক্তা বা ফ্রাটব্রিনন্ ॥

পানদ, গন্ধক, লোই, শুজ্জুল্ম, সোহাগার নৈ, হিং, শসি, তালীশপত্র, মৃত্য, ধনে, জীরা, দৈন্ধব লবণ, ধাইফুল, আতইচ, শুঠ, ঝুল, হরীতকী, ভেলা (অভাবে রক্তচন্দন), তেজ্জু পত্র, জায়ফল, লবঙ্গ, গুড়ুহক্, এলাইচ, বালা, বেলগুঠ, নেণী ও সিদ্ধিবীজ প্রত্যেক সমভাগে গ্রহণ ও ছাগতুদ্ধে মর্দ্দন করিয়া ২ মাধা প্রমাণ বিটকা করিবে। অনুপান—ছাগতুদ্ধ। ইহাতে গ্রহণী, জাতীসার, শূল, অমুপিত্ত ও গুদ্ধংশ প্রভৃতি বেগ নষ্ট হয়। রোগির বয়স ও অগ্নির বল বিবেচনা করিয়া কিংবা মৃক্তিপূর্দ্ধক মাত্রাবৃদ্ধি করিবে।

সল্ল-গ্রহণাকপাটে। রসঃ।

দরদং গৰাপাধাণং তুগাক্ষাযাইকোনকম্। তথা বরাটিকাভন্ম সর্ব্বং ক্ষীরেণ মর্দ্ধয়েং ॥ রক্তিকাযুগ্যমানেন চ্ছায়াগুলাং বটাং চরেং। গ্রহণীং বিবিধাং হস্তি রক্তাতিসারমূলণম্॥

হিঙ্গুল, গন্ধক, বংশলোচন, অহিফেন ও কড়িন্তন্ম, এই সমুদায় দ্রবা সমভাগে লইবে এবং ছাগড়গ্ধে মাড়িয়া ২ রতি প্রমাণ বটকা করিয়া ছায়ায় শুদ্ধ করিবে। ইহা সেবন করিলে গ্রহণী ও রক্তাভিসার রোগ প্রশমিত হয়।

বৃহদ্ গ্রহণীকবাটো রসঃ।

তারমৌজিকহেমানি সারকৈকৈকভাগিক:।

বিভাগো গন্ধক: সত্ত্রিভাগো মর্দ্রেদিমান্।

কপিথস্থরসৈগাতং নগুল্প তত্ত কিপেং।
পুটেরধাপুটেনের তত্ত উদ্ধতা মর্দ্ধিং।
বলারসৈ: সপ্তধৈবমণামার্গরসৈধি।।
লোধপ্রতিবিধান্ত ধাতকীক্রবন্যতাং ন
প্রত্যেক্ষেরণ স্বাইসভাবনা স্তাং নিধা নিধা।
মাষমারো রসো দেয়ো মধুনা মরিচেত্রপা॥
হত্তি সর্বানতীসারান্ গ্রহণাং সর্বজামিন।।
কপাটো গ্রহণীরোগে রসোহমং বহিন্দাপন:॥

সাবো—লৌহং।

রূপা, মুক্তা, স্বর্ণ, লোহ প্রত্যেক ১ ভাগ, গরুক ২ ভাগ, পারদ ৩ ভাগ, এই সমুনায় করেতবেল পাভার বনে উত্তমরূপে মাজিয়া হরিণশৃঙ্গের অভ্যন্তবে নিহিত করত গরুপুটে পাক করিবে। পরে উদ্ধ উদ্ধত করিয়া বেড়েলার রুদে দাত বাব এবং আপাং, লোধ, আতইচ, মুতা, ধাইফুল, ইন্দ্রবেও গুলঞ্চ, ইহাদের প্রত্যেকের রুদে তিনবার করিয়া ভাবনা দিয়া ১ মাষা (২ রতি ব্যবহার) প্রমাণ ব্রটিকা করিবে। অনুপান—মুধু ও মরিচ চুর্ণ। ইন্থা সেবন করিলে অভিসার, গ্রহণী প্রভৃতি রোগের শান্তি এবং অগ্রির দীপ্তি হয়।

অগস্তিসূতরাজে। রসঃ।

রসবলিসমভাগং তুলাহিকুলযুক্তং বিগুণকনকবীজং নাগফেনেন তুলাম্। সকলবিহিত্চগং ভাবরেন ভুকানীরে-গ্রিজনবিশোষে স্তরাজো ফ্রাভাঃ॥

কজ্জলী ১ ভাগ, হিদ্দুল ১ ভাগ, ধুভূরাবীজ ২ ভাগ, অহিফেন ৪ ভাগ , এই সকল ভীম-রাজ রসে মর্দ্ধন করিয়া গ্রহণী প্রভৃতি রোগে প্রয়োগ করিবে।

অগ্রিসূত্রসঃ।

ভাগো দক্ষকপৰ্দ্দকস্ত চ তথা শহাস্ত ভাগদন্তং ভাগো গন্ধকস্তরোমিলিতরোঃ পিষ্ট্রা মরীচাদশি। ভাগস্ত ত্রিতরং নিষোজ্য সকলং নিম্বুরসে চুর্গিতং নামা বহিন্দ্রতো রসোহয়মচিরাক্ষান্তং জয়েন্দারুণম্॥

যুতেন থঙাৎ পহ ভদিতেন
কীণান্ নরান্ হতিসমান্ করোতি।
সমাগধীচূর্ণযুতেন লীচুঃ
নর: প্রম্কেদ্গংলী বিকারান্॥
শোষভারারোচকশুলগুলান্
পাঙ্দবাশোগংলীবিকারান্।
ভকানপানো ভাষতি প্রমেহান্
যুক্র। প্রযুত্তাংহিস্তা রসেক্রঃ।

কভিন্ন ১ ভাগ, শঙ্গভন্ম ২ ভাগ, কজ্জা ১ ভাগ, মি চিচ্বি ৩ ভাগ, এই সকল কাগ জা লেবুর রদে মদন করিয়া উপযুক্ত প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত ও চিনির সহিত ইহা সেবন করিলে ক্লীণ মানব হস্তিভুলা স্থল ও বলবান হয়। গ্রহণীবোগে ভোট এলাইচের গুড়া ও ম্বত অমুপানে প্রয়োগ করিবে। তক্ত অমুপানের সহিত এই ঔষধ সেবন করিলে শোষ, জ্বন, অরোচক শূল, গুলা, পাড়, উদ্বা, অর্শা, গ্রহণী ও প্রমেহ প্রস্তুতি গোগ নিবারিত হয়।

অগ্রিকুমারো রসঃ।

রসং গদ্ধং বিবং ব্যোবং টক্সণং লোহভত্মকম্। অজমোদাহিকেনঞ্চ সর্বভূল্যং মৃতাত্রকম্ ॥ চিত্ৰক'ল কৰায়েণ মৰ্দ্দয়েদ্ ৰামমাত্ৰকম। মরিচাকাং বটাং থাদেদজীৰ্ণং গ্ৰহণীং তথা। নাশরেয়াত্র সন্দেহো গুহুমেতচ্চিকিৎসিতম।

পারদ, গদ্ধক, বিষ, ত্রিকটু, সোহাগার থৈ, লোহ, বন্যমানী, অহিফেন প্রত্যেক সমভাগ, সর্বসমান অভ্র। চিতার কাথে এক প্রহর মর্দ্দন করিয়া রিচের স্থায় বটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। অগ্নিকুমার সেবনে অজীণ ও গ্রহণীরোগ নষ্ট হয়।

জাতাফলান্তা বটা।

জাতীকলং উসপমলকক ধৃত্ববীজং সমভাগচুণ্।
ভাগৰ্মং ভাদহিকেনকভ গৰালিকাপতারসেন নৰ্দান ।
চণপ্রমাণা বটিকা বিধেয়া মধুপ্রযুক্তাং গ্রহণাগদের।
রোগের দ্ভাদন্পা-ভেদের জ্যা বিদ্যাদি চিসারবহ্ন ।
সামের রক্তের সম্পাক্র পারে বপকের গুলামারর।
পথাং সদধ্যাদনমত দেয়ং রসোভ্যোভ্যং গ্রণাকপাটাঃ।

জারফল ১ ভোলা, সোহাগার থৈ ১ তোলা, অন্ত্র ১ তোলা, বুচুরাবীজ ১ তোলা, বুচুরাবীজ ১ তোলা, অহিফেন চুই তোলা: এই সমুনার একত্র গন্ধভাহলে পত্রের রসে মর্দান করিয়া চনক প্রমাণ বটিকা করিবে। গ্রহণীরোগে অনুপান—মধু। অতিসার্হক অন্তান্ত রোগে দোষ বিবেচনা করিয়া অনুপান ব্যবস্থা করিবে। পথ্য—দ্ধি ও অন্ন।

জাতীফলাগা বটিকা।

বিশুদ্ধতে ৮ চ গদ্ধক প্র প্রত্যেক্শো মারচভুইয়ন্ত।
বিধার উদ্ধোপলপাত্রমধ্যে ফুকজ্বলীং বৈপ্রবরঃ প্রযুগ্রং ।
লাতীকলং শাল্মলিবেইমুন্তং সটসপং সাভিবিদং সঞ্জীরন।
প্রত্যেকমেষ্ণ মরিচন্ত্র পাণ-প্রমাণমেকং ।বনমায়কঞ ॥
বিচূর্ণ্য সর্বাণ্যবলোভ্য পশ্চাদ্বিভাবয়েৎ প্রভেবেরমীযাম।
১ প্রাণিকেন্সাশনকঃ সঞ্জয় জয়ন্তিকা দাড়িমকেশরাকো।
অবিদ্ধকর্ণাপি চ ভুঙ্গরাকো। বিভাব্য সম্যানিকা বিধেয়া।
কোলান্থিমানা চ বহুপ্রকারং সামং নিহস্তাত্র ব্যাস্থানিন্।
ক্যাদ্ বিশেষাদনলাবলম্বং কাসঞ্চ পঞ্চায়কমন্ত্রপিন্।
হয়ং নিহস্তি গ্রহণাং প্রদ্ধাং মন্ত্যক্ত জার্থহণীমসাধানে।

পত্ৰ অভ্ৰক্ত স্তক্তেতাপি কচিৎ পাঠ:।

চিরোঙ্কাং সংগ্রহকোঠছুটিং
শোধং সমগ্রং গুদজানসাধ্যান্।
আমাত্মবন্ধতিসারমুগং জয়েদ্ ভূশং বোগশতৈরস:ধ্যম্॥
বিবৰ্জনীয়াবিহ ভূষমৎক্তা মৎক্তত্ত্বপা পাওরবর্ণ এব।
রস্তাফলং মূলমবৌদনঞ্চ ব্বৈবিধেয়ং ন কদাচিক্ত ।

জাতীফলান্তা বটিকা বিধেয়া যগে:হর্ষিনো বৈন্তবরক্ত জন্তা॥ অনেকসম্ভাবিতমর্ক্তালোকা নানাবিধব্যাধিপয়োধিনৌকা॥

পানেদ ৪ মাষা, গন্ধক ৪ মাষা, (কেই কেই ইহার সহিত অত্র ৪ মাষা দিতে বলেন)
একত্র মন্দন করিয়া কজ্জলী করিবে। পরে
জায়ফল, মোচরস, মৃতা, সোহাগা, আতইচ,
জারা ও মরিচ ইহাদের প্রভ্যেকের অর্দ্ধ
তোলা, বিষ ১ মাষা; এই সকল দ্রব্য চূর্ণ
করিয়া নিসিন্দাপত্র, গেদ্রিগত্র, জামপত্র,
জয়স্তীপত্র, দাড়িমপত্র, কেশুরিয়াপত্র, আক্নাদিপত্র ও ভূসরাভপত্রের রুলে ভাবনা দিয়া
ও মন্দন করিয়া কুলের আঁটির প্রায় বটিকা
বান্ধিবে। ইহাতে গ্রহণী প্রভৃতি নানা রোগ
নন্ত হয়। এই ওষ্ণ দেবন কালে ভাজা নংখ্য,
পাগুরবর্ণ মংখ্য, রুখা, মুলা প্রভৃতি দ্রব্য
সকল নিতান্ত অপ্রা জানিবে।

মহাগরকম্।

রসগন্ধক্ষো কয় প্রাঞ্জেকর হংশাবিতন্।
তঠা কজালকার কৃষ্ণ মুদুপাকের সাধ্যের ॥
জাত্যাঃ ফলং তথা কোবং লবজারিষ্টপাত্রকে। *
এতেবাং করমাত্রের তোগের সহ মর্জারের ॥
মুজাগৃহে পুন: স্থাগাঃ পুটপাকের সাধ্যের।
গলকে বাহিলিগুরা পুটনাধ্য নিধাপারের ॥
গুলাগট্ক প্রাণাণের প্রতার কিলাগায় মহেন্বন্য ॥
গুলাগট্ক প্রাণাণের বলবর্গপ্রসাদনন্।
দুর্কারের প্রহ্লীরোগাং, জয়ত্যের প্রবাহিকান্ ॥
প্রতার প্রহ্লীরোগাং, জয়ত্যের প্রবাহিকান্ ॥
প্রতার ক্রানার দিলালার পে বিধাতকাঃ ॥
ব্রত্যেবিবর্গিতির তির সামার তাজস্তি ৫ ।
বালানার গদ্মুজানার প্রীণাকালি বিশেষতঃ ॥

সিন্ধুবারদলদৈব এলাবাজং তথৈব চ। ইত্যধিক,
 পাঠে কচিৎ।

রসগন্ধকমেতদ্বি সর্কব্যাধিবিনাশন্।
বিনা পাকেন সর্কাঙ্গ-হুন্দরোহয়ং প্রকীর্বিতঃ ॥
রসগন্ধকয়োঃ প্রত্যেকং কর্মঃ, জাতিফলাদীনামপি
চতুর্নাং প্রত্যেকং কর্মঃ। কজ্ঞলীং জলেন পরবং কৃছা
লৌহদর্বিকায়াং স্বেদয়িয়া ততঃ সর্কমেন্দীকৃত্য জলেন
পিষ্ট্রা একত্মিন্ মৃত্যাগৃহে উষধং সংস্থাপ্য অপরেশঃছোল্প
কদলীপত্রেণ বেষ্টয়িছা ঘনপঙ্কেন আলিপ্য করীবায়েম ধ্যে
সংস্থাপ্য বদা বহিরারক্ততা ভবেৎ তদৈবাকুষ্য গ্রাছঃ।
বধাবাধামুপানং, রক্তিকাঃ বট্ ধান্তাঃ। বালকানামুদরাময়াদাবতিপ্রশন্ত্য

পারদ ২ তোলা, গন্ধক ২ তোলা একত উত্তমরূপে মর্দন করিয়া কজলী করিবে। ो कड़नी जरन গুলিয়া পদ্ধবৎ করিয়া লোহপাত্রে কিঞ্চিৎ উষ্ণ করিবে এবং তাহার সহিত জায়ফল, জয়িত্রী, লবজ ও নিম্বপত্র (কেহ কেহ ইহাব সহিত নিসিনাপত্ৰ ও এলাইচ চুণ প্রভাকে ২ ভোলা (দতে বলেন) প্রত্যেক চুর্ব ভোলা মিলিত করিয়া মন্ধন করিবে। পশ্চাৎ এই ঔষণ একখানি ক্ষিত্রকের মধ্যে স্থাপিত ও অপর একথানি স্মিপুক উহার উপরিভাগে আচ্চাদিত করিয়া কল্লীপত্রে বেইন ও পদ্ধ দারা লেপন করিয়া ঘুটের অগ্নিতে পুটপাক দিবে। ঈষং বক্তবর্ণ হইলে অগ্নিহইতে উদ্ধৃত করিষা ঔষধ মুক্তন কৰিয়া লইবে। মাত্র-ভরতি প্র্যান্ত। ব্যাধি অন্ত-সারে অনুপান ব্যবস্থা করিবে। এই ঔষ্ধ্য সেবন করিলে গ্রহণী, অভিসার, হৃতিকারোগ, কাস, খাস, বালৱোগ ও জর প্রভতি নানা রোগ উপশ্মিত হয়। বিশেষতঃ ইহা বালকগণের উদরাময়াদি রোগে অত্যন্ত উপকার করে। এই ঔষধ পাক না করিয়া প্রস্তুত কবিলে স্কাঙ্গস্থলর নামে অভিহ্ত হয়।

শ্রীবৈদ্যনাথবটিক।।

রসন্ত শাণং সংগৃহ্ণ কাঞ্জিকেন তু শোধরেৎ।
চিত্রকন্ত রসেনাপি ত্রিফলায়ান্ট বুদ্ধিমান্॥
রসার্জ্ঞং গন্ধকং শুদ্ধং ভূকরাজরসেন বা।
দ্বাভ্যাং সংমৃদ্ধিনং কুতা স্বরুসৈঃ শাণসংহিতৈঃ॥

থলমেৎ তু শিলাখণ্ড ক্রমশো বক্ষ্যমণিজৈ।
নিও ভীমতুকীখেতা-কুচেলাগ্রীম্মক্লরৈ।
ভূক্ষাহকেশরাজৈশ্চ জয়েল্রাশনকেৎকটৈ:।
সর্বপাজাং বটাং কুত্বা দক্তাৎ তাং গ্রহণীগদে।
সামবান্থেইয়িমান্দ্যে চ জরে দ্রীহোদরের চ।
বাতরেম্মবিকারের তথা রেম্মগদের চ।
দিবিমন্ত বিনিক্ষিপ্য মর্দারিতা বধাবলম্।
দাতব্যা ভড়িকাং সপ্ত রোগিণে গ্রহণীগদে।
অম্তক্রাদিসেবান্ত কুবীত বেচছরা বহু।
জীমতা বৈজ্ঞানাথেন লোকান্ত্রহকারিণা।
স্বপ্লান্তেরং ভাবিতা লিখিতাপি চ।

অর্দ্ধ তোলা পারদ লইয়া কাঁজি, চিতার বদ ও ত্রিফলার কাথে শোধন করিয়া ভূলরাজরদে শোধিত গল্ধক ২ মাষা উহার সহিত্ত মিশ্রিত করিবে; পবে তাহা যথাক্রমে নিসিন্দা, থান্কুনী, খেত অপরাজিতা, আক্নাদি, গিমা, ভূলরাজ, কেশরাজ, জয়ন্তী, দিল্লিপত্র ও ওক্ডা প্রত্যেকর অর্দ্ধতোলা পরিমিত রদে মন্দন করিয়া দ্বপ প্রমাণ বটিকা করিবে। গ্রহণীরোগে একবারে ৭ বটিকা প্রযান্ত দেবনীয়া অনুপান—দ্ধির মাৎ। প্র্যান্ত ক্রোন্দ। ইহা সেবন করিলে অহিমান্দ্র, জব ও গ্রীহা প্রভাত প্রশ্নিত হয়।

খদপ্ৰ-বটা।

গবেষ্টকাইনিজান্তাম বিরব্দকেন চ।
কেপ্রির পার্রকৈব ক্ষার্থিত জার ধৃতম্ ॥
কুজরার্রকে ভার কেন্দ্র ক্ষার্থিত ।
স্বাভাবিকজনিকার কুলা বিবারকার
ক্ষার্রকারে চাপি রাখি ক্রার্থিত আ
ক্ষার্রকারে চাপি রাখি ক্রার্থিত আ
ক্ষার্থিত সামরাজীরসে তথা।
কল্পরিকারে রসে চ পরিভাবিতম্ ॥
রসমানসমানেন ছলায়ায়াং শোব্যেদ্ ভিষক্।
সর্বপাভাশ্য ভড়িকাং কার্যেৎ কুশলো ভিষক্।
ততঃ সপ্ত বটার্দ ভারিক্র ক্লোভার্যার ।
নিত্যার দ্রা চ ভেজেন্য কোইন্ত্রিনিস্ক্রে ॥
অহণীমতিসারক জ্বলোক্ষ নাশ্রেই।
অ্যিণাত্য করং শ্রেষ্ঠনামপ্রিকাহ্রম ॥

ইষ্টকচ্ণ, হরিদ্রাচ্ণ ও ঝুল ছারা শোধিত পারদ ১ তোলা এবং ভূজরাজের রসে শোধিত গদ্ধক ১ তোলা একত্র মর্দিত করিয়া কজ্জলী করিবে। পরে নিসিন্দাপত্র, থান্কুনী, কেশু-রিয়া, গিমা, অপরাজিতা, সোমরাজী ও রক্ত-চিতাপত্র, ইহাদের প্রত্যেকের ১ তোলা পরিমিত রসে ভাবনা দিয়া ছায়ায় শুক্ষ করত সর্বপ প্রমাণ বটিকা করিবে। দধির মাতের সহিত ৭ বটী সেবনীয়। ইহাতে গ্রহণী, অতিসার ও জর প্রভৃতি রোগ বিনষ্ট হয়। দধির সহিত অয় ভোজন করিবে।

অভ্ৰবটিকা।

অথ গুরুত্ত পুরুত্ত গুরুক্তা ভ্রকতা 5। প্রত্যেকং কর্মনানন্ত প্রত্যং রসগুণৈষিণা। **७** : कब्ब निकार कुछा (बाग्रहर्नर धान्ने भएर । কেশরাজস্ত ভঙ্গপ্ত নিগু গুটাশ্চিত্রকস্ত চ**।** গ্রীমপ্রক্ষাথ জয়ন্তাঃ ধরসং তথা। মঙকপর্ণাঃ সরসং তথা শক্রাশনভাচ। বেতাপরাজিত/যাশ্চ স্ববসং পর্বসন্থা দাপয়েৎ তত্র তুলাঞ্ বিধিজ্ঞ. কুশলো ভিষক্॥ রস্তুল্যং প্রদাতব্যং চুর্ণং মরিচস্**ন্ত**বম্ । দেয়ং রসার্দ্ধভাগেন চর্ণং টক্রণসম্ভবম ॥ শুভে শিলাময়ে পাত্রে ঘর্ষণীয়ং প্রযন্ততঃ। শুদ্ধমাতপদংযোগাদ বটিকাং কারয়েদভিষক। কলায়ণরিমাণান্ত থাদেৎ তান্ত প্রবত্নতঃ। দৃষ্ট্র বয়•চাগ্রিবলং যথাব্যাধ্যসুপানত: ॥ হ**ন্তি কাসং ক্ষ**ং স্থাসং বাতলেম্ভবং রুজ্য। পরং বাজীকর: শ্রেষ্ঠো বলবর্ণাগ্মিবদ্ধন: ॥ ব্দরে চৈবাতিসারে চ সিদ্ধ এব প্রয়োগরাট। নাতঃ পরতরঃ শ্রেটো বিস্তাতেহজ্রসায়নাৎ । ভোজনে শয়নে পানে নান্তাত্র নিয়ম: কচিৎ। দ্ধি চাবশুকং ভক্ষাং প্রাহ নাগার্জনো মুনি:। ওদ্ধরসকর্ব: ১, ওদ্ধগদ্ধকর্ব: ১ : কচ্চলীং কুড়া জারি তাত্রকর্ম: ১, মরিচচুর্বর্ধঃ ১, টঙ্গণকারতো ১,

পারদ ২ ভোলা ও গদ্ধক ২ ভোলা একত্র কজ্জনী করিয়া তা্হার সহিত অভ্র ২ ভোলা, ত্রিকটুচুর্ণ ২ ভোলা, মরিচচুর্ণ ২ ভোলা, সোহা-গার থৈ ১ ভোলা মিশ্রিত করিয়া কেণ্ডরিয়া,

মিশ্রীকৃত্য কেশরাজাদীনাং স্বর্সকর্ষঃ ২, ততম্ছায়াওকাং

বটীং কারয়েৎ।

ভূকরাজ, নিসিন্দা, চিতা, গিমা, জন্মন্তী, থ্ল্কুড়ি, সিন্ধি, শ্বেত অপরাজিতা ও পান, ইহাদের প্রত্যেকের ২ তোলা পরিমিত রসে
ভাবনা দিয়া এবং রৌদ্রে শুক্ষ করিয়া মটর
প্রমাণ বটিকা করিবে। বয়স, অয়ি, বল ও
ব্যাবি বিবেচনা করিয়া অয়ুপান ব্যবস্থা
করিবে। পথ্য—দিবি প্রভৃতি। এই ঔষধ
সেবন করিলে অতিসার, জর, বাতশ্রেমব্যাধি
ও ক্ষয়কাদ প্রভৃতি নানা উৎকট রোগ বিনষ্ট
হয়। ইহা শ্রেষ্ঠ বাজীকরণ।

গ্রহণীকপাটো রসঃ।

গিরিজাভববীজকজ্ঞলীং পরিমর্দ্যার্দ্ররদেন শোরিতা।
কুটজ্ঞস্য তু ভক্ষনা পুনর্দ্ধিগুণেনাথ বিমর্দ্ধা মিপ্রিতা।
মর্দ্দিরির প্রদাতবামস্য গুঞ্জাচতুষ্ট্রয়ম্।
অঙ্গালীরেণ দাতবাং কংপেন কুটজস্য বা।
যুবং দেয়ং মস্রস্যা বারি ভক্তথ শীতলম্।
দগ্গা সহ পুনদে য়ং প্রাস্যাদৌ রক্তিকাম্বরম্।
বর্দ্ধরেদশপ্যান্তং হ্রাসয়েৎ ক্রমশস্ত্রপা।
নিহস্তি গ্রহণীং সর্কাণ বিশেষাৎ কুক্রমার্দ্দিবম্॥

গদ্ধক ও পাবদেব কজ্জলী আদার রসে
মাড়িয়া শোষণ করিবে। পুনরায় দিগুণ
কুড় চিভস্মের সহিত মিশ্রিত করিবে। মর্দিত
হইলে ৪ গুল্ধা পরিমিত বটী প্রস্তুত্ত করিবে।
অনুপান —ছাগীহগ্ধ কিংবা কুড় চির কাথ।
পথ্য—মস্বরের যুয়, জল ও শীতল অন্ন। প্রথম
গ্রাদে দ্বির সহিত ২ রতি পরিমাণে ঔষণ
প্রয়োগ করিবে। এইরপে দশ রতি
পর্যান্ত বাড়াইয়া ক্রমশঃ ২ রতি করিয়া
ক্রমান্তবে। ইহাতে স্বরপ্রকার গ্রহণীরোগ
উপশ্যিত হয়।

বিলয়া বটিকা।

হাটকং রজভং তাত্রং যগুত্র পরিদীয়তে। বিজয়াখ্যা তুসা জ্ঞেয়া সর্ববোগনিস্পনী॥

গ্ৰহণীকপাট বদে স্বৰ্ণ, বজত ও ভাত্ৰ দিশে বিজয়া বটকা প্ৰস্তুত হয়। ইহা সৰ্ব্যোগৰিনাশক।

शौयृषवङ्गीत्रमः । .

সূতকং গলকঞাত্রং ভারং লোহং স্টক্রণম। রসাঞ্চনং মাক্ষিকঞ্চ শাণ্মেকং পথক পথক॥ লবঙ্গং চন্দনং মৃন্তং পাঠা জীরকধান্তকম্। সমকাতিবিধা লোধ্য কুটজেপ্রথবং ওচম ॥ जा औकतः विश्वविद्याः कनकः माध्यिष्टम्य । সমঙ্গা ধ'তকী কুঠং প্রত্যেকং রসসন্মিত্র ॥ ভাবয়েৎ সর্ব্বমেকত্র কেশরাজরসৈঃ পুন:। চণকাভা বটী কাৰ্য্য। চছাগীত্ৰধেন পেৰিতা॥ অবুপানং প্রদাতবাং দশ্ধবিধ্যমং শুড়ম। অ গ্রীদারং অরং তীব্রং রক্তান্তাদারমূরণম । গ্রহণীং টিরজাং হস্তি শোথং ত্রন মিকং তথা। আমশুলবিবদ্দাং সংগ্রহগ্রহণীহরম ॥ **शिष्टामरमायः वि**विधः शिशामामाहरताशकम्। হুল সারোচকচ্ছ দি-ওদলংশং সুদারণম । প্রাপ্রমতাসারং নানাবর্ণং স্বেদন্য। ক্রকারণক পীতক মংস্থাবনস্ত্রিভ্য ॥ প্লীহন্তল্মেদেরামাহং স্থতিকারোগসম্বন। অসুগ্দরং - হস্তোব বন্ধানাং গর্ডদঃ পরঃ॥ কামলাং পাঙুরোগঞ্চ প্রমেহান্পি বিংশতিম্। এতানু সর্বান্ নিহস্তাপ্ত মাসাদ্ধেনাত সংখয়:॥ পীয় বল্লী বটিকা অখিজ্যাং নিশ্মিতা পুরা। কপ্রপায় দদেহবিভাগে ততঃ প্রাপ প্রজাপতি: ॥ ধন্নস্তবিস্তান্ত: প্রাপ দৈবতানাং পতিস্তান্ত:। পরন্পরাপ্রাপ্ত এব রদক্তিলোকাছল ভঃ॥

পারদ, গন্ধক, অত্র, রৌপা, লৌহ, সোহাগা, রসাঞ্জন, স্বর্ণমাক্ষিক, লবঙ্গ, রক্তচন্দন, মৃত্যা, আক্নাদি, জীরা, ধনে, বরাহক্রাস্তা, আতইচ, লোধ, কুড্চিছাল, ইন্দ্রব, গুড়ত্বক্, জারফলা, গুঠ, বেলগুঠ, ধুতূরাবীজ, দাড়িমছাল, বরাহক্রাস্তা, ধাইফুল ও কুড় প্রত্যেক অর্দ্ধতোলা; এই সমূর্দ্ধ দ্রব্য একত্র করিয়া কেশুরিয়ার রুসে ভাবনা দিয়া এবং ছাগাহুদ্ধের সহিত্ত পেষণ করিয়া চণকবং বটিকা করিবে। বেল পোড়া ও গুড়ের সহিত্ত সেবনীয়। ইছারক্রাতীসার, গ্রহণী ও রক্তপ্রদর্গদি নানা রোগে ব্যবস্থেয়।

শ্ৰীনৃপতিবল্লভঃ। জাতীফলনবদাল-ঘনোলাটলনামঠদ। জীনকং তেলপত্মক যমানীবিখনৈৰবদ্॥

লৌহমত্ৰং রসো গন্ধন্তাত্ৰং প্ৰত্যেকশঃ পলম্ । মরিচং বিপলং দরা চ্ছাগাক্ষীরেণ পেরয়েৎ ॥ ধাত্রীরসেন বা পেষাং বটিকাঃ কুল্ল যত্নতঃ। জ্ঞীমলাহননাথেন বিচিন্তা পরিনির্দ্মিতঃ 🛊 স্থাবৎ তেজ্সা চারং রসো নুপতিবল্প:। অষ্টাদশবটীং খাদেৎ পবিত্রঃ সুযাদর্শক: । इक्षि नन्याननः जन्नभागामावः विक्षिकाम्। প্লীহগুলোদরাজীলা-যকুৎপাওতকামলাম্। काक्रुबर कर्शनाक भाषानुबर उरेश्व है। কটিশুলং কৃষ্ণিশুলম।মাহমষ্ট্ৰালকম ॥ কাসবাসামবাতাংক লীপদং শোধমৰ্ক্ত দম গলগভং গভমালামমপিত্রক গর্দভাম ॥ ক্রিমিকুণ্ঠানি দক্ষণি বাতরক্তং ভগন্দরম। উপদংশমতীসারং গ্রহণার্শ:প্রমেছকম 🛭 অশ্বরীং মৃত্রকুচ্ছক মৃত্রাঘাতং হদাকণ্ম। ব্বরং জীর্ণং তথা পাঙং তন্তালসাং ভ্রমং রুম্ম। দাহক বিদ্ৰবি" হিকাং ভ্ৰডগদাদমকতাম। মৃচঞ্চ শ্বরভেদক এপ্লবুদ্ধিবিদর্শকান ॥ উক্তম্ভং রক্তপিত্তং গুদত্রংশারুচিং ওয়াম। কৰ্নাসাম্থোথাং 🕫 দন্তরোগাং 🅫 পীনসান্॥ रहोलाक मी छिनाडक इ'वर्गामिवर्गान b। বাতপিত্ৰককৈ আংশ্চ ছন্ডজান সালিপাতিকান ॥ সর্বানের গদান হত্তি চণ্ডাংগুরিব পাপহা। বলকর্ণকরো হৃত্য অ'গুযো বার্থাবর্জনঃ ॥ পরং বাজীকরঃ শ্রেষ্ঠ: পটুদো মন্ত্রনিদ্ধিদঃ। অরোগী দার্ঘঞানা স্যাদ্ রোগী রোগাৎ প্রান্চাতে। রসস্যাস্য প্রসাদেন বৃদ্ধিমানু জায়তে নর:॥

জারদল, লবঙ্গ, মুতা, গুড়হক্, এলাইচ, সোহাগাব থৈ, হিন্ধু, জারা, তেজপত্র, ধমানী, গুঠ, নৈরূব, লোহ, অল, পারদ, গন্ধক, তাম প্রত্যেক এক পল, মঞ্চি ২ পল, এই অষ্টাদশ দ্রব্য ছাগছগ্রে বা আমলকীর রসে মাড়িয়া (অন্ধ্যানা পরিমাণে) বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ সেবনে অগ্নিমান্যা, গ্রহণী, শূল, কাদ, শ্বাদ, শোগ, ভগন্ধর, উপদংশ ও গুল্প প্রভূতি নানারোগ প্রশমিত এবং বলবীব্যাদি বৃদ্ধিত হয়।

রুহন পবলভঃ।

রসগন্ধকলোহান্ত্রং নাগং চিত্রং ত্রিবৃৎ সমষ্। টঙ্গং জাতীকলং হিন্দু ত্রেলান্দলবঙ্গকম্॥ ভেলপত্রমলালী চ বমানী বিবলৈশ্বন্।
প্রভাকং চোলকং চূর্ণং তথা মরিচচারয়ো: ॥
নির্ম্থকমূতং হেম তথা শালনারিক্তক্।
ভারিপ্তা প্রদানবার থাজ্যাল্চ শ্বরসৈতথা ॥
ভাবিদ্বা প্রদানবার মাব্যপ্রমাণতঃ।
ভক্ষরের প্রাত্তকথার পথাং ভক্ষেদ্ যথোচিত্র্॥
অগ্নিমাল্যমলীর্ব্ন প্রনামগ্রহীং জয়ের।
ভাষালীর্বপ্রমান স্ক্রোগনিস্বনঃ।
নাশয়েদীনরান্ রোগাল্ বিষ্চ্চমিবাস্থরান্॥
গ্রন্থরেহ্স্য রাজব্রভ ইতি সংজ্ঞা।

পারদ, গদ্ধক, লোহ, অল, সীসা, চিতামূল, তেউড়ীমূল, সোহাগার থৈ, জায়ফল, হিন্ধু, গুড়হক্, এলাইচ, মূতা, লবক্ষ, তেজপত্র, জীরা, হ্যানী, শুঠ, সৈদ্ধর, মরিচ ও রৌপ্য প্রত্যেক > তোলা, স্বর্ণ >২ রভি; এই সমুদার জব্য আদার ও আমলকীর রসে তাবনা দিয়া ২ মাষা (ব্যবহার অর্দ্ধ মাষা) প্রমাণ বটিকা করিবে। এই ঔষধ প্রাত্ত:কালে সেবনীয়। ইহাতে গ্রহণী, অজ্ঞীর্ণ, অগ্নিমাল্য ও সর্বপ্রকার পেটের পীড়া বিনষ্ট হয়।

পূর্ণকলা বটিকা।

রসং গৰং থবং লৌহং ধাত্তলীপুশনিবকন্।
বিষং কুটপ্রবাজক পাঠাজীরকধান্তকন্।
রসাপ্তবং উপ্রবাজক পাঠাজীরকধান্তকন্।
রসাপ্তবং উপ্রবাজক পাঠাজীরকধান্তকন্।
অল্লাংশক ফলং প্রাফ্তং প্রত্যেকং তোলকত্রম্।
ভেকপণী পঞ্চমূলী বলা কণ্টদাড়িমন্।
শূলাটং কেশরো অমু দ্বিমন্ত জয়স্তিকা।
কেশরাজং ভূকরাজং প্রত্যেকং তোলক্রমন্।
দ্বিমাবা বিটিকা কার্যা তক্রেণ পরিবেবিতা।
ইরং পূর্বকলা নাম গ্রহণীগদনাশিনী।
শূলদ্বা দাহলমনা বহিদা অবনাশিনী।
ল্যাক্রমিতিদ্বকরী সংগ্রহগ্রহণীং জয়েও।
পূর্বকলাবটিকারাং খনং মুক্তকম্। এবামল্রাস্তানাং
প্রত্যেকং কর্মানম্। কলং ত্রিদলা। তচ্চ প্রত্যেকং
তোলকত্রম্যিতি। পঞ্চমূলী বল্পা পঞ্সূনী।

পারদ, গদ্ধক, মুতা, লৌহ, ধাইফুল, বিব, বিষ, কুড়্চিবীজ, আক্নাদি, জীরা, ধনে, রসাঞ্চন, সোহাগা, শিলাজতু ও অত্র প্রত্যেক ২ তোলা, ত্রিফলা প্রত্যেক তিন তোলা, থান্কুনী, স্বর্গঞ্মূলী, বেড়েলা, কাঁচড়াদাম, দাড়িম, পাঁনিফল, নাগকেশর, জাম, দধির মাত, জরস্তী, কেন্তর্প্তে, তীমরাজ প্রত্যেক ২ তোলা; একত্র করিয়া ২ মাঘা পরিমাণে বটকা করিবে। অফুপান—বোল। ইহা সেবন করিলে গ্রহণী, শূল ও জ্বর প্রভৃতি রোগ বিনষ্ট হয়।

বজকপাটো রসঃ।

পারদং গন্ধককৈ অধিকেনং সমোচকম্।

ক্রিকটুক্রিকলা তৈব সমমেকত্র কারত্বেং ॥
ভঙ্গভুগত্রগৈকৈতদ্ ভাবরেচ্চ পুনঃপুনঃ।
রক্তিত্রিং তত্তকান্ত মধুনা সহ ভক্ষরে।
অসাধ্যাং গ্রহণীং হস্তি রসো বক্সকণাটকঃ॥

পারদ, গন্ধক, অহিফেন, মোচরস, ব্রিকটু, ব্রিফলা; এই সকল দ্রব্য সমভাগে মিলিত করিয়া সিদ্ধি ও ভীমরাজের রঙ্গে ৭ বার ভাবনা দিবে। ৩ রতি পরিমাণে বটা প্রস্তুত করিবে। অনুপান—মধু। ইহাতে ম্যাধ্য গ্রহণীরোগও উপশ্যিত হয়।

বড়বামুখো রসঃ।

গুদ্ধত্য সমং গদ্ধ মৃত্তামাত্রটিকপ্য।
সামুক্ত ববকারং সক্ষিনেদ্বনাগরম্ ॥
সপামার্গক চ কারং পলাশবরণক চ।
প্রত্যেকং স্ততুল্যং ক্তাদ্রযোগেন মন্দরেৎ ॥
ছক্তিগুজীতবৈশ্চামৌ মন্দির্দা পুটেনপু।
মাৰ্মাত্রং প্রদাতব্যো রনোধরং বড়বামুখঃ ।
গ্রহ্নীং বিবিধাং ছক্তি সংগ্রহগুলীং অরম্ ॥

শোধিত পারদ, গন্ধক, মারিত তাম, অল্ল, দোহাগা, কর্কচলবণ, যবক্ষার, দাহিক্ষার, সৈন্ধব, শুঠ এবং অপামার্গ পলাল ও বঙ্গণের ক্ষার প্রত্যেক বস্তু পারদের সমান গ্রহণ করিয়া কাঁজিতে মর্দিত করিবে। পরে হাতে-শুঁড়ার রসে মর্দন করিয়া লবু পুঁট দিবে। পরিমাণ ১ মাষা পর্যান্ত। ইহাতে গ্রহণী, কর ও সংগ্রহগ্রহণী উপশমিত হয়।

रःम्पाष्ट्रेनी ।

ন্ধকপদ্দলন্ পিষ্ট্,। ক্রাষণং টক্রণং বিষয়।
গন্ধকং গুদ্ধস্থ তুলাং ক্রমীর ক্রিবিং॥
নদিয়েদ্ ভক্রেরাষং মরিচাল্যং লিছেদন্।
নিছন্তি এইণীরোগং পথাং তক্রোদনং হিতম্
কভিত্তম, শুঠ, পিপুল, মরিচ, সোহাগা,
বিষ, গন্ধক ও শোধিত পারদ সমন্তাগ, একত্র পেষণ করিয়া জন্মীররদে মন্দিত করিবে।
১ মাধা প্রমাণ বটিকা। ঔষণ সেবনান্তে
মহিচ চূর্ণ ও মূত একত্র লেহন করিবে।
পথ্য—তক্র ও জন্ম। ইহাতে গ্রহণীরোগ
বিনষ্ট হয়।

গ্ৰহণীবজ্ৰকপাটঃ।

পূতং গঞ্জং যবক্ষারং জয়স্তাগাত্রটক্ষণম্।
জয়স্তীভূকজন্বীর-দ্রবৈঃ পিট্রা দিনত্রম্ম ।
বামার্দ্ধং গোলকং বেস্তাং মন্দেন পাবকেন চ।
শীতে জয়ারসসমৈঃ শাল্মলীবিজয়াদ্রবৈঃ॥
ভাবয়েৎ সপ্তথা বজ্জ-কপাটঃ স্যাদ্ রসোভ্তমঃ।
মাযব্যং ত্রেং বাসা মধুনা গ্রহণীং জয়েৎ॥

পারদ, গন্ধক, ব্যক্ষান, গনিয়ানি, বচ, অল্ল, সোহাগার থৈ, এই সকল দ্রবা জন্মন্তী, ভীমরাজ ও জন্ধীরের রসে তিন দিন পেষণ করিয়া গোলক প্রস্তুত এবং তাহা লোহপাত্রে স্থাপনপূর্বক শরা ঢাকা দিয়া মুখ কৃদ্ধ করিবে। পবে অর্দ্ধ প্রহর কাল অল্ল আগতে স্থেদ দিবে। শীতল হইলে সিদ্ধিপত্র, শিমূল ও হরীতকীর রসে ৭ বার ভাবনা দিয়া ঔষধ প্রস্তুত করিবে। ২ মাষা বা ৩ মাষা পরিমাণে মধু সহ সেবা। এই ঔষধ সেবনে গ্রহণীরোগ নই হন্ন।

শস্থকাদি-বটিক।।

দগ্ধশস্কসিদ্ধং তুলাং ক্ষোজেণ মর্দ্ধয়েং।
নিক্ষেকণ নিহন্তাগি বাতসংগ্রহণীগদম্।
দগ্ধ শামূক ও সৈন্ধবলবণ, সমান ভাগ
করিশ্বা মধুর সহিত মর্দ্ধন করিবে। ৪ মাধা
পুরিমাণ বটা করিয়া সেবন করিলে বাত
সংগ্রহণীরোগ বিনষ্ট হয়।

রাজবল্লভো রসঃ।

কা তীফললবলাক-ছগোলা টলরামঠন্।
ক্রীরকং তেজপত্রক বমানী বিশ্বদৈদ্ধবন্।
লৌহমজং সতাত্রক রমগদ্ধকমেব চ।
মরিচং তির্তং রাপাং প্রত্যেকং দিপলোদ্মিতন্।
ধাত্রীরসে বটাং কুর্গাদ্ দিগুল্লাকনানতঃ।
হস্তি শূলং তথা গুলমামবাতং ফ্লারণন্।
ফাচ্ছ্রেলং পার্যশূলক্ষ্রিকুংশূলং হলীমকম।
শিরংশূলং কটাশূলমানাক্ষর্গূলকন্।
ক্রিমিকুঠানি দক্ষণি বাত্রক্তং গুলদ্বন্।
ভূপদংশামতীসারং গ্রহণ্শ প্রবাহিকাম্।
নূপবল্পজ্রাজোহরং স্বেশ্ন প্রকাশিতঃ।

জারদল, লবঙ্গ, মুতা, গুড় হক্, এলাইচ, সোহাগার থৈ, হিশ্বু, জীবা, তেজপত্র, যমানী, গুঠ, সৈন্ধব, লোহ, জল, থান, পারদ, গন্ধক, মরিচ, তেউড়ী ও রূপ। প্রত্যেক ২ পল পরি-মাণে গ্রহণ ও আমলার রুসে মর্দ্দন করিয়া ২ রুতি পরিমিত বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ সেবন করিলে গুলা, আমবাত, শূল, ক্রিমি, কুঠ, দক্ষে, ভগন্ধর, উপদংশ, অতীসার, অশঃ ও গ্রহণী প্রভৃতি নানা রোগ প্রশ্মিত হয়।

মহারাজনূপবল্লভঃ।

মান্ধিকং লোহমন্ত্রক বলং রজতহাটকম।
গ্রন্থিকানিকা চোচং তাত্রং নাগরউল্পন্ ।
দৈশ্ববং বালকং মৃশ্বং ধস্তাকং গলকং রদম্।
শৃলী কপুরকদ্বৈত প্রত্যেকং মাধকে নিত্রন্।
মাবদ্বয়ং রামঠং স্যান্মরিচানাং চতুষ্ট্রম্।
লাতীকোদং লবক্লক পত্রক তোলকোন্মিতম্।
নাতিশহাং বিড্লক শাণং মাবদ্বয়ং বিষম্।
কর্মট্কং সন্তিমান্ধং স্কোলানাং ততঃ ক্ষিপেৎ।
বিড়ং কর্মধ্যং সর্কাং ছাগীকারেগ পেষয়েৎ।
চতুগুল্পানিতং থাদেৎ সানাহ্যহণীং জয়েৎ।
শস্ত্রনা নিশ্বিতো হেন্দ পূর্ববন্দ শুণকারকঃ।
নামা মহারাজপুর্বেল্না নুপ্রবন্দ শুচ্চতে।

স্বর্ণমান্ধিক, লৌছ, অন্ত্র, বঙ্গ, রৌপ্য, স্বর্ণ, পিপুলমূল, যমানী, দারুচিনি, তাত্র, শুঠ, সোহাগার থৈ, সৈম্বর্লবণ, বালা, মূতা, ধনে, গন্ধক, পারদ, কাক্ডাশৃঙ্গী ও কর্পুর প্রত্যেক দ্রব্য ১ মাষা, হিন্ধু ২ মাষা, মরিচচ্ব ৪ মাষা, জয়িত্রী, লবক ও তেজপত্র প্রত্যেক ১ তোলা, শঙ্কনাভি ও বিভঙ্গ প্রত্যেক ॥ ০ অর্দ্ধ তোলা, বিষ ২ মাষা, ছোট এলাইচ ১২ তোলা ৩ তিন মাষা, বিট্লবণ ৪ তোলা; এই সনন্ত দ্রব্য ছাগীজ্ঞা পেষণ করিয়া ৪ রতি পরিমাণে বটিকা করিবে। শভ্বনির্মিত এই মহারাজ নূপবল্পত রস সেবন করিলে আনাহর্ক গ্রহণীরোগ নিবারিত হয়। ইহা রাজবল্পত রসের ভাষে গুলকারক।

মহারাজনুপতিবল্লভরসঃ।

বর্ধ রয়ং মৃতং কান্তং মৃতাধ্যং মৃত্যাসকন।
মৃতং ভারা মাজিকক চবা কর্বং প্রনাপরে ।
মৃতং ভারা মাজিকক চবা কর্বং প্রনাপরে ।
মৃতং ভারা মুলক মরিচং তেজারকম ॥
বমানী বালকং মৃত্যা শুউকক স্বাধাসকন।
সিন্ধ ভূবং সকপুবিং বিভেক্ষং চিত্রকং বিষম ॥
পারদং গজককৈব ভোলমানা প্রদাপরেং।
ভোলছা কিবুজার্ক বিজ্ঞান ভারত্ত্ব বিষম ॥
মাতীকোবকলকৈব বরাক্ষক স্থাত্তমমন ।
মর্ক্ষেণ্যক্ষ ভাগার ক্রিলিট্রা ভ্রম্মন।
ভারা প্রকার ক্রিলিট্রা ভাগারকের স্থা।
মাত্রক্ষরমে প্রাভ্রমিন স্থা।
ভারা প্রকার বিটাং কুলা ভক্রের দ্বাবিক্ষাম ॥

মন্দানলং সংগ্রহণী : প্রস্থামামান্দ্রকাং ক্রিমিপাপুরোগম।
ছলান্নপিত্তং হুদ্রাময়ঞ্চ
প্রশানরমীই-ভগন্দরঞ্চ॥
অর্শাংসি বৈ পিত্তকুতানশেষান্
সোমং স্পুনাষ্ট্রকমেব ইন্তি।
সাজী প্রিষ্ট্রভাবসপদাহং
বিলম্বিকাঞ্চপালসং প্রমেইম্॥
কুষ্ঠান্ত্রশেষাণি চ কাসশোষং
হক্তাৎ সংশাধং অরম্ত্রকুড্রম্॥

কান্তলোহ ৬ তোলা, অন্ত, তান্ত, মুক্তা ও স্বৰ্ণমাক্ষিক প্ৰত্যেক ২ তোলা, স্বৰ্ণ, বৌপা, সোহাগা, কাঁক্ড়াশৃঙ্গী, গজপিগ্লনী, দন্তীমূল, মনিচ, তেজপত্ৰ, যমানী, বালা, মুহা, শুঠ, ধনে, সৈদ্ধবলবণ, কর্পুন, বিজ্ঞ্ব, চিতা, বিষ, পারদ ওগন্ধক প্রান্থেক > তোলা, তেউড়ী-চূর্ণ হ তোলা, লবঙ্গ ৮ গোলা, জেল্লা ৮ গোলা, জারফল ৮ তোলা ও দাকা,চনি ৮ তালা; মিলিত এই সমস্ত জবোর আর্দ্ধক বিট্রবল; এবং বিট্রবল সহ উক্ত সমস্ত জবোর সমান ছোট এলাচেব প্রজ্ঞা একতা করিয়া ছাগীতিয়ে ৭ বার ও ভোলঙ্গ লেবুব বসে ৭ বার ভাবনা দিবে। দশবতি পরিমাণে বঁটা প্রস্তুত্ত করিয়া ছায়াতে শুদ্ধ করিয়া লইবে। এই ঔষধ সেবন করিলে মন্দান্থি, আমান্তবন্ধ সংগ্রহণীরোগ, জিমি, পাণ্ডগোল হুদ্রোগ, অমপত্তি, বমন, প্রীহা, ভগন্দৰ, আর্শ্ধ প্রভৃতি বছবিধ গোলা বিবাহিত হয়।

ত্রপ্রবর্তী।

রম্য গদ্ধ নিষ্ণ ল'স্ত্রং গগ্রহ লৌচতালকন্। তিলুলা শাক্ষাজিলের হিক্লেশ সমানেশক্ষ্॥ সংস্থানিকা কালা জাগ্রন সহ দলৈছেও। গ্রেছকা সন্তব্য প্রথা শেষিকা সৈদকা জলম। তিলি শেলা লাক্ষ্যাং গ্রেছিক স্কর্ণাংক্। অন্যস্থিতি চলি সন্তা এবান সংখ্যা ॥

পাদে, গল ক মিঠাবিধ, তাত্র, আল, লৌহ, হবি নাল, হিন্দুল, শিমুলকাব ও আহিকেন, প্রয়েক সমভাগে লইয়া তথ্য দিয় মর্দন করত অর্দ্ধ ধন পরিমাণে বটিকা করিবে। ইহা ছুগ্ধ সহ সেবনে প্রবল শোথ, স্থান্ত্রণ গ্রহণীরোগ ও অইবিধ জ্বর নিবারিত হয়। ঔষধ্যেবন কালে জল পান নিষিদ্ধ। রোগির পিপানা হইলে গ্রাহ্রগ্ধ পান করিতে দিবে। যদি লবণ ও জল দেওয়া নিলান্ত আবিশ্রক হয়, লালা হইলে দৈর্দ্ধলবলব কেশুবিয়া বসে ভঞ্জিত করিয়া ও জন উষ্ণ করিয়া অন্ত্র পার্মাণে সেবন কাতে দিবে।

ठ्ठश्ववि ।

(মভ¦স্তবে)

অনুভং ভানুভাগঞ্চ তৎসমমহিংফনকম।
তদক্ষিং কান্তলোহঞ্চ সর্কাদ্ভিগমন্তকম্ ।
ভ্রম্পেন বটিকাং কুড়া দিগুঞ্জা চ প্রমাণতঃ।
ভ্রম্পেন চ সদা ভক্ষ্যা প্রাভংকান্তে বিশেষতঃ ।
ভাহনীং চিরজাং হস্তি সংশাধং বিষমন্তরম্।
অন্তিঞ্চ কুক্ততে নীপ্রময়ণিতং নিক্স্তালম্ ॥

মিঠাবিষ ১২ ভাগ, অহিফেন ১২ ভাগ, কান্তলোহ ৬ ভাগ, এই সকলের দিগুণ অত্র, ইহাদিগকে তথ্যে মর্দন করিয়া ২ রতি পরিনিত বটা প্রস্তুত করিবে। এই বটা তথ্য দিয়া প্রাভঃকালে সেবন করিতে হয়। ইহাতে বছদিনের গ্রহণীরোগ, শোণ, বিষমজ্ঞর ও অম-পিত্ত নিবারিত এবং অগ্নি বর্দ্ধিত হয়।

লোহপর্ণটী।

সমৌ গৰুরসৌ কুতা কুজলীকুতা যতুত:। গুদ্ধানীহস্ত চুর্বস্তু রসতুলাং প্রদাপয়েৎ 🛭 একীকুতা ভাতা বত্নালোহপাত্রে প্রমন্দিত্র। ঘুদপ্রতিপ্রদর্কশান্ত বেদয়েন্ মুস্তনাথিনা। **ভ্রবাড়জ সমাজ্য চালাবে কল্লীনলে।** চ্ৰীকৃতা সুখা**ৰ্**য় প্ৰাভ্গ_্ভি[,] প্ৰেন্তে ॥ শীতোদকাতুপ্ৰং বা ক'ৰং বা ধাস্ত[ী]ংগাই। বুজিকৈক'ং সমারভা বর্দ্ধবেদ রক্তিকাং ক্মাং॥ मक्षाद्यः वा वृद्धः वालि यावप्रदाशादर्भन्य। ত্রতিকাঞ্জ জ্বরকৈব গ্রহণীমণ্ডিত্ররাম্॥ আমশুলাভিদারাংশ্চ পাভুরোগং সক্মিলম্। প্লীহানমগ্রিমান্দাঞ্চ ভত্মকঞ্চ তথৈব চ ॥ আমবাতমুদাবর্ত্তং কুঠাক্সপ্তাদলৈব তু। এবমাদ'ংস্ক' রোগান গরাণি বিবিধানি চ হত্যানন প্রয়োগেল বপুখান নির্মালঃ স্থী। জীবেদ বৰ্ষণতং পূৰ্বং বলীপলিভবৰ্জিতঃ ॥ ভোজনং রক্তশালীনাং তাক্ত্র। শাকং বিদাহি চ। আমবাতপ্রকোপক চিন্তনং মৈথুনং তপা। প্রাতরুত্থায় সংসেব্যা বিধিনারু:প্রবর্জিনী।

পারদ ২ ভোলা, গন্ধক ২ ভোলা, একজ কজ্জলী করত ভাহার সহিত গৃই ভোলা লোহ খ্রিশ্রিত করিয়া লোহপাত্রে উত্তমরূপে মর্দন করিবে। পরে কোন লোহপাত্রে ম্বত মাথাইয়া তাহাতে কজ্জলী স্থাপন করিয়া মৃত্ব অমিতে স্বেদিত করিবে। দ্রবীভূত হইলে কদলীপত্রে ঢালিয়া পূর্ব্ববং পপটা প্রস্তুত করিবে। পরে চূর্ণ করিয়া লইবে। ১ রভি হইতে আবস্তু করিয়া প্রতাহ ১ রতি করিয়া মাত্রা বর্দ্ধিত করিয়া প্রতাহ ১ রতি করিয়া মাত্রা বর্দ্ধিত করিয়ে। ১ সপ্তাহ বা ২ সপ্তাহ পর্যান্ত অর্থাৎ আরোগালাভ পর্যান্ত সেবনীয়। অমুপান—শতল জল্প অপবা ধনে ও জীরার কাথ। ঔষধ্যেবন কালে বিদাহী ও শাকাদি দ্রব্য এবং চিস্তা ও নৈগ্ন প্রভৃতি বর্জ্জনীয়। লোইপর্য টা সেবন করিলে গ্রহণীরোগ্য, স্তিকা, অতিসার, পাওরোগ, কামলা, অগ্নিমান্যা ও ভত্মক প্রভৃতি নানা রোগ নই হয়।

স্বর্গপর্ব ।

রসোত্তমং পালং গুলং হেম তোলকনংযুত্ম।
শিলায়াং মন্ধ্রেৎ তাবদ্ যাবদেকজমাগত্ম॥
পালকঞ্চ পালকৈমমংপাত্রে ততো দৃতে।
মন্দ্রেদ্দৃদ্পাণিভাাং যাবৎ কজ্জলতাং ব্রজেৎ॥
ততঃ পাকবিধানজঃ পর্ণটিং কার্য়েৎ স্থাং।
রক্তিকাদিক্রমেণের যোজ্যেদমুপানতঃ॥
গ্রহনী বিবিধা হল্ডি স্কাণ্ক বিশেষ্ট।
শুল্মস্থিবিধা হল্ডি স্কাণ্ক বিশেষ্ট।
শুল্মস্থিবিধা হল্ডি স্কাণ্ক বিশেষ্টা।

পাদদ দ হোল। ও স্বর্ণ ১ তোলা একজ উত্তমরূপে মদ্দন কবিয়া একীভূত করিবে। পরে উহার সহিত গঞ্জক ৮ তোলা মিশ্রিত করিয়া লোহপাত্রে মদ্দন করিয়া কচ্ছলী করিবে। পশ্চাৎ যথাবিধি পাক করিয়া পর্পটা প্রস্তুত করিবে। ১ রতি হইতে আরম্ভ কবিয়া ক্রমশঃ মাজাবৃদ্ধি করিবে। ইহাতে গ্রহণীরোগ, যক্ষা ও শূল প্রভৃতি নানারোগ নষ্ট হয়।

পঞ্চামূতপর্ণটী।

অট্টো গদ্ধকতোলকা রসদলং লৌহং তদক্ষং গুড়ং লৌহার্দ্ধক সরাজকং স্থবিমলং ভাজং তথাজার্দ্ধিকম্। পাত্রে লৌহময়ে চ মর্দ্দমবিধৌ চূপীকৃতকৈকভো দর্ব্যা বাদরবহিনাভিমুদ্ধমা পাকং বিদিশ্বা দলে। রস্কারা লঘু চালরেৎ পট্রিরং পঞ্চাম্বতা পর্ণটা গাতা ক্ষোম্মম্বতাম্বিতা প্রতিদিনং গুঞ্জাম্বাং বৃদ্ধিতঃ। লোহে মর্কনবোগতঃ স্থাবিমলং ভক্ষাক্রিয়ালোহবদ্ গুঞ্জাষ্টাবথবা ত্রিকং ত্রিগুণিতং সপ্তাহমেবং ভজেৎ ॥ নানাবর্ণগ্রহণ্যামক্রচিন্ম্পরে ছুইগুর্নামকাদৌ চর্দ্যাং দীর্ঘাতিসারে অরভবক্ষিতে রক্তপিতে ক্ষয়েহপি। ব্ব্যাণাং ব্রারাক্ষী বলিপলিতহয়া নেত্ররোগৈকহন্ত্রী ভুক্ষং দীপ্তহিরাগ্রিং পুনর্পি নবকং রোগিনেকং করোতি॥

ুন্দং দান্তাইয়ায়ং বুন্দাণ ন্যকং গোগলং ক্যোভ চু (রসদলং গন্ধকার্দ্ধমিতার্বঃ। দীর্বাতিসারে চিরৌ-থিতাতিসারে)।

গন্ধক ৮ তোলা, পারদ ৪ঁতোলা, লোহ ২ তোলা, অলু ১ তোলা, তাম অর্দ্ধ তোলা, এই পাঁচ দ্রব্য একত্র লোহ পাত্রে মর্দ্দন করিয়া অপর লোহপাত্রে (হাতা প্রভৃতিতে) স্থাপন পূর্মক কুলকান্তের মৃত্র অগ্নিতে পাক করত কদলাপত্রে ঢালিয়া যথাবিদি পর্পটা প্রস্তুত করিবে। ইহাকে পঞ্চামূতপর্শটা কহে। মাত্রা—২ রতি। লোহপাত্রে মর্দ্দন করিয়া সেবনীয়। অন্থপান—
স্থক ও মধু। প্রতিদিন মাত্রা রুদ্ধি করিয়া ৮।৯ রতি পর্যান্ত বাবস্থা করিবে। ১ সপ্তাহ সেবন করিলে নানাবিদ গ্রহণীরোগ, অরুন্ত, বিমি, দার্ঘকালোৎপন্ন অভিসার ও নেত্ররোগ প্রভৃতি নানাবিদ প্রাড় নই হর।

রসপর্ণ টী।

শীবিকাবাসিপাদান্ নতা ধ্বত্তবিক স্বভিবলন্ ।
বসগন্ধকপপ টিকা-পরিপাটপাটবং বক্ষ্যে ॥
নহাং বনে জনন্তা; পশ্চাদেরওস্তৃতে ।
আর্ক্রনের চ সূত্য পত্তব্বেন কাকনাচা;শ্চ ॥
নহায়দিতানুপূর্ব্যা মর্দ্দনশুদ্ধং করেণ গৃহ্নারং।
প্রস্তুভাজনমধ্যে শুদ্ধিরিয়ং পারদক্ষান্তা ॥
শুক্পুক্তসমচ্ছারো নবনীতসমহ্যুতিঃ ।
মুস্পাং কঠিনঃ মিদ্ধাং ভেঠো গন্ধক ইব্যুতে ॥
কৃত্য ভক্তং গন্ধকমিতিকুশলা কুম্বতভূলকোর্ম।
তদ্ ভুল্বাজরসৈরনন্ত্রং ভাব্রেং পাত্রে ॥
তদমু চ শুক্ বুণাদ্ ধূলিস্মানক সপ্তথা রোদ্রে ।
ওদমু চ শুকং বুণাদ্ ধূলিস্মানক সপ্তথা রোদ্রে ।
নির্দ্ধ্যবদরকাঠালারে গুল্বং বিলাপ্য ভৈলসমন্ ।
পাত্রিছ্বভূল্বাজরসমধ্যে ঢালয়েরিপুণঃ ॥

ভিমিন্ প্রনিষ্ট্যাত্রং কঠিনহং যাতি গলকচূর্ণ্য। পুনরপি রৌজে শুদ্ধং কেডকরজ্লা সম!নতাং নীত্য ॥ শুদ্ধে মতে শৌধিওগন্ধকচ্পেন তুলাতা কার্যা।
তাৰমন্দ্রনমনয়োবাবন্ধ কণোহপি দৃষ্ঠতে মতে ॥
পশ্চাৎ কজ্জসদৃশং চূর্ণং লোহীস্থিতং বড়েন।
নির্দ্রন্দরকান্তাক্তারে ক্রপ্ত বিলাপ্য তৈলসমম্।
সত্যো-গোময়নিহিতে কদলদলে চালয়েম্ছ্নি।
লোহাস্থিতমবশিষ্টং কঠিনং তম গৃহীতবাম্॥
পশ্চাৎ পর্শচিক্রপা পর্শটিকা কীর্জ্যতে লোকৈঃ॥
ময়ব্যক্ষিকান্ত্রাক্তার্ক্র বিলংগ্রন্ত দেবাক্তা

ময়ুরচন্দ্রকাকারং লিকং যত্র ভূ দৃহাতে। তত্র সিদ্ধং বিজানীয়াদ বৈত্যো নৈবাত্র সংশয়ঃ॥ সমূদিতপাত্রে ভরণাবদনীয়া পর্ণটা মনুজৈ:। জীরকগুঞ্জে হিন্সোরন্ধং খাদেচ্চ বাতলে জঠরে ॥ জोतकहित्य। त्रामन चुपूर्शनः मिललक्षात्रमा कायाग। রসগন্ধকপর্ণটিকা ভক্ষণমাত্রেণ তু নাল্তসঃ পান্ম্ 🛊 প্রধান গুপ্তাযুগলং প্রতিদিনমেকৈকবৃদ্ধিতে। ভক্ষ্যম । দশগুল্পাপরিমাণাল্লাধিকগদনীয়মেকবিংশতিদিনালি। বাত্তপকোপন্নশিচন্ত্রন্মাহারসময়বৈষ্মান। বারোমশ্চায়াদঃ আনং ব্যাথ্যান্মভিত্মভান্তম ॥ প'কে স্থে'কং স্পিলারকধ্যাক্রেশবারৈশ্চ। শিষ্ট্রেন ব্দান্থ দন্ধ সামি শ'ল্যে ভক্ষা: ॥ कृषः वाडिक्रनक्लम विक्षकर्ग ए वास्तुकम्। জক্তমুক্তাঃ সহিতঃ নালদলস্থিতং পটোলফ ॥ ক্রমুকফলশুঙ্গবেরৌ ভক্ষ্যে) শাকেরু কাকমাচী চ। লাবকবর্ত্তকভিত্তিরিমযুরমাংসক হিত্তরং ভবতি ॥ मन्छत्रताहि स्थानावहन हो कुक्षम्बद्धान्छ । नीतकौतः वाञ्चनमन्नीयः शक्रमणकः। व्रष्ठाकनम्बद्धलभग्नानाः वर्णमः कायाम । **जिक्टर निकां** पिकमिल माळार दन कर जना बना । আনুপ্যাংসজ্লচরপ্ত ত্রিপ্লঞ্চ নর্কথা ত্যাজাম । ন্ত্রীণ্য সম্ভ'ষণমপি গড়কশ্চ কুঞ্চন্বস্থেষু॥ नामः न पृथि भाकः अर्थिता छक्तत छक्तान । গুড়থওশকরাদিক ইকুবিকারো ন ভক্ষা ইকুক। ন দলং ন ফলং ন লভাপাদনীয়া কারবেল্লন্ড ॥ ভোকং মুভূমিহ ভকাং পথে। সাকাঞ্জমুখানম। কুৎপীড়'য়'ং ভোজনমবগুকার্যাং মহানিশায়াঞ। ममजलिम्हाः श्रेतः कोतः यक्षक्षिक जल्लेशकः। কথমপি ভোজনসময়াতিক্রমজাতে হলে বিরেকে চ। বমনে চ নারিকেলস্লিলং হ্রধ্বর্গ পাতবাম্। স্থাপ্ন জাতে র্মিতে বিরেকত: ক্ষীর্মের পাতবাম ॥ न काशर दुरूका लका। अहे ३८७ य प्रता। অশ্ভি-বিনিবিনিম্ভকশূলাল্যৈনু নিম্বদাৰ্থা ॥ কিং বহু ব'চাং রে:গা খলা ভবতি সাকাঞ্জ:। পার্মিতবাং ছগ্ধং তদা তদা নির্ভয়ীভূয়॥ বিহিত্যকরণে চান্ডামবিহিতকরণে চ রোগাল্যস্থানাম। ব্যাপত্রয়োহপি বছধা দৃষ্টাঃ প্রামাণিকৈর্বভূপঃ॥

তক্ষাদবধাতব্যং ভবিতব্যং ভোজনে নিপুণৈ:। এবমিয়ং ক্রিয়মাণা ভবতি শ্রেয়স্করী নিয়তম ॥ অর্শোরোগং গ্রহণীং সামাং শুলাভিসারে চ। कामनभाक्षत गांवर भोशनका जिनाक्रगर रुखि ॥ গুনাজলে দরভন্মকবোগং হত্তামবাতাংক। खडेमिटेश्व क्षेत्रिक्षां वार्यां वार्यां किर्त्वाभारक ইয়মমপিতশমনা তিদোষদমনা কথাতিকমনীয়া। অগ্নিং নিমগ্রমুদরে ভালাজটিলং করোত্যাও। র্মগন্ধকপর্ণটিকা ছপ্রায়া ব্যাধিসংখাতম। বলীপলিতশৃক্তং পুরুষং দীর্ঘায়ুষং কুরুতে॥ বাংধিপ্রভাবহরণাদপমৃত্যুত্রাসনাপকরণাচ্চ। মর্জানামমূত্যটা রুদগন্ধকপর্ণটা জয়তি॥ শস্ত্রং প্রণমা ভক্তরা পূজাং কুরা চ বিঞ্চরণাজে। রদগন্ধকপর্পটিকা ভক্ষা। তেন'তি সিদ্ধিদা ভবতি॥ নুগাং সঞ্জাং প্রণাময়ম'রোগাং সত্ত্রণীলিতা কুরুতে। শীবৎসাক্ষবিনিশ্মিতা সমাগ্রসপর্ণটা শ্রেষ্ঠা । উক্তমের হি কর্ত্তবাং নানার। গভয়া তথা। ওয়ধক্রিণহৈলাক কর্ত্তলা চোত্রক্রিয়া। প্রভাবায়বিল্লার্থা কেরপ্রান্তবলিং ক্রাদের। কু চমঙ্গলকঃ প্রতিযোগিনীনাম্ভঃ পর্ম ॥ 2113F9 নৈদর্শিকদে ষত্রশোধনকাবভাং কাধান। বছজন-মলশিথিবিখনাম'নো রসসা নৈস্গিকা দেখি। মুট্ছাং মনেন বুরুতে শিখিনা দাহং বিষেণ ভিকাঞ।

পুথকার বাংলন পুরণার প্রাথমন পারবার বিবেশ (একান্তার পুথককা) হরতি মধ্য ক্রিকলা বিহিং চিত্রকান বিবাহ।
তল্পাদেভিবারান্ সংমূর্জ্জের সপ্ত সইওব ॥ এতি
পৃথককা) ঘূরকারা, ওসার দারবাসন বাননান। ত্রৈপলাবা
চুর্বেন প্রাথমন চিত্রকার প্রায়রসন নাডনান্। তর্গাব
নাম্নিকদেবাপার রাভিবং বিভাগি ক্রেন্ট্রস্থাস্থ

मूक्त्रिशिखवाम्।

পপটাজিয়ার প্রথমে পার্চের মল্টোয়, বহ্নিদার ও বিষ্টোর নি গাবণ করা অবশ্র কর্ত্তব্য। তাহার প্রণাগী এই—আট তোলা পারদ লইয়া মৃতকুমারীর রামে মদ্দন করিতে হয়, ইহাতে পারদের মলদোয দ্রীকৃত হয়, এইরপ জিফলাচ্রের সহিত মদ্দন বহিলোয এবং চিতাপাতার রসে মদ্দন করিলে বিষ্টোয় নির্ভ হয়। পরে যথা জমে জয়স্কীপত্র, এরগুপত্র, আর্ত্রক ও কাকমাচীপত্রের রসে ম্যাকরিয়া ক্রমাগত ম্দ্দন ধ্রারা ঐ রস সকল শুদ্ধ করিয়া লইতে হইবে। এই পারদ পর্পটা

ক্রিয়ায় বাবহার্য। ইহার সহিত মিশ্রিত করিতে হয়; যে গন্ধক শুকপুচেছর ত্থায় কান্তিবিশিষ্ট, নবনীতের ক্সায় শালী, চিক্কণ, কঠিন ও স্নিগ্ধ, তাহাই শ্ৰেষ্ঠ। ঐরপ ৮ তোলা গন্ধক কুদ্র কুদ্র তণুলাকার করিয়া ভূঙ্গরাজরসে ৭ বার ভাবনা ও, রৌদ্রে শুষ্ক করত ধূলিবং চুর্ণিত করিতে পরে ঐ গন্ধক লোহপাত্রে করিয়া ধুমরহিত কুল-কাঠের অঙ্গারে গলা-ইয়া ভূঙ্গরাজরসে নিকেপ করিবে। মাত্র গন্ধক কঠিনীভূত হইয়া যাইবে। গন্ধক রোদ্রে শুঙ্ক ও উত্তমরূপে চুর্ণিত করিয়া কেতকীপুষ্পের রজোবং করিবে।

পারদ ও শোধিত গন্ধকের পরিমাণ সমান হওয়া আবশুক। উল্লিখিত প্রক্রিয়ার পর পার্রদ ও গন্ধক সমভাগে মিশ্রিত করিয়া উত্তমরূপে মর্দ্দন করিবে। যাবং নিশচক্র অর্থাং পারদ অদুশ্র না হয়, তাবং মৃদ্দন ক্রিতে ইইবে। চুর্ণ সকল কজ্জলসূদ্ধ ইইলে লৌহপাত্র স্থাপন করিয়া নিজ্ন কুল-কাণ্ডের **অঙ্গা**রে গলাইয়া তেলবং কাবৰে। সংগ্**হীত** গোময় রাশির উপর একথানি কচি কলাপাতা পাতিয়া একথানি অপ্র কলাপাতার মধ্যে কিঞ্ছিৎ গোময় পুরিয়া পুট্লী কবিবে। অনস্তর দ্রবীভূত উক্ত কদলীপাত্রে ঢালিয়া এস্তুত পুটলী খারা চাপিবে। ইহাতে চটা প্রস্তুত হইবে। দ্রবীভূত কজ্জলীর যে অংশ কঠিন হইয়া লোহপাত্রে লাগিয়া থাকিবে, তাহা লইবে না। ময়্রপুড়ের চক্রিকাসদৃশ হইলে স্থপ্তত হইল জানিবে। মুণোক্ত নক্ষত্রাদিতে পর্ণটী এন্তত ও সেবন করা কর্ত্তবা। ইহা প্রস্তুত করিবার সময় মূলোক্ত দেবতাদিগের পূঞা করিবে। বাতোদর রোগে ২ রতি জীরক ও হিঙ্গুর সহিত সেবনীয়। পর্প টা ভক্ষণান্তে শীঘ জলপান করা অকর্ত্তব্য।

২ রতি পরিমাণে ব্যবস্থা করিয়া প্রত্যাহ ১ রতি করিয়া মাত্রাবৃদ্ধি করত ১০ রতি পর্যাস্ত করিবে। দশ রতির অধিক মাত্রায় প্রয়োগ করা অফুচিত। ২১ দিন পর্যাস্ত ঔষধ দেবনের নিম্ম।

পর্ণটী ব্যবহার কালে বায় সেবন, রৌদ্র-সেবন, ক্রোধ, অধিক চিন্তা, আহার-সময়ের ব্যতিক্রেম, ব্যায়াম, পরিশ্রম, স্নান, সমুদায় বর্জনীয়। অধিক বাক্যকথন, এই মৃত ও সৈন্ধৰ এবং জীরা ও ধনের বাটনা ঘারা প্রস্তুত ব্যঞ্জনাদি, শালিতপুলের অন্ন, বেগুন, নিমুখী শাক, বাস্ত,কশাক, কাল কীটাদি কর্ত্তক অভক্ষিত মুলা, স্থপারি. আদা. কাকমাচ শাক. লাবাদ পাক্ষর মাংদ, মাগুর, রোহত ও ক্লফবর্ণ মৎস্ত, জলের দহিত সিদ্ধ হগধ, এই সমুদায় আহার করা কর্ত্তবা। রম্ভাফল, নিম্বাদি ।তিক্ত দ্রব্য, উষ্ণান্ন, বরাহাদির এবং জলচর পক্ষী এভতির মাংস, অঃদ্রব্য, দ্বি, শাক্ত করোলা, এবং ক্লফবর্ণ মৎস্থের মধ্যে গড়ক মৎস্থা নিষিদ্ধ। ত্রীলোকের সহিত সন্তাষণ পর্যান্ত পরিত্রাজা। ওড়, চিনি এড় ত ইফুবিকার ও ইফু ভগণীয় নহে। কুখা উপাত্তত হইবামাত্রই আহার করা আবগুক, যাদ অদ্ধনাতে ক্ষুণার উদ্রেক হয়, তাহা হইলেও তৎক্ষণাৎ আহার করা শ্বর। কর্নাচিৎ ভোজন-সময়ের ব্যতিক্রম হেতু ভেদ বা বমন উপস্থিত হইলে ডাবের জল ও চুগ্ধ পান করা কর্ত্তব্য। স্বপ্নবিক্ষতি জন্ত গুক্রকরণ হইলে ছগ্ধ পান করা উচিত। रहेशाष्ट्र कि ना वित्निषक्तरं दोव ना रहेल গাত্র বিনেঝিন হুর্বলিতা প্রভৃতি দারা তাহা প্রিয়া আহার করা কর্ত্তবা। অধিক কি, রোগির যথন কুধার উদ্রেক হইবে, তথনই হগ্ধ পান করিতে দেওয়া যাইতে পারে, তাহাতে কিছুমাত্র ভয় নাই। উল্লিখিত অবিহিত আচরণ করিলে বা বিহিত বিষয় আচরণ না করিলে বিষম বিপত্তি উপস্থিত হইয়া থাকে।

পর্শটী সেবনে গ্রহণী, অর্শঃ, শোপ, পাণ্ডুরোগ, কামলা, অভিসার, গুল্ম, জলোদর ও অধিমান্দ্যাদি নানা রোগ নষ্ট হয়।

দর্বপ্রকার পর্পটী সেবনের নিম্নম এই— রোগিকে কিঞ্চিং চিনি বা মিছরির সহিত কেবল মাত্র হগ্ধ ও অন্ন আহার করিতে দেওরা যায়। লবণ ও জ্বল প্রভৃতি অপর সমস্ত দ্রব্য একেবারে পরিত্যাক্ষ্য। অসহ তৃষ্ণায় ভাবের জল ব্যবস্থেয়।

বিজয়-পর্পটী।

গন্ধকং কুদ্রিতং কুত্বা ভাব্যং ভুক্সমেন তু। मश्रभा ना जिथा नानि शण्डाष्ट्रकः विवृन्दारः । চূৰ্ণামন্বায়দে পাতে কুত্ৰা বহিত্যতং প্ৰধা:। ফ্রান্ড ক্লিপ্তা হন্ত উদ্ধান্তা **শোষয়েৎ ।** ७क गमार भनदेकवर शक्तार्घर एउमाभावम् । সভাদ্ধং ভশ্মরোপ্যক তদর্মং স্বর্ণভশ্মকম্ ॥ ত।ৰ্দ্ধং মূহবৈক্ৰান্তং মৌক্তিকঞ্চ বিনিক্ষিপেৰ। একীকুত্য ততঃ সবংং বুযা,< প্পটিকাং শু**ভাম্**॥ লৌহপাত্তে সমনসং মর্দ্দিতং ব জ্ঞলীকুতম। বদরাঙ্গারবহ্নিস্থে জৌহপাত্রে দ্রবীকুতে 🛭 ম্যুরচন্দ্রিকাকারং প্রিসং বা যাদ দৃশুতে। আত্মহাদ খতে হুতঃ থরপাকে ন দুখতে॥ মদৌ ন সমাগ্রুক: ভারাখ্যে ভরণ্ট রূপাবং। পরে লঘভবেদ ভঙ্গো রুক্তঃ সুক্ষোহরণচ্ছবিঃ॥ মুছুমধ্যে তথা থাছোঁ থনস্তাজাে বিষেপম:। জরাব্যাধিশতাকীর্ণং বিখং দৃষ্ট্য পুরা হরং ॥ চকার পর্ণীমেতাং যথা নারায়ণোহমৃত্য ॥ আদৌ শঙ্করমভার্চটা দ্বিজাতীন প্রণিপত্য চ। প্রভাতে ভক্ষেননাং প্রাগ্রাজন্ম**দমিতা**ম্ ॥ রম্ভিকাদিক্রমাদ্ বুজিভক্ষ্যা নৈব দশোপরি। আরোগ্যদর্শনং যাবৎ তাবদ্যাসন্ততঃ পরম্। অজীর্ণে ভোজনং নৈব পথ্যকালবাতিক্রন:। মুতনৈশ্বধয়াক-হিন্দুজীরকনাগরৈঃ॥ শস্ততে ব্যঞ্জনং সিদ্ধং পিতে স্বাৰম্নগাকিকম। কুক্ষমংস্থেন মুপোন মাংসেন জাঙ্গলেন চ॥ জাঙ্গলেষু শশচ্ছাগৌ মৎক্তে রোহিতমদ্ভরৌ। পটোলপত্ৰঞ্চ তথা কুফবাৰ্স্তাকুলালিকা। হৃষিদ্নপূগৈন্তাষ্ট্রনর্গাড়ে কপুর্নসংযুক্ত:। শুধাকালে ব্যতিক্রান্তে যদি বায়ুঃ প্রকুপ্যতি॥

बिक्किमीजि निज्ञः मृत्न वित्त्रत्क वमत्यो ज्या । ভক্ষাব্রাঞ্চাধিকে পিত্তে নারিকেলামু নির্ভয়ন্। मात्रिरकलभग्नः (भग्नः निर्श्वतः कोत्रस्य ह । ৰপ্নে গুক্ৰচাতে) চৈৰ চম্পকং কদলীদলম্। বৰ্জ্যং নিম্বাদিকং তিক্তং শাকারং কাঞ্চিকং হরাম্। कानीकनभवाषित -वश्वानात्ककी। কুমাওং কারবেলঞ্ ব্যায়ামং জাগরং নিশি। ৰ পঞ্চের স্পূলেদ গচেছৎ ক্রিয়ং জীবিতুমিচ্ছতি । বজৌবধে গ্রিরং গচ্ছেৎ কর্ত্তব্যা তু প্রতিভিন্না। ছকারাং গ্রহণীং হতি ছঃসাধ্যাং বহুবার্ষিকীয় ॥ আমশুলমতীসার: সামকৈব হুদারণম্। অতিসারং ৰড়শাংসি যক্ষাণং সপরিগ্রহ্ম ॥ শোধক কামলাং পাড়ং মীহানক জলোদরম্। পক্তিপুলঞ্চায়পিত্তং বাতরক্তং বমিং ক্রিমিন্ ॥ कहोप्रनिविधः कुछैः अत्महान विषम्बातान् । বাতপিত্তকদোখাংশ্চ জ্বরান্ হস্তি হুদারূপান্॥ জীর্ণোহপি পর্ণটিং কুর্বন্ বপুষা নির্গল: স্থী:। জীবেদ বর্ষশতং শ্রীমান বলীপলিতবর্জিত: । প্রাতঃ করোতি সততং নিয়তং বিশুঞ্জাং যন্তাং স বিন্দতি তুলাং কুমুমায়ুধস্ত। আয়ুক্ত দীর্থমনখং বপুষঃ ছিরত্বং হানিং বলীপলিতয়োরতলং বলঞ্

গন্ধককৈ কুদ্র কুদ্র অংশে বিভক্ত করিয়া ভূকরাজরদে ৭ বার বা ৩ বার ভাবনা দিয়া রৌদ্রে শুক্ষ করিয়া চূর্ণ করিবে। পরে উহা লৌহপাত্তে রাখিয়া অগ্নিসস্তাপে গলাইয়া পুন-র্বার ভঙ্গরাজরদে নিকিপ্ত করিবে। কিয়ৎকণ পরে তুলিয়া রৌদ্রে শুষ্ক করিয়া লইবে। এই গন্ধক ৮ ভোলা, পারদ ৪ তোলা, রূপা ২ ভোলা, স্বৰ্ণ চালো, বৈক্ৰান্ত ॥॰ ভোলা, মুক্তা॥• আনা একত্র মন্দন করিয়া উত্তমরূপে কজ্জা করিবে। পরে উহা রাখিয়া কুলকাঠের অঙ্গারে <u>ড</u>ব যথাবিধানে পর্পটী প্রস্তুত করিবে। কজ্জলীর (পপটীর) আভা, ময়ুরপুচ্ছের চন্দ্রিকার স্থায় হুট্লে, পাক সিদ্ধ হুইল জানিবে। কজ্জলীর পাক ভিন প্রকার,—সৃত্, মধ্য ও খর। মৃত্ ও মধ্য পাকে পারদ দৃষ্ট হয়, অরপাকে হয় না, मृष्ट्रभाक रहेरण উख्यत्रराभ ज्य रम्र ना, मश्राभारक রৌপ্যবং খণ্ড হয়, খরপাকে লঘু এবং কৃক্ষ, সূত্র ও অরুণবর্ণ চুর্ণ হয়। মৃত্ত মধ্যপাকের পর্ণটী

সেবনীয়, খরপাক পর্পটী—বিষসদৃশ। -২ রভি হইতে আরম্ভ করিয়া ১০ রতি পর্যস্তে মাত্রা বাবস্থা করিবে। ১০ বৃত্তির অধিক সেবনীয় নহে। রোগের উপশম হইলে ক্রমণঃ মাতা হ্রাদ করিবে। প্রোতঃকালে ঔষধ প্রতাহ সেবা। অজীর্ণসম্ভে ভোজন করা এবং ভোজন কালের ব্যতিক্রম করা অবিধেয়। ধনে, হিন্দু, জীরা, শুঁঠ, ঘুত ও সৈন্ধব সংযোগে ব্যঞ্জন প্রস্তুত করিয়া আহার করা কর্ত্তব্য। ধিক্যে অমু মধুর দ্রব্য ও মধু ব্যবস্থের। মাংদের মধ্যে শশক ও ছাগমাংস, মৎস্তের মধ্যে রোহিত, মাণ্ডর ও কৃষ্ণ মংস্ত এবং প্রতা, মুকাযুষ, কাল কচি বেগুন ভক্ষণীয়। সিদ্ধ স্থপারি ও কপুর সংযোগে তাম্বল চর্নণ করা উচিত। আহারকালের ব্যতিক্রম বশতঃ বায়ু কুপিত হইর। মস্তক ঝিনঝিন করিলে এবং ভেন, ব্যান, তৃষ্ণা ও পিন্তুগুদ্ধি হইলে নিভয়ে নাতিকেল জ্ঞল পান করাইবে। যদি স্বপ্নে রেতঃকরণ হয়, তাহা হইলে নিউয়ে নারিকেল জল ও হগ্ধ পান করা কর্ত্ব্য । নিম্ব প্রভৃতি তিক্তদ্রবঢ় শাক, অমু, কাজি, সুরা, কদলীফল, লাউ, কাকুড়, কুম্ড়া ও উচ্ছে প্রভৃতি দ্রব্য, ব্যায়াম, রাতিজাগ[ু]ণ প্রভৃতি নিষিদ্ধ। कीरानका शांकिल जीलांकित भगन ম্পর্ণন পর্যান্ত পরিহার্যা। যাদ নিতান্ত অবশতা-প্রস্কুক্ত স্ত্রীসঙ্গম ঘটিয়া উঠে, গ্রাহা হইলে ঘণা-বিধানে তাহার প্রতিকার কর্ত্তর। এই ঔষণ দেবনে ছনিবাধ্য বছকালস্ঞ্জিত গ্রহণীয়োগ আমণুল, অতীসার, যক্ষা, পাণ্ডরোগ, কামলা, অমুপিত, বাতর্ক্ত ও জ্বরাদি নানা ব্যাধি নই হইয়া, দেহের পৃষ্টি, রতিশক্তিবৃদ্ধি, বলীপলিত-রাহিতা ও আয়ুর্কি হয়।

তন্ত্রান্তরোক্তা বিজয়পর্প টী।

রসং বক্সং হেম তারং মৌক্তিকং ভাস্ত্রসত্তকন্। সর্বত্তোন গন্ধেন কুয়াদ্ বিজয়পর্পটাম্॥ প্রকাশ্বাং গ্রহণীং হস্তি ছ:সাখাং বছবার্থিকীয়।
আনশ্লমতীসারং চিরোখনভিলালণ্য।
প্রবাহিকাং ষড়শাংসি যক্ষাণং সপরিগহন।
শোধক কামলাং পাড়ং প্রীহন্তক্ষজলোলরম্।
পজিশ্লমলপিতং বাতরক্জং বমিং ক্রিমিন।
অপ্তাদশ্বিধং কুঠং প্রমেহান্ বিষমজ্ঞান্।
চতুর্বিধমলীর্থক নন্দায়িছমরোচকম্।
জীর্ণোহপি পর্পটাং কুর্বন্ বপুরা নির্মালং হৃধীঃ।
জীর্নাব্যবিশতং শ্রামান্ বলীপলিতবর্জিতঃ।
প্রাতঃকরোতি সততং নিয়তং ছিন্তক্ষাং
বস্তাং স বিন্দতি তুলাং কুন্সায়্ধসা।
আযুদ্ধ দীর্ঘননাং বপুরং হিরতং
হানিং বলীপলিতয়োরহুলং বলক ।
জরাবাাধিসমাকীর্ণং বিবং দৃষ্ট্য পুরা হরঃ।
চকাব পর্পটিমেতাং যথা নারায়ণং সুধ্যে।

পারদ, হীরা, স্বর্ণ, রৌপ্যা, মুক্তা, তাম ও অন্ন প্রত্যেক ১ ভাগ ও গন্ধক ৭ ভাগ একত্র মর্দ্দন করিয়া যথাবিধানে পর্পটী প্রস্তুত করিবে। ইহার গুণাদি পুর্বোক্ত বিজ্রপর্পটীর স্থায়।

হিরণ্যগ**র্ভপোট্টলীরসঃ।** একাংলো রসরাজক গ্রাহেগ **রৌ** হাটকক চ। মক্তাকলয় চম্বারো ভাগাঃ বড্টার্শনিকনাৎ॥

বুজাকলনা চথারে। জালাঃ বড়ুদ্বোন্ধনাই ॥

আংশং বলের্বরাট্যান্ট টঙ্গণো রসপাদিকঃ ।

পর-নিম্বুজতোরেন সর্বনেকত্র মর্দ্ধরেই ॥

ন্বামধ্যে স্থানে করুং কন্তা বক্তুং নিরোধরেই ।

পর্তেইরপ্রিপ্রমাণে তু পুটেই ব্রিংশদ্ বনোপলৈঃ ।

যাঙ্গলিতল তাং জ্ঞারা রসং ম্বোদরারাক্তই ।

ততঃ প্রান্ধরে মর্দ্ধ্যং স্থারূপং সম্করেই ॥

এতস্যাস্তরূপসা দক্তাদ্ গুলারুপরিণ ।

হতমান্ধিকসংশৃক্তমেকোনবিংশদৃক্টণ ।

মন্দারো রোগসংঘে চ গ্রহণ্যাং বিষমকরে ।

গুলারুরে মহাশ্লে পীনসে খাসকাসয়োঃ ॥

অতিসারে গ্রহণ্যাঞ্চ বর্ষেণী পাঞ্কে গদে ।

সর্বের্ কোন্ঠরোগের্ যকুংশীহাদিকেরু চ ॥

বাতপিত্রুক্তম্বের্ রোগের্ ক্রেন্ট্রেমত্রসায়নন্ ॥

পারদ ১ তোলা, স্বর্ণ ২ তোলা, মুকা ৪ ভোলা, কাঁসা ৬ ভোঁলা, গন্ধক ০ তোলা, "ক্ষ্ণিভন্ম ৩ ভোলা, সোহাগার থৈ ২ মাবা; এই সম্পায় দ্রব্য একত্র পাকা লেব্র রসে ম্পিন করিয়া মুখামধ্যে স্থাপন কর্ত মুখা মন্দ্র করিবে। পরে কুদ্র পুটে ৩০ থানি বিল ঘুঁটের অমিতে যথাবিধানে পুট দিরা শীতল হইলে উদ্ধার করিয়া লইবে। অনস্তর ঔষধ গ্রহণ করিয়া খলে মর্দ্দন করিবে। মাজা—৪ রতি। স্বত, মধুও ২৯টা মরিচের সহিত সেবনীয়। ইহাতে অমিমান্দ্য, বিষমজ্বর, অতিসার, গ্রহনীরোগও লোথ প্রভৃতি নানা-রোগ বিনষ্ট হয়।

বিল্বগর্ভ-ঘৃত্যু।

মপ্রক্ত ক্ষামেণ বিজ্ঞান্তং পচেদ স্বতম্ হস্তি কুক্ষ্যাময়ান্ সর্কান্ এৎপীপাঞ্কামলা: ॥ কেবলং গ্রীহিপ্রাণাক্ষকাপো ব্যক্তপ্ত দোষসঃ ॥

ঘুত /৪ সের, ককার্থ—বেলগুঠ /১ সের। কাথার্থ—মস্র দাইল /৮ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। একতা যথারীতি পাক করিয়া ঘুতাবশেষ থাকিতে নামাইবে। ইহা সেবনে কুক্ষিস্থ সর্বপ্রকার রোগ; বিশেষতঃ প্রহণীরোগ, পাঞ্রোগ ও কামলারোগ বিনষ্ট হয়। ত্রীছি ও প্রাণ্যন্ধ ইহাদের কাথ প্রস্তুত করিয়া সন্তঃ ব্যবহার করিবে। বাসি হইলে দূষিত হয়।

শুগীয়ত্য।

বিষৌষধস্য গড়েব দশমূলজলে শৃঙ্ধ । ঘৃতং নিহস্তাচ্ছয়ধুং গ্রহণীদাম তাময়ম্ ॥

শুন্তীর কল্প ও দশমূলের কাথ সহ পূর্ব্বোক্ত-রূপ থত পাক করিয়া সেবন করিলে শোথ এবং আমৰুক্ত গ্রহণীরোগ নিবারিত হয়।

নাগরঘূতম্।

যুতং নাগরককেন সিদ্ধং বাতামুলোমনম্। এহণীপাপুরোগস্বং সীহকাসক্তরাপহন্॥

খুত /৪ সের; উত্তমরূপে চুর্ণিত শুঠ /১ সের, জল ১৬ সের। যথাবিধি পাক করিয়া সেবন করিলে গ্রহণী, পাণ্ডু, প্লীহা, কাস ও শ্বর নিবারিত এবং বায়ুর অমুলোম হয়।

চিত্ৰকন্মতম্ ।

চিত্রকলাপককাভাগে এইনীয়ং শৃতং হবি:।
ভিত্রপোপোদরশ্লীহ-শুলাপোদ্ধ প্রদাপনন্।
চিতার কাথ ও কক্ষ দারা যথারীতি ঘৃত
পাক করিয়া থাইলে গ্রহণী, গুল্ম, উদ্ব, শোথ,
প্লীহা, শূল ও-জার্শ: নিবারিত হয়।

বিল্পাদিয়তম্।

বিৰাগ্নিচব্যার্ক্তকশৃঙ্গবের-কাথেন কচ্ছেন চ সিদ্ধমাজ্যম। সচ্ছাগত্ত্বাং গ্রহণীগদোথ-শোথাগ্নিমাল্যাঙ্গচিত্বদ্ বরিষ্ঠম্॥

বেশশুঠ, চিতা, ৈচ, আদা ও শুঠ ইহাদের কাথ ও কন্ধ এবং ছাগছ্গ্ধ, এই সকল জবোর সহিত যথানিরনে মত পাক করিয়া উপস্কুল মাত্রায় সেবন করিলে গ্রহণীজনিত শোথ, মন্দায়ি ও অক্ষচি প্রভৃতি রোগ বিনষ্ট হয়।

চাঙ্গেরীয়তম্।

নাগরং পির্সানীমূলং চিত্রকো হস্তিপির্সানী।
বদংট্রা পির্মানী ধান্তং বিবং পাঠা বমানিকা।
চাক্সেরীব্রমে সর্পিঃ ককৈরেটের্বিপাচয়েও।
চতুপ্ত গৈন দরা * চ তদ্যুতং কফবাত্রুও।
অনীংসি গ্রহণীদোসং মৃত্রকুচ্ছং প্রবাহিকান।
গুদলংশার্তিমানাইং মৃত্যেত্ব্যুপোইতি॥
(* দ্বিদাহচ্ব্যাচ্চাক্সেরীব্রস্কত্ত্ব্রপাং)।

মৃত /৪ সের, আমকলের রস ১৬ সের, দিবির মাত ১৬ সের। কলার্থ—ভাঠ, পিপুল-মূল, চিতামূল, চৈ, গোকুর, পিপুল, ধনে, বেলভাঠ, আক্নাদি ও যমানী মিলিত /১ সের। এই মৃত বাতঞ্মেম। ইহা পান করিলে গ্রহণী ও প্রবাহিকা প্রভৃতি বিবিধ রোগের শাস্তি হয়।

মরিচাতাং গ্রতম্।

মরিচং পিশ্ললীমূলং মাগরং পিশ্ললী তথা।
ভলাতকং বমানী চ নিড়ঙ্গ' হন্তিপিশ্ললী ।
হিন্দু সৌবর্চনেকৈব বিড়সৈন্ধবচব্যথ।
সামুদ্রং স্থবকারং চিত্রকো বচয়া সহ।

এতৈরন্ধপনৈর্ভাগৈত্ব তপ্রস্থা বিপাচয়ে । ।

দশমূলীরদে দিল্লা পারদা বিপ্তপেন চ ।

মন্দায়ীনাং হিতা শ্রেষ্ঠা প্রহণীদোষনাশনম্ ।

বিষ্টস্কমামদৌর্বলাং শ্রীহানকাপকর্বতি ।

কাসং স্বাসং ক্ষয়কাপি তুর্নাম সন্তর্গন্ধম্ ।

কফজান্ হস্তি রোগাংশ্চ বাতজান্ ক্রিমিসন্তবান্ ।

তান্ সর্বান্ নাশায়ত্যাপ্ত শুদ্ধা দার্বনলো ব্যা ।

গব্য ন্থত /৪ সের। কাথার্থ—দশমুল
মিলিত /৬। সের, জল ৩২ সের, শেষ ৮
সের, ছগ্ধ /৮ সের। কল্প দ্রবা যথা—মরিচ,
পিপুলমূল, শুঠ, পিপুল, ভেলার মুটী, যমানী,
বিড্লা, গজপিপ্পলী, হিন্দু, সচল, বিট্, সৈন্ধব,
কর্কচ লবন, চই, যবকার, তিভামূল ও বচ.
ইহাদের প্রভ্যেকের সর্জপল। এই ন্যত পান
করিলে অগ্রিমান্যা, গ্রহণীদোর, গ্লীহা ও কান
প্রভৃতি নানারোগ নই হয়।

মহাষ্ট্রপলকং ঘুত্র ।

সৌণচলং পঞ্কোলং সৈদ্ধবং হবুৰাং নিড্য।
আন্দোলাং যবকারং হিন্সু জীরকমৌছিদম।
কুনাজাজীং সভূতীকং কলীকুতপলার্দ্ধিক'ম।
আর্দ্রিকবরমং চুক্রং ক্ষারমস্থারমালকম্।
দশমূলকবারেণ ঘৃতপ্রস্থং বিপাচয়েৎ।
ভক্তেন সহ পাতবাং নির্ভক্তং বা বিচক্ষণৈ:॥
ক্রিমিটাংলারাজী-অরকুত্তথবাহিকাং।
বাতরোগান্ কফবাধীন্ হ্লাচ্ছুলমরোচকম্॥
পাভুরোগং ক্যাং কাসং দৌর্বলাং গ্রহণীগদম্।
মহাষ্ট্রপলকং নাম বৃক্ষমিন্দ্রাশনির্বধা।

ঘত /৪ সের, দশম্লের কাথ /৪ সেব, আদার রল /৪ সেব, চুক্র /৪ সের, চুক্র /৪ সের, চুক্র /৪ সের, চুক্র /৪ সের, দির মাত /৪ সের ও কাঁজি /৪ সের। করার্থ— সচল লবণ, পঞ্চকোল (মিলিত), সেন্ধবলবণ, হবুষা, বিটুলবণ, বন্যমানী, যব-কার, হিন্তু, জীরা, পাঁজা লবণ, রুফ্ডজীরা ও যমানী প্রত্যেক ৪ তোলা। শুদ্ধ এই ঘৃত বা অনের সাহত ইহা সেবনীয়। ইহা ক্রিমি, জর ও গ্রহণী প্রভৃতি রোগে বাবস্থো।

বিশ্বতৈলম্।

তলাৰ্দ্ধং গুৰুবিষস্ত তুলাৰ্দ্ধং দশমূলত:। জলছোণে বিপক্তবাং চতুর্জাগাবশেবিতৰ । আর্দ্রকন্ত রসপ্রত্নমারনালং তথৈব চ। তৈলপ্রস্থ: সমাদার কীরপ্রস্থ: তথৈব চ। थाएको विषक्षक गठी बाजा श्रमन्या । जिकरे शिश्रेजी मुलर हिजकर अविश्येजी । (मयमान वहां कुछे: (भावकः कर्षे वाहिनी। তেজপত্ৰাজমোদে চ জাবনীরগণস্থপা । এবামদ্বপলান্ ভাগান্ পাচয়ের ছুনাগ্নিনা। এতছি বিশ্বতৈলাখাং মন্দায়ীনাং প্রশাস্ততে। গ্রহণীং বিবিধাং হস্তি অভিসারমরোচকম। मः **अर्** अर्थाः विश्व व्यर्गमार्थाः नामकम् । লীপদং বিবিধং হস্তি অস্ত্রবৃদ্ধিক নাশয়েৎ। কফবাতোম্ভবং শোখং অরমান্ত ব্যপোহতি। কাসং খাসঞ্চ গুলাঞ্চ পাপুরোগ্রিনাশন্। ম্কল্পল্যনং স্তিকাত্তনাশ্নম্। निरतारतागहत्रदेकव जीवाः शवनिरुवनम् । রজোগ্রন্থান্দ যা নার্যো রেভোগ্রন্থান্দ যে নরাঃ। তেহপি তারণাশুক্রাচা ভবিষাতি মহাবলা: । বন্ধ্যাপি লভতে পুত্রং শুরং পণ্ডিতমেব চ। বিশ্বতৈলমিতি খ্যাতমাজেয়েণ বিনিশ্মিতম্ ।

তিলতৈল /৪ সের। কাথার্থ—বেলশুঠ
/৬। পের, দশম্ল (মিলিড) /৬। সের,
জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। আদার রদ
/৪ সের, কাঁজি /৪ সের, ত্রু /৪ সের।
কজার্থ—ধাইফুল, বেলশুঠ, কুড়, শঠী, রামা,
প্রন্বা, ত্রিকটু, পিপুলম্ল, চিতাম্ল, গজ্বপিপ্লী, দেবদারু, বচ, কুড়, মোচরদ, কট্কী,
তেজপত্র, বন্যমানী, জীবক, ধ্বভক, মেদ,
মহামেদ, কাকোলী, কীরকাকোলী, ধ্বি,
বৃদ্ধি, মুগানি, মাষাণি, জীবন্তী ও ষ্টিমধু ইহাদের
প্রত্যেকের:৪ তোলা; মৃহ আগ্রিত্ত পাক
করিবে। এই তৈল মন্দনে সংগ্রহগ্রহণী,
অতিসার ও স্তিকারোগ প্রভৃতি নানা ব্যাধি
নই হর।

গ্রহণীমিহির-তৈলম্।
ধক্তাকং ধাতকী লোগ্রং সমঙ্গাতিবিবা শিবা।
উশীরং বারিবাহক জলং মোচং রসাঞ্জনম্।

বিশ্বং নীলোৎপলং পত্ৰং কেশবং পদ্মকেশব্বন . ওড, চীন্দ্রবস্থামা, পর্কং কটরোইণী। তগর॰ নলদং ভঙ্গং কেশরাজঃ পুনর্নবা। আত্ৰরস্কদখানাং ওচ: কুটকুনখলন । यमानी कोतकरेक या॰ कर्म वकानि शकद्वार । হৈলপ্ৰস্থ পদ্ধ নমাক তক্তেশাক্সন্মন বা। क् देखपुर कर (यून धालाका किएन या। বুকা লে'ব শতিং তৎ ত কথাকোবধবারিশা ঃ এত্তসায়নবরং বর্ণপলিত্নাশ্নম। इच्छि मकाभगोम'द्र म शहरोर मक्क लिनीय ॥ ব্যার ভূকার তথা ক সাহিকার স্থাসর ব্যার ভ্রমিম। সোপদ্রবং কোষ্ঠকুলং নাশরেৎ সতামের জি॥ व्यर्गाः निकामनाः (महः वर्षः मृत्रमुवनम् । এত জি বুংহণং বৃষ্যং সক্ষরোগনিবর্হণম । বশীকরণমেতদ্ধি পুরাাযোগে বিপাচয়েৎ। সায়ং জীবু: প্রকর্ত্তবাং প্রাকৃ ষ:রাজ্ঞসংস্থি 🛊 विवाशिभिष् भाक्रणाः विवास क्रिय्रश्रम्। গর্ভসা চলিতস্যাপি স্থাপনং পর্মং শুভ্স্ । গর্ভ'রক্তে প্রকর্ত্তবামেতদ গর্ভবিবর্দ্ধনম। গ্রহণীমিহিরং নাম তৈলং ভুবনমঙ্গলম্॥ 'তলতৈল /৪ সের। কল্পার্থ—ধনে, ধাই-ফুল, লোধ, বরাক্রাস্তা, আতইচ, হুরীতকী, বেশার মূল, মুতা, বালা, মোচরস, বেলগুঠ, নীলোৎপল, তেজপত্ৰ, পদ্মকেশ্র, গুলঞ্চ, হত্রাব, শ্রামালভা, পদ্ম-কাঠ, কটুকী, তগরপাহকা, জটামাংসী, দাকু-চিনি, (বা ভীমরাজ), কেণ্ডরে, পুনর্নবা, আমছাল, জামছাল, কদমছাল, ছাল, যমানী, জীরা, প্রত্যেক ২ তোলা। কাথার্থ—কুড় চিছাল ১২॥০ সের, সের, শেষ ১৬ সের; অথবা ধনে ১২॥• পের, জল ৬৪ সেন, শেষ ১৬ সের; অথবা তক্র ১৬ সের, অথবা দোষাযুসারে অন্ত কোন গ্রহণীোগনাশক জব্যের কাথ ১৬ সের। উপরি উক্ত মুলার কাথ ও তক্র সহ তৈল পাক করতে হয় না; বেগের অফুদাবে শুদ্ধ তক্ৰ অথবা যে কোন একটি কাথের সহিত পাক করিবে। এই ভৈল মর্দ্ধনে গ্রহণী ও অতিসার প্রভৃতি নানা রোগ প্রশমিত হয়।

রুহদু গ্রহণীমিহির-তৈলম্।

তৈলং প্রস্থাতির গ্রাম্মের করং দক্তাক্ষত ও প্রা कृष्ठिक शास्त्रकरेकन छ ०० लगरः शृशक । ন্তয়োঃ কান্তং গচেণ্ডোণে অমুপাদাবশোৰ শ। একাকতা পচেছৈত্য। কলং কৰ্মী হং পৃথক। ধক্তাকং গ'ভকা লোধ্ৰং সমঙ্গাভিবিষা শিবা। सरकः वालकरिश्व शुक्राधिकत्रमाञ्चनम् ॥ নাগপুৰুপং পল্লকঞ্ ওড়েচীক্রববং তথা। প্রিয়ন্ত্র কটুকী পর-কেশরং ভগরং ভগা ৷ শরমূলং ভুক্সরাজন কেশবাড়ঃ পুনন্বা। অ'শ্রেরত্বকদন্তানাং বন্ধল'নি ৮ দাপয়েৎ 🛭 शहरीर क्षि उठ्छं घर न्नोभलिकनामनम्। হতি সর্বানতীসারান এংগীং সক্রেপিগীন্। জ্বং তুকাং তথা খাসং কাসং হিকাং বৃ্যিং ভ্রমিম। সোপদ্রবং কো**ঠক** জং নাণয়েৎ সন্তা এব হি । ৰশীকরণমেত্রদ্ধি পুষ্যধেংগেণ পাচায়ে । এইণামিধিরং নাম তৈলং ভুবনমঞ্লম্।

ভিলতেল /৪ সের। কাথার্থ—কুড্ চিছাল ১২॥। সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬
সের। পনে ১২॥। সের, জল ৬৪ সের, শেষ
১৬ সের। তক্ত ১৬ সের। কলার্থ—পনে,
ধাইফুল, লোন, বরাকোন্তা, আতইচ, হরীতকী,
লবন্ধ, বালা, পানিফলপত্র, রসাঞ্জন, নালেশ্বর, পদ্মকান্ত, গুলন্ধ, ইন্দ্রন, প্রিস্কু, কট্নী,
পদ্মকেশ্ব, তগ্রপাত্কা, শ্বমূল, ভুল্বাভ,
কেন্দ্রেট, পুন্নবা, অনুনচাল, জানছাল,
কদমছাল, প্রত্যেক ২ ভোলা; যুগাবিনি
পাক করিবে। এই তেল মন্দনে গ্রহণী ও
অতীসার প্রভৃতি নানারোগ নই হয়।

দাড়িমালং তৈলম ।

দাড়িমখন, কলং ধাস্তা বৎসকসা হচং তথা। প্ৰত্যেকমাটকং প্ৰাঞ্জলকোলে পচেৎ পৃথক ॥ চতুৰ্ভাগাবশিষ্ঠক্ক তক্ৰমাটকসম্মিতন্। পচেৎ তৈলাটকে ধীমানু গৰ্ভং দ্বা ভিষয়বঃ॥ ত্রিকট্ তিকলা মৃত্যং চব্যজীরকদৈশবন্ধ।
চাতুকাতিং মধুনিকা নাগদী চাদেবপুলাকন্
ভগতিকোষজনে ধাজা যমাজৌ বালকং তথা।
কথটাপিবা ভেকা পুলাটং বুই গীন্ধন্।
আত্রংপুরুচ প্রেণী সমক্ষেত্রগথং বরী।
ঘাতকা বিজ্ঞাচন কাইং খাদিবমের চ।
অসাধানিক মুকলা বংসকং বলা।
অসাধানিক চাকং খাদিবমের চ।
অসাধানিক চাকং বাদিবমের চ।
অসাধানিক চাকং বাদিবমের চ।
অসাধানিক চাকং বাদিবমের চ।
অসাধানিক চাকং বাদিবমের বিজ্ঞানিক ।
১০নাশ হাও ত্রনারাং প্রমেশ্যনালি বিংশ্তিম।
অধাশনিক বছাবিশালের নাশ্যেলাক সাক্ষা।

ভিল ইত্র ১৬ সের। কাপার্থ— দ'ডিমের হক ৮ পেন, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের; বালা ৮ সের, চল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের. ধনে ৮ সেব, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের; কুড় চির ছাল /৮ সের, ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। তক্র ১৬ সের। কলাৰ্থ— ত্ৰিকটু, ত্রিফলা, মূতা, চই, জীরা, সৈদ্ধব, গুড়ত্বক্, তেজপত্র, এলাইচ, নাগেশ্বর, মৌরি, জটা-মাংসী, লবন্ধ, কৈত্রী, জার্ফল, ধনে, যমানী, কাচ ডাদাম, ব্নয়মানী, বালা, আতইচ, পুলকুড়ি, পানিফলপত্র, বৃহতী, কণ্টকাবী, আমছাল, জামছাল, শালপাণি. চাকাল. वताकान्ता, इंज्यान, ब्रुप्ती, शाईकृत, (वल-শুঠ, মোচরস, তাল্মলী, কুড় চিহাল, ব্যেড্লা, গোক্ষর, লোধ, সাক্নাদি, এদির-কাষ্ঠ, গুলক্ষ, শিমুলছাল প্রত্যেক অর্দ্ধ পণ , এই সকল কল্প দ্রব্য তণ্ণুলজলে পেষণ করিয়া তৎসহ তেল পাক করিবে। এই তৈল মর্দ্দে গ্রহণীরোগ, প্রমেহ ও অর্থেবোগ প্রশমিত হয়।

অথ পথ্যাপথ্যম্।

গ্রহণীর পথ্যাপথ্য, অতিসারের পথ্যা-পথ্যের স্থায় জানিবে।

ইত্যায়ুর্বেদ-সংগ্রহে গ্রহণীরোগাধিকারঃ।

অথার্শোরোগাধিকারঃ।

অথার্শেরে। নিদান্য।

পৃথগ্দোষৈ: সমক্তেশ্চ শোণিতাৎ সহজানি চ। অশাংসি ষটপ্রকারাতি বিজ্ঞাদগুদ্রবিত্রয়ে॥ (मायायशाःमानाःमि मःभया विदिधाक्राण्डीन् । মাংসাক্ষরানপানাদৌ কুক্রত্যার্শাংসি তান জভঃ॥ क्यायकइंडिङ्ग्नि क्रक्नी उलघ्नि छ। প্রমিতাল্লাপনং তীক্তং মন্তাং মৈথুনসেবনম। লজ্মনং দেশকালো চ শীতো বাায়!মক্র 5। শোকো বা হা তপস্পনো হেতুৰা হাৰ্মীনাং মতঃ॥ কট্মলবণোঞানি বাায়ামাগ্যাতপপ্রভাঃ। দেশকালাবশিশিরে কোগো মতামপুর্নম্। विनाहि औष्ट्रमुक्तक मन्तर शामान्यक्षम् । পিতোৰণানাং বিজেয়: প্ৰকোপে হেতুৱৰ্শসাম্। মধ্বলিগ্নীতানি লব্বায়ওকণি চ। অব্যায়ামো দিবাস্থপ্ন, শ্যাদিনস্থপে র 🦭 ॥ প্রায়াত্রেরা শীতে চ দেশকালাব্টিন্তন্ম। লৈখিকাণাং সম্দিষ্টমে ২০ ক'রণমশদাম্।। হেতলক্ষণসংস্থা দিল্লাছন্দে বিণানি চ। সর্কো হেতুলিদোষাণাং সংক্রেল কণং সম্য ॥ বিষ্টাপ্তে ভাষার দৌর্কালাং বুক্ষের টেপে এব চ। কার্শামুক্যারবাহুলাং সক্ষিদাদ্যোহয়বিট্রতা।। গ্রহণাদোষপাও,তেরাশকা চে'দরশু চ। পুক্রেপাণি নির্দিষ্ট'ক্তর্শসাসভিবৃদ্ধয়ে । গুদাকরা বহুবেলাঃ গুকাল্চিম্চিমাখিতাঃ। মানাঃ ভাবারণাঃ ভবা বিষদাঃ পর্বাঃ পরাঃ॥ মিথোবিসদৃশা বক্রাস্টীকা বিস্ফুটি তাননাঃ। বিশ্বীথজ্ঞরকর্মনকংপ্রিমীফলস্থিতাঃ ॥ . কেচিৎ কদম্বপুষ্পান্তাঃ কেচিৎ সিদ্ধার্থকোপমা:। শিরংপার্থ'ংসকট্যার-বজ্ঞাণাপ্ত'ধকবা**থ**' ॥ ক্ষবথকা।রবিষ্টস্ত-হাদ্ গ্রহারোচকপ্রদাঃ। কাসখ্যোগ্রিবৈষম্য-কর্ণনাদভ্রমাবহাঃ॥ তৈরার্জো গ্রন্থিতং স্থোকং সশব্দং সপ্রবাহিক্ম। ক্রককেনপিচছাত্রগতং বিবদ্ধমুপবেশ্যতে ॥ কুষ্ণত্বভূ নথবিগা ত্রনেত্রবক্ত শ্রুচ জায়তে। গুলাপ্লাহে দরাজীলা-সম্ভবস্ত হ এব চ। পিজোত্তরা নীলমুখা রক্তপীতাসিতপ্রভা:। তম্বপ্রাবিশো বিপ্রাক্তনগো মূদবং লপ':। শুক্তিহ্বায়কুৎগণ্ড-জলৌকে!বক্ত্ৰুসন্মিভাঃ। দাহপাকজরবেদ-তৃথা, চ্ছ'ক্রচিমেরিদ'ে। সেখালো দ্রবনীলে ফ-পাত্রজামবর্জন:। যবমধ্যা হরিৎপীত-হারিজহড় নগাদয়:॥

রেখে, জ্বা মহামূল খনা মন্দর্যক্ত সিতাঃ।
ডৎসরোপটিত মিদ্ধ-ন্তর্ত্ত শুক্ত শুক্ত বিহাঃ
পিছিলাঃ ডিমিতাঃ রক্ষাঃ কণ্ড, বিচাঃ স্পর্শনিপ্রিরাঃ।
করীরপনসাস্থাভাত্তপা গোন্তনস্থিতাঃ
দ্বাসকলে স্করাস-প্রেকার্জিনিসাঃ
মহনু ভ্রু শিরে জাডা-শিশ্রভ্রকারিবঃ।
ব্রুবা হিমান্তর্কারা স্থায়বিকারনাঃ।
বসাত্ত সক্তর্জিরা মুগায়বিকারনাঃ।
বসাত্ত সক্তর্জিরা স্থায়বিকারনাঃ।
বসাত্ত সক্তর্জিরা স্থায়বিকারনাঃ।
বসাত্ত সক্তর্জিরা স্থার্জির কার্মিঃ।
ব্রুবা হিমান্তর্জিরা প্রির্জিত্ত সক্তর্জিরা স্থার্জির কার্মিঃ।
ব্রুবা হিমান্তর্জিরা কার্মিনার স্থানি হাঃ।
ব্রুবার ক্রিরাকার্যক্তর্জিরাক্তর্জানির মান্তর্জানির মান্তর্জির ক্রিকার স্থানির হাঃ।
ব্রুবার ক্রিরাকার ক্রিকার ক্রিকার মান্তর্জানির হাঃ।

গুঞ্দেশ হইতে ভিতরের দিকে যে একটি হল নাড়ী তাছে, তাহার ৪॥০ অঙ্গুলি পরি-থিত অংশকে গুদ কহে। সেই গুদনাড়া শুজাবর্তুসদৃশ তিনটি বলিবিশিষ্ট। সর্বনিমে অর্দ্ধাঙ্গুল পরিমিত অংশকে গুদেগ্রি কহে। সেই গুদেগ্র হইতে এক অঙ্গুলি পরিমিত অংশ, সংবাবী নামে প্রথমা বলি; তাহার উপরে দেড় অঙ্গুলি পরিমিত অংশ, বিসর্জ্জনী নামে ঘিতারা বলি; তদ্ধ্বে মাণ অঙ্গুলি পরিমিত অংশ, প্রবাহণী নামী তৃতীয়া বলি। এই বলিত্রেই মাংসান্ধুর জন্মিয়া থাকে।

অর্শোবোগ ছয় প্রকাব। যথা—বাতজ, পিত্তজ, শ্লেমজ, ত্রিলোযজ, রক্তজ ও সহজ (যাহা দেহের উৎপত্তির সহিত উৎপন্ন)।

বাতাদি দোষত্রয় ওক্, মাংস, রক্ত ও মেদকে দ্বিত করিয়া, গুজহদেশে ও নাসা প্রভৃতি স্থানে নানাপ্রকার আকৃতিবিশিষ্ট মাংসাদ্ধর উৎপাদন করে। এই সকল মাংসা-দ্বুবকেই অর্শ: করিয়া থাকে। এই প্রকরণে কেবল গুছার্শোরোগের বিষয়ই বর্ণিত হই-য়াছে।

কষায়, কটু, তিব্তু রুক্ষ শীতন ও লযুক্তরা আহার, অতি অল্ল ভোজন অথবা মাঝা-হীন ভোজন, তীক্ষমস্ত্রপান, অতিমৈথ্ন, উপবাস, শীতলদেশ এবং হেমস্তাদি শীতকাল, ব্যায়াম, শোক, প্রবলবায় ও আতপদেবন, এই গুলি বাতার্শোরোগের হেতু।

কটু, অম, লবণ ও উষ্ণ দ্রব্য ভোজন, ব্যায়াম, অগ্নি ও রোদ্রের তাপ, উষ্ণ দেশ ও উষ্ণকাল, ক্রোধ, মন্ত্রপান, অসুয়া এবং বিদাহী তীক্ষ ও উষ্ণবীধ্য যে সকল পানীয় অম ও ঔষধ, তৎসমস্তই পিজোন্বণ অর্শোরোগের হেতু।

মধুর, স্নিগ্ধ, শীতল, লবণ, অন্ন ও গুরুদ্রব্য ভোজন, শারীরেক পরিশ্রনাহিত্য, দিবানিদ্রা, স্থকর শ্যায় ও স্থজনক আগনে আগন্তি, পূর্ববায়ু বা সন্মুখবায়ু সেবন, শাতল দেশ ও শাতল কাল এবং চিস্তারাহিত্য এই সমস্ত শৈলিক অশোরোগের হেতু।

দোষধ্যের নিদান ও লক্ষণসংযোগে ধ্বন্ধ অর্থাৎ বাতপিত্তন, বাতশ্রেম্ম ও পিত্তশ্লেম্ম জ অর্শ: নিদেশ কারেরে এবং বাতজাদি প্রত্যেক অর্শের যে সকল হেতু উক্ত হইয়াছে, সেই সকল হেতুই ত্রিশোষজ অর্শের জানিবে। এই ত্রিদোষজ অর্শের লক্ষণের সমান জানিবে।

অর্শোরোগ উংপন্ন ইইবার পূর্দে এই
সকল লক্ষণ প্রকাশিত ইইয়া থাকে। যথা—
ভূক্ত দ্রব্য পরিপাক না হওরার উদর ভাব,
দৌর্কাল্য, কুন্ফতে গুড়্ গুড়্ শলোংপত্তি,
কুশতা, উদ্গারবাহল্য, জুজ্মার অবসাদ,
অসমাক্ষলনির্গম এবং গ্রহণী, পাণ্ডু ও উন্তররোগ উৎপন্ন ইইবার আক্ষা।

বতে। বণ অর্শ: প্রাবরহিত, চিমিচিমি বেদনা বিশিষ্ট, মানভাবাপদ, ধুম বা অরুণ বর্ণ, কঠিন, অপিচ্ছিল (ধুলিম্পর্শবং), কর্কণ (গোজিহ্বাম্পর্শবং), ধর (কাঁকরোল ফলবং ফুল্ম ফুল্ম কন্টকাকীর্ণ), পরম্পর বিভিন্নরূপ, বক্র, তীক্ষাগ্র ও ফুটিতমুধ হইরা থাকে। ইহাদের কাহারও আকার তেলাকুচাফলের বা থক্জ্রের ন্থায়, কাহারও আকার বনকাপাসী-ফলের ন্থায়, কাহারও আকার বনকাপাসী-ফলের ন্থায়, কাহারও আকার বনকাপাসী-ফলের ন্থায়, কাহারও আকার বা শেতসর্যপ্রে মায়, কাহারও আকার বা শেতসর্যপের মায়, কাহারও

বাতার্শেরোগে—মন্তক, পার্থ, রন্ধ, কটা, উরু ও বঙ্গণ প্রভৃতিতে অত্যন্ত বেদনা, হাঁচি, উল্লার, উদরভার, বঙ্গোবেদনা, অরুচি, কাস, খান, অগ্নিবৈষ্যা, কর্ণনাদ ও লম এই সকল লক্ষণ প্রকাশিত হইয়া থাকে। ইহাতে আমাশয় রোগের লক্ষণ উপস্থিত হয় এবং পিছিল, ফেনবিশিষ্ট, বন্ধ শুট্লে মল অল্প আর অল্প নির্গত হয়। মলত্যাগকালে অত্যন্ত যাত্না ও শব্দ হইয়া থাকে। পীড়িত ব্যক্তির অক্, নথ, মল, মৃত্র, নেত্র ও বক্তু ক্ষণবর্ণ হয়। এই পীড়া হইতে গুলা, গ্রীহা, উদ্বরোগ ও অষ্ঠালারোগ ভ্রিতে পারে।

পিতোরণ অর্শের মাংসাঙ্কর সকল নীলাগ্র রক্ত পীত বা ক্লংবর্ণ, তরলরক্ত প্রাবী, আমগন্ধি, অল্পরিমিত, কোমল ও লম্বনান. শুকের জিহ্বা, যক্কতের খণ্ড বা ক্লোকের মুখের ন্তায় আক্রতিবিশিষ্ট, মবের ন্তায় হলমধ্য ও উন্ম-বিশিষ্ট। ইহাতে দাহ, পাক, জ্বর, ঘর্মাগম. ত্রুণ, মুর্চ্ছা, অক্রচি ও মোহ উপস্থিত হয় এবং নীল পীত বা রক্তবর্ণ, তরল ও অপক মলভেদ হইয়া থাকে। রোগির অ্ক, নথ, মল, মূত্র ও বক্ত, হরিত পীত (হরিতাল) বাহরিদ্রা বর্ণসূক্ত হয়।

^{*} হুক্রত গ্রন্থে সহজ অর্ণের লক্ষণ এইরূপ লিপিত আছে, বধা—মাংসাল্পর সকল ছুদ্দদ্দ, ককল, অরণ বা পাপুবর্গ ও বিকট অন্তমুগবিশিষ্ট হয়। রোগী কুল, অলাহারী, শিরাব্যাগুদেত, অলপ্রজাং, ক্ষীণরেতাং, কীণ-ম্বর, ক্রোধালু, অলাগ্নি এবং চকুং-কর্ণ-নাসিকা ও শিরো-রোগে পীড়িত, তদ্ভিন্ন অন্তর্কন আন্টোপ ক্লয়লেগ ও মক্রচি প্রভৃতি উপদ্রব শ্বারা উপদ্রস্ত হইয়া থাকে।

শেখোৰণ অর্শের অন্ধর সকল মহামূল, অর্থাৎ নিবিড়াবয়ব, অল্লবেদনাবিশিষ্ট, খেতবর্ণ, দীর্ঘাক্ততি, স্থল, তৈলাভাক্তবং স্নিগ্ধ, অনম্র, বর্ত্ত লাক্ষতি, গুরুত্রব্যাক্রান্তবং ভারী, নি-চল, পিচ্ছিল, আর্দ্রবন্ধাচ্ছাদিতবং অমুভূত, মহণ, অত্যন্ত কণ্ডবিশিষ্ট ও সুৰম্পৰ্শ। ইহা-বংশান্তর, কাঁঠালবীজ দের আকার গো-স্তনসদৃশ। এই অর্শে বক্ষণদদ্ধে বন্ধনবৎ পীড়া এবং শুহুদেশে বস্তিতে ও নাভিস্থানে আকর্ষণবং বেদনা, খাস, কাস, বমনবেগ. মুখুস্রাব বা গুছুস্রাব, অরুচি, পীনস, মেহ, শীতজ্বোৎপত্তি, মৃত্রকুদ্ধ, মস্তকের জড়তা, ক্লীবতা, অগ্নিমান্দ্য, ব্মি, অতিসার-গ্রহণ্যাদি আমবছল পীড়ার উৎপত্তি এবং প্রবাহিকা-লক্ষণাক্রান্ত, বসাসদৃশ কফমিশ্রিত বহু মলের निर्श्य, এই সকল লমণ দৃষ্ট হয়। ইহা হইতে क्रमत्रकानि आव इत्र ना धवः मलत कार्ठिश থাকাতেও অর্শের অন্ধর সকল বিদীর্ণ হয় না। রোগির ত্বক ও মলাদি তৈলাভ্যক্তবং স্নিগ্ধ ও পা গুবর্ণ হইয়া থাকে।

বাতিক পৈত্তিক ও শৈল্পিক জ্বশের যে সকল লক্ষণ লিখিত হইয়াছে, সানিপাতিক ও সহজ্ব অর্শেও সেই সকল লক্ষণ সংঘটিত হইয়া ধাকে।

অথার্শেরোগ-চিকিৎসা।

ছ্র্নায়াং সাধনোপায়শ্চতুর্ন্ধা পরিকীর্দ্তিতঃ। ছেষজন্মারশন্তায়ি-সাধারাদান্ত উচাতে।

অর্শোরোগের চিকিৎসা চারি প্রকার;

যথ:—ঔষধপ্রয়োগ, ক্ষারপ্রয়োগ, শন্ত্রপ্রয়োগ ও
অগ্নিপ্রয়োগ। চারি প্রকার চিকিৎসার মধ্যে
ঔষধ-চিকিৎসা বলা ঘাইতেছে।

যদ্বালোরাত্সলোম্যায় যদগ্রিবলবুদ্ধয়ে। জন্মপানৌধঞ্জব্যং ভং দেবাং নিত্যমশলৈ:॥ বে সকল অমুপান, ঔষধ ও ভোজাদি দ্বব্য বায়ুর অমুলোম, অগ্নির দীপ্তি ও বলের বৃদ্ধি করিয়া থাকে, সেই সকল দ্রব্যই অর্শো-রোগির নিত্য সেব্য।

গুদার্শিয়ং প্রলেপাদি-ক্রিয়া তীক্ষা বিধীয়তে।
প্রাবিশাং রক্তমালোক্য ক্রিয়া কার্য্যাপ্রপৈত্তিকী।
শুকার্শে তীক্ষ প্রলেপাদি ক্রিয়া বিধেয়।
যে অর্শে রক্তপ্রাবাদি হয়, তাহাতে রক্তপিত্তের
চিকিৎসা কর্ত্তবাঃ।

শক্তৈবাণ জলৌকাভিঃ প্রোচছ নকটিন;র্শসঃ। শোণিতং সঞ্চিতং দৃষ্ট্যা হরেৎ প্রাজ্ঞঃ পুন:পুন: ॥

যদি অর্শের মাংসাদ্ধর ক্ষীত বা কঠিন হয় এবং ভাহাতে রক্ত সঞ্চিত থাকে, ভাহা হইলে অন্ত্র বা জলোকা দারা রক্তমোক্ষণ করিবে।

শ্লেমাশনো শুনে পার্মে রক্তমোক্ষং জলোকয়া। কুতা চার্করদৈলে পো দাহো বাত্রাপি শস্ততে ॥

শ্লেমজনিত অর্শোরোগে গুহুনাড়ীর পার্শ্বে জৌক ধরাইয়া রক্তমোক্ষণ করত আকন্দ-রসের লেপ দিবে। ইহাতে দাহও প্রশস্ত।

সুক্কীরং রঞ্জনীযুক্তং লেপাদ্হর্নমনাশনম্। কোশাত্কীরজোহধান্ত্রিপত্তি গুলোভবাং॥

মনসা সিজের আঠার সহিত হরিদ্রাচ্প মিশ্রিত করিয়া বলির মূথে প্রলেপ দিলে অথবা ঘোষাফলচূর্ণ দারা বলি ঘর্ষণ করিলে উহা থসিয়া যায়।

অর্কনীরং সূহীকীরং তিক্ততুব্যাক্ত প্রবাঃ। ক্রপ্রো বস্তমুক্তঞ্চ লেপনং শ্রেষ্ঠমর্শসাম ॥

আকদ্দের আঠা, মনসার আঠা, তিত-লাউএর কচি পাতা ও ডহরকরঞ্জের ছাল সমাংশে লইয়া ছাগমূত্রে পেষণ করত বলিতে প্রালেপ দিলে বিশেষ উপকার হয়। ইহা অর্শের শ্রেষ্ঠ প্রালেপ।

অর্শোদ্বী গুদগা বর্ত্তিগু ড়গোবাকলোন্তবা। জ্যোৎস্লিকামূলককেন লেপো রক্তার্শসাৎ হিতঃ॥

পুরাতন গুড় কিঞ্চিৎ জলে গুলিয়া, তাহাতে ঘোষাফলচূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পাক করত বাতি প্রস্তুত করিবে। ঐ বাতি শুহে প্রবিষ্ট করাইয়া দিলে অশঃ নই হয়। ঘোষা-লতার মূল বাটিয়া প্রেলেপ দিলে রক্তাশঃ নিবারিত হইয়া থাকে।

পীলুতৈলেন সংনিপ্তা বর্ত্তিকা গুদমধ্যপা। পাত্যতাশনংং সিদ্ধং ন বলেক্তেনা কচিৎ॥

একটি বর্ত্তি পীলুতৈল!ক্ত করিষা ঋষ্টমধ্যে প্রয়োগ করিলে বলি সকল পঞ্জিরা যায়, এবং বলিপাতগনিত বেদনা থাকে না। ইহা অশেব সিদ্ধ ঔষধ।

পিশ্বনী দৈন্ধনং কুঠং শিরীমন্ত ফলং তথা।
মুধাছ্ধাক্ত্রের্বা লেপে হয়ং গুদুজং হরেং ।
হ্রেড্রাজালিনীচুর্বাং কটুতৈলসম্প্রিত্য।
এব লেপো বরঃ প্রোভ্রো ফ্রান্সামন্তকাবকঃ।

মননাসিজের বা আকলের আঠা।
সহিত পিপুল, সৈদ্ধব, কুড় ও শিরীধদলচুর্ণ
মিশ্রিত করিয়া অথবা সর্বপতৈলের সহিত
হরিদ্রোও ঘোষালভাচুর্ব মিলাইয়া বলির মুখে
প্রালেপ দিলে উহা খাসিয়া যায়।

শুরণং রজনী ব**হ্নিট্রগ**ণং গুড়মিশ্রিতম্। পিট_{্ৰ}'রনানকৈলে পো হস্তঃশীংসি মহাস্থাপি ॥

ওল, হরিক্রা, চিতা সোহাগার থৈ, ইহা-দের চূর্ণ গুড়বংযুক্ত ও কাজি দ্বারা পেষণ করিয়া অর্শে প্রকেপ দিলে মহান্ শ্লৈকি ক্ষান্তি হয়।

আরনালেন সংপিষ্টা সবীজকটুভূম্বিকা। সভয়া হস্তি লেগেন চার্শাংসি মূলতো প্রবম্॥

বীজ সহিত তিতলাউ কাজিতে পেষিত ও ওড়ে সংষ্কু কবিয়া ভাহার প্রলেপ দিলেও অৰ্থ: সমূলে উলুলিত হয়।

ভাবিতং রজনীচুলি সুহীক্ষারে পুন,পুন:। বন্ধনাৎ স্বৃঢ়ং স্বং ছিনভাগো ন সংশয়:॥

হরিদ্রাচ্ব-সংযুক্ত সীজের আঠায় কাপাস-স্ত্র পুনংপুনং ভাবিত কার্য্যা তদ্বারা অর্শের বলি দৃঢ়রূপে বান্ধিয়া রাখিলে উহা ছিন্ন ইইয়া পড়ে। তুখীবীজং সৌন্তিদন্ত কাঞ্চীপিষ্টং গুড়ীএরন্। আর্শোহরং গুদস্থং স্থাদ্ধি মাহিষমন্তঃ॥

তিতলাউএর বীজ ও সান্তার লবণ, সমভাগে কাঁজিতে পেষণ করিয়া তিনটা গুড়ী প্রস্তুত করিবে। ঐ গুড়ী গুছে প্রয়োগ করিলে ফর্মা বিনষ্ট হয়। পথ্য—মাহিষদ্ধি।

মহাবোধিপ্রদেশস্ত পথ্যাকোষা একারজঃ।
কফেন * লেপতো হস্তি লিঙ্গবর্তিমনংশয়মূ॥
* কফেনেতাত্র সচ্চেনমিতি পাঠাপ্তরম।

মহাবোধি এ.দেশের (মগধে প্রাদিদ্ধ) হবীতকাচুর্ব ও ঘোষাফলচুর্ব থুতু মিশ্রিত করিয়া লেপ দিলে নিশ্চয়ই লিঙ্গাশঃ নিরাবিত হয়। (কেহ বলেন, সমুদ্রফেন জলে ঘণিয়া তৎসহ উক্ত চুর্বিয় মিশাইয়া প্রলেপ দিবে।)

অপামার্গাজিনুজ, কারো হরিতালেন সংযুতঃ। লেপেন লিকসঞ্ভমশো নামহতি ক্রম ॥

আপাংমুলের কাব ও হরিতাল সমভাগে ভবের সহিত পেবল করিয়া লেপ । কে লিকাশং বিনই হয়।

বাতাতীসারবন্তিন্ন-চ্চোংস্কর্গাংখ্যপাচরেও। উদ্যান্তবিধানেন গাচুনিট্কানি চাস্থাও। অশোবোগো তরল হল হইলে বাতাতি-সারের স্তায় এবং কঠিন মল হইলে উদাবর্তের বিধানে চিকিৎসা করিবে।

বিড়্বিবন্ধে হিতং তক্রং যমানী ি ড়সংযুত্ম।
বাতরেখাশসাং তকাৎ পরং নাজীহ ভেষজম্ ॥
তৎ প্রযোজ্যং যথালোক্ষং সম্প্রহং রুক্ষ্যের চ।
ন বিরোহিতি গুদজাঃ পুনস্তক্রমমাহতাঃ॥

অর্শোরোগে কোর্চবদ্ধ থাকিলে, যমানীচুর্ণ ও বিট্লবণ সহ তক্র পান করিতে দিবে।
বাতশ্রেজনিত অর্শে তক্রের স্থায় উপকারী
আর শ্বিতীয় ঔষধ নাই। দোষামুসারে
সম্মেহ বা ক্রন্ফ তক্র প্রধোজ্য অর্থাৎ বায়ুক্তন্ত
হইলে সম্মেহ (মাথন সহিত), শ্লেজন্ত হইলে ক্রন্ফ (মাথন রহিত) তক্র প্রয়োগ করিবে। তক্র সেবনে অর্শঃ একবার প্রশ্মিত
হইলে আর কথন হয় না। নাগেন নলিকাং কৃষা স্থৃতদৈশ্বলেপিতাম্। শুদ্ধ'নে ক্ষিপেরি চাং মলরোধপ্রণান্তরে।

মলরোধ হই একটি সীসার নলে মৃত ও দৈন্ধব মাথাইরা ঐ নল গুহু মধ্যে প্রবেশ কণাইবে। নিত্য নিত্য এইরূপ করিলে মল-রোধের প্রশাস্তি হয়।

হচং চিত্রকমূলন্ত পিষ্ট্র। কুস্কং প্রলেপথেৎ।
তক্রু বা দুবি বা তত্ত জাতমর্শেহেরং পিবেং॥
চিতামূলের ছাল বাটিয়া তদ্বারা একটি
কলদীর অভ্যন্তর ভাগ প্রলিপ্ত করিবে।
উহা শুক্ষ হইলে সেই কলদীতে দধি পাতিয়া
বা ঘোল মন্থন করিয়া ভাহা পান করিলে
অর্শঃ বিনষ্ট হয়।

পিন্তরেশ্বপ্রশামনী কচ্ছে,কজুকজাপহা। শুসজান নাণয়তাকৈ বোজিত' সগুড়'ভয়া।

হরীতকীচুণ গুড়ের সহিত সেধন করিলে অর্শ: নিধারিত হয়। ইহা পিত্রশ্লেমনাশক এবং।কচ্চু (শোস্পাচড়া) ও কণ্ট্নাশক।

স গুড়াং পিশ্লপীযুক্তামভয়াং স্বতভর্জিতাম্। কিবৃদ্ধতীযু ঠাং বাপি ভক্ষয়েদাযুলোমকীয়।

দ্বতভজ্জিত হ্বীতকীচ্ব, কিঞ্চিং পিপ্নলী চুব ক্ষণৰা তেউড়ামূল ও দন্তীমূল চুর্বের দাহত মিশ্রিত কবিয়া গুড়সংযোগে সেবন কবিলে অর্লঃ প্রশামত হয়। ইহা বায়ুব অনুবোমকাবক।

िलाङ्गक्षत्रभः स्थानिक खक्तरामधिवर्षनम् । कृष्ठेरत्रागञ्जाः स्थानेमनीयाः नामनः भत्रम् ॥

তিল ১ তোলা এবং ভেলার মুটাচূর্ণ ২ রতি একতা সেবন করিলে অগ্নিস্থান্ধ হয়। ইহা অর্শোরোগের অতি উংক্কৃত্ত ঔষণ এবং কুগুরোগনাশক।

হরীতকীং তিলান্ ধাত্রীং মৃদ্বীকাং মধুকং তথা। পক্ষরকস্ত ভোয়েন পিবেদশোনিবৃত্তয়ে॥

হরীত কী, কৃষ্ণতিল (থোসাশৃত্ত), আমলকী, কিদ্মিদ্ ও যষ্টিমধু, এই সকলের চুর্ণ
সমভাগে ফল্সাছালের রস সহ সেবন করিলে
অর্শের শাস্তি হয়।

গোমুত্রবৃষ্টিকাং দক্তাৎ সঞ্জাং বা হরীক্রীম্। পঞ্কেলেকযুক্তং বা ক্রমক্ষে প্রদাপয়েৎ ॥

হরীতকী গোম্ত্র ভিডাইয়া প্রদিন তাহা গুড় মিশ্রিত কার্য়া খাইতে দিবে কংবা পঞ্ কোলচুর্গ্রংমুক্ত এক অশ্রোগিকে সেবন করিতে দিবে, ভাহাতে বিশেষ উপকার হইবে।

মূলিপ্তং শৌরণা কলং প্রভূগতৌ পুটপাকবং। অক্যাৎ সঠেলবর্ণাং ছুন্মবিনিবুরুরে॥

বস্ত ওল অভাবে গ্রাম্য ওল মৃত্রিকা স্বারা লপ্ত করিয়া পুটপাকে সিদ্ধ কারবে, পরে সেই সিদ্ধ ওল কিঞ্চিং তৈল- ওলবণের সহিত সেবন করিবে। ইহা অর্ণের উংক্লাই ঔষধ।

খিন্নং বার্ত্তাকুফলং খোবারাঃ ক্ষারজেন দলিলেন। তদ্মুগভৃষ্টং যুক্তং গুড়েন বা ভৃষ্টিতো যেহৈত্তি॥ পিবতি চন্দং তক্রং তন্তাখেবাতিরক্ষণুললানি। য'ন্তি বিনাশ পুংসাং সহজাগুলি সপ্তরাত্তেণ॥

বোষালতার ক্ষান প্রস্তুত করিয়া ৬ গুণ জলে গুলিয়া ২১ বান ছাঁকিয়া সেই ক্ষারজলে কতকগুলি বার্ত্তাকু দিন্ধ করত স্পতে ভাজিবে। পরে যথোপষ্ক গুড়ের সহিত্ত সেই বার্ত্তাকু ভূপ্তি পর্যান্ত আহার কেরিয়া তক্র পান কাববে। এইরূপ সাত্ত দিন কবিলে অতি প্রের ভাশঃ এবং সহজ (জন্মাব্দি জ্ঞাত) ভশ্ত নিবারিত হ্য়।

শ্বিতানাং তিলানাং প্রাক্ প্রকৃথং শীতব্যানু। গাদতোহশীংসি নগুস্তি দ্বিজনাচ গিঙ্গপুষ্টিদ্য ॥

খোদাতোলা ক্লম্বতিল ৮ তোলা পরিমাণে খাইয়া পশ্চাৎ কিঞ্চিং শীতল জলপান করিলে অর্শঃ বিনষ্ট, দম্ভ দৃঢ় ও দেহ পুষ্ট হয়।

শঙ্গবের-ক্বাধঃ।

কফজে শৃক্ষণেরত কাথো নিত্যোপ্যোগিক: ।
কফজ অশে নিত্য শুঁঠের কাথ সেবন করা কর্ত্তব্য ।

অথ রক্তার্শেলকণ্য।

রজোৰণা শুদে কীলাঃ পিত্তাকৃতিসম্বিতাঃ। বটপ্ররোহসদশা শুঞ্জাবিক্রমসন্নিতাঃ। তেহতার্থং ছাইমুখ্ন পাচবিট্কপ্রশীড়িতা:।
প্রবস্তি সহসা রক্তং তক্ত চাতিপ্রবৃত্তিত:॥
ভেকাত, শীডাতে ছ.বৈ: শোপিতক্ষসন্তবৈ:।
হ'নবর্ণবলোৎসাহো হতৌজা: কলুবেজিয়:।
বিট্ স্থাবং কঠিনং ক্লক্ষধো বাযুর্ন বর্ততে॥

রক্তার্শের লক্ষণ, পিত্তার্শের লক্ষণের স্থায় জানিবে। ইহার মাংসাস্কুর সকলের আফুতি বটাপ্কুরসদৃশ; বর্ণ কুঁচ বা প্রবালের প্রায় লোহত। ইহার মলের কাঠিপ্রবশতঃ পেষিত হইলে, সহনা অধিক পরিমাণে ছপ্ট ও উষ্ণ রক্তমাব করে এবং সেই রক্তের অভিমাব হেতুরোগী ভেকবৎ পীতবর্ণ ও রক্তক্ষয়জনিত রোগে প্রাত্ত এবং বিবর্ণ, কুশ, হীনোংসাহ, ছর্বল ও বিক্ততেক্তির হইলা থাকে। ইহাতে মল শ্রাবর্ণ, কঠিন ও কৃক্ষ হয় এবং অণোবায় নির্নত হয় না।

অথ রক্তার্শান্চকিৎসা।

রস্কার্শদামুপেক্ষেত রক্তমাদৌ প্রবদ্ভিষক্। গুষ্টাপ্রে নিগৃহীতে তু শুলানাহাবসগ্গদাঃ।

রক্তাশঃ হইলে প্রথমেই রক্তস্রাব-নিবারক কোন ঔষধ প্রয়োগ করিবে না। কারণ, হুষ্ট রক্ত বন্ধ করিলে শূল, আনাহ ও বীস্পাদি রক্তবৃষ্টিজনিত নানা পীড়াদি জন্মাইতে পারে।

শক্রকাথ: সবিখো বা:কিংবা বিবাশলাটবঃ। যোজ্যা রক্তাশসৈক্তবজ্যোৎস্লিকামূললেপনম্॥

কুড় চির অথবা বেলগুঁঠের কাথে কিঞ্চিং গুঁঠচুর্ব প্রক্ষেপ দিয়া রক্তাশোরোগিকে পান করিতে দিবে। ঘোষালতার মূল বাটিয়া বলিতে প্রলেপ দিলেও উপকার হয়।

ठन्मना मिकांथः।

চন্দনাকরাততিক্তাক-ধন্বব্যাসাঃ সনাগরাঃ ক্ষিতাঃ। রক্তার্শসাং প্রশমনা দাক্ষীত্তশীরনিম্বাল্ড॥ রক্ত কলন, চিরতা, গুরালভা ও নাগর-মৃতা (মতান্তরে শুঠ) ইহাদের কাথ অথবা দাক্ত বিদ্রা, দাক্তিনি, বেণার মৃত্য ও নিমের কাথ পান করিলে রক্তার্শ: নিবারিত হয়।

লালৈঃ পেয়া পীতা চুক্রিকাকেশরোৎপলৈঃ সিদ্ধা। দা হস্তাত্রত্রাবং তথা বলাপুরিপণীজ্যাম ॥

আমরুলশাক, নাগকেশর ও উৎপল এই সকল দ্রব্যের সহিত সিদ্ধ অথবা বেড়েলা ও চাকুলের সহিত সিদ্ধ লাজপেয়া পান করিলে আর্শ্ব বফ্জ্যাব নিবারিত হয়।

নবনীততিলাভ্যাসাৎ কেশরনবনাত্মকরাভ্যাসাৎ।
দ্বিসরম্পিতাভ্যাসাদ্ গ দ্বা: শাম্যন্তি হক্তবহাঃ।
রক্তাশোরোগিকে প্রতিদিন মাথন ও
নিত্তক্ ক্ষণ্ডিল, বা মাথন, পদ্মকেশন
(কাহারও মতে নাগকেশর) ও চিনি কিংবা
দ্ধির সরক্ষত তক্ত্রে শাইতে দিবে। তাহাতে
রক্তাশাঃ নিবারিত হুইবে।

সমক্ষোৎপলমোচাহন-তিরীটভিলচন্দনৈঃ। ছাগক্ষীরং প্রযোক্তব্যং গুদক্ষে শোণিতাপহম্।

বরাহক্রাস্থা, নীলোৎপল, মোচরদ, পটিকা লোপ, তিল, রক্তচন্দন, এই সকল দ্রবা বাটিয়া ছাগছথে অলোড়িত করিয়া অথবা ক্ষীরপাক বিধানে পাক করিয়া পান করিতে দিবে। ইহা রক্তাশের উৎক্রই ঔষধ।

কোমলং নলিনীপত্রং পিষ্ট্রা পাদেৎ সশর্করম্। প্রান্তরাজং পরঃ পীঝা রক্তপ্রাবাদ্ বিম্চাতে।

কচি পদ্মপত্র বাটিয়া চিনির সহিত সেবন করিলে অথবা প্রাতঃকালে ছাগহত্ব পান করিলে রক্তশ্রব নিবারিত হয়।

সপল্লকেশরং ক্ষোদ্রং নবনীতং নবং লিছন্।
সিঠাকেশরসংযুক্তং রক্ষাশিসি স্থবী ভবেৎ ।
পদ্মকেশর, মধু, টাট্কা মাথন, চিনি ও
নাগকেশর একত্র সেবন করিলে রক্ষাশিঃ
নিবারিত হয়।

সশর্করং কৃষ্ণতিসন্ত কৰং
বন্তাপরোভিঃ পিবতি প্রভাতে।
সন্ত্যো হরত্যেব গুদোখরক্তং
বোগোহরমূকো গিরিশেন সাক্ষাৎ ॥

পিষ্ট ক্লফু তিল ১ তোলা ও চিনি অর্দ্ধ তোলা, এক ছটাক ছাগলুগ্ধেব সহিত দেবন ক্রিলে সন্তঃ রক্তপ্রাব নিবারিত হয়।

কৌটলং কৰমাণায় পিষ্ট্ৰা তক্ৰেণ বুদ্ধিমান্। পীয়া রক্তার্শসো হক্ত-স্রুতিমান্ত নিষম্প্রতি॥ কুড্,চির ছাল॥• তোলা বাটিয়া তক্রের স্বিত সেবন করিলে রক্তশ্রাব নিরুত্ত হয়।

ছাগেৰ প্ৰদা কৰং শতমূলীসমূত্তবম্। পিৰেক্সকাশ্সক্তৰং সদিতং দাড়িমং রদম্॥

শতমূলী ২ তোলা বাটিয়া ছাগছ্গ্রের স্হিত অথবা দাড়িমরস চিনিব সহিত সেবন করিলে রফ্রার্লঃ প্রশৃমিত হয়।

অপামার্গন্ত বীজানাং কক্ষতুল্বং(রাগা) প্রীতো রক্তানিবাং নাশং কুরুতে নাজ সংশ্রাহ

আপাঙ্গের বাজ চালুনিজলে বাটিয়া পান করিলে নিশ্চরই রস্কার্শঃ বিনষ্ট হয়।

व्यथनका निधु भः।

অবসকাধ নিশু তী বৃহতী পিশ্বনী ঘুতম্ ।
ধ্পোংরং স্পর্নাতে ক্রপনাং শমনে ক্রম্ ॥
কর্পকা, নি,নন্দে, বৃহতী, পিপুল, ইহাদের
চুর্ন ও ঘুত একত্র মি,শ্রত করিয়া তাহার
ধুম গুহুত্বারে লাগাইলে নিশ্চয়ই অশ্প্রাশ্বাত হয় ।

व्यक्तम्ना निधुभः।

অর্কমূলং শমীপত্রং লুকেশাঃ সর্পকর্কঃ। মার্ক্তার্চক্র চাত্ত্রাক গুদধূপোহর্শনাং হিতঃ।

আকলের মূল, শাইপাতা, মান্নবের চুল,
সাপের পোলদ, বিড়ালের চাম্ডা এবং মৃত
ইহাদের ধুম, অর্ণের পক্ষে বিশেষ হিতকর।
রালচ্ণত হৈলেন সার্থপেণ বুড়ত চ।
ধূপদানেন মুক্তার্শো-রক্তবাবো নিবর্ভতে।
রক্তৌশশান্তরে দেয়ং গুদে কপ্রধূপনম্॥
সর্ধপতৈলযুক্ত ধূনার ধূম গুহুদেশে
গুরোগ কারলে, অর্ণের রক্তবাব নিবারিত
হয়। রক্তবাবানবারণার্থ গুহুদেশে কপ্রের

ধুস্তুরাদিঃ।

ধৃত্রদা ফলং পকং পিয়লীনাগর'ভয়া:। বালকং গুড়দংঘূজং ভক্ষাং গুল টুকং নিশ। দিতামধ্বালৈঃ কধৈকং পিবেৎ পিলার্শদাং জয়ে॥

পাকা ধুহ্ গার ফল, পিপুল, শুঠ, হরীতকী ও বালা, এই সকল জবেরে চূর্ণ গুড়সংখুক্ত করিয় চিনি, মধু ও ছতের সাইত ২ ভোলা পরিমাণে রাজিতে সেবন করিলে পৈতিকার্শঃ প্রশমিত হয়। (য়ৢয় বৈছেরা প্রমান হইতে॥। আনা পারমাণে সেবন করিতে ব্যবস্থা দেন।)

(मर्नानीयानः।

দেবদানীকযায়েণ শৌচমাচরতাং নৃগংম্। কিংবা তদ্ধিমসেবাভিঃ কুতঃ স্থান্ত দক্ষাস্কুরাঃ॥

ঘোষালভার কাথে বা ঘোষালভা ভিজা জলে যে শৌচক্রিয়া করে, ভাহার কেন আর্শেহস্কুর জনিবে প

ভল্লাতায়তযোগঃ ।

গুড়ার পাক্ষণ শুক্ষী মুগু **গুঞ্জ।** চ কেতকা। সম্ভাব পাক্র**নৈম দি, ব বালভন্নাত্ত্রী**জকন । দিনৈকং মন্দরেশ পাড়ং নিশ্লামিং ভলবেং সদা। ভলাতামূত্রোগোচ্যং পিত্রজার্শাংসি নাশাংক।

গুলঞ্চ, ঈশ্লাঙ্গনা, কাক্ডাশৃঙ্গী, বড় খুল্-কুড়ি, গুঞ্জা ও কেতকী, ইহাদের পত্রের রসে কটি ভেলার বীজ একদিন উত্তমধ্বপে মর্দদ করিরা ২ মাধা পরিপমণ দেবন করিলে সর্ম প্রকার পিত্তক অর্দা বিন্ধা হয়।

করঞ্জাদিচুর্ণম্।

চিরবিশাগ্রিদিক্ধ-নাগরেক্রযবারল্ন। তত্ত্বে পিবতোহশাংসি নিপতজ্ঞান সহ।

কঃ স্কৃষ্ণ বের শাস, চিতা, সৈন্ধর, শুঠ, ইক্রম্ব ও শোনা, ইহাদের চুর্ণ তক্রের সহিত পান করিশে রক্তের সহিত অর্শঃ বিনষ্ট হয়।

धुभ मिरव।

লবণোভ্যাগ্রচূর্ণম্।

লবণোভ্যনজিকলিধ্ববাং-কিরবিধ্যংশপিতুমন্ত্রান্। কির সপ্তদিনং স্থিতালুলিভান্ কি মন্ত্রিজেসি পায়ুক্তান্॥

সৈন্ধনলবৰ, চিতা, ইন্দ্ৰৰ, তহৰকরঞ্চাল ও মহানিমছাল, ইছাদেৰ চুৰ সম্ভাগে বইয়া তকে আলোছিত করিয়া সাত্দিন সেবন কৰিলে বাহাৰ নিবাৰিত হয়।

মরিচাদি চুর্ন।

মরিচং থিঞ্জা কৃষ্ঠং এমধ্যকং জীৱনাগরম।
বচাহি কুষিড়কানি পথাবিজ্ঞান্তমে দেকন্ ।
নতেগাং কা যেনে গং চন্তি বিশুং ওড়ম।
আদেহ কংমি একাশি শিবেছকগানং ভিত্ত।
সক্ষাণাশাংসি মন্ত্ৰি বাহলানি বিশেষভাগ

মরিচ, পিপুল, কুজ, সৈরুব, জীরা, শুঠ, বচ, হিং বিহৃত্ব, হবীতকী, চিতা ও যমানী ইহাদের চ্বাং তোলা ও ওড় ১ তোলা নিশ্রিত করিয়া সেবন করিবে। অনুপান—উফজল। ইহা থারা সর্কপ্রকার অশঃ বিশেষতঃ বাতার্শঃ বিনন্ত হইয়া থাকে। (শ্রণ্যোদক ও বাতার্শার ওড় বাতার্শের বিশেষ উষ্ধা)।

সমশর্করং চূর্ণম্।

শুঠী কণাম'রচনাপদলয়গে নং চুণাকুতং জমবিবন্ধিতমুগ্ধ্মন্ত্যাৎ। পাদেদিদং সমসিতং গুদলাম্মিনান্য কাসকি চিথ্মনক্ঠজদাময়ের।

ছোট এলাইচ : ভাগ, দাক্ষচিনি ২ ভাগ, তেজপান ৩ ভাগ, নাগকেশন ৪ ভাগ, মরিচ ৫ ভাগ, পিপুল ৬ ভাগ, শুঠি ৭ ভাগ, এই সকলের চুর্ণ একত্র করিরা স্বর্জুর্ণ-স্নান চিনি মিশ্রিত করত উপস্কুত্র মাত্রাস্ব সেবন করিলে অশ্বঃ প্রভৃতি মূলের লিখিত বোগ স্কল প্রশ্নিত হয়।

কর্পুরান্তং চূর্ণম্।

খনদারো লবঙ্গঞ্ এলা ওড্নাগকেশরম্। জাতীকলমূশীরঞ্নাগরং কৃক্জীরবম্। কুকাগুরু তুগাফারা মাংসী নীলোৎপলং কথা।
চন্দনং তগরং বলো ককোলকেন্তি চূর্ণায়ং ॥
সমভাগানি সর্কাণি সাক্রাভাগিক সিচা ভবেং।
কপ্রিজামিদং চর্দং বাতালোমাশনং পরম্॥
বোচনং তপ্ণ বৃষং তিলেন্দ্রং বলপ্রদম্।
সংলোশং বাটিরোগঞ্ ক্সেছিকাঞ্ পীনসম॥
বিজ্ঞাণ ক্ষক্রাস্থান্যবস্কর্ম।
প্রেইক্টিপ্রাণীন প্রতিম্পি নাশ্রেং॥

কপূর, লবন্ধ, এলাইচ, গুড়ন্ত্ৰক্, নাগ্ৰেকাৰ, জান্ধক্ষণ, বেণার মূল, শুঠ, কালজীরা, ক্ষান্থক, বংশলোচন, জটামাংনা, নীলপদা, পিগুল, চন্দন, ভংরপাত্তক্ষণ, বালা ও কাক্লা, এই সমূল জবাকে একন চুণিত কাবিবে, সকলেব অর্দ্ধেক চিনি গুছণ কিনিয়া ভাছাতে মিশ্রিত কারবে। এই কপরাত্ত চুণ বাভার্নের শ্রেচি ঔষণ। ইহা ক্চিজনক, বলকারী, বুষা, গ্রিদোষন ও ভর্পণ। এই উম্প সেবনে প্রোকোক হন্দোগ, মুন্ধা, অভীদার, প্রল্ম ও গ্রহণ প্রস্থা বিভাগতি হয়।

বিজয়চূর্ণম।

ত্রিকটু, (শুঁঠ, পিপুল, মরিচ), ত্রিফল: (হুরীতকী, বহেড়া, আমলকী), ত্রিজাত দ (দার্কাচনি, এনাইচ, তেরপঞ্জ), ২চ, হিং

 ক বেহ বেহ তিজাত ছানে তিমদ অর্থাৎ নৃত্য বিভ্লপ ও চিতা গ্রহণ করেন। তাহাধা কাগ্রি শক্ত ভেলা অর্থ করিয়। পাকেন। আক্নাদি, যবক্ষার, হরিদ্রা, দার্ক্ছরিদ্রা, চৈ, কট্কী, ইন্দ্রযব, অগ্নি (চিতা), গুল্ফা, পঞ্চলবণ (সৈন্ধর, সৌবর্চন, বিট্, ঔদ্ভিদ ও সামুদ্রলবণ) পিপুলমূল, বেলগুঠিও যমানী, এই ২৮ পদ ঔষধ প্রত্যেকে সমভাগে চুণ করিয়া ২ তোলা মাত্রায় উষ্ণ জলের সহিত্ত পান অথবা এরও তৈলের সহিত লেহন করিলে অর্শঃ প্রভৃতি মূলের লিখিত বোগ সমূহ উপশমিত হয়।

দশমূল-গুড়ঃ

দশমুল মিদন্তীনাং প্রত্যেকং পলপকক্ম ,
ক্ষান্ত্রোপন সংকাণাং পাদ্দশ্যে সন্ধ্রের ।
শুড়েং পলশ্চকের সিদ্ধে নীতে বিমিশ্রের ।
ক্রিবৃত্যাঃ রক্তপ্রস্থান্তর পির্নীরক্ষঃ ॥
ক্ষাত্রাত্র স্থিত ব্যানিং ক্ষান্তর্বাক্ষার্য ।
ক্ষান্তর্বাক্ষা স্করের গ্রের পর্য ।
ক্ষান্তর্বাক্ষাক্ষান্তর পর্য ।

দশম্ল, চিতা ও দতী প্রত্যেক ৫ পল
লইয়া ৬৯ সের জলে দিদ্ধ করত ১৬ সের
থাকিতে নামাইবে এবং উহাতে ২২॥০ সের
গুড় মিশ্রিত করিয়া যথাবিদি পাক করিবে।
পাকসমাপনানন্তর উহা শাতল হইলে তেউড়ী
চুর্ল ২২ সেন ও পিপুলচুর্গ ১১ সের প্রক্রেপ
দিন্ধা গুতভাতে রাখিবে। মাত্রা—॥০ ভোলা
হইতে ২ ভোলা পর্যান্ত। ইহা সেবনে আর্শঃ
অজীবিও পাঞ্রোগ প্রভৃতি নিবাবিত হয়।

क्रीवाङ्गात्ना **७**५: ।

ত্রিব্ধ তেজোবারী দান্তী খনংখ্রা চিত্রকং শার্ম ।
প্রাক্ষামুক্তরিখাক্র-নিজ্ঞানি ধরী হলী ॥
পালোবিতানি চৈঙানি পলাক্তরারজবরাব ।
বট্পলং বৃদ্ধারজ্ঞ শূরণক্ত ৮ বেড়িশ ॥
ব্যন্তর্গাব্বরে কাখ্যং চতুভাগাবশেষিত্র ।
প্তস্ত তং রসং ভূমং কাখ্যোভান্তিওগো ওড়া ॥
প্রেং প্রেচৰ তু তং তাবদু বাবদ্ধনীখনেপান্য ।
অবতায় ততঃ পশ্চাচ্চুবানীমানি দাপ্রেম ॥
ত্রিব্ধতেজোবারীকন্দ-চিত্রকান্ বিপ্লাম্নিকান্ ।
এলাক্ড্যানিক্সানি গ্লাক্রকাণ্ যট্পলম্ ॥

ষাত্রিংশৎপলমেবাত চুর্বং দক্ত্য নিধাপরে ।
তত্যে মাত্রাং প্রযুঞ্জীত জীর্ন ক্ষীররসাশনঃ ।
পঞ্চ গুলান প্রমেচাংশ্চ পাঞ্রোগং হলীমকম ।
জয়েদশাংসি সর্বাণি তপা সর্বোদরাণি চ ॥
দীপরেদ্ গ্রহণীং মন্দাং যুক্তাবিগত তথৈব চ ॥
অয়ং সর্বাণিকেশব কল্যাণো লেহ উত্তয়ঃ।
ছুর্নামারিরয়ঞ্চান্ড দৃষ্টো বারসহক্রমঃ ।
ভবস্তোনং প্রযুজানাঃ শতবর্গং নিরাময়াঃ।
আর্মো-দৈর্ঘান্তননো বলীপলিতনাশনঃ ॥
রসায়নবরক্রেন মেধাজনন উত্তমঃ।
ভড়ঃ জারাহশালোহয়ং চুর্নামারি, প্রকী্তিতঃ ॥

গজাকাং নাগকেশরচুগ্য । অত্যাসুপাননস্তমপি কোশাসুনা বাতককে পিডালে। কারণিনা জেরম্ । নাচাত্র ভলাতকপ্রশোধ কোবং জলননগ্নিতি শক্ষায়ন্ । বতো ভলাতকপ্রে কোশ-কল্পান নিমেধা নাভলাতক্যোগ্যাতে । ভগাচোক্তম—কোকেশনকল্পানিক বেহনাগ্যা শ্যাতে । কতে ভলাতক্রে ভিলাত ভোগাক ব্যাতি শাক্ষাত্র । বিভাগাক বিভাগানিক বিভাগানিক বিভাগানিক প্রাতি শাক্ষাত্র । বিভাগানিক বিভাগ

তেউড়ীযুল, চই. দন্তীমুল, গোশুর, চিতা-মূল, শঠা, রাধালশশার মূল, মূতা, শুঠা, বিড়ঙ্গ, হবীতকী ইহাদিগের প্রত্যেকের ১ পল, ছেলা ৮ পল, বিদ্ধ কমূল ৬ পল, বনওল ১৬ পল, কাথার্থ জল ১২৮ সের, শেষ ৩২ এসর , উক্ত কাথ চাকিয়া উহার সহিত পুরাতন গুড় ১২০ পল মিলাইয়া পুনর্কার ছাকিয়া পাক করিবে। ঘন হইলে নামাইয়া উহাতে তেউড়ামূল, চই, বনওল ও চিতাম্ব ইহাদিগের প্রত্যেকের চুণ ২ পুল, এলাইচ, গুড়ম্বকু, মরিচ ও নাগকেশর ইহাদিগের প্রত্যেকের ৩ পণ পারমাণে দিয়া উত্তম্রপে করিবে। মাতা--: তোলা। (অমুপান--না তালামিক অশে সহত্বত হল, পিওজ অশে ত্ত্মাদি। বুদ বৈভগণ ইহা শতিশ জন সহ ্সবন কবিতে বলেন।) ঔষণ জীৰ্ণ হইলে হন্ধ বা মাংস্রুসাদি দেবা। বারংবার দেখা शियाद्ध (य, इंश्) दनवान अवत অনঃ প্রশ্মত হইয়া লাক দীর্ঘদীবী হয়, ইহা ্ৰভ বলকার ঔষর।

অগন্তিমোদকঃ।

হরী চকীনাং ত্রিপলং ত্রীণাান্ত্রাণি কটু ত্রিকম্। ছক্পত্রকঞার্ধপলং গুড়ক্তাষ্টপলং মতম্। অগন্তিমোদকানেতান্ কল্পিতান্ পরিভক্ষেৎ। পোফার্শোগ্রহণীদোব-কাসোদাবর্জনাশনম।

হরীতকী ৩ পল, ত্রিকটু ৩ পল, গুড়ছক্ ২ তোলা, তেজপত্র ২ তোলা, গুড় /১ এক সের; এই সকল একত্র করিয়া মোদক প্রস্তুত করিবে। ইহাতে শোধ, অর্শঃ, গ্রহণী, কাস ও উদাবর্ত্ত রোগ প্রশমিত হয়।

ভন্নাতকাদি-মোদকঃ।

ভনাতকং তিলং পথা চূৰ্ণ গুড়দমন্বিতম্।
বোদকং ভক্ষেৎ কৰ্মং মাদাং পিন্তাৰ্শদাং করে।
ভেলার মুটা, তিল, হ্বীতকী, ইহাদের
চূৰ্ণ গুড়দংযুক্ত করিয়া ২ তোলা (বৃদ্ধমতে।
আনা হইতে ১ তোলা পর্য্যস্ত) পরিমাণে এক
মাদ সেবন করিলে পিন্তার্শঃ প্রশমিত হয়।

নাগরাদি-মোদকঃ।

সনাগর ক্ষরবুদ্ধদারকম্

গুড়েন বো মোদকমত্যাদ্যকম।

আশেষত্রন মিকরেংগালারকং
করেংতি বৃদ্ধং সংসেব দারকম্।

চূর্বে চূর্বনমো দেয়ো মোদকে বিগুণো গুড়া।

গুঠি, ভেলার মুটা এবং বিদ্ধান্ত করিল ইহাদিগের প্রত্যেকের চূর্ব সমভাগ, বিগুণ গুড় সহ
মোদক পাক করিবে। ৪ মায়া পরিমাণে শীতল
জল সহ সেবন করিলে বহুকালোভূত আর্শঃ
নিবারিত এবং অগ্নি বৃদ্ধিত হয়। চূর্ণে চূর্ণসমান
গুড় এবং মোদকে তাহার বিগুণ গুড় দিতে হয়।

সল্পরণমোদকঃ।

মরিচমহোষণটিত্রক পূরণভাপা যথোদ্ভরং থিগুণা:। সক্ষসমো গুড়ভাগা সেব্যোহয়ং মোদকা দিল্লকা । অলনং জলয়তি জাঠনমুগ্মলয়তি জম্মপূলগদান্। নিংশেষয়তি শ্লীপদমবভামশাংসি নাশ্যভাগি॥ মরিচ ২ ভাগ, শুঠ ৪ । ভাগ, চিতামূল ৮ ভাগ, বনওল ১৬ ভাগ ও গুড় সকলের সমান লইরা মোদক প্রস্তুত করত ১ ভোলা পরিমাণে শীতল জল সহ সেবন করিলে জঠররোগ, গুলা, শুলা, শ্লীপদ এবং অর্শোরোগ নষ্ট ও অগ্নি প্রদীপ্ত হয়।

র্হচ্ছুরণ-মোদকঃ।

শুরণবোড়শভাগা বহুেরষ্টো মহৌবধক্তাত:। অর্জেন ভাগবৃদ্ধিম রিচক্ত ততোহপি চার্জেন # ত্রিকলা কণা সমূলা তালী লাককর ক্রিমিলা নাম। ভাগা মহৌবধননা দহনাংশা তালমূলী চ ॥ ভাগ: শুরণতলো দাতবো বৃদ্ধদার**ক্ত**াপি। ভূজৈলে মরিচাংশে সর্বাণ্যেকত সংচূর্ণ।। ৰিগুণেন গুডেন যুক্তঃ সেন্যোহয়ং মোদকঃ প্ৰকামধনৈ:। গুরুবুষ্ভোজারহিতে যিতরের পদ্রবং কুর্যাৎ ॥ ভন্মকমনেন জনিতং পূর্ব্তমগন্তান্ত প্রয়োগরাজেম। ভীম**ঞ্চ** মারুতেরপি যেন তৌ মহাশনৌ জাতৌ ॥ অগ্নিবলবু দ্বিহেতুন কৈবলং শূবণো মহাবীঘ্য:। প্রভবতি শক্তকারাগ্রিভিবিনাপার্শসংমেযঃ 🛭 খয়পুল্লীপদগৰভিদ্গ্ৰহণীক কফবাতসম্ভৰ্ম। নাশয়তি বলাপলিতং মেধাং কুরুতে বুষত্ত ॥ किकार योगः कामः मत्राक्षयणा श्राद्धाः । দীহানজাংশ গ্রংহতীতি রদায়নং পুংসাম্।

ওলচ্ব . ৬ ভোলা, চি চামূল ৮ ভোলা, ওলি ক্রিচ্ব ৪ ভোলা, মরিচ ২ ভোলা, বিফলা, ।পপ্লনী, পিপ্লনীমূল, তালীশপত্র, ভেলার মূটী ও বিড়ঙ্গ ইহাদিগের প্রশ্যেকের চুর্ব ৪ ভোলা, ওলাইচ ২ ভোলা, ওই সকল জব্য স্ক্রম চুর্ব করিরা প্রবাহন গুড় ১৮০ ভোলা সহ মিলাইয়া মোদক প্রস্তুত করিবে। শীতল জল সহ ১ ভোলা মাত্রায় সেবনীয়। ইহা সেবন কালে গুরু ও বলকর পথা ব্যবহার করিবে। শক্ত ও ক্রারপ্রায়া এবং অগ্নিক্রিয়া ব্যবহার করিবে। শক্ত ও ক্রারপ্রয়াগ এবং অগ্নিক্রিয়া ব্যতিরেকেও এই ঔষধ স্বারা আর্শ্য বিনষ্ট হয়। ইহা স্বারা শোখ, শীপদ, গ্রহণী, প্রীহা, রাজ্যম্মা, প্রমেহ, কাস ও শ্বাস প্রভৃতি নানারোগ্র

নিবারিত এবং অগ্নিও বল বিশিষ্টরূপ বর্দ্ধিত হয়। ইহা বৃষ্য ও রুসায়ন।

किश्न-(यानकः।

পথ্য পঞ্চ প্লাক্তেকমজাজ্য মন্ত্রিচন্ত চ।
পিন্ধলীপিন্ধলীমূল-চব্য,চিত্রকলাগরাঃ ॥
পলাভিবৃদ্ধাঃ ক্রমশো ববকারপলবয়ন্।
ভলাতকপলান্তরে কন্দল্প বিশুণো মতঃ ॥
বিশুণেন গুড়েনৈবাং বউকানকদন্মিতান্।
কুড়ৈবং ভক্ষমেৎ প্রাতক্তকমজ্ঞাংক বা পিবেৎ ॥
মন্দায়িং দীপয়ত্যের গ্রহণীপাঞ্চমাগমূৎ।
কালায়নেন শিব্যেত্যঃ শপ্রকারাগ্রিভিবিনা ॥
ভিবগ্জিকমিতি প্রোক্তং শ্রেচমর্শেবিকারিশাম ॥

হরীতকী ৪০ তোলা, জীরা ৮ তোলা, মরিচ ৮ তোলা, পিপুল ৮ তোলা, পিপুল দ তোলা, পিপুল দুলা, চিতামূল ৩২ তোলা, গুঠ ৪০ তোলা, যুবজার ১৬ তোলা, গুরুর ৯০ তোলা, যুবজার ১৬ তোলা, গুরুর চুর্ণ ও তাহার দ্বিগুণ পুরাতন গুড় একত্র মিশ্রিত করিয়া ২ তোলা পরিমাণে (ব্যবহার ৬ কিংবা ৮ মাষা) বাটকা করিবে। প্রাত্তকালে ১ বটা দেবন করিয়া উপযুক্ত ঘোল বা শাতল জল পান করিবে। ইহাতে মন্দামি, গ্রহণী ও পা গুরোগ বিনষ্ট হয়। শঙ্কার প্রয়োগ এবং অ্যাক্রিয়া, ব্যতিব্যক্তির ইহাতে অর্শোরোগ বিনষ্ট হয়।

यानिङ्का (यानकः।

বিভৃত্তসারামলকাজ্যানাং
পলং স্তাৎ ত্রিবৃতাতয়ঞ্চ!
শুভৃত্ত বড়্ছালশুভাগযুক্তা
মাসেন ত্রিংশদ্ শুভৃতা বিধেয়াঃ ।
নিবারণে যক্ষবরেণ স্পুটুঃ
স মাণিভক্তঃ কিল ল কাভিক্ষরে।
অয়ং হি কাসক্ষয়কুঠনাশনো
ভগলক্ষীইজলোদরাশ্লাম্ ।
বধেষ্টচেষ্টায়বিহারদেবী
অনেন বৃদ্ধক্তরণা ভবেচে ॥

বিজ্লের শশু ৮ তোলা, আমলকী ৮ তোলা, হরীওকী ৮ তোলা, তেউড়া ৩ পল ও গুড় ৬ পল একত্র মিশ্রিত করিয়া, এই বাদশ পল অর্থাং ৴১॥০ সের ঔষধগুলিকে তিংশৎ অংশে বিভক্ত করত তিংশংটি বটিকা করিবে। (ইহাতে এক একটি বরী ১ কর্ষ মায়া ৬ রতি পরিমিত হইবে।) প্রভাই এক একটি সেবনীয়। ব্যবহার ৮ বা ১০ মায়া। যক্ষবর বিনির্মিত এই ঔষণ সেবন করিলে অর্শঃ, কাস, ক্ষম্ম, কুঠাও ভগন্দর প্রভৃতিরোগ বিনষ্ট হয়। ইহাতে মথেজ্য আহার বিহার করিতে পারা যায়।

প্রাণদা গুড়িকা।

ত্রিপলং শুঙ্গবেরস্থ চতুর্থ: মরিচন্থ চ। शिक्षेता!: कछ गार्क क हवा "5 भनाम त ह ॥ তালীশপত্রস্ত পলং পলার্ক্তং কেশরস্তা চ ৰে পলে পিপ্লনীমলাদৰ্শ্বকৰ্ষণ পত্ৰকাৎ ॥ পুল্মেলাকৰ্ষমেকঞ্চ কৰ্মসুণালয়ে":। গুড়াৎ পলানি ত্রিংশচ্চ তুর্ণমেকত্র করেয়েৎ। অক্ষপ্রমাণা গুড়িক। প্রণাদতি প্রকারিত।। পুৰ্ববং ভক্ষা চ পশ্চাক্ত ভোজন্সা যথাবলম ॥ মক্তাং মাংসরসং যুষং কারং ভোরং পিবেদযু। হস্তাদ*িংসি সর্বাণি সহজান্তভারাপি দ ণাতপিত্রক,ফাথানি সন্নিশতোভগানি চ। পানাভ্যায় মুক্তকুত ব্ভেরে'গে গলগ্রহে। বিষমজ্ঞরে চ মন্দেহয়ৌ পাণ্ডুরেংগে তথৈব চ। ক্রিমিহুদ্রেশিণাকৈব গুরুশুনার্তিনাং তথা : খাসকাসপরীভানামেধা সাদেও গেপনা। ভুঠ্যাঃ স্থানেইভয়া দেয়া বিড্ গ্রহে পিত্তপাযুক্তে। প্রাণদায়াং সিতা দেয়া চুণমানচ্চতুগুণা। অমপিত্তায়িমান্দ্যাদৌ প্রয়োজাং গুন্জাতুরে ॥ व्यक्तभानः अर्थाङ्गवाः वा (स्वे अन्य । পলবয়স্ত নিলজে পিতঃজ তু পলত্রয়ন্। (পজৈুনং গুড়িকাঃ কাষ্যা গুড়েন সিত্যাথবা। পরং হি বহিন্দংসগ্রেথিয়ানং ভদ্র ন্ত তঃ ॥) [চতুর্থমিতি চতুর্ণাং পূরণং পলমেকং, ন তু পলচতুষ্ট্রম ॥] विषक्त है कि वा भार्ट ।

শুঠত পল, মরিচ ১ পল, পিপুল ২ পল, চৈ ১ পল, তালীশপত্র ১ পল, নাগেশর ৪ তোলা, পিপুলমূল ২ পল, তেজপত্র ১ তোলা, ছোট এলাইচ ২ ভোলা, গুড়ছক ১ ভোলা, বেণার মূল ১ তোলা (কেছ এলাইচ ও গুড়ত্বক্ প্রত্যেক ২ তোলা পরিমাণে মিশ্রিত করেন) পুরাতন গুড ৩০ পল : এই সমুনায় একতা মাডিয়া ২ তোলা পরিমিত মোদক প্রস্তুত ভোজনের অব্বেহিত পর্বের গুডিকা সেবন করিবে। অমুপান-মত্য, মাংস-রস, যুষ, চুগ্ধ ও জল প্রভৃতি। কোষ্টবন্ধ থাকিলে ভুগীর পরিবর্ত্তে হরীতকী বাবহার্যা, পিত্তার্শে গুড়ের পরিবর্ত্তে চূর্ণসমষ্টির চতুগুর্ণ চিনি দিয়া মোদক প্রস্তুত করিবে। ইহা সেবন করিলে সহজ অর্শ: ও রক্তাশ: প্রভৃতি সকল প্রকার অর্শ:, গুলা এবং বিষমজ্ঞান, মন্দামি. পাণ্ডু ক্রিমি, হাছোগ, শূল, মৃত্রুফু ও খাসাদি রোগ বিনষ্ট হয়। গুড় অথবা চিনি সহ অমিতে পাক করিয়া এই গুড়িক। প্রস্তুত কবিবে। পর্কোক্ত তথাদি অমুপানের মাতা--- ক্লেমজরোগে ৮ তোলা, বা হজবোলে ১৬ এ বল: , পি বজবোলে ২৪ ভোলা।

नाशार्ष्ट्रान्थरशंगः।

ভিক্তনা প্রকারণ। কুটং কটুকরে।বিশী।
দেবদাক বিড্কানি পিচুমান্দ্রকালি চ।
কা চাহিবলা চৈন ংকিছে ব প্রবর্জনা।
এতং সপ্তসন্থানা করজ রগ্রেন ছে॥
পিছ্যা তু প্রড়িকাং কুমা করজ রগ্রেন ছে॥
তিকেনাং তাং সম্মূল্ত লোগে বোগে পৃথক পৃথক॥
তিকেনাং তাং সম্মূল্ত লোগে বোগে পৃথক পৃথক॥
তিকেনাং তাং সম্মূল্ত লোগে বোগে পৃথক পৃথক॥
তিকেনাং তাং সম্মূল্ত লাগে বিশিবং এটাপ্রেন বিশিবং এটাপ্রেন জন্মেরং খিলাম্মানি বিভি ভারনে জন্মেরং খিলাম্মানি হিলাম্বনা।
মূলকুক্তর তোরেন ক্রেন্সাধনি ভিলাম্বনা।
ক্রকুক্তর কে তোরেন ক্রমানি শিলামান

ইন্দ্ররসমংগুক্তা সর্ক্তর্বিন'লিনী।

মাতুলুকরসেনাথে সন্তঃ শুলহুরী সূত্র।

কপিথতিন্দুকানার রসেন সহ মিজিতা।

বিষাণি হস্তি সর্কাণি পানাশনপ্রচাগতঃ।

গোলকুলসমংযুক্তা হতাৎ কুঠানি সর্কাণ।

তামাকগায়সহিত্র। জাগোদরবিনালিনা ।

ক্তরুক্তন্দাং কন্যতি ভুক্ততোপরি ভক্তি।

শক্তিবোপেশু সর্কোন্ধ্রনার্থার গালুকেং।

লেহমাত্রেল নারীণাং সন্তঃ প্রদরনাশিনী। ব্যবহারে তথা দূতে সংগ্রামে মৃগরাদিরু। সমালভ্য নরোওপোনং ক্ষিপ্রং বিজয়মাগ,য়াৎ॥

व्यागनकी, रतीठकी. वरहछा. (সৈম্বর, ধিট, করকচ, ঔদ্ভিদ ও সৌর্ব্বচল লবণ), কুড়, কটুকী, দেবদারু, বিডুঙ্গ, নিম-ফল, বেড়েলা, গোরক্ষ-চাকুলে, হরিদ্রা, দারু-হরিদ্রা ও হড় হড়ে; এই সকল দ্রব্য সমভাগে একত্র কবিয়া করঞ্জালের রস সহ মাডিয়া কুল আঁটিব স্থায় বটিকা প্রস্তুত কবিবে। ইহা ভিন্ন ভিন্ন রোগে ভিন্ন ভিন্ন অরুপান সহ কবিত্রে হয়। অগ্রিমান্দা উষ্ণজল সহ সেবনে অগ্নি সন্দীপিত হয়। অর্শোরোগে ঘোলসহ, গুলারোগে কাজি সহ, জন্তুর দংশন-জনিত বিষয়োগে জল সহ, চর্মান রোগে থদির কাঠেন কাথ সহ, মৃত্রকুছে জন সহ, হৃদ্রোগে তিলতৈল সহ, সর্বপ্রকার জ্বরে বুষ্টিন জল মহ, শলরোগে ছোলফ লেবুব রস মহ, বিষ্ণোগে কয়েত বেল অথবা গাব্গাছের রস সহ, সক্ষপ্রকাব কুষ্ঠরোগে গোময়রস সহ ও জলোদর রোগে তেউডীর কাথ সহ সেবন করিবে। ভোজনের প্র এই ঔষধ দেবন করিলে অকচি নষ্ট হয়। ইহা মধতে ঘ্যায় নেত্রে অন্তন দিলে নেএরোগ প্রশমিত হয়। এই ঔষধ প্রদেশবোধে দন্তঃ ফল প্রদান করে।

मखा तिखेग्।

ল্ট্রীচিত্রকর্নানাম্ভরোঃ পঞ্মুলয়োঃ।
ভাগাম্ প্রাংশানাপোথা জলছোলে বিপাচরে ।
ত্রিপান ত্রিকলায়ান্চ দলানাং তের দাপরে ।
বাসে চতুর্থনের তু পু এনীতে প্রদাপরে ।
তুলাং শুড়াস্য তব ভিঞেলাসাক্ষর সভজ্জান ।
ভন্মা ক্রা পিবন নিভামানীভোগ বিপ্রম্নাত ।
প্রাণাপ্রবাগন্ধ গাভবর্কে হিছুলোমনম্।
দীপনকাকচিত্রক দন্তারিষ্ট্রমিদং বিহঃ।
পাত্রেরিষ্ট্রাদিসকামা ধাত্রকীলোধ্যালিকতে ॥

দন্তীমূল ৮ তোলা, চিতামূল ৮ তোলা,

রহং পঞ্চমূল ও সন্ত্রপঞ্চল উভয়ের প্রত্যেক

দ্বা ৮ তোলা; এই সকল উসদ কুটিত কবিয়া

১৪ সেব জলে পাক কবিবে। পাককালে

প্রিত হর্নীতকী, বৃহজ্য ও আমলকী প্রত্যেক

৮ তোলা করিয়া উহাতে নিজেপ করিবে।

চর্গভাগ অর্থাং ১৬ সেব অর্বাই পাকিতে

উহা নামাইয়া বস্ব ধাবা ছাকিয়া লইবে।

মতল হলৈ উহাতে ওড় ১২॥০ সেব দিয়া
ঘতভাতে মূল রন্ধ কবিয়া ১৫ দিন রাশ্বে।

এই ঔষধ উপয়ক্ত মাহায় নিত্য সেবন কাব্বে।

অর্ণাং, এইবা, পাড়রোগ প্রভ্যাত নিবারিত

হয়। ইহা বায়ুও মলেব অনুলোমক। বাই
ফল ও লোব লোগত পাতে আর্টাদির সন্ধান
করা কর্তব্য।

কুটজনেতঃ।

কুটজছক্পলশতং জলজোলে বিপাচয়ে ।
অন্তল্পার্শিন্তন্ত্র ক্ষায়নবদাব্যে ।
অন্তল্পার্শিন্তন্ত্র ক্ষায়নবদাব্যে ।
অন্তল্পার্শিন্তন্ত্র ক্ষায়নবদাব্যে ।
অন্তল্পার্শ্ব ক্ষায়নবদাব্যে ।
অন্তল্পার্শ্ব ক্ষায়নবদ্ধার্থ ।
অন্তল্পার্শ্ব ক্ষায়নবদ্ধার ।
অন্তল্পার্শ্ব ক্ষায়নি বিশ্ব ক্ষায়ন ।
অন্তল্পার্শ্ব ক্ষায়নি বিশ্ব ক্ষায়ন ।
অন্তল্পার্শ্ব ক্ষায়ন বিশ্ব ক্ষায়ন ।
আন্তল্পার্শ্ব ক্ষায়ন ক্ষায়ন ক্ষায়ন লাভ্যান্ত্র ।
অন্তল্পার্শ্ব ক্ষায়ন্ত্র ক্ষায়ন লাভ্যান্ত্র ।
অন্তল্পার্শ্ব ক্ষায়ন্ত্র ক্ষায়ন লাভ্যান্ত্র ।
অন্তল্পার্শ্ব ক্ষায়ন্তল্পার ক্ষায়ন লাভ্যান্ত্র ।
ব্যালানীক্ষিনাশায়ে ক্ষেট্রোল লেভ উত্তল্পা ।

কুড় চিছাল ১০০ পল, ৬৪ সের জলে পাক কার্যা শেষ ১৮ সের থাকিতে ছাঁকিয়া লইয়া উহাতে ৩০ পল পুরাতন গুড় ও ৮ পল গুড় নিশাইয়া পুনঃ পাক করিবে। ঘন হইলে ভেলার মুটা, বিড়ন্দ, ত্রিকটু, ত্রিফলা, রসাঞ্জন, চিতামূল, ইক্সবে, বচ, মাতইচ ও বেলভুঁঠ, ইহাদিগের ওত্তাকের

চ্বি সল পৰিমাণে প্ৰক্ষেপ দিয়া পাক শেষ করিবে এবং নামাইয়া নীতল হইলে ৮ পল মধু মিলিং কবিবে। মাত্রা- অর্ধ তোলা হইতে ২ লোলা। অন্তপান— মধু ঘোল, ছাগত্যা কিংবা নীতল জল। ইহা দেবনে সর্বা প্রকাব বজার্ধাং, রন্তাপিত, অভীসার, পাঙ্গ, অক্টি, কাম ও বামলা। প্রভৃতি বোগ নিবাবিত হয়।

মাণশূরণালং লেভিম্।

মাণশুনণভারতে তিবুদ্র্তাসম্বিত্য :
ত্রিকত্রণসংগ্রহম্যা হুনাংমনশ্রন্থ
মাণ, ওল, ভেলাব মুটা, তেউড়া, দ্বাতা ত্রিকটা, ত্রিফলা ও ত্রিনদ অর্থাং চিতা, মুতা ও বিভান ইহাদিগের প্রত্যেকের চুর্ণ সমভাগ, সর্ব্ব-চুর্ণ-সমান লোহভবা, (মাত্রা—১ মাধা)।

অগ্নিয়ুখণ লোহম্।

ইহা মেবন করিলে অর্শোরোগ প্রশমিত হয়।

''ব্রুচিক'রক্মিক'ড্র'-জ হামু'ড্রিক'জ্টা, । প্রতে। বশোহইণালিক। মনক্রেমে বিপাচরেখ । প্ৰাৰ্থং বিষ্ফাল বোষি ং কৰ্ম এইং পুথক। বিষ্ণাল্য প্ৰাৰ্থ প্ৰাণ্ড শিলাৰ স্থালং ছাল্মং । फ़िला, गरिक भगा वि लेकक म्ह भग तो । প্রস্থাদশকং দেয়া, ক্ল্যুক্তাইন্যা চূর্লি লয় ॥ প্রৈশ্চ ভুলিংশ ভাঙি । অধুশকরয়োরণি। ঘনাভূতে সুশীতে চ দাপয়েদবতারিছে॥ এতদ্গিমুগং নাম ছুর্নামান্তকরং পরেম্। মুদ্দ্দ্বিং করেতা জ কালাগ্রিদ্দ্র ভেল্ম্ পৰ্বতা অপি জীয়ন্তি প্ৰাশনাদ্যা দেহিনাম। গুরুরুয়াতুপানানি পরো মাংসরসো হিডা । इन मिला भ्यायू-त् हे हो हि । एका लह्य । অকালপ্লিতং হলা'দ'মবাতং গুদাময়ম্ 🛭 न म त्रार्श्वराष्ट्रियकाणि न निरुष्टि कर्णानम्। कद्र"द्रका अकामानि ककातामीन दर्ऋष्य ॥

্তত্ত্া, চেতা, নিসিকা, সিজ, মুপ্তিবিফল ও ভূঁই আমলা প্রত্যেক ৮ পল, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সেব। স্বত ২৪ পল উষ্ণ করিয়া উহাতে স্বর্ণমান্ধিক বা মনাশিলা স্বারা

শোধিত কিংবা বৈচিমু লর রস ধারা শোধিত উ कुं लोइ ज्य ३२ भन निरम्भ कविद्य। তংপরে উহাতে উক্ত পরিক্ষত কাথ এয়ং চিনি ১২ পল দিবে, ঘন হইলে উহাতে বিভুঙ্গ ৩ পল ও ত্রিকট্-চূর্ণ প্রত্যেক ৬ তোলা, किकन-इर्व ६ भन छ निनाक > भन पिट्र । শীতল হইলে তৎপর্দিন উহাতে মধু ১২ প্ল মিশ্রিত করিবে। মাত্রা—> মাধা হইতে ৪ মাধা। ইহা শ্রেষ্ঠ অগ্নিকারক ঔষণ। সেবন করিলে সর্ব প্রকার অর্শঃ, শোথ ও প্ৰ'হাদি প্ৰশ্মিত হয়। তথ্য ও নাংসাদি वनकत धवः खद्म स्वा-वावशत कतिरव। করীর (বাশের কোড়) ও কাঞ্জিক প্রভৃতি ककाता म जवा वावशात कतिरव ना। (এই ঔষধ রসায়নোক্ত অমৃতদার লৌহের নিয়মে সেবন করিতে হয়।)

চন্দ্রপ্রভ: গুড়িকা। ক্রিমিরিপুদহনব্যোব-ত্রিফলাস্থরদার্ম্বচবাভূনিব্য। মাগধীমূলং মুন্তং সশ্চীবচং মাক্ষিককৈব। লবণকারনিশাযুগ-বু স্তম্মুরগঞ্জকণাতিবিবাঃ 🛭 क्वाः नकात्त्रय मधानि द्वार भवाष्ट्रककाणाबाउ निष्णार । নিপ্পএন্ডদ্ধসা পুরসা ধীমান পদ্ৰয়ং কৌহরজন্তবৈব ॥ সি াচতুক্বং পলমতা বাংস্থা निक छ ५ छ। जिल्ल भी स्वयुक्त म । हिन प्राट महिना कार कार অর্শ থাস নির্ণাশয়তে বড়েব । ভগলরং পাতুককামলাঞ্ निन हेराहः क्क्ट ह मोश्रिम्। इस्राभग्रान् शिखककानिलाबान् ৰাজীগতে মশ্বগতে ত্ৰণে চ। এছাকুদে বিদ্বধির জবলা-মেছে ভগাৰো প্ৰবলে চ বেজা। काकरत ठाणा विमुखकरात

গুকুপ্রবাহেহপু।দর:মরে চ

পলোহথবা শীতকলামুপানং বলেন নাগস্তরখো কবেন ঃ

भारको द्रामा क'क्काको द्रामा या।

তক্রামুপানস্থ মস্তপান-

দৃষ্টা হপর্ণ: শ্রবণে বরাহঃ
কান্তা রতীশো ধিবণক বৃদ্ধা।
ন পানভোজ্যে পরিহার্যমন্তি
ন শীতবাতাতপমপুনের ॥
শক্তং সমভার্চা কুতপ্রসাদেনাপ্তা গুড়ী চক্রমস: প্রসাদাৎ ॥
গুকুলোবান নিহস্তার্গ্রী প্রমেহানপি বিংশতিম ।
নলীপলিতনিপুর্জো রক্ষোহপি তর্মণারতে ॥
(বৃদ্ধবৈত্যেপদেশেম পলার্দ্ধং রমগন্ধকম্ ।
কেবলং মুর্চিছতং বাপি পলং বা দাপরেপ্রসম্ ॥
গুকুলক ক্ষিপেৎ কল্ডিৎ পলমানং ভিষধর:।
সংমর্দ্ধ্য মধুসর্পির্ভামশদে) রক্তিচভুষ্টমম্ ॥
গুকুলং বৃদ্ধা হথাযুক্তি যাবন্ধাবচভুষ্টমম্ ।
ক্রিদ্ধানীতি লাভানাং কর্মমানং প্রথক প্রথক ॥ ।
ক্রিদ্ধানীতি লাভানাং কর্মমানং প্রথক প্রথক ॥ ।

विकन, हि शंबन, जिकहे, जिक्ना, त्नव-দারু, চৈ, চিরতা, পিপ্লমূল, মুভা, শটী, বচ, वर्गमाकिक, रेमस्त नवन, महन नवन, यवकात, সাচিকার, হরিন্তা, দারুহরিন্তা, ধনে, গজপিপ্ললী ও আত্ইচ প্রত্যেক ২ তোলা, শিলাজতু ৮ भग, विश्व खश् खनू २ भग, त्नोह २ भग. চিনি ৪ পল, বংশলোচন ১ পল, দ্ব্তীমূল ১ পল, তেউড়ী ১ পল, শুড়বক্, তেজপত্র ও এলাইচ মিলিত ১ পল। গুগ্ গুলু এবং শিলাজতু শোধন করিয়া লইয়া পরে চুর্ণ সকল মিশ্রিত করিয়া বটিকা প্রস্তুত করিবে। অকুপান—তক্তে, দ্ধির মাত, ছাগমাংস-রস, नीर्न खन। ভাল্ল-মাংসরস, ঘুত, ঔষধ সেবন করিলে অর্শঃ মেছ ও ভগন্দর প্রভৃতি নানারোগ নষ্ট হইয়া বলবীগ্যাদি রুদ্ধি इहेग्रा थात्क । (तुक् देवज्ञशलंत डिशामनासूनादा এই ঔষধে ৪ তোলা পারদ ও ৪ ভোলা গন্ধক व्यथेदा (कदन तमिन्द्र > भन বাবস্বেয়। কেহ কেহ ১ প্ৰ অন্তও মিশ্ৰিত করিয়া থাকেন। প্রথমে ৪ রতি ছইতে আরও করিয়া ৪ মাবা পর্যান্ত মধু ও স্বত সহ সেবনীয়। ঔষধ সেৱনাত্তে তেউড়ী, মন্তীমূল, শুড়ম্বক, ভেন্সপতা ও এলাইচ, ইহানের চূর্ণ কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ ভক্ষণীয়)।

রস-প্রোগঃ।

রসগুড়িকা।

রমস্ত পাদিকস্তনা। বিড়কমনিচ'ভক**ং:**। গঙ্গাপালক্ষনন্দে থলয়িয়া পুন পুনঃ। রক্তিনাত্রা গুলাপোন্ধা বঙ্গেরহার্থনীপুনী॥

রস্থিত্ব ১ ভাগ, বিচ্ছ, মরিচ এবং মন প্রত্যেক ২ ভাগ, গঙ্গা পালঙ্গের (গাঙ্গুরাই) রগে মদ্দন করিছা ১ রতি পরিমাণে সেবন করিবে। ইহা ঘান গুড়ার্ল: নিবারিত হয় এবং ছারি বার্গ্নি হইয়া থাকে।

তাক্ষমুখে। রধঃ।

মৃত্যুত কেব্যাক্ত - তীক্তার মুখ্যক পশ্বন্।
মঞ্চাক সন্থ তাপাথে মনি। ক্রান্ত কেবিন্দ্॥
অন্ধান্য সত্ত সকৰে তিতা পাচাৰ দুটা এন।
চুলিত থানি বাম মান্য আনে হাজানিনাথে হিত্যা।
ব্যাক্ত ক্রেপা নাম চাসাধান্য সংগ্রেথ ॥

রস্যুদ্ধ্র, হার, স্বর্গ, সভ্র ভাস্থাপীত,
মুগুলোহ, গল্পক, মাগু ও স্বর্গ্যাক্ষক; এই
সকল দ্বা সমভাগে এইর স্থাকুমারী চরকে
এক্দিন মধন করেবে। তংপকে ঐ সমস্ত
লগ্রেক অন্যুদ্ধা মন্যে প্রাপন করেবা প্রবেশ অল্পতে আন্যুদ্ধা মন্যে প্রাপন করেবা প্রবেশ চনের সাহত একমাস কাল্পে অসাধ্য অল্প এই উস্থ সেবন করেশে অসাধ্য অল্প প্রশাসত হয়।

অশ্ঃকুঠারো রসঃ।

ওদ্ধত্ত বিধাসমার চুতাবিক ভাষ্ট্রকম্। প্রোকর দিশনর মন্ত্র জ্ঞাবনর শূরণ তথা। শুভা টক্রনফার-সেন্তর পালপন্তকম্। প্রাষ্ট্রকর মুক্তাকরির দ্বানির্গজ্ঞ গরার বলৈ।। কা নিজ্ঞিক প্রেরিরির ক্ষান্দ্রাম্বক্ষ করা। রস্কান্দ্রিরাবিদ্যান্দ্রাগক্ষার্থ

শোধিত প্ৰিদ্ধ তোলা; শোধিত গন্ধক নৌং, ভাষ্ক, দস্তা, একটু ও লো ২ তোক ১৬ ভোলা; বংশলোচন, সোহাগা, ঘবক্ষান ও
সক্ষব ৪০ ভোলা; ম্নদাসিজের আঠা /১
সের; এই সকল দ্রবা একতা করিয়া/৪
সের গোম্অ সহ অগ্নিভে পাক করিবে।
ইহা ২ মাথা পরিমাণে সেবন করিলে জার্মাঃ
বিনষ্ট হয়।

চক্রাখ্যে রসঃ।

স্তপ্তাহ্বকৈ থিং তামং কাংজ্ঞং সমং সম্ম। সবস্তুলেন গংখন (গনং ভল্লাত্বৈন্দ্ৰবৈশ্ব । মন্দ্ৰংগ্ৰহত, পশ্চন্থে বটাং কুষ্যান্দ্ৰিগুল্লিকাম্। ভক্ষান্ত্ৰসান্ত্ৰি মুখ্যান্সবজানসি ॥

র্থাসন্ধ, অল, দগ্ধবিক, তাম, কাংখ্য, প্রত্যেক দ্যা সম্ভাগ, সকল দ্বোর স্মান গল্প। তেলার রুদে একদিন মন্দন করের পশ্চাথ তুট দুচ পরি,মত বটকা প্রস্থাত কারেব। এই উর্বা সেবলে স্বর্দার একা উবরে ১ ভাগ বেনই হয়। (লাকাকা এই উবরে ১ ভাগ বেল গ্রংশ ক্রিছেন)।

ठक९कु ठारत। तमः ।

রমণান্ধকেরিংনাং প্রত্যেকং ভাগত্ম্বর্ম।
ক্রিকটু দান্তবুংওকং ধর্তাবং লাগলপ্ত চ ।
ক্রেট্রন্ধকের বাংতাকং ভাবণাক্ষ্য।
লাধ্যপ্ত চ মানিংশং রুছ কারং তবিছ চ ।
বাবাচ পিতি তং সাবং ভাবন্দ্রিনা পচেও।
নাম্ম্যং ততঃ লাদেদ্বাবাস্থানি বক্তাংধে।
রস্ভক্তর্ত্রাহ্র্য্যাস্থার ক্রেল্ড্রা

গ্রিদ, গল্পক, গৌহ, প্রত্যেক ২ ভাগ,
ত্রেক্ট্র, দন্ডা, কুড় প্রত্যেক ১ ভাগ, ঈশ্গ্রেক্ট্র, দন্ডা, কুড় প্রত্যেক ১ ভাগ, ঈশ্গ্রেক্ট্রেক ৫ ভাগ, যবক্ষার ক্রেল্ড্র, সোধার্ম প্রত্যেক ৫ ভাগ গোমুর ও সেল্ডের আঠি ৩২ ভাগ; এই সমস্ত দ্রুল একএ কার্যা পুত্র গ্রেক্ট্রেক গাল ১ বেল কারে এবং নিল্লিড্রা ভ্রেক্ট্রের স্বামিক শ্রেক্ট্রের স্বামিক ভ্রেক্ট্রের স্থানিক প্রত্যানিক স্থানিক স্থানিক

শিলাগন্ধকবটকঃ।

শিলাগন্ধকরোক্, পং পৃথপ ভূকরসায় তন্। সপাতং ভাবরেৎ সপিম ধূভ্যাক বিমর্করেৎ। অর্শসকানুলোস্যার্থং হতাগ্রিবলবর্দ্ধনম্। রক্তিকাদ্বিতরং থাদেৎ কুঞ্চাদিরহিতো নরঃ।

মন-শিলা ও গন্ধকের চুর্ণ পৃথক্ করিয়া ভীমরাজের রদে এক সপ্তাহ ভাবনা দিবে। পরে মৃত্তও মধুসহ মর্দন করিয়া ২ রভি পরিমিত বটা প্রস্তুত করিবে। এই ঔমধে অগ্নিমান্দ্য ও অর্শঃ প্রভৃতি রোগ বিনষ্ট হয়।

জাতীফলাদি-বটী।

জাতীকলং লবঙ্গঞ্চ শিপ্তলী দৈনবং তথা। শুঠী ধুন্ত,রবীজঞ্চ দরদং টঙ্গণং তথা। সমং সর্বং বিচূর্ণাপ জন্তান্তনা বিমর্দিয়েও। জাতীকলবটকেরমর্শোহয়িমান্দ্যনাশিনী॥

জার্ফল, লবঙ্গ, পিপুল, দৈরুব, ওঁঠ,
ধুত্রাবীজ, হিন্তুল, দোহাগা; এই সকল
দ্রব্য সমভাগে চূর্ণ করিয়া গোড়ালেবুর রদে
মর্দন করত বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহাতে
অশং ও অগ্নিমান্য বিন্ত হয়।

পঞ্চানন-বটী।

মৃতপ্তাব্ৰনৌগনি মৃত্যানগন্ধকৈ সহ।
সৰ্বাণি সমভাগানি ভল্লাং সংগ্ৰুল্যকন্ ॥
বন্ধশূৰণকন্দোগৈন্দ্ৰবৈং পলপ্ৰনাণভং ।
মৰ্দ্ধৰেন্দিনমেকঞ্চ মাধ্যমতিং পিবেদ্মুতিং ॥
ভক্ষণাদ্ হস্তি সৰ্বাণি চাৰ্শাংসি চান সংখ্যাঃ ।
অসাধ্যেদ্দি কৰ্ত্তবা চিকিৎসা শক্ষরোদিতা ।
কুঠরোগং নিজ্ঞাণ্ড মৃত্যুরোগবিনাশিনী ॥

রদদিদ্র, অল, লোহ, জারিত তাম এবং গদ্ধক প্রত্যেক ১ তোলা, ভেলা ৫ তোলা; এই সকল দ্রব্য ৮ তোলা পরিমিত বক্ত ওলের রসে একদিন মর্দ্ধন করিয়া ১ মাষা পরিমাণ বটা প্রস্তুত করিবে। অনুপান—ম্বত। মহাদেব বলিয়াছেন—এই ঔষধ সেবন করিলে সর্বপ্রকার অর্শঃ ও কুষ্ঠ প্রভৃতি রোগ উপ-শ্মিত হয়।

নিত্যোদ্রিতরসঃ।

মৃতত্ত।কঁনোহাজ-বিষং গদং সমং সমম্।
সক্তিলাংশভলাত-কলমেকত চূর্ণয়েং ॥
দ্রেই শ্বণকন্দোখৈভাবাং গলে দিনত্যুম্।
মাষমাত্রং লিহেলাজৈ রমশ্চাশাংসি নাশ্যেং।
বসো নিজোদিতো নাম গুলোজকুলাজক: ॥

শোষত বদ, তাম, লোহ, অল্, বিব ও গন্ধক, ইহাদিগো প্রত্যেকের সমভাগ, দর্ম-দমান ভেলা, একত্র উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া ওল এবং মাণের রূদে ০ দিবন ভাবনা দিবে। মাত্রা—> মাধা। (কেহ বলেন, মাধকলাই প্রমাণ)। অনুপান—স্বত। ইহা দেবন করিলে দর্মপ্রকার অণোবোগ নিণারিত হয়।

অফ্টাঙ্গো রসঃ।

গন্ধং রসেন্তং মৃতলৌহকিটং ফলত্রয়ং ক্রাফাবকি ভূকম্ কুতা দনং শাক্ষলিকাগুড়্কী-রদেন যাম্বিতয়ং বিমর্জা। নিমপ্রমাণং গদিতাকুপানেং সন্ধানি চার্শাংদি হরেদ্রমত।

গন্ধক, পারদ, মঙ্ব, ত্রিফলা, ত্রিকটু, চিতাও ভীমনাজ এই সমস্ত জব্য শিমুল ও প্রলঞ্জের নমে তিন প্রহেব মর্জন করিলা ৪ মারা প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। শাস্ত্রনিশিষ্ট অনুপানের সহিত্যেবন করিলা দর্জপ্রকার অংশারোগ বিন্দু হয়।

কাদীদাছতিলম্।

কাসীসং দঞ্চিসিন্ধ-করবীরানলৈঃ পচেৎ। তৈলমর্কপরোগিশ্রমভাঙ্গাৎ পায়ুকীলজিৎ॥

মূর্চ্ছিত ভিলতিল /১ সের। কল্পার্থ— হিরাকদ, দস্তীমূল, সৈদ্ধবলবণ, করবীমূল ও চিতা মিলিত এক পোয়া। যথাবিধি পাক করিয়া এই ভেলে কিঞ্চিৎ আকল্পের আঠা মিশ্রিত করত অর্শের মাংদাম্কুরে মাধাইলে অর্শাং দুরীভূত হয়।

রুৎকাসীসান্ততৈলম্।

কাসীসং সৈন্ধনং কৃষণ শুসী কুঠক লাঙ্গলী।
শিলাভিনখনারশ্চ দন্তী জন্তমন্তিত্রকম্।
তালকং কুনটা স্থৰ্গনীরী চৈত্রে পচেভিষক্।
তৈলং মু, সর্কপরসা গবাং মুন্ত্রং চতুগু পম্।
এতদভাঙ্গতোহশাংসি ক্ষারেণের পতন্তি হি :
কারকর্মকরং তেত্রে চ সন্দ্রয়েছলিম্।

তিলতৈল /৪ দের। করার্থ—হিরাকস, সন্ধব, পিপুল, ওঠ, কুড়, ঈশ্লাঞ্চলা, পাষাণভেদী, করবীর, দন্তী, বিড়ম্ম, চিতা, হরিতাল, মন:শিলা, স্বর্গনীরী, মনদাসিজেব আঠা ও আকলে আঠা মিলিত /১ দের। গোমূত্র ১৬ দের। এই তৈল যথাবিদানে পাক করিয়া মর্দন করিলে বলিসমূহ নিপতিত হয়। ইহা কারের কার্য্য করে অথাৎ ফারপ্রোগে বেরূপ বলি পড়িয়া যায়, তত্ত্বপ এই তৈল মন্দনেও বলি খিন্যা গিয়া থাকে। ইহা বলিকে দ্বিত করে না।

উদাৰ্ভধরতো যে যে চাত্র্যথি বিক্লিডাং। বিলোশবাতাঃ শ্লাভাজেধিষ্ঠমন্বাসন্ম্॥

অংশারোগী উদাবক্তাক্ত, অত্যস্ত বিক্ষিত, বিলোমবাত ও শুলার্ক হইলে তাহার পক্ষে নিমলিথিত পিপ্ল্যাদি তৈলের অনুবাসন হিতকর।

পিপ্লল্যাদ্যং তৈলম।

পিশ্বলী মধুকং বিলং শতান্দাং মদনং বচাম।
বু ৪ং শতীপুদ্ধাপাং চিত্রকং দেবদার চ ॥
পিষ্ট্রী তৈলং বিপক্তবাং দ্বিগুণাদীরসংযুত্য।
আর্শবাং মুচবাতানাং তচ্ছে ঠমনুবাসনন্ ॥
গুলনিংসরণং শুলং মুত্রকুছেং প্রবাহিকাম।
কট্যুসপুঠদৌর্শলামানাংং বজ্জাব রুজম্ ॥
পিচ্ছাধানং গুদে শোঝং বাতনচ্চোবিনিগ্রহম।
উপানং বছাশো বচ্চ চেট্রেনাক্স সন্ত ॥

তিলতিল ও দেব, জ্প্ন ৮ দেব, জ্ল ১৬ দেব। কলার্থ—পিপুল, দ্বীমধু, বেল-শুঠ, শুল্ফা, মহনা, বচ, কুড়, শুঠা, পুদ্ধরমূল, চিতা ও দেবদার। এই তৈলের অনুবাসনে গুনভংশ, শূল, মৃত্রক্কু, প্রবাহিকা, গুহু-শোথ ও মল-বাত-বিবদ্ধতা প্রভৃতি উপদ্রব নিবাধিত হয়।

উদকষট্পলকং ঘৃতম।

দক।বৈ::পঞ্কোলৈক পলিকৈস্ত্রিগুণোদকৈ:। দমং কীরং মৃতপ্রপ্রং জ্বরাশ্:গ্রীহকাদকুৎ ॥

গবাসত সি সের, চগ্ধ সি সের। কন্ধার্থ— যবকার, পিপুল, পিপুল্মূল, চৈ, চিতা ও শুঠ প্রত্যেক ৮ তোলা। জল ১২ সের। যথা-বিধি পাক করিয়া এই স্বত্ত ব্যবহার করিলে অর্শঃ, জন, শ্লীহা ও কাদ নিবারিত হয়।

বোধাদাং য়তম্।

কোৰিস্ভং পলাশস্ত ত্রিগুণে জন্মবারিণি। সাধিতং পিৰতকুম'পণ প্রভাগীংসাসংশয়ন্॥

গবায়ত '৪ নেল, পলাশনুক্ষের ছাল অন্ত-পূমি ক্ষার করিয়া যথাবিধি প্রস্তান্ত ক্ষাবজ্ঞল ১১২ সের। কন্ধার্থ—শুঠ, পিপুল ও মরিচ মিলিত ১১ সের। এই স্বত যথানিয়নে পাক করিয়া উপস্কু পরিমাণে সেবন করিলে অর্শের বলি সকল নিশ্চয়ই পতিত হয়।

চব্যাদিয়ত্য ।

চবাং ত্রিকট্কং পাঠাং কানং কুন্তস্কলি চ।
ব্যানীং পিলনীনূলমূতে চ বিড়াসকলে ॥
চিত্রকং বিব্যাভয়াং পিটা স্পিবিপাদেং ।
শকুষাভানুলোমার্থিং জাতে দল্লি চতুগুলি ॥
প্রবাহিকাং গুদত্রংশং মূত্রকুচ্ছেং পরিপ্রবম্।
গুদংক্ষণশূনক যুত্রমভ্যাপোইতি ॥

ন্বত ৪ সের, দধি ১৬ সেন, বার্যাধানার্থ জল ১৬ সের। কলজব্য ঘথা— চৈ, ত্রিকটু, আক্নাদি, ববজার, ধনে, ননানী, পিপুলমুল, বিট্যুবন, সৈন্ধবলবন, চিতা, বেলছাল ও হ্রীতকী মিলিত ১১ সের। যথানিয়মে পাক

্মাপন কৰিয়া এই স্বত্ত পান কবিলে মণ ও াষ্ব্ৰ অন্মূলোম হয় এং গুদুলংশাদি রোগ বকল নিবারিত হইরা থাকে।

কু । জাদ্যয়তম্।

কুটজন্ধলবন্ধকেশর-নীলোৎপললোপ্রধাতক বকৈ। সিদ্ধং ত্বং বিধেয়ং শূলরক্তংশস ২ ভবং ।।

• স্থাত /৪ সের। কক্ষার্থ—ইক্সবর, কুড়্চিছাল, নাগকেশর, নালোংপদ, লোগ ও হলুল, মিলিত /১ সেন। জন ১৬ সের। মথাবিধানে পাক করিলা এই স্থাত সেবন কালে দশুল রক্তাশ প্রশাসত হল।

হ নিষধক-চাঙ্গেরীয়তন্।

चारकशुष्पी तला माको शुक्षित्रभी अकर्षकः। অগোধেত বরাখন - এর ৭৮ বিপরে বিভিন্ন কৰণ্য এখাং পেষাপ্ত গৌনস্তী কঢ়তোহিলা। िश्री विश्वनीभूतः मंत्रिष्ठः यश्राः वर ६॥ कालकाः भाषालः भूत्राः वाता छन्मनम् अनम् । কটফলং চিত্রকো মুন্তং প্রিয়ন্ত তিবিধান্তিরা: ॥ পল্লোৎপলানাং কিছক, সমগ্র সনিদিধিকা। বিহুং মোচৰসঃ পাঠা ভাগা; কর্ষ্মণা পুথা চতুঃ গ্রন্থত প্রস্থার ক্ষাইমন শর্মের । व्हिर्भ ९ भवानि लाख १४ विष्ठास हिनवासिकः । স্থানিষ্পাক্তাক্ষেত্রনাঃ প্রত্যে হা বর্গ হা চ। সবৈরে ে । খাদিষ্টেয় তপ্রস্থা বিপাচরে ।। এতদর্শ, স্ব - সংক্রে রক্তর বে (এ.ছ) হরে। প্রবাহণে শুদলংশে পিচছ'ম বিনিধার চ।। উথানে চ'তি হণঃ শেখপুরে গুদারায়। মুত্রতে মুচ্বাতে মনে:২গ্নাবরচাবপি ॥ প্রায়'জ্যং বিধিবৎ সর্পির্বানর্ণ গ্রির রানন্। निनिध्धवस्थार्यस्य एकतल्यः ना भित्रसङ्ग ॥

অপামার্গ, বড়েলা, দালহবিদ্রা, চাকুলে, গোকুল, বট, যজ্ঞুমুণ ও অধ্যানের শুদা প্রত্যেক ছই ছই পল, পাকার্থ জল ১৬ সেব, শেষ ৪৪ সের। কম্দ্রব্য —জীব্জী, কট্কী, পিপুল, পিপুল্মুল, না চ. । বাং, ইন্দ্রবব, শিমুলফুল, কারকাকোলী বজ্ঞচন্দ্র, রমাঞ্জন, কট্ফল, চ৬ মৃত প্রয়েকু, আতইচ,

শালপাণি প্রাক্ষণর, উংপল্কেন্স বহাইকান্তা কণ্টকারী, বেলগুঠি, মোচরস ও
মাক্নানি প্রত্যক গুট গুট ভোলা। স্কৃত্যি
শাকের স্বংস সেন্ধ ও আন্তর্গর সম সং
সের। এই সকলে শাঠার সিং প্রত্যাধি বি
পান কানে অলা, শ্রেশাফল জানীসান রঞ্জাবি প্রত্যাধি বি
পান কানে অলা, শ্রেশাফল জানীসান রঞ্জাবি, শ্রেশ্যে প্রত্যাধি বি
জাল কান্ধ্যা, প্রশাহল জানীসান রঞ্জাবি, শ্রেশ্যে স্বাল্যাব,
আলা কাল প্রপ্রান্ধ্য মল্মিন্দরণ, প্র্যেশ্যর
শাক্ত শুল, মূল, বাত্বিক্ষা, আলা
মান্দ্র অক্রি বন্ধ হয়। ইছ বল বর্ণ ও
আল্লেক্সনা বিব্রু অল্লানের স্কিত অথবা
কেবল মাল এই নির্মাণ ছ্ড ওলান্ডা।

অথ পথ্যাপথাবিধিঃ।

অপেরিরেরে প্রানি।

বিরেচনং কোনন্দ্রনাক কালিছিন স্থাচ) এই জাক এ ।
পুরাতন, বো হত শালেক লগালিছিল বার্টি পালে, বুলালা ।
পটে কাল্টেবলৈ হৈ লালাই লালা

বিত্তেন, প্রথপ, হন্তান্থিপ, ক্ষাণ ও ভাগ্নিপ্রাণ্য, শাল্ডির, গ্রাহ্র বিভাগন ধান্ত ও প্রিক বান্তা, বল, কুল্য বিভাগ, পটোল, শালিকথাক, বদোন, চিতা, পুন্নবা, হল, বেভোগাক, ভারতীশাক, লোক, মান্ত ছোট এম চ. কোলাক, নালীত, তান কলোল, আমলনী, কড়ক লাক, কলেইবান উদ্ভৌৱ মুন্তু স্তুত্ত হল ভোল, স্থিপ্তিল, গামুত্র, সৌবীৰ, ভূম্বিক এবং বাল্নাশক, ও ভাগ্নিকারক সমস্ত অল্পান ভাগোবিনিগ ছিত্তকর।

অর্শেরোগেইপথ্যানি।

আনুসমামিকং মংকং পিশ্যাকং দ্বি পিষ্টকম।
মাখনে করারং নিষ্পাবং বিল্ল: তৃথীমূপে'দিকাম্।
পদামা শালুকং সর্বাং বিষ্টুলী ন গুরুণি চ।
আইপং কলপানানি ব্যনং বিশ্বকার্য চ।
বিশ্বদানি চ সর্কাণি মান্তবং পূর্বকিগ্ ভবন্।
বেগরোধং প্রিরং পৃষ্ঠযানমূহকটকাসনম্।
যথাবং দেশলকান্তমান্ত বিক্রান্তিনাম্।
বহুণপোরাগিণাং ভন্তদানি বিভালিনেষ্টা।
অনুপদেশ্লাত-প্রাদিব মাংস, মংক্ত

তিল্বাটা, দ্বি, পিইক, মাধকলাই,

কোঁড়, দীম, বেল, লাউ, পুইশাক, পাক।
আম, শালুক, বিচ্ন্তী (যে সকলদ্রর আহার
করিলে পেট জড়ভাব হয়)ও গুরুপাক দ্রব্য,
ৌদুতাপ, জলপান, বমন, বস্তিকর্ম্ম (পিচ্
কাবী), সংযোগবিরুদ্ধ দ্রব্য, পূর্বাদিকের বায়ু,
মলমুত্রাদির বেগধারণ, স্ত্রীসঙ্গ, অখাদি জন্তুঃ
পুঠে আরোহণ, উৎকটভাবে উপবেশন এবং
আশোর্ছিকারক দোষসূক্ত আলাদি অহিতকারক। রক্তাশোরোগে রক্তপিত্তের পথ্যাপথ্য
বাশের

ইত্যায়ুর্বেদ-সংগ্রহেখ্যোগ্রোগাধিকারঃ।

অধাগ্নিমান্দ্যানিরোগাধিকারঃ।

ज्या श्यान्त्र। नि निन'न्य ।

মুক্ত ক্ষতের বিষয়, সংশ্রুতি চতুলিবং।
কর্মপত্ত নিলাবিকাবে তৎসালাকে হৈরোহনতঃ ॥
বিষয়ে বাত্ত নি রোধান্ত ক্রিল পিত্ত নিজ্জান্।
করোতান্তিত নাকো বিকারান্কক্সস্তান্।
সমা সমাগেরশিতা মাকো সমাগ্রিপচাতে।
স্করাপি নৈব মন্দর্গেরিসমাগ্রেস্ত দেহিনঃ।
কদাচিৎ পচাতে সমাক কদাচিচ্চ ন পচাতে॥
মাকাতিমাকাপাশিতা হুপং যন্ত বিপচাতে।
ত ক্রামিবিতি তং বিস্তাৎ সমাগ্রিঃ শ্রেষ্ঠ উচাতে॥

দোশের তারতমারুসারে জঠগার চারি-প্রকার হইয়া থাকে, অর্থাং কফের আধিক্যে মন্দারি, পিত্তের আবিক্যে তীক্ষার ও বারুর আদিক্যে বিষমারি এবং বারু পিত্ত ও কফ এই দোক্তরের সাম্যাবস্থার সমারি হয়।

ঙঠ | বিষয় হহলে বাতজনিত, তীক্ষ ইইলে পিত্তজনিত ও মন্দ হইলে কফজনিত রোগ সকল আনম্বন করে। যে অগ্নিম্বারা পরিমিত আহার সমাক্রপে পরিপাক হয়, তাহাকে সমাগ্র ; যাহা মারা অত্যন্ত আহারও সমাক্ পরিপাক হয় না, তাহাকে মন্দান্তি ; যাহা মারা আহার কখন সমাক্রপে পরিপাক হয়, কখন বা হয় না, তাহাকে বিধমাগ্রি; আর বাহা মারা পরিমিত বা অপরিমিত আহার অনায়াসেই পরিপাক হয়, তাহাকে তীক্ষান্তি * কহে। উন্নিথিত চারিপ্রকার আগ্রন্ত সমাগ্রিই শ্রেষ্ঠ।

তীক্রামি অতি প্রবল ইইনেই ভাইাকে ভ্রাকায়ি কহে। মনুষ্কর কক অভিশ্য কর্ন ইইনে পিত্ত কুপিত ও বাতানুগত হইনা, অকার উন্মা আরা অনিস্থানে অন্নির বল প্রদান করে। এইরাপে স্বাত-ভ্রামি লব্ধনাল ইইনা দেহকে বিকুত এবং অকার অভিতাক্ষণ্ড আরা মৃত্যু ছং ভুক্ত অরকে পরিপাক করিয়া কেলে। রোগী যুত্বার যত আহার করে, ভ্রাকামি বারা তৎক্ষণাৎ সেহ ভুক্তাম ভ্রাক্ত হইনা বার এবং অন্নপাকানেম্বর অভ্তাপাচ্য স্বোর অভাবে রক্তানি ধারু-সন্নামকেও পাক

ष्यथाशियान्गापि-िहिकिৎमा।

দারসেতচিচিকিৎসায়াঃ পরময়েশ্চ পালনম্।
তক্ষাদ্ যক্ষেন কর্ত্তগাং বহুেশ্চ প্রতিপালনম্।
অস্ত দোষণতং কুদ্ধং সন্ত ব্যাধিণতানি চ।
কায়ায়িসেব মতিমান্ রক্ষ্ রক্তি জীবিতম্॥

জঠরাথি রক্ষা করাই চিকিৎসার সার কর্ম। শত দোষই কুপিত থাকুক, বা শত শত ব্যাধিই উপস্থিত হউক, বুদ্দিমান্ চিকিৎ-সক অতো কায়াণি রক্ষা করিবে। অগ্নি রক্ষিত হইলেই জীবন রক্ষিত হইবে।

সমস্ত রক্ষণং কার্য্যং বিষমে বাতনিগ্রহঃ। ভীক্ষে পিত্তপভীকারো মন্দে প্লেম্মবিশোধনম্।

সমাধির রক্ষণ, বিষমাধিতে বায়্-দমন, তীক্ষাধিতে পিত্ত-প্রতিকাব এবং মন্দাধিতে শেশবিশোধন করা কর্ত্তব্য।

হরীতকী তথা শুক্তী ভক্ষ্যশাণা গুড়ন চ। দৈন্ধবেন যুতা বা স্থাৎ সাতত্যেনাগ্রিদীপনী ॥

হরী তকী ও শুঁঠ, গুড় বা দৈন্ধবের সহিত নিত্য সেবন করিলে অগ্নির দীপ্তি হয়। সম্পথশূক্ষহোষধ-চুর্গ: লীচ্: ঘূতেন গোসর্গে। বুরুতে কুধাং হুগোদকং পীতং বিশ্বেষধং বৈকম্। গ্রোতঃকালে যুবুকার ও শুঠচুর্গ, অথবা

কেবল শুঠচূর্ণ মতের সহিত লেহন করিয়া ঈষত্বা জল পান করিলে ক্ষ্ণার্দ্ধি হয়।

অসমখ্য পিনেতাকং হিস্নৌনর্চলাধিতন।

বিষমেংপি সমস্তেন মন্দো দীপোত পাবক:॥ হিং ও সচল লবণের সহিত উষ্ণ অন্তমণ্ড পান করিলে, বিষমাধি সম এবং মন্দাধি

প্রদীপ্ত হয়।
ভোজনাগ্রে সদা পণ্যং ভিহ্নাকঠবিশোধনস্।
অগ্যিসলীপনং হস্তাং লবণার্মকভক্ণস্।

করিতে থাকে। স্থতরাং বোগী ক্রমণঃ গুন্দাস ও নানা-বিধ রোগো আক্রান্ত হইয়া মৃত্যুমূপে পতিত হয়। এই রোগে রোগী আহার করিলেই কণিক খাস্থা অনুভব করে, কিন্তু জীর্ণনাক্রেই অতায়ি হেডু অনহা তৃষ্ণা, কান, দাহ ও মুষ্ঠায় কাতর হইয়া পড়ে। ভোজনের পূর্বে আদা ও লবণ প্রভাহ সেবন করিবে। ইহা জিহ্বা ও কণ্ঠের শোধক, অধির দীপক, হৃত্য ও স্থপথা।

কপিথতক্রচাঙ্গেরী-মর্নিচাঞ্জাজি চিত্রকৈ:। কফবাতহনো গ্রাহী খড়ো দীপনপাচন:।

করেত্বেল, তক্রন, আমরুল শাক, মরিচ, জীরা ও চিতা, এই সকল দ্রব্যের ঋড়্যুদ কফবাতহর, মল-সংগ্রাহক (পাত্লা মল গাঢ় করে), অগ্নিদীপক ও আমের পাচক।

বিশ'ভয়।গুড়্চীনাং কলংরেণ বড়্বণম্। পিবেৎ শ্লেম্নি মন্দেহয়ে) তৃক্পদ্রুতাকৃত্স্॥ প্রকালং সমরিচং বড়ুবণমুদাকৃত্য্॥

শুঠ, হণীতকী ও গুলঞ্চ ইহাদের কাথে মড়ামণ অর্থাং পিপুল, পিপুলমূল, চই, চিতা. শুঠ ও মনিচ এই ছয়টি প্রব্যের চূর্ণ উপস্কু মাত্রায় প্রক্ষেপ দিয়া এবং সেই কাথ দারুচিনি ও তেজ্পত্রে স্থানভীকত করিয়া পান করিলে শ্রেমা ও অমিমান্যা নিবারিত হয়।

বড়বানল-চুৰ্ম।

দৈক্ষবং পিশ্বলীমূলং পিশ্বলাচব্যচিত্ৰকম্। শুদ্ধী ইরীতকী চেতি ক্রমক্ষানি চূর্ণপ্রের। বড়বানলনামৈতকত্বং শুংদ্ধিদীপনম্॥

সৈন্ধব লবণ ১ ভাগ, পিপুলমূল ২ ভাগ, পিপুল ৩ ভাগ, চই ৪ ভাগ, চিতা ৫ ভাগ, শুঁঠ ৬ ভাগ ও হরীতকী ৭ ভাগ; ইহাদের চূর্ণ সেবন করিলে অশ্লির দীপ্তি হয়। ইহা বড়বানল চূর্ণ নামে অভিহিত।

বড়বামুখ-চূর্ণম্।

পথানাগরকুণা-করঞ্জিলাগ্নিভিঃ দিতাতুলাঃ। বড়বামুগং বিজয়তে গুরুতরম্পি ভোজনং চুর্ণন্॥

হরীতকী, শুঠ, পিপুল, ডহরকরঞ্জার মুণ, বেলশুঠ ও চিতা; এই সকল দ্রব্য সমভাগে লইয়া চুণ করিবে এবং তাহাতে সর্ববি চুর্ণের সমান চিনি মিশ্রিত করিবে। ইহার নাম বড়বাম্ণ চূর্ণ। এই চূর্ণ সেবন করিলে শুরুতর ভোঙ্গনও শীঘ্র পরিপাক প্রাপ্ত হয়। (মাত্রা— ১০ আনা হইতে। আনা পর্যস্ত।)

সৈন্ধবাদি-চূর্ণম্।

সিক্ষ্পপথ্যসগধোন্তব্যক্তিচূৰ্ণমুকামুনা পিবতি ষঃ পলু নষ্টবক্তিঃ দ তক্তামিষেণ সম্বতেন বরং নবাম ভগ্মাভবত,শিতমাত্রমিহ ক্ষণণা ॥

দৈশ্বৰণৰ, হ্রীতকী, পিপুল ও চিতামূলচূর্ণ সমভাগে মিশ্রিত করিয়া উষ্ণ জলের
সংহত দেবন কবিলে অতিশয় অগ্নির দীপ্তি
হয়, তদ্ধারা নৃতন তণ্ণুলের অয় ও ম্বতপ্রক
মংশু পর্যান্ত ক্ষণকালের নধ্যে ভক্ষীভূত
হইয়া যায়।

रेनक्षवानाः हुर्ग्य ।

দৈশ্ববং চিত্রকং পথ্যা লবকং মরিচং কথা।

টক্রপং নাগরং চন্যং যথানী মধুরী বচা ॥

দ্রব্যাণি ছাদশৈচানি সমভাগানি চূর্ণরেৎ।
ভানরেপ্লিপুক্রদানৈস্থিসপ্তাহং প্রযঞ্জ তঃ ॥
ভচ্চো মাৰদ্বরং চূর্ণং বারিণোফেন পাররেৎ।
সন্সন্ধনেন ভক্রেণ মপ্তনা কাঞ্জিকেন বা।
দৈশ্ববান্তমিদং চূর্ণং সম্ভো বৃহ্নিং প্রদীপরেং॥।

সৈদ্ধবলবণ, চিতামূল, হরীতকী, লবঙ্গ, মরিচ, পিপুল, সোহাগা, শুঠ, চৈ, যথানী, মৌরি ও বচ এই ১২ দ্রব্যের সমভাগ চূর্ণ একত্র করিয়া লেব্র রসে ২১ দিন ভাবনা দিয়া শুক করিয়া লইবে। মাত্রা—২ মাধা। উষ্ণ জল, সৈদ্ধবদংষুক্ত তক্র, দধির মাত্বা কাঞ্জিকের সহিত সেবনীয়। ইহা সেবন করিলে দল্প: আগ্রর দীপ্তি হইয়া থাকে।

हिन्नु खेकः हुर्गम्।

ত্রিকটুকমজমোদা দৈদ্ধবং জীরকে ছে সমধরণধৃতানামষ্টমো হিন্দুভাগং। প্রথমকবলভুক্তং সর্পিষা চূর্ণমত-জ্ঞনয়তি জঠরায়িং বাতরোগাংশ্চ হস্তি॥ অন্তমোদাত্র যমানী, অংগ্রেরতান্তদী শনস্থাদিতি ভাত্ন-দাসগোপালদাসো। চুর্ণ: ভক্তোপরি দকা মুতেন সন্ধায় গ্রাসত্ত্বয়ং ভোজনীগুমিতি ভাত্নাম:।

র্ত্তিকটু, যমানী, সৈদ্ধন, জীরা, রুষ্ণজীরা ও হিন্ধু প্রত্যেক চূর্ণ সমভাগে মিশ্রিত করিয়া ভোজনের প্রথম গ্রাসে গ্রন্ত সহ সেবন করিলে অগ্নির বৃদ্ধি ও বাতরোগের নাশ হয়। ভাষ্ণাস বলেন, অলেন উপরিভাগে চূর্ণ নিক্ষেপ করিয়া গ্রন্ত মাশাইয়া তিন গ্রাস অল প্রথমে ভোজন করা কর্ত্তির দ্ব

সলাগিমুখ-চুর্ম।

থিপুভাগো ভবেদে কা বচা চ । ছওণা ভবেৰ।
পিন্নলী ত্ৰিগুণা প্ৰোক্তা শৃঙ্গবেরং চতুত পৃষ্ ॥
যন'নিকা পঞ্চগো বড় ছগা চ হরীতকী।
চিত্ৰকং সপ্রগুণিতং কুঠনইগুণং ভবেৰ ॥
এতন্ বাভহরং চুর্গং শীতনাত্রং প্রসন্ধা।
পিনেদ্ দগ্গা মন্তনা বা হ্রেয়া কোকবারিণা ॥
সোদাবর্জনজীর্গক সীহানন্দ্রং তথা।
অঙ্গানি বস্তু শীঘ্রতে বিধা বা বেন ভক্ষিতম্ ॥
অংশাহরং দীপ্রক্ শুলন্ধং গুলানান্ন্।
কাসং খাসং নিহ্ডাংগু তথিব ক্ষ্মনাশন্ম।
চুর্ণনিম্নিশ্বং নাম ন কচিব প্রতিহ্ন্তুতে॥

হিন্দু ১ ভাগ, বচ ২ ভাগ, পিপুল ৩ ভাগ, ভাঁঠ ৪ ভাগ, যমানী ৫ ভাগ, হরী চকী ৬ ভাগ, চিতামূল ৭ ভাগ, কুড ৮ ভাগ, একত্র চুর্ণিত করিয়া লইবে। প্রসাম (স্থার উপরিস্থ স্বচ্ছ ভাগ), দিবি, দিবির মাত, স্থারা অথবা উষ্ণ জলের সহিত সেবা। ইহা বায়ুনাশক এবং উদাবর্ত্ত, অজীর্ণ, প্লীহা ও কাসাদি রোগে ব্যবস্থেয়।

त्रक्तिभूथ-हुर्गम्।

খৌ ক্ষারৌ চিত্রকং পাঠা করঞ্চং লবণানি চ।
ফুল্মেনা পাত্রকং ভাগাঁ ক্রিমিন্ধং হিন্দু পুদ্ধন্ ॥
দাঠা দাবলী ত্রিব্যুত্তং বচা চেত্রহবত্তথা।
ধাত্রী জীরকবৃক্ষায়ং শ্রেরদী চোপকৃঞ্চিকা॥
ভারবেতসমন্নীকা ববানী স্বরদার চ।
ভারাতিবিধা ভাষা হবুবারধ্বং সমন্॥

তিলম্পকনির্গাং কোকিল'কপলাশরের।
কারেনি নৌই কিউ ৪ তথ্য গোমুরদেনি তম্ ॥
সমস্তাগানি সার্বানি প্রক্রন্তানি কাররের।
মাতৃলুঙ্গরদৌন ভাবরেচ্চ দিনত্রম্ ॥
দিনত্রযন্ত শুক্তেন আর্থ্রকন্ত রসেন চ।
অলা রিকারকং চুর্গং প্রদান্তানি সার্বান।
অলীর্কিমধ্যে শুন্সান্ শ্লীহানং শুরুজানি চ ॥
উদরাশাস্ত্রদিক অস্টানান্ শাহানির শুনান্ নির্দাশস্ত্রদিক অস্টানান্ নার্বানান্ বিলাশস্ত্রদিক অস্টানান্ নার্বানান্ বিলাশস্ত্রদিক অস্টানান্ নার্বানান্ বিলাশস্ত্রদিক অস্টানান্ নার্বানিক প্রাক্রানালেতং শুক্তং কুরা প্রভাজনে।
মাপ্তেনক্ত চুর্গক্ত বিভালপদনা ব্রক্ষ।
গোদোহ্যানাব্য তৎ সক্ষং ক্রনীশুনতি দেশ্লকস্ ॥

যুবকার, সাচিফাব, চিতামূল, আকুনাদি, করঞ্জার চাল, পঞ্চলব্প, চোট এলাইচ, তেজপত্র, বামু-হাটা, বিড়ন্ধ হিন্দু, কুড়, এঠা, नाकर्रातमा, (.इ.४५), मूडा, वह, हेन्स्यव, व्यागना, जीता गशाना, गर्शानश्रना, कुरूजीता, অমুবেত্র, তিল্পিড়ী, যুমানী, দেবদারু, হ**ী**-তকা, আতইন, বিদ্ধুত্ক, হর্ষা, দোলাল-ফলের মজ্জা, তিলের নালের ক্ষার্, ঘণ্ট পাকলিৰ কাৰ, সজেনামূলে। ছালেৰ কাৰ, কুলেঘাড়ার ক্ষার, পলাশক্ষারও উফীক্ত এবং গোমুত্রনিক্ত (শোনিত) মধুর; এই সকল ন্ত্রবং স্মতঃকোলহয় চুর্ণ কার্যা। তল দিবস টাবালেবুম নসে, তিন দিবস ওকে (অভাব কা,জ্বে) ও ভিন দিবৰ আনাৰ বনে ভাবন দিয়া শুক্ষ করিয়া লইবে। এক পাত্রে অন্ন ব্যঞ্জনাদি রাখিয়া ভাহাতে ইহান ২ ভোলা িক্ষেপ কার্য়া ঘতেব স'হত সেই অয় ভক্ষণ কারবে । ইহাতে অভিশন্ন অগ্নিন দীপ্তি হয় এবং অজার্প ও প্লীহা প্রভাত নানারোগ নষ্ট হয় ৷

ভাক্ষরলবণম্।

শিপ্পনী শিশ্পনীমূলং ধাক্সকং কৃষ্ণজীরকম্।
সৈন্ধনক বিড়কৈব পঞ্জ তালাশকেশরম ।
এবাং বিপলিক'ন্ ভাগান পঞ্চ সৌবর্চনতা চ।
মরিচাজাজীশুন্তীনামেকেকতা পলং পলম্।
ছগেলে চার্দ্ধভাগে চ সামূদ্রাৎ বুড়ববরুম্।
দাড়িমাৎ কুড়ববরুম ।

পিপুল, পিপুল্নল, বনে, ক্য জীরা, সৈনব লবল, বিট্লখন, ভেজপার, তালীশপার ও নাশের ইহাদের প্রত্যেক্তর ২ গল, ১৮৫ লবল ৫ গল, নাল্চ, জারা, ওঠি, ইহাদের প্রত্যেকের ১ পল, গুড়খন্ ৪ ভোলা, এলাইচ ৪ ভোলা, করকচ লবল ৮ গল, অমা ছিলফলের বীজ ৪ পল, অমাবেত্র ২ পল এই সকল চুল একর মিলত বার্যা লইবে। ত্রুদ্ধির মাত ও কাজিবলালর সাহত সেবল। হাই সেবল কারণে বাতশেগা, বাতগুর, বাতশুল, প্রীহা ও পাছবেলালৈ নালা পালুল এই হয় এবল এল বাহাবে বিশ্ব হহয় প্রাক্তে

অগ্নিমুখলবণম্।

চিত্রকং বিজ্ঞান দত্ত' তিবৃত্তী পুললা সমন্।

যাবস্তোতানি চুর্ণানি ভাবনাত্রস্ত সৈন্ধবন্।

ভাবনিয়া সুক্রাইরস্তব্দানেও নিজ্ঞাপের ভতঃ।

মৃত্বলেনাত্রলিস্থ প্রকিপেজ্জাভবেদনি।

হলমন্ত্র সমৃদ্ধুত্য সংচুর্নোফে সুনা পিবের।

এতদ্যিস্থান নাম লবণা ব্লিক্র প্রন্ন।

যক্রমীহোদরানাই-প্রকাশ পার্লাক্র্যা।

(দক্রণা চুর্মেকাকৃত্য স্ক্রা প্রক্রিকন্ত্রা)

পিবের।

চভামূল, ত্রিফলা, দন্তীমূল, তেউড়ীয়ুর কুড় ইহাদেব প্রত্যেকের সমভাগ, চুর্গমটি স সমান সন্ধবল্বব, একত্র সিম্নবৃক্তের আঠা कारना क्रिया देशन को धगरना (कारने गरना) ^{के} देखान वाशीर आश्रातिकाल भननीक देखान প্রিয়াপ্ত থাবা মূহ লেপ দিয়া মগ্রিতে : এই সকল লগণ উপ্রিত হয় ! ানকেপ করিবে। উত্মরূপে ৮% \$5C01 কুলিয়া লইয়া চূর্ণ করিবে। এই চর্ণের মানা অথামাজীর্ণাদিচিকিৎসা-বিধিও। ৫ বতি। উষ্ণজ্লের স্থিত সেবনীয়। ইহা দেৰৰ কৰিলে অভিশ্য আগ্ৰিন্দি হয় এবং লীহা ৬ গ্লাপ ছতি নানা বোগ নই হয়।

অগ তীক্ষায়ি-চিকিৎসা।

ना बोध्यादवन भएन क्षण शिव्यद्भाष्ठ, वतान अन्य । আভাং বা পায়সং সিদ্ধং পিবেদ গাত্তিশাভ্তে। য়ৎ কিবিণ গুৰু নেধাঞ্চ শ্রেমক।বি চ ছেম্জেশ। मक्षेर कि शिक्षिकर इन्ह्या अवश्वन पियो ॥

চাল ২ ভোলা স্থান-ত্রাপ্ত ব্যক্ত মুর্বেব বাটিয়া পান কংলে, অত্যগ্নি প্রণমিত হয়। কিংবা নারী-ছধ্যে মৃক্তভুমুরের করু এবং ভাহাতে অমুরূপ তওুল দিয়া পায়স প্রস্তুত করিয়া সেই পায়স ভোজন করিলেও ত্রীক্ষাগ্নি নিবারিত গুরু, মেবা, শ্লেমকারী হয়। মহিল্ডথাটি प्रवा ६ छेषव ध्वर प्याशांतास्य पिवानिमा টাক্ষাগ্রর পক্ষে হিতকব।

মুক্তমু ভবজীর্বেহপি ভোজামসোপকরয়েৎ। निविक्तानाव्यवर लक्षा वर्षानः न निशं उरार ।

আহাৰ জীৰ্ না ২ইতে হইতেই তীক্ষাগ্নি ব্যক্তিকে আখার দিবে, যেন আগ্ন অলাদিরূপ ইশ্ধন-(কাষ্ট)-বিহীন ও প্রাপ্তাবদর হইয়া ধান্তাদি শোষণপুর্বক আতুরকে না নিপাত করে ৷

অথামাজ। প-লক্ষণম্।

তত্রামে গুরুতোৎরেদ: শেথো গণ্ডাকিক্টগ:। উল্গার্ভ যথাভুক্তমবিদর্শঃ প্রবর্জতে । অজীর্ণসমূহের মধ্যে আমাজীর্ণ পূর্কোক্ত রোগে দেহের তারতা. ব্যনবেগ, গণ্ড ও অক্সিগোলকে শোথ এবং ষণাভুক্ত অবিদগ্ধ

'र व'स्म वभनः कोपार विषया लक्ष्यनर हिण्या। বিস্তেদ শ্ৰেদ্ৰৰ শৃত্যু বস্ত্ৰেলে শ্ৰ্যী । চ্যা

আমাজীর্ণে বমন বিদ্যাজীরে লক্ষন, বিষ্ট্ৰাজীনে বেদৰ ও বসংশ্যাজীনে অভ্না-वश्राम प्रवानिमा क देवा।

অথামাজীর্ণ-চিকিৎসা।

বচালবৰ্ণজোয়েৰ বাজিবাসে প্ৰৰুষ্ঠ : क्षात्रिकुवह क्षेत्र श्री श धः गेनित छम। ॥

ৰচ ১ তোলা ও দৈশৰ লবণ ১ তোৰা সের উফ জলের সহিত মিঞ্জিত করিয়া পান করাইলে বমি হইরা আমদোবের শান্তি হয়। অথবা পিপুল দৈর্ব ও বচ, ইহাদের কর শীতল জলের সংহত পান করাইকেও আমাজীণ প্ৰশাসত হইয়া থাকে।

धाक्रमागत्रमिकः ता (०'यः एका विध्यनः व्याम'कौष श्रममनः गुलधः विष्यःगायनम् ॥

ध्य ९ ७ ८३ काथ आधाओए अधान করিবে। ইহামারা আমাজীণ ও ভজানত শলবং বেদনা প্রশ্মিত হয় এবং বিশোষিত হইয়া থাকে।

ভবেদ যদা প্রতিরজীব্নকা ভদাভয়াং নাগ্রদৈকবাভাগি। বিচাৰ্ণতাং শাভজলেন ভুজা। ভুঞা।দশকং নিতমনকালে॥

যদি প্রাতঃকালে অজীণ বোবহয়, তাহা হইলে হ্রীতকী, ভাঁচ ও সেন্ধব চূর্ণ, শাতল জলের সহিত পান কবিয়া যথাসময়ে পরিসিত অন্ন ভোজন করিবে। তাহাতে কোন অনি-ষ্টের আশক্ষা থাকিবে ন।

জ্ঞতেন শুকীনথবে পকুলাং পথাং ভূতীয়ামণ দাভিমং বা। আনেষ্ জীৰেৰ প্ৰদান হৈবুৰ কে বিৰুদ্ধেৰু চ নিতামতা ।।

গুড় ও ও ঠ-চুণ কিংবা গুড় ও পিপুলচুণ, কিংবা গুড় ও হুৱীতকীচুণ অথবা গুড়ও দাভিমচর্ণ দেবন করিলে আমাজীর্ণ, মলবদ্ধতা করিবে। তাহাতে উক্ত ইপদ্ধ সকল নিব'-ও অশোরোগ নিবারিত হয়।

তীব্ৰংত্তিবুপি নংজীণী পিবেছ লম্বনোৰ্থন।। ष्यानमक्षां नालः शंख्युर (५)(भोषधं नाम् ॥

ভক্ত দ্রব্যের অজ্ঞীণতা নিব্ধন উদরে তীব্রবেদনা উপস্থিত হইলেও তংকালে বেদনা নিবারক কোন ঔষধ দেবন করা কভবা নহে। ! দৈন্ধবের সহিত দেবন করিলে, গুল নির্গানং কারণ তথন পাচকাগ্নি আমাচ্ছাদিত থাকায় উদ্যার ও প্রবল অজীণ প্রশ্মিত ইইয়া সভঃ কি বাতাদিদোষ, কি ঔষৰ, কি আহার, কিছুই পরিপাক করিতে পারে না।

व्यथ रिमक्षाकार्य-लक्ष्मग्र ।

বিদর্গে অমত্যার্চ্ছাঃ পিতাচ্চ বিবিধা রুজ:। উদ্যারত সধুমায়: খেদো দাহত জায়তে । বিদগাজীর্ণে ভ্রম, তৃষ্ণা, মূর্চ্ছা, পিত্তক্বত নানাবিধ পীড়া, ধুমনির্গমবৎ অফ্লোলাার, ঘশ্ম ও দাহ এই সকল লক্ষণ দৃষ্ট হয়।

অথ বিদগ্ধাজীর্ণ-চিকিৎসা।

অল্লং বিদ্যাং হি নরপ্ত শুত্রং শীতাম্বনা বে পরিপাকমেতি , তৎ তম্ভ শৈতোন নিংগ্রি পিড-নাক্রেদিভাবাচ্চ নয়তাগস্তাৎ॥

বিদ্যাজীর্ণে শীতল জল পান করিতে দিবে। শীতলজ্ঞপানে বিদগ্ধ অন্ন শীঘ্র পরিপাক প্রাপ্ত হয় এবং জলের শৈতা ও দ্রবার হেতু পিত্ত প্রশ্মত এবং অনোদেশে নীত হটয়া থাকে ।

বিদ্যুতে বস্তা চ পুরুষারেং দক্ষেত হাৎকে ঠিগলক শক্ত। দ্রাকাসিতামাকিকসম্প্রযুক্তাং লীচাভয়াং বৈ স ২২খং লভেড॥

ভোজন কবিবামাত্র যদি ভুক্তদ্রব্য বিদয় হয় এবং ভজ্জন্ম হৃদ্য়, কোন্ত ও গলা জালা

করে, তাহা হইলে হ্রীতকী ও কিদ্মিদ্ এবত্ত পেষণ করিয়া চিনি ও মধুব সহিত লেহন রিত হইবে।

হরীতকী ধাক্সত যাদ্দিদ্ধা স্থিপ্পলী সৈন্ধ্যমুখ্য । সোলাবিধ্যং ভূশমপাজীবং বিভজা সত্যো জনয়েৎ খুদাক 🖟

হরীতকী ও পিপ্ললী, भागा इत्सा ५८क (সন্ধান-বিশেষ) অভাবে কাঞ্জিতে সিদ্ধ করিয়া পুনাৰ উদয় হয়।

व्यथ विकेका जीर्ग-लक्ष्म ।

বিষ্ট্রকে শুলমাখানং বিবিধা বাতবেদনাং। মলবাতাপ্রবৃত্তিশ্চ শুক্তো মে!গঙ্গপীত্রম ॥

বিষ্টকাজীণরোগে শূল, উদরাগান, বৈতি-ক্বত বিবিধ পীড়া, মল ও বায়ুর অনির্গম, গুৰুত, মুৰ্চাও অঙ্গবেদ্না এই স্কল লক্ষ্ণ প্ৰকাৰিত হৰ

অথ রদশেষাজীর্ণ-লক্ষণম

বস্পের্বের মুবিছেয়ে ক্ষত্র ক্ষিত্রীরবে ॥ রস্পেনার্হীণে অগ্লবিশ্বেষ 'এবং শুদুয়েব অভ্রমি ও গুরুত। ইইয়া থাকে।

অথ বিষ্ট্ররসশেষাজ্ঞ চিকিৎস।।

विष्ठे ते (अभनः १५। (शशक लवर्गानकम । अमरणस्य किवायाः श्री वड्यनः वाउवर्कनम् ॥

বিষ্টনাজীলে অৰ্থাৎ অজীণতাহেতু উদ্ব স্তৰীভূত হট্যা থাকিলে, স্বেদক্রিয়া ও লবণ-মিশ্রিত জল পান ব্যবস্থেয়। রসশেষাজীর্ণে অর্থাৎ অন্নরসেব সম্পূর্ণ প্রিপাক না হইয়া কিছু অবশিষ্ট থাকিলে, দিবানিদা, উপবাস ও নিৰ্কাত স্থানে অবস্থানাদি কৰ্তব্য।

ব্যার্থ স্থান্থব। হন্ত ব্রক্তি নতী দারিণঃ
শ্ল্যান্ত স্থান্রিগতান হিকানকংশী ড়ি তান্।
কাণান্কাণক কাথি শন্মদহতান্ স্থান্র সাজীবিনঃ
রাজে । জাগরিতান্নর নে নিরশনান্ধ মং দিবা খাপরেং ।
রাজ্পেনেই রক্তি রিছাচাটে । ব্রিক্র ক্রেছিল।
ভাবে জ্ঞান নড় রাজ্পিক্তি । অস্থাকিং ব্রেন ত্রু

রসংশ্যাজীর্ণে দিবালিলার্গ প্রধান ঔষণ।
নিমালাখত বাজিদেবও দিবানিজা বিশেষ
উপকানী,—মাহারা সর্বাদা ব্যায়াম, স্থীসঙ্গ,
প্রপায়টন বা অধাদিয়ানে গ্রম ধ্রান, ত্রান্ত দেহ; যাহারা অভিসাব, খ্রা, ধ্রান, ত্রা,
হিক্কাও বায়ুরোগাও, যাহারা জ্ঞীন, অন্ন-ক্ষ,
অতি-অপায়া, রাতিহাগাবত, নিবাহার,
যাহারা বিশুবা বন, হাহাদিগকেও ক্ষেড্ডিরপে
দিবানিজা বাইতে দিবে।

ष्याजिया कठेवर शांरका (दश्च काम्पराक्रांतः) प्रितामधाः धत् प्रोड मन्त्राक्षीर्यशासम्

হিং, ত্রিকট্ট ও সেন্ধব লবণ ধারা উদর প্রালপ্ত কবিয়া দিবদে নিজা গেলে, সন্ধ্রপ্রকার অঙ্গীণ প্রশাসত হয়।

প্রথাপ্রলিমংযুক্তর চূলা দোবচচলা নিবেও। মন্তরোপোদকেনাথ ব্দ্ধা দোবচাতির ভিষক্। চতুবিবধনজার্থক মন্দানলমরোচকম। আগানিং বাতগুলাক শুলকান্ড নিম্ছ্যতি ।

হরীতকী, পিপুল ও সৌবচ্চললবণ সম ভাগে লইয়া তাহাদের চূর্ণ, দোষ ব্বিয়া দিবি মাত্বা উক্তজলের সহিত পান করিবে। ভাহাতে চতুর্বিণ অজীর্ণ, মন্দায়ি, অক্তি, উদ্যাবান, বাতগুল ও শুল প্রশ্মিত হয়।

হুকুমারমোদকম্।

পিপ্ললী পিপ্ললীমূলং নাগরং মরিচং শিবা।
ধানী চিত্রকমন্ত্রক গুড্ডুটা কটুরোহিলী।
প্রত্যেকমেবাং কথাংশং চুর্লং দন্ত্যান্থিকার্থিকম্ব।
নিপ্রতাচ্বং শকরায়াং পলক্রম্ব।
মধুনা মোদকং কাগাং প্রুমারকমোদকম্ব।
নাভাজীবিশ্রশমনং বিপ্লপ্র প্রমৌশবন্।
উদারভানাহ্যরং স্ক্রোজীবিনাশ্রম্ব।

পিপুল, পিপুল্যল, শুঠ, মরিচ, হরীতকী, আমলকী চিতামূল, অন, গুলঞ্চ, কট্কী, ইহাদের প্রত্যেকের চূর্ণ ১ কর্ম, দস্তীচূর্ণ ৩ ক্য, তেউড়ী চূর্ণ ২ পল, চিনি ২ পল। মধু মিশ্রিত করিয়া নোদক প্রস্তুত করিবে। ইহার নাম স্কুমান মোদক। ইহা দেবন করিলে বাতাজীন বিইছ, উদাবত ও আমানাহ রোগ নিবারিত হয়।

গুড়াফঁক্য।

ব্যোগং দ্রা বিক্রটিচ জং কৃষ্ণামূলং বিচ্ণিত্য। ওচনুৰ্বং গুড়ুস মিশং ভক্ষেৎ প্রাতক্ষণিত ॥ এতদ্ গুড়াওকং নাম বলব্যায়িবর্জনম। শোগোদাবর্জনম্বং মীহপাও শুম্বাহম্॥

ব্যাষ কৈঠ, পিগুল, মারচ), দক্তীমূল, তেউড়ামূল, চিতামূল ও পিগুল্মূল, ইহাদের চূল গুলাতন গুড়েব সাহত মিশ্রিত করিয়া প্রাতংকালে সেবন করিলে বল, বর্ণ ও অগ্নির রাদ্ধ হয় এবং শোপ, উদাবন্ত, শূল, গ্লীহা ও পাড়ুরোগেব শান্ত হল্যা থাকে। এই উষ্দের নাম গুড়াইক।

ছুজরং সংগ্রহেৎ সর্বাং নিশায়ামশনন্তথা। অজ্ঞাণী মন্দ্রবিহ্নক ভক্ষয়েৎ স্কুজরং লগু॥

অজ্বণিও অন্ধ্যান্দো পাড়েত ব্যক্তির সর্ব প্রকার প্রপাচ্য আহার ও রাজিতে ভোজন ভাগি করিয়া স্পাচ্য ও শবুস্থব্য ভোজন করা কর্ত্তবা।

বিশিক্টদ্রব্যাজীর্ণে বিশি**ন্টং** পাচনদ্রব্যমাহ—

অনং প্ৰদণাকায় কলং কদলসম্ভন্।
কদলক্ত তু পাকায বুধৈৱপি গুডং হিডম্।
গুডক্ত প্রিপাকায় জব' বক্ত রুমো হিডঃ ॥
নারিকেলফলডালবীজ্বোঃ পাচকং দপদি তভুলং বিদ্ধঃ।
ক্রীর্মের সহকারপাচনং চারমজ্জনি হরী হকী হিডা॥
মধুক্মাপুরনৃপাদনানাং প্রব্যজ্জনকপিথকানাম্।
পাকায় পেয়ং পিচ্মদিনীজং মুডেগপি তক্রেগপি তদের প্রাষ্

থর্জনশৃঙ্গাটকয়োঃ প্রশন্তং বিসৌষধং কুত্র চ ভন্তমুস্তম্। যক্তাঙ্গবোধি দফলেয় শস্তং প্রক্ষে তথা পয় স্বিতং প্রশীতম্ ॥ তভুলেষু চ পয়: পয়:यংখা দীপ। কন্তু চিপিটে কণাযুত:। ষষ্টিকা দ্ধিজনেন জীয়তে কৰ্কটা চ স্থমনেৰু জীৰ্য্যতে ॥ গোধ্যমাধ্হরিম্ভদ্তীন্যুদ্গ-পাকো ভবেজ নটিভি মাতলপুত্রকে।। থজ্বিকাবিসকশেরসিতাম শতং गुझांहरक मध्यत्वत्रि छत्रमुखम् ॥ কঙ্গুভাষাকনীবারা পুলপাশ্চাবিলম্বিতম্। দরে। জলেন শ্রীয়ান্তি বৈদলঃ কাঞ্জিকেন 🤌 ॥ शिष्ठोक्षः भी डलर नाजि कमजार असनर शहर । भारमखरौर नियुक्तकर शास्त्रमर भूकानुसकः । বটো বেশবার'ল্বজেন ফেনী সমং গণ্ট: শিগ্ৰুনীজেন যাতি। কণ'মুলতে লড়ডুক্কাপুপদট্য-দপাকো ভবে**জ**কলীমণ্ডয়ে¹ চ।

অনস্থর বিশিষ্ট দ্রব্য ভোজন জন্ম অজীর্ণে বিশিষ্ট পাচন দ্রব্য ব্লিভেছেন।

কাটাল খাইয়া অন্ত্ৰীণ চইলে কলা খাইলে আবোগাহয়। কলা খাইয়া অজীণ হইলে মত শাইলে পরিপাক হয়। মতের পবিপাকার্থ জন্মীর বস উৎকৃষ্ট। নারিকেল ও তাল সাঁটির পরিপাকের জন্ম ভঙ্ল ভোজন ক্যিবে। আমের পাচক হয়। পিয়ালফলের মুক্ষা হরী-তকী বারা প্রিগাক হয়। মউল, পিয়াল, ফলসা, এজির, কয়েভবেল, সকল দ্রোর পরিপাক জন্ম নিম্বীক্ষ খাইবে। মূতে এবং ডক্তে নিম্বীজই পথ্য। এবং পানিফলের সম্বন্ধ শুঠিই প্রশস্ত। স্থান ভন্নমুন্তকও (নাগবমূতা) প্রশাস্ত। দুগুর, অশ্বর্ফল, পাকুড়ফল পরিপাকের প্রাণিত (বাসি) জল পান করিবে। 357 পাকের জন্ম ত্রা, হ্রা-গাকের জন্ম ব্যানী, চিপিটক পা-পাকেৰ জন্ত পিপ্লীযুক্ত যমানী এবং বাইক ভিটুল পাবিপাকার দীৰমত্ত প্রশন্ত। বাকুচু পরিপাকে স্থান (অগাং গোরন) (এ) । গোৰ্ম, সাধ্ৰুলাই, চলক, সভীল (बब्ब कवाहे₎, भूशं, धर्म भभुष्ठ भनारक । শীল মাতুলপুএক (পুস্তুববীজ্য জীণ করে।

বন্থৰ্জুর, বিস (মুণাল্বিণেষ), কেশুর, সিতা, পানিফল এবং মধুফল (বৈচি) পরিপাকার্থ নাগরমু গ্রাই শ্রেষ্ঠ। কঙ্গ (বান্তাবিশেষ). খ্যামাক (খ্রামা ঘাসের বীক্র), নীবার এবং কুলখকলাই দধিমস্ত ছারা শীঘ্র জীণ হয়। কাঁভি ছাবা ৰৈদল (দাউল) পরিপাক হয়। পিন্নায় শীতল জলে পরিপাক হয়, দিদলমিশ্রিত অন্ন অহাৎ থিচড়ি সৈদ্ধব লবণে পরিপাক হয়, কাগজী লেবুতে মাষেগুরী (মাষ্ণণ্ড বিস্কৃতি) পরিপাক হয়। মুদ্রায়দে পায়দ পরিপাক হয়। বটক (বড়া)ও বেশবার লবঙ্গ ছারা পরিপাক হয়। ফেনী (খাজ।) ও পাঁপর সজিনার বীজে জীর্ণ ২য়, পিপুলের মূল লাড়ু পরিপাক করে। অপুপ ও সট্বাদি (পানক বিশেষ) তিলমিশ্রিত যবাগু বারা পরিপাক হয়।

ত্রথ সাধারণ-চিকিৎসা।

লবঙ্গালিঃ মোদকম্।

লবদ্ধা পিপ্ললী ভাষ্টী মন্ত্রিক জারকছন্ত্রম্ ।
কেশনং তগরকৈব এলা জাতীকলং তুগা ॥
ক্টেলণং ভেজপাত্রক পথাবাকং সচন্দ্রম্ ।
ককোলমগুকলৈব ভশান্তরকং ওপা ।
কপা নং জাতিকোবক মুন্তং মাংসী বনন্তবা ।
ধান্তকং শভপুপা চ লবকং স্বব্রুলাকম্ ।
স্বব্রুলাক ভিছি । তাং শক্রাং বিনিবাজনে ।
স্বব্রুলাক ভিছি । তাং শক্রাং বিনিবাজনে ।
স্বব্রুলাক নিত্রা ভ অম্পিতং ক্লাক্র্ণম্ ॥
অহিনাল্যমনীর্বিক কামলাপাভুরোগভূৎ ।
বনপুলিকরকৈব বিশ্বোৎ ভাবক্রম্ম ।
অহিনাং স্বব্রুলাক ভাষ্টিয়ার অনুজ্রম্ ।
অবিভাগে নিক্ষিতং হস্তি লবক্সাজ্যমিদং শুল্ম ।

শবন্ধ, পিপুল, ভাঁস, মনিচ, জীনা, ক্ষা-জীনা, নাগকেশন, ভগ্ৰমাজকা, এলাইচ, জাসকল, বংশলোচন, কট্ফল, ক্জেণ্ড, গল বীজ, বজ্ঞান্ধন, কাক্লা, অন্তর্গ, নেগাৰ নুল, অন্ত্ৰ, কপুৰ, জয়িতী, মুভা, জটামাংসী, যব- ভণ্ণল, ধনে, শুন্ফ। প্রত্যেক চুর্ণ সমভাগ, চুর্ণসমষ্টির সমান লবক্ষ্চ্ব। সর্বাচ্বের বিশুব চিনি। যথাবিধানে মোদক প্রস্তুত করিরা লইবে। ইহাতে অমপিত, অধিমান্সা, কামলা, অজীবি ও গ্রহণী প্রভৃতি নানারোগ নষ্ট হইরা থাকে।

ত্রিবৃতাদি-মোদকম্।

ত্রিবৃদ্ধ্ত কিণামূলং কণ। বহিং পলং পলম্। সর্ব্বকুল্যামূতা ভটা ত্রভেন সহ মোদকম্। কবৈকং ভক্ষেদ্রিতাং দীপ্তায়িং কুরুতে কণাং।

তেউড়ীমূল, দস্তীমূল, পিপুল্মল, পিপুল্, চিত্তামূল; প্রত্যেকের চূর্ণ ১ পল, গুলক্ষনার পেল, গুর্গীচূর্ণ ৫ পল, গুড় ৩০ পল। মোদক করিয়া লইবে। ইহা ভক্ষণ করিলে অগ্নি আতশন্ন বিদ্ধিত হয়। মাত্রা—।।০ তোলা হইতে ২ তোলা। পর্যাস্ত।

হরীতকী-প্রয়োগঃ।

হনাতকা। শতং প্রাক্তং নেরঃ পিরক কার্যে।
বর্গদ বীজং সমৃদ্ধতা চুননিমানি প্রয়েও ।
ব্যাদ বাং পঞ্চপট যমানীদ্যুমের চ।
বিজ্ঞারং হিন্দু দিবাঞ কর্মমানিতং পুগব ।
প্রস্কৃত্যীকতং সর্বাং চুক্রামানাপি ভাষােও বিস্পাক্ষরসেনাপি ভার্যেচ্চ দিন্ত্যম্ ॥
বাদ্যেদভ্যামেকাং সর্বাজীবিনাশনম্ ।
চতুর্বিধনজার্ক বহিমান্যং বিস্চিকাম্ ॥
ভ্যাম্লাদিরোগাংশ্চ নাল্যেধ্বিকল্ডঃ ।

১০০টা হরীতকী, উপস্কুক তকে দিদ্ধ করিয়া বৃদ্ধুক্তিক বীজ দকল নিশ্বলি করিয়া লইবে। পরে পিপুল, পিপুলমূল, টে, চিতামূল, শুঠ, মারচ, পঞ্চলবল, হমানী, বনহমানী, কাজেবি, সাহিত্যকোর হলোল চুল করিয়া পুরেরাক হবীতকী দকল আমর্যুল্ করিবে। প্রভাগ হবীতকী দকল আমর্যুল্ বর্ব রুলে ত দিন করিয়া ভাবলা দিবে।

এক একটি হরীভকী দেবনীয়। ইহাতে সঞ্চ প্রকার অজীর্গ, অগ্নিমান্দ্য, বিস্ফৃতিকা, গুল্ম ও শুলাদি নানা রোগ উপশ্মিত হয়।

অমৃতহরীতকী।

তকৈ সমুৎপ্রেক্ত শিবশি তানি
তবীজমুক্তা চন্ত্রীকেশিলেন।
বড়ুবণং পকা পার্টি হিকু
ক্ষারাকলাজীয়জমোদকক ॥
ক্তুবণাদেপিরুদর্শভাগা
গণস্য দেরাক্রগালিতদা।
বিভাবা চুক্তের রজাংসামীশাং
কিপেচিত্রবারীজনিরাদ্যাতে ॥
মুক্ত গণ্ডা চ বিশোবা তাসাং
হরাতকীমক্ততমাং নিমেবেং।
অজীবিমন্দানকজ্যাহরাময়ান্
সক্তর্শুল্লাহরী ডপাক্রান্
বিবক্ষমানাহকলো ম্যাগ্রেটী
তথামবাতাংগ্রেটা হরাতকী ॥

উৎক্ট হ্রীতকী ১০০টী, যোলে সিদ্ধ করিয়া কৌশল পর্বক ভাহার অাঠিগুলি বাহির করিয়া ফোলবে, যেন ভাহাতে হরী-তকী ভাঙ্গিরা না যায়। পরে ভাঠ, পিপুল, भ्रतिह, शिश्रुलयुन, ८६, bei, शक्षनत्व, श्रिक् যবক্ষার, সাচিকার, কালজীরে ও শুমানী; এই मकल हुन वञ्ज बाता जिल्ला लहेरव अवर हेर्बत অৰ্দ্ধভাগ ভেউড়াচৰ্ণ দিয়া একত্ৰ নিশ্ৰিত করিবে। এই মিশ্রত চূণ চুকাপালক ছারা ভাবনা দিয়া উক্ত শুক্তগভ হরীতকীর মধ্যে পুরিবে এবং রৌদ্রে অল্প শুষ্ক করিয়া পাত্র-মধ্যে ভাপন করিবে। প্রতাহ এই হরীতকী একটি করিয়া ভক্ষণ করিলে অজীণ, মন্দারি. জাতর রোগ, গুল, শূল, গ্রহণীরোগ, অশঃ, সানাহ ও আমবাও প্রান্ততি বোগ বিলয় ইয়।

भाक्तिका अक्रम

াগলনী শূলবেরণ নালনার মাই বন্ধ । চনিকাং শিলগোল্যক অল্যানায় জরীতকীয় । জীরকঞ্চালি হিপুণ কাজিক সাধ্যেদ্ ভিষণ্ ॥
এৰ শাৰ্দ্ধ কৰে। নাম কাজিকে হিপ্তিনলগল ।
সিদ্ধান-তেল্য হ'টো দশ বোগান্ বাপোইতি ॥
কাসং অধ্যমতীয়ার পাঞ্রোগন সকামলম ।
আনসং গুলারোগক বাতশুলং সবেদনম ॥
গণান্দ্রিধানেন কাজিকজালি সাধনম ॥
সবব্দাপেল্যা অপ্তরণ ক্তিকং চহুও গলালন
পক্তা কাজিকশ্বান কাজিক বাত্ত্ব বাত্তিকং চহুও গলালন

महोगभर यमानीक धाक्रकर महिहर छ्या।

পিপ্ল, আদা, দেবদাক, চিতাগুল, চে, বেলজাঠ, বন্দানী, হ্বাতকা, জঠ, স্মানী, ধনে, মহিচ, জীরা, হিন্ধু, ইহাদের প্রত্যেকের চূর্বসান; চূণ্দমন্তিব ৮ গুল কাঞ্চিক; কাঞ্জিকের চতুগুল জল; সমূন্য একত্র পাক করিয়া জল নিংশেষ হইলে নামাইয়া লইবে। ইহার নাম শান্ধ,লকাঞ্জিক। ইহা শেতদালা মাত্রায় প্রদান করিবে। ইহাতে কাম, খাদ, অতীসার, পাছুবোগ, কামলা, আমানেষ, গুলাবোগ, বেদনালক বাতশল, কর্মাঃ ও শোগ নাই হয়।

যুস্তকারিষ্ট;।

মুক্তকদা এপাছদং চতুনোগিল্পনং গচেত।
পাদশেস রসে তিখিন ক্ষিপেদ্ গুড়তুলাত্রমন্।
ধাতকীং গোড়শপল'ং ব্যানাং বিখান্ডেছজন্।
মারিচং দেবপুপাক মেণীং বলিক জারকম্।
পকসুগামিতং কি পা, রক্ষণান্ডে নিধাপয়েও।
সংস্থাপা মাস্যাতিও ভাঙা সংগ্রাব্যেদ্ ভিষব ॥
অজীব্যামিনাক্যক বিস্কানিক দাকণাম্।
লহন্ধং বিবিধাং হবি নাত্র কাল্যা বিচারবা॥

্মুতা ২৫ সেব, পাকার্যজন ২৫৬ সের, শেষ ৬৪ সেব। কাপ চাকিয়া লটয়া তাহাতে গুড় ১৭৫০ সেব, পাইফুল ১৬ পল, নদানী, গুঠ, মহিচ, লবন্ধ, মেথী, চিতামুল, জীবা, প্রত্যেক ২ পল চূর্ণ মিলিত করিয়া একদান আহত পাত্রে বাজিবে। পরে জ্বাংশ চাকিয়া লটবে। ইছা দেবন কবিলে অঞ্চীর,

অগ্নিমান্দা, বিস্টিকা ্ট্রন্ত গ্রন্থনীবোগ প্রশনিং হইয়া থাকে।

क्षेत्रिक्षः ।

ে বৃশ্ব প্রক্রাসকলল প্রবিধ্যা मुखार फिक्कमोटफ कार नायार लाजार स्वता समान প্ৰথা দুৰ্গলাল ভাগাল দ্বয়া ভ্ৰম সমাৰপেং। ত্রিসেপ। **হও**ত্যা জলংখাণে চ গাল্যেং ॥ জনসং সাধ্যেদ্যার, চতু লাগবিদেন্তিত। क्टा अपूर्वात तहा भाषासम्हनाविमा ॥ भक्कर १५% (नकांद्र हवीनीमानि माश्रास । इन्हिकालीर विकादकारलारे याकातर समानराष्ट्र । ৭০ চাক্ষণলা ভাগা প্রাণ প্রকাশি চ। इन ७कीर जिक्हेंकर मुख्यिकार हि ५कर नाम । হিন্দ মধ্যেত্য প্ৰাঞ্চ হে প্ৰোটিত দ্বাপ্ৰেছ । व्यक्त अभे नीर छ। एक १९ व श्री श्रीप्रत स्थाविक्रम् ॥ অবার্ণং জরয়ভোব জাগণ সন্দাপ্যভাগি। ডুকা ভাষণ কালে পাতুরমাকালিঃ ण र्'*ः वर्षपान न दक्षणको सभावो।ठकम । মন্দাগ্রিবিষমার্যানাং কলে কর্ণোর্মে স্থিতে॥ পুঠানি চ প্রমেহাংক্ত েমঞাক্ত বাপোর্চিত। भागिक कि बच्चाम (अस त्योगासक अस्मिक्स) ।

বুহং প্ৰশ্বলাও স্বল্ল প্ৰশ্বল, ত্ৰিফল, আকল্মল, শত্মলী, দন্তী, চিতা, হাপ্রমালী, রারা, আক্রাদি, সিজেব মূলও শুটা, এং সমস্ত দ্বা প্রত্যেক দশ দশ পণ প্রত্যেককে অন্তন্ধ দগ্ধ করিয়া স্বন্ধ স্থ ক্ষার কবিবে। পরে ঐ সমৃত্ত ক্ষার্র্য 🦠 সের জলে ওলিয়া >: বার ছাকিয়া লইবে এবা ঐ ক্ষার্জন আন্তে পাক করিয়া ১৬ (৪) পাকিতে নামাইনে, পৰে উহাতে ১০॥০ সেব গুড় মিশ্রিত করিয়া পুনরাব মূত্র আগ্রিত পাক করিবে। বখন উহা ঘনীভূত হইবে, তেখন विष्ठुष्ठि, कारकाली, कौतकारकाली अ नवका প্রত্যেক পাঁচ পাচ পল, হ্রীতকী, ত্রিকঃ (মিলিড), সাচিকাৰ, চিতা, বচ, হিং ও অমবেত্রস প্রত্যেক এক এক প্রবৃত্ত উহাতে প্রক্ষেপ দিয়া নামাইয়া ২ পরিমাণে ওডিকা প্রস্তুত করিবে।

গারগুড় অজীর্নাশক ও অগি উদীপক। ইছা সেবন করিয়া বারংবার ভোজন
করিলেও ভ্রুতার জীর্ণ হইয়া থাকে। ইছা
বারা পাণ্ডু, গ্রীছা, শোথ, অশু, শ্রৈত্মিক কাদ,
অরুচি, কণ্ঠ ও বক্ষঃস্থিত কফ, কুন্ঠ, প্রথেও
ও গুলারোগ বিনষ্ট হয়। ক্ষারগুড় রোগিকে
সেবন করিতে দিবে, কারণ ইছা অগ্নুদ্দীপক
ইলেও স্বস্থ ব্যাক্তির সোমনাতু ক্ষয়
১ইয়া থাকে।

অথ বিদূচিকাদি-নিদানম্।

অজীর্ণনামং বিষ্টরং বিদর্গক যদারিতম্। বিস্তালসকৌ তক্ষান্তবেসাপি বিলম্বিকা॥ স্তাভিরিব গাত্রাণি তুদন্ সন্তিচতেহনিলঃ। যস্তাজার্ণেন সা বৈজ্যৈবিশ্চীতি নিগজতে॥ ন তাং পরিমিতাহারা লভতে বিদিতাগমাঃ। মৃতান্তামজিতাগ্লানো লভতেগ্ৰনলোলুপাঃ॥

মুক্তাতিসাবৌ বম্ব: পিপাসা

শূলো অমোদেইনজ্ স্থলাবাং।
বৈৰণ্ডিকস্পে কৰ্ম ক্ষণ্ড ভৰম্ভি ভজাং শিবদশ্য ভৰ্ম । কুক্ষিরাম্চাত্তে লগ্ধ প্রতান্ত্যের পান্ত্রিলি।
বিক্ষোমাশতনৈচন কুল (বুপরি ধান্তি।।
বাতবঢ়েনিরোধন্য ক্ষ্যতার্থং ভবেদ্ধি।
ভজালদক্যান্তেই ভ্যোক্যানে) চ যজ জু।

ছুষ্টত ভুক্তং কদমার হা ছাং প্রবর্ত্ততে নোর্দ্ধমণত যক্ত। বিলম্বিকাং তাং ভূগছন্টিকিংস্তান্ মাচক্ষতে শাস্ত্রিদং পুরাণাঃ॥

আম, বিষ্কাও বিদ্যা এই যে তিন প্রকার অজীবেরি উল্লেখ হট্ল, ইথাদিগের ইইতেই বিস্কা, অলসক ও বিশক্ষিকা রোগ উৎপন্ন ইয়া থাকে।

বিষ্ঠীর নিক্তি;—এই পীড়ায় অজীৰ্ব-বশতঃ বায়ু অতিকুপিত হইয়া গার্ত্ত সকলকে অভাত্ত বেদনা অপেক্ষা স্চীবেশবং বেদনায় অধিকতর অস্থির করে বলিয়া, বেক্ষেণা ইহাকে বিস্ফী নামে ব্যাখ্যা করিয়া থাকেন। চলিত ভাগায় ইহাকে ওলাউঠা কহে

আয়ুর্বেদশাস্ত্রজ্ঞ পরিমিতাহারী ব্যক্তিগণের এই বোগ হয় না , যাহারা ভক্ষ্যানভিজ্ঞ, জ্ঞাজতেন্দ্রিয় ও অশনলোলুপ, ইহা তাহাদেরই হুইয়া থাকে।

মুর্চ্চা, ভেন, বিস, পিপাসা, শূলবন্বেদনা, ত্রম, হস্তপদে থালি দরা, জ্ভা (হাই), গাত্র-দাহ, বিবর্ণতা, কম্পা, ব্যক্ষাবেদনা ও শিরঃ-শুল এই গুলি বিস্ফীরোগের লক্ষ্য।

অলসক রোগে, কুন্ধিতে অতি কষ্টদায়ক আখান উপস্থিত হয়, রোগা মাতনার আন্ত-নাদ করে ও মুর্চ্চা যায় এবং অজীণবনতঃ কুন্ধিদেশস্থ বায় অনঃপ্রতিক্ষপগতি হুইয়া উপরিভাগে অর্থাৎ হাদর ও কণ্ঠাদি স্থানে বিচরণ করে, এই রোগে মল মূত্র বিশেষকাপ ক্ষর হইয়া থাকে এবং ভ্ষণ ও উপ্যার হয়। ভুক্ত ম্বর্বা অরঃ বা উদ্ধে গমন করিতে না পারিয়া অপকাবস্থার আমাশয়েই অলসীভূত হুইয়া থাকে বলিয়া, এই ব্যাদিকে অলসক কহে।

য়ে বে!গে চুক্তান্ন কুপিত বাবু ও কফ দ্বারা ছুই হুইয়া উদ্ধা অবঃ একা দিক্ দিয়াই নিগত হয় না প্রাচীন প্রিয়তবা তাহাকেই বিলম্বিকাবোগ কহিয়া পাকেন। ইহা অভি।তাশ্চিকিৎস্তা।

দণ্ডালমক বোগে বাবুৰ প্রাধান্ত পাকিলে কন্দা, গাঁকানুন, আনাহ বে শুল : পি.উব প্রাধান্ত থাকিলে জ্বা, আভ্যান, দাহ ও গলাদি : কফেব প্রাধান্ত থাকিলে দেহের গুকতা, কমি, বাগ্রাধ ও নিদ্রেন হয় এবং বাভাদি দোগজ্যের প্রকোপ থাকিলে কমন বি মলকেনে একবাবে বল হহয় ধায় ভীত্রশ্লাদি উপস্থিত হয় ও কোনে মকল ক্ষম হইয়া থাবে। এই রোগে দোষজ্য় ভির্গে গত হহয়া শ্বাপ্ত দঙ্বহ গুলু করে, ভজ্জে ইহাকে দণ্ডাল্যক বাগ্রাধান্য

অথ বিস্চিকা চিকিৎস।।

পঞ্ (মাগাঃ।

জলনী সমান্ত্ৰা কুলা হ'ল বিস্চিকাম।
সানেত্ৰ কৰিবেলগৈ নাৰায়েছি বিস্চিকাম।
বাস্থ্য কুলাই সিক্লিট্ৰ্যাণ্ডঃ।
বিস্তানাশনং তেন্তে জঠবাল্লিবিল্ছনঃ।
বিস্তানাশনং কোনো হস্তান্ত্ৰিক কিলিক্লিয়ে।
বিব্নাগৰকৈটিয়া কাপ্তদ্বিকো জুলৈঃ।
বিব্নাগৰকৈটিয়া কাপ্তদ্বিকো জুলৈঃ।

- ১। ভাপাজের মূল জলে বাটিয়া পান কবিলে বিশ্চিকা নিবারি হয়।
- ২। উচ্ছে পাতার রসে তিলতৈল প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে বিস্চিকা নই হুইয়া থাকে।
- ৩। কচিমূলার কাথে পিপুল্চুর্ব প্রক্ষেপ দিয়া, তাহা পান কবিলে বিস্চিকা নিবারিত হয়। ইহা বিস্চী রোগের শ্রেট ঔষধ ও জুঠরাগ্রির উদ্দীপক।

৪।৫। বেলশুঠি ও শুঠ ইহাদের কাথ অণবা বেলশুঠি, শুঠি ও কট্ফলের কাথ বমন ও বিশ্বচিকা রোগের উৎক্ট ঔষণ।

বিসূচিকায়া বিশেষ-চিকিৎসা।

বিস্টিকারাং ঘোরারাং ভেণাধিকা প্রশাস্তারে ।
ফণিক্ষেন্যুতং প্রাহি ভেষজং সংপ্রযোজ্যথে ।
চর্জনেংভিপ্রবৃত্তে তু ছ জনতা বিধিহিতঃ ।
সাবপেণ চ কন্থেন জঠরোর্ছিং প্রলেপয়েং ।
তেনাপি প্রশাসং বাতি বান্তির্বিস্টাসন্তবা ॥
নির্দ্রলং শীতলং তোরং কপুরেণ স্থবাসিতম্ ।
বুজ্যা মূহুগাভাগে তুলগার্জার ভিবগতনঃ ॥
বুজফলং তোলমিতং তদর্জং মধ্যুষ্টিকম্ ।
তদর্জং কজ্মলী প্রাহ্যা সর্বাং সংচুর্ণা গছতঃ ॥
লেহুয়েয়ধুনা সার্জমল্লারং রোগিণং ভিষক্ ।
কদলী মূলুজারুসৈর্নস্তং হিকানিবারণম্ ।
শ্রীবারাং পৃষ্ঠবংশে বা রাজিকাকক্ষেণনম্ ।
মূরুসঞ্জননার্থক প্যায়াং প্রকাং রেসম্ ॥
পার্যেরং সিত্রা সার্জং মূলুজারে রেচনং প্রম্ম্ ।
বটপত্রীং ববক্ষারং পিষ্টা বিশ্বিং বিলেপয়েং ॥

शिक्ष कु मां न्या पूर्व (र्हान्स्य किना नि श्रां ने ।

स्थितिया वार सम्भूष व मुक्ति स्थानित क्रवाम ॥

स्थानित मम्बुका (स्थारक्षित स्थान ।

स्थानित मम्बुका (स्थारक्षित महिना ।

स्थानित स्थानित स्थानित ।

स्थानित स्थानित स्थानित ।

स्थानित स्थानित स्थानित ।

स्थानित स्थानित स्थानित ।

स्थानित स्थानित स्थानित स्थानित ।

बिरुंष्टिका द्वारान स्थानावश्रीय ষিক্র-বিবাবণের জ্ঞা গহিকেনৰ ক্ৰ ওঁষৰ প্ৰয়োগ কৰিবে। ব্যন্তনিবাৰণাথ ব্যন চিকিৎসাধিকারোক্ত বিদি ভারলম্বন কবিৰে। স্মৃপের করে হাবা উদ্বেদ উদ্ধৃতাগ প্রালপ্ত করিলেও বমন নিবারিত ২য়। বোর্গী পিপা সায় কাত্র হুইলে কপু ব্রাসিত নিমাল স্থা-তল জল, বিবেচনা পুনৰ্বক মনো মধ্যে প্ৰদান করিবে। কাবাবচিনি চুর্ণ ১ ভোলা, যতিমধু চুর্ণ॥ তোলা, কজলী। আনা মধুব সহিত মিশ্রিত করিয়া অল্ল আল্ল লেহন করিতে hr.ব। ভাহাতেও পিপাসা নিবারিত হটবে। হিকা উপস্থিত হুইলে কদলীমূলের রুদের নম্ভ কিবে। ब्राध-मित्या बार्षिया चारफ वा পृष्टेवश्रम (भक् দণ্ডে) প্রলেপ দিলেও হিন্ধা নিবাহিত হয়। মুত্রসঞ্জননার্থ স্থলপদ্যের রস চিনির পান করিতে দিবে। পাথ<কুচার পাতা ও সোরা একত বাটিয়া বস্তিদেশে প্রালেপ দিলেও প্রসাব হয়। অঞ্জীতল ও ই ক্রয় ক্ষীণ হইলে উপৰুক্ত মাতায় মুভদন্ধীবনী সুৱা ও চূহ্ৎ চল্লে৷ দয়াদি মকরধবদ ব্যবস্থা কাংবে। বেদনা হইলে টার্পিন তৈল মাথাইয়া স্বেদ প্রদান (ফোমেণ্ট) করিবে। অধিক হইলে গাত্রে আবির মাধাইবে অথবা প্রবাল ভন্ম মধুর সহিত লেইন করিতে শির:শূল-নিবারণার্থ শীতল জলে মন্তক সিভ করিবে। সংজ্ঞাজননার্থ হাতে পায়ে বিকার উপস্থিত হইলে ম্পাবিশি বিকারের চিকিৎসা করিবে।

কুঠ গৈৰূবয়ো: কৰং চুক্তৈল্সম্থি এম্।
বিস্চাং মৰ্দনং কোষণ খৰী পুলনিবারণম্।
কুঞ্চেতাদি। অংজুরসা তাৎকালিকী পীড়া মহতী,
তদহে চ তৈলং পকুম্শকাম, অতঃ কি দিচচুক্তং তৈলঞ্
দ্বা কুঠ সৈন্ধবয়ো: কলেন কলুকেন মৰ্দনং কাৰ্য্মিতাভিল্লাঃ। ভৈলপাকপাকে তুকুঠ সৈন্ধবয়ো: কৰঃ
পাদিকঃ, চুকুঞ্চ চতুঞ্পিম্। চকুটাকা।

বিস্ফ চিকা সোণে খাইল্ ধরা ও পেটের বেদনা নিবারণার্থ কুড় ও দৈন্ধব লবণ, চুক্র (অভাবে কাঞ্জী) ও ভিলতৈলের সহিত পেষিত এবং অগ্নিতে উত্তপ্ত করিয়া মর্দ্দন করিবে। তৈল পাক কবিতে হুইলে ৪ দের চুক্র, কলার্থ কুড় ও দৈন্ধব মিলিত একপোয়া সহ এক দের তৈল পাক করিবে।

> বাোগং।করঞ্জ ফলং হরিদ্র'ং মূলং সমাবাপ্য চ মাতুলুক্সাঃ। ছায়াবিঙ্গা গুড়িকাঃ কৃত'পা হথ্যবিশ্বচীং নয়নাঞ্জনে॥

ত্রিকটু (শুঠ, পিপুল, মধিচ), ডহরকর-ঞ্জার ফল, হবিদ্রা ও টাবালেবর মূল, জলে বাটিয়া গুড়কা এস্তত করত ছায়ায় শুকাইবে। ইহার অঞ্জনে বিস্তৃতিকা নিবারিত হয়। ৬ড়ওপশিগ্রিড্ডল-গিরিকর্ণিকাইরিদ্রাভিঃ।

ম্থ্যা বুক্ষের সাব, আপাঙ্গের বীজ, খেত অপরাজিতার মূল, হন্দ্রি। ও ত্তিকটু; এই সকল প্রব্যের গুড়িকা প্রস্তুত করিয়া, অঞ্জন দিলেও বিস্থৃতিকা প্রশায়ত হয়।

অঞ্জনগুড়িক। বিলয়তি বিস্তৃচিকাং ত্রিকটুসংযুক্তা॥

ত্বপ্ররামাপ্তক্লাগ্র বৃ টেরম্নপ্রাপটেঃ স্বচাশতাহৈ:। উন্তর্জনং থবিবিস্টিকামং তৈলং বিপক্ত তদর্থকারি॥

দারুচিনি, তেজপত্র, রাস্না, অগুরু, সজিনা ছাল, কুড়, বচ ও শুল্ফা; এই সকল দ্রব্য কাঞ্জিতে পেষণ করিয়া সেই পেষিত ঔষধ ঘারা মর্দন করিলে খাইল ধরা ও বিস্তৃচিকা নিবারিত হয়। অথবা এই সকল দ্রব্যের উপষ্কু কল্কের ও চারিগুণ কাঞ্জিকের সহিত তৈল পাক করিয়া সেই তৈল ঘারা মন্দন করিলেও উক্ত উপদ্রব প্রশামত হইয়া থাকে। পিপানায়াং তথে।ৎক্লেশে লবক্সান্তামু শক্ততে। জাতীকলক্ত বা শীতং শৃতং গুল্লখনস্য বা ॥

বিস্চিকায় পিপাদা ও উৎক্লেশ নিবা-রণার্থ লবঙ্গ, জায়ফল বা ভদ্রমূতার সিদ্ধ জল শীতণ করিয়া পান করিতে দিবে।

অথেংক্লেশস্ত লক্ষণম।

উৎক্রিপ্তারং ন নির্গচ্ছেৎ প্রদেক্টীবনেরিতঃ। স্থায়ং পীড়াতে চাস্য তমুৎক্রেশং বিনির্দ্ধিশেৎ॥

উৎক্লেশের লকণ।—ইহাতে বমনোদেগ হয়, অথচ ভুক্তান্ন নির্গত হয় না। মুখ-প্রদেক থুৎকার উদ্গিরণ ২ইতে থাকে এবং হাদরে পীড়া জন্ম।

অথালসক-চিকিৎসা।

বমনস্থলদে পূর্বং লবণেনোঞ্চবারিণা। স্বেদো বর্তিল জ্বনঞ্জনশ্চাচোচাচারিকর্মনঃ॥

অংসকরোগে, প্রথমে লবণমিশ্রিত উষ্ণ জল পান দারা বমন করাইয়া পবে স্বেন-প্রদান, বর্ত্তিপ্রয়োগ, লঙ্গন ও অগ্নিবর্দ্ধক: ক্রিয়া করিবে।

করঞ্জনিথশিথনী-ওড়্চার্জ্জকবৎসকৈঃ। পীতঃ কর্বায়ো বমনাদ্যোরাং হস্তি বিস্টিকাম্॥

ডহরকরঞ্জার ফল, নিমছাল, আপালের বীজ, গুলঞ্চ, খেততুলদী ও ইন্দ্রখন এই সক্তর দ্রব্য দারা দিক জল আকণ্ঠ পান করিলে বমি হইয়া বিস্তৃচিকা (অলসক) রোগ বিনষ্ট হয়।

দক্ষক্ চানদ্ধমূদরময়পিটোঃ প্রলেপরেও।
দারুহৈমবতীকুঠ-শতাহ্বাহিকুদৈদ্ধবৈঃ ॥
তক্রেশ যুক্তং ববচূর্ণমূক্ষং সকারমার্জিং জঠরে নিহস্তাও।
বেদো ঘটের্বা বহুবাস্পূর্ণকুটকক্ষথাক্তৈরপি পাণিতাপৈঃ॥

উনর বেদনাম্বিত ও আনক (বায়ুমারা ক্ষিয়া ধরা) থাকিলে দেবদারু, খেতবচ, কুড়, গুল্ফা, হিং ও সৈম্বব এই সকল দ্রব্য কাজিতে পেষণ করিয়া উদরে প্রেলেপ ক্রিব। অথবা ষবচ্ব ও ধবক্ষার তক্রে মর্দন করিয়া উষ্ণ করত উদরে প্রলেপ দিবে। কিংবা বোতলে অভাষ্ণ কাঞ্জিকাদি প্রিয়া উহার মুধ বন্ধ করত ঐ বোতল ছারা অথবা বন্ধাদির পোট্টলী বা হস্ততল অগ্নিতে উত্তপ্ত করিয়া ভদ্মারা উদরে স্বেদ দিবে।

বিলম্বিকালসকরোররমেব ক্রিরাক্রমঃ। অতএব তরোক্রক্তং পূর্বভট্রব চিকিৎসিত্য ॥

অলসক ও বিলম্বিকার চিকিৎসাক্রম একই প্রকার, তজ্জন্ত পৃথক্ পৃথক্ বলা গেল না। অলসক-বিধানামুসারে বিলম্বিকার চিকিৎসা করিবে।

রস-প্রয়োগঃ।

আদিতারসঃ।

দরদক বিবং গকং ত্রিকটু ত্রিকলা সমস্।
ভাতীফলং লবক্ষক লবণানি চ পঞ্চ বৈ ॥
সর্ব্যমেতৎ কৃতং চূর্ণম্বোগেন সপ্তধা।
ভাবমিছা বটা কার্যা গুঞার্কপ্রমিতা বুবৈঃ ॥
মসো ফাদিতাসংজ্ঞোহমমজীর্ণক্ষকারকঃ।
ভক্তমাত্রং পাচমতি কঠমানলদীপনঃ ॥

হিন্দুল, বিষ, গন্ধক, ত্রিকটু, ত্রিফলা, জায়-কল, লবন্ধ ও পঞ্চলবণ এই সকল সমভাগে চূর্ণ করিয়া অন্তরসে ৭ বার ভাবনা দিয়া অর্দ্ধরতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা অন্তর্গানির নাশক, ভূকান্তের সভঃ পাচক ও জঠরামির দীপক।

বড়বানলো রসঃ।

ওছস্তস্য কবৈৎ গছকং ভংসমং মতন্। পিশ্ললা পঞ্চলবৰ্ণং মন্ত্ৰিচক ফলত্ৰেম্ । কানজ্জাং সমং সৰ্বাং চূৰ্ণং কৃষা প্ৰবন্ধতঃ। নিশ্ৰ গ্ৰাশ্চ জবৈশ্ব ভাবন্ধেদিনমেকতঃ। বঙ্কবামন্সনামানং মন্দান্ত্ৰিক বিনালবেং।

শেষিত পারদ ২ তোলা ও গন্ধক ২ তোলা লইয়া কজ্জলী করিবে এবং পিপুল, পশ্লবণ, মরিচ, তিম্পলা, যবক্ষার, সাচিকার ও সোহাগা ক্ষার এই সকল দ্রব্য প্রভ্যেক পারদের সমান, একতা চূর্ণ করিয়া নিসিন্দা-পত্রের রসে এক দিন ভাবনা দিবে। পরে ১ রতি পরিমিত বটা প্রস্তুত করিয়া সেবন করিবে। ইহাতে অগ্নিমান্দ্য বিনষ্ট হয়।

ত্তাশনে। রসঃ।

গজেশটক্ষণৈকৈকং বিষমত্ত ত্রিভাগিকম্।
আইতাগন্ত মরিচং জন্তাভোমর্দ্বিতং দিনন্।
তদ্বটাং মূলামানেন কৃষার্দ্রেণ প্রবোজরেং।
শূলারোচকপ্তক্ষেধ্ বিস্চামর্থিমান্দ্যকে।
অজীপে সন্থিপাতাদে। শৈতো জাতো শিরোগদে॥

গন্ধক ১ ভাগ, পারদ ১ ভাগ, সোহাগার থৈ ১ ভাগ, বিষ ৩ ভাগ, মরিচ ৮ ভাগ; এই সমুনার একত্র গেবুর রসে ১ দিন মর্দন করিরা মুগের ভার বটকা প্রস্তুত করিবে। অমুপান— আদার রস। ইহা শ্ল, অফুচি, গুলা, বিহু-চিকা, অজীর্ণ, অগ্নিমান্যু ও শিরংপীড়া প্রভৃতি রোগে প্রযোজ্য।

রহদ্ধুতাশনো রসঃ।

এক্ষিক্ৰাদশভাগৰুক্তং বোজাং বিবং টক্লণমূৰণক। ছতাশনো ন'ম ছতাশনস্য করোতি বৃদ্ধি ক্লজিল্লগাণাম্।

মঠাবিষ ১ ভাগ, সোহাগা ২ ভাগ, মরিচ ১২ ভাগ একত চূর্ণ করিয়া বটিকা প্রান্তত করিবে। এই ঔষধ সেবনে অগ্নিমান্দ্য ও কক নাশ হয়।

অজীর্ণকণ্টকো রসঃ।

ওছস্তং বিবং গলং সমং সর্বাং বিচুর্বরেং।
মরিচং সর্বাত্তস্থাংশং কণ্টকার্যাঃ ফলতবৈ:॥
মন্দিরেদ্ ভাবরেৎ সর্বামেকবিংশতিবারক্<u>ম।</u>
বিজ্ঞাং বটকাং থাদেৎ সর্বাজীর্থপান্তরে।
অঞ্জাং বটকাং বাংসং রসো হন্তি বিস্টিকাম্॥

শোধিত পারদ, গন্ধক ও মিঠাবিদ প্রত্যেক এক এক ভাগ, মরিচচূর্ণ ৩ ভাগ; এই সকল ত্রব্য কণ্টকারী ফলের রসে ২১ বার ভাবনা দিরা ও উত্তমরূপে মর্দ্দন করিয়া ৩ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটি করিয়া সেবন করিলে সর্ব্ধপ্রকার অজীণ ও বিস্মৃচিকা নিবারিত হয়।

শ্রীরামবাণ-রসঃ।

পারদায়তলবলগদ্ধকং ভাগয়ুগাসরিচেন মিশ্রিতয়।
লাভিকাকলমধার্দ্ধভাগিকং তিস্তিড়ীকলরসেন মর্দ্দিতম্।
মাৰমাত্রমমুপানবোগত: সক্ত এব স্পঠরাগ্রিদীপন:।
সংগ্রহতাহণিকুম্বকণকং সামবাতখরদুর্বং জয়েং।
বহিমাল্যাদশবক্তুমাশনো রামবাণ ইব বিশ্রহতো রস:।

পারদ, বিষ, লবঙ্গ, গন্ধক প্রত্যেক ১ তোলা, মহিচ ২ তোলা, জায়ফল অর্দ্ধ তোলা, একত্র কাঁচা ভেঁতুলের রদে মাড়িয়া মাষকলাই প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। দোষামুসারে অমুপান ব্যবস্থা করিবে। জঠরামিদীপক এই রামবাণ রদ দেবন করিলে দল্পঃ দংগ্রহ-গ্রহণীরূপ কুস্তুকণ, আমবাত্তরূপ খ্রদ্বণ ও অমিমান্দ্যরূপ রাবণ বিনষ্ট হয়।

অগিকুমারো রসঃ।

রসেক্রগন্ধে সহ টঙ্গণেন সমং বিবং যোজ্যমিহ ত্রিভাগম। কপর্দশন্ধাবিহ নেত্রভাগো মরীচমত্রাষ্টগুণং প্রদেশ্বম। ম্বপক্ষমীররসেন যৃষ্টঃ সিন্ধো ভবেদগ্নিকুমার এব:। বিস্টিকাজীর্ণসমীরণার্দ্ধে দণ্ডাদ্ বিবলং গ্রহণীগদে চ।

পারদ ১ ভোলা, গদ্ধক ১ ভোলা, সোহাগার থৈ ১ ভোলা, বিষ ৩ ভোলা, কড়িভস্ম ৩ ভোলা, শঙ্মাভস্ম ০ ভোলা, মরিচ ৮ ভোলা, এই সম্পার একত্র পাকা গোড়া-লেব্র রসে মর্দন করিয়া ৪ রভি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। অগ্রিকুমার সেবন করিলে বিস্টিকা, অজীর্ণ ও গ্রহণী প্রভৃতি রোগ নষ্ট হয়।

রুহদগ্রিকুমারো রসঃ।

ওদ্বতং বিধাগদং পদ্মতুল্যঞ্ টক্ষণম্। স্পান্তন্ত্রং যুবকারং ব্যোধং পঞ্চ পটুনি চ।। ষাদশৈতানি সর্বাণি রসত্ল্যানি বোজরেং।
সংমর্দ্য সপ্তধা সর্বাং ভাবরেদার্জকন্তবৈঃ।
সংশোষ্য চূর্ণীয়থা তু ভক্রেন্তার্জকার্ত্রনা।
শাণমাত্রং বরো বীক্য নানাজীর্ণপ্রশাস্তরে।
রস্ভাগ্রিক্মারোংরং মহেশেন প্রকাশিতঃ।
মহাগ্রিকারকল্টেব কালভাস্বরতেলসাধ্।
অগ্রিমান্যভবান্ রোগাঞ্জোধং পাঙ্যামরং জয়েং।
তুন মিগ্রহণীসাম-রোগান্ হস্তি ন সংশন্তঃ।
ব্যবস্থাহারচেইক্ত নাস্ত্যত্র নির্মাং কচিং।

শোধিত পারদ :> ভাগ, গন্ধক ২ ভাগ,
সোহাগা ২ ভাগ; ত্রিফলা, ঘবক্ষার, ওঁঠ,
পিপুল, মরিচ, কাললবল, সৈন্ধব, করক্ষ,
বিট্ও সচল কবল এই সকল জব্য প্রত্যেক
এক এক ভাগ করিয়া লইয়া আদার রদে ৭
বার ভাবনা দিবে। পরে শুক্ষ ও চূর্ণ করিয়া
আদ ভোলা (ব্যবহার ২ রতি হইতে ৮ রতি
পর্য্যস্ত) পরিমাণে আনার রদের সহিত ভক্ষণ
করিবে। এই ঔষধ সেবন করিলে সর্বপ্রকার
অগ্নিমান্দ্য, শোধ, পাণ্ডু, অর্শ: ও গ্রহণী
প্রভৃতি রোগ উপশমিত হয়।

পাশুপতো রসঃ।

শুদ্ধসূতং বিধাগন্ধ ত্রিভাগং তীক্ষভত্মক্স। জিভি: সমং বিষং দেয়ং চিত্রককাপভাবিতম্। ধ্ৰ্ববীজন্ত ভন্মাপি দাত্ৰিংশস্ভাগসংযুত্ৰ । কটুত্রয়ং ব্রিভাগং স্থানবলৈলা চ তৎসম্ম ॥ জাতীফলং তথা কোষমন্ধভাগং নিযোজয়েৎ। তথার্দ্ধং লবণং পঞ্চ প্রত্যুক্তরগুতিস্বিড়ী। অপামার্গাশ্বপ্রক কারং দক্তান্তিচকণঃ। হরীতকাং যবক্ষারং সর্জ্জিকাং হিন্দু জীরকম্॥ हेन्रनक एउजुनाको भ्रत्योत्त्रन मन्द्रहर । ভোজনাত্তে প্রযোজবো গুঞ্জাফলপ্রমাণ ::। রস: পাণ্ডপতো নাম দত্য:প্রভায়কারক:। দীপনঃ পাচনো হল্তঃ সম্ভো হস্তি বিস্টিকাম ॥ **ভালমলীরসেনৈব উদরাময়নাশনः।** মোচরসেনাভিসারং গ্রহণীং তক্রসৈন্ধবৈ:॥ भीगक्र**नकशां श्री-यूटः गृतः निर्मा**गाः । অশো হল্পি চ তক্রেণ পিল্লা রাজ্যক্ষকন। नाज्यतानः निरुष्णाच चक्रीमोवर्कनाविजः। শকরাধান্তবোগেন পিত্তরোগং নিহস্তায়**ব** ॥ পিপ্ললীক্ষোত্রগোগেণ লেমরোগঞ্ব ভৎক্ষণাৎ। অত: পরতরো নান্তি ধ্রম্ভরিমতো রস: #

শোধিত পারদ ১ ভাগ, গন্ধক ২ ভাগ, লোহভন্ম ৩ ভাগ, সর্বসমান বিষ একত চিতার কাথে ভাবনা দিবে। পরে ধুকুরার বীজভন্ম ৩২ ভাগ, ত্রিকটু তিন ভাগ, লবঙ্গ ১ ভাগ, এলাইচ ১ ভাগ, জায়ফল ও জয়িত্রী অৰ্দ্ধভাগ, পঞ্চলবণ প্ৰত্যেক অৰ্দ্ধভাগ: সিজু-কার, আকলকার, এরওকার, ঠেতুলাছালের ক্ষার, অপামার্গের ক্ষার, অশ্বথের প্রত্যেক অন্ধভাগ; হরীতকী, যবক্ষার, সাচি-ক্ষার, হিন্দু, জীরা, সোহাগা প্রত্যেক বস্তু এক এক ভাগ মিশাইয়া জন্মীর রদের সহিত মৰ্দন করিবে। তংপরে গুঞ্জাপরিমিত বটিকা করিয়া আহারের পর সেবন করিবে। ইহাতে অগ্নি-মান্য ও বিস্থচিকা প্রভৃতি রোগ উপশ্মিত হয়। উদ্রামণ্ন রোগে তালমূলীরদের সহিত, অ তীমারে মোচগ্রের সহিত, গ্রহণীরোগে ঘোল ও সেক্তবের সহিত এবং সচল লবণ পিপুল ও ভাঠ এই অনুপানের স্থিত সেবন করিবে। ইহা ঘোলের স্থিত সেবন করিলে অর্শঃ, পিপুল অমুপানে রাজ্যালা, ভঠ ও সচললবে অনুপানে বাতরোগ, চিনি ও ধনে অমুপানে পিত্রগোগ এবং পিপুল ও মধু অমুপানে শ্লেমুবোগ ্ৎক্ষণাৎ বিনষ্ট হয়। ইহা দীপন, পাচন, এন্ত ও বিস্থৃচিকান। ধ্রন্তাবি ব,লয়াছেন, পাগুপত বস সর্কোৎকৃষ্ট।

অমৃতকল্পবটা।

শ্বন্ধে পারদগন্ধে চ দমানে কজনকুতা ।

তথ্যের দিন গুদ্ধাত তংশনা চক্রণ জনে ।

ভূকরাজন্র ভাবাং নিদিনং যক্রজ পুনঃ ।

মূলাপ্রমাণা বটিকা কন্তন্যা ভিষ্ণাং ববৈঃ ।

বটাদরং হরেৎ শূলম্থিয়ান্দ্যং ফ্রাক্রণম্ ।

অজীবং জনয়ত্যা ও ধাতুপুষ্টিং করোভি ৮ ॥

নানাব্যাধিহরা চেমং বটা গুরুবটো হধা ।

অকুপানবিশেশের সংগ্রন্থাক্রী ভবেৎ ॥

সমান পারদ ও গল্পকে কজ্জলী করিবে। কজ্জদনীর অধ্দেক বিষ ও বিষের সমান সোহাগা দিয়া একত ভীমরাজের রসে ৩ দিন ভাবনা দিবে। পরে মৃগ প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিয়া দেবন করিলে শূল, অগ্নিমান্দ্য, অজীর্ণ প্রভৃতি নানা ব্যাধি বিনষ্ট ও ধাতু পুষ্ট হয়।

অমৃতবটী।

অমূত্বরাটমরিচৈছিপঞ্চন্জাগিকৈঃ ক্রমশঃ। বটিকা মূল্যাস্থানা কফপিতাগ্রিমান্দ্যহারিণী॥

বিষ ২ ভোলা, কড়িভন্ম ৫ ভোলা, মরিচ ৯ তোলা; একএ জলে মন্দন করিয়া মুগের স্থায় বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহা কফ, পিত্র ও অগ্নিম্নাল্য নিবারণ করে।

ক্ষুধাসাগরে। রসঃ।

জিকটু ত্রিফলা হৈব তথা লগণপঞ্চন্।
কারত্রয়ং রসো গলো ভাগৈকং প্রবৃদ্ বিষ্
শানীয়েন বটা কাষ্যা শুঞাসনের মনীয়িছিঃ।
ভক্ষয়েদ্ বটিকামেকাং লগকৈ, পঞ্চিঃ সহ ।
কুধাসাগরনামায়ং রসঃ স্থান নিমিতঃ।
আমবাতং তথা গুলং গ্রেন্সপিত্রক্ষ।
মন্দাগ্রিং নাশ্যত্যাপ্ত বৃদ্ধনিত্রশানিশ্যা।
প্রবৃধ্ধ বিষ্থিতি শ্রুতবন্ধুক্তভাগবং, তেনাএ
বিষ্প্ত ভাগব্যম্।

ত্রিকট্ট, ত্রিকলা, প্রকারণ, ত্রিকার (সাচিকার, ব্রকার ও সোহাগাকার), পারদ, গর্মক প্রত্যেক সভাগ , বিষ্ঠ ভাগ, এই স্কলকে জল দিয়া মন্ধন ক.তে ১ রতি পান্মিত বঁটা কারে। মনু দিয়া মাড়িয়া লব্সচুর্বের সহিত দেবা। ইহাতে স্ক্রিপ্রকার আমন্ত্র, গুলা, গ্রহণা, তম্পিও ও মন্দান্নি বিনষ্ট হয়।

ভক্তবিপাকবটা।

भाकिकर तमगरको छ इति इति र स्वर्शिको । जित्र भयो नातिवाहर छितकक भरहोयसम् ॥ शिक्षको मुत्रिधर शब्धा यनामा कृष्यकोत्रकम् । जाम्रेट करूको टेध्व * टेमक्कार माङ्ग्यापकम् ॥

। ক টুকাপালীতি পাঠাওরস্।

ঙ্গাতীফলং যুবক্ষারং সমন্তাগং বিচুর্ণয়েৎ। আর্দ্রিকস্ত রুসেনৈর নিগু গ্রা: স্বরুসেন চ ॥ সূর্যাবর্ত্তরসেনৈর তুলস্তাঃ স্বরসেন চ। জাতপে ভাবয়েদৈতাঃ গলপাতে চ নিম্মলে। পেষ্যিত্বা বটাং খাদেদ গুপ্তাফলসমপ্রভাস্॥

ভজোত্তরীয়ে বছভোজনাত্তে

মুভ্যু ছবাজতি ভোজনানি। আমাত্রবন্ধে চ চিরাগ্নিমানের বিড্ৰিগ্ৰ'ছ পিত্ৰকফাতুবন্ধে॥ শোঝাদরে চার্শগদেহশ্যজীর্ণ শুলে ত্রিদোশপ্রভবে জরে চ। শস্তা বটা ভক্তনিপাকসংজ্ঞা স্থৃথং বিগাচ্যাশু নিরস্ত কোঠম।

স্বর্ণমাজিক, পান্দ, গন্ধক, হরিতাল, মন:শিলা, তেউড়ী, দম্ভা, মূতা, চিতা, শুঠ, পিপুল, মনিচ, হলীতকী, ধমানী, ক্লফ্ডীরা, হিপু, কটুকী (পায়াগ্রে - কাটা ওড়কাউলি), সেন্ধব, বন্ধনানী, জাতীকণ ও ধ্বকাৰ ; এই সকল দ্রবা সমভাগে চুর্ণ করিয়া আদার রসে, নিসেন্পালের বসে, স্যাবিট (হড়্ছড়ে) রদে এবং ভুলদাপনে বংস বৌদ্রে একবার কবিয়া ভাবনা নিবে। পাৰে খন্নে পেখণ কবিয়া ১ বতি প্রফাণ বটকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষ্ণ দেবনে আন্দোষ আল্লানন্দা, মলবন্ধতা. শোথ, উন্নাময়, অন্য, অজীৰ্ণ, শুল ও জ্ব প্রভৃতি সোগ নঠ ২ইয়া সুকারাক ২য়া।

অগ্রিত জীরসঃ।

७५८ : निषः अन्नम्बरम् । मिक्किकातर यनक' । त्रिटिकानकातका ॥ स्रोवक्रवनिक्षानि भागपर काम्पर क मभग। विषम्ष्रिमनः भर्ततः अधाताःसम मण्डसः । মরিচাভাং বটাং গালেরগ্রিমান্দাপ্রশান্তরে । উঙ্গণং সম্মিতি বা গাঠঃ।

পারন, বিষ, গ্রাক, য্যানা, ত্রিফলা, সাচি-কার, যবকার, চিতামূল, সম্মবলবণ, জীরা, সচললবণ, বিজ্ঞ্ন, করকচলবণ ও তিকটু. (পাঠান্তবে-মোহাগার থে,) প্রত্যেক সম-ভাগ, দৰ্শ্যনান কুচিনা, সমুনায় একত্ৰ করিয়া | পিপুলমূল, চৈ, চিতা ও ওঠি প্রত্যেক সমভাগ,

গোঁড়ালেবুর রদে মর্দন করত মরিচদদুশ বটিকা করিবে। ইহা অগ্নিমান্দ্য রোগে ব্যবস্থেয়।

পঞ্চায়তবটা।

অত্রকং পারদং তাত্রং গন্ধকং মরিচানি চ। সমভাগমিদং চর্ণং চাঙ্গেরীরসমর্দিতম । মর্দিতে হি রসে ভয়ো জয়ন্তীসিদ্ধবারয়োঃ। ভাবনাপি চ কর্ত্তনা গুঞ্চাপরিমিতা বটা। তপোদকামুপানেন চতম্বস্তিম এব বা। বহিনান্যে প্রবাহব্যা বটাঃ পঞ্চামুতাত্তথা।

অভ্ৰ, পারদ, তাম, গন্ধক, মরিচ এই সকল দ্রব্য সমভাগে চূর্ণ করিয়া আমকলের রদে মর্দন করিবে ; পুনরায় জয়ন্তী 😢 নিদিন্দা পত্রের রদে ভাবনা দিয়া ১ রতি পরিমিত বটা প্রস্তুত করিবে। বোগির অবস্থা বুরিয়া ৩৷৪ বটিকা উষ্ণ জল সহ সেবন করিতে দিবে। এই ঔষধে অগ্নিমানদা বিনষ্ট হয়।

অগ্রিরসঃ।

भतिहासिकाः कुछैः समार्थः विवरत्व ह । অ'র্কস্থ রগৈ: পিষ্ট্রা মূলামাত্রস্ত কারয়েৎ 🛭 অয়ম্মির্সো নাম দ্বাজীবপ্রশান্তয়ে 🛚 (मर्क्समभः विषम् ।)

মরিচ, মুতা, বচ ও কুড় প্রত্যেক ১ ভাগ, বিষ ৪ ভাগ, আদার রুদে মাড়িয়া মুগ প্রমাণ বাটকা করিবে। ইহাতে সকল প্রকার অজীণ নিবারিত হয়।

জালানলো রসঃ।

ক।রদয়ং স্তগন্ধে। পঞ্কোল্মিদং সম্ম । मर्क्यञ्जा अया (मधा अमर्कः निश् वस्त्रम् । এতৎ मर्वराज्यानिश्च वस्त्रिभक्तिरक ब्रोमः। ভাবয়েৎ ত্রিদিনং ঘর্ষে ততো লগুপুটে পচেৎ 🛙 🏢 खानस्त्रद्भ मध्या हाम्मदेन**ख**ानानत्ना **ভरा**द् পাচনো দীপনো হত্যকেদরাময়নাশন:॥

সাচিক্ষার, যবক্ষার, পারদ, গন্ধক, পিপুল,

সর্বাদমান দিছিপত্র এবং দিছির অর্ছেক দক্তিনার ছাল প্রদান করিয়া ভাঙ, দক্তিনার ছাল, চিতা ও ভীমরাক্ত রস, প্রত্যেকের দারা তিন দিন করিয়া রোক্তে ভাবনা দিবে। তৎপরে লঘুপ্টে পাক করিবে। অনস্তর আদার রসে ৭ বার ভাবনা দিয়া সেবন করিলে সর্বাধিকার উদরাময় নাশ হয়। ইহা হাত্য, পাচক ও অগ্নিদীপক।

न्त्रकामि-वंगी।

লবলগুৱীম্বিচানি ভৃষ্ট-সৌভাগ্যচূৰ্ণনি সমানি দৃত্য। ভাব্যাঞ্চপামাৰ্গহতাশবারা প্ৰভৃতমাংসাদিকজারণায়।

লবন্ধ, শুঠ, মহিচ, সোহাগার থৈ প্রত্যেক চূর্ণ সমভাগে মিপ্রিভ করিয়া আপাঙ্গও চিতা মূলের কাথে ভাবনা দিয়া (১ রতি প্রমাণ) বটিকা করিবে। ইহা সেবন করিলে প্রভৃত মাংসাদি জীর্ণ হইয়া যায়।

রুহল্লবঙ্গাদি-বটী।

नवन्नवाणीकन्याण्यकृष्ठेः क्षेत्रवत्रः क्रावनरेककन्यः ।
 अनाष्ट्रः केन्वत्रावेभूष्टः ववाकत्यानां रिज़्टेनक्षवः ॥
 एकक्ष्यः भात्रमगक्षकाज्ञः कोव्यानाः विकास कृषा ।
 क्षाणवत्रे मनाज्ञात्रिष्ठः वव्यानागाः विकास कृषा ।
 व्याणविष्यानि काक्ष्याचे विवास ।
 व्याणविष्यानि काक्ष्यः व्याप्टः विवस्त्रमः विकास ।
 व्याणविष्यानि काक्ष्यः व्याप्टः विवस्त्रमः विकास ।
 व्याणविष्यानि काक्ष्यः व्याप्टः व्याप्टः व्याप्टः विवस्त्रमः नम्वन् ॥
 कृष्ठोम्निष्ठः व्यवनः ममीतः स्माननः काक्ष्यः वाण्यः ।
 विवस्त्रि नीष्ठभः ॥

লবঙ্গ, জায়ফল, ধনে, কুড়, জীরা, কালজীরা, ত্রিকটু, ত্রিফলা, এলাইচ, দারুচিনি,
সোহাগা, ক'ড়েডস্ম, মুতা, বচ, যমানী, বিট্
ও দৈয়ব লবণ প্রত্যেক ১ তাগ। পারদ,
গন্ধক, অল এই দকল অর্দ্ধভাগ এবং লোহ
১ ভাগ। এই দকল দ্রব্য একত্র কবিয়া
পানের রদে মর্দ্ধন করিবে। পরে ২ কুঁচ
পরিমিত বটা প্রস্তুত করিয়া উষ্ণ জলের সহিত
প্রাত্তকোলে দেবন করিবে। এই ঔবধ
দেবনে গ্রহণী, আমাণয়, জ্বর, কফজনিত

শূল, কুঠ, অন্নপিত্ত, অগ্নিমান্দ্য ও কোঠস্থ বায়ুর বিনাশ হয়।

वेक्न शामि-व**ि**।

টক্ষণনাগরপারদগন্ধা-গরলং মরিচং সমভাগযুত্য। লকুচরস্বরসৈশ্চণকপ্রতিমা গুড়িকা জনয়ত্যচিরাদনলম্॥

সোহাগার থৈ, শুঠ, পারদ, গন্ধক, বিষ ও মরিচ, ইহাদের প্রতোক চূর্ণ সমভাগ; মাদা-রের রসে মর্দন করিয়া চণক প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা সেবনে শীঘ্র অগ্নির দীপ্তি হইয়া থাকে।

काठीयना निविधी।

জাতীফলং লবকক পিপ্লী সিন্ধুকামৃতম্।
শুসী মৃন্ধু সবীজক দরদং টক্ষণং তথা।
সমং সর্কাং সমাক্ষতা জন্মান্তমা বিদ্দিন্দে ।
বলমানা বটী কাষ্যা চাগ্নিমান্দ্যপ্রশান্তমে।
(অত্র সিন্ধুকঃ সিন্ধুবার । ভটন্ত সৈন্ধবমিত্যাই।)

জায়ফল, লবঙ্গ, পেপুল, ানগিন্দা (কাহা-রও মতে দৈরুব), বিষ, শুঠ, ধুতুরার বীজ, হিন্ধুল, সোহাগা; এই সকল চূর্ণ সমভাগে লইয়া জন্মীর লেবুর রসে মদ্দন করত আন্মানন্দান্তির জন্ম ২ কুঁচপ্রমাণ বটা প্রস্তুত করিয়া সেবন করিবে।

শঙাবটা। মহাশঙাবটা।

দক্ষশথান্ত চূর্ণং হি তথা লবণপঞ্চক ।

চিঞ্চিকাক্ষারককৈব কটুক এরমেব ৮ ।

ভবৈব হিঙ্গুকং প্রাহং বিষণককপারদম্ ।
অপামার্গদ্য বচ্চেক কাবৈলিন্দাকৈও রসৈঃ ।
ভাবয়েৎ সর্বচূর্ণং তদমবর্গৈ-*-বিশেষতঃ ।
যাবৎ তদমতাং যাতি শুড়িকামুতরাপিনী ।
সংজ্যো বচ্চিকরী চৈব ভন্মকক নিগছতি ।
ভূক্ত্বাকঠন্ত তদ্যান্তে খাদেচ শুড়িকামিমাম্ ॥
তৎক্ষণাজ্ঞারমত্যান্ত সর্বাজীবিনাশিনী ।

অরং শুলাং পান্তুরোগং কুঠং শুলং প্রমেহকম্ ॥

জ্বীরবীজপুরঞ্ মাতৃলুক্সকচ্ত্রকম্।
 চাক্তেরী তিন্তিড়ী চৈব বদরী করমন্দক্ষ।
 জ্বীবয়দ্য বর্গোহয়ং কথিতো মুনিদত্তমৈ:।
 জামীর, বীজপুরক, টাবালেবু, জয়বেত্স, আমরল,
 তেতুল, কুল ও করঞ্জ, এই আটটিকে জয়বর্গ কহে।

(मिक्कक्ला)

বাতরক্তং মহাশোধং বাতপিত্তক্ষানপি। ত্রনামারিররকাশশু দৃষ্টো বারসহস্রশঃ ।
নির্মান্তররকাশু প্রাথা ক্রমেন ক্রমেন বিধা।
লৌহবঙ্গ যুতা।
প্রকাতে কোকতোরামু-পানমেব প্রশাস্যতে ।

শৃষ্ঠভিন্ম, পঞ্চলবণ, তেঁতুল ছালের ক্ষার, জিকটু, হিন্ধু, বিষ, পারা ও গন্ধক এই সমুদায় সমভাগে মিশ্রিত করিয়া আপাঙ্গ ও চিত্রাম্পুলর কাথে, লেবুর রুসে, বিশেষতঃ অম্পর্বর্গ এরপে ভাবনা দিবে, যেন ঔষধে অম্পরস উৎপন্ন হয়। (২ রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত্ত করিবে)। এই ঔষধের সহিত লোহ ও বঙ্গ মিশ্রিত করিলে, তাহাকে মহাশুগ্রবাটী কহে। প্রাতঃকালে ঈষত্বক জলের সহিত সেবন করা কর্ত্তর্গ। এই ঔষধ সেবন করিলে অগ্নিমান্দ্য, অজ্বীর্ণ, জর, গুল্ম, পাঞ্ছ, কুন্ঠ, শূল, প্রমেহ, বাতরস্ক, অর্শঃ প্রভৃতি নানারোগ নই হয়। আকণ্ঠ ভোজন করিয়া এই ঔষধ সেবন করিলে তৎক্ষণাৎ সমুদায় জীর্ণ হইয়া যায়। ইহা পরীক্ষিত ঔষধ।

শশ্বটী।

সাৰ্দ্ধকৰ্মং রসেক্রস্য গৰাকস্য তথৈব চ।
বিষং কৰ্মন্তং দক্তাং সৰ্বক্তৃল্যং মন্ত্ৰীচকন্ ।
দক্ষশৰ্মক তন্ত্ৰ্কাং পঞ্চ কৰাণি নাগৰাৎ।
সাৰ্ভ্জিকারামঠকণা-সিন্ধুনৌবর্জলং বিড্ন্ ।
বাম্ক্রমৌজিদকৈব ভাবরেরিমুক্তব্রেঃ।
বটা গ্রহণায়পিত্ত-শূল্মী বহ্লিগানী।
বহিমান্যকৃতান্ রোগান্ সামদোবং বিনাশরেৎ ।

পারদ ৩ তোলা, গন্ধক ৩ তোলা, বিষ ৬ তোলা, এই সকল জব্যের সমান মরিচ এবং মরিচের সমান শব্দজ্ম, তুঠ ১০ তোলা, সাচিকার, হিন্ধু, পিপুল, সেন্ধব লবন, সৌবর্চললবন, বিট্লবন, কর্কচলবন, পাংগুলবন এই সকল জব্য প্রত্যেকে দশ তোলা, ইহাদিগকে কাগ্জীলেবুর রসে ভাবনা দিয়া বটী প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ সেবন করিলে গ্রহণীরোগ, অম্পিত্ত, শূল ও আগ্রমান্দ্য প্রস্তৃতি রোগ নষ্ট এবং অগ্নি বর্দ্ধিত হইরা থাকে।

শস্থাবটী ৷

চিঞ্চাকারণলং পটুরজপলং নিম্বনে ক্ষিতং
তিমিন্ শঙ্পলং প্রতপ্তমসকুৎ সংস্থাপ্য শীর্ণানিধি।
হিক্রোবপলং রসামৃতবলী নিক্ষিপ্য নিক্ষাংশিকান্
বন্ধা শঙ্খবটা কয়এইণিকারুক্পক্তিশুলাদির ॥
পট্রজপলং পঞ্চলবণং মিলিছা পলং, হিক্তিজীন
পিলনীমরিচানামপি মিলিছা পলং, রসবিবগন্ধকানাং
প্রত্যেকং নিকং মাবচতুইয়ং, শঙ্গেড্রাং বক্ষে খাছা
নিষ্বনে তথাং নিক্ষিপেৎ, যাবচচ্পীত্র তর্ত্তনে পত্তি;
সর্বচ্পমেকীকৃত্য নিম্বনেসন রৌজে তাবদ্ ভাবরেদ্
যাবদরতা ভবতি।

তেঁতুলছাল ভন্ম > পল, পঞ্চলবণ মিলিত > পল, শন্ধান্তম > পল (শাঁথের গেঁড়ো অমিতে বারংবার দগ্ধ করিয়া তপ্ত তপ্ত লেবুর রদে নিক্ষিপ্ত করিয়া রোদ্রে ভাবনা দিবে। চুর্ণবিৎ হইলে অপরাপর জব্যের সহিত মিলিত > পল, পারদ, গন্ধক ও বিষ প্রত্যেকের আর্দ্ধ তোলা, লেবুর রদে মর্দ্ধন করিয়া অম্লাম্বাদ হইলে বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহা ক্ষয়, গ্রহণীব্যাগ ও পরিণামশূলাদি রোগে প্রযোজ্য।

শন্তাবটা।

দৌ কারে রসগন্ধকে সলবণে ব্যোষক তুলাং বিষং
চিকাল্ছাচতুও গং রসবরে লিম্পাকজাতে কুত্র ।
বারংবারমিদং স্থপাকচরিতং লৌহং কিপেছিকুহং
ভৃষ্টং বঙ্গসমং স্থমর্দিতমিদং শুপ্তাপ্রমণা ভবেং ।
খ্যাতা শুখাবল মহাগ্রিজননী শুলান্তত্বং পাচনী
কাসখাসবিনাশিনী ক্ষাহরী মন্দাগ্রিসন্দীপনী ।
বাতব্যাধিমহোদরাদিশমনী তুকাময়োচেছদিনী
সর্কব্যাধিবিনাশিনী ক্রিমিহরী ছুষ্টাময়ধ্বংশিনী ।

যবকার, সাচিকার, পারদ, গন্ধক, সৈত্ত্বৰ লবণ, বিট্লবণ, ত্রিকটু, বিষ ইহাদের প্রত্যেক ১ তোলা, তেঁতুলছাল ভন্ম ৪ তোলা, শহ্যভন্ম ৪ তোলা এই সমুদার একত্র করিয়া লেবুর রসে ভাবনা দিয়া তাহার সাহত লোহ, মুভভার্জিভ হিন্দু ও বন্ধ প্রত্যেকের ১ ভোলা, সমুদ্র একত্র করিয়া ১ রতি প্রমাণ বটকা প্রস্তৃত করিবে। ইহা হারা অভ্যন্ত অধি বৃদ্ধি হয় এবং শ্লু

কাস, খাস, ক্ষয়, বাতব্যাধি, উদরবোগ, ক্রিমি ও অঞ্যান্ত নানা পীড়া উপশ মিত হয়।

মহাশ্ভাবটী।

পটুপঞ্চকহি কুশঋ চিঞ্চা-ভদিতব্যোষবলীখরামূতানি। শিথিশৈথৱিকামবর্গনিমূ-ভূশভাব্যানি যথামতাং এজন্তি। মহাশঋবটা খ্যাতা ভোহনান্তে প্রকীর্থিতা। দীপনী প্রমা হন্তি মহাশোগ্রহণীমুখান্॥

প্রকাষণ, হিন্তু, শহাভয়, চেতুলছাল ভন্ম, ত্রিকটু, গন্ধক, পারদ, বিষ প্রত্যেক সমভাগে লইয়া চিতার কাণে, আপাঙ্গের কাথে, অমবর্ণে রসে ও পেবুর রসে এরপে ভাবনা দিবে, যেন ঔষণ অ্যাসাদ হয়। পরে বটকা প্রস্তুত করিয়া লইবে। এই ঔষণ আহারান্তে সেবন করিলে অর্শঃ ও গ্রহণী প্রভৃতি রোগের নাশ এবং অগ্নির অভিশয় দীপ্তিহয়।

মহাশভাবটী।

কণা মূলং বাছিদন্তী-পারদং গদ্ধকং কণা।

ক্রিকারং পঞ্চলবণং মরিচং মাগরং বিষম্ ॥

জন্মদালমুঠা হিঙ্গু ক্ষারং তিন্তিডিকাভন্ম।

সংচূর্ণা সমভাগন্ত দ্বিগুণং শন্ধভন্মকম্ ॥

জন্মদরেণ সংভাব্য বটা কোলাছিসন্মিটা।

জন্মদাড়িমভোরেন কিশাকিষরসেন চ ॥

ভক্ষরেৎ প্রাতরুপার নারা শভাবটা শুভা।

তক্রমন্তহুরাসীধ্-কাঞ্জিকে কোদকেন বা ॥

শবৈণাদিরসেনের রসেন বিবিধেন চ।

মন্দাগ্রিং দীপরত্যাশু বড়বাগ্রিসমপ্রভম্ ॥

জর্দাংসি গ্রহ্নীরোগং কুইমেহভগন্দরম্।

গীহানমন্দ্রীং শাসং কাসং মহোদরক্রিমীন্ ॥

হুজ্রোগং পাঙুরোগঞ্চ বিবন্ধানুদরে স্থিতান্।

ভান সর্ব্বান নাশ্রত্যাশু ভান্মরন্তিনিরং যথা॥

পিপুলমূল, চিতামূল, দন্তীমূল, পাংদ, গন্ধক, পিপুল, ষবক্ষার, সাচিকার, সোহাগা, পঞ্চলবণ, মহিচ, শুঠ, বিষ, বন্ধমানী, গুলফ, হিং, তেঁতুলছাল ভন্ম ইহাদের ১ ভোলা, শন্ধভন্ম ২ ভোলা; এই সমূদ্র অন্নবর্গের রুসে ভাবনা দিয়া কুল আঁটির ভায় বটিকা বান্ধিবে। অমনাজিমের রস, লেবুব রস, তক্রে,
দবির মাত, স্থ্রা, সীধু, কাঁজি অথবা উষ্ণ জলের সহিত সেবনীয়। ইহাতে অতিশয় অগ্নিবৃদ্ধি হয় এবং অশঃ, গ্রহণী, ক্রিমি. কুন্ঠ, মেহ, ভগন্দর, অশারী, খাস, পাণ্ডুও কামলা প্রভৃতি নানারোগ নই হইয়া থাকে। পণ্য—শশক ও এণ প্রভৃতি মাংসের যুদ্।

অর্জার্ণহ্রা বটা।

কন্তীবীজমকন্দ্রং সদ্ধান জন্তীলবঞ্চর সমন্
গল্পর পাবদটন্ধান গলিং জার্দ্ধানির বিশন্।
থলে ধান্যুগং বিমন্ধি বিধিনা দ্রুগণেরভাবনা
দেখাঃ পর্কনান্ধ নিজন করি করে। তির চিটেকঃ॥
তেরা চার্দ্ধের রুকে, গুড়াবারা ভিলন্দলার।
পশ্চাত্রকলায়দংমিরবটা করে। ভিলন্দলার।
কুলোধগুকরী নিশ্বন্দনা সার্ভিক্রেরংসিনা
কালারোচকপাড়ুরোদলগলন্ পানাবার্ভ্লানিনী॥
বস্তাটোপ্রজীমক মেয়রী মন্দানিনালা সিন্ধেয়ে মহাবিপ্রকৃতিরা স্বান্যন্ত্রা স্বান্॥

বিশুদ্ধ দন্তীবীজ, চিতা, শুঁচ, লবজ, গ্রহ্ণ, পারদ (কজ্জ্লী), সোহাগার থৈ, মরিচ, বৃদ্ধদারক, বিষ এই সকল সমভাগে খলে ২ প্রহ্র মর্দ্ধন করিয়া দন্তী সে ১৫ বার, কাগ্জীলেবুর রুমে ০ বার চিতার রুমে ০ বার, জালার রুমে ৭ বার ও বীজ্ভাজ্কের রুমে ৭ বার ভাবনা দিয়া শুক্ কলায় প্রমাণ বাটকা প্রস্তুত করিবে। ইহা কুলা রিক এবং ভিন প্রকার শূল, জীলজ্লা, কাদ, সর্রোচক, পাঞ্চ, উদররোগ, পানা, বায়ুরোগ, ব্যন্তর আটোপ ও হলীমক প্রভাত রোগ নাশ করিয়া পাকে।

অজীর্ণারি-রসঃ।

শুদ্ধং স্তং গদ্ধকণ পলমানং পৃথক্ পৃথক্।
হরীতকী চ বিপলা নাগরজিপলং গৃতঃ॥
কৃষণ চ মরিচং ভদং সিক্থং ত্রিপলং পৃথক্।
চতুম্পলা চ বিজয়া মর্দ্ধোরস্ক্রবৈঃ॥
প্টানি সপ্ত দেয়ানি বর্দ্ধমধ্যে পুনঃপুনঃ।
অকার্ণারিরহং প্রোক্তং সংস্তা দীপনপাচনং॥
ভক্ষেদ্ভিশং ভক্ষাং পাচয়েক্রেচয়েদ্পি॥

পারদ ১ পল, গদ্ধক ১ পল, হরীতকী ২ পল, শুঠ ৩ পল, পিপুল ৩ পল, মরিচ ৩ পল, সৈদ্ধব শবণ ৩ পল, দিদ্ধি ৪ পল, এই সকল দ্ববা কাগ্জী লেব্ব রসে মর্দ্ধন করিয়া বৌদ্ধমধ্যে ৭ বার পুট্পাক দিবে। এই অজীণারি রস সন্তঃ দীপন্তি পাচক। দিগুণ পরিমাণে আহার কবিলেও ইহা দারা উত্তম পরিপাক এবং কোঠ শুদ্ধি হয়।

ভাস্করে। রসঃ।

বিষং স্থাং ফলং গ্ৰম্ম জোলং ই জ্বজীরকন্।
একৈকং দিওপং লৌহং শ্ৰম্ম ব্যাটকন্
লক্ষ্কুলাং লবঙ্গায় ভাষা ভাষা বিষয় ।
সংবাদরপর্যতাং ততঃ ভাদ্ ভাষারা বসং ॥
গুঞ্জামরপর্যালন বটাং ব্যাদ্ বিচক্ষণঃ।
ভাষ্কীদলবোগেন বটাং সংক্রে ভক্ষংং ।
শ্লারোগের্ সর্বেই বিস্চাশ্রিমান্দ্রাকে।
সংবাবিশ্বরো ভেষ্ ভক্ষন্থেন ভাষিতঃ ॥

বিষ, পাঙ্কা, বিফলা, গন্ধক, ত্রিকট্ট,
সোহাগা ও জীনা প্রয়েক ১ ভাগ, লোহ,
শহ্মভন্ম, অন ও কড়িভন্ন প্রত্যেক ২ ভাগ,
সম্পারের স্থান অবস্থান, এই স্মৃথার ৭
দিন গোড়ালেব্ব হলে ভাবনা দিলা ২ রতি
প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ভালুলের
সহিত্ত চর্মণ করিয়া ভক্ষণ করিবে। ইহাতে
শীঘ্র ছায়ির দীপ্তি হয়। সর্মপ্রকার শ্ল,
বিস্তিকা ও অমিনান্যারোগে ইহা প্রস্তুত্ত
ভইলে বিশেষ উপকার করে।

ক্রব্যাদ-রসঃ।

পলং রমস্থা বিপলং বলে: তাচ্ছুলায়নী চার্নপলগ্রনাণে।
বিচুর্গা স সং ক্রতনরিবোগাদেরওপ্তেংথ নিবেশনীয়ন্।
ক্রতাথ তাং পপতিকাং বিদ্যাবি
লোহস্ত পাত্রে স্ববপূত্রনিন্।
ক্রমীরকাং পর রসং পলানাং
শতং নিবোল্যাগ্রিমণাক্রমলম্।

জীর্ণে রমে ভাবিতমেতদেতঃ
ক্রপঞ্চকেলেন্ডি।বারিপুরৈঃ।
সবেতসামৈঃ শতমত্র দেবং
সনং রছষ্ট্রপালং ক্রভুষ্ট্র্য়।
বিড্ং তদক্ষং মরিচং সমঞ্চ
তৎ সপ্তবারং চণকায়কেন।
ক্রব্যাদনামা ভবতি প্রসিদ্ধো
রমস্ত মধানকভৈরবোকঃ।
মামন্বরং সৈন্ধবত্র পীতমেতং ক্রপ্তং পলু ভোজনান্তে।
ভক্তি মাংসানি পরাংলি পিষ্টং
ম্বাতানি সেব্যানি কলানি চৈব॥
মাজাতিরিক্তান্তিপি সেবিতানি
ব্যামন্বর্যাররতি প্রসিদ্ধা।

কাশ্য প্রী নানিবহনো পরহবং সামান্তিনির্গাপনো গুল্পাইজলোদনাদিশমনং শুক্তি মুলাপহং। না তক্তেম নিবহণো এইনিকা তানারবিধ্বংসনো না ইঞ্ছিমহোদরাপ্তরণঃ ক্রণাদনামা রসঃ।

রেদ ১ পল, এফক ২ পল, তাম ৪ তোলা, লৌছ

তোলা। সর্কং চুর্গাছির লৌংপাতে মুছ্বছিলা পর্ণটান্

বং করিম্, ভালা ছম্বাররসপলশতেন শনৈঃ শনৈঃ
পরবাম্, রুদে গুলা পুনভাবনা দাতবা।; পঞ্জোলকর্পেন ৫০, অয়ের হসকাপেন ৫০, ততঃ সর্ক্যরসমং
ভূষ্টকপচুর্ব ৪ পল, তভাজে: বিট্নবর্ণং ২ পল, সর্ক্যরসমং

ফ্রাসমং ম্রিচ্র্বি ১০ পল, তভাক শিনিরেণ সন্ধ্রভাবনা দাতবা।। ৩তি কর্পিন্তা ভ্রান।

পাবদ : পল, গদ্ধক ২ পল, তার ৪ তোলা ও লোহ ৪ তোলা, এই সমুনার চুর্ণ করিয়া লোহপাত্রে মৃত্রু অনিতে গলাইয়া এরগুপত্রে ঢালিরা পর্পতীবং করিবে। পরে অপর লোহপাত্রে জামীরের রস ১০০ পল দিয়া অল্লে অল্লে উক্ত পর্ম টী পাক কবিবে, রস নিংশেষ হইলে ৫০ পল পঞ্চকোলের কাথে ও ৫০ পল অমবেতসের কাথে ভাবনা দিয়া ৪ পল সোহাগার থৈ, ২ পল বিট্লবণ ও ১০ পল মরিচচূর্ণ মিশ্রিত করত চণকালে ৭ বার ভাবনা দিয়া বটিকা প্রস্তুত কারে। সেন্ধবসংশুক্ত তক্রের সহিত সেব-নীয়। ইহাতে মাংস পিষ্টকাদি গুরুপাক আহার সকল ছই প্রহরের মধ্যে জীর্ণ হইয়া যায় এবং গুলা, প্লাহা, উদররোগ, শূল, গ্রহণী ও অতীসার প্রভৃতি নানা রোগ নাই হয়।

প্রদীপনে। রসঃ।

রসনিকং গন্ধনিকং নিক্ষা এং গ্রদীপন্ম।
মানমন্ধং প্রদাতবাং চূল্লিকালবণং ভিদক্।
মন্দ্রিকা প্রদাতবামশান্ত মাধ্যাতক্ষ।
অজীর্ণে চাগ্রিমানের চ দাতবাে রসবল্লভঃ।

পারদ্ধ তোলা, গদ্ধক ২ তোলা, প্রদী-পন বিষ ২ তোলা ও চুন্নিকালবে ৷ তোলা একতা মর্দন করিয়া ৷ মাধা পরিমিত বটী প্রস্তুত্ত করিবে। ইহাতে অন্মিনান্য ও অজীর্ণ উপশ্যিত হয়।

মহোদধি-বটী।

একৈকং বিষম্ভঞ্চ জাতী টঙ্গং দ্বিকং দ্বিকন্।
কুঞ্চাত্তয়ং বিষষ্টকং গৃদ্ধং কপদ্দিকং দ্বিকন্।
দেৰপূপাং বাণ্মিতং সৰ্কাং সংমৰ্ক্য গৃহতঃ।
মহোলবিবটা নামা নগুমবিং প্ৰনীপ্ৰেৰ ॥

• দক্ষং কপদ্দিকং তথেতি ব্যসন্তাভিতামণিপ্ৰতং পাঠঃ।

বিষ > তোলা, পারদ : তোলা, জারফল ২ তোলা, সোহাগার থৈ ২ তোলা, পিপুল ৩ তোলা, শুঠ ৬ তোলা, গদ্ধক ২ তোলা, কড়ি-শুপ্ম ২ তোলা (রুসেন্দ্র চিন্তামণিকার গদ্ধক না দিয়া কেবল কড়িভ্যা ৬ গোলা দিতে বলেন) ও লবঙ্গ ৫ তোলা; একত্র ছলে মদ্ধন করিয়া ১ রতি পরিমাণ বটিকা করিবে। ইহা সেবন করিলে নই অগ্রির পুনর্বার দীপ্তি হয়।

বিজয়-রসঃ।

রসজৈকং: পলং দত্তা নাগঞ্চ গন্ধকং পলস্।
কারতামং পদং দেবং লবকং পলপ দক্ষ্॥
দশম্লী জয়াচূর্বং ভদ্জবেন তু ভাবতেং।
চিত্রকভা রাজন থ ভ্লারাত্তরসেন তু॥
নিত্র, মূল্ডবৈশ্চাপি ততো ভাতে নিক্ষা চ।
যামমাত্রং পচেদ্রেল মুদ্রিক্সবৈং॥
ভাল্নীপত্তসংযুক্তং থানে মিক্সিভিং সদা॥

পারের ১ পল, সীনক ১ পল, গন্ধক ১ পল, সোহাগা ১ পল, ঘবকার ১ পল, সাচিক্ষার ১ পল, লবন্ধ ৫ পল, দশমুল

৫ পল, সিদ্ধি ৫ পল; এই সকল দ্রব্য দশমূল-কাথে ও সিদ্ধিরদে ৭ বার (অভাবে সিদ্ধি
ভিজান জলে) চিতার রদে ৭ বার ভীমরাজের
রদে ৭ বার ও সজিনার মূলের ছালের রদে
৭ বার ভাবনা দিয়া ভাওে নিক্ষেপ করিবে।
পরে ১ প্রহর অগ্নিতে পাক করিয়া আদার
রদে মর্দ্দন করিবে। ॥০ ভোলা পরিমাণে
পানের রদের সহিত সেবা।

বীরভদ্রাভ্রকম্।

অভ্ৰকং পুটসংস্থানিতিং কৰ্যনুগানিতিনিৰ্ম্বলীকৃত্য।
বাসরাণি নৰ হিং বিনৰ্দ্দিতং চিত্ৰকল্বঃসদাধুসিক্তকন্ ।
শৃঙ্গবেররসংদিতা বটা কারিতা সকলরোগনানিনী।
ভক্ষিতা ভূজগবল্লিপত্রকৈঃ শৃঙ্গবেরশকলেন বা পূনঃ ।
বাহিনান্যানিনাত্ম সহরং কারেছে প্রপরপাবকোৎকরম্।
খাসকাসবিনিধানিকামলান্দ্রীহগুল্লাচারাক্ষচিভ্রমান্ ।
বক্তপিত্রযুক্তমাপিত্তকং শুলকোষজগদান্ বিস্তৃচিকাম্।
ভামবাত্রহুবাত্মশাণিতং দাহনীত্বলভ্রাসকাশাক্ষ্ ।
বিভ্রবিং শ্বরগরং শিরোগদং নেত্ররোগম্বিলং হলীমক্ম্।
হিন্তি ব্যাত্মমেত্রভ্রক বীরভন্তমতিবল্যনুহ্যম্।
ভক্ষিতং বিবিধৃত্জামাগধাং কাঠগংখনপি ভক্ষতাং নরেছে।

সহত্রপৃতিত অল ২ তোলা, ৯০ দিন চিতার রেদে ভাবনা দিয়া আদাধ রুদে মাড়িয়া বটিকা প্রস্তুত কবিবে। পান বা আদার কুচির সহিত দেবন কবিতে দিবে। ইহাতে অগ্নিমান্দা, খান, কান, বান, শোর্থ, প্লীহা, গুলা, যক্ত্রং, রক্তপিত্ত, অমুপিত্ত, আমবাত, নেত্ররোগ, শূল ও বিস্চিকা প্রভৃতি নানা রোগ নই হয়।

র্স-রাক্ষসঃ।

ত'মং পারদগন্ধকং ত্রিকটুকং ভীক্ষণ দৌবর্চলং তৎ সংমন্দ্য দিনং নিধায় নিকতাকুস্তেম্ব যামং ততঃ। বিষ্ণা তেলপি রক্তশাকিনিভবং ক্ষারং সমং ভাবয়েৎ একীকুত্য চ মাতুলুক্কজলৈনীয়া রসো:রাক্ষম:॥

তাম, পারদ, গন্ধক, ত্রিকটু, লোহ ও সচল লবণ, এই সকল জব্য সমভাগে খলে এক দিন মৰ্দ্দন করিয়া বালুকাযন্ত্রে এক প্রহর পাক করিবে এবং তৎসহ রক্তপুনর্নবা-ক্ষার সম-ভাগে মিশ্রিত করত ছোলঙ্গলেবুর রসে ভাবনা দিয়া দেবন করিলে অজীর্ণ নিবারিত হয়।

ত্রিফলা-লোহম।

ত্রিফলামুন্তবেলৈক সিতয়া কণ্ডা সমন্। প্রমঞ্জরীবাজৈক লোহং ভন্মকনাশনন্॥

ত্রিফলা, মুতা, বিজ্ঞ্ন, চিনি, পিপুল, অপামার্গবীজ প্রত্যেক সমভাগ, সর্কামান শোধিত লৌহ একত্র মিশ্রিত করিবে। ইহা তীক্ষাহিনাশক।

বিখোদীপকাজ্য।

জনং নিম্নন্যারিতং প্রন্মিতং চুগাঁ চুতং যুক্তত করাং চিত্রক্সিক্রম্বরকনকং মালুবপ্রাক্রক্ম।
মূলং পিপ্পলিসন্তবং মধুরিব। নাপোংকর্নাং পুথক
টেবাং সন্থপলৈবিমাল চনিদং কবং কিপেউজ্পন্।
জ্ঞাসন্মিতমেতদেব বনিতং তংপারিত্রজ্ঞবৈমূলায়িং চিরজাতপুর্যানিচয়ং শূলায়পাওং জ্বন্য।
ছব্দিং মুইম্ফ্রিকামলসকং খাসক কাসং ত্যাম্
প্রাহানং যুক্তং ক্ষমং হরহিতং বুক্তং মহারোচকন্।
দাহং মোহমশেষদোষজনিতং কুজ্ঞক ঘুনীমকনমামং বাতবিমিশ্রিতং নয়নজং রোগং সম্পুর্বং ।
বিখ্যোদ্যাপকনাম রোগহরণে প্রোজং পুরা শপুনা
সর্বেবাং হিত্রকারকং গ্রন্তং স্ব্যাৎ মুজুরং পুনব্যাধাণা যদি ভক্ষিত্রদাপি তং কুয়াৎ মুজুরং পুনব্যাধাণা যদি ভক্ষিত্রদাপি তং কুয়াৎ মুজুরং পুনব্যাধাণা যদি ভক্ষিত্রদাপি তং কুয়াৎ মুজুরং পুন-

অভ্র ১ পল, চৈএর কাথ ১ পল, চিতা,
নিসিন্দা, ধুতুরা ও বিব ইহাদের প্রত্যেকর
পত্তের রস ও আদাব রস ১ পল এবং
পিপ্লমূল, মৌরি, কদম, আবনদাল ইহাদের
প্রত্যেকর ১ পল কাথের সহিত মদন করিয়া
তাহাতে ২ তোলা সোহাগার থৈ মিশ্রিত
করত ১ রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে।
অমুপান—পালিবার রস। ইহাতে মন্দাগ্রি,
গুলা, শুলা, অমুপিত্ত, বমন, মহুরিকা, অলসক,
খাস, কাস, ক্ষর, ষকুং, প্লীহা, কুঠ, অশাঃ ও

মূত্ররোগ নই হয়। ইহা বলকর, শুক্রবর্দ্ধক, রসায়ন, মেধাকর ও কান্তিপ্রদ।

অগ্নিয়তম্।

পিপ্লনা পিশ্বনামূলং চিত্ৰকো হস্তিপিপ্লনী হিন্দু চৰাজমোণা চ পকৈব লবণালি চ ॥ বৌ কারে ইবুষা চৈব দন্তাদ্দ্ধপলোমিতান। দাধকান্ত্রিকগুক্তানি বেহমানাসমানি চ ॥ আর্কিবরসপ্রস্থং ঘৃতপ্রস্থং বিগাচরেং। এতদ্যিত্বং নাম মন্দাগ্রীনাং প্রশাস্ততে ॥ অর্নাং নাশনং ভ্রেচং তথা গুলোদরাপহম্। প্রস্তার্ক্ দুপ্রীকাস-ক্লমেনাহনিলানিপি॥ নাশরেদ্ প্রত্নীলোবং খাণ্ডং সভ্যালরম্। বে চ ব্রিসতা রোগা যে চ ক্ষিসনালিতাঃ। সর্কাংস্তান্ নাশ্যতাও প্রাস্তম ইবোলিতাঃ॥

পিপুল, পিপুল্নুল্, চিতা, গজপিপ্পলী, হিস্কু, চে থ্যানী, পঞ্চল্বণ (দৈন্ধক, বিট্, সচল, উট্ছন ও সামুদ্র লবণ), যবক্ষার, সাচিক্ষার ও হরুমা, ইহাদের প্রত্যেকের উত্তমরূপ কুটিত কল্প ৪ তোলা; দিনি /৪ সের, কাঁজি /৪ সের, গুলুত ১৪ সের ও আদার ব্যরস /৪ সের, এই সকল জনোব সহিত /৪ সের মৃত্যুগবিধানে পাক করিবে। এই ঘত মন্দামি ব্যক্তির বিশেষ উপকারী। ইহাতে অশাং, গুল্ম, উদ্র, গ্রন্থি, অর্পনি, অপ্নী, কাস, গ্রহণী, শোধ, মেদং, ভগন্মর, ব্রিও ও কুক্ষিগত রোগ-সমূহ প্র্য্যান্যে অন্ধকারের স্থায় বিনষ্ট হয়।

অ্রিকরগ্নতম্ ।

প্রক্রাভর বিবাস-প্রিয় নাম্বাবসকলৈ।
রামাজনের নার্নির ক্রিজনাটি ভিন্ন ।
ব্রেন্ডন নার্ন্ডল স্বরনেনাজন জ চ।
ক্রেন্ডন নার্ন্ডল স্বরনেনাজন জ চ।
কাজিকেন চ মং প্রং পীংনিজ্যানিকৈং স্থান্
শ্রপ্তানির মান্নিকানিককানিংস্।
শ্রপ্তানির মান্নিকানিককানিংস্।

ন্মত / ৪ দের। ছোলঙ্গ লেবুর রস / ৪ সের, আদার রস / ৪ সেব, তক্ত / ৪ সের, দ্বিব মাত / ৪ সের, স্থ্রামণ্ড / ৪ সের, সৌবীর / ৪ সের, তুমোদক / ৪ সের, কাঁজি /৪ সের। করার্থ—পঞ্চমুল, হরীতকী, ত্রিকচু, পিপুলমুল, সৈন্ধব লবণ, রাম্বা, যবকার, সাচিকার, বন্যমানী, বিড়ঙ্গ ও শটী মিলিত /১ সের; যথাবিধি পাক করিয়া সেবন করিলে শূল, গুলা ও উদর প্রভৃতি নানারোগ বিনষ্ট এবং অগ্নি বর্দ্ধিত হয়।

ত্ৰথ পথ্যাপথ্য বিধিঃ।

व्यथाशियांन्ताकीर्नानितारं श्रथानि।

देविष्यक वसनः পূর্বং লৈভিকে মুদ্রুরেচনস্। वांटिक स्विप्तकाथ यथातत्रः दिख्य द्रा **নানাপ্রকা**রো ব্যায়ামো দীপনানি বসুবি চ: বছকালসমুংপালা: কৃষ্যা লেভিড্নালয়:। বিদেশী লাভ্ৰমণ্ডল্চ মাধ্য মুক্তারসঃ মুরা । এপো नहीं भएना लातः कुछ भरका क मन्त्रेयः ॥ **णानिक्षणांकः** तानांधः तान्यंकः तानम्नकम्। **লগুনং বুদ্ধকুত্মাঙ্ছং নবী- ক**্লীফল্ম । শোভাঞ্জনং পটে, সঞ্চ ব'র্তারুং নলদ্ম চ। কর্কোটকং কারবেলং বাহতক মহার্ক্রক্র।। প্রসারণী মেশপুরং চাঙ্গেরা অনিষয়কন। ধাত্রীষ্ণলং মাগরঙ্গং দ'ভিনং যালগর্পটাং ॥ অন্নবেডসজ্বীর-ম'তুলুঙ্গানি ম'জিকম্। লবলীতং ঘূতং তত্ৰং দৌৱীরৰ ভূষেদি ক। ধান্তায়ং কটুভৈলঞ্চ রাসঠং লবণার্ডক্ষ। यभानी भदिष्ठर प्रायो धाक्यकर अवकर स्थि॥ **ভাম্বলং তপ্তস**লিলং কটুভিক্তৌ রসাব্যি। मन्त्रीनत्तरभाकार्यश्रिभ भवाद्यत्य नृगार छ। वद ।

রোগের অবস্থা বিবেচনা করিয়া প্রথমে অবিক জলপান, বৈশ্লেক অজীর্ণে ব্যনন, পৈত্তিক অজীরে মৃত্ আলু, ছানা, ব্রুচিকা, অবিধ করিবে। নানাপ্রকার ব্যায়াম, অগ্নিবন্ধিক ও লঘুপাক জব্য, অভীব পুরাতন স্বল্ধা রক্ত- শালিধান্ত, বিলেপী (মগুরিশেষ), থৈয়ের মণ্ড, অন্তমণ্ড, মৃদুগ্যুম, সুরা, মৃগ, মারুর, খ্র- গোশ, লাবপক্ষী, সর্ক্রপ্রকার ক্ষুক্ত মংস্ত, শালিক্ষশাক, বেতের ভগি, বেতোশাক, কচি রোগে বর্জনীয়।

মূলা, লগুন, পাকা কুম্ড়া, অপক কনলী, সজ্বে ডাঁটা, পটোল, বেগুন, লেবু, কাঁক-বোল, করোলা, বৃহতী, বন-আদা, গন্ধ ভাহভিন্না, মেড়া শিল্পী, আমক্ষল শাক, অ্যুণি শাক, আমলকী, নারেলা লেবু, ডালিম, যবের মণ্ড; ক্ষেত্পাপ্ড়া, অমবেত্তম, গোঁড়ালেবু, ছোলল লেবু, মধু, মাখন, ঘত, তক্র, মৌবীর, তুমোদক, পান্তার, মর্যপ তৈল, হিন্তু, লবণ, আদা, যমানী, মরিচ, মেণী, পনে, জীরা, দিনি, পান, গবম জল এবং কটু ও তিক্ত রস, এই সকল অগ্রিমান্যা ও অজীণাদি রোগে পণা।

অগ্নিমান্দ্যাদাবপথ্যানি।

বিবেচন নি নি জ ত্ৰাং চাগেরিধারণন্।
অধ্যানন সন্ধনং জাগেরং বিষ্দাধনন্।
রক্ত জাতিং শ্বং ধান্তং নংসমুপোদিকান্।
ক্পিনং পিঠকক ভাগেনং মর্কমাল্কন্।
কৃষ্ঠিকং মোরিটং কারং বিলাটক প্রপাণকন্।
ভালা ভ্রাপ্তং ভ্রাপ্তং বেহনং ছুইবারি চা।
বিব দ্বাধান্তাপানারং বিহন্তাপি গুরুপি চা।
অ্লিমানোহগ্যাল্যের্ চাসকালি প্রিবর্জ্ঞারে।

বিরেচন, মহা মৃত্র ও অনোবায়র বেগধারণ, একত্র পথ্যাপথা ভোজন, রাজি জাগরণ, পূর্দাহার অজীবে প্রভাজন, বিষমভোজন বেহু অল্ল বা অসময়ে ভোজন), রক্তমোক্ষণ, সর্বপ্রকার দাইল, মংস্তা, মাংদা, পুদিনাশাক, অবিক জলপান, পিটক, জান, সর্বপ্রকার আলু, ছানা, নইত্থাভব জল, ক্ষীর, তক্ত-ক্রিকা, অবিক সরবং, ভাল শাঁটির শস্তা, তালশান, ঘুটালোদি লেহছব্যা, দূষিত জল, মৃগপংক্ষীরমংশুদি বিরুদ্ধ ভোজন, দেহের অনমুক্ল অল্ল ও পানীয়, বিইপ্তী জব্য (যাহা ভোজন করিলে উদর তাজন, অগ্রিমান্দ্যাদি রোগে বর্জনীয়।

ইত্যায়ুর্নেদ্-সংগ্রহেৎশ্বিমান্দ্যাদিরোগাধিকারঃ।

অথ ক্রিমিরোগাধিকারঃ।

অথ ক্রিমি-নিদানম।

ক্রিময়ক দ্বিধা প্রোক্তা বাহা;ভাররভেদতঃ। বহিম লকফাস্থিড্-জন্মভেদাচ্চতুর্বিধাঃ। শামতো বিংশতিবিধা বাহ্যান্তত্র মলোদ্ভবাং। তিলপ্রমাণসংস্থান-বর্ণাঃ কেশ্ররাখ্যায়ঃ 🛭 বছপাদাল সুক্ষাল বুকা লিকাল নামত:। ষিধা তে কোঠপিড়কা: কণ্ডগণ্ডান্ প্রকৃর্কতে। অজীর্ভাজী মধরায়নিতো জ্ব-প্রিয়: পিষ্টগুডোপভোক্তা। বাংয়ামবজ্জী চ দিবংশয়ানো বিরুদ্ধত্ক সংগভতে ক্রিমীংস্থ ॥ মাবপিষ্ট'মলবণ-গুড়গাকৈঃ প্ৰীয়ড়াঃ। মাংসমৎস্তগুডকীর-দ্বি ১কৈ: কফে:ছবঃ: । বিশ্বদ্ধান্ত্ৰীৰ্ণশাকাজ্যৈ: শোণিভোপা ভবস্থি হি ॥ বেরা বিবর্ণ তা শুলং ক্রছোগঃ সদনং ভ্রমঃ। ভক্তবেবাংতিসারক সঞ্জাত্তিমিলকণ্ম। ককাদামাশয়ে জাতা বন্ধা: সর্পতি সর্বত:। পুথুব্রপ্রনিভাঃ কেচিৎ কেচিদ্গভপদ্যোপনাঃ॥ ক্সংখ্যাকরাকারান্তত্রদীর্ঘ, তথাণবঃ। খেতান্তামানভাসাল নামতঃ সপ্তধা ত তে । व्यञ्जानी উদবাবেটা अन्यानी महास्रमाः । চুরবো দর্ভকুম্মাঃ শুগন্ধান্তে চ বুর্বতে । হলানমান্ত্রবর্ণমবিপাকমরে।চকম। মুঠ্ছাচ্ছ দিজ রানাহ-কার্শ্যক্রবর্গান্দান । রক্তবাহিশির:স্থান-রক্তরা এন্তবোহণব:। অপাদা বস্তুতাম্রান্ট দৌল্যাৎ কেচিদদশনা: ॥ কেশাদা রোমবিধ্বংসা রোমদ্বীপা উড় পরা:। बढ़े एड क्रिकक्यानः महामोत्रमभाउतः । পকাশ্যে পুরীযোথা জায়প্তেহধোবিদর্গি।:। বুদ্ধ'ন্তে স্থার্ভবেয়ুশ্চ তে বদামাশয়োবাুপাঃ॥ তদাক্তোক্যারনিশ্বাস-বিভাগন্ধাক্রবিধায়িনঃ। পথবস্তুতনুম্বলঃ স্থাব-গাত্সিতাসিতাঃ 🛊 তে পঞ্চ নামা ফ্রিনয়: কং ে । ক্রমকেরকা:। मोक्तांनाः मणुलाशा लिलश **क**नश्र हि॥ বিভ ভেদশুলবিষ্টস্ক-ক¦শ্যপাক্ষ্যপাত্তা:। ৰোমহৰায়িদদনং গুদক প্ৰবিষ্যাৰ্গপাঃ॥

বাহ ও আভ্যন্তর ভেদে প্রথমতঃ ক্রিমি ছই প্রকার অর্থাৎ কতকগুলি বাহ ক্রিমি, ক্তকগুলি আভ্যন্তর ক্রিমি। জন-ভেনে তাহানিগকে চারি ভাগে বিভক্ত করা যাইতে পারে। যথা—বহিম লোংপন, কফোংপন্ন, রক্তোংপন্ন ও পুনীযোৎপন্ন ক্রিমি। আর নামভেদে তাহারা বিংশতি প্রকারে পরিগণিত হইতে পারে। এই বিংশতি প্রকার নাম ক্রমশঃ বলা যাইতেছে।

বাফ ক্রিমি সকল, পাত্রমল ও বেদ্ হইতে উৎপন্ন, ইহাদের পরিমাণ আক্রতি ও বর্ণ তিলের আন্ন। ইহালা যুক ও লিক্ষা (লিকি) নামে অভিন্তি। যুক্তাণ বতপাদবিশিই, ক্লঞ্চন ও কেশাশ্রী এবং লিক্ষা সকল হক্ষ্ম, খেতবর্ণ ও বন্ধাশ্রী। এই বাহা ক্রিমিশ্বর কোঠ, পিড্কা, কণ্ড ও গ্রন্থানা উৎপাদন করে।

অন্ধীর্ণ ভোপন, নিত্য মধুন ও অন্তর্ম ভোগন, দ্ব-দ্বরের অভিপান, পিটক ও গুড় ভোগন, ব্যারামপ্রিকর্জন, দিবানিদা এবং মিলিত ক্ষীরমংখাদি বিক্লন্ডোগন, এই সকল কারণে আভাত্তর ক্রিন জ্লিয়া থাকে।

মাষ, পিষ্টক, অন্ন, লবণ, গুড় ও শাক ভক্ষণে ।পুনীষদ্ধ ক্রিমি; মাংস, মংস্ত, গুড়, ক্ষীর, দ্বি ও গুক্ত (আচার বিশেষ) ভোজনে ক্ষজ ক্রিমি; এবং ক্ষীরমংস্তাদি বিশ্বদ্ধ ডোজন, অন্ধীণভোজন ও শাকাদিভোজনে বক্তম্ব ক্রিমি জন্মে।

আভান্তর ক্রিমি সকল জ্রিলে জ্র, বিবণ তা, শূন, কদোগ, অবসাদ, লম, অরম্বের ও অভিসার এই সকল লক্ষণ প্রকাশিত হয়। ক্রজনিত ক্রিম সকল আমাশ্যে জাত ও পরিব্যক্তি হইয়া উদ্বের ইত্ততঃ বিচর্গ করে। ইহাদের ক্রকগুলি হল, ক্তক-

ও পরিবন্ধিত হইয়া উদরের ইতন্ততঃ বিচরণ করে। ইথাদের কতকগুলি সূল, কতক-গুলি চন্মলথানদৃশ, কতকগুল কিঞুলক (কেচো) সদৃশ, কতকগুলে ধাঞাক্ষুরের স্থার, কতকগুলি হৃদ্ধ অথচ দীর্ঘাকৃতি, কতকশুলি অতি ক্ষুদ্র, কতকগুলি শেতবর্ণ, কতকশুলি তাত্রবর্ণ। ইহারা নামভেদে সপ্তবিধ
ধথা—অন্তান, উদরাবেই, হৃদরাদ, মহাগুল,
চুক্ক, দর্ভকুত্রম ও শুগন্ধ। কফজ ক্রিমি
জারিলে বমনবেগ, মুথ হইতে জলস্রাব, অপাক,
আফচি, মুচ্ছনি, বমি, জর, আনাহ (বায় কর্তৃক
উদর ও মলমূত্র আক্কৃষ্ট হইয়া থাকা), ক্রণতা,
হাঁচি ও পীনস এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়।

রক্তম ক্রিমি সকল, রক্তবাহি-শিরার অবস্থিতি করে। ইহারা অতি স্ক্রা, পাদ-রহিত, গোলাকার ও তাত্রবর্ণ, ইহাদের মধ্যে কতকগুলি এরপ ক্রন্থা দে দৃষ্টির গোচা হয় না। ইহারা নামভেদে ছয় প্রকাব যথা—কেশাদ, রোমবিধ্বংদ, রোমদ্বীপ, উড়ুপুর, সৌরদনামা ও মাতৃনানা। একমাত্র কুর্ভোং-পাদন করাই ইহাদের প্রধান কর্ম।

পুরীষজ ক্রিমি সকল পরাণয়ে জয়ে।
ইহারা অবোগমনশাল, কিন্তুর্থন অতিপ্রস্ক
ইইয়া আমাশয়ের দিকে উত্থানোল্থ হয়,
তথন রোগির উলগারে ও নিখাদে বিগার গয়
অমভূত ইইয়া থাকে। ইহাদেব কতকগুলি
পুইাকুলি, কতকগুলি গোলাকার, কতকগুলি
সুল এবং কেহ শ্রাব, কেহ পীত, কেহ খেল,
কেহ বা রুফবর্ণ। নামভেদে ইহারা পাঁচ
প্রকার, বথা—ককেরুক, মকেরুক, সৌমুরাল,
সশ্লাথ্য ও লেলিহ। ইহারা বিমার্গগামী
ইইলে, মলভেদ, শূল, উদরের স্তর্কা, রুণতা,
পরুষতা, পাগুর্বতা, রোমাঞ্চ, অগ্নিমাল্য ও
শুহুদেশে কণ্ড এই সকল উপদ্রব উপাহত
ইইয়া থাকে।

অথ ক্রিমিরোগ-চিকিৎস।।

পারদীয়মদানিকা পাঁতা পযুৰ্গিষতবারিণা প্রাতঃ। গুড়পূর্ব্বা জিমিক্কাতং কোঠগতং পাতয়তাওে॥ ক্রিমিরোগাক্রান্ত ব্যক্তি প্রাতঃকালে প্রথমে কিঞ্চিৎ গুড় খাইয়া কিছু পরে বাসি জলের সহিত খোরাগানী ঘমানী খাইলে কোঠস্থ ক্রিমি শীঘ নিপতিত হয়।

পারিভক্রকপত্রোথং রসং ক্ষেক্সিন্তং পিনেৎ। কেবুকন্ত রসং বাগি পর্ত্তুর্থনা রসম্। লিহাৎ ক্ষোদ্রেণ বৈড়ঙ্গং চুর্ণং ক্রিমিরিনাশনম্॥

পালিধা পত্রের রস, কেউ মূলের রস বা শালিধের রস মধুব সহিত পান করিলে অথবা বিড়ক্ষচ্প মধুব সহিত লেহন করিলে ক্রিমি বিন্ধ হয়।

পলাশবী একরমং পিলেলবা কৌন্যান্তন্।
পিবেৎ তথীক্ষক হং বা তাক্রে ক্রিমিনাশনন্।
পলাশবী জের রস মধুর সহিত্ত পান করিলে
কিংবা উহার বীজ বাটিয়া তাক্রের সহিত্ত
ধাইলে ক্রিমি নই হয়।

কাখং গর্জ্বপজানাং সাক্ষাপ্রন্থ নিং নিশি।
পাঁথা নিবারয় লাভ কি মিসজন্দেশত ।
অপকং কৃষুকং পিষ্টা পাঁতং ভত্থারকৈ রুইনং।
নিংগ্রি কিড্ভবং ক'টং রসং গর্জনজন্তালাং।
পিবেং তৃথানীজনুর্বং তলেল বি মিনাশনন।
নারিকেলজনং পীতং সন্দোলং কিমিনাশনন্।
কম্পিল্রুর্বং কর্বাজিং হাডন সহ ভ্লিতন্।
সংপাতরেং কিমানু স্পালুক্রহান্ন সংশ্রা।

খেছর পাতার বস বাসি করিয়া মধুর সহিত্বা কাচা স্থারি বাটিয়া লেব্র রসের সহিত্বাবন করিলে ক্রিমিনই হয়। খেছুর পাতার রস ও লেবুর রস একজে পান করিলে পুরীষজ ক্রিমি নিপ্তিত হয়। তিতলাউবীজ-চুর্ব ঘোলের সহিত্ব বা নারিকেল জল মধুর সহিত্বপ্রবাক করলা গুড়ি ১ ভোল। (ব্যবহার । আনা) মান্তার গুড়ের সহিত্ব সেবন করিলে সর্বপ্রধার ক্রিমি নিশ্চয়ই নিপ্তিত হয়।

যুমানীং লবণে।পেতাং ভক্ষেৎ বলা উথিতঃ। অজীপুমামৰাত্ঞ কিনিজাংশচ জয়ে দুগদান্॥

খোরাসানী যমানী সৈদ্ধবলবণের সহিত প্রাতঃকালে সেবন করিলে অজীর্ল, আমবাত ও ক্রিমিরোগ সকল।নিবারিত হয়। ভূক্তং বিড়ঙ্গচূর্বং হি ক্রিমীন্ সর্ববান্ ব্যপোহতি।

একমাত্র বিড়ঙ্গচূর্ব দেবন ধারা সর্ববঞ্জার
ক্রিমি বিনষ্ট হয়।

ঘণ্টাকর্ণন্ত পত্রস্ত বহুনেত্রদলস্য ব।। স্বরদো মধুনা পাঁতঃ ক্রিমান সত্যো বিনাশয়েৎ ।

ঘেঁটুপাতার অথবা আনারদের কচি পাতার রস কিঞ্চিৎ মধু সংবৃক্ত করিয়া পান করিলে ক্রিমি সন্তঃ মরিয়া বায়।

জলপীতা সোমরাজী জিমীন্ সর্কান্ ব্যপোহতি।

জলের সহিত সোমরাজীবীজ পান করিলে সর্বপ্রকার ক্রিমি বিনষ্ট হয়।

কাপো দা ড়িমমূলস্য ক টাপুন্ নাশয়েদ্ধবম্॥

দাড়িমের শিকড়ের কার্থ পান করিলে ক্ষুত্র ক্রিমি মারিয়া যায়।

स्वमा प्रिशंगः वाणि मन्द्रीयावाभागांकाडाः ॥

ক্রিমিরোগে স্থতাক্ত প্রসাদিগণের কল্প ও ক্যাগাদি প্রয়োগ করিবে।

বিড়ঙ্গদৈশ্ববক্ষার-কম্পিনকহরীতকীঃ। পিবেৎ তকের সংপ্রিয়া সক্ষতিনিবিত্তয়ে।

বিজ্ঞা, সৈন্ত্র, ব্রহ্ণার, কনলাওঁজি ও হরীতকী তক্তে পেষণ ক্রিয়া পান করিলে সর্মপ্রকার ক্রিমি বিন্তু হয়।

বিড়কপিয়নীমূল-শিগ্রভিম বিচেন চ। তক্রদিদ্ধা ধ্বাগৃঃ স্যাৎ কিমিথ্না সম্ব্রতিকা॥

তক্রসিদ্ধা ধরাগৃঃ স্যাৎ কি.মিগ্রা সহবক্তিকা ॥ পীতং বিদ্বীয়ু ১২ হস্তি প্রসাশক্ষাধান্ জিনান্॥

অদ্ধলাব শিষ্ঠ ঘোলে, বিজ্প, পিপুল্মূল, সঞ্জিনা বীজ ও মরিচের সহিত ধবাগু পাক করিয়া তাহাতে স্ভিজ্কাক্ষার প্রক্ষেপ দিয়া উহা পান করিলে, কিংবা বিষ্টায়ত খাইলে আমাশয় ও প্রাশ্র গত ক্রিমি স্কল বিনষ্ট ইয়া থাকে।

পলাশবীজেন্দ্রবিড়ক্ষমিশ-ভূমিশ্বচূর্ণ সপ্তড়ং পিবেদ্ যং। দিনত্ররেণ ক্রিময়ং পত্তি পলাশবীজেন যুমানিকাং বা ।

পলাশবীজ, ইন্দ্রুয়ব, থিড়ঙ্গ, নিমছাল ও চিরতাচুর ওড়ের সহিত তিন দিন সেংন করিলে অথবা পলাশবীজ ও যমানী একত্র খাইলে ক্রিমি সকল নিপত্তিত হয়।

পারসীয়াদি-চূর্ণম্।

পারাসীয়যমানিকা ঘনকণা শৃঙ্গীবিড়ঙ্গারুণা-চূর্ণং প্রক্লতরং বিলীঢ়মপি তৎ ক্লোক্রেণ সংযোজিতম্। কাবং নাশয়তি অরঞ্জয়তি প্রোঢ়াতিসারং জয়ে-চ্ছান্দিং মর্ময়তি ফ্রিমিস্ত নিয়তং কোঠগুমুনুলয়েৎ॥

খোরাসানী ঘমানী, মৃতা, পিপুল, কাঁক্ডাশৃদ্ধী, বিড়ন্দ ও আতইচ উত্তমরূপে চূর্ব এঃং
সমভাগে মিশ্রিত করিয়া মধুব সহিত লেহন
করিলে কাদ, জর, অতীদার ও বমি নিবারণ
হয় এবং কোঠন্ত ক্রিমি দকল উন্মূলিত
হইয়া যায়।

কপুরিণ সমাযুক্তো রসো ধুকুরপ্রজঃ। তাসুলপ্রজো বাপি লেপাদ্ সুকাবিনাননঃ।

ধুত্বাপাতার বা পানের রদ, কর্পুরের সহিত মাড়িয়া মস্তকে প্রলেপ দিলে উকুন মরিয়া যায়।

পেষ্ট্রেলারনালেল নাজীচ্স্য ফলানি চ।

ফুকালিফাপ্রশান্ত্র্বিংদ্যালেপন্ত মন্তকে।

নালিভার বীজ কাজির সহিত বাটিয়া

শতকে প্রবেপ দিলেও সমূলায় উকুন মরিয়াবার।

দাড়িমাদি-ক্যায়ঃ।

দাড়িমসুক্≴ চঃ ক¦শক্তিলতৈলেন সংযুতঃ। ত্রিদিনাৎ পাত্যতোৰ কোঠতঃ ডি'মিজালকম্॥

দাড়িমহালের কাপ কিঞ্চিং তিলতৈল সংষ্কুক্রিয়া তিন দিন পান ক্রিলে, কোষ্ঠ হইতে সমস্ত ক্রিমি পড়িয়া ধার।

মুস্তাদি-ক্যায়ঃ।

মৃত্ত'পূপণীফলদারূশিগ্রু-কাপঃ সকুকাজি মিশক্রকন্ধঃ। মার্গারফোনাপি চিরপ্রবৃত্তান্ জিমীন্ নিহস্তাৎ জিমিজাংশ্চ রোগান্॥ (ক্লমক্র ফল্টিকেম্)

मुठा, इन्द्रकानी, जिल्ला, त्मवनाक अ मिंजनावीक, देशास्त्र कार्य शिश्करूर्व > भाषा ও বিভ্লচ্ব ১ মাধা প্রক্ষেপ দিয়া তাহা পান করিলে সকল প্রকার ক্রিমি ও ক্রিমিজ রোগ বিনই হয়।

ক্রিমীণাং বিটকফোখানামেতছুক্তং চিকিৎসিত্র। রক্তজানাত্ত সংহারং কুর্বাৎ বু গ্রচকিৎসয়া।

মলজাত ও কয়জাত ক্রিমি সকলের চিকিৎসাউক্ত ২ইল। রক্তজাত ক্রিমি সক-লের কুটোক্তবিশানে চিকিৎসা করিবে।

পারিভদ্রাবলেহঃ। () (] () ()

শ্রসং গ্রভদ্রের গুড়মাদার বছত।। তদর্মাক নিতাং দর্ম মৃতং বুড়বস্থিতম্।। * अश्रद्धिः त्रुक्त के क्रिक्त भावर ममाठाउँ र । यमा मन्त्री इरलागः मा। द दरेनवार हुर्वभाकित्य ॥ চিত্রকং ত্রেফলা মুন্তং বিভ্রাং বৃষ্ণজীরকম্। যমানীল সিল্লখং নিভ'্ৰীফলমেৰ চা পাঠা ভিত্তক্ষককের শারিবাদয়বাদকে।। পলাশ্ব'জং ব্যোষ্ফ ভিত্তকন্তা সরেণুকা । क्षतिहै: (मार्काको ह अएक क्ष विकाबिकम्। ততো মাৰাষ্ট্ৰকং ভাষেত্ৰ ভোষকান্ত্ৰপিৰেবর।। ক্রিমীংশ্চ বিংগতিনিধান নাশয়ের। এ সংশয়ঃ। ছুঠুর্ণাক বু,ঠক নাড়"ব্রণভগক্রম্।। बीटिशिटर निमिधिक मृत्र हत्रभवर उशी। ष्मकोर्नर कामनार खन्नार यश्युक विनानरहर ॥ বলপুষ্টিকরো হেন বলাপলিতনাশনঃ। পারিভদ্রাবলে হাঁহয়ং সর্কাব্যাধিনিস্থদনঃ॥ ত্রণিনাং হিতকামো হি প্রাহ নাগার্জনো মুনি:॥ अन्तरेष छन्। । अन्तरेष छन्।

পালিবার রস /ও সেব, চিনি /২ সের, ম্বত /১ দের, হরিদ্রাচুর্ণ /১ দের, এই সমুদায় একত্র পাক করিয়া উপৰুক্ত সময়ে চিতামূল, াত্রফল', মুতা, বিভঙ্গ, ক্রফজীরা, যমানী, বন-यमानी, रमस्वनवन, निमिन्नाकन, आक्नोनि, অনন্তমূল, বাদকমূল, খ্যালতা, বিডঙ্গ, প্লাশ্বীজ, ত্রিকটু, ভেউড়ী, দ্স্তীমূল, রেণুক, বিমছাল, দোমগ্রাজী ইহাদের প্রত্যেকের চুর্ণ l ৩ তোলা, বিড়ক ৪ তোলা, কুঁচিলা ৫ তোলা

⁸ তোলা। মাত্রা—১ তোলা। অমুপান-শীতল জল। ইহা সেবনে বিংশতি প্রকার ক্রিমি, ছইবণ, কুষ্ঠ, নাড়ীবর্ণ, ভগস্বর, শীত-পিত্ত, বিদ্রধি, পাণ্ড, দদ্রু ও অক্সান্ত রোগ মষ্ট হা। ইহা বলকারক ও পৃষ্টিবর্দ্ধক।

রসপ্রয়োগঃ।

ক্রিমিকালানলো রসঃ।

दिएकः विभन्देश्य निषर्गः उपर्श्वतम् । লৌহচুৰ্ণং তদৰ্শ্ধ তদৰ্দ্ধং গুদ্ধপারদম্ । রসতুল্যং শুদ্ধগন্ধং ছাগীহুদ্ধেন পেষয়েৎ। ছ'রাওদ'ং বটাং কুহা থাদেৎ ষে'ডু-রেক্তিকাম্॥ धारकीयां जूपीत्मन न! मो कोलानत्ला यमः। উদরস্থং ক্রিমিং হতাদ গ্রহণাশীসমস্বিতম 🛭 व्यधिमः भाषसम्भागा श्रेत्यक्षीरशम्त्राम् अराष्ट्र । গহনানন্দন্ধেন ভাষিতো বিষদপাদে 🛭

বিড়ঙ্গ ২ পল, বিষচ্ণ ১ পল, লৌহচ্ৰ অদ্ধপল, লোহচুর্ণের অন্ধেক শোবিত এবং পারদের সমান শোগিত গন্ধক সকল দ্রব্য একতা কবিয়া ছাগীতাগ্ধর সহিত পেষণ করিবে। তংপারে ছায়াতে গুরু করিয়া ১৬ রতি পরিনিত বটিক। প্রস্তুত করিবে। অহুপান-পনে ও জীরা। এই ঔষধ দেবনে ক্রিমি, গ্রহণী, অর্শঃ, শোপ, গুল্ম ও প্লীহা প্রভৃতি রোগ নষ্ট হয়।

ক্রিমিমুকারে। রসঃ।

ক্ৰেণ বৃদ্ধং বসগৰকাজ-মোদা বিভঙ্গং বিষমৃষ্টিকা চ। পলাশবীজঞ্চ বিচুৰ্ণম্প্য নিক্তমাণং মধুনাবলীচৃষ্। পিবেৎ কৰায়ং ঘনজং ভদুৰ্দ্ধ: রসোহয়মুক্তঃ ক্রিমিমুলারাখ্যঃ। ক্রিমীন নিহ'ড ক্রিমিজ:ংক্ত রোগান সন্দীপয়তাগ্রিময়ং তিরাতাৎ।

রস ১ তোলা, গন্ধক ২ তোলা, বন্যমানী

প্রশাশবীজ্ঞ ৬ তোলা, ইহাদের চূর্ণ একত্র নিশ্রিত করিয়া লইবে। এক মাধা হইতে ৪ মাধা পর্যান্ত মাত্রায় মধুসহ সেবা। এই ঔষধ সেবনের পর মূতার কাণ পান করিবে। ইহা সেবন করিলে তিন দিবসের মধ্যে ক্রিমি ৪ ক্রিমিজস্ত রোগ সকল নিবারিত এবং অগ্নি বর্দ্ধিত হয়।

ক্রিমিবিনাশো রসঃ।

শুদ্ধস্থ হং সমং গদ্ধমতাং লৌহং মনঃশিলা।
ধাতকী ত্রিকলা লোবং নিতৃক্ষং রঙনীদ্বম্ ॥
ভাবয়েং সপ্তধা দর্কং শুক্ষবেরভলৈ রসৈঃ।
চণমাত্রাং বটাং কুথা ত্রিকলারসসংযুতাম্ ॥
ভক্ষরেং প্রাতক্ষণার ক্রিমিরোগোপশান্তরে।
নাতিকং পৈত্তিকং হস্তি প্রৈমিকক ত্রিদোবজন্।
ক্রিমিরিনাশনামারং শিমিরোগকুলাভকঃ॥

শোধিত পারন, গন্ধক, অল, লৌহ, মন:শিলা, ধাইজুল, ত্রিফলা, লোধ, বিজ্ঞা, হরিদ্রা ও দারুহরিদ্রা; এই সকল জব্য সম-ভাগে একত্র কারয়া আনার রচেট্রং বার ভাবনা দিবে। পরে ছোলাব ভান্ধ বটিকা প্রস্তুত করিবে। অমুপান—ত্রিফলা। প্রাক্তংকালে সেব্য। ইহাতে সর্বপ্রকার ক্রিমিরোগ বিনষ্ট হয়।

ক্রিমিহরে। রসঃ।

শুদ্ধস্থতমিল্রববকাজমোদা মনঃশিলা। পলাশবীজং গন্ধক দেবদাল্যা ক্রবৈদিনম্॥ সংমদ্ধি ভক্ষয়েন্নিতাং শালপণীরসৈঃ সহ। সিতাযুক্তং পিবেচ্চাকু ক্রিমিপাতো ভবতালম্॥

পারদ, ইক্রমব, বন্যমানী, মনঃশিলা, প্লাশবীপ ও গন্ধক, এই দকল সমভাগে লইরা হস্তিঘোষা ফলের রদে ১ দিন মর্দন করিয়া ১ রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। অহপান—চিনিসংস্কুত শালপাণির রদ বা কাথ। ইহা সেবন করিলে নিশ্চয় সমুদায় জিমি নির্গত হইয়া যায়।

ক্রিমিরোগারি-রসঃ।

হতং গন্ধং মৃতং নৌহং মরিচং বিষয়েব চ।
ধাতকী জিলনা শুড়ী মৃতকং সরমাঞ্জনম ।
কিন্টু মৃত্তকং পাঠা বালকং বিধানেব চ।
ভাবমেং সর্পানেকত্র স্বর্গ্রান্ত কিনিবালার নিশাহতঃ।
কিনিবোগবিনাশার নসোহরং কিনিনাশানা।
পারদ, গন্ধক, মাবিত লৌহ, মরিচ, বিষ,
ধাইফুল, জিকলা, শুঠি, মৃতা, নসাজন, জিকটু,
মৃতা, আক্নাদি, বালা ও বিজ; এই সকল জব্য
একত্র করিলা ভীমরাজের রস পারা ভাবনা
দিয়া কড়ি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত ক্রিবে।
ইহাতে সর্পপ্রাকার ক্রিমিরোগ নই হয়।

कोडेगर्फ। तमः।

ভদ্ধতেং শদ্ধগৰুমজনোপ বিভ্লপন্। বিব্যুপ্তর ক্ষরীজং যথাক্রমগুণোত্তরন্। চূর্বেল্যপুনা মিশ্রং নিধৈকং জিমিজিদ্ ভবেং। কীট্যক্ষো রসো নাম মৃত্তকাথং পিবেদন্। (অএ ব্রহ্মবীজং ভার্মী নীজম্)।

পারদ ১ ভোলা, গদ্ধক ২ তোলা, বনবমানী ও তোলা, বিড়ঙ্গ ৪ তোলা, বিষমুষ্টি ৫
ভোলা, বামুনহাটার বাজ ৬ ভোলা, ইহাদের
চূর্ণ একত্র মিশ্রিত কারিয়া লইবে। মাত্রা—৪
মাষা। অমুপান—মধুও মুতাব কাথ। ইহা
দেবন করিলে জিমিনাশ হয়।

ক্রিমিল্লে। রসঃ।

ক্রিমিম কিংগুকারিষ্ট-বাজি হ্রসভন্মকন্।
বল্লমকাপুপণী-রদৈ ক্রিমিবিনাশনঃ ॥
বিভাল, পলাশবীজ্ঞ, নম্ববীজ, রস্মিন্দ্র
এই সকল দ্বা একত্র করিয়া ইন্দুরকাশির
রদে মর্দ্দন করিয়া ৬ কুঁচ পরিমিত বটা প্রশ্বত করিবে। ইহাতে ক্রিমিনাশ হয়।

বিভূঙ্গলোহম্।

রসং গৰাঞ্চ মরিচং জাতীকললবঙ্গকম্। কণা তালং শুক্তী বঙ্গং প্রত্যেকং ভাগদশ্বিতম্। লক্চুৰ্নমং লৌহং বিড়লং দৰ্কতুল্যকম্। লৌহং বিড়লকং নাম কোঠস্থলিমিনাশনম্॥ ছুনামমল্লচিঞ্চৈব মন্দায়িঞ্চ বিস্তৃতিকাম্। শোধং খূলং জ্বরং হিকাং খাসং কাসং বিনাশয়েৎ॥

পারদ, গদ্ধক, মরিচ, জায়ফল, লবঙ্গ,
পিপুল, হরিতাল, ভাঠ, বঙ্গ প্রত্যেক দ্রব্য
সমান ভাগে লইয়া তাহাতে সর্ব্রসমান লোহ
প্রদান করিবে। তৎপরে লোহ প্রভৃতি
সমস্ত দ্রব্য একত্র করত তাহার সমান
বিজ্ঞা দিয়া মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই
ঔষধ সেবনে অর্শঃ, অরুচি, মন্দাগ্রি, বিস্ফিচিকা,
শোথ, শূল, জর, হিক্কা, শ্বাস ও কাস রোগ
প্রশ্নীত হইয়া থাকে।

ক্রিমিঘাতিনী গুড়িকা।

রসগন্ধান্ধনোদানাং ক্রিমিয়ন্তক্ষবীজয়োঃ।
একদ্বিত্রিচতুঃপক তিলোবীজন্ম বটু ক্রমাং॥
সংচূর্ণ্য মধুনা সর্বাং শুড়িক'ং কিমিঘাতিনীম্।
থাদন্ পিপাক্সন্তোগ্রঞ মুন্তানাং ক্রিমিণান্তরে।
তাংগুপণীক্ষায়ং বা প্রপিনেছক্রিণ্ডিন্ম্॥

পারদ ১ ভোলা, গান্ধক ২ ভোলা, বন্ যমানী ৩ ভোলা, বিভূক্ত ৪ ভোলা, বামুনহাটীর বীজে ৫ ভোলা, কেউ ৬ ভোলা, এই সমৃদায় চূর্ণ একত্র করিয়া মধুর সহিত মিশ্রিত করিয়া ১ রতি প্রমাণ বটিকা প্রেস্ত করিবে। এই ঔষধ সেবনাস্তে পিপাসা উপস্থিত হইলে মৃতার অথবা ইন্দুরকাণির কাপ চিনির সহিত পান করা কর্ত্তব্য। ইহাতে শীঘ ক্রিমি নষ্ট হয়।

ত্রিফলান্তং স্বতম্।

ত্রিকলা ত্রিবৃতা দম্ভী বচা কম্পিলকং তথা। দিলমেভির্গবাং মুক্তৈঃ দর্পিঃ ক্রিমিবিনাশনম্। দর্কান্ ক্রিমীন্ প্রণুদতি বঙ্কং মুক্তমিবাহুরান্।

ত্বত /৪ দের, গোমূত্র ১৬ দের, করার্থ— ত্রিফলা, তেউড়ী, বৃহৎ দন্তীমূলের ছাল, বচ, কমলাগুঁড়ি মিলিত /১ দের। এই ত্বত পান করিলে সমুদার ক্রিমি নষ্ট হয়।

বিড়ঙ্গঘৃতম্।

ত্রিফলায়ান্তর: প্রস্থা বিড়ঙ্গপ্রস্থ এব চ।
দীপনং দশমূলঞ্চ * লাভতঃ সমূপাহরেৎ ॥
পাদশেষে জলদ্রোণে শৃতে সপির্বিপাচরেৎ।
প্রস্থোনিতং সিন্ধুমূতং তৎ পরং ক্রিমিনাশনম্ ॥
বিড়ঙ্গস্থাতমেতদ্ধি লেহাং শর্করয়া সহ ॥
(দীপনং পঞ্চলান্ম্) * দ্বিপলং দশমূল্ঞেতি পাঠান্তরম্ ॥

ংরীতকী ১৬ পল, বহেড়া ১৬ পল, আমলকী ১৬ পল, বিড়ঙ্গ ১৬ পল; পিপুল,
পিপুল্মুল, চৈ, চিতানুল, শুঠ মিলিত ১৬
পল; দশমূল মিলিত ১৬ পল, পাকার্থ জল
৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। ত্বত /৪ সের।
কল্কার্থ—সৈরুব লবণ /১ সের। এই ত্বত
পান করিলে ক্রিমি নই হয়।

বিড়ঙ্গতৈলম ।

সবিড়ঙ্গগৰকশিলা-সিদ্ধং স্থ্যভিগলেন কটুতৈলম্। আজন নয়তি নাশং লিকাসহিতাংশ্চ যুকাংশ্চ॥ (শিলা মন'শিলা। গদকশিলাশ্যন্ম গদ্ধক ইতি ভাতুঃ)

কটুতিল / ও সের। কেলামূল ১৬ সের। কলাগ—বিভূদ, গন্ধক, মনঃশিলা মিলিত / ১ সের, একএ পাক করিবে। এই তৈল মস্তকে মন্দ্রন করিলে সম্পায় উকুন নষ্ট হয়।

ধুস্তুরতৈলম।

পুস্রপত্রকক্ষেন ভদ্রসেন চ সাধিতম্। তৈ**ল**মভাক্ষাত্রেণ যুকান্ নাশয়তি গুবম্॥

কটুতৈল /৪ সের, ধুতৃরাপাতার রস ১৬ সের। কন্ধার্থ—ধুত্রাপত্র /১ সের। একত্র পাক করিবে। এই তৈল মর্দ্ধনে মাথার সমস্ত উকুন মরিয়া যায়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

অথ ক্রিমিরোগে পথ্যানি।

আস্থাপনং কায়শিরোবিরেচনং ধুমঃ কফমানি শরীরমার্জনা। চিরস্তনা বৈশ্বরক্তশালয়ঃ পটোলবেত্রাগ্ররদোনবাস্তক্ষ্ । ছতাশ্মকার্দলানি সর্বপ-नरीनस्माहः दृश्हीकलाग्रिशः ভিজ্ঞানি নালীতদলানি মৌষিকং মাংসং বিভঙ্গং পিচুম্দিপল্লবম্॥ পথ্যা চ তৈলং তিলস্বপোঙ্বম भोगोत्र**ङ्ख्य जूरम** प्रकः मनु । পচেলিমং ভালমককরং গ্রাম্ মূত্রক তাম্বর্ম্বাম্বাওজন্। উট্টাণি মূআজাপয়াংসি রামঠং কারাজমোদা গদিরক বৎসক্ষ। कश्रीतनीतः समती यमानिका সারাঃ সুরাহরা ওরুশিংশপোন্তবাঃ । ভিক্তঃ কষ'্য়ঃ কটকো রদোহপ্যয়ং বর্গো নরাণাং ক্রিমিরোগিণাং স্থপত ॥

গুহে পিচকারি প্রদান, বিরেচন, নশু, ক্ষত্ম ক্রিয়া, প্রপান, শরীর্মার্জনা, বাশের ও রক্তবর্ণ বাত্মের পুরাতন তওল, পটোল, বেতাগা, রম্বন, বেতো শাক, চিতার পাতা, বহতীর ফল, তিব্রুদ্রব্য, নালিতা পাতা, ইন্দুরের অজীণতা, ঘত, মাষ্কলায়, মাংস, বিভুঙ্গ, নিম্বপত্র, হরীতকী, তিলের ও মাংস, হুগ্ধ, অমুরস, সর্যপের তৈল, সৌবীর (সন্ধানবিশেষ), শুক্ত, ব্যক্তির এই সমস্ত পরিত্যাজা।

তুষোদক, মধু, ধান্তাদি স্বয়ং পক্তব্য, পক্তাল, ভেলা, গোমূত্র, পান, মন্ম, মুগনাভি, উদ্বের মুত্র, স্বত ও হ্রগ্ধ, হিং, যবক্ষার, বন্যমানী, পরের, ইন্দ্রুব, লেবুর রুস, করোলা শাক, যুমানী, অওককার ও শিশুকার্ঠের সার, দেবদারু, তিক্ত ক্ষায় ও ঝাল রস এই সকল ক্রিমি-রোগির হিতকর।

ক্রিমিরোগেইপথ্যানি।

ছৰ্দ্দিঞ্চ ভাষেণাবিধারণক বিশ্বদ্বপানাশনমহিত নিদ্রাঃ। দ্রবঞ্চ পিষ্টার্মজীর্ণ একে মূতানি মাধান দ্ধি প্রশাক্ষ্॥ भारतर भारतारञ्जर भवुतः तत्रक িমীন জিঘাং থঃ পরিবর্জীয়েচচ ॥

ব্যন, ব্যন্ত্রো-গারণ, বিরুদ্ধ পান, বিরুদ্ধ পালিধা মাদারের পাতা, সর্যপ, কলার মোচা, ভোজন, দিবানিদ্রা, তরল দ্রবা, পিষ্টক, দ্ধি, পত্ৰপাক, মধুররস, ক্রিমিনাশেচ্ছু

ইত্যায়ুর্বেদ-সংগ্রহে। ক্রিনিরোগাধিকারঃ।

অথ পাণ্ডুরোগাধিকারঃ।

অথ পাণ্ডুরোগ-নিদানম।

পাণ্ডৱোগাঃ স্মঃঃ পঞ্চ বা এপিত্তককৈবফঃ। চতুৰ্গ: সন্ধ্ৰিপাতেৰ পঞ্চনো ভক্ষণান্মদ: ৮ ^{ব্যা}ধানময়ং লবণানি ম**স্তং** মূদং দিবাস্বর্মতীব তীক্ষ্ম। নিমেৰমাণ্ড প্ৰদুষা রক্তং দোহ'স্ব>ং পাঞুরতাং নয়তি॥ উণ্টেনষ্টারনগাত্রসাদ-মৃত্তক্ষণপ্রেক্ষণকটলোখাঃ। বিধা,ত্রপীতত্বমুগাবিপাকো ভবিষ্য**তত্ত্বত** পূর সুবাণি 💵

ইত্যুত্তনয়নাদীনাং রাক্ষরকারণাভতা। বাহপাণ্ডাময়ে ভোগ-কম্পানাহল্রমানয়ঃ। পীত্মুত্রশকুরেতো দাহতৃকাজ্বরায়িতঃ।

ভিন্নবিটকো২তিপাতাভ পিওগাঙাময়ী নরঃ ॥ ক্ষপ্রদেক্ষয়গুভুলাল**ন্তা**্রিগৌববৈঃ । পাভুরোগি কছাজুক্তিক্ত মুদ্রনয়নাননৈঃ॥ জন'রে।চকগল্লাস-ছছ দিওকারনাখিতঃ। পা ওরোগা ত্রিভিদে বিষয়াজাঃ কাণো হতে প্রিয়ঃ । মৃত্তিক দিন শালভা কুপা গুভা গো মলঃ। ক্ষায়া মাকুতং পিতৃত্যুৱা মনবা ক্ষম ॥ কোপয়েন দ্রমানীংশ্চ রৌক্যাছভঞ্ রুক্তরেং। পুরুত্তাবিপকৈব প্রে! এংসি নিরুণদ্বাপি॥ इंक्सियानार नमर इस एउएकानीयोकिमी उथा । পাভরোগং করো ।। ত বলবর্ণাখিনাশন্ম ।

পাপুরোগ পাঁচ প্রকার। যথা—বাতত্ত্ব, পিতত্ত্ব, কফজ, সলিপাতজ ও মুদ্রজণজ।

ব্যায়াম [ব্যায়াম স্থলে ব্যবায় এই পাঠও পৃষ্ট হয়, ব্যবায় অর্থাৎ মৈথুন), অম, লবণ, মন্ত, মৃত্তিকা, দিবানিদ্রা, তীক্ষবীর্য্য দ্রব্য (লক্ষা মরিচ ও রাইনর্যপাদি) এই সকল বাহুল্যরূপে সেবন করিলে, বাতাদি । দোষত্রয় রক্তকে পৃষিত করিয়া অককে পাণ্ডবর্গ করে।

পাপুরোগ উপস্থিত : হইবার পুর্বের স্বকের

মূটন (ফাটা ফাটা), মূণ দিয়া জল উঠা,

শরীরের অবসরতা, মূদ্ভক্ষণের ইচ্ছা, অকিগোলকে শোণ, মলমূত্রের পীতবর্ণতা এবং
অবের অপাক এই সকল লক্ষণ ঘটয়া থাকে।

বাতল পাণ্ডুরোগে ত্বক্ মূত্র ও নয়নাদি কৃষ্ণ কৃষ্ণ বা অরণ বর্গ হয় এবং কম্পা, সূচী-বেধবদ্বেদনা, আনাহ ও ত্রম প্রাণ্ডতি লক্ষণ উপস্থিত হট্যা থাকে।

পৈত্তিক পা গুরোগে সমস্ত দেহ এবং মল
মূত্র ও নেত্র অতি পীতবণ হয়। ইহাতে দাহ,
ভূষণ, জ্বর ও ভাঙ্গা মল নির্গম এই সকল
লক্ষণ সভযটিত হইয়া থাকে।

নোমাজ পা ছুরোগে মুখ ও নামিক। ২ইতে জলআব, লোগ, তক্র, আলভ, দেহের আতি ওরংতা এবং হক্ মুত্র নায়ন ও সাননের ভক্তবর্তি। জনিমার গাকে।

সামিপাতিক পাড়বোগে, উক্ত বাতাদি শক্ষণ সকল সংগটিত হয়। ইহাতে জ্বর, জক্তি, বমির বেগা বমি, ত্কা, রান্তি এবং ক্ষীণতা ও ইন্দ্রিশক্তিনাশ, এই সকল উপদ্রব ঘটিলে রোগিকে ভাগি করিবে।

মৃত্তিকভিদ্দণশিল ব্যক্তির বাতাদি দোষ অষ্ট্রের মধ্যে কোন একটা দোষ কুপিত হয় অর্থাৎ ক্যায়-রস্বিশিষ্ট মৃত্তিকা বায়কে, ক্ষার-বিশিষ্ট মৃত্তিকা পিতকে ও মধুর-রস্বিশিষ্ট মৃত্তিকা ক্ফকে কুপিত করিয়া থাকে। ভুক্ত মৃত্তিকা নিজ রৌক্ষা গুণে রসাদি পাতুসমূহকে ও ভুক্ত অমকে ক্লক্ষ করিয়া তুলে এবং ঐ মৃত্তিকা অজীর্ণ অবস্থাতেই রসবহাদি স্রোতঃ সকলকে পূর্ণ ও রুদ্ধ করিয়া ইন্দ্রিয়শক্তি, দীপ্তি, বীর্ষা ও সর্ব্ধগাতুসার ওক্ষংপদার্থের বিনাশপূর্বকে শীঘ্র বল বর্ণ ও অগ্নি নাশ করিয়া পাপ্তরোগ উৎপাদন করে।

অথ পাণ্ডুরোগ-চিকিৎসা।

সাধ্যন্ত পাঙ্বাময়িনং সমীক্ষ্য রিন্ধং হতেনোর্দ্ধমধন্য শুদ্ধম্। সম্পাদরেৎ ক্ষৌ দ্বতপ্রগাটেন হবীতকীচুর্গমটিয়া প্রয়োগোঃ ॥

লক্ষণাদি দশন কবিয়া পাণ্ডুরোগ সাধ্য বলিয়া বৃঝিতে পারিলে সেহনার্থ প্রথমে রোগিকে কল্যাণক, পঞ্চাব্য ও মহাতিক্তাদি মৃত পান করাইবে। পরে বিরেচন ও মৃত্তু বমন দারা উদ্ধাধঃ পরিশুদ্ধ করিয়া মৃত ও মধুর সহিত হরীতকী-চুণ বহুল ঔষধ প্রয়োগ দারঃ চিকিৎসানকরিবে।

পিবেদ্ মৃত্যু বা রজনী,বিপরং
যথ তিরুলাং তির্থকদেব বাপি।
বিরেচনাম্বাকুতান্ পিবেদ্ বা
যোগাংক্ত বৈরেচনিকান্ মুতেন।

পা পুরোগে ইরিদার কাথে ও ককে থিছা ছাত, ত্রিফলার কাথ ও কক্ষণার ত্রৈফলারত জ্বাধা ত্রেফলারত জ্বাধা বাত্তবাধুতে তৈওক ছাত প্রায়েজা বিশ্বা তেউড়ী প্রভৃতি বৈরেচনিক-দ্রব্যান্তর সহিত বিরেচক ঔষর ব্যবস্থেষ।

বিধিঃ স্নিদ্ধশ্চ সাংভাগে (ভক্ত-শাভস্ত পৈজ্ঞিকে। লৈঞ্জিকে কটুককোকঃ কংযো। নিভস্ত নিভাবে ।

বা ৩ জ পা গুরোগে স্লিগ্ধ ক্রিয়া, পিত্রণ পা গুরোগে তিক্ত প্রয়োগ ও শতিল ক্রিয়া, কফজ পা গুরোগে কটু রুক্ষ ও উষ্ণ ক্রিয়া এবং মিশ্র পা গুরোগে মিশ্র চিকিৎসা কর্ত্তব্য । পাঙ্রোগে সনা দেখা সগুড়া চহরীতকী।
পাঙুরোগে গুড়ের সহিত হরীতকী নিত্য দেবন করা কর্ত্তব্য।

ত্রিকলাকথিতং তোরং সপুত্রণ স্থার্করন্। বাতপাণ্ড্রাম্যা পীরো স্বাস্থ্যান্ত এজেদু ঞ্বন্ ॥

বাতজ পাণুরোগে ঘত ও চিনির সহিত ত্রিফলার কাথ নিত্য পান করিলে আশু উপকার হইয়া গাকে।

ষিশর্করং ত্রিবৃহদ্ধুরং গলান্ধ লোগিতক তি বং । কফপাজে চ গোড়্তানু লাং ডিলাং ইলীছকীন্ । নাগরং লোইচুবিং বা রুখনং গ্রান্থ ভবাজান্ । ভগাজ্যু বাল মূতের কফপাজ্যান্থ গিবেং । সাপ্রবাজিং গ্রাং মুলে ভাবিতং বাসানোর্ড । পাঞ্রোগ্রশাল্যকং গ্রান্থ গ্রাক্ষণ

পিত্তজ্নিত পাঙ্বোগে ২ তোলা ৫ মালা । ৪ রতি চিনির সংহ্ত ১০ মাধ্ন চ রতি তেউ**ড়ী** চুপ্মিশ্রিত করিয়া সেবন কালেব।

ক্ষজ পাঙ্বোগে, ২বাতকা গোমুত্র ভিজাইয়া রাখিবে। সেই রিল হরীতকী গোমুত্রে পেষণ ও গোমুত্র আলোড়ন করিয়া সেবন করিতে দিবে।

অথবা গোন্তের সাহত ও ঠচুল ৪ মাধা ও লোহভয় ১ মাধা, বা পিপুল চুণ ৪ মাধা, ৪ হরীতকা চুণ ১ মাধা, কিংবা ওজন শিলাজতু ১ মাধা অথবা রত বেরিছা ওগ্ওলু ৮ মাধা ব্যবস্থা করিবে। বলাহতুর্গ সাত দিবস গোমুজে ভাবনা দিয়া উহা গান্ধ।

> আয়ুজিল নালাকোনভালে। সংক্রি সম্প্রাধিক্রা, কুল ন্। এতনে 'দক্ত এখা চার্লেল্ফু এন পাঙ্গিতের দূলগতের নি ক্তঃ॥

নোইচ্প ক্ষাতিল, লিকচ্, (শুঠ পিপুল মরিচ) ও কুনের আটা। শীস প্রত্যেকর চুণ সমভাগ, সক্ষম শোনত স্বণমাফিক চুণ একত উভ্যক্ষণে মিশ্রিত ক্রিয়া মধুর সহিত্ মোদক প্রস্তুত ক্রিয়ে। এই মোদক তক্র জমুপানে সেবন করিলে অতি কঠিন পাণ্ডু রোগও বিনষ্ট হয়।

ফলত্রিকাদিকধায়ঃ।

কলতিকান্ত্রোসা-তিজ্ঞাভূনিধনিধজঃ। কংগঃ কৌদ্রুতো হতাৎ প.গুরোগং সকামলমু॥

ত্রিফলা, গুলঞ্চ, বাসক, কট্কী, চিরতা ও নিম উহাদেশ কাপ মধুন সহিত পান করিলে পাও ও কামলাশোগ প্রশমিত হয়।

वांगाफि-कगर्हा

বাসাওতানিথ করাতকট্যু-ক্ষাংকোত্যং সম্পান্ধী এ: । সক্ষেত্র পাভুষ্থাপ্রপিতং ইলামকং হত্তি ক্ফাদিরোগান্॥

বাসক, গুলক, নেনছান, চিরতা ও কট্কী ইহাদের কাথ মধুদংস্ক করিয়া পান করিলে পাঞ্চ, কামনা, রক্তাপত্ত, হলীমক ও কফদ্ধ রোগ সকল বিনষ্ট হয়।

লোহভত্ম-যোগঃ।

অতিওক্ষয়েভিত্ম সুণি প্রেডিযুত্ত লিছে। পারুরোগস্তা মান্য কামলাকা সর্বশ্র ॥

অতি বিশুদ্ধ অন্নত্ত পুট্ত) লৌছ-ভগ্ন স্বত ও মধু সংসোগে তেওন করিলে পাঞু ও কানলা রোগ বিন্ত হয়।

আয়োনলন্ত সভাৱে ভাগে গোন এনোবিতন্। মধুদাপত্তির চূল্য সং ভাজন বেজিবেয়। নীনেঞ্জিলনন্য শোধায়াও,'ময়াপ্যমূগ

পান্ধরোগিব শোথ থাকিলে, মন্ত্র বারংবাব সোত্যাল , আগ্নিংগ সন্তপ্ত ও গোন্ত নিবলিত মন্ত্র ভ গোন্ত নিবলিত মন্ত্র চুর্ল ধনাবাত ভাগ করিলা ভোজনের আদি মধ্য ও অক্টে সুত ও মধু সংনক করত সম্বের সহিত সেবন কালতে দেবে। অকুপান—তক্র কংবা হগ্ধ। ইহাতে পান্ধ ও লোপ নিবারিত এবং অগ্নি প্রদার হল।

অথ কামলা-নিদানম্।

ণা ভূরেণী তু নোহতার্থং পিতলানি নিষেবতে।
তক্ষ্ঠ পিত্তমকূছ মাংসং দগুণ রোগায় কলতে।
হারিদনেত্রঃ স ভূশং হারিদেছ নেথাননঃ।
রক্তপীতশকুলা তো ভেকবর্ণো হতেনিয়ঃ।
দাহাবিপাকদৌকল্য-সদনাক্ষ্টিক্ষিতঃ।
কামলা বহুপিত্রেষা কোঠশাধাশ্রমা মতা।

মে পাণ্ডরোগী বাছল্যরূপ পিত্তকর দ্রব্য সকল সেবন করে, তাহার কুপিত পিত, রক্ত ও সাংসকে দ্যিত করিয়া কাললা রোগ (স্থাবা) উৎপাদন করে। এই কামলারোগে রোগির নেত্র, ত্বক্, নথ ও আনন অত্যস্ত হরিদ্রাবর্ণ, মল-মূত্র পীতবা রক্তর্বে এবং শরীর বর্ষাকালের ভেকের তায় পীতবণ হয়। রোগির ইন্দ্রিয়শক্তি লোপ, দাহ, অপবিপাক, দৌর্বল্য, অবসাদ ও অক্টি হইয়া পাকে। সঞ্চিত্ত বহু পিত্ত হইতে কামলার উৎপত্তি হয়। ইহা হই প্রকার; এক প্রকার কোঠাশ্রয়া, অপর প্রকার রক্তাদিবাহাশ্রয়া।

অথ কামলা-চিকিৎসা।

কল্যাণকং পঞ্চান্যং মহাতিজ্ঞনগাপি বা । স্নেহনার্থং স্থাতং দক্তাৎ কামলাপাভুরোলিলে ॥ রেচনং কামলার্জ্জ নিপ্নজ্ঞানে প্রযোজ্যরে । ততঃ প্রথমনা কান্যা ক্রিয়া নিয়েজন বান্যা ॥

পাণ্ড ও কামলা নেনিকে কল্যানক মৃত, পঞ্চাব্য মৃত, অথবা মহাভিক্তক মৃত মেহনার্থ পান করিতে দিবে। ভাহাকে মেহ পান করাইয়া প্রথমে পিত্তহরণার্থ রেচন, ভংপরে শ্মন ঔষধ প্রয়োগ করিবে।

গুড়ু চীপত্রকক্ষা বা পিবেৎ হাত্রণ কামলা।

গুলঞ্চের পাতা বাটিয়া তক্রের সহিত সেবন করিলে কামলা প্রশ্মিত হয়।

গৰাং পয়ঃ সনাগরং প্রিয়ে নিহণ্ডি কামলান্॥

গব্যহগ্ধ শুঁঠের গুঁড়ার সহিত পান করিলে কামলা বিনষ্ট হয়। লৌহচূর্ণং নিশাযুগাং ত্রিফলা কটুরোহিণী। এলিফ মধুসূর্পির্জাং কামলার্ত্তঃ সুখী ভবেৎ ॥

লৌহচূর্ণ, হরিজা, দারুহরিজা, ত্রিফলা ও কট্কীচূর্ণ, স্বত এবং মধুর সহিত লেহন করিলে কামলা বিনষ্ট ২য়।

নিশাচুৰ্ণ কৰ্মিতং দপ্তঃ প্ৰমিতং তথা।
া! :: সংসেবনং কুলাৎ কামলানাশনং প্রম্ ॥

হরিদ্রাচূর্ণ ২ তোলা, ৮ তোলা দধির সহিত প্রাতঃকালে সেবন করিলে কামলা রোগ নিবারিত হয়।

জিফলায়া গুড়্চা বা দাক্যা নিখস্ত বা রসঃ। প্রতিম ক্ষিকসংযুক্তঃ শীলিত কোমলাপ্তঃ ॥

জিদলা, ওড়ুচী, দারহরিকা বা নিমের রদ মধুর দহিত প্রতাহ প্রভাতে পান করিলে কামলারোগ প্রশমিত হয়।

অঞ্চনং কামলাত্তন্ত দেশেপুষ্পীরমঃ ধ্রতঃ। নিশাগৈরিকধাত্রীণাং চুর্বং বা সংপ্রকল্পায়ং ॥

কামলারোগির নেত্রে ঘল্যসিয়ার রস অথবা হরিজ্ঞা, গোরমাটী ও আমলকী চুর্ণ মধুব সহিত মিশ্রিত ক'রিয়া অঞ্জনরূপে প্রয়োগ করিলে কামলারোগ নিবারিত হয়।

নশুং কলে। চন্ত্ৰং বা জ্বোহ বা জালিনি ফলন্।

কাকরোলমূলের রস অথবা পীত ঘোষাকল চূর্ণ বি ঘোষাকল জলে গ্রিয়া দেই জল নভারপে ব্যবহার করিলে কামলা রোগের শান্তি হয়।

এপংরতি ক'ফলাজিং নতেন মুমারিকাজলং সভাঃ। সূতকুমানীব বাসের নতা লইলে কামলা বেলা সভা প্রশামিত হয়।

> স্বয়োরজো ন্যোযান্ডস্পচুন্থ নিহেন্ধরিদাং ক্রিফনায়িতাং ন । সন্ধরা কার্মাননাং বিভেণ্ড হিতা গ্রাক্ষা সম্ভল্ড চ শুষ্টা ॥

লোহচ্ণ, ত্রিকট্ ও বিদ্নস্থ এথবা দাব-হরিদা ও ত্রিকলা চুর্ণ মধু ও গ্রত সহ লেহ কিংবা বিরেচনাথ শর্করা ও তেউড়ীচ্ব অথবা শর্করা, তেউড়ী ও রাথালশ্লা বা শ্রড় ও শুঠ চুর্ব কামলারোগে হিতকর। তুল্যা অয়োরজঃপণ্যা-হরিদ্রাঃ কৌদ্রদর্পিষা। চূর্ণিতাঃ কামলী লিহুংদ্ গুড়কৌদ্রেণ বাভয়ংম্॥

লোহচূর্ণ হরীককী ও হরিদ্রা চূর্ণ, মধু এবং ঘতের সহিত অথবা হরীতকী চূর্ণ গুড় ও মধুর সহিত লেহন করিলে কামলারোগ বিনষ্ট হয়।

ধাত্রীলৌহরজোন্যোষ-নিশাক্ষোক্তার্যার্করা:। লীচ্বা নিবারয়ত্যান্ত কামলামুদ্ধতামপি।

আমলকী, লোহচূর্ণ, ত্রিকটুও হরিদ্রা, মূত মধু ও চিনির সহিত লেহন করিলে উংকট কামলাও আগু নিবারিত হয়।

অথ কুম্ভকামলানিদানম্।

কালাওরাৎ বৈশীভূনা কৃজ্ঞা স্থাৎ বস্তুকামলা।।
কালাধিকের কামলারোগ ধরীভূত হইয়া
কুন্তুকামলাকপে পরিণত হয়। ইহ: অতি
ক্ষুদাধ্যে।

অথ কুন্তকাসল:-চিকিৎস:।

কৃষ্টাপাক মল'য়'য় হিত্ত কামতিবো বিধিঃ দ

কামলাব চিকিৎসামুসাবে কুন্তকামলার চিকিৎসা করিবে।

> দধ্যককাঠেম লনায়সভ গোমুক্রিকালিতমইবারান্। বৈচুণা লীচং মধুনা চিরেণ কুছাহেরং পাঙ্গদং নিহতি।

বহেড়া কাঠের অগ্নিতে মণ্ডুর দ্যা করিয়া ক্রমশ: আট বার গোম্ত্রে নির্ব্বাপিত করিবে। সেই মণ্ড্র চূর্ণ করিয়া মধুর সহিত লেহন করিলে কুম্বকামলা রোগ অচিরে বিনষ্ট হয়।

অথ হলীমক-নিদানম।

যদা তু পাণ্ডোর্বর্ণ: স্থান্ধরিত: স্থাবপীতক:। বলোৎসাহক্ষয়ন্ত্রনা মন্দায়িত্বং মুহুত্বর:॥ স্ত্রীবহর্ষেহক্ষমূলক সাহস্তৃকার্মান্তর্ব ম:। হলীমুক্থ তুলা তুলা বুলাদুনিলপিত্তত:॥ যথন পাণ্ডুরোগির বর্ণ হরিত, গ্রাব বা পীত হয় এবং বল ও উৎসাহের হ্রাদ, তব্দ্রা, অগ্নিমান্দ্য, মৃতুজ্ঞর, রতিক্রিয়ায় অনিচ্ছা, অঙ্গবেদনা, দাহ, তৃষ্ণা, অক্লচি ও ভ্রম এই সকল উপদ্রব ঘটে, তথন পাণ্ডুবোগ হলীমক নামে অভিহিত হইয়া থাকে।

অথ হলীমক-চিকিৎসা |

প ভূরোগতিয়াং সর্বাং যেকৈয়েচ্চ হলীমকে। ক'মলায়াঞ্চ যাদিষ্টা সাপি কার্যা ভিষম্বরঃ॥

হলীমক কোগে পাঙু ও কামলারোগোক্ত চিকিৎসা করিবে।

মারিতঞ্চেদ চুর্বং মুক্তাচুর্বেন সংযুত্ম। পদিরস্তা ক্যাচেদ সিবেদ্ধন্তং হলামকন্॥

জারিত লৌহচ্ণ, ধয়েরের কাথ ও মুস্তা চুণের সঠিত বেবন কবিলে হলীমক রোগ নিবাবিত হয়।

সিলাবিজাবলাগে%-(এফলারজনীযুলৈ: । নৌহং লিজাং সমধ্যাজ্যং হলীমকনিবুভয়ে ॥

হলীমক-বোগ-শান্তির জ্ঞাকট্কী, বেড়েলা, ষষ্টমধু, ত্রিকলা, হাস্দ। ও দাকহাক্রা প্রত্যেক সমভাগ, সার্বসমান লৌহ; একর চুর্ণ কবিয়া মত সধু ও চিনিব সৃহিত লেহন কবিবে।

যোগরাজঃ।

ত্রিকলায়ারয়ো ভাগারয়েসকচুকশু ৮।
ভাগালিচ রক্মলক্ত বিভ্রন্থানাং তথৈব ৮॥
প্রশাস্ত্রনা ভাগান্তথা রূপামলস্য ৮।
মান্দিকস্য বিশুদ্ধস্য লৌহস্য রক্ষন্তথা ॥
অস্ট্রৌ ভাগাং সিতায়াশ্চ তৎসর্কাং শ্রক্তুর্বিতম্।
মান্দিকেণাপ্রতং স্থাপামারসে ভাজনে গুভে ॥ প্রাপ
উদ্পরসমাং মাত্রাং ততঃ থাদেদ্ যথায়ি না
দিনে দিনে প্রয়োগেণ জীর্ণে ভোজাং য়র্থেন্সি
বর্জয়িছা কুল্থাংশ্চ কাকমাটীং কপোত্রকান্
বোগরাজ ইতি থ্যাতো বোগোহয়মমূতোপম
রুসায়ন্মিদং ভোজং সর্ক্রোগহরং পরম্।
পাঞ্রোগং বিষং কাসং যক্ষাণিং বিষমক্তর

দারহরিদ্রা, ত্রিফলা, ত্রিকটু ও বিড়ঙ্গ প্রত্যেক সমভাগ এবং সর্ম্বসম লৌহচূর্ণ একত্র করিয়া মধু ও ঘতের সহিত সেবন করিলে কামলা ও পাণ্ডু প্রভৃতি রোগ নষ্ট ২য়।

বজ্রবটকমণ্ড্রম্।

পঞ্চলাবং সম্প্রিচং দেবদাক ফলত্রিকম্।
বিভূক মুক্তযুক্তাশ্চ ভাগাজিপলসন্মিতাঃ ॥
যাবস্ত্যোক্তান চূর্ণানি মঞ্বং বিশুণং ততঃ।
পক্ষ্যা চাইগুণে মৃত্রে ঘনীভূতে তত্ত্বরুবেং ॥
ততাংক্ষমাত্রান্ বটকান্ পিবেৎ তত্ত্বেণ তক্তত্ত্ব্।
পাঞ্রোগং জয়তোষ মক্ষাপ্রিজমরোচকম্ ॥
অশাংসি গ্রহনিদোষমূকক্তমধাপি চ।
ক্রিমিং প্লীহানমূদ্রং গলরোগঞ্চ নাশ্রেং ॥
মঞ্রো বজ্ঞনামায়ং রোগানীক্বিনাশনং ॥
"নিক্রাপ্য বঙ্গো মূত্রে মঞ্রং প্রাক্ষমিষ্টে।
গ্রাহ্যক্তাইগুণিতং মৃত্রং মঞ্রচুণ্ডঃ ॥"

গোমৃত্তে শোষিত মণ্ডুর চুর্গ ৬ পল, পাকার্থ গোমৃত্র /৬ সের। আসমপাকে পশ্চালিখিত দ্রুর সকলের চুর্গ প্রক্ষেপ করিয়া সমুদায় আলোড়ন করিয়া (৪ মাধা পরিমাণে) বটিকা প্রস্তুত্ত কবিবে। প্রক্ষেপ্য দ্রুরা — পিপুল, পিপুলমূল, চি, চিতামূল, ভুঠ, মরিচ, দেবদারু, ত্রিফলা, বিড়ঙ্গ ও মৃতা, ইহাদের প্রত্যেকের চুর্গ হ তোলা, অথাং সমুদায়ে ২৪ তোলা। তক্রেভোজী হইয়া তক্র অমুপানে এই মণ্ডুর সেবন করিলে পাণ্ড, কুন্তুকামলা ও অম্বান্ত রোগ নই হয়।

পুনর্বাদিমপ্রম্।
পুনর্বা তির্ছুজীপিলনামরিচানি চ।
বিড্লং দেবকাঠঞ্চ চিত্রকং পুনরাহ্বয়ন্।
ক্রিকানা বে হরিপ্রে চ দত্তী চ চবিকা তথা।
কুটলানা ফলং ভিক্তা পিলনীমূলমূত্তকম্।
এতানি সমভাগানি মপুরং বিত্তণং ততঃ।
গোম্ত্রেংইগুনে পজ্ব। স্থাপমেৎ নিম্নভালনে।
পাপুশোধোদরানাহ-শুলার্শাক্রিমিগুল্লহ্ব।
শোধিত নপূর ৫ পল, পাকার্থ গোমৃত্র
বের। আসরপাক্তে—পুনর্বা, ভেউড়ীমূল,

শুঠ, পিপুল, মরিচ, বিজ্প, দেবদারু, চিত্তামূল, কুজ, আমলকী, হরীতকী, বহেড়া, হরিদ্রা,
দারুহরিদ্রা, দস্তীমূল, চৈ, ইন্দ্রুষর, কট্কী,
পিপুলমূল ও মূতা, ইহাদের প্রত্যেকের চূর্ণ
১ তোলা পরিমানে প্রক্ষেপ দিয়া আলোড়ন
করিয়া নামাইবে। নাত্রা—৪ নাধা পর্য্যন্ত।
ইহা দেবন করিলে পাঞ্জ ও শোথ প্রভৃতি
অনেক রোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

পঞ্চায়তলোহমণ্ডুরম্।

লৌহং তামং গদ্ধান্তং পারদঞ্চ সমাংশিকম্।

ক্রিকট্রেফলা মুন্তং ডিক্রং চিক্রং তথা ।

করাতং দেবকা ইক্ ইরিদ্রাধ্যপুদ্ধন্।

যানী জীরমুগ্রক শটাধান্তকচব্যক্ষ্।

প্রত্যকং লৌহভাগক শ্লুকুর্ন্তি করেছে।

সর্বচ্র্বনা চান্ধাংশং স্কুদ্ধে লৌহকিটকম্॥

গোম্তে পাচয়েদ্ বৈছো লৌহকিটং চতুপ্ত বে।
পুনর্বাইগুর্বিত করেছ বৈছো লৌহকিটং চতুপ্ত বে।
পুনর্বাইগুর্বিত কর্পং তত্র প্রদাপয়ে ॥

শিদ্ধেবতারিতে চ্র্বং মধুনং পলমা রক্ষ্
ভক্ষয়েৎ প্রাত্রক্রপায় কোকিলাকান্ত্রণানতঃ ॥

গ্রহ্মীং চিরজাং হস্তি স্থোধং পাত্রকামনাম্।

ভাগ্রিক ব্রুক্তে দাস্তং অর্মান্বক বিশেষতঃ।

কান্ধাং যাসং প্রতিশ্রায়ং কান্তিপুত্রিবিদ্ধন্ম্।

ভার সর্বচর্বনাংশং ম্ভব্রচর্বামিতি বন্ধাঃ।

গোম্বার্ক্তির্বানাংশং ম্ভব্রচর্বামিত বন্ধাঃ।

গোম্বার্ক্তির্বানাংশং ম্ভব্রচর্বামিতি বন্ধাঃ।

গোম্বার্ক্তির্বানার বিশেষতঃ।

ভার সর্বচর্বানার বিশেষতার বিশেষ বিশ্বনার বিশেষ বিশ্বনার বি

ভাব স্বৰ্গ্ হৰ্ণ কৰিছে কৰিছে। গোমুত-পুনৰ্বাকাশাভাং মঙ্গাণাং পাকঃ, চুৰ্ণানাং পক্ষেপঃ, শীতে চুমধুনঃ।

লৌহ, তাত্ৰ, গন্ধক, অভ্ৰ, পারদ, ত্রিকট্ট, মূতা, বিজ্ঞ্গ, চিতামূল, চিরতা, দেবদারণ, হরিন্ডা, দারুহরিদ্রা, কুড়, कीता, क्रककोता, गंधी, धरन ७ हि देशानत প্রত্যেকের চুর্ণ ১ তোলা, চুর্ণসমষ্টির অর্দ্ধেক শোধিত মণ্ডুর (বুদ্ধগণের মতে চুর্ণের সমান মধুর)। মধুর চুর্ণের ৪ গুণ গোমূতা, ৮ গুণ পুননবার কাথ। গোমূত্র ও পুননবার কাথে ম্ভুর চুর্ণ একত্র পাক করিয়া আসম্নপাকে লৌহাাদ চূর্ণ সমস্ত প্রক্ষেপ দিয়া উত্তমক্রপে মিশ্রিত করিয়া নামাইয়া नहर्व। ंश्रेल गधु > भन मिखिड করিবে।

বিবেচনা মতে দিবে। অমুপান—কুলে-খাড়ার রদ। ইহাতে গ্রহণী, পাণ্ট, কামলা ও শোথ প্রভৃতি নানারোগ নষ্ট হয়।

ক্র্যেশাদিমভূরম্।

জাষণং তিক্লা মৃত্য বিভূক্ষং চন্য চিত্ৰকৌ।
দাবাঁছিছ মান্ধিকো ধাতুর্য স্থিকং দেনদার চ ॥
এষাং বিপলিকান ভাগাংশচ্পান্কুবা পৃথক্ পৃথক্।
মভ্রং বিশুল ক্রি ভাগাংশচ্পান্কুবা প্রক্ পৃথক্।
মভ্রং বিশুল ক্রি তিমিংজ্ব প্রক্লিপে তিতঃ।
উচ্ ব্রসমান ক্রা বটকাংস্তান্ যথায়ি তু ॥
উপযুক্তীত তক্রেন সংখ্যং জীর্নি চ ভোজনম্।
মভ্রবটকা হেতে প্রাণদাং পাভ্রোণিণাম্ ॥
কুঠাক্সরকং শোধ্মুক্তজ্ঞং কফাময়ান্।
অশাংসি কামলামেহান্ শ্রীহ্নিং শময়াক্ চ গ
নিবলাপ্য বহুণো মৃত্রে মভূরং গ্রাহ্মিনতে।
গ্রাহ্মন্তাইগুলিতং মৃত্র মভূরং গ্রাহ্মিনতে।

ত্রিকটু, ত্রিফলা, মূতা, বিজ্ঞ, চৈ, চিতামূল, দারুহরিদ্রার ছাল, স্বানাজিক, পিপুলমূল ও দেবদারু ইহাদের প্রত্যেকের চুর্ণ ২
পল, চুর্ণসমষ্টির দ্বিগুণ শোধিত মঙ্রচুর্ণ, মঞ্রের ৮ গুণ গোমৃত্র। অত্যে গোমৃত্রে মঙ্র
পাক করিয়া ঘনীভূত হইলে চুর্ণ সকল প্রক্ষেপ
করিবে। ২ তোলা মার্রায় বটিকা প্রস্তুত্ত করিয়া রাখিবে। উপস্কুল মার্রায়, তক্রের সহিত্ত সেবন করিতে দিবে। মঙ্গ সেবন কালে স্প্রপ্য দ্ব্যা ভোজন এবং অজীর্ণসত্বে ভোজন পরিত্যাগ কর্ত্বর্য। ইহাতে পাঞ্চ, কামলা, মেহ, শ্লীহা, প্রভৃতি নানারোগ উপশ্যিত হয়।

ত্রৈলোক্যম্বন্দরে রসঃ।

মানকৈকং ততঃ স্তং বড়লং বহু লোইকন্।
গন্ধকং ক্রিকলা-ব্যোবং চূর্বং মোচরসম্য চ ॥
ম্বলী চামুতাসস্বং প্রত্যেকং পক্ষাগিকন্।
ভাবরেৎ সর্বমেকতা ত্রিক্লানাং ক্যারকে ॥
ভাবনা বিংশতিদে গ্লা দশরাত্রং স্ভাবনা।
শিগ্রুটিত্রকমূলাভ্যামষ্টধা চ পৃথক্ ॥
কৈলোকাস্কলরো নাম রসো নিক্ষ্মিতো হিতঃ।
সিতরা চ সমং কৌত্রৈঃ শোণপাভুক্ষাপহং ॥
ম্বাভিসারসংযুক্ত-সর্কোপ্রবন্ধনঃ ॥

পারদ ১ ভাগ, অন্ন ৬ ভাগ, লৌহ ৮ ভাগ, গন্ধক, ত্রিফলা, ত্রিকটু, মোচরস, তালম্লী ও গুলঞ্চনার প্রত্যেক বস্তু ৫ ভাগ ; এই সকল দ্রব্য একত্র করিয়া ত্রিফলার কাথে ১০ দিনে ২০ বার ভাবনা দিবে। পরে সজিনা ও চিত্রামূলের রসে পৃথক্ পৃথক্ করিয়া আট বার ভাবনা দিয়া ৪ মাধা পরিমিত বটা প্রস্তুত করত চিনি ও মধুব সহিত সেবন করিবে। এই ঔষধ সেবনে শোপ, পাণ্ণ, ক্ষয় এবং উপদ্রবের সহিত জ্বরাতিসার বিনষ্ট হয়।

চন্দ্রস্থ্যান্তাকে। রসঃ।

পুতকা গদ্ধকং লৌহমজকণ শলং পুলম্। শঘটক্ষবনটিক «প্রত্যেক দ্বিপলং হলেও ॥ গোকুববীজচর্ব্য গলৈকং তবে দায়তে। সর্বমেকীকু ভং চুণ্থ বাস্প্রযন্ত্রে 'বভাবয়েও॥ পটোলং পর্ণতং ভাগা বিদানী শতপুষ্পিক।। কুওলা বাসকং দণ্ডী কাকসাচালবাকণী। ব্যাভুঃ কেশরাজন্চ শালিক্ষা দ্যোপপুশ্লিকা। প্রত্যেক।র্দ্ধপলৈর্দ্র'বৈর্ভাবিহিন্ধা বটাং বুক ॥ চতুদ্দিশ বটাঃ থানেচছাগাত্রগাতুপানতঃ। গ্ৰনানন্দনাথে জেলচন্দ্ৰহা (গুকে বসঃ । হলীমকং নিহন্ত্য'শু পাঙ্রোগং সকামলম্। জার্গজরং সবিষ্যং রক্তপিত্ররোচক্য ।। শূলং গ্লীহোদরানাইমন্ত্রী রাপ্তক্ষবিদ্রবান্। শেথেং মন্দানলং কাসং খাসং উকাং বুমিং জমিষ্ ॥ डगन्रतापमः(१) । तक्कख्वगंभाः।। দ'হং তৃষ্ধামুকত্তম'মবা ৮ং কটাএইন্ । যুক্তা। মজেন মজেন মুলাবুয়েণ বারিণা। গুড় চীত্রিফলাবাসা-ক্রেমনীরেণ বা কচিৎ "

পারদ, গন্ধক, লৌহ গু:অল্ল প্রত্যেকের ১
পল, শন্ধভন্ম, সোহাগার থৈ ও কড়িভন্ম
প্রত্যেক ৪ তোলা, গোক্ষুরবীজ চূর্ণ ১ পল ;
এই সমুনায় একত্র করিয়া পটোলপত্র, ক্ষেত্তপাপ্ডা, বামুনহাটী, ভূমিকুল্লাণ্ড, শুল্ফা,
গুলঞ্চ, দন্তী, বাসক, কাক্যাচা, রাথালণণা,
পুননবা, কেশুরিয়া, শালিঞ্চ ও ঘলঘদিয়া
ইহাদের প্রত্যেকের অর্দ্ধ পল প্রিমিত রসে
তপ্তথক্ষে যথাক্রমে ভাবনা দিয়া ১ রতি প্রমাণ

* বরাটিক। শঙ্ককেন্টে বা পাঠ:।

বটিকা প্রস্তুত করিবে। প্রভ্যুহ এক এক বটিকা দেবনীয়। ঔষধ দেবনের নিয়ম ১৪ দিন। সাধারণতঃ অফুপান—ছাগত্র্য়। অবস্থাবিশেষে মন্ত্র, অয়মণ্ড, মুদ্গযুষ, গুড়ুচীর কাথ, ত্রিফলার কাথ বা বাসকের কাথের সহিত দেবন করিতে দিবে। ইহাতে পাণ্ড, কামলা, হলীমক, জীর্ণজ্বর ও অভ্যান্ত নানাবিধ রোগ নই হয়।

প্রাণবন্ধভো রসঃ।

ইকুলসন্তবং স্তং গলং কার্যালসন্তবম্।
কৌহং তাব্রং বরাটাক তুখা হিন্তু ফলতরম্।
সূহীনূলং ববন্দারং জৈপালং । জগং তিপুং।
প্রত্যেকত্ত সমং ভাগং চাগীত্রদেন ভাগরেং।
চতুও প্রাং বটাং বাদেদ বারিগা নধুনা সহ।
প্রাণবহুতনামায়ং গংলানন্দভাবিতঃ॥
প্রেদেশক সংগীক্ষা সূত্রা। বা ক্রেটিবছনম।
নিহন্তি কারলাং পাঙ্গানাহং প্রাপদ তথা॥
গলগভং গঙ্মালাং রগানি চ হলালবম্।
শোধং শূলমুক্তওং স প্রহ্রংগি ভারেং॥
বাজিং মুড্গা জ্বিং হিন্তুং কাসে বাসং গলগ্রহম্।
অসাধ্যং স্থেপাত্র ভাগিত্রমারোচকন্॥
ভল্লোক্তবং শোকং মহোগ্রাক ভলেদেরম্।
দাতঃ পরতরহ ভোগং কামলাত্রিক্রাপ্রম্ন।

হিন্দুলোখ পারদ, আমলাসার গন্ধক, কুদ্ধম, লৌহ, হাত্র, কড়িভত্ম, তুঁতে, হিং, ত্রিফলা, সিজবুক্ষের মূল, যবক্ষার, জন্ধপাল, সোহাগার থৈ ও তেউড়ীমূল এই সমূদায় সমভাগে মন্দিন করিয়া ছাগগুগ্ধে ভাবনা দিয়া ৪ রতি পরিমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। অমুপান—মধু বা জল। ইহাতে পাঞ্জ, কামলা, হলীমক ও শ্লীপদ প্রাস্তুতি রোগ নষ্ট হয়।

পঞ্চাননবটী ।

ভদত্ত তথা গন্ধং মৃত্যামান্তগ্যুগু ।
কৈপান্ববিজং তুল্যাংশং যুতেন গুড়কাকুত্ম্ ॥
ভদ্মেদ্ বদরাস্থাভং শোষপাণ্ডশাস্তরে ।
পঞ্চাননবটা খাতো পাড়ুগোগকুলাস্তিকা ॥
(অতা সক্ষমনং জৈপান্ম । যুতেন প্রক্রং সংমন্দ্যি
বিশ্বভাগে সংস্থাপ্য বদরাস্থিপ্রমাণং ভক্ষরেং। ফোণপুশীরসম্ভূপিবেং) ।

পারদ, গন্ধক, তাম, অল ও গুগ্ওলু ইহাদের প্রত্যেকের সমভাগ, সর্নসমান জন্ন পাল বীজ চুর্ল; একত্র ন্বতে মন্দন করিয়া বদরাস্থি (ব্যবহার ২ রতি) প্রমাণ বটিকা প্রাপ্তত করিবে। ইহা সেবন করিলে পাঙ্-রোগ ও শোথ নই হয়। অনুপান—বল-ঘসিয়ার রস।

পাও্দুদনে। রসঃ।

রসং গদ্ধং মৃতং তাম্রং জরপালক গুগ গুলুম্।
সমাংশনাজাসংসূতাং পড়িবাং কারছে হিষক্।
একৈকাং বাদ্যেমিতাং গাড়েশোপপাশুয়ে।
শীতলক জলকামং বর্ত্তিং পাড়েশলন।
পারদ, গদ্ধক, তাম, জয়পাল ও গুগুলু
এই সম্দায় স্মভাগে লইয়া সতে নক্ষ ক্রিয়া
গুড়িক। প্রস্তুত ক্রিবে। পাড়ুস্দ্দ রস্
সেবন কালে শিতল ভাল ও অনু ব্র্জনীয়।

পাঙ্পঞ্চান,না রসঃ।

জোহাজকক ভাষ্ট্রক পলিবাসি পূথক পূথক্।
জিকট্ন নিজন দত্য চাবিকং দুক্তারকম্।
জিকট্ন নিশে ছে চ নিস্তা মাণ্ট্রকম্।
কুটজক্স কলং নিজা দেবদারে বচা ঘনম্।
প্রত্যেকমেষাং কর্মজ্ঞ মিন্দ্রিংগণ্ড পাকবিদ্রিষক্।
সর্বক্স দ্বিং গং দেবং শুদ্ধমান্তর প্রদাপরেও।
ভক্ষের প্রতিক্রমান্ত জন্মান্তর প্রদাপরেও।
ভক্ষের প্রতিক্রমান্ত জন্মান্তর দিয়েও।
ভক্ষান্তর প্রতিক্রমান্তর দ্বান্তর ।
ভক্ষান্তর শোগপান্ত্রক্রম্ভক্ নাশরেও।
ভক্ষান্তর দ্বান্তর বলবান্তিকারক:॥
বক্তর স্লীইগুল্লক্ষ্যক সর্ব্বোগ্রর: গরঃ॥
বক্তর স্লীইগুল্লক্ষ্যক্ষর পরঃ॥

লোহ, অভ, তাত্র, প্রভ্যেক ১ পল, বিকটু, বিদ্লা, দত্তীমূল, চৈ, ক্ষজীরা, চিতামূল, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, তেউড়ীমূল, মাণমূল, ইন্দ্রয়র, কট্কী, দেবদাক, বচ ও মূতা, প্রত্যেক ২ তোলা, সর্ব্যমষ্টির বিগুণ মণুর, মণুরের ৮ গুণ গোমূত্র। প্রথমে গোমূত্র মণুর পাক করিবে, পাক দিল্ল হইলে লোহ ও ভাত্র প্রাভ্ত সমস্ত দ্রব্য প্রক্ষেপ দিবে। উষজ্ঞানে স্ব্

ইহা দেবন করিলে পাণ্ড, হলীমক ও শোপাদি বিবিধ রোগের শাস্তি হয়।

আনন্দোদয়ো রস্থ

শারদং গন্ধকং লোহমত্রকং বিবনেব চ।
সমাংশং মরিচন্তান্তী উঙ্গণ্ঠ চতুও গ্র্ম ॥
ভূকরাজরসৈঃ সপ্ত ভাবনাশ্চারদাড়িখৈঃ।
বিপ্তপ্তং পর্ণপত্তন থাদেৎ সায়ং নিহন্তি চ ।
বাতক্ষেত্তবান্ রোগান্ নন্দাথিং গ্রংগাং জরান।
অক্চিং পাভুতাকৈব জয়েদ্চিরসেবনাৎ ॥
নত্তমগ্রিং করোতে য কালভাপ্রতেজসম্।
পর্বতোহিদি হি জীয়েত প্রান্নাদ্তা দেহিনঃ॥
ভর্করেমন্নায়ক ভক্ষণাদেব জীয়াতি॥
(রসেক্ষ্যারসংগ্রহেত্ত 'লিঘ্নন্দরসঃ' ইতি সংজ্ঞা)

পারদ, গ্রহণ, লেহি, অল ও বিষ প্রত্যেক ১ তোলা, মানিচ ৮ তোলা, সোহাগার থৈ ৪ তোলা , এই সমুদায় এক এ মাজেয়া ভুঙ্গরাজ-রসে ও অমুদাজিম ফলের রসে ৭ বার ভাবনা দিয়া ২ বতি পারামত বটক। প্রস্তুত করিবে। পানের সাহত সায়ংকালে স্বেনীয়। ইহা সেবন করিলে অন্চবে অক্চি, পাভুরোগ ও মন্দাগ্রি প্রভৃতি নানাবিধ পীজা প্রশমিত হয়।

অমৃতলতাগ্যং মৃতম্।

অমৃতলতারসক্ষ-প্রসাধিতং তুরগবিশ্বিষঃ সর্গিঃ। ক্ষীরচতুগুর্ণমেতদ্ বিতরেচ্চ ইলীমকার্ডেভ্যঃ॥

মাহিব ঘত /৪ দের, হ্র ১৬ দের,
পাকার্থ জল ১৬ দের। স্নীর ইাকিয়া
ফোলিয়া তাহাতে শিলাপিট গুলঞ্চ /১ দের
ও গুলুকের রস ১৬ দের দিয়া পাক করিবে।
ইহা সেবনে হলীমক নিবারিত হয়। মাত্রা—
কর্মি তোলা হইতে ২ গোলা পর্যান্ত।
ক্রমপান—উষ্ণ হ্রম।

হরিদ্রাত্য মৃত্যু।

ছরিলাতিফলানিশ্ব-বলামধুক্সাধিতম্। সক্ষারং মাধিবং স্পিঃ কামলাংরমূত্রম্॥

মাহিষ ছত ১৪ সের, ১% ১% ১% সের, পাকার্থ জল ১৬ সের। কন্ধার্থ—হরিদ্রা,

বিফলা, নিমছাল, বেড়েলা, ষ্টেমধু মিলিত /> সের। মাত্র:—২ তোলা। এই স্বত পান করিলে কামলা রোগ নট হয়।

মূর্কাভাং গ্লভয়।

মুব্বাতিকানিশাবাস-কৃষ্ণচন্দনপর্বটিঃ । তায়স্তাবংসভূনিদ-পটোল সুবদাকভিঃ ॥ অক্ষনাতেমু তপ্রস্থং সিদ্ধং কারচমূত পামু। পাপুতাম্বরবিকোট-শোগার্শোরক্রপি ভতুৎ॥

মাহিব ঘৃত ১৪ সের, তথ্ব ১৬ সের,
পাকার্থ জল ১৬ সের। কলার্থ—মুর্কামূল,
কট্কী, হরিন্তা, ত্রালভা, পিপুল, রক্তচন্দন,
ক্ষেত্রপাপ্ডা, বলাডুমুর, ইন্দ্রব, চিরতা,
পটোলপত্র, মূতা ও দাকহরিন্তা ইহাদের
প্রত্যেকের ২ তোলা। নাত্রা—২ ভোলা।
এই ঘৃত পান করিলে পাছুরোল, জর প্রভৃতি
নালাবির পীড়ার শান্ত হয়।

ব্যোষাখ্য মৃত্যু।

নোখং বিখং বিরজনী তিফলা বিপুনন বম্।
মুক্তান্তমোরজঃ পাগে বিড়ক নেবাক চ।
বৃশ্চিকালী চ ভাগী চ সক্ষাবৈত্তৈ, শৃতং স্থতম্।
স্বধান প্রশম্যাতাত্ম বিকারান্য স্থিকাকুতান্॥

ত্রকটু, বেলগুঁঠ, হারদ্রা, দারুহরিদ্রা, ত্রিক্লা, শ্বেতপুন্নবা, রক্তপুন্নবা, মৃতা, লৌহচুর্, আক্নাদি, বিড়গ, দেবলারু, বিছাটি ও বামুন্থটা এই সমুদ্রি কর্দ্রব্য মিলিত /১ সের। গ্রহ /৪ সেব। ৬% ১৬ সের। পাকার্থ জল ১৬ সের। এই সূত্রপান করিলে স্তিকাভক্ষণজনিত পাঙুরোগ প্রশ্নিত হয়।

দ্রাকায়তম্।

পুরাণদপিষঃ প্রস্থো ক্রাক্ষাদ্ধপ্রস্থদাবিত। । কামলাগুল্মপা গুক্তি-জন্মমেংং দ্বাপহঃ ॥

দশবর্ষস্থিত পুরাতন গ্রন্থত ১২ দের, প্রাক্ষার কল ১১ দেব, পাকার্থ জল ১৬ দের। এই দ্রাক্ষাত্মত উপযুক্ত মাত্রার চোরি । আনা হইতে আরম্ভ করিয়া ক্রমে ২ তোলা পর্যাস্ত) পান করিলে পাও, কামলা, গুলা, ব্রুর, মেই ও উদররোগ নিবারিত হয়।

পুনর্বা-তৈলম।

পুনর্নবাপলশতং জলদ্রোণে বিপাচয়েৎ। তেন পাদাবশেষেণ তৈলপ্ৰস্তং বিপাচয়েৎ॥ ত্রিকটু ত্রিফলা শৃঙ্গী ধান্তকং কট্ফলং তথা। শটা দার প্রিয়ঙ্গুশ্চ দেবদারহরেণুভি: । कुष्ठेर शूनर्नवामुलर यमानी कांत्रती उथा ! এলা ঘটং পদাকক পত্রং নাগরকেশরম। এষাঞ্চ কাৰিকৈ: কলৈ: পেষয়িত্বা বিনিক্ষিপেৎ। কামলাং পাভরোগক হলীমকমথাপি বা ॥ রক্তপিত্রং প্রমেহাংশ্চ কাসং খাসং ভগন্দরম : প্লীহানমুদরকৈর জবং জীবং বাপোহতি॥ কুক্সতে চ পরাং কান্তিং প্রদীপ্তরাবিল্য। হৈলং পৌনন বং নাম মলবাধীন নিয়ছতি 🛭

তিলতৈল ১১ সের। কাথার্থ—পুননবা ১০০ পল, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। কল্বার্থ---ত্রিকটু, ত্রিফলা, কাঁক্ড়াশুপ্রা, ধনে, কট্ফল, শটী, দাক্তহিন্দা, প্রিয়ন্ত্র, দেবলাক্র, রেথুক, कुड़, शूननवामून, यमानी, कुखजीता, धनाइंह. গুড়ত্বক, পদ্মকাষ্ঠ, তেজপত্র, মুতা ও নাগেশ্বর প্রত্যেক ২ ভোলা। এই তৈল মন্দ্রনে পাও, কামলা, হলীমক ও জার্গজ্ঞর প্রভৃতি বিবিধ পীড়ার শান্তি হয়।

অথ পথ্যাপথ্য-বিধিঃ।

--:*:---

পাণ্ডুরোগে পথ্যানি।

किर्मिरितत्रहनः कीर्ग-यवरगाध्यमानुगः। মুল্যাত্কীমপুরাণাং যুষা জাঙ্গলজা রসাঃ॥ পটোলং বৃদ্ধকুষাত্তং তক্ষণং কদলীফলম । জীবতীকুরমৎভাকী গুড়ুচী তভুলীয়কম্। পুনন বা দ্রোণপূষ্ণী বার্ডাকুল গুনম্বয়ম। প্রকাত্রমভ্যা বিদ্বী শৃঙ্গীমৎস্তা প্রবাং জলম্ ॥

ধাত্রী তক্রং ম্বৃতং তৈলং সৌবীরকতুষোদকে। নবনীতং গন্ধসারো হরিজ। নাগকেশরম ॥ বৰক্ষারো লৌহভন্ম ক্ষায়াণি চ কুকুম্ম। যপাদোৰ্যদিদং পথ্যং পাগুৱোগবভাং ভবেৎ ॥

বমন, বিরেচন, পুরাতন যব, গম ও শালি-ত গুল এবং মুগ, অভ্হর ও মসুরের যুষ, জাঙ্গল মাংসরস, পটোল, পাকা কুমড়া, কচিকলা, জীবন্তীশাক, গোক্ষুর, হেলেঞ্চাশাক, গুলঞ্চ, नार्छ भाक, श्रमनात, (हानश्रेष्ट्री, देखन, देखन, পেয়াজ, পাকা আন, হরীতকী, তেলাকুচা, শিঙ্গী মাছ, গোয়ত্র, আমলকী, তক্র, ঘুত, তিলতৈল, পৌবীর, তুষোদক, মাখন, রক্ত-চন্দন, হরিদ্রা, নাগকেশর, যবক্ষার, লৌহভন্ম, কষায় দুব্য ও কুছুন দোয় বিবেচনা করিয়া এই সকল পথা পাণ্ডরোগিদিগকে প্রয়োগ করিবে।

পাণ্ডুরোগেইপথ্যানি।

রক্তক্রতিং ধুমপানা ব্যবিবেগবিধারণম। ষেদনং মৈথুনং শিখা পত্রশাকানি রামঠম ॥ মায়েহিমুপানং পিণ্যাকস্তামূলং সৰ্বপাঃ সুবাঃ। হতক্ষণং দিবাৰপ্ৰস্থীকানি লবণানি **চ**॥ স্থাবিদ্যাজিজাতান'ং ন্রীনাং স্লিলানি চ। সকাণ্যমানি হুষ্টান্থ বিশ্বদান্তখনানি চ। গুর্বন্নঞ্চ বিদাহীনি পাঙুনোগ্ৰতাং বিষম্ ॥

রক্তমোকণ, ধুমপান, বমিবেগধারণ (বমনবেগ উপস্থিত হইলে বমন নাকরা). স্বেদ, স্ত্রীসঙ্গ, শিম, পত্রশাক, হিন্তু, মাষকলায় অধিক জলপান, তিলাদির কল্প, তামূল, সর্বপ, মুরা, মৃত্তিকাভক্ষণ, দিবানিদ্রা, তীক্ষদ্রব্য, লবণরস, সহা গিরি এবং বিদ্যাগিরিভব নদীর জল, সমস্ত অমুদ্রব্য, দূষিতজল, বিরুদ্ধ ভোজন, গুকুদ্রব্য, বিদাহিদ্রব্য এই সমস্ত পাণ্ডুরোগি-দিগের পরি গ্রাজা।

ইত্যায়ুর্বেদ-সংগ্রহে পা তুরোগাধিকার:।

অথ রক্তপিত্তরোগাধিকারঃ।

অথ রক্তপিত্ত-নিদানম্।

বর্মবারামশোকান্ধন-বাবাইর তিলেবিকৈ:।
তীক্ষেক্ষর প্রবিশ্বর কৈ কটু ভিরেব চ ॥
পিত্তং বিদন্ধং স্ব গুণৈবিদহত্যাপ্ত শোণিতম্।
ততঃ প্রবর্ততে রক্তমূর্ক্কাণে বিধাপি বা ॥
উর্জ্বং নাসাক্ষিকণিস্টেমে তি যোনিগুলৈর ধং।
কুপিতং রোমকৃশৈন্চ সমন্তৈত্তৎ প্রবর্ততে ॥
সদনং শীতকামতং কঠপুমায়ন বমি:।
লোহগন্ধিন্ট নিবাসো ভবত্যমিন্ ভবিবাতি ॥
সান্দং সপাপ্ত সম্মেহং পিচ্ছিলক ককাষিতম।
ভাবার পং সফেনক তত্ত্ব কৃষ্ণক বাতিকম্।
রক্তপিত্তং ক্ষায়াভং কৃশং পোমু সদানিভম্।
মেচকাগারধুমাভমঞ্জনাভক পৈত্তিকম্ ॥
সংস্কৃতিকং সংস্কৃত্যবিধাগং প্রনাত্ত্যম্।
ভির্মাগং কক্ষাভাগ্যামুক্তাগ্যম্ব্রত্তে ॥

আতপ, বাগাম, শোক, পথপর্যটন, মথ্ন, মরিচাদি তীক্ষ্বীর্যা দ্রবা, অগ্নিতাপ, ক্ষার, লবণ, অয় ও কটু দ্রব্য, এই সমস্ত অতিসেবিত হইলে পিত্র বিদগ্ধ হইয়া, তীক্ষ্ণোফঃপৃতিম্বাদি নিজ্ঞণ মারা রক্তকে শীঘ্র দৃষিত করিয়া ফেলে। তদনন্তব সেই পিত্তই রক্ত চক্ষ্প, কর্ণ, নাসিকা ও মুখরূপ উর্নার্গ দিয়া, মথবা লিক্ষ, যোনি ও গুছরূপ অধােমার্গ মারা, কিংবা উর্দ্ধাং উভন্ন মার্গ মার্গ মার্গ হারা, কিংবা উর্দ্ধাং উভন্ন মার্গ মার্গ হারাই বহির্গত হইয়া থাকে এবং অতিকুপিত হইলে সমস্ত লােমকৃপ দিয়াও বহির্গত হয়।

রক্তপিত্ত রোগ উৎপন্ন হইবার পূর্ব্বে অব-সন্মতা, শৈত্যাভিলাষ, কণ্ঠ হইতে ধ্যনির্গমবৎ প্রতীতি, বমি ও লৌহগন্ধি নিশ্বাস, এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়।

রক্তপিত্ত ককান্তিত হইলে ঘন, ঈষংপাপু বর্ণ, অন্ত্রিয় ও পিচ্ছিল বক্ত; বাতোন্ত্রণ হইলে খ্রাব বা অরুণবর্ণ, ফেনবুক্ত, পাত্লা ও রুক্ষ রক্ত এবং পিজ্যোবণ হইলে ক্যায়াভ

(বট ও পটোলাদির কাথবং বর্ণ), ক্বঞ্চবর্ণ, গোমূত্রান্ত, চিক্রণকৃষ্ণ বা আগারধ্মবং (ঝুল) বর্ণ অথবা সৌবীরাঞ্জন সদৃশ বর্ণ-বিশিষ্ট রক্ত নির্গত হয়।

শ্রেমাদিদোষভেদে রক্তপিত্তের যে পৃথক্
পৃথক্ লক্ষণ কথিত হইল, তাহাদের ছই
প্রকারের লক্ষণ একত্র সংঘটত হইলে স্বন্ধ্বন এবং তিন প্রকারেরই লক্ষণ মিলিত হইলে সালিপাতিক রক্তপিত বলিগা জানিবে।

কফদংস্ট রক্তপিত্ত উর্ন্নমার্গগামী ও বাতার্মগ রক্তপিত্ত অধোমার্গ-নিংসারী এবং বাতদ্রেসংস্ট রক্তপিত্ত উদ্ধাধঃ উভন্নমার্গগামী হইন্না পাকে।

অথ রক্তপিত্ত-চিকৎসা।

পিত্তাশ্রং স্তম্ভয়েন্নাদে) প্রসূত্তং বলিনো যতঃ। হৃৎপাণ্ডগ্রহণীরোগ-প্লীগগুলাছরাদিকুৎ॥

রোগির যদি বল থাকে, তাহা হইলে রক্তপিভের প্রসূত্র রক্ত প্রথমে বন্ধ করা কর্ত্তব্য নহে, কারণ হাই রক্ত দেহে রুদ্ধ থাকিলে তাহা ছদ্রোগ, পাণ্ড্, গ্রহণীরোগ, প্লীহা, গুলা ও জরাদি রোগ আনমন করে।

উদ্ধং প্রবৃত্তদোষশু পূর্বাং লোহিতপিন্তিন:। অন্ধীণবলমাংসায়ে: কর্ত্তন্যপতর্পণম্। উদ্ধ্যে তর্পণং পূর্বাং কর্ত্তন্ত্র বিরেচনম্। প্রাগধোগমনে পেরা বমনক ধর্ণাবলম্॥

উর্দ্ধগ রক্তপিতে যদি রোগির বল মাংস ও
অগ্নি ক্ষীণ না হয়, তাহা হইলে প্রথমে
অপতপণ (উপবাসাদি) কর্ত্তব্য। নতুবা
অগ্রে তর্পণ (ভৃপ্তিকর আহারাদি) ক্রিয়া
করাইয়া পরে বিরেচন করাইবে। অধোগ

রক্তপিত্তে রোগিকে প্রথমে পেয়া পান করা-ইবে, পরে তাহার বল বিবেচনা করিয়া বমন করাইবে।

দ্রাক্ষামধুককা শ্রয্য-সিতাযুক্তং বিরেচনম্। ম**টামধু**কযুক্তক সক্ষোদ্রং বমনং ভিতম ॥

রক্তাপিত পাড়ায়, দ্রাক্ষা, ষষ্ট্রমধু, গান্থারী-ফল ও চিনি সংবৃক্ত বিরেচক ঔষণ এবং ষষ্ট্রমধু ও মধুসংবৃক্ত ব্যনকাপক ঔষণ হতকর।

লজ্মিতস্ত ততঃ পেয়াং বিদ্ধাৎ সময় গুলাম। তপ্ৰং পাচনং লেহান সপীংবি বিবিধানি চ ।

্জ্মন-ক্রিয়ার পর অভয়ে তণুংশর পেয়া এক্তেত ক্রিয়া পান ক্রাইবে ; ক্রেন ভর্পণ, পাচন, লেহ ও বিবিধ য়ত বাবস্থা ক্রিবে।

তর্পাৎ সমৃতক্ষোত্র-ল'জচুকি: প্রদাপয়েও।
উদ্ধৃপং রক্তপিন্তং তৎ পাঁতং কালে বাংপাইতি।
জলং প্রক্রাইকা-মধ্কৈ: সপর্যকৈ:।
শৃতশীতং প্রধোক্তবাং তপ্পার্থং সশক্রম্॥
(অন্ত প্রক্রাদিনা জলং সভুক্রিধানেন কাল্যন্। চঃ টাং)

উদ্ধান র ওপিতে সুত, মধু ও থে চুর্ণ থার। এস্তে থাত রোগিকে তর্পণার্থ ভৌজন কারতে দিলে, অথবা পেও-শঙ্ক্র, কিস্মিস্ যৃষ্টিমধু ও কল্স তথাদের সমুঙ্গপানীয় বিব অনুসারে এস্তেও (মিলিং জনা ২ তোলা, জল /৪ সের, শেষ /২ সের) কর্প শাতল করিয়া চি.নর সহিত পান ক্রাইবে, তাহাতে রক্তপিত্ত কালে প্রশ্মিত হুইবে।

ত্রিবৃতা ফিলা ভাষা পিশ্বনী শর্করা মদু। মোদক: সন্নিপাতোদ্-রক্তপিত্তব্রাপং: ॥

উদ্ধাস রক্তাপতে জার থাকিলে অরুপমূল তেউড়ী, শ্রামামূল তেউড়ী, বিদলা এবং পিপুল ইছাদের চুর্ল সমভাগে লইয়া যথোপ-মুক্ত (সমস্ত চুর্ণের দ্বিগুণ) চিনি ও মধু দিয়া মোদক প্রস্তুত করিবে, সেই মোদক সেবনে রক্তপ্রত্ত ও জার প্রশামিত হয়।

লালপ্রাদিনা সিদ্ধা পেরা পূর্ব্যমধােগজে। ব্যন্থ মদ্যােরিশ্রো মস্থা সক্ষেত্রশক্রঃ ॥ অধােগ রক্তপিতে প্রথমে শালপর্ণাদি স্বলপঞ্চালর কাথে পেয়া দিদ্ধ করিয়া সেবন করিতে দিবে এবং ব্যনার্থ ম্যনাফল, মধুও চিনি মিশ্রিত হন্ত (জবদ্ববো আলোড়িত শক্তৃ) প্রয়োগ করিবে।

বিনা শুকীং বড়কেন সিদ্ধং তোয়ক দাপায়ৎ॥

রক্তপিত্রোগিকে, জ্বাধিকারোক্ত ষড়ঙ্গ-পানীয় পান করিতে দিবে, কিন্তু ষড়ঙ্গের শুঠ অঙ্গটী ত্যাগ ক্রিয়া অবশিষ্ট পাঁচটি অঙ্গ থাবা জল সিদ্ধ ব্যারতে হইবে।

ক্ষীণনাংস্বানং বালং বৃদ্ধ পোষাত্র দিন্দ্। অবস্যানিকেচ,ঞ্জপ্ত প্তবৈঃ মুপাচ রং।

ক্তশা, ছর্মাল, বালক, চৃদ্ধ এবং শোষ-রোগায়িত বক্তপিস্ত-রে,;গকে কমাচ কমন বা বিরেচন করাইবে না, স্তম্ভন ঔষধ মারা চিকিৎসা করিবে।

বৃষপ কা'ব নিম্প ভারবং সমধুশ করম্।
পিবেং তেন শমং সাতি রক্ত পিতং ফ্লাকুণম্।
বাসক পত্র পুট্পক করিয়া তাহার রা
মধুও চিনির সহিত পান কবিলে ফ্লাকুণ রক্ত পিত্র প্রশাসত হয়।

অটকসকনিযুক্তি প্রিয়ন্ত্রু মুক্তকাঞ্চন। বিনীয় লেখেং সংগৌদং রক্তপিত্ররং পিবেৎ ।

পুট্পদ বাসকপাতার রাসে প্রিয়ন্ত্র, সৌরাষ্ট্রশৃত্তিকা, রসাঞ্জন ও লোধ এই সক-লের চূর্ব ২ তোলা এবং মধু ২ তোলা মিশ্রিত করিয়া পান করিলে রক্তপিত্ত রোগ বিনষ্ট ইইয়া থাকে।

লাক্ষাচূৰ্ণং হ্ৰকৃতং ক্ষোন্তাজ্যসময়তং সকুলীচৃষ্। শময়তি সোদ্ধতবমনং সরক্ষপিতত সিদ্ধমিদম্ ॥

নক্ত্নিকৃত লাকা ৬ মাধা মাতার মধু ও মতের সহিত লেহন করিলে উর্দ্ধণ রক্তপিত নিবারিত হয়।

বাদাকৰায়োৎপলমুৎপ্ৰিমন্ত্ৰ লোগ্ৰাঞ্চনাজ্যেক্ষকেশনাণি। পীতা দিতাক্ষোম্যুতানি হস্তাৎ পিজাফ্জোর্বেগমুনীর্নমান্ত । বাসকের কাথে উৎপল, সৌরাষ্ট্র মৃত্তিকা, প্রিয়ঙ্গু, লোধ, রসাঞ্জন ও পদ্মকেশর ইহাদের চূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া মধু ও চিনির সহিত পান করিলে রক্তপিত্তের প্রবল বেগ আশু নিবা-রিত হয়।

তালীশচ্পদহিতঃ পেয়া ক্ষেত্রিশ বাসক্ষরসা: । কক্ষপিত্তমক্ষাস-স্বরভেদরক্তপিত্তহর: ॥ অত্র বাসক্ষরসাজ্ঞ পান্দ, তালীশচ্পজ্ঞ মাযক্ষরদ্; গধ্মাযচজ্ঞীয়মিতি বাবহরত্তি। চক্র-টা: ॥

বাদকপাতার বদ ৮ তোলা, তালীশপত্র চুর্ণ। আনা ও মধু॥ তোলা মিশাইয়া পান করিলে কফ্পিও, তমক্থাস, স্বরভেদ ও বক্তপিও নিবারিত হয়।

ধন্য।কাদি-হিমঃ।

ধক্তাকধাত্রীবাসানাং ত্রাক্ষাপর্ণটিছোটিম:। রক্তপিতং অরং দাহ, তৃকাং শেষঞ্চ নাশয়েৎ ॥

ধনে, আমলকা, বাসক, কিদ্মিদ্ ও ক্ষেত্ৰপাপ্ডা, ইহালের শাতক্ষায় প্রস্তুত্ত করিয়া সেবন কারলে রক্তপিত, জ্বা, দাহ, ভূষা ও শোব নিবারিত হয়।

হ্রীবেরাদি-কাথঃ।

হ্বীবেরমুৎপলং ধান্তং চন্দনং যষ্টিকামূতা। উশীরঞ্ ত্রিক্টেকাং কাঝং সমধুশক্রম। পারয়েৎ তেন সড্যো হি রক্তপিতং প্রণশুতি। রক্তপিতং জয়ত্যুগ্রং তৃঞ্চাং দাহং অরং তথা।

বালা, নীলোৎপল, ধনে, রক্তচন্দন, যষ্টি-মধু, গুলঞ্চ, বেণার মূল ও তেউড়ী; ইহাদের কাথ চিনি ও মধু সহ পান করিলে সন্থঃ রক্ত-পিত্ত প্রশমিত হয়। ইহা ধারা তৃষ্ণা, দাহ ও জ্বর নিবারিত হইয়া থাকে।

অটর্মযকাদি-কাথঃ। অট্যমধক্ষমীকা-পথ্যাকাথঃ সশর্করঃ। ক্ষৌপ্রাঢাঃ ক্যনবাস-রক্তপিন্তনিবর্ধগঃ। বাদকমূলের ছাল, কিদ্মিদ্ ও হরীতকী, ইহাদের কাথ চিনি ও মধুর সহিত পান করিলে খাদ, কাদ ও রক্তণিত প্রশমিত হয়।

শসক-কাথঃ।

কেবলো বাসককাথঃ পীতঃ কৌদ্রেণ নাশয়েং। রক্তপিতং ক্ষয়ং কাসং প্রেমপিতক্ষরং তথা ॥

একমাত্র বাসকের কাথ মধু সহ পান করিলেই রক্তপিত্র, ক্ষয়, কাস ও পিত্তশেশ-জ্ব বিনষ্ট হয়।

বাসক্ষরসে পশ্যা সপ্তথা পরিভাবিতা। কৃষ্ণা বা মধুনা লীঢ়া রক্তপিতং ক্রতং জয়েৎ ॥

বাসকের রনে হরীতকী কিংবা পিপুল ৭ বার ভাবনা দিয়া তাহা মধুব সহিত অবলেহন করিলে রক্তপিত সধর নিবারিত হয়। বাসায়াং বিজ্ঞানায়্মাশায়াং জীবিত্ত চ। রক্তপিত্তী করা কাসী কিম্বানসীদতি।

রক্তপিন্ত, ক্ষয় ও কাস রোগির ধনি বাহিতে সাধ থাকে, এবং পরম ঔষধ বাসক যদি বিজ্ঞান থাকে, তবে কেন তাহাদিগকে অবসয় হইতে হইবে ? অর্থাৎ বাসক ঐ সকল রোগের মহৌনধ।

> সমাক্ষিকঃ ফল্গুফলোম্ভবো বা পীতো রসঃ শোণিতমাও হস্তি।

ডুম্বের রস মধুর সহিত পান ক**রিলে** অধোগ রক্ত আশু নিবারিত হয়। _{মদযন্তা}জিনুলঃ কাণ্ডবং সমধুশক্**র**।

কাষ্ঠ-মল্লকার মূলের কাথ মধু ও চিনির সহিতপান করিলে রক্তপিত প্রশমিত হয়।

অতদীকুমুমসমঙ্গা-বটাবরোহত্বগঞ্চসা পীতা। প্রশময়তি রক্তপিতং যদি ভূড,কে মুক্গাযুবেণ।

অতদীপুষ্পা, বরাহক্রাস্তা ও বটের **ঝুরির** ছাল পেষণ করিয়া তাহা জলের সহিত পান ও মুগের যুষ পথ্য করিলে রক্তপিত্ত প্রশমিত হয়।

পকোড়, यत्रका श्रमा-পণ্যাথর্জ্বগোন্তনা:। মধুনা ছত্তি সংলীচা রক্তপিত্তং পৃথক্ পৃথক্॥ পাকা যজ্ঞতুমুর, গান্তারী, হরীতকী, পিও-থর্জ্ব অথবা দ্রাক্ষা ইহাদের কোন একটি পেষণ করিয়া মধুর সহিত লেহন করিলে সকল প্রকার রক্তপিত্ত রোগ প্রশমিত হয়।

থদিরস্য প্রিয়স্থাং কে:বিদারস্য শাব্দলে:। পূপাচূর্বস্ত মধুনা লীচ্1 চারোগ্যমগ্রতে॥

থদির, প্রিয়ন্থ্, রক্তকাঞ্চন ও শিম্লের পূপ্প চূর্ণ (রুদ্ধের মতে পৃথক্ পৃথক্ পূপ্প চূর্ণ) করিয়া মধুর সহিত অবলেহন করিলে রক্ত-পিত্তরোগী আবোগ্য লাভ করে।

নাসাপ্রবৃত্তরুধিরং যুতভূষ্টং লক্ষপিষ্টমামলকম্। সেতৃরিব তোয়বেগং রুণদ্ধি মৃদ্ধিনু বিলেপেন।

সেতু ধেমন জল বেগ বন্ধ করে, আম-লকী মতে ভাজিয়া কাঞ্জিতে পেষণ করত মন্তকে প্রলেপ দিলেও সেই রূপ নাদিকা হইতে রুধিরস্রাব বন্ধ হয়।

> াণপ্রবৃত্তে জলমান্ত দেয়ং সশর্করং নাসিকয়া পয়ো বা। জ্বাক্ষারসং ক্ষীরম্বতং পিবেদ্ বা সশর্করঞ্জেরসং হিতং বা॥

নাসিকা দিয়া বক্ত নির্গত হইলে, চিনির সহিত জলের বা তথেব নস্ত প্রদান করিবে। অথবা চিনির সহিত দ্রাক্ষারস বা তথেরাৎপন্ন ম্বৃত কিংবা চিনির সহিত ইক্ষ্রস পান (কোন কোন পণ্ডিতের মতে নাসিকা দিয়া পান) করিতে দিবে।

নস্যং দাড়িমপুশোগে। দুর্বারসসম্বিতঃ। আত্রান্থিজঃ পলাঙে।বা নাসিকাঞ্ডরক্তরিৎ।

দাড়িম ফুলের রস, দুর্নার রস, আম্র-কেশীর রস বা পলাঞ্র রস, ইহাদের নস্ত দইলে নাসিকা হইতে রক্তপতন বন্ধ হয়।

রসো দাড়িমপুপাস্য দুর্কারসসমস্থিত:। অলক্তকরসোপেত: পণ্যমা বা সমস্থিত:॥ বোজিতো নস্যত: ক্ষিপ্রং তিদোবম্পি দেহিনাম্। নাস্প্রস্তুং রক্তক্ত ইক্সাদেব ন সংশয়:॥

দাড়িম-ফুলের রস, দুর্কার রস সহ মিশ্রিত ক্রিয়া বা আলভার জল বা হরীতকীর জ্পের সহিত নম্ম দিলে নাসিকা হইতে রক্তশাব নিশ্চয় নিবারিত হয়।

মেঢুগেহতিপ্রবৃত্তে তু বন্তিক্লন্তরসংক্ষিতঃ। শৃতং ক্ষীরং পিবেদ্বাপি পঞ্চমূল্যা তৃণাহুরো॥

প্রসাব-মার দিয়া অধিক রক্ত নির্গত হইলে, উত্তরবন্তি প্রয়োগ করিবে। অথবা তৃণ-পঞ্চমূল (কুশ, কাশ, শর, ক্লফেক্ ও উলু-মূল) ২ তোলা, ছাগছগ্ধ ১৬ তোলা ও জল /১ সের একত্র পাক করিয়া ছ্গ্ধাবশেষ থাকিতে নামাইয়া পান করিতে দিবে।

> শতাবরীথোকুরকৈঃ শৃতং বা শৃতং পয়ো বাপ্যথ পর্নিনীভিঃ রক্তং নিহস্তাও বিশেষতম্ভ বন্যত্রমার্গাৎ দক্ষতং প্রয়াতি॥

শতমূলী ও গোক্ষুর-মূলের সহিত অথবা শালপাণি, চাকুলে, মুগাণি ও মানাণির সহিত তথ্য পাক করিয়া সেই তথ্য পান করিলে মূত্র-মার্গ-নিক্ষত যথ্যপাদায়ক রক্তস্রাব নিবারিত হইয়া থাকে।

নাসাপ্রবৃত্তে কাধিরে কল্ম যদ্ ভাষিতং ময়া। শ্রুত্যাদিভ্যঃ স্কৃতে চাপি বাসং তদ্ধি হিতং মৃত্যু। ভেষ্ডং শ্যুন্ধ ক্রিডাভান্তরং সুযুদ্ধ ॥

নাসা প্রান্ত রক্তপিত্তের হক্তক্ষাব নিবা-রণার্থ যে সকল ক্রিয়া কথিত হইল, তাহাদের বাহ্য প্রয়োগগুলি, কর্ণাদিমার্গের রক্তস্থাব নিবারণের পক্ষেও হিতকর জানিবে। অভ্য-স্তর-প্রযোজ্য শমন ঔষধ সর্বত্র সমান।

> ছাগং পয়ো লোহিতচন্দনেন বিধারুণাকৌটজবৰলেন। আভারসেনাপি বিপক্ষমান্ত নিহস্তি পিতাশ্রমধঃপ্রবাহি॥

রক্তচন্দন, বেলগুঁঠ, আতইচ, কুড়্চির ছাল ও বাব লার আটা মিলিত ২ তোলা, ছাগছ্য ১৬ তোলা, জল /১ সের, একত্র পাক করিয়া ছ্যাবশেষ থাকিতে নামাইয়া পান করিলে শীঘ্র অধোমার্গ-প্রক্রত রক্ত-পিত্তের শাস্থি হয়। মূদ্বীকাং চন্দনং লোধ্রং প্রিয়ন্ত্বঞ্চ বিচূর্ণয়েৎ।
চূর্ণমেতৎ পিবেৎ ক্ষোক্ত-বাসারসসম্বিতন্ ॥
নাসি কাম্প্পায়ুভো বে!নিমেত্রাদিবেগিনন্ ।
রক্তপিত্তং অবন্ধতি সিদ্ধ এব প্রয়োগরাট্ ॥
যচ্চ শক্তকতেনৈব রক্তং অবতি বেগতঃ।
তদপ্যতেন চূর্ণন তিষ্ঠতোবাক্রিবিতন্ ॥

কিস্মিদ্, রক্তচন্দন, লোধ ও প্রিয়ঙ্গু এই সকল জব্যের চূর্ণ বাদকরদ ও মধু দহ দেবন করিলে, নাদিকা, মুখ, গুহু, যোনি ও লিঙ্গ হইতে প্রক্রত রক্তাপত্ত নিবারিত হয়। অস্ত্রাঘাতহেতু অভিবেগে রক্ত্রাব হইতে থাকিলে ক্ষতস্থানে এই চুর্ণ লাগাইয়া দিলে রক্তরাব বন্ধ হয়।

রক্তাতীসারযোগাংক পিতাম্বেহধোবিসারিনি। অস্পনরহিতাংকাপি গোজমেং কুশলো ভিষক্॥

শ্বদোগ রক্তপিত্তে রক্তাতিমার ও প্রদর রোগাদিকারোক্ত ঔষণ সকল বিবেচনামতে প্রযোগ করিবে।

> গধ্যসূত্রীপ্রকশিতক তোক্ষ করপ্রবীজ্য মধুস্পিনী চ। মূলানি পুম্পাণি চ মাতুলুক্সাঃ পিষ্টা পিনেৎ তণ্ডলধাননে ॥

জামছাল, আমছাল ও অর্জুনছাল, ইহা-দের কাথ; স্বত ও মধু সংস্কু করঞ্জনীজ চুর্ণ; এবং তও্লজলে পিষ্ট টাবালেব্ব মূল ও পুষ্প; এই সমুদায় ঔষধ রক্তপিত-নিবারক।

ধৰজানাম্পূৰ্গ, লিহান্ত্ৰুনা মূগপক্ষিণাম্। সক্ষৌত্ৰং গ্ৰন্থিতে রজে লিহাৎ পার্বিতং শকুৎ॥

রক্তপিত্রোগে মকদেশজাত পশু-পশ্চির রক্ত মধুর সহিত পান করিতে দিবে। গ্রাথিত রক্ত নিঃস্থত হইলে পায়রার বিষ্ঠা মধু দিয়া মাড়িয়া লেহন করাইবে।

উৎপলং কুমুদং পন্নং কহলারং লোহিতোৎপলম্। মধুকঞেতি পিতাস্থক্-ভূঞাচ্ছধ্বিংরো গণঃ।

নীলোংপল, কুমৃদ, পদ্ম, খেতোংপল, রক্তোৎপল ও যষ্টিমধু; ইহারা রক্তপিত্ত, তৃষ্ণা ও ব্যানাশক।

উশীরাদি-চূর্ণম।

(मांह-कृष्णामा)

উণীরং তগরং গুঞী ককোলং চন্দনন্বর্ম। লবঙ্গং পিপ্লনীমূলং কৃষ্ণৈলা নাগকেশরম্॥ মৃত্যা মধুককপুরং তুগাক্ষীরী চ পত্রকম্। কৃষ্ণাগুরুসমং চূর্বং মিতা চাইগুণা তথা। রক্তবান্তিক তাপক নাশয়েলাকে সংশয়ঃ॥

বেণার মূল, তগরপাছকা, শুঠ, কাঁক্লা, খেতচন্দন, রক্তচন্দন, লবঙ্গ, পিপুলমূল, পিপুল, এলাইচ, নাগেশ্বর, মূতা, ষষ্টিমধু, কপূব, বংশলোচন, তেজপত্ত প্রত্যেক চুণ সমতাগ, সমূলায় চূর্ণের সমান ক্ষমাণ্ডক চুণ ; এই সকল জব্য ৮ গুণ চিনির সহিত মিল্লেভ করিয়া ॥০ তোলা মান্তায় -সেবন করিলে রক্তবমন ও লাহাদি নই হয়। (এই চুর্ণ ভক্ষণ করাইয়া ডুমুরের রস ৪ তোলা পান করিতে দিবে)।

এলাদি-গুড়িকা।

এলাপত্ৰহচাহক। কাঃ পিশ্ব গাৰ্কপলং তথা।
সিতামৰ্কথজ্ব-খুৰীকা ক পলোকিতাঃ ॥
সংচূৰ্ণ মধুনা বুক্তা। গুড়িকাঃ কারয়েদ ভিষক্ ।
অক্ষমাত্রাং ততকৈকাং ভক্ষেক্ত দিনে দিনে ॥
সাসং কাসং অরং হিকাং ছর্দিং মুর্ছিাং নদং অমম্ ।
রক্তনিতীবনং তুকাং পার্যপুলমরোচকন্ ॥
শোষপ্রীহাচাবাতাংশ্চ অরজেদং কতক্ষম্ ।
গুড়িকা তপনা বুধা। রক্তপিত্রং বিনাশমেৎ ॥

এলাইচ ১ তোলা, তেজপত্র ১ তোলা, গুড়হক্ ১ তোলা, পিপুল ৪ তোলা, চিনি, গৃষ্টিমধু, পিগুগুর্জুর, দ্রাক্ষা প্রত্যেক ১ পল; এই সমুনায় চূর্ণ মধুব সহিত মিলিত করিয়া ২ তোলা প্রমাণ গুড়িকা করিবে। লোষের বলাবল বিবেচনা করিলা মাত্রা ব্যবস্থা করিবে। ইহা সেবন করিলে কাস, শ্বাস, জ্ব, হিকা, ব্যি, মূর্চ্ছা, বক্রবমন ও ত্র্ঞা গ্রেড়িত উপ-শ্যিত হয়।

খণ্ডকুত্মাণ্ডাবলেহঃ।

পুরাণং পীনমানীয় কুমাওস্ফলং বৃহৎ। ত্বীক্রাধারবীজত্বক্-শিরাশুন্তং সমাচরেৎ ॥ ততত্ত্বস্তু তুলাং নীত্বা পচেজ্ঞলতুলাৰয়ে। তিমান্ নীরেহর্দ্মশিষ্টে তু যত্নতঃ শীতলীকৃতে। তানি কুমাওখণ্ডানি পীড়য়েদ্ দুঢ়বাসগা। বত্বতভালেং নীতা পুন: পাকায় ধারয়েৎ। **কুমাণ্ডং শোষয়েদ্**নর্দ্রো তাত্রপত্রে ততঃ ক্ষিপেৎ। **ক্ষিপ্ত† তত্র মৃতপ্রস্থং কুম্বাভং তেন ভর্জরেৎ।** মধুবর্ণং তদালোক্য তজ্জলং তত্র নিক্ষিপেৎ। **সিভায়ান্চ তুলাং তত্র কিন্তু।** তলেহবৎ পচেৎ ॥ হুপকে পিপ্ললীশুকী-জীরাণাং দিপলে পুথক। পুথক পলার্দ্ধং ধক্তাকং পত্রৈলামরিচহচম । চূৰ্ণমেষাং ক্ষিপেৎ তত্ৰ স্থতাৰ্দ্ধং ক্ষেষ্ট্ৰমাবপেৎ। এতৎ পলমিতং খাদেদখনাগ্রিবলং गथा। **খণ্ডকুত্মাণ্ডলেহোহয়ং** রক্তপিত্তঞ্চ নাশয়েৎ। **পিতত্তরং ভ্বাং দাহং প্রদরং কুশতাং ব্যিম্**॥ কাসং স্বাসঞ্চ হাদোগং বরভেদং ক্ষতং ক্রম। নাশয়ত্যের বৃদ্ধিক বুংহণো বলবর্দ্ধনঃ॥

পুরাতন স্থলতে বুহৎ কুলাণ্ডের বীজ, **বীজাধার, ছাল ও শি**রা পরিত্যাগ করিয়া **তাহার কেবল শাঁ**দ ১২॥० সাড়ে বার সের **গ্রাহণ করিবে। পরে** ২৫ দের জলে দিদ্ধ ক্রিয়া অন্ধাংশ অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে। শীতল হইলে ঘরপূর্ব্বক বন্ধ ছারা নিঙ্ডাইয়া সেই জল পুন: পাকের নিমিত্ত রাখিয়া দিবে এবং কুমাওগুলি রেমদ্র কিঞ্চিং শুষ্ক করিয়া তাত্রপাত্রে /৪ সের মৃত চাপাইয়া তাহাতে ভাজিবে। যথন কুমাণ্ডের বর্ণ মধুর ন্তায় হইবে, তখন সেই জল এবং চিনি ১২॥০ সাড়ে বার সের দিয়া একতা লেহবং পাক করিবে। পরে পাক সমাপ্ত-প্রায় হইলে তাহাতে পিপুল, ভুঠ ও জীরা প্রত্যেক চুর্ণ ২ পল এবং ধনে, তেজ-**শত, এলাই**চ, মরিচ ও দারুচিনি ইহাদের চুর্ণ প্রত্যেক ৪ তোলা পরিমাণে নিক্ষেপ করিগ্না পাক শেষ হইলে নামাইবে ও ণীতল হইলে /২ সের মধু মিশ্রিত করিবে। ইহার ১ পল মাত্রা। অথবা রোগির অগ্নিবলামুরূপ মাত্রা निर्द्धन कतिरव। এই ঔषध मित्रत्न त्रख-

পিন্ত, পিন্তজ্বর, পিপাসা, দাহ, প্রদর, ক্কশতা, বিমি, কাস, খাস, হুদোগ, প্রতেদ, উরক্ষত, ক্ষয় ও বৃদ্ধিরোগ বিনষ্ট হয়। পরস্ক ইহা বলবর্দ্ধক ও শরীরের উপচায়ক।

রহৎকুষ্মাণ্ডাবলেহঃ।

পুরাণং পীনমানীয় কুমাওভা কলং দৃঢ়ম। তদ্বীজাধারবীজত্বক-শিরাশৃন্তঃ সমাচরেৎ॥ ততোহতিসুক্ষণভানি কুছা ১৯ জনাং পচেৎ। গোছশ্বন্ধ তুলামধ্যে মন্দেহগ্নো বা পচেচ্ছনৈঃ । শ**র্করায়ান্তলাং সা**দ্ধাং গোন্বতং প্রস্থমাত্রকম্। প্রস্থার্কং মাক্ষিকঞ'পি কুডবং নারিকেলতঃ॥ <u> शिप्रोयकलमञ्ज्ञानः विश्वतः िश्वीशलम् ।</u> ক্ষিপেদেকতা বিপচেল্লেচনৎ সাধ সাধ্যেৎ॥ ভিষক ক্রপক্ষালোক। জলনাদৰভার্থেৎ। কোষে ত্র কিপেদেয়াং চুণং শনি বদামাহম্। একে '= भ: শতপুপ্ৰায়া অন্ন সংখ্যাকা। গোকুরঃ কুরকঃ পথ্যা কপিকভূদলানি চ। সপ্তমী অক্চ সকেবোমক যুগাং পুণক্ পুণক্। ধান্তকং পিপ্লা মুস্তন্মগন্ধা শতাবরী॥ डालमूली नाशवला नालकः शतकः **न**ि । **জাতীফলং লবঙ্গ**ঞ্চ সুক্ষৈলা বুংদেলিকা। শুঙ্গাটকং পর্পটকং সর্বাং প্রভাতিং পুণ্ড। চন্দনং নাগরং ধাত্রী-ফলফাপি কশেরকম। প্রত্যেকং পঞ্চ ক্র্যাণি চহ্নায়েতানি নিক্ষিপেৎ। প্রস্থারত ম্পন্তোধ্পার চা কুমাওস্যাবলেহে ভূষং ভূষি তঃ প্রথাত্রয়া। किश्ता यथातकितलः जुळ्या त्यांशान् निर्माणस्य ॥ রক্তপিত্তং শীতপিওময় পিওমরে। চকম। विक्रमान्ताः मनाइक उक्षाः अन्तरभव ह ॥ রক্তার্শোহপি তথা চছদ্দিং গাঙুরোগঞ্চ কামলাম্। উপদংশং विमर्शक कार्नक विकार खत्रम् ॥ ल्टिश्यः अत्रा त्रा तुः हर्गा वलवर्षनः। স্থাপনীয়ঃ প্রয়ম্ভেন ভাজনে মুন্ময়ে নবে।

পুরাতন স্থ্লতর কুম্মাণ্ডের বীজ, বীজাধার, ছাল ও শিরা পরিত্যাগ করিয়া তাহার অতি স্ক্রম থণ্ড খণ্ড শাঁদ ১২॥ গাড়ে বার সের গ্রহণ করিবে। পরে ১২॥ গাড়ে বার সের গরা ছথের সহিত মিলিত করিয়া মৃহ অগ্রিন উত্তাপে পাক করিবে। অনস্তর চিনি ১৮৮০ পৌনে উনিশ সের, গরা মৃত্ত /৪ সের, মধু/২

দের, নারিকেল এক সের, পিয়াল ফলের মজ্জা ২ পল, তিথুরী ১ পল ; এই সমস্ত একতা পাক করিয়া লেহবং করিবে এবং নামাইয়া ঈষগুষ্ থাকিতে নিম্লিখিত দ্রুবা গুলির চুর্ণ তাহাতে প্রক্ষেপ দিবে। যথা—গুলফা ২ ভোলা; ক্ষারী (হ্রফেনিকা পূপা) গ্রমানী, গোকুর, কুলেখাড়া, হরীতকী, আলকুণীবীজ ও দাকু-চিনি প্রত্যেক চুর্ব ৪ তোলা; ধনে, পিপুল, মুতা, অশ্বগন্ধা, শত্যুলী, তালমূলী, গোবক-চাকুলে, বালা, তেজপত্ৰ, শটা, জাতীফল, লবন্ধ, ছোট এলাইচ, বড় এলাইচ, পানিফল ও ক্ষেত্রপাপ্ডা প্রতেক চুর্ণ ১ পল; রক্ত-চন্দন, ভাঁঠ, আমলকী ও কেণ্ডৰ প্ৰত্যেক ১০ ্রালা; বেণাব মূল, সোনরাজী ও মরিচ প্রত্যেক চুর্ব প্র । এই কুল্লাপ্রবিলেহ ১ পল মথবা মাধা বলাবল দুলিলা উপযুক্ত মাত্রায় মেবন করাইবে। ইহা ধানা ব্লুপিন্ত, শীত-পত্ত, অমুপিত, অক্লাচ, অগ্নিমান্দা, দাহ, পিপাসা, প্রাদর, রক্তার্শঃ, বমি, পাণ্ডরোগ, কামলা, উপদংশ, বিদপ, জীর্ণজ্বর ও বিষমজ্বর নষ্ট হয়। এই অবলেহ অত্যন্ত গুক্তবৰ্দ্ধক, শরী-রের উপচায়ক ও বলকারক। এত্তিকানির্মিত ণুতন পাত্রে অভিন্ত্রে এই ঔষধ রাখিবে।

কুমা ওথওঃ।

কুমাওকাৎ পালগতং হ'লেঃ নিজ্লীকৃত্য ।
পচেৎ তথ্যে মৃতপ্রে শনৈন্তা সময়ে দৃদ্ ॥
যদা মধুনিতঃ পাকস্তান থওণতং স্তানেৎ ।
কুমাওপীড়নাৎ তোমেনাচকেন পুনঃ পচেৎ ॥
যুক্তনাপিনা পণ্ডেৎ তদা সিজেহত নিক্ষিপেৎ।
পিশ্বলাশৃঙ্গবেরাস্তাং ছে পলে জীরকস্ত চ ॥
ছগেলাপত্রমরিচ-ধন্তাকানাং পলার্কক্য ।
ভাসেচচুণীকৃতং তৎ তু দর্বন্যা সংঘট্টয়েৎ পুনঃ ॥
তৎ পকং স্থাপয়েদ ভাঙে দ্বা ক্টোক্রং যুতার্কক্য ।
তদ্ যথায়িবলং থাদেক্রন্তপিতী ক্ষতক্ষরী ॥
কাসশাসত্যক্তির বলবর্ণপ্রদাদন্য ॥
বুষাং পুন্নবক্রম বলবর্ণপ্রদাদন্য ॥

উরঃস্কানকরণং বৃংহণং স্বর্বোধনম্।
অবিভ্যাং নির্ম্মিতং শ্রেষ্ঠং কুমাওকরসায়নম্।
পর্তানকমানাতুসারাৎ কুমাওকস্রবাৎ।
পাত্রং পাকার দাতবাং যাবান্ বাত্র রসো ভবেৎ।
অত্রাপি মুদ্রয়া পাকো নিস্তৃহং নিঞ্জীকৃতম্॥

ত্বগুৰীজাদিরহিত পুরাতন কুমাও-শশু কিঞ্চিৎ জল দিয়া উৎস্থিন ও কৌমবস্তে নিষ্পীড়ন করিবে। পরে রোদ্রে শোষিত **ও** শিলায় পেষণ করিয়া তাহার ১০০ পল, /৪ সের স্বত সহ তাম্রপাত্তে ভাজিবে: কুমাও জল ১৬ হইলে তাহাতে সের. চিনি ১২॥ সের গুলিয়া দিয়া পাক করিবে। পাকসিদ্ধ হইলে প•চালিখিত দ্রব্য সকলের চুর্ণ প্রক্রেপ দিরা উত্তমরূপে আলোড়ন করত শাতল হইলে /২ মের মধু মিশ্রিত করিয়া মত ভাতে রাণিবে। প্রকেগ দ্বা বথা-পিপুল, ভঠ, জীরা প্রত্যেকের ২ পন , গুড়ুত্বক, এলা-ইচ, তেজপত্র, মরিচ ও ধনে প্রত্যেকর চুর্ণ ৪ তোলা। মাত্রা—১ ভোলা ইইতে ২ তোলা পর্যান্ত। কিন্তু অগ্নি ও বল বিবেচনা कतिशा माळा वावछ। कतिरव। ছाগ्रहश्चामित সহিত সেবনে বিশেষ উপকাব হয়। বুষ্য, পুষ্টিকর, বলপ্রদ ও স্বরদোষনিবারক। এই ঔষধ সেবন করিলে রক্তপিত ও ক্ষয়াদি নানারোগ প্রশমিত হয়। (পক্ষান্তরে—উক্ত কুষ্মাণ্ড বিশ্ব করিয়া নিষ্পীড়ন কারলে যে পরিমিত জল নির্গত হইবে, সেই জল ধারাই পাক করিবে। স্তন্ত কুমাণ্ডের রদ (দ্বাব প্রয়োজন নাই)।

বাসাকুষাওখণ্ডঃ।

পঞ্চাশচ্চ পলং পিয়ং কুমাণ্ডাং প্রস্থমাজ্যতঃ।
গ্রাহাং পলশতং গণ্ডং বাসাকাথাচকে পচেং॥
মুন্তধাত্তীশুভাভাগী-ত্রিহগলৈন্চ কাহিকৈঃ।
ক্রানেহধন্তাক-মত্রিচেন্চ পলাংশিকৈঃ॥
পিল্ললীকুড়বিধ্বৈ মধুমানীং প্রদাপত্রেং।
কাসং স্থামং করং হিকাং বক্তপিতং হলীমকম্।
হক্তোগমন্থপিত্রঞ্চ পানসঞ্চ ব্যপোহতি॥

বাসক মূলের ছাল ৩৪ পল, পাকার্থ জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। পূর্ব্ববিক্ত প্রকারে গৃহীত কুল্লাও-শন্ত ৫০ পল, /৪ সের সের ঘতে পূর্ববিৎ ভাজিয়া লইবে। পরে ১০০ পল চিনি, উক্ত বাসকের কাথ ও কুল্লাও শন্ত এই তিন ক্রব্য একত্র পাক করিয়া উপস্কুক সময়ে মূতা, আমলকী, বংশলোচন, বামুনহাটা, গুড়স্বক্, ভেজপত্র ও এলাইচ ইহাদের প্রত্যেকের ২ তোলা, এলবালুক, শুঠ, ধনে ও মরিচ প্রত্যেকের ১ পল, পিপুল ৪ পল নিক্ষেপ করত উত্তমরূপে আলোড়ন করিয়া নামাইবে; শীতল হইলে /১ সের মধু মিশ্রিত করিয়া রাধিবে। ইহা সেবন করিলে কাস, শ্বাস, ক্ষয়, হিক্কা, রক্তপিত, হলীমক, জন্তোগ, অমুপিত্র ও পীনসরোগ প্রশ্বিত হয়।

বাদাখণ্ডঃ।

তুলামানার বাসারাঃ পচেদইগুণে জলে।
তেন পাদাবশেষেণ পাচয়েদাচকং ভিষক্॥
চূর্ণানামভয়ানাঞ্ খণ্ডাচ্ছুদ্ধাচ্ছতং তথা।
বিপলং পিপ্পনীচূর্ণাৎ সিদ্ধে শীতে চ মাজিকাং।
কুড়বং পলমানস্ত চাতুর্জাতং হচ্পিতম।
কিপ্তা বিলোড়িতং পাদেসক্তপিত্তী ক্ষতক্ষী।
কাসক্ষর্প শ্রেপ্তমার্দ্ধির সাবিং ক্লেণ্ড শ

বাসকম্নত শতপনমার্দ্রের গ্রাহাং, জলং শ ১০০ পের শ ২৫, ছরীতকী চূর্ণ র ৬৪, শর্করা র ১০০, পির্মলীচূর্ণ র ২, মধুনঃ কুড্বমন্টপলং বৈগুণ্যাদিতি ভামুদাসঃ, চাতুর্জাতক্ত প্রত্যেকং পলন্। বাসাকাবে শর্করাপলশতং গোলয়িয়া দর্ব্যালোড্রেব, আসম্লাকে পিন্সলীচূর্ণং চাত্র্জাতচুর্ণক প্রক্ষেপ্যং, শীতীভূতে মধু প্রক্ষেপণীয়ন্)।

কাঁচা বাদকমূলের ছাল ১০০ পল, জল
১০০ সের, শেষ ২৫ সের। এই কাথের সহিত
চিনি ১০০ পল মিশ্রিত করিয়া পাক করিবে
এবং উপস্কুক্ত সময়ে হরীতকীচূর্ণ /৮ সের
দিবে। পাক সিদ্ধ হইলে পিপুলচূর্ণ ২ পল
এবং শুড়ত্বক্, তেজপত্র, এলাইচ ও নাগেখর
ইহাদের প্রত্যেকের চূর্ণ ১ পল প্রক্ষেপ করিয়া

উত্তমরূপে আলোড়ন করত নামাইয়া লইবে। শীতল হইলে মধু /১ সের মিশ্রিত করিবে। ইহাতে রক্তপিত্ত, কাস, শ্বাস ও যক্ষা প্রভৃতি নানারোগ প্রশমিত হয়।

রসপ্রয়োগঃ।

অর্কেশ্বরঃ।

মৃতাকং মৃতবঙ্গক মৃতাত্রঞ্চ সমাক্ষিকম্। অমৃতান্বরদৈর্ভা য়ং ত্রিসপ্তকং পুটে পচেৎ । বাসাকীরবিদারীভ্যাং চতুগু ক্লাপ্রসাণতঃ। ভক্ষণাদিনিহস্তাভ রক্তপিতং হদারণম ॥

মারিত তাম, বঙ্গ, অত্র ও স্বর্ণমাক্ষিক ইহাদিগকে গুলক্ষের রদে ২১ বার ভাবনা দিয়া পুট দিবে। অমুপান—বাদক ও ভাম-কুমাণ্ডের রদ। মাত্রা—৪ রতি। ইহাতে স্কারুণ রক্তপিত্র বিনষ্ট হয়।

রক্তপিভান্তকো রসঃ।

মৃতালং মৃততীক্ষণ মান্ধিকং রসতালকম্ *। গন্ধকণ ভবেৎ তুলাং যষ্টিদান্ধান্তীবং ॥ দিনৈকং মন্দিয়েৎ থলে সিতাক্ষোসসম্বিতম্। মাৰ্মাতং নিংস্তাপ্ত রক্তাপিতং স্পারণম্। অরং দাংং ক্ষতক্ষীণং ভূষাং গোষ্মধ্যোচকম্॥

জারিত অল, লৌহ, সাক্ষিক, রসভালক (রসেন্দ্রসারসংগ্রেহের টাকাকার বলেন—রস-তালকের অর্থ হরিতাল) ও গন্ধক সমভাগ; ইহাদিগকে যষ্টিমধু, দ্রাক্ষা ও গুলঞ্চের রসে ১ দিন মর্দ্দন করিয়া ১ মাধা পরিমাণে চিনি

রসো গন্ধতালক কর্ত্তশন্তী সমাগত ।
 সংমর্জা সিকতাবয়ে পচেদ্ বামচতু ইয়য়্।
 পীতাভং জায়তে পাকাদ্রসতালক সংক্রিতম্॥
 জাতেয়-সংহিতা।

পারা, গন্ধক, হরিতাল ও দারুমুজ-বিষ, একত্র মর্দ্ধন করিয়া বালুকাযন্ত্রে চারি প্রহন কাল পাক করিলে পীতাভ যে দ্রব্য প্রস্তুত হয়, ভাহাকেই রসভালক কহে। ও মধুব সহিত সেবন করিলে রক্তপিন্ত, জ্বর ও দাহ প্রভৃতি নানারোগ নিবারিত হয়।

রুশামূতরুসঃ।

রসপ্ত বিশুবং পকাং মাক্ষিকঞ্চ শিলাজতু।
চলদাং শুড়ুটা ক্রাক্ষা মধুপুশ্পক ধাক্সকম্ ।
কুটজক্ত হচং বাজং ধাতকী নিম্বপত্তকম্ ।
গঙ্গীমধুসমাযুক্তং মধুশর্করয়ায়িতম্ ॥
বিধিনা মর্দ্ধান্তা তু কর্ষমাত্রস্ত ভক্ষেরে ।
ধারোকপ্রসা যুক্তং প্রাত্রেব সমুখিতঃ ।
পিত্রং তথায়পিত্তক রক্তপিতং বিশেষতঃ ।
নিহন্তি সর্কানেবিক ক্রং সর্কাং ন সংশয়ঃ ।
রসাযুত্রসো নাম গহনানলভাষিতঃ ॥

পারদ ১ ভাগ, পারদের ধিগুণ গন্ধক;
মাক্ষিক, শিলাজভু, চন্দন, গুলঞ্চ, দ্রাক্ষা,
মৌলদূল, ধনে, কুড় চির ছাল, ইন্দ্রমৰ, ধাইফুল,
নিম্বপত্র ও যৃষ্টিমধু প্রত্যেক ১ ভাগ; ইহাদিগকে মধু ও চিনি সহ বিধিপুর্বাক মর্দান
করিয়া ধারোঞ্চ গুগ্ধের সহিত ২ তোলা পরিমাণে প্রাতঃকালে সেবন করিলে অম্পিত,
রক্তপিত্ত ও জব প্রভাত সর্পূর্বে বিনষ্ট হয়।

স্থানিধী রসঃ।

পুতং গন্ধং শাক্ষিকং লৌহচূর্বং সর্বং দুষ্টং তৈম্পলেনাদকেন। মুমামধ্যে ভূধরে তৎ পুটিছা দল্ভাৎ গুল্পাং তৈম্পলেনাদকেন॥ লৌহে পাতে গোপরঃ পাচয়িত্বা রাত্রৌ দল্ভামক্তপিকপ্রশাবৈয়॥

পারদ, গন্ধক, স্বর্ণমান্ধিক ও লৌহচুর্ণ সমভাগে লইয়া ত্রিফলার কাথে মর্দ্দন করিরা ম্বামধ্যে ভূধর যন্ত্রে পাক করিবে। বটিকার পরিমাণ ১ রভি। অমুপান—ত্রিফলার কাথ। রক্তপিত্ত প্রশান্তির জন্ম রাত্রিতে লোহ পাত্রে গব্য হগ্ম সিদ্ধ করিয়া সেই হগ্ম পান করিতে দিবে।

কপর্দকো রদঃ।

মৃতং বা মৃচ্ছিতং ক্তং কার্পাসকুত্মন্তবৈ:।
মর্পায়েন্দিনমেকস্ত তেন পূথ্যা বরাটিকা a
নির্পা চান্ধন্বায়াং ভাওে কদ্ধা পুটে পচেৎ।
উদ্ভা চুর্ণয়েৎ প্রক্রং মিরিটৈদিন্তবৈ: মহ॥
গুঞ্জামাত্রং ঘুটেনেব ভক্ষয়েৎ প্রাতক্ষথিত:।
উদ্ভাবং ঘৃটেকেব অনুপানং প্রবোদ্ধরেৎ।
কপর্দ্ধনে রসো নাম রক্ত্পিন্তবিনাশন: «

রসসিন্দ্র কিংবা শোধিত পারদ, কার্পাদফুলের রসে > দিন মর্জন করিয়া কড়ির মধ্যে
পূরিবে। পরে অন্ধ্যুষার পাক করিয়া উত্তোলন করত চূর্ণ কবিবে এবং দ্বিগুণ মনিচ্চূর্ণ
তাহার সহিত মিশাইবে। মাত্রা—> রতি।
প্রাতঃকালে মত সহ সেবন করিবে। অন্ধ্রপান—ম্বত ও যক্তভুমুরের রস। ইহা রক্তপিত্তবিনাশক।

শর্করাগ্যং লোহম।

শর্করাতিলসংযুক্তং ত্রিকত্রয়যুতস্বয়: । রক্তপিত্তং নিহস্ত্যাও চামপিত্হরং পরমু ॥

চিনি, তিল, ত্রিকটু, ত্রিফলা, ত্রিমদ, (চিতা মুতা ও বিড়ঙ্গ) ইহাদের সমান লৌহচুর্ণ একত্র মিশ্রিত করত উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে রক্তপিত্ত ও অম্লাপত্ত রোগ উপশ্যিত হইয়া থাকে।

সমশর্করং লোহম।

লৌহাচতুগুণং ক্ষীরমাজাং বিগুণমুত্তমম্ ।
চূৰ্ণং পাদত্ত বৈড়কং দত্তাক্মধূসিতে সমে ।
ভারপাত্তে গুড়ে পজ্ব বাপাংদ্বৃতভাজনে ।
মাবকাদিক্রমেশৈব ভক্ষরেদ্বিধিপূর্বকম্ ।
অনুপানং প্রযুক্তীত মারিকেলোদকাদিকম্ ।
রক্তশিলং জরেং তীব্রময়শিত্তং ক্ষতক্রম্ ।
পূষ্টদং কাজিজননমার্ব্যং বুহামুত্তমম্ ।
(মধুসিতে প্রত্যেকং লৌহসমে, মুল্লা পাকে জাতে
ভৌহাৎ পাদিকং বিড়ক-নিকর-চূর্ণং প্রক্ষেপ্যং, শীভে
মধু দেরম্ ।)

লোহ ৪ তোলা, ছাগহ্ব ১৬ তোলা, ঘৃত ৮ তোলা, চিনি ৪ তোলা ; এই সমুদায় একত্র তামপাত্রে পাক করিয়া বিড়ঙ্গচূর্ণ ১ তোলা প্রক্রেপ দিবে। শীতল হইলে উহার সহিত মধু ৪ তোলা মিলিত করিয়া ঘৃতভাতে রাখিবে। মাত্রা—এক মাধা হইতে , আগত করিয়া ক্রমে বর্দ্ধিত করিবে। অমুপান—নারিকেল জল প্রভৃতি। এই শোহ সেবন করিলে তীত্র রক্তপিত্ত, মম্পিত্ত, ক্ষত্রও ক্ষয়বোগ প্রশমিত হয় এবং কান্তি ও বলবীয়াদি বহিত হইয়া থাকে।

শতমূল্যাদি লোহম্।

শতমুণা:বি ংধাস্ত-ন'গ কে^৽ননানা জিকতায়ভিলৈযুভিং লৌংং স্পাগদ পহমু॥ ভূঞাদাহজ্ঞাচছৰ্দি-ব্ৰজণিওহলং প্ৰমু ॥

শতমূলী, চিনি, ধনে, নাগেশ্বর, রক্তচন্দন, বিকটু, বিফলা, তিমদ (বিড়ন্দ, মূতা, চিতামূল) ও ক্ফতিল প্রত্যেক সমভাগা; সম্দারের সমান লোহ। এই সমস্ত দ্বর একত্ত পেষণ করিয়া লাইবে। সাত্রা—> মামা। অম্পান—মধু। ইহা সেবন করিলে তৃষ্ণা, দাহ, জর, বাম ও রক্তপিত উপশ্যিত হয়।

খণ্ডকান্তং লোহম্।

শতাবরী চিছন্নকা ব্যম্ভিতিকাবলা:।
তালমূলী চ গারাজী ত্রিফলারাব্যক্তথা।
ভাগী প্রন্নলক পূথক পঞ্চ পলানি চ।
কলপ্রোণে বিপত্নামইভাগাবশেষিতম।
দিবোর্যবিহতজ্ঞাপি মান্মিকেণ হতক্ত বা।
পলম্বাদশকং দেরং রুত্মপোঠ্য চুর্বিতম।
থততুলাং গৃতং দেরং পলবোড়শিকং বুঝৈ:।
পচেৎ তামমনে পাত্রে গুড়পাকো মতো যথা।
প্রস্থার্কং মধুনো দেরং গুভাগ্রকতুকং বুচম।
শৃলী বিড়ঙ্গং কুমা চ গুঠাজাজীপলং পলম।
ত্রিকলা ধাজকং পত্রং ক্ষকং মরিচকেশরম।
চুর্বং দ্বা স্থানিতং রিন্ধে ভাভে নিধাপত্রেং।
যথাকালং প্রযুক্তীত বিড়ালপাকং ততঃ।
গ্রাকীরান্থপানক সেন্যো মাংসরসঃ পরঃ।

ভক্রব্যারপানানি লিখং মাংসাদি বৃংহণম্। রক্তপিতং ক্ষয়ং কাসং পার্থশূলং বিশেষ হ: । বাতরক্তং প্রমেহঞ্চ শীতপিত্তং বৃমিং ক্লমম। শরথুং পাওরোগঞ কুঠং প্লীহোদরং তথা।। আনাহং শোণিতাপ্রাবমন্নপিত্তং নিহুতি চ। চকুষ্যং বুংহণং বুষাং মাকলাং প্র তিন্দানম্ 🖠 আরোগ্যপুত্রদং শ্রেষ্ঠং কায়াগ্নিবলবর্দ্ধনম্। একরং লাব্যকরং থওক। তাং প্রকার্তিতম। ছাগং পারাবতং মাংদং তিত্তিরিঃ ক্রকরাঃ শশাঃ। কুরকাঃ কুঞ্সারান্চ তেয়াং নাংসানি যোজয়েও ॥ নারিকেলপয়ঃপানং প্রবিধাকবাল্ডকন। শুক্ষমূলকজীরাখ্যং পটোলং বুহতীফলম ॥ ফলং বার্ত্তাক প্রকারং থার্জ্তরং স্বাদ্র দাডিম্য। ককারপূর্বকং যটে মাংসঞ্চানুপসন্তব্য il বঙ্গনীয়ং বিশেষেণ গণ্ডকান্তাং প্রকৃষ্বতা। লোহাস্তরবদাবালি পুটনাদিলিয়েষ্টে 🛚

শতমূলী, ভল্প, বাসকছাল, মুভিলী, বেড়েলা, ভালমূলী, খদিরকাঠ, ত্রিফলাব ত্রু বামুনহাটা, কুড় প্রত্যেক ৫ পল, পাকার্থ জন ৬৪ সের শেষ ৮৮ সের। মনঃশিলা বা স্থ-মাক্ষিক সংখোগে জাবিত কান্ত জোহ ১২ প্রত চিনি ১৬ পল, সূত ১৬ পল : এই সমুদায় জ্ঞ উক্ত কাথের সহিত গৌহ বা তাম পাতে পাক করিয়া ঘনীভূত হুইলে বংশলোচন, শিলাগড়, গুড়ম্বক, কাক্ডাশুলা, বিড়ন্ধ, পিপুল, শুঠা ক্লম্ভনীরা প্রত্যেক ১ পল এবং ত্রিফলা, মনে তেজপত্র, মহিচ, নাগেশ্বর প্রত্যেক ৪ তোলা নিকেপ করিয়া শাতল হইলে মধু /২ সেব মিশ্রিত করিবে। ইহার অনুপান-গব্যগ্রা মাংসরস প্রভৃতি পুষ্টিকর দ্রব্য ভোজন করিবে। ইহা সেবন করিলে <u>রক্তপিত্ত</u> এবং অমূপিত, শীতপিত্ত, প্রমেহ, প্লীহা, কণ্ঠ প্রভৃতি বিবিধ রোগ নষ্ট হয়। ইং বুষা, চক্ষুষা, প্রীতিবর্দ্ধক, কাস্তিকারক ও প্রি-বৰ্দ্ধক। এই খণ্ডকান্ত লোহ সেবন কালে ছাগ্ৰ পায়রা, তিন্তিরি, ক্রকর (কর্কটিয়া), খংগোশ হরিণ, ক্লফদার হরিণ প্রভৃতির নাংস ভোজন, নারিকেলজন পান; স্বয়ুণি, বেতো, জীবা প্রভৃতি শাক; শুক্ষমূলা, পটোল, বুহতীফল,

বেগুন এবং পাকা আম, খর্জ্ব, মিষ্ট দাড়িম প্রাকৃতি ফল ভোজন করিবে এবং যে সকল দ্রব্যের আদিতে ক-বর্ণ আছে এক্সপ দ্রব্য (কপোত কর্কোটাদি) ও আন্প মাংস পরিত্যাগ করিবে।

উশীরাসবঃ।

উনীরং বালকং পদ্মং কাশ্রবীং নীলম্ৎপলম্।
প্রিরক্ত্ব: পদ্মকং লোগ্রো মঞ্চিতা ধর্ষাসকম্ ॥
পাঠা কিরাতভিক্তঞ্চ ক্সপ্রোধোড় স্বরং শটা।
পর্পটঃ পৃথুরীকঞ্চ পটোলং কাঞ্চনারকঃ ॥
জম্মং শালালিনিয়াসং প্রেত্যকং পলসন্মিত্রম্।
সর্বাং স্ফুর্লিতং কৃত্বা ক্লাক্লায়াং পলবিংশতিম্ ॥
ধাতকীং বোড়শপলাং ক্লন্দ্রেংগিছয়ে ক্লিপেং।
শর্করারাজ্ঞলাং দরা ক্লোক্লার্কভূলাং ভ্রবা ॥
মাসং সংস্থাপরেডাণ্ডে মাংসীমরিচধূপিতে।
উনীরণ্সব ইনের রক্তপিন্তবিনাশনঃ।
পাতকৃত্বপ্রস্থান্য বিদ্যালিকরম্বর্ণা ॥

বেণান মল. বালা. পদ্মক ষ্ঠ, গান্তানীছাল, নীলোৎপল, প্রিদন্ধ, পদ্মকাষ্ঠ, লোধ, মঞ্জিষ্ঠা, ছবালভা, আক্না দি, চিনতা. বটছাল, যজ্জতুমুরের ছাল, শটী, ক্ষেতপাপ ড়া, পুগুরিরা কার্চ, পটোল-পত্র, কাঞ্চনছাল, জামছাল ও
মোচরদ প্রত্যেক এক পল, দ্রাক্ষা ২০ পল, ধাইফুল ১৬ পল, চিনি ১২॥০ দের, মধু /৬।০ দের, জল ১২৮ দের। এই সম্লায় একত্র আরতপাত্র মধ্যে এক মাদ রাখিবে। ঐ পাত্র প্রথমতঃ জটামাংদী ও মরিচ চূর্ণ ছারা ধূপিত করা কর্তব্য। ইহা দেবন করিলে রক্তপিন্ত, প্রমেহ, কুর্ঠ, অর্শাং ও ক্রিমি প্রভৃত্তি নানারোপ উপশ্যিত হয়।

ম্বৃততৈলপ্রয়োগঃ।

বাসাঘ্নতম্।

বাসাং সশাধাং সকলাং সমূলাং
কুদা কৰানং কুত্ৰমানি চাডা:।
প্ৰদান্ন কৰং বিগচেত্ব মুভং ভৎ
সক্ষোত্ৰমাৰেৰ নিহত্তি রক্তম্ ।

শণস্ত কোবিদারত বৃষক্ত ককুভক্ত চ। কন্ধাঢাতাৎ পূলাকজং প্রস্তে পলচভূষ্ট্রম্॥

বাদকের শাখা, ফল ও মূল মিলিত /৮
সের, জল ৬৪ দের, শেষ ১৬ দের।
কল্পার্থ—বাদকপুশা ৪ পল। ঘুত /৪ দের।
পাকান্তে শীতল হইলে মধু ৮ পল মিলিত
করিবে। এই ঘুত কিঞ্ছিৎ মধুর সহিত পান
করিলে রক্তপিত্রোগ উপশ্মিত হয়।

দুৰ্ব্বাভাং মৃতম্।

দুর্বা সোৎপলকিঞ্জনা মঞ্জিষ্ঠা সৈলবালুকা।
সিতাং শীতমুশীরঞ্ মুন্তং চন্দনপদ্মকে ॥
বিপচেৎ কার্বিকেরেতৈঃ সর্পিরাজং স্থপান্থিনা।
তঙ্গান্থ মজাকীরং দ্বা চৈব চতুগুর্পম্ ॥
তৎপানং বমতো রক্তং নাবনং নাসিকাগতে।
কর্ণাজাং বস্ত গচ্ছেৎ তু তসা কংগা প্রপূর্বেৎ ॥
চক্ষুম্রাবিণি রক্তে তু পুরুবেৎ তেন চক্ষ্বী।
মেচু পার্প্রবৃত্তে তু বস্তুকর্মস্থ তদ্ধিতম্।
রেমকুপপ্রবৃত্তে তু বস্তুকর্মস্থ তদ্ধিতম্।

(ততুলোদকচ্ছাগছ্ব গয়: প্রত্যেকং চাতুগুর্ণ্যং, রস্ত্র-শালিততুল শ ৪, জল শ ১৬, সংমদ্যি বস্ত্রপূতং গ্রাহ্মস্) ॥

দাদ্থানি চাউল /৪ সের, ১৬ সের জলে
মর্দন করিয়া ছাঁকিয়া জল লইবে। ঐ জল
১৬ সের, ছাগছয় ১৬ সের, ছাগয়য় ১৪ সের।
করার্থ—দ্বাদিল, স্থঁদির কেশর, মঞ্চিটা, এলবালুক, চিনি, শেতচন্দন, বেণার মূল, মূডা,
রক্তচন্দন, পদ্মকার্ট প্রত্যেক ২ তোলা।
রক্তব্যনে এই য়ত পান, নাসিকা হইতে
রক্তন্সাব হইলে ইহার নশু, কর্ণ হইতে রক্তন্সাব হইলে
ইহা ধারা চক্ষু পূরণ, মেচ ও শুহাধার দিয়া
রক্তন্সাবে ইহার পিচকারী এবং রোমকৃপ
হইতে রক্তন্সাব হইলে গাত্রে মর্দন ব্যবস্থের।

সপ্তপ্রস্থারতম্।

শতাবরীপরোজাক্ষা-বিদারীক্ষ্মামলৈ রসৈ:। সর্পিব। সহ সংখৃজৈঃ সপ্তপ্রস্থং পচেদ্ দ্বতম্ ॥ শর্করাপাদসংযুক্তং রক্তপিত্তহরং পিবেৎ। উরঃক্ষতে পিত্তশূলে চোঞ্চবাতেহপ্যস্থাদূরে। বল্যমোজক্ষরং বৃষ্যং কয়হুদ্রোগনাশনম্॥

শতমূলী,:বালা, দ্রাক্ষা, ভূমিকুমাও, ইকু ও আমলকী, ইহাদিগের রস প্রত্যেক ১ প্রস্থ করিয়া ৬ প্রস্থ ; মৃত ১ প্রস্থ। যথাবিধি পাক করিবে। অনস্তর চতুর্থাংশ শর্করা মিশ্রিত করিয়া। • সিকি তোলা হইতে॥ • অর্দ্ধ তোলা পর্যান্ত পরিমাণে সেবন করিলে রক্তপিত, উরংক্ষত, ক্ষয় ও পিত্তশূল প্রভৃতি রোগ বিনষ্ট হয়। ইহাবল, তক্তে ও ওজোবৃদ্ধিকারক।

হ্রীবেরাছা তৈলম্।

ব্রীবেরং নলদং লোএং পদ্মকেশরপ দক্ষ।
নাগপুষ্পক নিৰক ভদ্ৰমুন্তা তথা শঠা ॥
চন্দনকৈব পাঠা চ কুটজন্ত ফলড্চম্।
বিষলা শৃঙ্গবেরক ভূতবাসত্বচন্তথা ॥
আন্তাহিজস্পারান্তি মূলং রক্তোৎপালসা চ।
এতেবাং কার্যিকৈভাগৈন্তৈলপ্রন্থং নিপাচয়েং ॥
কান্ধ্যাচককৈব ক্ষীরং মেহসমং ভবেং।
নক্তপিন্তক ত্রিবিধং নাশয়েদবিকল ১:॥
কাসং পক্ষিধং হস্তি তথা ধাসমূর,ক্ষতম্।
ইবরান্তামিদং তৈলং বলবণাগ্রিবর্দ্ধনম্॥
ক্রীমদ্গহননাথেন নির্মিতং বিষমপাদে॥

তিলতৈল /৪ সের, লাক্ষার কাথ ১৬ সের; হ্রা/৪ সের। কর্বার্থ—বালা, বেণার মূল, লোধ, পদাকেশর, তেজপত্র, নাগেশর, বেলশুঠ, নাগরমূতা, শটা, রক্তচলন, আক্-নাদি, ইক্রাবর, কুড্চিছাল, ত্রিফলা, শুঠ, বহেড়াছাল, আমের আঁটি, জামের আঁটি, রক্তোৎপলের মূল প্রত্যেক ২ তোলা। ইহা মর্দনে ত্রিবিধ রক্তপিত্ত, কাস, খাস ও উরংক্ষত রোগ প্রশমিত এবং বল বর্গ ও অধি বৃদ্ধিত হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিং।

--:+:---

রক্তপিতে পথ্যান।

অধোগতে চছৰ্দ্দনমূৰ্দ্ধনিৰ্গমে বিরেচনং স্যাত্রভয়ত্র লভ্যনম। পুরাতনাঃ ষষ্টিকশালিকোদ্রুং-প্রিয়ঙ্গুনীবারষবপ্রসাতিকা: ॥ মুদ্দা মস্থরাশ্চণকান্তবয়ো মুকুষ্টকাশ্চিকটন্দ্মিনৎসাঃ শশঃ কপে:তো হরিণৈণলাব-শরারিপারাবতবর্দ্ধকা**ল** ॥ ব**কা** উরভাশ্চ সকালপুচ্ছা:। কপিঞ্জলাশ্চাপি ক্ষায়বৰ্গঃ। গৰামজায়াশ্চ পয়ো মুতঞ্ ঘূতং মহিষাঃ প্ৰসং পিয়াল্য ॥ त्रष्टायनः कश्राह्म विश्वनीय-পটোলবেত্রাগ্রমহার্দ্রকাণি। পুরাণবু আ ওফলঞ্চ পর-ত'লানি তথীজজলানি বাসা # ৰ'দ্নি বিশ্বানি চ দাডিমানি পর্জরধাতীমিষিনারি:কলম। কশেক্ষশুক্ষাটমক্ষরাণি কপিথাবাল কপর্যক । বি॥ ভূনিম্বণাকং পিচমর্দ্দপত্রং তুথা কলিকানি চলাজশকুঃ ভাকা দিতা মাকিকমৈকব≉ শীতোদকঞেী দ্ভিদবারি চাপি। **দেকোহবগাহ: শতধৌতদর্পি-**রভাঙ্গযোগঃ:শিশিরপ্রদেহ:। হিমানিলকক্ষনমিকুপাদা: কথা বিচিত্রাশ্চ মনোংসুকুলাঃ ॥ ধারাগৃহং ভূমিগৃহং স্থশীতং বৈদুর্যামুক্তামণিধারণক। রম্ভোৎপলাম্ভোক্রহপত্রশ্যা কৌমাম্বরকোপবনং ফুশীতম 🛭 প্রিরন্থ কাচন্দনরাবিতানা-মালিক্সনঞাপি বরাক্সনানাম। পদ্মাকরাণাং সরিতাং হদানাং চক্রোদয়ানাং হিমবন্দরীণাম ॥ ফ্ৰীতলানাং গিরিনিঝ রাণাং শ্ৰুতিঃ প্ৰশন্তানি চ কীৰ্স্তিতানি। প্রকৃষ্টনীরং হিমবালুকা চ মিত্রং নৃগাং শোণিতপিভরোগে #

অধোগামি-রক্তপিত্তে উৰ্দ্ধগামি-ব্যন, রক্তপিতে বিবেচন, উদ্ধাধ উভর দিগ্রামি-রক্তপিত্তে লঙ্ঘন, পুরাতন ষষ্টিকধান্ত, শালি-ধান্ত, কোদধান্ত, কাঙ্গনিধান্ত, উজীধান্ত, যব, লাল উদ্বীধাঞ্জ, মুগ, মহুর, ছোলা, অভ্হর, বনমুগ, চিঙ্গ ড়িমাছ, বানি মাছ, শশক, গুণু, হরিণ, এণ, লাবপাথী, পায়রা, শরারিপাথী, বক ও ভারই পাথির নাংস, মেষ, কালপুচ্ছ. কপিঞ্জল পাখী, ক্ষায়বর্গ, গ্রাহ্রগ্ধ, গ্রাহ্রত, ছাগত্ত্ব, ছাগ্রত, মাহিনমূত, কাটাল, পিয়াল ফল রম্ভাফল (কদলী), কাঁচড়া শাক, নটেশাক, পটোল, বেতাগ্ৰ, আদা, পুৰাণ কুমড়া, পাকা ভাল, কচি ভালের শাস ও জল, বাসক, মধুব রস, তেলাকুচা, मंडिय, थर्ड्डव, आयनकी, त्योति, नातित्कन, ভন্ন তক, কেশুব, পানিফল, কয়েত্রবেল. কুমুলাদির মূল, ফল্সা ফল, চিরতা, নিম্ব-পত্র, লাউ, ইব্রুয়ব, থৈএর ছাতু, কিসমিদ, চিনি, মধু, ইকুরস, শীতল জল, ঔদ্ভিদ জল, পরিষেচন, অবগাহন স্নান, শতগোত-ঘত, তৈল মৰ্দন, শীতল প্ৰলেপন, শীতল বায়ু, চন্দন, জ্যোৎসা, মনের স্বাস্থ্যজনক বাকা, ধারাগৃহ (ফোয়ারার বর), শীতল ভূমিগৃহ, रेतमूर्यप्रमिन, मूका धांतन, कननीभटा এবং भन्न-কুমুলাদির পত্তে শর্ম, রেশমনির্মিত বস্ত্র

পরিধান, শীতল উন্থানে বাস, প্রিয়ঙ্গু-চন্দন, ভূষিতা কামিনীগণের সহিত আলিঙ্গন, পদ্মপুশ্রুক নদী এবং ফ্রদ (অক্কৃত্রিম রহৎ জলাশর) ও চল্রোদয় কালীন হিম্শীকর-সংস্কু শীতল পর্বতগুহা, নিঝ্রের জল, স্থাব্য গীত, বাস্ত, উৎকৃষ্ট জল ও কর্প্র এই সমস্ত রক্তপিত্রোগির স্থপ্য।

রক্তপিত্তেহপথ্যানি।

ব্যায়াসাপানিষেবণং রবিকরগুঁকানি কর্মাণি চ ক্ষেত্রে বেগবিধারণং চপলতা হস্তাখ্যানানি চ। খেলাব্রক্তিপুমপানস্বরতদোধাঃ কুলখো শুড়ো বার্ত্তাকুলিমায়স্বপদধিকারাণি কৌপং পরঃ॥ ভাষ্ত্রং নলদমু মজনগুনঃ শিশ্বীবিক্ষাশনং কট্নাং লবণং বিদাহি চ গণস্ত্যাজ্যোহস্ত্রপিতে নৃণাম্॥

বাারাম, পথপর্যাটন, রৌদ্র সেবন, তীক্ষ্ ক্রিয়া, ক্ষোত, মলমুত্রাদিব বেগধারণ, চঞ্চলতা, হস্তী অর্থ প্রভৃতি যানে আরোহণ, স্বেদ, রক্ত-প্রাব, ধুমপান, স্ত্রীপ্রদঙ্গ, ক্রোধ, কুলথকলার, গুড়, বেগুন, তিল, মামকলায়, সর্যপ, দধি, ক্ষারদ্রবা, কৌপ ক্লে, তান্থল ভক্ষণ, নিম্ব, মন্ত্র, রগুন, শিম, বিরুদ্ধ ভোজন, কটুত্রবা, অম্প্রবা, লবণরস্কংবৃক্তব্য, বিদাহিদ্রবা, রক্ত পিত্রবোগে এই সকল পরিত্যাগ করিবে।

ইতায়ুকোদ-সংগ্রহে রক্ত্রপিত্তরোগাদিকারঃ।

অথ রাজ্যক্ষরোগাধিকারঃ।

অথ রাজ্যকাকতক্ষীণ-নিদানম।

বেগরে খাৎ ক্ষ্মাটেচৰ সাহসাধিবমাশনাৎ।
ক্রিদোবো জায়তে যক্ষ্মা গলো হেতুচতুষ্ট্রয়াৎ।
কক্ষপ্রধানৈদো বিজ ক্ষদ্ধের সুসবস্থা হ।
ক্ষিত্রবায়িনো বাপি ক্ষীণে রেতস্যুনন্তরা:।
ক্ষীয়ন্তে ধাতবং সর্বেষ্ঠ ততঃ গুবাতি মানবঃ।

বাত মূত্র ও পুরীষের বেগধারণ, মৈথুন ও উপবাসাদি ধাতুক্ষরকারক কর্মা, বলবান্ ব্যক্তির সহিত মন্ত্রমুদ্ধাদি মহাসাহসের কার্য্য ও বিষমাশন (অল্ল, অধিক বা অকালে ভোজন) এই চারি প্রকার হেতু হইতে ফলুরোগের উৎপত্তি হইয়া থাকে। ইহা সালিপাতিক ব্যাধি। তন্ত্রাস্তরে ফলুরোগের বহুসংখ্যক হেতু উক্ত আছে, কিন্তু তৎসমূদায়ই এই কারণ-চতুইয়ের অস্তর্ভুত জানিবে।

ককপ্রধান-বাতাদিদোষত্রয় রস-वाहिनो नांफ़ी जकन क्रम्त इहेरन त्रक, मांश्ज, মেদ, অস্থি, মজ্জা ও শুক্রধাতু ক্ষীণ হইতে থাকে। কারণ রদ সকল ধাতুর পোষক, সেই রসের গতি কল্প হওয়াতে পোষকাভাবে কোন ধাতুই পুষ্ট হইতে না পারিয়া ক্ষ পাপ্ত হয়। এইরপ ক্ষাকে অপুলোম-ক্ষয় কহে। আর অতিমৈণুন বারা গুক্রধাতু ক্ষীণ হইলেও পূর্ব পূর্ব ধাতুগুলি ক্রমশঃ ক্রয়প্রাপ্ত হইতে থাকে। অর্থাৎ শুক্রক্ষয় হইলে বায়ুপ্রকোপ হেতৃ তৎপূর্বধাতু মজ্জা ক্ষয় এবং এবং মজ্জকরে বারুর অতি কোপ ২েতু তৎপূর্ক ধাতু অস্থি ক্ষয় প্রাপ্ত হয়। এইরূপে বিলোমভাবে মেদ, মাংস, রক্ত ও রস্থাতুর ক্ষয় হইয়া থাকে। এই প্রকার ক্ষয়কে বিলোগ-ক্ষয় কছে। ধাতু **ক্ষর হওরাতে মহু**ষ্যও গুদ্দ হইয়া বার।

জংসপাধাভিতাগত সন্তাগঃ করপান্নাঃ। ব্যঃ সর্বাহণাতেতি লক্ষণং রাজবক্ষণঃ। শ্বরভেদোহনিলাচছ নং সংকাচন্চাংসপর্ণরাঃ।
শ্বরো লাহোহতিসারক পিত্তাক্রস্ক্রস্য চাগমঃ।
শিরসঃ পরিপূর্ণহমভক্রচ্ন্দ এব চ।
কাসঃ কণ্ঠস্য চোদ্ধানো বিক্রেয়া কক্ষকোপতঃ।

ক্ষম ও পার্শ্বরে বেদনা, হন্তে পদে সম্বাপ এবং সর্বাগত জব এই তিনটি রাজ্যক্ষার লক্ষণ। যক্ষরোগে বাভাধিকা থাকিলে স্থানভঙ্গ, ক্ষম ও পার্থদেশের সক্ষোচ ও শুলবদ্বেদনা; পিতাধিকা থাকিলে জব, দাহ, অভিদার ও রক্তনিষ্ঠীবন এবং কফাধিকা থাকিলে মস্তকের পরিপূর্ণতা (মাথাভার), অক্লচি, কাস ও কণ্ঠের উদ্ধংস (গলা স্থান্ত্ স্কা, কার্জিকের মতে উৎকাসিকা) এই সকল লক্ষণ।প্রকাশিত হয়।

অথ রাজযক্ষ-চিকিৎদা।

বলিনো বছদোবস্য গঞ্চপ্রাণি কার্য়েং। বন্মিণঃ কীপদেহস্য তৎ কৃতং স্যাদিবোপনন্। শুনায়ন্তং বলং পুংসাং মলায়ন্তঞ্চ জীবিতন্। তত্মাদ্ বড্নেন সংরক্ষেদ্ যদ্মিণো মলরেতসী॥

বাতাদি বছ দোষে আক্রাস্ত যক্ষরোগির যদি বল থাকে, তাহা হইলে প্রথমে বমন বিরেচনাদি পঞ্চকর্ম করান যাইতে পারে, কিন্তু রোগী ক্ষীণ-দেহ হইলে, উহা বিষবৎ অনিষ্টোৎপাদক হইয়া থাকে। যেহেতু মমু-ধ্যের বল শুক্রায়ন্ত এবং জীবন মলায়ন্ত, অত্তর্থ শুক্ত ও মল যত্নপূর্বক রক্ষা কর্ত্তব্য ।

লোখ ধিকানাং বননং শস্যতে সবিক্ষেদন্।
ব্যহুংখলোগপন্নানাং সক্ষেহ্ধ যন্ত্ৰ কৰ্ষণন্।
বাদিও যক্ষুকোগো বনন বিক্লেচন নিষিদ্ধ,
তথাপি দোষের আধিক্য থাকিলো অর্থাৎ শেষার প্রাবল্য অধিক ইইলো বমন এবং পিত্তের প্রাবল্যা অধিক ইইলো বিব্যেচনও করান যাইতে পারে। কিন্তু রোগিকে অগ্রে স্নেহ ও স্বেদ প্রদান করিয়া অলমেহযুক্ত মৃত্ব বমন ও বিরেচন এরূপভাবে প্রয়োগ করিবে, যেন তাহার শরীর ক্ষীণ না হয়।

শালিবষ্টিকগোধুম্-যবমূদগাদর: গুড়া:।
মন্ত্রানি জাঙ্গলা: পক্ষি-গুগা: শন্তা বিগুষ্যতাম্॥
শুষ্যতাং ক্ষাণমা: সম্মাং কল্পিডানি বিধানবিং।
দন্তাং ক্রব্যাদমাংসানি বুংহণানি বিশেষতঃ॥

এক বংসরের পুরাতন শালিধান্ত, ষাটি-ধান্ত,: গাধ্ম ও বব, মুদ্দা প্রভৃতির দাইল এবং মন্ত ও জাঙ্গল পশু-পক্ষির মাংস, যক্ষরোগির পথ্য। শোষ-রোগির বলমাংস ক্ষীণ হইলে মাংসভোজি-পশুপক্ষির মাংস আহার করা বিধের; কারণ উহা বিশেষরূপ মাংসবর্দ্ধক।

সিপিন্ধলীকং স্বৰং স্কুলথং স্নাগ্রম্।

দাড়িমামলকোপেতং স্লিম্মা জরসং পিবেং ॥

তেন বড় বিনিবর্ততে বিকারাঃ পীনসাদয়ঃ।

অবাতো বিগুণং মাংসং স্ক্তিগ্ইগুণং জলম্।

পাদস্থং সংস্কৃত্ঞাজ্যে বড়লৈ বৃষ্ উচ্তে ॥

পাদহং সংস্কৃতকাজ্যে বড়কো বৃষ্ ভচাতে।
(যবস্তু পলমিত: কুলখন্ট। ছাগমাংসং পলচতুষ্টমং,
কলমন্টটছারিংশংপলং, অবশিষ্টং ছাদশপলম্। ততঃ
পলমিতে যুতে সংক্ষরণীয়ম্। তত্র কর্ধমিতং দৈৰূবং
দেরম্, সৌরভার্থং হিঙ্গু দেরম্। পিপ্পলীনাগরক পূথক্
মাব্মিতং কন্ধীকৃত্য দেরম্। বৃদ্ধবৈত্যাস্ত প্রভাব
মাব্মিতং কন্ধীকৃত্য দেরম্। বৃদ্ধবৈত্যাস্ত প্রভাব
হাইমি, দাভিমানলকরোরপি প্রত্যেকং মাবকচতুষ্টরং
ক্রাহ্ম্। সম্দিতদ্রবাপেক্ষয়া মাংসং দ্বিত্তাং ব্যাহ্ম্।
সর্ব্বমেকীকৃত্য অন্তর্ভাগভাগে কথনীয়ম্, তৎপাদহুং ঘৃতেন
সংক্ষত্যভিপবোজ্যমিত্যাহাঃ। চক্র-টাঃ)

যব ১ পল, কুলখ কলাই ১ পল, ছাগমাংস ৪ পল, জল ৪৮ পল। একতা সিদ্ধ করিয়া ১২ পল অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া ছাঁকিয়া লইয়া কোন পাত্রে ১ পল মৃত উষ্ণ করিয়া তাহাতে ঐ রস সন্তলন করিবে এবং সৈদ্ধব ২ তোলা, সৌরভার্থ কিঞ্চিৎ হিন্তু, পেনিত পিশ্ললী ও শুলী এক এক মানা দিয়া কিয়ৎক্ষণ পাক করিবে এবং অমরস করিবার জন্ম উহাতে দাড়িম ও আমলকীর কিছুরস দিবে। ইহার নাম ষড়ক যুব। এই যুব সেবনে মন্মরোগির পীনসাদি ছয় প্রকার বিকার উপশ্যিত হয়।

পারাবতকপিচছাগ-কুরসাগাং পৃথক্ পৃথক্। মাংসচুর্মজাক্ষারে: পীতং ক্ষয়হরং পরম্॥

পায়রা, বানর, ছাগ বা হরিপের মাংস মতে ভাজিয়া চূর্ণ করিয়া ছাগ-ছুগ্নের সহিত পান করিলে ক্ষয়রোগ নিবারণ হয়।

ছাগং মাংসং পয়শ্ছাগং ছাগং সূর্পিঃ সশর্করম্। ছাগোপসেবা শয়নং ছাগমধ্যে তু বক্ষমুৎ ॥

ছাগমাংস ভক্ষণ, ছাগত্ত্ব পান, চিনির সহিত ছাগত্মত পান, ছাগ সেবা ও ছাগসমূহ মধ্যে শশ্বন, যজুরোগির পক্ষে বিশেষ হিতকর।

শর্করামধূসংযুক্তং নবনীতং লিহন্ ক্ষয়ী। কীরাশী লভতে পুষ্টিমতুলো চাজামাকিকে॥

চিনি ও মধুর সহিত নবনীত অথবা অসমভাগে গ্রত ও মধু লেহন করিয়া ত্থপান করিলে বলাজনিত কণতা দূর হইয়া শরীরের পুষ্টি হইয়া থাকে।

যুতকুস্মরসালীচং ক্ষরং ক্ষরং নয়তি গজবলামূলম্। ছুগ্গেন কেবলেন চ বায়সজজ্যা নিপাঠেতব ॥

গোরক্ষচাকুলের মূল বাটিয়া স্থত ও মধুর সহিত সেবন করিলে অথবা ছগ্নের সহিত কাকজ্জ্বা সিদ্ধ করিয়া পান করিলে যক্ষা প্রশামত হয়।

শতপুষ্পা সমধুকং কুঠং তগরচন্দনম্। আলেপনং ভাৎ সযুতং শিরঃপার্খাংসশূলকুৎ॥

নক্তকের পার্শ্বেরা স্কন্ধে বেদনা থাকিলে শুল্ফা, যষ্টিমধু, কুড়, তগরপাত্নকা ও খেত-চল্মন, একত্র বাটিয়া স্বত-সংস্কু ও উষ্ণ করিয়া বেদনা স্থানে প্রলেপ দিবে, তাহাতে বেদনা প্রশ্মিত হয়।

বলা রামা তিলাঃ সপিম ধুকং নালমূৎপলম।
পলক্ষা দেবদার চন্দনং কেশরং যুত্য ॥
বীরা বলা বিদারা চ পুঠগক্ষি পুনর্বা।
শতাবরী গয়ন্তা চ কতুবং মধুকং যুত্য ॥
চহার এতে গোকাজৈ, এদেহাঃ পরিকার্জিতাঃ
শতাঃ সংবৃদ্ধদোষাণাং শিরংশাখাং শশুলিনাম্ ॥

বেড়েলা, মানা, ভিল, ষষ্টিমধু, নীলোৎপল ও মুত্ত; অথবা গুলাগুলু, দেবদাক, খেত- চন্দন, নাগেশ্বর ও ঘৃত; কিংব! ক্ষীরকাকোলী, বেড়েলা, ভূমিকুত্মাও, এলবালুক ও পুনর্নবা; অথবা শতমূলী, ক্ষীরকাকোলী, গন্ধভূণ, যষ্টি-মধুও ঘৃত একত্র বাটিয়া অল্ল উষ্ণ করত প্রলেপ দিলে মস্তক, পার্শ্ব ও রন্ধদেশের বেদনা নিবাহিত হয়।

অলক্তকরসৈঃ ক্ষেক্তিং রক্তবান্তিহরং পরস্। বিশল্যকরণীকাশঃ কুকুরদন্তবন্তথা ॥

আল্তার জ্বল ২ তোলা, মধু॥ তোলা, অথবা আয়াপানের কাথ কিংবা কুক্শিমার রস পান করিলে রক্তবমন নিবারিত হয়।

যষ্ট্যাহ্বং চন্দনোপেতং সম্যক্ষীরপ্রপেষিতম্। ক্ষীরেণালোড্য পাতব্যং রুধিরচছন্দিনাশনম্॥

ষ্টিমধুও রক্তচনদন, ছথের সহিত বাটিয়া পান করিলে রক্তবমন নিবারিত হয়।

অথ ব্যবায়াদি হেতুকশোষ-নিদানম্।

ব্যবায়শোকবার্দ্ধক্য-ব্যায়াসাধ্যপ্রশোষিতান্।
ব্রণার, কতসংজ্ঞে চ শোদিণো লকণে: শুপু।
ব্যবায়শোষী শুক্রম্য করনিকরপক্ততঃ।
পাড়ুদেহো যথাপূর্বং কীয়ন্তে চাক্ত থাতবঃ॥
প্রধানশীল: প্রস্তার্কঃ শোকশোষ্যপি ভালৃশঃ।
জরাশোষী কূশো মন্দ-বীর্বুদ্ধিবলেন্দ্রিয়ঃ।
কম্পনোহরুচিমান্ ভিন্ন-কাংক্তপাত্রহত্বরঃ॥
ঠাবতি প্রেমণা হীনং গৌরবার্তিপাড়িতঃ।
মংপ্রক্রাক্তাক্তানাকঃ শুক্রক্সনক্তবিঃ॥
অধ্বশোষী চ প্রস্তাকঃ সংস্কৃত্রপর্যভ্তবিঃ।
প্রস্তান্তাব্যবং শুক্তপাত্রহত্ববঃ।
বা্যায়ামশোষী ভূষিঠমেভিরেব সম্বিতঃ।
নিক্রের্যক্রক্তক্তিঃ সংযুক্তক কতং দিনা।
রক্তক্র্যান্তেদনাভিস্তবৈবাহার্যস্ত্রপাৎ।
ভ্রিক্তিয়া ভ্রেচেহাবং স চাসাধ্যত্বো মতঃ।

বাবার অর্থাৎ নৈথান, শোক, বাদ্ধক্য, ব্যায়াম, পথপর্যাটন, এগ (ক্ষত্র) ও উরংক্ষত এই সপ্ত কারণে সপ্ত প্রকার শোবরোগ উৎপন্ন হয়। লাহাদের প্রত্যেকের লক্ষণ লিখিত হইতেছে। ব্যবায় স্থারা যে শোষ রোগ উৎপন্ন হয়, তাহাকে ব্যবায়শোব কহে। ব্যবায় শোষ-রোগী, শুক্রুক্মজনিত লক্ষণে অর্থাৎ লিক্ষেও অপ্তকোষে বেদনা, মৈগুনে অসামর্থ্য ও বিলম্বে শুক্রের বা রক্তের অল্ল ক্ষরণ এই সকল উপদ্রবে উপক্রত ও পাণ্ড্বর্ণ হয়; এবং শুক্রুক্ময় হেতৃ বায়ু-প্রকোপে তাহার অন্থি মজ্জা প্রভৃতি ধাতু সকল বিলোমভাবে ক্ষয় প্রাপ্ত হইতে থাকে।

শৌকজনিতলোষরোগী প্রধ্যানশীল অর্থাৎ যাহার বিয়োগে লোক উৎপন্ন হইন্নাছে, সর্বনা তচ্চিন্তারত ও শিথিলাঙ্গ হয় এবং শুক্রক্ষয়-লক্ষণ ভিন্ন পূর্বোক্ত ব্যবায়শোমের যাবতীয় উপদ্রবে উপদ্রুত হইয়া থাকে।

জরা অর্থাৎ বাদ্দক্যাহেতু বে শোষ হয়, তাহাকে জরাশোষ কহে! ইহাতে শরীরের ক্লণতা, বীর্য্য বৃদ্ধি বল ও ইন্দ্রিয়শক্তির অল্পতা, কম্পা, অরুচি, ভগ্ন কাংস্ত-পাত্রের স্তায় স্বর, শ্লেমহীন শুদ্ধকাস, দেহের গুরুতা, চিত্তের অস্থিরতা, মুখ নাসিকা ও চক্ষ্ণ দিয়া জলপ্রাব, শুদ্ধনা ও ক্লক্ষনেহ এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়।

অধিক পথপর্যাটন করাতে যে লোমবোগ হয়, তাহাকে অধ্বলোধ কহে। এই রোগে অঙ্গ শিথিল, দেহের কান্তি ভৃষ্ট অর্থাৎ ভাষা দ্রব্যের প্রায় ক্লফ, অবয়ব সকল স্পর্শশক্তি-বিহীন এবং ক্লোম, কণ্ঠ ও মুখ শুদ্ধ হইয়া থাকে।

ব্যায়ামজনিত শোষ রোগে, শিথিলাঙ্গ-তাদি অধ্বশোষলক্ষণসমূহ বাছ্ল্যভাবে লক্ষিত হয় এবং ক্ষত ব্যতিরেকে উন:ক্ষতের অপর সমস্ত লক্ষ্ণ বিশ্বমান থাকে।

কোন বিশেষ ক্ষত নিৰন্ধন রক্তথাৰ, বেদনা ও আহার যন্ত্ৰণা হেতু যে শোষ হয়, তাহাকে ত্ৰপশোধ কহে। এই শোষ অসাধাতম।

ব্যবায়শোষ-চিকিৎসা।

ব্যবায়শোষিণং ক্ষীর-রদমাংসাজ্যভোজনৈঃ। স্বকৃলৈম ধুরৈক্র ত্যৈজীবনীয়ৈক্রপাচরেৎ॥

ব্যবার শোষ-পীড়িত রোগিকে হগ্ধ, মাংসের রস, মাংস ও গুত পথ্য এবং ভদীর হৈতকর মধুর, জন্ম ও জীবনীয় ঔষণ প্রদান করিবে।

(भाकरभाष-ििक ९ मा।

হ্ৰণাশাসনৈ: কীরৈ: ক্রিগেম ধ্রশীতলৈ:। ট্র দীপনৈল গুভিন্চালৈ: শোকশোবমুপাচরেৎ ॥

শোকজনিত শোষ রোগে হর্ষোৎপাদন, আশাস প্রদান, হগ্ধ পান এবং স্লিগ্ধ, মধুর, শীতল, অগ্নিদীপক ।ও লগু অন্ন ভোজন কর্ত্তব্য।

ব্যায়ামশোষ-চিকিৎসা।

বাগনাদশেবিশং স্নিষ্টেক্ষঃ ক্ষতক্ষরছিতৈহিনৈঃ। উপাচরেক্ষীবনীধৈবিধিনা দ্রৈন্মিকেণ তু ॥

ব্যায়াম-জনিত শোষে ক্ষতক্ষ্ম-হিতকর ক্ষিথ্য-গাঁতল জীবনীয়গণ থারা শ্লৈছিক বিধান:-গ্লমারে চিকিৎসা করিবে।

অধ্বশোষ-চিকিৎসা।

आञ्चार्यश्रमिनास्रदेशः नीरेजम् धृतवृश्हरेगः । असमारमसमाहारेतस्रक्षानासम्भाततः ॥

স্থাপবেশন, দিবানিদ্রা এবং শীতল মধুর বুংহণ অন্ন ও মাংসরস অধ্বশোষে হিতকর।

ত্ৰণশোষ-চিকিৎসা।

खनामारः कारार जिल्लानिश्वः चाइनीक्लाः। क्रेयनरेम्रजनरेमर्ग बृदेवर्गःशतकानिकः॥

স্নিগ্ধ অগ্নিদীপক স্বাহ্ন ও শীতল আহার অথবা দাড়িমাদির রসে অমীকৃত বা নিরম

মূল্গাদির স্থ ও মাংসরস প্রদান করিয়া ত্রণশোষের চিকিৎসা করিবে।

অথোরঃক্ষত-নিদাময়।

ধত্রণয়ক্সতোহতার্থং ভার্মদহতো প্রক্রম। যুধামানক বলিভিঃ পততো বিষমোচ্চতঃ॥ বুষং হয়ং বা ধাবস্তং দুমাং বাক্তং নিগছতঃ। শিলাকাঠাশনির্ঘাতান কিপতো নিম্নতঃ পরান ॥ অধীয়ানন্ত বাড়াচৈচদু রং বা প্রজতো ক্রতম্। মহানদীৰ্বা ভরতো হয়েব । সহ ধাৰতঃ ॥ সহসোৎপততো দ্বং তুর্কাতিপ্রনৃত্যত:। তপালৈঃ কর্মভিঃ ক্র রৈভ শমভাাহতভা বা ॥ বিক্ষতে বক্ষসি ব্যাধিব লবান সমুদীযাতে। রীয় চাতিপ্রসক্ত**র ককালপ্রমিতাশিনঃ।** উরো বিরুজাতেইতার্থং ভিন্ততেইখ বিভ্জাতে। প্রপীড়েতে ততঃ পার্ষে ওয়াছাকং প্রবেপতে ॥ ক্রমাদীয়াং বলং বর্ণো রুচিরগ্রিশ্চ **চী**য়তে : ক্রো ব্যথা মনোদৈন্তং বিড়্ভদাগ্রিবধাবপি 🛭 ছষ্টঃ স্থাবঃ হছৰ্গন্ধ: পাঁতো বিএথিত। বহু:। কাসমানস্ত চাভীক্ত ককঃ সংথক প্রবন্ধতে। . म कड: कीयार : डार्थर एथा खाको कामा: क्यार ॥

সতত জাবোপণ ধ্যুরাকর্ঘণ ও গুরু-ভারবহন, বলবানের সহিত মল্লয়ক, অতি উচ্চস্থান হইতে পতন, ধাৰ্মান বুষ অশ্ব ৰা গজোষ্ট্রাদি দমনাহ পশুকে বলপুর্বক বিধারণ, শিলা (দীর্ঘ প্রস্তর) খণ্ড, কার্চ্চ বা নির্ঘাত নামক অন্তবিশেষের সবলে নিক্ষেপ, তাতন, অতি উচ্চৈ:ম্বরে অধায়ন, ক্রতবেগে বা বছদুর গুমন, সম্ভরণ ছারা বড় বড় নদী উত্তরণ, ধাবমান অখের সহিত ধাবন, লক্ষন ও শীঘ্র শীঘ্র নর্তুন, এই সকল কারণে এবং এই প্রকার অন্তান্ত কঠোর কর্ম সম্পা-দনে, বক্ষ:স্থল কত হইলে, অথবা অভাস্ত স্ত্রীসঙ্গম ও ক্লকালভোজন করিলে বায়ু কুপিত হওয়ায় উর:ক্ষত রোগ উৎপন্ন হয়। এই রোগে বক্ষঃস্থল যেন ভয়, বিদীর্ণ বা বিধা-বিভক্তবং বলিয়া অনুমিত হয় এবং পার্শ্ব-ছয়ে বেদনা, অঙ্গশোষ ও কম্প উপস্থিত হয়।

জ্বমে বীর্যা বল বর্ণ ক্রচি ও অগ্নির হীনতা, জ্বর, বাথা, মনোদৈত্য, মলভেন ও আগ্লাপ হইতে থাকে। কাদের স্বভুত কফ নিরস্তর বহু পরিনাণে নির্গত হয়। বক্ষঃক্ষত হেতু বিশেষতঃ স্ত্রী-সেবনাদি থারা শুক্র ও ওজ্বংক্ষরবশতঃ উর্ক্তে-ব্রোগী অত্যন্ত ক্ষীণ হইয়া পড়ে।

অথোরঃক্ষত-চিকিৎসা!

উন্নো মন্ধা ক্ষতং লাক্ষাং প্রদা নগুদংমুভাষ্। মন্ত্র এব পিবেক্জীর্নে প্রদান্তাৎ সশর্কর্ম ।

উরংক্ষত হইয়াছে জানিতে পারিলে হয় ও মধুর সহিত লাক্ষাচূর্ণ সেবন করিবে। ঔষধ জীর্ণ হইলে চিনি ও জগ্ধের সহিত আল ভোজন করিবে।

বলাদি-চূর্ণম।

বলাৰগৰা জীপণা বহুপুনী পুনৰ্নবা।
প্ৰদা নিতামভাস্তাঃ শ্মহতি ক্ষতক্ষ্ম ।

বেড়েলা, অধ্যান্ধা, গান্থারীফল, শতমুলী ও পুনর্মবা, ইহাদের সমভাগ চুর্ণ অথবা ইহাদের কোন দ্রব্যের চুর্ণ অন্ধতোলা পরিমাণে, ছঞ্জের সহিত নিত্য সেবন করিলে উরংকত ও ক্ষয় রোগ প্রশমিত হয়।

জরাণাং শমনীয়ো যঃ পূর্ব্বমূক্তঃ ক্রিয়াবিধিঃ। ক্রিয়াং জ্বদাহেরু স সর্ব্বোহপি প্রশন্ততে॥

পূর্বে জরের যে দমস্ত শমনীয় ক্রিয়াবিধি উক্ত হইয়াছে, ফ্রন্থােগির জ্বন-দাহেও সেই দমস্ত বিধি প্রশস্ত।

উপদ্রণা অরাত্মান্তে সাধ্যাঃ স্বৈঃ সৈন্চিকিৎসিতৈঃ। তেমু শান্তেমু রোগেমু পশ্চাচ্ছোবমুপাচরেৎ।

শোষ (যক্ষা) রোগে জ্বরাদি যে সমস্ত উপদ্রব উপস্থিত থাকে, তাহাদের চিকিৎসা তন্তদ্রোগোক্ত ব্যবস্থামুদারে করিবে। ঐ রোগ সকল প্রশমিত হইলে পশ্চাৎ শোষ-চিকিৎসা কর্তব্য।

অথ চুর্ণ-প্রকরণম্।

लवकािन-पूर्वम् ।

লবক ককোলমুশীরচন্দনং
নতং সনীলোৎপলকুম্প্লীরকম্।
জলং সকুম্পাগুরু চুক্তেশরং
কণা সবিধা ললদং সহৈলয়া॥
তুষারপাতীফলবংশলোচনাসিতার্মভাগেং সমস্কাচুণিতম্।
হ্রোচনং তপ্ণসারিদীপনং
বলপ্রদং ব্যাতমং নিদোষ্টিৎ॥
উরোবিবলং তমকং গলগ্রহং
সকাসহিশারিদ্বার্মকতং ল্পাং
প্রেহগুলীশারমুর্কতং ল্পাং

লবন্ধ, কাক্লা, বেণার মূল, বিক্তচনন, তগরপাত্তকা, নালোৎপল, ক্ষজীরা, বালা, পিপ্লনী, অগুরু, গুড়ত্বক্, নাগকেশ , পিপুল, ভঠ, জটামাংসী, এলাচ, কপূব, জারুকল ও বংশলোচন প্রত্যেকের চূর্ণ এক এক ভাগ, চিনি ৯॥ ভাগ। একএ মিশ্রিত করিয়া উপর্ক্ত মাত্রায় সেবন করিলে ফল্পা, শ্বাস, কাস ও গ্রহণ্যাদি রোগ প্রশমিত হয়। ইহা রোচক, তৃপ্তিকারক, অগ্নির দীপক, বলপ্রদ, ভক্তক্রনক ও ত্রিদোযনাশক।

শৃঙ্গ্যৰ্জ্বনাছ্য-চূৰ্ণম্।

শৃক্যজুনাখগদা-নাগবলা-পুদরাভরাজিয়কহা:।
তালীশাদিদমেতা লেফা মধুদর্শির্ডাং ৰক্ষহরা:॥

কাক্ডাশৃঙ্গী, অর্জুনছাল, অশ্বপদ্ধা,
গোরক্ষচাকুলে, কুড়, হরীতকী, গুলঞ্চ ও
তালীশাদি (তালীশপত্র, মরিচ, শুঠ, পিপুল,
বংশলোচন, দারুচিনি, এলাইচ ও চিনি) এই
সকল দ্রব্যের চুর্ণ প্রত্যেক সমন্তাগে লইয়।
মধু ও ঘতের সহিত লেহন করিলে যক্ষা
রোগ উপশমিত হয়। (মাত্রা—/• হইতে
।• পর্যান্ত প্রবোজ্য)।

जिकिंगीमि हुर्गम्।

ত্রিকট্রিকলৈলাভিজাতীফললবন্ধকৈ:।
নবভাগোন্মিটেররেটেঃ সমং তীক্ষং মৃতং ভবেৎ॥
সংচ্ণ্যালোড়রেৎ ক্ষোদ্রে নিতাং বং সেবতে নর:।
কাসং খাসং ক্ষাং মেহং পাঞ্রোগং ভগন্দরম্।
অবং মন্দানলং শোধং সংখাহং গ্রহণীং জয়ে ॥

ত্রিকট্, ত্রিফলা, এলাইচ, জায়ফল ও লবন্ধ, ইহাদের প্রত্যেকের চুর্ণ সমভাগ ও সর্ব্বসাষ্ট্রসম (৯ ভাগ) লোহচুর্ণ মধুর সহিত্র আলোড়িত করিয়া নিত্য সেবন করিবে। তাহাতে যক্ষা, শ্বাস, কাস, জ্বর প্রভৃতি নিবা-রিত হইবে।

এলাদি চূর্বম।

এলা পত্রং নাগপুশাং লবস্বং ভাগন্তেয়াং দ্বৌ চ থর্জুনকস্তা। দাক্ষায়তীশর্করাপিপ্পলীনাং চন্ত্রারম্ভৎ ক্ষোদ্রযুক্তং ক্ষয়ে স্তাৎ ।

এলাইচ, তেজপত্র, নাগেশ্বর ও লবক্ষ প্রত্যেকের এক এক ভাগ; পিওখর্জ্ব হুই ভাগ; দ্রাক্ষা, যষ্টিমধু, চিনি ও পিপুল প্রত্যেকের চারিভাগ; এই সমুদ্রের চূর্ণ মধুর সহিত মিলিত করিয়া ক্ষয় রোগে প্রয়োগ করিবে।

জাতীফলাদি চূর্ণ্।

জাতীকলং বিড়ঙ্গানি চিত্রকং তগরং তিলাঃ।
তালাশং চন্দনং শুক্তী লবঙ্গংখাপক্ষিকা।
কপ্রঞাভয়া ধাত্রী মরিচং পিগলী তুগা।
এধামক্ষসমান্ ভাগান্ চাতুর্জাতকসংহিতান্।
পলানি সপ্ত ভঙ্গায়াঃ সিতা সর্বসমা তথা।
এতচ্চুর্বং জয়েৎ কাসং ক্ষয়ং খাসমরোচকম্।
গহলীমতীসারঞ্ অগ্রিমান্দাং স্পীনসম্।
বাতরেগ্রন্থবান্ রোগান্ প্রতিশ্রায়াংশ্চ ছ্বংসহান্।

জায়ফল, বিড়ঙ্গ, চিতামূল, তগ পাছকা (অভাবে শিয়লা ছোপ, কেই কেই বলেন গের অভাবে পাতাড়ী), ক্বঞ্চতিল, তালীশ-পত্ৰ, রক্তচন্দন, শুঠি, লবন্ধ, ক্ষঞ্জীৱা, কপূর্, হরীতকী, আমলকী, মরিচ, পিপুল, বংশ-লোচন, গুড়ত্বক্, তেজপাত্র, এলাইচ ও নাগেশ্বর প্রত্যেক চুর্ণ ২ তোলা, দিন্ধিচুর্ণ ৭ পল, চিনি দর্বাচূর্ণের সমান। সম্দায় উত্তম-রূপে একত্র মর্দন করিয়া লইবে। এই ঔষধ দেবন করিলে ক্ষয়, কাস, খাস, গ্রহণী, অভিনার, অগ্রিমান্দ্য ও প্রতিশ্রায় প্রভৃতি রোগ নই হয়। মাত্রা—২ মানা।

কপূরান্তং চূর্ণম্।

(হৃদয়দাহে।)

কপূ প্রচোচককোল-জা তীফলদলাঃ সমাঃ। লবক্ষমাংসীমরিচ-কৃষ্ণশুঠো বিবর্দ্ধিতাঃ॥ চূর্বং সিতাসমং হুন্তং সদাহক্ষ্মকাসজিৎ। বৈধ্যাপীনস্থাস-চ্ছুর্দ্ধিকগ্রাম্যাপহ্ম। প্রযুক্তকাম্নপাইনব্ । ভেষজদ্বেষিণাং হিতম্॥

কপুরি, দাক্ষচিনি, কাক্লা, জায়্ম্বল ও
জায়ি ইহাদের প্রত্যেকের চুর্ণ সমভাগ এবং
লবঙ্গ চুর্ণ ২ ভাগ, জটামাংসী চুর্ণ ৩ ভাগ,
মরিচ চুর্ণ ৪ ভাগ, পিপুলচুর্ণ ৫ ভাগ ও
ভাঠচুর্ণ ৬ ভাগ; সর্ব্যচ্গসমান চিনি। একজ্ঞ উত্তমরূপে মর্দ্দন করিবে। এই কর্পুরাগ্য চুর্ণ সেবনে দাহ, ক্ষয়, কাস, স্বরভঙ্গ, পীনস,
শাস, বমি ও কণ্ঠরোগ প্রশমিত হয়। ঔষধঘেষী রোগির অয় পানের সহিত এই ঔষধপ্রস্কুক হইলেও বিশেষ উপকার পাওশ্বা যায়।

ককুভত্ব নাগবলা-বানরীবীজানি চূর্ণিতং প্রসি। পকং স্বতমধ্যুক্তং সমিতং ষক্ষাদিকাসহরষ্॥

অর্জুনছাল, গোরক্ষচাকুলের মূল ও আলকুশীবীজ, ইহাদের প্রত্যেকের চূর্ণ ১ পল, চিনি ৯ পল, ছগ্ধ /২ সের; এই সমস্ত থথানিয়মে পাক করিয়া তাহা ৪ তোলা ছতে সস্তলন করিয়া লইবে। স্থানিত করিবে। তদ্বারা ফ্রাদি কাসরোগ প্রশমিত হয়।

সপ্তদশাঙ্গঃ।

অখগন্ধায় তাভীক্ত – দশমুলীবলাব্যা:।
পুন্ধরাতিবিবে ছান্ত ক্ষাং কীর্রসাশিন: ।
অসমাসনির্দ্দোদিহ পুন্ধরাতিবিষয়ো: প্রকেপাত্তমিতিইকুদটিগনী।

অশ্বনন্ধা, গুলঞ্চ, শতমুলী, দশমুল, বেড়েলা, বাসক, ইহাদের কাণে পুন্ধরমূল ও আতইচ চুর্ণ প্রেক্ষেপ দিয়া সেবন করিলে ক্ষয়রোগ নিবারিত হয়। পথ্য—তৃত্ব ও মাংসের রুম।

ত্ৰগোদশাঙ্গঃ।

ধক্তাকপিপ্লনীবিখ-নশম্লীজলং পিবেৎ। পাৰ্খশুলজন্বশদ-পানসাদিনিবৃত্তে ।

যক্ষরোগে (বাতলৈ মিকে) পার্শুল, জর, শ্বাদ ও পীনদাদি উপাদ্ধ থাকিলে ধনে, পিপুল, শুঠ ও দশমূল, ইহাদের কাথ পান করিতে দিবে, তাহাতে উক্ত উপদ্রব সকল নির্ত্ত হইবে।

कुष्णाजाकामिडालकः क्ष्मश्च (कोष्ट्रेडनर्न्) । भ्रमुमर्लिष्ट्रंडा वांब-शक्षाकृष्णमिट्डास्टरः ।

পিপুল, দ্রাক্ষা ও চিনি এই দ্রব্যত্তয়, মধু ও তৈলের সহিত অথবা অশ্বসন্ধা, পিপুল ও চিনি, এইগুলি মধু ও ঘতের সহিত অবলেহ করিলে ক্ষয়রোগে উপকার দর্শে।

> সর্পিম ধৃতাং ত্রিকটু প্রলিহা। চ্চব্যাবিড়কোপহিতং ক্ষার্ডঃ। মাংসাদমাংসের যুতঞ্চ সিদ্ধং শোষাপহং ক্ষোদ্রকণাসমেতম্ ।

শুঠ, পিপুল, মরিচ, চৈ ও বিজ্প, ইহা দের সমান সমান চূর্ণ স্বত ও মধুর সহিত লেহন করিলে অথবা মাংসভোজী পশুপক্ষির মাংসের সহিত স্বত পাক করিয়া তাহাতে পিপুলের গুড়া ও মধু দিয়া সেই স্বত পান করিলে ক্ষয়জ্বনিত ক্ষীণতা নিবারিত হইয়া শীঘ বল-বৃদ্ধি ও পীড়ার উপশম হয়।

সিতোপলাদিলেহঃ।

দিভোপনা তুগান্ধীরী পিঞ্জনী বছলা ছচঃ। অন্ত্যাদুন্ধিং দিগুণিতং লেহরেৎ কৌদ্রসপিবা॥ চূর্বং বা প্রাশ্যেদেতৎ খাসকাসক্ষয়পহয়। ক্পুঞ্জিবংবাচকিনং মন্দাগ্নিং পার্যশূলিনম্॥

গুড়ুছক্ ১ ভাগ, এলাইচ ২ ভাগ, পিপুল ৪ ভাগ, বংশলোচন ৮ ভাগ এবং চিনি ১৬ ভাগ'; একত্র স্বত ও মধুর সহিত লেহন করিলে, অথবা ঐ চূর্ণ (ছাগত্ন্ধের সহিত) সেবন করিলে, শ্বাস, কাস, পার্শুল ও ক্ষয়াদি রোগ উপশমিত হয়।

বাদাবলেহঃ ৷

বাসক্ষরসপ্রস্থে মাণিক। সিত্দকরা।
পিপ্রলী ব্রিপলং দক্ষা সর্পিক্চ প্রচেইনে: ।
লেহীভূতে ততঃ পশ্চাচ্ছীতে ক্ষোত্রপলাষ্টকম্।
দক্ষাবতারমেদ্ বৈভো মাত্ররা লেহ উদ্ভন্ম: ।
নিহন্তি রাজ্যক্ষাণ্য কাসং: শাসক দারণম্।
পাগশূলক সচ্ছ্রন্য রক্তপিত্য জ্বরং তথা।

বাসকের রস /৪ সের, অভাবে বাসকছাল /২ সের, কাথার্থ—জল ১০ সের, শেষ /৪ সের। এই কাথার্থ—জল ১০ সের, শেষ /৪ সের। এই কাথা ছাঁকিয়া লইখা ভাহার সহিত চিনি /১ সের ও স্বত এক পোয়া মিশ্রিত করিয়া পাক করিবে। লেহবৎ হইলে পিপুল চূর্ণ এক পোয়া প্রক্ষেপ দিয়া ও উত্তমরূপে মিশ্রিত করিয়া নামাইয়া লইবে, শীতল হইলে উহার সহিত মধু /১ সের মিশ্রিত করিবে। এই অবলেহ রাজ্যক্মা, কাস, শ্বাস, পার্য্পুল, হাচ্চূল, জর ও রক্তপিত প্রভৃতি রোগ নই করে।

ব্ৰহদ্বাসাবলেহঃ।

শতং সংগৃহ বাসায়ান্তোরক্রোণে বিপাচরেং। চতুর্ভাগাবশেৰেংক্সিঞ্করায়াঃ পলং শতম্ । ত্রিকুট্ ত্রিপ্রগন্ধিক কট্ফলং মুস্তকং গদম্।
জীরকং পিপ্পলীমূলং রোচনী চবিকা গুভা ॥
কট্কা শ্রেরদী চৈব তালীশং সধনীয়কম্ ॥ ।
কাষিকং পৃথগেতেবাং কিপেরাধু পলাষ্টকম্ ॥
তদ্ যথাগিবলং লিহ্নাচ্ছ্তশীভামুপানতঃ।
নিহন্তি রাজযক্ষাণং রক্তপিত্তং ক্ষতং ক্ষমন্ ॥
বাতিকং পৈন্তিককৈব খাসকৈব হদারণম্।
হচ্ছ্ত্লং পার্যশূলক ব্যিকৈবাক্তিজ্বরম্।
অন্তিডাং নিশ্মতো থেষ বুহ্ছাসানলেহকঃ॥

বাসক-মূলের ছাল ১২॥০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। এই ১৬ সের কাথের সহিত ১২॥ · সের চিনি মিশ্রিত করিয়া পাক করিবে। ঘনীভূত হইলে এিকটু, গুড়ুত্বকু, তেজপত্র, এলাইচ, কট্ফল, নতা, কুড়, জীরা, কমলাভাঁড়ি, চৈ, বংশলোচন, পিপুলয়ল, কটকী, গজপিগলী, ভালীশপত্ৰ ও ইহাদের প্রত্যেকের চুর্ণ ২ তোলা প্রক্ষেপ দিয়া আলোড়ন করিয়া নামাইবে, শাতল হইলে 🖒 সের মধু মিশ্রিত করিয়া লইবে; শৃত্নীতল জলের সহিত সেবনীয়। অগ্নিবল বিবেচনা করিয়া মাত্রা (১ ভোলা হুইতে ২ ভোলা) ব্যবস্থা করিবে। ইহা সেবন করিলে রাজ্যক্ষা, রক্তপিত্ত, ক্ষয়, খাদ, শুল, জ্বৰ, ব্যি ও অকৃচি প্রভৃতি নানা রোগ নই হয়।

বৃহদ্বাসাবলেহঃ।

(রুষ∤র্থ**ে)**

পঞ্চিংশংপলং গ্রাহাং বৃহত্যোগীসকন্ত চ।
ভ:গ্যাণ্চ পঞ্চিবংশচত জলছোলে বিপাচয়েং ॥
পাদশেষে বসে ত্মিন্ গগুপ্রহ সমাযপেং।
কুড়বার্মঞ্চ হবিষো মধুনঃ কুড়বং তথা ॥
মুডাক্রকং পলকৈকং কণাচূর্ণং চকুংপলম্।
কুঠং তালীশপক্রি মরিচং তেজপক্রকম্ ॥
মুরামাংসীমুশীরঞ্চ লবঙ্গং নাগকেশরম্ ।
ভগ্ভাগীবালকং মুস্তং প্রত্যেকং ক্যাপ্মিতম্ ॥
প্রক্রপিতং ক্রমং প্রেটাচ্তে বিনিক্রিপেং।
হস্তি বক্ষাপমত্যুগ্রং কাসং পঞ্চিবং তথা ॥
রক্কপিত্তং ক্রমং খাসং জ্বং প্রাহ্রিক্রসেন চ।
বালান্মপি বৃদ্ধানাং ব্রেশানাং বিশেষতঃ ॥

পার্থপুলক হচ্ছে_বলমন্নপিতং বৃমিং তথা। বৃহ**খা**সাবলেছোহয়ং মহাদেবেন নিশ্বিতঃ॥

বুহতী ২৫ পল, কণ্টকারী ২৫ পল, বাদক-মুলের ছাল ২৫ পল, বাসুনহাটী ২৫ পল, পাকার্গ জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। এই কাথে /২ সের চিনি মিশ্রিত করিয়া পুনর্কার পাক করিবে: ঘনীভূত হইলে অভ্র ১ পল, পিপুলচ্ব ৪ পল, কুড়, তালীশপত্র, মহিচ, তেজপত্র, মুরামাংসী, বেণার মূল, লবঙ্গ, নাগে-খর, গুড় হক্, বামুনহাটী, বালা, মুতা, ইহাদের প্রত্যেকের চুর্ণ ২ তোলা করিয়া নিক্ষেপ করিবে। পাক সিদ্ধ ইইলে ম্বত এক পোমা দিয়া আলে।ডুন করত নামাইয়া লইবে। শীতল হইলে মধু অর্দ্ধ সের মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই ঔষণ বালক, হৃদ্ধ, যুবা সকলের পক্ষেই উপকারক। ইহা সেবন **ক**রি**লে** রক্তপিত্র, শ্বাস, কাস ও যগা এভাত নানা রোগ প্রশাসত হইয়া থাকে। ২ তোলা ৷

অমৃতপ্রাশাবলেহঃ।

ক্ষারে ধাত্রী চ মঞ্জি। জারিণাঞ্চ তথা রসৈঃ।
পাচৎ সামগুলিপ্রস্থা মনুরৈ কর্বস্থানিতঃ॥
ডাক্ষাবিচন্দনোশীরৈঃ শকরে পেলপ্রাকৈঃ।
মধ্করুস্থা নস্তানিকাগ্রীভূণসংজ্ঞাকৈঃ।
অস্থান্ধ মধুনঃ শীতে শকরা দিতুলাং তথা।
পলাক্ষি মধুনঃ শীতে শকরা দিতুলাং তথা।
পলাক্ষি কালেলি সামাত্রাং নিতাং স্থানিতঃ।
অনুত্রালিনিতোত দিত্তাং প্রিকার্তিক্।
আনুত্রালিনিতোত দিত্তাং প্রিকার্তিক্।
আনুত্রালিনিং হতি রক্তাপিত্র ক্ষতক্ষম্ম॥
ভূকাক্ষিত্যাক্ স্বলাং প্রানিত্রদন্ম।
মুকুকুক্তরে মুঞ্চ ব্লাং প্রানিত্রদন্ম।

যথাবিনানে মুর্চ্ছিত গব্যন্থত /৪ সের।
কন্ধার্থ— শদ্ধি, বৃদ্ধি, মেদা, মহামেদা,
কাকোলী, ক্ষীবকাকোলী, মুগানী, মাধানী,
জাবস্তা, বহুগর্, কিদ্মিদ্, রক্তচন্দন, শ্বতচন্দন, বেনার মূল, ইক্ষ্চিনি, নীলোৎপল,
পদ্মকান্ত, মউয়াকুল, অনস্তর্শ, গাস্তারী,

कूभभूल, (कर्भभूल, भत्रभूल, छेलूभूल, कुरु ইক্ষুল প্রত্যেক ২ তোলা। গবাহগ্ধ / ৪ সের, व्यामनकीत तम / ८ रमत, मिक्कि / २ रमत, জল ১৬ সের, শেষ /৪ সের। ক্ষীরিরুক্ষ-সকলের কাথ অর্থাৎ বট, যজ্ঞভুমুর, বেত্স (পলাশ পিপুল) ও পাকুড় এই সকল মিলিত /২ দের, জল ১৬ দের, শেষ /৪ সের। এই সকল ছারা মৃত পাক করিয়া পাক সিদ্ধ হইলে নানাইয়া ডাকিয়া লইয়া তাহাতে উষ্ণাবস্থায় ইক্ষ্চিনি /৬।০ সওয়া ছয় সের, গুড়ত্বক, এলাইচ, ্ত্ৰপত্ৰ, প্রত্যেক চুর্ব ৪ ভোলা প্রক্ষেপ দিবে ও শীতলা-বস্থার মধু /২ সের মিশাইবে। অখিনীকুমার-কীৰ্ত্তিত এই অমৃতপ্ৰাণ অবলেহ উপযুক্ত মাত্রায় অবলেহন করিলে রক্তপিত, ক্ষতক্ষীণ, তৃষ্ণা, অফুচি, খাস, কাস, ছঞ্চি, মুচ্ছা, মৃত্রকুদ্ধ ও জ্বর প্রশমিত হয়। ইহা রতিশক্তি-বৰ্দ্ধক।

চাবনপ্রাশঃ।

বিঝাগ্রিমস্থান্ডানাক-কাঝার্যঃ পাটলা বলা : পর্ণাচত্রঃ পিপ্লপ্রঃ খদংহা বৃহতীবয়ন্॥ শুক্ষী তামলকী জাকা জীবন্তী পুকরাগুরু। অভয়া চামূতা ক্ষিজীবক্ষভকে? শটা 🛭 মুন্তং পুনর্মা মেদা স্থৈদলোৎপলচন্দনে। বিদারী বুষমূলানি কাকোলী কাকনাদিকা । এষাং পলোক্সিতান্ ভাগাঞ্জাস্থানকপ্স চ। পঞ্চ দন্তাৎ তদৈৰ ধাং জলদ্ৰোণে বিপাচয়েৎ । জ্ঞাত্বা গতরদান্তেতাজ্ঞোমধান্তথ তং রদম। ভচ্চামলকমন্ধ, ভা নিদ্দলং তৈলসপিযোঃ। পলম্বাদশকে ভৃষ্ট্রা দহা চার্কিভুলাং ভিষক্। মংস্তৃতিকায়াঃ পূতায়া লেহবৎ সাধু সাধয়েৎ॥ ষ্টপলং মধুনশ্চাত্র সিদ্ধনিতে প্রদাপয়েৎ। চতুঃপলং ভুগাকীয়া পিপ্লন্য দ্বিপলং তথা। পলমেকং বিদধ্যাচ্চ হগেলাপত্রকেশরাৎ। ইতায়ং চ্যবনপ্রাশঃ প্রমুক্তো রসায়নঃ॥ কাসখাসহরদৈচব বিশেষেণাপদিশ্যতে। ক্ষীণক্ষতানাং বৃদ্ধানাং বালানাঞ্চাঙ্গবদ্ধনঃ । স্থ্যসম্বোরোগং সম্বোগং বাতশোণিত্য। পিপাসাং মূত্ৰগুজস্থান দোষাংলৈবাপকৰ্বতি।

অন্ত মাতাং প্রযুক্তীত যোপক্ষন্তার ভোদ্ধনন্।
অন্ত প্রয়োগাচন্তার: স্কর্দ্ধোহভূৎ পুন্যু বা ।
মেধাং স্মৃতিং কান্তিমনাময়ত্বমায়ুংপ্রকর্ষং বলমিন্দ্রিয়াণান্।
ত্তাপু প্রহ্বং পরন্মির্দ্ধিং
বলপ্রসাদং পরনামকোনাম্য ॥
রসায়নক্তাস্য নরঃ প্রয়োগালভেত জীর্নোহপি কুটিপ্রবেশাৎ।
জরাকৃতং পূর্বমপাস্য কপং
বিভত্তি রূপং নবাধীনন্য্য ॥
সিতা মৎসান্তিকালাভে গান্তাক্ষ্য ভূজনন্।
চতু ভাগজলে প্রায়ো ক্রয়ং গতরসং ভবেৎ ॥

বিৰম্লছাল, গণিয়ারিছাল, শোনাছাল, গান্তারীছাল, পাকুল্ছাল, বেডেলা, চাকুলে, মুগানী, মাবালী, পিপুল, ভূঁই আমলা, দ্রাহ্মা, জীবস্তা, কুড়, কুধগগুরু, হরীতকী, গুলঞ্চ, পদ্ধি, জীবক, প্রয়ত্তক, শটী, মুতা, পুনর্মনা, মেদা, ছোট এলাইচ, নীলোং-রক্তচন্দন, ভূমিকুলাও, বাসকমূল, কাকোলী ও কাকগুজা ইহাদের প্রত্যেকের ১ পল; শ্লগ পোট্টলীবদ্ধ গোটা আমলকী ৫০০টা (অথবা ৭৮/০ ছটাক)। এই রসমুদায় একত্র ৬৪ দের জলে সিদ্ধ করিয়া ১৬ সের থাকিতে নামাইয়া কাপ ছাকিয়া লইবে (भाष्ट्रेनी-तक आगलकी मका शुलिया, तीक ফেলিয়া দিয়া ৬ পল সুত ও ৬ পল তৈলে (একতা মিশ্রিতে) অল ভাজিয়া শিলায় পেষণ করিয়া লইবে। পরে মিছরি ৫০ পল, উক্ত কাথজন ও উন্নিখিত শিলাপিট ও নিববীজ আমলকী একত্র পাক করিবে। লেহবং ঘন হইলে বংশলোচন ৪ পল, পিপুল ২ পল, গুড়-বৃক্ষ তোলা, তেজপত্ৰ ভোলা, এলাইচ ২ ভোলা, নাগেশ্বর ২ ভোলা, এই সমুলায় চূর্ণ নামাইয়া প্রক্রেপ দিয়া আলোড়ন করত লইবে। শীতল হইলে উহার সহিত মধু ৬ পল মিশ্রিত করিয়া স্বতভাণ্ডে রাণিয়া দিবে। ইহার মাত্রা—২ ভোলা। অমুপান—ছাগত্র্যা

ইহা সেবন করিলে স্বরভঙ্গ, যক্ষা রোগ ও শুক্রগত দোষ প্রভৃতি প্রশমিত হইয়া থাকে। এবং অগ্নিবৃদ্ধি, ইন্দ্রিয়-সামর্থ্য, বায়ুর আমু-লোমা, আয়ৣর্দ্ধি ও বুদ্ধের যৌবনভাব হয়। ইহা ত্র্বল ও ক্ষীণধাতুর পক্ষে অতি উৎকৃষ্ট ঔষধ। এই ঔষধ সেবন কালে বাতা-তপাদি বর্জ্জনীয়।

দ্রাক্ষারিন্টঃ।

ন্তাকাত্নাকং দিলোগে জনসা বিপচেৎ হথী:।
পাদশেষে কৰায়ে চ পুতে শীতে বিনিজিপেৎ ॥
শুড়দ্য দ্বিত্নাং তত্ৰ দুগেলাপত্ৰকেশনম্।
প্ৰিয়সুম বিচং কৃষ্ণা নিড়ঙ্গক বিচূৰ্ণরেৎ ॥
পুনক্ পলোঝিতৈও্ঠিগলু তভাঙে নিধাপরেৎ।
সমস্ততো ঘটুরিলা পিবেজ্জাতরসং ত ৩৯ ॥
উরক্ষতং ক্ষমং হতি কাসখাসগলামহান্।
দ্রাক্ষাবিস্তাহরঃ প্রোত্তা বলকু মনশোধনঃ॥

জাকা ভা৽ দের, পাকার্থ জল ১২৮ দের, শেষ ৩২ দের। এই কাথে ২৫ দের গুড় গুলিরা ভাছাতে গুড়ুছক্, এলাইচ, তেজপত্র, নাগেশ্বর, প্রিয়স্কু, মরিচ, পিপুল ও বিড়ঙ্গ প্রত্যেক ১ পল পরিমাণে নিক্ষেপ ও সমুদায় আলোড়ন করিয়া স্বতভাগ্তে ১ মাস মুখ বন্ধ করিয়া রাখিবে। পরে উত্তমন্ধপে চাকিয়া লইবে। জাক্ষারিষ্টপানে উরঃক্ষত, ক্ষমরোগ, কাস, শ্বাস ও গলরোগ নিরাক্কত, বল বর্জিত এবং মল বিশুক ছয়।

যক্ষারি লোহম্।

মধ্তাপ্যবিড়ঙ্গাশ্ব-জতুলোইগুতাভয়া:।

ম্বিভ বক্ষাণমতুগ্রং দেব্যমানা হিতাশিনা ॥
(সর্বাচ্বদ্মং লোইচূর্ণং সুতমধ্ত্যাং লেহামিতি ভাত্রদাসঃ।) লোহমিতাতা লোহ (অগুঙ্গ) মিতি বৃক্ষধৃত পাঠঃ।

ম্বর্ণমান্দিক, বিভূঙ্গ, শিলাজতু ও হরীতকী চূর্ণ প্রভ্যেক সমভাগ, সর্ব্বচূর্ণদম লৌহচূর্ণ। ইহা দ্বত ও মধু সংযুক্ত করিয়া অবলেহন করিলে উগ্র ফ্লা নিবারিত হয়।

রাম্বাদি-লোহম।

রাসাখগন্ধাকপুর-ভেকপণীশিলাহারের।

ক্রিকজ্রয়সনাগুলৈলো হৈ। যক্ষাগুকো নতঃ ।

সর্বেরাপদ্রবসংযুক্তনপি বৈস্তাবিবল্লিতন্।
হস্তি কাসং ব্রাঘাতং ক্ষরকাসং ক্ষতক্ষম্।
বলবণাগ্রিপুটীনাং সাধনো দোষনাশনঃ ।
(শিলা শিলাজতু, মনঃশিলা ইতি কেটিং, গ্রন্থান্তরে অস্য থকাগুকলোই ইতি সংজ্ঞা।)

রামা, অধ্যন্ধা, কর্পূন, থানকুনি, শিলা-জতু, ত্রিকটু, ত্রিফলা, ত্রিমন (বিড়ঙ্গ, মূতা, চিতামূল), ইহাদের প্রত্যেকের এক এক ভাগ এবং সমুদায়ের সমান লোহ, একত্র মর্দন করিয়া লইবে। (ইহার অপর নাম যক্ষাস্তক লোহ)। এই উমন সেবন ক্রিলে কাস, স্বরভঙ্গ, ক্ষয়কাস ও ক্ষতক্ষীণ রোগ নষ্ট হয়। ইহা বল, বর্ণ, স্থি ও পৃষ্টি-বর্দ্ধক এবং দোগনাশক।

শিলাজ হাদি টোহন।

শিলাজ কুমব্বোধ-ভাপালোহরজাংদি চ।
কীরেণ লেহি ন্যান্ত কয়ে কয়মনাগ্রাং ॥
(শিলাজ স্থাদিলোহে মধু ষষ্টমধু, তাপাং ক্র্য-মাক্ষিকং, লোহং দর্শক্রে সম্মান্ত ।

শিলাজতু, যষ্টিমধু, ত্রিকট্ট ও স্বর্ণমাক্ষিক প্রত্যেক সমভাগ, সর্ব্বসমান লৌহ, একত্র মর্জন করিয়া লইবে। ইহা গ্রুমের সহিত সেবন করিলে শীঘ্র ক্ষয় নিবারিত হয়।

বিন্ধবোসি-যোগঃ।

ন্যোধং শতাব্যী ত্রীণি ফলানি দ্বে বলে তথা।
সর্ব্যায়হরো যোগং দে! হয়ং লোহরজোই বিতঃ ।
এয় বক্ষাক্ষতং হৃতি কণ্ঠজাংশ্য গোংস্তথা।
রাজ্যক্ষাণমত্যাগং বাহুত্তভ্রমণান্দিতম্ ।
চূল্যোগ এবায়ং যুত্তমধুনোর শতহাৎ, অভ্যে তু লেহ এবায়ং যুত্তমধুলাং ক'ব্যাং লেহপ্রকরণবিহিত্তাদিত্যাহঃ। যুক্তকৈতদিতি শিবদাসঃ।

ত্রিকটু, শত্মূলী, ত্রিফলা, বেড়েলা ও গোরক্ষচাকুলে প্রত্যেক > তোলা, লোহ ৯ তোলা; এই সমুদ্য দ্রব্য একত্র মদন করিয়া লইবে। ইহা দেবন করিলে উরংক্ষত ও কণ্ঠ-রোগ দকল উপাশমিত হয়। কেহ কেহং বলেন এই ঔষধে মৃত মধুব উল্লেখ না থাকায় ইহা এক প্রকার চ্র্নাজ। কেহ কেহ বলেন, ইছা চ্র্ন নহে; বস্ততঃ মৃত মধু দারা কর্ত্তব্য লেহ। কারণ লেহপ্রকরণে উক্ত হইয়াছে। শিব-দাদের মতে শেষোক্ত মতই সমীচন।

কনকস্থন্দরো রদঃ।

মদা তুর্যাভাগেন হেমভন্ম প্রযোজ্যে ।
মনঃশিলা গন্ধকণ তুথং মান্দিকভালকম্ ॥
বিষং টক্ষণকং সর্বাং রমতুলাং প্রদাপয়েং।
মর্দ্ধরেং সর্ব্যেকত গলপাতে চ নির্মান ॥
জয়ন্তীভূক্ষরাকোথৈং পাঠায়া বাসক্যা চ ।
জগান্তিলাকলায়ানাং ক্ষরসৈন্চ পূপক্ পূথক্ ॥
ভাবয়িয়া বিশেংয়াথ পুনন্চার্ককবারিগা।
সপ্তথা ভাবয়য়া চ রসং কনকহন্দরঃ ॥
ভঞ্জান্ত্রাং ত্রায় বাস্য রাজ্যন্দপ্রশান্তরে।
মধুনা পিয়লীভিবা সরিচেবা ছতাখিতন্ ॥
সন্নিপাতে প্রদাতব্যমার্কক্যা রসেন বৈ ।
জয়পালরজোভিবা গলিনে শ্লরোগিণে ॥
জয়বর্জ্যং চরেং পথাং বলাং হৃত্যং রসায়ন্ম্ ।
বর্জ্যরেলবণং হিক্ত ভক্রং দধি বিদাহি বং ॥

পারদ ১ ভাগ, স্বর্ণ সিকি ভাগ, মনঃশিলা, গন্ধক, তুঁতে, মাঞ্চিক, হরিতাল, বিষ ও সোহাগা, এই সকল দ্রব্য পারদের সমান প্রদান করিবে। জয়ন্তী, ভীমরাজ, আক্নাদি, বাদক, বকপুষ্প, ঈশলাঙ্গলা ও চিতার রদে পৃথক্ পৃথক্ ভাবনা দিয়া বিশুক করত পুন-ক্রার আনার রদে ৭ বার ভাবনা দিয়া বটা প্রস্তুত করিবে। মধুও পিপুলচ্র্ণ কিংবা মরিচ চুর্ণ ও দ্বতের সহিত ২ বা ৩ রতি পরিমিত বটিকা রাজ্যক্ষরোগে প্রয়োগ করিবে। পাতগ্রস্ত রোগিকে আদার রুদের সহিত সেবন করিতে দিবে। শূল ও গুলারোগে জয়-পাল চূর্ণের সহিত প্রয়োগ করিবে। এই ঔষণ সেবন কালে অম, লবণ, হিং, ঘোল, দধি এবং বিদাহী দ্রব্য সকল ত্যাগ করিয়া বল-কারক, হুল্প ও রুসায়ন পণ্য সেবন করিবে।

রুহচ্চন্দ্রায়তো রসঃ।

রদগন্ধকরে গ্রাছং কথমেকং সুশোবিতন্।
অন্ত: নিশ্চলকং দ্বতাৎ পলার্দ্ধক বিচল্পনঃ ॥
কপুরং শাণকং দ্বতাৎ স্থান বেলকদ্মিতন্।
তামক তোলকং দ্বতাদ্ বিশুদ্ধং মারিতং ভিষক্ ॥
কৌহং কথং ন্ধিপেৎ তত্ত্ব বৃদ্ধদারকজীরকন্।
বিদারী শতমূলী ৮ কুরকক বলা তথা ॥
মকট্যতিবলা চৈব জাতীকোষকলে তথা ॥
মার্দ্ধানি কার্দ্ধানি কার্দ্ধানি হল ।
লবন্ধং বিজ্ঞানীয় চেকাক্ত্য প্রযুক্তঃ।
মধুনা মর্দ্ধানে বটিকাং কুরু যায়তা ॥
চতুত্ত স্লাপ্রমাণেন বটিকাং কুরু যায়তা ।
ভক্ষেদ্রটিকানেকাং বিপ্লান্ধনা সহ ॥

পারদ > তোলা, গদ্ধক > তোলা, অভ্ৰ ৪ তোলা (মহাস্তরে ২ তোলা), কপূরি অদ্ধি তোলা, বর্ণ ১ তোলা, হাত্র > তোলা, লোই ২ তোলা, বীজ্ঞ চাড় করীজ, জীরা, ভূমিকুল্লাও, শহমূলী, কুলেণাড়া বীজ, বেড়েলা মূল, আল কুলী বীজ, গোল্ফচাকুলে, জ্যিজী, জায়ফল, লবঙ্গ, সিদিবীজ ও শ্বেল্না প্রত্যেক অদ্ধি তোলা, এই সকল দ্বা মধু সহ মদ্দন করিবে। পরে ৪ রতি প্রমাণ বটা করিয়া পিপুলচ্ব ও মধুব সহিত সেবন কারতে দিবে।

ক্ষরকেশর।

িকটু িকলৈলাভিজ্য ইফললবঙ্গকৈঃ। নবভাগে কি হৈন্তল্য লৌহপারদাননূরম্॥ ভাগাহ্রেন সংপিয়া বলমদ্য অযোজয়েৎ। মধুনা ক্ষয়রোগাংশ্চ হন্তায়ং ক্ষয়কেশরী॥

ত্রিকটু, ত্রিফলা, এলাইচ, জায়ফল, লবঙ্গ প্রত্যেক ১ তোলা, লৌহ ৪॥০ তোলা, রস-সিন্দ্র ৪॥০ তোলা, ছাগহুগ্ধে পেষণ ক্ষিয়া ছুই রতি প্রিমাণ বাটকা প্রস্তুত ক্রিবে। অনুপান—মধু। ইহা সেবন ক্রিলে ক্ষমুরোগ নিবারণ হুইনা থাকে।

> ক্ষয়কেশরী। (মহাস্থরে)

মৃত্যজ্ঞ মৃতং সূতং লৌংক তান্ত্রকম্। মৃতং নাগঞ্চ কাংস্তঞ্চ মঞ্জং বিমলং মৃত্যু॥

বঙ্গং থর্পরকং তালং শঙ্কাটঙ্গণমাক্ষিকম। বৈক্রান্তঃ কান্তলোহঞ্চ স্বর্ণং বিক্রমমৌক্রিকম 🛭 বরাটং মণিরাগঞ্চ রাজপট্রঞ্চ গন্ধকম। সর্ব্বমেকত্র সংচর্গ্য থলমধ্যে বিনিক্ষিপেৎ ॥ মর্দ্ধয়েৎ ছগ্রিভাতুভ্যাং প্রপুটেৎ ত্রিদিনং লঘ। ভাবয়েৎ পুটয়েদেভির্বারাংস্ত্রীংক্ষ পূথক পূথক ॥ মাতৃলুঙ্গবরাবঞ্চি সমুদেতসমার্কবৈঃ। হয়মারার্ড্রকরদৈঃ পাচিতো লঘ বহিনা। বাতপিত্তককোৎক্লেশান জ্বান সংমৰ্জিতানপি। সন্নিপাতং নিহন্তাভি সকাকৈকাৰমাকত!ন ॥ দেবিত•চ সিতাযুক্তো মাগধ,রজসা যুতঃ। মধকার্দ্রকদংযুক্তস্তব্যাধিহরণৌধধৈ: 1 সেবিতো হস্তি রোগিণাং ব্যাধিবারণকেশরী ! ক্ষয়মেকাদশবিধং শোষং পাভং ক্রিমিং জয়েৎ ॥ कामः शक्षविधः योगः स्थारमामस्याप्तम् । ख्यातीः गकताः मृतः श्रीरुखनाः र्शामक्या नर्वन्याधिहरता नरन्या नृत्या स्वराधिक तमायनः ।

জারিত অত্র, রুস্মিন্দর, লৌহ, তাম, দীসক, কাংশু, মণ্ডুর, বিমল, বঙ্গ, ঝর্পর, হরি-তাল, শৃষ্ম, সোহাগা, মান্দিক, কাস্তলৌহ, বৈক্রাস্ত, স্বর্ণভন্ম, প্রবাল, মুক্তা, কড়িভন্ম, হিঙ্গুল, কান্তপানাণ (অভাবে হরিতাল) ও গন্ধক: এই সকল দ্রবা একত্রিত করিয়া খলে মৃদ্দন করত চিতা এবং আকন্দরসে ভাবনা দিয়া তিন দিন মুহ অধিতে লগুপুটে পাক করিবে। অনন্তর পূট ।হইতে ঔষণ উদ্ধত করিয়া পুনর্বার চিতা। ও আকলের রগে ভাবনা দিয়া প্রপুটে পাক করিবে। এইরূপ তিন বার করিতে হয়। পরে টাবালেবু (ছোলঙ্গণের), ত্রিফলা, চিতা, অমবেতস, ভীমরাজ, করবীর ও আদা প্রত্যেকের রসে তিনবার পৃথক্ করিয়া দিবে। ভাবনা অমুপান—চিনি, পিপুল, মধু ও আদার রস। ইহা সেবনে বাত, পিত্ত, কফরোগ, জরু, সন্নিপাত, সৰ্বাঙ্গবাত ও একান্ধ বাত প্ৰভৃতি নানাবিধ রোগ নষ্ট হয়। এই ক্ষয়কেশরী একাদশ প্রকার ক্ষয়, শোষ, পাণ্ডু, ক্রিমি, কাদ, পাঁচ প্রকার শ্বাদ, মেহ, মেদ, উদর, অশারী, শুল, গ্লীহা, গুলা এবং হলীমক প্রভৃতি নানা ব্যাধি বিনষ্ট করে। ইহা বলকারক, রোগনাশক, ব্যা, মেধ্য ও রসায়ন।

চুড়ামণিরসঃ।

বিনিধ্বং বসসিন্দুরং তদধ্ধং হেম জারিতম্।
নিধ্বয়ং গৰুকঞ্চ মর্দ্ধয়েচিত্রকজ্পবৈ: ॥
কুমারিকাদ্ধবৈগামং ছাগছধৈপ্রিধাসকম্।
নুক্তাবিদানবঙ্গানাং নিধ্বং নিধ্বং বিমিশ্রায়েৎ ॥
গোলকং পুরয়েদ্ভাতে কদ্ধা গজপুটে পচেৎ।
স্বাঙ্গশী এং বিচুর্ন্যাণ ভক্ষয়েজক্তিকাদ্বয় ॥
মধুনা ক্ষয়বোগন্তং বাভপিত দমুন্তবম্।
অভাগত্তকানুপনিচ্ছক্রামধুসংযুত্তম্॥

রসিদ্দূর ১ তোলা, স্বর্গ অর্দ্ধ তোলা, গদ্ধক ১ তোলা; এই সমৃদ্ধ দ্রব্য চিতার রদে ও স্বতকুমারীর রদে ১ প্রহর ও ছাগছদ্ধে ৩ প্রহর মাড়িয়া তাহার সহিত্ত মৃক্তা, প্রবাল ও বঙ্গ প্রত্যেক অর্দ্ধ তোলা পরিমাণে মিশাইয়া মাড়িয়া একটি গোলক প্রস্তুত করিবে। পরে ঐ গোলকটাকে বন্ধমুধায় গজপুটে পাক করিবে। শীতল হইলে ঔবধ উদ্ধৃত করিয়া লইবে। মাত্রা ২ রতি। ইহা মধুতে মাড়িয়া সেবন করিলে বাতপিত্যোত্তব ক্ষয়রোগ শাস্ত হয়। এই ঔবদ সেবন করিরা চিনি ও মধুসহ ছাগীঘৃত অনুপান করিবে।

মৃগাকো রসঃ।

স্যাদ্রদেন সমং হেম মৌজিকং বিগুণং ততঃ।
গন্ধকঞ্চ সমং তেন রসপাদন্ত টঙ্গণম্ ॥
সর্বাং তলোলকং কৃতা কাঞ্জিকেন চ পেবরেং।
ভাণ্ডে লবণপূর্ণেহণ পচেদ্ যামচতুষ্টরম্ ॥
মুগাক্ষসংজ্ঞঃ দ জ্ঞেরো রোগরাজনিক্স্তনঃ।
গঞ্জাচতুষ্টরকাস্য মরিচৈঃ সহ ভক্ষরেং॥
পিপ্রলীদশকৈর্বাথ মধুনা লেহয়েদ্ বৃধঃ।
পথ্যং ফ্লবুমাংদেন প্রায়শোহস্য প্রযোজরেং॥
দ্যাজং গর্যতক্রং বা মাংসমাজং প্রযোজরেং।
ব্যঞ্জনৈত্ব তপকৈক নাতিকারেরহিঙ্কুছিঃ।
ব্রন্তাকং তৈলবিবাদি কারবেদ্ধ বর্জ্জেং।
ব্রিয়ং পরিহরেদ্বুরে কোপকাপি পরিত্যক্তেং॥

পারদ ১ তোলা, স্বর্ণভন্ম ১ তোলা, মুক্তাভন্ম ২ তোলা, গন্ধক ২ তোলা, সোহাগা
২ মাষা এই সম্দায় কাঞ্জিতে পেষণ করিয়া
গোলাকার করিবে। পশ্চাৎ উহা শুক করিয়া
মুষামধ্যে স্থাপন করিয়া লবণবত্ত্বে ৪ প্রহর
পাক করিবে। মাত্রা—৪ রতি। ১০টা মরিচ বা
১০টা পিপুলের সহিত মধু দিয়া মাড়িয়া সেবন
করিতে দিবে। লগু মাংসের রস, ছাগদধি,
গব্যতক্র, ছাগমাংস ও গ্রত্রপক ব্যঞ্জনাদি যক্ষরোগির পথ্য। খাত্য সকল এলাচ, জৈত্রী,
মরিচ প্রভৃতি দারা স্থগদ্দীকৃত করিয়া লইবে।
অধিক ক্ষারদ্রেবা, হিং, বেগুন, তৈল, বিব ও
করোলা প্রভৃতি দ্বর পরিত্যাজ্য। স্ত্রীসম্পর্ক
ও ক্রোধাদি একবারে পরিত্যাগ করা উচিত।

মহামূগাক্ষে। রসঃ।

নিক্পভন্ম দৌবর্ণ দিগুণং ভন্মত্তকম।
বিশ্বণং ভন্ম মৃক্তোপং শুক্তৃচ্ছং চতুপ্ত গম।
মৃত্তাপ্যক পকাংশং তারুভ্য চতুগু গম।
মুক্তাপ্য প্রবালক রমভুল্যক টক্ষণম।
মর্কংমক এ সংমর্দ্ধ্য ত্রিদিনং গ্রুষবারিণা।
তৎ তত্যে গোলকং কুথা শোষ্থিয়া গরাতপে।
লবণৈ: পাত্রমাপ্য তন্মধ্যে গোলকং ক্ষিপেং।
তন্মুপ্রক মুদা কন্ধা পচেদ্যানচতুইয়ম্।
আকৃষ্য চূর্ণিতং শুদ্ধং চতু মন্তিবিভাগতঃ।
নক্ষা বা দেভাবে ত বৈক্রান্তং যোভণাংশিকম।

বক্তং বা তদভাবে তু বৈক্রান্তং যোড়শাংশিকম্।
মহামুগান্ধঃ ংলু সিদ্ধ এয
শ্রীনন্দিনাধপ্রকটাকৃতোগর্ম।
বল্লোহস্ত দেব্যো মরিচাল্যযুক্তঃ
দেব্যোহধবা পিগলিকাসমেতঃ ॥
আনোপচারাঃ কর্ত্তবাঃ সর্কেন্দ্রন্দ্রাদি চাঃ।
বল্যং বৃষ্যক ভোক্তবাং ত্যাক্রাং শ্রবিরোধি যং ॥
বন্ধাণং বহুরূপিণং অরগণং গুলাং ত্থা বিদ্রধিং
দ্বন্দান্তিং অরগ্রেদকাসমক্রচিং বান্তিক মুর্ফাং অমম্।
আন্তাবে মহাগদান্ গরগদান্ পাগুমিয়ান্ কামলাং
পিডোপাংক্ত সমগ্রকান বহুবিধানক্তাংক্তথা নাশরেং ॥

নিক্তথ ভত্ম স্থৰ্ব ১ ভাগ, রসসিন্দ্র ২ ভাগ, মুক্তাভত্ম ২ ভাগ, গন্ধক ৪ ভাগ, স্বৰ্ণমান্দিক ৫ ভাগ, রৌণ্যভত্ম ৪ ভাগ, প্ৰবাল

৭ ভাগ, সোহাগার থৈ ২ ভাগ; এই সমুদায় টাবালেবুর রসে তিন দিন মর্দদন করিয়া গোলা-কার করিবে এবং ঐ গোলক প্রথর রৌদ্রে শুষ্ক করিয়া মুধানধ্যে লবণ্যন্ত্রে ৪ প্রাহর পাক করিবে: শাতল হইলে উদ্ধত করিয়া লইয়া তাহার সহিত সমস্ত চুর্ণের ৬৪ ভাগের ১ ভাগ হীরক মিশ্রিত করিবে; হীরকের অভাব হইলে সর্ব্ব চূর্ণের ১৬ ভাগের ১ ভাগ বৈক্রাস্ত উহা দিবে। তৎপরে মাডিয়া লইবে। মাত্রা—২ রতি। অনুপান—মরিচ ও মত. পিপুলচূর্ণ। এই ঔষধ কালে মুতাদি বলকর দ্রব্য আহার করা এবং ক্ষয়রোগোক্ত বিধি অমুদারে চলা আবশ্রক। ইহা দেবন করিলে যক্ষা, জ্বসমূহ, গুলা, অগ্নিমান্দ্য, অকৃচি, বমন, মৃচ্ছা ও স্বর-ভেদাদি নানারোগ উপশ্যিত হইয়া থাকে।

রাজমুগাঙ্করসঃ।

রসভন্ম এয়ে ভাগা ভাগৈকং হেমভন্মকন্।
মৃততাম্বস্ত ভাগেকং শিলাতালকগন্ধকন্।
প্রতিভাগন্ধং শুদ্ধনে কীকৃত্য বিচুর্ণয়ে ।
বরাটীঃ পূর্মেৎ তেন চাজালীরেণ টঙ্গণন্।
পিন্ধী তেন মূপং মন্ধা সদ্ভাণ্ডে তাং নিরোধ্য়ে ।
শুদ্ধং গজপুটে পাচাং চুর্ণয়ে স্বাস্থানিরম্প ।
রুমো রাজম্গাকোহয়ং চতুগু শ্লং ক্ষ্যাপহং ।
দর্শাপার্ম নিকৈ কোটারেম বিটেকোনবিংশকৈ ॥
স্কৃতিদ্বিপারেদ্ বাধ বাতরেমেভ্রেক ক্ষরে ।

মৃততারভেতি রুসেক্রপ্তঃ পাঠঃ ।

রসসিন্র ৩ তোলা, স্বর্ণ ১ তোলা, তাম (পাঠান্তরে রৌপ্য) ১ তোলা, শিলাজতু (পাঠান্তরে মনঃশিলা) ২ তোলা, হরিতাল ২ তোলা, গন্ধক ২ তোলা; এই সম্দায় একত্র মর্দন করিয়া বড় বড় কাড়র মধ্যে পারবে। পরে ছাগদ্ধে সোহাগা পেশ করেয়া দারা ঐ কড়ি সকলের মুখ করে করিয়া মৃত্তিকা. পশ্চাৎ লেপ শুক্ষ হইলে গজপুটে পাক করিয়া শীতল হইলে ঔষণ চূর্ণ করিয়া লইবে। মান — ৪ রতি। ১০টি পিপুল ও মধু অথবা ১৯টি মারচ ও গ্লেত্র সহিত সেব্য। ইহাতে বাহরেশ্বাজ ক্ষররোগ নিবাশে হয়।

মহাজবটী।

অলকং প্রটিতং ত'ম্রং জৌহং গ্রহকপারদন। বুনটা উল্লেখ্য হিন্দুলা চ প্লং প্লম্॥ গরত্রপ্ত । পা আহ-১৬্রম্প্রেস চুর্গ্রের। তৎ সৰবং ভাবয়েদেখাং রুসেঃ প্রত্যেকশঃ পলৈ:॥ দেবরাগাশনাথা**স্ত** কেশ্রাহাথাক**স্ত** চ। সোমরা গ্রস্ত ভুগারা-র' গ্রস্ত গ্রাফলস্ত চা পারিভদ্রাধিমধুল রদ্ধানাকে ঃধুবোঃ। মণ্ডকগণা নিও ওা পুতিকে। মতকস্ত চ। যেতাপরাবিতারাশত ভাষত্তালচাত্রিক**ন্ত** চ। ত্রীগ্রহুন্দবক্ত ৮-রুষ্ক্ত রুষের তু॥ রসেস্তাম্বলবল্লান পরে প্রত্যভার্যেৎ পৃথক। স্ত্রার বিধিৎ স্থিতে চুণং মারচক্ত পলং ক্ষিপেই। তত্তির নানং ক্যাপালাং দক্ত দ্ সংখাতিতাম্। জ্বে তিনাভিসাৰে চ কাসে খাসে ক্ষয়ে হথা।। স্ত্রিপত হরে ত্রাবিধিক সমে অবে। ক্ষরোগেয়ু সরেয়ে প্রভিন্ন চ যক্ষ্রি। এইণ্যাণ (৮৭৮ গায়)। জ্ব: হক'য়'ং বিশেষ'হই। লোগে শুসে ৩৭ দাংগে স্ববে চামৰাতকে॥ মন্দ্র (নালেচনতে টেব সবারে প্রেডির গলে। পীনসেহবানসে ৫৮৫ প্রেংপরে নিবেষ্টঃ। বাতপ্রেম্বলি বাতে বা নৈবিধে চেপ্রিম্বন্থিতে। বাত্রদ্ধৌরতে গিতে বল'সেনার্তেংগি চ।। অষ্টাসুদরবোগেষু বুষ্ঠরোগে প্রশশুতে। অজীর্ণে কর্ণরোগে চ কূপে স্থান তু যক্ষা ।। অয়ং সংবাগদেশের রসো বৈ পরিকীর্ভিডঃ। মহাজ্রবাটকা সেয়ং পরং শ্রেষ্ঠা।রসায়নে॥

অল, তাম, লৌহ, গন্ধক, পারন, মনঃশিলা, সোহাগা ও ত্রিফলা প্রত্যেক ৮ তোলা;
বিষাণ তোলা; একত্র মন্দ্রন করিয়া াসন্ধিপত্র, কেন্ডনে, সোমরাজ, ভৃঙ্গরাজ, বিহুপত্র,
পালিধাপত্র, গণিয়ালি, বিদ্নুড়ক, তুষুক্ক, থুল্
কু,ড়, নিসিন্দা, নাটা, ধুতুবাপত্র, খেতঅপরাজিতা, জয়ন্তী, আলা, গিমা, বাসক ও পান
ইহাদের প্রত্যেকের ৮ তোলা পরিমিত রসে পৃথক্

পূথক্ ভাবনা দিয়া কিঞ্চিৎ দ্রবাংশ থাকিতে মরিচচুর্ণ ৮ ভোলা মিশ্রিত করিয়া (১ রতি প্রমাণ) বটা করিবে। ইহাতে গ্রহণী, অতিসার, স্থতিকা ও যক্ষ্মা প্রভৃতি নানা রোগ নষ্ট হয়।

কাঞ্চনাভ্রসঃ।

কাকনং রসিদ্দুরং মৌক্তিকং লৌংমজ্ঞকন্।
বিদ্যক্ষাভয়া তারং কপ্ত্রা চ মন্দ্রালা ।
প্রত্যেকং বিদ্যালক সর্বং সংমদ্ধ্য বছতঃ।
বারিণা বটিকা কাথা বিশুক্তাকলমানতঃ ।
অনুপানং প্রয়েজন্যং যথাদোষাকুসারতঃ।
ক্ষাং হস্তি এখা কাসং প্রেমপিওসমুছবন্ ।
প্রমেহান্ বিংশতিকেব নোষ এয়সমুখিতান্।
ভাশতিং বাতজান্ বোগান্ নাশ্রেং সন্ত এব হি ।
প্রসাদ্ধিং লিক্সাচাহি করোহি চ।
শ্রীকরং পৃষ্টিজননো নানারোগনিক্সনঃ।
গ্রনানন্দ্রেণ্ডের রসোহয়ং কাক্সন্ত্রং॥

স্বর্গ, রসসিন্দ্র, মুক্তা, লৌহ, অত্র,
প্রবাল, হরীতকী, রৌপা, গুগনা,ভ ও মনছাল
প্রত্যেক ২ তোলা; জলে মাড়িয়া ২ রতি প্রমাণ
বাটকা করিবে। দোষামুসারে অমুপান ব্যবস্থা
করিবে। ইহা সেবন করিলে ক্ষয়রোগ,
প্রমেহ ও কাস প্রভাত বিবেগ পীড়ার শাস্তি
হইয়া বল প্রং বাঁধা বার্কত হয়।

রুহৎকাঞ্চনাভ্রনঃ।

কাঞ্চনং রসদিন্দ্রং গৌ জিকং লৌহমজ্রকন্ ।
বিক্রমং মূতবৈজাপ্তং তারং তাজ্রঞ্চ বঙ্গকন্ ॥
কন্তুরিকা লবঙ্গঞ্জ জাতিকোবৈলবালুকন্ ।
প্রত্যেকং বিন্দৃনাজ্রঞ্চ সর্বং মর্দ্দ্যং প্রযন্ত্রঃ ॥
কন্তানারেল সংমদ্দ্য কেশরাজরসেন চ।
ভাজান্দ্রীরেল সংভাবাং প্রত্যেকং দিবসক্রয়ন্ ॥
চতুপ্ত প্রাপ্রমাণেন বটিকাং কার্মেন্ডিষক্ ।
জন্তুপানং প্রদাহনাং ম্থাদোধান্দ্রারতঃ ॥
কর্মং হস্তি ভ্রপা কাসং ম্ব্রাণং খাসনেব চ।
প্রমেহান্ বিংশতিকৈব দোধক্রয়সমূথিতান্।
সরবান্ রোগান্ নিহস্ত্যাও ভাস্কর্জিরং মুখা ॥

স্বর্ণ, রসসিন্দ্ব, মুক্তা, লৌহ, অভ্র, প্রবাব, বৈক্রাস্ক, রৌপা, তাম্র, বঙ্গ, মৃগনাভি, ববন্ধ, জয়িত্রী ও এলবালুক প্রত্যেক ২ তোলা, একত্র মাড়িরা স্বতকুমারীর বদে, কেণ্ডরিরার রসে
ও ছাগীলুয়ে ও দিন ভাবনা দিরা ৪ রতি
প্রমাণ বটিকা করিবে। দোধানুস,রে অনুপান
ব্যবস্থা করিবে। ইহা দেবন করিলে ক্ষর,
শ্বাস, কাস, প্রমেহ ও ফ্রনা প্রভৃতি বিবিধ
বোগ প্রশমিত হয়।

কল্যাণহন্দরাভ্রম।

বজাৰমেকপলিকং পুটনৈঃ সূজীৰ্ণং ধাত্রীপয়োদবহতীশতমূলিকেকু। বিশাগ্নিমন্তজলবাসককণ্টকারী-श्रीनाक्यावितनाक त्रामत्रभीवाम् । সংমৃদ্ধিতং পলমিতৈঃ পৃথগেকশক গুঞ্জ'সমা স্বলিতা বটিকা কুতা চ। বন্দকরে সকলণোষবলাসপিত্রং খাসং স্মার্মক্রিং স্কলাক্সাদ্ম ॥ (माचः यत्रक्षमकार्गम्मम् মেহং অরং বিষমুরোগ্রহণাভুটিকা:। কার্শাং ক্রিমিং বলবিনাশনমন্নপিত্তং প্রীহাময়ং সহহলীমকমপ্রগুলাম। ভক্ষামবাভনিচয়ং গ্রহণীং প্রতৃষ্টাং वित्यः हे कुछ नश्ना छ निरत्रा श्राः का মুচ্ছাং বমিং বিরস্তাং বিনিহ্স্তি সতাঃ কল্যাণস্থশার্মিদং বলদং সুবৃষ্যম্ ॥ মেধাং রসায়নবরং সকলাময়ানাং নাশায় যক্ষনিবছে কথিতং হরে।॥

জারিত কৃষ্ণাত্র ১ পল, আমলকী, মৃতা, বৃহতী, শতমূলী, ইক্ষু, বিবপত্র, গণিয়ারিপত্র, বালা, বাসকপত্র, কণ্টকারী, শ্রোনা, পারুল ও বেড়েলা ইহাদের প্রত্যেকের ১ পল পরিমিত রসে পৃথক্ পৃথক্ শদন করিয়া ১ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা সেবন করিলে যক্ষা, ক্ষয়, খাস, শোথ, অফ্লচি, শোব, স্বরভঙ্গা, অজ্বার্ণ, মেহ, অম্লপিত্ত, ক্রিমি, প্লীহা, রক্তগুলা, মৃচ্ছা, গ্রহণী ও কুঠ প্রভৃতি নানারোগ নই হয়। ইহা বৃষ্য, রসায়ন ও বলকারক।

রসেন্দ্র-গুড়িক।।

কর্থং শুদ্ধরদেকক স্বরদেন ক্ষার্ক্রযোঃ।

শিলারাং থল্লয়েৎ তাবল যাবৎ পিওং ঘনং ভবেৎ ।
জলকর্ণাকাকমণ্টী-রমাভ্যাং ভাবরেৎ পুনঃ।

সৌগন্ধিকপলং ভূক-স্বরদেন হুভাবিতম্ ॥
চূর্ণিতং রমসংযুক্তমজাকীরপলম্বরে।
পলিতং ঘনপিওস্ত ওড়ীঃ স্বিন্নকলায়বৎ ॥
কুডাদৌ শিবমভার্চা ন্বিজাতীন্ পরিতোষ্য চ।
জীর্ণানো ভক্ষেদেকাং ক্ষীরমাংসরসাশনঃ॥
সর্বারূপং করং কাসং রক্ত পিত্তমরোচকম্।
আপি বৈত্যশতিভ্যাক্রয়পিত্রং নিযক্ততি॥

বক্ষ্যাণ ক্ষ্নাবতী গুড়িকোক্ত বিধানে শোধিত রস ২ তোলা, জয়স্তী ও আদার রসে মন্দন করত পিগুবৎ কিংবে, পরে উহা কাণ্ছিড়া ও কাক্যাচীর রসে পৃথক্ পৃথক্ ৭ বার কারয়া ভাবনা দিবে। পশ্চাং ভৃঙ্গরাজ-রসে ভাবিত নবনীতাখা গন্ধকচুর্ণ ১ পল ঐ পারার সহিত মাড়িয়া কজ্জলী করিবে। অনস্তার ছাগ্ডশ্বং পল ঐ কজ্জলীর সহিত মন্দনকরিয়া সিদ্ধ মটবের স্তায় গুড়িকা করিবে। (তরুপান—ছাগ্ডগ্ধ কিংবা মধু ও বাসক পত্রের রস।) ভুক্ত অয়ের পারপাক ইইলে ঔবধ সেবনীয়। পথা—ছগ্ধ ও মাংসরস। ইহা সেবন করিলে ক্ষয়, কাস, রক্তপিত, অক্রাচি ও অমুপিত্ত রোগ নই হয়।

রহদ্রনেন্দ্র-গুড়িকা।

কুমাধ্যা ত্রিকলাচুবৈশিক্তকন্ত -রসৈ: ক্রমাং।
শোধয়িত্বা পুনা র'জী-গৃং ধুমহরিক্রয়া॥
পাবেষ্টকারজোভিন্ট বোহ্নাপত্ররদেন চ। *
শূলবেররসেনাপি শোধয়িত্বা পুন:পুন:॥
প্রকালয়েং পুন: পশ্চাচ্ছানয়েদ্ বসনে ঘনে।
কর্মনাং রসেক্রন্ত ভাবয়েদ্ বিজয়ারসে ॥
শিলায়াং খলয়েচচাপি যাবং পিওত্রমাগতম্।
জলক্ষিকাকমাচী-রসাভ্যাং ভাবয়েং পুন:॥
সৌগন্ধিকপলং শুন্ধমন্ধং মরিচটক্রপান।
মাক্ষিকপ্ল শিথিমীবং তালকঞাত্রকং তথা॥

কাছাপত্রসেন চেত্যত্ত অলম্বকরসেন চ এবং
শুক্রবেরয়সেনাত ভুলরাজসেনেতি পাঠাভরন্।

এতাংস্ত মিলিতান্ দক্ষা ভাবরেদার্ক্রকটের:।
রক্তিষয়প্রমাণেন কাররেদ্ গুড়িকাং ছিবক্ ॥
জীর্ণেহনে ভক্ষয়েদেকাং ক্রীরমাংসরসাশনঃ।
হস্তি কাসং ক্ষয়ং খাসং রক্তপিত্রমরোচকম্।
পাড়ক্রিমিগুরহরী কুশানাং পৃষ্টিবর্দ্ধিনী॥

৪ তোলা পার্দ লইয়া মৃত্তুমারীর রস, ত্রিফলাচুর্ণ, চিতার রস, রাইসর্যপ চুর্ণ, ঝুল, হরিদ্রা, ইষ্টুকচুর্ণ, বোহ্নাপত্রের রদ (পাঠা-ন্তরে অলমুখ-রদ) ও আদার রদ (পাঠা-ন্তব্যে ভীমরাজ বস) এই সকল ম্বারা পৃথক পৃথক মৰ্দ্দন ও জলে ধৌত করিয়া স্থল বস্ত্রে ছাঁকিয়া লইবে। পরে জয়ন্তী, কাণ্ছিড়া, কাক্সাচী ইহানের প্রত্যেকের রসে ভাবনা দিয়া ও মাডিয়া রৌজে শুক্ষ করিবে। 21-519 ভঙ্গরাজ-রসে শোগিত গন্ধক > পল, মরিচ, দোহাগা, **স্বর্ণ**াক্ষিক, ভুতে, হরিভাল ও অলু প্রত্যেক ৪ ভোলা এই সমুদর আদার রদে মাডিয়া ২ রতি পরিমাণ বটকা কবিবে। অমুপান—মাদার রস। ঔষধ সেবনের পর হুগ্ন ও মাংদের যুব পান করা উচিত। ইহা সেবন করিলে, ক্ষ্যক্ৰি, খাদ, অরোচক, ক্রোম ও পাড় প্রভৃতি রোগ নষ্ট হইয়া বলবীধ্য বুদ্ধি হইয়া থাকে।

লোকেশ্বর-পোট্ট সারসঃ।

ভন্মকৃতাচতুণাংশং মৃত্যবর্গ প্রদাপরে।

বিশ্বণং গন্ধকং দ্বা মর্দ্ধ্যেতি ক্রকাত্বণা ॥

পূয়া বরাটকা তেন টঙ্গণেন নিক্ষা চ।
ভাতে চূর্গুলিতেব্য ক্রিকা চ ম্রায়ে॥
শোষরিত্বা পূটে গর্ডেব্র ক্রিমাকে পরাইকে।
ব্যক্ত সমৃদ্ধৃতা চূর্ন ক্রিকা ত বিশুদেং॥
এব লোকেবরো নাম বাযাপ্রটিবিবর্জন:।
ভঙ্গাচতুইমকাত্ত পিমলী মধুসংযুত্ম॥
ভক্কাংশিহ্যিমান্দ্যে চ কানে পিত্রে রনক্রম।
ভক্কাংশিহ্যিমান্দ্যে চ কানে পিত্রে রনক্রম।
ভক্কাংশিহ্যিমান্দ্যে চ কানে পিতের রনক্রম।
ভক্বাংশ বজ্জেং ভক্ত সাক্রাং দ্বি চ যোজ্যেই॥
একবিংশ্লিমং বাবং সন্তব্ধ মরিচং পিনেং।
প্রথাং মুলাক্রন্দেয়ং শ্রাভ্রেন্তান্স্পাদ্ভঃ॥

বে শুকা বিষমানলৈ: ক্ষয়কলা ব্যাপ্তান্চ বেংগ্রীলয়া বে পাঙ্গুহতা: কুবৈজ্ঞবিধিনা যে শোষিণো ছর্ভগা:। বে তপ্তা বিধিবৈশ্ব হৈ: শ্রমদোন্নালৈ: প্রমাদং গতা-স্তে সর্বেব বিগত;ময়া হি পর্য়া স্থা: পোট্রলানেবরা ॥

রসসিন্দর ৪ ভাগ, শোধিত স্বর্ণ ১ ভাগ, গন্ধক ৮ ভাগ, একত্র করিয়া চিতার রুসে মর্দিত করিবে। পবে কড়ির মধ্যে পরিয়া সোহাগা দিশ্ৰ মুখ বদ্ধ করত একটি চুৰ্ণপ্ৰলিপ্ত ভাণ্ডে নিক্ষেপ পূর্বাক প্রবেপ দারা ভাহার মুখ বন্ধ করিবে এবং অরাত্বপ্রমাণ গর্ভে পাক করিতে দিবে: পাকানস্তর শীতল হইলে এক দিন পবে ঐ ভাগু উত্তোলন করিয়া ঔষধ সকল চূর্ণ করিবে। মধু, পিপুল চূর্ণ ও হুগ্নের সহিত ৪ রাত মাত্রায় দেব্য । রুশতা, অগ্নিমান্যা, পিত্রচুষ্টি ও কাস থাকিলে মহিচ ও মতের স্হিত তিন দিন সেবন করিবে এবং ঔষধ মেবনের পর চিৎ হইয়া শয়ন করিবে। এই ঔষ্য সেবন কাল লবণ পরিত্যাগ করিয়া গুভ ও দ্বি ভক্ষণ করিবে এবং একুশ দিন ঘুত ও মরিচচুর্ণ দেবন করিবে। মৃগাক্ষরদের পথোর ভাষ পথা প্রদেষ। এইরূপ নিয়মে থাকিলে ঘাহারা বহুদিন হইতে অঞ্চালা, পাতু, শোষ, বিবিধ জব ও উন্মাদ প্রভৃতি রোগে পীড়িত ২ইয়াছে, আরোগ্য লাভ কারবে। এমন কি অসাধ্য হইলেও এই ঔষণ সেবনে উক্ত রোগ সকল বিনপ্ত হয়।

হেমগর্ভ-পোট্রলীরসঃ।

রসভন্মতয়ো ভাগা ভাগৈকং (২২ভন্মকন্।
মৃততাম্রপ্ত ভাগেকং তোলৈকং গদ্ধকপ্ত চ ॥
মন্ধ্যেতিত্রক ভাগৈবিধানাথে সম্প্রেবং।
প্যা বরাটিকা তেন উঙ্গণেন নিলেপরেং॥
বরাটাং প্রমেদ্ ভাগে ক্ষমা গল্পটে পচেং।
বিচূর্ণমেং আক্সীতে গোটনীং তেমগভিকাম্।
সুগার্মকাত্রগু জা-ভক্ষণাদ্ রাজ্যকারং॥

রুষ্যানন্ত্র ও ভোষা, স্থান্তম ১ ভোষা, মারিত ভাষ ১ ভোষা, গন্ধক ১ ভোষা, এই জবাণ্ডাল চিতার রসে ২ প্রহর মর্দন করিয়া কাজর মধ্যে পূরিয়া সোহাগা ঘারা তাহার মুখ বন্ধ করিবে। এবং ভাণ্ডে পূরিয়া গজপুটে পাক করিতে দিবে। শীতল হইলে চূর্ণ করিয়া ৪ রতি পরিমাণে মৃগান্ধরদের ভায় সেবন করিবে। ইহাতে রাজ্যশ্যা বিন্ত হয়।

রত্বগর্ভপোট্রলারসঃ।

রসং বজ্রংহেন তারং নাগং লৌহক তাএকন্।
তুল্যাংশং মারিভং গোজাং মৃদ্ধামান্দিকবিদ্যন্।
শব্ধ তুথক তুল্যাংশং সপ্তহং চিত্রকদ্রবিঃ।
মন্দিরিষা বিচ্কাগ তেন প্র্যা ববাটিকাঃ।
টকাং ববিহ্নদেন পিয়া তব্পমন্ধরেও।
মুন্তাণ্ডে তাং নিরুধ্যাথ সমাগ্ গজপুটে পাচেং।
আদায় চূর্গরেৎ সকং নিও ভাঃ সপ্ত ভারন ঃ।
শার্কিন্তা রনৈঃ মপ্ত চিত্রকন্তেকবিংশভিঃ।
দ্রবৈভাব্য ততঃ শোসং দেয়ং ওপ্তাতভুপ্তরম্।
যান্দেরাগং নিহভান্ড সাধ্যমাগ্য ন সংশ্যঃ।
বোজরেং পিশ্বলাক্ষেন্টিল: স্থাত্তম বিচিত্রা।
মহারোগ্রিকে * কামে জ্বের গ্রেম্বিটিরার্কে।
পোট্রলাগ্রস্তা ভার্য স্বর্ধবোগ্রকা তকঃ।

রসদিন্ত্র, হানক, পণ্ট, রোপা, সাসা, লোহ, তাম, মুক্তা, স্বর্ণনাফিক, প্রবাল, শ্রু-ভশ্ম ও তুঁতে, এই সমুদায় সমভাগে লইয়া চিতার রসে ৭ দিন মাড়িয়া ও চুণ করিয়া কাড়র ভিতর পূরিবে এবং কিঞ্চিং সোহাগা আকল্পের আঠার পেবণ করিরা তদ্বারা ঐ কড়ি সকলের মুখ বন্ধ করিরা হাত্তকার ভাতে স্থানি পূর্বক ভাতে আরত এবং লিপ্ত করত যথাবিধি গজপুটে পাক করিবে। শীতল হইলে ঔষধ উত্তোলন পূর্বক (ব্রাটিকার) সহিত চুণ করিয়া নিসিন্দার রসে ৭ বার, আদার রসে ৭

বাতন্যাধান্দ্ররীকৃষ্ঠ-মেহোদক্রপ্রদানাঃ ॥
 অর্শাংসি গ্রহণীতারে) সহারোপাং প্রকীরিতার ।
 বাতব্যাধি, অব্যারা, কুঞ্চ, মেঞ্চ, উদরবোগ,
 অর্শান, ও গ্রহণী এই আটিটি পীড়াকে
মহারোগ বলে।

বার ও চিতার রসে ২১ বাণ ভাবনা দিয়া গুৰু করিয়া লইবে। ইহার মাত্র'—৪ রতি। মধু ও পিপুল চুণ অথবা দ্বত ও মানেচের সহিত সেব্যা এহ উষ্প সেবন করিলে ক্লচ্ট্রুদাধ্য ফ্লা, অষ্টাব্য মহানোগ ও জ্ঞাদি নানা পাড়া! প্রশামত হইয়া থাকে।

সর্ব্বাঙ্গজন্দরে। রসঃ।

রসং গন্ধক তুলাগনো ছো ভাগো চলগন্ড চ।
মৌজিকং বিজ্ঞাং শ হাভ্যা দেয়ং সমাংশিকণ্যা
মেভ্যাদিভাগে সর্বাং গলে বিজ্ঞায় কার্ট্রেক্য
নিগ-(নিথ)-এবের সাবিন্য গিন্তিকায় কার্ট্রেক্য
গিন্তাল্ডলগুচং স্বর্ধ প্রশালা গিন্তিকায় কার্ট্রেক্য
গিন্তাল্ডলগুচং স্বর্ধ প্রশালাদ্বির বিজ্ঞান
ক্রেক্ট্রেন্স ভাগে লালাদ্বির বিজ্ঞান
ভাগে গুলাং প্রশালাদ্বির বিজ্ঞান
ভাগি গুলার বিজ্ঞান
ভাগাদ্বির বিজ্ঞাদ্বির বিজ্ঞাদ্বির বিজ্ঞান
ভাগাদ্বির বিজ্ঞাদ্বির বিজ্ঞ

ষ্ণ প্রভাগ (ল।") র/সন্দাব।।

পারদ ১ ভাগ, গদ্ধক তাগা, মোহাগার থৈ ২ ভাগ, মুক্তা, প্রবাণ, কা ভাল প্রত্যেক অর্দ্ধ ভাগ, অর্কভাল এক ভাগা, এই সকল দ্বরা কাগাজীলেরর রসে (পাঠান্তরে—নিম-পাতার রসে) মাড়িয়া গোলাকার করিয়া পশ্চাং তীর লগ্নিতে বন্ধনুষায় গছগুটে পাক করিবে। শীতল হংলে উহা ওুলায়া লইয়া লোহ একভাগ ও লোহেব অস্দ্রক হিন্নুল মিশ্রত করিবে। মানা—২ রতি। অনুপান— মর্ম্যুক্ত বা ঘুড্যুইত পিপুল্চুর্ল কিংবা পানের রস, চিনি এথবা আলার রস। ইহ-দেবন করিলে রাহ্যক্ষা, বাত্তিক ও পৈত্তিক হ্বরা, স্নিপাতি, অশ্বা, গ্রহণা, মেই, গুলা, ভগ-হ্বরা, স্নিপাতি, অশ্বা, গ্রহণা, মেই, গুলা, ভগ-

পারাশর-মুত্যু ।

যষ্টাবলাগুড় চাল-পঞ্মূলাতুলাং পচেং।
ক্রেংপামস্তভাগস্থে তথে পাতং পচেদ্ গুতম্॥
ধাতীবিদারাক্রমে ত্রিপাতে প্যমোক্রে।
ক্রিউনীবনীয়েক পারাশরমিদং সূতম্।
সমৈঞ্চ বাজ্যক্ষাণ্মুত্রয়তি শীলিতন্॥

স্বত ১৬ সের। যথিনধু, বড়েলা, গুড়ুচা ও সর পঞ্চন্ত এই সকল দ্রা সমভাগে নিলিত ১২॥ সের; জল ১২৮ সের, শেষ ১৬ সের; জামলকার রস ১৬ সের; জুমিকুস্মাণ্ডের রস ১৬ সের, ইন্ধুরম ১৬ সের। কলার্থ—জীবনায় গণ অগাৎ জাবক, ক্ষরভক, মেদা, মহামেদা, কাকোলী, জীবকাকোলী, জীবকার, যথিমধু, প্রেও বৃদ্ধি। এই সূত্র সেবনে শ্রাণ্ড তত্ত্বদ্ব প্রশাস্ত্রতা।

অজাপঞ্চ-গ্রহণ।

ছালশক্রমম্বি-খাবৈদ্রা চলাধিত স্পিত। সঞ্চারং যুক্তবং খাসব গোপশাস্থ্য প্রমন্ত

ছাগস্ত . ৪ সেব, ছাগ্রেগাব রস . ৪ সের, ছাগমূল . ৪ সেব, ছাগছগ ৪ সের, ছাগদ্বি ৪ সেব , একত্র পাক করিয়া যবক্ষার চুবি, ১ সের প্রক্ষেপ দেয়া নামাইবে। মাত্রা— ১ ক্রোণা । এই গতি পান করিবে যক্ষা, স্থান ও কাসরোগ উপশ্যত হয়।

বলাগভং স্বত্য।

দিপক্ষালক্ত পচেৎ কথায়ে প্রস্থানে মাংসরসভা টেকে। কথাং বলায়াঃ স্থানিয়ােরা গাভং দিন্ধং পয়াপ্রস্থাত্য হাতক। সর্ব্বাভিধাতোথিতস্থাা্ল-ক্ষভক্ষয়ােৎকাসহরং প্রাদিষ্টম।

বলাগতে যুক্তে দশমুল্মিলিত প্লান্ন ২০, জলশগ্রে ৩২, শেষশগ্রাহায় ৮। ততি বুল্টাকা।

ঘ্ঠ / ৪ সের, দশমূলের কাথ /৮ সের, (মিলিত দশমূল ৫০ পল, জল ৩২ সের, শেষ /৮ সের) ছাগ-মাংসের কাথ / ৪ সের, ছ্ম / ৪ সের। ক্রাথ —কুটিত বেছেলা / ১ সের। যথা-নিম্নে পাক করিয়া সেই পন্ধ ঘ্রত পান করিলে যুগা, শুল, ক্ষতক্ষ্ম ও উৎকাশ নাশ হয়।

জাবন্তা গ্রন্থতম।

জীবন্তাং মনুকং জাকাং ফলামে কুটজন্ত চ।
শটাং প্রজরমূলক ব্যালাং কোফালকং বলাম ॥
শীলোংগালং ভামলকাং কামে ।
শীলাক সমা বিষ্টা চালা বৈজ্ঞো বিপাচয়েং ॥
এ শ্বাধিসমূহক্ত লোগালকাং ব্যাপাকান বি

ন্ত , ৪ , মবে জন ১৬ রেব। কন থি— জীবতী, ষষ্টিমধু, জাফা, ইন্দ্রব, শটা, কুড়, কণ্টকারী, গোজুব, বেড়েলা, নীলোৎপল, ভূই আননা, বলাড়ুমুব, চরালভা ও পিপ্পলী মিলত ১ সেব। এই উৎক্রই ন্থত পান কাববো একানশ্বিদ রগ্নিধিই বন্ধা বোগ উপশ্মিত হইয়া থাকে।

অমূত প্রশিয়তম্।

ातकदङ्खो संदर्भ हा, छार भागदर भंजना BBB. 创新开调信用 11 12 15 15 16 16 16 16 16 16 11 খুন্দ বে দ্বে মৰক্ষা গ্ৰন্ত , এ এবকান্ । ম্পিং এক্ষৰ ভোগ ভুজাকার বুধ্চাও **তথা।** 西蒙语海关 医饱油体胶 人名法尔尔 经有点的 化新鲜矿 化 Strates to the court of the court of the strain ফলালি ভালাপে, ৰ কথাৰ বা এটা কাপিক ৰ ১ **धाळालमां को नाम-एक असा जनमार धरा ए** मञ्जा अरङ्गाचे अन् अन्तरम् सुर्वे ङ्गा विश्वास्तरः । প্রস্থান্ধর মধন্দ্র শীনত প্রকরানিজনার পরী হ প্ৰান্ধক মান্তি-২০ : এপ ব্ৰেশ্বাই ৷ निर्माय होन्टर ट्या ३३० च. ३१९ मेली ५४० ४ अभाग्यानिया गाउवर्गामा भूता पृत्या 상제점 회에서의 그는 '주니라 (과학시학학 다) শস্ত্রপৃষ্ণ ংগণ্ড **ত্র**পারন্বিকারত প্র প্রস্তান কুশান্ধ। সংঘদ পেটার হাজং ॥ क माह माञ्चलकोतं नार इसीको ५७८८ । श्चिम् र्वाभावतः शक्ष्याः । भागाना भागानाः सन् ॥

বৃহতী (পুনকুক্তি জন্য ২ ভাগ), পানিফল, ভূ ই আমলা কাল ভূ ই কুমড়া, পিপুল, বেড়েনা, কুল, আথবোট, থেজুব, বানাম ও অভিযুক (পেন্তা) এই সকল দ্রবা প্রত্যেক ছই তোলা (কুল ও আখ্রোট প্রভৃতি ফল না পাইলে তদ গুণবিশিষ্ট অন্য ফ ল লওয়া যাইতে পারে)। আমলকী-রস, ভূমিকুত্মাও-রস, ছাগমাংস-রস ও হগ্ধ এই সকল প্রত্যেক 🖊 ৪ সের **হিসাবে লই**য়া /৪ দের ঘুত পাক করিবে। ঘুত ছাঁকিয়া তাহাতে ৴৬। পওয়া ছয় সের চিনি; মরিচ, দারুচিনি, এলাচ, তেজগাতা ও নাগকেশর পুষ্প চূর্ণ প্রত্যেক ৪ তোলা প্রকেপ দিবে; শীতল ইংলে /২ সের মধু তাহাতে দিবে। এই অমৃতপ্রাণ ঘৃত মানবের পক্ষে অনুভত্তা। ইহা উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিয়া তথ্য ও মাংসরস পথ্য করিলে কাস, খাস, জর, হিকা, দাহ, তৃষ্ণা, রক্তপিত্ত, বমি, মুর্চ্ছা, ফ্রান্ডাগ, যোনিগোগ ও মুত্রবোগ প্রশমিত হয়। এই অমৃতপ্রাণ ঘুত সেবন করিলে নইগুক্র ও ফ চক্ষীণ, তুর্মল, ব্যাধিপীড়িত, স্ত্রীনক্ত, ক্বণ ও বর্ণ বরহীন ব্যক্তিগণ পারপুষ্ট হয়। ইহা পুত্রপ্রদ।

র্হচ্দনাদি তৈলম্।

চন্দনামু নগং বাপাং যাইগৈলেরপায়কম্।
নঞ্জিষ্ঠা সরলং দারু শটোলা পৃতি কেশরম্।
পাত্রং গৈলং মুরা মাংসী ককোলং বনিতামুদম্।
হরিকে শারিবে তিজা লবকাগুরুকুকুম্ন্।
হরেকে শারিবে তিজা লবকাগুরুকুকুম্ন্।
হরেপুনলিকালৈচভিজেলং মন্ত চতু গুণিম্।
লাক্ষারসসমং সিন্ধং গ্রহমং বলবর্ণকৃত্য।
রক্তপিত্তকতক্ষীণ-মাসকাসবিনাশনম্।
আারুংগুইিকরকৈব বলীকরণমূত্রমন্॥

যথাবিধি মুর্চ্ছিত ভিলতৈল /৪ চারি সের।
লাক্ষা /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ /৪ সের,
দধির মাত ১৬ সেব। কলার্থ—রক্তচন্দ্রন,
বালা, নথী, কুড়, যষ্টিমবু, শেলজ, পদাকার,
ম্প্রিয়া, সরলকার, দেবদারু, শুটী, এলাইচ,
খটালী, নাগেশ্বব, তেজপত্র, শিলারস, মুর:-

মাংদী, জটামাংদী, কাঁক্লা, প্রিয়ন্থ, মুতা, হরিন্তা, দারুহরিন্তা, শ্রামালতা, অনস্তম্লা, লতাকস্ত্রী, লবঙ্গ, অগুরুদ, কুরুম, গুড়হুক্, রেণুক ও নালুকা ইহাদের প্রত্যেক ২ তোলা পান্মাণে লইয়া কুটিয়া ১৬ দের জল সহ পাক করিবে, পরে গন্ধদ্রব্য প্রদান করিয়া পাক শেষ করিবে। শাতল হইলে মুগনাভি প্রভৃতি গন্ধদ্রব্য দেওয়া কর্ত্তর্য। ইহা ব্যবহারে রক্তন্পিত্ত, ক্ষয়, শ্বাদ, কাদ প্রভৃতি নিবারিত এবং বলবীর্য্যাদি বর্দ্ধিত হয়।

শোকং হিন্নং ক্রোধমস্বরত।ঞ্ ত্যজেজ্বারান্ বিষয়ান্ ভঙে চচ। তথা দ্বিজাতাংগ্রিদশান্ ভ্রাশচ বাচক পুণাা, শুগুর বৃ দ্বিজেভাঃ॥

যক্ষণোগাঁ শোক, দ্রীসসম, ক্রোধ ও অস্থা ভাগে করিবে। উদাব অর্থাং ধন্মের অবিরে,ধী ও মনের অঞ্চুল বিষয় স্বল সেবা কবিবে। আহ্মণ, দেবতা ও প্রতামতি। প্রভৃতি শুকুজনের সেবা এবং বেদো কক্সস্তাত ও জীমভাগ্রভাদ পুণ্ডকথা স্কল ভাহ্মণগণের নিক্ট হইতে শ্রবণ করিবে।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

রাজযক্ষারোগে পথ্যানি।

মন্তানি জাকলং পিক্ষি-মৃণ্যাংসং বিশুষ্তান্।
মৃক্যান্তিকগোধুম্-যবশাল্যাদয়ে হিতাঃ ।
দোষাধিকশু বলিনো মৃত্যুজারাদৌ
গোধুম্কাচণকারুশালয়ক ।
চাগাদিমাংসনবনীতপয়োয়্তানি
ক্রাদমাংসমপি জাকলার রসাক ॥
পকানি মোচপনসাম্রকলানি ধাত্রী
গর্জ্রপৌজরপর্যকনারিকেলম্।
শোভাজনক কুলকং নবতালশস্তং
ডাকাফলানি নিষয়োহিণি চ মাশিম্ছন্॥
সিংহান্তপত্রমপি গোমহিবায়তক
চ্ছাগাল্যয়াশ্চ তদ্বকরমুত্রলেপঃ।
মংশুভিকা শিণারিল্ম মদিরা নসালা
কপুরকং মুগমদঃ সিতচশনক।

অভান্তনানি স্বর্জীণানুলেপনানি
সানানি বেশরচনান্তবগাহনানি।
হক্ষাং প্রজং স্মরকথা মৃত্যান্ধবাহো
গীতানি লাভ্যমণি চল্রস্কটো বিপঞ্চী।
মুক্তামণিপ্রচুবভূষণধারণক
হোম: প্রদানমমর্থি পুজনানি।

*
১০০ ক্ষেপ্রান্ধপি পঞ্চারণঃ ক্ষরেষ্ট্র

মতা, জাঙ্গল দেশজাত পাধীর ও মুগের মাংস, মুগ, ষ্টিকভণ্ডল, গম, যব ও শালিতণুল যুক্তারোগির স্থপথ। দোষাধিক বলবান ব্যক্তির পক্ষে প্রথমতঃ অতীক্ষ ব্যনাদি ছারা মূহ শোধন হিতকর। গোধুম, মুগ, ছোলা, রক্ত-ণালিত ওল, ছাগমাংদ, ছাগত্ব্ব, ছাগত্ববোদ্ধৰ মাধন ও গুত, মাংসাণী জন্তুর মাংস জাঙ্গলদেশজ পশু পকির মাংসরদ, মোচা, পাকা কাঠাল, পাকা আম, আমলকী, গর্জ্জুণ, পুষ্ণবমূল, পঞ্জয়ফল, নাণিকেল, সজিনা, পলতা, কাচতালের শহা, দাকাফল, মৌবি, দৈয়বলবণ, বাদকপত্র, গ্রান্থত, মাহিংম্বত, ছাগাশ্র এবং ছাগমল ও ছাগমতের এলেপন, মংস্তা, ওকা (ওড়াবশেষ), শেখরিণী, মন্ত্র, রসাল, কপুরি, কস্ত্রী, শেহচন্দন, অভাঙ্গ (ट्लामि प्रक्रंग), प्रशास जवा (जनामि) অমুলেপন, স্থান, প্রবেশ-বিক্যাস, অবগাহন খান, অট্টালিকায় বাস, মাল্যবারণ, হর্ষজনক বাক্যশ্রবণ, মুহ্বায়ুদেবন, সঙ্গীতশ্রবণ, নৃত্য দর্শন, চক্রের শোভা (জোৎসা), বীণাবাছ, মুক্তামণিনি।শ্রত প্রচুর ভূষণ ধারণ, যজ, দান, দেবতাপূজা, ব্রাহ্মণের শুক্রাষা এবং হৃদয়গ্রাহী

অরপানীয় এই সমস্ত রাজ্যক্ষা ও ক্ষতক্ষীণ-রোগে হিতকর।

রাজযক্ষারোগেহপথ্যান।

বিরেচনং বেগবিধারণানি
শামং স্থিয়ং স্বেদনমঞ্জনক।
প্রজাগরং সাহসকর্ম-সেবা
কক্ষারপানং বিষমাখনক॥
তাস্থলকালিক্ষকুলথমাবরুসোনবংশাকুররামঠানি।
প্রমানি তিক্তানি ক্ষারকাণি
কটুনি সর্ববাণি চ পত্রশাকম্।
কারান্ বিরুদ্ধ স্তাশনানি শিশ্বীং
কর্মেটকক্ষাপি বিলাহি সর্বব্য।
বঠিয়কং কৃক্ষমপি ক্ষেত্র্
বির্ক্তরেৎ সম্ভতমপ্রমণ্ডঃ॥

বিরেচন, মলম্ত্রাদির বেগধারণ, পরিশ্রম,
ন্ত্রীপ্রদঙ্গ, স্বেদ, নেত্রাঞ্জন, রাত্রি-জাগরণ,
সাহসিক কর্মা, রুক্ষ অরপান ও বিষমভোজন,
তাম্বল, তরমুজ্ফল, কুলপকলায়, মাষকলায়,
রঞ্জন, নাশের কোঁড়, হিন্দু, অমদ্রব্য, তিজ্বদ্রব্য, ক্ষায়দ্রব্য, কটুদ্রব্য ও সকল প্রকার
পত্রশাক, ক্ষারদ্রব্য, বিরুদ্ধভোজন, শিম,
কাকরোল, বিদাহী দ্রব্য এবং ক্লম্ভ্রুক্সী
এই সকল রাজ্যক্ষরোগে অপথ্য।

বৃদ্ধাকং কারবেল্লঞ্চ তৈলং বিষঞ্চ রাজিকাম্। মৈথুনঞ্চ দিবানিজাং কয়ী কোপং বিবর্জন্মেৎ ॥

ক্ষন্নরোগী বেগুন, করোলা, তৈল, বেল, সর্বপ, মৈথুন, দিবানিজা ও ক্রোধ ত্যাগ করিবে।

ইত্যায়ুর্বেদ-সংগ্রহে রাজ্যক্ষরোগাদিকার:।

অথ কাসরোগাধিকারঃ।

অথ কাস-নিদানগ্।

ধুমোগগাতাজসভন্তবৈধ নায়মেরক্ষাননিবেশাচচ। বিমার্গগালচ হি ভোগনতা লগোনরোধাৎ ক্ষনশোভূপৈন॥

বাংগো স্থাদান গুলাও প্রজ্ঞান হৈ ভিন্নক হৈ প্রথম কুলাগোদ্য ।

কিলেতি বজা কি সংস্থা মনে থাই মনি যি ভ. কাস আ হৈ প্রতিষ্ঠি ॥
পদক সে গোলা বাংগি ককে মুক্ত করে ।
ক্ষাংগোগোলাভাই সকেব মুক্তিমকে কাজতো ।
পুক্ত কথা ভাবেৰ ভোগা শূৰ পূৰ্ণপ্ৰভাতা ।
কটো কালুকা ভোগাংগিয়ে বাংগতা ।

মুণ ও নাদাপথে প্মান বুলিব প্রবেশ ।
আগরসের উদ্ধৃপতি, বানাম রাক্ষার ভোজন ।
ভূকজাবরে বিমার্গগেন (জাত ভোজনাদি
হেতু খাদপথে আহাদের প্রবেশ) মধ্যুলাদির ।
ও ইাচির বেগালোর এই সকল কারণে কুপিত ।
প্রোপবার, এই উল্লেখানে এইগ্র ও কফ ।
পিত্রে সহিদ মিলিত এবং ভ্রাব্যাপ্রের ।
ত্যায় শক্ষাব্রিই হংলা সহদ মুণ হইতে নির্মিত ।
ত্যায় শক্ষাব্রিই গণিওতিরা কারণোগ্র বেলন।

বায়, পিন্ত, কল, উন্নক্ষর ও ধাতৃক্ষর এই পাঁচ প্রকাশ কারণে পাঁচ প্রকাশ কাল উৎপন্ন হয়। তথ্যতাত জরানিবন্ধনও এক প্রকাশ কাল জন্মে, তাহা বাতাদি-দোবজ কালেরই অন্তভূতি বাল্যা জ্যান্যে। সকল প্রকাশ কালত উপ্পিক্ত জ্যাৎ আচাকংসিত হুইলে ক্রমশঃ বল্বান্ ২ইয়া শেষে গাতৃক্ষ্য-কালক হুইয়া উঠে।

কাসরোগ উৎপন্ন হইবার পূর্বে মুখ ও কণ্ঠদেশ ঘ্রাদের শুনা ঘারা ব্যাপ্ত বাল্যা অফু-ভূত হয় এবং গ্লার মধ্যে কণ্ণ ও আহারদ্রব্য গ্লালনে কণ্ঠব্যথা হইয়াথাকে।

অথ বাতজকাস-নিদানম।

হুছেওামুর্কোদরপার্থপূরী ক্ষান্ন: ক্ষাণ্যলপ্রৌজা:। প্রসক্রেণ্ড সমীরণেন ভিরম্বর: কাসতি শুধুমের ॥

বাতজ কাদে ধ্নর, শুজাদেশ (ললাটেক-দেশ), পাধ্রয়, উদৰ ও সম্প্রেকে শূলবদ্বেদনা, মুশের শুজতা, বল স্বা ও ওক্ষঃপদার্থের ক্ষাণতা, নিরন্তব কাস্বেগ, স্বরভক্ষ ও শ্লেমাদি বহিত শুলকাস এই সকল লক্ষণ প্রকাশির ২ইয়া থাকে!

অথ বাতজকাস-চিকিৎসা।

বাস্তকো বায়স শাকং মূলকং প্রমিধকম্। কেহাজৈলাদয়ে ভস্পাং সাকেস্প্রমণ্ডিকাং॥ দ্ব্যারনালাফকলং প্রম্যাগান্তবে চ। শস্ততে বাতকালে ৩ স্থায় ব্যাণনি চ॥ প্রমানুগোদ্বে বা ১৮২৭গোব্যমন্তিকান্। সম্মানুগোদ্বে প্রান্ধ্যাব্যমন্তিকার ভাল্॥

বাতকাদে বেতোশাক, কাক্মাচা, কাচ্
মূলা, সুর্ব্ধান, স্তও তেলাদি সেইপদার্থ,
তথ্য, ইক্ষুরস, গুড়বিকার (নিছরি প্রান্ত),
দাধ, কাঁজি, তম্ফল, প্রসন্ন (স্রামণ্ড) মধুব,
অম ও লবণ রসায়ক দ্ব্য হিতকর। গ্রামণ্
(ছাগাদি), আনুপ (বরাহাদি)ও উদক
(কচ্ছপাদি) জন্তর মাংসরদের সহিত ক্ষথবা
মাষকলায়ও আলকুশা বীজের ধ্যের সহিত্
যব, গম এবং ষ্টিক ও শালিভঙ্লের অম
ভোজন প্রশস্ত।

পঞ্চন্লাকৃতঃ কাথঃ পিললীচুৰ্ণাংযুতঃ। রসালমগতো নিভাং বাতকাসমৃদভাত ॥

বৃহৎ পঞ্চমূলের কাথ, পিপুল্চুবের সহিত এবং মাংসের রসের সাহত অন্ন নিউচ ভোজন কারলে বাভজ কাস বিনষ্ট হয়।

অপরাজিতাদিলেহঃ।

শটাশৃক্ষীকণাভাগী-গুড়বারিদ্যাসকৈ:।
সতৈবৈবিতকাসন্থা লেহোহংমপরাজিতঃ।
চূর্ণিতা বিশ্বহংশপা-শৃক্ষীক্রাক্ষাশটাসিতাঃ।
লাচু । তৈলেন বাং : 'থং ক্রেণ জয়তি দাক্ষাম্।
ভাগীক্রাক্ষাশটাশৃক্ষী-পি.প্রানীবিশ্বভেষজৈঃ।
ভাগীক্রাক্ষাশটাশৃক্ষী-পি.প্রানীবিশ্বভেষজৈঃ।
ভাগীক্রাক্ষাশটাশৃক্ষী-পি.প্রানীবিশ্বভেষজৈঃ।
ভাগীক্রাক্ষাশটাশ্কী তালি প্রানীবিশ্বভিষ্টির ।
ভাগীক্রাক্ষাশিনাম্।
ভাবত তিলং কট্ প্রান্যান্। এবং বক্ষামাণ্ন
ব্যোগস্পা। তিতি শ্লীক্ষা

শটী, কাঁক্ড়াশৃঙ্গী, পিপুল, বামুনহাটী, পুরাতন গুড়, মুতা ও হরালভা; অথবা ওঁঠ হরালভা,, কাঁক্ড়াশৃঙ্গী, ডাক্ষা, শটী।ও চিনি; কিংবা বামুনহাটী, জাক্ষা, শটী, কাঁক্ড়াশৃঙ্গী, পিপুল, গুঠ ও পুরাতন গুড়, এই তিনটি যোগ কটুতৈলের সহিত লহন করিলে বাতকাস প্রশানত হয়। এই যোগত্রয় বাত-কাসের প্রধান অবলেহ।

অথ পিতজকাস-নিদানম।

উরোবিদাহজ্বরজুণোগৈ-রক্তার্কিচন্তিক্তমুখপুষার্জ্ঞ। পিতেন পীঠানি বনেৎ কট্নি কাসেৎ সপাঞ্জঃ পরিদঞ্জানাঃ॥

পৈত্তিক কাসে, হানয়ের দাহ, জ্বর, মুথের শোষ ও ভিক্ততা, পিপাসা, পীতবর্ণ-কটুস্বাদ-ব্যন, দেহের পাণ্ডবর্ণতা ও কাসকালে দাহ এই সকল লক্ষণ লক্ষিত হয়।

অথ পিত্তজকাস-চিকিৎসা।

পিত্তকাদে তমুকফে ত্রিবৃতাং মধুরৈযু তাম । দক্ষাদ্বনকফে তিজৈবিরেকার্থং যুতাং ভিষক্ ॥

পিত্তন্ধ কাদে যদি কফ পাত্লা হয়, তাহা হইলে বিরেচনার্থ মধুর দ্রব্যের সহিত অথবা জীবনীয়-গণোক্ত দ্রব্যের সহিত তেউড়ীচূর্ণ, কিন্তু কফ ঘন হইলে তিক্তর্সের সহিত তেউড়ী-চূর্ণ সেবন্ধী বিতে দিয়ে।

মধুরৈক্রাজনরসৈঃ স্থামাক্ষবকোন্ত্রবাঃ। মুক্গাদিযুবেঃ শাকৈল্চ তিক্তকৈম ত্রিয়া হিডাঃ। মধুরদ্রবা (অথবা জীবনীয়-গণোক্ত দ্রব্য) সংস্কৃত জাঙ্গল মাংস-রস, মুলগাদির যুব ও তিক্ত শাকের সহিত উপবৃক্ত মাত্রায় যব, শ্রামাধান্ত ও কোলো ধাত্যের অন্ন, পৈত্তিক কাসে স্থপথা ।

কটকারীযুগং দ্রাক্ষা-বাসাকচ্চুরবালকৈ:। নাগরেণ চ পিয়ন্যা ক্ষিতং সনিলং পিবেৎ। শর্করামধূসংযুক্তং পিন্তকাসাপহং পরম্॥

বৃহতী, কণ্টকারী, কিদ্মিদ্, বাসক. শটী, বালা, শুঠ ও পিপ্পলী, ইহাদের কাথ চিনি ও মধু সহ দেবন করিলে পৈত্তিক কাস প্রশমিত হয়।

বলাম্বিষ্হতীবাসা-জাক্ষাভি: ক্ৰিডং জলম্। পিত্তকাসাপহং পেন্ধং শৰ্করামধুবোজিতম্ ॥

বেড়েলা, বৃহতী, কণ্টকারী, বাসক ও দ্রাক্ষা ইহাদের কাথ মধু ও চিনি সহ পান করিলে পিত্তকাস নিবারিত হয়।

শরাদিপঞ্চমূলস্য পিশ্ললীক্তাক্ষয়োতথা। ক্ষায়েণ শৃতং ক্ষীরং পিবেৎ সমধূশর্করম্॥

শরমূল, ইক্ষুন্ল, কুশমূল, কাসমূল ও শালিধান্তমূল, এই শরাদি পঞ্চমূল এবং পিপুল ও দ্রাক্ষা, ইহাদের অর্দ্ধশৃত চারিগুণ কাথের সহিত হগ্ধ সিদ্ধ করিয়া মধু ও চিনির সহিত, পিত্তকাসগ্রস্ত রোগিকে পান করিতে দিবে।

কাকোলীবৃহতীমেদা-বুগৈঃ সব্ধনাগরৈঃ। পিত্তকাদে রদকীর-যুবাংশ্চাপাপকররেও।

পিত্তপ্রধান কাসরোগে কাকোনী, ক্ষীরকাকোনী, বৃহতী, কণ্টকারী, মেদা, মহামেদা, বাসক ও শুঠ এই সকল দ্রব্যের সহিত মাংসরস, হগ্ধ বা যুষ পাক করিয়া রোগিকে সেবন করিতে দিবে।

জাকামলকথর্জ্বং পিঞ্চলীমরিচান্বিতম্। পিত্তকাসাপহং হেতল্লিহান্সাক্ষিকসর্পিবা।

দ্রাক্ষা, আমলকী, পিওথর্জ্ব, পিপুল ও মরিচ, ম্বত ও মধুর সহিত অবলেহ করিলে পিত্তকাস নষ্ট হর। (ক্ষারপাণির মতে এই লেহ কফামুবদ্ধ-পিত্তজকাসে প্রবোজ্য ; পিতজ কাসে ইহা প্রয়োগ কলিতে ২ইলে মরিচের পরিবর্ত্তে চিনি দিতে হইবে।)

খর্জ্রা পর নীত্রাখা-, সিতালজাঃ সমাংশিকাং। মধুস্পিয় তোলেফঃ পিছকাসহরঃ পরঃ॥

পিও । জুরি, পিপ্লনী, জাক্ষা, চিনি ও থৈ সমভাগে লইয়া মধু,ও মতের সহিত লেহন করিলে পিত্তকাস প্রশমিত হয়।

শ্টাঞ্চারেরত্ততী-শর্করাবিশ্বভেষজন । পিষ্টা রসং পিবেৎ পূতং সন্থতং পিভকাসত্তং । মধুনা পদ্ধবীজানাং চূর্বং গৈভিকক'সতুৎ ॥

শতী, বালা, কণ্টকারী (বৃহতীর অর্থ এখানে কণ্টকারী), চিনি ও গুঁঠ জলে পেষণ করিয়া বস্ত্রে ছাঁকিয়া ছতের সহিত সেবন করিলে পিত্তকাস প্রশান্ত হয়। পদ্মবীজের চুর্ণ মধুর সহিত সেবনেও পিত্তকাস নিবাদিত হইয়া থাকে:

অথ কফজকাস-নিদান ।

প্রতিপ্রমানের মুখেন সাদন্ নিরোক্ত ভি ক্ষপূর্ণদেই। অভ্যারগা, গৌরাকভূমুক্ত, কাসেন্ত্রনং সাক্রবক্ত, কফেন।

লৈ নিক্তানে বেণি ক্লেনিপ্তমুণ, ন্ব-সন্ন, শিরোবেদনাযুক্ত, কক্পূর্ণদেহ, আহার-বিমুণ, দেহভারাক্রান্ত ও কঙ্গাক্ত হয় এবং ভাহার নির্থ্য কাদবেগ হইন। থাকে। কাদের সময় অভিশয় ঘন কফ নির্গত হয়।

অথ কফজকাস-চিকিৎসা।

বিনং বননোদো শোগিত কফকাসিনন্।
বনালৈ বটুককোকৈ কফলৈকাপুলাচরেও।
কফকাসপ্রান্ত রোগির বল থাকিলে প্রথমে
তাহাকে বনন করাইলা কটু, কক ও উফ্থীগ্য
ক্ষকাশক যবান ভোজন করাইবে।

পিপ্ললীক্ষারকৈদু (বিঃ কৌলথৈমু লকস্ত চ। লব্জনানি ভূঞ্জীত রুঠেনবা কটুকাধিতৈঃ ॥ পিগ্লী ও যবক্ষার সংষ্কৃত কুল্থকলায়ের ৰ্ষ, অথবা মূলার গৃষ কিংবা কটু (ঝাল) রসাঘিত মাংসের গৃষ পান এবং ইহাদের সহিত লঘুপাক অন্ন আহার করিতে দিবে।

প্রকালৈঃ শৃতং ক্ষীরং ককল্পং লয়ু শস্ততে। শাসকাস্তর্ধরং বলগ্যন্তিদ্দিন্য॥

পঞ্চকোলের (পিপুল, পিপুল্মূল, চৈ, চিতা ও শুঠ) সহিত হ্রাপাক করিয়া সেবন করিলে শ্বাস, কাস ও জ্বর বিনষ্ট এবং বল বর্ণ ও অগ্নি বং কিত হইয়া থাকে।

পৌঞ্জঃ কট্ফলং ভাগী বিশ্বপিপ্সলিদাধিতম্। পিবেৎ দাশং কফোল্লেকে কাদে শ্বাদে চ হৃদ্গছে।

পুদরমূল (অভাবে কুড়), কট্ফল, বামুন-হাটী, ভাঁঠ ও পিপ্লের কাথ পান করিলে কফোল্থ কাস, খাস ও হুদোগ প্রশমিত হয়।

স্বরসং শৃঙ্গনেরস্ত মাস্কিকেণ সম্বিত্য। প্রয়েচচ্বাসকাসত্ত্ব প্রতিষ্ঠায়ককাপহয় ॥

মধুব সহিত আলার রস পান করিলে খাস, কাস, সন্ধিও কফ নিবারিত হয়।

পাখশুলে জনে কালে খালে প্রেম্মযুদ্ধরে। পিপ্লাচুর্সংযুক্তং দশমূলাজনং পিবেং ।

ক্রেলস্থা কাদে খাদে ও জ্বরে পার্ বেদনা থাকিলে দশ্মুনের কাথে পিপুল্চ্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিতে দিবে।

অথ ক্ষতজ্ঞকাস-নিদান্য।

অভিব্যব'হভারাধ্ব-যুদ্ধাখণজবিত্রহৈ:।
ক্রন্সভোরংকতং বাযুগৃ হীখা কাসনাচরেৎ॥
স পূর্বং কাসতে শুলং ততঃ জীবেৎ সশোণিতম্।
কঠেন ক্রজতাত্যবং বিক্লগ্রেন্য চোরসা॥
ফুটাভিরিব ীক্রাভিস্তজ্জমানেন শ্লিনা।
হু.শুশর্শেন শ্লেন ভেদণীড়াভিতাপিনা।
পর্বংভেদ্মরখাস-তৃফাবৈখ্যাপীড়িতঃ।
পারাবত ইবাকুজন্ কাসবেগাৎ ক্ষভোদ্ধনাৎ॥

অতি মৈথুন, গুরুভার বহন, অধিক পথ-পর্য্যটন, যুদ্ধাম্বগজের বিধারণ (বলপুর্বাক ধারণদি) এই সকল কারণে শরীর কৃষ্ণীভূত এবং বক্ষঃস্থলে (ফুদফুদে) ক্ষত হটলে বায়, সেই ক্ষতকে আশ্রয় করিরা কাসরোগ উপ-স্থিত করে। এই কাসে প্রথমে শ্লেমহীন শুদ-কাদ, পরে কাদাভিঘাতে হ্দয়বিদারণহেত্র বক্তনিষ্ঠীবন হয়। কণ্ঠদেশে ভাতান্ত বেদনা, ব**ক্ষঃস্থলে ভঙ্গ**বদ্বাথা, তীক্ষ স্চীবেশবদ যাতনা ও শ্লনিখাতবৎ অসহাক্লেণ অন্তুত হয় এবং পার্যাদি স্থানেও ছঃখস্পর্শ ভঙ্গবৎ পীড়াদায়ক শুল্বপ্রণা উপভিত হয়। ভদ্বতীত পর্বভেদ, জ্ব, খাস, তৃষ্ণা ও স্বর্ভঙ্গ এই সকল থাকে। কাসিবার লকিত হইয়া কালে কপোতথ্বনির ন্তায় শব্দ নিগত হয়।

অথ ক্বতজকাস-চিকিৎসা।

ইকি কুবালিকা প্রং মৃণালোৎপ্রচল্কন্। মধুকং পিপ্লবী দ্রাক্ষা লাক্ষা শৃক্ষা শতাবরী॥ দ্বিশ্বণা চ তুগাক্ষারী দিতা সক্ষচতুগুণা লিজাৎ তর্মধুসূদি গ্রাং ক কোসনিস্ভয়ে॥

ইশ্ব, ইশ্বালিকা (কান্ড্যাবনেষ), পলকাঠ, মৃণাল, পদ্ম, শেষ্চননন, যত্ত্বিধু, পিগ্লী, জাক্ষা, লাক্ষা, কাক্ডাশ্কী ও শৃতমূলী ও শৃতমূলী ও শৃতমূলী ও শৃতমূলী ও শৃত্বিধ এই সমন্ত জ্বা দিলিত করিয়া মধু ও মৃত্বিধ হয়।

অথ ক্ষয়জকান-নিদানম্।

বিষমানাস্মভোজ্যা তি-বাবায়াছেগ নিগ্ৰহাহ। মুণিনাহ শোচতাং ন্ৰুণাং ব্যাপ লংগ্ৰে তথাে মলাং। বুপিতাং শ্বয়গ্ৰহামং বুয়ু দেহিলয়হদম্॥

মগ্ এশুগৰ্পনাহনোহান প্ৰাণন্ধ মঞ্চোপলভে কানী। শুমান বিনিষ্ঠাৰতি ছববলস্থ প্ৰকাশনা 'নো কাধিয়ং মপ্যন্। ভং সক্ষিলিক্ষং শুশাহ্লিক সোং চিকিৎসিভঞাঃ শ্বয়ণং বদ্ধি।

বিষম ও অনন্তকুল ভোজন, আতি মৈথুন, মলমূত্রাদির বেগবারণ <u>এবং</u> আহারাভাব হেতু আত্মনিকার ওৈ শোককরণ এই সকল কাবণে পাচকাগ্নি বিক্লত হই(া, দোৰতাৰ ক্পিত হইলা কেছ-কল্কল কল্জ কাস উৎপাদন করে। এই ফরজনিত কাসে গাত-শূল, জ্বর, দাহ, মুদ্রুণি বা মুদ্রা প্রয়ন্তও উপস্থিত (3 91 ত্রনাঃ শুস্ ক্ষীণমাংস হয় এবং কানের সহিত রক্ত-নিষ্টাবন করে। চি'কংসকেরা এইরূপ সর্বাঞ্গাক্তান্ত ক্ষাকাসকে অভি ছন্টিকিংশু বলিয়া বর্ণনা করেন।

অথ ক্রুক্রকাস-চিকিৎসা।

চুণ্ট কালুভ্নিপ্লা কাৰ্যক্ষমভাবিতং বছৰায়ান্। মুৰ্ভত্নিত্তপ্ৰলাভিলেতিং ক্ষমকাৰ্যক্ষিকন্।

ভাজনুন কৃষ্ণের ছালচূর্ব বাসকের বস স্থার। সাতি বাব ভাবনা দিয়া মধু স্বত ও মিছ্সির সহিত লেহন ফরিলে ফ্রকাস ও একেন্দিস্ত্রণ নাই হয়।

বাটক, একুতে, ৰাখি সত্ত্তাং সারকাসহাত্ত কটিতাবাহি বিশ্যাক্ত এবং সংবাৰ বিহুৎ 🛭

পিপুন্চূণের সহিত কণ্টকাবীর **কাথ** পান অথবা কণ্টকাবীচূর্ব ও পিথুল্চূর্ব **মধু সহ** লেহন কবিলে সাম্প্রমার কাম নিথাবিত হয়।

বিভারৰণ হাত,ভাজা গোন কোনিবেটিতম্। হিন্নত্রী হরেৎ কামং ক্রম মারিধারতম্যা

স্তান্ত ব্যক্ত গোলনের মধ্যে পুরিয়া আগ্রে প্রত্থাক করিয়া উহা মুখনধ্যে ধারণ কারিলে কার্যে শান্ত হয়।

বাৰকথকে, পেডা মধ্যান্তা হিতাশিকা। পিডাগেডাতে কামে ইজাগতে বিশেষতঃ॥

স্প্রাংগ্রা ইটা প্রতিদ্ন **রাস্কের** বস ম্পুর্বহিত পান কবিলে, গিড্রে**ল্লেলনিত** কাস বিশেষ গেরজাপিও নিবাধিত হয়। ৰাসারা: বরসং পূতং কণামাক্ষিকসংযুত্ম।
অভ্যাসাম্মাতে সীত্বাপ্যসাধ্যাৎ কাসরোগত: ।

পুটপাকে বাসকের রস গ্রহণ করিয়া পিপুলচুর্প ও মধুর সহিত উহা প্রতিদিন সেবন করিলে ছঃসাধ্য কাসরোগ ;হইতেও পরিত্রাণ পাওয়া যায়। বৃদ্ধ বৈছেয়া বাসকের কার্থও ব্যবস্থা করিয়া থাকেন।

অথ কাসস্ত সাধারণ-চিকিৎসা।

क्रकचानिनकः कामगानो (बोटेश्क्रभांतरतः । युरेडः मभित्तः मककः क्राह्मः (बार्शनिरतारेनः ॥

ক্ষকদেহ ব্যক্তির বাচন্স কাসে প্রথমে ক্ষেহপান, পিত্তন্ন কাসে ঘৃতপান এবং কফন্স কাসে স্নেহ বিরেচন বিধেয়।

क्ष्यनानिः।

কট্ৰুলণ কড়ণং ভাগী মৃত্যং ধাতাং বচাভয়া।
শুলী পৰ্ণটকং শুক্তী হ্বরাহ্বক জলে শৃত্য ।
মধ্হিলুবৃত্য পেয়ং কানে বাতকফায়কে।
কণ্ঠরোগে কয়ে শুলে খানে হিকাক্সেরু চ ।

কট্ফল, গন্ধত্ন, বামুনহাটী, মুতা, ধনে, বচ, হরীতকী, কাঁক্ড়াশৃঙ্গী, ক্ষেতপাপ্ড়া, শুঁঠ ও দেবদারু, এই সকল দ্রব্য মিলিত ২ তোলা, ৩২ তোলা জলে সিদ্ধ !করিয়া ৮ তোলা থাকিতে নামাইয়া মধু ও হিং সহ সেবন করিলে বাতলৈছিক কাস ও কঠরোগ প্রভৃতি বিনষ্ট হয়।

পিপ্ৰলী প্ৰাকং জাকা সংপ্ৰকং বৃহতীক্ষম।
যুক্তকোজ্ৰযুত্তা পেহঃ খাসকাসনিবহ গঃ॥

পিপ্লনী, পদ্মকাষ্ঠ, জাক্ষা ও স্থপক বৃহতী কল ইহাদের চূর্ণ স্থত ও মধুর সহিত লেহন ক্রিলে শ্বাস ও কাস নিবারণ হয়।

হরীতক্যাদি-গুড়িকা।

হরীতকীনাগরস্তত্র্ণং গুড়েন তুলাং গুড়িকা বিধেয়া। নিবারম্বত্যাস্থাবিধারিতেমং শাসং প্রবৃদ্ধং প্রবলঞ্চ কাসমূঞ

হরীতকী, শুঠিও মুতা ইহাদের চূর্ণ সম-পরিমাণ (কেহ বলেন দিগুণ) গুড়ের সহিত মিশ্রিত করিয়া গুড়িকা প্রস্তুত করিবে, সেই শুড়িকা মুখে ধারণ করিলে প্রবল কাদ ও শ্বাদ প্রশমিত হয়।

মরিচাদি-গুড়িকা।

মরিচং ক্ষমাক্রং শুং পিপ্ললী ক্ষ্মিয়া।
অর্দ্ধনি বাকারং বৰ্ধুখ্যাপ লাড়িম্ম।
এতচ্চুণীকুতং বুজানিষ্টকৰং জ্বাডন হি।
শাণপ্রমাণাং জুড়িকাং দুখা বক্তে, বিধারয়েং।
অন্তাঃ প্রভাবাং মন্দেইল কানা যাপ্রের সংক্ষম্।
মরিচ ২ তোলা, পিপুল ২ তোলা, ঘবকার ১ তোলা, দাড়িমের ছাল ৪ তোলা; এই
সকল জব্যের চুর্নে ১৬ তোলা গুড় মিপ্রিত
ক্রিয়া মোদক প্রস্তুত ক্রিবে। ইহার অর্দ্ধ তোলা পরিমাণে গুড়িকা ক্রিয়া মুশে ধারণ
ক্রিলে সর্ব্ধ প্রকার কান বিনষ্ট হইবে।

সমূলং চিত্ৰকল্পৈৰ পিপ্লানীচূৰ্বকং হতে । কাসং শাসঞ্চ হিকাঞ্চ মধুমুক্তং খিজোন্ত। ।

শুদ্দমূলা, চিতামূল ও পিপ্পলীচূর্ণ সমভাগে মিশ্রিত করিয়া মধুর সহিত সেবন করিলে কাদ, খাদ ও হিকা নিবারিত হয়। তথ্য ক্রবাদজং মাংদং কৌলিজং মাংদমেব চ।

তৰং জ্বাদিজং মাংসং কৌলিঙ্গং মাংসমেব চ। অসাধ্যাগুঢ়তে ভুজ্বা কাসাদভাস্যোগতঃ॥

মাংসাণী পশু পক্ষী ও ফিঙে পাথী প্রভৃতির মাংস প্রতিদিন আহার করিলে অসাধ্য কাস রোগ হইতেও মুক্তি পাওয়া যার।

মরিচাদ্যং চুর্ম।

কৰ্ম: কৰ্মাৰ্ক্ষমণো পলং পলন্বয়ং তথাৰ্ক্ষকৰ্মত। মরিচক্ত পিঞ্চলীনাং দাড়িমগুড়যাবশুকানাম্ ॥ সকোষবৈরসাধ্যা বে কাসা: সর্কবৈজ্ঞবিনিমু কাঃ। অপি পুরং ছর্দরতাং তেবামিদং মহৌবধং পধান্॥

মরিচচ্প ২ তোলা, পিপুলচ্প ১ ভোলা, অরদাড়িম-বীজ-চ্প ৮ তোলা, পুরাতন গুড় ১৬ তোলা, ঘবক্ষার ১ তোলা এই সম্দায় একত্র মর্দ্দন করিয়া ঘথাযোগ্য মাত্রায় প্রয়োগ করিলে অতি ত্ঃসাধ্য কাদ এবং যে কাসে প্যাদি পর্য্যন্ত নির্নাত হয়, তাহাও উপশমিত হইয়া থাকে।

সমশর্কর-চূর্ণম্।

লবক্ষাতীকলপিপ্লনীনাং ভাগান্ প্রকল্পাক্ষসমানমানাম্। পলাদ্ধকেং মরিচন্ত দল্ভাং পলানি চন্থারি মধৌষধন্ত। বিতাসমং চূর্ণমিদং প্রস্ত রোগানিমানান্ত বলাগ্রিহন্তাং। কাসজ্বরারোচকমেহত্তম্ব-দাসাগ্রিমান্যাহনীপ্রদোবান্॥

লবন্ধ ২ তোলা, জায়ফল ২ তোলা, পিপুল ২ তোলা, মরিচ ৪ তোলা, শুঠ ৪ পল, চুর্ণ-সমষ্টির সমান চিনি। এই সকল দ্রব্য একতা মর্দ্দন করিয়া লইবে। ইহা সেবন করিলে কাস, জ্বর, অরুচি, মেহ, গুলা, খাস, অগ্নি-মান্দ্য ও গ্রহণী প্রমুখ নানারোগ নষ্ট হয়।

এলাদি চুর্বমৃ।

এলান্ধটো নাগপুন্সং মরিচং টঙ্গণং কণা। বংশান্তরং ভাগবৃদ্ধা চূর্ণন্ত সিত্যা সমম্॥ এহণ্যশোষক্ষক্র-রক্তপিত্রকাপহম্। কপ্তরোগাঞ্চিত্রং শীহরোগহরং পরম্॥

ছোট এলাইচ চ্র্ণ ১ তোলা, দারুচিনি চ্র্ণ ২ তোলা, নাগেশ্বর-চ্র্ণ ৩ তোলা, মরিচ চ্র্ণ ৪ তোলা, সোহাগার থৈ ৫ তোলা, পিপুল চ্র্ব ৬ তোলা এবং চিনি ২১ তোলা। এই সকল চ্র্ণ একত্র মিশ্রিত করিয়া উপযুক্ত মাজায় সেবন করিলে গ্রহণী, অর্শঃ, ষশ্মা, গুৰু, রক্তপিত্ত, কফ, কণ্ঠনোগ, অক্ষচি ও প্লীহা প্রভৃতি রোগ সকল নিবারিত হয়।

ব্যান্দ্রীহরীতকী।

সমূলপুল্চছদকটকাধ্যান্তলাং জনদ্রোণপার্গ্ণ তাঞ্চ।
হরীতকীনাঞ্চ শতং নিদ্ধাদ বিপচা সমাক্ চরণাবশেবৰ্।
শুড়ক্ত দরা শতমেতদ্যো বিপক্ষুত্রায় ততঃ স্থলীতে।
কটুত্রিকঞ্চ বিপলপ্রমাণং পলানি ষট পুলারসক্ত ততা।
কিপেচতুর্জ্জাতপলং যথাগ্নি প্রযুজ্যমানো বিধিনাবলেহং।
বাতাত্মকং পিত্তকলোভবঞ্চ বিদোবকাসান্সি চ ত্রিদোবন্।
ক্যোত্তবঞ্চ কতজঞ্চ হক্তাৎ স্পীনসবাসমূরক্ষেত্র ।
ক্যাণ্যেকাদশমুগ্রন্ধং ভূগুপ্দিষ্টং হি রসায়নং স্যাৎ ।

মূল পুষ্প ও পত্র সহিত কণ্টকারী ১০০ পল, শ্লথ-পোট্টলী বদ্ধ গোটা হরীতকী ১০০ টা, জল ৬৪ সের, শেব ১৬ সের। এই কাথজলের সহিত পুরাতন গুড় ১০০ পল ও সিদ্ধ হরীতকী সকল বীজরহিত করিয়া একত্র পাক করিবে, লেহবৎ হইলে ত্রিকটু প্রত্যেক ২ পল, চাতুর্জাত (গুড়্ত্ব্ক, তেজপত্র, এলাইচ ও নাগেশ্বর) মিলিত ১ পল চূর্ণ প্রক্ষেপ দিরা আলোড়ন করিয়া নামাইবে। শীতল হইলে মধু ৬ পল মিশ্রিত করিয়া লইবে। (এই অবলহে ৪ মাধা ও হরীতকী অর্দ্ধ খান এক এক মাত্রায় থেব্য)। এই ঔবধ সেবন করিলে নানাবিধ কাদ, যক্ষা, খাদ, উরংক্ষত ও পীনস প্রভৃতি রোগ সকল নই হয়।

অগস্ত্যহরীতকা।

দণমূলীং শায়ংগুপ্তাং শায়াপূপীং শাটাং বলাম্।
ছান্তিপিপ্ললাপামার্গ-পিপ্ললীমূলচিত্রকান্।
ভার্গাং পুদ্ধমূলঞ্চ দিপলাংশং ববাঢ়কম্।
হরীতকাশতং ভদ্রং জলে পঞ্চাত্রক পচেই ।
ববং দ্বিল্লে: কমায়ং ১ং পূতং ওচ্চাভয়াশতম্।
পচেদ্ গুড়তুলাং দর্ম কুত্র্ঞ পূথগ, হুতাই ।
তৈলাই স্পিপ্লাচূর্গাই সিদ্ধে শীতে চ মান্দিকাই।
কুড়বং পলমানঞ্চ চাত্রজাতং স্কুর্ণিতম্।
লিহান্টে চাভয়ে নিত্যমতঃ থাদেদ্রসায়নাই।
তদ্ বলীপ্লিতং হস্তাহ্বির্বলবর্জনন্।
পঞ্চ কাসান্দ্রমহারংশং হিকাঞ্ বিষমজ্বান্।

হস্তাৎ তথা গ্রহণার্শো হুদ্রোগারুচিপীনসান্। অগন্তাবিহিতং ধক্তমিলং শ্রেঠং রসায়নম্ ।

আলকুণী-বীজ, শঙ্গপুষ্পী, শটী, मध्यूल, (बर्डना, शक्षशिश्रनी, ज्ञामार्ग, शिश्रनम्न, চিতা, বামুনহাটা ও প্রন্ধরমূল প্রত্যেক ২ পল, পোট্টলীবদ্ধ নব ১৮ নের ও উৎক্লাই হরীতকী ১০০টা এই সমস্ত ২/ ছই নণ (৮০ সের) জলে পাক করিবে। চতুর্থাংশ অবশিষ্ট থাকিতে এবং ঘবগুলি সিদ্ধ হইলে নাগাইয়া ছাঁকিয়া লইবে। সিদ্ধ হরীতকীগুলি এক সের মতে ও এক সের তৈলে ভাজিয়া উক্ত কাথে নিক্ষেপ করিবে এবং তাহাতে ১২॥০ সাডে বার সের গুড় দিয়া পাক করিবে। ঘনীভূত হইলে পিপুল চূর্ণ অর্দ্ধ সের এবং দাকু চিনি, এলাচ, তেজপত্র ও নাগেশ্বর প্রত্যেক ২ তোগা প্রকেপ দিবে। পাক শেষ হইলে নামাইবে শীতল তাহাতে মধু এক সের প্রক্রেপ দিবে। প্রতাহ ২টী হুরীতকী সহ ২ তোল: মাত্রায় এই লেহ সেবন করিলে পঞ্চিধ কাস, খাস, ক্ষয়, হিকা, বিষনজন, গ্রহণা, অর্শঃ, ক্রাণ্ডাগ, অকচি, পীনস ও বলীপ্লিত নাশ এবং বর্ণ, আয়ুঃ ও বল বৰ্দ্ধিত হয়।

ব্ৰহ্বাসাবলেহঃ।

ভুলামাদার বাসারা জলদ্রোণে বিপাচয়েৎ।
পাদশেরে রসে ভ্রমিন্ পঙং শতপালং অসেৎ ধ
শনৈর দ্বিনা সমাক সিদ্ধে তত্র প্রদাপরেৎ।
ক্রিকট্রিপ্রপাদশের কট্ডলং মৃস্তারেক।
কুঠং কম্পিনকং শেতজীরক কুফজারকন।
ক্রিব্রা সিন্দিলং চনাং কট্টকরোহিণী ধ
শিবা ভালীশশ্রাকং প্রত্যেকক দিকাবিকন।
চুর্বীয়া ফিপেৎ তত্র শিতে মর্ পলান্তকন্ ॥
অস্ত মাত্রাং ভর্তো লীচ্বা ভোরস্কং পিরেদম্ব।
সর্বকাসবিকারের শ্বরভ্রে বিশেষতাঃ ॥
রাজ্যক্ষণি ছুংসাধ্যে বাত্রপ্রথাত্ররে ভর্পা।
আনাহে বহিন্দানো ৮ প্রোগে চ ক্রক্তরে।
মৃত্রক্তের চ কুন্তে চ শস্ত্রোগ্র বেহ উত্তমঃ ॥

বাদক-মূলের ছাল ১২॥০ দের, জল ৬৪ দের, শেষ ১৬ দের, চিনি ১২॥০ দের।

প্রক্ষেপার্থ—ত্রিকটু, গুড়্ছক্, তেজপত্র, এলাইচ. কট্ফল, মুতা, কুড়, কমলাগুঁড়ি, খেতজীবা, ক্ষঞ্জীরা, তেউড়ী, পিপুলমূল, চৈ, কট্কী, হরীতকী, তালীশপত্র ও ধনে প্রত্যেক চুর্ল ৪ তোলা। শাতল হইলে মধু /> সের মিশ্রিত করিয়া নইবে। মাত্রা—২ তোলা। অনুপান—উন্ধ জল। ইহা সেবন করিলে রাজ্যক্ষা, স্বরভঙ্গ, কাদ ও অধিমান্দ্যাদি

তালাশাদ্যং চুর্ণং গুড়িকা চ।

থালিপ এই মরিচই নাগারই পিয়ালী গুভা।
ব্যোক্তর ভাই ইচনা ব্যোলে চান্ধভাগিকে।
কিলাইগুলা চানে প্রেয়া সি এই দর।
কাল্য সালাই করে চন্দ এই দালাই পার্ম।
ভাইন লালারশূলাই মূচ্ব চান্ধুলোমনম্।
কল্যেক্ গুড়িকালৈ এই জালার প্রাণ্ডাপলাম্।
গুড়িকা গুড়িল চালাক্ত্র প্রিপ্তান্ধ্যালী।
(গোধিকে গ্রাহ্মান্ত্রেক শুভাগেই বংশালোচনাম্।
বিশেষণ হি পিয়ালা অন্তর্জ পৈ বিশক্ত্রা॥)

ভালীৰপত্ৰ ১ ভোলা, মহিচ ২ ভোলা, শুঠিও ভোলা, পিপুল ৪ ভোলা, বংশলোচন ৫ তোলা, গুড়ুহক ॥০ তোলা, এলাইচ ॥০ তোলা, চিনি ৩২ ডোলা ; এব এ মর্দন করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় ব্যবহার করিবে। ইহার নাম তালীখান্য চুর্। এই চুর্ব সকল চিনির সহিত ঘথাবিশানে পাক করিয়া গুড়িকা করিলে, তাহা অগ্নিবোগ হেতু চূর্ণ অপেক্ষা লঘু হইয়া থাকে। এই ঔষধ সেবন করিলে কাস, শ্বাদ, অক্রচি, হাজোগ, পাণ্ড, গ্রহণী, প্রীহা, শোথ, জন, অভিনান, বমি ও শুল প্রভৃতি নানা বোগ নষ্ট হয়। ("পিপ্রলী ভভা" এই ত্তানে কেহ কেহ বলেন যে, প্রবল পৈতিক কাসে "শুভা" পদে বংশলোচন গ্রহণ করিবে, কি ও অন্তর উহা "পিগলী" এই পদের বিশেষণ স্বরূপ স্বীকার করিতে হইবে।)

অথ ধূমপানবিধিঃ।

মন:শিলালমপুক-মাংসীম্ভেপুলৈ: পিবেং।
ধুমং নোহঞ্চ ভক্তাত্ম সঞ্ডুঞ্চ পায়: পিবেং॥
এব কাসান্ পূথগ্ দক্ষ-সর্বদেরিসম্ভ্রবান্।
শঠিত্রপি প্রয়োগাণাং সাধ্যমেপ্রসাধিতান্।

মন,শিলা, হরিতাল, গষ্টিনধু, জটানাংগী, মৃতা ও ইঙ্গুদীকল এই সকল দ্রব্য ছাগমূত্র পেষ্ণ করিয়া সেই পেষ্টিত কল্প পানা একথানি বন্ধথণ্ড লিপ্ত করত রৌদ্রে শুক্ত করিয়া বর্ত্তি প্রস্তুত করিবে, তংপণে একথানি শরাতে কুল কাষ্টের অঙ্গানাট্ন রাখিয়া ভাষাতে ঐ বর্তি নিক্ষেপ করিবে এবং আর একথানি ছিদ-বিশিষ্ট শরা উহার উপর ঢাকা দিয়া শতার ছিদ্রে একটি নল প্রবেশিত করিয়া দিবে। যথন নল দিয়া ধূম নিৰ্গত ২ইবে, তথন সেই ধুম নাসিকা ছারা গ্রহণ করিবে এবং ধুন-পানানন্তর ওড়-মিশ্রিত হ্রন পান করিবে। তিন দিবস এইরপে ধুন পান করিলে পুথক দ্বন্ধ ও দৰ্মকোষ্টেৰ যে সকল কাস শত শত ঔষ্ণেও প্রাণামত না হয়, সে সম্পত ইহাতে নিবাণিত হট্যা পাকে।

মনঃ শিকালিগুদলং ব্যানাত্যনে বিত্য।

সকীরং ধ্যপান্ত স্ববকাসনিবহণ্য ।

মনঃশিকো চাাদে বদ্যাতপশোষিত, মতি বন্ধাঃ
মনঃশিকালিগুদলম্ আতপে শোষিত মিতি যোজনা।
বদ্যাগ্যপতি অসিছাবিধেরনিত্যাং স্কিঃ। চক গীকা।

মনছাল জলে ঘাষ্যা কতকগুলি কুলপত্রে মাথাইয়া রৌদ্রে শুক্ষ করিবে। সেই কুল-পত্রের ধূম গ্রহণ করিয়া গ্রহণান কবিলে সকল প্রকার কাস নিবারিত হয়।

অৰ্কছন্ত্ৰশিলে তুলো ততে।হদ্দেন কটুত্ৰিক্ষ।
চুৰ্নিতং বঞ্জিকিজতং পিনেদ্পুন্ত বোগনিৎ ॥
ভক্ষেদ্ধ তান্ত্ৰং পিনেদ্ ভ্ৰমণাধুনা।
কাসাঃ প্ৰবিধা যান্তি শাতিমাত ন সংশয়।

আকন্মমূলের ছাল ও মনঃশিলা প্রত্যেক সমভাগ, মিলিত ত্রিকটু উভয়ের অর্দ্নভাগ, ইহাদের চুর্ণ অগ্নিতে নিক্ষেপ করিয়া তাহার

ধূম পানানস্তব তাখূল ভক্ষণ এবং ছগ্ধ বা জ্বল পান করিলে পঞ্চবিধ কাদই আংগু প্রশমিত হুইয়া থাকে।

মরীচশিলার্ককীরের্বার্ত্তাকীং ছচমাপ্ত ভ!বিতাম্। শুক্কাং কুড়া বিধিলা বৃনং পিবতঃ কালাঃ শনং যান্তি।

মরিচ, মনঃশিলা ও আকন্দের আটা, ইহা-দের ঘারা বেগুনের ছাল ভাবিত ও আতপে শুক্ষ করিয়া যথাবিধি তাহার ধুম পান করিলে সর্বাপ্রকার কাবের শাস্তি হইয়া থাকে।

ৱসপ্রহাগঃ।

-:+:----

পঞ্চামৃত-রসঃ।

শুদ্ধত্ত ভাগৈকং ভাগো বৌ গন্ধকন্ত চ।
ভাগন্ধাং মৃতং তানং মরিচং দশভাগিকম্ ॥
মৃতাজ্ঞ চতুভাগং ভাগনেকং বিবং কিপেৎ।
অল্লেন মর্কারং সর্কং মাধ্যৈকং বাতকাসমূহ।
অন্তপানং লিংহং কৌট্রেনিভীতককলন্ধ্যম।

পরিদ ১ ভোলা, গন্ধক ২ ভোলা, তাম ২ তোলা, মরিচ ১০ ডোলা, অত্র ৪ ভোলা, বিষ ১ ভোলা, এই সম্প্র লেবুর র**সে মর্দ্রন** করিয়া মাযকলাই প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহার অনুগান বহুড়া ফলের ছাল চুর্ব ও মধু। ইহাতে বাত্রায় নাই হয়।

পুরন্দরবটী।

স্তকাদ্ভিগ্ৰণ গল্পমেকধা কজলীকুতন্।
ত্ৰিকটু ত্ৰিফলাচুৰ্ণ প্ৰত্যুক্ত স্তদ্য্মিতন্।
অলাক্ষীৰেণ সন্তাব্য বচিকাং কাৰতেন ,ভিষক্।
আন্তৰ্কতা বসৈঃ দেব্যা শাতং তোজং গিবেৰক্।
কাসখাসপ্ৰসানী বিশেষদিখিবল্পনী ॥
ইয়ং যদি সনা দেব্যা তথা ত্ৰাদ্যোগসাধনী।
বন্ধোহলি তক্ষণঃ শক্তঃ প্ৰীশতেয় বুষায়তে।

পারা ১ ভাগ এবং গন্ধক ২ ভাগ একত্র মর্দ্দন করিয়া কজ্জলী করিবে। পরে তাহাতে ভুঁঠ, পিপুল, মরিচ, হরীতকী, বহেড়া ও আম- লকী ইহাদের প্রত্যেকের চূর্ণ এক এক ভাগ মিশ্রিত করিরা ছাগীহুগ্ধে ৭ বার ভাবনা দিয়া (২ রতি প্রমাণ) বটিকা করিবে। আদার রসের সহিত দেবন করিবে। অনুপান—শীক্তল জল। ইহা ছারা কাস খাস নিবারিত, অন্নি প্রদীপ্ত এবং বরঃ স্থাপিত হব।

চক্রায়তা বটী।

(চক্রামৃতরদ:।)

রসগন্ধকলৌহানাং প্রত্যেকং কার্ষিকং ওভ্য। টকণক্ত পলং দত্তা মরিচক্ত পলার্দ্ধকম ॥ जिक्टे जिक्ला ह्याः श्रामीत्रकरेमस्यम्। প্রত্যেকং তোলকং গ্রাহ্ণং ছাগীকীরেণ গোলয়েৎ। নবগুঞ্জাপ্রমাণেন ২টিকাং কারয়েভিষ্ক। প্রাতঃকালে শুচিভূ থা চিন্তয়িতামূতেররীম্। একৈকাং বটিকাং থাদেজকোৎপলরসপ্ল তাম। নীলোৎপলরদেনাপি কুলখন্ত রদেন বা । ছাগীকীরেণ মুপ্তেন কেশরাজরদেন চ। * হৃতি পঞ্বিধং কাসং বাতপিত্তসমূভবম্। বা**ডরেন্মে**ন্ডিবং দোষং পিত্তশ্লেম্মেন্ডিবং তথা। বাতিকং পৈত্তিককৈব নানাদোৰসমূভবম্ ॥ व्यक्तिविवनकाणि कदः याममभिव उम्। फुकार माहर जगर हस्ति कर्रजाग्रिशमीयनी ॥ বলবর্ণকরী হোষা গ্রীহণ্ডল্মোল্রাপ্রা। আনাহক্রিমিহৎ পাভু-জীৰ্মরবিনাশিনী । ইয়ং চন্দ্ৰামৃতা নাম চন্দ্ৰনাথেন নিৰ্মিতা। বাসা গুড়ুচী ভাগী চ মুস্তকং কণ্টকারিকা। সেবনাম্বে প্রকর্ত্তবা। গুড়িকা বীর্বাণারিণী।

পারদ, গন্ধক, লোহ প্রত্যেক ২ তোলা, সোহাগার থৈ ৮ তোলা, মরিচ ৪ তোলা, ব্রিকটু, ব্রিফলা, চৈ, ধনে, জীরা, সৈন্ধবলবণ প্রত্যেক ১ তোলা, এই সমূদর ছাগছম্বে পেষণ করিয়া ৯ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। অমুপান—রক্তোংপল, নীলোংপল, কুলখ-কলায়, মৃণ্ডিরি ও কেশরাজ; ইহাদের কাহারও রদ অথবা ছাগীছম্ব। (কেহ কেহ পিপুল চুণ মধু অথবা আদার রদ ও মধু সহ সেবন করিতে বলেন)। ইহা সেবন করিলে নানাবিধ কাস, রক্তবমন, খাস, জর, দাহ, জম,
শুলা ও জীর্ণজ্ঞর প্রভৃতি নানা রোগ নষ্ট হর
এবং ইহা অগ্নিবর্দ্ধক, বলকারক ও বর্ণকারক।
এই ঔষধ সেবন করিয়া বাসক, শুলঞ্চ, বামূনহাটা, মূতা ও কণ্টকারী মিলিত ২ তোলা
/॥০ সের জলে সিদ্ধ করিয়া প ০ পোলা
পাকিতে নামাইয়া ছাকিয়া এই কাথ কিঞ্চিৎ
মধুসহ পান করিলে বিশেব উপকার হয়।

কাসান্তকো রসঃ।

স্তং গন্ধং বিবক্তৈৰ শালপণী চ ধাস্তক্ষ্। যাবন্ত্যেতানি চুৰ্গানি তাবন্দাত্ৰং মরীচক্ষ্॥ গুল্লাচস্টুরং থাদেন্মধুনা কাসশাস্তমে ॥

পারদ, গন্ধক, বিষ, শালপাণি ও ধনে প্রত্যেকের চূর্ণ সমভাগ, সর্ব্বচূর্ণ সম মরিচচূর্ণ; একতা মাড়িয়া ৪ রতি পরিমিত বটা প্রস্তুত্ত করিয়া মধুর সহিত দেবন করিলে কাস নষ্ট হয়।

কাসকুঠারঃ।

হিলুলং মরিচং গন্ধং সব্যোবং টক্সণং তথা। বিশুপ্তমার্কিকটাবৈঃ সন্নিপাতং ফুদারুণমূ॥ কাসং নানাবিধং হস্তি শিরোরোগং বিনাশ্যেৎ॥

হিন্দুল, মরিচ, গন্ধক, ত্রিকটু ও সোহাগা এই সকল একত্র করিয়া ২ কুঁচ পরিমিত বটী আদার রসের সহিত সেবন করিবে। ইহাতে সর্ব্ধপ্রকার কাস ও শিরোরোগ উপশ্মিত হয়।

কাসসংহারভৈরবো রসঃ।

রসগন্ধক তান্তাত্ত-শশ্বটিকণলোহক মৃ।
মরিচং কুঠতালীশ-জাতীকললবক কমৃ॥
কাবিকং চুৰ্পমাদার দণ্ডেনামর্দ্ধ্য ভাবরেং।
ভেকপর্ণীকেশরাজ-নিত্ত তাকাকমাচিকা॥
কোবপুশী শালপণী ত্রীমন্থন্দরমেব চ।
ভাগী হরীতকী বাসা কাবিকৈ: পত্রলৈ রসৈ:॥
বটিকাং কাররেদ্ বৈদ্যাং পঞ্জঞ্জাত্রমাণত:।
বাক্তমং পিজ্জাং কাসং হৈছিকং চিরকালক মৃ॥

পাল্লা মধুনা বাপি শূক্ষবেররদেন বাঃ ইভি
 পাল্লাছিমিদং দৃশুতে কচিং।

নিহাতি নাত্র সন্দেহো ভাসরন্তিমিরং যথা।
জ্বীমদগহননাথেন কাসসংহারভৈরবঃ।
রসোহয়ং নির্মিতো যত্নালোকরক্পহেতবে।
বাসা শুঠীকউকারী-কাপেন শারয়েদ্ বুধঃ॥
কাসং নানাবিধং হস্তি খাসমুগ্রমরোচকম্।
বলবর্ণকরঃ জ্বীদঃ পৃষ্টিদো বহিদীপনঃ॥

পারদ, গন্ধক, তাত্র, অত্র, শন্ত্রস্থা, দোহাগার থৈ, লোহ, মরিচ, কুড়, তালীশপত্র, জায়ফল ও লবক প্রত্যেকের চুর্ণ ২ তোলা পরিমাণে একত্র করিয়া থুল্কুড়ি, কেশুরিয়া, নিদিন্দা, কাকমাতী, ঘলঘদিয়া, শালপাণি, গিমা, বামূনহাটী, হরীতকী ও বাদক ইহানের প্রত্যেকের পত্রের ২ তোলা পরিমিত ক্ষে ভাবনা দিয়া ৫ রতি প্রমাণ বাটকা করিবে। অত্যান—বাদক, শুঠ ও কণ্টকারী ইহাদের কাথ। ইহাতে সকল প্রকার কাদ ও উগ্রহ্মান নাই হয়। ইহা বল, বর্ণ, সৌন্দর্য্য, গুই ও অ্রিকারক।

পিত্রকাসান্তকো রস:।

ভশ্ম ভাষা একান্তানাং কাসমৰ্দ্দিইটো রসৈং। ম এটাক্রি সাইমুক্ত দিনং মন্দ্রীং স্থাপিন্তিতম্ ॥ নিকান্ধ্যং পিত্তকাসাজী ভক্ষম্প্রেচ দিনত্ত্রম্। কাসধাসাধিমান্দ্যক ক্ষমকাপি নিহস্তানম্॥

তাম, অল্ ও কান্তলোহ ভন্ম, কালকাসি-লার ছালের রসে, বকপুপা ও অমবেতসের রসে : দিন মন্দন করিয়া সিকিতোলা পরি-মাণে (ব্যবহার এক আনা) তিন দিন সেবন করিলে পিত্তকাস, খাস, অগ্নিমাল্য ও ক্ষয় বিনষ্ট হয়।

অমৃতার্ণবরসঃ।

পারদং গন্ধকং শুদ্ধং মৃতলৌহক উল্পণ্।
রামাবিড়ঙ্গত্রিকলা-দেবদার চ চিত্রকন্ * ।
অনুতা পদাকং কৌজং বিদ্ধাপি বিচূর্ণরেৎ।
বিভূপং বাতকাসার্ত্তঃ সেবয়েদমূতার্ণবন্।

🛊 কটুত্রিকমিতি বা পাঠঃ।

পারদ, গন্ধক, লোহ, সোহাগা, রান্ধা, বিড়ক, ত্রিফলা, দেবদাক, চিতামূল (পাঠা-স্তবে ত্রিকটু), গুলঞ্চ, পল্লকার্চ, মধু ও বিষ এই সকল ত্রব্য সমান ভাগে লইরা জলে মর্দ্দন করত ২ রতি প্রমাণ বটা করিবে। অমুপান—মধু। বাতকাসে প্রবোজ্য।

মহাকালেখরো রস:।

মৃতং লৌহং মৃতং বৃদ্ধং মৃতার্কং মৃতঃ জকম।
তবং প্তক গৰাক মান্দিকং হিলুকং বিবম্।
জাতীকলং লবকক তগেলা নাগকেশরম।
উন্নতন্ত চ বীজানি লয়পালক শোধিতম্।
এতানি সমন্তাগানি মরিচং হরনেত্রকম।
সর্বন্ধবাং কিপেং পরে লৌহদণ্ডেন মর্দিরেং।
শক্রানালক স্বর্গসভাবরেদেক্বিংশতিম।
গুলামালা প্রদাতব্যা আর্ক্রম্য রুসের্গতা।
তদর্কং বালবুক্তের্ পথাং দেয়ং যথোচিতম্।
পক কাসান্ ক্রমং খাসং রাজ্যক্রাণমের চ।
সরিপাতং কঠরোগম্ভিক্তাসমচ্ভনম্।
মহাকালেবরো হন্তি কালনাবেন ভাবিতঃ।

লোহ, বঙ্গ, তাত্র, অত্র, পারন, গন্ধক,
শ্বর্ণমান্ধিক, হিন্দুল, বিষ, স্বায়ফল, লবঙ্গ, গুড়ত্বক্, এলাইচ, নাগেশ্বর, ধুত্তাবীজ ও
শোধিত জয়পালবীজ প্রত্যেক ১ তোলা;
মরিচ ৩ তোলা, দিল্লিপত্র-রসে (অভাবে
দিল্লি-ভিজা জলে) ২১ বার ভাবনা দিয়া
১ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। বাল্য ও বুদ্ধ
অবস্থায় অর্দ্ধ রতি পরিমাণে প্রযোজ্য। যথাযোগ্য পথ্য ব্যবস্থা করিবে। অন্থপান—
আদার রস। ইহাত্তে কাস, শ্বাস, যন্দ্রা ও
কর্পনোগ প্রভৃতি পীড়ার শাস্তি হয়।

জয়াগুড়িকা।

প্তকং গন্ধকং নৌহং বিবং বৎসক্ষেব চ।
বিভূসং কেশরং মৃত্তমেলাঅখিকরেগুক্ম ॥
ক্রিকটু ক্রিকলা চিত্রং গুদ্ধং ক্রৈপালবীঙ্গক্ম।
ক্রভানি সমভাগানি বিশুণো গুড় উচ্যতে ।
ভিত্তিভূমিনীক্রমানেন প্রাত্তকালে চ ভক্ষরেৎ।
কাসং খাসং ক্ষয়ং গুদ্ধং প্রমেহং বিব্যুব্ধরম্ম।

অজীর্ণ গ্রহণীরোগং শূলং পাঙ্বাদয়ং তথা।
অপানে হৃদয়ে শূলে বাতরোগে গলগ্রহে।
অক্ষাবতিসারে চ স্তিকাতকণীড়িতে।
জয়াগ্যা নির্মিতা হেয়া ভক্ষণীয়া স্টরেরপি॥

পারদ, গন্ধক, লোহ, বিষ, কুড্ চি, বিড়ঙ্গ,
নাগেশ্বর, মুতা, এলাইচ, পিপুল্যুল, রেণুক,
ত্রিকটু, ত্রিফলা, চিতা ও শোণিত জয়পালবীজ এই সকল দ্ব্য সমভাগ, গুড় বিগুণ।
একত্র মিশ্রিত করিয়া তেঁতুলবীজ্ঞ পরিমাণে
প্রাতঃকালে ভক্ষণ করিবে। এই ঔষধ সেবনে
কাদ, শ্বাদ, ক্ষয়, গুলা, প্রমেহ, বিষমজ্ঞর,
অজীণ, গ্রহণী, শূল, পাড়, স্থতিকারোগ ও
বাতরোগ প্রভৃতি নষ্ট হয়।

রুহ**দ্রসেন্ত**গুড়িকা।

কর্ম শুদ্ধর সেক্রসা গদ্ধকস্যাত্রকস্য চ।
লৌক্চ্পিয় তাত্রস্য তালকস্য বিষদ্য চ।
মনঃশিলায়াঃ ক্ষারাণাং বাজং ধুন্তু রক্ষ্য ।
মরিচ্যাপি সর্বের্বাং সমং চূর্ণং প্রকল্পের ।
জয়ন্তা চিত্রকং মাণং ঘণ্টাকর্পোইশ্ব মঞুকী।
শক্রাক্স্য চ রসৈঃ:কর্মনাক্রেবিভাবয়েং।
কলায়পরিমাণাক্ত গুড়িকাং কারয়েদ্ ভিষক।
ইন্তি পঞ্চবিধং কাসং বাসকৈব ফ্লারুপম্।
কক্রাতাময়ান্ত্রানানাহং বিড় বিবদ্ধতাম্।
অগ্রিমান্যাক্রিচি শোপমূদ্রং পাঞ্কামলাম।
রসারনী চ ব্যা চ বলবর্পপ্রমাপনী।
মর্রং বৃংহণং বৃধ্যং মৎস্যং মাংসঞ্চ প্রাক্রন্ম।
ঘুতপ্রং সদা ভক্ষাং ক্ষ্মং তীক্ষং বিবর্জয়েং।
(আ্রিকর্সেন্ন ভক্ষণম্)।

পারদ, গল্পক, অন্ন, লৌহ, তাম, হরিতাল, বিষ, মনছাল, যবক্ষার, সাচিক্ষার,
সোহাগা, পুতৃনাবীজ ও মরিচ, এই সমুদার
প্রত্যেক ২ তোলা পরিমাণে লইয়া জন্মন্তী,
চিত্রা, মাণ, ঘেঁটুকোল, গুল্কুড়ি, সিদ্ধিপত্তী,
কেশুরিয়া, ভৃঙ্গরাজ, আদা ও নিদিন্দা
ইহাদের প্রত্যেকের ২ তোলা পরিমিত
রসে পৃথক্ পৃথক্ ভাবনা দিয়া মটর প্রমাণ
বাটকা করিবে। (অমুপান—আদার রস)।
ইহা দেবন করিলে পঞ্চিণ কাদ, খাদ,

অগ্নিমান্দ্য, পাণ্ড, কামলা ও শোথ প্রভৃতি নানা রোগ নষ্ট হয়। পথ্য—ত্মতপক ব্যঞ্জন, জাঙ্গল মাংস ও অন্তান্ত বলকর দ্রব্য। রক্ষ ও তীক্ষদ্রব্য বর্জনীয়।

ভাগোত্তরগুড়িক।।

রসভাগো ভনেদেকো গন্ধকো দ্বিগুণো ভবেৎ।
বিভাগা পিপ্পলী পণ্যা চতুর্ভাগা বিভীতকঃ ॥
পঞ্চাগন্তথা বাসা ষড়গুণা সপ্তভাগিকা।
ভাগী সর্কামিদং চূর্বং ভাবাং বকোলকৈর্ক্রবৈঃ।
একবিংশতিবারাংস্ক মধুনা গুড়িকাঃ কৃতাঃ।
বিভীতকপ্রমাণেন প্রাত্রেকান্ত ভক্ষেং।
কাসং খাসং হরেৎ কুন্তা-কাথং তদকু কুষ্যা।

পারদ ১ তোলা, গন্ধক ২ তোলা, পিপুল ৩ তোলা, হরীতকী ৪ তোলা, বহেড়া ৫ তোলা, বাসক ৬ তোলা, বাস্নহাটা ৭ তোলা, এই সম্দায় চূর্ণ ২১ বার বাব্লার আঠায় ভাবনা দিয়া মধু-সংবৃত্ত করিয়া বহেড়াফলের ভাষ গুড়িকা প্রস্তুত করিবে। প্রত্যুহ প্রাত্তে এক প্রড়কা ভক্ষণীয়। অনুপান—পিপুলচ্ণ ও কণ্টকারীর কাথ। ইহা সেবন করিলে কাম ও খাম রোগ নই হয়।

শৃঙ্গারাভ্রম।

শুদ্ধং কৃষ্ণাত্রচূর্ণং বিপলপরিমিতং শাণমানং যদশ্যৎ
কপুরং জাতিকোষং সজলমিভকণা তেজপজং লবক্ষ্।
নাংসী তালীশচোচে গজকুহুমগদং ধাতকী চেতি তুলাং
পথ্য ধাত্রী বিভাতং ত্রিকটুরপ পৃথক্ গুর্জণাণং বিশাণম্॥
এলাজাতীফলাখ্যং ক্ষিতিতলবিধিনা শুদ্ধগন্ধগ্রেকোলং
কোলার্বং পারদ্যা প্রতিপদবিহিতং পিষ্টমেকত্র মিশ্রম্।
পানীয়েনৈব কান্যাঃ পরিণতচণক্ষিত্রতুল্যান্ত বঁটাঃ
প্রাতঃ খাজান্তত্রশক্ষদ্ধ চ হি কিয়চছুক্সবেরং সপর্বম্ ॥
পানীয়ং পীতম্ভে জনমপহর্তি ক্ষিপ্রমেতান্ বিকারান্
কোঠে ছুষ্টাগ্রিজাতান্ ব্রম্পরস্কলো রাজ্যক্ষমঞ্ছ।
কাসং খাসং সশোধং নম্নপরিভবং মেহমেদোবিকারান্
ছন্দিং শ্লান্নপিত্রং ত্রম্পি মহতীং শুশ্বজালং বিশালম্ ।
শানুষ্বং রক্তপিত্রং গ্রগরলগদান্ পীন্সান্ শ্লীহরোগান্
হস্তাদামাশ্রোখান্ ক্ষপ্রনকুতান্ পিন্তরোগানশেষান্।

বল্যো ব্যাশ্চ যোগাগুরুণতরকরঃ সর্বারোগে প্রশন্তঃ পথাং মাংদৈশ্চ দূমেল্ব তপরিন্সুলিতৈর্গবাতুইশ্বশ্চ ভূয়ঃ॥ ভোজাং যোজাং যথেষ্ঠ: ললিভললারা। দীয়মানং মুদা বৎ শূকারাত্রেণ কামী।ফ্বভিজনশতাভোগযোগাদভূষ্টঃ।

> বৰ্জ্যং শাকাস্ক্রমাদে) দিনকতিপয়চিৎ বেচ্ছুমা ভোজামস্তং। দার্থায়ঃ কামমূত্রিস্তিগলিপলিতে। মানলোহস্ত প্রসাদাং॥

ক্ষাল ১৬ তোলা, কপুর, জৈনা, বালা, গজপিপ্ললী, তেজপত্র, াব্স, জটামাংসা. তালীশপতে, দাকুচিনি, নাগেশ্বর, কুড়, ধাইফুল প্রত্যেক ॥০ তোলা, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া. ত্রিক ট প্রত্যক এলাইচ, জায়ফল প্রত্যেক ১ (3)01 গদ্ধক ১ ভোলা, পারদ ॥০ ভোল'। এই সমুদার ক্রব্য জলে পেনণ করিয়। সিদ্ধ-চপক-প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। কিঞ্চিং আদা ও পানের সহিত সেবনীয়। শুঔষণ **ट**मक्नारस किक्षिट जल भान करा कर्खरा। ইহা সেবন করিলে কাসাদি বিবিশ রোগের শান্তি ও বলবীর্যাদির বৃদ্ধি হয়।

সার্কভৌমরসঃ।

জীৰ্ণ হ্বৰ্ণ লৌহং বা যজাত্ৰৈৰ প্ৰদায়তে। তথায়ং সৰ্ব্যোগাণাং সংক্ষণ্ডোনো ন সংশয় ॥ শৃঙ্গারাজে স্বৰ্ণ বা লৌহ ২ মাধা মিঞ্ছিত ক্ষিলে সাৰ্ব্যভৌম রস হয়।

রুহচ্ছ ঙ্গারাভ্রম।

পারদং গদ্ধককৈ উন্ধাং নাগকেশরম্।
কপুরিং জাতীকোষক লবকং তেজপাত্রকম্।
ফবর্গকালি প্রত্যেকং ক্রমান্তং প্রকল্পনে
ডদ্ধকুক্ষালচ্প্ত চতুনকং প্রয়োজ্যে
আলীলং আক্টক মাংসী হুগ্যাতীপুশ্বিকা।
এলাবীজং ত্রিক্টকং নিফলা করিপিপ্লনী ।
কর্বন্ধমেতেষাক পিপ্ললীকাপমান্তিম্।
অনুপানং প্রয়োক্তবাং চোচং ক্রোক্রমমাযুত্রম্।
অনুপানং প্রয়োক্তবাং চোচং ক্রোক্রমমাযুত্রম্।
অধ্নান্দ্যাদিকান্ রোগানক্রচিং পাঞ্জমলাম্।
উদরালি তথা শোধমানাহং অরমেব চ।
এইনীং খাসকাসক হস্তাদ্ বক্ষাণ্যেব চ।
নানারোগপ্রশমনং বলবর্ণাগ্রিকারকম্॥

বৃহচ্ছু সারাজনাম বিষ্ণুনা পরিকান্তি চন্। এতস্থাভ্যাদমাত্রেণ নির্ম্ব্যাধির্জায়তে নরঃ॥

পারদ, গদ্ধক, সোহাগা, নাগেখা, কর্পুব, জৈজী, লবঙ্গ, তেজপত্র, খুডুরাবীজ (কেছ কেহ বলেন স্থবণি), প্রত্যেক হ তোলা পরিন্দিত। শোনিত ক্ষাল্রচুণ ৮ তোলা, তালীশাপত্র, মুতা, কুড়, জটামাংসী, গুড় ফক্, বাইকলা, এবাইচ, তিফলা, তিকটু ও গজাপপ্রলী, ইহাদের প্রত্যেকের ৪ চারি লোলা, একজ্ঞ করিয়া পিপুলের কাথে মদ্দন করিবে। ইহাদার্শ্বচিনি ও মনুব দহিত সেবন করিলে আমিনান্দ্য, অক্লচি, পাড়, কামলা, উন্নর, শোথ, আনাহ, জা, গ্রহণা, খাদ, কাদ ও যক্ষাপ্রভৃতি নানারোগ নিবারিত হয় এবং বল, বর্ণ ও অগ্নি রন্ধি পার। ইহা নিম্মতি ব্যবহার করিলে লোক নিক্ষাবি হয়।

শ্রীভাষরানন্দাভ্রম্।

অসদ্যান্ত্ৰমারি ৩ ত তু পলং কুপ্রটিক্যন্ত্রির।
বিপ্রজ্ঞোনকপাটলা-কল্যনিকাঃ সপ্রক্ষাইয়াক্রকাঃ।
চিত্রগ্রন্থি কগোকুরং সচ্বিকং মার্গায়গুপ্তপি তম্
অইহন ক্রিত্রেকশক পলিকৈন্দ্রপ্রাক্ষকে ভক্ষিত্র॥
কাসং পঞ্চবিধং স্বরাময়নুরোধাতঞ্চ হিকাং জ্বরং :
আসং পীনস্মেইগুল্মার্কিছে ব্যক্তান্ত্রপতিং জ্বরং ।
লাতং নোহনশেষদেশিজনিতং খুলং বলাসং ক্রিমিং
ছন্দ্রং পাঞ্ছলীনকং গলগদং বিস্ফোটকং কামলাম্॥
মন্দায়িং গ্রহণিং ক্রয়ক বস্তুতং প্রীহানম্পাংসি বড়
হুজানাককোন্ত্রপান্ত্রপতান্ প্রভানবানন্দকম্।
বল্যং ব্যাস্পেব্রেদাহরবং ধাতুপ্রদং কাসিনাং
মেশ্যং ক্রপ্রবায়নং হরমুধাজ্ঞান্য মরা ভাষিত্র।।

(আনলকী রসে জারিত) অল ১ প্রস,
কণ্টকারী, বাসকমূল, শালপাণি, বিব্যুল,
শোনামূল, পাকলমূল, চাকুলে, বামুনহাটী,
আদা, চিতামূল, পিপুলমূল, গোকুর, চে,
আপাক ও আলকুণী ইহাদেব প্রত্যেকের এক
এক পল রসে ম্থাক্রমে মর্দ্দন করিয়া লইবে।
ইহার মাত্রা—অদ্ধ রতি। এই অল্ল কাস,
শ্বাস, হিক্কা, স্বরভঙ্গ ও ফ্লা প্রভৃতি নানা
রোগ নষ্ট করে।

বিজয়ভৈরবরসঃ।

শুতকং গছকং লোহং বিষমজ্ঞকতালকম।
বিদ্যুদ্ধং মুন্তমেলাগ্রন্থিককেশ্রম্ ।
ক্রিকটু ক্রিফলা চিত্রং শুদ্ধং জৈপালবীজকম্।
ক্রতানি সমজাগালি গুড়ো বিশুণ উচ্যতে ।
তিন্তিড়ীবীজমাত্রেশ প্রাত্যকালে তু জকরেং।
কাসং খাসং করং শুন্মং প্রমেহং বিষমজ্ঞরম্ ॥
জ্ঞানিং গ্রহনীদোবং হন্তি পাঙ্গাময়ং তথা।
জ্ঞানে হৃদয়ে শূলং বাতরোগং গলগ্রহম্ ॥
ব্রহ্মণা নির্মিতো ক্রেব রুসো বিজয়কৈরই।
(বিজয়কৈরবরসে জ্ঞাকতালকমিত্যক্র "বংসকমেব
চ" ইতি পাঠহক্ত জরা শুড়িকা ইতি সংজ্ঞা স্যাং।)

পারদ, গন্ধক, লৌহ, বিষ, অল্র, হরিতাল, বিড়ল, রেণুক, মুতা, এলাইচ, পিপুলমূল, নাগেশ্বর, ত্রিকটু, ত্রিফলা, চিতামূল, শোধিত জয়পালবীজ, ইহাদের প্রত্যেকের এক এক ভাগ, গুড় দিগুল; এই সমুনয় ত্রব্য একত্র মর্দন করিয়া লইবে। মাজ্রা—তেঁতুল বীজের ত্যায়। এই ঔষধ সেবন করিলে কাস, খাদ, অজীর্ণ ও অভ্যাভ্য রোগ উপশমিত হয়। (এই ঔষধে অল্র ও ছিরিতালের পরিবর্ত্তে কুড়্চি দিলে ইহার জয়া গুড়িকা সংজ্ঞা হয়।)

काननकौदिनामः।

শুদ্ধতং সভালক তালার্দ্ধং রস্থপ্রম। বলং তাত্রং খনং কাস্তং কাংসাং গদং পলং পল্য। কেশরাজ্রসেনাপি ভাবনা দিবসত্রয়। কুলখন্য রসেনাথ ভাবয়েচ্চ পুন:পুন: 🛭 এলা জাতীফলাখ্যক তেজপত্ৰলবক্ষম্। यमानी स्नीत्रकरेन्टर जिक्ह जिक्ला मगम ॥ নতং ভক্ষং বংশগর্ভং কর্মাত্রঞ্গ কারয়েং। ভাবয়েচ্চ রদেনাথ গোলয়েৎ সর্কমৌবধন। তৎপশ্চাদ বটিকা কাৰ্য্যা চণকপ্ৰমিতা তথা। শীতামুনা পিনেদ্ধীমানপ্রকাসনিযুক্তয়ে ॥ मरमार मारमर उदा की तर भगार मार विकास काम। কতকাসং তথা খাসং জন্নং হস্তি ন সংশয়: 🗈 হলীমকং পাঞ্রোগং শোধং শূলং প্রমেহকম্। অর্শোনাশং করোভােব বলবৃদ্ধিক কারয়েৎ ॥ कामामवमभः वर्गः ज्ञाद्याहकनाननम्। বৰ্জ্যং শাকামমাদৌ চ ভৃষ্টদ্ৰব্যং হতাশনৰ। রসো লক্ষীবিদাসোহয়ং মহাদেবেন ভাবিতঃ ॥

বঙ্গ, তাম, অভ্ৰ, লৌহ, কাঁসা, গন্ধক ও হরিতাল প্রত্যেক > পল, এর্পর ৪ তোলা, একতা করিয়া কেণ্ডরিয়ার রসে ও কুলখকলাইয়ের কাথে ৩ দিন করিয়া ভাবনা দিবে। পরে উহার সহিত এলাইচ, জায়কল, তেজপত্র, লবঙ্গ, যমানী, জীরা, **ত্রিফলা, তগরপাত্নকা, গুড়ত্বক ও বংশলোচন** প্রত্যেক ২ তোলা পরিমাণে মিশ্রিত করিয়া পুনর্কার কেণ্ডরিয়ার রসে ও কুল্থকলায়ের কাথে মাড়িয়া চণক-প্রমাণ বটিকা করিবে। অমুপান—শীতল জল। ইহা সেবন করিলে রক্তকাস, যক্ষা, খাস, জ্বর, হলীমক, শোপ, শুল, অর্শঃ ও প্রমেহ প্রভৃতি রোগ বিনষ্ট হয়। ইহা বলকারক ও অগ্নিবর্দ্ধক। এই ঔষধ সেবন কালে মংশ্র, মাংস, ছগ্ধ ও মিগ্ধকর দ্রবা স্থপথা। শাক ও অয় প্রাভৃতি এবং ভাঙ্গা দ্রবা ও অগ্নিতাপ বর্জনীয়।

মহোদধিঃ।

ক্তকং গন্ধকং লৌহং বিদ্যাপি নবাপকন।
তান্তকং বক্সভামাপি ব্যোদক্ষ সমাংশক্ষ্॥
ভদ্ৰমুন্তং ত্ৰিকট্কং বিদ্যাং নাগকেশরম্।
বেণুকামলকদ্বৈ পিয়লীমূলমেব চ ॥
এবাক বিশুণান্দ্রী মন্দ্রিয়া প্রবন্ধতঃ।
ভাবনা তত্ৰ দাত্রা গন্ধপিঞ্জলিক; মৃভিঃ ৪
মারো চণকত্ল্যা তু বটিকেয়ং প্রকীপ্তিতা।
হল্তি কাসং তথা স্বাসমর্শাংসি চ ভগলরম্॥
হচ্ছেন্লং পাখশূলক কর্ণবোগং কপালিকাম্।
হবেৎ সংগ্রহ্ণীরোগানস্তৌ চ জঠরাণি চ॥
প্রমহান্ বিংশতিকৈবাপাশ্রীক চতুর্বিধাম্॥

ন চান্নপানে পরিহার্থামন্তি ন চাতপে চাধ্বনি মৈথুনে চ। যথেষ্টচেষ্টাভিন্নতঃ প্রয়োগে নরো ভবেৎ কাঞ্চনরাশিগৌরঃ ।

পারদ, গন্ধক, লৌহ, বিষ, গুড়স্বক্, তাএ, বঙ্গ ও অল, ইহাদের প্রত্যেকের ১ তোলা, ভদ্রমূতা, ত্রিকটু, বিড়ঙ্গ, নাগেশ্বর, রেণুক, আমলকী ও পিপুলমূল, ইহাদের প্রত্যেকের ২ তোলা, সম্বায় একতা মৰ্দন করিয়া গন্ধপিপ্পলীর কাথে ভাবনা দিয়া চণক-প্রমাণ
বাটকা প্রস্তুত করিবে। ইহাতে কাস, খাস,
অর্শঃ, গ্রহণী, ভগন্দর, কপালিকা ও প্রমেহ
প্রভৃতি নানারোগ নষ্ট হইয়া থাকে। এই
ওবধ সেবন করিলে ইচ্ছামত আহারাদি করা
বাইতে পারে।

সমশর্করলোহম্।

লবকং কট্ফলং কুঠং যমানী জ্যায়ণ :তথা।
চিত্ৰকং পিপ্লীমূলং বাসকং কটকারিকা॥
চবাং ককটশুকী চ চাতুজ্ঞাতং হরীতকী।
শটা কৰোলকং মুখ্য লোহমন্ত্রং ববাতাগ্রন্॥
সর্ব্বানকাকৃতং চূর্বং তাবচ্ছকর্মান্তিম।
মর্ব্বানকাকৃতং চূর্বং বাবাজ্ঞান্ত্রন্॥
রক্তপিত্রং ক্ষা কাসং বাতলেশ্বাম্ত্রন্॥
রক্তপিত্রং ক্ষা কাসং বাসমাশু বিনাশ্রেং।
ক্ষাণ্ড পুষ্টিজননং বলবর্ণাগ্রিক্রন্ম্॥

লবন্ধ, কট্দল, কুড়, যমানী, ত্রিকটু, চিতামূল, পিপুলমূল, ধানক মূলের ছাল, কণ্টকারী,
টে, কাক্ডাশূদা, গুড় হক্, তেজপত্র, এলাইচ,
নাগেধর, হনাতকী, শটা, কাক্লা, মূতা,
লোহ, অল ও যবক্ষার ইহাদের প্রত্যেকর
এক এক ভাগ চুর্গ, সর্ক্রমান্তির সমান চিনি;
সমুধ্য একএ মদন করিয়া স্বতভাতে রাখিবে।
ইহা সেবন কবিলে সর্ক্র প্রকার কাস, রক্তপিত্ত, ক্ষয়কাস ও শাস্বোগ নই এবং বল, বর্ণ
ও অগ্রি বর্দ্ধিত হয়। (মাত্রা—৩ মাধা।)

বসন্তভিলকরসঃ।

হেন্নো ভন্মকভোলকং পন্যুগং লৌহাৎ তারঃ পারদাচভাবো নিয়তান্ত বঙ্গগুলকৈকীকৃতং মর্দ্ধরেং।
মৃক্যাবিজ্ঞময়ো রদেন সমতা গোক্ষরবাদেকুণা
সর্ববং বালুক্যন্ত্রগং পরিপচেদ্ যামং দৃচ্য সপ্তক্ষ।
কন্ত্রগুলিসারম্ভিত্রসং পশ্চাৎ স্থাসিধা ভবেৎ
কাসখাসসপিভবাতককজিৎ পাভুক্ষাদীন্ হরেৎ।
(শুলাদিগ্রহ্লীং বিবাদিহরণো মেহাখারীবিংশতিং)
হন্দোগাপহরো অরাদিশমনো যুব্যো বরোবর্জনঃ
(শিয়তো গজকঃ, বনসারং কপুরম্।)

স্বর্ণ এক জোলা, অত্র ২ ভোলা, লৌহ ৩ ভোলা, পারদ ৪ ভোলা, গন্ধক ৪ ভোলা, বন্ধ ২ ভোলা, মুলা ২ ভোলা ও প্রবাল ২ ভোলা; এই সমুদ্র দ্রব্য গোকুর, বাদক ও ইকুর রসে মর্দন করিয়া বালুকাষন্ত্রে সাত প্রহর পাক করিয়া বালুকামত্রে সাত প্রহর গাক করিয়া ভাবি। পরে ঔষধ উদ্ধৃত করিয়া ভাবা মৃগনাভি (৪ ভোলা) ও কর্পুর (৪ ভোলা) দ্বারা ভাবিত করিয়া মাড়িয়া লইবে। ইংা কাদ ও ক্ষমাদিরোগের মহৌষধ। মাত্রা—২ রতি।

কণ্টকারীঘৃতম্।

ছতং দ্বাহাবলাবোৰ-খনং ইবিৰপাচিত্য।
কণ্টকারীরসে সণিঃ পঞ্চকাসনিস্থানম্॥
কণ্টকারীরস ইতি কণ্টকারীস্বরসন্চতুগুল ইতি শিবদাসঃ।
ঘুত /৪ সের। কণ্টকারীর রস অভাবে
কণ্টকারীর কাথ ১৬ সের। কল্মব্য যথা—
রাহ্মা, বেড়েলা, ত্রিকটু ও গোকুর মিলিত
/১ সের। এই ঘুত পান করিলে পঞ্চবিধ
কাস নই হয়।

রুহৎ কণ্টকারীঘৃত্যু।

সমূলপত্রশাপায়াঃ কন্টকাগ্যা রসাচকে।

হাতপ্রস্থং বলান্যোয-বিড্সশাসিচিত্রকৈঃ ॥
সৌনর্চত্রপবাক্ষার-বিজ্ঞানলিড্নিজিভিঃ ॥

হাজাপুনর্বাচন্য-ধ্বমাসায়বেতসৈঃ।

নুজা ভামলকীভাগী-রাস্নাগোক্ষরকৈঃ পচেৎ ॥
কব্দেন্ত সর্ব্বনাস্ব হিকাখাসে চ শক্ততে।

কন্টকারীয়তং সিদ্ধং কক্ষ্যাধিবিনাশনম্ ॥

মূল পত্র ও শাখার সহিত কণ্টকারীর স্বরস
(বা কাথ) ১৬ সের, ত্বত /৪ সের। কল্পেরা
যথা—বেড়েলা, ত্রিকটু (মরিচ, পিপুল ও উঠ),
বিড়ক, শটা, চিতা, সচল লবণ, যবক্ষার,
বেলমূল, আমলকী, পুকর (অভাবে কুড়),
খেত পুন্নবা, বৃহতী, হরীতকী, যমানী,
দাড়িম, ঋদ্ধি, দ্রাক্ষা, রক্তপুন্নবা, চৈ,
ত্রালভা, অমবেতস, কাঁক্ড়াশুলী, ভূইআমলা, বামুনহাটী, রালা ও গোকুর; এই

সকল দ্রব্য /১ সের পরিমাণে লইরা উত্তম-রূপে কুটিত করত ছতে প্রদান করিবে। এই ছত সেবনে সর্বপ্রকার কাস, কফরোগ, ছিকা ও খাস রোগ বিনষ্ট হয়।

দশমূলগ্ৰত্য ।

प्रणम्लोकसाराम छात्रीकसः भरतम् युटन्। प्रकृतिक्षितिनगुरस् । एकामछूर् ॥

মৃত /৪ দের, দশমুলের কাথ /৮ দের, এবং কুকুট ও ভিত্তিরি পক্ষার মাংদের মিলিত কাথ /৮ দের। করাথ—পেষিত বামুনহাটা /১ দের। মথানিয়নে ঘত পাক করিশা দেবন করিলে বাতকাদ প্রশানিত হয়।

দশমূলাদ্যং যুত্য।

দ গমুলাচ়কে প্রস্থং সৃত্তাগদসনৈঃ পচেং। পুদ্ধরাহ্বশটীবিশ্ব-স্থ্যসব্যোবহিঙ্গুভিঃ ॥ পোরামুপানং তৎ পেরং কাদে বাতকফাধিকে। শ্বাসরোগেরু সবেবরু কফবাতাগ্রকেরু চ॥

মত /৪ সের। দশমূশ /৮ সের, জল ৬৪ দের, শেষ ১৬ দের। কলার্থ—কুড়, শটা, বিলমূল, তুলদী, ভাঁঠ, পিপুল, মরিচ ও হিং প্রত্যেক ২ তোলা। বথারীতি মৃত পাক করিয়া দেবন করিলে বাতশ্রেম্মেল কাদ ও সর্বপ্রকার শ্বাস নিবারিত হয়। য়ত-পানাত্তে পেয়া পান কর্ত্তর।

मम्बन्धित्रनकः व्रक्षा

দশমূলীচতুঃপ্রস্থে রমে প্রস্থোত্মি গং হবি: । সকারৈ পঞ্চকালৈস্ত কব্দিতং সাধু সাধিতম্ ॥ কাসস্ৎপার্শসূলম্বং হিকাখাসনিবারণম্ ॥ কব্দং ষটপলমেবাত গ্রাহয়স্তি ভিষণ্যবরা: ॥

স্থাত /৪ সের, দশমুলের কাথ ১৬ সের। কল্পজন্ত্র ধর্থা—পিপূল, পিপূলমূল, চৈ, চিতা, শুঠ ও যবক্ষার মিলিত ৬ পল প্রেভ্যেক ৮ তোলা)। যথানিয়মে পাক করিবে। এই মৃত পান করিলে কাস, সংপার্শল, হিরু: ও খাস প্রশাস্ত হয়।

চন্দনাদ্যতৈলগ্।

চন্দ্ৰীগুৰু হালাশ নগং মঞ্জিটা প্লকন্ ।
মুক্তকঞ্চ শটা লাক্ষা হরিন্তা র ওচননন ॥
এবাং প্রতিপলৈক কৈ-জৈলার্কপি কিন্তু ।
ভাগীনাসাক টকারী-নাট্যালক ওড় চিকাং ॥
এবাং শতপলে কাথ্যে সমস্তাগে জড়ীকুতে।
পক্ত্বা তৈলং প্রদাতন্যং নাজ্যক্ষ্যিনাশনন্ ॥
কাম্মুং গরনোবছাং বলবর্ণায়িবর্জনন্ ।
পালাক্ষ্যীপ্রনান গংলাম্বিনাশনন ॥
আদৌ কঞ্চ প্রদ্ধিনাশন ।
আদৌ কঞ্চ প্রদ্ধিনাশন ।
তলমুত্ত গ্রাদ্ধিনাশন কুমুমং নগন্ ।
গজ্যক্ষ্যাদ্ধিনাশন কুমুমং নগন্ ।
গজ্যক্ষ্যাদ্ধিনাশন্দ্রীগ্রং গ্রেক্ষ্যমং নগন্ ।

ভিলতেল ৮ महा ककार्थ-(अंड**ठना**न, অন্তক, তালীৰপত্ৰ, নৰী, মঞ্জিষ্ঠা, মুতা, শটা, লাকা, হরিদা ও রক্তচন্দ্র প্রত্যেক ১ পল। ক্বাথার্থ—বামুনহাটী, বাসক-কণ্টকারী, বেডেলা, গুলঞ্চ মিলিত ১২॥০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের, এই কাথেই কল্পাক করিছে হয়। পাকার্থ অন্ত জল দিবার প্রয়োজন নাই। কর-পাকান্তে গন্ধদ্বোর স্থিত তৈল পাক করিবে, গমদ্রব্যের মধ্যে শিলারস, কুক্ষুম, নগী, শ্বেত-চন্দন, কর্পুর, এলাইচ ও লবক ে তেল নামা ইয়া সর্বশেষে এই সকল দ্রব্য প্রাদান করিতে হয়। এই তেল মদ্দনে শক্ষা ও কাদ প্রভৃতি রোগ প্রশানত এবং বল, বর্ণ ও অগ্নি, বদ্ধিত হয়। ইহা পাপ, অল্ফী ও গ্রহদোষ নাশক।

বাসাচন্দ্রনাদ্যতৈলম।

চন্দনং রেণুকা প্তিইয়গন্ধা প্রদারণা।
ত্রিপ্রান্ধি কণামূলং নাগকেশরমের চ।
মেদে দে চ ত্রিকটুকং রাজা মধুকলেলজম্।
এটো বৃষ্ঠং দেবদার বানতা চ বিভীতকম্।
এতেষাং পলিকৈ ভাগৈঃ পচেৎ তেলাচকং ভিষক্।
বাসায়াক্ত পল্পতং জলজোলে বিপাচয়েৎ।

লাকারসাচ্কঠকৰ তথৈৰ দ্ধিনস্ত্ৰকন্ ।
চন্দনকামূতা ভাগা দশমূলং নিদিন্ধিকা ॥
এতেবাং বিংশতিপলং জলজোনে বিপাচয়েৎ ।
পাদশেৰে স্থিতে কাপে তৈলং তেনৈৰ সাধ্য়েৎ ॥
কাসান্ জ্বান্ রক্তপিতং পাঙ্রোগং হলীমকম্ ।
কামলাক ক্তকীণং রাজ্যক্ষাণ্যেৰ চ ॥
খাসান্ পক্ষিধান্ হৃতি বলবৰ্ণাগ্রিপুষ্টিকৃৎ ।
তৈলং বাসাচন্দনাদি কুষণত্রেয়েল ভাষিত্য ॥

ভিলতেল ১৬ দের। কাণার্গ—বাসকচাল ১২॥০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬
সের; রক্তচন্দন, গুলঞ্চ, বাম্নহার্টা, মিলিত
দশমূল ও কণ্টকারী প্রত্যেক ২০ পল, মোট
১২॥০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের।
লাক্ষার কাথ ১৬ সের; দিরির মাত ১৬ সের।
করার্গ—রক্তচন্দন, রেণক, গটাশী, অর্থগন্ধা,
গন্ধভাতুলে, গুড়হক্, এলাইচ, তেজপত্র,
পিপুলমূল, নাগেশ্বর, মেদা, মহামেদা, ত্রিকটু,
রাহ্মা, গৃষ্টমপু, শৈলজ, শ্রা, কুড়, দেবদারু,
প্রেয়স্থ ও বহেড়া প্রত্যেক ১ পল। এই তৈল
মন্দনে কাস, রক্তপিত্র, মন্দ্রা ও পঞ্চপ্রকার
শ্বাদ প্রভৃতি নানা রোগের শান্তি হয়।

অথ পথ্যাপথ্য বিধিঃ।

কাসরোগে পথ্যানি।

বেদো বিবেচনং ছার্জিধু মপানং সমাধনম।
শালিষষ্টিকগোধুম-শ্রামাকবনকোলবাঃ ॥
আন্ত্রপ্রামাষমূল্য-কুলখানাং রসাঃ পৃথক্।
প্রামােদকানুপধন্দ-মাংলানি বিবিধানি চ ।
ক্রা পুরাতনং সার্পি-ছাগঞাপি পয়ো ছতম্।
বাস্ত্রকং বার্মীশাকং বার্ত্তাকুবালমূলকম্।
কন্টকারী কাসমর্দো জীবতী ফ্নিম্বরক্ষ্।
আক্রা বিশ্বী মাতুলুকং পৌধরং বাসকস্মৃতিঃ ।
গোমুক্রং লগুনং পণা ব্যোষমুক্ষাদকং মধু।

লাজা দিবসনিদ্রা চ লঘ্ফুলানি যানি চ। পথ্যমেতদ্বপাদোমমুক্তং কাসগদাতুরে ।

স্বেদ, বিরেচন, ব্যন, ধূমপান, পরিমিত আহার, শালিতপুল, ষষ্টিকতপুল, গোধুম, খ্রামাপান্ত, যব, কোদোধান্ত, আলকুণী, মাধ-कलारम्बत ग्रम, भूरश्त ग्रम, कूल्य कलारम्बत ग्रम, গ্রাম্য (চাগাদি) মাংস, ঔদক্ষাংস, আনুপ-মাংস ও মকদেশজ বিবিধ মাংস, মন্ত, পুরাণ ঘুত, ছাগ্ত্বগ্ধ, ছাগ্ম্মত, বেতোশাক, কাক্মাচী, বেগুন, কচিমূলা, কণ্টকারী, কালকাম্বন্দা, জীবন্তী, সুসুণিণাক, 河本, ভেলাকচা, **ডোলঙ্গ-লেবু, পুদ্রমুল, বাসক, ছোটএলাইচ,** গোম্ব, রস্ত্র, হ্বীতকী, বিকট্ পিপুল, মরিচ), গরমঙ্গল, মধু, থৈ, দিবানিজা ও লঘুদ্ররা, এই গুলি কাসরোগিকে দোষাম-সারে পথ্যার্থ ব্যবস্থা করিবে।

ক।সরোগেহপথ্যানি।

বস্তিং নক্তমফঙ্ মোকং ব্যায়ামং দন্তগৰণম্।
বিষ্টণ্টানি বিদানীনি রক্ষাণি বিবিধানি চ॥
শকুনাকে কোনিকান-বনিবেগবিধারণম্।
আতপং ভ্রষ্টপননং রজোমার্গনিবেবণম্॥
মংস্তং কলং স্বপঞ্চ ভূষীফলমুপোদিকাম্।
ভূষাম্ চারপানক বিরজ্জাক্তশনানি চ।
তব্দ শীতক্ষেপানং কাদরোগী পরিতাজেৎ॥

বস্তি ক্রিয়া, নশু, রক্তথাক্ষণ, ব্যায়াম, দম্ভধাবন, রৌদ, দ্বিতবায়, ধূলি, পথপর্যটন, বৈইভিদ্রবা, বিদাহিদ্রব্য, বিবিধপ্রকার রুক্ষ-ভোজন এবং মল মৃত্র উলগার কাস ও বমির বেগধারণ, মংশু, কন্দর্শাক, সর্বপ, লাউ, পূইশাক, হুইজল, দ্বিত অয়পানীয়, বিরুদ্ধ শুকু কিংবা শীতল অয়পানীয়, এই সকল কাসরোগির পক্ষে অহিতকর।

ইত্যায়ুর্বেদ-সংগ্রহে কাসরোগাধিকারঃ।

অথ হিক্কাশ্বাসরোগাধিকারঃ।

অথ হিকাখাস-নিদান ।

विषादि शक्तिहे**ड-क्रका खिरान्तिः**। শীতপানাশনভান-রজোধ্যাতপানিলৈ:॥ বাায়ামকর্মভারাধ্ব-বেগাঘাতাপতর্পণৈ:। क्कि। बामण कामण मुनाः मम्नागर ॥ অন্নজাং ৰমলাং কুড়াং গ**ভী**রাং মহতী[,] তথা। বায়ু: কফেনাকুগতঃ পঞ্চ হিকা: করোতি চি । কণ্ঠোরদোও ক্লব্ধ বদনক্ত কবারতা। হিকানাং প্রকাশাণি ক্লেরাটোপ এব চ ॥ পানাদ্রৈরতিসংযুক্তৈ: সহসা পীড়িভোহনিল:। হিক্যতাৰ্দ্রগো ভূষা তাং বিস্তাদন্তমাং ভিবক । हित्रन वमरेलाव रेगया हिका मः अवर्खाः कम्लग्रस्री निरताञीयः समनाः ठाः विनिर्फिलः ॥ বিকুষ্টকালৈয়া বেগৈম ন্দৈঃ সম্ভিবৰ্ত্ততে । ক্ষুদ্ৰিকা নাম সা হিন্ধা জক্ৰমূলাৎ প্ৰধাৰিতা **॥** নাভিপ্রবৃত্তা বা হিকা ঘোরা গভীরন!দিনী। অনেকোপত্রববতী গভীরা নাম সা স্থতা। মর্দ্ধাণ্যৎপীভয়ন্তীব সততং বা প্রবর্ত্ততে। মহাহিকেতি সা জেরা সর্বাগাত্রবিকম্পিনী। মহোৰ্ছ চিছ্নতমক-কুত্ৰভেদৈৰ পঞ্চধা। ভিতাতে স মহাব্যাধি: বাস একো বিশেষত: ॥ বুদা স্রোতাংসি সংক্রধ্য মাক্সতঃ ৰুক্ পূর্বকঃ। বিৰগ ব্ৰহ্ণতি সং**স্কল্ডলা বাসান** করোতি সং 🛭

বিদাহী (যাহা আহারে জালা উপস্থিত হয়), গুরুপাক, বিগ্নন্তজনক, রুক্ষ, কফজনক এবং শীতল জব্যের পান ও ভোজন, শীতল স্থানে বাস, নাসিকাদি পথে ধূলি ও ধুম প্রবেশ, আতপ ও প্রবল বায় সেবন, ধুমুরাকর্বাদি ব্যায়ামকর্ম্ম, গুরুতারবহন, অধিক প্রপর্যাটন, মলমুল্রাদির বেগধারণ ও অনশনাদি অপতর্পশক্রিয়া এই সমস্ত কারণে হিক্কা, খাস ও কাস রোগ উৎপন্ন হয়।

বার, কফামুগত হইয়া অরজা, যমগা, কুমা, গন্ধীরা ও মহতী নামে পাঁচ প্রকার হিন্ধা উৎপাদন করে।

হিকারোগ উৎপন্ন হইবার পুর্বের কণ্ঠ ও বক্ষঃস্থলে ভারবোধ, মুখে কষায়াস্বাদ এবং আটোপ অর্থাৎ উদরে গুড়্গুড়্ শন্দোৎপত্তি, এই সকল লক্ষ্ণ উপস্থিত হয়।

অপরিমিত পান ও ভোজন থারা বাং সহসা পীড়িত ও উর্দ্ধাত হইরা যে হিকা উৎ-পাদন করে, তাহাকে অবজা হিকা করে।

যে হিক্কা মস্তক ও গ্রীবাদেশ কাঁপাইল বিলপ্নে বিলম্বে যমলবেগে অর্থাং ঘোড়া নোড়া প্রবর্ত্তিত হয়, তাহাকে যমলা হিক্কা বলে।

যে হিকা, জাকুমূল (কণ্ঠ ও বক্ষংস্থলের সন্ধি) হইতে বিলম্বে বিলম্বে মন্দ মনদ বেগে উল্লাভ হয়, ভাহাকে ক্ষুদ্রিকা হিকা কহে।

যে হিন্ধা, নাভিস্থল হইতে উংপন্ন হটঃ: ভূষণাজ্বাদি নানা উপদ্ৰব ঘটাইয়া অতি ঘোর গন্তীর স্বরে প্রবিভিত্ত হয়, তাহাকে গন্তীরা হিন্ধা কহে।

যে হিকা উল্গাত হইবার সময় সর্কশ্রীর কম্পিত হয়, এবং বোধ হয় গেন, বস্তি হুদ্র ও মস্তক প্রভৃতি প্রধান প্রধান মন্মন্থান সকল বিদীর্ণ হইয়া যাইতেছে, তাহাকে মহাহিকা কহে। এই হিকা নিরস্তর উল্গাত হুটতে থাকে।

বে সকল কারণে হিন্ধা রোগ উৎপন্ন হয়, সেই সকল কারণই প্রবলতর হইলে অভীব ভয়কর খাস ব্যাধি জন্মিয়া থাকে। সেই এক মহাব্যাধি খাস, বিশেষ বিশেষ হেতু ও বিশেষ বিশেষ লক্ষণভেদে মহান্, উর্দ্ধ, ছিন্ন, ত্যক ও ক্ষুদ্র এই পাঁচ প্রকার নামে অভিহিত হইয়া থাকে।

কদোখণ বাষু যথন প্রাণ ও উদানবং শ্রোক্তঃ সকলকে ক্লম্ম করিরা, নিজে কফ কর্তৃক অবক্লম অর্থাৎ বিনার্গগত হইয়া ইতন্ততঃ বিচরণ করে, তথনই শ্বাস রোগ উৎপাদন করিয়া থাকে।

অথ হিক্কাশ্বাস-চিকিৎসা।

যৎ কিঞ্চিৎ কক্ষবাতল্পমুক্তং বাতাসুলোমনস্। ভেষজং পানমন্নং বা হিকাখাদেরু তদ্ধিতম্।

যে কোন ঔষধ, অন্ন বা পানীয় কফবাতন্ন, বাতামুলোমক ও উষ্ণবীর্ণ্য, সে সমস্তই হিন্ধা ও শ্বাসরোগে হিতকর।

হিকাখাসাতুরে পূর্বং তৈলাক্তে বেদ ইবাতে। প্লিকৈল বণবোগৈক মৃত্র বাতাত্মলোমনম্। উদ্বাধনোনং শক্তে ছুর্বলে শমনং মতম্।

প্রথমে হিকারোগির উদরে এবং শ্বাস-রোগির হৃদয়ে সৈন্ধবলবণ-মুক্ত তৈল মর্দদ করিয়া স্লিগ্ধ স্থেদ প্রাদান করিবে। রোগির বল থাকিলে বায়ুর অপ্সলোমক সংশোধন ঔষধ কিংবা লবণ-মিশ্রিভ সংশোধন ঔষধ প্রয়োগ করিয়া মৃত্ব বমন ও বিরেচন করাইবে, তুর্বল হুইলে শমন ঔষধ সেবন করাইবে।

কোলমজ্জাপ্সনং লাজা ভিক্তা কাঞ্চনগৈরিকম্।
কুফা ধাত্রী সিতা শুঠী কাসীসং দধিনাম চ ॥
পাটলাঃ সফলং৷ পূশ্পং কুফা থর্জ্রমন্তকম্।
বড়েতে পাদিকা লেহা ছিকালা মধুসংযুতাঃ ॥

কুল আঁটির শশু, সৌবীরাঞ্জন ও থৈ।
কট্কী ও স্বর্গ-গৈরিক। পিপুল, আমলকী,
চিনি ও শুঁঠ। কয়েত বেলের শশু ও হীরা
কদ্। পার্কলের ফল ও পুষ্প। পিপুল ও
খেজুরমাতি। এই ছয়টি যোগের প্রত্যেকটি
মধুর সহিত সেবিত হইলে হিকা নিবারণ হয়।

মধুকং মধুসংযুক্তং পিপ্ললী শর্করাবিতা। নাগরং গুড়সংযুক্তং হিকাছং নাবনত্রয়শ্॥

যষ্টিমধু চূর্ণ মধুর সহিত; পিপুলচূর্ণ চিনির সহিত বা শুঠচুর্ণ গুড়ের সহিত মিশ্রিত করিয়া মস্ত লইলে হিকা নিবারিত হয়।

জন্তেন মক্ষিকাবিঠা নতং বালক্তকাৰুনা। যোজাং হিকাভিভূতায় জন্তং বা চন্দ্ৰাধিতম্ ।

মক্ষিকার বিষ্ঠা স্তন-হথ্যে কিংবা আল্-তার জলে গুলিয়া, অথবা রক্তচন্দন স্তনহুগ্ধে ঘষিয়া নক্ত লইলে হিকার শাস্তি হয়। মধুসৌবর্চনোপেতং সাতুলুঙ্গরসং পিবেৎ। হিকার্ত্তিস্য পরশ্চাগং হিতং নাগরসাধিতস্ ।

টাবালেব্র রম, মধু ও সচল (অভাবে সৈন্ধব) লবণের সহিত সেবন করিলে; অথবা ভাঠ ২ তোলা, ছাগহ্যা /।• পোষা, /> সের জলে সিদ্ধ করিয়া হ্যাবেশেষ থাকিতে নামাইয়া পান করিলে হিকা নিবারণ হয়।

কৃষ্ণামলকশুস্তীনাং চূর্ণং মধুসিভাযুত্ম। মুহুন্দু হঃ প্রযোক্তব্যং হিকাশাসনিবর্গম ॥

পিপুল, আমলকী ও ভঁঠ, ইহাদের চূর্ব মধু ও চিনির সহিত বারংবার সেবন করিলে হিকা ও খাস নিবৃত্ত হয়।

হিকাখাদী পিবেদ্ ভাগীং সবিখামুক্ষবারিণা। নাগরং বা সিতাভাগীং সৌবর্চলসমন্বিতাম ॥

হিকা ও শাসরোগে বাম্নহাটী ও ভাঁঠ চুণ উষণ্ণলের সহিত সেবনীয়। ভাঠ, চিমি, বাম্নহাটী ও সৌবর্চল লবণ একতা সেবনেও হিকা ও শাস নিবারিত হয়।

প্রাণ বরোধতর্জন-বিশ্বংপনশীতবারিপরিবেকৈঃ।

চিত্রৈঃ কথাপ্রয়োগৈঃ শমরেদ্ধিকাং মনোচ্ভিঘাতৈক।

প্রাণবায়্র অবরোধ (খাদ-প্রখাদ রোধ), তর্জন, বিশ্বয়োৎপাদন, শীতল জল সেচন, বিচিত্র বাক্য প্রয়োগ ও মনোভিঘাত (যাহা দ্বারা মন আহত হয়) এই সকল দ্বারা হিক্কা নিবারিত হয়।

প্রবানশন্ধত্রিফলা-চূর্ণং মৃতমধ্রমূত্ম। পিপ্লনী গৈরিককেতি লেহো হিকানিবারণঃ॥

প্রবালভন্ম, শঙ্খভন্ম, ত্রিফলা, পিপুল ও গেরিমাটী চূর্ণ, ম্বত এবং ম সহিত লেহন করিলে হিক্কা নিবারিত হ ।

নারিকেলস্য পূষ্ণাণি খেতচন্দনমেব ৮। হিকাঞ্চ প্রবলাং হস্তি ধারণাৎ তুন সংশয়ঃ ।

জলসহ খেতচন্দন ঘষিয়া সেই স্বৃষ্ট চন্দনে নারিকেল-পূষ্প চূর্ণ মিশ্রিত করিয়া তাহা মুখে ধারণ করিলে প্রবল হিকা নিশ্চয়ই নিবারিভ হইবে।

অথ ধুমপ্রয়োগঃ।

নৈপাল্যা গোবিষাণাদ্ধা বৃষ্ঠাৎ, সৰ্জন্তনস্থা বা। ধুমং কৃষ্পত্ত বা কাষ্যং পিনেদ্ধিকেংপশান্তয়ে॥

মনঃশিলা, গোশৃঙ্গ, কুড়, ধূনা বা কুশের ধুন পান করিলে হিকার শাস্তি হয়।

নির্মাঙ্গারনিক্ষিপ্তং হিঙ্গুমাবভবং রজঃ। হিকাঃ পঞ্চাপি হস্তাপ্ত ব্যঃ গীণো ন সংশয়ঃ॥

হিং ও মাষকলাই-চূর্ণ নিধূম অঙ্গারাগ্রিতে নিক্ষেপ করিয়া ভাহার ধূম পান করিলে পঞ্চপ্রকার হিকা প্রশমিত হয়।

भाषहूर्न्डरवा ध्रमा शिकाः दृखि न मःगग्नः। व्यमाधाः माधराज्ञिकाः मिटरेवल्डवः त्रकः॥

মাষ-কলাই-চূর্ণের ধূম পানে হিকা নিবা-রিত হয়। এলাইচ-চূর্ণ ও চিনি একত্র সেবন করিলে অসাধ্য হিকাও প্রশমিত হয়।

কনকস্ত ফলং শাধাং পত্ৰং সংকৃট্য যত্নতঃ। শোষশ্বিতা চ তদ্ধুম-পানাচ্ছ্ৰাসো বিনশুতি ।

কনকধুতৃরার ফল শাখা ৬ পাতা অস্ত্র ধারা থণ্ড থণ্ড ও কুটিত করিয়া শুকাইয়া ভাহার ধূম পান করিলে থাস নিবারিত হয়।

অণ্যসাধ্যাং নয়তান্তং হিকাং ক্ষৌদ্রবিলেহনন্।

মধু অবলেহন করিলে অসাধ্য হিকাও
নিবারিত হইয়া থাকে।

শর্করামরিসং চূর্বং লীচ্ং মধুযুতং মূতঃ। নিহস্তি প্রবলাং হিকামসাধ্যামপি দেহিনাম্।

চিনিও মরিচ-চূর্ণ মধুর সহিত মিলিত করিয়া মৃত্যুর্তঃ লেহন করিলে, হিকা নিবৃত্ত হইবে।

হিকাং হরতি প্রবলাং খাসমতিপ্রবৃদ্ধং জরতি। 📑
শিথিপুচ্ছতৃতিপির্লীচূর্ণং মধুমিপ্রিতং লীচ্ন্।

ময়ূরপুছে রুদ্ধ পাত্রে ভত্ম করিয়া উহার সহিত পিপুলচূর্ণ ও মধু মিশ্রিত করিয়া অবলেহন করিলে প্রবল হিকা ও দারুণ খাস নিবারিত হয়।

ৈহিক। ছংকদলামূল-রসঃ পেরঃ সশকরঃ ; কদলীমূলের রস চিনির সহিত পান

করিলে হিকা নিবারণ হয়।

करीः किलिएलहूर्नम् लीह्कान्त्रस्यः प्रसूना भिक्षम् । अहिबाक्षत्रिति वामः अवलामूक्टिकारेकव ॥

মধুর সহিত বহেড়াচূর্ণ ২ তোলা উত্তম রূপে মিশ্রিত করিয়া লেহন করিলে শীঘ্র খাদ ও প্রবল উর্দ্ধাহিকা নিবারিত হয়।

অভয়ানাগরককং পৌকরবাবশুক্মরিচককং বা। ভোয়েনোঞ্চেম পিবেচছু ানী হিকী চ ভচ্ছাত্তৈয়।

হরীতকীও শুর্জী কিংবা কুড় যবক্ষার ও মন্চি বাটিয়া উষণ জলের সহিত পান করিলে ঠিকাও ধাদ প্রশমিত হয়।

শৃत्रापि-हुर्गम्।

শৃষ্ঠ কটু ত্রিকফলতায়ক উকারী
ভাগী সপুদ্ধ জটা লবণানি পঞ্চ।
চূর্ণ পিবেদনিশিবেগ জলেন (২কাবাসোদ্ধাতক সনাক চিপীনসেধু॥
(অত্র প্রদ্ধান্ত পুদ্ধান্ত মুন্দ্ধ)।

কাব্ডাশৃঙ্গী, ভিকটু, ত্রিফলা, কণ্টকারী, বামৃত্যাটা, পুদ্রমূল (অভাবে কুড়) ও পঞ্চলব (সৈন্ধব, বিটু, সান্থার, সৌবর্চ্চল ও উদ্ভিদ্লবণ) এই সকল জব্যের চুর্ল সমভাগে লইয়া উষ্ণ জলের সহিত পান করিলে হিকা, খাস, উর্দ্ধবায়, কাস, অকৃতি ও পীনসবোগ উপশ্যিত হয়।

হরিদ্রাচুর্ণম্।

হরিদ্রাং মরিচং জাকাং গুড়ং রামাং কণাং শটাম।
কটুতৈলং লিহন্, হস্তাচছ্বাসান্ প্রাবহনানপি ।
হরিদ্রা, মরিচ, দ্রাকা, পুরাতন গুড়, রামা,
পিপ্পলী ও শঠা ইহাদের চুর্ণ সর্বপ-তৈতেশ্ব

সহিত মিশ্রিত করিয়া অবলেহন করিলে উৎকট শ্বাসপ্ত নিবৃত্ত হয়।

গুড়ং কটুকতৈলেন মিশ্রন্নিয়া সমং লিছেৎ। ত্রিসপ্তাহপ্রাগেণ শাসং নিম্নতো জয়েৎ ॥

পুরাতন গুড় ও সর্বপতৈল সম্ভাগে মিশ্রিত করিয়া ও সপ্তাহ লেহন করিলে খাদ সমূলে বিনষ্ট হয়।

কৃত্মাগুকশিকাচূর্ণং পেয়ং কোন্যেন বারিণা। শীভ্রং প্রশময়েচ্ছ্রাসং কাসঞ্চৈব স্থলারণম্॥

কুরাও্যুল-চূর্ণ অর্দ্ধ তোলা স্টেষ্ট্র জলের সহিত সেবন করিলে, খাদ ও কাদ প্রশ্মিত ইইরা থাকে।

কৃষ্ণাসৈদ্ধবচূণ্য প্রদেশ শৃঙ্গণেরস্থা হি।
যো লেটি শ্য়নকানে স জয়তি সপ্তাহতঃ খাসান্।
শ্য়নকালে পিপুলচূর্ণ ১ মাসা ও সৈদ্ধব
১ মাষা আদার রদের সহিত এক
পপ্তাহ কাল দেবন করিলে খাদের উপশ্য হর।

গন্ধকং মরিচং সাজ্যং খাসকাসকরংপহ্ম। গন্ধকং যুত্যেংগেন খাসকাসকরাপহ্ম ।

শোধিত গন্ধক ও মরিচচুর্ব, অথবা কেবল গন্ধকচুর্ব ত্বতের সহিত সেবন করিলে খাদ, কাদ ও ক্ষয়রোগের শাস্তি হয়।

> শৃক্ষীমহৌষধকণাখনপুদ্ধরাণাং চূর্ণং শঠামঝিচশক্ররা সমেতম্। কাপেন পীতমমূতাবুদপঞ্মুল্যাঃ খাসং ত্যাংহণ শমরেদ্তিদোবমুগ্রমু॥

কাক্ডাশৃন্ধী, গুঠ, পিপুল, মুতা, কুড়, শঠা, মরিচ ও চিনি, ইছাদের চুণ ॥॰ তোলা প্রক্ষেপ দিয়া গুলঞ্চ, বাদক ও বৃহৎপঞ্চমুলের (বেলছাল, শোনাছাল, গান্তারীছাল, পাকলছাল ও গণিয়ারিছাল) কাথ তিন দিন পান করিলে প্রবল খাদরোগের প্রশমতা হয়।

বিশাটর্র্যদলনারিসমূলগুর-দঙোৎপলোৎপলজলং কটুভৈলামশ্রন্। ভাগীগুড়ো যদি চ ততা হতপ্রভাব-ভং খাসমাত বিনিহন্তি মহাপ্রভাবন্॥ ভার্গী গুড় দেবনেও যে খাদ প্রশমিত নাহয়, তাহা বিলপত্তের রস, ধাদকপত্তের রস, সমূল খেত-ডানকুনি পত্তের রস ও উৎপলের রস সর্থপ তৈলের সহিত মিশ্রিত করিয়া পান করিলে আশু প্রশমিত হয়।

আমৃতানাগরকঞ্জী-বাগনীপর্ণাসমাধিতঃ কাথং।
পীতঃ সকণাচ্বঃ কাসখাসো নিহস্তান্ত ॥
দণমূলীকষংয়ন্ত পুকরেণাবচ্বিতঃ।
কাসখাসপ্রশানন পাথক্চে,লনাশনঃ॥
কুলখনাগরবাানী-বাসাডিঃ ক্বিতং জলম্।
পীতং পুদ্ধসংযুক্তং নিত্যশাসনিবতণম্॥

গুলঞ্চ, গুঁঠ, বামুনহাটা, কণ্টকারী ও জুলদী, ইহাদের কাথ পিপুলচ্পের সহিত পান করিলে কাদ ও খাদ নিবারিত হয়। দশ মূলের কাথ পুদরমূল (অভাবে কুড়) চুর্ণের দহিত পান করিলে কাদ, খাদ এবং পার্থ ও ছদ্য শূল প্রশামত হয়। কুল্থ-কলাই, গুঁঠ, কণ্টকারী ও বাদক ইহাদের কাথ পুদরমূল-চুণের সহিত পান করিলে হিকা ও খাদ নিস্ত হয়।

ভাগাঁগুডঃ।

শতং সংগৃহ ভার্গাপ্ত দশমূলাভেষা শতম্।
শতং ইরীতকীনাক পচেৎ তোয়ে চতুগু গৈ॥
পাদাবশেষে তামিংপ্ত রুদে বয়পরিক্রতে।
জালোডা চ তুলাং পুঠাং ওড়প্ত হুভয়াং ততঃ॥
পুনং পচেমুদাবমৌ যাবলেহত্মাগতম্।
ক্রিকট্ ক্রিপ্রজন্ধ পলিকানি পুথক্ পুথক্॥
কর্মন্ন যক্লারং সংচ্গ্র প্রাপ্তিরেও ।
ভক্রেদভ্যানেকাং লেহস্তাজপলং লিছেং।
খাসং স্থান্ধণং হত্তি কাসং পক্ষবিধং তথা।
বরবর্গপ্রদো হেন্য কঠরাগ্রেশ্চ দিপানঃ॥
'পালোলেগাগতে মানে ন বৈশুণামিংস্যতে।
ইরীতকাশতপ্তাত্র প্রস্থান্টকং জলম্॥
"

বামুনহাটার মূল ১০০ পেল, দশমূল প্রাত্তেক ১০ পল করিয়া মোট ১০০ পল ও হরীতকী ১০০টা (বঙ্গে শিথিলভাবে বাধিয়া) ১১৬ সের গলে কাথ করিয়া ২৯ সের থাকিতে নামাইয়া ছাঁকিয়া ঐ কাথে উক্ত হরীতকী
সকল এবং ১০০ পল পুরাতন গুড় দিয়া পাক
করিবে। ঘন হইলে উহাতে ত্রিকটু, গুড়ছক্, তেজপত্র ও এলাইচ ইহাদিপের প্রত্যেকের চুর্ণ ১ পল ও যবকার ৪ তোলা প্রক্রেপ
দিয়া নামাইবে; শীতল হইলে উহাতে ৬
পল মধু দিবে। মাত্রা—১ তোলা হইতে ৪
তোলা এবং হরীতকী ১টা বা উহার অংশ
একত্র সেবা। ইহাতে প্রবল খাস এবং
পঞ্চপ্রকার কাসাদি আরোগ্য হয়।

ভাগীশর্করা ৷

ভাগ্যা: শতার্দ্ধং বাসারা: ক'টকার্য্যান্চ পাচয়েৎ।
তুলামিতং জলং দরা নিশাচরচতুষ্টমন্ ॥
জলাচ্কে পচেৎ তেন চতুর্পনবশেষরেং।
বস্তপ্তক তৎ সর্কং সিতাপ্রস্থং ততঃ কিপেং।
উক্টেইবর্তারিতে তক্ত চুর্ণানীমানি দাপয়েং।
ক্রিক্ট ক্রিকলা মৃত্যং তালীশং নাগকেশরন্ ॥
ভাগ্যী বচা খদট্রো চ স্বগেলাপক্রজীরকন্।
বমানী চাজমোদা চ বাংশী কৌলখজং রক্তঃ।
কট্ফলং পৌধরং শৃঙ্গী কোলমাকং কিপেং ততঃ।
হস্তি পক্ষিং কাসং খাসমের স্ফার্ফণন্ ॥
যন্ত্রাণ্ হস্তি হিকাঞ্চ জরং জীবং ব্যপাহতি।
রোগানেতান নিহন্ত্যান্ত বলপ্রাগ্রিবর্দ্ধন্য।

বামুনহাটীর মূল ৫০ পল, বাসক মূলের ছাল ৫০ পল, কণ্টকারী ৫০ পল, জল ৯৬ সের, শেষ ২৪ সের। চারিটি বাগুড়ের মাংস, পাকার্থ জল ১৬ সের. শেষ /৪ সের. ছাঁকিয়া উভয় কাণ একতা করিয়া ভাহাতে চিনি /২ সের দিয়া পাক করিবে; ঘন হইলে নামাইয়া ,উহাতে ত্রিকট্ট, ত্রিফলা, মুতা, তালীশপত্র, নাগেশ্বর, বামুনহাটার মূল, গোকুর, গুড়ত্বক, এলাইচ, তেজপত্র, জীরা, বমানী, বনষ্মানী, বংশলোচন, কুল্খকলায়, কট্ফল, কুড় ও কাক্ড়াশুলী ইহাদিগের প্রত্যেকের চূর্ণ > ভোলা পরিমাণে প্রক্রেপ দিবে। রোগ বিবেচনায় উপযুক্ত অমুপান সহ (সিকি তোলা হইতে ১ তোলা পর্যান্ত মাত্রায়) সেবন করিবে। ইহা সেবন করিলে প্রবল খাস, পঞ্চপ্রকার কাস, যন্ত্রা, হিকা ও জীর্ণ জ্বর নিবারিত এবং শরীরের বল পুষ্টি ও অগ্নি বর্দ্ধিত হয়।

শৃঙ্গীগুড়ঘূতম্।

ক টকারীবয়ং বাসামৃতা পঞ্চপলং পুণক্। শতাব্যাঃ পঞ্চশ ভাগীদশপলানি চ। গোকুরং পিপ্ললীমূলং পুথক পলসম্বি চম্। পাটলা ত্রিপলকৈব চত্তপ্ত শজলে পচেৎ । চড়ভাগাণশিষ্ট্র ক্যায়মণভারয়েৎ। পুরাতনগুড়স্যাত্র পলানি দুণ দাপয়েৎ॥ যুত্সা পঞ্চ দহা চ দহা দশপলং পয়:। সর্বামেকীকু হং পজ্জু। চূর্ণমেশাং বিনিক্ষিপেৎ ॥ শুলী দ্বিভোলকং জাতি-ফলং পত্ৰং ত্ৰিতোলকম্। চতুন্তোলং লবঙ্গঞ্চ ভুগাক্ষীরী পুথক পূথকু॥ শুড্ৰগেলে চ তথা ভোলকৰ্মানকে। कुष्ठेर ভোলচত कक दर्शास्त्रांनकमध्यम् ॥ িপ্লনাঃ পলমেকঞ্ তালীশং তোলকত্রয়ম। काठीकामः जानदिकः नीतः ह मधुनः शलम् ততঃ প্রাত্মঞ্চ কবৈকমমূপানবিধিং শুণু। कार्कमार्क्जाविकाहर्नः मित्रिष्टः एक्ट छ नम् ॥ একীকুতা বটীং যত্নাৎ কুৰ্যা:নাষ্মিতাং ভিষক। তাসামেকাং চর্বায়িত্বা পিবেদত্ম জলং কিয়ৎ । শঙ্গীগুডঘুতং নাম সর্বব্যোগহরং পরম। অপি বৈল্পনতৈন্তাক্তং খাসং হস্তি প্রদারণম ॥ কাসং পঞ্চবিধং হস্তি বিবিধোপস্তবান্বিতম। রক্তপিত্তং ক্ষয়কৈব স্বর্ভক্সমরোচক্ষ। বিশেষাচিত্রকালোখং খাসং হস্তি হুছুন্তরম্ ॥

কণ্টকারী, বৃহত্তী, বাসকম্লের ছাল ও গুলঞ্চ প্রত্যেক ৫ পল, শতমূলী ১৫ পল, বামুনহাটী ১০ পল, গোক্ষুর, পিপ্ললীমূল প্রত্যেক ১ পল, পারুল ছাল ও পল এই সমস্ত কুটিয়া চতুগুণ জলে সিদ্ধ করিয়া চতুগাংশ অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া ছাকিয়া উহাতে পুরাতন গুড় ১০ পল, ঘৃত ৫ পল ও হুশ্ব ১০ পল দিয়া একতা পাক করিবে; ঘন ছইলে কাঁক্ড়াশুলী ২ তোলা, জায়ফল ৩ তোলা. তেজপত্র ৩ তোলা, লবঙ্গ ৪ তোলা, বংশলোচন ৪ তোলা, গুড়ত্বক্ ২ তোলা, এলাইচ ২ তোলা, কুড় ৪ তোলা, শুঠ ৭ তোলা, পিপ্ললী ৮ তোলা, তালীশপত্র ৩ তোলা, ৰুশ্বিত্ৰী ১ তোলা, এই সকল চূৰ্ণ প্রকেপ দিয়া নামাইবে; শীতল হইলে মধু ১ পল দিৰে। ২ তোলা মাত্ৰায় নিম্নলিখিত অমুপান সহ সেবন করিবে। অন্তপানবিধি যথা-কাঠবিভালের মাংস চুর্ণ ১ ভাগ * মরিচ চুর্ণ ৪ ভাগ, একত্র মাড়িয়া এক মাধা পরিমাণে বটিকা করিবে। শুঙ্গীগুড়ত্বত দেবনের পরেই এই বটিকা একটি চর্নণ করিয়া কিঞ্চিৎ জল পান করিবে। (অভাবে ঠেতুলপত্রের কাথ এবং মহিচ চুর্ণ ৬ রতি ও হিঙ্গু ৬ রতির সহিত ঔষধ দেবনীয়। তদভাবে উষ্ণ গ্রুসহ দেব্য।) ইহা শ্বারা শত শত বৈদ্য পরিত্যক্ত বহুকালের প্রবল শ্বাস, উপদ্বস্তুত পঞ্চ প্রকার কাস, ক্ষয় ও রক্তপিত্ত প্রভৃতি বহুবিধ রোগ দূরীভূত ২য়।

বিজয়-বটী।

স্তকং গদ্ধকং লৌহং বিষমজ্ঞকনেব চ।
বিদ্যুদ্ধং রেপুকং মুস্তমেলাঅস্থিককেশরম্॥
ক্রিকটু ক্রিকলা শুষ-ভঙ্গ জৈপালচিত্রকম্।
এতানি সমজাগানি বিশুণো দীয়তে শুড়ঃ॥
কালে খালে ক্ষয়ে গুলো প্রমেহে বিশম্বরে।
স্তায়াং গ্রহণীদোবে শ্লে পাঙ্গময়ে তথা।
হস্তপাদাদিদাহেরু ব্টিকেরং প্রশস্ততে॥

পারদ, গন্ধক, লোহ, বিষ, অন্র, বিড়ঙ্গ, রেণুক, মুতা, এলাইচ, পিপুলের মুল, নাগ-কেশর, ত্রিকটু, ত্রিফলা, তাম্রভন্ম, জয়পাল ও

চিতা প্রত্যেক সমভাগ, সমূদয়ের বিশুণ গুড় মিশ্রিত করিয়া বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ সেবনে কাদ, শ্বাদ, ক্ষয়, গুলা, প্রমেহ, বিষমজ্জর, স্তিকা, গ্রহণীদোষ, শূল, পাপুরোগ ও হস্তপদাদির দাই নিশ্চর উপশ্মিত হয়।

ভামরেশ্বরাভ্রম্।

মেচকং পান নিতং মৃতমন্ত্ৰং ব্ৰহ্ময় ছিকনকা মৃতবাসাঃ।
কাসমৰ্জননিথ কচবাং এছিকং দহন মূলসমেতম্ ।
একণক পানিকৈ বিহ সবৈম দিতং জয়তি ওদ্ গুলুহিকা মৃ।
খাসকাসমূদকং চিন্নমেহান্ পাঙ্গুল্লফ্ডং গলরোগম্।
শোধমোহন নাস্ত জনোগং যক্ষ্মপানসগরং বলসাদম্।
গঙ্মগুলবিষমন্ত্ৰেক্ সুমূদ্ৰ বিষম্ভ কুমূদ্ৰ হিছু বা তৰ্ফ পিত্তমশেষং ভামরেখন মিদং মহদ্ৰ ম্।
হিছু বা তৰ্ফ পিত্তমশেষং ভামরেখন মিদং মহদ্ৰ ম্।
হিছু বাংল ধানে চ প্ৰশৃত্তম্।

মারিত ক্ষণাত্র > পণা, ভাবনার্থ—
বাম্নহাটি > পণা, জল > সের, শেষ > পণা
কাথ, ধুক্ত, বপত্রের রস, গুলঞ্চের রস, বাসকপত্রের রস, কালকাফ্রনা পত্রের রস প্রত্যেক
> পল এবং বোড়ানিমের মূলের ছালা, চৈ,
পিপ্পলীমূলা, চিতামূলা, ইহাদিগের প্রত্যেকর
> পণা স্বরুসে (মভাবে উপরিউক্ত বাম্নহাটীর
মূলের ক্সায় কাথ করিয়া ঐ কাথে) এক এক
বার ভাবনা দিয়া ঔষধ প্রস্তুত করিবে।
এই ঔষধ সেবন করিলে প্রবল হিকা, খাসা,
কাদ, উদর, প্রাত্তন মেহ, পাঞ্, গুলা, যক্ষং,
শোগ, মোহ, নয়নজ ও আশুজ রোগা, যক্ষা,
খ্লা ও দাহ প্রভৃতি বিবিধ রোগ প্রশামত
হয় (মাত্রা— > রতি হুইতে ৬ রতি প্রান্ত ।
অমুপান মধু প্রভৃতি।

পিপ্লল্যাদ্যং লোহম্।

পিপ্নলামলকা ছাংলা-কোলাছিমধুশক্রা।
বিভঙ্গপুকরৈর জং লোহং হস্তি হুহত্তরাম্।
হিকাং ছজিং মহামাসং ত্রিরাজেণ ন সংশন্নঃ ।
অত্র লোহং স্কাচুর্ণসম্য। মধু যন্তিমধু, পুকরং পুকরমূলম্। হিকারামতিপ্রশত্তমেতৎ।

কেহ কেহ বলেন—কাঠবিলী নামক ওবধিরাখালশা; কেহ বা বলেন—কাঠবিলী নামক ওবধিবিশেষ, তাহারই মূলচুর্ণ ১ ভাগ। কিন্তু কাঠমার্জারিকা
শব্দের এ সকল অর্থের কোন বিশিষ্ট প্রমাণ পাওয়া
বায় না।

পিপ্ললী, আমলকী, জাক্ষা, কুলবীজের
শক্ত, ষষ্টিমধু, চিনি, বিড়ঙ্গ ও পুদ্ধরমূল, ইহাদিগের প্রত্যেক চূর্ণ > তোলা, লৌহ ৮ তোলা,
জল দিয়া মাড়িয়া (৫ রতি প্রমাণ) বটকা
করিবে। দোষ বিবেচনা করিয়া যথোপযুক্ত
অমুপান সহ এই ঔষধ তিন দিন সেবন করিলে
হিকা, বমি এবং মহাশাস নিবারিত হয়।
ইহা হিকার মহৌনধ।

মহাখাসারিলোহম্।

কৰ্ষয়ং লৌহচ্ণং কৰ্মাৰ্ক্ষমন্তমেৰ চ।
সিতাকৰ্ষয়কৈৰ মধু কৰ্ম্বয়ং তথা ॥
ত্ৰেকলা মধুকং জ্লাকা কণা কোলাছি বংশজা।
তালীশপত্ৰং বৈড়ক্ষমেলা পুন্ধরকেশরম্ ॥
এতানি গ্লক্ষ্পানি কৰাজ্য সমাংশিকম্।
লৌহে চ লৌহদণ্ডেন মৰ্ক্ষিয়েৎ প্রহর্ময়ম্ ॥
তত্তো মাত্রাং লিহেৎ ক্ষোইন্সবুজা দোধবলাবলম্।
ইদং খাসারিলোহক মহাখাসং বিনাশ্যেৎ ॥
কাসং পঞ্চবিধকৈৰ রক্ষপিত্রং স্থারণম্।
একজং ক্লককৈৰ তপেৰ সাল্লিপাতিকম্।
নিহন্তি নাত্র সন্দেহো ভাসরন্তিমিরং যথা॥

লৌছ ৪ তোলা, অল : তোলা, চিনি ৪ তোলা, মধু ৪ তোলা: এবং ত্রিফলা, মধু ৪ তোলা: এবং ত্রিফলা, মষ্টিমধু, জাক্ষা, পিপ্লী, কুল জাটির পাঁদ, বংশলোচন, তালীশপত্র, বিড়ঙ্গ, এলাইচ, কুড় ও নাগেশ্বর ইহাদিগের প্রত্যেকের কৃষ্ণ চুণ : তোলা, এই সমস্ত দ্রব্য লোহপাত্রে ও লোহদণ্ডে ২ প্রহর মর্দন করিবে। মালা—কর্দ্ধ মান। ইহাত ২ মারা। ইহা মধু সহ সেবন করিলে মহাথাস, পঞ্চ প্রকার কাস এবং রক্তপিতাদি রোগ নিশ্চয় প্রশমিত হয়।

খাসকুঠারে। রসঃ।

ন্নসং গদ্ধং বিষং টক্সং শিলে!বণকটুত্তিকম্ । সৰ্বং সংমন্ধ্য দাতব্যো রসঃ থাসকুঠারকঃ ॥ বাতলেমসমূত্ত কাসং খাসং অরক্ষম।
নাশবেলাত সন্দেহো বৃক্ষমিস্তাশনির্থা।
অত মরিচন্ত ভাগদরং পুনক্ষজভাৎ, মাতা রক্তিমিতা,
বৃদ্ধবৈত্যোপদেশাৎ আর্কিরসাম্পানম।

রস, গন্ধক, বিষ, সোহাগার থৈ, মনছাল, মরিচ ূএবং ত্রিকটু ইহাদিগের প্রত্যেকের সমান ভাগ; জলের সহিত মাড়িয়া ১ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। আদার রস সহ সেবন করিলে বাতশ্রেমজনিত খাস, ক'স ও স্বরভঙ্গ বিনষ্ট হয়।

তন্ত্রান্তরোক্তঃ খাসকুঠারে। রসঃ।

রসং গন্ধং বিদক্ষৈব উদ্পং সমনঃশিলম্।
এতানি সমভাগানি মরিচকার উদ্পাধ ॥
উদ্পর্কুত্বং দ্বিকট্কং থলে সর্বং বিচুপ্রের।
রসঃ ধাসকুঠারে:হয়ং বিষমশাসকাসজিব ॥
প্রতিশ্যায়ং কতকীশমেকাদশবিধং কয়ম্।
সজোগং পার্শপুলক দ্বরভেদক দারশম্॥
সন্নিপাতং তথা তল্লাং প্রমেহাংশ্চ বিনাশয়েব।
গতা সংজ্ঞা যদা পুংসাং তদা নক্তং প্রদাপয়েব।
ভাপয়েয়াসকারক্যে সংজ্ঞাকারণমৃত্তমম্
স্থাবর্ত্তান্তিকারক্যে রসং তথা ॥
জন্পানং পর্বসমার্ত্রকন্ত রসং তথা ॥
উদ্পানইত্বং মরিচম্। দ্বত্তগা পিরলী শুকী চ।

পারদ, গদ্ধক, বিষ, সোহাগার থৈ, মনছাল এই সকল প্রত্যেক ১ তোলা, সহিচ ৮
তোলা, পিপ্ললী ৬ তোলা, শুঠ ৬ তোলা,
একত্র জলে মদ্দন করিয়া ১ রতি পরিমিত
বটা করিবে। ইহা পানের রস কিংবা আদার
রসের সহিত সেবন করিলে বিষম খাস, কাস,
ক্ষর, হুদ্রোগ, সন্নিপাত ও প্রমেহ প্রভৃতি
রোগ বিনষ্ট হয়। সংজ্ঞা করিবার জন্ম ইহার
নম্ম বিশেষ কার্য্যকর। ইহাতে স্থ্যাবর্ত্ত
ও মন্ধাব্রুদক (আন্কপালে) প্রভৃতি উৎকট
শিরোরোগ প্রশ্মিত হয়।

শ্বাসভৈরবো রসঃ।

রসং গদ্ধং বিষং ব্যোষং সরিচং চ্ব্যচিত্রকম্। আদ্রুকস্ত রসেনৈর সংমর্দ্য বটিকাং ততঃ॥ গুঞ্জাধ্যপ্রমাণেন থাদেৎ ভোরাত্মপানতঃ। স্বর্ভেদং নিহস্ত্যাপ্ত খাসং কাসং স্বত্নজ্ঞরম্। অক্রাপি মরিচন্ত ভাগধ্যসু।

রদ, গন্ধক, বিষ, ত্রিকটু, মরিচ, টে এবং চিতামূল এই দক্ষের চুর্ণ দমভাগে লইয়া আদার রদে মাড়িয়া ২ রতি পরিমিত বটী করিবে; জল সহ দেবা। ইহা দেবনে খাদ, কাদ ও শ্বংভেদ বিনষ্ট হয়।

সূর্য্যাবর্ত্তো রসঃ।

পতকং গন্ধকো মন্ধ্যো * যামৈকং কন্সকাদ্রনিঃ।

দ্বান্তল্য তাত্রপত্রং পূর্বকন্দেন লেপয়েৎ।

দিনৈকং বালুকাবন্দ্র পাচ্যমাদার চূর্ণরেৎ।

স্থ্যাবর্ত্তরমো গ্লেষ্ দিন্তল্পঃ খাসকাসমূৎ।

ইন্দ্রবান্ধণিকামূলং দেবদাক কট্টরেম।

শক্রাসহিতং খাদেদুদ্বিধাননিষ্ভারে।

(এতেগং চুর্বং যথাবলং কেন্স্যু, কন্সচিন্নতে কাথঃ।)

পারদ ১ ভাগ ও গন্ধক ১ ভাগ (পাঠা-স্তব্যে গন্ধক পারদের অর্দ্ধভাগ) এই উভয় দ্রব্য ঘুভকুমারীর রসে ১ প্রহর মাজ্যা উহা দ্বারা ২ ভাগ পরিমিত ভামপত্র প্রালিপ্তা করিয়া এক দিন বালুকাগন্ম পাক করিবে। পরে ঐ তাম উদ্ধৃত করিয়া চূর্ণ করিবে। ইহার মাজা—২ রতি। ঔষধ সেবনাস্তে রাখাল শদার মূল দেবদাক্ত ও ত্রিকটু ইহাদের চূর্ণ বা কাথ চিনির সহিত দেব্য। ইহাতে উদ্ধাস নিবারিত হয়।

শ্বাসচিন্ত মণিঃ।

দ্বিকর্বং লৌহচূর্ণপ্ত তদর্জং গদ্ধমত্রকম্।
তদর্জং পারদং তাপ্যং পারদার্কেন মৌজ্বিকম্।
শাণমানং হেমচূর্ণং সর্বং সংমদ্য বড়তঃ।
কন্টকারীরসৈন্চাপি শৃঙ্গবেররসৈন্তথা।
চাগীকীরেণ মধুকৈঃ ক্রমেণ মতিমান্ ভিবক্।

গুঞ্জাচতুইয়ঞ্চান্য বিভীতক্ষম্বিত্র । ভক্ষয়েৎ খ!সকাসার্গ্রো রাজ্যক্ষ্মিণ্ডিতঃ ।

লোহচ্র্ল ৪ তোলা, গদ্ধক ২ তোলা, অত্র ২ তোলা, পারদ ১ তোলা, স্বর্ণমাক্ষিক ১ তোলা, মুক্তা ॥০ তোলা ও স্বর্ণ ॥০ তোলা; এই সমুনায় জব্য একত্র মাড়িয়া কণ্টকারীর রসে, আদার রসে, ছাগহুয়ে ও বৃষ্টিমধুর কাথে ভাবনা দিয়া ৪ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। জনুপান—মধু ও বৃহেড্য চুর্ল। হাদ, কাদ ও যক্ষারোগে প্রযোজ্য।

হিংস্রাগ্রয়তম।

হিংপ্রাবিড়ঙ্গপূতীক-ত্রিফলাব্যোদ্চিত্রকৈ:।
দ্বিকীরং সর্গিনঃ প্রস্থং চতুপ্ত প্রজ্ঞান্থিতম্ ॥
কোলমাত্রৈঃ পচেৎ তদ্ধি খাসকাসৌ ব্যপোহতি।
দ্বর্শাংস্তরোচকং গুলাং শকুদ্ভেদং করং তথা॥
(হিংস্রা—কালাপুক্ডা।)

ঘুত /৪: সের, ছগ্ন /৮ সের, জল ১৬ সের। কল্পাথ—কালাওক্ড়া, বিড়ঙ্গা, নাটা-কর্পার মূল, হরীতকী, বহেড়া, আমলকী, শুঠ, পিপুল, মহিচ ও চিতা প্রত্যেক ২ তোলা। বথাবিদি পাক ক্রিয়া এই ঘুত পান ক্রিলে খাস, কাস, অর্শা, অরুচি, গুলা, মলভেদ ও ক্ষয় প্রশমিত হয়।

তেজোবত্যাগ্যং মৃত্যু।

তেজোবতাভয়া কুঠং পিঞ্গলী কটুরোহিণী।
ভূতিকং পৌদরং মূলং পলাশন্দিতকং শটা ।
সৌবর্চনং তামলকী দৈদ্ধবং বিলপেষিকা।
তালীশপক্রং জীবন্তী বচা তৈরক্ষসন্মিতঃ।
হিন্দুপাদৈশ্ব তিপ্রস্থং পচেৎ তোয়চতুগু গৈ।
এতদ্ যথাবলং পীখা হিন্দাখাদৌ জয়ন্তরঃ।
শোধানিলাশোগ্রহণী-হৃৎপার্থক্ক এব চ।

ন্বত /৪ সের, জল ১৬ সের। কন্ধার্থ— চৈ, হরীতকী, কুড়, পিপুল, কট্কী, কন্তৃণ, পুদ্ধরমূল, পলাশ, চিতা, শটী, সৌবর্চচল,

স্তার্দ্ধো গন্ধকো মর্দ্দা ইতি চিন্তামণৌ রসরত্বসমুচ্চয়ে চ পাঠঃ।

ভূম্যামলকী, সৈদ্ধন, বেলগুঠ, তালীশপত্ত, জীবস্থী ও বচ প্রত্যেক ২ তোলা; হিং ॥॰ তোলা। যথাবিহিত নিরমান্মসারে মৃত পাক করিয়া সেবন করিলে হিন্ধা, খাস, শোপ, বাতার্শঃ, গ্রহণীরোগ এবং হৃদর ও পার্মবেদনা নিবারিত হয়।

কনকাসবঃ।

সংকৃত্য কনকং শাখামূলপত্রকলৈ: সহ।
তত্নতভূপলং প্রাক্তং বৃষ্মূল্ডচন্ত্রধা ॥
মধুকং মাগধী ব্যাত্মী কেশরং বিষ্টেষ্ডম্ ।
ভাগী তালীশপত্রক সংচুর্ব্যায়াং পলবংশতিম্ ।
জনজোণ্ডমং দ্বা শর্করায়ান্তলাং তথা ॥
ক্ষোদ্রভার্জভুলাঞ্চাপি সর্ব্যং সংমিশ্র ।
ভাগে নিক্ষিপ্য চার্ত্য নিদ্ধানাশসমাত্রকম্ ॥
নিহস্তি নিথিলান্ খাসান্ কাসং যক্ষাণ্যের চ।
ক্ষতকাণ্য জরং জীবং রক্তাপিড্রুরক্ষতম্ ।

শাখা মূল পত্র ও ফল সহিত কুটিত
ধুক্তুর ৪ পল, বাসকমূলের ছাল ৪ পল, যষ্টিমধু, পিপুল, কণ্টকারী, নাগেশর, শুঠ, বামুনহাটা, তালীশপত্র প্রত্যেক চুর্ণ ২ পল, ধাই ফুল
১৬ পল, জাক্ষা ২০ পল, জল ১২৮ সের,
চিনি ১২॥০ সের ও মধু /৬॥০ সের, এই
সমুদ্য উত্তমরূপে মিশ্রিত করিয়া আবৃত
পাত্রে ১ মাস রাখিয়া পরে জবাংশ ছাকিয়া
লইবে। ইহা সেবন করিলে সকল প্রকার
শ্বাস, কাস ও রক্তপিত্র প্রভৃতি নানা রোগ
নষ্ট হয়। মাত্রা—২ তোলা।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

হিকারোগে পথ্যানি।

বেদনং ব্যনং নক্তং ধ্মপানং বিরেচনন্।
নিলা বিশ্বানি চালানি মৃদূনি লবণানি চ ।
জীবাঃ কুলখা গোধ্মাঃ শালকঃ বৃষ্টিকা ববাঃ।
এপতিভিরিলাবাতা জাজলা মৃগপক্ষিকঃ ।

পকং কপিথং লগুনং পটোলং বালম্লকম্।
পৌকরং কুঞ্চুলসী মদিরা নলদমু ৮॥
উন্দোদকং মাতুলুকং মান্দিকং স্বজীজনম্।
অন্ধানানি সর্বাণি বাতশ্লেমহরাণি চ॥
শী গ্রম্পেকঃ সহসা আসো বিশাপনং ভ্রম্।
কোধো হয়ঃ প্রিয়োকেগঃ প্রাণারামনিবেবণম্॥
দক্ষসিক্তমুদাদ্রাণং কুর্চে ধারাজলার্পণ্ম।
নাভূক্বিভাতনং দংহো দীপদক্ষহ্রিস্রা।
পাদগোদ্ গুল্লানাভেক্তব্ধেক্টানি হিকিনাম্॥

হেদক্রিয়া, বমন, নস্তা, ধুমপান, বিরেচন, নিদ্রা, নিশ্ব অথচ লমু অন্ন, সৈন্ধবলবণ, পুরাতন কুল্খ-কলায়, গোপুম, শালি পান্ত, ষষ্টিক ধান্ত ও যব ; এণ (ক্বফহরিণ), ভিত্তিরি ও লাব পকী এবং জাঙ্গল মুগপক্ষির মাংস, नक्षन, शाहीन, किंह-পাকা কয়েৎবেল, মূলা, পুজরমূল, কৃষ্ণতুলদী, মল্প, নিম্ব, গ্রম-জল, ছোলঙ্গ লেবু, মধু, গোমূত্র, কফ বারু-নাশক অরপানীয়, শাতল জল ঘারা পরিষেক; হঠাৎ আদ বিশায় ভয় ক্রোধ ও হর্ষ উৎপাদন; প্রিয়বিচ্ছেদাদি হেতুক উবেগ, প্রাণায়াম এই সকল হিকারোগে হিতকর। জলসিক্ত পোড়া-মাটির ঘাণ, কৃষ্ঠস্থানে জলের ধারা, নাভির উদ্ধানে পীড়ন এবং পাদ্ধয়ের হুই অঙ্গুলি উদ্বেও নাভির হুই অঙ্গুলি উর্দ্ধে দীপদ্ম-হরিজা ধারা দাহ, এই সমস্ত হিকারোগে হিতকর।

হিক্কারোগেহপথ্যানি।

বাতমুত্রোলগারকাস-শকুষেগবিধারণম্। রজোনিলাতপারাসান্ বিরুদ্ধাঞ্চশনানি চ। বিষ্টম্ভীনি বিদাহীনি রুক্ষাণি কফ্লানি চ। নিম্পাবং পিষ্টকং মাবং পিণ্যাকান্প্রামিষম্। অবিস্থাব দস্তকাঠং বস্তিং মৎস্তাংশ্চ সর্বপান্। অয়ং তুর্ঘীফলং কন্দং তৈরভ্তুযুপ্পাদিকাম্। শুক্ল শীতকান্ধপানং হিক্কারোগী বিবর্জ্জেরে ।

বারু মৃত্র উদগার কাদ এবং মলের বেগ-ধারণ, ধূলি বায়ু ও রৌদ্রদেবন, শ্রমজনক কার্য্য, বিরুদ্ধভোজন, বিষ্টক্ষিদ্রব্য, বিদাহিদ্রব্য কৃক্ষদ্রব্য, কৃষ্ণকর দ্রব্য, শিম, পিট্টক, মাষকলায়, পিণ্যাক (তিলসর্যপাদির কন্ধ) ও
অনুপদেশজাত মাংস, মেষীহ্রন্ধ, দন্তধাবন,
বস্তিক্রিয়া, মংস্থা, সর্যপ, অমন্তব্য, লাউ, কন্দশাক (আলু, ওল এভ্তি), তৈলভৃষ্ট দ্রব্য,
পুইশাক এবং গুরু ও শীতল অন্ধ্রপানীয় এই
সমস্ত হিকারোগে অহিত্জনক।

কিদ্মিদ্, ছোটএগাইচ, পুদ্ধরমূল, গরমজল, ত্রিকটু, গোমূত্র ও কদবার্নাশক অন্ন পানীয় এবং ভেষজ, বক্ষপ্রদেশ হইতে উভর পাশ্বে, হস্তবয়ের মধ্যাস্থালমূলে ও কণ্ঠকূপে উত্তপ্ত লোহ ধারা দাহ, এই সমস্ত শ্বাসরেশগে হিত-জনক।

শাসরোগে পথ্যানি।

বিরেচনং স্বেদনব্যপানং প্রছেজনানি স্বপনং দিবা চ।
পুরাতনাং ষ্টিকরক্তশালি-কুল্পগোধ্যথবাং প্রশাস্তাং ॥
শশাহিতুক্তিভিরিলাবদক্ষ-শুকাদরো ধ্যমুগছিজাক।
পুরাতনং সপিরজাপ্রস্তং পরো মৃতকাপি পুরামবৃনি ॥
নিদিদিকা বাক্তকভকুলীয়ং জীবন্তিকামূলকপোতিকঞ।
গটোলবার্তার রুমোনপ্রগানিজ্ঞীরবিশ্বস্কাশ দ্রামবৃদ্ধা
দ্রাক্ষা ক্রটিঃ পৌদরমুক্ষবারি কট্জিয়ং গোজনিত্য মৃত্যু।
দ্রাক্ষা ক্রটিঃ পৌদরমুক্ষবারি কট্জিয়ং গোজনিত্য মৃত্যু।
দ্রাক্ষা ক্রটিঃ পৌদরমুক্ষবারি কট্জিয়ং গোজনিত্য মৃত্যু।
দ্রাক্ষা ক্রটিঃ পৌদরমুক্ষবারি ক্রট্রেয়ানি হিমানি গ্রামবি।
দ্রাক্ষা প্রস্কাশিক্ষানি হিমানি গ্রামবি।
ভদ্বিলোকো চ ক্রইকুলে দাহাত্যি চ ধানিনি গ্রামবি।

বিচেন, স্বেদ, ব্যগান, ব্যন, দিবান্দা, পুরাতন ইপ্তিক ও এজনাল তড়বের অন্ন, কুল্প কলান, যব, গ্যন, শশুক, মনুর, তি,ওলৈ পানী, লাবপানী, কুক্ট, শুকদি পক্ষী, ব্য-দেশজ পানী ও মুগেব মাণ্দ, পুণ্ডন মুত, ছাগছন্ধ, ছাগছত, স্থা, মধু, কণ্টকারী, বেঙুয়াশাক, কুদে নটেশাক, জীবস্তীশাক, কৃদিলা, নাটার পাতা, পটোল, বেগুন, রম্মন, হরীতকী, জামীরলেবু, তেলাকুচা, ছোলঙ্গ,

শ্বাসরোগেইপথ্যানি।

মুক্তোপণারচ্ছাদি তৃট্কাসরোধো
নক্তং ব্রিচ থিকান্তং শ্রাস্ট ।
অপরা ভারো রেণবং স্থাপাদা
বিষ্টটানি আমাধ্যমা বিদাহি ।
অপন্পানামানিষং তৈলভূতং
নিপ্পার্থ প্রেমকারানি মাধ্য ।
রক্তরাবং প্রবাতোক্সপানং
মেধানপিছ সমস্তোহপি হুত্তন্ ।
মহত্যাং কন্যাং স্বপাশ্যারণানং
কুগং শীতং ভ্রমণি খাপ্তমিজন ।

মুক্রেগ, উদ্যাববেগ, ব্যন্তবেগ ভ্রথবেগ এবং কাদ্রেগ ধারণ নহা, বস্তি, ক্রয়া, দন্ত-কাহলার: দন্তর্বন, পরিশ্রম, প্রপশ্যতিন, ভারবহন, ব্রু ও বৌদ্রেশন, বিইন্তিল্বা, মাপ্রসঙ্গ, বিধাহিদ্রব, অনুপ্রাংশ, ভৈলভূষ্ঠ দ্রবা, শিম, কফ্কাবক দ্রবা, মাফ্করাণ, রক্ত-মোক্ষণ, পূর্ববাহুদেবন, অনুপান (আহার বিহা-রাদির পর শীত্র জলাদিপান) মেয়ীগ্রম, মেষী মুচ, চ্রিত জল, মংস্থা, কন্দ্রণাক (আলু, শ্রম প্রভৃতি), সর্যপ, কন্দ্রণাক ও ভিত্রদ আর প্রানায় এই সকল গানবোগির অহিত্রদক্ষ।

ইত্যায়ুর্কেদ-সংগ্রহে হিক্কাশ্বাসরোগানিকাবঃ।

অথ স্বরভেদাধিকারঃ।

অথ সরভেদ-নিদানম্।

অত্যুচ্চভাষণবিষাধ্যয়নাভিঘা ১-मन्द्रवेशः প্রকৃপিতাः প্রনাদয়স্ত । শ্রোতঃস্থ তে স্বরবহেষু গতাঃ প্রতিঠাং হত্যঃ স্বরং ভবতি চাপি হি ষড়িখঃ সং 🛭 বাতাদিভি: পৃথক সর্বৈমে দুসা চ ক্রেণ চ। ৰাতেন কৃষ্ণনয়নাননমূত্ৰবৰ্চা-ভিন্নং শবৈর্বদতি গব্দভবৎ স্বরঞ। পিত্তেৰ পীত্ৰয়নাৰৰমূত্ৰবচ্চা-ক্রয়ালগলেন স চ লাহসময়িতেন ॥ ক্ৰয়াৎ কফেন সভতং কফকুছকঠঃ স্বল্পং শ,নৈৰ্বদতি চাপি দিবা বিশেষাং। সর্ব্বাত্মকে ভবতি সর্ব্ববিকারসম্পৎ তঞ্চাপাদাধামুষয়ঃ স্বর্ভেদমান্তঃ ॥ ধুপ্যেত বাক্ ক্ষয়কুতে ক্ষয়মাপুরাচ্চ বাগেষ চাপি হত্বাক্ পরিবর্জনীয়া। অন্তর্গতং স্বরমলকাপদং চিরেণ মেদোহবয়াবদতি দিমগ্রত্বার্তঃ।

অতি উচৈচ:ম্বরে কথোপকগন ও বেদাদিপাঠ এবং বিষপান ও কণ্ঠদেশে আঘাত এই
সকল কারণে ও এবংবিধ অন্ত কারণে বাতাদিদোষ প্রকুপিত হইয়া সরবহ ধমনীচতুইয়ে
অধিগত হইয়া য়র নই করে। ইহাতেই য়রভেদ রোগ উৎপন্ন হয়। য়রভেদ ছয় প্রকার,
যথা—বাতিক, পৈত্তিক, শ্লৈছিক, সালিপাতিক,
মেদোজ ও ক্রয়জ।

বাতিক স্বরভেদে, মল মূত্র নয়ন ও মানন ক্ষেত্রণ হয় এবং গদিভের স্থায় কর্ণোৱেজ্বক স্বর অরে অরে নির্গত হইয়া থাকে।

পৈত্তিক শ্বরভেদে মল মৃত্র নয়ন ও আনন পীতবর্ণ হয় এবং বাক্য কথনের সময় গলদেশে দাহ উপস্থিত হইয়া থাকে।

শৈষিক স্বরভেদে, কণ্ঠদেশ সভত শ্লেষা বারা ক্ষম থাকায় অতি অল্প আলু বাক্য নিঃস্ত হয়, কিন্তু দিবাভাগে স্থ্যরশ্মি বারা কক্ষের

মন্দীভাব হওয়াতে রোগী অপেক্ষাকৃত ভাল-রূপ কথা কহিন্না থাকে।

সান্নিপাতিক স্বরভেদে, উক্ত বাতাদি দোষ-ব্রয়ের লক্ষণ সকল প্রকাশিত হয়। এই স্বরভেদকে ঋষিরা অসাধ্য কহিয়া থাকেন।

পাতৃক্ষর-জনিত স্বরভেদে বাক্য ক্ষয় প্রাপ্ত হয় এবং রোগির বোধ হয়, যেন উহা ধ্যের সহিত নির্গত হইতেছে, অর্থাং কণ্ঠদেশ হইতে ধ্য নির্গমকালে যেরূপ বেদনা অহুভূত হয়, বাক্য কথনকালে তদ্ধপ বেদনা, অহুভূত হঈয়। থাকে। ক্ষয়জনিত স্বরভেদরোগে রোগী হতবাক্ অর্থাং বাক্যকথনে অসমর্থ হইলে ভাহাকে তাগে করিবে।

মেদোজ স্বরভেদে গ্লদেশ শ্লেমা বা মেদো দ্বারা লিপ্ত হয়। স্কুত্রাং রোগী কঠলগ্ন অস্পষ্ট বাক্য বিলম্বে উচ্চারণ করে ও পিপাসায় কাত্র হয়।

অথ সংভেদ চিকৎসা।

বাতাদিজনিতখাদ-কাদদ্বা যে প্রকার্ত্তিতাঃ।
যোগান্তানত যুঞ্জীত যথাদোষং চিকিৎসকঃ ॥
বাতাদি-দোষ-জনিত শ্বাসত্ম ও কাসত্ম
যে সকল যোগ কথিত ইইয়াছে, চিকিৎসক
বিবেচনাপূর্ব্বক দোষান্ত্রসাৱে স্বরভেদে সেই
সকল যোগ প্রয়োগ করিবেন।

নাতে সলবণং তৈলং পিত্তে সপিঃ সমাক্ষিকম্।
ককে সক্ষারকটুকং ক্ষোদ্রং কবড় ইব্যতে ।
গলে তালুনি কিহ্বায়াং দত্তমূলের চাশ্রিতঃ।
তেন নিক্ষরতে শ্রেমা স্বরশ্চাস্ত প্রামীদতি ।
স্বরোপবাতে মেদোক্তে কফবদ্ বিধিরিব্যতে।
স্বরুক্ত সর্বলে চাপি প্রভাধ্যায় চরেৎ ক্রিয়াম্॥

বাতজ স্বরভেদে লবণের সহিত ঈষত্য তৈল; পিত্তজ স্বরভেদে মধুর সহিত ছত; এবং কফল স্বরভেদে মধুর সহিত ঘবকার ও

ক্রিকটু মিলিত। করিয়া কবল করিবে। তন্দারা
গল তালু জিহবা ও দস্তমুলাশ্রিত শ্লেয়া নির্গত
ও স্বর বিশুদ্ধ হইবে। মেদোজ স্বরভঙ্গে কফজ
স্বরভেদের তায় চিকিৎসা কর্ত্তব্য। ক্ষয়জ ও
ক্রিদোষজ স্বরভেদ ছন্টিকিংস্থ বলিয়া রোগিকে
প্রত্যাধ্যান পূর্বক ক্ষয়জস্বরভেদে ক্ষয়কামোক্ত
এবং ক্রিদোষজ স্বরভেদে বাতাদি ক্রিদোষোক্ত
ভিকিৎসা করিবে।

আজে কোকং জলং পেয়ং জদ_া যুভগুড়োদনম্। কীরানুপানং পিজোগে পিনেৎ সপিরতন্তিতঃ। শিশ্বলী পিশ্বলীমূলং মরিচং বিশ্বভেষজম্। পিবেন্যুক্তেশ মতিমান্ কফজে স্বরদংস্বয়ে।

বাতপ্রধান স্বর্থকে স্বত্ত গুড়ের সহিত্ত অন্ন ভোজন করিয়া ঈষহক্ষ জল পান করিবে। পিতাধিকা স্বরভেদে জ্য়ান্ত্রপানে বাসাস্থতাদি পান কর্ত্তর। কফ্জ স্বর-ভেদে পিপুল পিপুল্মুল মরিচ ও শুঠ ইহাদের চুর্ণ গোম্ত্রের সহিত পান করিবে।

তৈলাক্তং স্বরভেদে:বা পদিরং ধাররেঝ্থে। পণ্যাং বা পিশ্বলীযুক্তাং সংযুক্তাং নাগরেণ বা ॥

সরভঙ্গ বোগে তেলাক্ত খদির অথবা হরীতকীও পিপুলচ্গ কিংবা হরীতকীও শুঠ চূর্ব মুখে ধারণ করিলে বিশেষ উপকার হয়। অজমোদাং নিশাং ধাত্রং কারং বহিং বিচ্গা চ। মধুদর্পিযুতং লীচ্য স্বরেজনমপোহতি॥

বনধনানী, হবিদ্রা, আমলকী, ববক্ষার ও চিতালুসমভাগে লইয়া বিচ্পিত এবং ঘত ও মধু সংযুক্ত করিয়া লেহন করিলে সরভেদ বিনষ্ট হয়।

বদরীপত্রকন্ধং বা ছত চ্ন্তং সমৈশ্বনম্। স্বরোপয়াতে কালে চ লেহমেনং প্রযোজয়েৎ ॥

দৈশ্ববেৰ সহিত কুলপাতা প্ৰেষণ কৰিয়া, সেই পোষত কল্প বহুল ছাতে ভাজিয়া সেই মৃত সহ আলোড়িত করিয়া লেহন করিলে স্বর্ভেণ ও কাস প্রশমিত হয়।

শক্রামধুমিজাণি শৃতানি মধুরৈঃ সহ। পিবেৎ প্যাংসি যজোটেচবন্ডোইভিইতঃ শ্বঃ॥ উচ্চ কথা বলিতে যাহার স্বরভঙ্গ হয়, সেই বাক্তি কাকোল্যাদিগণের সহিত হয়, পাক করিয়া তাহাতে মধু ও চিনি প্রক্ষেপ দিয়া পান করিবে।

মুগনাভ্যাদিরবলেহঃ।

মূগনাভিঃ সম্প্রেলা লবকর্ ধ্যানি চ। হর্কীরী চেতি লেছোল্যং সধুস্পিনস্যাস্তঃ। বাবস্তম্প্র জয়তি স্বরলংশস্ম্পিত্য ।

মুগনাভি, ছোট এলাইচ, লবন্ধ ও বংশ-লোচন ইহাদের চূর্ণ ন্বত ও মধুর সহিত অবলেহন করিলে, বাক্সন্ত ও স্বরভ্রংশ নিবারিত হয়।

हवाि मिठ्री म्।

চ্যায়বেতসক্তিকভিন্তিজ্ঞীক হালীশজীরকভুগাদহলৈ: সমাংশৈ: । চূর্ণ প্রড়ৈবিস্থাদিতং ত্রিহুগজিযুক্তং বেষ্বাগীনসক্ষাক্ষিত্র প্রশান্তম্ ॥

(ভিন্তিভাকং মহাজিকম্)

ৈচ, অমুবেতস, ত্রিকটু, মহাদ', তালীশ
পত্র, জীরা, বংশলোচন, চিতামূল, গুড়ত্বক্,
তেজপত্র ও এলাইচ এই সমুদায় দ্রব্য সমভাগে
লইয়া পুবাতন গুড়েব সহিত মন্দন করিয়া
দেবন করিলে স্থাভঙ্গ, পীনস ও শৈমিক
অক্চিনষ্ট হয়।

নিদিগ্নিকাবলেহঃ।

নিদিমিব। তুলা থাপা হদকং গ্রন্থিকস্ত তু ।
তদকং চিত্রক্তাপি দশমূলক তৎসনম ।
তলগোগছাই কংগাং গৃহ মাদাচকং তিই ।
প্তে কিপেং তদজন্ত পুবাণস্ত শুডুস্ত চ ।
স্বব্যেক ন ৮২। তু লেহনং সাধু সাধ্যেং ।
কান্তা প্রানি পিল্লনাম্বিলাতকপলং তপা ।
ম্বিচনা পলগৈকং স্বব্যেকতা চুর্ণিতম্ ।
মধ্যং বুডুাং দ্বা তদগায়াদ্ ংবানলম্ ।
নিদিমিকাবলেহোংসং ভিষগ্ ভিষ্ নিভিম্ তং ।
ব্যুজ্বহ্যো মুগাঃ প্রিভিয়ারহরত্বপা ।

কাসখাসাগ্রিমান্যাদি-গুল্মমেহগলাময়ান্। আনাহমূত্রকুচ্ছাণি হস্তাদ্ গ্রন্থকি, দানি চ।

কটকারী ১২॥ সের, পিপুল্ম্ল /৬। সের, 16জা /৩০ পের এবং দশমূল /৩০ পির এবং দশমূল /৩০ পির ; এই সমস্ত একতা ১২৮ সের জলে পাক করিয়া ১৬ সের অবশিষ্ট গাকিতে নামাইবে। তদনস্তর ছাকিয়া উহার সহিত /৮ সের পুরাতন গুড় মিশ্রিত করিয়া পুনং পাক করিবে। লেহবং ঘন হইলে উহাতে পিপুল্চুণ ৮ পল, তিছাতক (দাকচিনি, এলাইচ ও তেজপত্র) চুর্ণ মিলিত ৮ পল ও মানচ্চুর্ণ দল প্রক্রেপ দিয়া নামাইবে এবং শাতল হথলে /॥ অক্রিসের মধু উহার সহিত মিশ্রিত করিবে। অগ্রির বল বিবেচনা করিলে স্বর্ণের, প্রার্থিত রোগ সকল বিন্তু হয়। স্থান করিলে স্বর্ণের, কার ও অগ্রিমান্দা প্রভাত সোলোর হিছা তারিমান প্রভাত রোগ সকল বিন্তু হয়।

কল্যাণাবলেহঃ।

মংকিলা বচা কুঠং পিলানী বিশ্বভ্যলন্।
জ্জাজী চাজমোলা চ স্থান্ত্ৰদক্ষৰ ।
এতানি সমভাগানি চল্পুণ্ডন কাল্ডেং।
তচ্চুণ্ং স্পিনালোড়া প্ৰাহং ভ্ৰুদ্লেল্ড।
একবিংশতিলাজেল ভবেডে তিগলা নৱ:
মেগ্ৰুক্ভিনিলোধো মন্তকে।কৈল্নিশনা।
জ্ডুগ্ৰুক্তি কল্লাণ্ডো গ্ৰেং ১

হরিদা, বচ, কুড়, পিপুল, গুঠ, ক্লফ্জীনা, ব্যানী, ব্যানী, ব্যানি, ব্যানির (নিউমধুক অনে কেন্দ্র কেন্দ্র বাদুনহাটা ও নাইনধু প্রহণ করিল: পাকেন) ও নৈন্ধব লবণ, ইহাদেব প্রভ্যেকের চুর্ব সমান পরিমাণে লইন। তাহা গ্রান্ধ্র আলোভিত করিমা দেই স্বত প্রত্যহ দেবন করিলে ও সপ্তাহের মধ্যে মন্ত্র্যা শুনির ও স্বর্থ-বিশিষ্ট হয়।

ভৈরবে। রদঃ।

तमर शक्षर नियर छेक्कर मृतिहर ह्याहित्यकम् । व्यक्तिकक्क ब्रह्मरेसय मरमस्त्रा वृद्धिकार उट्टाः ॥ গুঞ্জাত্ররপ্রমাণেন থাদেৎ তোরাতুপানতঃ। স্বরভেদং নিহস্তাণ্ডি খাসং কাসং স্বত্নস্তরম্ ॥

পাবদ, গদ্ধক, বিষ, সোহাগা, মবিচ, চৈ ও চিতা এই সকল দ্রব্য একত্র করত আদার রসে সাড়িয়া তিন ক্চ পরিমিত বটিক। প্রস্তুত করিবে। অনুপান—জ্বল। ইহাতে স্বব্তেক, শ্বাস ও কাস বিনষ্ট হয়।

ভ্যেপকাত্রম।

জ্ঞান মেচকমারিতং পল্মিতং বাংগী বলা গোক্ষরং কণ্ডা গির্মালিয়জ্জু বৃদ্ধনাঃ পত্রং তথা বাদরম্। ধা বাবালিয়জ্জু চিকা: পূখাতঃ সদ্ধৈঃ পলাংশৈষু তিং সামর্ক্ষণাত্রমনার্ম্মং প্রক্রিতং কুষা মনা মেবিতম ॥ বাংগোজং কফপিছেরং অবগতং ধঞা তিনোধায়ক-মতাদেবনতো হতং বতনিধং পানামনোধোন্তবম্। ন সং আসম্বোজতং সমক্তং হিকাং ভূমাং ক্ষালা-মনাংশি প্রশাহনের বহুনিধং গোধং ক্ষালাবন দম্॥ হত্তি আশকমল্লম্ভতংবং ব্যাণাত্রস্থা পরম্ বংকার্ দ্ধিকরং রুমায়নবরং সক্রামন্ত্রংসি তং ॥

জারিত ক্ঞাল ১ পল পরিমাণে লইয় কণ্টকারী, বেড়েলা, গোক্ষুর, স্থতকুমারী, পিপুল্মল, ডুমলাজ, বাসক, কুলপাত্র, আমলা, হারদ্রাও ওল্প ইহাদের প্রত্যেকর ১ পল পরিমাত রসে পূথক্ পূথক্ ভাবনা দিয়া ১ প্রতি প্রমাণ বিচিকা করিবে। ইহা সেবন করিলে স্মপ্রকার সরতঞ্জ, কাস, খাস, উরোগ্রহ, গ্রহণী, জন, শোগ ও হিন্ধা প্রভাত নানাবোগ নগ হয়। ইহা আমকারক ও রসায়ন।

ব্যাদ্রায়তম্।

বাংলাপ্রন্থিকার রাজাবাট্যালগোক্ষুরবােবিঃ।
স্পিঃ অরোপথাতং হস্তাৎ কাসক পঞ্চবিধ্।
ওক্ষরবামুশাদায় অর্মামানসম্ভবে।
বারিগান্তভবে সাধাং আহুং পাদাবশেষিত্য।

গ্ৰায় গ্ৰহ /৪ সের ; কণ্টকারীর স্বস ২০ সের ; কলার্থ—রামা, বেড়েলা, গোঞ্চ^{ন্}, ত্রিকটু মিলিত /১ সের । কাঁচা কণ্টকা^{নী} না পাওয়া গেলে শুক্ষ কণ্টকারী /৮ সের, ৬৪ সের জলে সিদ্ধ করিয়া ১৬ সের থাকিতে নামাইয়া ঐ কাথের সহিত মত পাক করিবে। মাত্র'—২ তোলা। এই মত পান করিলে স্বরভেদ ও কাস নিবারিত হয়।

সারস্তয়ত্য।

(ব্রাকীয়ভণ্)

সমূলপ্রামাণায় আন্দাং প্রকাল্য বারিণা। উদুগলে ক্ষোদয়িয়া রসং বথেণ গালয়েৎ । রদে চতুগু ণৈ ভশ্মিন্ যুতপ্রস্থং বিপাচয়েৎ। ঔষধানি তু পেয়াণি তানামানি প্রদাপয়েৎ ॥ হরিদ্রা মালতা কুঠং ত্রিবৃতা স্থরীতক'। এতেয়াং পলিকান ভাগান্যান্তি কাণিকাণি চন পিল্পলোহ্য বিভঙ্গানি দেন্ধবং শুকরা বচা। সক্ষমেত্ৰ সমালেতি। শবৈষ দ্বাধা পচেব। এতৎ-প্রাশিত্মাকের বাবিভাগি প্রাজ্যারতে। সপ্রবিজ্ঞাধোণে কিরবৈ সহ গাঁধার। অন্ধাসপ্রয়োগেণ সোমরাজীবপুভবেৎ। মাসমাজপ্রয়োগের ঞ্চমাজ্রের ধারয়েং। হত্যষ্ঠাদশ কুষ্ঠানি অশাংসি বিবিধানি চ। পঞ্জন্মান প্রমেহাংশ্চ কাদং পঞ্চিধং তথা ! বন্ধানামপি নারীণাং নরাণামধ্রেতসংম্। মূতং সার্থতং নমে বলবণাগ্রিকানম ১ (হলানী তবৈরিদং ব্রাস্থায় ৩মুচাতে।)

মূল ও পতা সহ াজাণাক জলে বাত করিয়া উদ্ধলে পেষণ করত তাহার রস নিঙ্ডাইয়া লংবে। এই রস ১৬ সের, স্বত ৪ সের। কন্ধার্থ—হাজা, মালতাপুলা, কুড়, তেউড়ীমূল ও হরীতকী প্রত্যেক ১ পল, পিপুল, বিড়ঙ্গ, দেন্ধব, চিনিও বচ প্রত্যেক ২ তোলা। মূহ আগ্রতে পাক করিবে। (এক্ষণে ইহা রাজায়ত বালয়া প্রাস্থিক।) সপ্তরাত ইহা সেবন করিলে কিন্নরের ভায় কাস্তি; অন্ধ্ মাদ সেবন করিলে স্থাতশক্তির অত্যস্ত প্রাথমা হয়। ইহা দারা স্বর্গক্তি, কুড়, অশং, গুলা, প্রমেহ ও কাদ প্রভৃতি রোগ বিনষ্ট প্রবং বল, বর্ণ ও আগ্ন বাদ্ধিত হয়।

ভূপরাজাগ্যং ঘূত্য।

ভূকরাজায়তাবলীবাসকদশমূলকাসমন্দরসৈ:।
সবি: সপিপ্পলীক: সিদ্ধাং অরভেদকাসজিমাধুনা॥
স্বত /৪ সের। ভূকরাজ, গুলঞা, বাসক,

দশমূল 'ও কালকান্ত্ৰেল ইহাদের কাপ ১৬ দেশ এবং পিপুলের কল /১ সের। এই কাপ 'ও কল্প সহ যথাবিধানে ত্মত পাক করিয়া শীতল হইলে /১ সের মধু প্রফেপ দিবে। এই ত্মত পান করিলে স্বরভেদ ও কাদরোগ নিবারিত হয়।

ত্রথ পখ্যাপখ্যবিধিঃ।

পরভেদে পথ্যানি।

বেলো বাস্তপ মপ্ৰিম বিৰেকঃ ক্ষরতাগই।।
১৯৯ ভালে শিবাবেখো যবা লেছি এখালয়, ॥
২ংসাটবাত্ৰ মতুড়-কে কিনাংস্থল।
গোক-টকঃ কাকমাটা জাবস্তা বালমূলকম্॥
ডাক্ষা পথ্যা মাতুলুক্ষং লগুনং লবণাৰ্ডকম্।
ভাস্থলং মৰিচং স্থিত পথ্যানি স্বরভেদিনাম্।

বেদ, বান্তজিন্তা, দুমপান, বিচেচন, কবলবারণ, নহু, কপালে শিরাবেধ এবং যব ও
রক্তশালি, স্বরভেদরোগে প্রা। হংস, বহুকুকুট ও মহার মাংসেন রস, হ্রা! (মছাবিশেষ),
গোক্ষ্য, কাকমাচা, জীবন্তীশাক, কচিমূলা,
দ্রাফা, হ্রাতক্যা, ছোলন্স লেবু, ংম্বন,
দৈন্ধব, আনা, ভাগ্ল, গোলমানে ও মৃত এই
সমন্ত স্বরভেদরোগিঃ প্রা।

সরভেদেহপথ্যা ন।

আমং কপিথং ববুলং শাহ্ৰেং আখবানি চ। তিনুকানি কষাগ্ৰি স্বিং প্ৰপ্নং গ্ৰন্থমন্। অন্পানক যতেন প্ৰভোগী বিৰ্থমেং ॥

কাচ: করেংবেল, বকুল, শালুক (কুম্দাদেব মূল), জামকল, গাব, ক্ষায়স্তব্য, বমন,
নিদ্রা, আনক বাক্যকথন এবং অমুপান
(আহাব বিহারাদিব পর শতেশ জ্ঞাদি পান)
এই দকল ধরতেগগোগে অহিতঞ্জনক।

ইত্যায়ুর্কেদ-সংগ্রহে স্বরভেদ।ধিকারঃ।

অথারোচকাধিকারঃ।

অথারে চিক-নিদানম্ ।

বাঙাদিভিঃ শোকভয়াতিলোভ-ক্রোধৈম নোম্বাশনরূপগক্ষেঃ। অরোচকাঃ প্রাঃ পরিস্ট্রদয়ঃ ক্ষায়বক্ত শচ মতোহনিলেন। কট মুখকং বিরুদক পুতি পিতেন বিভালবর্ণ কলুম্। মাধ্যাপৈচিছলাগুরুত্বশৈত্য-বিবদ্ধসম্বন্ধ তং কমেন ॥ অরোচকে শোকভয়াতিলোভ-ক্রোধান্ত হতা শুচিগন্ধ প্র শুব স্বাভাবিককাস্তমপ'রুচিশ্চ विद्यामारङ निक्तमः ভবেৎ पू ॥ সচ্চুত্ৰপীড়নযুতং পৰনেন পিতাৎ তুড় দাংচোষণ্ডলং সককগ্রসেক্ষ্। ল্লেম্মান্সকং বছরুজং বছভিন্চ বিভাদ-বৈশ্বণামোহজ্জতাভিরপ'পরকা 🛚

অরোচক পাঁচ প্রকার। যথা—বাতজ, পিত্তজ, শ্লেমজ, সন্মিপাতজ অরোচক এবং শোক, ভয়, অভিলোভ, অভিজ্ঞোব ও ঘুণা-জনক আহার, ঘুণাজনক কপা, ঘুণাজনক গল এই সকল আগন্তুকারণে উংপন্ন আগন্তুজ অরোচক।

তন্মধ্যে বাতজ অরোচকে, মুগ ক্ষায়নস-বিশিষ্ট এবং দন্ত অমতোজনের স্থার হর্ষয়ক্ত হইরা থাকে। পৈত্তিক অরোচকে মুগ ভিক্ত, অম, বিস্থাদ, তুর্গন ও উষ্ণ হয়; এবং গ্রৈত্মিক অরোচকে মুখ লবণ, মধুর, পিচ্ছিল, গুরু, শীতল, আহারাক্ষম ও ক্ললিপ্ত হুইয়া থাকে।

শোক, ভয়, অভিলোভ, জোন এবং অহন্ত ও অপবিত্র গদ্ধ এই সকল আগত্তকারণ-জাত অরোচকে মুখ স্বাভাবিক রসবিশিপ্ত থাকে, মর্থাৎ আস্বাদের কোনরূপ ব্যতিক্রম ঘটে না, কিত্ত অক্লচি হয়। ত্রিদোষ্ক অরো-চকে মুখ একরূপ রস্বিশিপ্ত থাকে না, বাত- জাদি-অরোচকোক্ত সকল প্রকার বিশ্বতি রসই উৎপন্ন হইয়া থাকে।

বাতজনিত অরোচকে হৃদয় শুলবেদনা

যক্ত; পৈত্তিক মরোচকে তৃষ্ণা, দাহ ও চ্বণবৎ পীড়া, শ্লৈত্মিক অরোচকে কফপ্রসেক হয়,
এবং ত্রিদোষজ অরোচকে বাতজাদি ত্রিবিধ
অরোচকেরই লক্ষণ সকল ঘটয়া থাকে।
আগন্তকে অর্গাৎ শোকাদি আগন্ত-কারণ-জাত
অরোচকে ব্যাকুল-চিত্তা, মোহ ও জড়তা
উপস্থিত হয়। *

অথারোচক-চিকিৎসা।

বস্তিং সমীরণে পিতে বিরেকং বমনং কফে। কুষ্যাদৃহত্যাত্ত্বলানি হধণঞ্চ মনোদ্বজে।

বাতিক অকৃচি রোগে বস্তিজিন্না, পৈত্তিকে বিরেচন, কফজে বমন এবং মনোবিখাত-জনিত অরোচকে ১৩ অনুকৃষ্ ও হর্মপজিয়া কর্তব্য।

ভোজনাত্রে সদা পথাং লবণান্তকভক্ষণম্। বোচনং দীপনং বহে জিলোক্সবিশোধনম্॥

প্রত্য হ দিবাভোজনের পূর্বের লবণ ও আদ একত্র ভঙ্গণ করিলে আহারে ক্ষৃতি, অগ্নির দীপ্তি এবং জিহন: ও কঠের বিশোধন হয়।

বু ঠ° দৌৰচ্চল¦জাজী শক্ষা মরিচং বিভূম্। ধাতোলাপলকে শার-পিপ্ললীচন্দনোৎপ্**ল**ম॥

* চরক শুশত এথে অরোচক জিবিধ বলিয়া উত্ত আছে। গণা— অরুচি, অনগ্লাভিনন্দন ও ভক্তবেন। অক্লচির কক্ষণ এই বে, উহাতে কুধা সত্ত্বেও এছিকি করিতে পারা যায় না। অনগ্লাভিনন্দন রোগে পার অভিলেষিত হহলেও পাহতে পারা যায় না। অংর ভক্তবেবে আহারের এবণ, অরণ, ক্লমন, থাণ ও লপ্তেবি বিরক্তি জন্মে। লোধ্ৰং তেজোৰতী পথা জ্যেষণং স্বৰংগ্ৰহণ । আৰ্দ্ৰদাড়িমনিৰ্য্যাসন্চাজাজী শৰ্করা তথা ॥ সতেলমান্দ্ৰিকাস্থেতে চড়ারঃ ক্ষড়গ্ৰহাঃ। চড়ুরে!হরোচকান্ হ্যুৰ্বাভাস্তেকজন্ধজান্ ॥

কুড়, সচললবণ, জীরা, চিনি, মরিচ ও বিট্লবণ। আমলকী, এলাইচ, পদ্মকাষ্ঠ, বেণার মূল, পিপুল, চন্দন ও নীলোৎপল। লোধ, চৈ, হরীতকী, শুঠ, পিপুল, মরিচ ও যবক্ষার। কচি দাড়িমেন রস, জীরা ও চিনি। এই চারি প্রকার যোগ (চূর্ণ) মধু ও তৈলের সাহত মিশ্রিত করিয়া কবল ধারণ করিলে বাতজ, পিত্তজ, কক্জ ও ত্রিদোষজ অক্ষচি প্রশমিত হইয়াপাকে।

ত্বপুত্তমেলাধান্তানি মৃত্তমামলকং বিচঃ।
ত্ব চ দান্দী যমাক্তম্চ পিঞ্চলাত্তেজেবেতাপি।
যমানী ভিডিড়ীকক পদৈতে মৃথানাধনাঃ।
লোকপাদৈরভিহিতাঃ সর্বাবেচকনাশনাঃ।

দারু চিনি, মৃত্য, এলাইচ ও ধনে। মৃত্য, আমলকী ও দারু চিনি। দারু চিনি, দারু হরিদ্রা ও যানী। পিপুল ও চৈ। মানী ও ঠে হুল। এই পাঁচটি নোগ মুখে ধাবণ করিলে মুখেব শুদ্ধি ও মর্ব্ধ প্রকার অক্রচির শাস্তি হয়।

অ'শ্লকাগুড়তে এক সংগলামরিচায়িত্য। অভ্যন্ত চ্ছন্দরোগের শস্তং কবড়ধারণম।

পুরাতন তেঁতুল ও গুড়ের জলে দারুচিনি এলাইচ ও মরিচ চূর্ণ মিশ্রিত করিয়া কবল করিলে, অরুচি রোগে বিশেষ উপকার হয়। দারুচিনি প্রভৃতির চূর্ণ এইরপ মাত্রায় মিশা-ইবে, যাহাতে কিঞ্ছিৎ কটুরস ও সুগন্ধ হয়।

কারবাজাজী মরিচং জাকা বৃকান্নদাড়িম্ম। সৌবচ্চলং গুড়া ক্ষোত্রং সক্ষারে:চকনাশন্ম॥

ক্ষজীরা, জীরা, মরিচ, দ্রাক্ষা, মহার্ডক বো আসকল), দাড়িম, সচললবণ, গুড় ও মধু একতা মিশ্রিত করিয়া মুখে ধারণ করিলে সর্বাপ্রকার অকৃচি প্রশমিত হয়।

> আণ্যপানি ত্রিফলা রজনীধ্যক চুণীকুতানি ববশুকবিমিশ্রিতানি। কৌজাবিতানি বিতরেগুগধারণার্থ-মস্থানি ভিজ্কটুকানি চ ভেষজানি॥

ত্রিকটু, ত্রিফলা, হরিদা, দারুহরিদা ও নবক্ষার, ইহাদের চুর্ণ অথবা অন্তান্ত কটুতিক্ত দ্রবা (দারুটিনি ও এলাইচ প্রেভৃতি) মধু মিশ্রিত করিয়া মুখে বারণ করিলে অরুচি রোগ দুরীভূত হয়।

বিট্চুৰ্মধূমংযুকোরসোদ'ভিনসভবঃ। অদংধ্যুমপি মংহজাদক'চং বকু ধুরিতঃ॥

বিট্লবণ ও মধু দাড়িমের রদের সহিত মিশ্রিত করিয়া কবল করিলে অসাধ্য অকটিও প্রশাস্ত হয়।

রাজিক'জীরকৌ 'পষ্টো ভূগুং হিঙ্গু সন্গেরম্। দৈন্ধাং দ'দ গো': সর্বং বস্থপতং প্রকলমেৎ ॥ ভাষনাত্রং ক্ষিপেৎ তক্ষং যথা স্তাক্ষেতিশতনা। ভক্ষমেত্রত্বং সজো বেগ্টনং বঞ্চিবর্জনম্॥

রাইদর্যপ জীরা ও হিং ভা**লি**য়া চূর্ণ করিবে, ঐ চূর্ণতায় এবং শুঠচূর্ণ ও দৈদ্ধবলবন প্রভ্যেকের এক এক ভাগ, গব্য দিদি সর্কানান, এই দকল দ্রব্য একএ আলোড়ন করিয়া বঙ্গে ছাকিয়া লাইবে। পরে উহাতে সর্বাসমষ্টির দনান গ্রাভক মিশ্রিভ করিয়া দেবন করিবে। ইহা সন্ত ক্রচিকর ও অগ্রিবর্দ্ধক।

नाष्ट्रिशानि हुर्गम्।

্ব পলে দ'ড়িমাদটো পণ্ডাদ্ ব্যোক্ত পলার্য। ক্রিহুগ'লপলঞ্চৈক্ত চূর্বমেকত ক'রয়েই। এচচূর্বং মাত্রয়া ভুক্তমরোচকহরং পরম্। দাপনং পু'চনক স্তু'ৎ পীনসম্বরকাসকিং।

অম দাড়িম চূর্ণ ২ পল, থাড়গুড় ৮ পল
এবং ত্রিকট্ ও পল, ত্রিস্থগদ্ধি (দাকচিনি,
এলাইচ, তেজপত্র) ১ পল, এই সকল একত্র
মিশিত কবিয়া উপস্কু পরিমাণে সেবন
করিবে। ইহা অফুচিনাশক, অগ্নির দীপক,
পাচক এবং পীনস জব ও কাস নিবারক।

যমানীযাড়বঃ।

যমানী তিপ্তিড়ীকঞ্চ নাগরকায়বেতসম্।
দ'ড়িনং বদরকায়ং কাবিক'ণাপকল্লেং ।

ধান্তসৌষর্করাকাজ-বরাজধান্তকাবিকম্।
পিপ্পলীনাং শতকৈব ছে শতে মরিচন্ত চ ॥
শকরায়াকে চড়ারি পলান্তেকত্র চুর্ণয়েছে।
জিহ্বাবিশোধনং জন্তঃ উচ্চূর্ণ ভক্তরোচনম্॥
জহপাড়াপার্ধশৃক্ষং বিবন্ধানাহনাশনম্।
কাসখাসহরং গ্রাহি গ্রহণ্যশৌবিকারন্তং॥

যমানী, তেতুল, গুঠ, অমবেতস, দাড়িম ও অমকুল এই সমুগায়ের ও,ত্যেকের ২ ভোলা, ধনে, স্কুললবণ, জীবা, গুড়ত্বক প্রভ্যেক ১ ভোলা, পিপুল ১০০টা, মনিচ ২০০টা, চিনি ৪ পল। এই সমুদায় একতা কদন করিয়া লইবে। ইহা সংগ্রাহী ও হল্প। এই চুর্ণ মুশে ধারণ করিয়া জ্বমে ক্রমে গলাবংকরণ করা কন্তব্য। ইহাতে জিল্লাগুলি, অন্যে ক্রচি এবং হৃদ্যোগ, পার্যপূলা আনাহ ও কাসাদি বোগ নষ্ট হয়।

কলহংসম্।

অস্তাদশ শিশু,ফ্লামি দশ মারিচানি বিংশতি প্রস্তাশত আদ্রেকপলং গুড়পলং প্রস্তাক্তরারনাপজ্ঞ চ। এড দ্ বিত্লবশ্সাহিতং প্রশাহিত স্বাভিন্দাবিদ্যা বাজনস্থাপতি জেলং কলহংসকং নাম।

্রাজ্যেত্র সভান ও-ম্বিত্র প্রবৃত্তির চাই চাই-ছে তিন্ধ চাই, চাইজ্য হল মিলিয়া প্রম্ । প্রত্যেক্মিতি কেটিয়া কলাংসাক্ কলাব্যক্ষক মাদিশু কলাংসাক্ষা।)

সজিনাবীজ ১৮ ট, মান্চ ১০টা, পিপুল ২০ টা, আদা ১ পল, গুড় ১ পল, কাজি ১২ সের, বিট্লবণ ১ পল, এই সমুদায় মহনদণ্ড দ্বারা উদ্ভমরূপে মহন করিয়া ভাহার সহিত চাতুর্জ্জাত চূর্ণ (৬ড়্ছক্, ডেজপ্রে, এলাইচ ও নাগেশ্বর) ১ পল মিশ্রিত করিবে। এই ঔষধ সেবনে কলহংসের ন্তায় জতি উৎক্ষ্ট কণ্ঠসর হর বলিয়া ইহার নাম কলহংস। ইহা জ্যাবিক্ষক।

তিন্তিড়ীপানকম্।

ভাগান্ত পঞ্চ চিঞায়াঃ খণ্ডস্তাপি চতুগুণীঃ। ধাস্তকার্ডকয়োভাগান্চাতুর্জ্জাতার্দ্ধভাগিকম্। ছিন্তণং জলমেতেষামেকপাতে বিলেণ্ডিতম্। পিহিতং তপ্তত্নগোন ততো বস্ত্রপরিপ্পৃত্য ॥ বিধিনা ধূপিতে পাতে কৃত্য কপূরিধাসিতম্। নুপ্যোগ্যমিদং পানং ভবেদ্যুক্তা ক্যোজিতম॥

বীজাদিরহিত স্থপক তেঁতুল ৫ পল, চিনি ২০ পল, স্থপিষ্ট ধনে ৪ তোলা, আদা ৪ তোলা, গুড়স্বক চূর্ণ ১ তোলা, তেজপত্র চূর্ণ ১ তোলা, এলাইচ চূর্ণ ১ তোলা, নাগেশ্বর চূর্ণ ১ তোলা, জল ৫৩ পল; এই সমুদায় নূত্রন মুংপাত্রে স্থাপন ও হস্ত মানা আলোড়ন কিন্মা কিঞ্চিং উষ্ণকুগ্ধ মিলিত করিয়া গালিয়া লইবে। পরে অগুরু শুভূতি মারা ধূপিত নূত্রন মুংপাত্রে রাখিয়া কপুনাদি মারা স্থবাসিত করিয়া ৪ দশু কাল রাখিবে, পশ্চাং সেবনীয়। ইহা রাজবোগ্য পানীয়।

অদিকনাতুলুঙ্গাবলেংঃ |

আনেকপ্রস্তান্ত । দ্বিং শং গুড়ং ক্ষিপের।
বৃদ্ধ বাং পুর আন । লিফিরা বিচল্পর ।
সক্ষে নলাব্রিনা পজা। চত্রেমানি বিনিন্ধিপের।
বিলাওকং বিবাটুকং নিজলা বাসমের চা।
চিত্রেকং অভিকং ধান্তং ভারকদ্বমের চা।
ক্ষাংশং এলচুনান্ত মেল্যিরা তু ভক্ষরের।
অরোচকশন্তবন্ত্রিনাপিকর্যং প্রম্।
কামলাপাভুশোলল অাসকাস্থর প্রম্।
আধানেদ্রভ্যানি প্রাহশুলে চানাশ্রের।

আদার রস /৪ সের, গুড় /২ সের, টাবা লেবুর রস / । ০ সের ; এই সমস্ত মৃহ অগ্নিতে পাক করিয়া ত'হাতে নিয়াণ্ণিত চুর্ণ সকল ২ তোলা মাত্রায় প্রক্ষেপ দিবে। প্রমেপা— গুড়ত্বক্, ডেজপত্র, এলাইচ, শুঠ, পিপল, মরিচ, আমলকী, বহেড়া, হরীতকী, হরালতা, চিতা, পিপুলমূল, ধনে, জীরে ও কালজীবে। এই ঔষধ সেবন করিলে অরুচি, ক্ষয়, কামলা, পাণ্ণ, শোথ, খাস, কাস, আগ্রান, জঠর, গুলা, প্রীহা ও শূল রোগ নই এবং অগ্নি প্রদীশ্ভ হয়।

त्रमाला।

আর্ক'দুকং স্থাচিরপণু বিষয় সাধার প্রজ্ঞান বাজুল পলানি শশিপ্রজ্ঞা।
সাপিপেলং মধুপলং মরিচিকিবং
শুঠাঃ পলার্জমিপি চার্জপলং চতুর্ণাম্ ।
শুরোপলে ললনরা মূহপাণিঘুষ্টা
কপু রহুর্বহরভাকু চডাগুসংস্থা।
এবা বুকোদরকু তা স্বরদা রসালা
বাস্থাদিতা ভগবতা মধুস্পনেন ।
রস'লা বুংহণী।বুষাা বিজ্ঞা বল্যা রাচিপ্রদা ॥
(আন দধ্যে ন হৈছণ্ডিভি কেচিৎ।)

অম দিশ /৮ দের, নির্মাল চিনি /২ দের, মৃত ১ পল, মধু ১ পল, মরিচ চুর্প ৪ তোলা, শুড় ফক্, তেজপার, এলাইচ, নাগেশ্বর প্রত্যেক ১ তোলা। কোন স্করী রমণী কোমল হত্তে খেত পাথরে এই সম্নায় একত্র প্রাদদিত ও কর্প্রাদি ছারা স্বাদিত করিয়। ভাগুনধাে সংস্থাপন করিবেন। ইহার নাম রসালা। ইহা পৃষ্টিকর, বৃষ্য, বলপ্রাদ, স্থিও ক্রচিকর।

হলে। চনা ভ্রম্।

বলং স্থানী গৈ গগনন্ত বজ্ঞকং
তেজোবতীকোলনুশারদাড়িনশু ।
ধাত্রায়লোনীকৃচকং পূশগ দশপলোন্মিতং মন্দিত্যেব সেবিতম্ ॥
অরোচকং বাতকক্রিদোবজং
পিভোত্তবং গক্ষসমূজ্ঞবং নৃণাম্ ।
কাসং স্থরাযাতমুরেগ্রহং রুজং
খাসং বলাসং যকুতং জগল্পরম্ ॥
সীহায়িমান্যাং খ্রপুং সমীরণং
মেহং ভূশং কুঠসম্পদরং ক্রিমিম্ ।
শুলায়পিজক্ষররোগম্ভাতং
সরক্ষপিতং বমিদাহমশ্ররীম্ ॥
নিহান্ত চার্লাংসি স্লোচনাজকং
বলপ্রদং ব্যাতমং রসায়নম্ ॥

অভ্ৰন্থ ১ পল, কান্তলোহ ১ পল এবং চৈ, কুলের শাদ, বেণার মূল, দাড়িম, আমলকী, আমরুল, ছোলঙ্গ লেবু প্রত্যেক
দশ পল পরিমিত, একত্র মর্দ্দন করিরা দেবন
করিলে সর্বপ্রকার অরোচক, কাস ও অমি
মান্দ্য প্রভৃতি শ্লোকোক্ত রোগ সকল নষ্ট
হয়। ইহা বলকর, বৃষ্য ও রসায়ন।

স্থানিধিরসঃ।

রদগন্ধী সমৌ গুদ্ধৌ দ্ঞীকাথেন ভাবরেৎ।
জন্মীরবরসেনৈব আর্দ্রকন্ত রসেন চ।
মাতুলুকদ্য ভোরেন তদ্য মজ্জরদেন চ।
পশ্চাদ্বিশোষ্য সর্ববিংশং টক্ষণকাবতাররেং।
দেবপুশ্পং বাণমিতং রদপাদং মৃতামৃত্য ।
মারমাত্রক তৎ দেবাং নাগরেণ গুদ্ধেন বা।
সর্বারোচশুসার্তিমামবাতং ফ্লাক্রণম্।
বিস্তীম্মিমান্দ্যক ভক্তবেষক দাক্রণম্।
রসো নিবাররত্যাপ্ত কেশরী ক্রিণং যথা।
(গ্রন্থান্তেহেদ্যাংমৃত্রক্ষররদ ইতি সংজ্ঞা।)

১ ভাগ পারদ ও ১ ভাগ গন্ধক লইরা তাহা দন্তীকাথে, জামীর লেবুর রুদে, আদার রুদে, ছোলঙ্গ লেবুর রুদে ও ছোলঙ্গ-মজ্জার রুদে, ছোলঙ্গ লেবুর রুদে ও ছোলঙ্গ-মজ্জার রুদে ক্রমার্য়র এক এক বার ভাবনা দিবে। পরে তৎসহ ২ ভাগ সোহাগার থৈ এবং ৫ ভাগ লবঙ্গ চূর্ণ ও সিকিভাগ মিঠাবিষ মিশ্রিভ করিয়া তাহা উত্তমক্রপে মর্দ্দন করিবে। পরে তাহাতে ১ মারা পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত্ত করিয়া প্রতি দিবদ এক এক বটা শুঠ চূর্ণ অথবা ইক্ষুগুড় সহ সেবন করিবে। ইহা ছারা সর্ব্ব প্রকার অক্লচি, শূলবেদনা, আমবাত, বিস্কৃতিকা ও অগ্নিমান্দা প্রভৃতি রোগ নষ্ট হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধি:।

অরোচকে পথ্যানি '

বন্তিবিয়েকো বমনং ঘণাবলং
বুমোপদেবা কংড়গ্ৰহন্তথা।
তিক্তানি কাঠানি চ দত্তঘৰ্ণ।
চিত্ৰান্নপানানি হিতৈঃ কুতানি চ।

গোপমন্দাকণ্শ লিশ্টকা মাংসং বরাহাজশবৈণসম্ভবম। চেকো ক্ষাপ্তং সধবালিকেলিশঃ পোটা থলীশঃ কন্মী চ রে[:]হিতঃ। কৰ্মাৰ বেত্ৰাগ্ৰনবীন্যুলকং বার্ক্তাকুলোভাঞ্জনমোচদাডিনম। ভব্যং পটোলং ক্লচকং যুতং গয়ো বালানি তালানি রসোনশ্বণম ৷ खोका तमानः ननम्य काशिकः মতাং রদালা দ্বি হলমার্দ্রক্ম। **কলোলগ**র্জরপিশালতিককং পকং কপিথং বদরং বিকল্পতম ॥ তালান্তিমকা তিমৰ'লকা দিতা প্রাাধ্মানী মরিচানি লামঠ্য । স্বালম্ভিকানি ৮ দেইয়ার্জনা বর্গোভয়নকোচকচিরে ডিলে চিডঃ 🗈

বস্তিজিয়া, বিরেচন, রোগির বলামুসারে ধ্মদেবন, কবলধারণ, তিভারস্যুক্ত বমন, দস্তক্ষ্ঠি, নানা প্রকাবে প্রস্তুত ক্:চজনক হিতকর অমপানীয়, গোবুম, মুগ, রক্তশাল ও ষ্টিক তওুল, শুকৰ, ছাগল, শশক এবং মোঞ্চল, কোৰ, লোভ, ভয়, শোক, ছুগুন কুষ্ণহরিশের মাংস, চেঙ্গুমাছ, মাছের ডিম্ মৌরলামাছ, ইল্লিশ্যাত, পুটাগাছ, থলিশানাত,

কয়ীমাছ, কুইমাছ, কুমুড়া, বেত্রাগ্র, কচি-মূলা, বেগুন, সজিনা, কলার মোচা, দাডিম, চালতে, পটোল, ছোলঙ্গ, ঘুত, তুগ্ধ, কচি ভালের শস্তা, রম্ভান, ওল, আয়. নিম্ব, কাজি, মন্ত, রসালা, দধি, তক্র, আদা, कॅकिना, शङ्क्ति, शिश्रांनक्त, शांव, शांका कराए বেল, বদরীফল, বিকম্কত (বৈচি), তাল আঁটির শাঁদ. কর্পুর, চিনি, হ্রীতকী, য্যানী, গোলমরিচ, হিন্দু, অমুমধুবদ্রবা, তিক্তদ্রবা ও শ্রীংমার্ডন, এই সকল অক্রচিরোগে পথা।

অরোচকেইপথ্যানি।

करिमालाविक्षभारमञ्ज्याविद्यवश्विधावसम्। অহাত্য'রমস্থােশং লোখং লোভং ভরং ৩5ম। पूर्वकारणामनाकः न क्यामिक्टो नहः ॥

কাদবেগ, উদ্গারবেগ, কুদাবেগ অশংবগ ধারণ, অধ্য দ্রব্য ভোজন. এবং ডদ্বান : যুগাইরপে দ্বান) এই স্কল অক্চিরোগে আহতকর।

ইত্যায়র্কেন-সংগ্রহেহরোচ কানিকানঃ।

অথ ছর্দিরোগাধিকারঃ।

অথ ছ'ৰ্দ্দনিদানম।

ছুষ্টেদে বিষঃ পৃথক সর্কোনীভৎসালোচনাদিভিঃ : ছর্দিয়: পঞ্চ বিজ্ঞেয়াস্তাসাং লক্ষণমূচ্যতে ॥ **অ**তিদ্রবৈরতিশ্বিপেরহৃত্যেল বিশৈরতি । **অকা**লে চাতিমাত্রৈশ্চ তথাংসায়োশ্চ ভোজনৈ: ॥ শ্রমান্তরাৎ তথে। দেগাদ্র্ভার্ণাৎ ক্রিমিদে বতঃ। নাৰ্যা•চাপরসভায়াভথা ি দ্ৰুতম্বতঃ ॥ বীভৎদৈর্হেভিশ্চানৈক্র তমুৎক্রেশিতো বলাৎ। ছাদয়ত্যাননং বেগৈরদিফরকভঞ্জনৈঃ। নিক্ষচাতে ছদ্দিরিতি দোষো বক্তাং প্রধাবিতঃ ॥

रुक्षारमाणगांत्ररत'रथो ह अरमरका लवनस्रञ्सः। ছেযোগরপানে চ ভূশং বমীনাং পূর্বলক্ষণম্॥

কুপিত বায়, পিত্ৰ, কফ ও মিলিত দোষ-অয় এবং বী ভংসালোচনাদি (বিক্লতিদর্শন, অপ্রিয়গন্ধান্তাণ ও অপিয়বস্তুভোজনাদি) এই পঞ্চবিদ হেততে পঞ্চ প্রকার ছর্দ্দি (ব্রিরোগ) উংপন্হয়। ইহাদের লক্ষণ পরে অতিদ্ৰব পান, অতিমিগ্ধ ভোজন, অকালে আহার, অধিক লবণ ভক্কণ,

লোজন, অপরিমিত ভোজন, অসায়া (দেহের অনমুক্ল) ভোজন, ক্রন্তভোজন এবং শ্রম, ভর, উবেগ, অজীর্গ, ক্রিমিদোয, গভাবস্থা এবং অপরাপর নানাবিধ বীভংস হেতু এই সকল কাংণে দোব, শীঘ্র উংক্রিপ্ট (স্বস্থান হইতে বহির্গমনোল্গ্) ও বেগে ধাবিত হইয়া মুখকে পীড়িত ও আচ্চাদিত এবং অঙ্গে ভঙ্গবং পীড়া উৎপাদন করিয়া নির্গত হয়, ইহাকেই ছদ্দি কহে।

ব্যি হইবার পুরের্ব জ্লাস (ব্যন্বেগ), উদ্যার-রোপ, মুখ হইতে ল্বণাক্ত পাত্লা জলস্রাব ও পানাধারে বিধেষ, এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়।

অথ বাতজচ্ছদ্দি-লক্ষণম্।

সংপাধনীড়া-মুগণোধনীথ-ন'ভাতিকাসম্বরভেদতোলৈ। উল্লাৱশূকপ্রবলং সফেন বিভিন্নসুস্থ ক্রুকং ব্যাংখ্। কুড্রেল্ চাল্লং মহতা চ বেগে-নার্ভোহনিলাচ্ছর্ন্মতীর ছুখ্য্॥

বায়ুজনিত বমন গুরাগে জনয় জু গাল্লদেশে বেদনা, মুখশোম, মস্তকে ও নাভিস্বলে
পুল, কাদ, স্বলেচন ও অঙ্গে স্টাবেরবন্
বেদনা, এই সকল লক্ষণ প্রকাশিত হয়। এবং
রোগা অভিক্তে মহাবেগে প্রবল উদ্যান ও
প্রবল লক্ষ্ সহকারে সংস্কল, বিচ্ছিল (মন্তে
মধ্যে বেগর, হত) পাত্লা-ক্ষণ্ডবল, ক্রায়রসবিশ্তি অল্লাভ্র পদাধ ব্যন ক্রিয়া
প্রকে।

অথ বাতজচ্ছ ৰ্দ্দি চিকিৎস।।

আমান্ধে'ৎলেশভবা হি সর্কা-শ্চন্দ্রো মতা লত্যন্মের তত্মাং। প্রাক্ কারয়েঝাক্সতজাং বিমুদ্য সংশোধনং বা কফ,পত্তং'রি ॥

গণ লজ্জনমঞ্জাদাধবিষয়ন, স শোগনং বছলোধনিয় দ নি গ্ৰাক্ষা। সংশোধনং বা কফপিজহারীতি কফহারি পোধনং বমনণ, পিজহারি শোধনং বিরেচনন্। আমাশরের উৎক্রেশ হেতু বিম ইইয়া
থাকে, অতএব বমন রোগে প্রথমে লজ্জ্বন
দেওয়া কর্ত্তরা। বাতজ বিম ভিন্ন অত্য বিমি
রোগে কফের প্রবিল্টা লক্ষিত ইইলে বমন এবং
পিত্তের অবিক্যে বিরেচন উম্প ব্যবস্থা করিবে।
হত্যাৎ ক্ষীরোদকং পাতং ছদ্দিং প্রনমন্তরাম্।
দ্যোধনং পিনেং মার্পবিভিছ্দিনিবার্শম।

সমাংশ জল ও জুগ্ধ কিংবা সৈন্ধবলবণ ও যুত পান কবিলে বাত্তাধান ব্যন রোগ অংশনিত হয়।

মূল্যাসলকগৃষণকো সমাপদ্ধ সমৈদ্ধবম। যবাগৃং মধুসিঙাং বা পঞ্চমূলাকৃতাং পিবেৎ ॥

মূগ ও আনলকীব যুধ মতে সন্তলন করিল কেন্দ্রের সহিত, অথবং স্বল্পধ্যুলীর কাথে স্বাগু পাক ক্রিয়া ছোহা মধুর সহিত পান কাবলে ব্যক্ত রোগ বিন্তু হয়।

অথ পিত্ৰজছাদ-লকণম।

মূজ্যপিপাসামূলে ক্রিন্তি। তাৰ্জিসন্তাপ্তমেশন্ত্র। পাঁতং চুশোকং ইবিতং স্তিক্তং ধুসঞ্জিতিন ক্রেম সধ্যম্প

পিতৃত্বনিত বৃদ্ধ গোগে মুখ্যা পিপাসা, মুখপেষ, মস্তক তালু ও চন্ধতে সন্তাপ, অন্ধ-কার দশন ও দম এই সকল লক্ষ্য দৃষ্ট হয়, এবং রোগা পাত হ্রিত বা সুমুবর্গ (কুম্ব-লোহিত) স্থিতিক আত উদ্ধ পদার্থ ব্যন করে ও ব্যনকালে কথালি হানে জালা হয়।

অথ পিত্তজচ্ছদি-চিকিৎস।।

পিন্তা ধিক যা ধকুলোমন থিং
ত ক্ষাপিদার ক্রেনেপির্থ ভাব।
ককাশরহস্ত কিমা কর্মার
পিন্তা ভয়েব স্বাপ্ত ডিকাছমেন।
ভদ্মতা কালে মধুশর্ক বাভ্যাব
লাকৈল্য মন্থা ব্যাপি পেরাম।
ভাবাপ্যেক্ষরমেন বাপি
লালোন্য ভাক্সনলৈবা।

পিছজ বমন রোগে অনুলোমনার্থ দ্রাকা, ভূমিকুল্লাও ও ইক্ষুরসের সহিত (কেহ বলেন ইহাদের কোন একটির রদের সহিত) ভেউড়ী চুর্ণ সেবন করিবে, এবং কফাশয়স্থ অতিবৃদ্ধ পিত্তের নাশার্থ দ্রাক্ষাদি মধুর রস বিশিষ্ট দ্রব্য (তাহাতে মদনফলাদি প্রক্ষেপ দিয়া) খারা বমন করাইবে।

বমন বিরেচনাদি থারা শুরনেই রোগিকে অধিবলানুদারে উপস্কু সময়ে মধু ও চিনি সহ লাজমন্থ বা পেয়া অথবা মুদ্যযুব কিংবা জাললমাংসরস সহ শালিধান্তের অন্ন ভোজন করাইবে।

চন্দনোক্ষাত্তেও সংযে/জ্যানলকীরসন্। পিবেমাক্ষিকসংযুক্তং ছন্দিন্তেন নিবর্ত্তে ॥ চন্দনকামুণালক বালকং নাগরং বৃধন্। সতপুলোদককোত্তঃ পীতঃ ককো বুমিং হুরেৎ ॥

খে তচন্দ্ৰ ২ ভোলা, আমলকীর রস ৮ ভোলা, একতা করিরা মধুর সহিত অথবা চন্দ্ৰ, বেণার মূল, বালা, শুঠ ও বাসক এই সকল দ্রব্য সমভাগে চালুনিজল ও মধুর সহিত পান করিলে বমি নিবারিত হয়।

কাথ: পর্ণটিজ: পাত: সংক্ষোদ্রগছ দিনাশন: ।

ক্ষেতপাপ্ডার কাথ মধুর সহিত পান করিলে বমি নিবারিত হয়।

কৰায়ো ভৃষ্টমূলান্ত সলাজমধুশর্কর:। ছব্দাতীসারত্ত্ত্বাহ-অরম্ভ: সম্প্রকাশিত:॥

ভালা মূগের কাথে থৈ চূর্ণ, মধুও চিনি দিয়া তাহা আহার করিলে ভেদ, বমি, পিপাদা, দাহ ও অর নিবারিত হয়।

হরীতকীনাং চূর্ণন্ত লিঞ্ান্সাক্ষিকসংযুত্তম্। অধোভাগীকৃতে দোষে ছন্দিঃ ক্ষিপ্রং নিবর্ত্ততে ॥

মধুর সহিত হরীতকী চূর্ণ সেবন করিলে বিরেচন হইয়া ব্যি নি নারত হয়।

শুদ্ধুটীত্রিফলারিষ্ট-পটোলৈঃ কবিতং পিবেৎ । কৌরবৃতং নিহস্ত্যাশু চ্ছৰ্লিং পিন্তায়সম্ভবাষ্ ॥ (অত্র পিন্তায়সম্ভবাসিতায়পিন্তসম্ভবাষিত্যর্থঃ)। গুলঞ্চ, ত্রিফলা, নিমহাল ও পল্তা ইহা-দের কাথ মধুর সহিত পান করিলে অমপিত জনিত বমন রোগ বিনষ্ট হয়।

অথ কফজচছদ্দি-লক্ষণম্।

তন্দ্রাস্যাধুর্ব্যকশপ্রসেক -সম্ভোবনিদ্রাগণ্ডিগৌরবার্ডঃ। স্লিক্ষং থনং স্বাছ কফাদ্বিজ্ঞং সরোমহরে।হল্লগ্রুগুং বমেৎ তু॥

কফজনিত বসন রোগে তন্ত্রা, মুখমাধুর্য্য, কফপ্রদেক, সস্তোষ (ভোজনে অনিচ্ছা), নিদ্রা, অক্লচি ও দেহের গুরুতা এই সকল লক্ষণ দৃষ্ট হয়, এবং নোগা মিগ্ধ, ঘন, স্বাহ ও শুক্রবর্গ পদার্থ বমন করে। বমন কালে রোমাঞ্চিত হেইরা থাকে। কফজ ব্যিতে যাত্রনা অল্ল হয়।

অথ কফজচ্ছদ্দি-চিকিৎসা।

কফাল্লিকায়াং বননং প্রশন্তং সপিপ্রলীস্বপনিদ্ধতোয়ে।

পিতী একৈঃ সৈম্বৰসংপ্ৰানুক্তৈ-শহর্কাং কফাসাশয়শোধনার্থম ॥

नियम्बन्धः क्रिन् उकार्य शिक्षन्तामानाः अरक्तनः।

কফজ বনন রোগে কফপূর্ণ আমাশমের শোধনার্থ নিমছালের অদ্ধশৃত কাথের সহিত পিপুল ও সর্যপ চূর্ণ পান করাইরা বমন করাইবে অথবা সৈদ্ধবলবণ-মিশ্রিত মদনফল-চূর্ণ সেবন করাইবে।

বিড়ক্সজিকলাবিখ-চূর্ণ মধ্যুতং জয়েৎ ৷ বিড়ক্সস্বস্থাতীনামপুবা লেমজাং বমিস্ ॥

বিড়ঙ্গ, ত্রিফলা ও শুঠ চূর্ণ অথবা বিড়ঙ্গ কৈবর্ত্তমৃস্তক ও শুঠ চূর্ণ, মধুর সহিত সেবন করিলে শ্রেম্মজ বমি নিবারিত হয়।

> সঞ্জাখনং বা বদরদ্য চূর্ণং মুক্তাযুতাং ককটকস্য শৃঙ্গীন্। ছরাসভাং বা মধ্সম্প্রযুক্তাং লিহাৎ কফচ্ছেদ্বিনিগ্রহার্থন্॥

জামের আঁটির ও কুলের আঁটির শাঁস অথবা মৃতা ও কাঁক্ড়াশৃঙ্গীর কিংবা হরালভা, মধুসংস্কু করিয়া লেহন করিলে কফজ বনি নিগৃহীত হয়।

व्यथ जित्तायकष्टर्षि-लक्ष्णम्।

শূলাবিপাকাঞ্চিদাহতুকা-খাসপ্রমোহপ্রবলা প্রসক্তম্। ছন্দি,স্তিদোবালবণাস্ত্রনীল-সাক্রোকাসকং ব্যভাং নুশাং স্থাৎ॥

ত্রিংদাবদ্ধ বমন রোগে শূল, অবি-পাক, অক্চি, দাহ, পিপাসা, খাস ও মৃচ্ছা এই সকল লক্ষণ প্রবগভাবে প্রকাশিত হয়, এবং রোগী নিরস্কর অমলবণরসাক্ত, নীল বা লোহিত্রণ, ঘন ও উষ্ণ পদার্থ বমন করিয়া থাকে।

অথ ত্রিদোষজচ্ছার্দ্দ-চিকিৎসা।

পিষ্ট্ৰ, ধাত্ৰীকলং জাক্ষাং শৰ্করাঞ্চ পলোবিভান্। দ্বা মধু পলকাপি কৃত্বং সলিলক্ত চ। বাসসা গালিভং পাভং হস্তি চ্ছদ্দিং তিনেদাবজাম॥

আমলকী ফল, দ্রাক্ষা, চিনি ও মধু, প্রত্যেক ৮ ভোলা পরিমাণে লইয়া বার্টিবে। পরে ভাহা অদ্ধনের জলে গুলিয়া বস্ত্রে ছাঁকিয়া লইবে। ঐ দ্রবা উপযুক্ত মাত্রায় পান করিলে ত্রিদোযক বমন রোগ নিবৃত্ত হয়।

ওড়্চা রচিতং হস্তি হিমং মধ্সমন্বিতম্। ছবিবারামপি চছর্দিং তিদোবজনিতাং বলাং ॥

রাত্রিতে গুলঞ্চ ভিজাইয়া রাখিয়া প্রাতঃ-কালে সেই: জল মধুর সহিত পান করিলে তিলোষজ গুনিবার ব্যিরও শাস্তি হইয়া থাকে।

অৰ্থবন্ধলং গুৰুং দৃদ্ধং নিৰ্ব্বাপিতং জলে। ভক্ষদং পীতমাত্ৰং হি বাস্তিং জয়তি চুৰ্জ্জয়ন্॥

অধ্যথ বৃক্ষের শুক্ষ ছাল পোড়াইয়া কোন পাত্রস্থ জলে নির্দ্ধাপিত করিয়া দেই জাল পান করিবা মাত্র গুজ্জা ব্যন্ত নিবারিত হয়। শ্রীফলক্ত গুড়ুচা বা কবারো মধুসংবৃতঃ। পেয়ন্ছার্দ্ধরেরে শীতো মুর্বা বা তঙ্গামুনা ॥

বিলম্লের বা গুলঞ্চের কাথ শীতন করিয়া মধু সহযোগে পান করিলে অথবা মুর্মা চালুনি জলের সহিত সেবন করিলে বাতজাদি ত্রিবিধ বমি প্রশমিত হয়।

জাত্যা রসঃ কপিথস্ত পিপ্পলীমরিচান্বিতঃ। কৌদ্রেণ যুক্তঃ শমরেরেহোহরং ছর্দ্দিমূল্বণাম্॥

আমলকীর রস ১ তোলা ও করেত-বেলের রস ১ তোলা কিঞ্ছিৎ পিপুল চুর্ণ মরিচ চুর্ণ ও মধু সংযুক্ত করিয়া লেহন করিলে প্রবল বমি নিবারিত হয়।

ষষ্টাহিং চন্দনোপেতং সমাক্ষীরপ্রপেষিতম্। তেনৈবালোড্য পাতবাং স্বধিরচ্ছক্ষিনাশনম্॥

যষ্টিমধু ও রক্তচন্দন: ছগ্নের সহিত উত্তম-রূপে পেষণ ও আলোড়ন করিয়া পান করিলে রক্তবমন নিবাবেণ হয়।

> লাজাকপিথনধুমাগধিকোষণানাং কৌলাভয়াত্রিকটুধান্তকজীরকাণাম। পথ্যামূতামরিচমাক্ষিকপিপ্লনীনাং লেহাধ্যায় সকলবমাক্ষতিপ্রশাক্ষ্য।

থৈ, কয়েতবেল, মধু, পিপুল ও মরিচ চুর্ণ। মধু, হরীতকী, জিলফ, মরিচ, মধু ও পিপুল চুর্ণ। হরীতকী, জলফ, মরিচ, মধু ও পিপুল চুর্ণ। এই তিন প্রকার অবলেহ ব্যবহারে সর্বপ্রকার ব্যি ও অক্তি প্রশাবিত হয়।

অথ বীভংসজাদিচ্ছদ্দি-লক্ষণম্।

বীভৎসকা দৌহ্ন দিলামজা চ
আসাত্মাজা চ প্রিমিজা চ যা হি।
সা পঞ্চমী তাঞ্চ বিভাবয়েচচ
দোষোড্রহেটোৰ যথোক্তমাদৌ ॥

বীভংগজ (কুংসিত ম্বণাজনক **হেতুজাত),**দৌহ্দ দজ (গভকালজ), আমজ (অ**ন্ধার্গ),**অসাগ্মজ (অনভান্ত বা অনন্ধৰ্শ দ্রব্যভোজন
জনিত) ও ক্রিমিজ এই পাচ প্রকার বমিই
আগত কাংলে উৎপন্ন হন্ন বিশ্বা ইহালা

আগন্তক ব্যন নামে অভিহিত। অতএব পুর্কোক্ত চারি প্রকার ও এই আগন্তজ এক প্রকার, সমুদায়ে পাঁচ প্রকার ব্যি নির্দিষ্ট হইল। আগন্তজ ব্যিরোগে বাতাদি যে দোষের লক্ষণ লক্ষিত হইবে, তাহাকে সেই দোষাক্রান্ত জানিয়া চিকিৎসা করিবে।

বীভৎসজাদিচ্ছদ্দি-চিকিৎসা।

বীভৎসভাং হল্যত নৈরিষ্টেনে হা দিজাং কলৈ:।
লক্তবিরামজাং ছদ্দিং জয়েৎ সাম্যারসায়াজান্ ।
ক্রিমিকজোগবৎ হল্যাৎ ছদ্দিং ক্রিমিসমুক্তবান্ ।
তত্র তত্র বপাদে বং ক্রিয়াং কুষাচ্চিকিৎসক: ।
সোপগারায়াং ভূশং তহ্নদাং মুর্বায়া ধাল্যমুন্তয়েঃ ।
সমধুকাঞ্জনং চূর্বং লেহয়েরধুসংযুত্ম ।
সৌবর্চলমজালী চ শর্কা মরিচানি চ।
ক্রোজেণ সহিতং লীতং সন্তল্চদ্দিনিবারণন্ ।

বীভংসজ (কুংসিত-মুণাজনকহেতৃজাত) বমি হৃদয়গ্রাহি-দ্রব্য ধারা; দৌর্জ কলি বমি অভিলয়িত বস্তু প্রদান ধারা, আমরসজ বুমি লজ্বন ছারা: অসাগ্রাজ বুমি সাগ্রা দ্রবা ছারা ব্যির চিকিৎসা নিবারণ করিবে। ক্রিমিজ ক্রিমিজনি**ত শুদোগের** তিকিৎসার জানিবে এবং এই সকল বমন রোগে বাভাদি ষে দোষের লক্ষণ দেখিবে, সেই দোষেরই চিকিৎদা করিবে। প্রবল উল্পারেণ সহিত ব্মন হইলে মুর্কা, ধনে, মুতা, যষ্টিমধু ও রদা-জ্ঞন চুর্ণ সমভাগে লইয়া মধুর সহিত লেহন कतिरव। সচললবণ, জীরক, চিনি ও মরিচ চুর্ণ সমভাগে মধুর সহিত লেহন করিলে সহাঃ বমির শাস্তি হয়।

এলাদি চুর্গ্।

এলালবন্ধগজকেশরকোলমক্ষলাজপ্রিয়ন্থ্যনচন্দনপিধলীনাম্।
চূর্ণানি মাক্ষিকসিত!সহিতানি লীচ্বা
ছর্দিং নিহন্তি কক্ষমারুতপিত্তজাতাম্।
এলাইচ, লবন্ধ, নাগকেশর, কুল আঁটির
শক্তা, থৈ, প্রিয়ন্ধু, মুতা, রক্তচন্দন ও পিপুল,

প্রত্যেকের চূর্ণ সমভাগে মিশ্রিত করিয়া চিনি ও মধুব সহিত অবদেহন করিলে বাতজ, পিত্তজ্ঞ কফজ ব্যানিবারণ হয়।

त्राम् ।

অজাজীধান্তপণা (হ. সংক্রীদ্রংভিঃ কটুলিকৈ:। এভিঃ সার্দ্ধং ভস্মস্থতঃ সেনো। ব্যক্তিপ্রশাস্ত্রয়ে ।

জারা, দনে হ্বীতকী, ম্রু, **ত্রিকটু ও** রস্পিন্র সমভাগে গ্রন্থ: মুর্চন ক্রিয়া সেবন ক্রিলে ব্যাব শাভি হয়।

ব্যক্তর্সঃ ।

গন্ধক, ক্ষল ক্ষণ গ্ৰহণ্ শিল্পিড়।
ক্ষাক্ষণ ক্ষণ সংক্ৰা চুক্ক্ৰ্॥
চন্দ্ৰ ভ্ৰথাৰ গোৱাচন হিলাস্থ্য বিশ্বস্থাৰ গ্ৰেচন হিলাস্থ্য বিশ্বস্থাৰ হাজে ম্কাৰ্থাৰ ক্ৰা মাল্বিক্ৰ প্ৰাৰ্থাৰ ক্ৰাপ্তিল নান্বিক্ৰিপ্ৰেন ক্ৰিন্তি ভ্ৰিব্যাস্থ্য ব্যৱস্থাৰ ক্ৰাপ্তিল ক্ৰাক্ৰিট্য়॥

গন্ধক, প্রান্ত বেহ বলেন, কমলা লেবুর খোন:), ইপ্টিমপু, বিধালতু, ফ্রাক্ষ, সোহাগার বৈ. হবিংব শিং, খেতিদান, গন্ধতী ও গোলোচন এই সকল জব্য সমভাগে ঘটন বিষ্ণুলেব কাথে এক প্রাহ্য করিবে। বংগাপদ্ভ জন্তুপান সহ সেবন করিবে বিধাবত ব্যব নিশ্বিত হয়।

রুমধ্বজরসঃ।

ওদ্ধং বদং গছকণ বৌহনের সমাংশিকন্।
মর্কং চন্দনং ধাতা ক্ষেত্রা সলবঙ্গকন্।
উঙ্গং শিপ্পানী মাংসা জুলাং পার্নদালিতন।
বিদারীক্রসাভাগি ভারমেরিন্দাগুকন্।
সংশোধা মন্দিরেদ্বামং গার্গুগ্রেন মন্তর।
দ্বিপ্তপ্ত ভলয়েনিভাং বিদার রসমংবৃতন্।
বাভানিকাং পিতসুভাং চহনি হস্তি সংশোণিতান্।
সম্প্রসানা নাম ব্যধ্যানে নিমিডঃ।
কোনিত পারদ, গ্রাক, লোহ, যৃষ্টিমধু,
চন্দন, আম্লকা, ভোটএলাইচ, লবজ, সোহাগা,
পিপুল ও জটামাংসী এই স্বল্ল দ্বা স্মভাগ;

শালপাণি ও ইক্ষু রসে পূথক পূথক সাত দিন করিয়া ভাবনা দিয়া ছাগাহুগ্নে এক প্রহর মদ্দন করিবে। ২ কতি প্রমাণ বটিকা। তমুপান—শালপাণির রস। ইহাতে সর্বাপ্রকার ছার্দ্ধি বিনষ্ট হয়।

পদাক জিং মূত্য ।

পত্মকামূত্রিক'নাং ধাজ্যচন্দরণে'ঃ গ্রেই। কম্বে কাথে চ তবিষ্ণপত্ম ছন্দিনিবারণ্য। ভৃষ্ণাক্ষিপ্রশ্ননশ দাক্ষরত্বম্পর্য॥

পদ্মকান্ত, গুলক, নিম, ধনে ও চন্দন ইহাদের কাথে এবং করে ১৪ দের ন্বত বথা-বিধি পাক কবিয়া সেবন কবিলে ছদ্দি, তৃষ্ণা, অরুচি, জুর ও দাহ বোগেব শুক্তি ইয়।

অং পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

ভদিরেশে পথানি।

(A) (454 B) WAS - (4') 정하는 위한 선생님들은 독일하다 প্রক্রাং মটকাশালিন্সা-ৰ লগতে গ্ৰেম্প মধ্য বিভাগ শশ্ভিপ্ৰতি উদিল বৰ তে मुल्त (कर्ता काञ्चलम अ • 'क्ट । মুৰে জন'ন'ব্যব্দৰ্শ রসা¥চ সমা অপি ম'ছবা¥চ া রাগ্র খড়া, কাসলিকা স্থানি বেতাগ্রব স্থপ্তরান (এবেলান । क्षं'अधाजे'महकाद्राक'ल-ড়োক্ষাব পিখানি গচেলিমানি। হরাত্রী দাড়িম্বাজপুরং জাতীকলং ব'লকনিম্বাসাঃ। সিতা শহাস্থা করিকেশরাণি ভক্ষা মনঃপাণিকৰা ভিতাশ্চ ॥ ভুক্তমা ব্রেং শিশিরামু সকঃ कछ दिकी छन्मन र न्यूभा दि । মনে ভাগৰা প্ৰিয়নে শৰা বি পুষ্পাণি পত্রান কলানি চাপি 🛭 রূপাণি শ্রণাশ্চ রসাশ্চ গন্ধাঃ শৰ্শান্ত যে যুদা মনোহনুকুলা

দাহক নাভেল্মিবনোপরিষ্টা-দিদং হি পশ্যং বমনাতুরের্॥

বিংরচন, ব্মন, উপবাদ, স্নান, শরীর-মাজন, থৈ এর মণ্ড, পুরাতন রক্তণালি ও ষ্ঠিকত গুলের অন্ন, মুগ, কলায়, গোধুম, যব, মধু, শশক, ময়ুর, তিত্তির ও লাব প্রভৃত্তি পকা: নানাবিধ মনোজ্ঞ রূপরসগন্ধসূত্র জাঙ্গল मुश्राक्षीत बांश्मतम, मुन्तानियम, सांखत, तांश, খড়্য্য, কাম্বলিক, স্থবা, বেতাগা, ধনিয়া, भारितकल, आभीतलाव, आंभलकी आंध्र, कुन. দ্রাফা, কয়েংবেল প্রভৃতি স্বয়ংপক ফল, হরী-তকী, লাড়িম, ছোলঙ্গ, জাতীফল, বালা, নিশ্ব, বাদক, চিনি, শুলকা, নাগকেশর, জ্ন্য অথচ হিতকর দ্বা, ভুক্ত বাক্তির মুখে শীতল জল সেচন, কন্ত্রী, চল্মন, চল্রকিরণ (জ্যোৎসা), সুগন্ধি অনুলেপন, সুগন্ধি পত্ৰ.পুষ্প ও ফল, যে ব্যক্তির যেরূপ শব্দ স্পশ রূপ রস ও গন্ধ মনের প্রীতিকর, সেই ব্যক্তির পক্ষে সেইরূপ শক্ষ স্পশ রূপ রূপ ও গন্ধ দেবন এবং নাভির উদ্ধে তিন হব অন্তরে দাহ, এই সকল ছদ্দি বাগিব হিতকর।

ছদ্বিরোগেহপথ্যানি।

নসাং বন্তিং বেদনং বেহপানং
রক্তপ্রবং দন্তকাঠং নব'ন্ন।
বীভংদেকাং ভাতিমুখ্লগ্দাং
। গ্রন্ধাসাস্থ্যাংক্তবিরোধিকান্ন্য ॥
শিষ্যবিশ্বীকোষতকে। নথুকং
চিত্রামেলাং সর্থপান্ দেবদালীন্ ।
ব্যানামক চছত্রিকামস্কলক
ছল্যাং সত্যাং বর্জনেপ্রমন্তঃ ॥

নশু, বন্তিক্রিয়া, স্বেদ, ঘুহাদি স্নেহপান, রক্তনাক্ষণ, দন্তধাবন, নৃত্ন তঙ্লক্কত অন্ধ, ঘুণিত বস্তু দশন, তয়, উদ্বেগ, উদ্দেশ্ব্য, মিগ্রের্যা, অসাম্যাদ্র্যা, অহাছদ্র্যা, বিকক্ষের্যা, শিম, তেলাকুচা, কোষাতকী, মউলফল, চিতা, ছোট এলাইচ, সর্যপ, দেবদালী (বোষা) লতা, ব্যামাম, ছাত্রিকা (ভুটছাতা) ও রসাঞ্জন, ছদিরোগে এই সকল পরিত্যাছ্য।

ইত্যানুর্নেদ-সংগ্রহে চ্ছিদিরোগাধিকারঃ।

অথ তৃষ্ণারোগাধিকারঃ।

অথ ভৃষ্ণানিদান্ম্।

ভরশ্রমাভ্যাং বলসংক্ষয়'বা
উর্দ্ধং চিতং পিত্তবিবর্দ্ধনৈন্দ্য।
পিতং সবাতং কুপিতং নর:পাং
ভালুপ্রপন্নং জনরেৎ পিপাসাম ॥
প্রোতঃব্পাংবাহিষু দূবিতের্
দোবৈন্দ ভূট সম্ভবতাই জম্ভোঃ ॥
ভিস্তঃ স্মৃতাভাঃ ক্ষতকা চতুলী
ক্ষমাৎ তথাক্সামসমূত্রবা চং।
ভক্তোভবা সপ্রমিকেতি তাসাং
নিবোধ শিক্ষাভ্যপূর্বনান্দ্র ॥

ভয়, শ্রম বা বলক্ষাদি বাতপ্রকোপণ হেতু ধারা অথবা কটু, তমু, ক্রোধ ও উপ-কারণে স্বস্থান-স্থিত পিত্তবৰ্দ্ধক বাসাদি কুপিত পিত বায়ুসহকারে উর্দ্ধপ্রস্ত এবং ভাৰ ওক্লোম নামক পিপাসা স্থানকে প্ৰাপ্ত হইয়া ভূঞারোগ উৎপানন করে। জ্লবাহি-লোভ:সকলও বাতাদিদোধ কর্ত্তক দুষিত হুইলে পিপাদা সঞ্জনিত হয়। তৃফা দাত যথা---বা ত্ত্ৰ, পিত্ৰপ্ প্রকার: কফজ, ক্ষতজ, ক্ষয়জ, আমজ ও অরজ। বথাক্রমে ইহাদের লক্ষণ লিখিত হইতেছে।

অথ বাতজতৃফালকণম্।

কাষান্ততা মারুতসন্তবায়াং তোদন্তথা শন্ধশিরহে চাপি। শ্রোভোনিরোধো বিরস্থ বক্তব্বং শীতাভিরম্ভিক বিবৃদ্ধিমেতি॥

বাতক তৃষ্ণার মুখের শুক্ষতা ও রানত্ব,
শঙ্খাদেশে ও মন্তকে স্চীবেধবদ্বেদনা, রদ
ও অত্বাহী স্রোভঃ সকলের নিরোধ এবং
মুখে বিক্ষতাস্থাদ, এই সকল লক্ষণ উপস্থিত
হয়। শীতক কলপানে বাতজ তৃষ্ণার বৃদ্ধি হয়।

অথ বাতজ-তৃষ্ণা-চিকিৎসা।

ভৃষ্ণায়াং পবশোথায়াং সগুড়ং দুধি শস্ততে। রসাশ্চ বৃংহণাঃ শীত' গুড়্চা রস এব বা । বাতম্বমন্ত্রণানং মৃত্ত লতু শীতক বাতভৃষ্ণায়ম্ ॥

বাষ্জন্ম **ভূষণারোগে গুড় সংৰুক্ত দ**নি, শীতবীর্থ্য পু**ষ্টিজনক মাং**দের যুধ বা **গুলঞ্চে**র রস এবং বাতন্ন **অনপানী**য় ও মৃত্ন, ল্যু, শীতল দ্রব্য হিতকর।

অথ পিত্তজতৃষ্ণালকণম্।

মূচ্ছ শ্লিবিষেষবিলাপদাহা রক্তেক্ষণতং প্রভতণ্ঠ শোষ:। শীতাভিনন্দা মুগতিক্ষতা চ পিতাগ্লিকারাং পরিদৃয়নঞ্চ ॥

পিওজ তৃষ্ণায় মুর্চ্চা, আহারে বিষেষ, প্রলাপ, দাহ, রক্তনেত্রতা, অতীব মহতী তৃষ্ণা, শাতেচ্ছা, মুণতিক্ততা ও উপতাপ এই সকল লক্ষণ প্রকাশিত হয়।

অথ পিতজ-তৃষ্ণা-চিকিৎদ।।

পিওজায়ান্ত ভূম্পান্নং পৰেন্ত, স্বরজো রদ:। তৎকাশো বা হিম**ন্তব্যক্ত**রিবাদিগণাপু বা ॥

পিত্তজ ত্থায় পাকা যজ্জুমুরের রস কিংবা তাহার কাথ বা তাহার শীতক্ষায় পেয়। বাগ্ভটোক্ত শাহিবাদি গণেরও শীত-ক্ষায় পিত্তজ ত্থানাশক।

> পিভোখিতাং পিন্তহরৈর্বিপৰং নিহন্তি তোয়ং পয় এব বাপি ।

কাকোল্যাদি পিত্তন্ন দ্রব্যের সহিত জল বা হ্যানিদ্ধ করিয়া হাঁকিয়া সেই জল বা হয় পান করিলেও পিত্তকা হুফা বিনষ্ট হয়।

কাশ্বর্যাশর্করাযুক্তং চন্দ্রনোশীরপত্মকম্। ক্রান্ধামধুকসংযুক্তং শিক্ততর্যে কলং পিবেৎ ॥ পৈত্তিক তৃষ্ণারোগে গান্তারী, শর্করা, রক্তচন্দন, বেণার মূল, পদ্মকাষ্ঠ, ট্রাক্ষা ও ঘটিমধু এই সকল ঔষধের শীত-ক্ষায় পান ক্রিবে। কাহারও মতে ঐ সকল দ্রব্য বাটিয়া জলের।সহিত পেয়।

স্বাদ্ধ ডিক্তং দ্রবং শীতং পিত্ততৃক্ষাপহং পরম্॥

পিত্তজ তৃষ্ণায় মধুর ও তিক্ত এবং তরপ ও শীতল দ্রব্য হিতকর।

মুক্তপপ্টকোদীচা-চ্ছত্তাপ্যোশীরচন্দনৈঃ। শৃতশীতং জলং দন্তাং বৃড়্দাহকরশান্তয়ে॥ (ষড়ঙ্গপানীয়ন্)।

মুতা, ক্ষেত্পাপ্ড়া, বালা, ধনে, বেণার
মূল ও রক্ত চলন মিলিত ২ তোলা, জল /৪
সের, কেষ /২ সের। ইহা শীতল করিয়া
সেবন করিলে তৃষ্ণা, দাহ ও জ্বর নিবারিত
হয়। (ইহাকে ষড়ঙ্গপানীয় বলে)।

লাজোদকং মধুযুতং শীতং গুড় বিমন্দিতম্। কাশ্মব্যশক্রাযুক্তং পিবেৎ ভৃশ্যাদিতো নরঃ।

অর্দ্ধ পোয়া থৈ /> দের উষ্ণজলে রাজিতে ভিজাইয়া রাখিয়া প্রাতঃকালে ছাঁকিয়া লইয়া তাহার সহিত গান্থারীফলচ্ব ৪ মাবা, মধু ৪ মাবা, গুড় ৪ মাবা ও চিনি ৪ মাবা মিশ্রিত করিয়া পান করিলে পিপাসা নিবারিত হয়।

তদ্দুদ্রাক্ষাচন্দ্র-প্রজ্বে!শারমধুযুক্তং তোর্য্ ॥

দ্রাক্ষা, চন্দন, থৰ্জ্ব ও বেণার মূল এই সকল দ্রব্যের শীত-ক্ষায় প্রস্তুত করিয়া তাহাতে মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান ক্রিলে পিত্রজ তৃষ্ণা প্রশমিত হয়।

সশারিবাদৌ তৃণপঞ্চমূলে তথোৎপলাদৌ মধুরে গণে বা। কুর্যাৎ ক্ষায়াংশ্চ তথৈৰ সূক্তান্ মধুকপুষ্পাদিয়ু চাপরেরু॥

পুঞাতোক্ত শারিবাদিগণ, তৃণপঞ্চম্শ, উৎপলাদিগণ বা সধুবগণ এই চতুর্বিধ গণের অথবা মধ্কপুষ্পাদির (মউলফুল শোভাঞ্জনফুল, কোবিদারফুল ও প্রিয়স্কূল) শীতক্ষায় প্রস্তুত ক্রিয়া পিত্তজ তৃষ্ণায় পান ক্রিতে দিবে।

অথ কফজ-ভৃষ্ণালকণম্।

বাপাবরোধাৎ কক্ষসংবৃতেহয়ে।
তৃষ্ণা বলাসেন ভবেৎ তথা তু।
নিজাগুরুত্বং মধুরাক্ষতা চ
তৃষ্ণান্দিতঃ গুধানি চাতিমাক্স ।

(কফ, শাতল ও দ্রবপদার্থ, ইহা হইতে পিপাসার উৎপত্তি অস্থ্র, অতএব যেকপ কারণে কফ হইতে প্রপাসা জন্মে, ভাহা লিখিত হইতেছে।)

কফ কর্ত্ব জঠরাগ্নি উপরিভাগে আচ্ছাদিত হইলে, জঠরোগ্না অগোগত হইয়া জলবহ স্রোভকে শুক করে, তাহাতেই পিপাদার
উৎপত্তি হয়। ককজ ত্কান্ন নিদ্রাধিকা, মুখে
মিষ্টাস্বাদ ও দেহের অতিশয় শুকতা উপস্থিত
হয়া থাকে।

অথ কফজ-তৃষ্ণা-চিকিৎসা।

বিষাঢ়কীখাতকিপঞ্চকাল-দৰ্ভেথু সিদ্ধং কফজাং নিহ'ৱ। হিঙং ভবেচ্ছৰ্দনমেব চাত্ৰ তপ্তেন নিশ্বপ্ৰদ্বোদকেন॥

বিল্বন্দের ছাল, অড্হরপত্র, ধাইকুল, পঞ্চকোল (পিপুল, পিপুলমূল, চৈ, চিতাও শুঠ) কুশনল (কাহারও মতে উলু), এই সকল জব্য বড়ঙ্গ-পানীয় বিধানাস্থসারে জলে দিদ্ধ করিয়া দেই জল পান করিলে কক্ষজ ত্যা নিবারিত হয়। নিমছালের বা নিম পাতার কিংবা নিম ফুলের উষ্ণ কাথ পান করাইয়া বনন করাইলে কক্ষপ ভ্ষ্ণায় উপকার হয়। (সর্ব্ধ প্রকার ভ্ষ্ণাতেই পিত্ত-সম্বন্ধ আছে বলিয়া পঞ্চকোল দেওয়া অমুচিত বিবেচনায় পঞ্চকোল স্থানে পঞ্চমূল (স্বন্ধ) পাঠ করিয়া থাকেন)।

আমলং কমলং কুঠং লাজাশ্চ বটরোহক্ষ্ । এতচ্চূৰ্ত মধ্না ভটিকাং ধারয়েমুখে ॥ ভূকাং প্রকাং হত্তোমা মুখনোমক দাকণম্॥ আমলকী, পল্মমূল, কুড়, থৈ ও বটের ঝুরি, ইহাদের চূর্ণ মধু-সংযোগে গুটিকাকার করিয়া সেই গুড়িকা মূথে ধারণ করিলে, প্রবল তৃষ্ঠা ও দারুণ মুখশোষ প্রশমিত হয়।

অথ ক্ষতজক্ষয়জামজান্নজ-তৃষ্ণালক্ষণম।

কংশু রক্শোণিতনির্গনাভাং ভূষণ চতুর্থী ক্ষতনা মতা তু । রসক্ষাদ্ থা ক্ষমন্তবা সা ভ্যাভিত্তক নিণাদিনের। পেশীয়তেহত্তঃ স কুখং ন থাতি তাং সন্নিপাতাদিতি কেচিদ'হুঃ । রসক্ষরোক্তশনি চ লক্ষণানি ভ্যামশেষেণ ভিষধবস্তেং । ত্রিদোর লিকামসমূদ্যবা চ হচ্ছে,লনিষ্ঠাবনসাদক্তী। ব্রিধাং তথায়ং লবণঞ্চ ভূকং শুর্বারেশাশু ভূষাং করোতি।

শক্রাদি থারা ক্ষতাঙ্গ ব্যক্তির ক্ষত্যক্ষণা ও ক্ষত হইতে রক্তপ্রাব হেড়ু যে পিপাদা হয়, তাহাকে ক্ষতঞ্জ তৃঞা কহে।

রসক্ষা হেতু যে তৃষ্ণা হয়, তাহাকে ক্ষমজ
তৃষ্ণা কহে। ক্ষমজ্বকাতি ব্যক্তি দিবারাত্রি
মূহপুহি: জলপান করে, তপাপি হৃষ্ণোভ করিতে পারে না। কেহ কেহ এইরূপ তৃষ্ণাকে সন্নিপাতোৎপন্ন বলিয়া নির্দেশ করিয়া থাকেন। ইহাতে জৎপীড়া, কম্প এবং শ্রুতা প্রভৃতি স্থাত-নির্দিষ্ট রসক্ষয়-লক্ষণ সকলও উপস্থিত হয়।

আমন্ধ তৃষ্ণায় হৃচ্চ্চ্ল, নিষ্ঠাবন, অবসাদ এবং বাতাদি ত্রিদোষজ লক্ষণসমূহ প্রকাশিত হয়। কারণ আমনিবন্ধন অর্থাৎ অজীণহৈতু ত্রিদোষেরই প্রকোপ হইয়া থাকে।

ঘত-তৈলাদি সেহস্ক থান্ত অম লবণ ও কটুরস এবং গুরুপাক অম ভোজন করিলে, শীঘ্র পিপাসা উপস্থিত হয়, ইহাকেই ভক্তোঙবা ক্লর্থাৎ অমজা তৃকা কহে।

অথ ক্ষতজাদি-তৃষ্ণা-চিকিৎসা।

স্বতোথিতাং ক্ষণ বিনিধারণেন জয়েক্রসানামগুজ্ল পানৈ:। ক্ষোথিতাং ক্ষারজলং নিংস্তা-ন্মাংসোদকং বাথ মধুদকং বা॥

ক্ষতজনিত তৃষ্ণায় ক্ষতোদ্ভব বেদনার শাস্তি, মাংসরস সেবন বা (এণ-ছরিণাদিন সম্ভোগ্রত) রক্তপান কর্ত্তব্য। ক্ষরজ তৃষ্ণায় ত্থ্য বা মধু মিপ্রিত জল ও মাংসের রস হিত্তকর।

আমে!দ্ভবাং বিশ্ববচাযুতানাং জয়েৎ ক্ষায়ৈরথ দীপনানায়।

আমজন্ত তৃষ্ণারোগে বেলগুঠ ও বচ সংশক্ত দীপনীয় বর্গের কাথ পান করিতে দিবে।

শুক্রজাম্লিথনৈজয়েৎ তু ক্ষাদৃতে সর্ককৃতাক তুকাম্।

শুরু আর ভোজন জনিত তৃষ্ণার এবং ক্ষয়জ ভিন্ন অন্ত সকল প্রকার তৃষ্ণার বনন ক্রান করিবা।

অতিক্ষত্বর্জনানাং তবং শন্তেল্পানিহান্ত পিল:।

হাপো বা সূত স্থাং শিতো মধুরো রুদো জলঃ॥

মধুরো রুদ হত্য ইতি মধুবগণদাধিত হেন রুদো মধুরো
জেল্যা। ইতি জিকেই।

অতিশয় রুক্ষদেহ ও ছবল ব্যক্তির ত্ধা নিবারণের জন্ম ছগ্মপান অথবা মধু-গণসংস্কৃত স্বতভূষ্ট শীতল ছাগ্মাংসরস ব্রক্তা করিবে।

প্ৰায়জমূকষায়ং বা পিনেন্সান্ধিকসংযুত্ৰ। ছদ্দিং সৰ্ব্বাং প্ৰণুদতি তৃষ্ণাধৈবাপকৰ্বতি॥

আম ও জামের পাতার বা আঁটির শস্তের কাথ মধুসংযুক্ত করিয়া পান করিলে বমি ও ভূষগ নিবারিত হয়।

প্রাতঃ শর্করয়োপেতঃ কংশো ধন্তাকসম্ভবঃ। জয়েৎ তৃকাং ভশা দাহং কুয়াৎ সোতোবিশোধনম্।

প্রাতঃকালে ধনের কাথ অথবা শীতক্ষায় চিনির সহিত পান করিলে দাহ ও ভ্রম নির্ত্ত এবং স্রোতোবিশুদ্ধি ইইয়া থাকে।

বটগুঙ্গদিতালোধ্ৰ-দাড়িমং মধুকং মধু। পিবেৎ তগুলতোয়েন ছদ্দিতৃগণানিবারণম্॥ বটের শুঙ্গা, চিনি, লোধ, দাড়িম, যষ্টিমধু ও মধু, তণুল-জলের সহিত দেবন করিলে বমি ও পিপাসার শাস্তি হইয়া থাকে।

গোন্তনেক্রসক্ষীর-ষ্ঠানধ্মগৃৎপলৈ:।
নিয়তং নপ্ততঃ পানৈস্কা শান্যতি দাঞ্গা।
দাক্ষানস, ইক্ষ্রস, হগ্ধ, যতিমধুন কাথ,
মধুবা স্থাদিক্লের রস নাসিকা দারা নিয়ত
পান করিলে, দাকুণ পিপাসা প্রশামত হয়।

ক্ষীরেকুরসমাধ্রকৈ-ক্ষৌদ্দীধুহড়োদকৈ:। বৃক্ষাখ্যমৈক গভূমান্তালুশোদনিবারণাঃ।

ছথা, ইক্ষুদ্র, নউলফ্লের মন্ত, মনু, সীধু, গুড়োদক, বৃক্ষাল্ল (নহাল) ও অন্তান্ত আলোর গান্তব ধারণ করিলে তালশোষ নিবালিও হয়।

কেশরং মাতুলুক্স সংখ্যারং দাড়িমাণুত্য। ক্রণমাত্রেণ ছকারাং ভৃষ্যাং করলণো জ্যেৎ॥ দাহতুষ্যা-প্রথমনং ম্বলভূষণায়ণমূন

টাবালেবুর কেশর, মনু ও দাড়িম পেশণ করিয়া কবল করিলে গুনিবানা ভূষণও ক্ষণ-মাত্রে নিবারিত হয়। মধুর গঙ্য মুখে বারণ করিলেও দাহ ও পিপাদার শাস্তি হটয়া থাকে।

ভালুশোৰে পিবেৎ স্পিত্ব তমগুমধাপি বা।
মৃচ্ছাচ্ছাদ্বাহান বাসজ্ঞাক বিভাগ ।
প্ৰেয়ং শীতিকং বারি রক্তাপতে মদাতায়ে ।
প্রাময়াতুবং সন্দীন গ্রাদ্বিতা জলং বাচন্।
লভতে নচেৎ ভদায়ং মরণং প্রাধ্বেতি দামবেগং ও বা ॥

* দাপরেতা মতিবা গাডেঃ

ভালুশোষ রোগে মৃত বা মৃত্যুও (মৃত্রু উপরিস্থ স্থান্ধ ভাগ) পান করিবে। মূর্চ্ছা, বমি, তৃষণা, দাহ, মৈগুন ও মন্তপানে আহ-কর্ষিত ব্যক্তিদিগের বিশেষতঃ একপিত ও মদাল্যম-রোগগ্রন্থ ব্যক্তির শাতল জল পান করা কর্ত্ব্য। যদি রোগী মৃদ্ধা প্রভৃতি রোগে তৃষণাম কাত্র হইয়া অহিদীনভাবে জল প্রার্থনা করে, তৎকালে জল না দিলে তৃষণ দীর্ষকালস্থায়িনী হয় এবং মৃত্যু প্র্যুপ্তও ঘটিতে পারে।

ধান্তায়ম[স্তবৈরস্ত-মলদৌর্গনানানন্। তদেবালবণং পীতং মুগ্রোম্থ্যং পুরস্থা সলবণ ধান্তাম (কাঁজি-বিশেষ) মুখের বিরস্তা ও মলের দৌর্গন্ধা নাশক। ইহা অলবণ (অল্ল লবণ সহ) পান করিলে মুখনোষ নিবারিত হয়। অসঞ্জাত্য বা মাত্রা গণ্ডুষে সা প্রকীর্তিতা। কথা সকাষাতে বা তু সা মাত্রা কবলে হিতা।

যে পরিমাণ তরল দ্রব্য মূথে ধারণ করিলে
তাহা সঞ্চালন করিতে পারা যায় না, তাহাকে
গঙ্ব কহে। আর যে মাত্রায় গ্রহণ করিলে
অনায়াসে চালনা করা যায়, তাহার নাম
কবল। অর্থাৎ গঙ্ধে মূখ সম্যুক্রপে পূর্ণ
কবিতে হয়; কবল মাত্রা গঙ্ধের অর্ক্রেক।
নারি শীতং মনুযুত্ম:কঠাদ বা পিপাসিত্ম।
পায়য়েদ্র সমচেচাপি তেন হুকা প্রশামতি।
আকঠতোয়পানাদ্রু কিঞ্জিমুপানাম্ত্রপদিশন্তি বৃদ্ধাঃ।

পিত্তজ তৃষ্ণাগ্রস্ত ব্যক্তিকে মধুসংখ্যক শাতল জল আকও পান করাইয়া বমন করাইলে তৃষ্ণা ধুব হয়। বৃদ্ধ বৈভগণ বলেন যে, আকও জল পান করিয়া কিঞ্ছিং মধুপান কবিৰে।

তৃষিতো মে'ংমাপ্নে'তি নোহাৎ প্রাণান বিম্কৃতি।
তুমাৎ সর্কাষ্থবস্থাস্থ ন শচিদ্ ন'নি বাধ্যতে ॥
অ্যান্থাপি বিনা জন্তঃ প্রাণান্ ধ'বরতে চিন্নম্।
তোগ্নভাবে পিপাসাতঃ ক্ষণাৎ প্রাণৈবিষ্চাতে ॥
অত্যম্বপানাৎ প্রভন্তি রোগা নিরস্পানাচ্চ স এব দেখিঃ।
তুমাদ্ বুধঃ প্রাণবিধদ্ধনার্থা মৃক্ষু হবারি পিবেদভূরি ॥

তৃষ্ণা দ্বারা মূর্চ্চা এবং মূর্চ্চা দ্বারা প্রাণনাশ পর্যান্তও ঘটে। অতএব কোন অবস্থাতেই
জল নিধিদ্ধ নহে। অন্ন ব্যতিরেকে দীর্ঘকাল
প্রাণবক্ষা ইইতে পারে, কিন্তু জল ব্যতিরেকে
পিপাসাত্ত ব্যক্তি ক্ষণকালও পাচিতে পারে
না। অধিক প্রিমাণে জলপান করিলে নানা
রোগের উৎপত্তি হয়। আবার একবারে
জলপান প্রিভাগ করিলেও সেই দোষই
ঘটে; অতএব প্রাণবদ্ধনার্থ মধ্যে মধ্যে অন্ন
অন্ন পরিমাণে জলপান করাই ব্যবস্থেন।

স্বাস্থ্য ক্ষাব্রং শীতং সেবেত ত্যগ্রাদিওঃ। উত্তাপুদেগজননং ত্যজেৎ সর্ক্ষতক্রিতঃ॥ হৃত্য, মধুর ও শীতল দ্রব্য তৃষ্ণারোগির সেব্য এবং উগ্র ও উরেগজনক বিষয় সমস্ত পরিত্যাক্য।

রসাদি-চূর্ণ ম্।

রসগন্ধককপূরিঃ শৈলোশারমন্ত্রীচকৈ।
সদিতৈঃ ক্রমবৃদ্ধেত স্কাং কুখা বৃহমুলি ॥
ক্রিপ্তপ্রাপ্রমিতং পাদেৎ পিবেৎ প্রাণ্ডিবাসু চ।
ভূশং তবাং নিহস্তোবম্বিভাগ্নে প্রকাশিত্র ॥

পারদ ১ ভাগ, গন্ধক ২ ভাগ, কপূর ৩ ভাগ, শিলাজতু ৪ ভাগ, উনীব ৫ ভাগ, মরিচ ৬ ভাগ, চিনি ৭ ভাগ, একত্র চুর্ণ করিয়া প্রাতঃকালে ৩ রতি প্রিমাণে সেবন কবিবে। অমুপান—বাসি জল। ইহা উ্থানাণক।

মহোদধিরসঃ।

ভাজং চক্রিকরা বৃঙ্গং হালং সত্থক্ষ । বটাক্করবৈর্ভান্যং ভূজাগদ্ বল্পনাত্রতঃ । সক্ষোদ্রনাত্রজমূপং পিবেৎ কাণং পলোন্মিতন্। সক্ষমধুনা কুয়াদ্ গাড়্যান্ শাত্রে স্থিতঃ। (যত্র কেবল এব রসন্তর্জ ভ্রপণতো বোবাঃ:)

জারিত তাম, বঙ্গ, রস্পিন্দ্র, হরিতাল, তুঁতে এই পাচটি জবা সমভাগে লইয়া তাহা বটের ঝুরির রসে ৭ বার ভাবনা দিয়া ২ রতি পরিমাণে বটিকা করিবে। প্রতিদিন ইহার এক একটি বটিকা সেবন করিলে একা বিনষ্ট হইবে। এই ঔনধ সেবনান্তে অমুপানার্থ আমছাল ও জামছালের পল পরিমিত কাপের সহিত মধু মিশ্রিত কারয়া সেবন করিবে এবং শীতল শ্যায় শ্যুন ও উপবেশনাদি করিয়া পিপুল চুণ মিশ্রিত মধুনগুর বাবণ করিবে।

(বে বোগের মধ্যে গন্ধকের **উল্লেখ** নাই, অথচ কেবল রসের উল্লেখ আছে, সেখানে রসশকে রসসিন্দূর বুণিতে ইইবে।)

কুমুদেশরো রসঃ।

মৃততামশু বৌ ভাগো ভাগৈকং বঙ্গ ভন্মকম্।

যতীমধুরদৈর্ভাবাং শুক্তং মাবার্দ্ধকং শুভ্স্ ॥

সেবাকৈবানুপানেন বক্ষামাণেন বৃদ্ধিমান্ ॥

চন্দনং শারিবা মৃত্যং কুদ্রৈলানাগকেশরম্।

সর্বতুলাগ্রেখা লাজাঃ পচেৎ যোড়শিকৈজলৈঃ॥

অন্ধিশেষং হরেৎ কাথং দিতাক্ষোত্রযুত্ত তং।

ছব্দিং তৃষ্ণাং নিহস্তাক র্যোহয়ং কুমুদেবরঃ॥

শোধিত তাম ২ ভাগ, বঙ্গভন্ম ১ ভাগ

যষ্টিমধুব কাথে ভাবনা দিয়া শুদ্ধ করত আধ

মাধা পরিমাণে নিয়লিখিত অনুপানের সহিত

সেবন কবিবে। অনুপান যথ—চন্দন, অনস্তমূল, মূতা, ছোট এলাইচ ও নাগকেশর প্রত্যেক
সমভাগ, সকলেব সমান লৈ, একত্র করিয়া
ঘোলভাগ জলের সহিত পাক করিয়া অন্ধ
ভাগ অবশেপ্ত থাকিতে নামাইবে। ইহা

চিনি ও মধুমিশ্রিত করিয়া পান করিলে তৃষ্ণা
ও ছদ্দি আশুবিন্ত হয়।

অথ পথ্যাপথ্য বিধিঃ।

তৃষ্ণারোগে পথ্যানি।

শোধনং শমনং নিদ্রাং আনং কবলধারণম। জি**হ্বাধ-শির্গো**দ (২ে) দীপদম্মহরিদ্রা 🛭 কেদ্রিবা: শালয়: পেয়া বিলেপী লাজ্যভূব:। ভান্মভো ধ্রুরসাঃ শক্রা রাগ্যাড্রৌ ॥ ভূষ্টেম্ কোম সুরৈবা চণকৈবা কুতো রসঃ। রম্ভাপুষ্পং তৈলকর্চিং ক্রাক্ষাপ্রপটপ্রবা: 🛭 কপিণং কোলমণাকা কুখাওকমূণোদিকা। খ ুবং দাড়িমং ধাত্রী কর্কটা নলদমূচ॥ क्योत्रः कत्रम्पक वौक्ष्यृतः भनाः भग्नः। মধুকপুশাং হ্রীবেরং তিক্তানি মধুরাণি চ ॥ বালতাল:সু শীতামু পয়ংপেটা প্রপাণকম। মাক্ষিকং সরসাং তোরং শতাহ্বা নাগকেশরম্॥ এলা জাতীকলং পথ্যা কুন্তপুরু চ টঙ্গণম্। घनमातः शक्तमातः कोभूना निनितानितः ॥ bन्मनार्क्त अवादशस्या त्रङ्गा**ड**तपथात्रपम् । হিমাকুলেপনঞ্ স্তাৎ পথ্যমেতৎ তৃষাতুরে॥

নিদ্ৰা, স্নান, শোধন ঔষধ, শলন ঔষধ, কবলধারণ এবং দীপদগ্ধ হতিদ্রা স্থারা জিহবার অধোদেশের শিরাব্যের দাহ, কোদোধান্ত, শালিধান্ত, পেয়া, বিলেপা, থেয়ের ছাত্র, ধ্যদেশজাত-পশু-প্রিক্র মাংস্যুষ, চিনি, রাগ ও যাড়ব, ভৃষ্ট মুগ মহর এবং ছোলার যুষ, কলাব মোচা, তৈলকুর্ক্ত, কিদ্-মিদ, কেতপাপড়া, কয়েংবেল, কুল, তেতুল, কুমড়া, পুঁইৰাক, খজ্জুৰ, লাড়িম, আমলকী, কাকুড়, নিম্ব, জামির লেবু, করঞ্জ, ছোলঙ্গ, গোতৃত্ব, মউলফুল, বালা, তিক্তপ্রা, মধুরদ্রা, কচি তালশীদের জল, শাতল জল, ভাব, সরবং, মধু, সবোবরের জল, শুলফ, নাগ-কেশর, এলাইচ, জাতীফল, হ্বীতকী, বনে, সোহাগা, কপুন, চন্দন, জোৎসা, শাতল

বায়, চন্দনচর্চিত প্রিয়ার আলিঙ্গন, রত্নাভরণ ধারণ ও শীতল প্রলেপন এই সমস্ত তৃষ্ণা-রোগির পথ্য।

ফারোগেহ পথ্যানি।

সেহাঞ্জনস্বেদন্দ্দশানব্যায়ামনজ্ঞাতপদস্তক ঠিন্।
ভাৰ্ব্যায়মনজ্ঞাতপদস্তক ঠিন্।
ভাৰ্ব্যায়মনজ্ঞাত বৰ্ণাই ক্যায়মনজ্ঞান কৰা হৈ ক্যায়মনজ্ঞান কৰা কি হি তাভিলাবী
ভূকাভূরো নৈন ভাজেৎ কদাহিৎ ॥
সেহ (তৈল দ্বতাদি), অঞ্জন, স্বেদ, ধুমপান, ব্যায়াম, নজু, নৌডু, দন্তধাবন, ভার্ক্যাক
ভ্রব্য, অয়দ্রুব্য, লবণবদ-সক্তর্যব্য, ক্ষায়দ্রুব্য,
ভূক্যারোগাক্রান্ত ব্যক্তির ভ্যান্য ।

ইত্যায়ুকোদ-সংগ্রহে ভৃষ্ণারোগাধিকার:।

অথ মূর্চ্ছাদিরোগাধিকারঃ।

2:0

অথ মূৰ্চ্ছানিদানন্।

শীণত বছদেশিত বিক্লাহারদেবিনং।
বেগ্যাগাভাদভাগাভাদ্বীন্দর্য বা পুনং॥
করণায়ভনেস্থা বাঞ্চাভাগুরের চ।
নিবিশতে বদা দোবাতদা স্চাল্লি মানবাং॥
সংজ্ঞাবহাত্ত নাড়ার শিহিতাবনিলাদিভিং।
ভমোহভাগৈতি সংসা হ্বড়খবাণোহকুৎ॥
হগহুখবাপোহাচি নরং পতাত কাঠবং।
মোহো নুট্ছতি ভামাহং বড়িখা সা প্রকার্তি ।
বাতাদিভিং লোনিতেন মজেন চ বিষেণ্ড।
বাতাদিভিং লোনিতেন মজেন চ বিষেণ্ড।
ক্বপাতার পিত্তর প্রভুত্বনাবতিঠতে॥
হংগীড়া ভূভণং মানিং সংজ্ঞাদৌকল্যমন চ।
সকাসাং প্রকাণাণি ব্যাধ্য বিভাবরে।
নীলং বা বদি বা ক্ষমাকাশ্যবার্থণ্য।
পতাংক্তমং প্রবিশতি শীল্লাঞ্প্রভিন্নতে॥

त्तरायुक्ता**अभक्ति अ**नीक्षा क्रमाश्च b । কাৰ্ণাং ভাবাৰুণা জ্বায়া মুৰ্জ্বায়ে বাতসপ্তবে ॥ রক্তং হরিতবর্ণং বা বিয়ৎ পাঁতমথ পি বা। প্ৰাংশ্বমঃ প্ৰবিশ্তি সংখ্যান্চ প্ৰবুধাতে॥ (স্পিপ্স: স্মন্ত:পে: রফ্রণী চাবুলেক্ষণ:।) সংভিন্নকাঃ পীতাভা মুক্তায়ে গিওস**ন্ত**ৰে । (भवनका गम को गम के इ.स. वा अस्मा घरेनः। প•"ংস্তমঃ **প্রবিশ**তি চিরাচ্চ প্রতিবৃধ্যতে ॥ श्वकृष्टिः आवृदेखत्रेक्षयदेशवादर्ज्ञन हम्बन्ता । সপ্রসেকঃ সঞ্চল্লা মুদ্ধুরে **ক্**ফসম্বরে ॥ শকাকুতিঃ দল্লিপাতাদপত্মার ইবাগতঃ। স জন্তং পাওয়তাঙি বিনা বীভৎসচেষ্টিটেঃ ॥ পু:প্রাপিত্রমে রূপ: রক্তগন্ধন্তদ্বয়:। ত্থা**জন্ত গ**ৰেন মৃদ্ধি ভুবি নানবা: ॥ দ্রব্যবভাব ইত্যেকে দৃষ্ট্র যদভিমুখ্তি। গুণাপ্তারতরকেন স্থিতান্ত বিষন্তায়োঃ।

ত এব তক্ষাৎ তাভ্যান্ত মোহে স্থাতাং বথেরিতে। তথাক দৃষ্টব্যকলা গৃঢ়োচ্ছ্যাসক মুচ্ছিতঃ ॥
মন্ত্রেন বিলপঞ্জে নষ্টবিভ্রান্তমানসঃ।
গাত্রাণি বিক্ষিপন্ ভূমে জরাং যাবম বাতি তৎ ॥
বেপথ্যপ্রতৃকাঃ হয়ন্তমক বিষম্চিছতে।
বেদিত্রাং তীব্রতরং যথাবং বিষক্ষণৈঃ ॥

বেগধারণ, বিক্লদ্ধভোজন, মলমূত্রা দির লগুড়াদি ধারা অভিবাত ও সত্তপ্রের অন্নতা এই সকল কারণে ক্ষীণ ও বহুদোষ-ব্যাপ্তদেহ বাক্তির, বাতাদি উগ্ৰদোষ চক্ষরাদি-বাহেন্দ্রিয়ে ও মনোবহ মনো ধিষ্ঠান আভান্তর স্রোতঃ সকলে প্রবেশ করে, তথ্নই মানব মুচ্ছিত হুইয়া থাকে। অথবা মনঃ, শিরা ধ্যনী শ্রোতঃ প্রভৃতি যে সকল নাড়ীকে আশ্রেষ করিয়া ইন্দ্রিয়াদি স্থান প্রাপ্ত হয়, সেই সকল সংজ্ঞাবহ নাড়ীও বাতাদি দোষ কর্ত্তক আবৃত হইলে, স্বৰহংশনাশক-অজ্ঞান-হেতু তমোগুণ সহসা বৃদ্ধিত হয়। স্বতরাং সুথহাথের নাশ নিবন্ধন মুম্বা মুচ্ছিত হইয়া কাষ্ঠবৎ ভূমিতে পতিত হইয়া থাকে। এই পীড়ার নাম মোহ বা মুর্চ্ছা। ইহা ছয় প্রকার, যথা—বাতজ, পিত্তজ, শ্লেমজ, রক্তজ, মগুজ ও বিষজ। এই ছয় প্রকার মুর্চ্ছাতেই পিত্তের আধিপতা থাকে জানিবে।

মুচ্ছা উপস্থিত হইবার পুরের, সদরে পীড়া, জুন্থা, প্লানি ও জ্ঞানের অল্পতা এই সকল লক্ষণ প্রকাশিত হয়। মুচ্ছা রোগের ব্যক্তা-বস্থায় যে দোবের লক্ষণ দৃষ্ট হইবে, তাহাকে তদ্যোবসম্বন্ধ বলিয়া জানিবে।

বাতমূর্চ্চার, রোগাঁ নীল, রুফ্য অথবা অরণ বর্ণ আকাশ দর্শন করিতে করিতে মুর্চ্চিত হয় ও শিল্ল সংজ্ঞা লাভ করে এবং কম্প, অঙ্গমর্দ (আলভ্ড ত্যাগ করা,—গাভাজা), স্নুদ্রের পীড়া, দেহের রুশতা ও ভ্যাব বা অরণবর্ণ কান্তি এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হইয়া থাকে। পিত্তজ মুর্চ্চার রোগা রক্ত পীত অথবা হরিত বর্ণ আকাশ দর্শন করিতে

করিতে মূর্চ্চিত হয়। মূর্চ্চাপনোদন কালে ঘর্মা, পিপাসা, •সন্তাপ এবং রক্ত বা পীত বর্ণ নেত্র, ভাঙ্গা মল ও পীতবর্ণ কাস্তি এই সকল লক্ষণ সংঘটিত হইয়া থাকে। শ্লেম্মজ মূর্চ্চায় রোগা আকাশকে মেঘাভ বা মেঘাচ্ছন্ন, অথবা ঘোর অন্ধকারাবৃত দর্শন করিতে করিতে মূর্চ্চিত হয় ও বিলমে সংজ্ঞালাভ করে। সংজ্ঞাভাভাল আপন অঙ্গ সকল আর্দ্রচর্ম্মবেষ্টিতবং গুরু বিলিয়া বোধ করে এবং তাহার মুধ্নাব ও বমন বেগ হইয়া থাকে।

সানিপাতিক মৃচ্ছান্ত বাতজাদি ত্রিবিদ মৃচ্ছারই লক্ষণ সংঘটিত হয় এবং রোগাঁ অপ-আরবং প্রবলবেগে পতিত ও দীর্ঘকালে চেতনা প্রাপ্ত হয়। কিন্তু অপন্তারে বেরুগ ফেনব্যন, দন্তদট্টন ও নেত্রবিক্ষতি প্রভৃতি ভ্রমানক অঙ্গবৈক্ষতা বিভ্যান থাকে, ইহাতে হাহা থাকে না, এই মাত্র প্রভেদ স্থানিবে।

মৃত্তিকা ও জল উভয়ই ত্যোগুণ-বছণ, রক্তগন্ধও তদ্যর অর্থাৎ পৃথিবীজলায়ক, সভরাং উহাতেও ত্যোগুণের আদিকা আছে .
এবং মানবও ত্যোগুণ-ভূমিষ্ঠ; তক্তভা রক্তগঞ্জে ত্যোবহুল মানব মৃত্তিত হইয়া থাকে। কেই কেহ বলেন, জব্যের স্বভাবই কারণ। যেহেতুগন্ধ আদ্রাণ না ক্রমিয়াও কেবল মাত্র দর্শনেই মৃত্তি। ইইয়া থাকে। হত্তের এমনি সভাব যে, উহার দ্রাণে বা দর্শনেও মৃত্তা উপস্থিত হয়।

কণু, কৃষ্ণ, আশুকারী, বিশ্ন, ব্যবায়ী, তীক্ষ, বিকাশা, কৃষ্ণ, উষণ ও অনিদেশ রম এই দশটী বিষের গুণ। এই গুণ সকল তৈলাদিতেও আছে, কিন্তু সকলগুলি তীল-ভাবে নাই।

বিধ ও মজে ঐ দশটি গুণ্ট তীব্ৰতরকণে বিজ্ঞান আছে, তজ্জ্ঞা তৈলাদি ধান মুৰ্চ্ছা হয় না, বিষ ও মতে মুৰ্চ্ছা হটয়া থাকে। বিষক্ত ও মজ্ঞজ্ব মুৰ্চ্ছার বিষয় লিখিত হটতেটে। রন্তজ মূর্চার অঙ্ক ও দৃষ্টি স্তরীভূত এবং খাসক্রিয়া অস্পষ্ট হইরা থাকে। অধিক মন্ত্রান্ত জানর হিত ও বিলাস্ত চিত্র হইয়া ভূমিতে পড়িয়া হস্তপনাদি সঞ্চালন করে ও প্রলাপ বকিতে বকিতে মূর্চিত হয়। মন্ত যতক্ষণ না জীণ হয়, তত্তকণ মূর্চ্চাপনোদন হয় না, জীণ হইণেই সংজ্ঞালাভ হইরা থাকে। বিষত্ত মূর্চায় কম্প, নিজা, ভ্রমা ও অন্ধলার দর্শন, এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয় এবং কন্ম, মূল, ফল, পত্র ও ক্ষীরাদি বিষেব যে সকল লক্ষণ স্ত্রণতের কল্পস্থানে লিখিত আছে, তাহাও তীব্রতর ভাবে প্রকাশিত ইইয়াথাকে।

অথ মূর্চ্ছারোগ-চিকিৎসা।

সেকাবগাঙে) মণয়ঃ সহারাঃ শীতাঃ প্রদেহা ব্যগনানিলক। শীতানি পানানি চ গন্ধবস্তি সক্ষাথ মুচ্ছাথনিবাবিতানি।

সকল প্রকার মৃচ্চারোগেই শীতল জন-সেক, অবগাহন, মণি (মুক্তাফটকানি) খচিত হার ধারণ, গাত্তে উশার-চন্দমানি লেপন, ব্যজন-বায় এবং কর্প্রাদি থাবা স্থানীকৃত ও শীতল পানীয় হিতকর।

সিদ্ধানি বর্গে মধ্রে পরাংসি সদাড়িনা আললজা রসাত। তথা যবা লোহিতশালয়ত মূর্জাস্থ প্রপাত সতীনমূলাাঃ। (সতীনো বর্জ্ লকলায়ঃ)

কাকোল্যাদি মধুর বর্গের সহিত সিদ্ধ হথঃ, দাড়িম-রস মিশ্রিত জাঙ্গল পশুর মাংসের রস, যব, বক্তশালি, মটর ও মুগ মুর্চ্চারোগে স্থপথ্য।

ষণাদোৰং কৰায়াণি ক্ষম্মানি প্ৰবোজ্যেৎ।
মক্তনামান্ত মূৰ্চ্ছায়াং হিতঃ শীতক্ৰিমাবিধিং॥
মক্তনায়াং বমেমন্ত্ৰং নিজা সেবেদ্ যথান্থ্ৰম্।
বিষয়ায়াং বিষয়ানি ভেষজানি প্ৰবোজ্যেৎ॥

বাতজাদি মূর্চ্ছারোগে বাতজাদি **অ**রম্ন ক্ষায় প্রয়োগ ক্রিবে। রক্তনর্শন ও রক্তের গন্ধ আত্মাণ ধারা উৎপন্ন মৃচ্ছারোগে শীতক্রিয়া কর্ত্তব্য । মন্তপানজনিত মৃচ্ছারোগে বমনকারক ঔষধ ধারা উদরস্থ মন্ত বমন করাইয়া রোগিকে স্বাস্থ্য লাভ পর্যান্ত নিজা ঘাইতে দিবে । বিষক্ষ মৃচ্ছানোগে বিষত্ন ঔষধ ব্যবস্থেয় ।

কোলমজ্জোষণে শীর-কেশরং শীতবারিণা। পীতং মুক্তাং ভয়েলীতা কুঞাং বা মধুসংযুতাম্॥

কুল জাটির শস্তা, মরিচ, বেণার মূল্ও নাগেশ্বর এই সমুদায় শাতলজলে মর্দ্ধন করিয়া পান, অথবা পিপুল্চুর্ণ মধুব সহিত লেহন করিলে মুচ্চা দ্র হয়।

মহৌৰধায়তাসুদ্রা-পৌধরগ্রিতেক'ডবম্। পিলেৎ কণাযুতং কাথং মুঠ্ছায়েয়ু মদেয়ু চ ॥

ভাঁঠ, গুলঞ্চ, কণ্টকারী, কুড় ও পিপুলমূল ইঞাদের কাথে পিপুলচুর্ণ প্রাক্ষেপ দিয়া, তাহা পান করিলে মূচ্ছা ও মদরোগ নিবারিত হয়।

পীতং পয়শ্চ ধারোধণং মৃক্রায়াস্তকরং পরম্। প্রত্যহ ধারোধি হগ্ধ পান করিলে মৃচ্ছা প্রশম্ভ হয়।

তাম্রচর্ণং সমোণীরং কেশরং শীতবারিণা। পীতং মুর্চ্চোং জতং হস্তাদ্ বৃক্ষমিস্রাশনিষ্ণা।

তাম্ভস্ম ॥ বিতি, বেণার মূল ॥ বিত ও নাগেশ্ব ॥ বিতি একতা শীতল জলের সহিত সেবন করিলে মূচ্চা নিবারিত হয়।

শিরীষবীজগোমুক্ত-কৃষ্ণামরিচসৈক্ষণৈঃ। অঞ্চনং স্থাৎ প্রবোধায় সরসোনশিলাবচৈঃ॥

শিরীষবীজ, পিপুল, মরিচ, সৈন্ধব, রস্থন, মনঃশিলা ও বচ গোমুত্তে পেষণ করিয়া অঞ্জন দিলে মুচ্চাপনোদন হয়।

মধুকসারসিক্থে-বচোষণকণাঃ সমাঃ। গ্লুফং পিষ্ট**্রান্তসা নত্তং কুয়াৎ সংজ্ঞা**পবোধনম্॥

মৌলসার, সৈন্ধব, বচ, মরিচ ও পিপুল সমভাগে লইরা জলের সহিত উত্তমরূপে পেষণ করিয়া নশু লইলে মূচ্ছারোগির সংজ্ঞা লাভ হইয়া থাকে।

অথ ভ্রম-নিদ্রা-তন্দ্রা-লক্ষণম।

মুচ্ছা পিন্তভম:প্রায়া রজ:পিন্তানিলাদ্ভম:।
তমোবাতক্ষণ তলা নিজা লেখতমোতবা ।
চক্রবদ্ভমতো গাত্রং ভূমৌ পাইতি সর্বাদা।
ভ্রমরোগ ইতি জ্ঞেরো রজ:পিন্তানিলাক্ষক:॥
ইন্দ্রিয়ার্থেদসংবিভিগৌরবং জূম্বণং রুম:।
নিজার্ভতের বভেহা তক্ত তলাং বিনির্দিশেৎ॥

পিত্ত ও তমোগুণে মূর্চ্ছা, বায় পিত্ত ও রজোগুণবেগে ভ্রম, বায়ু কন্ধ ও তমোগুণ-বোগে তন্ত্রা এবং শ্লেমা ও তমোগুণবোগে নিলা হইয়া পাকে।

ভ্রমরোগে নিজ শরীরকে বা বিশ্বস্থিত সমস্ত পদার্থকৈ ঘূর্ণমোন বোধ হয়, ভজ্জ্যই রোগী দাড়াইতে পারে না, দাড়াইলেই ভূমিতে পড়িয়া যায়।

নিক্রা ও তন্ত্রার লক্ষণ।—নিক্রা ও তন্ত্রা অতি প্রসিদ্ধ, ইহা সকলেই জানেন, বিশেষ বিবরণ লিখিবার প্রয়োজন নাই। নিদ্রায় ইন্ত্রিয়া ও মন উভয়েরই মোছ হয় এবং ইন্ত্রিয়াপণ রূপ-রুসাদি নিজ নিক্স বিষয় গ্রহণে সম্পূর্ণ অসমর্থ হইয়া থাকে। কিন্তু তন্ত্রায় কেবল ইন্ত্রিয় মোহ, ইন্ত্রিয়-বিষয় সকলে অসম্যুগ্জান ও নিদ্রার্ভ ব্যক্তির স্থার চেটা এবং দেহের গৌরব জ্প্তা ও ক্লান্তি এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়।

অথ ভ্রম-চিকিৎসা।

শতাবরীবলামূল-ক্রাক্রাসিক্ষং পদ্ম পিবেৎ। সসিতং জননাশায় বীজং বাট্যালক্ষ্য বা। পিবেদ্যুরালভাকাথং সমূতং জমশান্তরে। ক্রিক্লায়াঃ প্রয়োগো বা প্রয়োগঃ প্রসোহপি বা।

শতমূলী, বেড়েলামূল ও কিস্মিসের সহিত সিদ্ধ গ্রম পান করিলে, অথবা বেড়েলা-বীকচুর্ণ ও চিনি লেহন করিলে ভ্রমরোগ নিবারিত হয়। ঘুতসংস্কু গুরালভার কাথ, ত্রিকলার কাথ বা গ্রম ইহারাও ভ্রমরোগ-নাশক। রশায়নানাং কৌস্কস্ত সর্পিষো বা প্রশক্ততে ।
(রশায়নানাং শিলাজভাদিরশায়নপ্রয়োগাণাম্।
কৌস্তং স্পির্শান্তিকম্।)

ভ্রমরোগে (গাত্রঘূর্ণন রোগে) দশবৎসরের পুরাতন মত মদ্দন ও শিলাজতু প্রভৃতি রাসায়নিক ঔগণ সেবন প্রশস্ত।

মধুনা হস্তাপহতা ত্রিফলা রাত্রো গুড়ার্ককং প্রাতঃ। সপ্তাহাৎ পথ্যাশী ২৮মূর্জাকাসকামলোনাদান ॥

রাজিতে মধুব সহিত অঞ্চলাচূর্ণ ও প্রাতঃকালে গুড়েব সহিত আদা সপ্তাহকাল ভক্ষণ করিলে মদ, মুর্চ্ছা, কাস, কামলা ও উন্নাদ প্রশামত হয়। ঔষধ সেবন কালে পথ্যভোজী হইবে অর্থাং মুর্চ্ছারোগে যে সকল দ্রবা হিতকর, তাহাই ভোজন করিবে।

ওঠীকৃষণতাহানাং দাভয়ানাং পলং পলম্। ওড়দা ষ্টুপলাতেষা ওড়িকা অমনাশিনী।

ন্ত ঠ, পিপুল, শুল্ফা ও হরীতকী প্রত্যেক ১ পল এবং গুড় ৬ পল একত্ত মর্দ্দন করিয়া বটিকা প্রস্তুত কানেবে। ঐ বটা সেবনে ভ্রমরোগ নিবারিত হয়।

ত'লং ছুর্'লভাকাথে, পাঁত্র মুত্সংযুত্য। নিবার্থেদ্ জনং শীঘং সংশ্রেছিত ন বিভাতে॥

ত্রালভা-কাথের সহিত তাম্ভন্ম স্থত-সংযুক্ত করিয়া সেবন করিলে শীঘট এমরোগের শান্তি হয়।

অথ নিদ্রাতন্ত্রা-চিকিৎসা।

তুরঙ্গলালাবণোত্তমেন্দু-মনঃশিলামাগথিকামধুনি। নিযোজা ভাষ্ঠান্ধি বিনিশ্চিভানি ভন্তাং সনিজাং বিনিবারগতি॥

ঘোড়ার লাল, গৈন্ধৰ, কপূৰ, মনঃশিলা, পিপুল ও মধু একতা উত্তম্মপে পেষণ করিয় নেত্রে অঞ্জন দিলে, নিদ্রাও তক্তা নিবারিত হয়। সৈক্ষবং খেতমরিচং সর্থপং কুষ্ঠমেব চ। বস্তমুত্তেণ সংপিষ্য নস্যং তল্রাবিনাশনম্ ॥

সৈত্বলবণ, সজিনাবীজ, খেতসর্ঘপ ও কুড় প্রত্যেক সমভাগে লইয়া ছাগমূত্রে পেষণ করিয়া নশু লইলে তন্ত্রা নিবারিত হয়।

তন্ত্রিণং স্থশগ্যাগ্নাং প্রকামং স্বাপণ্ণেদ্ব ভিষক্।
তন্ত্রারোগিকে স্থপপ্রদ শধ্যাগ্ন শগ্নন করাইগ্না
যথেষ্ট নিদ্রা যাইতে দিবে।

শিরীষ্বীজং লণ্ডমং পিপ্লনীং লবণোন্তমম্।
মন:শিলাঞ্চ মধুনা গ্লন্থং বড়েন মর্দ্দিরেং ।
তুলাঞ্জনেন তুলান্ড সনিমা বিনিবর্ততে ।

শিরীষবীজ, রম্মন, পিপুল, সৈক্ষব ও মন-ছাল এই সকল জব্য মধুর সহিত উত্তমক্ষণে মধ্যন করিয়া তাহার অঞ্চন দিলে তলা ও নিদ্াশ হয়।

অথ সন্ন্যাস-নিদানম্।

বাগ দেহমনসাং চেষ্টামাক্ষিপ্যাতিবলা মলাঃ। সংস্থাস্যাত্ত্যবলং জন্তং প্রাণারতনমাশ্রিতাঃ। স না সন্নানসন্যন্তঃ ক'জীভূতো মৃত্যোপমঃ। প্রাণৈবিম্চাতে শীত্রং মৃক্তা সক্তাক্ষলাং ক্রিয়াম্।

সন্মানরোগে বাতাদি দোষ সকল অতি আশ্রয় কু,পি ত প্রাণস্থান-হাদয়কে হইয়া করিয়া বাক্য দেহ ও মনের চেষ্টা বিনাশপুর্বক তুর্মল মহুষ্যকে মুচ্ছিত করে। সেই সন্মাস-পীড়িত ব্যক্তি কাষ্ঠবং নিজ্ঞিয় ও মৃতবং সংজ্ঞাহীন হয়_। এই রোগ উপস্থিত হইবামা**ত্র** তীক্ষ ञ्चनमान, यमि ऋहीरवन. নশুপ্রবোগ ও আলকুশী-ঘর্ষণ প্রভৃতি স্থ্য:-ফলপ্রদ ক্রিয়া না করা যায়, তাহা হইলে রোগির শীঘুই মৃত্যু হইয়া পাকে।

অথ সন্যাস-চিকিৎসা।

অঞ্চনান্তবপীড়াশ্চ ধৃমাঃ প্রথমনানি চ। স্চীভিত্তোদনং শতং দাহঃ পীড়া নথান্তরে । সুক্ষনং কেপলোক্ষাং চ দত্তৈদ ংগনমেব চ।

আবগুণাবৰ্গক হিতন্তম্য প্ৰবোধনে ।

অবগীড়:—ক্ষীকৃতৌবধরসম্য নামাপ্টে দানব।
প্ৰথমনং—ঔবধচুশ্য দিম্খা নাড়িকরা মুধবাডেন
নামাপ্টে দানম্।

সন্থাদরোগে মুর্চ্ছবিস্থার অপশ্বারোক্ত তীক্ষ অপ্পন, অবপীড়, ধুম, প্রধমন, স্টীবেধ, উফলোহণলাকাদি ছারা নথের অভ্যন্তরে দহন ও পীড়ন, কেশলোমাদি আকর্ষণ, দক্ত ছারা দংশন ও গাত্রে আলকুশী-ঘর্ষণ, এই সকল ক্রিয়া কর্ত্তব্য, ইহাতে রোগির সংজ্ঞা লাভ হয়। কোন ঔষধ শিলায় পেষণ করিয়া ভাহার রসের নম্ম দেওয়াকে অবপীড় কছে। কোন ঔষধের চুর্ণ নশে পুরিয়া ফুৎকার ছারা নাসিকাভ্যন্তরে নম্ম প্রদান করাকে প্রধমন বলে।)

কুয়াটেচরগুটৈলেন রসচ্র্নেন বা পুন:। রেচনং শিশু-সন্ন্যাসে স্বেদক্তভোগরে হিড:॥

শিশুসন্মাস রোগে এরও তৈল অথবা রসচ্প থারা বিরেচন করাইয়া উদরে খেদ প্রদান করিবে।

ক্রিমিজে শিশু-সন্ন্যাসে কিমীণাং হরণং হিত্যু ॥

ক্রিমি**জন্ত শিশু-**সন্নাদে ক্রিমি-নিঃসারণ কর্ত্তব্য।

कर्गामधूमुठः स्टब्स्यामस्मीनस्यः । भीडरमकावनादानीन् मस्तास्य नीएनः स्टांद ॥

মূচ্ছারোগে রসিন্দ্র পিপুলচ্ব ও মধু সহ সেবন করিবে। শীতল জলের অবসেচন, শীতল জলে স্থান এবং হঠাং সর্বাঙ্গে পীড়ন মদ ও মূচ্ছা রোগে প্রশস্ত।

মূহান্তকো রসঃ।

সিল্বং মান্দিকং হেম শিলাজন্মসী তথা। শতমূল্যা বিদাৰ্থ্যান্দ স্বর্গেন বিভাবরেৎ । শক্তং পিষ্ট্রা ততঃ কুর্থ্যাদ্ বটিকা বলসন্মিতাঃ। রসো মুক্তান্তকো হন্তাদ্বো মুক্তাঃ শিবোলিতঃ। রুশ্নন্ন, স্বণমাক্ষিক, স্বর্ণ, শ্লাজতু ও লোহ এই সম্লার দ্বব্য সমভাগে শভম্লী ও ভূমিকুল্লাণ্ডের স্বরুসে ভাবনা দিয়া উত্তমরূপে মাজিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা সেবন করিলে মুচ্ছারোগের শাস্তি হয়। (অমুপান,—শতমূলীর রস, ত্রিফলার জল প্রভৃতি।)

অশ্বগন্ধারিক্টঃ।

তুলার্ক্কাখগন্ধার ম্বলাঃ পলবিংশতিঃ।
মঞ্জিনা হর তকা রঞ্জে ম বৃক্না চ ॥
রাম্বাবিদারীপার্থনাং মুক্তকিবৃত্তারপি।
ভাগান্ দশ পানন্ দভাদনভাজানয়েঃভ্রথা ।
চন্দন্দি গুরুসাপি বচায়ান্চিত্রক্সা চ।
ভাগানষ্টপলান্ কুরানস্তানেংভ্রম: পাচেৎ ।
ব্যোক্সা বেলকাপি বিজ্ঞানক তুলাতারম্॥
ব্যোক্সা বিপলকাপি বিজ্ঞানক তুলাতারম্॥
ব্যাক্সা বিপলকাপি বিজ্ঞানক তুলাতারম্॥
মাসাদৃদ্ধা পিবেদেনং পলার্ক্লারমাণতঃ।
মুক্তায়াপেন্মুতী শোবমুন্নাদমপি দার্পণ্॥
কাশ্যমশাংসি মন্দর্থময়েবাতভ্রবান্ গদান্।
ভ্রম্পন্তাভ্রিগ্রেরাংগতির হ্রাব্সংশ্রম্॥
কাশ্যমশাংসি মন্দর্থময়েবাতভ্রান্ গদান্।
ভ্রম্পন্তাভ্রিগ্রেরাংগতির হ্রাব্সংশ্রম্॥

অর্থগন্ধ। ৫০ পল, তালমূলী ২০ পল, মঞ্জিয়া, হরীতকী, হরিদ্রা, দারুণরিদ্রা, ষষ্টিমধু, রালা, ভূমিকুয়াও, অর্জুনহাল, মৃতা ও তেউড়ী প্রত্যেক ১০ পল, অনস্তমূল, শ্রামালতা, শ্বেতচন্দন, রক্তচন্দন, বচ ও চিতামূল প্রত্যেকে ৮ পল, এই সমৃদায় দ্রব্য ৫১২ সের জলে পাক করিয়া ৬৪ সের অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া শীতল হইলে ছাকিয়া তাহাতে ঘাইলুল ১৬ পল, মধু ৩৭॥০ সের, ত্রিকটু প্রত্যেক ২ পল শুড়ত্বক, তেজপত্র ও এলাইচ প্রত্যেক ৪ পল, প্রিয়ঙ্গু ৪ পল ও নাগের্যর ২ পল, এই সমৃদায় প্রেক্ষিপ্ত করিয়া আর্তগত্রে এক মাস রাখিবে। পরে ছাকিয়া লইবে। ইহার মাত্রা ১ তোলা হইতে ৪ তোলা পর্যান্ত। এই অর্থগন্ধারিষ্ট সেবন করিলে মৃচ্ছা, অপত্রার, শোষ, উন্মাদ,

কার্শ্য, অগ্নিমান্দ্য ও বাতজ রোগ সকল বিনষ্ট হয়।

অথ **প**থ্যাপথ্য-বিধিঃ।

মূর্চ্ছাদিরোগে পথ্যানি।

সেকাবগাহে) মণয়ঃ সহারাঃ শীতাঃ প্রদেহা ব্যঙ্গনানিদশ্চ। শীতানি পানানি চ গন্ধবন্তি ধারাগৃহং শীতমরাচিরোচি:। धूरमांश्यनः नावनमयस्मात्का দাহক স্চীপারতোদনানি। রোয়াং কচানামাপ কর্বণানি নখান্তপীড়া দশনোপদংশ: ॥ নাদা মুখদারমক্ররিরোধো विद्युष्टनष्ट्रक्रमण्ड्यमानि । ফ্রোধো ভয়ং ছঃথকরী চ শ্যা কথা বিচিত্রা চ মনোহরাণি ছায়া নভো>স্ত: শতধৌতসর্পি-মূ দূনি তিক্তানি চ লাজমঙঃ। জীৰ্ণা যবা:লোহিতশালয়ণ্ড কৌ স্তং হবিমু কাদতানযুৱা:। ধ্ৰোভ্ৰা মাংসরসাত রাগা: স্বাড্ৰা গ্ৰাপয়: দিতা চ। পুরাণকুমাওপটোলমোচ-হরীতকীদাড়িমনারিকেলম্.॥ মধুকপুষ্পাণি চঃতভুলীয়-উপোদিকাল্লানি লঘুনি চাপি। প্রকৃষ্টনীরং সিতচন্দ্রনানি কপুরনীরং হিমবালুকা চ। অত্যুচ্চশলোহস্তুতদর্শনানি গীতানি বাজাম্বাপি চোৎকটানি। শ্রমঃ স্বৃতিশিস্তনমান্সবোধা ধৈৰ্যাঞ্চ মুৰ্চছাৰতি পথ্যবৰ্গ:॥

পরিষেচন, অবগাহন মান, মণি ও হার ধারণ, শীতল প্রলেপন, ব্যক্তনবায়, শীতল অথচ স্থগন্ধবৃক্ত পানীয়, ধারাগৃহ (ফোয়ারার ঘর), চল্রের: ৷কিরণ, ধৃম, অঞ্চন, নস্থ, রক্তমোক্ষণ, দাহ (অগ্নিকর্ম), স্টিকাবেধ, রোম এবং চুল আকর্ষণ, নথের অস্কর্জাগ পীড়ন, দ্যাঘাত, নাদিকা ও মুন্থের ঘারনিরোধ, বিরেচন, বমন, লজ্জ্মন, ক্রোধ, ভয়,
ক্লেশকর শ্যায় শয়ন, বিচিত্র মনোহর বাক্য,
ছারা, বৃষ্টির জল, শতধোত ঘত, মৃত্রুব্য,
তিজ্জুব্য, থৈএর মণ্ড, প্রাণ্যব, বক্ত্রুণালি,
দ্রুশ বংসরের পুরাতন ঘত, মুগের য্য, মটর
কলায়ের য্য, ধ্রুদেশ-জাত মুগ পক্ষী প্রভৃতির মাংস্যুম, রাগ, ষাড়ব, গোহুগ্ধ, চিনি,
পুরাতন কুম্ডা, পটোল, মোচা, হরীতকী,
দাড়িম, নারিকেল, মউলফুল, নটেশাক, পুইশাক, লঘুপাক অন্ন, উত্রুহ্ণ জল, খেতচন্মন,
কর্পূর্বাসিত জল ও কর্পূর, অতিশ্র গন্তীর
শন্ধ, অপুর্ম দশন, উগ্রগান, তীব্রান্ত,

পরিশ্রম, স্থৃতি, চিস্তা, ব্রন্ধক্রান ও ধৈর্য্য, এই সমস্ত মুচ্ছারোগির পথ্য।

মূর্চ্ছাদিরোগেহপথ্যানি।

তাধুলং পত্রশাকানি দত্তঘর্ষণমাতপম্।
বিক্ষাভ্রমণানানি ব্যবায়ং স্বেদনং কটুম্।:
ভূড়,নিদ্রায়ানিগরোধং তক্রং মুর্ছ্ডামগ্রী তাজেং।
তামূল, পত্রশাক, 'দন্তধাবন, রৌন্তা, বিক্লম্ব অন্ন পান, দ্রী প্রদাস, স্বেদ, কটুরদ, ভূষণবৈগ-রোধ, নিদ্রাবেগ ধারণ ও তক্রন, মূচ্ছারোগী এই সকল পরিত্যাস করিবেন।

ইত্যায়ুর্বেদ-সংগ্রহে মূর্চ্ছাদিরোগাধিকারঃ।

অথ মদাত্যয়াদিরোগাধিকারঃ।

অথ মদাত্যগ্রাদিলকণম্।

কুষ্ণেন ভাতেন পিপাসিতেন শোকাভিতপ্তেন বুভূক্ষিতেন। ব্যায়ামভারাধ্বপরিক্তেন বেগাবরোধাভিহতেন চাপি । অভাপুভকাবতভোদরেণ সাজীৰ্ণভু:ক্তন ভ্ৰথাবলেন। উচ্চাভিতপ্তেন চ সেবামানং করোতি মস্তাং বিবিধান বিকারান ॥ পানা তায়ং পরমদং পানাজীর্ণমথাপি বা। পানবিজ্ঞমমূগ্রঞ তেবাং বক্ষামি লক্ষণমূ ৷ हिकाशामित्रःकम्भ-भार्शगृतशकागरेतः। বিজ্ঞান্ত প্রলাপক্ত বাতপ্রায়ং মদাতায়ম ॥ ভূঞাদাহজ্বরস্বেদ-মোহাতিসারবিজ্ঞমৈ:। বিস্তাদ্ধরিতবর্ণস্থ পিতপ্রায়ং মদাত্যয়ম্॥ হর্দ্যরোচক হলাস-ত প্রাক্তিমিত্যগৌরবৈঃ। বিত্যাচ্ছীতপরীতক্ত কফপ্রায়ং মদাতায়ন ॥ জেয়ক্তিদোষজ কাপি সর্ববিবিদ্দ দাত্যয়: ॥ রেমা ৬৯ রোৎক গুরুতা বির্মান্ততা চ
বিণ্ মুত্রসক্তিরপ ত শ্রিররোচকক ।
লিক্সং পরস্ত চ মদক্ত বদন্তি তজ্জাকৃষণা ক্ষলা শিরসি সন্ধির চাপি ভেদঃ ।
আধানমুগ্রমণ চোলিগরণং বিদাহঃ
গানেহজরাং সমুণগচ্ছতি লক্ষণানি ।

কুন্ধ, ভীত, পিপাসিত, শোকার্ত্ত বা
বুভূন্ধিত হইয়া অথবা ব্যায়াম, ভারবহন বা
পথপর্যটনে ক্লান্ত হইয়া কিংবা মল মুত্রাদির
বেগধাবণে নিতান্ত কাতর হইয়া বা অপরিমিত
পান-ভোলনে পূর্ণোদর হইয়া অথবা অজ্ঞীর্ণে
ভোজন করিয়া কিংবা তুর্মনাবস্তায় বা উত্তাপে
তাপিত হইর মন্তপান করিলে বি.বর্ধ পীড়া
অর্থাৎ পানাত্যয়, পরসদ, পানাজীর্ণ ও উৎকট পানবিভ্রমরোগ জনিয়া থাকে। ইহাদের
প্রত্যেকের লক্ষণ লিখিত হইতেছে।

বাভোষণ মদাত্যয় রোগে হিকা, খাস, দির:কম্প, পার্স্পুল, নিদ্রানাণ ও বহুপ্রদাপ এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়। পিত্তোষণ মদাত্যয়ে তৃষ্ণা, দাহ, জ্বর, ঘর্মা, মোহ, অতিসার, বিভ্রম ও দেহের হরিতবর্ণতা, এই সকল লক্ষণ লক্ষিত হয় এবং কফোষণ মদাত্যয়ে বমি, অমুচি, বমির বেগা, তক্সা, আর্দ্রবার্তবং জ্ঞান, দেহের গুরুতা ও অতিশয় শীত, এই সকল লক্ষণ প্রকাশিত হইয়া থাকে। মার সায়িপাতিক মদাত্যয়ের, উল্লিখিত বাতোষণাদি ত্রিষিধ মদাত্যয়েরই লক্ষণসমুধ্ সংবটিত হয়।

পরমদ নামক রোগে শ্লেমাধিক্য (নাদা-প্রাবাদি), দেহের ভার, মুখবৈরস্ত, মলমূত্র-রোধ, তন্ত্রা, অক্লচি, তৃঞা, মস্তকবেদনা ও সন্ধিস্থানে ভঙ্গবংপীড়া, এই সকল লক্ষণ দৃষ্ট ছইশ্লা থাকে।

পানাজীর্ণ রোগে অতি উতা উদরাগান, ৰমি বা উলগার, উদরে বিদাহ এবং পীতমন্তের অপরিপাক এই সকল লক্ষণ সঞ্জাত হয়।

অথ মদাত্যয়াদি-চিকিৎসা।

মজ্যোধানাঞ্ধ রোগাণা: মস্তামেব হি ভেষজম্।
যথা দহনদ্ধামাং দহনবেদনং হিতম্॥
মিখ্যাতিহীনমন্তোন যো ব্যাধিকপজারতে।
সমেনৈব নিপাতেন মজ্যেন সাহি শাম্যতি॥

বেখন অগ্নিন্ধ ব্যাক্তর অগ্নিষেদ হিত-কর, সেইরূপ মন্তপান-জনিত মদাত্যরাদি রোগে মন্তই প্রধান ঔবধ। অতিযোগ, হীন-যোগ বা মিথাাযোগ ফুক্ত মন্ত ছারা দে বাাধি উৎপন্ন হয়, তাহা সমমাত্র ও যথাবিদি পীত মন্ত ছারা প্রশমিত হটয়া থাকে।

মন্থ: থৰ্জুরমূথীকা-বৃক্ষামান্তিকাণিড়িমৈ:। পক্ষযকৈ: সামলকৈবুজি \ম্ভাবিকান্তুৰ । (স্ববালোড়িতলাজশঙ্জু: পৰ্জুরাদিভিবুজি মন্থ উচাতে। পৰ্জুরাদীনাং জৰো আহু ইতি ভালু:।)

থৈ জলে গুলিয়া তাহাতে পিগুৰজ্জুর, কিন্মিন্, মহানা, তেঁতুল, দাড়িম, ফল্সা ও আমলকীর রস মিশ্রিত করিয়া পান করিলে মন্ত্রপান-জনিত রোগ উপশ্যিত হয়।

িশএর ছাতৃ জলে আলোড়িত করিয়া তাহাতে খৰ্জুরাদি দ্রব্যের রস মিশ্রেত করিলে তাহা মন্থ নামে অভিহিত হইয়া থাকে।)

চব্যং সৌৰচ্চলং হিঙ্কু পূরকং বিশ্বদীপাকম্। চুৰ্ণং মঞ্জেন প¦তব্যং পানাত্যয়ঙ্কজাপহম্ I

চৈ, সচললবণ, হিং, টাবালেবুর খোলা, ভঁঠ ও যমানী চুর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া মন্ত পান করিলে মদাত্যয় রোগ নিবৃত্ত হয়।

মন্তং মৌৰচচলব্যোষ-যুক্তং কিঞ্চিজ্জলাখিতম্। জীৰ্ণমন্তায় দাতব্যং বাতপানাত্যয়াপহন্॥

বাতিক মদাতায়ে জীর্ণমন্ত ব্যক্তিকে স্বচল-লবণ, শুঠ, পিপুল ও মত্রিচ চূর্ণ যুক্ত এবং কিঞ্চিৎ (কেহ বলেন, আট ভাগের ১ ভাগ) জল মিশ্রিত মন্ত পান করিতে দিবে।

লাবতি বিদিক্ষাণাং রদৈশ্চ শিথিনামণি।
পশ্দিণাং মুগদংক্ত নামানুপানাং তথোদনৈঃ।
বিধোক্তনগালৈক বেশবারেমু থাপ্রিয়ে।
বিধোক্তনগালেক বিদ্যালিক মান্তায়ম্।

লাব, তিত্তিরি, কুকুট, ময়্ব, আনুপদেশো-দ্বৰ ম্গমাংস ও মংস্থা ইহাদের মুষ, স্বিশ্ধ উষণ এবং লবণ ও ভন্নরস মুক্ত আন্ন, মুখপ্রিয় বেশ-বার এবং গোধ্ম ক্বত লুচি এ.ভৃতি স্বিগ্ধ খান্থের সহিত মন্থা পান করিলে বাতে।বিগ মদাত্যয় নিবারিত হয়।

মূলাগ্ন: সিভাযুক্ত: স্বাছ্ব। পৈশিতো রস:। পিরপানাভারে যোজ্যাঃ সর্বভেচ ত্রিরা হিমাঃ। মতাং পুরাতনং তত্র শীতবাধ্যমখাপি বা। জাকামলকভোয়াক্তং সিভরা মহ শক্ততে।

পৈত্তিক মদাত্যয়ে, চিনি সংযুক্ত মুগের যুষ ও স্বাহ্ মাংসের রস হিতকর। ইহাতে সর্ব্বতোভাবে শীতল ক্রিয়া কর্তব্য। চিনি, ফ্রাক্ষা ও আমলকীর রসের সহিত পুরাতন বা শীতবীধ্য মন্ত প্রশস্ত। শিন্তান্তকে মধুরবর্গকবার্থিশ্রং মক্তাং হিতং সমধুশর্করমিষ্টগন্ধন্। শীন্ধা চ মত্তামশি চেক্রসপ্রগাঢ়ং নিঃশেষতঃ ক্ষণমবন্থিতমুলিখেচচ।

পৈত্তিক মদাত্যয়ে মধুরবর্গের কাথমিশ্রিত মশ্ব, চিনি ও মধু সংস্কুত মশ্ব এবং
ইইগন্ধ বিশিষ্ট মশ্ব হিতকর। এই রোগে
প্রচুর ইক্ষুরস যুক্ত মশ্বপান করিয়া ক্ষণকাল
পরেই ঐ পীত মশ্ব নিংশেষে ব্যন করিলেও
উপকার হয়।

মন্ত্রং থর্জুরমুখীক-শার্মকরসৈযু তম্। সদাড়িমরসং শীতং শক্ত্ভিশ্চাবচূর্ণিতম্॥ সশর্করং শার্করং বা মাধ্বাক্মধ্বাশরম্। দত্যাদ্ বহুদকং কালে পাড়ুং পি**ভ্**মদাত্যরে॥

থজ্জুণ, কিস্নিদ্, ফল্দা ও দাড়িমের রস-সূক্ত শীতণ এবং শক্ত, ধারা একিত পেষ্টক নতা অথবা শক্রাসূক্ত বা শাক্র (শক্রাক্ত) বা মাধ্বীক মতা, কিংবা বছ জল মিশ্রত অতা মতা গৈছিক ম্লাত্যয়-রোগিকে কালে (পিপাসাকালে) পান করাইবে।

> শীতানি চান্নপানানি শীতপ্য্যাসনানি চ। শীতবাতজলম্পর্কা: শীতান্মপবনানি চ। ক্ষৌমপধ্যোৎপলানাঞ্চমণীনাং মৌক্তিকত চ। চন্দনোদকশীতানাং স্পর্শান্তজ্ঞাংগুণীতলাঃ।

শীতল অন্ন ও পানীয়, শাতল স্থানে শয়ন এবং উপবেশন, শীতল বায়ু দেবন, শীতল জল স্পর্শ, শাতল উপবনে বাস, পট্টবন্ত্র, পদ্ম, উৎপল, মণি, মুক্তা, চন্দননিষিক্ত শীতল জল স্পর্শ ও চন্দ্রকিরণ, এই সমস্ত পৈত্তিক মনাভায় রোগে হিতকারক।

হৈমরাজতকাংস্থানাং পাতাণাং শাতবারিভি:। পূর্ণানাং হিমপূর্ণানাং দৃতীনাং প্রনাহতাঃ। সংস্পৃশিক্ষনার্দ্রণাং স্ত্রীণাং পিত্রম্বাত্যয়ে॥

শীতল জলপূর্ণ স্বর্ণ, রজত ও কাংস্তপাত্র ম্পর্শ, শীতল জল অথবা হিমপূর্ণ প্রকাহত দৃতি (চম্মপূটক) ম্পর্শ ও চন্দনচর্চিত নারী-ম্পর্শ, পৈত্তিক মদাত্যরে অত্যম্ভ প্রশস্ত। ত্ব্যতে সলিলঞ্চান্মে দক্ষাৰ্ত্বীবেরসাধিতম্। বলরা পৃথিপর্ণ্যা বা কউকার্য্যাথবা শৃতম্। সনাগরাভিঃ সর্ব্যাভিরাভির্বা শৃতশীতলম ॥

এই মনতায়ে তৃষ্ণা হইলে বালা, বেড়েলা, চাকুলে, কণ্টকারী ও ওঠি ইহাদের কোনটির সহিত কিংবা মিলিত এই সকল দ্রব্যের সহিত জল সিদ্ধ করিয়া শীতল হইলে পান করিতে দিবে।

ছু:ম্পর্শের সমুষ্টেন শৃতং পর্শন্তকের বা।
জলং মুখ্যু: শৃতং বাপি দত্যাদ্দোষবিপাচনম্।
এতদেব চ পানীয়ং সর্কজাপি মদাত্যয়ে।
নিরত্যয়ং পীয়মানং পিপাদাব্যরনাশনম্।

কফজনিত মদাত্যয়ে দোষের পরিপাকার্থ হরালভাও মৃতা অথবা ক্ষেত্রপাপ্ডা কিংবা কেবল মৃতার সহিত সিদ্ধ জল পান করিতে দিবে। ইহা দোষের পাচক; সকল মনাত্য-শ্বেই এই জল প্রদান করিবে। কারণ ইহাতে কোন প্রকার অনিষ্টের সম্ভাবনা নাই, অথচ পিপাসাও জ্বের শাস্তি হয়।

ছাগমাংসরসং ক্লক্ষমং বা জাক্সনং রসম্। স্থাল্যামথ কপালে বা ভৃষ্টং কৃষা তু নীরসম্। কটুয়লবৰ্ণং মাংসং থাদেৎ ক্লমনাত্যয়ে ।

কৃষ্ণ (মৃতাদিবিহীন) ছাগমাংস-রস বা মন্ন (দাড়িমের রস) মিশ্রিত জাঙ্গল-মাংস-রস পান করিলে কিংবা কটু (মরিচাদি), মন্ন (দাড়িমাদি) ও লবপমিশ্রিত মাংস স্থালী বা খোলার ভাজিয়া নীরস অবস্থার ভোজন করিলেও লৈমিক মদাতায় নষ্ট হয়।

বাম কন্দ্রব্যুদ্কেন মন্ত্যেনে!লেখনং মতম্। মদ্যত্যিকে কক্ষোদ্ধতে কজ্বনক যথাবলম্॥

শ্লৈষ্মিক-মদাত্যয় রোগিকে বমন-কারক দ্রব্য সংস্কৃত মত পান করাইয়া বমন করাইবে এবং রোগির বল অমুসারে যথোপস্কু উপ-বাস করাইবে।

অফ্টাঙ্গলবণম।

সৌবচ্চলমজাজান্ত বৃক্ষায়ং সায়বেতসম্। অপেলামরিচার্দ্ধাংশং শর্করাভাগবেদ্ধিতম্ ৮ ছিতং লবশমষ্টাঙ্গমগ্রিসন্দীপনং পরম্। মদাতায়ে কফপ্রায়ে দছাংৎ প্রোতোবিশোৎনম্ ।

সৌবর্চন (সচল লবণ), ক্লফজীরা, থৈকল এবং অম্পরেত্রস, এই সমস্তের চুর্ণ সম-ভাগ; দারুচিনি, এলাইচ ও মরিচ এই সকল প্রত্যেক অর্জভাগ; চিনি ১ ভাগ; এই সমস্ত দ্রব্য একত্র উত্তমরূপে মিশ্রিত করিয়া স্রোভোবিশোধনার্থ কফ-প্রধান সদাত্যমে প্রদান করিবে; ইহা অগ্নিবর্জক।

আমাশরন্থারিতং কন্ষপিতং মদাতারে। বিজ্ঞার বহুদোবক্ত তৃড় বিদাহান্বিতক্ত চ ॥ মক্তাং লাক্ষারসং তোরে দক্বা তর্পণমেব বা। নিংশেবং বাময়েচ্ছীত্রমেবং রোগানিমূচ্যতে ॥

মদাত্যয় রোগে রোগির যদি বহু দোধের সঞ্চয়, তৃষ্ণা ও দাহ থাকে এবং আমাশমন্ত কফ ও পিত্তের উৎক্রেশ অর্থাৎ বহির্গমনোন্মুখতা দৃষ্ট হয়, তাহা হইলে রোগিকে মন্ত ও জাকারস-মিশ্রিত জল অথবা তর্পণ-দ্রব্যসংস্কৃত জল আকণ্ঠ পান করাইয়া নিঃশেষে ব্যন করাইবে। ইহাতে শীঘ্রই কফ-পিত্ত-মদাত্যয় রোগের শাস্তি হইয়া থাকে।

অথ কোদ্রবাদি-মদ-চিকিৎসা।

স**গুড: কুমাওরস: শম**য়তি মদমাত মদন-কোদ্রবজম্।

কুমড়ার রস গুড়ের সহিত সেবন করিলে মদন (ভূণধান্ত-বিশেষ) ও কোদ্রব জন্ত মন্ত্রভাসহর প্রশ্নিত হয়।

ध्य त्रकक इक्षः मनक्त्रकां छ পान्न ।

চিনির সহিত হগ্ধ পান ক<িলে ধুতুরা জয় মত্ততা নিবারিত হয়।

সচ্ছদিমুর্চ্ছাতিদারং মদং পুগফলোছবম্। সন্তঃ প্রশমরেৎ পীতমাতৃপ্তেবারি শীতনম্॥

স্পারি ফল ভক্ষণে নত্ততা উপস্থিত হইলো তৎক্ষণাৎ ভৃপ্তিপূর্বক জলপান করিবে। তাহা হইলে বমি, মুচ্ছা ও অতীসার সংযুক্ত স্থপারি-ফলজাত মত্ততা সন্তঃ দুৱীভূত হইবে। বঞ্চকরীবর্মাণাজ্জলপানাল্লবণভক্ষণাদপি চ।
শামাতি প্রফলোভ্রনদন্দ্র্পক্ষজা শর্করাকবলাৎ ॥
তৎক্ষণান্দ্র্দিতঃ চূর্ণং সমণছাতং প্রণাশরেৎ।
তামূলোথং মদং প্রদামেকমেব স্বভাবতঃ ॥
জাতীফসদং শীঘ্রং হস্তি পধ্যা নিবেবিতা।
শাত্রভোগ্রাবগাংশ্চ শর্করা দ্বিবোজিতা।
বিভীত্রদশান্ত্র্যুব্বেতদেব মৃত্যা পুনঃ ॥

শুক্ষ বস্তু গোময়ের আদ্রাণ বা শীতল জল পান, কিংবা লবণ ভক্ষণ দ্বারা স্থপারী-ফলোড্র মন্তরা নষ্ট হয়। চিনি দ্বারা কবল করিলে চুর্ণভন্মণ জন্ম মুখ্পীড়া প্রশমিত হয়। চুর্ণ মদন করত তৎক্ষণাৎ আদ্রাণ লইলে তামূল-ভক্ষণ জন্ম মন্তরা নিবারণ হয়। হ্বীতকী সেবন করিলে জাতীফলোড্র মন্তরা নিবারণ হয়। বহুড়ো ফল দ্বারা মন্তরা উপস্থিত হুইলে শীত্র জলে অবগাহন এবং চিনি সংস্কুত্র দুধি সেবন করিলে তাহা প্রশ্যিত হয়।

বদরীপলবোথাক তথৈবারিষ্ঠকোন্তনাঃ। ফেনিলায়াক যঃ ফেনক্রৈদ্বিহ ধেপনং ওভম্॥

কাজী সহ কুলের পরব বা নিম্বপত্র বা রাটাফল বাটিয়া আলোড়িত করিবে। অন-স্তর থজ স্বারা মন্থন করিয়া ফেন তুলিয়া নেই ফেন শরীরে লেপন করিলে মন্তজনিত দাহের শাস্তি হয়।

মন্তং পাহা যদি না তৎক্ষণমবলেট়ি শর্করাং সমৃতাম্। জাতু ন মদয়তি মন্তং মনাগপি প্রথিতবীযামপি॥

মগুপান করিয়া যদি তৎক্ষণাৎ ঘৃতসংযুক্ত চিনি লেখন করে, তবে ঐ পীত মপ্ত কিঞ্চি-ন্মাত্রও মত্তভা উৎপাদন করে না।

ফলত্রিকান্তচূর্ণম্।

ফলত্রিকং ত্রিবৃচ্ছ্যামা দেবদার মহৌবধম্ ।

জ্ঞানাদা যমানী চ দাবলী লবণপঞ্চম্ ।

শতপূপা বচা কুষ্ঠং ত্রিস্থগজ্যেলবালুক্ম্ ।

সর্বাণ্যেতানি সংচুণ্য পিবেচ্ছাতেন বারিণা ॥
পানাতায়াদিরোগাণাং হরণেংগ্রেন্ট দীপনে ।

সংগ্রহগ্রহণীববংসেহপোতদেবৌবধং ক্ষমম্ ।

ত্রিফলা, তেউড়ী, শ্রামালতা, দেবারু, ভুঁঠ, বন্যমানী, যমানী, দারুংরিজা, পঞ্চল্বণ, গুল্ফা, বচ, কুড়, গুড়ত্বক, তেজপত্র, এলাইচ ও এলবালুক প্রত্যেকের সমভাগ চূর্ণ একত্র মিশ্রিত করিবে। লাতল জলের সহিত সেবনীয়। ইহা সেবন করিলে পানাত্যয় ও গ্রহণী প্রভৃতি রোগ নপ্ত এবং অগ্নি বর্দ্ধিত হয়। (মাত্রা ১ মাধা হইতে ৪ মাধা প্রয়ন্তা।)

এলাছো মোদকঃ।

এলাং মধুকনথ্রিক রজজো বে ফল্ত্রিকম্।
রক্ষণালিং কণাং জাকাং থর্জ্বেক তিলং যবম্॥
বিদারীং গোক্রবীজং তিব্তাক শতাবরীম্।
সংচ্গা মোদকং কুর্যাৎ সিতরা দিপ্রমাণরা।
ধারোক্ষেনাপি পরসা মুকাগ্রেণ বা সমম্।
পিবেদক্ষপ্রমাণান্ত প্রাতর্নীয়িকাং গদী॥
মজ্ঞপানসমুখানা:বিকারা নিধিলা অপি।
সেবনাদস্য নশুন্তি ব্যাধ্যেংহক্তে চ দারণাঃ॥

এলাইচ, যষ্টমর্, চিঠামূল, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, ত্রিফলা, রক্তশালি, পিপুল, দ্রাক্ষা,
পিশুবর্জুর, তিল, যব, ভূমিকুল্লাণ্ড, গোকুরবীজ, তেউড়ী ও শতমূলী প্রত্যেক সমভাগ,
সকলেব থিওণ চিনি; যথাবিদি মোদক
প্রস্তুত করিবে। মাত্রা—২ তোলা পর্যান্ত।
অনুপান—ধারোক্ষ হয় অথবা মূলাযুষ। এই
মোদক সেবন করিলে মল্পান জনিত সর্মন্থকার বিকার ও অন্তান্ত বের্গাও বিনষ্ট হয়।

মহাকল্যাণবটী।

হেমাজ্রঞ্চ রসং গন্ধময়ো নৌজিকমেব চ।
ধাত্রীরসেন সংমন্দ্য শুঞ্জামাত্রাং বটাং চরেৎ ।
ভক্ষমেৎ প্রাতরুখায় তিলক্ষোদমধুর্গুন্য।
সিতাক্ষোদ্রয়তাং বাপি নবনীতেন বা সহ।
অবথাপানজা রোগা বাতজাঃ কফপিভজাঃ।
গদাঃ সর্বেব বিনগুল্পি প্রব্যান্ত নিবেবণাৎ ।

শ্বর্ণ, অত্র, পারদ, গন্ধক, লৌহ ও মুক্তা প্রত্যেক সমভাগ; আমলকীর রসে মর্দ্দন ক্রিয়া ১ রতি প্রমাণ বটকা করিবে। তিল-

চূর্ণ ও মধু, বা চিনি ও মধু, কিংবা নবনীত অন্তপানের সহিত সেবনীয়। ইহাতে মদা-তায়াদি বিবিধ রোগের শাস্তি হয়।

পুনর্নবাগ্যং মৃত্যু।

পরঃপুনর্ববাকাথ-যষ্টিকক্ষপ্রসাধিতম্। মৃতং পুষ্টিকরং পানামজ্যপানহতে)জসঃ।

ছ্প /৪ দের, পুনর্নার কাথ ১২ দের বা ১৬ দের ও যষ্টিমধুর কক /১ দের, ইহা-দের সহিত যথাবিহিত নিয়মামুসারে ত্বত /৪ দের পাক করিবে। এই ত্বত পান করিলে মঞ্চপান-হত্যেক্ষাঃ ব্যক্তির শ্রীরের পৃষ্টি হয়।

বৃহদ্ধার্টাতৈলম্।

ধাতীকলরসপ্রস্থা শতমূলীরসং তথা।
নিদারীশ্বরসপ্রস্থা প্রস্থা বর্ণারাশ্বরসপ্রস্থা প্রস্থাপ্ত ববস্যা চ।
পৃথক কাথাংশ্চ মাবস্যা তৈলপ্রস্থান সংপঠেও ॥
জাবনারো গণো মাংসী মঞ্জিষ্ঠা চেন্দ্রবার্কারী।
শারিবাধ্যানৈবের-শতপুপাপুনর্নবাং ॥
চন্দনধ্যমেলা আব্ কমলং কদলীকলম্।
বচাগুকভেয়াধাতীতোতান্ বন্ধান্ পঠেও তথা॥
মন্দ্রনাদ্যা তৈলস্য গন্ধাং পানাত্যবাদয়ং।
প্লাব্যে স্পুন্ধ হি সিংহত্তা মৃগা ইব॥

তিলতৈল / । সের। আমলকী, শতমূলী ও ভূমিকুমাও প্রত্যেকের রস / ৪ সের, ছাগ-হুন্ধ /৪ সের। বেড়েলা, অশ্বগন্ধা, কলাই, যব ও মাধকলাই প্রত্যেকের কাণ /৪ সের। করার্থ—জীবক, খবভক, মেদা, महारमना, कांरकांनी, क्रीतकांरकांनी, বুদ্ধি, মুগানী, মাধাণী, জীবস্তী, যষ্টিমধু, জটামাংদী, মঞ্জিষ্ঠা, রাথাল খ্যামালতা, অনন্তমূল, শৈলজ, গুলফা, পুন-नवा, त्यं उठन्यन, तत्क्ठन्यन, धनारेंह, खड़्यक्, श्रम्मन, अशक कालीकन, वह, अश्रक, इती-তকী ও আমলকী। যথাবিধি তৈল পাক করিয়া মর্দান করিলে পানাভ্যয়াদি রোগসকল সিংহত্তত মূগের স্থায় অদুরে পলায়ন করে।

প্রীথগুদ্রঃ।

শ্রীরথন্তং মরিচং মাংসী রজজো চিত্রকং খনস্।
উশীরং তগবং প্রক্রাং চলবং নাগকেশরস্।
পাঠাং ধাত্রীং কণাং চবাং লব সকৈলবংলুক্স।
লোপ্রকার্মপারার জনজোগদ্বরে পিবেৎ ॥
ফ্রাকাং যন্তিপলাং তত্র শুড়দা চ তুলাত্রয়ম্।
ধাতকীং দ্বাদশপলাকৈকত্র পরিবোজরেৎ ॥
মাসং সংস্থাপা ধুদুভাগ্রে বন্ত্রপূতং রসং নরেৎ।
পান্তরেরাত্রয় বৈজ্যো বরোবহুয়ান্তপেকরা॥
পান্তিরাং পরমদং পানাজীবিক নাশরেৎ।
পান্তিরামন্ত্রিং শ্রীবঙাসব শ্রান্ত চ॥

খেতচন্দন, মরিচ, জটামাংসী, হরিদ্রা, দাকহরিজা, চিতামুল, মুতা, বেণার মূল, তগ্রপাহকা, ডাক্ষা, রক্তচন্দন, আকনাদি, আমলকী, পিপুল, চৈ, লবন্ধ, এল-বালুক ও লোধ প্রত্যেক ৪ তোলা ; এই সকল দ্রব্য উত্তমরূপে কুটিয়া ১২৮ প্রক্রিপ্ত করিয়া তাহাতে ৬০ পল জাকা. গুড় ৩৭॥ • সের ও ধাইফুল ১২ আবৃত্রমুথ পাত্রের মধ্যে > মাদ রাখিবে। তাহা হইলেই আসব প্রস্তুত হইবে। ১ ভোলা হইতে ৪ ভোলা। ইহাতে পানা-তায়, পরমন ও পানাজীর্ণ প্রভৃতি রোগ আৰু বিনষ্ট হয়।

ত্ৰথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

मनाजायानित्वारम पथानि।

সংশোধনং সংশ্মনং অপনং तज्यनः ख्रयः। সংবংসরসমূৎপন্নাঃ শালরঃ বস্টকা যবাঃ। মুক্পা মাবাক্ত গোধুমা: সতানা রাগবাড়বৌ।
এপতিন্তিরিলাবাজ-দক্ষবর্ভিশশমিবম্ ॥
বেশবারো বিচিত্রান্ত হল্পঃ মন্তং পদ্ম: সিতা।
তঞুলীরং পটোলঞ্চ মাতুলুকং পদ্ধবক্ষ ॥
পর্জ্জং দাড়িনং ধাত্রী নারিকেলঞ্চ গোন্তনী।
সর্পি: পুরাণং কপুরং প্রনীরং শিশিরানিল: ॥
ধারাগৃহং চক্রপাদা মণরো মিত্রসক্ষম:।
কৌমান্থরং প্রিয়ানেবো গীতং বাদিত্রমুক্ষতম্।
শীতান্ত চক্ষনং স্থানং সেবামেত্রদাতায়ে ॥

সংশোধন ঔষধ, সংশমন ঔষধ, নিদ্রা, উপবাস, পশ্লিম, একবৎসরের পুরাতন শালি ও ষষ্টিক ভঙ্লের অন্ন, ধব, মুগ, মাধকলায়, গোধুম, মটর কলায়, রাগ, ষাড়ব এবং এণ তিন্তিরি, লাব, ছাগ, কুক্ড়া, ময়ুর ও শশকের মাংস, বেশবার, নানাবিধ হল্প অন্ন, মদিরা, হগ্ধ, চিনি, নটেশাক, পটোলা, ছোলঙ্গ, ফল্মা, থর্জুর, দাড়িম, আমলকী, নারিকেল, কিস্মিদ্, পুরাতন মৃত, কপুর, উৎক্লুপ্ত জল, শীতল বায়, ধারাগৃহ, চল্লের কিরণ, মণিধারণ, মহদ্ বাজির সহত সমাগম, রেশমনির্মিত বন্ধ, পিয়ালিঙ্গন, ভীত্র গান ও বাল, শীতলজল, চল্লন ও স্থান এই সমন্ত লেই হায়াদি রোগির পথা।

মদাত্যয়াদিরোগেইপথ্যানি।

বেদোহঞ্জনং ধুমপানং নাবনং দন্তব্যপম্। তাব্দুলক্তেপথাং স্যান্দাত্যয়বিকারিণাম্ ॥

স্বেদ, অঞ্জন, ধ্মপান, নশু, দস্তধাবন ও ভাষুণ, এই সমস্ত মদাত্যন্নরোগী পরিভ্যাগ করিবেন।

ইত্যায়ুর্কেদ-সংগ্রহে মদাত্যরাদিরোগাধিকার:।

व्य प. इ. द्वां भाषिकां तः ।

व्यथ नाहरतांग-लक्षण्य।

ভ্বচং প্রাপ্ত: স পানোখা পিজরক্ত ভিমুছিত ।

দাহং প্রকৃত্বতে ঘোরং পিজবং দহতি ধ্রুবন্ ।

কুৎরদেহাত্বাং রক্তমুদ্রিক্তং দহতি ধ্রুবন্ ।

কুডরাতে ত্বাতে বা তামাভত্তামলোক: ।

কোহগজাকবদনো বহিনেবাবকার্যাতে ।

পিজ্বরসমা পিডাং স চাপাক্ত বিধিং মুক্তঃ ।

কুঞানিরোধাদরাতৌ জীণে তেজং সমুদ্রতন্ ।

সংগ্রুবলতাবোঠো জিহ্নাং নিজ্বা বেপতে ।

আফ্রাং প্রকারক্ত দাহোহক্তঃ ভাৎ স্কুতরঃ ।

ধাতুক্তরাক্তো যো দাহত্তেন মুর্জ্জাত্তুর্জিতঃ ।

কামস্বরঃ ক্রিয়াহীনং স সাদেহ্তুব্পীড়িতঃ ।

মুর্মাভিযাত্তোহপ্যান্তি সোহসাধাং স্বর্থে মতঃ ।

স্বর্ম এব চ বর্জ্জাঃ প্রাঃ শীত্যাত্রক্ত দেহিনঃ ॥

মশুর দাহ।—মশুণানে কু।পত পিতোমা পিত্ত ও রক্ত কর্তৃক অভিমূচ্ছিত ও অক্'ক প্রাপ্ত হুইয়া অতি খোগ দাহ উৎপাদন করে। ইহাকে মশুর দাহ কহে।

বক্ত । — সর্বশ্রীরামুগত রক্ত অতি

ইছ হইলে নিশ্চাই দাহ উপাহত হয়। এই

দাহ কৈ বক্তল দাহ কহে। ইহাতে রোগী

তৃষ্ণার্চ, তাম্রাভ ও ভাগুলোচন হয়। তাহার

সমস্ত অল বিশেষতঃ বদন গৌহ বা রক্তগর্ক
বিশিষ্ট হইরা থাকে এবং সে আপনার চতু
দিক্তে অল্লিব্যাপ্ত বলিয়া বোধ করে ও তহং

স্বাণিতও হয়।

পিতৃত্বনিত দাহের লক্ষণ ও চিকিৎসা পিতৃত্বরের স্থার জানিবে। প্রভেদ এই— পিতৃত্বরের স্থার ইহাতে অনব,স্থত।চওত ও আমাশর-ছুইয়াদ থাকে না।

ভূকানিরোধন দাই।—পিপাসা নিগ্রহে
শরীবহু ক্লীর ধাতু ক্লীণ হওয়াতে তেকঃ
(পিডোলা) বার্কিত হুইরা দেহের বাত্তরে ও
ভিত্তরে দাই উপস্থিত করে। এই দাহে গল,

তালু ও ওঠ ওক হয় এবং রোগী জিহবা বাহির কারয়া কাঁপিতে থাকে।

প্রগাঢ় অস্ত্রাঘাতে, হানয়াদি কোষ্ঠ রক্তপূর্ণ হইলে ভয়ন্তর দাহ উপস্থিত হয়। এইরূপ দাহকে রক্তপূর্ণকোষ্ঠজ দাহ কহে। (পূর্ব্বে ঘে রক্তজ দাহের উল্লেখ হইলাছে, তাহা সর্বদেহা-মুগত অতিবৃদ্ধ রক্ত হইতে উদ্ভূত হইলা থাকে, স্মৃতরাং এন্থলে আবার এবন্তুত রক্তজ দাহের উল্লেখ হওর মু পৌনক্রক্তাদোর হয় নাই।)

ধাতৃক্ষয়জ দাহ।—রসরকাদি ধাতৃক্ষ হইলে যে দাহ উপাস্থত হয়, তাহাতে রোগী মুদ্ভিত, তৃষ্ণার্ত, কাণস্বর ও নিশ্চেষ্ট হয় এবং চিকিৎসাহীন হইলে এই ধাতৃক্ষয়জনিত দাহে মৃত্যু পর্যান্ত ঘটিয়া পাকে।

মস্তক হানর ও বস্তান্তি মশ্ম**স্থান সকল** দারুণ আঘাতে আহত হংলে **যে দাই উপ-**স্থিত হয়, তাহাকে মর্শ্মাভিবাতজ দা**হ কহে।** ইহা অসাধ্য ।

দাহরোগে রোগী যদি শীত-গা**দ্র অথচ** দাহ-প্রীক্তে হয়, তাহা হইলে **সর্বপ্রকার** দাহই অসাধ্য।

অথ দাহরোগ-চিকিৎস।।

বং পিন্তজ্ঞরদাহোক্তং দাহে তং সর্বাধিবতে। শতধৌতদ্বতাভাক্তো দেশো বা বংশক্ত ডি:। কোলামলকযুক্তবা ধ'ক্তাইন্নরপি বৃদ্ধিমাব্ । (ধাক্তায়: কাঞ্চিকভেদ:।)

পিত্তজ্ঞর-জনিত দাধের চি:কৎসার বে সকল প্রাক্তরা ও ঔষধ কাংগত হইরাছে, দাহরোগেও সেই সকল প্রাক্তরা ও ঔষধ ব্যবস্থা করিবে। শতধৌত স্থত এবং ব্যবর ছাতু মালত করিয়া, অথবা কুলের জাটির

আয়ুর্কেদ-সংগ্রহঃ।

শাঁস ও আমলকী একত্র কাঁজি দারা বাটিয়া অঙ্গে লেপন করিলে দাহরোগ বিনষ্ট হয়।

চাদয়েৎ তম্ম সর্বাঙ্গমারণালার্দ্রবাসসা। নামজ্জকেন শুক্তেন চন্দ্রেনাকুলেপয়েৎ॥

কাজি দারা বস্ত্র আর্জ করিয়া সর্ব শরীর আরত করিলে কিংনা বেণার মূল ও খেতচন্দন গুল্জের (কাঁজোবশেষ) সহিত পেষণ কবিয়া অঙ্গে লেপন করিলে দাহ প্রশাস্ত হয়।

ফলিনী লোপ্রদেব্যাম্ব হেম পত্রং কুটন্নট্ম। ক্লিলীয়করসোপেতং দাহে শস্তং প্রলেপনম্॥

ক প্রিয়ঙ্গু, লোধ, বেণার মূল, বালা, নাগ-কৈশর, তেজপত্র এবং কৈবর্ত্বমুস্তক এই গকল দ্রব্য কালীয় কার্চ্চের (পীতবর্ণ স্থগদ্ধি কান্ত-বিশেষ। কেহ বলেন, খেতচন্দন) কাথের গহিত পেষণ করিয়া শ্বীরে লেপন করিলে দাহ প্রশাস্ত হয়।

হ্রীবেরপদ্মকোশীর-চন্দনক্ষোদনা'রণা। সম্পর্ণায়বগাহেত জোণীং দাহার্দ্দিতো নবঃ॥

বালা, পদ্মকান্ঠ, বেণার মূল ও চন্দন এই সকল দ্রব্যের চুর্ণ শতিল জলে গুলিয়া ঐ জল দ্বারা একটি দ্রোণা (টব্) পূর্ণ কবিয়া ভাহাতে অবগ্যাহন করিলে দাহের শাস্তি হয়।

চন্দ্ৰাখুকণশুন্দি-ভালবৃজ্ঞোপনীজিভঃ। স্প্যাদ্ধাহান্দিতে!হজোজ-কদলীদলসংস্করে॥

পদ্মপত্র ও কদলীপত্ত নিশ্মিত শ্যায় রোগিকে শ্য়ন করাইয়া চন্দনজল-স্থান্দি-ব্যজন-সঞ্চালিত বায়ু সেবন করাইলে দাহ নষ্ট হয়।

অবগাহেতামুপূর্ণাং দ্রোণীং দাহাদিতো নরঃ।

কেবল জনপূর্ণ টবে অবগাহন করিলেও দাহশাস্তি হয়।

সর্পিরা শতথোতেন দেপাদ দাহ: প্রশামতি।
শতথোত ঘত গাত্রে লেপন করিলেও
দাইনিস্ত হইষা থাকে।

পারয়েৎ কমনভাভ: শর্করান্ত: পরোহপি চ।
^{বি} শীরমিকুরসঞ্চাপি কাররেৎ পিত্ত**কিবিধি**ন্ন

দাহরোগে পদ্মসংসিক্ত জল, চিনির পানা, শীতলজল, হগ্ধ বা ইক্ষুরস পান করাইবে এবং পিতম চিকিৎসা করিবে।

পরিবেকাবগাহেষু ব্যজনানাঞ্চ সেবনে। শস্ততে শিশিরং তোরং দাহতুকোপশান্তয়ে॥

তৃষ্ণা ও দাহ প্রশমনের নিমিত্ত জ্বসেচন, অবগাহন ও ব্যজনানিল সেবন করিতে হইলে তত্তৎস্থলে নীতল জল প্রয়োগ করিবে।

ठन्मनामिकाथः।

পটারপপটোশীর-নারনারদনারজৈ:। মূণালমিসিধান্তাক-পলকামলকৈ: কৃতঃ॥ জন্ধশিষ্টঃ শৃতঃ শীতঃ পাতঃ কোন্তসময়িতঃ। কংশো ব্যপোহয়েদাহং নূণাঞ্চ পরমোদ্ধাম্॥

চন্দন, ক্ষেতপাণ্ডা, বেণার মূল, বালা, মূতা, পদ্মশূল, মূণাল, মৌরি, ধনে, পদ্মগার্চ ও আমলকী মিলিত ২ তোলা, জল নাত দের, শেষ নাত পোয়া। এই কাথ শাতল হইলে তাহাতে মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিবে। তন্তারা অতি উৎকট দাহও নিস্ত হয়।

ত্রিফলাগ্য :

ত্রিফলারথধকাথঃ শক্রাক্ষেত্রিশ্র হৃতঃ। দাহরক্ষপিত্রহরঃ পিত্রশূলনিবারণঃ

হরীতকী, আমলা, বহেড়া ও সোঁদাল ইহাদের কাথ চিনি ও মধু সহ পান করিলে দাহ, রক্তপিত্ত ও পিত্তশূল প্রশমিত হয়।

পর্পটাদিঃ।

পর্গটঃ সমনোশীর: কথিত: শর্করান্বিত: । শীতপানং নিহস্ত্যাপ্ত দাহং পিত্তক্ষরং নৃণাম্॥

ক্ষেত্রপাপ্ড়া, মূতা ও বেণার মূল ইহাদের শীতল কাথে চিনি প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে দাহ ও পেত্তিক জব সঁত্বর ক্ষিষ্ট হয়।

थर्ड्ड्तानिष्ट्रर्भग्।

থজ্জুরামলবীজানি পিপ্পলী চ শিলাজতু।
এলামধ্কপাবাণ-চন্দনৈব্বাপ্লনীজকম্।
ধাস্তাকং শর্করাযুক্তং পাতবাং জ্যেষ্ঠবারিণা।
অঙ্গনাং লিঙ্গদাং গুদবক্ত্মণগুক্রজম্।
শর্করাশ্ম রিশুলন্ধং বৃষ্যং বলকরং পরম্।
নাশয়েশ্বরোগাংশ্চ তথা গুক্রগনিপি।
শর্করামহিতং যহী-ক্ষায়ং প্রপিবেৎ তদা।

থর্জ্ব, আমলকীবীজ, পিপুল, শিলাজতু, এলাইচ, যৃষ্টিমধু, পাষাণভেদী, শেওচন্দন, কাঁকুড়বীজ, ধনে ও চিনি এই সকলের চূর্ণ চালুনি জলের সহিত সেবন করিলে অঙ্গনাহ লঙ্গনাহ প্রভৃতি দাহ নষ্ট হয়। ইহা শর্করা ও অধ্যরীজাত শূল এবং মৃত্র ও শুক্র সংক্রাপ্ত রোগ নাশ করিয়া থাকে। অন্তপান—চিনি সংসুক্ত ষ্টিগধুর কাথ।

দাহান্তকো রসঃ।

ত্তাৎ পঞাক তলৈকং কৃষা পিন্তং প্রশোভনন্। জন্মীরন্ধরনৈম দিং প্রতুল্যক গৰুকন্।
নাগৰলীদলৈং পিষ্ট্রা তামপ্রাং প্রলেপয়েও।
প্রপুটেদ্ ভূধরে যথে যাবদ্ ভ্যাবমাগ্রিও।
বিশুস্তানিক দ্বাবৈর্ দ্রণেন ৮ থোক্ষেও।
নিহতি দাইসন্তাপং মুচ্ছ হি পিত্তসমূত্রবান্।

পারদ ৫ ভাগ, ভারপত্র ১ ভাগ ও গন্ধক ৫ ভাগ। প্রথমে পারা ও গন্ধক জার্মারের রসে উত্তমন্ধপে নাড়িয়া ও পানের রসে ভাবনা দিয়া ভদ্বারা ভারপত্র প্রকেশিত করিবে। পবে উহা ভূদর-মত্রে প্রটুপাক দিবে, যথন উত্থনেপ পরিণত হইবে, তথন ঔষর উদ্ধাত করিবে। ইহা ২ রভি পার্নিমাণে আদার বস ও ত্রিকটুর সহিত দেবন কার্বলে দাহ, সম্ভাপ ও পিত্রজ্য মুদ্ধা প্রশানিত হয়।

হ্রধাকররদঃ।

নিশ্রাএকহেমানি মৌজিকং তিফলাপ্তদা।
শতপুত্রীরদেনাপি মর্লয়েৎ সপ্তদপ্তদা।
তথ্যারজিমি চাং বুয়াদ্ বর্টীং ছায়াপ্রশানিতাম্।
একেকাং যোজয়েং তাপ্ত যথাদোষাত্রপানতঃ॥

র**নঃ স্থা**কর সোহয়ং হস্তি দাহং মহাবলম্। **অমেহান**পি বাভাম্মং বলস্তুক্তরঃ পরঃ॥

রদসিন্দ্র, অত্র, স্থর্ণ ও মুক্তা এই সমুদায় ত্রিফলার জলে ও শতমুলীর রদে ৭ বার করিয়া ভাবনা দিয়া ১ রতি প্রমাণ বটিকা করত ছায়ায় শুক্টিয়া লইবে। ইহার ১টী বটী যথোপযুক্ত অমুপানের সহিত সেবন করিলে দাহ, প্রমেহ ও বাতরক্ত রোগের শাস্তি হয় এবং বল ও শুক্রের বৃদ্ধি হইয়া থাকে।

কাঞ্জিকতৈলম্।

তিনতৈলং ভবেৎ গ্রন্থ: তৎ যোড়শগুলে শনৈঃ।
কাঞ্জিকে বিপ্তেৎ তৎ ভাদ দাহজ্মরহরং পরম্ ॥
তিলতিল ১৮ মেন, ৬৪ মের কাঁজির
সাহিত পাক কারিয়া মেই তৈল মাদন করিলে
দাহজ্ব প্রাশ্যিত হয়।

কুশাদ্যং তৈলং ঘ্রতঞ্চ।

কুণাদিশানপণ ভিগাঁবকাছেন সাধিতম্।
তিলা সুতা বা দাংগ্ৰাবা কণিউবিনাশনম্।
কুশাদি ভূগপ্ৰফাল ও শালপাণির কাথে
এবং জীবকাদি অস্তব্যের ক্ষে যথাবিধি তৈল বা স্বভূপাক ক্রিয়া সেবন ক্রিল দাই ও বা ভূপিত প্রশাম হয় ।

অথ পথ্যাপখ্যাবধিঃ।

काङ्कताल अथानि ।

শ্বিষ্ট মৃত্রিক। নুধ্বা মধ্য কিনকা থবা, ।
বৰ্মাংসক্ষা আজন ওপ্ত জ্বিকা সিতা ।
শত্র বৃত্ত প্রথম নবনাতর প্রেল্ড সমা।
কুমান্তর ককলা নোচং পানসং স্বাহুলাভূমন্ ॥
প্রেলিং পপত জ্বা ধালাফলপক্ষকন্ ।
বিস্নালুকা প্রত্য অভবং মিলিং॥
বালতকেং নিবলৈন পুসাটকক্ষেক্ষন্ ।
মনুকপুশা প্রবের প্রানি ভিক্তানি নববলং॥
শাত্র প্রদেশ দ্বেশ সেকোহভালে ব্রেলিংনন্ ।
প্রোধ্যক্ষিমান্যা শাত্রকানন্ ।
ক্যা বিচিন্তা বিত্যান শিশ্রো মন্ত্রাম্বিরঃ।
ভশ্বিচন্দ্রান্তেশং শাত্রম্ব শিশ্রানিলং॥

ধারাসূহং প্রিরাম্পর্ন: প্রনীরং ভিমবালুকা।
ক্ষাংগুরুলার: স্থানং মণরো মধুরো রস:॥
পুরা বানি বিধেরানি পিত্তগরীণি তানি চ।
ইতি দাহ্বতাং নুণাং পথাবর্গ উদাহ্বতঃ।

শালি ও ষ্টিক ভণ্ডলের অর, মুগ, মস্র, ছোলা, যব, ধন্দেশজ মুগ পক্ষী প্রভৃতির মাংসরস, এথার মণ্ড ও ছাতু, চিনি, শতংগীত ম্বত, ছগ্ধ, ছগ্ণোম্ভৰ মাথন, কুমড়া, কাকুড়, (माठा, काँगेल, स महे माजिम, शामित, क्षा छ-পাপুড়া, কিসমিস, আমণকী, পর্যফল, তেলা-कूठा, नाउ, नांतिरकन, शब्धूत, धरन, शोति, কচিতালের শাস, পিয়ালফল, পানিফল, কেওর, মউলফুল, বালা, হরাতকী, তিব্দ্রব্য, শীতন প্রদেহ, ভুগর্ভন্থ গৃহ, পরিষেচন, ভৈলাদি মৰ্দন, অবগাহন স্থান, প্ৰাপতা ও উৎপলপত্র এবং বেশমীবন্ত নির্মিত শ্যা, শীতল কানন, নানাবিধ মনোহর বাক্য, গান, শীতল্মব্য, মধুরভাষী প্রাণীর বব, বেপার মূল

ও চন্দন লেপন, শীতলজল এবং শীতল বায়, ধারাগৃহ, কাস্তাম্পর্শ, উংক্লুই জল, কর্পুর, জ্যোৎসা, স্নান, মণিধারণ, মধুবরসমুক্ত দ্রব্য, মদাতায়রোগোক্ত পথ্য এবং পিন্তনা-ক দ্রব্য এই সমস্ত দাহরোগির ছিতকর।

माहरतारश्रथशानि ।

বিক্লান্তরপানানি ক্রোধং বেগবিধারণম্। গঞান্তরানমধ্যানং কারং পিত্তকরাণি চ ॥ ব্যায়ামমাতপং তলং ভাসুলং মধু রাষঠম্। বায়ং কট্তীকোঞ্চ দাহবান্ পরিবর্জমেৎ ॥

বিক্রন্ধ আরপানীর,। জোধ, মলমুতাদির বেগধানণ, হস্তী অর্থ প্রভৃতি বানে আরোহণ, পথপর্যাটন, ক্ষারদ্রবা ও পিত্তকারক ক্রবা, ব্যায়াম, রোদ, তক্র, ভান্তুল, মধু, হিন্ধু, ত্রী-দঙ্গ, কটুদ্রবা, তীক্ষদ্রবা ও উষণ্ডবা, এই দকল দাহরোগির পরিত্যাক্ষা।

ইতাারুর্কেদ-সংগ্রহে দাহরোগাদিকার:।

ত বে 'মাদাধিকারঃ।

অথোমাদ-নিদান্য।

মদৰজ্বাদগভা দোবা যন্ত্ৰ: জুন্মাৰ্গমাগভা:।
মানসোহন্নতো বাাধিকনাদ ইতি কীৰ্ত্তিভঃ ।
একৈকণ: সক্ষণত দোবৈৰ ভাৰ্থ-ছিছতৈ:।
মানসেন চ ছ:থেন স চ পক্ৰিথো মত: ॥
বিৰাভ্ৰতি ষষ্ঠত যথান্য তত্ৰ ভেবজম্।
সচাপ্ৰকৃত্বজ্বণো মদসংক্ৰাং বিভৰ্তি চ ॥

বিক্তমন্থাতি তিতাজনানি প্রধর্ণং দেবগুরু বিজ্ञানান্।
উন্নাদহেতুর্জরহর্বপূর্বের মনোহতি থাতে। বিষমাণ্ড চেষ্টা: ।
তৈজনসম্বস্ত মলা: প্রচুষ্টা বৃদ্ধেনিবাসং ক্ষরং প্রদৃষ্য।
ক্রোতাংস্যুম্বিটার মনোবহানি প্রমোহর খ্যা ও নরস্য চেতঃ ।
বীবিজ্ঞমং সম্বশরিপ্রধনক পর্যাক্রনা দৃষ্টির ধীরতা চ।
ক্রমন্তবাজ্বং ক্ষরেক শৃন্তং সামাক্রমুনাদগদস্য লিক্সম্ ।
ক্রমনাক্রীতার বিরেক্ষণ্ডু-করোপ্যাসেরনিলোহতি বৃদ্ধঃ।
চিত্তাদির্দ্ধীয় ক্ষরং প্রদৃষ্য সৃদ্ধিং ক্ষরিকাশ্যাক্তি শীষ্ম্মা

আছানহাস্থিতন্তাগীত-বাগন্ধবিক্ষেপণরোদনামি।
গান্ধব্যকার্শারেপবর্ণতাল্চ জার্নে বলকানিলজসা রূপন্ ।
অফার্শকট্রেরিদাফান্টেরভাল্ডোল্ডিডেং পিন্তব্দীর্শনেশন্।
উন্মাদনত্যামনায়ক্সা ক্লি ছিতং পুর্ববদান্ত কুর্যাং ।
আফার্শাতার্লিজনাভিলাবং পীতা চ ভাং পিন্তক্তসা লিক্ষন্ ।
সম্পূর্ণেম লাবিচেষ্টিতসা সোখা ক্লোমগ্রিদ সংগ্রহাং ।
বৃদ্ধিং শ্বভিকাপ্শেহতা চিত্তং প্রমোহরন্ সংগ্রহাছিকারন্ ।

বাৰ্চেটিতং মন্দমরোচকশ্চ
নারীবিবিজ্ঞপ্রিয়তা চ নিজা।
ছর্দ্দিক লালা চ বলক ভুজে
নথাদিশোরাক কছাত্মকে স্যাৎ ।
যঃ সন্ধিপাতপ্রভবোহতিখোরঃ
সকৈ: সমবৈঃ স চ হেতৃভিঃ স্যাৎ।
সকালি রূপাণি বিভর্তি তাদৃগবিক্লক্ষতিবলাদিবিব্যক্তাঃ।

চৌরের্রপ্রস্থানররিভিত্তথান্তবিত্তাসিতক ধনবান্ধবসংক্ষারা।
গাঢ়ং কতে মনসি চ প্রিররা রিরংসোরুদ্ধেন্দ চোৎকটতমো মনসো বিকার: ।
চিত্রং এবাতি চ মনোহমুগতং বিসংজ্ঞো
গারত্যরং হসতি রোদিতি চাপি মৃঢ়:।
রক্তেক্ষণো হতবলেন্দ্রিভাং ফ্লান:
ভাবাননো বিষক্তেহথ ভবেদিসংজ্ঞ: ॥
অবাকা বাপাদকা বা ক্ষাপমাংসবলো নর:।
জাগরকো হসন্দেহমুমাদেন বিনশুতি ॥
অমব্যাবাধিক্রমবাধ্যচেষ্টো জ্ঞাদাদিবিজ্ঞানবলাদিভিথ:।
উন্মাদকালোহনিহতত যক্ত ভ্তোখমুন্মান্মনহরেৎ তম্॥

প্রবৃদ্ধ বাতাদি দোষসকল উন্মার্গ আশ্রয় করিয়া অর্থাৎ বিমার্গগামী হইরা মদ (চিড-বিভ্রম) জন্মায় বলিয়া ইহাকে উন্মাদ কহে। উন্মাদ মানস বাাধি।

আত কুপিত বায়, পিত, কফ ও মিলিত দোষজ্ঞা এবং মানসিক তঃথ ও বিষদেবন এই ছয় কারণে ছয় প্রকার উন্নাদরোগ জিমায়া থাকে। মানসেরাংপন্ন মপ্রাক্তিত। মানসত্তংগ ও বিষদেবন জানত উন্নাদে যে দোষের অমুবন্ধ থাকিবে, সেই দোষেরই চিকংসা কারবে। বিষদ্ধ উন্নাদে বিষয় ঔষধও অব প্রযোজ্য।

মিলিত কার-মংখ্যাদ বিরুদ্ধভোজন; বিষদংযুক্ত অর্নানিভোজন; অপ্তাচ ভোজন; দেবতা, গুরু ও ব্রাহ্মণগণের অব্যাননা, ভয় বা হধ কেতুক চিত্তাববাত এবং বেষমান্সভাদ ও বলবান্ ব্যক্তির সাহত যুক্করণাদ বিষম চেষ্টা; এইগুলি উন্মাদ রোগের হেতু বলিয়া কীর্ত্তিত হইয়া থাকে।

অল্ল সত্ত্বপ বিশিষ্ট ব্যক্তির, বাতাদি দোষত্ত্রম, পূর্বোক্ত কারণসমূহ স্বারা প্রকৃষ্ট-রূপে ছাই হইয়া, বৃদ্ধির স্থান হাদমকে ও হাদয়া-শিভ মনোবহা দশটি ধমনীকে দৃষিত করিয়া শিভই মন্তব্যের চিত্তকে বিকৃত করে।

বৃদ্ধিত্রম, চিত্তচাঞ্চল্য, পর্য্যাকুলা দৃষ্টি, অন্তি-মতা, অসম্বন্ধবাক্যকথন ও হৃদয়ের শৃত্ততা, এই-গুলি সর্ব্ধপ্রকার উন্মাদের সাধারণ লক্ষণ।

বাতক উন্মাদের নিদান ও লক্ষণ—
কক্ষ শীতল ও সতি মল্ল মাত্র অল্লংজালন,
বিশ্বচন, ধাতুক্ষয় এবং উপবাস এই সকল
কারণে বারু অতিকুপত হইয়া, চিন্তাদিছ্ট
হা-মকে দ্যত করত শান্তই মনুষ্যের বৃদ্ধি
ও স্মৃতিকে নট কাল্যা বাতোনাদ উপস্থিত
করে; এই বোগে গোগী মনুপমুক্তস্থলে হাস্ত,
দিবদ্ধাস্ত, নৃত্য, গীত, বাকা, অঙ্গাবক্ষেপ ও
রোদন করয়া থাকে এবং তাহাব দেহ ক্ষক্ষ,
কুণ ও অনুলবণ হয়। আহার প্রেপাক
হইলে বাতোনাদের বল বৃদ্ধি হটয়া থাকে।

পিজোন্মাদের নিদান ও লক্ষণ।—কটু,
ক্ষম, বিণাহী, উষ্ণ ও অজীণভোজন হেতু
হেতা হত-জ্ঞান-বিহীন আজতে ক্রম্ন বাক্তির
পূর্ণসাঞ্চত পিত্ত, উদীর্ণ-বেগ হইয়া পূর্যবিৎ
অর্থাং চেক্টাদিছেই হানমকে দূযত এবং বৃদ্ধি
ও স্মাতকে প্রনাষ্ঠ কবিয়া, শান্ত্রহ অতি উপ্রা পৈত্তক উমাদ জ্মাইয় থাকে। এই উন্মাদে
অসাহফুতা, আড়ম্বরকরণ, বিব্রতা, ভর্জনগর্জ্জন (পর্ব্রাগন), ক্রতবেগে পলায়ন, গান্ত্রদস্তাপ, ক্রোধ্পকাশ, ছায়া-দেবনেচ্ছা এবং
শাত্রল পান-ভোজনে আজলায় ও দেহের
পীত্রবর্ণতা, এই সকল লক্ষণ লাক্ষত হয়।

ক্ষজ উনাদের নেদান ও লক্ষণ।— শ্রমহীন বাজেন সাপত্ত কফ অ,তভাজনাদি

ছানা হাদরে প্রথষ্ট হইয় বুদ্ধ স্থাত বিনাশপূর্বক চিত্তের নোহ জনাইয়া উনাদরোগ
উৎপাদন করে। এই কফজ উনাদে বাক্চেষ্টার অল্লভা, অক্লাচ, নার্নাপ্রয়তা, বিজনক্রেভা, নিদ্রা, ব্যি, লালাপ্রাব, স্বল্পুত্রনেত্রনথাদির শুক্লবর্গত ও ভোজনাত্তে ব্যাধির বল,
এই সকল লক্ষণ সংঘটিত হয়।

সান্নিপাতিক উন্মাদের নিদান ও লক্ষণ। বাতাদি দোষত্রর নিজ ানজ বহু প্রকোপণ-হেতুতে প্রকাপত হইরা, আতভয়ন্কর সান্নি-পাতক উন্মাদ রোগ উৎপাদন করে। ইহাতে পূর্ব্বোক্ত বাতাদি ত্রিবিধ উন্মাদেরই শক্ষণ সকল বিজ্ঞমান থাকে । ইহা অসাধ্য বাধি। অস্তান্ত সালিপাতিক রোগে যদিও পরস্পর বিক্রন্ধর্মী বলিয়া একদোষের শাস্তি করিতে অপর দোষের বৃদ্ধি হয়, স্কুতরাং প্রত্যেক দোষের স্বতন্ত্র হিকিৎসায় ব্যাধির শাস্তি হয় না, তথাপি আমলক্যাদি এমন কয়েকটি ত্রিদোষত্র যোগ আছে, যদ্ধারা সেই সকল সালিপাতিক রোগের উপশম হইতে পারে; কিন্তু সাল্লিপাতিক উন্মাদের, ত্রিদোষত্র কোন প্রথাপি-বিশেষ হয় যে, তাহা ত্রিদোষত্র কোন প্রথবেই সাধ্য হয় না। অতএব ত্রিদোষত্র উন্মাদ বর্জনীয়।

চৌর, রাজপুরুষ, শক্র বা ত্রন্থি অপর কাহারও বাবা বিশেষরূপে ত্রাস জন্মিলে, অথবাধনক্ষর, বন্ধনাশ বা অভিলবিত কামি নীর অপ্রাপ্তি হেতু মন প্রগাঢ়রূপে আহত হইলে উৎকটতম শোকজ উন্মাদ জন্মিরা থাকে। ইহাতে রোগী বিপরীত-জ্ঞান অর্থাৎ কর্ত্তব্য-বিমৃত্ হয় ও অতি গোপনীয় বিবিধ মনের কথা সকলও প্রকাশ করিতে থাকে এবং কথন গান করে, কথন হ'সে, কথন বা কাঁদিতে থাকে।

বিষজনিত উন্মাদ রোগে রোগা রক্তলোচন, শ্রাবানন, দৈয়ভাবাপর, চেতনাশূর এবং বল, ইন্দ্রিয় ও কাস্তি বিহীন হয়।

উন্মাদ রোগে রোগা যদি সন্মদা উদ্ধান্থ বা অধােমুখ হতরা থাকে এবং যদি অতিশন্ত কুশ, তুর্মল ও নিদ্রারহিত হয়, ভাহা হউলে অবশ্রুই তাহার মৃত্যু আস্মনতর জানিবে।

ভূতোনাদ রোগে রোগির বাক্য, বিক্রম, শক্তি ও শারীর চেষ্টা সকল অমামুষিক হইরা থাকে; এবং চাহার তর্জ্ঞান ও শিল্পজ্ঞানাদি বিষয়ক ক্ষমতা এরূপ বন্ধিত হয় যে, নমুষ্যে সেরূপ কথনই সম্ভবে না। বাতিকাদি উন্মাদ রোগের নেনন সুদ্ধিকাল নির্দিষ্ট আছে,

ভূতোঝাদ রোগের তেমন কোন নির্দিষ্ট বৃদ্ধিকাল নাই।

অথোনাদরোগ-চিকিৎসা।

উন্নাদে বাভিকে পূৰ্দাং ক্ৰেছপানং বিরেচনম্। পিত্তক কফজে বাস্তিঃ পরো বন্ত্যাদিকঃ ক্রমঃ ॥ যচ্চোপদেক্যতে কিঞিদপন্মারচিকিৎসিতে। উন্মাদে ভচ্চ কর্ত্তবাং সামান্তাদেশ্যদ্যায়োঃ ॥

বাতিক উন্নাদে প্রথমতঃ মেহপান, পৈত্তিকে বিরেচন এবং গ্রেছিকে বমনক্রিয়া ব্যবস্থেয়। তৎপরে স্নেহ্বস্তি, নির্মাহণ ও শিরোবিশ্রেচনাল্লক চিকিৎসা কর্ত্তবা। দোর ও দুয়া পদার্থেন তুল্যতা হেতু অপস্থার-বোগেব যে চিকিৎসা, উন্নাদেরও সেই চিকিৎসা কর্ণীয়।

জনাগ্রিদমশৈলেভা বিষয়েভাশ্চ তং সলা। রক্ষেত্রমালিনং ষ্ট্রাং সভাঃ প্রাণহরং হি ৩৭॥

উন্নাদরোগিকে জল, প্রথ্নি, বৃক্ষা, শব্দত এবং অক্সান্ত বিষয় স্থান হউতে সংপূর্দ্ধক রক্ষ করিবে। মেছেতু এই সকল স্থারা সন্তঃ প্রাণ বিনষ্ট ইউতে পারে।

ব্রান্ধীকুম্বান্ডীফলমড় গ্রন্থান্থামুম্পিকাধরসাং। শৃষ্টা উন্মাদ্ধতঃ পুণগোতে কুঠমধুমিশ্রাই।।

অন্নৰ্থ:— ব্ৰান্ধানসভা তেলকচতুষ্ট্যং ৪, বুইচ্ণজ নাধাৰ্থং ২, নপুনঃ অন্তে ৮ নাধাঃ, হতোকো যোগঃ। কুখাগুলীজচ্ণজ অন্তে ৮ নাধাঃ; বুইচ্ণজ নামদরং ৮; মধুনঃ অন্তে ৮ নাধাঃ; এরং দিতারো যোগা। বেহন্দের অন্তে ৮ নাধাঃ; কুইচ্ণজ নামদরং ২, নধুনঃ অন্তে ৮ নাধাঃ; অন্তং ভূটারো যোগা। শ্রাপুশীক্ষসভা পলৈকং ১, বুইচ্ণজ নামদরং ২, নধুনঃ অন্তে ৮ নাধাঃ; অন্তঃ চতুর্থো যোগা। (ভার-চা।)

বান্ধীশাকের রস ৪ তোলা, কুড়চুর্ণ ২ মাধা ও মধু ৮ মাধা, অপবা পুরাতন কুমা-ণ্ডের বীজচুর্ণ ৮ মাধা, কুড়চুর্ণ ২ মাধা ও মধু ৮ মাধা; কিংবা খেতবচচুর্ণ ৮ মাধা, কুড়চুর্ণ ২ মাবা ও মধু ৮ মাধা; শঙ্গপৃষ্পীর (চোরকাচ্ কীর) স্বরস ৮ ভোলা, কুড়চূর্ণ ২ মাধা ও মধু ৮ মাধা; এই চারিটি যোগ প্রভ্যেকে উন্মাদনাশক। দশ্মুলামু সম্বৃত্তং মাংসরসেন বা। দশিদ্ধার্কচূর্ণং বা প্রাণং বৈককং যুত্তন্॥

ত্ব বা মাংসম্থের সহিত দশমূলের কাথ অথবা খেতসর্যপ চুণের সহিত পুরাণ মৃত কিংবা কেবল পুরাণ মৃত উনাদে হিতকর। উগগদ্ধং পুরাণং ভাদ্দশর্ষিতং মৃত্য। লাক্ষরস্থিতং শীতং প্রথমতঃ প্রম্ন (চরকটিকারুত্ত কেচিদিমং শ্লোক্ষনাবং বদন্তি। কেচিদেক্বব্যাতীতং মৃতং প্রাণ্মিতি ক্রতে তথ্যান্তর — সংবাদাধ।)

দশবদাস্তত উপ্রাপ্ত স্বতকে পুরাপ এবং দশবদের অধিক কালস্তিত, লাক্ষারদের প্রায় বর্ণ বিশিষ্ট ও শতবীমা স্বতকে প্রপুরাণ কহে। (চরক টাকাকার এই বচনকে অনার্ষ কহেন। কেহ কেহ বলেন, এক বংসর অতীত হইলেই স্বতকে পুরাণ বলা যায়)।

পুরাণমথনা সপিঃ পিবেৎ প্রাভরত ক্রিতঃ। প্রভাই প্রাতে পুরাতন স্বত পান করিলে বিশেষ উপকা। দশে।

বেতো আন্তঃ প্রার্থিত মূল্সিক্ষ স্থায়সম্।
গুড়াজাসংমূতং হস্তি সকেশ্মাদাংক্ত দোষগান্॥
খেতো আন্তঃ ধবলধুত্বকতে ভাতরদিশি স্থিতং
মূলং প্লা স্কুত ভঙুল প্লাগ ছ ছগ্ন শ্রাব ৪ পাশ্মদং সাধাম্।
ভদকুরপো গুড়াযুতে দ্বা খাছামিতি মহেশ্রঃ।

শেতধুত্রা বৃক্ষের উত্তরভাগস্থ মূল ১ এক পল, তণ্ডুল ৪ পল, হন্ধ /৪ সের, ইহাতে যথোপস্ক্র গুড় ও ন্বত দিয়া পায়স পাক করিবে। এই পায়স ভক্ষণ করিলে সর্ব প্রকার উন্মাদ বিনষ্ট হয়। (ধুত্রামূলের পরি-মাণ যাহা বলা যাইতেছে, এক্ষণে তাহা ব্যব-হার হইতে পারে না, যেহেত্ এখনকার মন্থ্রের অগ্নি ও বল নিতান্ত কম, অতএব ধৃত্রামূল অতি অল্ল মাঞায় গ্রহণীয়।) সংভোলা পিক্ষাংসং তং নির্বাতে শ্বাণয়ে স্থাম্। ভাক্তা শ্ভিমভিলংশং সংজ্ঞাং লক্ষা প্রশ্বাত। উন্মাদরোগিকে কোকিলের মাংস ভোজন করাইয়া নির্বাত স্থানে যথেচ্ছ নিজা যাইতে দিবে। ইহাতে স্মৃতিলংশ ও মতিলংশ দূর হইবে এবং রোগাঁ সংজ্ঞালাত করিয়া জাগরিত হইয়া উঠিবে।

কুমাণ্ডবীজকলক মধুনা দিবস নয়ন্।
পীজোন্দাদং মহাদোরং বাপহার স্থপী ভবেৎ ।
পুরাণ কুমাণ্ডের বীজ বাটিয়া মধুব সহিত
তিন দিন পান করিলে উন্দাদরোগ নষ্ট হয়।
তর্জনং জাসনং দানং সাস্থনং হণণং তথা।
বিক্ষয়ো বিশ্বতেঠতোর্নরন্তি প্রকৃতিং মনং॥
তর্জন, জাসোংপাদন, অভিলয়িত বিষয়
দান, সান্থনা, হর্বোংপাদন ও বিশ্বয়জনন
এই সকল দারা পীড়ার বিশ্বরণ হেতু মন

অপকচটকী ক্ষীর-পাঁতোন্মাদবিনা নিনা। বন্ধং সার্বপতৈলাক্তমুত্রানঞ্চাত্রপে অসেৎ॥

চটক পক্ষীর কাচা মাংস হুগ্ধে বাটিয়া তাহা উন্মাদ-রোগিকে পান করাইবে। সর্ব্বাঞ্চে সর্যপ তেল মাথাইয়া উন্মাদ-রোগিকে বাধিয়া উত্তানভাবে (চিং করাইয়া) রৌদ্রে রাখিবে।

দিদ্ধার্থকো হিসু বচা করঞ্জো দেবদার চ।
বঞ্জিষ্ঠা ত্রিফলা খেতা কটভাত্ত কট্তেরম্॥
সনাংশানি প্রিয়কুল্ট শিরীবো রজনার্থম্।
বস্তুণ্তেণ পিটোহরমগদঃ পানমঞ্জনম্॥
নস্মালেপনকৈব সানমুর্ব্ভনং তথা।
অপসারবিষোনাদ-গ্রহালক্ষাপ্রশান্তয়ে॥
ভূতেভাল্ট ভয়ং হস্তি রাজধারে চ শস্যতে।
স্পিরেতেন সিদ্ধং বা সপোমূতং তদর্বকুং ।

শেত সর্যপ, হিং, বচ, ডহরকরঞ্জ, দেবদারু,
মঞ্জিটা, তিফলা, খেত অপরাজিতা, লতাফটুকীর ছাল, তিকটু, প্রিয়ঙ্গু, শিরীষবীজ,
হরিদ্রা ও দারুহরিদ্রা, এই সকল দ্রব্য সমভাগে
লইয়া ছাগমুত্রে পেষণ করিয়া উহা পান
অঞ্জন, নস্ত, লেপন, স্নান (এতন্মিন্সিত জলে) ও উষ্ট্রন (ইহা দারা গাত্র মর্দন)
রপে ব্যবহার করিলে অপন্মার ও উন্মাদাদি রোগ প্রশামত হয়। উক্ত দ্রব্যে কক্ষে ও গোমুত্ত যণাবিধে ঘত পাক করিয়া দেবন কারলেও উন্দাদ নিবাবিত হটয়া পাকে।

কুষ্ণামরিচ সন্ধাপ-ব ধ্বাপিস্তনিশ্বিতম্। অঞ্জলং সক্ষত্তাথ-মহে ক্ম দবিনাশনম্।

পিপুল, মরেচ, সৈদ্ধবলবণ ও গোরোচন এই সকল ত্রব্য সমভাগে লইরা মধু দিখা মাড়িবে। ইহার অঞ্জনে সর্প্রভূতোথিত উমাদের শান্তি হয়।

জ্ঞাযশাদ্য। বর্ত্তিঃ।

জ্ঞাষণং হিন্ধু লবণং বচা কটুকরোহিণী। শিরীৰুক্তমালানাং বাজং গৌরান্চ সর্বপাঃ॥ গোমুত্র ঠিং শহিস্ত বর্ত্তির্নে গঞ্জন হিতা। হস্ত্যান্ত্রসম্পন্ম বং তথা চাতুর্যকং জ্ববম্॥

ত্রকর্ট, হিশু, সৈদ্ধবন্ধণ বচ কট্কী, শিরীষবীজ ও ডংর করঞার বীজ এবং খেণ-সর্যপ এই সকল দুবা গোমুদ্র প্রথণ কারত বর্ত্তি স্ক্তুত কারেব। নয়নে এই বর্ত্তির হঞ্জন দিলে উমাদ, অপস্মাব ও চাতুর্থক জ্বর নিবারেত্র ইইয়া থাকে।

নিম্বাদি-ধূপঃ।

নিম্বপত্রবচাঙিকু-দর্পনির্মোকদর্বপৈঃ। ভাকিস্থাদিহরে। ধুপো ভূভোন্মাদবিনাশনঃ।

নিমপত্র, বচ হিন্দু, সাপের থোলস্ ও সর্বপ, ইহাদেব ধূপ ধারা ডাকিনা প্রভৃতি নিরাক্কত ও ভূতোঝাদ নিবারেত হয়।

শিরবৈপুষ্পং লগুনং গুঞ্চী সিদ্ধার্থকং বচা। মঞ্জিটা রঞ্জনী কুকা বন্তমূত্রেণ পেষরেৎ ॥ বটা চ্ছারাস্থ গুলা বা সা হিচা নাবদাঞ্জনে॥

শিরীষকুত্ব লণ্ডন, শুঠ, খেতসর্থপ, বচ, মঞ্জিন্তা, হা লো ও পিঞ্চলী এই সকল দ্রুবা ছাগমূত্রে পেংগ পূর্বক বটিকা কনিয়া ছায়ায় শুষ্ক করিবে। উন্মাদ-রা,গকে এ বটার নত শুক্ষকন দিলে উপকার দর্শে। কাৰ্পান 'ভিময়ুর'ণজ্বুর চানিকালাণিণ্ডাতকৈ-স্থান বাংশাবুরণ লান্ট্ডুর চোকেশ'হিনিকোককৈ:। গোশৃক স্থানজড়ে সুমারটেশ্ডলিন্ড ধুন, কুড: স্থানাবালিশাচরাক্ষমগুরাবেশ্ডরড়ঃ স্থাচঃ ৪

কাপাসের বীজ, ময়ুরপজ্ রহতীকল, নিবনির্দ্ধাল্য, মদনকল, বেগার মূল, বংশ-লোচন, বিড়ালের বিটা, তুষ, বচ, চুল, সাপের খোলস, গোরুর শৃঙ্গ, হাস্তেনস্ত, হিং ও মারচ এই সকল দ্রব্য সমভাগে লইয়া ধূপ প্রদান করিলে নানাবিধ ভূতোরাদ ও অর বিনই হইয়া থাকে।

দেববিপিতৃগককৈ সমত্তসা চ বৃদ্ধিমান্। বৰ্জমেণঞ্জনাদীনি তীক্তানি ক্রুমেব চ ॥

দেব, ঝাষ গন্ধব ও পিতৃগ্রহগণের আবেশ •তু বিক্তুচন্ত বা.কের পকে াক্ষু অঞ্জন ও কুণ কর্মা নাধক।

ইট্টাব্যাবনাশংশ তু মনো যদ্যাভিহ্নাতে। তদ্য তংগদৃশপ্রাপ্তা দাস্তাশ্যাসঃ শ্বং নয়েশ ॥

কোন পিয় জবোর বিনাশ হেছু মনো,বকার উপাস্থত হইলে, তংসদৃশ প্রিয় জব্য প্রাপণ, সাস্থনা ও আশ্বাস প্রদান স্থারা পাঁড়ার উপশ্ম চেষ্টা কা বে।

কামশোকভয়ক্রোধ-হর্ষেগ্যালোভসম্ববান্। পরস্পরপ্রতিশ্বরেভিরেব শমং নয়েৎ ।

কাম, শোক, ভয়, ক্রোধ, হর্ব, দ্বর্যা বা লোভ হেতু উন্মাদরোগ উৎপন্ন হইলে কামাদির প্রতিষ্ঠান্দ্রভাব উপাস্থত করিয়া পীড়াপান্থিব চন্তা কারবে অর্থাৎ কামজন্ম উন্মাদে শোক এবং ভয়জ উন্মাদে ক্রোধ জনন থারা রোগের চিকেৎসা করিবে।

সর্পিঃপানাদিরাগভোম স্তাদিকেবাতে বিধিঃ ।

আগন্ত সর্থাৎ ভূতাবেশানের জন্ম উন্মাদ রোগে চেত্রসানে স্বতপান এবং স্থাদি বিধি কিতকর।

পূঞাবপূগদহারশান্তি থিয়ে, কোমেট্রমন্তিরা-দাবং বস্তারনং ব্রতানি নিরম: সতাং জপো মঙ্গলন্। প্রারশিক্তাবধান-প্রশ্বিধা মড়োবধাধারণং ভূতানামসুলাসিট্রচরণং গৌরীপতেরচ্চনন্ । ভূতগ্রহগণের অর্চনা, বলি উপহারাদি
শান্তিকর্ম, হোম, বজ, ইন্টমন্ত্রঙ্গপ, দান, বস্ত্যয়ন, বতনিয়ম, সত্যকথন, ধ্বপ, মঙ্গলাচরণ,
প্রায়ন্চিত্রবিধান, অঞ্জনবিধি ও রম্নৌমধিধারণ এবং রোগী বে ভূতকর্তৃক পীড়িত হইয়াছে,
সেই ভূতের অমুরূপ ইন্টাচরণ ও শিবপূজা
আগস্কক উন্মানে হিতকর।

ষে চ স্থাপু বি গুঞ্কাশ্চ প্রনগান্তেষাং সমারাধনম। দেবব্রাহ্মণপুজনঞ্ শময়েহ্মাদমাগত্তকন্॥

পৃথিবীতে যে দকল গুছক ও প্রমথগণ বিচরণ কবে তাহাদের আরাধনা, দেবতা ও বান্ধণেব অর্চন, এই দমস্ত ছারা আগন্তুক উন্নাদের প্রশাস্তি করিবে।

সারস্বতং চুর্ণম্।

কুঠাখগন্দে লবণাজনোদে ছে জীরকে জীপি কটুনি পাঠা। মাঙ্গলাপুপ্পা চ সমাস্তম্মি সবৈবং সমানাঞ্চ বচাং বিচুৰ্যা। আফ্লারসেনাখিলনেব ভাবাং বারজ্ঞাং শুধ্নিদং হি চুর্না। অক্ষপ্রনাধং মধুনা ঘুতেন

লিষ্ণান্তর গগু দিনানি চুর্ণি।
সারস্বতমিদং চুর্ণং প্রধাণা নিপ্সিতং পুরা।
হিতায় সকলোকানাং তুক্তেধসাং বিচেতসাম্।
এতস্থাভ্যাসতঃ পুংসাং বুদ্ধিমে ধা ধৃতিঃ মৃতিঃ।
সম্পত্তিঃ কবিতাশ্তিঃ প্রবর্ধতোত্তরোত্তরম্।

কুড়, অর্থগন্ধা, দেয়ব, য্মানী, (কেছ
বলেন, বন্যমানী), জীরা, ক্বফজীরা, ত্রিকটু,
আক্নাদি এবং শভ্যপুষ্পা প্রত্যেক সমভাগ,
সকলের সমান বচ-চুর্ণ; একত্র করিয়া ব্রান্ধী
শাকের রস ধারা তিন বার ভাবনা দিবে।
শুষ্ক হইলে পুনর্বা। চুর্ব করিয়া ২ তোলা
পরিমাণে ম্বত ও মধু সহ ৭ দিন সেবন
করিবে। এই ঔষধ মেনাবেহীন এবং বিকলচিত্ত ব্যক্তির নিমিত্ত পুরাকালে ব্রন্ধা কর্ত্ত্ক
নির্মিত্ত হইয়াছে। ইহাতে বুরি, মেধা, ধৈর্য্য,

স্থৃতি, সম্পত্তি ও কবিষশক্তি উত্তরোত্তর বর্দ্ধিত হয়।

উন্মাদ-পর্ণটীরদঃ।

কৃষ্ধুন্ত্রজৈণীলৈঃ পঞ্জিঃ পর্পটারসঃ। সংপ্রযোজ্যো নিহন্ত্যেষ উন্মাদং ভূতসম্ভব্ম ॥

কালগুতুরার ৫ট। বীজ ক্ষেত্রপাপ্ড়ার রসে মর্দ্ধন করিয়া সেবন করিলে ভূতোমাদ প্রশাষিত হয়।

উন্মাদগজাঙ্কুশঃ।

নিদিনং কনকজাবৈদ হারাষ্ট্রারদৈঃ পুন:।
বিষমৃষ্টিদ্রবৈঃ স্তহ:সনুত্থাপার্কচ ক্রিকায়।
কৃষা তপ্তাং সগন্ধাং তাং যুক্তা। বন্ধনমাচরেও।
তৎসনং কানকং বীজমজকং গন্ধকং বিষয়।
মর্জন্মেৎ ত্রিদিনং সর্কাং বল্লমাত্রং প্রযোজন্মেও।
দোবোন্ধাদং ক্রন্তং হস্তি ভূতোন্ধাদং বিশেষভঃ।

উপযুক্ত পরিমাণে পারদ লইরা যথাক্রমে ধুত্রার রসে, বামুনহাটার রসে এবং কুঁচিলার রসে তিন দিবস মন্দন করিয়া উর্দ্ধপাতন করিবে। পরে তাহা সমভাগ গন্ধকের সাহত মিশ্রিত করিয়া তামচক্রিকায় স্থাপন পূর্মক পট দিবে। পশ্চাৎ উহার সহিত সমভাগ ধুতুরাবীজ, অভ্র, গন্ধক ও বিষ মিশ্রিত করিয়া জল সহ তিন দিবস মর্দ্দন করিবে। মাজা—২ রতি। উপযুক্ত অমুপানের সহিত সেবন করিলে উন্মাদ ও ভূতোমাদ প্রশমিত হয়।

উন্মাদগজকেশরী রসঃ।

ত্তং গদ্ধং শিলাতুলাং স্বৰ্ণীজং বিচ্ৰা চ।
ভাবমেত্ৰগদ্ধায়াঃ কাপে মুনিদিনৈঃ পুণক্।
রালাকাথেন সংগ্র ভাবমিধা বিচ্ৰারেং।
রমঃ সঞ্জায়তে নুনমুখাদগজকেশরী
ভাজা মাবঃ সম্পিজা জীলো হন্তি হঠাদগদম্।
ভিত্তাদাধ্যমণ মারং ভূতোমাদম্প অবম্।

পারদ, গদ্ধক, মনঃশ্লা ও **ধুত্রাবীজ,** সনভাগে লইয়া বচের কাপে **৭ দিন ও রাজার** কাথে ৭ দিন ভাবনা দিয়া চূর্ণ করিবে। ইহা ১ মাধা মাত্রায় স্থত সহ দেবন করিলে উন্মাদ, অপস্মার, ভূতোন্মাদ প্রভৃতি নিরাকৃত হয়।

উন্মাদভঞ্জনে। রসঃ।

ক্রিকট্ ক্রিকলা চৈব গন্ধপিঞ্গলিকা তথা।
কিন্তুসঞ্চ দেবদাস কিরাতং কটুকী তথা।
কটকারী চ ঘটাপ্র-থবং চিক্রকমেব চ।
বলা চ পিঞ্চলীমূলং মূলক বীরণক্ত চ।
শোভাঞ্জনক্ত বীজানি ক্রিবৃতা চেপ্রবারণী।
বলং রূপ্যমন্ত্রকক্ষ প্রবালং সমভাগিকম্।
সর্ব্বচূর্ণসমং লোহং সলিলেন বিমন্দ্রেং।
উন্মাদমপি ভূতোখমুন্নাদং বাতজং তথা।
অপন্মারং তথা কার্শ্যং রক্তপিতং ফ্রারণম্।
নাশ্রেদ্বিক্রেন্ন রসন্টোন্নাদ্রভঞ্জনঃ।

ত্রিকটু, ত্রিফলা, গঞ্জপিয়লী, বিভৃত্ব, দেবদারদ, চিরতা, কট্কী, কণ্টকারী, যষ্টিমধু,
ইক্রযব, চিতামূল, বেড়েলামূল, পিপুলমূল,
বেণার মূল, সজিনাবীজ, তেউড়ীমূল, রাখাল
শশার মূল, বঙ্গ, রোপ্য, অত্র ও প্রবাল
প্রত্যেক দ্রব্য সমভাগ; সকলের সমান
লোইচুর্ণ দিরা জলে মন্দন করত ২ রতি পরিমিত্ত বটা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ সেবনে
সর্ব্যপ্রকার উন্মাদ, অপন্মার, কার্শ্য ও স্থদারুণ
রক্ষপিত রোগ বিনষ্ট হয়।

ভূতাঙ্কুশো রসঃ।

প্তারন্তারতারক মৃকা চাপি সমং সমন্।
প্তপাদং তথা বজ্ঞং তালং গল্ধং মনঃশিলা ॥
তৃথং শিলাঞ্জনং শুকামহিফেনং রসাঞ্জনম্।
পঞ্চানাং লবণানাক প্রতিভাগং রসোন্মিতম্ ॥
ভূলরাজচিত্রাবন্তী-ছন্দোনাপি বিমর্দারেও।
দিনান্তে পিভিতং কুবা ক্ষমা গলপুটে পচেং ॥
ভূতান্থুশো রসো নাম নিতাং শুপ্রাব্ধং লিছেং।
আর্ত্রন্ত রসোনাপি ভূতোনাদনিবারণঃ ॥
পিরলাক্তং পিবেচান্ত দশম্লক্বারকন্।
ভ্রেম্মং ক্টুডুব্যা চ তীক্ষং ক্ষক বর্জমেং ॥
সাহিবক মুতং ক্ষীরং গুর্বার্মণি ভোলমেং।
ক্রাহ্রন্ত ক্ষীরং গুর্বার্মণি ভোলমেং।

পারদ, লোহ, রূপা, তাম ও মুক্তা প্রত্যেক ১ তোলা, হীরা ২ মাষা, হরিভাল, গন্ধক, মনছাল, তুঁতে, শিলাজতু, অহিফেন, রসাঞ্জন ও পঞ্চলবণ প্রত্যেক ১ তোলা। এই সকল দ্বা ভৃদ্ধরাজ, দন্তী ও সীক্ষত্থে মর্দন পূর্বক দিনাস্তে পিণ্ডাকার করিয়া যথানিয়মে গজ্পটে পাক করিবে। ইহার মাত্রা—২ রতি। অমুপান—আদার রস। এই ঔষধ সেবন করাইয়া দশমূলের কাথে পিপুল চুর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিতে দিবে এবং তিংলাউয়ের স্বেদ প্রদান করিবে। তীক্ষ ও রুক্ষ দ্বব্য বর্জ্জনীয়। মাহিষম্বত হগ্ধ ও গুরুপাক অর ভোজন এবং গাত্রে সর্বপ-তৈল মর্দন করা-ইবে। ইহা ভূতোন্যাদ নিবারণ করে।

চতুভু জরসঃ।

মৃতপ্তত্ত ভাগে। যৌ ভাগৈকং হেমভ্সাকম্।
পিলা কন্তু,রিক। তালং প্রত্যেকং হেমভ্সাকম্।
সর্বাং খল্ল তালে কন্তুরা মন্দিরেদিনম্।
এরওপত্রৈরাবেষ্ট্য ধাত্তরাশো দিনত্রম্ ।
সংস্থাপ্য চ তছ্বজুত্য সর্বারোগেধু যোজয়েং।
এতদ্রসায়নশ্রেষ্ঠং ত্রিফলামধুমন্দিতম্ ।
তদ্রধারিবলং থাদেদ্ বলীপলিতনাশনম্।
অপস্মারে ক্রে কালে গোবে মন্দানলে ক্রে ॥
হস্তকম্পে শিরংকম্পে গাত্তকম্পোন্তেং।
বাতপিত্রসমুখাংক ক্ষজান্ নাশরেদ্ ধ্রম্।
চতুত্র ক্রমোানাম মহেশেন প্রকাশিতঃ ।

রসদিদ্র ২ ভাগ, স্বর্ণ ১ ভাগ, মনঃশিলা ১ ভাগ, মৃগনাভি ১ ভাগ, হরিতাল ১ ভাগ; সমস্ত দ্রব্য এক দিন ঘুতকুমারীর রসে মর্দ্দন করিয়া একটি গোলক প্রস্তুত করিবে। পরে ঐ গোলকটি ভেরেণ্ডাপত্র ঘারা বেষ্টন করিয়া ৩ দিন ধান্তরাশির মধ্যে রাখিবে; রোগের অবস্থান্থসারে এক একটি বটী ত্রিফলাচুর্ণ ও মধুসহ ভক্ষণ করিবে। এই ঔষধ সেবনে উন্নাদরোগ ও বলী-পলিত নাশ হয় এবং অপস্থার, জর, কাস, শোষ, কয়, মন্দার্মি,

হস্তকম্প, শিরংকম্প, গাত্তকম্প এবং বাতিক, পৈত্তিক ও শ্লৈত্মিক সর্বপ্রেকার রোগও নষ্ট হইয়া থাকে।

প্রিয়ঙ্গ মানতীপূপা-কাকোনীযুগণে

ক্রিয়ঙ্গ নার্নার
লগুনজাবিনষ্টতে তুলার্জং নিজ্ঞবিকৃত্য ।
তদক্ষং দশমূল্যান্ত দ্যাচকেহপাং বিপাচয়েৎ ॥
পাদশেবে ঘৃতপ্রস্থং লগুনজ্ঞ রসং তথা ।
কোনমূলকবৃক্ষার-মাতুলুকার্ত্রিক রসৈঃ ॥
দাড়িমামূহরামন্ত-কান্ত্রিকাইরত্বর্জ্বিকঃ ।
সাধরেৎ ত্রিকলাদার্ক-লবপব্যোমদীপাকৈঃ ॥
ব্যানীচবাহিক্র্র-বেত্রেশক পলাজ্বিকঃ ।
সিদ্ধমেতৎ পিবেৎ শ্ল-গুলার্শোর্ক্ররাপহম্ ॥
ব্রপ্রপাঙ্গ ময়্মীহ-বোনিদোব্রিমিক্সরান্ ।

বা তলেখাময়াংকাজাতুরাদাংকাপকৰতি ॥

11

বিশুদ্ধ ও পোসাহীন লগুন ৫০ পল, মিলিত দশমূল ২৫ পল, জল ৩২ সের, শেষ ৮ সের। এই কাথ এবং লগুনের রস /৪ সের, বদরীরস, মূলার রস, মহাদার রস, ছোলঙ্গ লেবুর রস, আদার রস, দাড়িমেব রস, স্থরা, দধির মাত ও কাজি /২ সের পরিমিত (কাহারও মতে /৪ সের); এই সকলের প্রত্যেকের রসের সহিত ঘত /৪ সের পাক করিবে। কলার্থ— ত্রিফলা, দেবদাক্ষ, সেমব, ত্রিকটু, বন্যমানী, যমানী, চৈ, হিন্ধু ও থৈকল প্রত্যেক ৪ তোলা পরিমাণে লইয়া মতে প্রদান করিবে। এই ঘত যথাবিধি পাক করিয়া সেবন করিলে শূল, গুলা, আশঃ, উদরাম্য, ত্রন্ধ, পাঞ্রোগ, প্রীহা, যোনিদোষ, ক্রিমি, জর ও বিবিধ উন্মাদরোগ বিনষ্ট হয়।

পানীয়কল্যাণকং ঘূতম্।

বিশালা ত্রিফলা কৌন্তী দেবদার্কেলবালুক্য ।
দ্বিরা নতং হরিদ্রে দে শারিবে দ্বে প্রিয়সুক্ষ্ ॥
নীলোৎপলৈলামঞ্জিষ্ঠা দন্তী দাড়িমকেশরম্ ।
তালাশপত্রং বৃহতী মালতাঃ কুস্তমং নবম্ ॥
বিড়ঙ্গং প্রিপ্লী চ কুঞ্চ চন্দনপলকৌ ।
স্প্রীবিংশতিভিঃ ককৈরেতিরক্ষসমন্বিতৈঃ ॥

চতুত্ত পং জলং দৰা স্বতপ্ৰস্থং বিপাচয়েং।

অপনারে জ্বরে কাসে পোবে মন্দানলে কয়ে ॥
বাতরক্তে প্রতিষ্ঠায়ে তৃতীয়কচতুর্বকে।
বমাশোনুক্রফুছে চ বিসপোপাহতের চ ॥
কণ্ডপাকুনময়োন্নাদ-বিবমেহগরের চ ।
ভূতোপহতচিন্তানাং গদাদানামরেতসাম্ ॥
শক্তং প্রীণাঞ্চ বন্ধ্যানাং বর্ণায়ুর্বলবর্জনম্।
অলন্দ্রীণাপরকোল্পং স্বর্ধগ্রহনিবারণম্ ॥
কল্যাণাকমিদং সর্পিঃ শ্রেষ্ঠং প্রংসবনের চ ॥

মৃত /৪ সের: করার্থ-রাধালশপার মৃত্যু ত্রিফলা, রেণুক, দেবদারু, এলবালুক, শাল-পাণি, তগরপাতকা, হরিক্রা. দাক্তরিক্রা, নীলোৎপল খ্রামালতা, অনস্তম্ল, প্রিয়ঙ্গ, (नील ऋँ मि), जनाइंह, मञ्जूष्ठी, मञ्जीमूल, দাড়িমবীজ, নাগকেশর, তালীশপত্র, মালতীর নবপুষ্প, বিভঙ্গ, চাকুলে, কুড়, **इन्स्न ଓ भूषक**्छि, এই २৮ शांनि खर्दात প্রত্যেকের ২ তোলা। পাকার্থ জল ১৬ সের। মাত্রা—২ তোলা, ইকুচিনি ও উঞ্চত্ত্ব শহ সেবা। এই মূত পান করিলে অপ**স্থার, জ্ব**, কাস, শোষ, মন্দায়ি, ক্ষয়, বাতরক্ত, মুত্রকুচ্ছু, উনাদ ও অক্তান্ত অনেক রোগ উপশমিত হয়। ইহা বল, বর্ণ ও আয়ুর্বর্দ্ধক। এই স্বভ পুংসবন কালে স্ত্রীলোকদিগকে সেবন করাইলে বিশেষ উপকার দর্শে।

ক্ষীরকল্যাণকং ঘৃতম্।

ৰিজলন্ত চতুংকারং কীরকল্যাণকস্থিদম্॥

পানীয়কল্যাণ ও ক্ষীরকল্যাণ ঘত উভয়ই প্রায় এক প্রকার; বিশেষ এই যে ক্ষীর-কল্যাণ ঘতে ঘতের দ্বিগুণ জল এবং চতুপ্তর্ণ দ্বপ্প দিয়া ঘত পাক করিতে হয়; কক্ষদ্রব্য সকল উভয়ের একই জানিবে।

মহাকল্যাণকং ঘূত্য।

এভা এব স্থিরাদীনি জলে পজৈ কবিংশতিম্। রসে তন্মিন্ পচেৎ সর্পিগৃষ্টকারং চতুগুর্ণমূ। বীরান্ত্রিমাষকাকোলী-স্বয়ংগুপ্তর্বভর্জিভিঃ। বেদরা চ সমে: কল্পৈডং স্থাৎ কল্যাণকং মহৎ। বৃংহণীয়ং বিশেষেশ সন্মিপাত্তরং পরম্॥

শালপাণি, তগরপাত্নকা, হরিন্তা, দাক-হরিদ্রা, শ্রামালতা, অনন্তমূল, প্রিয়ন্ত্র, নীলোৎ-পল, এলাইচ, মঞ্জিষ্ঠা, দন্তীমূল, দাড়িমবীজ, নাগকেশর, তালীশপত্র, বৃহত্তী, মালতীর নব-পুশা, বিভূষা, চাকুলে, কুড়, রক্তচনান ও পদ্ম-কাৰ্চ এই সকলের কাথ /৪ সের ও গৃষ্টিকীর (অর্থাৎ একবার প্রস্থতা গাভীর হগ্ধ) ১৬ সেরের সহিত মৃত /৪ সের পাক করিবে। কৰন্তব্য যথা—উত্তমরূপে পেয়িত অথবা কৃষ্টিত চাকুলে, মাঝাণী, মুগানী (কাহারও মতে রাজমাষ ও ক্ষেত্রমাষ), কাকোলী, শুকশিম্বী, ঋষভক, ঋদ্ধি, মেলা এত্যেক ১ এক পল। এই মৃত যথাবিষি পাক করিয়া সেবন করিলে, উন্মানরোগের শান্তি এবং শরীরের মাংসকুদ্ধি হয়, বিশেষতঃ সরিপাত বিনষ্ট হইয়া থাকে।

চৈত্সগ্নতম ।

পঞ্মূল্যাবকাশ্বর্ধের রাধিরগুত্তিবৃদ্বলাঃ।
মূর্ব্বা শতাবরী চেতি কাগৈছি পালিকৈরিইমঃ॥
কল্যাপকস্য চাঙ্গেন তদ্যুতং চৈতসং স্মৃতম্।
সর্ব্বচেতোবিকারাণাং শমনং পরমং মতম্॥
মৃতপ্রস্থাহত পক্তব্যঃ কাথো জোণাগুসা মৃতাং।
চতুগু পোহত্র সম্পান্তঃ কক্ষঃ কল্যাণকেরিতঃ॥

ছত /৪ সের। কাথার্থ—গান্তারীবর্জ্জিত
দশমূল, রাঙ্গা, এরগুমূল, তেউড়ীমূল, বেড়েলা,
মূর্বামূল ও শতমূলী ইহাদের প্রত্যেকের ২ পল,
পাকার্থ জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। কন্ধার্থ—
পানীরকল্যাণোক্ত ২৮টা স্রব্যের প্রত্যেক
২ তোলা। জল ১৬ সের। ইহা চিত্তবিকারশান্তির অতি উৎক্টেই প্রষধ।

হিঙ্গু দ্যং গ্নতম্।

হিশ্নৌবর্চলব্যোধৈর্দিললং থৈ যু তা ঢ়কম।
চতুপ্ত পৈ গবাং মুত্রে সিদ্ধমুনাদনাশনম্।
অপক্ষারং মহাঘোক ক্রিবাথং ক্রান্দে ধ্রবম্।
যুক্ত গ্রেকী ও সীক্ষার্থে মর্দ্দুন পূর্বক ক্ষার্থ—হিশ্ব, সচললবণ, ত্রিকটু প্রত্যেকর ২ পল। এই যুক্ত পান করিলে উন্মাদ ও উৎকট অপন্ধার-রোগের শান্তি হয়।

মহাপৈশাচিকং মৃত্যু।

জটিলা পূতনা কেশী চারটা মর্কটা বচা।
আরমাণা জয়া বাঁরা চোরকঃ কটুরোহিনী।
কাষস্থা শুকরা চছত্রা সাতিচ্ছত্রা পলস্কবা।
মহাপুরুষদতা চ বয়ঃস্থা নাকুলারয়ন।
কটুপ্ররা তৃশ্চিকালী স্থিরা চৈব চ তৈছা তন্।
সিদ্ধং চাতুর্বকোঝাদ-গ্রহাপন্মারনাশনন্।
মহাপেশাচিকং নাম ঘৃত্যেত্দ্ যথায়ত্য।
মেধাবুদ্ধিশ্বতিকরং বালানাঞ্জবর্দ্ধনন্।

ঘুত /৪ সের। ক্রার্থ—জটামাংদী, হরীতকী, ভূতকেশী, কুন্তাড়,লতা, (কেহ কেহ বলেন বামুনহাটা), আলকুণাবীজ, বচ, বলা-पुत्र, अप्रश्री, कीतकारकानी, टांत-कार्ट्स, কটকী, ছোট এলাইচ, বারাহীকন্দ (চামার वान्), भोति, द्वाका, खग छन्, भाउम्मी বা অপরাজিতা, ব্রাহ্মা (কেং কেং বলেন, खन्यः), রামা, গন্ধরামা. গন্ধভাহনে (বা লভাফট্কী), বিছাটী ও শালপাণি এই সমুদ্য মিলিত /১ সের। পাকার্থ জল ১৬ সের। ইহা পান করিলে উমাদ ও অপসারাদি নানারোগ নষ্ট হয় এবং বৃদ্ধি ও স্মৃতি প্রস্কৃতিই হইয়া থাকে । ইহা বালকদিগের অঙ্গবৰ্দ্ধক।

শৈবায়তথ্।

শিবায়াল্ড ক্পূতায়াঃ পঞাশং পললাং পরম্। পঞ্চ পঞ্চ সমাদায় পঞ্মূলায়ুগাং পৃথক্॥ ক্টরিতা চতুঃষষ্টি-শরাবৈরন্তসাং পৃথক্। পক্তা পাদাবশেবেণ তেন ফাবোদাকেন চঞা

ক্ষীরস্তাষ্টাভিরাজ্যত শরাবাণাং চতুইয়ন্। ষ্টীমধুকমঞ্চিঠা-কুঠচন্দ্ৰপদ্মকৈঃ। বিভাতকশিবাধাত্র'-বৃহতীতগরপাদিকৈ: II বিভক্ষণাভিমীদেব-দারুদত্ত'হরেণু ভি: ॥ তালীশকেশরভামা-বিশালাশালপণিতি:। প্রিয়ঙ্গুমালতীপুষ্প-কাকোলীযুগলোৎপলৈঃ॥ इतिज्ञायूननानञ्चा-त्यरेपनाइति गानूरेकः। मशुश्चित्रितिद्वरिकः करेक्द्रक्रमम्बर्धिः । निष्कत्म उत् घुडः यक उत्त्र निशन डः गुर्। দেবাস্থরগ্রহগ্রন্তে মানসে রাক্ষসকতে ॥ গন্ধবৰ্ধবিতে চৈব পিতৃগ্ৰহনিপীড়িতে : ভূতৈরপাভিভূতে চ পিশাচৈন্চ পরিপ্লুতে । ভুজন্মগৃহীতে চ তথা জান্তলন্তকিতে। যক্ষৈরপি পরিক্ষিণ্ডে ভয়ৈরপার্দ্ধিতে ভশম। শক্ততে সর্ববাতে চ সর্ব্বাপশ্মার এব **চ**। শোবে সোর:ক্ষতে কাসে গীনসে চ মহাতারে । মেহে মৃত্রগ্রহে চৈব অবে জার্বে চ শক্ততে। বুষাং পুনর্নকরং বন্ধ্যানামপি পুতাদম্ ॥ এ বিশ্বাবাদিপাদেন দিন্ধিদং সমুনীরিতম্। निवाध अभिनः नामा निवास्य नामिनाः मना । "শুগালবহিণোঃ পাকে পুমাংসং তত্ত্র দাপয়েৎ ॥ মযুরী জন্বকা চ্ছালা বীষ্থানা বভাৰত: ॥"

মুতা/৪ দের। কাথার্থ—শুগালের। মাংস /৬। সের, এবং দশমূল প্রত্যেক পাঁচ পাঁচ পল অর্থাৎ মিলিত /৬। সের। জল ৬৪ সের. শেষ ১৬ সের। হগ্ধ /৮ সের। কন্ধার্থ-यष्टिमधु, मञ्जिला, कूफ, दक्कान्सन, भग्नकार्छ, বহেড়া, হুরীতকী, আমলা, রুহতী, তগর-পাছকা, বিভঙ্গ, দাভিমবীজ, দেবদাক, দন্তী-মূল, হেণুক, তালীৰপত্ৰ, নাগেশ্বর, প্রামালতা, রাখাল শশার মূল, শালপাণি, প্রিয়ঙ্গু, মালতী-कून, कांटकानी, कीतकांटकानी, नीतनारभन, হরিকা, দাকহরিদ্রা, অনস্তমূল, মেদা, এলাইচ, এলবালুক ও চাকুলে প্রত্যেকের ছই তোলা। এই মৃত পান করিলে নানাবিধ উন্মাদ, অপ-মার, কাদ, শোষ, উরঃক্ষত ও অক্সান্ত অনেক রোগ উপণমিত হয়। ইহাতে শুক্রবৃদ্ধি হইয়া পুনরায় শরীর নৃতন হয়। বন্ধা জীলোক-দিগের ইহা পরম হিতকারী।

"পুরুষজাতীয় শৃগাল ও ময়ুরের মাংস গ্রহণ করিতে হয়, কারণ তাহাদের স্ত্রীজাতি স্বভাবতঃ বীর্যাহীন। এতএব এই শিবায়তে পুরুষজাতীয় শৃগালের মাংস গ্রহণ করিবে।"

কল্যাৰ্শকঞ্চ যুঞ্জীত মহন্ধা চৈতসং স্বতম্। জৈলং নারায়ণং বাশ্ব মহানারায়ণং তথা॥ মতে পিশাচাদন্তেমু প্রতিকূলং ন বাচরে২। রোগিণং ভিষজং যথ তে কুন্ধা হুমার্শ হৌজসঃ॥

মহাকল্যাণ স্থত বা চৈত্ৰস স্থাত, নারায়ণ তৈল ও মহানারায়ণ তৈল, উমাদ রোগে প্রয়োগ করিবে। পিশাচ ভিন্ন অক্ত কোন গ্রহেরই প্রতিকূল আচরণ করিবে না। কারণ তাহারা কুর হইলে রোগিকে অথবা চিকিৎ-সককে বিনষ্ট করিয়া থাকে।

অথ পথ্যাপখ্যবিধিঃ।

উন্যাদরোগে পথ্যানি।

আখাসনত্রাসনবন্ধন লৈ ভয়নি দানানি চ হর্ণানি।
ধ্পো দমো বিশারণং প্রদেহঃ শিরাবাধঃ সংশমনক সেকঃ ॥
আশ্চয্যকল্মণি চ ধ্যপানং ধাবৈয়সভাত্র নিবেদনানি।
অভ্যঞ্জনং আপন্যাসনক নিজা ফ্লী হাজ্তরলেপ নানি॥
পোর্ম্ম্পাক্রণশালয়ল ধারোক্তর্যং শহরেণ হসপিঃ।
ম্বাং নবানক পুরাতনক কুর্মামিবং ধ্রুসা রস্যালম্॥
পুরাণকুমাওকলং পটোলং ক্রমানেকং বাক্তকভ্রনায়ম্।
পরাম্মুকং গগনাম্ব প্রা হ্বর্গচ্পানি চ নারিকেলম্।
দ্রান্মুকং গগনাম্ব প্রা হ্বর্গচ্পানি চ নারিকেলম্।
দ্রান্ম কপিথং পন্সক বৈজৈবিধ্বেম্মাদগণের প্রাম্॥

আখাসবাক্য, ত্রাসজনকবাক্য, বন্ধন, ভন্ধ, দান, হয়, ধৃপ, ইন্দ্রিয়নিগ্রহ, রোগের বিশ্বতি, প্রেলেপন, শিরাবেধ, সংশমন ঔষধ, পরিবেচন, বিশ্বজনক কার্য্য, ধ্রপান, বৃদ্ধি, ধীরতা, সম্বস্তুন, আত্মবর্ণন, তৈলমর্দ্ধন, স্পান, হিরভাবে ক্রেবস্থিতি, নিদ্রা, শীতল অন্তব্রেলার, গোধ্ম, মৃগ, রক্তনালি, ধারোফহ্মা, শতধাত ঘত, নৃতন ঘত, প্রাতন ঘত, কছে-পের মাংস, মরুদেশজ্বাত মৃগ পক্ষীর মাংসকরম, শিলারস, প্রাণ কুমড়া, পটোল, ব্রান্ধীন্দাক, বেতোলাক, নটেলাক, গাধার মৃত্ত্র, অধ্যুত্ত, বৃষ্টির জল, হরীতকী, স্পারিভ্রম্বর্ণ,

वाग्रद्धन-मःश्रहः।

নারিকেল, কিদ্মিদ্, কয়েতবেল ও কাঁটাল এই সমস্ত উন্মাদ রোগে পথ্য।

উন্মাদরোগেহপথ্যানি।

মন্তঃ বিক্লছাশনম্ঞভোজনং নিদ্রাকুধাতৃট্কুতবেগধারণম্। ব্যবায়মাবাঢ়ফলং কঠিলকং শাকানি পত্রপ্রভবাণি সর্ব্বশঃ। তিজ্ঞানি বিষ্টীক ভিষক্ সমাদিলে-ছন্মাদরোগোপহতেষু গহিতম্ ॥

মন্ত, বিরুদ্ধ-ভোজন, উষ্ণদ্রব্য ভোজন, নিন্তা, ক্ষ্ণা ও তৃষ্ণার বেগ ধারণ, স্ত্রীপ্রসঙ্গ, পলাশবীজ, করোলা, পত্রশাক, তিব্রুদ্রব্য এবং তেলাকুচা এই সকল উন্মাদরোগে পরিত্যাগ করিবে।

ইত্যায়ুর্ব্বেদ-সংগ্রহে উন্মাদরোগাধিকার:।

অথাপস্থাররোগাধিকারঃ।

0,40

অথাপস্মার-নিদানম।

চিস্তাশেকাদিভিদে বি: কুলা জংশোত্সি ছিতা:।
কুমা স্তেরপধ্বংসমপ্যারং প্রকৃবতে ॥
তমঃপ্রবেশঃ সংরক্তা দোবোদ্রেকহতস্বতেঃ।
অপন্মার ইতি জ্রেরো গদো থোরশচতুর্বিধঃ ॥
হংকন্সঃ শৃন্ততা বেদো ধ্যানং মৃদ্ধ্য প্রসূততা।
নিজানাশক তমিংক ভবিষ্ঠি ভবত্যথ ॥
কল্পতে প্রদশেদ্যান্ ফেনোলামী মসিতাপি।
পর্কবার্লক্কানি পঞ্জেজপাণি চানিলাং ॥
প্রিকেনাক্সবস্তুশক্ষঃ পীতাস্পর্জপদর্শকঃ।
সন্তুকোকানবস্তুশকঃ শীতসন্তীক্ষলা গুরুঃ।
পঞ্জেজ্ব্রানি ক্লপাণি লৈগ্রিকো মৃত্যুতে চিরাং ॥
সব্বিরেরতঃ সমস্তৈক্ষ লিকৈক্তের ম্বিদোধকঃ ॥

চিন্তা শোকাদি কারণে অতি প্রবৃদ্ধ থাতাদি দোষ সকল ফ্রন্থে অবস্থান পূর্বক স্থতিশক্তি নাশ করিয়া এই ঘোরতর ব্যাধি উৎপাদন করে, তজ্জ্য ইছার নাম অপন্মার (মৃগীরোগ)। এই ভয়ম্বর অপন্মার রোগ চারি প্রকার। অন্ধকার দর্শন (জ্ঞানাভাব) ও সংরম্ভ (নেত্রবিক্কতি ও হস্তপদাদি-বিক্ষেপ) সকল অপন্মারেরই সাধারণ শক্ষণ। অপন্মার-রোগ উৎপার হইবার পুর্বের ফ্রন্থের কম্পন ও শূক্তা, দর্শাগম, অতিচিন্তা, মনোমোহ, ইন্দ্রিয়মোহ ও নিদ্রানাশ, এই সকল পূর্ববিদ্রপ প্রকাশিত হয়।

অনিলজ অপস্মার রোগে রোগী কাপে, দন্ত ছারা দন্ত দংশন ও ফেন ব্মন করে, ঘন ঘন নিশ্বাস ফেলিতে থাকে এবং অরুণ বা ক্লফ্টবর্ণ রুক্ষদেহ বিশিষ্ট অবাস্তবিক প্রাণী সকল দর্শন করে।

পৈত্তিক অপস্মারে রোগির মুখ-নিঃস্ত কেন এবং দর্বাঙ্গ বিশেষতঃ মুখ ও চক্ষু: পীত বর্ণ হয়। সে পীত বা লোহিতবর্ণ অবাস্ত-বিক রূপ দর্শন করে, সমস্ত বস্তুকেও পীত বা লোহিতবর্ণ দেখে এবং তৃষ্ণার্ত্ত ও উষণ-দেহ হইয়া থাকে। আর তাহার বোধ হয়, বেন সমস্ত জগৎ অনলব্যাপ্ত হইয়াছে।

শৈশ্বিক অপস্মারে রোগির কেন এবং
অঙ্গ বিশেষতঃ মুখ ও চক্ষু: শুক্লবর্ণ, গাত্র শীতণ
শুক্ষ ও রোমাঞ্চিত হয়। সে শুক্লবর্ণ অবাস্তবিক প্রাণী সকল দর্শন করে। বাতজ ও পিতুজ
অপস্মার অপেক্ষা ইহাতে অনেক বিলপ্তে
চেতনা লাভ হইয়া থাকে।

যাহাতে বাতজ্বাদি ত্রিবিধ অপস্মারেরই লক্ষণ সকল দৃষ্ট হইবে, তাহাকে ত্রিদোষজ অপস্থার বলিয়া বিবেচনা করিবে।

অথাপস্মার-চিকিৎসা।

বাতিকং বস্তিভিঃ প্রায়ঃ গৈন্ত: প্রায়ো বিরেচনৈঃ। শ্লৈকিং বমনপ্রায়ৈরপন্মারমূপাচরেও॥

বস্তিপ্রধান ক্রিয়া খারা বাতিক, বিরেচন-প্রধান ঔষধাদি খারা পৈত্তিক ও ব্যনপ্রধান ঔষধাদি খারা শ্লৈক্মিক অপস্মারের চিকিৎসা করিবে।

মনোহনা তাক্ষ্যজ্ঞিব শকুৎ পারাবতক্ত চ। অঞ্জনং হস্ত্যপ্রমারমূলাদঞ্চ বিশেষতঃ॥

মনঃশিলা, রসাঞ্জন ও পায়রার বিঠার অঞ্জন দিলে অপস্মার ও উন্মাদ রোগের শাস্তি হয়।

যিটিহিঙ্গুবচাবক্র-শিরীবলগুনাময়ৈ। সাক্ষামকৈরপন্মারে সোনাদে নাবনাঞ্জনে।

যষ্টিমধু, হিং, বচ, তগরপাছকা, শিরীষ-ফল, রগুন ও কুড় এই সকল দ্রব্য ছাগমুত্রে পেষণ করিয়া তাহার নস্ত বা অঞ্জন প্রয়োগ করিলে, অপস্থার ও উন্মাদ প্রশমিত হয়।

নিগু'ণ্ডীভববন্দাক-নাবনস্থ প্রয়োগ*তঃ*। উপৈতি সহসা নাশমপন্মারো মহাগদঃ।

নিসিন্দা-রক্ষোপরি যে পরগাছা জন্মে, তাহার রসের নশু লইলে অপস্মার রোগ আগু নিবারিত হয়।

কপিলানাং গবাং মৃত্রং নাবনং পরমং হিতম্। মুশুগালবিড়ালানাং সিংহাদীনাঞ্চ শক্ততে॥

অপস্মার রোগে কপিলা গাভীর মুত্রের নাবন (নস্থ) অত্যস্ত হিতকর। কুকুর, শৃগাল, বিড়াল ও সিংহ প্রভৃতির মৃত্রও নাবন বিষয়ে প্রশস্ত্য।

পুৰোগছ তং গুন: পিত্ৰপণারছমঞ্জনম্। তদেব সর্পিবা যুক্তং ধূপনং পরমং স্তম্।

পুষ্যানক্ষত্তে মৃত কুকুরের পিত্ত সংগ্রহ করিয়া তাহার অঞ্জন দিলে, অথবা ঐ পিত্ত ম্বত মিশ্রিত করিয়া তাহার ধুপ প্রদান করিলে অপন্মার রোগ বিনষ্ট হয়।

নকুলোকুকমার্জার-গৃত্তকীটাছিকাককৈঃ। তুতিঃ পকৈঃ পুরীবৈদ্য বূপনং কারয়েছ ভিষক্॥

নকুল, পেচক, বিড়াল, গৃধ, কীট (পশ্চিমদেশজাত বৃশ্চিক), সর্পত্ত কাক ইহা-দের যথাসম্ভব তুও (ঠোট) পক্ষ ও বিঠা মারাধুম প্রদান করিলে অপস্মার নিবৃত্ত হয়।

দিদ্ধার্থশিথ কট্বস্ক-কিণিহীভিঃ প্রলেপনম্। চতুগুলে গ্ৰাং মুত্রে তৈলম্ভ্যপ্তনে হিতম্॥

খেতসর্থপ, সজিনার ছান, শোণাছাল ও
আপাঙ্গমূল ইহাদের প্রদেশ দিলে অপস্মার
প্রশমিত হয়। অথবা ঐ সকল জব্য মিলিত
/১ সের, সর্যপতৈল /৪ সের, গোমূত্র ১৬
সের; যথানিয়নে পাক করিয়া ঐ তৈল মর্দন
করিলে অপস্মার নিবারিত হইয়া থাকে।

চুৰ্বৈঃ সিদ্ধাৰ্থকাদীনাং ভক্ষিতৈরথবাপি তৈঃ। গোমুত্ৰপিষ্টেঃ সৰ্বাঙ্গ-লেণৈঃ শাম্যত্যপশ্বতিঃ॥

খেতগর্ষপাদি চূর্ণ ভক্ষণ করিলে অথবা উহা গোমূত্রে পেষণ করিয়া দর্কাঙ্গে প্রলেপ দিলে অপন্মারের নিবৃত্তি হয়।

অপেতরাক্ষমীকুষ্ঠ-পূতনাকেশীচোরকৈ:। উৎসাদনং মৃত্রপিষ্টেম্ তৈরেবাবসেচনম্॥

খেত তুলসী, কুড়, হরীতকী, ভূতকেশী ও চোরকাঁচকী এই সকল দ্রব্য ছাগমুত্তে পেষণ করিয়া গাতে মন্দন করিলে অথবা ছাগমুত্তে বা গোমুত্রে গুলিয়া গাত্তে সেচন করিলে অপসারের শান্তি হয়।

জতুকাশকতা তদদ্দধৈনী বস্তলোমভিঃ। অপন্মারহরো লেপো মৃত্রসিদ্ধার্থশিগ্রভিঃ।

চামচিকার বিষ্ঠা বা ছাগলোম ভক্ম অথবা ছাগমূত্র-পেষিত খেতদর্ষপ ও দক্ষিনাবীক্ষ বারা দর্কালে প্রলেপ দিলে অপন্মাররোগ প্রশমিত হয়। (চামচিকার বিষ্ঠা এবং ছাগলোমভন্মও ছাগমূত্রে পেষণ করিয়া প্রলেপ দিতে হয়)। তৈলেন লগুনং দেব্যং পরদা চ শতাবরী। ব্রাক্ষীরসশ্চ মধুনা সর্বাপক্ষারভেষজম্ ॥

তৈলের সহিত রগুন, ছয়ের সহিত শত-মূলী ও মধুর সহিত ত্রাম্মী শাকের রন সেবন করিলে সর্ব্ধ প্রকার অপস্মার নিবারিত হয়। বং থানেং ক্ষারভন্তাশী মাক্ষিকেণ বচারজা। অপস্মারং মহাবোরং স্কৃতিরাশং জয়েদ গ্রেম।

প্রত্যহ মধুর সহিত বচচ্ব সেবন ও হগান্ত ভোজন করিলে দীর্ঘকালোৎপন্ন প্রবল অপ-মার প্রশমিত হয়।

কুমাণ্ডকফলোথেন রনেন পরিপেষিত্য।
অপস্মারবিনাশার যন্ত্যাহ্বং স পিবেৎ আহন্।
কুমাণ্ডার রসের সহিত যন্তিমধু বাটিয়া তিন
দিন সেবন করিলে অপস্মারের শাস্তি হয়।
মাংস্যান্ত নাবনাদ্ ধুমাদশনাচ্চ মহাগদঃ।
অপস্মারন্চিরোথোহপি সন্ত এব বিনশুতি।

জটামাংসীর নশু এবং ধৃ্ম গ্রহণ ও উহা ভক্ষণ করিলে চিরসঞ্জাত অপস্মার রোগও বিনষ্ট হয়।

উল্লিখনরগ্রীনা-পাশং দধ্য ক্তা সদী।
শীতাম্বনা সমং পীতা হস্তাপত্মারমুদ্ধতম্।
উপ্লেনে মৃত মনুষ্যোর গলরজ্জু দগ্ধ করিয়া
সেই ভত্ম শীতল জল সহ সেবন করিলে
অপস্থার বিনষ্ট হয়।

इंदकल्यांश्किकवा यमा त्यामा रखानिशाञ्जा। मनमूनीकनः उमा कलामाथाः अत्यावस्यः ॥ *

যে অপসার রোগির হৃৎকম্প, নেত্রপীড়া, মর্ম্মোদাম এবং হস্তপনাদি শীতল হয়, তাহাকে দশম্লীর কাথ কিংবা নিমলিথিত কল্যাণচূর্ণ সেবন করিতে দিবে। (পাঠান্তরে দশম্লীর কাথ কিংবা উন্মাদোক্ত কল্যাণন্থত সেবন করাইবে ।)

कलाप-हर्गम्।

প্রকালং সমরিচং ত্রিকলা বিড়সৈশ্বয়। কুকাবিড়ঙ্গপূতীক-যমানীধাশুজীরকম্॥

कन्यानाकाक त्याक्तरप्रमिकि किट शांकः ।

পীতমুকাপুনা চূর্ণং বাতশ্রেমাময়াগহম্। অপস্মাতে তথোন্নাদেহপার্ননি এঃনীগদে। এতং কল্যাণকং চুর্ণং নষ্টক্রাগ্রেন্চ দীপনম্॥

পঞ্চকোল, মরিচ, ত্রিফলা, বিট্লবণ, দৈশ্বব, পিপুল, বিড়ন্ত্র, পূতিকরঞ্জ, যমানী, ধনে ও জীরক প্রভ্যেক সমভাগ। ইহাদের চূর্ণ (অর্দ্ধ ভোলা মাত্রায়) উষ্ণ জলের সহিত্ত দেবন করিলে বাতনৈত্মিক রোগ, অপস্মার, উন্মাদ, অর্শঃ ও গ্রহনীরোগ নষ্ট হয়। ইহা অগ্রির দীপক।

কায়স্থান্ শারদান্ মুল্গান্ মুক্তোশার্যবাংক্তথা।
দ্ব্যোষান্ বৃত্তমূত্তেগ পিট্রা বৃদ্ধিং প্রকল্পরেং ।
অপসারে তথোক্যানে সর্পদষ্টে ক্রান্তিত।
বিষ্ণীতে জলমূতে চৈতাঃ স্থারমূত্রোপমাঃ ॥

নিসিক্ষা, শরৎকালীন মুগ, মুতা, উনার,

যব ও ত্রিকটু এই সকল ছাগমুত্রে বাটিয়া

বর্ত্তি প্রস্তুত করিবে। ইহা ছারা চকুতে

অঞ্জন দিলে অপস্মার ও উন্মাদরোগ নিবারিত

হয়। সর্পদিষ্ট, দুষীবিষান্দিত, বিষপীত বা

জলময় হইয়া মৃতপ্রায় ব্যক্তিদিগের পক্ষে এই

বর্ত্তি অমৃতের স্থার উপকার করে।

রসপ্রয়োগঃ।

রুশায়নভৈর্বঃ ।

বচামৃতব্যোধমধুকদার-ক্লদ্রাক্ষিক্সবর্গর্ভানি।
ফলং সমূদ্রন্থ রসোনকক, খাতং হি নাদাপুটমধ্যদেশে।
অপক্তিরেম্বনক্ষিত্রাক্ত্-প্রলাপতন্ত্রাশ্রমকাড্যমেইনি।
সসমিপাতং শ্রুতিকাকিভকান্ দ্র্পীনসং হস্তি হলামকক ॥
রসায়নং ভৈরবনামধ্যেং জাতং বিচারাৎ ক্বিবিটনেন।

বচ, মিঠাবিষ, ত্রিকটু, মৌলসার, ক্রদ্রাক্ষফল, সৈন্ধবণবণ, বৃহত্যবীজ, সমুদ্র-ফল ও
রশুন এই সকল সমভাগে চুর্ণ করিবে। সেই
চুর্ণ ফুৎকারশ্বারা নাগাভাস্তবে প্রয়োগ করিলে
অপস্মার, মেম্মজ ও বাত্র শিরোরোগ, প্রাণাণ,
তন্ত্রা, মোহ এবং সামিপাতিক জ্বের কর্ণ ও
নেত্রের কুটিলভা প্রভৃতি দুরীভূত হয়।

সূতভদ্মপ্রয়োগঃ।

শব্দপূর্ণীবচাত্রন্ধী-কুষ্ঠকৈলারদৈঃ সহ:। স্তভন্মপ্রয়োগোহয়ং রক্তিকাদয়মানতঃ। সর্বাপন্মারনাশায় মহাদেনেন ভাবিতঃ॥

শঙ্কাপুষ্পী, বচ, ব্রন্ধীশাক, কুড় ও এলাইচ, ইহাদের কাথ সহ রসসিন্দ্র ২ বতি পরিমাণে সেবন করিলে সর্বপ্রকার অপস্মার উপশমিত হইয়া থাকে।

ইন্দ্ৰেগাবটী।

মৃতপ্তাত্রকং তীক্ষং তারং তাপাং বিষং সমন।
পদ্মকেশরসংযুক্তং-নিনৈকং মর্ন্দিংদ্রুবৈঃ ॥
য়ৢয়য়য়িকয়য়য়ড়-বচানিশ্পাবশূরবৈঃ ।
নিপ্ত প্রান্দিক জাবৈর জ্বাং ভদ্গোলং পাচয়েৎ পুন্ত ॥
কসুনীসকপোথেন তৈলেন গন্ধসংযুক্ত ॥
উক্তরন্ধরিক ক্রান্ধর্মনি নাম ভক্ষমেন্দ্রকর্মনি নাম ভক্ষমেন্দ্রকর্মনি ।
দশমূলকর্মায়ক কণাযুক্তং পিনেকর ।
অপস্থারং জয়ংগাও যথা প্যোদ্যে তমঃ ॥

রসসিন্দ্র, অভ, লোহ, শ্রোপা, বর্ণমাক্ষিক, বিষ ও পদ্দেশর এই সকল জব্য সমভাগে গ্রহণ কার্যা মনসাাসজ, চিতা, সিদ্ধি, ভেরেওা, বচ, শিম, ওল ও নিগিন্দা ইহাদের রসে এক এক দিন ভাবনা দিবে। পরে পটে পাক করিয়া তৎসহ সমপরিমিত গন্ধকচ্গ মিশ্রত এবং প্রিয়ক্ত্র-তিল ও স্বপতিল সহ পাক করিবে। ইহাব এক চলক প্রমাণ বটকা করিয়া আদার রস সহ সেবন করিবে। ঔষধ সেবনের পর দশমূলের কাথ পিপুল চ্র্ণ সহ সেবনীয়। ইহা অপসার রোগের অভি ভৎকুট ঔষধ।

বাভকুলাওকঃ।

মুগনাভিঃ শিবা নাগ-কেশরং কলিবৃক্ষজম্। পারদং গন্ধকং জাতি কলমেলা লবক্সকম্। প্রত্যেকং কাষিকদৈব প্লফুর্ব ধ কারয়েৎ। জলেন মর্দায়িছা তু বটাং কুথাদ্ বিরক্তিকাম্॥ বৰাব্যাধ্যস্পানেন যোজয়েচ্চ চিকিৎসক: ।
অপস্মারে মহারোগে মূর্চ্ছারোগে চ শস্ততে ॥
বাতজান্ সর্করোগাংশ্চ হস্তাদ্চিরসেবনাৎ ।
নাতঃ পরতরং শ্রেষ্ঠমপস্মারেষু বর্ত্ততে ।
ব্রহ্মণা নির্মিতঃ পূর্বাং নামা বাতকুলাস্তকঃ ॥

মৃগনাভি, হরীতকী, নাগকেশর, বহেড়া, পারদ, গন্ধক, জারফল, এলাইচ ও লবল প্রত্যেক ২ তোলা; জলে মদন করিয়া ২ রিজ পরিমিত বটা প্রস্তুত করিবে। রোগ বিবেচনায় অমুপানের ব্যবস্থা করিয়া এই ঔষধ সেবন করাইলে অপস্মার, মুদ্র্যা এবং বাতজ সর্বপ্রকার রোগ বিনষ্ট হইবে। অপস্মার রে গে ইহা অতি শ্রেষ্ঠ ঔষধ।

ভূতভৈরবঃ।

মুত্ততাভ্রন্তিক তালং গন্ধং মনঃশিলা।
রসাঞ্চনক তুল্যাংশং নরমূত্রেণ মন্দিরেং।
তং গোলং দ্বিগুণং গন্ধং লৌংপাত্রে কণং পচেং।
প্রক্তন্তামিতং থাদেদপ্রসারহরং পরম্।
হিন্ধু দৌবর্চনং ব্যোধং নরমূত্রেণ সর্পিনা।
ক্রমাত্রং পিবেচ্চারু ব্যোধ্য়ং ভূতভ্রেবং।

পারদ, অভ্র, লৌং, হারতাল, গদ্ধক,
মন:শিলা, রসাঞ্জন এই সকল তথ্য সমভাগ;
নরমূত্রে মজন কার্য্য পুনু নার । দণ্ডণ গদ্ধকের
সাহত মিশ্রেত করত কি,কংকাল লৌহপাত্রে
পাক কারবে। মাত্রা—৫ রতি। ঔষধ
সেবনাস্তে—। হঙ্গু, সচল লবণ ও তিক্টু চূর্ণ
নরমূত্রে পেষণ করিয়া মৃত সহ ২ তোলা মাত্রান্থ
সেবা। ইহা অপশারনাশক।

সল্পঞ্গব্যং মৃত্যু।

গোশকৃত্ৰসদধায়-ক্ষারমূত্তৈঃ সমৈত্ব তম্। সিদ্ধং চাতুৰ্থকোঝাদ-এহাপঝারনাশনম্॥

গব্য স্থত /৪ সের, গোমর রস /৪ সের, অম গব্য দ্ধি /৪ সের, গব্য ছথ্ম /৪ সের, গোমূত্র /৪ সের। পাকার্থ জল ১৬ সের। এই মৃত এক দিবদের মধ্যে পাক করিয়া লইবে। ইহা পান করিলে উন্মাদ ও গ্রহাপস্মার নিবারিত হয়।

রুহৎ পঞ্চাব্যং ঘূতম্।

বে পঞ্চন্তে ত্রিফলাং রজফো কুটজহচন্।
সপ্তপর্গপামার্গং নীলিনীং কটুরোহিণীন্ ॥
শম্পাকং ফল্পনক পৌদরং সহরালভন্।
বিপলানি জলদ্রোপে পক্তর্ পাদাবশেরতে ॥
ভাগাঁ পাঠা ত্রিকট্কং ত্রির্তা নিচুলানি চ।
শ্রেরসীমাচকীং মুর্বাং দস্তাং ভূনিষ্টিত্রকৌ ॥
বে শারিবে রোহিষঞ্চ ভূতিকাং মদয়ন্তিকাম্।
কিপেৎ পিষ্টাক্ষমাত্রানি তৈঃ প্রস্থং সপিষঃ পচেৎ ॥
গোলকুদ্রসদধার-ক্ষীরমুত্রক তৎসমৈঃ।
পঞ্চণব্যমিদং খ্যাতং মহৎ তদমূতোপমন্ ॥
অপন্যারে অরে কাসে ব্যথাবৃদ্যে তথা।
ভ্রমার্শংপাঞ্রোগের্ কামলায়াং হলীমকে।
অলক্ষীগ্ররগেম্বং চাতুর্থকবিনাশনন্ ॥

কাথার্থ—দশমূল, ত্রিফলা, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, কুড় চিছাল, ছাতিম ছাল, আপাঙ্গের
মূল, নীলর্ক্ষ, কট্কী, সোঁদাল ফল, ডুমুরমূল, কুড়, ছরালভা প্রত্যেক ২ পল, জল ৬৪
সের, শেষ ১৬ সের। কলার্থ—বামুনহাটীর
মূল, আক্লাদি, ত্রিকটু, তেউড়ীমূল, হিজলবীজ,
গঙ্গপিপ্লা, অড়হর ফল, মূর্বামূল, দস্তীমূল,
চিরতা, চিতামূল, শ্রামালতা, অনস্তমূল,
রোহিব (গন্ধত্ন-বিশেষ), যমানী ও বনমল্লিক।
প্রত্যেক ২ তোলা। গব্য ন্বত /৪ সের,
গোমন্ন রস /৪ সের, গোম্ত্র /৪ সের, গব্য
ছন্ধ /৪ সের, অন্ন গব্য দিব /৪ সের। এই
ন্বত পান করিলে অপন্মার, কাস, শোপ, উদর,
শুন্ম, অর্শঃ ও জ্বাদি নানারোগ নই:হন্ন।

মহাচৈতসং গ্নতম্।

শণত্তিবৃৎ তথৈরতো দশমূলী শতাবরী। রারা মাগৰিকা শিগ্র: কাখ্যং বিপলিকং ভবেৎ। বিদারী মধুকং নেদে বে কাকোল্যো সিতা তথা। এতিঃ ধর্জ্বসূদীকা-ভীক্ষযুঞ্জাতগোকুরৈঃ। চৈত্ৰসন্থ মুভ্নাকৈ: পক্তন্যং সৰ্পিকৃত্তমন্।
মহাচৈত্ৰসমংজ্ঞন্ত সৰ্ব্বাপন্ধাননাশনম্ ॥
গরোনাদপ্রতিশ্রাম-তৃতীয়কচতুর্বকান্।
পাপালক্ষা) জয়েদেতং সর্ব্বগ্রহনিবারকম্ ॥
মাসকাসহরক্ষৈব শুক্রান্তবিবিশোধনম্।
মুতমানং কাপবিধিরিহ চৈত্রসবন্ধতঃ ॥
কন্ধক্তত্রসকন্ধেত ক্রব্রোঃ সার্ক্ষ পাদিকঃ।
''নিতাং যুক্ততিকাপ্রাপ্তে) তালমন্তক্ষিব্যতে ॥"

কাথার্থ—শণবীজ, তেউড়ীমূল, এরগুমূল, দশমূল, শতমূলী, রাঙ্গা, পিপুল, সজিনামূল প্রত্যেক ২ পল, পাকার্থ জল ৬৪ সেব, শেষ ১৬ সের। করুদ্রবা থণা—ভূমিকুত্মাও, যষ্টিমধু, মেদা, মহামেদা, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, চিনি, পিগুর্মজূব, জাক্ষা, শতমূলী, তালের মাতি, গোক্ষুর এবং ব্যংচিতস-মৃত্যোক্ত সমূদ্য করু, মিলিত /১ সের। মৃত্য ৪ সের। ইহাতে সকল প্রকার অপস্থার, উন্যাদ, প্রতিশ্রায়, গ্রাস, কাস প্রভৃতি অনেক গোগ উপশ্যিত হয়। ইহা শুক্র ও আর্ত্তবের বিশোধক। "গুঞ্জাতকের অভাবে তাহার স্থানে তালমাতি গ্রহণ করিবে।"

কুখা গুয়ুত্য ।

কুমাওসরসে সর্পিরস্টাদশগুলে পচেৎ। ষষ্ট্যাসককং তৎপানমপম্মারবিনাশনম॥

ন্বত /৪ সের, কুমাণ্ডরদ ৭২ সের। করার্থ—মষ্টিমধু /১ সের। মথাবিধি পাক করিয়া এই ন্বত পান করিলে অপস্মার প্রশমিত হয়।

ব্ৰাহ্মীয়তম ।

ব্রান্ধীরদে বচাকুট-শব্ধপুশীভিরেব চ। পুরাণং মেধ্যমুদ্মাদ-গ্রহাপন্মারমুদ্স্তুত্য ॥

পুরাতন মৃত /৪ সের, ব্রাহ্মীশাকের রস ১৬ সের। ক্কার্থ—বচ, কুড় ও চোরপুশী মিলিত /১ সের। যথাবিধি পাক করিয়া এই মৃত সেবন করিলে উন্মাদ ও গ্রহাপন্মার রোগ বিনষ্ট হয়।

পলস্কষাত্যং তৈলম ।

পলস্কথাবচাপাগ্যা-বৃশ্চিকাল্যকঁগৰিগৈ।
জটিলাপুত্ৰাকেশা-লাক্ষণীগিকুচোগ্ৰহী ।
লগুনাতিবিষাচিত্ৰা-কুঠোৰিড় ভিল্চ পশ্চিশাং ।
মাংসাশিনাং যথালাভং বস্তম্ভ চতুগুণ।
শিক্ষণভাঞ্চনাৎ তৈলমপ্যাবিনাশনম ॥

গুগ্গুলু, বচ, হরীতকী, বিছাটিমূল, আকলমূল, সর্থপ, জটামাংসী, হরীতকী, ভূত-কেশা, ঈশলাঙ্গলা, হিঙ্কু, 'চোরকাচকী, রস্থন, আতইচ, দন্তী, কুড়, গৃধ প্রভৃতি মাংসাশী পক্ষির বিষ্টা এই সমূলায় করদ্রব্য মিলিত /১ সের, ছাগমূত্র ১৬ সের, তৈল /৪ সের। এই তৈল মন্ধনে অপস্থার নম্ভ হয়।

অভ্যঙ্গে সার্থণং তৈলং বস্তমূত্রে চতুন্ত গৈ। সিদ্ধং ভাদ গোশকুমূত্রেঃ স্নানোৎসাদনমের চ।

চতুগুণ ছাগমূতে সিদ্ধ সর্বপ তৈল মর্দন, গোমর বারা গাত্তমার্ক্তন ও গোমূত্তে স্থান করাইলে অপসার রোগ নিবারিত হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

উন্মাদেৰু যত্নদিষ্টং পঞ্চা: নজাঞ্চনৌৰধম্ । অপস্মারেহপি ভৎ সর্ববং প্রযোক্তব্যং ভিষশ্বরৈঃ ॥

উন্মাদরোগে যে সকল পথ্য, নস্ত, অঞ্চন ও ঔষৰ উক্ত হইয়াছে, অপস্মার রোগেও সেই সমস্ত প্রয়োগ করিবে।

ই ত্যারুনেন্দ-সংগ্রহেংপশ্মাররোগাধিকারঃ।

অথ বাতব্যাধ্যধিকারঃ।

অথ বাতব্যাধি-নিদানম্।

ক্ষক্ষীতাপ্তলদ্পুন্বব্যয় (তপ্তজাগনে: ।
বিষমান্ত্ৰপচারাচ্চ দোষাস্থকপ্রবাদপি ॥
লক্ষনপ্রধানতাধ্ব-ব্যায়ামানিবিচেষ্টিতে: ।
ধাতৃনাং সংক্ষ্যাচিন্তা-শোকরোগাতিকবঁণাং ॥
বেগসন্ধারণাদামাদভিবাতাদভোজনাং ।
মন্ত্রাবাধান্সভানী ভ্রমানাপতসনাং ॥
দেহে প্রোতাংনি রিক্তানি প্রভিত্তানিকো বলা ।
করোতি বিবিধান্ ব্যাধীন্ সর্বাক্ষেকাঙ্কসংখ্যান্ ॥
অব্যক্তলক্ষণং তেষাং পূর্ব্তর্জপমিতি স্বত্রম্ ।
ভ্রাপ্তর্জবিদ্যাক্ষ্যপায়ো লহতা পুনঃ ॥

কৃক্ষ শাতল লঘু বা অল্পরিমিত অগ্ন ভোজন, অতিমৈপুন, অধিক রাত্রি জাগরণ, বিষম উপচার (বস্ত্যাদি পঞ্চক্ষের বিরুদ্ধোপ-চার অথবা অনিষ্টার্থ শত্রুক্ত যাগাদি কিংবা শাতোষ্ণাদি পরস্পরবিরুদ্ধ বিষয়ের মূগপং সেবন ইত্যাদি), অতিশয় বমন বিরেচনাদি, অবিক রক্তর্মাব, সাধাতিত টুউল্লক্ষন, জলসম্ভরণ, পথপর্যাটন ও ব্যায়ামাদি শারীরিক কর্ম এবং ধাতৃক্ষয় চিন্তা শোক ও রোগ দারা অতিকর্ষণ, নলমূত্রাদির বেগধারণ, আমরস দারা মার্গরোধ, আঘাত প্রাপ্তি, উপবাস, মর্ম্মন লারা মার্গরোধ, আঘাত প্রবং গজ উট্ট অব্ধ প্রভৃতি ক্রত ধান হইতে পত্তন, এই সকল কারণে দৈহিক প্রোভঃসমূহ রিক্ত অর্থাৎ অন্তুক্ল-পদার্থ শৃত্ত হলৈ, কুপিত বায় তাহাদিগকে পূর্ণ করিয়া সার্বাঙ্গিক বা উকাঙ্গিক বিবিধ খ্যাধি উৎপাদন করে।

বাতব্যাধি উৎপন্ন হইলে যে স**কল লক্ষণ** প্রকাশিত হয়, উৎপন্ন হইবার পূর্ব্বেও ক্ষেবল সেই সকল লক্ষণই ঈষদ্বাক্ত হইয়া থাকে। সেই অনভিব্যক্ত লক্ষ্ণগুলি^ই বাতব্যাধির পূর্ব্বরূপ। (জ্বাদির স্থায় ইহার অন্থ কোন বিশেষ পূর্ব্বরূপ নাই)। আর বাতাদে দোষ-ভেদে স্তন্ত, সঙ্কোচ, কম্প ও আক্ষেপাদি যে সকল লক্ষণ সমাক্ বাক্ত হয়, তাহা ও বায়ুর চপলস্বহেতৃ ঐ সকল লক্ষণের কখনও বা জ্ঞাব এবং বায়ু কর্তৃক সর্ব্বধাতুর শোষণ জন্ম দেহের লযুতা, এইগুলি বাতব্যাধির রূপ।

অথ বাতব্যাধি-লক্ষণম্।

সকোচ: পর্বাণাং স্তম্ভো ভলে।হয়ু বং পর্বণামপি।
রোমহর্ব: প্রলাপক পাণিপৃষ্ঠশিরোগ্রহ: ॥
খাঞ্জাপাকুলাকুজহুং শোষোহকানামনিজ্ঞ।।
গর্ভগুক্ররজানাশঃ স্পন্দনং গাত্রহুপ্তভা ॥
শিরোনাসাক্ষিজক্রশাং গ্রীবায়াকাপি ছণ্ডনম্।
ভেদভোদোহর্ত্তিরক্তেপো মুহুকায়াস এব চ ॥
এবংবিধানি রূপাণি করেণ্ডি কুপিভোহনিল:।
হতুত্বানবিশেষাচ্চ ভবেদ্রোগবিশেষকুং ॥

প্রথম শ্লোকে উক্ত হইয়াছে বে, বায়ু **কুপিত হইয়া সাৰ্ব্বাঞ্চিক** বা ঐকাঞ্চিক বিবিধ **পীড়া উৎপাদন করে।** অতএব যে যে ব্যাধি উৎপাদন করে, এন্থলে তাহা লিখিত ২ই-তে । — পর্ব সকলের সম্বোচ ও স্তর্নতা, **অন্থি ও** পর্বাসমূহে ভঙ্গবৎ পীড়া, রোমাঞ্চ, প্রশাপ, হস্ত পূর্চদেশ ও মস্তকে **খঞ্চা, পঙ্গুতা, কুজতা, অঙ্গুণোব, নিদ্রাভাব** বা অমানিলা এবং গভ শুক্র ও রজোনাশ বা গর্ভাদির বিক্বতি, কম্পন, গাত্রস্থতা অর্থাৎ স্পর্শবাক্তির লোপ এবং মন্তক নাসিকা চক্ষু: জক্ত (বক্ষ. ও গ্রীবার সন্ধিন্থল) ও গ্রীবার **ছণ্ডন অর্থাৎ অন্তঃ**গ্রাবেশ বা বক্রতা (কিন্তু কেহ কেহ "হুত্তন" শক্তের এইরূপ অর্থ করিয়া যথা—শিয়োহণ্ডন—কেশভূমিশুটন নাসাহত্তন— ও শহাললাটে ভঙ্গবদুবেদনা, খ্রাণশক্তিলোপ, অকিহণ্ডন-অকিনাশ, জত্র-হওন-ক্ষডাপ্রোধ, ত্রীবাহত্তন-ত্রীবাস্তম্ভ), দায় ওঠ ও ক ঠাদিতে ভঙ্গবদ্বেদনা, স্টাবেধবং বেদনা এবং পাদ পার্দেশ কর্ণ চক্ষু: ও বক্ষাস্থলে পীড়া-বিশেষ, মূল্মুলুরাক্ষেপ ও শ্রান্তিবোধ, এবংবিধ বহুবিকার এবং ক্রেণ্ড ও স্থানবিশেষে অন্তান্ত বিশেষ বেশেষ রোগ উৎপাদন করে।

অথ বাতব্যাধি-চিকিৎসা।

স্বাদমলবলৈ প্রিক্ষেরাহাট্রবাত্রোগিণঃ। অভ্যস্কমেহবস্ত্যাট্ডা, সকানেবোপপাদমে ॥

বায়ুরোগাক্রান্ত ব্যক্তির পক্ষে স্বাহ, অম ও লবণ রস-সংগ্রু ফ্লিগ্ল সাহার, তৈলাদি মর্দ্দন ও মেহবস্থিকিয়া প্রভৃতি কর্ত্তব্য।

সাপিতৈলবসামজ্জ-পানি।তাঞ্জনবন্তয়ঃ।
বেদঃ বিদ্যো নিবাশ্য স্থানং প্রাবরণানি চ।
রসাঃ প্রাংগি তেওলানি আছ্ডলবণানি চ।
বৃহহণং যচ্চ ডৎ সক্ষা প্রশন্তং বাতরোগিণাম্॥

বাতবোগে দ্বত ৈতল বসা ও মজ্জা পান, অভ্যঙ্গ ও বস্তি ক্রিয়া এবং স্নিগ্ধ স্বেদ, নিবাত স্থান, প্রাবরণ, মাংসরস, হ্রগ্ধ, স্বাহ্ অম ও লবণ-রসমুক্ত ভোজন এবং অপরাপর সমস্ত বুংহণ কার্যাই প্রশস্ত।

ৰলায়াঃ প্ৰফুলন্ত দশ্মূলত বা রসে।
অজনীৰামুজানুপ্-জবালিপি।শতৈঃ পূথক্ ॥
সাধ্যিমা রসান্ (গ্রধান দ্ধায়ব্যোহসংস্কতান্।
ভোজমেছা হ্রোগাভং তৈবাজলবণীন্য ॥

ছাগমস্তক, জলজনাংস (কৃষা কর্কট প্রভৃতি), আন্প্রনংস (মহিব বরাহ প্রভৃতি) বা ক্রব্যাদমাংস (মাংসানা পশু-পদ্মির মাংস), এই চতুর্বিধ মাংসের মধ্যে বে কোন এক প্রকার মাংস, বেড়েলা কিংবা মহৎপঞ্চমূল অথবা দশমূলের কাথে পাক করিয়া সেই মাংস-রস—মৃতাদি মেহ, অন্ন দ'ব ও ত্রিকটু মারা সংস্কৃত এবং প্রচুর লবণ সংযুক্ত করিয়া বাত-রোগিকে ভোজন করিতে দিবে।

দৰ্কাঙ্গগতমেকাঙ্গ-গতকাপি দমীরণম্। তৈলাবগাহনং হস্তি তোয়বেগমিবাচলঃ॥

জলের বেগ যেমন সমুখস্থ পর্বত ধারা প্রেলিছত হয়, স্কাঙ্গত বা একাঞ্চগত কুপিত সমীরণও তজ্রপ তৈলাবগাহন স্বারা বিনষ্ট হটয়া থাকে।

কোলং কুলথাঃ স্বরদার্গরানা-মাষাতদীতৈলফলানি কুঠম। বচা শতাহ্বা যবচূর্ণমন্নমূকানি বাতামন্থিনাং প্রদেহঃ॥

কুল, কুলখ-কলায়, দেবদারু, রামা, মাষ-কলায়, মসিনা, তৈলফল (এরগুবীজ, সর্থপ ও তিল প্রভৃতি), কুড়, বচ, শুল্ফা 'ও যবচূর্ণ এই সকল দ্রব্য কাজিতে বাটিয়া উষ্ণ করিয়া প্রলেপ দিলে বাত রোগের শান্তি হয়।

আনৃপ্রেশবারে ক্ষ-প্রদেহো বাতনাশনঃ।
"নিরস্থি পিশিতং পিষ্টং শ্বিরং গুড়যুতান্বিতম্।
কৃষ্ণামরিচসংযুক্তং বেশবার ইতি স্থতন্।"

অনুপ-দেশজাত পশুর নাংসের ঈবহৃষ্ণ বেশবার দারা পালেপ দিলে বাতরোগ নষ্ট হয়। অন্তিশ্স নাংস পেষণ ও সিদ্ধ করিয়া তাহার সহিত গুড়, ম্বত, পিপ্ললী ও মরিচ মিশ্রিত করিবে। এইরপ মিশ্রিত বস্তকেই বেশবার কহিষা থাকে।

অথ কোষ্ঠাদিগত-বাতলক্ষণম্।

তত্ৰ কোঠাত্ৰিতে হুষ্টে নিগ্ৰহো মূত্ৰবৰ্চনো:। এগ্ৰহজোগগুলাৰ্শঃ-পাধশূলক মাকতে॥

কুপিত বায় আমাশয়াদি কোৰ্চস্থানকে আশ্রয় কবিলে মলমূত্রের অপ্রবর্ত্তন, এগ্ররোগ (কুঁচ্কিতে শোগ), সংপীড়া, গুল্ম, অর্শঃ ও পার্মপুল এই সকল লক্ষণ লক্ষিত হয়।

সর্বাঙ্গকুপিতে বাতে গাত্রস্থুরণভঞ্জনম্। বেদনাভিঃ পরীতশ্চ স্ফুটজীবাক্ত সৰয়ঃ॥

কুপিত বার্ সর্বাঙ্গ আশ্রম করিলে, গাত্তের ক্ষুরণ ও ভঙ্গবৎ পীড়া, দেহে দোষ-ব্যাপ্তি ও সন্ধিন্তল সকলে ক্ষুটনবৎ ব্যথা এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়।

এছো বিগ্নুত্রবাতানাং শূলাম্বানাম্বর্ণকরাঃ। জন্তোক্ততিকপাং পৃষ্ঠ-রোগশোবো খনে ছিচ্চে॥

কুপিত বায়ু মলাশয়কে আশ্রয় করিলে মল মূত্র ও অধোবায়ুর অপ্রবর্তন, শূল, উদরা- খান, অশ্যরী (পাধরীরোগ), শর্করা (প্রস্রাবে চিনি হওয়া) এবং জঙ্ঘা উক্ত ত্রিক (মেক্র-দণ্ডের অধঃপ্রান্ত) পদ ও পৃষ্ঠদেশে শ্লাদি পীড়া ও শোষ হইয়া থাকে।

ক্রক্ পার্ষোদরহার'ভেক্তঞোলগারনিস্চিকাঃ। কাসঃ কঠান্তশোষশ্চ খাসন্চামানয়ন্তিতে ॥

ছণ্ট বায় আমাশয়কে আশ্রয় করিলে পার্শ্বয় উদর ঋদয় ও নাভি দেশে বেদনা, ভ্রমা, উদ্যার, বিস্থাচিকা, কাস, কণ্ঠ ও মূখ-শোষ এবং শাস হটয়া থাকে।

পকাশয়স্থেহিয়কুজং শূলাটেরেপী করে:তি চ। কৃত্যুমূলপুরীবংমানাহং ত্রিকবেদনাম্॥

কুপিত বায় পকাশ্যকে আশ্র করিলে অন্তর্গন বিভাত-ভাক।), উদরে শূল ও আটোপ (সংদেন গুড় গুড় ধ্বনি), মল মূত্রের কুজ্তা, আনাহ ও ত্রিকস্থানে বেদনা এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়।

त्याळानिवे लिखनशः क्यानिक्टेमभीतनः ॥

কুপিত বায়ু শ্রোত্রাদি ইন্দ্রিরগত হইলে তত্তং ইন্দ্রিয়ণভির নাশ হয়।

কোষ্ঠাদিগত-বাতচিকিৎসা।

বিশেষতশু কোষ্ঠন্তে বাতে ক্ষারং পিবেলরঃ।

কুপিত বারু কোছা শ্রিত হইলে যবক্ষার কিংবা গ্রহণীরোগোক্ত দীপনীয় ক্ষার পান করিতে দিবে।

সর্বাঙ্গধূপিতেহভাঙ্গো বস্তয়ঃ সামুবাসনাঃ। স্বেদাভাঙ্গাবগাহাক হত্যকান্নং স্থগালিতে॥

বায়ু সর্বাঞ্চে কুপিত হঠলে তেলাভাঙ্গ ও অনুবাসন-বৃত্তি প্রয়োগ , ওগ্গত হইলে স্বেদ, অভাঙ্গ, অবগাহন ও হৃত্তি অয় ব্যবস্থেয়।

বায়্না বেগ্রামানে তু গাত্তে স্থাহ্পনাহনম্। তৈলং সক্তুচিতেহভাসো মাৰসৈন্ধবসাধিতম্ ॥

কুপিত বায়ু শরীরে ব্যাপ্ত হইলে বাতম্ব প্রলেপ এবং শরীরকে সন্ধৃতিত করিলে মাষ- কলাই ও সৈদ্ধব লবণের সহিত সিদ্ধ তৈল মৰ্দ্দন প্রশস্ত।

শুৰূপকাশয়তে তু কথ্যোদাবৰ্ততুদ্ধিতম্। আমাশয়তে শুদ্ধত বৰাদোবহুৱা ক্ৰিয়া।

ছুই বায়ু গুহুদেশ বা প্রকাশর গত হইলে উদাবর্ত্তের ক্রায় চিকিৎসা এবং আমাশয়স্থ হুইলে ব্যন-বিরেচনাদি ধারা সংশোধন ক্রিয়া যথাদোধ ব্যবস্থা ক্রিবে। যথা—

আমাশরগতে বাতে চ্ছার্কিটার যথ'ক্রমন্।
রক্ষা থেনো লজনক কর্ত্তব্যং বহিদীপনন্;
দেয়া বড়্ধরণো বোগা সপ্তরাত্ত্য হুপাস্থনা।
বায়ু আমাশয়-গত হুইলে প্রথমে বমন,
তৎপরে ক্লাক্ষেদ, লজ্বন ও অগ্রিনীপন ঔষধ
প্রয়োগ কর্ত্তব্য়। এই ব্যোগে ঈষত্ত্ত জল সহ
বড়্ধরণ যোগ ৭ রাত্তি প্রয়োগ করিবে।

প্রকাশরগতে বাতে হিতং ফ্রেহবিরেচনম্। বস্তরঃ শোধনায়াশ্চ প্রাণাশ্চ লবণোডরাঃ ।

পকাশয়স্থ বায়ুতে এরগু-তৈলাদি **দারা** বিরেচন, শোধন-বস্তি এবং লবণাঢ্য আহার ব্যবস্থেয়।

শ্রোত্রাদিধনিলে ছু.ষ্ট কাথ্যো বাত্তরঃ ক্রম। শ্রেহান্ড্রকাবগাহান্চ মর্দ্দনালেপনানি চ।

তৃষ্ট বায়ু শ্রোত্রাদি ইন্দ্রিয়গত হইলে স্নেহ-প্রয়োগ, অভ্যঙ্গ, অবগাহন, মদ্দন ও আলে-পুনাদি বাতহরী ক্রিয়া কবিবে।

হৃদি প্রকুপিতে সিদ্ধনংশুমতা পরো হিত্য। মংস্থো নাভিপ্রদেশস্তে সিদ্ধো বিবশলাটুভিঃ॥

সদয়ত বারু কুপিত হটলে শালপাণির সহিত সিদ্ধ হগ্ধ এবং নাভিদেশত বায়ু কুপিত হইলে বেলগুঠের সহিত সিদ্ধ মংস্ত হিতকর।

কদয়ানিলনাপায় গুড়্তাং মরিচারিতাম।
পিবেৎ প্রাতঃ প্রয়েজন ক্থাং তপ্রাক্তমা সংল পিবেছফান্তমা পিষ্টমন্বাক্ষাবিভীতকম্। গুড়্যুক্তং প্রয়ম্ভেই কদয়ানিলনাশনম্ল দেবদারুসমাযুক্তং নাগরং পরিপেষিতম্ন কদ্বাতবেদনাযুক্তঃ পীতা ক্রমবাপ্রাই দ

কুবিতিবেদনাগুক্ত: পাজা হগনবাধা, গাব।
কুবিতি বাধু সদগ্গস্থ হইলে মরিচচূর্ণ
সংযুক্ত গুলকের রস, অথবা পুরাতন গুড়

সংযুক্ত শিলাপিষ্ট অশ্বগন্ধা ও বহেড়া কিংব! পরিপেষিত দেবদারু ও শুঠ উষ্ণ জলের সহিত প্রাতঃকালে পান করিবে, তাহাতে স্পৃগত বাতবেদন, দুরীভূত হুটবে।

অথ ধাতুগতবাতানাং লক্ষণম্।

প্রাক্তবা কৃষ্টিতা স্থা কৃষ্ণা কৃষ্ণা চ তুল্লতে।
আতন্ত্রতে সর্গো চ প্রকল্প ত্বগ্ণতেইনিলে ।
ক্রমান্ত্রাঃ সমন্তাপা বৈবর্গাং কৃষ্ণতারুচিঃ।
গাত্রে চারুংমি ভুক্তন্ত স্তম্প্রচন্ত্র মধা।
সক্তর্নারি হনতার্থং মাংসনেদোগতেইনিলে ।
ভেদোহস্থিপবর্গাং সন্ধি-শূনং মাংসবলক্ষর।
অস্বপ্রঃ মন্ত্রতা ক্রম্প চ মহলান্তিকৃপিতেইনিলে।
ক্রিপ্রং মুক্তি বর্গাতি গুলুং বুলিতোইনিলা।
ক্রিকৃতিং জনয়েচ্যাপি গুলুত্র বুলিতোইনিলা।

কুপিত বার ধ্বা গত হঠলে, স্বক্ ক্রাণ, স্ফুটিত, প্রশাশক্তি-খান, শার্ল, ক্রম্ব বা ঈনৎ রক্তবর্গ, স্ফুটীবেধবৎ বেদনা বিশিষ্ট ও বিস্তাপ-বং হয় এবং পান সকলে বেদনা হঠায়া থাকে।

কুপিত বায় রক্তগত ২ইলে স্বাঙ্গে তীও বেদনা, সম্ভাপ, বিবর্ণতা, রুশতা, অরুচি, গাত্রে পিড়কোংপত্তি ও ভুক্ত দ্রব্যের স্তব্ধতা, এই স্কল লফণ সংঘটিত হয়।

কুপিত বায় নাংস বা মেদোগত হইলে অঙ্গ সকল অতিশয় গুলু ও বিনাশ্রমে অত্যন্ত শ্রান্ত হয় এবং বোদ হয় যেন স্থচীদারা বিশ্ব বাদগুমুষ্ট্যাদি দারা অহিত হইতেছে।

কুপিত বার মজ্জা বা অহিকে আএর করিলে অন্থি ও পদ সকলে ভঙ্গবং পীড়া, সন্ধিশূল, বলমাংসক্ষয়, অনিদা ও নিরন্তর বেদনা উপস্থিত হয়।

কুপিত বায় শুক্রগত :ইলে শুক্র ও গভকে, হয় শাঘ্র মোচন করে, না হয় দীর্ঘ-কাল ক্ল করিয়া বাথে, অথবা বিক্লত করিয়া ফেলে।

ধাতুগতবাতানাং চিকিৎসা।

ছঃ মাংসাসক্শিরাপ্রাপ্তে কুর্যাচ্চাস্বর্বিমাকশম্ ॥ ছক্ (ছগ্গত বস), মাংস, রক্ত ও শিরা-গত বায়ুতে রক্ত মাকণ কর্ত্তব্য ।

শীতাঃ প্রদেহা রক্তত্তে বিরেকো রক্তনোক্ষণম্। বিরেকো মাংসমেদঃতে নিরুহাঃ শমনানি চ॥

বায়ু রক্তস্থ হইলে শীতল প্রালেপ, ।ব্রেচন ও রক্তমোক্ষণ এবং মাংস ও মেদোগত হইলে বিরেচন, নিরূহ এবং শমন ঔষধ বাবস্থা করিবে।

বাজাভা ওরতঃ লেভৈব(ত্মতগতং জয়েং 🛭

বায় আন্ত ও মজ্জাগত হইলে বাহ ও আভ্যস্তর মেহ প্রয়োগ ছারা (অভ্যঙ্গ ও পান ছারা) ভাহার শান্তি বিধান কবিবে।

হয়োহরপানং শুফ্রান্ত বলগুণকরং হিতম। বিশ্বদ্ধমার্গং শুফ্রান্ত দৃষ্টা দক্তাদ বিরেচনন্।

নিরিজপাত হৃত্তপ্ত প্রধ্যে জাং কার্য্যৎ জিরাম্।
কুলিত বায় শুক্রত্ব হইলে রীপ্রশৃতির
সহিত আলাপাদি ধারা রোগির হর্ষোৎপাদন
এবং বলকর ও শুক্রজনক অন্ন এবং পানীয়
ব্যবস্থা করিবে। শুক্রের পথ রোধ হইলে
বিশ্লেচক ঔষণ দিবে এবং বিবেচনের পর
রোগী ভোজন করিলে প্রের্থাক্ত হ্রোৎপাদ-

নাদি ক্রিয়া করিবে। গচেই গুলে তু বাতেন বালানাঞাপি গুয়াতীম্। সিতামধুককাশ্রায়োহিতমুখাপনে পয়ঃ॥

বায় স্বানা গর্ভ বা ।শশু শুক ২ইতে থাকিলে তাহার পোষণার্থ যষ্টিঃধু ও গান্তারীফল এন্ধে পাক করিয়া তাহাতে চিনি প্রক্ষেপ দিয়া দেবন করিতে দিবে।

অথ শিরাগতবাতলক্ষণম্।

কুৰ্য্যাচিছরাগতঃ শূলং শিরাকুঞ্চনপূরণন্। সবাহাভ্যন্তরায়ানং থলাং কৌজ্যমধাপি বা ॥

কুপিত বায় শিরাগত হইলে শ্ল, শিরার সঙ্কোচ ও পূর্ণ, বাহায়াম, অন্তরায়াম, শলী (শাইল্ ধরা) ওঃকুজ্ঞতা উপস্থিত হয়।

তস্য চিকিৎসা।

ক্ষেহাভ্যক্ষোপনাহাত মৰ্জনালেপনানি চ। বাতে শিৱাগতে কুয়াৎ তথা চাস্থিমোক্ষণম্॥

কুপিত বায়ু শিরাগত হইলে স্বেহাভাঙ্গ, উপনাহ, মর্দ্দন ও আলেপনাদি ক্রিয়া এবং রক্তমোক্ষণ করিবে।

অথ সায়ুসন্ধিগত-বাতলক্ষণম্।

সর্ব্বাক্সেকাস্প্রোগাংশ্চ ক্রাৎ স্নাযুগতোহনিলঃ। হস্তি সন্ধিগত সন্ধান শূলপোটের করোতি চ॥

কুপিত বাবু স্বাবুগত হইলে সার্বাঙ্গিক ও ঐকাঙ্গিক বোগ সকল আনমন করে। উহা সন্ধিগত হইলে সন্ধিনাশ (সন্ধির বিশ্লেষ ও শুন্তুবি), শূল ও শোগ উপান্তত করে।

স্নায়ুসন্ধিগতবাত-চিকিৎসা।

স্মেহাপনাহায়িকজ-বন্ধনোম্মনানি চ। স্নার্থকা,স্থিপস্থাতে কুয়াদ্ বাতে বিচক্ষণঃ॥

সাৰু সভিষান ও আস্ততে বাতাশ্র হইলে স্নেহন, প্রলেপন, সাথিজিয়া, বন্ধন ও মর্দ্ধনাদি ক্রিয়া প্রশস্ত।

অথ হেতুবিশেষেণ বাতব্যাধিবিশেষঃ।

প্রাণে পিন্তাবৃতে চ্ছান্দিন হিল্চবোপজায়তে।
দৌৰবল্যং সদনং তথা বৈরপ্তক কফাবৃতে।
ছদানে পিন্তযুক্ত তু দাহো মুচ্ছা অমঃ ক্লমঃ।
অবেদহৰো মন্দোহায়ঃ লাততা চ কফাবৃতে।
বেদদাহোঞামুক্তাঃ স্থাঃ সমানে পিন্তসংবৃতে।
কফেন সক্তে বিখাতে গান্তহৰণ্ট জায়তে।
অপানে পিন্তযুক্ত তু দাহোঞাং বক্তমুক্তা।
অধঃকায়ে প্রক্রমণ শান্তা চ ককাবৃতে।
বানে পিন্তাবৃতে দাহো গান্তবিক্রেপণং ক্লমঃ।
ভাবনা দণ্ডকভাপি শ্রাশোধী ক্লাবৃতে।

এক্ষণে প্রাণ অপানানি পঞ্চবার্, পিত্ত ও কফ দারা আর্ত হইলে তাহাতে যেরূপ লক্ষণ উপস্থিত হয়, তাহা লিখিত হইতেছে— প্রাণবার্ পিত্ত দারা আবৃত হইলে বমি ৬ দাহ; কফাবৃত হইলে দৌর্বল্য, অবসন্নতা, হক্রা ও মুখবৈরহু উৎপাদন করে।

উদানবাষ্ পিত্যুক্ত হইলে দাহ, মুর্চ্ছা, ভ্রম ও ক্লাস্তি এবং কফাবৃত হইলে ঘর্মাভাব, রোমাঞ্চ, অগ্নিমান্দা ও গাত্রের শীতলতা বা শীত উৎপাদন করে।

সমানবায় পিত্তসংষ্ক্ত হইলে, স্বেদ, দাহ, গাত্তের উষ্ণতা ও মূর্চ্ছা; এবং কফ্যুক্ত হইলে মলমূত্রবোধ:ও বোমাঞ্চ উপস্থিত হয়।

তপান বায় পিন্তাবৃত হইলে দাহ, দেহের উষণতা ও রক্তপ্রস্রাব এবং কফাবৃত হইলে শরীরের অধোভাগে গুরুত্ব ও শৈতা উপ-স্থিত হয়।

বানিবার্ পিতাবৃত হইলে দাহ, গাত্র-বিক্ষেপ ও ক্লান্তিবোধ এবং কফাবৃত হইলে শরীরের স্তর্কা অথবা দণ্ডবং অবস্থান এবং শূল ও শোধ এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়।

তেষাং চিকিৎসা।

বাতে সপি**তে** কুকান্তি বাতপিত্তহর[্]ই ক্রিয়াঃ। সক্ষেত্ত কুকাত বাতলেম্বর্টাং ক্রিয়াঃ।

পিত্তসংযুক্ত বাতে বাতপিত্তনাশক এবং কফসংযুক্ত বাতে বাতপ্লেম্মনাশক চিকিৎসা করিবে।

অথাক্ষেপকস্ম সামান্যলক্ষণম্। বদা তু ধমনাঃ স্বলাঃ কুপিতোহভোতি মাকতঃ। তদাক্ষিপত্যাও মুহগুছদে হং মুহল্ডঃ।

মূর্ত্ম হুচ্চাক্ষেপণাদাক্ষেপক ইতি স্বৃতঃ।

কুপিত বায়ু যথন উর্দ্ধ অধঃ ও তির্যাপগামিনী ধমনী সকলকে প্রাপ্ত হয়, তথনই
আক্ষেপক রোগ উপস্থিত করে, অর্থাৎ বায়ু
মৃত্যুত্তঃ অঙ্গকে ইতস্ততঃ চালিত করিতে
থাকে। মৃত্যুত্তঃ আক্ষেপণ হেতু এই রোগকে
ক্ষপক (থোঁচনি) কহিয়া থাকে।

অথাপতন্ত্রকলক্ষণম্।

কুদ্ধিঃ বৈ: কোপনৈৰ্বায়ঃ স্থানাদূদ্ধিং প্ৰপঞ্জতে।
পীড়য়ন্ হৃদয়ং গছা শিরঃশন্থে) চ পীড়য়ন্॥
ধহুর্বরময়েল্যাকাশ্যাক্ষিপেন্মোহয়েং তদা।
স কুজ্জাহুচ্ছু,সেচ্চাপি ন্তকাল্যেই নিমালক:॥
কপোত ইব কুজেচ্চ নিঃসংজ্ঞঃ সোহপ্তয়কঃ॥

এই রোগে রুক্ষাদি সংহত্-কুপিত-বায়ু স্বস্থান (পকাশয়) ইইতে উদ্ধাভিমুখে হাদয় মক্ষক ওশজ্ঞ দেশে যাইয়া তত্ত্বংস্থানকে প্রপীড়িত করত দেহকে পলুকের ছায় নত ও আক্ষিপ্ত করে। এই রোগকে অপতন্ত্রক কহে। তাহাতে রোগী মৃচ্ছিত, স্তন্ধাক্ষ বা নিমীলিত-নেত্র ও সংজ্ঞাহীন হয় এবং অতি কষ্টেশাস পরিত্যাগ কবে ও কপোতের ছায় শক্ষ করিতে থাকে।

অপতন্ত্ৰক-চিকিৎসা।

অপাপতন্ত্রকেণার্ডমাতুরং মাপতপরেৎ। নির্ক্তবন্তিবমনং দেবরের ফণ্চন॥ শ্বসনাঃ কফবাতাত্যাং ক্লছাস্তস্ত বিনেংকরেৎ। তীক্ষঃ প্রধর্মনিঃ সংক্রাং তাস্ত্র মুক্তব্ধে বিন্দতি॥

অপতন্ত্রক-রোগগ্রস্ত ব্যক্তির অপতর্পণ,
নিরহ্বাস্ত ও বমনক্রিয়া করিবে না। এই
রোগে কফ ও বায়ু কর্তৃক শ্বাসপ্রশাসবহা
ধমনী সকল ক্রম্ব থাকে, অতএব তীক্ষ প্রধমন
প্রয়োগ করিয়া ঐ সকল ধমনী বিমৃক্ত করিলে
রোগির সংজ্ঞা লাভ হইবে।

হরীতকী বচা রামা দৈদ্ধবং সায়বেতসম্। যুতমাত্রাসমাযুক্তমপতস্ত্রকনাশনম্। অয়বেতদকাভাবাচ্চুকং দাতবামীরিতম্॥

হরীতকী, বচ, রাস্না, সৈন্ধব লবণ ও অম্লবেতস এই সকল চূর্ণ মিলিত ১ তোলা, ঘুত ২ তোলার সহিত সেবন, অথবা হরীতকী প্রভৃতির কাথে সৈন্ধব লবণ ও ঘুত প্রক্রেশ দিয়া পান করিলে অপতন্ত্রক বিনষ্ট হয়। অম্লবেতসের অভাবে চুক্র গ্রহণ করিবে।

মরিচা'দ নশুম্।

মরিচং শিরা বীজানি বিড়ঙ্গণ কণিজ অবন্। এতানি স্পাচ্ণা ন দন্তাচ্ছাধাবরেচনে ।

মারচ, শজিনা-বান্ধ, বিড়ঙ্গ ও কুদ্রপত্ত ভূলসী, সমভাগে এই সকল চূর্ণের নক্ত গ্রহণ ক্রিলে অপতন্ত্রক নষ্ট হয়।

मूखः किथाखिलाः कूठेः खुदाद्यः स्वतं । सिक्नोतक्कुः (व्यदेशः निक्कः खाइणनाहसम् ।

মূতা, কিথ (সুরাবীঞ্চ), তিল, কুড়.
দেবদাক, সৈন্ধবলবণ, তগরপাক্ষকা, দবি, তথ্য
ও চৃত্যুংক্ষেহ (মৃত, তৈল, বসাও মজ্জা); এই
সমুদায় সিদ্ধ করিয়া বাতরোগে উপনাহ (উষ্ণ পুশুটিস্) দিবে।

অথাপতানকলকণম্।

দৃষ্টিং সংস্তান্ত সংজ্ঞাক হয়। কঠেন কুন্নতি। কৃদি মুক্তে নরঃ বাহাং বাতি মে'হং বৃত্তে পুনঃ। বাযুনা দারুণং আছুরেকে তদপতানকম্।

অপতানক নামে আং এক প্রকার ব্যাধি
আছে। তাহাতে দৃষ্টিশাক্তনাশ ও সংজ্ঞাগোপ
হয় এবং কঠ হহতে এক প্রকার অব্যক্ত শব্দ
বাহর্গত হইতে পাকে। বায়ু য়ধন জদয় হইতে
চালয়া য়ায়, তথন বোগী প্রস্থ এবং য়খন
স্কালকে আক্রমণ করে, তথন পুনব্দার মুর্ছেত
হয়। অপতানক রোগ অতীব জয়ড়য়।

অথ দণ্ডাপ ভানক-লকণম।

ক্ষান্বিতো ভূণং বায়্তাব্বের যদি তিষ্ঠতি। দওবং গুভারেদেহং স তু দওাপতানকঃ॥

কুপিত বারু, অত্যন্ত কফযুক্ত হইরা দেহত্ব ধননী :সকলকে আশ্রর কারেরা দণ্ডাপতানক নামে আর একপ্রকার ব্যাধি উৎপাদন করে। ভাহাতে দেহ দণ্ডের স্থার তান্তত অর্থাৎ আকুঞ্চনাদি-শক্তি রহিত হইরা থাকে।

অথ তয়ো হিচাকৎস।।

অধাপতানকেনার্ত্তমক্র ভাক্ষমবেপন্ম। অংট্রাপাডিনফৈর ত্বরা সন্পাচরেৎ।

ক্ষপতানক-রোগাক্রান্ত ব্যক্তি যদি সাশ্র-নর্ম, কম্পিত-দেহ ও শ্ব্যাশারী না দর, তাং হুইলে দ্বার তাহার চাক্ত্রো ক্রিবে। কালবিল্যে রোগ অসাধ্য হুইরা থাকে।

व्यभजानकित्न मण्डः मममूत्रीमृतः कः मम् । निम्नतोष्ट्रनिरमुक्तः कोर्त्य भारमत्ररमोषसम् ॥

অপতানক-রোগিকে ২ টোলা দশমুদ (মিলিত) অর্দ্ধদের জলে সিদ্ধ করিয়া অর্দ্ধ পোয়া থাকিতে নামাইয়া কিঞ্চিৎ পিপুল চূর্ণ মিশ্রিত করত পান করিতে দিবে। উহা জীর্ন হইলে মাংসব্ধের সহিত অন্ন ভোজন করাইবে।

তৈলেন মৰ্দ্দনকৈবাতখা তীক্ষং গিরেচনম্। শ্রোভোবিশোধনং পশ্চাৎ সপিঃপানং হিতং স্বতম্ ॥ হতাতুক্তবতা শীংময়ং দখাগতানকম। মন্ত্রিচন সমাযুক্তং শেহবজিরখাপি বা ॥

তৈল মর্দন, তীক্ষ বিশেচন এবং স্রোতো-বিশোবক মুক্ত পান, অপভানক শোগে ছিত্ত-কর। ভোজনের পূর্বে শুক্টোদরে মারচচ্গ সংখৃক্ত অমুদ্ধি পান থথবা স্লেহবাস্ত প্রয়োগ করিলে অপ্তানক রোগ বিনষ্ট হয়।

অথান্তরায় ম াহ্যায়াময়োল নিশ্ম।

ৰস্তালং নৰেষ্বন্ত স ধমুংগুৰুসংক্ৰকঃ।
অসুলীগুল্বজঠন-কৰ্কোগলসংক্ৰিতঃ ।
বাযুপ্ৰতানমনিলো বদাক্ষিণতি বেগবান্।
বিষ্ট্ৰাক্ষং অকংস্প্ৰগণাৰ্থঃ কক্ষং বমন্।
অভ্যন্তবং ৰস্বিবংবদা নমতি মানবন্।
তদাক্তাভ্যন্তবাদামং কুক্তে মাক্ষতো বলী ।
বাহ্যপ্ৰয়েপ্ৰতানহো বাহ্যাবামং করোতি চ।
তমসাধাং ব্বাং প্রাহ্বক্ষংকটাক্ষপ্তলন্ম।
ক্ষাদাক্ষেপ-ক্ষন্তং চতুর্বনাক্ষয়তক্ষম ।
ক্রাদাক্ষেপ-ক্ষন্তং চতুর্বনাক্ষয়তক্ষম ।
পর্তগাতনিমিন্তক্ষ লোণ্ডাতিপ্রবাচন বং।
অভিবাতনিমিন্তক্ষ নিধ্যতাপ্তানকং ।

যে রোগে দেহ ধন্মকের তার নত হয়, তাহাকে ধন্মতন্ত কহে। ইহা দিবিধ; যথা— অস্তরায়াম ও বহিরারাম।

অতি কুপিত বেগবান বায় যথন অঙ্গুলি. গুলফ, জঠর, বক্ষঃস্থল (বাহুদ্যের অন্তর্গত স্থান), হাদয় (বক্ষঃস্থানের অভ্যন্তরে ২ অঙ্গুলি-পরিমিত স্থান) ও গলদেশে অবস্থিত হইয়া তখনই মানব স্বায়ুসমূহকে আকর্ষণ করে, **অভ্যন্তরে (**ক্রোড়ে) নত হয়। ইহাকেই **অভ্যন্তরায়ান কহে। ইহাতে** রোগির চ**কু**-ছ ব্ন স্তব্ধ, হকু (চোয়াল) বদ্ধ, পাশ্বর ভগ্ন ও কফ উদ্গীর্ণ হয়। আর যদি ঐ বায় পশ্চাদ-অবস্থিতি বাহুসায়ুসমূহে ভাগে তাহাদিগকে আকর্যণ করে, তাহা হইলে মানব বহিভাগে পুড়ে নত হয়; ইহাকেই বহিরায়াম কহে। বাহরায়ামে বক্ষঃ, কটা ও উরুদেশে ভঙ্গবৎ বেদনা হয়। এই রোগ প্রায় অসাধঃহইয়া থাকে।

কুপিত বায়ু সমুং বা কফ-পিন্তান্বিত হইয়া অক্স একপ্রকার আক্ষেপ রোগ উৎপাদন (জেব্জুড ভাহাকে দণ্ডাপতানক ৰলিয়াই ব্যাখ্যা করিয়াছেন) ভাহাতে কফ-া**পত্তের অমু**বন্ধ থাকিলে শৈত্য, শোপ ও গুরুত্বাদি-লক্ষণ সকলও উপস্থিত। হইয়া থাকে। দ্র্ঞাদির আভিবাত হেতু বায়ু কুপিত হইয়া আক্ষেপ রোগ আন্য়ন করে, তাহাকে অভি-ঘাতজ আক্ষেপ কহে। আক্ষেপ চারি প্রকার; যখা—দ্ভাপতানক, অন্তরায়াম. গৰ্ভপাত, **ৰহি**রায়াম এবং আভ্যাতজ। অভিযাতহেতু যে অতিশয় রক্তস্থাব ও অপতানক উৎপন্ন হয়, তাহা অসাধ্য।

অথ তয়োশ্চিকিৎসা।

বাহারামেংস্করায়ামে বিধেয়ার্দ্ধিতবৎ ক্রিয়া। অর্দ্ধিত রোগের চি।কৎসার: স্থায় বাহা য়াম ও অন্তরায়ামের চিকিৎসা করিবে। বাগান্নামেংজ্বরান্নামে ধনুংগুজে চ কুজকে। যোজ্যং প্রসারণীতৈলং তেন ডেষাং শমো ভবেৎ। বাতব্যাধিব সামান্তা যাং ক্রিয়াঃ কথিতাঃ পুরা। কর্ত্তব্যা এব তাঃ সর্বাধৈত্রসমেতদ্বিশেষতঃ॥

অন্তরাগাম, বাহায়াম, ধ্**মুণ্ডন্ত** ও কুক্স রোগে প্রসারণীতৈল প্রয়োগ করিবে। পূর্ব্বে বাতব্যাধির যে সমস্ত সামান্ত চিকিৎসা উক্ত হইয়াছে, এই সকল রোগে সেই সমস্ত চিকিৎসা, বিশেষতঃ তৈল প্রয়োগ অত্যন্ত ফলদায়ক।

অথ পক্ষবধ-লক্ষণম্।

গৃহীত্বাৰ্দ্ধং তনোবায়ঃ শিরাং স্নায়্বিশোষ্য চ।
পক্ষমস্তব্যং হস্তি সন্ধিবজান বিমোক্ষয়ন্ ॥
কৃৎসাৰ্দ্ধকায়ন্ত্ৰস্য স্থাদকৰ্মণ্যো বিচেতনঃ।
একান্ধরোগং তং কেচিদন্তে পক্ষবধং বিছঃ ॥
সর্বান্ধরোগন্তব্যুচ সর্বকায়ান্তিতেহনিলে ॥
দাহসন্তাপমূর্চ্ছাং স্থাবায়ো পিত্তসমন্বিতে।
শৈত্যশোধন্তক্ষ্মানি তন্মিয়ের কফান্ধিতে।
শুদ্ধবাতহতং পক্ষং কৃদ্ধসাধ্যত্মং বিছঃ।
সাধ্যমন্তেন সংযুক্তমসাধ্যং ক্ষয়তেত্বকুম্॥

ছাই বাষু দেহের অর্ক ভাগকে আক্রমণ ও ভাগত !শিরা এবং সারু সকলকে বিশোষণ করিয়া সন্মিবন্ধ বিশ্লেষপূর্বক বাম বা দক্ষিণ একতর পক্ষকে বিনষ্ট (শক্তিহীন) করে, স্থতরাং সেই পক্ষ অকর্মণা ও বিচেতনপ্রায় হইয়া থাকে। এই ব্যাধিকে কেছ একাঙ্গরোগ, কেছ পক্ষবধ (পক্ষাঘাত) কছে। আর যদি ঐ ছাই বায়ু সমস্ত শরীরকে আক্রমণ এবং সর্বা শরীরস্থ শিরা ও সায়ু সকলকে বিশোষণ করিয়া সন্ধিবিশ্লেষপূর্বক সমস্ত শরীরকে অকর্মণা ও বিচেতন-প্রায় করে, তাহা হইলে তাহাকে সর্বাজ্বরোগ কহিয়া থাকে।

বায় পিত্তযুক্ত হইয়া পক্ষাঘাত রোগ উৎপাদন করিলে ভাহাতে দাহ, সন্তাপ ও মুদ্দ্র্য ; এবং কক্যুক্ত হইয়া উহা আনমন করিলে ভাহাতে শৈত্য, শোথ ও দেহের গুরুতা, এই সকল লক্ষিত হয়। বায়ু কফ- পিত্তসংযুক্ত হইয়া যে পক্ষাঘাত উৎপাদন করে, তাহা সাধা; কিন্তু কেবলমাত্র বাত দারা যে পক্ষাঘাত করে, তাহা অতি কষ্ট সাধা; আর ধাতুক্ষয়-কুপিত-বায়ুজ্নিত : যে পক্ষাঘাত, তাহা অসাধা।

অথ পক্ষবধ-চিকিৎসা।

পক্ষাধাতসমাক্রান্তং হতাকৈন্চ বিরেচনৈ:।
শোধমেদ্ বন্ধিভিন্চাপি ব্যাধিরেবং প্রশামাতি।
পক্ষাধাতপীড়িত রে:গির পক্ষে উগ্র বিরেচক ও বস্তিক্রিয়া নিতাস্ত হিতকর।
পক্ষাধাতহন্দিতে চাপি ধনুংস্তম্ভেহপতন্তরে।
অস্তেখপি চ সংরেক: শশুতে তৈলগাহনম্।
পক্ষাধাত, অন্দ্রিত, ধনুংস্তম্ভ, অপতর্জক
এবং অস্তান্ত বাতরোগৈও বিরেচন ক্রিয়া ও
তৈলাবগাহন বিশেষ হিতপ্রদ।

মাধাদিকাথঃ।

মাৰাশ্বগুপ্তকৈরও-বাট্যালকশৃতং পিবেৎ। হিঙ্গুদৈক্ষবসংযুক্তং পাক্ষাঘাতনিবারণম্ । (হিঙ্গুদিক্বথে মাধিকে)

মাষকলাই, আলকুশা, এরওমূল, বেড়েলা, ইহাদের কাথে হিং ও সেন্ধব প্রত্যেক ১ মাষা মাত্রায় প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে পক্ষাঘাত নিবারণ হয়।

গ্রন্থিকাদি তৈলম।

. প্রস্থিকণাশুস্তী-রাস্নাসৈন্ধবক্ষিত্য।
মার্কাথশূতং তৈলং পক্ষাযাতং ব্যপ্নেইতি।
পিপুলুমূল, চিতামূল, পিপুল, শুই, রাস্না ও সৈন্ধব, ইহাদের ক্ষে ও মাষ্কলায়ের কাথে তৈল পাক ক্রিয়া মর্দ্দন ক্রিলে পক্ষা-ঘাত প্রশমিত হয়।

মাধাদি তৈলম্।

মাধাত্মপ্রতাতিবিধাঞ্চব্ক-রাস্থাশতাহ্বালবণৈঃ হপিছৈঃ।
চতুগুল মাধবলাক্ষায়ে তেলং শৃতং হস্তি হি পক্ষবাতম্।
অতিবিধা ইত্তে অতিরণেতি বা পাঠঃ। অতিরসা
বাইমধু ইতি বৃন্দ টীকা।

মাষকলাই, আলকুশী-মূল, আতইচ (কেছ বলেন—যৃষ্টিমধু), এরওমূল, রামা, শুল্ফা ও সেম্বর লবণ এই সকল কল্প এবং তৈলের চতুগুর্গ মাষকলাই ও বেড়েলার কাথ, ইহাদের সহিত তিলতৈল পাক করিয়া মর্দ্দন করিলে পক্ষাঘাত প্রশমিত হইয়া থাকে।

অথাদি ঃ স্থাপ্তিপূর্বকলকণম্।

উচৈচ বাহরতোহতার্থং খাদতঃ কঠিনানি বা।
হসতো ক্ প্রতা বাপি ভারাদিবমশাধিনঃ ।
শিরোনানেগছিচ্বুক-ললাচেক্ষণসাধ্যমঃ ।
ক্ষান্তানিলো বকু মুক্তিং জনগুতাতঃ ।
ক্রান্তবিত বজু কিং: এবা চাপাপবর্ততে ।
শিরশচলতি বাকুমধ্যে নে নামানাক বৈকৃত্য ।
আবাচিবুক-স্থানাং তামিন্ পাছে চ বেদনা।
মন্তান্তানো রোমহানে নেবাদিন মানিলম্ ॥
বারাকারং বাচ বাপারেলেনে মন্তাহিনাহা।
হম্দিত্তি প্রহেবাদিং বাবেবিচ্ছানাঃ ।
হম্দিত্তি প্রহেবাদিং বাবেবিচ্ছানাঃ ।
ক্রান্তানিনিধা মন্তা প্রস্তাবাক্ততি ।
গ্রেপা ভ্রেৎ বাস্থাং সর্বেধ্যক্ষেপ্রাদিরু ॥

নিরন্তর অতি উটেঃশ্বরে বাকাকথন, কঠিন

দ্রব্য চর্মন, হাস্ত, কুন্ত, ভারবহন ও বিনমভাবে

শ্বন, এই সকল কাবলে বায়ুকুপিত হইয়া এবং
মন্তক নামিক। ৪৯ চিবুক ললাট ও নেত্রসন্ধিতে
গমন করিয়া মুখকে আন্দত অর্থাৎ পীড়িত
করে, এই জ্মুই ইহাকে অন্দিত রোগ কহে।
এই রোগে মুখের অন্ধভাগ ও গ্রীবা বক্রীভূত
হয় এবং শিরঃকম্প, বাকানিরোধ ও নেত্রাদির বৈক্বতা জন্মে এবং মুখের যে পাথে আন্দিত
হয়, সেই পাথের গ্রীবা, । চিবুক ও দক্তে বেদনা
হইয়া থাকে।

প্রবল রোমাঞ্চ, কম্প্র, নেত্রের **আবিলতা,** উদ্ধবাত, স্পর্ণানভিজ্ঞতা, স্ফীবেধবদ্ বেদনা, মন্তাগ্রহ ও হনুগ্রহ এইগুলিও অন্দিত রোগের লক্ষণ।

অদিতরোগাক্রান্ত ব্যক্তি যদি অতি ক্ষীণ, নিমেষশূত্র ও কগুলয় অধ্যক্তভাষী অথবা কম্পমান হয়, কিংবা ব্যোগ যদি গাঢ় অর্থাৎ তিনবৎসরের অধিক দিনের হয়, তাহা হইলে অসাধ্য জানিবে।

আক্ষেপকাদি সর্বপ্রকার বাতব্যাধিতে বারুর বেগ শাস্ত হটলেই বোগী স্বাস্থ্যলাভ করে অর্থাৎ তাহার পীড়ার লাঘব হইরা থাকে।

व्यार्किउ-ििक एम।

আৰ্দিতে নাবনং মূৰ্দ্ধি তৈলং তৰ্পণমেৰ চ। ন'ড়াব্দেশিন'ভাল্ড'পানুপপি লিভৈছিতাঃ॥

অৰ্দ্ধি এখা वा डवा । धरं छ न छ. टेडनगर्फन. · र्शन द्रामा । এवर आनुभ-भारतम (কচ্ছপাদের মাংদের) নাড়ীম্মেদ ও প্রলেপ বাবস্থেয়। (একটি খাড়াতে জল ও অনুপ-নেশোম্ভব জান্তব মাংস রাশিয়া, হাড়ির মুখে একথানি সাচ্ছদ্র-পরা চাপা দিবে এবং হাড়ের মুধ ও শরার সন্ধিত্বল উত্তমরূপে প্রালিশ্ব কারবে। তদনস্তর ঐ াড় চুল্লীতে বসাইয়া নিমে জাল দিবে, যখন হাড়ি হইতে বাষ্প উঠিয়া শরার ছিদ্র দিয়া বাহির হইবে, তথন একটি নলের একপ্রাপ্ত ঐ ছিম্রমধ্যে সঞ্লি-বেশিত কারবে এবং অপর প্রাস্ত দিয়া যে ৰাষ্প বহিৰ্গত হইবে, তাহা অন্ধিত স্থানে লাগাইবে, এইরূপ স্বেদ-প্রয়োগের নাম নাড়ী-বেদ; নাড়া অর্থাং নল।)

অন্তি নবনাতেন খাদেয়াখেওরীং নর:।
ক্ষারমাংসরসৈতু জ্বা দশমূলারসং পিবেং।
অন্তিত রোগে নবনাতের সহিত্ত মাধকলায়ের পিটক ভক্ষণের পর হুগ্ধ এবং মাংস রসের সাহত অন্ন ভোজন করিয়া দশমূলের কাথ পান করিবে।

> রদোনককং তিজতৈজমিশ্রং থাদেররো ঘোহদিন হরোপযুক্তঃ। তজ্ঞাদিতং নাশয়তাই শীক্ষং বৃক্তং ঘনানামিব মাত রখা॥

র্ভন (ই.চয়। তিলতৈলের সহিত ভক্ষণ করিলে, বায়ু-প্রতিমারিত মেখসমূহের ভার অংশত রোগ দুট্ত হয়। ক্ষেত্ৰেক শিরোবন্তি-পাননন্তপরায়ণ:। অদিতং স জয়েৎ সর্শি: পিবেদৌত্তরভক্তিকম্ ।

প্লেহের অভ্যন্ধ, শিরোবন্তি, পান, নম্ম ও ভোজনান্তে মৃত পান, এই সমূদর ক্রিয়া দারা অন্ধিত রোগ প্রশমিত হয়।

বলরা পঞ্মুল্যা বা ক্ষারং বাতার্দ্দিতী পিবেং।
ক্ষাদিতে পিডকে শীতান্ স্নেহাংশ্চিব নির্মিদশেং।
মুত্রন্তিপ্রসেকক ক্ষারবৃত্তিং তথৈব চ ।
ক্ষিক্ষাভূতাননো মুকো দাহবান্ বে'হর্দিতী ভবেং।
কুবাং প্রতিক্রিরাং তক্স বাতপিত্তবিনানিনীম্ ।
কক্ষীং কক্ষে কুর্বাং ক্রিরাং নিরবশেষতঃ।
বমনং শোধসংযুক্তে কুর্যাদ্বী গু বলং ভিষক্ ॥

বাতজ অর্জিকে বেড়েলা বা বৃহৎ পঞ্চমূলের সহিত সিদ্ধ হয় হিতক্র। পিঙ্ক আর্জিতে শীতল স্নেহপান স্থান্তর ও তথ্যবাদ্ধি উপকারী। অর্জিত রোগে সুথের বক্রতা, বাক্ণক্রিরাহিত্য ও দাহ এই সকল লক্ষণ উপান্তত থাকেলে বাতাপত্ত-নাণক ক্রিয়া কর্ম্বর । কেফল অন্ধিত রোগে কফল চিকেৎসাকর্ম্বর । শোধসংযুক্ত আর্জিতে রোগির বলাবল বুঝিয়া ব্যান করান যাইতে পারে।

বলামাৰাক্মগুপ্তাব্দ রোধিবাধাং তথা তৃণম্। এরওমূলমিত্যেবাং কাথো হস্ত্যান্দিতং গদম । পক্ষাধাতং বিশ্বচীক বিরেকক্ষাত্র শস্ততে ॥

বেড়েলা, মাষকলাই, আলকুণীমূল, গন্ধ-তৃণ ও এবস্তমূল, ইহাদের কাথ পান ও নস্ত-ক্লপে ব্যবহার করিলে অর্দিত, পক্ষাঘাত ও বিষ্ণাটী রোগ প্রশমিত হয়। ইহাতে বিবে-চন প্রশস্ত।

অথ হ্নুগ্রহম্ম স্নিদান-লক্ষণম্।

বিহ্নানিলে থনাজুছ-ভক্ষণাদভিষাততঃ। কুপিতো হমুখুনছ: এংসন্নিছানিলো হনু । কলোতি বিবৃতাসাদমধ্যা সংবৃত্সাতাষ্। হমুগ্রহ: সাতেন স্যাৎ কুক্সাচন্দ্রণভাষণষ্।

জিহ্বা-নিৰ্পেন (অধিক জিৰ্ছোলা), কঠিন প্ৰব্য চৰুণ ও আঘাতপ্ৰাপ্তি এই সকল কারণে হন্ন-(চোরাল)-মূলন্থ বায়ু কুপিত হুইয়া ঐ হনুকে শিথিল অর্থাং অধ্যক্ত কবে। ভাহাতে রোগী বিবৃত্তমুখ সংবৃত করিতে (বুজ্জিতে) ও সংবৃত মুখ বিবৃত (হা) করিতে পারে না। ইহাকেই হনুগ্রহ কহে। এই রোগে রোগী অতি কঠে চর্মণ করিতে ও কথা কহিতে পারে।

হনুগ্রহন্ত চিকিৎসা।

ব্যাদিতাক্তে হতু॰ স্বিপ্নসঙ্গুঠ'ভ্যাং প্রপীড়া চ। প্রদেশিনাভ্যাঞোন্ননা চিবুকোল্লমনং ছিতম্ ॥

বাতরোগে মুখ বিবৃত হটলে (হা হটর থাকিলে) হফুদেশ স্থেদ প্রান এবং অসুষ্ঠ-বর বাবা হফুহান (গণ্ডা, হ) চা,পরা তর্জনা-বর বাবা চিবৃত (লাড়) উন্নানত করিয়া মুখ প্রকৃতিস্থ কাবে।

প্রস্তঃ সংগময়েৎ স্থানং তথা বিশ্বঞ্চ নাময়েৎ। প্রত্যেকং স্থানদুখ্যাদি-জিগ্নাং সংবক্ত কাগ্রহেৎ॥

হন্দু যাদ প্রস্ত হর্টরা পড়ে, তাহা হর্টনে উহাকে স্বস্থানে আনমুন কারবে; কিংবা যদি স্তব্ধ হর্টরা থাকে, তাহা হর্টনে স্বেদ প্রদান করিয়া নোনাগ্রে; প্রত্যেক স্থলে স্থান-দুখ্যাদির উপযুক্ত।ক্রয়া কর্ত্তব্য ।

অথ মত্যান্ত শুস্তা নিদানপূর্ব্বকলক্ষণম্ । দিবাৰধাসমন্থান-বিবৃত্তাধ্বনরাক্ষণৈঃ।

মন্তান্তরং প্রক্রং স এব প্রেমণাবৃত্তঃ।
দিবানিন্তা, বিষমভাবে গ্রীবাস্থাপন,
বিবৃত্ত বা উদ্ধনেত্রে নিরাক্রণ, এই সকল
কারণে কুপিত বায়ু কফাবৃত হইয়া মন্তা-(প্রীবাদেশস্থ বৃংং শিরাঘর) গুল্প উপাস্থত করে। ইহাতে গ্রীবা ফিরাইতে ঘুরাইতে শারা যায় না।

মগ্রান্তম্ভশ্র চিকিৎস।।

পঞ্চমূলীকৃতঃ কাপো দশ-লোকুৰ েহিৰবী। কৃষ্ণ খেদপ্ৰধা নপ্তঃ মঞ্চান্ত জ প্ৰণপ্ততে চ মন্তান্তন্তে বৃংং পঞ্চন্ত্র দশম্পের কাথ, কক্ষেদে ও নহা প্রশস্ত। (মন্তা—গ্রীবার পশ্চাদ্ভাগন্ত শিরাহর)।

কুকুটাওদ্রবৈককৈ: দৈশ্ববাজ্যসমন্থিত:। আবাং সংমৰ্শ্বয়েৎ তেন মস্তাল্তম্ব: প্রশাম্যতি ॥

কুকুট-,ডম্বের দ্রবাংশ সেন্ধব লবণ ও স্বতের সহিত মিশ্রত এবং উষ্ণ করিয়া তদ্বারা গ্রীবা-দেশ মর্দ্দন করিলে মস্তান্তস্ত প্রশাস্ত হয়। কট্টেননোভাকে নিপ্তে কক্ষেন ব্যক্তিগন্ধায়াই। শামেদ্ প্রাবাস্তব্ধপুনং মহনপানাধ্যসম্ ।

স্থপতিল মন্দ্র এবং অবগদ্ধার মূল বাটিরা প্রানেশ দিলে জীব।স্তম্ভানবাধিত হয়।

অথ জহবা স্তম্ভল কণম্।

বার্বাহিনীশিরসেংস্থা জিহ্বাং গুরুস্তেহনিস:। কিহ্বেগুঃ স ১২ন:মু-পানবাকোদ্বাশতা ॥

কুপিত বায় বাগ্বা হনী শিবার অবস্থিত হটয়া ।জিহ্নান্তম্ভ করে। জিহ্নান্তম্ভ রোগে রোগী পান, ভোজন ও বাকাকথনে অক্ষম হয়।

জিহ্বান্তন্ত-!চকিৎসা।

বাতাদ্ বাগ্ধমন হুপ্তৌ ত্রেহগভূষধারণম্।

ৰায়ুৱ প্ৰকোপে বাগবাহিনী শিরা বিকৃত হইলে মৃত-ভেলাদি স্নেহ-পদার্থের গণ্ডুষধারণ কর্ম্বব্য।

অথ কুজলক্ষণম্ ।

ফলাং যদি বা পৃষ্ঠমুগ্নতং ক্রমশঃ সক্রক্। কুন্ধো বাযুর্থনা কুয়াৎ তনা তং কুন্ধমাদিশেৎ ॥

কুপিত বায়ু জনম কিংবা পৃষ্ঠদেশকে ক্রমশঃ উন্নত ও বেদনাবিশিষ্ট কারলে তাহাকে কুজরোগ বলে।

কুক্ত-িকিৎসা।

বানষ্ট্রদ শমুলা চ নবং কুজমুপানরেও। ক্রেটেংম 'া-সরসৈর্ব' প প্রবৃদ্ধান তথ্য বিবর্জনেও। নবন্ধ এক্সা যাবদ্বক্ষাপুদি কা এক্সি: ইতি এক্সিঃ। অন্ধদিন জাত কুজরোগে দশমূল ও অক্সান্ত বাতন্ন ঔষধ এবং শ্বেহ প্রয়োগ ও মাংসের যুষ হিতকর। এই রোগ হঠাৎ বৃদ্ধি প্রাপ্ত হইলে অসাধ্য জানিবে।

অথ শিরাগ্রহলক্ষণম্।

রক্তমাশ্রিত্য প্রনঃ কুর্যান্ত্রিধরাঃ শিরা:। রুক্ষাঃ স্বেদনাঃ কুষাঃ দোংসাধ্যঃ স্থাচিত্রাগ্রহঃ॥

কুপিত বার রক্তকে আশ্রমপূর্বক গ্রীবা-দেশস্থ শিরোধর বাবতীয় শিরাকে বিকৃত করিয়া শিরাগ্রহ রোগ উপস্থিত করে। ইহাতে ঐ শিরাসকল রুক্ষ, বেদনাযুক্ত ও কুষ্ণবর্ণ হয়। (এই শিরাগ্রহ রোগে সম্ভকেরও চালনাদি ক্রিয়া বহিত হয় বলিয়া কোন গ্রন্থকার ইহাকে শিরোগ্রহও বলিয়া থাকেন)। এই রোগ স্বভাবতই অসাধ্য।

শিরাগ্রহস্ত চিকিৎসা।

শিরারতে * তু কওব্যা শিরাগতমকৎজিয়া। দশম্লীকবারেণ মাতুলুক্সরসেন চ। শুতেন তৈলেনাভাক্ত শিরোবন্তিশ্চ যুজাতে॥

শিরাগ্রহ বা শিরোগ্রহরোগে শিরাগত-বাতনাশক চিকিৎসা কর্ত্তব্য। ইহাতে দশ-মূলের কাথ ও টাবালেবুর রস দ্বারা সাধিত তৈশ মর্দান ও শিরোবস্তি হিতকর।

व्यथ गृद्धमानकनम्।

শিক্পূৰ্বা কটিপূঠোর-জানুজন্তাপদং ক্রমাৎ। গৃথসী গুল্পরুক্তোদৈগৃ খ্লাতি শালতে মৃহ:। বাজাছাত্তকাৎ তন্ত্রা-গৌরবারোচকাবিতা॥

গৃঙ্ধদী নামক বাতব্যাধিতে প্রথমে ক্ষিক্
(প্রোথ-নিতম্ব-পাছা) তদনস্তর যথাক্রমে কটি
পৃষ্ঠ উক্ত জান্থ জন্মা ও পাদদেশে স্তর্জা, বেদনা
ও স্চীবেধবৎ যন্ত্রণা উপস্থিত হয়। এই
রোগে বাতাধিক্য থাকিলে মৃত্যুহ্ পান্দন

*ু--শিরোগ্রহে ইতি পাঠান্তরম্।

এবং বাতকফাধিক্য থাকিলে উক্ত বাতলক্ষণ, অধিকন্ত তন্ত্ৰা, দেহের গুকুতা ও অক্সচি হইয়া থাকে।

অথ গৃধ্ৰসী-চিকিৎসা।

তৈলমেরওজং বাপি ত্রিফলাকাথসংযুত্ম। মাসমেকং পিবেৎ প্রাত্ত্র ধ্রস্থারুগ্রহাপহম ॥

একমাস ব্যাপিয়া প্রত্যহ প্রভাতে ত্রিফ-লার কাথের সহিত এরওতৈল পান করিলে গুধনী ও উরুগ্রহ প্রশমিত হয়।

শেষালিকাদলকাথো মৃদ্বগ্রিপরিসাধিত:। ছর্কারং গৃপ্রদীরোগং গাঁতমাত্র: সমুদ্ধরেৎ॥ (অত্র শেষালিকা নিশু তী।)

মৃত্ অগ্নিতে নিধি-দা পত্রের কাথ প্রস্তুত ক্রিয়া পান কাংলে গৃধদীরোগের শান্তি হয়। এরওমূলং বিষঞ্চ বৃহতা কণ্টকারকা। ক্রামো ক্ষকোপেতঃ গাতো বজ্জশবন্তিগম্। গৃধদীজং হরেছে লং চিরকালান্ত্রিক চ॥

এর ওমূল, বেলছাল, বৃহতী ও কণ্টকারী ইহাদের কাথ সচল-লবণের সহিত পান করিলে গৃধসীজন্ম বক্ষণ ও বস্তিদেশের স্থায়ী বেদনা প্রশ্মিত হয়।

বৃহন্নিস্বতরো: সারো বারিণা পরিপেষিত:। পীত: প্রণাশয়েৎ ক্ষিপ্রমসাধ্যামপি এপ্রসীম্॥

বৃহৎ নিম্ব বৃক্ষের সার জলে ঘষিয়া সেবন করিলে গুঙ্গদী রোগ বিনষ্ট হয়।

দশমূলী বলা রাসা গুড়্চী বিশ্বভেষজম্। পিবেদেরগুঠৈলেন গুগ্রসীথঞ্চপঙ্গুকুৎ ॥

দশমূল, বেড়েলা, রামা, গুলঞ্চ ও শুঠ ইহাদের কাথে এরগুতৈল প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে গুগ্রসী, শক্ষ ও পঙ্গু রোগ বিনষ্ট হয়।

তৈলমেরওজং বাপি গোম্তেণ পিবেরর:। মানমেকং প্রয়োগোংরং গুরুসুরুত্রহাপহ:॥

এরগুইতল গোমূত্রের সহিত এক মাস পর্য্যস্ত দেবন করিলে গৃঙ্গদী ও উরুগ্রহ বিনষ্ট হইয়া থাকে। গোম্নৈরগুঠতলাত্যাং কৃষ্ণা পীতা স্কৃণিতা।

দীর্ঘকালোথিতাং হন্তি গৃপ্তমীং কলবাতজাম্ ।

গোম্বা ও এরগুঠতল মিলিত ৪ তোলা, ,
৪ মাধা পরিমিত পিপুলচ্ব প্রক্ষেপ দিয়া পান :
করিলে কফবাত জন্তা গৃপ্তমী বিনম্ভ হয় ।

অপ্তাতি যে। নরঃ সিদ্ধানেরগুঠতলসাধিতাম্ ।
বাস্তাকুং গৃপ্তমালাণঃ পূর্বামাপ্রোত্যেনা গতিন্।

এরগুতৈলের সহিত সিদ্ধ বার্ত্তাকু সেবন করিলে গৃধসী-পীড়িত ব্যক্তি রোগমুক্ত হইরা পূর্বের স্থায় স্বাভাবিক অবস্থা প্রাপ্ত হয়। পিষ্টেরগুদ্ধন ক্ষারে সবিখং বা ফলং ক্লবোঃ। পারসং ভক্তিতং সিদ্ধং গৃধসাক্টিশূলভূং।

চথ্ধে কিঞ্চিং তণুল ও ত্বগ্রহিত শিলা-পেষিত ২ তোলা এরগুবীজ অথবা ১ তোলা এরগুবীজ ও ১ তোলা ভাঠ দিয়া পায়ন প্রস্তুত ক্রিয়া সেবন ক্রিলে গৃধসী ও ক্টীশূল নিবারিত হয়।

রাস্বায়ান্ত পলঞ্চিকং ক্যান্ পঞ্চ চ গুগাগুলো:। সূপিয়া গুডিকাং কৃত্যা গাদেশ্বা গুগুসাহরামু ।

রান্ধা ৮ তোলা, গুণ্গুলু ১০ তোলা মর্দন করিয়া ত্বত সংযোগে বটিকা প্রস্তুত করিবে। ঐ বটিকা সেবন করিলে গৃগ্রসী রোগ বিনষ্ট হয়। (অফুপান—গরম জল, মাত্রা ১ তোলা।) গুগ্রসাঞ্জ নরং সমাক্ পাচনাইছাবিশোধিতম্।

জ্ঞাত্বা নরং প্রদান্তাগ্নিং নন্তিভিঃ সমুপাচরেং।
গৃধস্তাত্তি ব্যক্তিকে পাচন ও বমনাদি ত্বারা
শুদ্ধ করিয়া যথন দেখিবে, তাহার অগ্নি
প্রদীপ্ত হইয়াছে, তথন ৰণ্ডি প্রয়োগ ত্বারা

নাদৌ বন্তিবিধিং কুর্যাদ্ বাবদৃদ্ধং ন গুধাতি। স্লেহো নিরর্থকন্তস্য ভক্মগ্রেবাহতিযথা॥

চিকিৎসা করিবে।

গৃঙ্ধদীরোগে প্রথমে উর্দ্ধ অর্থাৎ পকাশারের উপরিস্থ আমাশর যে পর্য্যস্ত বমনবিরেচন শারা বিশোধিত না। হয়, সে পর্যাস্ত
বিস্তেপ্রয়োগ করিবে না। আমাশয় শোধিত
না হইলে স্লেছ-বস্তি প্রদান, ভক্ষে আছতি
প্রদানের স্থায় বিফল হয়।

গৃঙ্ধন্যার্জন্য জন্তবায়াঃ সেহসেদে কৃতে ভূশম্।
পন্ত্যাং নির্মান্দিতায়ান্ট স্কানার্থেণ গৃঙ্ধনীম্।
অবতার্থাকুলো সমাক্ কনিষ্ঠায়াং শনৈঃ শনৈঃ
জ্যাথা সম্মতঃ প্রস্থিং কগুরায়াং ব্যবস্থিতম্।
তং শব্রেণ বিদায়াণ্ড প্রবালাকুরসন্মিভম্।
সমুদ্ধ্তাগ্রিনা দগ্ধ্য নিম্পেদ্ ষষ্ট্যাহ্রচন্দনৈঃ।
বিধ্যেচ্ছিরামিক্রবন্তেরধন্তাচ্চজুরকুলে।
যদি নোপশমং গচেছদ্ দহেৎ পাদকনিজিকাম্।

গধ্দী-পীড়িত ব্যক্তির জভ্যায় প্রথমতঃ ম্বেছ ও স্বেদ প্রদান করিয়া পরে পাদ খারা জ্জ্বা মৰ্দ্দন করিবে এবং হস্ত দ্বারা গুর্মনীকে সুন্মার্গ অবলম্বন করাইয়া ক্রমে ক্রমে কনিষ্ঠা-আনিবে। তাহাতে সেই ঙ্গুলিতে তত্রস্থ কণ্ডরায় প্রবালাম্বর সদৃশ উন্নত গ্রন্থির আকারে অবস্থিতি করিবে। তথন উহা শস্ত দারা উদ্ধৃত ও অগ্নিতে দগ্ধ করিয়া **তাহাতে** ষ্টিমধু ও চন্দনের প্রলেপ দিবে। তৎপরে ইন্দ্রবান্তর অধোভাগে ৪ অঙ্গুলি নিম্নে শিরা-বিদ্ধ করিবে। ইহাতেও যদি রোগের শা**ন্তি না** হয়, তাহা হইলে কনিগ্রাঙ্গুলি দগ্ধ করিবে। তৈলং মুতং বার্ক্তকমাতৃলুঙ্গো রসং সচুক্রং <mark>সগুড়ং পিবেছা।</mark> কট্যুঙ্গপৃষ্ঠ নিকবন্তিশল-গৃধস্থাদানর্ভহর: প্রদিষ্টঃ॥

আদা, টাবালেবর রস, চুক্র এবং গুড় সমভাগে লইয়া তৈল কিংবা ঘত সহ সেবন কারলে কটা উদ পৃষ্ঠ ত্রিক ও ৰাস্তগত শ্লা, গুধ্রসাঁও উদাবর্ত্ত রোগ বিনষ্ট হয়।

অথ বিশ্বচী-লক্ষণম্।

তলং প্রত্যঙ্গুলীনাং যা কণ্ডরা বাহুপৃষ্ঠতঃ। বাহেবাঃ কম্মক্ষয়করা বিষচী চেতি সোচাতে ॥

বাহুর পশ্চাদ্ভাগ হইতে যে সকল কণ্ডরা
(মহতী শিরা) অঙ্গুলিতল পর্যান্ত আসিরাছে,
ভাহাদিগকে দ্যিত করিয়া কুপিত বায়ু
বাহুকে অকর্মণ্য অর্থাৎ আকুঞ্চন-প্রসারণাদিক্রিয়া-রহিত করে। ইহাকেই বিশ্বচীরোগ
কহে। ইহা কখন এক বাহুতে, কখন বা
বাহুদ্বেই হইয়া থাকে।

व्ययात्वाङ्क-ल कः म्।

অংসদেশ হিংহা বা ুং শেষরেদ সবকনন্।
শিগ্রান্টাকুঞ্চ তরস্থা জনরেদাব হক্ষ্যা
অংস অর্থাৎ স্কর্মেশাস্থ্য কু স্ত বাষু
ক্ষের বন্ধনাস্থ্য করে; ইছা বাভজ।
আর ঐ স্কর্ধাস্থ্য বাষু যদি শিরা সকলকে
আকুঞ্চিত করে, তাহা হহলে অববাহক রোগ
উৎপন্ন হয়; এই রোগ কফবাতজ

তয়োশ্চি 4ৎসা।

দশমূলীবলামাধ-কাথং তৈলাজামিশিতম্। দায়ং ভূকুা প্ৰেয়স্যং বিখচাম্ববা**হকে।**

বিশ্বচা ও অববাহক রোগে দশমূল বেড়েলা ও মাধকলাই ইহানের কার্থে তেল ও মুক্ত প্রক্রেপ দিরা সায়ং ভোজনানস্তর উহ নাসকা বারা পান কাবে। মুল্যবলায়াম্ব গাহিত্যা তথ মঞ্জাবরদাং পিথেবা।

মূলং বলায়ান্ত্রণ পারিজ্ঞাং ৩৭ লগুওগুণরসং পিবেছু বা। যুঞ্জীত বো মাবরসেন নসাং ভবেদদৌ বজ্ঞসমানবাজ্ঞ।

* মাংসরসেনেতি বা পাঠে।

বেড়েলার মূল, পা।লবা মাদারের মূল
মধবা আলকুণার স্বরস বা কাথ না,সকা পারা
পান কারলে ।কংবা মাধকলারের (পাঠান্তরে—
মা দ রলের / কাথে ততন ও লেখব লবণ
প্রক্ষেপ ।দরা ভাহার নস্ত লইলে অববাহক রোগ
নই হয়।

বাহশীখগতে নসাং পানখোডরভক্তিকন্।
ব্যক্তিকন্ন ওধো নাভে: শস্যতে চাবপাড়ক: ॥
কুপাও বারু বাহু ও শাব্যত হইলে নস্ত ও
ভোক্তনের পার ঘুডা। দ স্নেংপান এবং বারু নাভির
অধোদেশগত ইইলে বান্তকন্ম ও নস্ত হিতকর।
বাহুশোবে পিবেং সপিভূ কিবা কল্যাণকং মহং ॥
বাহুশোবে ভোক্তনের পার মহাকল্যাণক
স্বত্ত পান করিবে।

অথ ক্রেফ্রেকশীর্যন্ত লক্ষণম্।

বাতশোণিতজঃ শোধো জাতুমধ্যে মহারক্তঃ। জ্ঞেরঃ ক্রেট্টুকশীবন্ধ স্থ্রলঃ ক্রেট্টুকশীব্দং ॥ কুপেত বায় ও ওঠ বক্ত মিলিত হইয়া জাত্মধ্যে অতি বেদনাগায়ক শোথ উংপাদন করে। এই শোথ ক্রোগুকেব শার্ষেব ভার অর্থাং শুগালের মন্তক সদৃশ হয় বালয়া ইহাকে ক্রোগুকশ্র করে।

ক্রোষ্ট্রকশীর্ষস্ত চিকিৎসা।

ত্বপ্তপু: কোষ্ট্ৰীৰে তু গড়ুচীতিফলা**ন্তমা।** ক্ষীরেট রঙটেজন বা পিচেদ বা বুদ্ধদরেকম্॥ র**দৈতি**ভিরিমাংসম্য পাতেও প্তপ্রগুত্তঃ। বাতরক্তাক্রয়াভিক্ত ক্রেক্তম্বতম্য।

গুলঞ্চ, আমলকী, হণীতকী ও বহেড়ার এক পোয়া কাথেন সাহত (এরগুকাথে বা ত্রিফলাকাথে যথাবিদি শোধিত ও এরগুইতল দারা মন্দিত) গুগ্গুলু ২ তোলা, অথবা ০/০ অন্ধ পোয়া গব্য হয়ের সহিত ৪ তোলা এবগুইতল, কিংবা ॥০ অন্ধিসের গবা হয়েন সাহত বুন্ধনারক চুর্ণ পান কারলে ক্রোসুকণ্য রোগ শুল্মত হয়। ভাত্তরি পাক্ষ্ম মাংস-২নের সহিত গুগ্গুলু সেবন কারলেও ক্রোসুকণার্য রে.স নিবারেত হল্যা থাকে। সাবান্ধতঃ ক্রোসুকণ্য রোগের চিকংসা, বাতরক্তরোগেন চিকংসার স্কান্ধ কারবে।

অথ খঞ্জস্ত প্রোশ্চ লক্ষণম।

বায়ুঃ কট্যাশ্রিতঃ সক্থাঃ কওৱামাকিপেদ্বলা। পঞ্জনা ভবেজজ্ঞ পঞ্চ সক্ৰোৰ হোবঁধাং॥

কট্যাশ্রিত কুপিত বায়ু যথন এক পারের উদ্ধ অভযার কগুরাকে (মহতা শিরাকে) আকর্ষণ করিয়া রাখে, তখন মহায়্য খঞ্চ (খোড়া), আর যথন হুইটি জভ্যারই কপুরাকে আক্ষা করে, তখন পদ্ম হুইয়া থাকে।

ত য়োশ্চিকিৎসা।

উপাচরেদভিনবং ধঞ্জং পক্ষমথাপি বা। বিরেকাছাপনখেদ- গুণ্গুলুমেংবভিভিঃ ॥ বিরেচন, নির্কাহবস্তি, স্বেদ, গুগ্গুলু ও ক্ষেহবস্তি প্রয়োগ ছারা অভিনব ধঞ্চ এবং পঙ্গু রোগির চিকিৎসা করিবে।

অথ কলায়খঞ্জস্য লক্ষণম্।

প্রানামন্ বেপতে যস্ত গঞ্জনিব চ গচ্ছতি। কলায়গঞ্জং তং বিভাগিক্তস্থিপ্রবন্ধনম্ ॥

যে ব্যক্তি গমন আরম্ভ করিবার সময় কাঁপিয়া কাঁপিয়া, পরে খণ্ডের ন্থায় গমন করে, তাহাকে কলায়ণঞ্জ কহে। এই রোগে সন্ধিস্থল সকল শিথিল হইরা থাকে।

কলায়খঞ্জস্যা চকিৎসা।

ক্রমঃ কলায়গ্রহন্ত গঞ্জপায়ে বিব স্মতঃ। বিশেষ্থ বেছনং কল্প ক'বামান বিচলানৈঃ॥

কলায়খন্ত্রেব চিকিৎসা, খঞ্জ ও পঙ্গু চিকিৎসার ভাষ় করিবে। ইহাতে স্থেহনকার্য্য বিশেষরূপে করণীয়।

অথ বাতকণ্টক-লক্ষণম।

রুক্'পাদে বিষণ্ঠান্তে গ্রমান্না জায়তে যদা। বাতেন গুলক্ষা[প্রাত্ত ভ্রমান্ত্রতকণ্টকণ্ড

উচ্চাবচ স্থানে পাদ্যাস নিবন্ধন বা অধিক শ্রমহেতু কুপিত বায় গুল্ফদেশে বেদনা জন্মাইয়া থাকে, ভাহাকেই বাতকণ্টক (খুডুকাবাত) কহে।

তশু চিকিৎসা।

রক্তাবদেচনং বুর্য্যাদভীক্ষং বাতকটাক।

"পিবেদেরওতৈলং বা দহেৎ স্থচীভিরেব চ ।

বাতকণ্টক রোগে পুনঃপুনঃ রক্তমোক্ষণ, এরগুঠতল পান বা অগ্নি-সম্বপ্ত হটী মারা দাহ ব্যবস্থেয়।

অথ পাদদাহ-লক্ষণম্।

পাদয়োঃ কুক্তে দাহং পিত্তাস্ত্সছিতোহনিলঃ। বিশেষতক্ষক্রেমতঃ পাদদাহং তমাদিশেৎ

পিত্ত ও রক্তসংসূক্ত কুপিত বায়ু পাদদাহ রোগ উপস্থিত করে। নিয়ত ভ্রমণকারী ব্যক্তিরই পাদদাহ, প্রবলতর হইয়া থাকে।

পাদদাহ-চিকিৎসা।

বাতরক্তক্রমং কুমাৎে পাদনাহে বিশেষতঃ। সম্প্রবিদলৈ পিষ্টেঃ শৃতশীতেন বারিণা॥ চরণৌ লেপয়েৎ সম্যক্ পাদদাহগ্রশান্তরে। নবনীতেন সংলিগ্রৌ বহিনা পরিতাপিতে।। মুচ্যুতে চরণৌ ক্ষিপ্রং প্রিতাপাৎ স্থলাকণাৎ॥

পাদদাহ রোগের চি কংসা বাতরক্তের চিকিংসার ন্থায় করিবে। শৃতণীতল জলে মস্বকলাই বাটিয়া তদ্ধারা পাদ্বরে প্রলেপ দিবে। ইহাতে পাদদাহ প্রশ্মিত হয়। অথবা পাদ্বয়ে নবনীত মাথাইয়া অগ্নির তাপ দিলে উগ্র পাদদাহ শীল্প প্রশমিত হয়।

অথ পাদহর্ঘ-লক্ষণম ।

ক্রব্যেতে চরণো যন্ত ভবেতাঞ্চপি স্থকৌ। প্রদেহকঃ সুবিজেয়া ক্ষ্যাত্রপ্রতা

বাতশ্রেয়ার প্রকোপ হেতু পান্হর্ষ রোপ জনিয়া থাকে। ইহাতে পান্বর স্পর্শশক্তি-হীন ও রোমাঞ্চপ্রায় অর্থাৎ ঝিণিঝিণিবৎ বেদনাবিশিষ্ট হয়, ইহাকেই পাদহর্ষ কহে। কিন্তু সচরাচর যে ঝিণিঝিণি বেদনা উপস্থিত হইয়া থাকে, তাহা অপেক্ষা পাদ্হর্ষ অধিক-কালস্থায়ী।

পাদহর্ষ-চিকিৎসা।

পাদহর্ষে তু কর্ডবাঃ কফবাতহরো বিধিঃ ॥
পাদহর্ষরোগে কফবাত নাশক চিকিৎসা
করিবে।

অথ মূক-মিন্মিন-গদগদানাং লক্ষণম্।

আবৃত্য বায়ুঃ সককো ধমনীঃ শব্দবাহিনীঃ। নরান্ করোত্যক্রিয়কান্ মুক্মিক্মিনগণগান্ ।

কফৰুক্ত বায়ু শব্দবাহিনী ধমনী সকলকে আরত করিয়া মনুব্যকে অক্রিয়ক অর্থাৎ হয় বোষা, না হয় খনা, না হয় গদগদভাষী করিয়া থাকে।

তেষাং চিকিৎসা।

কল্যাণকাবলেহক যুতং সারস্বতাদিকম্। প্রদন্ত্যভিষ্জো বৃদ্ধা মুক্মিন্সিনগল্গদে।

মৃক, মিন্মিন ও গদগদ রোগ বিনাশের জন্ম সারস্বত ত ও কল্যাণাবলেহ প্রদান করিবে।

অথ তূণী-প্রতিতূণী-লক্ষণম্।

অধো যা বেদনা যাতি বর্চ্চোমূত্রাশয়োথিতা। ভিন্দতীব গুলোপত্বং দা তুর্গীনাম নামতঃ ॥ গুলোপত্বোথিতা যা তু প্রতিলোমং প্রধাবিতা। বেঠাঃ প্রকংশরং যাতি প্রতিত্র্গীতি দোচ্যতে॥

্বলাশর বা মৃত্রাশর হইতে যে বেদনা উথিত হইরা গুহুদেশ ও উপস্থকে (লিঙ্গ বা যোনি) বিদারণবং পীড়ার প্রীড়িত করিয়া অধোগামিনী হয়, তাহাকে তুণী কহে।

তুণী-লক্ষণের বৈপরীত্য ঘটিলে, অর্থাৎ গুহুদেশ বা উপস্থ হইতে বেদনা উথিত হুইয়া, প্রেবলবেগে উদ্ধাভিমুখে প্রকাশরে গমন ক্রিলে ভাহাকে প্রতিত্নী কহে।

তৃণীপ্রতিতৃণী-চিকিৎস।।

তৃণ্যাঞ্চ প্রতিতৃণ্যাঞ্চ প্রশন্তাঃ মেহবন্তর: । । পিবেৎ সম্মেহলবণং পিশ্নল্যাদিমণ সুনা । উক্তং বা রামঠকার-প্রগাঢ়মধবা মুত্রু ।

তৃণী ও প্রতিতৃণীরোগে সেহবস্তি প্রশস্ত এবং পিপ্ল্যাদি গণের চুর্ণ, ক্ষে**ছ** (তৈল-মুতাদি) ও লবণ-সংস্কুক করিয়া জলের সহিত

পান করিবে, অথবা হিং ও যবক্ষারমুক্ত উষ্ণ মৃত সেবন করিবে।

অথাগ্নান-প্রত্যাগ্নান-লক্ষণম্ ।

সাটোপমত্যুগ্রক্কমাথাতমুদরং ভূশন্।
আধানমিতি তং বিজ্ঞাৎ বোরং বাতনিরোধজন্॥
বিমুক্তপার্থজনয়ং তদেবামাশয়োথিতম্।
প্রত্যাথানং বিজানীয়াৎ কফবাকুলিতানিলম্॥

বায়নিরোধ হেতু উদর অর্থাৎ পকাশন্ত্র ক্ষীত, সবেদন ও গুড়গুড়শন্দবিশিষ্ট হইলে, তাহাকে আগ্মান রোগ কহে। ইহা অতীব কষ্টদায়ক এবং এইরূপ বেদনা ও গুড়গুড় শন্দ বিশিষ্ট আগ্মানই যদি পকাশন্ত্র •হইতে উভিত না হইন্না আমাশন্ত্র হইতে উভিত হন্ন, কিন্তু পাশ্ব ও ফ্লয়ের ক্ষীতি না জন্মান্ত, তাহা হইলে তাহাকে প্রত্যাগ্মান কহে। বান্তু কফাস্ত ইইন্না এই প্রত্যাগ্মান রোগ উৎপাদন করে।

তয়োশ্চিকিৎসা।

আধ্মানে লজ্মনং পাণি-তাপশ্চ ফলবর্জ্যঃ। দীপনং পাচনফৈব বস্তিশ্চাপ্তে শোধনঃ॥

উদরাগান রোগে লঙ্গন, হস্ত উষ্ণ করিয়া ভদানা উদরে তাপ প্রদান, ফলবর্হি, অগ্নির দীপক ও পাচক ঔষধ এবং শোধন-বস্তি প্রযোজা।

কৰ্মাত্ৰা ভবেৎ কৃঞা ত্ৰিবৃতা স্থাৎ পলোগিতা। খণ্ডাদ্পি পলং গ্ৰাফ চুৰ্নমেকত কার্য়েৎ ॥ মধুনা শাণক্ষিতং লিছাদাগ্মাননাশনম্॥

পিপুল চূর্ণ ২ তোলা, তেউড়ীমূল চূর্ণ ৮ তোলা ও চিনি ৮ তোলা একত্র মিশ্রিত করিয়া ॥• তোলা পরিমাণে মধুর সহিত সেবন করিলে আধান প্রশমিত হয়।

প্রত্যাগ্মানে সমুৎপন্নে কুর্য্যাদ্ বমনলজ্পনে। দ্বীপনাদীনি ৰুঞ্জীত পূর্ববেদ্ বস্তিকর্ম চ ॥

প্রত্যাগ্মান রোগে বমন, লঙ্ঘন, অগ্নির দীপক ও পা ক ঔষধ এবং বস্তিক্রিয়া ব্যবস্থেয়।

দারুষট্কলেপঃ।

দারুহৈমবতীকুণ্ঠ-শতাহ্ব'হিকুসৈক্ষবৈ:। লিম্পেত্রকৈরমপিষ্টেঃ শূলাগান্যুতোদরম্॥

দেবদারু, বচ, কুড়, শুল্ফা, হিং ও দৈন্ধব লবণ, একত্র কাঁজির সহিত বাটিয়া উষ্ণ করত উদরে প্রলেপ দিলে শূল ও আগ্রান নিবারিত হয়।

व्यथिना প্রত্যমিনয়োর্ল কণম ।

নাভেরণভাং সঞ্জাতঃ সঞ্চারী যদি বাচলঃ। অঞ্চলাবদ্দনো গ্রন্থিজজ্বিদায়ত উল্লভঃ। বাভাষ্টালাং বিজানারালহিম গিগবেলাধিনীম্॥ এতামের ক্ষজোপেতাং বাতবিগা, তারোধিনাম্। প্রভাষ্টালামিতি বদেজ্জারে তিথা শুখিতাম্॥

নাভির অধোভাগে সঞ্জাত সচল বা অচল, উদ্ধৃদিকে বিস্তৃত ও উন্নত, অষ্ঠালাবৎ সংহতাব্যব গ্রন্থি-বিশেষকে বাতাষ্টালা কহে। ইহাতে বাত মূত্র ও পুরীষের নিরোধ হইনা থাকে। এই লক্ষণাক্রাপ্ত অষ্ঠালাই যদি জঠরে তির্য্যা-ভাবে উথিত হয়, তাহা হইলে তাহাকে প্রত্যেগীলা কহে। (উত্তরাপথে বর্ত্তুলাকার পাষাণথণ্ডকে অষ্ঠালা কহে। কেহ কেহ কম্ম-কারদিগের গোলাকার দীর্ঘ লোইডাণ্ডীকেও অষ্ঠালা কহিয়া থাকে)।

তয়োশ্চিকৎসা।

প্রভাষীলাজীলিকয়োরস্তর্নিক্রমিগুল্মবৎ। ক্রিয়া কাখা। চ হিঙ্গুন্দি-চূর্নং কে;ফ'স্তমা হিতম ॥

অন্তালা ও প্রত্যন্তালা রোগে অন্তর্বিদ্রবি ও গুলোর ক্যায় চিকিৎসা করিবে এবং বক্ষামাণ হিঙ্গাদি চূর্ণ দ্বিধং উষণ জ্বল সহ পান করিতে দিবে।

অথ বস্তিবাতস্ত লক্ষণম্।

মাক্তেংবিওণে বস্তৌ মূলং সমাক্ প্রবন্ততে।। বিকারা বিবিধাশ্চাতে প্রতিলোমে ভবস্তি চ ॥ বন্তিদেশে (মৃত্রাশয়ে) বায়্ অন্ধলোমগ থাকিলে সমাক্ প্রকারে মৃত্র নি:স্ত হয়। এবং প্রতিলোমগ থাকিলে, অশ্যরী ও মৃত্র-ক্ষম্ভাদি নানাপ্রকার রোগ জন্মিয়া থাকে।

বস্তিবাতস্ত চিকিৎসা।

কাযোগ ক্সিগতে বাতে বিধিপ্তিবিশোধনঃ । বস্তিগত বায়ুতে বস্তিশোধন চিকিৎসা ক্রিবে।

বলাম্কাণ্ডচং চূৰ্বং সমিতং কর্মস্মিতম্।
পিবেৎ কুড়বছ্পেন মৃত্যুম্ তিশশাস্তরে ॥
পথ্যাবিভাতধাতাশাং চূৰ্বং চূৰ্বং মৃতায়ম:।
মধুনা সহ সংলাচং মৃত্যু তিশশাস্তিকুৎ ॥
যবক্ষারস্ত চূৰ্বন্ত সংযোজা সিত্যা সহ।
ভক্ষদেরিয়তং তন্ত প্রশাস্ত্যু ন্নিলাতঃ ॥
কুখা ওপ্ত ত্ বাজানি বাজানি ত্রপুষ্পত চ।
বস্ত্রে ত্রাজানি বাজানি ত্রপুষ্পত চ।
বস্ত্রে সক্ষারেয়েৎ তেন প্রশাস্ত্রি তিলিংছা।
ভাগনকাশত ক্ষেন্ত বিশ্বাস্থ্যাক্ষ্যুত্র শবৈঃ।
মহনক্ষার্থ যোনেবা মুখ্যাভাস্তরে শবৈঃ।
ঘনসংর্থুতাং বর্ত্তিং ধাররেয়া, ত্রনিগ্রহে ॥

বেড়েলা, মুর্কা ও দারুচিনি প্রত্যেকের চুর্ণ সমভাগ, চিনি সর্ব্যভুল্য। এই ঔষধ ২ ভোলা পরিমাণে অর্দ্ধনের হুগ্ধের সহিত সেবন করিলে মুহুমুত্রি নিবারিত হয়।

হরীতকী, বংহড়া, আমলকী ও জারিত লোহচূর্ণ একএ মিশ্রিত করিয়া মধুর সহিত লেহন করিলেও মুহুমু ত্রণ প্রশমিত:হয়।

যবক্ষারচূর্ণ চিনির সহিত নিত্য ভক্ষণ করিলে মূত্ররোধ দ্বীভূত হয়।

কুমড়ার বা শশার বীজ, অথবা আম-লকী বাটিয়া ব্স্তিদেশে প্রলেপ দিলে মূত্র-রোধ প্রশমিত হয়।

লিঙ্গ বা যোনির ঘারমণ্যে কপূরের বর্তি প্রবেশিত করিয়া রাখিলে মুক্ররোধ নষ্ট হয়।

অথ খল্লী-বেপথু-লক্ষণম্।

সর্ব্যক্তনঃ শিরসো বাব্রেপথুদংজ্ঞক:।
খবা তু পানজ্জেশক-করম্বাব্যোটনা в

বেপথু নামক এক প্রকার বাতব্যাধি আছে, তাহাতে সর্প্রাক্ত বিশেষতঃ মস্তক কম্পিত হইতে থাকে। খলী (খাইল্ধ্রা) নামক বাতব্যাধিবিশেষে পাদ, জজ্মা উরু ও করমলের অব্যোটন (মোচড্ডন) হয়।

তয়োশ্চিকৎসা।

কুষ্ঠ**দৈন্ধবয়োঃ কক্ষণ**্কুতিলসম্প্ৰতঃ। **স্থোকো মূদ্**নি যোজ্য থ্যাস্থানিবারণঃ॥

কুড় ও সৈন্ধব ইহাদের কল্প, চুক্র ও তৈলের সহিত মিশ্রিত এবং স্থোঞ্চ করিয়া মন্দিন করিলে খলী বেদনা (গাইল্ ধরা) প্রশামিত হয়।

খব্যাং বিশ্বালবলৈ থেদম্চ্ছোপনাইনম্।

শ্বীরোগে স্নেহ, কাজি ও লবণ ছারা
শ্বেদ, মর্দ্দন ও প্রলেপ ব্যবস্থেয়।

অথ ত্রিকশূলস্থা লক্ষণম্।

ক্ষিপত্তে পৃষ্ঠবংশাস্থা সন্ধিত ক্রিকং মতম্। তত্ত্ব ব্যাহন যা পাড়া ক্রিকগুলং তত্ত্বাহে ।

ন্দিক্ (পাছা) অস্থি ও মেরুদণ্ডের আস্থর সংযোগ-স্থানকে ত্রিক বলে। এই ত্রিকস্থানে বায়ুজ্ন্ম বেদনা জন্মিলে, তাহাকে ত্রিকশুল বলিয়া থাকে।

ত্রিকশূলস্থা চিকিৎসা।

করেয়েশ্ বালুকত্বদং ত্রিকগলে প্রয়ণ্ডঃ। যন্ত্রাধন্তহৈ করায়াগ্রিং ধরেতেৎ সততং নরঃ।

ত্রিকশূলে অভিষয়ের সহিত বালুকা-স্বেদ দিবে এবং রোগির পশ্চাদ্ভাগে সর্বাদা বিলঘুঁটের অগ্নি স্থাপন করিবে। (ত্রিক— মেরুদণ্ডের সর্বানিম ভাগ।)

অথ বাতবাধীনাং কুচ্ছুদাধ্যত্বাদি।

হন্তঞ্জ দ্বিতাক্ষেপ-পক্ষাতাপতানক।:।
কালেন মহতাঢ়ানাং যক্তাৎ সিধান্তি বা ন বা ।
নবান্ বলবতস্তেতান্ সাধ্যমন্ত্রিরূপজ্ববান্।
বীসপ্নাহরুক্সজ-মৃত্যাক্ষ্যান্ত্রিরূপজ্বান্।
কাণনাংসনলং বাতা প্রতি পক্ষবধ্যান্ত্রিয়।
শ্বং স্থারচংভগ্নং কম্পাগ্রাননিপাত্তিম্।
ক্ষাত্রিমন্তর্গ নরং বাতবাধ্বিনিশ্যেৎ ॥

হয়স্তন্ত, অদ্দিত, আক্ষেপ, পক্ষাথাত ও অপতানক এই সকল রোগ যদি ধনবান্ ব্যক্তির হয় ও অতি যদ্ধের সহিত দীর্ঘকাল চিকিৎদা করা যায়, তাহা হইলে রোগের শাস্তি হইতেও পাবে, কদাচিং নাও বা হয়। কিন্তুরোগ সকল যদি অচিরোৎপন্ন ও নিরুপ-তব হয় এবং রোগির যদি বল থাকে, তাহা হইলে সাব্য হইতে পাবে।

বিদপ, দাহ, বেনাবিশেষ, মলমূত্রের অপ্রবৃত্তি, মুচ্ছা, অফাচ ও অগ্নিমান্যা, এই দকল উপদ্রব পাকিনো, এবং রোগির বলমাংদ পরিক্ষীণ হুইলে, পক্ষাঘাতাদি বাত-ব্যাদি প্রাণনাশক হুইয় থাকে। এবং শোখ, স্পর্শনাক্তিশোপ, অঙ্গভঙ্গ, কম্পা, উদরাগ্মান ও বেদনাবিশেষ এই দকল উপদ্রব ঘটলেও বাতব্যাদিগ্রন্থ রোগির জাবন সংশন্ধ জানিবে।

অথ প্রকৃতবাতলক্ষণম্।

অব্যাহত সাংহ্যসংস্থানস্থা প্রকৃতি স্থিত। । বংযুং শুংং সোংহ্যকং আবেছাত রোগ্ধ সমাধ্য শতম্॥

যাহার শরীরস্থ বান্ন, অব্যাহতগতি (অনবরুদ্ধমার্গ), স্বস্থানস্থিত ও প্রস্কৃতিস্থ (অক্ষীণ ও অবৃদ্ধ) থাকে, সে ব্যক্তি নীরোগ হইরা শাস্ত্রোক্ত সমস্ত আনুদ্ধাল অথাৎ একশত বিংশতি বংসর পাঁচ দিন পর্য্যস্থ বাঁচিয়া থাকে।

স্থ:ননাম ত্রুপৈক নিজেঃ শেষান্ বিনিদিশেৎ। সর্বেগ্রেতেরু সংসর্গং পিজাজেরপলক্ষরেৎ॥ এতথ্যতিরিক্ত অন্বক্ত বাতব্যাধি সমস্ত স্থানামূর্যপ ও নামামূর্যপ হয়; যথা—শূল-নিথাতবদ্ বেদনাস্থলে শূল, স্চীবেধবদ্ বেদনাস্থলে তোদ ইত্যাদি নামে অভিহিত হইয়া থাকে।

এই অধিকারে : বাতজনিত বতগুলি রোগ বর্ণিত হইল, সেই সমস্ত বোগেই পিতাদিরও সংস্রব লক্ষ্য করিবে। অর্থাৎ পিতলক্ষণ দারা পিতামুবদ্ধ ও কফলক্ষণ দারা ককামুবদ্ধ বাতব্যাধি স্থির করিবে।

বাতব্যাধেঃ সাধারণ-চিকিৎসা।

সল্লরামাদি-পাচনম্।

রামাবিখবিড়কানি রুণ্করিকলা তথা।
দশমূলপৃথক্শা আ-ক'থো বাচাময়াপহঃ॥
আদিতে চ শিরংখুলে অবেহপত্মার এব চ।
মনোজংশে চ বিবিধে ক্থিতঞ্জুতপ্রদু॥

রাসা, শুঠ, বিজ্ঞ্ব, এরও, ত্রিফলা, দশমূল ও শ্রামালতা, ইহাদের কাথ বাতরোগাপহ। ইহাতে অন্দিত, শিরঃশূল প্রেভৃতি শ্লোকোক্ত রোগ দকল নিরাক্ত হয়।

মাধ্বলাদি-পাচন্য।

মাবৰলাপুকলিথীক ওগরামাবগন্ধোরুব্কাণাম্। কাণো নস্তানিপাতো রামঠলবণাথিতঃ কোকঃ॥ অপহরতি পক্ষবাতং মস্তান্তম্ভং সকর্ণনাদরুজম্। ফুর্জরমন্দিতবাতং সপ্তাহাক্তরতি চাবণাম॥

মাষকলাই, বেড়েলা, আলকুণীবীৰ, গন্ধ-তুণ, রান্ধা, অন্ধগন্ধা মূল ও এরওমূল, ইহা-দের কাথে ২ রতি হিং ও।• আনা সৈন্ধব-লবণ প্রক্ষেপ দিয়া ঈন্যন্থ থাকিতে নাসিকা দারা পান করিলে পকাদাত, ম্ঞান্তভ, কর্ণ-নাদ ও কর্ণবেদনা এবং হংসাধ্য অন্দিত রোগ এক সপ্রাহের মধ্যে নিশ্চয়ই প্রশমিত হয়।

(প্রাচীন চিকিৎসকগণ নাসিকা দারা পান না করাইয়া সাধারণ পাচনের মত ব্যবহার করিতে ব্যবস্থা দেন।)

শাক্ত্বণ-সেদঃ।

কাকোলাদিঃ স্বাতন্ত্র সর্বান্নস্বাসংযুক্তঃ।
সান্প্নাংসঃ স্থাবিল্লঃ সর্বান্নস্বাসংযুক্তঃ।
ক্ষোক্তঃ স্পষ্টলবণঃ সাবলা পরিকীর্ত্তিতঃ।
তেনোপনাহং কুলীত সর্বানা বাতরোগিণাম্।
বাতন্ত্রো ভ্রমাবানিং কাকোলাদিশু দৌশ্রুতঃ।
মাংসেনাত্রৌষধং তুলাং যাবতান্ত্রেন চান্নতা।
পট্নী স্থাৎ বেদনার্থক কাল্লিকান্ত্রনমিষ্টেও।
চতুঃবেহোহত্র ভাবান্ স্থাৎ স্বান্নিস্কাং যতো ভবেৎ।
লমন্তং বর্গনিস্কাং বা যথালাভ্রম্থাপি বা।
প্রযুক্তীত্রেতি বচনং সর্বাত্র গণকন্ত্রনি।

মুশ্রেক কাকোলাদিগণ ও ভদ্রদার্কাদি গণ (সমন্ত বা যথালাভ) এবং স্থান্তির আনৃপ্ মাংস (শ্করাদির মাংস), এই সকল দ্রব্য কাজি, ম্বা ও তুযোদকাদি অমপদার্থে অমী-কৃত, স্বত তলাদি চতুর্বিধ মেহে ম্থান্ত্রিপ, প্রেচ্র লবণে লবণরসাগিত এবং অগ্নিসন্তাপে অন্ধ সন্তপ্ত করিয়া তদারা উপনাহ (উষ্ণ প্রেলপ) দিবে। ইহাকেই শাল্প-স্বেদ কহে। এই শাল্প-উপনাহে মাংসের পরিমাণ যত, কাকোল্যাদি গণোক্ত ও ভদ্রদার্কাদি-গণোক্ত প্রমণের পরিমাণ্ড তত হওয়া আবশ্যক এবং কাঞ্জিকাদি অম, মৃত্যাদি মেহ ও লবণ্ড এমন পরিমাণে লইতে হইবে যাহাতে উপনাহ অম সিশ্ব ও লব্ণ রস হয়।

সাধারণত চিকিৎসকগণ নিমলিখিতরংশ শার্ণ-বেদ বাবহার কারয় থাকেন; যথা— কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, গুলঞ্চ, বংশলোচন, মুগানী, মাধাণী, অর্থানা, অনস্তম্ল, পুগুরিয়া, কাক্ডাশৃঙ্গী, পদ্মকাঠ, বেড়েলা, গোরক্চাকুলে, কিস্মিদ্, জীবন্তী, ষ্টিমধু, দেবদাক, হ্রিদ্রা, খেত অ্পরাজিতার মূল, অর্কমূল, গোকুর,

তগরপাত্কা, মুতা, দারুচিনি, গাব্ভেরেণ্ডার মূল, রক্তকাঞ্চন ছাল, কয়েংবেল, বাব্লার ছাল, গণিয়ারি, কাশের মূল, পাথরচ্পার পাতা, সাচা শাক, শুলুটে (হুড়্ছড়ে), পুন-নবা, কুড়, কাপাসবীজ, আলকুনাবীজ, শত-মূল, বকছাল, তেউড়ীমূল, শঠী, ঝাটীমূল, খেত-বেড়েলার মূল, যব, বদর, কুল্প, বেল-ছাল, শোণাছাল, গান্তারী, পারুল, শালপাণি, চাকুলে, ব্যাকুড় ও কণ্টকারী প্রত্যেক ১ তোলা: বরাহ্মাংস অভাবে কুৰ্মমাংস অভাবে ছাগমাংস ৫৪ তোলা; জল সমুদায়ের আটগুণ; পাতিলেবু, কাগ্জীলেবু, গোড়া-**লেবু,** ছোল**ঙ্গলে**বু, কমলালেবু, কুল, দাভিম, ভেতুল প্রত্যেক ৬ ভোলা. সৈন্ধব ও বিট্লবণ প্রত্যেক ১৮ তোলা: মুত ্রাণ পোরা, তিল্ডেল ্রাণ পোরা, এর গুতৈল /া০ পোয়া, কাঁজি /২ সের, দ্ধি /২ সের

ষ্ড্ধরণে। যোগঃ।

চিত্ৰকেন্দ্ৰবাঃ পাঠা কটুকাতিবিবাভগাঃ :

মহাব্যাধিপ্ৰশমনো যোগঃ বড় ধ্ৰণঃ স্মৃতঃ
পলন্দ্ৰমাংশো ধ্ৰণঃ । যোগোঃখং সৌশ্ৰুতঃ ভস্তস্থ মাৰেণ পঞ্চপ্ৰক্ৰমানেন প্ৰচাহং দেৱঃ।

(মেদাকফার্ভব্যাধিং মহাবাাধিং। বড়ধ্রণ ইতি
বয়াং চিত্রকাদীনাং প্রত্যেকং ধরণং প্রদেশনাংশরূপং
মানং বত্র স তথা। যোগোহয়ং সৌশাত ইতি কৃষা
তত্ত্ব হৃশতত্ত্ব পক্তপ্রক্মানেন নাবেণ বং পলং ভবতি
তত্ত্বেব পলতা দশমো ভগে। তেন পঞ্চপ্রক্মানামুন্
নারাং প্রদেশনাংশেন রক্তিবয়াধিকস্মানকা ভবন্তি
বড়্ভিধরিশেক মিলিছা সর্ক্তিবয়্মধ্যাবাধিকক্ষ্ম্মং
ভাদিতি শিবদাসং।

চিতা, ইন্দ্রণ, আক্নাদি, কট্কী, আত-ইচ ও হরীতকী প্রত্যেক ও নাবা ২ রতি। মিলিত চুর্ণ ৪ তোলা ও মাধা ২ রতি। এই যোগ সপ্তাহ সেবন করিলে মহাব্যাণি (মেদঃ কফারত ব্যাণি) বিনষ্ট হয়। (এই বড়্ধরণ যোগ স্থাতোক্ত, তজ্জা স্থাতের পরি-মাণায়দারে (৫ রতিতে মাধা ধরিরা) ইহার পরিমাণ নির্দেশ করিতে হয়। পলের দশ-মাংশকে ধরণ বলে।)

সন্নরসোনপিওঃ।

পলমন্ধলনকৈব রসোনজ্ঞ হুকুটি ভম্।
হিন্দু জীরকসিক, খ-সৌবচলকট্ একৈঃ ॥
চূৰ্ণিতম বিকোন্ধানৈরবচ্ব্য বিলোড়িতম্।
যথাগ্রি ভক্ষিতং প্রাভারক্র ক্ষাণান্ধানতঃ ॥
দিনে দিনে প্রযোজ্যার অদি ভং সাপত রকম্ ॥
একান্ধরোগিলে চৈব তথা সর্কান্ধান্ধানিলে।
উক্তত্তে চ গুরজাং কি মিদোরে বিশেষতঃ ॥
কটিপৃষ্ঠানরং হ্জাতদরক হুলার্কান্ধ্।
শেশুটা রসোনযোগন্ত হেমপ্তে নিশিরে তথা ॥
প্রান্তীকালে বসপ্তে চ মধ্যমঃ প্রিকান্তি ।
শার্দিবিধ্যাকেটব নৈব দেয়ং কদান্তন ॥
প্রান্তীকানে ভূ দাতব্যো বারিপূর্বে মহীতলে।
সম্পূর্বন্নবিধ্যাক্রে মান্ধান প্রভ্রেক ক্যান্তন।
সম্পূর্বন্নবিধ্যাক্রেনী মান্দে প্রভ্রেক ক্যান্তন।

উপরিস্থ আবরণ- ঃকু-রহিত পেষিত র্ভন ১২ তোলা, হিং, জীৱা, দৈয়াৰ লবণ সচল লবণ ও ত্রিকটু প্রত্যেক চুর্ণ ১ মাধা। সমুদার একত্র মুদ্দন করিয়া (॥০ ভোলা "ম্থিবল অন্তুদারে মাতায়) এরওমূলেব কাথের সহিত এক মাস সেবন করিলে অদ্দি-তাদি নানাবিধ বাতরোগ, উক্তম্ভ, ক্রিমি-দোষ ও উদর প্রভৃতি রোগ নষ্ট হয়। হেমন্ত ও শিশির শ্বতুতে রসোন্যোগ শ্রেষ্ঠ, প্রার্ট-ও বসম্ভকালে মন্যম এবং শর্থ ও গ্রীল্মকালে অবম; অতএব শরৎ ও গ্রীল্ল ঋতুতে ইহা প্রয়োগ করিবে না। প্রারুটকালে মহীতল বারিপূর্ণ হইলে রসোন প্রয়োগ করিবে। রদোন সকল ফান্তন মাদে রসপুর্ণ ও বীর্ণবোন হয় বলিয়া ইহা এই কালেই সংগ্রহ করিবে।

ত্রয়োদশাঙ্গগুগুলুঃ।

আহ: খগন্ধা হবুষা ভড়েটা শতাবর গোকুরবৃদ্ধারম্। রাগে শতাধা সণাটা যমানা সনাগরা চেতি সমৈন্চ চুণ্য ॥ তুলাং ভবেৎ কৌশিকমতা মধ্যে দেয়ং তথা স্পির্ণাদ্ধভারম। অধ্যাক্ষমান্তন্ত ততঃ প্রয়োগাৎ
কৃষানুপানং স্থার্যাণ গৃথৈঃ॥
মজেন বা কোঞ্চলেন বাপ
কটিগ্রহে গৃপ্তসিবাহপুঠে
হন্ত্যহে জানুনি পাদ্যুগ্রে॥
সন্ধিস্থিতে চাস্থ্যিতে চ বাতে
মজ্ঞানিতে স্নায়ুগতে চ কুঠে।
রোগান্ জয়েদ্ বাতকফানুনিকান্
বাতেরিতান্ হৃদ্গহযোনিদেংখান্॥
ভগ্নান্থিকেন্ চ পঞ্জনাতে
জ্যোদশাক্ষং প্রদন্তি সন্তঃ॥

(৩৪গ.৪লোরেছাড'গং মুত্রু। বৃদ্ধবৈজ্ঞায় যাবতা মুতেন গুগ গুলুপিট্রনং ভবতি তাবদেব মুতং গুরুছি।।

আহা (বিণিক্-দ্রব্য-বিশেষ) অভাবে লগুন, অপ্নগন্ধা, হবুষা, গুলঞ্চ, শতমূলী, গোক্ষুর, বিদ্ধান্ধ, হবুষা, গুল্ফা, শটী, বমানী ও প্রতি প্রত্যেক চূর্ণ ১ তোলা। গুগগুলু ১২ তোলা, স্বত ৬ তোলা (প্রথমে স্বত প্রারা গুগগুলু মা,ড়েয়া লইতে হয়। বে পরিমিত স্বতে গুগগুলু মাড়া বাইতে হয়। বে পরিমিত স্বতে গুগগুলু মাড়া যায়, বৃদ্ধবৈত্যগণ তাহাই গ্রহণ করিয়া গাকেন)। এই সমুদায় একত্র মর্দ্দন করিয়া লইবে। মাত্রা ৮০ তোলা। অনুপান—মগু, মুদ্যাদির বৃষ্, হগ্ধ, মাংসরস বা ঈষ্ত্রগুজল। ইহা সেবন করিলে কটাগ্রহ, গুগ্রসী ও বায়ুজনিত অন্থান লালি হয়।

পথ্যাদিগুগ্গুলুঃ।

পণ্যাবিভা তামলকাফলানাং
শতংক্রমেন বিগুণাভিবৃদ্ধন ।
প্রস্তেমন বিগুণাভিবৃদ্ধন ।
প্রস্তেমন বিগুণাভিবৃদ্ধন ।
প্রস্তাবিভাইং কথিতং কষায়ং
ভাওে পচেৎ তৎ পুনরেব লোহে ।
ক্রম্নি বংহুরবতায় দ্পাদ্
ক্র্যানি সংচ্ন্য পলার্ককানি ॥
বিড্পনন্তীতিকলাগুড্টী
কুষ্ণাতিবৃন্নাগরকোষণানি ।
যথেইচেইস্তানরস্তানীত্রং

নিবেবানাগো বিনিহন্তি রোগান্
সগ্রসাং নৃতনগঞ্জতাক।
সীহানমুকং জঠরাগিগুল্মং
পাণ্ডুমকভূবমিবাতরক্তম্ ॥
পথ্যাদিকো ভগংগুলুরের নামা
ধ্যাতঃ ক্ষিতাবপ্রমিতপ্রভাবঃ॥
বলেন নাগেন সমং মতুবাং
জবেন কুয়াৎ তুরগেন তুলাম্।
আর্থেকবং বিদধাতি চকুন্
বসং তথা পৃষ্টিকরো বিষয়ং॥
ক্ষতপ্র সন্ধানকরো বিশেষাদ্
রোগেধু শস্তঃ সকলেব তক্তাকৈঃ॥

হরীতকী ১০০ একশত, বহেড়া ২০০ চুই শত, আমলকী ৪০০ চারিশত এবং গুরু গুলু /২ সের, এই সুন্ধ দ্রব্য ৬৪ চৌষ্টি সের জলে একরাত্রি রাখিয়া পাক করিবে। ঐ কাথ যথন অদ্ধাবশিষ্ট থাকিবে, তথন নামাইয়া <u>ছাকিয়া লইয়া পুনরায় লৌহভাওে</u> করিবে; ঘন হইলে নামাইয়া তাহাতে বিভক্ষ म्खीमृत, आमनकी, इती ठकी, ब्राह्म, खनक, পিপুল, তেইড়ামূল, ওঠি ও মরিচ এই সকল দ্রব্যের চুর্ণ প্রত্যেক ৪ চারি তোলা পরিমাণে নিক্ষেপ করিবে। পরে নামাইয়া শাতল হুইলে উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিবে। এই ঔষধ ভক্ষণ কালে যথেক আহাব ও বাতল জল পান কত্তব্য। ইহাতে গুর্দী, খঞ্জতা, প্লীহা, গুলা, পাতু, গাত্রক চু, ব্লিও বাতরক্ত প্রশামত হয় এবং রোগী হন্তির স্থায় বলবান্ ও অংখন স্থায় দ্রতগামী হইয়া থাকে। এতদ্ভিন্ন এই ঔষধে আয়ুর বৃদ্ধি, চক্ষুর জ্যোতিঃ, পুষ্টি, বিষনাশ ও ফ ত-সন্ধান হয়।

চতুমুথো রদঃ।

রদগন্ধকলোহাত্রং সমং স্তাজিবুহেম চ।
সর্বং থলতলে কিপ্তা কন্তাধরসমর্দিতম্ ॥
এরওপত্রেরাবেষ্ট্র ধান্তরংশো দিনত্রয়ম্।
সংস্থাপ্য চ তছুদ্ধুতা ক্রিফলামধুযোজিতম্ ॥
এতদ্রসায়নবরং সক্রোগের বোজয়েং।
তদ্বণাগ্রিবলং থাদেদ্ বলীপলিতনাশনম্ ॥

পৌষ্টিকং ৰলামাযুদাং গ্ৰীণাং প্ৰসবকারণম্।
কয়মেকাদশবিধং পাঞ্যোগং প্ৰমেইকম্ ॥
কাসং শূলক মন্দাগ্ৰিং হিকাকৈবায়পিত্তকম্।
ত্ৰণান্ সৰ্কানাচ্যবাতং বিসপং বিজ্ঞবিং তথা ॥
অপস্মারং মহোন্মাদং সৰ্কাশাংসি ত্পাময়ান্।
ক্রমেণ শীলিতং হস্তি বৃক্ষমিন্দ্রাশনিমথা ॥
অগতাক হিতার্থায় চতুস্ম্ পম্পোদিতঃ।
রসন্চতুস্ম্ গো নাম চতুস্ম প ইবাপরঃ ॥

পারদ, গন্ধক, লৌহ ও অত্র প্রত্যেক ১ ভোলা, স্বর্গ ২ মাবা, এই সম্দায় ঘৃতকুমারীর রদে মদ্দন করিয়া এরগুপত্র ধারা বেষ্টন ও বন্ধন করিয়া ধান্তরাশির মধ্যে ৩ দিন রাখিবে, পরে উদ্ধত করিয়া ছই রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। অমুপান মধু ও ত্রিফলার জল। মগ্রিবল বিবেচনা করিয়া মাত্রা ব্যবস্থা করিবে। ইহা সেবন করিলে বলী, পলিত, ক্ষম, পাঞ্, প্রমেহ, কাস, শূল, মন্দাগি, হিকা, অম্পিত্ত, রণ, উক্তন্ত, অপস্মার ও উন্মাদ প্রভৃতি নানাবিধ রোগ প্রশমিত হয়। ইহা পৃষ্টিকর, বলবদ্ধক ও আয়ুদ্ধর।

চিন্তামণিচতুর্দ্বখঃ।

বিশুদ্ধং রসসিন্দূরং তদক্ষং লোইমজকম।
তদক্ষং কনকং থালে কস্থাবরসমন্দিরম্ ॥
এরওপত্রেরাবেষ্ট্র খান্সরাশৌ নিধাপরেং ।
তিনিনান্তে সমৃদ্ধ্তা সর্বরোগের যোজরেং ॥
এতদ্রসায়নবরং তিফলামধুসংযুত্ন।
তদ্ যথাগ্রিবলং থাদেখলীপলিতনাশনম্ ॥
অপন্দারং মহোন্মাদং রোগান্ বাতসমুম্ভবান্।
ক্রমেণ শীলিতং হস্তি বৃক্ষমিস্রাশনিষ্ধা ॥

রুস্সিন্দ্র ২ তোলা, লোই ১ তোলা, অভ ১ তোলা, স্বর্ণ অর্ক তোলা, এই সমুদার একতা ঘুতকুমারীর রসে মাড়িয়া এরওপত্তা বেইন করত ধাতারাশির মধ্যে স্থাপন করিবে। তিন দিবস পরে উদ্ধৃত করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটকা করিবে। অর্পান—মধু ও ত্রিফলার জল। ইহা সেবন করিলে অপস্মার ও উন্মাদ শুভৃতি বিবিধ বাতসমূহ্ব রোগের শাস্তি হয়।

বাতগজাঙ্কুশঃ।

মৃতং স্তং মৃতং লৌহং তাপাং গন্ধক তালকম্।
পথা শৃশী বিবং ব্যোবম্মিঃ ছঞ্চ টলপ্ ॥
তুলাং থলে দিনং মর্দ্দাং মৃত্তীনিত্ত ভিকাদ্রবৈঃ।
বিশুল্লাং বটিকাং পাদেৎ সর্ববাতপ্রশান্তরে ॥
কর্ণাচূর্ণমৃতকৈব জিল্লীকাথং পিবেদম্।
সাধ্যাসাধ্যং নিহন্ত্যান্ত রসো বাতগজালুলাং ॥
সপ্তাহাদ্ গৃধ্বনীং হন্তি দালুণং সালিপাতিকম্।
ক্রোই,শীর্ধকবাতকাপ্যববাহকসংক্রকম্ ॥
মন্ত্রান্তন্ত্রম্কত্তকং হ্নুক্তকং বিনাশয়েং।
পক্ষাঘাতাদিরেংগেনু ক্ষিতঃ প্রমোত্য়ণ।

পারদ, জারিত লোহ, স্বরণমাক্ষিক, গন্ধক হরিতাল, হরীতকী, কাঁক্ড়াশুদ্দী, বিষ, ত্রিকটু, গণিয়ারি ও সোহাগার থৈ প্রত্যেক দ্রব্য সমভাগে একত্র করিয়া খলে মর্দ্দন করিছে। পরে মুণ্ডিরী রসে (মুড় মুড়ে) > দিন ও নিসিন্দারসে > দিন মন্দন করিয়। ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। পিপুল্চুর্ণ ও মঞ্জিরার কাথে এক একটি বটী মর্দ্দন করিয়া সেবন করিবে। এই ঔষধ সেবনে গৃধদী, পক্ষাঘাত এবং অক্যান্ত সর্বপ্রকার বাতরোগ নই হয়।

রুহদ্বাতগজাঙ্কুশঃ।

স্তাত্ত জিকান্তানি তামতালকগন্ধকম্।
ন্বৰ্ণ গুঠী বলা ধান্তং কট্কলকভ্যা বিষম্।
পথ্যা শূকী পিপ্পলী চ মরিচং টক্ষণং তথা।
তুলাং খলে দিনং মন্দ্যং মৃণ্ডীনিগু ভিজৈক্সবৈ:॥
নিগুলাং বটকাং খাদেৎ সৰ্ববাতপ্ৰশান্তয়ে।
সাধ্যাসাধ্যং নিহন্ত্যান্ত বৃহদ্যতগজাক্ষুণঃ॥

পারদ, অন্ত্র, তীক্ষণৌহ, তান্ত্র, হরিতাল, গন্ধক, বর্ণ, শুঠ, বেড়েলা, ধনে, কট্ফল, হরীতকী, শিষ, হরীতকী, কাঁক্ড়াগৃঙ্গী, পিপুল, মরিচ, সোহাগার থৈ, এই সকল দ্রব্য সমভাগ; মুড় মুড়ে ও নিসিন্দার রসে ১ দিন
মর্দন করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করত সেবন করিলে সাধ্য ও অসাধ্য সর্ব্বপ্রকার বাতরোগ উপশমিত হয়।

মহাবাতগজাকুশঃ I

মৃতাত্রতীক্ষতাত্রঞ্চ স্ততালকগন্ধকম্।
ভাগী শুকী বলা ধাক্ষং কট্ফলঞ্চান্তরা বিষম্ ॥
সংগিষ্য চপলাক্রাবৈনিকৈকাং ভক্ষরেঘটীম্।
বাতরেমহরো ভেষ শুকুবাতগলংকুশঃ॥

শোধিত অত্র, লৌহ, তাত্র, পারদ, হরিতাল, গন্ধক, বামুনহাটা, ত'ঠ, খেত বেড়েলা,
ধনে, কট্ফল, হরীতকী ও বিষ এই সকল
দ্বব্য সমভাগে একত্র করিয়া পিপ্পলীর
কাথে মদন করত অর্দ্ধতোলা পরিমিত বটা
প্রস্তুত্ত করিবে। ইহাতে বাত্রশ্লেজ রোগ
উপশ্মিত হয়।

नकौविनारम। त्रमः।

পালং কৃষ্ণাত্রচ্পক্ত তদক্ষে রসগন্ধকে।
বলা নাগবলাংশুক বিদারীকন্দমের চ ॥
কৃষ্ণপুত্রনিচুলং গোকুবগুদ্ধদারয়ে:।
বীজং শক্রাশনস্থাপি জাতীকোষফলে তথা ॥
কপুরদৈর কর্বাংশং শক্ষ্চুর্নং পৃথক পৃথক।
গৃহীতা চাইমাংশেন অর্বং পর্ণক্ষেন চ ॥
বিটকাং বিশ্বচণক-প্রমাণাং কারয়েছ ভিষক্।
রসো লক্ষ্মী,বিলাসোহরং পূর্ববন্তগকারকঃ॥

কৃষ্ণ অভ্র ১ পল, পারদ ও গন্ধক উভরে অর্দ্ধ পল এবং বেড়েলা, নাগবলা, শতমূলী, ভূমিকুমাণ্ড, কৃষ্ণ ধুরুরাবীজ, হিজলবীজ, গোক্ষুরবীজ, বৃদ্ধারকবীজ, গিদ্ধির বীজ, আন্মফল, জৈত্রী ও কপুর প্রত্যেক চূর্ণ ২ ছই ভোলা এবং অর্ণভ্স ২ মাষা। পানের রসে মর্দন করিয়া দিদ্ধ ছোলার ন্তার বটকা প্রস্তুত্ত করিবে। চতুমুর্থ রসের ন্তার ইহার ফল জানিবে।

যোগেব্রুরসঃ।

বিশুদ্ধং রসসিন্দুরং তদর্জং শুদ্ধহাটকম্।
ডৎসমং কান্তলেহিঞ্ তৎসমঞ্চালমের চ॥
বিশুদ্ধং মৌজিকঞ্চৈর বঙ্গক তৎসমং মতন্।
কুমাারকারসৈভারাং ধান্তরাশৌ দিনজন্ম।
ডতো রজিবর্মিতাং বটাং কুয়াবিচকণাঃ।
বোগবাহী রসো ক্রেব সর্বারোগর্লাভকঃ॥

বাতণিজ্ঞনান্ রোগান্ প্রমেংন্ ব্রুণুজ্ভাম্।
মূত্রাঘাতমপত্মারং ভগন্দরগুদাময়ম্।
সোঝাদমূর্জ্বাং ফলাণাং পকাঘাতং হতেন্দ্রিয়ন্।
শূলামপিত্তকং হতি ভাসরান্তিমিরং যথা।
তিফলারসযোগেন শুভ্যা সিভ্যাপি বা।
ভক্ষিত্রা ভবেলোগী কামরূপী স্থাননিং।
রাত্রো সেবাং গ্রাং ক্রানাংক বিশেষতঃ।
বোগেন্দ্রাগো রমেং নামা কুলাতের বিনিধাতঃ।

রসসিন্দর ১ তোলা, সর্গ, লৌহ, আত্র, মুক্তাও বঙ্গ প্রত্যেত ॥ তোলা, এই সমুদায় মুক্তাও বঙ্গ প্রত্যেত । তোলা, এই সমুদায় মুক্তাও বঙ্গ প্রাথ বাটকা করিবে। ত্রিফলার জল বা চিনির সহিত সেবনীয়। রাত্রিতে গব্য ওগ্ধ পেয়। ইহা সেবনে উলাদ, মুদ্রা, পক্ষাধাত, প্রমেহ ওবহুমুত্র প্রভৃতি বিবিধ পীড়ার শাহ্যিহয়।

অনিলারিরসঃ।

রসেন গক্ষা দিঞ্চণ ইনিমন্দ্রি বাতাবিনিগু (ওরদৈদিনৈকন্ । নিলেশয়ের ভাসম্যে পুচে তর্ম সব্বং মুদ্যবেষ্ট্র চাবান্কাল্যে । যাস্ত্র পুটেদ্ গোময়চুর্ববহে । অভাবশীতে ভূ সমুদ্ধার্থ হব। নিগু 'ভিকাবা্ত্রব্যাহ্যিতাবৈ সংচুর্ব্যব্রেশ্ব বিভাব্যে তর্ম

রসোঃনিলারি: ক'থ্ডোংস্থা বন্যেবঙ্ডিলেন সমৈন্ধবেন ! মরীচচুর্বেন সমর্পিষা বা নিশু জিটিংশ্চ কটুঞ্জিব বা ॥

পারদ ১ ভাগ, গদ্ধক ২ ভাগ, এরওমূল ও নিদিন্দার রসে ১ দিন মন্দন করিয়া তাম পাত্রে আবদ্ধ করত মৃত্তিকা দারা প্রলেপ দিয়া বাল্কাফ্সে গোময়াগিতে (ঘুঁটের আগুনে) পাক কবিবে। পরে শীতল ইইলে উত্তোলন করিয়া নিদিন্দা, এরওমূল ও চিতার রসে সাতবার করিয়া মত্র পূর্বক ভাবনা দিয়া তিন রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। অনুপান—সৈদ্ধবলবণ-মিশ্রিত এরগুওঁতল; দ্বতের সহিত মিশ্রিত মরিচচ্ণ; অথবা ত্রিকটু-চ্ণ-মিশ্রিত নিদিন্দা ও চিতার রস। ইহাতে সর্ব্পকার বাতরোগ বিনষ্ট হয়।

রসরাজরসঃ।

প্রিকং শুদ্ধপ্রস্থা ব্যোগসন্থ কংষিকন্ ।
তদক্ষং কংশলং দেয়ং কন্তারস্থিন দি তদ্ধি ।
লৌহং ক্ষপাং মৃতং বঙ্গং বাহিপজ্জাং লবন্ধকন্ ।
জাতীকোনং তথা কার-কাকোলাখ তদক্ষি ।
কানকাচীরদেং পিন্ন প্রকল্পে নির্বাধি ।
কানক প্রকাশেরাগন্তপানং প্রকল্পে ॥
পক্ষাণ্ডেংনিতে পতে ১০ন্তন্তেংগতন্তক ।
২০ প্রস্তেংগতানে চ বাধিনে ম্পুকল্পে ॥
সর্বাধাতনিকাবের নস্বাক্ষা প্রকিন্তিত ।
বল্যো বৃষ্ধত ভোগাক্ষ নাজীকরণ উত্তন ।

রসসিন্দর ৮ তোলা, অল ২ তোলা, স্বর্ণ ১ তোলা। এই সম্দর ঘতকুমারীর রসে মাড়িয়া তাহার সহিত লোহ, রৌপ্য, বঙ্গ, অশ্বগন্ধা, লবঙ্গ, জৈত্রী, ক্ষীরকাকোলী প্রত্যেক ॥• তোলা পরিমাণে মিশ্রিত করিয়া কাকমাচীর রসে মাড়িয়া ৫ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। অস্থপান—হগ্ধ ও চিনির জল। ইহা পক্ষাঘাত, অন্দিত, ইন্নতভ্য, অপতলক ও ধন্ত হার প্রভাতি বোগে প্রযোজা।

চিন্তামণিরসঃ।

কংগকং রস্সিন্দুবং • ৎসমং য়ত্মজকম্।
তদক্ষং মূত্রনীতক্ষ স্বৰ্ণং শানাং কিলেচনক ।
কন্তারসেন সংঘল্ল আপ্রানাং বিটাও চিবেং।
অনুপানাদিকং দ্ঞাদ্ বৃদ্ধা দোষবলাবলম ।
ভঙ্জি শ্লেম্বানিং বাজিং কোলে পিতসংযুত্যু।
হল্পমক্ষ্তিং দলং বাজিং জাজিং শিলেগ্রহম্ ॥
আমহং কণনাদ্ধ জড়গলাদ্যনতাম্।
বাজিয়ং গভিনারোগনগরীং কৃতিকাময়ন্।
আদরং সোন্রোগঞ্জ স্পান্ধ অন্যান্ত ॥
বলবল্পিদ্যান্ত্যুং ডিস্তান্ত্রিসাধ্যর।
চিন্তান্তিরস্ক্যুং ডিস্তান্ত্রিসাধ্যর।

রসসিন্ধ ও শোণিত অত্র প্রত্যেক হুই তোলা, লোহ এক তোলা, ম্বর্ণ অর্দ্ধতোলা, মৃতকুমারীর রসে মর্দ্দন করিয়া এক রতি পরিমিত বটা প্রস্তুত করিবে। দোষের বলাবল ব্রিয়া অন্ধ্রপানের ব্যবস্থা করিবে। এই উষধ সেবন করিলে শ্রেমান্থিত অথবা পিত্তসংস্ক্র রিংবা কেবল বায়ু এবং হৃদ্ধাস, অক্লচি, দাহ, বনি, লান্তি, শিরোগ্রহ, প্রমেহ, কর্ণনাদ, মুকতা, বধিরতা, গভিনীরোগ, অগ্যরী, স্থতিকা, প্রদর, সোমরোগ, যক্ষা ও জ্বর নাশ হয়। ইহা বল, বর্ণ, কান্থি ও পুষ্টি সাধক।

ব্রহন্বাতচিন্তামণিঃ।

ভাগ বয়ং পর্ণভন্ম দিভাগং বৌগ্যমজকম।
লৌতাং পঞ্চ প্রবালক নৌজিকং এয়স্থিতম্।
ভল্পতং সপ্তক্ষ ক্লারেস্বিস্থান্তম্।
বালারা বটী কালা ভিষ্প্তি গ্রিবঃ ১১ :
যপাব বিন্তুপ্তিন নাম্যেদেশসকলম্।
বাল্যোগং পিত্রুতং নিং তি নাবে চিত্নম্।
বৃদ্ধে তিপি ক্ষণপদ্ধী কন্স্যমন্তিক্ষা।
দিপ্তা সদ্ধালক্ষ্যং বা বিচ্যুস্থিপ্তিঃ

পুণ ও ভাগ, বাপাং ২ ভাগ, অন ২ ভাগ, লোহ ৫ ভাগ, প্রবাল ও ভাগ, মূক্তাও ভাগ ও রস্ফিলুর সাত ভাগ, স্তকুমারীর রুদ্রে মাড়িয়া ২ রতি প্রমাণ বটিক। করিবে। ব্যাধি বিশেষে অন্ত্রপান বিশেষ ব্যবস্থা করিবে। এই উষ্ধ সেবন করিলে বাভজ ও পিওজ বিবিধ ব্যাধি নিরাক্ত হয়।

শীতারিরসঃ।

রসেন গন্ধং দ্বিভগং প্রগৃত পুন্নগায়িস্বরগৈরিভারা। প্রাকপ্তজ্ঞ রসেন পশ্চাদ্বিপাচক্ষেপ্টওগেন যন্ত্রাং ॥ রসাদ্ধ্রভাগঞ্চ বিশক্ষ দর। বিপাচক্ষেপ্টাজনে ক্ষণং তং । শতারিসংজ্ঞ রসায়নস্থা বন্ধা সান্ধিং মরিচালকেন। মরীচচুর্পেন যুভাগ্লেতেন সেবেড মাংসঞ্চ যুভঞ্চ প্রথম্ ॥

পারদ ১ ভাগ, গদ্ধক ২ ভাগ গ্রহণ করিয়া পুন্নবা ও চিতার রসে ভাবনা দিয়া পাকা আকল-পাতার আটগুণ রস সহ বালুকাষয়ে পাক করত পারদের অর্দ্ধভাগ পরিমিত বিষ মিশ্রিত করিবে। পরে চিতার রসে পাক করিয়া ২ রভি মাত্রায় বটা প্রস্কৃত করিবে। মহিচচুর্গ ও আদার রস, কিংবা মরিচচুর্গ ও ঘুত সহ সেবন করিলে শাতবাত বিনষ্ট হয়। পথা—মাংস ও ঘুত।

শীতবাতম্ম লক্ষণম।

হিনয়ন্তি চ গাতাণি রোমাঞ্চক,রিতানি চ। শিরোহক্ষিণেদনলৈতং শীতনাতত লক্ষণমু॥

সর্কাঙ্গহিম, বোমাঞ্চ, অঙ্গণুর্ণ, মস্তকে ও চকুতে বেদনা এবং আলম্ভ এই গুলি শীতবাতের লক্ষণ।

তালকেশ্বরো রসঃ।

একভাগো রসপ্ত শুশ্বন্ধালকভাগিক। আপ্তৌ স্থাব্জয়াগ্রুচ শুড়িকাং গুড়ত্রচরেং॥ একেকাং ভক্ষরেং প তশ্চারায়ামূপবেশরেং। ভালকেশননায়ায়ং গোগেংগশবিদাশনঃ॥

রুষ্ণিত - ভাগ, শোধিত ইরিতাল এক ভাগ, সিদ্ধি ৮ ভাগ, এই সকল চণের দিওণ ওড়; একার মিশিত কবিয়া বটক। প্রস্তুত করিবে। প্রতিকালে ঔবর সেবনের পর ভাগতে উপবেশন করিবে। ইহাতে অপশে বাতবোগ নাশ হয়।

धाराटेखत्व। ।

(2014/201)

তালগৰ্থসাহাজ-চঞ্চলে গ্ৰেইলুৰ্। পিষ্ট্ 'নপ্ৰসেঃ পুৰা,'ছটিকাং মুকামানত। ॥ মা সেবিতা নিহ্ভাকে ব'তলেমভবান্ গদ'ন্। গ্ৰহ্ণীং বহিন্দাংশ, পুচীব'তং মাশতাৰম্॥

হারতাল, গন্ধক, পারদ, অহিফেল, সোহাগার থৈ, নিকটু ও হিপুল ইইাদিগকে
আদান রসে নৃদ্ধ কবিরা মুস্পপ্রমণ বটিকা
করিবে। এই উবা সেবনে বাতক্রেমন রোগ,
গ্রহণা, অগ্নিনান্য ও অন্য নিবারিত হয়।
ইহা শেত্যক ও জ্চীবাতের মহেষিব। বেয়
বাসু দারা বোগির অঙ্গ একেবারে অসাড় হয়,
সচীদারা বিদ্ধ ক্রিবেও রোগির জ্ঞানস্কার
হয় না, ভাহাকে স্চীবাত বলে।)

আনন্দত্তেরবঃ।

(বাতশ্লেম্বণি)

পারদং গঝকং লোহনজকং বিষমের চ।
সমাংশং মরিচঞ্চাঠো উঙ্গণন্ত চতুগুণন্ ॥
ভঙ্গরাজবদৈং দপ্ত ভাবনান্চায়দাড়িনৈঃ।
গুঞ্জাব্যং পর্ণবঙ্গে থাদেৎ দোহয়ং নিহন্তানুন্ ॥
বাতলেখোডুবং রোগং মন্দাগ্রিং গ্রহণীং জ্বান্।
অকচিং পাড় চাঞ্চেব মেদোজং নাশ্যেদ গ্রহণ ॥

পারদ, গন্ধক, লোহ, অভ্র ও বিষ প্রত্যেক
সমভাগ, মনিচ-চূর্ণ ৮ ভাগ, সোহাগার থৈ
৪ ভাগ, এই সকল দ্রুবাকে ভীমরাজের রসে
৭ বার এবং অম্লাড়িমের রসে ৭ বার ভাবনা
দিয়া ২ রতি প্রমাণ বটকো প্রস্তুত করিবে।
এই বটকা পানের সহিত সেবন করিলে
বাতশ্রেম্মজ রোগ এবং মন্লাগ্রি, এহনা, জ্বর,
অক্রচি প্রভৃতি বিবিধ বোগ বিন্ত হয়।

বাভারিরসঃ।

রসো গন্ধো বরা বন্ধিন্ত গন্ধপুর জমবর্দ্ধিত।
ভক্তেকভাগে কাত জাদ গন্ধকা দ্বিভাগ প্রতা ॥
কিন্তাগা ক্রিকলা যোগা চতুভাগত চিতর ।
ভগ্নতাগুল পদভাগা জ্ঞানন্ তলেন মন্দিতে ॥
ক্ষিপ্তা তলেদিতা গুলিং তেন তেলেন মন্দিতে ॥
ক্ষিপ্তা কর্মনা নাম্ভ ভক্ষমের প্রাত্তের হি ॥
নাশারবভন্না নাম্ভ ভক্ষমের প্রাত্তের হি ॥
নাশারবভন্না নাম্ভ ভক্ষমের প্রাত্তের হি ॥
ক্যাজাবভাত তলেন প্রেটেম প্রত্তের হি ॥
ক্রিকেপ্রিবানে ভূ ক্রিমন্ভ্র্য ভোগ মহ
বাভারিসংজ্ঞানে তোল রসো নিমত্যের ভিত্ত ॥
মানেন মর্গতা বোহান্ত্ররে প্রত্তিত ॥

পারদ : ভাগ ও গন্ধক ২ ভাগ, একতা
মদ্দন কবিষ কজেলা কবিৰে। প্রথমতঃ গুল্গুনু ও ভাগ এব ডাতবো মদ্দন করিয়া তাহার
মহিত পূক্ষোক্ত কজ্জনী এবং জিফলাচুর্ব তাগ ও চিতামূল-চুণ ৪ ভাগ মিশাইবে এবং
ঐ এব ওতে পারা খুন্ধার মদ্দন করিয়া ২
ভোলা পার্মিত বলি প্রেপ্ত করিবে। মাত্রা—
২ ভোলা বিবহার হাসায় অনুসাদ,— ভুঁঠ
ও এব ওমুলের কাস। প্রোভঃকালে ঔষ্ধ-

সেবনের পর রোগির পৃষ্ঠদেশে এরগুতৈল মাথাইয়া স্বেদ প্রদান করিবে। বিরেচন হইলে স্বিশ্ব ও উষ্ণ দ্রব্য ভোজন করাইবে। স্ত্রীসঙ্গ পরিত্যাগ করিয়া ১ মাদ কাল এই ঔষধ সেবন করিলে সর্বপ্রকার বায়ুজন্ত রোগ বিনষ্ট হয়।

অথ গন্ধত্ব্যক্ষ্ম্ম।

এলা চন্দনকুষুমাগুর মুরা কংকালমাংসী শটা শ্রীবাসচ্ছদগছিপর্বশনভূৎ কৌণীগ্রজাশীরকম। কন্তুরীনগপুতিতেলজলমূত মেথালবঙ্গাদিকম্ গঙ্গাস্থামিদং প্রদেশ্যস্পিলং শ্রীবিকৃতেলাদিব্। তত্তাস্তরে—

কুঠক নলিকা পৃতিক্লণীরং মেতচলনম্।
জটামাংসা তেজপাত্রং নগী মৃগমদঃ কলম্।
ককোলং কুলুমং চোচং লতাকন্ত, বিকা বচা।
ফুগ্লৈলাগুকু মৃত্তক কপারং গান্থিপর্বক্ষ্ম।
শ্রীবাসঃ কুলুকদে বি-কুন্ত্মং গলমাতৃকা।
শিক্ষাকো মিবিকা মেথা ভন্তমূত্রং তথা শটা।
জাতীকোবং শৈলজক দেবদাক সক্রীরকম্।
এতানি গল্পবাধি তৈলপাকের যুক্তিতঃ।

এলাইচ, চনন, কুদ্ধন, অগুরু, মুরামাংসী, কাঁক্লা, জটামাংসী, শটা, সরলকাষ্ঠ, তেজপত্র, গেটেলা, কপূরি, শৈলজ, বেণার মূল,
মৃগনাভি, নথী, খটাশী, শিলারস, মূনা, মেগী
ও লবন্ধানি এই সমুদার গদ্ধতা বিষ্ণুতৈল
প্রভিতিতে প্রদের।

তমান্তরে—কুড়, নালুকা, খটানী, বেণার মূল, খেতচন্দন, জটামাংসী, তেজ-পত্র, নখী, নগনাভি, জায়ফল, কাঁক্লা, কুছুম, গুড়ঃক্, লতাকস্তুরী, বচ, ছোট এলাইচ, অগুরু, মূত্র, কপুর, গেঁটেলা, সরল-কাঁচ, কুন্দুরুখোটা, লবঙ্গ, গন্ধনাত্কা, শিলা-রস, শুল্ফা, মেথী, ভদ্রমুন্তক, শটী, জয়িত্রী, শৈলজ, দেবদাক ও জীরা এই সকল গন্ধদ্রব্য যথানিয়মে তৈলে প্রদান করিতে হয়।

বাতহরতৈলানাং বিঃশেষ কুছাবিধিঃ।

আন্ত্রজ্যুক্পিখানং বীজগুরক্বিধয়ে'। গন্ধকর্মান সর্ব্বত পত্রংণি পঞ্পল্লব্য ॥ প্রপ্রব্তোগ্রেন গন্ধানাং কালনং মত্য ॥ তৈলমুর্চ্ছার সাধারণ বিধি পরিভাষার লিখিত ইইয়াছে। অগ্রে সেইরূপ মূর্চ্ছা জিলা সম্পন্ন করিয়া পরে আম, জাম, করেৎবেল, টাবালের ও বিন্ন এই সমুদায়ের পত্র (মিলিড) পাচ্য তৈলের অন্তমাংশ, চতুগুল জলে কাথ করিয়া চতুর্থাংশ থাকিতে নামাইরা ছাঁকিয়া এই পল্লবকাথ দারা বাতন্ন তৈল পুনঃ শোধন এবং গদ্ধন্ত্র সমূহ কালন ও শোধন করিবে।

সঙ্গবিষ্ণু তৈলম্।

শালপণী পৃশ্লিপণী বলা চ বহুপুত্রিকা।
এরওস্ত চ মুলানি বৃহত্যো: পৃত্তিকস্ত চ ॥
গবেধুকস্ত মুলানি তথা সহচরস্ত চ ।
এতেবাং পলিকৈর্ভাগৈতৈলপ্রস্থং বিপাচয়েং ॥
আবং বা যদি বা গবাং ক্ষীরং দত্যাচচতুও শম্।
বাতার্জা লবণাশাশ্চ পীত্বা দৃচত্তুত্বচঃ ॥
কংপাশশূলে বাতাস্সে গলগণ্ডেহদিতে কয়ে।
শকরাথরিপাঙ্ড-কামলাদ্ধাবভেদকে ॥
কীণেলিয়েংসরুদ্ধে চ জরাজজ্বিতে হিতম্।
জিয়ো বা ন প্রস্থান্তে তাসাকৈব প্রদাপয়েং ॥
জীণামন্তরীণাঞ্চ গভন্তিতিকরং পরম্।
এতং তৈলবরকেব বিক্লা প্রিকীর্তিতম্।

তিলতৈল চারি /s সের। গব্য বা ছাগ-ত্রগ্র ১৬ সের। ক্ত্ৰাৰ্থ—শালপাণি, চাকুলে, বেড়েলা, শতমূলী, এরওমূল, বুহতীমূল, कण-কারীমূল, নাটামূল, গোরক্ষচাকুলে ও ঝাঁটী-মুল ইহাদের প্রত্যেকের ১ পল। এই তৈল যথাবিধানে পাক করিয়া মর্দন করিলে ইন্দ্রিয়-क्तीर्वना. অ্দিত. অন্তব্যন্ধি. রতিশক্তির হীনতা, অদ্ধাবভেদক (আধকপালে), কামলা, পাণ্ট, অংশরী ও অভাত নানা পীড়ার নিরুত্তি হইয়া দেহের বলবীর্য্য রুদ্ধি গর্ভিণী ক্রীলোকের প্রসব-ব্যাঘাত উপস্থিত হইলে এই তৈল মৰ্দন করা আব-খ্যক, ভদ্ধারা প্রদববিদ্ন নিবারিত হয়।

বিষ্ণুতৈলম্।

শতাৰরী চাংশুমতী পুলিপণী শটা ৰলা। এরওজ্ঞ চ মূলানি বৃহত্যোঃ পুতিক্স চ ।

গবেধুকক্ত মূলানি তথা সহচরস্য চ। এষাং দশপলান ভাগান জলছোণে বিপাচয়েৎ। भाषांवामारव भृत्क **ह श**्रदेशनः निधाभारद्र । পুনর্মবা বচা দারু শতাধ্যা চন্দনাগুরু॥ रेनलबः उनदः क्ष्रेयना गाःनी दिता बना। অশ্বাহ্না দৈশ্ববং রামা পলার্দ্ধানি চ যোজয়েৎ। গব্যাক্রপহসো: প্রস্থে স্থে স্থাবত প্রদাপরেৎ। শতাবরীরসপ্রস্থ তৈলং প্রস্থং বিপাচয়েৎ। অসা তৈল্যা প্রসা শুণু বীর্যামতঃ পরম্। অখানাং বাতভগানাং কুঞ্জাণাং নৃণাং তথা **॥** তৈলমেতৎ প্রয়োক্তব্যং সর্প্রবাতনিবারণম্। আয়ুখাংশ্চ নর: পীয়া নিশ্চয়েন দুঢ়ো ভবেৎ ॥ গভূমখভরী বিন্যাৎ কিং পুন্ম ক্রিণী তথা। হচ্চুলং পাৰ্ণুলঞ্ তথৈবাদাবভেদকম্ ॥ অপচীং গণ্ডমালাক বাতরক্তং হরুগ্রহম্। কামলাং পাণ্ডুরে গঞ্চ এশ্বরীফাপি নাশয়েং। ভৈলমে ভদ্ধগৰতা বিঞ্না পরিকী ভিতম্। বিশৃত্তল্মিদং গণ্ডং বাতাস্থকৰণং মত্ম ॥ (চক্রপতে২স্য মহানারায়ণতৈলমিতি সংজা)

ভিনতিল /৪ দের। কাথার্থ—শতমূলী, শালপাণি, চাকুলে, শটা, বেড়েলা, এরওমূল, বৃহতীমূল, কণ্টকারীমূল, নাটাকরঞ্জমূল, গোরক্ষচাকুলের মূল ও নীলসাটিমূল প্রত্যেক ১০
পল, পাকার্থ জল ৬৪ দের, শেষ ১৮ দের; গব্য হয় /৮ দের, ছাগহ্ম /৮ দের, শতমূলীর রস /৪ সের। কলার্থ—প্রনন্ধা, বচ, দেবদাক্ত, ভল্লা, রক্তন্দন, অন্তর্ন, শৈলভ, ভগ্রপাহ্কা, কুড়, এলাইচ, জটামাংসী, শালপাণি, বেড়েলা, অন্থন্ধা, সৈন্ধব ও রামা প্রত্যেক
৪ ভোলা। এই তৈল মন্দনে সকল প্রকার বার্রোগের শান্তি এবং অপচী, গণ্ডমালা, বাতরক্ত, কামলা ও পাণ্ডু প্রভৃতি রোগসমূহ প্রশ্মিত হয়। ইহা বারা গভদোষ নাণ ও সন্তানেংপত্তি হইয়াথাকে।

बुर्हिक्ट्रिजनम्।

জলধরমুখগৰা জীবকর্বভকো শটা। কাকোলী কীরকাকোলী জীবস্তী সধুযাষ্টকা ॥ মধুরিকা দেবদার পথাকাঠক শৈলজন। মাংসী চৈলা ওচং কুঠং বচা চন্দনকুরুম্ম ॥ মঞ্জিষ্ঠা মুগনাভিক্ত খেতচন্দ্ৰন্দৰ্য ।
পণী পণী কুন্থাটা প্ৰস্থিক কৰি তথা ॥
এতেবাং পলিকৈ চাগৈতৈলদ্যাপি তথাচকম্।
শতাবরীরদসমং ভুক্কাপি সমং পচেৎ ॥
বিকৃতৈল্মিদং শ্রেষ্ঠং সর্ববাতবিকারন্ত্র ।
উর্দ্ধনাতং তথা বাতমঙ্গলিপ্রধনের চ ॥
শিরোমধ্যগতং বাতং মন্তাক্তমং গলগ্রহম্ ।
ছস্তি নানাবিধং বাতং সন্দিনজ্জগতং তথা ॥
বস্যু গুবাতি কৈলাকং গতিগস্য চ বিহলো ।
বে বাতপ্রভবা বোগা যে চ পিত্রমুদ্ভবাঃ।
সর্ববিংগ্রান নাশ্যভাগত প্রস্তুব ব্রোদিতঃ॥

তিলতিল ১৬ সের। শৃতমূলীর রস ১৬ সের, হ্রা ১৬ সের। জল ৩২ সের। করার্থ—মুতা, অর্থগরা, জীবক, শ্বনভক, শটী, কাকোলী, ক্লাবকাকোলী, জীবস্তী, বৃষ্টিমধু, মে বি, দেবদাক, প্রকার্চ, শৈলজ, কটামাংদী, এলাইচ, ওড়্ছক্, কুড়, বচ, রক্ত-চন্দন, কুরুম, মঞ্জির্চা, মুগানাভি, খেহচন্দন, সৈন্ধবলবণ, শালপাণি, চাকুনে, মুগানী, মাষাণী, কুন্দুকথেটি, গেটেলা ও নতী ইহাদের থেত্যেকের ১ পল। এই তেল মন্দন করিলে উর্দ্ধান বায়, অন্ধ্রিতাহ, ম্যান্ডভাই, গলগ্রহ, সন্ধিগতবায়, মহলাশ্রিত বাল এবং বাতিক পৈত্তিক সর্ম্বিকার রোশ উপশ্যিত হয়।

নারায়ণতৈলম্।

বিৰোং গ্লিমন্থঃ শে নোকং গাচলঃ পারিভন্তকঃ ।
প্রসারণাগ্যকা ৮ বৃহহা কংচকালিকা ॥
বলা চাতিবলা চেব খবংথা সপুনন বা।
এবাং দশপলান্ ভাগুংখ্য চুকে গেংগুসঃ পচেং ॥
পাদশেষং পরিপ্রাবা ভগুগুকে গেংগুসঃ পচেং ॥
ভঙ্গুপা দেবদারু মাংসী শিলেয়কং বচা ॥
চন্দনং ভগবং কুড়মেলা পণ চৈ হও্য ।
রামা তুরগুকা ৮ সৈদবং সপ্রনন বিশ্ ॥
এবাং বিপলিকান্ ভাগুকি পেগ্রিহা বিনিক্ষিপেং।
ভাগুকি বা বাদি বং গ্রাহ ক্রিমে দ্যাকিত্ত গিম।
পানে বন্তো ভগাভ্যুদ্ধ ভোজ্য চব প্রশাতে॥
ভাগুবা বা বাভসংভ্রো গজো বা যদি বা নরঃ।
প্রশ্বক পীঠ্যপা চ হৈলেশনেন সিধাতি॥

আধান্তাগে চ যে বাতাঃ শিরোমধ্যগতাশ্চ যে।
মস্তান্তন্তে হতুত্ত দন্তনোগে গলগ্রহে ॥
যক্ত শুবাতি চৈকাকা গতিযক্ত চ বিজলা।
ক্ষীণেনিয়াঃ ক্ষীণ শুকা জ্বক্ষীণাশ্চ যে নরাঃ ॥
বিরা লন্দিংলাল্চ মন্দমেধন এব চ।
অলপ্রনা চ বা নারা যা চ গ ২০ ন বিন্দতি ॥
বাভার্ত্তী বৃষণো যেষামন্তবৃদ্ধিন্চ দারণা।
এতং তৈলবরং তেযাং নামা নারায়ণং স্মৃতমু॥

় আজগবাপ্যসোষ্ঠাপি প্রায়েণ গুণসাম্য তথাপি ছাগলক্ষীরেণ প্রং তেলমিদমনভিষ্যান্দ দোষ্ট্রবহরক ভবতীতি প্রত্থবাম্। ইতি জীক্ষীঃ।

তিলতৈল ১৬ দের। কাথার্থ—বিষয়বের গণিয়ারি-মূলের ছাল, শোণামূলের ছাল, পারুলমূলের ছাল, পালিধামূলের ছাল. গন্ধভাহলে, অধ্যন্ধা, বৃহতী, কণ্টকারী, বেড়েলা, গোরগারাকুলে, গোকুর ও পুননবা ইহানের প্রত্যেকের ১০ পল, জল ২৫৬ সের, (मध ७८ : मन । कहार्य- छन्मा, (मनमाक, জটামাংসী, শৈলজ, বচ, গ্রন্তচন্দন, তগর-পাছকা, কুড়, এলাইচ, শালপাণি, চাকুলে, মুগানী, মাষণী, রাধা, অর্থগ্রু, সৈন্ধব ও পুননবামূল ইহাদের প্রত্যেকের ২ পল। শতমূলীর ব্যাহত সের, গ্রাকিংবা ছাগ ছগ্ন ৬৪ সের। এই তেল পান, অভাঙ্গ ও বস্তিক্রিয়ায় প্রয়োগ করিবে। ইহা দারা পঙ্গুতা, অধ্যে-বাত, শিরোরোগ, নহাতত্ব, ২১তত্ব, ৮তরোগ, গলগ্ৰহ, একাঙ্গশোষ, সকম্পন গতি, ইন্দ্রিয়-দৌবলা, শুক্রণাদ, ব্যারতা, স্থাবনি প্রভৃতি রোগ স্বীলোকের গ্রগ্রহণ-ব্যাগত 151 নিবারণ হয়।

মধ্যমনারায়ণতৈলয়।

ভাষগন্ধং বলাং বিষয়ে পাউলাং বৃহ গ্ৰেষ্ট্ৰম।
থনংথাতিবলা নিশ্বং জোনাক্যা পুনন বাম্ ॥
প্ৰসাৱকামগ্ৰিম্পং কুব্যান্ধন্পলং পৃথন ।
চতুজোৰে জলে পঞ্জা পাদন্যেই বৃহহ মধ্যে ॥
তেলাচকেন সংযোজ্য শতাবনা ব্যাচকম।
প্ৰক্পলাকতে তে গোন্ধানীয় তেওঁজোঞ্চভুও পম্ ॥
পৃথক্ পলামতেঃ কন্দেজবাক্তেঃ পচেছিদন।
বচাচনান্ধ্যিলা-মাংস্কেলিব্ৰেভিঃ পচেছিদন।

আরগদাবলারামা-শতপুশেকদরেভিঃ।
পশীচতুষ্টরেনর তগরের প্রসাধ্যের ॥
তৎ তৈলং ভোজনেহভাজে পানে বক্তা চ যোজারং।
পকাথাতং হনুস্তস্তং মলাপ্তস্তং গলগুলমা।
গাত্রশোহেন্দ্রিরপ্রক গতিভঙ্গং কটিগর্ম।
গাত্রশোহেন্দ্রিরপ্রক দত্তরোগং শিরোগ্রন্ম।
আরব্ধিং কুরওক দত্তরোগং শিরোগ্রন্ম।
আরব্ধিং কুরওক দত্তরোগং শিরোগ্রন্ম।
আরাধিং কুরওক দত্তরোগং শিরোগ্রন্ম।
আরাধিং করবিধান্বা শুন্ হরের সক্রেপ্রান্
আরাধানে বিবিধান্বা শুন্ হরের সক্রেপ্রান্
আরাধানে বিবিধান্বা শুন্ হরের সক্রেপ্রতা।
যথা নারাধ্যা দেবে। এইলি হাবিনাশনঃ।
ভবেদং বাভ্রোগ্রাং নান্নং নিব্রুগর্ম।

তিল তল ১০৬ খোল সেল। কৰাৰ্থ---বচ, রক্তচন্দন, কুড়, এলভিচ, জটামাংসা, শৈলজ, সৈদ্ধৰ, অশ্বগণা, (<ছেনা-মূল, রামা, ভলফা, দেবলাক, মুগানী মাধাণী, শালপাণি, চাকুলে ও তথ্যসূত্ৰক, প্ৰত্যেক ৮ আট তোল। ক্রাস--ক্ষাক্তা, বেছেল, বিশ্বমূলের ছাল, পাক্রের চাল, কেন্ট্রী, কণ্ট-কারী, গোক্ষর, জোরফ্রাক্সে, নিম্ছাল, শোগাছাল, পুনন্ব, ঘ্ৰভাপ্তাৰ ও ঘণিয়াবি এই সকল দ্রবা প্রেটোক দশগুর অগ্রাই ৮০ আশী তোলা, ছয় মণ াব বেব জলে সিঞ্চ করিয়া এক মণ চাক্ত্র স্থাকিতে **নামাইবে।** এই কাথ এবং শৃত্যুলীর রুগ ১৬ সের, ছগ্ধ একমণ চ'ন্দ্রণ মেন। এই সমস্ত স্তব্য এবং কৰুদ্রবা সহ :৩% পাক করিবে। এই তৈল ভোগনে অভাগে পানে ও বিষ জিয়াতে প্রস্তুত হটলে প্রাপ্তি, হয়ুত্তম, মন্যাস্তম্ভ, গল্ডাই, কুজ্ম, ব্লিক্ডা, গাডিড্স, কটাগ্রহ, গারশোগ, ইন্দ্রিগরংস, জর, যক্ষা, অন্তর্বন্ধি, কবও, দন্তবোগ, শিরো-শ্ৰহ, পাৰ্শুল, প্ৰুত:, বুদিনংশ, প্রভৃতি এবং অভান্ত সক্ষাঞ্চগত নানা প্রকার বাতরোগ নষ্ট হয়। নারায়ণ খেমন দেখা-দিগের ধ্বাস কবেন, ত্রাপ এই তেল সর্বা প্রকাব বাতরোগ মই করে। অধিকত্ত এই তৈল প্রভাবে বন্ধা নার্নাগণও পুর্বতী হইয়া থাকে।

মহানারায়ণতৈলম্।

বিষাধ্যাকা বুচতী খদং হা গোনাকবাট্যালকপারিভদ্রম। ক্ষদা কঠিলাতিবলাগ্রিছং মুলানি চৈষাং সর্বাস্ভানাম ॥ मुल विषयांषय शांवेलानाः প্রস্তং সপানং বিধিনোদ্ধ, ত'নাম। **শ্রেটণরপামষ্টভিরেব পর্জ্যা** প্রার্থেয়ের ব্যেন তেন ॥ टिलाइकाचाः सभाभन् इध-भारतः निरुधाप्तथतानि जनाम । এব এ মহাগ্রিপচেৎ সুবৃদ্ধি-দ্ভি'হসংখৰ শতাৰ্বাণাম দ ১৮/বন ভারাং প্রবারের ভার त्राचीवशक्तां प्रिताकः हेम । 1 47532 (34149) 19 मिन परग्रभौतकनाश्वयक न देशालयकः हक्तमभूभवानि এনপ্রেষ্ট এলবার পার্যার ১৯ সেবর্গাপু বর্লা প্রাপ্ত स्थारपधदुम्धीवकरक वक्शाम् ॥ .५.१७, मगरख्कि अल्लाध्यारेन-त'रल' । सन्दर निश्चिमः निश्वस्य 本本 . 차'성' . 관심 원위되는 চণ মতালাং বিগলপ্ৰসাপ্ৰ। প্রবেক্তি কান্যবেশীয় দন্তাং প্রশাস্থ কৈবি কেন্তিছ। নারায়ণ্য নমে মধ্যে তৈলং সৰুপ্ৰক বৈবিধিবং প্ৰেজাম I এ'বের গু॰সাং প্রনার্জিতানা-মেক ক্ষেত্ৰ বা দিং তবেপৰাৰাম। যে গঙ্গৰ পীঠৰিম প্ৰিক বাধি নত্ৰক্ষণী ভিতাক ৷ ম্পাহতু স্তম্ব শিরোক ভার্তা মুক্ত ময়(স্থে বলবর্ণসূক্তাঃ। **मः**(मना ८७तः मश्म) ভ**तश्चि** ৰণ্যা চ নারা লভাতে চ পুরুষ্। वारताश्वर मर्क्स छर्गाश्रश्वर স্থাবসং আবিনয়াবিত্য। শাখাণিতে কোঠগতে চ বাতে বুদ্ধে বিধেয়ং প্রনান্তিতানাম । জিহ্ব'নিলে দন্তগতে চ শূলে উন্মাদকৌক্তাজনক্ষিতানাম্। প্রাধ্যেতি লক্ষ্মীং প্রমদাপ্রিয়বং वपूः अक्षर विकासक निटाम् ॥

তৈলোপদেবী জরয়াভিম্কো জীবেচিরকাপি ভদেদ গুবেব। দেবাস্বের গুদ্ধারে সমীক্ষা মায়ু স্থিভজানস্থারৈঃ স্বরংশ্চ। নারায়বেনাপি স্বরংহণার্থং স্বনাম ভিলং বিহিত্তক তেয়ায়।

কাথার্থ--বিৰ, অশ্বগন্ধা, গুংতী, গোক্ষুর, শোণা, বেড়েনা, পালিনা, কণ্টকারী, পুননবা, গোরক্ষচাকুলে, গণিধারি, গন্ধভাত্রলিয়া ও পাকল ইহাদেশ মূল প্রত্যেক /২॥। সের। পাকার্থ জল ৫১২ সের, শেষ ১২৮ সের। গব্য বা ছাগছগ্ধ ৩২ সের। শতমূলীব রস ৩২ সের। তিলতৈল ৩২ সের। করার্থ—রামা, অধ্যন্ধা, ভল্ফা, দেবদাক, কুড়, শালপাণি, **চাকুলে,** मुशानि, भाषानी, अञ्चक, नार्श्वत, रेमन्नवनवन, জ্ঞানাংসী, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, শৈল্জ, রক্ত-চন্দন, কুড়, এলাইচ, মঞ্জিষ্ঠা, তগরপাত্তকা, মুতা, তেজপত্র, ভুগরাজ, জীবক, ঋনভক, कारकाली, कांत्रकारकाली, श्रांत्र, तृष्त्रि, याना, महास्मिन, वाला, वह, शलानभून, छोटिना, খেতপুননবা ও চোরকাচকী, ইহাদের প্রত্যেকের পল। প্রার্থ-কর্পন, কুম্বন মুগনাভি মিলিভ ৩ পল। এই মহানারায়ণ তেল মূলোক বছবিধ বিকারের প্রাশৃষ্টি করিয়া থাকে।

মহানারায়ণতৈলম।

ভিলতৈ নং সমানায় চতুব ' চক্ সন্মিতম্।
পক্ষপল্লবভোষেন শোধায়ে দ্বামনাস্বলে ।
ভজাজং ছন্ধনথনা গৰাং তৈলদমং পচেৎ।
শতাবনীনসকাংশ তেলভূলাং পচেছিমক্।
দশমূলা বলা রামা শিল্নংপলপুননবাং।
শেকালিকা নাগবলা বলা চেব প্রসারণী।
অথগন্ধা সংচরো দভমূলং করপ্রকা।
গদিরং চন্দনং লোগং বচাসনপলাশক্ষ্য।
বকুলৈরগুবন্ধ শাল্যুগ্মকটন্তরাং।
শিল্পীক শিশ্পী বাসা হিংশ্রা জমুবিভীতকম্।
কাক্ষনারং কপিথক পারিজ্ঞাং প্রিয়ালকম্।
পারাণভেদং সম্পাকো ছন্ধিকা দাড়িমীকলম্।

উতুস্বঃ শাতনা চ কক্সকা মালতী ওচ্ম। মাগধীকলমূলক ধবকে লকুলপকম্ । আত্মগুপুর্ককাপাদ-ন'জং বৎদাদনী স্মুহী। কেতকীমূলগুত্ত বল ল'ঙ্গল'গদিভাওকম্। চিত্ৰকঞ্চ মহানিম্বং পঞ্চবন সমেৰ চ। मुखीरेकातीम्यली-१९मनानी विमलाकम् ॥ এষাং দশপলান ভাগান বারিণাইগুণে পচেৎ॥ পাদ্রশ্বেষং পরিস্থাব্য তার জেলং পুলঃ পচেই।। ছাগো মেষল্ট হরিব বণল্ট বছপুঞ্চকঃ। मनः ननाः निवा : ग्रांवा मिरदो नग्यक छन्नकः । ব**ক্তো বরাহ:** গড়গী চ মহিংমা :ঘাটৰ তথা। কপিবলংবিডালন্চ মুষকন্টোকদর্দি, বং ॥ বর্ত্তকন্তিত্তিরিল^{প্}বঃ খঞ্জবী*ট্*ন্চকোরকঃ। উল্কোনীলকণ্ঠশ্চ বনৰু এট এব চ॥ পু**ধ্রন্ট** গঞ্জা ইংসন্টফ্ত করে ওরোহণি চ। কপোতঃ সারসঃ জৌগো বল্ল, পারণব ইন্তথা। রোহিতো মদগুরশ্চাপি শিলীকু: শৃঙ্গক ওথা। ইল্লীশো গৰ্গবো বর্শ্মিরণ কাকঃ পিকোঃপি চ॥ মহামৎস্তঃ কচ্ছপশ্চ শিশুমারক সাক্ষিঃ। মকরো ঘণ্টিক কানস্তননাতে তু গোধিকা। যথালাভ্যমীয়াঞ্চ কাপং তিলসমং প্রেৎ। ব্লাস্থায়গুলামিধিদারুকু ১-প্রীচতুক্ষাগুরুকেশরাণি। मिक् श्रमारमी तक्रमीच्यक रेगरनयकर ठलनपूषतक ॥ এলা সম্প্রী তপর'কপারং ভূসোইবর্গস্ত বচা পলাশী। खोल्युक्तीतकाठातकाथार भक्ता दहर कड़ेक्लभग्र**कक ।** মুশালজাতীফলকে তক'গাং সনাগপুপ্পং সরলং মুরা চ। জীৰস্তিকোশীরবরাস্ত থেও তুরালভা বানরিকা **নগ**ন্চ 🛭 কৈবৰ্ত্তমূস্যাৰ্জ্জনতিক্তকণ বাভানগৰ্জনকতুসুৱাশ্চ। স্থাতকীগ্রন্থিকপর্পটাশ্চ পটোলহেমান্সগর্থিকাশ্চ। আয়ন্তিকালপুষণক্রবীজং এসাজনাভা তির্তারণা চ। স্ত্রাক্ষাকণাস্ত্রোণপুনন বাশ্চ াকীন্তা ক্রিমিছো হয়মার**কণ্ড**।

নীলোংপলং পদককারবাভাং
রস্তানলো গোলুরক: পুরক্ত।
ককোলকালোরকুত্বত্যপশং
তুরুককাশ্রীরকসিক্থকক ॥
লবক্তক পূর্বসালকাভকন্ত্রিকা বালকমন্তরক।
ককানমাধাং বিপচেৎ ফুবৈত্যঃ
পৃথক পৃথক কব্যুগোমিতানাম্॥
ভভে চ নক্তরমূহ ইলাগ্র
সন্তোম্য বিপ্রাংশ্চ ভিষম্বরাংশ্চ।
সংপ্র্যা নারায়ণনামধেনং
দেবং ত্রিনেত্রং জগ তামধাশম্॥
পাত্রে তু হেয়ঃ পল্ রাজতে বা
তামেন্স্থা নাহ্ময়েহপি রক্তেছ।

अ**ञ्चाक्षत्व**श्रक्षत्व नत्त्व निकार् ठ।वश्रश्रत्त । প'নে চৈতদ্যপাৰা!ধি প্ৰযুঞ্জীত চিকিৎসক: 1 বছৰাত কিমুক্তেৰ তৈলমেতৎ প্ৰয়েজিতম। অবশ্রং বাত্তান ব্যাধীনশীতিম্পি নাশয়েৎ 🛭 এত্ত ভাসতো জন্তে জার জাতু ন জায়তে। প্তি**তি** বল**য়ো** নৈব পলিতঞ্জ ন জায়তে ॥. নে**ত্রং তেজন্বি নি**তর**ং গরুড়ন্তে**ব জায়তে। নেক্তিলেভিন[ি]ব্ধিয়াং কর্ণনালো ন **জা**য়তে । পাণিকম্পঃ শিরঃকম্পঃ প্রলাপশ্চ ন জায়তে। বৃদ্ধিজংশোন জ'য়েত তত্মাৎ কৰাত প্টিব্যু। য়প। জলেন সিক্তস্য শাপিনঃ প্রবাদয়ঃ। বদ্ধান্ত ধ'তবস্তম্প হিনোখনেন নিতাশঃ॥ আমং গর্ভং ত্যজেজাতু স্থতিক কগ্যুতা চ্যা। যা চ হ্রপ্রসৰক্ষীণা তাভা গুড়ির হং প্রম। বন্ধা চ লভতে পুত্ৰং গৰ্ভপুৰে। ন জায়তে। ্যানিরোগাঃ প্রবান্ত প্রদর্শন প্রধামাতি 🛊 অম্মাৎ তৈলবরাদশ্তৎ কুত্রচিন্ন'ত্তি ভেষজম। বলাং বৃষ্যং বৃংহণঞ রসায়নমিদং মহৎ ॥ পুরা দেবাহরে যুদ্ধে দৈতৈয়র ভহত নু হুরান্। ভিন্ন'ৰ ভগ্ন'স্কান বিদ্যান পিচিচতান বাৰ্যাৰিতান ॥ ष्ट्री श्रिकां क्रिकानार नवानाकालनी क्रिम्। ৈতলং ন'রায়ণো দেবে। মহানারায়ণাভিধম 🛊

ভিলতৈল ৬৪ চৌষট্<mark>টী সের।</mark> মুচ্ছিত পঞ্চপন্নবের অর্থাৎ আম, জাম, কয়েৎবেল, ছোলঙ্গলের ও বেল এই পঞ্পপ্রকার বুক্ষের পত্তের কাথ ১৬ সের, তৈলের দোষ নিবারণ শন্ত একত্র পাক করিবে। কল্পার্থ-রালা, অশ্বপদ্ধা, भोति, दिनविनाक, कुछ, भानभागि, ठाकुटन, मुगानी, भाषांनी, अ खक, नारांचत, रमक्रव, कहा-মাংদী, হরিদ্রা, দাকুহরিদ্রা, শৈলজ, শ্বেত-চন্দন, পুদ্ধরমূল (অভাবে কুড়), এলাইচ, ষষ্টি-মধু, তগরপাহকা, মুতা, তেজপত্র, দাক্ষচিনি, यिक, वृष्कि, कारकानी, कौतकारकानी, कौतक, প্ৰৰভক, মেদা, মহামেদা, বচ, গন্ধপলানী, গেঁঠেলা, খেত পুনর্বা, চোরক, মুর্বা, দাক-हिनि, क्रेक्न, भग्नकार्छ, भागा मुनान, बाडी-ফল, কেয়ার মূল, নাগেশ্বর, সরলকার্চ, মুরা-मांत्री, कीवखी, (वंशांत्र मृत्त, जिक्ता, इतांत्रजा, আলকুণী-বীল, নথী, কেবর্ত্তমূতা, অর্জুনছাল, চিরতা, বাদাম, খেজুর, ধনে.

পিপুলমূল, কেতপাপ্ড়া, পটোল পত্ৰ, ফল মূল ও পত্র সহ ধুতূরা, জয়ন্তী, বলাডুমূর, লজ্জালু, ইন্দ্র্যব, রসাঞ্চন, বাব্লার ছাল, তেউড়ীমূল, মঞ্জিষ্ঠা, কিস্মিদ্, পিপুল, দ্রোণ পুষ্ণী, রক্ত পুনর্নবা, রেণুকা, বিড়ঙ্গ, করবীর म्न, नीटनार्भन, भग्रम्न, क्रस्कीता, कनात মল, চিতামূল, গোক্ষুব, কুলেখাড়া, কঙ্কোল, কালিয়াকাঠ, কুসুমফুল, শিলারস, ্মাম, লবন্ধ, কর্পুর, রুসালকাও (স্থগন্ধ দ্রব্যবিশেষ।), লতাকস্ত,রী, বালা ও ।অম্বর (शकाखरा दित्य), এই দ্ৰব্য প্রত্যেক ২ কর্ম অর্থাৎ চারি তোলা। ছাগছগ্ধ বা গ্রাহ্ম ও শতমূলীর রস তৈলের সমান। काथार्थ-नममूनी, त्वर्एना, त्रामा, नीला९भन, भूननवा, निमन्ता, आतकाकूल বেড়েলা, গদ্ধভাছলে, অশ্বসন্ধা, ঝাঁটি, উলুমূল. **ए**ड्रक् तक्ष, चिन्दकां हे, दक्क ठन्मन, त्नांध. वठ, অসনকাষ্ঠ, পলাশ, বকুল, ভেরেণ্ডামূল, বরুণ-ছাল, রক্তশাল, পীতশাল, কট্কী, শিরীষ-ছাল, গুড়কামাই, অপামার্গ, বাসক, বহেড়া, কাঞ্চনের ছাল, কয়েৎবেল, পালিধা পিয়াল, পাষাণভেদী, সোনাল. ত্রাপ্কলা, লোড়িম ফল, যজ্ঞডুমুর, চামরক্ষা, স্বত-কুমারী, মালভাফুল, দারুচান, পিপুল, পিপুল-মূল, য্ব, ওজবদর, কুল্পকলায়, আলকুনামূল, আকন্দ, কার্পাস বীজ, গুলঞ্চ, মনসাসেজ, কেতকীমূল, ধুতূরা, বেষলাঙ্গালয়া, পাকুড়-ছাল, চিতামূল, ঘোড়ানিম, পঞ্চবৰুল (আম, জাম, কয়েৎবেল, ছোলকলেবু ও বেলছাল), মুখ্বিরী, টেপারি, তালমূলী, গোয়ালে লতা এবং বিশলাকরণী, এই সকল দ্রব্য প্রত্যেক এক সের একপোয়া। মিলিত দ্রব্যের আটগুণ জল দিয়া সিদ্ধ করিবে, চতুর্থাংশ থাকিতে নামাইবে। ছাগ, মেৰ, হরিণ, এণ, বহুণুঙ্গক, শশক, সজারু, শৃগাল, গোসাপ, সিংহ, ব্যাঘ্র, ভন্নুক, বক্তবরাহ, গণ্ডার, মহিষ, ঘোটক, বানর, বক্র, বিড়াল, ইন্দুর, বৃহৎ ভেক, বর্ত্তক, তিন্তিরি, লাব, খঞ্জন, চকোর, পেঁচা, ময়ুর,

বস্তকুট, গৃধ, গরুড, হংস, চক্রবাক, কার-ওব, কপোত, সারস, ববং, বন্থ কপোত, রোহিত মংস্থা, মদ্পুর মংস্থা শিলিন্দা মংস্থা, শিঙ্গী, ইলিস, গাগোর ও বর্ণ্মি মংস্থা, কাক, পিক, মহামংস্থা, কচ্ছপ, শুশুক, সান্ধুচি, মকর, ঘটিকাকার (তদভাবে গোদিকা), ইহার মণ্যে বতগুলি সংগ্রহ হয়, তাহাদের মাংস একমণ চিলিশ সের, ছয়মণ সোল সের জলে সিদ্ধ করিয়া একমণ চিলিশ সের থাকিতে নামাইবে।

এই সমন্ত জব্য দারা যথাবিধানে পাক করিয়া শুভনক্ষত্র ও শুভলগ্ন বিশিষ্ট দিনে দেবাদির পূজা করিয়া স্বর্গ, রৌপ্য, তাম অথবা লৌহপাত্রে এই তেল রাখিবে।

বোগান্ত্ৰা (ব্যবচনাপূর্দ্ধক চিকিৎসক এই তল গান্ত্ৰমদনে, ৯৪ ন, ন গু, নির্মাহ, অবগাহনে ব পানে প্রাথাগ কারবে। এই তেল ধার: আন্তি প্রকার বাত্রোগ নিবারিত হংয়া থাকে।

সিদ্ধ। থকি তৈলম।

শতাবরীস্ত নিষ্পী দ্য রসং প্রস্থন্নয়ং হরেৎ। তিলতৈলং পচেৎ প্রস্থং ক্ষারং দ্বা চতুও শ্ম । गङ्गुल्या (प्रवहाक्र भारमा विकासकर वर्ता । চন্দ্রবং তগরং কুষ্ঠমেলা চাংশুমতা তথা ॥ রামা তুরগগকা চ সমঙ্গা শারিবাছঃম্। পুথাপুণী বচা চৈব তথা গৰাব্বহুম্ব 📲 🛭 নিক্ষুদ্ধবং সমং দন্তাদ বিশ্বভেষজনেব চ। এভিত্তিলং পচেদ্ধানান দ্বাদ্রকরসং সমস্ ॥ कुछ। क वीमना (य 6 श्रम् १ मि । व नवाः । মহাবাতেন যে ভগা অঙ্গদস্কৃচি হাক যে ॥ তেষাং হিত্তমিদং ট্রলং সন্ধিবাতে চ শ**স্ততে**। (यवार श्रवाणि ८५कावर गणियवाक विस्तता । ক্ষীণে <u>সিয়া নষ্ট গুলা জন্মা জর্জনীকৃতা:।</u> অমেধদক ব্ধিরান্তেধামপি পরং হিতম্। मःवामकर भिःतम्बन्धः योजनन्तः भूनार्शस्य । সিদ্ধার্থকমিতি খ্যাতং নরনারীহিতায় বৈ॥

্তলতৈল /৪ থের। শতমূলীর রস /৮ সের, হ্রা ১৬ সের, আদার রস /৪ সের। কথ্য— শুল্ফা, দেবদাক, জ্বটামাংসী, শৈলজ, বেড়েলা, রক্তচন্দন, তগরপাত্কা, কুড়, এলাইচ, শালপাণি, রালা, অখগন্ধা, বরাক্রান্তা, শ্রামাশতা, অনস্তমূল, চাকুলে, বচ, এরণ্ডমূল, সৈন্ধব লবণ ও শুঁঠ নিলিত /১ সের। এই তৈল মদিনে কুজ্ঞতা, পঙ্গুতা ও একাঙ্গশোষ প্রভৃতি নানাবিধ পীড়ার শাস্তি হয়।

হিমসাগরতৈলম্।

শতাবরীরসঞ্জে বিদার্য্যাঃ স্বরসে তথা। কুমাওকরসপ্রস্থে ধ'ব্যাকে স্বাদ তথা । শালালাঃ সরসপ্রতে তথা গোকুরকণ্ড **চ**। নারিকেলপয়ঃপ্রন্থে তিলতৈলন্ত প্রস্তঃ। कपलाः स्थानश्राय कोत्रश्रहकुरेसः। পাচয়েৎ কৰ্মানত্ত কক্ষং দত্তা বিচক্ষণ:॥ 5न्मनং তগরং বাপ্যং মঞ্জিষ্ঠা সরলাগুরু। भारती भूत्रभृष्ट्रात्वयः यदी मुद्र नशी वहा ॥ পুতিকা পাঁড়িকা পত্ৰং বু-দুন্ত্ৰ্লিকা তথা। বরী লোগ্রং তথা মুস্তং ছগেলাপত্রকেশরম ॥ লবক্ষং জাতিকে'বঞ্চ তথা মধুরিকা শঠা। **চন্দনং এ**ছিপর্ণক কপুরং লাভতঃ কিলেপ**ং** ॥ অক্ত তৈলক সিদ্ধক্ত শুণু বীধ্যমতঃ পরম্। উচ্চৈ: প্ৰপততো বায়োগজতো বাজিনস্তথা ॥ উট্টতো লোষ্ট্রপাতাচ্চ পঙ্গুনাং পীঠসণিণাম। একাঙ্গশেষিণাকৈব তথা সকাঙ্গশেষিণাম। কতানাং কীণগুক্রাণামত্যস্তক্ষ্যরোগিণাম। **হতুমস্তাহ**ভানাঞ্ছকলানাং তথৈৰ চ n শোবিণাং লম্বজিহ্বানাং তথা মিশ্মিনভাবিণাম । অভ্যন্তদাহযুক্তানাং কীণানাং বাভরোগিণাৰ ॥ এতৎ তৈলবরং শ্রেষ্ঠং বিষ্ণুনা পরিকার্তিতম। হিমসাগরমাধ্যাতং সক্ষরতবিকারতুৎ । যে বাতপ্ৰভবা রোগা যে ৮ পিত্রসমন্ত্রা:। শিরোমধ্যগতা বে চ শাধামান্রিতা বে স্থিত:। তে সর্বে প্রশমং যান্তি তৈলকাত প্রসাদত: 1

শতমূলী, ভূমিকুরাও, কুরাও, আমলকী, শিমুল মূল, সোকুর ও কদলামূল প্রত্যেকের রস ও নারিকেলের জল /৪ সের এবং কুয় ১৬ সের গ্রহণ কারবে। তিলতৈল /৪ সের। কবন্তব্য বথা— ক্রডকলন, ভগরপাত্নকা, কুড়,
মাঞ্জা, সরলকান্ত, অগুক, কটামংসী, মুবানাংসী, বালা, শেলজ, যষ্টিমধু, দেবলাক্ব, নথী,
বচ, খটালী, পিড়িংশাক-ফুল, ভেকপত্র,

কুন্দুকুথোটী, নালুকা শতমূলী মুতা, গুড়ুত্বকু, এলাইচ, তেজপত্ৰ, নাগেৰৱ, नवन, देवजी, स्मिति, भंदी, हन्तन, शिर्देशा छ এই তৈলে গন-কপূর প্রভোক ২ ভোলা। দ্রব্য সকল যথালাভ নিক্ষেপ করিবে। ইচা বায়রোগে অতি উৎক্রই তৈল। মৰ্দনে উচ্চস্থানাদি হইতে পতন জ্ঞা বেদনা, পঙ্গুতা, অঙ্গুলোষ, ওলেক্ষ্য, বিক্বতি, দৌর্মলা, লম্বজিহ্বতা, মিমিনভাষণ, গাত্ৰদাহ, শাৰ্ণাগতৰাতব্যাধি ও অভাভ নানা-বিধ বাতরোগ এবং বহুপ্রকার পৈত্তিকরোগ প্রশাসিত হয়।

বারুচ্ছায়াস্থরেন্দ্রতৈলম্।

বাট্যালকং পলশতং তৎসমং দশমূলকম্ ! জলবোড শিকে পক্তা পাদশেবং সমুদ্ধরেৎ । এতৎকাথে পচেৎ তৈলং দ্বাত্রিংশৎ পলমের চ। কৰাৰ্থং দীয়তে ভত্ৰ মঞ্জিছা বক্তচন্দ্ৰম্ 🛭 क्रेडमला (प्रविद्यात देशनकः देमकावः वर्षः । ককে'ল॰ পদ্মক'ঠঞ শুঙ্গী তগরপাদিকা । 👽 েচা মুক্তাপণী চ মাষপণী শতাবরী। নাগজিহা ভামলতা শৃংপুষ্পা পুনর্বা॥ এষাং তোলবয়ং ভাগং দ্ব। তেলস্ক পাচয়েং। এতৎ তেলবরং নামা বায়ুচ্ছায়াপুরেলকম্॥ সর্ববাতবিকারের হিভং পুংসাঞ্চ যোগিতাম্। कौन छक्रार्छवानाक नातोपाक विस्मव छः॥ রেতোবিকারং হস্ত্যান্ড বারুমাক্ষেপসন্তবম্। মুশ্ববা হং শ্রমকৃতং পাত্রকম্পাদিকং তথা। হিকং খানক কাদক বাঙ্পিভদম্ভবন। অপ্রারে মহোমাদে হিতং লেপে চ ভক্ষণে ৷ জ্ঞীমলাভ্ৰনাথেন রচিতং বিশ্বসম্পদে ॥ (क्रम-বে:ড)শকে তৈলাৎ যোড়শগুণে জলে ইতার্থ:।)

িলতৈল /৪ সের। কাথার্থ—বেড়েল ১২॥• সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের দণমূল ১২॥• সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১২ সের। কর্বার্থ—মঞ্জির, রক্তচন্দন, কুড়, এলার্চ দেবদারে, শেলজ, সেন্ধবলবণ, বচ, কাঁক্লা প্রকাঠ, কাঁক্ড,শ্রনা, তগরপাহ্বলা, গুলরা মুগানী, মাষাণী, শভ্রম্লী, অনস্তমূল, শ্রামালভা শ্রন্থা ও পুন্নবা ইহাদের প্রভাবেত ২ তোলা। ক্ষীণশুক্র পুরুষ ও ক্ষীণার্ত্তর ন্ত্রীগণের পক্ষে এই তৈল বিশেষ উপযোগী। ইহা ধারা শুক্রবিকার, মর্ম্মবাত, হিন্ধা, খাদ, অপস্মার, উন্মাদ এবং আক্ষেপ ও গাত্র-কম্পাদি নানা প্রকার বাতরোগ প্রশানিত হয়

ব্ৰহচ্ছতপুষ্পাদিতৈলম্।

ষিভাগি শতপুপাসা বচালৈকবংশ শুধা।
ভাগৈকং চিত্রককৈন পিপ্পনামূলনেব চ ॥
কাব্যুলং দেবদার রাজাং মধুককু ঠকম্।
প্রসারণাতিব্ মাংসী চ ভলাভং করিপিপ্পলী॥
এবাং ককং সমাদার পচেৎ তৈলং ভিষধরঃ।
জলং চতুন্ত গং দ্বা বাতরোগনিবঙ্গম্॥
অসাধো বাভ্যুলে চ তথা চার্কালভেদকে।
অভাক্তবিধিনা সত্যো লাশ্যুতি গুবম॥

তিলতৈল /৪ সের। কঙার্থ—শুল্ফা ২ ভাগ, বচ ছই ভাগ, দেরব লবণ ২ ভাগ, বজচিতামূল, পিপুল্মূল, এরগুমূল, দেবদাক, রামা, ষষ্টিমধু, কুড, গন্ধভাহলের মূল, জটামাংসী, শোদিত ভেলার বীজ ও গজপিপ্ললী প্রত্যেক ১ ভাগ (এই সমন্ত কল্পব্যের মোট পরিমাণ /১ সের)। পাকাগ জল ১৬ সের।
ব্যানিস্থান পাক করিবে। এই তৈলের অভ্যক্ষ ও বজিপ্রয়োগ ছারা অববাহক, বাহুদোষ ও পক্ষাণাত বিনষ্ট হয়।

বলা-তৈলম।

বল মূলক্যায়স্য দশমূল কৈ তথা চ।

যবকোলকুলখা নাং কাশস্য প্রস্তখা ॥

থঠাবছোঁ কভা ভাগা তৈলাদেক স্থানকভা ।
প্রেলাবাপা মধুরং গণং দৈনলসংস্তম্ ॥

তথাগুরু সজ্পানং সর্পং দেনলাক্ষ চ।

মঞ্জিতাং চন্দনং কুঠনেলাং কালাক্ষানিবাম ॥

মাংসাং শৈলেরকং পতং তগরং শারিবাং বচাম ।

শতাব্রীমন্বগলাং শতপুপাং পুনর্বাম্ ॥

তথ সাধু সিকং সৌবর্গে রাজতে মুমায়েহপি বা।

অক্ষিপা কলেন সমর্কে কুনিগুপ্তং নিগাপরেও ॥

যলাতৈল্মিদং নামা সর্ববাত্রিকারক্ষং ।

যথাবলং ভিষ্মাত্রাং স্তিকারৈ প্রদাপ্রেও ॥

যা চ গভাধিনী নারী কাণগুক্তকত বং পুমান্।
ক্ষীণনাতে মর্শ্বহত্তহ্তিহতে মণিতেহ্ণবা ॥

ভার শ্রমাভিপরে চ সকলেবোপযোজরে ।
এতদক্ষেপকাদীংক বাতরা ধান্ ব্যপোহতি ।
হিকাং কাসমধ্যমন্থ গুলাং শ্বাসং স্কৃত্তরম্।
ব্যানামুশ্যুগ্রে চনস্তু দ্বমপোহতি ।
প্রভারধণতুঃ পুরুবো ভবেচ্চ ত্তির্যোবনঃ।
এতদ্ধি রাজ্ঞা কর্ত্তবাং রাজ্যাত্ত্রাক্ত যে নরাঃ।
স্থানঃ স্কুমারাক্ত ধনিনক্তৈব যে নরাঃ ।
স্থানঃ স্কুমারাক্ত ধনিনক্তিব ব্যক্তাভ্যিতিবা

স্থানঃ স্কুমারাক্ত ধনিনক্তিব ব্যক্তাভ্যিতিবা

স্থানা

(**অ**'বাপ্য মধুবং গণসিতি কাকোলাদিগণং ককী-কুত্যেতি শিবদাসঃ)।

তিলতৈল /৪ সের, বেড়েলা-মূলের কাথ

থ সের, মিলিত দশমূলের কাথ ৩২ সের,

যব, কুলগুঁঠ ও কুলথ কলায়ের কাথ মিলিত

থ সের, ছম্ম ৩২ সের। কলার্থ—কাকোল্যাদি গণোক্ত ওবাসমূহ, সৈন্ধব, অশুরু,
শেতপুনা, সৰলকার্ত্ত, লেবদারু, ম্লিক্তা, রক্তচলন, কুড়, এলাইচ, তগরপাছ্কা, জটামাংসী,
শৈলজ, তেজপত্র, পিওতগর-মূল, শ্রামানতা,
বচ, শতমূলী, অশ্বসনা, শুল্ফা ও পুনর্বা
মিলিত /১ সের। যথাবিধি পাক করিয়া এই
তৈল বাতাতপ-রহিত স্থানে স্বর্গ, রক্ত বা
মৃংকলসে রাথিয়া দিবে। এই তৈল মদিন
করিলে সকল প্রকার বাতব্যাধি বিশেষতঃ
স্থিকা গোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

পুষ্পারাজপ্রসারণীতৈ**লম্**।

প্রদারণীপ্রশতং মূলকৈবাধ্যক্ষরণ । পঞ্চানৰ প্ৰসামনত্ত জনজোলে বিপাচয়েৰ ॥ পাদ্ৰেশ্য হরেৎ কাথং কাথাংশং তিলতৈলকম। ,তান,চচতুও বং কীরং গ্রাং বাম হৈয়ং এপা॥ পু ওর'করসন্তত্র শতাবকা; রসন্তথা ; তৈলসমঃ প্রদাংবাং পাচয়েন্ম ছব্ছিনা । শতপুষ্পা কণা ালা কুঠক কণ্টকারিকা। *ॐ। यष्टी (भनम अग्नालभगो १ नर्ने । । মঞ্জিষ্ঠ। পত্রকং রাজা বচা পুঞ্চরগুলকম্। रभानी एडिकर भारमी निष्ठ औं ह उभा नतां॥ বহিংগোক্তৰক ফেব মুণালং বছপুত্ৰিকা। প্ৰতিকৰ্মিদং যেভোং সৰ্ব্যেকত পাচয়েং॥ .৩লবেষং সমু**ভ**়ত। পুস্বরাজপ্রসারণীন্। অভাবে যোজায়েৎ পানে নতাকগ্মনি মর্কানা ॥ ভগানাং গঞ্জপাস্কাং শিরোরোগে হতুগ্রহে। সমতান্ বাতগান্ রোপাংভূ গং নাশয়তি *গ্*ৰম্ _ট তিলতৈল /৪ সের। কাথার্থ—গন্ধভাহলে
১০০ পল, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের;
অশ্বগন্ধা:মূল ৫০ পল, জল ৬৪ সের, শেষ
১৬ সের; গব্য বা মাহিষ হ্রা ১৬ সের, পদ্ম ও
শতমূলী প্রত্যেকের রস /৪ সের। কর্বার্থ—
ভল্ফা, পিপুল, এলাইচ, কুড়, কণ্টকারী,
ভাঁঠ, যৃষ্টিমধু, দেবদারু, শালপাণি, পুনর্নবা,
মঞ্জিটা, তেজপত্র, রামা, বচ, পুদ্ধরমূল, যমানী,
গন্ধভূল, জাটামাংসী, নিসিন্দা, বেড়েলা,
চিতামূল, গোক্ষ্র, মূণাল ও শতমূলী প্রত্যেক
২ তোলা। এই তৈল মর্দনে সকল প্রকার
বার্রোগ নপ্ত হয়।

ত্রিশতাপ্রসারণীতৈলম্।

সমূলপ্রশাপাক জাত্যারাং প্রযার্থাম্। কুট্রিছা পলশতং দশমূলশতং তথা। **অবগন্ধাপ**লশতং কটাহে সমধিক্ষিপেৎ। বারিদ্রোণে পুথক কুতা পাদশেষেহবড'রিভ্র 👍 ক্ষায়দমম ত্রিক্ত তৈলমত প্রদাপয়েৎ। দুখ্তথাঢ়কং দ্বা দিওপঞ্চারকাঞ্জিকাৎ। চতুগু ণেন প্রদা জীবনীয়েঃ পলেবিটিতঃ। **শৃঙ্গরেপলান্ পঞ্জিংশদ্**ভলাতকানি চ॥ বে পলে পিপ্লামূলাচ্চিত্রকাচ্চ পলম্বয়ম। यवक्त्रभाव (प्र ठ रेमक्त्रमा भवस्यम् ॥ मोवर्फनभान (द b मिक्किक्षे १३ : भानवरम् । প্রসার্থাপলে দে চ মধক্স্য পলহয়ম ॥ স্কাণ্যভূপি সংগ্ৰহা শ্ৰৈমুদ্ধিনা প্ৰেৎ। এতদভাপ্তনে শ্রেষ্ঠং বস্তিকশ্মনিনাংগে। পানে নদো চ দাতবাং ন কচিৎ প্রতিহ্নাতে। **অশীতিং** বাতজান্ রোগাংশ্চয়'রিংশচ্চ পৈথিক'ন্॥ বিংশতিং লৈখিকাংশ্চৈব সর্ব্বানেতান ব্যপোহতি। গ্রদীমস্থিতঞ্জ মন্দাগ্রিত্মরোচক্ষ্ ॥ অপস্মারং তথোদ্মাদং বিভ্রমং মন্দর্গামিতাম। ত্বগ্রহাক্তিপি যে বাতাঃ শিরঃসন্ধিগভাক যে। জাতুসন্ধিগতালৈচব পাদপৃষ্ঠগতাল যে। অখোবা বাতসংভগো গজোবাযদি বানরঃ॥ প্রসারয়তি বস্মাৎ তু তত্মাদেষা প্রসারণী। रेजियानाक कानी तुकानाक अर्यनी । এতেনান্ধকবৃষ্ণী। মাং কৃতং পুংসবনং নহৎ। -প্রসারণীতৈলমিদং বলবর্ণ গ্রিবর্দ্ধনম্ ॥

অপদরতি জরাং পলিতং শোষরতি ক্লাম্ৎপাদরতি তারশ্যম্। পক্ষাঘাতসর্বাক্ষ্তং বাতগুল্মক নাশরতি। এতত্বপুজামানঃ প্রসন্নবর্ণেস্তিরো ভবতি॥

তিলতৈল ১৬ সের। কাথার্থ—মূল-পত্র ও শাথা সহিত সারবিশিষ্ট গন্ধভাত্নিয়া ১০০ পল, পাকার্থ জল ৬৪।সের, শেষ ১৬ সের; দশমূল ১০০ পল, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের; আর্থারা ১০০ পল জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের, দধির মাত ১৬ সের; অম কাঁজি ৩২ সের; হ্রশ্ব ৬৪ সের; কল্বার্থ—জীবনীয়গণ প্রত্যেক ১ পল, আদা ৫ পল, ভেলার মূটী ৩০টা, পিপুলম্ল ২ পল, চিতামূল ২ পল, ববক্ষার ২ পল, रिमक्रव २ পল, महल्लवन २ পल, मिक्की ২ পল গন্ধভাত লিয়া ২ পল, যষ্টিমধু ২ পল। যথাবিদি পাক করিয়া এই তেল অভ্যঙ্গ, বাস্তকন্ম, নিরুষ, পান ও নস্তার্থ প্রযোজ্য। ইহা ষ্যবহারে নানাবিধ বাতিক, শ্লৈষ্মক ও পৈত্তিক পীড়া, গুধ্দী, আন্থভঙ্গ, আগ্নমান্দ্য ও অগ্রাগ্ নানা প্রকার পীড়ার শাস্তি হয়।

সপ্তশতিকপ্রসারণী-তৈলম ।

সমূলপত্র মুৎপাট্য শর্ৎকালে প্রসারগ্রিম। শতং প্রাঞ্ সহচর।চছ চাবগা। শতং তথা।। বলাস্বপ্তাৰ্গন্ধা-কেত্ৰীনাং শতং শতম। পচেচ্চতু ও গৈ ভোৱে জবৈত্তৈলাচুকং ভিষক 🛭 মন্ত্রমাংসরসং চুক্রং পর-চাচকমাচকম্। দধাক্তিসমাযুক্তং পাচয়েন ছুনাগ্নিনা ॥ স্রব্যাণাস্থ প্রদাত্র্যা মাত্রা **চার্মপ**লাংশিকা। তগরং মদনং কুঠং কেশরং মৃস্তকং হৃচমু॥ রাক্ষা দৈন্ধবপিপ্লল্যে মংশীমঞ্জিষ্ঠয় ইকাং। তথা মেদা মহামেদা জীবকর্মভকৌ পুন:॥ শঙপুষ্পা ব্যায়নখং শুষ্ঠীদেবাহ্নমেব চ। কাকোলী ক্ষীরকাকোলী বচা ভন্নতিকং তথা।। পেষ্ট্রিয়া সমানেতান্ সাধনীয়া প্রসারণী। न! जिलकर न शैनक मिक्कः পूजर निवालस्त्र ॥ ৰত্ৰ যত্ৰ প্ৰদাতব্যা তৰে নিগদত: শুগু। পুজাৰামথ পকুৰাং বামৰাৰাং তথৈব চ॥ যদা শুষাতি চৈকাঙ্গং য়ে চ ভগান্তিসক্ষয়। বাতশোণিভত্নসানং বাতোপহতচেতদাম্॥

স্ত্রীমন্তক্ষণিগুক্রাণাং বাজীকরণমূত্তমমূ। বজ্ঞী পানে তথাজ্যক্ষে নস্তে চৈব প্রবোজরেং। প্রযুক্তং:শময়ত্যান্ত বাতজান্ বিবিধান্ গদান্॥

তিলতৈল ১৬ সের। কাথার্থ মূল ও পত্র সহিত গন্ধভাত্তলিয়া ১২॥০ সের (শরৎকালে উদ্ধৃত)। ঝাঁটিমুল ১২॥০ সের, ১২॥০ সের, বেড়েলা ১২॥০ সের, আলকুর্নী-মূল ১২॥০ সের, অশ্বপদ্ধা ১২॥০ সের, কেয়ার মুল ১২॥০ দের, ইহাদের প্রত্যেককে ৪ গুণ জলে পাক করিয়া পৃথক পৃথক্ কাথ প্রস্তুত করিবে। দ্ধির মাত ১৬ সের, ছাগমাংসের কাথ ১৬ সের, চুক্র (গ্রহণীরোগোক্ত) ১৬ সের, ছগ্ধ ১৬ সের, দধি ১৬ সের। করার্থ-তগরপাত্কা, মদনফল, কুড়, নাগেশ্বর, মূতা, গুড়ত্বক্, রাস্না, দৈন্ধব, পিপুল, জটামাংদী, মঞ্জিন্তা, যষ্টিমধু, মেদা, মহামেদা, জীবক, ঋষ-ভক, শুল্ফা, নথা, শুঠ, দেবদাক, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, বচ ও ভেলার মূটা প্রত্যেক ৪ তোলা। এই তৈল যাহাতে গ্রপাক বা হীন-পাক না হয়, তবিষয়ে চেষ্টিত থাকিবে। ব্যবহারে কুজ্ঞ চা, পঙ্গুড়া, বামনভা, অঙ্গশোষ, সন্ধিবাত ও রক্তবাত প্রভৃতি নষ্ট ২য়। রিক্ত স্ত্রীসঙ্গম বা মগুপানে বাহাদের শুক্র ক্ষীণ হইয়াছে, তাহাদের পক্ষে এই তৈল উৎকৃষ্ট বাজীকরণ।

একাদশশতিকমহাপ্রদারণীতৈলম্।

শাথামূলদলৈ: প্রদারণিজুলান্তিক্য কুরন্ট ও তুলে চিন্দ্রমান্ত তুলে তুলে রুপুকতো রামানিরীয়াও তুলামু। দেবাহ্যাচ্চ সক্তেকান্ গটশতে নিঃকাথ্য কুস্তাংশিকে তোয়ে তৈলঘটং তুরাপুকলসৌ দম্বাচকং মন্ত্রনা। শুক্তাচ্ছাগরসাদথেক্রসতঃ ক্ষীরাচ্চ দ্বাচকং প্রাক্রিটারীরকান্তবিক্সা-কালোনিকাকজুরাঃ। স্টেল্লাখনসারক্লুসরলা-কালারমাংসীনগৈঃ কালীয়োওপলপ্রকাধ্যমিনিশা-ক্ষোলক্রাহিকে।। চাল্পেরাজ্যচোচপুগক্টুলা-জাতীফলাভীক্ষভিঃ শ্রীবাসামরদাক্ষতন্দনবচা-শৈলেয়সিক্তুবৈঃ। তৈলাস্থোদকউন্তরাভিত্ব নলিকা-বুল্টারকচেচারকৈঃ ক্ষুবান্দ্রম্বাক্তকনত-ধ্যোব্যধাশাস্থ্তিঃ। কৌস্তীতাক প্রশাসকল ক্ষানাল ভাষা করিব করিব কর্মান ক্রান্ম কর্মান কর্মান ক্রান্ম কর্মান ক্রান্ম ক্রান

তিলতৈল ৬৪ সের। কাথার্থ—শাখা মূল ও পত্র সহিত গন্ধভাত্নিয়া ৩০০ পল, পীত-নাঁটা ২০০ পল, গুলঞ্চ ২০০ পল, এরগুমুল ২০০ পল, রাসা ও শিরীয় মিলিত ১০০ পল, দেবদাক ও কেয়ার মূল মিলিত ১০০ পল, পাকার্যজল ৬৪০০ দের, শেষ ১২৮ দের। কাজি ১২৮ সের, দধির মাত ১৬ সের, শুক্ত ১৬ সের, ছাগমাংসের কাথ ১৬ সের, (ছাগ-মাংস ৬৪ পল, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের), ইশুরস ১৬ সের, ছগ্ধ ১৬ সের। কল্বাথ— পিড়িংশাক, কাক্ডাশুশ্বী, জীবনীয় দশক বা অষ্টবর্গ, মঞ্জিষ্ঠা, কাকোলী, আলকুণী- মূল, ছোট এলাইচ, কপূর, কুলুরুখোর্টা, সরলকাষ্ঠ, কুঙ্কুম, জটামাংশী, नशी, অগুরু, स्ट्रॉन, হরিদ্রা, কাক্সা, গেটেলা, নাগেশ্বর টাপার কলি), উশার, স্থারি. গুড় হক, লতাকস্ত,রী, জায়ফল, শতমূলী, নবনীত-খেটা, দেবদাক, খেতচন্দন, বচ, শৈলেয়, रमक्षय नथन, निनातम, भूजा, शक्कांश्रानत भून (বা বিছুটীর মূল), নালুকা, খেতপুনন্বা, গৰূণসী, মৃগনাভি, দশমুল, কেয়ার তগরপাত্নকা, গন্ধতুণ, অর্থগন্ধা, বালা, রেণুক, রসাঞ্জন, শরকী, মদনফল, অপ্তক্, প্রিয়ঙ্গু, শুলফা, কুড়, ভেশার মূটা, ত্রিফলা, কেশর, প্রামানতা, লবন্ধ ও ত্রিকটু ইহাদের প্রত্যেকর ৩ পল। এই তৈল পান. অভাঙ্গ, বস্তি ও নস্তার্থে প্রযোজ্য। ইহা ব্যবহার করিলে সর্বাঙ্গগত, অর্জাঙ্গগত, অব্যবগত ও সন্ধিমজ্জা- শ্রেত বাত, নানাবিধ পোত্তক ও শ্লেম্মক রোগ নই ইইএ দেকের বল বীর্যা প্রভৃতি বুদ্ধ ইইয়া থাকে। (এই তৈলের জ্ঞা কাণপাক করিবার সময় কাথান্তব্য ও জল বিবেচনা মত যথেচ্ছ ভাগ করিয়া লইতে হয়.)।

অফাদ-শতিক-এসারণাতেলণ্।

मयुज्ञप्रविभागोशीः श्रामात्रभावि ५ ० उत्सम् ।

শতমেকং শতাব্যা। এবগুনাশতং ওথা।। কেতকীনাং শতকৈকং দশমলাচ্ছতং শতন্। শতং বাটালেকস্তাপি শতং সহচরস্তা চা অলফোণশতং দ্বা শত ভাগাবশ্বেত্ন। ভতত্তেন ক্ষায়েণ ক্ষায়দ্বিভাগন চা। স্থাক্তেনারণালেন দ্বিম্প্রাচকেন চ। কীরশুক্তেকুনিয়ান-সংগ্রেগদেরস[া] কে: 🛊 হৈলছোপং সমাযুক্তং দতে পাতে নিবাপাৰে । জ্বাণি যামি পেলাণি তামি ব্যাসাতঃ পর্যা खतादकरानदर इंडो (१८)मा विश्वकर भौते । বচা প্রকা প্রসারণ্যাঃ বিধান্যা চুক্ত্রের চ 🛊 দেবদ্যক শত'ক্ষা চ ওজোলা ১৪বালকর । কুকুমং মদমঞ্জিঠা ত্রুদং ন্থক: গুল : कश्रक्तक्षित्। वादभवान्तिना ককে।লং মলিকা মুস্তং কাং হোৎগলগুৱকণ্ ॥ শ্রমিংরেণ্ডিব্যোহ-জ্বান্থি স্থান একস 🗓 ত্রিফলা কছের,ভারত বা পালকশান্ত্র खिद्रकृशीत्रमात्र छ।तक छार शुनराता । দশমূল্যপাঞ্চা চ লাগপুৰুৰ রস্থিন্ন ৷ किर्देश इंटिश्वानार क्लानि रहको उप. १ ভাগাংখিবলিকান দ্বা শ্ৰেম দাট্ৰা পচেই 🛊 निष्टोर्भ सन्हर्भ भारत भारतमा जुलानाबनी । প্রয়োগলমন্ত্রবিধক। এ রোগান্ত নাং বিবাসতে ॥ অস্ত্রসাপতং হতি পানাং কেষ্টিগতং তথা। ভোলনাৎ কুজনালভান বভাদিরসভং ভগা। প্রকাশ্যপতে বিভান হয় সাববগারিক। এওদ্ধি বছবাধান্য কিলোরাণাং ঘণামুত্র ॥ এ হদেব মন্ত্ৰ্যাণাং ৮ গ্ৰাণাং থবানাল। অনেনৈৰ চ তৈবেন ভ্ৰামাণা মহাজ্যাঃ । দিক্ত*: পুনঃ প্ররোহতি ভবতি ফলশালিন:। **বুন্ধোহপ্যনেন** তৈলেন পুনশ্চ ভরণারতে॥ ন প্রস্তুতে চ যা নারী সাপি পারা এইয়তে। অপ্রভাঃ পুরুষো মন্ত্র সোহপি পীয়া লভেৎ প্রতম ॥ অণাতিং ৰাজ্ঞান লোগান পেডিকান শ্লৈষ্মিকানপি। मिक्कि टम्मूबार्क नानस्तर किञ्रस्म है॥

এতেনাধ্বকবৃষ্টানাং কৃতং পুণসবনং মহৎ। কুমা বিদ্যোগলিকাপি তৈলমেতৎ প্রযোগ্ধের ।

তিলতৈল ৬৪ সের। কাপার্থ—মূল পত ও শাধার সহিত গ্রভাগুলে ৩০০ পল, শত-ম্লী :১০০ পেল, অশ্বসন্ধা ১০০ পল, কেয়ার মূল ১০০ পল, দশম্পের প্রত্যেকর ১০০ পল, বেড়েলা ১০০ পঃ, ক্টিমল ১০০ পল, পাকার্থ জল ৬৪০০ পের, শেষ ৬৭ সের। কাজি ১২৮ নের, মাধর মাত ১৬ নের, ছগ্ন ১৬ সের, ভক্ত ১৬ সেব, ইক্ষুব্য ১৬ সেব, ছাগ্রাং**সের** কাথ ১৬ সেব, (মৃত্যু 👉 সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের 🕒 কলার্থ—ভেমার ভগ্ৰপাদিকা, ভাঠ, প্ৰিপ্তাই, চিতামূল, বচ, পিড়িংশাক গণাভাগুলের মূল, পি**পুলমূল,** দেববার, ভাষা ভোট এলাইচ, গুড়বক, বালা, ক্ষুণ, ম প্রস্তা কন্তারী, বিধারস্তা, নগী, অওক, কপুর, কুল প্রান্ত্রী, হারপা, লবক, शक्षड्य. दछक्यम, स्वित्रं, सोतुको, কুষ্ণাভক, স্থান, তেলপান, প্রাণটা, রেপুক, বৈলের, সর্বাহ্রোটা, কেহকী, (মিলিড), আলকুশিব মূল, শতমূলা, সরল-কাত, প্রকেশ , জিন্তু, উপার, জটামাংসী, জীবনীয়গণ (মিলিড), পুনন্বা, (মিলিড), অধ্যয়া, নাগেধা, র্মাঞ্জন, লভাকস্থানী, তায়ন্ত্ৰ, সুপারি, শল্লকী ও গন্ধরস ইহাদের প্রত্যেকর ও প্রতা এই তৈল ছয় প্রকাবে প্রধান্তা। নদ্ধনে ২গুগত, পানে কেপ্রিগত, ভেডিনে (ভোজা দবোর সহিত মিশ্রিত করিয়া) স্প্রনাড়ীস্থ, নপ্তে উর্দ্ধ-সোহোগত, ব্যিকিলার প্রাশয়স্থ ও নিরহ-ক্রিয়ায় সর্বে দেহও বাতরোগ নষ্ট হয়। ইহা হস্তা, অশ্ব ও মহুণ্য সকলের পঞ্চেই উপযোগী। শুক বুকে এট তেল সেচন কাংলে ভাষাও পুনর্জীবিত ও কলশালী ইইয়া উঠে। রুদ্ধ বাজি এই তৈল ব্যবহার কনিলে মুবার স্থায় বল-বীৰ্য্যশালী হয় এবং নিঃপত্য নরনারী পুত লাভ করে। হহা ধারা নানা প্রকার বাত-

ব্যাধি, পোত্তিক বোগ ও লোমকপাড়া প্রশানিত হটয় থাকে।

মহারজেপ্রসারশীতৈলম ।

শতকরে প্রদারবার দে চ পীত্রহারে। व्यवगरेकाद्र अनला-न वां ता का श्रम्भनिताः॥ কেতকী দশগুৰত পুথক ওবু পারিভয়ত। প্রত্যেকমেষাম্ভ তুলা তুলাদ্ধং কিলিমাং তথা। তুলাদ্ধি ভাছিত্রারাফ লাকায়। পর্বাংশতিঃ। পলানি লোপ্রাচ্চ তথা সাসমেকত সাধ্যেই । জলপঞ্চকশতে সপালে ভত্ৰ পেৰ ছং ৷ **জোণদ্বয়ং** কাঞ্জিক**ন্তা** স্মৃতিংশ চা'চকে আি তথ্।। कौतमञ्जाः पुर्वत श्रष्ठ'न् प्रय सञ्चारकः उथा । ইকেন রস্ভাবী চৌচছাগ্যাংসভুলবেয়ে। জলপঞ্চহারিংশৎ প্রসান পক্ষে ত কেন্দ্রেই। **সপ্তদশ** রসপ্রস্থান্ মঞ্জিলাকাপ এব 5 ॥ কুড়বে'ন'ঢ়কোঝানো জলৈবেভিন্স স্থিয়েৎ। **সুশুদ্ধ**তিকতৈ লক্ষে ছে'শং প্রতেশ সংযুত্_{য ম} काञ्चिकर भागरता (भाषर खालना व विभीयरण। আত্ম এভিন্দরি: থেক কলে। ভরণ্ডকং কণা 🛭 লাগরং মরিটেক্তর প্রত্যেকং ষ্ট্রপলোলিত্য। (ভল্লাতকাসহকে কু রক্তা পদন্দিষাটি।) প্ৰাক্ষধাত্ৰ্য, স্বলং শুগুৰুৱা কৰ্বটো বুলা॥ চৌরপুপ্পী পরিনৃত্য-ম্বরং পার্থে সে'ংগলন্। भिक्षतीबृत्य को। शंद (जो धूनन ते। व দশমূলং সমুলিতা চাত্রোবসাংখনম্। গৰাত্ৰৰ হাৰতা চলব্ৰাহো হব লাগ वद्यार विश्वानोक्त-होताला, हो को विश्वास्तान। দেবপুষ্পা বে'লপত্র শতকবিসংগ্রের প্রিয়ঙ্গীরন্ধু । মাংদী দ রং বলচেলন্। শ্রীবাসো নলিকা থে'নি, কলৈ, না মুন্দুকমুরা ▮ নগাত্র্য়ণ হন্পত্রা প্ররা প্রতিপ্রক্ষ । महनः (इंशूका शृका भक्षतः भन्दह्म । প্রত্যেকং গন্ধতোমেন দ্বিতীয় গাক হয়তে॥ গন্ধোরকন্ত সুক্পত্রা পত্রকোশীরস্ত্তক্ষ। প্রত্যেকং সবলংমূনং পলানি প্রক্রিংশতিঃ। কুষ্ঠান্ধভাগোহ এ এল- প্রস্থাপ্ত প্রধানংশ ১ঃ । অন্ধার্ণ ষ্ট : কন্তব্যা: পাকে গদ্ধ ধুকথাণি। গন্ধ স্থু নান(ধুভাগং ভূড)য়ঃ পাক ২মতে॥ ক্ষোহত্র কেশরং কুঞ্জং ক্ষ্ কালোফকুকুমন্। ভদ্রাত্রয়ং আ স্থাপ্র লতাকস্তরিকা তথা ॥ लवकाश्चरकाका व कार्टिक विषय नि ह। এলা লবঙ্গচছল। চ প্রত্যেকং ক্রিপলে। বিতম্।। कल्र्यः बहुभना ह्याद भनः मार्कि गृञ्ह । विधनार्थः भूनकञ्च-भागे (मास) उत्थानिक हो ॥

মহাপ্রসারণী দেয়ং রাজভোগ্যা প্রকীর্ত্তির।
গুণানু প্রসারণীনাপ্ত বহুতোবা নয়োত্ত্বান্ ॥
"কাঞ্জিকং মানতো লোগং গুক্তেনাদ্র বিধায়তে।"
"জার গুক্তাবিদ্যান্তি-প্রতঃ প্রকাসবাক্ষিত্র। ॥
কাঞ্জিকং বৃড্গৌ দলে। গুড্পপ্রেগরমূলকাং।
পলান্তাইী শোধিতাদি পলান্তিবিকং তথা॥
কণানীবকনিয়া,গা-হনিছামনিকং তথা॥
কিপানা ভাবিতে ভাওে গুডেনান্তনিমং হিত্য।
দিন্ধং ভবতি প্রত্নাধ্যনিয়া গুন্তে॥
তদা দেয়া দেয়ুগা তিং গুণক্ কর্বন্যান্ত্রান্ ॥"
প্রস্থানা গুল্গে তথা গুণক্ ক্রান্ত্রান্ত্রান্

্ষ্ঠ ক্ষিক্ত ক্ষুক্ত ক্ষুক্ত ক্ষুক্ত নি তথাৰি কাহিকিল কাষ্ট্ৰিক বিশ্বকাৰ বিশ্বকাৰ

চন্দ্ৰাস্থাধনবিধিবোল ক্ষিত বেই চন্দ্ৰ **গ ৫০, প!** জলং শং ৫০, শেষ শং ২৫। স্থতস্থা বা **গোলয়িতা** দাতাবিভিন্ন

(34) :4 2,5 ্সেব। কাপাথ---গন্ধ-ভাগুৰে ৩০০ প্ৰস, পাত্ৰা টোম্ব ২০০ প্ৰ, অবগদ্ধ এ ওটুল, বেছেদ্য, শুচমুশা, রামা, পুন্নৰ , কেষাবুল, দশমূল (সভার সভার) **এবং** পারিনভাগ ১৫এক ১০০ প্র, দেবলক ৫০ পণ, শেন্ত্রার ৫০, আক্র ২৫ পণ, লোধ ২৫ পর ; এই সমুশার একজ ৮২০০ সের জলে পাক করিল ১২৮ বে: পাকেতে নামাইবে। ক্রিজ ৬৪ টেন (বালিও ক্রিন্স প্রিমাণ ২৬ আদৃক লোগত আছে, হথা,প ইবা: ৬৪ সের ম্বি দেওয়া বীতে, নতুবা েডাল কেবল ক্[জর গ্রাই অজ্জব ২৯), হ্রম ৪০ সের, দাব ৪০ মে, দাবর মাত ১৬ মের, ইশুর্দ ৩২ মের, ছাগ্যাংস ১০০ পল, পাকাপ জল ১৮০ সের, শেষ ৬৮ সেব, মাঞ্জর ৬০ প্রা, জল ৬০ দের, শেষ ১৫ সের। ভা**থ**মে এ**হ সকল** দ্রোর সাহত ,তল পাক কারবে। ভেলার মুটা, পিপুল, শুঠ ও মারচ ইহানের প্রত্যেকের ৬ পল (ভেলা অস্থ্ ২ইলে রক্ত-চন্দন গ্রহণ কারবে), হর তকী, বহেড়া, আম-

नकी, সরলকাঠ, ভলফা, कांकड़ांगुक्री, वह, চোরখড়িকা, শটী, মুক্তা, নাগরমুকা, পদ্মপূস্প, र्श्वेष, शिश्रुलयल, यक्षिष्ठं, अर्थशको, श्रुनगर्वा, দশমল (মিলিভ ৩ পল), চাকলা রসাঞ্জন, গন্ধতৃণ, হরিদ্রা ও জীবনীয় 50 (মিলিত ৩ পল), ইহাদের প্রত্যেকর ৩ পল। প্রথমতঃ এই সমুদায় কক্ষ্রব্য ছারা হৈল পাক করিবে। চোর্ভলী, তেজপত্ত, ধনা (কেছ বলেন, কুন্দুরু খোটা), रेगलय, श्रियम्, छेगीत, । (भीति, क्रिमिंगी, দেবদারু, বেড়েলা, দিহলক, নবনীতংগাটী, কঠিখড়ি, নালুকা, ছোটএলাইচ, কুলুকুখোটা, মুরামাংসী, ত্রিবিধ নথী (নথী এক প্রাকার ভ্রমরপতের ভাষ, বিভীয় উৎপল সদুশ ও তৃতীয় অশ্বগুরবং), তেজপত্র, শল্লকী, খটাশী, চাঁপার কলি, ময়না, ফল, রেণ্ডক, পিড়িংশাক ও কুদ্রপত্ত তুলদী ইহাদের প্রত্যেকের 🥲 পল, এই সমূদ্য কল্প ও গলোদকের সহিত তৈলের ষিতীয় পাক। গমোদক সাধনের নিয়ম এই যথা—তেজপত্ত, পত্ৰক (তেজপত্ৰসদৃশ বিশেষ), বেণার মূল, মূতা, বেড়েলা-মূল প্রত্যেক ২৫ পল, কুড় ১২॥० পল, জল ১৫० সের, শেষ ৫০ সের। এই গন্ধজলের সহিত উপরি লিখিত দিতীয় কক্ষ পাক। এই গন্ধাৰু ও চন্দনজলের সহিত পশ্চারিখিত কল্প পাক। চন্দনাম প্রস্তুত করিবার নিয়ম এই; যথা—চন্দন ৫০ পল, ৫০ সের জলে সিদ্ধ করিয়া ২৫ সের অবশিষ্ট থাকিতে নানা-ইয়া লইতে হয়, অথবা ঘুষ্টচন্দন জলে মিএিত করিয়া লইলেও হয়। পূর্কোক্ত গন্ধান্ত ৫০ সের ও এই চন্দনজল ২৫ সেরের সহিত নাগেশ্বর, कुछ, छाडुवक, कालिया कार्छ, कुकूम, व्यं ठठन्यन, গেটেলা, লতাকন্তারী, লবন্ধ, অগুরু, কার্না, জ্য়িত্রী, জায়ফল, এলাইচ ও লবঙ্গত্বক্, ইহা-দের প্রত্যেকের ৩ পল, মৃগনাভি ৬ পল, কর্পুর ১॥ • পল তেলে নিক্ষেপ করিয়া পাক ক্রিবে: পশ্চাৎ মৃগনাভি ৬ পল ও কপূর ১॥०

পল প্রক্ষেপ দিবে। এই মহারাজপ্রসারণী তৈল রাজসেবা, ইহার শক্তি অন্যান্য প্রসা-রণী তৈল অপেক্ষা অনেক প্রবল। (এই স্থলে শুক্ত প্রস্তুত করিবার প্রণালী বলা বাইতেচে যথা-তারম্প্ত /৪ সের, কাজি ৮০ সের, দবি ৴২ সের, গুড় /২ সের, অন্নমূলক (কাঁজির অনঃস্তিত অন্ন) ১১ সের, আদা /২ সের, পিপুল, জীরা, সেরুব, হরিদা ও মরিচ ইহাদের প্রত্যেকের ২ পল, এই সমুদার একতা মত-ভাও মধ্যে ৮ দিন লাখিবে, পরে ইহার সহিত গুড়ুত্বক, তেজপত্র, এলাইচ ও নাগেশ্বর ইহা-দের প্রত্যেকের চুর্ণ ৬ তোলা করিয়া মিশ্রিত কারয়া লইবে, ইহাকে শুক্ত কহা যায়। রাজপ্রসাবণী তৈলে যে কাজি দিবার বিষয় ালখিত ২ইয়াছে, তাহা এই ওক্ত লক্ষ্য করিয়া উরি,গত হইয়াছে। ইহারই ৬৪ সের তৈলেব সহিত পাক কবিতে হয়।)

কুজপ্রদারণীতেলম্।

প্রদারনিশতং মুখং পচেং তোয়ার্যাণ গুতে।
পারিনিশতং মুখং পচেং ভাষি দক্তাদ্ সকাঞ্জিকম্ ॥
বিগুণঞ্চ পয়ো দও, কন্ধান্ বিপলিকাংগুখা।
কিবকং পিপ্পনীমূলং মধুকং সৈপ্তবং বচাম্ ॥
শতপুপাং দেবদাক রাবাং বারণি প্রলীম্।
প্রসারণাশত মূলানি মাংসী ভ্রাতকানি চ ॥
পচেম্ছিরনা তৈলং বাতরেস্থাময়ান্ কয়েং।
অশাতেং নরনাবাহান্ বাতরেগান্ ব্যপাহতি॥
বুজ্তিমিতপকুষং গৃধ্মীপুড্কান্দিতম্।
হত্তপৃঠ্শিরোগ্রীবা-স্তম্পণ্ড নিষ্চ্ছতি॥
বুজ্পুঠ্শিরোগ্রীবা-স্তম্পণ্ড নিষ্চ্ছতি॥

তিলতৈল ১৬ সের। কাথার্থ-পদ্ধভাহলে ১২॥ পের, জ্বল ৬৪ সের, শেষ ১৬
সের, দির মাত ১৬ সের, কাজি ১৬ সের,
ছ্রা ৩২ সের। কল্মব্য যথা-চিতামূল,
পিপুলমূল, যাষ্ট্রমধু, সৈন্ধব, বচ, গুল্ফা, দেবদারু, রাস্বা, গজপিপ্লা, গদ্ধভাছলের মূল,
জটামাংসা, ভেলার মূটা প্রত্যেক ২ পল। মূহ
ভাগ্নতে এই তৈল পাক ক্রিয়া মদ্দন ক্রিলে

কৃষ্ণতা, পঙ্গৃত্ব. গৃধদী, খৃড়ুকবাত (গ্রন্থিবাত). অন্দিত, হেমুস্তম্ভ ও বাতীপ্লয়িক বোগ এবং সকল প্রকার বায়ু বোগ প্রশমিত ইয়।

মহাকুরুটমাংদ-তৈলম্।

মাৰস্তাৰ্দ্ধানকং দেয়ং দশমলাজ্বলাৰ্দ্ধকম। বলামলঞ্ভজার্দ্ধ কেত্রীনাং ভগৈব চা দক্ষমাংসপলতিংশজ্বিণ্টিকা পঞ্চবিংশতিঃ। জলদোণদ্যে পক্তা পাদশেষেংবতারিতে॥ িলতৈ সভাচ প্রস্থা পরে। চত্ত প্রা क्षावनीयानि याकाष्ट्री मक्षिटी हवाकहेकलम् ॥ (नामिर तास्रा कर्नामलर मधुकर शुक्रतर छ्या । মাধ্যেগুপ্তে সৈর্ভা শত'হর লবণ্ডয়ম। ক্ষাখগ্ৰা হামতা মুমানাক্ৰবরী শটী। নাগরং মাগ্ধী মৃস্তং বর্ধান্ত রজনাব্রম ॥ শতাবরী বৃহত্যে) চ এতৈরক্ষসম্বিতৈঃ। পক্ষাথাতের সর্বেধ্ অর্দ্ধিতে চ হতুপ্রতে 🛭 মন্দ্রণতেই চাত্রবলে ভিমিরে চ ত্রিদেখিক। হস্তকম্পে শির:কম্পে গাত্রকম্পে শিরে:গছে 🕫 **শস্তং কলায়থা**ঞ চ গ্ৰন্থামনব'ছকে। বাধিয়ে কর্ণনাদে চ সক্ষরাত্রিকারতুৎ ॥ দ্রাপতানকে তৈব মন্তান্তান্ত বিশেষতঃ -হনুপ্তান্ত প্রশাস্থ ক্রাৎ স্থাতিকাত্রানালনম ॥ ष्टाः भारत्रश्रात्रेकत् अक्षाधिवनवज्ञनम् । গাওবন্ধারবৃদ্ধিং বা বাতরভাঞ নাশয়েং॥

হিলাতেল / ৪ (411 কাগাৰ্থ-নায-কলাই ৴৪ সের, দশমূল ৴৬:০ সের, বেডেল:-মূল ২৫ পল, কেতকীমূল ২৫ পল, কুকুটমাংস ८० भन, वारिमृत २० भन, भाकार्थ छन ১२৮ দের, শেষ ৩২ দের। হগ্ধ ১৬ দের। কলার্থ-জীবকাদি অষ্টবর্গ, মঞ্জিষ্ঠা, চই, কট্ফল, ত্রিকটু, রামা, পিপুল-মূল, ষষ্টিনধু, কুড়, মাষ্কলার, আলকুনাবীজ, এরওমূল, ওল্ফা, विष्, रमस्रव ए महन नवन, कुरुज़ीता, शक्ता, खनक, यगानी, हेन्सगर, मठगूनी, मंती, ভঠ, পিপুন, মুতা, পুননবা, হরিদ্রা, দাক-হারদ্রা, শতমূলী, বৃহতী ও কণ্টকারী প্রত্যেক ২ ছুই ভোলা। এই তেল মর্দ্দন করিলে পকা-ঘাত, অধিত, শ্রবণশক্তির হাস, দৃষ্টিশক্তির হস্তকম্প, শিরঃকম্পা, কলায়খঞ্জ, অৱতা, কর্ণনাদ, বধিরতা, গুধদী, অববভিক,

দণ্ডাপতানক, মহাস্তিস্ত, হত্বস্তুস্ত, স্থতিকারোগ, অন্তর্গদ্ধি ও বাতরক্ত প্রভৃতি :বচবিধ পীড়া উপশ্যিত হয়।

নকুলতৈলম্।

बद्दर शीतकः त्रांता निस्तवः भडभू शिका । যমানী ম্বিচ॰ কুষ্ঠং বিভৃক্তং গজপিপ্ললী। মৌবর্চলঞ্চাজমোদা বলা সভ্যন্তিকা তথা। इंट्रिकर देशलखर भारती कर्ष (तबार शृशक शृशक)। বিনাম পাচয়েং তল-পত্ত রাব্দন্তব্য । প্রত্নে নকুলমাংস্থ্র কাথে চ দশ্যুলদে। প্রাক্ত ক'ঞ্জিকস্তাপি মন্ত্রপ্রান্ত ভগৈব চ। সিদ্ধং হৈল'মদং হন্তি কশানাতং **স্থদার**ণম্॥ इन्द्रकरणार भितःकरणार वाटकरणा**क मानास्टर** । অমেবা ১৩ সপ্ৰক সকোপ দ্বসংযুত্ৰ 🛭 পানাভ্যপুনবস্থিতিন শিয়েরাতা সংশয়:। আচাৰাতং কটাপুঠ জানুজজ্বালিতং তথা ৷ সন্ধিত্রং বাতমাথের জয়েরকলসংজ্ঞকম। ভারীভভাগিত নদং তৈলং হিত্**চিকী**ৰ্যা॥ বৈছ লাং সারভুতানাং শতেনাপি সমুজ্বিতম্। ব'্বা'ধং নিহস্তাপ্ত কম্পবাতং (বশেষতঃ। অণাতিং বাহজান বে'খান্ নাশয়েদাও দে'ংনাম্॥

নকুল্মাংস /২ (সর, জ্লু ১৬ **সের, শেষ** /8 (मृतः : प्रमृत् : (मृतः क्रल : ७ **(मृतः** শেষ ৪ সেব; কা.জ /৪ সের, দ্ধির মাত . ৪ সের, এর গুটেল ২ সেব। কলার্থ— যষ্টি-মধু, জারা, বাসা, ্দন্ধৰ লবণ, গুল্ফা, বিভঙ্গ यमानी, २८५, कूड़ বন্ধন্নী, বেড়েলা, ল্বণ, কেহ বলেন পিপুলমুল), গেটেলা (কেই ্ৰল্জ ও জটামাংসী ইহাদের প্রত্যেকের ৪ তোলা। এই তেল পান, অভাক ও ব্তি-ক্রিয়ার প্রয়োজ্য। ইহা ছারা হস্তকম্প, শির:-কম্প, বাহুকম্প, আনবাত, উক্তন্ত, সন্ধি-বাতও অহাক্ত নানাবিধ পীড়া উপশ্মিত হয়। ইহা কম্পাবাতের উংক্ট ঔষর।

মাষ্তেলম্।

মাৰাতদীয়বকুকটককণ্টকারী-গোকণট্টুট্কুকএটাকপিকজ্বতোলৈ:। কাপাসকাদ্বিশ্ববীজকুগধকোল-কাবেন বন্দ্রপিনিতপ্ত রসেন চাপি। শুঠা সমাগ্ৰিক্যা শতপুশ্যা চ সৈরগুমূলসপুনন ব্যা সরণা। রামাবলামূতলভাকটুকৈবিপকং মাঝাগ্যেতদববাত্তরক তৈলম্॥ ক্ষাক্রশোবমপতানকমাঢ্যবাত-মাক্ষেপকং সভুক্তম্পশির:গ্রকম্পম্। নজেন ব্যিবিধিনা প্রিবেচনেন হস্তাৎ কটাক্রঘনজাত্মক্ত সর্পাঃ।

তিলতৈল /৪ দের। কাথার্থ—নাম-কলার, মটর, যব, নাটিমূল, কণ্টকারী, গোক্রর, শোণামূল ও আলকুণীবীজ ইহাদের কাথ। কার্পান বীজ, শণরীজ, কুলখকলাই, কুলশুঠ, ইহাদের কাথ ও ছাগমাংসের কাথ মিলিত ১৬ দের। কফার্থ—শুঠ, পিপুল, শুল্ফা, ভেরেগুমূল, পুনর্নবা, গফভাছলে, রাস্না, বেড়েলা, গুলঞ্চ ও মরিচ মিলিত /১ দের। এই তৈল মদনে অববাতক, অর্কাঙ্গ-শোষ, আক্ষেপক, অপতানক, উক্তম্ভ, ভুজকম্প, শিরংকম্প এবং অন্তান্ত নানাবিধ বায়্-রোগ প্রশমিত হয়।

স্বল্পমাষ্টেল্ম।

মাবপ্রস্থং সমাবাপ্য পচেৎ সমাগ্ জলাচুকে।
পাদশেবে রসে ত্মিন ক্ষীরং দন্তাচতুগু প্র ॥
প্রস্থক তিলতৈলক্ত ককং দ্বাক্সমিত্র ।
জীবনীয়ানি যান্তর্তী শতপুশাং সদৈজবাম্ ॥
রামাত্মগুরু বলা ব্যোব্রিকণ্টকম্ ।
পক্ষাঘাতেহর্দিতে বাতে কর্ণশূলে চ দাঙ্গণে ॥
মন্দক্ষতে চাত্রবণে তিমিরে চ ব্রিদোর্মরে ।
হন্তকম্পে শিরংকম্পে বিস্চ্চাম্ববাহ্নকে ॥
শন্তং কলার্ম্বপ্রে চ পানান্ত্রন্ত্রন্তিতিং ।
মার্যতেলমিদং ভ্রেন্তম্প্র্ক্রক্ণদাপ্রম্ ॥

তিলতৈল /৪ দের। কাথার্থ—মাদকলাই /২ দের, জল ১৬ দের, শেষ /৪ দের; ত্থ ১৬ দের। কজার্থ—জীবক, ঋষভক, মেদা, মহামেদা, কাকোলী, কীরকাকোলী, ঋদ্ধি, বৃদ্ধি, শুলুফা, দৈদ্ধৰ লবণ, রাসা, আলকুশী-বীন্ধ, ঘৃষ্টিমধু, বেড়েলা, ত্রিকটু ও গোকুর প্রত্যেক ২ তোলা। এই তৈল মর্দন করিলে পক্ষাদাত, অন্দিত, কর্ণদূল ও শ্রবণশক্তির হীনতা প্রভৃতি নানাপ্রকার পীড়ার শাস্তি হয়।

ব্হনাযতেলম্।

মাৰবাপে বলাকাৰে রাজান্তা দশমুলকে।
ব্যবদালকুলখানাং চাগমাংসভবে পূপক্।
প্রাক্ত তিলক্ত চ প্রস্থা ক্ষারং দ্বা চতুপ্ত পিয়।
রাজারপ্রাসক্ত্যুক্ত কারা দলাক্রপ্রাক্ত তির্বাধির প্রকাশেশ বাহিংকার্ত্রের প্রকাশেশ বিশ্বচামানিক চ কর্পনাদে চ দার্ক্তনে।
বিশ্বচামানিকে কুজে প্রকাশেশতানকে।
বিশ্বচামানিকে কুজে প্রকাশেশতানকে।
বিশ্বচামানিকে কুজে প্রকাশেশতানকে।
বাইতেলমিদালকে ক্রিকাজান্তাবিকালে
বাইতেলমিদালকে ক্রিকাজান্তাবিকালে
বাইতেলমিদালক্রিকাজান্তাবিকালে
বাইতেলমিদালক্রিকাজান্তাবিকালা
বিভাগেরস্থা।

ভিলতেল /৪ সের। করার্থ—মাষকলাই

/> সের, জল ১৬ সের, শেষ /৪ সের; বেড়েলা

/২ সের, জল ১৬ সের, শেষ /৪ সের; রায়া

/২ সের, জল ১৬ সের, শেষ /৪ সের; রায়া

/২ সের, জল ১৬ সের, শেষ /৪ সের; দশম্ল

মিলিত /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ /৪

মের; যবত গুল, কুলশুঠি ও কুলথকলাই

মিলিত /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ /৪

সের; হাগমাংস /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ /৪

সের; হাগমাংস /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ

/৪ সের; হাগমাংস /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ

/৪ সের; হাগমাংস /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ

/৪ সের; হাগমাংস /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ

/৪ সের; হাগমাংস /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ

/৪ সের; হাগমাংস /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ

/৪ সের; হাগমাংস /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ

/৪ সের; হাগমাংস /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ

/৪ সের; হাগমাংস /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ

/৪ সের; হাগমাংস /২ সের।

অব্যাক্তর্কা

অব্যাক্তর্কা

বির্ণাধিক হা

নানারোগ বিন্ত হয়।

মহামাধ-তৈলম্।

মাৰক্সাধাঢ়কং দহা তুলাধিং দশমূলতঃ। পলানি চ্ছাগমাংসক্ত ত্রিংশদ ছোণেহত্তমঃ পচেৎ॥ পূতশীতে ক্যায়ে চ চতুর্থাংশাবতারিতে। প্রকৃতিনতৈলক্ত পরো দহা চতুর্গুণ্ম। আরগুপ্তা কুৰ্কণ শতাহনা লবণতারম্।
জীবনীয়ানি মঞ্জিটা চবাচিত্রককট্ফলম্ ॥
সবাোবং পিপ্লনীমূলং রালা মধুকদৈদ্বন্।
দেবদার্কমৃতা কুঠং বাজিগদ্ধা বচা শটা ॥
এতৈরকদমে: কব্দেঃ স্থেরেয়,তুনাগ্রিনা।
পক্ষাঘাতেহন্দিতে বাতে বাধিগ্যে হতুসংগ্রহে ॥
কর্ণমন্তানির শুলো তিমিরেচ ত্রিদোধজে।
পাণিপাদশিরোগ্রীবা-ভ্রমণে মন্দচংক্রমে ॥
কলায়বঞ্জে পাঙ্গুলো গৃপ্রস্যামবন'হকে।
পানে বন্দ্রে) তথাভাকে নত্তে কর্ণাক্ষিপুরণে।
তিলমেতং প্রশংসন্তি সর্ববিত্রক্তরাপহম ॥

কাথার্থ—শ্রথ তিলতৈল /৪ সের। পোট্টলীবন্ধ মাষকলাই /৪ সের, দশমূল /৬।• সের, দ্লথ পোট্লীবদ্ধ ছাগমাংস ৩০ পল, এই সমুদায় একত ৬৪ সের জলে পাক করিবে, শেষ ষোল সের থাকিতে নামাইয়া লইবে। হগ্ধ ্যাল ১৬ সের ৷ কলার্থ—আলকুশামূল, এরও মূল, শুল্ফা, সৈন্ধব, বিট্ও সচল লবণ, জীব-নীয় বর্গ, মঞ্জিটা, চই, চিতামূল, কট্ফল, दिक है, शिश्रवभून, तांक्षा, यष्टिभध्, रेमकव, राव-দারু, গুলঞ্চ, কুড়, অশ্বগন্ধা, বচ, শটা প্রত্যে-কের ২ তোলা। এই তৈল ব্যবহারে পক্ষাঘাত, অন্দিত, ব্দির্ভা, হ্রুগ্রহ, কণ্শল, শিরংশল, কম্প, গুধুদী, অববাহুক ও হস্তপদাদির অক্সাক্স নানা প্রকার বভিরোগ নষ্ট হয়। ইহা পান, ব্রিক্রিয়া, অভ্যঙ্গ ও ন্যাদিতে প্রয়োগ করিবে।

নিরাথিষ-মহামাষ-তৈলম্।

দশমুলাচুকং পাস্ক্র জনমোণেং সি শেষিতে।
ভদ্মানাচককাথে তৈলপ্যাং প্রাংসনে ।
কথৈরেতৈক মতিমান্ সাধ্যেন্ ছ্নারিনা।
অখপরা শটি দাক বলা রালা প্রসারনি ।
বুঠং পর্যাক্ত প্রান্তির প্রনার বা ।
নাতুলুক্ষলাজাজে । রামিঠং শতপুপিকা ।
শতাবরী গোক্ষকং পিয়লানুলচিত্রকো।
জীবনীমুগণং সর্বং সংস্কৃতিয়ান সন্দেশন্ম ।
তৎ সাধুসিদ্ধং বিজ্ঞায় মান্তেলনিং মংধ।
পঙ্গাঞ্জনপানেশ্ নাবনের্ প্রশন্ততে ।
পক্ষাণাতে হতুন্তত্তে অজিতে সাপত্রক।
অববাছকবিষ্চোঃ খাল্যপাক্ষ্রারোরিণি ।

শিরোমস্থাপ্রহে চৈব অধিমন্তে চ বাতিকে। শুক্রক্ষয়ে কর্ণনাদে কর্ণকে ডে চ দাক্ষণে। কলায়ধঞ্জশমনে ভৈষজামিদমাদিশেৎ ॥

কাথার্থ-দশ্রুল /৮ তিলতৈল /৪ সের। সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের; মাধকলাই ৮ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের; হ্ম ১৬ সের। কলার্থ—অশ্বসন্ধা, শটী, দেব-দারু, বেড়েলা, রামা, গন্ধভাহলে, কুড়, পরুষ-ফল (ফলসা), বামুনহাটী, ক্লফ ভূমিকুমাও, ভূমিকুমাণ্ড, পুনন্বা, **(5) 可** কৃষ্ণজীরা, হিং, গুল্ফা, শৃত্যুলী, গোকুর, পিপুলমূল, চিতামূল, জীবনীয় গণ ও সৈশ্বব, মিলিত 🖒 সের। এই তৈল বস্তিজিয়া, অভাঙ্গ, পান ও নস্তাৰ্থে প্ৰযোজা। ইহা ব্যব-হারে পক্ষাঘাত, হরুস্তম্ভ, অবিত, অপত্রক, অববাতক, বিশ্বচী, এঞ্জতা, পদুত্ব ও কলায়-খঞ্জ প্রভৃতি নানাবিধ রোগের শাস্তি হয়।

মহাস্থ্যন্ধিতৈলং লক্ষাহিলাসতৈলঞ।

জিলাচোরকদেবদ'রুসক্ষর।খীরচাচেলক-তৃক্পত্রৈ: সহ গঙ্গপত্রকশটাপথ্যাক্ষরাত্রীবনৈঃ। এতেঃ শোধিতসংস্কৃতিঃ পলমুগেতাগ্য'ত্রা সংখ্যা তৈলপ্রস্থান্তিতঃ স্থিনস্ভিঃ কক্ষৈঃ পচেদ্পান্ধিকৈঃ॥

নাংগীন্নাদমনচম্প্ৰক্ষণীত্ব –
১২ সুক্ষ্মকাকৈ দ্বপলৈঃ সপুকৈঃ।
শ্বীনাস্পুক্ষনগীনলিকা মিহাণ গ্ৰেহে ভূ ॥
এলালক্ষচলচন্দমগাতিপতিকৰে লেকান্ডলভগৈত্বলৈং পলাকৈঃ।
কন্তু বিকাক্ষ হিতামলদান্তিগুলিও
পৰস্তু মন্দিভিনেও মহাস্থাক্ষ ॥
পৰ্ব দ্বিকাৰ চলাহ কপু শ্বিষাণে।
প্ৰস্তু ব্ৰিকাশ গ্ৰেহি গ্ৰামনানিক তৈও পুনঃ

প্রপ্ত প্রক্রিক ক্রিক ক্র

e1(1)

কপুরস্য ছো ভাগে ; কিংবা অর্ফেন কন্ত্রীকর্বাৎ কপুরস্যাষ্ট্রী মাসকা: 1)

তলত এল /৪ সের। কল্পার্থ—মঞ্জিষ্ঠা, চোরকাঁচ্কী, দেবদারু, সংলক্ষ্ঠি, (গন্ধ দ্রব্যবিশেষ, কেহ বলেন, নথী), বচ, গুবাক রক্ষের ছাল, গুড়ত্বক্, তেজপত্র, গদ্ধ-**७१,** भी, हती ठकी, वहरू; आंगला, मूठा, প্রত্যেক ২ পল ; এই গন্ধক র বারা প্রথম পাক कतिरव। अहोगांश्मी, मृतागांश्मी, मना, हम्लक পুষ্প, প্রিয়ম্ব, গুড়খক, গোটেলা, বালা, কুড়, মক্রক পুষ্পা, পি।ড়ংশাক প্রত্যেক ২ পল; গন্ধবিরজা, কুন্দুরুখোটা, নখা, নালুকা, মৌরি ্রত্যেক ১ পল: ইহা দ্বারা দ্বিতীয় কল্পাক করিবে। এলাইচ লবন্ধ, শিলারস, খেতচন্দ্রন, জাতীপুষ্প, খটানী, কাকলা, অভ্নুত্ৰ লত'-কন্ত্রী, কুরুম প্রভ্রেক ৪ তোকা, মুগনাভি ২ ভোলা (বা ও নায় ২ রাড), কপুর ১ ভোলা (বাভম্যা৪রতি)। এই সকল দ্রাধার তৃতীয় কর পাক করিবে। পাক ন্যাপ্ত হইলে তেল হইতে খটাণী উদ্ধৃত ও উত্তমরূপে শিলা-পেষিত করিয়া তলে মিশ্রিত করিয়াদিবে। বিন্দাদি পঞ্চপত্রব-কাথ ছারা প্রধান কর পাক করিবে, গন্ধার ধা ' দিত্যার কর এবং অপ্তর্ঞ-ধূপিত গন্ধবারি ধার: তৃতায় ወሜ পাক করিবে। পূলোক্ত ত'লন ন্যায়, এই তেলেও গ্ৰহুল্য শোহন করিয়া লইবে। ইহা ব্যবহারে াববা বাভবালে প্রশামত এবং পৃষ্টি, কান্তি, ুমধা, ধৃতি ও বৃদ্ধি বৃদ্ধিত ২য় ৷

উল্লিখিক কল্প, সমস্ত বিশুণ প্রাথনীয়ে তৈলে দিয়া পাক কবিলে উহাকে লক্ষ্যীবিলাস তৈল কহে।

শ্রীগোপানতৈলম্।

নন' চকং শতাৰ্য্যাঃ ক্ষাভাষনগ্ৰেছা । বাজিগন্ধান্ত্চন-নলানাঞ্ শতং পৃথক্। প্ৰিপচান্তিমাং জোগে পাদলেখেনতান্ত্ৰেও। পক্ষুলং মহদ্ব্যাজী নৃক্ষাকেতকপৃতিকা॥

পারিভদ্রক সর্কেষাং গ্রাহ্যং দশপলং ওভম্। কাথ্যিত। জলদোণে তৎপ'দমবশেষয়েৎ ॥ ভাষ্টকং তিলতৈলক্ত কলৈরেতৈশ্য সংগচেৎ। অখগন্ধা চোরপুস্থী।পন্মকং কণ্টকারিকা a বল'গুরু ঘনং পুতি শিহলকাগুরুচন্দনম্। চন্দ্ৰং ত্রিফলা মুবলা জীবনীয়কট্রেয়ম, ॥ পৃতিকুল্মকন্ত ব্যাদ্য তুক্তাত্ৰ শৈলজ্ম। নধমুস্তরণালানি নীলে। পেলমুশারকম্॥ মাংসী মূলা হ্বতক বচা দাভিমভুমুক। ধ্দিব্ৰদিমনকং কুজেলাৰ্দ্ধপলং পুথক॥ এতং তলবরং হন্তি বাতপিত্তকফোছবান। ল্যাধানশেষান জনয়েৎ শুভিং নেধাং গুভিং ধিয়ম ॥ বাতরে।গান বিশেষের প্রমেধান হস্তি বিংশতিম। গভং সংস্থাপত্ৰেৎ স্থীণাং সৰ্কাং শুলং ৰ্যাপাইতি ॥ মুত্রকু ফুলমারমুন্মাদান নিবিলান্থি। স্থবিরে: পি জরাজার্নীগুলস্থাপ্ত নিদেরণাং ॥ लीवहा भाषानाम अध्यानामार गार अहर आहर । िष्टिम यस शहर , डलर आहणालाला एयर ७७० ॥ ন ত্রাভূতাঃ সংখ্যি ন প্রিছে। ন রাজসাঃ। ন দারিদ্রাং ভবেৎ তদ্য বিল্ল ক্রিন ক্রিয়েছে। অধিভাগে নিমিভিং ছেড্ছ বিশ্বকলাগহৈতবে 🗵

তিলতৈল ১৬ সেব। শ্তম্লীর রস, কুমড়ার রুস ও আমলার রুস বা কার্থ প্রত্যেক ১৬ সের। কলে। অধ্যক্ষা পীত্র্বাটা. বেডেল: প্রভাক ১০০ পল, প্রভাকে ধল ৬১ সের, শেষ ১৬ সের (প্রথক প্রথক কার্থ) বৃহং গ্রহণুৰ, কণ্টকাৰী, মুক্ষিযুল, কেয়ার युन, नांडोकरङ्ग्य, शानिवाधान ১০ পল, জুল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের । कवार्य--अक्ट्रास, ८६।तकाह्यी, কণ্টকারী, বেছেলা, অন্তর্ন, মৃত্যা, খটাশা, শিলার্য, অন্তব্দ, রাজন্দন, (चं टिंग्नन) विक्रना, भूक्ताभून, औरक, धर अक, अनी, মহামেল, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, মুগানী, মাহাণা, জীবন্তী, মৃষ্টিমধু, ত্রিকটু, খটাশা, কুমুম, কন্ত্রী, ওড়ম্বক্, তেজপত্র, এলাইচ, নাড়েবর, বৈগজ, নথী, নাগরমুতা, মৃণাল, নীলোৎপল, নেণার মূল, জটামাংদী, মুরা-गारमी, रमवमातः, वह, माड्मिवीक, जुमुक, अकि, नुष्ति, मना, हार्षे धनांदेठ श्राट्याक 8 खिला। এই তৈল মৰ্দ্ ন অশেষবিধ ব্যাধি প্রশ্মিত এবং স্মৃতি, মেনা, গৃতি ও ধীশক্তি বিকাশিত হয়। ইহাতে বায়ুনোগ বিশেষতঃ বিংশতি প্রকার মেহ, মৃতকুচ্ছে, অপস্মান, উন্মাদ, দর্বপ্রকার শূল প্রভৃতি নাগল রোগ নিবারিত এবং বন্ধ। গর্ভবতী হয়। জরাজার্ণ স্থাবরও এই তল-প্রভাবে উৎকট-যৌবনা শত শত প্রমদাগণে অবলীলায় অভিগমন করিতে সমর্থ হয়।

মাধবলাদিতৈলম।

মাষ্কাথে বলাকাথে রামায়া দশসুলভে:। প্রসারণা শতাংশায়াঃ প্রস্তুৎ দত্যাদ ভিষ্পরঃ॥ **এट्टक्र'बटेखलम्या प्रश्विकीतः मगर म**गर। ল'কারসং কাঞ্জিকক তৈলতুলাং প্রদাপয়েৎ !! শভাৰত্নীবিদাধোশত ত্ৰমং তেলাক্ষমেৰ চ। শতাহ্বা মধুরী মেখা রামা বারণপিঞ্চলী 🛭 मुखककाषभक्षा ह एमात्र मन्गष्टिको । শালপণী পৃঞ্জিপণী বলা চ বহুপুত্ৰিকা 🛭 প্রস্থায়: গৃহ'রা ৮ তেলপ'ত্রে প্রদাপয়েৎ । বাভরোগং নিহস্তা ও ম্যাক্তন্তং নিষ্ণৃতি । अञ्चलकोत्रकः जिल्लाम् एशनधर्मे । বিংশতিং মেহকান হস্তি গাত্রকম্পাদিকং জয়েং ' এতান হর্তি রোগাংশ্ড তৈলং মাধ্বলাদিকম্ 🛭 মুচ্চত তিলতৈল, ৪ সের। মানকলাই, দশমূল, গণভাগুলে বেড়েলা. त्राया, গুল্ফা প্রত্যেকের কাগ , ৪ চারি সেব। দাব /৪ সের, হুগ্ধ /৪ সের, লাক্ষার্ম /৪ সের, কাঁ। । । শৃতমুনী ও ভূমিকুলাভের স্বরুদ প্রভ্যেক ,২ সের ক্রার্থ—ওল্ফা, মৌরি, মেথী, রামা, গজাপপ্ললী, মূতা, অশ্ব-গন্ধা, বেণার মূল, ষষ্টিমধু, শালপাণি, চাকুলে, বেড়েলা ও ভূঁই আম্লা, প্রত্যেক ২ পণ। যথানিরুমে তৈল পাক করিয়া মদন করিলে ম্যান্তন্ত প্রভৃতি বিবিধ বাতরোগ এবং সর্বাপ্রকার মেহ প্রশামত হয়।

বাতরাজতৈ ন্। দশমূলং বলা বাট্যা বাডারিক মহাবলা। রাজবুক্ষোহমূভলতা সপ্রণণী চ মকটা॥

সোমর'জা গুধনগা পুতি বর্ধাভূচিতাকে। পিচুমর্নো মহানিয়ো ভূনিয়ো বংসকন্তথা। এষাং দশপলান ভাগান জলাফ্রোণে বিপাচারং। श्रामात्रायक देखलक श्रूबद्धाविकारहरू ॥ এরওম্মন্তো ১০ বি হার্ক বাবিভয়কম ! এষাং দ্বিপলিকান ভাগান ধরম নাং পৃথক পৃথক ॥ শত বিরীসমং তৈলং গ্রাং ক্ষারা চতুও শিম্। রালা ভিক্তা ভতিবিধা দেবদার কুচন্দ্রন্য ॥ মঞ্জিষ্ঠা বৰজানতা প্ৰসাৱশাৰণৰ কম। एवं इतिएक वृष्टा कुर्डर भारभी निरामग्रहण नम् ॥ রে'দনী ধাতকা বিখা পরাকঞ্জি ছার্কন। ষ্ট্টমধু সংগলা চ নাগকে শবপত্রকম ॥ দীপ্রকং শতপুষ্পা চ কুন্তকুকালিছে।পেয়ম । উশারমন্তবর্গণ্ড একৈক পলমের চ।। আলোড়া সর্ববং বিধিনা স্থগন্ধিত কং পুনঃ। বাতর জমিদং হৈলং সর্কাবাতহরং প্রম্। मार्क्स वर्णात राज्य मका कथरावर है। সন্ধিরজনাতে বাতে সর্বাধা এপ্রকল্পানে। ক'ল্ড জা পশিন্তারাং প্রকার তে ইয়ানাই। ৰুক্ত চাৰাত্ৰক্তে চাইটোলালাগুলালোঃ इ.स.च्या १८०० विकास १८० विकास १८ নগোড নেন মুনিনা ভাষিতং গুণবদ্ধন্য।

जिनटें ५५ (भत्। कार्थाय-भग्यन, বিবেপ বেড়েনা, লালভেরেও, গোরক্ষচাকুলে, সৌদাল, ভলঞ্চ, ছাত্মিছাল, আলকুণা, সোম্বাজী, কুড়-কোয়ালী, নাটাকরঞ্চ, খেত-পুনন্ব', চিড', নিম, ছোড়ানিম, চির্তা, কুড়াট প্রান্তাক ১৬ পল, জল ৬২ সের, শেষ ১৬ সের। এর ও, ধুহরা, মেহশুঙ্গী, মনসাদীজ, আক-দ ও পালিনা প্রত্যেকের স্ববস হই পল। শতাবরী রূম ১৬ সের, গ্রাহ্গ্প ৬৪ সের 🛭 ক্ষার্থ-রায়া, চিরতা, আত্তচ, দেবদাক, রক্তচন্দ্র, মাঞ্জা, মোমরাজ, অনন্তমূল, গন্ধ-ভাজুল, অধগন্ধা, হরিদ্রা, দারু-হারক্রা, বচ, कुछ, अंग्रीभाश्ती, देशलाय, ठन्मन, घ्रांनछा, ধাইফুল, ভঠ, পদাক্তি, জীরা, ক্লফজারা, যষ্টি-মধু, গুড় হক্, এলাইচ, নাগকেশর, তেজপত্ত, অজ্যোদা, শুল্দা, কুড়, পিপুল, চিতা, (गेंटरेना, द्वात यून, सक्ति, द्वि, त्यना, महा-त्यता, कीवक, अवष्ठक, कारकाली ও क्लीब-

কাকোলী প্রত্যেক ১ এক পল এবং গণোক্ত গন্ধদ্বা । যথাবিধানে পাক করিয়া এই বাতরাজ তৈল মর্দন করিলে সর্বপ্রকার বাতরোগ প্রশমিত হয়।

অশ্বগন্ধা-তৈলম।

শতং পক্ত; খগন্ধায়া জলছে গেংগংশশেষিতন্।
বিষাব্য বিপচেৎ তৈলং ক্ষীরং দুখা চতুগু পন্॥
কলৈমু পালশালুক-বিস্কিঞ্জনালতীপুলৈছীবেরমধ্ক-শারিবাপালকেশরৈঃ॥
মেনাপুনন বাজাক্ষা-মঞ্জিছারুহ চীর্নয়েঃ।
এলৈসবাপু ভিকলা-মুক্তচন্দনপ্রাকৈঃ।
পাকং রক্তগতং বাতং রক্ত পিত্তমন্ত্য দূরম্।
হন্যাৎ পুষ্টিবলং কুয়াৎ সুন্নাং মাংসবর্দনন্॥
রেতোবোনিবিকারম্বং এপানাল্যকানুবাসনৈঃ।
বঙ্গনিপ বুষাব কুয়াৎ পানাল্যকানুবাসনিঃ।

অশ্বগন্ধা ১২॥০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ
১৬ সের। এই কাথ এবং চতুগুণ হ্রা সহ
তৈল পাক করিবে। কলার্থ— স্থা মৃণাল,
শালুক, কুদ্র মৃণাল, পদ্মবীজকোষ, মালতী
পূজা, বালা, বৃষ্টিমধু, অনন্তমূল, পদ্মকেশর,
মেদা, পুনর্নবা, দ্রাকা, মঞ্জিচা, বৃহতী, কণ্টকারী, এলাইচ, এলবালুক, ত্রিফলা, মৃতা,
চন্দন ও পদ্মকাঠ। ইহা ধারা রক্তগত বাত,
রক্তপিত্ত, রক্তপ্রদর, গোনিবিকার, ত্রণশোষ ও
কৈব্য প্রভৃতি নিবারিত হয়। এই অশ্বগন্ধাতৈল
পৃষ্টিকর ও বল্মাংস্বর্দ্ধক।

মূলকাগ্যতৈলম্।

মূলকধরসং তৈলং কীরং দ্যায়ক জিন্ম।
তুলাং বিপাচয়েৎ কৰৈব লাচিত্র কসৈকবৈ: ।
পিপ্লাতিবিধারামা-চবিকাগুক চিত্রকে:।
ভলাতকবচাকু ঠ-খনং ট্র'বিখন্ডেবলৈ: ।
পুন্ধরাংশেটাবিধ-শতাংশা নংসাকৃতি:।
তৎসিদ্ধং পীত্রস্তুলান্ হস্তি বাতাম্বনান্ গদান্ ।
তৈল /৪ সের। মূলার স্বরস, হৃগ্ধ, দ্যি
অমু কাঞ্জিক প্রত্যেক তৈলের সমান।

অত বল',শিগ্রুক্দৈছবৈরিত্যে পাঠকসকে
দৃখতে।

করার্থ—বেড়েলা, চিতা (চরক বলেন—শঙ্কিনা), সৈন্ধর, পিপুল, আতইচ, রামা, চৈ, অগুরু, চিতামূল, ভেলা, বচ, কুড়, গোক্ষুর, শুঠ, পুন্ধরমূল, শটী, বেলছাল, শুল্ফা, তগরপাত্মকা ও দেবদারু; এই সকল দ্রবা কুটিয়া তৈলে প্রদান করত যথাবিধি পাক করিয়া পান করিলে অতি উৎকট বাতাত্মক রোগ বিনষ্ট হয়।

রসোনাছতিলম্।

রসোনকক্ষরসেন প্রং তৈলং পিনেদ্ যত্ত্বলিমেয়ার্ত্তঃ। ভঞ্চান্ত নভাত্তি চ বাতরোগা গ্রন্থা বিশালা ইবা হুগুঁহীতাঃ॥

রগুনের কক ও স্বরদের সহিত পক তৈল দেবন করিলে আগু বাতরোগ প্রশমিত হয়।

সৈন্ধবাছাতেলগ্।

ছে পৰে দৈন্ধবাৎ পঞ্চ শুণ্ঠা গ্ৰন্থিক চিত্ৰকাৎ। ১২ ছে জনাতকান্থীনি বিংশতিছে তপাচকে॥
আৱনানাৎ পচেৎ প্ৰস্থা তৈনাতেরগত্যদম্।
গুৰপ্যক্ষপ্ৰসাধিংহ তি-সম্পূৰণতিবিধাৰমুৎ॥

তেল /৪ সের। কাজি ৩২ সের, সৈন্ধব ২ পল, গুঠ ৫ পল, পিপুল্মূল ২ পল, চিতা ২ পল, এবং ভেলার মৃটি ২০টা, যথানিম্বমে পাক করিবে। এই তৈল মদ্দন করিলে গৃধ্বদী প্রভৃতি সক্ষপ্রকার বাতরোগ বিনষ্ট হয়।

মজ্জা,মহঃ।

গ্রাম্যানুগোদকানাও ভিন্নান্তানি পচেজলে। তৎ যেহং দশমূলক্ত কষায়েও পুনং পচেও। জীবকর্ষভকাক্ষোভা-বিদারীকপিকচ্ছ্ভিঃ। বাতদ্বৈজীবনীয়েশ্চ কলৈছিকীয়ভাগিকম্। তৎ সিদ্ধাং নাবনাভাঙ্গাং তথা পানাত্রাসনাও। শিরাপ্রান্থিকোঠন্থং প্রণুদ্ধতাংখ মাক্ষতম্॥ ৰে স্থাঃ প্ৰক্ষীণমজ্জানঃ ক্ষীণগুকোজসক্ষ যে।
বলপুষ্টিকরং তেষামেতৎ স্যাদমূতোপনম্ ॥
অত্ত দিগুণকীরসাহচ্যাদ্দ দশমূলীকাপোহপি
বিশুণ এব গ্ৰাফঃ। অস্তে তু চতুগুণমিত্যাহঃ। ইতি
শিবদাসঃ।

গ্রামা (ছাগাদি), আনুপ (ববাহ, মহি-যাদি), ওদক (কচ্চপাদি) ভ্ৰুৱ অস্থি সকল **টেচিয়া জলে সিদ্ধ করিলে, ভাহা হটতে** যে মজ্জামেহ বহির্গত হয়, দেই স্নেহ /৪ সের। ত্ত্ব /৮ সের। কাথার্থ—দশমূল (মিলিত) /৪ দের, জল ৩২ দের, শেষ /৮ দের। (মতান্তরে দশমূল /৮ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের।) কল্বার্থ-জীবক, পাণ্ডক, ভূমিকুলাণ্ড, হাপরমালী. আলকুৰ্না এবং বাতম ভদ্রদার্কাদি গণ ও জীবক-প্রভকাদি জীবনীয় গণ ১ (জীবক ও খনভকের ছইবাব উল্লেখ থাকায়, হুই ভাগ গ্রহণ করিতে হইবে)। ঘণানিয়মে পাক করিয়া এই মজ্জ-স্থেহ নশু, অভ্যঙ্গ, পান ও অনুবাসন (মেহবন্তি) কাগে প্রয়োগ করিলে শিরা পর্কা অস্থি ও কোষ্ঠগত বায় মাণ্ড বিনষ্ট হয়। যাহাদের মত্তা শুক্র বা ওজ্পদার্থের ক্ষয় হইয়াছে, ভাহাদের পক্ষে ইহা পর্ম হিতকর।

চতুঃমেহঃ।

প্রস্থ: তাৎ ত্রিফলায়ান্ত কুলখনুড়বন্বয়ন্।
কুঞ্চনন্ধাত্তলাচিকোঃ পূৰক্ পঞ্চপলং ভবেৎ ।
রানাচিত্রকয়োধে 'দ্বে দশনুলং পলোন্মিতন্।
জলজোলে পচেৎ পাদনোবং প্রস্তোবিতং পূৰক ।
স্বানপালদধ্যম-সৌবীরকত্বোদকন্।
কোলদাড়িমবৃক্ষাম-রসং ভৈলং স্বতং বসান্॥
মজ্জানক পরকৈচব জীবনীয়পলানি বট্।
ককং দল্ব মহামেহং সমাপেনং বিপাচয়েৎ ॥
শিরামজ্জান্থিয়ে বাতে সর্বাক্ষৈকান্ধরোগির্।
বেপনাক্ষেপশুলের্ ভমান্ডান্ধে এদাপয়েৎ ॥
(প্রস্থোবিতঃ পুখলিতি স্বানীনাং প্রোহস্তানাং
প্রত্যেকং প্রস্থা। ইতি চক্রটীকা।)

তিলতৈল /৪ সের, গব্য মৃত /৪ সের। বদা /৪ দের, মজ্জা /৪ দের, হ্রন্ধ /৪ দের। কাথাৰ্থ—ত্ৰিফলা /২ সের, কুলণকলাই /১ সের, শব্দিনামূলের ছাল ৫ পল, অভহর ৫ পল, রামা > পল, চিতা ২ পল, দশমূল প্রত্যেক ১ পল , জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ দের। হ্বা, কাঁজি, অমদিধ, দৌবীর (সন্ধানবিশেষ) ও ভূষোদক প্রভ্যেক /৪ কুলভাঠের কাথ /৪ সের; (কুল ভাঠ√২ সের, জল ১৬ সের, শেষ ৴৪ সের) দাভিন বদ এ৪ সেব, বৃক্ষায়রদ (মহাদাবদ) /১ সের। কলার্থ—জীবনীয় গণ (মিলিড) ৬ পল। ব্যানিয়মে ।পাক কবিয়া এই মহা-সেহ (চতুঃস্লেহ) অভাঙ্গ করিলে শিরা মজ্জা ও অন্থিগত বাত, সর্বাঙ্গ ও একাঞ্চ রোগ, কম্প, আক্ষেপ এবং শূল নিবারিত হয়।

অশ্বগন্ধাতাং মৃত্য।

অখগৰূ ক্ষায়ে চ কৰে ক্ষীরং চতুগুণিম। গুড়ং প্রস্তু ব্রিড্রাং স্থাং সাংস্কিন্দু॥

মুত /৪ সের, হ্রা ১৬ সের, অশ্বর্গনার কার্থ ১৬ সের, কল্ক /১ সের। যথানিয়নে পাক করিবে। এই মৃত বাতন্ন, ব্যা ও মাংসবর্জক।

দশ্লাভং য়ত্য।

দশমূলস্যা নিযুৰ্গহে জীবনীয়ৈঃ পলোশ্মিতৈঃ। ক্ষারেণ চ যুত্তং পকং ভর্মণং পরনাত্তিজিৎ। কাশেংজ তিগুণং সপিপ্রেস্থঃ সাধ্যঃ পর্যাসময়।।

ন্ত /৪ সের, ছগ্ধ /৪ সের, দশম্লের কাথ ১২ সের। করার্থ—জীবনীয়গণ (জীবক, ঋষভক, মেদা, মহামেদা, কাকোলী, ক্ষীর-কাকোলী, জীবস্তী, যক্তিমধু, ঋদ্ধি ও বৃদ্ধি) মিলিত ১০ পল। যথানিয়মে পাক করিবে। এই মৃত বাতবেদনানাশক ও তর্পক।

সারসতং মৃত্যু।

প্রস্থাত স্থাত পলিকৈ শিগ্নেকালবন্ধাত কীলোপ্তি:।
আজে প্রস্থাসপাঠে: সিদ্ধং সারস্থতং নারা।
বিধিবন্ধপর্জামানং ত ড্গলাদ্যকত শং কণাজ্জিরা।
স্থাতিমতিমেধাপ্রতিভাঃ কুর্যাং স্পাষ্টবাগ, ভবতি ।
গ্রায়ত /৪ সের। কলার্থ—শজিনার
ছাল, বচ, সৈন্ধব লবণ, ধাইফুল, লোগ ও
আক্নাদি প্রত্যেক অদ্পোয়া। ছাগত্র ১৬
সের। এই সমস্ত ব্যাবিধানে পাক কারবে।
এই যুত সেবন করিলে মুক, গদ্গদ, মিনিন
প্রস্থাত বেগি নন্ত এবং স্থাতিশক্তি মেধা ও
প্রতিভা বৃদ্ধিত হয়।

নকুলাদ্যং য়তম্।

নৰ্লস্য চ মাংস্ম্য পচেৎ প্ৰস্থা জলাচকে।
মৃতপ্ৰস্থা পচেৎ তেন চতু চাগাবশেষিত্য।
তৎসমা দশমূলক পকা মাঘবলান্বিত্যু দ্ব শৃতবেধীরসপ্রপ্রা গালাক্ষক তৎসম্য।
আটো বর্গান্ত কাকেগোলা জাব প্রা মধ্যুছিকা।
এলা স্বচক পত্রক কিকট ক্রিকলা তথা দ্ব মৃতকা নাগকিছলা চ কৰা কৰা প্রদাপত্তে।
সক্রবাতনিকারের অপস্মানে নেশ্যুভাছ।
মহোন্তাদে পক্ষায়াতে চালানে নেশ্যুভিত্য ।
হত্তকম্পে শিব্যক্ষেপা বাধিয়া নক্ষিত্রিলে।
উদ্ধৃত্যুগাতে বাতে ভজ্যাপার্থানিসংশিতে।
নক্সাজ্যিদ্ধানাত্র বাতে ভজ্যাপার্থানিসংশিতে।
নক্সাজ্যিদ্ধানাত্র বিজ্ঞানগ্রা প্রম্

কাথার্থ-নকুলমাংদ /২ ঘুত /৪ (সর। সের, জল ১৬ সের, শেষ / ৪ সের; দশম্ল /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ 🗸 ৪ সের ; মাধ-কলাই ও বেড়েলা মিলিত /২ সের, জল ১৬ ্সের ; শৃত্যুলীরস 🖊 ৪ সের, সের, শেষ /৪ কন্ধাৰ্থ—জীবক, হুশ্ব /৪ সের। ঋ্যভক, কাকোলী, ক্ষারকাকোলা, পদে, বৃদ্ধি, মেদা, महारामा, कारकाली, कीतकारकाली, कारखी, ষ্টিমধু, এলাইচ, গুড়ত্বক্, তেলপত্ৰ, তিকটু, ক্রিকলা, মুতা ও অনস্তমূল প্রত্যেক ২ তোলা। এই ঘুত পান করিলে অপশার, উন্মাদ, পকা-্ষাত, আগ্নান, কোষ্ঠনিতাহ, মিন্মিনভাষণ, উৰ্দ্ধজ্ঞতগত বায়ু ও অহায় নানাপ্রকার পীড়ার শান্তি হয়।

ছাগলাদ্যং মৃত্য।

আজং চর্মবিনির্মান্তং তাক্তশুক্ষরা দিকম্।
পক্ষমুলীন্তরকৈর জলদ্রোনে বিপাচয়েং ।
তেন পাদাবশেষেণ যুতপ্রস্থং বিপাচয়েং ।
জীবনীস্যঃ সমষ্ট্র্যাইকঃ ক্ষারকৈর শতাবরীম্ ।
ছাগলাদ্যমিদং নারা সর্করাতবিকারকুং ।
আর্দিতে কর্নশূলে চ বাধিয়ো মৃক্ষমিরিমে ।
জড়গলাদপক্ষ্নাং থঞে পুর্মিকুক্তয়োঃ ।
অপতানেংপত্সে চ সাপ্রেতং প্রশান্তে ।
প্রগর্মভুলাং পথ –মূলদ্ধান্তমাংস্ট্রোঃ ।
নিক্ষান্য সলিলদেশে ক্রেগ প্রান্যমেন্তিঃ ।
নিক্ষান্য সলিলদেশে ক্রেগ প্রান্যমেন্তিঃ ।

(অত্র ষ্টিমধু ভাগদ্বয়মিতি শিবদাসঃ।)
স্থারস্থার মন্তঃ ;—ওঁ কালি বজেখনি অমুকস্য
ফল্সিদ্ধিং দেহৈ কালনেন খাং।।
অপেরিংা চহাগ্যানে মানুদ্ধা ললাটেক।
উদযুগঃ প্রায়ুগো বা ভিষ্পেনমুপ্লৈভেং ।
ভাগমাবংমফ.—ওঁ হাং ভি গং গণপত্রে স্বাহা।

মৃত /৪ দেব। ছাগ্যাংগ ৫০ প্ল, দশ্যুল ৫০ পল, পাকার্থ জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের ; ছ% ৴৪ ্সা, শত্মুলীৰ রুদ ৴৪ কল্বাগ-জাবনায়দশক দের। (জীবক, প্ৰভক, মেদ্ৰ, মহামেদা, কাকোলী, ক্ষীৰ-কাকোলী, মুগালী, মাধাণা, স্পাবন্তী, যাষ্ট্ৰমধু) ও ষ্টিমধু মিলিভ /১ সের। এই মুঙ পান কার্লে অর্দিত, কর্ণশূল, ব্যিরতা, বাক্শব্জিণাহিতা, নিব্যিন ভাষণ, অস্পষ্টভাষণ, জড়তা, পশ্বতা, থঞ্জতা, গুএনী, কুক্ত্ব, অপতানক ও অপতন্ত্রক প্রভৃতি নানপ্রেকার বায়ুরোগ নষ্ট হয়। (বুন্দ বলেন—ছাগমাংস ৩২ ও দশমুল ৩২ পল, ৬৪ সের জলে সিদ্ধ করিয়া ১৬ সের থাকিতে নামাইবে। এই কাগ এবং জীবনীয় গণ ও যষ্টিমধুর কল্প দহ মৃত /৪ দের পাক করিবে। বুনের মত্ই প্রচালত)।

বৃহচ্ছাগলাদ্যং মৃতম্।

ড়াগনাংসতুলাং গৃহ্ণ দশমূল্যাঃ পলং শতম্। অখগন্ধাপলশতং বাট্যালকশতং তথা। জলদ্ৰোণে বিপক্তবাং প্ৰত্যেকং পাদশেষিতম্। মুতাঢ়কং পচেৎ কীন্নং শতাবৰ্ষ্যা রসং সমম্।

তাত্রপাত্তে দৃষ্টে হৈন শনৈম ছিগ্ননা পচেৎ। अत्मोवधमा ककमा প্রশেকং ভূক্তিদ মিত্য ॥ कौतन्त्रा प्रधुकः एएका कर्रकर मो मानम्द्रभनम् । মৃন্তং সচন্দৰং রাস্তা পর্নিৰ ছ:শারিবে ॥ (अरन एवं ह ज्या कुन्ने॰ अ'तकर्तन' को नहीं। मोन्सी 'श्रेषञ्च 'क्रकता नहर राज'म् ^{त्}राको ॥ এলাপত্রং বরীন'গং জা শীকুশ্রনধ'ক্সকম। मिक्किक माजिमः भाक्त तिशुकः 'मनतालुकम् । বিড়ঙ্গং জারককৈব পেষ্টিহা বিনিক্ষপেৎ। ৰস্বপুতে চ শীতে চ শকরা-প্রসংযুত্ম । ৰিধাপয়েৎ থ্রিদ্ধভাওে মার্দ্দে বা ভারনে শুভে। अस्मीयथमा निकामा अन् वीचामकः शत्रम् । দেববেবং নমস্থতা সংপূজা গণনায়কম্। পিবেং পাণিতলং তদ্য বাধিং বাক্ষ্যানুপানতঃ ॥ সর্ববাতবিকারের অপস্মারে বিশেষতঃ। উন্মাদে পক্ষায়াতে চ অ'গ্ৰানে কোঠনিগ্ৰহে॥ কর্ণরোগে শিরোরোণে বাধিয়ে চাপ্তস্থক। ভূতোঝাদে 6 গুধুনাাং সোদরে চা'ক্ষপাংজে॥ পার্যপুলে চ সচছ্তে বাগায়মে দিয়ে তথা। বাতকটকক্ষেণ্ড-মূত্রতছে সাবসুকে। ক্রোধুন্ধে তথা হাঞে কুছে চাপ্রনি'মন্মিনে। ख्या शास्त्र ध्रदायाचा व छ। १८७ । एवं दि ।। আনত্তের্গ কেওয়ে চাতুর্গন্ধানের বাছ। হতুরাহে তথা শেপের পানে তিববৈশ্বিকার। দুণ্ডাপতানকৈ জগ্নে দাহে চাকেনকৈ দুখা। জীর্বছরে বিধে কুড়ে শেক স্থান্ত মণাতামে। আচাৰাত্ৰকবিনালে চাৰাত্ৰজনলেৰু মা এক।ঙ্গবোগাণ হৈব তথা সবং গরেণিলে। হস্তকলো শির কলেন তিন্দান্তত্তে জড়ে জমে। ক্ষাণেক্রিয়ে নপ্তত্যক ওজুনি, দরণে তথা চ প্রীণাং বাভাপ্রভাতে চ পটলে চাক্রিস্পন্বনে। একাঞ্চল্পাননে .চব নকাঞ্চল্পাননে ভথা। নগাদিপতিতে বাতে স্থাণামপ্রাপ্তিংতুকে : আভিচারিকদেশে চ মন,সন্তাপসন্তবে ॥ বে বা হপ্রভবা রোগা যে চ পিওসমূদ্ধনাঃ। শিরোমধাগতা যে চ গুড়বা শার্থ দিস স্থিতাঃ ৮ মাতৃগ্ৰহাভিভূতক শিশুফক বিভ্যাতি। প্রকাণবলমাংস্ক্ত ন বস্থাসমনসাম ! মুতেনানেন সৈধাতি শঙ্কর জারণ প্রণাশ । নিহাত সকলান্বেগে ন ৫০০ গ্ৰহত্য এম্ 🕯 রসায়নং বহ্নিবলপদদ বপু প্রবর্ণ (৮৫) ও কর্পার্ **দস্তবেল্লে**ণ সম্প্রেম প্রাথম প্রাথম বি 質付 門 70変・竹

> অপু: -গা পু :শ গং করে : ভ শতাবুধং কামসমং বলিষ্টম্ ॥

মহদ ঘতং নাম তু ছাগলান্তাং বিনিশ্মিতং বাতনিস্থানক। শিবং গুড়ং রোগভয়াপহঞ্চকার হারীতম্মিরিশিষ্ট: 🛭 শুগালবহিণোঃ পাকে পুমাংসং তত্ত্ব দাপয়েং। মণ্রী জম্বকা চছাগী ব'যাহীনা স্বভাবতঃ। ভাষিতঃ কাশিরজেন চ্ছাগ এব নপুংসকঃ॥ গবা ঘুত ১৬ সের। কীথার্থ—নপুংসক ভাগমাংদ ১০০ পল, পাকার্থ জল ৬৪ সের শেষ ১৬ সের; দশমূল প্রত্যেক ১০ পল, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের ; অর্থগন্ধা ১০০ পল, জন ৬৪ সের, শেষ ১৮ সের; বেড়েলা ১০০ পল, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের , হুগা ১৬ সের, শতমূলীর রস ১৬ সের। **কন্ধার্থ**— জীবন্থী, ঘষ্টিনধু, দ্রাক্ষা, কাকোলী, কাকোলী, নীলোৎপল (অভাবে স্থ দিপুশ্ন-यल), युटा तक्काना, तात्रा, युगानी, यागानी, গ্রামালতা, অনন্তমূল, মেদা, মহামেদা, ভীবক, শ্বন্তক, শুটা, দাব্রুহরিন্তা, প্রিয়ঙ্গু, ভিদলা, ভগরপাড়কা, তাশাপত্র, পার্মকার্ছ, তেজপত্র, শতমূলী, নাগেশ্বর. জাতীপুষ্প, ধনে, মাঞ্জাই, দাড়েম, CHAPTO েণু চ. এলবালুক, বিভূ**ন্ধ ও জীরা ইহাদে**ব প্রত্যেকর ৪ তোলা। হান্রপাত্রে মৃ**ছ আয়-**পাক কারবে। পাকশেষে শাতল হুটলে ঘুত ছুঁ।কিয়া লুটুয়া চিনি /২ **সের** মিলত করিয়া মুক্তর ভাতে রাখিবে। মাকা-২ তোলা। ব্যাধ বিবেচনা করিয়া ছগ্ধাদি অরুপান ব্যবহা করিবে। এই ম্বত বাত-বাাধির শ্রেষ্ঠ ঔষধ। ইহা পান করিলে অপস্মার, উন্মাদ, পকাঘাত, আগ্রান, কোষ্ঠ-োধ, কর্ণগোগ, শিরোরোগ, বধিরতা, অপeস্ত্রক, ভূতোঝাদ, গৃধ্নী এ**বং অস্তান্ত নানা** প্রকার বাতজ ও পিওজ পীড়ার শাস্তি হইয়া था:क। इंश कोसंगा अ शेल्यानित माज-হারতা নিবা 'পের ম'হাষ্ব। কছু নন 4. 5 7. 14 ~ 가이 성. · · (西汉-

অথ পথ্যাপথ্যবিধঃ।

বাতব্যাধে পথ্যানি।

অভ্যক্তো মর্দ্দনং বস্তিঃ শ্রেহঃ স্বেদোংবগাহনম। সংবাহনং সংশ্মনং প্রাবৃতিবাতবর্জন্ম ॥ অগ্নিকর্ম্মোপনাহ ১ ভূশদ্যা স্নানমাদনম। তৈলভোগী শিরোবন্তি: শয়নং নক্তমাতপঃ। मञ्चर्नाः त्रःशक किलाहि। प्रधिकर्किका । प्रिंखिलः यमा भव्दा साम्यलयुगा तमाः॥ ন্ধীনান্তিলগোধনা নাধাঃ সংবৎসরে:খিতাঃ -শালয়ঃ ষ্টিকাশ্চাপি কুলথানাং রুসঃ হুরা। প্রামাগোহৰতরোষ্টার-রাসভচ্ছ প্রাদ্য:। **শানুপাঃ কোলমহিং-স্থান্ত্**পলিগঞাদ্য: । উদকা হংসকাদশ্ব-চক্রমদগুবকাদয়ঃ। বিলেশয়া ভেকগোধা নকুলখাবিদাদ্য: ॥ যথাশ্রমং যথাবস্থং যথাবরণমের হি। বাতবাাথে সমুৎপরে পণ্যমেতর ণাং ভবেৎ ॥ চটকঃ কুরুটো বহা ভিত্তিরিশ্চেতি জাঙ্গলা:। শিলিন্দঃ পর্বতো নক্রো গর্গরঃ কবয়ীল্লিশঃ॥ এরঙ্গণ্ট, লকী কুর্মঃ শিশুমারস্থিমিজিলঃ। রোহিতো মদগুর: শুঙ্কী বন্দ্রী ৮ কুলিশো নাবা: ॥ পটোলং শিগ্রু বার্তাকুল শুনং দাড়িমন্বরম্। প্রতালং রুসালঞ্চ নলদ্ব পর্যক্ষ ৷ জ্মীরং বদরং লোকা নাগ্রক্ষং মধকজ্ম : প্রসারণী গোকুরক: ভক্রাঙ্গী প¦রিভদ্রক: ॥ পরাংসি চ পরংপেটা রুবুতৈলং গবাং জলম। মং**ভাঙিকা চ** তাম্বলং ধাস্তামং তিভি**ডীফ**লম 🖡 বিশ্বোঞানি চ ভোজানি বিশ্বোঞ্চঞানুবেপন্ম। বিশেবাদ্বমনং কা্যানামাণ্যমুপাগতে॥ পকাশয়স্তে মাংসত্তে তথা স্বিদ্ধবিরেচনম। প্রত্যাগ্মানাগ্মানসংজে বর্ত্তিল জ্বনদীপনম। অন্তীলাখো গুলাবিধিঃ গুক্রন্থে ক্ষয়জিৎ ক্রিয়া। ত্ববাংসাস্কশিরাপ্রাপ্তে হিতং শোণিতমোক্ষণম ।

তৈলাভ্যন্ত, অন্ধর্মদন, বন্তিক্রিয়া, শ্লেহ-প্রেরোগ, স্বেদ, অবগাহন, সংবাহন, সংশমন ঔষধ, বস্ত্রাদি দারা শরীর আবরণ, বায়্বর্জন, অগ্নিকর্মা, উপনাহ (পুলটিণ), ভূমিশব্যা, মান, উপবেশন, তৈলপূর্ণ দ্রোণীতে অবগাহন, শিরোবস্তি; শয়ন, নস্ত প্রয়োগ, আতপ দেবন, সম্তর্পণক্রিয়া, পৃষ্টিকর দ্রব্য, কিলাট, দধি-কৃচ্চিকা, স্থত, তৈল, বসা, মজ্জা, মধুরদ্রব্য অমুদ্রব্য ও লবণরসমুক্ত দ্রব্য, নৃতন গোধুম, নৃতন তিল, নৃতন মাষ্কলায়, সংবৎস্রো্যিত শালি এবং যষ্টিক তণ্ডল, কুলখকলামের যুষ, মুরা ; গো, অখতর (গর্দ্ধভীর পর্ভে ঘোটকের ঔর**সজাত, অথবা ঘোটকী**র গর্ভে গর্দ্ধ**ভের** ঔরসজাত জন্তু), উট, অশ্ব, গৰ্দভ এবং ছাগ প্রভৃতি গ্রাম্য জন্তর মাংস ; শুকর, মহিষ, স্তম্ (বহুশুক্ষযুক্ত মুগ), গণ্ডার ও হস্তি প্রভৃতি আন্পমাংস; হংস, কাদ্র (শ্রামপক্ষ কলহংস). চক্রবাক এবং মদুগু, বক প্রভৃতি ঔদক্ষাংস: ভেক, গোদাপ, নকুল এবং শুজাক প্রভৃতি বিলেশর জন্তর মাংস , চটক, কুকুট, ময়ুর এবং তিত্রি প্রভৃতি জাঙ্গল-মাংস: শিলিক মৎসা, পাব্দা মংস্তু, কুতীর, গাগর মাছ, কইমাছ. ইলিশমাছ, এনঙ্গ (মংশু বিশেষ), চুলুকীমাছ (শিশুমার আরুতি মংস্ত), কচ্ছপ, শিশুক. তিমিঙ্গিল মংস্থা, রোহিতমংস্থা, মদ্গুর মংস্থা, শিঙ্গী মংস্ত, বানি মংস্ত, বেলে মংস্ত, কুদ্র মংস্থ এবং পটোল, শজিনা, বেগুন, রশুন, মধুর-দাড়িন, অমদাড়িম, পাকাতাল, জানু, নিম্ব, ফলসাফল, জামীরলেব, কুল, কিসমিস, নারাঙ্গীলের, মউয়াফল, গরভাহলে, গোকুর, নিসিন্দা, পালিধামাদার, ১গ্ন, ভাব, এরগুতৈল, গোমুত্র, গুড়ের মাত, পান, কাঁজি, ঠেতুৰ এই সকল বাতব্যাধিতে হিতকর। আমাশয়গত বাতে সিগ্ধ ও উষণ্ডবা ভক্ষণ এবং স্পিগ্ধ ও উফ প্রলেপন, বিশেষতঃ ব্যন হিতজনক। প্রকাশয়গত এবং মাংসগতবাতে স্নিগ্ধ বিরেচন এবং আগান ও প্রত্যাধান সংজ্ঞক বাতে বর্ত্তি-প্রয়োগ, লঙ্ঘন ও অগ্নিদীপ্তিকর দ্রব্য ; অগ্নীলা নামক বাতরোগে, গুলারোগবৎ পথ্য প্রয়োগ করিবে। ওক্রধাতৃস্থ বাতে শোষরোগোক্ত পথ্য প্রয়োগ করিবে। ত্বক মাংস রক্ত এবং শিরা প্রাপ্ত বাতরোগে রক্তমোক্ষণ হিতকর।

বাতব্যাধাবপথ্যানি।

চিন্তা প্রজাগরণবেগবিধারণানি ছৰ্দিঃ শ্ৰমোহনশনতা চণকাঃ ক্ষায়াঃ। নীবারকস্থশরবৈণবকোরদুষ-খ্যানাকচূৰ্বকুক্বিন্দুম্থানি যানি। ধাস্তানি তানি তৃণজানি চ রাজ্মাণা মুক্ণান্ডডাগসরিদম্ যবঃ করীরন। জম্বঃ কশেকতণকং ক্রমুকং মুণালং নিম্পাববীজমপি তালফলাস্ত্রমত্তা॥ শালকতিন্দককঠিলকবালতালং শিখা চ পত্রস্তবশাকমৃড স্বর্ঞ। শিতাম্বরাসভপয়োহপি বিরুদ্ধনন্ত্রং ক্ষারোহপি গুঙ্গাললং ক্ষতভ্রতি । কৌদ্রং কষায়কটভিক্তরসা ব্যবাহা হস্তামধানমপি চংক্রমণঞ্ গট্বা। আধ্যানিনোহর্দ্দি হবতেংহণি পুনর্ণিশেষ্থ রানং প্রস্তুপলিলং দির্গণক । নি,শেষতত্ত্ব পরিকীতিত এম বংগা न वर्ष भर्भभववशान्य भूषर न ४८७ ।

চিম্তা, রাত্রিজাগরণ, মলমুত্রাদির বেগধারণ, ব্যন, পরিশ্রম, উপ্রাস, ছোলা, ক্যায়রস, উড়ীধান্য, কাঙ্গনীধান্য, শর্ভণজাত ধান্য, বংশ-ত গুল, কোদোধান্য, স্থামাধান্ত, চূর্ণক (ব্রীহি-ভেদ), বনকুলথ প্রভৃতি সমস্ত ভূণধানা, বরবটী, মুগ এবং তড়াগ ও নদীর জল, যব, বাশের কোঁড়, জামফল, কেশুর, চিনাঘাস, গুরাক, পদ্মসূণাল, শিম্বীজ ও তাল আঁটীর শাঁস, কুমুদাদির মূল, গাব, করলা, কচিতালের শাস, দিম, লাউ-কুমড়া প্রভৃতি পত্রশাক, যজ্ঞভুমুর, শীতলঙ্গল, গাধার হগধ, বিরুদ্ধ দ্রব্যু, ক্ষার, শুষ্ক-মাংস, রক্তমোকণ, মধু, কষায়-কটু ও তিক্ত-রদ, স্ত্রী প্রদঙ্গ, হস্তী অথ প্রভৃতি যানে আরো-পথপ্ৰযাটন ও খাটে শ্য়ন বাতরোগে অপণ্য। বিশেষতঃ মান, দুষিত জল ও দন্তবাবন এই সমস্ত আগান-রোগী এবং অদিতরোগির বজনীয়।

ইত্যায়ুকোদ-সংগ্ৰহে বাতবাাধ্যবিকার: ৷

অথ বাতরক্তাধিকারঃ।

অথ বাতরক্ত-নিদানম।

লবণায়কটুকার-মিংগ্রাফারণেডে জনৈর।

ক্রিড্ডাক্সান্প-মাংসপিগাক্ষনকরে।
ক্রেড্যামিনিশাকাদিপললেক্ডি।
দধ্যরেনালসৌরার-স্তভ্ততক্রসামনে।
বিক্রাধ্যমনকেকি দিব স্বপ্রস্রামনে।
শ্রামন, স্কুমারাকারে মিকাইবিবিইবিশ্য।
স্কুলামাং ক্রিনাকারি কুপতে বাহমোগিত্য।

হস্তাঘোট্ট্রগজ্জভাদাশ্বভাদ বিদাহারং সাবিদাহোহশনত। কুমরং রক্তং বিদহতাকি এই ১৪২ শারেং গাদয়োকায়েকে ছে। তৎসাক্ষাকায়কা দুশিতেন তৎপ্রাবিদ্যাহিচ্যতে বাত্রজন্। ক্ষেদ্ৰত, বং ন বং কাষ্ট্যং প্ৰণাজ্য হং ক্ষাত্ত তিক্ৰ ।
স্কিশেমিলামালজ্যং সদনং পিতৃকোল্যান ।
কানুত প্ৰোক্ত কাষ্ট্ৰ সদনং পিতৃকোল্যান ।
কানুত প্ৰোক্ত কাষ্ট্ৰ কাষ্ট্ৰ চাসক্ৰ ।
কানুত ক্ষিমু কগ্ৰুত্ব ভূষা নজ্যতি চাসক্ৰ ।
বেৰলং মতান প্ৰতি তাক্ৰ প্ৰকাশন্য ।
বাতেই বিকেবিকং তাৰ প্ৰাপ্তবাধান্ত না
কাজ্যুলসকানাং স্কোচাইক্ষ্যতোহতিকক্ ।
শীত্ত্বধানুপ্ৰায়ী ভাত্তবপ্ৰথুত্ত্ব ॥
রক্তে গোধাহতিকক্ ভোদভান্তিকি ।
বিসক্ষেত্ৰ ক্ষাত্ত হিল্পান্ত ।
বিসক্ষেত্ৰ ক্ষাত্ত ।
বিসক্ষেত্ৰ ক্ষাত্ত হিল্পান্ত ।
বিসক্ষেত্ৰ ক্ষাত্ত হিল্পান্ত ।
বিসক্ষেত্ৰ ক্ষাত্ত হিল্পান্ত ।
বিসক্ষেত্ৰ ক্ষাত্ত বিশ্বান মুক্তা মন কৃষ্য ।
প্ৰাণ্ড বিদ্যুল্য বিজ্যান বিশ্বান মুক্তা মন কৃষ্য ।
প্ৰাণ্ড বিদ্যুল্য বিশ্বান মুক্তা মন কৃষ্য ।
প্ৰাণ্ড বিদ্যুল্য বিশ্বান মুক্তা মন কৃষ্য ।

ককে তৈমিতাগুরুতা-কুপ্তিরিয়ত্বশিততা,। কণ্ডুম লা চ রগায়কে সকলিঞ্জ সকরাৎ।।

অমু, কটু, ক্ষার (ঘ্রক্ষারাদি). াম্ম, উষ্ণ ও অপক বা হর্জর দ্রবাভাতন, এবং জন্ত্র অনুপত্র জীবের পচা বা শুষ মাংস, তিলকল্প, মূলা, কুল্থকলায়, কশায়, শিম, শাকাদিদ্রবা, মাংস, ইকু, দবি, কাঁ জ. সৌবীর (সন্ধানবিশেষ), (আচার-বিশেষ), আসব, ত্ত্ৰ, স্থরা, বিক্ষভোজন, অধ্যশন (পূর্বাহার অজীর্ণ-সত্ত্বে ভোজন), ক্রোল, দিবানিদ্রা ও জাগরণ এই সকল কারণে বাতরক্ত প্রকুপিত হয়। এই পীড়া প্রায় অষথা-আহার-বিহার-काती (कामनाञ्च श्लकात स्थी वाज्जिल्लानहरू ছই স্বা থাকে।

যে বাক্তি নিয়ত হস্তী অথ বা উট্ট মারা ত্রমণ ও বিদাহজনক অর ভোজন তাহার সমস্ত রক্ত, ঐ ভক্তায়ের বিদাহহেত্ আশু বিদগ্ধ হইয়া থাকে এবং সেই বিদগ্ধ রক্ত, কুপিত বায়ু সহযোগে পদৰ্যে দ্বি ত হয়। যাদও বাত ও রক্ত উভয়ই কু পিত হুইয়া এই রোগ উৎপাদন করে, ভথাপি দোষত্ব-বিষয়ে বায়ুরই প্রাবলা হেতু ইহাকে রক্তবাত না ব্লয় বাতরক্তই কহিয়া থাকে ৷ বিদাহী অন্ন ভোজনে ব্ৰক্ত ও হণ্ডাদিগমনে বায়ু প্রকুশিত হয় এবং পদম্বর লম্বভাবে থাকাতে ঐ চুষ্ট রক্ত বায়ুকত্তক প্রেরিত হইয়া পদম্যেই সঞ্চিত হইয়া থাকে।

বাতরক্ত উৎপন্ন হইবার পূবের অনাস্ত ঘত্মাগম কিংবা একেবারেই ঘত্মের অনিগম, স্থানে স্থানে ক্ষক্তবর্ণ চিত্র, স্পর্শাক্তিলোপ, কোন কারেও কোন স্থানে ক্ষত হইলে, তাহাতে অত্যন্ত বোনো, সান্ধসকলের লোখল্য, আলহা, অবসমতা ও পিড়কার (ব্রণ-বিশেষ) উৎপাত্ত হয় এবং ভারু ভত্মা ইক্স ব চি হন্ধ হস্ত পদ ও নাম সাক্ষালে স্টাবেববদ্ বেদনা, আ্রুণ (স্পান্ধন বিশেষ)), বিদারণবং পীড়া, ভক্ষাই, স্পর্শাক্তির

প্রাস ও কণ্ড হয় এবং সন্ধিস্থাল বারংবার বেদনা হয় ও দিবৃত্তি পায়। তথ্যতীত দেহে বিবর্ণনা ও চাকা চাকা চিহ্ন সকল প্রকাশিত ২ইয়া থাকে।

বাত ভ লোগে যদি বাসৰ কোপ অধিক-তর হয়, তাহা ২ইলে শূল, শূলণ ও **ভঙ্গবং** পীড়া এবং শোধেৰ ক্লফতা, ক্লফ্ট বা গ্ৰাববৰ্ণতা 'ও বাতরজ-লক্ষণের কথন বৃদ্ধি, কথন বা প্রাস হয়। ধননা অঙ্গলিও সন্ধি সকলের সম্বোচ, অঙ্গবেদনা, অভিনয় যাতনা, শাত-সেবনে ছেয় ও পাতে অনুপশয়, শুরুতা, কম্প ও স্পর্ণাক্তর হ্রাস হইয়া থাকে; এবং এই বাতরক্তে যাদ রক্তকোপের প্রাবলা থাকে, তাহা ২ইলে শেথ ভায়বর্ণ, কণ্ডক্রেদসম্বিত অভিশয় দাহ ভোদ ও চিমিচমি-বেদনাবিশিষ্ট হয়। কিন্তু কুক্ষ'ক্রল **স্থা**বা পাডার **শান্তি** হয় না। বিভাবিকা বৃতিবক্তি দাহ, মোহ, ঘশাগ্ম, মুর্ছে: মওতা ও তুল্গা হয়। আর স্পূৰ্ণানহ, দাংযুক্ত, রক্তবর্ণ, এবং পাকায়িত ও আতশ্য উন্নবিশিষ্ট হয়। কফা-ধিক বাত্তের স্থামতা, গুরুত্ব, স্পর্শাক্তির অরতা, চাকু চকা, শৈতা, কণ্ড ও অর অর বেদনা হইয়া থাকে। দোহধ্যের প্রাবশ্যে তত্ত্ব-ভয়দোষর ত লক্ষণ এবং দোষত্ররের আধিক্যে ত্রিদোষকত লক্ষণ সকলের মিলন ২য়।

অথ বাতরক্ত-চিকিৎসা।

*:---

উত্তানমথ গভীবং বিবিধং বাতশোণিতম্ । ভুলাংসংখ্যমুভানং গভারত ভুৱাভারম্ ॥

বাত ক্ত তুই প্রকার; যথা—উত্তান ও গন্তীর। বাতরক্ত, ত্বক্ ও মাংসাম্রিত হইলে তাহাকে উত্তান এবং মেদঃ প্রস্তৃতি স্তুপ্তি-স্তুগত হহলে তাহাকে গন্তীর বাতরক্ত বলা যায়। বাহং লেণাভাঙ্গদেকোপনাহৈ ব'তলোপিতন্। বিরেকাস্থাপন হেং-পানৈর্মন্তীরমাচরে । স্বয়োমু ফিনস্ক শৃঙ্গ প্চালাপ্জজৌকসা। দেশাদেশং এজেং প্রাবাং পিরাভিঃ প্রচ্ছানেন বা। অক্সমানো ন তু প্রাবাং ক্লকবাতোত্তরে তু যং ।

প্রদেশ, অভাঙ্গ, পরিষেক ও উপনাহ

দারা বাহ্য অর্থাৎ উত্তান-বাতরক্তের এবং
বিরেচন, আস্থাপন ও স্নেহপান দারা গন্তীর
বাতরক্তের চিকিৎসা করিবে। শৃঙ্গ, স্টী,
অলাব্ ও জলোকা দারা উভয় বাতরক্তেরই
রক্তমোক্ষণ করিবে। বাতরক্ত প্রসর্গনীল

অর্থাৎ একস্থান হইতে অক্সন্থানে থায়, অতএব যে স্থানে যাইবে দেই স্থানেই শিরাবেধ
বা প্রেছন (ঈষৎ বিদারণ) দারা রক্ত্রাব
করাইবে। কিন্তু রোগির অঙ্গমানি থাকিলে
বা দেহ ক্লক্ষ ও বাতপ্রধান ইইলে রক্তমোক্ষণ
নিষিদ্ধ।

বাতশোণিতিনো রক্তং বিষয়ত বহুশো হরেও। অলালং রক্ষদের বার্থ যথাদোবং যথাবলম্ ॥

বাতরক্ত পী।ড়ত ব্যক্তিকে শ্লেহপান করা-ইরা, দোষ ও বল অনুদারে অন্ন পরিমাণে পুন: পুন: তাহার রক্তমোক্ষণ করিবে। রক্ত-মোক্ষণ বিষয়ে এরপ সাবধান হইতে হইবে, যেন রক্তক্ষয় স্বারা বায়ুর প্রকোপ না জ্বনে।

উগ্রাহ্মদাহতোদের জলৌকোভিবিনিইরেং। শূকতুথ স্থাচিকাভিঃ কণ্ডুক্নগ্রেপনাধি ১ব্ ॥

উত্র অন্ধনাহ ও স্থ নিবেধবং বন্ধনা থাকিলে জলোকা ধারা এবং কণ্ডু, বেদনা ও কম্প থাকিলে শৃষ্ণ, অলাব্ ও স্থ নিবেধ ধারা রক্ত-মোকণ করিবে।

মোকণ কারবে।
বিরেচনৈ প্রেংষুকৈনিত্যমেনং বিরেচজেং।
স্বেংস্ক বিরেচক ঔষধ শারা বাতরক্ত
রোগির নিত্য বিরেচন করাইবে।
বিদ্যাদসকুচ্চাপি ৰভিকল যথাবলম্।
শহি বভিসমং কিঞ্চি বাতরক্তচিকিৎসিতম্।
বল বিবেচনা কারয়া পুন: পুন: বক্তি প্রয়োগ
করিবে। বাস্ত, বাতরভের শ্রেষ্ঠ ঔষব।

ছিল্লোভবাকৰানেণ দেবাং শুদ্ধং শিলাজতু। অমুভাত্তিফলাকাখ-সংযুতা বা পলম্বনা॥ গুলঞ্চের কাথের সাহত শোষত শিলা-জতু অথবা গুলঞ্চ ও তিফলার কাথের সহিত গুণ্গুলু সেবন করিলে ব্যত্তবক্ত প্রশান্ত হয়। গুদ্দোল স্বর্গং করং চূর্ল বা লাখ্যের চ। প্রস্তুত্তনালমানের মুচাতে বাত্যোলিতার ॥ গুদ্দুটীর স্বর্গ, করু, চূর্ণ বা কাথ দীর্ঘ-কাল সেবন করিলে রোগা বাত্যক্ত-মুক্ত হয়।

> মতেন বাতং সঙ্টা (ব্যক্ষং পিঙং সিভাচা নগুনা কঞ্চ্যা বাভাস্ত্তগ্ৰং কুৰ্ট্ডলমিশ্ৰা প্ৰচামবাতং শুমনেদ্ গুডুচা।

গুড়ু চীর কাথ প্রতের সহিত পান করিলে বাতরোগ; গুড়ের সাহত গান করিলে, মল-বিবন্ধতা; চিনির সহিত গান করিলে, পিতত্তি ; মধুব সহিত পান করিলে কফ-ছিট; এরপ্রতিলো সাহত পান করিলে উগ্রবাতরক্ত এবং প্রতিচূর্ণের সহিত পান করিলে আমবাত প্রশ্নিত হয়।

ক্ট্কামৃত্যপ্তাহ্ব- ৬ঠ কেন্দ্ৰং সমাজিকম্। গোমুত্ৰপাঠং জয়তি সক্তং বাচৰোণিতম্।

কট্কী, গুলঞ্চ, যষ্টিমধু ও শুঠ ইহাদের কর (প্রত্যেক ৮/০) মধু সংযুক্ত করিয়া গোমুত্রের সহিত পান কারলে কফাঘিত বাতরক্ত বিনষ্ট হয়।

> হরী একাং প্রাপ্ত সমং গুড়েন ভিশোহশবা পঞ্চততো গুড় চাটে। কাথোহহুপীতে শম্মতাব্যাং প্রভিন্নাজায়ুক্তবাত্র ক্ষম্

তিনটি বা পাচটি হরীতকী, গুড়ের সহিত ভক্ষণ করিয়া পরে গুলঞ্চের কাথ পান করিলে বাতরক্ত নিবৃত্ত হয়।

নিংহাক্তপঞ্না-ক্রিন্তহিরওগোক্রকাথ:। এরওতৈলর মা-সৈক্ষরত্ব থিতঃ পীতঃ । প্রশ্ময়তি বাতরতং তথামবাতং কটাশ্লন্। মূতপুরাধ্বিবক্ষং গ্রেধ্বিকারং প্রক্রবারন্।

বাসক, পঞ্মুলী, গুলঞ্চ, এরগুমূল ও গোকুর ইহাদের কাথে এনগুটতন, হিন্দু ও সৈন্ধব লবন প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে বাতর্জ্ঞ, আমবাত, কটাশূল, মল-মূত্র-বন্ধতা ও স্থদারুণ ব্রশ্ববাগ প্রশমিত হয়।

গন্ধবৃষ্ণ বাস্থ্যকামুতানাং
মূলং বলেক্ষ্যকরোন্চ পচেৎ তু ধীমান্।
বাতাস্থান্ত বিনিহন্তি চিরপ্ররুত্মান্তাম্পণ ক্টিভমূর্জগতত্ত ধীমান্।
কম্পিডপ্রশামনং কচ্ছুবাস্পনাশনম্।
বাভয়ক্তপ্রশামনং ক্ষাং গুড়বৃতং শৃতম্।
পিশ্লনীবন্ধিমানং বা সেবাং পথা। গুড়েন বা।

এরওমূল, বাসক, গোকুর, গুড়্চী, বেড়েলা মূল, কুলেখাড়ার মূল এই সকল জব্যের কাথ প্রস্তুত করিয়া সেবন করিলে বছদিন জাত বাতরক্ত, জামুপর্য্যস্ত শৃটিত বাতরক্ত, উর্জাত বাতরক্ত, কফ, পিত্ত, কচ্ছু ও বীসপ্ প্রস্তুতি নষ্ট হয়। গুড় সহ পিপ্পলী এক একটি বৃদ্ধি করিয়া সেবন করিলে এবং গুড় সহ হরীতকী সেবন করিলেও বাতরক্ত নষ্ট হয়।

পিভোত্তরে তু কাশ্বয়-প্রাক্ষারথধনকার।
মধুকক্ষীরকাকোলী-যুক্তং ক'থং হাশীতলম্ ॥
গর্করামধুসংযুক্তং বাতরক্তে পিবেররঃ।
ধারোপং মৃত্রসংযুক্তং ক'রং পোলানুলোমনম্ ॥
পিবেরা সত্রির্চচ্পং পিত্রকার তানিলে।
ক্ষীরেশৈরগুতৈলং বা প্রয়োগেণ পিবেররঃ।
বক্তলোবে বিত্রক'র্থং ক্রীরে ক্রীরেনাশন্য॥

পিভাধিক বাতরক্তে গান্তারীকল, কিন্
মিন্, সোঁদালের আঠা, রক্তচন্দন, যাষ্টমধু,
ও ক্ষীরকাকোলী এই সকলের কাথ শীতল
হইলে কাথের অষ্টমাংশের একাংশ চিনি ও
মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে পিভাধিক
বাতরক্ত প্রশমিত হয়। ধারোফ্ত হয় গোমুত্রসহ পান করিলে দোষের অম্প্রেলাম হয়।
পিত্ত ও রক্তাধিক বাতরক্তে ধারোফ্ত হয় সহ
তেউড়ী মূল-চূর্ণ পান করিলে বাাধি উপশমিত
হয়। বহুদোর বিশিষ্ট বাতরক্ত বোগী বিরেচনার্যে হয় সহ এরগুতৈল পান করিবে। উমধ
কীর্ণ হইলে হয় ও অয় আহার করিবে।

রক্তোন্তরং ক্ষীরমূতং মধুকে:শারবারিভিঃ॥ সেচনঞ্চাত্র কন্তন্যমনিক্ষানেঃ ক্ষণং ক্ষণস্॥ সহস্রশতধোতেন স্বতেন ক্লবিরোন্তরে। লেপনং স্বষ্ঠ্^{নী}তেন স্বতসর্জ্জরসেন বা। শীতেনি ব্রাপণেশ্চাপি বক্তপিতোত্তরং জয়েৎ॥

রক্তাধিক বাতরক্তে ছুগ্ধ, ঘুত, যৃষ্টিনধু, বেণার মূল, এই সকলের কাথে এবং মেষী ছগ্ধ ছারা পুনঃপুনঃ পরিষেচন করিবে। স্থানী-তল শতধীত ঘুত বা সহস্রধীত ঘুত অথবা স্থাতল দ্রব্য কিংবা ঘুত ও ধুনা ছারা লেপ দিলে রক্তাধিক রাতরক্ত উপশমিত হয়। দাহপ্রশমক স্থানিতল দ্রব্যের প্রক্রেপ ছারা রক্তাপতোহণ বাতরক্ত জয় করিবে।

সরাগে সরুজে দাঙে রক্তং বিস্নান্য লেপয়েং। তিলাঃ পিয়ালং মধুকং বিসমূলক বেতসম্। সম্বতং পয়সা পিঠং প্রলেপো দাহরোগগুং॥

দাহ ও বেদনায়ক্ত রক্তাধিক বাতরক্তে রক্তমোক্ষণ করিয়া পরে তিল, পিয়াল, যষ্টিমধু, পদ্মমূল ও বেতদ এই দকল জব্য চগ্ণ সহ পেষণ ও ঘত সংষ্ক্ত করিয়া লেপ দিনে। ইহাতে বাতরক্ত জন্ম দাহ নই হয়।

মারিখং নব্রীতক বাজনা পরিম্নিতিত্য।
গোমুজমিলিতং কুয়া জারেগ লবণেন চা তদেকজ সমালোগু বাজনা ভারগে**ছ**লৈ: ॥ গানুমুছভয়েও তেন দেংগুড়ানশাল্পয়।

মহিষের মাধনের সহিত গদ্ধক, গোমুত্র, হগ্ধ ও সৈদ্ধব একত্র মিশ্রিত করিয়া আগো-ড়ন করত উষ্ণ করিয়া গাত্রে সন্দন করিলে গাত্রস্ফুটন নষ্ট হয়।

> গোৰ্মচূৰ্গজপয়োয়তঞ্ সহ্হাগছ্পোকৰ্বীজকৰঃ। লেপো বিধেয়া শতবৌতস্পিঃ সেকে গয়কাবিক্ষেন শস্ত্ৰ।

গোধ্মচূর্ণ, ছাগহ্ম ও ছাগম্বত; ছাগ-হ্ম ও এরগুরীজ; এবং শতধৌত মৃত বাতরক রোগে এই ত্রিবিধ প্রলেপ ও মেষ্ড্রয় মেচন হিতকর।

এরওবাজমুক্তাং শতাধ্বাং জারকং বলাম্। ভাগেন প্রমা পিছুব লেপয়েদ্সকুদ্ ভিষ্ক । এরগুবীজ, গুলঞ্চ, গুল্ফা, জীরক ও বেড়েলা এই সকল দ্রব্য ছাগত্রয়ে পেষণ করিয়া, তন্ধারা পুন: পুন: প্রলেপ দিবে। রালাং গুড়ুচীং মধুকং বলাঞ্চ পরসা সহ। পিই। প্রলেপয়েং তেন বাতরক্তং প্রশামতি॥ রালা, গুলঞ্চ, যষ্টিমধু ও বেড়েলা, ত্র্য়ে পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে বাতরক্তের শাস্তি হটয়া থাকে।

লেপজন্বৎ তিলা ভৃষ্টাং পিয়াং পদ্দান নির্কা হাং ।

শোলার ভৃষ্ট ও জুথে নির্কাপিত ক্রম্বাতিল,
জুখে পেষণ করিয়া তাহার প্রলেপ দিবে ।
গুল্ধুনো বচা কুইং শতাপ্রা বছনীঘ্যম ।
প্রস্থা (ঝুল), বচ, কুড়, শুল্ফা, হরিজা
ও দাক্রহারজা, এই সকল দ্রা জলে পেষণ
ক্রেলা, ভদ্ধারা প্রলেপ দিলে বাতকফোরণ
বাত্রাজ্বের বেদনা প্রশামত হয় ।

অমৃতাদিঃ।

অমৃতানাগরধস্থাক-কর্মত্রেণ পাচনং সিদ্ধন্। জয়তি সরক্ষা বাতং সামং কুষ্ঠান্তশেষ্ণি॥

গুলঞ্চ, শুঠ ও গনে প্রত্যেক ২ তোলা করিয়া লইয়া কাথ প্রস্তুত কারবে। সেই কাথ পান করিকে বাতরক্ত, •আমবাত ও নানাপ্রকার কুঠ প্রশমিত হয়।

বাসাদিঃ।

বাসাপ্তত্, চ'চতুরস্থলানামেরগুটেতলেন পিবেৎ ক্ষায়ন্। জ্বমেশ সর্ববাঙ্গজনপ্যশেষং জ্যেদস্গ্রাত্তবং বিকারন্।

বাসক, গুলঞ্চ ও সোদাল-ফল ইহাদের কাথে এ:গুটতল প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে সর্বাঙ্গত বাত:ক্তানবারিত হয়।

নবকাষিকঃ।

ত্তিকলা নিত্তমঞ্জিষ্ঠা বচা কটুকরোহিণী। বৎসাদনী দার্কনিশা ক্ষায়ো নবকার্বিকঃ ॥ বাতরক্তং তথা কুঠং পামানং রক্তমণ্ডলম্। কুঠং কাপালিকাকুঠং পানাদেবংপকর্মতি । পঞ্চরক্তিকমানেশ কাথ্যোহরং নবকার্মিকঃ। কিন্তেবং সাধিতে কাথে যোগামাতা প্রদীরতে ॥

আমলকী, হরীতকী, বহেড়া, নম্ব, মঞ্চিন্নি, কট্কী, গুলক্ষ ও দারুহরিক্তা প্রত্যেক
এক কর্ষ পরিমিত অর্থাৎ সমূদারে নম্ব কর্ম।
ইহাদের কাথ পান করিলে বাতরক্ত, পামা,
রক্তমণ্ডল, কুঠ ও কাপালিকাকুঠ নিবারিত
হয়। (এছলে ৫ রতিতে মাধা ধরিয়া তদমুসারে কর্ষের পরিমাণ নির্দেশ ক্বিতে হইবে।)

পটোলাদিঃ।

প্টোলকটুকাভীক-তিকলামুতসাধিতম্। काथः नीया असम्बद्धः महादः বাতলোণিতম্॥

পলতা, কট্কী, শতমূলী, ত্রিফলা ও গুলঞ্চ ইহাদের কাথ পান করিলে পিত্তর বাতরক্ত ও তজ্জনিত দাহের শান্তি হয়।

নিম্বাদি চূর্বম।

নিথামতাভয়া ধাত্রী প্রত্যেকঞ্চ পলোমিতন। নোমরণভাপলম:ভন্তী বিভবৈতগজাঃ কণঃঃ দ गमानी (ठाञ्चभक्ता ठ कीत्रकर कहेकर उथा। थानवः रेमकवः कातः एव इति प्र ह भूखकम् ॥ Cप्तवनाक उथा कृष्टे: कर्षः कवैः अनिभित्यः । मर्काः मः हर्नि ३: कृषा सथवायन होनाय ।: শাণমাত্রস্ত ভোক্তবাং ছিন্নাকাথং পিবেদসু। মাসমাত্রপ্রয়োগেণ ভবেৎ কাঞ্চনসন্মিভ: 🏽 বাতশোণিতমতাগ্রং বিএমৌডু, বরং তথা। কোঠং চক্রদলাথাঞ্চ দিশ্ম পামা চ বিপ্লুড়া 🛭 কওবিচচ্চিকারং বি দক্ষেওলকিটি । মৃ। স্কাণ্যের নিহস্তাত বৃক্ষমিন্দ্রাশান্যথা। আ্মবাতকৃতং শোধম্দরং সক্কেপিণ্যু, প্রীহানং গুলুরোগঞ্চ পাণ্ডুরোগং সকামলম্ । সৰ্বান্ কভুরণাং দৈচৰ হরতে নাতা সংশয়:। এতরিখাদিকং চর্ণং প্রাহ নাগার্জনে। মূনি:॥

নিমছাল, গুলঞ্চ, হরীতকী ও আমলকী ইহাদের প্রত্যেকের > পল; সোমরাজী ১ পল, শুঠ, বিজুক, চাকুকা মূল, পিপুল, যমানী, বচ জীবা. কটকা, থদিবকান্ঠ, সেম্বর, ঘবক্ষার, হিন্দু, দারুহি জা, মূতা, দেবদারু ও কুড় প্রত্যেক ২ তোলা। এই সমুদার উদ্ভেমরূপে চূর্ণ করিয়া স্থল্ম বস্ত্রে ছাঁকিয়া লইবে। মাত্রা ৪ মাষা। অসংগান—ভলক্ষের কাণ। এক মান এই ঔষধ সেবন করিলে অতি প্রবল বাতবক্ত, খিত্র, কোঠ, চর্মাদল, পামা, ত্রণ, কণ্ডু, প্লীহা, গুলা এবং আমবাত জন্ত শোধ প্রান্ত,ত নানা প্রকার পীড়া প্রশমিত হয়।

व्यक्ताखन् अनुः।

ত্রিফলাভিবিষ'দাক-দার্কীমুস্তাপর্যকেঃ থদিরাসননক হব ওড়েচ নুপপাদপৈ: ॥ कुनिश्वनिश्वकहेकौ-क'लक्ककृतकेद्रिः मर्देशः। ক্ষাধ্য কৃত্বা তত, পুত্র শুক্রইওণেহন্তমি 🛭 **গুড়**,চাংত্র হকুত চুর্মদ্বত্ত বারিণি। কিন্তা ধনু এনে ভাতে বাসহেদ্রনীগতম। সোমোপেতেন পুতেন কৌশিকং পরিভাবরেৎ। ষড়্ওণেন তু সপ্তাহং শিলাজতুসম্বিতম্ ॥ ওক্ত তু প্রাস্থান্তী সমাবাপা বিচক্ষণঃ। তাপাচুৰ্বং পলকৈকং ছে পলে মধুসৰ্পিষে": 1 একীকতা সমং সকং িছাৎ তু িফলামুনা। তমুনা মুকান্যেণ জাকলানাং রসেন বা ৷ জীর্ণেংজার্ণে চ ভূঞাত পুরাশং শানিস**তিকম্**। यबाद्यांशः यवानांचाः तरमग्रान्य मःऋटिः । ত্রিসপ্তাহপ্রয়েংগণ বাতরক্তং অদারণম। নিহত্তি বীথাতঃ ক্ষিপ্রং কুষ্ঠরোগান ত্রণানপি। ছিলং ভিন্নক সন্ধান্ত তিফলাখো হি গুগ্ গুলু: 🖟

আমলকী, হ্রীতকী, বহেড়া, আতইচ,
দেবদারু, দারুহবিদ্রা, মৃত্যু, ফল্সা, থদিরকান্ন, পিয়াশাল ডহবকরপ্ত, গুলঞ্চ, সোঁদালের আঠা, !চরতা, নিমহাল, কট্কী, ইন্দ্রযব
ও পটোলপত্ত, এই সকল দ্রব্য সমভাগে
গ্রহণ পূর্বক অইগুল জলে সিদ্ধ করিয়া চতুবিংশ থাকেনে নাগইবে। পরে ঐ ভাবের
অর্জাংশ ওলঞ্চূর্ল উহাতে মিন্সিত করিয়া
নূতন পাত্তে এক রাত্তি রাথিয়া পর দিন
ইয়াকয়া লংবে। অন্তর শিলাজতু ও গুগ্, হলু

সমভাগে লইয়া উহাদেশ উভায়ের ছয় গুণ উক্ত কাথ ছারা সাত দিন ভাবনা দিবে। পরে উহার সহিত /> সের শুক্ত, অর্দ্ধ পোয়া স্বর্গমাক্ষিক, অর্দ্ধ পোয়া মধ্ ও অর্দ্ধ পোয়া স্বর্গমাক্ষিক, অর্দ্ধ পোয়া মধ্ ও অর্দ্ধ পোয়া স্বর্গমাক্ষিক করিবে। শোগির অবস্থা-স্থাারে ত্রিফলার জল বা পরিকার মুগের যুষ কিংবা জালল মাংসের রসের সহিত উপসূক্ষ মাত্রায় লেহন করিবে। এই গুগ্গুলু তিন সপ্তাহ সেবন করিলে স্থদারুল বাতরক্ত, কৃষ্ঠ ও ব্রণ নই হয় এবং ছিন্ন ও ভিন্ন সংযোজিত হয়।

অমৃতাগুগ গুলুঃ।

ত্রিপ্রসম্ভারাক প্রস্থানকর গুণ্ডলোঃ।
প্রভাবং বিফলাপ্রস্থং বর্ধানুপ্রস্থানবন্ধী ॥
সর্বনেকর সংকূটা সাধ্যেন্ত্রবংশকার ।
পুনং পচেৎ পাদশেষ বাবৎ সাক্রস্থাগত্র ॥
দত্তীত্রিকমূলানাং কণা বিশ্বফলারিকম্ ।
গুড়ু চীক্রিড়ঙ্গানাং প্রভাকার্মপলং মতম্ ॥
ক্রিরভাকর্মনেকর সর্বনেকর চুর্ণছে ।
সিদ্ধে উক্তে ক্রিপেৎ তর অস্থাতাগুগ্লুং পরম্ ॥
ভত্তো বধাবলং ।ধানেদম্পিতী বিশেষতং ।
বাতরকং তথা কুঠং: গুদলাস্থানাদনম্ ॥
মুষ্টনণং প্রমেহাংশ্চ আনবাতং ভ্রমন্বম ॥
নাড্যাচ্যবাতং স্বস্থাং স্ক্রাম্ব্রাংশ্রপা ।
অবিভাং নির্মিতশ্রমমূতাগ্যা হি খুগ্ গুল্ং ।

গুলঞ্চ /৬ ছন্ত্র সের ; গুগ গুলু, হরীতকী, বহেড়া, আমলকী ও পুনর্নবা প্রত্যেক /২ হুই সের ; এই সকল দ্রব্য একতা কুটিত করিয়া ৬৪ চৌষটি সের জলে সিদ্ধ করত ১৬ যোল দের থাকিতে নানাইবে। পরে ঐ কাথ ছাকেয়া পুনর্কান পাক করত গাঢ় করিবে। তৎপরে ঈস্তুফ্য থাকিতে দন্তী, চিতামূল, পিপুল, ভুঠ, হ্মীতকী, বহেড়া, আমলকী, গুলঞ্চ, দারুচিনি, ও বিড়ঙ্গ, এই সকল দব্যের চুর্ণ প্রত্যেক অর্চ পল অর্থাৎ ৪ দা রুতালা এবং তেউড়ী তোলা ঐ গাঢ় ঈষত্ৰ কাথে চূৰ্ণ দিবে। ইহ' রোগির বলা**নু**সা'র 47359 ब्रां १६, **.** अव्र বাত্রক্ত, Φő,

অমিনান্দ্য, গুদজ রোগ, ছুষ্টব্রণ, প্রমেহ, আন-বাত, ভগন্দর, নাড়ীব্রণ, উক্তক্ত, শোগ এবং অক্তান্ত রোগ দকল নষ্ট হয়: অধিনী-কুমারবয়ক ইক এই অমৃতা গুগ কিন্দ্রত হইয়াছে।

কৈশোরগুগ্ গুলুঃ।

বরম্হিবলোচনে। দর্মনিজবর্ণস্থ গুল ওলো: প্রস্থা। প্রাক্তিপা ভোষরাশে তিফলাক নগোলপ রমাণাম । ষ্বাত্রিংশচ্ছিন্নবহাগলানি দেখনি যালে। বিপচেদপ্রমতো দক্যানিখেলৰ মুক্তাবং ৷ অর্ক্সমিতং ডোগ্রং জাতং অসমস্ত স্পাঞ্চার ৷ অবতার বস্তুপুদং পুনর্পি সংস্থার্যন্য প্রায়ের **সাক্রীভাতে ভব্মিন্নবত**ার বিদে বিভাগর। জিফল'ড়ব্লিন্তেং জিকটোন ১, যদক্ষাট্রিমাণ্ড ১ কিমিবিপ্তর্গ স্থানীয় কথা বাস ি ক্রাস্থান । পলমেকঞ্ হ্লান্ত্রা সংস্থা সভ্যা উপ্যক্ষা চালুপানং সদং আন্তর্ধের আন্তর্ভার ১ **ঽচ্ছোহারবিলারা ভেষজ্যুর ।** সংগ্রক্ষাঞ্জন জিলন্ত্র ভক্তরাধি নাত শালিতাম ১৯৯০ করে। 🛴 👸 বিশ্ব। ख्यिति गान्यविक्रम् १ विद्यान्त । १ भा প্রশৃক্ষর প্রশৃষ্ট প্রশৃষ্ট বিশ্বন্ধ বিশ্বন্ধ 有時, 関西 計學歌 建心 "作人 儿子 中心不安。" সূত্ৰৰ নিৰ্মান্তি কলে তাতি আৰু ও তি চ अधिकृष स्वयः तम् वर्दरः । . . १९४८ - १९८८ - १९ अंकर "स्थलप्राध्य गण्या । भावायकः भनः "दलः १८१० १६६ नः । **उद्याद काश्रामियों विद्या श्राम्हर । किरमारेक**ा। **अथ-८१**। ऐगी-वहा अधिका १०५,७५७ । ४२ **মের, ত্রিফকা পত্রেক /২ মের, ত্র**প্প /৪ সের, পাকার্থ জল ৯৬ সেব। মুক্তমুক্তি নাড়িবে। ৪৮ সেব এব এই থাকিতে नामारेश माकिया बहुद्य ध्वरः लाम्बार छन्। গুল উক্ত কাথে গুলিয়া পুননাৰ লৌহপাতে চড়াইয়া পাক করিবে। ঘন হইলে নামাইয়া অতি শীতল হইলে ক্রিল্ (প্রভাক) চুৰ্ণ ৪ তোলা, ত্ৰিকটু চুৰ্ণ (মিলিড) ১২ তোলা, ধিড়ঙ্গ চুর্ণ ৪ চারি তোলা, তেউড়ী মূল চুৰ্ব হ ছই ভোলা, দন্তীমূল চুৰ্ব ২ ছই

তোলা গুলঞ্চ চুর্ণ ১ পল প্রফেপ দিয়া উত্তম-

রূপে আলোড়িত করিবে। (মাজা ১ তোলা)।
অন্তপান— চণকাদির যুষ, ছগ্ধ বা অগন্ধি জল।
ঔষণ দেবন কালে দথেচ্ছ আহার বিহাত করিতে
পারা যায়। ইহাতে বাতরক্ত, সর্মপ্রকার ব্রণ,
কান, কুই, গুল্ম, মেহ, অগ্রিমান্দা ও প্রমেহপিড়ক। প্রভৃতি রোগ আশু নিবারিত হয়।
নিয়মিতকপে ইহা ব্যবহার করিলে সর্মপ্রকার
রোগই কালে নিবারিত হয়। ঔষণের কাথ
পাক করিবার সময় চিকিৎসক সাতিশয়
যরবান্ থাকিবেন, কারণ ফল, পাকায়ত্ত এবং
কাপে গাকেরই প্রাণান্ত আছে।

রদাভগুগ্গলুঃ।

কাৰ্যথ প্ৰিন্দা কৌছং গণাগ ওৎসমন্।
লোইগপ নম্থাত্ত প্ৰগ্ৰেপ কাতিক।
সালোভতে এনে ডাল্লন্ গণাল কৰা বিচক্ষণা।
বিকট্নিকল নতা প্ৰদুল্ট চ কচ্পিত্ৰ ।
বিশ্বেষ নাগ্যপাল নিৰ্ভাচ কহিছিল।
বিশ্বেষ কৰ্মাদায় সকলেক এব বাবেছে।
ভগ বং কোন্দাগৰ সকলেক এব প্ৰিন্দ।
বাগৰক ক্ষাদায় সকলেক এব প্ৰিন্দ।
ভগ বং কোন্দাগৰ সকলেক এব প্ৰিন্দ।
ভগ বং কোন্দাগৰ বং গ্ৰিছালনি ক্ষাদিতঃ॥
বাগৰকে মনাগ্ৰেষ্ঠ সকলেল।
ভগল বং গ্ৰেছাল বং গ্ৰিছালনি কিন্দা।
বিশ্বিক নাগাল প্ৰান্দ্ৰীয় ভগান
বিধানিক নাগাল প্ৰান্দ্ৰীয় ভগান
বিধানিক নাগাল প্ৰান্দ্ৰীয় বংশাল ।
বাগৰকালিক মহালি নাগালেকাল
বাগৰকালিকাল নাগালেকাল
বাগৰকালিকাল

শাংশ গৌহ ও গন্ধক প্রত্যেক ৪ তোলা, অল্ল ৮ তোলা, গুগ্গুলু /১ দের, গুলঞ্চ /২ দের, পাকার্থ জল ১৬ দের, শেষ /৪ দের; ক্রিফলা মিলিত /২ দের, জন ১৬ দের, শেষ /৪ দের। এই তুই কাথ একত্র মিশ্রিত করিয়া তাহার সহিত পারদাদি জন্য সকল পাক করিবে। ঘনীভূত হইলে তাহাতে ক্রিকটু, ক্রিফলা, দন্তীমূল, গুলঞ্চ, রাথাল শশার মূল, বিড়ঙ্গ, নাগেশ্বর ও তেউড়ীমূল প্রত্যেক ২ তোলা পরিমাণে নিক্ষেপ করিয়া আলোড়ন করিবে। নাত্রা—১ তোলা। অমুপান— গুলঞ্চের কাথ। ইহা দেবন করিলে গণিত ফুটিত ঘোরতর বাতরক্ত রোগ এবং কুঠ, কিছিন, অশ্বরী, ভগন্দর, খেতকুঠ, কণ্ণ, চশা-কীল, দদ্রুও অভ্যান্ত নানাপ্রকার বোগ প্রশান্ত হয়। বাতরক্ত-বিনাশের নিমিত ব্যস্তরি এই রসাত্র গুণগুলু প্রস্তুত করিয়াছেন। ইহা বাতরক্ত ভগতের ভায় কার্য্য করে।

পুন্ন বা-গুগ গুলুং।

পুন্ধ ক্ষুল্পতং বিক্ষা ক্ষুক্র্লক তথা গুলোও।। দ্বা প্লং কেড্ৰেক্ড ভঞ্জা সম্বুট্য সম্মানিক্ষ্য ভাইনগাৰ দ

পলানি চাষ্টাবথ কৌ শিক্স তেনাপ্রণ কেন পুলং পাচে ছু।
এরওতৈলং কুড়বক দল্পাদ্ লয়। বিবৃদ্ধুন্ধনানি পঞ্চ দ
নিকুস্তুর্কী পলং ভেড়ুচাং প্রহণক নিপ্রের পলং লং।
ফলএরজাম্বিচিএক বি মিকুপাডনা ব্রিচ্পকানি দ
কবং তথা মাজিনবাড়েচ্বিং পুলনবিলো প্রমেব চুর্ন্।
চুর্নিনি দল্পা অবভাষা নাতে প্রদেশন ক্রম্ম প্রমান ন
বাভাস্তলং বৃদ্ধিনিক মাথ হল নাবছার্থ প্রমান্ধন।
জভোক্সপ্রতিক্ষাভিক্ষাভিক্ষাভিক্ষাভাষ্য স্বান্ধন বিশ্বা

পুননবার মূল ১০০ পল (১২॥০ দের). এরওমূল ১০০ প্ল, গুলা চুর্গ ১৮ প্লা, এই সকল ৬৪ সের জলে পাক করিয়া ৮ সের অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে। পবে ই:কিয়া তাহার সহিত 🔑 সের গুগুগুলু মিশাইয়া পুনরায় পাক করিবে। অনন্তর উথতে এরগুতেল ।।। অর্দ্রেব, তেউড্রীচুর্ণ ৫ পল. म्खीम्न हुर्न > शन, खन्य २ शन, जिल्ला ७ ত্রিকটু চুর্ণ (প্রত্যেক) অদ্ধপণ ও চিতা অদ্ধ-भन, रेमक्रव नवर्ग > शन, (उना > भन, विष्क्र ১ পল, স্বর্ণমাক্ষিক ২ তোলা ও পুনুনবা ১ পল প্রদান করিয়া পাক করিবে। পরে হইলে নামাইয়া (রোগির বলারুমাবে) জুই তোলা প্র্যান্ত মাত্রায় দেবন করিতে দিবে। ইহাতে বাতরক্ত, গুধ্দী, বৃদ্ধি এবং জ্বজ্বা উক পৃষ্ঠ ত্রিক ও বস্তিগত আমবাত অতি প্রবল হইলেও নিবারিত হয়।

যোগসারামূতঃ।

শতবৈরী নাগবলা রদ্ধারকন্তটোঃ।
পুনন বান্তা কৃষ্ণা বাজিগন্ধা জিকটকম্॥
পুনন বান্তা কৃষ্ণা বাজিগন্ধা জিকটকম্॥
পুনদপলান্তেমাং লক্ষুণ্নি কারমেং।
তদর্শকর বুল-চুর্বং সংম্ভিদের্ধঃ॥
হাপথেং ফুন্টে গাতে মধ্যম্পিতবসংস্ক্র।
হতপ্রে সমালো্ডা জিহ্মম্নিপলেন তু॥
হং গাদেনিয়টেষ্টারা মধাব্যিকলং নরঃ।
বাংবতং ক্ষমং কুইং বাংশা শিত্তাপ্রসম্ভবন্॥
বাংশিতককোপাংশ্য রোগান্ত্যাংশ্য ভিষেষ্টার্ম।
বোশ্যাব্যিতে পুরুষ্ধা বর্গাধিনিতবজ্ঞিতম্।
বোশ্যাব্যিতে নাম লক্ষ্যাব্যিক্ষম্ভবন্॥

बंड्यूबी, आत्रकांकुरव, वृक्षांतक, इग्रा-रलकी, भूर गर', खलक, भिश्रली, ज्यानना, গোক্ষৰ এই সকল দ্ৰৱা প্ৰাত্যেকা ১০ পুল লইয়া চূর্ণ করিবে। সেই চূর্ণের অন্নপরিমাণ চিনি ল্ট্রা মিলিত কবিবে। তাহার পর দুঢ় ভাঙে রখিয়া ভাহাতে ৮ সেব মধ ও /৪ সের গ্রত মিশিত করিয়। দাও **খা**রা **আলোড়ন** করিবে। পরে দাক্তিনি, এলাইচ ও তেজ-পত্র প্রত্যেক ১ প্রসূচ্প করিয়া স্থান্ধি করি-বার জন্ম মিশ্রিত করিবে। নোগির বল ও অগ্নি বিবেচনা কবিলা এই ঔষধ করিবে। ইথা ছাবা বাতরতা, ক্ষালোগ, কুছ, রক্তপিরজনিত কণতা, বাতজ, পিত্রজ ও কদজ বিবিণ রোগ এবং পলিভাদি বুদ্ধলক্ষণ-সমূহ দূরীভূত হয়। এই ওঁষণ কান্তি ও জীবদ্ধক 📗

অমূতভল্লাতকাবলেহঃ।

ভ গাতকপ্রস্থাও ছিন্তা লোণজলে কিপেও।
প্রথ্ন উড্চাশ্চ কুন্তা তরাস্থান কিপেও।
চতুর্বাংশাবশেষত ক্ষান্তবাহারেও।
বিধাতে ক্ষান্তে তুলকানাগানি নিকিপেও।
শরাবনাক্রক স্পিত্রিং ভাগাচকং তথা।
দিতাং প্রস্থানিং চ্ছাও প্রস্থানিং মাজিকং কিপেও।
সর্বাগ্যেকত্র ভাওে তুপচেন্ত্র্যিনা শনৈং।
সর্বাগ্যেকত্র ভাওে তুপচেন্ত্র্যিনা শনৈং।
সর্বাগ্যেকত্র ভাওে পাবকাদবতার্যেও।
তত্র ক্ষেপ্যাণি চুর্গানি জ্রমো বিশ্ববিষ্তাং।
বাকুটা চাথ দক্রম্মাণ পিচুম্পেনি হ্রীতকী।

আকো ধাত্রী চ মঞ্জিষ্ঠা মরিচং নাগরং কণা।

যমানী দৈশ্ববং মুন্তঃ হগেলা নাগকেশরন্ ।

পপটং পত্রকং বালনুশারং চলনং তথা।
গোকুরক্ত চ বীজানি কচু রো রক্তচলনন্ ॥
পূথক্ পলার্কমানানাং চুর্গমেয়ামিই ক্ষিপেং।
পলমাত্রমিদং প্রান্তঃ সমগ্রীয়াজ্ঞলেন হি ॥
নাশয়েদবলেহোহয়ং পথ্যাক্তরানি থালতঃ।
কুষ্ঠানি বা এরক্তানি সক্ষাণ্যশাংনি মেবিতঃ॥
ব্যায়াম্যাত্রপং ব্রিক্রনং মাংসং দ্ধি প্রিজন্।
তৈলাভ্যক্তং তথাপ্রান্ত নরো ভ্রাতিকা ।

ভল্লতিক সকলের মুখ(নাক বাবের) ছাড়াইয়া উহার /৪ চাবি দের এবং গুলঞ্চ /৪ দের কুট্টিড করিয়া ৬৪ চৌষ্টি দের জলে দিন্ধ করত ১৬ যোল সের থাকিতে নামাইবে। এই কাথ বস্ত খারা ছাকিয়া একটি পাত্রে রাখিয়া উঠাতে /২ সের ঘত, ১৬ সের হগ্র, ২ হুই সের চিনি, এই সকল এবা দিয়া দীরে দীবে নত অগ্নিতে পাক কবিবে। এ কাথ ঘনাভূত ২ইলে অগ্নি হটতে নামাইয়া বেলখঠ, আত্ইচ, ওলঞ্, িনিম, হ্বীত্কী, সোনরাজী, চাকুনেবীজ, বহেছা, আমলকী, মাঞ্জ্ঞা, মারচ, ভাঠ, शिक्षनी, यमानी, देमन्त्रत, ধাকু,চি.ন. 15, নাগকেশ্র, কেত্রপাপড়া, তেরপ্র, এলাইচ. বালা, বেণার মূল, প্রেত চন্দন, গোফুর-বীজ, শটী ও রক্তচন্দন, এই নকল দ্রব্য **প্রত্যেক ৪** ভোলা পরিমাণে প্রক্ষেপ দিবে এবং শীতল হটলে /২ সের সমু মিশাইবে। এই ঔষৰ প্ৰাভঃকালে ৮ ভোলা (উপযুক্ত) মাত্ৰায় জলের সহিত দেবা। এই অবলেহ সেবন করিলে কুন্ত, বাভাক্ত ও সমপ্রকার অশ্ব নিবাবিত হয়। এই ভ্রাতকাবলেহ সেবন कारण बाधान, त्याम, आध्रमञ्जूष, अञ्चनवा, নাংস, দবি, স্ত্রাসম্ভোগ, তেলাভান্স ও পথ-প্ৰয়াটন ভাগি কলিলে।

রসপ্রয়োগঃ।

বভিরক্তভিকে। রসঃ।

পারদং গন্ধকং লৌহং বনং তালং মন,শিলা। শিলাজত পুরং ওদ্ধং সমতাগং বিচ্পব্যেৎ। বিজ্ঞ্বজিকবাব্যেরং নোনরাজী * পুননবা।
দেবদারু চিজ্রবঞ্চ দানোঁ খেতাপরাজিতা॥
চূর্বনোং পৃথক ভুলাং সর্বন্ধেন ব ভারত্তেং।
জিকলাভুন্ধরাজক বসেনৈর তিথা তিথা॥
সম্ভাব্য ভ্যান্তেং পশ্চামোধ্যাক্তি দিনে।
কৃত্তি, মুপানং নিথক পজং পূপাং হৃহং সমম্॥
শাব্যাজং ঘুলে কুবাহে সক্রোত্রিকারসুং।
বাত্তিং মহালেরং গ্রাহং সক্রিকং জ্যেরং॥
সক্রোপ্তির্লাক্ত্রং স্থান্থাই নিজ্তার্যান॥

পালদ, গন্ধক, লেখিং, জন্ত, ধ্বিভাল, মনছান, শিলাজনু, শোলিত গুগ্গুলু, বিজ্ঞ,
ক্রিকল, ক্রিকটু, সোমরাজা, পুননরা, দেবদাক, চিতামুল, দারহবিদ্যা, খেত অপরাজিতা
এই সমূল্য সমভাগে মধন করিয়া ক্রিফলার
কারেয় ভাবনা ঘিনা মানকলাই প্রমাণ বাটকা
করিবে। জন্তপান নিধের পত্র পুষ্প ও
ছকের চুর্ণ অন্ধতালা এবং প্রত। ইহা কিছু
দিন সেবন করিলে উপাদ্র সংযুক্ত ঘোরতর
বাত্রক্ত রোগ নই হয়।

গুড়ুচ্যাদি লেহিম্।

ওচুত্য'বদংখুজ, বিক কাষম'বুজা। বাত্তবজ্জ নিং জ্ঞান্ত সকলোগ্ডবং হলঃ॥

। প্রচেষ্ট কুন্তাস্থাস্থা প্রচেষ্ট্র সংমন্ধ্য এবংশতিত। সাবো বিশুলো এচেচা কিকত্রণ বিধেশাবিকট্ন বিমন্ত্রা সন্ধ্যনং লৌগ্যুত

ওগলের চিনিন ভিক্লা, তিকটু, জিমদ (বিজ্ঞা, চিতামূল, মুকা), প্রেচাক ১ তোলা, লোহ ১০ টোনা, এই সমনার দ্রব্য জল দিয়া মাড়ির (চ রতি প্রমণ) বটিকা করিবে। ইহাতে বাত্যক প্রধানত হয়। (বনে ও প্রভাব জলেন মহিত স্বনায়। হস্ত পদাদির ভালাতে হতা বিশেষ উপকাৰ করে।

লাঙ্গলাতিং লোহ্য।

ातङ्कताङ्गलामृतन्दिकहृदिकरमञ्जूषा । ऋषाञ्चल, उत्तृष्टिञ्जलाहर स्तोरहृतर निरापकरण्य ॥

ে মোনবাহাতা । অহিধেনমিতি রঞাবলীধৃতঃ পাঠঃ।

गांजून्नत्रामित्र जिक्नाश अत्मन ह । বিমৃত্য বত্নতঃ পশ্চাদ গুড়িকাং কোলসম্মিতাম্। **एकरामध्ना मार्कः मृत् कृर्वरिष्ठ यान् छनान् ।** আজানুস্টুটিতং ঘোরং সকাঙ্গপুটিতং তথা। তৎ সৰ্বাং নাণয়তাতি সাধানাধাক ণোণিতম ॥

পরিষ্কৃত ঈশ্লাঙ্গলার মূল, ত্রিকট্ট, ত্রিফলা, দাক্ষাও গুগুগুলু এই সকল দ্রব্য সমভাগ, ইহাদের সকলের সমান কৌহচর্ব ; একত্র মিশ্রিত করিয়া, টাবালেবর রসে ও জিফলার **কাথে মদ্দিত করত কুল প্রিমিত বটা প্রস্তৃত** করিবে। ইহাতে সক্ষাত্র স্ফুটিত এবং বাহাল সাধ্য সর্বা একার বাত্রক উপখ্যিত ২য়।

তালভসা।

ভানিতালং পালং শুদ্ধং তথা কৰং চিন্ত ৮ . **ভেত্তি ঠিরদেনির স্থান্ত ৯ ৩**০কে ১ পলাশভন্ম দ্বিপলং নিধান স্থাতিৰে পিতি । ভম্ভযোপরি ভালপ্র গোলেকং প্রাণ্যেং ক্র্যাল। তক্ষোপরি অসামার্গ-ছল্ম দক্ষাদ প্রাথমার স্থালীমুখে শরবৈঞ্জন্তাদ গড়েন লেপত্রেং **লেপয়িহা** ত*ং*চ_{ুলা}মহোরাত্রং পাচন ভিষক্। ততন্ত্ৰ কায়তে ভস্ম গুদ্ধকণ এসলিভন্ ॥ অঞ্চাত্র্য়ং ততো ভক্ষানত্রপানবিশেষ ৩ঃ। বাতরক্রঞ্চ কুওঞ্চ দুদু-বিক্ষোটকাপ্টা: ॥ विष्ठिकिकार क्ष्मिंगलर वा दशिख्य स्थापिड्य : রক্তপিত্তং তথা শেখিং গলংকু ঠং বিনাশ্য হয়। হলামকং তথা শূলমগ্রিমান্স্মগ্রোচক্র ॥

হরিতাল: পল, বিষ ২ তোলা , এই দ্রবা-ঘয়কে খেত আঁকিড়ার রূসে খলে মদন করিয়া একটা গোলক করিলে। পরে একটা স্থালীর নীচে ১৬ তোলা পলাপের ক্ষার বাহিয়া ভাহার উপর ঐ গোলক রাখিয়া ২৪ ভোলা অপা-মার্গের ক্ষার ভাহার উপরে প্রদান করিবে, এবং তালীর মুখ শরার ছাবা উভ্যানপে বন্ধ করিয়া লেপন করিবে। পরে দিবারাত্র চুল্লীর উপর পাক করিলা পাকের পর হরি- বিদ্ধক ১৮ ভাগ, তুতি ১০ ভাগ, পলাশবীগ তালভম শুদ্ধকপূর্বের ভার দেখিতে পাইবে। পরিমাণ ০ রতি। অন্তপানবিশেষে দেবন জুবালতা, নালগাছ, জ্টামাংসী, দারুচিনি, করিলে বাতরক্ত, কুন্ত, দক্ষ, বিখোট, অপচী, নৃতন কুচিলা ও ভেলা এই সকল জবোণ

বিচর্চিকা, চম্মানল, বাতপিত্ত, রক্তত্বৃষ্টি, রক্ত-পিত্ত, শোথ, গলংকুছ, হলীমক, শূল, অগ্নি-মান্দা 'ও অভোচক লোগ বিনষ্ট হয়।

নহাভাগেশ্বরে: রসঃ ।

রকার রবা বা নির রাজাহাসের মেল্লে**র** । マス マービ カラナ 面に 小田市門が収 91/50 11 ত্য ত জান্ত তাল প্রমূজন ভাগ হচাৎ ু হল। স্বাহি বাজ্জ্মণাগি চ। 为不多子。 各次 约要标识的 辐射电压

35 18 WHATES হবিভাগ কালদ ও হালে এছার ও ভালের প্রক্র একর কণ্ড ইভ. ফাৰ জাণিত হাত্ৰ পোৰ কলিও এলাও আন্ত পাক জলিবের ভাষা ্রন ল প্রত বৈ ভা ১৯৮৬ জন্তব লাগক বুল अस्त अस्त । १० १ त्य प्रवरण वर्षश्रकात ্ৰঠ, বাহৰজ্ঞ হয় প্ৰতেশন ও খিন ৱেগি টুপশ্মৰ হয় ব ।

विषयभारतः तमः।

ব্যাদশ বিধার হয় এলব দেশ আহিছার। ভগান্ধৰ বাং বিশে মা ওছেট প্ৰস্তা ৰ জিউৎ ৮ 聖明書 化制力 生性信仰 (1986) দশ্ৰহ দশ্ৰহ ব্যাদ্ভাষ্থ্যি। জ্তান্ত্ৰিয়া PAGE IN A " THAT THE " WAS BEEN A. I ভ ভিন্ন লাল , চুল্লিয়া ভিমন ভভঃ॥ স্থানিক বাৰ্যালিক সামানিক প্ৰায়নীয়ৰ্যা। ে ভিকাপিত্য দুজাৰ সহতে যদি বা কয়ম।। व । - वक्तर खदा वृद्धः अदालामायामी शाम्य । আগ্রান্ত্রপুটিতং হ'ন্তি বিষয়ং বাজি নিংস্তম । ক এই ইণ্শবিধ্যতি ই ক্রিয়ের চক্ষ। বিখেখনো রসো নাম বিখনাথেন ভাষিতঃ॥

ে,বিত পারদ ১০ ভাগ, বিষ ৫ ভাগ, ৫ ভাগ, কণ্টকারী, করবীর, ধুভূরা, হাত- প্রত্যেকটী দশভাগ করিয়া গ্রহণ করেও
চূর্ণ করিবে। ।পূজাপরারণ বৈশ্ব রোগির
অবস্থানুসারে ২ রতি অথবা ৩ রতি পর্যাস্ত দেবন করিতে দিবেন। এই ঔষধ সেবনে
বাতরক্ত, জর, কুন্ঠ, অগ্নিমান্দ্য, অরোচক
ও বিষদ্ধ বিবিধ রোগ প্রশাহিত হয়।

দাদশায়সঃ।

গক্ষান্ নৰদ্ভীয়াং শব্ধাগ্যো বদ শুক্তিক।
গুলক গগনং ফেনং ক্ষিত্ৰক নিন্দ্ৰক্ষ্য।
গাঁডালনূপভিট্ছন বহিন্দ্ৰং সৰ্বমন্ত্ৰ্য।
জিকচ্ জেফলা শিল্প, অজমোদা বমানিকা।
বিশ্বনীমূলং ভাগী চ লাশনং জাত্ৰকল্বমন্ন
আনক্ষ্য নামানিক বনি হাং কাল্পন্তেন্ ভিলক্
বাং বক্ষা মহানিক বনি হাং কাল্পন্তেন্
বাং বক্ষা মহানিক বনি হাং কাল্পন্তেন্
বাং বক্ষা মহানিক ক্ষানিক বন্ধনিক্ষা নামানিকাম্বা

স্থ্যাজিক, হিন্তুক, বে.হ. বস্থিত্ব, বঙ্গ, গুজি, তাল, অল, দমুদ্রকেন, কুলন, কুলন, কুলি, সীসা, চিতানল, হিন্তু, ত্রিকটু, ত্রিফলা, পজনাবীজ, বন্যমানী, গনানী, পিপুল্মুল, বামুনহাটা, রহুন, জীরা ও রক্ষজীরা এই সমুন্য একতা আদার বলে মদন করিয়া ২ রভি প্রমাণ বাটকা করিবে। ইহা সেবন করেল বাতরক্ত, গলিত ত্রিদোষ্ট্র কুল, মন্দাগি, আমবাত এবং চক্ষ্ কর্ণ নাসিকা ও জিহ্বা প্রস্তৃতির স্কল প্রকার প্রীড়া নিবারণ হয়।

গুড় চায়ত্য ।

ওড়্চীকাথকখাভ্যাং সপয়ক্ষং শৃতং স্বতম। কল্পি নাতং তথা রক্তং কুঠং জয়তি ছুত্তরম্ঞ

ঘৃত /৪ দের, গুলকের কাথ ১৬ দের, হগ্ধ /৪ দের ও গুলকের কক /> দের। যণাবিধি ঘৃত পাক করিয়া দেবন করিলে বাতরক্ত ও কুঠ নিবারিত হয়।

শতাবরায়তম।

শ তবিরাকজগভাং রদে ত্যা!শচতুও দি। ক্ষীরতুলাং স্বতং প্রং বাতশোদিত্যাশন্ম ॥

শৃতমূলীর কক্ষ ও সেংচতুগুণ রস দারা মথাবিধি ঘত পাক করিবে। পাককালে ঘতের সমান হগ্য দিবে। ইহাতে বাত্রক প্রশানত হয়।

অমৃতালং মৃত্যু।

জায় হা মধূলং লাজ্য । ব্যক্তি মধ্য বং বা ।
বালাল্যাধ্বহানে-নেলাক হৈ এই ইম্ ।
করিব নিলাক ক্রা কাক নিজ যে কিন্তু ।
বালাল্যাক করা কাক নিজ যে কিন্তু ।
বালাল্যাক মিয়া নাম বি লাল্যাক করা ।
বালাল্যাক মিয়া নাম বি লাল্যাক করা ।
বালাল্যাক মিয়া বিজ্ঞান যা বি লাল্যাক করা ।
বালাল্যাক মাধ্য নাম বি লাল্যাক করা ।
বালাল্যাক মাধ্য নাম বি লাল্যাক করা ।
বালাল্যাক মাধ্য নাম বি লাল্যাক বি লাল্যাক নাম বি লাল্যাক মাধ্য ।
মাধ্য মাধ্য মাধ্য নাম বি লাল্যাক বি লাল্যাক মাধ্য ।
মাধ্য মাধ্য মাধ্য নাম বি লাল্যাক মাধ্য ।
মাধ্য মাধ্য

দুত ৪ দের, আমলকার রব ১৪ সের, জল ১২ .মা ৷ ক পর্য—ভলঞ্চ, মষ্ট্রমযু, দ্রাক্ষা, ত্রিকরা, ভাঠ, বেড়েলা, বারক, মোন্দাল, খেত পুনন্ধা, দেবদাক, গোগুল, কট্কী, শতগুলী, পিপুল, সাখানী ফল লামা, কুলে-শায়া, এর ৩, বুবদাবক, মৃত্য ও নীল উৎপল এই দক্তা দ্বা প্রয়োগ কবিয়া কথাবিহিত নিয়ঘাত্যারে মূত পাক করিবে। পানীয় ও ভোজা বস্তুর সহিত এই মৃত পান করিলে উদ্ভান ও গভীব এবং ত্রিক জান্ন ও জঙ্গালিত ব চবক, ्जारे भाग, বলদে যিয় ক আম্বাত, বাতজনিত বেদনা, মৃত্রকুছু ও প্রদেহ প্রভৃতি বহু প্রকাব রোগ বিনষ্ট এবং বল বৰ্ণ ও আমঃ বৃদ্ধিত হয়।

গুড়ুচীতৈলম্ ।

ওড়্চীকাথককান্ড্যাং সিদ্ধং তৈলং প্রযত্নতঃ। বাতরক্তং নিহন্ত্যা ও নাত্র কাথ্যা বিচারণা।

গুলঞ্চের কাথ ১৬ সের ও ককার্থ গুলঞ্চ

/১ সের সহ তিল-তৈল /৪ সের পাক
করিয়া মর্দন করিলে বাতরক্ত ও পি**ত্তমন্ত** দাহ
উপশ্মিত হয়।

মধ্যমগুড়ূ চীতৈলম্।

গুড় চীকাথকজ্বভাগে সিদ্ধং হৈলং প্রসেমন্। বাতরক্তং নিহস্তাত সাধ্যাসাধ্যমণাপি বা ॥ একজং দক্তকৈব তথেব সালিপাতিকম্। নাশবেং তিমিরং যোরং গুড়ুচীতৈলমূত্রমন্।

তিলাতৈল ৴৪ সের, গুলাঞ্চের কাথ ১২ সের (কেহ বলেন ১৬ সের) ও কল্প ৴১ সের। হ্যাঃ ৴৪ সের। এই তৈল মাদ্দনে বাতরক্ত নাষ্ট হয়।

র্ধদ্গুড়ু চাঁতিলম্।

শতং ছিন্নরুহায়। 45 জনজোণে বিপাচয়েৎ। ত্রের পাদাবশেষেণ ইতলপ্রস্থং বিপাচয়েৎ॥ ক্ষীরং চত্ত গং দ্যাৎ কঞ্চানতান প্রয়তঃ অখগন্ধা বিদারী চ কাকোলেট হরিচন্দ্রন্য 🛚 শতাবরী চাতিবলা বদংট্রা রহতীদ্যম। ক্রিমিল্লং ভিফলা রাহা আয়মাণা চ শারিবা। জীবন্ধী গ্ৰন্থিকং ন্যোধং বাগুলা ভেকপৰিকা। বিশালা এতিপর্বক মঞ্জিন্তা:৮ন্দ্রং নিশা শতাহ্ব সপ্তপণী চ কাৰিকাণাপকল্পতে । পাৰাভাগ্ননদোৰ ব'ত্যক্তে প্ৰযোজ্যেৎ ॥ বা ভরন্ত মুদাবর্ত্তং বু ঠা অষ্টাদেশেব ভূ। হতু**ত্তত**ং প্রমেচক কমিলাং পাঞ্ডাং গরে**।** বিষ্ণোটঞ্চ বিসপঞ্চ নাড়ীত্রণভগন্দরম। विष्ठिकोर शास्त्रकेष्ट्रः शाममाद्दर विश्वय है। এতং তেলবরং এই বলাপলি নাধনন। আত্রেয়নিশ্বিতবৈশ্ব বলবর্ণকরং স্মৃত্যু । ভিলতেল ৪ সের। কাগার্থ—গুলঞ্চ

পল, জল ৬৪ (সর, শেষ ১৬ সের।

১৬ ষোল সের। কল্বার্থ – অশ্বর্গনা, ভূমিকুশ্নাও, কাকোলী, ক্লীরকাকোলী, হরিচন্দন,
শতমূলী, গোরকচাকুলে, গোক্ষর, বৃহতী,
কণ্টকারী, বিড়ঙ্গ, ত্রিফলা, রামা, বলাডুমুর,
অনস্তমূল, জীবতী, পিপুলমূল, ত্রিকটু, হাকুচমূল, থূলকুড়ি, রাখাল শ্লার মূল, গেঁটেলা,
মঞ্জিটা, রক্তচন্দন, হরিদ্রা, ভল্ফা ও ছাতিমছাল প্রত্যেক ২ তোলা। এই তৈল পান
অভ্যঙ্গ ও নস্তাথে ব্যবহান। এই তৈল
মর্দনে বাতরক্ত, কুঠ, প্রানেহ, কামলা, পাণ্ণ,
বিক্ষোট, বিস্পা, ভগন্দর, হস্তপদাদির দাহ ও
নানা প্রকার বাত-প্রেক রোগ নই হয়।

মহারুদ্রগুড় চাতেলণ্।

অন্তঃধান্তলাং সমাগ্ জলাক্রণে বিপাচ্ছেই।
পিটুমন্দিইটাং কুড়াং ভাগনপ্রতিমাং তথা ।
জলাক্রেণে বিনিশ্বাপ্য প্রাক্রং প্রাবংশিতম্ব।
প্রস্থক কট্তেলপ্ত গোনুক্রকাণি তৎসম্ব।
আন্তর্গা বাংগুণো বু প্রাকরবানকর কিক্ম্ব।
লাড়িখা নিম্বনাজক রকন্তে। বুই তান্তর্ম।
নাগবলা বিক্টুকং প্রং মাংসা চুন্নবা।
প্রস্থিকা বিক্টুকং প্রং মাংসা চুন্নবা।
প্রস্থিকা বিক্টুকং প্রং মাংসা চুন্নবা।
প্রস্থিকা বিক্টুকং প্রেম্বার্থ রস্ত্র্মা।
নালবে ছে সপ্রপর্যো গোনুহাপ্ত রস্ত্রমা।
নালবে ছি সপ্রপর্যো গোনুহাপ্ত রস্ত্রমা।
বাতরক্তং নিহ গোভ সাক্রি বানামন্যু।
মহাক্রমপ্রচার্থিয় বিস্পাধ্য প্রথমন্যু।
মহাক্রমপ্রচার্থিয় বিশ্বনার্থ ভ্রমপ্রতিম।
মহাক্রমপ্রচার্থিয় বিশ্বনার্থ ভ্রমপ্রতিম।
মহাক্রমপ্রচার্থীয়ার বিশ্বনার্থ ভ্রমপ্রতিম।
মহাক্রমপ্রতিমান্তর্গান্ত ব্রহ্মপ্রতিম।
সহাক্রমপ্রতিমান্তর্গান্ত ব্রহ্মপ্রতিম।
সহাক্রমপ্রতিমান্তর্গান্তর্গান্তর্গান্ত্রমণ্ড ভ্রমণ্ডিয়া

কটটেত্র ৪ সের। কাথার্থ- গুল্প ১২॥-**সের, জ**ল ৬৪ সের, নেম ১৬, নিমছাল ৮ সের, জল ১৪ সের, ধেষ ১৬ সের গোমতা /৪ সেব। কলাগ—গুল্ঞ, Sq.61. রাজীবীজ, দ্রীমূল, কর্বীর্মূল, দাড়িমবীজ, নিম্ববাজ, इतिमा, भाजाइतिमा, বুহতী, কণ্টকারী, গোবকচাকুলে, এিকট্ট তেজপান, জটামাংগী, পুনন্ধা, পিপুরমূল, ગજીશ. অধ্যক্ষা, 130 B. Wal, উল্না, খ্যামালতা, অনন্তম্ল, ছাতিমছাল ও গোম্য-প্রত্যেক ২ ভোলা। ইহা মর্গন করিলে সকল প্রকার উপদ্বস্তুক বাতরক্ত, কুষ্ঠ, বিদ্পাও বৃশ নষ্ট হয়।

রুদ্রতৈলম্।

পুননবা নিশা নিধা বাস্তার র হতী হচম। কটকারা করঞ্চ নিগু ভা বৃষমুলকম্॥ অপামার্গং পাতালক ধুন্তু,ক দান্তিমাফলম। েমন্দ্রীয় কিং দলা প্রভাবত কর্ণসক্ষ্যম ॥ িষ্টল'খ্যা, গুলাংবাং দিনুষ্ট্য প্রক প্রথান। एको विश्वकारीको विशिक्षकार शतानि । প্রাচয়েদ্ ভাগনং তোয়ং চতু র্গাবশেষিত্য। কটুতিলপ্ত চ প্রস্থং ভ্রম্মক ভৎসমং ভবেং । বাসকস্বরস্পত্তং সন্দর্শনন বহিন।। গৰাং শটি চ কাকোলা চলনা গ্ৰন্থিকা নথী। প্রতিকা কেশ্রং এঞ্ছিং বচা বুকুক শৈলজম্। अरितदः **यश्चि**मतुकः अभिभाषमा शिलातमय ॥ दिशुदेकलाक मतला मात्रका कार्यिका कार्याला । कप्रदेखन्भिषर था। ६१ तो उन्नक्तर विश्वकृति ॥ অষ্ট্রাদশবিধং বৃষ্ঠং হত্যা হিমজ্জনং প্রনঃ! হস্তপাদ'ঙ্গুলাসঝি-গলিতং স্কৃতিহং তথা। ক্রবং খেতং ভথা বতাং নানাবর্ণ সমাহকম। পামাং বিচ্চিক'ং কণ্ডং ছারাং স্বচঞ্চ কালিনীয়। ম্পূরিকাং মঙলফ জ্বনক বিদর্শক্ষ। मां छौलार महाई नर शृंख शार्तार पारकमा। নিহ্ন্তি রক্তদোধক ভাপ্রস্থিমিরং ব্যা 🛊

কটুটেল / ৪ সের। কাথার্থ— গুলঞ্চ / ৪ সের, জল ১৬ সেব, শেষ /s সের; ছ্কা /s সের, বাসক রস 🗸 ৪ সের। কল্বার্থ-পুন-নবং, হরিদ্রা, নিমছাল, বেগুণ, বৃহতী, গুড়-ঘক, কণ্টকারী, করঞ্জ, নিদিন্দা, বাদকমূল, আপাঙ্, পটোলপত্র, ধুতূনা, দাড়িমফলের ছাল, জয়ন্তীমূল ও দত্তী ইহাদের প্রত্যেকের ৪ তোলা। ত্রিফলা পৃথক্ পৃথক্ ৪ তোলা। গন্ধার্থ—কুফাগুরু, শ্টা, কাকলা, গেটেলা, নথী, ঘটানী, নাগেশ্বর, কুড়, বচ, কুলুরুপোটা, শৈলজ, বালা, যষ্টিমধু, জটামাংসী, শিলার্স, রেপুকা, এলাইচ, मदलकार्छ, নালুকা প্রত্যেক ২ তোলা। এই তৈল মৰ্দন কংলে অন্থিগত ও মজ্জালিত কুঠ, হস্তপদাদির পামা, বিচচিচকা, কণ্ডু, মহুরিকা,

গাত্রবৈবর্ণ্য, দক্রন, রক্তদোষ ও নানাপ্রকার অগ্লোষ নিবারণ হয়।

মহারুদ্রতৈলম।

পুনন বা নিশা নিধং বার্ডাকুদ ড়িনীফলম্।
বৃহত্যে) পৃতিকামূলং বাসকং সিদ্ধারকম্॥
পটোলপারং বৃষ্ট্রমপামার্গং জয়ন্তিকা।
দখী বরা পুণক্ সর্বাং বর্ষদ্বমিতং পুনঃ।
বিষক্ত বিপানং দেশং পুণপা ব্যোসং পলাব্র্যম্।
শুক্ত সাবিপাং তলং প্রস্তাস্থ্য বৃষ্পত্র ম্।
শুক্ত সাবিপাং তলং প্রস্তাস্থ্য বৃষ্পত্র ম্।
শুক্ত সাবিপাং তলং প্রস্তাস্থাস চ।
বারিপ্রাস্থ্য প্রস্তাস্থাস নানাদোষসমূহ্রম্।
আইাদশবিধং কুঠং হন্তি বর্ণায়িবর্দ্ধনম্॥
কিমিছ্টব্রণ্টেক্র দাহং কুঞ্জুং নিহন্তি চ।
আবেদনং সহাবেদনভাসাদের নগুতি॥
(বাসাক্রান্তেড, চাত্রেলিয়ান্ত সংজ্ঞান্ত্রম্)।

কটুতৈল /৪ সের, বাসকপত্র রস /৪
সের। কাথার্থ—গুলঞ্চ ৮ সের, জল ৬৪
সের, শেষ ১৬ সের। কলার্থ—পুনর্নবা,
হরিদ্রা, নিমছাল, বেগুণ, লাড়িম ফলের
ছাল, বৃহতী, কণ্টকাবী, নাটামূল, বাসকছাল,
নিসিন্দা, পটোলপত্র, ধুতুরা, আপাঙ্গমূল,
জয়ন্তী, দন্তী, ত্রিকলা প্রত্যেক ও পল। জল /৪ সের। এই তৈল মর্দ্রন করিলে বাতরক্ত,
কুঠ, হুইবেণ, কণ্ডু ও দাহ প্রভৃতি নিবারণ হয়।
ইহা বর্ণ ও অগ্নিবর্দ্ধক। (এই মহারুদ্ধভৈলকে
বাসারক্তগুচুটি তৈলও কহে)।

বিষতিন্দুকতৈলম্।

বিষতরকলমজ্জ প্রস্থাক শিগ্রস্বরসলক চবারিপ্রস্থাকে কশ্চ।
কনক বরণ চিতাপিত নিগু ভিকার ক্স্বরসত্রগগলাকৈ অত্যরস্চ ॥
পৃথগিতি পরিকল্প প্রস্থান যুগাং
বিষতরকলমজ্জাত লা বিপ্রম্।
লগুনসরলম্ভীকু ঠিসন্ধু যুগাং
দহনতিমিরকু কাকজ্মুক্তং স্থ সিন্ধ্য ॥

হরতি সকলবাতান্ ধোররপানসাধান্। প্রতিদিনমনুলেগাৎ ওপ্তবাচস্থ এক্টো। কুঠমস্টাদশ্বিধং দিবিধং বা তশোণিতম্। *বৈবর্গাং দ্বাগ্রহান্ দোষান্ মান্যতাপ্ত মর্ফনাৎ।

s দের। কাথার্থ—কটিত তিল তৈল ক্চিলাবীজ /৪ সের, জল ৩২ সের, শেষ ্চ সের; শজিনামূলের ছাল /২ সের, জল ५७ .मा. (अप /8 ८मर , मानातम्म / ३ ८मत्, জ্ল ১৬ সের, শেষ ৴৪ ুসর ; কালপুত্রা ৴২ স্বে, জ্লা ১৬ সের, শো ৪ সো; ব্রুণ-ছাল /২ সেব, জল ১৬ সেজ, তেখা ১৯ সেৱা। টেত্রপর ৴হ সেব, জন ১৮ বের, শেষ, ৪ সের; ান্দেশবিত রব ৪ বেব (স্বাসেট অভাবে হাব), সহপত্র রুব /১ সের (অভাবে হাপ), অধ্যন্তার হাপ ৴১ সের , জয়ন্তার রদ ৫১ (বর (সংসের অভারে হাথ)। করার্থ— রপ্রকা, দ লকাই, ব্রষ্টিমরু, কুড়, সেজব ও বিট্-লবণ, চঙামূল, হানদ। ও পিপুল প্রা**্যক** ১ প্রা এই তেল মন্ত্র করিলে প্রবল বাত-सावि, कहीमनावि कुछ, वि. त दी बिक বিব্যাহাত হলেয়ে আন্ত নিবারণ ২য় ৷

নহাপিওতৈলম্।

অমৃতাস্থ গলশতং সেমেরাদীতুরং লগা। প্রসারণ্যাঃ প্রশতং রুক্তমুগ্র পুরুষ্ পুরুষ্ পাদশেষং গৃহায়। চ তেলগ্রহং পচেব ভিনক। क्योतः हरू छ पर प्रवा मन्त्रभरन्तन विश्वना ॥ প্রিভশালজনিয়াস-সিধুবারকল্ডয়ন্। निष्यान्धः भेषष्टे - करनः । वक्षूननं वः ॥ বহিত্যধিকসভানি নিশে হে চলনম্বরণ। পুতিপূত।क्षिकार्थ-नाकुतोहल्मर्लकम् ॥ वामानियमाधानानि वानवीवीकत्वत b। অখাহ্যা সরলং সর্কাং প্রতিকর্ণমিতং পরেৎ ॥ এরং দৈলবরং হন্তি বাতরক্তমসংশয়ন। কৃত্তমন্ত্রীদশ্বিধং অভিবাতং ক্রলাক্রণম ॥ ক'য়গ্রহ ধামবাতিং ভগন্দরগুদীময়ম। कत्र-हेरियः इष्टि मर्फनाञ्चाज मःगग्रः॥ কাথার্থ-ভলঞ সের ৷ ेख्न /8

<u>দোমরাজী, গন্ধভাত্তো, প্রত্যেক ১২॥° সের,</u>

জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের (পৃথক্ গৃৰক্
কাথ), হয় ১৬ সের। কলাথ—িলারস, ধুনা, নিসিন্ধা, ত্রিফলা, সিদ্ধি, রহতী,
দন্তীমূল, কাঁক্লা, পুননবা, চিভামূল, পিপুলমূল, কুড়, হরিজা, দারুহরিজা, চন্দন, হক্তচন্দন, ঘটালা, করঞ্জ, শেতস্বপ, সোমরাজী
বীজ, চাকুন্দাবীজ, বাসকছাল, নিমছাল,
পটোলপত্ত, আলকুনীবীজ, অশ্বগদ্ধা ও সরলকাঠ প্রত্যেক ২ তোলা। এই তৈল মর্দ্ধনে
বাতরক্ত ও কুঠাদি বিবিধ পীঢ়াব শান্তি হয়।

দশপাকবলাতৈলম্।

বলাকবায়কৰ ভাগে তৈলং ক্ষানচতুত্ত পিন। দশপাকং ভবেদেওদ্ বা চাকগাৰ ভণিভতি ২ গ প্ৰভাং পুংস্বনজৈব নবাপিং ভ্ৰুনগ্ৰন্থ বেভোবোনিবিকারগ্রম হল্লাওবিকাবত্ত ॥

জৈল /৪ নের। বেড়েলার কার্ম ১৬ সের,
তুর্ম ১৬ সের। বেড়েলার কল ১১ সের,
এইরূপ কাথ ও কল ছারা দশবার হুণাবিদি
তলপাক কবিয়া মদান কবিলে বাতরভা ও
দলগাপ্তরোগ নাই হয়। ইহা শুজাবৃদিত্রণ বেতোদোল, সেনিবিকার ও
বাতাকার বিনাশক।

শারিবাছাতেলম্।

শারিবারিষ্টকুমাও-পোতকীভক্ষক বনাঃ।
গড়ে টীকাথছ্যাতে কিন্তুরক্ষরসেন চ॥
পচে তৈলক িলজং দহৈতানি ভিষয়রঃ।
কাকোল্যে জারকে মেদে শতাহর ক্ষীর্নাযুত্তঃ॥
জিলীসক্ষামতানতা-সর্ভাসকর্যনারী এই ॥
হক্ষাদ্ বাতাক্ষরং ঘোরং ক্ষ্টিতং গলিতং তথা॥
চর্মানক পানানীংকুগ্লোবক বিপাদিকম্॥
ক্ষীক্ষাহিস সর্কানি এগণোথভগন্যন্।
ভামিক বাতরক্তন্য বিকারেরতিবন্ধিতন্।
ভন্মিক্ষাছোরিবাতাং তৈলমেতদ্ বিনিশ্চিতন্॥

ভিলতৈল /৪ দের, তৃগ্ধ /৪ দের, কাদ-রাঙ্গার রম ় /৪ দের। কাথ্য জব্য— অনন্তমূল, নিমছাল, কুমাও, পূইশাক, বিভ্ল,
মাবালী (বা গন্ধভাহলিরা) ও গুলঞ্চ, এই
সকল জবা মিলিত /৮ সের, জল ৬৪ সের,
শেষ ১৬ সের। কলার্থ—কাকোলী, কীরকাকোলী, জীরা, ক্রফজীরা, মেদা, মহামেদা,
গুল্ফা, ক্ষীরিণী (হুধ্লে), মঞ্জিচা, মোম,
গুলঞ্চ, অনস্তম্প, ধুনা, সৈদ্ধবলবণ ও রক্তচলন, এই সকল জব্য মিলিত /১ সের। বংগাবিধি পাক করিরা এই তৈল ব্যবহার করিলে
ক্টিত ও গলিত ভরকর বাতরক্ত, চর্ম্মদল,
শামা প্রভৃতি ত্বগ্দোর, কুচ, অর্শ:, রণশোও ও
ভগলর প্রভৃতি বিবিধ রোগ নিবারিত হয়।

শহাহ্বাদি তৈলম।

কাথেন প্তপুপায়া: কুঠস্য মধুকস্য চ। একৈকং সাধ্য়েৎ তৈলং বাংরক্তরজালাহ্য ॥

গুল্ফা, কুড় কিংবা ষ্টিমধুর কাথ সহ যথাবিধি তৈল পাক করিয়া ব্যবহার করিলে বাতরক বিন্ট হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

বাতরক্তে পথ্যানি।

ববস্তি নাবার-কলমারণনালয়:।
গোধুমাক্তবকা মূল্যা প্রবর্গ্যাংপি মুকুস্তকা:।
অকানাং মহিনীগাঞ্চ গবামাপ পরাংসি চ।
লাবভিত্তিরসপ্থিট্-ভারচুড়াদিবিধিরা:।
অকুদা: গুৰুদাভূহি-কপোভচটকাদর:।
উপোদিকা কাকমাচী বেআগ্রং স্থানিবর্ত্তম্প্রা
বাস্তক্ষং কারবেলক তপুলীয়: প্রসারণী।
পত্তব্যে বৃদ্ধস্থাতং স্পি: প্রশাকপ্রবম্।।

পটোকা স্বৰ্তিলক মূখীকা খেতণকরা। নবনীতং সোমবলী কন্ত্রী সিত্চলন্য । নিংশপ'শুস্কদেবাহ্য-সরলং শ্রেহমর্দন্য। তিক্তক পথামুদ্দিষ্টং ব'তরক্তপদে নুণায় ।

যব. ষষ্টিক তপুল, উড়ীগান্ত, কলমাধান্ত, রক্তশালি, গোধুম, ছোলা, মুগ, বনমুগ্ৰ, ছাগহম, মহিষ্দুগ্ধ, গৌছম. লাব, ভিন্তিরি, ময়ূব ও কুৰুট প্ৰভৃত্তি বিধির পকী এবং শুক, ডাকপাৰী. কবুতর, চটক প্রভৃতি প্রভুদ পক্ষির মাংস, পুঁইশাক, কাকমাচী, বেতাগ্ৰ, স্মুখ্ণিপাক, বেতোশাক, করলা, নটেশাক, গন্ধভাচলিয়া, শালিঞ্শাক, পাকাকুম্ডা, ঘর, সোনাধের কচি পাতা, পটোল, এরগুটতল, দ্রাক্ষা, পরিষ্কত চিনি, মাধন, সোমলতা, কন্ত্রী, খেত চল্মন, শিশুরুক, অন্তক্ দেবদাক, তৈলাদি মন্দ্ৰ ও তিজন্তবা এই সমস্ত বাত্তবক্ত বোগে পথা।

বাতরক্তেঽপথ্যানি।

দিবাৰপ্লাগ্ৰিসভাপ বাংবামাতপ্ৰমঞ্জন।
মাধাং কুল্পা নিপাবাং কলায়াং কারসেবনন্ ॥
অভ্ভানুপ্ৰাংসানি বিক্লানি দ্বানি চ।
ভক্ৰো মূলকং মভাং পিণালেকাংয়ানি কাজিকং॥
কটুক গুৰুৱাভিয়ালি অংগানি চ শভ্ৰা।
ভভাপথা নিগান্ড বাছর্বগালে লুগ্ম॥

দ্বানিজা, অগ্নির উত্তাপ, ব্যারাম, বৌদ্র-সেবন, ক্রীপ্রদঙ্গ, মাহকলাগ্ন, কুলওকলাগ্ন, শিম, মটর কলাগ্ন, ক্লার দেবন, ঔদক্ষাংস, আনুপ্যাংস, বিক্রদ্রবা, দাব, ইক্ষু, মূলা, মদিরা, তিলকব, অমুদ্রব্য, কাজি, কটু রস, উষ্ণবীর্য্য, গুরুপাক ও ক্ষকর দ্রব্য, লবণ ও ছাতু এই সমস্ত বাতরক্ত গোগে অপথ্য।

ইত্যায়র্কেদ-সংগ্রহে বাতরক্তাধিকারঃ।

অথোরুতত্তাধিকারঃ।

অথোব্ৰুস্তম্ভ-নিদান্য।

শীভোক্ষপ্রবাদ শুক-শুক্ষ স্থিক্ষ নিবেবিটিঃ।
জীপালীপে তথারাস-সংক্ষোন্ত শুপ্রপাণরৈঃ॥
সঙ্গেমমেদংপকনঃ সামমতার্থসঞ্চিত্র।
অভিভূরেতরং দোবমূর চেৎ প্রতিপদ্ধতে।
সক্ষান্থিনী প্রপূর্যান্তঃ প্রেমণা জিমতেন চ।
ভদা অভাবি তেনোক জনৌ শীভাবচেতনৌ।
পরকীয়াবিব শুক্র স্যাভামভিভূগবাংশী।
ব্যানাক্ষর্কভৈমিত্য-তল্যান্ড দিক্ষতিষ্করঃ॥
সংমৃক্ষো পাদসদন-কৃষ্ণ্রেছান্তরণপ্রভিতিং।
ভমুক্তক্ষবিত্যান্তরাচাবাত্রমধাপরে।

শীতল, উষ্ণ, দ্রব, কঠিন, গুরু, লঘু, রিশ্ব ও রক্ষত্রবা সেবন; অনেকভাগ জীর্ণ অন্ধ্রন, ভাগ অঙ্গীর্ণ এরূপ অবস্থায় ভোজন, পরিশ্রম, সংক্ষোভ (অত্যন্ত শরীরচালনা), দিবানিজাও রাত্রি জাগরণ এই সকল কারণে কুপিত বারু, হন্ত মেদ ও হন্ত ক্রেয়ার সহিত মিলিত হুইরা আমরসমৃক্ত অভিস্থিত পিত্তকে দুখিত করিয়া যখন উক্লকে আশ্রন্ন করে, তখন এ বারু ভিমিত শ্লেম্বাবা উক্সর অস্থি পূর্ণ করিয়া উহাকে ভার, নাত্রশ, আহ্রন্ন ও অভিশন্ন বেদনামুক্ত করে। ভাহাতেরোগী মনে করে ঘেন উক্ল তাহার নার, অপরের অর্থাৎ উত্তোলন ও প্যনাদি ক্রিয়ায় লামর্থা থাকে না।

উক্তজ্তকে কেহ কেই আঢ়্যাত কহিয়া থাকেন। এই রোগে অত্যন্ত চিস্তা, অক-বেদনা, স্তৈমিত্য, তল্লা, বমি, অক্ষচি ও জর হয়। এবং পাদের অবসাদ স্পর্ণানভিক্ষতা ও কটে সঞ্চালন, এই সকল লক্ষণ লক্ষিত হয়।

অথোরুন্তন্ত-চিকিৎস।।

স্নেহাস্ক্সাৰবমন-বতিকপাবিজেচনম্। বৰ্জনেজ্যালাতে তু যতগৈওস্য কোপানম্ ॥ ভন্ন'দত্ৰ সদা কাথাং খেদসভ্যনকৃষ্ণম্।
আমনেদাককাধিকানিনকৈ প্রিরক্তা।
বং সাথে ককপ্রশমন নতু মারুভকোপনম্।
তংসকাং সর্কান কাবামুক্তভ্যা ভেবসম্।
সক্রোক্রকা ক্রমান্ততাদৌ ক্রমাশন।
পশ্চদি বাতবিনাশায় বিধাতবাদিকা জিয়া।

উক্তন্ত রোগে স্বেহ প্রয়োগ, রক্তনোক্ষণ, বনন, ব্যক্তিকর্ম ও বিবেচন এই সমুদ্র বর্জন করিবে, কারণ ইহাদের থারা রোগের বৃদ্ধি হইয়া থাকে। অতএব আম মেদঃ ও কক্ষের আধিক্য হইতে বাযুকে রক্ষা করিবার নিমিত্ত উক্তন্তে স্বেদ শুক্তন ও কৃষ্ণ ক্রিয়া কর্তব্য। যাহা কফের প্রশমক অথচ বাযুর প্রকোপক নহে, তাহাই ইহাতে সদা প্রযোজ্য। প্রথমে কফনাশক সর্বপ্রকার ক্রুক ক্রিয়া কর্তব্য, পশ্চাৎ বায়ুনাশের নিমিত্ত যাহা যাহা আবশ্রুক, তৎসমুদ্যিই করিবে।

রক্ষণাদ্ বাতকোপদেরিদ্রনোশার্তিপূর্বক: । বেরবেদক্রনত কাংগো বাতাময়াপহ: । প্রতার্ত্তেং প্রতিব্যাত: সরিতং শতলোদকাম্ । সর্ব্ত বিমলং শতং স্থিতেশং পুনপুনঃ।

অতিকৃষ্ণ ৰাত্ৰ বায়ৰ প্ৰকোপ হেতৃ
নিজানাশাদ উপদ্ৰব উপস্থিত হইলে বাতনাশক স্নেহম্মেদ প্ৰয়োগ করিবে। রোগিকে
শাতল জলাবশিষ্ট নদীর স্নোতের বিপরীত
দিকে কিংৰা স্বোব্বের নিশ্মল শাতল স্থির
জলে প্রংপুনঃ সম্ভরণ করিতে দিবে।

ককৈ দিহেচ মুত্রাটোঃ করঞ্জ কনমবলৈঃ।
দুলৈব শোষণকারা মুলৈর ক্সা বা ভিষক্ ।
পিচুমন্দিশ্য বা মুলৈর ধবা দেবদারশঃ।
দত্তীক্র ইটাক্র মানবিশেকাশি বুদ্ধিমান্।
তকারী স্বর মানি গ্রুন্ব বিবেশক নিছকৈ: ॥

ডহর করঞ্জার ফল ও সর্বপ; কিংবা অর্থ-গন্ধা, আকল, নিম বা দেবদারুর মূল, অথবা দম্ভী, ইন্দুরকাপি, রামা ও সর্বপ; কিংবা জয়ন্তী, রান্না, শক্তিনা, বচ, কুড্,চি ও নিম গোম্ত্রে বাটিয়া উক্তস্তাভ ভাহার প্রালেপ দিবে।

কৌমসর্যপরন্মীক-মৃদ্তিকা-সংযুত্ত ভিষক্। কুর্যাৎ প্রদেপনং গাঢ়মুরুন্তত্তে সবেদনে ঃ

সর্বপ চূর্ণ ও উয়ীমৃত্তিকা মধুর সহিত মিশ্রিত করিয়া (ধুত্রাপাতার রসের সহিত পিষ্ট ও উষ্ণ করিয়া) বেদনাযুক্ত উরুত্তভে গাঢ়রূপে প্রলেপ দিবে।

কৃক্ণপুত্ৰ রুষ্বাঞ্চ ফলঞ্চ থাখসাভিধ্য। রসোনমরিচাজাজী-জরম্ভীনিয়া, সর্বপাঃ। সর্ব্বাংগ্যন্তানি নৃত্রেণ পিষ্ট'মুফৌকৃতানি চ। গাচং প্রলেপয়েদ্ বৈস্তা অ'ঢাগতে ভয়াবতে ॥

কৃষ্ণ ধুতুরামূল. তেঁড়ীফল, রম্থন, মরিচ, কৃষ্ণজীরা, জয়ন্তী পত্র, শজিনার ছাল ও সর্যপ এই সমূদ্য জবা গোম্ত্রেণ সহিত পিষ্ট ও উষ্ণীকৃত করিয়া উক্লস্তন্তে গাঢ় প্রলেপ দিবে।

ভল্লাতকাদিঃ।

ভন্নতিকামূচান্তর্তী-দারূপথা'পুনর্নবাঃ। পঞ্চলীয়য়োক্সিশ্রা উক্তন্তন্ত্রিকর্ণাঃ।

ভেলা, গুলঞ্চ, শুঠ, দারুহরিদ্রা, হরী-তকী, পুনর্মবা ও দশমূল ইহাদের কাথ উরুস্তন্তে হিতকর।

भिश्चन गिनः ।

পিল্লনীপ্লনীমূল-ভল্লাতকাৰ মেব বা। কৰম মধুযুত্য পীত্বা উক্তভাদ বিষ্চাতে .

পিপুল, পিপুলমূল ও ভেলার মূটা ইং-দের কাথ বা কক মধু সহ সেবন করিলে উক্তম্ভ রোগ প্রশমিত হয়।

গ্ৰন্থিকালককুফানাং কাৰ্য কৌলাখিতং পিবেৰ। লিফাৰা ত্ৰিকলাচূৰ্ণং কৌলেশ কটুকাগুভৰ ॥

পিপুল মূল, ভেলা ও পিপুল ইহাদের কাথে মধু প্রক্ষেপ দিয়া; কিংবা ত্রিফলা চূর্ণ, ও কট্কী চূর্ণ (মাত্রা অন্ধতোলা) মধুর সহিক সেবন করিলে উক্লন্তক্ত বিনষ্ট হয়। শিলাজতু তথাত্তপুং বা পিরলীমধ নাগরম। উক্লন্তত্তে পিবেন্মৃত্যৈদ শম্লীরদেন বা ।

শিলাজতু, ও গুগ গুলু, পিপুলা কিংবা গুঠ ইহাদের কোন একটি গোমূত্র কিংবা দশ-মূলীর কাথের সহিত সেবন করিলে উক্লন্তন্ত রোগ বিনষ্ট হয়।

ত্তিকলা পিশ্বলী মৃস্তং চবাং কটুকরোহিণী। লিহাদা মধুনা চূৰ্ম্কুন্তভান্দিতো নরঃ॥

ত্রিফলা, পিপুল, মূতা, চৈ ও কট্কী ইহা-দের চুর্ণ মধুর সহিত (অর্দ্ধতোলা মাত্রার) লেহন করিলে উফস্তম্ভ নিবারিত হয়।

পিপ্লনীধন্ধমানং বা মান্দিকেণ ওড়েন বা। উক্তমন্ত প্ৰশংসন্তি গুণ্ডাব্যবিষ্টামৰ চঞ

মধু বা পুরাতন গুড়র সহিত পিপ্পদীবর্দ্ধমান যোগ কিবে শোথোজ গণ্ডীরারিষ্ট উক্তন্তে ব্যবহা করিবে। পিপ্পদীবর্দ্ধমান যোগেব নিয়ম এই, যথা—প্রত্যহ এক একটি পিপ্পদী অধিক ভক্ষণ করিয়া পরে এক একটি কমাইতে হয় অর্থাৎ প্রথম দিন ৫টা ভক্ষণ করিলে বিভীয় দিন ৬টা তৃতীয় দিন ৭টা, এইরূপ ১০টা পর্যান্ত হইবে পরে এক একটি করিয়া মাত্রা হ্রাস্করিবে।

कककरार्थः वासाप्राप्तस्यः गाकाव् स्रोक्तसः । स्रायानामस्य कलाः अधिःयास्त्रा स्रोक्सम् ॥

উক্তন্ত-রোগির কক্ষন নিমিত্ত উপযুক্ত ব্যাহাম, প্রভাতে উচ্চস্থানসমূহ লঙ্খন এবং নদীলোতের প্রতিকৃলে সন্তরণ করাইবে।

'সন্ধবাত্য: হিতং তৈলং ব**হাত**্বমূ**তগুৰ্**ং ॥

উক্তভ্যোগে বক্ষ্যাণ দৈৰবাও ভৈশ এবং বাতব্যাধি অধিকারের পুন্নবাণ্ডগ্ভশু ও অমৃতাগুগাগুলু হিতকর।

গুঞ্জাভারে। বৃদঃ।

নিক্তরং গুদ্ধপুতং নিক্ষাদশগদ্ধকম্।
গুঞ্জানীজঞ্চ বড়ানিজং জরস্তী নিশ্ববীজকম্।
প্রত্যেকং নিক্ষাত্রন্ত নিকং জৈপালবীজক্ষ্।
জয়াজনীয়পুত্ত, ব-কাক্ষাচীক্রবৈদিনম্।

ভাবরিকা বটীং কুর্যাচ্চত্ ও প্রাথমাণতঃ । ভপ্রভিত্রো ক্ষমা নারা হিন্দু-সৈদ্ধবদংযুক্ত । শমরত্যুবশং কুঃখমূকতকং কুর্তভারম্ ।

শারদ ১॥ তোলা, গন্ধক ৬ তোলা, বেত কুঁচের বীজ ৩ তোলা, জরজীবীজ, নিম্ব-বীজ ও জরপালবীজ প্রত্যেক ॥ তোলা; এই সমুনার জরজী, জামীরলেব, ধুতূরা ও কাক-মাচীর রসে ১ দিন ভাবনা দিয়া ৪ রতি প্রমাণ বঁটকা করিবে। হিং ও সৈদ্ধব লবণের সহিত সেব্য। ইহাতে উৎকট উরুল্ডম্ভ রোগ নিবা-রিভ হয়।

অফকট্রর-তৈলম্।

পলাভাবে শিক্ষলীমূল-নাগরাদস্টকট্বর:। তৈলপ্রহ: সমো দ্বরা গৃপ্রস্থাপ্রহার । অস্টকট্রুইতলেহস্মিন্ তৈল সার্বপমিব্যতে ॥

সার্থপতেল /৪ সের, দধি ৪ সের, কট্র অর্থাৎ সমার দধির তক্র ৩২ সের। ককার্থ— শিপুল মূল ২ পল, শুঠ ২ পল, (কেহ কেহ বলেন, পিপুল মূল ও শুঠ মিলিড ২ পল)। বথাবিধি তৈলপাক করিয়া ব্যবহার করিলে গুএদী ও উরুস্তভ বিনষ্ট হয়।

कुष्ठीणः देवनम्।

ছুঠ এবৈষ্টকোদীচাং সরলং দারু কেশরম্ । অন্তল্যন্ত্রপদ্ধা চ তৈলং তৈঃ সাবপং পচেৎ। সক্ষোদ্রং মাত্রয়া ওত্মাদুরুত্তভার্দিতঃ পিনেৎ ॥

সার্বপত্তিল /৪ দের, জল ১% দের।
কর্মার্থ—কুড়, নবনীতথোটি, বালা, সরল
কার্চ, দেবদারু, নাগকেশর, বন্ধমানী ও অশ্বগদ্ধা (মিলিড) /১ দের; এই তৈল পাক
করিরা মধুর সহিত পান করিলে উরুত্তভ্ত নিবারিত হয়।

মহাদৈদ্ধবাত্যং তৈলম।

নিজুরুধিবজানোগ্রা-ভাগীবৃষ্টিছিরাকলৈ:। লাক্ষবিখনটীধান্ত-কুকাকট্ফলগৌকরৈ:॥ দীপাকাতিবিবৈরও নীলীনীলামুলৈ: পচেং।
তৈক: সকাঞ্জিক: হন্তি পানাভ্যঞ্জননাবনৈ: ।
আমবাত: ক্রিমীন্ গুন্মান্ প্লীহোদরনিরোরজ: ।
মন্দাযিং পক্ষমন্ত-বাত্ত্বগুগদানপি।

ভৈল /৪ সের। কন্ধার্থ—সৈদ্ধর, কুড়, ওচী,
বচ, বামুনহাটী, যষ্টিমধু, শালপাণি, জাতীফল,
দেবদারু, ওঠী, শঠী, ধনে, পিপুল, কটুফল,
পুফরমূল, যমানী, আতইচ, ভেরেপ্তামূল,
নীলীবৃক্ষ ও নীলপন্ম। এই সকল মিলিত /১
সের। কাজি ১৬ সের। এই তৈল ম্থাবিধানে
পাক করিয়া পানে নত্তে ও অত্যক্তে প্রয়োগ
করিলে আম্বাত উক্তম্ভ ও গুলা প্রভৃতি
রোগ প্রশ্মিত হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

উরুন্তন্তে পথ্যানি।

ক্ষকঃ সর্বাবিধিঃ ছোনং কোছবা রক্তশালয়ঃ।
ববাং বুলপাঃ হামাকা উদ্দালাণ্চ পুরাতনাঃ।
শোভাঞ্জনঃ কারবেলং পটোলং লহুনানি চ।
হানিগাং কাকমাটা বেত্রাগ্রং নিপ্তপালবম্।
পভা্রো বাস্তুকং পথ্যা বার্ত্তাকুর্বারি চ।
শালাকনাকং পিণ্যাক-তক্রারিষ্টমধ্নি চ।
কাইতিক্রকায়ানি ক্ষারবেনাগ্রাং জলম্।
ব্যাধান্য বধালক্তি স্থলভাক্রমণানি চ।
বাজে হনে সপ্তর্গং প্রতিক্রোভান্যবি চ।
ক্রেছি হনে সপ্তর্গং প্রতিক্রোভান্যবি চ।
ক্রেছি হনে সপ্তর্গং ব্যাক্রমণানি চ।
বিশ্বাক্রমণান্য ব্যাক্রমণান্যবি চ।
ক্রেছি হনে সপ্তর্গং ব্যাক্রমণান্যবি

সমশ্য দেকজিলা, স্বেদ, প্রাতন কোদোধাত্য, বক্তশালি, বব, কুলখকলায়, শ্রামাধার,
বনকোদ্রব, শজিনা, করলা, পটোল, রগুন,
মুর্ণিশাক, কাকমাচী, বেতাগ্র, নিমপাতা,
শালিঞ্পাক, বেতোশাক, হরীতকী, বেগুন,
গরমজল, সোলালপাতা, তিলাদির কর, তক্ত,
অরিষ্ট, মধু, কটুজবা, তিক্তদ্রবা, ক্ষামজ্বা,
ক্ষার সেবন, গোম্ত্র, সামর্থ্যাহ্বসারে ব্যামাম,
শরীবকর্ষণ, বক্ত জলবিশিষ্ট ভ্রমে সম্বরণ,

লোভবিনী নদীর প্রতিকৃদে সম্ভরণ এবং বাহা ককনাপক অথচ বাহুর প্রকোপক নহে, সেই সমত উক্তম্ভ-রোগির হিতজনক।

উরুস্তভেহপথ্যানি।

ওলনী আন বিশ্বন্ধ বিল্লাসাল্য ভোজনম্। বিরেচনং কেইনঞ্চ ব্যনং রক্তমোক্ষণন্। ব্যক্তিক্ ন হিতং প্রাহরদ্বন্তভ্বিকারিণান্। শুরুপাক, শীতবীর্যা, দ্রববছ্ল, সিপ্প (ম্বতাদিবছল) দ্রব্যা, সংযোগবিরুদ্ধ (যেমন মাংস ও হ্রপ্প, মৎস্থা বা লবণের সহিত হ্রপ্প দেবন) ও অসাস্থ্য (স্বাস্থ্যের অছিত্রকর) দ্রব্যা সকল ভৌজন, বিরেচন, স্নেছপ্রেল্পোগ, বমন, রক্ত-মোক্ষণ এবং বস্তিক্রিল্পা উরুস্তম্ভরোগির পক্ষে এই সমস্ত অহিতকর।

ইজায়র্বেদ-সংগ্রহে উক্তম্ভাধিকার:।

অথামবাতাধিকারঃ।

অথামবাত-নিদানম।

বিশ্বদাহারচেইক্ত মন্দাগ্রেমিন্চলক্স চ। विषर जुङ्क्यर श कन्नर गाम्रामर कुर्व्य उत्था । বায়ুনা প্রেরিতো হ্যামঃ শ্লেমস্থানং প্রধাবতি। তেৰাভাৰ্থং বিদক্ষোহদৌ ধমনাঃ প্ৰতিপদ্ধতে ' ৰ ভিপিত্তৰ কৈ ভূ হো দুখিতঃ সোহয়জো রসঃ। মোতাংক্তভিষ্যময়তি নানাবর্ণেঃতিপিচিছ্রঃ। क्षमद्रज्ञास पोर्खनाः भोद्रवः क्रम्यक ह । ব্যাধীনামাশ্রয়ো ছেব আমসংজ্ঞাহতিদারণ: । যুগপৎ কুপি ভাবন্তব্ৰিক্স দ্বিপ্ৰবেশকে।। ভদং বা কুকুতো পাত্রমাসবাত: স উচাতে চ व्यवस्थितिकिक्का बानकः (भीतवः बतः । অপাকঃ পুমতাকানামামবাভক্ত লকণ্ম। म कहे: मर्कात्रांगांगाः वता श्रकृतिका छत्यः। হক্ষপাদশিরো গুল্ক-ত্রিকজানুরুসদিসু॥ করোতি সরজং শোখং বত্র দোবঃ প্রপন্ততে ! न (मान) ब्रखाएक्शर्यः वादिक हेव वृश्विक: । जनदर मार्राश्चिकोर्समाः अम्बन्धकिरशोत्रवयः। উৎসাহহাসিং বৈরস্যং দাহক বছমুত্রতামু 🛭 क्रको करिवछाः भूतः छथा निजाविभगावस्। पृष्टि विश्वम मूर्कान्त झन् शहर विष् विवक्ष छाम्। ৰ ভারকুজমানাহং কট্টাংকাঞ্চামুপদ্রবান্। পিতাৎ সদাহরাগঞ্চ সলুলং প্রনামুগম। ভিষিতং ওর কণ্ড্র কক্ষ্মপ্ত তমাদিশেৎ।

ক্ষীর্ম:স্তাদি বিক্রম আহার, অতিরিক্ত মৈথুন, ব্যায়াম ও জলপ্রতরণাদি বিকুদ্ধবিহার, অগ্নিমান্দা, গমনাগমন-রাহিত্য, মিথারভোজী হইয়া ব্যায়াম করণ, এই সকল কারণে আম অর্থাং অপক আহাররস, বায়ু-কর্ত্তক আমাশয়-সন্ধ্যাদি-কফস্থানে নীত ও তথায় অত্যন্ত পুষিত হইয়া ধমনীসমূহে উপ-স্থিত হয়। অনন্তর দেই আমাধ্য অন্তর্গ, বায়, পিত্ত ও কক বারা অধিকতর দূষিত, অভি-পিচ্ছিল ও বিবিধ বর্ণযুক্ত হইয়া, শ্রোভ:-সকলকে ক্লেম্বুক্ত করে। ইহাতে শ্রীর শীষ্ত্র হর্মল ও হাদম ভারাক্রান্ত হইয়া থাকে। এই আম্দংক্তক ব্যাধি অতি ভয়ন্ধর ও বিবিধ রোগের মূল। উক্ত প্রকারে আমসংযুক্ত বারু এবং কফ ৰুগপং কুপিত হইয়া ত্রিক ও সন্ধি-স্থলে প্রবেশ করত গাত্রকে স্তব্ধ করিয়া কেলে, ইছার নাম আমবাত।

অন্নয়দি, অক্লচি, তৃষ্ণা, আলস্যা, দেছের শুক্তা, অর, অপারপাক ও শোথ এই শুলি আমবাতের সাধারণ লক্ষণ। ন আমবাত প্রকুপিত হইলে, সকল রোগাপেকাই কইলায়ক হইয়া থাকে। ইহাতে হন্ত,
পদ, মন্তক, গুল্ফ, ত্রিক, জামু, উক ও সদ্ধিছলে বেদনাসূক্ত শোথ উৎপন্ন হয় এবং সেই
ছাই আম যে স্থানকে আশ্রম্ন করে, সেই স্থানে
বুশ্চিকদংশনের প্রায়্ম অত্যন্ত যাত্রনা উপস্থিত
হয়। এই রোগে অগ্নিদৌর্বলা, মুখনাসাদি
দিয়া জলস্রাব, অকৃচি, দেহের গুরুতা, উৎসাইহানি, মুখবৈরস্থা, দাহ, বহুমূত্র, কুক্ষিদেশে শৃল
ও কঠিনতা, নিলাবিপর্যায়, পিপাদা, বমি, ভ্রম
মুর্ছা, হাদয়ে ব্যথা, মলবদ্ধতা, শরীরের জড়তা,
অন্তর্কুজন (পেটের নাড়ীতে অবক্তে ধ্বনি)
ও আনাহ এবং অস্তান্ত বিবিধ কউপ্রাদ উপস্থাব
সকল উপস্থিত হইয়া থাকে।

পৈত্তিক আমবাতে গাত্রদাহ ও শরীর রক্তবর্ণ হয়। বাস্তক্ষে শ্লবদ্বেদনা কফজে স্তৈমিত্য, গুরুতা ও কণ্ণু হইয়া থাকে।

অথামবাত-চিকিৎসা।

লক্ষান বেদনং ভিক্তং দীপনানি কটুনি চন্দ্র বিরেচনং শ্রেছনঞ্চ বন্ধয়ক্ষাক্ষতে ন আমবাত রোগে লভ্যন, স্বেদক্রিয়া, তিক্ত কটু ও অগ্রিদীপক আহার, বিরেচন, স্নেহপান

ও বন্তি প্রয়োগ কর্ত্তব্য । কল্ফ: ৰেদো বিধাতব্যো ব'লুকাপুটকৈত্তথা।

উপনাহাক কর্ত্তনান্তেঃপি নেহবিবর্জিডা: ॥
আমবাত পীড়ার বালুকার পুটুলী উত্তপ্ত
করিয়া, তন্ত্বারা ক্লুক্সেদ প্রদান এবং স্লেহ
বর্জিড প্রলেপ বিধেয়।

শঙ্কর-সেদঃ।

কার্পাদান্তিকুলখিকাতিলয়বৈরেরগুমুলাতদী-বর্বাভূশপশিশ্র কাঞ্জিকযুটেরেকাকুটের্বা পৃথক। ক্ষেঃ স্যাদথ কুর্পরে।দরশিরংক্তিক্পাণিপাদালুলি-ভলকক্ষকটীরজা বিজয়তে সামাঃ সমীরামুগাঃ। (এতানি সম্দিতানি একৈকশো বা সংকৃট্য কাঞ্জি-কেন সংসিচ্য বন্ত্ৰেণ পোট্টলীবন্ধং বন্ধা দীপ্তান্তিচুল্বাপরি-স্থিতকাঞ্জিকস্থাল্যপরিলিপ্তসাজ্ঞ্জনীবন্ধং বাষ্প্রপ্তথ-মেকৈকমানীয় বেদনাস্থানে স্বেদন্তে ।)

কার্পাদবীজ, কুলথকলাই, তিল, বং, লালভেরেণ্ডামূল, মদিনা, পুনর্ন বা, শণবীজ ও শজিলাবীজ, এই সকল দ্রবা সমস্ত বা যাহা পাওয়া যায়, তাহা কুটিত ও কাঁজিতে সিক্ত করিয়া ছইট পুটুলী বান্ধিবে এবং প্রজ্ঞালিত চুল্লীর উপর কাঁজীপূর্ণ একটি হাঁড়ী বসাইয়া ঐ হাঁড়ীর মুখে একখানি বহুছিন্ত বিশিষ্ট শরা চাপা দিয়া সন্ধিস্থলে লেপ দিবে। ঐ শরার উপর ঔষধের পুটুলী ছইটি রাখিবে, একটি উষ্ণ ইতৈ গাকিবে, অপরটি বারা স্বেদ দিবে, এরূপ ক্রমায়য় পুটুলীব্য বারা স্বেদ দিলে কুর্পর, উদর, মন্তক, ক্রিক্ (পাছা), হন্ত, পদ, অঙ্গুলি, গুলফ, য়য় ও কটা দেশের আমবাত জনিত বেদনা বিনষ্ট হইবে।

আমবাতে পঞ্জোল-সিদ্ধং পানান্নমিষাতে ৷

এই রোগে পঞ্চকোলের অর্থাৎ পিপুল, পিপুলম্ল, চৈ, চিতা ও ওঠি ইহাদের সহিত সিদ্ধ অন্নপান ব্যবস্থেয়।

শুক্ষমূলকযুৰং বা যুৰং বা পাঞ্চমোলিকম্। রুদকং কাঞ্চিকং বাপি শুক্টীচূর্ণাবচূর্ণিভম্ ।

ভন্দ্নার বা বৃহৎ পঞ্চমুলের সহিত সিঙ মুদ্গাযুষ অথবা ভঠিচ্ব সংযুক্ত মাংসরস বা কাজি আমবাতে হিতকর।

শতপূপাবচাবিদ্ধ-দদষ্টা বঙ্গণদ্ধ: । সহদেবী চ বর্ধান্তু: শতী চাপি প্রদারণী । সতর্কারীদলং হিঙ্গুগুক্তকাঞ্জিকপেবিতম্। আমবাতহরং শ্রেষ্ঠং স্থোকং লেপনং হিতম্ ॥

শুল্ফা, বচ, ও ঠ, গোক্ষ্র, বরুণছোল, পীতবেড়েলা, প্নন্বা, লটী, গন্ধভাতুলে, ক্ষয়ন্তীফল ও হিং, এই সকল দ্রব্য গুরু বা কাঁজির সহিত পেষিত এবং তাহা অন্ধ উষ্ণ করিয়া প্রানেপ দিলে আম্বাতে বিশেষ উপ-কার হয়। অহিংপ্ৰা কৈবুকং মূলং শিগ্ৰুৰ্থনীকমৃত্তিকা। মূত্ৰেণৈতানি সংপিৰ্য চোপনাহায় কলনেৎ ।

কুলেথাড়া, কেঁউমূল, শব্জিনাছাল ও উই মৃদ্ভিকা, এই সকল দ্রব্য গোমুত্তে বাটিয়া প্রলেপ দিলে আমবাতের উপশম হয়।

চিত্ৰকং কটুকা পাঠা কলিজাতিবিবায়তাঃ।
দেবলাক বচা মুখ্য-নাগরাতিবিবাছলাঃ।
দিবেছকামুনা নিত্যনামবাতক ভেৰজন্ ।
চিতামুল, কটুকী, আক্নাদি, ইক্সমৰ,

আতইচ ও গুলঞ্চ অর্থবা দেবদাক, বচ, মৃত্য, গুঁঠ, আতইচ ও হরীতকী, ইহাদের চুর্ণ উষ্ণ জনের সহিত নিত্য সেবন করিলে আমবাত উপশ্যিত হয়।।

শটীবিবৌৰ্ধিকজং বৃধাতৃকাপসংযুত্ৰ। সপ্তরাক্রং পিবেজজ্জবামবাতবিনাশনম ॥

পুননবার কাথে শটা ও ভাঠের কর প্রক্ষেপ দিয়া সপ্তাহ কাল সেবন করিলে আমবাত বিনষ্ট হয়।

ত্রিবৃৎসৈদ্ধকশুঠীনামারনালেন চুর্ণিতম্। পাছা বিবিচাতে জন্তরামবাতহরং পরস্।

তেউড়ীচুর্ণ ১২ মাধা, সৈদ্ধব লবণ ২ মাধা, শুরীচুর্ণ ২ মাধা এই সমুদায় একত মাশ্রত কাররা কাজির সাহত পান করিলে বিবেচন হইরা আমৰাত প্রশমিত হয়।

নপ্তাহং ত্রিবৃঠন্ত্র্বং ত্রিবৃহকানের ভাবিতম্। কাঞ্জিকেন জু তৎ পাতং রেচয়েদামবাতিনন্।

ভেউড়ীচুর্ণ, তেউড়ীর কাথে সাতদিন ভাবনা দিয়া কাঞ্জির সহিত পান করিলেও বিরেচন হইয়া আমবাতের শাস্তি হয়।

कर्षः नाजत्रहूर्वश्च काञ्चिक्तन भिरवर मना । स्रोमवाञ्चनमनः कर्णवाञ्चतः भत्रम् ॥

শুঠচুণ ২ ভোলা (॥॰ ভোলা ব্যবহার) কাঞ্জিকের সূহিত প্রভিদিন সেবন করিলে আম্বাত ও কন্ধবাত বিনষ্ট হয়।

ভন্তীগোক্ষুরক্কাথঃ প্রাতঃ প্রাতনিবেবিতঃ। দামবাতে কটাশুলে পাচনো রুক্পণাশনঃ॥ (কোঠভেদে কর্ত্তব্যে যুক্কারমত্র প্রক্রিপত্তি)। শুঠ এক ভাগ, গোকুর ছই ভাগ; বথাবিধি কাথ প্রস্তুত করিয়া প্রাক্তঃকালে পান করিলে আমবাত ও কটীশূল নিবারিত হয়। এই কাথ দোষের পাচক ও বেদনা নিবারক। (কোঠভেদ আবস্তুক হইলে ইহাতে ব্যক্ষার প্রক্ষেপ দিবে)।

কামবাতে কণাযুক্তং দশমূলীকলং পিবেং।
পাদেবাপাভয়াবিবং ওড়্টাং নাগরেন বা।
আমবাতে দশমূলীর কাথে পিপুলচ্র্

প্রক্রেপ দিয়া পান করিবে কিংবা হরীতকী চূর্ণ ২ মাধা ও ও ঠচুর্ণ ২ মাধা বাটিয়া উঞ্চলন সহ অথবা গুলক ও ও ঠৈর কাপ পান করিবে।

অমৃতানাগরগোক্ষর ডিতিকাবরণকৈ কৃতং চূর্ব। মকারনালগীতমামানিলনাশনং গাতেম।

গুলক, ওঠ, গোক্ত্র, মৃথিরী ও বক্ত ব্কের মূল এই সকলের চূর্ণ দাধর মাৎ কিংবা কাঁজিব সহিত সেবন করিলে আমবাত প্রশমত হয়।

রসোনাদিক্ষায়ঃ।

রুদোনবিশ্বনিপ্ত ভী-কাথনানার্দ্দতঃ পিবেৎ। নংকঃ প্রভরং কিঞ্চিদ্রমবাতন্ত ভেষজম্ ॥

রস্থন, ওঁঠ ও নিসিন্দা ইহাদের কাথ পান করিলে আমবাত নই হয়। আমবাতের ইহা উৎকৃষ্ট ঔষধ।

দশমূলীকষায়েণ পিবেৎ বা নাগরান্তসা। কুক্ষিক্তিকটাশুলে তৈলমেরওসম্ভবমূ॥

দশমূলের বা শুঠের কাথের সহিত এরও-তেল পান করিলে কুক্ষি বস্তি ও কটীশূল নিবারণ হয়।

আমবাতগলেক্সক শরীরবনচারিণঃ। এক এব নিমন্তাসাবেরগু-মেহকেশরী।

শ্রীরক্লপবনে বিচরণকারী আমবাতক্রপ গজেন্দ্রের, এরগুতৈলক্রপ কেশরীই একমাত্র নিহস্তা অর্থাৎ এরগুতেল আসবাতের উৎস্কৃষ্ট উষধ। এরওতৈলসংযুক্তাং হরীতকীং জক্ষরেরো বিধিবৎ। আমাদিলার্ত্তিযুক্তো গুধুসীযুদ্ধার্দিতো নিতাম্॥

হরীতকীচূর্ণ এরপ্ততৈলের সহিত অবলেহ করিলে আমবাত গৃধদী ও বৃদ্ধি রোগের শাস্তি হইয়া থাকে।

রামাপঞ্কম্।

রাক্ষা জড়্চানেরজং দেবদার মহৌষধন্।
পিবেৎ সাধ্যাক্ষিকে বাতে সামে সন্ধার্থিকালে।
রাক্ষা, গুলঞ্চ, এরগুমূল, দেবদার ও গুঠ ইহাদের কাথ, সন্ধিগত অন্থিগত মজ্জাগত ও সর্বান্ধগত আমবাতে প্রযোজ্য।

রামাসপ্তকম্।

রারামৃতারথধদেবদার - ত্রিক উকৈরওপুনবিবানান্। কাথং পিবেরাগরচূর্ণনি এং অজ্যোরপার্বত্রিকপৃষ্ঠশূলী। রামাপঞ্চক রামাসগুকে চ উফে ভেনার্থমেরওতৈলং প্রক্রিপত্তি রক্ষা।

রালা, গুলঞ্চ, সোন্দালফল, দেবদাক, গোক্ষ্র, এরগুমূল ও পুননবা, ইহাদের কাথে গুঠচুর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে জত্বা, উক্ত, পার্থ, ত্রিক ও পৃষ্ঠশূল প্রশমিত হয়। (বিরেচনার্থ রালাপঞ্চক ও রালাসপ্রকের উষ্ণ কাথে বৃদ্ধবৈদ্বগণ এব ওত্তিল প্রক্ষেপ দিয়া থাকেন)।

রাসাদশমূলকম্।

দশম্লামুতৈরও-রাশ্নাগারদার ভি:।
কালো রুষ্কতৈলেন সামং হস্তানিলং গুরুষ্।
দশমূল, গুলঞ্চ, এরগুমূল, রামা, শুঁঠ ও
দেবদারু, ইহাদের কাথে এরগুতৈল (শোধনার্থ হ তোলা এবং শমনার্থ > তোলা পর্যান্ত)
প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে আমবাত বিনষ্ট হয়।

মহারামাদি পাচনম্।

রাখা বাতারিম্লঞ্ বাদক: সম্বরালভ:।
শটী দাস্ত্র বলা মুখ্য: নাগরাতিবিবাভয়া: ॥

बनः ड्रोगाधिषाङ्क निमिधाः भूनन वाः। অখণকামতা কুঞা বুদ্ধবার: শতাবরী ৷ वहां महहत्रांक्टन हविकां बुहुडीच्यम् । সমভাগাৰিতৈরেতৈ রামাধিগুণভাগিকৈ: কৰায়ং পায়য়েৎ সিদ্ধমন্তভাগাবশেষিভয়। শুকীচুৰ্সমাযুক্তমাভান্তেন সুহং তথা। অলম্বাদিদংযুক্তমজমে'দঃদিদংযুতম্। यथ'लावः यथानानि अत्कर्भः कातराम् विश्वन । সবেব্ৰু বৃশ্তবোগেরু সন্ধিমজনতেরু চ। আনাতের চ সর্বেধু সর্বাগাত্রাত্রভাবে। কুজকে বামনে চৈৰাপক্ষাধাতে তথা**জি**তে : জাতুজ্পাহিপীডাহাগুগ্রন্থান হতুমহে। প্রশন্তং ব' হরক্তে স্থাদেশস্তঃম্ভ ভথার্শনি । বিখচ'ওঅসমোগ-বিস্ফাজেন্ট্র শার্থকে 🛊 অপ্রক্ষে প্রীপদে চ যোমিওকাময়ে তথা। পুংসাং মেচুগতে রোগে স্তাণাং বন্ধাময়ে ভথা 🛊 বোষিতাং গঠনং মুগাং নান্তি কিঞ্চিলতঃ পরসঃ সর্কেষাং পাচনানান্ত ত্রেষ্ঠনেত্তি পাচনম্। মহারামাণিকং ন'ম প্রজাপতিবিনির্মিত্য a

রাসা, এরওমুল, বাসক, হুরালভা, শটী, দেবদাক, বেড়েলা, মুস্তক, ভুঠ, আন্তইচ, হরীতকী, গোক্ষর, সোন্দাল, মৌবি, ধনে, भूननवा, जबगका, अनम, भिन्नमी, वृद्धनातक, बरुम्ली, वह, सिन्ही, हहे, ब्रह्की अ कन्हेंकाती এই সকল দ্রব্য প্রত্যেক সমভাগ, রাসাহ ভাগ; এই ৰ.৭৮ ভাগের এক ভাগ থাকিতে নামাইয়া দোষ ও বোগ অহুসারে ভুঞ্চির্ আভান্ত চুৰ্ণ, অলমুধাদি চুৰ্ণ কিংবা অজ-त्मानां पि पूर्व मः शुक्त कतिया भान कतित्व। हेरा বিবেচনার সহিত প্রযুক্ত হইলে সন্ধিও মজা-গত সর্বাঞ্চার বাতরোগ, আনাহ, গাত্রকন্স, কুজ্ঞ তা, পকাঘাত, অদিত, জামুবেদনা, অস্থি-বেদনা, গৃধদী, হমুগ্রহ, বাতরক্ত, উক্লক্তম, অৰ্শ:, বিশ্বচী, গুল:, হুমোগ, যোনিব্যাপৎ, শুক্রদোষ, মেচ গত রোগ ও জীগণের বন্ধা-দোষ প্রভৃতি বছবিধ রোগের শাস্তি হইয়া স্ত্রীলোকদের গর্ভসঞ্চারক। ইহা এরপ ঔষধ অভাপি আবিশ্বত হয় নাই। প্রজাপতি ইহার প্রকাশক।

শতপূষ্পান্তং চূর্ণম্।

শতপূজা বিভক্ত দৈৰুবং মরিচং সমস্। চৰ্মুক্তান্থ্ৰা পীত্মগ্ৰিসন্দীপনং প্রম্॥ শুলফা, বিড়ঙ্গ, সৈত্মব লবণ ও মরিচ ইহাদের চুর্ণ উষ্ণজলের সহিত সেবন করিবে। ইহা অগ্নিদীপক।

হিঙ্গান্তং চূর্ণম্।

হিন্দু চবাং বিভা ও গা কলাড 'জা সাপীকরম। ভাগে ত্রেনিদং চূর্ণং পীতং পাতাম জিন্তবেৎ ॥ হিন্দু ১ ভাগ, চৈ ২ ভাগ, বিটুলবণ ৩ ভাগ, ন্ত্রঠ ৪ ভাগ, পিপুল ৫ ভাগ, জীরা ৬ ভাগ ও পুষরম্ব ৭ ভাগ, ইহাদের চুর্ণ গরম জ্ব সহ সেবন করিলে আমবাত বিনই ২য়।

व्यवस्थानाः हुर्गम्।

অলম্বাং গে কুরকং গুড় চাং বৃদ্ধারকম্। ি প্রতাং ভিব্রভাং মৃত্যা বরুণং সপুনন বিম্।। दिकला" भागवरिक्षण अक्कृड्गीभि काजरपर । মস্তারনালতকেণ গ্রোমাংসবসেন বা 🛊 আমৰাতং নিহন্তা'ও ধ্য়থু সন্ধিসংস্থিতম। भोरु छत्यामदान'३-छन 'म!'न निर्माणापर ॥ অগ্নিঞ্চ কুক্তে দাপুং তেজাবৃদ্ধিং বলং তথা। বাতরেশ্যান জয়তোষ সন্ধিমক্ষ্ণতান্পি।

মুখ্রিরী, গোকুর, গুলঞ্চ, বৃদ্ধারক মূল, পিপ্ললী, তেউড়ী, মুতা, বরুণমূল, পুনর্নবা, ত্রিফলা ও ভুঁঠ এই সকল দ্রব্য সমভাগে শইয়া উত্তমরূপে চুর্ণ করিবে। দধির মাত, কাজি, তক্র, হ্রপ্প বা মাংস্যুষের সহিত সেবন করিলে আমবাত, সন্ধিজাত-শোথ, প্লীহা, গুলা, জাচববোগা, আনাহ, অর্শঃ ও সন্ধিমজ্জগত বাতরোগ নিবারিত হয়। ইহা বলকারক, অগ্নিদীপক ও তেজাবর্দ্ধক।

বৈশ্বানরচূর্ণম্।

মাণিমম্বন্ত ভাগে। ছৌ যমাক্তাগুৰদেব হি। ভাগান্তয়োহজমোদারা নাগরাদ্ ভাগপঞ্কন্ ॥

দশ **ছৌ** চ হরীতক্যাঃ প্রকৃচ্ণীকৃতাঃ **শুভাঃ।** মস্বারনালতক্রেণ সর্পিযোক্ষোদকেন বা 🛽 পীতং জয়ত্যামবাতং গুলং ক্ৰব্যিজান গদান। প্লীহানং গ্রন্থিলুলাদীনশাংস্থানাহমের চ ॥ বিবন্ধং বাতজান রোগাংস্তবৈধ হস্তপাদজান। বা তাতুলোমনমিদং চুর্ণং বৈশানরং স্মৃত্যু 🛊 (ভাগান্ত্রয়োহজমোদায়া ইতি অজমোদা কমানী, তেন

পঞ্চাগো ধ্মান্তা এব। কেটিছ, বন্ধানিতাপুত্ৰ यमास्रा ভাগদয়ং প্রবছন্তি। অন্যে ফলমোদাং বনবমানীং গছতি। কি হতংপরিমাজনে যমান্তের যুক্তা)। চ: गैः।

সৈন্ধবলবণ ২ ভাগ, যমানী ৫ ভাগ, ভাঠ ৫ ভাগ, হরীতকী ১২ ভাগ, এই সমুনায় চুৰ মিশ্রিত ও একত্র মদিত করিয়া লইবে । অন্ত-পান—দিবি মাত, কাজি, তক্র, ম্বত বা উষ্ণ জল। এই ঔষধ সেবন করিলে আমবাত, গুল, শুল, অর্ম: ও আনাহ প্রভৃতি নানারোগ উপশ্মিত হয়। ইহা বায়র অনুলোমক।

(বৈশ্বানর চূর্ণে কেই কেই ইমানী ২ ভাগ ও অজমোদ! অর্থাৎ বনযমানী ৩ ভাগ প্রহণ করিয়া থাকেন; কেহ্ বা "অজমোদা" এই শক্টাই ভ্যাগ করিয়া কেবল মাত্র যমানীই ২ ভাগ গ্ৰহণ করেন; কিন্তু এক্সলে "অজ্ব-মোদাব" অর্থ-যমানী, বেছেতু অন্তঃপরি-মার্জনের জন্ম যমানীই প্রশস্ত, অতএব ৫ ভাগ যমানীই গ্রহণ কর্ত্বা।)

পথ্যান্তং চুর্ন ।

পথাবিষ্যমানীভিস্তলাভিক্ত্রণ্ডিং পিরেং। তজেণেকোদকেনাপি কাঞ্জিকেনাথবা পুন: 1 আমবাতং নিহতাকৈ শোধং মন্দায়িতামপি ৷ পীনসং কণ্মকন্দোগং স্বরভেদমরোচক্ম ॥

হরীতকী, ভাঠ ও যদানী এই সকল চর্ব সমভাগে গ্রহণ করিয়া (॥০ ভোলা মাতাায়) ভক্র, উষ্ণ জল অথবা কাঁজির সহিত সেবন কবিলে আমবাত, অখিমান্য ও হুদোগ প্রভৃতি রোগ সকল নিবারিত হয়।

शूनर्नगि हुर्गम्।

পুনর্শবাসতা শুকী শতাহন বৃদ্ধদারকম।
শটা মৃথি তিকাচ্পনারনালেন পাররেও।
আমাশরে ধিবাতম্বং চুবং পেরং হুধামুনা।
আমবাকেং নিহস্তান্ত গুল্লমীমৃত্তামপি।
পুনর্নান, ১৯২ ক, শুক, শুক, শুলুফা, বৃদ্ধদারক,
শটা ও মুখিরী ইহাদের চুব কাঁজি কিংবা
ক্রিমৃত্ত্ব জালের সহিত পান করিলেও আমবাত
ও উদ্ধৃত গুল্মী রোগ নিবারিত হয়।

আভান্সচূর্ণম্।

আভা রামা ওড় টা চ শত বেরো মহোরথন।
শতপুশা খণলা চ হরুবা বৃদ্ধারকঃ ॥
বমানী চাজমোলা চ সমভাগানি কারছে।
ফলচুর্ণমিদে কুড়া বিড়ালপদকং পিবেং ॥
মত্যেম বংসরসৈর্ বৈস্তকৈরুকোদকেন বা।
সর্পিবা বাপি লেহন্ত দ্বিমণ্ডেন বা পুনঃ ॥
অন্থিসন্ধিগতং বায়ুং স্বায়ুমজ্জা ভিত্তক বম্।
কটিগ্রহণ গুঙ্গাক মন্থালন্তং চনুগ্রহম।
বে চ কোইগণ রোগান্তাংশ্চ সর্কান্ প্রণাশহেং।
আভাত্যো নাম চুর্গোহয়ং সর্কব্যাধিনিবর্হণঃ ॥

বাব ল, মুলের ছাল, বাসা, গুলঞ্চ, শতমূলী, গুঠ, গুলফা অশ্বগনা, হবুষা, বৃদ্ধনারক,
ধমানী, বন্ধমানী প্রত্যেক দ্রব্য সমভাগে
গ্রহণ করিয়া স্কর্চুর্গ কিবিনে। মন্ত, মাংসরস,
মূব, তক্রু, উজোদক, প্রভ অথবা দ্ধিমঞ্জের
সহিত এই চুর্ণ (॥০ ভোলা মাত্রায়) সেবন
করিলে অস্থিগত, সন্ধিগত, সামুগত ও মজ্জাপ্রিভ
বাষু এবং কটিগ্রহ, গুএদী, মন্তান্তন্ত, হমুগ্রহ ও
কোঠগত সকল প্রকার বোগ নিরাক্ত হয়।

व्यक्तरमानानिवछेकः।

অলমোদা মি চিপিঞ্চলী নিজুক্ত হ্রদারু চি কেশ হাস্তা: । সৈজবিশিঞ্চলীমূলং ভাগা নবক স্তুপলিকা: হা: ॥ গুঠী দশপলিকা ভাগে পলানি হান'ন্ত বৃহ্দারস্তা। পথা পঞ্চপলানি চ সর্বাণোক সক্ষা। ॥ সমগুড় কৌনদত শুক্র বাপাঞ্চবারিণা পিবত:। নক্তব্যামানিলকা: সর্বেরোগা: স্ক্রীভ্চ॥ বিহুচিকা প্রতিত্ণী জন্তোগো গুপ্তসী চোগ্রা। কটিবন্তিগুদক্টনকৈবান্থিজজ্বদোন্তীরম। ব্যুপুত্থাঙ্গসন্ধিব বে চান্তেহপানবাতসজ্তা:। সর্ব্বে প্রয়ান্তি নাশং তম ইব সূর্ব্যাংগুবিধান্তম্॥

(অজমোদাদিবটকে সর্ব্বচূর্ণসমো গুড়:, কিঞ্চি-হদকং দল্ধ বাচ্চী গুড়ং দ্রবীকৃত্য তত্ত্ব চূর্বং প্রক্রিশা বটকাঃ কার্যাঃ, চূর্বং বেতি গুড়ং বিহায় কেবলমুক্ষো-দকাদিভিঃ পেয়মিতি ভাকুঃ)।

যমানী, মরিচ, পিপুল, বিজ্ঞ্ব, দেবদারু, চিতামূল, গুল্ফা, গৈন্ধব, পিপুলমূল, এই নর দ্রবার প্রত্যেকের ১ পল, শুঠ ১০ পল, বিদ্ধুক বীজ ১০ পল, হরীতকী ৫ পল ; এই সমুদর একত্র চূর্ণ করিয়া সর্ব্রসমান গুড়ের সহিত মিশ্রিত করত বটক প্রস্তুত করিবে। প্রথমে গুড়ের সহিত কিঞ্চিৎ জল মিশ্রিত করিয়া অগ্নিসম্ভাপে দ্রবীভূত করিবে। অনস্তর্য তাহাতে চূর্ণ প্রেক্ষেপ দিয়া বটক করিতে হইবে। গুড় ব্যতিরেকে কেবলমাত্র চূর্ণ উষ্ণ জলের সহিত ॥০ তোলা পরিমাণে সেবন করিলেও উপকাব হয় । ইহাতে আমবাত, হুদ্রোগ, গুগুদী, কটিশূল, বন্তিশূল গুভ়তি এবং আমবাত।সম্ভুত অক্যান্ত নানাবিধ রোগ নষ্ট হয়।

যোগরাজগুগ্গলঃ।

চিত্রকং পিপ্ররীমূলং যমানী কারবী তথা। বিড়কান্সজমোদা চ জীরকং হুরদার চ हरेताना रेमक्तरः कूष्ठेः त्रात्रा शाक्त्रवश्यक्रम्। ত্রিকলা মৃত্তকং ব্যোষং অগুণীরং যবাগ্রজম ॥ ভালীশপত্রং পত্রঞ্চ লক্ষ্কুর্ণা নি কারয়েং। যাবস্তোভানি চূর্ণানি তাবন্মাত্রস্ত গুগ্ গুলুম্॥ मः प्रका मर्शियो गांज जिस्स छाए**छ निधा**भारत । অতো মাত্রাং প্রযুঞ্জত ব এষ্টাহারবানপি॥ যোগরাঞ ইতি খাতো যোগে হরমমূতোপম:। আমশা । ঢাবা হাদী ব ক্রিমিছ ইব্রণানি চ ॥ क्षेत्रक्ष व्यापतामाइ-६न भामि विमानास्य । व्यश्चिक कुन्नरक्ष मोश्वर एउटकानुष्टिः वसर रूपा ॥ বাতরোগ'ন জয়তোষ সন্ধিমজ্জগতানপি॥ (আদৌ শক্ষণ্ডগ গুলুং ফুল-ন পিটুয়িহা পশ্চংং সমেন সববচূর্ণেন সহ যুতেন পিট্টয়িতা বিশ্বভাণে হাপ-মেৎ, তভোহন্তৌ মাৰকানুকোদকেন জক্ষরেৎ)।

চিত্তামূল, পিপলমূল, যমানী, ক্বফজীরা, বিজ্ঞা, যমানী, জ্বীরা, দেবদারু, টচ, এলাইচ, দন্ধব, কুড়, রাঙ্গা, গোক্ষুর, ধনে, ত্রিফলা, মৃত্যা, ত্রিকটু, গুড়বক্, বনার মূল, যবকার, তালীশপত্র ও তেজপত্র এই সমুদায় সমভাগে চুর্ণ করিবে। চুর্ণামন্তিব সমান গুগাগুলু। অত্যে গুগাগুলু মতে মাড়িয়া পশ্চাৎ তাহার সাহিত চুর্ণ সমুদায় মিশ্রিত করিয়া মতো প্রাদান করিবে। বিবেচনা করিয়া মাত্রা প্রদান করিবে। (ব্যবহার মাত্রা—॥০ তোলা), অমুপান—উষ্ণ জল বা কাঁজি; ইহা সেবন করিলে আমবাত, উরুক্তন্ত, ক্রিমি, ফুটরণ, প্রীহা ও অক্তান্ত অনেক রোগ উপশমিত হয়।

ব্রহদযোগরাজ-গুগ্ গুলুঃ।

তিকটু তিফলা পাঠা শতাহ্বা রজনাধ্যম্ व्यवस्थान नहां हिन्दू रुत्वा रुखिशिधनी ॥ हिनकू किका भाग शाखाः निष्ठः स्मीत्रक्रलाः उथा। সৈশ্ববং পিপ্ললীমূলং ওগেল প্রকেশরম ॥ ফণিজ ্মকশ্চ লোহঞ্চ সজ্ঞকশ্চ ত্রিকণ্টকঃ। রামা চাতিবিবা শুগী ববক্ষারায়বেতস্থ। विखकर शुक्षत्रः वनाः वृक्ष्माः मः ছিमः कृतः। অখগন্ধা ত্রিবৃদ্দস্তী বদরং দেবদারু চ 🛭 হরিদ্রা কটুকা মুর্ববা ভ্রায়মাণা ছরালভা। বিড়কং মৃত্ৰুপ্থ যমানা বাসক বক্ষ এতানি সমভাগানি গ্রুচ্গানি কারয়েং। শোধিতং গুগ গুলুঞ্চৈব সর্ব্বচূর্ণসমং নয়েৎ ॥ যুতেন পিট্রগ্নিতা চ স্নিম্নে ভাতে নিধাপয়েৎ। রসবাতেন যে ভগ্নাঃ কটিভগ্নান্চ যে জনাঃ । একাঙ্গং শুষ্তে যেষাং কুঠং বাপি ক্ষতোওরম্। পাদৌ বিস্তারিতৌ যেনাং যেষাং বা গুলুসাগ্রহঃ। সন্ধিৰাতং দে ষ্ট্ৰীৰ্যং ব'তং সৰ্বলয়ীরগম্। শ্শীতিং বাডজান্ রোগংংকডারিংশচচ পৈত্তিক'ন্ ▮ বিংশতিং গ্লৈপিকাংশৈচৰ হস্তাৰগ্ৰং ন সংশয়ঃ । व्ययः वृश्वत्यागत्राज-खग्रः मन्तवः उशा

ত্রিকটু, ত্রিফলা, আক্নাদি, শুল্ফা, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, বন্যমানী, বচ, হিসু, হবুষা, গজপিপ্লশী, জীরা, শটী, ধনে, বিটু সচল ও সৈশ্বর এবণ, পিপুল্ম্ল, গুড়ত্বক্, এলাইচ, তেজপত্র, নাগেশ্বর, ক্ষুদ্রপত্র তুলসী,
লোফ, ধুনা, গোক্ষ্র, রামা, আতইচ, ভঠ,
ঘবক্ষার, অমবেতস, চিতামূল, কা, চ, মহা
দাড়িম, এরওমূল, অশ্বগন্ধা, তেউড়ী, দন্তীমূল,
কুলশুঠি, দেবদারু, হবিদ্রা কট্কী, মুর্বা, বলাডুম্ব, হরালভা, বিড়ন্ন, বন্ধভার যমানী, বাসকভাল ও অভ্র প্রত্যেক চ্গ সমভাগ। চ্গসমন্তির
সমান গুগ্গুলু। মুতের সহিত মর্দন করিরা
ম্বতভাণ্ডে রাথিবে। ইহাতে নানাপ্রকার বাতরোগ, পৈত্রিক ভ মোমিক রোগ নই হয়।

শিবাগুগ্গুলুঃ।

শ্বিবিভাতানলকাকলানাং প্রত্যেকশো মৃষ্টিচতুষ্টরঞ্চ ।
তোয়াচকে তৎকথিতং বিধায় পাদাবশেষে ঘবতারশীরম্ ।
এরওতিকং বিপলং নিধায় পিচুরেরং গন্ধকনামকক্ত ।
পচেৎ পুরক্তাত্র পালম্বর্য পাকাবশেষে চ বিচুণ্য দ্বভাত ॥
রাল্লা বিডুক্তং ম্বিচং কণা চ
দত্তা জটানাগ্রদেবদার ।
প্রত্যেকশং কালমিতং তথৈয়াং

বিচৰ্ণা নিক্ষিপ্য নিযোজয়েক । আমবাতে কটাস্থে গু<u>ধ</u>সীক্ষেষ্ট্ শীৰ্ষকে। নচান্তদন্তি ভৈষজ্যং ৰশাষং গুগ গু**লু:** মৃতঃ ॥

হরীতকী, বহেড়া, আমলকী প্রত্যেক দ্রব্য ৩২ তোলা পরিমাণে লইয়া ১৬ সের কলে সিদ্ধ করিয়া একপাদ অর্থাৎ /৪ সের অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে। পরে তাহাতে এরও-তৈল ১৬ তোলা ও গদ্ধক ৬ তোলা দিয়া পাক করিবে। পাকাবদানে গুণ গুলু ১৬ তোলা প্রক্রেপ দিবে এবং রামা, বিড়ঙ্গ, মরিচ, পিপ্ললী, দন্তী, জ্টামাংসী, শুঠ ও দেবলাক প্রভেক বন্ধ ১ তোলা পরিমাণে চূর্ণ করিয়া প্রদান করিবে। ইহা দেবনে আনবাভ, কটিশল, গুলগী ও জ্রোষ্ট্,শীর্ষক প্রভৃতি রোগ বিনষ্ট হয়।

সিংহনাদগুগ গুলুঃ।

পলত্ৰং কৰাৰত ত্ৰিফলাৰাঃ স্কুৰ্ণিতম্ , নৌগদ্ধিকপলকৈকং কৌশিকত পলং তেখা।

व्याद्यत्वम-मःश्रवः।

কুড়বং চিত্রতৈলক্ত সর্কমাদায় যত্নতঃ।
পাচয়েৎ পাক্বিবৈদ্যঃ পাত্রে লৌহময়ে দৃঢ়ে ॥
হন্তি বাতং তথা পিত্তং ক্রেমাণং পঞ্চপঙ্গুতাম্।
মাসং স্কুৰ্জন্মং হন্তি কাসং পঞ্চবিধং তথা ॥
কুন্তানি বাতরক্তানি গুল্মশূলাদরাণি চ।
মামবাতং ক্রেদেতদপি বৈদ্যবিব্যক্তিতম্।
এতদন্ত্যাস্থোগেন জ্বরপলিতনাশনম্।
স্পিত্তিলবসোপেত্মশ্লীয়াচ্ছালিঘটিকম্।
সিংহনাদ ইতি গা'তো রোগব'রণদর্পহা।
বিহ্বদ্ধিকরঃ পুংসাং ভাষিতো দণ্ডপাণিনা ॥

হরীতকী আমলকী ও বহেড়া ইহাদের কাথ তিন পল, শোধিত গদ্ধক চুৰ্ণ এক পল গুগ্,গুলু > পল, এরগুকৈল / । সের (কেই বলেন /১ সের), একখানি দুড় লৌহপাত্রে প্রথমে এরপ্রতৈলের সহিত গন্ধকচ্ব ও প্রগ-গুলু পাক কারয়া পবে ত্রিফণার কাথ দিয়া আলোড়িত কৰিবে। এই ঔষণ দেবন করিলে বাত-পিত্ত–শ্লেষ্মা, খঞ্জতা, পঙ্গুতা, বাস, পঞ্চাবধ কাস, কুঠ, বাতরক্ত, গুল, শূল, উদর ও অতি কঠিন আমবাত রোগ বিনষ্ট হয়। নিয়ত সেবন করিলে জরা ও পলিতাদি বিনষ্ট হয়। এই ঔষধ দেবন কালে স্বত তৈল ও বসার সহিত শালি ব। বৃষ্টিকধান্তের অর পথ্য করিবে। এই ঔষণ সিংহনাদ গুগ্গুলু বলিয়া বিখ্যাত। ইছা সেবনে অগ্নির দীপ্তি ২য়। (মাত্রা 🗸 • ছইতে ২ তোলা পর্যান্ত।)

বৃহৎসিংহনাদ-গুগ্গুলুঃ।

পিট্টিতাং গুগ গুলোম নিং কট্টেলপলাগ্নক। প্রত্যেকং বিফলা প্রস্থা সাদ্ধান্তাল প্রকে প্রেক্ত প্রদেশক পূত্রক পুনরে তদ্ বিমিশ্রতেং। বিক্রেট্রিকলামুন্ত-বিভঙ্গ মেনদার ৮॥ গুড় চায়িত্রিবৃদ্ধন্তী-চবীপরণম শক্ষর। পারদং গন্ধককৈব প্রত্যেকং শুক্তিসন্মিতম ॥ সহস্রং কানককলং সিদ্ধে সংচূর্ণা নিক্ষিপেং। ততাে মাবছরং জঞ্গা পিবেং তপ্তজলাদিকম্ ॥ ভারিক কুমতে দীপ্তং বড়বানলস্মিতম্ । খাতুর্ছিং বয়েবৃদ্ধিং বলং স্থবিপূলং তথা ॥ ভামবাতং শিরোবাতং স্কিবাতং স্বাস্থান্তা । জামবাতং শিরোবাতং বাতং সক্রিবাতং স্বাস্থান্ত্র ।

অশ্বরীং মৃত্রকুক্তঞ্চ শু গুঞ্চ তিমিরোদয়ে।

আরপিন্তং তথা কুঠং প্রমেহং গুদনির্গমম্।

কাসং পঞ্চবিধং খাসং ক্ষরঞ্চ বিষমজ্ঞরম্।

মীহানং দ্লীপদং গুলাং গাঙুরোগং সকামলম্।

শোধান্তবৃদ্ধিশ্লানি গুদজানি বিনাশয়েং।

মেদঃককামসাখাতং ব্যাধিবারণদর্পহা।

সিংহনাদ ইতি থাতো বে'গোহয়ময়তোপমং।

কেটুতৈলেন গুগ্গুল্ং পিউছিলা কাপজলেন সহ
পক্তবা আসমল্লাকে প্রক্রেপার্থং ত্রিকট্বাদীনাং চুর্ব ৪
তোলা শোধিত ক্ষপালবীক গোটা :০০০ রসগন্ধকৌ
কক্ষলক্বর সাকীত্রিভাচ দাহবারী ইতি স্কালে।)

হবীতকী, আমলকী, বহেড়া প্রত্যেক /৪ সের, মথ পোট্লীবদ্ধ গুগুগুলু / ১ এক সের. পাকার্থ জল ৯৬ সের, শেষ ২৪ চবিবশ সের। পবে ঐ পোট্ৰীবন্ধ গুগ্ৰেল গুল বাহিব করিয়া তাহা ৮ পল কটুতৈলে পেষ্ণ করণা-নম্ভর ঐ কাথ জলেন সাহত পাক কারবে। আসন্নপাকে তাহাতে ত্রিকট্, ত্রিফল, মুতা, বিড়ঙ্গ, দেবদাক, গুলঞ্চ, চিতামুল, তেউড়ী, দন্তীমূল, চৈ. ওল, মাণ, পারদ ও গন্ধক প্রত্যেক ৪ ভোলা, জয়পাল ১০০০টা (উত্তম-রূপে চুর্ণ করিয়া) নিক্ষেপ করত আলোড়িত করিয়া লইবে। মাত্রা ২ মাধা (ব্যবহার /• হইতে 🥠 🏻 হানা প্যান্ত) ে অমুপান-উঞ্চলৰ বা উক্ষতন্ত্ৰ প্ৰভৃতি। ইহাতে অতি-শর আগ্রির দী,পু ব্যুপ্তিও বলরুদ্ধি এবং আমবাত প্রভাত নানারোগ নষ্ট হয়।

বাতারিগুগ্গুলুঃ।

বাতারিতৈলসংযুক্তং গঞ্জবং পুরসংযুত্ম।
ফলতেরগুতং কৃষ। পিউরিজা চিরং রুজী।
ভক্ষেৎ প্রত্যং প্রাতরক্তেরানুপানতঃ।
দিনে দিনে প্রধাক্তব্যং মাসমেকং নিরন্তরম্।
সামবাতং কটাপুলং গৃধ্রদীং পঞ্জপস্তাম।
বাতরক্তং সংশাধক সদাহং ক্রোষ্ট্রশিক্ষ্।
শময়েদ্ বন্তংশা, দৃষ্টমপি বৈজ্ঞবিব্জ্ঞিতম্।

এরওতৈল গন্ধক গুগ্গুলুও তিফ্লা একত পেষণ করিয়া তাহা এক মাস ক্রমাগত া : কালে উষ্ণ জলের সহিত দেবন করিলে আমবাত, কটীশূল, গৃধদী, পঙ্গুতা ও বাত-রক্ত প্রভৃতি নানারোগ নষ্ট হয়।

রসোমপিতঃ।

রদোনস্থ পলশতং তিলক্ত কুড়বং তথা।

হিন্দু ত্রিকট্কং ক্ষারো ছো পঞ্চ লবগানি চ ॥

শতপুশা তথা কুষ্ঠং পিয়লীমূলচিত্রকো।

অজনোদা বনানী চ ধাক্তকগাপি সৃদ্ধিমান্ ॥
প্রত্যেক্ত পলকৈগাং প্রক্ষুচ্গানি কার্মেং।

যুতভাওে দৃচে চেতং স্থাপয়েদ্ দিনবোড়ণ ।
প্রাদিপে তৈনমানীঞ প্রস্থান্ধং কাঞ্জিকতা চ ।
পাদেৎ কথপ্রমাণস্থ তোরং মন্তাং পিবেদম্ ॥
আনবাতে তথা বাতে সর্কাল্কৈকাঙ্গমংশয়ে।
অপক্ষারেইনলে মন্দে কাস্থাসগরেষ্ চ ।
উন্ধাদে বাতভাগে চ শুলে জন্তোঃ প্রশাসতে ।
রনোনপিভাগ্রপজাতগারে বাংহ বিদ্যান্ধ্যাং প্রলেপম্ ।

ধন্ত,রপ্রস্থান্দ্র পিষ্টং নাগেশচুগং নবনীত্যুক্তম্ ॥

রস্থন ১২॥০ দের, নিজ্ঞধ তিল ।।০ দের, হিন্ধু, ত্রিকটু, যবক্ষার, সাচিক্ষার, পঞ্চলবণ, গুল্ফা, কুড়, পিপুল্যুল, চিভায়ুল, বন্যমানী, ব্যানী ও গনে ইহাদের প্রত্যেক চুর্গ পল; এই সমুদায় একত্র কোন স্বতপাত্রে রাখিয়া তাহাতে তিলতেল ৷ সের ও কাজি ৷ ২ সের প্রক্রিপ্ত কারয়া ১৬ দিন পান্তরাশির মধ্যে রাখিবে। মালা—ঃ ছুই তোলা (ব্যবহার ॥০ তোলা)। অনুপান—জল বা মন্ত।ইহাতে আমবাত, বাত, খাস, কাস ও শুলাদি নানা রোগ নই হয়। রসোনপিও সেবনে গাত্রনাই উপস্থিত হইলে নাগেশ্বর চুর্গ ধুতুরা-পাতার (কেহ বলেন ধুতুরাফুলের) রসে মাড়িয়া তাহার সহিত নবনীত মিশাইয়া গোত্রে প্রলেপ দিবে।

মহারদোনপিণ্ডঃ।

রসোনপলশতং কুধং তদক্ষং নিস্তবাৎ তিলাৎ। পাত্রং গ্রাস্থ্য তত্ত্বস্ত পিষ্ট্রা চৈতানি সংক্ষিপেৎ। ত্রিকটু ধাষ্ট্যকং চব্যং চিত্রকং গছপিঞ্চলী। অজমোদা ত্বেলা চ গ্রন্থিকঞ্ পলাংশিকম্।

শর্করায়াঃ পলাফট্টো পলাংশং মরিচস্ত চ। কুষ্ঠাজাজ্যোত চহারি মধুনঃ কুডবং ওপা॥ আর্দ্রকন্স চ তাবন্তি সর্পিগেংগুষ্ঠী পলানি চ। তিলতৈল্যা চড়ারি গুক্তকস্থাপি বিংশতি ॥ **সিদ্ধার্থকশু চত্তারি এ'জিকায়াস্তাথৈ**ব চ। কৰ্মপ্ৰাণং দাতবাং হিন্দুলবণপঞ্চম্॥ একীকৃত্য দুঢ়ে কুন্তে ধান্তার'শৌ নিধাপয়েৎ। দাদশাহাৎ সমুদ্ধ তা প্ৰতিঃ খাতাং যথাবলম । स्त्राः (मोवीतकः मौधु कः तकः 🙀 शितनन्नतः। কার্বে যথেপিতং ভোজাং দ্যিপিষ্টান্নবর্জ্জিতম । একমাসপ্রয়েগোণ। সর্বানু ব্যাধীন ব্যাপাহতি । অশীতিং বাডজান বোগাংকড'রিংশক পৈত্তিকান্॥ বিংশতিং শৈষ্মিকাংশ্চৈর প্রমেহানপি পিংশতিম। 'সর্লাংসি ষটপ্রকারাণি গুলাং প্রকবিধং তথা। অপ্তাদশবিধং কওমেকাদশবিধং ক্ষয়ম। ব্য়থাং বেংনিশ্লক সর্ক্রান্ড বিনাশয়েৎ 🛭 ক্ষ গ্রহমান্ত্রিভগ্নান্থে সন্ধানকলণঃ পরঃ। भुटिश्रेवेलकरता क्षेत्र व्यायुरमा वेलवेक्रमः । মহারসোনপিভোহ্যমাম্বাভ্র লাস্তকঃ॥ ্সব্বানেকীর হা চণ্ডাভপে শোষ্টিয়া বিশ্বভাগে সাহাপা ধানবাশো বানশ দিনানি হাপাং ৩০ উদ্ধত্য ভারেষ্য থাজং মাং ৮ ভক্তমন্ত্রপান্ন।)

রসোন ১০০ পল, ভুষরহিত তিল ৫০ পল, গব্য তক্র ১৬ সের, ত্রিকট্ট, ধনে, চই, চিতা-মূল, গজপিগলী, বন্ধমানী, গুড়ত্বক্, এলাইচ, পিপুলমূল ইহাদের প্রত্যেকের এক পল চিনি ৮ পল, মরিচচুর্ণ ১ পল, কুড় । পল, कुछकीता ৪ পল, মধু া। সের, আদা ৪ পল, স্বত ৮ পল, তিলতৈল ৪ পল, শুক্ত (কাজি বিশেষ) २० भन, (च उमर्वभ ४ भन, तार्वमर्वभ ४ भन, হিন্তু ২ তোলা, পঞ্চলবণ প্রত্যেক ২ ভোলা, এই সমুদায় মুতকুন্তে স্থাপন করিয়া ধান্ত-রাশির মধ্যে ১২ ালন অবস্থাপিত করিবে। প্রাতঃকালে বথালোগ্য মাত্রায় প্রদান করিবে। অমুপান-সুরা, দৌবীরক, দীধু বা হয়। দ্ধিও পিইক ভিন্ন অগ্রান্ত দ্বা ভোজা। এক মাস এই ঔষধ সেবন করিলে নানা প্রকার বাতজ পিত্রজ ও কফজ ব্যাধি নিবারিত হয়। ইহা আনবাতের মহোষৰ এবং আয়ুষ্য, হল্প, চক্ষুজ্যোতিষর ও বলবর্দ্ধক।

আমবাতগজসিংহো মোদকঃ।

ওষ্ঠীচূৰ্ণস্থ প্ৰস্থৈক যমান্ত শ্চ পলাষ্টকম। জীরকন্ত পলহন্দু ধান্যকন্ত পলম্বয়ম ॥ भरितकः गर्जभुभागं नगन्त्र भनः उथा। **টঙ্গণস্থা** পলং ভৃষ্টং মরিচ**স্থা** পলং ভবেৎ॥ ত্রিব গতিফল কার-পিয়ালীনা পলং পলম। শটোলাভেজপত্রাণাং চবিকানাং পলগুথা । অত্রং লৌহং তথা বঙ্গং প্রত্যেকঞ্চ পলং পলম। এতেষাং সর্ব্রচর্ণানাং খণ্ডং দল্লাদ গুণানুয় ।। ম্বতন মধুনা মিশ্রং কর্ষম'ত্রস্ত মোদক্র্। একৈকং ভক্ষেৎ প্রাতম্ব তঞ্চানু পিবেৎ পয়ঃ। শরীরং বীক্ষা মাত্রাস্য যুক্তা বা ক্রটিবর্দ্ধনমু। আমবাতপ্রশমনঃ কটাগ্রহবিনাশনঃ॥ শূলঘে। রক্তপিত্তমুশ্চামপিত্রবিনাশনঃ। শ্ৰীমতা চন্দ্ৰনাথেৰ গুৰুণা ভাষিতং ময়ি॥ শ্ৰীমদাহননাথে ২২ং।কৃতবান মোদকং ওভস্। গৰ্জ হামগ্ৰহেক্সাহয়মজাৰ্বকামাগ ৩ঃ॥ যথা সিংহো বনে হতি দন্তিনং বলিনং শুভ্ৰম। তথামরাজকরিণং নিহস্তোব ন সংশ্যঃ। (শট্যাদীন'ং চতুর্ণাং প্র ক ১ হুগমনগ্রং)।

ভঠ ২ সের, যনানী ১ সের, জীরা ২ পল, ধনে ২ পল, গুল্ফা ১ পল, লবজ্ব ১ পল, লবজ্ব ১ পল, দাহাগার থৈ এক পল, মরিচ এক পল, তেউড়ী, ত্রিফলা, যবক্ষার, পিপুল, শটা, এলাইচ, তেজপত্র, চৈ, অত্র, লৌহ ও বঙ্গ ইহাদের প্রত্যেকের ১ পল, চূর্ণসমষ্টির তিন গুল চিনি। ঘত ও মধুসংযোগে মোদক প্রস্তুত করিবে। বলাদি বিবেচনা করিয়া ২ হুই তোলা পর্যান্ত মাত্রান্ন ব্যবস্থা করিবে। অমুপান—হ্মাদি। ইহা সেবন করিলে আমবাত, অমপিত, রক্তপিত্ত ও শূল প্রভৃতি নানা রোগ নই হয়।

আমবাতারিবটিকা।

নদগন্ধকলোঁং তি । - তুথটঙ্গণনৈ কৰান্।
সমভাগৈৰিচূৰ্ণাথ চূৰ্ণদিগুণগুণ, গুলুঃ ॥
গুৰ্গাগুলোঃ পাদিকং দেয়ং তিবৃত্তামূলবন্ধলম্।
তৎসমং চিত্ৰকং দেয়ং খুতেন বটিকাং কুক্ত ॥
খাদেশাবন্ধকদং নিকলাগুলবোগতঃ।
আনবাতারিবটিকা পাচিকা ভেদিকা মতা ।

লোহাত্র ইত্যত্র লোহার্ক ইতি বা পাঠ:।

আমবাতং নিহস্ত্যাপ্ত গুলাপুলোদরাণি চ।
বকুৎপ্লীহোদরাজ্ঞীলাঃ কামলাং প'পুরোগকম্ ॥
হলামকঞ্চামপি ং স্বয়পুং প্লাপদাকপুনে।
এ'স্থিলং শির শূলং বাসবোগণ গৃপ্তমাম ॥
গলগণ্ডং গণ্ডমালা: ক্রিমিব ইনিলানি না।
বিদ্বিং গর্জনাহাত স্তবৃদ্ধি নালগন্ধ।
আমবাতারি:টিকা পুরেশানেন চোলতা ॥
পারদ গর্জক, লোহ, অত্র (পা:
নাম), তুতে, সোহাগা, সৈন্ধব প্রমান ভাগ! সকলের দিগুণ গুণ্গুলু,

পারদ গন্ধক, শৌহ, অত্র (পাঠান্তরে তাম্র), তুতে, সোহাগা, দৈন্ধব প্রত্যেক সমান ভাগ! দকলের দিগুণ গুণ্গুলু, গুণ-গুলুর চতুর্থাংশ (। দিকি ভাগ), তেউড়ীচূর্ণ, তেউড়ী চূর্ণের সমান চিতামূল চূর্ণ। সমুদায় ম্বতে মর্দ্দন করিয়া ২ হুই নাষা প্রমাণ বাটকা করিবে। অমুপান—ত্রিফলার জল। এই ঔষধ পাচক ও ভেদক। ইহা সেবন করিলে মামবাত, গুলা, শূল, উদর, হরুং, গ্রীহা, অমুপিত্ত এবং শির,শ্ল প্রভৃতি নানা রোগ নই হয়।

অপরামবাতারি-"টিকা।

রদগন্ধে বরা শক্তিগু গুলু: জমবন্ধিতঃ। এতদেরগুরেনেন মন্দ্রয়নতিচিদ্ধণম্॥ কর্মে;হন্যারগুরৈনেন হস্তাঞ্চলপ্রায়নঃ। আমন্যতমতাবোগ্রং ভূমেং নৌদ্যাদি বর্জ্জয়েৎ॥

পারদ ১ ভাগ, গন্ধক ২ ছই ভাগ,
ক্রিফলা ৩ তিন ভাগ, চিডা ৪ ভাগ, গুণ্গুলু
৫ ভাগ, এই সকল দ্রবা এরগুইতলের সহিত
অতি পরিক্ষাররূপে মন্দন করিবে। পরে ছই
তোলা প্রনাণ এরগুইতলের সহিত সেবন
করিয়া উষ্ণ জল পান করিবে; ভাহা হইলে
অত্যা আমবাতও বিনষ্ট হইবে। এই ঔষধ
সেবনকালে ছগ্ধ ও মুগ প্রস্থিত হক্কন করিবে।

আমবাতেখনো রসঃ।

শুদ্ধগৰাং পলাৰ্দ্ধক মৃতত্যপ্ৰক ওৎসমন্।
তাস্ত্ৰাদ্ধিং পাৰিদং শুদ্ধং বসতুলাং মৃত্যবসন্।
সকাং পকাস্লোনৰ শুবিয়েচ পূনংপুনঃ।
সংচূণ্য পককোলোগৈ কাথৈ সকাং বিভাবৰেৎ।
রৌদ্রে বিংশতিবারাংশ শুড়ুচীনাং রসৈর্দ্ধণ।
ভূষ্টস্বশ্রুণে তুলোন সহ মেলয়েৎ।

উঙ্গণিন্ধিং বিড়ং দেৱং মরিচং বিদ্রভুলাকম্।
তিন্তিড়ীক্ষারতুলাক সততুলাক দন্তিকম্।
ক্রিকট্ ক্রিকলা সৈব লবক্ষপার্নভাগিকম্।
আমবাতেখরো নাম বিক্ষনা পরিকীন্তিত: ।
মহাগ্রিকারকো হেম অ'মবাতাক্তকো মতঃ।
স্থলানাং কর্যণঃ ক্রেক ক্রণানাং স্থৌলাকারকঃ।
অনুপানবিশেবেণ সর্করেগবিনাশনঃ।
অনেন সদৃশো নান্তি বহিনদীন্তিকরো মহান্।
ভ্রন্নাশ্রিগ্রেলি্নাশন-শোপপাঞ্জন্বাপহঃ॥

শোধিত গদ্ধক ও তামু প্রত্যেকের চারি তোলা, শুদ্ধ পারদ ২ লোলা, লৌহ ২ তোলা, **এই সকল দ্রব্যকে** এবগুয়ুক্র রুসে १ বাব ভাবনা দিবে। পরে চুর্ণ কবিয়া পঞ্চকোলের (পিপুল, পিপুলমূল, ্ৰৈ, চিত্ৰ', শুঠ) কাথ : ছাবা ২০ বার ভাবনা দিয়া গুলঞ্চ রসে ১০ বার ভাষনা দিবে। ইহাব সহিত সর্বস্মান সোহাগা চুর্ণ, তদর্দ্ধ বিটলবণ এবং মরিচ মিলিত করিয়া নিস্তিড়ীক্ষাব ও দন্তী পারদের তুলা (২ তোলা) এবা ত্রিকট্ট, ত্রিফলা ও লবন্ধ প্রত্যেক ১ তোলা মিশ্রিত বটী প্রস্তুত করিবে। বিফু কর্তৃক এই আম-বাদেশ্ব নানক মতেলিগ কীৰ্ত্তি ইইয়াছে। এই ঔষধ তক্ষপানবিশেষে প্রায়োজিত ইইলে অগ্নিমানা, অতিবিক্ত স্থাতা, আমবাত. কুশতা, গুলা. ত্যুৰ্ন'ল গ্ৰহণা, শোগ, পাঞ্ প্রভত্তি সমস্ত শোগ বিনষ্ট হয় এবং ইহা শরীর পুষ্ট ও অগ্নি বৃদ্ধি করে।

বাতগজেন্দ্র সংহঃ।

জ্ঞানং লৌহং রসং গন্ধং তামং নাগং সটকণম্।
বিষং সিল্পুং লবকথ তিকু জণতীকলং সমম্।
তদৰ্জং ক্রিমুগন্ধক ক্রৈফলং জীরকং তথা।
কল্পারদেন সংগিবা কাঁয়া ক্রিবজিকা।
সেবা। পয়ে হনুপানেন সনা প্রাক্তঃ মুখা খিতৈঃ।
অলীতিং বাতভান রোগাংশুছারিং গচ্চ গৈছিকান্।
বিংশতিং শ্রৈ শ্রকান্তরগান্ সেবনাদের নাগংশুছা।
বিংশতিং শ্রৈ শ্রকান্তরগান্ সেবনাদের নাগংশুছা।
বিংশতিং শ্রৈ শ্রকান্তরগান্ধকাণান্ধ যে।
ব্যাধিকীণা বয়ংকাণাঃ প্রাক্ষাণান্ধ শানাঃ।
তবাং ব্যাক্ষ বলাক বয়ংল্পান এব চ।
ধ্যানাং পশ্বকুজানাং ক্রীণানাং নাংসবর্জনঃ।

অরোগী স্থমাপোতি রোগী রোগান্ত্মিচাতে। রসন্তান্ত প্রদাদেন নান্তি রোগান্ত্যং কচিং। বাতগজেক্সসিংহোংরং রুসো রোগবিনাশকঃ।

অন্ত্র, লৌহ, রস, গন্ধক, তান্ত্র, সীসা,
সোহাগা, বিষ, সৈন্ধব লবঙ্গ, হিন্তু ও জায়ফল
প্রত্যেক ১ তোলা, গুড়স্বক্, তেজপত্তা, এলাইচ, ত্রিফলা ও জীরা প্রতেক ॥০ তোলা;
এই সমৃদ্য স্বত্রকুমানীব রসে মাডিয়া ৩ বিভি
প্রমাণ বটিকা করিবে। অনুপান—জল। ইহা
সেবন করিলে আমবাত এবং বাতিক পৈত্তিক
ও শ্লৈষ্মিক বিবিধ রোগের উপশ্য হয়।

ত্রিফলাদিলোহম।

িকলা মুক্তকং বোধাং বিভূক্তং পুধরং বচা।
চিক্রকং মধুককৈব পলাংশং:শ্রক্ত্বিভিন ।
অফ্রক্র্বপলাক্তরে) গুলান্তাবাদেব হি।
আলোডা মধুনোপেডং পলম্বাদশকেন চ ॥
প্রাত্বিলিঞা ভূঞ্জানো ক্রিবি ভিন্নিন্ন ক্রয়েলকঃ।
ভূঃদাধ্যমামবাংশ পাঙ্রোগং হলীমকম্।
জীবিলিক্যাং শবং খ্যথং বিশ্যক্র্যা

তিকলা, মূলা, । ত্রকট্, বিজ্ঞ্প, কুড়, বৃচ, চিতামূল ও যষ্টিমধু প্রত্যেক চুর্ণ ১ পল, লৌছ চুর্ণ ৮ পল, ওই সমুদায় জব্য ১২ বার পল মধুব সহিত মন্দান করিয়া প্রত্যহ প্রাতঃকালে দেবন করিলে হঃসাধ্য আমবাত ও অন্তব্দুল প্রভৃতি নানাবিধ রোগ নই হয়।

বৃদ্ধদারাতঃ লোহম্।

বৃদ্ধদারতিবৃদ্ধভী-গঞ্জিপঞ্জিমাণকৈঃ। ত্রিক্তেয়সমাযুক্তৈরাম্বাহান্তক্ষঃ। স্কানেব গদান্ ইতি কেংরী ক্রিণং যথা॥

বৃদ্ধদার, তেউড়ীমূল, দস্তী, গজপিপ্পলী, পুরাতন মানকচ্র মূল, ত্রিকট, ত্রিফলা এবং ত্রিজাত (দারুচিনি, এলাইচ ও তেজপাত) মতাস্তরে ত্রিমদ, প্রত্যেক সমভাগ, সকলের সমান লৌং। এই ঔষণ আমবাতাদি রোপ সকল বিনষ্ট করে।

विष्मानि-त्रम-लोश्य ।

ব্ৰজ্ঞপাধ্যাদিলোঁহানাং গ্ৰ'হাং পঞ্চপলং শুভম। চর্ণং মৃত্যাভ্রকস্থাপি নৌহ'দ্ধং পারদং তথা। ত্রিশ্বণা ত্রিফ:। গ্রন্থা লৌহান্রাৎ দোডশৈজলৈ:। পক্তাইভাগশেষৰ গ্ৰাহ্যং কাথজলং ততঃ॥ তেন লৌহাত্রচূর্ণক পুন, পাচাং সমং মৃতম। भटावया। तमटेकन क्रोतक विश्वनः तमार ॥ লৌহমব্যা পচেদ দব্যা। পাত্রে b'র্যান তামকে। পচেৎ পাকবিধিজন্ত বঞ্জিন' মৃত্যনা শলে:॥ সিছে চ প্রক্রিপেদেত[ন বিডক্সাদিযথোদিতান। বিভন্ন: নাগরং ধান্যগুড্ত, b'সরজীরকম্ ॥ পলাশবাজং মরিচং পিঞ্চলা হস্তিপিঞ্চলা। ত্তিবতা ত্রিফলা দত্তী এলা চৈরওকং তথা। চবিকা গ্রিকং 'চত্রং মৃক্তকং বুদ্ধদ'রকম ॥ সর্বেষাং চর্নাতেমাং কৌহালুকসমং ভবেৎ আমৰাতগ্ৰহেলক কেশ্বা বিধিনিমিতঃ আম্বাত্র গোপ্রাপ্রিমান্দ্রং হল মক্ষ্ ॥ (হস্তাতি শেষ)

लोह ৫ भन, जन २॥० भन, भात्रम २॥**०** পল। কাপার্থ—তিফলা প্রত্যেক ৭॥০ পল, জল ৩৬০ পল, খেব ৪৫ পল,। প্রথমে কোন লৌহ বা তাম পাত্রে উক্ত লৌহ ও অভ চুর্ণ রাথিয়া তাহাতে এ ত্রিফলান কাথ ৪৫ পল, মুত ৭॥ । পল, শতমূলীর রস ৭॥ । পল, হ্রা ১৫ পল নিক্ষেপ করিয়া মৃত অগ্নিতে পাক করিবে এবং লৌহদবর্না দানা নাড়িবে। আসমপাকে পশ্চাল্লিখিত দ্রবা সকল প্রক্ষেপ করিবে। যথা—বিভঙ্গ, ভাঁঠ, ধনে, গুলঞ্চ দার, জীরা, পলাশবীজ, মরিচ, পিপুল, গজপিপ্রলী, তেউড়ী, जिल्ला, मर्सीमृल, এলाইচ, এরগুমূল, रेচ, পিপুলমূল, চিতামূল, মৃতা ও বিশ্বজ্কবীজ ইহাদের মিলিত চুর্ণ ৭॥০ পল। পানান্তে নামাইয়া উপরি উক্ত পারদ ২॥০ পল এবং গন্ধক ২॥০ পল (অনুক্ত হইলেও) কজলী করিয়া উহার সহিত মিশাইয়া পিথ-ভাত্তে বাথিবে। ইহা সেবন করিলে আমবাত, শোপ, অগ্নিমান্দা ও হলীমক রোগ নষ্ট হয়।

পঞ্চানন-রস-লোহ্য ।

জ'রিছং পুটিতং লৌহচর্ণং পঞ্চপলং শুভম। গুগ্ গুলোক পলং পঞ্চ লোহার্দ্ধং মতমত্রকম । ওদ্ধাসভামভাসমং গানকং তৎসমং ভাবেং। ত্রি**গুণাময়সশ্চ**ূর্ণাৎ করা তাং ত্রিফলাং পচেৎ॥ **বিরষ্টভাগং পানীয়মইভাগাব্দেষিত্র**। তেন চাষ্টাবশেষেণ পচেল্লোহালগুগ গুলুম। সূতত্ল্যং শতাব্যা রসং দুখা তথা শুভ্য। প্রস্থা প্রস্থা ভূমস্থা শ্রৈম দ্বিনা প্রচেৎ ॥ লৌহম্যা। পচেদ দক্রা পারে চায়সি মুন্ময়ে। ততঃ পাকবিধিজন্ত পাকসিছে) বিনিক্ষিপেং 🗈 বিড়ঙ্গং নাগরং ধান্তং গুড় চীস বজীরকম। প্রকালং বিবৃদ্ধে ত্রিফলৈলা চ মন্ত্রকম ॥ স্তুৰি হল প্ৰত্যেকমেষামৰ্দ্ধপলং ক্ষিপেং। तमञ्च कञ्ज्लीः कृषा क्रेयक्रकं विश्वस्तार ॥ উত্তাব্য স্থাপয়েদ ভাতে বিদ্যে চাপি প্রক্রিডম। সতেন মধুনা পশ্চার্দ্দিয়িতালুপানতঃ দ গুড় চান গরেরওং কাথয়িত্বা কলং পিরেও। ভক্ষেত্রদাদেহস্ত 'খভেংহনি প্রবাচ্চক।। অ'মবাতমহাবাধি-বিনাশায়েইনেবত'ম। সন্ধিবাতং কটাশূলং কুক্ষিশূলং সুদারূপ্য : জজাপাদাকুলাশুলং গ্ৰদা হতি পজ্তাম। গুলাশেথং পাঞ্রে'গং সন্ধিবাতক গ্রংস্তম। আমবাতগজেলায় কেশরা বিধিনিম্মিত ॥

लोह « পन, छन् छन् « भन, अन शा• পল, পারদ ২॥০ পল, গন্ধক ২॥০ পল। কাথার্থ—ত্রিফলা প্রত্যেক ৫ পল, জল ৩০ সের, শেষ , ও সের ৬ পল। এই কাথে লৌহ অভ্র ও গুগ গুলু পাক করিনে। তাহাতে মুত ৩২ পল, শতমূলীর রস ৩২ পল, ছগ্ধ ৩২ পল দিয়া লৌহ বা মূন্ময় পাত্তে লৌহদর্কী দারা পাক করিবে। আসন্ন-পাকে—বিড়ঙ্গ, ভাঁঠ, ধনে, গুলঞ্চনার, জীরা, পঞ্কেল, তেউড়ী, দন্তীমূল, ত্রিফলা. এলাইচ, মূতা, ইহাদের প্রত্যেকের চুর্ব ৪ তোলা নিক্ষেপ করিবে। পারদ ও গন্ধক কজ্জলী করিয়া ঈষহুষ্ণ থাকিতে নিক্ষেপ কৰা কর্ম্বর। পরে ঔষণ নাশাইয়া স্লিগ্ধ স্বতভাওে রাখিবে। ইহা স্বত ও নধুর সহিত মাড়িয়া গুলক ভুঠ ও এর ওমূলের কাথের সহিত অগ্রে বিরেচনাদি দারা দেহ শোধন সেবা।

করিয়া পশ্চাৎ এই ঔষধ সেবন করিতে হয়। ইহাতে আমবাত ও সন্ধিবাত প্রভৃতি নান্য-বিণ রোগ নই হয়।

শুগীয়তম্।

নাগরকাথককাভ্যাং ছাতগ্রং বিপ!চয়েৎ।
চতুও গৈন তেনাথ কেবলেনে।
কাতলেগ্রপ্রশানম্থিনকীপনং প্রম্।
নাগরং হাত্যিভাকেং কটায়মুলনাশন্য ॥

থ্ত /৪ সের। কলার্থ—কুটিত শুর্টী ১ সের; শুর্গার কাথ কিংবা কেবল জল ১৬ সের। যথাবিধানে এই থ্রত পাক কবিয়া সেবন করিলে কটাশূল ও আমবাত প্রভৃতি বিনষ্ট হয়। ইহা অগ্নিধর্মক।

শৃঙ্গবেরাত্য মৃত্যু ৷

শূক্ষবের্যবক্ষার-পিপ্রলীমূলপিপ্রলীঃ। পিষ্টু 1 বিপাচয়েৎ স্পিরারন্তাং চতুগুর্থীয় । শূলং বিবক্ষমানাইমামবাতং কটাগ্রহম্। নাশয়েক গ্রহণাদোষ্যগ্রিদন্যপন্থ পরম্॥

মৃত ৪ সের। কআর্থ — ভাঠ, স্বক্ষার, পিপুলমূল, পিপুল মিলিত ১ সের। কাজি ১৬ সের। ফারিদি পাক করিয়া এই মৃত সেবন করিলে শূল, বিবন্ধ, আনাহ, আমবাত, কটাগ্রহ ও গ্রহণী-দোষ নিরাক্তত হয়। ইহা অগ্নিক্লীপক।

কাঞ্জিকষদ্পলয়তম্।

হিন্দু ত্রিকট্কং চবাং মাণিনন্ধং তথৈব চ।
কন্ধান কুলা চ পলিকান্ মৃতপ্রন্থং নিপাচয়েৎ ॥
আরনালাচকং দল্লা তৎসাপ্রক্ররাপহ্ম।
শূলং বিবন্ধনানাহমানবাতং কটীগ্রহম।
নাশয়েদ্ গ্রহনীদোষং মন্দাগ্রেদীপনং পরম্।
পুষ্টার্থং সহাসা সাধ্যং দল্লা বিশ্বালুসংগ্রহে।
দাপনার্থং মতিমত। মন্তুনা চ প্রকার্ত্তিহ্য।

শ্বত /৪ সের কক্ষদ্রব্য—হিন্ধু ভাঠ, পিপুল, মরিচ, চৈ ও সৈন্ধর প্রত্যেক এক পল পানিক। কাঁজি ১৬ সের। ফ্লাবেবি ঘ্র পাক করিয়া পান করিলে জঠর, শূল ও আমবাত প্রভৃতি রোগ নই এবং অগ্নি প্রদীপ্ত হয়। এই ঘুরু কাঁজির পরিবর্ত্তে চতুগুলি গুল্প খারা পাক কারলে প্রষ্টিকারক, চতুগুলি দাবদ সহিত পাক করিলে মলম্ত্রের বিবন্ধতা—াশক এবং দ্বির মাতের সহিত পাকে অগ্নিলিপক হুইয়া থাকে।

প্রসারণীতেলম ।

প্রসারণ্যা রম্মিকাং তৈলমেরও »ং পি.বৎ.। সকলে যত কাৰণ কফাবোগহরং পরমু॥

এর ওতৈল ৪ সের, ১৬ সের গ্রন্ধভাত-লিয়ার বদের সহিত পাক করিয়া যথা মাত্রায় পান করিলে উপকার হয়। শৈল্পিক রোগে ইং৷ সত্যন্ত হিতকর।

দ্বিপঞ্চনুল্যান্তং তৈলম্ !

দ্বিপঞ্জীনিগাহি-কন্দদায়কাঞ্জিকৈ:। ত্তিবং কট্যুরপাখার্তি-কন্দ্রবিধায়মান্ গহ'ন্॥ হতি বস্তিপ্রদানেন করোতাগ্রিবলং মহৎ ।

দশমূলের কাথ ও কল এবং দবি ও অন্ন কাল্পিকের সহিত পক তৈলের বস্তি প্রায়োগ করিলে কটী, উক্ন ও পার্ম্পূল এবং বাত-শৈল্পিক বেদনা নিবারিত হয়। ইহা অত্যস্ত অগ্রিবলকারক।

বৃহৎ সৈন্ধবাদ্যং তৈলম্।

সেকবং ভোষণা রাঝা শতপুশা বমানিকা।
সাজিকা মণিচং কুঠং শুঠা সৌবচ্চলং বিডুম্।
বচাকমোদা মধুকং জীৱকং পৌপরং কণা।
এ লাক্তমপলাংশানি ক্লুপিষ্ঠানি কারয়েং॥
প্রথমেরগুটেলক্স প্রয়ম্ শতপুশারম্।
কাঞ্জিকং দিগুণং দ্বা তথা মন্ত শনৈং পচেং॥
সিহমেতং প্রয়াজনামানবাত্রয়ং প্রম্।
পানাভাঞ্জনবংস্টা চ কুক্তেংগ্রিবলং ভূশম্॥

বাতাৰ্ভ্ৰক্তনে শন্তং কটাজানুষসন্ধিজে।
শূলে সংপাৰ্থপৃঠেষু কৃচ্ছেহখারিনপীড়িতে।
বাহামার্দ্দিতানাহে অস্ত্রাধ্দনিপীড়িতে।
ক্যাংশচানিকভান বোগান নাশ্য গ্রাণ্ড দেহিনাম।

এরগুটেল /৪ সের, শুল্ফার কাথ /৪
সের, কাজি /৮ সের, দধির মাত /৮ সের।
ককাথ— সৈরুব, গজপিপ্লনী, রামা, শুল্ফা,
যমানী, সর্জিকার, মরিচ, কুড়, শুঠ, সচল
হ'বণ, বিট্লবণ, বচ, বন্যমানী, যষ্টিমধু, জীরা,
কুড়ে ও পিপুল ইহাদের প্রত্যেকের চুর্ণ ৪
তোলা। এই তৈল পান, অভ্যঙ্গ ও বস্তিতে
প্রয়োগ করিলে আমবাত প্রভৃতি নানারোগ
নষ্ট হ ইয়া অগ্নিবল বৃদ্ধি হয়।

विजीय-रेनक्षवामाः रेजनम्।

সৈশ্ববং দেবকাঠক বচা শুঠী চ কট্ফলম্।
শতাহনা মৃন্তকং চবাং মেদে মলহরং তিবৃৎ ॥
হিজ্জলন্ত স্বচং বালং চিত্রকং ব্রহ্ময়ন্তিকা ।
শতী বিভূত্তমধুকং রেণুকাতিবিয়া কুরু ॥
অন্তব্ধা নীলিনা দন্তীমূলং মরিচমেব চ ।
অন্তব্দান পিশ্বনী চ কুঠং রাঝা > প্রস্থিকম ॥
এবাং কর্থমিতিঃ ককৈ; শনৈমূ দ্বিনা পচেৎ ।
প্রস্থক কটুভেলন্ত শুক্তিভন্ত যথাবিধি ॥
এতং তৈলবরং শেনুমন্তাস্থাৎ সর্ববাভন্তৎ ।
বিশেষেণাম্বাভেমু কটাজানুকসন্ধিরু ॥
হুৎপার্থমর্ধগাত্তেমু শূলকৈব বিনাশরেও ।
বাতশ্লেমনি বাসায়ামান্তবৃদ্ধী ভগলবে ॥
শত্তং নাড়ীরণান্ সর্বান্ নাশয়ত্যপ দেহিনামু।
অন্তাংশ্চ বিবিধান্ রোগান্ বৃক্ষমিন্তাশনিবণা ॥
দৈক্ষবান্ত্যিদং তৈলং সর্বান্যনিস্দনম্ ॥

যথাবিধি মৃচ্ছিত কটু তৈল /৪ সের।
কলার্থ— দৈন্ধব, দেবদাক, বচ, উঠ, কট্ফল,
শুল্ফা, মূতা, চই, মেদা, নহামেদা, জয়পালমূল (অথবা ত্ক্), তেউড়ীমূল, হিজলছাল,
বালা, চিত্তামূল, বামনহাটী, শটা, বিড়ঙ্গ,
ষষ্টিমধু, রেণুক, আতইচ, এরগুমূল, আক্নাদি, নীলবৃক্ষ, দস্তীমূল, মরিচ, বনষমানী,
পিপুল, কুড়, রামা, পিপুলমূল প্রত্যেক ২
তোলা। পাকার্থজল ১৬ সের। এই তৈল

মর্দনে সকল প্রকার বাতরোগ নষ্ট হয়। বিশেষ ষতঃ আমবাতে ও হৃংপার্যসূলে এবং সর্বাঙ্গ-সূলে ইহা বিশেষ ফলপ্রদা।

বিজয়ভৈরবতৈলং মহাবিজয়-ভৈরবতৈলঞ্চ।

রসগন্ধশিলাতালং সর্বাং কুর্যাৎ সমাংশকম্।
চুর্ণীয়ত্বা ততঃ স্ক্রমারনালেন গেবংরং ॥
তৈলকজেন সংলিপা স্ক্রবন্ধ ততঃ পরম্।
তৈলাক্তাং কারয়েছন্তিমুক্তাগে চ দীপয়েৎ ॥
বর্ত্তাগোলিতে পালে তৈলং পত্তি শোভনম্।
লেপয়েতেন গালোণি ভক্ষণায় চ দাপয়েৎ ॥
নাশয়েৎ স্ততৈলং তদ্ বাতরোগানশেষতঃ।
বাহকল্পং নিরংকল্পং জহ্মাকল্পং তেঃ পরম্॥
ঐকাক্ষক তথা বাতং হ'ন্ত লেপান্ধ সংশয়ঃ।
ফ্রিকেন্যুত্তৈভ্রাহাজিয়াতেরবন্ধ॥

পারদ, গন্ধক, মনছাল 8 হরিতাল প্রত্যেক ২ ভোলা কাঁজিতে পেষণ ক বিয়া তদারা কলা বস্তুখণ্ড লিপ্তা করিবে। উহা শুক্ষ করিয়া বাতির আয়ে পাকাইবে এবং সেই বাভির অগ্রভাগে তৈল মাথাইবে। পরে বাতি প্রজ্ঞাত কার্য়া ভাষতে তৈল ঢালিয়া দিবে. ঐ তৈল প্ৰজ্ঞালত ২ইয়া নিমস্থাপিত পাতে বিন্দু বিন্দু পতিত হইবে, (উল্লেখিত বহিতে ১৬ তোলা মাত্রা তৈল প্রস্তুত হটবে)। ইহার নাম বিজয়ভৈরব তৈল। এই তৈল গাত্রে মর্দ্দন করিলে প্রবল বেদনা, একাঙ্গবাত ও বাহুকম্প প্রভৃতি বিবিধ বাতরোগ প্রশমিত হয়। ইহা ৩।৪ বিন্দু মাত্রায় ছগ্নের সহিত সেবন করিতেও দেওয়া যায়। এই তৈলের সহিত অহিফেন মিশাইশে মহাবিজয়ভৈরব তৈল প্রস্তুত হয়।

यद्मश्राजनीरेडनः रेडनः वा रमस्वाक्तिस्। प्रमुक्षाश्रारेडरान विख्तानः अनकरङ॥

স্বন্ধপ্রারণী তৈল, সৈদ্ধবাদি তৈল বা দশমূলাত তৈলের বন্তি প্রদান স্মামবাতে প্রশস্ত।

প্রদারণীসন্ধান্য।

প্রদারণা চুককাথে প্রস্থে গুড়রদোনরো:। পকঃ পঞ্চোষণরজঃ-পাদঃ স্থাদামবাত্তা॥

গন্ধভাছলে /৮ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। এই ১৬ সের কাথে গুড় /১ সের ও রক্ষন /১ সের মিশ্রিভ করিয়া এক সপ্তাহ কাল একটি আবৃত পাত্রে রাণিবে, পরে ইহাতে পিপুল, পিপুলম্ল, চৈ, চিতা ও ৬ ঠ ইহাদের চুর্ব /॥• অর্দ্ধ সের প্রক্ষেপ দিবে। ইহারই নাম প্রসারণী-সন্ধান। ইহা আম-বাতনাশক।

অথ পথ্যাপথ্য-বিধিঃ।

আমবাতে পথ্যানি।

ক্ষকঃ বেদো লজনং বেংপানং
বান্তলেপা বেচনং পায়ুবর্তি:।
অন্দোৎপন্নাঃ শালরো যে কুলখা
জীর্ণং মজঃ জাঙ্গলানাং রসাল্চ ॥
বাতরেজ্মদ্বানি সর্ব্বানি তক্তং
বর্গাস্থান্তরত তলং রসোন্য।
পাটোলপত বুককারবেলং
বাধাকুটকবৃদ্ধদারং ভ্রতিকং গোজলমানুকঞ্চ।
মন্দার-গোকণ্টকবৃদ্ধদারং ভ্রতিকং গোজলমানুকঞ্চ।

কট্নি ভিক্তানি চ দীপনানি স্বার্মবাভাষ্যিনে হিভানি । । ব্যাসে অহি

কৃষ্ণ স্বেন, উপবাস, স্নেহপান, বস্তি ক্রিয়া, প্রলেপ, বিরেচন, গুহে বর্তি প্রয়োগ, এক বংসরের পুরাতন শালি তত্ত্বল এবং কুলথকলার, পুরাতন মছ, জাঙ্গল মৃগপক্ষিপ্রভৃতির মাংসরস, বার্নাশক ও শ্লেম্মাশক সমস্ত ক্রিয়া, তক্র, প্রনবা, ভেরেণ্ডার তৈল, রশুন, পটোল, শালিঞ্চ শাক, করলা, বেগুন, শজিনা, গরম্বল, পালিব! মাদার, গোক্ষ্র, বৃদ্ধদারক, ত্রাতক, গোমূত্র, আদা, কটুদ্রব্য, তিক্তদ্রব্য, আরপ্রদীপক দ্রব্য, এই সকল আমবাত রোগে হিতজনক।

মামবাতেইপথ্যান।

দ্বিমৎক্স ওড়ক্ষ(রোপোনিকাম ক্রিপ্রকম্। এইনারং পুরুবাতং বিরুদ্ধাগুণনানি চ। অসাক্ষা: বেগরোধক জাগরং বিষমাশনম্। বংগরেগমবাতারো গুরুভিষ্যদ্রকারি চ।।

দধি, নংস্থা, গুড়, হ্থা, পৃইশাক, মাষ-কলায়, পিষ্টক, দ্যিতজল, পূৰ্ববায়, বিক্দ-ভোজন, অসায়া ভোজন, মলমূআদির বেগদারণ, রাত্রি জাগরণ, বিষমাশন এবং গুকুও অভিযানি দ্বা এই সকল আমবাত বোগে অহিতকর।

ই ত্যায়ুরের্দ-সংগ্রহে আমবাতাবিকারঃ।

ভাষ শূলকোগাধিকারঃ ৷

অথ শূল-নিদানম।

দেবিং পৃথক-সমস্তাম-ছলৈঃ শুলোক্ট্রা ভবেও। সর্বের্ডিরে শুনের প্রায়েণ প্রনঃ প্রভুঃ॥

শূল আট প্রকার, যথা—বাতাদি পৃথক্ পৃথক্ দোবে তিন প্রকার, ছন্দদোয়ে তিন প্রকার, মিলিত ত্রিদোবে এক প্রকার ও আম-দোষে এক প্রকার। কিন্তু এই আট প্রকার শূলেই বায়ুর বিশেষ প্রাধান্ত থাকে।

অথ শূল-চিকিৎসা।

বমনং লজ্মনং স্বেদঃ পাচনং ফলবর্ত্তয়ন। ক্ষারচুর্বানি গুড়িকাঃ শুস্তান্ত শুলশাস্তয়ে ॥

শূলরোগে বমন (উৎক্লিষ্টকফে), লজ্জন (আমপাচনার্থ), স্বেদ, (পৈত্তিক শূল ব্যতি-রেকে), পাচন, ফশবন্তি, ক্লারবন্তি বা ক্লার প্রয়োগ্যেবং বক্ষামাণ চূর্ণ ও গুড়িকা প্রশস্ত।

অথ বাতজশূল-লক্ষণম্।

ব্যায়ামধানাদ তিমৈশুনাচ্চ প্রজাগরাচ্ছীতজলাতিপানাং। কলায়মূল্যাঢ়কিকোরদুষাদত্যর্থককাধাননাভিযাতাং ॥

ক্ষান্তিক্তাতিবিনচ্জানবিক্লান্ত্রকশুক্ষণাকাং।
বিট্পুক্রমূলানিলবেগরোধাচ্ছোকোপনাসাদ্ভিহান্তভাষাং॥
বারু: প্রবৃদ্ধা জনরেদ্ধি শূলং
সংপার্গপ্তিক্রিকবন্তিদেশ।
জীর্নে প্রদোষে চ খনাগমে চ
শীতে চ কোপং সমুপৈতি গাচন্॥
মূহর্দ্ধ্যভালাপশমপ্রকোপো
বিজ্বাতসংক্তর্ভনতোদভেদৈঃ।
সংক্ষেনভাঞ্জনমর্জনাত্যৈঃ
বিশ্বোক্ষভোজিন্দ্র শুমং প্রয়াতি॥
বিশ্বোক্তভানিভাল্য শুমং প্রয়াতি॥

ব্যারাম, অশ্বাদিযানে ভ্রমণ, অভিনৈর্থন, রাত্রিজাগরণ, শীতশঙ্কলের অভিপান এবং

কলায় (নটা), নগা, অভ্তর ও কোলোশাল্য **७क्षन, क्षक्र**क्षता । प्रदेश, शृष्ट होते । कर्ड विन्दह পুনভোজন, অভিযাত, কলায় ও তিক্ত স আহার, অন্ধরিত গাল্পের অন্নও মিলিত ক্ষ্মি-মাংসাদি বিরুদ্ধভোজন, গুদ্ধ মাংস ও শুদ্ শাক আহাব, মল মূত্র বায় ও শুক্তের বেগ-বাংণ, শোক, উপবাস, অভিহান্ত ও অভি-ভাষণ, এই সকল কাবণে বায়ু কুপিত হইয়া পদয় পাশ্বয় পূত্র তিক ও ব স্তদেশে শূল উৎ-পাদন করে। এই বাৰ্জনিত শূল ভুক্ত আহার জীণ হইলে, সায়ংকালে, মেঘাগ্ৰে এবং বর্ষা ও শীত ঋতুতে প্রাণাট প্রকুপিত এই শ্ল মুল্যুল: উপশ্যত ও মুল্যুল বাদ্ধপ্রাপ্রইয়া থাকে। ইহাতে মলাও অধো-বায়ুর স্তম্ভন এবং সূচাবেনবং বেদনা উপস্থিত ২য়! েখা ক্রেয়া মদন বা বেদনান্তলে হস্তাদিমদন এবং স্নিগ্ন ও উফদেব্য ভোজন এই সকল দ্বারা বাত-শূনের,উপশম হইয়া থাকে।

অথ বাভজশূল-চিকিৎসা।

বিজ্ঞায় বাতশুলস্ত ক্লেংফেদৈক্লপাচরেৎ। বাতশুলাকুলস্ত স্তাৎ ম্বেদ এব স্থাবহঃ॥

বাতশূলের লক্ষণ দৃষ্ট হইলে স্বেহরেদ প্রয়োগ করিবে। বাতশূলে স্বেদই বিশেষ আরামজনক।

য়তিকাঙ্গেদঃ।

মৃত্তিকাং সজলাং পাকাদ ঘনীভূতাং পটে কিপেৎ। কৃষা ভংপোট্টনীং শুনী যথা বেদং নিধাপরেৎ a

মৃত্তিকা জলে গুলিয়া অগ্নিতে পাক করিবে জল নিঃশেষ-প্রায় হইয়া ঘনীভূত হই^{লে} উঠা বস্ত্রণতে পোট্টলী বদ্ধ করিয়া শূলস্থানে উষ্ণবেদ প্রদান কবিৰে।

ভিলেক শুড়িকাং ক্রণ আমরেক্সরোপনি। শূলং ক্রপ্তরং তেন শাস্তিং গচ্চতি সংবন্।

* अक्टिकंड क्रिकंड बाम्डिका। इंड वृक्त क्रिके

কতকণ্ডলি ভিল বাটিয়া, তাহার গুড়িকা করিবে। নেই শুড়িকা উষ্ণ করিয়া উদরেব উপরে বুলাইলে অতি হস্তর শূব আশু প্রশমিত হয়।

বিষয়লভিলৈরওং পিন্তু। চায়তুষ্ভেদা। গুড়িকাং আময়েতুফাং বাতনূল্বিনাশিনীন !

বিল্বমূল তিল ও এরগুমূল একত্র কাজিতে বাটিয়া ভদ্মিশ্বিত এবং ঈষহ্ফীকৃত গুড়িকা বেদনাস্থলে বুলাইলে বাতশূল বিনষ্ট হয়।

নাভিলেপাজরেজ্ছ_নলং মদনং কাঞ্চিকাখিত্য । মদন (ময়না) ফল কাঁজিতে বাটিয। নাভিদেশে প্রলেপ দিলেশুল নিবারিত হয়।

দারুংখনৰ তীবু জ-শতাহ্বাহিসু দেশবেঃ। অন্নপিষ্টেঃ স্থাধেশক বিম্পেচছ্ লযুচে দেৱমু ।

দেবনার, খেতবচ, কুড়, শুল্ফা, থিং ও সৈন্ধব কাজিতে বাটিয়া ঈষত্যু করত উদরে প্রালেপ দিলে শুল নিবারিত হয়।

মুলং বৈখা তথৈর ওং চৈত্রকং নিখ্য ছয়জন্। হিন্দু দৈক্ষবদংযুক্তাং দত্তঃ শুলনিবারণম্

বিষমূল, এরওমূল, চিতামূল, শুঠ, হিং ও সৈন্ধব পেষণ করিয়া উদরে প্রলেপ দিলেও ত্রায় শুলের শান্তি হয়।

বলাপুনন বৈরও-বৃহত্রেরগ্রেক্রেন।
সহিন্ধু লবণং পীতং সভো বাতরক পেইন্দ্ বেড়েলা, পুনর্নবা, এরওমূল, রহতী, কন্টকারী ও গোক্ষুর, ইহাদের কাথে হিংও সচল লবণ প্রক্ষেপ দিয়া পান ক্রিলে, বাতশূল সভঃ প্রশ্মত হয়।

বিখনেরওজং মূলং কাপয়িবা জলং পিবেং।
হিলুসৌবচ্চলোপেতং সন্তঃ শূলনিবারণম্।
ত ঠ ও এরওমূল ইহাদের কাথ হিং ও
সচল লবণের সহিত পান করিলে ত্রায় শূল
বেদনা নিবারিত হয়।

「たやなれる」をサージをはなって利用 1のでは、大阪のカラ・ルッセル 1、有所による所でのよう。

ষ্ঠি এবাগুনুল ও রে ১০। দা কাথ ভিন্নু ও প্রতিষ্ঠা চুন্ধর স্কৃতি । এথবা ভিন্নু ও সচল অবলেশ সভিত । পান কলিলে সভ্যন্ত লোক তেওঁ স্থান ও জন্ম ও লোক করিলে ভিন্নু এক স্থান । করিলে শ্লোকো এই ১০ পাকে।

শুনালি এক এই হ হলা গভিক্ত লিখানে নিবেছ। হিন্তুপতিবিধাবোধিন এনে বক্তন ভাগো॥

শ্ববোগ অভুকাবস্থা, হিং, আতইচ, ভাঁস, পিপুল, মরিচ, বচ, সচলব্দ ও হ্বীত্কী ইহাদেব সমভাগ চূর্ণ উপং জ্বের সাহত পান ক্রিবেন।

कुषुक्ताः स्टर्भार हिस्सू-इत्सीकार काम व्यय । श्रातक्ष यतांश्रमा तरिकामूनास्त्रमा १९४को ॥

গনে, গনাতকা, বিং, প্ররণ্ণ (অভাবে কুড়), বিচলবং, দেশ্ব লবণ ৪ ঐদ্ভিদ লবণ, ইহাদের সমভাগ চূণ, যবের কাপের সহিত্ পান করিলে বাভিগ্ল, গুল ও অপভন্তক রোগ উপশ্যিত হয়।

যম নাহিজুনিক্তা-ফারসৌ ক্লোভয়াঃ। জুলুমাণ্ডন পাতিবালিবাংখুলান্দদনালে

যদানী, হিশ্বু, সৈদ্ধবস্থান, বেজানি, সচলবেগ ও হ্নীভকী ইহাদেন চূর্ণ স্থানতের
সহিত্য পান কবিলে বাতশ্য নিবারিত হয়।
শাম বিচা বিশ্বসানি প্রান্ত্রকাশ্রেকমন্থ্যী।
কল্প সমা নিভাগুলি প্রাণ্ডর নিভাগুলিনাগ্রক্ষা।

। आभा -द्रभाग तकः । व्यवस्थी-भागकौ।)

বন্ধদারক, বিটনবণ, শজিনা বীজ, হরীতকী, বৈচ্ন্ন, কমলা প্রতি ও শল্লকী, ইহাদের কল্প মন্ত্রের সহিত পান করিলে বাতশূলীবনষ্ট হয়। তিন্দু মক্কালবণ যথান-ক্ষাপ্রতিয়াসৈলবতুলাভাগন্। তুলং পিবেদ্বার্শনিম ওমিবং শুলে গ্রুদ্ধেইনিলজে শিবায়।

াংং, অমুধ্রতস, পিপ্লী, সচললবণ, ব্যানী, ব্যক্ষার, হরীত্কী ও সৈত্ত্বর, ই**হাদের** সমভাগ চূর্ণ বারুণি (ভাড়ী) মণ্ডের সহিত পান করিলে অতি প্রবৃদ্ধ বাতশ্লও বিনষ্ট হইরা থাকে।

সৌবর্চনামিকালাজী-মরিটার্বিগুণে ত্রির:।
মাতৃলুঙ্গরনৈং পিন্ধা গুড়িকা বাতশূলমুৎ।
সচললবণ > ভাগ, তেঁতুল ২ ভাগ, ক্রম্বঃ
জীরা ৪ ভাগ ও মরিচ ৮ ভাগ; এই সমুদায়
জব্য টাবালেবুর রসে মর্দ্দন করিয়া। ত আনা
মাত্রায় গুড়িকা করিবে। উষণ্ডল সহ এই
গুড়িকা সেবনে বাতশল নিবারিত হয়।

হিন্দু মবেতসব্যোষ-যমানীলবণত্ৰিকৈ:। বীজপুনরসোপেতৈগু ড়িকা বাতশূলমুৎ ।

হিং, অমবেতন, তঠ, পিপুল, মরিচ, যমানী, দৈশ্বন, সচল ও বিদ্লবণ এই সম্পায় দ্বা টাবালেবুর রনে পেষণ করিয়া ০০ বা।০ আনা মাত্রায় গুড়িকা করিবে। ইহা বাতশূলনাশক।

বীজপুরকম্লঞ গৃতেন দহ পায়য়ে।
জয়েদ্ বাতভবং শূলং কর্ষদেকং প্রমাণতঃ।
টাবালেবুর মূল ২ তোলা মতের সহিত
সেবন করিলে বাতশূল প্রশাসত হয়।
(মাত্রা—॥০ তোলা হইতে আরম্ভ করিয়া
ক্রমশঃ বর্দনীয়)।

অথ পিত্তজশূল-লক্ষণম্।

কারাতিতীকোকবিদাহিতৈলনিশাবপিণ্যাকক্লখনুবৈঃ।
কট্ মদৌবীরস্বর*বিকারৈঃ
কোধানলায়াসরবিপ্রতাপৈঃ।
গ্রাম্যাতিযোগাদশনৈবিদকৈঃ
পিতঃ প্রকুপ্যাপ্ত করোতি শূলন্।
ভূমোহদাহার্দ্রিকরং হি নাভ্যাং
সংস্বেদমূর্জ্জালমচোব্যক্তন্।
মধ্যন্দিনে কুপ্যাতি চার্দ্ররাত্রে
বিদাহকালে জলদাতারে চ
নীতে চ শীতেঃ সম্পৈতি লাভিং
স্বাভুশীতৈরপি ভোজনৈন্ট।

কারপদার্থ, অতিতীক্ষ, অতি উষ্ণ ও অতি বিদাহজনক দ্রব্য ভোজন, ভৈলপান, শিষী, তিলকন্ধ, কুল্থকলায়ের যুষ, কটু ও অমরস, সৌবীর (সন্ধানবিশেষ) ও স্থরা-বিকার (স্বানিশ্বিত খাল্পন্তর), ক্রোধ, অমিতাপ, পরিশ্রম, রৌদ্রসেবন, অতিমৈথুন ও বিদগ্ধ আহার, এই সকল কারণে পিত্ত প্রকৃপিত হইয়া আশু নাভিদেশে শূল উৎপাদন করে। ইহাতে তৃষ্ণা, নোহ, দাহ, ঘর্মা, মুচ্ছা, ভ্রম ও চোষ (নিকটে অগ্নি থাকিলে শ্রীরে যেরপ চ্ষণবৎ পীড়া উপস্থিত হয়়, তম্বৎ পীড়া) এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়়। মধ্যাহ্ণ সময়ে অর্দ্ধরাত্রে, ভুক্তায়ের পরিপাকাবস্থায় ও শরৎ শত্তে পৈত্তিক শূলের প্রকোপ হয়়। শত্তে ও শাতক্রিয়ায় এবং স্ক্রাত্র ও শাতক্রিয়ায় এবং স্ক্রাত্র ও শাতল আহার ঘার। ইহার উপশ্য হইয়া থাকে।

অথ বিভজশূল চিকিৎসা।

গুড়শালিববাং কারং সপিংপানং নিরেচনন্। জাকলানি চ মাংসানি ভেষজং পিতৃশ্লিনাম্। পুরতিন গুড়ে, শালিধান্ত, যব, চগ্ধ ও স্বত এবং বিরেচন ক্রিয়া ও জাকলপশুর মাংস পিতৃশ্ল রোগির হিতকারক।

পৈতে জু শুলে বমনং পয়োহসু-রুদৈন্তথেকোঃ সপটোলনিথ: । শীতাবগাহাঃ পুলিনাঃ সবাতাঃ কা স্ত!দিপানাণি জলপ্ল, ভানি।

পিত্রশূলে পটোল ও নিম্নের কন্ধসুক্ত হ্র্য্য. জল কিংবা ইক্ষুব্র পান করাইয়া বমন করা-ইবে। শীতল জলে অবগাহন ননীতটে বায়-সেবন ও জলগুত কাংস্থাদি পাত্র ধারণ করিলে পিত্রশূল বিনষ্ট হয়।

> বিরেচনং পিত্ত হরঞ্গতং রসাক্ত শক্তাঃ শশলাবকানাম্। সন্তর্পণং লাজমধূপপরং যোগাঃ স্থাতা মধুসংপ্রযুক্তাঃ॥

পৈত্তিক শূলে পিতের মধুরগণরুক্ত বিবেচন-ক্রিয়া, শশ ও লাবপক্ষির মাংসরস, মধুসংযুক্ত থই চুর্ণের সম্বর্পণ ও মধুসংযুক্ত অন্যান্ত স্থাতিল যোগ হিতকর।

> চল্যাং অরে পিততবেংশ শ্লে ঘোরে বিদাহে অভিতর্মিতে চ। যবস্ত পেয়াং মধুনা বিনিশ্রাং পিবেৎ স্থাতাং মনুজঃ সুখার্থী ॥

বমি, জ্বর, পিত্তশূল, প্রবল দাহ ও অতি
ভূষণা এই সকল স্থলে মধুসংসূক্ত স্থাতন
যব-পেয়া উপকারী।

প্রলিফাং পিডশুল্ঘং ধাতীচূর্ণং সমাক্ষিক্য।
মর্ব সহিত আনলকাচূর্ণ অবলেহন
করিলে পিডশুল বিন ইহয়।

শতাবরীরসং ক্ষোর-গুতং প্রাতঃ পিনেররঃ। দাংশুলোবশান্তার্থং সর্কাপিতাময়াপংস্থ।

প্রাতঃকালে মধুব সাহত শতমূলীর রস পান করিলে পিত্তশূল, দাহ ও সংপ্রকার পিত্ত রোগ প্রশামত হয়।

ধাত্যা রসং বিদ্যোগা তারস্তাগোল্ডনার পিবেৎ স্থকরং সল্পঃ পিওশুলনিস্থন্ন।
পানল শীরস বা ভূমিকুল্লাণ্ডের রস ,
অথবা বলাভূমুণ ও জাক্ষার কাথ এই যোগ্তার
টোন সংগ্তা কা যা পান কবিলো পিতশুল
নিবারি হ হয়।

শতাবরীসযথৈ হ-বাট্য:লকুণগোকুরে:। শৃতশীতং পিরেৎ তোরং সঙ্ড্কৌদুশর্করম্। পিতাহগ্রহং সজো দাইম্রাপহম্।

শতমূলী, বাষ্টমধু, বেড়েলা, কুণমূল ও গোক্ষর ইহাদের কাপ শৃতনীত অর্থাং পাকান্তে ব্যজনাদি ধারা শীতল করিয়া গুড় মধু ও চিনি সহ পান করিলে রক্তপিত্ত, দাহ, পিত্ত-শ্ল ও দাহযুক্ত জব প্রশমিত হয়।

বৃহত্যৌ গোক্ষ্রৈরও-কুশক(শেক্ষ্ব)লিকাঃ। পীতাঃ পিতভবং শূলং সন্তো হত্যঃ হৃদাক্ষণম্॥

বৃহতী, কণ্টকারী, গোক্ষুর, এরওমূল, কুশ, কাশ ও ইকুবালিকা (খাগ্ড়াভেদ) ইহাদের ২ তোলা পারমাণে গ্রহণ করিয়া কাথ প্রস্তুত করত পান করিলে স্থলারুণ পিত্তশূল নিবারিত হয়। তৈলমেরগুজং বাপি মধুককাথসংযুত্র।
শূলং পিত্তোন্তবং হস্তি গুলাং পৈত্তিকমেন চ ॥

যষ্টিমধুর কাথে এরগুতৈল মিশ্রিত করিরা পান করিলে পিভোত্তব শূল ও পৈত্তিক গুলা প্রশমিত হয়।

ত্রিফলানিম্বস্ত্রাহ্ব-কটুকারগ্ বথৈ: শৃতম্। পারমেন্মধুনংমিশ্রং দাংশুলোপশাস্তরে॥

ত্রিফলা, নিমছাল, যষ্টিমধু, কট্কী ও সোন্দালফল, ইহাদের কাথে মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে দাই ও শ্ল প্রশাস্ত হয়।

ত্রিফলারগ্রধকাঞ্ সক্ষৌত্রং শকরাবিতম্। পাষ্ট্রেক্রজপিভন্নং দাহশূল্মিবারণম্।

ত্রিফলা ও সোন্দালের কাথে মধুও চিনি প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে দাহ, শূল ও রক্ত-পিত্ত প্রশমিত হয়।

অথ কফজশূল-লক্ষণম্।

ঝ'নূপবারিজকিলাউপয়োবিকারৈন মাংদেশুপিষ্ট কুশরাতিলশক্ষলীভিঃ। অক্টেখলাসজনকৈরপি হেতুভিন্দ শ্রেমা প্রকোপমুপগম্য করোতি শূলমু॥ গ্রনাধকাসসদনাক্রচিসংপ্রসেকৈন রামাশয়ে ভিমিতকোষ্ঠনিরোগুরুজৈঃ। ভূক্তে সদৈব হি কুজং কুক্সগ্রেমে চ॥

(জলবছল-দেশজাত) ও জলজ অানপ মাংস, তক্রকৃচ্চিকা, হ্যাবিকার (দধি প্রভৃতি), মাংস, ইক্ষুরস, পিষ্টক, ক্লুরা (থিচুড়ী বিশেষ), তিলপিট্রক এবং অন্তান্ত যাবতীয় কফকর হেতু, এই সকল কারণে শ্লেমা প্রকুপিত হইয়া আমাশয়ে শূল উৎপাদন करत । বমনবেগ, কাস, দেহের অবসরতা, জরুচি, কোষ্ঠপ্রদেশের হইতে জলসাব, স্তব্ধতা ও মস্তকে ভারবোধ, এই সকল লক্ষণ আহার করিবামাত্র এবং লকিত হয়। প্রাতঃকালে, শীত ও বসম্ভ ঋতুতে শ্লৈমিক শূল অতিমাত্র যন্ত্রণাদায়ক হয়।

অথ:কফজশূল-চিকৎসা।

শেলাধিকে চছলিনজজানানি
শিবেশিবেক মানাপুপান্ম।
মধুনি পোল্যবানাবিত্তান্
কালত ককান কটুকাশক স্কান্॥
ব্যাহ্য কৰা কলা কাল্যবানাবিত্তালী

ক্রোদিক শব্দোগে ব্যন, ল্ড্ম্বন, শ্রেন বিবেচন, মধুজাত গেল ও সাধু, মধু, গোধ্ম, বন, জারির (স্থানবিশ্যে) এবং স্বংশ্রকার রুক্ষ ও কট্ট্রির হিতকর।

পিপ্রাণিত : - শাচনটোডকনাগরের। যুর্গুলীপ্রীমা জাজ হল্লা :- যুস্তীনার

পিপুল, পিপ্লম্ল, চে, চিতা ও উঠি, এই স্কল জ্বোৰ সহিত সিক-য্ৰাগ্ অধিব দীপক ভশুল্নাশক।

লবণভায়সংখ্যন্তং পৃক্ষেবিং সরামসম। সংখাক্ষেনাস্থা পীতং কফগুলবিনাশনম্॥

পঞ্চোল অগাং পিপুল, পিপুল্মুল, টে, চিতা ও শুঠ, ইহাদের চূর্নে, লবণ্ড্র (সৈক্ষব সচল ও বিট্লুবণ) ও হিঞ্জু মিশ্রিত কবিয়া সমগ্রহ জালের সংহত্ত মেবন কবিলে কণ-জ্মিত শূল প্রশ্মিত হয়। (চ্পের মাজা ১ ভোলা ও উফ্জল ০'০ অক্সি(সায়া।)

মুন্তং বচাং তিজকরোহিণাপ তথ্যতম্বাং নির্দিহনাঞ্চ তুলান। পিবেং ডু গোমূলগুডাং কফোপ-শুলে তথ্যমুজ চ পাচনার্থন।

ক্ষপ্রশূলে আমপাচনার্থ মূতা, বচ, কট্কী, হরীতকী ও মূবরা, এই সকল জবা সমভাগে পেবল করিয়া গোমূত্রের সহিত পান করিবে।

বচাকাগ্রাভয়্যতিক্তা-চূর্বং গে মুক্রসংযুত্র। সক্ষারং বা পিবেৎ কথেং বিশাদেঃ কফশ্লবান ॥ (বিশ্বাদেদ শুমুক্তে।)

বচ, মৃতা, চিতা, ইরীতকীও কট্কী, ইহাদের চুর্গ গোম্তের সহিত অথবা বিবাদি দশমুলের কাপ, ব্যক্ষারের সহিত পান করিলে ক্ষশুল নিবাতিত হয়।

অথামজশূল-লক্ষণম্।

আটোপহুৱাসবমীগুরুত্ব-তৈনিত্যকানাহককপ্রসেকৈ:।
ক্ষপ্ত নিজেন সমানলিক্সমামোন্তবং শুলমূদাহর্তি।

আনজ শ্লে, আটোপ (উদবের গুড়্গুড়-শক্ষ), বমনবেগ, বিমি, দেহেব গুক্তা, তে,মতা, মলমুত্রের অপ্রসৃত্তি, কফপ্রাব এবং কফ্ড শ্লোক্ত লক্ষণসমূহ উপস্থিত হইয়া গাকে।

অথামজশূল-াচকিৎসা।

 ५८ मृत्व किश्रा कथ्या क्ष्म्वविना(मनी । प्रवासासद्वर मक्दर यहिंशविवक्षेत्रम् ॥

আমশূলে কফশূল-বিনাশিনী চিকিৎসা করিবে এবং যে সকল ঔবধে আমদোষ বিনষ্ট ও অগ্নি বন্ধিত হয়, সেই সমুদায় ঔষধ সেবন করিতে দিবে।

চতুঃসমচূর্ণ গ্।

দীপাকং দৈক্ষকং পথ্যা নাগারক চতুঃসময়। চুৰ্বং শূলং জয়তাকি মন্দ্রতাগ্রেক দাপন্য।

ন্যানী, দৈয়ব, হরীতকী ও শুঠ এই চার দ্বোর সমভাগ চূর্ব একত্র মিশ্রিত ক্রিয়া জলের সহিত বেবন করিলে আমশূল নিবারিত ও অধি প্রদীপ্ত হয়।

व्यथ द्वन्द्वज्न्ल-लक्ष्यम्।

বন্তে কংপার্থপৃঠেরু স শূলঃ কফবাতিকঃ। কুন্দে) গুল্লাভিমধ্যেরু স শূলঃ কফপৈতিকঃ। দাহজ্যকরো বোরো বিজেয়ো বাতপৈতিকঃ।

ঘন্দরশ্ল-লক্ষণ। বাতলৈ ছিকশ্ল—বন্ধি, স্ন্য, পার্য ও প্রে; পিত্ত কে মূল—কুকি, স্নয় ও নাভিদেশে এবং বাতপোত্তক শূল— পূর্ব্বোক্ত বাতিক ও পৈত্তিক শূলের নিার্দ্ধি স্থানে উৎপন্ন হইয়া থাকে। এই শূলে অতি-শ্য জ্বর ও দাহ উপস্থিত হয়।

অথ বাতপিত্তজশূল-চিকিৎসা।

সমাক্ষিকং বৃহত্যাদিং পিবেৎ পিত্তানিলাস্ককে। ব্যামিশ্রং বা বিধিং কুর্যাচ্ছৢলে পিতানিলাস্ককে ■

বাতপৈত্তিক শৃলে রহত্যাদিগণের কাথ মধুসংস্কু করিয়া পান করিবে অথবা যে সকল ঔষধ বাতজ ও পিত্তজশ্ল নাশক, সেই সকল ঔষধ মিশ্রিত করিয়া সেবন করিবে।

অথ পিত্তশ্লেষজশূল-চিকিৎসা।

পিত্তকে কফজে বাপি যা ক্রিয়া কথিতা পৃথক । একীকৃত্য প্রযুক্ষীত তাং ক্রিয়াং কফপিত্তে । পটোল্কিফলারিষ্ট-কাশং মধ্যুত্ত পিবেৎ । পিত্রেশ্বস্থাক্রকভাদি-৮'তশ্লোপশাধ্যে ॥

পিত্তন্ন ও কফজশূলে পৃথক্ পৃথক্ যে চিকিৎনা কথিত হঠগাছে, পিত্তংগ্ৰহ্ম শূলে হাহা মিলিত করিয়া প্রযোগ কবিবে।

পটোল ত্রিফলা ও নিমছাল, ইহাদের কাথ মধু সহ পান করিলে পিত্তপ্লেম্ব-জর, ব্যি, দাহ ও শুল উপশামত হয়।

অথ বাতশ্লেগজশূল-চিকিৎসা।

রদোনং মন্ত্যসংমিশ্রং পিবেৎ প্রাক্তঃ প্রক'ক্ষিকটা।
বাতঃশ্লেভবং শূলং নিহন্তং বহিদীপনম্।
নিস্তম রহ্মন ৬ মাষা ও মন্তা ৮ তোলা,
একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রাক্তঃকালে সেবন করিলে বাতঃশ্লেম-জনিত শূল নিবারিত ও
অগ্নি প্রদীপ্ত হয়।

অথ ত্রিদোষজশূল-লক্ষণম্।

দর্কের্ দোবের্ চ দর্কলিঙ্গং বিজ্ঞান্তিষক্ দর্বভবং হি শুলম্। ফুকস্টনেনং বিষবক্রকলং বিবর্জনীয়ং প্রবদস্তি তল্পঞাঃ। ত্রিদোবজ শূল। পূর্ব্বোক্ত কারণসমূহে
বাতাদি দোষত্রর প্রকুপিত হইরা ত্রিদোষলক্ষণাক্রাস্ত (সান্নিপাতিক) শূল উৎপাদন
করে। এই শূল অতি কইদায়ক এবং বিষ ও
বজ্রসদৃশ ভরাবহ। চিকিৎসকেরা ইহাকে
অসাধ্য বলিয়া বর্ণনা করিয়া থাকেন।

অথ ত্রিদোষজশূল-চিকিৎসা।

বিদারীদাড়িবলমঃ সন্যোগলবণাবিতঃ। ক্ষৌদ্রগুক্তো জয়ত্যাগু শূলং দোষত্রযোদ্ভবমুঃ॥

ভূমিবুলাণ্ডের রস ২ তোলা ও পক দাড়ি-মের রস ২ তোলা, ইহাদের সহিত তঠ, পিপুল, মহিচ ও সৈন্ধালবণ চূর্ণ এবং মধু মিশ্রিত করিয়া সেবন করিলে ত্রিদোধজনিত শূল বিনষ্ট হয়।

গোমুত ওদ্ধমভূবং তিফলাচূর্ণসংযূত্য । বিলিহন্ মধুসপিত্যাং শূলং হস্তি তিলোবজ্য ।

মণ্ডুর পোড়াইয়া ক্রমণঃ সাতবার সোম্ত্রে নির্বাপিত করিয়া শোগিত করিবে। সেই শোগিত মণ্ডুবচ্ণ ১ ভাগ এবং ত্রিফলাচ্ণ (মালত) ১ ভাগ, ম্বত ও মধুর সহিত লেহন করিলে ত্রিদোষজ শূল নিবারিত হয়। (মাত্রা—এও বা ৭ মাষা)।

শঙাহুৰ্ণং সনবৰণং সংস্কৃ ব্যোগসংবৃত্য।
উক্ষোসকন তৎ পাঁডং শুলং হস্তি বিদোৰজম্ ॥
শোধিত শঙাচুৰ্ণ সাধা; সৈদ্ধব লবণ,
শুঠ, পিপুল ও মরিচ ইহাদের চূর্ণ মিলিত ২
মাধা এবং হিং ২ বা ৩ রতি, এই সকল দ্রব্য একত্র মিলিত করিয়া উষ্ণজ্ঞলের সহিত সেখন
করিলে শ্লেমোখন ত্রিদোষজ শুল প্রশমিত হয়।
(কাহারও মতে সকল দ্রব্য সমভাগ)।

অথ পরিণামশূল-লক্ষণম্।

বৈনিদানে: প্রকুপিতো বায়ু: সন্নিহিতকা। কফপিতে সমারতা শুলকারী ভবেছলী। ভুক্তে জীয়তি বচ্ছু,লং তদেৰ পরিণামজম। ভক্ত লক্ষণমপোতৎ সমাসেনাভিধীয়তে। আখ্যানাটোপবিপুত্ত-বিবন্ধারতিবেপনৈঃ।
বিন্ধোক্ষোপন্মপ্রায়ং বাভিকং তবদেন্তিয়ক্।
তৃষ্ণাদাহারতিবেদং কট্মালবংশান্তরম্।
শূলং শীত্তন্মপ্রায়ং পৈতিকং লক্ষয়েব,ধঃ।
ছিদিরলাসসম্মোহং বর্মান্ত্রপ্রিন্ততি।
কট্তিভোপশান্তঞ্জ তেজ জেয়ং কল মকম্।
সংস্কুলক্ষণং বৃদ্ধা বিদোধং পরিকল্পরেং।
ভিদোধজ্মসাধান্ত কীণ্মাংসবলান্ত্রম্য।

পরিণামশূল। নিজ একোপণ হেতৃতে প্রকৃপিত বলবান্ বায় কফপিত্রের সমিংহত হইয়া, তাহাদিগকে দূষিত কঠুত পনিণাম-শূল উৎপাদন করে। ভুক্ত দ্বোর পরিপাক সময়ে পরিণাম-শূলের প্রকোপ হইয়া থাকে। বাতিকাদি ভেদে ইহার ভিন্ন ভিন্ন লক্ষণ সকল লিখিত হইতেছে।

বাতিক পরিণাম শৃকে উদবাগান, উদরে ৬**৬ড়গুড় ধ্বনি, মলমু**ত্রের বিবদ্ধতা, অস্তু-চিডাতা ও কম্প এই লক্ষণ গুলি প্রকাশিত হয়। সিধোঞ্চ সেবন দারা ইহা শাস্ত হয়।

কটু অন্ন ও লবণ রস সেবনে পৈতিক পরিণাম-শ্ল উৎপন্ন হয়। ইহাতে তৃঞা, দাহ, অনুস্থাচিত্ততা ও বাম এই সকল লক্ষণ দৃষ্ট হয়। এই শ্ল শাতক্রিয়ার উপশ্যিত হইয়া থাকে। কফজনিত পরিণাম-শুলে, বনি, বননবেগ ও মুচ্ছা হইয়া থাকে। ইহাতে বেদনা অন্ন, কিন্তু দার্যকাল স্থায়ী। কট্ তিক্ত সেবন স্থানা

এই শূল উপশ্যিত হয়।

পরিপাম-শৃলে ছই দোষের লক্ষণ প্রকাশ পাইলে তাহাকে থিদোষজ এবং তিন দোষের লক্ষণ সংঘটিত হইলে তাহাকে ত্রিদোষজ বিলয়া জানিবে। ত্রিদোষজ পরিণাম-শূলগ্রন্ত রোগির মাংস বল ও অগ্নি ক্ষমপ্রাপ্ত হইলে, শূল অসাধ্য হইয়া থাকে।

অধ পরিণামশূল-চিকিৎসা।

বন্ধনং তিজমধুরৈর্বিন্ধেকশ্চাপি শস্ততে। বন্ধয়শ্চ হিভাঃ শূলে পরিণানসমূত্তবে॥ পরিণাম-শূল রোগে আমাশয়স্থ দোবে তিক্র ও মধুবরদ দ্রবা ধারা বমন, লজ্বন, পচ্যমানাশয়স্থ দোষে বিরেচন ও নিরাহ বস্তি এবং পকাশয়স্থ দোষে অমুবাদন-বস্তি প্রয়োগ করিবে।

্রন্থকজং ভত্ম পীতং জলোনাফেন তৎক্ষণাৎ। পক্তিজং বিনিহস্তোতচ্ছালং বিশ্ববিরাহনান্॥

একটি বা তুইটি নির্মাংস শস্ক (শামুকের শোলা) ভন্ম করিয়া, সেই ভন্ম উষ্ণজ্ঞল গুলিয়া পান করিলে, কফপ্রধান পরিণাম-শূল নিবারিত হয়। (এই ঔষধ পান করিবাব সম্য মুখাভাস্কর ঘুভাভাক্ত করা আবিগ্রুক।)

শসূকাদি-গুড়িকা।

শসুকং ক্রাষণকৈর পঠিকর লবপানি চ। সমাংশং শুড়িক'ং কুছা কলসুকরসেন ব। ॥ প্রতিতোজনকালে বা ভক্ষােও ভূ যথাবলম্। শুলাদ্বিমূচ্যতে জন্তঃ সংসা প্রিণামজাৎ ॥

শুক্তস্ম, ওঠ, পিপুল, মারচ ও পঞ্চলবণ (সেন্ধব, বিচ্, সচল, সামুদ্ ও উচ্চিলবণ) সমভাগে লইলা কলমার রসে মুদ্দি করত ॥ তোলা পারমাণে বটিকা কারবে! এই বটিকা প্রাত্তমালে বা ভোজন-স্মান্ধ বলামুসারে সেবন করিলে প্রিণাম্-শূল অংও প্রশ্যিত ২য়।

তিলনাগরপথানাং ভাগং শুক্ভগ্ননাম্। বিভাগওড়সংযুক্তং গুড়ীং কৃথাক্ভাগিকাম্॥ শীতামুপানং প্কারে ভক্ষেৎ ক্রিভোজনঃ। সায়াকে রসকং পাজা নবো মুচ্চেত হুভ্যাৎ॥ পরিশানসমুখাচ্চ পুলাচিরভ্বাদ্পি॥

তিল, তুঠ, হরীতকী ও শমুকভন্ম প্রত্যেঞ্জন দ্বাল, গুড় আট ভাগ; একত্ত করিয়া ব তোলা পরিমাণে গুড়িকা করিবে। এই ঔষ্ট পূর্ব্বাহে শীতল জলের সহিত সেবন করিও হথের শহিত অন ভোজন এবং সামাহে মাংসরস্পান করিবে। ইহা ছারা দীর্ঘ কালোংক্র পন্ন হুজ্ন পরিণান-শূল্ভ নিবারিত হয়।

নারিকেলকারঃ।

নারিকেলং সভোয়ক লবণেন প্রপৃথিতম্।
মূদাববেষ্টিতং শুকং পকগোময়বহ্নিনা।
পিপ্লল্যা ভক্ষিতং হৃত্তি শূলং হি পরিণামজম্।
বাতিকং পৈত্তিককাপি শ্লৈমিকং নালিপাতিকম্॥

জ্বলসংগৃক্ত স্থপক নারিকেলের মধ্যে সৈদ্ধব লবণ পূরণ করিয়া মৃত্তিকা স্থারা উত্তমরূপে প্রাণেপ দিবে। এবং উহা শুক্ষ করিয়া ঘুঁটের অগ্নিতে দগ্ধ করিবে। পরে উহার মধ্যস্ত সৈদ্ধব সংগৃক্ত নারিকেল, পিপ্ললীর সহিত যথামাত্রায় দেবন করিবে। তাহাতে সর্ব্বপ্রকার পরিণাম-শূল নিবারিত হইবে।

লৌহচুৰ্ং বরাযুক্তং বিলীচং মধুস্পিয়। পরিণামশূলং শময়েৎ ভক্সলং বা তালে ভিত্ৰ ; (অত তক্সলং লৌহমলং মভুরং পল ১, মিলিড-ত্রিফলাচ্ব পলং ১, ততো মিলিডচুর্ণাৎ ৮ মায়াঃ মধু-যুতাভায়াং লেক্ষাঃ। (

লোহচুর্ণ ও ত্রিফলাচুর্ণ সমভাগে মিশ্রিত করিয়া ঘত ও মধুর সহিত লেহন করিলে পরিণাম শূল প্রশমিত হয়। কিংবা মণ্ড্র চুর্ণ ৮ তোলা ও ত্রিফলাচুর্ণ মিলিত ৮ তোলা একত্র মিশ্রিত করিয়া ১ তোলা পরিমাণে ঘত ও মধু সহ লেহন করিলে পরিণাম-শূল নষ্ট হয়।

कृष्कान्द्रशास्त्रीव्हर्नः श्वर्डन मह एक्सरारः । প্रक्तिमृतः निरुखाउड्डरज्ञानः।श्विमनः वृत्त्रः । स्वामवाउनिकानाः स्वोनारेक्षवाणकवृति ॥

পিপ্লনী, হরীতকী ও লোইচুণ সমপরিমাণে লইয়া গুড়ের সহিত ভক্ষণ করিবে। ইহা ধারা পরিণাম-পূল, উদধরোগ, অগ্নিমান্দা, আমবাত ও স্থোল্য বিনষ্ট হয়।

পথ্যালৌহরজঃ শুন্তী-চূর্ণং ম!ক্ষিকদপিষা। পরিণামকজং ২তি নাতপিত্তকফাল্লিকান্ 🖟

হরীতকী, শুঠিও লোহচূণ প্রত্যেক সম-ভাগে লইয়া স্বত ও মধুর সহিত সেবন করিলে বাতিক পৈতিক ও শ্লৈঘিক পরিণাম-শ্ল নিবারিত হয়। নাগরতিলগুড়কঝং পয়দা সংদাধ্য यः পুমানজাৎ। উগ্রং পরিণতিশূলং ভক্তাপৈতি সপ্তরাতেন। (শুস্তীচুর্ণগুড়য়ো: প্রত্যেকং কর্বং, তিল গ্লাম গ্রাক্ত কুর্মাং বাং প্রায়াং কুরা ভক্ষায়েও।)

শু ঠচুর্ণ ২ তোলা, পুরাতন শুড় ২ তোলা ও তিলচুর্ণ ৮ তোলা, /২ সের গব্য হুয়ের সহিত পায়স কবিয়া সেবন করিলে স্থাহের মধ্যে পরিণাম শ্ল প্রশমিত হুর।

দপ্রংগুন্দরেশাতাৎ সতীন্বর্শক্ত,কান্। অচিরাকুচাতে শুলান্নরাহন্নপরিবর্জনাৎ ।

সন্নতে স্থান পরিত্যাগ করিয়া সর্বাংসুক্ত দধির সহিত মটর ও যবের ছাতু ভক্ষণ করিলে শিল্প শূল হইতে মুক্তিলাভ করিতে পারা যায়।

কথলাপু গোকেন্স প্রাণারামং প্রকৃতি। । কট্তৈলাজিশজুমাং ধুপঃ শূলহরঃ পরঃ ।

শূলবোগী কম্বল দারা গাত্র আবৃত্ত করিয়া শাদরোধ পুরুষক কটুটিতল মিশ্রিত যবশক্তবুর ধুম গ্রহণ করিলে শূলরোগ ২ইতে বিমুক্ত হয়।

এরওসপ্তকম্।

এরগুবি বৃহতীষ্মমাতুলুক -প'ষাণভূৎত্রিকট্মলকুতঃ ক্ষায়ঃ। সক্ষারহিকুলবণো ক্রুট্ডলমিশ্রঃ শোণ্যংসমেচ, সদয়স্তনককু পেয়ঃ।

এব ওমূল, বিষমূল, বুহতী, কণ্টকারী, টাবালেব্ব মূল, পাষাণভেদী ও গোকুরমূল ইহাদের কাথে ববকাব, হিন্ধু, সৈন্ধবল্ধণ ও এর ও তৈল মিশ্রিত করিয়া পান করিলে কটী, অংস, মেচু, ক্লয় ও তান প্রভৃতি স্থানের শূল বিনষ্ট হয়।

তিকায়•চ্বনংযুক্তং থ্রিকলাচ্বিযুত্মম্।
প্রযোজাং মধ্যপি চাং সক্ষেত্রনিবারণম্॥
নারিত-পৃটিত বজলোইচ্বং কর ২ মাধা ৮,
বিহললাচ্বং প্রমান , মিলিতচ্বাচ্চ গ্রাহাং রতি ৪, যুতমধনী দ্বা লোহমূলাহেন সংমদ্ধি ভক্ষনীয়ম্।)

তীক্ষলীইচূর্ণ ২ তোলা ৮ মাধা ও ব্রিফলা চূর্ণ প্রত্যেক আট মাধা এক ব্র মিশ্রিত করিয়া দ্বত এবং মধুব সহিত ৪ রতি পরিমাণে সেবন করিলে সক্ষেকার শূল নিবারিত হয়। মূজান্ত:পাচিতাং শুদ্ধাং লৌহচূর্ণসমন্বিতাম্। সশুড়ামভ্যামন্তাৎ সর্বংশূলপ্রশান্তরে।

গোমুত্রসিদ্ধ ও শুদ্ধ হরীতকীচুর্ণ ১ ভাগ, লোহচুর্ণ ১ ভাগ ও গুড় ২ ভাগ একত্র মিশ্রিত করিবা সেবন ক;রলে সর্ব্ধপ্রকার শূল নিবারিত হইরা থাকে।

অথারদ্রবশূল-লক্ষণম্।

জীর্ণে জীব্যত্যজীর্ণে বা যচ্ছ্,লমুপজায়তে। পথ্যাপথাপ্রয়োগেণ ভোজনাভোজনেন চ। ন শমং বাতি নিয়মাৎ সোহর্য্যব উদাহতঃ।

ভুক্তদ্রব্য পরিপাক হইলে বা পরিপাকের সময় অথবা অপকাবস্থাতেই যে শূল উপস্থিত হয় এবং নাহা পথ্য অপথ্য, ভোজন অভ্যে-জন বা যে কোন নিয়ম প্রতিপালন করা নায় কিছুতেই উপশ্ম প্রাপ্ত হয় না, ভাহাকে অক্তদ্রব-শূল কহে।

অথান্দ্রবশূল-চিকিৎসা।

জনমবাধ্যে শূলে তুন তাবৎ স্বাস্থ্যমন্ত । যাবৎ কটুকপিন্তায়মন্ত্রং ন চ্ছন্দিরেদ্ জবম্ ॥ বাস্তমাত্রে জরৎ পিতঃ শূলমান্ত বিনাশরেও। পিতান্তঃ বমনং কুতা কফান্তঞ্চ বিরেচনম্ ।

অন্ধর্মন নামক শূল উৎপন্ন হইলে, যতক্ষণ পর্যান্ত কটু পিত্ত ও অমুরসমৃক হইয়া ভূক্তমুব্য বমি হইয়া না যার, ততক্ষণ রোগী স্বাস্থ্যলাভ করিতে পারে না। ব.ম হইবামাত্র পিত্ত জীর্ণতা প্রাপ্ত হইয়া শূল বিনন্ত করে। অতএব এই রোগে পিত্তোদগ্যন পর্যান্ত ব্যন এবং কফ-নিঃসূর্ণ পর্যান্ত বিরেচন দেওয়া কর্ত্ব্য।

আরম্বনে চ তৎ কার্নাং জরৎপিতে দরীরিতম্।
আমপকাশয়ে শুদ্ধে গচ্ছেদরম্ববং শমম্।
মাবেওরী সত্ত্বিকা যিরা সর্পির্যুতা হিতা ।
জরৎপিতে (অমপিতে) যে সকল চিকিৎসা
কথিত হইরাছে, অয়দ্রব-শুলেও সেই সকল
চিকিৎসা কওঁবা J আমাশয় ও পকাশয়

শুদ্ধ প'কিলেই অন্তর-শূলের শান্তি হয়। ঘতসংযুক্ত সিদ্ধ সতুষ মাদ্যগুরী অন্তরে শূল স্থপথ্য। (থালা সহিত মাষকলায় ধারা ক্তত পিইকাকার ভক্ষ্য দ্রব্যকে মাষেগুরী কহিয়া শাকে।)

ধাতীফলভবং চ্ৰ্নয়শচ্ৰ্সময়িতম্। বহাচ্বেন বা যুক্তং লিজাৎ কৌজেণ ভলাদে। জামাকভঙুলৈ: সিদ্ধং সিদ্ধং কোজবভঙুলৈ:। প্ৰিয়সুভঙুলৈ: সিদ্ধং পায়সং সহিতং ছিতম্।

(প্রাক্ত্র কর্বশেষ:)

আমলকী-চূর্ণের সহিত সমভাগ লোহচূর্ণ
কিংবা গষ্টিমধুচূর্ণ মধুর সহিত লেহন করিলে
জরংপিত্ত ও অন্ধর্মব-শূল নিবারিত হয়।
খ্রামাণান্তের তওুল, কোদ্রব তওুল বা প্রিয়ঙ্গ
ত ওলের (কঙ্গুধান্ত-বিশেষের) পায়স পাক
করিয়া সেবন করিলেও অন্ধর্মব-শূল বিনম্ট হয়।
অন্ধরা ছান্চিকিৎভো ছান্ত্রপ্রেমা মহাগর্ম: ।
তন্মাৎ তন্ত প্রশ্ননে পরং মঞ্জা সমাচরেৎ ॥
অন্ধর্মব-শূল ভ্রানক ছান্চাকৎন্ত ব্যাধি।
অত্রেব ইহার শান্তির জন্ত বিশেষরূপে ব্র
করিবে।

জীবন্তীমূলকংশ বা সতৈলঃ পাৰ্যশূলমূব।
জীবন্তীমূলের কল্প তিলতৈলের সহিত
মিলিত করিয়া প্রলেপ দিলে পার্শূল প্রশমিত
হয়।

মাতৃলুক্ষরসো বাগি শিগ্রাক থেকথা পর:। সক্ষারো মধুনা পীতঃ পাখহদভিশূলমুব ॥

টাবালেবুর মূলের কাথে বা শজিনাব মূলের কাথে যবক্ষার ও মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে পার্থ হৃদয় ও বস্তিশূল প্রশমিত হয়।

চিত্রকং গ্রন্থিকৈরও-শুস্তীধান্তং জলৈঃ শৃত্যু। শুলানাহবিবন্ধেদু সহিন্ধু বিভটেশ্বনম্॥

চিতা, পিপলমূল, এরওমূল, ভাঠও ধনে ইহাদের কাথে হিং, বিটু ও সৈন্ধবলবল প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে শূল, আনাহ ও মলবন্ধ^ত বিনষ্ট হয়।

हिन्नू स्मोवर्कनः शथा विख्टेमस्वकृषुतः। भोकत्रकः शिरवक्कृर्वः मममूलयवास्त्रमा ॥ পার্বহৃৎকটিপঠাংস-শলে তন্দ্রাপতানকে। শোথে শ্লেমপ্রসেকে চ কর্ণরোগে চ শক্ততে ॥

দশমূল প্রত্যেক ১ মাষা ৭ রতি ও বব-তণ্ডল ২ তোলা, জল /২ সের, শেষ /10 পোয়া। এই কাথে হিং. সচল লবণ, হুরী-**उकी, विवृत्ववन, रेमक्कवनवन, यदन ७ शूक्कव्रम** (মভাবে কুড়) ইহাদের চুর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে পার্থ, জ্নয়, কটি, পৃষ্ঠ ও স্করশূল এবং তন্ত্রা, অপতানক, শোগ, শ্লেমপ্রাসেক ও কর্ণশল উপশ্মিত হয়।

श्रिक जिक्रों कर कुछर यतकारताश्य अन्तरम्। মাতৃলুঙ্গরসোপেতং প্লীহশুলাপহং রজঃ।

টাবালেবুর মূলের কাথে (কাহার মতে টাবালেবুর ফলের রসে) হিং, শুঠ, পিপুল, মরিচ, কুড়, যবক্ষার ও সৈন্ধব ইহাদের চুর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে গ্রীহশুল বিনষ্ট হয়।

দক্ষমনিগ্রধ্মং মুগশুকং গোলতেন সহ পাঁতম। হৃদয়নি হম্বজশূলং হরতি শিথী দাক্সনিবহনিব ॥ হরিশের শৃঙ্গ চুর্ণ করিয়া, তাহা অন্তর্জ,মে দগ্ধ করিবে। ঐ দগ্ধশৃঙ্গ চুর্ণ গব্যন্থতের সহিত সেবন করিলে হৃদয় ও নিতম্বল-শূল প্রশাস্ত হইয়া পাকে।

শন্থারস-গুড়ক।।

পলানি চিঞাকারত পঞ্চ পঞ্চ পলানি চ। লবণানাং ক্ষিপেৎ প্রস্তুষ্মং জন্মীরবারিণঃ। পলছাদশ শভাস্ত ভন্মীভূতং ক্ষিপেৎ পুনঃ। পুর্ববত্রয়েণ সংমর্জ্য হিঙ্গুব্যোষচতুষ্পালম্ ॥ রসামৃতস্থানাং পলার্কি পুথক পুথক। **पश्चाद ममस्यः मरम**्ग अश्वीदारिक्षपि नेकश्च ॥ বদরান্থিপ্রমাণেন গুড়িকাঃ কারয়েদ্ ভিষক। **ভক্ষরেৎ প্রাতরুপায় তে**!য়**মুঞ্চং** পিবেদতু॥ मृतक मर्कश्चयक अजीर्गः পরিণামজম । **অভ্ৰ**ণ্ডং পজিপুলং হৃচ্ছ লঞ্চ বিশে**ব**ত:॥ क्षिणुकः भाषागुकः भृथक् वाङ्क्षिमञ्जवम् । আমশুলমুদাবর্ত্তং নাশয়েরাত্র সংশয়: । (ভিস্তিড়ীত্বগুভন্ম ম • পঞ্চলবণ প্রত্যেকং ম ১, मध्यम् । २, कचीतराम् भः ५; मटेनः मटेनः शङ्गी

১, র**দ গন্ধক** অমুত প্রত্যেকং তোও সর্বমেকীকৃতা জমীররসেন মর্দিরিকা দিনতারং রৌদ্রে শোষ্টেং। ভতে। বনরাস্থিমিতা বটাঃ ক্যাঃ। অত একামুকজলেন ভক্ষেৎ)।

(তেঁতুলছাল ভয় ৫ পল, পঞ্চলবণ পূৰ্ণেক ১ পল, শঙ্খভত্ম ১২ পল, জামীর লেবুব বস /৮ সের; অল্লে অল্লে পাক করিলা পশ্চাৎ হিন্ধু, শুঠ, পিপুল, মরিচ ইখাদের প্রত্যেক ১ পল এবং পারদ, বিষ ও গদ্ধক প্রত্যেক ৪ তোলা। এই সমুনায় মিশ্রিত করিয়া জামী-রের রদে মাড়িয়া তিন দিন রোজে শুফ করত কলখাটির ভায় বটিকা প্রস্তুত করিবে। উষ্ণ-জলের সহিত যেবনীয়। ইহাতে পরিণাগ শূল প্রভৃতি সকল প্রকার শূল নষ্ট হয়।

লোহগুডিক:।

লৌহস্ত রজসো ভাগতিকলায়।প্রথম্বপা। গুড়সাজৌ তথা ভাগা ওড়াল বং চতুও বৃষ্।। এতৎ সক্তঞ্চ বিপচেদ গুড়গাকবিশ'নবিং। লিছেচচ এদ যথাপক্তি ক্ষয়ে শ্লেদ পাৰাজে।

লৌহচুণ : ভাগ, ত্রিফলা ও ভাগ, পুরা-তন শুড ৮ ভাগ এবং গোমুত্র ১২ ভাগ; এই সকল একত্র করিয়া গুড়পাক-বিধানে পাক করিবে। রোগির শক্তি বুণিধা প্রয়োগ করিলে ক্ষরোগ ও পবিণাম শূল নষ্ট হয়।

সামুদ্রাতং চুর্ব।

সামুদ্ধ সেন্ধবং কারে) রচকং রোমকং বিভয়। কথা লৌহরজঃ কিটাং নিবৃচ্ছুরণকং সমস্। দ্ধিগে মু রুপ্রদা মন্পাবকপাচি ংম্। ভদ্যপারিবলং চুর্ব পিরেত্র্যান বারিবা ঃ জীণহলীৰে 🤌 স্ঞীত মাংসাদি সূত্ৰাধিতন্। নাভিশলং প্রাহশলং যাকুণ্ডলাকুত্র বং ▮ বিদ্রধান্ত্রীলিকাং ইন্তি কফবাতো ছবং ভথা। শুলানামপি নর্কেষামৌষধং নাক্তি ৩ৎপরম্। প্রিণামসম্প্রসা বিশেবেণা গুরুর হয় # প্রত্যেকং (मामूजानीनाः **ন্মভাগচ্**ণমেকীকুতা পশ্চাৎ হিন্দু শুঠী পিল্ললী মরিচ এবাং চূর্ণং প্রত্যেকং। দ্বিহ্রন্ধগোমূত্রাণাং সমভাগেন যাবতা আলোডিতং

ভবতি, তাবদ্ দল্ধা মন্দানলেন পচেৎ আ চুৰ্ণীভাবাৎ। উতোহদগ্ধমুক্ষোদকেন যথাবোগাং প্ৰযোজ্যম্। অক্টেডু সমুদিতচুৰ্ণাদ্ দধ্যাদীনাং মিলিভানাং চাতুগুৰ্ণামাহঃ)।

করকচ, দৈয়ব, যবক্ষার, সাচিক্ষার, সচল, সাম্ভারি ও বিট্লবণ, দস্তীমূল, লোহচূর্ণ, মণ্ডুর, তেউড়ী ও ওল প্রত্যেক সমভাগ চূর্ণ। দধি, ছয় ও গোমূত্র সমান সমান ভাগে পাকযোগ্য মাত্রায় দিয়া মন্দ অগ্নিতে পাক করিবে। অগ্নিবল বিবেচনা করিয়া মাত্রা ব্যবস্থা করিবে। উষ্ণ জলের সহিত সেবনীয়। ইহা সেবন করিয়া ম্বতপক মাংসাদি ভোজন করা যাইতে পারে। এই ঔষধ সকল প্রকার শূল, বিশেষতঃ পরিণাম-শূল নিবারক। ইহা যক্কৎ প্রীহাদি ও অস্তান্ত রোগেরও উত্তম মহৌবধ।

বিড়ঙ্গাদি-মোদকঃ।

বিড়#ভঙ্লব্যোধং তিবৃদ্ধগ্রাসচি বক্ষ্।
সর্বাণোতানি সংগত্য স্ক্ষ্চ্ণানি কার্য়েৎ ।
শুড়েন মোদকং কুড়া ভক্ষ্যেৎ প্রাতক্ষিতা।
উক্ষোদকাত্রপানস্ত দ্লাদিয়িবিবদ্ধনম্।
ক্য়েৎ তিদোধজং শূলং প্রিণামসমূদ্রম্॥

বিজ্ঞার তণুল, ত্রিকটু, তেউজ়ী, দস্তী ও
চিতা এই সকল দ্রব্য সমভাগে চূর্ণ করিয়া
এবং চূর্ণের স্বিগুণ গুড় একত্র মিশ্রিত করিয়া
মোদক প্রস্তুত করিবে। ইহা উষ্ণজ্জলের
সহিত প্রাতঃকালে সেবন করিলে ত্রিদোষজ্ঞা
পরিণাম-শল প্রশমিত হয়। (মাত্রা—২
তোলা)।

কোলাদি-মণ্ডুরম্।

কোলাগ্রন্থিকশৃঙ্গনেরচপলাক্ষারৈ, সমং চূর্ণিতং মঞুরং স্বরভীকলে২ইগুণিতে পজ্বাথ সাঞ্জীকৃতম্। তৎ থাদেদশনাদিমধ্যনিরতৌ প্রারণ হগ্ধারসূগ্ জেতুং বাতককাময়ান্ পরিণতৌ শূন্ঞ শুলানি চ॥

শুদ্ধ ম গুরচ্ণ ২॥ ০ পল, চৈ, পিপুলমূল, শুঠ, পিপুল, যবক্ষার প্রত্যেক ৪ তোলা, গোমুত্র ২০ পল। মগুর ও গোমুত্র পাক করিয়া আসরপাকে চূর্ণ সকল প্রক্ষেপ দিবে। এই ঔষধ, ভোজনের প্রথমে, মধ্যে ও অথ্যে সেবনীয়। ঔষধ সেবনকালে চুগ্গায়ভোজী হওয়া আবশুক। ইহাতে পরিণামজ ও অস্থান্য শ্ল নষ্ট হয়।

গুড়মণুরম্।

গুড়ামলকপথ্যানাং চূৰ্বং প্রত্যেকশঃ পলম্। বিপলং লৌইকিট্টপ্ত তৎসর্কং মধুস্পিয়া॥ সমালোড্য সমগ্রিংদক্ষমাত্রাপ্রমাণ্ডঃ। আদিমধ্যাবস:নেষ্ ভোজনস্তানিহন্তি তৎ॥ অন্তর্বং ভারৎপিত্তমস্পিত্তং স্বদাক্ষণম্। পরিশামসমুখ্য শূলং সংবৎসরোধিত্য॥

প্রাতন ওড়, আমলকী ও হরীতকীচুণ প্রত্যেক ১ পল, শোধিত ম্রুরচ্ণ ৩ পল এক্র মিশ্রিত এবং ম্বত ও মধুর সহিত আলোড়িত করিষা, ভোজনের আদি, মধ্য ও অন্তে ২ তোলা (ব্যবহাব ॥ তোলা) পরিমাণে সেবন করিলে অন্তবশূল, অমপিত্ত, রক্তপিত্ত ও বৎসরাভাত্তরজাত স্থাকণ পরিণাম শূল প্রশমিত হয়।

ক্ষারমণ্ডরম্।

লৌহকিউপলান্তরে গোমু নাদ্ধান্তকে পচেব।
ক্ষীরপ্রস্থেন তথ নিদ্ধাং পিত্যুলহরং পরম্।
মপ্তুর /১ সের, পাকার্থ গোমুত্র /৮ সেব,
চগ্ধ /৪ সের। যথাবিধি পাক করিয়া লাইবে।
ইহাতে পরিণাম-শূল নাই হয়।

মভূরবটিক।।

লৌইকিউপলাশ্যটো গোমুক্তেইওওণে পচেং।
চবিকানাগরক্ষার-পিগলীমূলপিগলী: ।
সংচূর্ণ্য নিক্ষিপেং ভিম্মিন্ পলাংশাঃ সাল্লভাং গতে।
শুড়িকাঃ কল্পন্নে তেন পক্তিশুলনিবারিণাঃ।

মণ্ডুরচ্বি ১১ সের, ১৮ সের গোমূতে পার্জ করিয়া, আসমপাকে চৈ, ভাঠ, যবকার পিপুলমূল ও পিপুল ইহাদের প্রত্যেকের চূর্ণ এক এক পল প্রক্ষেপ দিবে, গাঢ় ইইলে উপ-গুক্ত মাত্রায় বটা করিবে। এই বটা সেবনে পরিণাম শূল নিবারিত হয়।

তারামণ্টুরগুড়ঃ।

বিড়ক্ষং চিত্রকং চবাং ত্রিফলা ক্রোযণানি চ।
নব ভাগানি চৈতানি লৌহকিউসমানি চ॥
গোনুত্রং দ্বিগুণং দ্বা নৃত্রাদ্ধিকগুড়াবিতম্।
শনৈস্প্রিনা পক্ত্বা স্থান্দ্ধং পিওতাং গতম্॥
স্থিপভাওে বিনিক্ষিপ্য ভক্ষেং কোলমাত্রয়।
প্রাভ্রুন্যাস্তর্জনৈব ভোজনক্ষ প্রন্যান্তরং॥
যোগোহরং শময়তাওে পক্তিশূলং ফ্লাক্রণম্।
কামলাং পাঞ্রোগঞ্চ শোলং মন্দায়িতামপি॥
অর্শাংসি গ্রহণীরোগং ক্রিমিগুল্মাদ্যানি চ।
নাল্যেদম্পত্রক স্থোল্যকাপি নিষ্ট্রভিতঃ॥
বৃক্তরেচ্চুক্ষণাকানি বিদাহয়ক্টনি চ।
পক্তিশ্লাস্তরকা ত্যের শ্বড়ো মন্ত্রসংক্রিতঃ।
শ্লান্তানাং কুপাহেতোভারয়া পরিকীপ্রতঃ॥

শুদ্ধ ম গুর ৯ পল, গোমূত্র ১৮ পল, গুড় ৯ পল। যথাবিধানে পাক করিবে। প্রক্ষেপার্থ—বিড়ঙ্গ, চিতামূল, চৈ, ত্রিফলা, ত্রিকটু, প্রত্যেক ১ পল। মৃহ অগ্নিতে অলে অলে পাক করত পিণ্ডীভূত ২ইলে স্লিগ্ধ ভাণ্ডে রাখিবে। নাজা—১ তোলা। ভোজনের আদি মধ্য ও অন্তে সেবনীয়। ইহাতে পক্তিশূল প্রভৃতি নানাবিধ রোগ উপশমিত হয়। এই ঔষধ সেবনকালে শুদ্ধাক, বিদাহী দ্রব্য এবং অম্ল ও কটুরস বর্জ্জনীয়।

শতাবরামভুরম্।

সংশোধ্য চ্পিতং কৃত্য মঞ্রস্ত পলান্তকম্।
শতাবরারসন্তান্তী দধ্যত পরসন্তথা ॥
পলাক্তাদায় চত্বারি তথা গব্যক্ত সপিবঃ।
বিপচেৎ সর্বমেকধ্যং যাবৎ পিগুত্বমাগতম্ ॥
দিক্ষত্ত ভক্ষরেমধ্যে ভোজনস্তাগ্রতোহপি বা।
বাতাস্থকং পিশুভবং শূলক পরিণামজম্।
নিহন্ত্যেব হি যোগোহয়ং মঞ্রস্ত ন সংশয়ঃ॥

শোধিত মণুরচ্প ৮ পল, শতমূলী রস ৮ পল, দ্ধি ৮ পল, হুগ্ধ ৮ পল, হুত ৪ পল। এই সমুদায় একত্র পাক করিবে, পিগুবং হইলে নামাইয়া লইবে। ইহা ভোজনের আদি মধ্য ও অস্তে সেবনীয়। ইহা সেবন করিলে বাতিক, পৈত্তিক ও পরিণামজ শূল নই হয়।

রুহচ্ছতাবরীমগুরম্।

শতাবরীরদপ্রস্তে প্রস্তে চ স্বরভাজনে।
অন্ত্যাপ্ত প্রস্তে প্রস্তে প্রস্তে ধাত্রীরদপ্ত চ।
ক্যোপ্ত প্রস্তাপ্ত ক্রাপ্ত ক্যোপ্ত চ।
ক্যার কৃষ্ণ ৬ এ শনৈ দুর্যাপ্ত প্রস্তাপ্ত না
ক্যিরকলাব্যা স্থ-বমানাগন্ধ পিললী
ক্যিরকদানাক প্রক্রাপ্ত ক্যাপ্ত ক্যাপিলা
ক্যানে ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত না
ক্যানে ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত না
ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত চ।
ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত না
ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত না
ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত না
ক্যাপ্ত না
ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত না
ক্যাপ্ত না
ক্যাপ্ত না
ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্ত
ক্যাপ্

শতমূলীর রস ৪ সের, গোমুত্র ৪ সের, ছাগছগ্ন ৪ সের, আমলকীর রস ৪ সের, মণ্ডুর ৮ পল, চিনি ১৬ পল, ম্বত্ত ৪ পল। এই সম্নায় একত্র মৃত্ব অগ্নিতে পাক করিবে। পাক-শেবে, ঘনাভূত ও শীতল হইলে তাহাতে বিজ্ঞা, ত্রিফলা, ত্রিকটু, যমানী, গজাপপ্রলী, জীরা, ক্বফজীরা, মুতা প্রত্যেক চূর্ণ ২ তোলা প্রক্ষেপ দিয়া আলোজন করিবে। এই ঔষধ আহারের পূর্বের আগ্রবল বিবেচনা কার্ম্বা সেবন করা উচিত। ইহা সকল প্রকার শূলের বিশেষতঃ পিত্তশূলের উৎকৃষ্ট ঔষধ। ইহাতে ক্রেক্বিভি ও গুহুরোগ এবং শোথ, গ্রহণীন্দোর, গ্রীহা প্রভৃতি অস্তান্ত রোগও উপ্নামত হয়।

রহচ্ছতাবরীমণ্ডুরম্।

(মভাস্তরে)

মঙুরস্তাতিভপ্তস্থ বরাকাপগ্রহস্ত 5 ॥ চূণীকৃত্য পলাস্তটো শতাবরীরসস্ত 6 ॥ দধ্যক প্রস্কৃতিরামলকা। রসস্ত চ।
চতুম্পলং ঘৃতজাপি শাণমাত্রং বিনিক্ষিপেৎ ॥
সিদ্ধে প্রত্যেকমেতেরামজাজীধাস্তম্পুক্ষ্। ট্র
তিজাতককণাপথাা উপযুক্তং নিহস্তি চ ॥
শুসং দোষত্রয়েরভূত্রমাপতক দারণাম্।
অক্ষকি বনিকৈব ক'সং স্বাস্ক নাশরেৎ ॥
(তিকল কাথনিকাপিত মন্ত্র প্ল ৮, পাকার্থং শত্র্নী রস প্ল ৮, দ্ধি প্ল ৮, তুজা প্ল ৮, আমলকীরস প্ল ৮,
ঘৃত্র ৪, সিদ্ধে প্রক্ষেপ্যিনজাজ্যাদীনাং প্র চুর্ণ মা ৪।
অত্র অজাজা জারকম্।)

প্রথম তঃ ম গ্র উষ্ণ করিয়া ত্রিফলার কাথে
নিষিক্ত করত শোধন করিয়া লইবে। এইরপে
শোধত ম গ্র ৮ পল। পাকার্থ—শতমূলীর
রস ৮ পল, দান ৮ পল, ত্রা ৮ পল, আমলকীর
রস ৮ পল, মৃত ৪ পল। পাক সিদ্ধ ইইলে
জীরা, ধনে, মৃতা, গুড় হক্, তেজপত্র, এলাইচ,
পিপুল ও হবাতকী ইহাদের প্রত্যেকের চ্র্ণ
৪ মাধা প্রক্ষেপ দিবে। এই ঔষধ সেবন
করিলে সামিপাতিক শূল ও অম্পিক্তাদি নানা
রোগ নষ্ট হয়।

চতু সমমভূরম্।

সজো লৌহমলাজ্য শক্ষিকাসতাভাগাং সমা মানতং পাতে তামময়ে দিনা প্রমাথতং সংস্থাপয়েদাতপে। পশ্চাৎ তদ্বনতাং প্রণায় রজনামেকাং বহিং স্থাপয়েৎ পাতে তামময়ে নিধেয়মখনা পাত্তে হবি তাবিতে॥ পশ্চান্মায়চতুষ্ঠয়ং প্রতিদিনং জয়া জলং শাতলং পেয়ং ভোজনপ্রমধাবিরতে সভ্জনভোজ্যেনিয়া। জেজুং শুলহুতাশমান্যক্ষনন্যাসামপিত্তরে। নাদাপায়তিয়েহসক্সেঠরাজীণাদিসকা ক্ষঃ॥

শোধিত মঙুর ১ পল, ঘৃত ১পল, মধু
১ পল, চিনি ১পল, এই সমূন্য একত্ব তাম
পাত্রে লৌহদণ্ড ধারা মদন করিয়া একদিন
রৌজে এবং একরাত্রি শাশরে স্থাপন করিবে,
পরে উহা কোন তামপাত্রে বা ঘৃতপাত্রে
রাল্যা নিবে। প্রতাহ ৪ মাষা পরিমাণে
সেব্য। অনুপান—শাতল জল। ইহা ভোজনের আদি মন্য ও অস্তে সেবন করা ব্যবস্থেয়। ইহাতে শুলাদি নানারোগ নষ্ট হয়।

(ইহার মাত্রা যে ৪ মাষা লিখিত হইয়াছে, তাহাই ৩ ভাগ করিয়া এক এক ভাগ ভোজনের কালত্রয়ে সেবনীয়।)

রসমভূরম্।

কুড়বং পথাচুৰ্গং দ্বিপলং গন্ধ:শ্ব লৌহকিটক।
ন্তন্ধনসাৰ্থপলং ভূকক রসং সকেশরাজক।
প্রব্যোমিতক দ্বা পাত্রে নৌহেংগ দ্ওসংঘৃত্তম্ ।
নুকং তৃতমধুযুক্তং মৃদিতং স্থাপ্যক ভাজনে সিজে।
উপযুক্তমেতদচিরালিহন্তি কল্পিত্তান্ রোগান্।
শূলং তথায়পিতং গ্রহণীক কামলামুগ্রাম্।

হ্রীতকী চূর্ণ ৪ পণ, শুদ্ধ গদ্ধক চূর্ণ ২ পণ, শুদ্ধ মণ্ডর চূর্ণ ২ পণ, পারদ ৪ তোলা, ভূপরাজ্বস ৪ সের, কেশুরিষার রস ৪ সের (কেহ কেহ কলেন ভূপরাজ্বস ২ সের, কেশুরিষার রস ২ সের), এই সমুদায় লোহপাজোপরি লোহদণ্ডে মর্দ্দন পূর্বক রোমে শুক্রিয়া মৃত্ত মধু সংগৃক্ত করত স্লিগ্ধভাণ্ডে রাখবে। (মাত্র—চারি রতি হইতে আরম্ভ করিয়া ১ মাধা পর্যাস্ত বৃদ্ধি করিবে।) অমুপান—হ্গাদি। ইহাতে শূল ও অম্পত্তাদি রোগ নই হয়।

লোহায়তম্ ।

তন্ন দৌহপতাণি তিলোৎ সংগ্ৰম নি চ।
কশিকাম্লকৰেন সংলিপ্য সর্থ পণ বা ॥
বিশোষা স্থ্যকিরণৈঃ পুনরেবাবলেপরেৎ।
ত্রিফলায়া জলে খাতং বাপডেচ পুনংপুনং ॥
ততঃ সংচূর্বিতং কুছা কর্পটেন তু ছানরেৎ।
ভক্ষরেশ্বধুসপির্ভ্যাং যথাখ্যেতং প্রযোজরেৎ ॥
মাষকং ত্রিগুণং বাথ চতুপ্ত প্রমণাপি বা।
ছাগক্ত প্রসং কুর্যাদন্পানমন্তাবতঃ ॥
গবাং ঘুতেন ভুগ্নেন চতুংবছিপ্তণেন চ।
পঞ্জিশুলং নিহংস্তাতন্মানেনৈকেন নিশ্চিতম্ ॥
লোহামৃতমিদং শ্রেষ্ঠং ব্রহ্মণা নির্দ্মিতং পুরা।
করারপ্র্বকং যচ্চ যচ্চান্নং পরিকীব্রিতম্ ।
দেব্যং তন্ন ভবেদত্র মাংসঞ্চান্প্যক্ষবম্ ॥

তিল প্রমাণ পুরু কতকগুলি লৌহপত্রে শ্বেত আকন্দের মূল অথবা শ্বেত সর্বপ বাটিয়া প্রলেপ দিবে। পরে রৌদ্রে শুদ্ধ করিয়া পুনরায় লেপ দিবে এবং অগ্নিতে দগ্ধ করিয়া ত্রিফলার কাথে নির্ব্বাপিত করিবে। যতক্ষণ রৌদ্রে
লৌহ জীর্ণনা হয়, ততক্ষণ উক্তরূপ প্রলিপ্ত,
শুদ্ধ ও ত্রিফলার কাথে নির্ব্বাপিত করিবে।
অনস্তর চূর্ণ করিয়া কাপড়ে ছাকিয়া লইবে।
তিন মাধা কিংবা চারি মাধা মাত্রায় স্বত ও
মধু সহ সেবনীয়। অনুপান—ছাগছগ্ধ অথবা
ঔষবের ৬৪ গুণ গব্য স্বত ও ছগ্ধ। এই ঔষধ
সেবনে এক মাদের মধ্যে নিশ্চয়ই পক্তিশ্ল
নিবারিত হয়। ইহা সেবন কালে ককারাদি
দ্রব্য, অমুদ্র্য এবং আনপ্র মাধ্যে বর্জনীয়।

ত্রিকলা-লোহন্।

অক্ষামলকশিবানাং স্বর্গৈন্চ পকং হলৌংজচুর্ণম্। সঞ্জং যদ্বাপভূত্তে মুক্তি ত্রিদে'্যজং শুলম্॥

লোইচুর্গ /১ দের, বহেড়া, আমলকী ও হরীতকী ইহাদের স্থবদ বা কাথ /৪ দের (কেহ বলেন প্রত্যেকের কাথ /৪ দের), গুড় /১ দের। ব্যাবিদি পাক করিবে। ইহা দেবনে ত্রিদোবজ শূল দুবীভূত হয়।

সপ্তায়ত লোহয়।

মধুকং ত্রিকলাচূর্নযোগজঃ সমং লিংন্।
মধুসপিতৃতিং সমাগ্রেনাং ক্ষীরং পিবেদন্ত ॥
ছিদ্ধং সভিমিরং শ্লাম্মপিতংকুদ্ধাং ক্ষম।
আনাহং মুদ্রসঙ্গঞ্জ শোধ্ঞেব নিহ্তি তং ॥

যষ্টিমধু, ত্রিফলা প্রত্যেক এক এক ভাগ, লোহ চুর্ব ৪ ভাগ; এই সমুশার উপাযুক্ত পার-মাণে দ্বত ও মধুর সহিত মন্দন কলিয়া লইবে। মন্তুপান—গব্য হয়। ইহাতে শূল ও অম-প্রাণিরোগ নষ্ঠ হয়।

ধাৰ্ত্ৰালোহমু।

ধাত্রীচূর্ণস্তাষ্ট্রে পলানি চত্বারি লৌংচূর্ণস্ত। ষষ্ট্রীমধুকরঞ্চ দ্বিপলং দত্তাৎ পটে ঘৃষ্টম্॥ অম্তাকাথেন তচচুৰ্ণ ভাবাঞ্চ সপ্ত সপ্তাহ্য।
চণ্ডাতপের শুদ্ধং ভূয়ঃ পিট্টা নবে নটে স্থাপাম্ ॥
ঘূতমধুনা সহ যুক্তং ভক্তাদৌ নবাভাহতে চ।
ক্রীনপি বারান্ পাদেৎ পথাং দোষানুবক্তান্ ।
নগেহন্নবিষ্টপ্তং জয়তি নৃগাং বিদ্যুত্ত নাম্ম ॥
প্রান্ত ক্রান্ত নামান্ ভূজাতে শীলিতং জয়তি।
ববং জীয়াতি চালে শুলং নৃগাং স্বকষ্টমপি ॥
হরতি চ সহসা মুজো গোগশ্চায়া জরৎপিত্তম্ব
চকুবাং পলিতম্ম ক্লপিত্সমূদ্বান্ জয়েশোপান্ ॥
(অত্র অনুতা আমালকাতি ভানুদাসং, অভ্যেত্ত
ভঙ্চুটনাছং। সপ্তাহৎ সপ্ত ভাবনাং। উব্দশ্ত মাৰক্ত্রাং
ভ্রমং ভিজনাদিনগাংকত্ গ্রমণভাগং মন্দিতং ভক্ষামিতি বিপুরারিং।

আমলকী চূর্ণ ৮ পল, লে হচুর্ণ ৪ পল, বন্ধপুত বৃষ্টিমধুচুর্ণ ২ পল। এই সমুদায় একত্ত্র করিয়া আমলকীর কাথে (কাহারও মতে গুলক্ষের কাথে) ভাবনা দিবে। ভাবনার্থ— আমলকী ১৪ পল, পাকের জল ১১২ পল, শেষ ২৮ পল। এই কাথে ৭ দিন ৭ বার ভাবনা দিবে। পরে প্রথর রোচে শুদ্ধ ও পুনর্বাব পিষ্ট করিয়া নুতন মুৎপাত্তে রাখিবে। ঘুত ও মধুব সহিত আহারের আদি মধ্য ও অস্ত্রে এক এক মাধ্য মাত্রায় ৩ মাধ্য সেবনীয়। ইহাতে অতি কুচ্ছ শূল রোগ নষ্ট হয়।

ধাত্রীলোহম্। (মহাস্তরে)

মট্পলং শুদ্ধমণ্ড্রং ঘনস্থা কৃউনং তথা।
পাকায় নারপ্রস্থান্ধং দজাং পাদাবন্ধেষিতম্ ॥
শতননারসস্থান্তাবামনক্যা রসস্তথা।
তথা দ্বিপয়োভ্নি-কুমাণ্ডস্থা চতুপান্য ॥
চতুপানং সপিরিক্ষ্-রসং দজাদ্ বিচক্ষণঃ।
প্রাক্ষিপেজারবস্থাকং ক্রিজাতং করিপিয়নী ॥
মুন্তং হ্রাতকাকৈর লৌহনজং কর্টিজিক্ম্ ।
বেণুকং নিকলাকৈর তালাশং নাগকেশরম্ ॥ *
এতেখাং কাবিকং ভাগং চ্রিজিয়া বিনিক্ষিপেৎ।
ভোজনাত্যবদানে চ মধো চৈব সমাহিতঃ ।

ইত্পেরং—

"কট্কং মধ্কং রামা চা**ৰগন্ধা সচন্দনন্।"** ইতি ৰসে<u>ল</u>ধুতোহধিকং পাঠঃ। ভোলৈকং ভক্ষরেচ্চাত্র পেরং নিতাং পরস্তথা।
শ্বনষ্টবিং হস্তি সাধ্যাসাধ্যমথাপি বা ॥
বাতিকং শৈতিকঞ্চাপি হৈছিকং সালিপাতিকম্।
পরিশামভংং শ্বমরক্র,ভবং তথা ॥
নক্রানপি শ্বাংশ্চ অম্লপিতং ফ্লাক্রণম্।
সর্বাপ্লহরং শেষ্ঠং ধাত্রীলোইমিদং শুভম্॥

ঈ: ংকুটিত যবতপুল B পল, পাকার্থ জল ১৬ পল, শেষ ৪ পল। বস্ত্রপৃত শতমূলীর রুস, আমলকীর রুস (অভাবে কাথ), দধি, ছন্ধ প্রত্যেক ৮ পল; ভূমিকুল্লাণ্ডরস, ইক্ষুরস প্রত্যেক ৪ পল ; এই সমুদাণ একত করিয়া উহাতে গোমূত্রশোধিত ও স্কাচুলীকৃত মণ্ডর ৬ পল দিয়া পাক করিবে। আসরপাকে জীরক, ধনে, গুড়ত্বক, তেজপত্র, এলাইচ, গত্রপিপ্ললী, মুতা, হরীতকী, লোহ, অভ্র, ত্রিকট্ট, রেণুক, ত্রিফলা, তালীশপত্র, নাগেশব, (১মতান্তরে শুটুকী, যষ্টিমধু, রাম্বা, অশ্বগন্ধা ও চন্দন) ইহাদের প্রত্যেক চুর্ণ ২ ভোলা প্রকেপ দিয়া উত্তমরূপে আলোড়ন করত নামাইয়া লইবে। মাত্রা—া৽ আনা হইতে > ভোলা পর্যান্ত। ইহা ভোজনের মধ্যে ও অস্তে দেবনীয়। **দেবনান্তে** পান করা কর্ত্তবা। ইহাতে সর্মপ্রকার ও অন্ত্রপিত্র নষ্ট হয়।

খণ্ডামলকা।

শিল্পীড়িতকুমাণ্ডাৎ তুলার্ছং ভৃষ্টমাক্রান্তঃ।
প্রস্থার্ছ পণ্ডেলান্ত্র পচেদামলকীরসাৎ ॥
প্রস্থার্ছ ক্রমণ্ড-রসপ্রস্থার বিঘট্টরন্।
দর্ম্ব্যা পাকং গতে তুমিং-চ্যুনীকৃত্য বিনিক্ষিপেৎ ॥
বে বে পলে কণাজাজী-শুন্তীনাং মরিচপ্ত চ।
পলং তালীশধ্যাক-চাতুর্জ্ঞাতকমুন্তকম্ ॥
কর্মপ্রমাণং প্রত্যেকং প্রস্থার্জ্য মাক্ষিকস্ত চ।
পজ্বিশূলং নিহস্ত্যেতদ্ দোষত্ররকৃতঞ্চ বং ॥
ছর্দায়পিডমুর্জ্জান্ত বাসং কাসমরোচকন্।
ছচ্ছ্যুনং পৃষ্ঠশূলক রক্তপিত্তক্ নাশরেৎ ॥
রসারনমিদং শ্রেষ্ঠং ধণ্ডামলকসংক্রিতম্ ॥
(ছর্দ্যায়পিজরোঃ পিজোভরশূলে চ দৃষ্টকলোহয়ং
বোগঃ)।

সিদ্ধ এবং বস্ত্ৰনিষ্পীড়িত স্থপক কুমাও শস্ত ৫০ পল, /২ দের ঘতে ভাজিয়া লইবে পরে আমলকীর রস ৪ সের, কুমা গুরুস সের একত্র এবং তাহাতে ৫০ মিশ্রিত করিয়া ছাঁকিয়া লইবে। এই উক্ত ম্বতভৃষ্ট কুমাণ্ড দিয়া রীতিমত হাতা षात्रा বারংবার করিবে, নতুবা নীচে ধরিয়া যাইবে। এইরুগে পাকান্তে নামাইয়া তাহাতে পিপুল, জীরা 🔻 ভাঁঠ প্রত্যেক চুর্ণ ২ পল, মরিচ চুর্ণ ১ পল তালীশপত্র, ধনে, গুড়স্বকু, তেরপত্র, এলাইচ নাগেশ্বর ও মূতা প্রত্যেক চুর্ণ ২ তোল প্রফেপ দিনে। শতল হইলে মধু /২ সেং মিশ্রিত করিয়া লইবে। ইহা সেবন করিনে ত্রিদোষোথ পরিণাম শূল, শ্বাস, কাস, হৃচ্ছু, পৃষ্ঠশূল ও রক্তপিত্ত প্রভৃতি নিবারিত হয় বমি, অন্নপিত্ত ও পিত্তপ্রধান শূলে ইহা বিশে ফলপ্রদ।

নারিকেলখণ্ডঃ।

কূড়বমিতনিং স্থানারিকেল স্থপিষ্টং পলপতিমিতদর্শিংপ চিতং খওতুলান্। নিজপর্ম তদেতৎ প্রস্থমাত্রে বিপকং গুড়বদম্ব ফুদীতে শাণভাগান্ কিপেচত ॥ ধাস্তাকপিশ্ললিপরোদতুগান্ধিলীরা-স্থাণং ত্রিজাতমিজকেশরবদ্ বিচ্পা। হস্তারপিত্তমক্ষচিং ক্ষরমন্ত্রপিতং শূলং বৃমিং সকলপৌক্ষবকারি হারি॥

স্থাক নারিকেল শশু শিলায় পেষণ এব তাহা বস্ত্র ছারা নিস্পীড়ন করিয়া তাহার ৪ পা (মতাস্তরে ৮ পল) লইয়া ০/০ অর্দ্ধপোরা ঘটে ঈষৎ তাজিয়া লইবে। পরে ৪ সের নারিকেল জলে ৴াা০ সের চিনি গুলিয়া ছাঁকিয়া লইবে। এ জলে নারিকেল শশু দিয়া পাক করিবে। পা দিন্ধ হইলে নামাইয়া ধনে, পিপুল, মুতা, বংশ লোচন, জীরা ও কৃষ্ণজীরা প্রস্তেক ॥০ তোল গুড়ত্বক্, তেজপত্র, এলাইচ, নাগেশবং প্রত্যে চুর্ণ ১ মাবা করিয়া প্রক্ষেপ দিয়া আলোড় করিবে। এই ঔষধ সেবন করিলে অমপিত্ত, অক্লচি, ক্ষররোগ, রক্তপিত্ত, শূল ও ৰমি নিবা-রণ হর। ইহাতে পুরুষত্বন্ধি হইরা থাকে।

রুহন্নারিকেলখণ্ডঃ।

নারিকেলপলান্তর্ত্তী শর্করা প্রস্থানিতা।
তজ্জান্ধ পাত্রমেকস্ত সর্পিঃ পঞ্চপলানি চ॥
শুস্তীচূর্ণস্ত কৃত্বং প্রস্থান্ধং ক্ষীরমের চ।
সর্কমেকীকৃতং পাত্রে শনৈস্ দ্বিনা পচেৎ ॥
তুগা ত্রিকট্রুকং মুস্তং চাতুর্জ্জান্তং সধংস্থাক্ পূথক্ ॥
লক্ষ্যকি বিনিক্ষিপা স্থাপয়েদ্ ভাজনে মৃদঃ।
খাদেৎ প্রতিদিনং শাশং যথেষ্টাহারবানপি ॥
সর্কাদোযভবং শূলমেকজং দল্পং তথা।
পরিশামন্তবং শূলমেকজং দল্পং তথা।
বলপ্রিকরং হতাং বাজাকরণমৃত্রমন্।
রক্তপিত্রহরং গ্রেষ্ঠং চর্কিকল্রোগনানন্ন্।
ধর্ম্বারিক্রতিপ্তরারিকেলরস্প্রন্ন্।
ধর্ম্বারিক্রতিপ্তরারিকেলরস্প্রন্ন্

শিলাপিষ্ট-নিষাযিতরস-স্থাক নারিকেলশশু ৮ পল, ভর্জনার্থ ঘৃত ৫ পল। নারিকেল জল ১৬ সের, চিনি ২ সের, এই জলে
চিনি গুলিয়া ছাঁকিয়া লইয়া তাহার সহিত
ঘৃতভর্জিত নারিকেলশশু ৮ পল, শুঁঠ চুর্ণ ৪
পল, ঘৃগ্ধ ২ সের দিয়া মৃছ অমিতে পাক
করিবে। পাক সিদ্ধ হইলে বংশলোচন,
ত্রিকটু, মৃতা, গুড়্ঘক্, তেজপত্র, এলাইচ,
নাগেশ্বর, ধনে, পিপুল, গজপিপুল, জীরা ও
ক্ষজনীরা প্রত্যেক চুর্ণ ৪ তোলা নিক্ষেপ ও
উত্তমরূপে আলোড়ন করিয়া নামাইয়া মৃংপাত্রে রাখিবে। মাত্রা—॥• অদ্ধ তোলা। ইহা
সেবন করিলে শূল, অমুপিত, বমি ও হুদোগ
নষ্ট ছইয়া বল বীধ্য বৃদ্ধ হয়।

নারিকেলামৃত্যু।

নারিকেলফলপ্রস্থং স্থাপিটং ভর্জিডেং স্থাতে। প্রস্থেপ্রস্থং সমাদার শুঠীচূর্ণজ্ঞ ডৎসমন ॥ বিপারেং নারিকেলাস্থ ডৎসমং ক্ষারমের চ। ধার্য্যান্ড স্বর্মপ্রস্থাং থওজ্ঞাপি তুলাং স্তাদেৎ ॥ একাকৃত্য পচেৎ সর্ব্যং শাইনমূ বিভিন্ন ভিবন্ । সিদ্ধানীতে প্রদাতবাং চূর্ণমেষাং স্থানাভনন্ ॥ কট্রমং চাতুর্জাতং প্রত্যেকণ পরোমিতম্।
ধাত্রী জীরকয্থাক ধন্তাকং গ্রন্থিপর্কম্ ॥
তুগাপরোদ্র্রণনি ত্রিকবানি পূথক্ পূথক্।
চতুস্পানি মধুনঃ স্বিন্ধে ভাতে নিধাপরেৎ ॥
শিবং প্রথমা সগণং ধরস্তরিমধাপরম্।
কর্মপ্রধাণং ভোক্তবাং ক্ষারং সৃবং পিবেদম্ ॥
অরপ্রতাং শ্রুকের ম্দারুশম্।
পরিণামভবং শ্রং পৃষ্ঠশূসক নাণরেৎ ॥
অরম্রবভবং শ্রং পার্থশূরং প্রত্তরম্।
আরিসন্দীপনকরং রসায়নমিদং শুভ্তরম্।
আরাসন্দীপনকরং রসায়নমিদং শুভ্তরম্।
শ্রাণাতানশেবাংশ্চ রক্তপিতং বিশেষতঃ।
পানসক প্রতিশ্রারং নাশরেরিত্যসেবনাৎ ॥
রোগানীকবিনাশায় লোকাম্প্রহ্তেবে।
অবিভাগ্নং নিশ্নিতং শ্রেষ্ঠং নারিকেলাম্তং শুভ্রম্॥

শিলাপিষ্ট-বন্ত্রনিপীড়িত-স্থপর্ক-নারিকেল-শস্ত্র /৪ সের, সম্ভলনার্থ ন্মত /৪ সের, পাকার্থ নারিকেল জল ৩২ সের, গব্য হ্রপ্প ৩২ সের, আমলকী রস ৴৪ সের, চিনি ১২॥০ সের, ষ্ঠ চূর্ব >২ সের। এই সমুদর একত পাক করিবে। পাকান্তে শীতল হটলে ত্রিকটু, গুড়াইক, তেজপত্র, এলাইচ, নাগেশ্বর প্রত্যেক ১ পল, আমলকী, জীরা, ক্বঞ্জীরা, ধনে, গেঠলা, বংশলোচন ও মুগা প্রত্যেক ৬ তোলা প্রক্ষেপ দিয়া, মধু 州 • সের মিলাইয়া স্পিঞ্চাণ্ডে রাখিবে। মাত্রা— ১ তোলা হইতে ২ তোলা পযান্ত। অনুপান- -- দ্বা ও মুনগযুষ প্রভৃতি। এই ঔষধ দেবন করিলে নানা প্রকার শূল, অমুপিত্ত, অনোধবিণ মূতাখাত এবং রক্তপিত্ত প্রভৃতি অনেফ রোগের শাস্তি হইয়া থাকে।

হরীতকীখণ্ডঃ।

িকলাৰং চা পুজাতং বৰানী ক টুকতার । ।
বাজ্য সমূরিকা চৈব শাস্থাপী বাবক্ষকম্ ॥
প্রত্যেকং কাৰিকং গ্রাহ্ম বিষ্টুতা অর্পতি, কৌ ।
প্রস্কুত্রানি প্রাহ্ম সর্বভূলা হ'রতিকী ॥
বাবান্তেতানি চূর্ণানি সিতা তাছিগুণা মতা ।
পজে তানি বিধানেন ক্ষারেণাক্ষেন সম্পিবেং ॥
হস্তামপিতং শূলক বড়শীং সানিলাময়ম্ ।
কোঠবাতং কটাশূলমানাংমপি দাক্ষণম্ ॥

জিফল', মুতা, গুড়ত্বক্, তেজপত্র, এণাইচ, নাগেশ্বর, যমানী, ত্রিকটু, ধনে, মৌরি,
শুল্ফা, লবঙ্গ প্রত্যেক ২ তোলা; তেউড়ী ও
সোণামুণী প্রশত্যেক ২ পল, হরীতকী চুর্ণ
৮ পল, চিনি ৩২ পল। যথাবিধি পাক
করিবে। (উপযুক্ত মাত্রা ১ তোল')। ত্রহপান--উষ্ণ তুগ্ধ। ইহা সেবন করিলে
অম্লপিত্ত, শূল, ছয় প্রকার অর্শ: ও বারুরোগ
৫ ভৃতি পীড়ার শান্তি হয়।

পুগখণ্ডঃ।

ছিলং পুগফলং দুচং পরিণতং পক্তা চ এরাস্ভিঃ প্রকাল্যাতপশোষিতং বস্তপ্রং গ্রেং উচ্জার্ভিং । তৎ সর্পিঃকুড়তো বিপাচে হি বর্গানীরসে ছাঞ্জী **ত্রে প্রসঃ** প্রদার বিপ:চন্মনং তলার্কাং সিতাম । হেমাজোধরচন নং ত্রিকটকং ধার পিয়ালাভিজে মজ্জানো ত্রিপ্রগারিক বৃগং শৃক্ষাটকং বংশলা। জাতাকোষদলে লবক্সপারং ধান্তাককারোলকং নাকুলীতগরাম্বারশ্বিক: ভূজামগন্ধে তথা। সর্কাং স্বাক্ষমিতং বিচুর্ণা বিধিনা পাকে তু মন্দে ততঃ প্রক্রিপ্যাথ বিঘট্ট ন মুছরিবং দবল্যবভাষ্য ক্রণাৎ। সিদ্ধা বীক্ষা বিধা রয়েদ্বহিতঃ স্থিপ্লেংন মুদ্ভাজনে খাদেৎ প্রতিরিদ। অরাময়হর পুরা ক্রাম্যক্র শুলাজীৰ্ণগুদপ্ৰবাহ ক্ষবিরণ ছুষ্টামুপিন্তণ ক্ষেদ্ বল্লকীণহিতা মহ 'গ্লিজননা ভূটভৰ্নিমন্ডাপহ্ম ! পাঞ্ম বলবর্ণদুহি করেণ গর্ভপ্রদ গোষিতা-মেতৎ পুণারসায়নং, প্রদারতাদ বিগানেসকাপ্রম ।

স্পক স্পারি শশু শশু করিয়া সভল হথে দির বংশ্বত দৌত করিয়া লইবে। পরে উহা রৌদ্রে শুক্ষ ও চুর্ণীক্ষত করিয়া ৮ পল চুর্ণ গ্রহণ বংগারে । ঐ স্থপারি চুর্ণ ৮ পল, ১ সের ছাে ১ পাক করিয়া তাহাতে আমলকীর রস ১ গের, শত মূলীর রস ১ গের, ত্রা ৮ সের ও চিনি ৫০ পল দিয়া পাক করিবে। প্রক্রেপ', শ্রনাগেশর, মূতা, রক্তচন্দন, ত্রিকট্ট, আমল কী মজ্জা, পিয়াল মজ্জা, গুড়ত্বক্, তেজ-পত্র, গুলাইচ, জীরা, ক্ষজ্জীরা, পানিকল, বংশ শোচন, জ্বিত্রী, জার্মকল, লবক্ষ, ধনে,

কাঁক্লা, গন্ধরামা, তগদপাত্কা, বালা, বেণাব মূল, ভূজরাজ ও অখগন্ধ প্রত্যেক চূর্ণ ৪ ভোলা। এই সমূদায় চূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া হাতা ঘানা মূহশাুহুঃ আলোড়ন করিয়া নামা-ইয়া মিন্ধ মৃৎপাত্তে বাখিবে। প্রভাহ প্রাতে ১ ভোলা পারমাণে সেবনীয়। ইহাতে শূল ও অম্পিত্ত প্রভৃতি নানা রোগ নষ্ট হয়।

পূর্বগুঃ।

(মতান্তরে।)

প্রত্থৈক প্রচর্প প্রসম্চাচকং ক্রিপের। শ্করায়াঃ পলশংশ সূত্রা কুড্বদ্যুম্ ॥ চ'ভেন্ড'ড়া নিকটক দেবপুপা সচন্দ্ৰৰ ৷ মান্দ্র তালাশপর্গ বাঁকা ক্মল**সভ্বম্**॥ মান্ত্ৰাংপ্ৰত তথা বাংশী শঙ্গাটণ ভীৱ**কঃ তথা**। বিদারাকলম পেব রাজা গোকুরসম্ভবম্ ॥ ୩୭୩୯°(ସମ୍ବେଶ ସଂଗ୍ରୀଶ୍ରୟ ଅବଧା ধ' নাচুৰ্ণং সমা কথা কপু রণ 'জ'জমানতঃ ॥ মন্দেহছে। বিপ্রেদ বেক্সঃ স্মিদ্ধে ভাত্তে নিধাপয়েৎ। গাদেচচ প্রাত্রকথায় কর্মানক প্রমাণতঃ ॥ ছদিরেপিত্রহাদার-ভ্রমিন্ট্রাপর নৃণাম। সক্প্রহ্বং শ্রেষ্টমান্বাত্রিনাশ্রম ॥ মেহমেদোলিকারন্নং প্ল'হ প'ভূগদাপহম্। সম্মরী। মৃত্রু দুচঞ্চ গুদুজ রুধিরং জয়েং। রেতে!বৃদ্ধিকরং হৃত্যাং পৃষ্টির। কামদং তথা। বন্ধনাপি ন্ডতে পুত্ৰং ব্ৰদ্ধোহপি একণায়তে। নাতঃ পর্তর[,] শ্রেষ্ঠ[,] বিপ্ততে বাজিকর্ম্ব ॥

ত্রপারি চ্ব ২ সের, ছগ্ধ ২৬ সের, চিনি ১:॥। সের, গ্বত /২ সের। এই সমুদার একত্র পাক কবিয়া উপস্কুল সনয়ে গুড়গুক, তেজ-পত্র, এলাইচ, নাগেশ্বর, নিকটু, লবঙ্গ, রজ্জ-চন্দন, ভানাশপত্র, পন্মবীজ, নীলস্থ দি, বংশলোচন, পানিফল, জীরা, ভূমিকুল্লাণ্ড, গোক্ষ্বর, শতমূলীরস, মালতীপূর্লাণ্ড গোক্ষ্বর, শতমূলীরস, মালতীপূর্লাণ্ড আমলকী, প্রভাকে ২ ভোলা ও কপূর ৪ তোলা প্রক্ষেপ দিয়া যথাবিধি পাক সমাও করিয়া স্থিগ্ধ ভাণ্ডে স্থাপন করিবে। প্রভাহ প্রাভ্রকালে ২ ভোলা পরিমাণে সেবনীয়। ইহাতে সকল প্রকার শূল, আমবাত, মেহ,

বমি ও অমপিত্ত প্রভৃতি নানা রোগ প্রশমিত হয়। ইহা শুক্রজনক, হৃত্ত ও পৃষ্টিকারক এবং ইহা বাজীকারক শ্রেষ্ঠ ঔষধ।

শস্থাদি চুর্গ্ ।

শ্বাচ্ন্ পলকৈব পকেব লবণ।নি চ।
কারে উঙ্গাকং জাতী শতপুপা। যমানিকা।
ধ্বি ত্রিকট্ককৈব সর্বমেকত চুন্তেং।
আমবাতং বকুছে,লং পরিণামসমূহবন্।
আন্তবকুতং শূলং শূলকৈব ত্রিলেবিজন্।
শত্তিম লবণ, সেন্ধব সচল বিট্ শান্তার
ও উদ্দি লবণ, সোহাগার থৈ, জার্ফল,
শুল্ফা, যমানী, হিন্ধু ও ত্রিকট্ প্রত্যেক ১
পল, একত্র চূণ করিয়া (১ মারা মাত্রার উষ্ণ ভল সহ) সেবন করিবে। ইহাতে আমবাত,
বকুং-শূল্ ও সর্বপ্রকার শূল উপশ্মিত হয়।

শূলসংহারকং:চূর্ণম্।

হপুরাতনমন্ত্রং পল'য়কসমধিতম্।
মারাবদাড়িমন্ত্রক চকচা কুটজবন্ধলম্।
মূচুকুলক কন্ধোলমপাম'গক চিত্রকম্।
পূথগ দিকাবিককৈবাং শুড্ট্রীক দিকাবিকাম্।
আচকেন চ মৃত্রেণ তাবজ্বালং সম'চরেং।
বাবংপিডলিকাম্দ্রহিল্যক প্রজায়তে।
কারস্থা সমাপেষ্য রসগলৌ চ হিসুন্ম।
লবঙ্গং তেজপত্রক শুভা জাতীফলং তথা।
লাকানভি দক্রহারি প্রত্যেকক দিকাদিকম্।
পূর্ববং পেবরিয়া চ সর্বমেকত মেলয়েং।
প্রস্বাম্ন্রন্থান্দ্রন্থান্দ্র স্বাধ্য তথা পচেং।
ভোলকম্কর্থান প্রায়েং কুশলো ভিষক্।
একরং দক্ষক্রেক বিলোবজনথাপি বা।
শ্বনহিবিধং হন্তি সাধ্যাসাধ্যং হনিশ্চিত্র্।
শ্বনহারকং নাম চূর্বমেতং ফুল্লভ্য্।
(জ্বার কচ্টাতি মাণ্যা বন্ধলং ক্রোলমিতি

(অত্র কচ্চীতি মাণস্থ বন্ধলং, ককোলমিতি কাক-রোলং, গুণ্ডেতি বংশলোচনা, দদ্রহারীতি কেৎরাঙ্গ। শস্ত প্রসিদ্ধিঃ।)

শোধিত পুরাতন মণ্ড্র /১ সের। চাঁপা-নটে, দাভিমফলের ছাল, মাণকচ্র বন্ধল, কুড্চি ছাল, মুচুকুন্দ, কাক্রোল, আপান্দ, চিতামূল ও গুলঞ্চ প্রত্যেক ৪ তোলা, গোমূত্র ১৬ সের, এই সমস্ত একত্র পিত্তলপাত্তে পাক করিবে। পাক করিতে করিতে যখন সমস্ত গোমূত্র গুকাইয়া ঘাইবে এবং পাত্রস্থ উক্ত দ্রব্য সকল জলিয়া উঠিবে, তখন নামাইয়া সেই ভস্ম সহ পা<দে, গন্ধক, হিঙ্গুল, লবঙ্গ, তেজপত্র, বংশলোচন, জাতীক্ষ, শন্ধনাভি এবং চাকুন্দে, প্রত্যেক দ্রব্যের চূর্ণ ৪ তোলা পরিমাণে মিশাইয়া পুনরায় /৪ সের গোমূত্রে ও/৪ সের হুয়ে পাক করিবে। পরে সমস্ত চূর্ণ করিয়া ১ তোলা পরিমাণে উষ্ণ ছুয় সহ সেবন করিবে। এই ঔষধে সর্কপ্রেকার শূল নিশ্চয়ই প্রশমিত হয়।

ভিকলালোহ্য i

তীক্ষায়শচ্বিসংযুক্তং তিকলাচ্বমুভ্যম্। ক্ষারেৰ পায়য়েজামান্ সভঃ শূলনিবারণম্॥

লৌহচুর্ণ ও ক্রিফলাচুর্ণ সমভাগে লইয়া হুগ্রের সাহত পান করিলে সভঃ শূলরোগ নিবারিত হয়।

শর্করালোহ্য ।

ত্রিফলায়ান্তথা ধাত্যান্ড্রং বা কাললেহিজম্। শর্করাচুর্বসংযুক্তং সক্ষশূলেমু যোগয়েং॥

ত্রিফ্**লা** ও ধাত্রীচূর্ণের সমান লোইচূর্ণ একত কার্যা চিনির সাহত সেবনীয়। ইহা সর্বপ্রকার শূলেই প্রয়োগ করা যায়।

বৈশ্বানরলোহম্।

দ্বিপনং তিত্তি কারং তথাপামাগসম্ভবস্ ।
শস্কভন্মসংসূক্তং লবণক সমং তথা ॥
চতুর্নাং সমভাগাঃ স্থান্ত স্থাক্ত লৌহচূর্ণকম্ ।
চূর্ণং সংপিষ্য প্রানে) কারয়েদেকতাং ভিষক্ ॥
শূনক্তাগমবেলায়াং পাদেনাব্দমং নরং ।
শূনমন্তবিধং হস্তি সাধ্যাসাধ্যং ন সংশয়ং ॥

তেঁতৃল্ছাল জন্ম, আপাঙ্গ ভঙ্গ, শামুকমুটিভন্ম ও দৈশ্ধব লবণ প্রত্যেক /। পোয়া,
লোহ /১ সের; এই সম্দায় একত্র পেষণ
করিয়া লইবে। শূলবেদনা উপস্থিত হইবার
সময় ইহা ২ মাধা পরিমাণে সেবন করাইবে।
ইহাতে দকল প্রকার শূল নই হয়।

চতুঃসমলোহ্য্।

অবং গন্ধং রসং লোহং প্রত্যেকং সংস্কৃতং পলম্ সর্বনেতৎ সমাহত্য যত্নতঃ কুশলো ভিষ্কু । আজ্যে পলে ছাদশকে হুগ্ধে বৎসরসংখ্যকে। পক্ত_1 ক্ষিপেৎ তত্ৰ চূৰ্ণং স্থপুতং খনবাসসা॥ **থিড়ঙ্গ** ত্ৰিফলাৰ হি-ত্ৰিকটুনাং তথৈৰ চ। পিষ্ট্ৰ পলোকিতানেতাংক্তথা সংমিশ্ৰিতান্ নয়েৎ ॥ তৎ তু পিগ্নং শুভে ভাণ্ডে স্থাপয়েৎ তু বিচক্ষণঃ। আত্মনঃ শোভনে চাহ্নি পূজয়িকা রবিং গুরুষ্॥ মুতেন মধুনালোড্য ভক্ষেরাধকাদিকম্। অঙ্টৌ মাধান কমেণৈৰ বন্ধক্ষেচ সমাহিতঃ॥ অতুপানং প্রযোক্তব্যং নারিকেলজনং পয়:। জীর্ণে লোহিতশালারং মৃদ্যামাংসরসাদিভি:॥ ভক্ষেদ্ ঘৃতসংযুক্তং সন্তঃ শূলাদ বিমুচাতে। হৃচ্ছ, লং পার্যশূলঞাপ্যামবাতং কটাগ্রহ্ম । গুলাশূলং শিরঃশূলং যকুৎপ্লীধানমেব চ। অগ্নিমান্দাং ক্ষয়ং কুষ্ঠং কাসং থাসং বিচৰ্চিচকাম্। অশ্বরীং মৃত্রকুদ্রহঞ্চ যোগেনানেন সাধয়েৎ।

শোধিত অভ্ৰ, গন্ধক, পারদ, প্রত্যেক ১ পল, এই সমুদায় দ্বা, ১২ পল ঘুত ও বার পল হুগ্ধ সহ একত্র পাক করিয়া তাহাতে পণ্চাল্লিখিত দ্রবোর গনবস্ত্রনিষ্ঠাশিত চূর্ণ সকল প্রক্রেপ দিবে। প্রক্রেপা দ্রব্য বথা-বিড়ঙ্গ, ত্রিফলা, চিতামূল, ত্রিকটু চূর্ণ ১ পল। যথাবিধি পাক করিয়া উপযুক্ত পাত্রে রাখিবে। িজের শুভদিনে সূর্যা ও গুরুর পূজা করিয়া হত ও নধু সহ ১ নাবা মাত্রায় সেবন করিতে আরম্ভ করিয়া ক্রমশঃ ৮ মাধা পর্য্যন্ত মাত্রাকৃদ্ধি করিবে। অমুপান— হ্যাবা নারিকেল জল। পথ্য---রক্তশাল ভণ্ণার অন্ন, মুগের সৃষ ও মাংসরস প্রভৃতি। ইহাতে নানাবিধ শূল, গুলা, যক্ত্ৰ, প্লীহা ও **ক্ষ্ম প্রভৃতি অনেক** রোগের শাস্তি হয়।

শূলরাজলোহম্।

কর্ধিকং কাস্তলোহস্ত গুদ্ধমঞ্জং পলং তথা।
সিতায়াশ্চ পলকৈকং মধুসর্পিন্তবৈব চ ॥
সর্বমেকীকৃতং পাত্রে লৌহদণ্ডেন মর্দ্দরে।
ক্রিকট্ ক্রিফলা মৃস্তং বিড়ঙ্গং চব্যচিত্রকম্ ॥
প্রভ্যেকং তোলকং মানং চূর্ণিতং তক্র দাপরেৎ।
ভক্ষরেৎ প্রাতরুপায় শিশিরাখুলুপানতঃ ॥
সর্বাদোষভবং শূলং কুক্ষিশূলক যদ্ ভবেৎ।
সচচ্চুলং পার্যশূলক অমুপিত্তক নাশরেৎ ॥
ত্রনাংসি গ্রহণিদোবং প্রমেহাংশ্চ বিস্টিকাম্।
শূলরাজ্নিদং লৌহং হরেণ পরিনিশ্বিতম্॥

কান্তলোই ২ তোলা এবং শোধিত অল্র, চিনি, মধুও ঘত প্রত্যেক দ্রব্য ৮ তোলা পরি-মাণে লইয়া লোইদণ্ড দ্বারা মর্দন করিবে। বিকটু, ত্রিফলা, মুতা, বিড়ঙ্গ, চৈ, চিতা প্রত্যেক ১ তোলা পরিমাণে চূর্ণ করিয়া তাহাতে মিশ্রিত করিবে। শাত্তলজ্জল অন্পানে প্রাত্তলে সেবন করিলে সকল দোষজাত শূল, কুন্দিশূল, পান্ধশূল, হচ্চুল, অমুপিত্ত, অশং, গ্রহণী, প্রমেহ ও বিস্চিকা বিনষ্ট হয়। হর কর্তৃক এই শূলরাজ্লোই নির্ম্মিত হইয়াছে।

শূলগজকেশরী i

শুলতেং বিধানকং যামৈকং মদয়েদ্ চম্।
দ্যোন্তল্য শুলতাম-সংপুটে তং নিরোধয়েং ॥
দ্র্বাধো লবণং দ্বা মুংভাণ্ডে স্থাপয়েদ্ বৃধঃ।
কক্ষা গজপুটং দ্বা স্বাক্ষণীতং সমুদ্ধরেং ॥
সম্পুটং চুর্বায়ং প্রক্ষণ প্রতি দি প্রক্ষকম্।
ভক্ষয়েং সর্কাশ্লাজো হিঙ্গু শুগীক জীরকম্ ॥
বচামরিচিজং চুর্বাং কর্মুছজলৈং পিবেং।
অসাধাং সাধয়েচ্ছল্লং শ্রীশ্লাজকেশরী॥
(মুদ্ভাণ্ডে পলক্ষ্যকেবণযোগ্যে পলৈকং
ক্ষণা লবণমধ্যে সংপ্রতিকং স্থাপয়্রা অপর

(সুদ্ভাওে প্লম্বর্জবধ্যোগ্য পলৈকং লবণ নিক্ষিপ্য লবণমধ্যে সংপুটক স্থাপায়ির অপরলবণ পলেনাচছান্ত ভাওমুখং কপট্যা আচছান্ত লিপ্তা ৮ গশ পুটে পচেৎ। ইতি রসেক্রটাকা।)

শুদ্ধ পারদ ২ তোলা, শুদ্ধ গদ্ধক ৪ তোলা উভয়ে কজ্জলী করিয়া গোড়ালেবুর রনে মাড়িয়া তন্দারা ৬ তোলা পরিমিত তামপুর্টের অভ্যন্তর ভাগ লিপ্ত করিবে। পরে একটি ভাণ্ডের মধ্যে ৮ তোলা লবল রাথিয়া তহপ্রি ক্র ভাষ্মংপুট স্থাপন ও তাহার উপরিভাগেও ৮ তোলা লবল প্রদান করিয়া মুখ ক্রন্ধ করত গজপুটে পাক করিবে। পর দিবদ তামপুট উদ্ধৃত ও চুর্ণিত করিয়া উপবৃক্ত পাত্রে স্থাপন করিবে। ইহা ২ রতি পরিমাণে পানের সহিত দেবা। ঔষধ দেবনান্তে হিন্দু, ভাঠ, জীরক, বচ ও মরিচ, ইহাদের ২ তোলা পরিমিত চুর্ণ উষ্ণ জলের সহিত দেবন করা কর্ত্বরা। ইহাতে ক্রন্থ্রদাধ্য শ্লও উপশমিত হুইয়া থাকে।

শূলবজিণী বটী।

রসগন্ধকলোঁহানাং পলান্ধেন সম্বিত্য ।

টঙ্গণং রাম্যং শুষ্ঠী : ত্রিকট্ ত্রিফলা শুষ্ঠী ॥
ছগোলা প্রতালাশং জ' গ্রিফলনবক্সক্ম ।
বনানী জারকং ধাস্তং প্রত্যেকং তেলেকং শুভন ॥
নাবিকা বটিকা কান্যা চহুগোহুন্ধেন পেবিতা ।
গণেশং যোগিনাং শস্তুং হরিং স্ব্যং প্রপূজা চ ॥
শীততোরামুপানেন ছ্রুগোহুন্ধেন বা পুনং ।
একৈকা ভক্ষিতা চেরং বটিকা শূলবছ্রিণী ॥
শূলমন্তবিধং হস্তি প্রাইগুলোদরজ্বন ।
অস্তালানাহমেহাংশ্চ মন্দাগ্রিজমরে।চক্ম ॥
অম্লপিন্তামবাতাংশ্চ কামলাং পাণ্ডুরোগক্ম ।
শুলা চন্দ্রনাথেন বটিকেন। প্রকার্তিতা ।
সংসারলোকরকার্থং বিচিত্য প্রিনিশ্বিতা ॥

পারদ, গন্ধক, লৌহ প্রত্যেক ৪ তোলা, সোহাগা. হিন্দু, শুঠ (কেহ বলেন, তামা), ত্রিকটু, ত্রিফলা, শঠা, গুড়স্বক্, এলাইচ, তেজপত্র, তালীশপত্র, জারফল, লবপ, যমানী, জীরা ও ধনে ইহাদের প্রত্যেকের ১ তোলা। এই সমুদার ছাগীহুরে পেষণ।করিয়া ১ মাধা পরিমিত বটিকা প্রস্তুত করিবে। অনুপান— ছাগীহুর বা শীতল জল। ইহাতে শূল, গুলা, প্রীহা, মেহ ও অমুপিত্ত প্রভৃতি নানা রোগ বিনষ্ট হয়।

শূলান্তকো রসঃ।

জাৰণং ত্রিষ্ণা মৃন্তং ত্রিবৃতা চিত্রকং তথা। একৈকশঃ সমো ভাগন্তদর্কং রসগন্ধয়োঃ॥

শুকীতাত্ৰ শুৰ্ষিতি পাঠান্তরম।

লৌহাত্রকবিড়কানাং ভাগন্তদ্বিগুণো ভবেং।
এতং সর্বাং সমাদার চুর্বাহিনা বিচক্ষণঃ॥
ত্রিফলারাঃ কষারেণ গুড়িকাং কাররেদ্ ভিষক্।
ওদেকাং ভক্ষরেং প্রাতর্ভকবারি পিবেদতু॥
নিহস্তি পরিণামোশ্যমাপিত্রং বৃমিং তথা।
অর্লবভবং শুকং স্বিপাতসমূত্রম।
সর্বব্দান্ নিহস্তাপ্ত শুক্ষং দার্বনলো যথা॥

ত্রিকটু, ত্রিফলা, মৃতা, তেউড়ী, চিতামূল প্রত্যেক ১ তোলা, কজ্জনী ১ তোলা,
লোহ, অন্ত, বিড্না প্রত্যেক ২ তোলা। এই
সম্পায় চূর্ণ ত্রিফলাব কাথে মার্দন করিয়া
শুড়িকা প্রস্তুত করিবে! অমুপান—কাঁজি।
ইহাতে পরিণামজাদি সর্বপ্রকার শূল রোগ
নষ্ট হয়।

ত্রিপুরভৈরবঃ।

ভাগো রসন্তান্ধ্যথেকা ভাগো গ্রাফোইতিয়ন্ততঃ। তয়োদ্বাদশভাগানি তাত্রপত্রাবি লেপয়ের। পচেচ্ছু নুহর: প্রেণ ভবেং ত্রিপ্রবৈত্রবং। ম'বো মধ্বাভাসংখুকো দেয়োহন্ত পরিশামজে। অক্ষে হেরগুঠভানে হিন্ধু গ্রযুতো রসঃ॥

১ ভাগ পারদ ও ১ ভাগ গন্ধক কজ্জনী করিয়া ভদ্মারা ১২ ভাগ তামার পাত প্রানিপ্ত করিবে। পরে ভাহা বালুকা যন্ত্রে পাক করিলে ঔষধ প্রস্তুত হুইবে। ইহা ১ মাধা মাজার পরিণাম-শূলে মধু ও মতের সহিত প্ররোগ করিবে। অন্ত শূলে এরগুতৈল ও ৩ ভাগ হিন্ধুর স্থিত সেবন করিতে দিবে।

শূলহরণযোগঃ।

হরীতকা তিকটুকং বৃ চিলা হিন্ধু সৈপ্তবম্।
গন্ধকঞ্চ সমং সকাং বটাং কুৰ্য্যাৎ প্ৰথাবহাম্॥
লগুকোলপ্ৰমাণান্ত শশুতে প্ৰাত্ত্তেব হি।
একৈলা বটিকা গ্ৰাপ্তা গুলাশূলবিনাশিনী॥
গ্ৰহণ্যামতিসারে চ সাজীর্ণে মন্দ্রপাবকে।
যোজ্যেরজ্ঞপ্রসা স্থমাপ্লোতি নিশ্চিত্ম্।
স্বর্ণবন্ধ্ ভবেদ্দেহং সদোৎসাহযুতং নৃণাম্॥

হরীতকী, ত্রিকটু, কুঁচিলা, হিস্কু, সৈন্ধৰ, গন্ধক, এই সকল দ্রব্য সমভাগে একত্র করিয়া ছোট কুলের মত বটিকা করিবে। প্রোতঃকালে উষ্ণচুগ্নের সহিত ১টা করিয়া বটা সেবন করিলে গুলা, শূল, গ্রহণী, অতীসার, অজীণ ও মন্দামি প্রভৃতি রোগ সকল নষ্ট হয়। ইহাতে স্থবর্ণের আর কাস্কিও শরীর উৎসাহ-বান হইয়া থাকে।

শ্রীবিদ্যাধরাভ্রম।

বিড়কমুন্ত ত্রিকলাগুড়, চাঁ-দণ্ডী ত্রিত্দ্বহ্নিকট্ তিক্ক।
প্রত্যেকমেবাং পিচুভাগচুর্বং পলানি চন্তাযায়সো মলস্ত ॥
গোন্তগুদ্ধস্ত পুরাতনক্ত যন্ত্যাসন্তানি চিরাটিকায়াঃ।
কুন্ধালকাচ্চ, র্পলং বিশুদ্ধং নিশ্চলকং ক্লফ্মতীব সূতাং ॥
পাদোনকর্বং স্বরসেন খল-শিলাতলে মন্ত্যামনীদলসা।
সংমন্দ্যি যন্ত্যাদতি শৃদ্ধাপ্র-পারাণচুর্বেন পিচ্যাতেন ॥

যুক্ত্যা ততঃ পূর্ব্বর্জাংসি দরা
সর্পিন ধুন্ডামবর্মদা যক্ষং ।
নিধাপরেৎ ক্রিদ্ধবিশুদ্ধভাতে
ততঃ প্রযোজাস্য রসারনস্য ॥
প্রান্থ মারকে ছাবথ বা ত্ররো বা
প্রবাং পরো বা শিশিরং জলং বা ।
পিবেদয়ং যোগবরং প্রভূতকলেপ্রন্থানল্লীপকশ্চ ॥
রোগং নিংক্তাৎ পরিপ'মশূলং
শূলং তথান্নস্বসংস্কর্ষণ ।
বক্ষাম'পত্তং গ্রহণাং প্রস্তর্ভাং
জীর্ব্রেরং লোহিতপিত্রমুগ্র্ম ॥
ন সন্তি তে যান্ন নিহন্তি রোগান্
যোগোত্রং সমত্তপান্তমানঃ ॥

(মত্যুমনীদলং থুলকুড়াতি বস্তু প্রসিদ্ধিং, চিরাটিকা লোহচটকেতি থাতো। থানকুনীরসেন পারদ সংশোধা সংমন্দ্য পশুদ্দ গন্ধকচূর্ণ কর্ষমিতং দয়। সংমন্দ্য চ বিড্লাদিচ্র্য প্রক্রিপা যুতভাতে স্থাপনীয়ম্। ভোজ-নাদিমধ্যান্তেমু ভক্ষাম্। ভোজনাৎ পূর্ব্য বাবহরতি বৈতাঃ। মঞ্রস্থানে লোহং গ্রাক্রম্। প্রিণামশুলেহতি-প্রশন্তম্। চতুঃবৃত্তিভূবং গ্রাক্তম্য শিশিরতোগ্য বা অনুপ্রম্।

বিভন্ধ, মৃতা, ব্রিকলা, গুলঞ্চ, দস্তীমূল, তেউড়ী, চিতামূল ও ব্রিকটু ইহাদের প্রত্যে-কের ২ কোলা। গোমূত্রশোধিত-মণ্ড্র অথবা লোহচটা ভন্ম ৪ পল, ক্ষণান্রচূর্ণ এক পল, থুলকুড়ির রসে শোধিত হিন্ধুলোখ পারদ ১॥• তোলা, শোধিত গন্ধক ২ তোলা।
অত্যে পারদ ও গন্ধকে কজলী করিয়া পশ্চাৎ
উহার সহিত অক্সান্ত দ্রব্য সকল মিশ্রিত
এবং ঘুত ও মধু সংসুক্ত করিয়া যত্নপূর্বক
মাড়িয়া বটিকা প্রস্তুত করিবে এবং ভাহা
দিশ্বভাণ্ডে রাখিবে। মাত্রা—প্রথমতঃ ২ বা
০ মাষা। অনুপান—গবড়েগ্ধ বা শীতল জল।
ইহাতে নানাবিধ শূল ও অম্প্রপিত্তাদি বহু
রোগ নই হয়. বিশেষতঃ ইহা পরিণাম-শূলের
অতি উৎক্রই ঔষধ।

রুহদিদ্যাধরাভ্রম্।

শুদ্ধসতং তথা গলং ফলত্রয়কট্রয়ন্।
বিভ্রুদ্ধককৈ বিত্র দত্তী চিত্রকন্।
আবুপণী গ্রিকক প্রত্যেকং কর্মান্দ্রহন্।
পলং কৃষ্ণাল্রচ্পিস্ত মৃতায়শ্চ চতুপ্ত পন্॥
মুতেন মধুনা পিষ্ট্রা বাটকাং কোলসন্মিতাম।
এককাং বাটকাং পাদেং প্রাতরুপ্রে নিত্রশাঃ
অনুপানং গবাং কারং নীরং বা নারিকেলজন্।
সর্ক্ষ্পান নিহস্ত্যাশু বা ১পি ভুতবং তথা॥
একজং দ্দুজ্বকৈব তথেব সালিপাতিকন্।
পরিণানোন্তবং শ্লমানবাতোন্তবং তথা॥
কার্শাং বৈবর্ণামালক্ষণ তল্পাক্রিবিনাশনম।
সাধ্যাসাধাং নিহস্ত্যাশু ভাস্করন্তিবিনাশনম।

শোধিত পারদ, গন্ধ ফ, ত্রিফ্লা, ত্রিকট্, বিজ্ঞা, মৃতা, তেউড়ী, দন্তী, চিতা, আগুপর্ণী, পিপুল্মূল প্রত্যেক দ্রব্য ২ ভোলা করিয়া শ্রহণ করিবে। ক্রম্ণ অত্র চূর্ণ ৮ তোলা, শোধিত লোহ ৩২ তোলা; দ্বত ও মধুর সহিত্যাড়িয়া কুলের মত বটা প্রস্তুত করিবে। প্রাত্তকালে গোড়য় অথবা নারিকেল্জল অনুপানে দেবন করিবে। ইহাতে বাতিক, পৈত্তিক, একজ, দ্দুজ এবং সাল্লিপাতিক প্রভৃতি সর্ধপ্রকার শূল, পরিণামজ ও আম্বাতজ শূল, ক্লাভা, বিবর্ণতা, আলহা, ভক্রাও অক্রচি প্রভৃতি সাধ্যাসাধ্য সর্বপ্রকার রোগ বিনষ্ট হয়।

গুড়পিপ্পলীয়তম্।

সপিয়নীঙড়ং সূর্পিঃ পড়েৎ ক্ষীরচতুগু গৈ। বিনিহস্তায়পিত্তক শূলক পরিণামজম্॥

গবান্বত /১ সের। কল্পার্থ—পিপুল প । জর্মপোরা, গুড় প । পোরা। হ্রন্ধ /৪ । দের। এই ন্বত পান করিলে পরিণামশূল ও অম্ন-পিত্ত রোগ নিবারণ হয়।

পিপ্ললীয়তম্।

ক'থেন কজেন চ পিপ্পলীনাং
পিন্ধ: যুতং মাক্ষিকসংপ্রযুক্তন্।
কীরানুপানস্থ নিহস্ত্যবতাং
শ্বং প্রবৃদ্ধং পরিশামসংজ্ঞন্॥
(স্থাতি মধু পাদিকং, কলবন্মধূশকরেতি বচনাং।
তুম্পলমনুপিবেং।)

মুক্ত /৪ সের। পিপুলের কাথ ১৬ সের। করার্থ—পিপুল /১ সের। ফুনীতল হইছে মধু /১ সের মিশ্রিত কনিয়া লইবে। অনুপান—ত্থ প৹ অদ্ধিপোরা। ইহা সেবল করিলে পরিণাম-শূল নই হব।

দাধিকং গ্নত্য।

পিশ্বনী নাগরং বিবং কারণাচবাচিত্রকম্। হিঙ্গুলাড়িমবৃক্ষায়-বচাক্ষারায়বেতসম্। বর্ধাভূঃ কৃষ্ণলবণমগাজী বীজপুরকম্। দ্বিত্রিগুলিতং সপিস্তৎসিদ্ধং দাধিকং হাতম্। গুলাশ্গ্রীহঙ্গোর্থ-শূলবোনিক্সজাপহম্। দোবসংশ্যনং শ্রেঠং দাংশিকং পরমং স্থু চম্॥

ঘত /৪ দের। দ্ধি ১২ দের। করার্থ—
পিপুল, ভাঁঠ, বিষ্মুল, ক্রফজীরা, চৈ, চিতা,
হিন্ধু, দাড়িম, মহাদা, বচ, ঘবক্ষার, অমবেতস, পুনর্মরা, ক্রফলবণ, জীরক ও বীজপ্রকম্ল; উত্তমরূপে কৃটিত এই সকল কর্
ঘারা যথারীতি ঘত পাক করিবে। এই ঘত
পান করিলে গুলা, অর্শ:, প্রীহা, হৃদরশূন,
পার্থাশূল ও বোনিশূল প্রশমিত হয়। ইহা
দোষপ্রশমক শ্রেষ্ঠ ঔষধ।

বীজপ্রাত্যং **য়তম্** i

বীজপ্রক্ষেত্রভং বা'লাং গোল্রকং বলাম্।
পূথক্ পঞ্চলান্ ভাগান্ যুবেৎ পাদাবশেষিত্রম্।
গুতপ্রহু পচেং তেন কলং দ্বাক্ষমন্ত্রিন্।
গুতপ্রহু পচেং তেন কলং দ্বাক্ষমন্তিম্।
ভূস্কণাভয়া বোষং হিন্তু নৌবচলং বিভ্ন্।
সৈক্ষরং লাক্সক সভিক্ষমন্ত্রিতম্ ॥
প্রক্রা নাক্তি কের কুলায়ং জারকছয়ম্।
১ প্রক্রা দ্বা স্কাং মৃদ্ধিনা পচেং॥
গুতমেতৎ প্রশংসভি লাং হৃত্তি কিলো্রজম্।
গুতমেতৎ প্রশ্নিক ক্ষশ্লক নাল্যেৎ।
লল্বন্বর স্ত্তিন্নাভন্য প্রম্॥

থাত - ৪ সের। কাপার্থ—টাবালেবুর মূল, এরওমল, রামা, গোল্রা, বেড়েলা, ইহাদের প্রত্যেকের এপলা, নিস্তান ধর ঠাই সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। কল্পার্থ—ধরে, হরীতকী, ত্রিকট্ট, হিন্দু, সচলা, বিট্ ও সৈল্পর লবণ, নবক্ষার, সাচিক্ষার, অমবেতস, কুড়, দাড়িন, নহাদা, জারা, কল্পজীরা প্রত্যেক হুট ভোলা। দ্বির মাত গদ সের। মূহ অগ্নিতে পাক কারবে। এই খুত পান করিলে নানাবের শল নই হয়।

भृतगः, जम्म रेजनम् ।

এর ৪ং দেশ্যাকণ প্রত্যেকং পালপ্রকৃষ্ ।
জলে চাস্তথ্য পাজ্ব তেলপ্তাপ্তাত্তকং প্রচেব ॥
বিখা জারং ব্যালাকং ধাস্তকং পিলব্যম্ ॥
ব্যাকংশ্বং প্রত্যেক বিজ্ঞাপ্তার্থার ।
বৈলগে চন্মং তেলি লালা শ্রাপ্তেকক্ষ্ ॥
নিহন্তান্ত্রিকং শ্রাম্পত্রসমায়ত্ত্ব ॥
অগ্রিকং শ্রাম্পত্রসমায়ত্ব ।
অগ্রিকং ব্রহিরং খাসকাসারচাজ্যেব ॥
অগ্রাং রক্তাণিত্যে প্রাহ্রপ্রিনাশ্রম্।
ভ্রাম্পত্রনাশ্রম্।

তিলতৈল ৮৮ সের। কাথার্থ—এরগুমুল ও দশমুলের প্রত্যেক ৫ পল, জল ৫৫ সের শেষ ১৬৮০ সের; যব ৮৮ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের; হগ্ধ ১৬ সের। কন্ধার্থ— ভুঠ, জীরা, যমানী, ধনে, পিপুল, বচ, সৈন্ধব, কুলপত্র প্রত্যেক ২ পল। এই তৈল মর্দ্দনে ।
শূল ও তজ্জনিত বমি প্রভৃতি উপদ্রব এবং ।
শাসাদি বিধিধ রোগ নিবারিত হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

শলরোগে পথ্যানি।

ছাদ্ধং সেদো লগন পাৰ্বহিবিভিন্নিতা রেচনং পাচনঞ।
অন্যোৎপন্নাং শাল্যো বাট্যনাওভপ্তক্ষীরং ভাঙ্গলানাং রমাণ্ট ।
পটোলশোভাঞ্জনকারবেলবার্ত্তাকুরামাণি পচেনিমানি।
ভাক্ষা কপিথং স্কচকা পিযালং
শালিঞ্চপানি চ বাস্কবানি ।
সামুদ্রোবচ্চলাইকু বিখা
বিড়ং শভাহ্বা লগ্ডনং লবক্ষম।
এরগুইতলং কুরপ্তাক্রন্ধ
ভপ্তাৰু জ্বাররসোহিপি বুজম।
লঘ্নি চ ক্ষারবজ্ঞানি চেট্ট
বর্গো হিডঃ শুলগদানিতেল্যঃ।

বমন, স্বেদ, উপবাস, গুড়ে বর্ত্তিপ্রয়োগ, বন্ধিক্রিয়া, নিজা, বিরেচন, পাচকদ্রব্য, সংবৎ- সরোষিত শালিবান্ত, ঘবমণ্ড, গ্রম জ্রে,
জাঙ্গলামাংসের বস, পটোল, শজিনা, করেলা,
বেণ্ডণ, গাছপাকা আম, কিন্মিন্, কয়েৎবেল,
ফচকলবণ, পিরালফল, শালিঞ্গাক, বেডোশাক, সামুছলবণ, সচল লবণ, হিন্তু, ৬জি,
বিট্লবণ, ওল্ফা, লগুন, লবজ, ভেরেণ্ডার
তৈল, গোমুত, গ্রম জন, গোড়ালেব্র রস,
কুড, লগুপাক দ্বা 'ও ঘ্রশাট্রণ এই স্মন্ত
দ্বা শলরোগে হিত্তনক।

পুনারোগেইপথ্যানি।

বিক্**ষ**াত্রপ্রেমি জাগর বিষয়বেন্দ্। ক্ষ**ক্তিক্র**কার্যালি নি জোনি জোনি চলি বারোমান মন্দ্রা বেদ্যালয়ে তিলান্। বোরোমান মন্দ্রা বেদ্যালয়ে করেন নির্দা

বিরক্ত সমপান্য, রাজিলাগরণ, বিষম ভোজন, রক্ত ভিজ্ঞ ও করাম জ্বরা, শীতল জ্বান গুরুপাক জবা, বন্ধান, দ্বীপ্রামন্ত, মছ, ডাল, লবণরসমূক জবান ভিল্ন, বেগধানন, শোক ভাজের ব্যাবহিচ্চ করে।

ইত্যায়ুর্কেদ-সংগ্রহে শ্লরোগাধিকার:।

অথোদাবর্ত্তানাহাধিকারঃ।

অংগোদানর্ত্ত-নিদানম।

বাতবিশ্ব তেত্ত্ব স্থান্ত কৰিব কৰেব কাৰিবনালিয়-কুরু কাছে নুননি ধাণাং প্রধানত ব্যৱস্থা । অবোবায়, মল, মূন, গুড়া (হাই), অঞ্জ, হাঁচি, উল্পাব, বমি, শুক্ত, কুলা, ভ্রমা, দার্ঘ-শ্বাস ও নিজা এই সকলেব বেগ বারণ কবিলে যে যে রোগ জন্মে, তাহানিগকে উলবিত কহে।

वाद्यामावर्ड हिकिएम।।

সাক্ষেত্রয় বিধিন্তনাব, এ) বাংলক। বাংলাঃ জিলা বিধাতকা শ্রাশ বাংলার এ

সকল উদাৰত তেতেই বাৰুকে স্বমাৰ্গে আনিবাৰ জন্ম ম্বধানৰ সমস্ত জিনান বিবেষ।

অধোৰা চনিবেধেকাল জ্ঞান্ত্র জিলা মতম। জেলপানং তথা জেলা ক্রিটেলিকা মতা ॥

স্প্রোবাতন্দ্রের নিয়ে উলার্ড সেহ-পান, স্বেদ, ক্ষর্ভি ও ব্ডিগ্রেগে হিত্তনক।

বিভ্ৰিণা হুমণ্টো ভূ েছে লেছারাং বর্গে। ধর্ম। বস্তাঞ্জাবগালাকে বেলো বনিবিলো মতা।।

মলবেগ-পরিগ-সান্ত উদানত লোগে বিরে-চক 'ঔষর ও জন্ন এবং ক্লব্রি প্রয়োগ, মেহান্ডাঙ্গ, জ্লাব্ধাহন, সেন্ত বাস্তাক্রম হিতকর।

মূ্তাবরোধসনিও জারত নগতাং পিলেই। ছুক্পানীপ্রসং বাহি ক্যায়ং ক্যুউজ্ঞ সা এববাস্থ্যকিং তোজেন পিয়ের যা লাগ জুড্ম। মিতামিল্ডমা ক্ষাবং হাজাবং যাউন্থা পি বা। মক্তোৰ প্রযুক্ত মুক্তসূপ্তাটিবির্গ

মূত্রবেগ-রোধ-জানত উনাবতে সজল গুরোর সহিত বচ চূর্ব, কিংবা তরালভাব স্বরস: মথবা অর্জুনছালের কাথ অথবা জলের সহিত কিঞ্ছিং দৈশ্বব লবণ মিঞাত কাকুছ-বীন চূর্ব, অথবা চিনি, ইক্ষুরদ, ত্বগ্ধ, দ্রাক্ষারদ বা য**ষ্টি-**মধুর কাথ পান করিবে। মুত্রকুদ্ধু ও অশ্মরী-রোগের দমস্ত বিধি ইহাতে প্রয়োগ করিবে।

জ্ঞাভিদাতজে ক্ষেং বেদং বাপি **প্ৰবোজন্তে**। অত্যানপি প্ৰযুক্ষীত সমীৱণহুৱান্ বিধীন্। ভ**ূত্যাবেগ-ধারণ-জনিত উদাবৰ্ত্ত রোগে** সেই বা স্বেদ প্ৰযোগ করিবে। ই**হাতে বাত-**

হর অন্যান্ত ক্রিয়াও কর্ত্তবা।

নেত্রনারণারের প্রথম বাপি দুশোজ লম্।
থপাবে সথক ভন্তব্যে কথায়েক কথাঃ প্রিয়াঃ ।
অধ্যবেদ-বিদানণ-ক্রিত উদাবর্ত্তে তীক্ষাজ্ঞন প্রদান স্বার্গ চক্ষ্ হইতে অঞ্যনিঃসারণ
করিবে, বোগিকে স্থাথে নিজা যাইতে দিবে
এবং ভাষার নিক্ট প্রিয় কথা কহিবে।

জিরানিবেপেরে । শ্ব - ভানে**স্তা**র্কদ**ানৈ:।** প্রন্তরেই ফুড্রা সভার সেইক্ষেন্টোট শীলয়েছে।

হাচি-নিবোধ-জনিত উদাবর্ত্ত মারচাদি তাক্ষ দ্রবার ছাণ ও নস্ত এবং স্ব্যান্দনি দারা সক্ত (জাট্কান) হাচির প্রবর্তন করাইবে এবং সেহস্বেদ প্রায়ার করিবে।

ভক্ষারভাববোধে তু জৈহিকং গুম**মাচরেং।**

উদ্গাৰ-রোধ-জানত উদাব্যক **সৈহিক** বুন প্রোগ কবিবে।

দক্ষিত্রিকার স্থানি ব্যক্তির হিত্য । বিবেচনকার স্থানি বংকান্ত্রিকার চ্যা

ব্যম্বেগ ধানগ-জন্ন উদ্ধাৰতে ব্যান, লজ্মন, বিরেচন এবং ভৈলাভ্যস্থ বাবস্থা করিবে।

বজি গুলিকারে সারং গারুর গারুরে প্রচা আবারিনাপাথ কমিতং পতিবস্তং প্রকাসতঃ। বাংমা, প্রিয়া নাবাং প্রচালাবর্ত্তিনং নরম। তলাভাঙ্গোহের হিন্দু নাবিরা চরগামুগা । প্রান্তি প্রেথবিক্তিক ভিত্তং নৈথুন্যের চা। শুক্রনিগ্রহ-জন্য উদাবর্ত্তরোগিকে বস্থি শুদ্ধিকর (ভূণপঞ্চমুলাদি) দ্রব্যের কল্প ও চতুগুর্ণ জল সহ হুল্প পাক কার্য্য হল্পমার অবাশন্ত থাকিতে নামাইয়া পান কারতে দিবে এবং প্রিয়তমা রম্নীতে রমণ করাইবে। ইহাতে ভৈলাভাল, অবগাহন, মলপান, কুরুট-মাংসের রদ, শালিভঙ্গের অল্ল এবং প্রো-নিরাহ অর্থাৎ হুল্পের পিচ্কানী হিতকারক। মৈথুনই ইহার প্রকৃত ঔষধ।

কুৰিঘাতসমূজুতে বিশ্বমূজ্য তথা লয়ু। প্ৰচামল্লং হিডাং ভক্ষাং পূপাং দেব্যং ধুগলি যং ॥

কুধাবেগ-বারণ জন্ম উনাবতে নিয়, উষ্ণ, লঘু ও ক্রচিকানক অথচ অন্ন ভোরন করিবে এবং সুগন্ধি পুষ্পের আন্তান লইবে।

তৃষ্ণাবিধাতসভূতে শীত সংকা (ববিষ্ঠিত। কপুরিশিশিরং স্বরং পিবেং তোকে শনৈ শনে। তৃষ্ণাঘাতে পিনেন্মপ্রং যুবাপের বাপি শাতবাম ॥

তৃষ্ণানিপ্রাহ্নজন্ত উদাবতে সন্ধ্যাকার শীতল ক্রিয়া এবং কপূরবাদেত স্থানিত জল আলে আলে পান করা প্রাণ্ড। ইংগতে মহ ও শীতল ধ্বালু প্রো

রসেনাপ্তাৎ কবিশাস্থ্য শ্রহণার বুরা নরঃ ।

শ্রমোড়্তখানের বেগরারণ-ভানত উদা-বর্ত্তে বিশ্রাম এবং মাংস্বসের সহিত অন্ন ভোকন করিবা ৷

নিজাবেগৰিয়াতৈ।থে পিবেৎ ক্ষাৱং সিতাযুত্য । সংবাহনং কুশব্যাক হৈতা ২প্ন প্ৰিয়াঃ কথা ।।

নিজাবেগ-ধার্ণ-জনিত উদাবত রোগে চিনি সংস্কু ত্থপান, গাত্রদান, সুব্ঞদ শ্ব্যা, নিজা ও প্রিয়ক্থা হিত্তর।

অথ সদ্যোজাতখোদাবর্ত্তস্ত লক্ষণম।

বার্ কোষ্ঠানুলো ক্ষেত্র ক্ষায়ক্র্ভিক্তকৈর। ভোজনৈর কুপিতঃ সন্তা উদাবতঃ করে তি চ ॥ বাতমূত্রপুরীবাহক্কফনে দোবহানি বৈ। শ্রোতাংহ্যদাবতয়ভি পুরীবকাভিবতয়ে ॥ ততো ক্**ষ্তিশ্লা**ঠো ক্লাসারতিপীড়িতঃ। ৰাতমূত্রপুরীবাণি ক্জেছণ লভতে নরঃ। মাসকাসপ্রাত্তার দাহনোহত্বাব্রান্। বামহিকাশিরোরোগ-মন্থেবণাব্রমান্। বহুন্থাঃক্চ লভতে বিকারান্বাতকোগ্রান্।

বেগরোধজ উদাবর্ত্তের লক্ষণ লিখেত হইল ; এক্ষণে ক্ষণাদিসেবন-হেতু প্রকুপিতবায়ুজানত সন্তঃসম্ভূত উদাবর্ত্তের লক্ষণাদি লিখিড হইতেছে—

কোষ্ঠাশ্রিত বাষু, ক্লক ক্ষায় কটু ও তিজ্ঞ ভোজন হেতু কুপিত হইয়া সন্তঃ উদাবর্ত্ত গোগ উৎপাদন করে। এই কুপিত বাষু, বাত মৃত্র মল রক্ত কফ ও মেদোবহস্রোতঃ সকলকে আনৃত এবং মলকে শুক্ত করে। তাহাতে রোগী হুজুল, বজিশূল, বিব্যমধা ও অস্বাস্থ্যে কাতর হয় এবং অতিকঠে অধোবায় মৃত্র ও মল ত্যাগ করে। ক্রমণঃ শ্বাস, কাস, প্রতিশ্রায়, দাহ, মৃচ্ছা, ভৃষ্ণা, জর, বিমি, হিকা, শিরোরোগ, মনোবিত্রম, শ্রবণবিত্রম এবং বাত হকোপজন্ত অপরাপর বিবিধ পাঁড়ায় পাঁড়িত হইয়া থাকে।

অথোক্তোদাবর্ত্তস্ত চিকিৎসা।

ঁহসুমাক্ষিকাসক,খেঃ পিটেইডিং বিনিলিভাম্। যুহাভাজাং ওদে ভাজেছদাবভবিনা≗নীম্∎

অতঃপর রুক্ষাদি সেবন জন্ম কুপিতবাতক্বত সংখ্যাজাত উদাবর্ত্তের চিকিৎসা কাথত
২ইতেছে —হিং, মধু, সেন্ধব লবণ, একত্ত পেষণ করিয়া তদ্বারা বর্তি নির্মাণ করিবে।
ঐ বর্তি ঘুডাভাক্ত করিয়া গুহে প্রবেশ করাইয়া দিলে বিরেচন হইয়া উদাবর্তের প্রশান্তি
হইয়া থাকে।

ফলবর্তিঃ।

মদনং পিয়লী কুঠং বচা গৌরাক সর্বপাঃ। শুড়কারসমাযুক্তাঃ ফলবর্ত্তিরিহোচাতে । মদনফল (ময়না ফল), পিপুল, কুড়, বচ,
যবকার ও খেতদর্বপ প্রত্যেক সমভাগ,
গুড় সর্বসম। গুড়ে কিঞ্চিৎ জল দিয়া
আগ্নিতে পাক করিয়া, তাহাতে ঐ
সকল চূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া বর্ত্তি গুস্তত করিবে।
ইহারই নাম ফলবর্তি, গুহুদ্বারে এই বর্তি
প্রয়োগ করিলেও উদাবর্ত্তের নিসুতি হয়।

অথানাহ-লক্ষণম।

আমং শকুষা নিচিতং ক্রমেন্
প্রো বিবন্ধং বিশুণানিলেন।
প্রবর্তমানং ন যথাক্রমেন্
বিকারমানাহম্দাহরন্তি ॥
তিন্দিন্ ভবন্ত্যামসমূল্যনে তৃ
তৃষ্ণাপ্রতিষ্ঠামনিরোবিদাহাঃ।
আমাশরে শ্লম্থো গুরুষং
হৃৎস্তম্ভ উদ্পার্বিষ্ঠনক ॥
স্তম্ভ: কটাপৃষ্ঠপুর্বিষ্টেন
শ্লোহণ মুন্ছা শকুতন্চ ছদ্দি:।
শোঘন্চ প্রশান্ত্রে ভবন্তি
তথালসোক্রানি চ লক্ষণানি ॥

আনাহের কারণ ও লক্ষণ।— আহারজনিত অপক রদ বা পুরীষ ক্রনণঃ দঞ্চিত ও বিভণ বায়ু কর্তৃক বিবদ্ধ হইয়া ব্যাঘণ্যপ্রে নি.স্ত না হইলে, তাহাকে আনাহ রোগ বলা যায়।

আমজ আনাহ রোগে তৃষ্ণা, প্রতিশ্রার, মস্তকের জালা, আমাশরে শল ও গুরুতা, হাদরের স্তর্কতা এবং উদ্যাবের অপ্রবর্তন, এই সকল লক্ষণ প্রকাশ পায়।

মলসঞ্চর-জনিত আনাহে, কটা ও পুষ্টের স্তব্ধতা, মলমুত্রের রোপ, শূল, মূর্চ্ছা, পুরীষ-বমন ও শোথ এবং অলসক-বোগোক্ত আগান ও বাতনিরোধাদি লক্ষণসমূহ লক্ষিত হয়।

অথানাহ-চিকিৎসা।

--°*°-

তুল্যকারণকায্যত্বাহ্ননাবত্তগ্রীং ক্রিয়ান্। আনাহেরুচ কুব্রীত বিশেষশচাভিধায়তে॥ উদাবর্ত্ত আনাধ এই উভয় রোগেরই উৎপত্তির কারণ ও কার্য্য এক প্রকার ; অতএব উনাবর্ত্তের যে সকল ক্রিয়া উক্ত হইল, আনাহ রোগেও তাহাই করিবে। যাহা বিশেষ আছে, ভাহা ক্থিত হইতেছে ;—

ত্রিরৎকৃষ্ণাইরী হকেন স্থিচতু:পঞ্চালিকা:। ত্তড়েন,তুল্যা গুটিকা ইরত্যানাইমূলণম্॥

তেউড়া ২ ভাগ, পিপুল ৪ ভাগ, হরীতকী ভোগ এবং গুড় সরসম অর্থা২ ১১ ভাগ; এই সকল দ্রব্য একত্র মন্দন করিয়া যথোপযুক্ত মাত্রার স্তাড়কা করিবে। এই গুড়িকা সেবনে প্রবল আনাহ বিনষ্ট হয়।

বচাভয়া হিত্তক্ষা বশ্ক ক্তান্স পিললাকা তিবিধান্সক্তান্। ভক্তেনাল হৈ বিষ্ট্ৰাত ক্তানা ক্ষেদা ও কিতৌদনালী।

বচ, হবতিকী, চিতা, ঘবক্ষার, পিপুল, আহেচ ও কুড়, ইহাদের চুর্গ উষ্ণ জ্ঞানের সহত পান ক:ব্যা হিতাহারী হইলে অতি সহর অনাহ ও মুচ্বাত প্রশামত হয়।

িসুদ্ধরী চকাজ্যম । প্রাক্ষাধ্রেণ ভাবছেও। বটকা মুক্ষী হাস্তাঃ কোষ্ঠান্চানাহভেদিকাঃ ॥

অরুণমূল তেউড়া, হরতিকী ও খ্রামমূল তেউড়া, ইহাদের চূর্ণ মনসাসিজের আঠায় ভাবনা দিয়া বটিকা করিবে। অনুপান— গোমূত্র। ইহ আনাহ-রোগে প্রদান ভেদক ঔষদ।

> ফলক নুনক। নার্চনোন্তং বিশ্ব কথুলা দুক্তসমগ্রাম্। প্রুচিকবে। ১চব পুনন বিচে ুনানি সকেলে বিশানি পঞা। তেনে, সন্বোধ সহ জজ্জানি লাব্যাক। নিগতে প্রান্ত্তা। বিহু প্রান্তং লব্যং ভ্রান্ত্রে। প্রান্ত্র্যান্ত্র্যাম্যাম্।

্বরেচনব লে: ক্ত কল ও মূল এবং হিং,
আকলমূল, দশমূল, মনসাসিজ, চিতা ও
পূন্নবা এত্যেক সমভাগ; সর্ক্সম পঞ্চলবণ
(দেশ্ব, বেট, সচল, সামুদ্র ও ওছেদ লবণ);
এই সকল দ্রবা তেল ও গোমুত্রে জর্জারত
কাররা একটে গাড়িতে স্থাপনপূক্ষক একখান

শরার দ্বারা হাড়ীর মুণ বন্ধ ও মৃত্তিকা দ্বারা সন্ধিস্থান প্রলিপ্ত করিবে। এ গড়ী চুল্লাতে বসাইয়া নিমে জ্ঞান দিবে ও তম হইলে নামাইয়া চূর্ণ করিবে। এই লবণোষ্ধ জন্ধন পানের সহিত সেবনায়। হথা আনাহবেদনা-নিবারণের শ্রেষ্ঠ উষ্ধ।

রাঠধুমবিজ্যকাষ- এড়মীলাগিণাটিতী। ভালেহজুইনমা নাভাগিবেধানাং প্রভুং ॥

মদনফল, গৃহবুন (ক্লা), বিট্লবণ, জিকটু, এই দকল ত্রা উপযুক্ত পরিমাণে গুড় ও গোমুজের দহিত পাক ক্রিয়া অসুঠদদুশ স্থ্য বৃদ্ধি প্রস্তুত ক্রত গুছানেশে প্রয়োগ কারলে আনাহশুল বিন্ত হ্যা!

ত্রিকটুকাদ্য, বভিঃ।

ব্রিজিক) করের প্রক্রের স্থান করে। মধুনি ওড়ে বা পাক ১১,০০৮ মানুষ্ঠ সামি তা বিজেন। ব্রিজিয়া দুজেকা শ্লেম জানি ২৮৮ ডলে স্থান জা। আনোল মুক্রকারণ বিশ্বমান ১২৫ ডলে স্থান ॥

(ডিকটা, দিনে গোনার কান, গুড় কবা, মধু পল-মিট্যেকে ; বিকটা, দিনে গোনার সমত, গোলাগ্র বাজি কার্যে কেটিং ! বুলচকা)

ত্রিকট্ট, সেরন্ত নের্ভনন্ত, গৃহন্ত কুছুও হরীতকী, ত্রিকট্ট, মরনাফল মেন্ত্র নতাল, ৮ তোলা মধু, গুড় এক এক ভাগ; জয়পা ২ তোলা এট সম্প্ত পাক করিনা স্কামুন্ত পানকুনী ও আমকলের পরিমিত বৃত্তি প্রস্তুত করেবে। কেহ কেহ বিটকা প্রস্তুত করিবে। ত্রিকট্ট প্রস্তৃতি সম্ভাগ লহাত ব্যেল্য করিলে। ক্র গুলা, পাপুরোগ, জিবজিতে মৃত্যাগ্রাহ্য উহন ভ্রে প্রয়োগ করিলে। প্রস্তৃত রোগ বিনষ্ট হয়। আনাহ, উদাবর্ভ, উদর ও ত্যেরাগ নষ্ট হয়।

नाताहरूनी।

খওপানং তির তাসমধুপাতে কিবছুলি বং গ্রন্থা। প্রাগ্রেডাওনজ্ঞ মধুনা বিভূজিপদকং নারা লি**হাব ॥** এত**দ্**গাচুপুরীষে দেয়ং তিজৈপদাবতে ॥ মধুরং নরপ্তিযোগ্যং চুর্বং নারাচকং নায়া॥

চিনি৮ তোলা, ডেউড়া চূর্ণ ৮ তোলা এবং পিপ্লো চূর্ণ ২ ডোলা; এই সকল একত্র করিয়া ২ ভোলা মানার ভোজনের পুর্বে মধুর সহিত লেহন করিলে মলকাঠিক্ত নিবারিত হয়। ইহা স্থাহ।

গুড়াফকম্।

সব্যোৰপিপ্লনীমূলং ত্রিবৃদ্ধন্তী চ চিত্রকম্। তচ্চুৰ্বং শুড়দংমিশ্রং ভক্ষেৎ প্রাত্তক্ষিতঃ ॥ এতদ্পুড়াষ্টকং নামা বলবর্ণায়িবর্দ্ধনম্। ডদাবস্তুসীহগুল্ম-শোশপাশুক্ষরাপহম্॥

ত্রকটু, পিপ্পদীমূল, তেউড়ী, দস্কী ও চিতা এই সকল সমভাগে গ্রহণ করিয়া সমস্ত চুর্ণের সমান গুড় মিশ্রিত করিবে। ইহা প্রাতঃকালে যথামাত্রায় সেবন করিলে উদাবর্ত্ত, প্লীহা, গুল্ম, শোথ ও পাঙ্রোগ বিনষ্ট হয় এবং বল বর্ণ ও অধি বৃদ্ধিত হয়।

देवनागथवरी।

প্রণা ত্রিকটু প্রতঞ্চ দ্বিগুণং কানকং তথা।
থানকুনীরসৈরম-লোণিকারা রসৈঃ কুতা ॥
ওড়িকোদর জন্মাদি-পাঙ্গানরবিনাশিনী।
দিমিকুষ্ঠগাসকঙ্-পিডকাশ্চ নিহ্স্তি চ॥
ভড়া সিদ্ধকার চেরং বৈজ্ঞাবিশ ভাষিতা॥

হরীতকী, ত্রিকটু, রদসিন্দূর, এই সকল এক এক ভাগ; জয়পাল ২ ভাগ ইহাদিগকে গানকুনী ও আমকলের রদে মদ্দিত করিয়া বটিকা প্রস্তুত করিবে। এহা সেবনে উদাবর্ত, গুলা, পাণ্ণুরোগ, ক্রিমি, কুষ্ঠ ও গাত্রপুক প্রভাত রোগ বিনষ্ট হয়।

নারাচরসঃ।

স্তগন্ধৰ তুক্যাংশং মরিচং স্ততুল্যকম্।
টঙ্গণং পিপ্ললী শুঠী দ্বৌ দ্বৌ ভাগৌ বিমিশ্রহে ॥
সর্বভুল্যানি বীজানি দন্তীনাং নিস্তবাণি চ।
মুহাক্ষারেণ সংযুক্তং মর্দ্ধমেৎ দিবসএয়ম্॥
নারিকেলোদরে স্থাপ্যং মহাগাঢ়াগ্রিনা ততঃ।
তৎ কধং পাঁচরেৎ ক্ষিপ্রং অল্লব্রিয়া নিধাপরেৎ ॥
তক্ষধ্যনাভিলেপেন রাজ্যবোগ্যং বিরেচনম্।
বটিকা লেপমাত্রেণ দশবারং বিরেচয়েৎ।
তদগন্ধায়ানাত্রেণ বিরেকো জায়তে গ্রুনম্॥

পারদ, গন্ধক, মরিচ প্রত্যেক এক এক ভাগ, সোহাগা, পিপুল, শুঠি প্রত্যেক ২ সেই কাথ সহ গ্রত পাক কংবল পান কবিলে ভাগ: সর্বাসমান নিশ্বয় লঘদ্ভীবীজ। এই উদাবর্ভ বোগ নিশ্বর প্রশাহত হয়। (এই সমদায় সিজের আটায় ৩ দিবস মর্দ্দন করিয়া স্বতের কল্প জবা নাই।) নারিকেলের মধ্যভাগে স্থাপন পূর্বক প্রবল পাক করিবে। ঔষণ উদ্ধৃত : করিয়া লইয়া বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই ঐয়ধ ছারা নাভিদেশে প্রলেপ দিলে বা ইথার গন্ধ আঘাণ করিলেই বিরেচন হয়।

त्रश्मिष्धार्जिमे तमः।

শুদ্ধং পারদটকণং সমরিচং গক্ষাম তুলাং ত্রিবৃদ্-वियो ह कि छना उट्टो नवखनर देक्शालहर्नर किर्पर। খল্লে দণ্ডযুগং বিমন্ধা বিধিনা চাকস্ত পত্ৰে ততঃ থেদং গোময়বহিংনা চ মুহুনা স্বেচ্ছাবশাডেদক: ॥ অভৈকপ্রমিতো রুসে। হিম্কলৈ: সংস্বেতিতা রেচয়েদ यानस्त्राक्षकलः शिर्वपश्चि नदः श्रवाकः परशापनम् । আমং সর্বভ্রং ফুলীর্ণমুদর ওলা বিশ্বল হরেদ্ वर्क्ष्मी श्विकरत्रा वला मध्यणः मस्वामयक्षः मनः॥

শোধিত পারদ, সোহাগা, মনিচ, গুন্ধক, এই সকল ডবা সমভাগ: গন্ধকের বিভূণ তেউড়ী ও আতেইচ এবং ১ নয়তণ জয়পাল চুর্ব একতা করিয়া খলে আকন্দ পাতার রসে ২ দণ্ড কাল মদন করিবে। অনন্তর ঘুটের অগ্নিতে মুহু পাক করিয়া ১ রতি পরিমিত বটা প্রস্তুত করত , শাতল জলের সহিত করিবে। উঞ্চল সেবন না করা পর্যান্ত দান্ত হইবে। পথা—দুধি ও অন্ন। ইহাতে দর্মপ্রকার আম, উদাবর্ত্ত, গুল্ম প্রভৃতি রোগ বিনষ্ট হয় এবং অগ্নি বৰ্দ্ধিত হইয়া থাকে।

শুষ্কমূলাদ্যং য়তম্।

মূলকং গুক্ষমার্ক্তঞ্চ ব্র্বাভূমূলপঞ্চম্। আরেবতফলঞাপি পিষ্টা তেন পচেৎ মুভুষ্। তৎ পীতমাত্রং শময়েছদাবর্ত্তমসংশয়ম। শুক্ষিতি মূলকার্দ্রকারো বিশেষণমিতি ডবণ:।

শুক্ষমূলা, আদা (ভন্থপের মতে—শু ঠ) পুন-नेवा, वृह९ शक्षमून ७ (माँ नानकन, এই मकन দ্রব্য পেরণ করিয়া, ভাগার ক্রাথ প্রস্তুত করিবে।

স্থিরাচং দূরণ।

जित्र क्रिकीश शत्म रागः मुर्भा'के इंडिके बेर्धा प्रस्ति । বিভাৰমানা ভিনা ভিনাৰত প্রাপ্ত হ'ব হ'ব প্রতিক্রাস্ট দ

विश्वविद्यात्, शुरुवात्, (मान्यः)वाहम নাটাকরত্ব এই সক্ষ দুয় প্রাণ্ট হ প্র প্ৰিমাণে এট্য ৮০ - ৭ এবং ১ পাক কবিবে। 5७९,१९ क्या घर ६४ १ / १८७ सामारीया क्र া কাথের সহিত াঃ ও এর পাক করিয়া উপত্তত মান্ত্ৰায় এখন আ গে প্ৰতিকৰ্ম কাত 21412 5 211

व्यथ भगानया- रासिश।

উদাব্রে প্রান।

ক্ষেত্রস্বাধিক ক বছর । ১৮১৪ - । **匈哥斯的** 等性 自信的 化氯甲烷 病性电影形 आफ्रोन्कानुभवमा नवरग्य वावच दालक (क्रान्स्तक ,खदुर्) र देश नेत्र्य ॥ **ंक्ष**ातिक विक्रियों स्थानिक विकास करें । 마4쪽: 전투2 포함이 (하면로 게임) # 5 #

মিন্ধাৰণ, বিলেচন, বাস্ত্রজিলা, ফলবর্ত্তি, তৈলাদি মদেশ, বৰ এবং খল, মূত্ৰ ও বায়ুৱ নিঃসারক সমস্ত খবা , এ,মা উলক ও আনুপ मारत्य तम, ८७१५ छोउँ ८७४, योकनी मन्न. কচি মুলা, খোঁদাল পএ, তেউড়া, তিল, দিজপাতা, ভটা, ছোলন্স, যবকার, হ্রীতকী, লবন্ধ, হিন্ধু, কিন্মিন্, গোমুত্র ও দৈর্ঘ্যকর এই গুলি উনবিত্ত রোগে পথা।

উদাবর্ত্থপথ্যানি।

বননং বেগরোধক শ্মীণ তানি কোদ্রন্। নালাতশাকং শাল্কং জাধাং কর্কটাফলম্॥ পিশাকমালুকং সর্বং করারং পিপ্রবক্তম্। বিষ্ট্রানি বিক্লানি ক্যায়াণি গুলাব চ। উদাবতী প্রযুক্তন বর্জ্যেৎ সূত্ত নর ॥

বমন, নলমূত্রা,দর বেগরোন, শমীধান্ত (মুগ মাষ প্রভাত কলার), কোদোধান্ত, নালতা শাক, কুমুদাদির মূল, জাম, কাকুড়, তিল-কল্প, সর্ববিপ্রকৃতি, বিষ্টণ্ডা দ্রবা, বিরুদ্ধ দ্রবা, ক্যার দ্রবা ও গুরুপাক দ্রবা, এই সমস্ত উদাবর্জরোগির প্রিভাঙ্গা।

আনাহরোগে পথ্যাপথ্যম্।

উদাবর্ত্তহিতং সর্বাং পাচনং লজনং তথা।
আনংহে তু যথাযোগাং যোজয়েয়ভিমান ভিষক ।
অপথানি প্রদিয়ানি যানুদাবার্ত্তনাং পুরা।
অবাংকা তু পারহরেৎ তানি সর্বাণি যজতঃ ॥

জ্ঞানী বৈশ্ব আনাহরোগে উদাবর্ত্তোক্ত দকল প্রকার ক্রিয়া এবং লঙ্খন ও পাচন মুক্তি অন্তদারে প্রয়োগ কবিবেন।

উদাবর্তনোগে যে সকল অপথা উক হটিয়াছে, আনাহরোগেও সেই সকল অহিত-কর, অত্তর্ব নত্নবান্ হটিয়া তাহা পরিত্যাস করা কর্ত্বিয়া

ইত্যানুধের্বন সংগ্রহে উনাবর্তানাহাসিকাবঃ।

অথ গুলারোগাধিকারঃ।

অথ গুলা-নিদান ।

ত্রী বাতাদটোতভার্থং নিধাতারবিতারত।
কুর্বান্তি প্রথম গুলা কোঠাতথা ছিলপ্রিমা।
তত্ত পঞ্চবিধা তানা পরিগুলা হিবতার।
ক্রাভ্যোরভারে প্রতিঃ সকারী বাদি বাটলাঃ॥
বৃত্ত-চয়াপচয়বান্ মান্তথ্য ইতি কার্টিছা।
মান্তভারিয়াতে দোবৈঃ সমব্রেরাপি চোডিইটা।
মান্তভারিয়াতে দোবিধা সমব্রেরাপি চোডিইটা।
মান্তভারিয়াতের দোবিধা সমব্রেরাপি চোডিইটা।
অক্ষিণি কুজ্বিয়াত্র-বাতভাস্থিক্তন্য।
আনাহন্টের্বাভর্য স্বাস্থ্যমন্ত্রালায়েং॥

বাতাদি দোষ্ড্রয়, অনুচিত আহার বিহা-রাদি ধারা অতার্থ কুপিত হইয়া কোঠ্যধ্যে গ্রন্থিকপ গুলা রোগ উৎপাদন করে। ইহা পাঁচ প্রকার। পার্থ্যুর, হাদ্যু, নাভি ও বস্তি এই পাঁচটি, গুলাের অবস্থিতি স্থান।

উর্দ্ধে হৃদয় এবং অধোদিকে বস্তি, ইহার মধ্যে কোন স্থানে সঞ্চরণনাল বা অচল, কদানিং পুই বা কদাচিং অপুই, যে গোলা-কার গ্রন্থি জন্মে, ভাহাকে গুলা কছে।

সেই গুল পাঁচ প্রকার, যথা—বাতিক, পৈত্তিক, শ্লোলক, সালিপাতিক ও রক্তন। ইহা ল্লী পুরুষ উভয়েরই হয়। **খতু-শো**ণিত ক্ষনিভ গুল কেবল ল্লীদিগেরই হইয়া থাকে।

অক্চি এবং মল মৃত্র ও অধোবায়ুর কটে প্রবর্ত্তন, অনুকৃজন, আনাহ ও বায়ুর উর্দ্ধগতি এই সকল লক্ষণ সর্বপ্রকার গুলা রোগেই দৃষ্ট হইন্না থাকে।

অথ গুলা-চিকিৎসা।

বায়ো: প্রশমনং কার্য্যাদে) গুলাচিকিৎসতা। জিতে তল্মিন্ বলী দোষ: মুখেনাকো নিবার্য্যতে। গুলাচিকিৎসক অগ্রে বায়্প্রশমের চেষ্টা করিবেন, কারণ বায়ুর শাস্তি হইলেই অন্ত প্রবল দোষ সহজেই নিবারিত হয়।

সিদ্ধমেকানশবিধং শূপু মে গুলভেবক্রম্। লেহনং স্বেদনকৈব নির্মান্ত্রপাসনম্ ॥ বিবেকব্যনে চোজে লজ্বনং বৃংহণং তথা। শ্যনকাবসেকক শোণিতস্তাগ্রিকর্ম্ম চ। কারয়েদিতি গুল্মানাং যথারস্কা চিকিৎসিত্য ॥

শুলারোগে এই একাদশবিধ কর্ম্ম কর্ত্তব্য; যথা—েরেহন, স্থেদন, নির্ভ্রহণ, অমুবাসন, বিবেচন, ব্যন, লজ্মন, বৃংহণ, শ্মন, রক্তাব-দেচন ও অগ্নিকর্মা।

পের স্থাবন বিধিনা গুলারে গোপলামাল রাব।
তথ্যাদনেন বিধিনা গুলারে গেমুপাচরেব।
সেহ স্থোন ও বিরেচন ম্বারা গুলা শিথিল
হয়, অত্যাব এই বিধি অবলম্বন করিরা গুলারোগের চিকিৎসা করিবে।

লঘুরং দাপনং স্লিগম্কং বাতাত্রলোমনম্।
বুংহণং যদ্ ভবেৎ সর্বং তদ্ধিতং সর্বগুলিনাম্।
স্লেদ্ম্য ভিষণা স্বেদ্ধ করব্যা গুল্মণাপ্তরে।
প্রোতসং মার্দ্ধাং কৃষা জিয়া মার্স্তমূর্ণম্।
ভিরা বিবন্ধং স্লিগ্রন্থ স্বেদা গুল্মন্পেইতি॥

লঘু অ:ভোজন এবং অগ্নিদীপক স্নিগ্ন উষ্ণ ও বাতামুগোমক ঔষধ সেবন: যদ্যরা দেহের প্রষ্টিসাবন **২**য়. তৎসমূদায় আহার বিহার, গুলারোগে হিতকর। রোগ-পান্তির জন্ম অগ্রে সেহপানাদি দারা স্বোগিকে স্থিয় কবিয়া স্বেদ প্রয়োগ চিকিৎদকের কর্ত্তবা। কারণ ক্ষেত্রেদ খারা শ্রেতঃসকলের মৃহতা, উল্বণ বায়ুর 3 7 ও মলবিবন্ধতার নাশ হইয়া গুলারোগের শস্তি হয়।

কুর্ত্তীপিভেট্টকাবেদান্ কারয়েৎ কুললো ভিষক্।
উপনাহাশ্য কর্ত্তব্যাঃ স্থোঞাঃ শাবণাদয়ঃ॥
(কুর্ত্তাবেদঃ— বাতহরকাথাদিতিঃ কাঞ্জিকাদিতিবা
বটিটিতঃ বেদঃ। পিওবেদঃ—উৎসিন্নাবাদিপিওকৈবরবৈদ্ধে বেদঃ। ইটুকাবেদঃ—ইটুকরা প্রতন্তয়া বাতহরকাথসিক্তয়া বেদঃ। শাবণবেদঃ,—"কাকোলাগিঃ
সবাতয়ঃ সর্বায়য়বাসংযুতঃ। সান্পমাংসঃ স্থাবয়ঃ
সর্ববেহসমন্তিঃ। স্থোকঃ লাইলবণঃ শাবণঃ পরিকীর্তিতঃ॥")

গুলারোগে কুন্ডীষেদ, পিওম্বেদ ও ইষ্টকা-মেদ এবং শাহণাদি প্রলেপ হিতকর। 'বাতদ্ব অত্যুক্ত কাথ বা কাঞ্জিক দ্বারা একটা ঘট পূর্ণ করিয়া তদ্বারা স্বেদ প্রদান করাকে কুন্ডীম্বেদ; দিদ্ধ মাধাদির পিও বহুবন্ধ করিয়া তদ্বারা ধে মেন দেওয়া যায়, তাহাকে পিওম্বেদ; ইষ্টক অগ্নিতে প্রতপ্ত ও বাতহর কাথে দিক্ত করিয়া তদ্বারা স্বেদ প্রদান করাকে ইষ্টকাম্বেদ কহে। শাবণ উপনাহ বাত্যাধিতে উক্ত হইন্বাহে।

স্থানাবসেকো রক্তস্ত বাগ্গনধ্য নিরাব্যধঃ। যেদ'মুলোমনধ্যৈর প্রদন্তং সর্বাগুল্মিনাম।

স্থির গুলে গুল-স্থান হইতে রক্তমোক্ষণ এবং বালসামান ক্ষাবোদেশস্ত ক্লা শিল্প বিদ্ধ কাংবে। স্বেদ ও অঞ্লোমন ক্রিয়া, সকল গুলা রোগেই প্রশৃষ্ট।

পেয়া বাত্তইর: সিদ্ধাং কৌনখা ২থজা রসাং। খড়াঃ সপৰ ফ্লাশ্চ গুলিনাং ভোজনে হিতাঃ।

বাতহব ঔষণা'দ (দশমূল্যাদি) ছারা সিদ্ধ পেলা, কুলথ কলায়ের যুব, এবং ভাগল মাংসবস ও বৃহৎপঞ্মূলাসদ্ধ খড়যুধ গুলা-রোগির হিতকর।

অথ বাতজগুল্ম-লক্ষণ : ।

ক্ষণাল্লপানং বিষ্যানি নাত্ৰ।
বিচেষ্টনং বেগবিনি এইশট।
শোকোহ ভিদাতোহ তিমলক্ষ্যশট নিরল্লতা চানিলগুলহেতুঃ ॥
বঃ স্থানসংস্থানক্ষণাবিকল্লং
বিড্বাতসকং গলবক্ত শোবন্।
স্থানাক্ষণ ছং শিশিবজনক্ষ
কংক ক্ষিপাখাংস শিলোক্ষণ ॥
করোতি জার্ণে স্থাধিকং প্রকেশিং
ভুক্তে মুনুপাতি হশট।
বাতাৎ সাভ্যোন চ ততা ক্ষকং
ক্ষায়তিক্তং কটু চোপশেতে॥

বাতগুলের নিদান ও লক্ষণ; অধিক বা অল্লমাত্রায় অথবা অসময়ে রুক্ষ অরপ। নীয় দেবন, বলবান্ ব্যক্তির সহিত গৃত্ধ-বিগ্রহাদি-বিক্তমুচেষ্টা, মল-মুত্রের বেগধারণ, শোক, আঘাত-প্রাপ্তি, বিরেচনাদি ধারা অতি-শায় মল।ক্ষয় এবং অনশন এই গুলি বাত-প্রস্তার হৈত।

বা ভগুলোর অবস্থিতির কোন নিয়ম নাই. কখন নাভিতে, কখন পাশ্বে, কখন বা বস্তি দেশে চলিয়া বেড়ায়। ইহার আক্তিও দর্বাদা একরুণ পাকে না; কখন কুদ্র, কখন বুহং, ক্থন গোলাকার, ক্থন বা দীঘাকার ত্ইয় এইরূপ যন্ত্রণারও স্থিরতা নাই. थाक । ক্থন অল, কখন মহং, কখন সূচীবেদবং, কখন বা নানারণ যাতন। উপস্থিত হয়। ইহাতে কোঠবদ, অধোধায়ৰ অপ্রতি, মুগ ও গলনালীর শোষ, শরীরের খ্রাব বা অরণ্-বর্ণতা, শীতজ্বর, এবং সদয়, কুক্ষি, পার্থ, রন্ধ ও মস্তকে বেদনা হইয়া থাকে। ভক্তাহারের পরিপাকাবস্থায় রোগের অধিক প্রকোপ হয়, কিন্তু আহার করিলে কিছু উপশ্ম হয়। রুক কষায় ভিক্ত ও কটু দ্রব। সেবনে বাতগুলোব তারুপুশ্র হয়।

অথ বাতজগুল্ম-চিকিৎসা

বাভগুলো কফে বৃদ্ধে বা ত্তিক, বা দিনিষাতে।

বাভজগুলো কফ প্রবল হইলে বমনকারক
চূর্ন, ফলবর্ত্তি ও গুড়িকাদি প্রয়োগ করিবে।
বাতারিতৈলেন প্রোয়ুতেন প্রাসনেতেন বিবেচনং তি।
সংস্থেদনং ক্লিক্ষতিপ্রশক্তঃ প্রভল্পনকোধকতে চ গুলে।

বাতজ গুলো হয় ও হরীতকীচুর্ণের সহিত এরগুটভল দেবন এবং স্নেহম্বেদ প্রয়োগ বিধেয়।

স্বৰ্জিকাকুষ্ঠসহিতঃ ক্ষারঃ কেতকীজোহপি বা। পাঁত**ভৈলেন দম**য়েদ্ গুলাং প্ৰনসম্বৰ্ম।

সাচিক্ষার ২ মাষা, কুড় ২ মাষা ও কেতকী-জটার ক্ষার ৪ মাষা এই সকল তিলতৈলের

(কেহ বলেন, এরগু<mark>ঠৈলের) সহিত সেবন</mark> ক্রিলে বাত**ন্ধ** গুলা বিনষ্ট হয়।

মাতুলুকরসো হিকু দাড়িমং বিড়সৈদ্ধবম্। **১** ক্ৰামণ্ডেন পাতবাং বাস্ত্ৰাক্ষাপ্ৰম্।

টাবালেবুর রদ, হিং, লাড়িন, বিট্লবণ ও দৈন্ধব লবণ, এই সকল দ্রব্য স্থ্রামণ্ডে প্রক্ষেপ দিয়া হাহা পান করিলে বাতজ গুল্ম প্রশমিত হয়।

নাগরাদ্ধপানং পিঠা ছে পলে লুঞ্চিতত চঃ। তিলত্তিকং ওড়পানং ক্ষাত্রগোঞ্চেন বা পিবেং। বাতওক্ষমুদাবতং গোনিশুলঞ্চনাশয়েং॥

শুঁঠ ৪ তোলা, ভুষর হিত তিল ২ পল, গুড় ১ পল এই সকল পেষণ করিয়া উষ্ণ **হুগ্নের** সহিত সেবন কবিলে বাতপ্তন্ম, উদাবর্ত্ত ও যোনিশূল প্রশাসত হয়।

পিবেদেন এতৈলং বা বারুগাম গুমিলিতম্। ওদের তৈলং প্রদা বাতওকী বিবেল্লরং॥

বাক্ষণীমণ্ডের কিংবা উষ্ণ **গুরের সহিত** এব ওতেল পান কারিলে যথাক্রমে কফার্য ও পিঙারুগ বাতিওলা উপশ্যিত হয়।

নাধ্যেজ্প ওদ্ধান্ত বংশ নতা চতুপালন্।
ক্ষাবোদকেই গুলীতে ক্ষাবিশেষক পাধ্যে ।
বা চন্ডান্দ্ৰিক গুলুসাং বিষমজ্বন্।
কছোগা বিজ্ঞান্তি কোৰং নাশ্য চ্যান্ড তৎ প্রাঃ।
এবস্থা সাধ্যিতে ক্ষাবে ভোকমপাত্র দীয়তে।

প্রিম্নত ও গুদ্ধ রশুন ৪ পল, ছুগ্ধ ও জল (মিশ্রত) ২২ পল একত্র পাক করিয়া ছগ্ধাবশেষ থাকিতে নামাইবে। এই ।ছুগ্ধ (অগ্নিবলার্ন্নারে) অল্ল মাত্রায় পান করিলো বাতগুলা, উদাবত, গ্রদী, বিষমজ্বর, হৃদ্রোগ, বিদ্রাধি ও শোষ আশু নিবারিত হয়।

ভিত্তিরাংশ্চ মুর্বাংশ্চ কুর্টান্ কৌশ্বর্ভকান্।
সাগিঃ শালিং প্রদরাক বাতন্তব্যে প্রয়োজমেং।
ভিত্তিরি, ময়ূর, কুকুট, বক ও বর্ত্তক্
(ভাক্ই) পক্ষীর মাংস এবং ঘৃত, শালিতপ্ত্রের অন্ন ও প্রদন্তা (মন্তবিশেষ) বাতপ্তব্যরোগিকে পথা দিবে।

অথ পিত্তজগুলা-লক্ষণম্।

কট্মতীক্ষোদংবিদাহিত্তক্ষ-কোধাতিমতাকৈততাঁশদেবা। আমাভিঘাতো ক্ষধিবঞ্জইং পৈত্তত্ত গুলাতা নিমিওনৃত্তন্ । অৱঃ পিপাসা বদনাক্ষরাগঃ শূলং মতজ্জীর্যাতি ভোলনে চ। সেদো বিদাহো এণবচচ গুলাঃ স্পর্শাসতঃ পৈত্তিকগুলারূপন্।

পিত্তম্বনিত গুলোর নিদান ও লক্ষণ। কটু
আয় তীক্ষ উষ্ণ বিদাহী ও কক্ষ দ্রবা ভোজন,
ক্রোধ, অধিক মদ্যপান, অতান্ত রৌদ ও অগ্রি
সন্তাপ দেবন, বিদগ্ধাজীণজনিত তুই আমরদের
আধিকা এবং তুই রক্ত, এই গুলি পৈত্তিক
গুলোর হেতু। ইহাতে জব, পিপাসা, সমস্ত
আঙ্গের বিশেষতঃ মুণের লোহিত্রবর্ণিত, আহারের
পরিপাকাবস্থায় অতান্ত বেননা, লন্ধাগম ও
বিদাহ এই সকল লক্ষ্ণ প্রাকাশ পায়। পেত্তিক
ভ্লা, ব্রণবং স্পর্শানহ ইইলা পাকে।

অথ পিত্তজ গুল্ম-চিকিৎসা।

পিতে তুরেচনং নিমাণ রাজে রক্তা নেংক্ষণম। বিধ্যোক্তনোদিতে গুলো পৈতিকে বংসনং (২৩ম্। কক্ষোক্তনাত সম্ভতে সপিঃ প্রশানন প্রমা।

পিত্তজ্ব গুলো স্বিশ্ব বিবেচন ও বক্তজ্ব গুলো বক্তমাক্ষণ ব্যবস্থেয়। সিম্নোফ্য-কারণ-সংগ্র পৈত্তিক গুলো বিবেচন এবং ক্রক্ষোক্য-কারণ-জাত পৈত্তিক গুলো স্বতপান হিতকর। কাকোলাদিমহাতিজ্য-বাসালোঃ পিতত্ত্বিলেন। ক্ষেহিতং প্রংময়েৎ পশ্চাদ যোলয়েম্বজিকপ্রণা। কাকোলাদি গণের কাপ ও কক্ষ স্বারা সাধিত কাকোল্যাদি স্বত অথবা কুঠোক্ত মহা-তিক্তক স্বত বা বক্তপিত্যোক্ত বাসাত্ত স্বত পান করাইয়া রোগিকে স্লিয় করণানস্তর বিজি প্রয়োগ স্বারা তাহার বিরেচন করাইবে।

স্থিধোঞ্চকে পিত্তপ্তলে কম্পিলং মধুনা লিহেৎ। বেচনার্থে রসং বাপি ছাক্ষায়াঃ সন্তড়ং পিবেৎ॥ স্নিধ্যোক্ষ-কারণজনিত পিত্তপ্তলো বিবেচনোর

নিমিত্ত মধুব সাঁহত কমলাগুঁড়ি অথবা গুড় সহ দোকারস পান করিবে। পিত্তুলো ত্রিবৃচ্চ্বং পাতবাং ত্রিফলাম্বনা।
অভগং ক্রাক্ষা খাদেৎ পিতৃত্তনী গুড়েন বা॥
(ত্রিফলাস্বনা বিফলাকাপেন।)

পিতপুনী ত্রিফলার কাথের সহিত তেউড়ী চূণ অথবা দ্রাফার সহিত কিংবা গুড়ের সহিত গবীতকী সেবন করিলে উপকার দর্শে। বে'হিণা কটকা নিমো মধক ত্রিফলাস্বচঃ। কবাংশারমাণা চ পটোলভিবতে পলে।

বোহণা করকা নিমো মধ্ক । একলা ২০১ ।
কৰিংশাৰায়মাণা চ পটোলতিবতে পলে ।
দিপলক নস্তাণাং সাধ্যমন্তব্য জলে ।
দ্বতাচেষং স্বতসমং সপিবলচ চতুপলম্ ॥
পিবেং সংমৃত্তিতং তেন গুলঃ শাম্যতি গৈতিকঃ।
দ্বত্তকা চ শূলক লমা মৃত্যাব তিত্তপা ।

কট্কী, নিশ্ব, নষ্টিমধু, ত্রিফলাত্বক্ ও বলা দুম্ব প্রত্যেক ২ তোলা , পল্ডা ও তেউড়ী প্রত্যেক ২ পণ্ড ও নক্ষর ২ পলা , পাকার্থ জল প্রত্যেচ গুণ, শেষ ৪ পার। ঐ কাথে মৃত ৪ পলা মিশিত করিনা নথাবিদি পান করিলে পৈত্তিক গুঞানি বছরোগ বিন্যুহয়।

দাংশুলার্ডিসংক্ষেণ্ড-স্থানাশাক্ষতিক্ষরের। বিদলম্বন জানায়াদ্ ওলাং তমুপনাহারেও॥

জন্ম-বাগে দাঠ, শল, বেদনা, ক্ষুত্রতা, নিদানাণ, অকচি ও জন উপস্থিত ইইলে জন্ম পাকিবান উপক্রম ইইয়াছে জানিবে। তথকালে উহান পাকের নিমিত্র সত্ত্ব ব্রণশোথোক্ত পাচন প্রালেশ দিবে।

পকে তু এগৰৎ কাষ্যং বাধ্যশ্বনরোপণম্। বয়মূদ্ধধো বংগি স চে দাষ্ট প্রতিত ॥ হ'দশাহ্মুপেকেত ব্দ্রতালেক্সক্র । প্রত্ত শ্রেম স্থিত শক্ষেত্রধূম্যতিক্রম্॥

গুলা পাকিয়া উঠিলে তাহা । এণবং বিদ্ধা কবিয়া পুষাদি নিমোরণ ও রোপণ ক্রিয়া করিবে। ইহা স্বয়ু'ই বিদীর্ণ হুইয়া পুষাদি উদ্ধ কিংবা অনোদেশ দিয়া নির্গত হুইতে পারে, এই নিমিন্ত ২২ দিন পর্যান্ত শোধনাদি কোন ক্রিয়ুই করিবে না। কেবল অন্যান্য ন সকল উপদ্রব উপস্থিত হয়, তাহার প্রতি-কাব করিবে। দানশা দিনের প্রব এণশোধক উষ্পামশ্রিত গ্রহ্ণ পান করাইবে। পুয়াদি নিঃসারণ হইলে ক্ষতরোপণার্থ তিব্দ্রেব্য সাধিত ঘুত মধুমিশ্রিত করিয়া পান করিতে দিবে।

व्यथं क्ष्मक छन्त्र-लक्ष्मगा।

শীতং গুরু প্রিক্কমচেষ্ট্রনক সংপূরণং প্রশ্বপনং দিবা চ। গুল্মস্ত হেতু: কফসম্ভবক্ত সর্ববন্ত হুষ্টো নিচয়ায়কক্ত । ব্যৈমিত্যশীতজ্বরগাত্রসাদ-সন্নাসকাসাক্ষচিগৌরবাণি। শৈতাং রুগলা কঠিনোরত্বং গুলাক্ত রূপাণি কফাত্মকক্ত।

কফজ ও ত্রিদোষজ গুলোর হেতু। শীতল শুরু ও মিগ্ধ দ্রব্য সেবন, শারীরিক চেঠা-রাহিতা, অধিক ভোজন এবং দিবানিদ্রা এই গুলি কফজ গুলোর হেতু। আর উল্লিখিত বাতজাদি তিন প্রকার গুলোব যে সকল হেতু উক্ত হইরাচে, সেই সমস্ত হেতুই ত্রিদোষজ গুলোর জানিবে।

কফজ শুলার লক্ষণ ,— সৈমিত্য, শান্তজ্ঞর, গারেব অবসরতা, ব্যনবেগ, কাস, অক্লচি, শরীরের শুরুতা, শীতামূভ্য, বেদনার অক্লম্ব এবং শুলোর কাঠিন্য ও উন্নতি এই শুলি কফজ্ শুলোর রূপ।

অথ কফজগুল্ম-চিকিৎসা।

যোগৈক ব্যক্তগুলোগৈতঃ প্লেম্বগুলাম্পাচরেৎ। অপরেক বলাসগৈন্য ক্রিয়াইজ শমং নয়েৎ॥

শ্লৈদ্মিক গুলে বাতগুলনাশক যোগ এবং অন্তঃন্ত কফল্ল যোগ সকল বিবেচনা করিয়া প্রয়োগ করিবে।

ক্তমনোল্লেগনে সেদে কৃতেহয়ো সংপ্রবৃদ্ধিতে। যুতং সক্ষায়কটকং পাতবাং ক্ষণ্ডশ্মিনা।

কফজ গুল্মে উপবাস, বমন ও স্বেদক্রিয়া স্বারা অগ্নিবৃদ্ধি হইলে যবক্ষার ও ত্রিকটুর কন্ধ স্বারা সাধিত স্থত পান করিবে।

ম লাংগ্ৰিবে দৰা মলা গুৰুন্তিমিতকোষ্ঠতা। দোংকুলা চাৰুটিৰ জ্ঞান গুৰুষ্টা ৰমৰোপগঃ॥

মন্দায়ি, অল্ল বেদনা, কোঠে ভার ও কৈয়েত্য, উৎক্লেশ (গা ব্যি ব্যি)।এবং অক্লটি মন্দেংয়াবনিলে মৃঢ়ে জাভা সল্লেহ্মাশরম। ভড়িকাশ্চু পনিযু হো: প্রয়োজ্যাঃ ককগুলিনাম্॥

কফজনিত গুলো অগ্নিমান্দ্য ও নায়ুর গুৰুতা দৃষ্ট হইলে স্নেহজিয়া দারা কোঠকে স্নিগ্ধ করিয়া এই অধিকারোক্ত গুড়িকা, চূর্ণ ও ক্যায় বিবেচনা পূর্ব্বক প্রয়োগ করিবে।

পঞ্চমুলীশৃতং তোহং পুরাণং বাক্সণীরসম্ । কমগুলী পিবেৎ কালে জীগং মাধ্বীকমেন বা ॥ (মাধ্বীকং মধু)

কফজ গুলো রোগিকে বৃহৎ পঞ্চমুলের কষায়, পুনাণ বারুণী (ভাড়ী) ও জীর্ণ মধু পান করিতে দিবে।

তিলৈরভাতসীবীজ-সর্বপ্রে: পরিলিপ্য বা । রেল্যগুল্মময়পাত্তি: কুথোকৈঃ স্বেদ্যেদ্ ভিষক্ ।

্রেমিক গুরে তিল, মদিনা, এরপ্তবীজ ও সর্বপ বাটিয়া গুরু স্থানে প্রবেপ দিয়া ঈষতৃষ্ণ লোহপাত্র মারা মেদ প্রদান করিবে।

যমানাচুশিতং তকং বিড়েন লবণীকৃত্য । পিৰেংনুসন্দীপনং বাত-মুক্তৰচ্চোংহুলোমনম্॥

যমানীচূর্ণ ও বিট্লবণ সংযুক্ত তক্ত পান করিলে অগ্নির দীপ্তি এবং বাত মৃত্র ও প্রীষের অফলোম হয় !

অথ দ্বন্দ্বজগুলা-লক্ষণম।

নিমিন্তরপাণাপদভ্য গুলো খিদোবজে দোববলাবলক। ব্যামিশ্রতিকানপ্রাংক গুলাংকীনাদিশেদৌবধকরনার্থন্।

যদিও বাতজাদি পাঁচপ্রকার গুলোর উল্লেখ হইয়াছে, তথাপি যে স্থলে উভয়বিধ গুলোর নিদান ও লক্ষণ একত্র দৃষ্ট হইবে, তথার ঔষধ কল্পনার্থ অর্থাৎ মিশিত চিকিৎসা করিবার জন্য আর তিন প্রকার মিশ্রলক্ষণাক্রান্ত হন্দ্র গুলা নির্দ্দেশ করিবে। এই হন্দ্র গুলো দোষের বলাবলের প্রতিও লক্ষ্য রাখিবে।

অথ দম্বজগুলা-চিকিৎসা।

ব্যামিশ্রদোষে ব্যামিশ্র: সর্ব্দ এব ক্রিরাক্রম:।
সন্ত্রিপাতোন্তবে গুল্মে হৈদোনারা বিধিহিত:॥
বিদোষক্র গুল্মে তত্তদোমোক্ত পৃথক্ পৃথক্
চিকিৎসা মিলিত করিয়া বাবস্থা করিবে এবং
ক্রিদোষক্র গুল্মে ত্রিদোষত্র ঔষণ প্রয়োগ করিবে।

বচাৰিড়ভয়া শুক্তীহিন্দু কুঠাগ্রিদীপ্যকাঃ। বিত্রিবট চ্তুরেকাষ্ট-সপ্তপ্রধাংশিকাঃ ক্রমাৎ। চূর্বং মন্ত্যাদিভিঃ পীতং গুলানাহোদরাপহয়। শুলার্শংখাসকাসম্বং গ্রহণাদীপনং পরম্।

বচ ২ ভাগ, বিট্লবণ ৩ ভাগ, হরীতকী ৬ ভাগ, শুঠ ৪ ভাগ, হিং ১ ভাগ, কুড় ৮ ভাগ, চিতা ৭ ভাগ, যমানী ৫ ভাগ; এই সকল দ্রব্য চূর্ণ করিয়া মন্ত ও উফ জল প্রভৃতির সহিত সেবন করিলে গুল, আনাহ, উদর, শূল, অর্শঃ, খাদ ও কাদ বিনষ্ট হয়। ইহা অগ্নিস্থান প্রহণীয়ন্ত্রের উদ্পিক।

ৰমানীহিঙ্গুদিক ্থ-কারমৌবচলাভরা:।
স্বাম ওন পাতবা গুলালুননিস্দন :।

যমানী, হিঙ্গু, সৈদ্ধব লবণ, গ্ৰহ্মার, সচল লবণ ও হরীতকী ইহাদের চুর্ণ সমভাগে লইয়া উষ্ণ জল বা স্থ্যামণ্ডের সহিত পান ক্রিলে গুল্মশুল নিবারিত হয়।

হিলুপুদ্বন্দানি তুপুকণি হরীংকা।
ভাষা বিড়ং সৈদ্ধবঞ্ যবকারং মহৌবধ্য ॥
যবকাণোদকেনৈ চদ্ ঘৃতভূপ্তর পায়য়েৎ।
তেনাভ ভিজ্যতে গুলা: সশ্লঃ সপ্রিগ্রহঃ॥
(চুর্ণাদ্ বোগ্যমাত্রাং গৃহীত্ব। যবকাৰে সাবয়িত্বা ঘুতে
পারভর্জ্য পায়য়েৎ। গ্রামা তিবুদিতি চক্রটাকা)

হিং, প্রকর গুল (অভাবে কুড়), ছোট গনে, হরীতকী, তেউড়ীমূল, বিট্লবণ, দৈদ্ধব লবণ, যবক্ষার ও শুঠ এই সকল দ্রব্য চূর্ণ করিবে; সেই চূর্ণ যবের কাথের সহিত মিশ্রিত ও স্বতে সম্ভবন করিয়া পান করিলে গুলাও তজ্জনিত উপদ্রব সকল বিনষ্ট হয়।

> পুতীকপত্ৰগজচিভিউচব্যবহিং-ব্যোবঞ্চ সংস্তর্ভিতং লবণোপধানম।

দক্ষ্মী বিচ্ণী দ্ধিমস্তমূতং প্রয়োজ্যং শুলোদরশ্বয়পুপাঞ্গদোদ্ভবেষু ॥

নাটাকরঞ্জার পত্র, রাথালশণা, চৈ, চিতা, তঠ, পিপুল ও মরিচ এই সকল দ্রব্য একটি ইাড়িতে রাথিয়া তত্ত্পরি সমস্ত দ্রব্যের সমান সৈন্ধবলবণ এবং ঐ সৈন্ধবলবণের উপর আবার নাটাকরঞ্জ পত্রাদি স্থাপন করিয়া তার সাজাইবে। পরে ইাড়ির মুথে একথানি শরা চাপা দিয়া সন্ধিস্থলে লেপ দিবে। তাননস্তর ঐ ইাড়ী চুরীতে বসাইয়া নিম্নে জ্বাল দিবে, যখন অন্তর্ধুমে ইাড়ীর মধ্যস্থ ঔষধ দয় হইবে, তথন উহা লইয়া চুর্ণ করিবে। গুলা, উদর, শোও ও পাতু রোগে ঐ চুর্ণ যথামাত্রায় দ্বির মাতের সহিত প্রয়োগ করিবে।

পিধনীপিধন মুল-চত্তকাজাজালৈকথে।

যুকা পীতা হ্বা হতি গুলমাত হৃহত্তনম।

পিপুল, পিপুলমুল, চিতা, ক্বঞ্জীরা ও
সৈত্ধব, ইহাদের চূর্ণ স্থার সহিত পান করিলে
ত্ত্তর বাত্মেশ্রছ গুলা বিনষ্ট হয়।

ত্রিকলা কাঞ্চনকারী সপ্তলা নালিনা বচা। ভারতী হবুষা তিক্তা ত্রিবৎ দৈদ্ধবিপিপ্ললীয়ে। পিবেদ্ বিচুর্গ্য ন্যাত্রাঞ্চনারিমাংসরসাদিভিঃ। সর্ব্বগুলোদরপ্লীহ-কুঠানা শোধপাড়িতঃ।

ত্রিফলা, স্বর্ণকারী, চম্মকষা, নালবৃহ্ণা, বচ, বলাডুমুর, হ্বৃষা, কট্কা, তেউড়া, দৈদ্ধ ও পিপ্ললী ইহাদের চূর্ণ গোমুত্র, উফ্তঙ্গল বা মাংস-রসাদির সহিত পান করেলে দক্ষপ্রকার গুলা, উদর, প্লাহা, কুই, অশ্য ও শোগ প্রশমিত হয়।

শরপুদ্ধান্ত লবণং পথাটুর্ণং সমং ছয়।
শাণপ্রমাণসংখ্যাচচুর্ণং গুলাগদাপহম্॥

শরপ্ভাব কাব ও হবীতকীচুর্ণ সমভাগ লইয়া অন্ধতোলা পরিমাণে দেবন করিলে, জ্বারোগ প্রশ্নিত হয়।

স্বক্তিকা শাণম!না স্থাৎ তাৰ্যদেৰ গুড়ং ভবেৎ। ডভৱোৰ টিকাং থাদেদ্ ভগ্নাময়বিনাশিনীম্॥

স্বজিকাক্ষার অন্ধতোলাও পুরাতন গুড় অন্ধতোলা, একত মন্দ্র করিয়া বটা করিবে। সেই বটা সেবন করিলে গুলুরোগ বিনষ্ট হয়।

অথ রক্তজগুলা-লক্ষণম্।

নবপ্রস্তাহিতভোজনা যা
যা চামগভং বিস্তভেদ্তৌ বা।
বায়হি ভক্তাঃ পরিগৃহ্য রক্তং
করোতি গুলং সক্রন্থং সদাহম্।
পিওস্তা লিকেন সমানলিকং
বিশেষণকাপ্যপরং নিবোধ।
যং স্পন্দতে পিণ্ডিত এব নাকৈশিচরাৎ স্পান্ধান্যসমগর্ভলিকঃ।
সারৌধরঃ শ্বীশুবা বব গুলো
মাসে বাতীতে দশ্যে চিকিৎকাঃ।

প্রসবান্তে, অপকগর্ভস্রাবান্তে বা পত্কালে অহিতজনক সাহার বিহারাদি করিলে বারু কুপিত হইয়া রক্তকে পরিগ্রহণ করত গর্ভাশরে গুটিকাকার রক্তগুল উৎপাদন করে। ইহাতে অভ্যন্ত বেদনা ও দাহ থাকে এবং গুলোর তাবং লক্ষণই উপস্থিত হয়, গর্ভলক্ষণ সমস্ত অর্থাং পাতৃবন্ধ, মুগ পীত্রণ, স্তনাগ্রভাগ ক্লফবর্ণ ও নানাবিধ আহারাদিতে ম্পুহা হইয়া থাকে। তবে গভ, হস্ত পদাদি অঙ্গ প্রভাঙ্গে হারা বেদনা ব্যতিরেকে নিরস্তব স্পন্ধিত হয়, বক্তপ্র অঙ্গ-প্রভাঙ্গাভাবে সমস্ত পিওটীই দীর্ঘকালায়ে অতান্থ যাতনার সহিত স্পান্তি হট্যা থাকে, এইমাত্র প্রভেদ। ষাহা হটক, এইরূপ প্রভেদসত্ত্বেও গভাশকার পজিতেরাদশম নাস বাতীত হইলে এই স্নীভব রক্তগুলার চিকিৎসা করিতে উপদেশ দিয়া-ছেন। অক্সান্ত রোগ পুরাতন হইলে কন্ট্রসাধ্য হয় কিন্ধু বাাধিমাহায়ো, রক্তগুলা 397 Y হইয়া থাকে: (SSI 2 কেহ কেহ বলেন, য়খন গর্ভ ও গুলো এরপ প্রভেদ লক্ষণ দৃষ্ট হয়, তখন গভাশস্বায় না হইয়া পুরাণডাভিপ্রায়েই পণ্ডিতেরা দশ্যমাসাস্তে চিকিৎসা করিতে বিধি দিয়াছেন।

অথ রক্তজগুলা-চিকিৎসা।

রৌধিরক্ত তু গুলাক্ত গভকালবাতিক্রণম। বিশ্ববিদ্যালয়ীরাধ্যে দতাৎ স্মিন্ধবিরেচনম্ম। রক্ত শুলে প্রসরকাল অর্থাৎ দশম মাস অতীত হইলে রোগিণীকে স্নেহ ও স্বেদ প্রদান করিয়া স্নিগ্ন বিরেচন দিবে।

শতাংশাচিরবিঅতগ্যাকস্তাগীকণোছৰ:। কল্বঃ পীতো হরেদ গুলাং তিলকাথেন রক্তজ্ম্॥

ভল্ফা, নাটাকরঞ্জার ছাল, দেবদারু, বাম্ন-হাটা ও পিপুল, ইহাদের কল্প, তিলের কাথের সহিত সেবন করিলে রক্তন্ত গুঞা নিবারিত হুইয়া থাকে।

তিলকাৰং গুড়বোল-হিন্ধুভাগীবৃতং পিবেৎ। আর্দ্তবগন্তবে গুলো নষ্টে পুলেন চ দোষি হাম্॥

রক্তগুলে এবং রজোলোপে ভিলের কাথে পুরাতন শুড়, ত্রিকটু, হিং ও বামুনগটীর চুর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিতে দিবে।

সক্ষার ভ্রাষণং নজং প্রপিরেচন্দ্র গুলিনী।
পলাপকারতোয়েন (সিদ্ধং সপি পিরেচন সাঞ্ কোনো বংগিপাকলানিকুলা: ইঅকোড় ব্যক্তর কোনে। চল্টিলা:)

ঘণ্টাপাকলি প্রভৃতির কার (কেছ বলেন, যবকার) ও ত্রিকটু চূর্ণের সহিত মন্য, অথবা প্রাশক্ষার সংঘক্ত চতুগুলি জলে সিদ্ধ গ্রহ পান করিলে রক্তঞ্জা প্রশ্মিত হয়।

উদৈৰ্বা ভেদয়েদ্ ভিন্নে বিধিরাসগ্দৰে। ছিচঃ। ন প্ৰভিজ্ঞেত যজেব' দজ্ঞাদ্ বোলিবিশোধন্য। কারেণ যুক্তং প্ললং স্থাক্ষারেণ বা পুনা॥

রক্তগুলো সূরাম গুদি উষ্ণবীর্য্য ঔষধ খারা গুলা ভেদ করাইরা রক্তপ্রদর-বিহিত ক্রিয়া করিবে। যদি গুলাভিন্ন না হয়, তাহা হইলো পলাশক্ষার বা সিদ্ধের আঠার সহিত তিল-কল্পের বর্তি প্রস্তুত করিয়া সেই বর্ত্তি, যোনির অভ্যন্তরে নিহিত করিয়া যোনিশোধন করিবে।

প্রবর্ত্তমানে নিতরংং শোণিতে রক্তপিওকং । রক্তাতিমারশমনী ফিল্লা চাপি বিধীরতে ॥

উপরি-উক্ত ক্রিয়াসমূহ থারা যদি অধিক রক্তশ্রাব হয়, তাহা হইলে রক্ত পত্ত ও রক্তা-তিসারের চিকিৎসা করিবে। পীতো ধাত্রীরসো ফুক্তো মরিচৈশ্চাম্রগুলার্ং।
মরিচ চূর্ণের সহিত আমলকীর রদ পান
করিলে রক্তগুলোর শাস্তি হয়।

श्किरानि हुर्गम्।

হিন্দু ত্রিকট্কং পাঠাং হ্ব্যাভয়াং শটান্।
অন্নাদাজগন্ধে চ তিপ্তিড়ীকামনেতসৌ ।
দাড়িনং পৌকরং ধান্তমজাজীং চিত্রকং বচান্।
যৌ ক্ষামৌ লবণে যে চ চব্যকৈকত্র চূর্বরেং ।
চূর্বমেতৎ প্রযোজনামন্তপানেখনত্যয়ন্।
প্রাগ্,ভুক্তমথবা পেয়ং মন্ত্রেনেংঞাদকেন বা ॥
পার্যস্থাজ্ব ভূত্য প্রত্যানিক্ষলাক্ত ।
আনাহে মৃত্রকুভের্ পুল্যোনিক্ষলাক্ত চ ॥
প্রহণাশোনিকারের প্রীহপাঞ্জাময়েতকটো ।
ভরোবিবন্ধে হিকায়াং খাসে কালে গলগাহে ॥
ভাবিতং নাতৃপাক্ত চূর্বমেতন্তমন বা ।
বছশো গুড়িকাং কালাং কাশু কাং স্বান্ততোহধিকাং ।
(প্রভিকাপকে এবাং সমভাগহ্ণ সপ্তদিনং ছোলক্সরসেন ভাব্যিয়া গুড়িকাং কালাং। চিপ্তিড়ীকং মহাজক্মিতি চক্রনীকা)

হিপু, ত্রিকটু, আক্নাদি, হবুব, হরীতকী, শদী, যমানা, ক্ষেত্রবমানী, মহাদা, অমবেতস, অমনাড়িম, কুড়, ধনে, জীরা, চিতামূল, বচ, যবক্ষাব, সাচিক্ষাব, সৈন্ধব, সচললবণ ও চৈ এই সমুনারের সমভাগ চুর্ণ একত্র কারয়া মন্ত্র উষ্ণজ্জলের সহিত ভোজনের পূর্বের সেবন করিলে বাতলৈ মিলিক গুলা ও আনাহ প্রভৃতি বহুরোগ নিবারিত হয়। (ঐ সকল চুর্গ ছোলক লেবুর রসে ৭ দিন ভাবনা দিয়া শুড়িকা প্রস্তুত করিলে ইহা চুর্গ অপেক্ষা ফলপ্রান হয়।)

বচাদি-চূর্ণম্।

বচা হরীতকী হিন্ধু দৈশ্ববক্ষণ মবেতসম্।

যবক্ষারং ষধানীক পিবেছকেন বারিগা।

এতদ্ধি গুল্মনিচয়ং সশ্লং সপরিপ্রহম্।
ভিনত্তি সপ্তরাত্তেণ বচ্ছের দ্ধিং করোতি চ।

বচ, হরীতকী, হিন্ধু, সৈন্ধব লবণ, অম্লবেতস, যবক্ষার ও যমানী এই সমুনার সমভাগে চুর্ণিত করিয়া (প্রাতঃকালে ৪ মাধা

পরিমাণে) উষ্ণজ্জলের সহিত দেবন কবিলে সহর গুলা রোগ প্রশমিত হুটয়া অগ্নির তেজোবৃদ্ধি হয়।

श्कितानि हुर्वम् ।

হিঙ্গুগানা বিড়গুঠালালী হরীতকা পুৰুরমূলকুঠম। ভাগোত্তরং চুর্ণিতমেতদিষ্টং গুলোদর;লীব্বিস্টিকান্ত ।

হিং ১ ভাগ, বচ ২ ভাগ, বিট্লবণ ৩ ভাগ, শুঠ ৪ ভাগ, জীৱা ৫ ভাগ, হবীতকী ৬ ভাগ, প্রুরমূল ৭ ভাগ, কুড় ৮ ভাগ; এই সমুন্র চর্ণ একএ ক্রিয়া দেবন ক্রিলে গুল্ল প্রেভৃতি মনেক রোগ নই হয

लवका कि हुर्गम्।

লবন্ধ গ্র'তিষ্তাসন নী - শ্রীবচাধান্তক্চিএকাণি। ফলত্রয়ং ম'গধিকা চ কট্,' দংকা চবী গোকুরঘাবশু, মু ॥ এলাজমেশা কুটজন্ত বাজং বিধায় চুর্গনি সমান্তনীবাম্।

গাদেৎ ততঃ পাণিতলং জিতাশী কোঞ্চং জলকামুপিলেৎ প্রদর্গই ॥ নিহন্তি গুলাং সঙ্গুজং সদাহ-মশাংসি শোগাংশ্চ তথামবাতম্। সর্কোদরাণোধ চিরোখিতানি চুবং লবক্সাদিকমাগু হতি॥

লবন্ধ, দস্তীমূল, তেউড়ামূল, মনানী, শুঠ, বচ, বনে, চিতামূল, তিফলা, পিপুল, কট্কী, দ্রাক্ষা, চই, গোকুর, যবক্ষার, এলাইচ, বন-মনানী ও ইক্রণব এই সম্দ্র সমভাগে চুলিত করিয়া ২ তোলা প্যান্ত পরিমাণে উষ্ণ জলের সহিত সেবন করিলে গুলা প্রভৃতি নানারোগ নষ্ট হয়।

ক্ষারাফক্ম !

পলাশবজিশিবন কিশা কতিলনালগা:।

যবজঃ শব্জিকা চেতি কারা অষ্টে প্রকীপ্রিতা:।

এতে প্তশ্যরাং কারা অন্তার্পস চ পাচকা:।

পলাশকার, মনসাসিজের ক্ষার, আপাক্ষের
কার, তেতুলকার, আকন্দকার, তিলনালের
কার, ব্যক্ষার ও শ্বব্জিকাকার এই অস্টকার
গুল্মাশক ও অন্তীর্ণপাচক।

বজকারঃ।

সামুদ্রং সৈদ্ধবং কাচং যবকার: স্ববচলম্।
টক্ষণং ক্ষত্তিকাক্ষারং তুলাং চূর্ণং প্রকল্পরে ।
বজ্রিক্ষীরেরবিক্ষীরেরাতপে ভাবরেৎ ত্রাহম্।
বেইরেদর্কপরে পকাও ভাওে পুন: পচেৎ ॥
তৎ কারং চূর্বরেৎ পন্চাৎ ক্রোয়াং কিফলা তথা।
যমানী জীরকো বহ্নিচ্ছের্গমেষাক্ষ কাররেৎ ॥
কর্মচ্বাসমং কারং সর্কমেকত্র কাররেৎ ॥
তংক্ষ শুলে তথাজীনে পোগে সর্কোদরেম্ চ।
মন্দে বহনী চোদাংর্ত্রে প্লীক্ষ চালি পরং হিতম্ ॥
বাত্তেগিরেক জলা কোইদহিতঃ পিভাগির হুইতঃ।
গোম্তেণ ককাবিক্য কাজিকেন ত্রিদোষকে ॥
বক্রকার উতি খ্যাতঃ প্রেকং শ্রহুবা।
দেবিতো হরতেইজীণং তথাজাণ ভ্রান্ গদন্ ॥

কাচলবণ, যব-সামুদ্রবর্ণ, সৈন্ধবলবণ, কার, সচল লবণ, সোহাগার থৈ ও সাচিকার. ইহাদের চর্ণ সমভাগে লইয়া মনসাসিজের আঠা ছারা ৩ দিন ও আকন্দের আঠা ছারা ৩ দিন ভাবনা দিয়া রৌদ্রে শুকাইবে। পরে উহা আকন্দপাতা দারা বেষ্টিত করিয়া একটা হাড়ীর মধ্যে পুরিয়া শরা ছারা হাড়ির মুথ বন্ধ কংবে এবং ঐ হাড়ী চুন্নীর উপর বসাইয়া নিমে জাল দিবে। খাড়ীর মধ্যন্ত ঔষণ অন্তর্মে দগ্ধ হটলে, ঐ দগ্ধ ক্ষার বাহির করিয়া চুর্ণ করিবে। পরে ত্রিকট্ট, ত্রিফলা, যমানী, জীরা ও চিতা, ইহাদের চুর্ণ প্রত্যেক সমভাগ এবং উপরি-উক্ত কারচূর্ণ স্ক্রসমষ্টির স্মান গ্রহণ করিয়া একতা মিলিত করত জলের সহিত ১ পরিমাণে সেবন ।করিবে। খারা গুলা, শূন, অজীর্ণ, শোথ, সর্বপ্রেকার উদররোগ, আগ্রমান্দ্য, উদাবর্ত ও প্লীহা নষ্ট এই এক্সকার বাতাধিকো ঈষহফ জলের সহিত, পিতানিক্যে মতের সহিত, শ্লেমাধিক্যে সহিত <u> তিদোৰপ্রকোপে</u> গোমুত্রের এবং কাঞ্জিকের স্থিত সেবনীয়। ইহা সেবনে অজীৰ্জনিত রোগ প্রশমিত হয়।

দন্তাহরীতকী।

জনমেণে বিপক্ষবা বিংশতিঃ পঞ্চ চান্ডরাঃ।
দস্তাঃ পলানি তাবস্থি চিত্রকক্ত তবৈব চ ॥
তেনাস্টভাগশেবেণ পচেদ্ দন্তীসমং শুদুম।
তাশচান্তমান্তিবৃচ্চুর্পং তৈলাচ্চাপি চতুশালম্॥
পলমেকং কণাশুগ্রীয়াঃ সিদ্ধে লেহে চ শীতলে।
কৌমং তৈলসমং দত্য চাতৃক্জিতিপলং তথা ॥
ততো লেহপলং লীচ্বা জন্ধ্বা চৈকাং হ্রীতকীম্।
ম্বাং বিরিচ্যতে নিজো দেঃমপ্রমনাময়ঃ॥
মান্তম্মপুরুমার্শো-কংপাশুগ্রহণীগনাঃ।
শাম্যন্তাংক্রেশবিষম-কর্ম্নান্তরেচেকাঃ।

थ-(পाউनौरक स्तौठको २०छ। प्रस्तीयः ২৫ পল, চিতামূল ২৫ পল, জ্বল ৬৪ সেং শেষ ১৮ সের। এই কাথ জলে ২৫ প পুরাতন গুড় গুলিয়া ছাঁকিবে এবং পুর্বোহ পোট্টনীবন্ধ স্বিন্ন হরীতকী ২৫টি, ৪ পল তৈ ভাক্তিয়া ভাহা ঐ কাথে পাক করিবে আসরণ কে তেউড়ী চূর্ণ ৪ পল, পিপুলচুর্ণ তোলা, ভ ঠেওৰ্ ৪ তোলা প্ৰকেপ দিয়া উত্তম রূপে দিছ হুইলে নামাইবে অর্থাৎ লেহব ক্রিয়া নামাইবে। শীতল হইলে ভাহাতে মং চারি পল, গুড়ুত্বক, তেজপত্র, এলাইচ, নাগে শ্বর প্রত্যেক চুর্ণ এই ভোলা মিশ্রিভ করিয় লইবে। সেবনের মাত্রা— ২ ভোলা লেছ এব হুরীতকী ১টি। ইহা থার। বিড়েচন হুইয় ন্তনা, প্লাহা, শোপ, অর্শ: ও জদ্রোগ প্রভৃণি অনেক রোগ নষ্ট হয়।

কান্ধায়নগুড়িকা।

শটীং পুজরমূলক দত্তীং চিত্রকমাড়কীম্ ।
শুঙ্গবেরং বচাকৈব পালকানি সমাহরেৎ ॥
তির্ভায়া: পলকৈব ক্যাৎ ত্রীণি চ হিন্দুন:।
যবকারপলে ছে তু ছে পলে চায়বেতসংৎ ॥
যমাগুজাজী মরিচং ধাস্তকিকেতি কার্ষিক্ম ।
উপকুঞ্যজমোনাত্যাং তথা চাইমিকামপি ॥
মাতুলুঙ্গরসেনিব গুড়িকা: কাররেদ ভিষক্ ।
আসাকৈকাং পিবেদ্ধে বা ভিজ্ঞো বাধ স্থাপুনা ॥
এবা কাঙ্গারনোক্তা চ গুড়িকা গুজনাশিনী ॥
অর্শেহলোগশমনী ক্রিমীণাঞ্চ বিনাশিনী ।
গোম্ত্রবুক্তা শমরেৎ ককগুজাং চিরোখিতম্ ॥

কীরেণ পিতগুলাঞ্চ মত্যৈরইমন্ট বাতিকম্। ত্রিফলারসমূত্রৈন্ট নিযচ্ছেৎ সাল্লিপাতিকম্। রক্তগুলো চ নারীণামুষ্ট্রাকীরেণ পার্যেৎ ।

শটী, কুড়, দস্তীমূল, চিতামূল, অড়হর, 😴 ঠ, বচ ও ভেউড়ীমূল প্রত্যেক 🔰 পল, হিঙ্গু ৩ পল, যবকার ২ পল, অমুবেতদ ২ পল, ঘমানী, খেতজীরা, মরিচ, ধনে প্রত্যেক ২ তোলা, ক্বফজীরা, যমানী প্রত্যেক অর্দ্ধ পল; এই সমুদায় চূর্ণ একত্র করিয়া টাবা লেবুর রসে মাড়িয়া (৪ মাষা পরিমাণে) গুড়িকা প্রস্তুত করিবে। ইহার এক, হুই বা তিন গুড়িকা একবারে সেবনীয়। অমুপান—সংখাষ্ট জল, কাঁজি, মন্ত, মুদ্গাদির যূব, মৃত ও হগ্ধ প্রভৃতি। গোমুত্রের সহিত সেবনে কফজ, হুগ্নের সহিত দেবনে পৈত্তিক, মগু বা কাজির সেবনে বাতিক এবং ত্রিফলার কাথ বা গোমুত্রের সহিত সেবন করিলে সালিপাতিক গুলানষ্ট হয়। স্ত্রীলোকদিগেন নক্ত গুলো উষ্ট্র-ছুশ্বের সহিত সেবা। ইহা সেবন করিলে গুলা এবং অন্তান্ত অনেক ব্যাধি নই হয়।

পঞ্চাননরসঃ।

পারদং শিপিতৃথঞ্চ গন্ধং জৈপালপিপ্রলী। আরথধফলাক্মজা বক্ত্রীক্ষারেণ ভাবরেৎ॥ ধাত্রীরসযুতং থাদেক্তকুত্রতাপ্রশাস্তরে। চিকাফলরসঞ্চাকু পথাং দধ্যোদনং হিতম্॥

পারদ, তুঁতে, গন্ধক, জয়পাল, পিপুল ও সোঁদাল ফলের মজ্জা এই সমুনার দিজের আঠার ভাবনা দিয়া বটিকা প্রস্তুত করিবে। অমুপান—আমলকীর রস বা তেঁতুলের রস। পথ্য—দধি ও অন্ন। ইহাতে রক্তগুল্ম নিবা-রিত হইরা থাকে।

গুলাবজ্রিণী বটিক।।

রসগন্ধকতান্ত্রঞ্চ কাংস্তং টঙ্গণতালকম্। প্রত্যেকং পলিকং গ্রাহ্থং মর্দ্মরেদতিবত্নতঃ ॥ তদ্যধাগ্নিবলং থাদেদ্ রক্তগুল্মপ্রণান্তরে। নির্দ্মিতা নিতানাধেন বটিকা গুল্মবঞ্জিণী॥ গুলাগীহোদরাগীলা-যকুদানাহনাশিনা।
কামলাপাপুরোগন্নী করশুলনিনাশিনী।
পারদ, গন্ধক, তাম, কাংস্তা, সোহাগা,
হরিতাল, প্রত্যেক ৮ তোলা পরিমাণে লইয়া
উত্তমরূপে মদ্দন করিবে। রোগির অগ্নিও বল বিবেচনা করিয়া প্রয়োগ করিলে রক্তগুলা, গুলা, গ্রীহা, উদর, অগ্রীলা, যকুৎ, আনাহ, কামলা, পাণু, জর ও শূল প্রস্তৃতি বোগ বিনষ্ট হয়।

धनाकानानाना तुमः।

পারদং গৰুকং তালং তাপ্রকং চঙ্গণং কানম্।
তোলন্বয়নিতং ভাগং ববজারক তৎসনন্।
মুক্তকং পিপ্রলী গুঠা মরিচং গজপিগলী।
হরাতকা বচা কুঠং তোলৈকং চুর্নয়ে হুধাঃ॥
সর্বমেকারতং পাতে ভাবনা ক্রিয়তে ততঃ।
পর্পটং মুক্তকং পুঠাপামার্গং পাপচেলিকন্।
তৎ পুনক্র্নিয়েৎ পান্চাৎ স্বস্তপ্রনিবারণম্।
স্তপ্রাচহুইয়ং থাদের্বীতকারপানতঃ॥
বাতিকং পৈতিকং শুলং শ্রৈমিকং সারিপাতিকম্।
দ্বন্ধং বিনিহন্ত্যাপ্ত বাতগুলাং বিশেষতঃ।
শ্রীম্বস্থন্ননাথেন নিম্নিতা বিশ্বস্থানে।

পারদ, গদ্ধক. হরিতাল, তামু, সোহাগা (মতাস্তরে লোই) প্রত্যেক চুর্ল ২ তোলা, যবক্ষার ১০ তোলা, মৃত্যা, পিপুল, শুঠি, মরিচ, গৃহ্দপিপ্রলী, হরীতকা, বচ, কুড় প্রত্যেক চুর্ণ ১ তোলা। এই সমুদায় চুর্ণ একত্র মিলিত করিয়া ক্ষেত্রপাপ্ডা, মৃতা, শুঠি, আপাঙ্গ ও আক্নাদি ইহাদের কাথে তাবনা দিয়া।শুকা-ইয়া পুনর্কার চুর্ণ কারয়া লইবে। মাত্রা—৪ রতি। অমুপান—হরীতকীর জল। ইহাতে বাতিক, পেত্তিক, শ্লেমিক, সামিপাতিক ও শুদ্দ গুলা আশু প্রশ্মত হয়। বিশেষতঃ ইহা বাতগুলোর উত্তম ঔষধ।

तृष्ट्रमृखलाकोलोन(लो त्राः । अवः लोहः त्रमः भक्तः हेन्नगः कर्ष्कः वहास् । विकातः रिक्कतः कुष्ठः क्रायगः स्वनान ह ॥

পঠমেলাং ওচং নাগং খাদিরং সারমের চ।
গৃহীরা সমভাগেন প্রক্রুচ্বং প্রকল্পরেং ।
জয়ন্তীচিনকোন্মন্ত-কেশরাজনলং তথা।
নিশ্পীতা স্বরসং নীয়া ভাবরেং কুশলো ভিষক্ ॥
চতুত প্রপ্রাথমাণেন বিটকাঃ কার্যেং ততঃ।
উথায় ভক্ষেং প্রাতরন্তপানং জলং পয়ং ॥
গুলাং পঞ্চবিধ হন্তি ব্যুৎপ্লীহোদ্রাণি চ।
কামলাং পানুরোগণ শোধদৈর স্কারণ্য ॥
১লামকং রক্তপিতং মন্দাগ্রিমক্চিং তথা।
গ্রহাপদাদিরণ কংশিং জার্পদ বিষম্ভ্রম ॥

অল্ল, লৌহ, পারদ, গন্ধক, সোহাগা, কট্কী, বচ, যবকার, সাচিকার, সৈন্ধব, কুড়, ত্রিকটু, দেবদারু, তেজপত্র, এলাইচ, গুড়যক, নাগেশ্বর, খদিরদার, প্রতাক সমভাগে চূর্ণ ও একত্র মিশ্রিভ করিয়া জয়ন্তী, চিত্রা, ধুরুরা ও কেন্ডারিয়া ইহাদের পত্রের রসে ভাবনা দিবে। ৪ রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিয়া জল বা চ্থা সহ প্রাভঃকালে সেবন করিবে। ইহাতে পঞ্চ প্রকার গুলা, বকুৎ, গ্রীহা, উদর, শোণ ও রক্তপিত্ত প্রভৃতি নানা রোগ নই হয়।

गर्खाकानानाना तरः।

গন্ধক তালক তামং তথেব তাক্তাহকম।
সমাংশং নৰ্দ্দেশ গাল কন্তানারেব বছত।
সংগুটং কার্বেং পশ্চাৎ সন্ধ্রিলপদ কার্বেং।
ততো গলপুটং দ্বা সাক্ষ্যিত সম্প্রেরং।
বিশ্বস্থা ভক্রেন্ গুল্মী গুক্রেরানুপানতঃ।
স্বাধ্বাহ নিজ্ঞাত ভাস্মর্ভিনির স্থা।

গন্ধক, হারতাল, তাম ও তীক্ষণোহ, প্রত্যেক সমভাগ, স্বতকুমারীর রসে মর্দদ করিয়া শরাব্দয়ের নধ্যে স্থাপন করত মৃত্তিক। শরে গৃজপুটে পাক করিয়া শীতল হইলে কুলিবে। ২ রতি পরিমিত বটা আদার রস বা ভাঠের কাথ সহ সেবনে সর্বপ্রকার গুল রোগ বিনষ্ট হয়।

खन्मभिंद्रिला तमः।

রসং গদ্ধং গুদ্ধ-লোহং গুগ গুলুঃ পিপ্ললঃ পলম্। ত্রিবৃতা পিপ্ললী শুকী শকী ধাছ্মকলীরকম্। প্রত্যেকং পলিকং প্রাফ্রং পলার্কং কানকং ফলম্।
সংচূর্ণা বটিকা কার্যা। ছতেন ব্রমানতঃ
এ
বিজয়ং ভক্ষয়েচার্ক্রকাঞায়ু পিবেদত্ব।
২ত্তি মীহবকুদ্ গুলা-কানলোদরশোধকম্ ॥
বাতিক গৈতিকং গুলাং গ্রৈশ্বিকং রৌধিরং তথা।
গ্রহনানন্দনাধেশক্ত-যুবোহয়ং গুলাগুদি,লঃ॥

পাংদ, গন্ধক, শোধিত লৌহ, গুগ্গুল, সম্প্ৰছাল, তেউড়ী, পিপুল, শুঠ, শঠা, ধনে, জানা প্ৰত্যেক ৮ তোলা, জন্মপালফল ৪ তোলা; একত্ৰ চূণ করিয়া গ্রত মিশ্রিত করত তিন রভি পরিমিত বটা প্রস্তুত করিবে। আদার ংস ও উষ্ণ জল সহ হই বটা দেবন কবিবে। ইহাতে প্লীহা, থক্কং, কামলা, উদর, শোপ এবং বাতিক প্রৈত্তিক শৈল্পিক ও রোধির গুলা বিনষ্ট হয়।

নাগেখরো রসঃ।

ঙদ্ধতেং তথা গল্পে। নগেবকো মনংশিলা।
নরসারশ্চ ক্রিকারো লৌহণ শুদ্ধং ও তথাজকম্।
এতানি সমস্তাগানি সুংশিকারেও মন্দ্রিং ।
চিক্রকো বাসকো দ্বতা কাথেনৈকেন মন্দ্রিং ।
দিনৈক স্থান্তিন রসো নাগেখরো মতঃ।
গুলালাহগা, গুলোখান্ স্থানাক বিনাশ্যেং।
ভক্ষেত্রাগ্রনের স্থাবিধন স্থাবান্ধ বিনাশ্যেং।

পাদে, হন্ধক, সাসা, বঙ্গ, মনঃশিলা, নিশাদল, ব্ৰহ্মার, সাচিক্ষার, সোহাগা, লোহ ও অন্ন, এই সমুদায় সমস্তাগে লইয়া সিজের আঠায় মদ্দন করিবে। পরে চিতা, বাসক ও দস্তী এই তিনের কোনটির কাথ দারা ১ দিন মদ্দন করিয়া মাষকলাই প্রমাণ বঁটা করিবে। পানের সহিত সেবা। ইহাতে গুলা, প্লীগাল, শোগ ও উদরাগ্যান বোগ প্রশমিত হয়।

বিছাধরে। রসঃ।

পারদং গন্ধকং তালং তাপ্যং অবং মনঃশিলাস্।
কৃষ্ণাকাবৈ: সুহীক্ষীরৈদিনৈকং মন্দ্রেং স্থীঃ ॥
নিকার্জং প্রেম্মিকং গুলং হস্তি ম্কামুপানতঃ।
রসো বিভাধরো নাম গোমুত্রঞ্পবিবেদ্ধ ।

ওদ্ধমিতাত তান্ত্রিতি পাঠান্তরম্।

পারদ, গন্ধক, হরিতাল, স্বর্ণাক্ষিক, স্বর্ণ ও মন:শিলা প্রত্যেক সমভাগ। পিপুলের কাথে ও মনসা সিজের আঠায় একদিন মর্দন করিবে। ইহা ২ মাধা (উপযুক্ত) নাতায় সেবন করিলে ক্রৈত্মিক গুলা বিনষ্ট হয়। অমুপান—গোমূত্র বা গব্য হয়।

শিখিবাডবো রসঃ।

মারিতং তাম্রতাজং গন্ধকং মান্দিকং সমস্।
মন্দ্রেচিত্রকক্রাবৈর্বক্ষারযুতং দিনস্।
বিশুপ্তমং ভক্ষারেত্যং নাগবল্লীদলেন চ।
বাত্তপ্রাহ্বঃ খ্যাতো রসোহয়ং শিলিবাড্বঃ।

ভাষা, পাবদ, অন্ত্র, গন্ধক, স্বর্ণমান্ধিক ও যবক্ষার প্রত্যেক সমানভাগ। চিতাব রসে ১ দিন মাড়িয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। অমুপান—পানের রস। ইহা সেবন করিলে বাতগুলা প্রশমিত হয়।

প্রাণবল্লভে: রসঃ।

লৌহং তামং বরাটঞ্জ তৃথং হিন্তু ফলত্তিকম্।
সুইামূলং যবক্ষারং জৈপালং টঙ্গণং তিবৃৎ ।
শিংত্যকং পলিকং আহন ছাগীছুগ্ধেন পেষয়েও।
চতুও প্লাং বটাং থাদেদ বারিণা মধুনাপি বা ॥
প্রাণবল্লভনামায়ং গহনামন্দভাবিতঃ।
নহস্তি ক্ষেলাং পাড়ুং মেহং হিকা বিশেষতঃ॥
স্মাধ্যং সন্নিপাতঞ্জ্ঞাং ক্ষিরস্থ্যম্।
বাতরক্তঞ্জ কুঠ্জ ক্জুবিক্ষোটকাপ্যাম্॥

লোহ, তাম, কপদক, তুঁতে, হিন্ধু,
বিফলা, সিভ্নমূলের ক্ষার, ব্যক্ষার, জয়পাল,
সোহাগা, তেউড়ীমূল প্রত্যেক বস্তু ৮ তোলা
পরিমাণে লইয়া ছাগছুরে মান্দন কবিবে। ৪
উচপরিমিত বটী। জল কিংবা মধু জমুপানে
স্বেন কবিলে কামলা, পাঞ্জ, মেহ, হিন্ধা,
গুলা, বাতরস্তে, কুন্ত, কঞ্, বিস্ফোট ও অসচী
রোগ বিনষ্ট হয়।

রসায়নামূত-লোহ্য্।

ত্রিকট্ ত্রিফলা মৃত্যু বিজ্ঞাং জীরকছয়ম্।

যমানীছয়ভূনিছং ত্রিবৃদ্ধতী সুন্দ্রলম্ ॥

সর্বেরাং কাধিকং ভাগং সৈন্ধরং কধ্যত্র কম্।

পশুন্ত মোড়শপলং প্রস্থা ত্রিকলাজলম্ ॥

জন্মাণাং রসং দল্পাং পলগোড়শকং ভূপা।

পাচ্যং সর্বাং প্রয়েজন লৌহং দল্পা পলয়য়ম্ ॥

সিদ্ধে পাকে পুন্দে মং যুতং পলচভুয়য়ম্।

সর্বেরোগের সংযোজাং মহামুতরসায়নম্ ॥

শুন্তাং পঞ্চবিধং হস্তি যকুৎপ্লীহোদরাণি চ।

কামলাং পাভুরোগঞ্চ শোপং জীর্কিরং ভ্রথা।

বোগান্ সর্বান্ নিহন্ত্যান্ড ভাসরন্তিমিরং যথা।

চিনি ১৬ পল। পাকার্থ মিলিত জিফলা
১২ সের, জল ১৬ সের, শেল /৪ সের;
গোড়ালেরর রস ১৬ পল; লথাবিধানে পাক
করিবে। ঘনাভূত হুইলে বিকটু, জিফলা,
মুতা, বিভৃঙ্গ, জাবা, রুফ্ডজীরা, যমানী, বনযমানী, চিরতা, তেউড়া, দুগ্তীমূল, সচল লবণ,
সেম্বব ও অল প্রত্যেক ২ তোলা, লোহ ২
পল. এই সমুদার প্রক্ষেপ দিয়া উত্তমরূপে
আলোড়ন করিবে। পাক সিদ্ধ ইইলে তাহার
সহিত ৪ পল মুত মিলিত করিয়া লইবে।
এই সমায়নামৃত সকল প্রকাব রোগেই প্রয়োগ
করা যায়। বিশেষতঃ ইহাতে পঞ্চপ্রকার
গুলা, বৃদ্ধং, প্রীহা, উদেব, পাঞ্, কামলা, শোথ
ও জীবজর আশু বিনত হয়।

ক্রায়ণাদ্য-য়তম।

জাষণ্ডি ফলাধান্ত-'বডক্সচনাচিত্রকৈঃ। কলাকুতিসূত্র চিদ্ধিং সক্ষারণ কাতপ্তবানুখ।।

ন্ত্ৰত ৪ সেৱা হ্ৰা১৬ সেৱা কলাৰ্থ— ব্ৰিকটু, নিফলা, ধনে, বিড়ক্স, চৈ ও চিতা। হথাবিধি মত পাক কৱিবো এই মৃত বাত-হুৱানাশক।

দ্রাক্ষাদ্য-মৃত্যু।

শ্রাক্ষাং মধুকথর্জ্জরং বিদারীং সশতাবরী**শ**। পরাষকাণি ত্রিফলাং সাধয়েৎ পলসন্মিতাম ॥ क्निएक श्रीमत्नार उन्नामनकन 5। যুত্মিকুরদং ক্ষীরমভয়াককপাদিকম 🛭 সাধয়েৎ তু ঘুতং সিদ্ধং শর্করাক্ষৌদ্রপাদিকম। প্রয়োগাৎ পিতগুনাত্বং সর্ব্বপিত্তবিকারনুৎ। সাহচ্য্যাদিহ পূথগ স্থাদে: কাথডুলাতা। দ্রাক্ষা, বৃষ্টিমধু, পিগুৎবর্জুব, ভূমিকুম্মাণ্ড, শতমূলী, ফল্সা ও ত্রিফলা প্রত্যেক ৮ তোলা, জল ১৬ দের, শেষ /৪ সের, আমলকীর রস /৪ সের, ত্মত /৪ সের, ইক্ষুরস /৪ সের, ছগ্ধ /৪ দের, হ্রীতকীর কল /১ দের। মথা-বিধানে পাক করিবে। শীতল হইলে মধু ও শর্করা মিলিত /১ সের মিশ্রিত করিবে। এই ম্বত সেবনে পিত্তখা ও সর্বাপ্রকার পিতৃত্ব রোগ বিনষ্ট হয়।

পঞ্চপল-ঘূত্য্।

পিশ্বলাঃ পিচুর্ধানো দা ড্মাদ দ্বিপলং পলম্।
ধান্তাং পঞ্ছ যুতাচ্ছ্ আঃ কবঃ কানং চতুও গম্।
সদ্ধমতদ্ যুতং সজো বাতগুলং চিকিৎসতি।
যোনিশূলং শিনঃশূলমশাংসি বিষমজন্ম।
ঘুত ৫ পল । কলার্থ—পিপুল ৩ তোলা,
দাড়িমবীজ ২ পল, ধনে ১ পল, ভাঁঠ ২ তোলা,
ত্ম ২০ পল । এই সমুদায় সন্তঃ পাক করিয়া
লইবে । ইহাং সেবন করিলে বাতগুলা, যোনিশূল, শিরংশূল ও অশোরোগ নিবারিত হয়।

ধাত্রীষট্পলকং মৃত্য ।

ধাত্রীদলানাং স্বর্গে বড়কং পাচয়েদ্ মুত্র।
শক্রানৈন্ধবোপেতং তদ্ধিতং সর্বাগুলিনান্।
মুত্ত /৪ সের, আমলকীর রস ১৬ সের।
করার্থ—পিপুল, পিপুলমূল, চই, চিতামূল,
শুঠিও যবকার প্রত্যেক ১ পল। পাকের জল
১৬ সের। গুলেপ—চিনি /৮০ পোয়া ও
সৈন্ধব /০ পোয়া। এই মৃত সকল প্রকার
বাতগুলোই হিতকর।

ভাগীষট্পলকং মৃতম্।

ষড় ভিঃ পলৈম গধজাকলম্লচব্যবিষৌষধজ্ঞলন্যাবককৰপক্ষ ।
প্ৰস্থং মৃততা দশমূল্যকুবৃকভাগীকাথেহপাথো পয়ান দগ্নি চ ষট পলাখাম ।
ভাল্মাদরাক্চিভগলরমগ্রিনাদকামজ্ঞর ক্ষয়-শিরোগ্রহণীবিকারান্ ।
সন্তঃ শমং নয়তি ষে চ ক্যানিলোখা
ভাগ্যাগ্যষ্টপলনিদং প্রবদ্ধি বৈত্যাঃ ॥

ম্বত /৪ সের। করার্থ—পিপ্পলী, পিপ্পলীমূল, চৈ, ভাঠ, চিতা ও যবক্ষার, প্রত্যেক এক এক পল করিয়া ৬ পল ; দশমূল, এরগুমূল ও বামূল-
হাটার কাপ (মিলিত) /৬ সের (কাহারও মতে কাথ /৮ সের, নিশ্চলের মতে কাথ /৬ সের),
হগ্ধ /৪ সের, নিশ্চলের মতে কাথ /৬ সের,
করের মতে দাধ /৬ সের (কাহারও মতে
দাব /৪ সের, নিশ্চলের মতে দাব /৬ সের,
অক্তের মতে দাব /৮ সের)। যথাবিধি পাক
করিবে। এই ষট্পলক মতে পান করিলে গুল্ম,
ভঠর, অর্কাচ, ভগল্পর, অমিমান্স্য, কাস, জ্বর,
ক্ষয়, শিরোরোগ ও গ্রহণীবিকার এক বাত-
শ্লেম্বজনিত অন্যান্ত রোগ আশু প্রশমিত হয়।

ক্ষারষট্পলকং য়তম্।

পিপ্ললীপিপ্ললীমূল-চবাচিত্রকনাগরৈ:। পলিকৈ: স্বাক্ষ্ণরৈ: সপি:প্রস্থং বিপাচয়েৎ। ক্ষীরপ্রস্থেন তৎ সপিইন্তি গুল্মং ক্ষাত্মকম্। গ্রহণীপাণ্ডুরোগন্নং প্লাইকাসক্ষরাপহম্।

ঘু ১/৪ সের, ছ্গ্ন /৪ সের। ক্লার্থ—
পিপুল, পিপুলমূল, চই, চিতামূল, শুঠ ও
যবক্ষার প্রত্যেক এক পল। এই ঘুত সেবনে
কফগুল, গ্রহণীরোগ ও পাণ্ডু প্রভৃতি অনেক
ব্যাধি নষ্ট হয়।

ভল্লাতকং য়তম্।

ভরাতকনাং দিপলং পঞ্মূলং পলোকিতম ৷ সাধ্যং বিদারীগন্ধাচ্যমাপোণ্য সলিলাচ্কে ॥ পাদাবশেবে পুতে চ পিশ্পলীং নাগরং ৰচাম্।
বিভূসং সৈন্ধবং হিন্দু বাবপুকং নিড়ং শটাম্।
চিত্ৰকং মধুকং রাস্তাং পিষ্ট্রী কর্বনমান্ ভিবক্।
প্রস্থক পরসো দ্বা ঘৃতপ্রস্থং বিপাচরেং॥
এডদ্ ভ্রাতকং নাম কক্ত্রশ্বহরং পরম্।
দীহপাপ্রামরশ্বাস-গ্রহীকাসগুক্রশ্বং।

ভেলা ২ পল, স্বন্নপঞ্চমূল অর্থাৎ শালপাণি, চাকুলে, বৃহতী, কণ্টকারী ও গোকুর
এবং বিদারীগন্ধা প্রত্যেক ১ পল, জল ১৬
সের, শেষ /৪ সের। কন্ধার্থ—পিপুল, শুঠ,
বচ, বিড়ক্ষ, সৈন্ধব লবণ, হিন্দু, যবক্ষার, বিন্
লবণ, শটী, চিতা, যষ্টিমধু ও রান্ধা প্রত্যেক ২
তোলা। ক্লয় /৪ সের, ঘত /৪ সের। যথাবিধি পাক করিবে। এই ভল্লাভক ঘৃত কন্ধগুলোর শ্রেষ্ঠ ঔষধ। ইহা দ্বারা প্রীহা, পাণু,
স্বাস, গ্রহণী, কাস ও গুলা বিন্ত হয়।

হবুষাতাং মৃত্যু।

হব্বাব্যো বপৃথ ীকা-চব্যচিত্রকদৈকবৈ:।
নাজাজাপিপ্ললীমূল-দীপ্যকে: পাচয়েদ্ স্বতম্ ॥
নকোলমূলকরসং সক্ষীরদ্বিদাভিমম্।
৩ৎপরং বাতগুলাছং শূলানাহবিবকল্প ॥
বোজ্যপোগ্রহণীদোব-খাসকানাক্ষতিজ্বরান্।
পার্থক্তিশূলক স্বত্যেতদ্ব্যপোহতি॥

ম্বত /৪ সের, কুলগুঁঠের কাথ /৪ সের, ত্ব প্র নার কাথ /৪ সের, ত্ব /৪ সের, দিধ /৪ সের, দাড়িমফলের কাথ /৪ সের। কবার্থ —হব্বা, ত্তিকটু, ক্রফ্ডনীরা, চই, চিভামূল, সৈন্ধব, জীরা, পিপুলমূল ও যমানী মিলিত /১ সের। এই ম্বত পান করিলে বাতগুল প্রভূতি অনেক রোগ উপশমিত হয়।

রদোনাদ্যং মৃত্যু।

রলোনস্বরসে সর্পিঃ পঞ্মুলরসান্তিম।
স্বরারনালদধাম-মূলকস্বরসৈঃ সহ ।
ব্যোবদাড়িমবৃক্ষাম-যমানীচবাদেকবৈঃ।
হিল্পমবেতসাজাজী-দীপাকৈন্চ পলান্বিতৈঃ।
শিক্ষা গুলাগ্রহনালালাক্ষরস্বান্।
কাসাপন্মারমন্দাগ্রি-প্লীহশুলানিবান্ ক্রেছে।

রম্বনের স্বরস, মহৎ পঞ্চমুলের কাথ, ম্বা, কাজি, দিধি ও অমুল্ক, এই সকল দ্বা প্রত্যেক /৪ সের, ঘৃত /৪ সের। কলার্থ—ত্রিকটু, দাড়িম, মহাদা, যমানী, চৈ, সৈন্ধব, হিন্ধু, অমবেতদ (পেকল), জীরা, বনষমানী প্রত্যেক ১ পল। যথাবিধানে পাক করিবে। এই ঘৃত পান করিলে গুলা, গ্রহণী, অর্শঃ, স্বাস, উন্মাদ, ক্ষয়, জ্বর, কাস, অপস্মার, মন্দাগ্নি, শ্লীহা, শূল ও বাতরোগ বিনষ্ট হয়।

ত্রায়মাণাদ্যং মৃত্যু।

জলে দশগুণে সাধাং রোমাণাচতুপানম্।
পঞ্চাগন্থিতং পূতং ককৈঃ সংযোজ্য কার্বিকৈঃ ॥
রোহিনীকটুকা মৃন্তং রোমাণা ছুরালভা ।
কক্ষামলকা বারা জীবস্তা চনানোৎপালম্ ॥
রসকামলকানাক ক্রিয়া চ স্বত্যা চ।
পালানি পুখগন্তারো দ্বা সম্যাগ্রিপাচরেও ॥
পিন্তগুলাং রক্তপিন্তং বিসপং পৈন্তিক্রমন্।
কন্টোগং কামলাং কুঠং হ্সাদেব মৃত্যেন্তমন্ ॥
পালোমেখাগতে মানে ন বৈত্তগ্যমিহেন্তে।
চত্যাবিংশংপালং তেন তোমং দশগুণং ভবেৎ॥

ঘত /১ সের। কাথার্থ—বলাডুমুর ৪ পল, জল ৪ • পল, শেষ ৮ পল। আমলকীর রস /১ সের, ছগ্ম /১ সের। করার্থ—কট্কী, মূতা, বলাডুমুর, হরালভা, ভূইআমলকী, ক্ষীর-কাকোলী, জীবস্তী, রক্তন্দন ও উৎপল প্রত্যেক ২ তোলা। এই ঘুত পানে পিন্তগুলা, রক্তপিত্ত ও অস্তান্ত অনেক রোগ নই হয়।

রুশ্চীরাদ্যরিষ্টঃ

বৃশ্চীরমূকবৃক্ধ ব্যাভ্ঃ বৃহতীদ্বান্।
চিত্রকক জনলোণে পচেৎ পাদাবশেষিতন্।
নাগধীচিত্রকক্ষীদ্র-নিগুকুস্থে নিধাপদেং।
মধুন: প্রস্থাবাপ্য পথাচুর্গার্জসংযুতন্।
ব্যোষিতং দশাহক জীগ্তক্ত: পিবেরঃ:।
অরিষ্টোহরং জয়েদ্ গুলামবিপাকং বহুত্তরন্।
শেত প্নন্বা, এরশুমূল, পুনন্বা, বৃহতী,
কণ্টকারী ও িত এই স্কল জব্য মিলিত

১২॥ সাড়ে বার সের; জল ৬৪ সের।

যথাবিধি পাক করিয়া ১৬ বোল সের থাকিতে
নামাইবে। তৎপরে একটা কলদীর অভ্যন্তর
ভাগ পিপুল, চিতা ও মধু ঘারা লিপ্ত করিয়া ঐ
কলদীতে উক্ত কাথ স্থাপন করিবে। পশ্চাৎ
/৪ সের মধু ও /১ সের হরীতকী চূর্ণ তাহাতে
নিক্ষেপ করিয়া ঐ কলদীটা ১০ দিন ধায়
(আগ্ড়া) রাশির মধ্যে রাখিয়া দিবে। ভুক্ত
দ্রব্য সম্মক্ জীর্ণ হইলে এই অরিষ্ট পান
করিবে। ইহা পান করিলে গুন্ম ও হন্তর
অপাক নিবারিত হইয়া থাকে।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

গুলারোগে পথ্যানি।

বেহং কেলো বিরেকণ্ট বন্তিরণ্ট শিরাবাধং।
লঙ্গন বন্তিরভাঙ্গং মেচং পাকে তু পাটনম্॥
সংবংসরসমূৎপারাং কলায়রক্তশালয় ।
গড়ং কুলখাসুন্দ ধর্মাংসরসং হরা॥
গবামজায়ান্ট পায়ে মৃদ্ধান। চ পায়বকম্
থঙ্জুরং লাভিনং ধাজী নাগরকায়বেতসম্।
তক্তমেরওতৈগঞ্জ লঙ্গনং বালম্লকম্।
পাঙ্কুরো বাস্তবং শিল্লা বনকারো হরীতকা॥
রামঠং মাতুলুক্ষণ ক্রোবণং হরভাজলম্।
যদমং মিকম্থক্ষ বৃংহণং লঘু দাপনম্।
বাভালুলোমনকৈর পধ্যং গুলো নৃশাং ভবেৎ॥

মেহ, স্বেদ, বিরেচন ও বস্তি প্রয়োগ. বাছ্ঘরের শিরাবেধ, উপবাস. গুহু বর্ত্তি প্রয়োগ,
তৈলাদি অভ্যঙ্গ, মেহপ্রয়োগ, পাটন (পাকিলে
ছেনন), সংকংসরোঘিত কলায় ও রক্তশালি,
খড়মুম, কুলঅকলায়ের সৃষ, ধমদেশজ মৃগপক্ষী
প্রভৃতির মাংসরস, স্থবা, গোছগ্ধ, ছাগছগ্ধ,
দাক্ষা, ফল্সাফল, শর্জুব, দাড়িম, আমলকী,
নারাসীলেবু, থৈকল, তক্র, ভেরেণ্ডার তৈল,
রস্থন, কচিমূলা, শালিঞ্চণাক, বেভোশাক,
শজিনা, যবক্ষার, হরীতকী, হিন্ধু, ছোলঙ্গলেব,
ত্রিকটু, গোমৃত্র এবং সিগ্ধ উষ্ণবীব্য প্রষ্টকর
লঘু ও আয়নীপক দ্রব্য এবং বাতামুলোমক
অন্ধ গুলাবোগে হিতকর।

গুলারোগেইপথ্যানি।

বা • ক'র''। সক্ষা । বিরুদ্ধান্তশনানি চ । বল্লর মূলক মংসা নু মধুরাণি ফলানি চ ॥ ওক্ষাকং শ্যাবাল্যাং বিষ্টাণি ওক্ষি চ। অধ্যেবালশকু আুবি শ্যাবাশ্যাবশ্য। ব্যবহা জলপান্ধ ওক্ষাবোগা প্রিভাজে ॥

বায়ুবৰ্দ্ধক দ্ৰন্যসূহ, বিক্সপ্ৰেভাগন, শুক্ষ
মাংস, মূলা, মংসা, মৰুররসমূক্ত ফলা, শুক্ষণাক,
শুমীবাত্ত (মুশ্লমাসাদি), বিষ্টপ্তিদ্বা, গুক্তদ্ৰুৱা, অনোবাত্ত্বগ, মলবেগ, মূত্ত্বেগ, শুম জনিত শাসবেগ ও অশ্বেগ ধারণ, বমন এংই জলপান, গুলারোগির এই সমস্ত পরিত্যাক্ষ।

ইত্যারুর্ন্বেদ-সংগ্রহে গুলারোগাণিকারঃ।

অথ হৃদ্রোগাধিকারঃ।

অথ ক্দ্ৰোগ-নিদান ।।

অত্যুক্ত শুক্তর ক্রমায় তিজ-শ্রমা ভিনাতা গাণান প্রসক্তে। সংক্রিস্তানে বেগবিধারণৈশ্র ক্রমায়ঃ পঞ্চবিধঃ প্রদিষ্টঃ ॥ দূর্যায়ঃ রসং দোষা বিশুণা হৃদয়ং গভঃ। ক্রমিরণ বেশং প্রক্রমন্তি ক্রমাগং তং প্রচল্পতে॥

অতি উষ্ণ গুরু ক্যায় ও তিক্ত ভোজন.
পরিশ্রম, আঘাত-প্রাপ্তি ও অন্যুশন আগাৎ
পূর্বহার অজীণসত্ত্বে পূনভোজন এই সকলেব
আতিশ্যা এবং নিরন্তর চিন্তা ও মলাদির
বেগবারণ এই সকল কারণে সজোগ জন্মে।
স্থান্ত্রোগ পাচ প্রকার। যথা—বাতজ পিত্তজ,
কক্ষক, ত্রিদোযক্ত এবং ক্রিমিজ।

কুপিত বাতাদি দোষত্রর হাদয়ে উপস্থিত হুইয়া তত্ত্বস্থ রসকে দূষিত করত নানাপ্রকার বেদনা উপস্থিত করে, ইহাকেই হুদ্রোগ বলিয়া থাকে।

অথ বাতজহাতে দান-লক্ষণম।

আবম্যতে মারুতজে হদয়ং তুক্ততে তথা। নির্মাণ্ডে দীয়তে চ ক্ষেডিতে পাঁটাতেংপি চ ॥

বাতজন্ত সংদাগে সদয় যেন আরুই, হচা ধারা বিন্ধ, দণ্ড ধারা মথিত, অস্ত্র ধারা ধিবাক্কত, শলাকা ধারা স্ফুটিত ও কুঠার ধারা পাটিত বলিয়া বোধ হয়।

অথ বাতজহৃদ্রোগ-চিকিৎসা।

বাতোপন্য है, হৃদয়ে বাময়ে নিশ্বমা চুরম্।

বি এক মুলীকাঝেন সমেহলবণেন চ॥

(কাত্রামুক্তমপি মদনফলাদিচুর্ণং বোধাং বমনবোগ
ছাৎ, বাতজেহপি বমনবিধানং হৃদয়স্য কফস্থানছাৎ।
এবং পিত্তেহপি বমনং বোধান। চরকে হৃদ্রোগিণে।
রক্তপাবমা। উক্তান্তথাপি কফোৎক্রেশে বলীয়্নিঃ সব্বত্রৈব
বমনং ক্রেয়ন।

বাতোৰণ ক্ষোগে সেহপ্রারোগ দারা রোগিকে স্লিগ্ধ কবিয়া, তৈল ও লবণ সংখ্যুক্ত দশমূলের কাথের সহিত মদনফল চুর্ণ পান করাইয়া ব্যন করাইবে।

স্থতেন হক্ষেন শুড়াস্থসা বা পিবস্কি।চূর্ণং ককুভয়চো যে। গল্পোগলীব্যুরকুপিত্তং হয়া ভবেষন্চিরজীবিনুস্তে।

গ্নত, তথ্য কিংবা ওড়োদকের সহিত অর্জ্বন ছাল চুর্ণ ৮০ আন। মাত্রায় গেবন করিলে ফাদ্রোগ, জীর্ণজ্বর ও রক্তপিতের শাস্তি এবং আয়র দ্বি হয়।

পিপ্লল্যাদি চুর্গম্।

পিশল্যেলা বচা হিন্ধু স্বক্ষারোহ্য দৈশ্বৰু। সৌৰচলমথো শুঠী অন্ধানা চ চুর্নিতম্। ফলধাস্থান্মকৌলখ-দ্ধিমস্তাসবাদিভিঃ। পায়য়েচ্ছুদ্ধদেহক স্থেনেনান্সতমেন বা ।

অত্রে মদনফলাদি দারা বমন করাইরা বোগিকে শুদ্ধ-দেহ করিয়া পরে পিপুল, এলা-ইচ, বচ, হিঙ্গু, যবক্ষার, সৈন্ধব এবং সচললবণ, শুঠিও বনযমানী ইহাদের চূর্ণ, টাবালেবুর রস, কাজি, কুল্প কলায়ের কাথ, দধি, মদ্য, আসব বা কোন স্নেহ-পদার্থের সহিত্ত পান করাইবে।

সপুন্ধরাব্যাং ফলপূর্মূলং মহৌষধং শঠাভয়া চ কন্ধঃ। ক্ষারাম্লসর্পিল বিশেবিমিঞা গুণদ্ বাতহ্বপ্রোগহরো নরাণাম্॥

পুরুরমূল (অভাবে কুড়), টাবালেবুর মূল, ভুঠ, শঠা ও হরীতকী, ইহাদের কল্ক, ছগ্ধ কাজি ত্বত ও লবণ সংস্কুত করিয়া সেবন করিলে বায়জন্ত হনোগ প্রশামত হয়।

হরীতকাবচারামা-পিশ্ললীনাগরোম্ভবম্। এটাপুশ্বরমূলোথং চুর্বং হুজোগনাশনম্॥

হরতিকী, বচ, রামা, পিপুল, শুঠ, শঠী ও পুক্রমূল, ইহাদের চুর্ণ (৫ • হইতে ॥• আনা মাঝায়) জলের সহিত সেবন করিলে জন্তোগ নিবারিত হয়। নাগরং বা পিবেছ্জং ক্যায়কায়িবর্জনম্।
কাসমাসানিলহরং শ্লহুদ্রোগনাশনম্।
ত ঠের উষ্ণ কাথ পান করিলে শ্ল, হুদ্রোগ,
কাস, খাস ও বায়ু প্রশমিত এবং অগ্নি বর্জিত
ইইরা থাকে।

পুটদশ্বং হরিণশুক্ষং পিষ্টং গব্যেন সর্পিবা পিবতঃ। হুৎপৃষ্ঠশূলমচিরাছুপৈতি শাস্তিং স্থক্টমপি ।

হরিণশৃঙ্গ কুশ দাবা বেষ্টিত ও মৃত্তিকালিপ্ত করিয়া গোময়ামিতে দগ্ধ করিবে। পরে তাহা গব্য গ্নতের সহিত পেষিত করিয়া সেবন করিলে অতি কষ্টপ্রদ হৃদয়শূল ও পৃষ্ঠশূল অচিরে নিবারিত হয়।

তৈলাজ্য শুড়বিপকং চূর্ণং গোধুমপার্থজং বাপি। পিবতি পরোহতু চ যঃ সভবেজ্যিতসকলহদাময়ঃ পুরুষঃ॥

তৈল ঘৃত ও গুড় মিলিত ১ ভাগ, গোধ্ম ও অর্জ্জুনছাল চুর্ণ মিলিত ৪ ভাগ, অল্ল জল সহ একত্রে মোহনভোগের ক্যান্ত পাক করিয়া সেবন করিলে রোগী সকল প্রকার হুজোগ ছুইতে মুক্তিলাভ করে। পথ্য—2গ্ধ।

অথ পিত্তজহাদোগ-লক্ষণম্।

ত্কোষাদাহচোষা: সাং পৈতিকে হুদয়ক্ষম:।

ধ্মায়নঞ মুক্তা চ বেদ: গোগো মুপক্ত চ।

পৈত্তিক হুদোগে, তৃষ্ণা, উন্মা, দ'ই,
শরীরে চ্ষপবং পীড়া, হুদয়-মানি, কণ্ঠ হুইতে
ধ্মনির্গমবং প্রতীতি, মুর্চ্চা, ঘন্ম ও মুধশোষ
হুইয়া থাকে।

অথ পিতজহৃদ্রোগ-চিকিৎসা।

শীতাঃ প্রদেহাঃ পরিষেচনঞ্চ
তথা বিরেকো কদি পিত্তমতে।
পিত্তজনিত ক্রদোপে শাতল প্রদেহ ও
বরিষেক এবং বিরেচন প্রশস্ত।
শ্রুপশীমধুককোজনিতা গুড়কনৈর মেং।
পিত্তোপসতে কদরে সেবেত মধুরৈঃ শৃতম্।
শ্বতঃ ক্যারাংশ্চাদিষ্টান্ পিত্তম্বরিনাশনান্।
পিত্তজনিত ক্রদোগে গান্তারীফল ও বৃষ্টি-

মধু ২ তোলা /া:• সের জলে সিদ্ধ করিরা /া•
পোরা থাকিতে নামাইবে। সেই কাথে
মর্নাফল চূর্ণ মিশ্রিত করিরা ভাহা মধু,
চিনি ও গুড়ের সহিত পান করাইরা বমন
করাইবে। ইহাতে কাকোল্যাদি মধুরগণোক্ত
দ্রব্যের কাথ ও কল্প সহ সিদ্ধ হত এবং
পিত্তজ্রোক্ত কথার সকল ব্যবস্থা করিবে।

জাক্ষাসিতাক্ষেত্রপক্ষরকৈঃ স্থাৎ তক্ষে চ পিত্তাপহমন্ত্রপানম্। পিষ্ট্1-পিবেদ্বাপি সিতাজনেন মন্ত্রাহরমং তিক্তকরোহিণীক ॥

বমন ও বিরেচন স্বারা দেহশোধন করিয়া দ্রাক্ষা, চিনি, মধুও ফল্সা ফল সহ পিত্ত-নাশক অন্ন পানীয় প্রদান করিবে। চিনির ছলের সহিত ষ্টিমধুও কট্কী পেষণ করিয়া সেবন করাইবে।

অর্জুনক্ত হুচা সিদ্ধং কীরং যোজ্যং হৃদানয়ে। সিতয়া পঞ্চ্ন্যা বা বলয়া মধুকেন বা ॥

অর্জ্নছাল, স্বল্লপঞ্চমূল, বেড়েলা বা য**্টি-**মধুর সহিত ত্রগ্ধ সিদ্ধ করিয়া চিনির সহিত সেবন করিতে দিবে।

ৰথ কফজহাদ্রোগ-লক্ষণম।

গৌরবং কদসংপ্রাবোহসটি অভোহমিমার্কবন্।
মাধ্র্যমণি চাক্তক্ত বলাসাবততে হুদি।
সৈম্মিক হুদ্রোগে হৃদয়ের গুরুতা, কক্সাব,
অক্লচি, জড়তা, অগ্নিমান্ধ্য ও মুখ্মাধ্র্য্য এই
সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়।

অথ ককজহাদ্রোগ-চিকিৎস।।

বচানিককবায়াত্যাৎ বাস্তং হৃদি কফোখিতে। বাতক্ষ্যোগহৃচচূৰ্ণং পিশ্বল্যাদিক যোজয়েৎ ।

কৃষ্ণ হালোগে, বচের ক্যায় বা নিমের ক্যায় বারা কিংবা বচের ক্স্প ও নিমের ক্যায় মিলিত করিয়া তদ্বারা বমন করাইয়া পূর্ব্বোক্ত বাতহ্যদ্রোগনাশক পিপ্পল্যাদি চূর্ণ ও পিপ্পল্যাদি গণ প্রয়োগ করিবে।।

ত্রির তাদিচুর্থ।

ত্রিবৃচ্ছটা বলা রামা শুস্তী পথ্যা সপোদরা। চর্নিতা বা শুতা মূত্রে পাতব্যা কক্ষদ্গদে।

কফজ জ্জোগে তেউড়ী, শর্মী, বেড়েলা, রামা, শুঠি, হ্রীতকী ও কুড়, ইহাদের চুর্ণ অথবা গোমূত্র সাধিত ইহাদের কাথ পান করাইবে।

मृटेक्शनामिष्ट्र्गम्।

পুলৈকা মাগধীমূলং প্রলীচ্ং স্পিষা সহ। নাশয়েদাশু সচ্চোগং কফজং সপরিগ্রহম ।

ছোট এলাইচ ও পিপুলমূল চূর্ণ মতের সহিত লেহন করিলে আন্ত কফজ হুদ্রোগ ও তাহার উপদ্রব সকল প্রশ্মিত হয়।

অথ ত্রিদোষজ-ক্রিজ-ক্রেদাগলক্ষণম্।

বিস্তাদ্ তিলোযপুপি সর্কানকং
তীব্রান্তিভোদং ক্রিমিজং সক্তৃম্।।
উৎক্লে: গ্রীবনং ভোদ: শূলং হুলাসকস্তম:।
অক্টি: শ্রীবনেত্রত্বং লে!পশ্চ ক্রিমিজে ভবেং।
ক্লম: সাদো ভ্রম: শোষো জ্ঞেয়ান্তবাম্প্রবা:।
ক্রিমিজে ক্রিমিজাতীনাং গ্রৈমিজাণাঞ্চ বে মতা:।

ত্রিদোষজ ও ক্রিমজ হুদোগের লক্ষণ।
ত্রিদোষজ হুদ্রোগে, বাতজাদি ত্রিবিধ হুদ্রো-গের লক্ষণই সংঘটিত হয়। অপিচ ইহাতে
অপচার ঘটিলে অর্থাৎ তিল ক্ষীর ও গুড়াদি
আহার করিলে, হৃদয়ের কোন স্থানে একটি
গ্রান্থ উৎপন্ন হুন্ন এবং সেই গ্রন্থির রস ও ক্লেদ ইতি ক্রিমি জন্মিয়া থাকে। তথন সেই
ত্রিদোষজ হুদ্রোগে ক্রিমিজন্ম তীব্রবেদনা,
ক্রম্যে স্কুটীবেধবৎ পীড়া ও কণ্ণু উপস্থিত হুন্ন। ক্রিমিজ হুদ্রোগে বমন-বেগ, মুখপ্রাব, হুদরে স্থটীবেধবং পীড়া, শূল, হুদয়স্থ রসের উদিগরণ, অন্ধকারদর্শন, অক্রচি, শ্রাবনেত্রভা ও শোর্থ এই সকল লক্ষণ প্রকাশ পায়।

ক্লান্তিবোধ, দেহের অবসাদ, ভ্রম ও শোষ এই সকল উপত্রব সর্ব্বপ্রকার ক্র্যোগেই দৃষ্ট ২য়। ক্রিনিজ ক্র্যোগে এতখ্যতীত শ্লৈমিক ক্রিমির যে সকল উপত্রব, তাহাও ঘটিয়া থাকে।

অথ ত্রিদোষজহৃদ্রোগ-চিকিৎসা।

তিদোষকে লঙ্গনমংদিতঃ স্যাদন্ত্রক সর্ব্ধের্ হিতং বিধেয়ম্।
হীনাতিমধ্যত্বমবেকা চৈব কাল্যং ত্রন্থামপি কর্ম্ম শন্তম্।
ত্রিদোষক করেনাত্রে প্রথমে লঙ্গন করাইরা,পরে যে সকল জ্বন্ন পান বাতাদি দোষত্রেক্টে প্রশন্ত, তাহা বাবস্থা করিবে। এবং
দোষের হীনতা প্রবলতা ও মধ্যাবস্থা লক্ষ্য করিয়া দোষত্রহের্ই বৈধ চিকিৎসা করিবে।

চূৰ্। পুদ্ধকা লিহানাকিকেণ সমাক্তম্। হচ্ছুদং খাসকাসমং ক্ষহিকালিবারণম্।

পৃষ্ণরচূর্ণ (অভাবে কুড়চূর্ণ) মধুর সহিত মিলিত করিয়া লেখন করিলে, হৃৎশূল, কাদ, শ্বাদ, ক্ষয় ও হিকা নিধারিত হয়।

গোধুমককুভচুর্ণ ভাগপয়োগবাদপিযা পক্ষ।
মধুশকরাসমেতং শময়তি কলোগমুক্কতং পুংসাম্ ।

গোধ্ম ১ ভাগ, অৰ্জ্নছাল চূৰ্ণ ১ ভাগ, ঘত ও চিনি এই সমস্ত দ্ৰথা ছাপত্থ সহ মোহনভোগের স্থায় পাক করিয়া শীভল হইলে তাহাতে মধু প্রক্ষেপ দিবে। ইহা সেবনে উগ্র হাদোগ প্রশমিত হর।

মূলং নাগবলায়ান্ত চূর্ণং ছফোন পারয়েং। হাদ্রোগম্বাসকাসমং ককুভস্য চ বন্ধলম্ । রসাঃনং পরং বল্যং বাতজিক্সাসঘোজিতম্। সংবংসরপ্রয়োগেণ জীবেদ্ বর্ষশতব্যুম্।

গোরক্ষচাকুলের মূল চূর্ণ অথবা অর্জুন-ছাল চূর্ণ হুগ্নের সহিত পান করিলে ছাদোগ শ্বাস ও কাস নিবারিত হয়। ইহা বসায়ন, ৰলকর ও বাষ্নাশক। এই ঔষধ দীর্ঘকাল সেবন করিলে বোগী দীর্ঘায়ুঃ হয়।

হিক্তুগ্ৰগন্ধাবিড়বি খক্কা-কুঠাভয়চিত্ৰকযাবশুক্ষ। পিৰেৎ সমৌবৰ্চিং গপুক্রাচ্যং যবান্ধসা শুলহদাময়ন্ত্ৰম্ ॥

হিং, বচ, বিট্লবণ, শুঠ, পিপুল, কুড়, হরীতকী, চিডা, যবক্ষার, সচললবণ ও পুক্ষর মূল, ইহাদের চুর্ণ যবের কাথের সহিত সেবন করিলে হুদ্রোগ ও শূল নিবারিত হয়।

> मभयूनीक्षाहस्य नवगक्षात्रमःयुटः । बामः कामक ऋजानः खबाम्नक नागदाद ॥

দশমূলের কাথে লবণ ও যবক্ষার প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে হুদ্রোগ, কাস, খাস ও গুল-শুল বিনষ্ট হয়।

পাঠাং বচাং যবকারমভয়াং সায়বেতসাম্।
ছুরালভাং চিত্রকক জাবণক ফলজয়ম্॥
শঠাং পুদ্ধরমূলক তিছিড়ীকং সদাড়িমম্।
মাতুলুকস্য মূলানি লক্ষ্চগানি কারয়েং॥
হুপোদকেন মদ্যৈব চুগান্তোগানি পায়য়েং।
ভাশঃ শুলক হুলোগং ভাশকান্ত বণোহাত॥

আকনাদি, বচ, যবক্ষার, হরীতকী, অম-বেতেস, হরালভা, চিতার মূল, শুঠ, শিপুল, মরিচ, হরীতকী, বংঙ্গা, আমলকী, শুঠা, পুক্ষমূল, তেতুল ছাল, দাড়িমত্বক্ ও টাবা-লেব্র মূল, ইহাদের চুর্ণ সমভাগে লইয়া ঈষ-ছফ্চ জ্বল বা মঞ্জের সহিত সেবন করিলে গুলা, জ্বৰ্ম: শুল ও হালোগ নিবারিত হয়।

অথ ক্রিমিজহ্বদ্রোগ-চিকিৎসা।

ক্রিমিজে চ পিবেয়্তাং বিড়ঙ্গাময়সংবৃত্য । হুদি স্থিতাঃ পতস্তোবমধন্তাং ক্রিময়ো নৃণাম ॥ ব্বায়ং বিভরেচ্চাল্মৈ স্বিড্রুমতঃপ্রম্ ।

জৈমিক হুদ্রোগে বিভূপ ও কুড় চুর্ণ মিশ্রিত করিয়া গোম্ত্র সহ পান করিলে হৃদয়স্থ জিমি সকল অধোগামী হইয়া নিপতিত হয়। পথ্য—বিভূসক্ষায় সাধিত ধ্বায়। ক্রিমিকদ্রোগিণ স্লিক্ষং ভোজরেৎ পিশিতৌদনম্।
দর্যা চ পললোপেতং ব্রাহং পশ্চাবিরেচরেৎ ॥
স্থপন্ধিভি: সলবণৈর্যোগ: সাঞ্জাজিশর্করৈ:।
বিভ্রন্থপাট্চর্যান্তায়নং পারয়েন্ধিতমুদ্ধমম্ ॥
(অত্র পিশিতৌদনং ক্রিমীণামুৎক্রেণার্থং পিশিতপ্রধানমোদনং পিশিতৌদনং দর্যা পললেন চ সংযুক্তং
ব্রেহং ভোজরেৎ। পললং পিষ্টকমিতি জেজ্জ্য;, তিলচুর্ণমিতি চক্রঃ, অত্তে তু শুস্কমাংসচুর্গমাহঃ। এতে
ক্রিমিত্যকা:। স্থান্ধিভি: সলবণৈযোগৈরিতি বিরেচনযোগৈ: চাতুর্জাতেন স্থান্ধীকরণঞ্চ বাজিশকানিরাসার্থং। ধাল্ডারমন্থপেরম্।)

ক্রিমিঞ্চ ক্রদোগে প্রথমতঃ ও দিন দিধ ও তিলপিষ্টক সংগ্রক্ত স্নিগ্ধ মাংদার ভোজন করাইয়া চাতুর্জ্জাতাদি দারা স্থগন্ধীক্বত এবং দৈন্ধব, জীরা, চিনি ও অধিক বিড়ঙ্গ বিশিষ্ট বিরেচক ঔষধ পান করাইবে। অনুপান— কাঁজি।

অথোরোগ্রহ-নিদানম্।

শতাভিষানিগুর্বস্থাত্যামিষাশনাব। সাস্ত্রং মাংসং যকুৎপ্লীকোঃ সন্ত্যোবৃদ্ধির্যনা ভবেব। উল্লোক্তিং তদা কুন্ধে) কুঞ্জতঃ কফমারুতে। ॥

ন বামপাথে ন চ দক্ষিণংংশ বৃক্সা মধ্যে পরিবৃদ্ধিমেতি। উরোগ্যং তং প্রবদ্ধি রোগং বৃকাগ্রতন্তনা শিরাতমুম্বন্। দৌর্বনায় কুব্বনায়িকং কাশ্যং মাংসাভিকাজ্জিতন্। জারতে কৃক্বর্নজং শীতকঞাপি জারতে । ভিজিহ্বদশ্যং ক্ষিত ক্ষিত কছপুস্বিভঃ।

ব্যাংকৃটি: পিপাসা চ শোষকাতি প্রকোপনে।
ক্রেদ্ভনক, গুরুপাক, জলপান এবং শুষ্
ও পৃতিষাংস ভোজন হেতু বায়ু ও কফ প্রকৃপিত হইয়া উরোগ্রহ নামক কোল উৎপাদন
করে। এই রোগে যক্ত্-প্রীহার মধ্যক্ত অন্ত্র ও
মাংস সম্ভোবৃদ্ধি প্রাপ্ত হইয়া থাকে। ইহা
আক্রতি সর্প বা কছেপ সদৃশ। রোগির বুক্ক:
গ্রন্থ শিবাসকল তন্ত্র, বর্ণ ক্রম্ভ বা পীত এবং
দৌর্কাল্য, অগ্নিমান্দ্য, কুশতা ও মাংসভক্ষণেচ্ছা
ইয়া থাকে। এই রোগ প্রবল ইইলে জ্বর,
অক্রচি, পিশাসা ও শোধ উপস্থিত হয়।

অথোরোগ্রহ-চিকিৎসা।

অত্যান্ত স্বেদনং যুক্ত্যা বমনং রক্তমোক্ষণম্। তীক্তৈনিক্রহণকৈব ক্রমালজ্ঞনমাচয়েৎ ।

যুক্তিপূর্বক স্বেদ, বমন, রক্তমোক্ষণ, তীক্ষ নির্মহণ ও লঙ্ঘন দারা উরোগ্রহের আশু প্রতীকার করিবে।

পুত্রজীবকশিগ্র ছক্-স্থ্যাবর্ত্তবলোন্তবা:। রসা একৈকশ: কোকা বিশো বা রামঠাশ্রিতা: ।

জিয়াপুতা, সজিনাছাল, ছড় হড়ে ও বেড়েলা ইহাদের প্রত্যেকটির বা হুই ছুইটির রস হিংসংস্কৃত্ত ও ঈষত্ত্ত করিয়া পান করিবে।

চব্যাস্লবেভসক্ষার-সর্মেঠসচিত্রকান্। পিবেৎ ভৈলারনালাভ্যামুরোগ্রহনির্ভয়ে॥

চৈ, অমবেতস, যবক্ষার, হিং ও চিতামূল, সমভাগ চূর্ণ, তৈল বা কাজির সহিত সেবন ক্রিলে উরোগ্রহ বিন্ট হয়।

অথ হৃদ্রোগসাধারণ-চিকিৎসা।

ককুভাদি চূর্ণম।

ককুভত্বগ্রচা রালা বলা নাগবলাভয়া।

শটা পুদরমূলক পিশ্বলী বিশ্বভেষজম্ ।

সক্রাণ্যেতানি সংচূর্য সর্পিবা শাবমাত্রয়া।
ভক্ষয়েৎ প্রাতক্রখায় সর্বসন্দোগশান্তয়ে।

অর্জ্কন্ছাল, বচ, নাস্না, বেড়েশা, গোরক্ষচাকুলে, হরীতকী, শটা, কুড়, পিপুল ও তুঁঠ
প্রত্যেকের সমভাগ চূর্ব একত্র মিশ্রিত করিয়া
। তোলা মাত্রায় উপস্কু পরিমাণ গবায়তের
সহিত প্রাতঃকালে সেবন করিলে সর্মপ্রকার
ক্রোগের শাস্তি হর।

রসাংন্য ।

রসগন্ধান্ত আনি পার্গবৃক্ষত্বসমূন।

এক্বিংশ্তিধা পর্যে ভাবিতানি বিধান ১৯।
মাধ্যাতিমিদং চুর্গ সধুনা সহ লেহয়েৎ ॥

ৰাতজ্ঞং পিছজং শ্লেম-সন্তৃতং বা ত্রিদোবজন্। ক্রিমিজঞাপি হুদোগং নিহস্তোব ন সংশয়: ।

পারদ, গন্ধক ও অভ্ৰত্ম এই সকল দ্রব্য অর্জ্জুনছালের রসে ২১ বার আতপে ভাবনা দিয়া ১ মাষা পরিমিত চুর্ণ মধুর সহিত সেবন করিলে বাতাদি সর্ব্যপ্রকার দোষসম্ভূত জন্যোগ নিবারিত হয়।

নাগাৰ্জ্জনাভ্ৰম্।

সহস্পৃটনৈঃ শুদ্ধং বজ্ঞাজ্ঞমর্জ্নস্বচঃ।
সবৈবিদ্দিতং সপ্ত-দিনং পরে বিশোধিতম্॥
চারাপ্তকা বটা কার্যা নামেদমর্জ্জনাহরেন্।
সচ্চাপাং সক্রশূল শো-সলাসচ্চনারেচকান্॥
অতীসারময়িমানদাং রক্তপিতং কতক্ষ্যম।
শোধোদরাম্বিপিত্র বিষম্বরমেব চ।
হস্তাস্তানাপ বোলংকে বলাং বৃষাংরিসাম্বন্।
(অজ্যুনহুচঃ সাধ্রেরিত এজ্যুনবন্দলক্রিশ্রেতার্থঃ
র, টা।

সহস্রপুট দ্বারা শুদ্ধ বছাত্র অর্জুছালের কাথে ৭ দিন থলে উত্তমরূপে মর্দ্দন করিয়া ছায়াতে শুদ্ধ করত বটা প্রস্তুত করিবে। ইহা দ্বারা হুদ্রোগ, শূল, আশঃ, ছদ্দি, অরোচক, অতীসার, অগ্নিমান্দা, রক্তপিত্ত ও বিষম্পর প্রভৃতি নানাব্যাধি বিনষ্ট হয়।

কল্যাণস্থন্দরো রসঃ।

রস্মিন্ত্ব, অত্র, বৌপা, তাত্র, অবি ও হিঙ্কুল প্রত্যেক সমভাগে লট্যা চিতার রুসে একদিন মাড়িয়া এবং হাতিশুড়ার রুসে ৭ থার ভাবনা দিয়া ১ গতি প্রমাণ বটিকা কারবে। ঈষ্ত্য জলের সহিত সেবনায়। ইহা সেবন করিলে উরস্তোর, হুজোগ, বক্ষোবাত, বক্ষো-ক্ষধির এবং কুস্কুসজ রোগ সমস্ত বিনষ্ট হয়।

চিন্তামণিরসঃ।

পারদং গন্ধকঞাজং লোহং বহুং শিলাজতু।

নামং সমং গৃহীয়া চ স্বৰ্ণং স্তাঙ (অসম্মিতম্ ॥

স্বৰ্ণন্ত বিশুণং রোপাং সর্বমেকত্র মন্দিরেং।

চিত্রকন্ত দ্রবেশাপি ভুলরাজান্তসা ততঃ ॥

পার্থস্যাথ করায়েণ সপ্তকুড়ো বিভাবয়েং।

ততো গুপ্পামিতাঃ:কুর্বাদ্ বটাক্ছায়াপ্রশোবিতাঃ ॥

একৈকাং দাপয়েদাসাং গোধ্মকাথদারিণা।

সংক্রোগান্ নিধিলান্ হন্তি বাাধীন্ মুপ্কুসজানপি ॥

প্রমেহান্ বিংশতিং স্বাসান্ কাসান্পি সম্ভুত্রমান।

বলপ্রিকরো সন্ত্রো রস্ভিত্যমণিঃ স্বতঃ ॥

পারদ, গন্ধক, অত্র, লৌহ, বঙ্গ, শিলাজতু প্রত্যেক এক ভোলা, স্বর্গ।০ ভোলা ও রৌপা। ॥০ ভোলা; সমুদায় একত্র করিয়া চিচার রদে, ভূষরাজ রদে এবং জ্জুনছালের কাথে ৭ বার করিয়া ভাবনা দিয়া ১ রতি প্রমাণ বটিকা করত ছায়ায় শুকাইয়া লইবে। এক একটী বটিকা গোধুমের কাথের সহিত সেব-নীয়। ইহা সেবন করিলে জলোগ, হুদ্গত ও মুদ্দুস্গত রোগ এবং প্রমেহ প্রভৃতি ব্যাধি নই ও বলবীয়া বৃদ্ধিত হয়।

বিশ্বেশ্বররসঃ।

ষণীজনোহৰক্সনাং রসপদ্ধক্ষয়েরপি।
বৈজ্ঞান্তস্য চ সংগৃত্য ভাপাংগ্ডে'লকস্মিন্তান্ ॥
কপুরস্গিলেনাথ ভাবরিছা গথাবিধি।
রক্তিকৈকপ্রমাণেন বিদ্যাদ্ বটিকান্ততঃ ॥
জ্ঞাং বিশেষরো নাম রসঃ কুস্কুস্জান্ গদান্।
সংশাগাংশ্চ জয়েৎ সর্কান্ সংশারে তার ন বিভাতে ॥
স্বর্ণ, অত্র, লোহ, বঙ্গ, পারদ, গন্ধক ও
বৈক্রান্ত প্রত্যেক ১ ভোলা পরিমাণে লইয়া
কর্পুরের জলে ভাবনা দিয়া ১ বতি প্রমাণ
বটিকা করিবে। ইহা সেবন করিলে স্লোগ
ও ফুস্কুস্জ সমস্ত রোগ নিরাক্বত হয়।

হৃদয়াপ্বরসঃ।

স্তার্কগন্ধক" কাথে বরায়া মর্লয়েদ্ দিনম্। কাকমাচনা বটীং কুত্বা চণমাত্রাক ভক্তরেং। হাদয়ার্থবনামায়: সালোগদলনো রসঃ॥ *

পারদ গন্ধক ও ভাত্র ত্রিফলা কাথে এবং কাকমাচীর রসে এক এক দিন মর্দ্দন করিয়া চণকপ্রমাণ বাটকা করিবে। ইহা সেবন করিলে হন্দোগের শাস্তি হয়।

পঞ্চাননরসঃ।

সূতগন্ধে জৈবৈধ িন্যা মৰ্জনেদ্ গোন্তনাজবৈঃ। যষ্টিগৰ্জনুসলিলৈদিনক পৰিমৰ্জনেৎ। ধাত্ৰীচুৰ্গ সিতাকামু পিবেদ প্ৰদেশিশান্তৱে।

পারদ ও গন্ধক একএ কজ্জনী করির।
সামলকী, দ্রাক্ষা, যষ্টিমপু ও খেজনের করে
এক এক দিন মন্দর্শ করিয়া বটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। সম্পান—আমলকীচুর্ণ ও চিনি।
ইহা সেবনে স্লোগ বিন্তু হয়।

প্রভাকরবটী ।

মা'ক্ষকং লোহমজঞ্চ তুগাক্ষীরং শিল'জতু। ক্ষিপ্ত্রা গলে'দরে পশ্চ'দ ভারতেং পার্থনারিণা। বল্লদয়মিতাং কুর্যান্দ্ বটাং ছায়া'বিশোধিতাম্। প্রভাকরবটা সেয়ং জদ্যোগান্ নিগিলান জয়েং॥

স্বণমাক্ষিক, লোহ, অন্ত্র, বংশলোচন ও শিলাজতু প্রত্যেক সমভাগে লইয়া অজ্ঞ-ছালের কাণে ভাবনা দিয়া ৪ রতি প্রমাণ বটিক

ইতাহগ্রে—কাকনাটাফলং কর্ম তিফলাফলসংযুত্র ।

বাজিংশৎ তেলকং কালমন্ত ভাগাবশেবিতম ।

অমুপানং পিনেচাত হজোগে চ কফোখিতে ।

ইতি রসেলগৃতঃ অধিকং পাঠঃ ।

ক্রিকাল ক্রিকাল ক্রিকাল ক্রিকাল বিক্রিকাল কর্মিকাল কর্মিকাল ক্রিকাল ক্রেকাল ক্রিকাল ক্রিক

কাকমাচীফল, আমলকী, হরীতকী ও বহেড়া মিলিত ২ তোলা; জল ৩২ ভোলা, শেষ ৪ তোলা, এই কাথ কফজ ক্রন্তোর্থে অমুপানার্থ প্রয়োগ করিবে। করিয়া ছায়ায় শুকাইয়া লইবে। যথাযোগ্য অমুপানের সহিত দেবনীয়। ইহা দেবন করিলে সকল প্রকার হুদ্রোগের শাস্তি হয়।

শঙ্করবটী।

রদক্ত ভাগালভারো বলেরপ্তী তথা মতাঃ।

জরো লোহস্ত নাগক্ত বাবিত্যেকতা মন্দ্রেং॥
ভাবরেং কাকমাচ্যাল্চ বিত্রকক্তার্ক্রকক্ত চ।
বরনেন জরস্ত্যাল্চ বাদায়া বিল্পার্থরোঃ।
ততো গুপ্পার্থরিতাং বিদ্যাদ বটিকাং ভিবক্।
একৈকাং দাপরেদাদামীয়হক্ষেন বারিণা॥
জরেদিয়ং ফুস্ফুসঞ্জান্ রোগান্ হদয়সম্ভবান্।
জীগজরং তথা ঘোরং প্রমেহানপি বিংশতিম্॥
কাসমাদামবাতাংশ্চ গ্রহণীমপি ছম্ভরাম্।
বটা শ্রীশক্ষরপ্রান্ধা বলপ্রতিবিন্ধিনী॥

পারদ ৪ ভাগ, গন্ধক ৮ ভাগ, লৌহ ৩ ভাগ ও দীদা ২ ভাগ এই দমুদায় একত্র করিয়া যথাক্রমে কাকমাচী, চিতা, আদা, জয়স্তী, বাদক, বিৰ ও অর্জুনের স্বরদে ভাবনা দিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ঈষত্বক জলের সহিত দেবনীয়। ইহা দেবন করিলে কুদ্কুদজ রোগ, সদ্রোগ ও অ্যান্ত বিবিধ পীড়া নিবারিত হয়।

অৰ্জুনয়ত ।

পার্থক কক্ষরদেন সিদ্ধং শন্তং মৃতং সর্বজ্ঞানরের ॥
মৃত /৪ সের। কাথার্থ—অর্জ্জনছাল /৮
সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। ককার্থ—
অর্জ্জ্নছাল /১ সের। অর্জ্জ্নমৃত সকল প্রকার
কর্যোগে প্রশস্ত ।

বলান্তং মৃত্যু।

भ्रज्ः तमानांश्वलाञ्ज्नाम्-निकः मयद्यैयध्कक्षाम् । रुट्यागम्लक्कउतक्ष्मिष्डः कामानिमारुक् भयग्रज्ञानीर्गम् ॥

ম্বত /৪ সের। কাথার্থ—বেড়েলা, গোরক্ষ-চাকুলে ও অর্জুনছাল মিলিত /৮ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। কন্ধার্থ—বৃষ্টিমধু /১ সের। এই ম্বত পান করিলে হৃদ্রোগ, শূল, উরঃক্ষত ও রক্তপিতাদি অনেক পীড়ার উপশম হইয়া থাকে।

বল্লভকং গ্ৰতম্।

মুখাং শতার্দ্ধক হরীতকীনাং সৌবচ্চলক্ষঃপি পলম্বরক। পকং গুতং বল্লভকেতি নামা সচ্ছ্যাসশূলোদ্যমারুভন্মন্।

ন্তু /৪ সের। কল্পার্থ—হরীতকী ৫০ টা, সচললবণ ২ পল। পাকার্থ জল ১৬ সের। নগাবিধি মৃত পাক করিয়া পান করিলে হুদ্রোগ, শ্বাস, শূল ও বায়ু নাশ হয়।

अनः द्वीनाः श्रुग्।

খদংগ্রেণীরমঞ্জিতা বলা ক'শ্যযাক'ওণম্।
দভমূলং পূথক্পণী পলাশবভকৌ স্থিবা ॥
পলিক'ন্ সাধ্যেৎ তেষ'ং রদে ক্ষীবে চতুপ্ত গৈ।
কলৈঃ স্বগুপবিতক-মেদ'জীবস্তাজীবকৈঃ ॥
শতাববৃ দ্বিমুখীকা-শক্রাশ্রাবণীবিদৈঃ।
প্রস্থাং দিদ্বো ঘৃতাছাত পিউসকোগশুলন্ত ॥
মৃত্রকুদ্রপ্রমেহাশঃ-খানকদেক্ষ্য'পংঃ।
ধন্তু-প্রীমৃত্যভ্রেপে-ক্ষাণ্'নাং বলম 'দেদে॥

ঘৃত /৪ সের। কাথার্গ—গোক্ত্র, বেণার মূল, মঞ্জিন্ঠা, বেড়েলা, গান্তারীছাল, গরুত্ব, কুলমূল, চাকুলে, পলাশমূল, ঋবভক ও শালপাণি প্রত্যেক ১ পল; জল ১৬ সের, শেষ /৪ সের। ছগ্ন ১৬ সের। করার্গ—আলকুশীবীজ, ঋবভক, মেদা, জীবন্তী, জীবক, শতম্পী. ঋদি, দ্রাক্ষা, চিনি, মুণ্ডিরী ও মৃণাল মিলিত /১ সের। এই রত বাতিক ও পৈত্তিক হাদোগ, শূল, ম্বরুদ্ভ, প্রমেহ, অর্শঃ ও ক্ষয় প্রভৃতি রোগ নাশক। বয়ুং আকর্ষণ, দ্রীসংসর্গ, মন্তপান, ভারবহন ও প্রশ্রুসপান হয়।

পার্থাদ্যরিষ্টঃ।

পাখীং ছচং তুলামেকাং মৃদ্বীকাৰ্দ্ধতুলাং তথা।
ভাগং মধুকপুপজ পলবিংশতিসন্মিতম্।
চতুর্দ্রোণেইস্তমং পক্তবা দোগমেবাবশেষরেও।
ধাতক্যা বিংশতিপলং গুড়ক্ত চ তুলাং ক্ষিপেও।
মাসমাত্রং স্থিতো ভাঙে ভবেৎ পার্থাজ্ঞবিষ্টকঃ।
হৃৎফুস্কুসগদান্ সর্কান্ হস্ত্যরং বলবীগাকুৎ॥

অর্জ্নছাল ১২॥॰ সের, দ্রাক্ষা ভা॰ সের ও মৌলফুল ২০ পল, একত্র ২৫৬ সের জলে দিদ্ধ করিয়া ৬৪ সের অবশিষ্ট থাকিতে নামান্টয়া কাথজল হাঁকিয়া লইবে। অনস্তর ঐ জলে শুড় ১২॥০ সের গুলিয়া ও ধাইফুল চূর্ণ ২০ পল প্রক্ষিপ্ত করত রুদ্ধভাতে ১ মাস রাখিবে। ইহাতে অস্তরুংসেক ক্রিয়া খারা অরিষ্ট প্রস্তুত হইবে। এই পার্থাছারিষ্ট পান করিলে হালয় ও ফুদ্দ্দ্ভাত পীড়া সকলের শান্তি এবং বলবীগা বৃদ্ধি হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ। —:*:—

হ্লদ্রোগে পথ্যানি।

খেনো বিরেকো বমনঞ্চ লজ্মনং বৃত্তিবিলেশী চিবরক্তশালয়ঃ। মুগান্ধিজা জাঙ্গলশমন্তরাঘিতা মুবা রসা মুক্পাকৃলখমন্তবাঃ॥ রাগাঃ খড়াঃ কাম্বলিকাক বাড়বা তবাং পটোলং কনলাফলাক্তপি। পুরাণকুলাগুরসালনাড়িমং শুল্পাকুলাগুরসালনাড়িমং শুল্পাকুলাগুরসালনাড়িমং শুল্পাকুলাগুরসালনাড়িমং শুল্পাকুলাগুরসালনাড়িমং শুল্পাকুলাগুরসালনাড়িমং শুল্পাকুলাগুরসালনাড়িমং শুল্পাকুলাগুরসালনাড়িমং শুল্পাকুলাকং নবমূলকালুপি॥ গুরস্তিতলং গানামু সৈদ্ধবং দ্রাক্তিবিলাগুরুল ক্রমান্ত্রকা সৌবীরগুকু: মধু বাক্সণীরদ: কন্তুরিকা চন্দনকং প্রপাণকম্। তামূলমপোৰ গণ: নথা ভবে-শ্মপ্তান্ত হুদ্রোগনিপীড়িতন্ত ।

স্বেদ, বিবেচন, বমন, উপবাস, বস্তিক্রিয়া, বিলেপী, পুরাতন রক্তশালি, জাঙ্গল মুগপক্ষীর भारमत्म, भूग ७ कूनथकनारमत युष, तांग, খড়যুষ, কাম্বলিক যুষ, যাড়ব, চালতা, পটোল, কদলীফল, পুৱাণ কুমড়া, পাকা আম, দাডিম. সোঁদালশাক, কচিমূলা, ভেরেণ্ডাতৈল, বুষ্টি-**ज**न, रेमक्रव. দ্ৰাকা, ত্ত্ৰ, পুনাণ শুকী. यमानी, হর্গতকী, ব্ভন, কুড়. মরিচ, আদা, সোবীর, শুক্ত, মধু, বারুণীবস, কন্তর্নী, রক্তচন্দন, ভাষ্ণ হাজাগুপীভিত মনুষোৱ এই হিতকারক।

कर मार्गर भशानि।

ভূট্ছদিনুত্র'নিলখ্জকাসে'লারিশ্রম্যাসবিজ্ঞবেগান্। সহাজিবিদ্ধাজিনদাজলানি মেগাপ্যো ছষ্টগুলং ক্ষায়ম্। বিক্লম্পং গুক্তিজময়ং পজে¦খণ'কানি চিবস্তনানি। কারং মধুকান্তি চদ্তকাষ্ঠং রজজাতিং হাল্যদ্বাংস্তাজেচ গ

ভ্ষণ, বমি, মৃত্র, অধোবাত, গুক্রে, কাস, উদ্যার, শ্রমজনিত শ্বাস, মল এবং অল্ল এই সমস্তের বেগধানা, সহাগিরি ও বিদ্ধাগিবি জাত নদীর জল; মেবীতৃগ্ধ, ভৃষিতজল, কষায়রস, রিক্তমন্তব্য, উষ্ণদ্রব্য, গুকুদ্রব্য, বিজ্ঞান্তব্য, বহুদিবসোংপল প্রশাক, যবকার, মৌলফল, দস্তবাবন ও রক্তমোক্ষণ এই সকল ক্রেটাগে অপণ্য।

ইত্যায়ুর্ব্বেদ-সংগ্রহে কদ্রোগাণিকার:।

অথ মৃত্রকচ্ছাধিকারঃ।

অণ মূত্রকুচ্ছু-নিদানম্।

ব্যায়াম তাক্ষোধধরক্ষমত্য-প্রদক্ষনিতাক্ত গৃষ্ঠশানাৎ। আনূপমংসংখ্যশনাদজীৰ্ণং স্থামু ত্রিক ফুলাণি লুগাণ ভপাতী। পুণ ভূমলাঃ স্বৈঃ কুপি চা নিদানৈঃ সর্বেহ্থবা কোপমূপেতা বস্তো। মূত্রন্থ মার্গং পরিপীড়য়ন্তি বদা তদা মুত্রয়তীহ কুড়াং। াীব্রান্টিরখঙ্গণবস্তিমেটে স্বলং মৃত্যু এয়তীত বাতাৎ। পীতং সরক্তং সঙ্গজং সদাহং কুছেং মুভ্যু তার ঠাই পিতাৎ ॥ বল্ডে: সলিকতা গুরুহনে থে মুত্রং সপিচছং কলমুত্রকুড্রেছ। সর্বাণি রূপাণি তু স্বিপাতাদ ভব্রিতৎ র ফুছতমং হি কুছেন্।

ব্যায়াম, তীক্ষবীর্যা ঔষধ ও রুক্ষ মন্থ ইহাদের প্রসঙ্গ অর্থাং সতত সেবা, নিত্য ক্রত
পৃষ্ঠবান (লোটকাদিতে গমন), অনুপদেশ(সজলভূমি) জাত মাস, অব্যাশন ও অজীর্ণ
এই সকল কারণে মৃত্রক্বজু রোগ উৎপন্ন হয়।
ইহা আট প্রকার। বাতাদি পৃথক্ পৃথক্ দোষ
অথবা মিলিত ত্রিদোষ স্ব প্রকোপণ হেতুতে
প্রকুপিত হইয়া বস্তিদেশে যাইয়া মৃত্রমার্গকে
পরিপীড়িত করিলে অতিক্রেশে মৃত্রপ্রবর্তন
হয়, তাহাকেই মৃত্রক্ষত্র কহে।

বায়ুদ্ধনিত মূত্রক্চেড্র বজ্ঞাণ (কুঁচ্ কিস্তান), বাস্ত (মূত্রাশর) ও মেটে (লিঙ্গে) তীব্র-বেদনা হয় এবং মূত্ন্মু তঃ অল পরিমাণে মূত্র-প্রবর্তন হটয় পাকে। পিত্তধানত মূত্রক্চেড্র অত্যস্ত বেদনা ও ছাহের সাইত পীত বা রক্ত-বর্ণ মূত্র অতি কটে মূত্ন্মু হিঃ নির্গত হয়। শ্লেম-জনিত মূত্রক্চেড্র লিঙ্গ ও ব্স্তিদেশে গুরুত্ব ও শোপ ইয় এবং মূত্র পিচ্ছিল ইইয়া থাকে। সান্নিপাতিক মৃত্রক্ষেদ্র উলিখিত ত্রিবিধ লক্ষণই প্রকাশিত হয়। ইহা অতি কষ্টসাধ্য। (শল্যজাদি আর চারিপ্রকার মৃত্রক্ষেদ্র আছে, তাহাদের লক্ষণ বাতজ মৃত্রক্ষেদ্র আয় জানিবে)।

বথ মূত্রকৃচ্ছু-চিকিৎসা।

অভাঞ্জনমেহনিক্কহর্ণ্ড-স্বেদোপনাহোত্তরবন্তিদেকান্। বিরাদিভির্বাতহরৈন্চ সিদ্ধান্দ্রভাত্তরাহেল । বাতিক মৃত্রকচেছ্ বায়্নাশক তৈতলমর্দিন, সেহপান, নির্বান্ত, স্বেদ, প্রলেপ (পুল্টিন্), উত্তরব্বি ও প্রিষ্কে এবং স্বর্লপঞ্জন ও

মেহপান, নিরহবান্ত, ম্বেদ, প্রলেপ (পুল্টিদ্), উত্তরবন্তি ও পরিষেক এবং স্বল্লপঞ্চমূল ও বাতম্ম ঔষধের সহিত সিদ্ধ মাংসরস ব্যবস্থা করিবে।

অমৃতাদিঃ।

অমৃতাং নাগরং গ'নাং ব'জিগন্ধ গোকুরন ;
ক'ৰৱিহা পিষেদ্ ব'তমূত্রক জা সম'ক্ষিক্ ॥
বাযুদ্ধনিত মৃত্রকজু-রোগিকে গুলঞ্চ, শুঠ,
আমলকী, অশ্বসন্ধা ও গোস্পুব, ইহাদের কাথ
মধুর সহিত্ব পান করিতে দিবে।

পুনর্নবাতো মিশ্রকঃ।

পুনর্নবৈরওশতাবরীতিঃ পত্রবৃদ্ধীরবলাক্ষভিদ্ধিঃ। দ্বিপঞ্চমূলেন কুল্থকেন যবৈশ্চ তোয়োৎক্ষিতে ক্যায়ে। তেলং বরাংক্ষ বিদা ঘৃতঞ্চ তৈবেব কল্পৈল বিশৈক সিদ্ধম্। তুমাত্রয়াত্র প্রতিহঞ্জি পীতং শুলাধিতং মাক্ষতমূত্রকুছ্ম্য।

রক্তপুননবা, এরওমূল, শতমূলী, রক্ত-চলন (কেহ বলেন শালিঞ্চশাক), খেত পুন-নবা, বেড়েলা, পাষাণভেনী, দশমূল, কুলখ-কলাই ও যব, ইহাদের ক্ষায় ও কল্প এবং লবণ সহ—তৈল, শুক্র বদা, ভল্লুক্বদা ও ম্বত, যথাবিধি পাক করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় পান করিবে বেদনান্বিত বাতজ মৃত্রক্ষ্ণ প্রশমিত হয়।

> দেকবৈগগৈন শিশিরাঃ প্রদেহী-থ্রৈমো বিধিবন্তিপয়োবিকারাঃ। ড!কাবিদারীকুরসৈম্ব তৈক্চ শস্তানি পিতৃপ্রভবে ৮ কুড্রেছ ॥

পিত্তজ মূত্রকচ্ছে শীতল পরিষেক, অব-গাহন ও প্রলেপ এবং গ্রীম্ম ঋতুচর্য্যোক্ত বিধি, বস্তিক্রিয়া, হশ্ধবিকৃতি পান, কিদ্মিদ্, ভূমি-কুমাণ্ড, ইক্ষুণ্য ও মৃত্ত হতকর।

পঞ্চণমূলন্।

কুশঃ ক'শ' শরো দত ইকুন্চেতি ভূণোগ্রবম্। পিন্তকু দুক্তবং পঞ্চমুলং বস্থিবশোধনম্। এতং সিদ্ধং পয়ং পীতং মেচ্গং হস্তি শোণিতম্॥

কুশ কাশ শব উলু ও ক্ষেক্ মূল, এই তুল পঞ্চম্লের কাথ পান করিলে পিত্ত জ্ঞানিত মৃত্রক্ত প্রশানিত হয়। তুলপঞ্চমূল বস্তি-শোধক। এই প্রশানিত স্থানিক বিলে, লিজের শোলিত প্রাব নিবারিত হয়।

শতাবর রস: পাঁ ৩: স্বিতঃ পিও ৮ ১৯ বৃৎ।

শৃতমূলীর বস চিনির সহিত পান করিলে পিত্তঞ্জ মূত্রকচ্ছ বিনষ্ট হয়।

শতাব্য্যাদিঃ।

শতবিরাকাশকুশখদংট্রা-বিদারিশালীকুকসেককাণাম। কাথং কুশীতং মধুশর্করাভ্যাং বক্তং পিরেৎ পৈত্তিকমূএকুড্রেড ।

শতমূলী, কাশ, কুশ, গোকুর, ভূমিকুমাও, শালিধান্ত মূল, কুষেকুমূল ও কেণ্ডরের মূল, ইহাদের কাথ শীতল অবস্থায় মধু ও চিনির সহিত পান করিলে পৈত্তিক মৃত্যকুষ্টে উপকার দর্শে। এব্ৰাঙ্কবীজং মধুকঞ্চ দাবনীং পৈতে পিবেৎ ভঞ্চধাবনেন। দাবনীং তথৈবামলকীরদেন সমাক্ষিকাং পিত্তকৃতে তু কুদ্রেছ ॥

পৈত্তিক মূত্রক্ষেদ্ধ কাঁকুড় বীজ, যষ্টিমধু ও দাক্রহরিদ্রা, ইহাদের চূর্ণ তণ্ডুলধাবন জলের সহিত; অথবা দাক্রহরিদ্রা চূর্ণ মধু সংস্তুক করিয়া আমলকীর রুসের সহিত পান করিতে দিবে।

হরীতক্যাদিঃ।

হরীতকীপো;কুররাজবৃক্ষ-পাৰাণভিদ্ধব্যবাসকানান্। কাথা পিবেলাকিকসংগ্রহুতং ক্রেড্ড সদাতে সক্রতে বিব্যক্ত।

মৃত্রকৃচ্ছে দাহ, বেদনা ও মৃত্রবিবদ্ধতা থাকিলে হরীতকী, গোক্ষুর, সোন্দাল, পাধাণ-ভেদী ও ত্রালভা, ইহাদের কাথ মধুর সহিত প্রয়োগ করিবে।

ক্ষারে কেউাক্ষোবধমন্নপণন বেদো যদান্ত্রং ব্যনং নিজ্ঞ। তক্তক ভিজেন্বধাসন্ধাতল-মভ্যঙ্গপানং কক্ষমুত্রকুছে ॥

কফজনিত মৃত্রুচ্ছে, কার, তীক্ষ ও উষ্ণবীধ্য ঔষণ এবং অল পানীয়, স্বেদ, যবাল, ব্যান, নিরাহ, তক্র এবং তিক্ত ঔষধের সহিত তৈল সিদ্ধ করিয়া সেই তৈল মদ্দন ও পান বাবস্থেয়।

মূত্রেণ স্থরয়া বাংশি কদলীম্বরসেন বা। কফকুদ্রুবিনাশার স্লক্ষং পিষ্ট্রা ক্রটাং পিবেৎ ॥

কফ**ল** মূত্রক্ষ্ট্র বিনাশার্থ, ছোট এলাইচ উত্তমরূপে চূর্ণ করিয়া গোমূত্র স্থরা বা কদলী মূলের রসের সহিত পান করিবে।

তক্রেশ যুক্তং শিতিমারক**ন্ত** বীজং পিবেৎ কৃচ্ছবিনাধহেতো. । পিবেত্তথা তঙুলধাবনেন প্রবাসচূর্ণং কফমুত্রকুচ্ছে । বদংষ্ট্রবিষতোয়ং বা কফকুচ্ছবিনাশনম্ ॥ শালিঞ্চবীজ তক্রের সহিত; অথবা প্রবাল চর্ল তণ্ডল জলের সহিত পান করিলে কফজ মূত্রকুচ্ছু বিনষ্ট হয়। কিংবা গোক্ষ্র ও শুঠ ইহাদের কাথ পান করিলেও কফজ মূত্রকুচ্ছু প্রশামিত হইয়া থাকে।

> সর্বং ত্রিদোষপ্রস্তবে তু বায়োঃ স্থানানুপূর্ব্যা প্রসমীক্ষ্য ক'নাম্। ত্রিভ্যোহধিকে প্রাগ্রমনং ককে স্ত'ৎ পিতে বিরেকঃ প্রনে তু বস্তিঃ।

ত্রিদোষণ মূত্রক্ষ্টে যদি বাতাদি তিন দোষেরই প্রকোপ সমান থাকে, তাহা হইলে বাতজাদি নিন্দিই পৃথক্ পৃথক্ চিকিৎসা সকল মিলিত করিয়া করিবে। কিন্তু সম-ত্রিদোষজ্ঞ মৃত্রকুচ্ছের উদ্ধ বাতস্থানে হয় বলিয়া অত্যে বায়্রই শ্মতা করিতে হইবে। বিষম-ত্রিদো-গজ মৃত্রকুচ্ছের যদি ককের আনিক্য থাকে, তাহা হইলে প্রথম বয়ন, পিত্রের প্রাবল্য থাকিলে বিরেচন এবং বায়র আধিক্য পাকিলে বস্তি প্রমোগ ব্যবস্থেয়।

> বহতীবাবনাপ্ঠো-বহীনপুকলিককাঃ। পাচনীলো বুহত্যাদিঃ কুদ্রু দোষত্রং পহঃ॥

রহতী কটকাবী, আক্নাদি, যষ্টিমধুও ইন্দ্রবন, ইহাদের কাপ মৃত্রুড্ড্রোৎপাদক বাতাদি তিন দোনেবই শান্তিকারক।

মুণকডে গ্ৰিখাতোখে বাতক ফ্লেকিয়া হিতা।

অভিযাত-জনিত মূত্রক:১৬ৢ বাতজ মূত্র-কচ্ছের চিকিৎসাকরিবে।

খেদচূর্ণ ক্রিয়াভাঙ্গ-বস্তথঃ প্রাঃ প্রীবজে ॥ (চূর্ণ ক্রিয়েতি ফলবর্ত্তিঃ কিংবা বিরেচনন্দ্রবাচূর্ণং দর্বা ডিফে নলিকয়া ফুৎকরণ্ম্।)

পুরীষজ মুত্রকচ্ছে স্বেনপ্রদান, চুর্ণক্রিয়া (মদনফল-নির্দ্ধিত ফলবর্ত্তি গুহুত্বারে দিয়া কিংবা বিরেচন দ্রব্যের চূর্ণ গুহুত্বারে দিয়া নল দারা ফুংকার প্রদান), তৈলাভ্যঙ্গ গু বাস্তপ্রয়োগ কর্ত্ব্য।

কাপং গোক্ষুরবীজস্ত যবকারযুতং পিবেৎ। মূত্রকুদ্রুং শকুজ্ঞাঞ্পীতঃ শীঘং বিনাশরে । গোকুর-বীজের কাথ ঘবক্ষার সংযুক্ত করিয়া পান করিবে। তাধাতে শীঘট পুরীষজ মৃত্রকচ্ছু বিনষ্ট হয়।

ক্রিয়া হিতা **তথ্য**রিশকরায়াং যা মূত্রকুছে ক্ষমান্সতোথে।

কফবাত-জনিত মৃত্রক্চচ্ছু যে সকল চিকিৎসা উক্ত হইরাছে, অশ্যরী ওশকরা জনিত মৃত্রকুচ্ছেও সেই সকল চিকিৎসা হিতকব।

ত্রিকটক(রখনন ভকাশ-ছুর্বালভাপানতেভেদপথা)ঃ। নিম্নতি পীতা মধুনাগ্রীজং সম্পাপ্রসূত্যোরপি মূত্র ছুছু ॥

গোক্ষরবীজ, দোদাল আটা, কুশ, কাশ, হুরালভা, পাষাণভেদা ও হ্রীত্কী ইহাদের চূর্ণবা কাথ মধুব সহিত সেবন করিলে অম্ম-রীজ মুত্রকচ্ছের শান্তি হয়।

পাশাণভেণীকাপস্ত কুক্তমশারীজং চয়েৎ ॥

পাথর কুচির কাথ অশারীজ-মৃত্রকুছু-বিনাশক।

লেঞ্ শুক্রবিক্ষোপে শিলাগুতু সমাজিক**ন্** ॥

শুক্রবিধালনিত মূত্রকচ্ছে মধুব সহিত শিলাজ্ত লেহন কংবে।

এলাহিকুযুতং ক্লারং সাগিনিশ্রং পিবেরব। মুনদেশবিভ্রাজং গুক্র দশেরবঞ্জ তং ॥

মূত্রনোববিশোধন ও জুক্নোম-নিবাংণ জ্ঞা হগ্ধে গুড় মিশ্রিড করিয়া, ভাহাতে কিঞ্চিৎ এলাইচ চূর্ণ ও হিং প্রক্ষেপ দিয়া পান করিতে দিবে।

> যন্ত্ৰকুছেছে বিহিতন্ত পৈণ্ডে ৬ৎ কবিয়েকে। পিতমুখকুছেছে॥

পৈত্তিক মৃত্রক্নজ্ঞে যে সকল চিকিৎসা ক্থিত হইয়াছে, রক্তত্নষ্টিজনিত মৃত্রক্নজ্ঞেও সেই সমস্ত চিকিৎসা করিবে।

ধাত্যাদিঃ।

ধাত্রী ক্রাক্ষা বিদারী চ ষষ্ট্রাহ্ম গোকুরং তথা। এতি: কবায়ং বিপচেৎ পিবেচ্ছাতং সন্মর্ম। অপি যোগনতাসাধ্যং মৃত্রকুক্তং জয়েরস্মৃ।

আমলকী, দ্রাক্ষা, ভূমিকুয়াও, যষ্টিমধু ও গোকুর মিলিত ২ তোলা, জল ৴৷৷• সের, শেষ প প পোয়া। শীতল হইলে চিনি অর্দ্ধ তোলা প্রক্ষেপ দিয়া সেবন করাইবে। ইহাতে দুঃসাধ্য মূত্রকুচ্ছু প্রশমিত হয়।

বৃহদ্ধাত্র্যাদিঃ।

ধনৌ দ্রাক্ষা চ যষ্ট্যাহ্বং নিদারী স্ত্রিকটনা। দভেকুনূলমুভয়া কাথয়িতা জলং পিবেৎ। স্বাস্ত্রহুত্বং ক্রডাদাইইরং পরম্॥

আমলকী, দ্রাক্ষা, বৃষ্টিমধু, ভূমিকুমাও, গোকুর, কুশমূল, ক্ষেকু-মূল ও হরীতকী প্রভাকে ২ মাধা, জল ১॥॰ সের, শেষ ০/০ পোরা, প্রক্লেপ চিনি আর্দ্ধ ভোলা। এই কাথ পান করিলে মূত্রকুজ্ব ও তজ্জনিত দাহাদি নিবারিত হয়।

নারিকেলেছিবং পূপাং তঙ্লোদকসংযুত্ন। রক্তক্ষং মূলকুদ্রু হৈ পীত হস্তি ন নংশ্যে॥

নারিকেল ফুল ভঙুল-জণের সহিত বাটিয়া শাইলে রক্তজ মুত্রক্কাড়ু নিবারিত হয়।

কষ্ণয়ে¦হতিবলামূল-স{বিতে}হশেষকৃচ্ছাজিৎ॥
(অতিবলা খেতবলা, চলটাকা।।

খেত-বেড়েলামূলের কাগ পান করিলে, অশেষ প্রকার মত্রকুছে বিনষ্ট হয়।

ভয়ে'রজঃ লক্ষপিথ মধুনা সহ বেংলিতম্। মূত্রকুছেং নিহস্তা। ভাগিলিল হৈনা সংশ্যাঃ সিতাতুল্যো বৰকারঃ সর্বকৃছ্যবিনাশনঃ। নিদিয়িকারসো বাপি সক্ষোদ্ধি কুছ্মশনঃ॥

(আয় ইত্যাদি মারিত-পুটিতবজাদিকৌংচুর্ণ রতি ন, মধুমারেশ লোহপাতের মন্দিয়িতা লেহম, রভিকাঞ্মেণ মাষকদরপ্যান্তম্। নিভিলে হৈ'বাত 'দলকারণে স্পান্ত। চ.টাঃ।)

লোহচুর্ণ (৫ রতি হইতে ২ মারা প্রয়ন্ত মাতার) মধুর সহিত উত্তমরূপে পেরণ করিয়া তিন দিন অবলেছ করিলে নিশ্চয়ই মৃত্ররুদ্ধ বিনষ্ট হয়। ববক্ষার ও চিনি সমভাগে সেবন করিলে, অথবা কণ্টকারীর স্বরস মধুর সহিত পান করিলে মৃত্রুদ্ধ নিবারিত হইয়া থাকে।

প্ৰ্যাবৰ্জভবং বীজং লক্ষ্ণ দৃশদি পেৰিতম্। ব্যুষিতোদকসংগীতং কৃচ্ছং হস্তি স্বদাৰণম্॥ ভড়্তড়ের বীজ উত্তমরূপে শিলাপিট করিয়া বাসি জলের সহিত শাইলে স্নাঞ্ মৃত্রুজ্জু প্রশ্মিত হয়।

মধুনাচ ধৰকারং মৃত্তু ছহাতারী হরম্॥

মধুর সহিত যবকার সেবন করিলে মৃত্রক্লজু ও অশ্যরী বিনষ্ট হয়।

কুম্ম'গুকরসং পীত্বা স্বৰ্যকারশক্রম্। নুর্ত্তক্তহাদ্ বিমুচ্যেত শীঘ্রঞ্জভতে সুথম্॥

কুত্মাণ্ডের রসে কিঞ্চিৎ যবক্ষার ও চিনি প্রক্রেপ দিয়াপান করিলে শাঘ্র মৃত্রু প্রধ-মিত হয়।

গুড়েনামলকং রুধাং শ্রমন্থং তর্পণং প্রম্। প্রত্যুক্তিবাদ্ধান্ত্র ফুনিবারণম্ম

আমলকী ও গুড় সমভাগে সেবন কবিলে মৃত্রক্ছু, রক্তপিত, দাহ ও শূল নিবারিত হয়। ইহা রুমা, শ্রম্ম ও শ্রেষ্ঠ তপুণ।

তরিছো মধুক মুবর মৃত্তকং দেবদার চ। পিরেদক্ষমন কথা প্রধান নপীড়িতঃ।

মৃত্রক্লজুরোগে হরিজা, গটিমধু, নৃক্রী মুতা ও দেবনাক ইহানের কল ১ বা ২ ভোল প্রিমাণে তত্ত্বের সহিত পান ক্রিবে।

পিষ্ট[া] গোপ্যসা গ্রন্ধ কুটজন্ত হচং পিবেং । বেনেপ্রশাসিতি কিলাম নগ্রন্থেং সুদাকেশ্য

কুড় চির ছাল গোছথে উত্তমরূপে পেষণ করিয়া পান করিলে শীঘ্রই স্থারণ মৃত্তরুজ্জ উপশ্যিত হয়।

श्वनः द्वीितितनभः ।

পিষ্ট্ৰাখনং ই ফলন্লিক । তি-রেকা কোনা হৈ নি সকাঞ্চিকানি। আহিপামানানি সমানি বস্তৌ মূত্ৰক সংশ্ৰদ্ধিক বালি সন্থা।

গোকুরের ফল ও মূল এবং কারুড়বীজ সমভাগে লইয়া কাঁজিতে পেষণ করত বস্তি দেশে প্রলেপ দিবে, তাহাতে সম্ভই মূত্র বিশোধিত হইবে।

ভৈষজ্যৈরশারীশ্রেণিজ্ব ক্রিক্সক্তমুপাচরেৎ। যোগবাহিরদৈর্বাপি চারুপানবিশেষতঃ॥ অশ্মরী-রোগাধিকারোক্ত ঔষধ এবং অমু-পান-বিশেষে যোগবাহী রসসমূহের প্রয়োগ দারা মুক্তকুদ্রের চিকিৎসা করিবে।

রহদ্গোক্ষরাগ্রলেহঃ।

গোকণ্টকং পলশভং দশমূলং তথৈব চ। পাষাণভেদোহটুপলং গুড,চীপলপঞ্চম 🛭 এরপ্রেইভীকরত্তে চ মূলং দশপলং পৃথক। প্রমূলকাশ্বপদ্ধা প্রত্যেকং পলবিংশতিঃ ॥ সক্ষেক্ত সংকটা জলছোলে বিপাচয়েৎ। পাদশেষত্ত সংগৃহ্য বস্ত্রপূতং সমাক্ষিপেৎ ॥ গব্যাজ্যং প্রস্থমেক ন্ত্র শিলাজঞ্চ তথা স্মৃত্যু। দ্ৰী চুতে তু সঞ্জাতে দ্ৰব্যাণীম: নি দাপয়েৎ ॥ তালমূলী শতাহরা চ ত্রিকট বিফলা তথা। স্থালাল ভতকেশা চ হাবেরং নাগকেশবন্। পদাকং জাতিপত্রহা মধ্যন্তা সনোচন । জাতীফলমুশীরফ িরে । রক্তচন্দনম 🛭 भागकः कर्रकः कारने नाग्यनः ह गुन्निका। পুষরাহরং শাস লাক সাসং কাইক বঙ্গকম।। জ্যালামান সংগ্র প্রতাকং প্রথারক্ষ্। शामि तलाधिः भः अका भवाः (मत्ति मानवः । লিগ্নভাতে নিধ্যোগ নি নাং লিছাৎ পলে বিভেম্ . ष्यभावी भद्रत् एक क्याचारण निवस्त्र ॥ প্রয়েহা বিংশহিকৈর শুক্দােষস্তাগের চ। ধাতৃক্ষয়শ্চেকিবাতো বাতকুগুলিকানয়ঃ ॥ তে সর্বে প্রশমং যান্তি ভাসরেণ এনো যথা। নাতঃ পরতরং কিকিৎ কুষ্ণাজেয়েণ পুঞ্জিত।।।

গোকুর ১০০ পল, দশমূল ১০০ পল, পাষাণভেদী ৮ পল, গুলঞ্জ ৫ পল, এবজ্ঞমূল ৮ পল, শুলঞ্জ ৫ পল, এবজ্ঞমূল ৮ পল, শুলুমূল ২০ পল, অর্থান্ধা ২০ পল, এই সকল দ্রব্য কুটিত ও ৬৪ সের জ্ঞালে কি করিয়া ১৬ সের অবশিষ্ট পাকিতে নামাইবে। পরে উহা বজে ছাকিয়া ভাহাতে গ্রায়ত /৪ সের ও শিলাজতু /২ সের মিলত করিয়া পুনর্বাব পাক কারবে। ঘনীভূত হইলে উহাতে তালমূলা, গুলুফা, তেকট্র, ত্রিকলা, ছোট এলাইচ, ভূতকেশা, বালা, নাগকেশর, পলকাত, জ্রেরী, দাক্রিন, বিভার, গোরোচনা, জায়কল, বেণার মূল, এউড়ী, রক্তচন্দন, ধনে, কট্কী. যবক্ষার,

সোহাগা, পান, কাক্ডাশৃঙ্গী, প্ছরমূল, শঠী, দেবদারু, সীসা, লোহ ও বঙ্গ, এই সকল দ্রব্য প্রত্যেক এক পল পরিমাণে প্রক্ষেপ দিয়া নামাইয়া একটা স্বতভাওে রাখিবে। প্রতি-দিন ১ পল পরিমাণে বা অগ্নি বল বিবেচনা করিয়া সেবন করিবে। ইহা দ্বারা অন্ত্রী, মৃত্রক্নড়ে ও মৃত্রাঘাতা দি পীড়া সকল এবং শুক্র-দোষ প্রশমিত হয়।

রসপ্রসোগঃ।

777777

ग्दक्रष्डूह्तः ।

বিদারী গ্রাক্ষুরং যত কেশরক সমং পচেৎ। তৎ কষায়ং পিবেৎ ক্ষোত্রে রসভত্মত্তং পুনঃ। নাজে ৬.২ হবেৎ সকং সপ্তাহাৎ পিতসম্ভবমান

ভূমিকুআও, একিব, যদ্মিধু, নাগেশর প্রত্যক ৪ মানা, প্রকেব জল ॥ ০ সেব, শেষ ০০ আছ পোষা। প্রকেপা—মধু ৪ মানা। এই কাথেব সহিত বস্থান্ত্র সেবন কবিলে সপ্তাহ মধ্যে পৈত্তিক মুক্তক্তু নিবাধিত হয়।

মুত্রকুছে তিকে। রসঃ।

রসপদ্ধবৰক্ষারং সিতাত্ত্যুত্য পিবে**।** মুক্তুজুণ্যুদ্ধেশ্নি নিহুতি নিয়তং নুগাম্॥

পারদ, গন্ধক ও যবক্ষার একত্র করিয়া চিনি ও তক্রের সংহত সেবন করিলে সর্বং একার মুক্তক্রপ্র নিবারিত হইয়া পাকে।

মূত্রকৃচ্ছান্তকঃ।

পতং ধর্ণক বৈজ্বতং গ্রন্থতাঃ বিম্পন্তিং। 5 ওলোরক্ষিদ প্রবিধিনিধে তু গোলক্ষ্য ৭৯: বন্ধা প্রকিন্ধে কর্মাণ্ডেই মহাপুটে। মাদমাক্রং লিহেৎ ক্ষোটেন্ ক্রিড্ডেপ্রশাস্তয়ে।

পারদ, গন্ধক, স্বর্ণ, বৈক্রোক্ত প্রত্যেক সম-ভাগ চোপ্তালী ও চোর-গড়িকাম রসে মই প্রহর মর্দন করিয়া গোলাকার করিবে। পরে উহা শুক্ষ করিয়া ঘুঁটের অগ্নিতে ১ দিন মহা-পুটে পাক করিবে। মাযকলার পরিমাণে মধুর সহিত সেব্য। ইহা মুক্তরুন্তু-বিনাশক।

ত্রিনেত্রাখ্যো রসঃ।

বঙ্গং স্তং গৰুকং ভাবদ্বিছা লৌহে পাত্ৰে মৰ্দ্দমেক্ষপ্ৰস্থ। দুকাবস্থীগোক্ষুকৈঃ শালালীভি-মুৰ্যামধ্যে ভূধনে পাচ্ছিছা। ভঙ্গদ্বাকৈভাবদ্বিদ্বাস্থাকা দুকাব্দিশাল্লীভায়দ্ৰদৈ দুকাব্দিশাল্লীভায়দ্ৰদৈ দুকাব্দিশাল্লীভায়দ্ৰদৈ দুকাব্দিশাল্লীভায়দ্ৰদৈ দুকাব্দিশাল্লীভায়দ্ৰদৈ দুকাব্দিশাল্লীভায়দ্ৰদৈ দুকাব্দিশাল্লীভায়দ্ৰদ্ৰা

বঙ্গ, পারদ, গদ্ধক এই সবল দ্রব্য স্ম-ভাগে গ্রহণ করিয়া দ্র্মা, যষ্টিমধু, গোক্ষর ও শিমুলের রসে একাদন লোহপাতে মর্দনকরিবে। পরে ম্যাবদ্ধ করিয়া ভ্রম্বস্ত্রে পাক করেত শীতল হইলে তুলিয়া পূর্ব্যেক্ত প্রা, যষ্টিমধু, গোক্ষ্র ও শিমুলের কাথে ভাবনা দিবে। তিন কুঁচ পরিমিত বটা প্রস্তুত করিয়া সেবনার্থ প্রয়োগ করিবে। অনস্তর দ্র্বা, যষ্টিমধু ও শিমুলের কাথে এবং কাথ তুল্য হথ্যে পায়দ প্রস্তুত্ত করিয়া সেবন করাইবে এবং প্রাতঃকালে শাতল জল পান করিতে দিবে। ইহাতে মৃত্রক্ত রোগ বিনষ্ট হয়।

তারকেশরঃ।

শুদ্ধপৃতং সমং গঞ্জং লোহা বন্ধং মৃতাত্রকম্।
ছরালভাং যবদারং বিজং গোলারকাং শিবান্
সমাংশা ভাবত্তের সর্বাং কুমা ওফলগারিপা।
পঞ্চুপভরকাথে কমে গোকুরজে তথা।
মংশিবা সচিকা কাথা। বিশুদ্ধ ফলমানতঃ।
মধুনাম দ্যা বিলিকেল্ডের ছে শিনাশনঃ।
উড়ু স্বর্গকাং পকং চুর্লিতং কর্বমাত্রকন্
লেহরেল্যধুনা সার্দ্ধিক মুশানং কুথাবহন্।
অজ্যাক্ষারং ভবেৎ পথাং শ্করেক্রনো হিতঃ।

পারা, গন্ধক, লোহ, বঙ্গ, অন্ত, ছ্রালভা, যবক্ষার, গোক্ষুরবীজ ও হরীতকী এই সমৃদাধ সমভাগে লইয়া একত্র মর্দন করিয়া কুম্ডার জলে, কুশাদি তৃণপঞ্চমূলের কাথে ও গোক্ষুর রসে ভাবনা দিবে এবং উত্তমরূপে পেষণ করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। মধুর সহিত মর্দ্দন করিয়া সেবনীয়। ঔষধ-সেবনান্তে তই তোলা পক যজ্ঞভুমুর ফল চূর্ণ মধু সংশ্বক্ত করিয়া অবলেহ করিবে। পণ্য— ছাগছগ্ধ, চিনি ও ইক্ষুরস। ইহাতে মৃত্রক্ষ্ট্র

বরুণাত্তং লোহম।

দিশলা বরণা ধা গান্তদক্ষ ধা গ্রীপুশকম।
হরীতক্যাঃ প্লাক্ষক প্রিপ্রেন্ তদক্ষক্য ।
কর্মানক লৌহালা চুর্গমেকতা কার্য্যে ।
৮ক্ষরে প্রাক্তর্যার প্রাধান বরণান্তি ।
দুজাগাহর তথা ঘোরা মৃত্রুত্তেক দারণান্।
ক্ষারীং বিনিমন্ত্রা ও,প্রমেহা বিষম্ভরম্ ।
বর্গান্তিকরকৈন হুলামার্য্যনের চ।
বরণান্তিমিনা লৌহা চরকেন বিনিজ্ঞিন্ ॥

বঙ্গণছাল ১৬ ভোলা, আমলকী ১৬ ভোলা, ধাইফুল ৮ ভোলা, হরীতকী ৪ চারি ভোলা, চাকুলে ২ ভোলা, লোহ ২ ভোলা, আল ২ তোলা; এই সকল দ্রব্য একত চুর্গ করিয়া প্রাতঃকালে ৪ মাঘা পরিমাণে সেবন করিবে। ইহাতে খোর মৃত্যাতাত, মৃত্রকুদ্ধ, অশারী, প্রমেহ ও বিষমজর আশু বিনষ্ট হয়। এই বরুণাত লোহ বলকারক, পুষ্টিকর, হুনা ও আরুবর্দ্ধক।

মৃত্রকুচ্ছান্তকরসঃ।

শত বিশ্বী নদৈঃ পিষ্ট্ৰী মৃতস্ত্তক তালকম্।
শিপিতৃথক তুলাংশিং দিনেকং মৰ্ক্ষেদ্ দৃদ্যা
তলোলং সাধপে তৈলে পাচাং বামক চুৰ্বাৰে ।
মূত্ৰকুক্ত ভিকলাভ কোলৈ প্ৰাকৃত্যম্।
তক্ষানাত সলেনে মূত্ৰকুক্তং নিহস্তালম্।
তুলসা তিলপিণাংকং নিহমূলং তুমাসুণা।
ক্ৰেকং ৰামুণাংলন কুলয়া বা ক্ৰচেলেঃ।

রসিদদ্র, হরিভাল ও তুঁতে ইহাদিগকে শতাবরী রদে এক দিন দৃঢ়রূপে মর্দান করিয়া সর্বপ তৈলে এক প্রহর কাল পাক করিবে। পরে চূর্ণ করিয়া ৪ রতি পরিমিত বটা প্রস্তুত্ত করত মধুর সহিত সেবন করিতে দিবে। ইহাতে নিশ্চয়ই মৃত্রক্রছ্ণনিবারিত হয়। ঔষধ সেবনাস্তে তুলসী, ভিলক্ষ, বেলম্লের ছাল মিলিত ২ তোলা, ইহাদের কাথ কাঁজি, স্করা বা ছড়্ছ্ডের রস সহ অমুপানার্থ প্রয়োগ করিবে।

শতাবরীয়তং ক্ষীরঞ।

পতাবরীকাশকুশবদংগ্র'-বিদারিকেক্বামলকের সিদ্ধন্। সপিঃ পলো বা সিত্রা বিমিলং কৃচ্ছেরু পিত্তপ্রভব্যে যোজান্।

শতমূলী, কাণ, কুণ, গোক্র, ভূমিকুয়াও. ইক্ষ্ল ও আমলকী ইহাদের সহিত ছত বা হগ্ন পাক করিয়া তাহাতে চিনি মিশ্রিত করিয়া পান করিলে পৈত্তিক মৃত্যুকুছু প্রশমিত হয়।

অকুমারকুমারকরতম্।

পুনর্বামূলতুলা দশমূলং শতাবরী। বলাভুরগগন্ধা চ ভূপখুলং ত্রিকণ্টকম্ 🛭 বিদারীগন্ধা নাগাহরা গুড় চ্যাতিবলা তথা। পৃথগ দশপলান্ ভাগান্ জলদ্রোণে বিপাচয়েৎ । তেন পাদাবশেষেণ ঘুতস্তান্ধাঢ়কং পচেৎ। মধুকং শৃঙ্গবেরঞ্জাকাদৈদ্বপিগলী: 🛚 ৰিপলিকাঃ পৃ**থগ**্দ**তাদ্** যমান্তাঃ কুড়বং তথা। তিংশদ গুড়প্লাগুত্র তৈলকৈরওজন্ম চ। প্ৰস্থ দৰা সমালোড্য সম্যত মৃদ্যানা পচেৎ। এতদীশ্রপুত্রণাং প্রাগ্ভোজনমনিশিতম্॥ রাজ্ঞাং রাজসমানাঞ্ বছস্ত্রীপতয়ক যে। ম্ত্রকুছেই কটান্তন্তে তথা গাঢ়পুরীবিণাম্॥ মেচ্ৰঙ্কণশুলে চ যোনিশুলে প্ৰশস্ত। ৰথোক্তানাঞ্চ গুলানাং বাতশেণিতকাক যে। বল্যং রসায়নং শীতং স্কুমারকুমারকম্। পুনর্নবাশতে জোণো দেয়োহন্তের তথাপর: । পুন্নবা মূল ১০০ পল, এবং দশমূল, শভ-

মূলী, বেড়েলা, অশ্বগন্ধা, তুণপঞ্চমূল, গোক্র,

শালপাণি, গোরকচাকুলে, *শু* লাক বেড়েলা প্রত্যেক ১০ পল অর্থাৎ সমুদায়ে ১০০ পল, এই তুই শত পল দ্রব্য তুই দ্রোণ জলে পাক করিয়া চতুর্থাংশ অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া ছাকিয়া লইবে। এই কাথ ৩২ সের ; স্বত /৮ সের , গুড় ৩০ পল (/৩৸•), এরগুতৈল /৪ সের। কন্ধার্থ—মৃষ্টমুমু, আদা, जोका, रेमन्नर नर्ग '९ भिन्ननी প্রত্যেক ২ পল ; যমানী 🗐 • অর্দ্ধসের। যথাবিধানে মুত্র পাক করিবে। ইহা আহারের প্রথমে সেব্য। এই মত মৃত্রক্ষু, কটীস্তন্ত, মেচ্-যোনি-বঙ্কণ-শূল, গাঢ়তা, গুল ও বাতরক্ত প্রভৃতি রোগে প্রশস্ত। ইহা বলকারক, রসায়ন ও শীতল।

ত্রিকণ্টকাগ্রং য়ত্যু ।

ত্রিকটকৈরওকুণাস্তভীর-ককারুকেক্সুস্বরদেন দিন্ধ্। সপিত্র ড়াৰ্দ্ধংশযুহং প্রপেয়ং কুড়োগুনীমুম্বিঘাওঁহেতে†ঃ॥

ন্ত /৪ সের। কাথার্থ—গোক্র /২ সের, জল ১৬ সেব, শেষ /৪ সের। এরগুমূল /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ /৪ সের। ।তৃগপক্ষমূলনিলিত /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ /৪ সের; শতমূলীর রস, /৪ সের; কুমাগুরস /৪ সের; ইক্রস /৪ সের। পাক সিদ্ধ হইলে
উক্ষ অবস্থায় ছাঁকিয়া লইয়া /২ সের গুড়
নিশ্রত ও আলোড়িত করিয়া লইবে। (অম্পান—উক্ষ ছ্রা।) এই মৃত্ত পান করিলে
মৃত্রক্ষ্রে, অশ্যরী ও মৃত্রাঘাত রোগ উপশমিত হয়।

অথ পথ্যাপথ্য বিধিঃ।

মূত্রকুচ্ছে পথ্যানি।

পুরাতনা লোহিতশালয়ক ক্ষারো যবারানি চ তীক্ষমুক্ষয়। তকং পরো দধ্যপি গোপ্রস্তং ধ্যামিষং মুক্লরদাঃ দিভা চ ॥ পুরাণকুমাওফলং পটোলং
মহার্ত্রকং গোক্ষরকং কুমারী।
শুবাকথক্তরকনারিকেলভালক্রমাণাঞ্চ শিরাংসি পথা।
ভালান্থিমজ্জা ত্রপুষং ক্রটিশ্চ
শুতানি পানাভ্যশনানি চাপি।
প্রণারনীরং হিমবালুকা চ
মিত্রং নুগাং স্তাৎ সৃতি মৃতকুচ্ছে ।

পুরাতন তেশালি, যথকার, যবার, তীক্ষ ও উন্ধবীর্যা দ্রব্য, তক্রে, গ্রা দ্রগ্ন ও দ্বি। মক-দেশজ মৃগপক্ষী প্রভৃতির মাংসরস, মুগের যুষ, চিনি, পুরাণ কুম্ডা, পটোল, মহানা, গোকুব, স্বতকুমারী এবং স্থারি, শর্জুর, নারিকেল ও তালগাছের মাতি, হরীতকা, তাল্লাটির শাস, শণা, ছোট এলাইচ, শাতল অরপানীয়, শীতলজ্জল ও কপূব, এই সকল মৃহক্রজুরোগে হিতকর।

মূত্রকৃষ্টেই পথ্যান।

মত্যং শ্রমং নিধুবনং গজবাজিয়ানং দকং বিজন্ধনশনং বিষয়াশনক। :
ত'স্লমৎস্কলবণাদকতৈলভূপ্তং
পিণাকিভিস্তিলস্থপবেগরে।বান্ ॥
মাধান করারমভিতীক্ষবিদাবিক্ষকমন্ত্রান্তুজনঃ সতি মুক্তেছে॥

মন্ত্রপান, পারশ্রম, মৈথুন, হস্তী ও অধে আনোহণ; সকল প্রকার বিরুদ্ধ ভোজন, বিষণাশন, ভাগুল ভক্ষণ, মংস্ত্র, লবণ, আর্ত্রক, তৈলভৃষ্ট দ্রবা, তিলাদির কক্ষ, হিন্তু, তিল, স্বপ, মলমুভাদির বেগ্লারণ, মাযকলায়, বংশান্ত্রন, অতিশ্য তীক্ষ বিনাহী কক্ষ ও অল্ল-রস্থান্ত দ্রবা, এই সকল মৃত্রুদ্ধুনোগির পারভাগি।

ইত্রায়ুর্কেদ-সংগ্রহে মৃত্তক্ষ্ণাধকার ।

অথ মূত্রাঘাতা ধিকারঃ।

অথ মূত্রাঘাত-নিদানম্।

জায়তে কুপিতৈদে বিষয় ক্রে বি তাপ্তরে পশ ।
প্রায়ে মুক্রবিষ্টাতিপ্রতিপ্রতিপ্রকাদয় ॥
রৌক্যানেগবিগতি লো বায়ুর্যন্তৌ সবেদন ।
মূনমারিশু চরতি বিগুলং কুওলীকুতঃ ॥
মূক্রমল্লাল্লমথবা সক্ষলং সংপ্রবর্ততে ।
বাতকুওলিকাং তান্ত বার্যিং বিস্তাৎ কুদাকণম্ ॥
আগ্রাপ্যন্ বন্তিভাগ ক্লো বায়ুশ্চলোনতাম্ ।
কুর্যাৎ তীরার্ত্রিমন্তীলাং মূক্রবিগ্রানিধিনীম্ ॥
বেগং বিধারয়েদ্যন্ত মূক্রভালিগতো নবং ।
নিক্রণজি মূবং তক্ত বন্তের্বিভিগতো নিকং ॥
মূক্রসক্রো ভবেৎ তেন বন্তিকুক্লিনিপীড়িতং ।
বাতবন্তিঃ স বিক্রেয়ো বার্যার কুক্রপ্রসাধনং ॥
চিরং ধারয়তো মূক্রং ধরয়া ন প্রবর্ততে ।
বেহমানস্ত মন্দং বা মূক্রা হীতঃ স উচ্যতে ॥

মু এক্স বেগেং,ভংগত ওছদাবারহেতুকঃ। অগান কুপিতো কাবুরুদরং পুরয়েদ্ভশম্ 🛭 নাভেরধন্ত দিংগ্রানং জনয়েৎ ভারাবদনম্। ভল্নজঠনং বিজ দধে!ববিদ্নিরে ধন্ম্ 🛭 কজে। বঃপাথবা নালে মনো বা বঞ্চ দেছিনঃ। মূণং প্রবৃত্তং সজেত সরক্তং বা প্রবৃহত।॥ 🗠 दिन्छ देनत्रसम्बद्धः अक्षारः अन्य नौक्षः भू। विश्वपंत्रिवरको नाःवि. म भूरकोरमञ्जमःध्यिकः 🛭 ক্ষক্স রাওদেহস্ত ব্ভিন্তৌ গিভুমারতৌ । मृद्रकद्रः मक्ष्रकारः अन्याः । ७५१ द्राप्त्रम् ॥ অন্তর্শন্তিমুগে বুতঃ প্রিরে¦হলঃ সহস। ভবেৎ। অধানীতুলারগ ্রাহ্ম রগ্রাহ্য স উচাতে॥ মূণিত জ্ঞান্তিরং যাতো ব'য়ুনা ওংণমূলতম্। স্থানাচলুতিং ন্যয়তঃ আকু পশাস্থা অবভাতে ॥ ভ্যোদকপ্রতীক শং মূত্রগুরুং ভত্নচাতে ৷ বাবাম। ধ্বাতপৈঃ পিতং বৃত্তিং প্রাপ্যানিকামি ১ম । विश्वः स्पृष्टः स्थाने स्थाने स्थानिक स्थानिक विश्वास মূতাং হারিদ্রমথবা সরক্তং রক্তমেব বা 🛊 কুছে হৈ পুনংপুনর্জার করা হং করা ৪ তম। পিত্তং কফো দ্বাবপি বা সংখ্যাতেংনিলেন চেৎ। কুছে খালং ভদা পীতে খেতং গলং ঘন করেছ। সদাহং রোচনাশখাগ্রন্বর্ণ: ভবেৎ তৃ তৎ 🛭 **१९४० ममक्तर्भ तो स्वमाप्तः तक्ष्य स्म**ा प्रथम क वंदलारभ्रा वी एटरामी भाग छ। भाग नगला ॥ মুক্তেরেটে(হণুপাস্তান বিভূস ৬৪০ ছল নবং। বিভাগেক মুন্ধেং কাছত লাভাগে বি নান্দেং । জ হারবাজানায়ালের হ্যাত্র প্রত্নার। স্থান স্তর্দরতঃ সল্ভিচ্ত গতনং। भुजन्यक्तमाइ (जो निन्तु निन्तु स्वन्। भ। পাঁ,উভস্ত সজেদ্ধাৰণে সংস্থাস্থাদেশ্লটিমান্ত্র বৃত্তিকৃত্তলম'ছাও দোল কম্পিন্মাপ্রম্। প্ৰন্থাৰলা প্ৰায়েশ্ ডামিবাৰ্যন্ত দিছিল। ভাষ্মন পিও বিভে দাহা শুলা মহানিবন ধা। **८श**यान्। भीरतः (नाद्यः अकः २ ० वन १२,७२॥

ম্ক্রাদির বেগা। প ও কক্ষতোৎনাদি ।
থারা বাগাদে দেখে সকল কাপত হল ত ল কুপ্তালকা প্রভাত এয়াদশ প্রকাশ সুমাধান বোগ উৎপাদন করে। মূলক্ষেত্র মূল্রাল ল প্রভাত কালক হবেদ্বালগ্য কালে যাত্না ।
অভ্যন্ত মানক হবেদ্বালগালে যথগাক্ষা।

বাতকু প্রশিকা। দেহের ক্লডা বা মণাদির বেগ্রারণ-হেতু বাস্ কুপিত হই: বিস্তিদেশে মৃত্রকে আবরণ ক্রিয়া বেদনার সহিত
আবর্ত্তর ভাগ কুওলাকারে সপ্রন করে,
ভাগতে মুত্র অন্ধ অন্ধ বাতনার সহিত
নির্গত হয়, ইহাকেট বাতকু ওলেক। কহে।
এই বাাবি আত কইনায়ক।

মূল্টালা। কুপিত বাধ মূল্লাল ও গুদ-নাড়াকৈ স্থাত আগ্রাপিত ও এক করেছ ভার বেদ্নাযুক্ত, মলমূল্যার্গ-রোবক, চলনশল ও উন্নতাকার অগ্রীলা তুব্য প্রান্থ উৎপাদন করে। ইহাকে মূল্যুজীলা কংহ।

বাতবান্ত। বে ব্যক্ত মূর্বাবশতঃ মূত্রের বেগনারণ করে, আনার বান্তগত বায়ু কুপেত ২ইয়া বৃত্তিমূশ রোধ করে, ভাহাতে মূত্রাব হয় এবং ঐ কুপিত বায়ু পিণ্ডিত হইয়া বস্তি ও কুন্দিদেশে অবস্থিতি কৰে। ইহাকেই বাত-বস্তি কহে। বাতবাস্ত অতি কইসাধ্য।

মূআতীত। দীর্ঘকাল মূত্রেন বেগধারণ করিলে, প্রস্রাব সঃ হয় না ১থবা মন্দ মন্দ নির্গত হইতে থাকে। হহাকে মুগ্রতাত কছে।

মূত্রজঠর। মৃত্র বেগ অ,৩২০ ২ইলে উদাবত্ত রোগ উপ।ত্ত হয় এবং সেই উদাবত্ত হেণু অপান বায় ৩৫ ২ইয়া উদরকে আ,তশ্য প্রিপূরণ করিয়া না,ত্য অবোভাগে তীব্র ব্যাণাগ্যক আগ্যান উপাত্ত করে। ইহাকেই মূত্রজঠর রোগ কহে। এই রোগে বস্তির অবোভাগ বিবন্ধ হট্যা থাকে।

মৃত্যাংসক। এই রোগে ব্রিদেশে, শিক্ষনালে অথকা নিজ্ঞান্ত মৃণ্ সংস্কু হইয়া
থাকে, নির্গত হইতে পালেনা অতিশয় কুছন
কালেন, কান্ত প্রচাতক গাতভেদ হওয়ায়
সরও নুক্ত বেদনা সাহত অথকা বেদনা
বাত্তবেক শান্ত শান্ত বিন্দু নির্গত
হইতে থাকে। বিশ্বল বায়ু ছারা এই ব্যাধির
উৎপত্তি হয়। হহার নাম মৃত্যাংসক।

মূনক্ষা। রুক্ষ প্রাস্থানেই ব্যক্তির বস্তি-স্থিত পিত্র এক নাক্ষত কুপিত ইইলা মূত্রক্ষ কবে, ইহাতে নাম মূত্রক্ষা বোজে অভাস্থ বেদনাও দাহ উপ্রিত হয়।

মূত্রান্থ। বস্তিমুখের অভ্যন্তর ভাগে সংসা উংপন্ন এবং অন্যনী তুল্য বেদনাবিশিষ্ট ক্ষুত্র ও গোলাকার শ্বির প্রান্থকে মূত্রপ্রস্থিত প্রভেদ এই যে, অন্যনী ক্ষে ক্রেম গণিত হয়, মূত্রপ্রি সংসা জানিয়া থাকে। অপর ভেদ এই যে, অন্মরী রাগে।পভাদি কুপিত হয়, মূত্রপ্রান্থতে কেবল মাত্র রক্ত কুপিত হইয়া থাকে এবং অন্যনীর পূর্নস্থত প্রকাশ পায়না।

মূত্ৰহক। মূলবেগাকাস্ত ব্যক্তি স্ত্ৰীসঙ্গম করিলে শুক্র সম্থানচ্যত হইয়া বায়ু কর্তৃক উর্জনীত হর এবং মূত্রণকালে প্রস্রাবের অগ্রে বা পশ্চাতে ভন্ম,মশ্রিত জলের ক্রায় নির্গত হইয়া থাকে। ইহারই নাম মূত্রগুক্ত।

উষ্ণবাত। ব্যায়াম, অধিক পথ পর্য্যটন এবং আতপ দেবন এই দকল কারণে পিও প্রকুপিত ও বায়ুর দাহত মিশ্রিত হইয়া বস্তিকে আশ্রের করিয়া বাস্ত ক্রিঙ্গ ও পায়ুদেশে দাহ উপাস্থত করে। এবং পীত বা ঈষয়োহিত অথবা সম্পূর্ণ লোহিতবর্ণ মূত্র অতি কষ্টের সহিত পুনঃপুনঃ প্রবর্ত্তিত করিয়া থাকে। ইহাকেই উষ্ণবাত কহে।

মৃত্রনাদ। যদি পিত বা কফ অথবা পিত ও কফ উভয়ই বায়ু ধারা ঘনীভূত হয়, তাহা হইলে খেত পীত বা লোহতবর্ণ কিংবা গোবোচনা বা শহাচ্প্রণবিশিষ্ট অথবা উল্লি-থিত সমস্ত বর্ণসূক্ত অলপরি।মত ঘন মৃত্র প্রব-তান করে। মৃত্রণকালে কট ও দাহ হইয়া থাকে। ইহারই নাম মৃত্রসাদ।

বিজ্বিধাত। দেহ অতিশয় কৃষ্ণ ও হর্বল হইলে, পুর্'ষ বায় ঘারা উর্দ্ধাত হইয়া মৃত্র-আেতে উপনীত হয়, তজ্জা মলগন্ধযুক্ত অথবা মলামাশ্রত মৃত্র অতি কঠে প্রবৃত্তিত হইয়া থাকে। এইরূপ পীড়ার নাম বিজ্বিদাত।

জ্ৰুত প্ৰপ্ৰাটন, উন্নদ্ধন, বস্থিক ওল। পরিশ্রম, আঘাতপ্রাপ্ত এবং প্রপীড়ন (টেপা-টেপি) এই সকল কারণে বস্তি অর্থাৎ মূত্রাশন্ন স্বস্থান হইতে উথিত হইয়া গৰ্ভবং সুপাকারে পাশুদেশে অবস্থিতি করে। তাহাতে রোগী শূল কম্প ও দাহে আর্ত্ত হইয়া বিন্দু বিন্দু কিন্তু বস্তি চাপিলে প্রস্রাব ত্যাগ করে। উহা হইতে মূত্রণারা নিৰ্গত এবং স্তব্ধতা ও মোচড়নবৎ বেদনা উপস্থিত হয়। এই পীড়ার নাম বাস্তকুগুল। ইহা বাতোৰণ হুইলে শস্ত্র ও বিষ সদৃশ ভয়াবহ এবং প্রায়ই ছনিবার হইয়া থাকে। পিতায়িত হইলে দাহ শূল ও মূত্রবিবর্ণতা হয়। ক্লান্বিত হুইলে

দেহের গুরুতা, শোথ এবং মূত্র সিগ্ধ ঘন ও খেত বর্ণ হইয়া থাকে।

অথ মূত্রাঘাত-চিকিৎসা।

মুত্রালাতান্ যথাদোবং মুত্রকুচ্ছেহরৈর্জয়েং। বস্তিমুভয়বস্তিক দত্তাৎ স্লিগ্নং বিরেচনম্ ।

মূত্রাবাতে অর্থাৎ মূত্রবিবন্ধতা রোগে মূত্রকজ্জু-নাশক ঔষধ, বন্ধি ও উত্তরবন্ধি, এবং সিশ্ব বিরেচন দোষাস্তসালে প্রযোজ্য।

মৃত্রকুছহাশ্বরীরোগে ভেষজং যৎ প্রকল্পিতম্। মৃত্রাখাতেরু সর্কেন্দ্র তৎ বুয়ান্দেশকালবিৎ॥

মূত্রকচ্ছু ও অশারীরোগে যে সকল ঔষধ কলিত হটরাছে, দেশকালবিদ্ বৈচ্চ, সকল প্রকার মূত্রাঘাতেই সেই সকল ঔষধ বিৰেচনা করিয়া ব্যবস্থা করিবেন।

কক্ষেক্রিক্রীরান্যক্ষাত্তং সংস্কৃত্য। ধান্তাঃস্মৃত্তং প্রীজেব মুত্রাঘাতাদ্ বিমূচ্যতে ॥

কাঁকুড়বীজ ২ তোলা, সৈন্ধৰ লবণ। আনা, কাঞ্জিতে বাটিয়া সেবন করিলে মূ্ঞাখাত নিবারিত হয়।

নলকুশকংশেকুশিদাং ক্ষিতাং প্রাতঃ ফ্শীতরাং স্সিতান্। পিরতং প্রাতঃ নিয়তং মৃত্রাহ উত্যুব্ধ কচলে।

(• 5: বৃহম্পতে: পুরু:)।

নল, কুণ, কাণ ও ইক্ষু, ইহাদের মুনের কাথ শাতল করিয়া চিনির সহিত প্রাতাদন প্রাতঃকালে সেবন করিলে মুব্রোধ নষ্ট হয়।

यवकात्रक्षां विश्वः পিবেৎ পুষ্পফলোম্ভবন্। রসং মৃত্রবিবন্ধন্নং শর্করাশ্মরিনাংনন্য্॥

কুমড়ার রস, কিঞ্চিৎ যবক্ষার ও পুরাতন গুড় মি.শ্রত করিয়া সেবন করিলে, মুফাঘাত শর্করা ও অশ্যরীরোগ নষ্ট হয়।

স্বনাং সৌবর্চনবতীং মূত্রাঘাতী পিবেন্নরঃ।
দাড়িমাপুযুতং মূখ্যমেলাবীজং সনাগরম্।
পান্ধা স্বাং সলবণাং মূত্রাঘাতা।বমূচ্যতে।
মূত্রাঘাতরোগী, সৌবর্চল লবণের সহিত স্বরা

মূত্রাখাওরোগা, গোবজন লবণের পাহত স্বয় অথবা এলাইচ ও ভুঠচুর্বের সহিত দাড়িম রস ; কিংবা সৈদ্ধবলবণের সহিত স্থা পান করিলে, মূত্রাঘাত রোগ হইতে বিমুক্ত হইবে।

সপত্রফলমূলস্ত কাথং গোক্ষুরকস্ত চ। পিবেমধুসিভাযুক্তং মুত্রাঘাতাদিরোগমূৎ।

পত্র ফল ও মূলের সহিত গোকুর বৃক্ষের কাথ, মধুও চনে সংস্কু করিয়া পান করিলে মূত্রাঘাতাদি রোগ বিনষ্ট হয়।

ত্রিফলাকক্ষসংযুক্তং লবণং বাপি পায়রেৎ ।
নিদিন্ধিকায়াঃ স্বরসং পিবেদ্ বস্থাৎ পরিক্রতম্ ॥
(অত্যন্ত সৈন পানম । তথা মিলিতা অন্তমাবকমানঞ্চ.
তিহলাকক্ষমারা ৬, সৈক্ষবমারা ২ । চক্রঃ টাঃ ।)

মূত্রাঘাত রোগে হিফশার কল্প ও দৈৰ্বব-লবণ (সমভাগে মিশিত ১ তোলা) জলের সহিত দেবন করিবে। অথবা কণ্টকারীর রদ বত্তে টাকিয়া তাহা পান করিবে।

বিশ্বীমূলঞ্চ সংপিপ্তং কাঞ্জিকেন সময়িতম্। নাভিলেপনমাতেও মূত্রোধং নিহন্তি চ॥

মূত্ররোধ হইলে তেলাকুচার মূল কাঁজিতে বাটিয়া, নাভিদেশে তাহার প্রলেপ দিলে প্রসাব হইবে।

মূত্রে বিবদ্ধে কপুরি-চূর্ণং লিক্ষে প্রবেশরেং। কুমাণ্ডকরসো বালি পেরঃ সক্ষারশবরঃ॥ (কুমাণ্ডরমঃ কুমাণ্ডমঞ্জিকাম্বরমঃ। চঃ টাঃ)

মূত্রবিবক হইলে লিক্সমধ্যে কর্পূর চূর্ণ (পব্দ্ধিত দুর্ব্বাকাণ্ডাদি দারা) প্রবেশ করা-ইয়া দিবে। অথবা কুম্ডার রস যবক্ষার ও চিনির সহিত পান করিবে।

ত্রিকটকৈরওশতাবরীভিঃ দিদ্ধং পয়ো বা তৃণপঞ্চমূলৈ:।
শুড়প্রপাঢ়ং দখুতং পয়ো বা রোগেযু কুচ্ছাদিরু শস্ততে তৎ

গোক্ষ্ব, এরগুমূল ও শৃতমূলী ইহাদের সহিত অথবা তৃণপঞ্চমূলের সহিত ছগ্ধ পাক করিয়া তাহাতে গুড় ও ছত প্রক্ষেপ দিয়া উপযুক্ত মাত্রায় পান করিবে। ইহা মৃত্রক্ষম্ভ ও মৃত্রমাতাদি রোগে প্রশস্ত।

জলেন থদিরীবীজং মৃত্যাঘাতাশারীহরম্। মূলং ক্ষতভাটশ্বাশ্চ তক্রপীতং তদর্থকৃৎ॥ (খদিরীবীজমশোকবাজমিতাছিং। চংটীঃ) অশোকবীজ জলের সহিত, অথবা রুদ্র-জটার মূল তক্তের সহিত সেবন করিলে মূত্রামাত ও অশারী রোগ প্রশমিত হয়।

শৃত্তশীতপয়োহরাশী চন্দনং তণ্ডুলামুনা । পিবেৎ স্পর্করং শ্রেষ্ঠযুক্ষবাতে সংশাণিতে॥

শৃতশীতল ত্থের সহিত অন্নভোজন এবং তণ্ণুলোদকের সহিত চিনি সংস্কৃত খেতচন্দন পান করিলে শোণিতমুক্ত উষ্ণবাত নিবারণ হইরা থাকে।

শতি বগাহ আবস্তিরকাবতিনিবারণঃ।

শীতলজ্বলে বস্তিদেশ পর্য্যস্ত **ডুবাইয়া** রাথিলেও উষ্ণবাত নিবারিত হয়। রীণামতিপ্রসন্তান শোণিতং ম্প্রতাতে। মেপুনোপ্রসন্তান্ত বুংহগীয়ো হিতো বিধি:॥

অধিক স্ত্রীসম্ভোগ হেতু লিঙ্গ দিয় যাহার রক্ত নির্গত হয়, তাহার মৈথুনত্যাগ ও বল-কারক ঔষধাদি দেবন করা কর্ত্ত্যা।

থ ওপ্রকলম্বীকা-কুকেক্রসিতারজঃ। সমাংশমক্ত'গানি কারক্ষোস্থ গানি চ ॥ সকং সমাগ্বিম্থাক্ষ-মানং লীচ্ব প্যঃ পিবেং । ১তি ত্রু-শ্যোথাংশ্চ দেবোন্ ব্লাফ্তপ্রদৃষ্॥

আলকুণীর বীজ, জাক্ষা, পিপ্পলী, কুলে-থাড়ার বীজ ও চিনি, এই সকল জবেরে চূর্ণ সমভাগ এবং এবং হগ্ধ মধু ও ম্বত প্রত্যেক (মিলিত চূর্ণের) অর্দ্ধভাগ; একত্র উত্তমক্ষণে আলোড়িত করিয়া হই তোলা পরিমাণে লেহন করিয়া হগ্ধ অমুপান করিবে। তাহাতে ভক্রশিয়জাত সমস্ত দোষ নিবারিত হয়।

গোধাবতা। মূলং রখিতং যুততৈলগোরসৈমিশ্রম্। পীতং নিরুদ্ধমিচিরাদ ভিনত্তি মূত্রস্ত সংরোধম্॥

গোয়ালিয়া লতার মূলের কাথ স্বত তৈল ও তক্রের সহিত সেবন করিলে মূ**ত্ররোধ** অচিরে নিবারিত হয়।

নরাস্কলবণোপেতা হৃতং যশ্চ পিবেস্কর:। ভক্ত নহান্তি বেগেন মুনামাতান্তরোদশ ॥ কাঁজি ও সৈদ্ধব লবণের সহিত রসাসন্তুর সেবন করিলে সকল প্রকার মুত্রাঘাত প্রশ-মিত হয়।

দশম্লীশৃতং পীতা সশিলাজতু শর্করম্। বাতকুগুলিক'গ্রানা-বাতবত্তৌ প্রযুজ্যতে॥

দশমূলের কাথে শিলাজতুও চিনি প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে বাতকুণ্ডলিক', অফীলা ও বাতবাস্ত উপশমিত হয়।

কর্কটাবীজসিদ্ধূথ-, ত্রিফলাসমন্তাগিকম্। পীতমুক্ষাস্তসা চূর্ণং মৃত্ররোধং নিবারয়েৎ ॥

কাঁকুড়বীজ, দৈদ্ধৰ লবণ ও ত্রিফলা, ইহাদের চুৰ্ণ সমভাগে লইয়। উষ্ণজ্লের সহিত পান করিলে মুত্রোধ নিবারিত হয়।

চিত্রকান্তং গ্রতম্।

চিত্রকং শারিবা চৈব বলা কলোকুশারিবা।

জাক্ষা বিশালা পিপ্রনান্তথা চিত্রকলা ভবেং ॥

তবৈদ মধুকং দজাদ চজাদামলকানি চ।

মৃতাদকং পচেদেভিঃ কক্ষিপ্রক্ষমবভারতেও।

কারজোণে জনজোণে ভংগিদ্ধমবভারতেও।

শাতং পরিক্রতকৈব শর্করাপ্রস্থাণ গৃহম্ ॥

মুগাক্ষীযাাশ্চ ভংগর্কং মহিমান্ প্রতিমিপ্রতেও।

ততো মিতং পিবেং কালে যথাদোষং যথাবলম্ ॥

বাতরেকাঃ পিত্রবেতাঃ প্রেমারতাশ্চ বো ভবেং।

রক্তরেতা প্রস্থিকেতাং প্রেমারতাশ্চ বো ভবেং।

রক্তরেতা প্রস্থিকেতাং প্রেমারতাশ্চ বো ভবেং।

রক্তরেতা প্রস্থিকেতাং প্রেমারতাশ্চ বো ভবেং।

রক্তরেতা প্রস্থিকেতাঃ প্রেমারতাশ্চ বা ভবেং।

ক্রাবিনীরক ব্রাক্ষ স্পিরেত্রহাগুগম্।

প্রাক্রিক্ত ব্রাক্ষ স্পিরেতারহাগুগম্।

স্পিরেতং প্রস্থানা স্ত্রী গার্ভং লভতেহ্চিরাং।

অ্বস্বাদেষান্ লডেচ্চাপি যোনিদোশংশ্চ সাহতান্।

মৃত্রেরাধেশ্ব সর্ব্ব্যাদেহচ্চিকিৎসিত্রম্॥

মুত ১৬ সের। হুগ্ধ ৬৪ সের, জল ৬৪ কন্ধার্থ—চিতা, অনন্তমূল, সের। বেড়েলা, রাখালগণা, পিপুল, ভগরপাত্তকা, দ্রাক্ষা, চিত্রফলা (কাঁকুড় বিশেষ, গোমুকু), যষ্টিমধু ও আমলকী প্রন্যেক ২ তোলা পরিমাণে এই করিয়া ঘুতে প্রদান সকল দ্রব্য কুট্রিত করিবে। পাকশেষে শীতল হইলে বস্ত্র খারা **টাকিয়া ভাহাতে** /২ সের চিনি ও /২ সের করিবে। এই মুত্ত বংশলোচন মিশ্রিত

সেবন করিলে সর্ব্ধ প্রকার মুত্রদোষ নিরারিত হয়। ইহা ব্যা, আগুছর, যোনিদোর ও রক্তদোষ নিবারক এবং সর্ব্রোগনাশক।

ধান্য গোক্ষুরকং স্বতম্। ধান্তগোক্ষরকর্মণ-বঙ্গুক্তং ঘৃতং হিওম। মৃত্যাঘাতে মৃত্রদেশে শুক্রণোধে চুদারুলে॥

ধনে ও গোক্ষুর, এই উভয়ের কাথ ও কল্প সহ যথাবিদি মৃত পাক করিয়া দেবন করিপে মুত্রাঘাত এবং মৃত্র ও গুক্রদোষ নিবারিত হয়'

ভদাবহং হতম।

অবঠা পাটলা চৈব বৰাভ্ৰমনেব চ।
বিদানাকন্দকাশান্চ কুশমোনটগোকুরাঃ ।
পাষাণভেদো বারাইট শান্তিমূলং শরন্তথা।
ভলাতকং শিরী বস্ত মূলনেবামপাহরেও ।
সমভাগানি সর্বানি কাশয়িত্বা বিচক্ষণঃ।
পাদশেষক্ষাণে ঘৃতপ্রস্থা বিপাচরেও ॥
ব জং দ্বাথ গতিমান্ গিরিজং মধুকং তথা।
নালোৎপলক্ষ কাকোলাং বাজং ত্রাপুষ্মেব চ ।
কুখাভক তথ্যকাক-সন্তবক্ষ সমং ভবেও।
ভিশ্বতিং নিহস্তোওপ্ যুতং ভদ্রাবহং ওভ্রম্ ॥

অষ্টা, পারুল, শেতপুনর্নবা, রক্ত পুন-নবা, ভূমিকুমাও, কাশ, কুশ, ইক্ষু, গোকুব, পাষাণভেনী, বারাহাকন্দ, শালিবাক্ত মূল, শরমূল, ভেলার মূটা ও শিরীষমূল এই সকল দ্রব্য সমভাগ (মোট /৮ সের), জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। কলার্থ—শৈল্জ, যৃষ্টিমধু, নীলোংপল, কাকোলী, শুণার বীজ, কুমাও ও কাঁকুড়বীজ এই সকল মিলিত /১ সের। ম্বত /৪ সের। ষথাবিধি পাক করিমা সেবন করিলে উফবাত নিবারিত হয়।

বিদারী তম্।
বিদারী বৃষকো যুণী মাড় লুঙ্গী চ ভূত্থ্য ।
পাষাণভেদঃ কন্ত রী বঞ্কো বদিরোহনলঃ ।
পুনর্মবা বচা রাষ্মা বলা চাতিবলা তথা।
কশেন্ধবিসশৃকাট-তামলকাঃ দ্বিনাদরঃ ।

भारतक्तृपर्ভगृतकः कूणः काम**स्टरे**शन ह। প্ৰবয়ন্ত সংহাত্য জলকোনে বিপাচয়েৎ। পাদশেষে রসে তত্মিন্ মৃতপ্রস্থং বিপাচয়েৎ। শতাবর্যান্তথা ধাত্রা: স্বরুসো যুত্সন্মিত: । यहेललः नर्कत्रोग्रान्ह कार्यिकागुभवानि ह। যষ্ট্রাহ্রং পিপ্সলা ক্রাক্ষা কাশ্মর্বাং সপর্বকম্॥ এলা ছুরালভ। কৌস্তী কুকুমং:নাগকেশরম্। জীবনীয়ানি চাষ্টো চ দলা চ वि । প্রঃ। এতৎ স্পিবিপক্তন্যং শনৈমূ দ্বিমা বুধৈ:। মুত্রাঘাতেষু সর্কেষু নিশেষাং।পিত্তজেষু চ॥ শর্করাশারীশুলেষু শোণিতপ্রভবেষু চ। সদ্রোগে পিত্তগুলা চ বাতাস্ক্পিত্তকেরু চ। কাসখাসক্ষতোরক্ষে ধনু স্ত্রীভারক্ষিতে। ত্যাচ্ছ দিমন:কম্প-শোণিতচ্ছ দনে তথা। রক্তে যক্ষণাপস্মারে। হপোন্মাদে বিরেণগ্রহে। रवानित्नारव तरकार्तारव एकत्वारव खत्राभरत ॥ এতৎ স্মৃতি হরং বৃষাং বাজ³করণমূত্মন। পুত্ৰদং বলবৰ্গাঢ়াং বিশেষ'দ্ বাতনাশ্ৰম্ ॥ পানভোজননাক্ষ্ ন কচিং।প্রতিষ্ঠাতে। বিদারীঘৃত্মিত্যক্তং রস'য়নমনূত্মম্ ॥

মুত /s সের। কলার্থ—ভূমিকুমাও, বাদক, যুঁইমূল, টাবালেব, গন্ধত্ণ, পাষাণ-ভেদী, কস্তুবী, আকন্দ, গৃছ।পপ্পলী, চিতা. পুননবা, বচ, রামা, বেড়েলা, গোরক্ষচাকুলে, কেশুর, মূণাল, পানিকল, ভূ ই-আমলা, স্বল্ল-পঞ্মূল, শরমূল, ইক্ষুদ্ল, দভমূল, কুণ ও কাশ প্রত্যেক ২ পল, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। শতমূলীর স্বরস /৪ সের। আমলকীর স্বরস /৪ সের। হ্রা ৮৮ সের। করার্থ— চিনি ৬ পল, বৃষ্টিমধু, পিপুল, দ্রাক্ষা, গান্ডারী পর্বাফল, এলাইচ, ছালভা, রেণ্ডকা, কুমুম, নাগেশ্বর ও জীবনীয়গণ (পারি, বৃ.দ্ধ, মেদা, महारमान, कारकाली, कीतकारकाली, कीवक अ ঋষভক) প্রত্যেক ২ ভোলা। এই সমস্ত দ্রব্য সহ মৃত্ অগ্নিতে ঘথাবিধি ঘত পাক কবিয়া সেবন করিলে সর্বাপ্রকার মূত্রাপাত বিশেষতঃ পিত্তজ মূত্রাঘাত নিবারিত হয়। ইহাতে শর্করা, অশ্মরী, রক্তদোষ জন্ম রোগ, কড়োগ, বাত-রক্ত প্রভৃতি এবং রজোদোষ, যোনিদোষ, ভক্রদোষ ও হরভঙ্গ বিনষ্ট হয়। এই দ্বত পানে

অতিরিক্ত ধন্ম-আকর্ষণ, ভারবহন ও স্ত্রীস**ল জন্ম** উপস্থিত রোগ সকল নষ্ট হইয়া থাকে। ইণ<mark>া ব্ধা,</mark> স্মৃতিকর, বাজীকরণ, পুত্রদ ও বলবর্ণকারক।

শিলোদ্ভিদাদি তৈলম্।

শিলোছিদৈরঙসমন্থিরাভিঃ পুনর্নবা**ভীক্র**মেষু সি**ন্ধন্।** তৈলং শৃতং ক্ষীরমথাতুপানং কালেষু কুচ্ছাদিষু সম্প্রযোজ্যমু ॥

তৈল /৪ সের। পুননবা ও শতমূলীর রস :৬ দের। কলার্থ—পাষাণভেনী, ভেরেণ্ডা মূল ও শালপানে মিলিত /১ সের। বথাবিধি তৈল পাক কারয়া হ্রন্ধ সহ সেবন করিলে নৃত্রকুজুনি গোগ প্রশমিত হয়।

উশীরাছং তৈলম্।

উণারং তপরং কুঠং মন্ত্রমধুকচন্দনম্।
বিভাতকাভয় ভারু পর্মুৎপরণাহিবে ॥
বলা তুরগগল্পা চ দশ্যুলং শতাবরী।
বিদারা কাকোলা চৈব গুডুচ্চাতিবলা তথা ॥
খনংখ্রা শতপুপা চ বাট্যালকন্দুরিকে।
এতিঃ ক্রীনিতে ভাগেতৈজ্বপ্রহং বিপাচয়েৎ ॥
সপন্দলন্দ্রগু গোলুরগু পর্যা শত্রুষ্ ।
ভল্পো বিপজ্বাং পাদাংশেনাবতারয়েং॥
ভল্পং ভেলসনং দেয়ং বার্ণকাথ্যাচক্ষ্ ।
নুর্ধিত মুন্ধুক্তমন্মরাং ইন্তি দাস্পান্ ॥
বলবর্ণকরং ব্রাং বার্ণিড্রিস্ট্নিন্দনন ।
ভাগেতিনিং তৈনং কান্রাজেন নিশ্বিত্য ॥

তিলতেল /৪ সের। কাথার্থ—পত্র ফল ও মূল সহিত গোকুর ১২॥॰ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের, বেণার মূল ১২॥॰ সের, জল ৬৪ সের। করার্থ—বেণার মূল, তগরপাছকা, কুড়, ষষ্টি-মধু, রক্তচন্দন, বহেড়া, হরীতকী, মহাশতাবরী, পদ্মকান্ত, উংপল, অনন্তমূল, বেড়েলা, অব-গদ্ধা, দশমূল, শত্মূলী, ভূমিকুলাড, কাকোলী, গুলঞ্চ, গোরক্ষচাকুলে, গোকুর, শুল্ফা, শেত বেড়েলা ও মৌরি প্রত্যেক ২ তোলা। এই তিল ম্দনে মূত্রায়াত, মৃত্রক্ষত্র ও অশারী

রোগ নিবারিত হয়। हेश वन छ वर्ष-কারক, বুষ্য এবং বায়ু ও পিত্ত নাশক।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

মূত্রাঘাতে পথ্যানি।

শভাঞ্জনমেহবিরেকবন্তি-স্বেদাবগাহোত্তরবন্তয়ন্চ। পুরাতনা লোহিতশালয় সাংসানি ধরপ্রভবানি মতান ॥ তক্রং পরো দধ্যপি মাব্যুবঃ পুরাণকুত্মাগুফলং পটোলম।

> মহাদ্রকং তালফলান্তিমজ্জা হরীতকা কোমলনারিকেলম ॥ গুৰাকগজ্জরকনারিকেল-তালদ্মাণামপি মস্তকানি। যথামলং সর্বামিদক মুত্রা-ঘাতাতুরাণাং হিতমাবহন্তি॥

অভ্যন্ধ, স্বেহপ্রয়োগ, বিরেচন, বস্তিক্রিয়া,

ধ্বদেশজাত মুগপক্ষী প্রভৃতির মাংস, মুল পান, তক্র, হগ্ধ, দধি, মাষকলায়ের যুষ, পুরাণ কুম্ড়া, পটোল, বন আদা, তাল আঁটার শাস, হরীতকী, কোমল নারিকেল (নেয়পাতি). এবং স্থপারি, থর্জুর, নারিকেল ও তালবুকের মন্তক, এই সকল দোধানুসারে কারলে মূত্রাঘাতরোগির হিতকর হয়।

মূত্রাঘাতেইপথ্যানি।

विक्कानि ह मर्कानि वासायः माणनीलनम । ক্লকং বিদাহি বিষ্টম্ভি বাবায়ং বেগধারণম। করীরং বমনকাপি মূত্রাঘাতী বিবর্জয়েৎ ॥

সকল প্রকার বিক্রডবা, ব্যায়াম, নিয়ত কৃষ্ণদ্ব্য, বিলাহিদ্ৰব্য, বিষ্টান্ডদ্ৰব্য, পৰ্যটেন, মেথুন, মলমত্রাদির বেগধারণ, বংশান্ধর এবং খেদ, অবগাহন, উত্তর্বান্ত, পুরাণ রক্তশাল, বমন এই দকল, মূতাবাতে পরিত্যাগ করিবে।

ইত্যায়র্কেদ-সংগ্রহে মূত্রাঘাতাধিকারঃ।

অথ'শারীরোগাধিকারঃ।

অথাশ্ররী-নিদানম।

বাঙপিত্তকফৈহিত্রশতভূগী গুক্রজাপরা। প্রায়ঃ রেম্বা ম্যাঃ সকা অন্যয়ঃ স্থায়নোপনঃ: ।

বিশোষয়েদ্বস্তিগতং সশুক্রং মূত্রং সপিত্তং পবনঃ কফং বা। যদা তদাশাযু াপজায়তে তু ক্রমেণ পিভেষিব রোচনা গোঃ॥ অশ্বরী শক্রা হৈব তুল্যসম্ভবলক্ষণে। বিশেষণং শর্করায়াঃ শৃণু কীর্ত্তরতো মন ॥ পচ্যমানাশ্মরী পিত্ত ক্ছোষ্যমাণা চ বার্না। বি**মৃক্তকফসন্ধানা ক্ষরতা শ**র্করা মতা॥ হৃৎপীড়া বেপথু: শূদং:কুক্ষাব্যিশ্চ ভূৰ্বল:। তরা ভবতি মুক্তা চ মূত্রকুক্ত্রঞ্জ দারণেম্।

মূত্রবেগনিরস্তাভিঃ প্রশমং যাতি বেদনা। যাবদভাঃ পুননৈতি গুড়িকা স্বোত্সো মুখম্।

কুপিত বায়ু, পিত্ত, কফ ও শুক্র ধারা অশ্বরী রোগ উৎপন্ন হয়। স্কুতরাং অশ্বরী চারি প্রকার। যথা—বাতজ, পিত্তজ্ঞ কফজ ও শুক্রজ। শুক্তক অন্মরী ভিন্ন, সকল প্রকার অন্মরীরই **সমবায়ি-কারণ শ্লেমা। শুক্রাণ্যরীর স্মবা**য়ি-কাহারও মতে শুক্রাশ্রীরও কারণ শুক্র। সমবায়ি-কারণ কফ। অশারী অতি ভয়ঙ্কর ব্যাধি, অচিকিৎসিত হইলে নিশ্চয়ই মারাম্মক इहेग्रा शिका

কুপিত বায়ু কর্তৃক বস্তিগত মূত্র ও শুক্র কিংবা পিত্ত ও কফ বিশোষিত হইলে অশ্মনী-রূপে পরিণত হয়। যেমন গো-পিত্ত বায়ু কর্তৃক শোষিত হইয়া ক্রমে ক্রমে গোরোচনা-রূপে পরিণত হ্য়, অশ্মরীও দেইরূপে উৎপন্ন হইয়া থাকে।

শর্করা। অশারী ও শকরার কারণ ও লক্ষণ তুলারূপ জানিবে। তেবে শর্করার বিশেষ বিব-রণ শুন। মৃত্র শুক্র ও কফ প্রথমে পিত্তোমা দ্বারা পক্ক, পশ্চাৎ বায়ু দ্বারা শোষিত এবং কফ ধারা আমিষ্ট হুইলে, তাহতেে অশারী ট্র অশারী যদি কোন কারণে কফ-বলা যায়। সংশ্লেষরহিত হয়, তাহা হইলে সূজা সূজা হইয়া মৃত্রমার্গ দিয়া ক্ষরিত হইতে থাকে, তাহাকেই শর্করা কহে। সেই শক্রা হইতে দাকণ মৃতক্ষ্ জন্ম। ইহাতে হং-পীড়া, কম্প, কুলিলে- শূল, অগ্নিমান্দা ও মূচ্ছা এই সকল লক্ষণ প্রকাশ পার। অশ্রী-গুডিকা অর্থাৎ শকরা মৃত্রবেগে ধর্মন স্রোতো-মুখে আদিয়া সংলগ্ন হয়, তথন দারুণ বেদনা আনয়ন করে, কিন্তু মুনবেগ-বিৰ্দ্ধিত হইলে বেদনার পান্তি হইয়া থাকে।

(অপারী শকরারপে পরিণত হয় বলিয়াএই উভয়কে অভিয় পদার্থ বলা যাইতে পারে,
স্তরাং অপারী ও শকরা হইতে জাত মূত্রক্ষুত্বরও এক জাতীয় অতএব শকরাজ মৃত্রক্ষুত্বক অশারীজ মৃত্রক্ষ্ণের অস্তর্ভ গশনা
ক্রিয়া সমুদায়ে আট প্রকার মৃত্রকৃষ্ণ অভিহিত হইয়াছে)।

অথাশ্মরী-চিকিৎস।।

অধারী দারণো ন্যাধিরস্তকপ্রতিমো মতঃ।
ওবংধিক্তরুণঃ সাধ্য: প্রবৃদ্ধক্রেদমর্যতি ।
অশারী অতি ভয়ঙ্কর ব্যাধি, ইহা সাক্ষাৎ
বমস্বরূপ, তরুণ অশারী ঔষধ-সাধ্য, কিন্তু
বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হুইলে শুক্রপ্রয়োগ আবশ্যক।

তত পুর্বেব্ রূপেষ্ স্নেহাদিক্রম ইব্যতে। তেনাক্তাপচরং বাজি ব্যাধের্নাক্তশেষতঃ॥

অশ্বরী রোগের পূর্বরূপ প্রকাশ পাইলেই সেহাদি প্রয়োগ কর্ত্তব্য। কারণ তদ্মারা ব্যাধির মূশ বিনষ্ট হয়।

বঙ্গণন্ত ছচং শ্ৰেষ্ঠাং শুষ্ঠাগোকুরসংযুতাম্। বৰকারগুড়ং দ্বা কাম্মিছা জলং পিবেং। অথারীং বাতজাং হস্তি চিরকালান্তবন্ধিনাম॥

বরুণছাল, ভঁঠও গোক্ষুর ইহানের কাথে যবকার ২ মাধা ও পুণাতন ওড় ২ মাধা প্রাক্ষেপ দিয়া পান করিলে দীর্ঘকালোৎপর বাতাশ্মরীর শান্তি হইবে।

क्षिशामिकाथः।

শুপ্রার্থপাধান-শিগ্রেরপণগোকুরৈ:।
আন্তর্গর্থকলৈ: কাখং কুয়াদ্ বিচক্ষণ:॥
রামঠক:রনবন-চূর্ণ দ্বা প্রেরর:।
আন্তর্গুড় মুং পাচনং দীপনং প্রম্।
হস্তাৎ কোঠানিগ্রং বাতং কট্যুকগুদমেচুগম্॥

ভঠ, গণিয়ারি, পাষাণভেদী, শব্জিনা, বৃকুণছাল, গোক্ষুর, হরীতকী ও সোন্দালফল ইহাদের কাথে হিসু, যবক্ষার ও দৈরব লবণ চূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে অন্দরী, মূত্র-কুছু এবং কোন্ত কটা উক্ গুহু ও মেচ গত বাত প্রশমিত হয়। ইহা পাচক ও অগ্নির প্রদীপক।

উযকাদিগণঃ।

উৰকং দৈধনং হিন্তু কাশীশন্ত্যপ্তগ্ৰহণ শিলাজতু তুৰ্বকক উৰকাদিকদাক্তঃ । উৰকাদি, কদং হন্তি গণো মেদোবিশোধনং। সম্মুনীশৰ্কনামুন্ত্ৰালয়ং কফগুলাবুৎ ।

কারস্থিক: সৈন্ধব, থিসু, হিরাকস্বর (বাতুকানা ও পুষ্পকানীণ), গুগ গুলু, শিলাজতু ও তুতে ইহাদিগকে উবকাদি গণ কহে। উবকাদিগণ কফনাশক, মেদোবিশোধক

আয়ুর্কেন-সংগ্রহঃ।

নিবারিত হয়।

এবং ইহা অশারী, শর্করা, মৃত্তশূল ও কফগুলু নাশক।

বরুণাদিকষায়ঃ।

বক্লণত্বক্ষায়স্ত পীতন্ত গুড়সংযুত: । অশুরীং পাতরত্যাশু বন্তিশূলবিনাশন: ॥

বরুণছালের কষায় গুড়সংযুক্ত করিয়া পান।করিলে, অশ্মরী আশু নিপতিত এবং বস্তিশুল প্রশমিত হয়।

পিবেদ্ বরুণমূলত্ব্-কাথং তৎকক্ষসংযুত্ত। কাথক শিগ্রামূলোখঃ কছুফোইশারীনাশনঃ॥

বরুণমূলের ছালের কাথে, বরুণমূলের ছালের কক মিশ্রিত করিয়া পান করিলে অশ্যরী বিনষ্ট হয়। শজিনামূলের ছালের কাথও ঈষহ্ষ্য করিয়া পান করিলে অশ্যরী বিনষ্ট হইয়া থাকে।

নাগরবরুণগোকুরপাষাণভেদকপোতবক্তুকাথঃ। শুড়্যাবশুক্মিশ্র: পীতো হস্ত্যশারামুগ্রাম্ ॥

শুঠ, বরুণছাল, পোকুর, পাষাণভেদী ও কপোতবক্ত্র (শিরীষসদৃশ ক্ষুদ্রপত্রবিশিষ্ট বুক্ষবিশেষ) ইহাদের কাথে গুড় ও যবকার প্রাক্ষেপ দিয়া পান করিলে উগ্র অশ্যরীও বিনষ্ট ইইয়া থাকে।

বরুণজক্শিলাভেদ-শুক্তীগোক্ষরকৈ: কৃতঃ।
ক্ষায়: ক্ষারসংযুক্তঃ শক্রাঞ্চ ভিনন্তাপি।
স্বদংষ্ট্রেপ্ডপত্র'নি নাগরং বরুণজ্চম্।
এতং কাথবরং প্রাতঃ পিনেদম্মরীভেদনম্।
বরুণছাল, পাষাণভেদী, শুঠি ও গোকুর
ইহাদের কাথে ব্বক্ষার প্রক্ষেপ দিয়া পান
ক্রিলে শক্রা বিনষ্ট হয়।

গোক্ষুর, এরগুপত্ত, শুঠ ও বরুণছাল, ইহাদের কাথ প্রাতঃকালে সেবন করিলে অশ্যরী ভেদ হইয়া থাকে।

রুহদ্বরুণাদিঃ।

वाक्रभः तक्तः एकी वीकः भारत्वत्रमञ्जयम्। जानमृती क्लथक कुणानि शक्तमृतकम् ॥ শর্করাক্ষারসংযুক্তং কাগন্তিছা জলং পিবেং।
আন্মরীমূত্রকুজ্জন্থং বন্তিমেহনশূলনুং ॥
বরুণছাল, শুঠ, গোক্ষুরবীজ, তালমূলী,
কুলথকলাই, কুশাদি তৃণপঞ্চমূল মিলিত ২
ভোলা, জল ।।।• সেব, শেষ ন/• পোরা,
প্রক্ষেপ দিনি ২ মাধা, যবক্ষার ২ মাধা।
ইহাতে অন্মরী, মৃত্রকুদ্র, বস্তিশূল ও লিঙ্গশূল

মূলং খদংট্রেক্রকোরুত্কাৎ ক্ষীরেণ পিষ্টং বৃহতীধরাচচ। আবলোড্য দগ্না মধ্রেণ পেয়ং দিনানি সপ্তাশারিভেদনার্থম্॥ (সর্ববং মিলিতা মাধ্যতন্ত্রয়ম)

গোশ্বর, কোকিলাক, এরও, বৃহতীও কটকারী, ইহাদের মূল মিলিত ৪ মাষা, ক্লপ্পে পেষণ করিয়া অনমদ্ধিতে আলোড়ন করিয়া সাত দিন পান করিলে অশ্যরী বিনষ্ট হয়।

এলাদিঃ।

এলোপকুলা মধুকাখ্যভদঃ কৌস্তাখনংগ্রাব্যকাক্র্টকঃ। কাথং পিবেদগ্রহত্তপ্রগাচং সশক্ষে চাখ্যনিমুক্তকুচ্ছে॥

এলাইচ, পিপ্পলী, যিষ্টিমধু, পাষাণভেদী, রেপুকা, গোক্ষুর, বাসক ও এরগু, ইহাদের কাথে ৩।৪ মাষা শিলাজতু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে শর্করা অশ্যরী ও মৃত্রকন্ত্র প্রশমিত হয়।

ত্তিকণ্টকস্ত বীজানাং চূৰ্বং মান্ধিকসংযুত্ম। অবিক্ষীরেণ সপ্তাহং পিবেদশ্ররীনাশনম্॥ শুক্রাশ্রধাক্তি স্থানাশনা।।

গোকুর-বাজচুর্ণ মধুসংবুক্ত করিয়া মেষী-ছগ্ধের সহিত সপ্তাহকাল দেবন করিলে অশ্যনী বিনষ্ট হয়। শুক্তাশ্যনী রোগে, অশ্যনী-রোগোক্ত সাধারণ চিকিৎসা করিবে।

প্রপিবেৎ তালমূল্যা বা কন্ধং ব্যুষিতবারিণা।
তেনৈবাথ গণাক্ষ্যা বা ত্রোছাদগারীপাত্রম ।

তালমূলী অথবা গোস্কচাকুলে বাটিয়া বাসি জলের সহিত পান করিলে অথারী শীঘ নিপ্তিত হয়। যো নারিকেলকুস্মং সক্ষারং বারিণা পিষ্টু।। পিবতি তক্ত হি দিনৈকালিপততি ঘোরাশ্ররী নৃনম্।

নারিকেল ফুল ৪ মাধা, যবক্ষার ৪ মাধা, জলে বাটিয়া প্রাতঃকালে ভক্ষণ করিলে অস্মরী প্তিত হয়।

পাষাণভেদান্তং চুৰ্ণং মৃতঞ্চ।

পাষাণভেদং ব্যকং খদংখ্রী
পাঠাভয়াব্যোখনটানিকৃত্য:।
ভিংল্রাথরাখানিতিমারকাণামেব্যাক্রকান্ত অপুষ্ঠ বাজম্॥
উপকৃষ্ঠিকা হিঙ্গু স্বেতসামং
ভাদ্ ৰে বৃহত্যো হবুষা বচা চ।
চূর্ণ পিবেদম্বিভেদি পকং
স্বিশ্বিত গোমুত্রচতুগুণং তৈঃ॥

পাষাণভেদী, বাসক, গোলুর, আক্নাদি, হরীতকী, শুঠি, পিপুল, মরিচ, শটী, দন্তী, কালিয়াকড়া, বন্ধমানী, শালিক, কাঁকুড়বীজ, শশাবীজ, কুষ্ণজীরা, হেং, ত্মাবেতস, বৃহতী, কণ্টকারা, হব্যা ও বচ ইহাদের চুর্ণ জলসহ পান কারবে অথবা এই সকল দবোর কল্প লারা গতের চতুগুর্গ গোমুত্র সহ যথাবিধানে মৃত পাক কাব্য়া সেবন করিলে আশারী বিনষ্ট হয়।

জাতীফলাদ্যবৰ্গঃ।

জাতীকলং বরী দর্ভং শুরুরা চ তথ্য চ।
এলা চৈব লবঙ্গানি:সপিষা সগুড়ম্বচম্ ।
সমভাগানি,সক্বাণি,কারয়েটেচব যত্নতঃ।
অক্ষরীং মূত্রকুচ্ছঞ্ মূত্রাব্তিং তথ্যে চ।
ক্ষেতারোধং নিহন্ত্যান্ত প্রমেহনিথিলানি চ।

জাতীফল, শতমূলী, কুশ, চিনি, এলাইচ, লবক ও দাকচিনি ইহাদের সমভাগ চূর্ণ মুত্ত সহ মিশ্রিত করিয়া সেবন করিবে। এই জাতীফলাম্ম বর্গ সেবনে অশারী, মুত্তক্ষ্ণ, মুত্তাঘাত, স্রোতোরোধ ও সর্বপ্রকার প্রমেহ নিবারিত হয়।

তিলাদিকারযোগঃ।

তিলাপামার্গকদলী-পলাশ্যবসম্বব: ।
কার: পেরোহবিম্ত্রেণ শর্করাশ্মরিভিদ্ ভবেৎ ॥
(ভাগমুক্রেণেতি রসেন্সচিস্তামণে) ।)

তিলনাল ভন্ম, আপাঙ্গ ভন্ম, কদলীকাণ্ড ভন্ম, পলাশকাণ্ড ভন্ম, যবনাল ভন্ম (মিলিভ /২ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। এই ১৬ সের কার জল ছাঁকিয়া লইয়া পুনর্দার পাক করত সমুদায় জল নিঃশেষিত করিবে) ইহাদের ক্ষারচূর্ণ ২ রতি পরিমাণে মেষ বা ছাগমূত্রেন স্বাহত সেব্য। ইহাতে শর্করা ও অশারী রোগ নই হয়।

পাষাণকজো রসঃ ।

শুদ্ধ হ'ব বিধাগদ্ধ রদৈঃ খে বপুননিবৈ:।
মর্দ্ধরিতা দিনং পলে কদ্ধা তদ্ ভূধরে পচেৎ ॥
দিনাস্তে তৎ সমৃদ্ধৃত্য মর্দ্দরেদ্ গুড়দংমুত্ম।
অশ্বরীং বস্তিশূলক হস্তি পাবাণবজ্ঞক:॥
গোরক্ষকর্কটাম্ল-কাপং কৌলখকং তথা।
অনুপানং প্রধান্তেশং বৃদ্ধা দৌধবলাবলম্॥

শোবিত পারদ ১ ভাগ, গন্ধক ২ ভাগ, খেত পুনন বার রদে এক দিন খলে মর্দদন করিয়া ভূদর-যান্ত্র পাক করিবে। পরে শীতল হইলে উদ্যোলন করত গুড়সহ বটা প্রস্তুত করিবে। অনুপান—গোরক্ষকর্কটা মূলের এবং কুল্প কলায়ের কাথ। দোধের বলাবল বুঝিয়া অনুপান প্রয়োগ করিবে। ইহাতে অন্মরী (পাথুনী) ও ব্ভিশ্ল প্রশ্মিত হর।

পাযাণভিন্নঃ।

শুদ্ধপুতং বিধাগকং নিলাঞ্চুরদ: পলম্ । খেতপুনন বাবাদা-রদৈ: খেতাপরাজিতৈ: । প্রতিনিনং ত্রাহং মধ্যাং শুকং তদ্ ভ'ওসংপুটে। স্বেদয়েদ্ দোলিকায়ন্ত্রে সংশুক্তং তদ্ বিচূর্ণয়ে । রস: পারাণভিন্ন: স্ঠাদ্ বিশুঞ্জ-চান্দুরীং হরেং। ভূপাত্রীফলবিশালাং পিষ্ট্রা ফুম্মেন পার্ময়েং। কুলাঝকাব্দংশীত্মমুপানং স্থাবহন্। পারদ ১ পল, গদ্ধক ২ পল, শিলাবতু ১ পল, এই সমুদার একত্র করিয়া যথাক্রমে খেত পুনর্বা, বাসক ও খেত অপবাজিতার রসে এক এক দিন মর্দন করিয়া শুকাইয়া ভাশুমধ্যে নিরোধ করত দোলা-যত্ত্রে স্থেদ প্রদান করিবে। পরে শুদ্ধ ও চূর্ণ করিয়া ভূঁই আমলার ফল ও রাথাল শশার মূল হুগ্নের সহিত পেষণ করিয়া তৎসংযোগে এই ঔষধ ২ রতি পরিমাণে সেবন করাইবে। কিংবা কুলখের কাথের সহিত সেব্য। ইহাতে অশারী বিনষ্ট হয়।

ত্রিবিক্রমো রদঃ।

মৃততান্ত্রমন্ধান্ধীরৈ: পাচাং তুলাং গতে জবে।
তৎ তান্তং গুদ্ধস্তক গন্ধকক সমং সমন্॥
নিশু ভিন্দরসৈম দ্যিং দিনং তলগোলকীকৃতন্।
যামৈকং বালুকাষন্তে পক্ত্বা যোজাং বিশুপ্তকন্
বীজপুরক্ত মূলক সজলক ক্রেপায়য়েৎ।
রসন্তিবিক্রমো নাম শর্করামশ্রবীং জয়েৎ ॥
(ত্রিবিক্রমরেস তান্ত্রত্নাং ছাগীত্বধং দ্বা পাচ্যন্।
ছক্ষে নিংশেষতে তান্ত্র্লাং রসগন্ধকং নিক্রপা
নিশু ভীরসৈদিনিকং সংমদ্যি বালুকাষ্য্রে ঘামৈকং
প্রেছে। মা্ত্রা চাক্ত গুপ্তাত্বয়র্বিনিতা। রসেক্র টিঃ।)

শোধিত ভাষে সমপরিমিত ছাগীহ্য মিশাইয়া একত্র পাক করিবে। যথন হুগ্ধ নিঃশেষ হুইবে, তথন ঐ তানের সমান শোধিত পারদ ও গদ্ধক একত্রিত করিয়া নিাসন্দারদে এক দিন মর্দ্দন করত বালুকা-যন্ত্রে এক প্রহর পাক করিয়া ২ রতি পরিষাণে প্রয়োগ করিবে। টাবালেব্র মূল ও জ্বল অমুপানে সেবনীয়। ইছাতে শর্করা ও জ্বশ্বমী বিনষ্ট হয়।

পাষাণাদ্যং মৃত্যু।

পাৰাণভেণো বহুকো বলিরোহশান্তকন্তথা। শভাবরী খদটো চ বৃহতী কণ্টকারিকা । কপোতবন্ধার্জগল-কাঞ্চনাশীরগুম্মকা:। বৃহ্মাধনী ভদূকন্ট বসুণঃ শাক্তাং ফলম্ । যবাঃ কুলখাঃ কোলানি কতকন্ত ফলানি চ।

উষকাদিপ্রতীবাপমেষাং কাথে শৃতং মুতম্ ॥
ভিনত্তি বাতসন্তুতামশারাং ক্ষিপ্রমেষ তু।
ক্ষারান্ যবাগৃঃ পেয়াক ক্ষায়াংক প্রংসি চ।
ভোজমানি চ কুর্নীত বর্গেহশ্মিন্ বাতনাশনে ॥

পাষাণভেদী, আকন্দ, রক্তাপামার্গ, আমকল, শতমূলী, গোক্ষুর, বৃহতী, কল্টকারী,
কপোতবক্ত (শিরাষসদৃশ ক্ষুদ্রপত্রাবশিষ্ট
বৃক্ষ বিশেষ), নীলাফাটী, কাঞ্চন, বেণার
মূল, গুলঞ্চ, পরগাছা, শ্যোণাক, বরুণ, সেগুণফল, যব, কুল্থ কলাই কুল ও নির্মাণাফল.
এই সকল দ্রব্যের কাপে ও উষকাদি গণের
করে মৃত পাক করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় সেবন
করিলে বাতজ অশ্রুরী বিন্দ্র হয়।

উপার উক্ত বাতনাশক দ্বাসমূহের সহিত ক্ষার, যবাগু, পেন্ধা, কথার, দ্বপ্ধ ও ভোজা দ্রব্য সকল নথাবিধি পাক ক্রিয়া প্রয়োগ ক্রিলে বাতাশ্বরী বিনই হয়।

কুশাদ্যং য়তম্ i

কুণাং কাদাং শরো গুলা ইংকরে। মোগটোংশাভিং।
দটো বিদারী বারাখা শাকিছল কিউক:
ভল্লক পাটলী পাটা পভারেখে কুছলিকা।
প্রনর্বে নিরাষণ্ড কথিত স্তেষ্ দাধিতম্।
মুক্তং শিলাক্ষমধুকেবীজৈণি দাবরপ্ত চ।
জপুনৈকার্যকাণাং বা বীজৈশটোপাপিতং শৃত্যু।
ভিনতি পিশুস্তুত্যমন্ত্রর ক্ষেম্ব চ।
ক্ষারান্ ব্যাগুং পেরাশ্চ ক্ষারাংশ্চ প্রাংসি চ।
ভোজনানি প্রক্রীত বর্গেহ্মিন্ পিশুনাশনে।

কুশ, কাশ, শর, গুলঞ্চ, ইকড়, ইক্মৃল, পাষাণভেদী, উলুম্ল, ভূমিকুথাগু, বারাহীকল, শালিধাগুমূল, গোক্র, শোণা, পারুল, আকনাদি, শালিঞ্চ, পীতবিন্টো, রক্ত পুনর্বা, খেত পুনর্বা ও শেরীষ এই সকল দ্রব্যের কাথে এবং শিলাজভু, ষষ্টিমধু, পদ্মবীজ, শশাবাজ ও কাঁকুড়বীজ, হহাদের কল্কে যথাবিধি ঘৃত পাক করিয়া সেই ঘৃত পান কারলে পিত্ত অশারী বিনষ্ট হয়।

উব্দ্র পিত্তনাশক বর্গে ক্ষার, যবাগৃ, পেয়া, কষায়, হ্রশ্ব ৬ ভোজ্য দ্রব্য সকল যথাবিধি পাক করিয়া প্রয়োগ করিবে।

বরুণান্তং ঘ্নতম্।

গণে বৰুণকাদে চ গুগ গুগেল 'হরেণ্ডিঃ।
কুষ্মু হাইমেরিচ-চিত্রকৈঃ সম্বাহরেন্ডিঃ॥
এতৈঃ সিদ্ধমজাসপিরিবকাদিগণেন চ।
ভিন্তি কফস্তৃতানশ্মরী ক্ষিপ্রমেব তু॥
ক্ষারান্যবাগৃং পেয়ান্চ ক্ষায়াংক প্যাংসি চ।
ভোজনানি প্রকুলাত বগেহিমান্ ক্ষ্নান্যে॥

বর্মণাদি গণের কাপে এবং শুস্পুলু, এলা-ইচ, রেণুক, কুড়, মৃতা, মরিচ, চিতা ও দেব-দারু, ইহাদের এবং উষকাদি গণের করে যথাবিধি ছাগত্বত পাক করিয়া সেই ত্মত পান কংলে কফজ অশ্যরী বিনষ্ট হয়।

উপরি উক্ত কফনাশক গণের সহিত ক্ষার, যবাগূ, পেয়া, কষায়, হগ্ধ ও ভোজ্য দ্রব্য সকল যপাবিবানে পাক করিয়া প্রয়োগ করিবে।

হরুণয়তম্।

বঞ্জ তুলাং ক্ষাং ছলছোগে বিপাচয়েং।
পাদশেষং পরিশা সুভপ্তং বিপাচয়েং।
বঞ্গং কদলী বিলং তুণজং পঞ্চন্তক্ষ।
অমৃতা চাশ্মন্তং দেয়ং বীজঞ্চ ত্রপুষোন্তবম্।
শতপর্বা তিলক্ষারং পলাশক্ষাবমেব চ।
মৃশিকায়াশ্চ মূলানি কাষিকাণি সমাবপেং।
অন্ত মাত্রাং পিবেজজ্বদে শকালাল্যক্ষেপ্য।
জীর্ণে চাল্মিন্ লিবেং পূর্বাং গুড়ং জীর্ণন্ত মন্ত্রনা।
অশ্মরীং শক্রাকৈব মৃত্রকুক্তহং বিনাশয়েং॥
(পূর্বমিতি ভোজনাং পূর্বম্য।)

ঘুত /৪ দের। কাথার্থ—ক্টিত বক্ষণছাল

১২॥০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের।
করার্থ—বক্ষণমূলের ছাল, কদলীমূল, বিবছাল,
কুশাদি পঞ্জুপের ফুল, গুলঞ্চ, শিলাজতু,
শশার বীজ, বাশের মূল, তিলনালের ক্ষার,
পলাশকার ও যুইমূল প্রত্যেক ২ তোলা। দেশ
কালাদি বিবেচনা করিয়া মাতা স্থির করিবে।

ম্বত জীর্ণ হইলে, ভোজনের পূর্বের পুরাতন গুড়সংযুক্ত দধির মাত সেবনীয়। ই**হাতে** অশ্মরী, শর্করা ও মৃত্রকৃচ্ছু নিবারিত হয়।

কুলখাগ্যয়তম্।

কুলখনিক খেণিড়জনাবং সণকরং শীতনিবাবশ্কম।
বাজানি কুখাওবংগাক্রাত্যাং সূতং পচেরা বঞ্গত তোমে
তঃশাধানকাশিবিমূলক জ্ঞা মুক্তাভিগতিক সম্কবক্ষ।
এতানি সর্কাণি নিহতি শীলং প্রকাতৃকানিব বজ্ঞপতিম।

পুত /৪ সের। কাথার্থ—বক্ষণছাল /৮
সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। কক্কব্য

ক্লেথকলাই, সৈন্ধব লবণ, বিড়ক্ষ, চিনি,
শিউলিছোপ, যবক্ষার, কুমাগুরীজ, গোক্ধরবীজ প্রত্যেক ১ পল। যথাবিধি পাক করিয়া
এই প্রত পান করিলে হঃনাধ্য সর্বপ্রকার
অন্যরী, মৃত্ত্বক্ষুত্র ও মৃত্রাঘাত নিবারিত হয়।

বীরতরাল্যং তৈলম্।

প্রাধিকারে যথ তৈলং দৈশ্বৰাপ্তং প্রকীপ্তিত্য।
তথ তৈলং বিস্তাগ ক্ষারং পচেদ্ বীরতরাদিনা ।
কাথেন প্রকারেন সাধিতপ্ত ভিষণ্নরৈঃ।
এতথ তৈলবরং শেষ্ঠমপ্ররাগাণ বিনাশনম্॥
মুথাতে মুধকুক্তে পিডিতে মুখিতেগপি বা।
ভাগ শ্রমাভিপন্ন চ সর্ববৈধন প্রশাস্ততে।

ব্রধ-(কুচ্ কি)-চিকিৎসোক সৈদ্ধবাদি তেল, পুনবার নিমলিখিত কাথাদির সন্থিত পাক করিবে অর্থাৎ তাহা, দ্বিগুণহুগ্ধ ও চতুগুণ বা দ্বিগুণ বীরতরাদিগণের কাথ এবং পূর্বকক সহ অর্থাৎ সৈদ্ধবাদি তৈল পাক করিতে যে বক্ষ দেওয়া হইয়াছিল, সেই কক্ষ সহ পাক করিবে। অন্মরীবিনাশে ইহা শ্রেষ্ঠ তৈল। মুক্রাঘাত, মূত্রকজ্ব প্রভৃতি রোগেও এই তৈল প্রশন্ত।

বরুণান্তং তৈলম্।

ত্ত্বপত্তপুলমূলক বন্ধণাৎ সত্তিকটকাৎ। কবারেণ পচেৎ তৈলং বস্তিনাস্থাপনেন চ। লক্রাশ্মরিশ্লঘ্নং মৃত্তকুক্তবিদাশনম্।

আয়ুর্কেদ-সংগ্রহ:।

্কাথার্থং ব**ল্লাকন্ত বথা**লাভং তৃক্পত্রমূলপু**লাং** পল ৩২, গোকুর পল ৩২, জল শং ৬৪, শেষ শং ১৬, অকন্দমিদং টেলমূ।)

বরুণের ত্বক্ পত্র পূপা ও মূল (যথালাভ)
৩২ পল এবং পোক্ষুর ৩২ পল, । গল ৬৪ সের,
শেষ ১৬ সের; এই কাথে তৈল পাক করিয়া,
সেই তেল, বিশ্ততে ও আস্থাপনে প্রয়োগ
করিবে, তাহাতে শর্কর। অন্মরী ও মৃত্রকুচ্ছ্র

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

অশারীরোগে পথানি।

বন্তিবিরেকো ব্যন্ত লব্দনং বেদোহবগাহোহপি চ বারিসেচন্য। যুগাঃ কুলথাঃ প্রপুরাণশালয়ে। মন্তানি ধ্যাওজসন্তবা রুসাঃ॥ পুরাণবৃশাওক্লক তল্প। গোক্টকো বাক্লণাক্ষার্ভ্রম: পাৰাণভেণী যবশুকবেণ্ব: স্থিরা সমাকর্ষণমশ্যনামপি । এতানি সর্কাণি ভবন্তি সর্কাণা মুদেহশ্বরীরোগনিপীড়িতানাম্ ॥

বস্তিজিয়া, বমন, বিরেচন, উপবাদ, স্থোদ, অবগাহন, গলাব্দ, হব, কুল্পকলায়, পুরাজন শালিত গুল, মন্ত্র, মরুদেশজাত এবং অগুজ (পক্ষীও মংস্থাদি) প্রাণির মাংসরস, পরাণ কুম্ডা, কুম্ডার ডাটা, গোক্ষুর, বরুণের কচি পাতা, আদা, পাষাণভেদী, যুবক্ষার, বংশত গুল, শালপাণি এবং অন্মরী আকর্ষক দ্রব্য, এই সকল অশ্যরী-পীড়িত রোগির পধ্য।

অশ্মরীরোগেঽপথ্যানি।

মৃত্রতা গুক্তার চ বেগময়ং বিষ্টুছি রাক্ষা গুরু চারপানম্। বিরুদ্ধপানাশনমশ্বরীমান বিবর্জ্জারে সপ্ততমগ্রমন্তঃ॥

মূত্রবেগ ও গুক্রবেগ ধাংণ, অমুদ্রব্য, বিষ্টুম্বী কৃক গুকু এবং বিক্লন্ধ অমুপানীয় ভোজন এই সমস্ত অশ্যবীরোগে অবহিত্তচিত্তে সভত পরি-ত্যাগ কবিবে।

इंड्यायुट्कॅम-मरक्टर्भातीत्तांगांविकातः।

অথ প্রমেহরোগাধিকারঃ।

অথ প্রমেহ-নিদানম্।

আন্তাহণং স্বপ্নস্থং দ্ধীনি श्रारमोषकानुश्रतमाः शराः मि । নবালপানং গুড়বৈকৃতঞ্ প্রমেহছেতু: কঞ্চকুচচ সর্বাম্। মেদশ্চ মাংসঞ্চ শরীরজঞ্চ ক্লেদং কফো বস্তিগতঃ প্রদৃষ্য । করোতি মেহান্ সম্দীর্ণমূক্ষে-ন্তানেব পিত্তং পরিদৃষা চাপি ॥ কীণেৰু দোনেধবকুষ্য ধাতৃন্ সংদূষ্য মেহান্ কুক্তেহনিলক 🕆 সাধাঃ কফোথা দশ পিত্ৰজাঃ ষট্ যাপা ন সংখ্যা প্ৰনাজভুকা। সমক্রিয়হা ছিসমক্রিয়ত্বা-শ্বহাতায়ত্বাচ্চ যথাত্রমং তে । কফ: সপিন্তঃ প্ৰনশ্চ দোষা মেদোহস্র ওজ: সুবসালসাকা: । মজ্জা রসৌজঃ পিশিতঞ্দু যাত্ প্রমেহিণাং বিংশ[্]তরেব মেহা: ॥

मछामीमाः मलाहाषः आश्रात्त्रशः भः शिशामरहाः । দাহ**ল্ডিকণ**তা দেহে ভূট স্বাদ্ধান্তক **ভা**য়তে ॥ সামান্তং লক্ষণং তেষাং প্রভূতাবিলমূত্রতা ॥ দোৰদুৰাবিশেৰেহপি তৎসংযোগবিশেষ ১ঃ। মূত্রবর্ণাদিভেদেন ভেদো মেহেরু কল্পাতে। আছেং বছ সিতং শীত নিৰ্গন্ধমুদকোপম্য। মেহভুাদকমেহেন কি কিদাবিলপি চিছলম। ইকো রস্মিবাভার্থং মধুরঞ্জেকুমেহতঃ ॥ সান্দ্রীভবেৎ পযু বিভং সান্দ্রমেহেন মেহতি। স্বামেহী স্বাতুলামুপব্যক্তমধো গ্রম্ । সংক্রষ্টরোমা পিষ্টেন পিষ্টবন্ধহলং সিত্রম্। ভাষাভং ভক্রমিশ্রং বা ভক্রমেথী প্রমেহতি ॥ মুর্জাণুন সিকতামেহী সিকতারপিণো মলান্। শীতমেহী জনছলো মধুরং ভূশশীতলম্। শনৈ: শনৈ: শনৈমে হী মন্দং মন্দং প্রমেহতি। লালাভস্তযুত্ৎ মৃত্ৰং লালামেহেন পিচিছলম্॥ **गक्षवर्गत्रमन्भरेर्भः** कारत्रभ कात्राङ'ग्रन्थ । भौ**नस्परहम मोला**खर कालस्परी मनोनिष्ठम् ॥ হারিজমেহী কটুকং হরিজাসল্লিভ: দূহৎ। বিশ্ৰং নাঞ্জিষ্ঠমেহেন মঞ্জিষ্ঠাসলিলোপমম্ ॥

বিশুক্ দলনপং রক্তাভং রক্তমেহতঃ।
বসামেই:বসামিশ্রং বসাভং মৃত্রারমূক।
মজ্জভিং মজ্জমিশ্রং বা মজ্জমেইা মৃহ্যু হ:।
কবারং মধুরং রক্ষং কৌজমেহং বহেদ্বৃধঃ॥
হতী মত্ত ইবাজসং মৃত্রং বেগবিবর্জিতম্।
সলসীকং বিবন্ধক হস্তিমেহা প্রমেহতি॥
অবিপাকোহক্রিছজিনিতা কাসং সপীনসং।
উপদ্রবাঃ প্রজারস্তে মেহানাং কক্জমনাম্॥
বস্তিমেহনরোভোগে মুকাবদরণং অরঃ।
দাহস্কামিকা মৃচ্ছা বিডুভেনঃ পিত্রজন্মনাম্॥
বাত্রানামূদাবত্তঃ কম্পাহদ্রাহলোল হাঃ।
শ্রমুন্নিক্রা (শ্রং কাসং শ্রম্ভ জারতে॥

নিশ্চিন্তভাবে কেবলমাত্র উপবেশনজনিত সংগান্তভাব বং নিদ্যালুকা, সক্ষপ্রকার দানি ও তথা প্রামা উদক ও আন্প (সজল দেশজাত ববাহ কচ্চপাদি) মাংলের যুষ, ন্তন অয়-পানীয়, গুড়জাত জ্বা সমূহ এবং অপরাপর যাবতীয় কফজনক জ্বা, প্রমেহ রোগের হেতু।

কেফজনিত মেহের :আধিকাও সাধ্যত্ব হেতু, সর্বাতো কফজ মেহের, তৎপরে যথা-ক্রমে পিত্তজ্ঞ বাতেজ মেহের সম্প্রাপ্তি লিখিত হইতেতে ।)

বস্তিগত কফ, মেনঃ মাংস ও শ্রীরজ ফ্রেদ পদার্থকৈ দ্বিত করিয়া মেহ রোগ উৎপাদন করে। এইরূপ পিত, উফ্রীয়া ও উফ্লেশ্ ডব্য সেবন ছাবা কুপিত ২ইরা উক্ত মেদ প্রভৃতিকে দ্বিত করিয়া পোত্তক মেহ জমা-ইয়া থাকে। এবং ঐ দোষধ্য অর্থাৎ কফ ও পিত্ত অপেকাক্ত ক্ষীণ হইলে বায়ু, বসা মজ্জা ওজঃ ও লসীকা নামক বাতু সকলকে বাস্তিম্থে আন্ত্রন করিয়া বাতিক মেহ উৎপাদন করে।

কফজনিত, দশ প্রকার মেহ সারা। কারণ ভাহাদের সমা ক্রয়ত্ব আছে। অর্থাৎ কটুভিজ্ঞাদি যে যে ভেষত ধারা, কফ-দোষের শাস্তি হয়, সেই সেই ভেষত ধারা কফ-দোসের দ্যা পদার্থেরও সামতা গৃহীয়া থাকে। পিতত্বনিত ছয় প্রকার মেহ, বিষমক্রিয়ত্বহেতু যাপ্য অর্থাৎ মধুরাদি যে ভেষজ পিত্তহর
তাহা মেদয়র এবং কটুকাদি যে ভেষজ
মেদোহর, তাহা পিত্তকর; এইরূপ
ক্রিয়াবৈষম্য হেতুই পিত্তত্ব মেহ যাপ্য
হইয়া থাকে।

বায়ুজনিত চারিপ্রকার মেহ মহাতায়থ হেতু অসাধ্য অর্থাৎ বায়ু মজ্জাদি গন্তীর ধাষাশ্রমী, বহুবিপত্তিজনক ও আন্ত অনিষ্টকারী হওয়াতে কোন প্রকার ভেষজেই তাহার প্রতিকার হয় না, স্তরাং বায়ুজ মেহ অসাধ্য।

কার হয় না, স্তরাং বায়ুজ মেহ অসাধা।
সর্ব্বপ্রকার প্রমেহেই বায়ু পিত্ত ও কল
এই তিনটি দোষ এবং মেনঃ, রক্তা, শুক্র,
দৈহিক জলীয় পদার্থ, বসা (মাংসমেহ),
লসীকা (মাংস ও স্থাকের অভ্যস্তরম্ব জলীয়
পদার্থ), মজ্জা (অন্থিমধাগত মেহ), রস,
ওজ্ঞাং (সর্ব্বধাতুসার) ও মাংস এই সকল দ্যা
পদার্থ। সমুদায়ে ২০ প্রকার মেহ, তন্মধ্যে
কফজ ১০, পিত্তজ্ঞ ৬ ও বায়ুজ ৪ প্রকার।

মেহ রোগ জন্মিবার পূর্মে দস্ত ও চক্ষু কর্ণাদিতে অধিক মলসঞ্চয়, হস্তপদের জালা, দেহের চিক্কণতা, তৃষ্ণা ও মুখের মধুরতা এই দকল লক্ষণ উপস্থিত হয়।

মূত্রের পরিমাণাধিকা ও আবিলবণতা, এই চুইটি লক্ষণ সকল প্রকার মেহেই দৃষ্ট ছইয়া থাকে।

যদিও বাতজাদি সকল প্রকার মেহেরই
দোষ ও দ্ব্যু পদার্থ সকল সমান, তথাপি
মেহরোগ যে একরূপ না হইরা বিংশতি
প্রকারে বিভিন্ন হইরা পাকে, ভাহার কারণ
এই;—যেমন শ্রেভ পীত লোহিত ক্বয় ও
ভাব এই পাচটি বর্ণের ন্যোধিকা ও সংযোগবিশেষে কপিলাদি নানা প্রকার বর্ণ উৎপন্ন
হয়, সেইরূপ মেহসম্বন্ধে দোষ ও দ্যা পদার্থ
সকলের প্রভেদ না থাকিলেও উহাদের উৎকর্ষাপকর্ষ ও সংযোগ-বিশেষে, মুত্রের বর্ণাদিভেদ হয় এবং সেই মুক্তানে দামুসারেই মেহ-

রোগের প্রকারভেদ হইয়া থাকে। প্রত্যেক মেহের স্বতম্ব স্বতম্ব লক্ষণ ক্রমশ: লিখিত ছইতেছে।

উদকমেহ, ইক্ষুমেহ, সাক্রমেহ, স্থরামেহ, পিষ্টমেহ, শুক্রমেহ, সিকতামেহ, শীতমেহ, শনৈমেহ ও লালামেহ, এই ১০টী ককজ।

তন্মধ্যে উদকমেহে রোগী—শ্বচ্ছ, বছ-পরিমিত, শ্বেতবর্ণ, শীতল, জলবং, গন্ধহীন, কিঞ্চিৎ আবিল ও পিচ্ছিল মূত্রত্যাগ করে। ইক্ষুমেহে প্রস্রাব ইক্ষুরসের, স্থায় অত্যন্ত

মিট হয়। সাজমেহে প্রস্থাব পায়ুর্গিত (বাসি) ইইলে ঘনীভূত হয়।

প্রধামেরে মূল স্থকাতুল্য এবং উপরিভাগে স্বচ্ছ ও নিমে ঘন হট্য়া থাকে।

পিষ্টমেং মূত্ৰকাণে রোগাঁ তোমাঞ্চিত হয় এবং বহু পরিমাণে পিটুলি গোলা জলের স্তায় খেতবৰ্ণ প্রস্রাব করে।

শুক্রমেং প্রস্রাব শুক্রাভ বা শুক্রমিশ হুইয়া পাকে।

সিকভামেহে বালুকা-কণার স্তায় অভি কল্ম ক্ল্ম কঠিন কণাযুক্ত মূত্র নিংস্তত হয়।

শীতমেহে মূত্র অভিশয় শীতল মধুরাম্বাদ ও বছপরিমিত হইয়া থাকে।

শনৈমেহি শনৈঃ শনৈঃ অ**ল অল** মূত্র নির্গত হয়।

লালামেহে লালামুক্ত তম্ভবিশিষ্ট ^ও পিচ্ছিল প্ৰস্ৰাব হয়।

কাবমেহ, নীলমেহ, কালমেহ, হাণিজমেহ, মাঞ্চিমেহ ও রক্তমেহ, এই ৬টা পিতজ।

মা অস্থ্যেই ও রক্তমেই, আই ৬৮। পিওজা ক্ষার্নেই, ক্ষার্-জলের স্থায় গন্ধ বর্ণ স্থাদ ও স্পর্শ বিশিষ্ট যুক্ত নির্গত হয়।

নীলমেহে নীলবৰ্ণ এবং কালমেহে মুদী-নিভ মূত্ৰ নিংস্থত হয়।

হারিদ্রমেহে, মৃত্র হারিদ্রাবর্ণ ও কটুরস এবং প্রস্রাবকালে লিজনালে জালা হইরা থাকে। মাঞ্জিষ্ঠমেহে মূত্র আমগন্ধসূক্ত ও মঞ্জিষ্ঠা-জলের আয় লোহিতবৰ্ণ হয়।

রক্তমেহে মূত্র আমগন্ধগুক্ত, উষণ, লবণা-স্থাদ ও রক্তবর্ণ হয়

বদামেহ, মজ্জমেহ, ক্ষোজ্রমেহ ও হস্তিমেহ এই ৪টা বাতজ।

তন্মধ্যে বসামেহে মৃত্র্যা, হং বসাভ বা বসামিশ্র মৃত্র নির্বাত হয়। (স্থ্রণত প্রায়ে এই বসামেহ সর্পিমে হ নামে পঠিত)।

মজ্জমেহে মজ্জাভ বা মজ্জমিশ্র মূত্র প্রহৃত হয়।

ক্ষোদ্রমেহে মূত্র করার মধুর ও রক্ষ হইরা থাকে। (চরকপ্রন্তে এই ক্ষোদ্রমেহ মধুমেহ নামে পঠিত।)

হ্তিমেহে রোগী ম হতির স্থার নিরস্তর বেগবার্জ্জ ত মুত্রভাগি করে। কখন বা মূত্র-রোব হইয়া যায়। হ্তিমেহের মূত্রে লসীকা নামক জলীয় পদার্থ মিশ্রিত থাকে।

কফন্ধ-নেহের উপদ্রব।—আহারের অপরি-পাক, অরুচি, বমি, নিদ্রাধিক্য, আর্দ্রকাস ও পীনস

পিত্তজ-মেহের উপদ্রব ।—বস্তি ও লিঙ্গে ত্টাবেধবদ্বেদনা, পাকনিবন্ধন অওকোথের বিদারণ, জ্বর, দাহ, তৃষ্ণা, আয়োগদার, মূর্চ্ছা ও মলভেদ।

বাতজ মেহের উপদ্রব।—উদাবর্ত্ত, কম্প, হৃদয়বেদনা, সর্বপ্রকার আহারে লোলুপ্তা, শূল, অনিদ্রা, শোষ (যক্ষা), কাস ও খাস।

প্রমেহনিরুত্তিলক্ষণম্।

প্রমেহিণো যদা মৃত্রমনাবিলমপিচ্ছিলম্। বিষদং ভিক্তকটুকং ভদারোগ্যং প্রচক্ষতে॥

প্রমেহরোগির মৃত্র আবিলতাবিং।ন, অপিচ্ছিল, স্বচ্ছ এবং তিক্ত-কটুরস বিশিষ্ট ইইলে রোগ নিবৃত্ত হইয়াছে জানিবে।

অথ প্রমেহরোগ-চিকিৎসা।

স্থলঃ প্রমেহা বনবানিছৈকঃ ক্রন্তথান্তঃ পরিত্রুর্বলন্চ। সংবৃংহণং তত্ত্ব ক্রশস্ত কাষ্যং সংক্রাধনং দোধনলাধিকস্তা॥

প্রমেখরোণির মধ্যে কেই বা স্থুল ও বলবান্, কেই বা ক্লশ ও জর্মল থাকে। ক্লণ ব্যক্তির পক্ষে বৃংহণ অর্থাৎ বলুনাংসর্রন্ধিকারক ঔষধ এবং বলবান্ ও প্রভূতদোষাক্রান্তের পক্ষে সংশোধন অর্থাৎ বন্দন বিরেচনাদি ব্যবস্থেয়।

উচ্চং ভণাধন মলেহপ্নীতে মেহের সন্তর্পণ্মের কাষ্ম্। সংশোধনং নাহতি যুঃ প্রমেহা ৩৩ দিয়া সংশন্নী বিশেষা॥

মেহরোগে বমন ও নিবেচন ছারা দোষ
সকল উদ্ধাধ্য নিস্তেত হুইলে সন্তর্পণ ক্রিয়া
কিবিনে। বে প্রানেহ রোগির বমন বিরেচনাদি
শোবনক্রিয়া নিষেদ্ধ, তাহার প্রক্ষেশমন উষ্ধ বিবেয়।

শ্লেশজদশবিধ-প্রনেহ-চিকিৎসা।

জরতিকাকট্ফলমুম্বলোপ্রাঃ পাঠাবিড্সাজ নধ্যনাল । ভাত ছরিজে তিগবা, বিভঙ্গা, কল্পণালাজ্যনলাপাক ।

काको । तर्कः अस्टित । ४१०५ द्यास्त्र श्रीक्र्मिका । । नाकाधिम्हः । यस्या त्रपारा भागे । मृक्षा ६ उसी ४०१६ । यस्यामात्रापात्या अस्कृते जब्दामार्गाहः सम्भादात्या । भारतः क्यांश भन्यादिनार Сठ नत्यापात्रा अनुमाद्या ॥ कलश्रास्त्र त्रश्रात्याः ॥ कलश्रास्त्र त्रश्रात्याः ॥ कलश्रास्त्र त्रश्रात्याः ॥ नाक्ष्यास्त्र (० द्यापार्यः । माक्ष्यास्त्र (० द्यापार्यः । माक्ष्यास्त्र (० द्यापार्यः । साक्ष्यास्त्र (० द्यापार्यः ।

হরতিকা, কট্ফল, মৃতা ও লোপ। আক্-নাদি, বিচ্প, অপ্তুন ও বামনা। হরিন্তা, দাকহরিন্তা, তগরপাত্কা ও বিড্প। কদম, শাল, অপ্তুন ও ধমানা। দাকহরিন্তা, বিড্প, থদির ও ধাওয়া। দেবদার, কুড, অর্জুন ও চন্দন। দারুহরিন্তা, গণিয়ারি, ত্রিফলা, আক্নাদি। আক্নাদি, মুর্বা ও গোকুর। যমানী, বেণার মূল, হরীতকা ও গুলঞ্চ। ফামছাল, হরীতকা, চিতা ও ছাতিম। এই দশটি ঘোগের কষায়, মধু সংযুক্ত করিয়া প্রয়োগ করিবে। এই দশটি কষায়, য়থাক্রমে প্রযুক্ত হইয়া, উদকমেহ, ইকুমেহ, দাল্রমেহ, স্বরামেহ, পিটমেহ, গুক্রমেহ, দিকতামেহ, শীতমেহ, শনৈমেহ ও লালামেহ, এই দশটি মেহ নিবারণ করে।

পারিজাতজয়া নিখ-বহিলায়ত্রিবণং পৃথক্।
পার্ঠায়াঃ সা গুরোঃ পীতা-য়য়য় শারনয় চ।
কলেক্মম্পুসিকতা-শনৈল বিণপিষ্টকান্।
সা-ল্রমেহান্ ক্রমাদ্ মন্তি চাণ্ডৌ কাণাঃ সমাক্ষিকাঃ॥
পালিধামান্দারের কাথ, জয়য়্তীর কাথ,
নিমের কাথ, চিতার কাথ, খদিরের কাথ,
আক্নাদি ও অগুরুর কাথ, হরিদ্রাঃও দারুহরিদ্রার কাথ, ছাতিমের কাথ, এই আট
প্রকার কাথ, মধ্ সহ প্রযুক্ত হইলে যথাক্রমে
জলমেহ, ইক্মেহ, স্বরামেহ, সিকতামেহ,
শনৈমেহ, লবণমেহ, পিষ্টমেহ এবং সাল্রমেহ
নিবারিত হয়।

শনৈৰে হিনাং তিকলা গুড় টাকৰায়ন্, পিপ্তমেহিনাং হিক্সাৰিতয়কবায়ন্, সিক তামেহিনাং নিশ্বকবায়ন্, উদক্ষেহিনাং পারিজাতকবায়ং পার্য়েৎ। সাল্রুমেহিণাং সন্ত্রপর্কবায়ন্, লালামেহিনাং তিকলার থকবায়ং পার্য়েৎ। ওক্মেহিনাং দুর্কাশেবলগ্লবকর ক্লক্ষের্যার কক্তচন্দ্রন্তর্বায়ং বা, শীতমেহিনাং পাঠা-গোলুরক্ষায়ন্, ইলুমেহিণাং নিশ্বক্ষায়ন্, হ্রামেহিণাং শাল্রীক্ষায়ং পার্য়েহে।

শনৈমে হৈ, ত্রিফলা ও গুলঞ্চের ক্যায়, পিটমেহে করিদ্রা ও দারুহরিদ্রার ক্যায়, দিকতামেহে নিমের ক্যায়, উদক্ষেহে পালেধার ক্যায়, দালানেহে ত্রিফলা ও সোন্দালের ক্যায়, গুক্রমেহে দুর্বা, লৈবাল, কৈবর্ত্তমূতা, করঞ্জ ও কেগুরের ক্যায়; অথবা অর্জ্জুন ও চন্দনের ক্যার,

শীতমেহে আক্নাদি ও গোক্ষরের কষার, ইক্ষুনেহে নিমের কযায়, স্থরামেহে শিমুলের কষার পান করিতে দিবে।

অথ পিত্তজপ্রমেহ-চিকিৎসা।

লোধ্র জ্নোশীরকুচন্দনানান মরিষ্ট্রসেবামলকাভরাশাম্। ধাত্রার্জ্জুনারিষ্টকবৎসকানাং নীলোৎপলৈলা তিনিশার্জুনানাম্। চড়ার এতে বিহিত্য: ক্যায়া: পিড়প্রমেহে মধুসংপ্রযুক্তাঃ।

লোধ, অর্জ্ন, বেণার মূল ও রক্তচন্দন।
নিম, বেণার মূল, আমলকী ও হবীতকী।
আমলকী, অর্জুন, নিম ও কুড় (চ। নীলোংপল, এলাচ, তিনিশ ও অর্জুন। এই চারিটী
যোগের কাথ মধু সহ প্রযোজত হইলে, পিত্তজ
মেহ নিধারিত হয়।

উশীরলোগ্রাজ্নচন্দনানাম্শীরেম্ভানেকাভয়ানাম্। পটোলনিভানলকাম্ভানাং মুভাভয়াপায়কবৃক্ষকাণাম্॥ লোগ্রাসুকালায়কধণ্ডকীনাং

নিম্বাৰ্জ্যু নামাত্নিশোৎপলশ্নাম্। মাজিইহারিক্রকনীলকুঞ্চ-ক্ষারাথারকে ক্রমশঃ ক্ষায়াঃ॥

পেল্লকমিত্যক্ত কচিৎ পুছরং কচিৎ মৃত্তক ইতি পঠিশ্বরম্।)

বেণার মূল, লোগ, অর্জুনছাল ও রক্তন্তলন। বেণার মূল, মূতা, আমলকী ও হরাতকী। পল্তা, নিম্ছাল, আমলকী ও গুল্ঞা। মূতা, হরীতকী, পদ্মকাষ্ঠ ও কুড়্চি। লোগ, বালা, দাকহিছিলা ও বাইজুল। নিম্ছাল, অর্জুন, আমড়াছাল, হরিদ্রা ও নীলোৎপল। এই ছয়টি যোগের কাথ মধু সংস্কু করিয়া প্রয়োগ করিবে। ইহারা যথাক্রমে মাঞ্জিরমেহ, হারিদ্রমেহ, নীল্মেহ, মাসীমেহ, কারমেহ ও রক্তনেহ এই ছয় প্রকার মেহ বিনষ্ট করে।

অখথাচতুরসুলাালাগোধাদেঃ কলতয়াং। সঞ্জিবীরস্তানালাচ কাধাঃ পঞ্চ সমাক্ষিকাঃ॥ নীলহারিদ্রগুক্রাপা-কারমাঞ্জিষ্ঠকাহরোন্। মেহান্ হফা: ক্রমাদেতে সক্ষোপ্রো রক্তমেহজিৎ। কাশ্ব: গর্জ্জারকাশ্মর্যা-তিন্দুক'স্থামৃ হাকৃত:॥

তশ্বথের কাপ, নোন্দালের ক.প, ন্তরোগাদিগণের কাথ, ত্রিফলার কাথ এবং ম জঃ ও
রক্তচন্দনের কাথ, এর পাঁচ প্রকার কাথ মধুসহ প্রযুক্ত হইলে যথাকে ম নালমেহ, হারিজমেহ, শুক্রমেহ, কারমেহ ও মাজিইমেহ প্রশমিত
হয়। থর্জুর, গান্ডারী ফল, গুলঞ্চ ও গাবফলেব বীজ ইহাদের কাথ স্থাতল করিয়া
মধুসহ সেবন করিলে রক্তমেহ প্রশমিত হইয়া
থাকে।

ছিলাবস্থিকধায়েণ পাঠাকুটজরামঠম্। ভিক্তাকুঠক সংচ্গ্য সপিমে হৈ পিবেল্লরঃ॥

গুলক ও চিতার কাথে আক্নাদি, কুড় চি, হিং, কট্কী ও কুড় এই সকল দ্রব্যের চুর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে স্পিমেহ নিবারিত হইয়া থাকে।

পাঠাশিরীষত্ব-শর্শ-মুর্বাকিংগুকতিলুকৈ:।
কপিথানাং ভিষক্ কাথং হস্তিমেহে প্রযোজ্যের ।
আক্নাদি, শিরীষ, গুরালভা, মুর্বা,
কিংশুক, গাব ও করেংবেল ইহাদের কাথ,
হস্তিমেহে প্রয়োগ করিবে।

পूर्वातिस्मानकाः वानः मत्योतः त्योप्रस्म इत्यान् ॥

পুগঃ পর্কটিরিতি কৃদঃ। বু মতে—পা**কুড়)** ও

ক্পারি (রু মতে-পাকুড়) ও গুরে-বাব্লার কাথে মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে, মধুমেহ নিবা।রত হয়।

চাঙ্গেরীদেশয়োং কাথং সক্ষোত্তঃ ক্ষোত্তমহিনাম্।
মধুমেহে, আমকুল ও মেনার কাথ মধু
সংযুক্ত করিয়া পান করিতে দিবে।
বসামেহিনামগ্রিমন্থকবারং শিংশপাক্ষারং বা।
বসামেহে গণিয়ারি বা শিংশপার কাথ
ব্যবস্থা করিবে।

অথ দ্বন্দ্বজমেহ-চিকিৎসা।

কম্পিলসপ্তচ্ছদশালজানি বৈভীতরৌহীতককৌটজানি। কপিথপুস্পাণি চ চুর্নিতানি কৌল্লেণ লিহ্নাৎ কন্ধপিত্তমেহী॥

কফমেহী বা পিত্তমেহী, কমলাও ডি, ছাতিম, শাল, বহেড়া, রোহিতক (রক্তপুষ্প-বৃক্ষবিশেষ), কুড়্চ ও কয়েংবেল ইহাদের পুষ্প চূর্ণ কারয়া মধুর সহিত শেহন করিবে। হয়ীতকীকট্ফলম্ভলেও-বৃচন্দনোশীরকৃতঃ ক্ষাদ্ধঃ। কৌজেণ যুক্তঃ ক্ফাাংমেহং নিহুতি পীতারজ্ঞসাচ পীতঃ।

হরীতকী, কট্ফল, মৃতা, লোধ, বেশার মূল ও রক্তচন্দনের কাথে, মধু বা হারদ্র। চূর্ণ প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে বাতরেমমেহ বিনষ্ট হয়।

বিড়ঙ্গরজনীধন্দ-খনিরোশীরপুণজঃ।
বাখং পীতো নিংস্ত্যান্ত মেহং পিতানিলোদ্ভবস্।
বিড়ঙ্গ, হরিজা, দারুহরিজা, খদির, বেশার
মূল ও ভবাক ইফাদের কাপ পান বাংকো
বাতপিত্তোদ্ভব মেহ আন্ত নিবারিত হয়।

অথ ত্রিদোষজমেহ-চিকিৎসা।

ত্রিফলাদারদার্ব্যাপ-কাথ: কৌল্লেণ মেহহা। শুড়ুচ্যাঃ স্বরদঃ পীঠো মধুনা সর্বমেহজিৎ ॥

ত্রিফলা, দেবনাক্ষ, দাক্ষর্রেক্তা ও মূভা ইহাদের কাথ, অথবা গুলঞ্চের স্বরস মধুর সহিত পান করিলে সর্বপ্রকার মেহ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

সর্কমেহহরো ধাত্যা রদ্ধ: ক্ষৌত্রনিশাধুত: ;
ক্ষায়ন্ত্রিফলাদাক-মুম্বকৈরথবা ক্রত: 8

মধু ও হরিদ্রাচ্ব সংগ্রুক আমলকীর রস অথবা ত্রিফলা, দেবদার ও মৃতার কার্থ পান করিলে সর্বাপ্রকার প্রমেহ বিনষ্ট হয়।

> ফল্তিকং দাক্সনিশাং বিশালাং মৃত্তঞ্চ নিংকাপা নিশাংশকৰ্ম। পিবেৎ ক্ষায়ং মধুসংপ্ৰযুক্তং সৰ্বপ্ৰমেহেৰু সমুখিতেৰু॥

(নিশায়া অংশ-চতুর্থো ভাগঃ সমুদিতকাথ্যাপেকর। স এব ককঃ। প্রকেপরং-চ,্ব:। ব্যবহারপ্রনেনৈর। চক্র, টা:।)

ত্রিফলা, দাকুহরিদ্রা, রাথালশশা ও মুভা ইহাদের কাথে মিলিত দ্রব্যের সিকি ভাগ হ**িজা চূর্ণ ও মধু প্রক্ষেপ করি**য়া সক**ল** মেহে প্রয়োগ করিবে।

কোহারও মতে প্রত্যেক দ্রবা সমভাগ, কাহার মতে ত্রিফলা হইতে মুতা প্যাস্ত প্রত্যেক দ্রবা সমভাগে লইয়া যত হইবে, হক্ষিতিত লইবে)।

্তিফলালৌহশিনাজত্পখাচুর্বঞ্চ লাচুমেকৈক্ষ্। মধুন'নর স্থেরস হব সকান্তি হেংল্ নিব'রয়তি । (প্রত্যেকং 'এফল'দিচতুণা তুণ' মধুনা লেজ্যম্।)

ত্রিফলা, লোহ, শিলাজতু বা হরীতকী চূর্ণ, অথবা গুলঞ্জের রস, মধুর সহিত সেবন ক্রিলে সর্বপ্রকার মেহ নিবারিত হয়।

ক্ষাটিকং চূর্গনাদাশ নারিকেলোনরে ক্ষিণ্ডে। তৎ কলং প্রসংগা ভূ স্থাপায়েনকর একম ॥
প্রাত্তনানীয় সকলং চর্গং পেয়ং প্রয়ন্তন।
স্কানন চিরকালানো হেখে নঞ্চি নিশ্চিতম ॥

কিঞ্জিৎ ফাট্কিবি চূর্ণ সজল নারিকেলে।
মধ্যে নিহিত করিয়া, ঐ নারিকেল পফ মধ্যে
এক রাজি ময় করিয়া বাগিবে। প্রদিন প্রাতঃকালে উহা উদ্ধৃত করিয়া ঐ চূর্ণ ও জল একত্র
পান কারলে নিয়ক,লোপের মেহও নই হয়।

শতাব্য । রসং নাজা আর্রণ সং গঃ প্রেং। প্রেডা বিংশ্ভিক্ত শুরুং যারি ন সংশয়, ১

শৃতমূলীর রস ছয়ের সহিত পান ক'ংল বিংশতি প্রকার মেহ বিনষ্ট হয়।

আনত্ত্ব সমজলং যা পিৰেৎ প্রতক্ষিত। নিঃসংশ্যং শুক্রমেছা পুর্ণিশুক্ত নঞ্চি ॥

প্রভার প্রতিকোলে কাঁচা হয় পেও ছটাক ও জল পিও ছটাক, একত মিশ্রিত করিয়া পান করিলে পুরাণ শুক্রমেইও নষ্ট হয়।

পলানপুষ্পতোলৈকং সিতায়া অৰ্দ্ধভোলকম। পিষ্ঠং শীতাস্তদা গাঁতি মেহং হণ্টি ন সংশয়ঃ॥

পলাশপুষ্প ১ তোলা ও চিনি অর্ধতোলা বাটিয়া শীতল জ্লের সহিত পান করিলে নিশ্চয়ই মেহ নিবাবিত হয়।

শাৰালীত্বাসোপেতং সক্ষোদ্ৰজনীরজঃ। বঙ্গভন্ম হরেমেহান্ পঞ্চামন উদ ছিপান্। শিমুলছালের রস, মধু ও হরিদ্রা চূর্ণ, এই সকল দ্রব্যের সহিত বঙ্গভত্ম সেবন করিলে সর্বপ্রকার মেহ প্রশাস্ত হয়।

धनानि हुर्ग्म्।

এগাণিলাকত্কণাপাদাণভেদনিশ্বিতং চূর্ব।
তণ্পুলজনেন পীতং প্রমেহরোগং হরতান্ত।
এলাইচ, শিলাজতু, পিপুল ও পাধাণ-ভেদী ইহাদের চূর্ব, তণ্পুল জলের সহিত পান
করিলে আশু প্রমেহ ব্রোগ নিবৃত্ত হয়।

কর্কটীবাজাদি চুর্ণম্।

কর্ণটাবীজসিদ্ধ্য-ত্রিফলাসমভাপিকস্।
পীতম্কান্তসা চূর্ণ: মূত্রোধং নিধারয়েও।
মেহরোগে প্রস্রাব রোধ হইলে কাঁকুড়বীজ, সৈন্ধব লবণ ও ত্রিফলা ইহাদের চূর্ণ
সমভাগে লইয়া উষ্ণ জলের সহিত পান
করিবে।

অগ্রোধাদি চুর্বা।

ভাগে ধাড় স্বর্থ- গোণাকরে থধাসনম্।
আন্তর্থক পিথক পিরালং করুভং ধবম্।
মধুকো মধুকং লোক বরণং পারিভ্রাকম্যা
পটোলং মেনশুলী চ দত্তী ভিত্রকমাটকী ॥
করঞ্জনিকলাশ্র ভলাভকফলানি চ।
এতানি সমভাগানি লকচুর্ণানি কার্য়েং ॥
ভাগোধান্ত্রমিদং চুর্ণং মধুনা সহ লেহ্য়েং।
ফলত্ররমঞ্চান্ত্র পিবেল্লুড়ে বিশুধাতি ॥
এতেন বিংশভিমে হা মূত্রকুক্তাণি থানি চ।
প্রশাং মান্ত্রি বোগেন পিড়কা ন চ জায়তে।
ভাগোধান্ত্রমিদং ভত্র চাম্রক্ষু গৃহতে ॥
বটি, যক্ত্রভুমর, আর্ম্বাণ, শোণা,

বট, যজ্ঞভুমুর, অখথ, শোণা, সোন্দাল, অসন (পীতশাল), স্বামের অাটি, জামের অাটি, করেংবেল, পিয়াল, অর্জুন, ধাওয়া, মৌলসার, যষ্টিমধু, লোধ, বকলছাল, পালিধা-মান্দার, পল্তা, মেষশৃন্ধী, দন্তী, চিতা, অড্হর, করঞ্জল, তিকলা, কুড়্চি ও ভেলার ফল, এই সকল দ্বয় সমন্তাগে লইরা স্ক্র চুর্ণ

প্রমেহরোগাধিকারঃ।

করিবে। এই চুর্ণের নাম স্তগ্রোধাদি চুর্ণ।
ইহা মধুর সহিত লেহন করিয়া ত্রিফলার কাথ
বা ত্রিফলা ভিজার জল অমুপান করিলে,
বিংশতি প্রকার মেহ ও সমস্ত মৃত্রক্বচ্ছ নিবারিত হইবে। পিড়কা জন্মিবে না।

কুশাবলেহঃ।

কুশং কাশো বীরণন্চ কুকেন্দু: গগ গড়ন্তথা।
এবাং দশপলান্ ভাগান্ জলদ্রোণে বিপাচরেৎ ॥
অক্টভাগাবশেষস্ত ক্যায়নবভারয়েৎ।
৩৩প্রস্থং সমাদায় লেহবৎ সাধু সাধ্যমং ॥
অবভাষ্য ভতঃ পশ্চাক ব্রিনীনানি দাপরেও।
মধুকং কর্কটাবারং কর্কারুং এপুরং ভবা ॥
শুভামলকপত্রাণি হুগেলানাগকেশরম।
বক্ষণাম্ভাগ্রস্থাং প্রভোক্ষকসন্মিত্ম ।
প্রমেহান্ বিংশতিং গুডি মৃত্যাধাভাংত্থাম্মরীঃ।
বাতিকান্ পৈতিকাংশ্চাপি গ্রেমিকান্ সামিপাতিকান্।
হল্যারোচক্মত্যগ্রং বলপুষ্টিকরং পরম্ ॥

কুশ, কাশ, বেণা, ক্ষণ্ড ইক্ষু ও থাগড়া ইহাদের মূল প্রত্যেক ১০ পল, জল ৬৪ সের, শেব /৮ সের। এই অবশিষ্ট কাথ ছাকিয়া লইয়া তাহাতে চিনি /২ সের দিয়া পুনর্কার পাক করিবে। লেহবং ঘন ইইলে নামাইয়া তাহাতে যষ্টিমধু, কাকুড়বীজ, কুম্ডা বীজ, ধনাবীজ, বংশলোচন, আমলকী, তেজপত্র, এলাইচ, নাগেখর, বক্ষণছাল, গুলক্ষণ ও প্রিক্ষু প্রত্যেক চুণ ২ তোলা প্রক্ষেপ দিয়া উত্তমরূপে মাড়িয়া লইবে। ইহা সেবন করিলে বাতিক, পেত্তিক, শ্লেঘিক ও সাল্লিপাতিক প্রমহ, মুক্রাঘাত, অশ্মরী ও উগ্র অরোচক নষ্ট এবং বল ও প্র্টিই বিদ্ধিত হয়।

শিলাজতুপ্রয়োগঃ।

শালসারাদিতোয়েন ভাবিতং ৰচ্ছিলাঞ্জু।
পিবেং তেনৈব সংগুজ-দেহং পিষ্টং বথাবলম্ ॥
জাললানাং রদৈঃ সার্জং তাশ্মন কার্ণে চ ভোজনম্ ।
কুর্যাদেবং তুলাং যাবহুপস্থাতি মানবং ॥
মধুমেহং বিহারাসৌ শর্করামশ্মরীং তথা।
বপূর্ববলোপেতঃ শতং জাবত্যনাময়ঃ ॥
মাক্ষিকং ধাডুমপোবং যুঞ্জাবভাপায়ং শুণঃ ।

(তেনৈবেতি শালসারাদিতোমেটনব পিবেৎ। সংগ্রদ্ধকেইতি বমনা।দনা। তুলাং বাবহুপযুঞ্জীত ইতি প্রতিদিনমর্ক্ষকরাদিমাতায়া। চক্র-টাকা।)

শালসারাদি গণের কাথে 🕍 লাজতু ভাবনা দিয়া, উত্তমরূপে পেষণ করিবে এবং শাল-সারাদি গণেরই কাথের সহিত ঐ শিলা-জতু সেবন করিবে। শিলারুতু জীর্ণ হইলে সহিত অন্তোজন জাঙ্গল মাংদের যুষের করা কর্ত্তবা। বমনাদি ধারা শুগ্গদেহ ব্যক্তি এই ঔষধ ('শিলাজতু) অন্ধি কৰ্ষাদি মাত্ৰায় প্রতিদিন সেবন করিবে। সেবিত মেট পরিমাণ যথন ১২॥• সের ত্র্বন ঔষণ সেবনে নিরস্ত হুইবে, ইহাতে অশ্যরী মধুমেহ, শর্করা বোগ ઉ ভূত হইয়া বল, বর্ণ ও আয়ুবু কি হয়।

ী শিলাব্দত্-প্রয়োগের বিধি প্রহ্নসারে স্বর্ণ-মাব্দিক ধাতু সেবন করাইলেও তজ্ঞপ উপকার হয়।

শালসারাদি-লেহঃ।

শালদারাদিবর্গন্ত কাথে তু গনতাং গতে।
দক্ষালোগ্রশিবাকান্ত-লৌহতান্ত্রন্ত্রন্ত্রান্ত্রিশিবাকান্ত-লৌহতান্ত্রন্ত্রন্ত্রান্ত্র্বিশি দ্বাল্পান্তি॥
শালদারাদি গণের কাথ প্রস্তুত করিয়া
কোহপাকের নিয়মানুদাবে যথাবিধে পাক
করিবে। ঘনীভূত হইলে তাহাতে দন্তীমূল,
লোগকান্ত, হরীতকী, কান্তলোহ ও তান্ত্র এই
সমুদায়ের চুর্ণ প্রক্ষেপ দিবে। সাবধান
থাকিবে, যেন চুর্ণ সকল দগ্ধ হইয়া না যায়,
অথচ পাক ঘনীভূত হয়। এই অবলেহ

গোক্ষুরাদি-গুটী।

সেবনে সমস্ত মেহ বিনষ্ট হয়।

ত্রিকট্ ত্রিকলাতুলাং গুগ গুলুঞ্চ সমাংশকম্।
গোক্রকাথসংযুক্তাং গুটিকাং কারয়েদ্রুধং॥
দেশকালবলাপেক্ষা ভক্ষয়েচাত্রলোমিকাম্।
ন চাত্র পরিহারোহন্তি কর্ম কুর্যাদ্ যথেপিতম্॥
প্রমহান্ বাতরোগাংক বাতশোণিতমেব চ।
মৃত্রাধাতং মৃত্রদোবং প্রদর্শান্তনাবেং॥

ত্রিফলা ও ত্রিকটু সমভাগ, উভরের সমান গুগ গুলু; একত্র গোক্ষরের কাথে মন্দিন করিয়া উপস্কু পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। দেশ, কাল ও রোগির বল বিবেচনা করিয়া এই ঔষধ প্রয়োগ করিলে প্রমেহ, মুত্রাঘাত, মুত্রহৃষ্টি, প্রদর প্রভৃতি রোগ নষ্ট হয়।

চন্দ্ৰপ্ৰভা গুটী।

বেলব্যেষফলত্তিক ং তিলবণং বিক্ষারচব্যানক ভামাপিয়লিমূলমূ গুকণটামাক্ষীকথাতুবচঃ।
বড় এছামরদারু নারণকণাভূনিঘদজীনিশাপত্তিলাতিবিবাঃ নপচুপ্রতিমিতা লোহস্ত কর্ষান্তকম্ ॥
বক্কীরী পলিকা পুরাদ্দশ পলাভাষ্টৌ শিলাজকনোমানাৎ কর্ষদমা বৃত্তেতি গুটিকা সংযোজ্য সর্বাং ভিষক্।
তত্ত্বৈব প্রতিবাসনাং সহ হৃতক্ষোজেণ শিহ্যাদিমাং
ক্রেং মস্তু চ গোসু তং মধুরসং পশ্চাং প্রক্ষাত্রা॥

বিজ্ঞা, িএকট্, গ্রিফলা, সৈদ্ধব সচল ও বিট্লবণ, সাচিক্ষার, ষবক্ষার, চৈ, চিতা, অনস্তমূল, পিশুলমূল, মূতা, শটী, স্বর্ণমান্ধিক, গুড়ত্বক্, বচ, দেবদারু, গছপিপ্পলী, চিরতা, দস্তী, হরিদ্রা, তেজপত্র, এলাইচ ও আতইচ, প্রত্যেক ২ তোলা, লোহ ১৬ তোলা, বংশ-লোচন ৮ তোলা, শোধিত গুগ্গুলু ১০ পল, শিলাজতু ৮ পল; এই সকল একত্র মন্দন ক্রিয়া মৃত্ত ও মধু সহ সেবন করিবে। অমু-পান—তক্র, দধির মাত, গবা মৃত্ত প্রভৃতি।

সপ্রযোগঃ।

মেহান্তকো রসঃ।

রসগন্ধকলোইঞ্ তারবঙ্গ ত্রিভাগিকম্ । অভ্রকস্ত ত্রেরা ভাগা ভাগা র্মিন ক্বর্ণকম্ ॥ সর্কচ্পসমং দ্যা ও তালমূলীফুর্ণিতন্। নানারোগহরং শ্রেষ্ঠং বাতপিত্রভবং মহৎ। কাভিপুষ্টকরকৈব রতিশক্তি বিবর্দ্ধনম্ ॥

পারদ, গন্ধক, লৌহ, রৌপ্য ও বঙ্গ প্রত্যেক ও ভাগ, অত্র তিন ভাগ, স্বর্ণ অর্দ্ধ-ভাগ এবং সকলের সমান তালমূলীচূর্ণ, একত্র জনে মর্দন করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটী প্রস্তুত করিবে। ইহাতে বাতিক, পৈত্তিক মেহ ও নানারোগ বিনষ্ট হয় এবং কাস্তি পুষ্টি ও রতিশক্তি বর্দ্ধিত হইয়া থাকে।

মেহকুলান্তকো রসঃ।

মৃতং বঙ্গং মৃতঞ্চালং গুদ্ধপারদগন্ধকম্।
ভূমিখং পিশ্বনীমূলং ক্রিকটু ত্রিফলা ত্রিবৃৎ ॥
রসাঞ্জনং বিভূমাক-বৈশ্যাক্রদাড়িমম্।
প্রত্যেকং তোলকং গ্রাহাং ভদ্ধমন্মজতোঃ পলম্ ॥
গোপালককটামূল-স্বরটেকবিটিকাং কুরু।
প্রমেহান্ বিংশতিং ইন্তি মৃত্রকুছেং হলামকম ॥
অন্মরীং কামলাং পাঞুং মৃত্রাঘাতমরোচকম্।
অনুপানং প্রব্যাক্তবাং ছাগীজ্বং প্রেশ্হণবা।
ধাত্রীযাত্র নিয়াসং কাধং কৌলখ্রং পিরেব ॥

বঙ্গ, অভ্ৰ, পারদ, গন্ধক, চিরতা, পিপুলমূল, ত্রিকটু, ত্রিফলা, তেউড়ী, রসাঞ্জন,
বিড়ঙ্গ, মুতা, বেলশুঠ, গোক্ষ্রবীজ, দাড়েমবীজ প্রত্যেক ১ তোলা, শিলাজতু ৮ তোলা।
এই সমুদায় বনকাকুড়ের মূলের রসে মন্দন
করিয়া বটিকা করিবে। (ব্যবহার ২ রভি
প্রিয়া বটিকা করিবে। (ব্যবহার ২ রভি
প্রিয়া বটিকা করিবে। ক্রেক্ট্রের কাগ।
ত্রহা নেবন করিলে প্রমেহ, মৃত্রক্ট্রেও হলীমক
প্রভৃতি নানা রোগ নষ্ট হয়।

পঞ্চাননো রসঃ।

रुटः शकः मृटः कोहः:मृटमः ग्राः निकम् । मर्क्रवाः विश्वाः रुकः सभूना मर्कराकिनम् ॥ एकरायः आदक्षात्र मीठरणाः भिरतकः । स्यान्।न् विरम्पिः रुक्षिः मृत्रकाणाः स्वभागतीम् । मृत्रकृष्टः स्टब्र्यमाः शकानती तमः ॥

পারদ, গন্ধক, লোহ ও অত্র প্রত্যেক ১ তোলা, বঙ্গ ৮ তোলা এই সমুদায় একত্র মধ্র সহিত ১ দিন মর্দান করিয়া বটিকা করিবে। (ব্যবহার ১ রতি মাত্রায়)! অমুপান—শীতগজল। ইহা সেবন করিলে প্রমেহ, মূত্রাঘাত, অশ্যরী ও উগ্র মূত্রকুদ্রু নিবারণ হইয়া থাকে।

রুহৎ সোমন থরসঃ।

হিন্দুলসম্বন্ধ সূত্র পালিধারসমান্তিম্।
রঙ্গাণোধিতগল্প তেনৈব কজ্লনীকৃতম্।
তদ্বরান্ধিগং লৌহং কন্তারসবিমান্তিম্।
অব্দ্রকান্ধিগং লৌহং কন্তারসবিমান্তিম্।
অব্দর্গ কমনং সর্বাং প্রত্যেকণ রসান্ধিকম্।
তৎ সর্বাং কন্তান্তানিক নিরেস্তাব্যেৎ তথা।
তেকপণীরসেনৈব গুল্লান্থর নিরেস্তাব্যেৎ তথা।
ত্বেপণীরসেনৈব গুল্লান্থরটাং হিতাম্।
মধুনা ভক্ষয়েচাপি সোমরোগনিকৃত্রে।
প্রমেহান্ বিংশতিং হস্তি বহুমূল্র্ঞ সোমকম্।
মূত্রদাবং বহুবিধং প্রমেহং মধুসংক্রকম্।
হস্তিমেহনিক্রমেহং লালামেহান্ বিনাশ্রেৎ॥
বাহিকং পৈত্রিকঞ্চেব হৈছিলং সোমসংক্রতম্।
নাশ্রের্ড্ঞ মূল্ঞ প্রমেহনবিকর্ল্ডঃ॥

পালিধার রলে শোধিত হিন্দুলোগ পারদ ২ তোলা ও ইন্দুর কাণি-পাতার বলে শোধিত গন্ধক ২ তোলা, এই উভয়ে কজ্জনী করত তাহার সহিত লৌহ ৮ তোলা মিশ্রিত করিয়া মতকুমারীর রলে মাড়িবে। পরে উহার সহিত অল, বঙ্গ, রূপা, খপর, স্বানাক্ষিক ও স্বাপ্রত্যেক ১ তোলা মিশাইয়া স্বতকুমারীর ও থূল্কুড়ের রলে ভাবনা দিয়া ২ রতি প্রমাণ বাটকা করিবে। অনুপান—মধু। ইথাতে প্রমেহ, সোমরোগ, বহুমুত্র, মুত্রাভিসার, মুত্রক্ষ্ণু, মুত্রাভাত ও বহুবেধ মৃত্যুদোষ প্রস্থাত প্রমান হইয়া থাকে।

মেহকুঞ্জরকেশরা রসঃ।

রসগন্ধায়সাত্র পি নাগনকো কনেকন্!
বক্সকং মৌজিকং সক্ষমেকাকুতা বিচুপ্রেং ॥
শতাবরারসেনৈব গোলকং গুদ্দান্তপে।
বৃদ্ধা গুদ্ধং তমুদ্ধৃত্য শরাবে ক্দৃত্ শিপেং ॥
সাক্ষলেপং মূদা কুয়াদ্ গর্ভারাং গোময়ামিনা।
প্রেদ্যামন্ত্রসংবাম্কৃত্য পাকশাতলম্ ॥
শক্ষপন্নে বিনিক্ষিপ্য গোলং তং মন্দ্রেমন্ত্র্ম।
দেশবাক্ষণপুজাঞ্চ কুত্য ধৃত্যে কুপিকে॥

থাদেদ বলম্বয়ং প্রাতঃ শীতঞ্চান্ত পিবেজ্জনম। অষ্টাদশব্মনেহাংশ্চ জয়েনাদোপযোগতঃ ॥ তৃষ্টিং তেজো বলং বর্ণং শুক্রবুদ্দিঞ্চ দারুণম। অগ্নের্বলং বিভক্তে মেছকুঞ্জরকেশরী। দিবাং রসায়নং:শ্রেষ্ঠং নাত্র কাধা। বিচারণা ॥ পারদ, গন্ধক, লোহ, অভ্র, সীসা, বঙ্গ, স্বৰ্ণ, হীরা, মুক্তা এই সকল সমভাগে একত্ত করিয়া শতমূলীর রুসে মাড়িয়া একটি গোলক করিবে: এই গোলক রৌদ্রে শুদ্ধ করিয়া শরাবসংপুটে স্থাপন পূর্ব্বক সন্ধিস্থল মৃত্তিকা দারা বিপ্ত করিবে। ইহা গর্ভমধ্যে গোমমা-গ্নিতে ৪ প্রাহ্ব পাক করিয়া শীতল উদ্ধত করিবে। মাত্রা— ৪ রতি। প্রাতঃকালে ও্রষণসেবনান্তে কিঞ**্**শাতল কবিব। এই মেহকুজরকেশরী এক মাস দেবন করিলে অঠানশ প্রকার প্রমেহ বিনষ্ট হর এবং বল বণ তেজাও শুক্র বিভি থাকে। ইহা আগ্রবদ্ধক ও শ্রেষ্ঠ রসায়ন।

যোগীশ্বরে। রসঃ।

মৃত্যুতাভনাগ নাং তুলাভাগং প্রকল্পের। মহানিথক ব'ছোখেং চুৰ্বং যোগ্যং তিভিঃ সমন্। মধুনা লেইয়েরাখং নানামেইপ্রশান্তরে। मक्किक्टरा हाथ (लग्ध विकास मा। অসাধ্যঃ নাশ্যেকেছং 'বদ্যাদ্যোগাখনো রসঃ॥ রস্দিন্র, অভ্র, বঙ্গ প্রত্যুক সংভাগ, মহানিষের বীজচুর্ণ ত ভাগ, এই সম্ভ একত জল দিয়া মাড়েয়া ১ মাধা পার্নাণে, স্থু দেবন কারবে। এই ঔষণ সেবনের পর হবৈজাচুণ ও মধু মিলিত দেড় তোলা সেবন মেহও অসাধ্য ক্রিতে হুইবে। ইহাতে নিবারিত হয়।

সর্কেশ্বরো রসঃ।

ষ্বৰ্ণ ৌপ্যং ৌক্তিকঞ্চ বিশুদ্ধক শিলাজতু। লৌহমন্দ্রং তথা তাপাং মবুষ্টা চাপায়লা॥ মারচং বিশককোঠ সর্বমেকনে কারয়েও। বিষক্ষাং গ্রহণং যথাৎ কজলাকাতসাত্রতম্॥ স্বর্ণ, রূপা, মুক্তা, শিলাজতু, লোহ, অন্ত্র, স্বর্ণমাক্ষিক, যষ্টিমধু, পিপুল, মরিচ ও শুঠ, এই সমুদার একতা এক প্রহর মদ্দন করিয়া কজ্জলবৎ করিবে। পরে কেশুরিয়া, ভূঙ্গরাজ ও দিন্ধির রসে পৃথক্ পৃথক্ মদ্দন করিয়া বটিকা প্রস্তুত করিবে। (ব্যবহার ২ রতি মাত্রা)। ইহা সেবন করিলে সকল প্রকার প্রমেহ নষ্ট হয়।

[`]রুহ**ৎ কামচূড়াম**ণীরসঃ।

মৌজিকং মান্ধিককৈব স্বৰ্ভন্ম পুৰ্বৰ পুৰ্ব। কপুরিং জাতিকোষক জাতীফললবসক্ষ। বঙ্গভন্ম তথা গ্ৰাহ্যং রূপ্যঞাপি তথাৰ্দ্ধকম্। চা**তু**জাতঞ্সংগ্রাহং স**র্বা**মেকত চুণিতম্॥ শতমূলারদেনৈর ভাবরেৎ সপ্তবারক্ষ। ততো গুঞ্জাপ্রমাণেন বটকা ভিষজাকৃতি:॥ অমুপানবিশেষেণ রোগাকরবিনাশিনী: শীতং পয়োহতপানক কামিনীঃ কমেয়েচ্ছত্য ॥ বার্যাহানো ভবেদ যক্ষ যো বা ভাৎ পতিভধ্বজ:। সোহশীতিবাধিকো ভুত্বা যুবৈৰ রমতেহঙ্কনাঃ॥ ভেষজৈবিবিধঃ কিং স্থাদত্যেশ্চ শঙসংখ্যকে। ফলং ন কিঞ্চিৎ তত্রান্তি কেবলং গৌরনং মুহঃ॥ নাতঃ পর এর কিঞ্ছিদ্ভি পুষ্টিকরঞ্ ৩৭। অতঃ সৰ্বপ্ৰবজেন সেব্যা ভূমিভুজা সদা ॥ বিশেষাদ্ ধ্বজভক্ষ সপ্তাহেন বিনাশয়েং। প্রমেহং মূত্ররোগঞ্চ মন্দাগ্রিং বয়পু: তথা। রক্তদোষক নারীণাং পান্দেব বিনগুতি॥

মৃক্তা, স্থামাক্ষিক, স্থা, কপূর, জৈত্রী, জায়ফল, লবঙ্গ, বঙ্গ প্রত্যেকের এক এক ভাগ, রোপ্যা, দারুগ চিনি, এলাইচ, ভেজপত্র, নাগেশ্বর প্রত্যেক অদ্ধভাগ লইয় একত্র মদ্দন করিবে। পরে শতমূলীর রদে ৭ বার ভাবনা দিয়া ১ রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ দেবনে, বীর্যাহীন ব্যক্তির বীর্যাহিনি এবং দেহের পৃষ্টি হয়। বিশেষতঃইং। সপ্তাহে দেবনে ধনজভঙ্গ, প্রমেহ, মৃত্ররোগ,

অগ্নিমান্দ্য, শোপ এবং স্ত্রীলোকের রক্তদোষ নিবাহিত হয়। শীতলজল সহ সেব্য । রোগের অবস্থা বুঝিয়া অমুপান ব্যবস্থা করিবে।

স্বর্ণবঙ্গম্।

প্রক্ষিপেদ্ ভাজনে বঙ্গমায়দে চাপি মূন্ময়ে !
বিক্রতে বহ্নিতাপেন তিন্ধিংস্তন্মানকং রসম্ ।
ক্রিপ্তা সঞ্গুরেং তক্র নরসারক গন্ধকম্ ।
তহ্বাসোমূদালিগু-কাচকুপ্যাং নিধায় চ ॥
তৎ সর্কাং সিকভাবন্ত্রে পচেদ্ যামচতুইয়ম্ ।
পাকাৎ সঞ্জায়তে চিত্রং কীর্ণং হেমকণৈরিব ।
রম্পায়তরং স্বর্ণ-বঙ্গং নাম রসায়নম্ ।
বল্যং মেহহরং কান্তি-মেধাবীয্যাগ্রিবন্ধনম্ ॥

লৌহ বা সূত্রয় পাত্রে কিঞ্ছিৎ বন্ধ আগ্ন তাপে গলাইয়া তাহাতে বঙ্গের সমান পারদ নিক্ষেপ করিবে। উভরে মিশ্রিত হইলে উহাব সহিত নিশাদল ও গদ্ধকচুর্গ পারদের সমান পরিমাণে মিলাইয়া মর্দান করিবে। পরে স্ক্ষবন্ধ ও কর্দাম হারা লিপ্ত একটি কাচের শিশিতে ঐ সম্দায় চুর্গ নিক্ষেপ করিয়া বালুকা যন্ত্রে ৪ প্রহরকাল পাক করিবে। এই প্রক্রিয়া হারা স্বর্ণকণাবৎ পরম রম্নার স্বর্ণকন্ধ নামক ঔবধ প্রস্তুত হইবে। ইহা রসায়ন, বলকর, কান্তি জনক, স্মরণশক্তি-বদ্ধক, শুক্রজনক, অগ্নি-সন্দীপক ও মেহরোগ নাশ হ। (ইহার মাত্রা ছই রতি)।

বঙ্গেশ্বরঃ।

রমন্ত ভগ্না তুলাং বঙ্গভন্ম প্রয়োজয়েও। অন্ত নাষধ্যং হস্তি নেহান্ ক্ষোদ্রসম্বিতম্॥

রদসিন্দ্র ও বঙ্গভত্ম সমভাগে মিশ্রিত করিরা ২ মাধা পরিমাণে কিঞ্চিৎ: মধুর সাহত দেবন করিলে মেহ নষ্ট হয়।

মহাবঙ্গেশ্বরসঃ।

বঙ্গং কান্তঞ্চ গগনং হেনপুষ্পং সমং সমন্। কুমারীরসতো ভাব্যং সপ্তবারং ভিষগ্রহৈ:॥ এব বলেখনো নাম প্রমেষ্টান্ বিংশতিং জয়ে ।
মৃত্রকুক্তং সোমরোগং পাঙ্রোগং মহাম্মরীম্ ।
রপারনমিদং শ্রেষ্ঠং নাগার্জ্জনবিনির্মিত্ম ।
বন্ধ, কান্ত কৌহ, অন্ত্র, নাগেশ্বর প্রত্যেক
সমভাগ । স্বত্রকুমারীর রসে ৭ বার ভাবনা
দিয়া বটিকা করিবে । ইহা প্রমেষ্ঠ, পাণ্ডুরোগ,
অশ্মরী, মৃত্রকুক্ত্র ও সোমরোগ প্রভৃতি রোগ
বিনষ্ট করে । এই মহাবলেশ্বর উৎকৃষ্ট রসায়ন ।

রহদ্বশ্বেরা রসঃ।

বঙ্গভন্ম রসং গন্ধং রূপ্যং কপূর্রমভক্ষ। কৰ্বং কৰ্বং মানমেবাং স্তাহ্ব্যিহেমমৌক্তিকম্ ॥ কেশরাজরসৈর্ভাব্যং দ্বিগুঞ্জাফলমানতঃ। প্রমেহান বিংশতিং হস্তি সাধ্যাসাধ্যান ন সংশয়: 1 **মুত্রকুদ্রহং তথা পাঞ্ছং ধাতুত্বক অ**রং জয়েব।: **হলীমকং** রক্তপিত্তং বাতপিত্তকফে:ছবম ॥ श्रद्भीयायामायक यन्नाशिष्याद्राहक्य। এতান্ সৰ্কান্ নিহস্তাত বৃক্ষমিলাণনিযথা॥ বুহুৰকেখনো নাম দোমরোগং নিহ্ন্তালম। বছমু এং বছবিধং মধুমেহং :হুদারুণম্॥ মুত্রাতিসারং কুচ্ছঞ কীণানাং পুষ্টিবর্জনঃ। **ওজন্তেজক্রো নিতাং প্রীযু সম্গর্ ব্যায়তে ॥** বলবর্ণকরে। ক্লচাঃ শুক্রসঞ্জননঃ পরঃ। ছাগং। वा यपि वा शवाः शासा वा प्रिथ निर्मालय ॥ অমুপানং প্রযোক্তব্যং বৃদ্ধা দোষগতিং ভিষক। দপ্তাচ্চ বালে প্রোঢ়ে চ সেবনার্থং রসায়নম্॥

বন্ধ, পারদ, গন্ধক, রূপা, কর্পুর, অল্র গুড়োক ২ ডোলা; স্থর্ণ ও মুক্তা প্রত্যেক ৪ মাধা। এই সমুদার দ্রব্য কেগুরিয়ার রুসে ভাবনা দিয়া ২ রতি পরিমিত বটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। এই ঔষধ প্রমেহ, মূত্রকুছু, গোম-রোগ, বছমূত্র ও মূত্রাতিসার প্রভৃতি পীড়ায় উৎক্কুষ্ট ফলদায়ক। ইছা বল বর্ণ পুষ্টে ভেম্ব: ও ভক্তেব জনক এবং রতিশক্তিবর্দ্ধক। অমুপান ভাগ বা গব্য হৃদ্ধ বা উৎকৃষ্ট দধি। ফলত: দোধের গতি বুঝিয়া অমুপান কল্পনা করিবে।

বৃহ**দক্ষেশ্ব**রঃ।

(মতাস্তবে)
পতং গদ্ধং মৃতং সৌহং মৃতমন্ত্ৰং সমাংশিকম্।
থেম বন্ধুক মৃত্যা চ তাপ্যমেবং সমং সময়।

সর্কেষাং চুর্ণিতং কৃতা কল্যারস্বিম্পিতম্।

জ্ঞান্ধ্যপ্রমাণেন বটকাং কৃত্র যতুত: ॥
বৃহত্বকেশরো কেব রক্তমূতে প্রশাস্ততে।
ব্যত্তবুক্তং বৃহন্দু ইং কৃত্রসমূতে তথৈব চ ॥
সর্কাপ্রকারমেহাংগু নাশয়েদনিকভত:।
অগ্নিবৃদ্ধিং বয়োবৃদ্ধং কান্তিবৃদ্ধিং করোতি চ ॥
ক্রার্বাগং নিহন্তাগু কাসং পঞ্চবিধং তথা।
কৃত্রমন্তাগং নিহন্তাগু কাসং পঞ্চবিধং তথা।
কৃত্রমন্তাগং কান্তিব্দিং করোচকম্।
শ্বং খাসং অরং হিকাং মন্দাগ্রিজমরোচকম্।
ক্রমণ শীলিতো হন্তি বৃক্ষমিন্ত্রাণনিবথা॥
পারদ, গল্পক, লোহ, অন্ত্র, স্বর্ণ, বৃদ্ধ,
মুক্তা, স্বর্ণমান্ধিক প্রত্যেক সমভাগ, স্বতকুমারীর রসে মর্দ্দন করিয়া ২ রতি প্রমাণ
বিটকা করিবে। ইহা সেবন করিলে সর্ব্রনি

रङ्ग करे गा।

প্রকার প্রমেহ, রক্তমেহ ও অন্তান্ত অনেক

পীড়াপ্রশ্মিত হয়।

রদং গন্ধং মৃতং লৌহং মৃত্রূপাঞ্চ থপ্রম্।
মৃত'জ্বং মৃতং তাজ্রং:দর্কতৃল্যঞ্চ বঙ্গকম্।
পুটেদ্ গলপুটে বিদ্ধান্ খাঙ্গনীতং সম্প্রুবেং।
রক্তিষ্মপ্রমাণেন মধুনা লেহয়েররম্।
নিশাচূর্ণকৌদ্রমুতং পিবেদ্ধান্তীরদং কন্ম।
বঙ্গান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধানিক ক্রান্তবিদ্ধান্তবিদ্ধানিক ক্রান্তবিদ্ধানিক ক্রিক ক্রান্তবিদ্ধানিক ক্রা

পারা, গন্ধক, লৌহ, রৌপ্য, ঝর্পর, অভ্র ও তাম প্রত্যেক সমানভাগ, সর্ব্বদমান বঙ্গ। এই সমুনায় একজ মন্দন করিয়া গজপুটে পাক করিবে। স্থাতিল হইলে ঔষধ উদ্ধুত করিয়া লইবে। মাজা—২ রতি। অমুপান— মধু, হরিদ্রাচ্প ও আমলকীর রদ। ইহা দবন করিলে প্রমেহ, আমদোধ, বিস্টিকা, মুত্রাতিদার ও সোমরোগ প্রভৃতি নষ্ট হইয়া থাকে।

ठन्द्रक्ला।

এলা সকপূ রশিলা সধাত্রী জাতীকলং কেশরণা**ত্মলী 5।** সূত্রেপ্রবঙ্কায়সভন্ম সর্ব্বমেতৎ সমানং পরি**ভাবয়েৎ তু**॥ ভড় চিকাশাল্য নিকাক্যারৈর্নিভার্ত্বমানাং মধ্না তত্ত ।
বন্ধা গুড়ীং চন্দ্রকলেতিসংজ্ঞাং মেহের্ সর্কের্ নিয়োজয়েত ॥
এলাইচ, কপূর, শিলাজতু, আমলকী,
ভারকল, নাগেশ্বর, শিমূলমূল, রসদিন্দ্র, বঙ্গ
ও লৌহভন্ম এই সমূলার দ্রব্য সমভাগ। ইহাদিগকে গুলঞ্চ ও শিমূলছালের কাথে ভাবনা দিবে
এবং মধুর সহিত মাড়িয়া ২ মাষা পরিমাণে বটিকা
করিবে। ইহা সকল প্রকার মেহে প্রযোজ্য।

চক্সকান্ডিরসঃ।

বিশুদ্ধং পারদং গদ্ধং গগনং গতচন্দ্রকম। তারং ভালং তথা কাংস্তং লৌহং বারিতরং তথা ! মাকিকং ভন্মবর্ণক সমভাগং প্রকল্পারে। যাবছোতানি সর্কাণি ভস্মবক্ষণ তৎসমম। রদালত্বপ্ভবৈত্তোগৈরামলক্যা রদৈত্তথা। ততঃ কুলথতোয়েন কজালুম্বরসৈত্তথা। বটাবরোহতোয়েন রোচনশ্বরদেন চ। ভাবনা খল দাতব্যা প্রত্যেকং দিবসত্তয়ম॥ **জাতীফললবঙ্গান্দ-হগেলাজা**ভিকোৰকম্। সমভাগং বিচুণ্যাপ দ্বা বৈ কল্পেষ্টাম্ 🛭 আমলক্যা রসেনৈব খাদেদেকাং শুভে২হনি। **हक्क्का खित्र मार्थ्या २३१ मर्क्ट मर्क्ट महिला गर्नः** ॥ বুব্যাদ্ৰুয্যভৱে। জ্ঞেয়ো কীণানাঞাঙ্গবৰ্দ্ধন:। **ধ্বজভঙ্গাদীংস্ত** রোগান্ নাশয়েরাত্র সংশয়ঃ॥ মুক্রাধাতমশারীঞ্ মধুমেহং হুলারণান্। মূ**ত্রাতীসা**রমত্যগ্রং কাসং পঞ্চবিদং তথা ॥ রাজযক্ষাণমত্যগ্রং বহিনান্দ্যং ভগন্দরম। নাশয়েদবিকল্পেন বৃক্ষমিন্তাশনিয়থা 🛭 নাশয়েদয় পিত্তঞ্ শূলমন্তবিধং তথা। রেত্যেবৃদ্ধিকরঃ পুংসাং ধ্বজভঙ্গাদিনাশনঃ॥

(ইতাদরো বহবো গুণা: সন্তি)।
শোধিত পারদ, গন্ধক, নিশ্চন্দ্রক অন্ত্র,
রৌপ্য, হরিতাল, কাঁসা, লৌহ, স্বর্ণমাক্ষিক, স্বর্ণ প্রত্যেক সমভাগ; এই সকল
ফবেয়র সমান বঙ্গ একত্র মন্ধন করিয়া আমছালের কাথ, আমলকীর রস, কুল্থকলাইয়ের
কাথ, লজ্জাবতীর রস, বটের ঝুরির রস ও
শিম্লম্লের রস প্রত্যেকের দারা তিন দিন
করিয়া ভাবনা দিবে। পরে জায়কল, লবঙ্গ,
মুতা, দারুনিন, এলাইন ও জেত্রী, এই সকল

জব্য সমভাগে উল্লিখিত জব্যের সমান লইরা চূর্ণ করত একত্র মিশ্রিত করিবে। এই বটী (২ রতি পরিমিত) আমলকীর রস দিয়া সেবন করিতে দিবে। ইহাতে সর্ব্ব প্রকার মেহ, ধ্বজভঙ্গ, মূত্রাঘাত, অশ্মরী, মধুমেহ, উৎকট মূত্রাতিসার, পঞ্চ প্রকার কাস, রাজ্যুণা, ভগন্দর ও অগ্রিমান্য রোগ বিনষ্ট হয়। ইহা শরীবের পুষ্টিসাধক ও বীর্যবিদ্ধক।

স্থান হ ভাগ, রৌপ্য হ ভাগ (রৌপ্যের পরিবর্ত্তে কেহ কেহ কর্পূন বাবহার করেন), বঙ্গ, সীদা, লোহ প্রত্যেক তিন ভাগ, অন্ত্র, প্রবাল, মুক্তা প্রত্যেক ০ ভাগ। এই সমুনার একত্র মাজিয়া যথাক্রমে গবাহক্ষ, ইক্ষুরদ, বাদকছালের রস, লাক্ষার কাথ, বালার কাথ, কদলীমূলের রস, মোচার রস, পদ্মের বস, মালতীকূলের রস, কুষুমের জল ও মুগনাভি, এই সমুদার দারা ভাবনা দিয়া হ রতি প্রমাণ বাটকা প্রস্তুত করিবে। অনুপান—মৃত্তিন ও মধু। ইহা মেহরোগের অতি উৎক্রিব্র। ইহাতে অন্তান্ত অনেক রোগের জ

ভাবনা গ্রাছয়েকু-বাস:য়াজিজলৈনিশা।
মোচকলয়িয়: সপ্ত ক্রাভাবাং পৃথক্ দু
শতপত্রসেগনের মালতাঃ কুসয়েত্বা।
পশ্চাকুগমদে জাবাঃ শুসিজে। রসরাড্ ভবের ।
ইতি বোগরজাকরে পাঠঃ।

উপশম হইয়া থাকে। ।চনি ও চলনের সহিত সেবন করিলে অমুপিত প্রভৃতি বিবিধ পীড়ার শাস্তি হয়।

প্রমেহসেতুঃ।

স্ভাত্রক বটকীরৈম দিয়েৎ প্রহরদ্বর্য। বিশোষ্য পক্ষ্বায়াং সর্বরোগে প্রযোজয়েৎ ॥ বিশেষাক্ষেহরোগের ত্রিফলামধুসংযুত্য। বুঞ্জীত ব্রমেকস্ত রুসেক্সন্তান্ত বৈদারটি ॥

রদদিন্ব ও অন্র দমভাগে বটের আটার ২ প্রহর মদ্দন করিয়া মুষাযত্ত্বে পুটপাক দিবে। পরে ৩ রতি পরিমিত বটা প্রস্তুত করিয়া ত্রিফলার কাথ ও মর্ অনুপানে দেবন করিলে দর্মপ্রকার মেহ বিনষ্ট হয়।

হরিশঙ্করে। রসঃ i

মুক্সতাত্রকং তুলাং ধাতীফলনিজ্ঞাবৈঃ। সপ্তাহং ভাবয়েং থলে ঘোগোচয়ং হরিশহরঃ। মংষমাত্রাং বটাং খাদেৎ সক্ষমেহপ্রশান্তয়ে॥

রস্থিন্দ্র ও অল সমভাগে গ্রহণ করিয়া আমলকার রসে ৭ দিন ভাবনা দিবে। পরে ১ মাষা পরিমাণে বটা প্রস্তুত করিয়া দেবন ক্রিলে সকল প্রকার প্রমেহ বিনষ্ট হয়।

রহদ্ধরিশঙ্করে। রসঃ।

রসগন্ধকলোইক স্বর্ণ বঙ্গক মাজিকম্।
সমভাগন্ত সংপিষ্য বটিকাং কারয়েন্ডিষক্ ॥
সপ্তাহমামলক্রানৈর্ভাবিতোহয়: রসেখরঃ।
হরিশক্ষরনামায়: গহনানন্দভাবিতঃ।
প্রমেহান্ বিংশতিং হস্তি সত্যং সত্যং ন সংশয়ঃ॥

পারদ, গন্ধক, লৌহ, স্বর্ণ, বন্ধ ও স্বর্ণ-মান্ধিক এই সকল দ্রব্য সমভাগে একত্র করিয়া আমলকীর রসে ৭ দিন ভাবনা দিয়া বটকা প্রস্তুত্ত করিবে। ইহাতে বিংশতি প্রকার প্রমেহ রোগ নিশ্চয় প্রশানত হয়।

আনন্দভৈরবে। রসঃ।

বক্তম মৃতং বর্ণ রসং কৌলৈবিম্পন্তং।
বিজ্ঞাং ভক্ষেন্নিতাং হলি মেংং চিরোত্তবম্।
গুঞ্জামূলং তথা কৌলৈব্দুপানং প্রশক্ততে।
বক্ষতম্ম, স্বর্ণ, রসসিন্দ্র (পারদভক্ষ)
ইহাদিগকে সমভাগে লইয়া মধুতে মন্দিত
করিবে। ২ রতি পরিমিত বটা প্রস্তুত করিয়া
দেবন করিলে পুরাতন প্রমেহ বিনষ্ট হয়।
অন্পান—গুঞামূল ও মধু।

अश्रुविभानिने। वन छः।

নৈক্ৰান্তমন্ত্ৰং ব্ৰিচাপারোপ্যং বৃদ্ধং প্ৰদালং ব্ৰমজন্ম লৌহ্ম। কুটকাং ক্ষুক্জন্ম স্বাধ্য সমাংশকং পেবাবৱাহবিদ্ধাঃ ॥ জুবৈবিভাব্যং।মুনিসংগ্য়া চ মুগাওজাশীতক্রেণ পশ্চাৎ । বল্পমাংগা মধুপিপ্ধলীভি-জীৰ্ণন্ত্ৰে থাতুগতে নিযোজাঃ ॥ গুড্ চিকাস্বসিতাযুত্তচ সক্ষেমেংগু নিযোজনীয়ঃ। কুড্ই'শ্ৰুবাং নিহন্তাংশু মাতৃলক্ষাজিনু জৈকুবৈঃ। ব্ৰমো বস্ত্তনামায়ম পূৰ্বো মালিনীপদঃ ॥

বৈক্রান্ত, অল্ল, তাম, স্বর্ণমান্ধিক, রৌপা,
বঙ্গ, প্রবাল, রদাদিল্ব, লোহ, সোহাগার থৈ,
শঙ্খভন্ম, এই সকল দ্রবা সমভাগে গ্রহণ
কারয়া বেণা, শতমূলী ও হরিদ্রা এই সকল
দ্রবা ঘারা ৭ বার ভাবনা দিবে। পশ্চাৎ তাহা
মৃগনাভি ও কপুরে ভাবিত করিয়া ২ রতি
প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা ধাতুগত ও জীর্ণ
জ্বরে মধু ও পিপুল্চুর্ণ সহ, সকল প্রকার প্রমেহ
রোগে গুলঞ্চর্ম ও চিনের সহ এবং মৃত্রকুছ্
ও অশ্ররী রোগে ছোলঙ্গ লেবুর মৃলের রস
সহ সেবন করিতে দিবে।

মেঘনাদে। রসঃ।

ভস্মস্তং সমং কান্তমত্রকন্ত শিলারজু। গুদ্ধতাপ্যং শিলাব্যোব-ত্রিকলাকোঠজীরকম্। কার্পাসবীলং রজনী-চূর্ণং ভাব্যঞ্চ বহিনা। তিংশদারং বিশোঘাথ লিহাচে মধুন। সহ। মাৰমাত্রং হরেয়েহং মেগনাদরসো মহান্॥

রসসিন্দ্র, কাস্তলোহ, অল, শিলাজতু, মর্ণমাক্ষিক, মনঃশিলা, ত্রিকটু, ত্রিকলা, ধলাআাকড়া, জীরা, কাপাদবীজ ও হরিদ্রাচ্প এই সকল দ্রব্য একত্র করিয়া চিতার রসে

ে বার ভাবনা দিয়া এক মাষ্য পরিমিত
বটী প্রস্তুত করিবে। অনুপান—মধু। ইহা
দ্বারা মেহ রোগ বিনষ্ট হয়।

মেহবজ্ৰঃ।

ভদ্মস্কং মৃতং কান্ত-নৌভভদ্ম শিলাজতু।
ভদ্ধভাপাং শিলা ব্যোধং ক্রিকলা বিধ্নারকম্ ॥
কপিখং রজনীচুর্গং ভূক্ষরাজেন ভাবরেং।
ক্রিংশছারং বিশোষাাখ লিগ্রাচ্চ মধুনা সহ ॥
নিক্ষাক্রং হরেনেহান্ মুক্চছং স্বদাকণম্।
মহানিষ্পত্র বাজক্ বড়নিকং পেষিত্রক বং ॥
পলতভূলতোরেন মৃত্নিক্ররেন চ।
ক্রাকুত্য পিবেচ্চাত্র হত্তি মেহং চিরোধিত্ম॥

রসসিন্দ্র, কাগুলেইভন্ম, শিলাজতু, স্বৰ্ণমাক্ষিক, মনঃশিলা, ত্রিকটু, ত্রিফলা, বেল,
জীরা, করেৎবেল, হারজাচুণ এই সকল জব্যকে
ভীমরাজের রসে ত্রিশবার ভাবনা দিয়া চারি
মাষা পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করত মধুর সহিত
সেবন করিবে। ইহাতে স্কদার্কণ মূত্রকজ্ঞ ও
মেহ নিবারিত হয়। অনুপান—মহানিম্বের
বীক্ষ ও তোলা চুর্ণ করিয়া চালুনি জল ৮ তোলা
এবং ঘৃত ১ তোলার সহিত মিশ্রিত করত
সেব্য়। ইহাতে পুরাতন প্রমহ প্রশমিত হয়।

মেহকেশরী।

মৃতবঙ্গং স্থবৰ্ণক কান্তলোহক পাবদম্।
মৃত্যু গুড়ছেকৈব স্থৈকলা পত্ৰকেশয়ম্।
সমভাগং বিচুৰ্ণাৰ কন্তানীরেণ ভাবয়েছ।
বিমাৰাং বটিকাং থাদেদ্ ছদায়ং প্রপিবেৎ ততঃ।
ক্রমেহং নাশয়েদাশু কেশরা করিণং বর্ণা।
শুক্রপ্রাহং শময়েছ ত্রিরাতারাত্র সংশয়ঃ।

বঙ্গ, স্বর্ণ কান্তলোহ, পাবদ, মুকা,
দার্ক্রচান, ছোট এলাইচ, তেরুপত্র ও নাগ-কেশর এই সকল দ্রব্য সমভাগে চূর্ণ করিয়া দ্বতকুমারীর রসে ভাবনা দিয়া ২ মাষা পরিমিত বটা প্রস্তুত করিয়া সেবন করিবে। পথ্য—হগ্ধ ও অল্প। এই ঔষধ তিনদিন সেবনে প্রমেহ, শুক্রমেহ ও মধুমেহ বিনষ্ট হয়।

विष्क्रामित्नो इः।

বিড়ঙ্গত্রিফলামুক্তিঃ কণ্যা নাগরেণ চ। জীরকাভ্যাং যুতো হস্তি প্রমেহানতিদারুণান্। লৌহে। মূত্রবিকারংক্ত সর্ব্বানেব বিনাশরেৎ ॥

বিভৃপ্প, ত্রিফলা, মৃতা, পিপুল, শুঠ, জীরা ও ক্লফজীরা প্রত্যেক সমভাগ, সর্বাসমান লৌহ। একত্র মর্দ্দন করিয়া লইবে। ইহাতে প্রমেহ ও সর্ব্ব প্রকার মৃত্রবিকার নিবারিত হয়। (মাত্রা—৩ রতি।)

শুক্রমাতৃকা বটী।

গোকুরনাজ ক্রিকলা পাত্রমেলা রস'ঞ্চনন্।
ধ'স্তাক' চনিকা জারং তালাশং উপ্পদাড়িমে।
প্রত্যেকার্ছিপলং দরা গুলু গুলোঃ কযমের চ।
রসাক্রগন্ধলোইনাং প্রত্যেকঞ্চ পলং ক্ষিপেৎ।
সর্ব্যেকার্কুত" বৈদ্যো দগুযোগেন মন্দ্রিং।
যুতভাগুে তু সংস্থাপ্য মাব্যমকঞ্চ জনরেৎ।
অনুপানং প্রদাতনাং জাতিভেদাৎ পৃথক্ পৃথক্।
দাড়িম্মস্ত রসেনের চছাগছন্দেন বাস্ত্রসা।
চন্দ্রনাথেন গদিতা বটিকা গুক্রমাতৃকা।
প্রমেহান্ বিংশতিং হস্তি বাতপিত্তক্ষোম্ভবান্।
ঘল্ডান্ স্রিপাতোখান্ মৃত্রকুছালারীগদান্।
বল্রবর্ণায়িজননা অরদোযনিস্পনী।

গোক্ষুরবীজ, ত্রিফলা, তেজ্বপত্র, এলাইচ, রুমাঞ্জন, ধনে, চৈ, জারা, তালীশপত্র, সোহাগা, লাড়িম বীজ প্রত্যেক ৪ তোলা; গুগ গুলু হই তোলা; পারদ, অভ্র, গন্ধক, লোহ প্রত্যেক ৮ তোলা। সম্লায় লাড়িমের রুসে মর্দ্দন ক্রিয়া স্বতভাণ্ডে রাখিবে। ১ মাবা মাত্রায় সেবনীয়। (ব্যবহার ৩।৪ রতি।) অকুপান—
লড়িমের রস, ছাপালগ্ধ বা জল। ইহা সেবন
করিলে সর্ব্ধপ্রকার প্রমেহ, মুত্রকুছ ও
অন্মরী রোগ নষ্ট হয় এবং বল বর্ণ ও অগ্নি
বর্ধিত হয়।

(वनविनावणी ।

পারদাত্রককান্তানাং নাগভন্ম সমং সমষ্।
দিনং ব্রন্ধীরসৈম দিনং বালুকাবন্ত্রগং পূনঃ ।
উদ্ব্য চূর্ণয়েং শক্ষং জারিতাত্রং শিলাব্রত্ব।
তাপাং মণ্ডুরবৈকান্তং কাসীসং তুলামের চ ।
সর্বাং সর্বাসনাং চূর্ণং কর্লেয়েচ্চ ততঃ পূনঃ।
মুন্তচন্দনপুরাগ্র-নারিকেলভ্র মূলকম্ ।
কপিথরজনীদাবর্গ-চূর্ণং সর্বাসমং ভবেং।
জন্মীরাপাং জবৈম দিনং হিযামং বটকীকৃত্রম্।
বেদবিস্তাবিটা নামা ভক্ষণাৎ সর্বামহরিছে।
মধু ধাত্রীরসকামু কোলৈরসি গুড্,িচলাঃ ॥

পারদ, অল্ল, কান্তলোহ, সীমা প্রত্যেক
সমভাগে লইয়া ব্রহ্মীরসে > দিন মর্দন করত
বালুকাযন্ত্রে পাক করিয়া ঔষধ উদ্ধৃত করিবে;
পরে অল্ল, শিলাজতু, অর্ণমান্দিক, মপুণ,
বৈক্রান্ত ও হীরাকদ প্রত্যেকে পারদের সমান
এবং মুতা, রক্তচন্দন, পুলাগ, নারিকেল মুল,
করেণবেল, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা প্রত্যেক দ্রব্য সর্ব্যমন্তির তুল্য লইয়া সমস্ত দ্রব্য জামীরের
রসে তুই প্রহর মর্দন করিয়া বটকা প্রস্তুত করিবে। অনুপান—মধু, আমলকীর রস কিংবা
মধু সহ শুলঞ্চর্যা। ইহা সর্বমেহ বিনাশক।

इस्वणी।

মৃতং সৃতং মৃতং বঙ্গমর্জ্জনক বচাৰিতম্। তুল্যাংশং মর্দ্ধয়েৎ ধলে শাবাল্যা মূলজৈর্দ্রবিঃ। দিনাকে বটিকা কার্য্যা মাবমাত্রা প্রমেহর।। এবা চেক্রবটা নামা মধুমেহপ্রশাস্তরে।

রসনিশ্র, বঙ্গ, অর্জ্জনছাল, এই সমুদার জব্য সম্ভাগে লইয়া শিসুল মুগের রসে ১ দিন মাজিলা ১ মাধা প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহাতে প্রমেহ ও মধুমেহ নিবারণ হয়।

চন্দ্ৰপ্ৰভা বটিক।।

চক্রপ্রভা বচা মুখা-ভূনিম্বর্নারব:। হরিক্রাতিবিধাদাববী-পিঞ্গলীমূল চিত্রকম্॥ ত্রিবৃদ্ধ্বী পত্রকঞ্ক ত্রেলা বংশলোচন।। প্রত্যেকং কর্ষমাত্রাণি কুর্যাদেতানি বুদ্ধিমান । ধান্তকং ত্রিফলা চবাং বিডক্সং গজপিপা।। प्रवर्गभाक्षिकः त्यावः स्त्री कारती नवणज्ञान् ॥ এতানি টক্ষাত্র ল সংগ্রীয়াৎ পু।ক পুণক্। विकर्षः इक्टलोहः का अ पुक्रा मिठा छत्त् ॥ निनान : हेकवे: का नाहे कर्वाम्ह खन खना । বিধিনা গোজিতৈরেতেঃ কর্ত্তবাা গুটিকা ওভা চক্রপ্রভেতি বিখ্যাত। সক্রেগপ্রণাশিনী। নিহস্তি বিংশতি মেহান কুছেম্ট্রবিধং তথা চতপ্রকাশারীক্তরনালাভাং প্রয়োদ ।। অভবৃদ্ধিং পাতুরোগং কামলাঞ হলামকম্॥ কাদং খাদং তথা ক্টমগ্রিমান্দামরোচ চন্! বাতপিত্তকফবাাধ ন বলা। বুবা রসাংগনা এ সমারাধ্য শিবং যক্ষাৎ প্রযক্রাদ্ গুড়িকামিমাম্। প্রাপুরাংক ল্রমান্ত্রমাদিয়ং চল্রপ্রভা সুতা 🛊

সোমরাজী, বচ, মৃতা, চিরতা, দেবদারু, হরিদ্রা, আতইচ, দারুহারিদ্রা, পিপুলমূল, চিতামূল, তেউড়ী, দন্তীমূল, েজপত্র, গুড়ত্বক, এলাইচ ও বংশলোচন প্রাক্তির ২ তোলা, ধনে, ত্রিফলা, চে, বিড়ঙ্গ, গজপিয়লী, স্বর্ণনাক্ষিক, ত্রিকটু, যবমার, সাচিক্ষার, সৈধন, সচল ও বিট্লবল প্রত্যোক ৪ মায়; গৌহ ৪ তোলা, চিনি ৮ তোলা, ানা জতু ১৬ তোলা, গুগু গুলু ১৬ তোলা; এই সমুদার দ্রব্য একজ্র মাড়িয়া যথাবিধি বটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। এই প্রধারেন করিলে প্রমেহ, মৃত্রক্ট্র, অশারী, মৃত্রাভাত ও পাণ্ড ওভ্তি বিবিধ রোগের শান্তিহয়। ইহা বলকারক বৃষ্য ও রসায়ন।

মেহমুকার-বটিকা।

রসাঞ্চনং বিড়ং দারু বিশ্বগোকুরদাড়িমা:।
ভূনিখপির্মনীমূলং ত্রিকটু ত্রিকলা ত্রিবৃৎ ॥
প্রত্যেকং তোলকং দেরং লৌহচূর্ণস্ত তৎসমন্।
পলৈকং গুল্ গুলুং দক্ষা যুতেন বটিকাং কুরু ॥
মাবৈকা নির্শ্বিতা চেরং মেহমূলারদংক্রিনী।
ক্রিম্লাহননাবেন লোকনিজারকারিশা॥

জনুগানং প্রকর্ত্তবাং ছাগীছুবাং জলক বা।
বিংশদেহং নিহস্তাতি মৃত্রকুক্তহং হলীমকন্।
জন্মরীং কামলাং পাঞ্চং মৃত্রাঘাতমরোচকন্।
বড়ুর্নাংসি ত্রণং কুঠং ভগলারমস্থারিকান্।
(স্থানে যদি কর্ত্তবাং তিহুগন্ধিসমন্থিতা।)
জাত্র দাক দাক্ষ্যান্তবা। রঃ টা:। ত্রিকট্রিত্যক্র তিবক্ট
উতি ক্টিং পাঠ:।

রসাঞ্চন, বিট্লবণ, দাকহরিছা, বেলন্ড ঠ, গোকুরবীজ, দাড়িম, চিরতা, পিপুলমূল, ত্রিকটু (পাঠান্তরে গোকুর), ত্রিফলা ও তেউড়ীমূল প্রত্যেক ১ তে'লা, লোহচুর্ণ ১৫ তোলা, গুল গুলু ৮ তোলা; এই সমুদায় দেব্য ঘুত দিয়া মাড়িয়া এক মাষা প্রমাণ বাটকা করিবে। অনুপান—ছাগীহগ্ধ বা জল। ইহা সেবন করিলে প্রমেহ, মৃত্ত্বুচ্ছু, হলীমক, জন্মরী ও মুত্রাঘাত প্রভৃতি বিবিধ পীড়ার শাস্তি হয়।

কামধেনুরসঃ।

সিন্দুর্মজং নাগঞ্চ কপুরং হেম মাক্ষিকম্।
ধর্পরং রক্ষত্রকাপি মন্দরেৎ কমলান্ত্রসা।
তত্তো গুলামিতাঃ কৃত্বা বটাশ্ছারাপ্রশোবিতাঃ।
একৈকাং দাপরেদাসাং কদেকগরদেন চ।
প্রমেহান্ বিংশতিং হত্তি শুক্রমেহং বিশেষতঃ।
ত্ররং জীর্ণক যক্ষাণং কামধেষ্ডিধো রসঃ॥

রসদিন্ত্র, অভ্র, সীদা, কর্প্র, স্বর্ণ, স্বর্ণ-মান্দিক, এর্পর ও রৌপ্য প্রত্যেক সমভাগে শইমা পদ্মপ্রস্থার রবে মর্দন করত ১ রক্তি প্রমাণ বটিকা করিয়া ছায়াতে শুক্ত করিবে। কেশ্বরের রদের সহিত দেবনীয়। ইহাতে শুক্রমেহ প্রভৃতি অনেক পীড়ার শাস্তি হয়।

শিলাজত্বাদি-বটী।

শিলাকৰ ৰহেমাণি গৌহওগ ওল্টৰণম্।
কেশরাজক তোরেন মর্দ্ধরেদ্ দিবসবর্ম্।
বন্ধমানাং বটাং কুড়া শৈবালসলিলেন চ।
বাতঃ প্রাতঃ প্রমুক্তীত গুকুমেহনিবৃত্তরে।

শিলাকড়, অল্ল, বর্ণ, লৌহ, গুগ্ গুলু ও সোহাগার থে, এই সমুদার সমস্তাগে নইরা কেশুরিয়ার রসে ছই দিবদ মর্দন করিয় ২ রতি প্রমাণ বটকা করিবে। শেওলার রসের সাইত প্রভাহ প্রভাতে দেবনীয়। ইহা দেবন করিবে শুক্রমেহের শাস্তি হয়।

ठन्मना मि हुर्गम्।

চন্দনং শালালীপুন্দাং ত্রিজাতং রজনীম্মন্।
অনন্তাং শারিবাং মৃত্তমূশীরং মৃষ্টিকামলে।
মর্পতিত্রীং গুড়াং ভাগীং দেবদার হরীতকীম্।
সর্বাহিগুণিতং সৌহকৈকত্র পরিমর্দ্ধিরং।
প্রমেহা বিংশতিঃ মানাং কাসো জীপ্তারস্বধা।
প্রাশনাদক্ত নশুনি ছুর্নামানি চুকামলা।

খেতচন্দন, শিমুল ফুল, গুড়ছক্, ভেজ-পত্র, এলাইচ, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, অনস্তমূল, গ্রামালতা, মূতা, বেণার মূল, মষ্টিমধু, আমলা, সোণামুখা, বংশলোচন, বামুনহাটী, দেবদারু ও হরীতকা প্রত্যেক সমভাগ এবং এই সকলের সমষ্টির ছিগুণ লোহ একত মর্দন ক্রিবে। মাত্রা ১ মাধা। ইছা সেবন ক্রিলে প্রমেহাদি বিবিধ পীড়ার শাস্তি হয়।

याकिक। नि हुर्गम्।

মান্দিকং পারদং গন্ধং থপরং গিরিম্ভিকাম্। শিলাজত্ততোহানি শাহ্মলাঃ কুহুমং ডঃম্॥ বিদারীং গোকুমং বাজকৈকত্ত পারমন্দিয়েং। মাৰমাত্রং প্রযুঞ্জীত গুকুমেংনিবুভরে॥

স্বর্ণমাক্ষিক, পারন, গন্ধক, থর্পর, গেরি-মাটা, শিলাব্দতু, অত্র, লৌহ, শিমুল্ফুল, শিমুল-ছাল, ভূমিকুশ্নাও ও গোকুরবীজ এই সমুলার সমভাগে ।লইয়া মর্দ্ধন ।করিবে। মাত্রা ১ মাষা। ইহা দেবন করিলে ও ক্রমেহের ।শান্তি ইইয়া থাকে।

প্রমেহমিহির-তৈল।

भठभूष्मा (प्रवक् है: मूखकक निमाधतम् । मूर्वा कूष्टे: वाजिगक्षा तम्मनवत्तत्वकम् ॥ कर्वे मधूकः त्रांचा चलाना तक्कविका । हविका धासकः वस्तः पृष्ठिकाश्वतः शत्कसम् ॥ ত্রিক্লা:নলিকা বালা বলা চাতিবলা তথা।
মঞ্জিটা সরলং পত্মং লোগ্রং মধুরিকা বচা ॥
অঞ্জানী চোশীরং জাতী বাসা তপরপাত্মকা।
এতেরাং কার্থিকের্ভাগৈতৈরপ্রস্থাং বিপাচরেৎ
শতাবর্থা। রসং তুলাং লাকারসং চতুপ্ত প্ম।
মপ্ত লাকারসৈজ্ঞলাং ক্ষীরং তুলাং প্রদাপরেৎ ॥
অবৈরেতেঃ পচেৎ তৈলং গলং দল্বা যথাক্রমম্।
এতৎ তৈলবরং শ্রেষ্ঠমন্ডাঙ্গান্মক্তাপহম্॥
বিষমাখ্যান্ অরান্ সর্বান্ মেদোমজ্জগতানপি।
বাতিকং গৈন্তিককৈব লৈন্মিকং সালিপাতিকম্।
কাণেন্সিরে তথা শৃত্তং ধ্বজ্জেরে বিশেবতঃ।
দাবাং পিতং বিশোবেণ ফলম্প্র চ কথাতে ॥
দাবং পিতং পিপাসাঞ্চ চ্ছিক্কি মুধ্লোবণম্।
প্রমের্থান্ বিংশতিকৈব নাশরেদবিক্রতঃ।
প্রমের্থান্ বিংশতিকৈব নাশরেদবিক্রতঃ।

তিলতৈল /৪ সের। কাথার্থ—লাক্ষা /৮ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের; শত-মূলীর রস ৴৪ **সের, হুগ্ম** ৴৪ সের, দধির মাত ১৬ সের। করার্থ—গুলফা, দেবদারু, মৃতা, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, মুর্বামূল, কুড়, অর্থগন্ধা, খেতচন্দন, রক্তচন্দন, রেণুক, কট্কী, যষ্টিমধু, বালা, গুড়ত্বকু, এলাইচ, বামুনহাটী, চৈ, ধনে, ইক্রয়ব, করপ্রবীজ, অগুরু, তেজপত্র, ত্রিফলা, বালা, বেড়েলা, গোরশ্বচাকুলে, নালুকা, সরলকার্ছ, পদ্মকার্ছ, লোগ, মৌরি. বচ, জীরা, বেণার মূল, জায়ফল, বাদকছাল ও তগরপাত্রকা প্রত্যেক ২ তোলা। এই সমস্ত কল্প জাপ সহ যথাবিধি তৈল পাক করিয়া মর্দ্দন করিলে মেদোগত, মজ্জগত ও সর্বদোষ-জাত বিষমজ্ঞর, ধ্বঞ্ভঙ্গ, দাহ পিত্ত পিপাসা ছদ্দি ও মুখশোষ এবং সবল প্রকার মেহ ও অক্সাক্ত অনেক পীড়া প্রশমিত হয়।

ত্ৰিকণ্টকাছাং মৃতং তৈলং যমকঞ।

ত্ৰিক টকাশ্মন্তকদোমবলৈ-ভলাতকৈ: সাতিবিবৈ: সলোধ্য়ে। বচাপটোলাজ্জনিবমুক্তি-ইয়িজয়া দীপাকপদ্মকৈত। मक्षित्रं गोश्चिक्तक्तिकं गोर्क्सः ममरेखः कक्ष्यां उत्सव् । स्मार्ट्स् रेटनः विश्वत्रम् शृञ्ख शिरखत् मिटाः विष्यु सक्तरायु ॥

গোক্ষ্য, তম্কুচা, থদিরকান্ঠ, শোধিত ভেলা, আতইচ, লোধ, বচ, পল্তা, আর্জুন্ছাল, নিমছাল, মুতা, হবিদ্রা, যমানী, পদ্দকান্ঠ, মঞ্জিন্ঠা, আক্নাদি, অগুকুও রক্তচন্দন
এই সমস্ত দ্রব্যের কক্ষের সহিত যথাবিধি তৈল
ও ঘত বা মিশ্রিত ঘততৈল পাক করিবে।
কফ ও বাতন্দনিত মেহে তৈল, পিছজ মেহরোগে ঘত, ত্রিদোয়জ মেহে মিশ্রিত ঘততৈল
পাক করিয়া প্রয়োগ করিবে।

কফমেহহরর ক্র-সৈত্র সাপিঃ কফে হিতম্ । পিওমেহশ্বনিগুর্হ-সিদ্ধং পিতে হিতং যুতম্ ॥

কদোৰণ মেহে কফজ মেহনাশক ঔষধের কাপের সাহত এবং পিন্তোৰণ মেহে পৈ!ছক-মেহনাশক দ্রব্যের কাথের সাহত স্বত পাক করিয়া প্রয়োগ করিবে। (এই ম্বতে কব্দপাক নাই)।

দ। ডিমাদ্যং হতেম্।

দাড়িমন্ত তু বাজানি ক্রিমিন্নত চ তঙুলাঃ।

রজনা চবিকাজাজা ক্রিকানা নাগরং কণা।

ক্রিকটকত বাজানি বমানী ধাতাহং তথা।

বৃক্লায়ং চপলা কোলং সিক্তবসমাযুত্য *।

কানৈ ভোজা চ দাতবাং সর্কর্ত মাত্রয়।

প্রমোংন বিংশতিবিধান মুলাঘাতাং তথা শ্রীম্।

কৃত্রং হদারুণকৈব হতাদেতর সংগয়ঃ।

বিব্রানাংশ্লঘং কামলাজ্বনাশন্।

দাড়িমাত্রং ঘুলং নামা অধিভ্যাং নির্মিতং পুরা।

(অক্র চপলা পিপ্লীম্লমিতি বৃন্ধঃ। গজপিপ্লীতি
প্রসেনক্রিপ্রক্রীক্রো।)

ন্বত /৪ সের। কলার্থ - দাভিমবীজ, বিদ্যুস, হবিদ্রা, চৈ, জারা, ত্রিফলা, ভাঠ, পিপুল,

ইতঃ পরম্—
 অয়বেতসদদ্বাকা-বর্তীমধুকপাকলৈ:।
 দাক্ষী ত্বল্ চ শিলাধাঙুনীলোৎপলরসাঞ্জনৈ:।
 ইতাধিকঃ পাঠো রয়াবল্যাম্! অতা পাকলং কুঠম্।

গোক্ষুর বীজ, যমানী, ধনে, মহাদা, পিপুলমূল, (মভান্তরে গজপিপুল), কুলগুঠ ও সৈম্ববলবণ (র্র্বাবলা গ্রন্থ কার ও কয়েকটি কন্ধান্তর দিতে বলেন, যথ:—অমবেতস, দ্রাক্ষা, বৃষ্টিমধু কুড়, দারুহা দ্রা, দারুন্চনি, মনঃশিলা, নীলাৎপল ও রসাজন) প্রত্যেক ২ তোলা। পাকের জল ১৬ সের। সকল ঋতুতেই যথানোগ্য মাত্রায় সেবন করিলে সর্ব্বপ্রকার প্রমেহ, মৃত্রাঘাত, অশারী, স্থারুণ মৃত্রকৃদ্ধ, আনাহ ও শূল প্রভৃতি রোগ নই হয়।

বৃহদ্ দাঙ্িমাদ্যং গ্লতম্।

চতু.ষষ্টিপলং পঞ্চ-দাড়িমস্তা স্থবুটি ১ম্। চতুত গং জলং দয়। চতুভাগাবশেষিত্য ॥ কাৰেন হস্তপুতেন ঘুতপ্ৰস্থ বিপাচয়েৎ। পাড়িন্থ চাৰকাজাকা ক্ৰিমিল্লং রজনীল্লয়মু॥ खोक्राथङ्ग्।यूक्षा ७२९ शनः शक्तिश्रमा । অঙ্নোদা মহাদ্রেকা কাকোলী নাগরং বচা। (प्रवःइता ह विका कुष्ठः का याः) मध्यष्टिका । ভাষেত্রবারণী মুক্রা ওছা শুকী ধনীয়কষ্। কুলথক মহামেদা নিম্বন্চ বৃহতীম্বয়ম্। দণ্ডোৎপলং বরা বাসা সপ্তলা সিন্ধুবারকম। কৰ্ম'চৰাং যুক্তিবোগ'দ গ্লাহ্যা হি পরিভাষয়া। প্রমেহং বাতিকং হ'ত পৈ,ত্তকং দ্বৈত্মিকং তথা। হুচ্ছু লং বস্তিএং শূলং মূত্রাযাতাংস্তরোদশ। हिकार यानक का नक रुक्यानर नर्क्त शिन्य ॥ স্বরক্রমুরোরোগং রক্তপিত্রম রাচকম্। যে চ প্রহেজ। রোগ:ভানু সর্বান্ নাশয়তাপি। षाष्ट्रिमाञ्जनिषः मन्त-अध्यक्षाः निरुपनम्। অখিভা: নি:শ্বতং হেতৎ প্রমেহকরিকেশরী।

পক দাভিন্বীজ ১৮ সের, জল ২২ সের, শেষ ১৮ সের, স্বত ১৪ সের। কর্বার্থ—
দাভ্ম, চে, জারা, বিভ্লু, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা,
আক্ষা, পিগুথর্জ্জুর, হঞ্জাত (অভাবে ভালমাতী),
নীলোৎপল, গজাপপ্লালী, বন্যনানী, মহানিষ,
কাকোলা, ভাঠ, বচ, দেবদাক, চৈ, কুড়,
গাজারী মুলের ছাল, যাষ্ট্রমধু, অনস্তমুল,
রাখালণপার মূল, মুর্বা, বংশলোচন, কাক্ডাশৃশী, ধনে, কুণ্ডাকলাই, মহামেদ, নিমছাল,

বৃহতী, কণ্টকারী, ভানকুনী, ত্রিফ্লা, বাসকছাল, ছাতিমছাল ও নিসিন্দামূল এই সমুদায়
মিলিত /১ সের। জল ১৬ সের। যথাবিদি
শাক করিবে। এই ম্বত পান করিলে বাতিক,
পৈত্তিক ও লোমক প্রমেহ, হুচ্চূল, বস্তিশ্ল,
অমোদশ প্রকার মৃত্রাবাত, হিকা, খাস, রক্তপিত্ত ও যক্ষা প্রভৃতি বিবিধ পীড়ার এবং প্রমেহ
জন্ম সমস্ত রোগের শান্তি হইমা থাকে।

মহাদাড়িমাদ্যং ঘ্ৰত্তম্।

দাড়িমক্ত ফলপ্রন্থং প্রস্থক ববত্তুলম্।
কুলখং প্রস্থমাদার মুতপ্রস্থং বিপাচয়েৎ ॥
শতাবরীরসপ্রস্থং গবাড়মঞ্চ তৎসমম্।
কন্ধঃ সার্দ্ধিকি গুরুত্বং ত্রিফলা নত্ত্য্য রেপুকা চাইংর্গল্ড দেবলাক নিশাদ্বয়ম্।
শুক্রী ত্রিকট্ স্টাক্রনা বিদাগাতিবলা তথা ॥
প্রমেহণ্ন্ বিংশতিং হতি প্রেমজান্ সন্নিপাতজান্।
নৃংহণক বিশেষেণ সর্ক্রেহ্হরং পরম্।
অমিভ্যাং নিশ্বিতং সিদ্ধং দাড়িমাদামিদং মহৎ ॥

মৃত /৪ সের। কাথার্থ—দাড়েমবীজ ১২ সের, জল ১৬ সের, শেষ 🖊 ৪ সের ; যবত গুল /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ /৪ সের. কুল্খকলায় /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ /৪ দের ; শতমূলীর রস 🗸 ৪ সের। গব্যহ্ম 🗸 ৪ সের। ক**ন্ধার্থ—**দ্রাক্ষা, পি**ওখর্জ্জুর,** ত্রিফ*ল*া, জীবক. তগরপাছকা, রেণুক, काटकानी, कीतकाटकानी, মেদ, মহামেদ, ঋদি, বৃদ্ধি, দেবদাক, হবিন্তা, দাক্তরিদ্র', কাঁকড়াশুঙ্গী, ত্রিকটু, ছোটএলাইচ, কুম্মাণ্ড ও গোরক্ষচাকুলে প্রত্যেক তোলা। এই ঘুত পান করিলে সকল প্রকা মেহ নষ্ট হয়।

ধারন্তরং মৃত্যু।

দশম্লং করপ্রে থে দেবদার হরীতকী। বর্ষাভূর্বরূণো দত্তী চিত্রকং সপুনর্ববম্ । ফ্থান প্রকদ্মাশ্চ িজ্ঞলাতকানি চ। শঠী পুদরমূলক পির্মানীমূলমেব চ। পৃথগ দশপলান্ ভাগাংস্ক হস্তোর্ন্নর্গনে পচেব।
ববকোলকুলখানাং প্রস্থং প্রস্থক দাপরেব।
তেন পাদাবশেষেণ স্থতপ্রস্থং বিপাচরেব।
নিচুলং ত্রিফলা ভাগী রোহিবং গজ পরালী।
শূলবেরং বিড়জানি বচা কম্পিলকং তথা।
গর্ভেপানেন তব সিদ্ধং পায়রেবং তু যথাবলন্।
এতদ্ধাস্বস্তরং নৃদ্ধ বিখ্যাতং স্পিকত্তমন্।
কুষ্ঠং শুলাপ্রমেহাংশ্চ খরপুং বাতনোণিতম্।
গ্রীহোগরং তথালাংসি বিজ্ঞাং পিড়কাশ্চ ষাঃ।
অপন্দারং তথালাংসি বিজ্ঞাং পিড়কাশ্চ ষাঃ।
অপন্দারং তথালাংসি বিজ্ঞাং পিড়কাশ্চ ষাঃ।
শৃথক্ তোয়ার্দ্ধনে তক্র প্রে দ্বাব্যাচ্ছ ডং শতম্।
শতক্রেরাধিকে ভোরমুৎস্যাঃ ক্রমতো ভবেব।।

मन्यून, नांचीक्तअक्न ও उर्तकत्व कन, দেবদারু, হরীভকী, পুনর্নবা, বরুণ, চিতা, খেতপুনৰ্বা, মনসাসীজ মূল, কেলিকদ্য (কাহার মতে-ভূমিকনম), কনম, বেলছাল, শেবিত ভেলা, শঠা পুষরমূল (অভাবে কুড়) ও পিপুলমূল; এই সকল দ্রা প্রত্যেক ১০ পল। (দশমুলেরও প্রত্যেক দশ দশ পল লইতে হইবে)। যব, কুল ও কুলখ কলাই প্রত্যেক /২ সের। এই সকল দ্রব্য ৮ গুণ জলে সিদ্ধ করিয়া চতুর্থাংশ জল অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে। দেই কাথে /৪ দের ঘুত, নিম্নলিখিত কল্কো সহিতপাক করিরে। कदान्या यथा-- श्विनकन, जिक्ना, वामूनश्री, গন্ধতৃণ, গজ্পিপ্পলী, ভুঁঠ, বিড্ঙ্গ, বচ ও কমলা-ভাছ। রোগির বলাদি বিবেচনা করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় এই ধাষ্ঠ্যর ম্বত সেবন করা-ইলে কুষ্ঠ প্ৰমেহ প্ৰভৃতি বিবিধ পীড়া প্ৰণমিত হইয়া থাকে। এই ঘুত পাক করিতে প্রতি ২০০ পল কাথ্য দ্রব্যে ৬৪ দের জল দিবার নিয়ম. কিন্তু ৩০০ পলের অধিক ছইলে কাথ্য দ্রব্যের অইগুণ জল প্রদেয়।

শাল্মনীয়তম্।

শাব্দলীক্রবসংযুক্তং সর্পিক্ছাগীপরোহধিতম্। অবগন্ধাং বরাং রাষাং মুশলীং বিষ্তেবজম্। অনস্তাং মধুকং দ্রাক্ষাং দ্বা চ পলমানতঃ। পচেক্মকায়িনা বৈদ্যাং পাত্রে মুৎপরিনির্মিতে। প্রমেহান নিথিলান হ'জ গুজমেহং বিশেষতঃ। কৈবাং বাতুক্দরং শোবং কাদকৈতদ্ বরং ঘৃতমু॥

গ্রাম্বত /৪ সের। শিম্লের রস /৪ সের, ছাগত্র /৪ সের। করার্থ— অর্থপরা, শতমুলী, রামা, ভালমূলী, শুঠ, অনস্তমূল, ঘট্টমধু ও ফাকা প্রভ্যেক ১ পল। পাকার্থজন ১৬ সের। মৃত্তিকা নির্মিত পাত্রে মৃত্ত অন্ধিতে পাক করিবে। ইহা সেবন করিলে শুক্রমেহাদি অনেকাপীড়ার শাস্তি হয়।

দেবদার্কাদ্যরিষ্টঃ।

ভূলার্দ্ধং দেবদার স্থাবাসায়া: পদবিংশতিঃ।
মঞ্জিটেন্দ্রখন দত্তী তগরং রক্তনীব্যম্॥
রাম্বা ক্রিমিয়ং মুন্তঞ্চ শিরীবং থদিরার্জ্নে।।
জাগান্ দশপলান্ দদাদ্ যবাঞ্চা বংসকন্স চ।
জাগানষ্টপলানেতানষ্ট জাণেংস্কসঃ পচেৎ॥
জোণগেষে করায়ে চ প্তেশতৈ প্রনাগরেৎ।
থাতক্যাঃ যেড়েশপলং মান্দ্রক্ত ভূলার্মম্॥
ব্যোবস্য বিপলং দন্তাৎ ক্রিজাতকচতুস্পলম্।
চতুস্পলং প্রিয়ন্তোন্ট বিপলং নাগকেশরম্॥
সর্ব্বাণ্যোতানি সঞ্জুর্গ বিভাগের নাগকেশরম্॥
সর্ব্বাণ্যানি সঞ্জুর্গ বিভাগের হস্তরম্॥
বাতরোগগ্রহণ্যশোন্তুক্তজ্ঞানি নাশ্যেৎ।
দেবদাব্যাদিকোহ্রিটো দক্তক্তগ্রিনাশনঃ॥

দেবদার /৬। পের, বাসকছাল /২॥ সের, মঞ্জিষ্ঠা, ইন্দ্রব, দস্তীমূল, তগরপাত্নকা, হরিদ্রা, দারুহহিদ্রা, রামা, বিড়ঙ্গ, মৃত্যা, শিরীষছাল, খদিরকার্চ, অর্জুনছাল প্রত্যেক /১। পের; যমানী, ইন্দ্রবন, রক্তচন্দন, গুলঞ্চ, কট্কী ও চিতামূল প্রত্যেক /১ সের, পাকার্থ জল ৫১২ সের, শেষ ৬৪ সের। পাকশেষে শীতল হইলে মধু ৩৭॥ সের এবং ধাইফুল /২ সের, ত্রিকটু /। পোরা, গুড়ুত্বক্, তেজপত্র, এলাইচ প্রত্যেক /॥ সের, বিশ্বস্থু /॥ সের, নাগেশ্বর /। পোরা, সম্নায় চূর্ণ করিয়া ঐ কাথে নিক্ষেপ করিবে এবং ঘতপাত্রে ১ এক মান রাখিবে। ইহা পান করিলে হল্ডর প্রমেহ, বাতরোগ,

গ্ৰহণী, অৰ্শঃ ও মৃত্ৰক্বচ্ছু প্ৰভৃতি বিৰিধ রোগের শাস্তি ংইয়া থাকে।

চন্দ্ৰাস্বঃ।

ठम्मनः वालकः मुखः शास्त्रात्रोः नीलम् ९ भलम् । विश्रक्र भग्नकः लाधः मक्षिष्ठाः त्रक्रान्मनम् ॥ পাঠাং কিরাততিক্তঞ্চ স্তগ্রোধং পিঞ্চলং শঠীম। প্পটিং মধুকং রাস্লাং পটোলং কাঞ্চনারকম। আত্রতঃ মোচরসং প্রচ্যেকং প্রমাত্রক্ষ। ধাতকীং বোড়শপলাং ক্রাক্ষায়াঃ পলবিংশতিম্ 🛭 জলদোণৰয়ে কিন্তু। শর্করায়ান্তলাং তথা। গুড়ভাৰ্মতুলাঞ্চাপি মাসং ভাগুে নিধাপয়েৎ । চন্দ্ৰাসৰ ইছে।ৰ গুজুমেহবিনাশন:। বলপুটকরো হত্যো বহিংসন্দীপন: পর: 1 গান্তারীফল. খেইচন্দন, বালা, মুতা, নীলোৎপল, প্রিয়স্থ্র, পন্মকান্ঠ, লোধ, মঞ্জিনা, রক্তচন্দ্র, আক্নাদি, চিরহা, বটছাল, অখথ-ছাল, শঠী, ক্ষেত্রপাপজা, ষষ্টিমধু, পটোলপত্ৰ, কাঞ্চনছাল, আমছাল ও মোচরস প্রত্যেক ১ পল ; ধাইফুল ১৬ পল, দ্রাক্ষা ২• পল, চিনি ১২॥০ সের ও গুড় /৬।০ সের এই সমুদায় ১২৮ সের জলে প্রবিমিশ্রিত করিয়া আরুত ভাণ্ডে এক মাস রাখিবে। পরে কন্ধ ভ্যান্স করিয়া দ্রখাংশ ছাকিয়া লইবে। এই চল্দনাসৰ জক্ৰমেহ-নিবালক, বলবৰ্দ্ধক, পুষ্টি-कत्र, शता ७ व्यधिमनीशक ।

লোপ্রাসবঃ।

লে.ধং শঠাং পুকরম্লমেলাং
মূর্বাং বিড়ঙ্গং ত্রিকলাং বমানাম্।
চবাং প্রিয়ঙ্গং ক্রমুকং বিশালাং
কিরাতভিক্তং কটুরোহিণিকে ।
ভাগীং নতং চিত্রকপিন্ধলীনাং
মূলং সকুঠাভিবিবং সপাঠম্।
কলিককান্ কেশরমিল্রসাহ্বান্
নথং সপত্রং মরিচা প্রবঞ্চ ॥
ভোগেছজাং কর্ষসমানি পজ্বা
প্তে চতুর্ভাগজলাবশেবে।
রসেহর্মভাগং মধুনং প্রদায়
পক্ষং নিধেয়ো মৃতভাজনকঃ ॥

লোগ্রাসবোহরং ককপিত্তমেহান্ কিপ্রং নিহস্তাদ্দিপলপ্রয়োগাং। পাত্বামরার্শাংক্তক্ষচিং গ্রহণ্যা দোবং কিলাসং বিধিবচচ কুষ্ঠম্॥

লোধ, শঠী, পুক্রম্ল (অভাবে কুড়), এলাইচ, মুর্বাম্ল, বিড়ঙ্গ, ত্রিফলা, বমানী, চৈ, প্রিয়ঙ্গ, স্থারি, রাথালশশা, চিরতা, কট্কী, বাম্নহাটী, তগরপাছকা, চিত্তামূল, পিপুল্মূল, কুড়, আতইচ, আক্নাদি, ইক্রম্ব, নাগকেশর, ইক্রম্ব, নথী, তেজপত্র, মরিচ ও কৈবর্জমুস্তক ২ তোলা পরিমাণে লইয়া ৬৪ সের জলে সিদ্ধ করম্ভ ১৬ সের অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া ছাঁকিয়া লইবে। পরে উহাতে /৮ সের মধু মিশ্রিত করিয়া স্বতভাণ্ডে এক পক্ষ রাথিবে। এই লোগ্রাস্ব প্রতিদিন হুই পল (ব্যবহার ২ তোলা) মাত্রায় সেবন করিলে কফপিত্ত-মেহ, পাণ্ড, অর্শঃ, অরুচি, গ্রহনীদোষ, কিলাদ ও নানা প্রকার কুষ্ঠ আশু প্রথমিত হয়।

অথ পথ্যাপথ্য-বিধিঃ।

প্রমেহরোগে পথ্যানি।

প্রাগ্লজ্যনানি ব্যনানি বিসেচনানি প্রোম্বর্তনানি শমনানি চ দীপকানি। নীবারক সুযব নৈণদকোরদৃষ-খামাৰজীৰ্বকুৰিক্ষুকুক্ক কি । গোধুমশালিকলমান্চিরজাঃ কুল্খা---मुक्तां एकी हशक गृष्ठ मा खिला 🗝 । লাজা: পুরাতনহুরামধ্বাট্যমণ্ড-স্তক্ষ রাসভজনং মহিবীজনক॥ লট্ৰপোত্ৰশতি জিরিলাববর্তি-ভূকৈণবৰ্ত্তকশুকাদিকজাকলাক। শেভাঞ্চনানি কুলকানি কঠিলকানি ককোটকানি ভলকানি চ বাৰ্গতানি॥ উড়ুম্বরাণি লঙনানি নবীনমোচং পত্ররগোক্রকমৃষিকপর্ণিশাকম্। মন্দারপত্রমমূভা ত্রিফলা কপিখং कपः कर्णक्रकमत्नार्थनकम्योजम् ।

পর্জ্জুরলাঙ্গলিকতালতর ন্ত্রমাঙ্গং
ব্যোবক তিন্দুককলং পদিরং কলিজঃ।
তিক্তানি চাপি সকলানি কবায়কানি
হস্ত্যম্ববাহনমতি ভ্রমণং রবিছিট্ ।
ব্যায়াম ইতাপি: গণো ভবতি প্রকামং
মিত্রং প্রমেহগদপী ভিত্যানবানাম ।

উপবাস, বমন, বিরেচন, উৎক্রেন, শুমন দ্ব্য, অগ্নিদীপকন্ত্ৰা, উড়ীধান্ত, কান্দ্নীধান্ত, ঘব, বাঁশের তপুল, কোলোধান্ত, স্থামাধান্ত, পুরাণ বোরোধান্ত ও পুরাতন মুকুল্কক (ষষ্টিক-ধান্ত বিশেষ), পুরাতন গোধুম এবং শালি ও কলমাধান্তের তণ্ডুল; কুলখকলায়, মুগ, অভ্হর ও ছোলার যুষ, মাংসরস, তিল, থৈ, পুরাতন মুরা, পুরাতন মধু, যবসণ্ড, ভক্র, গর্দভমুত্র, মহিষ্মত্র. গ্রামচেটক. পায়বা. তিন্তিরি, লাব, ময়র, ভৃঙ্গ, এণ, বর্ত্তক •ও শুক প্রভৃতি জাঙ্গল মাংস, শজিনা, পটোল, করলা, কাক্রোশ, তাল, বুহতীফল, যজ্ঞদুরু, রগুন, নুতন মোচা, শালিঞ্গাক, গোক্ষুর, ইন্দর্কাণি পালিধামান্দারের পাতা, ত্রিফলা, কয়েৎবেল, জামফল, কেশুর, পদ্ম এবং उर्भातत कन ଓ वीक, शर्क्त, नेन्नाकना, তালমাতী, ত্রিকটু, গাব, খদির, ইন্দ্রবর, সকল

প্রকার তিক্ত ও ক্যায়ন্তব্য, হস্তী ও অধবাহনে অত্যন্ত ভ্রমণ, রৌদ্রদেবন ও ব্যায়াম, এই সমস্ত প্রমেহরোগে স্থপগু।

প্রমেহরোগেইপথ্যানি।

মূত্ৰেগং ধ্মপানং বেদং শোণিত মোক্ষণম্।
সনাসনং দিধানিক্সাং নৰাশ্ল'নি দধীনি চ।
আনুপ্ৰমাংসং নিজ্পানং পিষ্টাশ্লানি চ মেপুন্ন্।
সোবী বকং হ্বরাং শুক্তং তৈলং ক্ষীরং ঘৃতং গুড়ম্।
তুষীং তালাত্তিমক্জানং বিক্লশ্বগণানি চ।
কুমাণ্ডমিক্ষং ছষ্টাৰু কাক্ষলবণানি চ।
অভিযালৈ চ যাজন প্রমেহী পরিবর্জকেং।

মৃত্রবেগধারণ, ধ্মপান, স্বেদ, রক্তমোকণ, দর্মদা উপবেশন, হিবানিদ্রা, নৃত্তন চাউলের অল্ল, দধি, অনুপদেশক মৃগপক্ষী প্রাভৃতির মাংদ, শিম, পিষ্টাল্ল, মৈথুন, সৌবীর, স্থরা, শুক্ত, তৈল, হগ্ম, স্থত, গুড়, লাউ, তালআটির শাস, বিরুদ্ধভোজন, কুম্ডা, ইক্লু, দৃষিত জ্বল, মধুরদ্রব্য, অল্লদ্রব্য, লবণদ্রব্য ও অভিযানিদ্রব্য প্রমহরোগে অতি যত্তের সহিত পরিত্যাগ করিবে।

ইত্যায়র্কেদ-সংগ্রহে প্রমেহরোগাধিকারঃ।

অথ দোমরোগাধিকারঃ।

অথ দোমরোগ-নিদানম্।

ত্রীণামতিপ্রসঙ্গাদ্ধা শোকাদাপি শ্রমানপি।
আভিচারিকদোবাচ্চ:গরদোবাৎ তথৈব চ।
আপ: সর্বলরীরেন্ডা: কুজান্তি প্রস্রবন্তি চ।
তন্মাৎ তা: প্রচাতা: স্থানামূত্রমার্গ: ব্রজন্তি চ।
প্রসন্না বিমলা: শীতা নির্গনা নীক্ষজ: সিভা:।
শ্রবন্তি চাতিমাত্রভন্তীদোর্বনাং গতিহীনতা।
শিরস: শিথিলয়ক মুখতাল্বিশোষণম।
দোমরোগ ইতি প্রেয়ো দেহে সোমক্ষামূণাম্।

অধিক স্ত্রীসঙ্গম, শোক, অতিরিক্ত পরি-শ্রম, আজিচারিক দোষ অথবা বিষদোষ-প্রযুক্ত সর্বদেহত্ব অলপদার্থ বিক্কত ও স্থান-চ্যুত হইয়া মুত্রমার্গে উপস্থিত হয়। ঐ সমস্ত জ্বল মুত্ররূপে পরিণত হইয়া মৃত্রপথ দিয়া অত্যস্ত অধিক পরিমাণে নির্গত হইয়া যায়, উহা প্রসয়, নির্মান, শাতল, শুদ্র ও গন্ধরহিত। উছার নির্গমকালে কোন প্রকার যাতনা অমুভূত হয় না, কিন্তু নিতান্ত হৰ্কল চা, গতি-শক্তিরাহিত্য, মস্তকের শিথিণতা, মুখ ও তালুর শোষ এই সমুনায় লক্ষণ উপস্থিত হয়। এই রোগে দেহে সোমগুণের ক্ষয় (যুত্তাতিসার দোমরোগ। নাম ইহার রোগও এই প্রকার, তাহাতে অত্যস্ত বলক্ষয় ও প্ৰবল তৃষ্ণা হওয়াতে অধিক জলপান করিতে হয়।)

কার্লাং বেনে হিক্সান্ধ: করপদরসনানেত্রকর্ণোপদাং: কাস: শৈখিলামক্ষেহকটিরপি পিড়কা-কণ্ঠতাবোর্টশোব:। দাহ: শীতপ্রিয়ত্বং ধ্বলিমতমুতা আন্ততা পীতমূত্রং মৃত্রন্থা মাক্ষিকাম্ভান্তিরমপি বহুমূত্রাধ্যরোগে প্রবৃত্তে।

বছমূআখ্য রোগ প্রবৃদ্ধ হইলে, দেহের কুশতা, ঘর্মা, অব্দে গদ্ধ এবং হস্ত পদ দিহবা নেত্র ও কর্ণে উপতাপ, কাদ, অব্দের শিথি-শতা, অরুচি, পিড়কা, কণ্ঠ তাদু ও ওঠশোষ, দ্বাহ্য, শীতদেচ্ছা, পাণ্ড্রর্ণতা, প্রান্তম্ব, পীত- মূত্রতা ও মূত্রে মক্ষিকাদির উপবেশন, এই সকল লক্ষণ প্রকাশ পার।

অথ সোমরোগ-চিকিৎসা।

- (+)----

ক্ষলীনাং কলং পকং ধাত্রীকলরসং মধু। দক্রাপরসা পীতমপাং ধারণমূভ্যম্॥

পক কদলীফল ১টা, আমলকীর রস ১ তোলা, মধু ৪ মাধা, চি.ন ৪ মাধা ও তথ একপোয়া এই সমুদায় একত্র ভক্ষণ করিলে দোমরোগের উপশম হয়।

कननीनाः कलः शकः विनातीक गठावतीम् । कीद्रत शास्त्रस्थ शास्त्रभाः शास्त्रमम् ॥

পক কদলীফল, ভূমিকুছাও ও শতমূলী সমান ভাগে একতা করিয়া ছথেরে সহিত প্রোতঃকালে পান করিলে মৃত্যাধিকা নিবারণ হয়।

ধাত্রীক্সপ্ত রসকং মধুনা চ পিবেৎ সদা। বছমুত্রকরং কুষ্যাৎ কারেণ বাসকস্ত চ।

প্রত্যন্থ মধুর সহিত আমলকীর রদ, অথবা যবক্ষারের সৈহিত বাদকের রদ পান করিলে।বহুমূত্র নিবারণ হয়।

তালৰুলক তরুণং খর্জ্বং কলনীফলম্। পরসা পাররেৎ প্রাতমু ত্রাতীসারনাশনম্।

ছোট তাল বা খেছুর গাছের মূল এবং কংলী ফল হথেরে সহিত প্রাতঃকালে ভক্ষং করিলে মুত্রাতিসার নিবারণ হয়।

মাৰচূৰ্ণং সমধুকং বিদারী শর্করা মধু। পল্লনা পারয়েৎ প্রাতঃ সোমরোগবিনাশনম্।

মাৰকলাই চূৰ্ণ, ষষ্টিমধু, ভূমিকুদ্মাণ্ড, চিনি ও মধু এই সম্দাৰ প্ৰাতে ছথেবে সহিত সেবন ক্ষিলে সোমবোগ নই হয়।

সোমরোগাধিকারঃ।

जिक्लामियां १३।

ত্রিক্লাবেপুগত্রাধ-পাঠামধ্যুতৈঃ কৃতঃ।
কুন্তবোনিরিবাস্তোধিং বহুমূত্রন্ত শোষয়েং॥
ত্রিক্লা, বাশপাতা, মূতা ও আক্নাদি,
ইহাদের কাথ মধু ও গ্রত সংস্কু করিয়া পান
করিলে বহুমূত্র নিবারিত হয়।

র**স**প্রয়োগঃ।

ভারকেশ্বরে! রসঃ।

মৃতক্তালগন্ধক মন্ধ্যেলগুনা দিনম্।
তারকেবরনামারং গ্রুনানন্দভাগিতঃ ॥
মাধ্যালং ভজেৎ কৌজৈব ও্যুত্রপ্রশান্তরে।
উদ্ধানকলং পকং চুর্ণিতং ক্যাত্রকম্।
সংলিজালগুনা সান্ধ্যমপ্রশান্ত প্রশান্তর একতা মধুর
সহিত একদিন মন্ধ্যম করিয়া ১ মাধা পরিমিত
বটা প্রস্থাত করিবে। ইহা মধু সহা সেবা।
উন্ধানেবনান্তে পক ব্রুভুমুব ফলচুর্গ ২ ভোলা
মধুর সহিত সেবন কাবতে দিবে। ইহাতে
বৃত্যুত্র রোগ বিন্ত ওয়া

তারকেখনো রসঃ।

(বিতীয় প্রকারঃ)

মতং পূতং মৃতং লৌহং মৃতং বক্সজিকং সমম্।
মন্দ্রেম্যধুনা চাহো রসোচয়ং তারকেশরঃ
মাধ্যাজং লিহেৎ ক্ষোলৈপহ্সুরাপন্তরে।
ওড়ুশ্বরং প্রকলাং চুর্নিতং মধুনা লিহেং॥

রসদিন্ত্র, লৌহ, বঙ্গ ও অত্র প্রত্যেক সন্ভাগে মধুর সহিত ১ দিবদ মদ্দন করিয়া এক মাধা প্রিমিত বটকা করিবে। ইহা মধুর সহিত সেবন করিয়া পশ্চাৎ পক যজ্জ-দুমর ফল চুর্ণ মধুর সহিত লেহন করিবে।

তালকেখনে রসঃ।

তালং স্তং সমং গন্ধং মৃতলৌহাজবন্ধ। মৃদ্ধিরেরধুনা চৈব রসোহয়ং ভালকেশ্রঃ । মাৰমাত্ৰং ভজেং কৌটোৰ্বছম্ তাপ্ৰশান্তয়ে।
উদ্প্ৰকলন পৰং চুৰ্ণিতং কৰ্মানতঃ।
সংলেহং মধুনা সাৰ্কমনুপানং হুপাৰহম ॥
হবিতাল, পাবদ, গান্ধক, জাবিত লোহ,
অল ও বঙ্গ এই সকল দ্ৰব্য সমভাগে মধুতে
মাড়িয়া > মাথা পরিমিত বটা প্রস্তুত করিবে।
অনুপান—মধু অগ্বা পক উড়াম্বকল-চুর্ণ ২
তোলা ও মধু। ইহাতে বহুমূত্র বিনষ্ট হয়।

গগনাদি লোহম।

গগনং ত্রিফলা লোহং কুটজং কটুকজয়ন্। পারদং গন্ধকথ্যের বিষ্ট্রস্থানতি কাং॥ স্বগেলা তেজপত্রাপ্ত বঙ্গং জীরকমুমাকন্। এখানি সমভাগানি গ্রুচগানি কাবয়েও॥ তদ্ধিং চিণ্ডকং চুণ্ড ক্ষেকং মধুনা লিছেও। এবছাং বিনিস্ত্যুত্ত মুক্তাভিসারসোমকন্॥

অল, ত্রিফলা, লোহ, কুড্চি, ত্রিকটু, পাবদ, গৰুক, বিষ, সোহাগা, সাচিক্ষার, দারুচিনি, এলাইচ, তেজপত্র, বঙ্গ, জীরা ও কুষ্ণজীরা এই সকল দ্রবা সমভাগে চুর্ণ কারিরা ভাহাকে। তদল চিতা চুর্ণ মিশ্রিত করিবে। পরিমাণ ২ লোল। অনুপান—মধু। ইহাতে মুত্রাভিদাব ও সোমরোগ আশু প্রশ্-মিত হইয়া থাকে।

হেমনাথরসঃ।

পতং গন্ধং হেন তাপাং প্রত্যেকং কোলস্থিতিম্।
অফলন্তাং প্রবালক বঙ্গগান্ধং বিনিক্ষিপেও।
ফণিফেনজা তোরেন কদলীকুখনেন চ।
ভিচ্নুখররনেনাপি সপ্তথা পরিমন্ধিরেও।
বন্ধনাতাং বটাং থাদেদ্ বথাবাবিজ্পানত।
প্রমেহান্ বিংশতিং হন্তি বহুমত্রং স্কুদ'রুশ্ম্॥
সোমরোগং করকৈব খাসং কাসমুরংক্তম্।
চেমন্থরসো নামা কুক্ষাত্রেবে ভাষিতঃ॥

রদ, গন্ধক, স্বর্ণ ও স্বর্ণমাক্ষিক প্রত্যেক ১ তোলা, লৌহ, কপূব, প্রবাল ও বঙ্গ প্রত্যেক॥• অর্দ্ধ ভোলা। আফিঙের জলে, মোচার রসে এবং যজ্জভূমুরের রসে প্রত্যেকে ৭ বার করিয়া ভাবনা দিয়া ৩ রতি প্রমাণ বটকা করিবে। রোগ বিবেচনা করিয়া অমুপান ব্যবস্থা করিবে। ইহা সেবনে সকল প্রকার প্রমেহ, বহুমূত্র ও সোমরোগ প্রভৃতি বিবিধ প্রীভার শান্তি হয়।

সোমনাথরসঃ।

কৰ্ম জারিতলোহক তদকিং রসগন্ধকম্।
এলা পত্রং নিশাযুগাং জন্ম্বীরণগোক্রম্॥
বিভূকং জীরকং পাঠ। ধাত্রী দাড়িমটকণম্।
চন্দনং গুল গুলু-লোগ্র-শাল/জ্জনরসাপ্তনম্॥
ছাগীছকোন বিটকাং কারয়েদ্ দশরক্তিকাম্।
নিশিতো নিত্যনাথেন সোমনাথরসন্থয়ম্।
সোমরোগং বছবিধং প্রদরং হস্তি চুর্জ্ঞয়ম্।
যোনিশ্রং মেচ্শুলং সর্বজং চিরকালজম্।
বছমুত্রং বিশেষেণ ছুর্জ্ঞয়ং হস্তাসংশয়ম্॥

কারিত লৌহ ২ তোলা, পারদ, গন্ধক, এলাইচ, তেজপত্র, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, জাম, বেণার মূল, গোক্ষ্র, বিড়ন্স, জীরা, আক্-নাদি, আমলকী, দা,ড়ম, সোহাগা, চন্দন, গুগ্ওলু, লোধ, শাল, অর্জুন ও রসাঞ্জন প্রত্যেক ১ তোলা। এই সকল দ্রব্য ছাগ-ছুগ্নে পেষণ করিয়া ১০ রতি (ব্যবহার ২০ রতি) পরিমিত বটা প্রস্তুত্ত করিবে। ইহাতে সোমরোগ, হুজ্লর প্রদর, যোনিশূল, মেচ-শূল এবং বহুমূত্র নিবারিত হয়।

সোমেশ্বরো রসঃ।

শালার্জ্কনং লোএকঞ্চ কদৰাগুরুচন্দনন্।
অগ্নিমন্থং নিশাযুগ্যং ধাত্রীদাড়িমগোক্ষ্রন্॥
অস্থ্রীরণমূলঞ্চ ভাগনেষাং পলার্জকন্।
রসগন্ধকধান্তান্দনেলা পত্রং তথাক্রকন্।
অত্যেকং পলিকং ভাগং পলার্জং গুলারপি॥
যুতেন বটিকাং কৃষা ধাদেং বোড়শরক্তিকান্।
গছনানন্দনাধেন রসো যত্নেনা নির্মিতঃ॥
সোমের্বার্ম মহাতেজাঃ সোমরোগং নিহস্তালন্।
একজং বন্দ্রক্তিকং কামলাঞ্চ হলীমকন্।
ভগন্বোগাতং মৃত্রক্তিং কামলাঞ্চ হলীমকন্।
ভগন্বোগাতংশ্য চ বিবিধান্ পিড়কারণান্।
বিক্ষোটার্ক্রক্তিং কামলাঞ্চ হলীমকন্।

শালবুক্ষের সার, অৰ্জ্জনছাৰ, লোধ. কদম, অগুরু, চন্দন, গণিয়ারী, হরিদ্রা, দারু হরিদ্রা, আমলকী, দাড়িম, গোক্ষর, জান, বেপার মূল ও গুগ্গুলু প্রত্যেক অর্দ্ধ পল। পারদ, গন্ধক, ধনে, মুতা, এলাইচ, তেজপত্র, অভ্র, লৌহ, রসাঞ্জন, আক্নাদি, বিড়ঙ্গ, সোহাগা ও জীরে ইহাদের প্রত্যেকের ১ পল (৮ ভোলা); ম্বভের সহিত মর্দ্দন করিয়া ১৬ রতি (বাবহার ২।৩ রতি) পরিমিত বটা প্রস্তুকরিবে। গ্ৰনানন্দ অতি যত্ত্বে এই সোমেশ্বর রস প্রস্তুত করিয়াছেন। ইহাতে সোমরোগ অবশু বিনষ্ট হয় এবং মুত্রাঘাত, মৃত্রক্ষন্তু, ভগন্সর, উপদংশ ও সর্ব্ব প্রকার মেহ প্রভাত রোগ নিবারিত হয়।

বস্তকু ক্রমাকরে। রসঃ।
বৈজ্ঞান্ত চ ভাগৈকং বিভাগং তেমভন্মন:।
অত্রকস্য চ ভাগে বৌ মুক্ত!বিক্রময়োত্তথা ॥
বঙ্গভাগ ভাগে তৌ মুক্ত!বিক্রময়োত্তথা ॥
বঙ্গভাগ ভাগান্চ সর্কমেক এ মর্লিভ্র ॥
ভগারান্তিল্ট পোহ্নিক্রশীরে ভববারিভিঃ।
ব্রন্থবিক্রিক্রনীরে: সপ্তথা ভাবরেৎ পূথক ॥
ভগারতো রসরাজ ভাগ্র বসন্তক্তমাকরঃ।
বংগ্রেস্থ মধুনা লীড়া সোমরোগং ক্রমাকরঃ।
ব্র্ন্থভাসারং নেহাশ্রু মুক্তাবাভাগ্রাক্রজন্।
তৃক্ষাকাহ ভালুশোবং নাশয়েল্লান্ত সংলয়ঃ॥
বলাঃ পৃষ্টিকরো সুষ্টাং সর্বনোগনিবহণঃ।
হস্ত্যজীণং জয়ং শাসং ক্ররোগং কৃশাক্রভাম্॥
নাতঃ পরতরং কিঞ্জিদায়নমিহেয়তে॥

বৈক্রান্ত ১ ভাগ , স্বর্ণ, অভ্র, মুক্তা ও প্রবাল প্রত্যেক ২ ভাগ, বঙ্গ ও ভাগ, রস-সিন্দুর ৪ ভাগ ; এই সমুদায় গোঁড়ালেবুর রসে, গবাছত্বে, বেণার মূলের কাথে, বাসকছাল ও ইক্ষুর রসে ৭ বার করিয়া ভাবনা দিয়া ও রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। মধু সহ সেব্য। ইহা দারা পোনরোগ, মুক্তাভীসার, প্রমেহ, মুক্তাঘাত, অশ্যরী ও দাহ প্রভৃতি বিবিধ রোগ বিনষ্ট এবং :বল পুষ্টি ও বীধ্য বার্দ্ধত হয়। ইহা উৎকৃষ্ট রসায়ন ঔষধ।

সল্লধাত্রীঘু ভম্।

বিনা কৰুং স্বরধাত্রী-যুতমেতল্লিগস্ততে। সর্বাং তুলাং গুণৈরেব পথ্যাপথ্যং তদেব হি ॥

পশ্চান্ধিথিত বৃহদ্ধাত্রীঘ্বত বিনা কব্কে পাক করিলে তাহাকে স্বল্গ পাত্রীঘ্বত বলা যায়। ইহার গুণ ও পথ্যাপথ্য সমস্তই বৃহদ্ধাত্রী-ঘ্যতের তুল্য

রহদ্ধাত্রীয়তম্।

ধাত্রীফলরসপ্রস্থং বিদারীস্বরসং তথা। ক্ষীরক্তাপি শতাবর্যাঃ প্রস্তুং প্রস্থা চ 1 তৃণপঞ্চরসপ্রস্থং দহা প্রসং মৃতস্য চ। পচেনা, দুগ্রিনা বৈজ্যঃ পাকং জ্ঞাতা বিধানত: । ণলালব**ন্ধ ত্রিফলা-কপিথ**ফলমের চ। সঞ্জং সরলং মাংসী কদলীকন্দমেব চ **উৎপলস্য চ कन्नानि कबः पश्चा दिहक्म**ीः। ততঃ কলং পরিস্থাব্য চর্ণং দত্যাৎ পলং পলম। মধুকং ত্রিবৃতা চৈব ক্ষারকং বৃদ্ধদারকম্। শকরায়াঃ পলাস্তটো মধুনন্চ পলান্তকম্ ॥ চুৰ্ণ দ্বা সুম্বিতং বিশ্বভাণ্ডে নিধাপয়েং। সোমরোগং নিহন্তাতি ভকাং দাহ্মরোচকম। মুত্রাবাতং মৃত্রু ছেং নাশয়েদ্ বহু মৃত্রু । পিওজান বিবিধান বাাধীন বাতজাংশ্চ হুদাকণান্। করোতি শুক্রোপচয়ং বলবর্ণকরং পরম। নানারপবিকারত্বং বিশেষাদ্ বহমূত্রহং।

মৃত /৪ সের। আমলকীর রস /৪ সের। স্বেরসাভাবে কাগ—যথা আমলকী /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ /৪ সের,), ভূমিকুমাও-রস /৪ সের, শতমূলীরস /৪ সের, ছগ্ন /৪ সের, ভূপপঞ্মূলের কাথ /৪ সের। ককার্থ—এলাইচ, লবক্ষ, ত্রিফলা, কয়েংবেল, বালা, সরলকান্ঠ, জটামাংসী, কদলীমূল ও স্থানির পাক করিয়া করু সকল ছাকিয়া ফেলিয়া দিবে। পরে মৃষ্টিমধু, ভেউড়ী, যবকার, বিশ্বড়ক মূল, প্রত্যেক চূর্ণ ১ পল, চিনি ৮ পল প্রক্ষেপ দিবে। শীতল ছইলে মধু ৮ পল মিশ্রিত

করিয়া সিগ্ধ ভাণ্ডে রাখিবে। ইহা সেবন করিবে সোমরোগ, ভৃষ্ণা, দাহ, মুত্রাঘাত, মুত্রকুদ্ভু, বহুমূত্র প্রভৃতি নানা পীড়ার উপশম হয়।

কদল্যাদি মৃত্য।

কদলীকন্দনিয়াসে তৎপ্রস্থাকুলাং পচেং।
চঙ্গাগাবশেবেংশ্মিন্ যুতপ্রস্থং বিপাচরেং।
চন্দনং সরলং মাংসী কদলীমূলকং তথা।
গলা লবকং ক্রিফলা কপিথফলমের চ॥
উদকানি চ কন্দানি স্থাপ্রাধাদিগণভ্ষা।
কন্দোনেন সংসিদ্ধং সোনরোগনিবারণম॥
মৃত্রোগানশেষাংশচ প্রভূতান্ গুক্রপিচ্ছিলান্।
প্রমহান্ বিংশতিকৈর মৃত্রায়াতাংশ্রমোদশ॥
বহ্মকং বিধেবের মৃত্রক্তেইং তপ্যশ্মরীম্।
পিতিং সূতং নিহস্ত্যাশ্র বিশ্বনা প্রিকান্তিক্ম॥
কনলাদিসূতং নাম বিশ্বনা প্রিকান্তিক্ম॥

ঘত /৪ সের। কদলী পুষ্প (মোচা) ১০০ পল পাকার্থ—কদলী মলের রস ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। কল্পার্থ—র**ক্তচন্দন**, मत्रकाष्ठे, कृष्टीभाः भी, कृष्णीभून, লবঙ্গ, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, কয়েৎ-বেল, পদ্মমূল, কেণ্ডর মূল, নীলোৎপল মূল পানিফল মূল, जाःशाधामि গণ অর্থাৎ বট, যজ্ঞভুমুর, অখ্বল, পিয়াল, পাকুড়, বেতস, আম, বড় জাম, কুদে জাম, কুল, মৌল, গাব, অর্জুন, ঢোরপত্র, কট্কী, কদম্ব, পলাশ, যষ্টিমধু, আমড়া, কোশাল, তেজপাতা, শল্লক, লোদ, সাবরলোধ, ভেলা ও নন্দীবৃক্ষ প্রভাক ২ ভোলা। যথাবিধি পাক করিয়া সোমধ্যোগ, এই দ্বত পান করিলে প্রকার মূত্ররোগ ও অশারী প্রভৃতি নানারকম পীড়াব নিবৃত্তি হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

সোমরোগের **পথা**পিথ্য প্র**মেহরোগের** গ্রায় জানিবে।

ইত্যায়ুর্বেদ-সংগ্রহে সোমরোগাধিকার:।

অথ প্রমেহপিড়কাধিকারঃ।

অথ প্রমেহপিড়কালকণম্।

শরাবিকা কচ্ছপিকা জা, নিনী বিনতালজী।
মস্থারিকা সর্বপিকা পুত্রিনী সরিদারিকা ॥
বিদ্রাধিশ্চতি পিড়কাঃ প্রমেহাপেক্ষয়া দশ।
সন্ধিমম্মপ্র জায়ন্তে মাংসলেবু ৮ ধামস্থ ।
অন্তেম্বতা তু তদ্রপা নিম্নমধ্যা শরাবিকা।
সৌরস্বপসংস্থানা তেৎপ্রমাণা ৮ সর্বপী ॥
সদাহা কুর্মসংস্থানা তেরো কচ্ছপিকা বৃধৈঃ।
জানিনী তারদাহা তু মাংসজালসমাবতা ॥
অবগাঢ়ক্ষজা ক্রেদা পুঠে বাপুদ্রেহপি বা।
মহতী পিড়কা নীলা বিনতা নাম সা স্মৃতা ॥
মহতাল্লচিতা জ্বেয়া পিড়কা চাপি পুতিণা।
মহ্বাকৃতিসংস্থানা বিজ্ঞেয়। তু মস্বিকা ॥
রক্তাসিতা ফেট্টিতা দাক্ষণা বলজা তবেহ।
বিদারাক্ষণবহু ওা কঠিনা চ বিদারিকা।
বিজ্ঞেল ক্ষণেযুক্তা জেয়া বিদাধিকা তু সা॥

প্রমেহরোগ উপেক্ষিত হটলে শরাবিকা, কচ্ছপিকা, জালিনী, বিনতা, অলজী, নস্থ-রিকা, সর্বপিকা, পুত্রিণী, বিদাবিকা ও বিদ্রধি এই দশবিধ পিড়কা জন্মিয়া থাকে। প্রত্যে-কের লক্ষণ ক্রমশঃ লিখিত হইতেছে।

শরাবিকা। প্রাস্তভাগে উন্নত ও নধা-ভাগে নিন্ন শরাবাকতি যে পিড্কা উৎপন্ন হর, ভাহাকে শরাবিকা কহে। ইহা সন্ধিস্থলে, মশ্মস্থানে ও মাংসক্ষানে জনিয়া থাকে।

কচ্ছপিকা। কচ্চপের স্থায় আক্তৃতি-বিশিষ্ট ও দাহমুক্ত যে।পিড়কা, তাহাকে কচ্ছ-পিকা কহে।

জালিনী। তীব্ৰদাহণক্ত ও মাংসজাল-ব্যাপ্ত যে পিঙ্কা, ভাহাকে জালিনী কহে।

বিনতা। প্রষ্ঠে বা উদরে উৎপন্ন, অত্যন্ত বদনা ও ক্লেদ বিশিষ্ট, নুহদাকার, নীলবর্ণ যে পিড়কা জন্মে, তাহাকে বিনতা কছে।

অলজী। রংক বা ক্বশুবর্ণ, স্ফোটক-াাপ্ত ও অতি ক্লেশদায়ক যে পিড়কা. ভাহাকে অলজী কহে। মস্রিকা। মস্তর কলাইয়ের স্থায় আক্বৃতি ও পরিমাণ বিশিষ্ট পিড়কাকে মস্রিকা কছে। সর্বপিকা। শ্বেত সর্বপের স্থায় আকৃতি ও পরিমাণ বিশিষ্ট পিড়কাকে সর্বপিকা কছে। পুত্রিনী। অতি স্ক্র স্ক্র ক্ষোটকাবৃত বহুদাকার পিড়কাকে প্রতিনী কছে।

বিদারিকা। ভূমিকুম্মাণ্ড-কল্পের স্থায় গোলাকার ও কঠিন পিড়কাকে বিদারিকা কহে।

বৈদ্রধি। বিদ্রধির লক্ষণ জ্ঞাস্ক পিড়-কাকে বিদ্রধি কংখা (বিদ্রধির লক্ষণ অক্সত্র বিশিত হইবে।)

অথ প্রমেহপিড়কা-চিকিৎসা।

শরাবিকাতাঃ পিডকাঃ সাধ্যেচ্ছাথবদ্ ভিষক্।
পকান্চিকিৎসেদ্ এগবং তাসাং পদেন প্রশান্ততে ॥
কাপং বনস্পতেবান্তং নৃত্রক বিগরোপান্য ॥
গুরাগ্রধাদনা কুষাহে কাথমুগুতনানি চান।
শালসারাদিসেকক ভোজ্যাদি চাকণাদিনা॥
কোনীবারকং প্রবাং শুক্তং তৈলং ক্ষীরং যুতং শুড়ম্।
শংক্রম্প্রসাপতার নৃপ্নাং সানি বহুবেং ॥

ক্ৰমুৎসাদনায় চ হতি কুলতে পাঠে। উৎসাদনং
নিয়এগতোলতিকরণম। ১৮২য়াদনে পেকুমাবস্থামাবস্থাদিনৈবাৎসাদনমিতি কুলং।

প্রমেহরোগোৎপন্ন শরাবিকাদি পিড়কায়
ব্রণ-শোধবৎ চিকিৎনা করিবে, কিন্তু পিড়কা
পাকিলে ব্রণবৎ চিকিৎনা করিতে হইবে।
বটাদের কাপ ও ছাগমূত্র পান কারতে দিবে।
স্ফলতোক্ত এলাদিগণের কাথ ও কক্ষ পারা
সাধিত তৈল ব্রপরোপণার্থ প্রয়োগ করিবে।
স্ফলতাক্ত আর্গনাদির কাথ উপর্ত্তনার্থ
(উৎসাদনার্থ নিম্নব্রণের উন্নতি করণার্থ) ব্যবস্থা
করিবে। শালসারাাদগণ ধারা পার্বেক দিবে

এবং পিপ্ললা দিগণ সাধিত আহার প্রদান করিবে। প্রমেহ পিড়কাগ্রস্ত রোগী কাঁজি, স্বরা, শুক্তা, তেলা, তুগ্ধ, স্বতা, গুড়া, অস্ক্লা, ইক্ষুনস, পিষ্টক এবং আনুপ্রমাণস ত্যাগ করিবে।

পিডকালেপঃ।

কীরমৌড মুধ্বং শতাদাকুচং বা প্রযোজয়েৎ। পিডকাস সমস্তাম লেপনং সংপ্রশান্তয়ে।

যজ্জুমুরের আঠা দারা অথবা সোমরাজী বীজ বাটিয়া প্রলেপ দিলে সর্ব্বপ্রকার পিড়কা প্রশমিত হয়।

অনস্তাং শারিবাং ক্র'কাং ত্রিত্ তাং শ্বর্ণপত্রিকাম্। কট্বীং তরীতকাং বাসাং পিচুমন্দর নিশার্গম্। নীজং গোক্ষুরজঞ্চাল কাথফিয়া জলং পিবেং। নাশং যান্তি জমেতেগে। অনেন পিড়কা ক্রম্।

অনস্তম্ব, গ্রামাণত, দ্রাফান তেওঁওঁ, সোণামুখী, কট্কী, হবীতকী, বাসকভাল, নিমছাল, হরিদ্রা, দারংহবিদ্রা ও গোলুববীজ ইহাদের কাথ পান করিলে প্রমেহঞ্জ পিড়কা সকলের শাস্তি হয়।

মূলাপণা গ্ৰহণণী ত্ৰিবলাৱধ্বং শটা।
বৃদ্ধনাৱকণীজক নালিবেলা হ্যাতকা ॥
শ্যামানস্তা দেবপুপা'মণ্ডবাং সাধ্যাধিত।
কাৰো হলাৎ প্ৰমেহোখাল পিড়কাং কিপ্ৰমেব হি ॥
মুগানা, মাযাণী, তেউড়া, সোনদাল, শটা,
বৈশ্বড়ক বাজ, নালিমূল, এলাইচ, হ্যাতকী,
শ্যামালতা, অনস্তমূল ও লবক ইহাদের কাথ পান
করিলে প্রমেহপিড়কা সকলেব শাস্তি হয়।

পাঠাদ্যং চূর্ব্।

পাঠাচিত্রকশাঙ্গ প্রিঃ শারিবা কটকাবিকা। সপ্তাহ্বং কৌটজং মূলং সোমবন্ধং নৃপক্ষম। সংচূর্ণ্য মধুনা লিহাৎ তন্ধচূর্ণং নবায়সম্।

আক্নাদি, চিতামূল, করঞ্জ, অনস্তমূল, কণ্টকারী, ছাতিমছাল, কুড়্চিমূল, খেতথাদর ও সোন্দাল, হহাদে ম চূর্ণ কিংবা পাণ্ড্রোগোক্ত নবায়সচূর্ণ মধু সহ সেবন করিবে।

শারিবাদি লেভ্য।

শারিবা নীলিনা রামা ওড়ঃচোলা চ চিত্রকঃ। মাণশ্রণশন্ধিগুলিবুদ্ভলাতকাতয়ঃ॥ এভিযু তময়ো হন্তি প্রণেচনি চুকা দশ। বাতরক্তং বড়শাংসি ২গ্রান্দ্রিবানানি॥

অনস্তম্ল, নীলম্ল, বাস্না, গুলঞ্চ, এলাইচ, চিতাম্ল, মাণ, ওল, চেবিকাচ্কী, তেউড়ী, ভেলা ও হবীতকী, এই সমুদায় সমভাগ, সমষ্টির সমান লোহ। সমুদায় একত্র মন্দন করিয়া লইবে। মাত্রা—৮ রতি। ইহা সেবন করিলে প্রমেহ-াপড়কা, বাতরক্ত, অর্শঃ ও অ্গ্রত পাঁড়া সমস্তাবনস্থ হয়।

যক্রপ্রজরসঃ।

সিন্দুরং তেম প্রেইক দেবপুপাং সচ প্রকম্।
জাতীফলং মগমনদৈবনা প্রিমর্করে ॥
পণাস্থমা এতঃ বুখাদ্ বটিকাং বল্পসামিতাম্।
সেবিতন্থগপ্রদা প্রেইন স্তথ্যন্ গদান্।
ক্রোং ধাঙুক্ষন বাসে ভার্কি বিষমং জ্বস্থা
রসোহয়ং ক্রায়ং হ্রামকরক্রসংক্তকঃ॥

রস্মিদর, খণ, .লংহ, লবন্ধ, কপুর, জায়ফল ও সুগনাভি. এই সমুদায় সমান ভাগে লইয়া গানের বদ দিয়া মাড়িয়া ২ রতি প্রমান বিচিকা করিবে। ছাগছথ্যেব সাহত সেবনায়। ইহা সেবন করিলে প্রমেহ, প্রমেহজাত পিড়কা, .কবা, গাহুক্ষয়, কাদ এবং জীল ও বিষম্ভব উপশ্যত হয়।

বৃহ্চ্যামায়তম্।

শামো বরা বলা বলা বলং বিদ্যো ল'লম্থপলম্।

অস্ত্রপ্ত মধুকনথগলা শানাবরী ।

অস্ত্রমালা হারতে ধে মঞ্জিই। চলনাবয়ন্।

আক্ষা প্রদাবলাগুলাং সবিখা কচুবোহিলা ।

আবাং কর্মানে পালায় চপ্রস্থ পাচেদ্ ভিষক্।

শামালাক্যবলিগুলাং বিদ্যোগ্র ক্ষমং তথা ।

ভাগাপিয়াক তত্ত্লাং করা মন্দেন বাহ্না।

সিদ্ধান্ত ভূবাং করা মন্দেন বাহ্না।

সিদ্ধান্ত ভূবাং করা নিল্যোগ্রাবাহাং বাতশোশিতম্ ।

অন্ত্রেক্যাং রক্তাপত্তং হ্যোগং বাত্শোশিক্য ।

নাশয়েক্লাত্র সন্দেহ: শ্যামাত্মতমিদং বৃহৎ। বালানাং পুষ্টিজননং গর্ভদোষহরং পরম্।

গব্য ঘত /৪ দের। শ্রামানতা, শতমূলী, ইক্ষ্ ও ভূমিকুমাও ইহাদের প্রত্যেকের রস /৪ দের। ছাগছ্র /৪ দের। কল্পর্য-শ্রামানতা, ত্রিফলা, বেড়েলা, পদ্মকাঠ, ভূমিকুমাও, নীলোৎপল, জীবক, শ্বন্ডক, মেদ, মহামেদ, শ্বন্ধি, বৃদ্ধি, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, ষষ্টিমধু, অশ্বগন্ধা, শতমূলী, বনষমানী, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, মঞ্জিঠা, শ্বেতচন্দন, রক্তচন্দন, দ্রাক্ষা, গল্পভাছলের মূল, উঠও কট্কী প্রত্যেক ২ তোলা। পাকার্য জল ১৬ সের। যথাবিধি পাক করিবে। ইহা দেবন করিলে প্রমেহ, প্রমেহপিড্কা, ক্ষীবতা, বাতরক্ত, উক্রেম্বর, রক্তপিত্ত, হুদ্রোগ ও গাত্নোর প্রভূতির নিবারণ হয়। ইহা বালকগণের পুষ্টপ্রদ ও গর্জদোষনাশক।

শারিবাদ্যাসবঃ।

শারিবা মুন্তকং লোধো স্থগ্রোধঃ পিশ্বলঃ শটা ।
অনস্তা পল্লকং বালং পাঠা ধাত্রী শুড় কিবা ॥
উশীরং চন্দনছন্দং যমানী।কটুরোহিলা।
পত্রমেলাম্বরং কুঠং স্বর্ণপত্রী হরীতকী ॥
এবাং চতুপ্পলান্ ভাগান্ স্ক্র্মনুলীকৃতান্ গুড়ান্ !
জলক্রোণম্বরে কিন্তা, দাক্ষাং যষ্টিপলাং তথা।
মাসং সংস্থাপয়েদ্ ভাঙে সংবৃতে মুন্তরে শুড়ে ॥

শারিবাজ্ঞাসবজ্ঞান্ত পানাক্ষেহান্চ বিংশতিঃ। শরাবিকাদয়: সর্ববাঃ পিড়কান্তৎকৃতান্চ বাঃ। উপদংশিকরোগান্চ বাতরক্তং জগন্দরম্। সর্ব্ব এতে শমং বান্তি ব্যাধয়ো নাত্র সংশয়:॥

শ্রামালতা, মুতা, লোধ, বটছাল, অর্থ-ছাল, শটা, অনস্তম্ন, পদ্মকাঠ, বালা, আক্নাদি, আমলকী, গুলঞ্চ, বেণার মূল, শ্বেত-চন্দন, রক্তচন্দন, যমানী, কট্কী, তেজপত্র, ছোট এলাইচ, বড়, এলাইচ, কুড়, সোণামুখী ও হরীতকী প্রত্যেকের চূর্ণ ৪ পল, গুড় ৩৭॥০ সের, ধাইকুল ১০ পল ও দ্রাহ্মা ৬০ পল; এই সমুদার ১২৮ সের জলে প্রক্রিপ্ত ও মৃৎপাত্রে কন্ধ করিয়া একমাস পরে উহার কন্ধ ছাকিয়া দ্রবাংশ লইবে। ইহা সেবন করিলে প্রমেহ, প্রমেহ-পিড়কা, উপদংশ জন্ম সমস্ত বিক্কৃতি, বাতরক্ত ও ভগন্যর পীড়ার শান্তি হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

পাননরমভিষ্যান্দি কক্ষং ভীক্ষণ ছজ্জরন্।
বেগরোধং ব্যবশ্বক ব্যায়ামং নিশি জাগরম্ ॥
স্বয়াং প্রতীক্ষাং মংক্ষক পলাভুক রমোনকম্।
ভাজেৎ স্থ্যাগ্লিমস্তাপং প্রমেহজগদাভুর; ॥
প্রমেহ-পিড়কাক্রাস্তাং রোগির পক্ষে। কফজনক ক্ষক ভীক্ষ ও ভূপাচ্য পানাহার, বেগংরোধ, মৈথুন, ব্যায়াম, রাত্রিজাগরণ, স্থভীদ্ধ স্বরা, মংস্তা, পলাপু, রস্থন, রোদ্র ও, অগ্লিসন্তাপ এই সমুদায় বর্জ্জনীয়।

ইত্যায়ুর্বেদ-সংগ্রহে প্রমেহপিড়কাধিকারঃ।

অথ মেদোরোগাধিকারঃ।

অথ মেদোরোগ-নিদান্য।

অন্যায়ামদিবাস্থপ-শ্লেমলাহারসেবিন:।
মধুরোচন্ত্ররসং প্রায়: স্বেহামেদং প্রবর্জনে ॥
মেদসাবৃত্যার্গরিব পুষাস্তান্তে ন থাতবং।
মেদস্ত চীরতে তন্মাদশক্ত: সর্ব্বক্ষান্ত্র।
কুল্রাসত্বামোহ-স্বাক্রখনসাদনৈ:।
মুক্ত: কুৎস্বেদ্রেগন্ত্রৈরপ্রপ্রশান্তর্বামান্তর্বামান্তর্বাদ্রের প্রশান্তর্বাদরে বৃদ্ধিঃ প্রায়ো মেদস্বিনো ভবে ॥
মেদসাবৃত্যানাম্পরেবর্বিপ্র স্থিতন ভবে ॥
মেদসাবৃত্যার্গরিব্যাহার কোঠে বিশেষতঃ।
চরন সকুক্ষয়ত্যিমাহারং শোষয়ত্যাপি॥
তন্মাৎ সালীমং জন্মগ্রাহারম্ভিক্তক্তি।
বিকারাংশ্যার্গরে গোরান্ কাংশ্চিৎ কালব্যতিক্রমাৎ॥

ব্যায়াম বাৰ্জ্জত ও দিবানিদ্রাপ্রিয় ব্যক্তি, শ্লেমজনক এব্য ভোজন কারলে তাহার ভুক্ত দ্রব্য হইতে যে রস উৎপন্ন হয়, তাহা পরিপাক প্রাপ্ত না হইয়া মধুররসবিশিষ্ট হয় এবং সেই মধুর আমের অর্থাৎ অপক অন্নরসের সেহ হইতে মেলংপদার্থের বৃদ্ধি হইয়া থাকে। মেদোবৃদ্ধিহেতু রসরক্তাদিবাহী স্রোভঃসমূহ রুদ্ধ হওয়াতে শরীরের অন্তান্ত ধাতুও পুষ্ট হইতে পারে না। কেবল মেদোধাতু ক্রমশঃ বর্দ্ধিত হইয়া মন্তব্যকে সকল কার্য্যে অসক্ত করিয়া ফেলে।

মেদোরোগে ক্র্যাস, তৃষ্ণা, মৃচ্ছা, নিজ্রা-ধিক্য, অকস্মাৎ উচ্ছাসাবরোধ, অবসাদ, ক্ষ্ধা, ষম্মনির্গম, শরীরে দৌর্গন্ধ্য, বলের হ্রাস ও মৈথুনশক্তির অল্পতা এই সকল লক্ষণ উপ-স্থিত হয়।

মেদঃপদার্থ, সকল জীবের উদরে ও হক্ষান্থিতে থাকে, তজ্জন্ত মেদমী ব্যক্তির প্রান্ন উদরেরই বৃদ্ধি হয়।

যেমন কুন্তকারের পয়ন, কর্দম দারা আর্ত হওয়াতে, তদস্তর্গত বায়ু বহির্গত হইতে না পারিয়া অগ্নিকে প্রদীপ্ত করে, সেইরূপ মেদোধাতু **ছা**রা মার্গাবরোধ হেতু বায় কোষ্ঠমণ্যেই বিশেষরূপে সঞ্চরণ করিয়া কোষ্টাগ্লিকে সন্ধৃক্ষিত ও আহারকে শোষিত করিয়া থাকে, তজ্জ্যুই মেদসী ব্যক্তির আহার দাঁঘ্র পরিপাক হয় ও ব্যক্তিরূম আকাজ্জ্যা জন্মে এবং ভোজন কালের ব্যক্তিরুম ঘটিলে নানাবিদ বাতজনিত পীড়া উপস্থিত হুইয়া থাকে।

অথ মেদোরোগ-চিকিৎসা।

শ্মচিন্তাব্যবাধন-ক্ষেম্ব্রাগরণপ্রিয়: ।

হস্তাবশ্বমতিক্বোল্যং ববশ্বামাকভোজনঃ ॥

অস্বপ্রক ব্যবায়ক ব্যামানং চিন্তনানি চ।

ক্ষোল্যমিচ্ছন্ পরিত্যকুং ক্রমেণাতি প্রবর্দ্ধরেং ॥
প্রাতম পুরুতং বারি সেইবতং স্কৌল্যনাশনন্।
উক্ষমস্ত মণ্ডং বা পিবন্ কুণ্তন্ত্তবেং ॥

শ্রম, চিন্তা, মেপুন, পথপথাটন, মধুপান ও রাত্রিজাগরণ কাবলে এবং যব ও শ্রামা-তওুলক্কত অন্ন ভোজন করিলে, আত স্থোল্য বিনষ্ট হয়। স্থোল্য দুর কারতে ইচ্ছুক ব্যাক্ত, অনিদ্রা, মৈথুন, ব্যান্থাম ও চিন্তা এই সকল ক্রমে ক্রমে বাড়াইবে। প্রাত্রকালে মধুমিশ্রিত জল এবং অন্নের উষ্ণ মণ্ড পান করিলেও স্থলতা নিবারিত হয়।

জানকবোষ-হিঙ্গুসৌবচ্চলানলাঃ। মুন্তুনা শক্তবঃ শীভা মেদোদ্বা বহিদীপনাঃ॥

চৈ, জীরা, ত্রিকটু, হিং, সে.বর্চন লবণ ও চিতা, ইহাদের চুর্ণ এবং (সমস্তচুর্ণের ষোড়শ গুণ) যবশক্তা দ্বির মাতের সাহত সেবন করিলে মেদ নই ও আগ্নি প্রদীপ্ত হয়।

ফলত্রয়ং ত্রিকটুকং সতৈলং লবণাবিতম্। ষমাসাত্রপযোগেন কফমেদোহনিলাপহম্॥ ত্রিফলা ও ত্রিকট্টুর্ণ, তেল ও লবণ সংযুক্ত করিয়া ছয়মাস কাল সেবন করেলে কফ মেদ ও বায়ু মন্ত হয়।

বিড়ঙ্গাগ্যচুৰ্ণ ।

নি**ড়ঙ্গনাগরক্ষা**ব-কালেলোগন্ডেশ মধ। গ্রামলকচর্বস্তু প্রয়োগ স্থোলালাশন্ত ।

বিভঙ্গ, শুঠি, ষ্বকার, কান্তলোহভন্ম, ব্ব ও আমলকীচুণ মধুব সহিত সেবন করিলে স্থোল্য নিবারিত হয়।

মূলং বা ত্রিফলাচূর্ণ মধুযুক্ত স্বদক্ষ্। বিশ্বাদিপক্ষুল্ভ পয়োগ্য কৌদসংযুত্ত। অতিকৌল্যবঃ প্রোকৌ মওক: মেবিতো ক্রম্॥

শুক্ষ মূলা ব' ত্রিফলা চুর্গ নধুর সহিত সেবন করিলে অথবা তুলাপরিদানে মধুমিশ্রিত জল পান করিলে, অথবা বিহাদি পঞ্চমুলের কাথ মধু সহ সেবন করিলে বা মণ্ড পান করিলে অতিভোগা বিন্ট হয়।

ধ্বশাদলব্জিস্থালিকং শতপুষ্প- হিছুদাযুক্তম্।
পুচকে নিহন্তি নিয়তং সক্ষেত্ৰাণ ফোদ্যাং বৃদ্ধিন্য ।
কারং বা হারিপানেই হিজুফুক্তা পিলেন্ডবা।
কোনোর দ্বিনাশার ভক্তা মন্তসম্বিহন্য ।
সক্ষোজাকোকান্য পোলা কোনোহলো নালা ।
ভঙ্ চাক্রিকলাকান্যভাগ লৌহবজোহলিতা।
ভাগুজ্ মহিবাজক বা তেনেব বিশিবা পচেৎ ।
ভাগুজ্বাদ্বীজ্মগ্র ম্প্রাত্র ইন্তানের্ক্রিন্য ।

পল্তা, চিতা, বালা, গুল্ফা ও হিন্তু এই সকল দ্বব্য প্টপাক কৰিয়া উপযুক্ত মাত্ৰায় সেবন কবিলে সর্প্র প্রকার মেনোর্দ্ধি বিনষ্ট হয়। তেনেগুল পাতাৰ ক্ষার হিন্তু সংযোগে সেবন করিলে কিংবা সাড়যুক্ত ত্রয় এবং যবের বা গবেধুক (দেবানের) ছাতু শহার কবিলে নেলোর্দ্ধি প্রশানত হয়। তিমান কবিলে কালে কিংবা স্থানীতে শোগিত শিলাক্ত্র বা গুগ্গুলু ভাগ্যা তিন্নাবীজের শস্ত্র মধ্র সহিত লেহন কালে ক্লাভা বিনষ্ট হয়।

বদরীপত্রকক্ষেন পেয়া কাঞ্জিকসাধিতা ॥

কুলপত্রের কন্ধ ও কাঞ্জিক সহ তণ্ণুলের পেয়া প্রস্তুত করিয়া পান করিলে স্থলতা দ্রীভূত হয়।

ংগোলতে স্থাৎ সাগ্নিমন্ত-রসং বাপি শিলাজতু। গণিয়ারির কাপে শিলাজতু প্রক্ষেপ দিয়া সেবন করিলে গুলাতা বিনই হয়।

লৈবেরবু ঠ'ওকদেবল'ক-কৌন্তাসমূত্র'ক্সথ গদপতৈঃ। জনাসপুদাগনপুপদেব-পূপাং । থা সক্ষমিদং প্রণিদা। দুব্দারপুত্রতা রসেন গাঁচসমুভন। গৌনাইরং প্রদিষ্টম॥

শিলাজতু, কুড, অগুরু, দেবলার, রেণুকা, মৃত্যা, পঞ্চপত্র (আন. জান, করেংবেল, ছোলঙ্গ ও বেলের পাতা), সরলবৃক্ষ, পিড়িংশাক, বাবৃষ্ট তুলসা ও লবঙ্গ এই সকল পত্নাপত্রের রূপে উত্তনকপে পেষণ ক্রিয়া উপ্রত্তন করিলে স্টোলনোশ হয়।

জ্ঞাৰণাজিখনদেৱৰচাতি-ভক্ষান সমস্তাং মাংখাক্ষম্ । আন্তঃ হান্তা ক্ষমাঞ্চান্তা-লোবজান্ বলবা একিপি বিকারণে ॥

ত্রিকট, চিতা মুতা, বিজ্ঞাও বচ, এই সকল চূর্ণ এবং সমভাগ গ্রন্থ সংগ্রন্থ ভক্ষণ কারলে কফ, বায়ু এবং মেদোদোষ জন্ম বলবান ব্যানিও শীঘ্র বিনষ্ট হয়।

> গোমুত্রপিষ্টং বিনিহস্তি কৃঠ° বর্ণোজ্ঞলং গোপ্যসা চ যুক্তম্। কক্ষাদিদৌর্গক্ষ্যকং প্রোভি: শৃত্যং বনীকৃদ্ রজনীয়্যেন ॥ (ভার বর্ণোজ্জল স্বিত্যালিভি চফ্টীকা।)

হরিতাল গোমুতে পেষণ করিয়া প্রালপ ।

দলে কুন্ঠ ; এবং গব্য গ্রেয়ে সহিত মিশ্রিত কশিয়া মাথিলে কক্ষাদিশ গ্রুম নাশ হয় ।

উদ্দারহারিদ্রা মাশ্রেত হারিতালের সহত ও শ্রে
দারহারিদ্রা সংগক্ত করিয়া লগাটো তিলক ধারণ কশিলে বশাক্রণ হয় ।

চিঞ্পত্রসর্বাক্সকতং কক্ষাদিযোজিতং জয়তি। পুটদন্ধহরি**দ্রোভ্রত**নচিরান্দেহদৌর্গন্ধান্। তেঁতুলপাতার রস কক্ষাদি স্থানে মাধা-ইরা প্টদগ্ধ হরিদ্রা ধারা গাত্রোঘর্ত্তন করিলে অচিরে দৌর্গন্ধ নষ্ট হয়।

দলজললযুমলয়াভয়বিলেপনং হরতি দেহদৌর্গকাষ্। বিমলারনালসহিতং পীতমিবালমুবাচুর্ণ্য ॥ .(দলং তেজপুত্রং, লঘু অগুরু, অভয়মূশীরম্।)

ভেজপত্র, বালা, অগুরু, খেতচন্দন ও বেণার মূল এই সকল দ্রব্যের প্রালেপ দিলে কিংবা নির্মাল কাঁজির সহিত মুণ্ডিরীচুর্ণ সেবন করিলে গাত্রের হুর্গন্ধ নিবারিত হয়।

শিরীৰলামজ্জকহেমলোথৈস্থগ দোৰসংখেদহর: প্রবর্ধ: । পত্রাস্থলোহাভয়চন্দ্রানি শরীরদৌর্গন্মহর: প্রদেহ: ।

শিরীষ্ছাল, বেণার মূল, নাগেশ্বর ও লোধ, ইহাদের চূর্ণ গাত্রে ঘর্বণ করিলে, তকের দোষ ও ঘর্মা নিবারিত হয়। তেজপত্র, বালা, অগুরু, বেণার মূল ও চন্দন ইহাদের প্রেলেপ দ্বারাও গাত্রের দৌর্গন্ধ্য প্রশমিত হইয়া পাকে।

বাসাদলরসো লেপাচ্ছম্বচূর্ণন সংযুত:। বি**এপত্রর**সো বাপি গাত্রদৌর্গন্ধানাশন:॥

বাসক বা বিল্পত্তের রসে শঙ্গচূর্ণ মিশ্রিত করিয়া প্রলেপ দিলে গাত্রদার্গন্ধা দূর হয়।

> হরাতকা লোধ্রমরিষ্টপত্রং চূতত্বটো দাড়িমবঙ্কলক। এবোহকরাগ: কবিতোহকনানাং জ্ঞাকবায়ক নরাধিপানাম্॥

(লভেণা বর্তনার্থং কব্দ:, প্রায়েণ হি রাজাদীনাং গজাদি-বাহনানাং লভ্যাবিবর্ণতা ভবতি, তাং সবর্ণীকরণার্থং লভ্যাসবর্ণকরায়বিধিঃ। করায়ো বিলেপনমিতি মেদিনী।)

হরীতকী, লোধ, নিমপত্র, আমহাল, দাড়িমছাল, এই সকল একত্র বাটিয়া প্রলেপ প্রস্তুত করিবে। ইহা ক্ষলাদিগের অঙ্গরাগ এবং ইহার মর্দ্ধনে রাজাদিগেব গজাদি বানে প্রমন্ত্রস্থ জুজ্যাবিবর্ণতা দূর হইয়া থাকে।

(बार्षामाणक প্রয়োগঃ।

ব্যোদবিভূক শিগ্ৰ ,ণি ত্ৰিকলাং কটুরোহিণীম্। বৃহত্যে) ৰে হরিজে ৰে পাঠামতিবিবাং দ্বিরাম্। হিক্কেবৃক্ষ্নানি বমানীধান্তচিত্ৰকম্।
সৌবর্চনমজাজীঞ্চ হব্ৰাঞ্চিত চুর্নারে ।
চুর্বতিলম্বতক্ষেত্র-ভাগাঃ স্থাম নিতঃ সমাঃ।
শক্ত্নাং বোড়শগুণো ভাগাঃ সন্তর্পণা পিবেং ॥
প্রানাগাং তক্ত শামান্তি রোগাঃ সন্তর্পণা বিভাঃ।
প্রমেরা মুচবাতাশ্চ কুঠান্তর্শাংসি কামলাঃ ॥
সীহা পাও মায়ঃ শোধোম্তক্ত্রহমরোচকঃ।
ক্রেলাগা রাজ্যক্ষা চ কাসঃ খাসো গলগ্রঃ ॥
ক্রিমরো গ্রহণীদোবাঃ শৈতাং স্থোলামতীব চ।
নরাণাং দীপাতে চাগ্নিঃ স্থতিবু জিন্চ বর্ষতে ॥

ত্রিকটু, বিভ্ন্ন, শব্দনামূলের ছাল, ত্রিকলা, কট্কী, বৃহতী, কণ্টকারী, হরিদ্রো, দাক্ষহরিদ্রো, আক্নাদি, আতইচ, শালপাণি, হিন্দু, কেউমূল, যমানী, ধনে, চিতামূল, সচললবণ, জীরা ও হব্যা প্রভাক সমন্তাগ চূর্ণ, তিলতেল স্বত ও মধু প্রভাক চূর্ণসমষ্টির সমান; শব্দু (ছাতু) ১৬ গুণ, এই সম্নায় একত্র মিশ্রিত করিয়া কোন শীতল অমুপানের সহিত সেবনীয়। ইহাতে প্রমেহ, মূঢ্বাত, কুন্ঠ, আর্শঃ, কামলা ও মেদোরোগ প্রভৃতি নানাপীড়ার শান্তি এবং অগ্নি স্থতি ও বৃদ্ধির বৃদ্ধি হয়।

অমৃতাদিগুগ্গুলুঃ।

অমৃতাক্রটিবেরবংসকং কলিক্সপশ্যামলকানি গুগ্**ওসু:**। ক্রমবৃদ্ধমিদং মধুপুতং পিড্কাফৌল্ডগল্যান্ **জয়ে**ং ।

গুলক ১ ভাগ, ছোট এলাচ ২ ভাগ, বিজ্প ৩ ভাগ, কুড়্চি ৪ ভাগ, ইক্সব ৫ ভাগ, হরীতকী ৬ ভাগ, আমলকী ৭ ভাগ ও গুগ্গুলু ৮ ভাগ, এই সকল একত্ত্ব মধু সহ দেবন করিলে স্থোল্য, পিড়কা ও ভগন্দর প্রশমিত হয়।

নবকগুগ্ গুলুঃ।

त्यावाधिजिक्नाम्ख-विकृतेक्क न्या मन्यः नमम् । शानन् मन्त्रीन् करम् गाशीन् तमः समामनाक्कान् ॥

ত্রিকটু, চিতা, ত্রিফলা, মৃতা ও বিজ্জ প্রত্যেক সমভাগ, সর্বসমান গুণ্গুলু; এই সকল দ্রব্য একত মিশ্রিত করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে মেদ ও শ্লেম্বা এবং আমবাত রোগ নিরাক্তত হইয়া থাকে।

विस्त्रानाः लोश्य ।

বিড়ঙ্গনিকলামুভৈঃ কণানাগরকেন চ।
বিঅৱস্থন হীবেরং পাঠোনীরং তথা বলা ॥
এবাং সর্বসমং লোহং জনেন বটিকাং কুরু।
মুক্তবোগেন কর্ত্তবাা মাথৈকা বটিকা গুজা ॥
অনুপানং প্রবোজবাং লোহাইগুলং পাঃ।
সর্বমেহহরং বলাং কাস্ত্যায়্বলবর্জনম ॥
অগ্নিসন্পাপনকরং বাজীকরণমূভ্রম্ ।
সোমরোগং নহস্ত্যাগু ভাসরন্তিমিরং বথা ।
বিজ্ঞান্তমিধং লোঁ ং স্করেগেনিক্দনম্ ॥

বিজ্ল, ত্রিফলা, মুতা, পিপ্পলী, ওঁঠ, বেলওঁঠ, বক্তদেন, বালা, আক্নাদি, বেপার মূল ও বেড়েলা এই সকল দ্রব্যের চূর্ণ প্রত্যেক সমন্তাগ, সর্বভূগসম লৌহচূর্ণ; একত্র জলে শেষণ করিয়া ন্বত সহযোগে এক মাষা (ব্যবহার ৩৪ রাত) পারমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। হুগ্রের সহিত বটিকা সেবন করিয়া আটগুণ (৮ মাষা) হগ্ধ অনুপান করিবে। ইহা সর্বব্রেকার মেহনাশক, বলকর, কাাস্ত আয়ুহ ও বল বর্দ্ধক, আয়ুর প্রবাক্তির।

লোহরসায়নম্।

ভগ্ ভগ্তালমূলী চ জিকলা থদিরো বৃষ্ ।

ক্রিবৃত্তালমূলী সুক্ চ নিও ভা চিত্রকং শটা ।

ক্রাং দশ পলান্ ভাগাংখোরে পঞ্চাচকে পচেৎ।
পাদশেষং ততঃ কৃথা করারমন্তাররেৎ।
প্রাণসানির প্রস্থং শকরাইপলানি চ ।
প্রোণসানির প্রস্থং শকরাইপলানি চ ।
পচেৎ তারমারে পাতে ফ্লাতে চাবতারিতে।
প্রস্থাকি মাক্ষিকং দেরং নিলাজভুপলবর্ন।
ক্রান্তাই পলাকিক নিড়কানি পলার্বন।
ক্রান্তাইপলাক ক্ষা ছিপলং ডিকলাবিত্র।
পার্চিকান্তনং কৃষ্ণা ছিপলং ডিকলাবিত্র।
পাল্বরম্ভ কাসাসং প্রস্তুণাকুতং বুবৈঃ।
চুব্ং দেরাথ মধিতং লিজে ভাওে নিধাপারেৎ।
ভতঃ সংগুদ্ধবিদ্ধন্ত ভক্ষেদক্ষাত্রকম্।
জন্তপানং পিবেৎ ক্ষারং জাকলানাং রসং তথা।

বাতলেমহন্নং শ্রেষ্ঠং কুঠতে হজরাপকম।
কামলাং পাঞ্রোগঞ্চ স্বয়থ্য সভগন্দরম্ ॥
মৃচ্ছিামেণ্ডবিধোন্মাদ-গরাণি বিবিধানি চ।
স্থানাং কর্বণং শ্রেষ্ঠং মেতুরে প্পরমৌষধম্ ॥
কর্বণ্যেকাতিমান্তেশ কুক্ষিং পাতলৈসন্ধিতম্ ।
বল্যং রসায়নং মেধাং বাজীকরণমূত্রমম্ ।
জ্যিকরং পুত্রজননং বলীপলিতনাশনম্ ॥
নালীয়াৎ কদলাং কন্দং কাঞ্জিকং করম্দিকম্ ।
করীরং ক্রিবল্লক ষ্টককারাদি বৃহ্জরেৎ ॥

শ্লথ পোটলীবন্ধ গুগ ড়লু, তালগুলী, ত্রিফলা, ধাদরকার বাসকছাল, তেউড়ী, মুওরী, সিঙ্মূল, নিসিকা, চিতামূল ও শটা প্রত্যেক ১০ পল; পাকার্গ জল ৮০ সের, শেষ ২০ সের। এং কাথ বস্ত্রপুত করিয়া তাহার সাহত উক্ত গুগুগুলু এবং তীক্ষ্ন লৌহ-চূর্ণ ২২ পল, পুরতিন স্বত ৴৪ সের ও চিনি ৮ পলা ত্রণ পূর্বক ভাষপাত্রে পাক করিবে। পাকান্তে নামাইয়া শিতল হইলে মধু /২ সের, শিলাজত ২ পল, এলাইচ ২ তোলা, প্ৰভূত্ক ২ তোলা, বিভঙ্গ ৩ পল, মবিচ রসাঞ্জন পিপুল ত্রিফলা ও হীরাক্স প্রভাক ২ পল, ইহাদের চূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া স্নিগ্মভাণ্ডে রাখিবে। মাত্র—২ তোলা পর্যান্ত। অমুপান - হগ্ধ ও জাঙ্গল মাংদের রদ। ইহাতে বায়, শ্লেষা, কুষ্ঠ, মেহ, জ্বর, কামলাও মেদোরোগ প্রভৃতি বিবিধ পীডার উপশ্ন ২ইয়া থাকে। বল ারক, বুয়া, রসায়ন, মেধ্য ও বলীপালত-नानक । हें इा (प्रवनकां एन कमनी, कन्म, काँकि, করম্চা, করীর (বাশের কোড়) ও করলা ককারাদি এই ছয়টি দ্রব্য বর্জনীয়।

ক্রাষণাদ্যং লোহম্।

ক্র-মণং শিজরা চবাং দিকেকং শিড় বিভিদ্ম।
ব গুজী সৈন্ধবিধন সৌবর্চজন যুওম্।
ক্যাল পুনি সংগুজং জন্মান্ত্রপূসপিথা।
সৌলাপেকধণং শ্রেষ্ঠ বনবর্গাধিবদ্ধনম্।
মেহন্ত্রং কুঠনমনং সকরোধিধনং পরম্।
নাহারে যন্ত্রণা কাষা। নাবহারে তথৈব চ।
ক্রাব্যান্ত্রমিদং লৌহং রসায়নবরোভ্যম্।

ত্তিকটু, দিদ্ধি, চৈ, চিতা, বিট্লবণ, ঔদ্ভিলবণ, সোমবাজী, সৈন্ধব ও সচললবণ; এই সকল চুর্ণের সমান লোহচূর্ণ মিশ্রিত করিয়া মধু ও ঘত অমুপানের সহিত সেবন করিতে দিবে। ইঞাতে গ্লত নাশ হয়, মেহ, কুঠ প্রভৃতি নিবারিত এবং বল বর্ণ ও অগ্নি বন্ধিত হইয়া থাকে। যেরূপ আহার বিহারে রোগির যন্ত্রণা না হয়, সেইরূপ ব্যবস্থা করিবে।

বছ ণগিলোহম ।

স্তভন্ম সতালক লৌহং ভারং সমং সম্। মন্দিরেৎ স্থাপক্রেণ চাক্ত বলং প্রযোজ্যেৎ।
মধ্না স্থানালে চ পোণে শূলে ভগৈব চ।
মধ্যাজামনুপানক দেরং ব'নি কফোরণে॥

রস,সন্দৰ, হরিতাল, লৌহ ও তাত্র সমান সমান ভাগ; আকন্দপত্র রসে মদ্দন কারবে। মাত্রা—তিন রতি। কফোরণ শোথ, শূল ও ছূলরোগে মধু কিংবা মধু সংযুক্ত ত্বত অন্ধুপান ব্যবস্থা করিবে।

বড়বারিরসঃ।

শুদ্ধত সমং গদ্ধং তামং তালং সমং সমন্।
অককানৈদিনং মধ্যং ক্লোকৈলে ছিং ত্রিপ্তস্তকন্।
বড়বাগ্নিরসো নামা স্থোল্যমান্ত নিবছেতি।
পারদ, গদ্ধক, তাম ও হরিতাল প্রত্যেক
সমানভাগ, আকল আঠায় একদিন মদ্দন
করিবে। পরিমাণ—তিন রাত। অমুপান—
মধু। ইহা আশু স্থোল্য-নিবারক।

ত্রিফলাদ্যং তৈলম।

বিষণাতিবিধামুকা-তিব্চিত্তক্ষাসকৈ:।
নিষারথধ্যড় এস্থা-সপ্তপর্ণনিশাষ্ট্র: ॥
গুড় চাল্রথন্যকুলা-কুঠমধনাগরৈ:।
তৈলনেভিঃ সমা: পকং স্বরসাদিরসাপ্তম্ ॥
পানাভাঞ্জনগড়ব-নক্তবন্তিম যোজিতম্।
স্বলচালগুকভাদান্ জয়েৎ কফকুতান্ গদান্।
ভিলতৈল /৬ সেব । স্থাতোক্ত ম্বসাদিগণেব কাথ ১৬ সেব । ক্ষার্থ-তিকার্

আতইচ, মুর্লামূল, তেউড়ী, চিতামূল, বাদকছাল, নিমছাল, দৌদালমজ্জা, বচ, ছাতিমছাল, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, গুলঞ্চ, গোরক্ষকর্কটী (বা নিসিক্ষা), পিপুল, কুড়, সর্বপ ও শুঁঠ
মিলিত /১ সেব। যথাবিধি পাক করিয়া উহা
পান, অভাঙ্গ, গগুষ, নস্ত ও বস্তিক্রিয়ার প্রয়োগ
করিবে। ইহা ব্যবহার করিলে দেহের স্থুগতা,
আলস্ত ও কণ্ড প্রভৃতি কফজরোগ নষ্ট হয়।

মহাস্থগিষ্ধিতৈলম ।

চলনং কৃত্ববোদীর-প্রিয়**স্**ক্রটিরোচনাঃ। তুরদ্বাগুরুকস্থুরা কপুরিং জাভিপত্রিকা॥ জাতীককোলপুগানাং লবক্ষ ফলানি চ। নলিকা নলদং কুঠং হয়েপু তগরং প্রবন্।। नशः वर्गाधनशः शका (वालः प्रन्नकः उथा। .श्रीरभग्नकः ८५१तककः रेमरमग्नः रेमलव'ल्कम् ॥ मनलः मञ्जूषर्वक लाका उपानको उथा। লংমজ্জকং প্রক্ষ ধাতকাণঃ কুপুমানি চা প্রপৌ ওরাক: कर्फ्नुत: ममार्टन: गानमाळाटेक:। মহাসুগৰামিতোত্ত তৈলপ্ৰস্তেন সাধ্যেৎ॥ প্রসেদমলদৌর্গন্ধ্য-কভকুষ্ঠহরং পরম্। অনেনাভাক্তগাত্রন্ত বৃদ্ধ: সাপ্ততিকোংপি বা । যুবা ভবতি শুক্র'চাঃ স্ত্রীণামতাগুবল্লভঃ। স্কুভগো দৰ্শনীয়ক্ত গড়েড্ড প্ৰনদাশতম । বন্ধ্যাপি লভতে গর্ভং মণ্ডোহপি পুরুষায়তে। অপুত্র: পুত্রমাপ্নোতি জাবেচ্চ শরদাং শতম্ 🕫

তিলতৈল /৪ দের। কন্ধার্থ—রক্ত কন, কুন্নুম, বেণার মূল, প্রিয়ন্থ্ন, ছোট এলাচ, গোরোচনা, শিলারস, অগুরু, কন্তুরী, কপূর, কেন্ত্রী, জাতীফল, কন্ধোল, স্পারি, লবল, নালুকা, জটামাণসী, কুড়, রেণক, তগরপাছকা, কৈবর্ত্তমৃত্তক, নথা, ব্যাঘনখী, পিড়িংশাক, বোল, দমনক. (দনা), গেঠেশা, চোরক (গন্ধদ্র বিশেষ) শিলাজতু, এলবালুক, সরলকান্ঠ, ছাত্তম, লাক্ষা, ভূই আমলা, বেণার মূল, পালুকার্ন্ন, গাইকুল, পুগুরিয়া ও শসী এই সকল প্রত্যেক ক্ষন্তভালা পরিমাণে গ্রহণ করিয়া ঘণারিল পাক কবিবে। এই তৈল গাত্তে মন্ধন, কাশল ঘন্ম-সল-দৌগন্ধ্য এবা কন্তু ও কুন্ত রোগ নিবারিত হয়।

অথ কার্শ্য-নিদানম।

বাতো ক্লকান্নপানানি কজনং প্রমিতাশনম্ ।
ক্রিরাতিবোগং শোকত বেগনিজাবিনিগ্রহঃ ।
নিতাং রোগো রতিনিতাং ব্যারামো ভোজনারতা।
ভীতিধ নাাদিচিছা চ কার্শ্যকারণমীরিতম্ ।
তহস্পিভদরগ্রীবো ধমনীজালসম্ভতিঃ ।
হুগছিশোবোহতিকুশঃ স্থুলপর্বাননো মতঃ ।

বাষুত্তি, ক্লক অন্ন ও ক্লক পানীয় দেবন, উপবাস, অভ্যন্ত ভোজন, অভিনিত্ত বমন ও বিরেচনাদি প্রয়োগ, শোক, মলমুত্রাদির বেগ ও নিজাবেগ ধারণ, নিভ্য রোগভোগ, প্রভাহ মৈপুন, ব্যায়াম, ভোজনের অন্নভা, ভঙ্গ ও ধনাদি-চিন্তা এই সকল কারণে শরীর ক্লশ হইরা থাকে।

কলের লক্ষণ—কুশব্যক্তির ক্ষিক্ (পাছা) উদরে ও গ্রীবাদেশ শুদ্দ, সর্বাঙ্গ শিরাজালে ব্যাপ্ত, চর্ম্ম ও অস্তি শুদ্ধ এবং পর্বাসন্ধি ও মৃথ স্থল হইয়া থাকে।

অথ কার্শ্য-চিকিৎসা।

ক্লকারাদিনিদিন্তে তু কূলে যুঞ্জীত ভেবন্ধ।
হংংগং কলকৃদ বৃষ্যাং তথা বাজীকরঞ্ধ যং ।
ক্লকার-ভোজনাদি দারা দেহ কুশ হইলে
পৃষ্টি ও বলকারক এবং বৃষ্য ও বাজীকরণ
ঔষধ সকল প্রয়োগ করিবে।

শীতাখগন্ধা পরসার্দ্ধনাসং ঘৃতেন তৈলেন হথামুনা বা। কুলক্ত পুষ্টিং বপুৰো বিধত্তে বালক্ত শক্তক্ত বথামুবৃষ্টিঃ।

জ্ববর্ষণ ধারা যেমন চারা গাছ বর্দ্ধিত হর, হ্রা ঘুত তৈল বা ঈষত্ব্য জল, ইহাদের কাহারও সহিত কিছুদিন অর্থগন্ধা পান করিলে তেমনই কুণ দেহের পৃষ্টি হইরা থাকে।

পুষ্টি কুষ্ বালরোপোজসম্বর্গকায়তং ভজেৎ। বালীকরোদিতং তবদখগন যুতাদিকম্।

বালরোগোক্ত অশ্বপদ্ধা ম্বত এবং বাজী-করণোক্ত অশ্বপদ্ধা-ম্বতাদি ঔষধ সেবন করিলে কুশাকের পৃষ্টি হইয়া থাকে। স্কাৰাদতিকাশ্যো বঃ স্কাৰাদলপাৰক:। স্কাৰাদৰলো যদ্ভ ডক্ত নাল্ডি চিকিৎসিত্য ।

যে ব্যক্তি শ্বভাবতঃ ক্লুশ, শ্বভাবতঃ অল্লাগ্নি ও শ্বভাবতঃ হৰ্মল, তাহার কোন ঔষধ নাই।

অশ্বনন্ধাতৈলম্।

অবগন্ধারা: ককেন কাপে তশ্মিন্ পরস্তাপ। সিদ্ধং তৈলং কুশাকানামভাকাদকপ্রিদ্ধ ॥

তিলতৈল /৪ সের, অশ্বগন্ধার কন্ধ /১ সের এবং উহার কাথ ১৬ সের, ছগ্ম /৪ সের। যথাবিধি পাক করিবে। এই অশ্বগন্ধা তৈল মদ্দন করিলে কুশালের পুষ্টি হইয়া থাকে।

অমৃতার্পবঃ।

রসভত্ম এয়ে। ভাগা ভাগৈকং হেমভত্মকম্।
সব্বাংশমমৃতাস বং সিতামধ্বাজামিশ্রি হম্॥
দিনৈকং মন্দিরেং থলে মাবৈকং ভক্ষরেং সদা।
কুশানাং কুরুতে পৃষ্টিং রসোহরমমৃতার্পবঃ।
অব্যক্ষাপলার্ক্ষ গবাং ক্ষারৈঃ পিবেদকু॥

রসদিন্ত্র ৩ ভাগ, স্বর্ণভন্ম ১ ভাগ, গুলক্ষের চিনি চারি ভাগ, চিনি মধু ও ম্বত সহ একদিন মাড়িয়া ৫০ আনা পরিমাণে সেবন করিবে। ঔষধনেবনাস্তে গব্য হয়্ম সহ আশ-গন্ধামূল চুর্ণ ৪ ভোলা (রোগির বলাবল ব্রিয়া উপযুক্ত মান্তায়) সেবন করাইবে। ইহা শ্বাম শ্রীর প্রষ্ট হয়।

সথ পথ্যাপথ্য-বিধিঃ।

মেদোরোগে পথ্যানি।

চিন্তা শ্রমো জাগরণং ব্যবায়ঃ প্রোবর্ত্তনং লক্ষনমাতপক।
হস্তাব্যানং ভ্রমণং বিরেকঃ প্রচ্ছদিনকাপ্যপতপণানি ॥
প্রাতনা বৈণবকোরদূব-ভামাকনীবারপ্রিয়ঙ্গবন্ধ।
ববাঃ কুলখান্দগকা নস্রা মূল্যান্তবর্গ্যোহপি মধ্নি লালাঃ।
কট্নি তিক্তানি ক্যায়কানি তক্রং স্বরা চিন্সটমৎক্ষ এব।
দক্ষানি বার্ত্তাকুফলানি চাপি কলত্রয়ং গুগ্ গুলুবায়সন্চ।

কটুত্তয়ং সার্বপতৈলমেলা ককাণি সর্কাণি চ মুখ্যতৈলন্। পত্তোবশাকোহগুক্তলপনানি প্রতপ্তনীরাণি শিলাজত্নি। প্রাপ্তোজনক্তাণি চ বারিপানং মেদোগদং প্রামিদং নিহস্তি।

চিন্তা, পরিশ্রম, রাত্রিজাগরণ, মৈথুন,
অভ্যন্ত শরীর মার্জন, লক্ষন, রৌদ্রস্বেন,
হক্তী অর্থ প্রভৃতি বানে আরোহণ, পথপর্যাটন,
বিরেচন, বমন, অপতর্পণ, পুরাতন বংশত গুল,
কোদোধান্ত, শ্রামাধান্ত, উড়ীধান্তা, কাঙ্গনিধান্তা, ধব, কুলখকলায়, ছোলা, মস্থর, মৃগ,
অড়হর, মধু, থৈ, কটুন্তব্য, তিক্তম্বর, ক্ষায়ক্রব্য, তক্ত্র, স্থরা, চিংড়ীমংস্তা, পোড়াবেগুণ,
ত্রিফলা, ওগ্গুলু, কাকমাচী, ত্রিকটু, সার্ধপতৈল, এলাচ, সমস্ত ক্লক্ষদ্রব্য, তিলতৈল,
পত্রশাক, গাত্রে অগুক লেপন, গ্রমজল ও
শিলাজতু এবং ভোজনের পুরের জলপান, এই
সকল মেনোরোগে অত্যন্ত হিতকর।

মেদোরোগেইপথ্যানি '

স্থানং রদায়নং শালীন গোধ্যান স্থণীলতাম।
ক্ষীরেক্বিকৃতীম বিশ্ব দৌহিতাং স্নেহনানি চ।
মংস্থং মাংসং দিবানিজাং প্রগ্,গন্ধৌ মধুরাণি চ।
ভোজনন্ত সমগ্রস্থ পশ্চাৎ পানং জলন্ত চ।
অতিমাত্রন্থপচিতো বিশেষাদ্বমনক্রিয়াম।
মতাবছখমফিছন মেদলী পরিবর্জন্তেং।
স্থান, রসায়নক্রিয়া, শালিত গুল, গোধ্ম,
স্থশীলতা, ক্ষীরবিকৃতি (ছানা আদি), ইক্ব্-বিকৃতি (চিনি প্রভৃতি), মাষকলায়, সৌহিত্য,
স্থেকিয়া অর্থাৎ ম্বতাদি পৃষ্টিকর ক্ষেহসেবন,
মংস্ত ও মাংসভক্ষণ, দিবানিজা, মাল্যধারণ,
স্থান্ধি জব্য সেবন, মধুররদসংযুক্ত প্রব্য ভক্ষণ,
ও ভোজনের পরে জলপান মেদোরোগে

সত্যস্ত সূলকার ব্যক্তির পক্ষে ব্যন্তিরা বিশেব নিষিদ্ধ ।

ইত্যাব্বকেদ-সংগ্রহে মেদোরোগাধিকার:।

অহিতকর।

অথোদররোগাধিকারঃ।

অথোদর-নিদানম্।

রোগাঃ সর্বেহণি মন্দেহগ্রী স্বতরাম্দরণি চ।

অজীণালালিনৈন্টারের্জারন্তে মলসক্ষাৎ ।

কলা বেদাপুবাহীনি দোবাঃ প্রোতাংসি সকিতাঃ।
প্রাণাগ্যাপানান্ সংদ্বা জনমন্ত্রাদরং নৃণাম্ ।

আগ্রানং গমনেহশন্তিকে বিলাং ক্র্বলাগ্রিতা।
শোধঃ সদনমন্সানাং সন্সো বাতপুরীবরোঃ ।

দাহভক্রা চ সর্বের্ জঠরের্ ভবন্তি হি।

পৃথপ্লোবৈঃ সমন্তেন্চ মীহবদ্ধনতাদনৈং ।

সংভবন্তাদরাণাট্রো তেবাং লিকং পৃথক্ শৃণ।

তত্র বাতোদরে শোধঃ পাণিপালাভিক্তিক্র্ ।

কৃত্তিপার্যোগ্রক্রটা-পৃত্তিক্রক্ পর্বভেদনন্।

ভক্রাসোহস্যর্জাহধোগ্রক্রতা মলসংগ্রহঃ ।

ভাবারপথগাদিবমকমাশ্র্জিরাসবং।
সংগদভেদমুদরং তত্তৃকশারাততম্ ॥
আগ্রাতদৃতিবচ্ছসমাহতং প্রকরোতি ৮।
বায়ুল্গাত্র সরুক্শার্ডং প্রকরোতি ৮।
বায়ুল্গাত্র মরের মুর্জা দাহস্তুট্ কটুকাভাতা।
ভ্রমোহতীসারং পীতভং ত্বগাদাবুদরং হরিৎপীততাম্রশিরানকং সম্বেদং দোখা দহতে।
ধুমায়তে মৃত্তুশর্শাং কিপ্রপাকং প্রদূরতে ।
প্রেশাদরেহক্সদনং স্থাপব্রম্থগৌরবম্।
নিজ্ঞাব্রেশাহরুচিঃ বাসঃ কাসঃ গুরুত্বগাদিতা॥
উদরং ভিমিতং মিগ্রং গুরুরাজীততং মহৎ।
চিরাভিবৃদ্ধি কটিনং শীতস্পাই গুরু ভিরম্।
স্থিত্রাহুল্পানং নগলোম্ত্র-বিড়াগ্রব্রু ক্রম্যাধুবৃত্তাঃ।
থিত্রাহুল্লার্য়ো গ্রাংক্ত ত্রাযুদ্বীবিব্রেশবনারা।

তেনাণ্ড ব্লুড়ং কপিতাক দোবাঃ কুর্য: স্থারং ভঠরং তিলিক্ষ্। ভচ্চীতবাতে ভশচৰ্দ্দিনে চ বিশেষতঃ কুপাতি দহতে চ। স চাতুরো মুগ্তি হি প্রসক্তং পাঞ্জ: কুশঃ গুৱাতি তৃষ্ণরা চ। দবোদরং के ব্রিতমেতদেব। য় খাল্লমনৈকপলেপিভিবা বালাশ্বভিবা পিহিতং যথাবং। সঞ্চীয়তে তক্ত মল: সদেবি: मरेनः मरेनः मकत्रवक्त नांखान् । নিরুধাতে তক্ত গুদে পুরীষং নিরেতি কুচ্ছাদপি চালমল্ম। হুরাভিমধ্যে পরিবৃদ্ধিমেতি ত**ন্তোদ**রং ব**দ্ধান্ত**দং বদস্তি॥ শল্যং তথালোপহিত: যদসং ভক্তং ভিৰন্ত্যাগতমস্ত্ৰথা বা। তক্ষাৎ ক্রতে হলত সলিলপ্রকাশঃ প্ৰাৰঃ সুবেদৈ গুদ্ধপ্ৰ ভুৱা। নাভেরধশ্চোদরমেতি বৃদ্ধিং নিস্তম্মতে দালাতি চাতিমাত্রন। এতৎ পরিস্রাব্যাদরং প্রদিষ্টং দকোদরং কান্তঃতো নিবোধ। যঃ ক্লেংগীতে'হপাত্রবাসিতে। বা বাস্তো বিরিজোহপাথবা নিরুচ:। পিৰেজনং শীতনমান্ড তক্ত স্ৰোতাংসি দৃষান্তি হি তৰ্থানি ॥ স্নেহোপলিপ্তেম্বৰবাপি তেৰু मक्तामतः शृक्वतमञ्जारेभि । শিশ্বং মহৎ তৎ পরিবস্তনাভি-সমাততং পূৰ্ণমিবামুনা চ। যথা দৃতিঃ কুজাতি কম্পতে চ শব্দায়তে চাপি দকোদরং তৎ॥

অগ্নিমান্য হেতু সকল ব্যাধিই বিশেষতঃ উদরবোগ জন্মিরা থাকে। অলীর্ণ, মলিন অয়ভোজন, (অত্যস্ত দোষজনক বিরুদ্ধভোজন ও পূর্বাহার অজীর্ণসত্তে পুনর্ভোজন ইত্যাদি) এবং মলসঞ্চয় এইগুলি উদরবোগ জন্মিবার কারণ।

সঞ্জিত ৰাতাদি নোয় সকল, ধ্বেদৰহ ও অম্বহ স্লোভঃসমূহকে ক্ল'ছ এবং প্রাণবায়ু, অশানৰায়ু ও অগ্নিকে দ্বিত করিয়া উদর-রোগ উৎপাদন করে। উদরাখান, গমনে অশক্তি, দৌর্মনা, মতিশয় অগ্নিমান্দা ও শোধ, অঙ্গ সকলের অবসাদ, অধোবায়ু ও মলের অপরান্ত এবং দাহ ও তক্রা এইগুলি সর্বাপ্রকার উদর োগের সাধা ণ লক্ষণ।

উদররোগ আট প্রকার; যথ — বায়ুজনিত, পিত্তজনিত, কফজনিত, ত্রিদোষজনিত, প্লীহ-জনিত, মলসঞ্চয়জনিত, ক্ষতজনিত ও জল-সঞ্চয়জনিত। এই আট প্রকার উদররোগের পুথক্ পুথক্ লক্ষণ লিখিত ২ইতেছে।

বাতাদরে হস্ত পদ নাভি ও কুক্ষিদেশে
শোপ, কু,ক্ষ পার্শ্ব উদর কটা ও পুদেশে
বেদনা, ভান্তর পর্বভেদ, শুক্ষকাদ, অঙ্গমন্দ,
শরীরের মবোভাগে গুরুষ, মলরোধ, ষ্ক্ চক্ষ্ণ ও মূত্র প্রভাতর প্রাবন্ধতা বা অরণবর্ণতা,
অকস্মাৎ উদরশোধের হ্রাস বা বৃদ্ধি উদরে
স্টাবেংবং বা ভঙ্গবং বেদনা এবং স্থ্য স্ক্র্য়া
ক্ষণবর্ণ শিরাসমূহের উংপাত্ত ও উদরে আঘাত
করিলে বায়ুপূর্ণ ভন্তার আয় শন্দোৎপাত্ত এই
সকল লক্ষণ প্রকাশ পার। এই বাতোদরে
বায়ু শক্ষ ও বেদনার সহিত উদরের সকল
স্থানে বিচরণ করে।

পিভাদরে জর, মৃচ্ছা, দাহ, ত্বল, কটুকাভাতা (মুথে কটুম্ব:লোৎপত্তি), ত্রম, অতিসার ও ছক্-নয়নাদের পাতবর্ণতা, এই সকল
লক্ষণ প্রকাশ পায় এবং উনর সম্মানুক্ত, উন্নবিশিষ্ট, লাহান্তিত, কোমলম্পর্শ ও ছারৎ পাত বা তাত্রবর্ণা নরাসমূহে ব্যাপ্ত হয়। আর বোধ হয়, যেন উহা হইতে ধ্যোঘমন হইতেছে।
পোতকোদর শীঘ্র পাকিয়া জলোদররূপে পরিগত হয় এবং সকলে বেদুনাযুক্ত হইয়া থাকে।

শ্লেমজনিও উদররোগে, অঞ্চের অবসাদ, স্পর্শজ্ঞানাভাব, শোথ, গাত্তগুরুতা, নিত্রা, বমনবেগ, অফাচ, খান, কাস ও ওগা,দর গুকুবর্ণভা, এই সকল লক্ষণ উপাস্থত হয়। এবং উদরশোপ বৃহৎ, স্থিমিত, চক্কণ, কঠিন, শাতস্পর্শ, গুরু, অচল ও দীর্ঘকালে পারবার্দ্ধিত এবং গুরুবর্ণ শ্বাসমূহে ব্যাপ্ত হইয়া থাকে।

ত্রিনেষজনিত উদরবোগ। হ:নালা কামিনী-গণ, নি:ম্বেহ-পতিকে বা অন্ত কোন অভি-ল্যিত পুরুষকে বশাভূত করিবার জন্ত অজ্ঞাত-সারে তদীয়া অরপানের সাহত নথ, লোম. মৃত্র, বিষ্টা ও আর্ত্তব-শোণিত প্রদান করিয়া থাকে। সেই ম;লন (নানাদোষজনক) অন্ন আহার করিলে, কিংবা শত্র-প্রান্ত সংযোগজ বিষ ভৌজন কাবলৈ অথবা সাবৰ মংশ্ৰ ও তৃণ-পত্রা,দর কাথ মি।শত চুই জল বা দুষীবে (আয় বা বেষয় ওবাব ধারা জার্ণ স্বল্প প্রভাব विष , (प्रदम काइल ङ धवर वा जीन तमाय-এয় কুপিত হ্রয়া তি দ্বি-লক্ষণাক্রান্ত আত खब्दा ५% व-(बार्श ए९ min न द्वा इंश्विड ভেনেষ্ড ডার রোগ কহে। এবস্থুত উদর রোগ, শাতবাত ও আত ও দনে (এল কড় ৬ মেঘাল বি.শ্ৰু দিবসৈ লাভশয় কু.পত ও দাহযুক্ত ইর এবং রোগী পাড়বণ, ক্লা, পেপানার শুষ্ক্ত ও পুনঃপুনঃ মুচ্ছত হংগা থাকে। হহার অপর লাম দুষাদে।।

যাহার অন্ত্র শাকশালুকানি পিচিছল অন্ন বা চুল ও কল্পরানি ধার ।বেদ্ধ হয়, তাহার সদোষ মল, সমার্ক্তনা (ঝাঁটা) নি,ক্ষপ্ত ধূল-রাশের স্তায়, ক্রথে ক্রমে অন্ত্রনাড়াতে সঞ্চিত ইইয়া থাকে। গুদনাড়াতে মল ক্রম্ব থাকেয় অতিকটে অন্ন অন্ন পার্মাণে নির্গত হয়। ইহাতে হ্লয় ও নাভির মন্যবার্তি হানে উদরের ব্রাছ হয়। ইহাকেই বক-গুদোদির কহে।

কণ্টকাদি-শলাস্ক অন্ন ভোজন করিলে,
সেই ভুক্ত অন্ন যাদ পাকাশন্ন হহতে বিলোম
ভবে বক্তভাবে) আগেত হয়, তাহা হংলে
সেত কণ্টকাদি-শলা ধারা জন্তনাড়ী ভেদ
হহলা যান্ন। জ্বভা ভ আত ভোজন ধারাও অন্ধভেদ হহতে পাতে, এংগ্রেপে অন্তাভিন হংলে
ভাহা হুহতে বহুপ, নাপে জলবং আবা নিঃক্রত
হুইন্না নাভির অবোভাত্য উদরের বৃদ্ধি করিয়া

গুহুষার দিয়া পুন:পুন: নির্গত ১ই০ে থাকে। ইহাকেই ক্ষতোদর বা পরিস্রাব্দের কছে। এই উদররোগে স্ফীবেধবৎ বা বিদারণবৎ অসহ বেদনা হইয়া থাকে।

শেহপান, অপুরাসন (স্নেহপদার্থ দারা পিচ্কারী দেওয়া), বমন, বিরেচন অথবা নেরহণ (পিচ্কারী বিশেষ) এই সকল ক্রিয়ার পর আশু শীতলজল পান করিলে অথবা স্নেহ-পদার্থ দারা উপলিপ্ত হইলে জলবহ স্রোভঃ সকল দ্বিত হয় এবং সেই হছ নাড়ী হইতে পীতজ্বলানংক্রত হয়য় উদরের র্ছে করে। হহাকেই দকোদর বা জলোদর কহে। দকোদরে উদর চিক্রণ, রৃহৎ, জলপূর্ণবং ক্ষীত ও নাভির চতু; দিকে বেদনাযুক্ত হয়। জলপূর্ণ তয়া (ভিস্তি) সঞ্চালিত হইলে যেমন ক্ষুক্র কম্পিত ও শক্ষুক্ত হয়, দকোদরও তদ্ধপ

অখো নর-চিকিৎসা।

সক্ষেধ্যের প্রয়ো দ্যেসংঘাতজং যতঃ। অতো ব'ঙাদিশমনীঃ ক্রিয়াঃ স্বত্ত কার্য়েৎ ।

প্রায় সকল উদররোগই ত্রিলোয প্রকোপ জন্ম উৎপন্ন হইয়া থাকে, অতএব সর্বত্ত উদররোগে বাতাদি দোষত্রয়ের শাস্তিকারক চিকিৎদা করিবে।

উদরে দোষদম্পূর্ণ কুকৌ মন্দে। যতোহনলঃ। ভন্মান্তোজ্যানি যোজ্যানি দাপনানি লঘূনি চ ॥

উদর দোষপূর্ণ হইলে অগ্নিমান্স্য হয়, অতএব অগ্নির উদ্দীপক ও লঘু আহার উদর-রোগে ব্যবস্থা করিবে।

দোষাতিমাতোপচয়াৎ প্রোতোমার্গনিরোধনাও।
সম্ভবতু দরং তত্মান্দ্রতামেনং বিরেচয়েও ।
(প্রোতোমার্গং স্রোতোম্পুম্, মার্গন্ধোহত মুধ্রাপ্ত
মার্গবাচী। চক্রটিকা।)

লোষের অভ্যস্ত সঞ্জ ও প্রোতোমুশ সক-তের ানরোধ হেতু উদর রোগ **উৎপন্ন** হইয়া থাকে, অতএব ইহাতে নিত্য বিরেচন ক্রিয়া আবশ্রক।

পাররেৎ তৈলমেরগুং সমৃত্রং সপয়োহপি বা ।
বিরেচন করাইতে হইলে গোমৃত্র কিংবা
উষ্ণ স্থাপ্তর সহিত এরগু তৈল পান করাইবে।
বাতোদরং বলবতঃ শ্রেহখেদৈরপাচরেৎ।
শ্রিষার খেদিতালার দ্যাৎ শ্রিষবিরেচনন্।
হতে দোবে পরিয়ানং বেষ্টরেদ্বাসসোদরম্।
ব্যক্তান্বকাশভাদ্ বায়ুর্নাগ্রাপরেৎ পূনঃ।

রোগির যদি বল থাকে, তাহা হইলে বাজেদর-রোগিকে প্রথমতঃ স্নেহ স্বেদ প্রদান করিয়া স্নিগ্ধ বিরেচন দিবে। বিরেচন দারা দোষ সমস্ত নির্গত !হইয়া উদর কোমল হইলে বস্ত্র দারা উদর বেষ্টন করিয়া চাপিয়া বান্ধিবে; ইহাতে স্থানাভাব প্রযুক্ত বায়ুর দারা উদরাগান হইবে না।

বিরিক্তে চ যথাদোষ-হরৈ: পেরা শৃতা হিতা ॥

বিরেচনের পর উদর রোগে দোষের আধিক্য বুঝিয়া তত্তদোধনাশক ঔষধ সহ পেয়া প্রস্তুত করিয়া সেবন করিতে দিবে।

বাতোদরে পয়ে।২ভ্যাসো নির্ছো দাশমূলিক:। সোদাবর্ত্তে বাভমায়-শতৈরগুমুবাসন:।

বাতোদরে ছগ্নপান কারলে ও দশমুলের কাথে পিচ্কারী দিলে উপকার হয়। উদা-বর্ত্তম্ব্রুক বাতোদরে বাতম দ্রবা ও কাঁজির সহিত এরওতৈল পাক করিয়া অমুবাসন করিবে। এরওতৈলং দশমূলমিলং গোমূত্রমুক্ত ব্রিফলারসো বা। নিহন্তি বাতোদরশোপশূলং কাশং সমূত্রো দশমূলজ্বন্ড॥

দশম্বের কাথে এরওতেল প্রক্ষেপ দিয়া বা ত্রিফলার রসে গোম্ত্র মিলিত করিয়া কিংবা দশম্বের কাথে গোম্ত্র মিলিত করিয়া পান করিলে বাতোদর শোথ ও শূল নই হয়।

क्छां कि ह्र्ग्य ।

কুষ্ঠং দক্তী যক্ষারো ব্যোক্য ত্রিলবণং বচা। অজ্ঞানী দীপাক্য হিন্দু স্বলিকা চব্যচিত্রকৃষ্। শুদ্ধী চোকান্তনা দীতা বাতোদ্যক্ষাপ্রা। কুড়, দক্তী, ষবক্ষার, ত্রিকটু, ত্রিলবণ (সৈরুব, বিটুও সচল লবণ), বচ, ক্লফজীরা, যমানী, হিন্ধু, স্বৰ্জ্জিকার, চৈ, চিতাও ওঁঠ ইহাদের চুর্ণ, সমভাগে লইয়া উপযুক্ত মাত্রায় উষ্ণ জলের সহিত পান করিলে বাডোদর নিবারিত হয়।

সামুদ্রাদ্যং চুর্গম্।

স;মুদ্রসৌবর্চনাসক্ষরানি কারং যবানামজনোপক্ষ।
সপিন্ধলীচিত্রকশৃঙ্গবেরং হিন্ধুং বিড়ক্তেতি সমানি কুর্য্যাৎ ।
এতানি চুর্ণানি যুত্তম,তানি ভূঞ্জীত পূর্ববং কবলং শুলুক্তম।
বাতোদরং শুলুমজীর্ণভক্তং বায়ুপ্রকোপং গ্রহণীং প্রছুষ্টাম্।
অর্শাংসি ফুষ্টানি চ পাঞ্রোগং ভগন্দরকাপি নিহন্তি সন্তঃ।

করকচ, সচল সৈন্ধব, যবক্ষার, যমানী, পিপুল, চিতামূল, ভুঠ, হিন্তু ও বিট্লবণ প্রত্যেক সমতাগ চূর্ণ ঘতে মর্দন করিয়া আহারের প্রথম গ্রাদের সহিত ভোজন করিলে বাতোদর, গুলা, অজীর্ণ, বায়ুপ্রকোপ ও গ্রহণী প্রভৃতি নানারোগ নই হয়।

পিজোদরের বলিনং পূর্বমেব বিরেচরেং। অনুবাজাবলং:কীর-বিভিন্তকং বিরেচয়েং॥ পয়সা সন্তিত্তককেনোকবৃক্শতেন বা। শাতলাত্রায়মাণাজ্যাং শ্তেনারথধেন বা॥

(সত্তিবৃৎকক্ষেন পদ্মসা ইতেকো যোগা:। উল্লুক্কশৃতেন ইতি দ্বিতীয়ো যোগা:। শাতনাদিরারখধান্তক্তপরা জাতুকর্ণসংবাদাং। ইতি শিবদাসা:।)

রোগির বল থাকিলে পিভোদর রোগে প্রথমেই বিরেচন দিবে; কিন্তু রোগী যদি ছর্বল হয়, তাহা হইলে অত্রে অমুবাসন, তৎপরে হগ্ধপ্রধান বন্তি ছারা শোধন করিয়া পশ্চাৎ তেউড়ী কন্ধ মিশ্রিত হগ্ধ কিংবা এরগু-বীজ কিংবা চর্ম্মকবা, বলাডুমুর ও সোন্দালের ফলের সহিত সিদ্ধ হগ্ধ পান করাইয়া বিরেচন করাইবে।

কণাছদ্রিণং ওদং কটুকারারভোজিতন্। মুত্রারিষ্টারস্কৃতিভির্বোজরেচ্চ কলাপহৈ: ।

কফপ্রধান উদররোগে রোগিকে বমন ভিন্ন বিরেচনাদি অভ শোধন দারা ৩% করত কটু ও ক্ষার বুক্ত পেয়াদি অন্ন ভোজন করাইয়া, গোমৃত্র, অরিষ্ট, নবায়সাদি লৌহ বা রসায়নোক্ত লৌহ প্রভৃতি কফনাশক ক্তিয়ধ প্রয়োগ দ্বারা চিকিৎসা করিবে।

সন্নিপাতোদরে সর্কা যথোক্তাঃ কারয়েৎ ক্রিয়াঃ। সন্নিপাতোদ্বের, বাতোদরাদি-নির্দিষ্ট সকল ক্রিয়াই করিবে।

নাত।র্থসালেং মধুরং তক্রং পানে এশস্ততে।

ঈষদ্বন ও মধুররস তক্র পানার্থ প্রশস্ত।

বাতোদরী পিবেৎ তকং পিপ্পলীলবণায়িতম্।
শর্করামরিচোপেতং কাছ পিভোদরী পিবেৎ ॥
যমানীসৈকবাজাজা-মধুবোটেষঃ কফোদরা।
ক্রোযণকারলবণৈয়ু ক্রন্ত নিচমোদরী ॥
মধুতৈলবচাগুলী-শতাহ্বাকুগুলৈকবাঃ।
প্লীজি বন্ধে তু হ্ব্যা-ব্যানীপট্,জাজিভিঃ।
সক্রন্ধামাজিকং ছিলে ব্যোষ্বৎ সলিলোদরে॥

বাতোলরে পিপুল ও দৈন্ধবলবণের সহিত, পিত্তোদরে চিনি ও মরিচের সহিত, কফোদরে মমানী, সৈন্ধব লবণ, জীরা, মধুও ত্রিকটুর সহিত এবং সরিপাতোপরে ত্রিকটু, যবক্ষার ও দৈন্ধব লবণের সহিত তক্র পান করাইবে।
প্রীহোদরে বচ, শুঁঠ, শুল্ফা, কুড় ও সৈন্ধব লবণ ইহাদের চুণ, মধু ও তৈল মিশ্রিত তক্র পান করাইবে। বজোদরে হবুযা, যোয়ান, সেন্ধব লবণ ও ক্রফানীরার সহিত, ছিলোদরে পিপুলচ্প ও মধুর সহিত এবং দকোপরে বিকটুচ্পের সহিত তক্র পান করাইবে।

भीरहाम्यत भीरहतः करमामतहतः उथा ॥

প্লীহোদরে প্লীহনাশক এবং প্লীহোদর-হর চিকিৎসা করিবে।

শিলার বন্ধোদরিশে মৃত্রতীক্ষোরধায়িতম। সতৈললবণং দক্তান্নিজহং সামুবাসনম। পরিশ্রংসীনি চালানি ভীক্ষকৈব বিরেচনম। ছিজোদরমৃতে স্বেদাৎ শ্লেমোদরবদাচরেৎ।

বন্ধোদরে, রোগির উদরে স্বেদ দিয়া পরে গোমূত্র ও ভীক্ষবীর্য্য ঔষধযুক্ত, তৈললবণ-বহুল নিরুহণ ও অমুবাসন প্রয়োগ করিবে, এবং শিক্তাদির অমুলোমনকারী ভোজন ও তীক্ষ বিবেচন ব্যবস্থা করিবে। ছিদ্রোদর-রোগে স্বেদ ব্যতীত কন্দোদরোক্ত অস্তান্ত চিকিৎসা করিবে।

জাতং জাতং জলং প্ৰাৰাং শাবোক্তং শস্ত্ৰকৰ্ম চ। জলোদৰে বিশেষণ জনসেবাং বিবৰ্জধ্যে।

ব্দলোদরে যেমন ব্দল সঞ্চিত হইবে, আমনই শল্যপান্ত্রোক্ত বিধানাস্থসারে অন্তর দারা জল বাহির করিয়া ফেলিবে এবং জলীয় দ্রব্য ভোজন একবারে পরিত্যাগ করিবে।

দেবলাকপলাপাক-হন্তিপিশ্ললিশিগ্র্কিঃ। সাধ্যমকৈঃ সগোম্টারঃ প্রদিখাগ্রদারং শনৈও॥ মুবাবাষ্টাবুদরিশাং দেকে পানে চ লোজমেং। সুভীপারোজাবিভানাং পিশ্লনামং পারেংশনং। সহস্রঞ্জার শক্তিতো জঠবাম্যা॥

উদররোগে দেবদারু, পলাশফল, আকন্দ, গছপিপলী, শজিনা ও অর্থপদ্ধা এই সকল দ্রব্য গোমুত্রে পেষণ করিয়া সেই পিষ্ট কল্প দ্রবা উদর ক্রমে ক্রমে ক্রমে ক্রমে প্রলিপ্ত করিবে। পরিষেকেও পানে গোমুত্রাদি অষ্টবিধ মূক্র প্রয়োগ করিবে। মনসাসীজের আঠায় পিপ্পলী ২১ বার (ব্যবহার ৭ বার) ভাবনা দিয়া সেই ভাবিত পিপ্পলী তিনটি, চারিটি, পাচটি বা কোষ্টামুন্দপ যে কয়টি উপস্তুল, সেই কয়টি করিয়া প্রতিদিন বা একদিন অস্তর অর্থবা ছই তিন দিন অস্তর এই প্রণালীতে শক্তি অন্থপারে সহস্র পিপ্পলী পর্যাস্ত দেবন করিবে। পিপ্ললী সেবনকালে ছগ্ধ পান করিবে।

শিলাজত্নাং মুত্রাণাং গুগ্গুলোজৈফলতা চ। সুত্রীক্ষারপ্রয়োগণ্ট শময়ত্যুদরমেয়মূ॥ (ত্রৈফলতাতি গুগ্গুলোবিশেষণম্। সমাসাস্তর্গত-মপি প্রয়োগপদং চকারাজিলা;জনাদিভিঃ প্রত্যেকং

मश्वारत । इन्डि निवन'मः।)

শিলাজতু, গোম্ব, ত্রিফলাগুগ্গুলু ও মনদাদীজের আঠা, এই দকল দ্বব্য উপ-যুক্ত মাত্রায় দেবন করিলে উদর মোগের শান্তি হয়।

অুক্ণয়দা পরিভাবিতত গুলচুবৈনিমিতঃ পূপঃ। উদন্ধুদাবং হিংস্তাদ ঘোগোহয়ং সপ্তরাত্তেব । মনসাসীজের আঠার তণ্ণল-চূর্ণ ভাবনা দিয়া সেই ভাবিত তণ্ডুল-চূর্ণের পিষ্টক করিয়া সেবন করিবে। এই পিষ্টক সাতদিন সেবন করিলে উদর রোগ প্রশমিত হয়।

পিপ্ললাবদ্ধমশনং বা কল্পন্তং প্রযোজয়েও। ভট্টবাণাং বিনাশার নান্তি তেন সমং ভূবি॥

চরকোক্ত রদায়ন-বিধানামূদারে পিপ্লনী-বৰ্দ্ধমান প্রয়োগ করিবে। উদররোগ-বিনা-শার্থ এরূপ ঔষধ আর ভত্তে বিতীয় নাই।

দন্তী বচা গৰাকী চ শন্ধিনী ভিত্তকং তিবৃৎ। গোমু তথা পিৰেদেভজ্ঞানয়নশেনম্॥

দ্ঞী, বচ, রাখাল্শশা, চোরপুশাী, লোগ ও তেউড়ী এই সকল একত্র পেযণ করিয়া, গোমুত্রের সহিত পান করিলে ছঠর রোগ নষ্ট হইয়াথাকে।

সক্ষীরং মাহিষং মুক্তং নিরাহারঃ পিবেল্লরঃ।
শামাত্রানেন জঠরং সপ্তাহাদিতি নিশ্চয়ঃ॥
(মাহিষং মুক্তং পলমেকং ছয়ং বা পীতা বিরেকে
সতি গোক্ষারমেব পাঁড়া স্থাত্রামিত্রাপদিশতি।)

অনাহারে ১ পল কিংবা ২ পল মহিধের মূত্র পান করিয়া বিরেকের পর কেবল গো-ছগ্ধ পান করিয়া থাকিবে। ইহাতে জঠর রোগ নিবারিত হইবে।

গবাকী শ্ছিনাদত্তী নালিনাক ধনংযুত্য।
সংক্রাদরবিনাশার গোমুকং পাছুমাচরেও।
রাধালশানা, চোরপুজ্গী, দন্তী ও নীলীবৃক্ষ, ইহাদের চুর্ণ সংযুক্ত গোমুক্ত পান ক।রলে
সংক্রাদর বিনষ্ট হয়।

দেবক্রমং শিগ্রু রক্ত্বক্ত গোমূত্রপিষ্টামথবাখগন্ধাম্। পীতাও হক্তাহ্রদরং প্রবৃদ্ধং ক্রিমীন্ সংশাধাক্রদরক দূব্যম্॥

দেবদার, এজিনা ও আপাং এই সকল দ্রব্য অথবা অর্থান্ধা গোমুত্রে পেষণ করিয়া পান করিলে, প্রবৃদ্ধ উদর রোগ, ক্রিমি ও শোথ উপদ্রব এবং দুয়োদর বিনষ্ট হয়।

দশ্মলগালনাগার জিলাক্রমণ্যন্নবাভরাকাথ:।

ক্ষমতি জলোদরশোধনীপদগলগওবাতরোগাংক।

দশমূল, দেবদারু, ভঠ, গুলঞ্চ, পুনর্মবা ৪ হুরীজকী, ইহাদের কাথ দেবন করিলে জলোদর, শোপ, শ্লীপদ, গলগণ্ড ও বাতরোগ নিবারিত হয়।

পুনর্বাং দার্বভয়াং গুড়ুটাং
পিবেৎ সম্ত্রাং মহিবাক্ষযুক্তাম্।
জগ্দোবশোধোদরপাঞ্রোগছৌলাপ্রসেকোর্জক্ষাময়ের্॥
গোম্ত্রযুক্তং মহিবীপয়ো বা
কারং গবাং বা তিফলাবিমিশাম্॥
কারাশ্রভুক্ কেবলমের গবাং
মৃত্রং পিবেরা খ্রগ্লরের॥

শুন্বা, দেবদান, হরীতকী, গুলঞ্চ, এই সকল জব্যের কাথে গোমুত্র ও গুগ্গুলু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে তথ্যদাষ, শোপ, উদ্বর, পাপু, স্থৌলা, প্রসেক ও উর্দ্ধশেষজ রোগ নপ্ত হয়। শোথসংস্কু উদররোগে গোমুত্রের সহিত মহিষীছ্য় কিংবা ত্রিফলার কাথ বা কল্ক সহ গব্য ছগ্ম পান করিবে। কেবল ছগ্মের সহিত জন্ম ভোজন।এবং গোমুত্র পানও হিতকর।

পুননবা দার্কবিষ্তা পাঠা বিশং খদংট্রকা।
বৃহত্তা) ছে রজজ্যো ছে পিপ্ললান্দিত্রকং বৃষম্ ।
সমভাগানি চূর্ণানি গবাং মৃত্রেণ বা:পিবেৎ।
বছপ্রকারং খয়পুং সর্কাগাত্রবিসারিণম্।
হল্তি শোঝোদরংগান্তৌ রণাংকৈবোদ্ধতানপি॥

পুননবা, দেবদারু, গুলঞ্চ, আকনাদি, বিলমুল, গোক্ষুর, বৃহতী, কণটকারী, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, পিপ্পলা চিতা ও বাসক এই সকল দ্রুব্য সমভাগে চুর্গ করিয়া গোমুত্রের সহিত পান করিলে সর্বাঙ্গব্যাপী বহু প্রকার শোধ এবং শোধ্যুক্ত আট প্রকার উদর ও উৎকট ব্রণ নষ্ট হয়।

পুনর্নবাদি-কাথঃ।

পুমনিবা দাক নিশা সতিক্বা
পটোলপথা-পিচুমৰ্জম্পুতা।
সনাগরচিত্রক্তংহতি সহৈ কৈ:
কুত: ক্বালো বিধিনা বিধিজৈ: ॥
পোম্তবৃশ্ভগ ভুলুনা চ যুক্ত:
পীত: প্রভাতে নিরত: নরাণাম।
সর্কালণোখোদরকাসশূলবাসাধিতং পাঙুগদং নিহন্ত।

পুননবা, দেবদারু, হরিন্তা, কট্কী, পল্তা, হরীতকী, নিম্ব, মূতা, শুঠ ও গুলঞ্চ মিলিত ২ তোলা। ইহাদের কাথে গোমূত্র ও গুল্প শুলু প্রক্ষেপ দিয়া প্রভাতে পান করিলে সর্বান্ধগত শোথ, উদর, কাদ, শূল, খাদ ও পাপুরোগ নিবাবিত হয়।

মাণমণ্ডঃ।

পুরাণং বাণকং পিষ্ট্ । বিশ্বণীকৃততভুলন্।
নাধিতং কীরতোরাজ্যানজ্যক্তেৎ পারসন্ত তৎ ॥
হত্তি বাতোদরং শোধং গ্রহণীং পাঞ্ডানপি।
সিন্ধো ভিষগ ভিরাধানতঃ প্ররোগোহয়ং নিরভায়ঃ ॥
(পুরাণমিজ্যাদি। পুরাণমাণকক্ত মূলং পলমাঞং
দরদলিততভুলক্ত পলহয়ং কীরতোরাজ্যাং সমাজ্যাং
সাধ্যিত্বা পায়দঃ বায়ঃ। অক্তোপ্যোগেহপরমন্ত্রগ্লনং
নামীরাদিভ্যান্থঃ। বোগোহংং লোকমাত্রেহপি প্রজবতি।
ইতি শিবদাসঃ।)

প্রাতন মাণ ১ ভাগ, আতপত গুল চুর্ণ ২ ভাগ, সজল হয় ২৪ ভাগ, একএ পাক করিয়া মণ্ড প্রস্তুত করিবে। ইহা প্রত্যহ পান করিলে বাতোদর, শোগ, গ্রহণা ও পাণু এই সমস্ত রোগের শাস্তি হয়।

নারায়ণ-চুর্ম।

যমানী হবুষা ধান্তং ত্রিফলা সোপকুঞ্চিকা। কারবী পিখল মূলমূলমূল দাঠী বচা ॥ শতাহ্বা জারকং বোষিং স্বৰ্ণক্ষারা সচিত্রকা। को कारतो (भोकतर मृतः कुछः जनगभक्षकम् । বিড়ক্ক সমাংশানি দন্ত্যা ভাগতায়ং তথা। ত্রিবুদ্বিশালে দিওণে সাতলা স্থাচত হও গা। এয নারায়ণো নাম চুর্ণো রোগগণাপহ:। নৈনং প্রাপ্যান্ডিবর্দ্ধন্তে রে'গা নিমুখ্মিবাছর': ॥ তক্রেপাদ্রিভিঃ পেয়ো গুলিভিবদবাসুণা। 'অ'নদ্দৰাতে কুর্য়া বাত্রোগে প্রদন্ত।॥ দ্ধিমণ্ডেন বিট্টসঙ্গে দাড়িমাসুভিরশদৈ:। পরিকত্তে চ বুক্ষামেক্ষণাস্থ ভিরত্তীর্ণকে। ভগন্দরে পাঙ্রোগে কি.সে খাসে গলগ্রহে। ছালোগে গ্রহণীলোবে কুন্তে মন্দানলে অবে । परद्वानित्य मृत्रानित्य मगरत कृजिस्म नित्य । যথাইং স্থিক্ষকোষ্ঠেন পেয়মে তদ্বিরেচনম্ ॥

यमानी, श्रृषा, धरन, शिक्ना, क्रुक्कीता, कांत्रवी (जेवर कृप जीता), शिक्षनीयन, বনষদানী, শঠী, বচ, ওল্কা, জীরা, ত্রিকটু, বর্ণক্ষীরী, চিতা, যুবক্ষার, সাচিক্ষার, পুষর-মূল, কুড়, পঞ্চলবণ ও বিডঙ্গ এই দকল দ্রবা প্রত্যেক এক এক ভাগ, দুষ্ঠা ৩ ভাগ, তেউড়ী ২ ভাগ, রাথালশ্যা চই ভাগ, চন্দ্রকষা চারি ভাগ, এই সমুদায় দ্রব্যের চুর্ণ একত্র সেবন করিলে সকল রোগ বিনষ্ট হয়। এই চুর্ণ উদররোগে তক্রের সহিত, গুলারোগে কুলের কাথ সহ, আনাহ-বাতে হুৱা সহ, বাত্রোগে প্রসরা (সরামণ্ড) সহ, মলবদ্ধভায় দ্ধির মাতের সহিত, অংশীরোগে দাডিমের সহ, পরিকভিকা রোগে (গুয়ে ও কর্ত্তনবৎ পীড়ায়) প্রকল সহ ও অজীর্ণ রোগে উষ্ণজ্ঞ সহ পান করিবে এবং ভর্মরে, পাণ্ডু, কাদ, খাদ, দংশন জ্ঞাবিষ, মুলবিদ, বিষ-দোষ ও ক্লাত্রমবিষ প্রভৃতি রোগে উপযুক্ত অফুপানের সহিত সেবন করিলে বির্য়েচন হইয়া বিশেষ উপকার হয়।

পটোলান্তং চুণম্।

পটোলমুকং রজনীং বিচ্ঙ্গং ত্রিকলাম্বচন্।
কম্পিলকং নালিনীঞ্ তিবৃত্যকেতি চুণারং ॥
যড়াপ্ত'ন্ কার্ষিকানস্তাংশ্বাংশ্চ দ্বিত্রিচ্ছুপ্ত শান্।
করা চুর্নং এতো মুঞ্জিং গবাং মৃত্যেন বা পিবেং ॥
বিরিজ্ঞো মুক্ত ভুজাত ভোজনং জাঙ্গলৈ রসৈঃ।
মণ্ডং পেয়াঞ্চ পাছা চ সব্যোধং ষ্ট্রুং প্রঃ॥
শৃতং পিবেং ভতশচ্বং পিবেছবং পুনংপুনঃ।
১ন্তি সংকানরাগ্যেতচ্চুবং জাতোদকাশ্বপি॥
কামলাং পাঞ্রোগঞ্চ অয়ুক্পাপকর্তি।
পটোলাপ্তমিদা চুর্ন্নরের অপুজিতম্॥
(নীলিনী নালবুকা, ১ঞ্জাশ্চ কলং বৃদ্ধ্বাগ্ভট-সংবাদাণিত শিবদাসঃ।)

পটোলমূল, হরিদ্রা, বিজন্ধ ও বীজরহিত জিফলা প্রভাকে ২ ভোলা, কমলাও জি ৪ ভোগা, নালবুহুক্তিল ৬ ভোলা, তেউড়ামূল ৮ ভোলা, এই সকল জব্য চূর্ণ করিয়া সেই চুর্লি৮ ভোলা পরিমাণে গোমূল্ল সহ পান

করিতে দিবে (এক্ষণে ২ তোলার অধিক মাত্রা প্রধোজ্য হয় না)। এই চুর্ণ সেবন **इ**डेटन করিলে বিরেচন হুইবে। বিরেচন সহিত মণ্ড জাঙ্গল মাংস রসের পেয়াদি লঘু ভোজ্য ভোজন এবং ত্রিকটু সহ হগ্ধ সিদ্ধ করিয়া সেই হগ্ধ পান করিতে দিবে। ছয় দিন পর্যান্ত এইরূপ পথা সেবন করা-ইবে। তৎপরে পুনর্কার সপ্তম দিবসে ঐ চূর্ণ থাওয়াইবে। এই চূর্ণ দেবনে দর্বপ্রকার উদর, এমন কি জাতোদক উদর, কামলা, পাও ও শোথ বিনষ্ট হয়। এই পটোলাগ্ত চুর্ণ সকল উদরেই হিতকর।

রসপ্রযোগঃ।

ত্রৈলোক্যস্থন্দরে। রসঃ।

শুদ্ধস্থ হং বিধাগন্ধং তাদ্রাভাং দৈন্ধবং বিবস্।
কুঞ্জীবং বিভূসক শুভূ চীসন্বচিত্রকম্ ॥
উপ্রগন্ধা যবক্ষারং প্রভ্যেকং কর্মাত্রকম্ ।
নিশু প্রিকাজবৈদ্ধানীজপ্রজবৈদিনম্ ॥
মন্দ্রিয়েছে।বয়েং সোহরং রসপ্রেলোকা ফুলবঃ ।
শুস্তান্ধরং হুভৈলে কং বাতোদরক্লান্তকম্ ॥
বিশ্চুর্গং যবক্ষারং প্রভ্যেকক্ পলঘর্ষ্ ।
যুতপ্রস্থং বিপক্তব্যং গোমুক্তক্ত চতুপ্ত শৈঃ ।
যুতপ্রস্থং বিপক্তব্যং ক্ষমাত্রং প্রিকেন্ত্র্ ॥

শোধিত পারদ ১ তোলা, গন্ধক ২ তোলা, তাত্র, অল্ল, সৈন্ধবলবণ, বিষ, কালজীরে, বিড়ঙ্গ, গুলঞ্চদন্ধ, চিতা, বচ, যবক্ষার প্রত্যেক ছই তোলা করিয়া গ্রহণ করত নিসিন্দা, চিতাও টাবালেব্র রসে এক এক দিন মর্দদনকরিবে। স্থতের সহিত ২ রতি পরিমিত্ত সেবন করিবে। ইহাতে বাতোদর নিবারিত হয়। পশ্চাৎ চিতাও যবক্ষার প্রত্যেক ২ পল (১৬ তোলা)ও সত্ত এক প্রস্থ । ৪ চারিসের); ৪ গুণ (১৬ সের) গোম্তা সহ পাক করিবে। স্থত অবশিষ্ট থাকিতে নাম্মাইয়া ২ তোলা পরিমাণে সেবন করিবে।

ইচ্ছাভেদী রসঃ।

শুঠীমরিচসংযুক্তং রসগন্ধকটক্রণম্।
কৈপালান্তিগুণাঃ * প্রোক্তাঃ সর্বমেকত্র পেষরেৎ।
ইচ্ছান্ডেদী বিশুক্তঃ স্থাৎ সিতরা সহ পায়রেৎ।
পিবেৎ তু চুন্নকান্ যাবৎ তাবদ্বারান্ বিরেচয়েং।
তক্ষেদনক দাতব্যমিচছান্ডেদী যথেচছয়া॥

ষ্ঠ, মরিচ, পারা, গন্ধক ও সোহাগা প্রত্যেক ১ তোলা, জন্ধপাল ৩ তোলা (রুসে-দ্রের মতে ২ তোলা), এই সমূদ্য একত্র জলে পেষণ করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটকা করিবে। অন্ধুপান—চিনির জল। যত গণ্ড্ষ চিনির জল পান করিবে, ততবার দান্ত হইবে! পথ্য—বোল ও অন্ন।

ইচ্ছাভেদী রসঃ।

ওদ্ধত্তত মাধৈকং গঞ্জকান্মায়কত্রয়ম্।
বিভাতকত মাধৈকং খাত্র্যাদৈনৰ তুমায়কম্ ॥
মাষ্য্যক পিপ্ললাঃ শুটীনাং মাষ্কত্রয়ম্।
জৈপালবাজমজারা গুড়কং বিংশতিং তথা ॥
অমলোণারনৈঃ সাদ্ধং তোয়মূলং পিবেদন্ত।
তাবদ বিবিচাতে বেগাদ যাবচ্চীতং ন সেবতে॥

পারদ ১ মানা, গদ্ধক ৩ মাধা, বহেড়া ১ মানা, আমলকী ১ মাধা, পিপুল ২ মাধা, শুঠ ৩ মাধা, জন্মপাল বীজ ২০টা; আমরুলের রুপে মদ্দন করিয়া কলায় প্রমাণ বটিকা করিবে। অন্ধুপান—আমরুলের রুস ও উষ্ণ জল। যাবৎ শীতলজল পান না করা যায়, তাবৎ পর্যান্ত বিরেচন হয়।

ইচ্ছাভেদী রসঃ।

স্তং গন্ধক মরিচং টঙ্গণং নাগরাভয়ে। জৈপালবীজসংযুক্তং ক্রমোন্তরগুণং ভবেৎ॥ সব্বক্তগোদরে † দেয় ইচ্ছাভেদী স্বয়ং রসঃ। দ্বিগ্রিগুঞ্জাং বটাং ভুকুণ ভক্ততোয়ং শিবেদ্সু।

- অঞ্পা ইতাত দিঞ্পা ইতি রসেক্রধৃতঃ পাঠঃ।
 চুলকং সিতোদকগভূষ্ম।
 - 🕂 সর্বভুল্যো গুড়ো দেয়: ইতি রক্সাবল্যাং পাঠঃ।

পারদ ১ ভাগ, গন্ধক ২ ভাগ, মরিচ ৩ ভাগ, সোহাগা ৪ ভাগ, শুঠ ৫ ভাগ, হরীতকী ৬ ভাগ, জরপাল ৭ ভাগ। (পাঠাস্করে সমষ্টি- তুলা শুড়) একত্ত মর্দ্দন করিয়া ২।০ রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। অমুপান--- উষ্ণ জল।

জলোদরারি-রসঃ।

পিশলী মরিচং তামং রজনীচ্পদংশুতম্।
সুহীকীরৈদি নং মন্দিং তুলাং জৈপালবীজকম্॥
নিকং প'লেদ্বিরেকঃ স্তাৎ সংস্থা হস্তি জলোদরম্।
রেচনানাক সংক্ষোং দধ্যাং শুস্তনে হিতম্।
দিনাস্তে চ প্রদাতব্যমাং বা মূলগ্যুবকম্।

পিপুল, মরিচ, তাম ও হরিদ্রাচ্ণ ইহাদিগকে মনসাসীজের আঠাতে একদিন মদন
করিরা দকল চূর্ণের দমান জ্বপাল চূর্ণ
তাহাতে মিশ্রিত করিবে। পরিমাণ ৪ মাধা।
ইহা সেবন করিলে বিরেচন হইয়া দত্ম: জলোদর বিনষ্ট হয়। দর্বপ্রকার রেচন-স্কন্তনের
জন্ম দিও অয় স্থপা। বোগিকে দিনাস্তে
অয় বা মুগের যুব প্রদান করিবে।

জলোদরারি-রস:।

রদেন গন্ধং বিগুণং শিলা চ
নিশা চ বাজং জয়পালকক।
ফলত্রাং ক্রাবণকক চিত্রং
সর্কাং বিচুণ্যাপি বিভাবদেচ ॥
দত্তীমুহীভূক্ষরসে পৃথক্ চ
সন্ধান্য সংশোষ্য চ সপ্তবারান্।
বর্মো বলং বীক্ষা তথা দদীত
জাতে বিরেকে চ দদীত পথ্যম্ ॥
অন্নং সতকং শিলিরামুশায়ি
জাতে বলে তৎ প্ররেব দত্তাৎ।
তক্রেণ রোগং সমূপৈতি শাস্তিং
দিলো রদো নাম জলে।দরারিঃ॥

পারদ ২ ভোলা, গন্ধক ৪ তোলা, মন-ছাল, হরিদ্রা, জমপালবীজ, ত্রিফলা, ত্রিকটু ও চিতামূল প্রত্যেক ১ তোলা, এই সমুদায় জব্য দক্ষী, সিজ ও ভৃঙ্গরাজের রসে ভাবনা
দিয়া বটিক। প্রস্তুত করিবে। ব্যুদ ও বল
বিবেচনা করিয়া (২ রতি হইতে ৪ রতি) মাত্রা
ব্যবস্থা করিবে। ঔবধ সেবন করিয়া বিবেচন হইলে তক্রসংস্কুত শীতল পথ্য ব্যবস্থা
করিবে। কিয়ংক্ষণ পরে অবসন্ধ ভাব দূর
হইলে পুনরায় এইরূপ পথ্য দিবে। ইহাতে
জলোদর বিনষ্ট হইয়া থাকে।

নারাচরসঃ।

পথ উন্ধণতুল্যাংশং মরিচং প্রতুল্যকম্।
গন্ধকং পিশ্বনী গুটা ছৌ ছৌ ছোগৌ বিচুর্ণরেং॥
সবপতুল্যং ক্ষিপেদন্তী-নীজং নিস্তুজ্যর চ।
বিশুল্পো রেচনং সিদ্ধং নারাচোঞ্যং মহারদঃ।
গুল্মপালাদরং হন্তি পিবেং তড়লবারিণা।
পারদ, সোহাগা ও মরিচ প্রত্যেক ২
তোলা; গন্ধক, পিপুল্, শুঠ প্রত্যেক ২
তোলা, নিস্তুষ জ্যুপালবীজ্ঞ তোলা। এই
সমূদ্য জলে মর্দ্দন করিয়া ২ রতি প্রমাণ বঁটা
করিবে; অনুপান—তণ্ণুলোদক। ইহা গুলা

বহ্নিরসঃ।

প্রত্ত গ্রহকত হো রছনাত্রিগলাশিলা। । প্রটোকক হিছাগং স্থাৎ ত্রিরজৈপ লচিত্রকম্ ॥ প্রত্যকং স্থাৎ বিভাগক বো যং দপ্তিকজীরকম। গ্রভোক সপ্রভাগং স্থাদেকীকুতা বিচুর্ণরেৎ ॥ জয়ন্ত নি কুপয়ে 'ভূ**ন্গ**-বহিং-বা হ'বিতৈলকৈ:। প্রত্যেকন ক্রমান্ত বাং সপ্তবারং পুথক পুথক। भ्राविक्तितामा नामा निक्षमुक्कितः भिरत् । বিষ্ণেচকং ভবেৎ তেন তক্রভুক্তং সমেশ্ববম্। हिन एक पार्थाए श्रेशः वङ्ख्याक्री छतः जलम । সক্রোদরহন: ,প্রাক্তঃ রেখবাতহরঃ পরঃ॥ পার্চ ও গ্রুক প্রাকে ৮ ভাগ , ত্রিফলা ও মন-শিলা প্রত্যেক ২ ্রেউড়ীমূল, ভয়পাল, চিত্রা প্রত্যেক গভাগ; ত্রিকটু দম্ভী ও জীরা প্রত্যেক ৭ ভাগ করিয়া গ্রহণ করিবে। পরে চুর্ণ করিয়া সিজের আঠা, ভুঙ্গরাজ, চিতা ও এরও তৈলে

ক্রমশঃ ৭ বার পৃথক্ ভাবনা দিয়া ॥ । ভোলা পরিমাণে (উপযুক্ত নাত্রায়) উষণ জলের সহিত সেবন করিতে দিবে। বিরেচন হইলে সৈম্বের সহিত তক্রযুক্ত পথ্য দিনাস্তে একবার দিবে। শীতল জল খাওয়া নিষিদ্ধ। ইহাতে সর্বপ্রকার উদর রোগ নই হয়।

শোথোদরারি লোহম।

পুন্রবামৃতাবহ্নি-গবাক্ষীমাণশিগ্রব:। र्यार्विक्म्लक प्रथाहेपनः कल । পাদশেকে শৃতং জ্রোণে স্থপুতে বস্তুগালিতে। লৌহচূর্ণাষ্ট্রপলকং পচেদাঞ্জাসমং ভিষক । অর্কস্ত দ্বিপলং ক্ষীরং স্কুইক্ষীরং চতুষ্পলম্। পলম্বাং কৌশিকস্ত গন্ধকস্ত পলং তথা । পলার্কিং পারদং সিদ্ধে বন্ধানাগন্ত নিক্ষিপেং। ভাষপালং ভাষমত্রং শুদ্ধমতা প্রদাপরেৎ 🛭 कक्ष्ठेविक्कमानाः भत्राधाम् घन्ठेकर्गकाः । পলাশস্ত চ বীজানি কঞ্কী ভালমূলিকা 🕆 ত্রিকলায়াঃ ক্রিমিরিপোক্তিরুদ্ধন্তীভবং তথা। স্যাবর্ত্তপবাক্ষ্যেশ্চ বর্ষাভর্বজ্ঞবন্ধিকা :: এবাং জৌহসমাং মাত্রাং শ্লিঞ্চে ভাতে নিধাপয়ে। অতোহন্ত ভক্ষেক্সত্ৰ মনুপানক বৃদ্ধিতঃ ॥ হস্তি সর্কোদরং नীভং নাত্র কাথ্যা বিচারণা। বে চ শোখাঃ সুত্রবারাশ্চিরকালাসুব্ধানঃ। তান সর্বান নাশয়ত্যাও তমঃ সুর্যোপ্রে যথা। নাতঃ পরতরং কিঞ্চিছোখোদর্বিনাশন্ম। উদর'ণি পাণ্ডরোগং কামলাঞ্চ্লীমকম্। व्यामी अभिनेतर कुछेर खत्रर खन्नक नांगाहर ।

প্নর্না, গুলঞ্চ, চিতাম্ল, গোরক্ষচাকুলে, মাণ, শজনে ম্ল্, হুড় হুড়ের মূল ও আকলমূল প্রত্যেক /১ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। এই কাথ ছাকিয়া লইয়া লোহ /১ সের, ম্বুত /১ সের, আকলের আঠা /।০ এক পোয়া, সিজের আঠা /॥০ সেন, গুল গুলু /০ পোয়া, সহক ১ পল, পারা ৪ তোলা (উভয়ে কজলী করত) মিশ্রত করিয়া পাক করিবে। শাক দিছ হুইলে জয়পাল, তাম, অল্র, কছুর্ন্ন, চিতামূল, বনওল, শরপুল, বে টুকোল, পলাশবীল, কীরীশ, তালমূলী, ত্রিফলা, বিড়ঙ্গ, তেউড়ী, দস্তীমূল, হুড়হুড়ে, গোরক্ষচাকুলের

মূল, পুনর্বা ও হাড়যোড়া, এই সমুদারের মিলিত চুর্ণ /১ সের প্রক্ষেপ দিয়া যথাবিধানে পাক সমাধা করিয়া মৃতভাঙে রাখিবে। মাজা ও অমুপান বিবেচনা করিয়া ব্যবস্থা করিবে। ইহা শোথ ও উদর রোগের মহৌষধ এবং ইহাতে পাণ্ডু, কামলা, হলীমক, অর্শ: ও ভগন্দর প্রভৃতি অন্তান্ত অনেক রোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

পিপ্লল্যান্তং লেহিম্।

পিশনীন্লচিত্রাল-ত্রিকতরেন্দুদৈশ্বন্।
দর্বচূর্ণদনং লৌহং হন্তি দর্বেদ্রাময়ন্।
পিপুলন্ল, চিতা, অল্ল, ত্রিকটু, ত্রিফলা,
ত্রিমল (চিতা, মুতা ও বিড়ঙ্গ), কর্পূর ও
দৈশ্বব এই দকলের চুর্ণ দমভাগ; দকল চুর্ণের
দমান লৌহচুর্ণ একত্র বটী করিয়া দেবন
করিবে। ইহা দকল প্রেকার উদর রোগ
বিনাশক।

উদরারি-রসঃ।

প রদং শিথিতুথক জৈপালং পিশ্লীসম্। আরথধ্চল নজ জো বজাকারেণ মর্দিরে ।
মামানাং বটাং পাদেদ জাপাং জলোদনং জয়েও।
টিক কলরসকাক পথাং দধ্যে দক্ষে ।
দকেদরহরকৈব ভীরেণ বেচনেন চ॥

পারদ, তুঁতে, জয়পালবীজ ও পিপুল সমভাগে লইয় দোন্দ।ল কলের মজ্জা ও সিচ্ছের
আঠাতে মর্দিত করিয়া এক মাধা পরিমিত বটী
প্রস্তুত করিবে। তেঁতুলের রস—অম্পান।
পথ্য—দিধ ও অয়। ইহা ছারা তীত্র রেচনের
পর জলোদর নাশ হয়। স্বীলোকের জলোদরে
ইহা মতি উৎক্ঠ ওঁষধ।

শ্রীবৈদ্যনাথাদেশবটিকা।

ত্রিকটুকপারদপণ্যাসরভাগং ক'নকফলং বিশুগন্। মাবপ্রমাণা বটিকা কায্যা স্বরসেনায়লোণিকায়া: ॥ প্রবাজলোদরগুল্মজরপাঙ্গাম্মনাশিনী প্রোক্তা। তিমিরাণি পটলবিদ্রধিপ্রবলোদাবর্জপুলহরা॥ ক্রিমিকোঠকুঠকভূপিড়কাল্ড নিহস্তি রোগচরম্। সিদ্ধগুড়ীপ্রথিতা ভূবনে দ্বীবৈজ্ঞনাথপাদাজা ॥ (অতিসরণে সভি হস্তপাদপ্রকাননপূব্বকং দ্ধি ভক্তেন ভোজয়েৎ। পথ্যং স্বল্প দেয়ম্।)

ত্তিকটু, রদসিন্দ্র, হরীতকী প্রত্যেক সমভাগ, সর্ব্বিগুণ জয়পালবীজ। এই সমৃ-দার আমরুলের রদে মর্দন করিয়া > মাষা পরিমাণে বটিকা করিবে। ইহা দেবন করিলে প্রবল জলোদর, গুলা, জর, পাণ্ড, তিমির, পটল, বিজ্ঞাণ ও উদাবর্গ্ত প্রভৃতি বিবিদ পীড়ার শান্তি হয়। এই ঔষধ সেবন করিয়া ধনি নিতান্ত জানিক পরিমাণে বিরেচন হয়, তাহা হইলে হস্ত ও পদ প্রেকালন পূর্ণক দাধ ও অয় ভোচন করাইবে। পথা অল পরিমাণে দেয়।

ভেদিনা বটা

ত্রিকণ্টকন্মূক্পয়সা পিপ্ললা বটিকা কৃতা। ভেদিনীয়ং সিদ্ধিষতী মহাগদনিস্পনী।

গোক্ষ্ব, সিজের আঠা ও পিপুল এই সম্দার একত্র মর্দন করিয়া বটিকা প্রস্তুত করিবে।
ইহা সেবন কারলে বিরেচন হইয়া জনেক
প্রবল্পীড়ার শাহ্তি হয়।

অভয়া বটা।

অভয়া মরিচং কৃষ্ণা উঙ্গণক সমাংশিকন্।
সর্বচুর্ণসনং ভাগং দত্যাৎ কানকজং ফলন্ ।
প্রাক্তীক্ষারে সংস্কুর্যাদ্ বটাং স্থিপ্পকলারবং।
বটাছ্যং শিবামেকাং পিষ্টুন্ন তভুলবারিণা।
উকাদ্ বিরেচয়েদেবা শীতে স্বাস্থাম্পতি চ।
জীর্ণজ্ঞরং প্লীহরোগং হস্তান্তাব্দরাণি চ।
বাতোদরে প্রশন্তেয়ং সর্বাজীর্ণং ব্যুপাছতি।
কামলাং পাভুরোগঞ্চ তথৈব কৃষ্ণকামলান্।

হরীতকী, মরিচ, পিপুল ও সোহাগ প্রত্যেক সমন্তাগ, সর্ব্ধসমান জ্মপাল। সিজের স্মাঠার মর্দ্ধন করিয়া সিদ্ধ মটর তুল্য বটকা প্রস্তুত্ত করিবে। সেবনের নিয়ম এই —একটী হরীতকী তপুলোদকে বাটিয়া তাহার সহিত একবারে ২ বটিকা সেব্য। যাবৎ উষ্ণ জ্লাদি পান করা যায়, ভাবৎ বিরেচন ইইতে থাকে, শাতল জল পান করিলে বিরেচন নিবৃত্ত হয়। ইহাতে জীর্ণজ্বর, উদর, প্লীহা ও সর্ব্বপ্রকার অজীর্ণ প্রভৃতি পীড়া উপশ্মিত হয়। ইহা বাতোদরে প্রশস্ত।

চুলিক।-वि।

বদো গন্ধে। বিষং তালং ত্রিকট্ ত্রিকলা তথা।
উঙ্গণ সমভাগঞ্জ ভারপালং চতুও পিমুন
ভাজরাজরসেনাথ কেশরাজরসেন বা।
মবুনা বটিকা কা্যা শুস্পান্থমিতা ওভান
চলিক্থান বঁটা থ্যাতা শোধোদরবিনাশিনী।
কামলাং পাভুবোগঞ্জ আমবাতংগ্রেমাকম্।
হন্তাদ্ ভগদরং বুড়ং গ্রাহানং ভালমেব চনা

পারদ, গদ্ধক, বিষ, হরিতাল, ত্রিকটু, ত্রিফলা ও সোহাগা প্রত্যেক সমভাগ, সমষ্টির চতুর্ত্তণ জয়পাল। ভীমরাজ বা কেন্ডবিয়ার রসেও মধুর সহিত মন্দন করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা কারবে। ইহা সেবন করিলে লোথ, উদর, কামলা, পাগু ও আমবাত প্রভৃতি নানা রোগ নষ্ট হয়।

বিন্দুগ্নতম।

থ কক্ষাপণে বে চ প্র ইক্ষাবিপলানি বছ:
পথা ক'পেলেকং শ্যাম। শম্পাকং গৈরিকর্পিকা ॥
নালিনা তির্তা দন্তী শন্ধিনা চিত্তকং তথা।
এতেবাং পলিকৈ ভাগেগ্য তিপ্রস্থা বিপাচয়েং ॥
অথান্ত মলিনে কোঠে বিন্দুমাতাং প্রদাপয়েং ।
বাবতোহন্ত পিলেন্বিন্দুংস্তাবিদ্ বারান্ বিরিচাতে ॥
কুঠন্ত অম্পাবর্ত্তং ব্যম্থং সভগন্দরম্।
শম্মত্তা দ্বাগান্তৌ বৃক্ষা ক্রান্তিলা বিরিচাতে ॥
(জলং চতুক বং লেয়ং পাকার্থং বিন্দুম্পর্বাঃ।)
স্বত /৪ সের । কন্ধার্থ—আকন্দের আঠা
পলা সিজের আঠা ও পলা, হরীতকী, কম্লা-

মুত্ত / ৪ সের। ক্রম্বাক্র আন্তর্ন বির্বেদ্ন আরা হ পল, সিজের আর্ঠা ও পল, হরীতকী, কমলাগুঁড়ি, খ্রামমূল তেউড়ী, সোন্দালফলের মজ্জা,
শ্বেত অপরাজিতার মূল, নীলর্ক, তেউড়ী,
দস্তীমূল, চোরপুস্পী ও চিতামূল প্রত্যেক ১
পল, পাকার্থ জল ১৬ সের। এই মৃতের বভ
বিন্দু সেবন করাইবে, ভত্তবার বিরেচন

হুইবে। ইহাতে কুষ্ঠ, গুলা, উদাবর্ত্ত, সকল প্রকার উদর ও অন্যান্ত বোগ প্রশমিত হয়।

মহাবিন্দুগ্নতম ।

প্রতিক্টিরপলে ককে প্রস্থাক্তিকর সর্পির।
কশ্পিল্লকং পলক্ষিকং পলান্ধি সৈদ্ধবক্ত চ ॥
থিরত্থা পলক্ষিকং কৃত্বং ধাত্রিক রসং ।
ভোরপ্রস্থেল বিপচেচ্ছনের মহিন্দ্রনা ভিষক ॥
কর্মপাণং দাত্রাং জঠরে প্রীহন্তক্ষারোঃ।
তথা কচ্ছপরোগের যুগ্রীত মতিমান ভিষক ॥
এতান্ গুল্মান্ সনিচয়ান্ সশ্লান সপরিগ্রহান্ ।
নিহন্তোর প্রয়োগোঁ হি বায় জলধরানির ॥
পঞ্জন্মবধ্পির বক্তো মৃক্তঃ স্বযন্ত্রা।
নহাবিন্ত্তং নাম সিদ্ধং গান্ধন্চ প্রতি হন্ ॥

মৃত /২ দেন। কলার্থ— সিন্দের আঠা ২ পল, কমলাগুঁড়ি ১ পল, দৈন্ধব ৪ তোলা, তেউড়ী ১ পল, আমলকীর রস /॥• দের। জল /৪ দের। মৃত অমিতে পাক করিবে। প্রীহা উদর ও গুলা রোগে ২ তোলা পরিমাণে প্রযোজা। ইছা গুলারোগের উৎক্রই ঔষধ।

চিত্রকয়ত্য।

চতুগুলি জলে মূত্রে ছিন্তনে ডিক্রক হৈ পলে। কান্ধে সিদ্ধং মূতপ্রস্থাং সক্ষাবং জহরী পিবেই ॥

ছত / ৪ সের, জল ১৬ সের, গোমুত্র /৮ সের। কলার্থ—চিতামূল ১ পল ও যবকার ১ পল। যথাবিধি পাক করিয়া জঠররোগিকে পান করাইবে।

নারাচয়তম্।

মুক্লীরদন্তীত্রিকলাবিড়লগিংহীত্রিবৃচ্চিত্রককক্যুক্তন্।
মুভং বিপকং কুড়বপ্রনাণং
তারেন ভদ্যাক্ষমধার্কনক্ষন্।
গীক্ষোক্ষমজ্ঞাহনু পিবেদ্ বিরিক্তে
পেরাং কুবোক্ষাং প্রপিবেদ্ বিধিক্তঃ।
নারাচমেভজ্ঞঠরামরাণাং
মুক্ত্যোপকুতং শমনং প্রদিষ্টন্।

স্বত /॥• সের। কন্ধার্থ—সিজের আঠা, দক্ষীমূল, ত্রিফলা, বিড়ন্দ, কণ্টকারী, তেউড়ী

ও চিতামূল প্রত্যেক ১ তোলা ৬ মাষা ২ রতি। রোগির বলাবল বিবেচনা করিয়া মাত্রা ছই বা এক তোলা প্রয়োগ করিবে। অনুপান— উষণ্ডল। বিরেচনান্তে স্থোষ্ণ পেয়া প্রস্তুত করিয়া পান করিতে দিবে। এই মৃত বিবেচনা পূর্বাক প্রায়ুক্ত হইলে সকল প্রকার জঠর রোগ বিনষ্ট হয়।

রহনারাচঘত্য ।

লোপ্রতিএকচব্যানি বিভূজং ক্রিছলা ভিত্ত ।
প্রিতিএকচব্যানি বিভূজং ক্রিছলা ভিত্ত ।
প্রতিএক বিধা ব্যাব্যক্তনোদা নিশাব্যম্ ॥
পত্ত কর্মেকং সর্কাং গোম্থসা পলাষ্টকম্ ।
চতুপানং স্কুটাকারং বাজবৃক্ষকনং তথা ॥
গতেশ্চতুত্ত গৈ ভোৱে স্তপ্রত্থং বিপাচকেং ।
চত্ত্রকামবাতক গুলাগীহভগলবান্ ॥
নিহন্ত্যচির্যোগেগ গুল্লমাং স্তন্তম্কজম্ ।
বহল্পাচব্যমান্ত্র নাম স্ত্যেত্দ্ যথামূত্য ॥

গ্রন্থ /৪ সের। কন্ধার্থ—লোধ, চিতামূল, চই, বিড়ন্থ, ত্রিফলা, তেউড়ী, চোরপূপ্ণী, আতইচ, ত্রিকটু, বন্ধ্যানী, হরিদ্রো, দারু-হরিদ্রো ও দন্তীমূল প্রভ্যেক ২ তোলা, গোমূত্র ১ সের, সিজের আঠা ৪ পল, সোদালমজ্জা ৮ পল। জল ১৬ সের। এই গ্রত পানকরিলে উদর, আমবাত, গুলা, গ্লীহা ও ভগন্তর প্রভৃতি নানারোগের শাব্ধি হয়।

নাগরাদি তৈলং মৃতঞ।

পিপ্লল্যাদিগণেনাজাং পাচিতং পার্য়েন্টিবক্।
নরং পথাভূজং নিতাং কফোদর্মিপ্রয়ে ॥
নাগর্ত্তিফলাককৈদ ধাসুপ্রিপেবিতঃ।
পাচিতং তৈল্মাঞ্জাং বা পিবেং সর্কোদরেষ্ চ ।

পিপ্লল্যাদি গণের কব্দ সহ ঘত পাক করিয়া কফোদর-প্রশান্তির জক্ত পথ্যভোজী রোগিকে প্রভাহ সেবন করাইবে।

গুত বা তিলতৈল /ও সের। ক্লার্থ— শুন্তী ও ত্রিকলা মিলিত /১ সের। দধির মাত ১৬ সের। এই তৈল বা গুত যথানিরমে পাক করিয়া সেবন করিলে সর্বপ্রেকার উদর রোগ বিনষ্ট হয়।

রসোন-তৈলম।

লগুনক্ত ভুলামেকাং জলছোলে বিপাচরেং।

ক্রিকট্ ত্রিকলা দন্তী হিন্তু দৈন্ধবিচিত্রকম্ ॥

দেবদার বচা কুঠং মধুলিগ্র, পুনন বা।
সৌবর্চলং বিড়কানি দীপাকো গজপিগলী ॥
এতেবাং পলিকান্ ভাগাংগ্রিসতঃ ষট্ পলানি চ।
পিন্তু। কষারেণানেন তৈলং মুবগ্রিনা পচেং ॥
তৎ পিবেং প্রাতক্রখায় যথাগ্রিবলমাত্রয়া।
নিহন্তি সকলান্রোগানুদরাণি বিশেষতঃ ॥
মুক্রক্তম্পাবর্তমন্ত্রস্কিং ভদ্বিন্মীন্।
পার্যক্রক্তম্পাবর্তমন্ত্রস্কিং ভদ্বিন্মীন্।
থার্যক্রক্তম্পাবর্তমন্ত্রস্কিং ভ্রাক্রমান্ত্রমান্
যক্রক্তম্বিকানাহান্ প্রীহানকাক্রমান্
মাসমাত্রেণ নক্তিভ্রেক্তিকা ভ্রাকার্যাঃ।

তৈল /৪ দের। রশুন ১২॥০ সাড়ে বার সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। কর্নার্থ— ব্রিকটু, ব্রিফলা, দন্তী, হিন্ধু, দৈন্ধব লবণ, চিতা, দেবদারু, বচ, কুড়, রক্তশক্তিনা, পুন-নবা, সচললবণ, বিড়ঙ্গ, যমানী ও গজপিপলী, এই সকল প্রত্যেক ১ পশা, তেউড়ী মূল ৬ পল দিয়া সূত্র অগ্লিতে পাক করিবে। অগ্লিও বল বিবেচনা করিয়া প্রাতঃকালে সেবন করিবে। ইহা উদর রোগের অত্যুৎকৃষ্ট ওঁধব।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

উদর্রোগে পথ্যানি।

বিরেচনং লজনমন্দসন্তবাং
কুলথমূল্যাক্লণালরো যবাং।
মূগদ্বিজা জাঙ্গলসংজ্যাদিতাঃ
পোরাং হ্রামাক্ষিকসাধুমাধবাং।
তক্রং রসোনোক্রপুতেলমার্ত্রকং
শালিকশাকং কুলকং কঠিলক্ম।
পুনর্বা শিগ্র্ফলং হরীতকী
তামূলমেলা যবশূক্মায়সম্॥
অজাগবোষ্ট্রীমহিবীপ্রোজলং
লঘুনি তিক্তানি চ দীপনার্গুপি।
বক্রেণ সংবেষ্ট্রনম্থিকপ্রতা
বিষ্ঠারোগাহসুযুতো বধায়পম্॥

সমীরণোথে স্বতপানমাদিতঃ
সাভ্যপ্রনং বাপাসুবাসনং তথা।
যথাসলং পথ্যগোহরমাশ্রিতঃ
স্থা নৃণাং স্পাছদুরাময়ে সতি॥

বিরেচন, উপবাস, সংবৎসরোষিত কুলখকলায়, মুগা, রক্তশালি ও যব, জাঙ্গল মুগা
পক্ষী প্রভৃতির মাংস, পেয়া, হ্মরা, মধু, সীধু,
মাধব (মভবিশেষ), তক্র, রশুন, এরগুতৈল, আদা, শালিঞ্চশাক, পটোললভা, কারবেল্ল, পুননবা, শজিনাফল, হরীতকী, তাত্মল,
এলাইচ, যবক্ষার, লোই, ছাগহুগ্ধ, গোহুগ্ধ,
উট্টাহুগ্ধ, মহিষীহুগ্ধ, ছাগমুক্ত, গোমুক্ত, উটের
মুক্ত, মহিষমুক্ত, লযুদ্রবা, তিক্তস্তবা, অফিলীপক
দ্রবা, বন্ধ ধারা উদর পরিবেষ্টন, আফিকর্ম ও
বিষপ্রয়োগ, এই সকল উদর-রোগির অবস্থামুসারে বিবেচনাপুর্শ্বক প্রয়োগ করিবে।

বাতোদরে প্রথমতঃ ম্বৃত পান, অভ্যঙ্গ ও অনুবাদন ক্রিয়া দোবানুদারে প্রয়োজিত হইলে উদরবোগাক্রাস্ত মানবগণের স্পুণ্য হয়।

উদর্রোগেহপথ্যানি।

সংক্রেহনং ধুমপানং জলপানং শিরাব্যথা।
ছিল্মানং লিবানিয়াং বাাছামং পিষ্টবৈকৃত্য ।
ভদকান্পমংগানি পত্রশাকাংছিলানপি।
ছক্ষানি চ বিদারীনি লবণাজ্ঞশানি চ ।
শির্থাজ্ঞানি বিশ্বাং ছারতাং সলিলানি চ ।
বিষ্ট্রজীনি বিশেষাং ছু বেদং ছিল্মমুক্তবে।
বক্তমেত্দ্রব্যানে বৈজ্ঞো বক্তন্ নিজং বলং ।
সেহপান, ধুমপান, জলপান, শিরাবেধ,
হুন্ত্যাদি যানে আব্রোহণ, দিবানিজ্ঞা,

বমন, হস্তাদি যানে আরোহণ, দিবানিদ্রা, ব্যায়াম, পিটবৈক্তি, উদকমাংস, আনুপমাংস, পত্রশাক, তিল, উষ্ণদ্রব্য, বিদাহী দ্রব্য, লবণ, শিষীধান্ত (অড্হরাদি), বিরুদ্ধ ভোজন, দ্বিভ জল, গুরুদ্রব্য, মহেন্দ্র পর্বাতজাত নদীর জল, বিইন্তকারক দ্রব্য, বিশেষতঃ ছিল্লোদরে স্বেদ, এই সমন্ত, নিজ-যশোরকার্থী বৈহ উদর-রোগিকে পরিত্যাগ করাইবেন।

ইত্যায়ুর্বেদ-সংগ্রহে উদররোগাধিকার:।

অথ প্লীহ্যকৃদ্রোগাধিকারঃ।

অথ প্লীহযকুত্রদর-নিদানম।

বিদাহাভিব্যন্দিরতভ জন্তোঃ প্রছ্ট্রমত্যর্থমতক্ কফশ্চ। দ্রীহাভিবৃদ্ধিং কুক্লতঃ প্রবৃদ্ধী দ্রীহোপমেতজ্জ্চরং বদস্তি ॥ তথামপার্থে পরিবৃদ্ধিমেতি বিশেষতঃ দীদ্বি চাতুরোহত। মন্দ্রবাস্থিঃ কফপিভলিকৈক্লপদ্রতঃ কীণবলোহতিপাণ্ডঃ। সব্যাস্তপার্থে যুক্তি প্রবৃদ্ধে জ্ঞেরং যুকুদ্ধাল্যদরং তদেব॥

> উদাবৰ্জ্জকানাহৈমে 1হতুড় দহনম্বরৈঃ। গৌরবান্ধচিকাঠিকৈর্বিতাৎ তত্র মলানু ক্রমাৎ॥

বিদাহী ও কক্ষনক দ্রব্যভোজনে রত ব্যক্তির রক্ত ও কফ প্রহুষ্ট হইয়া প্লীহার বৃদ্ধি সাধন করে। সেই বৃদ্ধিপ্রাপ্ত প্লীহজনিত উদররোগকে প্লীহোদর কহে। প্লীহা উদরের বাম পার্ষে বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হয়। ইহাতে রোগী অত্যন্ত অবসয়, মন্দজর, অগ্নিশক্তিহীন, কফ-পিত্তজনিত উপস্থবে উপক্রত, ক্ষীণয়ল ও পাঞ্বর্গ হয়।

যেরূপ উদরের বামপার্থে প্লীহার বৃদ্ধিকে প্লীহোদর কহে, সেইরূপ উদরের দক্ষিণপার্থে বৃদ্ধতের বৃদ্ধিকে যক্তদাশুদ্র কহে।

প্লীহোদরে ও যক্তদান্যদরে বায়ুর প্রকোপ থাকিলে উদাবর্ত্ত, বেদনা ও আনাহ; পিত্তের প্রকোপ থাকিলে মোহ, তৃষণা, দাহ ও জ্বর; কফের প্রকোপ থাকিলে গাত্রগুরুতা, অরুচি ও উদরের কাঠিন্ত এই সকল লক্ষণ প্রকাশ পাইয়া থাকে।

অথ প্লীহযক্তচিকিৎসা।

বমানিকাচিত্রকথাবশূক-বড় গ্রন্থিদন্তীমগধেণ্ডবানাম। শ্লীছানমেভদ্বিনিহন্তি চূর্ণমূকাসুনা মল্পক্রাসবৈর্বা ।

ষমানী, চিতা, যবকার, পিপুলমূল, দন্তী ও পিপুল, এই সকল জব্যের চুর্ণ সম্ভাগে লইয়া (॥০ ভোলা পরিমাণে) উক্তজ্ল, দধির মাত, সুরা বা আসবের সহিত সেবন করিলে প্লীহা বিনষ্ট হয়।

পিপ্ললীং কিংশুকক্ষার-ভাবিতাং সংপ্রবােজয়েৎ। গুলাপ্লীহাপহাং বঞ্চি-নীপনীঞ্চ রসায়নীম্। (কিংশুকঃ পলাশাঃ। তৎক্ষারােদকে সপ্তধা ভাবিতাং পিপ্ললীং পিপ্ললীবর্দ্ধমানক্রমেণ বে'জয়েৎ। তথ্পান-মপ্যত্র উপদিশন্তি বৃদ্ধাঃ। চং টাং।)

পলাশক্ষাব মিশ্রিত জলে পিপুল ৭ বার তাবিত করিয়া উপসূক্ত মাত্রায় পিপ্লাশীবর্দ্ধ-মানোক্ত ক্রমে সেবন করিলে প্লীহা ও গুলা বিনষ্ট হয়। ইহা অগ্রির দীপক ও রসায়ন। অমুপান—গ্রন্ধ।

বিড়ক্সাজাগ্রিসিক, থ-শক্তন্ন দক্ষ্যা বচাছিতান্। পিবেৎ ক্ষারেণ সংচুর্য গুলাপ্লাহোদরাপহান্॥

বিভঙ্গ, চিতা, সৈদ্ধব লবণ, যবের ছাতু ও বচ ইথাদের চূর্ণ স্থতাক্ত করিয়া অন্তর্গুমে দগ্ধ করিবে। সেই দগ্ধ ক্ষার শ্লক্ষ চূর্ণ করিয়া ছগ্থের সহিত সেবন কবিলে গুলা ও গ্লীহোদর প্রশাস্ত হয়।

তালপুশারবং করে সম্ভত্ন প্রাচনাশনং।
(সপ্তত্যু সমপ্তত্য করিক মাহকচত্ত্রনে ব্যবহারং।)
তালজ্ঞটা ভন্ম ৪ মাধা সমভাগ পুরাতন
স্তাহ্যের সহিত সেবন করিলে প্রীহা বিনষ্ট হয়।

পাতন্যো যুক্তিতঃ ক্ষার, ক্ষীরেণোদ্ধিশুক্তিজঃ। পর্মা বা প্রযোজন্যাঃ পিশ্ললীঃ প্লীত্শান্তরে॥

লীহ-শাস্থির জন্ম উপযুক্ত মাত্রায় সমুদ্র-জাত-নিত্মক-ভত্ম অথবা পিপ্ললী হুগ্ধের সহিত্ত পান করিবে।

চিত্রস্থ মূলকং পিঠু । কুছা তু বটকাত্রয় । কদলীপক্মধ্যেন ভক্ষণাৎ প্লীহনাশনম্॥

চিতার মূল পেষণ করিয়া ১ এতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহার ৩ বটিকা পাক রম্ভার অন্তর্গত করিয়া সেবন করিলে প্লীহরোগ বিনষ্ট হয়। শুট্রেন্চিত্রকমূলং বা রজ্ঞর্কদলং তথা। ধাতকীপুশচূর্ণং বা প্রত্যেকং দীহনাশনম্॥

চিত্তামূল, । হরিদ্রা, পাকা আকলপাতা অথবা ধাইফুল চূর্ণ পুরাতন গুড়ের সহিত সেবন করিলে প্রীহা বিনষ্ট হয়।

লশুনং পিশ্বলীমূলমভয়াকৈব ভক্ষরেৎ। পিবেদ্ গোমূত্রগভূষং প্লীহলোগবিমূক্তরে॥

রঙন, পিপুলমূল ও হরীতকী ভক্ষণ করিয়া গোমূত্র পান করিলে খ্লীহরোগ প্রশমিত হয়।

তিলৈরওদ্রবন্ধীনাং ক্ষারো ভলাতকং কণা।
এবাং ভাগং সনং কৃষা ততুলাক্ত শুড়ং মতন্।
থাদেদগ্রিবলং মহা পাবকস্তা বিস্করে।
জয়েৎ সীহানমত্যুগ্রং যকৃদ্গুলং তথৈব চ ॥
স্লাইজিচ্ছরপুখায়াঃ কছন্তব্রেণ সেবিতঃ॥

ভিলক্ষার, এরগুক্ষার, দ্ববস্তীক্ষার, শোধিত ভেলা, পিপুল ইহাদের প্রত্যেক চুণ সমভাগ, সর্ব্ধসমান পুরাতন গুড়। একত্র মিশ্রিত করিয়া অগ্নিবলামুদারে সেবন করিলে অভ্যুগ্র প্রীহা, যক্তং ও গুলা বিনষ্ট হয় এবং অগ্নির বৃদ্ধি হইয়া থাকে। শ্রপুদ্ধামুলের কর (৪ মাধা) ঘোলের সহিত পান করিলেও প্রীহার শাস্তি হয়।

রদেন জ্বার্ফলক্ত শ্রানাভীরজ্ঞ পীত্রশেষ্মের। কর্মপ্রমাণ্য শন্ত্রেৎ সমূল্য সীত্র্যায়ং কুর্ম্বসমানমান্ত ॥

শঙ্খনাভি চুর্ণ ২ তোলা (ব্যবহার ॥ তোলা) গোঁড়ালেবুর রসে গুলিয়া সেবন করিলে কৃম্মদমান গ্লীহাও সমুলে বিনষ্ট হইয়া থাকে।

দারুদৈদ্ধবগন্ধঞ্চ ভ্রমীকৃত্য প্রবন্ধতঃ। প্রীহানমগ্রমাংসঞ্চ যক্তক বিনাশয়েৎ॥

দেবদারে, সৈধ্বলবণ:ও গন্ধক এই সমুদার সমভাগে লইয়া ভন্ম করিবে। ইহা সেবন করিলে প্লীহা, অগ্রমাংস ও যক্তং বিনষ্ট হয়।

অকলবণম ।

অকপতাং সলবর্ণমন্তর্ধু মং দহেররঃ। মন্তনা তৎ পিরেৎ কারং গীহগুলোদরাপহম্॥ আকন্দপত্র ও সৈদ্ধব লবণ অন্তর্ধুমে দগ্ধ করিয়া সেই দগ্ধ ক্ষার দাধর মাতের সহিত সেবন করিশে শ্লীহা, গুলা ও উদর রোগ নিবৃত্ত হয়।

পীতঃ শ্লীহোদরং হস্তাৎ পিপ্লামরিচান্বিতঃ।
আয়বেতসসংযুক্তঃ শিগ্রুকান্ধঃ সদৈদ্ধবঃ।
শক্তিনার কাথে পিপূল, মরিচ, থৈকল
ও দৈন্ধব লবণ প্রক্ষেপ দিশা পান করিলে
প্লীহোদর বিনষ্ট হয়।

হাবরং শাব্যলাপুপং নিশাপ্য ছিতং নর:। রাজিকাচুর্নংযুক্তং দক্তাৎ প্রীহোপশান্তরে॥

শিমুলফুল সিদ্ধ ও প্যায়িত করিয়া প্রাতে খেতসর্থপ চূর্ণ সহ সেবন করিলে প্লীহা রোগের শান্তি হয়।

যক্ত গৃহীয়া সংজ্ঞামুৎপাট্নিতেক্সবার্ক্ণীমূলম্। প্রক্ষিপাতে কুদুরে শাম্যেৎ প্লীহোদরং তক্ত ॥

যাহার প্লীহোদর হইয়াছে, তাহার নাম উচ্চারণ পূর্বক একটি রাথালশশার মৃশ উৎ-পাটন করিয়া দূরে নিক্ষেপ করিলে প্লীহোদরের শাস্তি হয়।

সদৈন্ধবমপামার্গমন্তব্ন দহেৎ ততঃ। বারিণা ৩৭ পিবেৎ কারং মাধ্যমাজং প্লীংশিহ্য ।

আপাং ও দৈন্ধব লবণ অন্তর্গে **দগ্ধ** করিয়া দেই কার প' আনা পরিমাণে জলের সহিত দেবন করিলে গ্লীহা বিনষ্ট হয়।

লীহোদিষ্টাঃ ক্রিয়াঃ সর্বা বকুলাশায় যোক্সরে ॥

যক্তংরোগে প্লীহরোগোক্ত চিকিৎসা সকল করিবে।

দ্ধ। ভূক্তবতো বাম-ৰাছনধ্যে শির। ভিষক্।

বিধ্যেৎ প্লাহবিনাশায় যকুলাশায় দক্ষিণে।

প্লাহানং মন্দ্রেম্পাত্ং ছয়য়ক্তপ্রবৃত্তরে ।

(দ্বা ভূক্তবতো বামবাহোঃ কুপ্রসন্ধাবভাস্তরতঃ
শিরাং বিধ্যেং)।

প্লাহ-রোগে, রোগিকে দধির সহিত **অয়** ভোজন করাইয়া বাম বাহুর কুপব (ক**মু**ই)-সন্ধির অভ্যন্তরস্থ শিলা বিদ্ধ করিয়া রক্ত মোক্ষণ করিবে। যক্তং-রোগে দক্ষিণবাহুর ঐ শিরা বিদ্ধ করিয়া রক্ত মোক্ষণ করিবে।
শিরাবেধানস্তর প্লীহা গাঢ়রূপে মর্দন করিয়া
শেই স্থান হইতে ছ্ঠ রক্ত নির্গত করিলে
প্লীহার উপশম হয়।

দীহানং বকৃতং বৃদ্ধং মৃত্রেষদৈরূপাচরেৎ।
প্লীহা ও যক্কৎ বৈর্দ্ধিত হইলে গোমুত্রের বেদ দিবে।

ভিলাতদীরূব্বাজ-রাজিকালেপনং হিতম । ভিল, তিসী, এরগুবীজ ও খেত সর্বপ পেষণ করিয়া যক্তং স্থানে প্রলেপ দিবে।

মাণকাদি-গুড়িকা।

মাণমার্গায়ত। বাদা দ্বিরা দৈশবচিত্রকম্।
নাগরং তালপুপাঞ্চ প্রতোকঞ্চ ত্রিক হিকস্।
বিদ্যৌবর্চলক্ষার-পিপ্পল্যান্টাপি কার্বিকাঃ।
এতচ্চ্ শীকৃতং সর্বাং গোমুরক্ত চকে পচেং।
দাল্রীভূতে গুড়ীং কুয়াদ্ দরা ত্রিপলমান্ধিকম্।
ব্যুগং পরিকরো নামা তারিদলীপনং পরঃ।
(মার্গোংপানার্গঃ। তালপুপাং তালপ্রটাকারঃ।
এতং সর্বাচ্বিং প্রক্ষিপ্য গোমুরাচ্কে পচেং, ততা
গুড়বং পাকঃ। শীতে মধু প্রক্ষিপ্য গুড়ক। কংয়া।
পরিকরো বিরেকস্তংকারক্ষ্যাৎ পরিকরো বিরেককারীতার্বাঃ। উল্লাহি ভালিও)।

সংবৎসরাতীত মাণ, আপাঙ্গমূল ভন্ম গুলঞ্চ, বাসকমূল, শালপাণি, সৈদ্ধবলবণ, চিতামূল, শুঠ, তালজ্ঞটার ক্ষার প্রত্যেক ৬ তোলা; বিট্লবণ, সচললবণ, যবকার ও পিপুল প্রত্যেক ২ তোলা। এই সমুদায় চুর্ণ ১৬ সের গোমুত্রে পাক করিবে। যন হইলে নামাইবে। শীতল হইলে ৩ পল মধু মিশ্রিত করিয়া (অর্দ্ধ তোলা মার্রায়) গুড়িকা প্রস্তুত্ত করিবে। ইহা সেবন করিলে বিরেচন হইয়া যক্ষৎ, প্লীহা, উদর, গুল্ম, অর্প্য ও গ্রহণী রোগ নষ্ট হইয়া অগ্নির দীপ্তি হয়।

त्रश्यागकानि-७६का।

মাণমার্গছিরা বহ্নি-মুহীনাগরদৈক্ষবম্।
তালর্থং ক্রিমিল্লক হব্বং চবিকা বচা ॥
বিড্সোবর্চলক্ষার-পিশ্ললীশরপুঞ্চম্।
জীরকং পারিভক্রক প্রত্যেকং কর্বক্ষরম্ ॥
সার্জাচকে গবাং মৃত্রে পচেৎ সর্বং স্চ্রিভম্।
সার্জাচকে গবাং মৃত্রে পচেৎ সর্বং স্চ্রিভম্।
সার্জাচকে গবাং হুকু বমানী পুলরং শটা।
ত্রেক্ষত্তী বিশালা চ দ্বা ত্রিপলমান্ধিকম্ ॥
থাদেদ্যিবলাপেন্ধা বৃদ্ধা চামুপিবেল্লরঃ।
বকুৎশ্লীহোদরানাহং গুলং পাগুং সকামলম্ ॥
কৃষ্ণিক্স হচ্ছুলং পার্শুল্মরোচকম্।
শোধক শ্লীপদং হস্তি জীর্ণক বিষমক্ষরম্ ॥

শোধক নীপদং ইন্তি জীপক বিষমজন্ত্ব।
প্রাতন মাণ, আপাঙ্গমূলভক্ষ, শালপাণি,
চিতামূল, সিজমূল, শুঠ, সেম্বন, তালজটাভক্ষ,
বিজঙ্গ, হর্ষ, চই, বচ, বিট্ ও সচললবণ, যবকার, পিপুল, শরপুষ্ম, জীরা ও পালিধামান্দাবের মূল প্রত্যেক ৪ তোলা; গোমূত্র ২৪
সের। এই সম্লায় একত্র পাক করিয়া ঘনীভূত হইলে জীরা, ত্রিকটু, হিন্তু, যমানী, কুড়,
শটী, তেউড়ী, দন্তীমূল ও রাখালশশার মূল,
প্রত্যেক চূর্ণ ২ তোলা পরিমাণে প্রক্ষেপ দিয়া
যথাবিধি পাক সমাপ্ত করিবে। শাতল হইলে
মধু ওপল মিশ্রিত করিয়া লইবে। জামবল
ও দোষাদি বিবেচনা করিয়া মাত্রা ও অমুপান
ব্যবস্থা করিবে। ইলা সেবন করিলে যক্তং,
প্রীহা, উদর, আনাহ, গুলা, কুক্ষশূল, হচ্চুল ও
পার্শনুল প্রভৃতি অনেক পীড়ার শান্তি হয়।

অভয়ালবণম।

পারিভন্তপলাশার্ক-স্কৃত্পামার্গচিত্রকান্।
বঙ্গণায়িমন্থবস্থক-বদংগ্রা বৃহতীদ্বর্ম ॥
পৃতিকান্দোতকুটজ-কোবাতক্যঃ পুনর্মবা।
সম্লপত্রশাথাশ্চ ক্ষোদয়িবা উদ্পবল ॥
তিলনালগ্রদীগুয়ি-সদক্ষং ভন্ম শীতলম্।
কারপ্রস্থং গৃহীতা চ অসেৎ পাত্রে দৃঢ়ে নবে ॥
জলদ্রোণে বিপক্তব্যং গ্রাহ্ং পাদাবশেষিতম্।
পূর্ব্যৎ কারকল্পেন সাধ্যেৎ তং বিচক্ষণঃ॥
প্রস্থামকঞ্চ লবণং তদক্ষিক হরীতক্ষিয়।

কিঞ্চিৎ সৰাপাসান্তে চ সমাক্সিজেহবতারিতে।
অজাজী জ্যাবণং হিন্ধু যমানী পৌদ্ধরং শটা ॥
এতৈরর্জপলৈভিগিন্দুর্নং কৃত্বা প্রদাপরেং।
অভ্যালবণং নাম ভক্ষরেচ্চ যধাবলম্ ॥
ব্যাধিক বীক্ষা মতিমানকুপানং যথানিত্য।
যে চ কোষ্ঠগতা রোগাস্তান নিহন্তি ন সংশ্রং॥
বক্ৎমীহোদরানাহ-শুকাঠালাগ্রিনাদ্জিং।
প্রতিভূন্যবিজ্ঞাগ্রনাশনম্ ॥

পালিনাছাল, পলাশছাল, আকন্দ, ।সীজের ছাল, আপাঙ্গ, চিতামূল, বরুণছাল, গণিয়ারি বকফুলের গাছ, চাল. গোক্ষর, বৃহতী, কণ্টকারী. নাটা, হাফরমালী, কড় চি-ছাল, বোধালতা ও পুননবা এই সমূদায় দ্ৰব্যু, মূল পত্রও শাখার সহিত উদুখলে কুটিয়া একটি হাড়ীর মধ্যে রাখিয়া নিয়ে তিলকার্চ্চের আবাল দিবে। স্থালীস্থ দ্রা সকল ভত্ম ইইলে সেই ভক্ম /২ সের লইয়া ৬৫ সের জল দিয়া পাক করিবে। ১৬ সের থাকিতে নামাইয়া ক্ষারকরণবিধানাত্রনারে ক্রমণঃ **ছাকিয়া লইবে।** পরে এই কারজল পুনর্বার পাকে চডাইয়া ভাহাতে দৈন্ধবলবণ ৴২ সের হরীতকী /> সের ও পোমুত্র ১৬ সের দিয়া ঘনীভূত হইলে নাগাইয়া পাক করিবে। ক্বঞ্জীরা, ত্রিকটু, হিন্তু, যমানী, কুড় ও শটা প্রত্যেক চুর্ণ ৪ কোলা পরিমাণে নিক্ষেপ করিয়া মিশ্রিত করিবে। (মাত্রা—২ তোলা। অমুপান—উঞ্চল)। ইহা সেবন করিলে যক্ত্, গ্লীহা, উদর, আনাহ, অগ্লালা, গুল ও অগ্নিমান্দ্য প্রভৃতি নানারোগ নষ্ট হয়।

खड्शिश्रनी।

তুলৈকং গুড়মাদায় পিশ্ললীঞ্চ তথৈব চ।
হিন্ধু ত্রিকটুকং মানং দৈন্ধবানাং বিকাধিকম্ ॥
চিত্রকঞ্চ বিড়কৈব ছৌ ক্লারৌ শিগরীং তথা।
তালপুপকোকিলাক্ষ-চিঞাক্ষারং সফেনকম্।
ক্র্ছীক্ষীরসমাযুক্তং প্লীহজ্ঞধবিনাশনম্ ॥

গুড় ১২॥ সের, পিপুল ১২॥ সের, হিসু, ত্রিকটু, 'সৈদ্ধবলবণ, চিতা, বিট্লবণ, যবকার, সাচিকার, অপমার্গকার, তালজটার কার, কুলেখাড়ার কার, তেঁতুলের কার, সমুজফেন, মনসাসীজের আঠা প্রত্যেক ৪ তোলা। একত্ত মর্দ্দন করিয়া এই ঔষধ ব্যব-হার করিলে প্রীহা ও জব নিবারিত হয়।

রহদ্ওড়পিপ্ললা।

বিজ্ঞ্যং ক্রাষণং হিন্ধু কুঠং লবণপঞ্চম।

একারং ফেনকং চবাং শ্রেরা চোপকৃষ্ণিকা।
তালপুশোন্তবং কারো নাড্যাং কুমাওকস্ত চ।

অপানাগোন্তবং কারো নাড্যাং কুমাওকস্ত চ।

এতানি সমভাগানি পুরাণো বিশুণো শুড়ং।

ওড়তুলাং প্রবাতবাং চুর্ণাঞ্চন কণোন্তবম্।

মাদ্দিরা দৃচে পাতে মোদকামুপক্রমেং।

ভক্ষয়েহ্বগতানেন প্রীধানং হস্তি মুন্তরম্।

প্রবাতবং পাঞ্রোগঞ্চ কামলাং বহিনানাক্রম্।

বর্গতং পঞ্জন্মঞ্চ উদরং সর্ক্রপক্রম্।

ভাগিন্তরং তথা শোধা কামণা পঞ্চবিধং তথা।

মাদ্বায়াং নিম্মিতা শ্রেধা পুরুষ্ণভূপিপ্রলী।
বালগ্রহাভিত্তানাং বালান্টিক্রণ শস্ততে।

বিড়ঙ্গ, তিকটু, কুড়, হিন্ধু, পঞ্চলবণ, দ্বক্ষার, সাচিক্ষার, সোহাগা, সমুদ্রফেন, চই, গজপিগলী, কৃষ্ণজীরা, তালজটাভন্ম, কুম্ডার ডাটাভশ্ব, আপাঙ্গভশ্ব, তেতুলছাৰ ও চিতামূল ভন্ম প্রত্যেক সমভাগ। এই সমু-দায় চুর্ণের ধিগুণ পুরাতন গুড়। গুড়ের সমান পিপুলচ্ণ। সমূদায় একত মাজিয়া লইবে। (মাত্রা॥ তোলা।) অনুপান---উষ্ণজ্ল। ইহাতে অতি কঠিন শ্লীহা, যক্ত্ৰৎ. প্রমেছ, পাণ্ড, কামলা, অগ্নিমান্দা, পঞ্চবিধ গুল, উদর, জীর্ণজ্বর, শোথ ও ঔষধ বালকদিগের কাদ নষ্ট হয়। এই পক্ষে বিশেষ উপকারী।

छष्ट्रगानि-हुर्गम्।

ওড় চাতিবিধা গুঠা ভ্নিখনবিভক্তকম্।
নৃত্যা কণা বনকার: কাশীশং জমরাতিধিঃ।
এতেবাং সমভাবেন চূর্ণমেব বিনির্দিশেৎ।
বক্তংগ্রাংপাভূরোগমগ্রিমান্দ্যমরোচকম্।
অরমইবিধং হস্তি সাধ্যাসাধ্যমণাপি বা।
নানাদেশোন্তবকৈব বারিদোষ্ডবং তথা।
বিশ্বজ্যভব্যভব্য অরমাশু ব্যপোহতি।

আয়ুর্কেদ-সংগ্রহঃ।

গুলঞ্চ, আতইচ, গুঠ, চিরতা, কালমেঘ, মুতা, পিপ্লা, যবক্ষার, হিরাকস ও চাপার ছাল প্রত্যেক চুর্ল সমভাগ; একত্র মিশ্রিত করিবে। (মাত্রা ২ মাধা)। ইহাতে যক্কৎ, প্লীহা, পাঞ্চ, আগ্রমান্দ্য, অরুচি ও নানাবিধ কর প্রস্থৃতি বিবিধ পীড়ার শাস্তি হয়।

রোহাতকান্তচূর্ণন্।

রোহীতকং যবকারো ভূনিখা কটুরোহিণী। মৃত্তকং নরদারক বীরা বিখা ফুচ্পিতিম্। মামমাত্রং ততঃ থাদেচছীততোরাফুপানতঃ। যকুক্রোগং নিহন্ত্যান্ত ভাসরভিনিরং যথা॥

রোহীতক ছাল, গ্রহ্মাণ, চিরতা, কট্কী,
মূতা, নিশাদল, আতইচ ও স্থঠ প্রত্যেক চুর্ণ
সমভাগ, একতা মিশ্রিত করিবে। মাত্রা—১
মাষা। শীতল জল সহ সেব্যা। ইহাতে সংর
যক্ত ও প্রীহা উপশ্যিত হয়।

পিপ্ললীবর্দ্ধমান।নি।

ক্রমবুজা দশাহানি দশপিপ্রনিকং দিন। ।
বর্জমের পরসা সার্জং তথৈবাপনরেৎ পুন: ॥
জীর্নিৎজীর্নে চ ভূঞ্জীত যষ্টিকং কারসপিবা।
পির্লীনাং সহস্রক্ত প্রয়োগোহরং রসংয়নঃ ॥
দশপৈপ্রনিকং শ্রেচো মধ্যমং বট্ প্রকীষ্টিতঃ।
যন্ত্রিপির্মালিপর্যান্তঃ প্রয়োগঃ সোহবরঃ স্মৃতঃ ॥
বংহপং ব্র্যায়্ব্যং প্রীকোন্রবিনাশনম্ ॥
বর্সঃ স্থাপনং মেধাং পিপ্রনীনাং রসারনম্ ॥
পঞ্চপিঞ্লিকক্লাপি দৃশুতে বর্জমানকঃ।
পিস্তান্তা ব্রন্ধিনি প্রতি রস্কারনিরঃ।
শীতীকৃতা ব্রন্ধিনের হদোবাম্যান্ প্রতি ॥

প্রথম দিবদে ১০টা পিপুল, দিতীয় দিবদে ২০টা, তৃতীয় দিবদে ৩০টা, চতুর্থ দিবদে ৪০টা এইরূপ প্রত্যন্থ দেবদ করিয়া হগ্ধসহ ক্রমাগত ১০ দিবদ দেবদ করিয়া ১০
দিনের পর পুনর্কার প্রত্যহ ১০টা করিয়া শ্রাদ করিবে। এইরূপ সহস্র পর্যান্ত পিপ্রলা দেবদ করিবে। প্রত্যহ ১০টা করিয়া বর্জন করা প্রধান যোগ, ৬টা করিয়া বৃদ্ধি মধ্যম এবং ৩টা

করিয়া অধম। ৫টা করিয়া রৃদ্ধি করারও
নিরম আছে। পিশলীরৃদ্ধির সহিত হুগ্নেরও
মাত্রা বৃদ্ধি করিবে। বলবান্ ব্যক্তি পিশ্ললী
পেষণ করিয়া, মধ্যবলী ব্যক্তি কাথ করিয়া
এবং অল্লবল ব্যক্তি শীতক্ষার প্রস্তুত করিয়া
এই পিশ্ললীবৃদ্ধমান যোগ অভ্যাস করিবে।
পথা—ইপ্টক তণ্ডুলের অল্ল গুল্প গুল্ত। ইহাতে
প্লীহাদি বোগ নই হইয়া বল বীশ্য গু আয়ুর্দ্ধি
হইয়া থাকে।

রসপ্রয়োগঃ।

প্লাহান্তকে: রসঃ।

হত গুলগ ত'রগ গগনায়সন্ জিকা।
দরদং পুশকা হৃতং গলকং ন্নমং তথা।
দ্রদং পুশকা হৃতং গলকং ন্নমং তথা।
দ্রদ্ধ পুশকা হৃতং গলকং ন্নমং তথা।
দ্রদ্ধা কটুকা দন্তী দেবদালা তু দৈল্পবন্।
দ্রিক্তা তু বনকারো বাতারিতৈলম্দিত্য।
অস্টোদরাণি পাভুবনানাইং বিষমজ্বন্।
ভাজার্থিনামং সককং ক্রঞ্ সক্বান্তক্।
দানং বাসক শোধক সর্ব্ধান্ত ব্রপোইতি।
প্রাহান্তকো রসো নাম প্রাহোদর্শিনাশনঃ॥

তামা, রূপা, অন্র, লোহ, মুক্তা, হিঙ্গুল, রুমাঞ্জন, পারদ, গদ্ধক, গুগুগুলু, ত্রিকটু, রামা, জয়পাল বাজ ত্রিফলা, কট্কা, দস্তা-মুল, খোবামুল, সৈদ্ধব, তেউড়া ও যবক্ষার এই সমুদায় দ্রব্য এরগুতৈলে মর্দ্দন করিয়া (১রতি প্রমাণ) বাটকা করিবে। ইহা সেবন করিলে অইবিব উদররোগ, পাণ্ডু, আনাহ, বিষমজর, অজীর্ণ, আমদোষ, কফ, ক্ষয়, সর্ব্ব-প্রকার শুল, কান, শ্বান ও শোথ প্রভৃতি নানা পীড়ার উপশম হইয়। থাকে। ইহা প্লীহোদর রোগে বিশেষ উপকারী।

প্লীহার্ণবো রুসঃ।

হিলুলং গন্ধকং উল্পল্পকং বিষদেব চ। প্রত্যেকং পলিকং ভাগং চূর্ণয়েদভিচিক্তপম্ ॥ পিপ্ললী মরিচক্তেব প্রত্যেক্ত পলাক্ষিক্ষ্ । মন্দ্রিতা বটাং কুয়াদ্ বলমাত্রাং প্রবন্ধতঃ ॥ সেবা সেকালিললজৈবটা নাক্ষিকসংযুতা।
প্লীহানং ৰট্পাকারঞ্চ হয়ি শীত্রং ন সংশ্রঃ।
ব্রং মন্দানলফৈর কাসং খাসং বনিং ভ্রমিন।
প্লীহার্ব ইতি গাতো গহনাননভাষিতঃ।
(প্লীহার্বরে জন্মারবেসন শোধিতং হিসুলং গাত্য্য।
বিষঞ্জা গোম্অশোধিতম্।)

হিঙ্গুল, গদ্ধক, সোহাগা, অল ও বিষ প্রত্যেক ৮ তোলা লইয়া উত্তর্মনে মর্দ্দন করিবে। পরে পিপুল ও মরিচ প্রত্যেক ৪ তোলা পরিমাণে লইয়া তাহাতে মিশ্রিত করিবে। ৩ রতি পরিমিত বটী। অমুপান— শেকালিকা পাতার রস ও মধু। ইংতি ছয় প্রকার প্রীহা নিঃসংশ্যারূপে বিনষ্ট হয় এবং জব, মন্দামি, শ্বাস ও কাস প্রাভৃত নানা-প্রকার রোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

প্লাহশাদি লো রসঃ।

শুতকং গন্ধকং বোৰং সমভা : পূৰণ্ পূৰণ্ ।
এতিঃ সমং তামভন্ম বোগছেদ্ বৈতার জমান্ ॥
মনঃশিলা ববটেঞ্জ কুষং রাজেলেইকম্ ।
জয়ন্তী রোহিতকৈব কারটলপদের মৃথ
ভবিষেৎ তিজং কানকঞ্জ রসতুলাং পূথক্ পূথক।
ভবিষেৎ ত্রিদিনং ধবিং তির্ভিতকণাদকেঃ ॥
গুঞামাতাং বঁটাং খাদেং সতাঃ গাইবিনাশিনাম্
মর্শিক্ষলিসংযুকাং গিঙজাং বা প্রযোজ্যেও ॥
প্রীহানমগ্রমাংসঞ্জ বরুদ্ গুলং প্রস্তারম্ ।
জামান্যের্ সর্বের্ চোদরে শোধান্তবে। ॥
আমান্যের্ সর্বের্ চোদরে প্রাণ্ডবিদ্ধান্তবা
আমান্তবা করে চৈব প্রীক্ষি স্বব্ররের চ।
শ্রীমান্সবান্যেন ভাষিতঃ গ্রহণান্তিনঃ ॥

পারদ, গন্ধক, তিকটু প্রত্যেক সমভাগ; এই ভিনের সমান ভাগ্রভন্ম এবং মন্যাললা, কড়িভন্ম, তুঁতে, হিন্তু, লৌহ, জয়ন্তা, রোড়া, যবক্ষার, সোহাগা, সেন্ধব, বিট্লবণ চিত্রা, ও জয়পাল এই সকল জব্য পারদেব সমান; ইহাদিগকে ভেউড়া, চিত্রা, পিপুল ও আদার রসে পৃথক্রপে তিন দিন করিয়া ভাবনা দিবে। ১ রতি প্রমাণ বলী কার্য্যা সেবন কারলে সন্তঃ প্লীহা বিনষ্ট হয়। মধু ও পিপুল চুর্ণের সহিতে হটা বলী সেবন ক্রিলে প্লীহা, অগ্রমাংস, যক্কং, গুলা, সক্ষপ্রকার আমাণার,

উদর, শোথ, বিদ্ধি, অগ্নিমান্দ্য ও দর্বপ্রকার জব নিবারিত হয়।

প্লাহারিরসঃ।

কবৈকং তালচ্পিস্ত তৎপাদাংশং স্থবণকম্।
পালাকং মৃততামঞ্চ তৎসমং গুদ্ধমন্তকম্॥
মুগাজিনস্ত তত্মাপৈ কথনত প্রদাপরেও।
বিশ্পাকাজিনু ইচন্তত্বৎ সর্বামেকত কারমেও॥
বসপ্তস্ত্রপ্রমাণেন বটিকাং কারমেও তঠঃ।
মধুনা বাহ্চচ্পেন খাদেলিতাং মধাবলম্॥
অসাধ্যমপি প্রাহানং হস্তাবন্তং ন সংশ্যঃ।
যকুতং পাভুরোগঞ্জ গুলাদিকভগন্তবান্॥

হরিতাল চুর্ণ ২ তোলা, স্বর্গ অন্ধতোলা, জারিত তাম ৪ তোলা, শুদ্ধ অত্র ৪ তোলা, মুগচন্দ্র-ভ্রম ২ তোলা ও পাতিলেবুর মূলের ছাল চুর্ণ ২ তোলা, এই সকল জবা একজ করিয়া ৬ বতি পরিমিত বটা করিবে। ইহা মধু ও চিতামূল চুর্ণের সহিত সেবন করিলে অসাধ্য প্রীহা রোগ্র নিশ্চয়ই নিবারিত হয় এবং যক্কৎ পাড়, গুলা ও ভংকার প্রভৃতি রোগ্রিন্ট হয়।

শ্লীহারিরসঃ। (মতাগুরে)

(এ । দৰ্বেধান কং জরপালন।)

পারদ, গদ্ধক, সোহাগা, বিষ, জিকটু,
জিফলা প্রতোক ১ ভোলা, জ্বমণাল ৫ ভোলা।
এই সমুদার পলাশবুকের রসে ১ প্রহর মন্দন
কার্যা ১ রতি প্রমাণ বটিক। প্রস্তুত করভ
ছারাম শুকাইয়া লইবে। অফুপান—আদার
রস। ইহা সেবন করিলে প্রীহা, শুলা, শুলা,

উদাবর্ত্ত ও বাতশূল প্রভৃতি বিবিধ পীড়া প্রশামত হয়।

বাহ্নকিভূষণো রসঃ।

প্তেন বন্ধস্ক সমং নিযোজাং
তন্ত্ৰ, লাপ্তবেন চ গন্ধকেন।
বিনৰ্দিয়েদৰ্শবসেন যামং
মুদা চ সংলিপ্য পুটং দদীত।
বাসারসৈত্তং পরিভাবয়েচচ
রসো ভবেদাস্কিভ্রবণাংয়ম্।
প্লীজ্লচ গুলাস্ত চ শাস্তয়েহস্ত
বল্লঞ্ছ দ্যুদ্ধিযুক্তম্য।

(वरु रेमक्तवम् ।)

পারদ, গন্ধক, বঙ্গ ও তাত্র, এই সমুদায়
সমভাগে লইরা আকন্দ পত্রের রগে এক প্রহর মর্দন করিয়া মৃত্তিকা লেপন পূর্ব্ধক পূটপাক দিবে। পবে বাসকের রসে ভাবনা দিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। অন্তপান— সৈশ্ধবল্বণ চূর্ব। ইহাতে গ্রীহা ও গুলারোগের শাস্তি হয়।

মহামৃত্যুঞ্জয়-লোহঃ।

শুদ্ধসূতং সমং গন্ধং জারিতাক্রং সমং তথা। ৭ক্ষপ্ত দ্বিগুণং লৌহং মৃতত(সং চতুও ণিমু॥ কিকারং সৈক্ষবং » বিড়ং বরাটাভন্ম শঙাকম্। চিত্ৰক° কুনটা ভালং রামঠং কটুকা ভণা ॥ রোহিতং ত্রিবুতা চিঞা বিশালা ধবলাকঠ:। অপামার্গস্তালরওম্মিকা চ নিশংবয়ম্ ॥ প্রিয়ঙ্গিক্রথবং পথ্যা অজমোদা যমানিকা। তৃত্থকং শরপুথা চ যকুরাদো রসাঞ্জনম্। প্রত্যেকং শাণমানেন ভাবয়েদার্ক্রকর্রে:। গুড়্চ্যা: স্বরসেনাপি মধুন: কুড়বার্দ্ধকম্॥ বটিকাং কারয়েদ্ বৈস্থো গুঞাবট্প্রনিতাং পুনঃ। অনুপানং প্রদাতব্যং বুদ্ধা দোষাতুসারত: ॥ ভক্ষেৎ প্রতিরখার সর্বরোগকুলাস্তক্য। প্রীহানং অরম্প্রঞ্ কাসক বিষমভারম্। আমবাতং যকৃচ্ছ,লং খাসমর্শঃ শিরোক্তম্। গুলাশোগোদরানাহমগ্রমাংসং যকুৎ ক্রম্ । मकामनः পोश्रुद्धानमूलद्रकः स्वाक्रिनम्। রোগানীকবিনাশায় কেশরী করিণো যথা।

সেশ্ববিদিত্যতা টক্রণমিতি বা পাঠ:।

মৃত্যুঞ্জয়ো মহালৌহঃ প্লীহগুলাবিনাশনঃ। প্ৰাণিনান্ত হিতাৰ্শায় শন্তুনা পরিকীর্ভিতঃ।

শোধিত পার্দ, গন্ধক, অভ্র ॥• ভোলা; লৌহ ১ ভোলা; ভাষ ২ ভোলা, ঘবক্ষার, সাচিক্ষার, সৈন্ধব, বিট, কড়িভন্ম, শ্যাভন্ম, চিতামূল, মনছাল, হরিতাল, হিন্ন, কট্কী, রোহীতকছাল, তেউড়ী, তেঁতুলছাল ভন্ম, রাখালখশার মূল, ধলা আঁক্ড়ার মূল, আপাঞ্চন্ম, ভালজ্টা ভন্ম, অমুবেত্স, হরিদ্রা, দারুহতিলা, প্রিঞ্জু, ইক্রম্ব, হ্রীতকী, বন-ষমানী, যদানী, তুঁতিয়া, শরপুষা, রোহীতক-ছাল ও রুসাঞ্জন প্রত্যেক ॥ তোলা। এই সমূদায় একতা করিয়া আদা ও গুলঞ্চের রসে ভাবনা দিয়৷ ২ পল মধুর সহিত মাড়িয়া ৬ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। দোষ বিবেচনা কবিয়া অনুপান ব্যবস্থা করিবে। প্রাতঃকালে দেবনীয়। ইহাতে গ্রীহা, উগ্রন্ধর, বিষম-জ্ব, কাস, আমবাত, খান, অর্ণা, শিরোরোগ, ভুলা, উদর ও আনাহ প্রান্ত নানারোগ প্রশমিত হয়।

লোহ-মৃত্যুঞ্জয়ে রসঃ।

নসগদ্ধকলো হ'বং কুনন্ মৃততা মুকন্।
বিষ্টিবরাটিঞ্চু কুখং প্রোর রসাঞ্জনম্ ॥
জাতীকলঞ্চ কটুকা বিকারং কানকং তথা।
ব্যোধং হিপু সৈন্ধবঞ্চ প্রত্যেকং স্ততুলাকম্ ॥
রক্ষ্টাকুতং সর্বনেকত্র ভাবরেৎ ততঃ।
স্থাবর্ত্তরনেনিব বিষপত্ররসেন চ ॥
স্থাবর্ত্তন মতিনাল্ বটিকাং কাররেৎ ততঃ।
সীহালং যক্তং ভ্রমজীলাঞ্চ বিনাশরেৎ ॥
অগমাংসং তথা শোধং তথা সর্ব্বোদরাতি চ।
বাতরক্তঞ্চ ক্রইরঞান্তবিদ্ধিসেব চ ॥

পারদ, গন্ধক, লৌহ, অন্ত্র, মনঃশিলা, জারিত তাম, কুঁচিলা, কড়িভম্ম, তুঁতে, শঙ্খভম্ম, রসাঞ্জন, জায়ফল, কট্কী, যবক্ষার,
সাচিকার, জয়পাল, ত্রিকটু, হিঙ্গু, সৈন্ধব এই
সকল দ্রব্য সমভাগে চুর্ণিত করিয়া হুড্হুড়ে
ও বিলপত্রের রসে ভাবনা দিবে। পরে

হুড় হুড়ের রদে মর্দন কবিয়া (২ রতি পরিমিত) বটী প্রস্তুত করিবে। ইহাতে গ্রীহা, যকুৎ, অগ্রমাংস, শুনা, অঞ্চীলা, উদর ও বাতরব্রু প্রস্তুতি রোগ বিনষ্ট হয়।

লোকনাথে রসঃ।

পারদা গলকবৈধ সমভাগে নির্দিষ্টে ।

সূতালং বসতুল্যা পুনস্থাবন মন্দ্রিটা ।

রসাদিওগালীকা নেইছলাক নামকন্ ।
বয়াদিকাশ ভ্রমণ তাম বিশুপার বন ।

নাগার্লীকসেনি মন্দ্রিদ গালার ভিন্ন ।
প্রেদ গলপুতে নিগান কালার ভিন্ন ।
বিশ্লীমধুনা যুক্তা সভতার বা ব্যাভকান্ ।
বােম্ভাক পিনেতার ভূতা বা কাবকামিত্য ॥

যক্দভ্রাদেরতর পাহ্যাথনাকন ।
ভাগিকার তথা পাভ্র কামনাক বিনাশ্রেই ।
অগ্নিনান্ত শম্বান্নাক।

পারদ, গলক ও অলু প্রত্যেক ১ তোলা, লোহ ও তাম প্রত্যেক ২ তোলা; কড়ি-ভক্ষ ৬ তোলা। এই সমুনায় দ্বা পানের রসে মন্দন করিয়া গলপুটে পাক করিবে। শীতল হইলে উষ্য উদ্যাক্ষরিয়া লইবে। অনুপান—মধুও পিপ্লের গুড়া, গুড় ও হ্বী-তকী, গোদ্য কিংবা গুড় ও জীবার গুড়া। ইহা সেবন করিলে বৃক্তং, গুল, উদর, প্লীহা, শোথ ও অগ্নিনান্য প্রেম্বাত অনেক পাড়ার উপশ্য হয়।

লোকনাথো রসঃ | (মহান্তরে)

রসগন্ধী সমৌ কৃত্ব মর্কন্তেদ্র্বিধানকম !
রসতুলাং মূত্র জিং বিগুণং লৌহত মিক্স।
তামক্ত বিগুণং তব্ম কপন্দকসমূত্রন।
নাগরন্ধীরসৈনামং মর্কন্তেন্তিনিজনে ॥
ততা লঘুপুটং দ্বা সুশীংং গ্রাংব্রে তথা।
বিগুল্পমর্ক্রেলিং থানিরত্বাসং পিবেৎ ॥
মুক্ৎপ্লীহোদরং শোক্ষান্ত্রিমানানিকং জ্বেং।
লোকনাধ্রনো নাম সর্ক্ষাব্রিমানানা।
(লৌহং তাম্রঞ্জ প্রত্যেকং রস্বিগ্রণ। আর্ক্রিকরস্কেন্ব্রিটাং ভক্ষান্ত্রি গ্রিরং জ্বে সংস্থাপ্য ভক্ষ্যন

পারদ ১ তেলা ও বর্ক ১ তেলা একত্র ৪ দও মদিন করিয়। কজলী করিয়ে। পরে অল ১ তেলা, লৌহ ১ দেলা ভাগ ১ তেলা ও কড়িছল্ল ৪ তোলা উহা । সহিত মিল্লিত করিমা পানের বাসে এক প্রথম মাজিয়া লগু-পুটে পাক করিমা। শীলা হলিন ইন্দ উদ্ধৃত করিমা অইবে। মানা –২ বালি। আনার বাস মহ সেবন করিমা প্রদান করিমা গলিব ভিজান জল কিঞ্জিং পান ব্লিবে। ইভালে সকং, প্রীহা প্রভাত করে। বাবালা বাবালা হলা প্রভাত করে।

बुर्द्धावन(११ तमः।

শুদ্ধান জংগিত লং আন কুলাকে কল লম্।
পুরক্লার জংগিত লৈ কলে ব নাল কোলাস্থা।
ভাষে পিছাপত লক্ষার নাল লোহা প্রস্তুত।
পুতারি ওপর লোকে নাল লোক কলে ।
ভাষে পাল্পনা লোক কাস্থান বং নাল্ডলের ।
পিরা সংপুল্ ক্রেন বিলাক কাস্থান বং নাল্ডলের ।
পিরা সংপুল্ ক্রেন বিলাক কাস্থান বং নাল্ডলের ।
ভাষাকেন্ত্র ক্রেন বিলাক কাস্থান বং নাল্ডলের ।
ভাষাকেন্ত্র ক্রেন বিলাক বিলাক ক্রেন বিলাক ক্রেন বা সাহাল বিলাক ক্রেন বিলাক ব

পারেল ১ তেনি ও গণেক । তানা একর মাজিয় কজনা কাবের । পানে ইবার সহিত্ত অন ১ তোলা দিলেও কানি । রতকুমারীর রসে মাজিবে। পান্ডাই তানা ই তোলা, লৌহ ই তোলা ও কজিলা করিয়া কাকমাচার মধ্যে মাজিয় সম্পায় গোলাকার করিবে। অনন্তর ও গোলক গজপুটে পাক কলিয়া শতিশ ইইলে উদ্ধৃত করিবে। মাজ — ২ হতি। অন্তপান — মধু। ইহাতে প্রীহা, সাণা কান্তর হব। অন্তপান — মধু। ইহাতে প্রীহা, সাণা কান্তর হব। অন্তপান — মধু।

ভাভোশনবটা।

হ সু জি কটুকবৈশ্ব অপ্নার্গন্ধ প্রক্রম্ব। অক্সত্রং তথা আনুহাগজন্দ দন্তাগিক্ষ্ব। সৈন্ধবং তথ্যমান গ্রাহাং ক্রোইং ভারাধ ওৎসমস্ব। মীহানং যকুতং শুক্ষমানবাতং ফ্রাক্রশম্ব।

পশ্চাৎ পেয়মিতি বৃদ্ধব্যবহুরে:)

কৰিংগি থে:বমুদ্ৰং মুক্তাং পাড়ং জ্লীমৰম্। এছণীম ডিস্বেজ যক্ষণেং গোধমেৰ চ। তোমেখাৰ স্পামাণিপ্ৰসাত্থা অৰুপত্ৰসাত্থা স্তুজ্জনাচ ক্ষাব্যিত্যুক্তিশ্ভি ক্ষাং।)

হিন্ধু, ত্রিকট্ এবং অপামার্গের পত্র, অর্ক পত্র ও সিঙ্গানের কার সমভাগে লইয়া সক-লের সমান সমার লবণ একতা মিশ্রিভ করিবে। ভাহাদের সমান পেই ও ভার মিশ্রিভ করিয়া বঁটা প্রস্তুত করিবে। ইহাতে গ্রীধা, বৃক্তং, গুলা, আমবাত, অর্শা, গ্রহনী, অভীবার ও শোধ গুড়তি রোগ বিন্ত হয়।

চিত্রকাদি-লৌহঃ।

চিত্রকং নাগ্রং বাস। গুড়ুহা শাংগণ্ডিক শ্লপুলামপ্রেলো মান্ত্র লগারিক জ্বন্ধ । টোইমজং ক্রা হাসং ক্ষাক্তর চরপ্র। গুরুব করাংশায়েত্রাং চুর্বাসকতে চরপ্র। চতুঃপ্রান্তে স্বান্ত প্রিক্তন্তর বিজ্ঞা। মিন্ধনীতে সমন্ত্র সাঞ্জিক ভপলং ক্ষিপেং॥ চিনকাদিনগং লোভো গুলুগানাম্যম্। সকুরং প্রধার হান্তি শাক্ষা সক্ষাক্তনা এরম বাল্লোং পান্ত্রাগান ভ্রেক্ত্রাং প্রস্থাতক।।

চিত্রামূল, শুঠি, বাসকমূল, শুলঞ্চ, শাল-পালি, তাল্ল্টাড্রা, আপালমুলভ্রা ও প্রা-ভন মাল প্রত্যেক চুর্ছ ৬ তোলা; লেই, জন্ম পিপুলচুর্ল, তানা, যাফার, পঞ্চলবল প্রত্যেক চুর্গ ২ তোলা; গোমূত্র ১৬ সের। মৃত্র অগ্নিতে পাক করিবে। শাভল হইলে মধু ২ পল মিশ্রিত করিয়া লইবে। এই চিত্র-কাদি:লোহ সেবন করিলে প্রাহা, উদরাময়, গুলা, যুক্তং, গ্রহণী, শোল এবং অগ্নিমান্য, প্রভাৱ নানা রোগনস্ত হয়।

সর্বেবশ্বরলোহম্।

শুদ্ধসভং পলং গৰুং বিগুণস্থ মৃতাত্ৰকম্। ত্ৰিপলং মৃততাত্ৰক পলাহিং স্বৰ্ণমালিকম্। কৈপালং চিত্ৰকং মাৰ্বং মৃত্ৰং ঘটকৰ্ণকম্। গ্ৰন্থিকং ত্ৰিকলা ব্যোগং ত্ৰিবৃত্যা প্ৰমঞ্জৱী। দণ্ডে'ংপলা গৃশ্চিকালা কুলিশং নাগদন্তিকা।
ক্যানিভ্ৰণ সংচূণা কথনালং বিমন্ধ্যে ॥
আছেকসা রসেনৈ চূর্ণিয়প্র পুনং ক্ষিপেং।
ত্রিপলা লৌহচূর্ণসা: তাংঃ পাদেচ্ছু,তেইছনি ॥
সংপূজা ভাসারং বিশ্বুং গানাণাং দ্বিজ্ঞা ভ্রমন।
মাৰমাজক মধুনা কুলা কিলাজলা গিবেং ॥
চূর্বা সর্কেশিক নাম স্ক্রেণ্ডে " ভবেং।
কঠোরশ্লীভনাশায় ভ্রমোন্তেক ভবা।
কামলাং পাভ্রমানাং মক্রেণ্ডিগ্রানার্যান্।
বিচ্ছীন্মাপ্তধা কভুং কুছং বিনাশ্যেং ॥
প্রাহানম্প্রকাগায়িনাকা ভ্রত্তবম।
শিক্ষা কাজিকালা নিম্নাকা ভ্রত্তবম।
শিক্ষা কাজিকালা নিম্নাকা ভ্রত্তবম।

পারদ ১ পল, গদক ১ পল, জন ২ পল, তাম ৩ পল, স্বর্ণমাজিক ৪ তোলা; জরপাল, চিতামূল, প্রতিন মাণ, ওল, যেট্কোল, পিপলফুল, ভিফলা, জিকটু, তেউড়ী, জাপাপ, ডানকুনিশাক, বিছাটীমূল, হাড্যোড়া, নাগনান ও হুছ্তড়ে প্রত্যেক চুর্ণ ২ তোলা। এই সমুদার জাদার রসে মাড়িয়া পরে লোহচুর্ণ ৩ পল মিশ্রেড করত মদন করিয়া কইবা। এই চুর্ণে মাণ,— ১ মায়া। মধু সহ সেবন করিয়া শাভল জল পান করিবে। শুভাদেন হ্যাদির পূজা করিয়া এই উয়ের সেবন করিছে। কুঠোর প্রাহা, ওল, উদর, কামলা, যকং, জিমি জন্ম রোণ ও জম্মপিও প্রভৃতি পীড়া নই ইর্য়া কান্তি, শুক্র, আরুঃ ও বল বদ্ধিত হয়।

বিভাধরো রসঃ।

গন্ধকং তালকং তাপাং মৃত তামং : মনঃশিলা।
শুদ্ধপত্ৰণ তুলাংশং মৰ্দ্ধেন ভাৰয়েদ্ দিনম্ ॥
পিপ্নলাংশ কৰায়েন বজ্ঞাকীরেন ভাৰয়েং।
বল্লঞ্চ ভক্ষয়েং কোন্তিত আপ্লীহানিকং জয়েং।
কলা বিভাগেরো নাম গোহুপ্ত পিবেদম্ ॥

* তাম্মিত্যুর প্রনিতি বা পাঠঃ।

গন্ধক, হরিতাল, স্বর্ণমাক্ষিক, তাত্র (পাঠা-স্তরে স্বর্ণ), মনছাল ও পারদ প্রত্যেক সম-ভাগে মিশ্রিত করিয়া পিপুলের কাথে ও সিজের আঠায় এক এক দিন ভাবনা দিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। অন্নগান-- মধু ও গবছেশ্ব। ইহা দেবনে গুল্ম ও গ্লীহাদি নষ্ট হুইয়া থাকে।

রসরাজঃ।

গক্ষকেন মৃতং তামে গুজাগধানজুলাকন।
ছয়েই পাদ গুজানদা নক্ষেত্ত রণক্রনে ॥
পুটেদ্ গঞ্পুতে বিশ্বান ফার্মনীতং সনুদ্ধারং।
গুলাগ্রং লিলেং কোলৈ, অত্ত্তুলাকিনাশনম্ ॥
সন্চত্তুলা জ্বলাত হিন্তু বাংলিক্স্তিবিদ্ধান।
রস্বান্ত হতি পাণ্ডে বেংগ্রাব্রণকেশ্রা॥

গন্ধক-সংযোগে জারিত তান ১ তোলা, গন্ধক ১ তোলা, পারা॥• তোলা, এই সমূদ্যি ওলেব রসে মঞ্চন করিয়া গলপুটে পাক করিবে। অগ্লিনির্মাণ হইয়া জ্নাতল হইলে ওয়াও উদ্ধাত করিয়া লাইবে। মার্লা—> রতি। অলপান — মধু। ইহাতে পাঁহা, ওলা, মক্রং, শল ও জাব নাই হইবা কান্তি ও গান্ধি বাকিত হল।

রোহাতক-লোহণ্।

্র হাত্রন্সগর্জার বিক্রায়্ত্র্য ঘাইনিমগ্রম্বাংস্ক কোশং হস্তিন নাক্ষ্য । (আন স্কাচ্বিস্থা কৌহ্ সধূনা কৌইপার্য বিষ্ণা রক্তিকাদিজ্যের জিলাব,)।

রোহীতকছাল, ত্রিকট্, ত্রিফলা ও তিন্দ (বিজ্ঞা, মুডা, চিতামুলা) প্রত্যেক সমভাগ, সার্বসমান লোহ। এই সমুনায় একত মধুর সহিত লোহপাতে মদ্দন করিয়া লউবে। ইহা সেবন করিলে প্রাহা, অগ্রমাংস ও শোথ নিশ্রেষ্ট বিনষ্ট হয়।

যক্ত দরি-লোহম।

বিকৰি সৌহচুৰ্বস্ত গগনস্তা প্ৰাদ্ধকন্। কৰা শুদ্ধা মৃত্যা ভাষ্মা লিম্পাকাজি বুৰচা প্ৰান্থ মুগাজিনভক্ষালয়ে সক্ষেক্তা কাৰ্য্যামা । নৰপ্ৰত্য প্ৰাধ্যেন বুটিন তাকাৰ সম্বাদ্ধিৰ : यकुष्प्रीतिकामप्रदेशक कामला । इस्तामकम् । कामर बामर ब्यार इस्ति चलनगानिकान्नकम् । यकुमति द्विष्ट (सोटर नामकुद्यानिकामम् ॥

লোইচূর্ণ ৪ তোলা, অন ৪ তোলা, তাম ২ তোলা, পাতিলেব্ব মূলের চাল ৮ তোলা এবং অন্তপুনে ভলীক ৩ ক্ষাসারচক ৮ তোলা , এই সমুদার একত্র জলে মন্ধন কার্যা ৯ বতি প্রমিত বটকা কার্যে। ইহা সেবন ক্যিলে বক্রং, প্রীহা, উদ্ব, কাম্লা ও কাস এটোত রোগ নই ইইয়া বল, বল ও অগ্নি বদ্ধিত হয়।

সকুংপ্লাহারি লৌহম্।

ভিত্তনান্ত্র করে পদ্ধবাহ জনিয়ন করন।

ইত্যা বিভ্রণতানন্ত্র নিজাত সমত ন্যাত।

কাহা সর্বাহ করাক স্থান করিবাহ করাক।

কাহা সর্বাহ করাক স্থান করিবাহ করাক।

ইত্যালিক করাক ক্রান্তরাহ প্রান্তরা প্রান্তরা করাক।

ইত্যালিক করাক ক্রান্তরাহ করাক প্রান্তরা করাক।

ইত্যালিক ক্রান্তরাক করাক।

ইত্যালিক করাক করাক।

ইত্যালিক করাক।

ইত

হিন্দুলাত পানি, গন্ধ, লেইও কথ্য প্রত্যেক ২ তোল , তাম, মন্দ্রিলা ও হরিজা প্রত্যেক ২ তোল , ক্ষপাল, সোহাগা ও শিলাজতু প্রত্যেক ২ তোলা . এই সম্নায় একন মন্দ্রন করের পান দ্রীমূল, তেউড়া, চিতামূল, নিসন্দা, ত্রিকচু, আরা ও ভামবাজের রমে (বা বালে) পুলক্ গুলক্ ভাবনা দিয়া কুল-আগির স্তায় ব্টিক কাব্রা ইংগ সেবন করিলে দীঘকালোব্যাল গ্রাইন স্ক্র্ম আট প্রকার উদ্ব, জব, পাড়, কামলা ও শোল প্রভৃতি নানাবোগের শাস্তিহা।

यक्रदश्ची हाभाउधना हो हेन्।

लाहोत्तिस्तरः **ए**क रास्तराक्षिम्। ८ अ.सर्वाच्याकः । १ १ स्टब्स् **ঘিরষ্ট বা**রিণো ভাগমষ্টশেষস্ত কারয়ে**ং।** তেৰ চ'ষ্টাবশেষেণ সমেনাজ্যেৰ যতুতঃ ৷ রসেন বছপুত্রায়া দ্বিগুণফারসন্ধিত্য। লৌহম্যা প্রেদ্ধর্যা গ্রণত চার্ম সুময়ে। किरवारिवास्त कर क्षीर श्रीतर श्रीतर श्रीतिकारिक । পচেৎ পাক্ৰিয়িজ্প বৃহিনা মূছনা শনৈ: ঃ অভ্ৰক্ত নিহতং কৃষ্ণং পূলকং বিধিম্চিছ্তম্। অয়সন্টার্নভাগর আদৌ পাকে বিনিক্সপেৎ ॥ কন্দকাপালিকা চবাং বিভঙ্গং সত্রংদলম্। শরপুভা চ পর্যা চ চিত্রকণ মহৌষধম । লবণানি চ সর্ব্বাণি সক্ষারো রন্ধদারকঃ। দীপাকক তথা দিকথং লৌহাভ্রকসমং ক্ষিপে**।**। প্লীহোদরযকুদ ওক্ষান হাত্তি কারাহিছিবিনা। खारमारमारम भरानेएता लोट्स लोस्विमार वज्रः ॥ প্লীহোদরবিনাশ্যম দস্তাতে ছে পুটে পৃথক। মাণেন গণ্টকৰ্গের শুরাগনা ধকত পুনা।।

লোহ ১ শাস লোহের অদ্ধেক অনু, অত্রের অন্ধেক কাষিত্র, অসু ও লৌহের সমষ্টির ৩ গুণ ত্রিফনা, এই সমুলায় দ্রবা একত্র ১৬ গুণ জলে পাক কবিয়া অইমাংশ অবশিষ্ট থাকিতে নানাইলা তাহার সংহত সমভাগে মত এবং শতমুলীর বস ও বিভণ পবিমাণে তথ-মিশ্রত করিয়া মৃত্তিকা বং লৌহের পাত্রে পাক করিবে। প্রথম ধৌরের অফাংশ পাকার্য চড়াইবে পরে অন্তর্গ অন্দ্রক প্রক্রেপ দিবে। প্রাক্ষেপার্থ-ভল, কাপালিকা, চই, বিডক্ত, প্টিয়ালোধ, শ্বপুঞা, আক্নাদি, চিতামুল, শুঠ, পঞ্জবণ, নন্ধান, বিদ্ধান্তক্রীজ, যামী ও মৌন প্রায়ুক বেছে ও অভ্র উভয়ের সমান। ইহু সেবন কবিলে কার এই আথি-ক্ষু বৰ্ণভবেকেও উদৰ, যক্তম ও ওলা প্ৰাকৃতি পাড়ার শাভি ২ল। ীথেনব-বিনাশের নিমিন্ত ইহা মাণ্ড চেমিকাল ও ওণের বসে পুথক পুথক মারি। এই ২০ বাব পুটপাক मिर्व ।

ওজ্ঞারেণ্।

्तापूरण जिस्तरा च छ। प्रतक्षातः द्वावृक्षेत्रम् । विकास कर्षि करेला स्तकार अर्क्टर तिपूर्वद्वर ४

অর্ককীরে: সুহীক্ষীরেরাতপে ভাবরেৎ ত্যাহম। তেন লিপ্তার্কপত্রঞ্গ রন্ধা চাস্তঃপ্রটে পচেৎ॥ তৎ ক্ষারং চর্ণয়েৎ পশ্চাৎ ক্রোষণং ত্রিফলারজঃ। জীরকং রজনী বহিন্দ্রভাগে সমং সম্ম 🗈 কারান্ধমের সর্বাঞ্চ একীকুতা প্রযোজয়েৎ। ব্রুক্টার্মিদং সিদ্ধং স্বয়ং প্রোক্তং পিনাকিনা ॥ সর্বোদরের গুলের শুলদেবিধু যেজিয়েৎ। **অগ্নিমান্দো**হপাজীর্নে চ ভক্ষাং নিশ্ব**ষ**ণং স্বয়ম ॥ বাতাধিকে জলং কোষণং ঘুতং বা পৈত্তিকে হিতম। ককে গোমুত্রসংযুক্তমারনালং বিদোষজে। সামুদ্র লবণ, সৈত্ত্ববৰ, কাচলবণ, যবক্ষার, সচল লবণ, সোহাগা ও সাচিক্ষার এই সকল দ্রব্য সমভাগে চর্ণ করিবে। পরে **আকন্দে**র আঠা ও সিজের আঠায় ৩ দিন রৌদ্রে ভাবনা দিয়া তদ্ধারা তামপত্রে প্রেলেপ দিবে। পুটে পাক করিয়া প্রালিগু তাম্রপতা চূর্ণিত করিবে এবং ভাহার সংহত ত্রিকট, ত্রিফলা, জীরা, হরিদ্রা, চিতা ইহাদের সমভাগ চুৰ্ মিলিত ফাবেৰ অদ্বাংশ একতা মিশ্রিত করিবে। ইহা সেবনে সক্ষপ্রকার উদর, গুলা, শব্দ, অগ্নিদানলা ও অজীর্ণ রোগ নিবাবিত ২য়। পরিমাধ ২ ভোলা। অমু-পান-বাতাবিকো উফজল, পিতাবিকো মত,

মহাদাবকঃ।

কফাধিকো গোম্ব ও ত্রিদোধাধিকো কাজি।

বৃদ্ধিত্যপানাগ্রিকণা কৃষ্ণাগুলাভিকা।
সূত্রী তালেন্ত পুশাক ব্যাপুর্বিকার তথা ।
কালেন্তিরা ক্ষান্তার বিল্পান-ব্যাস্থার কালেন্তা।
কালেন্ত্রী ক্ষান্তর বিল্পান-ব্যাস্থার কালেন্ত্র।
কালেন্ত্রী ক্ষান্তর বিল্পান-ব্যাস্থার কালেন্ত্র।
কাল্ড লিপানে প্রিলা ব্যাস্থার প্রেলিক্ষান্ত্রী কালিন্ত্রিকার কাল্ড নিকাল ক্ষান্তর বিশ্বাস্থান কালিন্ত্রী কালেন্ত্রী কালেন্ত্রী ক্ষান্তর বিশ্বাস্থান কালিন্ত্রী কালিন্ত্রী কালিন্ত্রী কালিন্ত্রী কালিন্ত্রী কালিন্ত্রী কালিক্সান্তর বিশ্বাস্থান কালিন্ত্রী কালিন্ত

বাসক, চিৰাণুল, আপাজ, তেঁচুলছাল, কুম্ডার দাঁটা, সিজগুল, ভাগজটা, পুন্নবা ৪ বেত এই সমুদায়ের ক্ষার পাতিলেবুর রসে
মিশ্রিত করিয়া ছাঁকিয়া লইবে, পরে এ ক্ষার
দ্রব্য প্রচণ্ড রোদ্রে শুক্ষ করিবে। এই ক্ষার
২ পল, যবক্ষার ২ পল, ফট্কিরি ১ পল, নিশা
দল ১ পল, সৈদ্ধব ৪ তোলা, সোহাগা ২
তোলা, হীরাকস ১ তোলা, মুদ্রাশম্ম ১ তোলা,
দেঁকো ২ তোলা ও সমুদ্রফেন ১ তোলা;
এই সমুদায় দ্রব্য একত্র চূর্ণ করিয়। বকষত্রে
চুয়াইয়া আরক লইবে। ইহার নাম মহাদ্রোবক। এভদ্বারা রসাদির জারণ হয়।
(ইহার ৫।৭ বিন্দু ভলে মিশ্রিত করিয়া)
সেবন কবিলে যক্তং, প্রীহা, উদর ও গুরাদি
নানারোগ নষ্ট হয়।

মহাদাবক-রসঃ।

শুদ্ধং কাঞ্চনমান্ত্ৰিকং মৃত্ত ধ্বং কাংক্তঃ ভিধং ভৎ তথা। সিন্ধা, পাং বিমলং রসাঞ্জনবরং ফেন্ট অবভাপতে:। ক্ষারৌ স্বজ্ঞিকসায়লো প্রনিমলো ভাগার্থীয়া সমাঃ সপ্তানাং সদুৰত্ব উঙ্গণমিহাস্তাকো নুসাবঃ সিত্ত ব তত্ত্বলা ক্ষতিকারিকা জিসদুশঃ শুকো ঘ্রসাংগ্রতঃ क ना नि जिल्हार वव (अजमनर मरहर्ग) मन्दर ग्राहर । প'ত্রে কাচময়ে মুদধববুতে যদ্ধে বকাপ্যে ভিষগ্ আলেন জনবর্দ্ধিনা চাবহিতোহসাধাং রসং পাত্রেৎ ন যোঁ এ!গ্,ভন্ম বর'টিক্ং প্রকুক্তে সে¦হয়ং মহাস্থাবকঃ কো বক্তরং প্রভবেদমুধ্য নিতরাং সম্যগ্ গুনান্ ভূতনে। এতদ্ বল্লচত্ত্যাং সং গিলেজ্ঞা লবজেন বা তৎপশ্চাৎ পরিবাসিতং বছগুণা তাম সকা ভক্ষায়ং 🗵 প্রাদক্ষ্যাৎ কথ্যামি তান শুগু গুণানক্ষেব কাংশিচং পরান নিংশেষণ বিনিহস্তাসৌ চিরভবাস্তান্তাদরাণি প্রবয । ভ্ৰমং পাড়হলীমকং স্ত্ৰুঠিৰামঠালিকাং কামনাং মন্দাগ্রিং বিষমাগ্রিতাং বছবিধান শোখাংশ্চ শুলানপি ॥ गर्तानीरिम ७१। नवीन किमिशनन् १८७५ की १ एउसी किक 'होनाम्टक मन क्रियक हिना भिर सर १५ किमन नवार वा किनकार खता वर्धातवा कृषि किथीन तिरम्धिः ৰক্ষাণং চিবজানবা হলিভকা বাসপ্ৰি খেচকন । समाप्तः चत्रास्त्रमञ्जूषम् (चत्रपः क्रशीनिः । जिलाखक्रमलग्रदर कित्रजनर जीनाक्रमाभूगाम । नामाकर्गनित्ताशकिवद्धः अभवान् क्ष्मामग्राः कार्यान् হয়াদের চিরোখিতান্ বহুবিধানস্থাংশ্চ বোণান্ধি॥ यकः कार्याता हि हेक्ष्म्यार्थपूर्वाः भावः मधानः -রক্তর ফটিকারিউপ্রথবকার একাসাসকে।।

জানীয়াদ গুরুতো বিভাগ্যন্ত্রাণ্ড, চিক্লাপ্ত নির্দ্দিষ্টাপ্তয় এব ভেষজবন্ধ ধ্যন্তা নতান ন্যান্য ৪

(উশ্বশাদিকাদীমাতে: সংন্তাৰ-গ্ৰহণ ক্ৰিন কালিকাদীমান্তচকুৰ্মশৈ সংগ্ৰহণ স্থানাক্ৰিকাদীনান্তচকুৰ্মশৈ সংগ্ৰহণ স্থানাক্ৰিকাদীনান্তচকুৰ্মশৈলা স্থানাক্ৰিকাদীনান্তচকুৰ্মশৈলা স্থানাক্ৰিকাদীনান্তচকুৰ্মশৈলা স্থানাক্ৰিকাদীনান্তচকুৰ্মশৈলা স্থানাক্ৰিকাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তিকাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ্মশ্ৰীকৰাদীনান্তচকুৰ

স্থাক্ষিক, কাংলস্থানক, চেন্ধ্ৰ এবং त्रमाञ्चन, मगम्याकन, माहिकात १ गोछः कात, এই সকল দ্বা প্রত্যেক ১ ভাগা, মোহাগা ৭ ভাগ, নিশাদণ সাড়ে তিন াগ, ফটুফিরি গা• ভাগ, ধ্বক্ষার ১৪ ভাগ : প্রভুকাসাদ, প্রকাদীদ, কাদীন (ইাল্ক্স্) নিলিত ১৪ ভাগ, এই সমুদায় দ্রুরা সম্ভাগে চুর্বত করিয়া কুটিত বস্ত পুরুষণ মান্ত ক্রেড ক্রি-নিশ্বিত পাত্র রাখিয়া বক্ষার ক্ষান (उन् त्रिकातरत ६ रशीत का माननाय)-প্ৰৰ্শ্ব পাক কৰি, উল্লেখ্য হানৰ 📑 ভাগ गरेता हेर्डा गम स्थाबारणा त्रा स्था मता अ मरूर (६३) (६५) ४, छ। १ ५५ । १८७० । क्टेंकिन, साराभा, न्यूली व द्वायाकन এই চাবি দ্বোঃ সমান হণ ।বলিত কাব্যা শে আরক এন্তর কল কণ, ভাচাকে স্বয় দ্রবিক করে। এইনহা স্থাইত , নিশ্বন্ধ, ফটুকিবি, ধ্রুদার, বাতুক,রান, পরকারার ও কাদাদ (হার্যাক্র), এই সপ্রান্ত্র আর্ক্রেক মধ্যম দ্বিক কংহ। ১/1 अध्या शिक्ष প্রভৃতি মুগোক্ত সমুদ্রে এরেন্ট্র সালকের নাম गर्धातिक । देशांचन ५० ५ ५०.५५ (ग्रामापि धक्त निक्षे स्ट्रेंट जीव्या শুঠিকা লক্ষ মূলের সাহ্ত সংবাত (মাল নিজু) পরিমাণে দেবকাষ: ৬াব ন্যালান্তে প্রবাদ সৈত ভাষ্ট ভক্ষা কৰিবলৈ ৷ এই স্থান্তাবক ব্যের হল কলোকার জনালা इंस्ति कि उर रोग्स्टील, हेंश्रीक (५५६) व 国家 图集内 毫升。 思知 所注。 类侧有体。 অঠানা, কাম- , সামেন্দান বিভাগে প্রে শুন অশু, শুকাৰ, ধরং ও ল'ল প্রাট্ডি मुलाङ नानाजात हैल्ला २० रहा।

শঙ্গদ্রবিকঃ।

অর্ক: বুইা ভথা চিঞা তিলাবয়খ চিত্রকন্।
অপামার্গভিক্ষা সমং বস্তুপ্ত কলং হরেও।
মৃদ্ধিনা পচেও তও তু বাবরবণতা গতন্।
লবণেন সম্মে গোন্ডা কাসীসং সোরকা তথা।
দিওপং পঞ্চলবর্গ নাতুল্ম রসেন চ।
কাচকুপান্তি সম্প্রতি বাসরেন্মযোগতা।
মঙ্চুণ্পলং দক্ষা বাক্ষণীয়নুদ্ধেরেও।
সন্ধাতুন্ হরেছীমং বর্গান্থাক দিকান্।
ভিদ্যাদিকরোগাণ্ডাং সভ্যোন কাশকর প্রা।

আকন্দছাল, সিজ, তেওুল ছাল, তিল কাচ, সোন্দলি ছাল, চিতা ও আপান্ধ এই সমুদায়ের সমান সমান ভক্ষ লইয়া জলে গুলিয়া ছাকিয়া লইবে। তৎপরে ঐ কারজল যাবং না লবণরস প্রাপ্ত ইয়, অগ্নিতে পাক করিবে। পরে ঐ লবণ ৪ তোলা; ব্ৰহ্মার, সাচিকার, সোহাগা, সমুদ-ফেন, গোদস্তহরিতাল, হারাকস ও সোরা প্রত্যেক ৪ তোলা, পঞ্চলবণ প্রভোক ৮ তোলা, এই সমূলায় একতা করিয়া টাবালেবুর রসের সহিত কাচকুপীর মধ্যে সপ্থাহ কাল রাখিয়া দিবে। পরে শঙ্কাচুর্ণ ৮ ভোলা উহার সহিত মিশ্রিত কবিয়া বাকণীয়ন্তে চুরাইয়: লইবে। এই দ্রাবকে কড়িও শত্ম প্রভৃতি দ্রবা দ্ৰীভূত হুইয়া নায়। ইহা সেবন क्तिरन शीरां नि नानारतां ने ने ने रहा।

মহাশশ্বদ্যাবকঃ।

চিক্ (খথঃ সু. ই. কার্কে পে সার্গিক হি পথা ম:
পূপ্য জ্বা জলং কুরা কুকুতা লাগ'নি চ ॥
টক্ষণক ববকার: অজিল বিপঞ্চক্ ।
রামঠং তালককৈব লবকাং নরদারক: ॥
জাতীকলক গোদতা তাপ্যং গন্ধান্য তথা ।
বিষং সমুদ্ধেনক দোরকা অটিক নিকা ॥
শক্ষ্মির্গং শন্ধনাভি-চুর্গং পা্যাণসন্তব্ম ।
মন্ত্রানাল চ কার্মানং সম্ভাগক কার্য়েং ॥
ভ্রোং ভদ্ বেত্রস্বদৈঃ কচেকুপাংং ক্ষিপেং ততঃ।
ভ্রোং ভদ্ বেত্রস্বদৈঃ কচেকুপাংং ক্ষিপেং ততঃ।
ভ্রাং ভদ্বাবা উক্স্থানে চ ধাব্যেং॥

বস্ত্রেণাচ্ছাদিতস্তাবদ যাবৎ স্থাৎ সপ্তবাসরম। भ•ठोत्रकाधिनो एतसः योक्नीयञ्जूकारहर ॥ कांठकुला १ कला श्राः तकसम युक्टः स्थीः । গুল্পৈকং পর্বগণ্ডেন প্রাহাহং ভক্ষয়েররঃ॥ কাসং খাসং ক্ষমং প্লীহমজার্ণং গ্রহণাগদ্য। রক্তপিতঃ ক্ষতং গুলামর্শাংসি চ বিনাশয়েৎ॥ অশ্বরীং মৃত্রকু ছেঞ্চ শূলমন্ত্রিণং তথা। আমৰাতং বাতরকং গ্রুবাতং গরুত্ব। দ উদরানয়ন। মধ্ পুলতাং ক্রিমিকেভিড। ম। বাতপিত্ৰফান্ সৰ্বান্ নাশ্যেল্লাত্ৰ সংশ্যং॥ ভুক্ত্রা চ কণ্ঠপর্যাত্তং গুল্লৈকঞ্চ রসং লিছেং। তৎক্ষণাৎ কারয়েছয়া তুণরাশিমিবাদল।। ব'মাদ্ধং দাব্যেৎ দর্বণ শহাব্রজিবরটিক্ষ। পুর্বেশক্ত বিধিনা তাত্র দৃত্যান্ত্রিশি চত্তপথে।। যোগিনীভৈরবাভাঞ বলিং মায়তিলান্দ। নহাশভাদবো নামা শহদেবেন ভাষিতু দ শুকাদিওসালেং গোণায়ে প্রবস্তাবি ন কথাতে। (लोक नार (को इव (र कव) श्रक थ्रंटर त इम जिल्लो ॥ (তত্পত্রি, স্থাপ্তাল, সিচের আকলভাগ ও আপাঞ্জ হহাদের প্রক কার জল প্রত্ত কবিয়া তাতা হইতে লবং উদ্ধত করিয়া লংবে। পরে সোহাগা, যব-কার, সাচিকার, পঞ্চলক, হিন্দু, হ্রিতাল, न्यम, निर्मापन, জ বনল, গোদ ওহরি তাল, স্বণমান্ধিক, গন্ধবোল, বিষ, সমুদ্রদেন, সোরা, ফুটুকিবি, শুঝাচুর্ণ, শুঝানা।ভচুর্ণ, প্রস্তুবচুর্ণ, মনছাল ও হীরাক্স এই সমুদায় সমভাগে চূর্ণ করিয়া বেতের রসে ভাবনা ক চকুপীতে 31위리 করিবে। পবে করিয়া উষ্ণস্থানে ব্যাব্ত পশ্চাং মন্দ অগ্নিতে বারুণীয়ান্ত্র পাক করিয়া সর্পাত্ন করিবে। ĒÌ. **प्**रवाश्य কাচপাত্রে পাতিত করিয়া যত্নপুলক রাখিতে ইহা ১ রতি পরিমাণে পানের হইবে। ইহাতে কাস, খাস, ক্যু, সহিত সেবা। প্লাহা, অজীণ, গ্রহণা, রক্তাপত, উর:কত, গুলা, অর্শঃ ও মূত্রকচ্ছু প্রভৃতে নানা রোগ ধ্বংস হইয়া অতিশয় অগ্রির্জি হয়। ভোজন করিয়া এই রস ১ রতি মাত্রায় সেবন করিলে তৎক্ষণাৎ সমুদায় ভগীভূত হয়।

শছাদ্রবিকো রসঃ।

যোগিনীভৈরব'ভা'ক বলিনাদৌ প্রদাপয়েং। পশ্চাদ যম্বঞ্চ কর্ত্রবামেবাই পরমেখনী ॥ রুসং শভাদুৰো নাম শুভুদ্ৰেন ভাষিত। প্রভাদ গুরুত্নং গুঞ্জিদানীং কথাতে ময়া। मधाहर्वः मनकातः खिल्कातः महेकाम। সম্ভাগ প্রকল্পণ ক্ষিক বি নুসালন্ম ॥ क'हरालार • इः कि छू । त'त्वीयस्कातरः। यामिः जावसास्य स्प अखिनत्रं हेरान् ॥ ঘূর্ণ দেন নাশয়েৎ ষট চ মত্রকুদ্র 'শ্বরীস্তথা। উদ্যুদ্ধবিধং তথি প্রস্থালীহোদর গি চ ॥ অসীৰ্ণ ন'ৰ্যেচ্ছীত গ্ৰহণীক বিশ্চিকাম। ভ্রত্তেরে চ ভোত্তার। সাধ্যার কার্যারে । अपना राष्ट्र सर्वास्त्रमा भूनर शहर ने व्यक्ति । প্রার <u>ক্রেলিনারে চ সাংসার্যাহ্যং এস</u>ভিষ্ণ ॥ ন কুজায়াং ভংগ বাপি সভাং সভাং বদ'নাহয়। ন্ন দেখা সভা কন্ত পি সলা গোপাল ক'রয়েৎ। রসং শুজ্মার লাখ এতামিনুপক্রিকঃ॥

শৃজ্ঞাচুণ, বরক্ষান সাচিক্ষান, সোহাগা,
পঞ্চল্বণ, কট্কিরি ও নিশাদল এই সমুদায়
মনভাগে কাচকুপীতে ভাপিত করিয় বারুণী
মার চুয়াইরা ইডা প্রস্তুত করিতে হয়। ইছা
জার প্রথনের মারা পাল ও শুভি প্রস্তুত
জাবাকে দ্বাভি করে। মাত্রা—এক মারা
(১০)১২ বিন্দু) ভোজনান্তে সেবনীয়। ইছা
সেবন করিলে ফ্টুপ্রকা। অর্শন শুটু প্রকার
উদর, গুলা, প্রাহা ও বিক্লাকে। প্রস্তুতি নানা
রোগ নই হয়। ইছা অজ্যাণের অতি উৎকুই উষ্ধা।

চিত্রক পিপ্ললা-মৃত্যু।

পিপ্ললীং চিত্রকাগুলং পিঞ্ া সমাগ্রিপাচয়েৎ। গুডং চছুগু শং স্কারং যকুৎপ্ল'হে দ্রাপহম্॥

ন্বত /৪ সের। ছগ্ধ ১৬ সের। কলার্থ—
পিপুল ও চিতানুল মিলিত /১ সের। পাকের
জল ১৬ সের। এই ন্বত পান করিলে যক্কং
ও গ্রীহা নষ্ট হয়।

পিপ্লাীয়তন্।

পিশ্বলীকক্ষণযুক্তং মৃতং ক্ষীরচত্ত্র পৃথ্। পচেৎ দ্বীহাগ্রিদাদাদি-যকুজোগতরং পরস্॥

মৃত /৪ সের। হগ্ধ : ও সের। কন্ধার্থ— পিপুল /১ সের। ভল : ৬ সের। এই মৃত পান করিলে যক্কং, গ্রীহা ও অগ্নিধান্দাদি রোগ নত্ত হয়।

চিত্রকগ্নত্য।

চিত্রকন্তা কুনার শিপ বৃত্রপ্রস্থ বিপাচয়েব।

জারনালং তদন্ধিপ্রণং দ্বিমন্তং চতুপ্ত পিস্ ॥

পদকে লকতাবাশ-কারেল বিপাশস্তৈঃ।

বিজ্ঞানকনিশাক্ষাম বিচং তান দাপথেব।

প্রান্ত প্রোনার কিছিলান্।

বন্তি সংপাধক ক্রীকে-শুলোল বিভ্নানসান্॥

হতাং প্রিচং তদলি মং এগ্রেম বৃহ্নিপ্রনা।
ব্লের কর্বাপ্তি তথাকক নিয়ক্তি।

ঘত ৪ দের। কাপার্থ—চিতামূল ১২॥০ দের, জল ৬৪ দের, শেষ ১৬ দের। কাঁজি ৮৮ দের, দিবের মাত ৩ দের। কজার্থ— পিপুল, পিপুলমূল, চই, হিতামূল শুঁঠ, তানাশপর, ধনকার, নিজাব, জাবা, ক্ষাজারা, হরিদ্রা, দারহুলিন্তা ও সনিচ সমুসারে /১ দেব। এই রত পান কারলে গ্রাহা, গুলা, উদরাগান, পার্য, অক'চ এবং বস্তি কল্ম পাশ কটা ও উক দেশের শূল প্রস্তৃতি নানা বোগ উপশানত হয়।

রোহাতক হতম্।

রেহাতক ২০. (এছ): পলানং পঞ্চবিংশ তিঃ।
কোল ছিপ্রথমংযুক্তং ক্যাযমূপকর্য়েও ॥
পলিকৈ: পঞ্চলালেশ্য তেঃ মকৈশ্যাপি তৃলায়া।
রোধাতক হল পিছের তিপ্রথং বিপাচ্যেও ॥
প্রীচাতির দ্বং শন্যানেতলাও প্রযোজিতম।
তথা ভ্রমজ্বখাস-ক্রিমিপাভ্রকামলাঃ ॥
ঘুত ১৪ সের । কাথার্থ—রোহীতকছাল
২৫ পল, কুল শুঠি ৩২ পল, পাকার্থ জল ৫৭
সের, শেষ ১৪ সের ২ পল। ক্রার্থ—পিপুল,
পিপুলমূল, চই, চিতামূল ও শুঠি প্রত্যেক ১

পণ, পোহতিকছাল ৫ পল। এই মৃত পান করিলে প্রাহত, ওল, এত, ম্বাস ও ক্রিমি প্রস্তাত বৈতি উপধানত হয়।

মহারোই।তক-য়তম্ ।

लाक २०१८ भलावार (कालावान राजवानका)। স ব্যাহা প্ৰান্ত্ৰোপ চতভাগাৰণে যত্ম।। হু । প্রস্থা সমারাপ্য চ্ছোপ্রমার । চভুগু পুমু। ভাগিন্দ স্থানিম'ন বাজান্ স্বলাংভান্জসংমিতান্॥ त्यात्यः कर्णाक्षकः शिक्षु यम भी जुक्कः विक्रम्। এন জৌ কুঞ্জন্তং দা,ডুম্থ লেবদকে চ। पूर्वमणे विशास्त्र ५ यदक्षात्रः मालोकतः । (तप्रकार (५३क)(४-५ वर्षा (तिका उठा ॥ এভিচু^{*}ে বিপৰ্য স্থায়েদ্ ভারান ভার। প্রায়াং নিপ্রাং মাজাং কার্মিং বলমবেশ্য চ 🕫 বসকেন্ড সুফ্র গ্রহণ বাণি ছে।জয়েৎ ১ ত সূতে মুদ্র মন্ত্রাধীন্ ইন্তাদিমান্ বছন্। या) दक्षीरक (नवीरेश १ १ (इसून) वकुट ज्या । বু কিশুলবং জলে কা পাৰশুলমটোচকম্।। বিন্যাপুরং এলালং গাড়াবার্গং নকামলম : इक्त १ अ) न जब्द करने बन जिल्ला स्थान মহালোহাত্ৰ, নাম পাৰানং হতি দাকুণ্যু 🖟 (আর গণে নৈৰ অলমে 'দেন বদৰচ্প'ডকস্হিত্ত বেংহাত লেকিড হান কলাম, তাপের নিজিপ্তছাত,

Un'nghalitet (statem-

ত্ত /৪ সের। কাথার্থ—রোহীতকছাল

>২াা০ সের, কুল উ ঠ /৮ সের, জল ৬৪ সের,
কের ১৬ সের। (জলো জার আশস্কা করিয়া
কের বলোন—রোহাতক ছাল ১২॥০ সের,
জল ৬৪ সের, শেন ১৬ সের। এবং কুল উ ঠ
/৮ সের, জন ৬৪ সের, শেন ১৬ সের। এইরূপ গুণাক্ পুণাক্ ২টা করার করিতে হইবে।
এই নিয়মেই ব্যবহার করা বায়)। ছাগাজ্য
১৬ সের। কল্পার্থ—ত্তিকটু, ত্রিফলা, হিন্তু,
গুলানী, বনে, বিট্নবণ, জীরা, ক্ষণলবণ (এক

প্রশতবিভালে ৮ ১০ ৮বং বারাম্। প্রভন একেন

ন্ত্ৰদে বেন বে হী কৰ্মসান্ত্ৰ কৰে। অপ্ৰেৰ

व्हरिक्ष ए केर्पर । वाद्यक्ष्ट्रक्रिकेट । व्हर्ज (नवहामः ।

明息马 5公安日野沙公

প্রকার সচললবণ), দাড়িম বীজ, দেবদার, পুননবা, রাথালশশার মূল, ববক্ষার, কুড়, বিড়ঙ্গ, চিতামূল, হবুষা, চই ও বচ প্রত্যেক ২ তোলা। রোগির ব্যাপি ও বল বিবেচনা করিয়া ও পল পর্যান্ত মাত্রা প্রদান করিবে (বাবহার এই তোলা:। জন্মপান—মাংসবস, যুম ও হন্ধ প্রভৃতি। ইহা সেবন করিলে গরুং, গ্রীহা, গ্রীহশুল, বরুংশুল, হাচছুল, পার্মশূল ও করুচি প্রভৃতি নানা রোগ উপশ্যিত হয়।

রোহাতকারিষ্টঃ।

বেংহীতকতুলামেকাং চতুর্ফোণে জলে পচেং।
পাদনেরে রনে পুতে শীতে পলশংস্বয়ন্।
দক্ষাদ্ গুড়ক্ত ধাতকাঃ পলবেণ্ড্শিকা মতা।
পঞ্চকোলং ডিজোতন্ধ ডিফলাঞ্চ বিনিক্ষিণেং॥
চূর্ণয়িবা পলাংশেন হতে। ভাঙে নিধাপয়েং।
মাসাদুর্জন পিবতাং সার্বাদরক্ষাং জয়েং।
প্রাহিগুলোদরাঞ্চালা-এহণ।শাংসি কামলান্।
কুঠশোদার্ভিহরো রেংহীতানিঞ্ছিংছিডঃ॥

রোহীতকছাল ২২॥। সের, জল ২৫%
সের, শেষ ৬৪ সের। এই কাপ ছাঁকিয়
লইয়া ইহাতে গুড় ২৫ সের গুলিয়া দিয়া
ভাহাতে বাইকুল ১৬ পল, পিপুল, পিপুল্ম,
চই, চিতামূল, শুঠ, গুড়হক, এলাইচ, তেজ-পত্র, হরীতকী, বহেড়া ও আমলা প্রত্যেক
এক পল চুর্ণ করিয়া নিক্ষেপ করিবে এবং
একমাস কাল কোন আবৃত ভাণ্ডে রাখিবে।
পরে ছাঁকিয়া লইয়া অছ্চটাক মাত্রায় দিবসে
২০ বার পান করিলে সর্ম প্রকার উদর্বোগ,
গ্রাহা, গুলা, অগ্রীলা ও গ্রহণা গ্রেড়াত বিবিধ
প্রিড়াই শান্তি হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

প্লীহা ও যক্কৎ রোগের পথ্যাপথ্য উদর রোগের স্থায় জানিবে।

इंजाबूर्व्सन-मः अट्ट श्रीश्यक्रम् द्वांशिकातः।

অথ শোথাধিকারঃ।

অথ শোগ-নিদানম্।

রক্তপি একফান্ বায়ত প্রে ছিষ্টান্ বহি শিরাং।
নামা কলগতিজাই কুয়াৎ মহাংসদংশ্যম ।
উৎসেধ্য সংহতং শে'ঝং তমান্থনিচয়াদকঃ।
সক্তং হেডুবিশেষের কাপতেদ্যিরবাজকম্।
দেখে পূথপ্তায়ং সংকরতিয়াতাদিবাদিপ।
তৎপূর্বকপং দ্রথং শিরোযামান্ত্রক্তারবম ॥
গুল্পামান্ত্রক্তাবানানা ক্লারান্ত্রিক্তাকগুল্পানানা।
ক্যাম্যুক্তক্তাবলানা ক্লারান্ত্রিক্তাকগুল্পানা।
ক্যাম্যুক্তক্তাবলানা ক্লারান্ত্রিক্তাকগুল্পানা।
ক্যাম্যুক্তক্তাবিদ্যুক্তিকাবাদ্যাপ্তাবিদ্যুক্তির ।
ক্যাম্যুক্তক্তাবিদ্যুক্তিকাবাদ্যাপ্তাবিদ্যুক্তির ।
ক্যাম্যুক্তক্তাবিদ্যুক্তিকাবাদ্যাপ্তাবিদ্যুক্তির ।
ক্যাম্যুক্তিকাবাদ্যাপ্তাবিদ্যুক্তিকাবাদ্যাপ্তাবিদ্যুক্তির অভিকল্পান্ত্রিকাত হৈত্য খ্যুব্দাং প্রিকিটা।

मालीत्वर छ। जना छ । ४ সোৎসেধমুগ্ন শিরাতত্ত্ত্ব। স্বেশ্মত্ৰণ্ড বিবৰ্ণতা চ मामाज लिक्ट बहागर अभिवेस् ॥ চলভুতুত্বক প্ৰসাধ্যপোহসিতা ত্ৰপ্ৰিত্ৰী ওৰুণে ইনিনিউং । প্ৰামাণি প্ৰামণ এপ্ৰাছিল কিবাবলা চ শহথ সহারণার। মৃত্য স্থাপা কডি ক্টাকেণ্যপান ভ্ৰমন্ত্ৰপ্ৰত । 21 · 4月代: 然名中门母号管理之 मिश्रिक्षानी' भि भूतिन' ने केने ने " এক স্থিক পার্নরেটকাবিহা প্রসেক নিমাবমির জনাকার্থ। স কুছে গ্ৰহণ হয় বিপাড়িতে নচে:গমেদাতিবলা কফায়কঃ । ্ৰিদাৰাবৃতিসংস্থা জ , য়থুত স্থান্ডিদে 'সজ: । স্ববার তিঃ সন্নিপ্তোচ্ছাথে। ব্যামিশ্রলকণং ॥ এভিষাতেন শ্রাদি-ক্ষেন্ডেদল-গ্রাদিভিঃ। হিমানিলোদধানিলে হল্লা হকপিকজুজেল। রদৈঃ শুকৈশ্চ সংস্পর্গাচ্চ ুয়গ্ঃ স্তাবিসর্পবান্। ভূশোষ্ম লোহিতাভাস, প্রায়শঃ পিত্তলকণঃ॥ বিষজঃ সবিষপ্রাণি-পরিসর্পণমূত্রণাৎ। দংষ্ট্ৰাদস্তনথাদা ভাদবিষপ্ৰাণিনামপি॥ বিশা, জন্তকে।পহত-মলবদপ্রসঞ্চরাৎ।

শোধের সম্প্রাপ্তি। কুপিত বার, ছই রক্ত পিত্ত ও কফকে বহিংস্থ শিরাসমূহে লইয়া গিয়া এবং স্বয়ং উহাদের দ্বারা অবক্ষপতি ইইয়া দ্বস্থাংসাশ্রিত সংহতাবয়ব (দন) উৎ-সেম মর্থাং উদ্ধায় উংপাদন করে, ইহাকেই শোপ কছে। পুর্বোক্ত রক্ত পিত্ত কল ও বার ইহারাই শোপপদার্থের উপাদান। হেডু-বিশেষে মর্থাং বাতাদি প্রক্ পুপক্ দোমে, দ্বন্দ্র্যান্ত কিদোবে, অভিগাতে ও বিষ্ট্রের লাগকে হেডু শোপ সকল নয় প্রকাব হইয়া থাকে , য্পা—বাত্র, পিত্ত, ক্ষক, বাতপিত্রল, বাতরেশ্রহ, পিত্তেশ্রহ, ব্রদোবল, অভিযাত্র ও বিষ্ক্ত।

শোগ ভানিবাব পূর্দে মন্তাপ, শিরা-বিস্তারেবং পীড়া ও গাণগুরুতা এই সকল লক্ষণ প্রকাশিত হয়।

ব্যন বিকেচনাদি ক্লিকিয়া, জ্বাদিবাধি, ভ্ৰেছ্ৰেন বা বিশ্বণ ভোচন, এটা সকল কাংলে কুশ এবং ছবৰ্বন ব্যক্তি বলি কাৰে অন ভীঞ ৰীষ্য উঞ্চৰণ ও ওক্তৰ্বা দেবন কলে, ভাষা হটলে শোথ রোগ উৎপন্ন হয়। তদ্প দবি, অপকদ্রব্য, মৃত্তিকা, শাক, ক্ষারমংখ্রাদি বিগ্রন্থ ভোজন, জুষ্ট বা বিষ্মিশ্রিত অলাহাদ, অশো-রোগ, শ্রমরাহিতা, ব্যন্তিরেচনালি শোধনযোগ্য দেহের অশোধন, মশাভিঘাত, গুৰুমাৰ এবং ব্যনাদি পঞ্চম্মেৰ অসম্যক-ক্রণ, :এই সকল কারণেও শোপ জন্মিয়া থাকে। এস্থলে বুরিতে ছইবে মে, এই জোকোক্ত কারণ গুলিনিজ অর্থাং বাতাদি হেতু। কিন্তু ইহাদের শেথের দেখিজ মধ্যে মশ্মভিঘাত, আগন্ত শোণেরও তেতু হইতে পারে।

শোধরোগের সাধারণ লক্ষণ। বথা— শোধের স্থিতি, ভার ও ক্ষীততা ইহাদের

বিষৰুক্ষানিলক্ষণ দ্ গরগোগাবচূর্ণনাৎ ॥ মুদ্রুক্টলোহবলম্বী চ শীঘো দহিক্জাকরং।

দোষাঃ খয়থুমুদ্ধং ভি কুর্ব্বস্তাানাশয়স্থিতা:॥

কুৎস্নদেহসত্তপ্রাপ্তাঃ কুযুর্বঃ সর্কাসরং তথা ॥

পকাশয়স্থা মধ্যে তু বচ্চ স্থানগতাস্বধঃ।

অনিয়তত্ব আছে অর্থাৎ চিকিৎসা ব্যতিরেকেও কথন নিবৃত্তি, কথন বা উৎপাত হট্যা থাকে। শোপস্থান উষ্ণ, শিরাব্যাপ্ত ও বিবর্ণ হয়। এবং রোগির রোমাঞ্চ হট্যা থাকে।

বায়ু জন্ম শোথ সঞ্চরণনীল (একস্থানে স্থির থাকে না), পাত্লা চম্মবিশিষ্ট, ককণ, অকণ বা ক্ষ্তবর্গ, স্পশ্শক্তিহীন ও কিনিক্ষিনিবং বেদনাবিশিষ্ট হয়। বায়ুব চল্ড হেতু কখন কখন বিনা কাংণেও বাতিক শোথ প্রশমিত হুইয়া থাকে। ইহা টিপিলে বসিয়া বায়, কিছু ছাড়িয়া দিলে পুন্ায় উন্নত হুইয়া উঠে। এই শোথ দিবাভাগে বলবান ও রাতিতে জ্কুপ্রায় হয়।

শৈত্তিক শোথ কোমল, সগন্ধ এবং ক্রফ্ট পীত বা রক্তবর্ণ হয়। ইহা উন্নবিশিষ্ট, অতি যন্ত্রণাদায়ক ও বিশেষদাহায়িত হইনা পাকিয়া থাকে। ইহাতে রোগির ভ্রম, জব, মর্ম্ম, পিপাসা, মন্ত্রতা ওচকু রক্তিমবর্ণ হয়।

শৈলিক শোথ গুরু অচল ও পাণ্ডুবর্ণ হয়।
ইহাতে অরুচি, মুগাদি ইইতে জল্পাব, নিজা,
বিমি ও অগ্নিগান্দ্য ইইগাংপাকে। এই শোপ সমাক প্রকাশিত বা সমাক প্রশমিত ইইতে অধিক সময় কাগে। ইহা টিপিলে ব্যিয়া যার, কিন্তু ছাড়িয়া দিলে উন্নত না ইইয়া নিম্নভাবেই থাকে। কফ্ল শোপ বাত্রিতে বল্বান ও দিবলে শুক্তপায় হয়।

বে শোথে ছুই দোষেব নিদান ও লক্ষণ সমবেত হয়, তাহাকে ছিদোষজ এবং যাহাতে তিন দোষের নিদান ও লক্ষণ মিলিত হয়, ভাহাকে অিদোষজ জানিবে।

আর শ্রাদি খারা ছেদ ভেদ ও ক্ষত প্রভৃতি কারণে যে শোথ হয়, তাহাকে অভিযাতজ শোপ কহে। এইরপ হিম বায়ু, সামুদ্রিক বায়ু, ভেলার রস ও আলকুশার শুঁয়া স্পর্শেও শোপ উৎপন্ন হইয়া থাকে। এই সকল আগছজ শোথ সঞ্চরণশাল, উন্নবিশিষ্ট, লোহিতবর্ণ ও প্রান্থ পিত্রলক্ষণাক্রান্ত হয়।

বিষধর প্রাণী শরীরে চলিয়া গেলে, বা ভাহাদের মূত্র গাত্রে লাগিলে, অথবা নির্বিদ্ধ প্রাণিদগের দাড়া দম্ভ ও নথাঘাতে আহত হুইলে, কিংবা মল মূত্র ও শুক্রলিপ্ত মলেন বস্ত্র পরিধান করিলে বা বিষক্ত্রক্ষাগত বায়ুব স্পর্শে অথবা সংযোগজ-বিষমিশ্রিত চুর্ল ঘারা গাত্র ঘর্নণে শোথ উৎপন্ন হয়; এই প্রকার শোথকে বিষজ শোথ কহে। বিষজ শোথ কোমল, সঞ্চারী, অ্যোগমন্দাল, দীঘ্রজন্মা এবং দাহ ও বেদনা জনক। এই শোথ আগন্তুক্ত শোণেশ অন্তর্ভুতি হুইলেও বিশেষ লক্ষণ ও চিকিৎসার ভন্ত পূর্ণক্ পঠিত হুইয়াছে।

জামানরস্থিত দোষ বৃক্ষঃস্থল প্রভৃতি উদ্ধান্তে; প্রকাশয়স্ত দোষ মন্দেহে অথাৎ বৃক্ষঃস্থল হইতে প্রকাশয় প্রয়ন্ত স্থানে; মলা শ্যুস্ত দোষ অধ্যোদেতে এবং সর্কং-শ্রীরগত দোষ স্কাস্থে শৌপ উৎপাদন করে।

অথ-শোথ-চিকিৎসা।

লত্যনং পাচনং শোধে শিরকোযনিরেচনম্। বমনক গ্রাসনং গ্রানেকে প্রক্তরেং॥ ব্যেহাংশ বাতিকে শোধে বন্ধবিট্কে নির্হণম্। প্রোস্তুং পৈত্তিকে তু ক্ষকে ক্ষক্ষণক্রমঃ॥

শোথবোগে দোধান্ত্সারে বিবেচনা পুর্বক লজ্মন, পাচন, নহা বিরেচন ও বমন ক্রিয়ার ব্যবস্থা কবিবে। বায়ুজনিত শোথে স্লেহ প্রয়োগ, মল বন্ধ থাকিলে নিরুহণ, পৈত্তিক শোথে হ্যাও ঘৃত পান এবং কফজ শোথে কৃক্ষ ক্রিয়া কর্ত্তব্য।

অধানজং লজ্বনপাচনক্রমৈবিশোধনৈরন্দ্রশংদাধনাদিতঃ।
ক্রিরোগতং শীর্ধবিরেচনৈরধোবিরেচনৈরন্ধ্রইউথোজ্বন্।
উপাচরেৎ স্নেহত্তবং বিরুক্তগৈঃ
প্রকল্পরেৎ স্নেহবিধিক রাক্ষিতে।

আমজনিত শোণে লঙ্গন ও পাচন, প্রবল দোষ বিশিষ্ট শোণে শোণন ঔষধ, মন্তকগত শোথে নহা, উদ্ধৃতাগণত শোথে বমন কাবক এবং অধোভাগ গত শোণে বিরেচন কারক ঔষধ ব্যবস্থা করিবে। তৈল ঘুতাদি মেংস্বেন জনিত শোণে ক্রক্ষ ক্রিয়া এবং ক্রক্ষতা নিবন্ধন শোণে স্লিশ্বক্রিয়া ব্যবস্থেষ।

শুর্জীপুনন বৈরণ্ড-প্রফ্রীপুতং জলম্। বাতিকে শয়থো শশুং পানাহারপরিপ্রতঃ। দশমূলং সকাথা চবাতশোথে বিশেষতঃ॥ (পানাহারপরিগ্রহ হতি অরপানসংক্ষাবে। সকাথেতি করকাথাদিবিধিনা।)

বাতিক শোপে জন্ন ও পানীয় সংস্কার বিনয়ে শুঠ, পুনর্নবা, অংগুমূল ও বহংপঞ্মূলীর কাথ প্রশস্ত । এই শোগে দশমূলের কল্প ও কাথানি বিশেষ উপকর্মি।

ৰাভজে তেলমেনজং নিড় গ্ৰহে প্ৰদা মহ।

বাত্তিক শোধে কোষ্ট্ৰক থাকিলে হুগ্ধেৰ সহিত্ত এবগুৱৈতৰ পান কবিতে দিবে।

গোম্বস্ত প্রযোগো বা শাষ্থ শ্বপুন'শনঃ। মাণকলস্ত্রা মণ্ডঃ প্রায়শ্লাতিশোপজিও।

গোমুত্র পানে ও মাণ্যও সেবন করিলে শোগ শাল্ল নষ্ট হয়।

পচোলজিফলারিষ্ট-লাকীকাথঃ সম্ভগ গুলুং। হতি পিন্ত চুতং শোধং তৃষ্টাজনুসময়িতন্॥

পল্তা, হিফলা, নিমছাল ও দারহবিদ্র হাংদের কাথে ২ নাথা ওগ্ওলু প্রক্রেপ দিয়া পান কারতে ভ্রুণ ও অন বৃক্ত পিওল শোখ নিবারিত হুট্যা থাকে।

কা ন্দান পিতক্তেইৰ পেপে তিত্তিত চাতিকলাকৰায়ন । পিবেদ গৰাং মূলবিমিতি হং বা ফলজিকাচচ্বিদ্ধাক্ষন তিম্ । প্ৰিপ্ৰামনাদীচা-গুঠাসিক্ত পৈতি ক

পিওজনিত শোণে ক্ষারান্দ হইয়া তেউড়ী গুলঞ্চ ও ত্রিফলাব কাথ, কিংবা গোমুত্রের ধহিত ২ তোলা পরিমাণে াহফগাচুর্ণ অথবা চাকুলে, মুভা, বাল। ও শুঠের কাথ পান করিবে।

শাওবীল্যাইমজ্ঞারভাঙ্গাদীংক কর্রয়েব। (শীতনায়নঃ কাকোল্যাদিশারিবছেবেপ্লাদিগণাঃ, তব্দুক্তেঃ শ্রেহাদিভিরভাঙ্গাদীন্ কার্য়েব)।

পেত্রিক শোথে কাকোল্যাদি, শারিবাদি ও উৎপল্যাদি নাত্রীধ্য-ঔষ্য-দিদ্ধ তৈলাদি ক্ষেহ অভ্যঙ্গ ও শীতলঙ্গলে অবগৃহিন করিবে।

ধ্ৰকারভাবিতা, বুজা প্ৰা। মূত্ৰে বা যুঠা। যোগিতা কান্যজ্ঞান্ত কোগং শ্ৰেমস্থিতিয় ।

মন্দ্র সাজের আঠার বিপুল, অথবা সোমুতে হুরীতকা ভাবনা দিয়া সেবন করিলে কক্ষ শোগ প্রশ্নিত হয়।

> পুননাবি, বিশ্ববিদ্যুক্ত আুটান কলে কপ্ৰয়ানৱে ক্লেক্ত মৃত্ত কোনে কলেবেল মহিলাক মুক্তা মান্ত্ৰিক মহিলাক ভাৰেমান এ

প্রিক কোণে প্নন্ব, ভাঠ, তেউড়ী, ভালক, সোন্লান, হরাতকাঁও দেবদার, ইহাদের কল্ল বা কণে ভগ্ভল্ও গোম্রদ্হ পান কলিবে।

ককে ভূ কুফাসিকত,পূন গ্ৰুপি গ্ৰুপিএ,ইওমাপালেশী। কুলগ্ৰুপ্তিক্ষ্যুদ্দকশন্ত ওক্তামিস্কালিক ॥

্রুফারে ইছিছু নিপান্তরে পিং। তথা কুলপান্ত**টিকালেন,** তথা পোন্তু কার্ত্ব বিধান সৈতি কার্তি কার কার্ত্ব কার্তি কার কার্ত্ব কার্ত্ব কার্তি কার কার্ত্ব ক

ক্ষা শোগে শিপুল, বালুকা, প্রশতন স্থপ-, থা, শজিনার ছাল ও তিনি, এই সকল জ্বা গোলুলে পেবণ করিয়া তাহায় প্রশেপ; কুল্প ও জুঠো কাপ থাবা কিংবা কুল্প ও ভূঁঠো সাহত দিদ্ধ পৌন্ত থাবা পারকে; এবং চোরপূজা ও অন্তক্ষ পেহণ করিয়া ভদ্ধারা অকুলেপন (চাজের ২০০ মানান্ত্র অকুলেপন) ক্রিয়া

প্রত্য প্রভাবনার কুলার সকলে সকলে কি ।

্ষিদোষজ শোগে দোষপরের এবং **তিলোষজ** শোগে দোষত্ররের মেলিত চিকিৎসা করিবে। বিশ্বপত্ররদং পূতং দোষণং শ্বয়থে তিজে। বিট্সকে চৈব তুর ক্লি বিদ্ধাৎ কামলাই চ।।

বিরপত্রের র্ম ছাঁকিয়া মরিচ চূর্ণের সহিত পান করিলে সালিপাতিক শোথ, মলবদ্ধতা, আর্শঃ ও কামলা প্রশমিত হর।

ভূনিখদাকচ্বং অধুৰা পেয়ঃ পুনন বাকাৰ ॥ অপহরতি নিয়তমংক শোঘং সাকাজিকং নুগান্।

চিরতা ও দেবদার চূর্ণ থাইয়া পুনন বার কাথ পান করিলে সার্ধ্বাঙ্গিক শোথ নিবারিত হইয়া গাকে।

শেগমুৎ কোকিলাকপ্ত ভন্ম মূত্রেণ চাস্তম। ॥

কফজ শোগে গোমুত্রের সহিত এবং পিতঞ শোগে জলের সহিত কুলেথাড়া-ভত্ন পান করিবে।

ে 'গ্রেড্র সন্ত্রতে কু গ্রেড , সকলেপ্রাটি নী চলম। ভল্লাতকং হরেছে এং সহিলা ক্রমন্ত্রিকা। মতিয়াকারসংগ্রিড নবনী ভ্রমন্ত্রিকা।

আগত্ত শোগে শাতন পরিষেক ও লেপাদি ব্যবজা করিবে। ভন্নাতকজ্ঞ শোথে তিল ও ক্লক্ষণুত্তিকা মহিষীর গ্রাগ্ধে পেষিত ও নবনীত সংগুক্ত করিয়া তাহার লেপ দিবে।

ভিলেপিপ্ত শ্বন যাতি পোলো ভগতেকেপিতে। গতিমুগতিলৈলৈ পোনবনাতেন সংযুক্ত। পোমনাক্ষরণ হস্তি চূর্ণে; শালনলক্ষ্য চান ব্যস্তঃ শালনগ্য। ধা হতি বন্ধ্যত পাঠ।

ভ্রাতক্ত শোপে তিলক্তের লেপ, কিংবা যৃষ্টিমধু ও তিল মহিনীর হুগ্নে পেবিত ও তাহাতে মাধন সংযুক্ত করিয়া তদ্ধারা লেপ দিবে। শাল-পত্র (বৃস্ত) চূর্ণের ছারা মদ্দন করিলেও ভেলা-জানিত শোথ প্রশাসিত হয়।

পথ্যাদিকাথঃ।

প্ৰদানিশাভাৰ্গায় হাগ্নিদাৰ্কা-প্ৰনৰ বাদাক্ৰমহৌষধানাম্। কাৰ্থঃ প্ৰদক্ষে দুৱপাণিপাদ-মুখাজ্ঞিতং হস্তাচিত্ৰণ শোৰস ॥ হরীতকী, হরিদ্রা, বামুনহাটী, গুলঞ্চ, চিতা, দারহরিদ্রা, পুনর্ন বা, দেবদার ও গুঠ ইহাদের কাথ পান করিলে উদর, হস্ত, পদ ও মুণগত শোথ অচিবে বিনষ্ট হয়।

ফলজিকোন্তবং কংগ্ৰা গোদৰ বংগৰ সাবিত্য। বাতলেখ্যেক্তবং শোগং হতাদ ব্যবস্থান

ত্রিফলা ২ তোলা, গোমূত অদ্ধ সের, শেষ অদ্ধপোয়া; এই দ্বাথ পান করিলে বাতশ্লেগ-জনিত কোবদংশ্রিত শোগ নই হয়।

াসকস্তথাৰ্কনধী ছে-নিধৰ গামন ধ্ৰোমাছৰ। গোমুটোৰণি কুক্ৰীত স্থাপ্ৰায়েন বংগ্ৰহনমূ। গুননাবা দাক ভূটী শিলা চিদ্ধাল্যৰ ক্ষা। অন্ত্ৰপ্ৰিষ্ঠা কৰোমান্তৰ প্ৰায়োগ্ৰহণ প্ৰস্থাগ্ৰহণ।

আকল্প, প্রন্ধ ও নিম ইহাদের কাপ ধারা বা ঈবহুক ধ্রেনির গার, প্রিমেক কবিলে অথবা প্রন্থা, দেবসার, শুঠ, শুজিনার ভাল ও খেত সর্থপ, এই সকল ধ্রেন্য ব্যক্তিতে প্রেমিত ও ঈষত্য করিনা তদান প্রেপ দিলে সক্ষ-প্রকার শেথ বিন্ধ হয়।

> ভড়ভিকং বা ভড়বাগৰা বা ভড়াভয়াং বা ভড়বি হলাং বা। কথাভিরদ্ধা বিজনমাধা থানেরবা, থজনমাধি মাধন্য শোপপ্রভিজ্ঞারপার করোগান্ স্থাসকাসাক চপীনসাদেশ্। ভাগ্জবাশেপহণাবিকারান্ হলাৎ ভথাতাল কন্যাহরোগান্য

গুড় ও আদা বা গুড় ও গুঁঠ অথবা গুড় ও হরীতকী কিংবা গুড় ও পিপুল এই চতুর্কিধ যোগ ২ তোলা পরিমাণে আরও করিয়া প্রতি-দিন ছুই হুই তোলা বর্দ্ধিত করিয়া ২৪ তোলা পর্য্যস্ত দেবন করিবে। এইরপে ১৫ দিন বা একমাস দেবন করিবে শোগ, প্রতিশ্রায়, গলরোগ, শ্বাস, কাস, অক্রচি, পানস, জীর্ণজ্বর, অশঃ ও এইবা রোগ এবং বাতশ্রেজনিত অন্তান্ত তবং বোগ প্রশমিত হয়। (এক্ষণে উক্তরণ মাতা ব্যবহৃত হয় না, বৃদ্ধ বৈশ্বেরা বিবেচনা করিয়া উহার সিকি মাত্রা পর্যন্তে প্রয়োগ করিয়া থাকেন)।

কণান'গরজং চূর্বং সপ্তড়ং শোধন'শনন্। আমাজার্গপ্রশমনং শূলন্নং বস্তিশোধনন্।

পিপুল ও শুঠ চূর্ণ, গুড়ের সহিত সেবন কবিলে শোগ রোগ বিনষ্ট হয়। ইহা আমা-জীৰ্ণ-প্রশমক, শ্লনাশক ও বস্তিবিশোধক।

গুড়াৎ পলত্রং গ্রাজং শৃক্ষবেরপলত্র্যম। শৃক্ষবেনসমা কুষণ লৌহবিচ্তিলয়োঃ পলম্। চুর্মেতৎ সমুক্তঃ বনব্ধ্যপুনাশন্ম।

প্রভ্ দেড় পোয়া, শুঠচুল দেড় পোয়া, পিপুল চুল দেড় পোয়া, মঙুণ চুণ অদ পোয়া ও তেল চুল অদ্ধ পোয়া, এই সকল চুণ মিলিত কবিলা উপযুক্ত মাজাণ দেশন কলিল সুষ্ঠ প্রকাব শোগ বিষয়ে ইয়া।

> বৃশ্চাবদের দামনাস্তরের। দত্ত'জিবুংজ্জামণ্ডিত কেবা। তুম্বং স্কৃতিষ্কাই বিধিনা নিশীতং গাতং পরং শে,ধুল্লং হাতিষ্ঠা, ভান।

খেতপুন্নবা, দেবদাকে ও শুন্তা দার ট্রীকিংবা দত্তী, তেউড়া, ত্রিকটু ও চিতা দাবা ববা-বিবানে এগ্ন পাক কবিয়া পান কবিলে শোগ নিবারিত হয়।

বিশং গুড়েন তুল্যং বৃশ্চীরবসায়ুপানমভ্যুত্তন্। বিশিহ্তি সক্রশোথং গমর্ক্যং চণ্ডবায়ুরিব ॥

শুঁঠ ও গুড় সমভাগে দেবন কবিয়া পুননবাব রস অৱপান করিলে সকল প্রকার শোথ রোগ, প্রচণ্ড-বায়-প্রতিসারিত মেঘ-বন্দের স্থায় নিরাক্ত হয়।

পুলপুরাময়ং কৰং প্রস্লোন্ড্য প্রিয়েছে। প্রাহাময়হরকৈন সর্কাকৈনাক্ষণোপ্রতিং। (স্থলপুরাং মাণকন্দর্গে, স চ পুরাণো প্রাহাতি শিবদাসঃ)।

পুরাতন মাণের মূল চূর্ণ ছগ্ণের পহিত আলোড়ন করিয়া সেবন কারলে সর্বাঙ্গ ও একাঙ্গজাত শোথ নিবারিত হয়।

সিংহাস্তাদিঃ।

সিংহাক্ত স্থিত উপিক)-কাম্বর স্থা স্থা ক্ষিক্ষ।
পীতা শোগং জারজার স্থানং কামং জ্বরং ব্যিষ্।
বাসকমুলের ছাল, গুলগু ও কণ্টকারী
ইহাদের কাগ মধু সহ পান করিলে শোগ,
শাস, কাস, জার ও ব্যি নিবারিত হয়।

পুনর্বাস্টক্কাণঃ।

পুনৰ্বানিহপটোলগুটী-তিক্তায় হাদাৰতে য়াকগায়। মৰবাক্তাবোদৰপাণশুল-খামাখিতং পাওগদং নিহতি।

পুননবা, নিন্তাল, পটোলপান, শুঠ, কট্কী, জ্যুদ্ধ, দেবদাক ও হ্বাডিকা ইহাদেব কাপ পান কবিলে স্ফান্তিক শোপ, উদ্বয়োগ, প্রাহশন, খান ও পাণ্ডোগর শান্তি হয়।

নাক্তগ্তলুকুটু মা কালে! মুক্রের ধ্যোগজিং। বয়াভুকুজাবরাভাগে ব কা বা সকাশাদ্ধজিং ॥

দেবলাক, গুগগুলুও গুঠ ইথাদের কর গোণুদরে সহিত কিংক প্লবণ ও গুঠ এই উভয়ের কাগ সহ দেবল কৈয়িণে সলপ্রকার শোগ বোগ নিবাহিত হয়।

পুননকা নিষ্ণাত্তং নিপাকিগ'রিভ দক্ষে।
তেওঁ পুত্সংক্ষেক গোলং ইন্তি ক্লাক্ষণনা অসামাত কাকিলাকো নিউভী বিভাগ তথা। বাহেরপি পুটক্ষেক শেশ হস্তি ক্লাক্ষণনা।

পুন্নবা, নিমপাতা, শিমপাতা ও পালিবা অথবা আপাং, কুলেখড়ো, নিঃদলাও জয়ন্তী এই সম্দায় দুবা পোটলীবক করিয়া স্বেদ প্রদান করিলে প্রবল শোগ নিবারত হয়।

পুননবাদি চুর্ম।

পুননবা দাকভেয়া পাঠা বিখং খদং ধ্বকা । বৃংভাৌ দে রুজভৌ দে পিপ্সলো চিত্রকং বৃষ্ট ॥ সমভ্গোনি সংচ্গা সবাং মৃত্রেগ না পিবেৎ । বহুপ্রকার খদ্পং সক্লোত্র(বসারিণ্ম ॥ ২ঞ্জি কোপে দরাধান্তৌ রুপাংক্রেবোদ্ধভান্পি ॥ (বিশ্বস্থা মূল্ম্) । পুননবা, দেবদাক, হরীতকী, আক্নাদি, বিঅমূল, গোক্ষ্র, বৃহতী, কণ্টকারী, হরিন্তা, দাক্ষহরিন্তা, পিপুল, গজপিপুল, চিতামূল ও বাসকছাল, এই সমূদায় সমভাগে চূণ করিয়া গোমূত্রের সহিত সেবন করিলে শোথ, উদর ও রণ রোগ নষ্ট হয়।

শোথারি চুর্ন্।

শুক্ষমুলা, আপাঙ্গ, ত্রিকট্ট, ত্রিকলা, দন্তীমূল, বিড়ঙ্গ, চিভামূল ও মূতা . এই সমুদার
সমভাগে চূর্ণ করিলা লইবে। (মাত্রা—জন্দ ভোলা)। অনুপান—বিভপত্রের রম। প্রাতঃ
কালে সেবনীয়। গুছাতে পান্ধ্রোগ ও স্নাক্রণ
শোধ প্রশমিত হয়।

শোথোদরে পুনর্নবাদিগুগ্ ওলুঃ।

পুননিবাং দাকাভয়াং গুড়,চাং পিবেৎ সমৃত্যাং মহিষাক্ষমুক্তাম্। তথ্যনাৰশোগোদবপাগুরোগ-ত্বোপ্রসেকোগ্রকদাময়ের॥

স্থেলা অনেকে শ্বিক্ষা শ্রেষ্ট্র।
(স্বর্লচ্পিন্না শুগ্রেল্, এরখতে লেন পিছিমির্ছা একাকৃতা স্থাপায়। অনুরূপং গোম্বেণ পেয়ন্।)

পুননবা, দেবদার, হনীতকী গুলঞ্চ প্রত্যক এক তোলা, মহিষাক্ষ গুগ্গুলু চারি তোলা। এরগুলৈরের সহিত গুগ্গুলু মাজিয়া উল্লেখিত চুণ সকল উহার সহিত মিশ্রিত করিয়া লইবে। গোমুজের সহিত উপস্কু মাজায় সেবা। ইহাতে মকের বিক্লতি, শোথ, উদর ও পাণ্ডু প্রাভৃতি নানা পীড়ার উপশম হইয়া থাকে।

পুনর্বাদি-লেহঃ

পুনর্বামৃতাদার-দশমূলরসাচকে। আর্ক্ষরস্প্রে গুড়স্ত চ তুলাং পচেৎ। তং সিদ্ধং ব্যোষপত্তিলা-ত্ব্চলা, কাৰ্ষিকৈঃ পৃথক।
চুণীকুটিঃ ক্ষিণেচ্ছাতে সধুন, কুডুবং নিছেং॥
নেহং পৌননবো নাম শোখশুলনিস্পনঃ।
কাসখাসাঞ্চিহরো বলবর্ণাগ্রিবর্জনঃ॥
(মধুনঃ কুডুবসপ্তী পলানি। ২তি শিবদাস,!)
পুননবা, গুল্ঞ, দেবদাকৈ ও দশমল এ

পুননবা, গুলঞ্জ, দেবদার ও দশমূল এই
সমুদায় ১৮ সেব, পাকের জল ৬৪ সের. শেষ
১৬ সের। আদার রস ১৪ সেব। এই উভয়
জবো পুরাতন ওড় ১২॥০ সেব গুলিয়া চাঁকিয়া
লইয়া পাক করিবে। ঘনীভূত হইলে ত্রিকটু,
তেজপত্র, এলাইচ, গুড়গুক্ ও চি প্রত্যেক
চুব হ তোলা কলিয়া প্রক্রেপ দিবে। শতল
ইইলে, মধু এক সেব মিলিত করিয়া লইবে।
এই ঔষণ সেবন কাবলে শাগ ও শ্ল প্রভৃতি
নানারোগ নই হার বল বল ও স্মান্তির ক্রি

শোখারি মণ্ডরম।

গোন্ত শুদ্ধ এবং নিস্ত ভারম ভাবি এম !
মাণকাছ দৰ কান্যা বিসেপপি চ ভাবতেও !
ডিক্টা বাজ্য গানাং চুন্ত ক্ষত্য প্রাক ।
চর্নাদ্ স্থিত সাল্যাত গানাং চুন্ত ক্ষত্য প্রাক ।
চর্নাদ্ স্থিত সাল্যাত গানাং চুন্ত প্রস্তা গায়ে ।
সিংক্স চর্না ক্ষিপ্রেলি নি ব্যক্তি সাল্যা ।
বিভাৱি সাল্যাত গানান্য এর্মিতি সংজ্ঞা ।
(গ্রাছাট্যেইস্তা গোন্যম এর্মিতি সংজ্ঞা)

গোনুতে ৭ বার াদিত মধ্র ৫ পশ,
নিদিন্দা, মাণ, আদা ওবন ওলের রসে বধাক্রমে ও বার করির। ভারনা দিয়া ৭ সের
সোমুতে পাক করিবে, পরে হাতায় লাগে
তরূপ গাঢ় হইলে তাহাতে বিফ্লা, ত্রিকটুও
তৈ, এই ৭ স্বারর প্রভাক চুর্ল তোলা
পরিমাণে প্রক্রেপ দিয়া নামাইবে, নাতল
হইলে মধু ২ পল নিশ্রত করিরা লইবে। এই
উষধ সেবন করিলে সন্ধানেযোৎপর শোধ
প্রশ্মিত হয়।

অগ্রিমুখন ভুরম্।

পলদাদশমভূবং গ্রেম্ভেইঞ্জ পচেই। পথকোলং দেবদাক মুখ্য গোধ্য ফলভয়ন্। বিড়ঙ্গং পলমাজন্ত পাকান্তে চুণিতং ক্ষিপেৎ। পায়রেদক্ষাজন্ত তক্রেণ সহ বৃদ্ধিমান্॥ অসাধাং ধ্য়পুং হন্তি পাঙুরোগং চিরোভবম্। ক্যমগ্রিমুখং নাম সপিঃ-ক্ষোদ্রেশ মর্দিয়েৎ॥

শোধিত-মণুর ১২ পল, পাকার্থ—গোমুর ১২ মের। প্রক্ষেপার্থ—পিপুল, পিপুলমূল, চে, চিভামূল, শুঠ, নেবদার, মূতা, ত্রিকটু, ত্রিকলা ও বিড়ম্ম প্রত্যেক ১ পল। ইহা মত ও মধুর সহিত মন্দন করিয়। তক্রের সহিত সেবা। মাত্রা—২ তোল:। ইহা দেবন করিলে অসাধা শোপ ও চিরভাত পাণ্ডবোগ নষ্ট হয়।

রদাভ্যভ্রণ্।

গঞ্জাকা ঘরণে চানাং প্রচাকে ক জিস্পাল্ড ।
সংশোধা চুর্বিতং কৃষ্ণা মণ্ডর । সুস্তক্ষর ॥
প্রস্তুজ্ঞ ভরাতেকা; প্রামণ্ডর । স্পিক্ষর ॥
ভালকং কাছলৌহল্ড সর্কং রৌছে বিভাবরেং ॥
ভঙ্গরাজরমপ্রত্বে কেশর , কর্মে তথা ।
নিজ্ঞানাগকলানানা করুল নমেপুপি ॥
বৈকটু কেল্ডাচরা-মৃত্তকানাং পুঞ্চ পুঞ্চ ।
কর্ম কর্ম ফিক্ষেত্র গাঁল সর্কার্য্যপিয়া ॥
ভঙ্গরে পাত্রক্য স্থানাগ্রিকত প্রান্
নহিন্ত সর্কার্য সাল্লাগ্রিকত প্রান্
নহিন্ত সর্কার হালাগ্রিকত প্রান্
ক্রিক্রর স্থান স্কার্ত্র ব্যবহার ॥
অগ্রিক্রর স্থান স্কার্ত্র ব্যবহার ॥
অগ্রিক্রর স্থান প্রস্তুজ্ঞানাক্রিক্র ।
স্লালাং পাভ্রোক্স প্রেক্তিলি ক্রিক্র ।
স্লাহ্রাক্র প্রান্তির স্থানিক্র প্রাক্র প্রাক্ত প্রাক্র প্রাক্র প্রাক্ত প্রাক্র প্রাক্র প্রাক্ত প্রাক্ত প্রাক্র প্রাক্র প্রাক্র প্রাক্ত প্রাক্র প্রাক্ত প্

(নিগু গুটানাং রসে: প্রতেকমাজীকরণকমৈর্চাব-রিছা কিনি দার্জভারাং ত্রিকট্বাদীনাং চূর্বং প্রত্যেকং কবং দল্প পুন: নিষ্ট্রা কেলেগ্রমাণা নটিকাঃ কৃত্য একৈকাং গ্রহমধ্নতাং মর্জ্বিয়া ভক্ষয়েং; পুননবাকাশং প্রক্রিয়বকারমন্ত্রিবেং।)

গন্ধক, অত্র ও পারদ প্রত্যেক ৪ তোলা; শোধিত মণ্ডুর চূর্ণ ২ পল, হরীতকী চূর্ণ হই পল, শিলাজতু ২ তোলা ও কান্তলোহ এক তোলা; এই সমুদায় একত্র মন্দন কার্য়া ভামরাজের রস /৪ সের, কেণ্ডুরিয়া রস চারে সের এবং নিসিন্দা, মাণ্মূল, ওল ও আদা এই সমুদায়ের আদীক্রণোপ্যুক্ত রসে ভাবনা বিয়া ও রৌত্রে ওকাইয়া

কিঞ্চিৎ আর্দ্র পাকিতে, ব্রিকট্, ব্রিফলা, চৈ ও মুতা ইহাদের প্রচ্যেকের চূর্ণ হ ভোলা পরিনাণে মিশ্রিত করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় (চারি আনা প্রনাণ) বটিকা করিবে। অন্ধুপান—
ঘত ও মুণ্। (সেবনাস্তে পুনর্কার কাপে যবক্ষার প্রক্রেপ দিয় পান করিবে)। ইহাতে সর্মানি দোবজাত ও স্মাসিগত শোপ, কাস, খাদ, ত্বাগ ও দাহাদি নালারোগ ন্ত হইয়া অয়ি বৃদ্ধি হয়। ইহা ব্রা, বাতাকুলোলোমক ও জন্ত।

কংসহরাতকা ।

(দশসুল-হরীতকী)

দ্বাক্ষরপ্ত পচেৎ ক্ষায়ে
কংসেতভগ্নাক শতং গুড়াক।
ক্রেড্ স্থানি চ বিনীয় চূর্বং
বোষং ক্রিসোগকামূনান্তিতে চ ॥
প্রস্তানান্ত্র মুনীতে
কিনিক্ত চুর্বাদ্ধি মানশকাং।
ক্রেভিয়াং প্রাপ্ত ভতনচ ক্রেভান্তি
ক্রিডিয়াং প্রাপ্ত ভতনচ ক্রেভান্তি
ক্রিডিয়াং প্রাপ্ত প্রস্তানা
ক্রেভানাত্র চক্রেভান্তি
ক্রানানাত্র ক্রিডিয়াংশভ্রব্ণ প্রয়োগান।
ক্রানানাত্র ক্রিডিয়াংশভ্রব্ণ প্রানানান্ত্র ক্রেভানান্
ক্রেভানানাক্রিকার্যন্ত্র

মিলত দশমূল /৮ দেৱ, লগ-পোটলীবিদ্ধ হ্রীতকী ১০০টা পাকার্থ জল ৬৪ দেৱ,
শেষ ১৬ দেৱ। এই কাথ ছাকিয়া তাহাতে
পুরান্ন গুড় ২২০০ ধের শুলিয়া পুনর্বার
হাকিয়া উহাতে উক্ত দিদ্ধ হ্রীতকী ১০০টা
দিয়া মৃংপাত্রে পাক করিবে। পাক দিদ্ধ হইলে
ত্রেকটু ও ঘবক্ষার মিলিত ৪ পল (যবক্ষারের
মাত্রা কিছু কম, বুন্দের মতে ২ তোলা), শুড়হক্, তেজপত্র, এলাইচ প্রত্যেক ২ তোলা
প্রক্ষেপ দিবে। শাতল হইলে মধু /২ দের
মিন্ত করিবে। প্রত্যহ ঐ হরীতকীর এক
একটি ও৪ তোলা পরিমাণে লেহ দেবনীয়।
হহাতে শোধ, শ্বাস, অফ্চি, মেহ, শুল্ম

প্লীহা, ত্রিদোষজ উদৰ ও শুক্রাদিব দোষ প্রভৃতি বিবিধ পীড়ার শান্তি হয়। তথাৰ অপর নাম দশমূল-হ্বীতকী।

ক্ষারগুড়িক।।

ক্ষারহয়ং ভারবণান চহা-যায়োরজো ব্যোষফলতিকে চা স্পিপ্লীমূলনিড্সসারং মুস্তাজ্যোদামরদার বিলম। কলিকক শিতাকমলপাঠে यहेगास्त्रार माहितियर अनारत्य । मिक्कितर्वर उस् ७४५०र দেশ্য ভথা মূলকশুঠকানাম্। প্রান্ত্রখনত্ত স্ক্রিন সংগ্র-श'रल' प्राय' वक्षणभवशीकश्रव । স্থান্ত, কোলসমাধ মাঞা कृष्ट्री अनुष्ठः निश्चिम अनुकार्षः । প্রীড়েদের বিড্ড জ'মক'র্মা, প্রভাময়'রে'চকশে।খলে'ম'ন্। বিস্টিক ভিলুগৰাগাৰীক मय'मक:म'न् अपुरत्य मकुकेन् ॥

বিস্টেশ গুলাগালাগালাক স্থাসক সেশ্লু এণুদেশ সনুষ্ঠান্। সৌৰক্তনং সৈন্ধবাধ বিভাসী ছিদ্দেৰ চ। চতুল ব্যামত্ৰ স্থাপিত্যসম্ভাগ ভাবেং।।

্জার মন্ত্রক্ষান্ত হৃদ্দেশণ বা জলং দ্রা ডিছাগাব্শিষ্ট্রক্ষাগালনিষ্ট বা কাষ্ট্র ং গ্রাক্ এলাম ভতঃ জালছফাদিচ্লাপেক্ষর চন্দ্রণা কর্মজাল গুড়ারা প্রন্যাম। প্রিচ্চ সমীস্থা ক্ষরিষ্টান্ত্র-প্রক্ষাপ্র। ইতি শিবদ্যিয়ে ।

ববক্ষার, সাভিক্ষার, চতুলবণ (সচল, সেরব বিট্ ও উদ্ধি লবণ), লোহচুণ, বিকটা, বিফলা, পিপুল্মুল, বিজ্ঞ, মুতা, ষমানী, দেবদার, বেলগুঠ, ইন্দ্রব, চিতামুল, আক্নাদি, যৃষ্টিমধু ও আতইচ প্রত্যেক ১ পল, হিশু ২ তোলা গ্রহণ করিয়া হক্ষা চুর্ণ করিবে। পরে গুল মুলা ভত্ম করিয়া ৩২ সের গ্রহণ করিবে। উক্ত ভত্ম ৩৮৪ সের জলে সিদ্ধ করিবে। উক্ত ভত্ম ৩৮৪ সের জলে সিদ্ধ করিবে। উক্ত ভত্ম ৩৮৪ সের জলে সিদ্ধ করিবা অর্ফোক কিংবা ৩ ভাগের এক ভাগ অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে। পরে ঐ কাথ বস্ত্রপুত করিয়া তাহা হইতে ক্ষারাদি চূর্ণের ৪ গুণ জল গ্রহণ করিয়া পুনর্কার পাক করিবে। ঘন হইলে পূর্বকৃত্ত চুর্ণ সকল প্রক্ষেপ করিয়া উত্তমরূপে আলোড়নের পর পাকশেষ হইলে । তেলা প্রিমাণে বটা এন্তত করিবে। ইহা সেবন করিলে প্লীহা, উদ্ব, স্মর্শ:, শোগ প্রভৃতি নানাপ্রকাব বোগ বিনষ্ট হয়।

রসপ্রয়োগঃ।

ক্রাষণাত্ত লোহন্।

অয়োরজস্কু।যণবাবপুৰত চূণক পীতি তিফলারমেন। শোকা নিত্যাৎ সত্সা নবস্ত যথাননিত্ত কমুদ্র্বিগা। তেন্যাং দিলোকৈ সক্সুদ্রমং লোক্সিতি রা টালে।

ত্রিকটু, যবক্ষার এবং উভয়ের সমান ফে'ছ-চূর্ণ একত ও চূর্ণ কারয়া ত্রিফলার রুসের সহিত সেরম ক্রিলে স্হস্ত শোগ নিয়াতিত হয়।

ত্রিকট্রাদি-লে. ইম্।

িক্টেডিফলান্তী নাগ নেক্তইকৈ।
প্রশাসনাযুক্ত যুৱা হাঁৱ ক্লান্তা।
ক্রিনাক্তি ব্রাক্তি ক্লান্তা।
ক্রেন্ট্রান্তান্ত তালিক্রি ক্লাক্তই বরঃ
ফৌডম ন্সক্তেমন্য তিতি ক্লাক্তি ।

্রেকট্, বিদ্বাস দ্রীমূল, আপাং, বিড়াও চিতামূল, মূতা, গুদমূল ও প্রনাবা প্রত্যেক সমভাগ চূণ ; চূণসম্ভির সমান লোই। সমুদায় একজ প্রেম্ব করিয়া লাইবে। ইহাতে শোথাদি প্রীড়া নষ্ট ইইয়া থাকে।

শোখভশ্ম-লোহম্।

তিকচু ত্রিকলা ক্রাক্ষা পৌধরং সজলং শটা !
লোহং বচা লবঙ্গক শুঙ্গা হক্ শতপুপ্পিকা॥
বিভাহকং বিভ্ঙাক ধাতকীপুপ্সমেব চ।
বহু:নি সমভাগানি গ্রন্ধগুণিনি কারয়েও॥
সর্ক্রেবাসম্পাত হভন্নং লোহকিউক্ম।
বুটপ্রস্তা রসেনাপি মক্ষয়েও পরিষত্বহঃ॥
পেষ্টিতং ভাষুপতেও প্রেন পরিবেপ্রেও।
ততো গজপুটে পক্ত্রা খাজনীতং সমুদ্ধরেও।

প্রাতঃকালে শুচিভূ থা ভক্ষরেচ্ছুক্তিমানতঃ।
নিহস্তি সর্বজ্ঞ শোখং গ্রহণীঞ্চ বিশেষতঃ।
উদরেসু চ সর্বেসু শোপেষু চ বিধানতঃ।
বিবিধা ব্যাধ্যুশ্চাস্তে সেবনাদ্ যান্তি সাধাতাম্।

ত্রিকট্, ত্রিফলা, দ্রাক্ষা, কুড, বালা, শটী, লোহ, বচ, লবন্ধ, কাক্ডাশ্দ্রী, গুড়ফক্, গুল্ফা, বহেড়া, বিড়ন্ধ ও বাইফুল প্রত্যেক সম্ভাগ চূর্ণ, সর্ব্ধ সমান শোধিত মধুর। এই সম্পায় প্রব্য কুড় চিছালেব রমে মন্দন কবিয়া ভামপত্রে বেইন ও তাহাতে পদ্ধলেপ প্রদান পূর্ণাক ষথাবিধি গজপুটে পাক করিবে। শীতল হুইলে উদ্ধার করিয়া লইবে। প্রাতঃকালে গুচি হুইয়া ৪ ভোলা (মথোপমুক্ত) মাত্রাম ইহা দেবন কবিলে সব্বপ্রকার শোগ, গ্রহণী ও উদর প্রভৃতি বিবিধ রোগ নিবারিত হয়।

কটুকাগ্য-লোহম্।

কটুকং ক্রায়ণং দস্তী বিভূকং ত্রিফলা তথা।

চিত্রকো দেবলাক্ষণ ত্রিবৃদ্ধানপিপ্তালী।

চূর্ণান্তোনি তুল্যানিট্রিপ্তণং জ্ঞানরেরজঃ।

জ্ঞানের পাত্রমতচ্চ তেওঁং স্বরপ্রাশনম্।

(সর্বাচনানিত্রণং পৌহম্)

কট্কী, ত্রিকটু, দপ্তামূল, বিজ্ঞ্ব, ত্রিফলা, চিতামূল, দেবদারু, তেউড়ী ও গজপিপলী, প্রত্যেক সমভাগ, সর্ক্ষণিগুণ লৌহ। ছাগ ত্থের সহিত দেবনীয়। ইহাতে শোণ শুক্ষ হয়।

স্তবৰ্চচলান্তং লোহম ।

স্বর্চেলা ব্যাত্মনগং চিত্রকঃ কটুরোহিণী। চব্যঞ্চ দেবকাষ্ঠঞ্চ দীপাকং লোহমেব চ। শোধং পাঞ্ছং তথা কাসমুদরাণি নিহন্তি চ॥

হুড়্হড়ে, ব্যাঘনখা, চিতা, কট্কী, চৈ, দেবদাক, বন্যমানী ও গোহ এই সকল জব্য একত্র করিয়া বটা প্রস্তুত করিবে। ইহাতে শোথ, পাঞ্জ, কাস ও উদর প্রভৃতি রোগ নিবারিত হয়।

শোথারিঃ।

হিঙ্গুলং জয়পালক মরিচং উঙ্গুণং কণাম্। সংমন্ধ্য বল্লঃ সম্বতঃ সর্বশোপহরঃ পরঃ॥

হিঙ্গুল, জন্মপাল, মরিচ, সোহাগার থৈ ও পিপুল সমভাগে মর্দ্ধন করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা মত সহ সেবন করিলে সকল প্রকাব শোথ নই হয়।

ত্রিনেত্রাখ্যো রসঃ।

টঙ্গণং শোধিতং গদ্ধং নৃতগুৰায়সং রসম্। দিনৈকমাজকদ্বাবৈম দিঃং লগুপুটে পচেৎ॥ তিনেকাথ্যো রসো নাম চাসাধাং খয়থুং জয়েৎ। বল্লমাত্রং পিবেচচাকু এরগুণিধরীরসম্॥

পারদ, গন্ধক, সোহাগার থৈ, তাম ও লোহ এই সমুদায় দ্রব্য ১ দিন আদার রসে মদন করিয়া লঘুপুটে পাক কারবে। মাত্রা— ২ রতি প্রমাণ। অনুপান—এরও ও আপা-ক্লের রস। ইহাতে অসাধ্য গোথও নিবারিত হইয়া থাকে।

শোথকালানলো রুমঃ।

চিত্রং কুটজবাজঞ শ্রেমনী দৈলবং তথা।
পিল্ললা দেবপুপাঞ্চ সজাতাঁকলটকণ্ ।
লোহমত্রং তথা গন্ধং পারদেনৈর মিঞ্জিতন্।
এতেরাং কর্বনাত্রেণ বটাং গুঞ্জামিতাং গুঞ্জাম্ ॥
ভক্ষরেৎ প্রাতক্রখায় কোকিলাক্ষরদেন তু।
অরমন্টবিধং হস্তি সাধ্যাসাধ্যমপাপি বা ॥
কাসং খাসং তথা শোধং শ্লীহানং হস্তি ছন্তরম্।
মেহং মন্দানলং শুলং সংগ্রহগ্রহণীং তথা ॥
অবশ্রং নাশ্রেচ্ছোগং কর্দ্মাং ভাক্ষরো ঘণা।
শোধকালানলো নান রোগানীকবিনাশনঃ ॥

চিত্তামূল, ইন্দ্রবব, গজপিপ্পলী, সৈদ্ধব, পিপুল, লবন্ধ, জায়কল, সোহাগা, লৌহ, অল্র, গন্ধক ও পারদ প্রত্যেক ২ তোলা। এই সমস্ত মর্দন করিয়া ১ রতি প্রমাণ বটকা করিবে। অনুপান—কুলেখাড়ার রস। ইহাজে জর, কাদ, খাস, মেহ, শোপ ও প্লীহা প্রভৃতি নানা রোগ নষ্ট হয়।

শোগান্ধশো রুসঃ।

রসেন্দ্রগন্ধং মৃতলৌহতাজং নাগং তথাজং সমসংথাকঞ্। নিও ভিকাফোতকপিপ্রিলা-পুনগবাদ্রীফলকেশরাজন্ ॥ এবাং রসৈভাবিতমেকশন্ড কেলেএমাণা বটিকা বিধেয়া। শোধজারেরেচকপণ্ডুরোগং সর্বাঞ্জাধাং বিনিবার্যেচ্চ ॥

> পিভায়িতান্ বাতভবান্ কফে'খান্ শোথাকুশো নাম নিহন্তি লোগান্॥

পানদ, গদ্রুক, লৌহ, ভান্ন, দীদা ও অন্ন প্রত্যেক সমভাগে মিশ্রিত করিলা নিদিন্দা, হাপরমালী, কয়েংবেলের ছাল, তেতুলছাল, পুন্নবা, বেলছাল ও কেন্ডরিয়া এই সমুদারের রসে যথাক্রমে একবান কার্য্য ভাননা দিয়া। কুল প্রমাণ ব্রিক! কার্যে। ইহা সেবন করিলে শোথ, জ্ব, অ্রাচ, পাড় এবং বাতজ, পিন্তজ্ঞ ও শ্রেম্য স্থা প্রকার বোগ উপশ্যিত হয়।

পঞ্চামূতরুসঃ।

ওজস্তং সমাদায় গককং ভাগতং সম্ম ।
ক্রিভাগং উদ্পাং দেয়ং বিষং ভাগতঃ সম্ম ।
ভাগত্রমং তথা দেয়ং মনিচন্ত প্রায়ন্তঃ ।
চুণীকুতং জনেলাপি ,পপ্ত । মন্তিনি তাং মট্ন ॥
শূক্ষবেররসেনেন ভক্ষত দ্ নান্বিনিমান ।
জলদোষেতিক নোবে গোলে বিংজভূতেগ জলোদরে ॥
সন্ধিপাতের গোলের বিশ্পতিকৈ মিকে গদে ।
ভারাতিস্বান্ধংযুক্ত শোধে টেব গলগ্রহে ॥
শিক্ষশ্বসদে গোবে শ্রমারোগে স্থীননে ।
পকাম্বরসো হেম সর্বরোগোপশান্তিক্ত ॥

পারদ ৯ তোলা, গন্ধক ১ তোলা, সোহাগার থৈ ৩ তোলা, বিয ৩ তোলা ও মরিচ
৩ তোলা; এই সমুদায় একতা জলে মর্দদ
করিয়া ১ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। অমুপান—আদার রস। ইহাতে শোণ, জলোদর,
অব্যতিসার সংস্তুত শোথ, গলগ্রহ ও শিরু-শূল
প্রেজ্বি নানারোগ উপশ্নিত হয়।

ক্ষেত্রপালরসঃ।

হিন্দুলঞ্চ বিষং তাত্রং লোহং তালকটঙ্গণম্। শীরমাপ্তরফেনঞ্চ সমস্থাগং বিমর্দ্ধরেং॥ যবাদ্ধা বটিক। কাথা পথাং ছণ্ণোদনং হিত্য।
ভালবণং বারিহীনং দাতবাং ভিষজাং বরৈঃ॥
ভালবণং বারিহীনং দাতবাং ভিষজাং বরৈঃ॥
ভালবণং বারিহীনং দাতবাং ভিষজাং বরৈঃ॥
ভালবণ বিষমাল্যং গ্রহণীমতিছভারাম্।
হিঙ্গুল, বিষ, তাত্র, লৌহ, হরিতাল,
সোহাগা, জীরা ও আফিং প্রত্যেক সমভাগে
মজন কবিয়া অদ্ধ যব পরিমিত বটিকা করিবে।
প্রথা— হুগা ও অলা। লবণ এবং জল বর্জনীয়।
ইহাতে শোপা, অলিমান্যা ও ছুন্তর গ্রহণী
প্রান্তি নানারোগ নই হয়।

ष्ठश्ववणे।

অমূতং প্র্যাপ্তরু স্ত'দ্হিকেনং তথৈব চ।
পদ্ধবিজকলো শ্বন মন্তির্জ্বকল কম্॥
প্রথমিত প্রাদ্ধনিতা বটা কালো ভিষ্য বিদা।
প্রথমিক নানাবিধং হস্তি প্রহণীং বিষমজ্বন্।
মন্দাঝিং পাঙ্রোগক নামা ভ্রমবটা পরা।
বক্তমেলবণং বারি বাাধিনি শেষতাবিধি॥

বিষ ১২ রতি, আদিং ১২ রতি, লোহ েরতি ও অন ৬০ রতি; এই সমুদায় দ্রব্য একত্র ছগ্নের সহিত মন্দন কবিয়া ২ রতি পরি-নাণ বটিকা করিবে। অনুপান হয়। পথ্য— কেবল ছগ্ন ও অয়। যাবং আরোগ্য লাজ নাহয়, তাবং লবণ ও জল বর্জনীয়। ইহাতে শোপ, গ্রহণী, অগ্নিমান্দ্য ও বিষম জর প্রভৃতি রোগ নই হয়।

ত্রশ্বতী।

অমৃতং ধৃত্তিনীজঞ্চ হিন্তুলঞ্চ সমং সমশ্।
ধৃত্তপত্ৰসেইনৰ মৰ্জন্তে যামমাত্ৰকম্ ॥
মূলগাপমাং বটাং কৃষা ছুগেন সহ পান্তৰেং।
ধৃগ্ণেন ভোজন্তেদনং বৰ্জনেলনণং জলম্।
শোৰং নানাবিধং হুন্তি পাঞ্রোগং সকামলম্।
সেয়ং ছুন্ধনটা নামা গোপনীয়া প্ৰযুক্তঃ॥

বিষ, ধুত্রাবীজ ও হিঙ্গুল এই তিন দ্রবা সমভাগে মিশ্রিত করিয়া ধুত্রা পত্তের রুদে ১ প্রহর মাড়িয়া মুগের স্থায় বটিকা করিবে। ইহা হুগ্নের সহিত সেবা। পথা—ছুগ্ধ ও অর।

লবণ এবং জ্বল বৰ্জনীয়। ইহা সেবন করিলে শোপাদি নানাবিধ রোগ উপশ্যিত হয়।

গ্ৰহণীযুক্তশোগে — কল্পলতা-বটী।

অমৃতং হিঙ্কুলং ধৃষ্ট-বীজং দাদশরক্তিকম। প্রত্যেকমহিফেনঞ্ ষ্ট ত্রিংশদ্রক্তিকং নয়েৎ। পিষ্টা ছম্মেন গুল্লৈকাং বটাং ছম্মেন পারয়েং। ছগ্ধং পাৰে ভোজনে চ দেয়ং ন লবণং জনম্। গ্রহণীং চিরকালীনাং হস্তি শোধং কছজ্বস। চিরজ্বরং পাভুরোগং নামা কললতা বটা।

বিষ, হিঙ্গুল ও ধুতুরাবীজ প্রত্যেক ১২ রভি, আফিং ৩৬ রভি ; এই সমস্ত জবা চুগ্নেব সহিত মর্দ্দন করিয়া ১ রতি প্রমাণ বটক। করিবে। অনুপান-- ১%। পথা ৬% ও সর। লবণ ও জল বর্জনীয়। গ্রহণীয়ক্ত শেথে ইহাতে চিত্ৰৰ ও পাছবোগ প্রায়েকা । নিবারিত হয়।

रिवक्रमाथ-वर्षी।

(দ্ধিবটা)

পকেষ্টকাহরিদ্রাভ্যামাগারধ্নকেন b। শোধিতং সূতকং গ্র'হাং ভোলকং তুল্লা গ্রুম । 'ভুঙ্গবাজরদৈঃ শুদ্ধং গ্রুক্তক প্রভুজাক্ষ। হরিত।লং বিষং তুখ্যমলব।লুক্ত।একম্। পর্পরং মাঞ্জিকং কান্তং স্বব্যেকতা কারণেং। সর্বাদ্ধী কজ্ঞা আতা ভাবয়েচ্চ পুনংখনং ॥ সিম্বাররসে চৈব জ্যোতিমতা রসে তথা। রসেহপরাজিতায়ান্চ জনতা। সন্দে তথা। রক্তাটত্রকম্বলেখে রসে চ পরিভানরেং। ৰটিকাং সৰপাকাৰাং নোজয়েৎ কুপলো ভিষা । ৩৩ঃ সন্থ নটাদ প্রাত্রকেন বারিনা সই। অতুপানক কত্তবাং কৰুলা কৰ্মা সহ।। সন্নিপাওজ্বরে চেব সলোগে এইণীগদে। পাভরোগেহগ্রিমান্দো চ বিবিধে নিসম্ভরে । শুকুমজ্বগতে দুজার তু কাসে কদাচন। निकार प्रश्ना ह एक्टब्लार मिटा निवार अधिन ए ह মা হবাং হাভয়ালি চাং বয়োদে। শাতুষাল জ। अनवनः वातिशंबः मधि भभाः मम छत्रः। বৈজ্যনাথবটা নামা বৈজ্যনাথেন নিশ্মিগা।

(ইয়ং গ্রহণ্যাং শোগে চ প্রযুজাতে।)

ইষ্টকচুণ, হরিদা ও গৃহবুম (ঝুল) ইহাদের খারা শোধিত পারদ এক তোলা, ভঙ্গরাজরসে শোধিত গন্ধক ১ লোলা, এই উভয়ে কজ্জলী করিবে। পরে হরিভাল, বিষ, ভাতে, এলবালুক, তান, পর্পন, সর্বনাঞ্চিক ও কান্তলোহ প্রত্যেক ৪ মাধা পরিমাণে লইয়া ঐ কচ্চলীর সহিত নিমিত কৰিয়া নিসিন্দা পত্ৰ, লতাফুট্কী, অপরাজিতা, জয়ন্তী ও লালচিতামূল, এই শনুদায়ের রদে ভারন। দিয়া সর্মপাকৃতি বটিকা প্রস্তুত কবিৰে। উষ্ণ জলের সহিত সাত বটিকা সেবনীর। অনুপান-১ ঘব কজ্জলী ও ১ ঘব পিপুল চূর্ব। এই ঔষধ শোপ সংযুক্ত গ্রহণা ও জ্বণাদি ক্রোগে প্রয়োগ করিবে, কিন্তু যাদ কানের লফাণ থাকে, তাহা হঠলে কদাচ প্রয়োগ করিবে ।। দ্বি ও চিন পথা। রোগ্রি বাস ও োগের অবতা ক্রেচনা কলিয়া নিভয়ে খান বাবস্তা করিলে। इंश्राइड लत्व कव वक्कांम ।

उद्भविषे ।

ব্দক্ত মাধক, গ্রাক্তিং গ্রুক্ত চন্দ্রিকর I দ্বিনায়ক বিষ্ণুলি ভাষ্ত্ৰ নাষ্ট্ৰথম্ । তে'লকং (প্রেল্ডেশ্র মণ্ডুনতা চ কেলিক্ম । মার্থন ব্যার্থন প্রতিপ্ত জারের স্বর্থনার ব বলপ্রাধাণ বছিব ৩ খারণ বছ গালেছে। अन्तर् (अक्रिक्ट १ चर् जनगण्डा(वर्ग) • म । নিহাত শোক্ত হা নিং মলাগিও পাডুতমেপি 🖡

পারল ১ নায়া, গন্ধক ১ নামা, বিষ ২ মায়া, তাম ৪ সাফ, পিপুলচুল ১ ভোলা, মণ্ডৰ ১ তোলা; এল সমুদায় একত মুদ্দন কাৰ্ম ক্ষমজালাৰ কালো ৭ দিন ভাবনা বিশ্বা হ রাত প্রধান বটিকা করিবে 🕽 🗼 জের সহিত ्भवा । श्री-राक १ स्था । एस ४ न्यून वृद्धनीय । ७५ छेनः हरवन कारहण स्मीर्थन এংগা, মন্দ্রীয় ও গাঞ্জবাগ ভাগাবিত হয়।

धन्तराजी।

12 at same 750 -750 (175, 79) 14 1 ক্ৰিচেন্দ্ৰং নিষং ডা শ্ৰন্দলং ধৃষ্ণু ব্ৰহাত্ত্বৰ মূ 🛭 সংমদ্য বিজয়ান্তাবৈমু লামাত্রাং বটাং চরেও।
অমুপানং প্রদাতবাং শোপে ক্ষীরং ভিষথরৈ: ।
গ্রহণ্যাং বিজয়াকাথ: পথ্যং ছ্য়ারমেব হি।
ভালঞ্চ লবণঞাপি বর্জনীয়ং বিশেষত: ।
প্রবলারামুদ্জারাং সলিলং নারিকেলজম্।
পাতব্যা বটকা চৈমা শোখং হস্তি ন সংশয়: ।
গ্রহণীমতিসারঞ্চ জরং জীর্ণং নিহস্তি চ।

হিঙ্গুল ২ তোলা, লবন্ধ, আহফেন, বিষ, জান্ধদল ও ধুতুরাবীজ প্রত্যেক ১ তোলা; এই সমুদ্র সিদ্ধির রসে (অভাবে সিদ্ধিভিজ্ঞা জলে) মাড়িলা মুগপ্রমাণ বটিকা করিবে। অমুপান—শোথে হগ্ধ, গ্রহণীতে সিদ্ধির কাণ। পথ্য—হগ্ধ ও অন। লবণ ও জল বর্জ্জনীয়। কিন্তু অত্যন্ত পিপাসা হইলে নারিকেলের জল পান করিবে। ইহা সেবন করিলে শোণ, গ্রহণী, অতিসার ও জীর্ণজ্ঞর প্রশমিত হয়।

পা গুশোগে—

তক্রমণ্ডুরম্।

পলার্দ্ধং বিজয়াচুর্ণং পলার্দ্ধং শুদ্ধলোক্তান্ ।
বংশকালীয়কারিস্তং বিব তাড়কমুপকন্ ॥
নহাসমুদ্রককৈব প্রদেশ্যং কার্দিকং তথা।
তেজপত্রলবজ্বলা-শতপুশামধুরিকা ॥
মরিচকানুতা ঘটা জাতী নাগরসিন্ধুজন্ ।
সর্বাং তোলমিতং দল্ভাদ্যাধিবিভিষ্কাং বর্রঃ ॥
বর্ধাভূস্বরসেনৈর বদরাপ্রিপ্রমাণতঃ।
কেশরাজানুপানেন তক্রেণ্ব চ দাপয়েং ॥
তক্রেণ দাপয়েং পথাং তক্রং ভূকুং নিরস্তরন্।
লবশেন বিনা তক্রং শোষদ্বং পর্বেণ্যধ্ন্ ॥

দিদ্ধিচ্ব ৪ ভোলা, লোহচ্ব ৪ ভোলা, বাশের মূল, ক্ষণগুরু, নিম্ব, বিঘতাড়কমূল ও সমুজফেন প্রত্যেক ২ ভোলা , তেজপত্র, লবক, এলাইচ, শুল্ফা, মৌরি, মরিচ, গুলঞ্চ, ষষ্টিমধু, জায়ফল, শুঠ ও দৈন্ধবলবণ প্রত্যেক ১ ভোলা ; এই সমুদায় জব্য পুননবার রুসে ভাবনা দিয়া কুলের আঁটির মত বটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। অমুপান—কেশুরিয়ার রুস ও তক্র। পথা—তক্র ও অয়। নিরস্তুর লবণ বিনা তক্র ভক্ষণ করিলে শোপ প্রশম্ভ হয়।

স্থধানিধিঃ।

ধান্তকং বালকং মৃন্তং বিখং সিদ্ধং সমাংশকম্।
মঙ্বং দিগুণং দকা ভাবরেৎ তু চতুর্দ্দণ ॥
গোমৃত্রং কেশরাজন্চ শোধদ্বী ভূঙ্গরাজকঃ।
নিশু গু ভেকপণী চ রসৈরেবাং বিভাব্য চ ।
নিচ্চং চূর্বং প্রযুঞ্জীত তক্রেণ সহ বৃদ্ধিমান্।
কেশরাজরসৈর্বাপি ভোজনং লবণং বিনা ॥
তক্রেণ ভোজয়েদমং পানে তক্রক দাপরেং।
কামলাক্রবশোধদ্বো বৃহ্নসন্দাপনং পরঃ।
গ্রহণীপাভুরোগদ্বং সর্বব্যাধিবিনাশনঃ॥

ধনে, বালা, মৃতা, শুঠ ও দৈন্ধব প্রত্যেক
১ তোলা, মণ্ডুর ১০ তোলা; এই সমুদার
একত্র মর্দন করিয়া গোমূত্রে এবং কেশুরিয়া,
পুননবা, ভীমরাজ, নিদিন্দা ও থুল্কুড়ি ইহাদের রসে যথাজনে ১৪ বার করিয়া ভাবনা
দিবে। মাত্রা—৪ মাথা। অমুপান—ত্রু বা
কেশুরিয়ার রস। পথ্য— তক্র ও অয়। পিগাসার সমর জলেব পরিবর্ত্তে তক্র দেয়।
ইহাতেও লবণ জল নিবিদ্ধ। ইহা ঘারা শোথ,
গ্রহণী ও পাণ্ডু প্রভাত বিবিধ রোগের শাস্তি
হয় এবং ইহা বিভিস্নশাপক।

পুনৰ্বাভাং য়ত্য্।

পুননবাচিত্রকদেবদার-পঞ্চোবণক্ষারহরাতকানান্। কল্পেন প্রকং দশনুগতোয়ে স্বতোত্তমং শোপনিস্দনক ॥

কল্বাথ—পুন্নবা, চিতা দেবদারু, প্র্ব্ কোল, যুবক্ষার ও হুরীতকী এই সকল দ্রবা এবং দশমূলের কাথ সহ ঘত পাক করিয়া সেবন করিলে শোথ নিবারিত হয়।

পুনর্মবাল্যং দ্বতম্। (মতান্তরে)

পুনর্নবা তুলা গ্রাহ্যা জলক্রোণে বিপাচয়েৎ। চতুর্ভাগাবশেষেণ যুতপ্রস্থাং বিপাচয়েৎ। তুনিঘবিজয়া শুঠী শোধস্বামনদাক চ। কাসং খাসং ক্ষরং হস্তি শোধফাপি থদাকণম্।

ম্বৃত /8 সের। কাথার্থ—পুননবা ১২॥° সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। ককার্থ— চিরতা, জয়স্কী, শুঠ, পুননবা ও দেবদারু মিলিত /১ দের। পাকের জল ১৬ দের। এই ম্বত পান করিলে প্রবল শোগ, কাস, শ্বাস ও জ্বর প্রশমিত হয়।

সঙ্গপুনর্নবান্নতম্।

भूमनवाकायकक-मिकाः लाथहतः युउभ्॥

পুন্নবার কাথ'ও কল নহ যথাবিধানে প্রকাষ্ঠ শোধনাশক।

পঞ্কোলাল্যং য়ত্য।

রনে বিপাচয়েৎ সপি: গাফকোরকুলথয়েঃ। পুননবায়: কাফন যুত্ত পোগবিনাশন্।।

মিলিত পঞ্জেলে ১ ভাগ ও ক্লপ কলাই ১ ভাগ, উভয়ের কালে পুননবা কক দিয়া যথাবিধি মূতপাক করিবে। হছা শোণনাশক।

গুঠীয়ত ।

বিশৌষধপ্ত কান্ধন দশনূলজনে শৃতম্। যুতং নিংখ্যাচভুৱধ্য গ্রহণাং পাঞ্ভানয়ন্॥

র্গুঠের করা ও দশমূলের কাথ সহ পরু ঘৃত শোথ, গ্রহণী ও পা গুরোগ বিনাশক।

স্থলপদায়তম্।

স্থলপরপলাঝ্যাত) জাষণত চতুপ্পানন।
মৃতপ্রহং পাচেদেভিঃ কারং দ্বা চতুগু গম্।
পঞ্চ কাসান্ হরেছালং শোধকৈব প্রত্তরম্।
(স্থলপাল্বতে স্থলপানং মাণকল্মেন, জাবণতা
মিলিছা চতুপ্লম্। ইতি শিবদাসঃ)।

মাণ ৮ পল, ত্রিকটু মিলিত ৪ পল, ইংা-দের কন্ধ এবং ১৬ সের হুন্ধ সহ . ৪ সের স্থত পাক করিয়া সেবন করিলে পঞ্চবিধ কাস ও স্তৃত্ত্বে শোথ রোগ সম্বর প্রশামত ২য়।

চিত্রকান্তং মৃত্যু।

সচিত্রকা ধাজ্ঞগানিপাঠাঃ
সদীপাবক্তাষণকেত্রসায়াঃ।
বিশ্বাৎ কলং দাড়িমখাবশূকং
সপিশ্বলীমূলমখাপি চলাম্ ॥
পিষ্টাক্ষমাত্রাণি জলাঢ়কেন
পক্ত্রা মৃতপ্রসংবাপযুক্তাং।
অর্নাংসি ওক্মান্ ধর্থক কৃচ্ছং
নিহন্তি বহ্নিক করে।তি দীওম ॥

ন্বত /৪ সের। কন্ধার্থ—চিতা, ধনে, ধনানী, আক্নাদি, জীরা, ত্রিকটু, থৈকল, বিল্বফল, দাড়িম, ধবক্ষার, পিপুলমূল ও চৈ, এই সকল দ্রব্য প্রভাক ২ তোলা, জল ১৬ সের, ধথাবিদি পাক করিবে। ইহাতে অশঃ, গুঝ,শোণ ও মৃত্রক্ষম্ভ প্রভৃতি রোগ সকল বিনই ও জত্রামি প্রদীপ্ত হয়।

মাণকল্পত্য ।

নাণককাৰককাজাং মৃতপ্ৰস্থং বিপাচয়েং।

একজং দশ্বনং শোধং ক্ৰিলোমক ব্যপোহতি ॥

মাণের কাথ ও কল্প সহ মৃত পাক করিয়া

সেই মৃত পান করিলো, একদোষকা, বিলোমজ
ও ত্রিদোষজ শোথ প্রশামত হয়।

শুক্ষমূলাদ্যতৈলম্।

ওংমুলকবর্ধ ভূনাকরারামহোবদৈ।
প্রথমভাঞ্জনাৎ তৈলং সশুলং শ্বরথং জয়েৎ॥
মূর্চ্চিত তিলতৈল /৪ সের। ক্রার্থ—শুক্ষ
মূলা, প্ননবা, দেবদাক্র, রালা ও শুঠ মিলিত
/১ সের। পাকার্থ জল ১৬ সের। এই তৈল
মদনে শ্লযুক্ত শোপ নষ্ট হয়

त्ररुष्ट्रक्षम्नानारेजनम् ।

মূলকং দশমূলক কণামূলং পুনর্বা।
প্রত্যেকং প্রস্থাসভা বারিণাস্তপ্তনে পচেৎ।

তেন পাদাবশেবেণ ভৈলক্তান্দিকং পচেৎ।
দাপায়েৎ ভৈলত্লাক গোমূজং কুশলো ভিৰক্॥
মূলককামূভং শুদ্ধী পটোলং চপলা বলা।
গাঠা পুন্নবামূলং বালোশীরক শিগ্রুজম্॥

নিশু জীল্রাশনং শ্রামা করপ্লো বাসক্তথা।
কণা হরীতকী চৈব বচা পুৰুষ্মূলকম্ ॥
রামা বিড়ঙ্গং চবাঞ্চ ছে হরিপ্রে চ ধাক্রকম্ ।
দিক্ষারং সৈন্ধবক্ষৈব দেবদারু সপত্মকম্ ॥
শটী করিকণা বিঅং মঞ্জিষ্ঠা চ ততঃ ক্রমাং ।
প্রত্যেকাদ্ধপলক্ষৈয়াং পেষয়িত্বা বিনিক্ষিপেং ॥
অভ্যন্তেনাস্থ্য তৈলক্ষ যে গুণাস্তাংস্ততঃ শূণু ।
নানাশোধা বিনশ্রুভি বাতপিত্তকফোদ্ধবাঃ ॥
মলোক্তবাল্চ যে কেচিদ্ বিশেষণ জলাশ্রাঃ ।
অবশ্যং নির্জ্জা দেহা ভবিষ্যন্তি ন সংশ্রঃ ॥

তৈল ৮ সের। কাথার্থ—শুক্ষমূলা /২ সের, দশমূল মিলিভ /২ সের, পিপ্লমূল /২ সের, পুনর্নবা /২ সের, পাকার্থ জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের, গোমত ৮ সের। করুদ্বা— শুম-यूना, छन्छ, छंठे, পটোলপত, পিপুলম্ল, বেড়েলা, আকুনাদি, পুননবামুল, বালা, বেণার युव, मिल्लावीक, निमिन्ता, भिक्षि, अन्तर्यक. বাসকমূলের ছাল, পিপল, ডহরকরঞ্জবীজ, হ্রীতকী, বচ, কুড়, রামা, বিডুম্ন, চই, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, ধনে, যুবক্ষার, সাচিক্ষার, সৈন্ধব, (एत्पाक, भूगकाई, भूगे, शक्षभिश्रवी, (तन-ছাল ও মঞ্জি ইহাদের প্রত্যেক ৪ তোলা। পাকের জল ৩২ সের। এই তৈল নদনে বাতিক, পৈত্তিক, শ্লেষ্মিক, মলজ ও জলজাত শোগ বিনষ্ট হয়।

বৃহচ্ছু ক্ষমূলাদ্যতৈলম্। (তন্ত্ৰাহ্নে)

গুরুন্বরসপ্রস্থা । বিজ্ঞান্তর প্রাপ্ত । বিজ্ঞান বরসপ্রস্থা । বিজ্ঞান বিজ্ঞা

বিক্লপ্ৰেৰজভনং শোৰম ও নাপোহাত। ব্ৰণশোপাক্ষিশুলয়ং কামলাপাঞ্কাশনম । বে চান্তে ব্যাধ্যা সন্তি লেলজাঃ স্বিপতিভাগ। তান সৰ্বান নাশ্যভাগত স্থান্তৰ ইনোদিংঃ।

তৈল /৪ সের । শুদ্ধমুলার কাপ /৪ সের, শিক্ষিনার রস /৪ সের, বুজুরার রস /৪ সের, নিসিন্দার রস /৪ সের, দশমুলের কাপ ৪ সের, পালিবার রস /৪ সের, প্রন্থার রস /৪ সের, পালিবার রস /৪ সের, প্রন্থার রস /৪ সের, ভাহর কর্পার কাপ /৪ সের, বুলণভালের কাপ /৪ সের। কর্পার্থ—শুঠ, মবিচ, সৈন্ধর, প্রন্থার, কাকমাচা, চাল্তে ছাল, পিপ্পলী, প্রাপিপ্রনা, কট্দল, কুড়, কাক্ড়ান্স্লা, রামা, জরালভা, রম্ভলারা, হ্রিদ্দা, দাকহরিদা, কর্পা, নাগা, জরালভা, রম্ভলারা, হ্রিদ্দা, দাকহরিদা, কর্পা, নাগা, জরালভা, রম্ভলারা, হ্রিদ্দা, দাকহরিদা, কর্পা, নাগা, ক্রান্তার ৪ তেলা। স্থাবিনি পাক করিয়াইছা মন্দ্র কাবেরে স্বাধ্যারতি হস। উদ্ধর, খান, রণলোল, ক্রন্থান ক্র্যার্থা, পালু, ব্রাধ্যার ক্রান্তার ক্রান্তার

নমুদ্রংশাবণ-তৈলা।

নিউ জি দশমূল হ বৃশ্বক্ষক্রপ্রে ।

শক্ষলভাগ বিধান গোলাকপুন্ন বাং ॥

এমান্দ প্রত্তের এই বিধান বিধান কালাদিকন ॥
মালাহিতা ভ্রান কালাদিকন ॥
মালাহিতা ভ্রান কালাদিকন চল্লাহিতা কালাদিকন ॥
মালাহিতা ভ্রান কালাদিক ভ্রান কিন্তুল্য কালাদিকন ॥
কালাহিতা ভ্রান কালাঘিক ভ্রান কালাঘিক লা

কালাঘিক দ্রানাম্য ভ্রান্ত্রা ক্ষিম জন্ম ॥

নতান্ স্বরান্দ নিহত্যা ভ্রাভ্রাগ্রিলিবাধ্রম ॥

সম্মূলশোধার নাম ইভলব বে নাপি কালিবল ॥

সম্মূলশোধার নাম ইভলব বে নাপি কালিবল ॥

স্থপতিল /৪ সে.। কাথাথ—নিসিন্দা,
দশ্মুল, পুড়বালিজ, ডহবকরপ্থ, গুদ্ধুলা,
জয়স্তীপ্ল, গুলা, রালা, দেবলান এবং পুনারা
সমভাগে নিলিভ, ৮ সেব, জন ৬৪ সের, শেব,
১৬ সের। শেওড়া, ৮ সের, ১ল ৬৪ সের, শেব
১৬ সের। কজার্থ—সেন্দ্রব্যবণ /১ সের।
যথাবিধি এই তেল পাক করিয়া নন্দ্রন

শোপ, মৃস্তক ও কর্ণগত শোপক সর্কাঞ্চ শোপ, শ্লীপুল, গলগ'ও, কৃত্কি ও কোষবৃদ্ধি, কর্ণশোপ, দ্সুশোগ, ২ন্তুগল ও চক্ষুব শোপ সংহর প্রশ্মিত ইয়।

শোধশার্দ্রনতেল।

वृद्ध्या १८६०सः शिष्यायता रस्यं छतः।

श्रममा कर ५०० व्यामण्य १,६८८

कारक्षाः, विश्वकताः १ ६० श्रममास्य म् ।
श्रम कर्ष्यक्र कर्ष्यक्रमा १,५८८ ।
स्रात श्रममा स्रात्य च्याना नीयनर कमा।
श्रम देनस्य १,६१०६ । स्याप्त स्रात्य स्रात्य स्थापता स्

কটুটিতন /৭ সেব। কাপপি—ধুতরা, দশমূল নিসিন্দা, জহন্তী, প্রন্থাও কর্প্ত মিলিত, ৮ সেবং পাকের জল ৬৬ সের, শেষ ১৬ সের। কল্বাল—বাহা, প্রন্থাং কেবলক, শুদ্দার ও পের। কল্বালে এই ত্রালাবনি পাক কাবং এই ত্রালাবনি কাবং কাবলে হানাকণ শোগ, স্থানিক পান কর্বাল হানাকণ শোগ, স্থাপিদ, জ্বং, পাণ্ড জিমি প্রান্ত জনেক প্রান্তা নের্ভিছ্য।

পুনন্বাদিতৈলন্।

পুন্নবাপলণতে এলজোণে বিপাচয়েও।
১৯ন পালবংশতেও লৈজজ্ঞ পাছেদ্ ভিষক্।
ক্রিকট্ ক্রিকলা শূকা ধাস্তকং কচ্দলং তথা।
শটা দালা লিয়কুল্চ পালক ঠং হরেপুক্ষ্।
কুটং পুন্নবা চৈন ফানা কাবনা হলা।
এলা ত্বং সলোপ্তক পক্তকং নাগকেশ্রম্।
বচা অছিকমূলক চনাং চিক্রকমূলক ।
শতপুপাধু নজিঠা এলা বাসগুলৈব চ।
এতেয়াং কাষ্টিকভাগেঃ পেষ্ট্রো বিনিক্ষণেও।
কামলাং পাভুরোগক হলীমকম্মানিট্র্।
বজ্জিতেং মহাঘোরং কামং শাসং ভগন্দব্য।
নীহানমূদরকেব জীবিজনপোহতি।
বুক্তে প্রমাং কান্তিং এদান্তং এচ্বানলম্।
১লং পুন্নবা খ্যাতং সক্রান্ ব্যাধীন্ ব্যপেহিতি।

তৈল /৪ সের। কাথার্থ—পুনর্বা ১২॥
পের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। কল্প
দ্বা যথা—ত্রিকটু, ত্রিফলা, কাক্ডাশুলী, ধনে,
কট্ফল, শটা, দাকহরিদ্রা, প্রিয়ন্ত্র্, পদ্মকান্ত,
বেণ্ক, কুড়, প্রন্থবা, যমানী, ক্রফজীরা, তলাইচ, গুড় হক্, লোন, তেজপত্র, নাগেশ্বর, বচ,
পেপ্লম্ল, চই, চিতামূল, শুল্ফা, বালা,
মান্ত্র্যা, রামা ও ছ্বালভা প্রত্যেক ২ তোলা।
এই তেল মন্দ্রন, কামলা, পান্ন, হলীমক,
করণাচ, রক্তপিত্র, কাদ, শ্বাস, ভগন্দর, গ্রীহা ও
উদর বোগ প্রস্তৃতি নানা পীড়ার শান্তি হয়।

শৈলেয়াদ্য-তৈলম্।

নৈলেয়. কুড়, অন্তব্দ, দেবদাবদ, রেপুক,
দারুচিনি, পল্লকাই, এলাইচ, বালা, শুঠী,
মুঠা, প্রিরন্ধু, গোঠেলা, নাগেশ্বর, জটামাংসী,
তালীশপত্র, কৈবর্ত্তমুম্ভক, তেজপত্র, ধনে,
নবনীতথোটা, গদ্ধভূল, পিপুল, পিড়িং ও নথী
ইহাদের কল্প ও ১৬ সের জল সহ /৪ সের তৈল
যথারীতি পাক করিয়া ব্যবহার করিলে বাতজ
শোণ নিবারিত হয়। কিংবা উক্ত ক্ল সকল
পোণ কবিয়া প্রলেপ দিলে উক্তরপ ফল হয়।

গণ্ডীরাদ্যারিষ্টঃ।

গ্ৰীরভন্নতিক চিত্রক । শুচ বোধং বিভূকং বৃহতীষ্মঞ্চ। শুপ্রস্থিকং গোমমপাবকেন দ্রোণে পচেৎ কৃচিচক মন্তর্নন্ত। ত্রিভাগশেষস্থ স্পৃত্রনীতং, দ্রোণেন তৎ প্রাকৃত্যমন্তনা চ। সিতোপলায়ান্দ শতেন যুক্তং লিপ্তে ঘটে চিত্রকপিপ্পলীভ্যান । বৈহায়নে স্থাপিতমা দশাহাৎ প্রযোজয়ংক্তম্বিনহস্তি শোপান । ভগন্দরার্শঃক্রিমিকুষ্ঠমেহান্ বৈবর্গাকাশ্যানিলাইকনঞ্ ॥

গণ্ডীর (শমঠশাক), ভেলা, চিতা, ত্রিকটু, বিডঙ্গ, বৃহতী, কণ্টকারী মিলিত /'৪ সের কট্টিত করিয়া তাহা ৬৪ চৌ২টি সের কর্চিক মস্তর সহিত ঘুঁটের আগুনে পাক করিবে, তৃতীয়াংশ থাকিতে নামাইয়া ভাকিয়া লইবে। এবং তাহার সহিত ৬৪ সের দ্ধিমন্ত্র ও ১০০ পল চিনি মিশ্রিত করিবে। তৎপরে একটি মুভভাবিত ঘট (খিন্থের মুটকী) চিতা ও পিপুলের কল্পে প্রলিপ্ত করিয়া সেই ঘটে উহা স্থাপন পূর্বক দশদিন পর্যান্ত ঘটটি শুক্তে রাখিবে। (কৃচিক হই প্রকার—তক্রকৃচিক তপ্তব্য ও দ্ধিকৃচিক। তক্র প্রক্ষেপ করিলে তক্রক্রিক এবং অমুদ্ধি প্রক্ষেপ করিলে দ্ধিক্র্চিক হয়। এই ক চিচকের ক'ঠকমন্ত কছে।) মক্ত জ্বাণ <u> যাতকেই</u> এই গভীরাভরিষ্ট পান করিলে শোণ, ভর্মার, व्यर्भः, किभि, कुर्रं, त्यर, देववर्षा, कार्मा, वायु. ও হিকা বিনষ্ট হয়।

পুনর্বাদ্যরিষ্টঃ।

পুনর্নবে বে চ বলে সপাঠে
বাসা ভড়্চী সহ চিত্রকেণ।
নিদিন্ধিকা চ ত্রিপলানি পক্ত্রী
ক্রোণাবলেবে সলিলে ততন্ত ॥
পূজা রসং বে চ গুড়াৎ পুরাণাৎ
তুলে মধুপ্রস্থাতুং স্পীতম্।
মাসং নিদখাদ স্বতভাজনন্তং
পর্বে যবানাং পরতশ্চ মাসাৎ ॥
চুলীকুলৈরর্জপলাংশিকৈন্তং
হেমত্বেলামরিচাম্পুর্বেঃ।
গন্ধান্থিত ক্লোমন্থতপ্রিনিঃ
জীর্ণে পিবেলাধিবলং সমীকা॥

শ্বশাভ্রোগং খরখুং প্রবৃদ্ধঃ
দীহম্বরারোচকনেহগুলান্।
ভগন্দরং ষড় জঠরাণি কাদং
খাসং গ্রহণ্যানরকুষ্ঠকভুঃ ॥
শাখানিলং বদ্ধপুরীষতাঞ্
হিকাং কিলাসঞ্চ হলামকঞ্
ক্ষিপ্রং জয়েছণ্বলায়ুরোজজ্যেজাংহ্খিতো মাংসরসান্ধভোজী॥

খেত পুন্নবা, হক্ত পুন্নবা, ্বডেলা. গোরক্চাকুলে, আক্নাদি, বাসকছাল, গুল্ঞ, চিতামূল, কণ্টকারী প্রত্যেক তিন পল: একত্র ২৫৬ সের জলে পাক করিয়া ৬৪ সের শাতল হটলে অবশিষ্ট রাখিবে। তাহাতে পুরাতন গুড় ২৫ সের ও মধু /৪ সের মিশ্রিত ক**িবে এবং একটি ঘুত ভাবিত** পাত্রে আচ্ছাদন করিয়া ধবের গড নধ্যে একমাদ রাথিয়া দিবে। মাসাস্তে ভাহার সহিত নাগে-শ্বর, দারুচিনি, এলাইচ, মরিচ, বালা ও তেজ-পত্রের চুর্ণ প্রত্যেক ৪ তোলা এবং স্বত /৪ সের ও মধু /৪ সের মিশ্রিত করিবে। রোগির বল বিবেচনা পূর্বাক উপযুক্ত মাত্রায় <u>দেবন করিয়া, জীণ হইলে মাণ্দের সহিত অর</u> ভোজন করিবে। ইহা শোথাদি বিবিধ রোগ নাশক এবং বর্ণ, বল, আয়ুঃ, ওদ্ধঃ ও,ভেজেবির্দ্ধক।

ত্রিফলাদ্যরিষ্টঃ।

ফলত্রিকং চিত্রকপিঙ্গলী চ
সদীপ্যকং লোহ্যজো বিড়ঙ্গম্।
চুণীকৃতং কৌড়বিকং দ্বিরংশং
ক্ষোদ্রং পুরাণপ্ত তুলাং গুড়প্ত।
মাসং নিম্ধাদ্ ঘৃতভাজনত্বং
ঘবেসু তানেব নিহ্নিত রোগান্॥

ত্রিফলা, চিতামূল, পিপুল, যমানী, লোহ-চূর্ণ ও বিড়ঙ্গ প্রত্যেক অর্দ্ধরের, মধু এক্ সের, পুরাতন গুড় সাড়ে বার সের, এই সমস্ত জব্য একটি ঘতভাবিত কুল্ডে রাণিয়া যবরাশির মধ্যে একমাদ কাল রাখিতে হইবে। পরে ছাকিয়া লইয়া উপযুক্ত মাত্রায় প্রয়োগ করিলে পুর্বোক্ত পীড়াসমূহ নিবারিত হইয়া থাকে।

অথ পথ্যাপথ্য-বিধিঃ।

শোগরোগে পথ্যানি।

সংশোধনং লজানমশ্রমোকঃ (खनः शालभः भति:गठनकः। পর'তনাঃ শালিযবাঃ কুলখা-মক্লাল গোধাপি চ শলকে হিপ। ভ্রমত্ক ডিবির অচ্ছ-লাবাদয়ো ভাঙ্গলবিধিরাশ্চ। ক্ষোত্পি শঙ্গী প্রপুরাণ্সপি-खकर खुता या किक्यामान । নিজ্পাবক ঠিলক বকু শিগ্-বস লক কাটকমাণ্যলম। প্রক্রেরা গগুনকঃ গটোলং ব্ৰেশ্ৰপাতিক্সমূলকানি # প্রনাবাচিত্রকপারিভন্ত-ছাপর্নসমুরপরবানি। এরওতৈলং কটুকা হয়িদ্রা হরীতকা কার্নি:যবগঞ্॥ ভলাতকং গুগ,ভলবায়সঞ কটনি ভিক্তানি চ দীপনানি। ম্ভাণি গোহজামহিষীভবানি কন্দ রিকা চাপি শিলাজভূমি॥ মৎ পাণ্ডরোগিম্বপি বহিংকশ্ম পুরা প্রদিষ্টন্ত তদেব চাপি। गवामलः शवामिनः अभिष्टेः ্ৰোথাময়ং সংক্ৰম্ম্মেন্ডিল্ডি॥

সংশোধন ঔষধ, উপবাস, রক্তমোক্ষণ, বেদন, প্রলেপন, পরিষেচন; প্রাতন রক্ত-শালি, যব, কুল্পকলার ও মৃগ এবং গোদাপ, শঙাক্ত, মসূর, তিন্তিরি, কুরুট ও লাবপক্ষী প্রভৃতি জাঙ্গল ও বিধির মাংস, কচ্ছপের নাংস, শিশীমংস্তা, পুরাণ ঘৃত, তক্র, স্থরা, মধু, আসব, শিম, করোলা, রক্তশজিনা, শিলারস, কাক্রোণ,

মাণকচ, স্থাস্থাকুলের পাতা, গাজর, পটোল, বেতাগ্য, বেওণ, মূল্য, গ্রন্তা, চিতা, পালিধানালার, গণিবারে, নিমপাতা, কুলেখাড়া, ভেরেওার হৈনা, কট্কী, হজিদ্য, হরীতকী, কারদেবন, ভরাতক, গুগ গুলু, অগুরু, কটু-ম্বা, ভিত্তম্বা, অগ্নিদীপক গামগ্রী, গোমূত্র, ছার্ম, মহিন্তুর, কন্তুনী ও শিলাজতু এনং পান্ধরোগা,ধকারে যে অগ্নিকম্ম পূর্বে বলা হইম্বান্ত, ভার্য শোজান্ত বাভিক্রে বিশ্বনা পুলুই নাব্য শোগোলান্ত বাভিক্রে

শেগরোগেইপথ্যানি।

नितार द्वश्र प्रात्ममित्रायः त्वध्वांधाम् विक्रम्, मक्दः प्रान्तः प्राप्तम्भना कृष्टिन छण्णाक् ॥ शाक्षा छानपर विभिन्न त्वः छल्लाकः भवांधा ८वेष्टा १४ वा त्वः रात्तः विभावः प्राप्तम् ॥ स्ना वस्ता स्वत्मात्रः छल्लाः व्याप्तम् ॥

দর্বন ব্যিত ব্যু হোল দূষত হল পান, মলমূতাদির তেগনারত, স্থা একার বিক্লাক পান ভোলেন, বিষনভোগন, সৃত্তিকভিক্ষণ এবং গ্রাম্য, গুলজ ও আনুপ মাংস, লবণ, গুদ্ধাক, নবান, গুড়বিকার, পিটার, দ্বি, কুশরা (থিচ্ট্রী), নিজ্জ মদ্য, অস্ত্র, ভূষ্ট্যব, শুদ্ধাল্য এবং প্রধাপ্যা একত ভৌজন, গুরু, অসামা ও বিনাহকর দ্বা ভৌজন, দেবানিলা ও মৈপুন এই সম্ভ, শোধবোগী বক্তন ক্রিব।

ইত্যায়র্কেদ-সংগ্রহে শোখাখকাব।

তাথ রদ্ধিরোগাধিকারঃ।

অণ ব্লাদ্ধিরোগ-নিদানন।

ক্রেছে হন্দ্রগতিবায়ঃ শে!পশুনকরশচরন্। মুদে) বঙ্গণত প্রাপ্য ফলকোষাভিবাহিনী।। क्षत्री पा श्रामोत् किः व नां कि कवरक वामः। त्वास्यायात्रं मुक्षारेकः म इक्तिः मध्या श्रमः॥ মুদ্রান্ত্রগোবপ্যানিলাদ্ হেতুগভবস্তা কেবলম্। ব্যতপূর্বসভিস্প শৌ ক্লো বাভাদক্তকণ ॥ প্রোড়,ধরস্কাশং পিতাকাছে, মাণ্যবান্। कक' हमोर डो अक्ट क्षिक्षः कष्टमान् किंाने श्हेलक्ष् ॥ ক্ষকেনাবৃত্য পিত-বৃদ্ধিনি**র*চ** রক্তভ**ে**। ক্ষনকোদ্যা বৃদ্ধিয় তুক্তালফলোপনং ॥ মত্রধারণ নিক্তা মৃত্তঃ সাতু গ্লুটাঃ। অন্তোভিঃ পূর্বদৃতিবৎ কে'ভং যাতি সকঃ মৃতঃ। मृदक्षक्रभर **छा**क हालयन् कलाकावार'ः। বাতকোপি ভিরাহারৈঃ শাতভোষাবগাংইন ॥ ধারণেরণভারাধ্ব-বিষমাঞ্চাবভারে। কোভণৈঃ কোভিত্তাখনীত কুন্তা হারবং ব্যা॥ প্ৰনো বিশুণীকুতা স্বনিবেশাল্যো নাংখ। व गां दिकानम् भिष्ट्री अञ्चा छ ययपुर छनी ।

উপেক্ষরণিক্স চামকর জিন মাধ্যানকণ গুড়বাতীং সামকুল প্রাপিটিতে হিতঃ ক্ষরণেন্ প্রয়াতি প্রধাপরলৈতি পুনক মুক্লা। অসুস্কিনস্থোতিখা ধাকুর জিসমাধেতি ।

কুপিত অণোগামী বায় বজ্ঞাণ কি চুকী)
স্থান হইতে মুদ্ধে (অওকোমে) আগমন করিয়া
ফলকোষবাহিনী ধমনী সকলকে প্রাপীড়িত
করে। তাহাতে ঐ ফলকোষ বর্দ্ধিত, ফ্রীত
ও অতিশয় বেদনাযুক্ত হয়। এই পীড়ার
নাম বৃদ্ধি। বৃদ্ধিরোগ সাত প্রকার, যথা—
বাত্ত, পিত্তজ, কফজ, রক্তন্ধ, মেদোজ,
মুদ্রদ্ধ ও অন্তজ্জ (অনুস্থিকি)। ইত্যার মধ্যে
মুদ্রদ্ধ ও অন্তজ্জ বায়ুর প্রকোপেই
উৎপন্ন হয়, তবে হেতুলে বশতঃ পৃথক্
পরিগণিত ইইয়া থাকে মাত্র।

বায়্জনিত বৃদ্ধি অর্থাং কুরও অর কারণে বেদনায়ক্ত, কৃষ্ক ও বায়পূর্ণ চম্ম-পুট্কের ভাষা স্প্রশ্বিশিষ্ট হয়। পৈত্তিক বৃদ্ধি পক্ষ উড়ুম্বব ফল সদৃশ, দাহ ও উন্নাবিশ্বিষ্ঠ । ইহা পাকিয়া থাকে।

ক্ষজনিত প্রবৃদ্ধ কোষ শীতল, ভাবাক্রাফ্ চিরুণ, কণ্ণুযুক্ত, কঠিন ও অন্ধ বেদনা বিশিষ্ট। ব্যক্তবৃদ্ধি ক্ষাবুণ স্ফোটক্রাধ্য ও পিত্রুত

রক্তজনৃদ্ধি ক্লফবর্ণ ক্ষোটকব্যাপ্ত ও পিত্তজ নুধ্বি-লক্ষণাক্রান্ত।

মেদোজবৃদ্ধি মৃত, প্রতালফ**ল**সদৃশ নীল ব্রুল ও কফজ-বৃদ্ধির **লফ**ণাজান্ত।

নাধারা নিয়ত মূলবেগ পারণ করে, তাহা দের মূলজ লক্ষি হই রা থাকে। এই লক্ষিলোগ-গ্রন্থ বাক্তির কোম, গমন কাঙ্গে জলপুর্ণ চন্দ্র-পুট্কের তায় ক্ষোভয়ক্ত, মূল ও বেদনা বিশিষ্ট হয় এবং সঞ্চালিত হইয়া অনোদিকে ঝুলিয়া পড়ে। ইহাতে মূলকুছ্বদ্বেদনা হইয়া থাকে।

বাতপ্রকোপক আহার, শীতল জলে অব গাহন, মলমূত্রের উপস্থিত বেগ ধারণ বা অনুধ স্থিতবেগে বেগ প্রদান, ভাগ্বহন, পৎপর্যটন, বিষমভাবে অঙ্গপ্রবর্তন ও বল্ববিগ্রহণ্ড্র-কৰ্যণাদি-ক্ষোভ জনক অন্তান্ত কৰ্ম ছালা বাহ কোভিত (চাপিত) ১ইবা বধন কুদাল্লেব কিয়দংশকে ২ফুচিত করিয়া স্বস্থান হইতে অণোদিকে লইয়া গিল বক্ষণ সন্ধিতে উপস্থিত হয়, তথনই ঐ সন্ধিস্থলে গ্রন্থির শোথ উৎ-পাদন করে। ইহাকেই অন্তর্ত্ত্বি কহে। অন্ত্র-বৃদ্ধি অচিকিৎসিত হইলে অগুকোষ বৰ্দ্ধিত, স্ফীত, বেদনাৰুক্ত ও স্তম্ভিত হয়। প্ৰপীড়িত হইলে (টিপিলে) শব্দবিশিষ্ট বায়ু উপরে উঠিয়া যায় এবং ছাড়িয়া দিলে আসিয়া শোথ উৎপাদন করে। অন্তর্গদ ্বতবৃদ্ধিলক্ষণাক্রাস্ত। ইংগ অসাধ্য ব্যাধি।

অথ রদ্ধিরোগ-চিকিৎসা।

বাতবৃদ্ধৌ পিবেৎ নিশ্বং যথাপ্রাপ্তং বিরেচনম্। সক্ষীরং বা পিবেৎ তৈলং মাসমেরঙসম্ভবম্॥

বায়ুজনিত কুবজ্ঞবোগে যথাপ্রাপ্ত স্নিগ্ধ বিরেচন সেবন এবং হ্রপ্পাংযুক্ত এর ওবৈত একমাস কাল পান করিবে।

গুগ্'গুবেরওজং তৈলং গোমুনেণ পিবেরর।। বাতবৃদ্ধিং জয়ত্যাশু চিরকাল'কুবন্ধিনীন্ ॥

(গোমুরপলম্বরে এরওতৈল,পিই গুগ্ গুলুমাযক।ইকং প্রকিপ্য পেরম্। তথা গোমুলপলম্বরে এরওতেলকর্ষমেকং প্রক্রিপা পিবেং। ইতি শিবনাস:।)

১৬ তোলা গোমুত্রে এরগুটেল পিই গুগ্-গুলু ৮ মাষা কিংবা এরগুতৈল ২ তোলা প্রক্ষেপ করিয়া পান করিলে দীর্ঘকালোখিত বাত্রদ্ধি প্রশমিত হয়।

আর্ড্রকদ্য রসঃ ক্ষেত্র-মুক্তের বুমনবাছজিৎ 🕫

আমাৰ বস মধ্য সহিত পান করিলে বাতজবৃদ্ধি প্রশ্মত হয়।

পিত্রপ্রতিকমেনৈর পিত্র দিমুগাংকে। জলৌকাভিগরেছকং বৃংদ্ধী শিত্তসমূদ্রে।

পৈত্তিক বুদ্ধিণোগে পিত্ত গ্রন্থিব গ্রায় চিকিৎসা কবিবে। জলৌকা ঘাবা 15 মোক্ষণ ব্যবস্থা কবিৰে।

श्रमभवाष्ट्रारेखन ना देडनर मात्राक्षणर छवा। পাৰে বন্ধে) কৰেব্যন্তলং পেধং ৰা দশক স্থানা :

পিত্রস বুদ্ধ বোলে পুননবার কাপ ও কর সহ তৈল পাক কৰিয়া সেই তেল কিংবা নারায়ণ তৈল পানে ও বস্তিক্ষো প্রয়োগ कार्था गरिः করিবে, অথবা দশমূলের এর ওইতল পান কারতে দিবে।

क्रमनः भ्रमकः शृज्यभीहः भीलगुरश्लम् । कौत्रशिष्टरः अध्वाशन संस्थाशिकः शिस्त् ॥

রক্তচন্দন, ষ্টিমধু, পদাকেশর, বেশাব মূর ও নালোৎপল, এই দকল দ্বা গ্রেম পেনণ করিয়া, ভাহার প্রলেপ দিশে পিত্রজ বাদর দাহ, শোথ ও দেন। নই হয়।

প্ৰক্ষাক্ষেন্ন স্থাতন প্ৰলেপন্ন . পাनः वांशि कवाइक शिवताको श्रममारह ॥

বট, অখ্ৰ, যজ্দুমুর, পাকুড় ও বকুল এই

ক্রিয়া, সেই মৃতাক্ত কলের প্রলেপ দিলে. অথবা ঐ পঞ্চ বন্ধবোর রাথ পান করিলে পিওজ বুদ্ধি প্রশ্নিত হয়।

कम्बद्धा न्याभिदेश भ्यानीत्याः शतनभागः। भा**डरना। मृ**बमः युक्तः कषायः श्री व्यक्तिषः ॥

(फॅक्कवरियातकशक्ताः विश्वः क्र-कः इंटर्काः, नृब्दशक्त-मुला (किश्वी ।)

करूक नृष्ट्रि लोहा है अन्तीया जवा (ब्रहर পঞ্চ মূল কিংবা জনতোক্ত অজগন্ধাদি) গৌৰুত্ৰে পেষ্ণ কৰিয়া ভাহাৰ প্ৰলেপ দেৰে, দেবলাকুর ক্যায় গৌমুত্র সংস্ক্ত করিয়া পান করাইবে।

ৰিকট্ট এফল কাথং সঞ্চাবলনাং নিবেই <u>৷</u> বিবেচন্দিল লোৱং কলত দ্বিৰান্দ্ৰিন চ চোপ্ৰিং কটিওকৈ কং (স্ব নং ককামৰ ৮। থারবেকে,গানাভৌ চাস্কুন্র নাভ্যাভে 🛊

ত্রিকটুও বিদ্যাব ুকাথে ধ্বক্ষাব ও সৈশ্বে লবং প্রাক্ষেপ দিয়া পান করিছে দিবে। শ্রেষ্ঠ বিরেচক এবং কফজ ব্রাদ্ধ রোগনাশক। ক্ষজ ব্রণত কট 🔹 ও উষ্ণবীসা প্রায়েপ, ककरत्रम, भारत्यक ६ छेशनांश डेकांवश्रा প্রায়ের করিবে।

भूषध् ७० (लोकि है, तम भर बेक्ट कार्या পিৰেছিৱেলন লাপ শতরাংখনীদ্যাত্তম ৷ भौडेन तथन भेष्ठ मन्दर शिवहंबर डा। i পিত্র দ্বিদ্যং কুলাদানে পরে 5 বজালে।

বক্তর ব্রিরোগে জ্বেকি ছার পুনঃপুন রক্ত মোলগ কবিবে ৷ ইহাতে চিনি ও মধু দংখন্ত বিচেচন, পাতৰ প্ৰাৰেপ এবং সকল প্রকার প্রভার জিলা প্রশস্ত। বক্তর বৃদ্ধির আসাবস্থায় কি প্রতিষ্ঠান মল্লাই পিওছ 1/31 15.05# 0 17.41

진성이 교육, 최신의 나이 (c 역(c) - 작가기('타네') भित्ति (तात्रुधन क्रांत्राह क्रांत्रा (स्टन अमार्युटेका)

মদোহ বুৰতে জ্যন্তা গোন্যপি জ্ঞানি স্বারা त्यतः निया १९१४ इनियो, निमिन्ताः भुकानांत् अनमात-शालाङ पदा धाना श्रामण পঞ্চরকের বন্ধল পেষ্ণ ও তাহাতে মৃত্যান্ত্রণ । । । শিলোববেচন (পিগুল, মরিচ, জাপাং প্রভৃতি) দ্রাসমূহ গোমুত্রপিষ্ট ও তাহা ঈষত্র করিয়া প্রবেপ দিলেও উপকার দর্শে।

সংস্থেন মৃত্যপ্ৰভবাং নপ্ৰপটেন প্ৰেমেং।
সেবকাং পাৰ্যতাংগতাবিধােদ্ ব্ৰাইম্পেন বৈ ।
শক্ষোপত্তি চ কৰ্বান্তে তাত্ত্বা দেবনীমাদৱাং।
বাত্যাসাধা শিবাং বিধাদপ্ৰত্তিনিবৃত্ত্য়ে।
অসুষ্ঠাধ্যে ওব্ ছিত্বা দহেদজ্বিপ্যায়ে।

মৃত্তে বুদ্ধি, স্বেদ খারা সির করিয়া ত্বকের মৃত্তাকম্পাদনার্থ বস্ত্রণণ্ড ছারা বেইন করিয়া বান্ধিয়া রাখিবে। তৎপনে মৃত্রপ্রাব-পার্থ ত্রীহিমুখ নামক শস্ত্র হারা দেবনীর পার্থে অধোভাগ এরূপ বিদ্ধ করিবে, যন সেবনীতে আঘাত না লাগে। অন্তর্গন্ধ নিস্তির জ্ঞা বিপরীত ভাবে শিরা বিদ্ধ করা কন্তব্য, অর্থাৎ বাম কোধের বুদ্ধি হইলে দক্ষিণভাগে এবং দক্ষিণ কোষের রুদ্ধি ১ইলে বামভাগে; আর উভয় কোষের রুগি হটাল প্ররাং উভয় ভাগেই বিক্ষতে ২ইবে। শুজানশের উপরে কর্ণের প্রান্তভাগে যে শিল আছে, তাহাও বিপ্রীত ভাবে বিদ্ধা কবিবে। হস্তের বুদ্ধাপুলির মধ্যে ইঙ্মাত ছেন্ন করিয়া সেই স্থান দ্র্ম করিয়া দিয়ে। এন্তরেও পুরুবৎ বিপরীতভাবে পোড়াইতে হলবে অধীং বাহ কোষের বুদ্ধি হইলে দক্ষিণ হাস্তব এবং দক্ষিণ কোষের বৃদ্ধি হইলে বাদ হডের, স্বাব উভয় কোষেরই বুদ্ধি হলে উভয় হস্তের বৃদ্ধান্ত্রীল পোডাইতে ২ইবে।

মুদ্ধকোষমগাছন্তরামপুর্দ্ধৌ (বিচক্ষণঃ) বাত্তবৃদ্ধিকামং কুষাধি বেদস্তরাগ্রিনা হিতম্।

সন্তব্ধি কোষ প্রাপ্ত না হইবো অথাৎ বজ্ঞানে প্রতিরূপে এখনবস্থার সবস্থিত প্রতিবে বাত্ত ব্রহ্মির চি.কংমা ক্রেবে। এক্রপ অবস্থার অগ্নির স্থেনি হিতকর।

রাশ্বায়াইতর্গুল-বলাগোলুনসাধিত।
কাধোহরর্গুলি হস্তাতি কাব্তলেন মিপ্রিত।
বাসা, ইন্টিমর্, গুলঞ্চ, এরগুমূল, বেড়েলা
ও গোকুর ইন্টানের কাথ, এরগুতিল মিপ্রিত।
করিয়া পান করিলে, অরবৃদ্ধি নিবারিত হয়।

তৈলমেরগুজং পীত্বা বলাদিদ্ধ-পয়োহন্বিতম্। আধ্যানপুলোপতিতামস্তব্দিং জয়েররঃ।

বেড়েলামূলের সহিত হগ্ধ পাক করিয়। তাহাতে এরপ্ততৈল প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে আগ্রান ও শূলবৎ বেদনাযুক্ত অন্তর্বন্ধি প্রশামত হয়।

হরীতকীং মৃত্রসিদ্ধাং সতৈলাং লবণায়িতাম্। প্রতিঃ প্রতিশ্চ সেবেত কফবাতাময়াপহাম্॥

হরীতকী গোমূত্রে সিদ্ধ করিয়া তাহাতে এরগুটেল ও লবণ মিশাইয়া গোমূত্রের সহিত (কেহ বলেন গরম জল সহ) প্রতিদিন প্রাতঃ-কালে সেবন করিলে বাতটিশ্লব্রিক বৃদ্ধি বিনই হয়।

ভিষলাকাৰগোমূলং পিলেং আত্ৰতন্তিতঃ। কফৰাতোভাত শংহতি ঋষপুং বৃষণে (খিতমু॥

ত্রিজলার কাপে গোমুত্র প্রক্রেপ দিয়া উহা প্রতিদিন প্রতিকোলে পান করিলে বাত-লোমজনিত রুধণ-শোথ নিবারিত হয়।

শন্ধর্বহস্ত তৈলেন কারেণ বিহিতং শৃতম্। বিশ্বশিল্ভাগ চুণিং হৃদ্ধিং হৃতি ন সংশয়।॥

এর ওতৈলা ও হুগের সহিত যথাবিধি পাক কারেয়া রাগালশশার মূল চুর্ণ সেবন করিলে বৃদ্ধি বোগ নির্ভ হয়।

> গনাং যুতং ৈ ধানসংপ্রযুক্তং শব্দুকভাতে নিহিতং প্রযঞ্জাৎ। সপ্তাহমাদিতাকরৈবিপকং নিহতি কুরওমতিপ্রবৃদ্ধমান

গবান্বত ও (চতুর্যাংশ) দৈন্ধব লবণ একত্র মিশ্রিত করিয়া সদ্য আনীত একটা শানুকের মধ্যে পুরিয়া ৭ দিন রৌদ্রে পাক করিবে। সেই ম্বতের প্রশেপ দিলে কুরও নষ্ট হয়।

ইজীমূলভবং চূণং ক্লবৃতেলেন মন্দিতন্।
আহাদেশাপায়সা পাতং সকাবৃদ্ধিনবারণম্।
রাধালশশার মূল চূর্ণ এরও তৈলো
সহিত মন্দ্রন করিয়া গব্য ছয়ের সহিত ও দিন
পান করিলে সর্ব্প্রকার বৃদ্ধি রোগ নষ্ট হয়।

ক্তজটান্ল্লিপ্তা করওনাকচল্মণা।
বন্ধা বৃদ্ধিঃ শনং যাতি চিরজাপি ন সংশয়ঃ ।
নিশিপ্তমারনাকেন রূপিকাম্ল্রপ্রথা।
লেপো বৃদ্ধান্ধাহ হ'ত বন্ধ্যন্ত্রপি দুচ্ন ।
বচাস্থপককেন প্রেণো বৃদ্ধিনাশনঃ।
লক্ষাপৃত্রমলাভ্যাক কেপো বৃদ্ধিহরঃ পরঃ ।

শিবজটার মূল উপদৃক্ত পরিমাণে লইয়া
পেষণ করত তদ্বাবা কোষে প্রলেপ দিবে।
ভাহার পর করটবানামক জন্তুর (নকুল সদৃশ
জন্তু, গটাশ) ক্রোড্ছ চন্ম দ্বারা কোষ বন্ধন
করিয়া রাখিবে। ইহাতে বহুকালোৎপর কোষকরিয়া রাখিবে। ইহাতে বহুকালোৎপর কোষকরিয়া রাখিবে। ইহাতে বহুকালোৎপর কোষকরিয়া রাখিবে। ইহাতে বহুকালোৎপর কোষকরিয়া করিছে হয়। আকলমূলের বরল কাজির
সহিত বাটিয়, কুরণ্ডে প্রলেপ দিলে বন্ধ্যাও ও
দৃত বৃদ্ধিও নর হয়। বচ ও সর্বাপ একত্র
পেষণ কার্যা কুরণ্ডে প্রলেপ নিনি বিচা একত্র
হয়া বর্ণহজ্ঞাও ও গ্রিনীর বিচা একত্র
পেষণ কার্যা ক্রণ্ডে প্রনিনীর বিচা একত্র

मतल, छनः, १५६मः एतनस्य भटनिययन् । भूषात्रमालनारम् छन्। सम्बद्धाः कलना १०**५८ ॥**

সংলকাণ্ড, অগুক্ত, ক্ষ্ত্ৰ, দেবদাক ও শুঠ এই সকল দুবোর কন্ধ গোমুত্র ও কাণ্ডির সাহত বাটিয়া প্রনেপ দিলে কোষগত শোগ এবং বায়ুত্ত কফ্ বিনষ্ট হয়।

निभ् इक्ष्मवेरेपाल भः स्थानात्यः निवाधिकः॥

শ্জিনাছাল ও স্বপ্ৰাটিয়া প্ৰবেপ দিলে কোৰগত শোৰ, শ্লেষ্ম ও বংযু প্ৰশাসত ইয়।

বছবারস্ত বাজক গিষ্টং এটা জ্রান্ত সহ। কুরন্তং নাশক্ষে ভক্তে লেগনালান সংশয়ঃ।

ব**হুবারে**র বীজ ও জাদা একত্র বাটিয়া তাহার এলেগ দৈনে কুনও _{শি}বারিত হয়।

বঃ পিন্তদে,যেন কুরন্তনোধো ভবেচ্ছিদোদ কিন্মুশভাগে । এক্ষোদ্ধভাগে এবেন্স বিবোদামক নামে প্রভাব নারস্তা।

পিওদোবে বাণকের দক্ষিণ কোষে কুরও হইলে, বাসকর্ণের উদ্ধভাগ এবং বাসকোষে হইলে দক্ষিণ কর্নের উদ্ধভাগ বিক্ষিয়। দিবে।

্গরগুতেলসংমিত্রা কাস্যাসং সেক্ষাবং পিবেং। বয়েপু সুষ্পুং বদ্ধাং কুরাভজ্বনাশন্ম । এরগুতৈলেব সহিত হিবাকস ও সৈত্রব লবণ মিশ্রিত করিয়া পান করিলে এবং বস্ত্র ম্বারা কোম বাধিয়া রাখিলে কুরগুও ও ভজ্জনিত জ্বর নষ্ট হয়।

সংচ্পিতং দৈজবমাজাযুক্তং সংমন্দ্য তোরস্থিতমের সোক্ষম। মুহুল্মুক্তিয় কুকতে প্রকোপে বিলীয়তে তঞ্চ কুরপ্তরোগঃ॥

সেন্ধৰ লবণ চূর্ণ গবা স্বতে মর্দ্দন করিয়া অল জল দিলা অগিতে উফা করিয়া **মৃত্যু্তিঃ** প্রণেশ দিলে কুর গুণোগ নষ্ট হয়।

প্রবংশুলমেরও-শূলং মূষকচন্দ্র চ। প্রালেপঃ স্থাৎ কুরও'নাং রে:গ্রিচেছদকারকঃ॥

রুদ্রজ্ঞামূল, এব ওমুল ও ইন্ট্রের চর্মা বাটিরা প্রলেপ দিলে কুবওবোগ বিনষ্ট হয়। জবেষিতং একেব্লস্কাল মূলং সমং ভঙ্লধবিনেন। নিহামি কেপদ্গলন্তমানাং বুরওস্থানিধিলান্বিকালান্।

বাম্নহালিক মূল আহপ ততুলের জলে বাটিয়া প্রেণ দিলে গ্ওমালা কুবও প্রভৃতি রোগ নই হয়।

> বা হানি এই কৃষি ইং কুর্মণকরাজ্য মূল্য মন্ত্র বি বি হুলো মঞ্চণ বিচুলী। গবো নিশ্ব সংগ্রি বিদিম্বিদানে হুক্ত ঘণ্ডাতি বুবও মূরে। বকার ॥

্দ্ৰদানবীজ বাতল (৭৭ %) তেল সহ বাটিয়া তাহা জ্পন দেবলাক মূল চূৰ্ গ্ৰাপ্ত্ৰের সাহত সেবন কাবলে তিন দিলে পুরুও নিবারিত । হয়।

অথ এর-নিদানম্।

অত্যভিষ্যান্দ ওক্ষণ উপগৃত্যানিধ শান । কৰো তি গ্ৰিবজেগৰা দেশযো বজ্ঞানা পত্ন অৱশ্যাক্ষণ দিটো তোপের মতি নিদিশেৎ ।

ত্র তাভসান্দী দ্রবা, গুরুপাক অন্ন, গুদ দেবা এবং প্রা মাংস ভক্ষণ করিলে বাভানি দোষ সাঞ্চত হইয়া বজ্ঞাসান্ধিস্থানে গ্রাহ্র হ্যায় শোপ উৎপন্ন করে। তজ্জ্ঞ অত্যন্ত জ্বন, শূনবন্ বেদনা ও শ্রীরের অব-স্মতা উপাস্ত হয়। ইহাকে বর্রোগ বলে।

অথ ব্রধ্নচিকিৎসা।

--:*:---

ভৃষ্টাশ্চরগুটিতলেন সমাক্ কর্ণে হভয়াভবঃ। কুঞ্চাদৈশ্বসংযুক্তো এগ্রোগহরঃ পরঃ॥

হরীতকীর কল্প এরওতৈলে ভাজিয়া তাহাতে পিপুল ও মৈন্ধব চুর্ণ সংস্কৃত করিয়া সেবন করিলে ব্র (কৃচ্কী ও বার্থী) রোগেব শান্তি হয়।

স্তাপ্রাধক্ষারলেপেন এর রোগো বিন্তা ।

বটের আঠা লেপন করিলে সভোজাত ব্রপ্ত বসিয়া নায়।

অজাজী হরুষা বুঠং গোপ্দণ বদরা খিতম্। কাঞ্জিকেন তুসংপিতাং হাইনো বিভিন্ন বিলা।

ক্ষণ্ডশীরা, হর্যা, কুড়, গ্রের্য ও কল এই স্কল দ্বা কাভিতে প্রেণ করিয়া ভাষাব প্রান্ধে দ্বেও শ্র বিন্ত হয়।

অবিক্ষীরেণ গোধুম কথা বুন্ধুক্তক চ। বিজেপানং স্থাপাকং আদ্ ব্যুন্থকং প্রম্

মেষ্ডুগ্নে গোৰ্ম ও কলকংশাটা বাটিয়া ঈষ্তুক্ত করত ভাহাব প্রবেপ দিলে ব্রধন নিবারিত হয়।

হরীতকী পচা গুটা তির : স্বণগ্রিকা। এলাম্বরং দেবপুশা কাশ্বিয়া জনা পিরেই। অনেন প্রশাস কাফি ব্যক্তাস্থ্যা প্রবায়।

হ্রীতকী, বচ, শুঠি, তেউড়ানুল, মোণা-মুখী, ভোট এলাইচ বড় এলাইচ ও লবস ইহাদের কাল পান ক্রণে বর কাস ও ছাঃ প্রশ্মিত হয়।

লাক্ষা করগুণাজক তেন্তা দাক মগৈরিকন্। কুন্দুক্ষক সনং কৃষা চুর্বন্ধেন্নি ভিন্ন ভিন্ন । কাঞ্জিকেন ডু সংপেষ্য তথা খ্যুগুন্ধনন্য ॥

লাকা, করজবীজ, শুঠ, দেবলাক, গারি-মাটা ও কুন্কুবংগাটা এই সকল দ্বোর চুর্ণ ও কাঞ্জিতে পেষণ করিয়া ভাহার প্রাণেপ দিলে ব্রধ্যোথ বিনষ্ট হয়। মৃত্যাতে ভূ বৈ কংকে বিশন্তে সংপ্রবেশরেং। ব্রন্ন মুহূর্ত্তং মেধাবা ভৎক্ষণাদক্ষজো ভবেৎ॥

একটি কাক মারিয়া তৎক্ষণাৎ তাহার ক্রোড়দেশ বিদীর্ণ করিয়া, তন্মধ্যে ত্রপ্ন প্রাত্তন করাইলে ক্ষণকাল মধ্যে যাত্রনা নিবারিত হয়।

दिल्वाि हुर्गम्।

মূলং বিৰক্ষিথায়ে ঃ এলুক্স্তানের হতো দে যোঃ
তামাপুতিকরপনিগ্রকতার বিষোধধারকরম্।
কুক্ষাগ্রন্থিকার গ্রাপঞ্জনগক্ষারাগ্রেদাগিতম্
শীতং কাঞ্জিককো কতো রম্পিতং চুণীকৃতং এর জিং॥
(তামাত্র বৃদ্ধারকঃ। ফুলমিতি মূলং ষষ্ঠাতৈঃ
সাকৈর বেগজান্। ভতি শিন্দাসঃ।)

বেল, কয়েংবেল, প্রোণাক, চিতা, বৃহতী, কণ্টকাবা, বৃদ্ধনাবক, নাটাক, জ ও শজিনা ইহাদেব মূল এবং শুঠি, ভেলাব মূলি, পিপুল, পিপুল্ল, তি, পঞ্চলবল, ব্যক্ষার ও ব্যৱহানী এই সমূদ্য চূল কাল্যা কালি এথবা উষ্ণ জলের সহিত প্রবন কালে ব্যক্ষার বিনষ্ট হইয়া থাকে।

ভক্তোভরাগ্য ।

অভকং গঞ্জকদৈব পিলালা লগগৈনি চ।
গ্রিক্ষারং তিকলা চৈব হারচালং মন্দ্রিলা ॥
পারদক্ষারুলালা চ ফানি শতপুপিবা ।
ভাবকং ছিল্পু মেথা চ চিত্রকং চবিকা বচা ॥
দত্ত চ ত্রিবৃতা মৃন্তঃ নিলা চ মৃতলাহকম্ ।
অস্তলা নিম্বাজানি পাটোলং চৃদ্ধারকম্ ॥
সাববাণি চাজমা গ্রাণি প্রজ্চুগান কারগেং ।
শতা কনকবাজানি শোবিতানি প্রস্থাজ্যে ॥
এচন্ট্রিবিবৃদ্ধার্থিখৃষ্তিঃ পরিক্রাভিত্র ।
প্রাপ্রাত্র দ্বিক্রার্থিখৃষ্তিঃ পরিক্রাভিত্র ।
প্রাপ্রাত্র দ্বিক্রার্থিখৃষ্তিঃ পরিক্রাভিত্র ।
প্রাপ্রাত্র দ্বিক্রার্থিখিতঃ প্রক্রার্থিশ ॥
অক্চিক্রান্বিভ্রার্থিশ ভব্দশাহ ।
ভ্রেলান্তর্নিক চুলাবিভ্রাং নিশ্বিতং পুরা ॥

অল, গলক, পিপুল, পঞ্চাবৰ, যবকার, সাচিক্ষার, সোহাগা, তিফ্লা, হরিভাল, নন-ছাল, পারদ, বন্যমানী, ব্যানী, গুল্ফা, জীরা, হিন্দু, নেগা, চিতাযুল, ১৮, ১৮, দন্তীযুল, ভেউড়ী, মুতা, শিলাজতু, লোহ, রদাজন, নিম্বীঙ্গ, পটোলপত্র ও বিদ্ধৃত্ব বীজ
প্রত্যেক ২ তোলা, শোধিত ধুতুরাবীজ ১০০টা;
এই সমূনায় একত্র চূর্ণ করিয়া লইবে। আহারের পর সেবনীয়। ইহা সেবন করিলে শ্লীপদ,
অন্তর্বন্ধি, অক.চ, আমবাত ও বাতজ শ্ল প্রভৃতি অনেক রোগেন উপশম এবং আগে
বৃদ্ধি হইয়া থাকে।

অর্থামায়তাভ্রম ।

দশমূলী চ নিগু জী সবসা চ পুন্নবা।
রুইা চ চ্বিকা বাসা। চেরকা বাদাবকন ॥
বলা চাতিবলা চের পাঠ রুষ্যচিত্রকন।
সহস্পুটিভালস্ত বটসরেষাং বিমন্দিরং ॥
অযাসামূতনায়েশ রেরকার নিগছেতি।
অস্তর্ত্তির হুর্যানিং বাহিন্দার্থন ॥
গঙ্গালাং হুর্যা এ ভনকারে বাহুর্যাত্রন ॥
ব্যাবি ভ্যা বের্যার্যার বাহুর্যার বাহুর্যার বিশ্বার্যার ব্যার বাহুর্যার বাহুর

দশমূল, নিসিকা, ধেত তেউড়া, পুনান, মনসাসিজ, চই, বাসক, চড়া, বৃদ্ধাক, ব্রুড়ার, প্রারক্ষরিকা, আক্রানে, সেঁলাল ও রক্তরেল, হারেন বাস সংঅপ্টিত অল মাড়িয়া উপযুক্ত মাজাম সেবন কাবলে তার, বৃদ্ধি ও অন্তর্মন্ধ প্রভৃতি নানাবোগ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

त्रिक्तिनाभिकः दिष्टिकः।

গুদ্ধত্য তথা গদ্ধং মৃত্যুক্ত গদি বে'ছবেং।
প্রৌহং বঙ্গং তথা তামং কাংশুকাৰ বিশোধিতম্।
ভালকং তুপকঞ্চাপি তথা শশ্ববাদকম।
কিন্তু ক্রিকলা চলাং বিড্ঙাং বৃদ্ধার্থকম্।
কর্চুকাং মাগধামুলং পাহাং সহব্যাং বচাম।
এলাবীজং পেবলাঠং তথা লবণপঞ্চম॥
এতানি সমভাগানি চুর্গদেশ কাব্যেং।
ক্যায়েল হ্রাভকা বিকিন্তি ক্যাংমিতাম্॥
একাং তাং ব্টিকাং মন্ত নির্দিদ্ধ বারিণা সহ।
অন্ত্রাদ্ধানি তথা নগতি সংসম্॥

পারদ, গন্ধক, গৌহ, বঙ্গ, তাম, কাঁদা, হরিতাল, তুঁতে, শুগুভুম, কড়িজ্ম, ত্রিকট্ট, ত্রিফলা, চই, বিড়ঙ্গ, বিহুড়ক বীজ, শটী, পিপুলমূল, আকুনাদি, হর্ষা, বচ, এলাইচ, দেবদার ও পঞ্চলবণ প্রশ্যেক সমভাগে লইয়া হ্রীতকীর কাথে ফ্রন করত ১ মাধা প্রমাণ বটিকা কাবে। এই বলি জল সহ প্রভাই ১লী দেবন কবিলে অসাধা অনুব্রিভ্রতাই হল।

শ্বিশেখর-রসঃ।

লোকৈবেণ (সন্দ্ৰং মদ্দে<mark>ংং কন্সকাস্থন)।</mark> জ্ঞান্ত মিতং দ্যাদ্ৰংবাগনিস্ত্ৰেয় ।

্রাহে, এল ও রস্মিদ্র একর মৃত্রুমান রাক কমে মাড়েয়া ১ বাত প্রমাণ বটিকা কাত্রে। ইহা যথেপেয়ক অনুপানের সাহত সেবন কাংকে স্বল প্রকার অন্তরোগ বিবাই হয়।

বাতারিঃ ।

বন গানা ভারদেকো সককো বিওলো মতা।
ক্রিন্তনা ক্রিন্তনা প্রাক্তনা চতুভাগণত চিনকঃ ॥
ওগ্যন্তন্ত্র, পদভাগণ স্থাদেনওং গলমান হয়।
ক্রিন্তনা প্রকান চ্বাং তোনা মহ মন্দ্রিয়া ওল্ডকাং ক্রিন্তা এ ভক্তার্য প্রাচরেন হি।
নগেরেনওম্লানাং কাশং তদত্র গগ্যমে ॥
অভানৈরেরওতৈনেন ক্রেন্তে প্রকানকন ।
বিরেকে তেন সংগ্রাতে ক্রিন্তকন ভারারা ॥
বাতারিসাভাকে। তোধ বদো নিক্তি স্বাত্রা ।
অন্তর্ন্তার ভিন্তনার ক্রেন্তার স্বাত্রা ক্রিন্তার ভিন্তনার ক্রেন্তার স্বাত্রা ভিন্তনার ক্রিন্তার ॥
অন্তর্নার ভিন্তনার ক্রিন্তার স্বাত্রা ভ্রান্তনার ভিন্তনার ক্রিন্তার স্বাত্রা ভ্রান্তনার ভিন্তনার ক্রিন্তার স্বাত্রা ॥

পাদ ১ ভাগ, গন্ধক ২ ভাগ, ত্রিফ্লা মিলিত ৩ ভাগ, চিগায়ল ৪ ভাগ ও গুণ্ণুলু ৫ ভাগ , এই সমন্ত ক্রবা এরপ্ততৈলের সহিত মদ্দন করিয়া ২ তোলা মাত্রায় গুড়িকা প্রস্তুত কারবে। অনুপান—আদার রস ও তিলভৈল। উষ্প্রেন্নায়ে গুঠ ও এরপ্তমুলের ক্রাপ্র প্রেদ্বি এই ঔষ্ব মেবনের পর রোগির প্রদ্বেশ এরপ্ততিল মাধাইয়া স্বেদ প্রদান করিবে। বিজেচন হুইলে স্লিগ্ধ ও উক্ষণ্রবা ভোজন করাইবে। ইহাতে অন্তবন্ধি রোগ প্রশমিত হয়।

রস্রাজেন্দ্রঃ।

হিন্দুলোখা রসং নকাং কেশরালাস্থাপিক। রসাদ্ধা হয় তারক নাগং হেমাদ্ধার হপা ।
ক্ষিপ্তা প্রতলে প্রাদ্ধার বাদ্ধার হারকার ।
ক্রমালাভিত্রক স্থানি ক্ষিপ্তার বাদ্ধার ।
ভবের রিজিমিশার ব্যাদ্ধান ক্ষিপ্তার বিশিক্ষা ।
ভবের রিজিমিশার বিশ্বান্ধার বিশ্বান্ধার স্বাদ্ধার স্থান্ধার বিশ্বান্ধার বিশ্বান্ধার বিশ্বান্ধার স্বাদ্ধার স্থান্ধার স্বাদ্ধার স্বাদ্ধার স্বাদ্ধার স্বাদ্ধার স্বাদ্ধার বিশ্বান্ধার স্বাদ্ধার স্বাদ

হিন্ধুলাথ রদ ও কেন্দ্রিয়ার বদে শোরিত গল্পক প্রত্যেক ১ তোলা, অর্ণ ও রোপ্যে প্রত্যেক ৪ মাধা এবং দীলা ২ মাধা, এই সমুদায় একত্র কবিয়া বাদক, কাকমাচা, চিতা, নিসিন্দা, কুড়্চি, ফলগ্রা ওপ্রা ইহাদের কাথে পৃথক্ পৃথক্ ৭ বার কবিয়া ভাবনা দিয়া ১ রতি প্রমাণ বাটকা করত রোজে শুকাইরা লইবে। ইহা সেবন করিলে সমস্ত অন্নার্রাণ এবং অক্তান্ত বিবিধ বার্গি প্রশ্যিত হল।

শতপুষ্পাদ্যং ঘূত্য।

শতপূপানত। দক্ষি চন্দমং রজনবিধন ।

ক্ষীরকে দ্বে বচা নাগ-ত্রিজলা গুণ্ গুলুত্বন্ ।

মাংসা কুঠং পত্রকলা রাশা পূজা সাচত্রকন্ ।

ক্ষিম্বমধ্যকা চ শৈলেয়ং কটুরেংহিলা ।

শৈক্ষবং ভগরকৈব কুটজাতিবিদে সমে ।

এতেজ্ব কাষিকৈং ককৈপুভিগ্রত সমে ।

ব্যমুন্তিভিইকরও-নিধপানভবো রসং ।

কটকাুয়াজিখা প্রহং কারপ্রস্থা বিনিক্তিপেং ।

সিদ্ধানতন্ মৃতং পীতনস্তর্জিং বাপোহতি ।

বাতর্জিং পিতর্জিং মেলোস্জিক দক্ষিণান্ ।

মৃত্রবৃদ্ধিং লীপদক যকুৎ প্লীহানমেব চ ।

শতপুশান্তামেতন্ বৈ মৃতং হন্তি ন সংশারং ।

(সৈশ্বং ভগরকৈব কুডলাতিবিদ্ধান স্থানিতি

রুস ইভি বা পাঠঃ।)

য়ত ৴৪ সের। বাদক, মুণ্ডিরী, এরণ্ড, নিম্পত্র ও কণ্টকারী ইছাদের প্রভ্যেকর রম /৪ সের, ছগ্ধ /৪ সের। কল্পি— শুল্ফা, গুল্ফা, দেবদারে, রক্তচন্দন, হরিদ্রা, দার-হরিদ্রা, জীরা, রুষণ্ডারা, বচ, নাগেশ্বর, ত্রিফলা, গুণ্ডেল্, গুড্ছক্, ছটামাংসী, কুড়, ভেজপত্র, এলাইচ, নারা, কাক্ডাশুঙ্গী, চিত্র মূল, বিভুঙ্গ, অশ্বস্কা, শৈল্ডা, কট্কা, শেরার, তগরপাছকা, কুড়াচছাল ও আইচি প্রত্যেক ২ ভোগা। এই মূত পান কবিনে সকল প্রকার রুদি, শ্রীপদ, ধরুং গ্রীষ্ঠাবিন্দ্র হুট্যা থাকে।

ত্রির পদি-য়তম।

্তির্তানপুষ্ঠান্থ-প্রোগরসমানিকার।
ক্রামানিবারানিভাগে-পিল্লানিকার।
সূত্রস্থা পর্প্রেশ নর্গান্তক্সর্থান্থন্।
শতাবরারস্থান্থ সর্কালোকত সংগ্রের ।
কির্তাদি মৃত্রেশতবিধানি বিদ্যান্ধ্যান্ধান্ধ।
প্রেমান্ধ্যান্ধানি বুটাত্রশাবিদ্যান্ধান্ধ।
ক্রামান্ধ্যান্ধান্ধানি বাহ্যান্ধানিকার দান্ধান্ধ।
ক্রামান্ধান্ধানিকার বাহ্যান্ধানিকার দান্ধান্ধ।
ক্রিমানিকার প্রিয়ারগাল্যান্ধানিকার বাহ্যান্ধানিকারিকারণ ব্রামানিকারিকারণ ব্রামানিকারণ বাহ্যান্ধানিকারণ বাহ্যান্ধানিকারিকারণ ব্রামানিকারণ বাহ্যানিকারণ বাহ্যানিকারিকারণ বাহ্যানিকারণ ব্রামানিকারণ বাহ্যানিকারণ বা

গবারত /৪ নেব। জন /৪ নেব। করার্থ—
১৬ দের, শত্রুলার রস ৪ নের। করার্থ—
তেউড়ী, যষ্টিমধু, বালা, মুতা, যমানী, শ্রামালতা, ভূমিকুলাও, নৌরে, পিপুল ও কুড়্চিভাল মিলত /১ দের। পাকার্য জল ১৬ দের।
যথাবিদি পাক কানয়া এই মত পান কারেল
অস্ত্রজ সমস্ত রোগ এবং প্রমেহ, শ্বাস, কুঠ ও
অর্শ্য প্রভৃতি পীড়া নিবারত হয়।

রহদন্তীয়তম্।

জলদ্রোণে পচেৎ সম্যাগ দুস্তাঃ পলশতং ভিষক্।
পাদশিষ্টং গৃহীত্বেমং কাথং সর্পিঃ পয়ন্তথা ॥
দন্তঃমূলং বলাং দ্রাক্ষাং সহদেবীং শতাবরীম্।
সরলং শারিবাং শামাং প্রত্যেকং বৃড়বোফ্মিতম্॥
বিদায্যান্তালমূল্যান্ত শাল্মলাঃ কুটজসা চ।
রসাচকং পরিক্ষিপা সাধ্যেন্মূল্নাগ্নিনা॥

অসর্ক্ষিত্রবাধ্যস্থন হিং প্রদার্কণন্।

নুক্রুক্ষিং ভবা এরং এগণোধাং ভগদার্।

আমনতিং বাত্রকাং মুগনাগ্রিয়েরাকার।

রেচঃশোণিতদোধাংশ হুলি সভায় হুল বৃহ্ধ।

মৃত ১৬ সের। কংগ্রহিন দ্রীমূল ১২॥
করে, জল ৬৪ সের, কেন ১৬ সের। জ্রা,
চুমিকুলাও বস, তালমূলীর বস, শিমূল মূলের
রস ও কুড্(চছালের রস এংগ্রেক ১৬ সের।
ব রাপিন দন্তামূল, বেড়েলা, জালা, পীতবেড়েলা,
নতমূলী, সাবলকাঠ, অনন্তমূল ও গ্রামালতা
েক্ছ বলেন—গ্রামালা তেউড়ী এতোক
এক কুড্ব। প্রাকাথ জল ১৬ সের। এই
গ্রহ্ণপান কালে অন্তর্গান, অন্তর্গান, ম্রুক্রিন বর, আনবাত, বাত্বক ও
বক্তরিষ্ট প্রাকৃতি বিশ্বিব পাড়ার শান্ত হয়।

গন্ধবিহস্ত তৈলম্।

শৃত্যার ওয়ুরস্ত পারণ শুক্র নি তক্ষ্ণ জনজাগে বৈপজ্লান যা বং পালাবলৈ যিত্যু ।
১০০ পালাবলৈ গে প্রমা বিংসামের চ
আজার তালারস্ক লামুলাক শুকু ব্যার্থী
বিপালয় শাস্ত্রার মান্দান লগা বপালার ।
১০০ পানার জন্ত ভারো । ১০০ বিধার বৃদ্ধী নি অসুক্রিয়া ।
১০০ পানার জন্ত ভারো । ১০০ বিধার বৃদ্ধী নি অসুক্রিয়া ১৪০ বিধার বৃদ্ধী ।
১০০ বিধার ১৪০ বিদ্ধান বিধার বিধার বৃদ্ধী ।
১০০ বিধার ১৪০ বিদ্ধান বিধার বিধার বৃদ্ধী ।
১০০ বিধার ১৪০ বিদ্ধান বিধার বিধার বৃদ্ধী ।
১০০ বিধার ব

এ.তে তেল /৪ সের। কাথার্থ—এর ওম্ল
১২।০ সের, ৩ঠ ১২।০ সের, যব /৮ সের,
এতোকে এল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। ত্র্য্ব
১৬ সের। কর্ত্যাক এর ওমুল ৪ প্রশ, আনা
৩ পল। এই তেল পান কারলে শ্র অনুস্থি
প্রশামত ২য়। প্রা—হ্ন্য ও অর। (মাত্রা—
হুই তেলা, উষ্ণহ্র্যা সহ সেবা।)

রুহৎ সৈন্ধবাতং তেলম্।

সেশ্ববং মদনং বু ঠং শতাহ্বংং নিচুলং বচাম।
জীবেরং মদুকং ভাগীং দেবদার সন্পরম্ ।
কট্দলং গৌদরং মেদাং চাবিক: চিত্রকং শটীম্।
বিজ্ঞাতিরিয়ে শামিং বেপুকাং নালিনাং ছিরাম্ ।
বিশাসমোদে কুকাঞ্চ দুজীরানে প্রথিষ্টি ।
সাধ্যমেরগুলং তেলং তৈলং বা ক্ষব্যন্তম্ম ॥

এপ্রেদিবিউওথ।শিঃ-খাইসেহচোমাঞ্চান্।
আনাইম্খারীকেব হস্তাৎ তদ্যবাদনাৎ ।
(শ্যামা তির্চা। ১১লং বেচি শিট্তলং বা।
ইতি শিবগ্যাঃ!)

এরগুঁতেল বা তিলতৈল /৪ দের।
কল্পার্থ—সৈল্পব, মন্দল্ন, কুড়, গুল্ফা,
বেত্রন, বচ, বালা, ষষ্টিমরু, বামুন্হাটা, দেবদারু, গুঁঠ, কট্ফল, প্রস্কমূল, মেদা, চই,
চিতামূল, শটা, বিড়ঙ্গ, আত্তচ, ভেউড়া,
রেণুক, নালবুঞা, শালপাণি, বেলগুঁঠ, বনন্মানী, পিপুল, দ্তীমূল ও রাক্ষা মালত >
সের। জ্লাহ ৬ দেব। এই তেল মন্দনে এর,
উদাবর্ত, গুলা কর্মান, মোহ ও বাত্রক্ত
প্রভৃতি নানা বোল নই ইইলা থাকে।

বৃহন্দারতৈলম ।

ষ্মধান হার্থনাম তেলং
ভাষ্য গোপিলতে হি ট -লম্।
মন্দাবেণ্ডপ্রেমন ক্ষিং
প্রেদ্ধি বিশ্বিক ক্ষেত্রনা হ মন্দারটো বং বহরেওদাও
ব্লাহ ক্ষেত্রনাম নাম্দ্রনাম ক্ষেত্রনাম ক্ষেত্রনাম নাম্দ্রনাম নাম্দ্রনাম নিজ্ঞান

দে সকল কর ও কাথাদি ছারা বাতব্যাধি অধিকারের নগম নার্যণ তৈল পাক কারতে হয়, তৎসমস্ত দ্রা, আনক্ষ পালিবা পুশ্পেব ও পদ্ম রসের সহিত তেল পাক কারলে, তাহাকে বৃহৎ মন্দারতৈল বলে। ইহা গাত্তে ও উদ্বাদিতে মন্দন কারলে সমস্ত অন্তর্জ রোগ এবং জ্ঞান্ত ব্যাধি প্রশাসত হয়। ইহা বল ও গুক্রবদ্ধক।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

वृक्षित्वारम नथानि।

সংশোধনং বাস্তরস্থিমোকঃ বেদঃ প্রলোগোহরপণালরক। এরস্তট্টকং স্বস্থাজনঞ্চ ধ্যামিধং শিগ্রাফলং প্রোলম্॥ পুন্নবা গোজুবকে হাল্পত্বশুংশুলপাথ। সংলা বসে নম।
বাতিকানা গুজনকং নগুনি
কৌছং চুংং ভপ্তজলক হেল্মু॥
বস্নান্ত পহ্মতিকারী
ভদ্মপানক করা পুরণা।
অগে ন্তব্দ্ধপ্রেকি সাভা
বাত্যাসাত্র বাহ্মপারক নগোলক ॥
বাধাস্থাক করা পুরণিক সর্গা
শুণাক্ষ্পত্রাক্ষাক সর্গা

সংশোধন উষ্ব, বাছাজ্ঞা, রক্তমাকণ, স্বেদ্ন, প্রালেপন, রক্তমালি ভঙ্গা, ভেবেঙার তৈল, গোনুতা, ধ্যদেশজ চুগপক্ষী প্রভৃতিব মাংস, শাজনাফল, পটোল, পুনর্শবা, গোকুব, গণিয়ারি, ভারুণ, হরীতকা, সর্মকাসি, রক্তন, বেগুণ, গালব মধু, দশন্মারণ পুণাতন মুভ, গ্রম জল এবং ৩জ, এই সমস্ত বার ও বারি-রোগে স্প্রা।

আমিবং প্রক্রিকাবে আমিব জিনাশক যে পূহিশাক, গুরুদ্রবা ও শুক্রবেগধারণ, সকল পথা নিব্দ করা ইউবিছে, সেই সকল । সমস্ত এয় ও ব্যক্তরাণ্ড্র পঞ্চ অহিতকর।

পথ্য এবং অগ্নিবর্দ্ধক অন্নপানীয়, পুরাতন সংগ, বজ্ঞান বাহের অর্দ্ধচন্দ্রের ন্থান্ত করা ও বিপানীত বাহের শিরাবেধ অর্থাং বামভাগেণ কোষবৃদ্ধি হইলে দক্ষিণ বাহুর শিরাবেদ এবং দক্ষিণভাগের কোষবৃদ্ধে হইলে বামবাহুর শিরাবেদ কয়া এবং শঙ্গাবচারণীয় বিদি অনুসাবে শঙ্গক্রিয়া এই সকল ব্রবৃদ্ধি রোগে হিতকর।

রূদ্ধিরোগেহপথ্যানি।

বিকল্পানাল্লমস্থ্যেলেব। সাক্ষেত্ৰিং হস্তিহ্যাদেবানম্ । আনুপ্ৰাংসানি দ্বান যাব। এখা বা পিঠালুন্পাদিকা ১ : ভালাৰ ভাকোবিভালেবাৰ ধা এল্বাল্লানাৰিকাম নিজালে :

বিকল্প অন্ন পান, অধান্তা দেবন, সংক্ষোভণ, হত্তী অধ প্রভৃতি বানে গ্রনাগ্যন আন্প্রাংশ, দ্বি, মাষকলার, হ্রা, পিইার, পূহ্নাক, গুরুদ্রা ও গুরুবেগ্রারণ, এই সম্ভ তার ও বারবাল্য প্রেম্ম অহিতকর।

ইং)।য়ুসেন -মংগ্রহে ব্যবিধাসাধিকারঃ।

তাথ গলগণ্ডাদিরোগাধিকারঃ।

অথ গলগও-লক্ষণম্।

নিবদ্ধঃ শ্বরপুরিক্ত ম্পানাম্পত হ'লে।

মতাম বা সদি বা হুবো গ্লগ্ডা তম্পিনেই ।

বাতঃ কদশ্চপি গ্লে প্রচাঠে।

মত্যে চ সংগ্রাতা তথেব মেদঃ ।

কুনানি গ্রাড ক্রমশং স্থালানে

সম্বিতং তং গ্লেগ্ডাডাঃ

গলনেশে বৃহৎ ৰ। কুদ্ৰ মুক্তবং বে দৃচ শোণ লম্বিত হয়, তাহাকে গলগও কহে।

প্রমন্ত বার্কক বা মেদ: গলদেশে মন্তা নামক শিরাব্যকে আশ্রম করিয়া ক্রমে ক্রমে বাহা সক্ষণযুক্ত গণ্ড উৎপাদন করে। ঐ গণ্ড অর্থাৎ শোথবিশেষকে পণ্ডিতের। গলগাও কছেন।

অথ গলগগু-চিকিৎস।।

ববন্দাপটোলান কটু কক্ ভেড্নন্।
ছাদিং সরজমুক্তিক গংগতে প্রয়েজনেং॥
গলগও রোগে যব, মুগ, পটোল এবং কর্তৃ
ও কক্ষ দ্রব্য ভৌজন ব্যবস্থা কর্তিব। ইহাতে
রক্তমোক্ষণ ও বমন্ক্রিয়া কর্তিব।
তভুনোক্ষপিটেন ম্লেন পরিনেপিড:।
হত্তিকর্পলাশস্ত গলগও: প্রশাসতি॥

হস্তিকর্ণপলাশের মূল আতপত গুলেব জলে বাটিয়া প্রলেপ দিলে গদগও নিবারিত ইইয়া থাকে।

স্থপন্ শিগু,বীজ (নি শ্বনীজাতনীয়বান্) মূলকৰা চাবীজ (নি তেকেণা মূল পেৰ্জেৎ দ গলগাড়ী গুড়মালা গ্ৰুষ্ণান্তৰ দক্ষণাঃ প্ৰেণাকৈৰ নশাভি বিল্ফাং মাডি সাংবম্ধ

সর্যপ, শজিনাবীজ, শণবীজ, মসিনা, যব ও মুলার বীজ একএ অমতকে বাটিয়া প্রলেপ দিলে গলগ ও, গওনালা ও এতি সকল সত্তব বিলয় প্রাপ্ত হয়।

রক্ষে স্থাতিলযুদ্ধেন জলকৃত্যক্তজ্জন। লেপনং পলংগুলা চিলেম্পনাম্প শস্তি।

(র.ক'ড্র' **সর্ব**প_{ে)}

প্রিন্ডিক স্থপতিবের সহিত মুদ্র ক্রিয়া প্রাণ্ডিকে বিচ্ছিন স্থৃত স্ক্রণেওব্র শাস্তি হইয়া থাকে।

আর্থিক কাক্ষরতার । তেওু সঞ্চলত্ত্ত । নুস্ত্রের কবি কর্মান্ত প্রথাপ্তর নাস্ত্রতা ।

পরিপক তিতলাউএব রদে বিটুও সৈধব লবং মিঞিত করিয়া নগুঙাহণ কবিলে নূরন গুলগ্ড অংশমিত হয়।

জনকু জাকজং ভাষা প্রবং পোন্ধন নিত্র । পিরেং কেন্দ্রনভাজকোনী পল্প ওপ্রশাস্তিম দ

পান:-ভশ্ম গোমুকে পাক করিয়া ভাকিয়া ভাহা পান এবং গোলগান্তব অন ভোজন করিলে গ্লগণ্ড প্রশামত হয়।

্পত্পেরাজিত নূলং জাত াগঞ্চ পাল্যর ৮ স্পিমালিসভাত বেই জলগভ্জেশ্বয়ে ৮

শ্বেত অপণ।(জ্ঞা-মূল গ্রেত্র স্থিত প্রেণ ক্রিয়া প্রাত্তকালে সে.ন ক্রিলেও নিয়মিত আহার ক্রিলে গ্লগ্রেণ শাস্তি হয়।

ত্র্যাবর্ত্তরসে(নাস্তাং গলসংগ্রেশ হন । তেওঁটাক্রতের নামং মাতি থলগাও না সংশ্যা ।

গ্লগণ্ডে, ভৃত্ত্ও ও রহনের পুণ্টিশ দিলে, উহা ফাটিয়া যার এবং পূয রক্তানগত হওয়ায়, উহার শাস্তি হইয়া থাকে।

হিন্তালোবুক্তে পাকে সপ্তাহমূপতা গলম। মন্তাং বা গলগভন্নং পানাৎ পাধান্তিসে(বন । প্র ভিত্রাট ফলের মধ্যে জল কিংবা মন্ত ৭ দিন রাখিবে। পরে সেই জ্লুবা মন্ত পান করিকা স্থপথা মেবন কবিলে গ্লগণ্ড রোগ প্রশ্যিত হক।

কট্টা সচুৰ্বান্ত্ৰীনে না চলচ ওমগ্ৰয়ানি সংবাহৰণ আত্হালি (৩০চাবিৰ চিকাসুস্কল

কান্সল চূর্ব গলের অন্তভ্তাগে ঘষণ কবিলে অথবা খ্রেড অপনাজিভার মূল স্থাতের সহিত সেবন কবিলে গলগণ্ড উপনামত হয়।

মাজনাম নাম মাশ্র কৈ ক্রীকেলাও স্থাপ্ত হাংসাম্। অনুস্থান কৰে কিঞালস্থান স্থাপ্ত ভাগ

মছিবীত মুক্তে , ইটম্বা (মাধ্রা) এক মাস ভিন্টাল ট্রাট প্রেট উত্তা অন্তর্গুল দ্বা কবিত, মধুর ব্রিভ অব্রেখন করিবে গ্রাট মুগু প্রশ্নিক হল।

তক্ত । তা প্ৰকাশ জিলা বিশ্ব উত্ত ।

সেতা স্থু, কাৰ তাৰ বলাই (বা স্কৃতি) শ্ৰী ।
বা স্কৃতিৰ বাতি ক্তা কাৰ্য্য কৰি ।
বাবে বাস্থ্য যে বাহু স্বাহ্য স্কৃতিৰ ।
বাহু স্কৃতিৰ ভাগ কাৰ্য বাহু স্বাহ্য স্কৃতিৰ ।
বাহু স্কৃতিৰ ভাগ কাৰ্য বাহু স্বাহ্য স্কৃতিৰ ।

ছিহ্বাং প্রান্ত প্রত্যান্ত ১২টি শিরা আছে, ভ্রাব্যাকর কর্মান্ত কর্মান্ত বছিল গ্রাহ্বা নাম জ্যান্ত ক্ষণা মানাক শ্রেছালা বিক বিশ্বা নাল নেগত হইলে অভ্যানে ওচ্চান্ত ক্ষণা ক্রান্ত বি

বর্ণপুরাবহি মালমবং এ নাজেওগা (২) এপয়া গোল «ছিন্দা ল গ্রাণা (১) (৪) (১)

কংৰলে বৃহস্থ সাধ্বৰ নিকটবৰ্তী যে তটা শিলা আছে, প্ৰচ্ন উপস্থাপৰি **বিদ্ধ** কবিবোগ্যসংখ্যান্ত হল।

ভূপারেলম্।

ा अध्यक्तिसम्भागान्तः वर्षः हित्ता भूक्ष्यूरिकः । च सुकुष्याभारतस्य चर्चूरान्यस्य चरा,ठ.स्थः। च तत्राचना भागप्यस्य विनाद्यस्य ॥ কটুতৈল /৪ সের। পাকা তিতলাউয়ের রস ১৬ সের। কন্ধার্থ—বিভৃত্ব, যবক্ষার, সৈন্ধব, বচ, রাম্বা, চিতামূল, ত্রিকটু ও হিন্তু মিলিত /১ সের। ইহার নম্ম গ্রহণ ক্রিলে চিরোথ গলগণ্ডও নিবারিত হয়।

অমৃতাদ্যং তৈলম্।

তৈলং পিৰেচ্চামূতৰ্লিনন্ত-হংসাহ্বধাৰুক্ষকপিপ্পলীভিঃ। সিদ্ধং বলাভ্যাঞ্চ সদেবদাক্ষ (২তঃয় নিতাং গলগওৱোগী॥

তিলতৈল /৪ সের। ককার্থ—গুলঞ্চ, নিমছাল, হংসপনী, কুড়্চি ছাল, পিপুল, বেড়েলা, খেত বেড়েলা ও দেবদারু মিলিত /১ সের। ইহাদের ক্ষ ও কাথ সহ যথাবিধি পাক করিয়া, এই তৈল পান করিলে গলগও রোগের দম্ম হয়।

व्यथ गध्याला-लक्ष्यम् ।

ককপুকে বি,মলক প্রমাণ্ডা ককা মেমস্তাগেলা ক্ষণ্ডের মেদ্যকফ (ভাগিং (১১মন্দ্রমণ্ডাক মান্ত্রমণ্ডালা বহাতে ১৫৪৮)

তৃষ্ট মেদঃ ও কফছার: কক্ষ (বগৰ), স্বন্ধ, মন্ত্রা (ত্রীবাদেশত হল শিরাবয়), গল ও বজ্জনদেশে শেয়াকুল, কুল অথবা আমলকীর ত্রায় আকার বিশিষ্ট বহুসাপাক যে গও উংশ্বন্ধ হয়, ভাহাকে গওমাল। কহে। এই গওমালা দীঘকালাতে সামাত্রমণ পাকে।

অথ গগুমালা-চিকিৎসা।

কাঞ্নারস্কারে বান্ধা প্রথাচুদ্রন সংস্কৃত। মাক্ষিকাচ্য সক্ত পৌত, কান্ধো বঞ্গন্লর । গওম্বাং হয়ত্যাও চিবকাগান্তব কিনাস্॥

শু ঠচুর্ণের সহিত কাঞ্চন ছালের কাথ অথবা মধুর সহিত ব্রুণমূলের কাথ পান করিলে দীর্ঘকালোৎপন্ন গণ্ডমালা আশু বিনষ্ট হয়।

পিষ্ট্র। জোঠাখুনা পেয়াং কাঞ্নার হচঃ ওভাং। বিখতেষজন্যুকা গ্ডনালাংশরাং প্রাণা কাঞ্চনছাল তণ্ডুলোদকে পেষণ করিয়া, তাহাতে ভাঠ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে গওমালা নিবারিত হয়।

কাঞ্নারগুগ্গলুঃ।

কাকনারস্য গৃহীয়াৎ ২চং পঞ্চপন্যোত্মিন্থ।
নাগরস্য কণারাক্ত মারিচ্যা পলং পলম্ ॥
পথ্যবিভাইধারাণাং পলমন্ধং গুলক পূথব্।
বঙ্গণায়াক্তমকল পত্তকলা ২চাং পূল্য।
টকং টকং মন্দেশ্য স্ববংশেকত চুল্তেই ।
বাবচ্চ্ছলীন্দং সকং হাব,নেবাই গুলগ্রহ।
বাবচ্ছলীন্দং সকং হাব,নেবাই গুলগ্রহ।
মন্ত্রট সক্ষেত্রক গালিও কুলা নিধারতেই।
১টিকা পানিকান চুহা প্রভাত প্রচালয়ন্ত্রন ।
বিলগ্রহ প্রান্থ নিকান চালান্য ।
ব্যান্ত্রণ নাল্যাক্লিন্তালান্য ভালন্য ন্
ক্রিকাক্তিয়ালাব্য বাব্য ক্রিকাক্তিয়ালাব্য ন
ক্রিকাক্তিয়ালাব্য বাব্য ক্রিকাক্তিয়ালাব্য ন
ক্রিকাক্তিয়ালাব্য বাব্য ক্রিকাক্তিয়ালাব্য ন
ক্রিকাক্তিয়ালাব্য বাব্য ক্রিকাক্তিয়ালাব্য ন

কাঞ্চাল ও পল, তাঠ, পিপুল ও মা-চ প্রত্যেক সপল, হাতকা, বহুড়ে ও আন লকী প্রত্যেক অন্ধ পল, বরণছাল ছুই তেলি, তেজপাল, এলাইচ ও দাকাচিনি প্রত্যেক অন্ধ তোলা, এই সকল দ্রব্য একনে চুর্ণ করিবে : এই চুর্ণের পরিমাণ বত, তত পরিমাণে ওগং গুলু মিশ্রিত করিবে : প্রদার কুটিত করিবে : এই উষ্ধ লাল তোলা পরিমাণে প্রত্যেক্ষার কুটিত করিবে : কেই উষ্ধ লাল তোলা পরিমাণে প্রত্যেক্ষার ক্রিত জ্বানি ক্রিয়া প্রদার করিবে : অনুধান করিবেল, ক্রিক রাল্যেও, অপ্রতি বর্ণ হর্ণ হর্ণ করিবলার ক্রিয়া প্রদার ক্রিয়ার ক্রিয়া ক্রিয়ার ক্রিয়ার

্রজন বা সিরিক্র নিন্দ্রণ স্থান্ত্রাপ্ত । সংস্কৃতি বার্থ সংগ্রেক্তিক কেপিত্রাপুর্য

রাগালশশার জিগার খেত অপরাজিশ মূল গোমূতে পেষণ কবিয়া সেবন কাজা দীঘকালভাত মণ্ডনালাও প্রশানত হয়।

ছুছুন্দর।-তৈলগ্।

ছুছুপন্যা বিশেষক ক্ষণাৎ তেলবরং প্রমু। অভ্যঙ্গারাশয়েৎ ক্ষিপ্রং গ্রমালাং কুদারণাম্য

ক্ত্রার্থ—ছুটার মাংস তৈল /৪ সের। /১ দের, পাক।র্থজন ১৬ সের। (চক্রনতের মতে ছুঁটার কক্ষ ও কাথ ধারাই তেল পাচা)। এই তৈল মাদ্দন কবিলে স্দাকণ গওমালা নিবারিত হয়!

শাখোটক তৈলম।

গুওম।লাপুহং হৈলং সিদ্ধং শ খোটা ইয় ।

<ে sড়ার ছালেব ক.৭ ও কক্ষ ছারা গিক वादशा क तरन अध्यान ৈত্ৰ, নস্তাদিতে নিবারিত ২গ।

शिक्तुताभिरेटनग्।

एवम्बन्धनम् कन्नः हुन्। (तथः,bद्रारः) কেশবাজনান ১৮০২ কৰৰ ত্ৰুলাট্ৰিকী ট পাক এয়ে বিভিন্ন । মনুবনৰ প্ৰায়েখে। अंबरेडक विद्यान ग्रह्मां अंग्रहा देश का स्थित

কটুতিল ৮৪ সের, কেন্দ্রবিয়ার রূপ ১৬ সের। কল্পি-চাকুলার্ন / ॰ সের। মৃত্ অগ্নিতে পাক করিয়া পাকশেষে দিশ্র অদ্ধ দের প্রক্ষেপ দিয়া নাম।ইবে। ইহা মন্ধনে গুঞ্জালা নিবারিত ইয় ৷

दिक्सामिरेडसम् ।

विद्यादिक्षण्यम् अकृति वर्षः वर्षः न वन्त्रम् । ্জন বিস্থাধন বংগা কণ্ডা বিস্তৃতি তি ক্ৰম্ ्र नुक्तिकः।)

তেলাকুচার মূল ও করবীমূল ইহাদের কল এবং চতুগুণ নি।সন্দার রস সহ পাচিত তৈবেব নশু গ্রং॰ করিলে গণ্ডল্লা নিবাবিত হয়।

নিও ও।তৈলণ্।

নিও ভাষরদে বাম লাঙ্গলালকবি হন্। ८७तर नम्। श्रीच्रुडा ७ जन्यमं जार अभीका भू । ভিলভেল /৪ (সুর। নিসিন্ধার রস ১৬ সের। ক্লার্থ—ঈশলাপলার মূল /> সের। এই তেলের নশু ধারা গণ্ডনালা নই ২য়।

অথ।পিচা-লকণম।

ে প্রন্থয়া কেচিদ্র'প্রপ্রাকাঃ প্রবৃত্তি নশ্ব(ম ভব্নত চালে) : क विशिष्ट्रवन्तर हिरामी प्रशाहित াসবাপচ'ডি প্রবদ্ধি ডছা জ ঃ ৷ সংখ্যঃ স্মুৰত পাৰস্থা হযুত্ৰ-ক সেজবৃচ্ছ দিয়ে লা স্বয়াধ্য ক

গুড়ুগালা-ই গুড়ুসকল প্যাববাক্ত দীঘকাৰ ব্যাপিয়: এলগ ভাবাপন হয় যে, ভাষাদের মধ্যে কতকওলি পাকিয়া আবয়ক্ত. কতকভুলি অপ্র ও অপ্র উদ্বত হটতে পাকে, ভাষা হটলে **উহাকে** অপচা বেল বলের আভ্রিত করা যায়। নিক্পএক অপ্র সংক্র কিম গান্স, পাশ্বশূল, মাস, হার ও বাম এল স্বাহা উপ**দ্র সূক্ত** इंडर के फिल्हें र इंडर्स संस्किती

অধাপচা-চিবিৎসা।

ब्रह्महर्म, १९७ वर्ग १८ वर्ग विधानय । অবংবি জালুহ কুলা হৈ 45 ল'শ ন্ৰুৱ মুডিব্রেবে বস ২ পল পান করিলে অপ্রা, র ভুমালা ও ল ১০ , মুগ বিমষ্ট হয় । (* B.)。 (* 17 年) 《 (司符)역下(制) C+ 1 80 1800 1 -- + 1 + + 580 18 1

 ভাৰতাৰ প্ৰকল্প কৰ্মকৈটে পেৰিছ এবং অভিনেত সংস্কৃত্য ক'ব্যা প্র**লেপ দিলে** का पाठी विभारे केया !

大线线线 化丙烯苯酚硫甲酚 部门 १ - १ १० १ विस्ता है। १ जिल्लाम्बर्ध ্পত সন্ধ ও বিষপত্র, তেলার অংখতে ও ৬ ডংগুলে পেৰিত করিয়া

সহিত

शहर के हिटाल अ कार है। दिनाने देश । বৰৰ প্ৰিক ১০ শভূবে নাই যে জিচাৰ্য र कुन् राष्ट्री के वा कर्मा है। बार्स हैं। बार्स हैं।

ব্নকাপাসের মূল ১ ভাগ ও ত**ুল ভিন.ভাগ** একজ পেষ্ট কৈবিয়া তাহার পিষ্টক প্রস্তুত কারবে। এই পিঠক ভক্ষণে অপচী নষ্ট হয়।

অৰথকাঠং নিচুলং গৰাং দন্তক দাহয়েং। বরাহ্যজ্জসংপুক্তং ভম্ম হন্তাপচীত্রণান্॥

অশ্বথকাঠ, হিন্ধল ও গোদস্ভ ভত্ম করিয়া, বরাহের মজ্জার সহিত মিশ্রিত করিয়া প্রলেপ দিলে অপচী ও এণ নষ্ট হয়।

গুঞ্জাদ্যং তৈলম্।

শুঞ্জাইরারিষ্ঠানার্ক-সর্বপৈন্ব তিসাধিতম্। তৈলস্ক দশধা পশ্চাৎ কণালবণপঞ্চক্। মরিটেশ্চ্বিতিযুক্তিং সর্বংবস্থাগতং জয়েও। অন্তাকাদপ্রাং নাডীং বন্ধীকার্গোহর্বদ্রণান।।

কুঁচমূল, করবীর মূল, বিদ্নত্ক, সাকদ্দেব আঠা ও সর্বপ. এই সমুদার কল্প ও তৈলের চতুগুল গোমূত্র দিয়া ক্রমশঃ ১০ বার পাচিত তৈলে, পিপুল, পঞ্চলবণ ও মরিচ চুর্ণ প্রক্রেশ দিরা, তদ্বারা মদন করিলে সপচী ও নাড়ী-ত্রণ প্রভৃতি নানাবিধ ব্যাধি বিনষ্ট হয়।

চন্দনাদিতৈলম্।

চন্দনং সাভয়া লাকা বচা কটুক-রোহিণা। এতত্তিলং শৃতং পীড়া সমূলানপটাং ভরেও।

ভিনতৈল /৪ সের। কন্ধার্থ—রক্তচন্দন. হরীতকী, লাক্ষা, বচ ও কট্কী নিলিত .'১ সের। পাকার্থ জল ১৬ সের। যথানিয়নে পাক করিং।, এই চন্দনাদি ভৈল পান করিলে অপচী রোগ সমূলে বিনষ্ট হয়।

(गुर्धामिटेंडनम्।

ব্যোষং বিভূক্তং মধুকং দৈলবং দেবদাক চ। ভৈলমেভিঃ শৃতং নদ্য'২ সকুজ্ঞামপটীং হুরেং ।

তিল তৈল /৪ সের। কল্পার্থ—তিকটু, বিজ্ল, ষ্টেমধু, সৈন্ধব ও দেবদার মিলিত /১ সের। পাকার্থ জল ১৬ সের। এই তৈলের মশুলইলে কট্টসাধ্য অপচীও প্রশমিত হয়।

অথ গ্রন্থি লক্ষণম্।

বাশার্মা মাংসমস্কু প্রহুটঃ সংস্থা মেলক ভথা শিরাশ্চ। বৃত্তোলতং বিজ্ঞানক শেখং কুৰবস্তালে প্রস্থানিত প্রান্তর।

বাতাদি দোষ সকল, দক্ত মাংস মেদঃ ও শিব্ধ সমূহকে দ্বিদ কাবৰ বৰ্জুলাকার উন্নত যে গ্রন্থিক শোপ উৎপাদন করে, তাহাকে গ্রন্থিকাণ করে।

অথ গ্রন্থি চিকিৎসা।

জ্ঞান্ত্রপাত ভাগত ব্লাইনিয়াম। প্রাক্তগাউ যাকে বার্বা ক্রুল্ডান্ডার ।

প্রতির সপরাবস্তার শোগের চিকিৎস করিব। গা,করা ইটিলে, উহা উৎপাটিত করিয়া ক্ষতনিবারক উন্মাধার উহার জেকি ও রোপ্য করিবে।

> গপ্তামেগ্রন্থান । মুক্তা চলাল কৈব । একা ক্ষায়েল এতানু গতিবাব্যত্তু সকলেক স্থান , যাথ লেকেন্দ্র

অন্তর্ভ ও অপক প্রতি স্কল, শ্র দারা উদ্ধাত কবিয়া দ্র হান স্থান্ধ দারা দ্র করিবে। প্রতি স্কর, লোন করিয়া ক্ষার প্রয়োগ্যান ভাষা প্রসাধে করা কর্তব্যা

> জ্ভিটে ব ন্যালি (এই.১৮) নিসাশ, ৩২ শুখাই,কংমটেকন । আজাদিবলৈ ইটেন ৮০ছে। এটান চাটেকন 5 মাধ্ কংমের ॥

বে গ্রাহ ঔষৰ ধাৰা নিবারিত হইবে না, তাহাকে শ্র ধারা উৎপাটন করিবে। পরে জাত্যাদিন্বত ও এণনাশক ঔষৰ ধারা তাহাব্ চিকিৎসা করিবে।

হিংকা মরের্হণায়র চাচ দাগী শ্যোগাক্রিয়া প্রকৃষ্ণপর্কার। গ্রোপিত পিস্তার মহাবার্গনির প্রক্রোহার বাতজ গ্রন্থিরোগে কালিয়াকড়া, কট্কী, গুলঞ্চ, ধামুনহাটী, গ্রেনা, বিক্ত অপুক্র, শক্তিমা ও তালমূলী, এই সমুদায় দ্বব গোপিতে প্রেষণ করিয়া প্রলেপ দিবে।

জলাস্মকাঃ পিত্তকতে ভিতান্ত লাকৈচনকাভাণ পরিষেচনক। কাকোলিবর্গ**ন্ত ভূ**ণ তলানি পিনে২ কমায়ণি সংক্রাণি॥

পৈত্তিক। গ্রাহ্রেগে কলোকা প্রয়োগ, জলমিপ্রিত জ্যার প্রিণেচন ও শক্রা সংযুক্ত কাকোলীবর্গের শাওল কাপ বিশেষ উপকারী। দাকারেসন্মের্বসন করি চ্যা পিরেম্বাপি গ্রাহকানাম। মধুক্তর্মান্য বসামণ রগাই। প্রায়েন্ত নব্তরেক্কেচন

প্রতিরোগে দ্রাঞ্চার বাহকু রমের সহিত হলীতকী চুর্ব সেবন কাবেলে, কিংবা মেলিকুল, জাল, জাজুন চুফা ও বেত্র ইহালের বক্ষল প্রথম করিব। প্রথম বিজ্ঞান হয়।
সতের দেশফা হয় কুপ্রণা প্রাভা ভিন্ন ক্রেমন্থিতে চ।
স্থান চুহি দুন্ন নার ব্যাক্র ক্রেম্বাত্তে চ।

ক্ষেত্রক প্রতিষ্ঠান প্রান্তপুলিক জিয়া।
(ব্যন বিবেচন ও নক্তেলগুলি জিয়া।)
দ্বান দেশ নিলোৱত কাব্য প্রতিত বেলস্পান কবিবে। তেলিজে ক্ষেত্র, বংশ এবং
চোট নোড়াব হাব তাল্য বলাচ্যাট্রিব।
বিকল্প ক্ষেত্রতাল কবিবলাগুলিক।
দ্বালপ্রেন্স্পর্ভিত্রতাল বিবল্প বিবল্প।
দ্বালপ্রেন্স্পর্ভিত্রতাল বিবল্প।

বের্চি, সোন্দাল, বচমূল, কালিয়াকড়। ও ইন্দুদীমূলের ছাল, অথবা তিংলাট, বানুনহাটী, করস্ত্র, কালিয়াকড়। ও সদন্দল এই সকল দ্ব্যু উত্তমরূপে পেষণ ক্রিয়া গ্রিছতে এলেপ দিবে।

দত (চত্ত্ৰকৃষ্ণকৃষ্ণকৃষ্ণকৃষ্ণ জড়। ভন্নতেক ছিকাশাশ্য লেপো ভিন্দাং জ্লাম্পি॥

দণ্ঠী, চিতামূলের ছাল, সিজের আঠা, আকলের আঠা, ওড়ে, ভেলার বীজ ও হিরাকস্ এই সকল দ্রব্য একও চূর্ণ করিয়া প্রলেপ দিলে গ্রাছি নিশ্চর বিদার্গ হয়।

স্ক্রিকামূলকক্ষারঃ শ্রাচূর্ণনম্বিতঃ। এলেপো বিভিত্তাক্ষো হাও গ্রন্থার্গুদাদিকান্॥ সাচিক্ষার, মূলক ভন্ন ও শৃঙ্কাচুর্ণ এই সকল জবোর প্রলেপ দিলে এতি ও অর্থ্য বিনট হয়।

অথার্দ-লকণম্।

গা এপ্রদেশে ক তিনেব দেখি।
সংমূদ্রিত বা মংখনতক্ প্রদূষ্য ।
বৃতং স্থিবং মন্দর্শজং মহাতমন্দ্রন্থ চিরবন্ধাপাক্ষ ॥
কাকণ্ড মংখনো ক্রয়নভাগাধ্য
ভ্রম্বিদ্রন ১ স্থানিধা বদ্যি ॥

বাতা দ দোৰ সকল কুপিত হইয়া রক্ত ও মাংসকে দূৰত করিয়া শ্রীবের কোন স্থানে গোলাকার, অচন, অল্লবেদনায়ক, দ্বাহ-প্রবিষ্ট, স্বত্রাং অনল্পুল, বৃহলাকার ধে মাংসোদ্ধ্র উৎপাদন কবে, তাহাকেই অর্কুদ (আব্) বলে। অর্দুদ্দীর্ঘকালে পরিবৃদ্ধিত হয়, ইহা প্রায় পাকে না।

অথাৰ্ক্ৰুদ-চিকিৎসা।

এজনকু দুৰ্গনাঞ্চ অভোহবিশে মা প্ৰদেশতে জাকু ডিদোহদুৰ্যান। ভঙ্গিক কৈবলে দুৰ্ভিবসকৰু দুৰ্গনি বিধানবিদ্যালিকিৎসিতেন।।

গ্রন্থি ও মর্কাদ এই উভয়রোগেণ উৎপত্তির স্থান, হেডু, আক্ততি, দোব ও দ্যা সমুদায়ই একরূপ। অভএব গ্রন্থিচিকিৎসার নিয়মামুদারে অর্কাদের চিকিৎসা করিবে।

> বাতাক', (ল. চাপ্যপনাহন'নি কৈলৈ মাং সেরখ বেশবারৈঃ। কেল বিদ্যাৎ কুশবস্ত নাড়া পুজেন কজং কছ. শা হরেফ।।

বাতজ অর্কুদ রোগে সিগ্ধ মাংস অথবা বেশবার দ্বারা প্রবেপ, নাড়ীস্বেদপ্রদান এবং শুক্লদারা বারংবার রক্তমোক্ষণ করা কর্ত্তবা। বেদোপনাহা মনবন্ধ পথাঃ পিতার্ক্টের কায়বিজ্ঞেনক।
মৃত্তবাদ, কাকোলাটাদি নৃত্যবাক্ত প্রবেপ
এবং বিরেচক ঔষধ, প্রতিক অর্ক্ট্রন বোগে
হিতকর।

বিষ্ণা চেড্ধরণাকগোঞা-পত্রেন্ত্র শং ক্ষোদ্ধ্যে প্রালক্ষেৎ। রক্ষীকৃতিঃ সঞ্জরস্থিঃকু-পত্তকলোপ্রাক্ষিকাংহা ।

অর্কাদ্রান কাকডুমুর সেগুণ বা গোজিয়া প্রস্থারা ঘর্ষণ করিয়া পুনা, প্রিয়ন্থ, রঞ্চন্দন, লোদ, রসাঞ্জন ও ঘটিমধু এই সকল জবা উত্ম রূপে পিষ্ট এবং মধুর স্থিত মিন্তত ক্ষিয়া ভদ্মারা ও লেপ দিলে উপকার হয়।

লেপনং শ্রায়র্থন সহ মূলকভ্রমন। কন্দাক্ষ্পুলেভ কুন্যাদ প্রস্থাদিস্থ বিশেষত ॥ সৈত্রিক অবর্ষুদ ও গ্রান্থ বোগে শৃত্যামূর্ণ ও

মূলাভন্ম একতা কার্যা প্রলেপ দিবে।

মূলকন্ত কৃতঃ কাল্যা হালামান্তবৈ ১।
শুমুতুর্বি, সংফুলো লেগ বিক্রাংক্তাগেং ।
মূলা ও ইবিদ্যার আন্তব্যবি সহিত

মিশাইরা প্রেলেপ দিলে অক্ষুদ বিনষ্ট হয়। শিগুড়ককটোবিজিং বকোলং প্রকাশবন তক্ষেণ্যবিপ্ত পিষ্টা বিপেদস্থান হয়।

শ্ভিনাবীজ, মূলার বীজ, সম্প, তুলনী, ধব ও করবার মূল তক্র সহ বাটিরা প্রশেপ দিলে অর্কানের শান্ত হয়।

গন্ধাদিলে শঃ।

পক্শিলাবিয়ে বিষয় বিষয় ক্ষান্ত ক্যান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্ষান্ত ক্য

বটছমধ্ররামকলিন্তং বদ্ধং বটসা পরেন।
অধ্যন্তি সপ্তরাতাশ্বংলপ্যুপশাতিমর্কান্তং গছেং।
বটের আঠা, কুড় ও পাংক্তলংগ লেপন
ক্রিয়া বটপত্র ঘারা বাধিয়া রাখিলে ৭ রাতি
স্বিধ্যে অধ্যন্তি ও অর্কাদ বিনষ্ট হয়।

উপোদিকারসাভাক্তাত্তংপত্রপরিবেটিভাঃ। প্রণাশভাচিরার গাং পিড়কার্ক্, দ্রাভাষ্যঃ॥ (পিড়কার্কা, দ্রাভয় ইতি পিড়কার্দ্প্রকারা ইত্যর্থ---ইতি চক্রঃ)।

পিড়কা ও আর্দ্ন প্রভৃতিতে পূইপাতাব রস লেপন করিয়া পুইপোতাব ছারা বাবিষ্ণ রা**ংপে,উহারা**,বনঃ ২য়।

সুহাদিসেকঃ।

ञ्च होत्राकी, तका-प्रयामा नामाप्ट परत्तु मानि । जनसम्बद्धाः स्टब्स २,२१ कन ७ स्थान । ॥

তপ্ত সিজু কাও ধালা কিংবা ল্বণ্ছার, অথবা সীসা ভাগা কেন প্রদান কারলে জনস্দ বিন্ত হয়।

> উপোদিকা কল্পকত ক্তিয়া তথাপক্তো লক্ষক ত্তুব। দুৱে হক্ষক্ষাক্ষক্ষক কেল্ডি দিনে দুনে বাটেবু মুক্তাক্ষু॥

পুঁহপাতা, কাজে ও খোলের সাহত বাটিয় তাহাতে কিঞেব ক্ষরত্ লব্ধ ক্ষরতার প্রাত্তিক ক্ষরতার তহার প্রেক্তির। তাহাতে মধ্যে আনুদাবনত হ্রের।

জেলোহসর্দৃষ্টি এ ওাটে । ব এলা হুম্পাঙ্চুপ্র ৪, । শর্টকাধিতালৈকগ্রাব দেলাগ্রাক্ষণাগ্রেবাশ ॥

কলার নোচাভার, তুম ও শালচ্গ ইহানের প্রালেপ অথবা গন্ধক, যুক্তার, বিভূপ ও ৩৮, ইহানের চুণ কুক্লাসের : তে আজি কাব্য: প্রালেপ দিলে অধ্যান্তিই হয়।

र्वतिकार्ताक्षण उभ-शृहसूर मनः निकाः । मन् भगोरम् किरणाश्यर स्थानश्यन् पृह्यः भवः । এ अस्मर क्रियोर क्रियानस्मारः मकत्।क्रुष्तः ॥

হত্মিন্তা, লোণ, গুভাচন্দন, ঝুল ও মনঃশিলা, এই সকল জবা সমভাগে লইয়া উত্তমধ্যপে চূণ ও মধুর সাহত মিলিত কারয়া তাহার প্রান্তে শেলোজাত অর্পুদ নই হয়। ক্রিরাক্ট্রেও উক্তর্মপাচাকৎসা কারবে। নিশ্বাবিশিগাককুলখককৈম গংসৈঃ প্রগাকৈ দিবদিকৈ ।
লেপং বিদ্যাহ ক্রিমন্ত্রে মুখাত্র
মুখানুপত্যাশু ও মন্ধিক বা ॥
অভ্যাবশিষ্টং ক্রিমিন্তিঃ প্রজম্মং
লিখেৎ ভত্যেহ গ্রিং বিদ্ধীত প্রকাং ।
যদলমূলং ভ্রপ্তামুসীসৈঃ
সংবেষ্ট্র প্রেরখন মুইদর্বা ॥
ক্ষার্থিন স্থানুবাভারয়েচ্চ
মুহমুন্তিঃ প্রান্থনেক্রম্বারঃ
মানুক্তরা (চাপগতানি পাকং
গাব ক্রেণ্ডাব্রুক্ ম্থাক্রম্ ॥

শিম, খইল, কুল, খকলায় ও অধিক পরিমিত মাংস এই সকল ক্রা দির সহিত রাটিয়া
অর্ক দে প্রলেপ দিবে। ঐ প্রলেপ অধিক ক্ষণ
রাখিবে; বখন দেখিবে ইহাতে মক্ষিকা বা
ক্রিমি সকল সন্তান প্রসব করিতেছে এবং
অর্ক দের অধিকাংশ ভক্ষণ করিয়াছে, তখন
অবশিষ্ট অংশ ছেদন করিয়া অগ্নি দারা দগ্ধ
করিবে। অল্লাবশিষ্ট অংশ বঙ্গ, সীসাং তামা,
অথবা লৌহ নিম্মিত পত্র ছারা বেইন করিয়া
কারী, অগ্নি ও শন্ত প্রস্থাগ হারা নিম্পেশ্ত
করিবে। কিন্তু শন্তাগি প্রয়োগ কালে বারংবার
রোগির বলের প্রতি দৃষ্টি রাখিবে। অর্ক্রদ
বিদ্বন্ধং পাকিয়া উঠে, তাহা হইলে পাকের
নিয়মান্ত্রসারে যথোক্ত চিকিৎসা করিবে।

রে দ্রিসঃ।

শুদ্ধসূতং সমং গদ্ধং মন্দ্যং যামচকুন্তরম্। নাগবলীদলযুতং মেখনাদপুনর্বা। গোম্অপিপ্ললীযুক্তং মন্দ্যং ক্লদ্ধা পুটেলপু। লিহেৎ ক্ষেক্তি রসো রৌদ্রো গুঞ্জামাত্রোহর্ক্তুদং ক্লমেৎ।

সমপরিমিত পারদ ও গন্ধক ৪ প্রহর কাল মর্দন করিবে। পরে তাহার সহিত পানপত্র, তথুলীয় (কাঁটানটে) শাক, প্নর্নবা, গোমৃত্র ও পিপ্লচুর্ণমিশ্রিত করিয়া প্নরার উত্তমরূপে মর্দ্দন করিবে। তৎপরে উহা লঘু পটে পাক করিয়া ১ রতি পরিমাণে মধুর সহিত লেহন করিবে, তাহাতে অর্কুদ বিনষ্ট হইবে।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

गलगर्धा मिर्तारण अथानि ।

ছিলিবিরেচনং নভং স্থেদো ধৃনঃ শিরাবাধং।
নাথিকর কারসোগং প্রলেপো লগ্যনানি চ ।
পুরাণগ্রতপানক জার্পলোভ্তশালয়ং।
যবা মৃত্যাং প্রেটালক রক্তশিপ্র ক্রিরকম্ ॥
শালিকশাকং বেজাগ্রং ক্রাণি চ কট্নি চ।
দীপনানি চ সর্বাণি গুগগুলুক্ত শিলাফতু॥
বিশেষ দ্ গলগতে তু চিছন্সাজ্জিলাতের শিরাং।
কুষাগ্রা মণিবজে দ্বং বেখান্তিপ্রোহকুলান্তরাং।

বমন, বিবেচন, নহা, স্বেদ, ধুম, শিরা-বেধ, অগ্লিকন্ম, ক্ষারপ্রয়োগ, প্রলেপন, উপ-বাদ, পুরাতন হৃতপান, পুরাতন রক্তশালি, যব, মৃগ, পটোল, রক্তশাজনা, করলা, শালিঞ্চ-শাক, বেতাগ্র, ক্রক্ষবা, কটুদ্রব্য, অগ্লিনীপক সমস্ত দ্রবা, গুগগুল ও শিলাজতু, এই গুলি গণ্ডমালা, গলগণ্ড, অপচী, গ্রন্থি ও অর্ব্যুদ-রোগে হিতকর। বিশেষতঃ গলগণ্ডরোগে জিহ্বার নিমদেশস্থ শিরাচ্ছেদন করিয়া মণি বন্দের উদ্ধাতাণে এক এক অঙ্গুলি অস্তরে অদ্ধচন্দ্রাকৃতি তিনটি রেখাবং ছেদন করিবে।

গলগণ্ডগণ্ডমালাপচীপ্রস্থার্ক,দাতুরে। বধাদোবং যথাবস্থং প্রধানেতং প্রকীভিতম্ ॥

গলগণ্ড, গণ্ডমালা, অপচী, গ্রন্থি এবং অর্ন্নুদ্রোগাক্রান্ত ব্যক্তিদিগকে অবস্থামুদারে দোষাদি বিবেচনাপূর্দ্মক এই সকল পথ্য প্রয়োগ করিবে।

গলগণ্ডাদিরোগেহপথ্যান।

ক্ষীরেকুবিকৃতীঃ সর্কা মাংসঞ্চানুপসম্ভবন্। পিষ্টালময়ং মধুরং গুর্কভিযান্দকারি চ।

গলগওগওমালাপচীপ্রস্থাবর্দাময়ান। 6িকিৎসরগদক্ষারো বশোহগী প'রবর্জয়েং । সর্ব্ব প্রকার তথ্যবিক্ততি (ক্ষীর, দধি, ছানা প্রভৃতি) ও ইক্ষ্বিকৃতি (চিনি প্রভৃতি),

অমুদ্রব্য, মধুরদ্রব্য, গুরুদ্রব্য ও অভিযানী দ্রব্য, এই গুলি গলগণ্ড, গওমালা, অপচী, গ্রন্থি ও অর্ম,দ রোগাক্রান্ত ব্যক্তিগণকে অনপদেশজ মাংস, পিষ্টান্ন (পিটে প্রভৃতি । যশোহভিলাষী বৈদ্য পরিত্যাগ করাইবেন।

ইত্যায়র্কেদ-সংগ্রহে গলগণ্ডাদিরোগাধিকার:।

অথ শ্লাপদরোগাধিকারঃ।

वाश हो। शाम-निमानग।

यः मब्दता गडकगढना जनातिः (बार्या ननार श्रीभगडः करम् , তৎ প্রীপদং সাংথ করকর্নানত্র (नाट) हेनामायाल (क्छिन्। वा বা ভল্জং কুল-কুক্ত্মক প্রাটিতং ভীক্রবেদন্য : অনিমিত্রকাং ৩মা বহুপো জর এব চা পৈতৃত্বং পাত্সকাশং দাহজ্বয় হং স্বত। লৈখিকং সিধ্বণ্য বেতং পাত ওক 'প্রম।

নীপদরোগ উংপন্ন হইবার পূর্দে প্রথমে জ্বের সহিত বক্ষণদেশে অভান্ত বেদন,যুক্ত শোথ হয়, পরে সেই শোথ ক্রমে ক্রমে পদে উপস্থিত হয়। ইহাকেই শ্লীপদ (গোল) কহে। কেহ কেহ বলেন, হস্ত কর্ণ নেত্র শিঙ্গ নাসিকা ও ওঠেও শ্লীপদ হইয়া থাকে। বাভজ ল্লীপদ কুফাবর্ণ, রুক, শৃতিত ও তীব্রবেদনাগুক্ত হয়। ইহাতে অকস্মাৎ বেদনা ও স্বৰ্ধা জ্ব ২ইয়া থাকে। পিত্তজ্ঞাপদ কোমল, পাতবর্ণ, দাহ ও জর বিশিষ্ট। শ্লেমজ শ্লীপদ কঠিন, চিৰুণ, খেত বা পাওবর্গ ও ভারসূক্ত হয়।

অথ শ্লীপদ-চিকিৎসা।

क्ष्यनात्वभनत्यम-त्त्रहरेन त्रख्यभाकरेगः। थायः सम्बर्धतक्रेकः त्रीभनः ममुभागत्तः ॥

শ্লীপদরোগে উপবাস, আলেপন, স্বেদ. বিরেচন, বত্ত যোগণ এবং শ্লেমহর উষ্ণ ঔষ্ ব্যবস্থা করিবে।

নি প্রিমাবন লেন রাপিকাম্লব্যুলয় । প্রাপার প্রাপদা হ'ন্ত বন্ধনলম্প ভিরম্ন। আকন্দের মূলের ছাল কাজি সহ বাটিখ প্রবেপ দিলে শ্লীপদের শান্তি হয়।

ধুন্তুরাদি-লেপঃ।

ধুপ্ত,রৈরভ্নিভ ভী-বশা ছুশিগ্র,স্থপৈ: । প্রলেপঃ লাপদং হ'ন্ত চিনোখনপি দারুণ্ম ॥

ধুতুরা, এরও, নিদিন্দা, শ্বেতপুনন্ধা, শক্তিনা ও সর্যপ এই সমুদয় একতা বাটিয়: প্রলেপ দিলে ব্লদিন-সঞ্জাত শ্লীপদ প্রশ্নিত হইয়া থাকে।

হিতশ্চালেশনে নিতাং চিত্রকো দেবদার বা। সিলাৰ্শিঞ্কৰো বা প্ৰোক্ষে মূলপেষিতঃ ॥

চিতাৰুল, দেবদাক বা খেত সর্ধপ ও শজিনামূলের ছাল গোমূত্রে বাটিয়াও ঈষত্রক করিয়া এলেপ দিলে উপকার দর্শে। মঞ্চিষ্ঠাং মধুকং রাক্ষাং সহিংশ্রাং সপুনন বাম।

পিষ্ট্ৰাৱনালৈলে পোহয়ং পিত্তশ্লীপদশান্তয়ে ॥ মঞ্জিটা, বৃষ্টিমধু, রামা, কালিয়াকড়া ও পুনর্নবা এই সমুদয় দ্রব্য কাঁজিতে বাটিয়া

প্রলেপ দিলে পৈত্তিক শ্লীপদ উপশমিত হয়।

বেহবেদাপনাহাংশ্চ লীপদেংনিলজে ভিষক্।
কৃষা গুল্কোপরি শিরাং নিধ্যেক্ত ভুতুরসূলে।
বাযুদ্ধনিত শ্লীপদ-রোগো সেহবেদ ও
প্রলেপ প্রদানানস্তর গুল্ফের উপরিভাগে
চারি অঙ্গুলের মধ্যে শিরা বিদ্ধ করিয়া রক্ত মোক্ষণ করিবে।

গুল্ফস্তাধ্য শিরাং বিধোৰ গ্রীপদে পিত্তসন্তনে। পিতত্বীঞ্চ ক্রিয়াং কুনাও পিতাননুদ্বিস্পানৎ ॥

পিত্তজনিত শ্লীপদরোগে গুল্ফের আন্তর্ শিরা বিদ্ধ করিয়া পিতার্ব্ব্রুদের ও পিত-বিসপের ভায় পিত্র চিকিৎদা করিবে।

শিবাং স্থাবিদিভাং বিধোদস্থত প্রেমনীপদে। মধ্যক্তানি বা ভাক্ত-ক্ষায়ালি পিবেয়বঃ ॥

স্থৈতিক শ্লীপনে অস্তের দুখ্যান শিরা বিদ্ধ করিবে এবং মধুসংযুক্ত ভীক্ষ কহার পান করাইবে।

সিদ্ধার্থাদি লেপঃ।

ন (সদ্ধার্থনোভাঞ্জনদেবদার-বিষেষ্টেম্ তিমুটেঃ প্রলিপেৎ। সুন্নবানাগরসক্ষাধাং কক্ষেন্বা কাঞ্জিকমিশ্রিটেন॥

খেতস্যপ, শজিনা, দেবদার ও ভাঠ এই সমূদ্র একত্তে গোমূতে বাটিয়া কিংবা পুনর্নবা ভাঠ ও স্থপ ইহাদের কল্পে কাজি মিশাইয়া প্রালেপ দিলে দ্যাপদ নিবারিত হয়।

পিশুরেক্টক্রমন্তব্যক্তাকশিক। জয়তি সংপ্রায় গাঁতী। লাপদমূহাং নিয়তং বদ্ধা ক্রেণ জ্ঞায়েশ্য ।

পিণ্ডারক (বৈচ) রক্ষের পরগাছার মূল পেষণ করিয়া ম্বতের সহিত দেখন করিলে অথবা স্ত্র ম্বারা জন্তথাতে বাধিলে উৎকট দীপদ রোগ নিবারিত হয়।

আসাধামপি যাত্যপ্তং লীপদং চিরকালজম্। মূলেন সহদেবায়াস্তালমিশ্রেণ লেপনাং॥

বেড়েলার মূল তালমাড়াব রস ঘারা বাটিয়া প্রেলেপ দিলে অসাধ্য ও বছদিন-সমূত নীপদও নিবারিত হয়। সন্তত্তামূলপত্তাণাং কৰং তথেন বারিপা।
সংস্কৃত্ত জানগোপেত্ত সেনিতং প্রাপদং হরেও।
সাতটি তাধ্যপত্তীর কক্ষ সৈন্ধর মিশ্রিত করিয়া উষ্ণ জল সহ সেবন করিলে শ্লীপদ নই হয়।
শাবেণ্টবন্দ্রকাধ্য গোড়াত্রেণ মূত্য নিবেও।

ন্ধীপদানাং বিনাশায় নেদোদোবান্সভয়ে।
গোষ্ত্রের সহিত শাংশাট (শেওড়া)
ভালের কাথ পান কসিবো নাপদও মেদোদোষ নিস্ভ হয়।

রজনীং গুড়সংখুক্তাং গ্রেন্ড্রণ পিনেররঃ। ব্যাধ্যান্ত নাল্ডন্ড হান্দ্র সংগ্রেন্ড্রান্ডর ॥

প্ৰতিন গুড় ও গোনুত্ৰের সহিত হরিজা চূৰ্গ সেবন কারলে সক্ষান্ত ও প্লাপন বিনষ্ট হয়। ব্যাস্থিকলাচন প্ৰধান বহু নোলিকন। সংক্ষাদ্য লাগনে ক্ষাদেৱে থা গ্ৰাপন স্বেহ। গুলনবা, জোলনা ও পিপুল ইহাদের চূৰ্ণ মৰ্দহ স্থেন কাবলে শ্ৰিদ নিব্যাবিত হয়।

নপুণার তেওক অধ্যাত্ত সাধান কর্ম ছিল রয়। স্কার্কটেল ৮৯৭ বাংকাং সোঁ ব্যোক যান পিল: ৩। স্কালকার্কান্ত্র ভালতানে স্বরাজেল।

(গলক্তিল্লের ডিচলম্ তেওল পেণ্ডম্ !)

এরওটিতার হ্রীজকী ভাজিয়া গোমুজের স্হিত সেবন করিবে ৭ দিনের মধ্যে লাপদ রোগ বিন্তু হয়।

শিবেৎ স্থাপতার্থ র প্রভেষ্ণ , এর ওয়ে , পূর্তির রঞ্জনে রম্বর এই পার্থণার্থ , অস্টের প্রকারে : ও রঞ্জন দা, বর্ম ॥

শীপদ বোগে নাটকবলপ্রের রস, স্থপ তেল সংস্কু কার্যা পান করিনে উপকাব হয়। এইক্স স্থপ তেল সহ জীয়প্তার বস পান করিলে লাগিদ বিন্ত হয়।

কা গকেন গিলেচ্চ্য যুগ্ৰহ্ম গ্ৰহণ জন্মজ্য ।
বুল্ধনালক ভূপ কাজি কিংবা গোমুত্ত্ৰের
সহিত সেবন কাললে শ্ৰীপদ বিনষ্ঠ হয়।
ধ গ্ৰহণ হৈনে মাজুলং ক্ষাবা, বিনাধনন্ত্ৰ দাক্ষকাৰ্যনে ধ্যায়েত্ব গ্ৰহণ শ্ৰম্ম ॥

কাজিও কচুতের একএ নিলিত করিয়া পান কবিলে কফ-বাসা শ্মতা, আল্লর দাপ্তি, আমদোবের নাশ ও লাপদ রোগের উপশ্য হয়। গোধাৰতীমূলযুক্তাং থাদেমাবেওরীং নর:।

জয়েৎ শ্লীপদকেনোথং জ্বরং সজ্যো ন সংশয়: ।

(গোধাৰতী গোয়ালিয়া লতা, তমূল্জ একো
ভাগঃ, মাষ্য্য ভাগত্রম্থ । ইতি শিবদাস:।)

গোয়ালিয়া লতার মূল ১ ভাগ ও মাবে-ওরী (মাধকলায়ের পিষ্টক) ৩ ভাগ একত্র করিয়া সেবন করিলে শ্লীপদ জন্ম জ্বর সদ্যো নিব্তু হয়।

त्रोभन्दा द्रामांश्कामा**न् ७**७, हारिखनमःयुटः ।

গুলঞ্চের স্বরস বা কাথ সর্যপতিল সংস্ক্ত করিয়া প্রভাহ সেবন করিলে দীপদের বিশেষ উপকার হয়।

यमगामित्नभः।

মদনক তথা সিক্থং সামুদ্রবরণং তথা। মহিষীনবনীতেন সন্তপ্তে রেপনং 'হতস্। সপ্তাহাৎ ক্ষুটিতৌ পানৌ জায়েতে কম্বোপ্নৌ ॥

ময়নাফল, মোম, সামুদ্রলবণ, এই সকল দ্রব্য মহিষীনবনীতে বাটিয়া দাহস্ত ও দুটিত শ্লীপদে প্রলেপ দিলে সপ্তাহের মধ্যে উহা প্রশমিত হয়।

हो। भारति ।

নিষ্ণ খদিরসারক সধুনা চাইমারকম্। গবাং মৃত্রেণ পিষ্ট্য ডু পিবেৎ প্রীপদ্দশান্তরে ।

নিম্বনুদের ছাল ও খদির সমভাগে মিশ্রিত করিয়া গোমূত্র ও মধুর সহিত ১ তোলা পার-মাণে ভক্ষণ করিলে নীপদরোগের শাস্তি হয়।

क्लामिष्ट्रभ्य ।

কণাবচাদারপুনর্গবানাং চূর্বং স্বিল্পং সম্পূদ্ধদারম্। সংমন্ধ্য চৈত্রভা নিহন্তি বলঃ স্কাঞ্জিকঃ ল্লীপদমুগ্রেগম্॥

পিপুল, বচ, দেবদার, পুননবা, বেল-ছাল প্রত্যেক সমভাগ; সকলের সমান ব্দ-দারক (বীজতাড়ক)। একত চূর্ণ করিবে। ও রতি পরিমাণে কাঞ্জিক সহ সেবন করিলে শ্লীপদ বিনষ্ট হয়।

বৃদ্ধদার কচুর্ণম্।

ত্রিকট্ ত্রিফলা ক্র্ট্টেনাকর বন্ধণগোকুরম্।
অলমুবাং শুড়্টাঞ্চ সমভাগানি চূর্ণরেৎ ।
সর্কেবাং চূর্বমান্তর বৃদ্ধনারস্ত তৎসমম্।
কাঞ্লিকেন চ তৎ প্রেমক্ষমাত্রপ্রমাণতঃ ।
জীর্ণে চাপরিহারং স্যাদ্ ভোজনং সার্কামিকম্।
নাশরেৎ শ্লীপদং স্থোলামানবাতক দাক্ষণম্ ॥
শুলকুষ্ঠানিকহরং বাতপ্রেশ্বস্থারাপহম্ ॥

ত্রিকটু, ত্রিফলা, চই, দারুহরিন্তা, বরুণছাল, গোক্ষ্র, মুণ্ডিরি ও গুলঞ্চ প্রত্যেক
চুর্ণ সমভাগ কিছুক চুর্ণ সর্বাসমান। সমু
দায় একত্র মিশ্রিভ করিয়া কাঞ্জির সহিত ছুই
ভোলা মাত্রাগ্ধ সেব্য (বাবহার ॥ তোলা)।
ইহা সেবন করিলে শ্লীপদ, ছুলভা, আমবাভ,
কুঞ্চ ও গুলু প্রভৃতি নানারোগ নম্ন হয়।
ঔষধ-শ্লীণান্তে যথেচ্ছ ভোজন করি

পিश्रनामाः पूर्वम् ।

পিপ্ললা ত্রিফলা দাক্ষ নাগেদং সপুন্নবস্থ।
ভাগৈছিপলিকৈরেষাং তৎসমং দুদ্ধারকন্ধ
কাঞ্জিকেন পিকেচ, বং ক্রমাত্রপ্রমাণতঃ।
জীর্গে চাপরিহারং স্থাদ ভোজনা সাক্ষক মিকম্ম
শ্লাপদং বাদ্বোগাংশ্চ হস্তাৎ গ্লাহানমের চ।
অগ্রিঞ্চ কুক্তে থোরং ভাগন্য নিস্চ্ছতি॥

পিপুল, ত্রিফলা, দেবদারু, শুঠ ও পুনন্ব। প্রত্যেক হুই পল, বিড় ৯ক চুর্ণ. ১৪ পল ; এই সমুদ্ধ একতা মদ্দন করিয়া লইবে। মাজা— ২ তোলা (ব্যবহার ॥০ তোলা); কাজির সহিত সেবনীয়। ইহা সেবন করিলে শ্লীপদাদি নানাবোগ নষ্ট ও অগ্নি বিদ্ধিত হয়।

ক্লফাদ্যে। মোদকঃ।

কৃষ্ণাচিত্রকদন্তীনাং ক্ষমর্ম্পলং পলম্। বিংশতিক হরীতক্যা গুড়স্য তু পলদন্তম্। মধুনা মোদকং খাদেৎ শ্লীপদং হস্তি হুস্তরম্॥ (মোদক্ষোগ্যং মধু)

পিপুল চুর্ণ ২ তোলা, চিতামূল চুর্ণ ৪ তোলা, দস্তমূল চূর্ণ ৮ তোলা, হরীতকী ২০টা ও পুরাতন গুড় ১৬ তোলা। উপযুক্ত মধু সহ

এই সমুদায়ের যথাবিধি মোদক প্রস্তুত করিবে। প্রাতে উপসূক্ত মাতায় সেব্য। ইহাতে প্রবল শ্লীপদ নষ্ট হয়।

নিত্যানন্দর্সঃ।

হিঙ্গলসভাবং সূত্ং গ্ৰাকং মৃত্তাপ্ৰক্ষ **কাংস্তং বঙ্গং** হরীতালং তুগং শব্ধং বর'টিক। । ত্রিকট্ট ব্রিফলা লৌ২ং বিড়ঙ্গং পটুপঞ্চন্য। চ্বিকা পিপ্লীমূলং হৰুমা চ্বচা তথা ॥ नी शाशासनमात्र वजा ह तुक्तमात्रकम् । নিবতা চিত্রকং দ্রভী:গৃহীয়া তু পুথক পুথক -এতাৰি সমভাপাৰি সংচ্থা ওড়কীকু মু ! হরীতকীরসং দ্ব। প্রভাগেতিং ওভাগ্। একৈকং ভক্ষদেশ্লিতাং শতপণ্ড প্রিনেসালম্। প্লাপদা, ককবাতে পাণ সভাসাংসালগাভাদ খণ্ড : ষেলোগতং ধাতুগত। "নত ও লাত সংগ্ৰহ। अस्तु मर अध्याकां के तो १५३९ व्यक्तिम् কদৰতে।ছবং বেগিমপর কং চিবওনার। বাত্রক্তে বাতককে ওদনেগে তিনো তথা অন্ত্রিকুদ্ধিং করে হৈ গুয় বলবের্ণক স্কুটামু : ভাষণাহ্ননাথেন ন্থেতা বিগস্কারে -[ন্তা]ন্দ্রস্কায়ং মহারী দেনাশ্ন । নক্তকে 'পান্তকে চাপি শ্রীপদে যোগায়সনুম নাতঃ পরতরং কিবিন্দ্ 'বস্তাত লাপেন্সয়ে।

(তিব্তা চিত্রকং দত্তা গৃহীয়। তু পুরক্ গুরক্ ইতি সংক্রেয়িক। করিছা করিছা পুরক্ ইতি সংক্রেয়িক। পাঠা। করিদলসারিসংগ্রহারবিশী এছতির এতৎ পাতা, দ্বাংশির শতি পাঠা দেবদাক এলা চিক্লারকম্ ইতার শতি পাঠা দেবদাক ফলারাকম্ ইতার শতি পাঠা দেবদাক ফলারাকম্

হিঙ্গুলোও পারদ, গন্ধক, তাম, কাদা,
বঙ্গ, হরিতাল, তু তিয়া, শুলতম্ম, কড়িওম্ম,
ত্রিকট্ট, ব্রিফলা, লোহ, বিড়ন্স, পঞ্চলবণ, চঠা,
পিপুলমূল, হবুমা, বচ, শুটা, আক্নাদি, দেবদার্ম্ব, এলাইচ, বিশ্বড়ক, তেউড়া, চিতামূণ,
ও দন্তীমূল এই সমুদায় সমভাগে হবীতকার
কাথে মর্দান করিয়া ৫ রতি প্রমাণ বটিকা
করিবে। প্রত্যাহ এক এক বটিকা শীতলজনের
সহিত সেবনীয়। ইহা সক্ষপ্রকার শ্লীপদ
রোগের অতি উৎক্লই উবধ। ইহাতে অর্ব্যুদ,

গওমালা, বাতরক্ত ও চিরকালোখিত অন্ত্র-বৃদ্ধি প্রভৃতি অস্তান্ত নানাবিধ রোগও উপ-শমিত হইয়া থাকে।

শ্লাপদগলকেশ্রী।

ব্যাষণ্ড থমানী চা স্থাতা হার্যান্দকং বিলা।
সৌতাগ্যাং জয়পালক চুর্মেকতা কার্য়েং ॥
ভূকাগে কুরজনারা দকতো হার্বিমন্দ্রেং।
প্রস্তারভিদ্যাং থাদেহদতো যাতুপালতঃ।
শাপদং ভুন্তর হার সাহান্ধ হস্তি সেবিতঃ।

জিকটু, বিষ, যমানী, পারদ, গন্ধক, চিতা মূল, মনজাল, দোহাগা ও জন্মপাল এই সমু-দায় সমভাগে লইয়া ভীমরাজ, গোকুর, জন্মীর ও জাদার সমে মদ্দন করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা ক্রিবেন অনুপান-উক্তজন। ইহা দেবন ক্রিলে ওস্তর গ্রীপদ ও গ্রীহান্ত হয়।

সেবিশ্বয়ত্য ।

ভাশসা । নবক ১৯৯ বিকট্ট এনেল তথা। कारन कर मर्द्रान किन्न नाम हिनक्य । চ্ৰিকা ও থল'মলং ওগ্ডলুকৰুষা বচা ট य ग्रांभाजक भागा ५ व्याला विकास विकास কলেন্দ্র কার্যকেরেভিড় ভপ্রতং বিপার্চনের। লৰ্মলীৰ য'ৱেব ধাৰ্যদ্যদ্ৰেক চ 🛊 দ্ৰবন্ধসন্যুক্ত প্ৰত্থ প্ৰত্থ প্ৰক পূথ্য I প্রকং ক্সপ্রস্থাতং কলাও প্রেরণ ক্র**বর**ং হবিল। ব্ৰাদ্দের কাল্বাং হাবল মাংসবজ্ঞালিতক য়ব। ্রেল, প্রিডাঞ পিডোখং ক্যাদের ন সংশয়ঃ :: অপুটাং গ্রুম্ । দ অপুট্রি তথাকা, দুর্। भारत् श्रःशीक्षण्यः वरशः अभवति ।। প্রন্ত্রর হওত ,কাছজি।মবিনাশন্ম। গ্রং ট্রাক্রনং নাম রীপদং হতি জন্তরম্। লীবকেন কৃতং ,হ'তদ্ রোগানীক্বিনালনন্॥ ্তালনেনেতি জাবো রহস্পতিঃ, স্বার্থে কঃ।)

ন্বত সম দের। দশমুলের কাথ, কাঁজী ও দিবির মাত প্রত্যেক সম দের। ককার্থ—ক্ষত-ত্লামী (কাছারও মতে নিসিন্দা), দেবদাক, ত্রিকটু, ত্রিফলা, পঞ্চলবণ, বিজ্ল, চিতামূল, চই, পিপুলমূল, গুণ্গুলু, হবুষা, বচ, যবকার, আক্নাদি, শটা, এলাইচ ও বিশ্বড়ক প্রত্যেক ২ তোলা। মাত্রা—৪ তোলা পর্যান্ত। ইহাতে সর্বপ্রকার শ্লীপদ, অপচী, গণ্ডমালা, অন্তর্গুদ্ধি ও অর্ব্বাদ প্রভৃতি নানা রোগ নষ্ট হয়। ইহা অগ্নিকারক ও হল্প।

বিভূষাদিতৈন্য।

বিদ্যুস্থারিচার্কের্ নাগরে চিত্রকে তথা।
ভক্রদার্কেলকাথে;বু সর্কের্ লনগেরু চ॥
তৈলং পৃক্থ পিবেদ্ বংশি শ্লীপদান ং নিস্ভয়ে॥
(এলকাথ্যো হোগ্লো এলবালুক্মি গ্রন্থে।)

তেল /৪ সের। কলার্থ—বিভূপ, মরিচ, আকলমূল, ভঠ, চিতামূল, দেবদাক, হোগ্লা, মতান্তরে এলবালুকা) ও পঞ্চলবণ মিলিত /১ সের। এই তৈল বোগস্থানে মদ্দন ও পান করিলে শ্লীপদের শান্তি হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

श्लीभनतात्र भगति ।

প্রচ্ছদ্দিনং লজ্মনমশ্রমেশ্কাং বেলো নিরেকঃ প্রিলেশনঞ্চ।
পূর্বাতনাঃ বছিকশালয়ক যবাঃ কুল্পা লগুনং ৭টে'লম্ ।
বার্ত্তাকুশোভাঞ্জনকরেবেল-পুন্নবামূলকপৃতিকংক।
এরগুঠতলং স্বভীজলক কটুনি ভিক্তানি চ দীপ্রানি ॥

গুল্কোপরিষ্টাচতুরস্কুনে চ বাতোপরে গুল্ফুডলে তু পৈতে। অসুঠনূলে কফজে বিশেষা-চিছরাবাধনৈচন স্থাবিধানন্। এতানি প্রধানি ভ্রতি পুণসাং রোগে সতি গ্রাপদন্যাধ্য়।

বমন, উপবাদ, রক্তমেক্ষণ, স্বেনন, বিরেচন, প্রলেপন, পুরাতন ষ্টিক এবং বক্তশালি তওুলের অন্ন, যব, কুল্পকলায়, রস্থন, পটোল, বেগুন, শজিনার জাটা, করলা, পুনল্বা, কচিম্লা, নাটাক্বক্ষের পাতা, তেরে গুর
তৈল, গোমুত্র, কট্রেষা, তিক্তর্যু এবং
অগ্নিপ্রদিপক ক্রম, শ্পদ বোগে হিত্তর্মক।
বিশেষতা বাঙ্গ প্রাপদে গুল্ফদেশের চারি
অঙ্গুলি উপবে, পিড্রজ শাপদে গুল্ফ্তলে,
এবং ক্ফল শাপদে ব্দ্রান্থ এই সমস্ত বিদি
হিত্তর।

श्ली भारतीर श्रेशानि।

পিন্তারণ জন্পবিদ্যালি ওচ্চনান্ধানানিক। সংক্রমান পারেপতি-মতাবস্কানাঞ্জন্ম। পিচিড্যাল জনভিষ্যানি স্থানা গাঁৱবাস্থেত।

পিঠান, ছগ্ধাবকতি (ছানাদি), গুড়, আনুপমাংদ, নধুবজব্য এবং পারিপাত্র পর্মত, সভাগিরি ও বিন্ধাগিতি নপ্ত নদীর জল, পিচ্ছিল্ডবা, গুরুপাকদ্বা এবং অভিযান্দি-দ্বা, শ্লীপদরোগা প্রিভ্যাগ ক্রিবেন ।

इन्डाशूर्त्वन-मर्थाः श्रीयन्ताशीःवका १।

অথ বিদ্রধিরোগাধিকারঃ।

व्यथ विष्विधि-निमानम्।

ष्ट्राक्रमाध्मरमप्तान निकार हिनमा विद्याः। লোষাঃ শোপং শনৈগোরং জনঃ থাছিত। ভণ্ম ॥ मक्षामलः कुक्तिगुः नुदुः तिशाभतायवम्। স বিদ্রধিবিতি থাটেও বৈজ্ঞেয়ঃ ষ্ডিব্রণ্ড সং॥ পুর্বাদ্রের সম্পেক্ ক্ষতেরও করে । তথা । মগ্রাস্পি হি তেমাখ লগাণা না গ্রেকাটের। व १४५१०वर ११ वर्ग विषयो 🛫 म र र्ग . ५० म. চিত্রেথান্থপার্ক, বিদুর্গত্মথণ । প্রে-ড, খনদ্র'(শঃ स्टेन) न। करान्द्रन'न्। কিংপ্রাণ নগগাবল বৈদ্ধিঃ গিও্সভার । শ্রবেস্দশঃ পণ্ডঃ শু শু বিগ্রেভিয়াপেন।। চিরে দামপ্রপাকশ্য বিদ্রবিং কল্মপ্রইং ▮ ভুতুলী হ'সাহ (কৈচ্যাস স্বাপ্তি ক্ষক , স্বৰণ) बाबादर्वकार (ता १ जा जो जिसाम करान् । বিষয়ং পলাতে চালে লিপবিঃ সালিপাতিক: देशांखांचात्रवर्द्धां इत्राह्म भारत नात्रवाकारियाः व ক্ষরেরারা বংগারেমতা সরকেং পিকাবেশং। England 5 6 18 € 5° 81 € 18 7° 5 4 1 আলাস্থানদ বংশাস বিভেচিত কলাসায় মুস্ক ক্ষেণ্টে বিভাগ ল'বেল বেল বিভাগ বিভাগ शिक्षित्विविविधिक्ष तह - नामक्षेत्र १०॥ পুৰ্মস্থ্য বা লেখি৷ কুলিং: ১৯৮৭খন্ট स्याक्तर रामुझक्तरेष्ट तुन ४ दिन वर्ग । छाप व्हिम्राभ न, धार इ.सी ८ कामा । ৰুৰয়েত প্ৰতি যায়ত প্ৰত্যাৰ হিবাপেৰে। তেষ'মুক্তানি লিঞ্চানি ব'গ্ৰিদ্যাধলকণেঃ ৷ অধিষ্ঠানবিশেষণ লিখং পুণু বৈশেষতঃ ৷ প্তদে বাহ নিরোকত বাহী রাজ্যালমূতাতা . নাজ্যার হিবল তথাটোপেঃ কুন্দের মান্তকে প্রম্য कर्षेष्ठशृहेश्रह्खारन। दश्यारगण्य इ निस्टती। বুক্ষেত্র পর্বিক্ষে চ. পাঞ্চেছ, নাব্রবিন্ন ॥ স্বাঙ্গপ্রহার স্থারে হাদ কাস্ত ভারতে ৷ খানো যকু। ১ (২কা চ কোম পেপায়তে প্ৰঃ॥

অত্যন্ত কুপিত বাতাদি দোষত্রয়, অস্থিকে
আশ্রম করিয়া ওক্ রক্ত মাংস ও মেদকে
দূষিত করিয়া, ক্রমণঃ অত্যবগাঢ় মূল, অতিশয়
বেদনায়ক্ত, আয়ত বা গোলাকার, কষ্টদায়ক
যে শোণ উৎপাদন করে, তাহাকে বিদ্রধি
(ফোড়া) কহে। সেই বিদ্রধি ছয় প্রকার।

ষপা—বাতজ, পিত্তজ, কফজ, ত্রিদোষ**জ, ক্ষতজ** ও রক্তজ। এই ছয় প্রকারের পৃথক্ পৃথক্ লক্ষণ কথিত হইতেছে।

ব'তিক বিদ্বধি কৃষ্ণ বা অকুণবর্ণ, কখন কুদ্ৰ, কথন বা বৃহৎ এবং অভ্যস্ত বেদনাসূক্ত হয়। বাযুব বিষমক্রিয়ত্ব হেতু ইহার উৎপত্তি ও পাক নানাবিব হইয়া থাকে।

পিতৃজ বিদ্ধি পকোড়ুম্ববসদৃশবর্ণ বা গুলবর্গ হয়। ইহার উৎপত্তি ও পাক শীঘ্র শীঘ্র হইয়া থাকে। উৎপত্তিকালেই ইহাতে জব ও দাহ উপস্থিত হয়, পাকিবাৰ সময় ঐ জব্ব ও নেদনা ভীবতর হইয়া উঠে।

কফজ বিদ্রধি শরাবের স্থায় আক্রতিবিশিষ্ট, পাণ্ডবর্গ, শীতল, চিশ্বণ ও অল বেদনাযুক্ত। ইহাব উৎ্যেন ও পাক দীর্ঘকালে সম্পন্ন হয়।

বাতজ বিদ্যানিধ স্থাব পাত্লাও বাতায়-কপ্রবিশিষ্ট অধ্যাৎ ক্লফাদি, পেভিকের স্থাব পাত ও প্রায়কের প্রাব ১০৩বর্ণ হইয়া থাকে।

সংগ্রিপাতিক বিদ্রণি ক্রম্পীতাদি-নানা বর্ণাবশিষ্ট তোক্দাহাদি নানাবেদনান্বিত ও খেতপাতঃদি বতবিধ আবয়ক্ত। ইহা ঘাটাল অর্থাৎ অত্যুন্নতাগ্র, বিষ্মাকৃতি ও বৃহৎ। ইহা বিষ্মভাবে পাকিয়া থাকে।

শন্ত্রাদি থাবা ক্ষত বা আহত ব্যক্তি
অপথ্য দেবন করিলে, ভাহার ক্ষতোমা বায়ুকর্তৃক চালিত হইন্না, রক্ত ও পিততেক দূষিত
কবত বিদ্রদি উৎপাদন করে। ইহাকে
ক্ষত্র বা আগন্তুল বিদ্রদি কহে। ইহা
পিত্রবিদ্রদিলক্ষণাক্রান্ত। ইহাতে জ্বর তৃষ্ণা ও
দাহ থাকে।

রক্তপ্রকোপজ বিদ্রধি ক্বফবর্ণ-ক্ষো**টকা-**বৃত, গ্রাববর্ণ, তীব্রদাহ, জর ও বেদনাযুক্ত। রক্তজ বিদ্রধিতে পিত্তজ বিদ্রধির তাবং লক্ষণ বিভাষান থাকে। বাহ্য বিদ্রধির বিষয় লিখিত হইল. এক্ষণে অন্তর্বিদ্রধির স্থান ও লক্ষণ দর্শিত হইতেছে।

কুপিত বাতাদিদোষত্রয় পূথক মিলিতভাবে. দেহেব গুনাদদ প অভান্তরে বল্মীকাক্সতি অভায়ত বিদ্ৰ ধ উংপাদন করে। গুঞ, বস্তিমুখে, নাভিত্তে, কুক্ষিদেশে বজ্ঞাণ হয়ে, বুরু হয়ে, প্রীহায়, যকুতে, খুদুরে ও ক্রোমে এইরূপ বিদ্রুষি উৎপন্ন হইয়া থাকে। ইহাদিগের সাধারণ লক্ষণ বাফ্রবি দুধি লক্ষণের আয়, তদির উৎপত্তির স্থানভেদে যে সকল বিশেষ লক্ষ্ণ দুষ্ট হয়, ভাহা লিখিত হইতেছে।

শুদনাড়ীতে বিদ্রাধ হইলে অনোবায়ন নিরোধ; বন্তিদেশে হইলে মুক্তরুণ্ড ও মুত্রা-রুতা, নাভিতে হইলে হিন্ধা ও উদরে দবেদন শুড়গুড় ধ্বনি; কুন্সিতে হইলে বায় প্রকোপ, বুজ্জানে হইলে কটা ও পুটে ভীরবেদনা, বকে পার্শ্যক্ষান্ত; প্রীহাম স্থাসাবরেধ; স্থান হইলে সর্ব্বাক্ষে তীত্র বেদনা ও কাস, বক্তে স্থাস ও হিন্ধ; ক্লোমনামক পিপ্রাহানেন বিদ্রাধ জ্লিলে পুনংপুনং জ্লপানের ইঞ্ছ হয়।

অথ বিদ্রধি-চিকিৎস।।

জলৌকাপতিনং শস্তং সর্কাশিশ্রেন বিদ্যো।
সূচাবিরেকো ন্যুন্ধং খেদংগ্লিভোক্তবং বিনা।
(১ছবিরেকো বছধা ক'মাং, গস্তারধাতুগতদোধকতুত্বাদ বিজ্ঞানিতি চকুটাকা।)

সকল প্রকার বিদ্রবিতেই জলোকা ঘারা রক্তমোক্ষণ, বাবংবার মূহবিরেচন, লঘুপাক অন্নভোজন ও স্বেদক্রিয়া ব্যবস্থেয়। কিন্তু পৈত্তিক বিদ্রবিতে স্বেদক্রিয়া নিষিদ্ধ।

যবগোধ্মম্লৈগন্ত সিদ্ধপিষ্টে: প্রলেপরেৎ। বিলীয়তে কণেনৈবমপরুলৈব বিদ্রবিঃ॥

্ষ্ব, গম ও মুগকে দিদ্ধ এবং পেষিত ক্ষরিলা তাহার প্রদেপ দিলে অপক বিদ্রুধি শ্বাভ বিলয়প্রাপ্ত হয়। ৰাতস্থ্যুলককৈন্ত বসাতৈলম্বতান্বিতে:। সুখোনেশ বহলো লেপ: প্ৰয়োজ্যো বাতবিজধৌ । (বাতম্মূলং দশ্যুলম ।)

বাতবিদ্রধিতে দশমূল বাটিয়া তাহা বৃষ্ণ, তৈলও স্বতের সহিত মিশ্রিত এবং ঈদ্দৃদ্ধ করিয়া পুরু প্রলেপ দিবে।

বেদোপনাহাঃ বজগাং শিগ্রান্লসময়িতাঃ।

শজিনান্নের স্বেদ ও এলেপ দিলে উপ-কার দর্শে।

পুননবাদ ক্রিখ-দশমূলভবাস্তসা। ভগ্তেল্ং কবুটেলং বা পিলেমারটেরিছটৌ॥

প্রন্নবা, দেবদার, ওঁ ও দশমূল, ইহা দের কাণের সহিত গুগ্তল বা এরওতৈল পান করিলে বাতবিদ্ধির শাস্তিহয়।

পৈত্তিকে শূৰ্ব জালাগান্যধূকৈ শারিব।যুক্তা। প্রলিজাৎ কীন্পিষ্ট্রেনা পয়স্তোশীরচন্দ্রনা। পিবেদ্ বা তিফলালাগণ তিস্থকন ক্ষমণযুভ্যু॥

পৈত্তিক বিজমিতে চিন্, খে, যষ্টিমধুও অনন্তমূল, কিংবা ক্ষীরকাকোলী, বেণার মূল ও রক্তচন্দন হুগ্নে বাটিয়া প্রকেপ দিবে, অথবা ত্রিকলার কাথে ২ ভোলা তেউড়াকক নিপ্রিত করিয়া রোগিকে পান করাইবে।

প্রথম লক্ষেন স্তমিশের লেপন্য । ষপ্তাহিশারিবাদুকানিল্লা সচলবৈঃ। কার্পিটে, প্রেপ্ত পিত্রিদ্ধিনাশনঃ॥

বট, যজ্জুমুর, অখণ, পাকুজ ও বেতস
ইহাদের বন্ধল ঘতের সহিত অথবা ষ্ট্রিমুর,
অনস্তুমূল, দুর্না, নলমূল ও রক্তন্দন, এই
সকল দ্রব্য হয়ের সহিত বাটিয়া প্রলেপ দিলে
পিত্রবিদ্রবি প্রশামিত হয়।

হস্তক্যাসিকহালীহ-গোশকৃত্ত্বপাংশুভি:। মৃত্রপিষ্টেশ্চ সতহং স্বেদয়েৎ শ্লেছবিক্রধিষ্।।

ইপ্টকচ্ণ, বালুকা, লোহচ্ণ, গোময়, তৃষ্ ও ধূলি এই সম্দায় ত্রব্য গোম্ত্রে পেবিত. অগ্নিতে ঈষত্বক ও এরগুপত্রাদিতে বেষ্টিত করিয়া তদ্বারা শ্লৈশ্বিক বিক্লধিতে স্বেদ দিবে।

পিন্তবিজ্ঞাধিবৎ সর্কাং ক্রিয়াং নিরবশেষতঃ। . বিজ্ঞাে কুশলঃ কুয়াদ রক্তাগন্তনিষিত্তকে ॥ রক্তজন্ত আগন্থজ বিদ্রধিতে বিবেচনা করিয়া পিত্তবিদ্রধির সকল ক্রিয়াই করিবে।

রক্তচন্দ্রমাজি ছা-নিশামধুকলৈ (রকৈঃ। সক্ষীরৈবিদ্ধেই লেপো রক্তাগন্ত্রনিমতকে॥

রক্তচন্দন, মঞ্জিছা, হবিদ্রা, বৃষ্টিমধু ও গিরিমাটা এই সকল জব্য ছথে বাটিয়া রক্তজ ও আগত্তজ বিজেধিতে প্রলেপ দিবে।

ৰোভ'ঞ্জনক'নিয় হিছ (সক্ষেধ্য বিষয় । অ'চর'দ্ বিদ্রাণঃ হ'ল প্রাত্ত প্রাতনিয়েবিতঃ ॥

প্রতিদিন প্রাতঃকালে শব্দিনা ছালের কাপে হিং ও দৈন্ধবলবণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে বিজুদি আন্ত বিনষ্ট ইয়।

'बातुभुवाः काल स्तीरः नत्त्रिष्ठः **श्रतालस्यः** ७५मः भवना व्योगः २८ उ^{र्गत}वस्यः मनः ॥

শভিনামূলের ছাল জলে সোত ও শিলায় ছাল পেষিত ক্রিয়া, বস্ব ধারা হাহাব রস গালিয়া লইবে। এই রস মবুব সহিত পান ক্রিলে অস্ত্রিস্থিন্ত হয়।

বেতব্যাভূবো মূলং মূলং বা বৃদ্ধান্ত । জলেন ক্ষিতং লী ত্মপুক বিভূষিং জ্যেত ॥

বেঃপুন্নবাধ বা বক্ষেণ মূল জ্বা সিদ্ধ কার্যা সেই লাগ পান কবিলে অপক বিদ্রাধি উপশ্যিত হয়।

শুময়তি প্রিম্ন ক্ষেট্রতং ততুলাল্যা গীংন্। অওজুতিং বিজ্যান্তনাবেব সমুক্ত ।

আক্নাদির মূল, মধু ও তণ্ণ-জণের সহিত সেবন করিলে অস্তবিদ্যবি প্রশমিত হয়। অপকে বেত্তদিতং পকে তু এণবং ক্রিয়া। অপক বিদ্যবিক চিকিৎসা লিশিত হইল,

অপক বিদ্রধির চিকিৎসা দিশিত হইল, বিদ্রধি পাকেলে এণুশোণোক্ত চিকিৎসা করিবে।

প্রিয়ন্থ বিজনী লোধং কট্ফলং তিনিশস্চম। এটেক্টেলং বিপক্তবাং বিজ্ঞাে রোপনং প্রমু॥

প্রিরন্থ, ধাইফ্ল, লোব, কট্ফল ও তিনিশ (মথুরা দেশস্থ বৃক্ষবিশেষ) ছাল, ইহাদের সহিত তৈল পাক করিবে। এই তেল বিদ্র-ধির ক্ষতরোপক।

कञ्जलीर्याशः।

বৰুণ দিকষায়েণ বসগন্ধককজ্ঞনী।
ছুক্তা নিহন্তি মাধৈকা বাহ্নগন্ধত বিদ্যান।
অপকে বেতছদিষ্টং পকে ভু ত্ৰণবং কিয়ান
বৰুণা দিয়তোক্ত বকণা দি গণেব কাথ সহ
মাখা কজ্ঞলী সেবন কবিপে বাহ্ন ও অন্ত-বিদ্যান নিবাবিত হয়। অপক বিদ্যাবিত ইহা
প্রদান কবিবে; পক ইইলে বণেব স্থায়
চিকিংসা কবিবে।

বরুণাদি ঘুত্র।

সিদ্ধাণ বক্তপ্রদিস্থাবিধিনা ভংকজ্ঞপাচিত্রং স্থিতি । অন্তৰ্গিন্দ্ৰ প্ৰতক্ষণ ভতাৰ্থাকাক 🛊 শুকাৰতি প্ৰাবিধান ল'শ্যুতীনং যথাত্ব বাযুদ্ধম। এতং প্ৰতিঃ প্ৰণিবেদ ভোজনসময়ে 'ন্নাত্তভূপি ॥ বক্লাদিগণের (ব্ৰুণ্ডাল, শ্জিনা, রভাশ্জিনা, জরায়ী, মেষ্শঞ্জী, ভছর-कर् अ, कर् अ, डेक्सल, श्रांशादी, नीवाविन्ही, পীত্রিটী, তেলাকুচা, আকন, গুজ্বিপ্ললী, াচ চা, শতমূলী, বেলভূঠ, অজ্পুন্নী, কুশমূল, वक्ती अ कलेकारी इंश्रामित्रक वक्ननामित्रन বলে) কাগ ও কলস্থ নথাবিধি গৃত পাক প্রা:কালে, ভোজনসম্যে मक्काकारन रमवन कतिरत अश्रीयमान स्थवन ক্রক্ল, ম্যান্ন, ও প্রাবিধ ওখা, জ্ল-প্রদানে আশ্বর ন্যায় বিনষ্ট হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

বিদ্রধিরোগে পথ্যানি।

আমাবতে রেচনানি লেপাঃ ক্রেলোচপ্রমোলপন্। জীলাঃ প্রামাককসমাই কুল্পলজনানি চ । রক্তনিপ্রকুচ নিম্পাবং কারবেলং পুননবা। জীপ্রবিং চি.৭৯ঃ কৌশং পোশোক্তানি চ নর্ববাং ॥ পকাবছে শ্যকর পুরাণা রক্তনালয়ঃ । যুক্ত কৈলং মুলারমো বিলেপী ধর্মলা রসাঃ ॥ নালিঞ্চাকং কদলং পটোলং হিমবাপুকা। চল্লবং তপ্তনীতামু সর্ববিদ্যাপি প্রণোদিতন্ ॥ নবাগাং বিশ্রধিবাণো বাধাবস্থং বর্ধামলম্ । প্রাক্তেন্তানি সর্বাণি নির্দিষ্টানি মহবিভিঃ ॥ বিজ্ঞধির অপক অবস্থাতে বিরেচন, প্রশোলপন, স্বেদন, রক্তমোক্ষণ, পুরাতন শ্যামাক এবং কলম ধান্তা, কুল্পকলায়, রপ্তন, রক্তনাজ্ঞলা, শিম, করলা, পুনর্নবা, গান্তারী, চিতা, মধুও শোথাপিকারোক্ত সমস্ত দ্রব্য হিতকর। এবং বিজ্ঞধির পকাবস্থাতে শম্বক্রিয়া পুরাতন রক্তশালি তওল, মুত, তৈল, মুগের যুয়, বিলেপী ও ধয়জ মাংদেব য়য়, শালিঞ্চলাক, কাঁচাকলা, পাটোল, কপূন, চন্দন, গরম জল শাতল কবিয়া সেই জল এবং বণ রোগাধিকারোক্ত সমস্ত দব্য পক্রিদ্ধিতে

বিদ্রধি রোগাক্রাম্ভ মানবগণের এই সকল পণ্য মহর্ষিগণকর্তৃক নির্দিষ্ট হইয়াছে, অভএব অবস্থ!-বিশেষে দোষাদি বিবেচনা পূর্বক ইহা প্রয়োগ করিবে।

বিদ্রেধিরোগেইপথ্যানি।
শেশবাং বাহ্যপথ্যানি র'গনামহিতানি ।
ক্রমানানে চপ্রক চ বিদ্রুর্থে বর্জ্ঞানের ।

শোথাধিকারে যে সমস্ত অপথ্য নিদিষ্ট আছে, অপক বিদ্যবিরোগিগণ তাহা পরিত্যাগ করিবে এবং এনবোগে যে সকল অপথ্য ক্থিত হইরাছে, তাহা, পক্ষবিদ্যবিরোগী প্রি

ই ভাষেকেন-সংগ্ৰহে বিদ্বধিরোগানিকাইঃ।

অথ ত্রণশোথাধিকারঃ।

ত্রথ ব্রণ্পাথ-নিদানন্।

একদেশে খা ও শোখো কথানা প্ৰকাশপ ষড়িখা স্তঃ পৃথক সকো। বক্তাগন্তানমিত্ত। । শোধাঃ ষড়েতে বিজ্ঞোঃ প্ৰাপ্তকৈঃ শোধলক্ষণে । বিশেষঃ কথাতে চিষাং প্ৰাপনাদিনিক্ষয় । বিষমং পচ্চতে ব্যতাং পিত্তোখনচিচাচিচাচিচাম্য ক্ষণ্ডঃ পিত্ৰচেছাগো বক্তাগন্তনমূত্ৰ: ॥

যে স্থানে এণশোর্থ হইবে, তথার অগ্রে একটি লোথ হয়, সেই শোথই এনশোথের পূর্বরূপ। এগলোথ ছয় প্রকার। ঘথ!— বাতজ, পিত্তজ্ঞ, কফজ, ত্রিদোষজ, রক্তজ্ঞ ও আগন্তজ্ঞ। ইহাদের লক্ষণ পূর্ব্বোক্ত শোথ-লক্ষণের ভায়। তবে পকাপকাদি-বিশেষ লক্ষণ বলিতেছি, প্রবণ কর। বাতজ এণশোথ বিষমভাবে পক হয়; পিত্তজ্ঞ শোথ শীঘ ও কফজ শোথ বিলম্বে পাকে। রক্তজ্ঞ ও আগত্তজ্ঞ শোধ বিলম্বে পাকে। রক্তজ্ঞ ও আগত্তজ্ঞ শোধ বিভবং শীঘ পাকিয়া থাকে।

অয ব্রণণোথ-চিকিৎস।।

থানে) বিষ্ণাপনং কৃষ্যাদ্ বিভায়েনবদেচনম্।
ভূতীয়মুপনাহঞ্চভুথীং পাটনক্রিয়াম্।
পক্ষাং শোধনকৈব ষঠং রোপণমিষাভে।
এতে ক্রমা লবস্তোক্তাঃ সপ্তমো বৈকৃতাপহঃ।

(বিশ্লাপনমিহ কেবলমঙ্গুটাদিমর্জনমাত্রে পরিভাষিতং প্রাথ্য । কিন্তু বিশ্লাপ্যতেহনেনেতি ব্যুৎপত্তা। বহিংপাধ-মার্জনকাপে শমনে শোধবিলয়নপরিবেকাভ্যঙ্গাদা-বাপ বর্ততে । ইতি চক্রটাকা)।

ব্রণশোথের প্রথম অবস্থায় বিমাপন, দিতীয়
অবস্থায় বমন-বিরেচন ও রক্তমোক্ষণ, তৃতীয়াবস্থায়
প্রলেপন, চতুর্থবিস্থায় বিদারণ, পঞ্চমাবস্থায়
শোধন (পুযাদিনি:সারণ) ষষ্ঠাবস্থায় রোপণ
(ক্ষতপূরণ), সপ্তমাবস্থায় বিকৃতি দ্রীকরণ
কর্ত্তব্য । এস্থলে অস্ক্ল্যাদি বারা কেবলমাত্র
মর্দ্দনকেই যে বিমাপন কহা ধার, তাহা নহে,

কিন্তু বিমাপন শব্দে শোণের বিলয়কারক পরিষেক ও অভ্যঙ্গাদি বহির্মার্ক্তনরূপ শ্মন-ক্রিয়াও বৃঝায়)।

(মতান্তরে)

আদৌ শোধহরো দেপগুড়গু পরিবেচনম্। বিদ্যাপন্দস্থ মোকগুড়ঃ স্থাত্নপনাহনম্॥ পাচনং ভেদনং পশ্চাৎ পীড়নং শোধনং ৬থা। রোপণং বর্ণকরণং এণকৈড)ঃ ক্রিয়াঃ স্থাচাঃ॥

রণশোথে প্রথমে শোথহর প্রলেপ, তৎ-পরে জ্রুমায়রে পরিষেক, বিশ্লাপন, রক্তমোক্ষণ, উপনাহ (প্রলেপ, প্ল্টিস), পাচন, বিদারণ, পীচন, শোধন, রোপণ ও বর্ণকরণ কর্ত্তর।

এণে বয়পুরায়াদাৎ দ চ রাগশ্চ জাগরাৎ। ভৌচ কক চ দিবাহলাৎ ভাশ্চ সৃত্যুশ্চ মৈণুনাৎ ॥

পশ্সিম করিলে বংগ শোথ উৎপন্ন হয়, রাত্রিজাগরণে শোথ ও লৌছিত।, দিব-নিজায় শোথ, লোহিতা ও বেদনা; নৈথুনে শোথ, লোহিতা, বেদনা ও সূত্য প্রযান্ত ঘটিয়া থাকে। অতএব বণ হইলে এই সকল বিষয়ে সাবধান হইবে।

ব**ধা প্রজ্বলিতে বেশ্মগুন্তসা পরিবে**চনম্। ক্ষিপ্রং প্রশাসকাগ্নিমেবসংকোলা

প্রজ্বনিত গৃহে জলসেচন করিলে অগ্নি যেথন শাঘ্র নির্কাপিত হয়, শোগে প্রলেপ দিলে বেননাও তেমনই আশু প্রশমিত হয়।

ধৃষ্ঠ্রমূলং সলবণমূক্ষং এণ ক্ষতারিছে।

দশুং লেপালিয়ত বৰ্ণশোপং হরতি বত্ত্তম্ ।

বেশোপথের প্রথমবিস্থায় ধুড়বার মূল বাটিয়া ভাছা সৈন্ধব-মিশ্রিত ও ঈনত্ত্ত করিয়া উদ্ধার প্রলেপ দিলে বিশেষ উপকার দর্শে।

মাতুলুকান্ত্রিমন্তে) চ ভদ্রদার মহৌবধস্। অভিত্রো চৈব রালা চ প্রলেপো বাতশোধধা ॥

টাৰালেব্র মূল, গণিয়ারি, দেবদারু, ভুঠ, কুড়কুরানি ভারারা, এই সকল ত্রব্য পেষণ করিয়া, ভদ্দারা প্রালেপ দিলে বাতিক ত্রণশোধ বিনষ্ট হয়।

ককঃ কাঞ্জিকসংগিষ্টঃ মিদ্ধঃ পাৰোটকছচঃ। স্থাৰ্থ ইয় মাধানাং বাতগোধবিনাশনঃ। শেওড়ার ছাল কাঁজিতে বাটিয়া ও তাহাতে মৃত মিশ্রিত করিয়া প্রলেপ দিলে বাতজ বুণশোথ প্রশ্মিত হয়।

দূকা চ নলম্নক মধুকং চন্দনং তথা।
শাতলাক গণাং সর্বে প্রলেগঃ পিন্তনোগহা।
দূর্কা, নলমূল, যষ্টিমধু রক্তচন্দন এবং
শাতল দুবাগণ, এই স্কল দুবোৰ প্রলেপ,
পিন্তজ্বণশোধানাশক।

ত্যাবে'ড়ুস্বাধ্য-প্লক্ষেত্রসবন্ধলৈ। সম্পিনঃ প্রবেশঃ স্তাচ্ছোম্মনিবাপেণ্ড পরঃ ॥

বট, যজড়ুমূৰ, অশ্বথ, পাকুড় ও বেতস, ইংাদের ছাল সমভান্তো লহয়া শিলাপিষ্ট ও মতসংস্থাত করিয়া, তাহাব প্রলেপ দিলে প্রেক ব্যশোগ উপশ্যিত হয়।

आधरका (* भिर्कारण b न्द्रभ वन किसाक्सर ॥

আগ্রেজ্ ও শোণিত জ এণণোথেও এই-ক্রপ চিকিৎসা অর্থাং ইফাতে পিওজ এগ-শোথেবই চিক্রৎসা করিবে।

অজগন্ধগন্ধা ৮ কালা স্বলয় সহ। একেশিকাজগুলা ৮ প্রলেপঃ শেখগোপং। ॥

অজগন্ধা অবগন্ধা, কেলেকড়া (বা কুড়কুড়ানি), সরলকাই, তেউড়া ও কাক্ড়া-শুঙ্গী এই সকল দ্রব্য পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে শ্লেঘ্রিক বণশেথ নিবারিত হয়।

পুনমব্যদাক্ষণিগ্ৰ_দশ্যলম্ভৌগলৈ। বক্ষব্যভুক্ত কোলে লেপ: কোনো বিধায়তে ॥

প্নন্বা, দেবদাক, শজিনা, দশমূল ও উঠ এট সকল দ্বা বাটিয়া ও ঈষহুল করিয়া তদারা প্রলেপ দিলে বাতশেমজনিত শোথ বিনষ্ট হয়।

ন রাজে। লেপনং দগুলেওক পতিতং তথা। ন ৮ পদুৰ্বিতং গুৱামাণং নৈবাৰধারত্বে। গুৱামাণমূলেকেও প্রদেহং পাড়নং প্রতি। ন চাপি মুগমালিকেপং দেন ধোসং প্রসিচাতে ঃ

রাত্রিকালে প্রলেপ দিবে না এবং থসিরা পড়া প্রলেপ ছারা প্রকার প্রলেপ দিবে না। বাসি প্রলেপৌষধ ব্যবহার করিবে না। প্রালেপ শুষ্ক হইলে তাহ। তুলিয়া ফেলিরে।
কিন্তু ব্রপ্লোগ ফাটাইবার জন্ত যে প্রালেপ
দিবে, তাহা শুষ্ক হইলেও তুলিয়া ফেলিবে।
না। ব্রণমুখ প্রালেপ ধারা লিপ্ত করিবে না,
কারণ বণ ফাটিলে ঐ মুখ ধারাই পূয রক্তাদি
নির্গত হইবে।

ত্বিধন্ মলক্ষজং শোপান্ ত্ৰেকে বাতককাপছৈ:।
অভ্যজ্য সেদ্ধি হা ৮ বেগুনা ছা ততঃ শনৈ:।
বিশ্বাপনাথাং মৃদ্ধিয়াৎ তলেনাক্ষ্ঠকেন বা।

কঠিন।ও অন্ধবেদনান্তিত শোপে বাত-শ্লেম্মন্ন তৈল মাধাইয়া, তাহাতে স্বেদ দিবে, ' তৎপরে বিমাণনার্থ বেণুদণ্ড, করতল বা অঙ্গৃষ্ঠ ধারা জি শোখ মর্দ্দন করিবে।

রস্তাবদেচনং কুল্যাদাদানের বিচক্ষণ । এশাথে ১২তি সম্বদ্ধে বেদনাব্ভিত বংল। নিবারণায় প্রক্তা বদনেশপ্রাত ৮ ॥

রণশোপ অতি বৃহং কঠিন ও বেদনাঘিত ছইলে, পাক নিবারণের ও বেদনোপশমের জন্ত বৃদ্ধিমান্ ব্যক্তি প্রথমেই শক্তমোক্ষণ করিবেন।

বো ন যাতি পাল লপ্ত- স্বানকপেত্রপথে:।
সোহপি নাশ্য বস্তত্যান্ত পোন: এপালিতমোক্ষণায়।
একতল্য কিয়ালে সভা বস্তানোক্ষণায়েকতা।
বস্তুবা হি বাম্লভাবে সভি শক্ষেত্রান্তি ন চাল্লি নক।

গে বণশোগ প্রক্রেপ, স্নেদ, পরিষেক এবং লজ্ফনাদি অপান্তপণেও প্রশমত না হয়, রক্তমোক্ষণে ভাষাও সংধ্র বিনষ্ট হটয়া থাকে। রণশোগে প্রশ্নোক্ষণ ক্রিয়া একদিকে এবং একমাত্র রক্তমোক্ষণ অপর্যদিকে, কারণ রক্তট ব্যস্তা (পাক) প্রাথ হয়, রক্তমোক্ষণ হেতু বৃদ্ধি সেট রক্তট না থাকে, ভবে পাকা দিও থাকে না।

শস্ত্রনিক্ষেপাপবাদমাহ—

বালস্কানহকীণ-ভাকণাং গোনিতামণি। বলেস্মর্মারাতের্ ভেলবার্যালেপন্য। বালক. বন্দ, অসহিষ্যু, ক্ষীণ

বাৰক, বৃদ, অসহিষ্ণু, ক্ষীণ, ভীরু-মভাব, স্ত্রীলোক ইংগাদের বুণশোণে এবং মর্মান্তাত ব্রণশোথে শস্ত্রপাত না করিয়া ভেদন ঔষধের প্রলেপ দিয়া ভেদ করিবে।

অত্র ভেদনমাহ—

চিরবিংখাহ**য়িকো** দস্তী চিত্তকো হয়মারকঃ। কপোতক্ষপুশ্রাণাং মলক এণভেদনম্॥

করঞ্জ, ভেশা, দস্কী, চিতা, করবী এবং পারর। কন্ধ ও শকুনির বিষ্ঠা, এই সকল ফ্রব্য পক্ষরণের ভেদক।

ক্ষারস্থাতথা কারো দারণঃ পরিকীপ্তিত। ক্ষার ক্রব্য (অপামার্গাদি) অপবা ক্ষার (যবক্ষার) প্রয়োগ করিলেও এণ ভিন্ন হয় অর্থাং ফাটিয়া যায়।

প্রাং দ্বং কাল গ্রং বিশ্যাঞ্চ প্রাংশ্রং । অভার্যং কটিনে দাসে বাবে পালনাস্থ্য। গোরুর দাত জলো স্বায়া, ভারার বিদ্ মাত্র ব্যক্ষো লাগাইয়া দিলো আতি কটিন লোগ্র পাকিয়া দাটিয়া গায়।

কর্তেল খিলৈল পাং সপ্নিজ্ঞাক্তন্ত্তি।
১০ শামাতি গঙ্কে প্ৰক্ত শানিতি পূত্ৰ।
সাপের খোল্স ভাষ্ম ক্রিয়া ভাঙার সাহত্
কটুট্তের মিশাইয়া লাগাইলে অপক বণ্নোও
প্রক্ষিত্ত্য গ্রহ পক্ষ বণ্ণোল শ্রা নিনীত্তিয়া যাত্র।

ন প্রণামাতি যা শ্রেণ প্রজেপাদিবিধান্ত।

দ্রণালি পাচনীয়ানি দ্যাবে তেলাপনালনে।
প্রলেপাদি স্বারণ যে শোপ প্রশানিত ন হয়, ভাহাতে পশ্চাল্লিখিত গাচনীয়া দ্রনোগ উপনাহ প্রাটিষ্) দিবে।

শণনুলকশিগ্নাং ফলানি ভিলনগণাঃ।
ভাতনী শক্তবো কিন্দুক্তব্যক্ত পাচনন ॥
পাচন অন্ধা। শুগৰীজ, মূলার বাজ,
শজিনাবীজ, তিল সর্বাপ ও মদিনা ইহাদের
চূর্ণ, শক্ত এবং কিপু (স্থুৱাবীজ্ঞ) ও উক্ষবীযা
জ্ববা, (যুব, গোধুম ও খাক্তাদি) এই সকল
জ্ববা, ব্রেপর পাচন অর্থাৎ ইহাদের উপনাহে
ব্রুশেশ্য পাকিয়া থাকে।

ভৈলেন সৰ্পিষা বাপি ভাজ্যাং বা শক্তু পিভিকা। স্থোকঃ কুথপাকাৰ্যমূপনাতঃ প্ৰশক্তত।

বাতিক শোথে তৈলের সহিক্ত, শ্লৈম্মিক শোথে মতের সহিত এবং পিতক ও রক্ত শোপে তৈল ও মত উভরের সহিত যবাদির শক্তু মুগোফ করিয়া পাকার্য প্রালেপ দিবে।

অন্তপ্রেলবংক্ত্র ভথা চাৎসঙ্গরহম্প । গ্লিমধুর চ বোগের ভেদনং সংধ্যর্জাতে ॥

সে সকল রণের মধ্যে পুস সঞ্জিত থাকে, মাহাদের মুগ হয় নাই, সে সকল বণ কোটর-বিশিষ্ট, যে বণে নালী হইয়াছে, শত্র ছাবাই হউক বা ঔষণ ঘাবাই হউক, ভাহাদের ভেদ করা আবঞ্চন।

্ন'লে বাধনস'থে তু যথগেদশং প্ৰম'ণ্ড া শুলানি থ দে'লাকে কু'ন্যুক্ত কৰিছং যথা ৮

শ্বসাধা বংগ শ্বপাতের উপযুক্ত স্থান নিগর করিয়া যে স্থানে যে প্রিনাণে শ্বপ্রয়োগ বিধান আছে, সেই স্থানে সেই প্রিনাণে শ্বপাত করিয়া ওয়ানি লোম নিহরণ করিবে :

জনাগৈ।ং পিতিহলানার ওএ সলগুন নিপীডনম্ । সংগোধুমমালগেং চূণ্নি চ সমাস হয়।

েলুও শাল্পলী প্রভৃতি পিচ্ছিল দ্রোর । মক্ত মূল এবং নব, গোগ্ম ও মানকল,ট ইহাদেব চূর্ণ পীড়ন দব্য, অগাৎ ইহাদের । প্রকেপে শোগ স্ফুচিত হইয়া পুনাদি এক ভানে। স্কিত হয়।

'চতঃ প্ৰকালনং কান, পটোলি'নিষ্ণ রগং। অবিশ্যন্ধে বিশ্বন্ধে ৮ স্তাগ্ৰাধাদিয়গুদ্ধনা ॥

অবিশুদ্ধ রণ, প্রভাও নিম্পাভার কাপ মারা; এবং বিশুদ্ধ রণ বটাদিন মকের কাপ মারা প্রাক্ষালন করিবে।

বাহিকে দশমূলানাং ক্ষীরিশাং পেজিকে এবে । আরম্বধানে: কফ্জে ক্ষায়ঃ শোধনে হিডঃ॥

বাতিক ব্রণশোথে দশমূলের, পৈত্তিক বরণশোথে বটাদি কীরি-রুফের এবং শ্লৈমক ব্রণশোথে আরথধাদি গণের ক্যায় শোধনার্থ প্রয়োগ করিবে।

তিলাফকঃ।

ভিলনৈদ্ধবন্তা হৈ-তিবুলিদ্দিশাযুগে: ; স্পিটেয় ভিদংমি:খ: প্রলেগে। বৃণ্ণাধনঃ ॥

তিল, নৈদ্ধবলবণ, নষ্টিমধু, তেউড়ী, নিম-পাতা, হরিদাও দাকহরিদা এই সকল তব্য উত্তমক্রপে প্রতিত ও গুড সংস্কু করিয়া, ভদাবা প্রতেপ দিলে ব্যের বিশুদ্ধি হয়।

নিবপ রং তিল। লস্ট ভিতৰ সেন্ধবমাক্ষিকম্। ভ্রম্বৰপ্ৰমানা লেগাং শোধনকেশ্বী ॥

নিমপাতা, তিল, দন্ধীও তেউড়ী এই সকল দ্রব্য সমভাগে বাটিয়া সৈন্ধব লবণ ও মধুব সহিত মিশ্রিত করত তন্ধারা প্রলেপ দিলে ভইবণের পশ্ম হয়। হহা সর্কোৎকৃষ্ট নগশোধক উষ্ধ।

প্ৰক্ৰা শ্বিৰামূল্য স্বৰ্বণ বিশোধন্ম ॥

অথবা একমাৰ অভস্ত বাটিয়া প্ৰশেপ দিল্ভ স্কাপ্কাৰ বা বিশ্ব হয়।

বিষক্ষা থানিলো সানগা ক্যপ্তোপাদিবলাকুশা। । নিম্বলোলকপাক্ষাতি ক্যাথ্য শোপনে হিন্দু ।

ত্তিকল, গদির, দাকুছবিদা, স্তর্থাধাদি-গণ বেড়েলা, কুণ, নিমপাতা ও কুলপাতা, ইতাদের কমায় বশশোধন হিতকর।

াৰণে এপ, ভিনা মে নাং মাংসন্তানামধ্যে চত্ত্ৰে। কৰু, সংযোপণঃ কাৰা, ফলানাং মধুকা বিভঃ নি

পচ নাংস সকল অপগত হইলেও মাংসম্থ বং বাদ প্রকাচ না ২০, তাহা হইলে ভিল ও দ্বিম্বু করের (পাসারবে মধুসংশক্ত ভিল করের) প্রধাপণ দিবে, ভাহাতে ব্যাধ্র রোপণ হইবে।

নিলপ্রনিধূছাকৈ যুক্তা সংশোধনা মাঙা। প্রশোধা স্পিয়া বাপি যুক্তশুগুপুপেরোপ্রা। নিলপ্রতিকো কৰো মধুনা কতলোধনা। রাপ্রায় মার্শিয়া যুক্তা যহকাক্ষ্পায়ং বিধিঃ॥

নিধণত এবং নধুর স্হিত পুর্বোক্ত **বৃষ্টি-**মধুও তিলের কক মিশ্রিত ক**রিয়া অথবা**

ভিললো মধ্দংযুত ইতি পাঠাভরম্।

ষষ্টিমধু, তিল, নিম্বপত্ত ও মধু ইছানের করের সহিত দ্বত মিশ্রিত করিয়া রণে প্রালেপ দিলে প্রশের শোধন ও রোপণ হয়। নির্মপত্ত ও তিল বাটিয়া, তাহাতে মধু ও দ্বত মিশ্রিত করত প্রশেপ দিলেও ক্ষতের শোধন ও রোপণ হইয়া থাকে। যবের করুও এইরূপে ব্যবহার করিবে।

সপ্তদলভূষ্ণকৰ: শমণতি ভূষ্ট্রণং লেপাং। মধুযুক্তা শরপুঝা ভূষ্ট্রণরোপনী ক্থিতা।

কেবলমাত্র ছাভিমের আঠা ধারা অথবা শরপুমার কল্প মধু সংস্কুত করিয়া ভদারা প্রালেপ দিলে তুইবা প্রকাচ হয়।

निष्य''जञ्च उटकोञ्च-माननीमधूकमः युठाः वर्षिष्ठिकानाः कस्का वा स्वाधःप्रकाशसम्बद्धः स्वाप्तः

নিমপাতা, দ্বত, নবু, দারুহিং দা ও বাই মবু ইহাদের কল দারা বন্ত্রপণ্ড প্রলিপ্ত করিয়: তাহার বর্ত্তি (পলিতা) প্রস্তুত করিবে। সেই বর্ত্তি ব্রণমুশে নিহিত করিলে অথবা তিলকদ্বের প্রান্থে দিলে ব্রণ বিশুদ্ধ ও সংর্চ হয়।

অধ্যক্ষা ক্লহা লোধং কট্ফলং মধুয়ন্তিকা । সমস্যা ধাতকীপুস্পং প্রমং প্রণ্রোপণম ॥

অখগন্ধা, কট্কী, লোপ, কট্দল, যষ্টমধু, লজ্জালু লভা ও ধাইফুল ইহানের প্রলেপ দিলে ব্রণ শীঘ্র প্রকৃত হয়।

পক্ষকচুৰ্টেৰ্বা শুক্তিচ্পসমাযুক্তিঃ। ধাতকীচ্পলোধ্ৰৈৰ বিভৰা বেৱাংগ্ৰি তে প্ৰণাঃ। (শুক্তিব্দরী ভঞান্তক্। শুক্তিচ্পসমণ্যুভৈৱিতি পঞ্চৰশুলচুৰ্টেৰিডাক্ত বিশেষণমিতি চফ-টাকা।)

বট, অশ্বথ, পাকুড়, যজ্জুনুর ও বেতস এই পাঁচটিঃ বুক্ষের ছক্ এবং বদরী (কুল) বুক্ষের ছক্ চুর্ণ করিয়া তাহার প্রলেপ দিলে অথবা ধাইকুল ও লোধ চুর্ণের প্রলেপ দিলে ব্রণের রোপণ হয়।

সদাহা বেদনাবস্তো বে এণা মালতোওরা:। তেৰাং তিলাত্মাকৈব ভৃষ্ট'ন্ পদ্মসি নির্কৃতান্॥ তেনৈব পদ্মনা পিষ্ট্ৰা দ্ঞাদালেপনং ভিষক্॥

তিল ও তিসি ভাজিয়া তাহা ছথে নিকা পিকৃও সেই ছথেই পেষিত করিয়া, ভড়ারা যে সকল, ত্রণ দাহ ও বেদনালিত এবং বাতো-বণ, তাহাতে প্রলেপ দিবে।

বাতাভিজ্তান্ সাপাবান্ গুপন্নে গ্ৰেক প্ৰনান্; যবাজাভূজ্জনদন-শ্ৰীবেছক প্ৰাহ্বলৈ; ॥ (মদন: সিক্ধক:। শ্ৰীবেইকো নবনীত গোটা ইতি চক্ৰ-টা:।)

অন্ধ্রমাববিশিষ্ট অথচ উত্তবেদনাযুক্ত বাজোখণ রণে, যব, ঘুড, ভূজ্জপত্র, মোম, গন্ধবিরজা ও দেবদার ইহাদের ধুপ প্রদান করিবে।

জীবাস ওপ্তথ ওক্স-শাল্মিয়াসবুলিতাঃ। কঠিনজং এপা সাজি নশালামাবাবেদনাঃ॥

নবনাতশোটি, গুগ্গুলু, অগুর ও প্না ইহাদের প্প প্রয়োগ করিলে, বং কঠিন হয়। এবং জালাব ও বেদনা নিবারিত হইয় থাকে। নাকুষ শ্র কলাল ভদ্প বা লেপনং মত্রেগ। রোপণ্যিদং ফাংনিং যোগন্তেবপাস্বানান্। (মৃকুষ্থিরকেশ্লেমিত প্রাণং গাহামিত। চক্রটাকা

মন্ত্রের কপালান্থি (পুরাতন) অথবা অন্তি, গোমুতে বাটিয়া প্রলেপ দিলে অসাধা ক্ষতিও প্রবাচ হয়।

স্ববীপত্ৰপ্ত র-কণমেন্টকুঠেরকাঃ। পুৰ্বেতে প্রলেগ্রন গ্রাহারবণবোপণা

উচ্চেপাতা, শালিক্ষা, কান্ছিড়া ও তুলমী পত্র, ইহাদেব প্রত্যোকের প্রলেপে গদ্ধীন এণ সংরুড় হয়।

লেংকুদ্ধালকে যুদ্ধ। লিম্পাক্ষনবারিণা। শেতার্কসম্ভবং মলা লেপং দক্তাৎ ক্ষতোপরি। স্থি গোগশতাদাগ্যং ক্ষতং হস্তি ন সংশয়ং॥

লৌহনিম্মিত কোদালে, পাতিলেবুর রসে খেত আকদের মূল ঘ্রিয়া ক্ষতের উপর প্রলেপ দিলে অসাধ্য ক্ষত্ত নিবারিত হয়।

যবচূৰ্ণং সমধুকং সভৈলং সহ স্পির। । দক্তাদালেপনং কোঞ্চং দাহশূলোপণান্তয়ে ॥

যব ও যি সমধু চ্র্ন, তৈল এবং স্থাতের সহিত্ মিশ্রিত ও ঈষত্বক করিয়া প্রালেপ দিলে ক্ষত-জনিত দাহ ও বেদনা প্রশাসিত হয়। কর্ম্পারিষ্টনিক ওী-লেপো হজাদ্রণজিমীন।
লক্তনজাধনা কেপো হিঙ্গুনিম্বরুটোগনা ॥
নিম্পান্তবাহিঙ্গু-মর্পিল বণদর্থপে:।
ধূপনং ভাদ্রণে রৌক্ষা-জিনিক্ডুক্তরাপহম্ ॥
করম্ভ নিম ও নিসিন্দা অথবা রগুন
বাটিয়া প্রলেপ দিলে কিংবা হিং ও নিমপাতা,
অথবা নিমপাতা, বচ, হিং, ঘ্রত, লবণ ও খেত
সমপ ইহাদের পপ প্ররোগ করিলে ব্রনেব
কৃক্ষতা, ক্রিমি, কণ্ণ ও বেননা নির ১২।।

খেতকরবারন্ত ব্যস্থিপ লা'লা • মৃ
পলাষ্ট্রকমিদং গ্রা-ক্ষার্মেকজ মিল্ডেং ।
দ্বি কুলা তদাবর্জ নির্মাণ, নবনাত্তকম ।
গুলীয়া তেন লেপেন ক্ষাতং হস্তি চিরোপিওম্ ।
আক্ষোতে গুলনিয়ালা ক্ষাতং হস্তি চিরোপিওম্ ।
শ্বেতকরবীর মুলের রস । । প্রায়া ও গ্রা য়া ১১ সের একজে নিশাইয়া দ্বি পালিবে

বের কর্মার মুল্নর রস সাল গোলার স্থা হর্ম সে সের একতা মিশাইয়া দিদি পাতিবে, সে দ্ধি মন্তন করিলে যে নবনীত উপিত হইবে, তাহাব প্রলেপ দিলে অপব: হাপর-মালীর আঠার লেপ দিলে দীঘকাল-উংপল ক্ষত্ত নিবারিত হয়।

ত্রিফলাগুগ্ওলু।

যে ,বৰপাকফাতিগন্ধবিষ্ঠা প্ৰশাসহান্তঃ সক্তঃ সন্ধোৰা , , প্ৰয়াস্তি ,ত গুণাঞ্জু মিলিতেন পীতেম শাস্তিং ভিজ্ঞারসেন।

ত্রিফলার কাথ অন্ধপোয়', মৃত-পেষিত গুগুগুল ৪ মাঝা, একত্র মিশ্রিত করিয়া পান করিলে ক্লেন পাক স্রাব তুর্গন্ধ বেদন। ও শোথ বিশিষ্ট প্রবল ত্রণ উপশ্যিত হয়।

সপ্তাঙ্গগুগগুলুঃ।

বিড়ক জিক সাবেয়া মুর্গং গুণাগুণানা সমস্। সপিয়া বটিকাং কুঞা গাদেদ্ বা ছিতভোজনঃ। ছষ্টবৰ্ণাপচীমেই-কুঠন'ড়ীবিশোধনঃ॥

্বিড়ঙ্গ, ত্রিফলা ও ত্রিকটু প্রত্যেক ২ তোলা, শুগা, শুলু ১৪ তোলা, এই সমুদায় স্বতের সংহিত মন্দন করিয়া স্নিগ্ধ ভাণ্ডে রাখিয়া দিবে। আহারান্ডে সেবনীয়। মাত্রা—১ ভোলা।

অন্প্রণান—উঞ্চল। ইহাতে হুইব্রণ, **অপচী**, মেহ প্রভৃতি নিবারিত হয়।

প্রপোগুরীকাদ্যং মৃত্যু।

প্রপৌওরীকমঞ্চিঠা-মধুকোশীরপলকৈ:। সহবিজ্যে শৃতং সূর্পি: সক্ষীরং রুশরোপণমু ॥

ন্ত /১ সের, হগ্ন /৪ সের। কন্ধার্থ— নালোংপল, মঞ্জিলা, যষ্টিমধু, বেণামূল, পদ্ম কাঠি ও গ্রেক। মথাবিদি পাক করিবে। এই ঘুত বন্ধাপক।

তিক্রাদাহত্য।

তি জাসিক্থ নিশাষ্টি-নজাংহকজলপলবৈ:। পটোলমাল জীনিল পাঁচিব গিং মুভং শুভম ॥

কট্কী, সোম, হরিজা, বৃষ্টিমধু, ভহর-করঞ্জাব ফল ও পত্র, পটোলপত্র, মালভীপত্র ও নিম্নপত্র এই সকল কল্প সহ ম্পাবিধি শ্বত পাক করিয়া ব্যবহার কবিলোরণ বিনষ্ট হয়।

করঞ্জাদ্যস্থতম।

নজনালদা প্রাণ্ তরুণানি দলানি চ।
কুংনাজাপ্স প্রাণি পটোলারিষ্টকে তথা ॥
ছে হাবলে মর্ছিঙ্ক মধ্কং তিরুরোটেনী।
মঞ্জিত চন্দানারমুংপলং লগবেব ত্রুর ॥
বংহদাং কার্বিকেভাবেল ত্রুত্বং বিপাচয়েং ।
ছুধ্বব্রুবানাক ক্রুলান্সিবং শুভ্রুষ্

কন্ধার্থ—ডগ্র-করপ্পার নূতন পত্র ও কচি কল, মালতীপত্র পটোলপত, নিম্বপত্র, হরিদ্রা, দারহরিদ্রা, মোম, মষ্টিমধু, কট্কী, মঞ্জিষ্ঠা, রক্তরনান, বেণার মূল, নীলোৎপল, অনস্তমূল, প্রানালতা ও তেউড়ী প্রত্যেক ২ তোলা। মৃত ৪ সো। যথাবিধি পাক কদিবে। ইহাতে তুইত্রান, নালী-ঘা ও ছিন্মরণ প্রভৃতি প্রশ্মিত হয়।

দুৰ্ব্বাদ্যং তৈলং হুতঞ্চ।

দ্ৰ্বাৰেরস্সিদ্ধং বা তৈলং কম্পিলকেন চ।
দালীক্ষণ কৰেন প্ৰধানং প্ৰণৱোপণৰ্

আয়ুৰ্বেদ-সংগ্ৰহঃ।

ষেশৈৰ বিধিনা তৈলং ঘতং তেনৈৰ সাধ্যেৎ। রক্তশিক্তোন্তবং জ্ঞাতা সর্পিনেবাৰচারয়েং।

দুর্বার সরস এবং কমলাগুড়ির ও দারু-প্রণে প্রয়োগ করিবে।

জাত্যাদ্যং মৃতং তৈলঞ্চ।

জাতীনখপটোলপত্ৰকটকাল'নবী'নধানাবিবা मञ्जित्ता अवस्थित विकास में बर्ग के विकास में बर्ग । म'र्लः मिश्वमात्मन रुक्तत्वस्मा अध्याध्याधाः स्पृतिःवा গম্ভীবাঃ সক্ষ্যপ্ৰা ওলাঃ সমৃতিকাঃ গুৰাক্ত বেক্তি চ

का ठीभज, नियमज. भारतिमभज, करेकी. দারুহ্রিজা, হবিজা, অনস্তম্প, মঞ্জিটা, বেপার মূল, মোম, ভূঁতে, বৃষ্টমধু ও ভহরকরঞ্চরীক, ১ সমুদায়ে 🔑 দের। এই সমুদায় কল সহ। যথাবিধি 🗸 ৪ সের ঘুঠ বা তৈল পাক করিবে : 🔻 এই মূত ও তৈল মারা ক্ষতাদি হটতে প্য নি:স্ত হটয়া উহা শুক হইয়া যায়।

গৌরাদ্যং মুতং তৈলঞ।

পৌরা হরিলা মঞ্জিঠা মাংদী মধুক্ষেব চ। **व्यापी ख**र्दोकः श्रीत्वतः क्षप्तमुखः महक्तनम् । खाडीनिय्यादिग्लक कार्यः कहाराहिनी। मधाक्केश मगध्कर: मश्रामणी अरेबन ह ॥ পঞ্চৰজ্জতে হৈন প্ৰভাৱত বিপাধ্যে । এব গৌরো মহাযোগঃ সর্ববশ্বিশোধনঃ ॥ আপস্থসহজাতৈর হুচিরোখাত ব এণাং ; বিষমামপি নাডীয়া শোণয়েচ্ছীয়দেব তু ॥ গৌরাভা হাতিকাভাক তৈলমেবং এস্থাতে। ভৈলং কুল্মাননে ছাষ্ট্ৰেণে গ্ৰীব এব চঃ

মুছ /৪ সের। কাথার্থ—বট, ধ্রুড়মূর, অখ্থ, পাকুড় ও বেত ইহাদের ছাল ১৮ দের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। কল্বার্ক-হরিন্তা, शांकर्विका, मिक्का, क्लामाश्मी, পুশুরীক কাষ্ট, বালা, ভদ্রমূতা, রক্তালন,

জাতীপত্র, নিমপত্র, পটোবপত্র, ডহরকরঞ্জবীজ, क्ट्रेकी, स्माम, यष्ट्रियथ ও नहास्मन এड সমুদায়ে 🗸 সের। এই শ্বত দেখনে আগত্ত হরিদ্রা-মকের কল্প সহ তৈল পাক করিয়া ও সহজ এণ এবং নাড়ীব্রণ প্রভৃতি নানাবিদ প্রয়োগ করিলে এব রোপণ হয়। উক্ত স্ববস ! কতে শুক হয়। এই সমুদায় কল ও কাথ সহ ও কল সহ স্বত পাক করিয়া রক্তপিতোত্তব [†] যথাবিধি তৈল পাক করিয়া সুদ্ধমূধ গন্তীব ও ছাই ব্রে লাগাইলে উহাদের উপলম হয়। এই তৈলকে গোঁবান্ত তৈল কছে।

বহজাতীকাদাং তৈলম।

জাতী নম্বাটোলানাং মক্তমালপ্ত প্রায়ে। 'मक्षकर प्रवृक्तर वृक्षरहैं (व निर्•ान उन्द्राप्तर्ग ह মঞ্জিষ্ঠ। পশ্ধক েল'ধ্রমন্ডলা পরকেশবম্ । তথকং শারিক বীজং নক্তমালন্ত দাপ্তেই ন তে নি সমস্পান পিষ্টা , ডলং বিপাচ্যেৎ বিষ্ঠাপ সমুৎপল্লে খোটাক কুটাবোলিয় ন क्षशीमलेक्षाक्ष्य कोष्ठिताक्ष्य मन्द्रभः। স্ত্যু:শস্ত্রপ্রথই'রেম্ব দাষ্ট্রেরিন্ধেন্ন চের ভি ॥ नवनश्चकर ७ (मुट्ड छन्नेश) संभ्यकर्षणम : अक्षर्रभी अस्त । इस्तर दि इर् , न्यं यस (त्राप्याक्ष ।

তেল ৪.সব। করাথ-ভাতীপত্র, নিম-পত্র, পটোলপত্র, ৬হবকরঞ্জপত্র, মোম, যষ্ট-र्यु, कुछ श्रीक्ष, मानश्रीवृक्ष, कहेकी, मुख्छा, প্রাক্তি, লোন, হ্বীতকা, প্রো কেশর, ্ততে, অন্তম্ল ও ডংরকরঞ্জীজ স্মভাগে সমন্ত্রে ১ দের। এই তেল যথাবিধি পাক া করিয়া ব্যবহার করিলে বিষরণ, স্ফোটক, কুঠ, ৮৮ বিদ্রপ্ত সক্ষপ্রকার কাটরোগ এবং দখ শ্ব প্রহারজনিত নানাবেধ কতেব শাস্তি হয়।

বিপ্রতিষ্কাতিলয়।

দিন্দর্শ্র বিষ্টিশ্ব রাস্থান চিঞ্ বালা জিলাল লিককৰ বিপ্ৰতেল্য। প্র'সাদকর্যুত্তৃৎকৃতপুনফেনং রিল্লব্ৰ প্রশম্মে বিপরী ভ্রমল:। পড়গ'ভিশ'ত গ্রন্থ সংহাপদংশ-নাড়ী**ত্রণক্ষ**তবিচ্চিত্রক কুষ্ঠপামাঃ। এতান 🗪 স্থি বিপরীতক্ষরনাম ं इसर यरबद्धनग्रनाननः डाबनच्य ।

কটুতৈল /৪ সের। কন্ধার্থ—দিন্তুর, কুড়, বিষ, হিং, রহ্মন, চিভামূল, বালামূল ও দিশ্লাক্ষলা প্রত্যেক ১ পল। পাকের জল ১৬ সের। যথাশাস্ত্র পাকাদি সম্পন্ন করিবে। এই তৈল লাগাইলে বড়গাভিঘাত, উংকট উপদংশ ও নাড়ীরণ প্রভৃতি নানাবিধ ক্ষত ওছ হয়।

ত্রণরাক্ষসতৈলম।

ত কৰা গৰ্জকৰ তালং দিন্দুৱক মনগ্ৰিল।

রসোনক বিদ্যাতা সং প্রত্যেকৰ কৰ্মাতবের।

কুড়বং সাপপা তৈলং সাধ্যের ত্বাতাপত।

নাড়ীরপক বিদ্যোতি মাংসর্জিং বিচিচিক মৃত্তি প্রত্যান ব্যাংস্থাতা

ব্যালাদান্য্যাত্তিক প্রত্যান ব্যাংস্থাত্তিক বিদ্যালাদান্য্যাত্তিক হিন্তু

কটুতৈল া। পের। ককার্থ—পারা, গন্ধক (কজ্জলীক্ষত), হরিতাল, মেটেদিন্দ্র, মন-, ছাল, রস্তম, বিষ ও তাম প্রত্যেক ২ তোলা। ইহা স্থাতাপে পাক করিতে হয়। এই তৈল মদনে নাড়ীরণ (নালী-ঘা), বিস্ফোটক, মাংসনৃদ্ধি, বিচ্চিকা, ও দদ প্রভৃতি নানা নাগুনই হইয়া থাকে।

त्रश् द्रशताकनरेटनम्।

কুড়বং সাধপং তেনং ওদাছং গোগৃতস্ত চ।
একীকৃত্য পচেৎ তৎ তু প্ৰাপত্তরসেন তু ।
চিত্রপত্রপলং কলং দধা তত্র বিপাচরেং।
৩২ কলং প্রাবয়িষা তু চুর্গমেবাং বিনিক্ষিপেং।
গজকং গুজমিলুরং ইরিচালং মন্যানিলা।
ইরিজা গৈরিকং রাজী কথাছং প্রতিভাগিকম্ ।
ভাগাছিং পারদকাপি কজ্জলীকৃত্য মিশ্রবেং।
২তত্তে মিশ্রমিণ তু তত্তং কৃষা প্রলেপ্যেং।
কণ্ডুং বিচচিচকাং পামাং ব্লেদং কৃষ্ঠং প্রত্তরম।
বাতরক্তং র্ণান্ সর্বান্ বিববিক্ষেট্দ্যান্তম।
নিহয়ান্ড মহান্ত্রিকং তৈলক্ত র্ণরাক্ষ্যমা।

কটুতৈল ৪ পল, গব্য ঘুত ২ পল ; কক্ষ— চিতার পত্র ১ পল। আকন্দপত্তের রস /৩ সের। এই সমুদার পাক করিয়া তৈল ছাকিয়া লইয়া তপ্ত থাকিতে উহাতে গন্ধক

অথ পথ্যাপথ্যবিশিঃ।

ভ্রণরোগে পথ্যানি

যাবষষ্টিকগোর্মা জাঙ্গলা মুগপক্ষিণঃ।
বিলেপা লাজমঙ্গ কটুতৈলং যুতং মধু।
তিলং মহ্মনুররী মুগগা্যবাল লকনা।
আবাচফলব ভিনিক্-কলোটকপটোজকন্।
কাবরলং নিম্বপত্রং বেত্রাগ্রং বালমলকম্।
প্রমিণকশালিক-ভঙ্গীরকবাস্তকম্।
বিফলা পনসং নেচং দাভিসং কটুকীকলম্।
ভাবতী সেজবং জাঙ্গা আছিভিক্তকবায়কণং।
সমস্তমেতদলম্ভ নিজমুকং স্বোভরম্।
ভাবতং শমনং দাহং স্বেদনং বন্ধন্তিয়া।
ব্যাবচর্গনং লেপো যুপনং প্রধারণম্।
ভিনীরবালবাজনং চন্দনং ভিললেপনম্।
বঙং প্রাং নবৈঃ সেবাং ব্যাবস্থা বিশ্বপাং নবৈঃ সেবাং ব্যাবস্থা বিশ্বপাধ্য বাবে সজ্যোত্রবে নাউনিগ্রহণ্পি চা।

ধব, বৃষ্টিকধান্ত, গোধুন, জান্ধল মৃগ পক্ষী প্রভৃতির মাংস, বিলেপী, লাভমণ্ড, কটুতৈল, ঘত, মধু, তিলতৈল; মসুর, অভ্ছর ও মুগের দাইলের যুব, চিনি, প্লাশবীন্ধ, বেগুণ, কাকুড় ও পটোল, করলা, নিমপাতা, বেতাগ্র, কচিমূলা, সুমৃণিশাক, শালিক্ষে পাক, নটে শাক, বেতোশাক, ত্রিফলা, কাটাল, মোচা, দাড়িম, কট্কীফল, জীবস্তী, সৈন্ধন, কিদ্মিস্, মধুর-তিক্ত-ক্ষায়-রসমৃক্ত দ্রবা, সিগ্ধ, উষ্ণ ও দ্রবব্ছল অল্ল, এষণ (লোহশলাকা দারা নালীর গতি নিরূপণ), শমন ঔষধ, ব্রশ্বানদ্হন, স্বেদন, বন্ধনজিয়া (ব্রণস্থানে বায়ুর সংস্পর্ণ না হয় এমত ভাবে বন্ধন), ব্রণে চুর্ণ ঔষধ প্রয়োগ, প্রাণেপন, ধুপন, পাতা লাগান, বেণার মূল, চামর স্কালন, রক্তচন্দন এবং তিলকন্ধ লেপন, এই মুক্তল ব্রণ, ব্রণশোধ, সম্ভোব্রণ ও নাড়ী-ব্রণে হিতকর।

ত্রণরোগ্নেহপথ্যানি।

নবানি ধান্তানি তিলান কলায়ান মাধান **কুলখা**ন কুশরাং হিমান্ত: ৷ ক্ষীরেক্সভাতান বিবিধান বিকারান মন্ত্ৰানি শাকাৰি চ পত্ৰবস্তি **৷** व्यवाननः याःमगमायायः विमाडिविद्वेषिक्षकानि ठानि। करं मणीजः ननगः बावाय-মারাসমুক্ত: পরিভাষণঞ ॥ প্রিয়াসমালোকনম্ফি নিজাং প্রকাগরং চংক্রমণ নিতান্তম। সদান্তিতিং আগধিরোপণঞ ৰক্তানি তাৰ্শমজীৰ্ণতাঞ । এচঙৰাতা তপধমনুষ্ট-রভোতয়ক্রোধ্বমিপ্রহয়ন। শোকং বিক্তাপ্ৰমণ্য উক্তোকককালি বিঘটনক ॥

কণ্ড্যনং কাঠনখাদিতোদং
নিরম্নভাবং বিৰ্মোপচারম্।
বৈষ্টাকিকিৎসন্ এপশোধরোগং
এণঞ্চ সভোএণমাময়ঞ্॥
নাড়ীএপঞ্চাপি বশোহভিনাবী
বিবক্তরেৎ সম্ভতমপ্রমন্তঃ॥

ন্তন্ধান্ত, তিল, মটার, মাধকলায়, কলখ-কলায়, থিচ্ছি, শীতলজন, নানাবিধ ক্ষীর-বিকৃতি (ছানাদি), ইকুবিকৃতি (গুড়াদি). মতা, পত্ৰশাক, জাঙ্গল ভিন্ন অপর মাংস, অসাত্মাদ্রব্য, বিদাহিদ্রব্য, বিষ্টব্যিদ্রব্য, प्रवा, कर्ष्ट्रवा, जामजवा, भीटलप्रवा, लब्बबन भःगुक जवा, देमथून, वामाम, উरिक्रःश्वरत वाका-কথন, প্রিয়াদর্শন, দিবানিস্তা, রাত্রিজাগরণ, অতিশয় পথ ভ্ৰমণ, সর্বদা বসিয়া থাকা. সংশোধন ঔষধ প্রায়োগ না করিয়া অগ্রেই বোপণ ঔদ্ধ দান, নম্ম প্রয়োগ, ভাষুলভক্ষণ, অজীৰ্ণতা, প্ৰবৃদ্ধ বায়ু, রৌদ্র, ধুম, বৃষ্টির জল, ধলি, ভয়, ক্রোধ, বমন, প্রাহর্ষণ, শোক, বিরুদ্ধ ভোজন, জলপান, তীক্ষপ্রবা, উষ্ণদ্রবা, ক্লক্ষত্ৰৰ এবং বিঘটন (ঘৰ্ষণ), চলকান, কাঙ অপবা নথাদি খারা বিদ্ধ করা, উপবাদ, বিষম-ভাবে শয়ন, এই গুলি ব্রণ ব্রণশোপ, সংখ্যাবণ ও নাডীরণ রোগে অহিতকর।

ইত্যায়ৰ্কেদ-সংগ্ৰহে ব্ৰণণোপাধিকার:।

অথ সত্যোত্রণাধিকারঃ।

অথ সভোরণ-নিদানম্।

নানাধারমুগৈ শক্তৈবানাস্থাননিপাতিতৈ।
ভবন্তি নানাকৃতরো রপান্তাংস্তান্ নিবৌধ মে।
ক্রিং ভিন্নং তথা বিদ্ধা কতং পিচিত্তমের চ
ঘুন্তমান্তথাৰ ষঠং তেখাং বন্ধামি লক্ষণম্।
নানাপ্রকার ধারমুখবিশিপ্ত শস্ত্র শন্ত্রীরের
নানান্তানে নিপতিত হইলে নানাক্ষতি বণ
(ক্ষত) উৎপন্ন হয়। এইপ্রকাব ব্রুকে
সম্পোরণ বা আগ্রুফ রণ কহে। ইহা ছয়
প্রকার। মৃথা—ছিন্ন, ভিন্ন, বিদ্ধ, ক্ষত, পিচিত্ত

অথ স্বোত্রণ-ার্চাক্ৎসা।

मनः भिला ममक्रिका नजाका तकने चप्रम ¹ প্রানেপঃ সমুতকৌদ্রস্থতঃ সাবর্ণাকৃৎ স্থাতঃ ॥ মনঃশিলা, মঞ্জিষ্ঠা, লাক্ষা, হরিদ্রা ও দারু-হরিক্সা এই সকল দ্রব্য বাটিয়া ভাহাতে স্বত ও মধু সংযুক্ত করিয়া প্রবেপ বিবৰ্ণতা নষ্ট হইয়া স্বাভাবিক বৰ্ণ হয়। কপুরপুরিতং বন্ধ সমৃতং সংপ্ররোছতি। সন্তঃ শস্ত্ৰকৃতং পুংসাং বাৰংপাকবিৰজ্জিতম্ শম্বাদিক চ সন্ত উংপর ক্তের মান্তাগ শতগোত-মতমিশ্র কপ্রচুর্ণ ধারা পুর্ণ করিয়া বস্ত্রখণ্ড দিয়া বাধিয়া রাখিলে, ক্ষতের ব্যুণা ও পাক নিবাবিত এবং ক্ষত সংরু ইইয়া থাকে। শ্রপুরা কাকজজা প্রথমং মহিষীস্ ১-मनः नक्त ह मण्यन-जनमः भूनान जू। ওনো জিল্লাকৃতং চূর্ণং সন্তঃ কতবিরোহণম্॥ নবজাত মহিষী-শরপুঝা, কাকজব্বা, শাবকের প্রথম মল ও লজ্জালু লতা (কাহার মতে ব্যাহকোস্কা) ইহাদের প্রত্যেকের প্রলেপে সভঃ কত বিরু হয়। কুকুরের জিহবা চুর্ সত্যঃ ক্ষত্ত রোপণ করে।

সপ্তঃক্ষতত্রণং নেজ্যঃ সশুসং পরিবেচয়েৎ 🛊 যঠীমধুকককেন কিঞ্চিত্রকন সর্পিবা 🛊

ন্বৰ্ত । পোনা, যৃষ্টিমধু কক্ষ ৪ তোলা, পাকাৰ্থ জল ১৮০ পোনা। যথাবিধি পাক করত দেই ন্বত ঈষত্ব্ধ ক্রিয়া সম্ভোত্তণে দেচন করিলে উহা প্রশ্মিত হয়।

শ্রবভাশ্রর রণে বাসন্তোয়সিক্তং প্রযোজরেৎ। তেনশ্রেরোধো ভবতি বেদনা চ প্রশাস্তি ।

ক্ষত হইতে রক্তসাব হইতে থাকিলে জগ-সিক্ত বস্ত্রথণ্ড বন্ধন করিবে, ভাহাতে রক্তসাব বন্ধ হইবে।

অপামাগস্ত দ'সিকং পত্রেপ্নের রসেন তু। সন্ত্যেরণেষু রক্তম্ব প্রবৃত্তি ।

কোন স্থান কাটিয়া গিল্লা রক্তপ্রাব হইলে সেই স্থানে আপাঙ্গের রস দিলে রক্তপ্রাব নিবারিত হয়।

ইতি সাপ্তাহিক কাষ্য সন্ধ্যোরণ্টিচে বিধিঃ।
সপ্তাহাৎ পরতঃ কুষ্যাক্ষরোররণবং ক্রিয়া ।
সন্ধ্যোরণে সপ্তাহ পর্যান্ত এইরপ ক্রিয়া
করিবে, সপ্তাহের পর পূর্বোক্ত শারীররণের
ক্ষতের চিকিৎসা করিবে।

অথাগ্নিদমত্রণ-চিকিৎসা।

পিওবিছ(ধরীসপ-শমনং লেপনাদিকম্। অগ্রিদক্ষে ত্রণে সমাক্ প্রযুক্ষীত চিকিৎসকঃ ।

পিত্তবিদ্রণি ও পিত্তবিদপের যে সকল প্রলেপানি উন্নিখিত হইরাছে, অন্নিম্বর্ধ ক্ষতেও সেই সমস্ত প্রয়োগ করিবে।

जिन्दिका विना वर्षः वर्णकामम्बद्धः । जानुकार्याः नाजनस्मित्वास्त्राम्

ভিল ও যব ভত্ম করিয়া অধিনয় ক্ষতে। প্রলেপ দিলে, ক্ষত নিবারিত হয়। डिनरेडरेनर्यनाम् नक्ष्मा ममः कृषा छू त्नशरहर । टिनेन (तमनोज्ञान्त तक्ष्मिक्षः सूथी ज्यतर ।

ধবভন্দ তিলতৈলের সহিত সমভাগে মিলিত করিয়া তত্বারা প্রলেপ দিলে, অগ্নি-দর্ম বাক্তির আশু আলা মন্ত্রণা নির্ভ হয়।

সজোদম্বন মধুনা নেপং কৃষা ভিষৰর:।
তৎপুঠে বনচূর্ণেন লেপং স্যান্দাহশান্তরে।
অগ্নিদম্ম ক্ষতে মধু মাণাইয়া, তাহার
উপরিভাগে যবচূর্ণ লেপন করিলে জালা
নিব্রত হয়।

ৰহিমীনবনীতেন কীরেণ পেষয়েৎ তিলম্। তেন লেপেন দক্ষাকং সদ'হং কুসমগুতে॥

মহিষীর নবনীত ও ছগ্নো সহিত তিব বাটিয়া তথারা প্রলেপ দিলে দাহ নির্ভ হয়।

भराबाद्वीक्षरात्वणाम् नभणुकावरूर्वनम् । कौर्वगृरङ्गाकत्वरं मकत्वग्रसः अतम्॥

় জলপিপলার মূল ও গৃহের জীর্ণ পড় চুর্ণ করিয়া দক্ষভানে লাগাটয়া দিলে ১০৯ কত নিবারিত হয়।

অন্তদ শকুঠেরকে। দহনজং লেপারিহন্তি বণ্ন। অন্তল্পত বিশুক্তবন্দকুতং চূণ্য তলা গুওনাং।

বাবৃইজুলদী অথবা অব্ধথের শুক্চাল অন্তপুনে দগ্ধ করিয়া ভাধার চুর্গ লেপন করিলে অধিদ্যাক্ত নিবারিত হয়।

শুড়ান্থান্থ বিনিইন্তি তেলস্থিত। গুপুণ্টা শাক্ষণিত লাক্ষণিত লাক্ষণিত লগাং আ বালুকা: আ কোনো কৈনো কৈনো কৈনো পাকার্য জল /৪ সের) লাগাইলে, অপবা জলান্তিত বালুকা পেষণ করিয়া শিমুল তুলাব সহিতে লোপ দিলে সকল প্রকার কন্ত নিবারিত ভর ॥

পাটলীতৈলম্।

নিছা কছকবালাভ্যাং পাউল্যাঃ কটু ভেলকম। দক্ষরণক্ষাশাব-দাংহবিশোটনাশ্যম্ ॥

সর্বপতৈল /৪ দের। কাথার্থ—ঘণ্ট: পাকল ছাল /৮ দের, জল ৬৪ দের, শেষ ১% সের। কক্ত-ঘণ্টাপাকল ছাল /১ সেব। এই ভৈল লাগাইলে দগ্ধস্থানের বেদনা বসানি স্রাব ও দাহ এবং বিস্ফোটক নই হয়।

জীরকরতম্।

জীরকপকং পশ্চংও সিক্থকস্ক্রবস্মিঞ্জিত: ২রাজ । পুত্রমন্ত্রকার পাবক-দগ্রজ্ঞতাং ক্রণার্ক্তেন ॥

ন্ত , ৪ সেন, জল ১৬ সেন, কলার্থ--জীরা /১ সেন। পাক সিদ্ধ হটলে মোম দ পল ও সুন: ৪ পল প্রাক্ষেপ দিনে। ইহা দদ্ধ ক্ষত নাশক।

মঞ্জিষ্ঠাদ্যং মুত্র ।

মঞ্জিটাং চল-নং মক্ষণ পিছে। সাংগণিপাচারং। সক্ষেদ্যোগদ্ধানামেতদোপণমিধ্যতে । (কেচিৎ ভূস প্রিসার তিলমিতি পাসং কর্মাণ মঞ্জিটাস্তং তেলমিতি গঠিছা।)

মঞ্জিয়া, রক্তাচন্দন ও মুর্না ইহাদের কর ও চতুপুণ জ্বলাহ স্থাবিদি স্বত বা তৈল পাক ক্রিয়া, সকল প্রকার অগ্রিদ্র বংগ লেপন ক্রিয়া, সকল প্রকার অগ্রিদ্র বংগ লেপন

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

সংস্থারশবোগের পণ্যাপথ্য রণশোগেব গ্যায় জানিবে।

ইত্যার্কেদ সংগ্রহে সভ্যে বণাধিকার:।

অথ ভগ্নাধিকারঃ।

অণ ভগ্ন-নিদানম্।

ভাগং সমাসাদি বিধং গুণাণ,
কাণ্ডে চ সদ্ধৌ চ হি তাল সদ্ধৌ :
ভংপিষ্টবিনিজিবিনজিতিক
ভিষাপ্রতং কি শুমদণ্ড ষট চ
প্রসারণাকুঞ্চনবর্তনোআ
কব প্রমাণ্ডির স্কিল্ডিজ্ব

হে ততাশ! (হে অগ্নিবেশ!) সংক্রে পতঃ ভগ্ন ছুই প্রকার, কাণ্ডভাগ্ন ও সন্ধিভাগ়। সন্ধিদীমা পর্যান্ত এক এক গানি অন্থিব নাম কাণ্ড। কাণ্ড শদে নলক কপাল বলয় তক্ত্রণ ও কচক এই পাঁচি প্রকার অস্থিকেই বৃনিতে ২ইবে। এতালে আন্ত-বিলোগে। নামও ভগ্ন। অভ্নেব দন্ধিগত অস্থি বিশ্লেগকেও দ্ভিভাগ্ন বলা গাগ়। সন্ধিভাগ্ন ছয় প্রকাব, যথা—উং-পিই, বিশ্লিই, বিবর্ত্তিত, তিশ্যেগ্রত, ক্ষিপ্ত ও অবংক্ষিপ্ত।

উল্লিখিত চর প্রকার ৬গ্লেই এই সাবারণ লক্ষণ বিভয়ান থাকে। যথা অক্ষের প্রদ:-রণে, আকুষ্ণনে ও পরিবত্তনে অভান্ত যমণ। ইয় এবং ই স্থান স্পান করিতে পারা শায় না।

অথ ভগ্ন-চিকিৎস।।

আৰে) ভগ্ন: বিদিয়া তু সেচয়েক্টাতলামূৰা । পঙ্কেনালেপৰং কাৰ্যাং বন্ধানক কুৰা বিভয়। স্থাংতাক্তক ভগ্নেমূ বীক্ষা বন্ধা দিমানেরং॥

* কুশা ভগান্তিবজ্ঞানসাধনং প্রশাদ দ্বন্ । ইনি আকঠা:
প্রথমতঃ ভগান্তানে নাতল জল সেচন
করিবে এবং ভাহাতে কদ্ধ্য লেপন করিয়া
নক্ষামাণ কুশাদি দ্বারা বন্ধন করিয়া দিবে। স্থশভ প্রাছে বেরূপ বন্ধনাদি করিবার নিয়ম শিখিত ভাছে, তদকুসারে তৎসমূদ্ধ কার্য্য নির্বাহ
করিবে। অবনীমিত্যুরগ্রের একাবনাময়েং। অংক্তের্ডিকপুমধোগতকোপার বর্ত্তং ॥

শে অস্থি অবনত হইয়া পড়িয়াছে তাই। উন্নানিত এবং উন্নত অস্থিকে চাপিয়া স্বস্থা-নস্থ কবিয়া দিবে। শে অস্থি অতিশন্ন উঠিয়া পড়িয়াছে, তাহাকে নাথাইয়া এবং যাহা অত্যন্ত নামিয়া পড়িয়াছে, তাহাকে তুলিয়া ঠিক মিল কবিয়া বান্ধিবে।

মধুকোড, ধর খেল-কদধ নিচুল ১৮ঃ
বংশসক্তাজ্জন নাক কুণার্থমূপদংহরে ।
পাইদেশপরি বরায়ান্ত্র গাঁচে শিলিলং ন ৮।
তথা ডিশান্ত্রের বন্ধে সাক্ষরিয়াং না ভারতে ॥
গাতেনালৈ জগানীনাল শাহেনা ক্লাক থাক এব ৮।
• আ'ব সাধানগা বন্ধাং ভরে শাংসন্তি ডিলিল্লা ॥

প্রথমের উক্ত হর্রাছে যে, ভগ্নছান কুণাদি প্রায় বন্ধন করিবে। দেই কুণার্থ মৌল বুক্ষের ছাল, গজ্জুনুর্বের ছাল, অর্থপ ছাল, ক্ষমছাল, হিজলছাল, বাশের ছাল, সরলরক্ষের ছাল ও অর্জুনুর্ক্ষে। ছাল গ্রহণ করিবে। ভগ্নজানে বস্ত্রণও জড়াইয়া ভাষার উপর এই সকল ছারা প্রানা এমন ভাবে বন্ধন কবিবে, যেন অভ্যন্ত দৃঢ় বা অভিশন্ত শিপিল নাহ্য়। কারণ বন্ধন অভিশন্ত শিপিল হুইলো সংযোগ স্থির পাকে না এবং অভি কঠিন হুইলে প্রগাদতে শোগ, বেন্নাও পাক উপ-স্থিভ হয়। অভ্যাব সাবাবণভাবে বন্ধন করা কত্তবা।

নপুন(এ)ৎ নপুন(এ)ৎ দোমোপুতুই মোকপুৰ। কন্ত্ৰাং ক্সাৎ নিৱ'নাচ্চ ভঞায়েয়ের ক্ষান্তা। কালে ৮ সমশিতোকে পঞ্চরলোপু বিমোক্ষেৎ।

ঐ বর্ধন শাতল শতুতে ৭ দিন অন্তর,
সম্পীতোধ্য শতুতে ৫ দিন অন্তর ও উক্ষ
শতুতে ৩ দিন অন্তর গুলিয়া কেলিয়া নৃতন
বন্ধন দিবে।

ন্তঃগ্রাধানিকবারক ফ্লীভং পরিবেচরেং : পঞ্চন্ত্রীবিপকত্ত ক্ষীরং দত্তাং সবেদনে। ফুগোক্ষমবভার্যাং বা চক্রতৈলং বিজানতা ॥

ভগ্নস্থানে ক্সগ্রোধাদিগণের কাথ শীতল করিয়া সেচন করিবে। অধিক বেদনা থাকিলে স্বল্পঞ্চমূলের সহিত ছগ্ধ পাক করিয়া সেই ছগ্ধ সেচন করিবে, কিংবা ঈষহফ্ষ চক্র তল (মানিগাছ হইতে তৎক্ষণাৎ বহির্গত তৈল) অভ্যঞ্জন করিবে।

আলেপনাৰ্থং মঞ্চিঠামধুককালপেবি ১ম্ ' শতধোতসূতোলিজনং শালিপিটক লেপনম্ ॥

মঞ্জিটা ও বৃষ্টিমধু, কাজিতে পেষণ করিয়া ভগ্নস্থানে প্রালেপ দিবে, অপবা শালিতওুল পেষিত এবং ভাহাতে শভ্রেটিত মুক্ত সংযুক্ত করিয়া ভাহার প্রশেপ দিবে।

বনোনস্থাকাজা-সিডাককং সন্ধ্যা ভিন্তিল্ভাতাভু কি সকানম্চিরাদ্ভবেদ্॥

রস্থন, মধু, লাক্ষা, স্বত ও চিনি, এই সকল দুব্য পেষণ করিয়া ভক্ষণ করিলে, চিন্ন ভিন্ন ও স্থানচ্যত আন্ত অচিবে সংহিত হয়।

সম্ভাতনাছিদংহারং লাকাগোধ্যমজ্ঞান্। স্থিম্ভেংজিভরে ৮ পিরেং কারেণ নানবং।

সন্ধি মুক্ত বা অব্যি ভগ্ন হইলে হাড়যোড়া। লাক্ষা, গোধ্ম ও অর্জ্যুন্ডাল এই সকল ক ইাদের কোন একটি পেষণ করিয়া এগ্ন ও গ্লুভের সহিত পান করিবে।

গৃষ্টিকীরং সদপিকং মধুরৌষধদা[ধিচন্। শীতলং লাক্ষা যুক্তং প্রাতর্ভাঃ পিবেরর ।

গৃষ্টির (একবার মাত্র প্রস্তা গাভীর) হ্র কাকোল্যাদি মধুর দ্রব্যের সহিত পাক করিয়া শীতল হউলে তাহাতে ছত ও লাক্ষা চূর্ণ প্রক্ষেপ দিরা ভ্রমরোগিকে প্রাত্তকালে পান করিতে দিবে।

नीछवद्राधिका-हूर्गर विश्वश्वर वा जिश्वश्वकम् । अनुक्रकोद्रनीछर जानश्विकश्चरताङ्गम् ॥

ি পীতৰৰ্গ কড়ি ডক্ষ ২ বা ৩ রতি পরিমাণে কাঁচা ফুগ্রের সহিত দেধন করিলে অস্থিতয় প্রায়োচ হয়। ক্ষীরং সলাক্ষামধুকং সস্পিঃ ক্লাজ্জীবনীয়ঞ্চ ক্রথাসচঞ্চ। ভয়ঃ পিবেৎ তুক প্রসাজ্জনক্ত গোধুমচূর্ণং সমূতেন বান ॥

লাক্ষা ও মষ্টিমধু পেষণ করিয়া স্থত ও ত্থের সহিত সেবন করিলে, তাগ জীবনী বর্দ্ধ ও স্থা জনক হয় কিংবা অর্জ্জুন ভালের সহিত সিদ্ধ তথ্য এবং স্থাতের সহিত গোধ্যচূর্ণ ভোজন করিলে, ভগ্ন সংহিত হয়।

আঞ্চিতিং মধুযুত্সভিত্তগ্রহণ্ডং পিরেও। পীতে চান্থি ভবেও সমাগ্ বজুসার্মিডং দৃচম্॥

থাব্লাছালের চূর্ণ মধুর সহিত ৩ দিন সেবন করিলে ভগ্ন অভি সকল বজ্তুলা হয়।

সান*ত চ ভয়প্ত নগং সাধিন বৃত্তি: । প্রতিসাধ্য করাইঃক শেস্থ ভ্রানদাচরেও । ভয়ং নৈতি যথপোকং প্রয়েত্ত তথা ভিষক , নতেব্যাদিবিনিদ্ধিদা স্থানত প্রয়েচায়েও ।

ক্ষতমূত ভাষান ছাত ও সাবুমূত সাঞ্চাধ্য কিষায় স্থানা প্রকালন (শ্রীক্ত বলেন—প্রলিপ) করিয়া পশ্চাৎ ভয়ের চিকিৎসা করিবে। ভয়স্থান মাহাতে পাকিয়া না উঠে, তাহার চেষ্টা করিবে এবং বাতবাাবিচিকিৎসোভ স্নেহ (তেল ছাতাদি) প্রয়োগ করিবে।

লাকাগুগ্গুলুঃ।

া'ক।ত্বিদংসংক ুভাগগজ
•গুণীকু গা নগোলা পুরণ্ড।
সংভগ্যবুজাত্বিক্তা নিহল্তাদক্ষানি কুয়াং কুলিগোপমানি ॥
(অতোংস্তাকোপদিইঙাং তুলাল্ট্ণেন গুণ ওলুন।)

লাকা, হাড়যোড়া, অর্জুনচাল, অশ্বনন্ধা, গোরকচাকুলে প্রভাক ১ ভোলা, গুলু তেলা, একত্র মদন করিয়া লইবে। ইহার প্রলেপ শারা ভয় ও স্থানচ্যুত অন্তর বেদনার নিবারণ হইয়া অক্সকল বজেঃ স্থায় দৃঢ় হয়।

আভাগুগুগুলুঃ।

অ'ভাকল জিক ব্যোধেঃ দকৈরেভিঃ দমীকুতৈঃ । তুলো গুণ্গুলুরাযোজ্যে ভাদানি প্রদাধকঃ ॥ বাব্লামূলের ছাল চূর্ণ এবং ত্রিফলা ও ত্রিকটু চূর্ণ প্রত্যেক সমভাগ, সর্বসমান গুগ গুলু। সম্পায় একত্র মর্দান করিয়া লটবে। এই ঔষণ স্বারা প্রালিপ্ত করিলে ভগ্নদন্ধি পুনর্বার সংহিত হয়।

গন্ধতৈলম্।

রাজৌ রাজৌ তিলান কুফান্ বাসয়েদ স্থরে জলে। किना किरेनवर मर्ग्याया कौत्तव शतिखानस्य । ত্তীয়ং সপুরাক্তন্ত ভাবয়েনাধৃক সুনা। ভতঃ কীরং পুনঃ শীতান্ ঋষান্ ক্লান্ বিচুণ্যেং : कारकालापिः मध्यास्तः मिक्षेष्टः मातिनाः उपा कर्षः मञ्जूमः भारमार अतुमान कुठन्त्वम् । गङ्गाक मःहूर्ना विषक्षि योक्सः। পীতনার্থক কত্তবাং সর্বগ্রের: শৃতং পয়: । চতৃপ্ত পেন প্রদা তথ তেলং পাচাংখে পুনঃ। এলাম ওমতীং পত্রং জীবভীং তুরগং তথা। লোধ প্রাপেতিরীক্ত তথা কলোতুসারিবাম। শেলেয়কং ক্ষারশুক্লামনস্তাং সমপ্লিকাম্। 'शेष्ट्रे । अप्रोहेकरेकात आश्वाकारशोवधानि ह এভিন্তদ্ বিপচেং তেলং শাল্পবিনাচনাগ্নিনা ॥ এছং তৈল সদা পথাং ভথানাং স্ক্কেম্ব এক্ষেপ্তে পক্ষাহাতে তালুলোয়ে তথানিতে : মস্তাপ্তত্তে শিরে:রেশগ কর্ণপুলে হতুপ্রতে , বাধিৰো ভিমিন্নে :6ব । য চ স্থায় ক্ষাং গভাঃ। পথাং পানে ৬থাভাঙ্গে নজে বাস্তুর ভেজনে। গীবাসকোরদাং বৃদ্ধিরনেনৈবোপভায়তে। मूर्वक भवार्था उमर मञ्जाकिमभी तप् . গন্ধটেডলমিদং নামা সংব্বা এবিকাবনুৎ । রাজাঠমেতৎ কর্ত্তন্যং রাজ্ঞামেন বিচক্ষণৈ । তিলচুৰ্দমস্থত মিলিভং[†]চুণ্মিষ্যতে ।

শুক করিবে। চভূর্য সপ্তাহে পুনরার ভিলের সমান গ্ৰাহ্যে রাত্রিকালে তিল ভিজাইয়া দিবদে শুক্ষ করিবে। প্রতি সপ্তাহে প্রভাহ উক্তরূপ ক্রিয়া করিয়া পরে ঐ স্কল তিল নিস্তব ও চুর্ণ করিবে। কাকোল্যা দি গণ, বৃষ্টি-मध्, मञ्जिष्ठी, धानख्यून, कूफ्, धुना, कहामांश्त्री, **(५वनांक, तङ्गठन्मन ७ ७न्**का हेशांत्र भिनि इ চূর্ণ তিলচুর্ণের চতুর্থাংশ (সিকি) পরিমাণে গ্রহণ করিয়া উভর চুণ একত্র করিবে। পরে সর্বাগন্ধ এলাদি গণ)-সাধিত হয় স্বারা এই চুণ আদ করিয়া তৈল-নিস্পীড়ন ষ্ট্রে (ঘানিগাছে) পিষিয়া তেল বাহির করিয়া পইবে। এই প্রকারে প্রস্তুত তৈল /৪ সের, ত্ম চতুগুণ ১৬ (সর)। কন্ধদ্রা, ষ্ণা---এলাইচ, শালপাণি, তেজপত্র, জীবস্তী, অশ্ব-গন্ধা, লোধ, পুণ্ডরীক কাৰ্চ, তগরপাছকা, ৈশলজ, ভক্লভূমিকুলাও, অনন্তৰ্ণ, যুকা, পানিফল এবং কাকোন্যামি গণ প্রভৃতি পূর্বোক্ত দ্রবাসমূহ। মৃত্ন অ্যিতে পাক করিবে। ভগ্ন পাড়ায় এই তৈল পান ও অভ্যন্তাদি সর্ব প্রকারে প্রযোজা। ইহার বাবহারে আক্ষেপ, পক্ষাঘাত, আদত, মন্তান্তম্ব, শিরোরোপ, কর্ণাল ও ববিরতা প্রভাত অভাত অনেক পীতা উপশ্মিত হইয়া থাকে।

অথ পথ্যাপথ্য বিধিঃ।

—:*:— ভন্নবোগে পথ্যানি।

শীং খৃ. গচনং পথা প্রদেশে বন্ধন কিবা;
শালি প্রস্কুলোব্য। যুখো সুক্সসভীনরোঃ ॥
নবনীতং গৃতং কীবং তেলং মাধ্যনো মধু।
পটোলং লক্তনং শিপ্তঃ পত্তরো বালম্লক্ষ্॥
গাক্ষা ধালী বন্ধবনী লাক্ষা যচ্চাপি বুংহণ্য।
তং স্ববং ভিষ্ণা নিতাং শেষ্য ভগার কানতা॥

শ নাতলজল পরিষেচন, কর্দমামুলেপন, ভগ্ন-স্থান বন্ধন, শালিধান্ত, প্রিরস্কু (কান্ধ্ নিধান্ত), গোধ্ম এবং মুগ ও মটরের বৃষ, নবনীত (মাধন), স্থাত, হ্রগ্ধ, তৈক, মাষকলায়ের যুষ,
মধু, পটোল, রগুন, শজিনা, রগুচনান ও
কার্চ মুলা, জাক্ষা, আমলকী, অস্থিসংহারলভা (হাড়যোড়া), লাক্ষা এবং পৃষ্টিকর দ্রব্য
সমস্ত জ্ঞানবান্ চিকিৎসক ভয়রোগিদিগকে
প্রয়োগ কহিবেন।

ভন্নলৈহপথ্যানি ।

লবণং কট্ককারমনং মৈথুন্মাতপম্।
ব্যার'মঞ্চ ন সেবেত ভংগা ক্লকান্তমেব চ ।
লবণ, কটুরুবা, ক্লারম্ববা, অন্ত্রাসমূত দুন্য,
স্থ্রীপ্রাক্তম, রোদ্রা, ব্যায়াম এবং রুক্ষদ্র। এই
সকল ভগ্নবোগী পরিত্যাগ করিবে।

ইত্যায়ুর্বেদ-সংগ্রহে ভগ্নাধিকার:।

অথ নাড়ীত্রণাধিকারঃ।

অথ নাড়াব্রণ-নিদানম্।

যাং শোশমাসমভিপকন্পেক্তেরজা যো বা এবং প্রচুরপুসন্সাধুরভঃ। গভান্তরং প্রবিশতি প্রবিধায়ে তঞ্জ গানানি পুর্ববিহিতানি ততঃ সপুষঃ। ভঞ্জাভিমাকেগ্যনাপ্রাভিনিষ্যতে ভূ নাডাব ক্ষরতি তেন মতা ভূ নাডা।

বে অহিতাহারাচারী অজ্ঞ ব্যক্তি, অপক বা প্রাচুরপূষ্যক্ত অতিপক শোথকে উপেকা করে, অর্থাৎ শোধন পাঁড়নাদি না করে, তাহার শোধস্থ পূব ক্রমণঃ স্বক্ গংস শিরা মায়ু সন্ধি অস্থি কোঠ ও মন্ম প্রভৃতি স্থান সকলকে বিদীর্গ করিয়া অভ্যক্তরে প্রারেণ করে। সেই পূর্বের অতিমাত্র গমন হেভু এইরপ ব্রণকে গতিব্রণ কহে। কিন্তু সচ্চিদ্র নাড়ীর (লভার) স্থায় বহন করে বলিবা ইংগ নাড়ীবণ নামে প্রসিদ্ধ হইয়াছে।

এথ নাড়ীব্রণ-চিকিৎসা।

নাড়ীনাং গতিষ্বিধা শরেণাপাটা কর্মবিং।
সর্বারশক্ষাং কুর্যাচ্ছোধনং রোপণাদিকম্।
নাড়ীরশের গতি অর্থাৎ ক্ষতের শোষ
ভর্তনুর পর্যান্ত সিয়াচ্ছে, তাহা স্থির করিয়া শস্ত্র

দ্বারা সেই স্থান পর্যান্ত বিদারণ করিবে। পরে, লোগন (পুয়াদি-নিঃনারণ) ও রোপুণ (ক্ষত পূরণ প্রভৃতি বণরোগ বিহিত চিকিংসা করিবে।

নাড়া বা এক হাং সাবু পাটি হাং লে এখেদ্ ভিষ্ণ । প্রভাক্ত প্রীক্ষাত স্থিলৈঃ পি স্থে প্রলেশ্যাব ॥ প্রতিকীং তিলমার জা-নাগদন্তীনিশান্সৈঃ । এই জ্বাং তিলমার কি নিকু স্থারিস্থানজনে । শ্রাজাং বিলমার তিয়ালি পু। বজনমাচরেং । । লপ্যাব ভিন্নাশানিভাম্ হাই প্রেড চাক বংশ্চা

বায়ন্ত্রনিত নালী ঘা যথোপায়ন্ত বিদীর্ণ করিয়া তাহাতে আপাং-বীন্ধ ও তিল , পৈত্তিক নালীতে তিল, মঞ্জিটা, হাতিশুঁড়া, হরিদ্রা ও দাক্তরিদ্রা; লৈগ্রিক নালীতে তিল, ঘৃষ্টিমধু, দ্নন্তীমূল, নিম্নপ্র ও দৈরুব; শল্যন্থ নাড়ীতে শল্য উদ্ধাত করিয়া তিল মধু ও মত, (একত্র পেষণ করিয়া) ইহাদের প্রলেপ দিয়া বান্ধিয়া রাশিবে।

বেত্রৈওক্ত নির্বাস: গদিকে সমাযুত্য।

হস্তি নাড়ীরণান্ সব্বান্ মুগান্ মুগপতিষ্থা।

শ্বেত ভেরেণ্ডার আঠা ও গদির, একত্র
মন্দিত করিয়া নালী-ঘায়ে প্রলেপ দিলে সকল প্রকার নালী বিনষ্ট হয়।

আকোতাকীরসংযোগো নাড়ীং নাশরতি ধ্বম্। হাপরমালীর আঠো নালী ঘায়ে লাগাইয়া দিলে নিশুমুই নালী বিন্তু হয়। বিড়ক্সত্রিক্সাকুশা-চূর্ণ: লীচ্ং সমাক্ষিক্য। হস্তি কুষ্ঠক্রিমীন্ মেহ-নাডীরণভগন্দরান্ ॥

বিজ্ঞা, ত্রিফলা ও পিপুল ইহাদের স্মান স্মান চূর্ণ মধুর সহিত সেবন করিলে নাড়ী-বণ ও ভগন্দরাদি নষ্ট হয়।

আরগ্রনিশকোলা-চুর্নিজ্ঞাক্ষার্কার রুঠা। সম্ভ্রন্তির লৈ যোজ্যা শোধনী সভিনালিন ।

সোন্দাল মূলের ছাল, ছবিজা ও কালিয়া-কড়া ইহাদের চূর্ণ, মধ্ ও প্রতের সহিত মিলিত কবিয়া ভড়াবা একগাছি পুত্র প্রলিপ্ত করত বৃত্তি প্রস্কৃত কবিবে। উ বৃত্তি নালাফতের মধ্যে প্রনিহিত কবিষ। বাহিলে, সভে ইউতে পুয়াদি নিতি হইয়া শোষ মধিয়া ধায়।

গুণ,গুল্পাদি-কেপঃ।

थर्भ अपूर्वकालारनारमः अधारेमकार्यस्य । नाष्ट्रीकृष्ट्रेत्रभक्षां ७-४-सम्बन्धि ७००क्षम् ॥

গুপু প্রক্রিকলা ও ভিকট সম্পাসে এই ।
করিয়া মৃত সহ মিলাইবে । ইহা ছাবা বলস্থান ।
প্রাণেপ কিলে নাড়াবি । তুইবল ও ভগলর ;
নিবারিত হয়।

শেরাকুল ফলের অক্, মদনফল, ত্পারির ছাল ও সৈদ্ধবলবণ, এই সকল দ্রা সমভাগে লইয়া সিজ ও আকলেশ আঠার মদ্দিন করিয়া বর্ত্তি প্রস্তুত করিবে। এই বৃত্তি নাড়ীফতে প্রবেশিত করিয়া রাখিলে সত্তর ত্রণ নত হয়। বর্ত্তীকৃতং মাজিকদংপ্রযুক্তং নাড়ীলমুক্তং লবণোভনং গা। ইউরণে যদ্ধিহিতক ভিলং তং দেবামান গতিমাও হতি।

মধুও দৈদ্ধবলবণ একত্র অগ্নিতে পাক করিয়া বৃঠি প্রস্তুত করিবে। দেই বৃত্তি নালী মধ্যে দিলে উহা নিবারিত হয়। ছুইরণ-চিকিৎদোক্ত তৈল প্রয়োগ করিলেও নাড়ীগতি মাণ্ড বিশয় প্রাপ্ত হয়। মাহিষং দ্বি ওকাজবভক্তমিঞ্জিতং হর্নাত চির্নির্নচাম্। ভক্তং কলুশিকাভবমতিদারুলাং নাড়ীং শ্রয়েই॥

মাহিগদধির সহিত কোদ কিংবা ক্ষুন ধান্তের অন্ন আহার করিলে অতি দারুণ নালীব: উপশ্মিত হয়।

বিভীতক মান্তিবটপ্ৰবাল-হরেণুকাশ্বিমিনীজ্ঞমিখা। ব্ৰাহ্নিটপ্ৰক্ষমা প্ৰদেশ ৰাষ্ট্ৰীৰ তৈলেন সামিশ্যিক। ।

বংহণ, আয়বীজ, বটাব্রব, রেণুক, চোর-কাচ্কীবীজ এবং দক্ষ শূক্ষবিষ্ঠা চূর্ণ, তৈলের সহিত মিশ্রিত কবিয়া নালাতে প্রলেপ দিলে উপকাব দশে।

্রধনোমসমার্থা কটুণেলা বিপাচিতম্। নাড়ানিশা চিরোভাশ জারমাতু ভূলমঙ্গনির

নেয়রোন পোড়াইনা, সেই ভ্রাও তিংলাউ ইছাদের সহিত্য স্থাপ তৈল থাক করিয়া সেই তৈলোভনা সিক্ত ক্রিয়া নালীতে প্রবেশ কর্টালে নালী থা প্রশাসত হয়।

ল্ভক্তজনকিবিং র'বং এর **প্রপ্তরং।** তথ্যক্তক ছোলেজিং ভ্রাই প্রয়োগতাই॥

াস্তের আঠি, আকলের আঠাও দাক-হরিদা, ইহাদের বৃদ্ধি প্রস্তুত করিয়া প্রয়োগ করিলে, স্বন্ধীবস্তুত নাড়ীব্যু নিবারিত হয়।

ত্ৰভুক্তনভালগাং গাংল প্ৰাণি হা ১ যা। সংক্ৰমতে ভাগ ভিন্নাৰ শ্ৰেণ কলচন॥

কুশ, জুর্মল ও ভীক্ষ ব্যক্তিগণের কঠে এবং মন্মন্তানজাত নাড়ীবণে কদাচ অস্ত্র প্রয়োগ ক্রিবে না। তাদশ স্থলে ক্ষারস্ত্র ধারা চেদ্ন ক্রিবে।

ন্দ্ৰণ্য গ্ৰিম্বিধা ক্ষারত্ত্তাত্মানিন্দ্ৰ।
ত্তী নিদ্ধান্গ্ৰায় চোলাম্য চাল্ড নিৰ্ধবেৎ ॥
ত্বজ্ঞান্তং সমানীর গাঁচং বন্ধন্যাচরেৎ
তথ্য ক্ষাণ্যলং বাক্ষা স্থানম্ভৎ প্রবেশরেৎ ॥
কারান্তেং মতিমান্ বৈজ্ঞো বাবর বিস্তুতে গতিঃ।
ভগন্যবেহপার বিধি। কার্য্যা বৈজ্ঞেন জানতা ॥

এষণী-মন্ত্ৰ ৰাবা (যে শ্লাকা-মন্ত্ৰ ৰাবা শল্য বা নালীর গতি অবেষণ করা নার, ভাছাকে এষণী যন্ত্ৰ কছে) শোষের গতি অন্থে-ষণ করিয়া, পরে একটি স্থচীতে ক্ষারস্ত্র পরা-ইয়া, ঐ সূচী শোষের মধ্যে প্রবেশিত কর: বিনিয়া সূচী বাহির শোষের প্রাক্তভাগ कतिया नहेंद्व: धवः ক্ষারসূত্রের প্ৰা ম্বন্ধ দ্যুরপে বান্ধিয়া রাখিবে। সূত্র ক্ষীণবল হইলে অত্য হতে হারা এরপে বাহিবে। (শোষ যদি অতি দীর্ঘ হয়, তাহা হইলে ২০০ অঙ্গুলি অন্তরে অন্তরে স্ফী বাহির করিয়া ঐ প্রকার বান্ধিবে)। य পर्यास नांनी यां विनीर्ग नां इत्र. तन पर्यास পুনঃপুনঃ ' ঐরূপ করিবে। ভগন্দরেও এরপ ক্রিয়া কর্ত্তবা।

গুণবতী বর্ত্তিঃ।

তুলাং সজ্জ্বসং লোধ্রং সিন্দুরাতিবিবে নিশা।
অকং কপিথজ্ঞীবাসো গুগ গুলুমু তিতৈলকৈ ॥
তুল্যাংশং পেবরেং পিগুং তত্ত্লাং সিক্থকং ভবেং।
মুখ্যিনা পচেৎ পাতে নিশ্রি ৪২ তং সম্ভবেং ॥
বর্তিগু গবতী নাম জুষ্টা শীতজলাম্বিতা।
ভুঃসাধ্যরণগণ্ডেষ্ তথা নাড়ীরণেষ্চ।
শোধনে রোপণে চৈব বাস্তামুৎপাদ্যতানে) ॥

ধুনা, লোধ, সিন্দ্র, তাতইচ, ইরিদ্রা, তুঁতে, কাঁচা করেংবেল, তার্পিণ তৈল, গুগ্-গুলু, এই সমস্ত সমভাগে মদ্দন করিয়া পি গু-কার করিবে। পরে মৃত অগ্নিতে লোহকটাহে মৃত ও তৈল চড়াইয়া, উক্ত পিণ্ডের সমান মোন্ তাহাতে দিয়া গলাইবে। তদনস্তর ঐ পিশু তাহাতে দিয়া পাক করিবে। পাকানস্কর বর্ত্তি প্রস্তুত করিয়া শীতল জল সহ প্রয়োগ করিলে তঃসাধ্য ত্রণ ও নাড়ীরণ প্রভৃতি সর্স্ব-প্রকার রণরোগ নিবারিত হয়।

সপ্তাঙ্গগুড়নুঃ।

বিভ্ৰম্বতিকলাব্যোষ-চূৰ্ণং গুগ গুলুনা সমন।
নাপিয়া বটিকাং কুৰ্যাৎ থাদেয়া হিতভোজন:।
• ছট্টৰণাপটামেহ-কুটনাড়ীবিশোধন:।

্ৰবিড়ন, ত্ৰিফলা, ত্ৰিকটু সমভাগ, ইহা-দৈর সমান গুপুগুলু; মতে মাড়িয়া বটী প্রস্তুত করিয়া দেবন করিলে ছইব্রণ, নালী-গা ও কুষ্ঠাদি রোগ বিনষ্ট হয়।

শামায়তম।

শ্রামাত্রিভণ্ডীত্রিফলাপ্তসিদ্ধং হরিদ্রয়া ভিষকসুক্ষকেণ। মৃতং সদৃধ্ধং রণতর্শগেন হক্ষাদৃগতিং কোঠগতাপি বা ভাং।

মত /৪ দের, চগ্ধ ১৬ সের। কলার্থ—
অনস্থান, তেউড়ী, ত্রিফলা, হবিদ্রা, লোধ ও
কুড়্চি এই দকল দ্রব্য মিলিত /১ দের। এই
মত বণ স্থানে প্রয়োগ করিলে নাড়ীবণ
নিবারিত হয়।

পৰ্জিকান্তং তৈলম।

স্বজ্ঞিকাসিফুদন্তাগ্নি-রূপিকানলনীলিকা:। ধনমঞ্জনিবাজানি তেলং গোস্ত্রপাচিত্রন্। দুষ্টবণপ্রশমনং কফন'চাবণাপাহম্॥

তৈল /৪ সের। কল্পার্থ—সাচিক্ষার, দৈল্পব লবণ, দক্তীমূল, চিতামূল, আকলমূল, ভেদার মূটী, নীলকান ও আপাং বীজ মিলিত /১ সের, গোমূত্র ১৬ সের। এই তৈল লাগাইলে ছুই বণ ও ক্যোলক নালী দা উপশ্যিত হয়।

হিংস্রাদ্য তৈলম।

গিংশ্রাং হরিষ্কাং কটুকাং বচাঞ্চ গোঞ্জিহ্বকাঞ্চালি সবিষমূলমু। সংহাত্য তৈলং বিপচেদ্রণক্ত সংশোধনং পূরণরোপণক।

তৈল /৪ সের, জল ১৬ সের। কন্ধার্থ— কেলেকড়া, হরিন্দা, কটুকী, বচ, গোজিয়া ও বিলমূল, মিলিত এবং কুটিত /১ সের। ইহাতে এণের শোধন, রোপণ ও পূরণ হয়।

কুঞ্জীকাদ্যং তৈলম্।

কুন্তীকথৰ্জুরকপিথবিধ-বদশতীনাত্ত শলাটুককৈ:। কৃষা কৰায়ং বিপচেৎ তু তৈলমাৰাণ্য মুখ্তান্ত্ৰলপ্ৰিয়কু—।
সৌগান্ধিকানোচরসাহিপুশ্পলোগ্ৰাণি দ্বা খলু ধ্তেকাঞ।
এতেন শল্যপ্ৰভবা হি নাড়ী
রোহেদ্ এণো বৈ সুখনাপ্ত ১৪৭ ॥

কুমারিয়ালতা (ইহার ফল দাড়িম সদ্শ), থেজুর, কয়েৎবেল, বেল ও বনস্পতির শলাটু অর্থাৎ বট ষজ্ঞভুমুর প্রভৃতির অপক ফল এই সকল একতা করিয়া তাহাদের কাথ প্রস্তুত করিবে। দেই কাথের সহিত যথানিয়মে তৈল পাক করিবে। কল্পতা যথা—মূতা, সরলকান্ত (হুন্দ বলেন—তেউড়া), প্রিরসু, অনহমূল, মোচরস, নাগেশ্বা, লোগ ও ধাইফুল। এই তৈল লেপনে শলাজ নালী ও নানাবিদ ক্ষত্ত গুদ্দ হইয়া থাকে।

ভল্লাতকান্তং তৈল্য।

ভল্লাতকাকমন্নিটেল বংশ ভেমেন সিদ্ধং বিভূজন্তজনীত্ত্বসৈত। স্তানাক্ষরত চান্তমন নিহস্তি এতনং নাড়ীঃ ক্যানিলকুভামপটাং বৃণাংশ্চ ।

তৈল / ৪ সের। ভীমরাজের বস ১৬ সের। করার্থ—-,ভলার মুটা, আকলের মুল, মরিচ, সৈরব লবণ, বিভঙ্গ, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা ও চিতামূল মিলিত /১ সের। পাকের জল ১৬ সের। এই তৈল লাগাইলে নালী, বাতলৈগ্রিক অপচী ও ব্রণ উপশ্যতি হয়।

নিশু গুতিলম্।

নমূলপঞাং নিও তিং পাঁড়য়িথা রমেন তু তেন সিদ্ধং সমং তৈলং নাড়াঁগ্রণবিশোধন্য । হিতং পামাপচানান্ত পানাভাঞ্জননাবনে। বিবিধের চ রোগের তথা সর্বপ্রণেয় চ। ৈতল /৪ সের। মূল পত্র ও শাখা সহিত
নিধিনা বৃক্ষ নিষ্পীড়ন করিয়া রস বাহির
করিবে, ঐ রস /৪ সের। একত্র পাক করিয়া
লইবে। পামা (খোস্ চুলকনা), অপদী ও
সর্বপ্রকার এশে এই তৈল পান, অভ্যন্ত ও
নপ্রাথ প্রযোজ্য।

হংসপাদীতৈলম্।

ংনপাত্ত ভিত্তপত্রং জাতীপত্রং ওতো রুদৈঃ। ংকলেশ পচেৎ তেলং নাড়ীরণনিরোহণমু॥

তৈল . ৪ সের। গোষালিয়া লতা, নিম ও ফাতী ইহাদের পরের বদ মিলিত ১৬ সের। কলাগ—উহাদের পত্র মিলিত . ১ সের। যথা-শাস্ব পাক করিয়া ২ইবে। ইহা নাড়ীরণ-বিনাশক।

সৈন্ধবাগ্যং তৈলম্।

্যক্রবিক্সারিক্সলনাপ্রেম বিবেশ রজনা**ধ্যাসন্ধ্** তেলনে হলটিবেশ নিহ্**ভাদ্** স্বলাম্পি কল্যান্**লমাড়ী**ম্য

তৈল ১৪ দর। বঙার্থ—সৈত্তর লবণ, আবন্দ, মরিচ, চিতা, ভূক্সরাজ, হ্রিলো ও দাক্ত্রিজা মিলিত ১১ সের, জন ১৬ সের। যথাবিবি গাক করিবে। ইহা মালী ঘা নাশক।

নরাস্থিতেল্য।

নবাঞ্জিতেললেপেন শ্রুটিতঃ গুণাতি এবং॥

মন্থার মন্তকের খুলিতে তেল পাক ক্রিয়া বাবহার ক্রিলে এণ নাম শুদ্দ হয়।

তাথ পথ্যাপথ্যাবিধিঃ।

নাড়ীরণেরও পথ্যপথ্য-ব্যবস্থা র**ন**-শোথের ক্সায় জানিবে।

্ইত্যায়নের্দ-সংগ্রহে নাড়ীব্রণাণিকারঃ।

অথ ভগন্দরাধিকারঃ।

অথ ভগন্দর-নিদানম্।

खम् । मृत्व (कार्य शाय :. शिक्षकारिक र। ভিলাভগনবো জেয়ঃ সূচ প্রক্রিধা মতঃ॥ ক্ষায়ক্তিক স্বভিকে পিডভাংনিল-স্বপানদেশে পিডকাং করেছি নাম। উপেক্ষণাৎ পাক্ষ্পৈতি দাৰুণং কজা চ ভিন্ন'ক্ৰণকেনবাহিনী ঃ ত্রাগমো মুরপুরীষরেত্সাং नरपत्रस्मरेकः भाजरभामकः राष्ट्र। প্রকোপণে: পিত্রমতিপ্রকোপিতং করোতি রস্তাৎ পিডকাং গুলাঞি বাস ৮ হলাঙপাকাহিনপতিব'হিন ং ভগকর গু, ইুলিরেরধনং নদেং। কন্তয়নে, খনস্ৰাৰী কচিনো মন্দৰ্বেদন, , ্ষ্টাব্ভাসঃ কফছ, পরিশাব' ভগ্লরঃ বহুবৰ্ণক্ষান্তাবা পি চকা গোল্ডানাপ্ৰমা শ্বৰাবৰ্ত্তবন্ধান্তী শ্বৰ বৈভিকো মত, এ ক্ষতাকাতিঃ পার্গতা বিবন্ধে धारशक्तवाद स्थाः कियान विलोधा ए । প্রকরতে মার্গমনেকণ'ন্থে-র বে**শুভুরা**র্গি ভগন্দর্য বদেখা।

শুহাদেশের পার্কে ছুই অফুলি পরিনিত স্থানে বেদনাদায়ক পিড়ক: (বৰ) উৎপন্ন শুইয়া বিদীপ হুইলে উহ্ন ভগন্দর নামে অভিহিত হয়, ইহা পাচ প্রকার:

ক্ষার ও রক্ষ সেবনে বা তাতিকুলিও ইইরা গুঞ্চদেশে যে পিড়কা উৎপাদন কনে তাহা প্রথমাবদি ভালকপ চিকিৎসিত না হইলে, দারুল বেদনার সহিত পাকিয়া উঠে এবং বিদীর্ণ ইইলে উহা হইতে অরুণবর্ণ ফেন নিংস্ত হয় । পরে এরপ হয় য়ে, ক্ষতমুখ দিয়া মূত্র পুরীয় ও গুলু প্রয়াও নির্গত হইয়া থাকে। ঐ রণ বহুমুখ হইয়া শতপোনক অথাৎ চালু-নির আকার প্রাপ্ত হইলে উহাকে শতপোনক ক্রেছে।

পিন্তপ্রকোপক হেতুতে পিন্ত প্রকুপিত ফুইয়া, গুহুদেশে যে পিড়কা উৎপাদন করে, ভাহা শাঘ্র পাকিয়া উষ্ণ ছুগন্ধ পুষাদি প্রান করে। উন্ধুগ্রীবার ভায় ইহার আকার বঞ হয় বলিয়া, এইনপ ভগন্দরকে উন্ধুগ্রীব কঠে। পরিপ্রাবি-নামক এক প্রকার ভগন্দন আছে, ভাহা কপুবিশিষ্ট, গনপ্রাবী, কঠিন, নন্দবেদন ও শ্বেত্বর্ণ। ইহা কছন্ধ ব্যাধি।

শস্কাবর্ত্ত ভগন্সরে। ইহাতে উক্ত বাহ-জানি প্রত্যেক ভগন্সবের বর্ণ বেদনা ও প্রাব বিজ্ঞমান থাকে। পিড়কাবস্থায় ইহার আক্রতি গোস্তনের ভায়, কিন্তু ভগন্সরাবস্থায় ইহাব রূপ পূর্ণ নালীব শ্রুকাবটের ভায়ে হয় বাল্যা। ইহাকে শুকাবর্ত্ত করে।

কণ্টকাদি থানা গুজনেশ ক্ষত হইবে যাদ উহা উপোক্ষত হয়, ভাহা হইবে উহাতে শোষ উৎপন্ন হইয়া ক্ষিম জন্মে। পরে ঐ ক্রিমিগ্ন উহা বিদাণ করিয়া বছমুখাবশিষ্ট রণ উৎপাদন করে। ইহাকেই উন্মার্গা ভগন্সর কহে।

অথ ভগন্দর-চিকিৎস।।

স্কৃত্য সম্প্র দৃষ্ট্য বিশোধ, শোষরেই এক। বস্তাবমেচনাং কুমনুষ্ট্রা পাকিং ন গ্রাছিডি । (বিশোস্ট্রেপ বাসা¦দনা। নেম্বরেদিতি বিরেচরেই। বস্তাবমেচনাং এলৌকাদিভি।।)

শুগদৈশে ভগন্দরোৎপাদক নোথ দৃঠ হুইলে, প্রথমে উপবাসাদি দ্বারা বিলোহণ, পরে বিরেচন দ্বারা লোখন, তৎপরে জলৌকাদি দ্বারা সক্তমোজণ করিবে। অগাৎ এরপ সাব্যান হুইয়া চিকিৎসা করিবে, যেন উহা না পাকে।

বর্তপত্রেষকা শুষ্ঠী শুদুহচঃ সপুননবাঃ। স্থপিপ্তাঃ পিদুকারপ্তে কেপঃ শক্তো ভগন্ধরে।

শুহুম্বারে পিড়কা হইলেই বটপত্র, জ্ব-স্থিত ইষ্টক, শুঠ, গুলগ ও পুননবা এই সমু-দায় একত্র বাটিয়া তদ্বারা প্রলেপ দিবে।

পিডকানাম**পকা**নামপতর্পণপূর্ব্বক্ষ। কল্ম কুষ্যাদ বিরেকাতঃ ভিন্নানাং বক্ষ্যতে ক্রিয়া ।

ভগনার-পিডকার অপকাবস্থায় অপতপণ হুইতে বিরেক পর্যাম্ভ স্থাণতের দিবণীয়োক্ত वकामन अकात हिकिएमा कतिरव। পিচকা পাকিলে যেরপ চিকিৎসা করিতে হটবে, ভাষা বলা যাইতেছে।

अवनी भारतकात-विश्वादाधिकः वस्त्रा विश्रात्र जगवद कायाः चथाः। वर वर्षाक्षमम् ।

পিড়কা প্রাকিলে এম্পা-যন্ত্র থাবা নালীর গতি অন্নেধণ এবং ভাহাতে প্রাটন কার প্রোগ ও অগ্নিদাহাদ ক বিশ্বা, 'हाक रहा

বিধেচনাপ্রসক 4043 পরে বাতাদিদোর চিকৎসা করিব।

अ अकद्वस्ताननी छ्वाईर क्रश विष्ण प. क्याम्बर्गा ७१ का भा श्राह्म । ११ श्राह्म

এবা সংবশবামুখ্য লাড়ুখ্য ইন্তান সংগ্রন্থ।

খারা দাক্ষথারন্ত্রা পাক করের বার প্রস্তুত করিবে। ঐবঙ্গি ভগণরে প্রাণ্ডিত করিয়। রাখিলে, ভগদর এবং শ্রীরস্থ তাবং নালী বিনষ্ট ইয়।

রমাঞ্জনং ছরিলে বে মজিনানিত 'াব'. जितृत्वकावटीम्छी-कस्या नासीयगानसः ।

नाकश्वम, भावत, রদান্ত্রন, হরিদ্রা, নিম্বপত্র, ভেউড়ী, গুডাফট্কী একহ বলেন -.চ) ও দন্তী, এই সকল এব্যের প্রাণে বিংগ তগলর ও নাড়ীব্র বিনষ্ট হয়।

भग्न. भिरेष्टिश्विला त्रिष्ठ-नशुर्व क ्ना : (ले । ভগন্দরে প্রশক্তে হয়ং সরস্কে বেলন,বৃতি ।

তিল, নিম ও ঘটিমনু ছব্দ্ধ পেশ্ব কৰিলা শীতল প্রলেপ দিলে সরকে বা বেশুনাসুক ভগন্দর বিনষ্ট হয়।

दमना राज्यानि छन्। विश्व छन् म मरमक्ष बच्छकं शिष्टो (न(भ) इ. ४ छ भन्द बस् জাতীপত্র, কচি বটপত্র, গুলম্ব, শুঠ ও দৈ**ন্ত্ৰৰণ তক্তে** পেষণ ক্ৰিয়া তাহাৰ প্ৰলেপ

भिटन जिन्नम् व रिनेष्ठे इत ।

রজনা ত্রিফলা তুখং হিতং এণবিশোধনম ॥

কুড়, তেউড়া, তিল, দন্তী, পিগলী, দৈমব, মধু, হরিদ্রা, ত্রিফলা ও তুতে, এই সকল জব্য (भवन कतियां अल्लभ मिल्ल नन विकास इत्र।

बिट्र डिला ना निष्ठा मिक्का मह मिलिया। ভবসাদ্ধং ভবেদেতৎ সেন্ধ্বক্ষোদ্রসংসূত্য ॥ (पेरमाननः अधीनाः भारमनकनकाषाम्, श्रे छ (이 역사(전위)) 1

েউড়ী, ভিল, হাতিও ড়া ও মঞ্জিটা, এই সকল দ্ব। শিলাপিট্ট এবং স্বত মধুও সৈন্ধব সংযুক্ত কবিনা প্রলেপ দিলে ভগন্দরের বিশুদ্ধি হয়, অগ্নাং ভগ্নার কেনর হিত হট্যা থাকে। 'केल' (आ'डिय ३ क्रिश लाक्नली विजिकनिका ।

 তাক্রারিক প্রান্ধর (ধারেন)য় ভগকারে ॥ क्रमा उन, न शक्तिकी, कुड़, जेन नाजना, অপ্রাজিভাম্ল, ওল্ফা, তেউড়ীমূল ও দন্তীমূল; মনসাসিজের আঠা ও আকলের খাঠ তেই সমুদ্ধি চবেৰে প্রবেপ দিলে ভগলবের

> বিশুদ্ধি হয় ৷ িলাভ্যালে ধাৰণবিহণ ক নিংশ লা কুইমখাববমান। चलकात् वर्गः । विकासाया

5명시나 하나라 고 아이네트워워 다 ্রচন্ত্রান লোপ্টিডি প্রচেলোবর্যা পরিন্দ্র)।

कुर्या ७०१, इत्री ७०१, (भीत, নগপত্র, হরিলা, দাকহবিলা, বচ, কুচ ও বলা এই সকল দ্বোব প্রলেপ দিলে, ভগ্নব, क्षित्र ६ छप्रेदर्भव .भावन ६ (इ. १४० इस ।

গ সর্বাধরতে। তথা কলম্মং একচন্দ্রং পিরেও। 지수시 학교 (5명 이 등) 한 제 이 제 제 시 시 시

क्षाम्यायुष्णाणी ५इता दिक्तान कांथ अथवा মাহ্যাক ওগ্ ওগ্ ও বিভ্সেব কাথ পান কারলে ভগন্ব বিশ্ব হয়।

ख्याच्यार अशहत्र क्रिया अ विक्ला**ल्या** । ্রফলাবন পিথেন মাজারাস্থা চ লেপতে ।

্রফলার কাথে প্রতিদ্ন ভগণার উত্তম-ক্রণে নৌত করিয়া, ত্রিফলার কা**থ-পিষ্ট বিড়া-**नाष्ट्रि अत्नथ मिर्द ।

পরাশ্রপকভূনাগ-চূর্ণলেপো ভগন্দরম্। হস্তি দন্ত্যায়াতিবিয়া-লেপস্তদ্বচ্চু-নোহস্থি বা ॥ কিফলারসসংযুক্তং বিড়ালাস্থি প্রলেপনম্। ভগন্দরং নিহন্ত্যাপ্ত গুইব্রণহরং পরম্।

গদিভের রক্তে কেঁচো পাক করিয়া ভাহার প্রলেপ দিলে, অথবা দস্তীমূল চিতামূল ও আতইচ পেষণ করিয়া ভাহার প্রলেপ দিলে, কিংবা কুকুরের হাড় ভিক্লার কাথে পেমণ করিয়া ভাহার প্রলেপ দিলে অথবা ভিফ্লার কাথে বিড়ালান্থি পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলেও ভগন্দর রোগে উপকার দর্শে।

জম্বনাংসং ভুঞ্জীত প্ৰকানৈৰ্ব্যপ্তনাদিভিঃ। অজীৰ্বক্ষী মাদেন মৃচ্যুতে চ ভগন্দৰাৎ।

যে ভগন্দর-বোগির অভীর্নদোষ নাই, সে পুগাল মাংসের বিবিপপ্রকার বঞ্জনাদি করিয়া একমাস সেবন করিলে ভগন র ২ইতে মৃত্তিলাই করে।

মধুতৈশযুতা বিভ্লসার-ডিফলামাগাধকাকণাশ্চ লাচান। ক্রিমিয় উচগ্যসরপ্রমহ-কর্মণ্ড্রেগরোপণা ভবস্তি।

বিজ্লসার, ত্রিফলা, ছোট এলাইচ ও পিপ্লনীচূর্ণ এই সকল দ্রব্য সমভাগে মধু ও তৈলের সহিত লেহন করিলে ক্রিমি, কুঞ্চ, ভগ্নসর ও নাজীব্রণ প্রভৃতি বিনষ্ট হয়।

খদিরাদিকাথঃ।

খদিরতিফলাকাথো মহিষীগুতসংযুঠঃ। বিড়কচুর্বসংযুক্তো ভগন্দরবিনাশনঃ॥

খাদর ও ত্রিফলার কাথ, মহিলাত্বত বা বিভ্লাচুণ সংস্কুত করিয়া পান করিলে ভগন্দর নষ্ট হয়।

নবকার্ষিক-গুগ্ গুলুঃ।

ত্রিফলাপুরকুঞ্চানাং ত্রিপঞ্চৈকাংশ্যোজিতা। শুড়িকা শোশগুল্মাশো-ভগন্দরহিতা স্মৃতী॥

হরীতকী, আমলকী, বহেড়া প্রত্যেক ২ তেলা; গুণুগুলু ১০ তোলা, পিপুল ২ তোলা; এই সমুদায় স্বতে মর্দ্ধন করিয়া অর্দ্ধতোলা

প্রমাণ গুড়িকা প্রস্তুত করিবে। এই গুড়িকা শোপ, গুলা, অর্গ: ও ভগন্দর রোগে প্রবোজা।

সপ্তবিংশতিকে। গুগ্গুলুঃ।

বিকট্নেফলামুখ-বিড়কা হত চিত্ৰকম্।
শটোলা পিশ্বলী মূলং হব্যা স্থানাক চ ॥
তুসুক্রকারং চবাং বিশালা রাজনীবাম্ ।
বিড়সৌবর্চলং কারৌ সৈন্ধবং গজপিশ্বলী ॥
শবভোতানি চূর্ণানি তাবদিগুণগুণগুণ্ডুণ; ।
কৌলগুমাণাং জড়িকাং ভক্ষেমাবুনা নহ ॥
কাসং বীসং তথা শোধানশাংসি চ জগলাম্ ।
সভালং পার্যশূলক কু কিব্ভিডদে রাজম্ ॥
আধারং মৃত্যেত্তক জন্তবিভ্ডদে রাজম্ ॥
আধারং মৃত্যেত্তক জন্তবিভ্ডদে রাজমান্ ।
চির্ভাবে গিক্স্নিশং ক্ষেমাপ্রত্চেত্নাম্ ॥
আনাহক তথা মানং কুঠানি চোদবানি চ ।
নাড়াং ভ্রেশান্ স্বশান্ প্রত্ত্বং ল্লাপনং তথা ।
সপ্রবিংশতিকো হত্তি সক্রোগান্ত্রনং ॥

ত্রিক টু, বিগল, মুভাত বিভুঞ্জ, চিতামুল, শটা. এলাইচ, পিপুলমুল, হৰ্ষা. দেবদাক, বুনে, ভেলা, চই, রাখাল মুল, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা বিট্রবণ, সচল করণ যবকার, সাচিকার, সৈত্কবলবণ ও গজুপিপু-ইহাদের প্রভাকের ১ ভোলা, গুগুগুলু ৫০ প্রথমে গুণাগুণা স্থাত মাজ্যা পশ্চাং তাহাৰ সহিত জ্ঞা সম্ভ চুৰ্ ন্দ্ৰ ক্রিয়া মুভভাওে त्रिष्ट्रव । খাত্রা-এক ॐ ४४८ मधनार्छः (3/3/1 অনুপান-নধু। অদ্দির শাতল জলপান করা কর্ত্তব্য 🗀 ইহাতে ভগন্দর, কাদ, শ্বাদ, শেখ, অশঃ সচ্ছাল, পাৰুশুল, অন্মরী, মৃত্রকুন্ডু, প্রমে**ছ** ও ক্ষর প্রভৃতি নানারোগ নষ্ট হয়।

বিড়ঙ্গারিক্টম।

বিড়ঙ্গং এখিকং রামা কুটজন্তকানি চ। পাঠেলবাপুকং ধাত্রী ভাগানু পঞ্চপলান্ পুৰক্ । অন্তঃমোণেহন্তসঃ পক্ত_বা কুধ্যা**দ্ মোণাবশে**বিভিন্ন। ১ পুতে নিতে কিশেং ভত্ত কৌরং পলশভত্তরন্॥ ধাতকীবিংশতিপালং তিজাতং ছিপলং তথা।
প্রিরন্থকাকনারাণাং সলোগ্রাণাং পালং পালম ॥
ব্যোবক্ত চ পলাভাষ্টো চূণীকুত্য প্রদাপরেং।
মৃতভাঙে বিনিক্ষিপা মাসমেকং বিধাররেং ॥
ততঃ পিবেদ্ মধার্হস্ত এমেছিদ্রবিম্চিছ্র্তম।
উল্লেক্ত শ্বারীমেহান্ প্রভাগ্রাভগন্যবান্।
গভ্যালাং হলুক্তঃ বিড্লারিগ্রনংক্তিরঃ ॥

বিভূক, পিপুনমূল, রামা, কুড় চিছাল, ইক্রমর, আক্নাদি, এলবালুক, আমলকী প্রত্যেক ৫ পল, জল ৫২২ নের. ১২৮ সের পাকিতে নামাইয়া শীতল হইলে, ভাষাতে মধু ১০০ পল (৩৭॥০ সের), ধাইফুলী ২০ পল, ত্রিজাত (গুড়মক, এলাইচ, ভেজপাতা) ২পল, প্রিয়কু, কাঞ্চনছাল ও লোন প্রত্যেক ১ পল, ত্রিকটু মিলিত ৮ পল, চুর্ণ করিয়া প্রক্রেপ দিবে এবং ১ মাস ম্বভভাতে রাখিবে। পরে উপসূক্ত মাত্রাম পান করেলে ভগ্নসর, বিদ্ধিন ইক্সম্বন্ধ, বিদ্ধান ব

ভ্রণগজান্ধ্যুশা রসঃ।

দরদং পাক্কতী পূপাং কুনটা পূক্ষো রসঃ।
শোপিতং গলকো দেতাং দৈলবাছিবিয়া চনী ।
শংপুছা বিড়ঙ্গণ যন নি গঙাপিপ্রকাঃ
মরিচাকৌ চ বঙ্গণো প্রকণ্ড কটা একা ॥
সংমদ্য কট্টেলেন গুড়িকাং করেছে বিশক দ নাড়ীবাপপ্রবাহন্ধ গঙ্মালাং বিচ্চিকাম ।
চিরছ্পরবাং দন্ত পুতিকাং শিরোগদম্ ।
ধ্যাপ্রকাটং ছামাগান্ধ ভগন্বম্ ।
বান্রোগান্ নিহন্তাংগ গ্রাভ্রনিব কেশ্রী ॥
(গ্রাছাভরেইন্ডেব নারার্গসংজ্ঞা)

হিঙ্গুল, গিরিমাটী, রসাঞ্জন, মনছাল, গুগ্-গুলু, পারদ, কুছুম, গন্ধক, লৌহ, সৈন্ধব লবণ, আতইচ, চই, শরপুজা, বিড়ঙ্গ, যমানী, গন্ধপিপ্পলী, মরিচ, আকল্মমূল, বক্ণমূল, খেত-গুলা ও হরীতকী: এই সমুদায় সমান সমান পরিমাণে লইয়া কটুতৈলের সহিত নদ্ধন করত: ১ মাষা পরিমাণে গুড়িকা প্রস্তুত করিবে। অন্থপান—মধু। ইহা সেবনে গুণ্ড-মালা, বিচ্চিকা, কুষ্টব্রণ ও হংসাগ্য ভ্গন্দর প্রস্তুতি নানাবিধ ক্ষত শুক্ষ হয়।

চিত্রবিভাওকো রসঃ।

শুদ্ধতাং বিধাপদ্ধং কুমারীরসমন্দিত্য।

তাহাত্তে গোলকং কুমা তামং তেন প্রলেপদ্ধের ।

দর্মাং সমং ভ্রমণ্র-ভ'ওে কন্ধা বিপাচনের।

দিবামান্তে সমুদ্ধতা চর্পন্তের স্বান্ধাতিলম্ ।

দ্বান্ধাত্তে সমুদ্ধতা চর্পন্তের স্বান্ধাতিলম্ ।

দ্বান্ত্তের পিট্রা কন্ধা সপ্তপুটে পচের।

শুল্লী লন্দ্রনাজ্যের বিকাশদ্ধি ভ্রপন্তমম্ ।

নর্পন্তিরা মবুরাজনের দিবাস্থাক মেথুন্ম।

নর্পন্তিরিভ'তার বিধার বিদ্যান্তিরিভ'তেরে ॥

পার্দ্ধ প্রোকা ও গ্রাক্ত ৪ তোলা একত মুত্রকুলবিটিৰ বলে ডিন দিন স্ফুন কজলী কবিবে। পরে শোধিত তামপত্র ৬ ভোলা কজনী মারা লিপ্ত করিয়া একটি স্থালী সংবা ঘুঁটেৰ ছাই রাণিয়া, তাহার উপরি ভাগে কজ্জলী-লিপ্ত ঐ তাম্রপত্র স্থাপন ও গোলক ছাবা আঞ্চাদন ক্রিয়া পুনকার তাহার উপনি ঘুটিয়ার ছাই দিয়া স্থালী পুর্ণ कतिर्द। अन्यत भवाव बाता छानीत भूभ আরুড করিয়া তীর অ্যিতে ছুই প্রহর পাক করিবে এবং শীতল হইলে প্রথম বাহির করিয়া চর্ণ করতঃ জালীবের বলে পেষণ করিবে। পরে মধান্ত্রা ক্র কবিয়া সাত্রার গ্রুপুটে পাক কার্যা: গইবে। সাত্র-- ১ রতি। অমুপান--গুৰু ও নধু সেবনান্তে কাঞ্জিকপেষিত তাল-মলী ও বস্তন লোজন কৰা কৰ্তবা। ঔষধ দেবন কালে দিবানিদা, মৈথন ও শীতলাহার বজ্জন এবং মধুব রদ বিশিষ্ট আহার পথা কবিবে।

ভগন্দরহরো রসঃ।

প্রক্ত দিওপেন ওদ্ধবলিনা কল্পাপরোভিত্তাহং ওদ্ধং থানসভঃ সমস্তত্বিতং পাতাং নিধারোপরি। বেলাং যানত্ত্যক ভ্রমপিঠার নিমুন্তলৈঃ সপ্তথা পাকং ভং পুটায়েদ্ ভগন্দরহরো গুলোমিতঃ জাদিতি। পাদে ১ ভাগ, শোধিত গদ্ধক ২ ভাগ, ঘুতকুমানীর রাসে ৩ দিন মন্দ্রন করিয়া সমুদ্দারের সমান ভান ও লোহ সিঞ্জিত কর্ত্ত একটি ভক্মপূর্ণ পাত্র মধ্যে রাণিয়া ২ প্রহর ক্ষেদ দিবে। পরে কাগজীলেবুর রদে ৭ বার ভাবনা দিয়া পুট দিবে। ১ রতি পরিমাণে ইহা সেবন করিলে ভগন্দর নই হয়।

তাত্রপ্রয়োগঃ।

ভাষপতং বৰিন্ধীরে নিশ্বভিগ্নিরসে তথা।
ত্রিকণ্টজে সুহীরসে ভাসং দম্বা কিপেপ বিধা।
বসস্তার্মপনাং জন্ধং গন্ধকন্ত পলং ভগা।
কল্পনার্মের ক্রিল্ডাই দ্যোহ পদ্ম পুটান্ হসুন।
সংমন্দ্রি মধুমপি ভাইং ভতো ব্রক্ষিত কিছেই।
ভগান্যের সর্ক্রিত্র বাধ্য স্ক্রিপ্রি চ

৮ তোলা প্রিমিত তানপ্ত পোড়াইয়া যথাক্রমে আকলের আসায়, নিসিন্দার রসে, গোক্সরের রসে ও সিজের আসায় তিন তিন বার নিষিক্ত করিয়া শোধনা করিবে। পরে পারা ৪ তোলা ও গুলুক্ত ৮ তোলা এই উভয়ের কজলী করিয়া ঐ কজলীর অধানা কামীরের রসে মাড়িয়া তাহা ধারা প্রেমাক্ত তানপত্র লিপ্ত করিবে। অনন্তর ই তানপত্র জন্মুখায় রুদ্ধ করিবে। অনন্তর ই তানপত্র জন্মুখায় রুদ্ধ করিবে। অনন্তর ই তানপত্র জন্মুখায় রুদ্ধ করিবে। অনুপান—মধুও স্থান। ইহা সেবন করিবে সকল প্রকাব ভগন্দা ও ফাত প্রকাবিত হয়।

বিষ্যান্দনং তৈলম।

চিত্রকাকৌ ত্রিবংপাঠে মলপুহরমারকৌ।
স্থাং বচাং লাকলিকাং হরিতালং স্বার্চিকাম্॥
ক্যোতিমতীঞ্চ সংক্তা তৈলং ধীরো বিপাচয়েৎ।
এতদ্ বিষ্যান্দনং নাম তৈলং দত্যাদ্ ভগন্দরে।
শোধনং রোপণধ্যৈব স্বর্ণকরমুক্তম্ম।

তিলতৈল /৪ সের। জল ১৬ দের। করার্থ-নরক্ত,চিতামূল, আকলমূল, তেউড়ী-মূল, আক্নাদি, কাকডুমুনমূল, করবীমূল, মনসাসীজ, বচ, বিশ্লাঙ্গলিয়া, হরিহাণ, স্বজ্জিকাক্ষার ও জোভিম্মতী (লতাকটুকী) মিলিত /> সের। ফ্যাবিধি পাক করিয়া ব্যবহার করিলে ভগন্দর নিবারিত হয়। ইহা ভাগশোধক, রোপক ও স্বর্ণভাকারক।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

ভগন্দররোগে পথ্যানি।

প মে সংকোধনং লেপো এজনং রক্তমোকণম।
পরে পুনং পর্যকি-কারকর যথাবিদি।
সক্তেপি শালয়ো মূপা বিরোগী জাললো রসঃ।
প্রেণ্ডালা শিগ্রনে লাগ্রং পান্তরো বালমূলকম।
ভিলম্বপ্রেণ্ডিলা, ভিজনগো যুতা মধু।
বহুত পর্যা শালার ধ্বির দেবার ভাগনরে।

অপক ভগন্ধবাগে সংশোধন ঔপর,
প্রালেপন, উপবাস ও রক্তমোক্ষণ হিতকর।
ভগন্দব পাকিলে বিদিবং শ্রন্তক্রা, অগ্নিক্ষ
ও ক্ষাব প্রয়োগ কর্ত্তবি,। পক ও অপক এই
উভয় ভগন্দবে শালিশাল, মুগ, বিলেপী, জাকল
যুগ পক্ষী প্রভৃতির মাংসরস, পটোল, শজিনা,
বেভাগ্র, রক্তচন্দন ও ক্চিমূলা, তিলাতৈল,
সামপ্রতেল, তিভাবর্গ, ঘ্রভ ও মধুদোশন্দ্রসাবে
প্রযুক্ত হইলে, এই সম্বন্ধ ভগন্দর বোগির
হিত্তনক হ্য।

ভগন্দররোগেই পথ্যানি।

বিক্লাভ্রপানানি বিষমাশনমাতপ্য। বাজামং মেপুনং সূক্তং পৃত্তথানং জ্বনি চ। সংবৎসবং প্রিছরেদ্যা রচহুপো নরং ॥

বিক্তম অন্নপানীয়, বিষ্ম ভোজন, স্নৌদ্র সেবন, ব্যায়াম, স্থীপ্রসঙ্গ, মৃদ্ধ, অত্থ গজাদির পৃষ্ঠারোহণণ্ড গুরুজব্য, এই সমস্ত ভগল্পর-ব্যোগির ক্ষতস্থান পুরিয়া উঠিলেও এক বংসর পর্যান্ত পরিত্যাগ করা কর্তবা।

ইত্যায়র্কেন-সংগ্রহে ভগন্দররোগাধিকারঃ।

অথোপদংশাধিকারঃ।

অংথাপদংশ-নিদানম।

হস্তাভিদাতারপদস্তপা তাদধানা দত্যপদেবনাদা।
বােনিপ্রদোষাচ্চ ভবস্তি নিশ্রে
পঞ্চোপদংশা বিবিধ্বপচারৈঃ ॥
সত্যোদভেদেং ক্ষ্রণেং সক্ষেণ্
ক্ষোইবারক্তেৎ প্রনাপদংশ্য।
শীতৈবভক্রেদ্যুতিং সদাহৈঃ
পিজেন রক্তাৎ পিনিতারভাসেঃ ॥
কোটেই সকুষ্ণৈ ক্ষাবিরং প্রবন্ধং
রক্তাত্মকং পিন্তিসমানলিক্ষ্।
সক্তুরৈ লোধ্যুতিম ইন্তি
ভব্রেব্নৈ প্রাব্যুতিং ক্ষেন ॥
নানাবিধ্বাবস্থালোপদ্রন

মত্যন্ত অনুবাগ বা কলখাদি বনত লিঙ্গে হন্ত বা নগণন্তাদির আঘাত এবং লিঙ্গ-মপ্রকালন, অধিক মৈথুন, গৃইযোনি-গমন, অথবা কারমিপ্রিত উষ্ণ জলে প্রকালন ও এক্ষারিণী-গমনাদি বিবিধ অপ্রানে উপদংশ রোগ জন্ম। ইহা পাঁচ প্রকার।

বাভিকোপদংশে, স্ফোট সকল ক্ষণ্ডবৰ্ণ ও তাহাতে স্ফীবেধবৎ বা ভেদবৎ যন্ত্ৰণা ও স্ফুটি (দপ্দপানি) বিভাষান থাকে।

পৈত্তিকোপদংশে, স্ফোট সকল পীতবৰ্ণ এবং অত্যন্ত ক্লেন্ ও দাহসুক্ত হয়।

রক্তজনিতোপদংশে, ক্ষোট সকল মাংসের স্থার তাত্রবর্ণ বা কৃষ্ণবর্ণ ও রক্তস্রাববিশিষ্ট হয়। ইহাতে পৈত্তিকোপদংশের লক্ষণ সকল বিভ-মান থাকে।

ক্ষজনিভোপনংশে কোট সকল বৃহদা-কার, শুক্রবর্ণ, কণ্ড্রিশিষ্ট, সশোপ ও ঘনপ্রাব-যুক্ত হয়।

ত্রিদোষজ উপদংশে, প্রত্যেক দোষোক্ত আব ও বেদনা বিশ্বমান থাকে। ইহা অসাধ্য।

অথোপদংশ-চিকিৎসা।

জিজনিরশ্বীবস্ত প্রজমধ্যে শিরাব্যধঃ। জনৌকাপাতনং বা স্তাদৃদ্ধীধংশোধনং তথা। সন্ত্যোনিজিজনাবদা কনশোধাবৃপনামাতঃ। পাকে। রক্ষাং প্রয়ন্ত্রন শিশুক্ষকরো হি সং॥

উপদংশ (গ্রন্ম) রোগে গুগ্মতঃ স্বেহ প্রায়োগ ও স্বেদপ্রদান করিয়া লিক-মণাস্থ শিরা বিদ্ধ কবিবে। ইছাতে জলৌকা দ্বাবা রক্তমোক্ষণ এবং বমন ও বিরেচন দ্বারা দেহশোদন আবিশুক। এই সকল ক্রিয়া দ্বারা দোষেব শাস্তি হইলে, বেদনা ও শোধের উপ-শম হয়। বাহাতে উহা না পাকে, বিধিমতে ভাহার চেই। কবিবে। কারণ, পাকিয়া উঠিকে লিক্ষ ক্ষর প্রাপ্ত হইতে পারে।

ত্রিফলায়া, কমারেও ভূগনাজরসেন বা। বশপ্রকালনং কুয়াাত্রপদ্ধেপ্রশাস্ত্রে।

ত্রিফলার কাথ জগবা ভীমরাজের রস্থাবা ঔপদংশিক ফাত প্রকালিত কবিবে।

দংহৎ কড়তে কৈলাং সাম্যামধূবংযুক্ত উপদংশ প্রবেশ লেজা রোপ্যতি এবস্থা

(নুভনজ্জানাপ সমভাগ্যিকলাং শরপেন পিশার সক্ষাম। ভদ্ভক্ষ মধুনা সংবীক্ষাপ্তবংশে লেপাং।)

একটি কটাহে বা স্থালী মধ্যে হরীতকী, বহেড়া ও আমলকী সমভাগে রাখিয়া, উহার উপরি শরা চাপা দিয়া নীচে আগ্রির জ্বাল দিবে। উহা ভন্মীভূত হইলে, ঐ ভন্ম মধ্র সহিত সিশ্রিত করিয়া উপদংশক্ষতে প্রেলেপ দিলে, ক্ষত শুষ হইবে।

প্রপৌগুরীকষ্ট্যাহ্ব-সরলাগুরুদারভিঃ। সরামাকুঠপূপ^{*}কৈবা' তকে লেপসেচনে ।

প্তরিয়া, বৃষ্টিমধু, সরলকান্ট, অগুরু, দেব-দারু, রামা, কুড় ও ছোট এলাইচ, ইহাদের করে প্রলেপ দিলে, অথবা ইহাদের কাথ সেচন করিলে, বায়ুজনিত উপদংশক্ষত প্রশমিত হয়। নিচ্লৈরগুবাজানি যবগোধুমশক্তবা। এতৈশ্চ বাতজে মিধ্যেঃ মুখোফৈঃ সংপ্রলেপরেং ।

বাতজ উপদংশে হিজলবীজ, এরগুরীজ, যব ও গোধুন, এই সকল দ্রব্যের চুর্ণ মৃত্যংসুক্ত এবং ঈগ্রহা করিয়া তদারা প্রলেপ দিবে।

গিরিকাঞ্জনমাঞ্জঠা-মধ্কোশীরপথকৈ:। সচলনোৎপলৈ বিধেঃ পিজিকং সংপ্রলেপয়েং।

পৈত্তিক উপদংশে গিরিমাটা, রসাঞ্চন, মঞ্জিটা, যষ্টিমধু, বেণার মূল, পদ্মকার্ট্চ, রক্ত-চন্দন ও নীলোৎপল, এই সকল জব্যের কল্কে শৃত্যনীত মৃত্যমিশ্রিত করিয়া তথ্যার। প্রনেপ দিবে।

পালোৎপালমূণ বৈলক সমর্জ্বাক্তননে ওসের। সংপ্রিকার্য সময়কৈ পোনকং সংপ্রলেপয়েং॥

পদ্ম, নীলোৎপল, মূণাল, শাল, জর্জুন, বেক্তম ও যষ্টিমধু, এই সকল দ্রব্যের করু মত-সংস্কৃত্ত করিয়া পৈত্তিক উপদংশে প্রলেপ দিবে।

রসাঞ্জনং শিরীবেও পথায়া বা সম্বিত্য। সক্ষোদ্ধ বা প্রলেপোক্যং স্বর্গন্ত্রগদাপহঃ॥ (অত্যোগায়া গুড্ঠো সাহি শিবদাসঃ।)

শিলাপিট শিরীষছালের সহিত্রা গুল-ক্ষের সহিত রসাজন মিশ্রত করিয়া ভদারা প্রলেপ দিলে, অথবা রসাজন ও মধু একত্র মিলিত করিয়া ভাচার প্রনেপ দিলে, সর্ব-লক্ষণাক্রাস্থ উপদংশ বিনষ্ট হয়।

বলোলদলচূর্বেন দাড়িমজগ ভবেন বা।
গুণ্ডনং নুস্থিচূর্বেন উপদংশহরং পরেম্।
লেপঃ পুগফলেনাখ-মারমূলেন বা তথা।
সেবেলিতাং ববালক পানীলং কৌপামের চ।
(গুণ্ডনমবচূর্বনম্। নুস্থিমপুরপালাম্থি।)

বাব লাপাত। চুর্ণ, দাড়িমের ত্বক্ চুর্ণ অথবা মন্তব্যের কপালান্থি চুর্ণ উপদংশে দিলে উহা গুদ্ধ হয়। স্থপারি ফল বা করবীর মূল দারা প্রলেপ দিলেও উপদংশের প্রশান্তি হয়। উপদংশ রোগির যবায় ভোজন ও কুপোদক শান নিত্য কর্তব্য।

জয়াজাতাৰমারার্ক-শম্পাকানাং দলৈ: পূথক। কৃতং প্রকালনে কাথং মেচুপাকে প্রবেট্ডিয়েং।

উপনংশে লিঙ্গ পাকিলে, জয়ন্তী, জাতী, করবী, আকন্য বা সোন্দাল ইহানের পত্রেন কাথ প্রান্তত করিয়া তন্দারা ক্ষত প্রকালন করিনে।

ইটো দারুহবিজায়াং শতাশালা রসপ্তেন্স। লাকা গোময়নিয়াসভ্তোং কৌদ্রং ঘৃতং প্রত্ এতিন্ত পিঠিপ্রনাংশৈকপ্রতংশং প্রকেপ্রেই । এপাক্ত তেন শামান্তি ব্যবস্থাতি এব চ।

লাক্ষংবিজার রক্ শব্দনাভি, রসাঞ্চন, লাক্ষা, গোমররস, তৈল, মধু, ত্বত ও ছগ্ধ, এই সকল দ্রব্যের প্রালেপ নিলে উপদংশেব ক্ষত, শোগ ও দাহ নিবারিত হয়।

সেচয়েচঃ যুক্তক্ষীৰ-শক্ষেক্সধুদকৈ: । অশ্ববৃথি সুদীয়েন কৰায়েও বটাট্নিনা॥

ম্বত, হ্রম (চনির জল, ইক্রস ও মং মিশ্রিত জল ইহানের মারা অথবা বটানির শীতল কাণ ধারা পিত্তজনিত উপদংশ-জত প্রকালন করিবে।

শালাজকর্ণাকর্ণনাচায়গ্রিঃ কলেণিওম্। কুলাপ্রাভক্ষণ্ডিঃ সভেলাভিঃ প্রলেপয়েং॥

শাল, অনন, লতাশাল, বচ ও দাফ্চিন এই সকল প্রবা, স্থবার পিষিয়া, তৈতের স্থিত মিশ্রিত ও অগ্নিতে ঈষ্ত্র কাবন কফজ উপদংশে প্রশেপ দিবে।

আরখগ'দিকাথেন পরিবেকক কারয়েৎ।

আরগ্নাদি গণের কাথ থারা ককজ উপ-দংশ প্রাক্ষালন করিবে।

নিবাৰ্জ্নাৰথকদৰশাল-জমূবটোড়ু ম্বনেতদৈশ্চ। প্ৰকালনালেপমূতানি কুয়াচেনুৰ্ং সপিতাপ্ৰভবোপদংশে।

পিত্ত-রক্তজনিত উপদংশে নিমছাল, অর্জুন ছাল, অর্থণছাল, কদমছাল, শালছাল, জান ছাল, বটের ছাল, যজ্জুমুরের ছাল ও বেতুর ছাল, এই সকল জব্যের কাথ ধারা পরিষেক ইহাদের কল্প ধারা প্রলেপন এবং এই স্কর্ল জব্যের কাথ ও কল্প সহ স্কৃত পাক করিয়া তদ্বারা ক্ষত একণ ও ইহাদের চুর্ণ দারা অব-চুর্ণন ব্যবস্থা করিবে।

সৌরায়ী গৈরিকং তৃথং পূপাকাসীসদৈক্ষণম্।
লোএং রসাঞ্জনকাপি হরিতালং মনঃশিলা ॥
হবেণ্টকলে চ তথা সমং সংক্তা চূর্ণয়েং।
তচ্চুর্ণং ক্ষৌত্তসংযুক্তমুপদংশেষ পূজিতম্ ॥
পূট্দক্ষং কৃতং ভন্ম হরিতালং মনংশিলা।
উপদংশবিদ্যাণাব্যক্তম্বালিকবং প্রম ॥

সৌরাষ্ট্রমৃত্তিকা, গোরমাটা, তুঁতে, পুষ্পকাদীদ (হীরাকস), সৈন্ধব, লোধ, বসাঞ্জন,
হরিতাল, মনঃশিলা, হরেণু ও এলাইচ ইহাদের চুর্ণ সমভাগে মধুর সহিত মিশ্রিত করিয়া
প্রলেপ দিলে উপদংশ ও বিদর্প নিবারিত
হয়। হরিতাল ও মনঃশিলা ম্থানিয়মে
পুট্পাকে ভব্ম করিয়া লইতে ইইবে।

করবারগু মূলেন পবিপিছেগ বারিণা। অসংখ্যাপি এজতান্তং লিকোপো কক্ পদেপনাৎ।

করবীমূল জলে বাটিয়া উপনংশে প্রলেপ দিলে, উপনংশজনিত বেদনাব বিশেষ উপ-কার হয়।

> পটোলনিম্বজিফলাগুড চি:-কামং পিবেদ্ধা পদিবাসনাভাগে : মগুগাগুলুং বা বিফলামুকা ও সকোপদংশাপহরঃ প্রয়োগ্য ॥

পটোলপত্ত, নিম্বপত্র, ত্রিফলা, (হরীতকী, আমলকী ও বহেড়া) ও গুলফ ইহাদের কাথে অথবা খদির ও পীতশালের ছালের কাথে গুগ্ওলু কিংবা ত্রিফলাচূর্ণ প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে সর্বপ্রকার উপদংশ নই হয়।

লেপঃ।

বিষ্ঠিন্দুং লৌহপাতে নলাকে নিস্ক্রটেং ।

থ.বঁং কুফস্থামূলং প্রত্যেকং মান্দিকং দৃঢ়মু ॥

তুথং তদত্ স্তঞ্চ লৌহদণ্ডেন তদ্যুত্ম ।

স্বাং তদেকতাং যাতং তেন লিক্ষং প্রলেপারং ॥

তাপে শুকে পুমর্লেপং ক্রাভ্রুকে পুনস্তথা।

তাক্ষং ন প্রংময়েরেপং ক্রাভ্রোপনি দাপ্রেং ॥

মরিচা-ধরা লোহার পাত্রে লোহার দণ্ড
ধারা কাগ্জি লেবুর রস দিয়া কুঁচিলা মদ্দন
করিবে, পরে যথাক্রমে নিজমূল, সর্নাক্ষিক,
ছুঁতে ও পারদ, সমুদায় ঘর্ষণ করিয়া একীভূত
করিবে। ইহাদের ধারা লিঙ্গে প্রলেপ দিবে।
ঐ প্রলেপ ওম হইলে তাহাব উপরিভাগেই
পুনর্বার প্রলেপ দিবে, ৬ম প্রনেপ ভূলিয়া
ফেলিবে না। এক প্রলেপ ওম হইলে তাহার
উপরিভাগে অপর প্রলেপ দিবে। এইরপ
পুন্পুন্ন করিলে রোগের শান্তি হয়।

ধপঃ।

বনরাক্মপামাগন্তবা বান্ধবৃষ্টিবা ভিত্নক সমকেষা ভাগং কর। চাগ্রম্। ভোষতং ক্রডা ভ্যাত্রপদংশালিকং এণ্ডা

কুলের মূলের ছাল, আকলমালের ইছাল, আপাংমূল, বামুনহাটা ও হিছুল প্রত্যেক সমান ভাগে লইয়া মর্দ্দন কবিয়া, তদাবা দুপ প্রদান করিলে উপদংশ প্রাঠতি ক্ষত শুগ হয়।

মিশুরং পারবং ভুষং হবিতাগাং মন শিলা।
মুদ্রাশন্ধাং কটা কাবে। বিডং উল্লেখন আয়া।
খেণকেল্লং মরিচং প্রভাবিং মাধ্যাতিব ।
হিলুলা সালিতোল্য স্ববিং ছাত্রিমিনি ন্য।
এতি প্রধ্বনং হ্লান্তবাং বিং লিক্সম্থিতি ।

সিন্দর, পারন, তুঁতে, হরিতাল, মন্দ্র শিলা, মুদ্রাশজা, ফট্কিবি, ববকার, বিট্লবেণ, সোহাগার গৈ, খেত আকলের মূল ও মরিচ প্রত্যেক ১ হার, হিন্তুল এ০ তোলা, এই সম্নারেক চুল লভে সন্দ্র করেরা ভাহার পুর্ণ প্রদান করিলে উপদর্শিক ক্ষত শুক্ষ হয়।

নরাশিগুণ্ওলুঃ।

বর; নিথা জুনাথথ- গদিরাসনবাদকে ।
চুণি তেওঁ গ্রুণু গানেবটিক। অক্সম্থিত । ।
কন্তব্যা নাল্যজ্ঞাতে সর্বান্ বিক্সমুখি তান্ ।
উদদেশানত্বাধাৰ তেওঁ বুটিন্দানি ।

ত্রিফলা, নিম, অর্জ্ঞ্ন, অশ্বর্থ, থদির, শাল (পিরাশাল) ও বাসক, ইহাদের চুর্ণ সমভাগ, চুর্ণের সমান গুগ্গুলু; একত্র করিয়া ২ তোলা পরিমিত বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহা সেবন করিলে উপদংশ, রক্ত্রকৃষ্টি ও ফুষ্টরণ নিবারিত ইইয়া থাকে।

রসগুগ্গুলুঃ।

প্রাত্যং পাত্রবারের গুল্ল-চ্নুসমো রসং। রক্তিকাশতমেত্র শকরা ত্রিগুণা ভবেৎ। তত্তত্ত্ত গৈ! প্রালো গুগাগুলুম হিষাকক:। যুত্তং রসসমং দঙ্গানাদ্রায়েচ্চ প্রয়ন্ত । বিংশতিবটিক! কালান্তিপ্ৰতিবোদন যেম । . शक्कां क्रमा क्रिये ब्रह्मा (१६ व्यव क्रमा विकास क्रमा विकास क्रमा विकास क्रमा विकास क्रमा विकास क्रमा विकास न**ाः । इन्द्रायानकः का**न्द्रायम् (७४५) । लावपर नेकार्यर भारता भागानिकालन प्रवास । দিন্দরে ব্যক্তারে ভ প্রদেশনং প্রামাচরের। মসরস্থাং সগুড়াং ব্যক্তনদাপ কল্লাং। পুনন্ধ পটোলানি ভিক্তপত্রী চ গোক্রম। পুটপত্ৰীং কোকিলাক্ষং শাকাংখ গুডভাজ •ম ॥ শকর। লবণস্থানে বেশবারে ধনীরক্ষ। লবঙ্গাজাজিতিজ্বনি গান্তকং জীৱকানি ০ ৷ পাকার্থে সংপদাত্রা সংস্থার প্ং ভিষ্যা ববৈ । ভেরবন্ধ রসস্থান্তাঃ কিন্তা জন প্রব্যেভ্রেৎ ॥ রসপ্তপ্তলুরেবং তি সর্বান জিহাময়। । क्छि। भारत्यमामानः खगः वाद्यानिमार्ये ६५। কামদেবপ্রতিকাশ-িচরজারী ভবেরর: ॥

পাতন্যথে শোধিত পাইদ ১০০ বতি,
চিনি ৩০০ রতি, গোধিত মহিলাক গুগ্গুল্
৪০০ রতি, মৃত ১০০ রতি, এই সমুদায় একএ
উত্তমরূপে মর্দন করিয়া ২০টি বটিকা প্রস্তুত্ত করিবে। ইহার সেবনের নিয়ম পরোক্ত ভৈরব রসের হ্যায়, অর্থাং প্রথম হইতে তিন দিবস প্রত্যুহ ৩টি করিয়া ও ৪র্থ দিবস হইতে প্রত্যুহ একটি করিয়া সেবনীয়। ১৪ দিনে সমুদায় ঔবধ নিঃশেষ হইবে। আহারের নিয়ম—১ম দিবসে পাদাংশ, দ্বিতীয় দিবসে অর্জেক এবং তৎপরে পাদোন (৮০ আনা) পার্মাণে আহার করা করেয়। গুড়ুগুংযুক্ত ব্যক্তন ও মুহুরের ডাইলের মুষ্ আহার করিতে দিবে। শাকের মধ্যে পুনর্বা, পল্তা তিজ্ঞপত্তী (কাঁক্রোল), গোকুর, পুটপত্তী ও কুলেখাড়া, এই সমুদায় দ্ব্য স্থতে ভাজিয়া আহার করিতে দিবে। লবণ আহার নিবিদ্ধ। লবণের পরিবত্তে চিনি এবং অক্স বাট্নার পরিবর্তে ধনের বাট্না ব্যবহার্য। অক্সান্ত মস্লার পরিবর্তে লবক, কৃষ্ণজীরা, হিং, ধনে ও জীরক বাবহার করিতে হইবে। এবং ইহাতে ভৈরবরসোক্ত সমুদায় নিয়ম প্রতিপাল্য। রসগুগ্গুলু সেবন করিলে কৃষ্ঠ ও উপদংশ এভ্ভতি নানা প্রকার ব্রণব্যোক্তর প্রবংগ হইয়া দেহের লাবণা ও জান্তর রদ্ধি হয়।

ভৈরবরসঃ।

ওল্পত্র এর নবার ব্যক্তিকাপ্রমারক্ষ। বিভাগত শক্ষাৰ লোৱে নিম্বদুৰ্ভেন স্বন্ধায়েই 🛊 য'মমাত্রং ভক্ত দন্তাচ্ছে, ৩ং শাধরচর্কম্। ৫০৬লা: ১০. ব্যালিকানাৎ কজালোপান্। निংশ उन हिकाइ को घटन हाला। भारतमहर्गक । নি,শেষনিংস্তা জাগ্না পিডকান্তা, কলেবরে। ভৈরকং দেশমভাচ্চ। বলিং ভালো প্রদায় চ। বিধায় বোলিনীপজাং তুলামভার্চা বত্নতঃ ॥ বটিকাস্তাঃ প্রয়োজব্যা ভিষণা জানতা ক্রিয়াম। দিবস্ত্রিতয়ং দ্যাৎ তিম্বস্থিতে। বিজানতা ॥ চতর্গতাৎ সমারভা এক মেকাং প্রযোজায়ে। এবং চভুদ্ধশদিনে ন'বোগো জায়তে নরঃ॥ পথাং শক্রয়া সংসমুক্ষারং মূচগুলি চা ক্ষাাৎ সাকাজ্যমুখানং সকুদ ভোজন্মিষাতে। চলপানং জলম্পূর্নাং ন কণাচন কার্য্রেৎ। গ্ৰহায়'ন্ত ভূষণায়ানিকুষাড়িমকাদিকন্। শৌচকায়ে। প্রাঞ্চবারি বাসদা প্রোঞ্জনং জভ্য। বাতাতপাগ্রিসম্পকং দূরতঃ পরিবছয়েৎ॥ মেগ্পমে ব। শীতে বা কংগ্ৰেভদ বিজ্ঞানত।। মুখরেপে তু সংজাতে মুখরোগহরী কিয়া॥ শ্রমাধ্বভারাধ্যয়ন-স্বপ্নালস্তান বিবর্জয়েৎ। ভাস্থলং ভক্ষেত্রিভাং কপুরাদিধবাসিভম্॥ ক্রিয়া লেখহরী বুক্তা ব'ডপিক্তাবিরোধিনী। लवनः वङ्कारप्रमञ्जः निवन्निज्ञाः ७रेभव ५॥ রাজে) জাগরণধ্যৈর জীমুখালোকনং তথা। সপ্ত হ্ৰয়মুৎক্ৰমা ক্ৰানমুদগত্মনা চরে**ৎ** ॥ পথ্যং কুষ্যান্ধিত্মিদং জাঙ্গলামাং রসাদিভি: । বায়োমাদাং বৰ্জনীয়ং যাবন্ন প্রকৃতিভবেৎ ॥

এবং কুতবিধানস্ত যা করোতোতদৌষধম।
স এব পাপরোগস্থ পারং যাতি জিতেন্দ্রিয় ।
পিড়কা বিলয়ং যান্তি বলং তেজ্বন্ধ বর্ধতে।
রক্ষা চ প্রশমং যাতি গ্রন্থিশোশন শাম্যতি।
অস্থাং ভবতি দাচাক আমবাতশ্চ শাম্যতি।
ভৈরবেণ সমাধ্যাতো রমোহয়ং ভৈরবঃ বয়ম ॥

শোধিত পারদ ১০০ রতি, চিনি ৩০০ রতি, এই উভর দ্রব্য পৌহপাত্রে নিমের দণ্ড ছারা ১ প্রহর মর্দন করিয়া তাহাতে ১০০ রতি শ্বেত থদির দিয়া মাড়িয়া কজ্জলবং করত ২০টি বটিকা প্রস্তুত করিবে। ন বাটকা গুল গোধুমচুর্ণ সহযোগে রাশিয়া দিবে, দেখিবে উপদংশীয় বিষক্ত গাতে সমুদায় বৰ নিঃশেষক্ৰপে নিগত হইয়াছে, ভংকালে পুজাদি শুভকাষ্য করিয়া, এই উদ্দ সেবন করাইতে আবস্থ কবিবে। প্রথম তিন দেবস 5 \$4 প্রভাষ ৩টি করিয়া দেবন করালবে, দিবস হুইতে প্রভাই এক একটি ক'রয়৷ লিবে, এইব্রপে ১৪ দিনে সমুদায় বটা নিঃনে বিভ হইয়া রোগশাতি হইবে। পথা— চি.। ও অল্ল মূত সংখুক্ত উষ্ণ অল, ১চ্ছামত একবার আহার করিবে। জলপান বা জলপান এক-বারে নিষিক, অস্ত্ত্ঞা উপস্তি ২ইলে . ইকু ও দাভুমাদি ছারা তাহা নিবারণায়। মল্ডাগান্তে উষ্ণ জল ধারা শৌচ ক্রিয়া নিমাহ করিয়া তৎক্ষণাৎ শুষ্ক বন্ধ খাণা ওল-দেশ মুছিয়া ফেল। উচিত। বায়ু, রৌদ ও আগ্নতাপ একবারে বজনীয়। ব্যা বা শীত শতুই এই ঔষৰ সেবনের উপযুক্ত কাল। ইহাতে যদি মুধরোগ উপাত্ত ২য়, তাই হইলে ভরাশক চিকিৎসা করিবে। প্রিশ্রম, পথপর্যাটন, ভারবহন, অধায়ন, দিবানিড ও আলগু পরিত্যাগ করা উচিত। সদানা কপুরাদি ছারা স্বাসিত ভারুল চমণ করা আবশ্বক। ইহাতে কফনাশক অথচ বার ও পিতের অবিরোধী ক্রিয়া বিধান করিবে।! লবণ, অমু, দিবানিদ্রা, রাত্তিজাগরণ এই সমস্ত व्यवः क्वीरनारकत्र मूल भगन श्रयास्त्र निविक्त।

এইরূপে সপ্তাহ্বর যাপন করিয়া পরে উষ্ণ জলে সান ও জাজন মাংসের রস আহার কবা বাবস্থেয়। কিন্তু যাবং পূর্ম্ববং প্রকৃতি উপস্থিত না হয়, তাবংকাল প্যান্ত ব্যায়ামাদি আচরণ নিমিদ্ধ। এই সমস্ত নির্মান্ত্র ব্রী ও জিতেক্রিয় হইয়া ঔষ্ণ সেবন করিলে উপদংশ ও ভেজনিত পিড়কাদি প্রশাসত ইইয়া তেজ ও বলেব বৃক্তি এবং অস্তি সকলের দৃত্তা সম্পাদিত হয়।

स्मः।

·荆' 付军审 5 百食 未水 · 杏汁的 巨锰水麻) ·水气 P 法共同总额 化对对邻苯甲酚 5 # নংব (৩'জ কমালা প্রা'লিট্যে হ'বতালিক না ाक्षकर अन्तरका र भारता जनगर उपा ॥ ং লা চল্পানি । দ্বসায়েশ ও জ্ঞানে বাজি লাব চা j ংখা । কশ্বরা 'ই : ২০ নর্গন্ধ প্রকর ছে**র।** भक्तीत का एवीएका सन्दर्भ शहकात्रकाप्रदेशी । ୬ ମନ୍ଦ୍ର ବର୍ଷ ହେଏ । ୧୯୮୭ କଥା ଓ ମାଧ୍ୟ ହେ । মুটেন সং যদ কাম। বলিকা মুখব্লি হাল। र्वत्रम्(र ब्रुक्क)६४९ ५७६, ५व १ मन्। । (तक्षण के जिल भी की जिला से के कर लायर) ত, নূপং প্রিগুলয় এবো ব্রাণ্ডরে**ছ** । ॥ মুগৰাসাকণা হিৰিখাসকা কিবোধতে । ८४१म ६ त. ७० छ रेन ¢कार भाषाः आकिंग न्यम् ॥ নাসমাত্রত্ব প্রাংশী, শাক্ষেত্রত ব্রজন্ম। क्षत्रस्त्रभग्यमानीनि जन्मशा ने निवक्तस्य ॥ किन परम वह होएक कु अपने भूगते खुनी हरतर । বেশ ব্যোরতে শাল্ডি এণান্চ পিড়কা অপি। •ঝা লোগেশ্চাৰণাত গড়তা শকুতালি চ . करके! निम्हणभाष्टिकोह । इन्हर्सन अके विष्ट ॥

শোবত পাংদ, বসতথা প্রেম্থদির, হরীত্কীত্থা, কোমল কদলীকুল তথা প্রপারিতথা প্রতেকে এক তোলা; হিন্ধুল, হরিতাল,
গল্পক, গুঁতে, পলকাগ, সরলকাগ, থেতচন্দন,
কেন্দ্রকার প্রকাশক, বক্ষকাগ ও নাগেশ্বরকাঠ প্রতেকে ১ নাথ ; এই সমুদার একত্র
ও চুর্ল করিয়া লোহপাত্রে গোহদভ শারা
আমক্লের রস, হুলদীপত্রেব রস, পুরাতন

গুড় ও মতের সহিত মর্দ্দন করিয়া ৬টি গুলি প্রস্তুত করিবে। ইহার ধুম গ্রহণ করিতে তাহার নিয়ম এই—রোগির মুখ নাদিকা ও কর্ণ ভিন্ন অপর সমস্ত গাত্র শুক্র বস্ত্রে আরুত করিয়া এবং তাহার মধ্যে শরা প্রভৃতিতে নিধুম অঙ্গারাদি রাথিয়া তাহাতে উল্লিখিত একটি গুলি নিক্ষেপ করিবে. ইহার ধুম সর্ববি গাত্রে লাগিবে। পীড়ার আধিকা দুষ্ট হইলে ২টি অথবা ৪টি পৰ্য্যস্ত গুলির ধুম গ্রহণ করিবে। প্রাতঃ ও সায়ং-কালে এটক্লপ ক্রিয়া করণীয়। এই ভাপরা মারা অভ্যন্ত ঘর্মা নির্গত হটয়া রোগেব শাস্তি হয়। ভাপ্ৰা লওয়া শেষ হইলে উঠিয়াই যন্ত্ৰ সকল ৪% বস্ত্র স্বাবা মুছিয়া ফেলা উচিত। এইরূপ তিন দিবসেই রোগ আরোগা হয়। কিন্ত এক মাস স্থপথা সেবন করিয়া অভি সাবধানে থাকিতে হইবে। শাক, অস, দ্বি, 'গুরু অর ও পায়দ প্রভৃতি দ্রব্য ইহাতে কুপ্রা। ভূতীয় দিবসের পর উষ্ণ জলে সান করা কর্ত্তর। এই সমপ্রয়োগ ছারা এণ, পিছকা, শেথে, কুঠ ও উপদংশ প্রভৃতি নানা-বোগের শান্তি হইয়া থাকে।

রস্থেরঃ।

পারদঞ্চাহিকেনঞ্ বিশ্বাদশকরন্তিকন্।
আয়পোলে নিম্বকাঠে মর্জিকেং কুলসিংহলৈ ॥
হিন্দিন্ সংমৃচিন্ততে দন্তান্দরদং রসসন্মিতন্।
মর্জিয়েচ তুলক্তিল ততলৈতানি দাপয়ে ॥
জাতীকোষকলে চৈব পারসীয়মনানিকান্।
আকারকরন্তকৈব দাজিংশক্তকিং প্রতি॥
মর্জিয়েং তুলসাতোয়েরেতেরাং বিশুণং শুভুন্।
দন্তাং বনিরসন্তক গটিকা চণকপ্রভা ॥
সায়ং শে শে প্রথাজ্যে চ লবণান্নঞ্ বর্জয়েং।
গলং কুঠং তথা ফোটান্ মুইান্ গর্জভিকানি ॥
যে হার ণা নৃণামভ্য উপদংশ্রন্সরাঃ।
ভান্ সর্জান্ নাশয়হাাও সিংজাহয়ং রসশেগরং ॥

পারদ ২ রতি, অহিফেন ১২ রতি এই ছই জব্য কোহপাতে নিম্বদণ্ডে তুলসীর রসে মাড়িয়া ভাহার সহিত হিঙ্গুল হাই রতি মিশ্রিত করিয়া পুনর্বার তুলসীর রসে মাড়িবে, পণ্চাং জৈত্রী, জায়দল, খোরাসানি নমানী ও আকরকরা প্রত্যেক ২২ রতি, এই সকলের বিশুল পদির উহার সহিত সংস্কুক করিয়া তুলসীর রসে মাড়িয়া চণকপ্রমাণ বটিকা করিবে। প্রত্যহ সায়ংকালে হুইটি করিয়া প্রযোজা। লবণ ও অয় প্রভৃতি বর্জনীয়। ইহাতে গলংকুষ্ঠ ও উপদংশ প্রভৃতি সর্বাপ্রকার শেলটিকের শাস্তি হয়।

ভূনিম্বাগ্যং মৃত ।

স্থানিষ্টি ফলাপটোল-করগ্রহাতাগদিরাসনাশাম। সতোয়ককৈ যুভিমাক্ত পরিং সর্কোপদংশাপ্তরং প্রদিষ্টন্য।

নত ৪ সের। কাণা দ্রন্তির বিশ্বনিধ্যা কিন্তুলী জন্মপত্র, কিন্তুলী জন্মপত্র, করপ্রবীজ, জাতীপত্র, থানিবকাঠ ও অসনভাগ প্রভাক এক সের, জল্প ৬৪ সের, কেল্ডুড সের। কর্নার্থ—উলিখিত কাণ্য দ্রব্যা সকলের প্রভাক এক পল অর্থাৎ সমুদায়ে এক দের। ইংাতে সকল প্রকার উপদংশ প্রশাস্ত হয়।

করঞ্জাদ্যং মৃত্যু।

করঞ্জনিধাজ্ঞনশালজম্বটাদিভি: কন্ধকষায়সিদ্ধন্। সপিনিহন্তঃকুপদংশদোষং সদাহপাকং ক্রাসমুক্ত ॥

সত / ৪ সের । কাথার্থ—করঞ্জফল, নিমপত্র, অর্জুন, শাল, জাম, বট, যজ্ঞুন্ব,
অর্থা, পাকুড় ও বেভ, ইহাদের প্রত্যেকের
ছাল, এই সমুদায় মিলিত আট সের, জল
৬৪ সের, শেষ ১৬ সের । কল্পার্থ—উল্লিখিত
কাথ্য দ্রব্য সমস্ত মিলিত এক সের । যথাবিধি পাক করিয়া এই স্বত পান ও এক্ষণ
করিলে দাহ, পাক, পুষাদি আব ও রক্তিমাযুক্ত উপদংশ নই হয়।

অনন্তান্তং মৃত্য ।

অনন্তামককীতাকাঃ কাকোলাযুগলং বরীম্।
এলাঘ্যং বিদারীক মধুকং মধুকং মুরাম ॥
তিফলাং অর্ণপর্নীক নীজং গেকুর্মন্তবম।
দশমুলং ভালমূলীং তির্ভামিক্রনাক্ষীম্॥
নালিনীং শুক্শিখাশিচ বীজং কর্বপ্রমাণতঃ।
কন্ধীকৃত্য পচেৎ প্রস্তে সপিবঃ সাবিবান্তনা॥
তাতমেতদনভাত্যমুপদংশ্বিনাশনম্।
ব্যাহ্যনং পরং ত্রামন্ত্রেনাক্রিক্রম্॥

গব্য হত /৪ চারি সের। অনস্তম্লের ক'থ ১৬ সের। কলার্থ—অনস্তম্ল, আমলকী, দাক্ষা, কাকোলী, কীরকাকোলী, শতাববী, ছোট এলাইচ, বড় এলাইচ, ভূমিকুলাও, মৌলফল, নষ্টিমধু, মুরামাংনী, ত্রিফলা, সোণাম্থী, গোক্ষুরবীজ, দশমূল, ভালমূলী, তেউড়ীমূল, রাখালশণা, নীলিমূল ও আল-কুণীর বীজ প্রভাত্ত হুই তোলা। এই হুত সেবন ক্রিলে উপদংশ ও হক্তানেষ শিন্ত হয়। ইহা ব্যা ও র্যায়ন।

গোজাতৈলগ |

গোজা^{শ্}বড়**প্রয়া ডঃ ন**ননাক্ষেণ্ড সংগৃত্য। এতং স্বেল্পদংশেষ তৈলং রোপ্রমিষ্ট ।

তিলতৈল /৪ দেব। ক্ষার্থ—শেওড়াছাল (গোজিয়াশাক), বিড়ঙ্গ, নষ্টমনু এবং গন্ধজবা সমস্ত ষথা—নাক্ষচিনি, এলাইচ, তেজপত্র,
নাগেশ্বর, কপুর, কাক্লা, অগুরু, কুল্কম ও লবজ
এই সমস্ত মিলিভ /১ সের। জল ১৬ সের।
এই তৈল প্রয়োগে সকল প্রকার উপদংশ
নিবারিত হয়।

কোশাতকীতৈলম্।

তিজকোশাতকীলম্বা-বীজং নাগরসাধিত্য । তৈলং হস্তাবিশেষেণ ব্রণং চুষ্টমনেকধা ॥

তিত্বিশ্বাবীজ, তিত্তলাউবীজ ও ও ঠ মিলিত /১ দের; এই কব্ব ও ১৬ দের জন সহ /৪ সের তৈল পাক করিয়া ব্যবহার করিলে বিবিধ ছইব্রণ নিবারিত হয়।

আগারধুমাদ্যতৈশম্।

আগারধুমো রজনী স্বরাকিট্রঞ্চ তৈপ্রিভি:। ভংগোত্তরৈঃ পচেৎ হৈলং কঞুশোলরজাপহ্ম। শোধনং রোপণকৈর সাবর্গকরণং তথা॥

তেল /৪ দের। ককার্থ—গৃহের ঝুল এক পল ১ কর্ম ৫ মাষা ৩ রতি, হরিছো ২ পল ২ কর্ম ১ মাষা ৬ রতি, মগুরীজ ৩ পল ৩ কর্ম ১৫ মাষা ৯ রতি, জল ১৬ সের। এই তৈল লাগাইলে উপদংশ হইতে পুযাদি নিঃস্ত হইয়া উই। ৬% ও স্বাভাবিক বর্ণ প্রাপ্ত এবং শোণ ও বেদনা বিনষ্ট হয়।

জম্বাদাং তৈলম্।

জমুবেত্সপাণ বি ধানীপত্রং তথৈব চ।
নক্তমালস্থা পত্রাগৈ তথ্য প্রোৎপলানি চ॥
নলা চালি হাবানাগ্রে ম্বকঞ্ প্রথমবঃ।
লাক্ষা কালায়কং লোপে চলনা বিবৃত্যস্থা।
১ তালেকা হতাক্সব বছনাত্রন লোকাহিছে।
১ ক্রমান বাছনীকাইজলপ্রং বিপাচ্ছেই ।
ইল্ফান্ডবং নেউছ মুনিভি প্রিকী ইন্তম্যা

তেল ৪ সে । কলার্থ—জামপাতা, বেতদপাতা, আমলকীর পাতা, ডহরকরঞ্জার পাতা, পদাপত্র, নীলোৎপল পত্র, এলাইচ, আতইচ, আমের আটি, যৃষ্টিমধু, প্রিম্নস্কু, লাকা, কালিয়ককান্ত, লোধ, রক্তচন্দন ও তেউড়ী, এই সকল দ্রব্য প্রত্যেক ২ তোলা; ছাগমূত্র ১৬ সের । এই তৈল যথাবিধি পাক করিয়া ব্যবহার ক্রিলে সকল প্রকার রণ ও উপদংশ নিবারিত হয়।

ज्य नित्रार्लीनकगर्।

অঙ্গুরৈরিব সংগাতৈরপয়ু পিরিসংখ্যিতঃ। কমেণ জায়তে বর্ত্তিভাত্রচূড়শিখোপমা ॥ কোষক্তাভ্যন্তরে সকৌ পর্ববসন্ধিগতাপি বা। লিঙ্গু বিভিন্তি খ্যাতা লিঙ্গার্শ ইতি চাপরে। অবেদনা পিচ্ছিলা চ ছ'ক্তিৎস্থা নিদোষ্কা।

লিঙ্গের উপবি মাংসাত্ত্র উৎপন্ন হইনা ক্রমান্ত্রের উপসুপিরি দেপ্তিত ও কুক্টের চূড়াব লার আকৃতি বিলিপ্ত হইলে, ভাহাকে লিঙ্গবর্তিব কিঙ্গার্শিঃ বলে। এই রোগ কোষাভান্তর সনিতে কা লিঙ্গপর্কেব সনিতে উৎপন্ন হয়। ইহা বেদনাহীন ও পিছিল। লিঙ্গার্শ- বিদোষ হইতে উৎপন্ন হয় বাল্যা ইচা ছন্চিকিংড।

অথ লিঙ্গার্শন্চিকিৎসা।

व्यक्तम् (इस्वक्राधारः क्या करात्रिशःसवः ॥

উপযুক্ততা অনুসাবে শিক্ষাশঃ ছিন্ন বা দগ্ধ করিয়া, উপদংশের তায় তাহার চিকিৎসা করিবে।

আজিক(তুপলৈলেরসপন্ সরস্পন্ম। মূলানিলালে চ সমং চণং মাংসালুবাপত্ম।

স্বজ্জিকাকার, দৃঁতে, শেলজ, সোরীরাজন, রসাঞ্জন, মনঃশিলা ও হরিতাশ এই সকল চুর্ণ প্রয়োগ করিলে লিঙ্গাশঃ নষ্ট হয়।

অথ পথ্যাপথ্যাবধিঃ।

----;*:----

• উপদংশরোগে পথ্যান ।•

ত দিবিরকো ধ্রজমধানাড়ী-বেধে। এলোকপেরিপাতনক। সেকতে প্রবাপা ঘবশালয়ক ধ্যানিষা মুক্তারদো স্বতানি॥ কঠিলকং শিগ্রক্তনং পটোকং শানিক্ষাক্তন নৰমূলকক। যতুং ক্যায়ণ সধ কুপবারি তৈওক ইত্যাস্প্রদংশ্রোগ্য ॥

বমন, বিশেচন, শিল্লমণ্যে শিরাবেশ, জনৌকাংচারণ (জোঁক লাগান) পরিষেচন, গুলেপন, যব, শালিবাজ, গলদেশজ মাংস, মুগেব যুব, গুভ, পুনন্বা, শাজনাফল, পটোল, শালিঞ্জাক, কচিমুলা, ভিক্তস্ত্রা, ক্যায়দ্রা, মধু, কুপজল ও ভেল এই সকল উপদংশ রোগেব শাস্তিকারক।

উপদংশরোগেইপথ্যানি।

নেবংনিজাং মুক্তবেগং গুরুৱং গৈপুনং গুড়প্।
গ্রেমন্থং ত্রজ লক্ষেগ্রিংকব'ন্।
দিব; নাদ , মুক্তবেগ্রাংল গুরুত্বাভক্ষণ,
ব্যাস্থ্রাস, গুড়, ব্যায়াম, ক্ষাক্সবং এবং এলি,
এট স্নান্ধ উপ্লাশ্রোধী প্রিভ্যাগ ক্রিবে।

ইত্যায়র্কেন-সংগ্রহে উপদংশানিকারঃ।

অথ শৃকদোযাধিকারঃ।

অথ শৃকদোষ-নিদানম।

অক্রমাচেছফসো বৃদ্ধিং বোহভিবাঞ্চতি মৃচধীঃ। ব্যাধয়প্তক্ত জায়ন্তে দশ চাষ্ট্রেট চ পুকজাঃ॥

বে মৃত্ বাক্তি শৃকানি লিঙ্গবৰ্দ্ধক পদার্থের প্রলেপ থারা লিঙ্গবৃদ্ধি ব¦ঞা করে, তাহার শৃক-জনিত ১৮ প্রকাব রোগ উৎপন্ন হয়। শুক, জলের মলঞ্জ বিষক্ষন্ত বিশেষ।)

অথ শূকদোষ-চিকিৎসা।

শূকদোষেয়ু সনেবস্থ বিষয়ীং কাররেও কিলাম জলৌকোভিসরেয়ক্তং রেচয়েলগু ভোজায়ও ॥

সকল প্রকাশ শুকদোষেট বিজ্ঞাশক ক্রিয়া কর্ত্তব্য । ইহাতে জলেপকা হাবণ চক্ত-মোক্ষণ এবং বিরেচন ও লঘু ভোগন প্রশস্ত । জন্মকল প্রক্রমণ বিজ্ঞাশ ব্যাহ্য ১৯ ।

গুল্হ পারয়েচচালি তিকলার খেসংযুত্ন। ক্লীরেণ লেপদেকাংশ্চ কিডানের ভাকাবংখা।

শূকলোষ তিকেলার বাগ সহ গুণ গুন াসবন এবং হ্রানহ শীতগ গুনেপ ও প্রিবেক হিতকর।

সংগীং লিখিতাং প্ৰৈয়ং ক্যাংগ্ৰেচ্ণ্ডেং। তৈরেবাভাঞ্জনং তৈরং সাধ্যেদ্ এগরোপণন্ । জিমেরমধিনছেংশি রক্তং প্রাবাং তপোভায়াঃ। অঠালারাং হতে রক্তে প্রেম্বান্থিবনাগ্রেই ॥

শূকদোযে শিক্ষাণ্ডে যে ১৮ প্রকাব পিড়কা (রণ) উৎপন্ন হয়, ঐ সকল পিড়কা পুথক্ পৃথক্ দোষে ভিন্ন ভিন্ন প্রকাধের হইন্ন পাকে। অতএব তাহাদের পূথক্ পুথক্ চিকিৎদা বলা হইতেছে—সর্মপী নামক পিড়কা শেওড়া, ডুমুর প্রভৃতি কর্কণ পত্রাদি ঘানা মধ্য করিয়া তাহাতে হ্রীতকী প্রভৃতি ক্যার দ্বোর সক্ষ চুর্ব প্রদান করিবে এবং ঐ সকল ক্ষায় দ্বোর কাথ ও ক্রের সহিত তৈল পাক করিয়া ক্ষত্ত রোপণার্থ সেই তৈল মাথাইবে। অধিমন্ত নামক পিড্কাতেও এই সকল জিয়া কৰিবে। উভ্য পিড্কাতেই রক্ত-মোকণ আইশ্যক। অফ্টলা নামক পিড্কায় ইক্তমোকণ করিয়া শৈলক গ্রন্থির স্তায় চিকিংস্ করিবে।

বু স্বাক্তিক বিশ্বস্থা প্রক্রিক বিশ্বস্থা । বিশেষক বিষয়েশ বিশ্বস্থা স্থান স্পরীক্ষর স্থান স্থান ॥

কুটাকাল্যক পিড়কার অপকাবস্থার বভাষালে করিবে। তাই পাকিলে পুয়াদি কিছাকে করিব গাব, হিছলা ও লোদের এনেপ দেবে এবং ক্ষতপ্রবার্থ, উ সকলের কলে তেওঁ পাক করিবা প্রোগ্ কবিবে।

অনজ্যাং কংগ্ৰহণামধ্যেৰ বিষ্ণান্ত্ৰ। স্বেধ্যান্ত্ৰিগ্ৰহণাম্থ্যেন বৃদ্ধিমান্। ক্যোক্ষেত্ৰ লাগ্ৰেচ ক্ৰিয়েকপ্ৰাহ্যেই ।

জলভান্যক পিছ্কার রক্তমোজন করিয়া কুডাকার স্থার চিকিংগা করিবে। প্রাণিত নানক পিছকা তেল ধারা সিগ্ধ করিয়া ভারতে নডিল্লেল লিবে এবং কফনাশক স্থার বা এটল গারা স্থান্ধ ও অগ্নিতে উন্নত্য কারেয়া ভারার প্রলেপ দিবেন (বেলার মূল, প্রল্প এবড়, বাজনা, মূলক ও সর্বপ্রপ্রতি চরকোজ বেলন দ্যা সকল একটি হাড়িতে রাখিয়া জল দিব, দিছা করিবে। ভাজন মূলে একখানি কলা চলো দিয়া মৃত্তিকালি ঘারা নজিনান প্রলিপ্র করেবে। বাস্প্রক্রি ভারতি ইলি, নল ঘারা প্রাড়া স্থানে সেই বাস্বের ধেনা দেবেন। ইহাই নাড়ীস্থেন।

উত্তমাখ্যান্ত পিড়কাং সংক্রিয় বড়িলোজ্ভাষ্। . কল্পৈক্রেণ কল্মাণাং ক্ষেম্ব্রেক্সাচরেও।

উন্নাৰ্য পিড়কা বঙিশবন্ধ দারা তুলিয়া ছেদন কার্বে। পরে উহাতে হ্রীতক্যাদি এবং বটাদি ক্যায় দ্রব্যের কল্প ও চূর্ণ মধুসংস্কুদ কবিয়া প্রয়োগ করিবে। ক্রম: পিত্তবিসর্পোক্তঃ পুন্ধরীমূচরোর্হিতঃ। তুক্পাকে স্পর্শহাস্তাঞ্চ সেচয়েন্মূদিতং পুনঃ। বলাতৈলেন কেংকেন মধুরৈস্চোপুনাহয়েং॥

পুন্ধরী, মূচ, জক্পাক ও স্পর্শার নামক পিজকার চিকিৎসা, পিত্ত-বিসপ্রেক্ত চিকেৎ-সার স্থায় জানিবে। মূদিত নামক শৃকরোগে জবত্ত্ব বলাতৈলের পার্যেক এবং কাকো-ল্যাদি মধুর গণের প্রেলেপ ব্যব্দ্থা করিবে।

রসক্রিয়া বিধাতবা। লিখিতে শতপোনকে। পুথকপর্বাদিনিক্ষঞ তৈলং দেয়সন্তর্ম।

(পৃথক্পণ্যাস্বান্ত চ হরিছে মালটা সিচা। কাকোলাদিক যোজাঃ স্থান্তিবজা রোপণে মৃত ইতি। আন সিতা শর্করেতি চক্রঃ। খেতদূর্কেটি লক্ষণেরঃ। এতচে মৃতং তৈলং বা পৃথক্পণ্যাদিন। বাপেন কল-ক্রপণেচ সাধানিতি বদ্ধি।)

শতপোন ক রোগে শ্রুপ্রোগ করিয়া শোধক (পটোল অফলাদি) ও রোপক (স্ত্রোধছাল ত্রিফলাদি) রসক্রিয়া করিবে এবং পৃশ্লিপণী, আলকুনী, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, মালভীপত্র, চিনি (মতাস্তবে শ্রেত দুর্ন্না) ও কাকোল্যাদিগণ ইহাদের যথাযোগ্য কাথ ও কল্ক সহ যথাবিহিত নিয়মাম্পারে স্তুত ও তিল পাক করিয়া প্রয়োগ করিবে।

রক্তবিদ্বধিবচ্চাপি ক্রিয়া খোণিতক্স্ক্র্নে। রক্তাক্র্দের চিকিৎসা রক্তবিদ্রবির ভায়। ক্ষায়ক্ত্রপাঁথি তৈলং চূর্ণ রস্ক্রিয়ান্। শোধনে রোগণে চৈব শীক্ষা বীক্ষাবভারয়েং।

পুথাদি-নিংদারণ ও ক্ষতরোপণার্গ ক্যায় জব্যের কল্প বারা সিদ্ধ ন্মত, তৈল, চুর্ণ ও রদ-জিলা যথাযথ ব্যবহার করিবে।

অর্কা, দং মাংসপাকক বিজাধিং তিলকালকম্।
প্রত্যাখ্যার প্রকুমীত ভিষক্ তেখাং প্রতিক্রিয়াম্।
শ্করোগ সমস্তের মধ্যে অর্কান, মাংসপাক,
বিজেধি ও তিলকালক এইগুলি ছন্চিকিৎশু;
ইহা জানাইয়া পরে চিকিৎসা করিবে।
সর্বেধাং শুক্দোবাণাং ক্রিয়াং প্রণ্যদাচরেং।
উপদংশাধিকারোক্তমৌষধং শুক্দোবতঃ॥

শৃকদোষজাত যাবতীয় প্রীড়ায় ব্রণবং চিকিৎসা কর্ত্তব্য এবং উপনংশাধিকারোক্ত সমস্ত ঔষধ প্রযোজ্য।

मार्कीरेजनम्।

দংব্যাহরনযন্ত্রাহ্ব-পৃহধ্মনিশাষ্ট্র:। তৈলমভাঞ্জনে পানে মেচুরোগং নিবারয়েৎ ।

তিলতৈল /৪ সের। ককার্থ—দারুহরিদ্রা ২ ভাগ, তুলনী, যৃষ্টিমধু, গৃহের ঝুল ও হারদ্রা মিলিত /১ সের। জল ১৬ সের। এই ভৈল শৃকদোষজাদি রোগে ব্যবহাধ্য।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

শূকদোষরোগে পথ্যান।

লেগো বিবেকোংসংগ্রাক্ষঃ স্পিপোনক শালয়ঃ।
যবা জান্তবাংসানি মূলগুৰ্বটন্নকম্ ।
পটোলং শিগ্রককোটং পক্তরং বালম্পক্ষ্।
বেজাগ্রমাযানকলং দাড়িমং সৈন্ধাবং বরা ।
ক্পেদেকং গল্পারং কন্ত্রী হিম্বালুকা।
ভক্রং করায়তৈলক স্থাৎ পদাং শুকরোগিণাম্ ।

প্রনেপন, বিরেচন, রক্ত:নাগণ, মৃতপান,
শা.নিং তা, যব, জাপলমাংন, মুগের যুব, করলা,
পটোল, সজিনা, কাকরোল, রক্তচন্দন, কচি
মূলা, বেভাগ্র, পলাশবীজ, লাড়িম, সৈশ্বর,
কিফলা, কৃপজল, খেড>ন্দন, কন্তুরী, কপুর,
ভক্ত, ক্যায়দ্রব্য এবং তৈল, এই সমস্ত শৃকদোব্রোগির হিতকর।

শূকদোশরোগেহপথ্যানি।

মূত্ৰবোং দিবানিজাং ব্যায়াসং গৈপুনং গুড়ম্। বিদাহি গুৰু তক্ৰঞ্চ শূক্দোবাসয়ী তাজেৎ ।

মূত্রবেগধারণ, দিবানিদ্রা, ব্যায়ংম, গ্রী-প্রদক্ষ, গুড়, বিশাহিদ্রবা, গুরুত্রবা এবং তক্র এই সকল শৃকদোধে অহিতকর।

্ ইত্যায়র্কেদ-সংগ্রহে শুকদোষাধিকার:।

অথ কুষ্ঠাধিকারঃ।

व्यथ कूर्छ-निमानम्।

বিরোধীশুরপানানি দ্রব্রিগ্নগুরুণি 5। ভত্ততামাগতাং ছদিং বেগাংশ্চান্তান্ প্ৰতিম্বতান্॥ ব্যায়ামম্ভিসম্ভাপম্ভিভুক্ত্বা নিষেবিণাষ। ঘর্মভায়ার্ডানাং জ্ঞানাস্থ্যেবিনাম ॥ खजीनीधा भिनादेश्व अक्षकर्या अठातिगाम् । नवान्नविम् १ छ। छि- जववान्न निरमिवाम् ॥ মাৰমূলক পিষ্টাল্ল-ভিলক্ষার গুড়া শিনাম্। ব্যবায়ঞ্চাপ্যজীৰ্ণেহন্নে নিদ্ৰাঞ্চ ভন্নতাং দিবা ॥ निञ्जान् श्वज्ञन् धर्मप्रचारः পाश्रः कथा ६ कुर्यन्दीम् । বা তাদয়প্রয়ো ছক্টাস্থাক্তং নাংসমসূ চ ॥ দ্বয়প্তি স কুষ্ঠানাং সপ্তকো দ্রবাসংগ্রহ। অতঃ কুণ্ডানি জায়ন্তে সপ্ত চৈকাদশৈব চ।। কুজানি সপ্তধা দে^{ণ্}মেঃ পৃষ্ণ <mark>ছলৈছঃ স্</mark>মাগতৈ : সর্কেম্বপি ত্রিদোমেরু ব্যপদেশোহধিকওতঃ॥ ॰ অভিন্নকুথরম্পর্ল-স্বেদ্ধেদ্বিবর্ণ হাঃ। দাহঃ কণ্ডুস্থটি স্বাপজ্ঞোদ° কেটোর্রাতর্র মঃ॥ ত্রণানামধিকং শুলং শীঘোৎপত্তিশ্চিরস্থতি। রচানামপি স্কৃত্ধ হং নিমিত্তেহজেহতিকোপনম্। রোমহধাংহজঃ কাফ্য কুঠলকণ্মগ্রস্ । কুঞ্চারুণকপারাভং যদাকং পর্বং ততু ৷ কাপালং তোদবহুলং ভৎ কুঠং বিষমং শ্বতম্ 🛚 ঞ্জাহরাগকভূভিঃ পরাতং রোমবিঞ্রম্। উড়ু স্বফলাভাসং কুঠমৌড়ু ধরং বদেং। (चंडर ब्रक्टर व्रितर छानिर विश्वभूरमञ्ज्ञभु। কু ছুছু মত্যোষ্ট সংযুক্তং কু ঠং মণ্ডলমূলতে ॥ कर्कनः त्रक्रभयाक्षमसः शांतः मद्रमनम्। যদুষ্য প্ৰহ্মান্ধ্য জিহাং ভত্চাতে ॥ मत्यकः ब्रक्कश्याखः शूखताकनःनीभमम्। সে.ৎসেধক সরাগক পুগুরীকং ভছচাতে॥ খেতং তামং ততু চ বছজো গৃষ্ঠং বিমুক্তি। প্রায়শ্চেরিসি তৎ সিধামলাবুকু হুমোপম্ম। যৎ কাকণস্তিকার্ন্ং সপাকং ভারবেদনম্। অকোষলিক্ষং তৎ কুঠং কাকণং নৈব সিধাতি॥ অবেদনং মহাবাস্ত যন্মংস্তশকলোপময়। তদেককুষ্ঠং চগ্ধাখ্যং বহলং হস্তিচশ্ববং ॥ ভাবং কিণধরশ্বর্শ পক্ষমং কিটমং খুত্ম ॥ বৈপাদিকং পাণিপাদ-কুটনং ভীরবেদন্য। কভূমন্তিঃ সরাগৈশ্চ গণ্ডেরলসকং চিত্র্ ॥

সকগুরাগপিড়কং দুক্রমণ্ডলমুক্সতম্। वक्तः मन्तः कर्ष्यः माक्किः यकानकाशि । ওচ্চশ্বদলমাখা তিং সংস্পর্নাসহমূচ্যতে। ক্ষা বহাঃ পাড়ক: স্থানবতাঃ পামেত্যক্তাঃ কভুমতাঃ সদাধাঃ। দৈৰ কোটেন্তীনদাহৈকপেতা (क्वा शार्यात: कक्कूक्शी किएकांक । খেটোঃ খাবাৰণাভা**দা** বিশ্বেটাঃ স্বা**ন্তর্**প**চঃ** ॥ রস্তা: গাবেং সদাধা, র শতাক্র: স্থাবহুরণম্। সকওঃ পিড়কা গ্ৰাবা বহুপ্ৰাবা বিচৰ্চিচক। ॥ কুলৈকনন্তবং খিত্রং কিলাসং বারুণং ভবেৎ। [निर्फिक्टेशপतिख] वि , जध | ३ खतम॰ अयम् ॥ বাতা দক্ষাকণং বিজাপ তামং ক্ষলপাত্রবং ৷ मक्ताहर (वार्य) विश्ववे विकास किल्लाहर अन् । मक धृतः क्रमां क्रजमारमाममः स्ट्रामान्यः । বর্ণে নৈজেদু গুভয়ং কু দুরুং ভচ্চেত্রি রাজিবমু॥ প্রদক্ষ প্রার্থ পর্বার্থ সহজ্যের ব একশ্যাদিনাচ্চের বস্থালাভিলেপনাং ॥ কু ৯: হ্রন্ড শে! বশ্চ .ন শ্ভিয়ান্দ ৭ব চ। ত্রপদ্যিকরো গাল্ড সংক্রপেন্তি নরাল্লবন্।।

ক্ষীর-মংস্তাদি বিরুদ্ধ আর ও মিলিত পানীয় এবং দ্রব মিশ্ব ওক্তর দ্রব্য ভোজন, উপস্থিত বমনের ও মলমূলাদির বেগধারণ, অপ্রিমিত ভোজনানম্ভর বালাম ও সম্ভাপের অতিদেৱন, আতপ্রান্ত পরিশ্রান্ত ও ভয়ার্ত হটবাৰ অব্যৱহিত পরেট বিশ্রাম না করিয়া শাতল জল পান, অজীপে ভোজন, অধাশন, ব্যন্বিবেচনাদি পঞ্চক্ষের পর অহিতাচার-করণ এবং নূতন তঞ্লের আর দশি **মংস্থ** অতিশয় লবণ অমু মাধকলাই মূলা পিষ্টান্ত তিৰ ক্ষীর ও গুড় ভোজন, ইক্ত অন্ন জীপ না ্মগুৰুকরণ, বিবানিদ্রা, ব্রা**ন্সণ ও** গুরুর অপমান এবং অন্তবিদ উৎকট পাপা-চৰণ , এই সকল কাৰণে বাতাদি দোষত্ৰয় ছষ্ট হইয়াত্বক্(ওগ্গত রস)**বক্ত** মাং**স ও লসী**-কাকে দুয়ত করিয়া কুজবোগ উৎপাদন কৰে। বাণাদি নোষ্ত্রয় ও রদাদি দ্যাচতুইয়, এই সাতটি পদার্থ কুষ্ঠরোগের উপাদান সামগ্রী।

মহাকুষ্ঠ সাত প্রকার ও ক্ষুদ্রকুষ্ঠ একাদণ প্রকার, সমুদায়ে আঠার প্রকার কুষ্ঠ।

সকল কুষ্ঠই ত্রিদোষজ, তবে দোষের আধিক্যান্ত্রনারে ইহা সাত প্রকারে পরিগণিত হয়। যথা—বাতিক, পৈত্তিক, শ্লৈত্মিক, বাত-পৈত্তিক, বাতশৈল্পিক, বাতশৈল্পিক, বিভেদ্ধে ইহারা সাত প্রকার হইলেও বিশেষ বিশেষ অবস্থান্ত্রসারে কুন্ত আঠার প্রকাব হইয়া থাকে।

কুঠবোগ উৎপন্ন ইইবার পূর্বের, অঙ্গাবশেষ অতি মক্ষণ বা ধরপেশ, অনিক বন্ধনির্থম বা একবারেই সন্মরোধ, শরীবের বিবর্গতা, দাহ, কছু (চুলকানি, শুড়শুড়ানি, গানে পিপ্নালিক। সঞ্চলনবং প্রানীতি), অঞ্জাবশেরের প্রানীতি হিল্পানির প্রানীতি কিলালিক। স্বানীবের প্রানীতি কিলালিক। স্বানীবের প্রানীবির প্রানী

সপ্ত মহাকুষ্টের মধ্যে কাপাল নামক কুণ্ট, কিয়নংশ-রুফ্তরণ ও কিয়নংশ-অরুণবর্ণ কপালের (খাপ্রার) আভাবিশিষ্ট হয়। ইংগ রুক্ত, ধ্রুম্পর্শ ও পুচারেপ্রৎ ধ্যুণালায়ক। ইংগতে ফুকু পাত্লা হইয়া থাকে। ইংগ ওশিচকিৎস্তা।

ঔচুম্ব নামক কুছ, উছুম্বং-ললের সায় আক্রতিবিশিষ্ট। ইয়া বক্তবর্গ ওংবেদন:-দাহ-কণ্ডু-যুক্ত, এই কুছে ব্যাধি-স্থানের রোন সকল পিম্মাবর্গ হয়।

মণ্ডন নামক কুছ, কভক খেতবৰ্ণ, কতক রক্তবর্ণ। ইহা ধানভাবাপন, আদ্র, নিগ্ন ে(তৈলান্তবং চধ্চকে), উন্নত, মণ্ডলাকার ও প্রশাস্থ মিল্ড। ইহা কুছ্সাধ্য ব্যাধি। খন্যজিহন নামক কুন্ঠ, খন্যের অর্থাৎ হরি-ণের জিহনার ফ্রায় আক্বতিবিশিষ্ট। ইহা কর্কণ, প্রান্তভাগে রক্তবর্ণ, মধ্যে শ্রাববর্ণ ও বেদনা-যুক্ত হয়।

পুগুরীক নামক কুছ, পুগুরীক দলের ন্যায় আকৃতিবিশিষ্ট। ইহার প্রাস্তভাগ সংখ্য রক্তবর্ণ, মধাভাগ সংখ্য আরক্তবর্ণ। ইহা উন্নতাকার।

দিয়া নামক কুন্ত দেখিতে লাউফুলের সায়,
ইং খেত লোধিতাত্মক ও পাত্লা চন্দ্মবিনিন্তি,
বাাবিস্থান বৰ্ষণ করিলে, তাহা হইতে গুড়া
ও ড পলার্থ সকল নির্মাত হইতে থাকে। এই
বাানি প্রায় বক্ষঃ খলেই বাহলারূপে হইতে
দেখা যায়। (সিয়া—ছলীবিশ্রেম)।

কাকণ নামক কুঠ, কাকণস্তীর (কুঁচের) কাম বর্ণনিশিষ্ট, অর্থাৎ মধ্যে ক্লফ ও অফ্রে-গোহিছ। ইফা তিলোমজ, পাকবিশিষ্ট ও ভীব্রবেদনাযুক্ত। কাকণ কুঠ অসাধা।

থে কুঠে ঘণ্ম হয় না, যাহা মহারাপ্ত অবি কার কবিয়া থাকে এবং যাহার আকৃতি নংলোর হকের ভায়, অর্থাৎ চক্রাকার ও অল-তার সদৃশ হয়, ভাষাকে এককুঠ কহে। (এক-শব্দের অর্থ মুখা, ইন্না কুদ্রকুটের মধ্যে মুখা অর্থাং প্রধান বলিয়া ইহাকে এককুঠ বলে।)

যে কুঠ, হাতিচম্মের স্থায় রক্ষ ক্ষেবর্ণ ও ফুল, এইাকে চমাখ্য কুঠ কছে।

্য কুও শ্রাবিধর্ণ, ক্লক্ষ্য গুলুক্ষ ক্ষাত্ত স্থানেব প্রায় গ্রুম্পর্মা, ভাহাকে কিটিন কুঠ কহে।

বে কুঠে হাত ও পা ফাটিয়া যায় এবং ভীব্রবেদনা থাকে, তাহাকে বৈপাদিক কুঠ কহিয়া থাকে।

যাহা কণ্ড্ৰিশ্টি রক্তবর্ণ ক্ষো**টক ধা**রা ব্যাপ্ত, তাহাকে অলসক কুঠ কহে।

্যে উন্নত মণ্ডলাকার কুঠ, কণ্ড্যুক্ত ও রক্তবর্ণ পিড়কাদমূহে ব্যাপ্ত, তাহাকে দক্ষ-মণ্ডল কহে। বে কুঠ রক্তবর্ণ, শূলবৎ বেদনাবিশিষ্ট, কণ্ডুমুক্ত, কোটকব্যাপ্ত ও স্পর্শাসহ এবং মাহা হইতে মাংস গলিয়া পড়ে, তাহাকে চর্মদল কহে।

স্ক্ষ স্ক্ষ প্ৰাবাহিত সদাহ কণ্ড্বিশিষ্ট পিড়কাসমূহকে পামা (চুলকন)) কহে। এই পামাই পাকিয়া তীব্ৰদাহমূক ক্ষেটিক-ব্যাপ্ত হইলে তাহাকে কচ্চু (খোস্) কহে। ইহা হত্তে ও নিত্তৰে বাহুল্যভাবে হুইয়া থাকে। পামা ও কচ্চু একজাতীয় কুঠ।

খ্যাব বা অরুণবর্ণ পাত্রা চর্মবিশিষ্ট স্ফোটকসমূহকে বিস্ফোটক কহে।

রক্রা প্রাবর্ণ, দাহ ও বেণনারিত, বত এণকে শতাকঃ কহে। (মুকুস্ শংকর মুখ রণ)।

বিচচিচ হা নামক ক্ষুদ্ৰকুঠ, প্ৰাবৰণ, আবসুক্ত এবং কণ্ডু ও পিড়কাবিশিষ্ট; বিচ,চিচকাই পাদজাত হইলে, বিপাদিকা নামে অভিহেত হইয়া থাকে।

শিত্র (ধবল) রোগ। কুঠ ও শিত্র এই উভয় রোগেবই উৎপত্তির কারণ এক, চিকিং-সাও একবিধ, এজন্ত শিত্ররোগ কুঠাধিকারে লিখিত হইয়াছে। উভয়ের প্রভেদ এই— কুঠ সায়িপাভিক, শিত্র পৃথক্ পৃথক্ দোষে উৎপর হয়। কুড, রমাদি সপ্তধা হুকেই আক্র-মণ করে, শিত্র কেবল রক্ত মাংস ও মেদকে আশ্রম করিয়া থাকে। কুঠ হইতে রমাদি শ্রাব হয়, কিন্তু শিত্র অপ্রাবী। শিত্র অকণবর্ণ হইকে ভাহাকে কিলাস কহে।

বা ভদ্ধনিত খিত্র, কৃক্ষ ও অরুণবর্ণ, পৈতিক খিত্র, তাত্রবর্ণ বা পদ্মপত্রের ভার মধ্যে খেত, অস্তে লোহিত বর্ণ এবং দাহযুক্ত ও রোমনাশক; কফদ্ধ খিত্র খেতবর্গ ঘন গুরুও কণ্ডুযুক্ত। এই অরুণাদি বর্ণ ধার। থিত্র রোগের রক্তাদি অধিষ্ঠানও বুঝিবে, অর্থাৎ রক্তাশ্রৈত খিত্র অরুণবর্ণ, মাংসাশ্রিত তাত্রবর্ণ

ও মেদোগত খিত্র খেতবর্ণ হয়। রক্তাদি অধিষ্ঠান-ভেদে দোষজ খিত্র বা ব্রণজ খিত্র ক্রমাখ্যে কষ্ট্রসাধ্য হইয়া থাকে।

মৈথুন, গাত্রদংম্পর্শ, নিশ্বাস, একত ভোজন।
এক শ্যার শ্রন, রোগির বন্ধ মাল্য ও
অন্থলেপন ব্যবহার, এই সকল কারণে কুঠ
জা রাজ্বক্সা নেত্রাভিষ্যন্দ (চোধ-উঠা)
এবং পাপজ ও ভূতোপদর্গজাদি রোগ সকল,
এক ব্যক্তি ইইতে অপর ব্যক্তিকে আক্রমণ
করে, অর্থাৎ এই সকল রোগ সংক্রামক।

অথ কুষ্ঠ-চিকিৎসা।

কন্তা কাটি প্রদানেন গঙ্গায়াং পিতৃতপ্রে। বিশেষরপুণীণানে ৩২ফলং কুঠনাশনে॥ গ্রাং কোটিপ্রদানেন চাগ্রেমধ্যতেন চ। বুয়োৎসর্গে চায়াও প্রণাং কুঠনাশনে॥

কোটি কন্তা সম্প্রধান করিলে, গঙ্গাতে পিতৃত্বৰ্গ করিলে, অথবা বিশ্বেরপুরী কাশী-ধামে বাস করিলে, মানব যে পুণ্য লাভ করে, কুগুরোগিকে ব্যাধিমুক্ত করিলেও চিকিৎসকের সেই পুণ্য সঞ্চয় হইয়া থাকে। কোটি সংখ্যক গোদানে বা শত অধ্যাধ্যক্ত সম্পাদনে, কিংবা ব্যোৎসর্গে যে পুণ্য জন্মে, কুগুরোগ বিনাশ কবিলেও তদ্ধপ পুণ্য লাভ হইয়া থাকে।

সংগ্রিকোন্তরে কুঠে বমনং প্রেম্বসন্তরে। গৈন্তে বিবেচনং শুস্তং তথা শোণিতমোক্ষণম।

বাতোৰণ কুঠে স্বতপান, প্রেমোৰণ কুঠে বমন এবং পিভোৰণ কুঠে বিরেচন ও রক্ত-মোক্ষণ প্রশস্ত।

যে লেপাঃ কুষ্ঠানাং যুদ্ধান্তে নিৰ্গতান্ত্ৰদোৰাশাম্। সংশোধিতাশন্ত্ৰানাং সন্তঃ সিদ্ধিৰ্ভবেৎ তেৰাম্॥

রক্তগত দোষের নিষ্কাশন ও বমন এবং কিরেচনাদি ধারা কোঠের সংগুদ্ধি করিয়া কুঠোক্ত প্রলেপ ব্যবহার করিলে রোগের শীভ্র উপশম হয়। পথাকরঞ্জনিদ্ধার্থ-নিশাবস্তুজনৈদ্ধবৈ:।
বিশ্বস্থাহিতে: পিটেলে পো মুত্রেন কুঠনুৎ।
হরীতকী, ডহরকরঞ্জ, খেতসর্যপ, হরিদ্রা,
সোমরাজী, দৈশ্বব ও বিভূক্ত, এই সকল দ্রব্য গোমুত্রে পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে কুঠ বিনষ্ট হইয়া গাকে।

সোমরাজীভব° চূর্ণং শৃঙ্কবেরসমন্বিতম। উত্তর্জনমিদং হস্তি কুঠমগ্রাং কৃতাম্পদম্। সোমরাজী চূর্ণ ও শুঠিচূর্ণ একতা করিয়া ভদ্মারা মন্দন করিলে প্রবৃদ্ধ কুঠও বিনষ্ট হয়।

মনঃশিলালে মরিচানি দৈল-নার্কং পরঃ কুঠহরঃ প্রনেপঃ। (তৈলং সার্বপং কুঠহরং স্থাদিতি চক্রটিকা।)

মনছাল, হরিতাল, মরিচ, দর্বপত্তিল ও আকন্যজাঠা, এই দকল দ্রব্য পেষণ কবিয়া প্রালেপ দিলে কুঠ বিনষ্ট হয়।

> করপ্লবীজৈড়গঙ্গ: সকুঞ্চো গোমুত্রপিষ্টশ্চ বরং প্রদেহ: ॥

ভহরকরঞ্জবীজ, চাকুন্দেবীজ ও কুড় এই সকল দ্রব্য গোমুত্তে পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে কুষ্ঠ নিবারিত হয়।

বিড়কৈড়গজকুষ্ঠ-নিশাসিক্তখনধলৈ:। ধাস্তামপিকৈকে পোহরং দক্তকুষ্ঠবিনাশনঃ॥

বিড়ঙ্গ, চাকুন্দেবীজ, কুড়, হরিদ্রা, সৈদ্ধব লবণ ও সর্বপ, এই সকল দ্রব্য কাঁজিতে বাটিয়া গুলেপ দিলে দক্র কুষ্ঠ বিনষ্ট হয়।

তুলো রস: শালতরোপ্তবেণ সচক্রমন্দিহিপ্তেয়াবিমিখ:। পানীয়ভক্তেন তদয়পিন্তো লেপ: কুতো দুফ্রসকেন্দ্রসিংহ: ॥

ধ্না, তৃষ, চাকুন্দেবীজ, হরীতকী ও পানীয়ভক্ত (পান্তাভাত) এই সকল জ্ব্য আমানিতে পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে দক্র নিবারিত হয়।

দূর্ব্বাভয়াদৈশ্বনচক্রমৰ্শ-কুঠেরকাঃ কাঞ্চিকতক্রপিষ্টাঃ। এক্তিঃ প্রলেপেরপি বন্ধমূলাং কঞুঞ্চ দক্রক নিবারয়ত্তি।

দুর্বা, হরীতকী, দৈদ্ধব, চাকুন্দেবীক ও তুলসীপত্র, এই সকল দ্রব্য কাঁজি বা তত্ত্বে পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে বন্ধমূল কণ্ড ও দফ নিবারিত হয়। প্রপাদ্ত বীজানি ধাত্রীসর্জরসমূহা:। দৌবীরপিটং দজ্পানেতছন্ত্রং পরম্ (মুহারা: ক্রীরমন্তে মুলনাছরিতি চক্রটাকা।)

চাকুন্দেবীজ, আমলকী, ধুনা ও সীজ আঠা (মতান্তরে সিজমূল) এই সকল দেবা কাঁজিতে পেষণ করিয়া তাহার প্রালেপ দিবে। ইহা দদ্দ রোগের শ্রেষ্ঠ উবর্ত্তন।

চক্রমন্দকবীক্সানি জীরকঞ্চ সমাংশক্ষ। ভোকং সুদর্শনামূলং দক্রকুঠবিনাশনম্॥

(স্তে:কং স্বনশ্নামূলমিতি মিলি হচক্রমন্ধকজীর কা পেক্ষয়া পাদিকমিতি চক্রটাকা)

চাকুন্দেবীজ ও জীরা প্রত্যেক সমভাগে এবং উভয়ের চতুর্থাংশ পদাশুলঞ্চের মূল এই দ্রব্যত্তয়, জলে পেষণ করিয়া প্রালেপ দিলে দদ্দ কুষ্ঠ বিনাই হয়।

লেপন'দ্ভক্ষণ¦ফৈৰ তুণকং দুৱাৰান্ম #

তিলাঘান (চীনে ধান) পেষণ করিয়া লেপন বা ভক্ষণ কবিলে দাদ ভাল হয়।

এড়গজকুষ্ঠনৈদ্ধনদৌনীরসর্যপৈঃ ক্রিমিছে:। ক্রিমিসিগ্রানদমণ্ডলকুষ্ঠানাং নাশনো লেপঃ॥

(অত বিশিষ্ট্রদানুক্ত হাদ্ গোমূত্রমের কুঠছর হন। গ্রাহ্মিতি বর্দত্ত। অপবে তু দৌরীরশক্ষ কাঞ্জিক। র্বহাং পরিকলা তেনের পেষণ্মিতাাছরিতি চকুটীকা।)

চাকুন্দেবীজ, কুড়, সৈন্ধব, সৌবীরাঞ্জন খেতসর্থপ ও বিড়ঙ্গ, এই সকল দ্রবা গোমৃত্রে (কেহ কেহ সৌবীর শক্তের কাঁজি অর্থ করিয়া তন্ধারা) বাটিয়া প্রালেপ দিলে ক্রিমি, সিগ্র (ছুলী), দান্ ও কুঠ বিনষ্ট হয়।

কাসমৰ্দ্ধকমূলক সৌবীরেণ প্রপেষ্টিতম্।
দক্ষকিটিমধুন্তানি জয়েদেতৎ প্রলেপনাৎ॥
কোসমর্দ্ধিতি সৌবীরেণ পিছা রাজৌ স্থ

(কাসমর্দ্ধতি সৌবীরের পিন্ধু রাজ্রী স্থাপাম প্রাতশ্ব অকাক-রুতে লেপো বিধেয় ইত্যুপদিশন্তি।) কালকামুম্মার মূল কাঁম্মিতে বাটিয়া

কালকা স্থন্ধার মূল কাঁজিতে বাটিয়া পুমুমিত করত প্রান্তাবে কাক ভাকাব আগ্রে] প্রলেপ দিলে দাদ্ ও কিটিম নামক কুষ্ঠ নিবারিত হয়।

এড়গঙ্গাতিলসর্থপকু ৬-মাগধিকালনণত্রয়মন্ত । পুতি কৃতং দিনসত্রয়মন্তব্ধস্তি বিচ্চিকদক্ষকরুষ্ঠম ॥

চাকুলেবীজ, তিল, খেতদর্ঘপ, কুড়, পিপুল, দৈন্ধব, সচল ও বিট্লবণ এই সকল দ্রব্য ৩ দিন দধির মাতে ভিজাইয়া রাথিয়া হুর্গন্ধ হইলে ভদ্ধারা বিচচ্চিকায় ও দক্রতে প্রালেপ দিবে। তাহাতে উক্ত রোগ বিনষ্ট হয়।

পার্দঃ শ্বাগন্ধ শিলা চোত্তরবারণী।
প্রপুরাড়ক সর্পক্ষী মেঘনাদাগ্রিলাকলা।
ভলাতং গৃহধুমঞ্চ মুনিগুঞ্জা স্থাপরঃ।
অরিষ্টক গুড়ক্ষোক্ষং বাগুঞ্জীবীজতুল্যকম।
গোমুকৈরারনালৈবা পিষ্ট্যা লেপঞ্চ কার্য়েং।
দক্ষমগুলকগুক্ষ বিচ্চিক্ত বিনাশ্যেং।

পারদ, শঙ্গভন্ম, গন্ধক, মনহাল, রাখালশশার মূল, চাকুন্দেবীজ, গন্ধনাকুলী, পলাশবীজ, চিতা, ঈশ্লাঙ্গলা, ভেলার মূটা, গহের
ঝুল, বকমূল, কুচ, দিজের আঠা, নিমছাল,
পুরাতন গুড়, মধু ও দোমরাজী, এই সমুদার
দ্বা সমভাগে লইয়া গোমুত্রে কিংবা কাজিতে
পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে দক্ত মণ্ডল, কণ্
ও বিচ্চিক্তিকা নই হয়।

আরথ্যন্ত পত্রাণি আরমানেন পেষ্চেৎ । দুজ্বন্ধিটিমকুঠানি হস্তি দিশ্বান্মের চ

সোনগলপাতা ক।জিতে বাটিয়া প্রলেপ দিলেও দক্ত, কিটিম ও দিখা (ছুলা) নামক কুঠ নিবারিত হয়।

চলাহরেং সুহীকার ভাবিতং মৃত্যংযুত্য। রবিতপ্তং হি কিঞ্চিৎ তু লেপনং কিটিমাপহ্যু ॥

চাকুন্দেবীজ, সিজের । আঠায় ভাবনা দিয়া তাহা গোমুত্রে বাটিয়া স্থ্যতাপে কিঞ্চিং তপ্ত করিয়া প্রালেপ দিলে কিটিম বিনষ্ট হয়।

কুষ্ঠং মূলকবীজং প্রিয়ঙ্গবঃ সর্বপান্তথা রজনী।
এতৎ কেশরষষ্ঠং নিহস্তি বছবার্ষিকং দিয়া।
নীলকুরণ্টিকপান্তব্যবসেনালিপা গাত্রমতি বছশঃ।
লিম্পেয়লবীজৈঃ পিটেস্তকেন দিয়ানাশায়॥

কুড়, মূলার বীজ, প্রিয়ঙ্গু, শ্বেতসর্বপ, হরিদ্রা ও নাগকেশর, ইহাদের প্রলেপে বছ বর্ষের সিশ্মও প্রশমিত হয়। নীলকাটা-পাতার রস পুনংপুনঃ গাত্তে মাথিয়া তক্রপেষিত মূলা-বীজের প্রলেপ দিলে সিশ্ব প্রশমিত হয়। কাসমৰ্দ্ধকৰীজ্ঞানি মূলকানাং তবৈব চ। গন্ধাশ্যচূৰ্ণমিশ্ৰাণি সিধানাং প্ৰমৌষধম্। (উপদেশাৎ কাঞ্লিকপিষ্টেলে পিঃ)।

কালকাস্থন্দার বীঙ্ক, মূলার বীঞ্চ ও গন্ধক-চূর্ণ কাজির সহিত পেষণ করিয়া প্রেলেপ দিলে দিশা রোগ বিনপ্ত হয়। ইহা দিয়োর শ্রেষ্ঠ ঔষব।

গৰূপ;যাণচূৰ্ণেন যবক্ষারেণ লেপিতম্। সিম্ম নাশং এজভাতি কটুতৈলযুতেন চ॥

গন্ধকচুর্ণ ও মবকারচুর্ণ, সর্ধপতৈলে মিলিত করের। তাহার প্রলেপ দিলে আ: ও দিধারোগ অশ্মতা প্রাপ্ত হয়।

শিপরিরদেন স্থপিতং মূলকরীজং প্রলেপতঃ সিশ্মম্। ক'রেণ বা কদলাা রজনীমিশ্রেণ নাশয়তি॥

মূলার বীজ, অপামার্গের রসে কিংবা কদলীর ক্ষারোদকে পেদণ করিয়া ভাহার প্রলেপ দিলে, অথবা কদলীর ক্ষার ও হরিদ্রা চূর্ণ মিলিত করিয়া তদ্মারা প্রলেপ দিলে সিশ্ম বিনষ্ট হয়।

দাৰ্শ্বীমূলকৰীজানি ভালকং হ্বনদান্ধ চ। ভাষ্ট্ৰপত্ৰং সৰ্ব্বাণি কা'ৰ্যক'ণি পুথক পৃথক্। শন্ত্বপূৰ্বন্ধ শাণং সাাং সৰ্ব্বাণ্যকত্ৰ বাবিণা। প্ৰানেপায়েং প্ৰানেপাক্ষং সিম্বাশন উভন:॥

দারুহরিদ্রা, মূলার বীজ, হরিতাল, দেব-দারু ও পান প্রত্যেক ২ তোলা, শুখভক্ম ॥• তোলা, এই সকল দ্রব্য জলে পেষণ করিয়া প্রালেপ দিলে সিধারোগ নষ্ট হয়।

সলিলে চামপেশী তু কিঞ্চিৎসৈত্ত্ববসংৰূতা। ভ'মপাত্ৰে বিনিম্ব প্লী লেপাচ্চন্মদলাপহা।

অল্পরিমিত দৈদ্ধবলবণ সংস্কুত আমচুর, তামপাত্রে ঘর্ষণ করিয়া, তাহার এলেপ দিলে চর্মাদল নামক কুঠ নিবারিত হয়।

সানলেন তু ওঁকাণি যুঠ্ব ধাত্রীফলানি চ। করাভাং হুথমাপোতি নরশ্চপ্রদলান্বিতঃ ঃ

গুদ্ধ আমশকী জলে কেনিয়া তাহ। কর-বয়ে মন্দন করিবে। সেই জল চম্মদল নামক কুঠে মাধাইলে রোগী সেই কুঠ হইতে মুক্তি লাভ করিবে।

মঞ্জিঠা-ত্রিফলা-লাক্ষা-লাক্ষণী-রাত্রিগক্তি । চুর্ণিতৈকৈনমাদিত্য-পাকং পামাহরং পরম্ ॥

মঞ্জিষ্ঠা, ত্রিদলা, লাক্ষা, ঈশ্লাঙ্গলা, হরিদ্রা ও গন্ধক, ইহাদের কল্কের সহিত তৈল স্থ্যপক করিয়া, সেই তৈল মাধিলে পামা বিনষ্ট হয়।

সৈশ্বৰং চক্ৰমৰ্শন্চ সৰ্বপাঃ পিন্ধনী তথা। আনুনালেন সংপিষ্টাঃ পামাকভূছরাঃ পরাঃ ॥

সৈদ্ধবলবণ, চাকুন্দেবীল, খেতসর্থপ ও পিপুল এই সকল জব্য কাঁজিতে পেহণ করিয়া প্রালেপ দিলে পামা ও কণ্ডু প্রশমিত হয়।

হরিজাকৰসংযুক্ত গোম্ত্র পলব্যম্। পিবেল্লর: কামচালী কচ্ছ,পামাবিনাশনম্॥

২ পল গোম্ত্রে ৮ মাধা হতিজাচুর্ণ প্রক্ষেপ দিরা পান করিলে কচ্চু ও পামা প্রভৃতি বিনষ্ট হয়।

শোধপাঙ্বামহেরী গুলমেহকদাপহা।
কচ্ছপামাহরা চৈব পথা গোম্ত্রসাবিতা।
গোম্ত্রে হরীতকী সিদ্ধ করিয়া সেই হরীতকী খাইলে শোধ, পাণ্ড, মেহ, কচ্চু ও পামা
নিবারিত হয়।

পিনতি সকটুটেলং গ্ৰূপাৰাণচূৰ্ণ রবিকিরণস্তত্তং পামলো বঃ পল ﴿। কিদিনতদম্বিক্তঃ কীরভোঞী চ শীঘং ভব্তি কনকগোরঃ কামযুক্তো মসুবাঃ ।

৪ ভোলা পদ্ধকৃত্ন, কটুতৈলে মিশ্রিত ও স্থ্যভাপে উত্তপ্ত করিয়া ভাষা ভক্ষণ বা গাত্রে প্রালেপন করিলে তিন দিনের মধ্যে পামা (চুল্কনা) প্রশমিত হইয়া শরীর কন্দর্পের ভার হয় । পথ্য—ছগ্ধ।

সিন্দুরম্বিচ্চুর্পং মহিষনবনীতসংযুতং বছণ:।
লেপারিছন্তি পামাং তৈলং করবীরসিদ্ধং বা ॥
মেটেসিন্দুর ও মরিচচূর্ল, মাহিষ নবনীতের
সহিত মিশ্রিত করিয়া বারংবার প্রলেপ
দিলে, অথবা করবীর-মূলের কভের সহিত
ভৈল পাক করিয়া সেই তৈল মাধিলে পামা
নিষারিত হয়।

অবস্থান কাসমৰ্থ্য চক্ৰমৰ্থ্য নিশাযুগম্। শ মাণিমন্থক তুল্যাংশং মন্ত্ৰকাঞ্জিকপেৰিতম্। কণ্ড্য কচ্ছতু: জয়তুগ্ৰাং সিষ্ধ এব প্ৰয়োগরাট।

সোমরাজী, কালকাম্মনার বীজ, চাকুন্দে-বীজ, হরিদা, দাকুহরিদ্রা ও সৈন্ধবলবণ, এই সকল দ্রব্য সমভাগে লইরা দধির মাতে বা কাঁজিতে পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে কণ্ডু ও কচ্চু প্রশমিত হয়।

কোমলসিংহাক্তদলং সনিশং হয়ভীজ্ঞলেন সংপিট্র:। দিবসত্রয়েণ নিয়তং ক্ষপয়তি কচ্ছ_{বং} বিলেপনতঃ ॥

কচি বাসকপত্র ও হরিক্রা, গোমুত্রে বাটিয়া তিনদিন বারংবার প্রলেপ দিলে কচ্চু নন্তীহয়।

পূর্ণ নি পিষ্ট্রা চতুরঙ্গুলন্ত তত্তেগ পূর্ণাক্তাথ কাকমাচ্যাঃ। তেলাক্তগাত্রক্ত নরক্ত কুঠান্ত্রাম্বর্ডয়েদখংনচ্ছদৈক ।

রোগির গাত্রে তৈল মাধাইরা সোন্দাল পত্র কাকষাচীপত্র ও করবীপত্র, তত্ত্বে পেষণ করিয়া তদ্বারা গাত্র মার্জন করিলে।

বিড়ঙ্গ সৈত্ৰবশিবাশ শিরেধাসর্বপত্র রঞ্জরজনীভিক। গোজলপিষ্টো লেপঃ কুঠহরো দিবসনাধ্যমঃ।

বিড়ঙ্গ, দৈন্ধব, হ্রীতকী, দোমরাজী, খেত্রম্প, ডহরকরঞ্জবীজ ও হরিদ্রা, এই সকল দ্ব্য গোমুত্রে পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে কুষ্ঠনাশ হয়।

> বিববরূপত রিক্রাচিতকোপারধ্ন-মনলম রিচদ্ব্রাক্ষীরমর্কস্থাভ্যাম। দততি পতিতমাত্রং কুঠজাতীরশেষাঃ কুলিশমিব সরোধ-চ্ছত্রহতাদ্ বিমৃত্যম্॥

মিঠাবিষ, বরুণছাল, ছরিক্সা, চিতা, ঝুল, ভেলা, মরিচ ও দুর্বা এই সকল জব্য, আকলেন ও সিন্দের আঠায় পেষণ করিয়া প্রালেপ িলে নানা প্রকার কুঠ বিনষ্ট হয়।

সুক্কাণ্ডে সর্বপাৎ কক্ষ: করীবানলপাচিতঃ। লেপাদ্ বিচর্চিচকাং হস্তি রাগবেগ ইব অপাব্॥

সীজের ভাল চিরিয়া, তাহার এক খণ্ডের মধ্যভাগ কুরিয়া শৃষ্টগর্ড করিবে। পরে উহা খেতসর্বপের কম্ব দ্বারা পূর্ণ করিয়া ভাহার উপর অপের খণ্ড চাপা দিয়া রক্ষ্ ধারা বান্ধিবে। তদনস্তর উহা মৃত্তিকা ধারা প্রালপ্ত করিয়া ঘুঁটের অগ্নিতে পুটপাক করিবে। ঐ পক সর্বপক্ষের প্রলেপ দিলে বিচর্চিকা নামক কুষ্ঠ বিনষ্ট হয়।

त्र, क्का ७ छ विदत्र प्रकृति शृह्यू मेर ने रेनकावम् । अस्य प्रभार देखना पुरुष तिन्धि निष्ठ कि कि म् ॥

সীজের নলের মন্যে ঝুল ও সৈদ্ধবলবন প্রিয়া, উহা একটি হাড়ির মন্যে রাখিয়া, হাড়ির মুখে একথানি শরা চাপা দিয়া, সন্ধিস্থান মৃত্তিকা ছাবা প্রলিপ্ত করিবে। পরে ঐ হাড়ী চুল্লীর উপর বসাইয়া নিমে জ্ঞাল দিয়া হাড়ীর মধ্যন্থ ঔমধ অন্তর্ধ্যে দ্বা করিবে। ই দ্বাক্ষার তৈকের সহিত সিল্লিত করিয়া প্রশেপ দিলে বিচ্চিত্র বোগের ধ্বাস হয়।

নারিকেলোদকে অন্তব্যভুলঃ পৃতিতাং গতঃ। লেপাৰিপাদিকাং হন্তি চিরক'ল'নুবন্ধিনামু॥

একটি সজল নারিকেলের মধ্যে কতক গুলি ভগুল বাশিবে, কিছুদিন পরে ভগুল পচিয়া গেলে, ভদারা প্রলেপ দিবে, তাহাতে দীর্ঘকালজাত বিপাদিকা প্রশমিত হইবে।

উন্মন্ত তৈলম্।

উরাস্তকন্ত নীজেন মাণকন্ধারনারিনা। কট্টতেলং বিপস্তন্যং শীত্বং হল্ডি বিপাদিকান্॥

কটুতৈল /৪ সের। মাণের ভাটা ও পত্র-ভম্মের ক্ষারজন ১৬ সের। ধুতুরা বীজের কর /১ সের। যথাবিধি পাক করিয়া এই তৈল প্রয়োগ করিলে বিপাদিকা প্রশুমিত হয়।

সর্জ্ঞরস্নিজ্বস্তব গুড়গধুম্ছিধাক্ষগৈরিকং সমূ ১ বৃ।
সৈক্ষকমে ১চচ পকং পাদক্টনাপহং সিদ্ধর্॥

ধুনা, দৈহন, গুড়, মধু, গুগ গুলু, গেরি মাটী ও মুচ, এই দকল জবা পাক করিয়া ধুখন প্রকেপদোগ্য দিক্থাকার হইবে, তখন উহা দারা প্রলেপ দিবে, তাহাতে পাদক্ষোট প্রশমিত হইবে।

তিলকুস্মলবণগোভালকট্টেলং লোহভাজনে কৃতা। শোধি ভ্ৰমক্ষয়থৈঃ পাদস্টুনং নিহন্তি লেপেন।

তিলফুল, সৈদ্ধবলবণ, গোমুত্র ও কটু-তৈল, এই সকল দ্রব্য লৌহপাত্রে মর্দ্ধন করিয়া রৌদ্রে শুদ্ধ করিবে। পরে উহার প্রালেপ দিবে। ইহাতেও পাদক্ষোট নিবারিভ হইবে।

यः चारमण्डश्रीतप्रभातिप्रशासको न ह। य अरयद सक्तन् है। नि भागामृष्ट्यः स सर्भग्रः॥

যে বা,জ, হরীতকীও নিম্পত্র কিংবা আনস্কীও নিম্পত্র মাদাধিক কাল ভক্ষণ করে, তাহার সর্বাপ্রকার কুঠ প্রশামত হয়।

ছিলায়া: ধ্বসো যাপি মেনামানো ধ্যাবলম্। জার্গে স্তেন পুঞ্জীত করা সুযোদকেন বা। অতিপতিশবারোগণি দিবারুণী ভবেলুরঃ॥

বলামুদারে গুণক্ষের রদ পান করিয়া ভাহা জীণ হইলে স্তের দহিত বা মূলাদির যুবের সহিত পথা ভোজন করিলে পুতি-শরীরও দিব্যরূপী হয়।

তারেণ কুচেন পরীতদেহে।

যা সোমরাজীং নিয়মেন প্রদেহ।

নংশংসকং কুশাতিশ্বিতীয়াং

নামেনাজীং বপুষাতিশ্বৈত ॥

নিয়নসূত্ৰক এক বংসাকাল দোনরাজী-বীও ও ক্বনাতল (প্রত্যেক ৩।৪ মানা) একত্র ভক্ষণ কানিলে তারকুষ্ঠ নষ্ট হইয়া দেহ অভি-স্থানা ও লাবণ্যময় হয়।

ৰু এবৈ রি ভবং তৈলং কু ওলং চন্দ্রদে ।

চাউলমুগ্রার তৈল মর্জন করিলে কুঠ ও তুগ্দোধ বিনষ্ট হয়।

उन्नाक्तना प्रमृत्यन विश्वः शकाश्वना उथा । दुष्टः मर्कानिस्रोक्षन नामः गः ।

চাউলখুগ্বার বীঞ্চর শস্তা, মোম্ও গন্ধক-চূর্ণ একতা পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলেও স্ক্রিণ কুঠ নিবারিত হয়।

চূৰ্ণোদকেন কুজন্ব-তৈলং কুন্তহরং পরস্॥

গর্জন তৈশ ৮।১০ বিন্দু কিঞ্চিৎ চূণের জলের সহিত পান করিলে কুঠ নিবারিত হয়। এই তৈল কুঠে লাগাইলেও উপকার হইরা থাকে।

কুঠম†শু ক্ষয়ং বাতি পঞ্গবানিষেবণাৎ ॥

প্রতিদিন পঞ্চগব্য পান করিশেও কুষ্ঠ প্রশমিত হয়।

কুঠানাং বিনির্জৌ চ গোমূজং পরমৌষধম্
অন্তরাসহিতং তদ্ধি ধাং সিদ্ধিপ্রদং মতম্ ॥
কুঠ নিবারণে গোমূত্র পরম ঔষণ।
হরীতকীর সহিত গোমূত্র সেবন করিলে
বিশেষ উপকার দর্শে।

गञ्जिक्षां मिः।

মঞ্জিঙা বাকুটী চক্র-মর্দ্দিত পিচুমর্দ্দকং।
হরীতকী হরিলা চ ধাত্রী বাসা শতাবরী ॥
বলা নাগবলা যন্তি-মধুকং কুরকোগপি চ।
পটোলভা লতোশীরং শুডুটী রক্তচন্দনম্॥
মঞ্জিঙাদিররং কাথং কুঙানাং নাশনং পরং।
বাতরক্তভা সংহঠা কঙ্মগুলনাশনঃ॥

মঞ্জিল, সোমরাজী, চাকুন্দেবীজ, নিংছাল, হরীতকী, হরিদা, আমলা, বাসকপত্র,
দতমুলী, বেড়েলা, গোরক্ষচাকুলে, যষ্টিমধু,
কুলেথাড়াবীজ, পটোললতা, বেণা মূল,
গুলঞ্চ ও রক্তচন্দন; ইহাদের কাণ পান
করিলে কুঠ, বাতরক্ত, কণ্ড ও মণ্ডল
বিনষ্ট হয়।

অমৃতাদিঃ।

অন্ত্রতরগুরাসাল্ট সোমরাজী হরীতকী। কাথ এখাং হরেৎ কুঠং বাতরক্তঞ্চ দাঙ্গণমূ॥

গুলঞ্চ, এরগুমূল্, বাসকছাল, সোমরাজী ও হরীতকী; ইহাদের কাথ, কুঠ ও বাতরক্ত নাশক।

পঞ্চক্ষায়ঃ।

বচাৰাসাপটোৰানাং নিম্বন্ত ফলিনীড্চ:। ক্ষালো মধুনা পীতো ৰান্তিকুমদনাবিতঃ। বচমূল, বাসকমূল, পটোলমূল, নিমছাল ও প্রিয়ন্থ্রলা; বমনার্থক কাথবিধি অনুসারে ইংগদের কাথ প্রস্তুত ও তাহা মদনফল চুর্ণ ও মধুর সহিত সেবন করিলে বমন হইয়া কুঠ-রোগ প্রশ্মিত হয়।

> বিভীতকন্ত মূলগুঞ্জীনাং ক'পেন পীতং গুড়দংযুতেন। অবস্কুজং বীৰমণাকরোতি খিত্রালি কুজাণাপি পুণ্ডনীকম্।

বহেড়ার ছাল ও কাকডুমুরের মূল, ইহা-দের কাথে গুড় মিশ্রিত করিয়া সেই কাণের সহিত সোমরাজী বীজ পান করিলে, বিত্র (ধবল) ও পুগুরীক কুঠ নিবারিত হয়।

বায়তেড্গজাবু b-কুফাভি ৪ ডিকা কুতা। বস্তমুক্তেন সংগিষ্টা লেগাছিছ তাবিনাশিনী।

কাক্মাচী, চাকু: ন্ববীজ, কুড় ও পিপুল, এই সকল ড্ৰব্য ছাগমুত্ৰে পেষণ ক্রিয়া ভদারা প্রলেপ দিলে খিত বিনষ্ট হয়।

পুতিকাৰ্কসূত্ৰরেক্রজ্মণাণং
মৃত্যৈ পিষ্টাং প্রধান গৌমনাশ্চ।
লেপাক্ষিত্রং ছন্তি দ্ফারণাশ্চ
কুঠাকুণাংকারনাকীরণাশ্চ।

নাটাকরঞ্জ, নীজ, আক্রন্ধ ও সোন্দার ইহাদের পত্র ও জাতীপত্র গোমুত্রে পেষণ করিয়া তাহার প্রলেপ দিলে মিত্র, দক্ষ, এণ, কুষ্ঠ, অর্মাঃ ও নালা ঘা প্রথমিত হয়।

কুড়বো বাকুচীৰীজান্ধরিতালং পলাধিতম্। গবাং মৃত্রেণ সংশিষ্টং প্রলেপাচিছ,ত্রনাশনম্॥

সোমরাজী বীজ ৪ পল ও হরিতাল ১ পল গোমৃত্রে মর্জন করিয়া প্রলেপ দিলে খিঞ বিনষ্ট হয়।

গজচিত্ৰব্যায়চৰ্ত্ৰ-মসীতৈলবিলেপনাৎ। বিত্ৰং নাশং ব্ৰঃ**লং** কিংবা পুতিকীটবিলেপনাৎ॥

হস্তী বা চিতাবাঘের চর্ম্মভন্ম কটুতৈলেব সহিত মিশ্রিভ করিয়া প্রলেপ দিলে অথবা পাছরিয়া পোকার প্রলেপ দিলে বিত্র বিনষ্ট হইয়া থাকে। ধাত্রীথদিরয়োঃ কাথসবস্তুজরজোহধিতম্।
ধাত্রীথদিরয়োঃ কাথং পীতা চ মধুস: যুত্ম।
শহাকুন্দেন্দ্ধবলং জয়েজি তাং ন সংশয়: ॥
আমলকী ও খদিরের কাথে মধু বা সোমরাজী চূর্ণ প্রাক্ষেপ দিয়া পানে কবিলে ধবল
রোগানষ্ট হয়।

খেতজমন্ত্ৰীমূলং পী ১ং পিষ্টক প্ৰইদৰ।
খিলং নিংজি নিয়তং বৰিবাবে বৈজ্ঞনাধাজা।
ববিবাবে খেতজন্মস্তীমূল হুগ্ধে বাটিয়া
খাইলে ধ্বল বিনষ্ট হয়।

শুঞ্জাকলীয়িচ্গন্ত লেপিডং খেডকুঠনুং। শূলাপামার্গভন্ম'পে লেপাজি তং নিনাশহেং।
ক্রিফল ও চিত্যসূল চুক্ত ক্রিমা প্রের

কুঁচফল ও চিত্তামূল চুর্ন করিয়া প্রলেপ দিলে খিতা নষ্ট হয়। মনছাল ও আপ্প'ঙ্গের আর থারা প্রলেপ দিলেও প্রলের শাস্তি হয়। কারে হদমে গলভঙের চগলস্ত নৃয়েণ বছকতে চ। দেংশিখনাগং দশভাগযুক্তং দ্বা প্রেদ্ বীক্রমবর্জস্থা। এইদ্যনা চিক্শ চামুপৈতি

এতব্যনা (চৰণ চামুপৈতি তদা অসিদ্ধাং শুড়িকাং প্ৰকুষ্যাৎ। বিষং প্ৰলিম্পেদ্ধ তেন মৃষ্ঠং তদা প্ৰভাৱত সৰ্বভাৱন।

(হ**ত্তিপুরীষতক্ষনঃ** ষট্পঞ্শৎপলাধিকপলন ১৮৪২ গ্রাহাণ, ক্লালেশ্চকাল্ দলমাণ্ডনন কিলিল্যুনক্রেয়েদণ-মাষাধিকপকালৎপলানি)।

হন্তীর প্রীযভন্ম ৩২ সের, হন্তীর ১৯২ সের
মৃত্রে পাক করিয়া বছবাব (৭ বা ২১ বার)
ছাঁকিয়া লইবে। সেই ক্ষারজ্ঞল ৬৪ সের লইয়া
ভাষার সহিত কিঞ্চিদ্ধিক ৬৮০০ সের
সোমরাজ্ঞীবীজ দিয়া পাক করিবে এবং লন
হুটলে নামাইবে। ধবলস্থান ঘর্ষণ করিয়া ইহার
প্রালেপ দিলে ধবল বিনষ্ট হুইয়া থাকে।

পঞ্নদ্ব।

নিখন্ত পাত্রং মূলানি সংক্তৃপাদনানি চ।
চ্পিতানি ঘৃতক্ষীত্র সংযুক্তানি দিনে দিনে
লিক্তাৎ পিবেদ্ বা মূজেন সংযুক্তানাদকেন বা ।
মদিরামলভোয়েন পর্না বা যথাবল্য ॥
পুঞ্জীত যুত্যুবালৈঃ শালারং প্রসাপি বা ।
সক্ষেত্রবিস্প শেনিনাড়ীত্রন্ত্রণানপি ॥
কামলাক গদান্ হস্তাৎ তথা পিত্রকাশজান্।

সংবৎসরপ্রয়োগেণ সাধ্ববর্জ্ঞাবিবজ্জি ১৫। জংত্যেতৎ পঞ্চিম্বং রসায়নমনুত্রম্য।

নিমের পত্র, মূল, ত্বক্, পূব্প ও ফল সমভাগে চূর্ণ করিয়া তাহা ত্বত্ত, মৃরু, গোমূত্র, জল,
মন্ত্র, আমলকীর রস শ্রুপবা হয়ের সহিত দেবন
করিলে এক বংসরে সকল প্রকার কুঞ্জ, বিসপ,
অর্ণঃ, নাড়ীরণ ও হুইরণ প্রভৃতি নানারোগ
নিষ্ট হয়। পথা—ত্বত, হুগ্ধ, যুষ্ ও শালি তগুলের
অয় প্রভৃতি। মংখাদি কুপথা ভোজন নিষিক্ক।

পঞ্নিম্বন্ ।

(নভাস্তরে)

পুলাক কো কা পুলা প্রিক কা কালে করানি চ।

মান্ত্রী গিচুমন্ত্রক কছ মূলানি দলানি চ।

বিরশ্যনি সমাহত্য ভাগিকানি লক্ষয়েং।

বিষকা ক্রাবণ ক্রমী খবংপ্রক্রমানিকাঃ।

বিজ্ঞানবারাহা-লৌহচুর্বায়তাঃ সমান।

ইরিষ্রাথয়বাগ্রী-ব্যাদিখাতাঃ সমাননার।

ক্ষেত্রপ্রবাগ্রী-ব্যাদিখাতাঃ সমাননার।

ক্ষেত্রপ্রবাগ্রী-ব্যাদিখাতাঃ সমানরার।

ক্ষেত্রপ্রবাগ্রী-ব্যাদিখাতাঃ সমানরার।

ক্ষেত্রপ্রবাগরীনার ব্যাক্ষরেক ভাগেবেং।

সপ্রবা প্রক্রিয়া ব্যাক্ষরেক শুভে দিনে।

মধুনা ভিক্রহ্বিয়া প্রক্রিয়ানবারিবা।

সোনায়কায়ুনা বাপি কোলকুল্লা পলং পিবেং।

জীর্বে ড্রেডনং কাগাং প্রিয়াং লগু হিছক যাং।

বিচচিকেট, ধরপুগুরাব কপেলিদ দকিনিমালসাদি।
শতারু বিশ্বেটিবিসপানার
কুইপ্রকোপং বিবিধং কিলাসম্।
ভগদরং শ্রীপদবা এরক্তং
কডাঝানাড়ারণনাবরোগান্।
সববান্ প্রমেহান্ প্রদরংক সর্বান্
দ প্রবিষং মূলবিষং নিহান্ত।
স্থাবিষং শ্রীবিশ্বাপনোগাং।
সমোপ্যোগাদাগ বে দশন্তি
সপ্যবিষং ব্যাধিকরাবিমূক্তঃ
ভাতে রঙক্তপ্রসমানকান্তিঃ।

্যদিরাদননিথানাং থনকাথেনেতি পদিরাদানাং প্রভ্যেকমন্তর্ভাগাবশেবেণ কাথেন ভাবনা। ভিত্তত্বি-বেতি বক্ষানাভিত্তবট্যলম্বতনা বিদ্ধান্তমূত্বং বেছক্রিয়াব্যন্বিরেচনাদিনা)।

নিমের কুল, ফল, ছাল, পত্র ও মূল প্রত্যেক ২ তোলা; আমলকী, হরীতকী, পিপুল, বহেড়া, e 3, মরিচ, বন্ধী. গোকুর, ভেলা, চিতামূল, বিভ্লসার, চামার-षान, लोश्हर्न, खनक, श्रिक्ष, माक्रश्त्रिष्ठा, সোমরাজীবীজ, সোন্দালমজ্জা, চিনি, কুড়, ইক্স্যৰ, আকুনাদি প্ৰত্যেক ১ তোলা। এই সমুদায় চূর্ণ একতা মদন করিয়া খদির অসন-ছাল ও নিমছাল ইহানের প্রত্যেকের ঘনকাংথ এবং ভীমরাজের রদে যথাক্রমে ৭ বার করিয়া ভাবনা দিবে। সেহক্রিয়া বমন ও বিরেচনান্তে এই পঞ্চনিম্ব যথাযোগ্য মাতার ব্যবস্থা অমুপান-মধু, তিক্তষট্পল গ্ৰত, क्रिंद्र । খদির ও অসনের কাথ হথবা উষ্ণজ্প। তোল মাত্রায় সেবন করিতে আরম্ভ কবিষা ৮ তোলা পর্যান্ত মাত্রা ক্রান্ধ করিবে। ঔষধ জীর্ণ হইলে মতাদি দংযুক্ত লগু অলপথা করিব। অজীৰ্ণ সত্ত্বে ভোজন । নিধিক। ইহা সেবন করিলে বিচ্চিকা, ঔড়্ম্বর, পুগুরীক ও কাপাল প্রভৃতি নানাবিধ কুষ্ঠ ও অক্সান্ত অনেক রোগ উপশ্যিত হইয়া শ্রীর ব্যান্শ্রি এবং উজ্জ্ল ও কান্তিস্ত হয়।

অমৃতাগুগ গুলুঃ।

অমৃত য়াঃ পলশতং দশম্ল্যান্ত বা শত্ম।
পাঠামুক্ম বেলা হিন্তা ভনাকৰ্বান্তকাঃ দতং হ'রং।
এবাং দশপলান্ ভাগান্ বিভীতকাঃ শতং হ'রং।
তে শতে চ হরীতকাঃ আমলকান্তলা শত্ম।
জলভোগতায়ে পজ্বা অস্তভাগাবেশ্বিতম।
প্রস্থা ওপ্রস্থান্ততা প্রস্থান্তকা স্থান্তক।
পাক্সিকৌ অদাতবাং গুড়া চাঃ সন্থানত।
প্রস্থাত জাবা ওপ্রাঃ প্রস্থাত জাবান্ত প্রধান্তম।
অসংদশফ কুঙের বাতরেজগদের চ।
কামলামানবাতক অগ্নান্তাং ভগন্দরম্।
শীনসক প্রতিভাগ্যং মাহানমুদ্ধং তবা।
এতান্ রোগান্ নিহন্ত্যান্ত ভাগরন্তিনিরং ব্যা।
এতান্ রোগান্ নিহন্ত্যান্ত ভাগরন্তিনিরং ব্যা।

শুল,ঞ্চ ১২॥॰ দের, দশমূল ১২॥॰ দের ; আব্নাদি, মুর্কামূল, বেড়েলা, ফট্কী,

षांक्रहिता ७ ध्वत्रभुग खारहाक ১० भग. ল্লথপোট্টলীবদ্ধ বহেড়া ১০০ টা, হ্রীতকী ২০০ টা, আমলকী ১০০ টা এবং দোলাস্থ পোটুলী বন্ধ গুণ্গুলু /২ তুই সের এই সমুদায় একত্র ১৯২ সের জলে পাক করিয়া ২৪ সের থাকিতে নামাইবে। এই কাথ ছাঁকিয়া লইয়া তাহার স্থিত ঐ গুগগুলু /২ সের গুলিয়া দিনে हती की, बागनकी 9 পূৰ্কোক্ত বংহজা সমস্ত বীজরহিত করিয়া /২ সের ভাজিয়া ঐ কাথে খু'ত পাক করিবে। পাক সিদ্ধ হইলে গুলকের চিনি শুঠচুর্ণ ও পিপুলচুর্ণ প্রত্যেক ২ পল প্রক্ষেপ দিয়া মিশ্রিত করিবে। ইহা कर्तित्व अहे। मार्चा कुछे, কামলা, আমবাত, অ্যিমান্দা ও ভংকর প্রভৃতি নানারোগের শাস্তি হয়।

এ ‡বিংশতিকো গুগ্গুলুঃ।

চিত্রক ত্রিকলাব্যোধনজাজাং করিবাং বর্চাম।

ইসক্ষর তিবিয়ে কুঠং চব্যোলাববশৃক্জম্ ॥

বিতৃক্ষাজ্যজনাদকৈ মুন্তাজ্যমরদাক চ।

যাবন্তো হালি সন্বাণি ভাবনান্তে গুণ্ডলুম্ ॥

সংকৃত্য সাথিষা সাজং গুড়িকাং কার য়দ্ ভিষক্।
প্রাত্তি ভাকাবলে বা ভক্ষেত্র যথাবলম্ ॥

হস্তাগ্রাক্ষ ব হালি ক্রিমীন্ হস্তব্যানপি।

গ্রহানে বিকারাংক মুন্তাহ্যগলগ্রহান্ ॥

গ্রহামণ ভগ্রক গুলুকাপি নিষ্কৃতি ।

যাধান্ কোঠগ হাংকাভান্ জয়েছিকুরিবাস্ত্রান্॥

যাধান্ কোঠগ হাংকাভান্ জয়েছিকুরিবাস্ত্রান্॥

চিতা, ত্রিফলা, ত্রিকটু, জীরা, ক্বফজীরা, বচ, দৈরব, আতইচ, কুড়, চই, এলাইচ, ঘবফার, বিড়ক্ষ, যনানী, মৃতা ও দেবদারু, এই
দকল দ্ব্যু সমভাগে লইয়া চূণ করিবে। চূর্ণের
পরিমাণ যত হইবে, তাহাতে তত পরিমাণে
গুগু গুলু দিয়া মৃতের সহিত্যক্ষন করত উপযুক্ত মাত্রায় বটিকা প্রস্তুত করিবে। এই
বটিকা প্রাতঃকালে অথবা ভোজন সময়ে
দেবন করিলে সক্ষপ্রকার কুঠ, চুইব্রণ ও অশঃ
প্রভৃতি রোগ সকল প্রশমিত হয়।

পঞ্চিক্তগ্নতগুগ্,গুলুঃ।

নিমানুতাবুৰপটোলনিদিন্ধিক নাং ভাগান পৃথগ, দশপলান বিপচেদ্ ঘটেংপাম। অপ্তাংশশেষিত্রসেন জুনি শিতেন প্রস্থং মুড্ড বিপরেৎ পিচুভাগককৈ: । প'ঠ'বিভক্ষরবারগজোপকুলা-विका बनागद्रनिमानि विठवाद रेक्टेः। ্েজে'ব তীমরিচবৎসক্দীপাকাগ্নি-রোহিশারকরবচাকণমলযুক্তি:॥ মঞ্চিপ্রাতিবিষয়া বর্যা যুমাস্থা मः ७ क छन् छन् भरेनत् (अ शक्रमः रेना): । তৎ সে িতং বিষম্ভিপ্রবলং সমীরং সকা স্থিমজগতমপাথ কুঠমীদক । নড়ৌরণ কে দুছগন্দরগভ্যালা-জক্রদর্কগদগুলাগুদোখমেই।ন। যগালে চিম্বসন্পানসক সংগাৰ-হৃৎপাঞ্রোগগল^(বছরিব)তরক্তম ।

কোনারস্থানয়ে ওপ নলুং প্রথপে টুলিক ছোং বন্ধা দোলাবদেশ বিলং রুখা তেখেন কাপজনেন ভানায়খা ছুতে নিজিপা পতেং। মিধি শতপুশা নতু মধুলিকা, বন্ধবাবহার (২॥)

মৃত /৪ দের। কাথার্থ — নিমছাল, গুলঞ্চ, বাদকছাল, পটোলপত্র, কণ্টকারী প্রত্যেক ১০ পল; মুথপোটুলী বন্ধ গুগুগুলু ৫ পল, পাকার্থ জল ৬৪ দের, শেষ ৮ দের। ছাকিয়া লইয়া উষ্ণ থাকিতে তাহার সহিত পোটুলীস্থ গুগুগুলাল লইবে। পরে মহতে। সহিত এই কাথ জল পাক করিবে। কলার্থ— মাক্নাদি, বিড়ঙ্গ, দেবদার, গজপিগুলী, যবক্ষার, সাচিক্ষার, শুঠ, হরিদ্রা, শুল্ফা, চই. কুড়, লতাফটুকী, মরিচ, ইল্ফাব, জীরা, চিতামূল, কট্কী, ভেলা, বচ, পিপুলমূল, মঞ্জা, আতইচ, ত্রিফলা ও বন্ধমানী প্রত্যেক ২ তোলা। ইছা দেবন করিলে বিবদোষ, কুঠ, নাড়ীত্রণ, আর্মুদ, ভগন্দর, গণুমালা ও গুলা প্রভৃতি নানাবোগ নই হয়।

অমৃতভল্লাতকম্ ৷

ভ্রাতকানাং প্রনোদ্ধতান'ং বৃস্তচ্যতানাঞ্চ যদাঢ়কং স্তাৎ। এচেষ্ট্রকাচূর্বকগৈবিস্থা প্রকালয়িকা বিস্তত্তেৎ প্রবাতে॥

ওকং পুনস্তদ বিদলীকুতঞ ততঃ পচেদন্ম চতুও পাস্। * তৎ পাদশেষং পরিপূতনীতং কীরেণ তুলোন পুনঃ পচেৎ ত । তং পাদশেষং পুনরেব শাতং গুতেন তুলোন পুনঃ পচেৎ তু। एक्सी शक्ता विकीर्ग ততঃ থাজেনোঝখিতং বিধায়॥ তং সপ্তরাত্রাত্রপজাত্রায়াং ত্রধারসাদপাধিকত্বদৈতি। প্রতিবিশ্বন্ধ: কুডদেবকায়ের মাত্রাঞ্গাদেৎ স্বশ্রীরযোগ্যাম। ন চারপানে পরিহাযামত্তি ন চাতপে চাধ্বনি মৈথনে চ। ব্ৰেষ্ট্ৰটেষ্টা বিহিত্যোপযোগাদ্ ভবেরব: কাঞ্নরাশিগৌর: # অনতানেধা নর্নিং হতেওা থ ষ্ঠান্ডাহেবাহেডবাদ্ধির :। দত্ত কিবাং পুনক্ষরন্তি কেশাল্ড উপ্লাঃ প্ৰনাৱেৰ দিবাও ॥ নালাঞ্নালিপ্রতিমা ভবাস্ত হ'চে। বিবর্গত প্রনারন দিবাতে। বিশাণকণ'ঙ্গুলিনা'সিকোহপি ক্রিমার্কিতো ভিরগবোচপি বুঠা । মোহপি জমাদক্ষরি গ্রাগশাখ-স্প্রক্ষা ভাতি নভাইস্থাস্থিত। ৬ হ'ল মণ ব'ল জ্য়তি সরেণ ব্ৰান নাগস্তব্ৰো জবেন দ तमक्षमणामा भनः अमानः ए রহজ্ঞতেরপা ধিকে হৈপি বন্ধা। গ্ৰাৰ বেশাল'ৰ পুনক্তিদোষাৰ গুঠু'ি লীঘং ন চ নগুং ৬ তু॥ কুপালিমং কলগীনলবুদ্ধি ক্ষরেরা ব্রশ্ হানি পঞ। রাজা হায়ং সক্রেসায়নানাং 5কার যে'গং ভগবানগস্তাঃ

্ ১৩% প্রস্তা সাহিশ্যেকস্তা পাঠান্তরং যথা সারা-নল্যাম- -

পাদাব- ইম্ব পুন: পচেৎ তৎ কারপ্ত প্রপ্তম চ চুইরং হি। প্রহং মৃত্যুপি বগা খনং স্থাৎ মিতাপলৈ: বেংড়শভিঃ ক্ষিপেচ্ছ। ব্যোবং ত্রিজাতং গজপুশলোহং পলং বিমিশ্রোম্মিতং নিধায়।

বুক্ষ হইতে পতিত স্থপক ভেলা /৮ সের, ইটের গুড়া দিয়া বর্ষণ ও জলে প্রকালন করিয়া বায়ুতে শুষ্ক করিবে। পরে ঐ ভেলা সকল বিখণ্ড করিয়া ৩২ সের জলে পাক করিবে, ১৮ সের থাকিতে নামাইয়া শীতল ছইলে কাথ ছাকিয়া প্রয়া প্রকার 👉 সের ছম্বের সহিত পাক করিবে, পাদশেষ থাকিতে নামাইয়া ক্ষীর ছাকিয়া ফেলিবে এবং /৮ সের ম্বতের সহিত পুনর্কার পাক করিবে। পাক দিন্ধ হইলে নামাইয়া /৪ দের চিনি প্রক্ষেপ দিয়া এবং হাতা ছারা উত্তমরূপ নাড়িয়া তদবস্থায় ৭ দিন রাখিবে। (প'ঠা হরে-পুন:পাকে হুত্ম ১৬ সের, ঘৃত /৪ সের, চিনি /২ সের, দাক্তিনি, এলাইচ, তেজপত্ৰ, নাগেশ্বর ও লৌহ প্রত্যেক ১ পল।) ইহাতে ঔষধ অভিশয় वीर्यातान छ छन्त्रक इस्। इस इल विस्वहना করিয়া যথাযোগ্য মাত্রা। ব্যবস্থা এই ঔষধ প্রাভঃকালে সেবনীয়। সেবনকালে ইচ্ছাসত আহার বিহারাদি করিতে পারা যায়। ইহাতে কুঠাদি নানা রোগের প্রংস হইয়া বল-বীৰ্যা ও বৃদ্ধিশক্তি প্ৰবল এবং চুৰ্যল ই ক্ৰয় সকল সবল হইয়া কাৰ্য্যক্ষম হয়। (মাত্রা— ॥• হইতে ২ তোল।)।

মহাভল্লাতকগুড়ঃ।

নিবং গোপাকণা কট্বা তামন্তী তিফলা ঘনং।
পর্পটাবন্ধজানন্তা বচা পদিরচলনম্ ॥
পাঠা গুটা ভাগী বাসা ভূনিঘবৎসকম্ ।
ভামেল্রবারুণী মুর্বা হিড়কেল্রবিধানলম্ ॥
হত্তিকর্ণামূতা দেকা পটোলং রজনাধ্যম্ ।
কণারধ্যমন্তাহনকুকবেত্রোচ্চটাফলম্ ॥
ভূকলং তুণপর্কি জিল্লীপন্নাটমূবলা ।
বিকর্মেনা চ কৈটযাং পরপুঝার্ম কর্কুলা ॥
এবাং দিপলিকান্ ভাগান্ জলপ্রেণে বিপাচরেৎ ।
ভাইভাগাবনিষ্ঠিত্ত করাম্মন্তারয়েৎ ॥
ভলাভকমহন্দ্রানি ত্রীণি ভিরাপ্রণেহভ্সি ।
চতুভাগাবশেষত্ত করাম্মন্তারয়েৎ ॥
ভৌ করাম্নী সমানাম্ব বস্বপ্রেট চ কর্বেরং ।
ভড়ভ তু ভুলাং ভাভাগং করাছাভ্যাং প্রেছিবক ॥

ভ্রমাতকসহমাণাং মজানং তত্ত্ব দাপরেং।
ত্রিকটুত্রিকলামুক্ত-সৈদ্ধবানাং পলং পলম্॥
দীপাকন্ত পলকৈব চাতৃজ্ঞান্তং পলাংশিকম্।
সংচূর্ণা প্রক্রিপেরত গন্ধকণ্ঠ চতুপ্পলম্
ত্রিদ্ধন্ত বিনিক্ষিপ্য স্থাপরেং কুশনো ভিষক্।
মহাভ্রমাতকো তের মহাপেরেন নিশ্মিতঃ॥
কপতন্ত হিচার্থায় জয়েছেীয়ং নিবেবিতঃ।
বিত্রমাতৃষ্ঠঃ দক্ষয়াজিহং সকাকণম্॥
পুঙ্রীকক চর্মাথাং বিক্রোটং মঙলং তথা।
কঙ্গং কাপালকুঠক পামানং সবিপাদিকম্॥
বাতরক্তম্নাবর্জ্যং পাঙ্রোগং রণক্রিমান্।
আশীংসি বট্পকারাণি কাসং স্থাসং ভগন্দরম্॥
তদভ্যাসেন পলিতমামবাতং স্তুক্তরম্।
অসুপানে প্রবাক্রবাং ছিলাকান্থং প্রোহ্পবা।
ভোজনে চ তথা বোজামুক্রপান্নং বিশেবতঃ॥

গ্রান.পু চা, আত্ট (কেঃ বলেন, তেউড়ী). কটুকী, বলাডুমুব, ভিফলা, মুতা, ক্ষেত্রপাপড়া, সোমরাজীবীজ, অনন্তম্ব वह, थिनतकार्ष्ठ, तक्कहन्यन, आकृनामि, खैंठे, শটা, বামুনহাটী, বাদকমূলের ছাল, চিরতা, কুড়্চিমুলের ছাল, বিদ্ধাক, রাখালশশার স্ব মুর্লামূল, বিজ্ঞা, ইক্রয়ব, বিষ, চিতামূল, হস্তি-কর্ণপলাশের ছাল, গুলঞ্চ, যোডানিমের ছাল, পটোলপত্র, হরিন্তা, দারুহরিদা. সোনালফলের মজ্জা, ছাতিমছাল. लालकूँ ह, अल, हिनाधान, मिक्का, हाकूत्सवीक, जीनमूनी, श्रिम्भ, कट्रेकन, भत्रभूखा, भिनीय-ছাল প্রত্যেক ২ পল, পাকার্থ জল ৬৪ সের, শেষ /৮ সের। ভেলা ৩০০০টা, জ্বল ৬৪ এই উভয় কাগ সের, শেষ ১৬ দের। ষ্ঠাকিয়া একত্র মি.শ্রত করিয়া তাহাতে পু**বা**-ভন গুড় ১২॥০ সের ও ১০০০ এক সহস্র ভেলার মজ্জা দিয়া পাক করিবে। প্রক্ষে-পার্থ-ত্রিকটু, ত্রিফলা, মুগা, দৈন্ধব ও যমানী (সারাবলী মতে জীরা) প্রত্যেক ১ গুড়ম্বক, তেজ্বপত্র, এলাইচ, নাগেশব প্রভ্যেক ২ ভোলা, গদ্ধক ৪ পল: মথাবিদি পাক ক্রিয়া গুডভাণ্ডে রাখিবে। করিলে সর্ববিপ্রকার কুঠ, বাতরক্ত, উদাবর্ত, ক্রিমি, ষ্টপ্রকার অৰ্শ:

প্রভৃতি নানারোগ নষ্ট হয়। অমুপান — গুলঞ্চের কাথ অথবা হয়। পথ্য—উষ্ণ অয়।

অমৃতাঙ্কুরলোহম্।

হতাশমুখন্ডদ্বাস্থ্য পলমেকং রদক্ত বৈ। পলং লৌহস্ত ভাত্রস্ত পলং ভলাতক্সা চ ॥ গদ্ধকন্ত পদক্ষৈক্য একন্ত চ গুণ গুণে। । इत्रौडकौतिष्टी**उरका।न्ह**ुर्नः कथत्रग्नः **५**८ग्नाः ॥ অষ্ট্রমাধাধিক: তত্র ধাত্রাাঃ পাণিতলানি ষটু। गृडः बाहे-(शह)-छनः लोशः म्बाजिः मद जिक्तां अलग् ॥ এবং क्रशं भरहर भारत लोहर ह निधिभूकं क्रम्। পাকমেত্ত জানীয়াৎ কুণলো লৌহপাক্বিৎ॥ বিবৃদ্ধ, প্রাতরূপ য় গুরুদেবদ্বিজার্চক:। রকিকাদিকমেণের গৃতভামরম্দিত্য ॥ लोर्ड कोइड म्एडन क्याप्ति क्रमायनम्। অতুপানক কুলীত নারিকেলে। দকং পয়:। স্ক্রকুন্তহ্রং শ্রেষ্ঠং বলীপ্লিভনাশন্ম। পাভুমেং মিবাভয়ং বাভরক্তরজাপহ্ম । ক্রিমিশোপাশ্মরীশূলং তুর্নামবাতরোগতুৎ। ক্ষয়ং হস্তি মহাখাসমত্যৰ্থং শুক্ৰবৰ্দ্ধনম। অগ্নিসন্দীপনং হজাং কান্ত্যায়বলবুদ্ধিকৃৎ 🛭

বিবর্জ্য পাক'রমপি ব্রিরঞ্চ সেব্যা রসো জাকললাবকানামু।
শালোদনং ষষ্টিকমাজামুকা-ক্ষেত্র ও ওডকারানং ক্রিরায়াম ॥
শালিকগুকাদি বৃংৎকরপ্তশিলাজতু ক্ষোদ্রইং পর্যচ
সপিয় তান্ ভক্ষরতো বিহল, ন্
প্রপ্রতার হববলদেহধা হুঃ ॥
কৃষ্ণপ্র পক্ষ সিত্রে তু পক্ষে
বিপঞ্চরাত্রের যথা শশাকঃ॥
পাক্ষক্ষণং যথা—

বন্ধে নিপ্ণীড়িতং স্থান্ধ স্থলতন্তো ঘনে দৃটে। সমূদ্ধ জায়তে ব্যক্তং ন নিংসরতি সন্ধিতিং। নচ শক্ষায়তে বক্ষো তদা সিদ্ধিং বিনিদ্ধিশেৎ।

(হতাশনমূপসংগুদ্ধ-রদগন্ধকাত্যাং কজ্জাকৃত্য প্রত্যক্তান্ধনে পিপ্তিকা কাব্যাং, ততঃ পিপ্তিকোপরি তপ্ত-তামভান্ধনং নিবেশনীয়ম ততঃ কিঞ্চিৎ পপট্যাকৃতে। স্থৃতায়াং বোড়শাংশং উঙ্গপক্ষারং দ্বা অভ্যমূবিকায়াং ক্যা বাবদ্ গুল্কসম্বন্ধা নোপনভাতে তাবদেব খাত-বাম। এবময়ো স্থিনীকৃত্য রসক্ত গ্লা এবং কোইাদি কগ্ৰেক্টানাং প্রত্যেকংগ্লা, ঘৃতংগ্লাভ। সংমেকী-

শ্বক্ষ্য প্রক্রেক্ত গ্রাক্ত চতুস্পান্মিতি
রদেশপুতঃ পাঠঃ।

কৃত্য লৌহপাতে ক্রিফ্লাকাথেন পচনীয়ম, শেষপাকে প্রক্ষেপার্থং যথোক্তভাগং ত্রিফ্লাচুর্নমু। চুং।

অনুতাকুরনৌহে ছতান্মুখসংগুছপলমেকং রসজ বৈ ইতি হতাশমুপেতাদি বিশেষণেন রসসিন্দুরং গৃহজীতি কেচিং। অপরে তু হিন্দুলোভবং পারদং পাতনাবন্ধবোগাদ গৃহজি। বৃদ্ধান্ত প্রায়ো রস্দিন্দুরং ব্যবহরতি। রসাদি সর্ব্বমেকীকৃত্য গৌহপাতে ত্রিকলাক বাবহরতি। রসাদি সর্ব্বমেকীকৃত্য গৌহপাতে ত্রিকলাক কাম্পেন পচনীরম্, পাকশেষে তু ত্রিকলাচুর্বং প্রক্রিপেং। ইতি রসেক্রটাকা।)

অগ্নিশেধিত (হিন্নুলোখ) পারদ : পল. গদক > পল, এই উভয়ে কজ্জলী করিয়া প্রস্তর পাত্রে রাণিয়া পিণ্ডাকার করিবে, পরে ঐ পিণ্ডোপরি কোন তপ্ত তামপাত্রের চাপ দিয়া কিঞ্চিৎ পপটাকার কবিবে এবং (উহার সহিত > তোলা সোহাগা মিশ্রিত করিয়া) মুধামধ্যে নিবে,শত করত কিঞ্ছিৎ অগ্নিভাপ দিবে। অনস্তর ঐ কজ্জলীর সহিত লৌহ ১ পল, তাম ১ পল, ভেলার মুটী ১ পল, অভ ১ পল, গুগ্ডলু ১ পল ও মৃত ১৬ পল সংযুক্ত করিয়া / ৪ সের ত্রিফলার কাথে (মিলিত ত্রিফলা /২ সের, পাকের জল ১৬ সের, শেষ > ৪ দের) পাক করিবে। শেষ পাকে হরী চকী-চুণ ৪ তোলা, বহেড়াচুণ ৪ তোলা, আম-'লকীচুৰ্ ১২ ভোলা৮ মাধা ওংকেপ দিয়া যথাবিধ পাক সমাপ্ত করিবে। মাত্রা—প্রথ-। মতঃ ১ রতি , পরে বৃদ্ধি করিবে। ঘত ও মধু দিয়া মাড়িয়া নারিকেল জলবা ংগ্রের সহিত প্রাতঃকালে দেবনীয়। লৌহপাত্রে লৌহনও দ্বারা ঔষধ প্রস্তুত করা কর্ত্তব্য। ইহা সেবন করিলে কুট প্রভাত নানারোগ উপশ্মিত **इट्रेश अधि, दल, तौर्गा ଓ आयुः विकि 5 द्या**।

তালকেশ্বরঃ।

বুখাও বিদলাতৈ ল-কন্তাকাঞ্জিকভাবিতন্।
ভালকং তুলাগদ্ধং ভাদদ্ধপারদমন্দিতন্।
ভালকং তুলাগদ্ধং ভাদদ্ধপারদমন্দিতন্।
আগ্রোকং ভাবমেজুদ্ধং চক্রিকাকারতাং গতম্।
বিপচেদ্ধিভিকামধ্যে প্লাশকারমধ্যান্।
ধামান্ দ্বাদশ শীতেহস্মিন্ প্রবোধ্যং রক্তিকাদ্রম্।

হস্তাষ্টাদশ কুঠানি রোমবিধ্বংসনং তথা। দ্বিধং বাতরক্তঞ্চ নাড়ী ছুষ্টব্রণানি চ ॥

হরিতাল ২ মাষা, কুমড়ার রসে, ত্রিফলার জলে, তিলতৈলে, স্বতকুমারীর রসে ও কাঁজিতে ভাবনা দিবে। পরে গন্ধক ২ মাষা ও পারদ ১ মাষা উভরে কজ্জলী করিয়া ঐ কজ্জলীর সহিত উল্লিখিত হরিতাল ২ মাষা মিশ্রিত করিয়া ছাগ্চথ্যে. লেবুব রসে ও স্বতকুমারীর রসে যথাক্রমে তিন দিন ভাবনা দিবে। পরে ওক্ষ ও চক্রাকার করিয়া ইাড়ের নসে পলা-শের ক্ষানের ভিতর স্থাপন করিয়া ১২ প্রহর পাক করিবে। শিতল হুইলে উদ্ধৃত করিয়া লাইবে। মাত্রা—২ রতি। ইহাতে কুইানি নানাবেণ্য প্রশামিত হয়।

ত লকেশ্বরঃ।

দক্ষরণণাজি, রসং দম্বা তালং কংণিতম্।
প্রংপুনশ্চ সংমদ্ধা শুক্ষং পুলাপণাপাধা।
দুচস্থালাং গৃতং ক্ষারং পুলাশপণাপাপাধা।
শুবো জালা প্রদান্তবা দিনর তের মৃতং ভবেৎ ॥
শুক্রণং বসা চ ভাদেই চিন্ত ন ব্যক্ষ্।
দো জাত মৃতং ভালং স্কর্ত্বিশাশনম্॥
প্রত্ব বা ব্রক্ষণ ভাষ্ণক্ষণ গুলুম্পং মুধ্বিদ্ধা।
পুলুং মুদ্বং চাকং মুক্রম্পের ম্পেচ্ছা॥

কিছু হরিতাল চাকুনেপতের রসে ও শরপ্তা পতের রসে প্রংপুনং মাড়িয়া এবং শুদ্ধ করিয়া পলাশকার-পূর্ণ জালীর মধ্যে রাখিয়া পুটপাক দিবে, যেন হরিতালের নিমে ও উপরে উভর দিকেই ঐ ক্ষার থাকে। অহোরাতা পাক করিলে হরিতাল ভত্ম হইবে। যথন উহা শুরুবে হইবে এবং অগ্নিতে নিক্ষেপ করিলে ধুমোলাম হইবে না, তখন জানিবে যে হরিতাল ভত্ম হইয়াছে। ইহা সেবন করিলে স্ব্রিপ্রকার কুন্ত, শীতপিত্ত ও দক্র প্রেলিও ব্যাপের শাস্তি হয়। পথ্য—মহ্রুর, ছোলাও মুনের ভাইল। (মাত্রা—১ যব।)

মহাতালকেশ্বরঃ।

সংমদ্যাং তালকং শুদ্ধং বংশপত্রাগ্যমূচ্চকৈঃ। क्यां धनीत्रः मञ्जाता जिलिनः लाभरत्र पूनः । মুতকম্মান্দ্রবৈভূ রো ভাবয়েচ্চ দিনত্রমুম্। मः यक्तः काञ्चिक्तरेनव प्रश्नासन विमक्तरस् । मःभन्ना हुर्गनित्व त्राम (भोनर्गत भूनः। ঞিদিনং মৰ্দ্দয়িত্বা তু ক'রয়েৎ পটিকাকুতিম।। इति। १ प्रवास्था । १ वर्गाना कार्यक राम উপযাৰস্থালকন্ত কারং দ্রা শরাবকৈ।। পিন ম লেপয়েৎ যত্রাদ্ পরয়েৎ ক্ষারসঞ্গম। পুনা কদাং শরাবেণ লেপয়েৎ তদ্দৃতং ৬তঃ॥ वाजिः नियामभगाष्टः निक्रवालाः अनाभाराः । এবং সিদ্ধেন ভালেন গৰুত্ত্যেন মেলয়েৎ॥ ষয়ে স্থলাং জীৰ্তামং বালুকাহন্বগং পচেৎ ; অরং তালেখরো নাম রসঃ পরু ছল ভঃ ॥ হত্যাই দশ কুঞানি বাতশোণিতনাশন:। রজমওলমতাগং কৃটিত প্রতিত তথা। ব্রুকা বং স্ববজাতিং নাশয়েদ্বিক্সতঃ। **ड**हेलपक नीमर्ल॰ दश का का वक निर्माण हारू। দুটো বারসহস্রক রোগবারণকেশরী।

বংশপন হারতাশ চুন কবিয়া কুমড়াব ভলে ও মৃতকুমারীর রুদে ও দিন করিয়া ভাবনা দিয়া কাঁজি ও অয় দিনি শৃহ মদ্দন করিয়া ভাবন দিয়া কাঁজি ও অয় দিনি শৃহ মদ্দন করিয়া ভাব করিবে, পনে চুণের জল ও পুন্নবার রুদে তিন দিন মদ্দন করিয়া খাড়র জ্ঞায় কনিবে। পরে একটি হাড়ী পলংশের ক্ষার ছারা পূর্ণ করিয়া হরিতালকে ক্ষারের মন্যুগত করিবে এবং শরা ধারা হাড়ী আর্ত ও মৃত্তিকাদি ঘার্ণ লিপ্ত করিয়া ৩২ প্রহর পর্যান্ত পাক করিবে। পশ্চাই ঐ হরিতাল ১ ভাগ, গন্ধক ১ ভাগ ও জারিত তাম ই ভাগ একজ মাড়িয়া বালুক। যন্তে পাক করিবে। তাহা ইইলেই ঔষধ প্রস্তুত ইবৈ। ইহা সেবন করিলে নানাবিধ কুই, বাতরক্ত ও হুইব্রণ প্রভৃতি রোগের ধ্বংস হয়।

মহাতালেখনে। রসঃ। (মহান্তরে)

ভালভাপ্যশিলাস্তং গুদ্ধভ্ৰণদৈশ্বন্।
সমং সংচূৰ্ণহেৎ ধলে স্ভাদিঙ্গপদ্ধন্।
গদাদিগুণলোহক জমানাদেন মন্দ্ৰেং।
ভ্ভো লঘুপুটে পাচাং ৰাক্ষীভং সমুদ্ৰেং।

বিংশদংশং বিষণাত কি গুৰা সর্বং বিচ্ববিধে।
মাহিষাজ্যেন সংখিশং নিকাদ্ধিং ভক্ষায়ং সদা।
মধ্যতিকাৰী গুলাচুৰ্বং কৰ্মনাত্ৰং লিংহদত্ব।
সর্বান কুলান নিহন্তা গুলাহালখনে বিসং।
(মহাতালেখননসে বিংশদংশং বিধ্যাতি স্বাচ্থাপেক্ষা বিংশদংশং বিধ্যাত্যি ।)

হবিতাল, স্বর্ণা ক্ষক, মন্থ্যিল, পারদ, দোহাগার থৈ ও সৈদ্ধা লবণ এই সকল জ্বা সমভাগে মন্ধন কৰিয়া ভাষা সহিত পারদের ছিওণ গদ্ধক এবং স্থাকের ছেওণ লোইচূর্ণ মিশ্রিড কার্বরে। পরে জানার গেরুর রুসে মন্ধন করিয়া ল্যুপটে পাক কার্বরে। সমস্ত চূর্ণের জিশ ভাগা এক ভাগ বিষ ভাষাতে মিশ্রেও করিয়া মাহের লবং (ভারসা মি। অন্তপানে ও মারা পরিমাণে সেবন কার্তে দিবে। উল্পান্ধ স্বন্ধনিন্তা মাহিল কার্বিনা ক্রেডিল মাহিল কার্বিনা ক্রেডিল মাহিল কার্বিনা ক্রিডিল মাহিল কার্বিনা ক্রিডিল স্বাধার স্বাধার ক্রিডিল কার্বিনা স্বাধার হাইল। ক্রিডিলির হার স্বাধার স্বাধার হাইল। ক্রিডিলির হার প্রাধার জ্বনার স্বাধার স্বাধার

ব্রেগ্ররয়ে।

छारेशकः मृतिकार राज्य प्रकार प्रशिक्ष छा। पृष्ठ राज्य शामा । शामा शिकार के विकास के विरामधान । छाल्छ । १९४१ छा। छा। छा। काई ती विकास छान ते के छाल ते दूरिन जाने । भएंड सर्वक्छा कुला ४८०० विश्वी थित लिस्सी

মৃচ্ছত পাদে চলাগ এবং গণক, চিলা, সোমগাজ ও ব্যাবাহীর বাজচুল, গ্রাল্যেক ২২ লাগ, গুড় ২০ জাগ, এই সকল প্রবা "একত্র কারয়া মর্ব সাহত মাড়েয়' ৮ মাঘা পাবিমালে সেবন কারবে। অলুপান—জলপিই পাতালগ্রাড়াব (তিত্যাউ। মূল। ইহাতে স্পাশ্বিভিহানতা ও মন্তর্কুত বিনই হয়।

চন্দ্রানার রসঃ।

ত প্রামাগ্রন্থলা প্রভাগো পদকপ্রত। কাঠোড় খুরিকাক্ষারৈঃ সর্ববেকত সর্ধিয়েং॥ মাষমাত্রাং গুড়াং কুড়া কুষ্ঠরোগে প্রযোজয়েং। দেহগুদ্ধিং পুরা কুড়া স্ববকুঠানি নাশয়েং। এষ চন্দ্রাননো নাম সাক্ষাৎ প্রীতরবোধিতঃ॥ পারদ, অল্ল, চিতা, এক এক ভা**গ, গন্ধক** ও ভাগ, কাঠাডুমুবরৰ আঠাতে মৰ্দ্দন **করিয়া** ১ মধো পার,মত বঁটা করিবে। **ইহাতে** দর্শপ্রকাশ কুঠ বিনষ্ট হয়।

উদ্ধৃত্যস্করঃ।

গৰ্মকেন এবং তামণ দুন্তাগৈ সমুদ্ধারেই। এনগং গণতাগিং আদেয় এক দ্বিতাগিকম্ ॥ শংস্থায়ি বং সকং ব্রিটকৈন্সপ্রণাণতঃ। নাব্যাগারু জন্ম সম্যানুপান্তা নাগেবং ॥ গাল্ডে পুন্দাত ১৮ন বিপুলে মন্ত্রাগ্রায়ায় নাট্টিকবিল গণিয়াসকার্ত্রশ্বিয়ায়া

গধক সংখ্যে ভারিত হান ১০ তোলা, মান্চ ৫ তেলা ও বিধাই তোলা, এই সমুদার চুণ এক এ, নিশ্রত ক্রিয়া ১ রতি পরিমাণে সেবন কর্তিয়ে। অবজা বিবেচনা ক্রিয়া অনুযান ব্যবজ্য ক্রিয়ে। ইংগ্রেবন ক্রিয়ে গ্রুত ও পুটিত সম্প্রকার কুঠ উপশ্যত চইয়া গাকে।

त्र्या व्याम् ।

বংশপথ হবিভাল কুমড়ার জলেও অম দ্বিতে ধ্যাক্রনে ২ ববি বা ৭ বার ভাবনা দ্বা গুকাইয়া চূর্ব করিয়া তণ্ণাকৃতি করিবে। প্রে শ্রাব্ধয়ের মধ্যে স্থাপন করিয়া কুল পত্র বাটিয়া তথ্যা ুশ্রাব্ধয়ের সন্ধিস্থ্যে প্রলেপ দিবে। যে পর্যান্ত নিমন্থ পাত লাল বর্ণ না হয়, তাবৎ অগ্নির জাল দিবে। শীতল হইলে ঔষধ উদ্ধৃত করিয়া লইবে। ইহাতে ঐ হরিতাল মাণিক্যের ক্সায় দীপ্তি-বিশিষ্ট হইবে। এই ঔষধ ২ রতি পরিমাণে মৃত ও মধু সহ সেবা। মহাদেবেব পূজা করিয়া ইহা সেবন করিলে কুন্ধ, বাতরক্তন, ভগন্দর ও উপদংশ প্রভৃতি নানারোগের উপশ্ম হয়।

মাণিক্যো রসঃ।

भसः **ालः भसः भसः निसाग्रान्त** भसार्कक्य। চপলঃ গুদ্ধদীসক ভাত্রসভ্রয়োরজঃ॥ এতেয়াং কোলভাগঞ্চ বটক্ষীরেণ মর্দ্ধিংং। ততো দিনতায়ং যদ্মে নিম্নকাথেন ভাবয়েৎ। গুড়ু চীবালহিন্তাল-বানরানীলকিণ্টিকা:। শোভাঞ্জনমুরাজাজী-নিগু গুইয়মারকম্॥ এষাং শান্মিত, চূর্ণমে**ক** কুতা সরিস্তটে। মুৎপাত্তে কঠিনে কুতা মুদম্বযুতে দৃঢ়ে। এককৌ পাকবিদৈতো নগা: শিথিল ইতলঃ। পচেদবহিতো রাত্রৌ যত্র ৎ সংযতমানস:॥ ত্ৰিজানীহি ভৈষ্ণাং স্ক্ৰুঠবিনাশন্ম। সপিষা মধুনা লৌহ পাত্রে তদ্বভম্দিত্যু॥ विख्या मर्तात् के नार नामनः वलाकन्य । শীতলং স্বসং ভোষং ছয়াং বা পাকশীতলম্ 🛭 আনীতং তৎক্ষণাদাক্ষমপুপানং হুল বহুষ। বাতরক্তং শীতপিতেং ত্রাঞ্চারণাং ভরেছ। জ্বান সর্বান্ বাহরোগান পাণ্ডং কওঞ্চ কামলাম। শ্ৰীমকাহননাথেন নিশ্বিতো বহুবছুতঃ। (কোলভাগং কর্মভাপমিতি রসেল-টীকা।)

হরিতাল > পল (৮ তোলা), গন্ধক > পল, মন:শিলা অর্দ্ধপল (৪ তোলা), পারদ, সীসা, তাম, অভ্র, শৌহচুর্গ, ইহাদের প্রত্যেক ১ ভোলা (রসেক্রকারের মতে (ভালা) পরিমাণে গ্ৰহণ ক রিয়া বটের আঠায় মর্দ্দন করিবে। পরে ৩ দিন নিমের কাথে ভাবনা দিয়া আহপে শুক্ষ করিবে। পরে তাহার সহিত গুলঞ্চ, বালা, হিতাল, আল क्ना, नीन विष्णे, निक्ना, मुतामार्भी, जीता. निमिना ও করবী, ইহাদের প্রত্যেকের চুর্ণ॥• অৰ্দ্ধ ভোলা মিশ্ৰিভ করিয়া একটি কঠিন মৎ-পাত্তের মধ্যে রাখিয়া ঐ পাত্ত ছিন্ন বস্ত্রখণ্ড ও

কর্দম ছারা উত্তমরূপে লেপন করিবে। পাকবিদ্ বৈছ সংযতচিত্ত উলঙ্গ ও শিথিলকেণ

হইয়া রাজিতে কোন নদী বা পুদ্ধরিণীর তীরে

একাকী যাইয়া ভাহা পাক করিবেন। এই

ঔষধ সর্বপ্রকার কুঠ রোগের নাশক। মধু ও

য়তের সহিত ২ রতি প্রমাণ ঔষণ লোহখলে
ও লোহদণ্ডে মন্দন করিয়া সেবন করিতে
দিবে। অমুপান—শীতল সারস জল, অথবা
পাকের পর শাতল আবর্তিত হয়, কিংবা
তৎক্ষণাৎ আনীত ধারোফ ছাগহুয়। ইহাতে
কুঠ, বাতরক্ত, শাতপিত্ত, দারুণ হিক্কা, সর্বপ্রকার জর, পাতু, কামলা ও কণ্ডু প্রভৃতি
রোগ প্রশমিত হয়। ইহা গহনানক্ষের বহু

যারের ঔষধ।

পারিভদ্রস:।

মৃচ্ছিতং পতকং ধাত্রী-ফলং নিম্বন্ত চাহরেং। তুল্যাংশং থদিরকাপৈনিন:মন্দ্যক ভক্ষরেং। নিকৈকং দদ্দকুঠন্নং পারিঙলাব্দরে। রস. ॥

মূচ্ছিত পারদ, আমলকা ও নিম্বকল তুল্য ভাগে লইণা ইহাদিগকে খদিরের কাণে একানে মর্লন করিয়া ৪ মাধা পরিমাণে দেবন করিতে দেবে। ইহাতে দক্ষ ও কুষ্ঠ রোগ বিন্ত হয়।

कुष्ठावित्रमः।

কাঠোড়, স্বরিকাচুর্ণং রক্ষনগুরিকাত্রম্।
প্রভাগং মধুনা লাচং বাহারকং নিহান্ত চ ।
ক্ষরত্বক্ষরমাংসং মাসমাত্রেন সর্বধা।
গলংশুবং পতংকাটং ত্রিটঙ্গং দেবামীর হম্॥
কাঠভুমুরের চুর্ন, বামুনহাটা ও বলাত্রয়
(পীতপুল্পা বলা, খেতবলা ও নাগবলা)
ইহাদিগকে চুর্ন ক্রিয়া মধুনং দেবন করিলে
বাতরক্ত ও গলংকুঠ গ্রন্থাত দর্বা একার কুঠ
বিনষ্ট হয়।

কুন্তনাশনে। রসঃ।
চিরবিৰণত্রপথ্যা শিরীৰ ক বিভী ঠক্ ।
কাঠোড়,স্বিকায়কং মুত্রৈরালোড্য ফেনিতর ॥

কর্মাত্রং পিবেন্ডোগী গোক্তথা সহ টঙ্গণম্। গৈ সংস্থাকপর্যাক্তং সর্ববৃত্তবিনাশনম্॥

কল্পপ্রকের পত্র, হরীতকী, শিরীষ, বিভীতক ও কাঠতুমুরের মূল, এই দকল দ্রব্যকে
গোমুত্রের সহিত মর্দন করিয়া ২ তোলা পরিমাণে দেবন করিবে। কিংবা দ্রাক্ষা ও সোহাগা
একত্র করিয়া ঐ পরিমাণে দেবন কবিবে,
ইহাতেও সর্কপ্রকার কুঠ বিনষ্ট ইইবে।

গলংকুষ্ঠারিরসঃ।

রসো বলিন্তান্তময়ঃ পুরে।গাঁঃ
কিলাজতু ভাছিবভিদ্কোগ্রে।
সর্বাঞ্চ ভুলাং গগনং করঞ্জগাঁজং ভুলা ভাগচেতু ইরঞ্জ।
স মর্দ্ধা গুলে
ব্যবহুঞ্জি নিহন্তাবভাশ।
কুঠং কিলাসং হুপি ব ভরকং
জলোদরং বাখ বিবন্ধমূল্য।
বিশীব্দগ্রুলনা সিকোহপি
ভবেং প্রসাদাং স্মার্কুলাম্রিঃ।

(গলংকুটারিরসে বলিগন্ধকঃ, গগনমত্রং, বিষ-তিলুকং কুচিলা ইঙি খ্যা ঠা। রসংদিবচাতানি সম-ভাগানি, গগনং করঞ্জনীজক রসাপেক্ষা চতুগুণিং, মধু-ভুতে বটাক্ষণযোগ্যে দেয়ে।)

পারদ, গন্ধক, থাম, লৌহ, গুগ্গুল, চিতা, শিলাঙত, কুঁচিলা ও বচ এই সকল দ্ব্যু সমভাগ, অল ও করঞ্জবীজ পাঞ্চের চতু-গুণ। মরু ও মতের সহিত উত্তমরূপে মন্দন করিয়াবটা প্রস্তুত করিবে। পরিমাণ ৬ রতি। এই ঔষণ সেবনে কুছ, কিলান, বাতরক্ত, জলোদর ও মলবদ্ধ গ প্রভৃতি বিনষ্ট এবং শরী-রের কান্তি বৃদ্ধিত হয়।

कृष्ठकानानला तमः।

গন্ধং রসং টক্ষণতামলৌহং ভশ্মীকৃতং মাগধিকাসমে এম । পঞ্চাক্ষনিষেদ ফলত্রিকেণ বিভাবিতং রংগ্রতরোত্তবৈব ॥ নিবোজায়েগ্রকক্যুগ্যমানং কুঠেবু সর্কেবু চ রোগসংঘে ॥ (পধাক্ষনিধৈরিতি নিম্ম্প প্রসুপ্দিলমূলবন্দলৈ: ।) গন্ধক, পাবদ, সোহাগা, তাত্র, লৌহও পিপুল, এই দকল দ্রব্যে চুর্ণ পঞ্চাঙ্গ নিমের (নিমের পত্র, পুষ্প, ফল, মূল ও ছাল) এবং ত্রিফলার ও সোন্দালের কালে পৃথক্ পৃথক্ ভাবনা দিয়া ৬ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহাতে সকল প্রকার কুষ্ঠবোগ উপশ্মিত হয়।

খিত্রহরে: লেপঃ।

দৈদ্দাবং রবিত্রফান পেব্য়িছাথ মণ্ডলম্। প্রক্রোয় তু প্রদেশেহিং বিত্রুক্তিবিশ্নাঃ ॥

সৈদ্ধবলনণ, আকন্দ আঠাতে পেষণ কবিবে। পরে শিত্রস্থান অন্ধর্মার অই অই চিরিয়া এই ঔষ্পের প্রেলেপ দিলে শিত্র**কুঠ** বিনষ্ট হয়।

কুষ্ঠশিত্রনাশনে লেপঃ।

মূপে ৰেতে চ সংজাতে কুব্যাদিমাং প্রতিজ্ঞিয়,মূ। গন্ধকং চিত্রকাসীসং হারতালং ফলগ্রয়মূ। মূপে লিম্পেন্ধিনৈকেন বর্গন'লে। ভবিষ্যতি॥

শ্বিত্র কুঠে মুখ শ্বেতবর্গ ছইলে এর প্রতিকার করিবে;—সঞ্জক, চিতা, হীরাকদ, হরিভাল ও ত্রিফান, এই সকল দ্রবা মান্দিত
করিয়া প্রত্বেপ দিবে, তাহাতে এক দিনেই
শ্বিত্রনাশ হইয়া সহজ শ্রীরের গুয়েবর্ণ হইবে।

খেতারিঃ।

ক্ষুক্তং সমং গঝং কিললং ভূকণাগুলান্। ভলাতকং তিলং কুলং নিষ্বাজং সমং সমস্। মন্ত্ৰন্ত্তকাবৈ শোসাং পেষাং খুনংখুনা। ভ্ৰাং কুষাৰে তিসপ্তাহং রসং খেতারিকো ভবেৰ। মধ্যক্ষাব্যাক্ত গাদেৰ খেতং বিনাশয়েই।

পাবদ, গন্ধক, ত্রিকলা, ভূপরাজ, হাকুচবীজ, ভেলার মুটা, ক্রঞাতন ও নিমবীজ, সমুদায় সমভাগে ভূপরাজের বলে তিন সপ্তাহ
ক্রমাগত পেহিত ও তাহা গুল্ক করিয়া > মাষা
পরিমাণে বটিকা প্রস্তুত করিবে। মরুও মতের
সাহিত সেবনীয়া ইহাতে ধ্বলবোগ নই ইয়া

তিক্তক-ঘূত্য।

ত্রিফলাধিনিশাবাসা-বাসপণ্টকুলকান্।
তায়ন্তীকটুকানিখান্ প্রত্যেকং দিপলোকিচান্॥
কাপয়িত্বা জলম্পোনে পাদশেষের তেন তু।
যুতপ্রস্থং পচেৎ ককৈঃ পিপ্পলীযনচন্টনঃ॥
তায়ন্তীশক্রভূনিষৈত্তং পীতং তিজকং যুত্র।
হস্তি কৃঠজনার্শাংসি স্বয়ন্থং গ্রহণাধ্দম।
পাশুরোগং বিসপক ক্রীবানাম্পি শক্ততে॥

জিফলা, হবিদো, দারহবিদ্রা, বাসক, হরালভা, কেতপাপড়া, পল্ডা, বল চুমুর, কট্কী, নমছাল প্রত্যেক ২ পল, পাকার্থ জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। মৃত ১৪ সের। ককদেরা গণা—ি দিপুল মৃত', রভাইন্দন, বলাছুমুর, ইন্দ্রন ও চিবভা। নথাবিধানে । মৃত পাক কবিরা সেই মৃত সেবন করিলে । কুছ, জব, এইনা পড়াত নানাবোগ। প্রশমত হয়।

তিক্রষ্পলবং মু । মৃ

নিশ্বপটোলং দানে ছিলালভাং ছিজনে ছিলাং তিকলান্। কুষাদ্দ্ধপলাংশান্ পপাটকং ভাষনগোক। সলিলাচকসিদ্ধানাং রসেইছে গিজিতে কিলেও পূরে। চন্দ্রনিকাতি ভিজকমাগ্রিকালগোক। মুন্তং বংসক্ষীজং কথীকুতা দিকাবিকাল ভাগান্। নৰস্পিষ্ট ষট্পল্যেতং ভিজকং গুডং প্রেম। কুঠজ্বপ্রস্থাশোগ্যনাগান্ত্রান্যখণ্যার। প্রামানীস্প্রিড্ডাক্ড্রিনগুড্রিং সিন্ধা, তেন্ন।

ন্তন ঘত ৬ পল। কাথার্থ—নিমছাল, পল্ডা, দাকহরিদা, ছালত, কট্কা, ছিফলা, কেতপাপড়া ও বলাছুলু। প্রত্যেক ৪ তোলা, জল ১৬ সের, শেষ ১২ সের। ব লাগ—রত-চন্দন, চির্ভা, পিপুল, বলাছুলুর, মুতা, ইজ্রব প্রত্যেক ১ এক ভোলা। এই সমস্ত ম্পাবিধি পাক করিয়। উপ্যক্ত মাধার পান করিবে। ইছাতে কুট, জন, জলা, ভার্ন, গালু, পালু, পালু, পালু, বাধ্ব, কুটু, মদরোস ও গলগও রোগ নিবারিত হয়।

পঞ্চিক্ত-ঘূত্য।

নিষং পটোলং ব্যাত্মীঞ্ গুড়ুটীং বাসকং তথা।
ক্যান্দশপলান্ ভাগানেকৈকস্ত স্ববৃট্টি চান্॥
কন্যান্দশপলান্ ভাগানেকৈকস্ত স্ববৃটি চান্॥
কন্যান্দ্ৰ বিশ্বকাশ ক্ষান্ত লাখ্য
লক্ষ্যিকং পাংহং স্পিঃ কুইবিনাশনম্।
ভাশিতিং বাতজান্ গোগাশ্যকাবিংশক্র পৈতিকান্॥
বিংশতিং হৈশ্যকাংশ্যৈর পশনাদেশপক্ষিত।
ক্রিপ্রতিং জিমীনশং পঞ্চ কাদাংশ্য নাশহেং॥

স্থাত /৪ সেটা। কাথার্থ— নিম্ছাল, পটোল-পত্র কটকারী, গুলঞ্জে ধাসকছাল প্রত্যোক ১০ পাল, পাকার্থ—জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের, বিভার্থ— মিলেড জিকলা /১ সেব। এটা স্থাপাল ব্যু, জুইবণ, কিন্তি ও অবঃ প্রত্যাল্যাক বাহিত্য।

নহাতি ক্রবং য়তম্।

সহজ্ঞান প্রতিবেশং শলানে । তিওলে হিণাং পাঠান।
মৃত্যুনীন ক্রিন্দাং প্রেলি চুম্বর্কাপ্রিক্ষা।
ধর্যাসং সচন্দ্রন্থত লো পরকং রক্ত তা ১।
ফ্রন্থাং সনিশালাং শতাবলাং শারিনে সেন্ডে।
বংসকলারং বাসাং মুক্রাম্কুরাং কিরাতিজ্ঞিন।
কথান ব্যালাত্রান্ গঠাহেং জায়্যাগাঞ্জা।
কথার চুড়াগো এলার্ডির লাম্যাল্য ন্দলামান।
দিশুলা ছুডাং প্রেলিন্ডেং সপি, প্রেরেং নিদ্ধা।
বুটানি রস্তাপিতা প্রেলিন্তানাং নি রজাগাহান।
বাস্থাম্য বিজেন্ সালা্যাল্য দিলান্য।
ক্রোজিন্ প্রিলিন্তান্তির লাভ্রান্তির স্বালিত স্বালিন্ত ক্রিন্তান ।
ক্রোজিতা পিড়ক্মিস্পর্থ গ্রেলিন্ন।
ক্রোজিত প্রজ্ঞান ক্রিন্নান্য নিলিন্নান্ন নিলিন্নান্ন নিলিন্নান্ন নিলিন্নান্ন নিলিন্নান্ন নিলিন্নান্ন নিলিন্নান্ন নিলিন্তান্ন নিলিন্নান্ন নিলি

ছাতিমের ছাল, আত্হচ, মোনাল, কট্কী, আকনাদি, মুতা, বেণার মূল, বিষ্ণা, (হরীতকী, আমলকা ও বহেড়া), পটোল নিম্ব ক্ষেত্রপাপড়া, ত্রালভা, রক্তচন্দন, পিপ্লনী, গঙ্গিপপ্লনী, পদকান্ত, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, বচ, রাণালন্দা, শতমূলী, শ্রানালতা, অনন্তমূল, ইন্দ্রব, বাসক, মুকা, গুলক, চিরতা, মৃষ্টিমধু ও বলাভুমুর, এই সকল দ্রেরর উত্তমরূপ

কৃটিত কক্ষ মতের চতুর্থাংশ, জল মতের আটগুণ এবং আমলকীর রস মতের বিগুণ; এই সমস্ত জবোর সহিত উপযুক্ত পরিমাণ মূত পাক করিবে। রোগির বলাদি বিবেচনা পূর্বক এই মৃত উপযুক্তমাতার সেবন করিতে দিবে। ইহা মারা কুঠ, রক্তপিত্ত, প্রবল বক্তবাহী অর্শাং, বিসর্প, অয়পিত্ত, বাতরক্ত, পাণ্ণ বোগ, বিশ্লোট, পামা, উন্মাদ, কামলাং, জন, কণ্ড হাদোগ, গুলা, পিড়কা, অস্থানর ও গণ্ড-মালা প্রভৃতি রোগ সভাই বিনাই হয়।

মহাথদিরকং য়ত্য।

গদিনতা তুলাং পদা নিংশপান হাপেলে
তুলান্ধান সাধা এবিতে করিপারির বিভাগ ॥
পার্লিটে কুটির দেশের ব্যাদিনিক করে।
হরিছে কুটার বিশ্ব ওচ্চা কিন্দান বিশ্ব ।
মন্তচ্ছদশ্চ সংক্রুতা দশ্চেপ্রিক বার্নিপান করিব।
করিছারাক্ষ ভুলানিশং স্পিনিক টিকং প্রেই ।
মন্ত্রিভাকক কলৈ করে ব্যাদিনিক বিশ্ব ।
মন্ত্রিভাকক কলৈ করিক বিশ্বিক বিশ্বিক ।
মন্ত্রিভাকিনিকিনিত্যতা প্রক্রিক বিশ্বিক ।
মন্ত্রিভাকিনিকিনিত্যতা প্রক্রিক বিশ্বিক ।
মন্ত্রিভাকিনিকিনিত্যতা প্রক্রিক বিশ্বিক ।
মন্ত্রিভাকিনিকিনিত্যতা প্রক্রিক বিশ্বিক ।

গবায়ত ১৬ সের, আমলকীব রস ১৬
সের। কাথার্থ—খনিরকার্ঠ ৬২া০ সাতে বাঘটি
সের, শিশু ও অসমর্ক্রের ছাল মিলিত ২৫
সের, ডহরকরঞ্জের ছাল, নিম্ছাল, বেতস,
ক্ষেত্রপ পড়া, কুড্চি, বাসক, বিড্লা, তেইড়া
ও ছাতিমছাল প্রত্যেক দ্রবা, ১৮০ সের।
জল ৬৪০ সের, শেষ ৮০ সের , মহাতিক্রকন্
য়তোক্ত কক্ষদ্রব্য ইহাতে প্রক্ষেপ দিয়া পাক
করিবে। যথা—ছাতিম, আতইচ সোন্দাল,
কট্কী, আক্নাদি, মৃতা, বেণার মৃল, ত্রিগলা,
পল্তা, নিম্ছাল, ক্ষেত্রপাপ্ডা, ছরালতা,
রক্তচন্দন, পিপুল, গজাপপুল, পল্কান্ত, হরিদ্রা,
দাক্রহিদ্রা, বচ, রাখালশণা, শ্রামালতা, শতমৃশী, অনক্রম্ব, ইন্তম্ব, বাসক, মুর্বা, গুলক,

চিরতা, যষ্টিমধু ও বলাডুমুর প্রত্যেক ৮ তোলা। এই গ্রত নগাবিধানে পাক করিয়া পান অথবা অভ্যপ্তন করিলে সর্কবিধ কুষ্ঠ রোগ নিধারিত হয়।

গোসরাজা-মৃত্যু।

চতুপালং সেংস্কাজা, গদিবস্তা প্রং ৩পা।
পটোলন্থে ভিসতা ভারসাধা হ্রালভা ॥
ককার্থি কটুককাপি কার্যকান্ হলপেরিভান্॥
পল্বয়ং কৌনিকস্তা ভল্লস্থাত অসাপ্রেং ॥
নিদ্ধং সাপ্রিদং বিহার হৃত্যালয় ইবানল্য্।
অষ্টাদ্যালাং বুইন্নাল প্রমাণ্ডেন্যেম্য্যা।
সোলাজায়তং নামানামাধ্যে ক্রাণা পুরা।
নামাজায়তং নামানামাধ্যে ক্রাণা পুরা।
নামাজায়তং নামানামাধ্যে ক্রাণা পুরা।

সোমবাজা ৪ পল, গ্রেম এক পল এবং প্টোরমূল, এফবাং, ব্যাভূমাং, ভগালভা ও কট্কী প্রেরক স হোলা। শোষিত গুল গুলু ভূই পর। এই সকল এবেরে ককোর সহিত ব্যাবেশানে মৃত্ত পাক করিলা সেই সূত্র পান করিশে অস্তানশ প্রকার কুট ও সিত্রাগো প্রভাত প্রশ্নিত হয়।

তৃণকতৈলম্।

মাজি সার্যাণ নিশাচন কর্মিন গ্রপ্থানবিচ। ভূগৰাজান্ধ নিজাং ১৩০১ পুঠভূবং বিবাস ।

মাঞ্চী, কুড় হারজা, চাকুন্দ ও সোন্দাল-পত্র, ইতালো করে এবং গজতুলো স্বরুদে ধুগাবিবানে তিল পাত করিয়া সেই তৈল মন্দ্র কর্মল কুইনোগ বিন্ত ইয়া

মহাতৃণকতৈলম্।

ত্রিদা তেজন দাব ব্যমণরফ্চিত্রকণ । সভাচ্চ্চ্চ নিজন্বক্ করাজী ব'লকং নপা ॥ কুঠনেড্গলাবাজং লাজলা গণিকারিকা। জাতাপত্রঞ্চ দাবনী চ হারতালং সন্ধানা ॥ ক্লিঙ্কং তিলপারক অর্কান্ত্রফ গুলাগুলা। ওড়বত্ব মুরিচবৈব বঙ্গুনং এছিপণিকন্॥ সর্জ্বপর্ণাশপদিরং বিড়ক্সং পির্মনী বচা।
ঘনরেবসূতারটী কেশরং ধ্যামকং বিষম্।
বিষক্টকলমঞ্জিটা বোলং তৃষীফলং তথা।
মুহীশূলাকরোঃ পত্রং বাগুজ বীজমাংসিকে।
এলা জোভিয়তীমূলং শিরীবো গোময়াজসঃ।
চন্দনে কুতনিগু খী বিশালা ম্রিকাছরম্।
বংসাহকণী ব্রম্মী চ শ্রাপ্তং চন্দকক্টালম্।
এতঃ কক্ষৈঃ পচেৎ ভৈলং তৃণক্ষরসক্রবম্।
সর্ক্রগ্রেদারহরণং মহাতৃণকসংক্রিতম্।

ছবিদ্রা, ত্রিফলা, দেবদারু, করবী, চিতা, ছাতিম, নিমছাল, করস্ত, ডহরকরঞ্জ, বালা, नशी, कूफ, ठाकूरकरीय, जेन्लाजना, शन-য়ারি, জাতীপত্র, দারুহহিন্দা, হরিতাল, মন:-শিলা, ইন্দ্রব, ভিলপত্র, আকলমাঠা, গুগ্-গুলু, দারুচিনি, মহিচ, কুমুম, গেঁটেলা, ধুনা, खनती, चिन्तकांहे, विस्त्र, शिक्षती, वह, मूछा, রেণুক, গুলঞ, ষষ্টিমধু, নাগকেশর, গন্ধতৃণ, বিষ ভাঁঠ, কট্ফল, মঞ্জিঠা, গন্ধবোল, ভিত-লাউবীজ, সীজপত্র, সোন্দানপত্র, সোমরাজী-বীজ, জটামাংসী, এলাইচ, লভাফট্কীমূল, শিরীষ্টাল, গোম্মরস, রক্তচনন, প্রেতচনন, কড়, নিসিন্দা, রাখালগণা, মল্লিকা, বনসল্লিকা, क्रयंदर्गमान, दकी, ন্বনীতথোটা ও চম্পককলিকা, এই সকল দ্বোর করে ও গন্ধতৃণের স্বরুসে যথাবিধি তৈল পাক করিবে। (महे रिड्न बर्फरन मर्क्स श्रकात उग्रहान निवी-রিত হইয়া থাকে।

বজ্রকতৈলম্।

সপ্তপ্ৰিরঞ্জার্ক-মালতীকরবীরজম্।
মূলং সুহাশিরীনাভ্যাং ডিএকান্দোতয়োরপি ॥
করঞ্জবীজং ত্রিকলাং ত্রিকট্ং রঞ্জনীব্দম্।
সিদ্ধার্থকং হিড়েক্ক প্রপুমাড়ক সংহরেং ॥
মূত্রপিষ্টেঃ পচেৎ তৈলখেজিঃ কুঠবিনাশনম্।
অভ্যান্ধার্ম বক্লকং নাম:নাড়ীছট্রপাণ হন্ ॥
(তৈলমত্র সার্ধপন্। অংক্ষোভা বেতার্কম্লমিতি
কেচিদিতি শিবদাসঃ।)

ছাতিম, ভহরকরঞ্জ, আঞ্চল, মাণ্ডী, ক্রুরবীর মূল, সিক্তমূল, শিরীষমূল, চিতামূল,

হাপরমালী (মতান্তরে শ্বেত আকলমূল), ডহরকরঞ্জবীজ, ত্রিফলা, ত্রিকটু, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, শ্বেতসর্বপ, বিভ্ঙ্গ ও চাকুলা, এই সকল দ্রব্য গোমৃত্রে পেষণ করিয়া সেই পেষিত কল্প সহ সার্যপ তৈল পাক করিবে। এই বজ্ঞক নামক তৈল নালী ও ছুইক্ষত নিবারক।

করবীরাদ্যতৈলয়

ষ্টেকরবীরকরসো গোমুকং চিত্রকং বিড়ঙ্গঞ্চ। কুষ্টেষ্ট্রেলযোগঃ সিন্ধোহয়ং সম্মতো ভিষঞ্চামু॥

পেতকরবীর মূলের রস ও গোমুত্র মিলিত, তৈলের চতুগুল। কলার্থ—চিতা এবং বিড্লা, তৈলের চতুগাংশ। এই সকল দ্রুরোর সহিত তৈল পাক করিবে। ইহা সকল কুষ্ঠেই প্রযোজ্য।

সিন্দুরাদ্যতৈ ।

সিন্দুরার্দ্রপলং পিষ্ট্রা জীরকন্ত পলং তথা।
কটুটেলং পচেন্দ্রালীং সজ্যঃ পামাইরং পরমু॥
(বুন্দে তু কটুটেলং পচেনাভাং সজ্ঞঃ পামাইরং
পরমিতি পচাতে। তন্মতে বৃদ্ধবৈজ্ঞ গ্রহারাদেবাইপলং প্রাক্ষিতি শিবদাসঃ।)

সিন্দ্র ৪ ভোলা ও জীরা ৮ ভোলা পেষণ করিয়া, সেই কল্পের সহিত /১ সের কটুটেতল পাক করিবে। সেই তৈল পামা রোগের উৎক্ষয় ঔষধ।

মহাসিন্দুরাদ্যতৈলম্।

সিন্ত্রং চন্দনং নাংসাং হিড্জং রজনীব্যন্।
প্রিয়ন্থ পদ্মকং কুঠং মঞ্জিঠাং গদিরং বচান্।
জাত্যকত্রিবৃত্যনিম্ব-করঞ্জং বিষমেব চ।
কৃষ্ণবেত্রকলোপ্রক্ষ প্রপুশ্লাভৃক্ষ সংহরেও।
প্রক্ষপিষ্টানি সর্কাণি যেণজন্তেও তৈজনাত্রয়া।
অভ্যক্তের প্রযুক্তীত সর্ককুঠবিনাশনন্।
গামাবিচচ্চিকাক্ড্-বীসপাদিবিনাশনন্।
রক্তপিতেঃখিতান্ হতি রোগানেবংবিধান্ বহুন্।

দিন্ব, রক্তচন্দন, জটামাংসী, বিভঙ্গ, হিন্তা, দাকহরি চা, প্রিয়ন্ত্, পদা দাঠ, কুড়, মঞ্জিঠা, খনিরকাঠ, বচ, জাতীপত্র, আকন্দণত্র, তেউড়ী, নিমছাল, তহর দরক্তবীস, বিব, ক্ষেবেজ, লোগ ও চাকুন্দে ইহাদের কন্ধের সহিত তৈল পাক করিয়া, সেই তৈল মর্দন করিলে সর্ব্ব প্রকার কুঠ, পামা, বিচ র্চ্চ চা, কণ্ড, বীসর্প এবং রক্তাপিত জনিত রোগদমূহ প্রশামত হয়।

ভাকুতৈলম্ ৷

অকন্দীরং অুহান্টারং ভূঙ্গন প্রধােজনন।

জবং জন্মারগােন্ত্রং প্রভাবং পল্বংশ্ তিং॥
ভিলতৈলাং পলং কিংশং সাধ্যমকত পাচয়েং।
ভৈলাবশেষমুদ্রামা তত্র চুর্ণমিদং কিংপেং॥
কাঞ্চনী ধা তকীপুশ্পং মঞ্জিঠা চ শতাংবরী।
গন্ধকং পঞ্চলবাং বিনিশা বংসনাভক্ষ।
গ্রিতি চার্দ্রপলং বােজামেকীকৃত্য বিমন্দ্রেং।
মুশ্রস্থাকাক্তি চালি ভাততেলং নিহত্যলা।

তিন হৈল ৩০ পল (/৬/০)। আক-নের আঠা, মনদার আঠা, ভীমরাজরস, ধুত্যাপাতার জাগীর রুস, লেবুণ রস, গোম ব शहान ٠ ڊ 491 যথাবিশৰে এই তেল পাক করিয়া পশ্চালিখত জবেরে চুণ প্রত্যেক ৪ তোলা taca 1 প্রক্ষেপ यथा-श्रवकोती. **F**11 মঞ্জিঠা, শতমুনী, গল্পক, পঞ্চলবণ, হবিদ্ৰা, माक्रहतिसा ७ वरमनाङ्गिष्य । अहे देखन मन्दरन মশ্বস্থানজাত সর্মপ্র কার কুট নিবারিত হয়।

আদিত্যপাকতৈলম।

मिक्कि जिल्लालाका-निशाशनानगक्षरेकः। हु विटेटेखनमाहिना-भाकः भामद्रवः भतम् ॥

ম ঞ্জিটা, ত্রিফলা, লাক্ষা, হিন্দ্রা, মনঃশিলা, হরিতাল ও গদ্ধক, এই সকল দ্রব্যের
কল্প এবং তৈল ও তৈলদম জল একতা মিশ্রিত
করিয়া স্থাতাপে পাক করিবে। যথন ধল

শোষিত হইবে, তথনই জানিবে, তৈলপাক দিক হইরাছে। এই তৈল পামা রোগের শেষ ঔষধ।

দুকাগতেলম্।

সরসেন চ দুকারো: পচেৎ হৈলং চতুগুণ্ম। কচ্ছ,বিচচিকাপামা অভ্যঙ্গাদের নাশরেৎ॥ দুকাতৈলে চতুগুণং যথা জাং তথা দুর্কাস্বসেন পঠেদিতি শিবদাম:।

চতুও ণ দুর্লার স্বরণের সহিত যথাবিণি তৈল পাক করিয়া মাখিলে কচ্ছু, বিচর্চিক। ও পামানট হয়।

অৰ্কতৈলম্।

অকপত্রমে পকং হরিদ্রাকশ্বসংযুত্য । নাশয়েং সংবপং তৈলং পামাকচ্ছ/বিচ্চিকাং॥

আকন্দপাতার রদে এবং হরিন্তার কল্পে সর্বপটতে পাক করিয়া, তাহা লাগাইলে পানা, কচ্ছ, ও বিচ্চিচ্ছা নই হয়।

অক্ষন,শিলাতৈক্য।

অক ব্যৱসে প্ৰং কটুতিলং নিশাযুত্য। মন শিলাযুতং বাপি পাষাকভালিনাশনমু॥

উত্তমরূপে কুটিত হরিজার কল্প, অথবা মনঃশিলার কল্প এবং আকলপাতার চতুগুণ রস, ইছানের সহিত যথাবিধে কটুতৈশ পাক করিবে। এই তৈল পামা কণ্ডাদি বিনাশক।

গণ্ডারিকান্তং তৈলম্।

গঙাবিকঃচিত্রক্ষাক্রণক-কৃষ্ঠদুস্কর্প্রবণ্ডিস্ট্রই। এডলং পচেরওলক্ষ্দুদুদুক্তর্ণাক,কিটিনাপ্রারি ॥

দিছের কীর, আকলের আঠা, চিতা, ভূঙ্গরাজ, কুড়, সোনামূলের ছাল ও দৈশ্বর লবণ এই দকল দ্রব্যেব কুটিত কল্প এবং গোমূল দহ তৈলপাক করিয়া, অভ্যাকে প্রায়োগ কহিলে, মণ্ডল কুছ, দক্ষ, ছুষ্টরণ, মর্মান করিতে ছুইবে। এই তৈল মর্দ্ধনে নানাবিদ ব্রণ ও কিটিম রোগ নিবাবিত হয়।

শেতকরণীরাগ্য-তৈল্য।

খেতকরবীরমূলং বিষাংশদাধিতং গোমুত্তে। চম্মদল্মিগ্রপামাণিখোট্ডিফিমিকিটিনজিং তৈলম ॥

তিলতৈল /৪ সের। গোমূত ১৬ সের। কল্ল-শেতকরবীর মূল ৪ পান, বিষ ৪ পাল। এই তৈল মঞ্জনে চক্ষ্যন, সিমা, পানা ও বিক্লোট প্রভৃতি পোগ নই হয়।

কৃষ্ণ গণ-তৈলম্।

মৃত্যু কুশংসপথ শিরপেচছারবজ্ঞিতম। অন্তর্মকৃতং ভন্ম বাগুলাতেগনিভিত্য। এতেন মুদ্ধান দেব গলংগুটং বিষ্ণতি॥

্চ ক্ষেদ্পের মন্তক, অন্ত ও পুছে পরি-ভাগি কান্যা, অবংশস্ট অংশ অন্তর নে ভন্ম করিয়া, সেই ভন্ম পোমরাজী তৈলোন সংহত মি.শ্রত কলত ভল্লারা মজন কংশলে গালত কুঠ প্রাস্থি প্রশামত হয়।

কুষ্ঠরাধনতৈল্য ।

প্তকং গৰ্পকং বৃঠং স্থাগ্ৰণ চিত্ৰাক্ষ্।
সিন্দুর্গ রসেংশক হারতাল্যবংগ্রা।
আর্থ্যক্ত বাজানি ভার্ণশেষ মন্থানি।
অভ্যেকং কর্বনেথেয়াং বৃট্টেলং প্লাষ্টক্ষ্।
সাধ্যমে স্থাতাপেন সক্তুর্গনিশ্ন্।
আন্ধাজ্যরং ক্তুং মাংসবৃদ্ধিং ভ্রন্পর্যা।
বিচচিকাক পামানং বাত্রভং ফ্লাক্ণ্যা।
গঞ্জারক তথে ভানং মাণ্ডেন্ যক্ত ক্ল্ণাং ।
ক্রাক্সনালেদং সাব্যক্রবং প্রাক্ষ্যা

কটুতৈল /১ সের। কল্বার্থ-পারদ, গন্ধক (উভয় কজ্লাী কার্রা), কুড়, ছাত্য-ছাল, চিতামূল, মেটে দিলুর, রন্থন, হরিতাল, সোমরাজীবীজ, সোন্দালবীজ, জারিত তাম শুমনছাল প্রত্যেক ২ তোলা। রৌজে পাক করিতে ইইবে। এই তৈল মর্দ্দনে নানাবিধ কুট, মাংসবৃদ্ধি, ভংলার, বিচর্চিকা, পামা ও বাত ক্ত ওড়তি যোগ নষ্ঠ ইয়। ইহাতে ক্ষত্তান শুদ্ধ ইইয়া পুনর্বারে স্বাভাবিক বর্ণ প্রাপ্ত হয়।

কুষ্ঠকালানলতৈলগু।

প্রত গ্রহ নিশা তালং কাজিকৈম দিয়ে দিনম্।

হানপ্রপ্রতি তাং তৈলা জাং মাল্যেদ্ধঃ॥

ক্রিতে পাতে পাতে তৈলা গুহায়া লেপয়েব ততঃ।

বুহলানং বিশোষণ সর্ববুতং হরতালম্।

হদং কালানলং তৈলং বাতকতে মহৌষধন্।

(এবাং সমং কাজিকং, সদেবাং দ্বিপ্তণং তিলতৈল

বজাং বাবে সালান্য সংশাষ্ট বিশ্বাহ। তাল

তেলাজাং সন্দাশিক্ষা আলায়িরা স্বাবি তেলং দ্বাধ্তিং তেলেম্বং পাতে গুহায়াং। কৃত্যানি দ্বাধ্।

সিদ্ধান্তংগ্রেম্বা

পাবদ, গন্ধক, মন্চাল ও ইনিতাল প্রত্যেক
থক তেলি। এই সবল দ্রব্য ৪ তেলা
কাজিতে উত্তমনপে পেষণ করিয়া ভদ্ধার বন্ধ
বন্ধ লিপ্ত করিবে। পরে উহা গুকাইয়া, বাতি
প্রত্য করত তাহাতে তৈল মাধাইবে। পরে
সাংঘাল ঘালা প বাতি ববিয়া প্রজ্ঞানত
কালবে এবং বাতির উপাবভাগে মধ্যে মনে
তেলা দিবে। তেলো পার্মাণ সমুদায়ে এক
পোয়া। বাতির নিয়ে একটা পাত্র রাখিবে,
সেই পাতের উপর বাতি হইতে যে সকল
তৈলবিদ্ পতিত হইবে, তল্পারা কুছন্থান
লেপন করিবে। ইহাতে সক্ষ্পার কুছ নাই
হয়। ইহা বাতকুত্বের উৎক্রই ফলদাগক ঔষ্ধ।

বিষ্ঠেলম।

নওনালং হরিছে ছে অকং তগর্মেব চ। করবারং বচা কুট্নাম্পোতা রক্তচন্দ্রন্ম। মালতা দিক্ষুবারঞ্চ মঞ্জিষ্ঠা সপ্তপর্শক্ষ্। এষামর্দ্ধপলান্ ভাগান্ বিষ্ঠাপি পলং ভবেৎ। চতুপ্ত গে গবাং মুত্রে তৈলপ্রস্থাবিচর্চিকাঃ। কণ্ডুকচ্ছ, বিকারান্চ যে এণা বিষদ্ধিতা:।
তে সর্কে নাশমারান্তি তম: প্র্যোদরে বধা।
বিষতৈলমিদং নামা সর্কাএণবিশোধনম্।

কটুতৈল /৪ দের। গোমূত্র ১৬ দের। ক্ষেত্র ১৬ দের। ক্ষেত্র — ভহরকরঞ্জবীজ, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, আকল্ম আঠা, তগরপাতকা, করবীর মূল, বচ, কুড়, হাপরমালী, রক্তচল্মন, মালতীপত্র, নিদিল্লাপত্র, মঞ্জিটা, হাতিন মূলের হাল প্রত্যেক ৪ তোলা; বিষ ৮ ভোলা। যথাবিধি পাক করিয়া এই ভৈল মর্দ্দন করিলে নানাবিধ কুষ্ঠ ও বিহদুষিত সর্বপ্রকার এণ বিনষ্ঠ হয়।

সোমরাজ।তৈলম্।

সোমরাজী হরিছে বে সর্বপাঃ কৃথমেব চ।
করস্তৈত্বজালীতং পত্রাপাঃরেখধন্ত চ॥
বিপচেৎ সার্বপং তৈলং নাড়ীছপ্তরণাপহম্।
অনোক্ত প্রশাস্তি কৃষ্ঠ স্পন্তীদশৈব তু॥
নালিকা পিড়কা বাসা গন্তীরং বাতশোণিত্য।
ক্তুক্চ,প্রশমনং দক্ষপামানিবাঃগম্॥

কটুতৈল /৪ দের। জল >৬ দের।
করার্থ—সোমরাজী বীজ, হরিজা, দারুহরিজা,
খেতসর্বপ, কুড়, ডহরকরঞ্জ বীজ, চাকুন্দেবীজ,
সোন্দালপত্র মিলিত /> সের। এই তৈল
মর্দনে অইার্শবিশ কুড়, নালী ঘ্, পিড়কা ও
বাতরক্ত প্রভতি রোগ নই হয়।

ব্ৰহৎ দোমৰাজীতৈলম। সোমরাজীতুলাকাথে তথা দক্রহণস্য চ। গোমূত্ৰস্য তথা পাত্ৰে কৰুং দ্বা বিচক্ষণঃ । বিপচেৎ কাৰিকৈভাগৈ: কটুতৈলাঢ়কং ভিষক। চিত্রকং লাক্ষলাথ্যা চ নাগরং কুঠমেব চ । হরিছা নক্তমালক হরিতালং মন:শিলা। আফোতার্ককরবীরং সপ্তপর্ণক গোময়ম। পদিরে। নিম্বপত্রঞ্চ মরিচং কাসমন্দিকম্। এতানি লক্ষপিষ্টানি ককং দৰা বিচক্ষণঃ। হস্তি সৰ্বাণি কুষ্ঠানি ক্রিমিছ্টরণানি চ। কিটমং দক্ৰপ্ৰাভঞ্চ গাত্ৰবৈবৰ্ণামেৰ চ॥ विनीर्वध्यमाः नाषि-मृहीकत्रपम् खम् । পাভুরোগং তথা কভূং বীদর্গং হক্তি দাঙ্গণম্। বে চাক্তে হুগ্পতা রোগান্তাংগু শীসং ব্যশেহতি। (কটভৈলচিক্ষিত্যক্ৰ পাঠান্তর্ম)।

সর্বপতিল ১৬ সের (পাঠান্তর ৪ দের)।
কাথার্থ—সোমরাজী ১২॥ সের, জল ৬৪
সের, শেষ ১৬ সের; চাকুন্দেবীজ ১২॥ সের,
জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের; চাকুন্দেবীজ ১২॥ সের,
জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের; গোমূত্র ১৬
সের। কল্বার্থ—চিতামূল, জিল্লাক্লা, শুঠ,
কুড়, হরিদ্রা, ডহরকরপ্রবীজ, হরিতাল, মনছাল, হাপরমালী, আকন্দ আঠা, করবীমূল,
ছাতিমমূলের ছাল, গোমম্বরস, থদিরকার্ট,
নিম্বপত্র, মরিচ ও কালকাসন্দা প্রত্যেক ২
তোলা। এই তৈল সন্দলে কুন্ত, ক্রিমি, ছুইবণ,
সাত্রবৈবণা ও বগ্গও সর্বপ্রকার রোগ এবং
অক্টান্ত রোগেরও ধ্বংস হয়।

মরিচান্ত তৈলম।

মরিচালশিলাকাক-পরোংখারিজটাতির্ং-শকুজসবিশালাকত - নিশাযুক্সকিনা । কট্তেলাৎ পচেৎ প্রত্থ ছাকৈনিবস্পাছিতে; ॥ সংগাষ্ঠিত্তদভাকাদ্ দক্ষিত্রবিনাশন্। সংব্যধ্পি চ কুঠেষু তৈল্মেত্ৎ প্রশাস্তে॥

কটুতৈল ৪ শের। গোমুই ১৬ দের।
কলার্থ—মরিচ, হরিতাল, মনছাল, মুহা,
আগকলের আঠা. করবীমূল, জটামাংসী,
তেউড়ীমূল, গোমহরদ, রাখালশ্শার মূল,
কুড়, হারজা, দারুহরিজা, দেবদারু ও রক্তচন্দন
প্রত্যেক ৪ ভোলা, বিষ এক পল। এই
ভৈল দক্ষ ও শ্বিত্র প্রভৃতি সকল প্রকার কুঠে
বাবহার্যা।

রহন্মরিচাদ্যতৈলম্।

মরিচং ত্রিবৃতা দন্তী ক্ষীরমাকং শকুক্রসং।
দেবদারু হরিচ্রে ছে মাংসা কৃষ্ঠং সচন্দনম্ ॥
বিশালা করবীরক হরিতালং মনঃশিলা।
চিত্রকো লাক্ষলাখা চ বিড়ক্কং চক্রমন্দকম্ ॥
শিরীষং কুট্রো নিম্বঃ সপ্তপর্নঃ কুহামৃতা।
শুশ্পাকো নক্তমালোহকং পদিরঃ পিরুলী বচা ॥
জ্যোতিমতী চ পলিকা বিষম্য দিপলং ভবেং।
আঢ়কং কট্টেলস্য গোমৃত্রক চতুন্ত প্ম ॥
মুৎপাত্রে কৌহপাত্রে বা শনৈম্ ঘ্রিনা পচেং।
পক্ত্বা তৈলবরং ছেত্ন্মক্ষয়েৎ কুষ্ঠকান্ এশান্ ॥

পামাবিচর্চিকাদক্র-কণ্ণবিশোটকানি চ।
বলয়: পলিতং ছায়া নীলী বাস্তবৈধ চ।
অভালেন প্রণশুদ্ধি সৌকুমাযাঞ্চ কারতে।
প্রথম বয়সি প্রণাং যাসাং নহন্ত দীয়তে।
পরামণি জরাং প্রাপ্য ন তুনা যান্তি নম্ভান্।
বলীবর্দ্ধরক্রা বা গজো বা বায়ুগীড়িতঃ।
এভিরভাঞ্জনৈর্গাঢ়ং ভবেন্মাক্রতবিক্রমঃ।

কটতৈল ১৬ সের। গোমূত্র ৬৪ সের। कदार्थ-मित्रिह, टिडेड्रीम्न, म्छीम्न, व्याक-ন্দের আঠা, গোময়র্ম, দেবনাক্র, হরিদ্রা, पाक्रहित्रजा, जिंगारमी. কৃত্, রাখালশশার মূল, করবীমূল, হরিতাল, মন-ছान, हिडामून, जेन नाजना मून, रिएक, চাকুলে বীজ, निরীষছাল, ইন্দ্রব, নিমছাল, ছাতিমছাল, সিজের আঠা, গুলঞ্চ, সোন্দাল-পত্র, দহরকরঞ্জ বীজ, মুতা, খদিরদার, পিপুল, বচ, লতাফটুকী প্রত্যেক ১ পল, বিষ ২ পল। মুৎপাত্রে কিংবা লৌহপাত্রে মুহ অগ্নিতে পাক করিবে। ইহা মদন করিলে কুছ ব্রণ ও বিচ-চিকা প্রভৃতি রোগ প্রশমিত হইয়া দেহের (माकुमार्ग) वृक्ति इस्र। अथगरवो रान রুম্নীকে এই তৈলের মশু প্রদান কবা যায়, বুদ্ধাবস্থাতেও তাহার স্তনগুগল শিথিল না হইয়া शीरनात्रक अ खारकरे शारक। धरे रेखन बाता গো অখাদিরও বা চরোগ দুবীভূত হয়।

বাসাক্তদ্র-তৈলম।

ত্রিফলা নিখভণ্টাকী বৃহত্যো সপুনর্বরে।
ছরিত্রে বৃষ্থিতি গ্রেটা পাটোলকনকাহরে। ।
ছরিত্রাপা শিলাকুঠো লাঙ্গলীদাড়িমাহরে।
অপামার্গবিবদৈব জফ্টা পৃতিকট্ফলে ।
এবাং কর্বছরে: কলৈবৈজনপ্রস্থ: বিপাচরেও।
চতুগুণি গুড়াল রসে বৈজ্ঞা সমাজিতঃ ।
চতুগুণি গুড়াল রসে বৈজ্ঞা সমাজিতঃ ।
চতুগুণি গুড়াল রসে বিজ্ঞা সমাজিতঃ ।
চতুগুণি গুড়াল রসে বিজ্ঞা সমাজিতে ।
দক্ষানভাররেদ্ বৈজ্ঞা সক্রময়ং সমাজপেও ।
দক্ষানভাররেদ্ বৈজ্ঞা সক্রময়ং সমাজপেও ।
নাড়ারণং রগং বোরং বাতরকং স্ক্রেক্সম্ ॥
সমিণাভজ্ঞরিক্ব শিরোরোগং স্থারণাব ।
শোক্ষু গলগওক লীপদন্তর্ক্রিদ্বে তথা ।

বাতরোগানশেষাংশত অন্তর্জীং হুলারণাম। পীনস্বাসকাসক হুলারণাজগলারম্। উপদংশং মহাবোরং চকু:শূলক নাশারেছ। চর্জোখান্ সর্কারোগাংশত তৈলমেতদ্ বিনাশারেছ। রুদ্রতৈল্মিদং নামা স্বরং রুদ্রেগ ভাবিতম্।

তিলতৈল ১৪ সের, গুলক্ষের রস, গবা হয় ও বাসক পাতার রস প্রত্যেক ১৬ সের। ক্রাপ্তি বিদ্দা, নিমছাল, তালমূলী, রুংতী, কণ্টকারী, পুন্নবা, হতিন্তা, দারুহরিন্তা, বাসকছাল, নিসিন্দা, পটোলপত্ত, কনক্ষুত্রার মূল, হরিতাল, মনঃশিলা, কুড়, ঈণ্ লাজলা, দাভিমফলের ছাল, অপামার্গ, বিষ, জয়স্কীপত্ত, নাটাকরঞ্জ ও কট্লন প্রত্যেক দব্য ৪ ভোলা। যথাবিধি পাক করিয়া ব্যবহার করিলে সর্বপ্রকার ব্রণ, নাড়ী ও ছইব্রণ, ঘোর বাতরক্ত, বীসপ, বিদ্বাধি, শোপ, বাতরোগ, উপদংশ এবং সমুনায় চর্মরোগ বিনাই হয়।

কন্দর্পদার-তৈলম।

म् शुभर्वस्था काली खड़ाही विव्यक्तिम् । শির যাদ মহা, তক্তা জয়া ভুদ্দী মৃগাদনী॥ নিশা দশপলান ভাগান জলদেনে বিপাচয়েৎ। তৈলপ্রং সমাদাধ গোম্ত্রেক চতুও গিম্। অ'রথধো ভূকরাজো জয়া ধুন্তুররাজয়:। अन्ताननाधिशक्तः (शामग्राक्त्र है क्हल्म् ॥ ें उल्रुखाः अमा उवाः यत्रमक पृथक् पृथक् । মহাকালবচাত্রকা-তুম্বাগ্নিগ্রপুরিকাঃ। কুচেলা কুলকা রাত্রিমে ঘনামা চ এছিকা। भागिकमर्कको द्रक कायुरम्बत्रमृतकम् ॥ আংচজিকী মহাতিকা বিশালাচ্ছবিপত্ৰক্ষ। পুতিকাক্ষোতমূর্কা চ সপ্তপর্ণশ্বীয়কম্ ॥ কুটজং পিচুমৰ্দ্দক মহানিম্বং তথৈ । চ। **७**ए. ही हम्ब्दिश ह मा महाह हम्म क्ष्म ॥ তৃত্বস্থান্ত কলং কটুকরে হিণী। শটা দাবলী তিবেং পদ্ম-গ্রন্থিকা**গুরুপু**দরম্ ॥ कश्रवः कर्षेक्षः मार्शी यूरे व्याप्तिकाण्यम् । এতেষাং কাৰিকৈ: কৰ্মেন'মা কন্দৰ্প উচ্যতে। অষ্টাদশবিধং কৃষ্ঠং গ্রন্থিমজ্জগতং তথা। इन्द्रभाषाकृतीम्बि-भविष्यः मर्कम्बिष् ॥ যত গাতে ভবিষাতি মাংসানি চাধিকানি চ। नामाकर्ण दिक्नाः (एकाकांत्रवशूष्ठम् ।

ৰেতং রক্ষং তথা কৃষ্ঠং নানাবৰ্ণং বিপাদিকম্।
পামাবিক্ষোটকানীলা': ক্রিমিচ্ছিং তথৈব চ ॥
কীটদক্রমন্থরীশ্চ কিটমং রক্তমণ্ডলম্।
কুষ্ঠমৌড্ৰুম্বরং পল্লং মহাপল্লং তথৈব চ ॥
গলপণ্ডার্ব্যুদং হতাদ্ গণ্ডমালাং তগলরম্।
বাতলং পিত্তমধ্বৈ লেমজং সান্নিগাতিকম্।
একোম্বণং ম্যাধ্বক কুষ্ঠং হতান্ন সংশয়ঃ॥

কটুটেল /৪ সের। কাথার্থ – ছাতিমছাল, কালিয়াকড়া, গুলঞ্চ, নিমছাল, শিরীবছাল, ভিতপলতা (বা ঘোড়ানিম). জয়স্তীপত্র, ভিতলাউ, রাখালশনা মূল ও হরিন্তা প্রত্যেক ১০ পল, পাকের জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। গোমূত্র ১৬ সের। সোন্দালপত্র, ভূঙ্গরাজ জয়ন্তী-পত্র, ধুতুরাপত্র, হরিজা, দিদ্ধিপত্র, চিতাপত্র. শেজুরপত্র, আকন্দপত্রও দিজ্পত্র, ইহানের প্রত্যেকের রস /৪ সের এবং গোম্যর্য (भत्। कलाय-भाकाम, ८४, अर्था, जिल्लाडे, চিভাষুল, খুভকুমারী (কেহ বলেন গোয়ালে লতাবা ঝুল), কুঁচনা, পটোলপতা, হরিদ্রা, মুণা, পিপুলমূল, দোন্দাল পত্ৰ, অ।কন্দের আঠা, কালকাসিন্দের মূল, नेत्य ग्न, আচমূল, মঞ্জিল, ছিতপলতা (বা গোড়া-রাখাল শশার মূল, বিছাটি পত্র, করঞ্জীজ, হাপরমালী, মুর্নামূল, ডাতিনছাল, শিরীয়ভাল, কুড়ু চিভাল, নিম্ভাল, যোড়া-নিমের ছাল. ওলঞ্চ, সোমরাজ (দোমরাজবীজ ২ ভাগ). ठाकुरमवीक, ধনে, ভীমরাজ, ব্রষ্টিমধু, বন ওল, কট্কী, শঠা, দাকুহ্হিদ্রা, তেউড়ামূল, পল্মকান্থ, গাঠি-য়ালা (অভাবে পিপুন্যুল , অগুরু, রুড়, कर्पून, कहेंकन, क्लामांशी, भूगभारी, धन -ইচ, বাদকছাল ও বেণার মূল প্রত্যেক ছই তোলা। এই তৈল মদনে বাতজ, পিওঁল, শ্লেমজ ও সাল্লিপাতিক প্রভৃতি সকল প্রকার কুষ্ঠ এবং গণ্ডমালাদি নানারোগ প্রশামত ২য়।

পৃথ্বাসারতৈলম্ ।

চিত্রকভাগে নিক্ত গো হয়নারতা মূলত:। নাড়ীচবীজাদ্বিষতঃ কাঞিপিত্রং পলং পলম্ ॥ করঞ্গতৈলাষ্ট্রপলং ক:জিকন্ত পলং পুন:। মিজিতং স্থাসংপঁকং তৈলং কৃষ্ঠবিণাশ্রজিৎ ।

করঞ্জতৈল /১ দের। কল্লার্থ—চিতামূল, নিসিন্ধামূল, করবীরমূল, নালিভাবীজ ও বিষ প্রত্যেক ১ পল। কল্পতা সকল কাঁজিতে বাটিয়া তৈলে দিবে এবং উহাতে কাজি ১ পল নিশ্রিত করিয়া বৌদ্রপক করিবে। এই তৈল মর্দনে কুষ্ঠ রণ ও রক্তদোস নিবারিত হয়।

মড় বিন্দু তৈলম্।

সিপ্রাম্ততালগৈরিকহলা ছাজীগদক, বংঁ-হু ৎপারণেরসোনব শদহনস্কুত্ত্রিনিশা-। রংজীগদকতিকু ভিং পরিনিটেও গুলুনা পচেৎ সার্বিণং তৈলং গুভুমিতং যুত্ত কুড়বং পানং তথাকালসম্। গোমুনক তথা বিনায় সকলং পূতং প্তং রোনিণে দক্তাং কুইবিচচ্চিক'দির দিয়া নামা ভূ যড়বিদ্দকম্। বেপক্টেস্পান্য সকলংগ সক্রাতিত্ত্বতে ৮।)

কটুতিল ১৪ দের, প্রত সাত দেব, আক-ক্ষেব বস ২৬ দের, গোমুল ১৬ দের। কল্পার্থ — মেটেসিন্দ্র, বিষ, হরি হাল, গোরিমাটী, ঈশ লাঙ্গলা, ক্রম্মজীরা, কুড়, লিকটু, মন্চাল, রহুন, শরপুঞা, চিতামূল, সিজের আঠা, আকন্দের আঠা, হরিদ্রা, রাইস্বপ, গল্প ও হিন্ধু প্রত্যেক ৪ ভোলা। এই তৈল সকল প্রকাব কুঠ ও বিচ্ছিক। প্রাকৃতি রোগে

কচ্ছ রাক্ষসতে শ্।

মন, শলালং কাদীদ স্পাশ্বাদক্ষ্পম চ।
প্ৰথকী বিলাভেনী শুকী কৃষ্ট্ৰ মাগ্ৰী ॥
লাকলী ক্ষনীপ্ৰদ দশত্ব কিনিছানলা।
দন্তী নম্বলপ্ৰে ভ, পৃথক ক্ষনিছৈ ভিষ্ণ ॥
ক্ষাকুতা পচেই তৈলং কট্ৰপ্ৰস্থায় বিল্যুন্ত।
অক্ষেত্ৰ স্থাক্ প্ৰয়িত্ৰ চ ॥
গোমুৱন্ত চকলালি গনৈ দুলিনা পচেই।
অভাক্ষেত্ৰ ক্ষেত্ৰ ক্ষান্ত মণি।
প্ৰাৰেক তথা কঞ্ছ ছুখাৰিক্ষবিৱাময়ান্।
কক্ষুৱাক্ষন। মেদই উলং হুৱোৰ ভলাবিত্ৰ ॥

সর্বপতিল /৮ সের। গোমূর ১৬ সের। কলার্থ-নন শিলা, হকিতাল, হীরাকস, পুরুক, সৈশ্বৰ লবণ, স্বৰ্ণক্ষীরী, পাধাণভেনী, উঠ, কুড়, পিপুল, বিদলাঙ্গলা, করবীর, চক্রমর্দ্ধ, বিড়ঙ্গ, চিতা, দস্তী ও নিমপাতা এই সকল দ্রবা প্রত্যেক ২ তোলা এবং আকলের আঠা ও সিজের আঠা প্রত্যেক ২ শল। এই তৈল মৃহ অগ্নির তাপে পাক করিয়া গাত্রে মর্দ্ধন কছিলে হংসাধা কচ্ছু, পামা, কণ্ডু, চর্মরোগ ও রক্তদোধ নই হয়।

আরথধাতাং তৈলম।

আরথধং ধবং কুঠং হরিতলং মনঃশিলা। রঞ্জনীন্বয়সংযুক্তং পদেও তৈলং বিধানবিৎ। এতেনাভাঞ্জয়েচিছ্যিত ক্ষিপ্রং বিবাহাতি॥

তিল তৈল /৪ দের। কলার্থ—সোনদাল পত্র, ধাওয়াছাল, কুড়, হরিতাল, মনছাল, হরিদ্রা ও দাকহরিদ্রা, মিলিত /১ দের। পাকের জ্বল ১৬ দের। এই তৈল মন্দ্রনে শিত্র রোগ নই ইয়।

শ্বিত্রপঞ্চানন-তৈলম ।

এরগুতুলনী বাজং বাগুজী চক্রমন্ত্রম্ব।
তিব্রুকোষ তিকীনাজং কুল্যাকোঠক বাজিকম্ ॥
ব জং দশ্বা শিলা ক'লা পথ্যা কুঠং বিভক্ষম্ ।
গোমুত্রদ্বিত্রুক্রমন্ত প্রেচ্পান্ত্র্যাক্তঃ ॥
কটুতৈলক তল্পোনীষ্দ্ যুষ্ট্রা বিলেপনৈঃ।
পঞ্চানম্মিবং তৈলং খেতকুগুকুলাপহ্ম্ ॥

কটুটতল /৪ সের। গোমূত্র, দধির মাত, ছগ্ধ ও ছাগমূত্র প্রত্যেক /৪ সের। কল্বার্থ— এরগুবীজ, তুলদীবীজ, হাকুচবীজ, চাকুলো-বীজ, তিত্রবিজ্পার বীজ, কাল আঁকোড়বীজ, মনছাল, হীরাকস, হরীতকী, কুড় ও বিড়ল মিলিত /১ সের। ধবল স্থান ঈষৎ ঘর্ষণ করিয়া এই তৈল লাগাইলে উহা প্রশামিত হর।

খদিরারিষ্টঃ।

খনিরক্ত তুলার্দ্ধন্ত দেবদাক চ তৎসমস্। বাকুটী ছাদশপলা দাববী ছাবে প্রবাংশতিঃ । ত্রিকলা বিংশতিপলাস্তারেশেংশুলঃ প্রেৎ।
কর্বারে জ্যোণশেরে চ পুতে লীতে বিনিক্ষিপেং।
তুলাররং মান্ধিকস্ত তুলৈকা শর্করা মতা।
ধাতকা৷ বিংশতিপলং ককোলং নাগকেশরম্।
কাতীকলং লবলৈলা-ত্রক্পত্রাণি পৃথক্ পৃথক্।
পলোলিতানি কৃষ্ণায়া দ্যাং পলচতুষ্টরম্।
মুতজাতে:বিনিক্ষিপ্যঃমানাদৃদ্ধিং পিরেং ততঃ।
মহাকুটানি ক্লোগং পাঞ্রোগার্কদৃদং তথা।
শুলার গ্রাহিনিক্ষীন্ কাসং তথা সীহোদরং প্রেং
এই বৈ গদিরারিট্টঃ সর্কর্কনিবারণং।

খনিরকান্ত /৬। সের, দেবদারু /৬। সের, সোমরাজী বীজ ১২ পল, দারুহুরিলা ২০ পল, দারুহুরিলা ২০ পল, ত্রিকলা ২০ পল, পাকার্থ জল ৫.২ সের, লেষ ৬৪ সের। ইহা ছাকিয়া ভাহাতে মধু ২৫ সের, চিনি ১২॥০ সের, ধাইফুল ২০ পল, ১৯কোল. নাগেষা, জায়ফল, লবঙ্গ, এলাইচ, গুড়ুমক্ ও তেজপত্র প্রত্যেক ১ পল এবং পিপুল ৪ পল। এই সম্বায় একত্র আনুহুমুগ স্বতভাওে একমাস রাখিবে। ইহা সেবন করিলে কুঠ, সম্বোগ, পাণু, অর্ক্র্ন ও গুলা প্রভৃতি বিবিধ পীড়ার উপশ্য হয়। (মাত্রা—১ পল)।

অখুপথ্যাপথ্যবিশিঃ।

কুষ্ঠরোগে পথ্যান।

পকাৎ পকাচছৰ নানি মাদানাসাদিরেচনম্।
নক্তং আহাৎ আহানাদি ৰঠে বঠেত প্ৰমোক্ষণম্।
সৰ্পিলে পিন্চিরোৎপন্না যবগোধ্যশালয়ঃ।
মূলাচকীমসুরাশ্চ মাক্ষিকং জাকলামিবম্ ।
আ্বাচকলবেত্রাগ্রং পটোলং বৃহতীক্ষলম্।
কাকমাচীনিস্পত্রং লগুনং হিলমোচিকা ।
পুনর্নরা মেবশুলী চক্রমন্ধিলগনি চ।
ভলাতকং পকতালং পদির্লিচক্রকো বরা ॥
জাতীকলং নাগপুপং কুছুমং প্রতনং হবিঃ।
কোবাতকী করপ্লোহশি তিলস্বপনিস্কন্ম ॥
তৈলং তবেসুদোশক লযুক্তভানি বানি চ।
ক্রেছাং সরলদেবাহ্য-শিংশপাপ্তক্রসভবাঃ॥

মূক্রাণি গোখরোব্রাব-মহিবীন্সনিতানি চ। কন্দুরিকা গন্ধসারতিকানি কারকর্ম চ। যথাদোবং সমস্তানি পথাক্তেতানি কৃতিনাম্॥

কুটুরোগে একপক অন্তর ব্যন, এক্যাস অন্তর বিহেচন, তিন দিবদ অন্তর নম্ম প্রয়োগ এবং ছম্মাস অন্তর রক্তমোক্ষণ কর্ত্তবা। পান, প্রবোতন হব, গে: ম, শালিধানু, মুগ, অত্তর, মসুর দাইল, মধু, জাঙ্গলদেশজ মগপক্ষীর মাংস, পলাশবীজ, বেতাগ্র, পটোল, বুহতীফল, কাকমাচী, নিম্পত্র, রগুন, হিঞা-শাক, পুনর্মবা, মেষশৃন্ধী ফল, চাকুনিয়াপাতা, ভ্যাতক, পাকা তাল, খদির, চিতা, ত্রিফলা, জাতীফল, নাগকেশব, কুন্ধুম, পুথাতন স্বত, ঘোষাৰতা, করঞ্জতৈল, তিলতৈল, দার্ঘপতৈল, निष्ठते जन, इंजुनीकर नाइन ৈতল, লঘুদ্রব্যু, সরলকাষ্ট, দেবদারু, শিশু ও অগুরুকাষ্ঠ উৎ-পর স্থেহ (ভৈল), গোমুত্র, গদভমুত্র, উষ্ট্র-মৃত্র, অশ্বমৃত্র, মহিধীমৃত্র, কস্তুরী, শেতচন্দন, ভিক্তদ্রব্য এবং ক্ষার প্রয়োগ, কুইরোগিকে দোবারুদারে এই সমস্ত প্রয়োগ করিলে হিত-কর হয়!

क्ष्रेद्राराष्ट्रभथानि।

পাপানি কন্মাণি কৃতন্মভাবং নিন্দা গুরুণাং গুরুণবৰ্ণ। বিক্রমপানাশনমন্থি নিদ্রাং চগুংগুভাপং বিষমাশনক ।

ব্দেং রতং বেগনিরোধমিক্ং
বা'ন্নামমানি তিলাংশ্চ মাখান্।
জবান ভর্বন্নবাপ্তভুক্তং
বিদাহি বিষ্টু ভিচ মূলকানি ।
সভাজিবিক্ষাণজিসমূভবানাং
তর্জিণানামূদকানি চাপি।
আনুগমাংসং দ্ধিভূক্ষমপ্তাং
গুড়ক কুঠামহিনস্তাজেয়ুঃ ।

পাপকল্ম (ব্রাহ্মণীগমনা দি), কুতম্বতা উপকারকের অপকার করা), গুরুনিন্দা, গুরুজনকে অব্যাননা করা, বিরুদ্ধ পান, বিরুদ্ধ ভোজন, দিবানিদ্রা, রৌদ্রেনন, বিষম ভোজন, স্বেদন, রমণ, মলমুল্লাদির বেগদারণ, ইক্ষু, ব্যায়াম, অমুদ্রবা, তিগু, মাদকলায়, দ্রব-দ্রব্যু, গুরুদ্রব্যু, নৃত্ন চাউলের অয়, বিদাহি-দ্রব্যু, বিষ্টুদ্রিব্যু, মুগা, সহাগরি ও বিন্ধা-গিরি সম্ভূত নদীর জ্বল, আনুপ্রমাণ, দ্রি, চুন্ধু, মন্ত্র ও গুড় এই স্কল কুঠুরোগা পরি-ভাগ করিবে।

ইত্যায়ুর্কেদ-সংগ্রহে কুন্তাধিকার:।

অথ শীতপিত্তোদৰ্দকোঠাধিকারঃ।

অথ শীতপিত্তোদৰ্দ্দকোঠ-নিদানম্।

শীতমাক্তসংস্পর্ণাৎ প্রচ্নষ্টো কফমাকতে।
পিত্তেন সহ সভ্য বহিরন্তবিসপ্ত: ।
বর্টীদ্বন্তপ্রান: শোখঃ সংজারতে বহি:।
সক্তুন্তোদ্বহুল্ডলিজ বিদাহবান্ ।
উদ্দিষ্টিত তং বিভাচ্ছীতপিত্রম্পাপরে।
বাতাধিকং শীতপিত্রম্পদ্ত কফাধিক: ।
সোৎসক্ষত সরাগৈত কণ্ডমিত্তিত মাওলৈ:।
শৈশিরঃ ক্ষতে। ব্যাধিক্রদ্দি ইতি কীর্তিত: ।

অসম্যামনোণ্-্শিত্তলেমান্নএতৈ:। মওলানি সক্তুনি রাগবস্তি বহুলি চ। উৎকোঠ: সাতুবকণ্ড কোঠ ইত্যুভিধায়তে॥

শীতল বায় সেবন দারা কফ ও মারুত প্রছষ্ট এবং পিজের সহিত মিলিত হইয়া দক্ ও রক্তাদি ধাতুতে পরিসপণ করিয়া শীতপিজ রোগ উৎপাদন করে।

শীতপিত্ত ও উদদ রোগে গাতে বোল্ডা দংশনজনিত শোণের স্থায় শোণ হয়। ইহাতে অভিশন্ন কণ্ণ, তোদ, ব্মি, জন ও দাহ বিশ্ব-মান থাকে। শীতপিতে বায়ুর এবং উদ্দি রোগে কদ্বে আধিক্য থাকে।

উদদ-শোথ মধ্যনিয়, রক্তবর্ণ কণ্ডুমুক্ত,
মণ্ডলাকার ও হিম্মস্ত্ত। ইহা কফজ ব্যাধি।
বমনক্রিয়া শারা সম্যগ্রূপ বিমি না হইলে
বহির্গমনোল্থ পিত ও শেয়ার এবং ভৃজায়ের অনির্গম হেতু শরীরে রক্তবর্ণ কণ্ড্বিশিষ্ট
মণ্ডলাকার বহুসংশ্যুক যে শোথ উৎপন হয়,
তাহাকে কোঠ কহে। কোঠ নির্মুবন্ধ অর্থাও
উদ্যত হইবার কিছুক্ষণ পরেই বিলয়প্রাপ্ত
হয়, আর পুনক্রনাত হয় না। কিন্তু এই কোঠ
সাম্বন্ধ অর্থাৎ পুনংপুনং উৎপন্ন ও পুনংপুনং
বিনাশীল হইলে উৎকোঠ নামে অভিহিত
হইরা থাকে।

অথ শীতপিত্তোদৰ্দ্দকোঠচিকিৎসা।

শীতপিতে তু বমনং সটোলারিষ্টবারিণা।
ক্রিকলাপুরকুকাভিবিরেকশ্চাত শস্ততে ॥
অভ্যক্তঃ কটুতৈনেন সেকশ্চেশেন বারিণা।
ক্রিকলাং ক্রোক্তগাং পাদেচ নবকাবিক্স ॥
(পটোলারিষ্টবারিপেত্যাদানকুক্তমপি মদনদাসককং
প্রক্রেপাম। চক্রটাকা।)

শান্তপিত্ত, উদক্ত ও কোঠ রোগে, পল্তা ও নিমছালের কাথে মদনফল চুর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া তাহা স্থারা বমন এবং ত্রিফলার কাথে গুগ্গুলু ২০ মাধা এবং পিপুল ৬ মাধা প্রক্ষেপ দিয়া তত্বারা বিরেচন; সর্ধপ তৈল মদন; উষ্ণ জলে গাত্র সেচন; মধুর সহিত (প্রক্ষেপ দিয়া) ত্রিফলা কাথ সেবন এবং বাতরকোক্ত নবকার্ষিক নামক পাচন অথবা প্রশ্লোকোক্ত নবকার্ষিক বটিকা সেবন ব্যবস্থেয়।

বিদর্পোক্তমমূতাদিং ভিষণতাপি যোজয়েৎ।

উদর্দে বননং কার্যানিতি বা পাঠ:।

বৈষ্ণগণ এই সমস্ত রোগে বিদর্প-চিকিৎ-সোক্ত অমৃতাদি পাচন ও ব্যবস্থা করিবেন।

তিফলাপুরকৃষ্ণানাং ত্রিপঠিক্ষাংশ্যো'জভা। ভটিকা শীত্পিত্রাশো-ভগন্দরবতাং হিতা॥

ত্রিফলা ৩ ভাগ, গুগুগুলু ৫ ভাগ ও পিপ্ললী ১ ভাগ, এই সমস্ত একত্র করিয়া বটা প্রস্তুত কবিবে। এই বটী ১টা করিয়া সেবন করিলে শীত পিন্ত, অশু: ও ভগুন্দর বিনষ্ট হয়। অর্ত্রেকস্ত রদ: গেয়: পুরাণগুড়ুসংযুত:।

भाषकञ्च त्रनः ८१४ः भूतानश्चित्रस्युटः । भाङ्गिखानसः (आक्षां नास्त्रामानिनामनः ॥

পুরতিন গুড়ে। সহিত আদার রস পান করিলে শীতপিও ও অগ্নিমান্দ্য বিনষ্ট হয়। দুর্কানিশ মুড়ে: এপঃ কঙুপামারিমান্দ্র: । ক্রিদিদ্যুর্ভেটেন শতপিরাপ্তঃ গুড়া।

দুৰ্ক ও ১ নিজ একতা বাচেয়া এলেপ দিলে কও, পানা, ক্ৰোম, দক্ষ ও শাতপিও নিবালিত হুইয়া থাকে।

সিদ্ধাপরজন'ককে: প্রপ্রন'ড ভিলে: সহ। কটুটেলেন সংমিশ্রনারজন্তনং প্রিতন্ম।

খেতসন্প, হবিদ্ধা, চাকুনেবীজ ও কৃষ্ণ তিল, এই সমুধায় স্থপতৈলেন সহিত বাটিঞ গাতে মাথিলে শাত্থিত।দিন নাশ হয়।

ভাগ্নিমন্ত লবং মূলং পিস্তং পাঁতক্ষ সাপিষা। শীতপিত্যোদনকোঠান্য প্ৰকাশনের ॥

গশিয়াবিমূল বাট্যা ঘতের সহিত সাত দিবদ দেবন কারলে শাতপিত্র, উদদ্ধ ও কোস বোগের শাস্তি হয়।

কারসিক প্তেলৈশ্চ গাড়োভালং হবে'লয়েব। গ্ৰকার ও নৈর্বলবণ কটুইভলের সহিত মিশ্রিত করিয়া গাতে মাধিলে শাতাপত্ত নষ্ট হইয়া থাকে।

গান্তারিকাফলং পরত শুক্ষানুব্যোদতং পুনা। ক্ষীরেণ শীতপিভন্নং গাদিতং পণ্যদেবিনা॥

পথ্যদেবী হইরা গান্তারীর স্থপক শুদ্দ কল হথ্যে সিদ্ধ কলিয়া সেবন করিলে শীত-শিত্ত রোগাবিনপ্ত হয়।

কৰ্মং গ্ৰায়তভাপি নামকং মন্ত্ৰিচন্ত চ। একীকুতা পিৰেৎ প্ৰাতঃ দাঁ চপিতাদিনাশনমু॥ গব্য দ্বত ২ তোলা ও ম বিচের গুঁড়া ১ ম'বা একতা (উঞ্চ) করিয়া প্রাতঃকালে দেবন করিলে শাভপিতাদির শাস্তি হয়।

শীতলাগ্ৰপানানি বুদ্ধা দোষগতিং ভিষক্।

উল্লামি বা যথাকালং শীভণিত্তে প্রয়োগরেং । বাতাদি, দোষের অবস্থা ও দেশ কাল

বাতাদি দেবের অবস্থা ও দেশ কাল বিবেচনা করিয়া শাত্বীগ্রা উফ্বীগ্রেল্পান ব্যবস্থা করিবে।

সিতাং মধুকসংযুক্তাং গুড়বানলকৈ সহ। যথানীং গাদ্যেচ্চাপি ব্যোধকারসগায় গণ্

চিনির সহিত ষ্টিনপু, আনলকার সহিত গুড় এবং ত্রিকটু ও ব্যক্ষানের সহিত য্যানী ভক্ষণ করিলে শাতপিতাদির শাস্তি ইইরা পাকে। সহড় দুপাকং যন্ত্র খানেই গ্রান্ত্র

ভক্ত নগুডি সপ্ত'হ'ছদর্দ্ধঃ স্বাদেহকঃ॥

এক সপ্তাহ স্পপ্যভোগী ছট্যা গুড় ও ননানী ভক্ষণ কারলে সাধিদেহস্থ উদন্দ নট হয়। তৈলোহর্ত্নমোগেন যোজা এলানিকো গণা।

ওলমূলকমূষেণ কৌলথেন রসেন বা ; ভোজনং সকলো কাধ্যা লাৰতিভিত্তিলেন বা ॥

উনন্ধারে (স্ক্রান্তাক্ত) এলাদিগণ তৈলের সহিত মিলিত করিয়া শ্রীরে উম্বর্জন করিবে এবং ওক্ষ মূলার মুখ সহ অথবা কুল্পকলায়ের ম্যাসহ কিংবা লাব ও তিত্তির প্রভৃতি পশ্কির

কুঠোক্তঞ্চ ক্রমং কুখানগুলিওল্লমেব চ । উদ্দ্যোক্তাং ক্রিয়াঞাপি কোঠরোগে সমাসতঃ । সুনি পাঁড়া মহাভিক্তং কাব্যং শেশিভমেক্রম্ম।

মাংদরদ সহ অন্ন ভোজন করিবে।

কোঠবোগে কুষ্ঠোক্ত, উদদ্ধেক্ত এবং অমপিত্তনাশক ক্রিয়া সকল করিবে। ইহাতে মহাতিক্রাদি মুত্রপান ও রক্তমোকণ কর্ত্তবা।

> নিষ্প্ত পত্রাণি সদা যুত্তন ধাত্রীবিমিশ্রাণি নর: প্রযুঞ্জাৎ। বিক্ষোটকপুক্রিমিশীতপিত্ত-মুদর্দ্ধকে†ঠৌচ কফঞ হক্সাৎ।।

আমলকী ও নিমপাতা সমভাগে বাটিরা মতের সহিত সেবন করিলে বিক্ষোট, কণ্ডু, ক্রিম, শীতপিন্ত, উদন্ধ ও কোঠরোগ প্রশমিত ! ইইরা থাকে।

স্পার্শবাতলক্ষণম্।

অংশের তোদনং প্রায়ো দেহস্পর্নং ন বিক্তি। মণ্ডসানি চ দৃষ্ঠান্তে স্প্রাহান্ত লক্ষ্ম।

স্পাৰ্শ ভৱোগে অঙ্গে স্চাবেশবদ্ বেদনা ও স্পাৰ্শ ভিন্ন নাৰ হয় এবং গাণ্ডে মণ্ডলাকার চিহ্ন দল উদ্ভ হইয়া পাকে।

রনাণিগুরী।

শ্বস্থাবিদ গুলোবিদতিন্দ্দি শৈব তৃ।
১.পাকস্থান প্রেটি চিত্রিক বিষ্টি ক্রেল হারেও।
বিজ্ঞিক দুস্থানাং বচাখালে হারেও।
বেশক বিষক্তিনেং পিন্না শিল্পনাগ্রো: ॥
একৈ কস্তাভবেদ্ ভাগ ইতি প্রাক্ষ্যে ক্রমেণ চ।
গুড়াস্ট্রিকংশতিং প্রাদ্ধি বিকাশ দর্শকৃতি:।
ক্রমেণ বারুকেনেত স্প্রিচাপ্রস্তারে॥

শোবিত পারদ ৮ ভাগ, কুঁটিলা ১০ ভাগ, গরুক ১২ ভাগ এবং শুঁঠ, পিপুল, মরিচ, হরীতুকী, বহেড়া, আমলকী, ভেলার মুটা, চিতা,
মুহা, বচ, অখগদ্ধা, রেণুক, বিষ, কুড়, পিপুলমুল ও নাগকেশর প্রতোক এক এক ভাগ,
গুড় ২৪ ভাগ। এই সকল দ্রবা এক এ মদন
করেয়া কুলের প্রায় বটিক। কারবে। এই বটা
কিছ দিন সেবন কারলে স্প্ৰবাহ বিনাই হয়।

হরিদ্রাথণ্ডঃ।

হরিদ্রায়াঃ পলান্তাইী বঢ়পলং হবিষত্তথা।
ক্ষ'রাচকেন সংবৃদ্ধং খণ্ড ছার্কভুলাং তথা।
পচেন্ মুদ্ধনিন বৈত্যো ভাজনে মূলরে দৃঢ়ে।
কর্টা কং ক্রিজাতক ক্রিমিল্লং ক্রিতা তথা।
'এফলা কেশরং মৃন্তং লৌহং প্রতি পলং পলম্।
সংচ্ণা প্রক্ষিপেং ত এ বর্ষ,মক্স ভক্ষরেং।
কঞ্বিক্যেটিদ্রুণাং লাশনং প্রমৌবধম্।
প্রত্প্রকাঞ্চনভাসো দেহা ভব্তি নাজ্ঞপা।
হরিদ্যানানতঃ পভং কঞ্নাং প্রমৌবধম্।

হরিদ্রা ৮ পল, স্বরুড পল, গরাত্ব্য ১৬ দের, চিনি /৬। দের। মৃত্ অগ্নিতে মৃৎপাত্তে যথাবিধি পাক করিবে। প্রক্ষেপার্থ—ত্রিকটু, গুড়ম্বক্, তেজপুত্র, এলাইচ, বিড়ঙ্গ, তেজড়ীমূল, ত্রিফলা, নাগেশ্বর, মূতা ও লোহ প্রত্যেক চূর্ব ১ পল। মাত্রা—২ তোলা। হরিষ্ঠাথণ্ড শীতপিত্র, উদর্দ্ধ, কোঠ ও পাণ্ডু প্রভৃতি রোগের উৎক্লই ঔষধ।

রহদ হরি দাখণ্ডঃ।

নিশাচূর্ণক্ত কুড়বং তির্ৎপলচতুষ্টয়ম্।

অভয়া তৎসংগ দেয়া সার্ধপ্রছয়রী সিভা ॥

দালনী মুন্তা বমাক্ষে) বৌ চিক্রকং কটুরোহিণী।

অভানী পিয়নী শুন্তী ক্রিজাতং ক্রিমিক্টকম্ ॥

অমৃতা বাসকং কুঠং ক্রিফলা চবাধান্তকম্ ॥

মৃতলৌহং মৃতাভ্রক প্রত্যেকং কোলস্মিতম্ ॥

পচেন্মুল্মিনা বৈজ্যো ভাজনে মুন্তয়ে নবে।

কর্বার্মক ততঃ বাদেছ্কতে মামুপানতঃ ॥

লীতলিতে দুর্মকোঠ-ক্রুপামাবিংচিক্রঃ।

জীর্জ্রাক্রমীন্ পাঞ্-শোধাদীংক্ত বিনাশরেং॥

হরিদ্রাচ্প / ॥ • দের, তেউড়ীচ্প ৪ পল, হরীতকীচ্প ৪ পল, চিনি / ৫ দের। দারুহরিদ্রা, মৃতা, যগানী, বন্যমানী, চিতা, কট্কী, ক্ষজীরা, পিপ্ললী, কঠি, গুড়বক্, এলাইচ, তেজপত্র, বিড়ঙ্গ, গুলঞ্চ, বাসকমূলের ছাল, কুড়, হরীতকী, বহেড়া, আমলকী, চই, ধনে, লোহ ও অল প্রত্যেক ১ তোলা। একত্র মৃত্র অগ্নিতে পাক কংবে। মাত্রা—১ তোলা। উষ্ণ জল সহ সেব্য। ইহা ঘারা শীতপিত্ত, উদ্দি, কোঠ এবং কণ্থ প্রভৃতি নানাবিধ পীড়া উপশ্যিত হয়।

অ'র্দ্রকথগুঃ |

আর্দ্রকং প্রস্থাককং স্থাদ্ গোঘ্তং কুড় বছরম্।
গোদ্ধাং প্রস্থাকাং তদক্ষং শক্ষা মতা।
শিশ্বলী শিশ্বলীমূলং মরিচং বিশক্তবজম্।
চিত্রকঞ্চ বিভূপক্ষ মৃত্তকং নাগকেশরম্।
ক্রিলান পাকং বিধিবং থাকেং তং প্রসন্মিত্রম্।
ক্রিলান পাকং বিধিবং থাকেং তং প্রসন্মিত্রম্।
ক্রিক্রক্তক্রমানারং প্রাতভূক্তো ব্যপোহতি।
নীতিশিক্রমূর্কক ক্রেচিমুহকোঠনের চ।

যক্ষাণং রক্তপিত্তঞ্চ কাসং খাসনংসাচকন্। বাতঞ্চঅনুদাবর্ত্তং শোধং কভূ ক্রিমীনপি ॥ দীপরেছদরে বহিং বলবীর্য্যঞ্চ বর্ত্তরেং। বপ্তঃ পৃষ্টং প্রকৃক্ষতে ভক্ষাৎ দেশ মদং সদা ॥

আদা /২ সের, গব্যন্থত /১ সের, গব্যন্থর /৮ সের, চিনি /৪ সের। পিপুল, পিপুলমূল মরিচ, শুঠ, চিতা, বিড়ঙ্গ, মুতা, নাগকেশর, দারুচিনি, এলাইচ, তেজপত্র ও শটী প্রত্যেক ১ পল। এই সমস্ত ধ্পাবিধি পাক করিয়া লেহবৎ ঘন হইলে নামাইয়া প্রাভঃকালে ৮ ভোলা মাত্রায় (বিবেচনা মতে) সেবন করিলে শীতপিত, উদদ্দ, কোঠ, উৎকোঠ, ফ্রা ও রক্ষপিত্ত প্রভৃতি নানাবিধ বোগ বিনষ্ট হয়।

শ্লেমপিভান্তকে। রসঃ।

মৃতস্তার্কনে) হন্ধ বহিগদ্ধক টলপম্।
ভূনিবেন্দ্রবেণী রামা গুড়্চী পল্পকং সমম্॥
দিনং পর্পটক্ষা বৈমন্দিতং বটকীকৃত্য।
সি গক্ষোটদেনি হেলাংসৈঃ শ্লেমপিতান্তকো রসং।
পথাকণাগুড়ং গুড়ীং মাবৈকং ভক্ষরেন্দ্র।
কন্ধবাতহরং পাদেদাভিমং নাগরং গুড়ম॥

রনসিদ্ব, তাম, লৌহ, চিতা, গন্ধক, সোহাগা, চিরতা, ইব্রুষবা, রামা, গুলঞ্চ ও পদাকাঠ; সমভাগে এই সকল দ্রব্য একদিন ক্ষেত্রপাপ্ডার রুসে মাড়িয়া বটী প্রস্তুত করিবে। চিনি, মধু বা মাংসরসের পহিত সেব্য। হরীতকী, পিপুল, গুড় ও ওঠি এক নাবা পরিমাণে অন্পান করিবে। কফ ও বার্র আধিক্য থাকিলে দাড়িম, ওঠি ও ওড় একত্র সেবন করিতে দিবে।

বীরেশ্বরো রসঃ।

মৃতস্তাৰ্কলোহক তালগন্ধকট্কলম্।
মেৰণ্দী বচা শুকী তালী পথা চ ৰালকম্।
ধন্তাকং বৰ্দয়েৎ তুলাং সটোলে,খন্তবৈদিনম্।
নিৰ্মান্তং নিহেং কৌলৈ: ক্ষৰাতপ্ৰশাস্তৱে।
রসো বীরেখরো নাম উল্লো নাগাৰ্জ্বেন চঃ

রদদিশ্র, তাম, লোহ, হরিতাল, গদ্ধক, কট্ফল, মেড়াশিঙ্গী, বচ, ষ্ঠেঠ, বামুনহাটা, হবীতকী, বালা ও ধনে, এই দকল দ্রব্য পটো-লের রদে একদিন মর্দন করিয়া চারি মালা পরিমিত বটা প্রস্তুত করিবে। অনুপান—মধু। ইহা কফবাত-প্রশমক।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

শীতপিতোদর্দ্ধকোঠরোগে পথ্যানি।

হদিবিনেচনং লেপোহসংঘাকো জীর্ণশালয় ।
জাঙ্গলৈরামিইমুলিনা কুলগৈবী কুভা নসায় ॥
ককে টকং কারবেলং শিগ্রুনকপোতিকার।
শালিকশাকং বেত্রাগ্রং দাড়িমং তিফলা মধু ।
কটুতেলং ভপ্তনাবং সিত্তলেম্বহরাণি চ।
কটুতিজকমায়াণি সর্বানীতি গণঃ স্থা।
শাত্রপিন্তাদিদ্ধাকার বালিণাং স্ঞাদ্যধামলম ॥

বমন, বিরেচন, প্রলেপন, রক্তমোক্ষণ, পুরাতন শালি, জাঙ্গল মাংসরস, মুগের যুষ ও কুলথকলায়ের যুষ, কাঁকবোল, করলা, শাজিনা, কচি মূলা, শালিঞ্শাক, বেতাগ্র, দাড়িম, ত্রিফলা, মধু, সর্বপত্রৈল, গরমজ্ঞল, পিত্তশ্লেমনাশক দ্রব্য এবং সমস্ত কটুবর্গ, তিব্রুবর্গ, ও ক্যায়বর্গ, দোমামুসারে প্রবোজিত হইলে শীতপিত্র, উদদ্দ ও কোঠরোগির মুপথ্য হয়।

শীতপিভোদৰ্দকোঠরোগেইপথ্যানি ।

ক্ষীরেকুজাতা বিবিধা বিকারা
মংক্ষোদকানুপভবামিষার্থ।
নবীনমন্ত্রং ব্যিবেগরোধঃ
প্রাংগ কিশাশাপবনোহক্ষি নিদ্রা॥
মানং বিক্ষাশনমাতপশ্চ
জিগ্ধং তথায়ং মধুরং ক্যায়ম্।
গুক্ষরপানানি চ শাতপিত্তকাতথেয়ে দেশবহাং বিবাণি॥

নানাবিধ ক্ষীরবিক্ষতি (ছানাদি) ও ইক্ষ্-বিক্ষতি (গুড়াদি), মংশু এবং উদ্ক্ষাংদ, আনুপ মৃগপক্ষী প্রভৃতির মাংদ, নৃতন মন্ত, বামবেগধারণ, পূর্ব বায় ও দক্ষিণ-বায়, দিবা-নিদ্রা, স্থান, বিক্ষভোজন, ক্রোদ্রবেন, স্লিগ্ধ দ্রব্য, অনুদ্রবা, মধুইদ্রবা, ক্ষায়দ্রবা এবং গুরুপাক অন্নপানীয়, এই স্কল শীত্রপিত্ত, ক্যোঠ ও উদ্দ্রোগির অপ্রা।

ইত্যায়র্কেদ-সংগ্রহে শাতপিত্রাভাগিকারঃ।

অথামপিতাধিকারঃ।

অথান্নপিত্ত-নিদানম্।

বিক্ষপ্রস্থ স্থানিদ্ধিতি একোপিপানারভুজে। বিদম্প।
পিত্তং অহত্পচিতং পুরা যৎ তদমপিত্তং প্রবদন্তি সন্তঃ।
অবিপাকরনোৎরেশ-তিকামোদসারসৌরবৈঃ।
হৎকঠদাহারুচিভিক্ত'মপিত্তং বদেন্তিষক্॥
ছড়,দাহমূর্চ্ছাত্রমমোহকারি প্রধাতাধো বা বিবিধপ্রকারম্।
হলংসকোঠানলসাদহর্ব-বেদারু পীত্তকরং কদাচিৎ॥
বাত্তং হরিৎপীতকনালকৃকমারক্তরক্তাভ্যমতীব চাম্মম্।

মাংসোদকাভশ্বতিপিচ্ছিলাতে
শ্রেখাকুজাতং বিবিধং রসেন ॥
ভুক্তে বিদদ্ধে রখবাপাভুক্তে
করোতি তিব্তামবনিং কদাচিৎ।
উচ্চারমেবংবিধ্যের কঠহুৎকুক্ষিনাহং শিরসো রুজঞ্চ ॥
করচরণদাহমৌদ্যং মহতীমক্ষ্ণিট অরঞ্চ কফ্পিন্তম্।
জনহতি কণ্ডুমগুরপিড়কাশতনিচিত্রগাত্ররোগনিচয়ম্।
মিলিত ক্ষীর মহত্যাদি বিরুদ্ধ ভোগ

মিলিত ক্ষীর মংখাদি বিরুদ্ধ ভোজন, দুষিত অল, অসুও বিদাহিদ্বা এবং অভাভ শিত্তপ্রকোপক পান আহার, এই সকল কারণে পূর্ব্বসঞ্চিত পিত্ত বিদগ্ধ হইয়া অস্ল-পিত্তরোগরূপে পরিণত হয়।

অম্পিত্ত রোগে, ভুক্তারের অপরিপাক, ক্লান্তিবোধ, ব্যনবেগ, ভিক্ত ও অম উদ্গার, দেহভার, বৃক ও গ্লা জালা এবং সক্লাচ, এই দকল লক্ষণ উপস্থিত হয়।

মধোগ অন্ধণিত্তে হ্রিৎপীতাদি বিবিধ-বর্ণবিশেষ্ট প্রথম মলভেদ হয়। ইহাতে তৃষ্ণা, দাহ, মূর্চ্ছা, ভ্রম, জ্ঞান-পেরবাতা, বমনবেগ, কোঠোৎপাত্ত, আগ্রমান্দা, রোমাঞ্চ, দক্ষোলগ্র ও অঙ্গের পীতবর্ণতা, এই সকল লক্ষণ প্রকাশ পাইবা থাকে।

উদ্ধা অমাপতে হরিং পীত নীল ক্ষণ আরক্ত বা বক্তবর্গ, অতাব এম, মাংস্কল সদৃশ, অতি পিছেল, বছং, কফনংস্পুত্ত ও কটুতিভানি বিবিধ বসাবীশন্ত বাম হইয়া থাকে। ভুক্তমব্য বিদ্যা হইলে অথবা অভুক্তাবস্থাতেও ক্ষন কথন তিক বা অমব্যম হয় এবং উদ্যারও বন্ধা ও কুন্দিদেশে দাহ, শিরোবেদনা, হাঙ পা জালা, দেহের উফতা, আতশ্য অক্তাচ, পিত্তমেন্ত্রের এবং শ্রীরে কড়, ব্লসংগ্রেক শিত্তকাংপ,ত ও নানাবিদ রোগ, এই সমস্ত উপ্তর্ধ সংঘটিত হয়।

অথামুপিত্ত-চিকিৎসা।

প্রাণন্ত পাওবাগার্ভংকুরকারেরবারিভিঃ। বাস্থ্যক্রান্ত সিন্ধুরিপ্রবিদ্যান করেরের ভিষক।।

ক্ষাপিন্ত রোগে প্রথমতঃ পল্ত: ও নিম ছালের কাপ করিয়া ভাষাতে হিসু, মধুও সৈন্ধন লবণ প্রক্রেপ দিয়া রোগিকে পান করাইয়া বমন করাইবে।

বাজিং কৃতায়পিতে তু নিরেকং মৃদ্ধ কাররেং। সমাগ্রান্তবিরিক্তক স্থান্থিতাস্থাসন্ম। আহাপনং চিরোন্ততে দেয়ং দোবাত্যপেক্যা। অমুপিত্ত রোগে বমনের পর মৃছ বিরেচন এবং তদক্তে স্নেহক্রিয়া ও অন্থবাসন প্রচোগ কারবে। াচরোৎপন্ন অমুপিত্ত রোগে বাতাদি দোয বিবেচনা কারয়া নিরহং-বাস্ত (পিচ্-কারী) দিবে।

ক্রিরা গুদ্ধন্ত শমনী হনুবন্ধবাপেকরা। দোষসংসর্গজে কংখ্যা ভেষজাহারকলনা।

গুই তিন দোষের মিলনে অমুপিত্ত উপ-হিত হইলে, গুথমে ব্যন-বিরেচনানি শোধন ক্রিয়া দারা রোগেকে সংশুদ্ধ করিয়া, এরপ উষধের ও আহারের ব্যবস্থা করিবে, যেন ভাষা অনুসন্ধান্যের বিরোধী না হয়।

জ্বলন্তনিৰ চাক্সাৰং মক্ততে যোহমপিভৰান্। ভাস্তৰ শোধনং পথাং ন শান্তিঃ শোধনং বিনা॥

ত দ্বাপত্ত রোগে যদি কোন বাক্তি এমন বোধ কবে, যেন তাহার শরীর অনলে জাণতেছে, তাহা হইলে তাহার পক্ষে বমন বিরেচনাদি শোধনক্রিয়াই প্রশস্ত । শোধন ব্যতিরেকে সেকপ ক্রোগর রোগণান্তির অন্ত উপায় নাই।

উদ্ধৃগং বমনৈধামানধাগং রেচনৈগরে । গ্রুপিতে তু বমনং পটোলাগিঔপতকৈ । কারকেরদনকৌছ-'সন্ধুষ্টক্রং কালে।ৰূপে। বিরেচনং 'এবুচনুর্গং মধুধানীক্লক্রণেঃ ।

উদ্ধাণ অমপিত বমন শারা এবং অধোগ অমপিত বিচেচন শারা হরণ করিবে। কফো-বণ অমপিতে পল্ডা, নিমপাতা, ময়নাফল, মধু:ও দৈন্ধবলবণ শারা বমন।করাইবে। বিবে-চনের আবশুক হইলে মধু ও আমলকীর রসেব বহিত তেউড়ীচুর্ণ-প্রয়োগ করিবে।

তিজভূমিইমাহারং পানকাপি প্রকর্মেরং।
ববগোধুমাবকু গাঁওীকুসংখারবর্জিতা:।
মধ্যেং লাজগন্তন্ বা সিতামধুমূতান্ পিবেং।
অন্নপিত্ত রোগে তিক্ত প্রধান আর ও পানীর
ব্যবস্থা করিবে। দোষসংস্গাদি বিবেচনাপূর্বক তত্তদোষনাশক দ্রব্য সহ যব ও গোধুমের
প্রাদিরূপ শাস্ত গুলুত করিয়া আহার

করিতে দিবে, তাহার সহিত অধিক লবণ কটু ও অন্নাদি তীক্ষদ্রব্য সংস্কুত করিয়া দেওয়া উচিত নহে। অন্নপিতে চিনি ও মধুর সহিত থৈ চুর্ণ ধাইতে দিবে।

নিজ্ববব্ৰধাতীকাথ প্রিহগকিমগুর্ত: পীত:।
অপনয়ভি চায়পিত: বদি ভূত কে মুলগগ্রেণ।
নিজ্ব বব, বাসক ও আমলকী ইহাদের
কাথে দারু চিনি, এলাইচ, তেজপত্র চুর্ণ ও মর্
আক্ষেপ দিয়া, ভাহা পানকরণানস্তর মুলগ্যুষ
অমুপান করিলে অমুপিত্ত নিরাক্ত হয়।
যবকুলাপটোলানাং কাপং কৌত্রতং পিবেং।
নাশয়েদয়পিত্রক অক্টিক বিনিং তথা।
যব, পিপুল ও পল্তা ইহাদের কাথে

য়ব, পিপুল ও পল্তা হহাদের কাথে মধু প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে অম্পিড, অক্চি ওবনি নিবাক্কত হয়।

मनाजः ।

বাসাহত। প্ৰতক-নিম্বস্থ, নম্মাকবৈঃ। ত্ৰিকলাকুলকৈঃ কাথঃ সক্ষোদ্রকায় পিওলা

বাসকছাল, গুলঞ্চ, ক্ষেত্রপাণ্ডা, নিম-ছাল, চিরতা, ভীমরাজ, ত্রিফলা ও পটোলপত্র সমুনারে ২ তোলা, জল অর্দ্ধ সের, শেষ আব-পোরা। এই কাথ মধুদ্ধ পান করিলে অমুপিত্র বিনষ্ট হয়।

ক্লাতিকং পটেলেক তলা ক'ব। সিভান্ত ।
গাঁডঃ গ্ৰাভকন্পগক্তো অনচ্ছলানপিত্ৰিব।
তিকেলা, পল্তা ও কট্কী ইহাদের কাথে ।
চিনি, যষ্টিমধু চূর্ণ ও মধু প্রক্ষেপ দিয়া সেবন করিলে জন্ত, বনি ও অনুপিত্র বিনষ্ট হয়।
পথ্যাভ্সন্ত্রজন্ত্র্ণ যুক্তং জাঁণ্ডড়েন সু।
জয়েদম্পিত্রজাং ছর্লিনন্ত্রিদ্যাত্রিশ্য।

হরীতকা ও ভীমনাজ চূর্ণ উপযুক্ত মাত্রার পুরাতন গুড়ের সহিত লেংন করিলে, অম-শিক্ত ও অম্বিদাহ জন্ত বমন নিবারিত হয়।

বাসাদিগুগ্ গুলুঃ।

বাসানিস্বপটোলাতিফলংসনধাসধোজিতো জয়তি। অধিকক্ষমমূপিতং প্রধোজিতো গুগুণুক্ষশং। বাদকছাল, নিমছাল, পল্তা, ত্রিফলা, পিয়াশাল ও ত্রালভা, ইহাদের দমভাগ চূর্ণ, দমস্ত চূর্ণের দমান গুগ্,গুলু। একত মিশ্রিত করিয়া দেবন করিলে, কফাধিক অমুপিত্ত নিবারিত হইয়া থাকে।

ছিলাথদিরবটাকি-দার্কাজোবা মধুদ্রম্। স্তাকানভয়াং থাদেৎ সকোলাং স্ভড়াঞ্ ভাষ্॥

অমপিত্রোগে শুলঞ্চ, খদির কাঠ, য**ষ্টিমধু** ও দারুহরিদ্রা, ইহাদের কাথে মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিবে, অথবা হরীতকী ও দ্রাক্ষা, মধু বা পুরাতন শুড়েব সহিত মিশ্রিত করিয়া দেবন করিবে।

ভিন্না প্রবাশিষপতে লগতে। কলত্রিকন্ত কথিতং কুণীতন্। ক্ষেট্রাইতং গাঁতন্যনকর্মপং ক্ষারূপং হব্তি ভদত প্রত্যা

গুল্ঞ, নিমছাল, পটোলপত্র ও ত্রিকলা, ইহাদের কাথে শাতল অবস্থার মধু প্রক্ষেপ দিয়া সেবন করিলে অনেকরূপ স্থাকেণ অম-পিত্র নিবারিত হয়।

সিংহাস্তামুতভাটকৌ-কাথং পাঁহা সমাক্ষিক্ষ্। অসুপিতং জয়েজন্ত্ৰা কাসং ৰাসং জ্বং ব্যিম্ম

বাদক, গুলঞ্ ও কণ্টকারী, ইহাদের ক,থে মধু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে অসুপিত্ত, কাদ, শ্বাদ, জর ও বমি নিবাবিত হয়।

পিলনী মধ্সংখুজা চাই পিত্ৰিনা নিনা। জ্ঞানস্বন্ধ শীহঃ সাংগং ভাইপিত্ৰু ॥

মধুদ্ধ পিপুলচ্ও দেবন করিলে অন্ধপিত্ত বিনষ্ট হয়। পাকা জামীবের স্বরদ সায়ংকালে পান করিলেও অনুপিত দুবীভূত ইইয়া থাকে।

ভিস্ক ক তককলানি চিঞাছতো হৃতক পুট্নমন্।
শ্বাহতি তন্ত্ৰপ্ৰিমন্ত্ৰে হাণাভ্ৰহ বিশ্বন্ধ্য
(কতকলানে কলপ্ৰসাদনকলান নিজ্বাতিপ্ৰসিদ্ধান্ধ।
যথোভ্ৰহ বিশুলমিতি ভিস্কাপক্ষা কতকলানে দ্বিশুলাক ককলাপেক্ষা হি গুড়াছল চিথিড়াই গণেক্ষা হৃত্ৰতি। এতা সাক্ষ্য স্থানিখন নিজ্বিপা শ্বাহ্বৰ প্ৰায়াইল না দক্ষ্য নাম্বাহত কুইবন্ধ্যাহান্ত্ৰ না দক্ষ্য নাম্বাহত কুইবন্ধ্যাহান্ত্ৰ না দক্ষ্য নাম্বাহত কুইবন্ধ্যাহান্ত্ৰ না দক্ষ্য নাম্বাহত কুইবন্ধ্যাহান্ত্ৰ ক্ষান্ত্ৰে ক্ষান্ত্ৰে সংক্ষা হৃত্য হুবন্ধানিছ ।

হিন্ধু > ভাগ, নির্ম্মলীফল ২ ভাগ, তেঁতুলছাল ৪ ভাগ ও ঘৃত ৮ ভাগ, এই সকল দ্রব্য স্থালী মধ্যে রাখিয়া, শরা ধারা স্থালীর মুখ আবৃত করও অন্তর্ধু মৈ দগ্ধ করিবে। এই ভন্ম ৪ মাধা পরিমাণে দেবনীয়। অমুপান উষ্ণ কল। ইহাতে অমুপিত রোগ বিনষ্ট হয়।

অথ কফপিত্ৰ-চিকিৎসা।

কফ্পিত্রমীকভূ-জর্বিশ্রেট্রদাইহা। পাচনো দাপন, কংখা শঙ্গবেরপটেলেয়েন।

শুঠি ও পল্তা ২ তোলা লইর উওমরূপে কুটিয়া কাথ করিয়া দেবন কবিলে কম-পিও, বমি, কও, জব, বিজ্ঞোট ও দাহ বিনষ্ঠ হয়। এই কাথ পাচক ও অগ্নিপ্রদাপক।

> পাড়াকবিশ্বয়েতবে ভিনাক । জলং পিবেং পিতৃকত্বে জ্ঞান্ত শুলক্রমারোচকবিজ্যান্তা-দাহস্করচন্দিনিবারণা তথা।

কদ ও পিত প্রবল থাকিলে পটোল, ষ্ঠা, গুলগু ও কট্কা, এই সকল দ্রবা ২ ভোলা পরিমাণে এইয়া কাথ প্রস্তুত করত সেবন করিলে কদ্পিত, শূল, লম, অঞ্চি ও অগ্নিমান্দা প্রস্তৃতি গোকোক্ত রোগ সকল নিবারিত হয়।

अख्यां शिक्षवाज्ञां का-ति ०:४१ खणन् । तक्य । सम्बा कर्रमारुष्ट्रः शिढाक्ष्यस्तरः शतम् ।

হ্রাতকী, পিপুল, জাকা, চিনি, ধনে ও তুরালভা, এই সকল তুরা মধু সহ সেবন ক্রিলে কণ্টদাহ ও পিত্তশ্লেষা বিনষ্ট হয়।

প্রেলিয়ব ধরাক-পিন্ধলামলক নি চ।
এবাং কেন্দ্রিয়ত কাথা পিওলেম্বহর পর ।
পল্তা, যব, সনে, পিপুল ও আমলকী,
এই সকল দ্রব্যের কাথ মধু সহ সেবন করিলে
পিন্তলেমা বিনষ্ট হয়।

কান্তপাতে বরাকধো ব্যয়িতে গ্রহানযোগতঃ। সিতাকৌদ্রমনাযুক্তঃ কফপিব্রুরঃ স্বতঃ॥ ত্রিফলা বাটিরা তন্থারা ১টা কাস্ত লোছের পাত্র প্রালিপ্ত করিয়া এক রাত্রি রাখিবে। প্রাত্যকালে ঐ কন্ধ চিনি ও মধু সংসূক্ত করিয়া খাইলে পিত্তশ্লেষ্য প্রশমিত হয়।

পঞ্নিম্বাদি-চূর্ণম্।

একোতংশঃ পঞ্চনিধানাং বিগুণো রন্ধণারকঃ।
শক্ত্যকুদ শগুণো দেয়ং শক্রামধূসংযুতঃ।
শিতেন বারিণা শীতং শুলং পিতককোদ্রিভাতম।
নিহন্তি চূর্বং সন্ধোদ্রময়পাতং প্রদারশম।

নিম্নুক্ষের অক্, পার, পুষ্প, মুল ও ফল, এই সমুদায়ের ১ ভাগ, বিদ্ধুক ২ ভাগ ও ছাতু ১০ ভাগ, এই সমুদায়ের স্থিত চিনি ও মধু মিশ্রিত করিয়া পিঠ করিয়া লইবে। মান্র —১ পার বা অদ্ধাল । বাবহার ২ তোলা। অন্তপান—শতল এল ও মধু। ইহা স্বেন করিলে পিত্তৈলোক শূল ও অম্পিও উপশ্যিত হয়।

व्हरम्लानि-हुर्गम्।

এলাচশ্লের জ্ঞচন্দ্র শিব ক্রিপ্র শিচ্জের প্রেরণ করে ।
বিংবা শক্রয়া সমং প্রাচিদির ইন্তায়পিতর জরং দাহং শেষমধ্যে দাহণ শিক্ষে ।
করে শক্রমা সাম প্রাচিদির ইন্তায়পিতর জরং দাহং শেষমধ্যে দাহণ শিক্ষি করে করে শেষমধ্যে দাহণ শিক্ষি করে করে শিক্ষা করে ।
এলাইচ, টাপাছাল, রক্তিন্দর, হবীতকী, বনে, চিতা, আমলা, গোরক্ষচাকুলে, পল্তা ও মূতা, ইহাদের চুর্ল মধু বা চিনি সই প্রভাই উপযুক্ত মাত্রায় সেবন করিলে অয়পিও, দাহ, অক্রি, বক্ষোবেদনা, জরে ও প্রবল শোগ প্রশ্মিত হয়।

হ বিপত্তিকরং চুর্ণম্।

ত্রিকট্ থ্রিকলা মূল্য বাজকৈব বিভ্নকন্দ ।
পলা পত্রক চুর্গানি সমভাগানি কারছেছে ॥
সক্রমেকার্কত্র গাবলসঙ্গ ওৎসনং ভবেছ ।
সক্রমেকার্কত্র তারছ তারছেক্রমাধিত্য ।
সক্রমেকার্ক্ত তথ ভু লিগ্ধভাঙে নিধাপরেছে ॥
ভোজনানে তথান্তে চ ন্ধ্রাজ্যাভাসিদং শুভ্রম্ ।
শীতভোরারুপান্ধ নারিকেলোদকং তথা ॥

আমপিওং নিহস্তাত বিবন্ধং মলমুক্রয়োঃ।
আগ্নিমান্দান্তবান্ রোগান্ নাশয়েদবিকলতঃ॥
বলপৃষ্টিকরদৈক শুনন্তর্নামনাশনম্।
আমেহান্ বিংশতিকৈন মুক্রাঘাতাংক্তথান্দ্রাম্।
অবিপ্তিকরং চূর্ণমগন্তাবিহিতং শুভম্॥

জিকটু, ত্রিকলা, মুভা, বিড়ঙ্গ, এশাইচ ও ভেজপত্ত প্রত্যেক চুর্ণ ১ ভোলা, লবজচুর্ণ ১০ ভোলা, ভেটড়ীমূল চুর্ণ ৪০ ভোলা, চিনি ৬০ ভোলা, এই সমস্ত জব্য একত্র মিশ্রিত কবিয়া স্লিগ্ন ভাণেও রাখিবে। ইহা ভোডনের প্রথমে ও লেমে উপযুক্ত পরিমাণে সেবন করিলে অমপিত, শল, মলমুর্রোধ, অগ্নিমান্ডনিত রোগসমূহ, প্রমেহ ও অশঃ প্রভৃতি রোগেল উপশম হয়। অমুপান - মুত্র, মধু, শার্তভল বা নালিকেল জল্।

পিষ্কলাখণ্ডঃ।

ক্যাচনক্স বৃদ্ধন স্ট্যান্ত ই বিষয়পা।
প্রাধ্বনিস্থান্তেই ।
প্রপ্রাধ্বনিস্থান্তেই ।
প্রপ্রাধ্বনিস্থান্তেই ।
প্রপ্রাধ্বনিস্থান্তেই নির্মাধিক ।
অভ্যান্তেক কেব চুকা ছাদেন্যান্তিক ।
প্রস্তানিক কেব চুকা ছাদেন্যান্তিক ।
প্রস্তানিক মধ্যন শাচা স্থান প্রাধ্বনিক চ ।
প্রাধ্বনিস্থান শাচা স্থান প্রাধ্বনিক ।
শ্রাধ্বনিক স্বাধানিক ভিন্নিক বিশ্বনিক ।
শ্রাধ্বনিক স্বাধানিক ভিন্নিক বিশ্বনিক বিশ্বনিক বিশ্বনিক স্বাধানিক ভিন্নিক বিশ্বনিক বিশ্যনিক বিশ্বনিক বিশ্বনিক বিশ্বনিক বিশ্বনিক বিশ্বনিক বিশ্বনিক বিশ্বন

পিপুলচ্ব ৪:পল, ব্বত ৬ পল, ক্তমূলীর রদ ৮ পল, চিনি ১২ দের, গ্রন্ধ ৮ দের। এই দমুলার যথাবিধি পাক করিবে। প্রক্রেপার্থ— গুড়ারক, তেরপ্রেজ, এলাইচ, মুন্তা, কনে, ভাঁত, বংশলোচন, জীরা, ক্রফ্ডজীবা, ইরীতকী ও আমলকী প্রত্যেক চ্ব ১৮০ তোলা; মরিচ, নাগেশ্বর ও খদির-সার চ্ব প্রত্যেক ৬ মাষা। শীতল হইলে মধু ৩ পল মিশ্রিত করিবে। ইহা যথাযোগ্য মাত্রায় প্রযোজ্য। ইহাতে অম্পত্তি, শূল, অফচি, হুলাদ (গা ব্যি ব্যিক্রা) ও ব্যি প্রভৃতি রোগ নিবারিত হইয়া অশ্বির অভিশর দীপ্তি হয়।

বৃহৎ পিপ্পর্লাখণ্ডঃ।

পিপ্রলাঃ কুড়বং চুর্গং হুতন্ত কুড়বন্ধন্।
পলমোড়শিকং গঙালুসে বর্যাঃ পলাপ্তকে ॥
পলমোড়শিকে ঠেব আনলকা রসক্ত চ।
ক্লীরপ্রস্থার মাধাং লেইাভূতে ততঃ ক্লিপেং ॥
কিজাতকাত্যান্ধান্ধা ধন্তাকং মুক্তকং ক্তন্তা।
ধারী চ কাবিকং চণং করার্ছিং কুঞ্জারকন্ ॥
কুঠং নাগরকং নাগং সিদ্ধনীতেহব্চুর্গিতন্।
কাতাকলাং সমরিচং মধুনন্চ পলব্রন্থ।
দেশস্থাং ততে। ধানান্মপিত্রিপুর্য়ে।
কলাসারেচিক্চাল-স্বাসক্সক্রপ্র্য়।
স্প্রস্থানিক্সিক্তিক্তালে।
স্প্রস্থানিক্সিক্তিক্তালে।
স্প্রস্থানিক্সিক্তিক্তালে।
স্প্রস্থানিক্সিক্তিক্তালি।
স্প্রস্থানিক্সিক্তিক্তালি।
স্প্রস্থানিক্সিক্তিক্তালি।
স্প্রস্থানিক্সিক্তিক্তালি।
স্থানিক্সিক্তিক্তালি।

পিপালচূর্ব গাও দের, গাত ১ সের, চিনি /হ সেব. শতমূলীব বস ১ সেব, জানলকীর রস ২ সেব, জয় ৮ সের, এই সমুনায় বলাবিধি পাক কবিবে। প্রক্ষেপাথ — গুড়ারক্, তেজ-পত্র, এলাইচ, হবীতকী, জীবা, হনে, মুহা, বংশলোচন ও আমলকী প্রভাকে ২ তোলা; রুষ্ণজীরা, কুড়, শুঠা, নাগেরণ, জারক্ষ ও মারচচূর্ব প্রভাকে ১ ভোলা। পাকসমাপ্তির পর নাতল অবস্থায় মধু প্রভাকে ৩ পল পরিমাণে মিশ্রিত করিয়া লইবে। ইহা দেবন করিলে অম্লাপত্র, সল্লাস, অরুচি, ব্যি, শ্বাস, কার ও ক্ষয় প্রভৃতি নিবারণ হইয়া আহি প্রদীপ্র ও আহার-ক্রি ব্রিত হইয়া আহি

रःश्रेषधः ।

ক্ষাচুৰ্বজ্ঞ বুড়বং গওপ্ৰধং সমাবংশং।
বং দিক্ড্বং স'প্ৰ ক্ষাব্ৰপ্তভাৱে পচেং।
প্ৰেংবত বিচে চজু ব্ ধাত্ৰী বাজকমুম্ভকম্।
বংশা গালী বাংশা তিনাতে কাববা নিবা॥
বিশোগ ম'বচং নাগং কমামত পৃথক পৃথক।
পলত্ত্তেম মধুন, নাগ্ৰাভূতে প্ৰদাসত্তেং।
বংলাম বাকাং পশুগ্ৰি অম্পিত্তিন্ত্তঃ।
ব্ৰহ্মপ্ৰমাবিমানাত্ৰিক প্ৰীড্ডঃ॥

ন্ত ঠ চূর্ব া। সের, চিনি ২ সের, ছত ১ সেব, জ্বা ৮ সের , এই সম্পায় বথাবিধানে পাক করিবে। প্রক্ষেপার্থ—আমলকী, ধনে, মৃত্য, জীরা, পিপুল, বংশলোচন, গুড়ত্বক, তেজপত্র, এলাইচ, কৃষ্ণজীরা ও হরীতকী প্রত্যেক ১॥ • তোলা; মরিচ, নাগেশর প্রত্যেক ৬ মাষা। শীতল হইলে মধু ৩ পল মিশ্রিভ করিবে। অমুপিত্ত, শূল ও বমি প্রভৃতি রোগে এই ঔষধ ষথাবোগ্য মাত্রার প্রয়োগ করিবে।

খণ্ডকুষ্মাণ্ডকোইবলেইঃ।

কুমাওকরসো প্রাক্তঃ প্রানাং শতমাত্রকম্। রসজুলাং গবাং ক্রীরং ধাত্রীচূর্নং প্রাষ্ট্রকম ॥ ধাত্রীজুলা দিতা যোজা গব্যমাজাং প্রস্থয়ন্। মন্দায়িনা পচেৎ দর্কং মাবদ্ ভবতি পিভিত্য ॥ প্রাক্তির প্রথমকং বা প্রভাহং ভক্ষেদ্দিম্। প্রকুমাওকং প্রাত্মমুপিত্রাপ্রং পরম্॥

কুম্ডার বস ১২॥ • সের, গবা ছগা ১২॥ • সের, আনলকী চুর্গ ৮ পলা, চিনি ৮ পরা ও গবাছত ২ পলা। এই সকল বস্তু এক এ মৃহ অগ্নিতে পাক করিবে, পিশুক্লিতি ইইলে নামাইবে। অগ্নিবল করিয়া সেবন করিবে। এই শশুকুমাণ্ডাব্রেছ অমুপিতের শ্রেষ্ঠ ঔষধ।

অভয়াগুবলেহঃ।

অভয়া পিয়লী জাকা সিতা ধ্ববনাসকম্। মধুনা কঠজকাহ-মঞালেমালভিত্ৰং॥

হরীতকী, পিপুল, কিস্মিদ্, চিনি ও হরালভা, ইহাদের চূর্ণে মধু সহ মোদক প্রস্তুত করিয়া সেবন করিলে, কণ্ঠ ও হনুদয়ের দাহ, মুর্চ্ছা, শ্লেষা ও অন্নপিত্ত বিনষ্ট হর।

সেভাগ্যশুষ্ঠ-মোদকঃ।

ক্রিকট্ তিফলা স্থল-সারক্ষয়ধান্তকম্।
কুঠাজমোপা লৌহান্তঃ শৃঙ্গী কট্মলম্প্রকম্।
এলা জাতীদলং মাংসা প এং স্টেলাশকেশরন্।
গন্ধমাতা পটা বঠা লবকং রক্তচন্দনম্।
এতানি সমভাগানি শুটাচুর্বি তংসমম্।
সিতা বিশ্বণিতা তব গ্রাক্ষীরং চতুগুণিম্।
ভোলগুমাণং লাতনাং ছক্ষোন্পি জলেন বা।
অস্ত্রিপিতং নিহ্ন্তোতদরোচকনিস্ননম্॥

শূলক্ষেপিশমন: কঠনাহং নিয়ছতি।
কদাহক শিরঃশূলং মন্দায়িত্বং বিনাশরেও।
কছে, লং পাখক কিছ-বতিশূলং গুদে কজ্য।
বলপুটিকরকৈব বশীকরণমূভ্যমন।
বিশেষালমপিত্রক মুক্তুড়াং করেং ভ্রমন।
নিহত্তি লাক সন্দেহো ভাষারতিমিরং যথা।

ত্রিকট্, ত্রিফলা, গুড়ত্বক্, জীরা, রুক্ষশীরা, ধনে, কুড়, যমানী, লোহ, অল্ল, কাক্ডাশৃঙ্গী, কট্ফল, মুডা, এলাইচ, জায়ফল, জটামাংনী, তেজপত্র, তালীশপত্র, নাগেশর, গন্ধমারা, শটা, যষ্টিমধু, লবক ও রক্তচন্দন, প্রত্যেক সম্ভাগ, সর্বাসমান শুঠ চুণ। শুঁঠচুর্ণের সহিত সমুদায় চুর্ণের বিগুণ চিনি এবং সমুদায় সমষ্টির চতুগুণ গ্রাত্থ্য, যথাবিধি মোদক প্রস্তুত্ত করিবে। ইছার মাত্রা—> ভোলা। অনুপান—ভগ্ধ বা জল। ইহাতে অমুপিত, অক্চি, শল, সন্দোগ কণ্ডনাহ, সন্দাহ ও অগ্রিমান্দ্য প্রভৃতি নিবারিত এবং বল ও পুষ্টি ববিত হয়।

অনুপিত্তকে-গোদকঃ

নাগরদা কণায়াত প্রাক্তি প্রদাপয়েব। গুৰাকত প্লাছালে সৰ্বানকৰ কারছেং । মুতং ক্ষান্তং ততঃ পশ্চাৎ প্রস্থুং প্রস্থাপ্রের। লবকং কেশ্রং বৃষ্ঠং যমানী করেবী বচা 🛭 हन्मनः मनुकः ताथा (भवमातः कल्डिकम् । প্রস্তান বরাক্ষ দেশ্বনং হর্ষা শটা ॥ मननः कटकतः भारमः शहनः वक्काभाकम्। তালীশং পল্লকং মুধ্বা সমঙ্গা বংশলোচনা । অধিকং শতপুষ্ণা চ শতমূলী কুম্বুটকম্। काठीकनः काठीरकायः करकानमञ्जूषः कर्गा ॥ কপুর্ক বিভঙ্গক অজ্যোদা বলাস্তা। নকটা কুরবীজঞ্চ চল্দন॰ দেবতাড়কম্। লৌহং কাংস্তং প্রদাত্তবাং ক্যমাত্রং ভিব'গ্রনা। এক্তং সকাং কৰ্মানিং কৰাৰ্দ্ধ: স্বৰ্ণভাষ্ট্ৰৰ । চতুদ্ধা **ড়** বিধানেন নাবিত প্রাচয়েৎ কথা:। অম্পিতাপ্তকো ভোষ মোদকো মুনিভাবিত:। वाखिः वृष्टाक प्राञ्चक कामर यामर जनर उर्था । বাতজং পিত্তজভৈব কদজং সাল্লিপাতিকম ॥ সর্করোগং নিহস্তান্ত প্রমেতং সৃতিকাগদম। णुलक विक्रमान्गाक मृजकुष्ठः भलशहूम् ॥

ভঠ ৮ পল, পিপুল ৮ পল, স্থারিচর্ণ ৮ পল, ছুত /৪ সের, ছুগ্ধ /৪ সের। এই সমৃ-দার যথানির্মে পাক কবিবে। প্রক্ষেপার্থ -लवक, नारभवत, कुछ, यभानी, कुक्छिती, वह, त्रक्कान्सन, यष्टिमधु, तांत्रा, हितनांत्र, जिक्ना, তেজপত্র, এলাইচ, গুড়ত্বক, সৈন্ধব, হব্যা, न्ही, मन्नकृत, क ट्रकृत, क हो गाः भी, अज, यूत्र, क्रभा, जानी मभज, भग्नकां है, भूकी, देवा रक्का छा, বংশলোচন, পিপুল্মূল, ভল্ফা, শতমূলী, পীত্রাটির মূল, জায়ফল, জায়ত্রী, কাক্লা. মৃত্যা, পিপুল, কপুর, বিভুক্ত, বন্যমানী, (राष्ट्रमा, श्वनक, ज्ञानकृमी वीख, कूरम्बाष्ट्रा-বীজ্ঞ, চন্দ্ৰন, দেবতাড়, লোহ ও প্রত্যেক ২ তোলা, স্বর্ণভন্ম ১ ভোলা। ইহা সেবন করিলে অমুপিত্ত, বনি, মুচ্ছা, দাহ, প্রমের, মুত্রকছ ও স্ত্তকা প্রভাত রোগ নিবারিত হয়।

সিতামণ্ডুরম্।

ধমন বিধিবিভদ্ধং গোস্থলে সপ্তবারাং-স্তর প্রিরপত্তকং প্রক্রমভরচুর্গা। দিবটকপলমেকং : পঞ্চসংপাং সিতারা অনবয়তপল'ছে ঘাইকং গ্ৰাছ্মম্ । মুদ্রদর্শিখা ভিম ন্দমন্দং কটাহে বিগতসলিলশেষ: পাচয়েৎ পাকবিজঃ। গতবতি শুড়পাকে কিঞ্চিত্নশংবতীর্ণে দ্বদি দৃত্যভীক্ষং চূর্বিতং দেয়সাও ॥ ্রিকটকমধ্কৈলা যাসবৈচলসারং जिक्क अपनित्र क्या क्रिक्क अपनित्र । তদকু শিশিরকালে ছে পলে মান্দিকগু প্রতকু পট্নিগৃষ্টং গালিতং সং**প্রদন্তা**ৎ ॥ **७७** जिथिनियमामो (छाञ्जनामो निरवताः अध्यक्षितमामकः भागमानः उपृक्षम्। व्यक्त्रकृत्वा यावनकः अवाकाः হিমকরক্রচিপীতং গবাছমঞ্চ পের্ম 🛊 নিয়তময়মসাধ্যানয়পিতে:অশুলান্ বমিনিবহদদাহানাহমোহপ্রমেহান্। বিবিধক্ষধিররোগান্ পিত্রুকানশেষান্ অপহরতি সিভাখ্যো দিব্যমঙ্গবোগ: 🛭

বিমলকপলমিভাপি পাঠ:।

ম গুর অগ্নিতে দগ্ধ করিয়া ক্রমশঃ সাতবার গোমুত্রে নিক্ষেপ করত শোধন করিয়া লইবে. পরে রৌদ্রে শুক্ষ ও উভ্নরূপে চুর্ণ করিবে। ঐ চুর্লিত মণ্ডুর ১০ পল (পাঠাস্করে ১ পল) চিনি ৫ পণ, পুরাতন স্বত ৮ পল, প্রাত্তর ১৬ পল। লেভকটাহে মত অগ্নিতে বথাবিধি পাক করিবে। পাক সিদ্ধ হইলে নামাইয়া কিঞিং উষ্ণ থাকিতে পশ্চাল্লিখিত দ্রবাসকর প্রক্ষেপ দিবে। বথা-ত্রিকট, বৃষ্টিমধ, এলাইচ, ত্রথা-লভা, বিভূক্সার, ত্রিফলা, কুড় ও লবক প্রত্যেক ২ তোলা। শীতল হটলে তাহাতে মধু ২ পল মিশ্রিত করিবে। পূর্বে সেবনীয়। প্রথমে অদ্ধতোলা হইতে আর্ম্ম করিয়া ২ তোলা পর্যন্তে মাত্রা বৃদ্ধি করিবে। অমুপান শীতল হয়। ইহা **সেবন করিলে ক**ষ্ট্রসাধ্য অমুপিত্ত ও ভজ্জনিত শূল, বমি, আনাহ ও প্রমেহ প্রভৃতি বিবিধ ৱোগ ডপ্ৰমিত হয়।

ত্রিফলামণ্ডরম্।

গে'মূত শুভ্ৰম্ভূরং বিফলাচুর্ণনংযুত্য। বিলিংন্মধ্নপিভাগে শূলং হস্তান্নপিভজ্য। (মূলিত বিফলাদমং মঙ্কচর্ম। শীতলঙ্লমলুপেরম্)।

মিলত ত্রিকলা ১ ভাগ, গোম্ত্র-শোধিত মণ্ডুর ১ ভাগ, উপযুক্ত পরিমাণে মৃত ও মধুর সহিত মন্দন করিবে। অনুপান—শীতল জল। ইং৷ সেবন করিশে অনুশূল নিবারিত হয়।

অমুপিভান্তকে। রুসঃ।

নতস্তাক-ক-লোহানাং তুল্যাং পধ্যাং বিদৰ্দয়েও।
মাৰমাত্ৰং লিংহেং কোটেররমপিত প্রশান্তরে ।
রসসিন্দ্র, তাম (পাঠান্তরে অভ্র) ও লোহ
প্রত্যেক > ভাগ, হরীতকী চূর্ণ ও ভাগ, এই
সম্পায় সমভাগে মর্দন করিয়া একমাবা প্রমাণ
বিটকা করিবে। অমুপান—মধু। ইহা সেবন
করিলে অমুপিত রোগ প্রশামত হয়।

অক ইতাত্র অভ্রমিতি বা পাঠ:।

সর্বতোভদ্র-লোহ্য।

লৌহচুর্ণ মৃতং তামুম্ভকক পলং পল্য। শুদ্রপুত্র কবৈকং গন্ধকাদ্ধপলং তথা। মাক্ষিকন্ত বিশুদ্ধত কৰং গুদ্ধা শিলাপরা। সাদ্ধকৰং বিশুদ্ধক শিলাজত তথা প্রম্ । গুরু গুলে 'ক পি ক নৈ কং শাণমানং পরসা দ। চূৰ্ণ বিভুক্তলাত-ৰাইংখতাক মূলজৰ্॥ क्तिकर्गणनागक ज्ञानमृती भूनग्रा। ঘনামূতা নাগবলা চক্রমর্জকমুভির!॥ ভুক্তেশশত(বয়ের বৃদ্ধারং ফল'ত্রকম্। ত্রিকটু-চ†পি সর্বেষ্ণে প্রত্যেকঞ্ব নয়েদ্ ভিষক ॥ স্ক্রেক্ত সংম্প। গুরুন সধুনা সহ। ক্লিমে ভাঙে বিনিক্ষিপা ততঃ কুয়াদ বিধানবিং॥ बावका फिक्र स्वरंगव लोइः मन्त्रतम् अस्य অমুপিত্রং জয়েঞ্জীত্বং সক্রোপদ্রবসংগৃত্য ॥ ভন্নৰ্শংসি সৰ্বব্যাণ সৰ্ব্যেষ ভগন্দর্ম। প্রিশুলঞ্শুলঞ্ভখ^{নং} কৃষ্ণিস্থবম্॥ বাতরক্তং তথ। কুঠং পাড়ারাগং হলীম**ক**ম্ । আমবাতং তথা শোপনগ্নিমান্দাং স্মৃত্যরম। কামলাং বাতগুলাঞ্পিড়কাগরগুপ্রসীঃ: कामवामाक्तिहरू द्वाय : ५ विस्वरः । नर्ववाधिहतः (श्राद्धः वः वहेशात्रातिनः। যক্ষাণ্য রক্তপিত্র বাতরোগং বিনাণ্যেৎ। সংক্রয়া সকলে।ভছ-লৌহো রস্বরঃ খৃতঃ ।

লৌহ তাম ও অল প্রত্যেক ১ পল, পারদ ২ ভোলা, গন্ধক ৪ ভোলা স্বৰ্ণালিক ২ তোলা, শিলাজ ১ মনছাল ২ ৩ ভোলা, গুগ্রুলু ২ ভোলা, বিভূক্ ভেলার মুটি, চিতামূল, খেত মূল, হস্তিকণ পলাশ মূলের ছাল, তাল-মুলী, পুনন্ব:, মুভা, গুলঞ্চ, গোরক্ষচাকুলে, চাকুলেবীজ, মুণ্ডিরী, ভীমরাজ, কেণ্ডরিয়া, শতমূলী, বিদ্ধড়কবীজ, ত্রিফলা ও ত্রিকট্ট প্রত্যেক ৪ মাধা। এই সমস্ভ দ্রব্য স্বত ও মধুর সহিত মর্দন করিয়া স্বতভাত্তে রাণিবে। মাত্রা---> মাধা হইতে আরম্ভ করিবে। এই করিলে উপদ্রব্যক্ত অমপিত ঔষধ সেবন অর্শ:, ভগলর, শূল ও বাতরক্ত প্রভৃতি নানা-রোগ নষ্ট হয়।

পানায়ভক্তবটা ।

আয়ণং থিকলা মুন্তং তিবৃতা চিত্ৰকং তথা।
প্ৰত্যেকং কাৰ্ষিকং দক্ষাং প্ৰতগ্যে তদৰ্শকে।
লীহাজকবিড়ঙ্কানাং দক্ষাং কৰ্মনা ওথা।
থিকলায়াং কৰায়েও গুড়াং কৃষা বিধানতঃ ॥
থদেকাং ভক্ষেং প্ৰাভৰ্জকবানি পিবেদত্ব।
হস্তি শূলং পাৰ্যশূলং কৃষ্ণিবন্তিগুদে কুজন্ব।
খাসং কাসং তথা কুষ্ঠং গ্ৰহণীদোৰনাশিনী॥

ত্রিকটু, ত্রিদলা, মূতা, তেউড়ী ও চিতামূল প্রত্যেক ২ তোলা, পারদ অর্কতোলা;
গন্ধক অর্কতোলা, লৌহ, অত্র, বিচন্ধ প্রত্যেক
৪ তোলা। এই সমুদার দ্রব্য ত্রিদলার কাপে
মাজিরা বটিক। প্রস্তুত করিবে। ইহাব এক
এক বটিক। প্রত্যাহ প্রাত্তে দেবনীয়। অন্তর্গনি—কাজি। ইহাতে পুল, প্রাস, কাস,
কুত্ত ও গ্রহণী প্রভৃতি রোগের উপশম হয়।

পানায়ভক্তবটিকা।

বৃষণ্ডলোহমল**ওদ্ধবিভঙ্গ**চূৰ্ণং প্রত্যেক্ষেক্প্লিকং বিধিবদ বিধায়। 5ব্যং কটু রয়ফলত রয়কেশর জ-न्छाপ्যाप्रह्मनान्यपःहेक्**राः** ॥ মংগৌলকন্দুরহাতির :: সম্বা-বৰ্তাঃ পুনন্বিক্যা সহিতাস্থনীবাম । মূলং প্রতি প্রতিবিশেধিতমক্ষমেকং 5र्नर ¹5५%त्रमश्चक (মকসংস্কৃ ॥ कृष्ट्राप्टक प्रवन्नमार ग्लिटक प्रवः मः शिषा ७ मा विका (नश्वित्व विदयश) । হস্তান্ত্রপিত্রকৃচিং গ্রহণানসাধাাং ह्रनामकामन्डशन्त्रत्यावश्चान् ॥ শূলঞ্পাকজনিতং সভতাগ্রিমান্দাং সন্তঃ করোভাপচিতিং চিরনন্তবংকঃ। কুঙানি হস্তি পলিতঞ্ বলীং প্রবৃদ্ধাং খানক কাসমপি পাতুগদং নিহন্তি॥ বাগারমাংসদ্ধিকাঞ্জিকভক্রমৎস্য-वृक्षाप्रदेखना विभाग शृत्राहेविवशक्षककहेनां तिर**क्**न-তৃগ্ধানি সর্ববিদলানি বিবর্জয়েৎ তু । (এবা গ্রহণ্যামপি প্রশন্তা)।

অল, মধুর, বিভঙ্গ প্রত্যেক > পল, চৈ
ত্রিকট্, ত্রিকলা, কেণ্ডবিরা, দন্তীমূল, মৃত্য,
পিপুল, চিতামূল, ঘেঁট্কোল, মাণ, ওল, রহতীর মূল, ভেউড়ীমূল, ভড়্ভড়ে মূল ও পুন্নবামূল চুল প্রত্যেক ২ তোলা; পারদ > তোলা;
গন্ধক > তোলা। এই সমুদায় দ্রবা আদার
রসে মাড়িয়া বিটকা প্রস্তুত করিবে। এই
উষধ দেবন করিলে অলাপত্ত অরু.চ. প্রহণী
ক্রনা, কামলা, ভগলার, শোথ, গুলা, শুল ও
আমমানা প্রভাত নানাবিধ রোগ প্রশানত
হয়। জলগোত অল, মাণ্য, দার, তক্ত, কাভি,
মংতা ও ভলপক দ্রবা প্রভৃতি পথা।
পানিদলে বেল, গুড়, কাড্ডা, লারকেল, গুরু

সল্লা কুধাৰতা গুড়িক:।

রসগক্ষকভাগি সমানী কালগা থেছা।
বিকলা শতপুপা চালাক। শাক্ষরস্থা
পুনরার বচা দ্যা তিরুলা পাটকর্কম্থা
দান্তবিলা স্থাবিব তিরুলা পাটকর্কম্থা
মঙ্কা ছিলাই দ্রা প্রেলাই ক্রেছের।
আলম্বন আলেভি প্রেলাই ক্রেছের।
আলম্বন আলেভি প্রেলাই ক্রিছের।
আল্রাই ভ্রাইন্তবিলাই
আল্রাই ভ্রাইন্তবিলাই
আল্রাইন্তবিলাই
আল্রাইন্তবিলাইন্তবিলাই
আল্রাইন্তবিলাইন

পারদ, গদ্ধক, অল, ধননো, তিকটু, জিদলা, গুল্না, চই, জীরা, ক্ষজীরা, পুন্নার, বচ দহামূল, তেউচ্যুন্ন, ঘেট্কোল-মূল, ডানাক্রা ও অনস্থ্ল প্রত্যেক ২ ভোলা, মড়র ৪ তোলা। এই সমস্ত জ্বা আদার রসে মাড়িয়া গুড়কা প্রত্ত কারবে। অনুপান—কাছে। প্রত্যুহ এক এক গুড়কা দেবনীয়া ইহাতে অমাপত, প্রিণামণুগ, গাঁহা, আনাহ ও আমবাত প্রভৃতিরোগ নই ইইয়া তেজঃ, বল ও আম্বর বৃদ্ধি হয়।

কুধাবতী-গুড়িকা।

পাদে, লেভ্ গ্রুক, অন্ন, ত্রিক্টু, ত্রিফ্লা, বচ. যমানী, ওল্ফা, চট, জীবা ও ক্লেজীরা প্রত্যেক ১ পল , থেট্কোলমূল, প্রন্ধা, মাণ, পিপ্লমূল, ইন্দ্রেশ, কেওারিয়া, পদ্মগুলক, ভানকুনিমূল, ভেউড়ীমূল, দন্তীমূল, হড় হড়ে মূল, রক্তচন্দ্র, ভীমরাজ, আপাদ্ম্মল, পল্তা ও প্রকুড় প্রত্যেক ৪ ভোলা। এই সমুলায় দ্রব্য আলের রসে মাড়েয়া কুল আটির স্থায় বিটকা প্রস্তুত করিবে। অন্ত্রপান—ক্রিজা প্রতিকাশেরত করিবে। অন্ত্রপান—ক্রিজা প্রত্যাক এক এক বাটকা সেবনীয়। ইহা সেবন করিলে অজীণ, অন্যানালা, ভাষাক ও সমাপত্ত প্রভৃতি নানারোগ নই হয়। ইহাতে মধ্র দ্রব্য বিশেষতঃ ত্র্য্য ও চিনে বজ্জনীয়।

অভ্ৰন্ত দিঃ।

আ ওভাকে নিকৈঃ গিষ্টমন্ত্ৰ হৈ তথ্য সংশ্বিতমু। কলমাণা শ্বিসংহ'ব-পাওকৰ্ণৱসৈধ্য । ভঙ্গীয়ক শালিক-ক'লমারীবজেন চ। বৃশ্চাৱবৃহতী ভূঞ্চ-লক্ষ্ণাকেশ্বাজকৈঃ ॥ পোষণাং ভাবনং কুষাং পুটঞানেকৰো ভিষক্। বান্ধ্ৰিক কৰা তথা গাছকু 'ক্ষােৱবং বিহায়সং ॥

্রাণমতঃ কৃষ্ণ-মন্ত্র্ণ আশু ধান্তের কাজতে অহোরাত্র ভিজাইয়া রাণিবে। পরে ভাহা উক্ত কাজি দারা পেষণ করিয়া ভল, শাণ, হাড়যোড়া, খেঁটুকোল শাক, নটে শাক, শালিঞ্গাক, টাপানটে, খেতপুনর্বা, বৃহতী, ভূপরাজ, খেতকণ্টকারী (অভাবে নীলবুক্ষের মৃণ) ও কেপ্তর্ত্তে এই সকল জব্যের রবে ভাবনা দিয়া পুটপাক করিবে। যাবং নিশ্চন্দ্র ন। হয়, তাবং পুনংপুনং ভাবনা দিয়া এইরূপ পুটপাক করিবে।

গোহশুদ্ধিঃ।

প্রধান কিকশালিক-গাতিং নির্কাপিতং জলে।
কৈকলেহর নিতুর্বিবং লোহং কান্তানিকং পুনা।
বৃহৎপত্তকরিকর্ণ-তিকলাবৃদ্ধলারটাঃ।
নাণকন্দান্তিনিকা-তাল্যনীসমূদ্রবা।
পুতি হং সাধ্যাপ্তন শুক্ষনেরমার ব্রেং।

স্থানাক্ষিক ও শালিকশাক একত পেষণ করিয়া কান্তলোহে লেপন করিবে। পরে অন্ত্রিতে দক্ষ কার্য়া ত্রিকলার কাথে নিময় ও নির্ব্বাপিত করিবে। পাট্যালোধ হস্তিকণ-পলাশ ত্রিকলা, বীজতাজ্ক, মাণ, বনওল, হাজ্যোজা, আলা, দশমূল, সুভিরী ও তাল-মূলী, ইহাদের প্রত্যেকের যথাস্থাব স্বর্গর বা কাথে ভাবনা দিয়া গজপুটে পাক করিবে। বে পর্যান্ত উত্তনন্ধণ চূর্ণ না হয়, সেই প্রান্ত পুন্পুন্য ক্র প্রক্রিয়া অবলম্বন করিবে।

মপুরশুদ্ধিঃ।

নাশরং বেতবাট্যালং মধুপণীমযুরকম্।
তঞ্জীয়ঞ্চ বর্ধাহনং দহাধন্দে; দ্বি:মব চ॥
পাক্যং হজার্পনভূরং গোম্ত্রেণ দিনত্রয়ম্।
অন্তর্ধ;প্রমদ্ধাঞ্চ তথা স্থাপ্যং দিনত্রয়ম্।
বিচুর্বিতং শুদ্ধিরিয়াং লোহকিউজ দশিতা॥

শেত হড়্হড়ে, খেত বেড়েলা, গুলঞ্চ, আপাঙ্গ, ক্ষুদে নটে ও পুন্নবা, এই সকল এব্যের মূল থক্ ও পল্লব একটি হাঁড়ির মধ্যে পাতিরা তহুপরি পুরাতন জীর্ণমণ্ড্র স্থাপন পুরুক উ মণ্ডুরের উপরি ভাগ উক্ত এব্যের মূলানি দ্বারা আচ্ছানিত করিবে, পরে উহাতে গোমূত্র দিয়া এরপভাবে ৩ দিন পাক করিবে, যেন উহা দগ্ধ হইয়া যায়। তৎপরে ঐ হাড়ীর মুখে একখানি শরা চাপা দিয়া সন্ধিস্থল উত্তমরূপে প্রলিপ্ত করতঃ অন্তর্বাঙ্গে তিন দিন পর্যান্ত পাক করিবে। পাক সমাপ্ত হইলে মাগুর জলে প্রক্ষালিত ও আহেপে সংক্তম করিয়া অচুনিত করিবে। ইহাই মাগুরের শুদ্ধি।

পারণগুদিঃ।

জয়ন্তা। বৰ্দ্ধমানস্ত অ'র্কক্ষরদেন চ। ব্যুয়স্ত'লচাকুপুর্কৈরেং মন্দ্রং রসন্যোধনমু॥

ভয়স্তাপত্র , এরগুপত্র, আদ্যাও কাকমাচীব রদে ধপজেনে মদন করিলে পারদের শুদ্ধি হয়।

গদকশুদ্ধিঃ ৷

গন্ধকং নদনীতাথাং কুদ্রিতং লৌহজানে। তিথা চণ্ডাতপে গুলং ভূলপান্ধকাল,তম্ ॥ তথা বক্ষো একীভূতং ত্রিতং বস্তগালিতম্। বঞাদ্ ভূলঃসে জিপুং পুনং কুমং বিত্তধাতি॥

নবনীতাগা গদ্ধক পৌহপাত্রে ভীমরাজে ব রদের স.হত আগ্নাবিত করিয়া প্রচিণ্ড আতপে শুক্ষ করিবে। এইরূপ তিনবার করিয়া অগ্নিতে গলাইবে এবং তৎক্ষণাৎ ন্মতাক্ত স্কন্ধ বন্ধবারা ভাকিয়া ভীমরাজের রসে নিক্ষেপ করিবে। পরে উত্তোলন করিয়া শুকাইয়া গাইবে। এইরূপে পূর্কোক্ত জ্বব্য সকল শোধন করিয়া কুশাবভী বটিকাতে প্রয়োগ করিবে।

ব্বহৎ ক্ষুধাবতা-বটিকা।

গগন;দ্ ছিপলং চূর্ণং লৌংস্থ পলমাত্রকম্।
লৌংকট্রপলার্জক সর্পামেকতা সংস্থিতম্।
মঞ্কপণবিশির-ভালমূলীরসৈপ্তথা।
বরীভূলকেশরাজ-কালমারিবজৈরধা।
তিফলাভদ্রমুক্তাভিঃ স্থালীপাকাদ্ বিচূর্ণিতম্।
রসগন্ধকারাং কর্ণং প্রভোকং গ্রাহ্মেকতঃ।
ভন্নস্থাশিলাপনে যতুতঃ কল্জনীকৃতম্।
বচা চবাং বমানী চ জীরকে শভপুশিকা।

त्यायः गुष्टः विष्ठक्रक अश्विकः धत्रमञ्जती । ত্রিবতা চিত্রকো দম্ভী পূর্যাবর্ত্তঃ সিহস্থপা ॥ ভঙ্গমাণকৰন্দান্ত ঘণ্টাকৰ্ণক এব চ। দণ্ডোৎপলা কেশবাজকালীবঙ্কডকো^৯পি চ॥ এষ'মৃদ্ধপলং প্রাহাং পটম্বর্তং স্কুর্ণিতম্। প্রত্যেকং ত্রিফলায়াণ্ট পলার্দ্ধং পলমেন চ। এতৎ সর্বাং সমালোডা লৌংপাত্রে চ ভাবরেং। আতপে দণ্ডস গৃষ্টমার্ক্রক রু রুদৈ স্থিবা। ভদ্রমেন শিলাপিষ্টাং গুডিকাং কারয়েছ ভিষ**ক**। বদরান্তিনিভাং গুলাং সুনিগুপ্তাং নিধ'পয়েব। তৎ প্রাত্যর্ভাক্তনাদৌ চ সেবিতং গড়িকাত্রয়ম ! আমোদকাতুপানক হিতং মধুরবজি চম ॥ प्रथम मातिरकलक विज्ञानेष्टर विश्ववटः। ভোজাং যথেপ্তমিষ্টক বারিছভায়কাঞ্জিকম 🕫 হস্তায় পি.জং বিবিধং শূলঞ্পরিণামজ্য পাঙ্রোগক গুলাক পে'খে'দরগুদামহান্। হক্ষাণ্ড পঞ্চকাসাংশ্ৰচ মন্দাণ্ডি হুমুরোচক্ষ , व्यक्तित् अनुमन्। नाइम 'मन् कर वर्ग भग्न । ভটা কুধাৰতী সেয়ং বিখাতো রে'গনানিন'।

অলু ২ পল, লোহ ১ পল, মওর ৪ ভোলা, এই সমুলায় একলে কৰিয়া, থানকুন, শেত-হড়্ছড়ে ও ভালমুলী ইহাদেন (৮ পল) বলে স্থালীপাক করিবে। শতমূলী, ভীমরাজ, কেন্তরে ও কাটানটো ংসে বিতীয় স্থালীপাক এবং ত্রিফলা ও নাগ্রমূতার রদে গৃতীয় शालोभाक कतिया भरत के मकन जना हुन क दित् । भावन २ (छोना, भन्नक २ (छोना, अर्थ : তুই দ্রব্য মাড়িয়া উত্তমবাপে কজ্লী করিয়া क्टर्रा अम्बत् शृत्मां क अञ्चापि हुनं. এहे कड्डनी এवः वह. हर्रे, यभागी. क्रोत्रं, कुछड़ीत्रां. শুল্ফা, ত্রিকটু, মুতা, বিড়ন্স, পিপুলমুল, আপান্ধমূল, ভেউড়ীমূল, চিতামূল, দন্তী মুল, শেংত্ড়তংড় মূল, ভীমবাজ, মণ, যে টুকোল, ভালকুনিম্ল, কেন্ড'র, কালিয়া-কড়ামূল ও কৈ৷ক্ড়াশুলী প্রত্যেক ৪ তেলি: ত্রিফলা মিলিত :॥ ॰ পল, এই সমুদার লৌহ-পাত্রে আদার রুসে ৩ বার ভাবনা দিয়া এবং িলাতে পেঘণ করিয়া কুল অ্রাটির ন্তায় বাটকা এক্ত করিবে। অনুপান—কাজি। প্রাতে ও। ভোজনের পুরের ০ ২টিকা সেবনীয়। এই উব্ধ । মাংসের রস প্রভৃতি। ইহা অগ্নিবদ্ধক।

দেবন কালে মধুর দ্রব্য বিশেষতঃ ছগ্ধ ও নারি-কেল বর্জনীয়। ইহাতে অমুপিত, পরিণাম-শূল পাণ্ড, গুলা, শোপ, উদুরাময়, ধলা, পঞ্চ-বিণ কাদ, মন্দারি, অফ্রেড ও প্রীহা প্রভৃতি। নানা বোগ উপশ্মিত হয়।

পঞ্চাননগু (।

উদ্বত্তং প্রার্কি ত্রসমং গুদ্ধাব্দক্ষ। উয়ে স্বিলাং ভামপানং লিপ্তা মুদান্তরে কিপেৎ॥ গ'ক্ড'ছা পঞ্চলবণেলি প্রা গ্রুপ্টে প্রেৎ। সিক্ষং ভাষ্ড্রং সমাদাধ পলমেকং বিচর্থেখ্য পার্রান্ত প্রত্থিক: গ্রাক্ত প্রপু: ভ্রমী : প্রদায়ত ক্রেইজ গ্রামন্ত পলং প্রমা মন না এতথ্যপা চারিকটা বিষ্ণালিক চা িব ণা চলিকা রত্য কিথবা জীলকল্বয় 🛭 এতে ধাং পলিবৈ ভাগেদিউকৰ্কমাণকম। গ্ৰহণ চিত্ৰৰ তৈওৰ কুলিশাৰ্ণ পলাৰ্থিকম। অ'দ্ৰুক্ত টেনঃ পিত্ৰ। গুডিকাং মাৰকে: নিভান। পঞ্ননবটা পাতা সক্রেখ্রবিনালিনা জয়পি ওমঙাবাংখি-নাশিনা চ রসাংনী। মহাজিকারিকা চিষা পরিব্যেরালাপ্রা 🛭 ে থেপা ভাষ্যান হ-প্রতি থাকালর প্রা। ভ#বুষা'ল্ল'নি প্রে'মাংসর্বা ভিডা: #

পারন্ধ তোলা, গলক ৪ তোলা, এই উভয়ে কজ্লা কবিল ভদ্মার ১ পশ পরিমিত তাম্পত্রেঃ চতুজিক লিপ্ত করিবে। ভানপার মুধাবার ও পঞ্চলবণ ছোরা আছোদিত কবিয়া গ্রুপুটে পাক করিবে। ইহাতে তাম ভশ্ব থ্টবে। ও ভাষচুর্গ স্পল, পারদ, গন্ধক, (लोड, अञ्च, यमानी, दलका, जिकहे, जिक्ना, टिউड़ीयून, ठरे, हर्खायून, जाशांत्रयून, कौता, ক্বফন্সীব: প্রত্যেক ১ পল , গেইকোলমূল, মাণ, পিপুলমূল, 'চতামূল ও হাড্যোড়ার মূল প্রাত্তাক ৪ ভোলা। এই সমুদায় জবা আদার नाम गाष्ट्रिश > यामा व्ययान विका करित्व। ইহাতে অম্লাগত, পরিশামশূল, শোথ ও গুলা প্রভাত রোগের উপশম হয়। পথা--- হগ্ন ও

ভাঙ্গরামূতাভ্রম।

বাসামূতা-কেশরাজ-পর্ণটানিবভূককন্।
মূব্য রুশ্টারবৃহতী-বাট্যালকশতাবরা ॥
এবাং সবৈঃ পলোঝানেম দিতং বিমলভকন্।
সহস্রপুটিতং তত্র শতাব্যা রসং ক্ষিপেৎ ॥
বারবাদশকং দ্বা বটিকাং কারয়েদ্ ভিষক।
ভাস্করামূতন'মেদমন্ত্রপিতং নিযক্তিতি ॥
শ্লমন্ত্রবং শূলং শূলক পরিণামজন্।
ভদ্দিং হল'সমক্তিং ভূকাং কাসক ভূজ্যুন্॥
হাদ্গ্রহং কামলাং রক্তপিতং বল্লাণমের চ।
দাহং পোলং ভ্রমং তন্ত্রাং বিজ্ঞোটং কৃষ্ঠমের চ।
খাসং মূর্চ্ছাক মন্দাগ্রিং বক্তর্প্রীহোদরং ভূঝা॥

বাদকছাল, গুলঞ্চ, 'কেশুরিয়া, ক্ষেত্-পাপ্ড়া, নিমছাল, ভুঙ্গরাজ, মৃত্য, শ্বেতপ্ন-নবা, বৃহতী, বেড়েলা ও শতমূলী, ইহাদের প্রস্ত্রেকেব ১ পল পরিমিত বংস মদিত সহস্ পুটিত অল্ল শতমূলীর রুদে ১২ বার ভাবনা দিয়া বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহা স্বেন ু করিলে অন্নপিত্ত, শূল, অহন্তবশূল ও ভুক্তা । প্রভৃতি নানারোগ প্রশ্নিত হয়।

नानाविनामः।

রসে। বলিবোমে রবিস্ত লৌচণ ধা ব্রক্ষনীরৈ পিনিনং বিদ্যা। ভদর্গপুর মূচনাক্রেন সংম্করেদজ্ঞ হি বল্লগুম্ ॥ হস্যাসপ্তং মনুনাবলীটো লীলানিলাসনা রসরাজ গেল। ভদিং সশূলাং প্রদয়প্ত দাহং নিবারেদেব ন সংশ্যেতি ॥ দ্বাং সনুস্থাওরসং স্থাতা-ফ্লং সনুস্থাওরসং স্থাতা-

পারদ, গন্ধক, অল্, ! তান ও শৌহ এই
সমুদার সমানভাগে লইয়া আমলকী ও বংহভার রুদে ও দিন অল্ল মন্দন করিয়া পশ্চাৎ
ভূঙ্গরাজ্বদে মন্দন করিবে। মাত্রা— ২ রতি।
ইহা মধ্, ছগ্ধ, কুম্ভার জল ও আমলকীর রস
অথবা চিনির সহিত সেব্য। ইহা সেবন
করিলে অমুপিত্ত, শূল্যুক্ত ব্যি ও সংপ্রদাহ
(বুক জ্বালা) নিবারিত হয়।

জীরকান্তং মৃতম্।

পিষ্ট্ৰাঞ্জীং সধস্যাকাং ঘৃতপ্ৰস্থং বিপাচয়েৎ। কফপিতাক্ষচিংরং মন্দানলবমিং জয়েৎ॥

গব্যহ্বত / ৪ সের। ক্লফজীরা ও ধনের কল্ক / ১ সের। জল ১৬ সের। যথানিয়মে পাক করিবে। এই স্থৃত কফপিত্ত, অরুচি, অগ্নিমান্য ও বমি নিবারক।

পটোলশুগাঁয়তম।

পটে লশুঠোত কৰ্মাভাগি কেবলং কুলকেন বা। মৃতপ্ৰস্থাং নিপক্তন্যাং কফ্পিড্ৰহনং গ্ৰেম !!

পণ্ডাও শুঠেৰ কৰে বাকেবল পল্তাব কৰে যথাবিধি ঘুত পাক কবিবে। এই ছুত কক্পিত-মাশক।

পিপ্রবায়তম্।

পি**স্গ**লাৰ শেকজেন হাতং সিদ্ধং মধুপ্প, •ম্। পিৰেচচ প্ৰাত্তকাৰ হাত্ৰপাও-নিবৃত্তয়ে ॥

পিপুলের কাপ ও করে মধাবিধানে মৃত্ত পাক কবিয়া সেই মৃত্যুত্ব স্থিত প্রাতঃকালে পান কবিলে অমুপিত নিরোবিত হয়।

দাক্ষাগ্র-মুত্র।

স্থাক্ষায় ভাশক্রপড়োলপটায়,
সোণীরপাজীগনচন্দ্রৈন্দ।
বাংঘানিকাজীগনচন্দ্রিন্দ।
কাংজাপেতাবি রা ভগাতে,
কাংজা পচেতা সাপালগো নেভি, ।
গুজীত মাজো সভা ছোভানেন
সক্ষত্ত,পানেতাপ ভিষ্যা, বিদ্যান্ত।
বলাস্থা,তং এই শাং প্রক্ষা;
কাসাগিসাদি ব্রুহম্পিউস্ ॥
সক্ষা শিহতাদ্ স্থাত্যেতালাভ্যান্যন্ত, প্রযুক্তর গ্রুহাতালাভ্যান্যন্ত, প্রযুক্তর গ্রুহাতালাভ্যান্যন্ত, প্রযুক্তর গ্রুহাতালাভ্যান্যন্ত, প্রযুক্তর গ্রুহাতালাভ্যান্যন্ত, প্রযুক্তর গ্রুহাতালাভ্যান্যন্ত, ॥

জাকা, গুলঞ্চ, ইন্দ্ৰৰ, পল্তা, বেশার মূল, আমলকা, মূতা, রক্তচন্দ্ৰ, বলাডুমুর, পল্পাষ্ঠ, চিৰতা ও গনে, ইহাদের কলে যথা বিধানে ঘত পাক কলিবে। ইহা অল্পানী-ম্বের সহিত সর্ক্তালে প্রযোজ্য। এই ঘৃত সেবনে কফপিত্ত, উংকট গ্রহণী, কাদ, অগ্নি-মান্দ্য, জ্বর ও সর্ববিপ্রকাব স্বয়পিত্ত বিনষ্ট হয়।

শতাবরীয়তম্।

শতাববীমূলককং স্বতপ্রস্থং প্রঃসমন্।
পচেল্পিরাল সমাক্ কীরং দ্রা চতুপ্ত গম্।
নাশকেদম্পিজক বাহপিরোভবান্ গদান্।
রঙ্গপিজং ত্যাং কৃচ্ছাং গদেং সন্তাপমের চা।
(শতাবরীমূতে প্রঃসম্মিতি প্রঃশক্তেনেই প্রঃস্থাধি শতাববীর্যো প্রাক্তি, নামু কীরং, তথা পৃথপ্ত-প্রাধাধ শতাববীর্যো প্রাক্তি, নামু কীরং, তথা পৃথপ্ত-প্রাধাধ শ্যাববীর্যা প্রাক্তি, নামু কীরং, তথা পৃথপ্ত-প্রাক্তি, মুম্বাধি চ্নাক্তি, মুম্বাধি চ্নাক্তি,

মৃত /৪ দের। কল্লার্থ—শতমূলী এক /১ দেব, শতমূলীবস -৪ দেব, তথা ৬ দেব। মৃত অগ্লিকে পাক করিবে। এই মৃত পান করিবে অস্ক্রপত, বাতপিত্যোপন নানা-রোগ, রক্তপিত, ত্বল ও মৃচ্ছা প্রভৃতি পাড়া নিবারিত হয়।

নারায়ণয়তম্।

এলৈদ শিশুলৈ কাঝাং পিশ্পলালাড়েশং পলম্।
পাদশেষং হরেৎ কাঝাং কাঝাতুলাং মৃতং পচেৎ ॥
রসপ্রস্থা গুড় চ্যান্চ ধার্রাঃ মন্তিপলং রসম্।
ক্রান্ধা ধার্রা পটোলঞ্জ বিগঞ্চ কটুকা বচা ॥
পলপ্রমাণং কন্ধক দ্বা স্পি: সম্মুদ্ধেং।
ক্রমপি:বহরং খাদেদ্ দাইচ্ছ দ্লিবারণম্।
ক্রমপি:বহরং খাদেদ্ দাইচ্ছ দ্লিবারণম্।
ক্রমপি:বহরং সাধেন্ধ সংস্থা নামা নামাখাং মৃথ্যেৎ সাধ্

মৃত , ৫ সের। কাথার্থ—পিপুল /২ সের. জল ২০ সের, শেষ /৫ সের। গুলক্ষ রস /৪ সের, আনলকীর রস / গা০ সেব। কলার্থ — দ্রাক্ষা, আনলকী, পটোলপতা, শুঁ, কটুকী ও বচ প্রত্যেক ১ পল। এই মৃত পানে অম্বর্ণিও, দাহ ও ব্যি নিবারিত হয়।

বাসায়তং তিজ্ঞগ্নতং পিশ্বলীয়তমেব বা।
অন্নপিত্তে প্রয়োজনাং গুড়কুমাগুকং তপা॥
পক্তিশুলাপহা বোগান্তথা গণ্ডামনকাপি।

অমপিত্ত রোগে বাদান্বত, তিক্তবন্বত, পিপ্পলীন্বত, গুড়কুমাগুক, গণ্ডামলকী এবং পরিণামশূল-মাশক সমস্ত ঔষধ প্রযোজ্য।

শ্ৰীবিল্পতৈলম।

বালবিশ্বং পালশতং জলছোগে বিপাচয়েৎ।
পাদাবশেরে ভামিংস্ত তৈলপ্রস্থং বিপাচয়েৎ॥
ধাত্রীরসং তৈলসমং দ্বিগুণং ছাগছ্পকম্।
কব্দীকৃত্য পচেদ্ধীমান্ ধাত্রীং লাক্ষাং ভবাভয়াম্॥
মৃত্তকং চলনোদীচ্য-সরলং দোদার চ।
মঞ্জিন্তাং চলনং কুঠমেলাং তগরপাদিকম্॥
মাংসাং শৈলেয়কং পত্রং প্রিয়ক্তং শারিবাং বচাম্।
শভাবরীমধ্যকাং শভপুপাং পুনর্নাম্॥
তং সিদ্ধং স্থায়ে কুন্তে মাসমেকং স্থাকিতে।
বিধাতলমিদং শ্রেষ্ঠমম্পিত্রকুলান্তক্তং॥
ম্নাইবিধং ইন্তি সংধাসাধ্যং ন সংশ্যঃ।
স্তিকারোগশ্যমন গর্ভদং শুক্রবর্দ্ধন্য॥
হস্তপাদমিবোদাহং লৌকলাং কুশ্তাং তথা।
গ্রহণগুলান্তন্ত্রাং ক্রেন্ড্রিয়াং॥

তিলতৈল ৪ সের। কাথার্থ—ক্চিবেলশুঠ ১২॥০ দের, জল ৬৪ দেব, শেষ ১৬
দের, আমলকীব রদ ৪৪ দেব, ভাগত্যু ৪৮
দের। ক্ষার্থ—আমলকী, লাক্ষা, হরীতকী,
মুতা, রক্তচন্দন, বালা, দরলকার্র, দেবদারু,
মঞ্জির্গা, শেতচন্দন, কুড়, এলাইচ, তগরপাতকা,
জটামাংসী, শৈলজ, তেজপত্র, প্রিয়ন্ত্র্যু, অনন্তমূল, বচ, শত্রুলী, অর্থান্ধা, শুল্ফা ও পুননবা মিলিত ৪১ দের। এই তৈল ঘথাবিদি
পাক করিয়া আবৃতমুখ কুন্তে যত্রপূর্বক এক
মাস রক্ষা করিবে। ইহা মন্দনে অমপিত্র, শূল,
হস্ত পদাদিন জালা ও স্তিকা রোগ প্রভৃতি
নিবারিত হয়।

অথ পথ্যাপখ্যবিধিঃ।

অনুপিত্রোগে প্রানি।

উদ্বাস বমনং প্রমাধানে তু বিরেচনম্।
দর্মারর শনং পশুনিরিরক্টালি শালয়ঃ॥
দরগোর্মমূদ্যাশ পরাণা জাললো রসঃ।
জলানি তপ্তলীতানি শালামানুশক্তবঃ।
কর্লোটকং কাবনেরং পটোলং হিলমোচিকা।
বেজাগ্রং বৃদ্ধকুম, এং রস্তাপুষ্পাশ বাস্তকম্॥
ক্লিখং দাড়িমং ধাত্রীং তিক্তানি সকলাস্থাপি
পানারানি সমস্তানি কফ্পিগুহ্রাণি চ।
অ্যাপ্তাময়ে নিতাং সেবিভন্যানি মানবৈঃ॥

উদ্ধাণ অমপিত্তে প্রথমতঃ বমন, অধাণ অমপিত্তে প্রথমতঃ বিরেচন কর্ত্তবা, তৎপরে উদ্ধাধোণত উভরবিধ অমপিত্তেই অল ভোজন করাইয়া নিরুহু প্রদের। এই রোগে পুরাতন শালিতগুল, যব, গোধ্ম, মুগ, জাঙ্গল মাংদের রদ, উফজল শীতল করিয়া পান, চিনি, মধু, ছাতু, কাঁক্রোল, করলা, পটোল, হিঞা-শাক, বেভাগ্র, পাকা কুম্ডা, কলার মোচা ও বেভোশাক, কংগেবেল, দাড়িম, আমলকী, দমস্ত ভিক্তদ্রব্য এবং কফ ও পিত্তনাশক ঘাবতীয় অম্পান, অমপিত্রোগির স্পপ্য।

অমূপিভরোগেঽপথ্যান।

নবামানি বিক্লমানি পিগুকোপকরাণি চ।
বেগরোধং তিলান্ মাধান কুলথাং জৈলভকণম।
অবিদ্যান্ধক ধান্তায়ং লবণায়কট্নি চ।
গুর্বায়ং দিবি মন্তাক বর্জ্জনেমাপিগুবান্।
ন্তান চাউলের আরু, বিক্লমুদ্রব্য, পিগু-প্রকোপক কর্যা, মলমুন্তাদির বেগণারণ, তিল,
মায়কলায়, কুলথকলায় ও তৈল ভক্ষণ, মেধীহ্যা, কাজী, লবণ রস স্তুজ ক্রব্য, আমদ্রব্য,
কর্টুদ্রব্য, গুরুপাক অন্ন, দ্বি ও নতা, এই
সকল অম্মপিত্রোগাঁ পিরিত্যাগ করিবে।

ইত্যায়ুরের্দ-সংগ্রহে অনুপিভাধিকার:।

অথ বিসর্পাধিকারঃ!

অথ বিসর্প-নিদানম্।

লবণামকটক দ্বি-সংসেবাদোশকোপ তং । বিদ্রপার সংখ্যা জেয়া সক্ষতা পরিদ্রপাণ্ড। পুথক তয়ভিভিজেকো বিদর্পা বলজান্তর:। বাডিকঃ পৈডিকলৈচৰ কফজং সাল্লিপ'ডিকং ৷ চন্ধার এতে বীদুর্পা বন্ধান্তে দুকুলাপ্রয়: । অংগেয়ো বাতপিড়াভাং গ্রন্থাগ্য ককবাডজ: । বস্তু কল্পথকা গে'রঃ স পিতুকক্সস্তবঃ॥ तकः अभीका दृश्याः मः पृष्ः (भागवःया भवाः । বিদ্রপ**্ৰাং সমুৎপত্তো বিজে**য়া: সপ্ত ধাতব: ॥ ভতা বাতং দ বাসপে। বাংকরসমবাথঃ : শোথক্ষরণনিক্ষোদ-ভেদায়াসংঠিতবর্ন । পিত্তাদু দ্রুতগতিঃ পিত্ত-অর্থলিকে হৈতিলোহিতঃ : কলাথ কন্তবৃতঃ শ্রিম: কল্পেরসম্প্রক। স্ত্রিপ্তসম্পশ্চ স্ক্লিক্সম্বিত:॥ বাতপিতাজ্যক্ষি-মুচ্ছাতিসায়তৃড় ভামৈ।। গ্রন্থিভেদ।গ্রিস্থন-ভ্রকারে:চকৈয় ভি: 🛚 करवा कि मर्लाभक्षक भी शाक्ष (व!५क) र्वत । ्यः यः (मनः विमर्शनः विमर्भाः छत्वः म मः ॥ শান্ত সারাসিতো নীলো রক্তো বাল্ড চ চীয়তে। অখিলন্ধ ইব কোটেঃ শীঘগৰাখুক্তা স চ ৷

মুখ্যাত্মারী বীসপঃ শুংগ্রেভিডিবলগুডঃ। नामराव्यक्रः अरद्धः मरकारः निकाक वानमीतरारः । হিকাঞ্চ স গতে হবস্থানীদলী। লভতে ন না। ক চিছ্মারতি গ্রে ভ্রিণ্যাস্থাদেশ ॥ ८५ द्वेगानञ्ज ५ दिखी यस्तारमञ्जादावान । জ্পুবোধেত্র,তে নিজা , সোহগ্রিবীসর্প উচাতে । करकन क्रमः भराना क्रिका ७९ दक्षा कक्षम । রক্তং বা ওজরক্তপ্ত তক্শিরামায়সাংসগম।। দৃষ্ঠিত। তু দীঘারু-বৃঙ্গুলখরা মন্ম । গ্রন্থীনং কুরতে মালাং সরস্তাং ভীব্রন্থগ জ্বাম । খাদক (সাতী সারাস্ত-শোষ হ কাব্রি জামে:। भाकरेनन्नामुध्याक-छकाशिमकरेनयू छ।न् ॥ হতায়ং প্রস্থিপ। কফমান্স একাপজ: । বক্পিডাগ্রঃ হুছো নিদা চল্রা শিরোরগা। অঙ্গানসাদ্ধিকেপৌ প্রলেপারোচকভ্রমা:॥ मुद्धाविशामित छत्ता । श्रिशासिक हो देव । আমোগবেশনং লেপঃ শ্রোতসাং স চ সপ্তি॥ প্রায়েণানান্ধং গুরুত্রকদেশং ন চাতিক্রক॥ পিড়কৈরকার্ণোহতি-পীতলোহিতপাতুরৈ:। বিধ্বোছসিতো মেচকাভো মলিন: শোপবান গুল:। গৰ্ভীরপাক: প্রাজ্যোত্মা প্রপ্ত: ক্লিকোংশ্বাতে ॥

পদক্রজীর্বাংশক স্পষ্টবার্শিরাগণ।
শ্বগানী চ নীসর্পাঃ কর্দ্দমাপামুশন্তি তম ॥
বাহ্যহেতোঃ ক্তাং কুদ্ধঃ সরক্তপিত্তমীররন্।
নীসর্পাং মাকুতঃ কুষাংহ কুলথসদৃশৈশিচত্য।
কোটেঃ শোপ্তরক্জা-দাহংচাং ভাবলোহিত্য॥

লংগ অন্ন কটু ও উষ্ণ দ্রবাদির সত্ত সেবন ছারা বাতাদি দোষ প্রকুপিত হইরা বিস্পরোগ উৎপাদন করে। ইহা শরীরের সকল স্থানে বিস্পিত হয় বলিয়া ইছার নাম নিস্প। বিস্পরোগ সাত একার; যথা— বাতজ, পিত্তজ্ব, শ্লেমজ, সালিপাতিক, বাত-পিত্তজ্ব, বাতশ্লেমজ ও পিত্তশ্লেমজ। ইহাদের মধ্যে বাতপিত বিস্পকে অন্মবিস্প, বাত-শ্লেমজ বিস্পকে গ্রন্থিকপ ও পিত্তশ্লেমজ বিস্পকে ক্ষমক বিস্প কহে।

কুষ্ঠবোগের ভাগ বিদর্পরোগেরও রক্ত, লদীকা, ত্বক্ ও মাংদ এই চারিট দ্যা এবং বায়ু পিত ও কফ এই তিনটি লোষ, সমুদায়ে দাতটি উপাদান-সাম্থা।

(কটে ও বিসপে প্রভেদ এই-কুট রোগে (भाष पृथा मकल প्रतार्थई श्वित्र छाद नीर्घकाल ব্যাপিয়া কার্য্য করে, কুঠে রক্তপিত্তের প্রাবল্য থাকে না। কিন্তু বিদর্পরোগে রক্ত পিত্ত প্রবল এবং উহারা সর্কাশরীরে শীঘ্র শীঘ্র বিস-পিত হইয়া ক্রিয়া করিতে থাকে। তান্তর উহা-দের নিদানগতও বৈষম্য আছে; গ্রাহ্মণ গুরুর অপমান ও পরদ্রব্যহরণাদি কুট রোগের निषान, किन्नु উহা বিসপের নিषान नहर। শান্নিপাতিক ; কিন্তু কাহার কুষ্ঠরোগ বিস্প রোগ পৃথক্ পৃথক কাহার মতে দোষেও উদ্বত হইতে পারে।)

বাতিক বিসপে বাতজ্বের স্থায় মন্তক ক্লয় গাঁও ও উল্বে ব্যথা, শোণ, স্ফুণ্ন, স্চীবেধবৎ বা ভঙ্গবৎ বেদনা, শ্রম না করি-য়াও শ্রান্তিবোধ ও রোমাঞ্চ, এই দকল লক্ষণ প্রকাশ পায়।

পৈত্তিক বিদর্প অতি লোহিতবর্ণ, শীঘ্র বিদর্পনশীল ও পিত্তজ্বলক্ষাক্রাক্ত।

কফজ বিদর্প কণ্ণুযুক্ত, চিরুণ ও কফজব-লক্ষণায়িত।

সান্নিপাতিক বিসপেঁ, উক্ত ব'তঙ্গাদি ত্রিবিধ বিসপেঁ,ই লক্ষণ নকল মিলিওভাবে উদিত হয়।

বাত্রপত্রিক অগ্রিবিসপে জা মুচ্চা, অভিদার, পিপাদা, ভ্রম, গ্রন্থিবেদনা, অ্থিমানা, তমক ও অকৃতি, এই সকল লক্ষণ প্রকাশ পায়। ইহাতে সমাস্ত অঞ্চ জনস্ত অঙ্গার স্বারা ব্যাপ্ত বলিয়া বোধ হয়। বিদর্পত শ্রীরের যে যে স্থানে বিদ্পণ করে, সেই দেই স্থান নিকাপিত অঙ্গারের আয় ক্ষার্বর হয়, কখন নীল বা রক্তবর্ণ হইতেও দেখা যায়। অগ্নিদগ্মস্থানবং চত্দিক স্ফোটকবাণ্ডি হয়। নীঘু গুমুনশীল বলিয়া ইহা ফুদুয়াদি মুখ্য স্থান সকলকে ওরার আক্রমণ করে। তাহাতে বার অভিনয় প্রবল হইয়া অঙ্গে বেদনা জনায়, मः छ। ও निर्मा नान करत এवः श्वाम छ हिका আনয়ন করে, রোগী একপ অবস্থাপর ২য় त्य. ८५ छोतान 'श्डेबाउ क्रि स्था उ कामनािक কিছুতেই স্থ্লাভ করিতে পারে না। এইরূপ নানা যন্ত্রণা ভোগ করিয়া ক্রমে ক্লিষ্ট, অবসর ও সংজ্ঞাহীন হইয়া রোগা চিরনিদায় নিদ্রিত হয়।

গুষ্ট কফ, কুপিত বায়ুকে অবক্রদ্ধ করিলে সেই কুপিত বায়ু অবরোগক-কফকে বহুভাগে বিভক্ত করিয়া গ্রন্থির শ্রেণী উৎপাদন করে; অথবা ঐ বায়ু, রক্তবহল ব্যক্তির স্বক্ শিরা স্নায়ু ও মাংসগত রক্তকে দূষিত করিয়া পূর্ব্বোক্ত প্রকারে গ্রন্থিমালারূপে উদ্ভাবিত করিয়া থাকে। এই গ্রন্থিমালা দীর্ঘ এবং গ্রন্থি সকল বর্ত্তুল, খূল, কঠিন ও রক্তবর্ণ। ইহাতে অভিশন্ন বেদনা, প্রবল জন্ন, শ্বাস, কাস, অতীদার, ম্থশোষ, হিকা, বমি, ভ্রম, জ্ঞানবৈপ-রীত্য, বিবর্ণনা, মূর্চ্ডা, অঙ্গভঙ্গ ও অগ্নিমান্যা, এই দকল লক্ষণ উপস্থিত হয়। ইহারই নাম গ্রন্থিবিদর্প; ইহা বাত্তপ্রস্থার প্রকোপে উদ্বত।

পিত্তবৈশ্বিক বিদর্পরোগে জর, জড়তা,
নিজা, তন্ত্রা, শিরোবেদনা, দেহের অবসাদ,
আক্ষেপ, মুখলেপ, অরুচি, ত্রম, মুচ্ছা, অগ্রিমান্দ্য, অন্থিতেন, পিপানা, ইন্দ্রিরগুরুতা,
অসক-পুনীর নির্গম ও প্রোতংদকলের লিপুতা,
এই দকল লক্ষণ প্রকাশ পায়। এই বিদর্প প্রায় আমাশ্যেই উত্ত হইয়া একদেশ-বাপী
হর, ইহা অতি পীত লোহিত বা পাত্রবর্ণ পিড্কাসমূহ খারা ব্যাপ্ত, তত্ত বেদনায়িত,
চিক্কণ রুষ্ণ রুষ্ণর (ভিতরে পাকে), অতি
উষ্ণুস্পর্ন, রিয়, বিনীন, প্রবং বর্ণ,বশিষ্ট ও
শবহর্গনী। এই রোগে মাংস গলিয়া পড়ে,
মতরাং শিবা ও সায় সকল স্পষ্ট প্রকাশিত
হয়। ইহাকেই কন্দ্যাণ্য-বিদর্প কছে।

শস্ত্রানি প্রহার তথাবা হিংপ্রক জন্তুর নথ দন্তানির আঘাত প্রভাগত বাফা হেতু বারা ক্ষত হইরা রক্ত ও পিতৃকে বিকৃত করিয়া কুল্প কলায়ের জায় আক্রাত-বিশিষ্ট ক্ষেণ্টকসমূহ ঘারা ব্যাপ্ত ও কৃষ্ণলোহিতবর্গ বিস্পৃতি উৎপানে করে। এই বিসপে শোথ, বেদনা, জর ও দাহ বিশ্বনান থাকে। ইহা পিতৃপ্ন বিদ্পে অন্তর্শুতি জানিবে।

অথ বিদর্প-চিকিৎসা।

বিরেকব্যনালেপ-সেচনাস্থগ্রিনোক্ষণে:। ভপাচরেদ্ যথাদোশং বিস্পান্বদাহিভিঃ॥

বিসপরোগে বাতাদিদোয় বিবেচনা করিয়া বিরেচন, বমন, এলেপ, পারবেক ও রঞ্জ-মোক্ষণ এবং অবিদাহী অন্ন পান ব্যবস্থা কারবে। পটে'লপিচুমন্দ্রীভাগি পিঞ্চল্যা মদনেন চ। বিসপে বমনং।শক্তং তথৈকেন্দ্রবলৈ সহ ॥

বিসপ রোগে পল্তা, নিমছাল ও ইন্দ্রযব, অথবা পিপুল, মদনফল ও ইন্দ্র্যব, ইংাদের কাথ পান করাইয়া বমন করান প্রশস্ত।
কেহ কেহ পল্তা ও নিমছালের কাথ, পিপুল,
মদনফল ও ইন্দ্র্যবের চ্ব প্রক্ষেপ দিয়া পান
করিতে ব্রস্থা দেন।

ত্রিধলারসমণ্যুক্তং সর্পিপ্রির্ত্তরা সহ। প্রয়োজনাং নিরেকার্থং নিসপ্তরশাশুয়ে। রসমামলকানাং বা মৃত্যিশ্রং প্রদাপ্রের।

বিসপ-জব-নিবারণার্থ ত্রিফলার কাপে স্বত্ত র তেইড়ী চূর্ব প্রক্ষেপ দিয়া, উহা বিকেচ-নাগ প্রয়োগ কাবে। অথবা স্বত্তিশ্র আম-লকীর রস ব্যবস্থা করিবে।

ृष्तव्हरः श्रादि (क्षेत्रारः श्रक्तमृष्ट्रहरम् । श्राप्तरमकमाश्यः चीतमार्शे वर्णवस्थाः ॥

ব্ ভিজ-বিদর্প রোগে ত্রপঞ্চমূল (কুল, কাল, শর, দভ ও ইকু) ব্ ভাতি স্বল্প পঞ্মূল, বুহুং পঞ্মূল, বুহুী পঞ্মূল (মেড়ালিসে, ছ্রিড্রা, ভূমিকুল্লাও, জনস্তমূল ও জ্ঞাঞ্জ) এবং কন্টকাপক্ষূল (মেলিক্র, লাভাবরা, বিন্টা, কালাকড়া ও ক্রম্প) প্রদেহ এবং মেচনক্রেপ অথবা গ্রত সহবোগে প্রায়োগ করিবে।

কৃষ্ঠং শতংকা ধ্রুসক্সি মুখ্যা ব্যৱস্থিত্তপুক্কাশগন্ধ । বংতেহকবংশার্ত্তপলাশ্চ থোড়াঃ সেকেয় লেপের তথা সূতেরু ।

বাতজ বিসপে কুড়, শুল্ফা, দেবদার, মুতা, বরাহকন্দ, (অভাবে চামার আলু), বনে, শজনে মূল, আকন্দাল, ব শনীল ও গাগড়া (কিংবা অর্জুন ছাল, ডখনের মতে নীল ক^{*}টি) এই সমস্ত এব্য হারা সেক ও লেগ, অথবা হহাদের সাহত ঘত পাক করিয়া সেই মুত প্রয়োগ করিবে।

রাস্ত্রা,নালোৎপালং দারু চন্দ্রনং নপুকং বলা।
মুভক্রার্মুডো লেপো বাভবীসপ্রাধনঃ ॥
(চন্দ্রন্ত্র রক্তং প্রযোজ্য ।)

রান্ধা, নীলোৎপল, দেবদারি, রক্তচন্দন, ষষ্টিমধু ও বেড়েলা, এই সকল দ্রব্য সমভাগে পেষণ করিয়া ঘত ও ছগ্ম সহ মিশাইয়া প্রলেপ দিলে বাতবিদপ নিবারিত হয়।

প্রপো ওর ব ম ঞ্জিন পরকোশীরদেশনৈঃ। সম্প্রীন্দবিকঃ পিডে কীর্পিট্যে প্রকেপয়েও॥

পুণ্ডরিগা, নঞ্জিষ্ঠা, পদ্মকাষ্ঠ, বেগার মূল, রন্তচন্দ্রক, বাষ্টিমধু ও নীলোৎপল, এই সকল ক্ষব্য জ্ঞান সহিত পেষণ করিয়া প্রালেপ দিলে পিরজ বিস্পারিগা বিশ্ব হয়।

কংশকশৃঙ্ক টিকপ্র গুলাঃ
সংশবলাঃ সোৎপলকর্দ্ধশশ্চ।
২র্ম থবাঃ পিত্তকৃতে (২সপে
লেপা বিধেয়াঃ স্থতাঃ ১৯৮১ । ॥

কেণ্ডর, পানিফল, পদ্মকাই, গুলঞ্চ, শৈবাল, নালোৎপল ও পদ্মমূলের কর্দ্ধন, এই সকল দ্রবা, অথবা ইহাদের যে কোনটি সংগ্রহ করিয়া পেহল করিবে। এবং উহা দ্রত সহ বস্ত্রগণ্ডে মাধাইয়া পিত্রবিদর্প রোগে স্থানিত প্রনেপ দিবে।

अप्पर्'ः পরিসেক' क - खाल পঞ্চৰ লৈ । প্রকে' নিরমধুক- চন্দ্রীনর: প্রশাস্তে ॥

পদাকাত, বেলার মূল, যষ্টিমধু ও রক্তচন্দন একত এই সকল জবোর অথবা পঞ্চ-বন্ধলের (বট, অর্থণ, পাকুড়, সজ্জুমুর ও কপীতন) প্রলেপ ও দেক, বিসপ রোগে হিতকর।

পিতে তু পদ্মিনীপকং পিষ্টং বা শ্ব্যালৈবলম্।

গুলুশুনুৱন্ত শুক্তিৰী গৈরিকং বা স্বভাষিতম্।

পিত্তবিসপরোগে পক্ষম্ল-লাম কদন, বা শঙা ও শেবাল, অথবা গুল্জ ও নিরুক, কিংবা গেরিমাটী যথোপযুক্ত পারমাণে মৃত সহ পেষণ করিয়া প্রলেপ দিবে।

শ্রুপ্রাধপাদা গুলা চ কদলী । ও এব চ।
বিসগ্রন্থিকলেপ: শুক্তি থেখা এছ গামুতঃ ।
বটের বাুরি, গুলঞ্চ, কদলী গভ (কলার।
থোড়) ও পদামণালের গ্রন্থি, এই সকল দ্রব্য

শতধৌত মৃত সহ ৰাট্যা প্ৰলেপ দিলে। পিওজ বিদৰ্প রোগ প্ৰশমিত হয়।

হরেণবো মন্তরাক্ত মুক্টাকৈর স্থানর:।
পূথক পূথক প্রদেহা: ক্যা: সর্কেরের্ম সর্পিরা সহ ॥
মটর কলায়, মন্তর, মুগ ও শালিধান্ত এই সকল দ্রুৱা পূথক পূথক বা মিলিত, মুতাক্ত কবিয়া পিত্রবিস্প বোগে প্রবেশ দিবে।

দ্রাক্ষারথবৰাখন-জিফলৈরওপাঁসুভি:।
জিবুদ্ধাইতকাভিন্চ বিদর্পে পোধনং হিতম ।
দ্রাক্ষা, সোন্দালফল, গাস্তারী, জিফলা,
এরগুরীজ ও পীলুফল, অথবা তেউড়ী ও হরীতকী, ইহাদের কর এবং কাথ বিস্পাশাধক ।

মননং মধুকং নিধং ব**ংসকন্ত** ফলানি চ। বনন্দ বিধাতব্যং বিসপে কফ**সম্ভবে ।**

ক্ষজনত বিসপে ময়নাকল, যাষ্ট্রম্ধু, নিমছাল ও ইন্দ্রব, এই সকল জব্যের কাপ পান করাইয়া বমন করান কর্ত্ব্য।

গায়ত্রীসপ্তপর্ণক-বাসার্থধনকে ভঃ। বুটরাট ভবেরেপো বিসাপ ধেমসম্ভবে।

খ্নরকার্চ, ছাতিমছাল, মুতা, বাদক, শোন্দালপত্র, দেবদাঞ্জ ও কৈবর্ত্তম্প্রক, এই সকল দ্রা একত্র পেষণ কাবিয়া শ্লেমজ বিদর্পে এলেপ দিবে।

অজাবগন্ধা সর্বাণ কালা সৈকেশিকা বাপাশবাজশৃঙ্গ। গোমূতপিরো নিছিম: প্রদেহো হস্তাদ্ বিসপং কফজং স্থাপম্ ॥ (বিহিম ১'এ হিমবিপরাঙঃ কোষে ইতি শেষঃ। চ,টা)

অজা (ফোকন্দী নামক দ্রবা), অধ্যান্ধা, তেউড়ী, কালিগাকড়া, আক্নাদি ও কাক্ডা-শৃঙ্গী, এই সকল দ্রব্য গোমুত্রে পেষিত এবং অগ্নিতে ঈষত্বফ করিয়া তাহার প্রালেপ দিলে কফল বিদর্গ শীল্প বিনষ্ট হয়।

ক্রিফলাপ্রকোশার-সমঙ্গাকরবীরকম্।
নলমূলমনভাচ লেপ: লেমবিসপহা।
(অয়: লেপভথা বঞ্চমাণোহপ্যারখধাদিঃ, ব্রহ্মভূতযোগেল স্থিম: কাষ্য:। ইতি চক্র-টাকা।)

ত্রিকলা, পদ্মকান্ত, বেণার মূল, বরাক্রাস্তা, করবার্ত্বল, নলমূল ও অনস্তমূল, এই সকল ক্রব্য বাটিয়া অল্ল মৃতাক্ত করিয়া প্রলেপ। দিলে কফজনিত বিদর্শনিষ্ট হয়।

আরথধন্ত প্রাণি ছচ: শ্লেমাতকোদ্ভবা:।
শিরীবপুশকানাচী হিতা লেপাবচুণনৈ: ।
(কামাচা কাক্মাচী । শ্লেমাতকঃ বছবার:। ইতি
চক্রটীকা।)

সোন্দালপত্র, বছবারত্বক্, শিরীযকুত্বম ও কাকমাচী, ইহাদের গুড়াক্ত গুলেপও বিদর্পনাশক।

মুন্তারিষ্টপটোলানাং কালঃ সর্ক্রিসপথুং। ধাত্রীপটোলমুন্সানামধ্বা মুতসংস্কৃতঃ॥

মৃত্র', নিমছাল ও পল্তা, এই সকল দ্বোর কাথ অথবা আমলকী, পল্তা ও মুগ ইহাদের কাথ রতসংযুক্ত ক্রিয়া পান ক্রিলে স্ক্রিকার বিস্পুন্ত হয়।

দোৰদন্মিলনাজ্জাতে পরীদর্গে ভিষক ক্রিয়াম। তন্তদোৰপ্রশমনীং যুক্তা। বৃদ্ধাবচারয়েং ।

থিদোষজ বা ত্রিদোষজ বিসর্প রোগে মৃত্তি ও বিবেচনা পূর্ব্ব ফ তত্তদোষনাশক ।চকিৎনা করিবে।

ভূনিবৰাসাকট্ৰাপটোলী ফলএটঃকন্দন্নিবকৈ। বিসৰ্পদাংশ্বন্ধাপকভূবিক্ষেট্ট্ফাব্চিগৎ ক্ষারঃ॥

চি.ত', বাসকছাল, কট্কী, পটোনপত্ৰ, ত্ৰিফলা, রক্তচন্দন ও নিমছাল ইংাদের কাথ পান করিলে বিস্পা, দাহ, জব, শোথ, কণ্ডু, বিস্ফোটক, তৃষ্ণা ও বমি নষ্ট হয়।

मनात्त्र। (लाभः।

শিরীবর্ষ্টীনতচলটে,লা-মাংস হরিদ্রাধ্যকুঠবালৈ:। লেপো দশাঙ্গঃ সমূতঃ প্রযোজ্যো বিদর্পান্তর্বেশাধ্যারা।।

শিরীষ, যষ্টিমধু, তগরপাহকা, রক্ত, ন্দন, এলাইচ, ফটামাংসী, হরিদ্রা, দাক্তহিদ্রা, কুড় ও বালা, এই সকল জব্য পেষণ করিয়া মুড সহ প্রবেপ দিলে বিসপ্ত, কুন্ঠ, জর ও শোখ নিবারিত হয়।

नवक्षाइछन् छन्।

অমৃত বৃষপটোলং নিম্নইজ্বন্ধপতং ত্রিফলপদিরসারং ব্যাধিঘাতক জুলামৃ। ক্ষিত্রিদমণে বং গুগ্গুলোর্ভাগযুক্তং জয়তি বিব্যিসপান বুষ্ঠমন্ত্রাদ্ধাখ্যম্।

(গুণ গুলোভাগযুক্তমিতি প্রত্যহোপযোগে প্রকেপ-পরিভাষট্রের দেরস্থা বিরোক কর্ত্রব্যে প্রকেশমানা-পেক্ষর্য বৈশুনোনেতাগ্রঃ। ইতি চফুটাকা।)

গুলক, বাদক, পটোলপত্ত, নিমছাল, হিফলা, থদিরসার ও সোলালফল মিনিত ২ বোলা , ছল সাত অন্ধ্যের; শেষ অন্ধ্য পোরা ; যথোপযুক্ত গুলু পুক্ত দিয়া পান করিলে বিচপা ও মোটাদশ প্রকার কুট নিবারিত হয়। বিহেচনার্থ এই কাণ প্রয়োগ করিতে হইলে প্রকেশমানের দিওণ অগ্রাণ ১ খোলা গুলু দিবে।

> বাতপিত প্রশমনম্মিনীসর্পণে (২তম্। বাতপ্রেম্বর্গ কল্প গ্রাছ্বীসর্পণে হিতম্॥ পিত্রেম্বপ্রশমনং ছিতং কল্মসংজ্ঞক। ত্রিদোষ্যাজ ক্রিয়াং কুর্যান্দ্ বিসর্পে ত্রিভয়াপহাম্॥

উক্ত বাতজ ও পিত্তজ বিসর্পেক্ত ঔষধ ধারা অন্ধিবসূপর; বাতজ এবং কফজ বিসপোক্ত ঔষধ ধারা গ্রন্থিবিসপের; পেতজ ও কফজ বিসর্প নাশক ঔষধ ধান কদ্দমাধ্যবিস্থান এবং তিদোধজ বিস্প্র নাশক ঔষধ ধারা সান্নিপাতিক বিস্প্রের চিকিৎসা করা কর্তবা।

> কুঠাময়কোটমস্রিকোক্ত-টিকিৎসরাপ্যাশু হরেছ বিসপ্নে। সব্বান্ বিপক্নে পরিশোধ্য থামান্ অগ্রুমেধোপচয়েদ্ যথোক্তম্ ॥

বিদপরোগে কুষ্ঠ, ক্ষোটক ও মুস্থারকার স্থায় চিকিৎসা করিবে। পাক্ষেন শোধন করিয়া প্রণবৎ চ.কৎসা কর্ত্তব্য i

অমৃতাদিঃ।

অনৃতঃবৃষণটোলং মৃন্তকং সপ্তপর্ণং খদিরমসিতবেতাং নিখপত্রং হরিছে। বিবিধবিষধিসর্পান কুঠবিক্ষোটকডু-রপনরতি মস্বরীং শীতণিতং অরঞ্চ॥

গুলঞ্চ, বাসক, পটোলপত্ৰ, মুতা, ছাতিম-ছাল, খদিরকার্ছ, ক্লফবেত্রের মূল, নিমপাতা, হরিছা ও দারুহরিদ্র, ইহাদের কাথ পান करित्न विविध क्षकांत्र विश्वतांत्र, विश्वर्भ, कूष्ठे, বিন্ফোটক, কণ্ড ও মহুরী প্রভৃতি নানারোগ নিবারিত হয়।

কালাগ্রিককে। রসঃ।

পুত'ল হাজলৌহানাং ভত্ম গন্ধকম' কিকম। - অকর্কোটকদ্রাবৈশ্বনাং মর্দ্ধাং নিনাব্ধি । वश्चकरकां हिकाकरम कि श्रु । विश्रु । मृत्रा विश्र । ষ্টুধরাথ্যে পুটে পশ্চাদিনৈকং তদ্বিপাচয়েৎ ॥ प्रमार्भः निवः (गोजाः गोवगाज्ञ एकःश्रर । রস: ক'লাগ্রিক্সডে ছিবং দশাহেন বিসপ্ত । ি প্রানীয়ধদংগ্রুমতুপানং প্রকল্পায়ং ।

পারন অলু, কান্তলোহ-ভুম, গ্রুক ও স্বর্ণমাক্ষিক, এই সমস্ত দ্রব্য বন-কাকরো বর রুদ্রে একদিন মন্দ্র কবিয়া বন-কাকরোলের কন্দমধ্যে পুরিবে। পরে এ কন্দ মৃত্তিকা দার। প্রালিপ্ত করিয়া ভূধর যাত্র একদিন পুট দিবে। শীতল হইলে তাহা হইতে ঔষণ উদ্ধত কৰিয়া ভাহাতে দশ্মাংশ বিষ সংযুক্ত করিবে। মাত্র-১ মানা পর্যান্ত। অন্তপান-পিপুর চুর্ব ख भवा हैश स्वतन म्यानित स्वाप्ता विर्श নিবারিত হয়।

রুষাগ্যং গ্নতা।

বুৰপ্ৰিরপটোলপ্রনিথ-হন্দত মহাকীক্ষায়ককৈ। যুত্মভিলৰ মত্দাঙ প্ৰং ভয়তি বিস্পাস্থান্ স্পৃতি গুলান্ । বাসক, খালরকার, পল্ডা, নিমহাল. खन्क उ बायनकी, इंश्रानत काःश उक्त ष्ठ शाक कार्या भिरे इंड शान करिएन বিস্পা, কুষ্ঠ ও হলা বিনষ্ট হয়।

ব রঞ্জ-তৈলম।

করপ্রস্থান্ত দ্রালালীক-সূত্র দও্কানেলভূপর(বৈঃ ! टेडला निशाम अविदेशियकः विमान वित्यका उतिहां के का मा

তৈল /৪ দের। কভার্থ—ডহরকরঞ্জ. ছাতিমছাল, ঈশ্লাঙ্গলা, দিজ ও আকলের আঠা, চিতা, ভীমগ্রাঙ্গ, হরিপ্রা ও বিষ, এই দকল জ্বব্য নিলিত /১ দের। গোমুত্র ১৬ সের। এই তৈল বিদর্প, বিক্ষোট ও বিচর্চিক নাৰক।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

বিসর্পরোগে পথ্যানি।

বিরেকো বননং লেপে। লজানং বরুনোক্ষণম।: পুরাণা যবগোধ্য-কঙ্গুষষ্টিকশালয়:॥ मुल्ला महत्रान्डनकोन्द्रवर्गा ङ्किरला द्रहः। ৰানীতং মৃতং দ্রাকা দাডিমং কারবেলক ।। বেতাগ্রং বুলকং গাতী খদিরো নাগকেশরঃ। লামা শিরীষঃ কপুরিং চন্দনং তিললেপন্য ॥ হাবেরকং মন্তক্ষ তিজ্ঞানি সকলানি চ। যথ'লোষমিদং পথাং দেবিতবাং বিদ্পিভিঃ॥

বিরেচন, বনন, প্রলেপন, উপবাদ, রক্ত-মোকণ, পুরাতন ঘব, গোধুম, কান্সনিধান্ত, যষ্টিক গাল, শালিধান্ত, মুগ, মহুর, ছোলা, অভ্হর, জাঙ্গলমাংদের রদ, মাখন, ঘুত, কিস-মিস, দাড়িম, কংলা, বেতাগ্র, পল্তা, আম-লকা, খদির, নাগকেশর, লাক্ষ্ণ, শিরীয়, কর্পূর, রক্তচন্দন, গাত্রে ভিললেপন, বালা, মুতা, সমস্ত তিক্ত দ্ববা এই গুলি বিস্পরোগে নোনা-প্রদারে প্রােগ করিলে ছিতকর হয়।

: বিস্পরোগেইপথ্যা নি

বাায়'মম্ছি শয়নং স্থাতং প্রবাতং • (क्विश ७०: वयनव्यश्रम्थः । শাকং বিশ্বন্ধমশনং দ্ধি কৃচ্চিকাঞ্চ সৌবীরমাস্ক্রমনেক্বিধং কিলাচ্যু। क्ष्मिभागमार्थितः लक्षमः वृत्रश्रान् মাধাং ভিল'ন সকলমাং সমজাঙ্গলক ॥ স্বেদং বিদাহিলবণায়কট্নি মস্তা-ক্মৰভামপি বিসপাদী ত্যঞ্জেং তু।

ব্যারাম, দিবানিজা, স্ত্রীপ্রসঙ্গ, প্রবল বায়ু অথবা পূর্ব্বদিগ্ভব বায়ু সেবন, ক্রোধ, শোক, বমনবেগ, অস্থান (গুণেতে দোধারোপ করা), শাক, বিকৃদ্ধ ভোজন, দধি, কুর্চ্চিকা, সৌবীর, বিবিধ আসব, ছানা (হুদ্ধবিক্তি), দকলপ্রকার গুরু অর ও পানীর, রগুন, কুলখকলার, মাধকলার, তিল, জাঙ্গলমাংদ ভির অপর দকলপ্রকার মাংদ, স্বেদন, বিদাহিদ্রব্য, লবণদ্রব্য, অমুদ্রব্য, কটুদ্রব্য, মন্ত এবং রৌদ্র, এই দকল বিদর্শরোগী পরিত্যাগ করিবে।

ইত্যায়র্কেদ-সংগ্রহে বিদপঃশিকাব:।

অথ বিস্ফোটাধিকারঃ।

অথ বিস্ফোট-নিদানন্।

কট্মতাকোঞ্চনিদাতি কল-ক'বেরজীব্ধাশনভিপেন্চ। তপ্ত্রদাবেশ বিপ্যারেশ কুপান্তি দোবা প্রনাদয়প্ত। তচনাশ্রিতা তে রক্ত-মাংসাস্থীনি প্রদুষ্য চ। গোরান্ কুর্বজি বিজ্ঞোটান্ সর্বান্ অরপুর সরান্॥ অধিদক্ষনিভাঃ কোটি'ঃ সন্মন্ন রক্তপিত্তজাঃ। কচিৎ সর্বতি বা দেহে বিজ্ঞোটা হতি তে খুডাঃ।

কটু, হমু, তীক্ষ্ণ, উষ্ণবীৰ্য্য, বিদাহী, ক্ৰক্ষণ গুকাৰ জৰা ভোজন বা অপক্ষৰ ভোজন, অধ্যশন, আতপ দেবন ও শহুবিপৰ্য্যয়, এই সকল কাৰণে বাতাদি দোব প্ৰকুপিত হইয়া ৰক্তন মাংস ও অন্থিকে দ্বিত এবং অক্ষেক আশ্ৰয় কৰুত, অতি ভয়ন্ধৰ বিক্ষোটক উৎপাদন কৰে। বিক্ষোটক হইবাৰ পূৰ্বেজ জন্ম হইয়া থাকে।

দেহের কোনস্থানে এ। সর্বাদেহে অগ্নিনগ্ন-নিভ ও জ্বলংগুক্ত বে সকল ক্ষোটক জন্মে, তাহাদিগকে বিস্ফোটক কহে। বিস্ফোটক রক্তপিত-প্রকোপজ ব্যাধি।

व्यथ विरक्षा है - हिकि ९ भा।

विष्कारिक लक्ष्यकः कायाः नगनः श्रभारकाञ्चनम् । यथारमायनलः वेन्का युक्तमुक्कः विदर्शनम् ॥

বিক্ষোট রোগে লোষের বলাবল বুনিয়া উপ্রাদ, বমন, পথ্যজোজন ও বিরেচন প্রারোগ করিবে। , ওড় চীনিম্বজকাথেঃ পদিরেক্যব্যুক্।। দে প্রক্রোী রামা চ দাক্রাণীরং ভ্রালভা ॥ ওড়্চী ধাতকং মৃত্যেষণ কাথং (পরেররঃ। বিশেষটাম্ নাশয়তাকৈ সমারণ্নিষ্ঠিজান্॥

গুলক, নিমছাল, খুদিরকান, ইক্রবর, বালা, দশমূলী, রাস্কা, দারুহরিন্তা, বেণার মূল, গুণালভা, গুলক, দলে ও মূভা, ইহাদের কাথ পান করিলে বাতজ বিশোট বিন্ত হয়।

দ্রাক্ষাকাশ্বয়াগজ্জনপটোলারিষ্টবাদকৈঃ। কট্কালাজহুংপর্বো দিতাযুক্তর পৈত্তিকে॥

জাক্ষা, গান্ডারীফল, বর্জুর, বল্তা, নিম্ছাল, বাসকছাল, কট্কী, শৈ ও গুরালন্ডা, ইংশদর কাপে চিনি প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে পৈত্তিক বিকেটি বিনষ্ট হয়।

ভূনিখনবচাবাসা-(এফলেকজবৎনকৈঃ। পিচুম্দ্ৰটোলাভ্যাৎ কফজে মধ্যুক্ শৃতম্॥

কিবা থা ংক্তকা, কিই-ঘঠা। প্ৰাস্ত্ৰনাসকৈঃ। পটোলপপটো শাল- ক্ৰিকলাকো চঞা ছিট ঃ। ক্ষিত ছব দিশাস্ত্ৰসক্ষ বিক্ষোটনাশন্ম।

চিরতা, নিমছাল, যষ্টিমধু, মূতা, বাসক-ছালু, পটোলপত্র, ক্ষেত্পাপড়া, বেণার মূল, ত্রিফলা ও ইক্রাথব, ইছাদের কাথ পান করিলে বিস্ফোট প্রশমিত হয়।

বিক্ষোটব্যাধিনাশায় তণ্ডুলাস্থু প্রযোজিই চঃ। বীজৈ: কুটজবক্ষস্থ লেপ: কার্যো। বিজ্ঞানতা ।

বিক্ষোট-বিনাপের নিমিত্ত তণ্ণলঙ্গলে ইন্দ্রযুব বাটিয়া প্রলেপ দিবে।

ছিল্লাপটোলভূমিখ-বাসকারিষ্টপর্ণটোঃ। গদিরাকায়⁷তঃ ক'লেগা হস্তি বিক্ষোটক**জ**রম।।

গুলঞ্চ, পল্তা, তিরতা, বাসকছাল, নিম-ছাল, ক্ষেত্রপাপ্ডা, খাদিরকান্ত ও মৃতা, ইহা-দের কাথ বিকোটজ্জন-বিনাশক।

চন্দনং নাগপুপাঞ্চ সারিবা তভুলীয়ক্ষ। শিরীবান্ধনং জাতী লেপং স্ত'দ্দ'হনাশনা।

ংক্তকলন, নাগেশা, অনন্তমূল, ক্ দনটে, শিরীষছাল ও জাতীপত্র ইহাদের ওংলেপে দাহ শাস্তি হয়।

পটে'প্রিফল।বিষ্-গুড়ু ''মুস্তচনতে । সমুকা রোহিনী পঠো রজন' সচলালভা ॥ কবাহে পায়য়েলে ১২ পিস্তরেম্মনরাপ্তম। কগুডুবা পোষ্বিজ্যেত বিষ্কিশেটিনালন ॥

পল্ হা, ত্রিকলা, নিম্ছাল, গুলঞ্চ, মুতা, রক্তান্দন, মুর্বা, কট্কা, আক্নাদি, ছরিত্রা ও হুরালভা, ইছাদের কাথ পান কারলে পিডালেল্লর, কণ্ড, ত্বক্দোষ, বিস্ফোটক ও বিষত্রষ্টি ও বিস্ফোটক বিনষ্ট হয়।

কুণ্ডনীপিচুমন্দামু গদিরেন্দ্রযবাসু বা। বিকোটং নাশয়গ্রাশু বাযুর্ভলধরানিব ।

গুলঞ্চ ও নিমের কাথ অথবা খদিরকান্ত ও ইক্রয়বের কাথ দেবন করিলে বিস্ফোটক আগু বিনষ্ট হয়।

শুকতক্ষনতথাটা রঞ্জনী পরা চ তৃল্যানি। পিষ্টানি শীতভাগ্নেন লেপঃ স্থাৎ সর্কাবিক্ষোটে। (অতে মাটা দেবদাক।)

শিরীষ, তগরপাছকা, দেবনারু, হ্রিক্সা ও বামুনহাটী, প্রত্যেক সমভাগে লইরা শীতল জলে বাটিয়া প্রলেপ দিলে সর্বপ্রকার বিক্ষোটকের শান্তি হয়।

শিরীবমূলমঞ্জিষ্ঠা-চব্যামলক্ষষ্টিক':। সঞ্জাতীপল্লবক্ষোলা বিক্ষোটে কবড়গ্রহাঃ॥ (অত্র বছনচননির্দেশাৎ প্রত্যেকমপ্যেতে করড়ে যোজ্যাঃ। জাতীপত্রং কৌদ্রঞ্চ সর্বত্ত জ্ঞেরম।)

শিরীষমূল, মঞ্জিইা, চই, আমলকী, ষ্টিমধু, এই সকল দ্রবাঁ পৃথক্ পৃথক্ অথবা একত্ত জাতীপাতা ও মধু সহ পেষণ করিয়া ভাহার কবল ধারণ করিলে, বিস্ফোটে উপকার দর্শে।

িরীষেড়ে, খনৌ এস্: সেকালেপনরোছিতা: ।
শিরীষভাল, বজ্ঞাতুমুর ও জামছাল এই
সকল দ্বোর পরিষেক ও প্রালেপ হিতকর।

চকুঃসম্।

শিরীধে শীরনাগাহর-হিংসাহিলেপনাদ্ ফুতন্। বিদ্পবিদ্বিকেল্টাং প্রশাসাস্তি ন সংশ্যঃ ॥

শিরীয়, বেশার মূল, নাগকেশর ও কালা-কড়া, এই দ্রবাচভুইয় সমভাগে লইয়া পেষণ করিয়া ভাহার প্রেলেপ দিলে থিসপ্, বিষত্তি ও বিজ্ঞোটক নিবারিত হয়।

উৎপক্ষ চন্দনং লো<u>রমূশী</u>রং সারিবাছয়ন্। জলপিটেন লেপেন কোটদাহণ্টিনাশনম্।

নীলোংপল, চন্দন, লোধ, বেণার মূল, অনস্তমূশ ও স্থামালতা, ইহাদিগকে জল দারা বাটিয়া প্রলেপ দিলে বিস্ফোট ও দাহ নষ্ট হয়।

পুত্রজাবস্ত মক্তানং জনে পিষ্ট্রা এনেপয়েও। ক'নম্পোটং বিক্ষেটঞ্-সন্মো হস্তি সবেদনম্। কক্ষপ্রস্থি নের্যস্থি-কর্যস্থীংশ্চ নাপয়েও।

পুত্রজীবের (জিন্নাপুতার) মজ্জা জলসহ বাটিয়া প্রলেপ দিলে কালফোট, বিফোট, কক্ষপ্রস্থি, গলগ্রস্থি ও কর্ণপ্রস্থি নিবারিত হয়।

%पूरी निषक्रकः रेवः चित्रक्रस्यशृष्ट्रना । कपृ'त्रक्षित्रशक्षिणाः युक्तः स्टशः विश्वतक्रम् । विरक्षारुः वर्षत्रवः श्लाम् वरयुक्तवस्त्रानिय ॥

ছন্ন রতি পরিমিত রদসিন্তকে গুলঞা, নিম, থদির ও ইন্তাব ইহাদের যথাসপ্তব কাথে বা রদে মন্দন করিয়া কপুর, এলাইচ, দারু-চিনি ও তেজপত্র চূর্ণ মিশ্রিত করিবে। ইহা সেবনে অতি সম্বর বিস্ফোট বিনষ্ট হয়।

ত্রণারি-গুগ্ গুলুঃ।

भनः कृषा भूतः भक जिष्मना जिभनः छदि । एकप्रज्ञानकाञ्च कर्षः मक्ष्यभाष्टः ॥

পিপুল ১ পল, গুগ্গুলু ৫ পল, ত্রিফলা ৩ পল এবং রস্নিল্ব ১ পল। এই সকল দ্রব্য একত্র উত্তমরূপে মিশ্রিত করিয়া ২ ভোলা (বথাধোগ্য) মাত্রায় দেবন করিলে সর্ব্য প্রকার ত্রণ বিনষ্ট হয়।

পঞ্চিক্তক-ঘ্তম্।

পটোলসপ্তচ্ছদনিশ্ববাসা-কলত্রিকচিছ্নক্সহাবিপক্ষ।
তৎ পঞ্চিক্ত: যুতমাশু হস্তি ত্রিদোষবিক্ষোটবিসর্পকভূঃ।
(পঞ্চিক্তযুতে ত্রিকলায়াশ্চ কল্প: শেষাণাং ক্যায়
ইতি ব্যবহর্ষ্তি কৃদ্ধাঃ। ইতি চক্রটাকা।)

পল্তা, ছাতিমছাল, নিমছাল, বাদক ও ওলঞ্চ, ইহাদের কাথে এবং ত্রিফলার করে গুত পাক করিল, নেই গুত পান করিলে লানিপাতিক বিক্ষোটক, বিদর্প ও কণ্ডু আণ্ড বিনত্ত হয়।

মহাপদ্মক-মুত্যু।

পথকং মধুকং লোধং নাগপুলান্ত কেশরম্।
ছে হরিছে বিড্লানি স্লোলা তগরং তথা ॥
কুঠং লাক্ষা পত্রকক নিক্থকং তুখমেব চ।
বহুবরে: শিরীকত কপিথফলমেব চ ॥
ভোয়েনালে ডা তৎ সর্কং ঘুতপ্রস্থা বিপাচয়েং।
যাংশ্চ রোগান নিহ্নাদ্ বৈ তান নিবোধ মহামুনে ॥
সর্পকীট খুর্টেস্ ল্ভাম্ত্রন্তেস্ চ।
বিবিধেনু ক্ষেণ্টকেরু ভথা কুটবিস্পিন্ন ॥
নাড্নিন্ প্রানাম্ প্রভিন্নাম্ বিশেষতা।
ভগন্তাবিহিতং বন্ধা পালক্ত মহাস্থ্তম্ ॥

গ্রারত /৪ দের। করার্থ—পদ্মকর্ষি,
যষ্টিমধু, লোধ, নাগেশ্বর, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা,
বিভ্না, ছোট এলাইচ, তগরপাহকা, কুড়,
লাক্ষা, তেজপত্র, মোম, তুঁটো, বহুবার, শিরীদ ও ব্যাহবেল মিলিড ১ দের। পাকার্থ জল ১৬ দের। যথাবিধানে পাক করির এই ম্বত সেবন করিলে বিবিধ প্রকার বিক্ষোটক, কুষ্ঠ, বিদপ, নানাপ্রকার বিদ্ এবং নাড়ীত্রণ গুভুতি রোগ নিবারিত হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ। —(+)—

বিস্ফোটরোগে পথ্যান।

বিরেচনচ্ছর্দ্ধনলেপলজ্মনং
পুরাতনাং ষষ্টিকশ'লয়ে। ঘবাং।
মূল্যা মস্ত্রাশ্চণকা মুকুষ্টকাধ্বংমিবং গণাযুতং ক্রিক্রকন্।
বেক্রাশ্রমাধার্ট্যকাং পটোলকং
জ্যোতি ঘতী নিম্নলানি চন্দ্রন্।
তৈলং সিতাঞ্জং তিল্লেপনং ঘনং
বালঞ্জ বিক্ষোটগনং বিনাশকেং।

বিরেচন, বমন, প্রকোপন, উপবাস, পুরা তন বছিক গান্ত ও শানিধান্ত, যব, মুগ্, মন্থর, ছে'লা, বনমুগ, মকুদেশক মাংস, গ্রান্থত, করলা, বেতাতা, পলাশবীক, শান্তাল, লতা-ফট্কী, নিমপাতা, রক্তেচন্দন, তৈল, কপুর, গাত্তে তিললেপন, মুতা ও বালা, এই সকল দ্বা বিজোটারোগে অপগা।

বিস্ফোটরোগেইপথ্যানি ।

বেদং ব্যবাহং ব্যায়ামং ক্রোংং গুরুল্লভাতপম্।
ক্রিবেশং পত্রশাকং প্রবাহং ক্রানাং দিনা।
গ্রাম্যোদকানুপমাংসং বিক্ষান্তশনানি চ।
ভিনান্ ব্বান্ কুল্প'ংশ্চ ল্বণায়কট্নি চ।
বিদাহি ক্লম্যুক্ত বিজ্ঞোটী পরিবর্জ্নের।

ষেদন, স্ত্রীপ্রহন্ধ, ব্যায়াস, ক্রোব, গুরুণ পাক জন, বেইজ, বমিবেগ, পত্রশাক, প্রবল বায়ু বা পূর্ববিষয় দেবন, দ্বিরুনিজা, গ্রাম্য-মাংস, উদক্ষাংস, আন্প্যাংস, বিরুদ্ধ-ভোজন, ভিল, যব, কুল্পক্ষণায়, লবণ অন্ন ও কটুরস-সংস্কুক জ্ব্য, বিদাধী কৃক্ষ ও উষণ্ড্রব্য, বিক্ষোট-বেংগির পরিভ্যান্য।

हेळागूर्व्यत्-म्:श्राह दिस्कांग्रे,पिकांतः।

অথ মসূরিকারোগাধিকারঃ।

অথ মদূরিকা-নিদান।

का मुलन् कात-निक्रका धाननामटेनः। बुद्धेनिष्य तथाकारेष्ठः अबुद्धेयनत्नापरेकः ॥ কুরগ্রেক্ষণাচ্চাপি দেশে দোষাং সমুদ্ধতা:। জনগতি শরীরেহশ্মিন ছুষ্টরক্তেন সঙ্গাঃ । মসুরাকুতিসংস্থানাঃ পিড়কাঃ স্থাম সুরিকাঃ। ভাসাং পূর্বাং জর: কঙুগাত্রভঙ্গোহরতিজ ম: । ৫ চি পোমঃ সবৈবর্ণ্যো নেত্ররাগ**ল্ট** জায়তে। ক্ষেটোঃ স্থাবারুণা রকান্তীরবেদনয়ায়িতাঃ ॥ কঠিনান্চিরপাকান্চ ভবস্তানিলসম্ভব':। সন্ধান্ত্রিপর্ব্বপাং ভেদঃ কাসঃ কম্পোহবভিঃ ক্লমঃ । শোষভাবোঠ জিহনানাং তৃষ্ণা চাক্তিসংযুতা। রক্তাঃ পাতাঃ সিত্ঃ কোটাঃ সদাহান্তাব্দেনাঃ । ভবস্তাচিরপাকাশ্চ পিজকোপসমূভবাং। বিড্ভেদ্তাক্মদিত দাহত লাক্তিতা। মুপপাকো>কিরাগশ্চ হরন্তীত্র: সুদারুণ:। রক্তজায়াং ভৰস্তোতে বিকারা: পিত্তলক্ষণা:॥ কফপ্রদেকঃ স্থৈতিতাং শিরোক্রগ্ গাত্রগৌরবম্। হলাস: সাক্রচিনিদ্রা তলালভসম্বিতা। ষেতাঃ বিশ্বা ভূশং সুলাঃ কণ্ডরা মন্দবেদনাঃ। মসূরিকাঃ কফোখাল চিরপাকাঃ প্রকীর্ভিটাঃ। নালা কিপিটবিস্তীর্ণা মধ্যে নিম্না মহারুজা:। চিরপাকা: পৃতিস্থাবা: প্রভৃতা: সর্বদোষজা: ॥ ক ঠারোধার চিত্তত্ব- প্রবাপার ভিসক্তা: । ছুল্চিকিৎক্তাঃ সমুদ্দিষ্ট'ঃ পিড়কাল্চর্মসংজ্ঞিতাঃ । রোমকুপোরভিসমা রাগিণ্যঃ কফপিওজাঃ। কাসারোচকসংযুক্তা রোমান্তো। অরপুর্বিকা:। োয়বৃদ্ধসকাশাস্থাগ্ৰহান্ত মস্বিকাং। সরদোব: প্রজায়ন্তে ভিন্নান্তোরং প্রবৃত্তি চ। ব্ৰক্তবা লোহিতাকারাঃ শীঘপাকান্তনু ১চ:। সাধা। নাভাৰ্গ্নন্ত ভিন্না রক্তং শ্রবন্তি চ ॥ মাংসন্থাঃ কঠিনাঃ শ্রিদ্ধান্তিরপাকা ঘনহচঃ পাত্রশূলভ্যাকভূ-জরারতিসম্বভা:। মেদোকা সভলাকারা মূদবং কিক্ছিলতা:। ঘোরত্বৰপরীতাক স্থলাঃ বিশ্বাঃ সবেননাঃ। সংমোহারতিসন্তাপা: কল্চিদ্বভো বিনিন্তরেৎ। কুদ্রা গাত্রসমা রক্ষান্টিপিটাঃ কিঞ্চিত্রতা: । মজ্জোখা ভূলংসমোহ-বেদনারতিসংযুতা:। ছিল্ভি মশ্বধামানি প্রাণানাশু হর্ভি হি॥ ज्ञात्वराव विकासि अवसारीनि मर्क्डः। প্রাভাঃ পিডকাঃ শ্রিকাঃ ব্ল্যান্চাভার্থবেদনাঃ । জৈ মিতাারতিসংমে হ-লাহে'আদসম্বিত: । শুক্রজায়াং মধুর্যান্ত লক্ষণানি ভবন্তি হি॥ নির্দিষ্টং কেবলং চিজং দৃষ্ঠতে ন তৃ জীবিতম্। দোব মিশ্রান্ত সংস্থান ছেইবা দে বলক্ষণৈ: ॥

কটু, অমু, লংগ ও ক্ষাব দ্রবা ভোজন, মিলিত ক্ষার-মংখ্যানি বিরুদ্ধ ভোজন, পূর্মাহার অজীর্গনন্ধে পুনর্ভোজন, তুই অমু শিস ও শাকাদি আহার, বিষাদিনংপার্প-দূষত বাষ্থ জল সেবন এবং দেশের প্রাত কুরগ্রহদিশোর কুদৃষ্টি, এই সকল কারণে বাতানে দোষ প্রকৃপিত ও ওই রকের সহিত মিলিত হইখা শরীরে মহাকলায়ের ভাষ আকৃতি ও পার-মাণবিশিষ্ট যে সকল শিড়কা উৎপাদন করে, তাহানিগকে মহারিকা কহে। মহারকা রোগ উৎপান হইবার পূর্কে জর, কছু, গাএবেদনা, অনবস্থিত-চিত্ততা, ভ্রম, জকের ক্ষীতি ও বৈবর্গ এবং চকুর রক্তবর্ণতা, এই সকল পূর্ণক্রপ প্রকাশ পায়।

বাতজ মস্থারিকার পিছকা সকল খ্রাব বা অরুণবর্ণ, ক্লক্ষ, তারবে:নাযুক্ত ও কঠিন। ইহা বিলম্বে পাকে।

পিত্তপ্রকোপজ মস্থারকার ক্ষোট সকল রক্ত, পীত বা শুক্রবর্গ, দাহ ও উপ্রবেশনা মৃক্ত ; ইহা শাঘ্র পার্কিয়া থাকে। ইহাতে সন্ধি আন্ত ও পর্ম সকলে ভঙ্গবৎ বেদনা, কাস, কম্প, অর্থতি (অনবস্থিত-চেত্ততা), ক্লান্তি, তালু ওঠ ও জিহ্বার শোষ, তুকা ও অক্লাট, এই সকল লক্ষণ প্রকাশ পায়।

রক্তজ মহারিকা রোগে মলভেদ, অক্সমদ্, দাহ, তৃষণ, অরুচ, মুণের পাক, চকুর রক্ত-বর্ণতা, স্থাকণ তীত্রবৈগ অর এবং পিত্তজ মহারিকার লক্ষণ সকল উপস্থিত হয়। শ্রৈত্মিক মধ্রেকার ক্ষোট সকল খেত-বর্ণ, চিরুণ, অভিশয় স্থুল, কণ্ড্রিশিষ্ট ও অর বেদনাযুক্ত। ইহা দীর্ঘকালে পাকে। ইথাতে কফন্রাব, স্থৈমিতা, শিরোবেদনা, গাত্র-গৌরব, বমনবেগ, অরুচি, নিদ্রা, তক্রা ও আলদা, এই সকল লক্ষণ দৃই হয়।

জিনোষজ মস্বিকা নীলবর্ণ, চিঙার ভাষ চেণ্টা, মধ্যভাগে নিম্ন, অভ্যন্ত বেদনাযুক্ত ও হুর্গজ্ঞাব নিঃবারক। ইহা বহুপ্রিমাণে উৎপন্ন হয় ও দীর্ঘকালে পাকে। জিদে,যদ্ধ বসন্ত মধাধা।

চন্দ্রন নামক একপ্রকার ব স্ত আছে, ভাহা আভি ছুন্চিকিৎখা; ভাহাতে কঠরোগ, আফ্রচি, স্তাপ্তিভাব, প্রনাপ ও অরতি, এই সকল উপদ্রব উপস্থিত হয়।

রোমকৃপের স্থার উন্নতিবিশিষ্ট রক্তবর্ণ যে সকল পিড়কা উৎপন হয়, ভাহাদিগকে রোমান্তী অর্থাৎ হাম্বলে। ইহাতে কাস ও অক চ, এই ছাই কেল বিজ্ঞান থাকে। হাম ছাই পিত্ত ও ডাই কক হইতে উৎপন। হাম হাইবার প্রেপ্ত হা হইয়া থাকে।

রসাদিগত মৃত্রিকার লক্ষণ। রসগত মৃত্রিকা ভ্রাবৃদ্ধের ন্তার আকৃতি বিশিষ্ট; ইহাতে দোনের প্রকোপ অধিক থাকে না। চলিত ভাষায় ইহাকে পানিবসম্ভ কহে। পানিবসম্ভ বিদীণ হইলে তাথা হইতে জলবং আৰু নির্গত হয়।

রক্তগত মহরেক। রক্তবর্ণ ও পাতনা চন্দ্র-বিশিষ্ট। ইং। শীল্প পাকিরা থাকে। এই বদস্ত সাধ্য, কিন্তু রক্তন্তুষ্টির আধিক্য থাকিলে কুছু সাধ্য। বিদীন হইলে ইংগ হইতে রক্ত নিক্ষত হটরা থাকে।

মাংসগত মহরিকা, কঠিন, স্লিগ্ধ ও পুরু-চর্ম বিশিষ্ট। ইহা বিলম্বে পাকে। ইহাতে গাত্রশূল, ভ্ষণ, কণ্ণ, জ্বন ও চিত্তচাঞ্চল্য বিশ্বমান থাকে। মেদোগত মস্বিকা মগুলাকার, কোমল, কিঞ্চিং উন্নত, বোরজবোৎপাদক, স্থুল, চিক্রণ ও স্বেদন। ইহাতে মনোবিভ্রম, চিত্তচাঞ্চল্য ও সম্ভাপ, এই সকল উপজ্ব উপস্থিত হয়। দ্বোং কেহ এই ভয়ন্ধর ব্যাধি হইতে মুক্তিলাভ করিতে পারে।

অস্থি ও মজ্জাগত মত্রিকা ক্ষুদ্রাকৃতি, গাত্রসমবর্গ, রংকা, চিড়ার ন্থার চেপ্টা ও কিঞ্চিৎ উন্নত। ইহাতে অত্যন্ত মোহ, বেদনা ও অরতি উপস্থিত হয়; মর্ম্মান সকল যেন ছিন্ন হইতে থাকে এবং স্কাঞ্দের অস্থি যেন ভ্রমর শ্বারা বিদ্ধ হইতেছে, এইরূপ বোধ হয়। ইহা আগু প্রাণনাশক।

শুক্রগত মুদ্দিরকা দেখিতে প্রকাভ, কিন্তু প্রকাহে, ইহা চিকণ, স্থাও অভ্যন্ত বেদনা যুক্ত। ইহাতে শুমেতা, অনুতি, মুদ্দুর্গ, দাহ ও মত্তা, এই স্কল উপদ্ব প্রকাশ পার। এইরূপ ব্যস্ত নিশ্চয় প্রাণাশক।

উল্লিখিত সপ্তধাতুগত যে বসস্তে যে দোবের লক্ষণ দৃষ্ট হইবে প্রাহাকে তদ্দোহজ বলিয়া স্থানিবে।

অথ মসূরিকা-চিকিৎসা।

মক্রিকারাং কুঠেবু লেপনাদিক্রিয়া হিচা। পিক্সেম্বিসপোক্রা ক্রিয়া চাক্র প্রশক্ততে ॥

মহারিকা ও কুঠরোগে লেপনাদি ক্রিরা দারা চিকিৎনা করিবে। এই রোগে পিত্ত-ক্লেমবিদর্শোক্ত ক্রিয়া সকল হিতকর।

ষে • চন্দানকৰ্ম্প হিলমোচীভবং জবম্। পিনেশ্বস্থানক বৈছে নৈব বা কোলাং রসম্॥

মস্রিকারোগের প্রারম্ভে শ্বেতচন্দনের কল্প হেলেঞ্চাশাকের রস, অপবা কেবল হেলেঞ্চাশাকের রস পান করিলে উপকার হইয়া থাকে। मर्त्वामाः व्यवः भथाः भर्त्वानातिष्ठेवामरेकः । कवारेक्षक वर्वावश्म-यद्याध्यक्तककिकरेटः ॥

দর্ব্ধ প্রকার মস্থরিকারোগে পটোলপত্র, নিমছাল ও বাসকছাল, ইছাদের কাথে বচ, ইক্সঘৰ, ষষ্টিমধু ও মদনফল চুর্ণ প্রক্রেপ দিয়া ব্যনার্থ পান করাইবে।

সক্ষৌত্রং পায়য়েদ্ একাগ রসং বা হৈলমে:চিক্ষ্। বাস্তপ্ত রেচনং দেরং শমনঞাবলে নরে॥

মস্রিকায় এক্ষীশাকের এস অথবা হেলেঞ্চাশাকের রুগ মধুর সহিত ব্যনার্থ দেবন করাইবে, পরে বিরেচন দিবে, কিন্তু রোগী তুর্বল হইলে শমন ঔষধ প্রাযোগ্য।

প্রথনীপ্রনিধ্যাসং ছরিছাচুর্নসংযুত্য । বোমান্ত ছব-বিজেটি-মুক্তনীশান্তয়ে পিবেৎ ।

করণাপাতার রসে হরিদ্রা চুর্ণ মিশাইয়। পান করি:ল রোমাস্টী (হাম) জন, বিজোট ও মুদুরী প্রশ্মিত হয়।

উভাভাং প্রদোষত বিশুধান্তি মস্বিকাং। ব্রাকাকারান্টাজপুষাঃ পচাতে চাজবেদনাঃ।

বমন ও বিবেচন ছারা দোষ সকল নই হয়, সূতাং মত্রিকা সকল বিশোধিত বিক্তিশ্যাও অল্পবেদনাবিশিষ্ট হটয়: স্বরংট পাকিয়া উঠে। কটাকুস্কাল্যাক কথনবিধিকতং হিসুমাবৈকস্কাল্যাক কথাকাল্যাক্ত কিলাল্যাক্ত কিলাল্যাক্ত কিলাল্যাক্ত কথাকাল্যাক্ত কথাকাল্যাক্ত কথাকাল্যাক্ত কথাকাল্যাক্ত কথাকাল্যাক্ত কথাকাল্যাক্ত কথাকাল্যান্য প্রতিবাহা বিশ্বাহাক্ত কথাকাল্যান্য প্রথমিক প্রযোগা বাজাক্ত্বতে কথাক্যান্য প্রথমিক প্রযোগা বাজাক্ত্বতে কথাক্যান্য কথাকাল্যান্য প্রযোগা বাজাক্ত্বতে কথাক্যান্য কথাকাল্যান্য প্রথমিক কথাকাল্যান্য স্থান্য কথাকাল্যান্য স্থান্য প্রথমিক কথাকাল্যান্য স্থান্য প্রথমিক কথাকাল্যান্য স্থান্য প্রথমিক কথাকাল্যান্য স্থান্য কথাকাল্যান্য স্থান্য প্রথমিক কথাকাল্যান্য স্থান্য কথাকাল্যান্য কথাকাল্যান্য স্থান্য কথাকাল্যান্য স্থান্য কথাকাল্যান্য কথাকাল্যান্য কথাকাল্যান্য স্থান্য কথাকাল্যান্য কথাকাল্যান্য স্থানিক কথাকাল্যান্য কথাকাল্যান্য কথাকাল্যান্য কথাকাল্যান্য স্থান্য কথাকাল্যান্য কথাকাল্য কথাকাল্যান্য কথাকাল্য কথাকাল্যান্য কথাকাল্য কথাকাল্যান্য কথাকাল্যান্য কথাকাল্যান্য কথাকাল্যান্য কথাকাল্যান্য কথাকাল্যান্য কথাকাল্যান্য কথাকাল্যান্য কথাকাল্য কথাকাল্যান্য ক

পাপরোগ (মহরী) প্রথম দৃষ্ট হইলে কটোকুদ্ধারু লতার (কুমারিয়ার) কাথে হিঙ্গু ১ মাষা প্রকেপ দিয়া পান করিবে।

জ্যস্কীবীজ অথবা সিকটীমূল, গুত ও পুদুর্গষিত জ্ঞানে করিবে।

স্পারির মূল কিংবা মরিচ ও ময়নামূল অথবা মরিচ ও নাটাকরঞ্জার মূল, বাসি জলের সহিত প্রয়োগ কঙিবে।

উষ্ট্ৰকটকমূলং বাপানস্তামূলমেব চ। বিধিগৃহীতং ধোঠামুপী হং হস্তি মপুরিকাণ ।

ছরালভা অথবা অনস্তমূল, তওুলজলের সহিত বাটিরা থাইলে বসস্তরোগ প্রশমিত হর। সম্বনীং মৃশ্ছিতো হন্তি গন্ধকাৰ্মন্ত পানদঃ।
নিশাচিকাচ্ছদে শীত-বানিপীতে তথৈব ছু ॥
(ছনপক্ত নপুংসকত্বং ছান্দসভাৎ, কিংবা নিশাচিকাচ্ছনাবিতি পাঠঃ। ইতি চক্ৰটাকা।)

১ ভাগ পারদ ও ২ ভাগ পদ্ধক একত্র করিয়া কজলী করিবে। এই কজ্জলী ৪ মাধা কিংবা ৬ মাধা (যোগ্যপরিমাণে) পালের সহিত দেবন করিলে, অথবা হরিদ্রাপাতা ও তেঁতুলের পাতা শীতল জল সহ বাটিয়া পান করিলে মস্রিকা বিনষ্ট হয়।

গাবংসংখ্যা সত্যক্ষে তাবন্তিঃ শেলুজৈদ'লেঃ। ডিলৈবাতুগনামা তু গুড়ী বোতি ন বৰ্দ্ধতে॥

রোগির গাত্রে যতগুলি বসস্ত নির্গত হয়, বোগির নাম করিয়া বছবার-বুক্ষের ভতগুলি পত্র ছিল্ল করিলে, গাত্রে তাহার অধিক আর বসস্ত নির্গত হয় না।

বাংষতং বারি সক্ষেদ্রং পাতং দাহওড়ীহরম্।

বাসিজলের সহিত মধু মিশ্রিত করিয়া পান করিলে বসস্তের গুটীও তজ্জভা দাহ নিবারিত হয়।

উগ্রাক্তাবংশনীলীয়ববৃষ্কার্পাসকীকসভ্রন্ধী-প্রসময়বলাক্ষাধ্যে। রোমান্তিকার্ণচ্ছন ॥

বচ, মৃত, বাশের নীল, যব, বাসকম্ল, কাপাসবীজ, ব্রহ্মীশাক, তুলসীপত্র, অপ্রশ্ন মার্গ ও লাক্ষা, এই সকল জবেরে ধুপ প্রদান করিলে হাম প্রভৃতি বিনষ্ট হয়।

ভপণং বাতজায়াং আগ লাজচুৰ্বিঃ সশক্রৈঃ। ভোজনং ভিজ্যুষৈণ্ড প্রত্যানাং রসেন বা ॥

বাতঙ্গনিত বদস্ভরোগে প্রথমতঃ চিনির সহিত গৈ-চূর্ণ মিলিত ও জবদ্রব্য থারা আলো-ড়িত করিয়া ভোজন করাইবে। ভিক্ত জব্যের যুষের অথবা পারাবত প্রভৃতি পক্ষির মাংদের বুদের সতি ভোজন করিতে দিবে।

ছিপঞ্মূলং রাজা চ দার্কানীরং ছুরালভা। সামৃতং ধাক্তকং মৃত্যু জয়েছ বাতসমূখিতার ॥

দশমূল, রামা, দারুহরিজা, বেণার মূল, তুরালভা, গুলঞ্চ, ধনে ও মূতা এই সকলের কাথ (অর্দ্ধদের জলে সিত্র করিয়া অর্দ্ধপোয়া থাকিতে নামাইয়া) দেবন করিলে বাতজগু মহরিকা রোগ নষ্ট হয়।

মঞ্জিঠাবহুপাৎপক্ষ-শিরীবোছস্বর্গজঃ। বাতজায়াং মস্যাং স্থাৎ প্রলেপঃ সর্কণো হিতঃ॥

মঞ্জিষ্ঠা, বট, পাকুড়, শিরীষ ও যজ্জুমুরের ছাল, ইছাদের প্রলেপ দিলে বাতজ মস্রিকা নিবৃত্ত হয়।

গুড়্টাং মধুকং রাশ্বাং পঞ্মুলাং কনিষ্ঠকাম। চন্দনং কাশ্বস্থাকাং বলামূলং বিকক্তম্। পাককালে মস্থাতি বাতজায়াং এবোলয়েও॥

গুলঞ্চ, ষ্টিমধু, রামা, স্বল্প প্রকৃল, রক্ত-চন্দন, গান্তারীফল, বেড়েলামূল ও বৈচিমূল, ইহাদের কাথ বাতজ্ঞ মহবিকার পাককালে প্রয়োগ করিবে।

গুড়্চী নধুকং জ্রাক্ষা মোরটং দাড়িনৈং সহ। পাককালে প্রদাতবাং ভেষজং গুড়সংযুত্য । তেন কুপাভি নো বায়ুং পাকং বাঞ্চি মক্রিকাঃ ॥ (মোরটনৈক্ষবং মূলম)

নস্রিকা পাকিতে আরম্ভ হইলে, গুলঞ্চ, ষষ্টিমধু, জাকা, ইকুম্ব ও দাড়িন এই সকল জবের কাথে গুড় প্রক্ষেপ দিয়া প্রয়োগ করিলে বারু কুপিত হয় না এবং সহর উহা পাকিয়া যায়।

পটোলমূলং কৰিতং মোরটং স্বরদং তথা। আদাবেৰ মস্থায়ি পিতজায়াং প্রযোজ্যেও।

পিত্ত প্রত্য মহরিকা রোগে প্রথম তঃ পটোল-মূলের কাথ ও ইকুমূলের স্বরস প্রয়োগ করিবে।

নিখং পর্ণ টকং পাঠা পটোলং চন্দনন্বয়ন্। উপীরং কটুকা ধাত্রী তথা বাসা ছরালতা । এবাং পানং শৃতং শীতমূত্রমং শর্করান্বিতন্। মুস্বাং পিত্তলাদ্যন্ত প্রবোক্তব্যং বিজ্ঞানতা। দাহস্বরে নিসর্পে চ ব্রণে পিতাধিকেহপি চ ॥

নিমছাল, কেতপাপড়া, আক্নাদি, পটোলপত্ত, চন্দন, রক্তচন্দন, বেণার মূল, কটুকী, আমলকী, বাসক ও হুরালভা, ইহাদের কোব শীতল হইলে ভাহাতে চিনি প্রক্ষেপ দ্বিয়া

পান করিবে, ভদ্মারা, পিত্তজ মহুরিকা, দাহ, জব, বিদপ্ত পিতাধিক এণ বিনষ্ট হুইবে।

দ্রাক্ষাকাশ্যয়গর্জ্ব-পটোলারিষ্টবাসকৈ:। লংজামলকড়ংশ্পর্নৈ: সিতাযুক্তিক্ট পৈত্তিকে।

দ্রাক্ষা, গাস্থারী, শর্জুর, পল্তা, নিম-ছাল, বাসক, লাজ (থৈ), আমলকী ও ছরা-লভা, ইহাদের কাথে চিনি প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে পিত্তজ মহুরিকা নষ্ট হয়।

শিরামে'ড়্**স্**রাম্প-শে**ল্ফগ্রে'খনল**লৈ:। প্রলেপঃ সমূত: শীম্মা এণ্টাস্পান্থরা।

শিরীয়, যজ্জুমুব, অশ্বথ, চাল্তে ও বট, ইহাদের ছাল বাটিয়া স্থত সং প্রালেপ দিলে ত্রণ, বিস্পু ও দাহ নষ্ট হয়।

দ্বরালভাং পর্ণটকং ভূনিখং কর্রোহিণীয়। শ্লেমিকাং পিত্রভারতে বা প্রেন নিকাশ্য দাপ্রেই।

ছ্রালভা, ক্ষেত্পাপড়া, চির্ভা ও কট্কী ইহাদের কাথ পোড়ক কিংবা শ্লেছিক মহু-রিকায় পান করিবে।

বাসামুন্তকভূনিধ-জিফলেল্রগবাসকন্। পটোলারিষ্টকঞ্চাপি কাথায়থা সমাক্ষিকন্। পিবেৎ তেন প্রণশাধি মপুর্যাঃ কদসন্তবাঃ॥

বাসক, মৃতা, চিরতা, ত্রিফলা, ইন্দ্রব, ছরাণভা, পল্তা ও নিম্ব, ইহাদের কাথে মধু একেপ দিয়া পান করিলে কফজ মস্রিক। বিনই হয়।

শিরীষে ও যজ্ঞতুমুরের ছাল এবং থদির ও

নিমের পাতা পেথণ করিয়া প্রলেপ দিলে কক্ষত্র পিতজ মসূরিকা প্রশমিত হয়। অমৃতাদিকদারক বিদপে:জং প্রনেজয়েং॥ মসারকা রোগে বিদপ-চিকিৎদোক্ত অমৃতাদি কধায় ব্যবস্থা করিবে।

নিম্বাদিঃ।

নিদ্বং পপটকং পাঠাং গটোলং কটুরোহিনীম। বাসাং জ্বালভাং ধাতীমূশীরং চন্দ্রনদ্বয় । এব নিম্বাদিক: খ্যাত: পীত:,শর্করয়া যুত:। হস্তি ত্রিদোৰমস্কীং জ্বনীসর্পদন্তবাম। উপিতা প্রবিশেদ্ বা ডু পুনস্তাং বাহুতো নয়েৎ ।

নিমছাল, কেতপাপড়া, আক্নাদি, পটোলপত্ত, কটুকী, বাসক, ছরালভা, আম-লকী, বেণার মূল, ধরেতচন্দন ও রক্তচন্দন, ইহাদের কাথে চিনি প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে জয় ও বিসর্পজনিত এবং ত্রিদোষজাত মস্থারিকা বিনষ্ট হয়। যে সকল মস্থারিক। বহির্গত হইয়া অন্তলীন হয়, তাহাও ইহাতে বাহির হইয়া পড়ে।

কাঞ্চনাদিকাথঃ।

কাঞ্চনারহচ: কাথন্তাপ্যচূর্ণবিমিশ্রিতঃ। নির্মতান্তঃশ্রবিষ্টান্ত মস্তরাং বাজতো নয়েং॥

যে সকল মস্ত্রিকা বহিগত হইয়া অন্তর্গীন হয়, তাহাদের পুনব ইকরণার্থ রোগিকে রক্ত-কাঞ্চনছালের কাথে স্বর্ণমাক্ষিক প্রক্ষেপ_ুদিয়া পান করিতে দিবে।

भटोला किः।

পটোলকুওলীমূল-বৃনধ্বধ্বাসকৈ: ।
ভূনিস্বনিধ্বকুকা-পর্বটৈক শৃতং জলম্ ।
মস্ত্রীং শময়েশাসাং পক্তৈক-বিশোবয়েং।
নাতঃ পর্তরং কিঞ্জি বিকোটজ্বলান্তয়ে ।

পটোলপত্র, গুণঞ্চ, মুতা, বাসকছাল, ছরালভা, চিরতা, নিমছাল, কট্কী, ক্ষেত-পাপড়া মিলিত ২ ভোলা। অর্ধদের কলে সিদ্ধ করিয়া অর্ধপোয়া থাকিতে নামাইবে। এই কাথ পান করিলে অপক বসস্ত প্রশমিত ও পক বসস্ত গুদ্ধ হয়। বিক্ষোটক জ্বরে ইহা বিশেষ উপকারক।

পটোলমূলারুণতঙুলীয়কং পিবেদ্ধরিক্তামলকৰুসংযুত্র । মস্ত্রিবিক্ষোটবিদাহলাপ্তয়ে ওদেব রোমান্তিবমিব্দরাপহম্ ॥

পটোলমূল ও লোহিত ও গুলীয় (রাঙ্গানটে) ইহাদের কাথে হরিদা ও আমলকীর চুর্ণ

প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে মস্থরিকা, বিস্ফোটক, দাহ, হাম, জ্বর ও বমি বিনষ্ট হয়।

পটোলম্লারণতভূলীয়কং
তথৈব ধারীখ দিরেণ সংযুত্ম।
পিবেজ্জাং সংক্ষিতং হুণীতলং
মস্রিকারোগবিনাশনং পরম্।
পটোলম্ল, রাঙ্গানটে, আমলকী ও খদির
ইংগাদের শীতল কাথ পান করিলে মস্রিকা
বিনষ্ট হয়।

খদিরাফকঃ।

গদির ত্রিফলারিই-পটোলামু এবাসকৈ:।
কাপোংইকাকো জয়তি রোমান্তিকন্ত্রিকা:।
কু চুবীসপরিক্ষােই-কণ্ডাু দানপি পানতঃ।
(এতা শোধান কর্জবাে শুগ্ শুসুমপি প্রক্রিপারিঃ।
ইতি চক্রিকা)

খদিরকান্ঠ, ত্রিফ্রা, নিমছাল, পটোলপত্ত, গুরুঞ্চ ও বাদক, এই সকল মিলিত ২ তোলা। ইহাদের কাথ পান করিলে হাম, মস্থারিকা, কুঠ, বিমর্গ, বিস্ফোট ও কণ্ড প্রভৃতি নিবারিত হয়। ইহাতে শোধন (বিজ্চন) আবশ্যক হইলে গুগ্গুলু প্রক্ষেপ দিয়া পান করিবে।

নৌ শরেণ তু সংপিটং মাতুলুক্স কেশরম্। প্রলেপাৎ পাতরভ্যাশু দাহঞ্চাশু নিয়ক্ততি ॥

ছোলক লেবুর কেশর কাঁজি সহ পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে সম্বর মহরিকা ও দাহ নিবারিত হয়।

পাদদাহং প্রকৃক্তে পিড়কা পাদসন্থন।
তক্র দেকং প্রশংসন্থি বহুশত্তপুলামুনা।
পাদসন্তব পিড়কা পাদদাহ জন্মার,
অত্তব উহাতে বারংবার তপুলধীত-জল সেক
করিবে।

পাককালে তু সর্বান্তা বিশোষয়তি মাঞ্চত।
তন্মাৎ সংবৃংহণং কাষাং নতু পৰাং বিশোধণমূ।
পাককালে বসন্ত সকল বায়ু ধারা শুক হইতে পাকে, অতএব তৎকালে শোষক আহার না দিয়া পুষ্টিকর আহার দিবে।

্লিংহদ্ বা বাদাঃং চূৰ্বং পাচৰাৰ্থং **ওড়েন তু**। অনেৰাপ্ত বিপচ্চত্তে বাতাপ্তককান্মিকাঃ॥ কুলচূর্ণ গুড়ের সহিত ভক্ষণ করিলে বাতিক, পৈত্তিক ও শৈলিক মস্বিকা শীঘ পাকিয়া উঠে।

শূলাগ্মানপরীতক্ত ৰুম্পনানক্ত বায়ুনা। ধৰমাংসরদাঃ শন্তা ঈবৎসৈক্তবসংৰূতাঃ॥

মস্বিকা রোগে বায়ু কর্তৃক শূল, উদরাগ্নান ও কম্প উপস্থিত হইলে, জাঙ্গল পক্ষির মাংসরসে সৈন্ধব লবণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিতে দিবে।

দাড়িমান্নর সৈযু জো মুখা: স্থারক্লচৌ হিতা:। পিবেদস্বস্থপুশীতং ভাবিতং গদিরাসনৈ:। (পিবেদস্বস্থপুশীতমিতার্কশূতং শীতঞ্চ এবং বক্ষা মাণ্যোগেহপীতি চক্রটাকা)।

এই রোগে অক্লচি হইলে, অন্নদাড়িমের রসস্তুক যুব পান করিতে দিবে এবং থদির-কার্চ ও পিয়াসাল সাধিত অর্ক্লণ্ড শীতল কাথ পান করাইবে। (পশ্চাল্লিখিত শৌচগণ্ড্যাম্মর্থ কাথসমূহও এই নিয়মে প্রস্তুত করা উচিত।)

শৌচে বারি প্রযুপ্তীত গায়ত্রীবহুবারজন্॥

বদস্ভ রোগে খদিরকান্ঠ ও বছবার পত্রের (চাল্ডা পাভার) সহিত দিদ্ধ জল শৌচার্থ প্রদান করিবে।

জাতীপত্রং সমঞ্জিষ্ঠং দাবলী পৃগদলং শমী।
ধাত্রীদলং সমধুকং ক্ষিতং মধুসংযুত্তম্ ॥
মুধ্রোপে কঠরোধে গভুষার্থং প্রশাস্ততে।
অক্টো: দেকং প্রশাসন্তি গবেধুমধুকামুনা ।
(গবেধুমো গুলক, অনয়ো: ককং কর্ণটে বন্ধা
প্রশীড্যাক্ষিসেক: কাষ্যঃ। ইতি চক্রটাকা)।

জাতীপত্ত, মঞ্জিষ্ঠা, দাক্তংরিদ্রা, স্থপারি,
শনীছাল, আমলকী ও যষ্টিমধু, এই সমুদার
দ্রব্যের কাণে মধু প্রক্ষেপ দিয়া তাহা মুণ ও
কণ্ঠরোধে গঙ্বার্থ প্রয়োগ করিবে। গুলঞ্চ
(কেহ বলেন গোরক্ষচাকুলে বা দেধান) ও
যষ্টিমধুর কন্ধ পোটুলীবন্ধ ও নিম্পীড়ন করিরা
সেই রস বারা চকুব্রে সেচন করিবে।

ৰ সংশ্বাস সূত্ৰ হয় হোচন কামহেৰ। মধুকং ত্ৰিকলা মুকা দানলীছঙ্ নীলমুৎপলম্। উশাসকোএমঞ্জিটাঃ অলেপাশেচ্যাতনে হিডাঃ।

নগুদ্ধানন দৃগ্জাতা মপুৰ্য্যে ন জবন্তি হি॥

ষষ্টিমধু, ডিফলা, মুঝা, দারুহরিদ্রা, দারু-'চিনি, নীলোৎপল, বেণার মূল, লোধ ও মঞ্জিষ্ঠা, এই সকল দ্রব্যের প্রলেপ অথবা ইহাদের অন্ধিসিদ্ধ জ্ঞল দ্বারা পরিষেক করিলে চক্ষু-স্থ মস্থারকা বিনষ্ট হয়।

পঞ্চৰজন্ত্ৰি ফেদিনীমবচ্পত্ৰে। ভন্মৰা কেচিদিজ্জি কেচিদ্ গোমন্ত্ৰেগুৰা। (ফেদিনীং কেব্যুক্তাং মস্বীম্। ভন্মৰেভি গুৰু মিমজ্যানা প্ৰায়ম্পন্ত্ৰিক ব্যৱস্থান ক্ৰি

্রেপনার রেপর্কার নহর।ন্। ভার-ন্ত ওজ গোন্যভারনা। গোন্যরেপুনেতি বর্ছানিতেন। ইতি চক্রটাকা)।

মক্রিকায় অধিক পূ্ব নিগত হইলে পঞ্চ বন্ধলের (বট, বজ্জুমুর, অথথ পাকুড় ও বেত) ছাল চূর্ণ করিয়া ভাহা বসস্তের উপর ছড়াইয়া দিবে। বিলঘুটে ভন্ম অথবা গোময় চূর্ণ বন্ধে ছাকিয়া ঐ ক্ষতস্থানের উপর ছড়াইয়া দিবে।

ক্রিমিপাতভয়াদ্ যোহপি ধুপরেৎ সরলাদিভিঃ।
বেদনাদ'হণাপ্তার্পং কত'নকে বিশুল্ধার।
সপ্তপ,গুলুং বরাকাশং মুঞ্জাধা পদিরাষ্ট্রন্ম।
(সরলাদিভিন্নিতান সরলাপ্তরপ্তগৃগুলুভারনিধা)।
সপ্তপ্তপুমিত্যুভারনিধা সম্বাতে। ইতি চক্রটাকা)।

বনস্তে ক্রিমিনা হয়, এই জন্ম সরলকান্ত,
পূনা, দেবদারু, চন্দন, অগুরু ও গুগুগুলু
প্রভৃতির পূম প্রদান করিবে। ত্রিফলার কাথে
অথবা খাদরাইক পাচনে গুগুগুলু প্রক্রেপ
দিয়া পান করিলে পুযাদি নিগত হইয়া বেদনা
ও দাহ নিবারিত হয়।

কৃষণভয়ারজো লিকানাধুন। কণ্ঠতদ্বয়ে।

কণ্ঠগুদ্ধির নিমিত্ত মধুর সহিত পিপুল ও হরীতকী চুর্ণ অবলেহ করিবে।

অধাষ্টাঙ্গাবলেহো বা কবড়শ্চার্ককাদিভিঃ। পক্তিক্তং প্রযুক্তীত পানাভ্যক্তনভাঞ্জনৈঃ ॥

মস্রিকা রোগে অন্তাঙ্গাবলেছ স্বন কিংবা আদা প্রভৃতির কবল ধারণ অথবা পান অভ্যঞ্জন ও ভোজনার্থ কুষ্ঠোক্ত পঞ্চতিক্ত মূত বাবস্থা ক্রিব।

ङ्गाम्बर्गविधानक टेडलामीन् वक्तरङ्कितम्। विवरेषः मिक्तरेष्ठक अमुकार जू भूनःभूनः॥ ७ग मिन्डमरुष्टाः कान्तिर मिन्टरमाकटेगः॥

মস্থরিকায় রণোক্ত চিকিৎদা কর্ত্তব্য এবং আধককাল ভৈল বর্জনীয়। পুনঃপুনঃ বিষয় সিদ্ধ মন্ত্রপাঠ পূর্ব্বক রোগিকে মার্জন এংং শোণিতসংস্কৃষ্ট মস্তরিকাম্ব রক্তমোক্ষণ করিবে।

নিশাছয়োশীরশিরীবমৃত্তকৈঃ
সনোধ্রভদ্রভারনাগকেশরৈঃ।
সংবদবিক্ষোটবিসর্পকৃষ্ঠদৌর্গকারোমান্তিহরঃ প্রদেহঃ।

ইরিদ্রা, দাক্ষংরিদ্রা, বেণার মূল, শিরীষ-পূলা, মূলা, লোগ, প্রেছচন্দন ও নাগকেশর, এই সকল দ্রব্য একত্র পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে স্বেদ, বিস্ফোটক, বিসপ, কুছ, দৌর্গন্ধ্য ও হাম নিবারিত হয়।

বিষাতিমুক্তকাশোক-প্লক্ষেবতসপলবৈ:।
নিশি প্যুমিত: ক'থো মপ্রাভয়নাশন:॥
(যোগোহয়মনাগতমপ্রীনিবারণার্থ: ১৮এ মাসি
পেয়:। ইতি চক্রটিকা।)

হেলাকুচা, মাধবীলত!, অংশক, পাকুড় ও বেশুস, ইহাদের পাতার কাথ পার্টাইত করিয়া প'ন করিলে বসস্তবোগ আরু আক্রমণ করিতে পারে না। বসস্তানিবারণার্থ চৈত্রমাসে এই কাথ পান করিতে হয়।

চৈত্রাসিতভূতদিনে রক্তপতাকাৰিতা র, হী ভবনে । ধবলিতকলনে ভাষা পাপক্ষো দুরতো ধতে ।

চৈ এমাদের ক্লফপক্ষীয় চতুদ্দশীতে শুল্ল বর্ণ কলদোপরি লোহিত পতাকায়ক্ত সিক্ল বৃক্লের শাধা স্থাপন করিলে, সে বাটীতে বসস্তরোগ উপস্থিত হয় না।

নারীণাং বামপাশ্বহং নরাণামপ্সব্যগদ্। পাপরোগভ্যাং দূরাচ্ছিবাস্থি বিনিবাররেও। (শিবাস্থাত্যতা হরীতকাবীঞ্জমিতি নীলকঠঃ। শুগাল'স্থীতি কেটিও।)

স্ত্রীলোকের বাম পাশ্বে এবং পুরুষের দক্ষিণ পার্গে হবীতকীর বীজ (কাহারও মতে শুগালান্থি) ধারণ করিলে বসস্ত হয় না।

ব্দরে জাতে স্পুশেরাসু তিঠেরিব্বাতবেশানি। অক্ষেদ্ বিজয়াচুর্বৈগাঁজং বয়েণ বন্ধয়েৎ।

জর উপস্থিত হইলে জল পরিত্যাগ, নির্বাত গৃহে জবস্থান, গাত্রে সিদ্ধিপত চুর্ণ মুদ্ধন এবং বস্তু জারা গাত্র বন্ধন করা উচিত। ক্সাক্ষ নরিচৈযুক্তং পীতং পথু বিভাস্তদা। আহাৎ পাপক্ষং হস্তি দৃষ্টং বার্মহ্মশঃ॥

ক্**ডাক্র্ণিও মরিচ চ্**র্ণ একতা বাসি জলের সহিত সেবন করিলে ৩ দিবদে বসস্তরোগ প্রশমিত হয়।

ছষ্ট্রপাস্থ ভাষেব জলৌকাভিগরেদহায়। এণশোষ্ট্রং গোগমাচরেৎ তৎপ্রণান্তয়ে।

ছি বসম্ভে জোঁক বসাইয়া বক্ত মোক্ষণ ও এশশোথ-নাশক চিকিৎসা করিবে।

উষণাদিচুর্ণমৃ।

ডদশং সিয়লীমূল, কুঠং বারণপিয়লীম্।
মুক্তকং মধুকং মুকাং ভাগাং মেটরসং গুভাম্।
ব্যক্তিবিধাবাদা লোক্রং বৃংহীদ্বন্।
সক্রা সমভাগানি মারমানেন বোজামে।
উষ্ণাস্থিনিং চূর্ণ বিজোটং লোহিত্জ্রম্।
রোমান্তিকাং জ্বং জীর্ণ হ্ছাকালি মহাকিন্য

মরিচ, পিপুলম্ল, কুড়, গজপিপ্ললী, মুতা, লষ্টিমধু, মুর্বা, বামুনহাটী, মোচংস, বংশলোচন, ঘবকার, আতেইচ, বাদক্ছাল, গোকুর, বৃহতী ও কটকারী প্রত্যেক দ্রবা সমভাগে উত্তমরূপে চূর্ণ কার্যা ১ মান। মানায় জলের সহিত সেবা। ইহাতে বিজ্ঞোটক, লোহিত জর, হাম ও মত্রিকা প্রভৃতি নই হয়।

সর্বব্রোভদ্রসঃ।

সিন্দুরমলং রজতঞ্চ হেম
সমেন ভাগেন নন: শিলাঞ্চ।
দিশস্ত বাংশী নিপিলেন তুলাং
সংমর্দ্ধিদে ভগ গুলুকং প্রথক্তাং ॥
ভতন্ত মাৰপ্রমিতাং বিধার
বটাং প্রযুক্তীত ব্যানুপান্য।
যং স্ক্তিভালরসো ন হন্তি
ন সোহন্তি রোগঃ থল্ দেহিদেহে।

সিন্দুর, অল, রৌপা, স্বর্ণ ও মনছাল প্রত্যেক সমভাগ, বংশগোচন ২ ভাগ, সক-লের সমান গুগ্গুলু, এই সম্বয় জল সহ উত্তমরূপে মাড়িয়া উপযুক্ত অন্ত্পানের সহিত ১ মাষা পরিমাণে সেবন করিলে মসুরিকা প্রভৃতি সকল প্রকার রোগ নিবারিত হয়।

তুর্লভে। রসঃ।

অথ গুদ্ধস্ত সৃহস্ত মৃচ্ছিত্ত মৃত্ত চ।
দ্বিলা পিপ্পনী ধাত্ৰী ক্ষাক্ষয়তমান্দিকৈ ।
মৰ্দ্দনং কাররেৎ থলে গুপ্তামানাং বটাং চরেৎ।
পাপরোপান্তকো যোগং পৃথিবাামেব তল তঃ।
(দ্বিশেতি খেতগাতভোগান্বলান্বরং গ্রাহ্ম।)

খেতবেড়েলা, পীতবেড়েলা, পিপুল, আমলকী, রুদ্রাক্ষ, দ্বত ও মধু, এই সকল দ্রব্যের সহিত রসিন্দ্র মর্দন করিয়া > রতি পরিমিত বটা প্রস্তুত করিবে। ইহাতে মস্থারকা বিনষ্ট হয়। পৃথিবীতে এরূপ ঔষধ ছুলভ বলিয়া ইহার নাম ছুলভ রুদ হইয়াছে।

ইন্দুকলাবটিকা।

শিলাজত্বসী হেম সংমধ্যাজ্জকবারিং।।
শুপ্তামাত্রা বট্টা: কৃত্বা কৃত্যাচ্ছায়াবিশোবিতা: ।
মুসুরিকায়াং বিস্ফোটে জ্বে লোহিতসংজ্ঞকে।
একৈকাং দাপরেদাসাং সর্বত্রণগনের চ ।

শিলাক্তু, লৌ হ ও স্বর্ণ প্রত্যেক সমভাগে লইরা বাবুই-ভুলসীর রসে মাড়িয়া > রতি প্রমাণ বটিকা করত ছারাতে গুরু করিবে। ইহাতে মস্রিকা প্রভৃতি রোগ বিনষ্ট হর।

এলাপ্সরিষ্টঃ।

পঞ্চাশংপলমেলায়া বাসায়াঃ পলবিংশতিম্ ।
নঞ্জিটাং কুটজং নস্তাং গুড়্চীং রজনীব্রম্ ॥
নাসামূলীরং মধুকং শিরীবং পদিরার্জ্জনৌ ।
ভূনিঘনিষবকাংশ্চ কুটং মধ্রিকাং তথা ॥
গৃহীবা দিক্পলোয়িতা। জলফোণাইকে গতেং ।
দোপশেবে কবারে চ প্তে শীতে বিনিক্ষিপেং ॥
ধাতকাঃ বোড়শপলং নাক্ষিকস্ত তুলারয়য় ।
চাডুর্জ্জাতং ত্রিকট্কং চন্দনং রক্তচন্দনম্ ॥
মাংসীং মূরাং মৃত্তকক্ শৈলেয়ং শারিবাব্রম্ ।
পলগুনাবতন্তার কিন্তা মাসং নিধাপরেং ॥
এলান্ডরিটা হন্তোব বিসর্পাংশ্চ মত্রিকাম্ ।
রোমান্তিকাং শীতপিন্তং বিশেটাং বিষমন্তরম্ ॥

नाज़ीडगः जगः इष्टेः कामः चामक नाजग्। छगन्मत्राभनःयो ह अध्यव्भिष्कास्य।।

प्लाहें हे €० शब, वांत्रकहाल २० शब, मिक्षेत्र, कूड् हिलान, मखीमून, खनक, हितान, नोक्ट्रिका, तांचा, त्र्वांत्र मून, वष्टिमधु, नित्रीय-ছাল, ধদিরকাষ্ঠ, অর্জ্জুনছাল, চিরতা, নিমছাল, চিতার মূল, কুড় ও মৌরি প্রত্যেক ১০ পল. পাকার্থ জল ৫১২ (সর. শেব ৬৪ (সর। কাগ শীতল হইলে ছাঁকিয়া তাহাতে ধাইফুল ১৬ পল. মধু ৩৭॥০ সের ; গুড়ম্বক্, তেজপত্র, এদাইচ. নাগেশ্বর, ও ঠ, পিপুল, মরিচ, খেতচন্দন, রক্ত-ठन्मन, क्रोंगांशी, भूवांगांशी, भूठा, रेमनक. অনস্তম্ল ও খ্রামালতা প্রচোক ৮ ভোলা পরিমাণে প্রক্ষেপ দিয়া আৰ্তমুখ পাত্রে এক মাস রাখিবে। পরে করগুলি ফেলিব। ইহাতে রোমাঞ্ডিকা, শীতপিত্র, বিস্ফোট, মসুরিকা, ভগন্দর, উপদংশ ও প্রমেহ-পিডকা এভতি নানাবিধ রোগ বিনষ্ট হয়।

ष्य भी जना- ि कि ९ म।

ঘণ্টাৰুৰ্ণং শিবং গৌরীং বিষ্ণুং বিপ্রঞ্চ পূজ্যেও। আচরেজ্জপ্রোমাদীন ব্রতং রোগহরং তথা।।

ষণ্টাকর্ণ (খেটুদেবতা), শিব, ছগা, বিফু ও ব্রাহ্মণের পূজা এবং জপ হোমাদির অঞ্-ষ্ঠান ও শীতকা-রোগন্ধ ব্রত আচরণ করিবে।

অগদানি বিষয়ানি রক্সানি বিবিধানি চ। ধারতেদ্ বাচয়েচচাপি বৈনতেয়সা সংহিতাম্॥

এই রোগে বিষয় ঔষধ ও বিবিধ রত্ন ধারণ এবং গরুড-সহিতা পাঠ করিবে।

বিষ**ষ্টো সিদ্ধ**ইদ্রক্ষ প্রমূজ্যাৎ তু পুন:পুন:। ভক্ত্যা পঠেৎ পাঠয়েচ্চ শীতলারাঃ শুবং শুভষ্।

পুন:পুন: বিষয় সিদ্ধ মন্ত্র প্রয়োগ এবং ভক্তিপুর্বক শী লো । দেবীর স্তোত্র পঠন ও পাঠন করিবে।

শীতলাক ক্রিয়া কার্যা: শীতলা রক্ষরা সহ। ব্যীয়ামিথপত্যাণি পরিতো ভবনাস্করে। শাঁতলারোগ উপস্থিত হইলে শীওলার কবচধারণাদি রক্ষাকার্য্য করিবে এবং গৃহের চতুর্দ্দিকে নিমপাতা বন্ধন করিবে।

পকেহবধ্বনং কুর্যাদ্ বনগোময় জন্মনা। সংপত্তনিম্বশাপাভিম ক্ষিকামপদারয়েং॥

শীতলা পাকিলে তাহাতে বনঘুঁটের ভন্ম-চূর্ণ প্রয়োগ করিবে এবং নিমের ভাল ও পদ্মের নুহন পত্র স্থারা মক্ষিকা নিবারণ করিবে।

জনক শীতকং দল্পাক্ষরেংপি নতু তং পচেং। স্থাপয়েৎ তুম্বলে প্তে রম্যে রহিদি শীতলে। নাগুটিঃ সংস্পৃথেৎ তন্ত নত তন্তান্তিকং এজেৎ॥

ইহাতে জর হইলেও শীতল জলা দিবে। কনাচ উক্ত জল দিবে না। পরিষ্কৃত, শীতল, মনোরম, নির্জ্জন এবং মনাগুজিকর স্থলে রোগিকে রাগিবে। অগুচি হইয়া বোগির নিকটে গমন বা তাহাকে স্পর্শ করিবে না।

বহবো ভিষজো নাত্র ভেষজং যোজয়ন্তি হি। কেচিৎ প্রযোজয়ন্ত্রের মতং তেষামপ করে॥

অনেক ,চ,কৎসকই এই রোগে ঔষণ প্রয়োগ করেন না। অপরে যেরূপ ঔষণ প্রয়োগ করেন, তাহা বলা গাইতেছে।

> নে শীতলেন স্থিলেন বি: শ্বা সমাধ্ নিশ্বক্ষিকালস্থিতাং রজনীং প্রবৃত্তি। তেখাং ভ্রতি ন কদাচিদশীহ দেহে ক্ষেটিস্থ বা জগতি শীতলিকাবিকারাঃ॥

যে সকল ব্যক্তি নিম্ব, বছেড়ার বীজ এবং ছরিদ্রা শীতণ জলে পেষণ করিয়া পান করে, তাহাদের শীতলায়োগ কখন হয় না।

> মোচারদেন সহিতং সৈতচন্দনেন বাসারদেন মধুকং মধুকেন চাধ। আদৌ পিবন্ধি ফ্ষনংখরদেন মিশ্রং তে নাগু,বন্ধি ভূবি শীতনিকাবিকারমু॥

মোচার রস ধারা খেতচন্দন অথবা বাসক, মধু ও জাতিপত্তের রসে যষ্টিমধু পেবণ করিয়া প্রথমে (জ্বর আসিবার অব্যবহিত পূর্বে) পান করিলে আর শীতনা কর্তৃক আক্রান্ত হইতে হর না। কণাচিদপি নো কাব্যমুচ্ছিটট প্রবেশনম্। ফোটেদপি সদাহের্ রক্ষারেণ্ৎকরো হিতঃ। তেন তে শোবমায়ান্তি প্রপাকং ন ভজন্তি চ। (রক্ষামেণ্ৎকরং গুরুগোময়ভন্মচূর্প্রক্ষোঃ।)

শী তলারোগির গৃহে কখনও উচ্ছিষ্টাদি
লইরা যাইবে না। স্ফোটকে দাহ হইলে
তাহাতে শুক্গোময়-তশ্বচূর্ণ প্রক্ষেপ করিবে,
তাহা হইলে উহা শুক্ষ হইয়া যাইবে এবং
কখনও পাকিবে না।

চন্দ্ৰং বাসকো মৃস্তং গুড়ুচী ছাক্ষয়া সহ। এবাং শীতক্ষায়স্ত শীতলাজ্বৰাশৰঃ॥

চন্দন, বাদক, মুতা, গুলঞ্চ ও জাকা ইহা-দের শীতক্ষায় পান ক্রিলে শীতলা জ্ব নিবারিত হয়।

জপহোমোপহারৈত দানস্বস্তারনার্চনে:। বিপ্রসোপপুরোরীণাং পূজনৈস্তাং শমং নরেও॥

জপ, হোম, উপহার, দান, স্বস্তায়ন, পূজা এবং ব্রাহ্মণ, গো, শিব ও হুর্গার পূজা দারা শীত্রণ প্রশমিত হয়।

ত্তোত্তক শীতলাদেব্যাঃ পঠেং তু শীতলান্তিকে। প্ৰাহ্মণঃ অৰুষা যুক্তত্তেৰ শামান্তি শীতলাঃ ॥

প্রাহ্মণ শ্রহ্মার ক্রেপির নিকট শীতলাস্তোত্র পাঠকারতে শীতলারোগ নিব -রিভাহর।

অথ শীতলাস্তোত্রম।

শ্বন্ধ উবাচ।
ভগবন্দেব দেবেশ শীতলারাঃ তাবং শুভদ্।
বকু মুর্জ্পলেবেশ বিক্ষোটকজ্যং মহৎ ॥
ঈশ্বর উবাচ।
বন্দেহহং শীতলাং দেবীং রাসজ্ঞাং দিগম্বরীম্।
বামাসান্তা নিবর্জে চ বিক্ষোটকজ্যং মহৎ ॥
শীতলে শীতলে চেতি বো জরাদাহপ্রীভিতঃ।
বিক্ষোটকজ্যং ঘোরং কি শং তক্ত প্রশৃত্তি।
বন্ধানুদক্ষধেয় তু খ্যাম্য সম্পুল্নেররঃ।
বিক্ষোটকজ্যং ঘোরং কুলে তক্ত ন লারতে ।

শীতলে জ্বলগান্ত পূতি**গন্ধগ**তসাচ। প্রনষ্ট্রকুষ্ট পুংসম্ভামত্ত জাঁবিতৌধধম্ । নমামি শীতলাং দেবীং রাসভস্থাং নিগম্বরীম্। मार्कनीकल्पार्भाष्ट्राः स्प्री तक्षु द्रमस्काम् । অস্ত ঐাশীলীতলান্তোত্রস্য মহাদেব-ক্ষরিরন্ত্র পছন্দঃ শী হলাদেব হা শী হলোপজবশাস্তাৰ্থে জপে বিনিয়োগঃ। শীতলে ততুজান রোগান নৃণাং হরসি জ্ঞুরান। "বিক্ষে'টকবিশীর্ণানাং হ্মেকামুত্রবিণী। গলগওগ্রহা রোগা যে চাত্তে দারুণ। নৃণাম। স্বদম্পান্মাত্রেণ শীতলা যান্তি তে ক্ষ্ম। न मन्नः (नोवधः क थ॰ পাপরোগ্যা বিদ্যাত। ছমে চা গীংলে ধাতি নাজাং পঞামি দেবতাম। মুণালতস্তমদুশীং ন'ভিজ্মধানংস্থিতান। यञ्चार म किछा एए कि विज्ञा प्रकृत का श्राट ॥ ष्यष्टेकः भौडलास्यका यः शर्यम् नवः मना । বিক্ষোটকভয়ং খোরং কুলে তস্যান জায়তে 🛊 শোভবাং পঠিতবাঞ্চনরৈ ছ ক্রিসম্খিতে । উপস্গ্রিনাশায় প্রং অক্তারনং মহৎ ॥ শী হলাষ্টকমেত্তির ন দেয়ং যদা কলাতিং। কিন্তু তল্পৈ প্ৰদাহৰাং ভক্তিপ্ৰদ্ধানিতে হৈ যু,॥ ইতি কানীখণ্ডে নীত্ৰাষ্ট্ৰং স্থোএম।

অথ পথ্যাপথ্য-বিধিঃ।

মদূরিকারোগে পথ্যান।

পূর্বাং লঙ্গনবান্তিরেচন'শরাবেধাং শশাকে জ্বান জীর্নাঃ বছিকশালয়েহ'প চণকা মূল্যা মস্রা যবাং। সর্কেহ'প প্রতুষাং কপোত্রটকা দা হৃছেয়ৌঞ্চাদয়ে জীবল্লীবগুকাদয়োহপি কুলকং কাঠিলনাবাচকষ্ । ককোটং কদলক শিগ্র, সচকং জাকাফলং দাড়িমং মেধ্যং বৃংহণমন্ত্রপানম্বিলং কোলানি মাবো রসঃ। অক্রোঃ সেক্বিধৌ:গবেধুম্থুকোড়ুতং ক্লীতোদকং শৃষ্কোদরকোকনীরম্পি বা কপুরচ্গানি বা । পাকে মূল্যরসোহপি জাললরসং শালিকশাকং যতং নিশু গ্রীদলকর্প্রাবিহিতে। ধূপো মুর্মু ক্তিতঃ। শ্বলোগরক্তম গুলুম্বো গুলে কুর্মু ক্তিতঃ। শ্বলোগরক্তম গুলুম্বো গুলে ব্রণোক্তঃ ক্রিয়াল রালেগং পিচুম্বিপ্রানিশ্রোঃ শেবে ব্রণোক্তঃ দ্বাহারণা । ইথং সর্বাদশাবিভাগবিহিতং প্রাং যথাদোরতঃ সংযুক্তং মূল্যাতনোতি নিত্রাং নৃণাং মস্বীগনে ॥

প্রথমতঃ উপবাদ, ব্মন, মহরীরোগে विदश्कन, भित्रादिश, हत्का किन्न (क्यां क्यां), পুরাতন ষষ্টিক ও শালিধান্ত, ছোলা, মুগ, মসূর, যা, পায়রা, চটক (চড়াই), ডাক, বক, চংকার এবং শুক প্রভৃতি সমস্ত প্রভুদগণের भारम, भाष्टील, कदला, भनानकन, कांक्टतान, কাঁচাকলা, শজিনা, ছোলঙ্গ, কিসমিদ, দাড়িম, পবিত্র অথচ পুষ্টিকর অরপানীয়, কোল, মাষ্ কলারের ধূন পথা খিবে। গবের (তুল্ধান্ত-বিশেষ—কোন) ও ষ্টিম্বু সিদ্ধ করিয়া শীতল হটলে দেই জল ছার। ও শামুকের কোষ'-ভান্তরত জল ছারা চকুতে পার্থেচন করিবে অথবা কপুরচুর্ণ মিশ্রিত জল প্রয়োগ করিবে। মস্বী প্র হইলে মুগের যুব, জাঙ্গল মাংদের রস, হেলেঞ্চা শাক, ঘুত, নিসিন্দাপাতা, যুক্তি অনুবারে বুপান্থন্তিত ধুপপ্রয়োগ, শরীরে সর্বদা গোময়ভত্ম ঘর্ষণ, গুগু,গুলু; মুহুরী 🖘 হইলে নিম্নপত্র এবং কাচ। হরিদ্র। শিলাতে পেষণ করিয়া শরীরে লেপন করিবে, অব-**भारम** ज्ञादत. हमा क हि. के९मा क तिर्देश । के প্রকাব দোষভেদে অবস্থার বিভাগ অনুসারে যথাবিহিত পথা প্রয়োগ করিলে, মুক্র্যুর্গী স্বান্তা করিতে পারেন।

মসূরিকারোগেহপথ্যানি।

রতিং শেবং শ্রমং তৈলং শুক্ররং ক্রোধন'তপন্।
ছইংখু ছইপবনং বিক্রন্ধান্তণন নি চ ॥
নিশাবসালুকং শাকং লবণং বিষমাশনন্।
কট্মাং বেগরোধক মস্টাগনবাংস্তান্তেং ॥
নৈগ্ন, স্বোক্তিয়া, পরিশ্রম, তৈল, শুক্রছব্য, ক্রোধ, রৌদ্র, দুইতজ্ঞল, দুইতিবার্,
বিক্রন্ধভাজন, শিম, আলু, শাক, লবণ, বিষম্ন ভোজন, কট্দব্য, অমুদ্রব্য এবং মলমুত্রানির
বেগধারণ এই সমস্ত মস্বীরোগী পরিভাগ
করিবেন।

ইভাায়ুর্কেন-সংগ্রহে মসুরিকারোগাধিকার:।

অথ কুদ্রোগাধিকারঃ।

অজগল্পিকা।

বিষ্ণাঃ স্বৰ্ণা এথিতা নীক্ষা মূলসন্নিভাঃ। কলবাতোখিতা জ্ঞেনা বালানামজগলিকাঃ॥

মৃগ কলামের স্থার আক্রতিবিশিষ্ট, চিক্কণ, গাত্রনমবর্ণ, গ্রন্থিল ও অবেদন দে পিড়কা জন্মে, তাহাকে অজগল্লিকা কহে। ইহা কফ-বাভোখিত। এই রোগ প্রান্ন বালক,দিগেরই হইয়া থাকে।

তত্রাজগল্লিকামামাং জলৌকাভিঞ্পাচরেৎ। গুব্দিনৌরা ইককার-কবৈশ্চালেপয়েরুছঃ॥

মজগ্রিকা রো:গ্র অপকাবস্থায় জোঁক বদাইয়া দিরা রক্তমোক্ষণ করা এবং বিজুক-চুর্ণ, দৌবান্তু মৃত্তিকা ও বর্বকার বারা প্র-পুন: প্রদেপ দেওয়া কর্তিবা।

ন্ধানকট ধ্বাশিক কটকৈবেধমাত্রতঃ। কিমাশ্চয়াং বিপচ্যান্ত প্রশামা হাজগলিকা॥

তক্রণ কণ্টকারী গাছে। কাঁটা দিয়া অভ-গল্লিকা বিবিয়া দিলে উহা পাকিয়া সত্ত্ত প্রশাসিত হয়।

বৃষমূলবিশালাভাাং নেপো হস্তাএগলিকাম্।

বাসকমূল ও রাখালণণার মূল বাটিয়া প্রালেপ দিলে অজগল্লিকা বিনষ্ট হয়।

কঠিনাং কার্যোগৈত জাব্যেদজগলিকান্। ভাষালাকলিকামূর্বা-কক্ষৈরণি প্রলেপয়েৎ।

অজগল্লিকা অতি কঠিন হইলে ক্ষার্যোগে ভাহাকে বিদীর্ণ করিবে এবং খ্রামালতা, ঈশলাঙ্গলা ও মুর্বার কর ধারা প্রলেপও দিবে।

ঘবপ্রখ্যা।

যবাকারা। হুকঠিনা গ্রন্থিতা মাংসসংশ্রিতা। পিড়কা ক্ষরাত¦জ্যাং যবপ্রধ্যেতি সোচ্যতে।

ষবাক্কতি অর্থাৎ ধবের তার মধ্য-স্থুন। এবং কঠিন গ্রন্থিন মাংসাল্রিত যে পিড়কা উৎপন্ন হয়, ভাহার নাম যবপ্রখ্যা। ইহা কফবাতজ ব্যাদি।

ञ्जान नी।

গৰানবক্ৰাং পিড়কামুন্নতাং প্রিমণ্ডলাম্। অস্থালজীমলপুণাং তাং বি**স্থা**ং কফবাতজাম্॥

ঘন অবক্র উন্নত মণ্ডলাকার ও অন্নপূন্ব-যুক্ত গে পিড়কা উদ্বত হয়, তাহাকে অন্তালজী কহে। ইহাও বাতলেম্মজ।

अश्वातकोयनश्राक्षो शृक्तः (खरेनक्षभावतः । मनः मिनाप्तवनाक् -कूक्रकरेकः श्रात्तभावः । शृकाः व्यक्तिस्यानन वस्योख्यन श्रमासद्यतः ॥

অপ্তালন্ধী ও ষবপ্রাণ্যা রোগে প্রথমে স্বেদ নিয়া পরে মনছাল, দেবদারু ও কুড়, ইহাদের প্রানেপ দিবে। পার্কিলে ব্রণরোগোক্ত চিকিৎসা করিবে।

বিরতা।

বিৰুতান্তঃ মহ'দাহাং প্ৰেণ্ড্ৰুন্নদ্ৰিভাম্। বিৰুত্যমিতি তাং বিভাগ পিডোম্খাং প্ৰিমঞ্জাম ॥

প্রক উড়াধর ফল সদৃশ বর্ণবিশিষ্ট, অত্যন্ত দাহারিত, মণ্ডলাকার ও বিবৃতমুখ যে পিড়কা জন্মে, তাহাকে বিবৃত। কহে। ইহা পিত্তজ বাাণি।

ইক্রবিকা।

পল্লক শি.হবন্ধধো পিড়ক।ভি: সমাচিতাৰ। ইক্ৰবিদ্ধান্ত তাং বিজ্ঞাদ্বাতপিন্তোশিতাং ভিষক্॥

পদ্মবীঞ্চকোষের বীজসমূহ, মধ্যভাগে ব্যেরপ মণ্ডলাকারে সংস্থিত, ত্বকের উপর সেইরূপভাবে পিড়কা সকল উৎপন্ন হইলে, তাথাকে ইন্দ্রবিদ্ধা কহে। ইহা বাতপৈত্তিক রোগ।

গদ্দভিকা।

মণ্ডদং বৃত্তমুৎসন্নং সরক্তং পিড়কাচিতম্। কলাকরীং গর্দ্ধভিকাং তাং বিস্তাদাতগিওলাম্॥

মণ্ডলাকারে উৎপন্ন এবং গোল গোল উঁচু উঁচু হক্তবর্ণ বেদনাযুক্ত পিড়কা দারা ব্যাপ্ত ব্যাধিকে গৰ্দভিকা কছে। ইহা বাতপিত্তত্ব।

জালগদিতঃ।

বিদর্গবং সপতি যা শোখন্তব্রপাকবান্।
দাহজ্বকরা পিডাং দ জোয়ো জালগর্দিতা।
ব্য শোপ তমু (পাত্রা) ও পাকরহিত
(কাহার কাহার মতে ঈষৎপাক্যুক্ত), বিদ-পেরি ছার পরিসপানীল এবং যাহাতে দাহ ও
জ্ব বিশ্বমান থাকে, তাহাকে জালগ্র্মত কহে। জালগ্র্মত, অগ্রিবাত নামে খ্যাত।
ইহা পিত্রজনিত।

ইব্রিবেল্লিকা।

পিড়কানুত্তমাঙ্গল্পাং গৃতানুত্তকজাজনান্। সর্ব্বান্তিকাং সর্ববিক্ষাং জানীয়াদিরিবেল্লিকান্। উগ্রবেদনা ও জ্বদায়ক গোলাকার যে পিড়কা মস্তকে জ্বলো, তাহাকে ইবিবেল্লিকা কহে। ইহা ত্রিদোষজ্ঞ ও ত্রিদোষ-লক্ষণাক্রান্ত।

本本门

নাহপাৰ্থাংসককের কৃষ্ণফোটাং সবেদনাম্।
পিত্তপ্রকোপসভূতাং ককামিতাভিনিদ্দিশেং।
বাহু পার্থ স্কন্ধ ও ককদেশে ক্রম্ভবর্ণ বেদনা
যুক্ত যে ক্ষোটক উৎপন্ন হয়, তাহাকে ককা
কহে। ইহা পিত্তপ্রকোপজ।

গস্ক্রমালা।

একামেতাদূলীং দৃষ্ট্ৰ পিড়কাং খেটেসমিতাম্।
থগ্যতাং পিডকোপেন গন্ধমালাং * প্রচন্ধতে ।
কন্ধোক্ত খেটেসদৃশ ত্বগ্যত এক একটি
পিড়কাকে গন্ধমালা বা গন্ধনামী কহে। ইহাও
পিড়প্রকোপন্ধ ব্যাধি।

গৰামীনিতি পাঠান্তরম্।

ক্ষাঞ্চ গন্ধমালাঞ্চ চিকিৎসভি চিকিৎসক:। "
পৈতিৰ জ্ঞ বিদৰ্পন্য ক্রিয়ন্না পূর্বামূক্তরা ॥
ক্ষা ও গন্ধমালা বোগের চিকিৎদা
পৈতিক বিদর্পের জায় করিবে।

অনুশয়।

গভার।মলসংরভাং স্বর্ণানুপ্রিভিতাম্। পাদ্ভানুশ্যীং তান্ত বিভাদ্ভঃপ্রপাবিণান্॥

পায়ের উপর অল্পাথসূক্ত, স্বক্দমবর্ণ, অন্তঃপাকবিশিষ্ট, স্কৃত্যাং গদ্ধীর যে ব্যাধি জন্মে, তাহাকে অন্তশ্মী কছে।

শ্লেষবিজ্ঞকভেন জয়েদত্রগাং ভিষক। বিবৃহামিক্রবিদ্ধাঞ্চ গর্মজাং জালগন্দভম্॥ ইরিবেলিং গন্ধমালাং জয়েৎ পিভ্রিমপ্রথ। মধুরৌষধ্যিদ্ধেন স্পিথা শম্মেদ্রণম্॥

অমূশ্যীরোগে কফ র বিদ্রণির ভার এবং বিবৃতা, ইন্দ্রবিদ্ধা, গর্দ্ধতী, লাগগর্দ্ধত, ইরি-বেলিকা ও গন্ধমালা রোগে পিত্রবিসর্পের ভার চিকিৎসা করিবে। মধুর ঔগধের সহিত সিদ্ধ মুত্র ধারা ইহাদের ক্ষত শুক্ষ করিবে।

নীলীপটোলম্লাভাং সাজাভাং লেপনং হিত্য। জালগুজিভবোগে তু সজো হুথি চ বেংনামু।

নীলগাছ ও পটোলমূল বাটিয়া মৃতেব সহিত মিশ্রিত করত তন্ধারা প্রদেপ দিলে জ্বাল-গ্রদ্ধত রোগের বেদনা তৎক্ষণাৎ প্রশ-। মিত্তহয়।

লৈত্তিকক্ত বিসর্পন্ত যা চিকিৎসা প্রক'র্ন্তিতা। ভয়েব ভিষগেতাঞ্চ চিকিৎসেদিরিবেল্লিকাম্॥

পৈত্তিক বিসপের যে চিকিৎসা কণিত হই-য়াছে, ইংবেল্লিকারও সেই চিকিৎসা করিবে।

পাহাণগর্দ্ধভঃ।

বাতলেখনমূভূতঃ খয়পুঠনুস্কিজঃ। ছিরো মন্দরকঃ সিধো জেয়ং পাষাণস্কিভঃ।

হত্যস্থিতে কঠিন, অৱবেদনাযুক্ত ও চিক্কণ যে শোপ জন্মে, তাহাকে পাধাণগৰ্দভ কহে। ইহা বাতমেশ্ৰদ্ধ।

কুদ্রবোগাধিকারঃ।

কচ্ছ পিকা।

গ্রাধিতাঃ পঞ্চ বা ষড় বা দারুণাঃ কচ্ছপোপনাঃ। ক্ষানিকান্তাং পিড়কা জেয়া কচ্ছপিকা বৃধৈঃ॥

কচ্ছপের ন্থায় আকৃতি-বিশিষ্ট ও অতি কঠিন এবং পাঁচটি বা ছয়টি একত্র গ্রাথিত, এই রূপ যে পিড়কা জ্বনে তাহাকে কচ্ছপিকা কহে। ইহাও বাতংশ্রম্ম ।

অন্ধানন্ত্ৰীং কচ্ছপিকাং তথা পাষাণগৰ্দ্ধন্। স্বনাক্শিলাকুঠিঃ সেন্ধ্ৰিয়া প্ৰলেপৱেং ॥ কফনাক্তশোখান্ত্ৰা লেপঃ পাষাণগৰ্দ্ধতে। পূকং এণ্ডিধানেন যাৰোক্তেন প্ৰসাধ্যেং ॥

মন্ত্রালঙ্কী, কচ্ছপিকা এবং পাষাণগদ্ধ বোগে ব্যেকপ্রান করিয়া দেবদার, মনাশিলা ও কুড়ের প্রাক্রেপ দিবে। পাষাণগদ্ধভ বাতরৈ বিক্রেক-শোগন্ন প্রালেপ প্রশস্ত । পাকিলে ব্রণবোগোক্ত চিবিৎসা করিবে।

বন্দীকঃ।

প্রাবাংসক কাকরণাদলেশ সন্ধা গলে বা জিভিরেব নোবৈ:। প্রস্তিঃ স বন্মাকরদজিয়াণাং জাতঃ জমেণেব গতঃ প্রবৃদ্ধিন্। মুগৈরনেকৈঃ শ্রুভিতোদবজ্ঞিন বিসর্পার স্পতি চোরতালৈ:। ব্যাকিমান্তভিম্নজো বিকরেং নিপ্রতানীকং চিরজং বিশেষাং॥

গ্রীবা কর কক হস্ত পদ সন্ধিত্ব ও গলদেশে বলাকবং বছশিশর-বিশিষ্ট যে পিড়কা
জন্মে, ভাহাকে বলাক কহে। ইহা তিলামজ
বাানি। এই বাানি অচিকিৎসিত হইলে ক্রমে
ক্রমে বৃদ্ধি প্রাপ্ত হইয়া আব ও স্চীবেশবদ্
বেদনা বিশিষ্ট উন্নতাগ্র ও বছমুখ হইয়া বিসর্প
রোগের ন্থায় বিদ্পিত হয়। ইহা পুবাতন
হইলে অসাধ্য হইয়া উঠে।

পদ্ধেশোংকৃত্য বন্মীকং কারাগ্রিভ্যাং প্রদাধ্যেই।
মনঃশিলালভ্রতি-স্থাগেণা গুকুচন্দরৈঃ।
কাতীপল্লবক্ষৈত নিশ্বলৈং বিপাচয়েই।
বন্মীকং নাশ্যেই ভদ্ধি বৃহ্নিত্তং বৃহত্তবম্।

শস্ত্র দারা বল্লীক উৎপাটিত করিয়া তাহাতে কার ও অগ্নি প্রয়োগ করিবে। এবং মনঃ-শিলা, হরিতাল, ভেলা, ছোট এলাইচ, অগুরু, রক্তচন্দন ও জাতীপত্র, ইহাদের করের সহিত নিমের তৈল পাক করিয়া, সেই তৈল ক্ষতে মাধাইবে। ইহাতে ২হচ্ছিদ্র ও বহুআব বিশিষ্ট বল্লীক প্রশমতা প্রাপ্ত হুটবে।

বল্লাকত্ত ভবেদ্যন্ত নাতিসুদ্ধমমৰ্থ্য।
তত্ত্ব সংশোধনং কৃত্বা শোণিতং মেকচেদ্ ভিষক্।
বল্লাক মনে অভিপ্ৰায়ন্ত ও মন্মন্তানসন্ত্ত না হয়, ত!হা হুইলে প্ৰথমে শোধনক্ৰিয়া ক্ৰিয়া প্ৰে বক্তন্যাক্ষণ ক্ৰিবে।

সংশাসং এণগন্ধক হবৃদ্ধং মল্মস্থ স্থিতম্। হল্ডপাদস্থিতকাপি বল্মীকং পারিবজ্জারেও॥

্শাগযুক্ত, ওগঞ্বিশিষ্ট, অভিপ্রদ্ধ এবং মূল্মতানে কিংবা হস্তে বা পদে উৎপন্ন বল্লীক অপ্রতিকাধ্যু।

প্ৰসিকা।

কর্ণপ্রভাগতে জাতাং পিড়কাম্প্রেদনাম্ :
থিবাং পন্দিকাং ভাস্ত বিদ্যাপথ্যপ্রপাকিণীম্ ।
কণের অভাস্তরে উপ্রেদনা মৃত্ত ও স্থির
ে পিড়কঃ উদ্ভ হয়, ভাহাকে পন্দিক। কছে ।
ইহা অস্কভাগে পাকে ।

ভিষক প্রাসিকাং প্রকা হেদয়েদপ লেপয়েং। কাক্ষম না:শিলাকু ই-নিশাতালকদারুভিঃ। প্রকাং বিজ্ঞায় তাং ভিত্না এগবং সমুপাচরেং॥

প্রথমে পনসিকার স্বেদ দিয়া, পরে মন ছাল, কুড়, হরিন্ডা, হরিতাল ও দেবদারু ইহাদের কল্কে প্রলেপ দিৰে। যখন পাকিবে, তথন কাটিয়া রণের ন্থায় চিকিৎসা করিবে।

অগ্নিরোহিনী।

কক্ষভাগেৰু যে ক্ষেণ্টা জায়ন্তে মাংসদারণাঃ।
অন্তৰ্জাহজ্বকরা দীপ্তপাবকস্মিভাঃ॥
সপ্তাহাৰা দশাহাৰা পক্ষাৰা দ্বন্তি মানবম্।
ভামগ্রিরে'জিণীং বিভালসাধ্যাং সর্কালোৰজাম্॥
(সপ্তাহাদিতি বাতপিত্তকজাপেক্ষয়া বোদ্ধবাম্, মৃত্তি
অনুপ্রনাত্তাং, উপক্রান্তান্ত সাধ্যা এব চরকেণাগ্রিরোহিনীচিকিৎসায়া ডক্তবাং। ইতি ভাবমিভাঃ।)

ককভাগে মাংসবিদারক, অন্তর্দাহজনক, জরকর ও প্রদীপ্ত অন্ধারসদৃশ যে সকল ন্দোট জন্মে, তাহাদিগকে অগ্নিরোহিণী কহে। ইহা ত্রিদোষজ্ঞ ও অসাধ্য। এই রোগে বাতাধিক্যে ৭ দিন, পিভাধিক্যে ১০ দিন এবং কফাধিক্যে ১৫ দিনের মধ্যে রোগির মৃত্যু হইয়া থাকে। (চরকাদির.মভে স্থাচিকিৎসায় এই রোগ সাধ্য হইয়া থাকে।)

পিজনীসর্পনিধিনা সাধ্য়েদরিরোহিণীম্। রোহিণ্যাং লজনং কুর্যান্তজমোক্ষণক্ষকণম্। শরীরক্ত চ সংশুদ্ধিং তান্ত বৃদ্ধাং পরিত্যজেৎ॥

পৈত্তিক বিসপের তার অগ্নিরোহিণীর চিকিৎদা করিবে। ইহাতে ল্ড্যন, রক্ত-মোক্ষণ, রক্ষিক্রিয়া এবং ব্যন বিয়েচনাদি দারা শ্রীরের শোধন কর্ত্তির। ইহা প্রবৃদ্ধ হুইলে পরিভাগি করিবে।

চিপ্পং কুনখঞ্চ।

নথমাংসমধিভায় বায়ুঃ পিত্তক দেছিনাম। কুৰ্ব্বাতে দাহপাকে) চ তং ব্যাধিং চিপ্নমাদিশেৎ। তদেবাপ্পতবৈদে বিষঃ প্ৰসং কুনগং বদেৎ।

ৰাষ্ট্ৰ পিন্ত, নণের মাংসকে দুবিন্ত করিয়া দাহ ও পাক বিশিষ্ট যে রোগ উৎপাদন করে, তাহাকে।চিপ্ত কহে। এই চিপ্ত রোগই যদি অল্লদোষসম্ভূত ও ধরম্পর্শ হয়, তাহা হইলে তাহাকে কুনধ কহে।

ित्रमूक्ष्यूना विश्वमूक् छाडाका ठः अनम् । पत्रा मर्कत्रमः हुन्दे दक्षा अपन्ताहरतः ।

চিপ্সরোগে উষ্ণক্তল ঘারা স্বেদ দিয়া ঐ স্থান ছেদন ও তৈলাদি লেপন। করিয়া ধূনা-চুর্ণ লাগাইবে এবং বাধিয়া রণের ক্লার চিকিৎসা করিবে।

স্বরদেন হরিদ্রায়াঃ প'ত্তে কুক্রার্ডেইডয়ান্। ঘুট্টা তজেন কৰেন লিলোচিপ্পং মূহস্মু হঃ ।

কৃষ্ণলোহ-পাত্রে হরিদ্রার রস নিও ডাইরা ভাহাতে হরীতকী ঘর্ষণ কুরবে এবং ভদ্যরা চিপ্লন্থানে বারংবার প্রলেপ দিবে।

हित्स महिक्षां (क्षां छ-मृत्यताला मन्याः

চিপ্লবোগে সোহাগা ও হাপরমানীমূল একতা বাটিয়া প্রলেপ দিলে নথ উৎপন্ন হয়। কাল্লগ্যা: সপ্তভি: পত্রৈ: কোমলৈ: পরিবেষ্টতঃ। অনুলীবেষ্টক: পুংসো ধ্রুবমান্ত বিনশুতি॥

গান্তারীবৃক্ষের ৭টা কোমল পত্রম্বারা বেষ্টন করিয়া বাধিয়া রাখিলে অঙ্গুলীবেষ্টক রোগ প্রশমিত হয়।

বিদাৱিকা।

বিদারীকলবদ্রতা কক্ষবকণসন্ধিয় । বিদারিকেতি তাং যিক্সাৎ সক্ষক্ষাং সক্ষলকণাম্॥

কক্ষ ও বজ্ঞাপ-সন্ধিতে ভূমিকুমাওকল্পের স্থার গোলাকার যে শোগ জন্মে, ভাছাকে বিদারিকা কহে। ইং ত্রিদোষজ ও ত্রিদোষ-লক্ষণাক্রান্ত।

রক্তাবদেধৈবঁহাভিঃ কেদনেরপ্তপ্রথা: । জয়েদ্ বিদারিকাং লেপে: শিগ্রুদেক্তমোস্তবৈঃ ॥ পন্যিকাং কচ্চপিকাননেন বিধিনা ভিষকু। সাধ্যেৎ কঠিনানগুটন্ শোধান্ দোষসমুদ্ধবান্॥

প্নংপুনঃ রক্তমোক্ষণ, স্বেদপ্রদান, শোহণ ক্রিয়া এবং শুজিনামূলের ছাল ও দেব-দার্ম্বর প্রলেপ প্রদান, এই সমস্ত ক্রিয়ার দারা বিদারিকার নাশ করিবে। প্রনিকা,। কচ্ছ-পিকা এবং বাতাদি দোষসভূত অক্যান্ত । কঠিন শোখেও এই প্রণালীতে চিকিৎসা করিবে।

শর্করাক্দের।

প্রাপ্য মাংসলিরাস্বায়্য প্রেমা মেদক্তথানিক।
গ্রন্থিং করোতাসৌ ভিরো মধুসপিবদানিতম্ ।
প্রবভাগাবমনিকতা বৃদ্ধিং গতঃ পুনঃ।
মাংসং সংশোগ প্রশিতাং শক্ষাং জনরে ওভঃ।
হুগদ্ধি গ্রিমনভার্থং নানাবর্থং ভঙঃ ।
প্রবন্ধি রক্তং সহসা ওং বিভাচ্ছক্রাক্র্দ্ধ।

বায় ও কফ, মাংস শিরা সায় ও মেদকে
দ্বিত করিয়া গ্রান্থ উৎপাদন করে। এই গ্রন্থি
বিদীর্ণ হউলে, তাহা হইতে ঘত মধু ও বসা
সদৃশ আব নির্গত হয় এবং ধাতুক্ষ হেতু
পুর্বক্তিই বায় অধিকতর কুপিত হইয়া মাংস

সংশোষণ পূর্বক শক্রা তুল্য কঠিন গ্রন্থি জন্মা-ইরা থাকৈ। এই গ্রন্থি অর্ধ্যুদ্ধের জ্ঞার হর বলিরা, তাহাকে শর্করার্ধ্যুদ্ধ কহে। এই অর্ধ্যুদ্ধ দম্ব শিবাসমূহ হইতে তুর্গদ্ধি পচা ও নানাবর্গ নিঃস্রাব নিঃস্কৃত হর, কথন বা সহদা রঞ্জ নির্গত হইতে থাকে।

মেদোহর্ক, দবিধানেন সাধয়েচ্ছকরার্ক, দৃষ্।

নেদোক্ষনিত অর্দ্রে স্থার শর্করাক্রিনের চিকিৎসা করিবে।

পাদদারী।

পরিক্রমণশালক বারুষতার্থককরে: ।
পাদরো: কৃকতে দারীং পানদারীং তায়াদিশেং ।
বি সকল বাক্তি পানবাকে অধিক ভ্রমণ করে,
ভাহাদের পাদয়য় ক্রক্ষ হইয়া বায়ুকর্ত্তক বিদারিত
হয়, অর্থাৎ ফাটে । ইহাকেই পাদদারী কহে।
পানদারীযু তু শিরাং নেধয়েং তলংশাধনীয়।
স্কেহরেশোপপ্রেটি চ পাদৌ চালেপ্রেস্টাহঃ ॥
মধ্চিত্তরৈসামজ্জ-গৃতকারৈবিমিশ্রিতে:।
সঞ্জীখাসিক্তরেশিত্রিং মধ্যুতায়,তম্।
নির্পা কট্তলাক্তং হিতং পাদপ্রমার্জনম্॥
(তলশোধনীমিতি পাদতলগ্যিনীম্। স্কেল্পোপ্রাবিতানত্তরং কৃত্তিতি শেষং। অত্যে তু শিরাবাধালী-

ভূতক্ষেত্ৰেদৌ কুলা শিরাং বাধরেদিতা ছি:।

(। किर्गिकत

পাদদারী রোগে পদতলগামিনী শিরা বিদ্ধ করিয়া স্নেহস্থেদ প্রদান করিবে। (কাহার মতে অত্যে স্নেহস্থেদ দিয়া পশ্চাং শিরা বিদ্ধ করিবে) এবং মোম্, বসা, মজ্জা, ঘৃত ও যবক্ষার দারা প্রঃপুনঃ প্রালেপ দিবে। ধ্না ও সৈন্ধব লবণ চুর্ণ, মধু এবং ঘুতে আগ্লুড (মণিত) ও কটুইতলাক্ত করিয়া পাদমার্জ্জন করিবে।

গুড়গ্ৰণম্বতং চেৎ ভিন্তিড়ীযুক্তমেতদ্ বিশুণমিত বিদ্ধ্যাক্সমেকক কুণা। দিনকভিচিদপেদং কিঞ্চিদাশোষা লেপাৎ কুটিতপদতলং ক্ষাৎ পদ্মপ্ৰাক্তমাঙ্য।

 পালদারীং ভাষাদিশেদিতাত সর্ব্বাং তল-সংশ্রিতামিতি ভাষমিশ্রপৃতঃ পাঠঃ। গুড়, দৈশ্বৰ, খুত ও তেঁতুল, প্ৰত্যেক দ্ৰবা সমভাগে লইয়া সমষ্টির দিগুণ গোমুত্রে বাটিয়া কিঞ্চিৎ শুক্ষ করত বিদীর্ণস্থানে প্রলেপ দিবে। কিছুদিন এইরূপ করি লই পাদদারী প্রশমিত হয়।

মধুসিক্থগৈরিকয়ৢঽগুড়বাহিষাক্ষণালনিয্যাসৈঃ। গৈরিকসহিতৈলে পঃ পাদক্টনাপহঃ সিক্ষঃ॥
(প্রথমঃ গৈরিকং শিলাক্ত।)

মোম, শিলাজতু, মৃত, গুড়, গুগ্গুলু, ধুনা ও গেরিমাটী, এই সকল জব্য পেষণ কবিয়া প্রলেশ দিলে পাদদারী বিনষ্ট হয়।

উপোদিকাঞ্চারতৈলম্।

উপোদিকা স্বীপ্রিয় নাচ-ককারুকৈর্বারুকভন্মতের্ব। তেলং বিপাকং লবগাংক্তুং তং পাদকারীং বিনিহন্তি লেপাংক। (লেপাঞ্চিতিংক্তুং ।)

পূইডাটা, সর্ধপ, নিমছাল, মোচা, কুম্ডাডাটা ও কাকুছডাটা, এই সমস্ত ভন্ম করিয়া ক্ষারজল প্রস্তুত কহিবে। সেই ক্ষাংজলে (তৈলের চতুগুণ) ও সৈন্ধব লবণের ক্ষে (তৈলের চতুগ্ণণ) তৈল পাক করিয়া ভদ্মারা লেপন করিলে পাদদারী প্রশ্যিত হয়।

উন্মন্তক্ষ্য বীজেন নাগককারবারিণা। বিপক্ষ কটুটেচলন্ত হস্তাদারীং ন সংশয়ং॥

মাণের ক্ষারজ্বলে এবং ধুচুগাবীজের করে সর্বপত্তিল পাক করিয়া, সেই তৈল ফ্রক্ষণ করিলে নিশ্চয়ট পাদদারী প্রশামত হয়।

কদরম্।

শকবোর্ম্বটে পাদে ক্ষতে বা কর্তকাদিভিঃ। গ্রন্থিত কোলবছুৎসন্মো জায়তে কদরং হি ভং ॥

কাকর বা কণ্টকাদি দার: পদতল ক্ষত বা আহত হইলে, কুলের আটির ভায় আক্ষতি বিশিষ্ট গ্রন্থি উৎপন্ন ইয়, ইহাকে কদর (কুল-আটি) কহে। দহেৎ কদর্দ্ভা তৈলেন দহনেন বা। কদর (পায়ে কুল আটি) শস্ত্র ধারা উদ্ধত করিয়া তপ্ততৈল বা অগ্নি বারা দগ্ধ করিবে।

অলসকঃ।

ক্লিনাসুশান্তরৌ পাদৌ কণ্ডুদাহরজা বিতৌ। ভষ্টকর্দ্দমসংস্পাদলসং তং বিভাবতে ॥

ছঠ কৰ্দ্ম-সংস্পাৰ্শ পাদাঙ্গুলিবয়ের মধ্য-দেশ ক্লিন্ন এবং কণ্ডু দাহ ও বেদনা বিশিষ্ট ইইলে তাহাকে জ্ঞান (পাকুট) কাহে।

অনসেংশ্লৈশ্চিরং সিজে চরণে পরিলেপয়েৎ। পটোলারিষ্টকাসীদ-ত্রিফলাভিম্ভিম্ভিয়

অলস রোগে কাজিতে অনেকক্ষণ পর্যন্ত প' ভিজাইয়া রাখিবে, তৎপবে পল্তা, নিমছাল, হীরাকস ও ত্রিফলা বাটিগ্র তদ্বাবা মুল্মুহ: প্রালেপ দিবে।

করপ্রবীজং রঞ্জনী ক্রেনিং মধুকং মধু। রোচনা হরিতালক লেপে: হয়মলাস ভিতঃ ॥

করঙবীজ, হরিদ্রা, হীরাকস, যষ্ট্রিমধু, মধু, গোরোচনা ও হরিতাল, ইহাদের প্রলেপ, , অলসক রোগে হিতকর।

লাক্ষাভয়ারদালেপঃ ক'ব।° রক্তদা মোক্ষণম। জাতীপত্রঞ্চ সংমধ্যে দত্যাদলদকে ভিষক॥

(রদোপশ্রসঃ: ইতিচক্রটীক:।)

লাক্ষা, হরীত্রণী ও গন্ধবোল, ইহাদের প্রলেপ অথবা ছাত্রীপত্র বাটিয়া তাহার প্রলেপ কিংবা রক্তমোক্ষণ, অলসক (পাকুই) রোগে ব্যবস্থা করিবে।

বৃহতীরদ্সিদ্ধেন হৈলেন'ভাজ। বৃদ্ধিম'ন্। শিলারোচনকাদীস-চুন্বিধা প্রতিসারয়েৎ॥

(বৃহতা কণ্টকারী, তদ্যাঃ স্বরদঃ, তৈলঞ্চ দাৰপ্রিতি ফুক্মতদংবাদাৎ। প্রতিদারয়েদ্ ঘ্রয়েও। ইতি ক্রেটাকা।

কণ্টকারীর রসে সর্বপ ভৈল পাক করিয়া, সেই ভৈল অলসকে মাখাইয়া মনছাল, গোরোচনা ও হীরাকস চূর্ণ ধাবা ভাহা ঘর্ষণ করিবে।

रेळलू खब्।

রোমকুপাতুগং পিত্তং বাতেন সহ মুচ্ছিত্ম। প্রচাবিষ্ঠি রোমাণি ভতঃ প্রেমা সংশালিতঃ। ক্লণন্ধ গোমকুপাংস্ত তভোহত্যেধামসম্ভব:। তদিকুলুগুং থালিতাং ক্লফেতি চ বিভাবতে।

কুপিত বায়ুও পিত্ত, রোমকৃপস্থ হটন্না তত্ততা কেশ সকলকে উঠাইনা দেয় এবং দুষ্ট শ্লেমা ও রক্তন, ঐ রোমকৃপ সকলকে রুদ্ধ করিয়া রাখে, তজ্জ্জ্জাই আর ঐ স্থানে অন্ত কেশ উঠে না। ইহাকেই ইক্সলুপ্ত, থালিতা বা কুহা কহে। চলিত ভাষায় ইহার নাম টাক!

ইপ্রলুপ্তে শিরাং বিদ্ধা শিলাক সীসতুথকৈ:।
লেপরেৎ পরিতঃ ককৈন্তৈলকাজ্ঞান হিতম্।
কুটারটশিথীজাতী-করঞ্জকরবারকৈ:।
(শিপাতি দীর্যপ্টিশ্চান্সম্বাৎ সমর্থনীয়:।)

টাকরোগে তৎস্থানের শিরা বিদ্ধ করিয়া মনছাল, হীবাকস ও তৃ তিয়া, এই সমুদার একত্র মন্দন কবত প্রালেপ দিবে এবং কৈবর্ত্ত-মূতা, আপাঙ্গমূল, জাতীপতা, ওহবকরঞ্জবীক্ষ ও করবীবমূল, এই সমুসায় কাক্ষেয় সহিত তৈল পাক করিয়া সেই তৈল মস্তাকে মাণিবে।

অবগাঁচপদৰৈ ব প্ৰচ্ছত্বিত্বা পুনংপুনং। গুঞ্জাফলৈকিবং নিশেং কেণভূমিং সমন্তচ: ॥

টাকস্থান হটী প্রভৃতি ম্বারা ক্ষতবিক্ষত করিয়া, তাহাতে পেষিত গুঞ্জাফল ম্বারা পুন:-পুন: প্রালেপ দিবে।

ইন্তিদন্তমসীং কুলা মুখ্যবৈধন ক্ষাঞ্চনম। লোমান্তনেন জায়ন্তে নুগাং পাণিতলেলপি।

প্টার্থ হস্তিদস্কভম ও অক্তিম রদান্ত্রন, একতা মিশ্রিত করিয়া প্রেলেপ দিসে করন্তলেও রোম উৎপন্ন হয়।

হতিদন্তমদীং কুমা তৈলেন সহ যে!জয়েও। হস্তেম্পি প্রজায়ন্তে কেশা নান্ত্যক্র সংশয়ং॥

হস্তিদন্ত-ভত্ম তৈলের সহিত মিশ্রিত করি:। প্রনেপ দিলে কেশ উৎপন্ন হয়।

ভলাতকরত তীফলগুঞ্গান্লকলেন্ডায়েকেন। মধুসহিতেন বিলিপ্তং স্থরপতিলুপ্তং শমং বাতি॥

ভেলা, বৃহতীফল, কুঁচমূল ও কুচফল, ইহাদের কোন একটি মধুর সহিত মিশ্রিত কবিয়া প্রলেপ দিলে টাক্ প্রশমিত হয়। বৃহতীফলরসপিষ্টং শুশ্লামূলফলকেন্দ্রলুপ্ত । কনকফলনিঘুট্ড সংগ্রোদাতব্যং প্রতিহত্ত সদা॥

ইন্দ্ৰপৃথ বোগে পক বৃংতীফলের রসের সহিত গুঞ্জার মূল বা ফল পেষণ করিয়া টাক্ স্থানে প্রলেপ দিবে। প্রলেপ দিবার পুর্দে ক্রিস্থান ধৃতৃথাফল দিয়া ঘর্ষণ করিবে। অথবা অস্ত্রপ্রায় কল্প কল্প করিবে।

যুষ্ট্রন্থ ককলৈঃ পত্রৈরিক্তলুপ্তর্ম ওওনন্। চুণিটভ্রম রিটেঃ কাষামিক্তলুপ্তবিনাশনম্॥

কর্কণ পত্র স্বাধা টাকস্তান দৰ্শণ করিয়া দেই স্থানে মরিচ চূর্ণ দর্শণ করিলে ইন্দুর্পু নষ্ট হয়!

क्षांत्रक्षेत्रत्रमाञ्चनपूर्वेषक्षेत्रात्रक्षांत्रात्रत्वश्चः । क्षांद्रस्य मुख्यांत्रांद श्लामाण कृष्टिश्चाः ॥

চাগত্থ, রদাঞ্জন, পুটদগ্ধ-গঙ্গদস্ত-ভত্ম এই সমস্ত একতা মিশ্রিত করিয়া ৭ দিন প্রলেপ দিলে টাক্স্থানে পুনর্মার কেশ উৎপন্ন হয়।

মধুকেন্দীবরম্কী(ভলাকাগে ন্দীর চুক্সলেপে ন। অচিরাদু ভর্তি কেনা ঘনদুচমুলারভানুছব ॥

ষষ্টিমধু, নীলোৎপল, মূর্দামূল, ছিল, স্থত, গবাহার ও ভূঙ্গরাঞ্জ, এই সমুনায় একতা বাটিয়া তিন্প দিলে, শীঘ্ল ঘন দৃতমূল আয়ত ও কুঞ্ছি। কেন্দু উৎপন্ন হয়।

সুহাগেং তৈলম্।

স্ত্রপায়ঃ পরোহর্কস্ত মাকবো লাকলী বিসম্।
মৃত্যারং সগোমৃতং রক্তিকা সেলবারুণী ॥
সিদ্ধার্থং তীক্ষতৈলক গর্ভং দরা বিচক্ষণঃ।
কন্ত্যা মৃত্যা পদং তৈলং থালিতানাশনম্॥
ক্রপৃষ্ঠসমানাপি স্কুছা যা রোমতস্বরী।
দিশ্বা সানেন জারেত ক্ষশারীব লোমণা॥

কটুতৈল /৪ সের। ছাগমূত্র /৮ সের। গোমূত্র /৮ সের। করার্থ—সিজের আঠা, আকল্মের আঠা, ভ্লরাজ, ঈশ্লাঙ্গলা, মৃণাল, কুঁচ, রাধালশশার মূল ও থেকে সর্বপ, প্রত্যেক স্পল। মৃত্ অগ্নিতে পাক করিবে।

এই তৈল মালিশ করিলে কচ্ছপপৃষ্ঠের প্রায় টাকস্থানেও কেশ উৎপন্ন হয়।

আদিত্যপাক-গুড়ুচীতৈলম্।

বটাবরোহকেশিস্তোক্রেনিদিতাপাচিত্র। ওড়্চ'সরসে তৈলমভ্যকাৎ কেশরোপণম্॥

তৈল ও তৎপরিমিত গুলঞ্চের রসে বটের ঝুরি এবং জটামাংশী চূর্ন (তৈলের চতুর্গাংশ) মিশ্রিত করিয়া ফ্র্যাপক করিবে। এই তৈল মর্জনে কেশোদ্ধব হয়।

যষ্টিমধ্বাতাং তৈ ন্।

তেলং স্বস্তিমধুকৈঃ ক্ষীরে ধাত্রীকলৈঃ শৃত্যু। নক্ষেদ্তং জনয়তি কেশান্ শ্রন্ধ্রি চাপ্যায় ॥

তেল /> সের। হ্র /৪ সের। কর্নার্থ— যৃষ্টিমধু ৮ তোলা, আমলকী ৮ তোলা। পাকার্গ জল /৪ সের। ইহার নম্ম গ্রহণ ও মর্দ্দন করিলে কেশ ও শ্রম্ম উৎপন্ন হয়।

মহ ভৃগরাজ-তৈলম্।

রন্পদেশসমূহং গৃহীরা মাকনং শুভ্রন।
কথোতং জন্ধর কুতা স্থানং তক্ত চাইরেং ।
চতুগু পেন তেনৈর তৈলপ্রস্থং বিপাল্রেই ।
কারপিষ্টেরেছিদনৈ দেখোল্য মতিমান ভিষক্ ॥
মঞ্জিতা পথকং লোধং চলনং গৈরিকং বলা।
রহুত্তো কেলরকৈর প্রিমুম্ম ধুয়াইকা ॥
প্রপৌ ওরীকং গোপী চ পানিকংক্তত্র দাপয়েই।
সমাক্পকং ততো জারা শুভে ভাগে নিধাপয়েই ॥
কেলপাতে শিনোমুটে মন্তাল্যন্ত গলায়হে।
শিরকের্নান্তিরিক্ষান্ ক্যান্ কুয়ান্ বহুংক্তা।
কানিত্রিক্ষান্তরিক্ষান্ ক্যান্ কুয়ান্বহুংক্তা।
কানিত্রিক্ষান্তরিক্ষান্তর্গেন্তেন্নতদ্ব্যপোইতি॥

ভিলতৈল /৪ সের। আন্পদেশোৎপর সংগৌত ভৃশবাজের রন ১৬ সের। কল্কার্থ— মঞ্জিষ্ঠা, পদ্মকাষ্ঠ, লোধ, রক্তচন্দন, গিরিমাটী, বেড়েলা, হরিদ্রা, দাকহরিলা, নাপেশ্বর, প্রিয়ন্থ, যষ্টিমধু, প্রপৌগুরীক ও শ্রামানত প্রত্যেক ১ এক পল। কল্পন্তর সকল ছথে পেষিত করিয়া পাক করিবে। এই তৈল মাথার মাখিলে কেশ-পতন নিবারিত হয়। মক্সান্তন্ত, শিরোরোগ, কর্ণরোগ ও চক্ষুরোগ প্রভৃতিতে ইহার নস্থ ও অভ্যঙ্গ ছ'রা বিশেষ উপকার দর্শে। ইহা মর্দ্ধনে ইক্সলুপ্ত (টাক্) প্রভৃতি রোগ উপশমিত হয় ও কেশের সেষ্টিব সাধিত হইয়া থাকে।

দারুলকম।

দারণা কঙ্যা রক্ষা কেশভূমি, প্রপাটাতে ! কুমুমাকুতকেশ্পেন বিজ্ঞানীয়ণকস্ক তম্ ॥

দারণক। এই রোগে কেশভূনি, কঠিন কণ্ডমুক্ত রুক্ষ ও ফাট। ফাট। হয়। ইহা বাতমেল-প্রকোপজ ব্যাধি। চলিত ভাষায় ইহাকে রুগী বা গুস্কী কহে।

ত্রিফলান্তং তৈলম।

্রিকলারেরজে'মাংসীমার্করে'ৎপলশারিবৈ:।

সংস্করে: পচেৎ তৈলংভাঙ্গাফ্রন্ফিকাং জয়েৎ।

(উৎপলশারিবা অনন্তমূলম্, অত্যে তু উৎপলং
নীলোৎপলং শারিবাচ ইত্যাহারিতি চক্রটাকা।)

তেল /৪ দের। কন্ধার্থ— ত্রিফলা, লৌহ চুর্ণ, জটামাংসী, ভূঙ্গরাজ, অনন্থমূল ও সৈন্ধৰ লবণ সমুদায় /১ দের। পাকের জল ১৬ দের। এই তৈল মদ্দন করিলে ক্লক্ষিকা (রুখী) নিবারণ করে।

দারূপে তু শিরাং বিধোধ শ্রিক্ষস্থিয়াং ললাটজাম্। " অবপীত-বিবেতীনভাঙ্গাংলাবিচারয়েধ।

দারণকরোগে ললাটদেশ স্নেছ ও স্বেদ প্রদান করিয়া তত্ত্বে শিরা বিষ্ক করিবে। ইহাতে নশু গ্রহণ, শিরোবন্তি (বক্ষামাণ বিহরিডান্ত তৈল ধারা) ও অভাকীদি কর্ত্তব্য।

কোদ্রবাণাং তৃণকার-পানীরং পরিধাবনে ॥

কোদগাক্তের খড় দগ্ম করিয়া জলে গুলিবে এবং সেই ক্ষার-জলুবারা মন্তক ধৌত করিবে। कारणा नाजनरक मृष्ट्वि अस्तरणा मधुमरयूजः। नित्रालवीकमधूक-कूठंमारेवः मरेमबारेवः॥

দারণক রোগে পিরাল বীজ, যষ্টিমধু, কুড়, মাষকলাই ও দৈরূব লবণ, এই সকল দ্রব্য একত্র বাটিবে এবং মধুর সহিত মিশাইয়া মস্তকে প্রলেপ দিবে।

আন্ত্রবীজং তথা পথ্যা ছয়ং স্যান্সাত্রয়া সমস্। দুর্ঘেন পিষ্টং তল্লেগে দাকুণং হস্তি দাকুণম ॥

আমের আঁটি ও হরীতকী সমভাগে জ্যের সহিত বাটিয়া প্রলেপ দিলে দারুণক রোগ বিন্ট হয়।

ক'ঞ্জিকস্তাত্ত্বসপ্তাহং ম'বা দারুণক'প্ৰা; 🛊

মাবৰ লাই তিন সপ্তাহ কাঁজিতে ভিজা-ইয়া কাঁথিয়া তাহার প্রলেপ দিলে দারুণক বোগ বিনষ্ট হয়।

সহ নীলোৎপলকেশরয়®মধুকতিলৈঃ সদৃশমামলকম্। চিরঞ্জাতনপি চ শীৰে দারুণরোগং শমং নয়তি॥

নীলোৎপলের কেশর, যৃষ্টিমধু, তিল ও আমলকী, ইহাদের প্রালেপ দিলে দীর্ঘ কালোৎপল্ল দারুণ হোগ প্রশমিত হয়।

চিত্ৰক তৈলম।

fbএকং দন্তামূলক কে:বাতক সম্ভিত্। কলং পিই। পচেৎ তৈলং কেশশক্রবিশ্শনম । কেশশক্রঃ ক্রকণী। বৃক্লঃ!

চিতামূল, দস্তীমূল ও ঘোষালতা, এই সমুদায় কৰজবা ছারা যথানিয়মে তৈল পাক করিয়া মস্তকে মর্দান করিলে কথী বা খুসকী নষ্ট হয়।

গুঞ্জাতৈলম ।

ও প্লাকলৈঃ পচেৎ তৈলং ভূজরাজনসেন ছু। কভূদারণজিৎ কুঠ-কপালবাধিনাশনন্॥

ভিল্তৈল /৪ দের। ভীমবাজরদ ১৬ দের। কর-কুচফল /১ সের। এই ভৈল মর্দ্ধনে কণ্ণু, দাঙ্গণক ও কুষ্ঠ প্রভৃতি রোগ নষ্ট হয়।

সঙ্গভৃসরাজতৈলম্।

ভূকর'জটি,ফলোৎপলশারি-কৌহপুরীবসমধিতকারি। তৈলমিদং পচ দারুণহারি কৃঞ্চিতকেণগনস্থিরকারি।

(সম্ভিতকার: সংকার: সম্ভিতশক্ত সংগ্রিং, জ্বস্তুচ ফলম্ধাং প্রাহাং কেশ্যতাং কৃষ্ণীকরণ্যাচেতি শিবদাস: ।)

তিলতৈল /৪ সের, ভীমরাজ রস ১৬ সের। কলার্থ—তিফলা, নীলোংপল, অনস্কমূল মণ্ডুর ও আমের কোনা মিলিভ /১ সের।
(মহান্তরে তৈল /৪ সের। কলার্থ—ভীমরাজ, ত্রিফলা, নীলোংপল, অনন্তমূল ও মণ্ডুর,
এই সমুদায় /১ সের। পাকের জল ১৬
সের।) এই তৈল মাধায় মাধিলে দারণক
রোগ নই ইইয়া কেশের সোহর সম্পাদিত হয়।

প্রপোগুরীকাদ্যং তৈলম।

প্রপোণ্ডরীকমধুক-পিগ্নলীচন্দনোৎপলৈ:। কার্নিকৈন্তেলকুড়নকৈছির।মনকীরস:। সাধাঃ স প্রভিম্ব: স্যাৎ সর্বাধীবগদাপহ:॥ (ছিত্তগেলামলকীরসেন পাক ইন্ডি চক্রটিকা!)।

ভিলতেল /॥• সের, আমলকীব রদ />
সের। কল্পার্গ—প্রপৌগুরীক, যষ্টিমধু, পিপুল,
রক্তচন্দ্রন ও নীলোংপল প্রত্যেক ২ তোলা।
এই তৈলের নত্তে দকল প্রকার শিরোরাগ
নই হয়।

মালত্যাদ্যং তৈলম্।

মালতীকরবারাগ্রি-নক্তমালবিপাচিতম্। তৈলমভাক্সনে শত্তমিশ্রুপুতাপহং পরম্। ইদং হি ত্তরিতং হস্তি দারুণং দারুণং নৃণাম্॥

তিলতৈল (কেছ বলেন—কটু তৈল) /১
দেৱ। কঁজাৰ্থ—মালতীপত, করবীমূল, চিডামূল ও ডহরকরঞ্জ বীজ প্রত্যেক ৪ তোলা,
পাকের জল (মতান্তরে—গোমুত্র) /৪ দের।
এই তৈল মাথিলে ইক্সলুপ্ত (টাক) ও দার্যণক
রোগ দুরীভূত হয়।

ধাত্যাত্রমজ্জলেপাৎ স্যাৎ স্থিরতা স্থিমকেশতা।

আমলকী ও কচি আমের অ'টির মজ্জা বাটিয়া প্রলেপ দিলে কেশ সকল স্থির ও মিশ্ব হয়।

অরুং বিকা।

অরংবি বছবজ্বানি বছারদীনি মুর্দ্ধি, জু। কফাস্কক্রিমিকেংপেন নৃণাং বিদ্যাদরুংবিকাম ॥

ষে থোগে মন্তকে বছমুখ ও বছক্লেদবিশিষ্ট ব্ৰণসমূহ উৎপন্ন হয়, তাহাকে অক্লংষিকা কহে। ইহা কফ হক্ত ও ক্ৰিমি কোপ হইতে উৎপন্ন হইয়া থাকে।

> অধংষকায়ং ক্রনিরেহবসিজে শিরব্যেধেনাথ জলৌকসা বা। নিষাসুসিজে শির্মি প্রকেপো নেয়ে'হৰবচ্চোরসদৈক্ষবাভ্যায়॥

অরুংবিকা অর্থাৎ শিরোত্রণ রোগে প্রথমে
শিরাবেন ছারা অর্থবা জোঁক বসাইয়া রক্তমোক্ষণ করিবে। পরে অর্জাবশিষ্ট নিম্বকাথ
ছারা মন্তক ধৌত করিয়া ঘোটকের বিষ্ঠার বস
এবং সৈন্ধব লবণ একএ মিশ্রিত করিয়া প্রশেস
দিবে। (এই রোগে প্রথমে মন্তক মুখ্রন
করা উচিত।)

পুর্ণমথ পিণ্যকং পূরীষং কুক্টস্য বা। মূত্রপিষ্ঠঃ প্রকেপে(২য়ং শীঘ্রং ইস্তাদকংবিকাম্॥

পুরাতন তিলের থৈল, অথবা কুকুটের বিষ্ঠা, গোমুত্রের সহিত বাটিল্লা প্রলেপ দিলে শুদ্র অরুংয়িকা নিবারিত হয়।

व्यक्षः विद्यः इष्टेक्टं-हूर्नः टेटलन मः यूटम् ॥

কাঠণোলায় কুড় ভাজিয়া ভন্ম করিবে। পরে ক্র জন্ম কটুতৈলের সহিত মিশ্রিত করিয়া ব্রণস্থানে প্রলেপ দিবে। ইহাতে অবসংধিকা বিনষ্ট হয়।

नोत्नार गलक किञ्जला थं जीकलमम्बिकः।
यहीरमुक्युक्क लिशासकः।

নীলোৎপল-কেশর, আমলকী ও বৃষ্টিমধু ইহাদের প্রলেপ দিলে অক্সংষিকা বিনষ্ট হয়।

দ্বিহরিদ্রাদ্যং তৈলম।

হরিদ্রাধয়ভূনিদ-ত্রিফলারিষ্টচন্দনৈ:। এতৎ তৈলমঙ্গংয়ীণাং সিদ্ধমভাঞ্জনে হিতম্॥

কটুতৈল চাবি /৪ সের। করাথ— হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, চিরতা, বিফলা, নিমছাল ও রক্তচন্দ্রন প্রত্যেক > পল। জল ১৬ সের। এই তৈল মস্তকে লেপন করিলে অবুংবিকা রোগ উপশ্যিত হয়।

পলিতম্।

কোধশ্যেকশ্রমকুতঃ শরীরেংখা শিরোগতঃ। পিত্তঞ্চ কেশ'ন্ পচ্ডি প্রিতং তেন স্কায়তে॥

ক্রোধ শোক ও শ্রমজনিত দেখোখা এবং পিন্ত, শিরোগত হটয়া কেশ সকলকে অকালে পক কে?, ইহাকেই পলিত বা চুলপাক। কহে। (এই নিদান অকালপলিতের পক্ষেট স্থানিবে, কারণ বৃদ্ধাবস্থার পালিত্য, ব্যসের ধর্ম্মেই হইয়া থাকে।)

(本本政治本部)

ক্রিফলা-নালিনী-পত্তং কৌংড়ঙ্করজঃ সম্ম। অবিষ্ত্রেণ সংযুক্তং কৃষ্ণীকরণমূত্রম্॥

ত্রিফলা নীলবৃক্ষের পত্র, লৌহ ও ভীমরাজ চূর্ব এই সম্দার সমান ভাগ। ইহাদিগকে মেষমুত্রে ভাবনা দিরা কেশে মাথাইলে কেশ সকল উত্তম কৃষ্ণবর্ণ হয়।

ত্রিফলাচুর্পনংযুক্তং লৌহচুর্পং বিনিক্ষিপেও।
ঈষৎপকে নারিকেলে ভূদরাজরসাবিতে ॥
মাসমেকন্ত নিক্ষিপ্য সম্যাগ্রান্তাং সমৃদ্ধরেও।
ততঃ শিরো যুপ্তরিত্বা লেপং দবা ভিষম্বরঃ ॥
সংবেষ্ট্য কদলীপত্রৈমে চিয়েৎ সপ্তমে দিনে।
কালয়েৎ ত্রিকলাকাবিঃ কীরমাংসরসাশনঃ।
কপালরঞ্জনকৈতৎ কুকীকরণমূত্রমম্ ॥

ঈবংপক একটি নারিকেলের মধ্যে ভীম-রাজের রস, লৌহ ও ত্রিফলা চুর্ণ নিহিত করিয়া গর্ভের মধ্যে এক মাদ পুঁতিয়া রাখিবে। ইহাতে ঐ নারিকেল পচিয়া যাইবে। পরে মস্তক মৃত্তন করিয়া উহা দারা প্রলেপ দিয়া কদলীপত্তে বেইন করিয়া বাদ্ধিয়া রাখিবে। ৭ দিবদের পর ঐ প্রেলেপ তুলিয়া ত্রিফলার কাথে মস্তক ধৌত করিবে। উক্ত ৭ দিবদ হগ্ধ ও মাংদের যুয় পণ্য। ইহাতে শুক্লকেশ ক্ষাবর্ণ হইয়া থাকে।

উৎপনং পরসা সাদ্ধি মাসং ভূমৌ নিধাপরেও। কেশানাং কুফীকরণং শ্রেহনক বিধারতে॥

নীলোৎপল পুষ্প, ছগ্ধের দহিত লৌহ পাত্রে রাখিয়া একগাদ গর্ত্তে নিহিত করিয়া রাখিবে। ইহা কেশে মাখিলে, কেশ সকল মিশ্ব ও কৃষ্ণবর্ণ হয়।

ভূকপুশং জনাপুলাং বেষ ছগ্ধপ্রপেষিতম্।
তেনৈবালোড়িতং লৌহ-পাত্রস্থং ভূমাধ্যেতম্।
সপ্তাহাপুল তং পশ্চাদ্ ভূকরাজরসেন তু।
আলোডাভাজা চ শিরো বেষ্ঠগ্রিছা ব্যেষ্ক্রিক্সনম্।
প্রাত্ত কালনং ব্যামেবং স্যান্ত্র্রিক্সনম্।
এবং সিন্দুরবালাম-শ্রাভ্রকরসেং কিয়া।
(বেষ্টগ্রিছা ইতি কদলীপত্রেণ্ডি শেষা। শিরশ্রক্ষালনক জিকলাক'শেন বদন্তি ইতি চক্রটাকা।)

ভীমনাক্ত পূপা ও জবাপুপা মেয়ী হুর্মের সহিত পেরণ করিয়া পুনর্নার তদ্ধারাই জালোডুন করিয়া লোহভাওে পুরিষার গিপিবে। প
দিবদের পর গর্জ হইতে তুলিয়া ভীমরাজ্বের
রসের সহিত আলোড়ন করিয়া মস্তকে লেপন
করিবে এবং কদলীপত্র ধারা মস্তক বাধিয়া
রাখিবে। প্রাভাকালে ত্রিফলার কাথে মস্তক
ধৌত করিয়া ফেলিবে। ইহাতে কেশ রঞ্জিত
হয়। এইরপ মেটে দিন্দ্র, বালা, আত্রকোশী,
শহ্মনাভি চুর্ণ ও ভীমরাজের রস, এই সমুনায়
ধারা মস্তক লিপ্ত করিলেও পুর্বেলিক্ত ফল হয়।
নরদদশন্ত্রিং কাঞ্জিকরসদংখুতং হি সীদক্ষিষ্টা।

নরদগ্ধশাস্থা কাঞ্চিকরসসংযুতং হি সীসকং গৃষ্ট্রা।
লেপাৎ কচানকদলাবনদ্ধান গুজান করোতি নীলভরান্॥

রামকর্পুরভূপভত্ম, শঙ্খচুর্ণ ও সীসা এই সম্দার কাঁজির সহিত পেষণ ও কেশে লেপন করিয়া আকলপত ছারা কেশ বন্ধন করিয়া রাখিলে শুত্র কেশ নীলবর্ণ হয়। লোংমলামলককৈঃ মঞ্জবাকুস্থমৈর্নরঃ সদা স্বায়ী। পলিতানীহ্ন পশুতি গঙ্গাস্থ য়ীব নরকাণি ॥

প্রত্যন্ত সানকালে লোহমল, আমলকী ও কবাপুষ্প একত্র প্রেষণ করিয়া মাথায় মাথিলে কেশ পক হয় না।

> নিষস্থ বীজানি হি ভাবিতানি ভূকত তোয়েন তথাসনতা। তৈলক্ত তেবাং বিনিহন্তি নস্তাদ্ ছুক্ষান্মভোক্তঃ পলিতং সমূলমু॥

ভীমরাজ ও অসন বৃক্ষের প্রভ্যেকের রসে
নিমের বীজ ৭ বার ভাবনা দিয়া তাহা হইতে
তৈল নিস্পীড়ন করিয়া লইবে। এই ভৈলের
নম্ম গ্রহণ ও হ্যান ভোজন করিলে কেশের
পকতা নিবাংণ হয়।

নিধন্ত তৈলং প্রকৃতিস্থান নত্তো নিধিকাং বিধিনা যথাবে। মাদেন গোক্ষ রচু থা নরস্তা জরাগ্রহুতং পলিতং নিংভি। (জরাগ্রহুতং ছরাগ্যনস্চক্ম।)

একমাস কেবল নিমের তৈলের নম্ম গ্রহণ ও গব্য ত্বন্ধ পান করিলে অভিশয় ৎক্লবর্ণ কেশ্ব পুনর্বার কৃষ্ণবর্ণ হয়।

ক্ষারাৎ সমার্কবরস:দ্ দিপ্রস্থে মধুকাৎ পলে।
তৈলক্ত কুড়বং পকং ভন্নতাং পলিতাপহম্।
(ক্ষারভূক্ষয়াজরসংগ্লামিলিছা প্রস্থায়ং, নির্দেশক্ত মানপ্রধানস্থাদিতি চফ্রটাকা।)

তিলতৈল /।। সের, ছগ্ম /২ সের, ভীমরাজের রস /২ সের। কলার্থ— যৃষ্টিমধু ৮
ভোলা। যথাবিধি পাক করিয়া এই
তৈলের মশু গ্রহণ করিলে কেশের পক্তা
নিবারণ হয়।

চন্দন। ছাং তৈলম্।

কান্তা বটাবরোহশচ হুত্টা বিসমেব চ ।
কান্তা বটাবরোহশচ হুত্টা বিসমেব চ ।
লৌহচ্পং তথা কেলী শারিবে ছে তথৈব চ ।
মাক্বম্বরেসেনেব তৈলং মুম্বন্নিনা পচেহ ॥
শিরস্থাপচিতাঃ কেশা জায়তে ঘনক্ষিতাঃ ।
নির্মাশ্চ দৃচ্যুলাশ্চ তথা লমরসন্মিদাঃ ।
ন. স্তমাকালপালিতং নিহ্নাং ১ এলমুব্যম্ ॥

তিলতৈল /৪ সের, ভৃঙ্গরাজ্বস ১৬ থের ।
ক্রার্থ—রক্তচন্দন, যাষ্টিমধু, মুর্কার মূল,
ক্রিফ লা, নীলোংপল, প্রিয়ঙ্গু, বটের ঝুরি,
গুলঞ্চ, মৃণাল, লোহচুর্গ, ভূতকেলী, শুমালতা ও
অনস্তমূল মিলিত /১ সের। মৃহ অগ্নিতে পাক
করিয়া এই তৈল কেশে লাগাইলে কেশ সকল
ঘন, কুঞ্চিত, দৃঢ়মূল, স্লিগ্ধ, ক্রঞ্চবর্গ ও বৃদ্ধিশীল
হয়। ইহার নস্ত গ্রহণ করিলে কেশের অকালপক্তা নিবারণ হইয়া থাকে।

महान्।लिटें नम्।

অ'দিত্যবল্লা মূলানি কুফলৈরীয়কপ্ত চ। হরস্মা চ প্রাণি ফলং কুঞ্খণ্মা চ 🛭 মাকবঃ ক'কমানী চ মধুকং দেবদারু চ। পূথগ্দশপলাংশানি পিপ্ললান্ত্রিকরাঞ্জনম। প্রপৌরবৌকং মঞ্জি লোগ্রং কুনং গুরুৎপলম। व्यास्त्रिकक्षमः कृतका मुनाना ५ छन्नम् । নালী ভল ভকান্থানি কাদীদং মদয়ন্তিকা। সোমরাজাসনং • স্ব: কুফৌ পিণ্ডাত**চিত্র**কৌ ॥ পুপাণাজ্নকাশ্ম:যারি:মঙন্ফলানি চ। পুথক পঞ্চলৈভাগৈঃ স্থপিষ্টেরাঢ়কং পচেৎ 🛭 বৈভীতক্সা তৈল্যা ধাত্রীরসচত্ত প্র। কুয্যাদাদিত্যপাৰং বা যাবচ্ছুগো ভবেদ্রম: । লৌহপাত্রে ততঃ পূতং সংগুদ্ধমূপযোজয়েৎ। পানে নম্ভজিয়ায়'ঞ শিরোহভাঙ্গে তথৈব চ ॥ এতচ্চকুষামাযুষ্যং শিরসঃ সর্বরোগমুং। মহানীলমিতি খাতিং পলিত্রমতু**ত্ম**ম্॥

े उन সের। বহেড়া কন্বার্থ---আমলকীর সের। हफ्हरफ़ भून, नीनशांिद भून, जुननीभव, ক্ষণণের ফল, ভীমরাজ, কাকমাচী, ষষ্টিমধু ও দেবদাক প্রত্যেক ১০ পল, পিপুল, ত্রিফলা, প্রপৌত্যীক, মঞ্জিষ্ঠা. রুগঞ্জন. নীলোৎপল, আত্রকেনা, পন্মমূলস্থ কৃষ্ণ গুকু, কদ্ম, মূণাল, বক্তচন্দন, নীলগাছ, ভেলার মূটী, হীরাকস, মৃত্রিকাপুষ্প, সোমরাজী, অসন-ছাল, লৌহচুর্ণ, ক্রফ্যপুষ্প, মদনছাল ও চিভামুল, অৰ্জ্জনপুষ্প, গান্তারীপুষ্প, আন্তফল ও জামফল প্রত্যেক ৫ পল। যপাবিধানে পাক করিবে।

জথবা সমুদার রস শোষণ পর্যান্ত স্থা,পক করিয়া লইবে। পাক সম্পন্ন ইইলে ছাঁকিয়া লোহ পাত্রে রাখিবে। ইহা পান, নশু ও মন্তকে মর্দনার্থ প্রযোজ্য। ইহাতে সকল প্রকার শিরোরোগ ও কেশের পকতা নিবারণ হইয়া চক্কর তেজ ও আয়ুর বৃদ্ধি হয়।

ভূৰরাজগ্নতম্।

ভূকরাজরনে পকং শিখিপিতেন কব্বিতম্। যুতং নদ্যেন পলিতং হস্তাৎ সপ্তাহযোগতঃ।

স্বৃত্ত /।। পের, ভীমরাজের রস /২ সের।
কবার্থ—ময়্রপিত্ত ৮ তোলা। সপ্তাহ এই
স্বতের নম্ম গ্রহণ করিলে কেশের পক্ত।
নিধারণ হয়।

কাঞ্জিপিপ্তশেল্ফলমজ্ঞ সাক্ষ্যেলীহণে। যদর্কপাতাৎ পথতি তৈলং ভন্নসাম্রক্ষণাং। কেলা নীলালিসকালাং সত্যা প্রিধ্যা ভব্তি চ। নয়নশ্রবপ্রীবা-দন্তরোগাংশ্চ হন্তাদা।

বহুবারফলের মজ্জা কাঁজিতে পেষণ করিয়া, সচ্ছিত্র লোহপাত্রে রাশিবে, ঐ পাত্র রোজে ধরিলে তাহা হইতে যে তৈল চুয়াইয়া, পড়িবে, তাহার নহা ও অভ্যঙ্গ দারা কেশ সকল অলির ভার সিগ্ধ নীলবর্ণ এবং চকু, কর্ণ, গ্রীবা ও দম্ভ সম্বন্ধীয় পাঁড়া উপশ্যিত হয়।

যুবানপিডুকা।

শাক্ষণীকণ্টকপ্রখ্যাঃ কফনারুতর্ত্জাঃ। যুবানশিড়কা যুনাং বিজ্ঞো মুখদ্বিকাঃ॥

ধুবা ব্যক্তিদিগের মুখে, দিমুল্কাটার ভার মে সকল এণ জন্মে, ভাহাদিগকে মুখদ্ ফিল। (বন্ধেএণ) কছে। ইহা কফ মারুত ও রক্ত দোষে উদ্ভ হর।

যুবাৰপিড়কাক্সছ-নীলিকাব্যঙ্গশকরাঃ। শিরাবেধঃ প্রলেপেন্চ জয়েদভাঞ্জনৈত্ব। ।

সুবানপিড়কা (প্রথম যৌবন কালীন মুখ-বুণ), ক্সন্ড, নীলিকা, ব্যক্ষ ও শর্করার্ক্স

রোগে শিরাবেধ, প্রলেপ ও উপযুক্ত তৈলাদির অভ্যঙ্গ ব্যবস্থা করিবে।

লোএধান্তবচালেপস্তারুণ্যপিড়কাপহঃ। তবদুগোরোচনাযুক্তং মরিচং মুখলেপনাৎ। সিদ্ধার্থকবচালোএ-সৈদ্ধবৈক্ত প্রলেপনম। বমনঞ্চ নিহস্ত্যাশু পিড়কাং যৌবনোদ্ভবাম্।

নবযৌবনজাত মুখরণে লোধ, ধনে ও বচ; কিংবা গোরোচনা ও মরিচচ্ণ; অথবা খেতসর্বপ, বচ, লোধ ও দৈন্ধবলবণ একজ বাটিয়া মুখে প্রলেপ দিলে বা রোগিকে বমন করাইলে আশু ইহা প্রশমিত হয়।

কেবলান্ পয়সা পিষ্ট্ৰা তীক্ষান্ শাল্মলিকণ্টকান্। আলিপ্তং ক্ৰাহমেতেন ভবেৎ পল্লোপমং মৃণম্।

শিমুলের তীক্ষ্ণ কাটা ছুগ্নে বাটিয়। তিন দিন প্রলেপ দিলে মুখ পালে। স্থায় স্থী ধারণ কবে।

মাতৃৰুক্ষজটা স'পিঃ শিলা গোশকুডো রস:। মুখকান্তিকরো লেপঃ পিড়কান্তিকালাজিং ।

টাবালেরর মূল, যত. মনছাল ও টাট্কা গোবরের রস, ইহাদের প্রলেপ দিলে মুখের পিড়কা ও তিলকালক রোগ বিনষ্ট হয়।

প্ৰিনীকণ্টকঃ।

কণ্টকৈর।চিতং সূতং মঙলং পাপু কণুরষ্। প্রিনীকণ্টকপ্রগৈতদাখ্যং কফবাতজম্॥

ছকের উপর কন্টকের স্থার মাংসাঙ্কর-ব্যাপ্ত, পা পুরণ, কণ্টুযুক্ত, বৃত্তাকার যে মণ্ডল উদ্যাত হর, তাহাকে পদ্মিনীকন্টক (পদ্মকাটা) কহে, ইহা বাতলেমজ ব্যাধি।

পদ্মিনীকউকে রোগে চছর্নিয়েরিছবারিণা। তেনৈব সিদ্ধং সক্ষোধ্রং সপিং পাতৃং প্রদাপয়েৎ।

প্রিনীকণ্টক রোগে নিমছালের কথি পান করাইয়া বমন করাইবে এবং নিমছালের কাথের সহিত মৃত পাক করিয়া ভাহা মধুর সহিত থাইতে দিবে।

পন্মনালকুতকারঃ প্রিনীং হতি লেপতঃ। নিমারথধকদৈবা মুক্তক্ষতনং হৈতম্ । পদ্মের ভাঁটা পোড়াইয়া সেই ক্ষার ঘারা প্রালেপ নিলে অথবা নিমছাল ও সোন্দাল-পাতা বাটিয়া ভদ্মারা পুনঃপুনঃ মর্দ্ধন করিলে পদ্মিনীকণ্টক প্রশমিত হয়।

চতুগু পৈন নিষোধ-পত্ৰকাথেন গোযুত্ম।
পচেৎ ততন্ত নিষক্ত কৃত্ৰমালক্ত পত্ৰলৈঃ ।
ককৈতুন্ম: পচেৎ সিদ্ধং তংপিবেৎ পলসন্মিত্ৰম।
পদ্মিনীকটকান্দোগানুক্তো তবতি নাক্তৰা॥

গব্যন্থত /৪ দের। নিম্বপত্রের কাথ :৬
দের। কন্ধার্থ—নিম্বপত্র ও দোন্দালপত্র
মিলিত /১ দের। যথাবিধি পাক করিয়া ৮
তোলা পরিমাণে পান করিলে পান্ধানীকণ্টক
বিনষ্ট ২ইবে।

জভুম্মনিঃ।

ममभूरमध्मक्षकः भखनः व कत्रक्रकः । महकः कृष्णः देहत्कवः नत्कः। ज्ञाद्भः (वस्र मः॥

থকের উপর মহণ কিঞ্চিন্নত ও অবেদন যে (ক্ষাবর্ণ) মণ্ডল উৎপন্ন হয়, তাহাকে জতুমণি (জড়ুল) কহে। ইহা সহজ, অর্থাৎ জন্মের সহিত জাত। জতুমণি কফরন্তন্দ্র প্রাধি। কোন কোন পণ্ডিত বলেন, ইহা স্ত্রী পুরুষের অঙ্গ-বিশেষে অবস্থিত হইলে শুভাশুভ ফল প্রদৃহয়।

মাবক্ম।

অবেদনং স্থিরকৈব যশ্মিন্ গাতে প্রদৃষ্ঠতে : মাববৎ কৃষ্ণুৎসন্ধ-মনিলানাবকত্ত ৩৭॥

ত্তকের উপর মাষকলায়ের ন্যায় আকৃতি-বিশিষ্ট কৃষ্ণবর্গ কিঞ্চিত্রত বেদনারহিত ও কঠিন যে আকৃতি উদ্ভূত হয়, তাহাকে মাষক (মশক) কহে। ভাষায় ইহাকে সাঁচিল বিশেষ বলা যায়। ইহা বাত্ত ব্যায়।

তিলকালকঃ।

কুন্ধানি তিলমাত্রাণি নীক্ষরানি সমানি চ। বাতপিস্তককোন্ধেকাং তান্ বিস্তাৎ তিলকালকান্। (বাতপিস্তককোচ্ছাসাদিতি পাঠাস্তর্য ।) সকের উপর অনুমত অবেদন ও ক্লফবর্ণ ভিলবং যে সকল আক্লতি উৎপন্ন হয়, তাহাকে ভিলকাশক (ভিল) কহে। ইংা জিনোধন্ন।

চন্দ্ৰকীলং জতুমণিং মণকাংখিলকালকান্। উদ্ভূতা শল্লেণ দংহৎ কারায়িভাামশেষতঃ ॥ (অনবগাঢ়ে কারেণ, অবগাঢ়ে অগ্নিনেতি চক্রটীকা।)

চর্মকীল, জতুমণি, মশক ও তিলকালক এই সকল রোগ অন্ত্র ধারা উৎপাটিত করিয়া তাহা অনবগাঢ়মূল হইলে ক্ষার ও অবগাঢ়মূল হইলে অমি প্রয়োগ ধারা একেবারে দগ্ধ করিবে।

ক্ৰুনালস্ত চূৰ্ণেন ঘৰো মণকনাশনঃ। নিম্মেকভ্ৰমগৰীৰা মণঃ শান্তিং ব্ৰক্তেৎ সদা ॥ (চূৰ্ণং শহাচূৰ্ণন্ন) ইতি চক্ৰটীকা।)

এরওনাল দ্বরো শৃজ্চুর্ণ এইণ করিয়া ঘর্ষণ করিবল অপরা সপোর খোলদ ভক্ষ করিয়া ভদ্মাবা ঘ্যান কবিলে মণক রোগে শান্তি হয়।

শুন্ত্র ম

मश्चा यक्ति ना हाझर शानः ना यक्ति नाश्ति छन्। नोजकार मखनर भारत शास्त्र मिटा विशेषाट ॥

গাত্রে বহবায়ত বা স্বলায়ত শ্রাব বা ক্রফাবর্ণ বেদনারহিত যে মণ্ডল উত্তুত হয়, তাহাকে ভাজ (ছোদ বা ছুলি) কহে।

স্তাচ্ছং লিম্পেৎ প্রঃপিট্রে কব্ধি ক্ষার্ডকন্তবৈ:। ট্রিভুবন্বিজয়াপত্রং মূলং শ্ববিরক্ত শিংশপা চৈডিঃ। উদ্বর্জনং বির্চিডং স্তাচ্ছব্যক্ষাগৃহং সৈদ্ধ্য। (শ্ববিরক্ত সৃদ্ধদারক্ত।)

বট, অথখ, পাকুড, যজ্জুমুর ও বেওস এই পঞ্চ ক্লীরিত্ক প্রত্যেক সমভাগ, তথ্য পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে, অথবা দিন্দিপত্ত, বৃদ্ধনারকের মূল ও শিশুবৃক্ষের ছাল চূর্ণের উত্তর্জন করিলে ক্সন্ত (ছুলী) ও ব্যঙ্গ নিবা রিত হয়। (কুষ্ঠাধিকারোক্ত দিখাকুঠনাশক প্রলেপাদি ব্যবহারেও ছুলী নিবারিত হইয়া থাকে।)

ব্যকো নীলিকা চ।

কোধায়াসপ্রকুপিতো বায়ুঃ পিত্তেন সংযুতঃ। মুখমাগত্য সহসা মণ্ডলং বিস্কৃত্যতঃ॥ নীক্ষজং ততুকং শ্রাবং মুখে বাঙ্গং তমাদিশেৎ। কুক্ষমেবংগুণং গাত্রে মুখে বা নীলিকাং বিছঃ॥

ক্রোধ ও পরিশ্রম ,হ হু কুপিত বারু এবং পিত্ত, মুখে উপস্থিত হইয়া খ্যাববর্ণ অনুরত (পাত্লা) ও বেদনাহীন যে মণ্ডল উৎপাদন করে, তাহাকে মুখব্যঙ্গ (মাছ্তা) বলে।

উপরি উক্ত বাঙ্গ লক্ষণ বিশিষ্ট চিহ্ন, যদি কৃষ্ণবর্ণ হয়, তাহা হইলে ভাহাকে নীলিকা কহে। বঙ্গ ও নীলিকায় প্রভেদ এই—বাঙ্গ শ্রাববর্ণ, নীলকা কৃষ্ণবর্ণ। ভোজ বলেন, বাঙ্গ কেবল মুখে হয়, নীলিকা মুখে ও গাত্রে হইয়া থাকে।

ব্যক্ষের চাজ্মত্ব বা মঞ্জিতা বা সমাজিকা। লেপঃ সমব্মাতা বা খেতাখ্যুরজা মসী॥

বাঞ্চরোগে অজ্নগাছের ওক্ছাল বা মঞ্জিষ্ঠা মধুর সহিত মিশ্রিত করিয়া কিংবা ঝেতবর্ণ অথের গুরভ্তম (বৃন্দ বলেন – খেতাপ-রাজিতাও খেতবর্ণ অথের গুরভ্তম) নবনীতের সহিত মিশাইয়া এলেপ দিবে।

রক্তদশনমঞ্জিঙা-কুউলোএপ্রিয়ক্সবঃ। বটাকুরা মত্র'শ্চ বাস্থা মুখকাভিদাং॥ (বটাকুরা বটক্ত অভিনৰপ্রমূক্সাং।)

রক্তা ক্রন, ম্ঞাষ্ঠা, কুড়, লোধ, প্রিয়ক্ষ্, বটের নূতন পত্র ও মুকুল এবং মহর দাইল, এই সকল একতা বাটিয়া মুখে লেপন করিলে মেচেতা বিনষ্ট হইয়া কান্তির্দ্ধি হয়।

বটাৰুরা মহরাশ্চ প্রলেপাদ্ ব্যঙ্গনাশনম্।
ব'ঙ্গে ম'জিষ্টরা লেপাং প্রশস্তো মধ্যুক্তরা ॥
অথবা লেপনং শতং শশক্ত ক্ষরিরণ চ।
অর্কক্ষীরহরিক্রান্ড্যাং মন্দরিতা প্রলেপনাং।
মুখকাঞ্চাং শমং য'তি চিরকালোন্ডবং প্রবম্ম ॥

বটাঙ্কুরের ও মহুরের প্রলেপ অথবা মধু-সংস্কু মঞ্জিষ্ঠার প্রলেপ দিলে, কিংবা শশকের রক্ত লেপন করিলে অথবা আকন্দের আঠা ও হরিন্তা চুর্ণ একত্র লেপন করিলে ব্যক্ষরোগ বিনষ্ট হয়। মস্বৈ: ক্ষীরসংপিটের্নিগুমান্তং মৃত্যামিতে:।
সপ্তরাতাদ্ ভবেৎ সতাং পুঙরীকনলোপমন্।
মস্ব কলাইয়ের দাইল ত্রে পেষিত এবং
মৃত্রে সহিত সংসূক্ত করিয়া ৭ দিন প্রবেপ দিলে, মুণ পদ্মের স্থায় কান্তিবিশিষ্ট হয়।

নবনীত গুড়কোদ্র-কোলমজ্জ-প্রলেপনম্। ব্যঙ্গদ্ধিদ্ বঙ্গণ্ডগ্রাচ্ছগেক্ষীরপ্রপেষিতা।

নবনীত, গুড়, মধু, কুল আঁটির শস্ত, এই সমুনায় একত মৰ্দ্দন করিয়া প্রালেপ দিলে অথবা বক্লণছাল ছাগতুরে বাটিয়া লেপন করিলে বান্ধ প্রশ্নিত হয়।

জাতীফলকছলেপো নীলাবাস্থাদিনাপ্ন ।
সায়ঞ্চ কটুতৈলেনাভাসো রক্তপ্রসালনঃ ।
কায়ফল বাটিয়া প্রানেপা দিলে অথবা
সায়ংকালে মুথে স্কাশ তৈল মাখিলে নীলিকা
ভ বাসাদি : বাগ নিবাহিত হয় ।

বটন্ত পাঙ্গজানি মাল্টী রক্তকনন্।
কুঠং কালায়কং লোগ্রমেভিলেপিং প্রয়োভ্যেৎ।
বটের পাঙুবণ পত্র, মাল্টী পত্র, রক্তচন্দ্দ,
কুড়, কালিয়াকড়া ও লোধ এই সকল জ্বোর প্রানেপ দিলে ব্যক্তালি প্রশমিত হয়।

কালীয়ংকাৎপ্ৰাময়দধিসৱগদরা(স্থমধাফলিনা)ভি:। লিপ্তং ভৰতি হি বদনং শশিপ্রভং সপ্তরাঞে ।

কালীয়কার্গ (স্থান্ধ কার্গবিশেষ), নীলোৎপল, কুড়, দধির সর, কুল অ।টির শস্ত ও প্রিয়ন্থ, এই সকল জব্যের প্রাণেপ দিলে সাত দিন মধ্যে মুখ শশিপ্রভ হয়।

ভূষ এহি তমত্থ্যবচূর্ণসময়ীসধুকলে ! এলেপেন। ভবতি মুখং প্রিনিজি ১৮/মাকরচাকসৌভাগ্যম্॥

তৃষরহিত যাচুর্ল, যষ্টিমধু ও লোগ এই সকল দ্রব্য সমভাগে লটয়া প্রালেপ দিলে, মুখ স্বরবর্গে ভাষে কান্তিবিশিষ্ট হয়।

রকোমণক্রীব্যুমঞ্চিটাগিরিকাঞাবস্থানঃ।
সিদ্ধেন লিগুমাননমুন্তাব্যুগিব্যুদ্ বিভাতি।
খেতস্থাপ, হড়িজা, দারুহরিজা, মঞ্জিটা, গোরমাটা, স্বত ও ছার্গাহ্যু, এই সম্পার স্বারা প্রেলপ দিলে মুখ চল্লের ভাগ কার্ম্বি ারণ ক্রিয়া থাকে। পরিণতম্বিশরপুথ্যে: কুবলয়দলকু উচন্দনোশীরৈ:। মুপক্মলকান্তিকারী জকুটীতিলকালকান্ জয়তি ॥

শরপুষা, নীলোৎপলপত্র, কুড়, চন্দন, বেণার মূল, এই সমস্ত পুরাতন দ্বি সহ বাটিয়া মূখে প্রকেপ দিলে তিলকালক প্রভৃতি বোগ দূর হইয়া পল্মের ক্রায় কান্তি হয়।

দ্বিহরিদ্রোদ্যং তৈলম।

হ্রদ্রা, দারুহরিদ্রা, যৃষ্টিমধু, কালীয়ক কাঁচ, রক্তচন্দন, পুণ্ডরিহা, মাঞ্জ্ঞা, পদ্মপুষ্পা, পদ্মকাঁই, কুছুম এবং কয়েৎবেল, গাব, পাকুছ ও বট ইহানের পত্র, এই সকল দ্রব্য হয়সহ বাটিয়া লেপন কবিবে। অথবা এই সকল কল্পের এবং চুগুল ভূগ্নের সহিত্ত যথাবিদি তেল পাক করিয়া মদন করিবে। ইহাতে ছছুল, নীলিকা, বল্প, তিল ও মুণ্ট্রিকা প্রভাত বোগ বিনষ্ট হইয়া মুণের কাস্তি গৃদ্ধি হয়।

কনকতৈলম।

মধ্কত ক্যারেণ তৈলত কুড়বং পচেৎ।
কলৈ: প্রিয়সুমঞ্জিগা-চলনোৎপলকেশরৈ:॥
কলকং নাম তৎ তৈলং মুখকান্তিকরং পরম্।
অভীক্রীলিকাব্যক্ত-শোধনং পরম্চিতম্॥
(অভীক্র ডাটুলম্।)

ভিলতৈল ।।। সের। কাথার্থ—যষ্টিমধু

/> সের, জল /৮ সের, শেষ /২ সের। কক

দ্রব্য—প্রিয়ঙ্গ, মঞ্জিচা, ক্রক্তচন্দন, উৎপল ও
নাগকেশর প্রভ্যেক ২ ভোলা। পাকার্থ জল—

/২ দের। এই ভৈল লেপনে জটুল, নীলিকা
ও ব্যঙ্গ দূরীভূত হইয়া মুখের কান্তি বৃদ্ধি হয়।

মঞ্জিষ্ঠান্তং তৈলম্।

মঞ্জিঠা নধুকং লাকা মাতুলুকং সগষ্টকন্।
ব ধ প্রমাণেরেতৈ প্ত তৈলক্ত কুড়বং তথা ।
আজং পরস্তদ্ভিগং শনৈমু দ্বিনা পচেং।
নীলিকাপিড়কাব্যক্ষানভাক্ষাদেব নাশহেং ।
মৃথং প্রসন্তোপচিতং বলীপলিতবর্জ্জিতম্।
সপ্তরাত্রপ্রোগেণ ভবেং কনকসন্নিভন্ ।
(মধুকং সগষ্টকমিতি পদব্যোপাদানাং জলস্থলভেদেন
ষ্টমধুদ্বন্নিহ গ্রহণমিতি জেরন্। চক্রটাকা।)

ভিলতৈল /।। সের, ছাগছগ্ন /১ সের।
ক্রাণ্—মঞ্জিটা, জলজ গটিমধু, লাক্ষা, টাবালেবুর মূল, গটিমধু প্রভাক ২ ভোলা। মৃছ
ভারতে পাক করিয়া, ইহা মদন করিলে
নীলিকা, পিড়কা ও বাঙ্গরোগ দুরীভূত এবং
মুণ কাহিস্ক হয়।

সল্লকুস্কুম। ছাং তৈলম্ ।

কুত্বমং চলনং লাকা মঞ্জিতা মধ্যন্তিকা।
কণপ্রমাণেরেতৈন্ত চৈলক্ত কুড্বং পচেৎ ॥
অজাকারং তদি তুণং শনৈমু ছিটানা পচেৎ।
সমাক্পকং পরং হেতত্পুকান্তিপ্রদাদনম্॥
নালিকাপিড়কাবাকানভাকাদেন নাশ্যেৎ।
সপ্রাত্রপ্রাত্রিণ ভবেৎ কাক্নসঞ্জিন॥

কলার্থ—কর্ম, চন্দন, লাক্ষা, ম্রেন্ডা ও ষ্ট্রমধু প্রভাক ২ ভোলা। তৈল ৴.০ সেন। ছাগল্প্ ৴১ সো। যথাবিধি মৃত অগিতে এই তৈল পাক করিয়া মুখে মালিদ করিলে, নীলিকা, পিড়কা ও বাস প্রভৃতি রোগনপ্ত হুইয়া মুখের কান্তি বন্ধিত ও শরীরের বর্ণ সমুক্ষন হয়।

কুফুমাদ্যং তৈলম্।

কুজ্মং চন্দনং লাকা মঞ্জিষ্ঠা মধ্বষ্টিকা।
কংলীয়কমূণীরঞ্জ পয়কং নীলমূৎণলম্ ॥
অগ্রোধণাদাঃ প্রকল্প শুলা পরিছে কেশরম্।
বিপঞ্চনুলাইতৈঃ করারৈঃ পলিকৈঃ পূথক্ ॥
জলাচকং বিপক্তব্যং পাদশেষমধোদ্ধরেং ।
মঞ্জিষ্ঠা মধুকং লাকা পভঙ্গমধ্যষ্টিকৈঃ ॥
ক্যপ্রমাণেরেতৈপ্ত তৈলদ্য কুড্বং পচেং।
অলাকীরং বিশুবিতং লনেমূদ্বিয়না পচেং ॥

সমাক্পকং পরং ফেতনুখবর্ণপ্রসাদন মৃ।
নীলিকাপিড়কাব্যঙ্গানভাঙ্গাদেব নাশয়েং ।
সপ্তরাত্রপ্রয়োগেণ ভবেৎ কাঞ্চনসন্ধিভম্।
কুকুমান্তামিদং তৈলমখিভাগং নির্মিতং পুরা।
(কাথার্থং পঠিতমপি কুকুমং দিন্ধতৈলে প্রক্ষিপভি
বৃদ্ধাঃ।)

তিলতৈল /॥ • সের। কাথার্থ— রক্তচন্দন, লাকা, মঞ্জিল, বৃষ্টিবধু, কালিরাকার্চ, বেণার মূল, পদ্মকার্চ, নীলোৎপল, বটের ঝুরি, পাকুড় বৃক্ষের শুলা, পদ্মকশর ও দংমূল প্রত্যেক ১ পল, জল ১৬ সের, শেষ /৪ সের। কল্লাণ— মঞ্জিলা, বৃষ্টিমধু লাকা, রক্তচন্দন ও ঘট্টমধু প্রত্যেক ২ তোলা। ছাগছগ্ম /১ সের। পাক-দিন্দ ইইলে কুরুন ৮ তোলা একেপ দিবে। এই তৈল মদনে নালিকা, পিড়কা ও ব্যক্ষ-রোগ দূব হইরা মুধ্জোতিঃ পরম রম্ণীয় হইরা থাকে।

কুষ্মাদ্যং তৈলম্।

কুরুনং কিংজকং লাকা মঞ্জিটা রক্তচলনন্।
কালীয়কং পদ্মকঞ্চ মাতৃপুক্তং সকেশরম্ ॥
কুকুত্বং মধ্যুরী চ ফলিনা মদর্ভিকা।
নিপে ছে রে!চনা পদ্মধুপ্রক্ত মনাশিলা।
কাকোল্যাদিসমাযুকৈরেটেরক্সনমৈভিষক্।
লাক্ষারসপ্রোভ্যাঞ্ তৈলপ্রস্থাং বিপাচ্যেৎ॥
ক্রুয়ান্তামিদং তৈলপ্রস্থাং বিপাচ্যেৎ॥
ক্রোভি বদনং সন্তঃ পুটলাবণ্যকান্তিদন্।
সোভাগ্যক্রীজননং বলীক্রণ্যুত্মম্॥

ভিনতিল /৪ সের। লাকার কাথ /৮ সের, ছাগছয় /৮ সের। করার্থ—কুরুম (কুরুম প্রকেপ দিতে হর), পলাণপুল, লাকা, মঞ্জিয়, রক্তকলন, কালীরক কার্ছ, পদ্মকার্ছ, টাবালেবুর কেশর, কুসুমপুলা, ষষ্টিমধু, প্রিয়ন্থ, বুইপুলা, হরিদ্রা, দাকহরিদ্রা, গোরোচনা, পদ্ম, উৎপলা, মনছালা, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, অদি, ক্ষীবক, অবভক, মেদ ও মহামেদ প্রত্যেক ২ তোলা। ইহা মুখে মাথিলে মুখের লাবণা ও কান্তি বৃদ্ধি হয়।

ৰৰ্ণ ক-গ্নতম্।

মধুকং চন্দনং কল্পু সর্বগং পালকং তথা।
কালেরকং হরিদ্রা চ লোপ্রমেভিন্ট কবিউটে।
বিপচেদ্ধি যুতং বৈজ্ঞত্বৎ পকং বল্পগালিতম্।
পাদাংশং কুরুমং সিক্থং ক্রিপ্তানকর্বরেং ততঃ।
তৎ সিদ্ধং শিশিরে নীরে প্রক্ষিপানকর্বরেং ততঃ।
তদেতহুর্বিকং নাম যুতং বর্ণপ্রমাদনমূ ।
অনেনাভ্যাসনিপ্তং হি বলীভূতম্পি ক্রমংং।
নিদ্ধাকন্দ্রিম্বাভং স্যাঘিলাসবতীমুধ্ব ।
(বু কুমসিক্থয়োমিলিছা পাদাংশ:। সিক্থকস্য
দ্বীকরণার্থং মন্ত্রপাকং দহা শীতনকলে কিরৎ ক্ষণং
রাপরিহা শীতলং সং অনুশুপ্তং নিধাপরেং।)

মৃত / ৪ সের। কজার্থ— যৃষ্টিমধু, রক্তচন্দন কঙ্গু (ধান্তবিশেষ), খেতসর্থপ, পলকাত, কুফা-শুক্র, হরিদ্রা ও লোধ মিলিত / ১ সের। যথা-নিয়মে পাক করিয়া (কিঞ্চিৎ জল সম্বন্ধ থাকিতে) বস্তবারা মৃত ছাকিয়া লইবে। পরে উহাতে কুছুম অর্দ্ধ সের ও মোম অর্দ্ধ সের প্রক্রিয়া প্রক্রিয়া করিবে। পরে ক্রিয়াংশন শীতল জলের উপর ক্র ম্বুভপাত্র হাপন করিয়া পরে । নর্জ্জন স্থানে হান্থিবে। এই মৃত , শুনন করিলেও বিলাসবভী রম্নীর মৃণ নিম্বেক্সচক্রবিসং সৌন্দর্যাণালী হয়।

পরিবার্ত্তিকা।

নৰ্দনাৎ পীড়নাছাতি তবৈবাপ্যভিষাততঃ।
মেচ্চত্ম যদা বায়ু ভলতে সৰ্বতক্ষরঃ॥
তদা বাতোপস্ট্ডবাৎ হচতত্ম পরিবর্ততে।
মবেদনং সনাহঞ্চ পাৰুক প্রজতি কঠিং॥
মণেরধন্তাং কোৰক প্রস্থিরপেশ লম্বতে।
সরকাং বাতসভ্তাং তাং বিদ্যাৎ পরিবর্ত্তিকাম্।
সক্তঃ কঠিনা বাপি সৈব লেমসম্থিতা।

লিক অভিমর্দিত বা অভিহত ইংলে,
অভিঘাত কুপিত ব্যানবায়, লিকচর্মকে আশ্রম
করে,
তজ্জন্ত ঐ চর্ম দূষিত ও বিবর্তিত হইয়া
লিকমণির অধোভাগে গ্রন্থির
ইহাকেই পরিবর্তিকা (মুদ) কহে। ইহা দাহ
ও বেদনা বিশিষ্ট হইয়া কথনও পাকিয়া উঠে।

পরিবর্ত্তিকা বাতজ হইলে বেদনাযুক্ত এবং কলান্ত্র্য হইলে কঠিন ও কণ্ণবিশিষ্ট হয়।

ব্যেদাপনাহে। পরিবর্ত্তিকায়াং কুমা সমভাজ্য মুতেন পশ্চাৎ। প্রবেশয়েজক্ম শুনৈং প্রবিষ্টে মাংকৈঃ প্রবোধেরপনাহয়েজে॥

পরিবর্ত্তিকার অত্যে হাত নাথাইর। পশ্চাৎ
ভাষাতে বাভন্ন মাধকলাই প্রভৃতি হারা স্বেদ
ও প্রলেপ এবং বাভব্যাব্যুক্ত শাখন স্বেদ ও
উপনাহ প্রয়োগ করিবে। ইহাতে পরিবর্ত্তিত
চক্ষ কোমল হইলো জ্বনে ক্রমে স্বস্থানে প্রবেশ
কবাইবে। চন্ম প্রবিষ্ট ইইলে ঈন্তম্ভ মাণ্সের
প্রলেপ দিবে।

অবপাটিকা।

জন্তার পাং বদা হবীদ্ বলাক্ষাকেই থিয়ং নর । হস্তাভিবাতাদ্ববা চন্দ্রাইতে বলাই। সক্ষাবপাটাতে চন্দ্র হাং বিজ্ঞানবপাটিকাম্॥

অনাত্রা বালকাব স্ক্রম্থ-যোনিতে, হ্গ বা বলপুকাক গুলন করিলে যদি লিক্সম্ম উব্দিত হয়, অথবা হস্তাভিনাত ধারা কিংবা বলপ্রয়োগ করায় যদি উ চম্ম উটাইয়া যায়, অনাৎ স্থান হইতে উদ্ধে অবস্থিত হইয়া আর মূদ্রিত না হয়, তাহা হইলে উহাকে অব-পাটিকা করে।

বেগ্রস্টেন্ডথেনৈন'ং । চ্কিংসদ্বপাটিকান্।
পরিবৃত্তিকার স্থায় অবপাটিকা রোগেও স্লেছ স্বেদ উপনাহ ও স্বস্থানে চণ্যানয়ন প্রান্থতি চিকিৎসা করিবে।

নিরুদ্ধপ্রকশঃ।

বাভোপপতে মেচে বৈ চল্ম সংশ্রহত মণিন্। মণিনচন্মোপনন্ধন্ধ মৃত্তমোতো রুণন্ধি চ । নিরুদ্ধ একণে তল্মিন্ মন্দধারং সবেদনম্। মৃত্রং প্রকৃত্তি জন্তোম ণিবিব্রিয়তে ন চ। নিরুদ্ধপ্রকশং বিস্তাৎ সরুজং বাতসপ্তবম্॥

এই অবপাটিকার চর্ম্মদি লিঙ্গকে দৃঢ়রূপে আশ্রম করে এবং তজ্জন্ত মুক্তসোতঃ রুক হয়, তাহা হইলে উহাকে নিক্রপ্রকশ বলা যায়।
এই রোগে লিজমনি যদি সম্পূর্ণ কর না হয়,
তাহা হইলে মূত্র মন্দ্রবারে বেদনার সহিত অল্ল
অল প্রবর্ত্তি হয়, কিন্তু ক্রন্ত হইলে এক বারে
বন্ধ হইলা যায়। নিক্রন্ত্রপ্রকণে বায়ুর কোপ
অধিক থাকিলে অন্যন্ত বেদনা হইলা থাকে।

নিক্ষপ্পথন নাড়াং বিষ্থীং কনকাদিজাম্। কিন্তু, ভাক্তং চুলক্যাদি-মেহেন পরিবেচয়েৎ। তৈলেন বা বচাদাক্ষ-ককৈঃ সিদ্ধেন চ তাহাং। পুনঃ স্থলতরা নাড়া দেয়া প্রোতোবিবৃদ্ধয়ে। শংসা সেবনাং তাজু। ভিন্না প্রশাস্থান্য। মিন্দ্র ভাকনং বদ্ধ-গুদেশপার ক্রিয়াল্য,।।

নিক্তম প্রকশে স্বর্গলোহাদি-নিশ্মিত তুইমুগ্রিশিষ্ট নল, মুড়াদি স্বারা অভ্যক্ত করিয়া
প্রবেশ করাইয়া দিবে, পরে শুক্তম ও শুক্তরাদির চর্দ্দি অথবা বচ ও দেবদাকর ককের সহিত্ত
সিদ্ধতৈল, ঐ নলের অপর মুখ দিয়া পরিচালিত করিয়া নিক্তম প্রকশ পরিষক্ত করিবে
এবং মুগমার্গের পথ বাড়াইবার জন্ম তিন
দিন অন্তর অপেক্ষাক্ত স্থলতর নল
ঐরপে প্রবেশ করাইয়া দিবে। অন্তর প্রেয়াত্রর প্রবেশ করাইয়া দিবে। অন্তর প্রেয়াত্রন হইলে নেবনীস্থান ত্যাগ
করিয়া অন্তর্গরেবে। অন্তর্করণানন্তর এণবং
চিকিংসা করিবে এবং মিয় পথ্য দিবে। বছশুদ্দ রোগেরও এইরূপ চিকিংসা জানিবে।

সলিরুজ-গুদঃ।

্বগদকারণাখায়ুবিহতে। গুদশংশ্রিতঃ। নিকণদ্ধি মহাম্রোতঃ স্কাধারং করোতি চ ॥ মার্গজ্ঞ সৌন্ধাং কুড্রেগ পুরীধং তথ্য গক্তি। দ্যারক্ষ্মপুদ্ধ ব্যাধিমেতং বিভাগ স্কারণামু॥

মলবেগধারণ হেতু অপানবার কুপিত হটয়া মলমার্গকে ক্ষম্ভ প্রক্রমার-বিশিষ্ট করে। মলমার্গের অল্পজনিবন্ধন পুরীষ অভি কষ্টে নিগত হয়, ইহারই নাম সন্ধিক্ষণ্ডদ। ইহা অভি ভয়ানক।

সন্নিরুদ্ধগুদে তৈলৈ: সেকো বাতহরৈহিত:। তথা নিরুদ্ধপ্রকণ-ক্রিয়াপি ক্থিতাথবা। সন্ধিক্ষগুদে বাতন্ন তৈল খারা পরিষেক এবং নিরুদ্ধ প্রকশের স্থান্ন চিকিৎসা করিবে।

অহিপুতনম্।

শকুৰুত্ৰসমাযুক্তেহধৌতেহপানে বিশোভবেং। থিয়ে বাহস্ৰাপ্যমানে বা কণ্ডু রক্তৰফোডবা ॥ কণ্ডুয়নাথ ততঃ কিপ্ৰং ক্ষেট্টঃ প্ৰাবণ্ড জায়তে। একীভূতং ত্ৰণং ঘোৱং তং বিভাদহিপতনম্॥

শিশুদিগের গুহুদেশের সলমুত্র বা ঘর্ম ধুইয়া না দিলে, বা তাহাদিগকে সান করাইয়া না দিলে, ক্লেনহেতু ঐ স্থানে রক্তকফোদ্ধ কণ্ড্ জনিয়া থাকে। উহা চুলকাইলে সংসা ক্ষত হইয়া রক্তস্রাব নির্গত হয়। পবে ক্ষত সকল, মিলিত হইয়া অতি কইদায়ক ংইয়া থাকে ইহাকেই অহিপুতন কহে।

অহিপুতনকে পূৰ্বাং ধাত্ৰীস্তক্তং বিশোধয়েৎ। ত্ৰিফলাগদিরকাথৈত্ৰ গানাং কালনং হিতম ॥

অহিপূতন রোগে প্রথমতঃ ধাত্রীর (স্থাস্থারিনীর) স্তানহাগ্রের শোধন কবিবে এং ত্রিফলা ও থদিরের কাথ ধাবা বারংবার ক্ষত্র স্থান ধৌত কবিবে।

শশ্বদৌবারষষ্ট্রা হৈওল পং কালোগ্রহপুত্রে ॥

শমপুষ্পী, রদাঞ্জন এবং ষ্টেমধু ছাবা প্রলেপ দিলে অহিপুতন বিন্ট হয়।

করঞ্জ বিশ্বাতিকৈ: সর্পি: সিদ্ধং শিশোর্তিত্ব ।
রসাঞ্জনং বিশেষেণ পানালেপনরোহিত্য ।
(ভিক্তং চরকোক্তব্দিক্তকগণঃ, অক্তে তু পটোলপত্তমাহরিতি চক্রটীকা।)

করপ্রবীজ, গ্রিফলা ও চরকোক্ত তিক্তক-গণের (মভান্তরে পল্তা) সহিত দ্বত পাক করিয়া অহিপুতন রোগে ব্যবস্থা করিবে। ইহাতে রগঞ্জন খাওয়াইলে এবং তন্দারা প্রদেপ দিলেও উপকার দর্শে।

পটোলাদ্যং স্থতম্।

পটোলপত্রতিফলা-রসাঞ্চনবিপাচিতম্। পীতং মৃতং নিহস্তাণ্ড কুচ্ছামপ্যহিপ্তনাম॥ পল্ভা, ত্রিফলা ও রসাঞ্চন, এই সকল দ্রব্যের সহিত মৃত পাক করিয়া পান করিলে অতি কট সাধ্য অহিপূতনাও বিনষ্ট হয়।

র্ষপকচছ, %।

প্রানোৎসাদনহীনপ্ত মলো ব্যণসংস্থিতঃ।
যদা প্রস্তিত্য স্বেদাৎ কঞ্চ জনয়তে তদা ।
কঞ্চনাৎ ততঃ ক্ষিপ্রং স্ফেন্টিং প্রাবন্দ জায়তে।
প্রাক্তব্যক্তহং তাং গ্রেম্মক্রপ্রকোপজাম ॥

যে বাক্তি সান ও গাত্রমাজ্জন না করে, তাহার অপ্তকোষস্থিত মলা দর্ম দারা ক্লিয় হইয়া কণ্ণ উংপাদন কবে। উহা চুলকাইলে শীঘ্র ক্ষাও হইয়া আব নির্গত হয়। ইহাকেই ব্যাক্ত কহে। ইহা শ্লেম্বক্ত প্রকোপজ।

সর্জ্বণ্ডক্রষ্ঠিসক্ষবসিত্সিক্ষার্থিঃ প্রকল্পিতো যোগঃ। উষ্ঠ্রনেন নিয়তং শন্মতি বৃষণক্ত কঙ্তিম ॥ ভিষণ বৃষণকজুক্ত চিকিৎসেৎ পানরে'গবং। অহিপুতননির্দিষ্ট-ক্রিয়য়'পি চ তাং ২রেং॥

ধনা, বুড়, সৈদ্ধব ও খেতসম্প, এই দকল দ্বা পেশ। করিয়া ছদ্যাবা উত্তর্কা করিলে বুষণ-কচ্চু প্রশাসিত হয়। পাসা ও অহিপুতন রোগোক চিকিৎদা খাবাও ব্রণ-কচ্চ, বিনই হইয়া থাকে।

কাদীসরোচনাতুপ-হরিতার রসাঞ্জনৈঃ। অন্নপিষ্টেঃ প্রারোপাহয়ং বৃষণকচ্ছ, হিপুতয়োঃ॥

হীরাক্স, গোরোচনা, তুঁতে, হরিতাল, রসাঞ্জন, এই সমুদায় দ্রব্য কাজিতে পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে বৃষণকচ্চুও অহিপৃতন রোগ উপশ্যিত হয়।

छमञ्र्रा

প্রবাহণাতিসারাজ্ঞাং নির্গচ্ছতি গুদং বহি:। কক্তব্বলদেহক্ত গুদজংশং তমাদিশেৎ॥

অতিশর কুছন ও অধিক মলভেদ হেতু কৃষ্ণ ও তুর্বলদেহ ব্যক্তির গুদনাড়ী বহির্গত হইলে, তাহাকে গুদলংশ কহে। গুদলংশে গুদং স্নেহৈরভাজাণ্ড প্রবেশয়েৎ।
প্রবিষ্টে স্বেদয়েচ্চাপি বন্ধং গোক্ষণয়া ভূপন্।
(গোক্ষণা বন্ধবিশেষঃ, সাহি স্থান্টত প্রণলেপবন্ধবিধো ব্যক্তা। উক্তং হি বচ্চোগমনার্থং সচ্ছিদ্রেণ চন্মণা
কৌপীনবন্ধঃ কার্যাঃ।)

শুদভ্রংশ রোগে বহির্গন্ত গুদনাড়ীতে গব্য বসাদি মেহ মর্দ্দন করিয়া উহা প্রবিষ্ট করিয়া দিবে এবং প্রবিষ্ট হইলে ম্বেদ দিয়া গোক্ষণা নামক বন্ধনবিশেষ দারা বাধিয়া রাখিবে। (সচ্ছিদ্র চম্মদারা গুহুদেশে কৌপীন বন্ধন করাকে গোক্ষণাব্দ্ধ কহে)।

কোমলং পল্লিনীপত্রং যঃ খাদেচছকরান্বিভন্। এতমিশ্চিতা নির্দ্ধিয়ং ন তক্ত গুদনির্শনঃ।

যে ব্যক্তি কচি পল্পত্র বাটিয়া চিনের সহিত ভক্ষণ কবে, তাহাব আর গুদলংশ হয় না।

বৃক্ষ ধনিলচাক্ষেরী-বিশ্বপাঠ ঘৰ গ্রেজম্। তদেশ শালয়েৎ পায়ু-লংগাডেই হনলদাপনম্॥

মহাদা, চিতা, আমরুল, ওঠ, আক্লাদি ও গ্রক্ষার ইহাদের কর তক্ত সহ পান কবিলে গুদুজংশ প্রশ্মিত হইয়া অগ্নির দীপ্তি হয়।

গুৰুঞ্চ (ব্যবসন্না অক্ষয়েদবিশস্থিতঃ । ভুষ্পবেশো ওদলংশো বিশত্যান্ত ন সংশয় ॥

গব্যবদা ধারা মক্ষণ করিলে জ্প্রবেশ্য গুদনাড়ীও শীল প্রবিষ্ট হয়।

भ्विकार्गाः वनान्धिन'न्याः नमाक् धाल्यमम् । विभ्रम्भिकभाष्टासम् ठायना स्वन्तम् स्वन्य ॥

ইন্নের চব্বি ধার। গুদনাড়ীতে প্রলেপ দিলে, অথবা ইন্দ্রের মাংস কাঁজিতে সিদ্ধ ও ম্বতভৃষ্ট করিয়া তদ্ধারা স্বেদ প্রদান করিলে গুগ্রংশ প্রশমিত হয়।

মূষিক। দশমূলানি গুঞায়াছভয়ং সমষ্।
অভাঙ্গাৎ ওক্ত তৈলসা গুণকাংশো বিন্তাতি ॥
বিনশ্যতি তথানেন গুণশূনং ভগশ্বম্॥

ইন্দ্রের মাংস ও দণমূল সমভাগে লইয়া ভাষার কাথ ও কক ধারা তৈল পাক করিয়া সেই তেল এক্ষণ করিলে গুদত্রংশ, গুরুশূল ও ভগক্ষর নিবারিত হয়। গোতৈলেনাভাক্ত: শীঘ্নং প্রবিশেন্নির্গতো গুদ: ।
গব্য বদা হারা অভ্যক্ত করিলে বহির্গত গুদনাড়ী শাঘ্র প্রবিষ্ট হইয়া যায়।

চাঙ্গেরী-মৃত্যু।

চাব্দেরীকোলদধ্যয়-মাগরকারসংযুত্রম্। হু ১৭ংক্ষিতং পেরং গুদলংশক্রজাপহৃম্। গুড়িস্কার[বঞ্জক্রে] শিষ্টস্ক প্রবিষয়তে ।)

ঘত /১ সের। আমক্রলের রস, শুক্ষ-কুলের কাথ, অস্ত্রদধি, এই ভিনটি দ্রবশদার্থ মিলিত /৪ সের। কল্পার্থ—শুঠ ও ধবক্ষার মিলিত /০ পোয়া। যথাবিধানে পাক কবিবে। এই ঘত পান করিলে শুদ্তংশ-জনিত বেদনা প্রশমিত হয়।

স্যিকাদাং তৈলম্।

ক্ষারে মহৎপঞ্জুলং মূৰিকামস্থ্ৰ জিতাম্। পঞ্জা তল্মিন্ পচেৎ তৈলং বাতস্মৌৰধসাধিতম্। গুদজংশ্মিদং তেলং পানাভাঙ্গাৎ প্ৰসাধ্যেৎ ॥

অপ্নাদিবজ্ঞিত মুষিকমাংস ৮ পল, বিবাদি
পঞ্চুল মিলিত হৈ সের, ছগ্ধ > 8 সের, জল ১২
সের, পাক করিয়া কেবল / 8 সের ছগ্ধ অবশিষ্ট
পাকিতে নামাইবে। এই কাপ এবং ভদ্দল্বাদিগণের কন্ধ সহ তৈল / ১ সের পাক
করিয়া সেই তৈল পান ও গুদ্দ্রংশ মন্দ্রন
করিলে গুদ্দ্রংশ রোগ উপশমিত হয়। শিবদাস বলেন— অন্নাদিবজ্জিত ইন্দ্র ১টা, ছগ্ধ
/ ৪ সের, পঞ্চমুল মিলিত / ২ সের, জল /৮
সের, একত্র পাক করিয়া ছগ্ধাবশেষ থাকিতে
নামাইয়া সেই কাথ ও ভদ্দার্বাদির কর সহ
তৈল পাক করিবে।

শৃকরদংষ্ট্রকঃ।

সদাহো রক্তপথাগুস্থুকপাকী তীব্ৰবেশনঃ। কভূমানু অরকারী চ স স্থান্তুকরদংষ্ট্রকঃ। ব্রহিদংষ্ট্রক (ব্রহিদাড়্)। এই ব্রোগে শ্রীরের তৃক্ স্থানে স্থানে পাকিয়া ক্ষত হয়, ঐ ক:তর প্রান্তভাগ রক্তবর্ণ হইয়া থাকে। উহা দাহ কণ্ডু ও তীব্রবেদনাযুক্ত এবং অরকারী।

রজনীমাকবমূলং পিষ্টং শীতেন বারিণা তুলাম্। হঞ্জি বিস্পাং লেপাদ্ বর'হনশনাহরয়ং ঘোরম্॥

হরিদ্রা ও ভীমরাজের মূল সমভাগে লইয়া শী**তল জলের সহি**ত বাটিয়া প্রলেপ দিলে, বিদপ ও **শ্করদং**ষ্ট্রক রোগ প্রশমিত হয়।

নাড়াচবীজকলঃ পীতো গব্যেন সপিষা প্রাতঃ। শময়তি শুকরদংষ্ট্রং সদাহপাকজনং গোনম্॥

নালিতার বীজ বাটিয়া গব্য স্থাতের সহিত প্রাতে সেবন করিলে দাহ, পাক ও জবোপ-দ্রবন্ত শূকরদেই রোগ উপশ্যিত হয়।

বিসপোক্তঃ প্রতীকার কাষাঃ শুকরদংইকে ॥

্শুকরদংষ্ট্রক রোগে বিসপের ন্যায় চিকিৎসা বিশেষ।

অমৃতাক্ষর-বটী।

জম্ভং পারদং গজং লৌহমঞ্চ শিল্ডিডু।
স্বন্ধান্ত্র বঁটাং কুমান্দ্রির মৃত্যু স্থস।
ক্রাম্বাক্তির মৃত্যু স্থস।
ক্রাম্বাক্তির স্থান্দ্রির মৃত্যু স্থান্দ্র স্থান স্থান স্থান্দ্র স্থান্দ্র স্থা

বিষ, পারদ, গধ্বক, লোহ, অল ও শিল:জতু, এই সমুদায় সমান ভাগে লইয়া গুলঞ্জের
রসে মাজিরা ১ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে।
অকুপান—আমলকীর রস। ইহা সেবন
করিলে বিবিধ কুজুরোগ, পিত্র ও রক্তের
প্রকোপ অকুপীড়া সমস্ত নিতৃত্ত হইয়া পুষ্টি,
কান্ধি, মেধা ও শুভ মতি উৎপন্ন হয়।

চন্দ্রপ্রভারসঃ।

চন্দ্ৰপ্ৰভাং ভূগাকীরীং সৈন্ধবঞ্চ শিলাক্ত । কৌশিকঞাক্ষানস্ত হেমানং রৌপামজকম্॥ কান্দিকং শাণমাত্রঞ্চ মধুনা পরিমর্দ্ধয়েও। ততো বিবল্নমানেন বটিকাঃ পরিকল্পয়েও॥ জনুপানবিশেষেণ যোজিতোইয়ং মহাবসঃ।
সক্ষান কুজগদান হস্তি প্রমেহানপি হস্তরান ॥
বাতব্যাধীনশেষাংক পিত্রান কফসন্তবান্।
চিব্রপ্রমন্ত্রিক দাপয়েজ্নয়েদ্বলম্॥

সোমবাজী বীজ, বংশলোচন, সৈত্ধবলবণ, শিলাজতু ও প্রগ্ গুলু প্রত্যেক ২ তোলা; স্বর্ণ, বোপা, অল ও স্বর্ণমান্ধিক প্রত্যেক॥। তোলা; এই সমস্ত দ্রব্য মধুর সহিত মাড়িয়া ৪ রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। বাাধি ও দোষাদি বিবেচনা করিলা অনুপান ব্যবস্থা করিবে। ইহা সেবন করিলে বিবিধ ক্ষুদ্রোগ এবং প্রমেহ প্রভৃতি নানা পাড়ার শাস্তি হয়।

নপ্তছণাদি-তৈলম।

সংগ্রহণ বাসংখ্যে পি মেন্দ্রস্য চাপ্তসা।
বিভাগপুর প্রেচর করি নিশান প্রিফালিটেক। ল ব্যামিক্রস্থাস্থ্য – প্রিক্তি চ্ছনাগ্রিন। ল গোম্ভাস্যাকল দ্বা শবৈশ্চ চ্ছনাগ্রিন। ল প্রিল্কিন্টকর চিথ্ন ক্রন্থ ব্যক্ষীলেকে। জ্যাক্রক্তক্তিক ব্যক্তিশাশ্চ বিদ্যালয়ে ॥

তিলতৈল /ও সের। ছাতিমছাল, বাদকছাল ও নিসছাল ইছাদের কাথ মিলিত
১৬ সেব। কক যথা—হরিদ্রো, দারুহরিদ্রো,
হরীতকী, জামলা, বহেড়, শুঁঠ, পিপুল,
মারেচ, ইশুযব, মঞ্জিটা খাদিরকাচ, যবক্ষার ও
সৈন্ধব মিলিত /১ সেব। গোমুত্র ১৬ সের।
মৃত্র অগ্রিতে পাক করিবে। ইছা মদন করিলে
পদ্মিনীকণ্টক, চিপ্লা, কদর, ব্যঙ্গ, নীলিকা,
ভালগদত ও বিবিধ হগ্রোগ নিরাক্ত হয়।

क्क्रुगामि टेडलग्।

কুল্মেন নিশাভ্যাঞ্ দণয়া বহিবারিণা।

য়ৢঽ৻ পরং নিরার গালালিকাং মুগদূলিকামু ॥

দিগাদীং পুগ গদানু সর্কান ব্যাধীন কফসমুন্তবান্।

শিরোহর্তিং নাশয়েচচাশু লাবগাং জনয়ে পরম্॥

য়গতামুপকারায় দশ্রভাং বিহিত্তিদম্।

পানেহভ্যকে তথা নস্যে মুক্তা যোজাং বিচক্ষণৈঃ।

মুচ্ছিত দ্বাত /> সের। চিতামুলের কাপ /৪ সের। ককাপ—কুত্বন, হরিদ্রা, দারুহরিদ্র এবং পিপুল প্রত্যেক ৪ তোলা। এই মৃত ব্যব-হাবে নীলিকা, মুখদ্যিকা, সিগ্ন প্রভৃতি ত্বগ-রোগ, সমস্ত কফজ ব্যাধি ও শিরোরোগ বিনষ্ট হয় এবং মনোহর কান্তি উৎপন্ন হয়। ইহা বিবেচনামত পানে অভাঙ্গে ও নতে প্রযোজা।

সহাচরঘুত্র ৷

সংচরত্ল কাথে কাথে চ দশমূলজে।
শিরীমন্ত ক্ষারে চ হাতপ্রস্থা বিপাচরেৎ দ ক্ষান্দরা পঞ্জোলা ক্রিমিয়ং পট্পঞ্জম।
ক্ষারক্রয়ং স্প্তিকালাং-সিন্দুরমপি গেরিকম্।
হস্তাদেতদ্ হাতং স্তান্তং নালিকাং তিলকালকম্।
অসুলীবেস্ত্রকং পদে-সারীক মুগদ্বিকাম্।

গবালত /৪ সের। কাথার্থ—পীংকাটি ১২॥• সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। দশম্ল মিলিত ১২॥• সের, জল ৬৪ সের, জল ৬৪ সের, জল ৬৪ সের, লেষ ১৬ সের। শিরীষ্টাল ১২॥• সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। কর্কার—পিপুল, পিপুলমূল, চই, চিতামূল, শুঠ, বিড্লা, পঞ্চলবণ, ঘবকার, সাচিক্ষার, সোহাগা, বিছাটামূল, মেটেসিন্দুর ও গেরিমাটা মিলিত /১ সেব। ঘথাবিদি পাক ক্রিবে। এই ত্বত মদ্দন ক্রিলে গ্রন্ড, নীলিকা, তিলকালক, অঙ্গুলীবিষ্টক, পান্দারী ও মুগদ্বিকা নিবানিত হয়।

ক্ষারয়ত্য ।

মুক্কং কুচনং গুঞ্জাং চিত্রকং কদলীং বৃষম্।
অকল্পু আবপামার্গমেখনারং বিভাতকম্ ॥
পলাশং পারিভন্তক নক্তমালক সন্দহেং।
ততঃ প্রস্থং সমাদায় কারক্ত বড়ংগুলালা।
ক্রিসেপ্তর্ডো বিপ্রাব্য পচেং সপিগুলম্না।
কন্ধং ক্রারক্রয়ং দক্ষা নাতিতীবেণ বহিনা॥
ক্রারস্পিরিদং হস্তাক্ষশকং তিলকালকম্।
প্রিনীক্টকং চিপ্রমলসং দক্রানিগ্রনী॥

ঘণ্টাপারুল, কুড্চি, কুঁচ, চিতা, কদলী, বাসক, আকন্দ, মনসাসিজ, আপাঙ্গ, করবীর, বহেড়া, পলাশ, পালিধা ও করঞ্জ ইহাদের গাছ থগু থগু করিবে এবং সমান সমান ভাগে লইয়া একতা দগ্ধ করিবে। পরে এই ভন্ম /২
দের, ১২ দের জ্বলো গুলিয়া ক্রমান্তরে ২১
বার চাঁকিবে। এই ১২ বার সের ক্ষারজল
এবং যবক্ষার, সাচিক্ষার ও সোহাগা মিলিত
/১ দের কল সহ /৪ দেব গ্রায়ত অনতিতীব্র অগ্নিতে পাক করিবে। এই ঘৃত মন্দ্রনে
মশক, তিলকালক, পদ্মিনীকটেক, চিপ্প,
অলস, দক্ত ও সিশ্ম রোগের শাস্তি হয়।

অথ সহেতুকান্ সলক্ষণান্ কতিচিদ্বিকারানাহ—

শক্ত চাপানুৎসাঠ, কথাণালজনুচাতে।
অবাস্থাং চিন্তরাতার্থনাত কথাতে ব্ধে: ॥
ধংবিজারং ন নির্গান্তেই প্রদেকটাবনেরিকা।
প্রদারং পীড়াতে চাজ তমুহাকণ বিনিন্দির্যং ॥
বঙ্গে, মধুরতা তলা ক্রমোন্তেরহন জনা।
ন চারং পোচতে যথা থানিং তক্ত বিনিন্দির্যং ॥
ধানেরাক্রক্ষণালুহ্বগদ্মান্তিক শ্রমান্তবাই।
ধনানকোপ্রাহারস্থানিত নির্বাহ ।
ধনানকোপ্রাহারস্থানিত নারেবই।
ধনানকোপ্রাহারস্থানিত বিভাগে ॥
ধনানকোপ্রাহারস্থানিত বিভাগিত ভামান্তবাই।
ধনানকোপ্রাহারস্থানিত বিভাগিত ভামান্তবাই।
ধনানকোপ্রাহারস্থানিত বিভাগিত ভ্রমান্তবাই।
ভাগেটোপো ভড়ভ্রমানক প্রোভাগিত ব্রব্যঃ ॥
ভামান্তবাক্র বিভাগিনা বিভাগিত ব্রব্যঃ ॥

কার্যা কারতে সমর্থ হইয়াও উৎসাহ-হইলে, সেই উৎসাহ-বিহীনভাকে আলিস্ক্রে। অভান্ত চিন্তা ধারা যে অস্বাস্থ তাথাকে অরতি কহে। ভুকার যদি উৎক্রিষ্ট অর্থাৎ বহিগমনোল্য হইয়াও বহিগত না ১য়. क्रिक पूर्वातिक अ निर्मेतन इंटेंड **या**क এবং হৃদয়ও বৃদি পার্ডিত ২য়, তাহা হইলে তাহাকে উৎক্লেশ বলা যায়। মুখমাধুৰ্য্য, তক্ৰা, হৃদরের উদেইন, লগ ও অরে অক্চ হইলে, তাহাকে মানি বলে। মানি, ওজ:ক্ষন, তঃখ, অজীৰ্ণ ও শ্ৰমজনিত উদান বায়ুৱ প্ৰকোপ এবং আহারের হাত্ত্ত্ত হেতু বায়ুর যে উর্দ্ধগমন, তাহাকে উদ্যার কহে। উদরের যে গুডগুড শব্দ তাহাকে আটোপ কঃ। যায়। তমঃস্থিত ব্যক্তির, যে জ্ঞান অর্থাৎ কেবল অন্ধকার দর্শন, তাহাই তমঃ বলিয়া অভিহিত হইয়া থাকে।

শ্যাসূত্র-চিকিৎসা।

কু ১মূর'র ভূডাপ-মূদমাক্ষা থোলকে।
সংভজন মধুদ পিতাং লেংরেগুরি ১২ জনম্।
শ্যারাং মূররোধঃ স্থান্মূরিত স্থান সংশয়ঃ ।
(শ্যাতিল স্থিমিত মুক্তিকাং সৃহীয়া খোলকে ভজ্রিয়া স্থান্ধভাং লেহরেও)।

যে ব্যক্তির শ্যার প্রস্রাব করা রোগ পাকে, তাহার শ্যাতলস্থ মূ্ত্রসিক্ত মৃতিকা খোলায় ভাজিয়া দ্বত ও মধু সহ তাহাকে অব-লেহন করাইলে উক্ত রোগ নিবারিত হয়।

বিশ্বনুলরদঃ পানাছেয়া।মূত্রঃ প্রণাম্যতি ॥

তেলাকুচা মূলেব রদ ২ তোলা মাতায় (২ মাষা চিনি সহ) সায়ংকালে পান করিলে শ্যামুত্র নিবারিত হয়।

অভিক্রেপরে'লেণামূ বরে'বো ভবেদ্ করম ॥

সায়ংকালে (অদ্ধ বা এক রতি মাঞায়) অহিফেন সেবন করাইলে নিশ্চয়ই শ্য্যামূত্র নিবারিত হয়।

লোমশাত্র-বিধিঃ।

হরিতালচূর্ণকণিকালেপাৎ তত্তেন বারিণা সন্তঃ। নিপভ্তি লোমনিচয়াঃ কৌতুক্মিদমভূতং মস্তে॥

উফজেলে হবিতাল চ্ব নদন করিয়া লোম-হানে লেপন করিলে সভঃ লোম দকল পতিত হয়। ইছা অতি বিশায়কর।

দধ্য শৃত্যা কিপেন্নস্থাবরদে তচ পেষিত্য। ভুল্যালং লেপতো হন্তি লোম গুফাদিসস্থাম।

শৃভাভত্ম ও হরিতাল কদলীর রসে মর্দন করিয়া লেপন করিলে গুহাদি স্থানস্থ লোম সকল নিপতিত হয়।

রক্তাঞ্চনীপুচ্ছচূর্ণং যুক্তং তৈলন্ত সার্বণম্। সপ্তাহমুবিতং হস্তি মূলগঞোমাণাসংশয়ম্॥

রক্তবর্ণ অঞ্জনীর (আঞ্জিনার)পুঞ্ছ চুর্ণ কহিয়া ৭ দিবদ সর্বপ তৈলে ভিজাইয়া রাথিবে। ইহা লোমস্থানে লেপন করিলে লোম সকল মমুলে উৎপাটিত হয়।

> পলাশভক্ষাধিতভালমূলৈ-বভাপুমিশৈকপলিপ্য ভূষ:। কন্দর্পগেহে মুগলোচনানাং রোমাণি রোহস্তি বদাপি নৈব ॥

পলাশভাল ভন্ম ও হবিতাল সমভাগে কদলীমূলের রসে উত্তমরূপে মাড়িয়া লোম-স্থানে লাগাইলে লোম সকল সকর পতিত ইয়া কথনও উদ্ধাত হয় না।

একঃ প্রদেয়ো হরিতালভাগঃ
পক প্রদেয়া জলজন্ত ভাগাঃ।
রক্ষন্তরোর্ভন্মন এব পক
গোক্তান্টভান এব পক
গোক্তান্টভান ভাগাঃ কদলীজলাটাঃ।
সংমিশ্রা পারের চ সপ্তরাত্রং
কুতা ন্মর্থার বিলেপনক।
রোমাণি সকাণি বিলাসিনানাং
পুন্ন রোহান্তি ক্লাচিদ্রের চ

হরি হাল ১ ভাগ, শুজান্তম্ম ৫ ভাগ, পলাশক্ষার ৫ ভাগ, এই সমুনায় জব্য ৭ দিন কদলীর রসে ভিজাইয় রাণিয়া ভাহা লোম-স্থানে লেপন করিলে লোম সকল নিপভিত ইইয়া থাকে।

> রপ্ত'জনে সপ্তদিনং বিজ্ঞান্য জন্মানি কংছাম হিণানি পন্চাং । তালেন যুক্তানি বিলেপনেন লোমানি নিমু লয়তি কংগন ॥

শঙ্গাভত্ম কদলীর রসে ৭ দিন ভাবনা দিয়া পরে হরিভাল সহ মিশ্রিত করত তথারা লেপন ক্রিলে লোম সকল নিযুলি হয়।

কুস্বভাতলাভ্যকো বা রোমান্ৎপাটকোগ্যুক্ৎ।
লোমস্থানে কুস্থমতিল মৰ্দ্দন করিলে লোম সকল উৎপাটিত হয়।

কপুরভলাতকশগুচ্ণং ক্ষারো ধবানাঞ্চ মনঃশিলা চ। তৈলং ফুপকং হরিতালমিশ্রং রোমাণি নিমুলয়তি ক্ষণেন । কুপূব, ভেলার মৃটি, শঙাচুণ

কপূৰ, ভেলার মৃটি, শঙাচুৰ্ণ, যবকার, মনছাল ও ১রিতাল এই সম্লায়ের সহিত সিদ্ধ ভৈল লোমস্থানে লেপন করিলে লোম সকল নিশ্মূল হইয়া থাকে।

কারতৈলম্।

শুজিশম্কশথানাং দীর্ঘৃত্তাং সমুদ্ধকাং।
দক্ষ্যা ক্ষারং সমাদায় প্রমূত্ত্বেণ ভাবরেং।
ক্ষারাষ্ট্রভাগং বিপচ্ছেই তৈলং বৈ সার্থণং বৃধঃ।
ইদমন্তঃপুরে দেয়ং তৈলমাত্রেয়পুজিতম্॥
বিন্দুরেকঃ পতেদ্যতা তাং লোমাপুন্তবং।
মদনাদিরণে তৈলম্মিশ্রাং প্রিকার্ত্তিম্॥
অর্শনিং কুঠবোগাণাং পামাদক্রিচিতিমন্।
কারতৈল্নিদ্ধ শ্রেষ্ঠ দ্বিক্রক্রজাপ্তম॥

বিষ্কুক, শামুক ও শন্ধানতম্ম, গ্রোনা ও বণ্টা-পারুলির ক্ষার গর্দ্ধতের মূত্রের সহিত মিশ্রিত করিয়। টাকিয়া লইবে। পরে ক্ষারের অষ্ট-ভাগ সর্বপ তৈলের সহিত উহা পাক করিবে। ইহা দারা লোমপাতন ও অর্শ:, কুন্ঠ, পামা, দক্ত প্রভৃতি অনেক পীড়ার শাস্তি হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবি**ধিঃ।**

কু জরে'গেষু সর্কোর নানারোগাতৃকারিরু। দোষান্ দৃষানিবস্থাত নিরীক্ষ্য মতিমান্ ভিষক ॥ ১৯৯ ডেও চ রোগন্ত পথাপেথ্যানি সর্কাশঃ। বথাদেশিং যথাইটং যথাবস্তুক কর্মের ॥

নানবিধ রোগের অনুকানী কুমরোগ-সমূহের দোষ, (বার পিত্ত কল), দূরা (রসণ রক্তাদি) এবং রোগির অবস্থা অবলোকন পূর্মক বৃদ্ধিমান্ চিকিৎসক দেই দেই রোগ-সমূহের দোষ, দূর্য এবং অবস্থা অনুসারে পথা ও অপণ্যের নির্দ্ধারণ করিবেন।

ইত্যায়র্কেদ্-সংগ্রহে ক্ষুদ্রোগাধিকার:।

অথ মুখরোগাধিকারঃ।

অথোষ্ঠগতমুখরোগ নিদান ।

আনুপণিশিভকীর-দ্ধিমংস্তাতিদেশনাং।
মুগমধ্যে গদান কুর্যঃ কুদ্ধা দেশেঃ কফোন্তরাঃ॥
কর্কশো পদ্ধান স্থান্ধান সংপ্রানিলবেদনো।
দালোতে পরিপাটোতে ওঠো মান্ততকোপতঃ॥
চীয়তে পিড়কাভিন্চ সক্ষজাভিঃ সমস্ততঃ।
সদাহপাক পিড়কো পীতাভাসো চ পিত্তঃ॥
সদর্গভিক চীয়েতে পিড়কাভিরবেদনো।
ভবতত্ত্ব কফাদোঠো শিক্তিনো শাতনো গুরু॥
সক্তক্কো সকুৎপীতো সকুচ্ছেন্তো ভবৈব চ।
সদ্ধিপাতেন বিজেয়াবনেকপিড়কাচিতো॥
থক্ষ্রকলবর্ণাভি পিড়কাভিনিপীড়িতো।
রক্ষোপ্রতী ক্ষরিং স্রবতঃ শোবিত্রতে।
ভক্ত প্রকা মাংসক্রেটা মাংসপিওবহুলাতো।
ভক্ত প্রকা মাংসক্রেটা মাংসপিওবহুলাতো।
ভক্ত প্রকা মাংসক্রেটা মাংসপিওবহুলাতো।

দপিন ও প্রত্যকাশে নিদদা কণ্ডরে ওজ।
অস্ত্য ক্ষিক্ষক শৈমাপ্রাব্য প্রব্যা ভূশন্॥
তরোত্র গোন সংবোহন্দুত্তঞ্জ ন গচছতি।
গুঠি প্রাবদীয়েতে প্রেটিতে চাভিগাততঃ ॥

আন্প মাংস, ক্ষীর, দধি ও মংস্তের অভি সেবন হেতু বাতাদি দোষ কুপিত হইয়া মুখ্যমধ্য নানাবিধ রোগ উৎপাদন করে। মুখ্যোগে কলেরই বিশেষ প্রাধান্ত থাকে।

বাতজ ওঠরোগে ওচন্দ্র কর্কণ, কৃক্ষ, জড়বৎ, ভোনাদি-বাতবেদনাযুক্ত ও অত্যস্ত ব্যান্তি হয় এবং ওঠের স্বক্ ফাটিয়া যায়।

পিত্তদ্ব ওটরোগে ওট্রম্ম পীতাভ ও বেদনা-দায়ক পিড়কাসমূহে ব্যাপ্ত হয়। সেই সকল শিড়কা পাকে ও দাহ উপস্থিত করে। কফজ ওঠাবোগে ওগুরর শীত**ল ওরু** পি,ছিল কণুসূক্ত ও বেদনারহিত হয় এবং ওঠ-সমবর্ণ পিড়কাসমূহে ব্যাপ্ত হইয়া থাকে।

তিদোসজ ওঠরোগে ওঠার কথন কৃষ্ণ, কখন পীত, কখন বা খেতবর্ণ হয় এবং নানাবিধ পিডক হারা আকীণ হইয়া থাকে।

রক্ত প্রকোপজ ওংবোগে ওট্ছল, শর্জ্ব-ফালের ক্যায় বর্ণাবশিষ্ট পিড়কা দারা আকীর্ণ ও বক্তবর্ণ হটয়া রক্তশাব করে।

মাংসদোষজনিত ওইরোগে ওইবয় গুরু স্থল ও মাংসপি এবং উন্নত হয় এবং ওই-প্রান্তব্যে ক্রিমি জন্মিয়া ক্রমে বন্ধিত ইইতে থাকে।

্নদোজনিত ওঠনোগে ওঠবয় গুরু ও কঙ্গুক্ত এবং ঘতের উপবিতন বচ্চভাগের ভায় রূপবিশিষ্ট হয়। ইহা হইতে ক্টিকের ভায় নিশ্মণ সাব নিরস্তব নিঃস্তে হইতে থাকে।

অভিষাত্ত ওঠনোগে ওঠনর বিদারণবং ও কুঠারখিতিবং বেদনাসূক্ত হয়।

অথেষ্টেরোগাণাং চিকিৎসা।

ওছগনে পে বাং গথে শাখণে নাপনাইনম।
মন্ত্রিকে চৈর নক্তে চ তৈলং বাহহরৈ গুওম।
পোলাংভাঙ্গং বেহপনেং রসায়ননিংহেষাতে।
বাজনিত ওঠরোগে শাখল ফেল (বাতব্যাধিতে উক্ত হইয়াছে) দ্রবা দ্বারা উপনাহ
এবং ভদ্রলার্কাদি বাতায় ঔষধের সহিত
সিদ্ধ তৈলের শিরোবস্তি ও নস্ত ব্যবস্থা
করিবে। ইহাতে স্থেদ, অভ্যঙ্গ, স্নেহপান ও
রসায়ন (চ্যবনপ্রাশাদি) ক্রিয়া হিতকর।

চতুৰিংধন থেংনে মধ্চ্ছিষ্টযুতেন চ। বাতজেংভ্যঞ্জনং কুৰ্যান্নভাবেদক বৃদ্ধিনান্।

ৈত্ব, ঘত, বদা ও মজ্জা এই চারি প্রকার স্নেহের সহিত মোন্ মিশ্রিত করিয়া তদ্ধারা অভ্যঞ্জন করিলেও নাড়ীম্মেদ দিলে বাতজ ওঠরোগ প্রশমিত হয়। (নাড়ীসেনের বিষয় পুর্বে লিখিত হইয়াছে।)

শ্রীবেষ্টকং সর্জনসং: গুগ গুলুং কুরনার চ। ষষ্টীমধুক্চর্ণ বিদধ্যাৎ প্রতিসারণম্॥

নবনীতগোটি, ধুনা, গুগ গুলু, দেবদার ও ষ্টিমধু, এই সকল দ্রব্যের চূর্ণ ভট্টে গাঁরে ধীরে মুর্যণ করিবে।

> তৈলং মৃতং সর্জ্রসং স্পিক্ষং রাধান্তড়ং সৈন্ধনতৈরিক্ল। পজনু। সমাংশং দশনচ্ছদানাং তুর্ভেদহন্ত বৰ্বোপ্লঞ।

তৈল, স্বত, ধুনা, মোন্, রাসা, গুড়, সৈন্ধব ও গেরিমাটা, প্রত্যেক সমভাগে লইয়া পাক করিবে। লেহবৎ ঘন হইলে নামাইবে। ইহার প্রালেপ দিলে ওছের ইগ্ডেদ ও ক্ষত প্রশমিত হয়।

> রালং মধুচ্ছিন্টগুড়েন প্রকং তেলং যুতং বা বিনিহ্নিত লেপাৎ। ত্বতোদপারুবাক্সজোহবর্ম পুরাক্রোড় প্রাক্সিথা প্রস্ঞান

মোম্ ও গুড়েব সহিত ধূনা, তৈল বা ঘুত পাক করিয়া তাহাব প্রলেপ দিলে ওঠের স্চীবেধ্বৎ বেদনা, পারুষা, বাপা ও পুয়বক্ত-স্তাব প্রশ্মিত হয়।

> বেধং শিরাণাং বমনং বিবেকং তিক্তক্ত পানং রসভোজনক শীতান প্রলেপান্ পরিবেচনঞ্ পিত্রোপক্টেম্বধরের ক্যাং ॥

পৈছিক ওষ্ঠ রোগে সমীপস্থ শিরাবেদ, বমন, বিরেচন, তিক্ত ত্মত পান, মাংসরস সহ আহার, শীতল প্রলেপ ও পরিষেক, এই সম্-দায় কার্য্য কর্ত্তব্য।

পিত্তরস্তাভিষাতোথান্ জলৌকাভিক্সপাচরেৎ। পিত্তবিদ্রধিবচ্চাপি ক্রিয়াং কুয়াদশেষতঃ।

পিত্ত রক্ত ও অভিঘাত জনিত ওঠরোগে কেলোকা শারা রক্তমোক্ষণ এবং পিত্তবিজ্ঞধির ভার চিকিৎসা করিবে।

缴

শিরোবিরেচনং ধুম: বেদঃ কবড়ধারণম্।
ছতে রক্তে প্রবোক্তব্যমোষ্ঠকোপে কফান্সকে।
কফজ ওঠরোগে রক্তমোক্ষণ করিয়া
শিরোবিরেচন (নস্তাদি), ধূম, স্বেদ ও
কবলধারণ এই সকল ক্রিয়া কর্ত্তব্য।

ত্রিকট্: সর্জ্ঞিকাক্ষার: ক্ষারক্ত যবশ্বজ:। কৌন্তবৃত্তং বিধাতব্যমেতচ্চ প্রতিসারণম্ ।

ত্রিকটু, সাচিক্ষার ও যবক্ষার, এই সকল দ্রব্য মধুমিশ্রিত করিয়া ৬ঠে প্রতিসারণ অর্থাৎ মৃত্র মৃত্র ঘর্ণণ করিবে।

মেদোকে স্থেদিতে ভিন্নে শোধিতে জননো হিচঃ। প্রিয়কু ত্রিফলা লোধং সক্ষোজং প্রতিস'রণম্। হিতক ত্রিফলাচ্পং মধ্যুক্তং প্রলেপনম।

মেদোজনিত ওচরোগে স্বেদ, তেন ও শোধনক্রিয়ার পর অগ্নিতাপ হিতকর। প্রিয়ঙ্গ ক্রিফলা ও লোধ ইহাদের চূর্ণ মধুমিশ্রিত করিয়া প্রঠে প্রতিসারণ করিবে এবং মধুমংযুক্ত ক্রিফলা-চূর্ণের প্রবেপ দিবে।

সজ্জনসকনকগৈরিকধ্যাক্তলম্বতসিমুসংযুত্র। সিদ্ধা সিক্থকমধ্যে পুটিতোচ্টিতে রশং হরতি॥ (কনকগৈরিকমৃৎকৃষ্টগৈরিকমিতার্থঃ।)

ধুনা, উৎকৃষ্ট গেরিমাটা, ধনে, তৈল, স্বত, সেন্ধব ও মোন, একত্র অল পাক কবিয়া ভাষার প্রলেপ দিলে ওচক্ষত নিবারিত হয়। প্রিয়ক্ষক মুখ্যা চ ত্রিকলা চ প্রলেপনম্॥

ভ্রহ্ণতে প্রবন্ধু, মুতা ও ত্রিফলার প্রলেপ প্রদান করিবে।

. ও নোগেদশেষের দৃষ্ট্য দোষস্পাচরেৎ।

শুরু এপতং যাতের এণবং সম্পাচরেৎ।

বিদ্যান্ত ওচকতে দোষের বলাবল দেথিয়া

চিকিৎসা করিবে। তাহা পাকিলে এণ

চিকিৎসাক্ত ঔষধ ব্যবস্থা করিবে।

অথ দন্তবেইগতরোগ-নিদানম্।
শোণিতং দন্তবেইভো যক্তাকসাৎ প্রবর্ততে।
ছর্গৰীনি সকুকানি প্রয়েলীনি মৃদুনি চ ।
দন্তনাংসানি শীর্যান্তে পচন্তি চ পরস্পরম্।
শাঙাদো নাম স ব্যাধিঃ কফলোণিতসভবঃ ।

দম্বোজিগুবা যক্ত ব্য়পুজায়তে মহান্। দত্ত পুরু টকো নাম স ব্যাধি: কফরক্তজ: H অবস্তি পৃষক্ষধিরং চলা দন্তা ভবস্তি চ। দম্ভবেষ্টঃ স বিজ্ঞেয়ো ছষ্ট্রশোণিতসম্ভবঃ ॥ वरपूर अमृत्वम् क्रकावान् ककत्रक्रकः। লালাম্বাবী স বিজ্ঞেয়: পৌষিরো নাম নামতঃ॥ **দন্তান্ত**লম্ভি নেষ্টেভান্তালু চাপ্যবদীর্যাতে। यित्रम् म नर्काः जा वार्षिय हात्भीवित्रमः छिटः ॥ দক্তমাংসানি শীষ্যকে যশ্মিন জীবতি চাপ,কক। পিত্তাস্ক্ৰফজো ব্যাধিজে য়ং পৰিদরো হি সং ॥ নেপ্তের দাহঃ পাকক তাত্যাং দপ্তাকলন্তি চ। য**িম**ন্ সোপ**কুলো নাম পি**ত্রক্তকতো গঢ়: ॥ যুষ্টের দওমাংসের সংরক্ষো জায়তে মহান্। চলা ভবন্তি দত্তাশ্চ স বৈদর্ভোহভিষাতকঃ॥ মারুতেনাধিকো দর্গে জায়তে ভারবেদনঃ। গলিবদ্ধনসংজ্ঞাহাসী জাতে ক্লুক চ প্রশামাতি॥ শলৈঃ শলৈঃ প্রকুক্তে বাবৃদ্ভিদমাশিতঃ। করাল'ন্ বিকটান্ দস্তান্ করালো ন স সিধাতি॥ হানব্যে পশ্চিমে দত্তে মহানু শোখো মহাক্ষজ। ল'লাশ্র'বী কফকুতো বিজেয়ঃ দোহবিদাংসক: । দত্রমূলগ্র। নাড্য: পঞ্জেয়া যথেরিতা: । लोबाम'लियन कडा यक नटख्यू आंग्रह। দালনো ন'ম স বাাধিঃ সদাগতিনিমিভজঃ॥ কুক্চিদ্রকলঃ স্রাবী সসংরক্ষে মহাক্ষজঃ। গ্রিমিভরুরো বাতাদ্বিজ্ঞেয়ং ক্রিমিগুক ॥ বকুং বনং ভবে**দ্যপ্ত দম্ভক্ষক** জ'রতে। কফৰাতকুতো বাৰ্ণি, সা ভঞ্জনকসংজি 🍪 🖡 শীভক্তপ্রধাতায়-স্প্রানাস্মহা বিবা পিওমাক্সতকে পেন দছহৰ সানামত 🖟 দ্ধুমাণ্ট্ৰম লক্ষাবৈধা ছাত্ত খ্যপুঞ্জি । সদাহককু অবেভিন্ন পৃষ্!সং দতুবিদ্রধিঃ॥ মলো দত্তগতো যস্ত পিত্র কেত্রোষ্টে। শর্করের থরম্পর্শা সা জেয়া **দন্তণক**রা॥ क्षारक्षिव मीयारक म्छानाः रेमव भक्ता। क्षामिक्कि विक्किश मनी मस्विमानिमी॥ অস্থ্রিশ্রেণ পিডেন দম্বো দম্বস্থশেষত।। শ্যাৰতাং নীলতাং বাপি গতঃ স শ্যাবদ্ভক ॥

শীতাদ নামক দপ্তবেষ্টরোগে দপ্তবেষ্ট (দাতের মাড়ি) হইতে অকস্মাৎ রক্তস্রাব হয় এবং দপ্তমাংস সকল ক্রমশঃ পচিয়া হর্গন্ধ, ক্রেদ্যুক্ত, ক্রফবর্গ ও কোমল হইয়া খসিয়া পড়িতে থাকে। কফ ও রক্তের ছিটি হেতৃ এই রোগ জলো। 4

ছুইটি বা তিনটি দাঁতের গোড়া অভ্যস্ত শোণযুক্ত হইলে তাহাকে দস্তপুপ্লুট কহে। ইহা কফরক্তজ ব্যাধি।

দস্তবেষ্টনামক রোগে দস্ত সকল নড়ে এবং তাহা হইতে পৃষ্ণক্ত নির্গত হয়। ইহা হুষ্টরক্তর পীড়া।

দাতের গোড়ায় যন্ত্রণাদায়ক শোগ জন্মিলে এবং তাহা হইতে পালা নিঃস্ত হইলে তাহাকে শৌষির কহে; ইহা কফরক্তজ।

যে রোগে, দক্তবেষ্ট হইতে দক্ত সকলের বিচলন এবং তালু দক্ত ও ওঠের ক্লিন্নতা হয়, ভাহাকে মহানৌষির কহে। ইহা ত্রিদোষজ।

যে রোগে, দস্তমাংদ দকল গলিত ও রক্ত নিঃস্থত হয়, তাহাকে পরিদর কহে। ইং। রক্ত পিত ও কফ্বিকৃতি হেতু উৎপন্ন হয়।

যে রোগে, দস্কবেষ্টে নাহ ও পাক উপস্থিত হয় এবং ঐ নাহ ও পাক নিবন্ধন দস্ত সকল পতিত হইতে থাকে, তাহাকে উপকুশ কহে। ইহা রক্তপিওজনিত ব্যাধি।

দস্তবেষ্ট ঘৃষ্ট হওয়াতে যদি প্রবল শোথ উৎপন্ন ও দস্ত সকল বিচ্লিত হয়, তাহা হইলে তাহাকে বৈদৰ্ভ কহে। ইহা অভিযাতজ।

বায়ুর প্রকোপ বশতঃ প্রবল যাতনার সহিত যে একটি অতিরিক্ত দম্ভ উঠে, তাহাকে থালবৰ্দ্ধন (আকেল দাত) কহে, এই দম্ভ উদ্যাত হইলে পর আর যন্ত্রণা থাকে না।

দক্তাশ্রিত কুপিত বায়ু দম্ভ সকলকে ক্রমে ক্রমে বিষম ও বিকটাকার করিলে তাহাকে করাল রোগ করে। ইহা অসাধ্য।

হরুকুহরের প্রাস্থান্তি দন্তমূলে অতি বন্ধুণা-দারক প্রবল শোথ হইয়া লালা নির্নত হুইলে তাহাকে অধিমাংস কহে। ইহা কফজ।

নাড়ীব্রণাধিকারে বাতজ পিত্তজ কফজ শীতা সন্ধিপাতজ্ঞ ও আগস্থজ এই পাঁচ প্রকার নাড়ী-ব্রুশের যে যে লক্ষণ লিখিত হুইর্মাছে, দস্তমূলেও করিবে।

সেই সেই লক্ষণাক্রান্ত পাচ প্রকার নাড়ী

দালন নামক দন্তরোগে বোধ হয় যেন, দন্ত সকল বিদীর্ণ হইয়া যাইতেছে, এইরূপ যম্বণা উপস্থিত হয়। ইহা বাতন্ধ ব্যাধি।

ক্রিমিনস্তক রোগে, দক্তে ক্ষণ্ডবর্ণ ছিদ্র হয়, দক্ত নড়ে এবং দন্তমূলে অতি বেদনাদায়ক শোথ লালাম্রাব ও অকস্মাৎ বেদনার আধিক্য এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়। এই রোগে বায়ুর প্রকোপ থাকে।

ভঙ্গনক রোগে মুখ বক্ত ও দস্ত ভগ হয়। ইহা বাতশ্লেজন বাধি।

দম্বর্থ গোগে দম্ভদকল, শীত ক্লফ বায়্-প্রবাহ ও অমুম্পশ সহা করিতে পারে না। ইহা বাতপিত্ত-প্রকোপজ পীজা।

দস্তমাংস ছুপ্ত এবং তাহা মল ও প্রাবযুক্ত হইয়া ভিতরে ও বাহিরে যে দাহ ও বেদনাযুক্ত শুক্ত শোধ উৎপাদন করে, তাহাকে দস্ত-বিদ্রাধি কহে। দস্তাবিদ্রাধি বিদীণ হইলে তাহা হইতে পুর রক্ত নিঃস্কৃত হয়।

দস্তগত মল, বায় ও পিতত দ্বারা শোমিত ইইয়া শর্করার শুায় খ্রস্পেশ ইইলে তাহাকে দস্ত-শর্করা কহে।

পেই দস্তশক্ষা, দশ্ববিষ্ক্ত সাহত খাপ্রার স্থায় বিদীর্ণ হইলে তাহাকে কপালিকা কছে। ইহা দস্তনাশক।

গ্রন্থ ও পিত থারা কোন দক্ষের সক্র অংশ দশ্ধবৎ ক্লফ বা স্থাববর্ণ হইলে তাহাকে শ্যাবদ্য কহে।

অথ দন্তবেষ্টগতরোগ-চিকিৎসা।

শীভাদে হাভরক্তে তু ভোয়ে নাগরসর্বপান্। নিঃকাপ্য ত্রিফলাঞাপি কুয্যাদ্ গভূষধারণম্॥

শীতাদ রোগে রক্তমোক্ষণ করাইরা ওঠ, সর্বপ ও ত্রিফলা ইহাদের কাথের গণ্ডুস ধারণ কবিবে। কাদীদলেণপ্রকৃষণামনঃশিলাপ্রিয়সুতেজোহ্বঃ। এদাং চূর্বং মধুবুক্ শীভাদে পুতিমাংসহর্য।

হীরাকস, লোধ, পিপুল, মনছাল, প্রিয়ন্থ ও তেজখল, ইহাদের চূর্ণ মধুমিশ্রিত কবিয়া লাগাইয়া দিলে শীভাদরোগে পৃতিমাংদ বিনষ্ট হইয়া থাকে।

তৈলং ঘৃতং বা বাতমং শীতাদে সম্প্ৰতিতে ॥
বাতম তৈল বা ঘৃত শীতাদবোগে হিতকর ।
কুঠং দালী লোএমকং সমলা
ততঃ পাঠা তেজনী পীতিকা চ।
চূণং শভং দৰণং তদ্যজানাং
রক্তপ্রবং হস্তি কভুং রক্তাক ॥

কুড়, দারুহরিদ্রা, লোধ, মৃত্রা, বরাক্রান্তা, আক্নাদি, চৈও হরিদ্রা এই সকল দ্রব্যের চূর্ণ ম্বারা দস্ত ঘর্ষণ করিলে রক্তস্থাব কণ্ণ ও বেদনা নিবারিত হয়।

দন্তপুগা,টকে কংযাং তরুণে রক্তমোক্ষণম্। সপঞ্চলবণকারঃ সকৌদ্রঃ প্রতিসারণম্।

দম্ভপুপ্পুটাবোগের তর্রণাবস্থার রক্তমোক্ষণ এবং মধুমিশ্রিত পঞ্চলবণ ও যবকার চ্পের প্রতিদারণ (ধীরে ধীরে ঘর্ষণ) কর্ত্তর।

ভদ্রমুক্ত ভর'কোম বিড্জারিষ্টপলবে। । গোমুক্রপিষ্টেগু ড়িকাং চারাগুদ্দ'ং প্রকর্মেৎ ॥ তাং বিধার মুখে ফুপ্যাস্তলদন্তাতুরো নরঃ। নাত্য প্রতরং কিঞ্চিলদন্তক্ত ভেষজম্ ॥

ভদ্রন্তা, হরীতকী, ত্রিকটু, বিভৃত্ব ও নিম-পত্র এই সমুবায় দ্রব্য গোম্ত্র বাটিয়া বাটকা প্রস্তুত করিয়া ছারায় শুক্ষ করিবে। নিদ্রা-কালে এই বটা মুগে ধারণ করিয়া নিদ্রা বাইবে। ইহা চনদক্তের অতি উৎকৃষ্ট ঔষধ। চলদ্ভভিত্রকরং ক্যাং বকুলচ্ধণিয়।

বকুল ফল চৰ্বণ করিলে চলণন্ত দৃচ হয়। করঞ্জকরবীরাক-মালভাকরুভ্সেনঃ:

मञ्चल्छ प्रज्ञभवत्व त्य हात्भावःविधा समाः॥

করঞ্জ, করবীর, আকল্স, মালতী, অর্জুন ও অসন প্রভৃতি কাঠের অপব: এই জাতীয় অন্ত কাঠের দাঁতন করিলে দম্ভ দৃঢ় হয়। আর্ত্তিগলদলকাথ-পঞ্চো দস্তচালমুৎ। দস্তচালে হিতং শ্রেষ্ঠং তিলোগ্রাচর্বণং সদা ॥

নীলক টী-পত্তের কাণের গণ্ডুষ ধারণ এবং সর্বাদা ভিল ও বচ চর্মণ করিলে দাতনড়া নিবারিত হয়।

দম্ভানাং তোদহধে চ বাতমাঃ কবলা হিতাঃ।

দক্তের ভোদে (স্চীবেধবং যন্ত্রণায়) ও হর্ষে (দাত শিড়্শিড়্করায়) বাতম (উষ্ণ তৈল গ্রত সম্মেহ দশমূল কাথাদি) কব**ল** ধারণ হিতকর।

দস্তচালে তু গণ্ড্যো বকুল হক্ততো হিতঃ।
মাকিকং পিঞ্নীসৰ্ণি শিশুভং ধাররেন্থে।
দঙ্শলহরং প্রোক্তং প্রধানমিদমৌগধম্॥
বকুল ছালের কাথে গণ্ড্য অথবা পিপুল
চুণ ৪ মাধা, সূত ৮ মাধা ও মধু ২ তোলা
মিশ্রিত করিয়া তাহা মুধে গাবণ করিলে দস্ত-

বিস্থাবিতে দন্তবেষ্টে প্রণস্ত প্রতিদারয়েৎ। নাধপন্তক্ষমধুক-লাক্ষাচুর্টেম ধুত্তরৈ। গণ্ডধে ক্ষারিনে। যেংজাঃ সক্ষেষ্টিদ্যতশকরাঃ॥

শূল প্রশামত হয়।

দস্তবেই রোগে জলোকাদি দ্বারা রক্ত-মোক্ষণ করিয়া লোগ, বকম কাঠ, যৃষ্টিমধু ও লাক্ষা, ইহাদের চূর্ণ মধুসংযুক্ত করিয়া ভদ্মারা ক্ষতস্থান অলে অলে ঘষণ করিবে এবং বট ও অশ্বথানি কীবিরক্ষের কাথে ঘুত মধু ও চিনি প্রক্ষেপ দিয়া তাহার গণ্ডুষ ধারণ করিবে।

শৈশিরে জতরক্তে তু লোধ্যুন্তারসাঞ্চনিঃ। সক্ষোচিত্র শস্তাতে লেপো গভুষে ক্ষারিণো ছিডাঃ ॥

শৈশির রোগে বক্তমোক্ষণ করিয়া লোধ, মূতা ও বসঞ্জিন, মধুসংযুক্ত করত তাহার প্রালেপ এবং বটাদি ক্ষীরি-রক্ষের কাথের গুধুষবারণ ব্যবস্থেয়।

িনয়'ং প্রিদরে কুয়াচ্ছাতাদোক্তাং বিচক্ষণঃ। সংশোধ্যাভয়তঃ কায়ং শিরশ্চোপকুশে ততঃ॥

পরিদর রোগে বমন ও বিরেচন দারা দেহ এবং শিবোবিরেচন দারা মন্তক সংশুদ কবিলা শাতাদ-রোগোক সমস্ত ক্রিলা করিবে। উপকুশ রোগেও এইরূপ ব্যবস্থা জানিবে। কাকোড়, স্বরকাগোজী-পত্রৈবিপ্রাব্যেদস্ক ।
ক্ষেত্রসূত্তক লবণৈঃ স্বোধ্যঃ প্রতিসারয়েৎ ॥
পিপ্রল্যঃ সর্বপাঃ খেতা নাগরং নৈচুলং ফলম্।
স্বোদকেন সংম্ধ্য কংড়ং তক্ত যোজয়েৎ ॥

উপকুশবোগে ভুমুবপত্র ও গোজিয়া পত্র ঘর্ষণ ছার। বক্তমোক্ষণ করিয়া তাহাতে মধু সংযুক্ত পঞ্চ লবণ ও ত্রিকটুচুর্ণ ঘর্ষণ করিবে এবং পিপুল, শ্বেতসর্বপ, শুঠ ও হিজলফল এই সক্ষল দ্রবা ঈষত্ব্য জলে মধ্যন করিয়া, তাহার কবল ধারণ করিবে।

শাস্ত্রণ দত্তবৈদয়েও দস্তম্বানি শোধরেং। তিও কারিং প্রযুক্তীত ক্রিয়াং স্বরণাশ্চ শীতলাং ॥

দস্করিদভ রোগে অস্ত্রদার: দস্তমূল হইতে পুনাদি কেদ নিংসারণ ছরিয়া ক্ষারপ্রয়োগ এবং সমস্ত গীতলক্রিয়ার অস্তর্গন করিবে।

ভূষ্ত্যাধিকদন্তপ্ত ততেইংগ্নিষ্বচানয়েং। তিনিদন্তক্ৰচনাত বিধিঃ কাথোন বিজ্ঞানতা ॥

অনিদস্ত উদ্ধত করিয়া অগ্নিপ্ররোগ ও ক্রিমিদস্তের তার্যুচিকিৎসা করিবে।

তিব্যক্ষিমাংসং সাক্ষাবৈদ্যাকৈত্য ক্রিপ চিবেৎ। বচাতেজোনতীপাঠা-স্বজ্ঞিক বৈন্দ্রক জঃ । ক্ষোদ্রমিত গাড় পিগুলাঃ কনক্ষাত্র কার্তিতঃ ॥ (আন্ত্রাত্রকারতী চনী।

অধিমাংস চেদন করির বচ, 'চ, আক্-নাদি, সাচিকার ও যবকার ইহাদের চুর্ণ মধু-সংস্কু করিয়া প্রয়োগ কাংবে। ইহাতে মধুর সহিত পিপুলের কবল ধারণ প্রশস্ত।

পটে!লনিম্বতিফলা-ক্ষায়শ্চাত ধাবনে। শিকোবিরেকশ্চ হিতো ধূমো বৈরেচনশ্চ য*া*।

অদিমাংসরোগে পটোলপত্র, নিমপত্র ও ত্রিফলা ইহাদের কাথে মুগ প্রকালন করিবে। ইহাতে শিরোবিরেচন ও বৈরেচনিক ধুম বিশেষ উপকারী।

নাড়ীরণহরং কলা দন্তনাড়ীর করিবেং।
যং দন্তমধিজাক্ষেত নাড়ী তং দল্তমুদ্ধরেং ।
ভিন্না মাংসানি শক্ষেণ যদি নোপরিজো ভবেং।
শোর্বিভা দহেচচাপি কারেণ জলনেন বা।

দন্তনালীরোগে নাড়ীব্রণাক্ত চিকিৎসা করিবে। যে দক্তে নালী হয়, তাহার মাংস অন্ত থারা ছেদন করিয়া সেই দক্ত উৎপাটন করিবে। কিন্তু উপরি পাটীস্থ দন্ত উৎপাটন করা বিধেয় নহে। পুযাদি নিঃসারিত হইয়া দল্ভের শুদ্ধি হইলে রোগস্থান ক্ষার বা অগ্নি-থারা দহন করিবে।

গতিহিন্তি হয় স্থি দশনে সমুপেকিতে। তথ্য ৎ সমুলদশনং নিঠায়েদ্ ভগ্নস্থিত।

দম্ভনালী অচিকিৎসিত হইলে হন্ধনের অন্থি পর্যান্ত সংহার করে। অতএব মূলের সহিত্তদন্ত উৎপাটন ওভগ্গ অস্থি উত্তোলন করিবে।

উদ্ভে ত্ররে দক্তে শোহিতং সংগ্রিচাতে। বক্তাতিয়ে'গংখ পূর্বেগ্ডা গে'রা রোগা ভর্তি চ। চলমপাওরং দত্তমতো নেপিংরেদ ভিষক॥

উপরিপার্টীস্ত দস্ত উৎপাটন করিলে অধিক রক্তপ্রাব হ**ই**য়া নানা প্রকাব উ^{শ্}ষণ রোগ উৎপন্ন হয়, অভএব উপরপাটির দস্ত নড়িলেও ভাহা **উৎ**পাটন কবা কন্তব্য নহে।

ক্ষায়ং জাতীমদন-কটুকস্বাস্থ্ৰতিকৈ:। লোলপদিরমঞ্জিঠ।-বল্লাইস্কেন্ডাপি যথ কুত্যু। তৈলং সংশোধনং তদ্ধি হস্তাদ্মস্তগতাং গতিয়।

জাতীপত্র, ময়না, কট্কী ও বৈচি ইহাদের কাথ মুগে ধারণ করিলে এবং লোধ, থদির, মঞ্জিয়া ও ষষ্টিমধু ইহাদের সহিত তৈল পাক করিয়া সেই তৈল লাগাইলে দস্তনালী প্রশামত হয়।

হ্পোশাঃ শ্ৰেছকৰলাঃ সপিষ্টপুৰ্ভক্ত বা।
নিৰ্বাহাশচানিল্লানাং দত্তংৰপ্ৰান্দিনাঃ।
সৈহিক ভ হিতো ধুনো নতং হৈছিকসেব চ॥
(কৈবৃত্তাং সপিৰ সিবৃতাপকস্য স্পিষ্ট কৰল
ইত্যাং, ইতি ভাৰমিশাঃ।)

দস্তহর্গ রোগে অথোঞ্চ স্নেহ পদার্থের কবল, তৈবেত স্থতের কবল, বাতম কাথ, সৈহিক ধুম ও সৈহিক নক্ত হিতকর।

অহিংসন্ দস্তমূলানি শকরামুক্ষরেদ্ ভিষক্। লাকাচুটেন্ম ধুনুট ১০৪ চতাং প্রতিসারয়েও ॥

দস্তমূলের কোন হানি না হয়, এরূপ সাবধান হইয়া দস্তশক্র, তুলিয়া মধুদংগুক্ত লাক্ষাচূর্ণ থারা তৎস্থান ধর্ষণ করিবে। (দস্তগতমলপদার্থ পিত ও বায়ু থারা শর্করাবৎ হইলে তাহাকে দস্তশক্রা কহে)।

দৰহৰ্ষক্ৰিয়াকাপি কৃষ্যান্নিরবশেষতঃ।
ৰপালিকা কৃচ্ছনাধ্যা তত্ৰাপ্যেষা ক্ৰিয়া হিতা ।
(কৃচ্ছসাধ্যেত্যনেন কপালিকায়': শাদ্ৰপ্ৰতিকৰ্ত্তৰ্যতা
সূচ্যতে)।

কপালিকারোগ রুদ্ধুসাধ্য হইলেও ইহাতে দস্তহর্ষের চিকিৎসায় বিশেষ উপকার দর্শে। (দস্তশ্র্করা দস্তাবয়বের সহিত গ'প্রার ন্তায় বিদীপ হুইলে তাহাকে কপালিকা কহে।

জয়েদ্বিরাবণেঃ বিরম্ফলং ক্রিমিদস্তকম্। তথাবলীড়ৈ পাত হৈঃ স্নেচ্গপুষ্ধারণেঃ॥ ভদ্যাক্ষাদিবধা দু-লেপেঃ স্লিট্যান্চ ভোজনেঃ। হিকু দোদশন্ত মতিমান্ ক্রিমিদস্তম্দাপরেও॥

ক্রিমিদস্তক (পোকা থেকে! শত)
নোগে, দক্ষে স্থেক প্রদান, ক্রিমিদুদিত রক্তের
মোক্ষণ, বাতম অবপীড় (নস্তবিশেষ), স্বেহগণ্ডম্বারণ, পুন্নবা ও ভদ্রনার্বাদি-গণের
প্রেলেপ এবং মিগ্ধ অন্তভাজন ব্যবস্থেয়। হিং
উষ্ণ করিয়া ক্রিমিদক্তে দিলে বিশেষ উপকার
হুইয়া থাকে।

द्रशीङ्गीकमयशकाञ्चलकर्षेकातिकाकः । अकुरुरेखनगुरुः क्रिमिष्ठकरतमनामननः ।

বৃহতী, কুক্শিমা, এরগুমূল ও কণ্টকারী ইহাদের কাথে তৈল মিশ্রিত করিয়া গণ্ড্য ধারণ করিলে ক্রিমিদস্তক রোগের বেদনা প্রশমিত হয়।

নীলীবায়সজজ্ঞার গ্-ছগ্নাবাও মূলমেকৈক্ষ্। সংচক্ষা দশনবিধৃতং দশনক্রিমিপাতনং আছে:॥

নীলবৃক্ষ, কাকজত্বা, সিজ ও বটাদি ক্ষীরিবৃক্ষ ইহাদের মূল চর্বণ করিমা দত্তে চাপিয়া রাখিলে দত্তের ক্রিমি পড়িয়া যায়।

চলমুদ্ধ তা বা স্থানং দহেৎ তু শুবিরক্ত চ।

শুষির রোগে চলদক্ত তুলিয়া সেই স্থান অগ্নি বারা দগ্ধ করিবে।

বিদার্য্যাদি-তৈলম্।

ততো বিদারীযষ্ট্যাহ্ব-শৃঙ্গ:টককশেক্জি:। তেলং দশগুণং ক্ষীরং সিদ্ধা নতেন্ত তু যোজয়েৎ॥

ভূমিকুখ্মাণ্ড, নষ্টিমধু, পানিফল ও কেণ্ডর ইহাদের কল্প এবং যত তৈল, তাহার দশগুণ ছগ্ধ একত্র নথানিয়মে পাক করিয়া তাহা নস্তার্থ প্রয়োগ করিলে দস্তরোগ নষ্ট হয়।

হত্রশাকে সমূদ্দিষ্টা কাথ্যা চার্দ্দিতবং ক্রিয়া।

হয়মোকে অদিত রোগের স্থায় চিকিৎদা কনিবে।

ফল:শুমানি শীতামু ক্লকানং দন্তধাবনম্। তথাতিকঠিন:ন্ ভক্ষান্ দন্তরোগী বিশহরেং ॥

অস্ত্রফল, শতিশ জল, রুক্ষান, দস্তধাবন ও মতি কঠিন ভক্ষা দ্ব্যা, দস্তরোগে বর্জন করিবে।

সপ্তচ্চৰংকহ্বদাভাংং পুৰণং ক্ৰিমিদওতুৎ। জীবনীয়েন ছদ্দেন ক্ৰিমিন্ধন্ প্ৰপুৰণম্ ॥ (অকক্ষারেণেব্যমক্ষোধ্যঃ) ॥

ছাতিম ও আকন্দের আঠা দ্বারা কিংবা আকন্দের আঠা সহ জীবনীয় গণ পেষণ করিয়া তদ্বারা ক্রিমিঃক্র পুরণ করিবে।

ছোণপুপালবঃ ফেন-মধুতৈলসমাযুতঃ। ক্রিমিন্ডবিনাশায় কাথাং কর্ণজ্ঞ পুরণম॥

জোণপুশের (ঘলদসিয়ার) রস, সমুজ-ফেন, মধুও তৈল, একতা মিশ্রিত করিয়া তদ্বারা কর্ণপুশে করিলে ক্রিমিদস্ত রোগ বিনষ্ট হয়।

পটোলকটুকাব্যোষ-পাঠাদৈশ্বভাগিকৈঃ। চুৰ্ব্য ধৃষ্টো লেপঃ ক্ৰড়ো মধুটভলকৈঃ॥

পটোল, কট্কী, ত্রিকটু, আক্নাদি, দৈল্পব ও বামু-হাটী এই সকল দ্রব্য চূর্ণ করিয়া মধুর সহিত প্রলেপ দিলে এবং মধু ও তেলের কবল ধারণ করিলে ক্রিমিদস্ত রোগ প্রশমিত হয়।

মুন্তামধুক নিশু 'তী-খনিরোশীরদাক্সভি:। সমঞ্জিষ্ঠাবিড়কৈন্দ্র সিদ্ধং তৈলং হরেৎ ক্রিমীন । মূতা, যষ্টিমধু, নিসিন্দা, খদির, বেণার মূল, দেবদারু, মাঞ্জ্যা ও বিড়ঙ্গ, ইহাদের সহিত তৈল পাক করিয়া সেই তৈল দজ্ঞে লাগাইলে ক্রিমিদন্ত রোগ নিবারিত হয়।

কৰ্কটান্তি,ক্ষীরপক-মৃতাভ্যক্ষেন নশুতি। দস্তশকঃ কৰ্কটান্তি,-লেপংৰ বা দ্যুযোজিতাৎ॥

কাঁক্ডার পায়ের সহিত ছগ্ধ পাক করিয়া সেই পক হগ্ধে দ্বত পাক করিবে। সেই দ্বত মর্জন করিলে অথবা কাঁক্ডার পা বাটিয়া দত্তে ভাহার প্রদেশ দিলে দত্তের শক্ষ নিবারিত হয়।

চরণৌ কর্কটক্তাপি গোকীরেন বিপাচয়ে। খনতাঞ্চ পতে তত্মিন্ রাজৌ চরণলেপনাং। দস্তানাং কড়মড়ীং হস্তি সত্যং সভ্যঞ্চ পার্ক্তি॥

কাঁক্ড়ার ২ খানি পা বাটিয়া গ্রা জ্ঞের সহিত পাক করিবে, গন হইলে উহা দারা রাত্রিতে পদম্ম লেপন কনিয়া রাশিবে। ভাহাতে দাত কড়মড়ানি নিবারিত হইবে।

কৃষ্ণবৰ্ণাশ্বপুচ্ছক্ত সপ্তকেশেন বেণিকা। ভংং বন্ধা চ গলে দক্ত-কড্মড়াং হস্তি মানবঃ॥

ক্লফবর্ণ অধ্বের পুচ্ছের ৭ গাছি চুলে বেণী প্রস্তুত করিয়া, ভাষা গলদেশে বান্ধিলে দাত কড়্মড়ানি প্রশমিত হয়।

দন্তরোগাশনি-চুর্ণম।

জাতীপত্রপুননবাতিলকণাকৌরণটন্ত'বচাঃ
শুস্তীদীপাহরীতকী চ সগতং চূর্ণং মুপে ধাররেং ।
বাতরং ক্রিমিকর্শন্দন্তনং সর্বাধ্যয়বংসনং
দৌর্গজাদিসমন্তদোক্তরণ দন্তন্ত রোগাশনিঃ।
জাতীপত্র, পুননবা, তিল, পিপুল, ন'াটিপত্র, মুতা, বচ, শুঠ, বমানী ও হরীতকী এই
সম্দারের সমভাগ চূর্ণ ঘত্তক্রিকত করিয়া
মুখে ধারণ করিলে দক্তের ক্রিমি, কণ্ট, পুল ও
দৌর্গজা প্রভৃতি নানা রোগ নই হয়।

দশনসংস্কারচূর্ণম্।

শুক্তী হরীতকী মৃস্তা থদিরং খনসারকষ্। শুবাকভন্ম মরিচং দেবপুপাং তথা স্থচম। এতেষাং সমভাগেন চুর্ণমের বিনির্দ্ধিশেৎ। তৎসমং প্রক্ষিপেৎ তত্ত চুর্বং কটিনিসম্ভবমু। এতদ্ দশনসংস্কার-চুর্বং দস্তান্তরোগজিৎ॥

শুন্তী, হরীতকী, মুতা খদির, কপূর, স্থারি ভন্ম, মরিচ, লবঙ্গ ও দারুচিনি প্রত্যেক সমভাগ, ফুলখড়ি চূর্ণ সর্ক্রমান। এই চূর্ণ ব্যবহার করিলে দক্তও মুগ্রোগ উপশ্মিত হয়।

অথ জিহ্বাগতরোগ নিদানম।

জিন্দানিলেন স্টিতা প্রস্থা ভনেচ্চ শাব্দজনপ্রনাশ। পিড়াং সদাহৈরপটিয়তে চ দীঘাঁ: সহকৈরপি কটকেশ্চ। কফেন ওকা তেলাচিং। চ মাংসেড্ছেরে শা্মালিকটকাভৈ। ভিন্তাতেল যা: স্বয়পু: প্রগাঢ়ঃ সোংলাসগড়ের কফরজমূরি:। জিন্দাং স তু স্তন্তাতি প্রস্থানা দলে চ জিন্দা ভূমামতি পাক্ষ।। জিন্দাগ্রন্থা স্থাপুতি ভিন্তা মূল্য ক'তে কফরজমূর:। লালাকরা কপুর্তা সচোষঃ সা তুপভিন্তা পঠিতা ভিষণ্ভি।।

বায়জনিত জিহ্নারোগে, জিহ্না ক্ষুটিত ও রসাম্বাদনে অসমর্থ এবং শাক (দেগুণ)-নামক রক্ষের পত্র সদৃশ কণ্টকব্যাপ্ত হয়। পৈত্তিক জিহ্নারোগে জিহ্না। দাংজনক, রক্ত-বর্ণ ও দীর্ঘাক্ততি কণ্টকসমূহ দারা আকীর্ণ হইয়া থাকে। শ্লেমজ জিহ্নারোগে জিহ্না, গুরুও শাহ্মলীকণ্টকের ক্সায় মাংসাম্বর-বিশিষ্ট হয়।

প্রছার কফ ও রক্ত জিহ্বাতলে যে দারুণ শোথ উৎপাদন করে, তাহাকে অলাস কহে। উহা বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হইলে জিহ্বান্তন্ত ও জিহ্বা-মূলে অত্যন্ত পাক উপস্থিত করে।

হুষ্ট কফ ও রক্ত জিহবাকে উন্নত করিয়া নিম্নস্থানে যে লালাস্রাব কণ্ড ও দাহ বিশিষ্ট জিহ্বাগ্রাক্কতি শোপ উৎপাদন করে, তাহাকে উপজিহ্বা কহিয়া থাকে।

অথ জিহ্বারোগ-চিকিৎসা।

ওঠকোপে ত্নিলজে যত্তকং প্রাক্ চিকিৎসিত্য।
কণ্টকেগনিলোগেয় তৎ কার্যাং ভিষজা পলু ॥
বাতজ ওঠরোগে যে চিকিৎসা উক্ত হইরাছে, বাতজনিত জিহ্নাকণ্টক গোগেও সেই
চিকিৎসা করিবে।

পিত্তগের নিল্পেট্রু নিংসতে জুইংশাণিতে। প্রতিসারণগঙ্ধ-নক্তক মধুরং হিতম্॥

পৈত্তিক জিহ্বাকণ্টক বোগে ককণ পত্রাদি খারা জিহ্বা ঘর্ষণ করিয়া রক্তনোক্ষণ কনিবে। পরে কাকোল্যাদিগণের চূর্ণ শ্বন, গভুষধারণ ও নশুগ্রহণ করিবে।

কণ্টকেণু কফোণেযু নিবিতেখসজঃ ক্ষয়ে। পিশ্বনাদিম ধুযুতঃ কাষাস্ত প্রতিসারণঃ ॥ গুঙুায়াৎ কবলঞাপি গৌরসর্বপদৈন্ধবৈঃ। পটোলনিঘ্র-জ্বার-ক্ষারস্থেন্চ ভোজয়েৎ॥

কক্জ জিহবাক্টক রোগে কর্কশ পরাদি দারা জিহব দ্বাণ করির রক্তনাক্ষণ করিবে। পরে পিপ্রলাদিগণের স্কা চূর্ণ মধু মিশ্রিভ করিয়া তড়ারা প্রতিসারণ (ধীরে ধীরে ঘর্ষণ), যেত সর্বপ ও সৈন্ধব-লবণের কবল ধারণ এবং পটোল, নিম, বেগুণ ও ক্ষারপ্রধান কুল্থাদির যুষ ভোজন করিবে।

জিহ্বাজাড়াং মাণভন্ম নবণতৈ লঘৰ্ষণং হস্তি। ঈষৎস্তু কন্দীরাক্তং জ্বীরাগুল্লচর্বণং বাপি॥

মাণ্ডিম, সৈদ্ধ লবণ ও তৈল একত্র মিলিত করিয়া জিহ্বায় ঘর্ষণ এবং জামির লেবু প্রভৃতি অন্তর্মব্যের কেশর কিঞ্চিৎ সিজের আঠার সহিত মিশ্রিত করিয়া চর্বণ করিলে জিহ্বাজাড়া রোগ প্রশমিত হয়।

উপজিহ্নান্ত সংলিধ্য ক্ষারেণ:প্রতিসাররেৎ। শিরোবিরেকগণ্ডুম-ধুমৈকৈনমুপাচরেৎ।

কর্কশ পত্রাদি ধারা উপজিহবা ঘর্ষণ করিয়া ভাষাতে যবকার প্রতিসারণ করিবে। ইহাতে শিরোবিরেচন, গণ্ড্যবারণ ও ধুম প্রায়োগ কর্ত্তব্য।

্বোদকারাভয়াবচ্চিচ্ব্যেতৎ প্রথবণম্। উপজিহ্বা প্রশান্তার্থমেইটক্তেলং বিপাচয়েৎ ॥

ত্রিকটু, যবকার, হরীতকী ও চিতা, ইহা-দের চূর্ণ ঘর্ষণ করিলে অথবা এই সকল দ্রব্যের সহিত তেশ পাক করেয়া দেই তৈল মাধাইলে উপঞ্জিখনা প্রশমিত হয়।

অথ তালুগতরোগ-নিদ,নম্।

লেমাপুৰ্বাং তালুমূলে প্ৰশুদ্ধা দ'যঃ ৰোধে। গ্ৰাত্ৰক্তিপ্ৰকাৰঃ। ভূক্ষাকাসখ!সকুৎ তং বদস্তি। ব্যাধিং বৈছাং কণ্ঠন্তগীতি নামা। শোধঃ সুক্রোদদাহ প্রপাকী প্রাপ্তকাভাাং ভুণ্ডিকের' মতা তু। মন্দঃ লোখো লোহিডো গোণিতে খো জেয়েহিরবং সম্বরতীব্রক্ত চ কুৰোঁ পেরে হলেনা হলী একমা রোগো জেয়া কচ্ছপা শ্লেমণা তু পদাকারং তালুমধো তু শোধং বিস্তাদ্রকাদক্র্দং প্রোক্তলিক্সম্।। पृहेर भारतर (अधना नीजक्र ভারত, হং মাংস্সজ্যাতম হ:। নারুক স্থায়ী কোলমাত্র: কফাৎ স্থা-রেদে যুক্তাৎ পুরা টপ্তাল্দেশে ¿ **োষো**হত্যর্থং দীয়াতে চাপি ত*্*লু याम्बर्काञ्चानात्वास्याविकाकः । পিত্তং ক্যাৎ পাক্সভাৰ্থগোরং ভালুক্তেবং তালুপাকং বদন্তি 🛭

ছুই কফ ও ছুই রক্ত দারা তালুম্লে যে শোথ উৎপন্ন ও ক্রমণঃ বৃদ্ধিত হইয়া বাত-পূর্ণ চন্মপুটের ক্রায় আর্ক্তিবিশিষ্ট হয়, তাহাকে গলগুড়ী কহে। গলগুড়ী রোগে ভূষা খাদ ও কাদ উপস্থিত হয়।

কক ও রক্তের প্রকোপ হেড় ত।লুমুলে তৃত্তিকেরী অর্থাৎ বনকাপাসীফলের ন্তান্থ আরুতিবিশিষ্ট যে স্থল শোগ উৎপন্ন হয়, তাহাকে তৃত্তিকেরী কহে। ইহাতে তোদ ও দাহ বিদ্যান থাকে; এবং ইহা পাকে।

তালুদেশে রক্তগ্নষ্টি জন্ত যে লোহিতবর্ণ অনতিঙ্গ শোধ জন্মে, তাহাকে অধ্রব ক**হে**। ইহাতে জন্ম ও তীব্রবেদনা উপস্থিত হয়।

শেমার প্রকোপে তালুদেশে অর বেদনা যুক্ত কুর্মাক্ষতি যে শোধ ক্রমে ক্রমে দীর্ঘকালে উদ্ভূত হয়, তাহাকে কচ্ছপ ক্রে।

র ক্রপ্রকোপে তালুনধ্যে পদ্মকর্ণিকার স্থায় আকৃতিবিশিষ্ট অর্থাৎ মাংসাত্মরব্যাপ্ত যে শোপ উৎপন্ন হয়, তাহাকে রক্তার্কান কহে। ইহা পুর্কোক্ত রক্তার্কান্দ-লক্ষণাক্রাপ্ত।

ক্ষত্ষিতে ভালুদেশে বেদনারহিত যে ছুষ্ট মাংসোপচয় হয়, তাহাকে মাংসংখাত কহে।

ছৃষ্ট কফ্ ও মেদঃ, তালুদেশে কুলের ভার আকৃতিবিশিষ্ট এবং অবেদন যে স্থায়ী শোথ উৎপাদন করে, তাহাকে তালুপুপ্লুট কহে।

তালুশোষ নামক এক প্রকার তালুরোগ আছে, তাহাতে তালুর অত্যন্ত শোষ ও বিদারণবৎ পীড়া এবং রোগির শাস উপস্থিত হয়। ইহা বাতপ্রকোপন্ন ব্যাধি।

পিত্ত প্রকুপিত হইয়া ভালুদেশে কইলায়ক পাক উপস্থিত কবিলে ভাষাকে ভালুপাক কহিলা গাকে।

অথ তালুরোগ-চিকিৎসা।

ছিলা গধেদ গলে শুগ্রীং ব্যোবোগ্রাক্ষোদ্রসিক্রৈ: কুটোনগবচা, সন্ধু-কণাপাঠাপ্লবৈরপি।
সক্ষোট্রেন্ডিবজা কাষ্যং গলগুণ্ঠা; প্রধর্ণম ॥
গলগুণ্ঠী ছেদন করিয়া শুঠ, পিপুল, মরিচ,
বচ ও সৈন্ধবলবণ, অথবা কুড়, মরিচ, বচ,
সৈন্ধবলবণ, পিপুল, আক্নাদি ও কৈবর্ত্তমুক্তক
ইহাদের চুণ মধুর সহিত মিশ্রিত করিয়া ঘর্ষণ

উপন সাব্যধা হস্তি গলগুঞ্জীনশেষতঃ। গলগুঞ্জীহরং তদ্ব চ্ছেফালীমূলচর্ববশ্ম॥

করিবে।

নাসিকার সমীপস্থ (অতি সমীপস্থ শিরা-চতুইর ত্যাগ করিয়া) শিরা বিদ্ধ করিলে অথবা শেফালিকার মূল চর্কণ করিলে গল-শুন্তী বিনষ্ট হয়।

বচামতিবিবাঃ পাঠাং রাস্নাং কটুকরো ভশীম। নিঃকাথ্য পিচুমর্দ্ধঞ্চ কবলং তত্ত্ব যোজ্বরেৎ । কারসিজের মুলেগর যুবশ্চাপ্যশনে হিতঃ ॥ গলগুগী রোগে বচ, আতইচ, আকুনাদি. রামা, কট্কী ও নিমছাল, ইহাদের কাথের কবল এবং ঘণ্টাপারুল ও অপামার্গ প্রভৃতির কারজনে সিদ্ধ মুদগাণ্ডির যম হিতকর। তুণ্ডিকেয়াধ্বমে কণ্ম-সন্বাততালু**পুশ**ুটে। এষ এব বিধি: কার্য্যো বিশেষ: শস্ত্রকল্মণি। তুণ্ডীকেরী, অধ্রষ, কৃষ্ম, সংঘাত ও তালু-পুগ্লাট রোগে পূর্বেগক্ত বিধিই করণীয়; তবে শস্ত্রকম্মের পার্থক্য আছে, অর্থাৎ ভূতীকেরী ও তাৰুপুপ্ল,ট ভেগ্ন ; ত্মপরগুলি ছেগু। ভালুপাকে তু ৰ ৰ্ব্তব্যং বিধানং পিডনাশনম। **द्यश्रद्यमे जानुस्थारम विधिक्यानिनमागनः** ॥ ক্রেয়া কর্তবা। ভালুপাকে পিত্তনাৰক

ভালুশোষে স্নেহ স্বেদ ও বাতন্ন বিধি বিধেষ।

অথ কণ্ঠগভরোগ-নিদানম্। গলেহনিলঃ পিন্তক্ষৌ চ মুচ্ছিতে) প্রদুষ্য মাংসঞ্চ তথৈব শেংপিতম। গলোপ্সংগেধকরৈত্বথাকুরে-নিহস্তাপুন্ ব্যাধিরিয়ং হি বেছিণী॥ **জিহ্নাসমন্তানভূপবেদনান্ত** মাংসাক্ষরাঃ কঠবিরে খিনো যে। দা রোটিণী বাতকু চা প্রদিপ্তা বাতাক্সকোপদ্রবগা। যুক্তা ॥ ক্তেপোমা কিপ্রবিদাহণাকা ঠাবৰুৱা পিত্তনিমিত্তলা তু। <u>লোভোবিরোধিষ্ণচলোপাতা চ।</u> তিরাক্ষরা যা কফসন্তবা সা॥ গম্ভারপাকিণ্যনিবাঘাৰীয়া ত্রিদোষ্ট্রিকা ত্রিভয়োখিতা চ। কোটেভিচতা পিত্তসমান্লিকা সাধ্যা প্রণিষ্টা ক্লধিরাত্মিকা তু॥ কোলান্তিমাত্র: কফসম্বরো যো গ্ৰন্থিল কণ্টকশুকভূত:। খর: স্থির: শন্ত্রনিপাতসাধ্য-ন্তং কণ্ঠশালুকমিতি ক্রবস্থি॥ জিহ্বাগ্ররূপ: ব্য়থু: কফাৎ তু জিহ্বোপরিষ্টাদ্পি রক্তমিশ্রাৎ। জেয়োহধিজিহ্ব: খলু রোগ এন विवर्कत्यमाग्रज्भाकत्मनम् ।

বলাস এবায়তমুর তঞ পোশং করোভালগতিং নিবার্য। তং সর্ববৈধবাপ্রতিবার্যাবীর্যাং विवर्ष्कनीयः वलयः वलखः। গলে ভ শোধং কুরুতঃ প্রবৃদ্ধৌ क्षियानिली यामक्रकां भनेत्र । মর্শ্বচিচদং ক্রম্বরমেনমাত-र्वज्ञानमः खः निश्ना विकातम् ॥ ব্ৰেক্সতে ১৯৯ খ্য়পু: সদাহ: সকওরে হপাকামুছও ক্রন্ট। নামেকবৃন্দঃ পরিকীত্তিতোহসৌ বা†ধিবলাসকতজপ্রতঃ॥ সমূরতং বুত্রমান্দর হং তীরক্ষরং বন্দমদাহরন্তি। ত্যাপি পিতৃক্তজ্ঞকোপাজ-কেষ্ণ সভোগে প্ৰনাথকত । वर्डिग्रंमा कर्शनिय्वाधिनी या চিতাতিমাত্রং পিশিতপ্রোটেঃ। অনেকক্ষক প্রাণহরী ত্রিদোষাজ্ জেয়া শতন্ত্রী চ শতন্ত্রিরূপা । গ্রন্থিগলৈ ভামলকান্থিমাত্রঃ স্থিরো>তিরুগ নঃ ককরক্তমূর্ভিঃ । সংলক্ষাতে সক্রমিবাশনক म नवमधाञ्च भिनासमः छः ॥ সর্বাং গলং ব্যাপ্য সম্পিতো য শোখো কল: সন্থি চ যত্ৰ সৰ্বা"। म मर्काफ्रारेश्रांनविष्य विख टेखन जुनाः थन मर्नकमा ॥ लात्या महानवकतावरताधी তীব্ৰহুরো বায়ুগতেনিহন্তা। কফেন জাতো ক্লধিরাক্সিতন গলে গলোখঃ পরিকীর্ভাতে: 🔉 🛭 **স্তামামান: খদিতি প্রসক্তং** ভিন্নস্থরং শুক্ষবিমুক্তকণ্ঠঃ। करकाशिक्षिश्वनिमाग्रानियू জের: স রোগ: খদনাৎ স্বরম্ন:॥ প্রভানবান্ যঃ খরপুঃ ফুকটো গলোপরোধং কুরুতে ক্রমেণ। স মাংসতানঃ ক্ৰিভোগ্ৰলমী প্রাণপ্রণুৎ সর্বাকৃতে৷ বিকার: 1 সদাহতোদং খমপুং স্কাত্র-মন্তৰ্গলে পৃতিবিশীৰ্ণমাংসম্ পিছেন বিস্থান্বদনে বিদারীং পাৰ্বে বিশেষাৎ স 🛡 যেন শেতে।

বার পিত ও কফ প্রত্যেকে বা সকলেই প্রকুপিত হইরা, মাংস ও রক্তকে দূষিত করতঃ কণ্ঠদেশে মাংসাস্কুর সমূহ উৎপাদন করে। সেই মাংসাস্কুর স্বারা কণ্ঠরোধ হওয়াতে রোগির প্রাণ বিনষ্ট হয়। এই ব্যাধির নাম রোহিনী।

বাতঙ্ক রোহিণী রোগে, অত্যন্ত বেদনা-দায়ক কণ্ড-নিরোধক মাংস।ঙ্কুগ প্রকণ জিহ্বার চতুর্দিকে উৎপন্ন হয়, তাহাতে মন্তান্তম্ভাদি বাতজ উপদ্রব সকল প্রাবলভাবে বিঅসান থাকে।

পিতৃত্ব রোহিণী বোগে মাংসালুর সকল শীঘ উৎপত্ন হয় ও শীঘ পাকে। ইহাতে তীর-জব উপস্থিত হয়।

ক্ষত্র রোহিণী রোগে মাংশাদ্ধর সকল কঠলোতোরোধক অচল উন্নত ও কঠিন হয়। সাত্রিপাতিক রোহিণী রোগে মাংসাদ্ধর

সকল গন্তীরপাকী ছনিবার্য্য ও ত্রিদোষলক্ষণা-ক্রান্ত হয়।

রক্তন বোহিনী, পৈত্তিক-রোহিনীর লক্ষণ মৃক্ত ও ক্ষোটক **ঘান: আকীর্ণ হ**য়। ইহা সাধ্য।

কদ প্রকোপ হেতু কগুদেশে কুল-মাঁটির তায় আকৃতিবিশিষ্ট গরম্পণ ও কঠিন যে গ্রন্থি উৎপন্ন হয়, তাহাকে কণ্ঠশালুক কহে। ইহা কণ্টকবং ও জলশ্কবং বেদনাদায়ক। কণ্ঠ-শালুক অস্ত্রসাধা ব্যাধি।

কফ ও রক্ত, জিলার উপরিভাগে জিহ্বাগ্রভাগের গ্রায় আক্রতি-বিশিষ্ট যে শোথ উৎপাদন করে, তাহাকে অধিজিহ্ব কহে। ইহা পাকিলে অসাধ্য হয়। উপজিহ্ব জিহ্বার নিমে হয়, অধিজিহ্ব উপরে থাকে।

তৃষ্ট কফ, কণ্ঠদেশে বলমাকৃতি যে আয়ত ও উন্নত শোপ উৎপাদন করে, তাহাকে বলম কহে। বলম রোগে অন্নবহ-স্রোত রুদ্ধ হইমা যায়। ইহার শক্তি ছনিবার্য্য, স্মৃতরাং বিবর্জনীয়।

শ্লেমা ও অনিল প্রকুপিত হইয়া কণ্ঠদেশে শ্বাস ও বেদনান্ধনক মর্মাচেদক যে শোখ উৎ-পাদন করে, তাহাকে বলাস কহে। ইহা ছশ্চিকিংশু। ছুষ্ট কফ ও রক্ত, কণ্ঠ-মধ্যে দাহ ও কণ্ড্-যুক্ত ঈষৎপাকী ও ঈষৎ মৃত, ভারবিশিষ্ট উন্নত ও গোলাকার যে শোথ উৎপাদন করে, ভাষাকে একরুন্দ কছে।

পিত্ত ও রক্তের প্রকোপ হেতু কণ্ঠনেশে উন্নত ও গোলাকার এবং তীব্রজ্ঞর ও দাহবিশিষ্ট যে শোথ উৎপন্ন হয়, তাহাকে বৃন্দ কহে। ইহা বাতাত্মক হইলে তোদবিশিষ্ট হয়।

বাতাদি দোষত্রের প্রকোপ জন্ত কণ্ঠ-নিরোধক, কঠিন ও শতন্ত্রীর ন্তায় আকৃতি বিশিষ্ট যে বর্ত্তি উৎপন্ন হয়, তাহাকে শতন্ত্রী কহে। (লৌহ-কণ্টকাছেন্ন বৃহৎ শিলাকে শতন্ত্রী বলে।) শতন্ত্রী বেমন লোহ-কণ্টকে আকীণ, ইহাও তেমনি নাংসাম্বরে ব্যাপ্ত। ইতাতে বাতাদি-দোষত্রন্য-কত বিবিধ বেদনা বিভ্যমান থাকে। এই বোগ প্রাণনাশক।

ক্ষ ও রক্তের প্রকোপে কণ্ডদেশে আমলার আঁটিব ন্সায় জাক্ষতি ও প্রিমাণ, বিশিষ্ট কঠিন এবং অভ্যন্ত বেদনাযক্ত যে শোগ হয়, ভাহাকে শিলানু (বা শিলায়ু) কহে। ইহাতে বোধ হয় যেন, আহার দ্রব্য কণ্ডদেশে সংলগ্ন হইয়া বাহয়াতে। শিলায় অস্থান্য বাধি।

ত্রিদোষের প্রকোপত্তের সমস্ত কণ্ঠ ন্যা,পর। যে শোপ উৎপন্ন হয়, ভাহাকে গ্রহার কহে। ইহাতে তোদ দাহ ও কণ্ণ প্রভৃতি ত্রিদোষ-জনিত সর্কাপ্রকাব বেদনা উপস্থিত হয়। ইহা পূর্কোক্ত সান্নিপাতিক বিদ্রাধিব লক্ষণাক্রান্ত। স্থান্যস্থাতিক থাকার গ্রাবিদ্রধি পূর্থা,ভাবে পুনং প্রিত হইয়াতে।

গলোঘ রোগে গলমধ্যে এরূপ বৃহৎ শোথ হয় বে, তাহাতে অল জল ও নিধানশালুরও গতি কন্ধ হয়। এবং রোগী প্রবল জরে আক্রোন্ত হইয়া থাকে। ইহা কফরক্তজনিত ব্যাধি।

সরস্থানের স্থাসমার্গ কদক্র হওয়াতে রোগী মুচ্চা বায়, ঘন ঘন নিশাস কেলে, তাহার সরভেদ হয় এবং কও নীরস ও অবশ (কোন দ্ব্যু গিলনে অসমর্থ) হইয়। পাকে। ইহা বাতজ বাদি। ্য রোগে কণ্ঠদেশে বিস্থৃত অতি কট্টদায়ক লম্বান শোধ উৎপন্ন হইয়া ক্রমে ক্রমে
কণ্ঠরোধ করিয়া প্রাণনাশ করে, তাথাকে
মাংস্তান কয়ে। ইহা ক্রিদোষ্ট্র।

বিদারী রোগে কণ্ঠের মধ্যে তোদ-দাহ-বিশিষ্ট তাত্রবর্ণ শোথ হয়, এবং ক্রমে ঐ শোথের মাংস প'চিয়া তুর্গন্ধ হইয়া থসিয়া পড়ে। যে পান্ধে শন্ধন করা অভ্যাস, সেই পাশ্বেই প্রায় এই রোগ জন্মিয়া থাকে। ইহু। পিত্রপ্রকোপজ ব্যাধি।

অথ কণ্ঠরোগ-চিকিৎসা।

সাধানিং রে'ইণীনস্তে হিতং শোণিতমোক্ষণম। ছন্দ্রনং বনগানিক গ্রুয়ো নস্তক্ষ চাঃ

চিকিৎসাসাধি বৌহিলীরোগে রাজ্যোকণ, ব্যন, পুলপান, গাওগ্রাকি ব নাজ্ঞাইণ হিত্কর। বাহিকীর সংহ্রাজ নবগৈঃ অভিসাধ্যে। ক্রোস্প্তিক্ষক্ত্যু বার্ডেদ্যাতীক্রঃ॥

বাতিক গোহিণীরোদ্যে বস্তুয়োক্ষণ করিয়া পঞ্চলনগের প্রতিসারণ এবং বারংবার ঈ্য-হুফ তৈলের কবল ধারণ করিবে।

পত্তক্ষশর্করাক্ষোটিক্রঃ পৈত্তিকাং প্রতিসারয়েৎ। দাক্ষাপর্যক্ষরণে হিতক কংডগ্রহে।

পৈত্তিক রে। হিণীরোগে রক্তচন্দন, চিনি ও মধুর প্রতিসারণ (ধীরে ধীরে ঘর্ষণ) এবং দ্রাক্ষা ও ফলসার কাথের কবলধারণ হিতকর।

আগারধুমকট্ৰৈ: কফগ্রাং প্রতিসারয়েৎ। খেতানিড়ক্সক্তায়ু সিদ্ধং তেলং সমৈদ্ধবম্। নস্তঃকর্ম্মণি দাতন্যং কবলঞ্চ কফোচ্ছেয়ে॥

শ্লেষোলণ রোহিণীরোগে ঝুল ও কট্কীর প্রতিসারণ এবং লভাফট্কী (অথবা অপরা-জিতা), বিড়ঙ্গ, দস্তী ও সৈন্ধব, ইহাদের সহিত তৈল পাক করিয়া দেই তৈলের নম্মগ্রহণ ও কবলধারণ করিবে।

পিত্তবৎ সাধ্যেদ্ বৈজ্ঞো রোইলাং রক্তনন্তন'ম্। বিস্নাব্য কঠশালুকং সাধ্যেৎ তুল্ডিকেরীবং। এককালং যবান্নঞ্চঞ্জীত নিশ্ধসন্তনঃ

রক্তজ রোহিণীর চিকিৎসা পিওজ রোহিণ ণীর স্থায় করিবে। কণ্ঠশালুক রোগে ছই বক্ত স্থাব করিয়া ভূপ্তিকেরীর স্থায় তাহার চিকিৎসা করিবে এবং একবাব অল কবিয়া মিশ্ব যবান্ন ভোজন করাইবে।

উপজিহ্নিক্বজাপে সংধ্য়েদ্ধিজিহ্নিকান্। উন্নাম্য কিহ্নান্ত্ৰ্য বড়িশেনা ধিজিহ্নিকান্। ডেনয়েলগুলাপেণ তালেইফার বিশ্বভিতিঃ ।

উপজিহ্বার প্রায় অনিজিহ্বিকা নোণের চিকিৎসা করিবে। এবিজিহ্বকা রোগে জিহ্বা উদ্ধানকে তুলিয়া ব'চশ যম্ম স্থারা ধরিয়া মণ্ডশাগা অন্ধ স্থারা অনিজিহ্বা ছেদন করিবে। এবং জীক্ষ, উক্ষ ও লাবণাদি স্থারা ক্রীকাথ্যশাক্রিবে।

ণকৰ্ক হ বিধাৰা বিনিং শোনন্মাতবেং। শিলাগৃকাপি যৌ বাধিস্তঞ্জ শাধন সাবংধং। (আন্তৰ্মাণয়েদিতি কমিনহুবেনন্মবিং শিলাংগ ছেদয়েং, প্ৰস্তু ভেদয়েং পূথনি সাৱগাৰিং। তেওো দ্বিহায়াক্তবিধিনা শোদনাদির বাপি লভাতে।।

এক বৃন্দ রোগে জনৌ হাদি খারা রক্ত মোক্ষণ করিয়া প্রতিসারণ, শিরোবিরেচন ও ক্বলধারণ খার। গ্লগত দোব শোধন এবং ব্যনাদি খাবা কায়বিশোধন ক্রিবে।

শিলায়রোগ শস্ত্রসাধ্য। কঠিন অন্তবেদনা-বিশিষ্ট ও অপক শিলায় ছেন্স, কিন্তু পূথ-নিঃদারণার্থ পক শিলায় ভেন্ত। তদনত্তর সঞ্চতের দ্বিনীয় চিকিৎসাক্ত চিকিৎসাকর্ত্তব্য।

অনুস্তুং স্থাৰ ক ভেদয়েদ্ গলবিজনি ।

গলবিদ্রণি যদি মশ্মস্থানজাত না ২য়, তাহা হইলে স্থপকাবস্থায় উহা তেন করিবে। কঠরোগেষসভ মোকগুলিনস্পাদিকস্ম চ।

কথরোগেলত নোকভাক্তনভানিকন চ। কার্যপানন্ত দক্ষোত্ত নিম্বতাক্ষ কিলিকত ॥ দর্মবিধ কণ্ঠরোগেই রক্তমোক্ষণ তীক্ষ নতাদি প্রয়োগ এবং দাকুহ্রিদ্রা, ওড়ত্বক্, নিমছাল, নসাঞ্জন ও ইক্রথন ইহাদের কাণ পান কবিবে।

হবীতকীক্ষায়ে। বা বেয়ে। মাক্ষিক্সংগতঃ । কটুকাতিবিদানক্ষিপ্যেন্তকলিক্ষকাঃ । গোনএকমিতান পেয়াঃ কণ্ঠরোক্ষবিনাশনাঃ ॥

মধুদংযুক্ত হরীতকী-কাথ, অথবা কট্কী, আ। ১৮চ, দেবদাক, আ।কনাদি, মৃতা ও ইক্রাবর, এই সকল দ্রবা গোমুরে দিদ্ধ করিয়া দেই কাথ পান করিলে সমুদায় কগরোগ প্রশমিত ১ইয়া থাকে।

দশমূলং লিবেছৰ ২ মূলং সলকুলপায়ে। ক্ষাৰকুৰমগোমূৰ দ্বিমাধ্যক (ঞ্চিকঃ। ব্যৱহাৎ কা । নি বাজন দে মং তিল্পতিবলি। ॥

গলবোগে দশমূলের ক্ষান, কিংবা শুক্ষ মূলক ও কুলখকলানের যুগ ঈ্ষত্ত থাকিতে পান করিবে এবং দেনে বিবেচনা কবিল্লা হ্রা, ইন্ধুন, লোন্ত, দনে, দনির মাত, অন্ন কাজিক, তৈল ও ছাব। কবল ধারণ করিবে।

স্থাক। করুৱা জোনে লাকারক ভিন্না গ্রন্থ। প্রায়োক্ষাজন করবা তেজোকেতি অচ্বিত্য। ক্ষোল্ডের বিধানকা প্রবাধে মতৌধধন্॥

দাক্ষা, কট্কী, তিক্টু, দাক্ষ্থিকাছাল, তিক্লা, মৃতা, আক্নাদি, রসাঞ্জন, দুর্ঘা ও চৈ, ইহানের সমভাগ চূর্ণ মরু সহ সেবন করিলে গলরোগে অভ্যন্ত উপকার হয়।

কালকচূর্ণম।

গৃহধামা ধনক্ষার: পাঠাবোষ্যাপ্রমাপ্রম্য। তেজাপ্রাজিকলালৌহ-চিত্রকক্ষেতি চূর্বিচম্ । সাক্ষীদং ধারতেদেহদ্ গানরোগবিনাশমম্। কালকং নাম হচ্চাবাং দত্তজিধ্যাস্থারোগভূৎ॥

ঝুল, শবক্ষার, আক্নাদি, থিকটু, রদা-জন, চৈ, ত্রিফলা, পোইচুর্ণ ও চিতা এই সকল একত্র চুর্ণ করিয়া মধুর সহিত মুখে ধারণ করিলে গলরোগ, দস্ত, জিহ্বা ও মুখগত রোগ বিনষ্ট হয়।

পীতকচূর্ণম্।

মন.শিলা ঘৰকারো হরিজালং সদৈক্ষবম্।
দাবলীত্ব চেতি ভল-ুণং মাক্ষিকেণ সমাযুত্য ।
মৃহ্ছিতং স্থতমণ্ডেন কঠরোগেরু ধারতেং।
মুধরোগের চ শ্রেষ্ঠং পীতকং নাম কীর্ত্তিম্॥

মন:শিলা, ববকার, হরিভাল, সৈদ্ধবলবণ ও দারুহরিন্তার ছাল ইহাদের চূণ মধুর
সহিত মিশ্রিত করিয়া গ্লত-সঙ্গে আলোড়িত করিয়া মুগে ধারণ করিলে কগরোগ
বিনম্ভ হয়। (ইহা এবং কালক চূণ সকলপ্রকার মুণ রোগেই উপকাশ করে।)

কারগুড়িকা।

প্রধানক থালীশ-প্রত্রানারিচন্তঃ।
প্রাণ্ড্রান্দ্রক্ষার-ব্যক্ষারান্চ চুর্লিথাঃ।
ওড়ে পুরাণে ক্ষিতে বিশুনে গুড়িকাঃ কৃতা।
কক্ষুমারোঃ সপ্তাহং ছিতা মুক্তকল্মনি।
ক্টরোগান স্বেক্র্যুধানাঃ ত্যারগুতোপমাঃ।

পিপুল, পিপুন্যুল, চৈ, চিতাযুল, শুঁঠ, ভালীশপত্র, ভেজপত্র, একাইচ, মরিচ, গুড়ত্বক, পলাপক্ষার, ঘণ্টাপারুলির ক্ষার ও যবক্ষার এই সমুনার দ্রবা, বিশুল পুরতিন গুড়ের সহিত পাক করিয়। কুন-প্রমাণ গুড়িকা প্রস্তুত করত ৭ দিবস ঘণ্টাপারুলির ক্ষার মধ্যে রাখিয়া দিবে। এই গুড়িকা সকল প্রকার কণ্ঠরোগে অমুতের ভায় উপকাব করে।

যবকারাদিগুটী

যবাগ্রগং তেজবর্তাং সপঠোং রসাঞ্জনং দাক্ষনিশাং সকুকাম। কোলেন কুয়াদ্ শুটিকাং মুখেন তাং ধারয়েং সর্কালাময়েরু॥

যবক্ষার, লভাফট্কী (কেছ বলেন চৈ), আক্লাদি, রদাঞ্জন, দারুহরিন্তা, পিপুল, এই সকল তব্য মধুর সহিত গুড়িকা করিয়া, মূথে ধারণ করিলে সকল প্রকার গলরোগ নষ্ট ইইরা থাকে।

পিন্ননী পিন্ননীমূল-চব্য চিত্রকনাগরৈ:। সক্তিকাকারভুল্যাংশৈত পেহিনং গলরোগনুৎ ॥

পিপুল, পিপুলমূল, চৈ, চিতা, শুঠ, সাচি-ক্ষার ও যবকার ইহাদের সমভাগ চুর্ণ ব্যব-হারে গলরোগ নষ্ট হয়।

মুত্রস্বিদ্ধাং শিবাং তুলাং মধুরীকুঠবালকৈ:। অভান্ত মুধ্রোগাংল জয়েদ্বিস্তামপি॥

গোষ্ত্রসিদ্ধ হরীতকী, মৌরি, কুড় ও বালা এই সকল জব্য সমপ্রিমাণে গ্রহণ করিয়া দেবন করিলে মুগরোগ ও মুংশর বিরস্তা নই হয়।

বা হাৎ সক্ষমনং চুর্বেল বেশেঃ অভিসারছেও। তেলং বাতহরৈঃ সিদ্ধা ছিভং ক্রড্রস্যয়েও।

বাতজন্ত সর্বসর-মূখরোগে সৈন্ধব লবণ দিয় মূখ, দন্ত ও জিহ্বা মার্জ্জন করিবে এবং বাতনাশক (ভদ্রদার্কাদি গণ) দ্রব্যের কন্ধ ও কাথ সহ সিদ্ধ ভৈলের কবড় ও নক্ত গ্রহণ করিবে।

পিভান্ধকে সর্বসরে শুদ্ধকায়স্য দেহিনঃ। সর্বপিভহরঃ কায়্যো বিধিম ধুরণীতলঃ।

পিত্ত সন্ত সংবাদর-মুখরোগে বমন ও বিবে চনাদি দারা দেহ শুদ্ধ হইলে পিত্তনাশক মধুর ও শীতলাবধি অবলয়ন করিবে।

প্রতিসারণগণ্ডবান্ ধূমং সংগোধনানি চ। কফালকে সর্বাসরে ক্রমাৎ কুয়াৎ কফাপহন্।

কফজ সর্বসর রোগে প্রতিসারণ, গগৃষ-ধারণ, ধ্মপান, সংশোধন এবং কফবিনাশক চিকিৎসা করিবে।

মূথপাকে শিরাবেখা শিরংকায়বিরেচনম্। কাথান্ত বছধা নিতাং জাতীপত্রস্য চর্কণম্॥

মুখপাক রোগে শিরাবেধ, শিরোবিরেচন, কান্নবিরেচন ও বারংবার জাতীপত্র চর্মণ করিবে।

জাতীপত্রামুতারাকা-যাসদাব্বীফলজিকৈঃ। কাথঃ ক্ষোত্রযুক্তঃ শীতো গগুরো মুখপাকতুৎ॥ জাতীপত্ত, গুলক, দ্রাক্ষা, ছরালভা, দার-হরিদ্রা ও তিফলা ইহাদের কাথ শীতণ হইলে ভাহাতে মধু প্রক্ষেপ দিয়া গণুষ ধারণ করিলে মুখপাক বিন্তু হয়।

কৰিতা ত্ৰিফলাপণ্ঠা-মুখীকাজাতিপনবাঃ।
নিবেৱা ভক্ষণীয়া বা ত্ৰিফলা মুখপাকহা।
(নিবেৱা ইতি পানগভূষাভ্যামুপ্যোজ্যা। ইতি চক্ৰটাকা)
ত্ৰিফলা, আক্নাদি, জাক্ষা ও জাতীপাতা
ইহাদের কাথ প'ন ও গভূষধারণ অথবা ত্ৰিফলা
ভক্ষণ করিলে, মুখপাক নিবারিত হয়।

কুকাজীরককুড়েজ্জ-যবাশাং চূর্গগুরাহাৎ। মুগপাকএণ্রেজ-দৌর্গকামুপ্রামাতি॥

পিপুল, জীনা, কুড় ও ইন্দ্যৰ ইহানের চুৰ তিন দিবদ বাবহাব করিলে মুখপাক। বুগ, ক্লেদ ও দৌর্গন্ধা উপশ্যিত হয়।

রসাঞ্জনং লোব্রমণাময়ক মন,শিকা নাগরগোরকণ। পাঠা হরিন্তা গজপিঞ্চলী চ গুলারণং কৌন্তযুতং মুখত ॥

রসাজন, লোধ, কুড়, মনঃশিলা, ভাঁঠ, গেরমানী, আক্নাদি, হরিলা ও গজপিপুল ইহাদের কাথে মধু প্রক্ষেপ দিয়া মূথে ধারণ ক্রিলে মুণপাক নষ্ট হয়।

পটোলনিম্প্রম্বাত্র-মাল্ডীনবপল্নাঃ । পঞ্চলুক্রঃ ভোঠঃ ক্রায়ো মুখধাবনে ॥

পটোল, নিম, জাম, আম ও মালভী ইহাদের নৃতন পত্রের কাথে মুখনাবন করিলে উপকার দলে।

পঞ্চৰ কৰালো বা ত্ৰিফলাকাৰ এন চ। মুখপাকেৰু সক্ষোত্ৰ: প্ৰবোজ্যো মুখধাৰনে ॥

বট, যক্তভুম্র, অখথ, পাকুড় ও বেত ইহাদের ছালের কাথ অথবা ত্রিফলার কাথ মধু সহ মিশ্রিত করিয়া মুখ ধৌত করিলে মুখপাকের উপশম হয়।

বরস: ক্বিতো দার্ক্যা ঘনীসূতো রসক্রিরা।
সংক্রাপ্তা মুখরোগাসগংগাখনাড়ীত্রণাপথা।
দারুত্রিক্রার ব্যরস অথবা কাপ ঘনীসূত
ক্রিরা মধুর সহিত অবলেহন বা লেপন করিলে
মুখরোগ, রক্তদোষ ও নাড়ীত্রণ উপশ্মিত হয়।

তিলা নীলোৎপলং সূপি: শর্করা ক্ষীরমের চ। সংক্ষীলো দুর্মবন্ধ কার্কী ক্ষান্ধর ।

কারাদি ধারা মুখ দগ্ধ হইলে তিল অথবা নীলোংপলের কাথ গুত, চিনি, দৃগ্ধ ও মধু সংস্কুত করিয়া গুড়্ব ধারণ করিলে দাহ ও পাক নিবারিত হয়।

জৈলন কাঞ্জিকেনাথ গঙ্যক পুৰিচহণ।
চূৰ্ণ ভক্ষণ করায় মুখে দাহ উপস্থিত হইলে
তৈৰের বা কাঞ্জিকের গণ্ডম ধারণ করিবে।

খনকুঠেলাধাভাকিবলীমধেলবাৰুকাকৰড়ঃ। বদনেহতিপ্তিগন্ধং হরতি স্বরাল ওনগন্ধক ॥ (খনাদিকং মুপে নিক্ষিপ্য চর্কানীয়মিতি সৃদ্ধাঃ।)

মূতা, কুড়, এলাইচ, ধনে, য**ষ্টিমধু ও এল-**বালুক, এই সমন্ত বস্ত চর্মণ করিলে মুণের দৌর্গন্ধ। এবং প্রবাপান ও বস্ত্ন ভোজন জনি**ত** গন্ধ নিবারিত হয়।

সপ্তচ্ছদাদিঃ।

স**প্তচ্ছদোশার**পটোলমূল-ছর' চকীতিজকরোহিণীতিঃ। যষ্টাহ্বরাজজনচন্দনৈত ক'শং পিবেং পাকহরং মুখ্**ভ**া

ছাতিমছাল, বেণার মূল, পটোলপত্র, মূতা, হরীতকী, কট্কী, ষষ্টিমধু, সোন্দাল মূল ও রক্তচন্দন এই সমুধায় দ্রব্যের কাথ পান করিলে মুখের পাক নিবারণ হয়।

পটোলাদিঃ।

প:টাল শুকী ত্রিকলাবিশাল তোমস্থিতিকাবিনিশাস্তানাম্। পীতঃ ক্ষামো মধুনা নিহন্তি মূপে স্থিতশচাক্তগদানশেষান্।

পটোলপত, শুঠ, ত্রিফলা, রাখালশশার মূল, বলাডুমুর, কট্কী, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা ও গুলক এই সম্দারের কাথ মধুর সহিত পান বা মূখে ধারণ করিলে মুখরোগ নষ্ট হর।

সহকারগুড়িকা।

এলালভালবণিকা**ফ্যশী**তকোৰ-কোশদ্বিকানি পদিয়**ন্ত কু**তে কৰায়ে। তুল্যাংশকানি দশভাগমিতে দিষায়
প্রোভিরকৈতকপুটে পুটবৃদ্বিপাচা ॥
প্রাগংশতুল্যশিনাথ তদেকসংস্থং
পিষ্ট্রা নবেন সহকাররসেন হস্তৌ।
লিপ্ত্রা যথাভিল্যিতাং গুড়িকাং বিদ্যাৎ
স্ত্রীপুংসরোর্বদনসৌরভবক্ষভূতায়

■

এলাইচ, লভাকস্ত,রী, লবঙ্গ, জায়দল, কপূর, জৈঞী, কন্ধোল ও অগুরু ইহাদের প্রত্যেক সমভাগ কল্প, সকলের দশগুণ পরিবিত থদির কাঠের কাথে, আলোড়িত করিয়া বিক্সিত-কেতকীপত্রের পুটমধ্যে স্থাপন ও পুটপাক-বিধানামুসারে অন্ধ্য পাক করিবে। পরে উক্ত কল্প সকল চুর্ণ করিয়া ভাহাতে পূর্বে পরিমিত কর্পূর মিশাইবে। অনম্ভর নভন আমের নোটার আন্তাহতে মাণিধা সেই হস্তেইচছামত গুড়কা পাকাইবে। ইহা সেবন করিলে দ্বী পুরুষের মুখে অভ্যন্ত সৌর্বত হয় এবং মুখ্রোগ নই হইয়া থাকে।

সঙ্গরখদিরবটিক।।

খনিরক্ত তুলাং সম্যাগ্ জলক্রেণে নিপাচয়েং।
শেবেঃরঙাগে তথেব প্রতিনাপং প্রদাপয়েং॥
ভাতীকপুরপুগানি কনে।লকফলানি চ।
ইতোষা গুড়িক: কায়া মুখসৌভ:গাবদ্ধিনী।
দজৌধুখরোগের জিহলাভাবাময়ের চ।
(জাভ্যাদিচুর্দানাং প্রত্যেকং পলং বক্ষামাণপদিরবটিকায়াং পলাংশিকানীভিদশনাং। ইতি শিবদামঃ।)
খনির ১২॥০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ
৮ সের। এই কাথে জয়িত্রী, কপূর, স্বপারি,
ককোল ও জায়ফল প্রত্যেক ৮ ভোলা পরিমাণে প্রক্রিপ্র করিয়া গুড়িকা প্রস্তুত করিবে।
ইহা মুধে ধারণ করিলে দক্ত, ওঠ, মুখ, জিহলা
ও ভালুর পীড়া নিবারিত হয়।

त्रृह् थिष्तृत्रविकः।

গার্মিনারতুলয়েরিম্বর্কনানাং সার্দ্ধং তুলাযুগলম্মুগটেশ্চতুর্ভিঃ। নি:কাল্য পাদমবশিষ্টপ্রস্থাতং ভয়ঃ প্রেদ্ধ শবৈষু ছপ্রেকেন।

তিম্মিন্ ঘনত্বসূপগচছতি চুর্নমেধাং লক্ষ্ণ ক্ষিপেচ্চ কবডগ্রহভাগিকানাম। এলামণালসিতচন্দ্রচন্দ্রাথ-গ্রামতিমালবিক্সাগনলোহয়ন্তী : লজাফলত্রয়রসাঞ্জনধাতকীত- • 🗐 পুষ্পগৈরিককটন্ধট কটফলানাম। পদ্মাপ্রলো ব্রটরোহ্যবাসকানাং মাংশীনিশাহরভিদকলসংগ্রামাম ॥ ব কে লিজাভিফলকোষলবঙ্গকানি চুণীকুতানি বিদ্ধীত পলাংশিকানি ৷ শীতেইব হাব্য ঘ্রমারচভুম্প্রক কিন্তা কলায়সদৃণীগু ড়িক'' প্রকুষ্য ং ॥ ওক। মুখে বিনিহিতা বিনিবারয়ন্তি রোগান গলেষ্টিরসনাধিজতাল্পাতান। কুৰ্যাম গৈ কুৱজিতাং পট্তাং ক্লুচিঞ্চ रिश्वाः भवः प्रयम्भाः वमनालय्यम् ॥

(গায়তিদারঃ প্রিবারে**ড্ড** টুল্য়া স্ক্রি হরি-মেনব্লানা বিচপ্রির্থচাং তুলাম্গল্যি শ্র্ন হতি চক্রমকা।)

খদির ১২॥ সের, গুয়েবাব্লার ছাল ১২॥০ (সর, জল ২ ৬ সের, শেষ ৬৪ সের। এই কাথ ছাকিয়া পুনব্যার মৃত্ত অগ্নিতে পাক কারবে। সনীভূত হইলে এলাইচ, বেণার মূল, খেতচন্দন, রক্তঃন্দন, বালা, প্রিয়ন্ত্র, ভ্যাল-পত্র, মঞ্জিলা, মৃতা, অওক, স্টিমধু, বরাক্রাস্তা, जिक्ना, तनाञ्चन, भारेक्न, नागरकभत, পूछ-বিয়া কাই, গেবিমাটা, দারুহবিদ্রা, কটুফল, পদ্মকার্ছ, লোদ, বটের ঝুরি ছুলালভা, জটা-भारती, शहरता, तामा (अपना कून्द्र किरवा মুর্বা) ও দাক্চিনি প্রত্যেক ২ ভোলা; करकान, जांग्रकन, अधियो ও नवन श्राटाक ৮ ভোলা চুর্ণ নিক্ষেপ করিবে। পরে নামাইয়া শীতশ হইলে কপুর 계 । সদ্ধ সের মিশ্রিত করিয়া মটর প্রমাণ গুডিকা প্রস্তুত করিবে। গুড়িকা শুদ্ধ করিয়া মুখে ধারণ করিলে গল, ওঠ, জিহবা, দক্ত ও তালুসম্বন্ধী রোগ নষ্ট হইয়া মুখ জ্গন্ধি, স্থাস ও দন্ত সকল দুঢ় হয়। ইহাতে জিহ্বার জড়তা অপনীত হট্মা আহারে কচিবদ্ধি হয়।

মুখরোগহরীবটা।

রদগন্ধী সমৌ তাজাং বিগুণক শিলাগত ।
গোনুত্রে বিমন্দাধ সপ্তথাকজবেন চ।
জাতীনিষমহারাষ্ট্রী-রসেঃ দিধাতি পাক্টা।
কণা মধুমুতা হস্তি দুপপাকং হলাকণম্।
অন্তথ্য গুডা বক্তে, সজ্যো হস্তি বটা গদান্।
মহারাষ্ট্রান্ড কন্দেন মুপক প্রতিসার্য়েৎ।
ধারণাৎ দেবনাট্চেব হস্তি সর্বান মুপাম্যান্॥

পারন ১ তোলা, গমক ১ তোলা, শিলাজতু ৪ তোলা, এই সমুদার জব্য গোমুত্রে,
আকল পত্রের রদে, জাতীপত্র রদে, নিমপত্র
রদে ও জলপিপ্রলীব রদে ৭ বার করিয়া মর্দন
করত ৮ বতি প্রমাণ বটা করিবে। এই বটা
মুখে ধারণ বা জলপিপ্রনীর কল বারা মুখ
ঘরণ করেলে অথবা পিপুল চুণ্ ও মধু সহ ইহা
দেবন নারলে বর্ষপ্রকার মুখ্রোগ নই হয়।

রুসেন্দ্রবটা।

রদেক্দকারাজ্যতু প্রবাললোহানি ব্রক্তরে সমতাগ্রিকারীন ।
রুদেক্পাদ প্রমিতিক হেম
বিভাগ্য নিমাননাকিংশাহিম
তাহা বৃদ্ধা বছবাববারা।
ফলা বছবাববারা।
ফলা বছবাববারা।
ফলা বছবাববারা।
রুদেক্রটাক্রগণ ন্ নিহন্তি
বাতাময়ান্ মেহল্লবীয়ায়াক্
বৃদ্ধির বিশেষের স্বায়নীয়ম্।

পারদ, গন্ধক, শিলাজ হু, প্রবাল ও লোই প্রত্যেক এক ভাগ, ফর্ল। দিকি ভাগ; এই দকল একত্র করিয়া নিমহাল, অসনছাল ও চিতামূল ইহাদের রসে ভাবনা দিয়া উত্তমরূপে মাড়িয়া ছই রতি প্রমাণ বটকা করিবে। বছবার-ছাল, ত্রিফলা বা অপ্তরুর কাথের দহিত প্রত্যহ প্রাতে এক এক বটকা প্রযোজ্য। ইহা দেবন করিলে মুখরোগ, বাতব্যাধি, মেহ ও জ্বের শাস্তি এবং অ্যি, বল ও বীর্ষ্যের বৃদ্ধি হয়। ইহা উৎকৃষ্ট রসায়ন।

সহকারবটী।

সহকারপ্র নিম্মন্ত পদিরপ্রাসন্ত চ।
তুলাং পৃথণ বিনিংকাধা ছোণমানেন চামুনা ॥
একীকৃত্য ক্যায়াংশ্চ পাদশিষ্টান্ পূনঃ পচেই।
তত্র ক্ষিপেরলয়জ্ঞং বালকং রক্তচলনম্ ॥
গৈরিকং দেবপুপার্ক থাতকাং রজনীয়র্য।
লোবং জাতীকলং শুসামাং চাতুর্জ্ঞাতং ফলত্রেম্ ॥
বটপ্ররাহমঞ্জিটা-মাংসীরম্বধরং বিভূম্।
কট্রেরময়শ্চলং প্রস্থার বিভূম।
কট্রেরময়শচলং প্রস্থার বিভূম।
ততঃ কলারসদৃশীবিদ্যাদ্ গুড়িকা ভিষক্।
বোগান্ কঠোইরসনা-দত্তালুসমুদ্ধান্॥
সহকারবটা ইন্তাদাধেন বদনে ধুতা।
জন্যেগ্থানোবভাং সক্ষতিং প্রিরমন্তত্বান্

আমছাল ১০॥ • পের, জল ৬৪ সেরু শেষ ১৬ সের। নিমছাল ১২॥ সের. জল ৬৪ সের শেষ ১৬ পের। শাদিরকাঠ ১২॥ । সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। অসনছাল ১২॥• . সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। এই ৪টী কার্থ একতা করিয়া পুনর্দার পাক করিবে। ্যথাসময়ে খেতচ দন, বালা র জচন্দন, গেরি-মাটা, লবঙ্গ, পাইফুল, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, লোধ, জারফল, শ্যামালতা, গুড়ারক, এলাইচ, তেজ্পার, रुवीडकी. আমলকী, गार्गभन, বটের ঝুরি, মঞ্জিষা, জটামাংগী, মূতা, বিট্-লবণ, ভঠ, পিপুল, মারচ, লৌহ ও কপুর প্রোক চ্ব : প্র পরিমাণে প্রক্ষেপ দিবে। পরে নামাইয়া মটরের স্থায় গুটিকা স্কল প্রস্তুত করিবে। এই সংকারবটা মুখে ধারণ कतिया थाकिटन करे, उठे, दिस्ता, न्य उ তালুর ক্ষতাদির নিবারণ, দস্ত সকলের স্থিনত্ব আহাবে ক্ষৃতি ও মুখে সৌগন্ধা হয়।

চতুম্বা রসঃ।

মৃতং সূতং মৃতং ধর্গং খাজ্যাং জুল্যাং মনংশিলাম্।
বিমন্দর্গেচ তৈলেন অতসীসপ্তবেন চ ॥
তল্পোলং বস্তবো বন্ধা লেপয়েচ্চ সমস্ততঃ।
অতসীফলকন্দেন দোলাযন্তে আহং পচেৎ।
উদ্ধৃত্য খাররেদ্ বজ্যে জিহ্বাদন্তাল্তবোগন্ত্ং ॥
বস্সিন্দ্র ১ ভাগ, জারিত অর্ণ : ভাগ,
উভ্যেব তুল্য মনঃশিলা, মসিনাতৈলে মর্দন

করিয়া একটা পিগু করিবে। পরে ঐ পিগু বন্ধ ধারা বেইন করিয়া তাহাতে অভসীফলের কল্প লেপন করিবে। পরে ইহা দোলাযন্ত্র তিন দিন পাক করিয়া মুখে ধারণ করিলে জিহ্বা দস্ত ও ইথরোগ বিনষ্ট হয়।

পাৰ্ক তীরসঃ।

পাৰ্বতীকাশীসস্কৃতো দরদো মধুপুশ্পকম।
স্কৃত্টাশালনীজাকা ধান্তভূনিষমার্কবম্ ॥
তিলম্লাপটোলক কুমাওলবণষ্মম্ ।
মন্তিকাধান্তকং ভন্ম চান্তর্দিধং সমং সমম্ ।
মুধ্রোগং নিহস্তাংগু পার্বতীয়ন উত্তম: ।
পিত্ত্বেরং চিরং হতি তিমিরক ত্বংমপি ॥

গন্ধক, পারদ, হিঙ্কুল, মৌলদুল, গুলঞ্চ, শিমুল, দ্রাক্ষা, ধনে, চিরতা, ভৃঙ্গরাজ, তিল, মুগ, পটোল, কুল্লাণ্ড, দৈন্ধবলবণ, বিট্লবণ, ঘষ্টিমধু, ধনে, এই দকল দ্রব্য সমভাগে অন্ধ-বাষ্পে দগ্ধ করিবে। এই ভন্ম দেবনে মুখরোগ আগু বিনষ্ট হয়। ইহা পিত্তজ্ব, তিমির ও ভ্রানাশক।

সপ্তায়তরসঃ।

নৃতস্তাজকং তুলাং মৃতলৌহং শিলাজতু। গুণ্গুলুঞ্চ শিলা তাপাং সমাংশং মধুনা লিহেও। মাৰ্মাজপ্ৰয়োগেণ মুধ্যোগং বিনাশয়েও॥

রসসিন্দ্র, অভ, লৌছ, শিলাজতু, গুগ্ গুলু, মনঃশিলা ও স্বর্ণমাক্ষিক প্রত্যেক দ্ব্রা সমভাগে লইয়া মধুসহ মাড়িয়া একমায়া পরি মাণে ব্যবহার করিলে মুখরোগ নিরাকৃত হয়।

পথ্যাবটী।

পথ্যবিলক্ষুঠক গৌমুত্তেণ প্রসাধ্যেৎ। এবা চন্টিকা হস্তি মুখদৌর্গদাসন্ততিম্॥

হরীতকী, বালা ও কুড় এই সকলের
চূর্ণ একত্র করিয়া, সকল চূর্ণের আটগুণ পোমৃত্র সহ ঐ চূর্ণ পাক ক্রিবে। পরে বটিকা গুস্তুই করিয়া সেবন করিলে সকল প্রকার
মূবদৌর্গন্ধ্য নিবারিত হইবে।

মহাসহচর-তৈলম্।

তুলাং গৃতাং নীলসহাচরক্ত
ফোণেহন্দ্রসং সংশ্রপদ্মেদ্ যণাবং।
পূতে চতুর্ভাগরসে তু তৈলং
পচেচ্ছনৈর্ম্বপলগ্রমিণে৯ ব্যাশ্রমণীমধ্কোৎপলানান্।
তৎ তৈলমাবেন গৃতং মুখেন
হৈর্ঘাং বিঞ্চানাং নিদ্যাতি সভাঃ।

নীলন নিট ১২॥০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। তৈল /৪ দের। কল-অনস্থায়, থদিরকান্ঠ, গুয়েবাব লার ছাল, জামছাল, আমছাল, মষ্টিমধু ও উৎপল প্রত্যেক ৪ তোলা। থগাবিধি পাক করিয়া এই তৈল মুশে ধারণ করিলে দস্ত দৃঢ় হয়।

ইরিমেদান্তং হৈলম্।

ইরিমেদহক্পলশতমভিনবমাপোধ্য থগুণ: কুড়া।
ভৌরাচকৈক্ত্রভিনিঃকাধ্য চতুর্গণেবেণ ॥
কাথেন তেন মতিমাংকৈলেন্ডারিংচকং শনৈপিচেং।
ককৈরক্সমাংশৈর জিঠালোগ্রমধ্কানাম ॥
ইরিমেদধনিরকট্দলনাক্ষান্তগোধমুক্ত্রকানান ॥
পত্রসংগাকলবেল ককোলজাতীকলানাম ॥
পত্রসংগাকলবাল বিদ্যালিন ক্রমধানাম বিদ্যালিক বিদ্যালিন বিদ্যালিক বিদ্যালিক

ভিলতৈল ৮ সের। গুয়েবাব্লার ছাল

১২॥• সের, জল ৬৪ সের সের, শেষ ১৬ সের।

করার্থ—মঞ্জিনা, লোধ, ষষ্টিমধু, গুয়েবাব্লার

ছাল, খদিরকান্ত, কট্ফল, লাক্ষা, বটছাল,
মৃতা, ছোট এলাইচ, কপুর, অগুরু, পদাকান্ত,
লবক্ষ, ককোল, জয়িত্রী, জায়ফল, রক্তচন্দন,
গেরিমাটী, গুড়ত্বক্, নাগকেশর ও ধাইকুল
প্রত্যেক ২ ভোলা। যথাবিধি পাক করিবে।
এই ভৈল ব্যবহারে মুধ্রোগ, ছন্টমাংস, শৌবির
ও শীতাদ প্রভৃতি দক্তসম্বনী যাবতীয় রোগ এবং
জিহ্বা, তালুও প্রক্রোগ নিন্ত হয়।

नाकौछिटजन्य ।

তৈলং লাক্ষারসং ক্ষীরং পৃথক্প্রস্থং সমং পচেৎ।
চতুপ্ত গৈরিমকাথে দ্রবৈদ্র পলসংমিতৈঃ ॥
লোপ্তকট্ফলমঞ্জিঠা-পলকেশরপদ্মকৈঃ।
চন্দর্নাৎপলযন্ত্যাহৈকৈতলং গাভ্রথারণম্ ॥
দালনং দন্তচালঞ্চ হনুমোক্ষং কপালিকাম্।
মীতাদং পৃতিবক্ত্রশ্ধ অক্চিং বিরুসাক্ষতাম্।
চন্দ্রাদ্র গাদেন্তান্ কুয়াদ্রন্ধান্পিত্রান্॥

ভিলতিল /৪ সের। লাক্ষার কাথ /৪ সের, তথ্য /৪ সের, গুরেবাব্লার কাথ ১৬ সের। কলার্প—লোগ, কট্ফল, মঞ্জিটা, পদ্ম-কেশর, পদ্মকাঠ, রক্তচন্দন, উৎপল ও মষ্টিমধু প্রত্যেক ১ পল। এই তৈলেব গণ্ড্যে দালন, দস্তচালন, হন্নাক্রেক, অনুচি ও মুখের বিরস্ভা প্রস্তি দূব হুইয়া দস্ত স্কল স্নুদ্ হয়।

বকুলাগ্য-তৈলম্।

বধুলক্ত ফলং লোপ্রং বজ্রবলাকুক্রণ্টকম্।
চতুরকুলবলোল-বাজিকর্ণেরিমাসনম্।
এখাং কষায়কক্ষাভ্যাং তৈলং প্রং মুখে ধৃতম্।
ক্রৈয়াং করোভি চলতাং দৃশ্তানাং ধাবনেন চ।।

তিলতৈল / ৪ সের। কাথার্থ—বকুল ফল, লোধ, হাড়যোড়া, নীল্ফাটি, দোণাল পত্র, বাব্ইতুল্সী, শালবুক্ষের ছাল, গুয়েবাব্লা ও অসমছাল মিলিত ১:॥॰ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। ককার্থ—কাথ্য দ্রব্য সমস্ত মিলিত /১ সের। এই তৈল মুখে ধারণ করিলে চলদন্ত দৃঢ় হয়।

জাত্যান্তং তৈলম্।

শ্বতিপলণতোরেন শশ্বপুশারসেন চ।
বকুলত্বক্কযায়েন পচেৎ তৈলং তিলোন্তবম্ ।
গায়ত্রীমান্তবাজক ত্রিকলাং কটুকত্রবম্ ।
চব্যং নীলোৎপলং কুঠং মধুকং রজনীব্যম্ ।
মৃত্তকং বালকং লোগ্রং সিন্দুরং বর্ণগৈরিকম্ ।
ক্ষীকৃত্য ক্ষিপেৎ তত্র বৃষ্টরোহময়োহপি চ ।
কাত্যাত্যাপ্যমিদং তৈলং নিধিলান্ মুধজান্ গদান্ ।
ভগনদরোপদংশোচ ত্রণং ছব্বং নিহন্তি চ ।

ভিলভৈল /৪ সের। জাতীপত্র রস, শৃষ্থপূশীর রস ও বকুলছালের কাথ, প্রভ্যেক ১৬
সের। কল্কার্থ—খদিরকার্চ, আত্রকেশী,
হরীত্রকী, আমলকী, বহেড়া, শুঠি, পিপুল,
মিহিচ, চই, নীলোংপল, কুড়, যৃষ্টিমধু, হরিদ্রা,
দাক্ষহরিদ্রা, মূতা, বালা, লোধ, মেটেসিন্দ্র,
স্বর্ণগৈরিক, বটের ঝুরি ও লৌহ মিলিত /১
সের। যথাবিধি পাক করিবে। এই ভৈল
ব্যবহারে মুখরোগ, ভগন্দর, উপদংশ ও
ছন্তরণ নিবারিত হয়।

মালত্যাগ্রয়ত্য ।

মালতা ছোণপুজালত নিষ্বকোলয়োত্ত্ব।
সহাচরত সক্তিত অৱসেন পুথক পূথক।
ককৈম লয়জোশীর-রজনদালাকসৈকবৈ:।
অথখনটনীলিনী-রজনাদাকসৈকবৈ:।
দাব্বা। বিঘাহক্তিভাগে কণ্যা চ পচেদ্ ছত্ম।
শ্নৈত্তাম্মায়ে পাতে কৃত্বক বিলেপনে।
মালত্যাত্মদিং স্পিদান্ মুখসমূত্বান্।
নিহতাগ্লাক সন্দেহা ভাসরত্তিমিরং ব্বা।

গব্যম্বত /৪ দের। মালতী, ঘন্ঘসিয়া,
নিম, বাব্লা, কাটি ও শাল ইঙাদের
পদ্রহাদির রন বা কাথ প্রত্যেক /৪ সের।
করার্থ—খেতচন্দন, বেণার মূল, রক্তচন্দন,
চাপাছাল, অখণছাল, বটহাল, নীলমূল,
হরিদ্রা, দেবদাক, সৈন্ধবলবণ, দাকহরিদ্রা,
ভঁঠ, কুড় ও পিপুল মিলিত /> সের।
বঙ্গলিপ্ত (কলাইকরা) তাম্রপাত্রে পাক
করিবে। এই মৃত গভূষ ও পানার্থ ব্যবহার্য্য।
ইহা দ্বারা সমস্ত মুথবোগের শাক্তি হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবি**ধিঃ**। —::-

মুখরোগে পথ্যানি।

বেদো বিরেকো বমনং গঙ্ব: প্রতিসারণম্। কবলোহতক্ক্তিনিসাং ধুম: শক্তাগ্রিকর্মণী॥ তৃণধাক্তং যবা মূলগাঃ কুলখা জাকলো রসঃ। বৃহৎপ্রোষ্ঠী কারবেলং পটোলং বালমূলকম্॥ কপুরনীরং তামূলং তপ্তামু খদিরো মৃত্য।

কট তিক্তপ বর্গোহয়ং মিত্রং সাানুগরোগিণাম্।

স্থেনন, বিরেচন, বমন, গণ্ডুষধারণ, প্রতিসারণ, কবলগ্রহণ, রক্তমোক্ষণ, নশু, ধূম, শস্ত্রক্রিয়া, অগ্লিকেয়া, তৃণধাতা, যব, মুগ, কুল্পাকলার, জাঙ্গলমাংসের যুগ, বড়পুটিমাছ (সরল পুটি), করলা, পটোল, কচিমুলা, কর্সুবাসিত জল, পান, গরমজল, খদির, মৃত, কটু প্রবাপ্ত তিক্তদ্রবা, এই সমস্ত মৃণবোগা-ক্রান্ত ব্যক্তির স্থপধা।

মুখরোগেইপথ্যানি।

মন্তকাঠং সানময়ং মৎস্যমান্পমামিষম্। দধি কীরং গুড়ং মাধং রুকালং কঠিনাশনম্॥ অধামুখেন শহনং গুক্তিয়ালকারি চ। মুখবোণগেয়ু সর্কেদু দিবানিস্থাং বিবর্জকায়েৎ ॥

মৃথবোগে দশুকাঠ, স্থান, অমুদ্রব্য, মংখ্য, আন্পনাংস, দিবি, ত্রগ্ধ, গুড়, মাষকলাই, ক্ষান, কঠিন ভোজন, মধোমুখে শ্য়ন, গুরুও কফজনক জন্য এবং দিবানিদ্রা, এই সমস্ত বিষর্জনীয়।

ইত্যায়ুর্বেদ-সংগ্রহে মুখরোগাধিকার:।

অথ কর্ণরোগাধিকারঃ।

অথ কর্ণস্রোতোগতরোগ-নিদানম্।

সনীরণ: শ্রোনেগতোহত্তথা চরন্
সমস্ততঃ শুলমতীব কর্ণরোঃ।
করোতি দেবিশ্চ যথাপ্দাস্ত ।
স কর্ণপুলঃ ক্থিতো গুরাচরঃ ॥
কর্ণপ্রোতাপ্থিতে বাতে পুণোতি বিবিধান্ পরান্।
ভেরামূদকশঝানাং কর্ণনাদঃ স উচাতে ॥
যদা শব্দবহং বায়ুঃ প্রোত আবৃত্য তিপ্ততি।
ভবঃ শ্রেমাখিতো বাপি বাধিয়াং তেন জায়তে ॥
বাযুঃ পিত্তাদিভিযুক্তা বেগুগোনোপনং ক্ষম ।
করোতি কর্ণরোঃ ক্ষেড়া কর্ণক্রেড়া স উচাতে ॥
শিরোহভিষ্যভাদধ্যা নিম্জভ্যে

স কৰ্ণসংখ্ৰাৰ ইতি প্ৰকীৰ্ত্তিঃ।
মাক্ষতঃ কফলংযুক্তঃ কৰ্ণকঞ্চং কৰোতি চ।
পিন্তোমশোষিতঃ শ্লেমা কুলতে কৰ্ণগুণকম্॥
স কৰ্ণগঞ্জা দুৰক্তঃ গতেও যদা

অবেদ্ধি পুষং এবণোহনিলাদিতঃ

স কর্ণপুৰো দ্রবতাং গতো যদ।
বিলায়িতো আগমুখং প্রপন্ততে।
তদা স কর্ণপ্রতিনাহসংক্রিতো
ভবেদিকার: শিরসে।হর্ধভেদকৃৎ ॥
যদা তু মূর্ছস্তাধবাপি জন্তবঃ
ক্ষন্তপ্রভাগতাপ্রধাপ মিক্ষকা:।
তব্যপ্রনাম্ভরবেশে নিক্ষত্তে
ভিষপ্তিরাক্তঃ ক্রিমিকর্গনো গদঃ ॥

পছঙ্গাঃ শতপদ্যক কর্ন্সভিঃ প্রবিশ্ব হি।
অরতিং বা ক্রম্প কর্ণ কুরুরে বেদনাম ॥
কর্নী নিস্তাতে ভক্ত তথা ফর্ফরায়তে।
কাঠে চর্নি রুক্ ভীরা নিশ্লান মন্দরেদনা॥
ক্ষতাভিগাতপ্রভন্ত বিদ্যাধিন
ভবেৎ তদা দেশসুক্তাহ্পরঃ পুন:।
সরস্থী ভারগমন্দরাক্রেই
প্রভিন্ন ক্রেমান্ন ।
কর্নপার স্তা দিতেন কেথেবি রুদ্র ছবেছ।
কর্নিরুদ্রিপাক ছা জায়তে চাম্পুরণাং।
পৃষ্য স্থাতি যা পৃতি স জ্ঞাঃ পৃতিকর্ণকঃ।
বর্ণশোধাক্রাদ্রাহিক জানীয়াত্বজ্লকগৈঃ॥

কর্ণগত বায়ু প্রতিলোমভাবে ইতন্তরঃ বিচরণ করিয়া, কর্ণে অতি কন্টদায়ক শৃশ উপস্থিত করে এবং কুপিত রক্ত পিত্ত বা কফ ইহাদের মধ্যে থে দোষ শ্বারা আবৃত হয়, তাহারও লক্ষণ প্রদর্শন কারেয়া থাকে। এই ব্যাধিকে কর্ণশৃশ কহে। ইহা কইসাধ্য়।

কর্ণনাদ নামক রোগে, কর্ণস্রোভোগত বায়্ দারা কর্ণে ভেরী মৃদক্ষ ও শব্দ এভৃতির শব্দের স্থায় বিবিধ প্রকার শব্দ অমুভূত হয়। শুদ্ধ বায়্বা কফসংযুক্ত বায়্শন্তবহ স্রোতকে আবরণ করিলে, বাধির্য্য কোলা) রোগ উপস্থিত হয়।

বায় পিত্তাদির সহিত সংযুক্ত হইগা কর্ণে ক্ষেত্র অর্থাৎ বেণুগোষের স্থায় শব্দ উপস্থিত করিলে তাহাকে কর্ণক্ষেত্র কহে।

মন্তকে আঘাত, জলে নিমজন অথবা কর্ণ-বিদ্রুধির প্রপাক, এই সকল কারণে বায় কুপিত হইয়া কর্ণকে প্রপীড়িত করিলে, তাহা হইতে পূয়, রস ও জল নিঃক্ষত হইতে থাকে। ইহাকেই কর্ণপ্রাব কহে।

কর্ণগত বায়ৃ কফদংসূক্ত হইয়া কর্ণে কণ্ণু উৎপাদন করিলে ভাহাকে কর্ণকণ্ণু করে।

কণন্ত শ্লেমা পিত্রোমধারা শোধিত ছইলে তাহাকে কর্ণন্ত কছে।

ঐ কর্ণগুণ যদি স্নেহ ও স্বেণদি । দারা বিশীনীকৃত ও দ্রব হইয়া নাসিকা এবং নৃথ দিয়া নির্গত হয়, তাহা হইলে উহাকে কর্ণ-প্রতিনাহ কহে। কর্ণপ্রতিনাহ রোগে অদ্ধাব-ভেদক উপস্থিত হয়।

কর্ণের অভ্যন্তরে মাংস ও রক্তের পচন হেতু ক্রিমি উৎপন্ন হইলে, অথবা মাক্ষিকাগণ ডিম্ব প্রস্তব করিলে, তাহাকে ক্রিমিকর্ণক বলা যায়।

পতঙ্গ ও কাণকোঠারি (কেরাই) গণ কর্ণে প্রবেশ করিলে, অত্যস্ত অন্তুখ, ব্যাকুলতা, দারুণ বেদনা ও তোদ উপস্থিত হয় এবং কাণ ফর্ফর্ করিতে থাকে। কীট যথন চলিয়া বেড়ায়, তথন অত্যস্ত যাতনা বোগ হয়, কিন্তু নিম্পন্দ হইলে বেদনার লাঘ্ব হইয়া থাকে।

কর্ণে ক্ষত বা অভিগাত হেতু আগন্তজ্ এবং দোষ প্রকোপ হেতু দোষন্দ, এই দিবিদ বিদ্রুধি উৎপন্ন হয়। কর্ণ-বিদ্রুধি বোগে স্ফী-বেধবং বেদনা, ধুমনির্গমবং পীড়া, দাহ ও সম্ভাপ এই সকল উপদ্রব উপস্থিত হয়। ইহাতে রক্ত পীত বা অক্লণবর্ণ প্রাব নিঃক্ষত হইয়া থাকে।

পিত্ত প্ৰকোপ হেতু কৰ্ণ ক্লিন্ন ও পৃতিভাবা-পন্ন হটলে তাহাকে কৰ্ণপাক কছে।

কর্ণবিজ্ঞধির পাক অথবা কর্ণে জলপ্রবেশ হৈতু কর্ণ দিয়া তুর্গদ্ধ পূয্ নিঃক্ষত হইলে, তাথাকে পুতিকর্ণক কহে।

উপরি-উক্ত রোগ ব্যতীত, কর্ণে শোথ অর্কাদ ও অর্ণ: হইয়া থাকে। তাহাদের লক্ষণ পূর্বোক্ত শোথাদির লক্ষণের ন্তায় জানিবে।

वर्थ कर्नरताग- हिकिৎमा।

কণশূলে কৰ্ণনাদে ৰাধিৰ্য্যে ক্ষেত্ৰুত এব চ। চহুপাপি চ বোগেৰু সংমাক্তং ভেষজং স্মৃতম্ ॥ শূঙ্গবেরঞ্জ মধ্ চ সৈন্ধাবং তৈলমেব চ। কছৰণং কৰ্ণবাৰ্ধাব্যমতৎ স্তাদ্ বেদনাপহম্॥

কর্ণশূল, কর্ণনাদ, ব্রিরতা ও কর্ণক্ষেত্র রোগের সাধারণ ঔষধ যথা ;— প্রাদার রস ৪ মাধা, নধু ২ মাধা, সৈন্ধব ১ রতি এবং তিল তৈল ২ মাধা, এই সকল দ্রব্য একত্র মিশ্রিত ও ঈষহুষ্ণ করিয়া ভদ্মারা কর্ণপূর্ণ করিলে কর্ণের বেদনা প্রশমিত হয়।

কপিথম তুল্প (ম-শৃঙ্গবেররদৈঃ গুভৈঃ। পুলোদেঃ পুনয়েন কর্ণং কর্ণশুলোপশা হয়ে॥

করেৎবেলের রস, টাবালেবুর রস ও আনার রস ঈষহয়ও করিয়া তদ্বারা কর্ণপূরণ করিলে, কর্ণের যাতনা নিতৃত হয়।

লশুনাদ্রকশিগ্রাণাং স্থরক্সা মূলকস্স চ। কদলাাং স্থরদঃ শ্রেণ্ডঃ কছলং কর্ণপূর্ণে॥

রম্বন, আদ্', শাজনাছাল, রক্তশজ্জনা, মূলা ও কলার ড'াটা ইথাদের সমস্তের বা এক একটির স্বরদ ঈদত্বক করিয়া তদ্ধারা কর্ণপূর্ব করিলে কর্ণের যাতনা নিবৃত্তি ধ্য়।

সমূদ্দেনাচ্পন যুক্তা বাপাবচ্পত্তে ।

(গুক্তোতি প্রথম তৈলেন কর্ণা অঞ্চাপ ততাংবচ্পন্মথবা ওক্তেন কর্ণো পুর্যিতা ততঃ সমূদ্দেশেনাবচ্পন্মিতি শিবদাস: ।)

কর্ণবেদনার প্রথমে কর্ণে তৈল একণ করিয়া অথবা কাঁজি দাবা কর্ণপূর্ণ করিরা পরে সমুদ্রফেন চূর্ণ প্রয়োগ করিবে।

আর্দ্রকন্ম্যাবর্ত্তকশোভাঞ্জনমূলকন্মরসা:। মধতৈলদৈশ্ববৃতাঃ পৃথগুক্তাঃ কর্ণলুলহরাঃ।

মধু তৈল ও দৈদ্ধবযুক্ত আদার রদ বা হুড়্ছড়ের রদ বা সজিনার রদ অথবা মূলার রদ কর্ণে প্রয়োগ করিলে কর্ণশূল প্রাশমিত হয়।

শোভাঞ্জনন্ত নিয়াদন্তিলতৈলেন সংযুত: । ব্যক্তোঞ্চ: পূরণ: কর্ণে কর্ণশূলোপশান্তয়ে ॥

সজিনার রস তিলতৈলের সহিত সংযুক্ত ও ঈষ্তৃষ্ণ করিয়া তন্দ্রীরা কর্ণপুরণ করিলে কর্ণশুল উপশ্যিত হয়।

অষ্টানামপি মুত্রাগাং মুরেশাক্সতমেন চ। কোন্দেন পুরয়েৎ কর্ণে কর্ণুলোপণান্তরে॥

গোমূত্রাদি অপ্টবিধ মুত্রের নেকোন মূত্র ঈষত্যক করিয়া তদ্বংরা কর্ণপূর্ণ করিলে কর্ণ-শূল নিবারিত হইয়া থাকে।

আমাধাপত্রথন্নং বা বিধায় বছপত্রকম্।

তৈলাক্তমঙ্গারপূর্ণং নিদধাক্তিবণোপরি ।

বং তৈলং চারতে তথ্যাৎ খন্নানন্ধারচাপিতাং :

তৎ প্রাপ্তং প্রবণ্যোতঃ সদ্যো গৃহাতি বেদনাম্।
(পিত্তাম্বন্ধে তু স্পিন্দিং তৈলস্থানে। ইতি বিদেহ ।)

কতকগুলি অশ্বথপত্তে একটি ঠোঙ্গা প্রস্তুত করিয়া তাহা তৈলাভ্যক্ত ও জ্বলস্ত অঙ্গারপূর্ণ করিয়া কর্ণের উপর স্থাপন করিবে। অগ্নির উত্তাপে তৈল চুরাইয়া বিন্দ্ বিন্দু করিয়া কর্ণরন্ধ্যে পতিত হইবে। তাহাতে শহুই বেদনা নিবারিত হয়। (বিদেহ, পিভায়্ব-বন্ধে তৈলের পরিবর্তে মুগ্ত দিতে বর্ণেন।)

অকপত্রপুটে দম্ম-মুহীপত্রভবো রস:। কছক: পুরণাদেব কর্ণিক্রনিবারণ:॥

আকল্পত্রের পুটে সীজপত্র কল্সাইয়। তাহার ঈষহক্ষ রস কর্ণে পুরণ করিলে কর্ণশূল নিবারিত হয়।

তীত্রশূলাতুরে কর্ণে সধকে ক্রেবাছিনি। ছাগমূত্রং প্রশংসন্তি কোনংং দৈক্ষবসংযুত্র । কর্ণে তীত্র শূল, শব্দ ও ক্লেদস্রাব থাকিলে সৈন্ধব-সংযুক্ত ঈষত্বক ছাগমূত্র ছারা কর্ণপূর্ণ করিবে। তাহাতে বিশেষ উপকার হইবে।

বংশবিলেথসংযুক্তে মূত্রে বাজাবিকে ভিষক্। তৈলং পচেৎ তেন কর্ণং পুরয়েৎ কর্ণশূলনঃ।

বাশের নীলের কল্প ও ছাগমূত্রের সহিত অথবা মেষমূত্রের সহিত তৈল পাক করিয়া কর্ণে পূরণ করিলে কর্ণশূল নিবারিত হয়।

হি**কুত্**ষুক্ত**ন্তীভিঃ** সাধ্যং তৈলন্ত সাৰ্থপৃষ্। কৰ্ণশুলে প্ৰধানন্ত পুরণং হিত্তচমূতে ॥

হিছু, গনে ও ওঠি এই সমুদায়ের সহিত সর্বপটেতল পাক করিল। বংগ পুংগ করিলে কর্ণশ্র নিবারিত হয়।

> অকস্ত পরং পরিগ্রেপীর মাজ্যেন লিগুং শিশিয়োগ্রপুর। আপাড়া তোরং এবংগ নিষ্ক্রিং নিষ্ঠি শুলং বহুবেনক্ষ।

আকল্পের পীতবর্ণ পাকা পাতায় স্থত মাথাইরা অগ্নিতে কল্মাইবে এবং রস নিঙ্ডাইয়া অল্ল উন্স পাকিতে থাকিতে কর্ণপূরণ করিবে। ইহাতে কর্ণের শূল ও অত্যস্ত বেদনা দূর হয়

কৰ্ণৰাদে কৰ্ণক্ষুড়ে কট্ডেলেন পুরণ্য : নাদ্বাধিয়ায়েট কুয়াছাত্মুলেক্ষমৌৰ্থম্ ।

কর্ণনাদ ও কর্ণক্ষেত্র রোগে কটুইতল ছারা কর্ণপুরণ করিবে। কর্ণনাদ ও ব্যবিরতা রোগে বাতশুলের ভায় চিকিৎসা করিবে।

এধ এব বি,ধিঃ কংঘ্যঃ প্রণ'দে মসাপুর্বকঃ। গুড়ুনাগরতে।য়েম মস্যং সাক্ষেত্রগাঁরপি॥

কর্ণনাদে পুর্বোক্তরূপ কর্ণপুরণ ও নহাগ্রহণ করিবে। বধিরতা ও কর্ণনাদে গুড়মিশ্রিত শুনুর কাণ দারা নহা গ্রহণ করিবে।

नाराङ्कः मार्वेष्ठनामि वाधिगारमो छू राक्तरहः। वर्क्करहोत्राश्चनः कार्धः कृष्णः वाधिगाशीष्टिङः।

বধিরতা বোগে বাতরোগাক্ত মাধ-তৈলাদি প্রয়োগ করিবে। বধির ব্যক্তির মৈথুন, ক্রোধ ও ক্লক্ষরতা বর্জনীয়। চূর্ণং পঞ্চকষায়াণ্*ে কপিথরসসংযুত্য। কর্ণপ্রাবে প্রশংসন্তি পুরণং মধুনা সহ॥

তিন্দুক (গাব), হরীতকী, লোগ, সমঙ্গা (বরাক্রাস্তা) ও আমলকী ইহাদের বন্ধল চূর্ণ, কয়েৎবেলের রদ ও মধু মিশ্রিত করিয়া তদ্ধারা কর্ণপূরণ করিলে পুষাদি স্রার নিবারিত হয়।

ব্যজ্ঞিকাচূর্ণসংযুক্তং বীজপুররসং ক্ষিপেৎ। কণপ্রাবন্ধজো দাহ'তে নগুন্তি ন সংশয়ঃ ।

সাচিক্ষার চুর্ব টাবালেবুর রদে আগ্লুত করিয়া তদ্বারা কর্ণপূবণ করিলে কর্ণের আব, বেদনা ও দাহ নিবাবিত হয়।

সজ্জিক্চুৰ্সংযুক্তঃ কাপাসীফলজো রসং। মধুনা সংযুতঃ সাধু কৰ্বধাৰে প্ৰশস্ততে॥

শালের ওক্চুর্ণ বন-কার্পাস ফলের রসে আল্লুত করিয়া তাহা মধ্ব সহিত কর্ণে প্রয়োগ করিলে কর্ণস্রাব নিবৃত্তি হয়।

পুটপাক বিধিয়িয়ো হ'লিড জ'ভেছত্রজ । বসং সভেলসিক্ষুণা, কর্ণন্থরঃ পরঃ॥

হস্তির বিষ্ঠান্ধাত ছত্র (ছত্রাকার বস্ত বিশেষ) পুটপাকে ঝল্দাইয়া তাহার রস, তৈল ও সৈন্ধব সংযুক্ত করিয়া কর্ণে দিলো:কর্ণপ্রাব প্রশামত হয়।

কর্ণপ্রকালনে শস্তং করোক্ষং হয়তীজনম্। কর্ণ-প্রকালনে ঈষ্চ্ঞ গোমুত্র প্রশস্ত।

. ক্লেদীয়া তু তেলেন স্বেদেন প্রবিলাপা চ। শোধয়েৎ কর্ণগুম্বস্থা ভিষকু সমাক্ শলাকয়া।

কর্ণগুথ রোগে প্রথমতঃ তৈল দারা কর্ণমল ক্লিন্ন করিয়া পরে স্ফেন্ন প্রদান করত শলাকা দারা দেই মল নিঃদারিত করিবে।

ত্ব্যাবত্তকক্ত রসং সিজুবাররসং তথা। লাকলীমূলজরসং ক্রাষণেনাবচুর্বিতম। পুরয়েৎ ক্রিমিকর্ণন্ত জস্কুনাং নালনং পরম্॥

হুড় হুড়ে, নিসিন্দা বা ঈশ্ লাঞ্চলামূলের রসে ত্রিকটু চূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া তন্দারা কর্ণপূর্ণ করিলে কর্ণের ক্রিমি বিনষ্ট হয়।

ক্রিমিকর্ণবিনাশায় ক্রিমিয়ং যোজয়েদ্ বিধিম্। বাস্তাকুধ্মশ্চ হিতঃ সর্থপক্ষেহ এব চ । কর্ণের ক্রিমিনাশার্থ ক্রিমিন্ন বিধির অমু-ষ্ঠান করিবে। ইহাতে বেগুনের ধ্ম ও সর্বপ-তৈল প্রশস্ত।

হলিস্থ্যাবৰ্ত্তব্যোধ-স্বরদেন। ভিপুরিতে। কর্ণে পাতস্থি সহসা সর্কাস্ত ক্রিমিজাতয়ঃ।

ঈশ্লাঙ্গলা ও হুড় হুড়ের রসে ত্রিকটু চূর্ণ মিশ্রিত করিয়া তদ্বাবা কর্ণপূরণ করিলে কর্ণের ক্রিমি সকল শীঘ্র বিনষ্ট হয়।

মালতিদুলরসমধ্না পুরিতমথবা গবাং মুক্তিঃ। দূরেণ বিভজ্যতে বৈ অবশ্যুগং পুতিরোগেণ ॥

মানতীপত্রের রস মধুসংযক্ত করিয়া তন্তারা অথবা গোমূর ছারা কর্ণপূরণ করিলে পৃতিকর্ণ রোগ (কান্পচা) নিধারিত হয়।

হরিখালং সগোমুকং পুরুষং পুতিকর্ণজিং।
হরিখিল গোমুতে থ্যিয় ভাহা থাব: কর্ণপূবণ ক্রিলে পুতিকর্ণ প্রশ্মিত হয়।

অ' একৰ, প্ৰবালানি মৰ্কস্ত বটস্ত চ। এভিন্ত স'ধিতং তৈলং প্তিকৰ্ণাদং হবেং ॥

আম, জাম, মৌল ও বট, ইহাদের ন্তন পত্তের সহিত তৈল পাক করিয়া সেই তৈল কর্ণে দিলে পৃতিকর্ণ প্রশমিত হয়।

জাতাপত্রসৈত্তেল বিপ্রবং পৃতিকর্ণজিং। পিষ্টং বসাঞ্জনং নাধ্যাঃ ক্ষীরেল ক্ষোত্রসংযুত্র । প্রশক্ততে চিরোধে তৎ স্থাবকে পৃতিকর্ণকে।

জাতীপত্তের বদেব সহিত তৈল পাক করিয়া দেই তৈল, অথবা স্তনত্ত্বপিষ্ট ও মধু-দংযুক্ত রসাঞ্জন কণে পূরণ করিলে দীর্ঘকালোং-পন্ন পৃতিকর্ণ ও স্রাব প্রশমিত হয়।

বক্লাককপিথাত্র-জন্ধুপ্রব্যাধিতম্। পুতিক্লাপ্তং তৈকং জাতীপ্তর্গোহ্যবা ।

বরুণ, আকন্স, কয়েৎবেল, আম ও জাম ইহাদের পজের সহিত পক তৈল, অথবা কেবল জাতীপজের রস পৃতিকর্ণে প্রয়োগ করিবে। অথ কর্ণপ্রতীনাহে প্রেহপেদী সমাচরেৎ। তত্তা বিশ্বিকশিরদা ক্রিয়াং প্রাথাং সমাচরেৎ।

কর্ণপ্রতীনাহ রোগে স্নেহ, স্বেদ ও শিরোবিরেচন (নম্ম) প্রয়োগানন্তর দোবানু-রূপ চিকিৎসা করিবে। নিও তিক্রমতেলং সিকুধ্মরজো ৩ড়া। প্রণাৎ প্তিকর্ণজ শমনো মধ্সংযুতঃ ।

নিসিন্দাপত্রবস, তৈল, সৈন্ধব লবণ ঝুল, পুরাতন গুড় ও মধু এই সম্দার একতা মিশ্রিত করিয়া কর্ণে পূরণ করিলে পৃতিকর্ণ উপশ্যিত ছইয়া থাকে।

কৰ্ণপাৰস্থ ভৈষজাং কুয়াংং ক্ষত্তবিসপ্ৰথ। বিধিশ্চ কফ্হা সৰ্ব্বঃ কৰ্ণকঞুং ব্যপোহতি॥

কর্ণপাকে ক্ষতজ-বিসর্পের ভার চিকিৎসা করিবে। কর্ণকগৃতে কফনাশক ক্রিয়া সকল কর্ত্তব্য।

বিদ্রধে) চাপি কুলাঁত বিদ্রধাক্তং (ই ভেষজম্। (বিদ্রধাক্তমিতাস্থবিদ্রধাক্তমিতি জীক্তঃ।)

কর্ণবিদ্রণিরোগে অস্তবিদ্রণি-রোগোক্ত ঔষধ ব্যবস্থা করিবে।

শতাব্যরীবাজিগন্ধা-পয়জ্ঞৈরওবাজকৈ:। তেলং বিপক্ত সক্ষারং পালীনাং পুষ্টকৃৎ পরস্থ

শতমূলী, অশ্বগন্ধা, ক্ষীরকাকোলী ও এরগুবীজ, ইহাদের কল্প ও যথোপযুক্ত হুগ্নের সহিত তৈল পাক করিয়া সেই তেল নন্দন করিলে কর্ণলভিকা পুষ্ট হয়।

শুঞ্জাচুৰ্বসূতে জাতে মাহিলে ক্ষীর উচ্চাত্ম। মবনাতং ওদভ্যকাৎ কৰ্ণগালিবিবদ্ধনম্॥

মাহিষ্ড্রে, অইমাংশ গুঞ্জাফলচূর্ণ মিশ্রিত করিয়া তাহাতে দ্বি পাতিবে। পরে ঐ দ্বি হইতে নবনীত উদ্ধত করিয়া সেই নবনীত কর্ণে মৃদ্দন করিলে কর্ণের পালি বৃদ্ধিত হয়।

কর্ণন্ত তুর্কাধে ভূতে সংরক্তো বেদনা ভবে। তত্ত্ব ত্রাধরোহার্থং কোপো মধ্যাজাসংযুক্তঃ। মধুক্যবমঞ্জিলা-কর্মুলৈ: সমস্তহঃ॥

কর্ণ তুর্বিদ্ধ হওয়ার শোথ ও বেদনা জানিলে ঘটিমধু, যব, মঞ্জিটা ও এরগুনুল এই সকল দ্রব্যের কক ঘুত ও মধু সংযুক্ত করিয়। ভাহার প্রলেপ দিবে।

অনেকধা তু চিছন্নন্ত সন্ধিং কর্ণন্ত বৈ ভিৰক্। যো যপাতিনিবিষ্টঃ তাৎ তং তপা বিনিষোজ্ঞাহে। ধান্তানোবেশদকাভ্যান্ত সেকো বাতেন দূৰিতে। রক্তপিতেন প্রসা প্রেমণা সুফ্রারিণা। ততঃ সীব্য স্থিরং কুষ্যাৎ সন্ধিবক্ষেন বা পুনঃ। মধ্বাজ্যেন ততোহভাজা পিচুনা সন্ধিবেষ্টনম্। কপালচূর্নেন ততশ্চুর্বয়েৎ পথায়াথবা॥

কর্ণসন্ধি বহুণা ছিন্ন হইলে যে যে স্থান যে যে স্থানের উপগ্রুক্ত বলিয়া বোধ হইবে, সেই সেই স্থান তত্তৎস্থানে সংষ্কৃত করিয়া দিবে। কর্ণচ্ছেদ বাতদ্বিত হইলে কাঞ্জিক বা উষণ-জল স্থারা; রক্ত ও পিত্ত দ্বিত হইলে ছগ্ধ স্থারা এবং ক্লেল্যিত হইলে উষণ জল স্থারা কর্ণ-সেক করিবে। তৎপরে রেশমস্ত্রে ছিন্ন স্থান সেলাই ও বন্ধন করিয়া স্থাত ও মধুস্থারা উহা অভ্যক্ত ক্রিবে এবং তুলা স্থারা সন্ধিস্থান বেষ্টন করিয়া রাখিবে। তদনস্কর হংকপাল চুর্ণ বা হ্রীভকীচুর্ণ ক্ষভস্থানে প্রদান করিবে।

ভৈরবো রসঃ।

পতং গন্ধং বিষধৈণ উপাং স্বাপদ্ধ । মারিচেন সমাযুক্তমাক্রতোয়েন ভাবিতম্ ॥ বহ্নিমান্যকামরোগং ক্ষেমাণং গ্রহণাগদম । সন্ধ্রিপাতং তথা শোধং হস্তি শ্রোহেবং গদম্ ॥

পারদ, গন্ধক, বিষ, সোহাগার থৈ, কড়িন্তম ও মরিচ চুর্ণ এই সমুদায় একত্র আদার রসে ভাবনা দিয়া বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহাতে অগ্নিমান্দ্য ও কর্ণরোগ প্রভাত নিবারিত হয়।

इस्विं।

শিলাক্ষত্বলোহানি সমানি হেন পাদি ব কাকমাটাবরীধাত্রী-পথানামস্থসা পূথক্ । ভাবরিহা বটাঃ কুষাংধ্ বিশুঞ্জাফলমানতঃ। ধাত্রীভোষেন সংমন্দ্র প্রাতঃ প্রাতঃ প্রযোজ্যের । কর্ণনাদাদয়ং সর্বের গদা বাতে।ভবাশ্চ যে। প্রমেহা বিংশতিশ্চাপি নগুল্পোতরিবেবণাব । স্থাবিপ্রাবণাদিক্ষ্রণতাবং তাপহৃদ্ যথা। ভবৈবেকুবটা নাম রোগতাপনিস্দনী।

শিলাজতু, অল্ল ও লোহ প্রত্যেক এক ভাগ, ম্বর্ণ। দিকি ভাগ, এই সমুদায় একত্র করিয়া কাকমাচী, শতমূলী, আমলকী ও প্রের রসে ভাবনা দিয়া ছই রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। আমলকীর রস বা কাপের সহিত প্রতাহ প্রাতে এক এক বটিকা সেব-নীয়। ইহা সেবন করিলে কর্ণনাদাদি সমস্ত রোগ, বাতজ ব্যাদি সকল এবং বিংশতি প্রকার প্রমেহ নিবারিত হয়।

भातिवानिवरी।

দারিবাং মধুকং কুঠং চাতৃজ্জাতং প্রিম্পুকন্।
নীলাৎপলং শুড়্টীঞ্চ দেবপুপাং ফনত্রিকন্॥
অলং সর্কান্ধশলে-সনং লৌহং বিভাবরেং।
কেশরাজান্ধনা পার্থ-কাথেন সবজান্তদা ॥
কংকমাচারসেনাপি গুঞ্চান্দ্রেরেরে চ।
বড়গুঞ্জাপ্রমিতাঃ পশ্চাদ্ বিদ্যাদ্ বটিকা ভিষক॥
ধারোকনাপি প্রমা শত্র্লীরসেন বা।
একৈকাং যোজরেং প্রাত্ত শ্রীপ্রসালনেন বং॥
নিখিলান্ কর্ণজান্ রোগান্ প্রমেহানপি বিংশতিম্।
রক্তপিত্তং ক্ষরং থ'সং লৈব্যুং জীর্ণজ্ব ভগা॥
অপ্রারমনাশাংসি কলোগঞ্চ সদ্বিত্রম্।
সারিবাদিবটা হন্তাং প্রাগদানবিলানপি॥

অনস্তম্প বস্তিমধু, কুড়, গুড় থক্, তেজপত, এলাইচ, নাগেশ্বর, প্রিরন্ধু, নীলোংপনমুল, গুলকা, লংকা, হণীতকী, আমলকী ও বহুড়া প্রশ্রেক সমভাগ, সমস্তিত্বা অল্ল এবং অল্লের সমান লোহ, এই সমুদায় একত্র করিয়া কে গুরিষার রসে, অর্জ্জুন ছালের কাথে, যবের কাথে, কাকমাচার রসে ও কুচ্মূলের কাথে ভাবনা দিয়া ভরতি প্রমাণ বিটকা করিবে। অনুপান—গারোক্ষ হুগ্ধ, শতমুলীর রস, অথবা চন্দন জল। প্রত্যাহ প্রভাতে এক একটি বিটকা সেবনীয়। ইহা সেবন করিলে বিবিধ কর্ণরোগ, প্রমেহ ও রক্তপিতাদি নানা পীড়ার শাস্তিহয়।

मीशिका-देखन**म्**।

মহতঃ পঞ্মূলসা কাণ্ডাক্সষ্টাকুলানি চ।
ক্ষোমণাবেষ্টা সংসিচ্য তৈবেনাদীপরেৎ ততঃ ।
বহু তৈলং চাবতে তেন্ডাঃ স্থাকং তহু প্রযোজরেছ।
ক্ষেয়ং তদীপিকাতিলং সন্ত্যো গৃহাতি বেশনাম্॥

এবং কুষ্যাদ ভন্তকাঠে কুঠে কাঠে চ সারলে । মতিমান দীপিকাতৈলং কর্ণশূলনিবারণম্ ॥

মহৎ-পঞ্চমুলের অটাঙ্গুল পরিমিত কাষ্ঠ-গগু সকল পট্বন্ধে বেষ্টিত ও তৈলে সিক্ত করিয়া প্রজালিত করিবে। ইহা হইতে নে সকল তৈলবিন্দ্ পতিত হইবে, তৎসম্দায় হবোঞ্চ অবস্থার কর্ণে পূরণ করিবে, তদ্মারা সদ্যঃ বেদনার উপশম হইবে। ইহার নাম দীপিকা তৈল। এইরূপ দেবদারু, কুড় ও সরলকাঞ্চেদীপিকা তৈল প্রস্তুত করিয়া কর্ণে পূরণ কারলেও বেদনার শাস্তিহয়।

ক্ষারতৈলম্।

বালমূলক শুঠীনাং ক্ষানো হিন্দু সনাগরম্। শতপূপা বচা কুষ্ঠং দারু বিজ্ञ রসাঞ্জনন। भीवर्कनयक्षाद-विकास हिम्देनस्वय । ভূজ্জান্থিবিড়ং মুখ্যং মধুগুক্তং চতুগুণিম্ 🖡 भ 'जूनुक्रतमरेक्ठव क्ला ताता अव **छ**। তৈলমেভিবিপক্তবাং কর্ণশলহরং পরম। বাধিয়াং কর্ণনাদশ্চ প্রথাপ্রাপশ্চ দারূপঃ ! পুরণাদ্দ্য তৈল্যা ক্রিময়ঃ কর্ণসংশ্রিতাঃ॥ ক্ষিপ্ৰং বিনাশং গচ্ছন্তি কৃষ্ণাতেরস্য শ'সনাং। কারতৈলমিদং শ্রেষ্ঠং মুগদন্তাময়াপহ্ম ॥ মধুপ্রধানং শুক্তর মধুশুক্তং তথাপরম্। জখারস্য ফলরসং পিপ্লীগ্রিসংযুত্ম । মধুভাতে বিনিকিপা ধান্তরাশে) নিধাপয়েৎ। মাদেন ভজাভরদং মধ্ওজন্দাহাত্ম ! দ্'তিংশংপল্'ন্ পিললীমূলদা (ङायीत्रयः गत्रभग চড়'রি, নধুনোহষ্টপলানাতি বৃদ্ধবৈভোপদেশাৎ মানক্রম:। शिवानामः :)

তেল /৪ সের। মধুগুক্ত ১৬ সের,
টাবা দেবর রস ১৬ (মতাস্করে /৪) সের,
কদলী (বাক্ড়ার) রস ১৬ (মতাস্করে /৪)
সের। করার্থ—কচি শুক্ত মূলার ক্ষার,
হিন্তু, শুঠ, শুল্ফা, বচ, কুড়,
দেবদারু, শক্তিনা ছাল, রসাঞ্জন, সচললবণ,
ঘ্রক্ষার, সাচিক্ষার, উদ্ভিদলবণ, সেন্ধবলবণ,
ভূক্তপত্র, পিপুলমূল, বিট্লবণ ও মূতা মিলিত
এক সের। এই তৈল কর্ণে পূরণ করিলে

কর্ণশূল, বধিরতা, কর্ণনাদ, পূ্য্স্রাব ও ক্রিমি অতি সম্বর নিবারিত হয়। এই তৈশ ব্যবহারে মূখবোগ ও দম্ভের পীড়া উপশ্নিত হয়।

মধ্প্রধান শুক্তকে মধু-শুক্ত কহে। মধু-শুক্ত প্রস্তুত করিবার প্রণালী এই—জামীর লেবুর রস ১২ পল, পিপুলমূল ৪ পল, মধু ১ সের, এই সমুদায় একত মৃৎকল্সে রাখিয়া ধান্তরাশির মধ্যে একমাস রাখিবে। তাহা হইলে মধুশুক্ত প্রস্তুত হইবে।

অপামার্গকারতৈলম।

মার্গকারজলেন চ তৎকৃতকক্ষেন সাধিতং তৈলম্। অপহরতি কর্ণনালং বাধিয়াঞ্চাপি পুরণতঃ॥

তিলতৈল /৪ সের। আপাক্ষ কার /২
সের, জল ২৪ সের, ২১ বার ছাকিয়া ১৬
সের ক্ষার্জন গ্রহণ করিবে। কল্ল-আপাক্ষ
কার /১ সের। এই তৈল কর্ণেপূরণ করিলে
কর্ণনাদ ও ব্ধিরতা নিবারিত হয়।

সৰ্জ্জিকান্তং তৈলম্।

শ্বাজ্ঞকা মূলকং শুলং হিন্ধু কুৰণ মহৌৰধন্। শতপুশা চ তৈক্তিলং পদং শুলং চতুগু পৃষ্। প্ৰণাদশুলৰাধিষ্যং প্ৰাৰঞ্চান্ত ব্যপাহতি॥

তিলতৈল /৪ সের। কাঁজি ১৬ সের। কল্পানিকার, শুক্ষমূলা, হিন্ধু, পিপুল, শুঠ ও শুল্ফা মিলিত /১ সের। ইহা ধারা কর্ণ নাদ, কর্ণশূল, কর্ণপ্রাব ও বধিরতা বিনষ্ট হয়।

म्भूमारिङ्म् ।

দশমূলীকৰায়েণ তৈলপ্ৰস্থং বিপাচয়েৎ। এতৎ কক্ষং প্ৰদায়েব বাধিয়ে প্ৰমৌৰধম্॥

ভিলতৈল /৪ দের। কাথার্থ—মিলিত দশমূল ১২॥• সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। ক্ষ—দশমূল /১ দের। দশমূল তৈল ব্যারভার উৎক্ষণ্ট ঔষ্ধু।

বিল্বতৈলম্।

कनः विचमा भृत्वन शिष्ट्री टिजः विशोहतः । माजकोतः তविতরেছাধির্যে কর্ণপূরণে ॥

তিলতৈল /৪ সের। ছাগছগ্ম ১৬ সের। কল্প-গোমুত্রপিষ্ট বেলগুঠি /১ সের। বাধির্য্য রোগে এই তৈল কর্ণে পূরণ করিবে।

विव्येटिनम्।

(মহাস্তরে)

বিশ্বগভং পচেৎ চৈলং গোমূআৰূপয়েংছবিতম্।
বাধিয়ে পুরয়েৎ তেন কর্ণে মকফবাত্তিং॥
তিলাতৈল /১ /সেব। ছাগত্ন /৪ (সের,
গোমূত্র /৪ (সের। ক্র —বেলাশুঠি ২ পলা।
বাত্তৈশ্বিক বিধিবতায় ইহা কর্ণে পূরণ ক্রিবে।

লশুনাদ্যং তৈলম্।

লশুনামলকং তালং পিষ্টু,া তৈলে চতুগু গৈ। তৈলাচতুগু গং ক্ষীরং পাচাং তৈলাবশেষকম্। তৎ তৈলং পুরয়েৎ কর্ণে বাধিষাং পরিশাশয়েৎ ॥

তিলাতৈল /> সের, ছাগছ্য /৪ সের। কল্বার্থ—রত্মন, আমলকী ও হরিতাল মিলিত ২ পল। ইহা কর্ণে পূরণ করিলে ব্যারতা নিব।রিত হয়

জম্বাদ্যং তৈলম্।

জম্বান্তপত্ৰং তক্ষণং সমাংশং কপিথকাৰ্পাসফলঞ্চ সাত্ৰম।
কৃষা রসং তং মধুনাবিমিন্তং প্ৰাবাপহং তং প্ৰবদন্তি তজ্ঞ।
এতঃ শৃতং নিম্বকরঞ্জতৈবং সমাৰ্বপং প্ৰাবহরং প্ৰদিষ্টম্ ।

(সার্ক্তমিতি সমস্থাদার্ক্তমিতার্থ:। নিম্ববীজকরঞ্ বীজ্ঞতবং তৈল: সার্বপতিলক সংমিত্র্য পঞ্জবাম্। প্র-প্রেব তৈলক্তমং পঞ্জবামিতাক্ত্রে। ইতি শিবদাস:।)

কচি জামপত্র, কচি আমপত্র, করেংবেল ও কার্পাদফল, ইহাদের রস মধু মিশ্রিত করিয়া কর্ণে দিলে কর্ণপ্রাব নিবারিত হয়। উপরি-উক্ত জব্যের ও চতুগুল জলের সহিত নিম, করজ তৈল বা সর্ধপের তৈল অথবা এই তিন প্রকার তৈল একত্র পাক করিয়া কর্ণে পুরণ করিলে আব নিবারিত হয়।

শম্বৃক-তৈলম্।

শম্কুকন্ত চ মাংসেন কটুতৈলং বিপাচিতৰ। কন্ত পুরণমাত্রেণ কর্ণন'ড়ৌ প্রশাম্যতি।

কটুতৈলে শামুকের মাংস সিদ্ধ করিয়া ঐ তৈল কর্ণে পুরণ করিলে কর্ণনালী বিনষ্ট হয়।

নিশাতৈলম।

নিশাগন্ধপলে পকং কটুতৈলং পলান্তকম্। ধুন্তু,রপত্রজরসে কর্ণনাড়ীজিছ্তমম্॥ (নিশাগন্ধয়োমি লিখা পলমেকমিতি চক্রটাকা)।

কটুতৈল /> সের। ধুত্রা পাতার রস /৪ সের। কল্প-হরিদ্রা ৪ তোলা, গন্ধক ৪ তোলা। এই তৈল কর্ণনালী রোগে উৎক্রই ফলদায়ক।

কুষ্ঠাদ্যং তৈলম্।

কুষ্ঠহিঙ্গুবচাদাস্ত্র-শতাহ্বাবিখনৈকবৈঃ। পুতিকর্ণাপহং তৈলং বস্তুমূত্রেণ সাধিতম্॥

তৈল /১ সের, ছাগমূত্র /৪ সের। ক্রার্থ—কুড়, হিন্ধু, বচ, দেবদাক, ওল্ফা, ভাঁঠ ও দৈন্ধব মিলিভ ১৬ ভোলা। এই তৈল পুতিকর্ণ-বিনাশক।

দাৰ্ক্যাদি-তৈলম।

দাৰ্ক্যাশ্চ দশম্লস্য কাথেন মধুক্স্য চ।
কদলাঃ স্বাসেন পি পচেৎ তৈলং তিলোভবম্ ।
ক্লৈ: কুঠবচাশিগ্ৰ-শতপূস্পারমাঞ্জনৈঃ।
দেবদাক্ষ্যবক্ষার-সন্জিকাবিড় সৈজাকৈঃ ।
কর্ণশূলং কর্ণনাদং বাধিয়াং প্তিকর্ণকম্ ।
কর্ণক্ষ্ড জন্তক্র ক্র কর্ণপাকক্ষ দার্কম্ ॥
কর্ণক্ত্রতীনাহৌ:শোধান্ কর্ণসমূত্রবান্।
তৈলং দার্ক্যাদিকং হস্তি কর্ণসাবং তথৈব চ।

ভিলতৈত /৪ সের। কাথার্থ—দাক- ! শির্ক্ষান হরিদ্রা ১২॥০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ কফকর দ্রবা সের; দশমূল মিলিত ১২॥০ সের, জল ৬৪ সেবন এই সের, শেষ ১৬ সের; যষ্টিমধু ১২॥০ সের, করিবেন।

ইত্যায়ুর্কেদ-সংগ্রহে কর্ণরোগাধিকার:।

জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের; কদলীমূলের রস ১৬ সের। কন্ধার্থ—কুড, বচ, শক্তিনার বীজ, শুল্ফা, রসাঞ্জন, দেবদারু, যবক্ষার, সাচিক্ষার, বিট্ ও সৈন্ধবলবণ মিলিত /১ সের। যথাবিধি পাক করিবে। এই তৈল কর্ণে পূরণ করিলে, কর্ণরোগের শাস্তি হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

_ ° * • ____

অথ কর্ণরোগে পথ্যানি।

খেনো বিরেকো বমনং নসাং ধ্মঃ শিরাবাধঃ।
গোধুমাঃ শালরো মূলা ঘণাল প্রতনং হবিঃ ॥
লাবো ময়ুরো হরিণন্তিভিরিবজ্জুকুটঃ।
পটোলং শিগ্রু বার্তাকুঃ স্থানিষমং কঠিলক্ষ্ ॥
রসায়নানি সর্বাণি প্রক্ষায়নাবণি দু

স্বেদন, বিরেচন, বমন, নশু, ধুম, শিরাবেধ, গোধুম, শালিধান্ত, মুগ, যব, পুরাতন
মৃত, লাবপাধী, ময়ুর, হরিণ, তিত্তির ও বন্তকুকুটের মাংস; পটোল, শজিনা, বেগুণ,
স্বযুণিশাক, করলা, সর্বপ্রকার রসায়নকিয়া,
ব্রহ্মচর্য্য অবলম্বন (অমৈথুন), অল্ল কথন,
দোষ বিবেচনা পুর্শক এই সমস্ত পথ্য কর্ণরোগে ব্যবস্থা করিবে।

অথ কর্ণরোগেহপথ্যানি।

বিরুদ্ধান্তর্মপানানি বেগরোধং প্রজ্ঞজনম্। স্তকাঠং শিরঃমানং ব্যায়ামং রেখনং গুরু। কপুরনং তুষারক কর্ণরোগী পরিত্যজেৎ ।

বিক্তম অল্ল, বিক্তম পান, মলমুআদির বেগধারণ, অধিক বাক্য কথন, দস্তধাবন, শিরঃমান (মস্তকে জল ঢাল:), ব্যালাম, কক্ষকর দ্রব্য, গুরুদ্রব্য, কর্ণচুলকান ও হিম-সেবন এই সকল কর্ণরোগী পরিত্যাপ ক্রিবেন।

অথ নাসারোগাধিকারঃ।

অথ নাসারোগ-লক্ষণম্।

আনহাতে ধদ্য বিশুধাতে চ প্রক্লিয়তে ধূপ্যতি চাপি নাসা। ন বেভি যো গন্ধরসাংশ্চ জন্ত-क् हेर वावरमार एमगीनरमन ॥ তঞ্চানিলমেমভবং বিকারং জয়াৎ প্রতিভারসমানলিক্স। দোৰৈবিদদৈগলভালু মূলে मः मृष्टिखा यमा मभौद्रवञ्ज । নিরেতি পৃতিমু প্রনাসিকাভাাং अश्विमाः अवनिष्ठ तोशम् । ঘাণাভাতং পিত্রমরংযি কুর্বাদ্ যশ্মিন বিকারে বলবাংশ্চ পাকঃ। তং নাসিকাপাকমিতি বাবসোদ্ বিক্লেদকোপাবথবাপি যতা। (मारेविनिमेश्वत्रभवाणि कर्छा-ল'লাটদেশেহভিহতসা তৈজৈ:। নাসা প্রবেৎ পূর্যস্থিমিশ্রং তং পুয়রক্তং প্রবদ,স্তি রোগম্॥ ছাণাভিতে মুর্মণি সংপ্রছন্তে। যসামিলো নাসিকরা নিরেতি। কফানুষাতো বহুশোংতিশব-खर (त्राणमाष्टः कवशूः विविद्धाः ॥ তীক্ষ্ণেযোগাদভিজিম্বতো বা ভাবান্ কটুনক্নিরীকণাছা। স্ত্রাদিভিবা তরণাস্থিম্ম-शृष्वाविष्ड>श्चः कवर्थ्विदवि । প্ৰব্ৰম্ভতে নাসিক্ষা তু যুস্য माल्या विषयभा नवनः करुष्ठ । আব্সন্ধিতো মুর্দ্ধনি স্থাতপ্ত-😻 खरमथ्र जाभभूनांदत्रि । ম্রাণে ভূশং দাহসমন্বিতে তু विभि.म ब्रह्म श्वर वायुः। নাসা এদীপ্তেব চ বস্য জন্তো-वाधिक छः म अमूमण्डरिष्ठ ॥ উচ্ছ্যাসমাৰ্গন্ত কলঃ সবাতো ক্ষ্যাৎ প্রতীনাহৰুদ হরেৎ তম্। আণাদ্ধন: শীভসিততত্ বা দোৰ: অবেৎ আবস্পাহরেৎ তম্ ।

আণাশ্রিতে শ্রোহসি মারুতেন গাঢ়: প্রতন্তে পরিশোষিতে চ। কৃছেহাচছ সেদুৰ্দ্বনধণ জন্ত-যিমিন্স নাসাপরিশোষ উক্তঃ 🛭 শিরোগুরুত্মরুচিনি সামাবস্তরু: সর:। কাম: ঠীবতাথাভাক্ষমামগীনসলকণ্য ॥ আমলিকায়িতঃ রেখাঘনঃ থেগুনিমজেতি। সরবর্ণবিশুদ্ধিশ্চ পরিপক্ত লক্ষণম্ ॥ অনেদ্ধা পিহিতা নামা ততুস্থাবপ্রদেবিনী। গলতাবে।ঠলোষক নিস্তোদঃ শহায়োম্ভথা।। ক্ষবপ্রবৃত্তিরতার্থং বক্তুবৈরস্থমের চ। ভবেৎ সরোপঘাত•চ প্রতি**ক্রা**য়েগ্নিলা**য়**কে॥ উষ্ণঃ সপীতকঃ স্থাবো ত্রাণাৎ স্থবতি পৈত্তিকে ; কুশেঃতিপাঞ্য সন্তপ্তো ভবেহ্ঞাভিপীড়িতঃ ॥ সধ্মমগ্নিং সহসা বমভীব স মানবং। খ্রাণাৎ কদকুতে শীতঃ কদঃ পাতুঃ প্রবেদ্ধ ।। শুকুবিভাস: শুকুকো ভবেদ্গুরুবিরা নর:। কণ্ঠতাৰোঠশিরদাং কণ্ডুভিরভিপীড়িতঃ। ভূতা ভূতা প্রতিশ্যায়ো যদ্যাকমালিবর্ততে। সংপকো বাপ্যপকো বা স সর্কপ্রভব: স্মৃতঃ ॥ প্রাক্ততে পুনর্নাসা পুনশ্চ পরিভ্যাতি। পুনরান্থতে বাপি পুনবিব্রিয়তে তথা ॥ নিখাসো বাতিছুৰ্গন্ধো নগে গন্ধান্ন বেটি চ। এবং ছষ্টপ্রতিশ্যায়ং জানীয়াৎ কুছ্হসাধনম্। রক্তজে তু প্রতিষ্ঠায়ে রক্তশ্রাবঃ প্রবর্ততে। তাত্রাক্ষক ভবেজম্বরুরোগাতপ্রপীড়িত:। তুৰ্গক্ষাচছ বাসবদনো গন্ধানপি ন বেভি স:।

অপীদন (পীনস) এই পীড়ার, নাসিকা বাহশোষিত শ্লেষারা ক্লব্ধ, ধুমনির্গমবৎ পাড়ার পাড়ত এবং কথন শুদ্ধ কথন বা আদ হয়। ইহাতে ঘাণ-ক্লিও আফাদনশক্তি নষ্ট হটরা যায়। পীনসণোগ বাতশ্লেমা হইতে উৎপন্ন। ইহার লক্ষণ বাতশ্লৈমিক প্রতি-ভারের শক্ষণের স্তায় জানিবে।

হুই রক্ত পিত ও হুই কফ দারা বায়ু গণ-ভালুমূলে দ্যিত ও প্তিভাবাপন্ন হুইয়া মুখ এবং নাসিকা দিয়া নির্গত হুয়, ইহাকেই পুতিনত কহে। যে রোগে নাদাশ্রিত ছই পিত্ত, নাদিকার পিড়কাদমূহ ও দারুণ পাক উপস্থিত করে, অথবা যে রোগে নাদিকা ক্রিন্ন ও পৃতিভাবাপর হয়, তাহাকে নাদাপাক কহে।

দোষের ছষ্টি অথবা লগাটদেশে আঘাত-প্রাপ্তি হেতু নাদিকা হইতে রক্তমিশ্রিত পূ্য-নিঃক্ষত হইলে, তাহাকে পুযুরক্ত রোগ কহে।

নাদামশ্রে (শৃঙ্গাটকে) প্রত্ই বায় কফাথগত হইয়া নাদিকা দিয়া প্রবণ শব্দের সহিত বারংবার নির্গত হইলে ভাহাকে ক্ষবগুরোগ (হাচি) বণা যায়।

রাইসর্যপ প্রভৃতি তীক্ষদ্রবা ভোজন, কটুন্তব্য থ্রাণ, স্থাদেশন অথবা স্থ্রাদি হারা নাসিকার তরুণাস্থি-মধ্মেণ (শৃস্পাটকের) ঘর্ষণ, এই সকল কারণেও ক্ষর্থু হট্যা থাকে। ইহাকে আগিয়ুজ ক্ষর্থুবলে।

মন্তকে পূর্বস্থিত ঘন কফ প্র্যত্তিপ (বা পিত্ত ছারা) বিদ্যান স্থত্তাং লবণরস্বিশিষ্ট হুইয়া নাসিকা ছারা নিগত হুইলে তাহাকে জংশপু কহে।

দীপ্ত নামক রোগে নাগিকায় অত্যন্ত দাহ, অগ্নিশিখাবং প্রদীপ্তি এবং ধূমনির্গমবং উষ্ণ শ্বাস নির্গম, এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়।

বায়ুর সহিত কফ নিশাস-মাগকে ক্রন্ধ করিলে তাথাকে প্রতীনাহ করে।

নাসিকা দিয়া ঘন বা পাত্ৰা, পীত কিংবা শুক্লবৰ্ণ কফ নিৰ্গত হটলে, তাহাকে নাদা-স্তাব বলে।

নাধানোত ও তলগত শ্লেষা, বায় কড়ক শোষিত এবং পিত কড়ক প্রতপ্ত হইলে, অভি কষ্টে নিশ্বাস প্রশ্বাস নির্গত হয়। এইরূপ বোগকে নাধাশোষ কষ্টে।

অপক ও পক পীনদের লক্ষণ। অপক পীনদে, মাথাভার, অক চি, পাত্লা প্রাব, ক্ষীণ-বর ও নাসিকা দিয়া মুহুগাছুঃ দদ্দি নিসম হয়। পক পীনদে শিরোগুরুহাদি অপক-লক্ষণ সমস্তই বিশ্বমান থাকে, তবে ইহাতে শ্লেমা ঘন হইয়া নাশারক্রে বিলীন হয় এবং স্থর ও বর্ণ পরিশুদ্ধ ইইয়া থাকে।

বাতিক শুভিশ্বারে, নাসিকা বিবদ্ধ ও আচ্ছাদিতের স্থার হইরা থাকে, পাত্লা স্থাব নির্গত হর এবং গল তালু ও ওঠের শোষ, শুখা দেশে স্কীবেশবদ্ বেদনা, নিরম্ভর কাঁচি, মুগের বিরস্তা ও স্বরভঙ্গ ইইরা থাকে।

পৈত্তিক প্রতিশ্রারে পীতবর্ণ উষ্ণস্থাব নির্গত হয় এবং রোগী ক্লণ পা গুবর্ণ সম্ভপ্ত ও উষ্ণাতি-পীড়িত হয়। তাহার নাক মূণ দিয়া সধ্ম অগ্নিবাহির ইইতে থাকে।

শ্লৈ, আফ প্রতিশ্রামে নাসিকা দিয়া বছ পরিমাণে পাণ্ডবর্ণ নাতল কফ নির্গ**চ হয়।** বোগির শরীর ও নয়ন শুক্লবর্ণ, মস্তক ভারা-ক্রাস্থ এবং কণ্ড ওষ্ঠ তাল ১ও মস্তক অত্যক্ত কণ্ডবুক্ত হইমাথাকে।

যে পঞ্চ বা অপক প্রতিগ্রার, বিকারণে প্নঃপ্নঃ উৎপন্ন ও প্নঃপ্নঃ তিরোহিত হয়, ভাহাকে সামিপাতিক জানিবে।

যে প্রতিশ্রামে নিগাস তুর্গন্ধ ও আণশক্তি বিলুপ্ত এবং নাাসকা কখন আর্দ্র, কখন শুদ্ধ, কখন বন্ধ, কখন বা বিস্তুত হয়, সেই হুষ্ট প্রতিশ্রায়কে কইসাধা জানিবে।

রক্তজনিত প্রতিগ্রায়ে নাসিকা দিয়া রক্তসাব, চকুর রক্তবর্ণতা, খণরে তীব্রেদনা, মুখ ও নিশ্বাদে হুর্গন্ধ এবং ফ্রাণশক্তির বিশোপ এই সকল লক্ষণ প্রকাশ পায়।

অথ নাসারোগ-চিকিৎসা।

সংক্রে গীনসেধানে) নিক্ষাভাগরগো ভবেৎ। সেহত্বেদপ্রধমনং ধুমগঞ্চধারণম্॥

নকল প্রকার পীনস রোগে প্রথমতঃ নিবাত গৃহে অবস্থান, স্নেহ, স্বেদ, নক্ত ও ধ্ম গ্রহণ এবং গঙ্ঘ ধারণ কর্তব্য।

নধেণ শুরুণোঞ্চন শিরসো বেষ্টনং হিতম্ । লঘূকং লবণং স্লিগ্ধমূদং ভোঞ্নমন্ত্রম্॥ পীনস রোগে মোটা গরম :কাপড় দারা মন্তকবেষ্টন এবং লঘু উষ্ণবীর্যা লবণরস স্লিগ্ধ গরম ও শুষ্ক দ্রব্য ভোজন হিতকর।

সর্বের্ সর্বকালং পীনসরোগের জাতমাত্রের।
মরিচং গুড়েন দগ্গ ভূঞীত নর: ফুখং লভতে ।
সকল প্রকার পীনস বোগ উৎপন্ন হইবামাত্রই গুড় ও দধির সহিত মরিচচূর্ণ সেবন
করিলে তাহাতে বিশেষ উপকার দর্শিবে।

পঞ্মূলীশৃতং ক্ষীরং স্থাচিত্রকহরীতকী।
সপিপ্ত ড়ং বড়ঙ্গত যুবং পীনসপান্তয়ে ।
বহুৎপঞ্চমূল কিংবা স্বলপঞ্চমূল সহ সিদ্ধ
হয়, চিত্রক-হরীতকী এবং যগেদাক সপিও ড় ও
বড়ঙ্গযুব পীনস রোগে ব্যবস্থা করিবে।
কট্ফলং পৌদ্ধাং শুক্ষী ব্যোবং যাসত কারবী।
এবাং চূর্ণং কবারং বা দল্যাপার্ককলৈ রলৈ: ॥
পানদে বরভেদে চ নামান্তাবে হলীমকে।
সন্তিপাতে ককে বাতে কানে বাংস চ শহুতে ॥

কট্ফল, পুদ্ধরমূল (অভাবে কুড়), কাঁক্ডাশৃদ্ধী, শুঠ, পিপুল, মরিচ, ছরালভা ও ক্লফালীরা, ইহাদের চূর্ণ বা কাথ আদার রস সহ সেবন করিলে পীনস, স্বরভেদ, নাসাল্রাব ও হলীমক প্রভৃতি স্কল রোগ নিবারিত হয়।

ব্যোষাষ্ঠং চূর্ণম্।

ব্যোষ্ঠিজকতালীপ-তিস্তিড়িকায়বেতসম্। সচব্যালাজিতুল্যাংশমেলাহক্পত্ৰপাদিকম্॥ ব্যোষাদিকং চুৰ্মিদং পুরাণগুড়সংযুত্ম। শীনসন্ধাসকাসম্মং ক্ষতিবরক্রং পরন্॥

ত্রিকট্, চিতামূল, তালীণপত্র, তেতুল, অমাবেতস, চই ও ক্ষজনীরা প্রত্যেক একভাগ; এলাইচ, গুড়ত্বক্ ও তেজপত্র প্রত্যেক পূর্ব্বোক্ত এক ভাগের সিকি ভাগ, পুরাতন গুড় সর্বাক্র করিরা উপযুক্ত মাত্রান্ত প্রবােগ করিবে। অমুপান—উষ্ণজ্বল। ইহা সেবন করিলে পীনস খাস ও কাসবােগ উপশমিত এবং ফুচি ও শ্বর বর্দ্ধিত হয়।

ত্রিকটুবিড়ঙ্গনৈদ্ধববৃহতীফলশিগ্র,স্বরদদভীভি:। তৈলং গোজলসিদ্ধং নক্তং স্থাৎ পুতিনক্তক্ত ॥

ত্রিকটু, বিড়ঙ্গ, সৈদ্ধবলবণ, বৃহতীফল, শজিনাবীজ, নিসিন্দে (মতাস্তবে তুলসী) ও দস্তীবীজ, ইহাদের কন্ধ মিলিত ১৬ তোলা এবং গোমুল /৪ সেবের সহিত /১ সের তৈল পাক করিয়া নস্ত গ্রহণ করিলে প্তিনস্ত নিবারিত হয়।

কলিন্সহিন্ধুমরিচ-লাক্ষাস্থরসক্ট্ফলৈ:। কুঠোগ্রাশিগ্র্জস্তবিদ্বরণীড়ং প্রশাস্ততে॥ (পীনসাদিবপায়ং যোগ ইতি ভাবমিশ্রঃ।)

ইক্রম্ব, হিঙ্কু. মরিচ, লাক্ষা, তুলদী, কট্ফল, কড়, বচ, শজিনাবীজ ও বিড়ঙ্গ, ইহাদের গোমুত্রপিষ্ট করের নক্ত গ্রহণ করিলে প্তিনক্ত নিবারিত হয়। ভাবমিশ্র বলেন, ইহাতে পানদ, নাদাশ্রাব এবং স্বরভেদাদিও নিরাক্ত হয়।

তৈরের মৃত্রসংযুক্তিঃ কটুতৈ লং নিপাচয়েৎ। প্রসানসে পৃতিনক্তে শমনং কীর্ত্তিতং পরম্ ॥

পূর্ব্বোক্ত কল্প /১ দের এবং /৪ সের গোমুত্তসহ /১ দের স্বপটেছল পাক করিয়া নম্ম গ্রহণ করিলে পীনস ও পূক্তিনম্ম বিনষ্ট হয়।

শি গ্রতলম্।

শিগ্ৰ,সিংহীনিকুন্তীনাং বীজৈঃ সব্যোষ্ঠসন্ধৰৈ:। বিৰপান্ত্ৰসৈঃ সিদ্ধং তৈলং স্থাৎ পৃতিনস্তন্ত্ৰ।

শঙ্গিনাবীজ, বৃহতীবীজ, দস্তীবীজ, ত্রিকটু ও সৈন্ধব ইহাদের কল্প এবং বেলপাতার রদ সহ তৈল পাক করিয়া প্রয়োগ করিলে পুতি-নম্ম উপশ্যাত হয়।

ব্যান্ত্রী-তৈলম।

ব্যাসীদন্তীবচাশিগ্ৰ-স্বরসব্যোবদৈশ্ববৈ:। পাচিতং নাবনং তৈলং পুতিনাসাগদাপহম্॥

কটুতৈল /> সের, জল /৪ সের। ক্সাথ—কণ্টকারী, দস্তীমূল, বচ, শজিনা- ছাল, নিসিন্দে, ত্রিকটুও সৈত্কব মিলিত ১৬ তোলা। যথাবিধি পাক করিয়া, ইহার নপ্ত গ্রহণে পৃতিনাসা রোগ নষ্ট হয়।

> নাদাপাকে পিত্তহ্বৎ সংবিধানং কার্য্যং সর্বাং বাছম:ভান্তরক । হরেক্সকং কারিবৃক্ষহচন্চ যোজাঃ দেকে সন্মতান্ত প্রদেহাঃ ॥

নাদাপাকে বাহ্ন ও আজ্যন্তরিক পিত্ত-নাশক ক্রিয়া করিবে। ইহাতে রক্তমোকণ করিয়া ক্ষারিবৃক্ষ অকের কাথ ঘারা পরিষেক করিবে এবং বটাদি ক্ষারিবৃক্ষের ত্বক্ ও গুত ঘারা প্রলেপ দিবে।

পুষাত্রে রক্তপিত্তম্বা: ক্ষণ্যা নাবনানি চ । পুষরক্তরোগে রক্তপিত্তম ক্ষায় ও নত্ত প্রানা কবিবে।

ভা সুঠকণানিব-দাক্ষাক্ষাক্ষাক্ষাক্ষাক্ষাক্ষা সাধিতং তৈলমাজ্যা বা নতং ক্ষাগুমুট্নুব। ভাঠ, কুড়, পিপুল, বিলম্ল ও দ্রাক্ষা

ইহালের কাথ ও কক্ত সহ যথাবিধি স্বত এবং তৈল পাক করিয়া নহু গ্রহণ কবিলে ক্ষবথু (হাচি) ও পুট রোগ প্রশমিত হয়।

মুত্তপ্ত প্রনাজ সিক্ধক প্র প্রথ এই।
ধ্যং ক্ষরপুরোগল্প অংশপুল্ল নিকিশেৎ ॥

ঘৃত গুগ্ধেলু মোন্ একএ করিয়া পুন প্রদান করিলে ক্বথুও লংশ্থুনিবারিত হইয়া থাকে।

> দীপ্তে রোগে গৈত্তিকং সংবিধানং সর্বং কুযারাধুরং শী চলঞ্চ। নাসানাহে মেহপানং প্রধানং স্কিন্ধা ধুমা মুদ্ধবস্তিশ্চ নিতাম।

দীপ্ররোগে (নাসাদাহ ও নাসা ইইতে
ধুম নির্গমবৎ বোধে) পিতন্ত সর্বপ্রকার
মধুর ও শীতল ক্রিয়া করিবে। নাসাদাহে
(নাক টানিয়া থাকার) স্নেহপান, রিগ্ধ
ধুম ও শিরোবন্ডি ব্যবস্থের।

বাতিকে তু প্রতিষ্ঠায়ে পিবেৎ দর্পিগণাক্রমম্। পঞ্চিত্র বিশৈঃ সিদ্ধং প্রথমেন গণেন চ। নক্সাদিয়ু বিধিং কুৎস্নমবেক্ষেত্রান্দিক্টেরিতম্ । বাতিক প্রতিশ্রায় রোগে পঞ্চ লবণের সহিত সিদ্ধ অথবা প্রথমগণের (বিদারি গন্ধাদিগণের) কাথ ও কল্পের সহিত সিদ্ধ স্বত বথাক্রমে (স্কুতের স্নেহোপযৌগিকাধ্যায়োক্ত বিধানক্রমে) পান করিবে এবং নস্তাদি গ্রহণে অর্দ্দিতোক্ত নিয়ম সকল লক্ষ্য করিবে।

পিত্রকোথয়োঃ পেয়ং দর্পিন ধুরকৈঃ শৃত্য। পরিবেকান্ এদেহাংক ক্যাদ্ধি চ শীতলান্।

পিত্ত ও রক্ত জনিত প্রতিশ্রামে মধুর গণেশ সহিত দিদ্ধ মতপান এবং শীতল (অগ্রোধাত্যৎপলাদিগণক্বত) পরিষেক ও শীতল প্রলেপ ব্যবস্থেয়।

স'পৰা ভৃষ্টয়া ধাত্ৰা শিরসো লেপতঃ ক্ষণাং । নাসায়া: সংপ্রবৃত্তঞ্চ ক্ষাব্যক বিৰগুচি ॥

য়তভৃষ্ট আমলকী কাঞ্জিতে পেষণ করিয়া তাহার প্রলেপ দিলে নাসিকা হইতে রক্তস্রাব নিবারিত হয়।

কফজে স'প্যা সিধাং তিলমাধ্বিপ্রহা। যবাথা বাম্যাহা বা কফ্মং ক্রমনাচরেৎ ॥ (অব্ স্বন্দলম্পি বোধাং ব্যন্থোগাৎ। চক্রটীকা)।

ক্ষজ প্রতিশ্রারে মৃতপান ম্বারা রোগিকে সিগ্ধ করিয়া তিল ও মাষকলাইয়ের সহিত্ যবাগুপাক করিয়া (যবাগুপাককালে ভাহাতে ব্যনকারক ময়নাফলও দিতে হইবে) সেই যবাগু পান করাইয়া রোগিকে ব্যন করাইবে। পরে ক্ষম দ্রব্যের সহিত প্রক্রেরাদি প্রাণিবে।

দাকীঙ্গুদীনিকুল্ডৈন্চ কিণিছা হুরদেন চ। বভয়েংহত কুডা যোজ্যা ধুমপানে যণাবিধি।

দারুহরিক্সা, ইঙ্গুদীফল, দস্কীর মূল বা বীজ, অপামার্গ ও তুলসী (বা নিসিন্দা), এই সকল দ্রবা মন্দন করিয়া তাহার বত্তি প্রস্তুত করিবে। সেই বর্তির ধূম যথাবিধি (বৈরে-চনিক ধূমবর্তি বিধানক্রমে) পান করিলে প্রতিশ্রায় প্রশমিত হয়।

অথবা সম্বতান্ শক্তনু কৃষা মলিকাসংপুটে। নবপ্রতিশায়বতাং ধুমং বৈস্তঃ প্রবোজয়েৎ ॥ ন্তন প্রতিষ্ঠারে ঘ্তপ্লুত থবের ছাতু শরাবস্থিত অঙ্গারাগ্নিতে হাস্ত করিরা তাহার উপর আর একখানে ছিদ্রবিশিষ্ট শরা চাপা দিবে এবং সেই ছিজে একটি নল দিরা তন্দারা ধুমপান করিবে।

বিড়ঙ্গং সৈদ্ধবং হিন্তু গুগ গুলুং সমনঃশিলম্। প্রতিপ্রায়ে বচাযুক্তং শক্তুধুমং গিবেররঃ। এতচচ চুর্শমান্তাতং প্রতিষ্ঠায়ং বিনাশয়েৎ॥

বিড়ঙ্গ, সৈন্ধব, হিং, গুগ্গুলু, মনঃশিলা ও বচ, ইহাদের চূর্ণের পুর্বোক্ত প্রকারে ধ্ম পান অথবা ইহাদের চূর্ণ আঘাণ করিলে প্রতিশ্রায় বিনষ্ট হয়।

অতিখায়ে পিবেদ ধুম্ নর্কাং গব্যসমাযুত্য। চাতুর্জাতকচুর্বং বা ভ্রেয়ং বা কৃষ্জীরকম্ ॥

প্রতিপ্রায়ে গ্রায়ত সংযুক্ত করিয়া উপযুক্ত দ্ব্যের ধুম গ্রহণ করিবে। চাতুর্জ্জাতক বা রুঞ্চ জীরাচুণ আখাণ করিলে প্রতিশ্রায় প্রশমিত হয়।

যাং পিবভি শহনক লে শহনকেটা ক্ণাডলং ভূরি। স্লিলং পানসময়তা সমুচাতে ডেন রোগেণ।

শ্যনকালে শ্যাকিট ইইয়া প্রচুর পরি-মাণে শীতল জল পান করিলে প্রতিগ্রায় প্রশমিত হয়।

শঠীতামলকীরোক্তে দুগং স্পতি জাষিত্য। ২রেদগোরং প্রতিগ্রাহং পার্থসন্থান্তির ॥

পঠা, ভ্যামণকী ও ত্রিকট্ট ইহাদের চূর্ণ ছাত ও গুড় সংস্কুত করিয়া লেখন করিলে ঘোর প্রতিশ্রায় এবং পার্য হৃদয় ও বাস্ত দেশের বেদনা নিবারিত হয়।

পুটপৰং জয়াপত্রং সিক্তৈলসমাযুত্য। প্রতিপ্রায়েশ্ব সংক্ষু শীলিতং পরনৌষধ্য। (জয়া জয়ন্তীতি শিবদাসঃ। জয়া বিজয়া ভঙ্গেতি বাবং। শীলিতং ভূজামতি শুবিধিশ্রঃ)।

দিদ্ধি অথবা জয়ন্তীপত্ত পুটপক করিয়া দৈশ্ববলবণ ও তৈল সংযুক্ত করিয়া প্রভাই দেবন করিলে দর্ববিপ্রকার প্রতিশ্রায় প্রশমিত হুইয়া থাকে। সোষণং গুড়সংযুক্তং বিশ্বনধ্যয়ভোজনম্। নবপ্রতিখায়হরং বিশেষাৎ কন্দপাচনম্॥

মরিচ ও গুড়ের সহিত লিগ্ধ অমদ্ধি ভোজন করিশে নৃতন প্রতিশ্রার রোগের উপশম ও কফের পরিপাক হয়।

প্রতিষ্ঠারে নবে শব্দে যুষ্-চিঞ্চাননোম্ভব:।
ততঃ পকং ককং জ্ঞাতা হরেচ্ছাইবিরেচনৈ:॥
শিরসোহভাঞ্জনত্মদ-নক্তকটু মুজোজনৈ:।
বমনৈত্ম তপানৈন্দ তান্ যথাস্থানারেব।
(জ্ঞা হিন্দুমরিচচুর্গং মাতানুরূপাং প্রক্ষিপত্তি বৃদ্ধাঃ)।

ন্তন প্রতিষ্ঠারে তেঁতুলপত্রের কাথ উপযুক্ত মাত্রার হিং ও মরিচচুর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া পান করিবে। কফ পরিপক হইলে শিরো-বিরেচন, শিরোহভাঞ্জন (মস্তকে কফনিঃদারক তৈলাদি মুক্ষণ), স্বেদ প্রদান, নম্ভ এবং কটু ও কম ভোজন, ব্যন ও স্বত্পান বাবস্থেয়।

পাঠাদি-তৈলম।

পাঠাছিরজনীমূর্কা-পিশ্ললীগ্রাভিপ্লবৈ:। দন্ত্যা চ তৈলং সংগিদ্ধং নস্তং সংগ্ৰুপান্সে।

কটুতৈল ১ সের। কথার্থ—আক্নাদি, হরিদ্রা, দাক্তরিদ্রা, মুর্কা, পিপুল, ভাতীপত্র ও দন্তীমূল মিলিত ১৬ তোলা, জল ৪ সের। পক পীনসে ইহার নম্ভ ব্যবস্থেয়।

ভক্ষতি ভূজমাত্রে সলবণস্থাননাধ্যতাক্ষ্। স জন্নতি সর্বসমূপং চিন্ডাতক প্রতিভার্য্

আহারের অব্যবহিত পরেই লবণের সহিত স্থাসিদ অত্যুক্ত মাধকলাই ভক্ষণ করিলে ত্রিদোবজ ও দীর্ঘকালোৎপন্ন প্রতিশ্রায় নই হইয়া থাকে।

পিল্লা: শিত্ৰীজানি বিড়ক্ষমরিচানি চ। অবশীড়া প্রশক্তোহয়ং প্রতিশার্গনিবারণ: a

পিপুল, শজিনাবীজ, বিজ্ঞ ও মরিচ, ইহাদের চূর্ণের নম্ম লইলে প্রতিশ্রায় নিবা-রিত হইরা থাকে। সম্অপিষ্টান্চোন্দিষ্টাঃ ক্রিয়াঃ ক্রিমির্ বোজতেং। ধাবনার্থং ক্রিমিছানি ভেষজানি চ বুদ্ধিমান্। শেষাণাক্ত বিকারাণাং যথাকং স্থাচিচকিৎসিতম্॥

প্রতিশ্যার রোগে নাদিকার ক্রিমি জন্মিলে ক্রিমিল্ল ঔষধ (স্থরদাদিগণ প্রভৃতি) গোমৃত্রে পেষণ করিয়া নাদিকার প্রয়োগ করিবে। এবং ক্রিমিনাশক ঔষধের কাথ ধারা নাদিকা গোত করিবে। অন্তান্ত রোগে বাতাদিদোয বিবেচনা করিয়া যথাবিধি চিকিৎদা করিবে।

রক্তপিতানি শোখাংশ্চ তথাশাংশুর্কা,দানি চ।
নাসিকারাং স্থারেতেযাং বং বং কুয়াচ্চিকিৎসিত্ম।
নাসিকাজাত রক্তপিত্ত, শোধ, অর্ণ: ও
অর্কাচ, ইহাদের সামাগ্র রক্তপিতা,দির গ্রায়
চিকিৎসা করিবে।

করবারাদ্যং তৈলম্।

রক্তকরবীরপুপাং জাতাজিপাদনমন্ত্রিকালাক :

এতৈঃ সমস্তৈত্তিকাং নাদাশোনাশনং পক্ষ্॥
(অসনমন্ত্রিকা অফরমন্ত্রিকেতি চক্র-বৃন্দৌ।)
তৈল /> সের। কল্পাধ—লালকরবীপূপা, জাতীপুপা, হাফরমালীপুপা প্রত্যেক
ছই তোলা। এই তৈলের নজে নাদিকাব
অর্শাং নই হয়।

শিথরি-তৈলম।

গৃহধুমকণাদার-কারনজাহাসকবৈ:।

শিক্ষা শিগরিনীজৈন্দ তৈলা নাগাশিনাং হিতম ।

তৈল /১ দের । কলার—ক্লা, পিপুল,

নেবদারু, ঘবক্ষার, করঞ্জবীজ, সৈন্ধবল্পবণ ও
অপামার্গের বীজ, মিলিত ১৬ তোলা। জল

/৪ দের । নাগিকার অর্শে এই তৈল
উপকারী।

চিত্ৰক-তৈলম।

চিত্রকচবিকাদীপাকনিদিন্ধিকাকরঞ্জ গাঁজলবণাইক।
স্বান্ত্রমূতৈঃ সিদ্ধং তৈলং নাসার্শনাং শাখ্যৈ।
তৈল /৪ সের, গোমূত্র ১৬ সের। কল্ম—

ভিল /৪ সের, গোৰুঅ ১৬ সের। पर-

দৈশ্ধবলবণ ও আকলের আঠ। মিলিত /১ দের। ইহার নম্ভে নাদার্শ উপশ্মিত হয়।

হিশ্বাদ্যং তৈলম্ ।

ৰিপুৰোষৰিড়সক টফলবচান্ত্ৰক তীক্ষণকৈ যুঁতে-লাক্ষামেতপুৰ্ববাধাইটকৈঃ প্ৰোদ্ভবৈঃ দৌরদৈঃ। ইত্যেভিঃ কটুতৈলমেতদনলে মন্দে সমূন্ত্ৰং শৃতং পীতং নাসিক্যা যথাবিধি ভবেনাসমেয়িভো। হিতম ॥

হিশ্ব, তিকটু, বিড়ন্স, কট্ফন, বচ, কুড়, পজিনাবীজ, লাকা, খেতপুননবা, মুতা, কুড় চি ও নিদিন্দ। ইহানের কল্প ও গোমূত্র সহ যথাবিধি কটুটতল পাক করিয়া নাদিকা দিয়া পান করিলে দলপ্রকার নাদারোগ বিনষ্ট হয়।

চিত্ৰক-হরাতকী।

ভিত্ত ভাষত কাশত গুড়ুচা দশম্লজম।
শতং শতং বসং দশ্ব পথাচুৰ্গাচকং গুড়াং॥
শতং পচেদ্ ঘনাভূতে পল্বাবশকং কিপেং।
ব্যোগজিজাতয়ে কালাং পলার্জনপরেহনি॥
প্রস্থার্ক মধুনো দশ্ব। যথাগ্রাভাদবপ্রণঃ।
দল্পরেহগ্রে ক্ষাং কাশং শীনসং তপ্তরং কিনান্॥
ভব্যোদাবর্ত্ত নান্-খাসান্ হতি হলাক্ষণান্॥

পুরাতন গুড় ১০০ পল। কাথাণ—চিতা-মুল ৫০ পল, জ্ল ৫০ সের, শেষ ১২॥০ সের; আমলকীর রদ (অভাবে কাথ) ১২॥০ দের, গুল্ঞ ৫০ পল, জল ৫০ সের, শেষ ১২॥০ (मृत् ; मृभ्यून প্রত্যেক ৫ প্র, জল ৫০ সের, শেষ ১২॥। সের। এই সমুদায় কাথ একতা ক্রিয়া তাহাতে গুড় গুলিয়া হাঁকিয়া হরী-তকী চুর্ব ৮ সের দিয়া পাক করেবে। ात्रक इहरन **७ ठ, भिश्न, गांत्र**, **७५५क,** তেজপত্র ও এলাইচ প্রত্যেক চুর্ণ ২ পল ও যবকার ৪ তোলা প্রকেপ দিবে। প্রদিনে মধু /২ সের মিশ্রত করিবে। অগ্নির বল াববেচনা কার্য়া (১ তোলা ২ইতে ৪ তোলা) ইহা সেবন মাঞা স্থির করিব। আগ্র দীপ্ত এবং ক্ষয়, কাস ও পীনস প্রভৃতি নানাবিধ রোগ নষ্ট হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

নাসারোগে পথ্যানি।

স্থিতিনিব্বাতনিলয়ে প্রগাঢ়োকীষধারণম্।
গণ্ডুবো লজ্মনং নক্তং ধ্মশ্ছদ্ধিঃ শিরাব্যথং॥
কটুচূর্ণং নাসারক্তে নিক্ষিপ্যাত্তঃপ্রশান্যন্থ।
কেলং সেহঃ শিরোহভাকঃ প্রশা যবশালয়ং॥
কুল্থম্পায়েণ্ড্রি গ্রাম্যজাকলজা রগঃ।
বাতাকুঃ কুলকং শিগ্রঃ কর্কোটং বালম্লকম্॥
লক্তনং দ্বি তপ্তাম্ম্ বার্কী চ কটুত্রয়ম্।
কট্মলবণং সিম্মুক্তং লঘু চ ভোজনম্।
নাসারোগে পীনসাদে। সেব্যেত্দ্যথামলম্॥

বায়শূভা স্থানে অবস্থান, অভিশন্ধ গাঢ়-ভাবে উফীষধারণ, গভ্ষধারণ, উপবাস, নহা-গ্রহণ, পৃমসেবন, বমন, শিরাবেণ, কটুদ্রবা চুর্ণের নহা, স্বেদন, স্বেহ-প্রয়োগ, মন্তকে তৈল মর্দ্দন, পুরাতন যব ও শালিধাতা, কুর্ণকলারের যুদ, মুগের দুষ, প্রাম্য এবং জাঙ্গল প্রাণির মাংসরদ, বেগুণ, পলতা, শজিনা, কাঁক্রোল, কচিমুলা, রগুন, দাধ, গরম জ্বল, বারুণী (তাড়ী), ত্রিকটু, কটু অম ও লবণ রদ, সিগ্ধ দ্রব্য, উষ্ণদ্রব্য এবং লঘুদ্রব্য ভোজন, পীনসাদি নাসারোগে দোষাকুদারে বিবেচনা পূর্ব্বিক এই দকল দেবন করিবে।

নাসারোগেহপথানি।

বিক্লানি দিবাসপ্রমতিষ্যানি জ্বানি চ।

স্থানং ক্রাণং শরুষ্যুত্র-বাশবেগান্ শুচং দ্রম্।
ভূশব্যামপি গরেন নাসারোগা পরিত্যজেং ।
বিরুদ্ধন্য ভৌজন, দিবানিজা, স্লোব্যা জনক জব্য, গুরুদ্ব্য, স্থান, ক্রোণ, মলবেগ,
মূত্রবেগ ও বাম্পবেগ ধারণ, শোক, তরলজব্য এবং ভূমিতে শারন এই সমস্ত নাসারোগা অতিয়ন্ত্রের সহিত পরিত্যাগ করিবেন।

ইত্যাহুর্নের্দ-সংগ্রহে নাসারোগাধিকারঃ।

অথ নেত্ররোগাধিকারঃ।

অথ নেত্রগতরোগ-নিদানম্।

উঞ্চান্তিত গ্রস্ত জলে প্রবেশাদ্দূরেক্ষণাথ স্বপ্পবিধায় চৈ ।
স্বেদায় জোধুমনিবেবণাচ্চ
ছর্মেবিঘাতা দ্বমনাতি যোগাথ ॥
দ্রবাথ তথা মান্ত্রিলি সেবিতাচ্চ
বিগ্নু অবাংক মনিগ্রহাচ্চ ।
প্রসক্ত সংরোদনকোপশোকাচ্ছিরোহ ভিযাতাদ্যতিম জ্বপানাথ ॥
তথা শুতুনাঞ্চ বিপয় দ্বেণ
দ্রেশান্তিয়াল তিম ক্রপাচ্চ ।
বাম্প্রহাথ স্ক্রনিরীক্ষণা চচ
নেত্রে বিকারান্ জনমন্তি দোবাং ॥
বাতাথ পিতাথ ক্রকান্তরাদ্যিবান্ত্রাক্রিধং ।
প্রায়েণ সাম্বেধে যোগায় স্ক্রনেরাময়াকরঃ ॥

निरखामनख अन्दर्भागश्य-সংঘৰপাক্ষয় শিরোগভিতাপাঃ। বিশুক্তবেং শিশিরা শতা চ বাতাভিপন্নে নয়নে ভবস্তি॥ **मार्थिंगारको भिनिता**खिनम्। ধুমায়নং বাম্পাসমূচ্ছয় । উষ্ণাশ্রতা পীতকনেত্রতা চ পিতাভিপন্নে নয়নে ভবস্তি ॥ টকাভিননা গুরুতাকিলোথং কণ্ডুপদেহাৰতি শীততা চ। প্রাবো মুহুঃ পিচ্ছিল এব চাপি ক**ফা**ভিপন্নে নয়নে ভবস্তি॥ তামাশতা লোহিতনেত্রতা চ নাডাঃ সমস্তাদতিলোহিতাক। পিওত লিকানি চ যানি তানি র**ক্তা**ভিপন্নে নয়নে ভবস্তি ॥

আতপাদি থারা সম্ভপ্ত হইয়া সহসা জলপ্রবেশ, অবিকক্ষণ পর্যন্ত দুবস্থ বস্তব প্রতি
দৃষ্টিনিক্ষেপ অথবা নিয়ত অতি স্কা বস্ত
দর্শন, দিবানিদ্রা বা রাত্রিজাগরণ, চকুতে ঘর্মধূলি ও ধ্মপ্রবেশ, বিমর বেগধারণ বা অতি
বমন, রাত্রিতে জব অন্ন সেবন, মলমূত্র ও
বায়র বারংবাব বেগরোগ, সর্বালা জন্মন, ক্রোগ
ও শোককরণ, মস্তকে আগাত, অতিশয়
মন্তপান, ঋতুবিপর্যায়, অতায় ক্রেশ ও অঞ্নবেগধারণ বেং অতি মেথুন এই সকল
কারণে বাংগদি নোষ কুপিত হইয়া নানাবিধ
নয়ন-রোগ উৎপাদন করিয়া থাকে।

ু নেত্রাভিয়াল (নেত্রপ্রদাহ, চোগ্-উঠা) চাবি প্রকার। যথা—বাত্ত পিত্রজ কলজ ও জক্তত। ইহা অতি ক্লেশকর ও প্রায় সর্ক্র-প্রকার নেত্রোগের আকর।

বাতিক অভিশ্যনে গুচীবেশবদ্ যন্ত্রপা, জড়িমা, রোমংয, ককরিক', কক্ষতা, শিরো-বেদনা, বিশুক্ষভাব ও শীতলাশপাত, এই সকল লক্ষণ প্রকাশ পায়।

পিতত অভিযানে, চকুর প্রদাহ ও পাক, শিতলেচ্ছা, ধ্যনির্গমবৎ প্রতীতি, বাষ্পবাচলা, উন্ধাশপাত ও নেত্রের পীতবর্ণতা এই সকল লক্ষণ সংঘটিত হয়।

ক্ষণ অভিয়নে, উফাভিলান, গুরুতা, আজিশোপ, কণ্ডু, পিচুটি, চকুর শীতলতা ও মৃত্লুছিঃ পিচিত্ল আব, এই সকল লক্ষণ প্রকাশিত হয়।

রক্তজ অভিযানে গৈত্তিকাভিয়ন্দের সমস্ত লক্ষণ বিগুমান থাকে। অধিকত্ত ইহাতে তামবর্গ অঞ্পাত, নেত্রের লোহিত্য ও শিরাসমূহের অভিলোহিত্য এই সকল লক্ষণ প্রকাশ পায়।

(অধিকাংশ নেত্ররোগই অভিযুক্ত ইইতে উৎপার হয়, এইজন্ম কেবলমাত্র অভিযুক্তের লক্ষণ সন্ধিবেশিত হইল। অন্তান্থ রোগের পরিচয় তাহাদের চিকিৎদা-প্রদক্ষে কথিত হটবে।)

অথ নেত্ররোগ-চিকিৎসা।

অস্ট্রপন্তরিখ্যাতা দেহত নেত্রতবা গদাং। চিকিৎসিত্নিদং তেখাং সম্পোদ ব্যাস্তঃ শুণু॥

শাঙ্গে যে ৭৮ প্রকার নেত্ররোগ কথিত হট্যাছে, তাহাদের সজ্ঞিপ ও বিস্তৃত চিকিৎসা লিশিত হইতেছে।

ৰে পাদমধ্যে পৃথুসন্ধিবেশে
শিরোগতে দে বছধা হি নেত্রে।
ভাঃ প্রোক্ষণেই সাদনলেপনাদীন্
পাদপ্রযুক্তান্ নয়নং নম্নন্তি॥
(প্রোক্ষণং সেচনম্। উৎসাদনং উদ্বর্জনম্।)

তুইটি হুল শিরা, পদবর হুইতে মস্তক পর্য্যস্ত সমস্ত শরীরে সন্নিবিষ্ট থাকিয়া, বহু-শাথা প্রশাথার বিভক্ত হুইয়া নেত্রগত হুই-য়াছে। অতএব পরিষেক উদ্বৰ্তন ও প্রেলে পাদি পাদ্বয়ে প্রযুক্ত হুইলে তাহারা ঐ শিরাবয় বারা নয়নে ক্রিয়া প্রকাশ করে।

মলোঝসংগটনগীড়নাজৈতা দূশরতে নয়নানি ছষ্টা। ভজেঝহাত্তিভিতানি তথাজপানদভাঞ্জনধাবনানি॥

ধূলাদি মলপদার্থ, উন্না, সংঘট্টন ও পীড়নাদি ধারা ঐ শিরাধর হুষ্ট ইইলে চকুও দূষিত হুইরা থাকে। অভএব জ্তা ব্যবহার, তৈল ধারা পাদাভাক ও পাদ প্রকালন বিশেষ হিতকর জানিবে।

লজ্বন¦লেপনস্বেদ-শিরাব্যধ্বিরেচনৈঃ। উপাচরেদভিষ্যন্দানঞ্জনাশ্চোতনাদিভিঃ॥

অভিয়ন্দ রোগে তজ্বন (লখুভোজন বা উপবাস্), প্রলেপ, স্বেদ, শিরাবেধ, বিরেচন, অঞ্জন ও আন্ফ্যোতন ব্যবস্থেয়।

অক্লিকুক্ষিভবা রোগাঃ প্রতিষ্ঠায়ত্রণজ্বরাঃ।
পক্ষৈতে পঞ্চরাত্রেণ প্রশমং যান্তি লক্ষ্যান ।
(পঞ্চরাত্রেণেতৃপেলক্ষণং তেন ত্রাহ্মপি বোধ্যম্,
বিদেহসংবাদাং।)

অন্ধিরোগ, কুন্ধিরোগ (অতিসার, বিল-দ্বিকা প্রভৃতি), প্রতিশ্রায়, রণ ও জর এই পাঁচটি পীড়া পাঁচদিন (কেহ বলেন, তিন দিন) উপবাদ করিলেই উপশম প্রাপ্ত হয়।

সেক আন্চ্যোতনং পিণ্ডী বিড়ালম্বর্পণং তথা। পুটপাকোহঞ্জনকৈভিঃ কল্পৈনিত্রসূপ!চরেৎ॥

সেক, আন্চ্যোতন, পিণ্ডী, বিড়ালক (পক্ষ ভিন্ন নেত্রের বহিন্ডাগে প্রনেপ), তপ্ণ, পুটপাক ও অঞ্জন এই সকল দারা নেত্রকোগির চিকিৎসা করিবে।

বেবঃ প্রলেপন্তিক্তান্নং সেকে। দিনচভূষ্টরম্। লজ্মনঞ্চান্দিরে;গাণামামানাং পাচনানি চ। জঞ্জনং পুরণং কাশ্ম-পানমামে ন শক্ততে॥

খেদ, প্রলেপ, ভিক্তার, পরিষেক ও লক্ষন দারা এবং চারিদিন অভিক্রান্ত হইলে চক্ষরোগের আমাবস্থা দূরীকৃত হইরা পরি-পাকাবস্থা আগত হয়।

আমাবস্থায় অঞ্জন, আশ্চেটাতন ও কাথ-পান প্রশস্ত নহে।

ধাতীফলনিয়াপো নবদূক্কোপং নিহস্তি পুরণতঃ। সক্ষোত্তসৈক্ষবে! বা শিগু,ভুবপুত্রসংসকঃ।

আমলকীফলের বন চক্তে পূবণ করিলে অথবা ১ মাধা মধুও ২ রতি সৈদ্ধবের সহিত ৪ মাধা শজিনাপত্রের রদ সেচন কবিলে ভ্রুণ নেত্রকোপ বিনষ্ট হয়।

শ্রীবাসাতিবিধালোগ্রেন্ট্রিট্ডরগ্রন্থেনের।
অব্যক্তেইন্ধিনের কার্য্য প্রোটাইস্থ্রেরিন বিহি ॥
নেত্রবাসের প্রথম অবস্থায় দেবদারে,
আতইচ, লোধ ও অন্নপরিমিত দৈন্ধর, ইহাদের
চুর্ন পে উশীবদ্ধ করিয়া নিমীলিত চক্ষুর
বহিন্তানে বুলাইবে।

দাববীরসাঞ্জনং বাপি গুলুস্থকং প্রপুরণন্। নিহন্তি শীখ্রং দাহাঞ্-বেদনাং জন্দসস্থনাঃ॥ দাকুহ্রিজার কার্থ-ক্লত রসাঞ্জন স্তনক্ষের স্বিত চক্ষে পূরণ করিলে অভিযান্য জঞ্জ দাহ

অক্রেনির্গম ও বেদনা সম্বর দূরীভূত হয়। করবীরতরণকিশলয়চ্ছেদোভবসলিলসম্পূর্ণ্। নয়নযুগং ভবতি দৃঢ়ং সহসৈব তৎক্ষণাৎ কুপিতম। করবীর কচিপত্র ছিড়িলে ধেরদ নির্গত হয়, তাহা চক্ষে দিলে সম্বর নেত্রকোপ নিবা-রিভ হয়।

শিখরিজমূলং তামভাজনে ভোকসৈকবে;লিখন। মন্ত্রনি ঘট্টং ভরণাদ্ হরতি নবং লোচনোৎকোপুন॥

অপামার্গের মূল ও অল দৈদ্ধব লব্ণ দ্ধির মাতের সহিত তাএপাতে ঘর্বণ করিয়: চক্ষে দিলে অচ্চর্জাত নেত্রকোপ নই হয়।

সৈক্ষবদার্ক্তরিছাগৈরিকপথ্যারসাঞ্জনৈঃ পিট্টো। দত্তো বঙিঃ প্রলেপো ভবতাশেষাক্ষিরোগ্ছরঃ।

সৈন্ধব, 'দাক্ষহরিদা, গেরিমাটা, হ্বীতকী ও রদাঞ্জন একত মদ্দন করিয়া চকুর বাহিরে প্রলেপ দিলে সকল প্রকার নেত্রোগ বিনষ্ট হুইয়া থাকে।

তথা সাবনক লোধং মুতভুগ্নং বিড়ালক.। কায্যো হয়ীতকী তথ্য মুতভুগ্নী বিড়ালক:। শাল্যকোহজোবিহলে পো বিডালক উদ্ধিতঃ।

সাধরলোগ অথবা হ্রীতকী সতে ভাজিয়া তদ্যারা বিড়ালক এলেপ দিবে। যে প্রলেপ পক্ষভিন্ন নেত্রের ২িছিনগৈ দেওরা যায়, স্কুল্ড গ্রন্থে তাহা বিড়ালক নামে অভিহিত হইয়াতে।

গিরিম্বাচন্দ্রনাগরখনিকংশেব্যোজিতো বৃভিলে পঃ কুরতে বচরা মিলো গোচন্যগদ্ধ ন সন্দেহঃ ॥

গেরিমাটা, রক্তচন্দন, শুট, খড়িও বচ এই সকল জব্য সমভাগে লট্যা চকুর বহির্ভাগে ভাষার প্রলেপ দিলে নেত্র রোগণভাষয়।

ভূম্যামলকী মৃষ্টা সংস্ক্রবগৃহবং বিধারিতা হংমে। বাহা স্বস্থমক্ষেত্রির তি বহিলে পতঃ পীড়াম্ । (গৃহবারি কাঞ্জিক্ম্ ।)

ভাষপাত্রে ভূম্যামলকীর মূল লৈদ্ধব লব-ণের সহিত কাঁজিতে গর্মণ করিয়া ঘনীভূত হইলে ভদ্ধারা চক্র বহিভাগে লেপ দিলে চক্র পীড়া প্রশমিত হয়।

আংশ্চ্যোতনং মাক্লতজে কাথে। বিবাদিভিহিতঃ। কোকং সৈরওবৃহতী-তকারীমধূশিগ্রুভিঃ। (আংশ্যাতনমক্ষিদেক:।) বায়ুজন্ত অভিষ্যন্দে বিবাদি মহৎ পঞ্চমূল, এরগুমূল, বৃহতী, জয়ন্তী ও রক্ত-জিনা
ইহাদের ঈসত্ত্ত কাথ ছারা আন্চ্যোতন
করিবে। (নেত্রে, কাণ, হগ্ধ, কোন দ্রব্য বা
স্মেহ পদার্থের বিন্দুশাতনকে আন্চ্যোতন
কহে।)

এরওপলনে মূলে ছচি চাজং পয়ঃ শৃতম্। কন্টকায়াশ্চ মূলের স্থোকং দেচনে হিতম্।

এরওবৃক্ষের পত্র, মূল, চাল এবং কণ্ট-কারীর মূল, এই সকল ডবোর সহিত পরি-ভাষার নিয়মান্ত্রসারে ছাগছগ্ধ পাক করিয়া ঈষ্চঞ্চ অবস্থায় তাহার আশ্রেচাতন করিলে উপকার দর্শে।

ত্রিফল'লেচাতন নেতে সর্ব্বংভিদাননাশনম ।
ত্রিফলার কাপ আনেন্ডাতনে প্রয়োগ ।
করিলে সর্বপ্রকাব অভিযান প্রশানিত হয় ।

প্রপৌওরাক্ষয়। সে-নিশাসলক প্রাকৈ:। শীতৈর ধুস্মাবৃজৈ সেক: পিতা ক্রিরোগন্থ।। (সমাষ্ট্রেরিডাজ নিতাবৃজৈরিতি বা প'থ:।)

পুগুরিয়া, বৃষ্টিমধু, হরিদ্রা, আমলকী ও পদ্মকান্ত, এই সকল জবেরে কাপ প্রস্তুত করিয়া তাহা শাতল হইলে মধু (পাঠান্তরে— চিনি) প্রক্ষেপ দিয়া আশ্চোতন করিলে পিত্তজনিত অভিষ্যাল রোগ বিনষ্ট হয়।

জাক¦মধুকমঞ্জিঙাজীবনীয়ৈ পূতং পয়ঃ। প্রাত্তরাক্ষ্যোত্তনং পথাং শে'পশুলাক্ষিরোগিণাম্॥

দ্রাক্ষা, যষ্টিমধু, মঞ্জিন্না ও জীবনীরগণ এই সকল ঔষণের সহিত হগ্ন পাক করিয়া তন্ধারা প্রাতঃকালে আন্দেনাতন অর্থাৎ নেত্রসেক করিলে শোথ ও শূলযুক্ত অক্ষিরোগ প্রশ-মিত হয়।

> নিম্বস্ত পরে, পরিনিপা লোঙং ম্বিক্তাগ্রিনা চূণ্মম্ব'পি কক্ষ্। আন্চোতনং মানুষ্চৃধ্যুক্তং পিভাশ্রবাভাপহম্যামুক্তম্॥

নিমপত্র পেষণ করিরা তৎপিও মধ্যে লোধকাঠের কক বা চূর্ণ প্রক্ষিপ্ত করিয়া উহা পত্র ধারা বেষ্টিত এবং স্কারায়িতে সিদ্ধ

করিবে। অনস্তর উহা স্তন্ত্যন্ধ মিশ্রিত এবং বস্ত্রগালিত করিয়া দেই রস আন্দ্যোভনে প্রয়োগ করিবে। ইহাতে পিত্ত রক্ত ও বায়ু-জনিত নেত্রবোগ প্রশমিত হয়।

সদৈৰনং লে'প্ৰমণাজ্যভূষ্টং সৌবীরপিষ্টং সিতবন্ত্ৰবন্ধন্। অপ্ৰেচ্যাতনং তন্ত্ৰয়নস্য কাৰ্যাং কণ্ডক দাহক কজাক হস্তাৎ॥

সৈদ্ধবলবেণ ২ রতি এবং লোধকাঠ ৪ মাঝা কাজিতে পেষণ ও গবাছতে ভর্জন করিয়া, নিমাল ফল্ম বস্ত্রে পোট্লীবদ্ধ করিবে। ঐ পোট্লী অঙ্গুলী খার। নিপ্পীড়িত করিয়া ভাহার রস চক্ষুতে দিবে। ইহাতে কণ্ডু দাহ ও বেদনা প্রশাস্ত হয়।

িন্ত্ৰীট ত্ৰিফলায়ন্ত-শক্ৰা হত্তমুক্তকে:। পিঠ্যু: শা হাস্থুনা সেকো বক্তাভিষ্যক্ষৰাশনঃ॥

লোব, ত্রিকলা, সন্তিমধু, চিনিও মুতা এই সকল দ্রব্য শাতল জলে বাটিগ চকু সেচন করিলে রক্তাভিয়ান্দ নই হয়।

ক্ষেত্রমধ্কানাঞ্চূর্নম্বরসংর্তম্। অস্তমপ্রান্তরীকাঞ্চিন্নাল্টোতনং ভবেৎ॥

কেণ্ডৰ ও যষ্টিনধু চূৰ্ণ পোট্ডলীবন্ধ ও বৃষ্টি-জলসিক্ত করিয়। ভদ্মারা আন্ত্যোতন করিলে উপকার দশে।

সংপ্ৰেংকিগদে কাণ্যমঙ্গনাদিকমিষ্যতে। প্ৰশস্ত্ৰয় তা চ(ক্ষে: মংরম্ভান্ত্রমান্তরা। মন্দ্ৰেদ্নতাকপুঃ প্ৰশক্তিগদলক্ষণমূ॥

নেত্রবোগের পরিপাকাবস্থায় অঞ্জনাদি ব্যবস্থেয়। চকুর পাতার প্রশস্ততা এবং শোধ, অঞ্পাত, বেদনা ও কণ্ডুর অলতা, এই সকল পকাবস্থার লক্ষণ।

অঞ্জনবিধিঃ।

কৃষ্ণভাগাদবঃ কুয়াদপাকং যাবদল্পনম্। প্রথমং স্বামঞ্চীয়াৎ পশ্চাদ্দকিপমঞ্জয়েং। শুলাকরা সঞ্জিন্যা নচ ভ্রয়নং স্পুণেৎ ॥

একটি শলাকা দারা অঞ্জন লইবা চক্ষুর ক্ষয়ভাগের নিয়ে অপাঙ্গ পর্যান্ত অঞ্জন দিবে। হস্ত ছারা চক্ষু স্পর্শ করিবে না। প্রথমে বাম নেত্রে পরে দক্ষিণ নেত্রে অঞ্জন দেওয়া কর্ত্তব্য।

বৃহজ্যেরওমূলত্বক্ শিগ্রোমূলং সলৈকবন্। অঙ্গান্ধীরেণ পিষ্টং স্যাদ্ বর্ত্তিবাতান্ধিরোগসুৎ ।

বৃহতী, এরওমূলের ছাল, শজিনামূলের ছাল ও সৈদ্ধবলবণ, ছাগছঝে পেষণ করিয়া বৃত্তি প্রস্তুত করিবে। সেই বর্ত্তি ঘর্ষণ করিয়া তাহার অঞ্চন দিলে চক্রোগ বিনষ্ট হয়।

হরিছে মধুকং জ্রাকা দেবদার চ পেবরেং।
আজন পরসা শ্রেষ্ঠনভিষ্যলে তদঞ্জনম্ ॥
(জ্রাকেত্যত্র পণেয়তি বা পণ্ঠঃ।)

হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, বৃষ্ট্রিম্মু, দ্রাক্ষা (পাঠা-স্তরে হরীতকী) ও দেবদারু, এই সকল দ্রব্য ছাগ ছগ্নে পেষণ করিয়া তাহার অঞ্জন দিবে। ইহা অভিষ্যান্দের (চকু উঠার) শ্রেষ্ঠ ঔষধ।

গৈরিকং দৈরূবং কুঞা নাগরক বংশান্তরম্। পিষ্টং দ্বিংশতোহত্তিব। গুড়িকাঞ্চনমিবাতে । বোশকাচ্ছাগীকীলমপি বেশ্ধাম্। ইতি শিবদানঃ।)

গেরিমাটী ১ ভাগ, সৈন্ধব ২ ভাগ, পিপুল ৪ ভাগ ও শুঠ ৮ ভাগ, এই সকল দ্রবা জলে বা ছাগ হুগ্নে পেষণ করিয়া শুটিকা করিবে। সেই শুটিকা ঘৃষিয়া চক্ষতে অঞ্জন দিবে।

পথাক্ষধাত্ৰীবীজানি এক্ষিত্ৰিগুণানি চ। পিষ্ট্ৰাম্বনা বটীং কুখানগুলং স্থিহরেপুক্য। নেত্ৰপ্ৰাবং হয়তান্তি বাতস্ক্ৰক্ষ ওপা॥

হরীতকীর বীজ > ভাগ, বহেড়া বীজ ২ ভাগ, আমলকীর বীজ ৩ ভাগ, জলে পেষণ করিয়া ২ মটর প্রমাণ বটিকা করিবে। ঐ বটিকা ঘষিয়া অঞ্চন দিলে নেত্রস্থাব ও বাত-রক্তজনিত বেদনা নিবারিত হয়।

রসাঞ্জনং হরিছে বে নালতীনিখপলনা:।
গোণকুজসসংখুকা বটা নকান্ধানাশনা।
এতস্যাশ্চালনে মাতা প্রোক্তা সাহিংরেণকা।
রসাঞ্জন, হরিজা, দাকুহরিজা, মালতীপত্র,
নিমপত্র, এই সকল জব্য গোময় রসে মন্ধিন করিয়া দেড় মটর প্রমাণ বটা প্রস্তুত করিবে।
ঘবিরা তাহার অঞ্জন দিলে নক্তান্ধ্য (রাতকাশা) প্রশমিত হয়। কতক্ষ্য ফলং ছাষ্ট্ৰা মধুনা নেত্ৰমঞ্জনে । ঈশংকপূৰ্বসহিতং তৎস্যান্ত্ৰেপ্ৰসাদনম ॥

নির্দাণীফণ মধুর সহিত ঘর্ষিত ও তাহাতে কিঞ্চিৎ কপূর মিশ্রিত করিয়া ভদ্মরা অঞ্জন দিলে নেত্র নির্দাণ হয়!

রসাঞ্জনং সর্জ্জরসো জাতীপুপাং মনঃশিলা।
সমুদ্রকেনং লবণং গৈরিকং মরিচং তথা ॥
এতং সমাংশং মধুনা পিজং প্রাক্লিবফানি।
অঞ্জনং ক্লেকভুল্লং পক্ষণাঞ্চ প্রক্লোহণম্॥
ছক্ষেন কড়ং ক্লোজেণ নেজস্থানক সপিষা।
পুপাং তৈলেন তিমিরং কাঞ্জিকেন নিশাক্ষতাম্।
পুনর্নবা হরতান্ত ভাসবৃত্তিমিরং বধা ॥

রবাঞ্চন, ধূনা, জাতীপুষ্প, মনংশিলা, সমূদকেন, সৈন্ধব, গোলমাটা ও মরিচ, এই সকল জব্য সমভাগে লইছ: মধুতে পেষণ করত প্রক্রিরবর্থে অঞ্জন দিবে। ইতাতে ক্লেদ ও কভু প্রশমিত এবং পত্ম (নেলরোম) প্রনক্ষত হইবে। পুন্নরা হগ্ধে পেষণ করিয়া অঞ্জন দিলে কভ, মধুতে পেষণ করিয়া অঞ্জন দিলে নেত্রার, ত্মতে পেষণ করিয়া অঞ্জন দিলে পুষ্পরোগ, তৈলের সহিত অঞ্জন দিলে তিমির রোগ এবং কাঞ্জিতে পেষণ করিয়া অঞ্জন দিলে রাজ্যাক্ষ নিবারিত হয়।

বক্লদলনিঃকাথো লেহীভূতস্তদঞ্জনং । নেক্রপ্রো ব্রেচেছাবং মর্যুক্তার সংশয়ঃ ॥

বাব্ধার কাথ পুনর্কার পাক করিয়া ঘনী-ভূত হইলে মধুমিশ্রিত করিয়া তাহার অংখন দিলে নিশ্চয়ত নেত্রপাব প্রশমিত হয়।

বটক্ষীরেণ সংযুক্তং মূপাং কপুরিজং রজঃ। কিপ্রমঞ্জনতো হন্তি কুসুমন্ত বিমাসিকম্॥ কৌদ্রাখনালাসংখ্টের বিচৈনেএমঞ্জনাৎ। অভিনিত্রা শমং থাতি তমং স্বায়োদরাদিব॥

কপূরচুর্ণ বটের স্বাঠার সহিত মিশ্রিত করিরা তাহার অঞ্জন দিলে তুই মাদের পুষ্প-রোগ (নেত্রের শ্বেতবর্ণ চিষ্ণ্) বিনষ্ট হয়। মধুও ঘোড়ার লাকার সহিত মরিচ পেষ্ণ করিরা তাহার অঞ্জন দিলে আতনিদ্রা প্রশমিত হইরা থাকে। আগ্নিতপ্তং হি সৌবীরং নিধিকেৎ ত্রিকলারসে। সপ্তবেলং তথা ক্তক্যৈ স্ত্রীণাং সিক্তং বিচূর্ণিতম্ ॥ অপ্লরেৎ তেন নয়নে প্রত্যহং চক্ষুবাহিতম্। সর্বানক্ষিবিকারাংস্ত হস্তাদেতর সংশয়ং ॥

সৌবীরাঞ্জন অগ্নিন্তে তপ্ত করিয়া ৭ বার ত্রিফলার কাথে, সাতবার শুক্তগ্রহের নিষিক্ত করিয়া চূর্ণ করিবে। তদ্দারা অঞ্জন প্রদান করিলে সর্বপ্রকার চক্ষ্রোগ নষ্ট হয়।

শিলায়াং ব্লকং পিট্রা সম্যগাস্ত্রারা বারিশা।
গৃষ্ট্রায়াৎ ভজ্জলং সকং ভ্যক্তেচ্চ্ প্রধানতম্ ।
গুদ্ধক ভজ্জলং সকং পর্পটাসন্ত্রিস্থা ভবের।
নিচুর্গা ভাবরেৎ সমাক ত্রিবেলং ত্রিফলারসৈঃ ।
কপ্রিক্ত রুজত্ত্র দশমাংশেন নিক্ষিপেং।
অঞ্জেররস্কে তেন নেক্রালিলগদচ্চিদঃ ।

খপর শিলাতে পেনণ করিয়া উপযুক্ত জলে প্রবিত্ত করিবে, পরে ভারিয়ন্ত চুর্ণ সকল পরিত্রাগ করিয়া সেই জল শুক্ত করিলে যে পর্পটাক্কতি হইবে, ভাহা চুর্ণ করিয়া ত্রিফলার রসে তিনবার ভাবনা দিবে এবং ঐ চুর্ণের দশ ভাগেব একভাগ কর্পূর মিশ্রিত করিয়া চক্ষতে অঞ্জন দিবে। ইহাতে সকল প্রকার নেত্র-রোগ প্রশ্মিত হয়।

মুক্তাদিগহাঞ্জনম্।

মুক্তাকপুরকাচাগুল্পরিচকণ দৈলবালং শুগ্রীককোলকাংখ্যত্রপুরজনিশিলাশখানাভ্যত্রপুর। দক্ষাগুহক্ চ দাকং ক্ষতজ্মণ শিবা রীতকং রাজবর্ত্ত। জাতীপুপাং তুল্ডাঃ কুমুমমভিনবং বীজকং শ্রাৎ তথৈব।

পূজীকনিখাজ্যন্তরম্ভং
সভাষদারং রসগভাযুক্তন ।
প্রত্যেক্ষেষাং খলু মাষকৈকং
যঙ্গেন পিষোমধুনাভিস্কান্ ॥
ভবস্তি রোগা নয়নাজিতা যে
নিভান্তমাজোপচিতাক তেবান্ ।
বিশীয়তে শান্তিরবন্তমেব
মুক্তাদিনানেন মহাজনেন ॥

মুক্তা, কর্পুর, কাচ, অগুরুকার্চ, মরিচ, পিপুল, দৈল্পবাব, এল্যালুক, গুঠ, কলোল, কাংলা, বঙ্গ, হরিদ্রা, মনঃশিলা, শুখনাভি, অল, তুতে, কুক্ডার ডিসের খোলা, বহেড়া, কুল্বন, হরীতকী, গৃষ্টিমর্থু, রাজাবর্ত্ত, জাতীপুলা, তুলদীর নৃতন পুলা ও বীজ, ডহরকরঞ্জ, নিম্ব, অর্জ্বাছাল, নাগরমূতা, তাম, লোহ ও রসাঞ্জন এই সম্লায় প্রত্যেক ১ মাধা পরিনাণে লইয়: একত্র মধুর সাহত উত্তমরূপে পেষণ করত অঞ্জন দিবে। ইহাতে সকল প্রকাব নেত্র রোগের উপশ্য হয়।

কফজে লজ্মনং ক্ষেদং নস্তং তিজারাভাজনম্। তীক্ষিঃ প্রদানং কুয়াংখ তীক্ষেত্রবাপার্চনম্।

কফজ নেত্ররোগে লজ্মন, ধ্বেদ, নশু, তিব্রায় ভোজন, ত্রীক্ষ প্রধমন (নল সহ-থোগে সুংকার দারা তীক্ষ ঔধধ চুর্ণের নশু প্রদান ও তীক্ষ উপনাধ ব্যবস্থো।

ক্ষিত্ৰক'কে' তেওঁপ্ৰবিধ পাত্ৰপানুক্ষসাই ভটকঃ। বেদং বিদ্যাল্পৰা প্ৰেপং বহিঠ ৬টা প্ৰদাক্ষিত ॥

(এমং ভজৈ: প্রধের্জসমত্তরক্ষর ইংপিতে-ক্রকুষে মৃত্যের কাষ্যা । ইতি চক্রটীকার)

কুদ্রপত্র তুলদী, হাপরমালী, কয়েৎবেল, বেল, শালিঞ্চশাক, পীলু, ক্লঞ্চ্নুসী ও শ্বেত-তুলদী, ইহাদের (পৃথক্ পূথক বা মিলিত পত্র অগ্নিতে তথ্য ও নিস্পীড়িত করিয়া দেই রস বারা) .স্বদ; অগবা বালা, শুঠ, দেবদাক ও কুড় ইহাদের প্রলেপ দিবে।

গুদ্ধীনিম্বদলে: পিণ্ডঃ মুগোটেনঃ স্বভটনন্ধটনঃ। ধাথাকস্কৃদি সংক্ষেপটেক্ছাম্মকপুৰুবাধাপহঃ॥

ন্ঠ ও নিমপত্র বাটিয়া ভাহার সহিত অল্ল পরিমাণে দৈনৰ লবণ মিশ্রিত ও অগ্নিতে ঈবত্বক করিয়া ভাহার পিও চক্ষুর উপর ধারণ করিলে চক্ষুর শোপ কণ্ড ও বাথা বিনষ্ট হয়। (চক্ষুর উপর হলা বন্ধ্রথও দিয়া ভাহার উপর পিও স্থাপন কর্ত্ব্য।)

বঙ্জং পাবিজাতক্ত তৈলং কাঞ্চিকসৈন্ধবম্। কফোডুঙাকিশ্লমং তক্ষং কুলিশং যথা।

পালিগার ছালের স্বরস ১ সাসা, তৈল ৩ মাষা, সৈন্ধবলবণ ২।৩ রতি, কাঞ্জিক এক নিকুঞ্ এই সকল দ্রব্য তামপাত্রে রাখিয়। তাহা কড়ি দারা ঘর্ষণ করিবে। উঠা খন হইলে চকুতে তাহার অঞ্জন দিবে। (রুদ্ধেরা এইরূপ উপ-দেশ দেন)। ইহাতে কফজ অক্ষিশূল নপ্ত হইয়া থাকে।

মিজেককৈ নাতোখা পিজজো মৃত্বীতলৈ।
ভীকেককোকবিশনৈ প্রশাসতি ককামক:।
ভীকেককোকবিশনৈ প্রশাসতি ককামক:।
ভীকেককোকবিশনৈ বাতাসাৎ সামিপাতিক:॥
বাতিক নেত্ররোগে স্থিয় ও উষ্ণ ক্রিয়া,
পিত্তক নেত্ররোগে মৃত্র ও শীতল ক্রিয়া, শ্লেমজ নেত্ররোগে ভীক্ন ক্রুক্ষ উষ্ণ ও বিশদ ক্রিয়া
এবং ক্রিদোব প্রধান নেত্ররোগে ভীক্ষ উষ্ণ
মৃত্র ও শীতল ক্রিয়া ব্যৱসাসভাবে করিবে।

দাকা পটোলং মধুকং সানধং প্রকোৎপলন্। প্রপৌওরাককৈতানি পচেৎ তোরে চতুগুলি। বিপাচ্য পাদশেষদ্ধ তৎ পূনং কুড়বং পচেৎ। শাতীভূতে তম মধু দক্তাং পানাংশিকং ততঃ। রস্কিরেয়া দাহাশ্যনাগ্যাপকজাপহা।

দারুহরিদ্রা, পটোলপত্র, যষ্টিমধু, নিম্ছাল, পদ্মকৃষ্ঠি, নীলোৎপল ও পুগুরিরাকার্গ সমভাগে মিলিত /॥• দের, পাকার্থজন ছই সের, অব-শিষ্ট /॥• অর্দ্ধদের থাকিতে নামাইরে এবং ছাকিয়া কাথজন পুনর্কার পাক করিবে, ঘনী-ভূত ও শীতল হইলে ৮ টোলা মধু তাহাতে মিশ্রিত করিবে। ইহার প্রলেপ দিলে চকুর্দাহ, অঞ্পাত, চকুর রক্তবর্ণতা ও বেদনা নিবারিত হয়।

শিক্সপঞ্জবনিয়াসঃ সংস্কৃতি অসংপূর্টে ॥ স্থাতন ধুপিতো হস্তি শৌধ্যধাস্তবেদনঃ ॥

শজিনাপতের রদ তামপাতে উত্তমরূপে মর্কন করিয়া মতের সহিত মিশ্রিত ও ঈষত্ঞ করত চক্ষুতে প্রলেপ দিলে শোথ, ঘর্ষ (কর্-করানি), অশ্রুপাত ও বেদনা নিবারিত হয়।

ভিক্তন্য সর্পিবঃ পানং বছণন্চ বিরেচনম্। অক্টোরপি সমস্থাচ্চ পাতনন্ত জলৌকসঃ। পিক্তাভিধান্দশমনো বিধিন্চাপাপণাদিতঃ।

চক্রোগে পটোলপত্রাদি ভিক্ত জব্যের সহিত সাধিত বক্ষামাণ পটোলাছ ত্বতপান, বড়-কাদি বিরেচক ঔষধ সেবন ধারা পুনঃপুনঃ বিরেচন, চকুর চতুর্দিকে জে'কব্সান এবং পিভাভিষ্যন্দ নাশক ক্রিয়া সকল প্রশস্ত । পিষ্টেনিম্বস্য পত্রৈরভিবিমলতরৈর্জাতিসিক্ক্থিনিশ্র-রন্ধর্গতং দুখানা পটুতরগুড়িকা পিষ্টলোধ্রেণ ভৃষ্টা। ভূগি: সৌবীরসালোরতিশ্রমূছভিবেন্টিতা সা সমস্তা-চকুরকোপপ্রশান্তিং চিরমুপরিদ্শোল মিমাণা করে।তি।

নিম্বপত্র, ভাতীপত্র ও দৈন্ধবলবণ পেনণ করিয়া তন্মধ্যে লোধপিও স্থাপিত করিবে। পরে এই সমুদায় একত্র স্থতে অল্প ভর্জন করিয়া উপস্কুক কাজির সহিত মিশাইয়া পোট্রী বদ্ধ করিবে; ঐ পোট্রনী চক্ষুর উপরে বুলাইলে চক্ষ্:-প্রকোপের শাস্তি হয়।

বিল্বাজন্য।

্বলপত্রনাঃ পূত্র সেধ্বনাজাসম্ব্রিতঃ। শুংল বরাটিকাছুটো ধ্পিতে গোম্মালিনা॥ প্রসালোড়িতশ্চাকোঃ প্রণাচেছাগশূলমুৎ। অভিসালেহধিমায়ে চ স্থানে রক্তে চ শ্সাতে॥

বিলপত্রবস ৪ মানা, সৈন্ধব লবণ ২ রতি, গবান্বত ৪ বিন্দু, ভাসপাত্রে এই সমুদার রাখিয়া কড়ি থারা থর্ষণ করিবে এবং খুটিয়ার অগ্নিতে উত্তপ্ত করিবে। পরে স্ত্রীহৃত্ধ থারা ঐ সকল ভরল করিয়া চক্ষুতে লাগাইলে চক্ষুর শোণ, রক্তসাব, বেদনা ও অভিযান্দ প্রশানিত হয়।

বিজ্পত্ররসং সামং নিগৃষ্টং হামভাগনে। সিল্পেকট্ডেলান্তং কুণ্যায়েত্রপুব!দিবু॥

বিশ্পত্রের কাঁজির সহিত তানপাতে ঘর্ষণ করিয়া তাহাতে দৈন্ধবলবণ এবং সরিষার তেল ামশ্রিত করিবে। ইহা চক্ষুতে দিলে নেজ্ঞাব নিবারিত হটবে।

সলবণকটুতৈলং কাঞ্চিকং কাংস্যপাত্রে ঘনিতমুপলয়ন্তং ধূপিতং গোময়াগ্রে। সপবনকককোপং ছাগছ্কাবসিক্তং জয়তি নয়নশূলং প্রাবশোধং সরাগম্॥

সৈদ্ধবশ্বণ ২ রতি, কটুটেল ৪ বিন্ধ্ ও কাঁজি ৪ মাধা একতা কাঁদার পাতে শিকাখণ্ড খারা ঘর্ষণ করিয়া ঘনীভূত করিবে। পরে ঘুঁটের আঙনে তথ্য ও ছাগছুগ্নে তরল করিয়া চকুতে দিবে। ইহাতে বাতলৈত্মিক চকু:শূল, শোথ, জলস্রাব ও চকুর রক্তবর্ণতা দ্বীভূত হটয়াথাকে।

তরুত্ব বিদ্ধাননক রসঃ সর্ব্বাকিরোগরৎ। পুরাণং সর্ব্বথা সপি: সর্ব্যন্তাময়াপত্ম ॥

বৃক্ষপ্ত আমলকী বিদ্ধ করিয়া ভাহার রস লইবে, সেই রস চক্ষতে দিলে অথবা পুরাতন পরিষ্কৃত ঘত চক্তে দিলে চক্ষ্ণপ্ত বহুবিধ রোগ প্রশমিত হয়।

নহনশোণাঞ্জনম্।

কণা সলবণোষণা সহরসাঞ্চনা সাঞ্চনা সরিংপতিককঃ সিতা সিতপুনর্মনা শক্রা। রক্ষপ্তকণচন্দ্রন মধু চ তুপপথাশিলা অ্রিষ্টদলসাবরক্টিকশন্ধনাভীন্দরঃ ॥ উমানি তু বিচুর্গমেরিবিড্রণস্সা শোধরেং ভবারসি বিমর্দ্ধরেরধুনা তামপণ্ডেন তং। উদং মুনিভিরীরি হং নরনশেণনামান্দ্রনং করোতি তিমিরক্ষরং পটলপুপনাশং বলাং॥

পিপুল, লৈদ্ধবলবণ, মরিচ, রসান্তন, সৌবীরান্ত্রন, সমুদ্রকেন, মল্লিকাপুলা, খেতপুননবা,
চিনি, হরিদা, রক্তচন্দ্রন, নষ্ট্রমধু, তুতে,
হরীতকী, মনংশিলা, নিম্নপত্র, সাবব লোধ,
ফট্কিরি, শঙ্গনাভি ও কর্পুর এই সম্পার চুণ
করিয়া, বন বন্ধও ডাকিয়া লইবে। পরে
মধুসহ লোহপাত্রে তাম্রও থারা মন্দন করিয়া
ইহার অঞ্জন লইবে। ইহার নাম নয়নশোণাঞ্জন। এই অঞ্জন ব্যবহারে তিমিররোগ
ও পটলগত পুলারোগ প্রশামিত হয়।

জনৌকংপাতনং শন্তং নেত্রপাকে বিরেচনষ্। শিরাভেদং প্রকুলীত দেকলেপাংশ্চ গুক্রবৎ॥

নেত্রপাক রোগে জ্পোকা থারা রক্ত-মোক্ষণ, বিরেচন, শিরাবেধ এবং ভক্ররোগের স্থায় দেক ও প্রবেপ হিতকর।

অয়মেব বিধিঃ সবেবা মস্থাদিখপি শহুতে। অণাস্তৌ সব্বথা মন্তে ক্রবোক্লপরি দাইয়েৎ ॥ অধিমন্থাদি রোগে উল্লিখিত সকল চিকিৎ-সাই প্রশস্ত। চিকিৎসা ধারা অধিমন্থাদি রোগের শমতা না ২ইলে ক্রমন্তের উপরিভাগ দগ্ধ করিয়া দিবে।

ষঙ্গগুগ গুলুঃ।

বিভীতকশিবাধানী-পটোলারিষ্টবাসকৈ:।
ক:পো গুলু জলুনা পেয়ং শোপপাকা কি শুলহা।
পিষ্টঞ্চ সৰণং জুকুং রংগাদীং-কাপি না-শয়েং।
(বিভীতকা দিচুৰ্বসমং গুলু জুলুং গৃহীত্বা সূত্রন পিষ্টুৰ্বাবিকাং কুয়া দিভাপদিশ্পি বুদ্ধাঃ।)

বহেড়া, হরীত কী, আমল কী, পটোলপত্র,
নিমছাল ও বাসকছাল, ইহালের কাথে গুগ্গুলু প্রক্ষেপ দিয়া দেবন করিলেও চক্ষুব
শূল, শোপ ও রক্তবর্গতাদি এবং পিষ্টক ও সরণ
গুক্র বিনষ্ট হয়। রুদ্ধ বৈছাগণ—বিভীতকাদি
প্রত্যেক চুণ সমভাগ, সর্বস্মান গুগ্গগুলু;
একত্র ঘতে মিশ্রিত ও পেষণ করিয়া বটিকা
প্রস্তুত মিশ্রিত উপদেশ দেন। (পিষ্টবং
গুলুবর্গ গোলাকার ক্ষীত মাংসোলতিকে
পিষ্টক কহে।)

এটেশ্চাপি ঘৃতং পকং রোগাংশ্বাংশ্চ নাপেছেতি। উপরি উক্ত বহেড়া প্রভৃতি দ্রব্য সকলের কাথে এবং গুগ্গুলুর কল্পে গুত পাক করিয়া সেবন করিলেও চক্ষ্রোগ সকল প্রশ্মিত হয়।

বাসকাদিঃ।

এটরধাভ্যানিশ্ব-ধাত্রীমৃত্তাক্ষ্ক্রকৈ:।
রক্তপ্রবাং কলং হতি চকুষাং বাসকারিকম্।
বাসকছাল, হরীতকী, নিমছাল, আমলকী,
মৃতা, বহেড়া ও পটোলপত্র ইহাদের কাথ
সেচনে (এবং বিরেচনার্গ গুগ্গুলু প্রক্রেপ
দিয়া সেবনে) চকুর রক্তপ্রাব ও কফ নিবারিত
ইয়া চকুর প্রসমতা ক্ষনায়।

বাসা ঘনং নিম্বপটোলপত্রং তিক্তামুতাচন্দনবংসকত্বক। কলিঙ্কদাববীদহনানি গুঠী-ভূনিম্বধাত্রাবভয়া বিভীতম্॥ ভামা ববং কংশমণাইভাগং
পিবে দিমং পূর্বাদিনে কথায়ন্॥
তৈমিধাকভূপটলাবি দুক্
শুক্তং তথা সত্রণমত্রণক।
নিহন্তি সর্বান্ নয়নাময়াংশচ
ভূগুপদিইং নয়নাময়েষ্॥

বাদকছাল, মৃতা, নিমছাল, পল্ডা, কট্কী, গুলঞ্চ, রক্তচন্দন, কুড়চিছাল, ইল্লয়ব, দারুছরিদ্রা, চিতামূল, শুঠ, চিরতা, আমলকী, হরীতকী, বহেড়, শুমালতা ও যব মিলিত ৪ ভোলা, জল / দের, শেষ প ০ ছটাক। এই কাথ পূর্ব্বাহ্নে দেবন করিলে তিমির রোগ, কণ্ণ ও পটলাকাদ প্রভৃতি নেক্রোগ দকল বিনষ্ট হয়।

প্ৰাণ্ডিশ্ৰে বিভীতকাঃ ষড় ধাঁজো দাদশৈৰ তু। প্ৰস্তুগৈন সলিলে কাৰ্মইভাগাবশোষতন্। পী হাভিষ্যক্ষমান্ত্ৰীকা হিমিন্ন জয়েব। সংবস্থ্যবাগশূলাক্ষ-নাশনং দূৰ প্ৰসাদনন।

হরীতকী ৩ টা, বহেছা ৬ টা, আমলকী ১২টা, এই সমুদার /২ সের জলে সিদ্ধ করিয়া /া• পোয়া থাকিতে নানাইবে। এই কাথ (সায়ংকালে) পান কবিশে অভিস্কল, নেত্র-আব, নয়নের রক্তবর্ণতা প্রভৃতি নিবারিত হয়। নেত্রে স্ভিগতে ক্যাচ্ছিলগুল্গা হনাগিক্ষ্।

নেত্র আহত হইলে শীতল-আন্চোটনাদি ক্রিয়া কর্ত্তব্য।

দৃষ্টে: প্রসাদজননং , বিধিমাও বুয়াৎ বিধৈমিইনৈক সধুবৈক তথা প্রয়েবি:। বেনাগ্রিধুমভয়ংশাকরজাভিতাপৈ-রভ্যাহতাম্পি তথৈব ভিষক্ চিকিৎস্তেৎ ॥

স্বেদ, অমি, ধুম, ভয়, শোক ও রোগা-দির অভিতাপে দৃষ্টি আহত হইলে স্নিয়, শাতল ও মধুর প্রক্রিয়াদি ধারা দৃষ্টির প্রসাদন করিবে।

> আগৰ্মদাৰং প্ৰসমীকা কাৰ্যং বন্ধোত্মণা বেদিতমাদিতন্ত। আন্তোচাতনং স্ত্ৰীপদ্দশা চ সভ্যো বচচাপি পিত্তক্ষতঞ্জাপহং ভাং।

স্যোপরাগানলবিজ্ঞাননি-বিলোকনেনোপহতৈক্ষণক্ত। সম্তর্পণং স্বিশ্বহিমাদি কাঘাং সায়ং নিষেব্যাগ্রিফলাপ্রয়োগাং॥

আগন্তক কাংণে চকুতে কোন প্রকার বিকার উপস্থিত ইইলে পোটলীংদ্ধ বস্ত্র ধারা খেদ দিবে এবং স্ত্রীগুদ্ধ ধারা আন্চ্যোতন ও পিত্তজ রক্তজ চক্ষুরোগেব ন্যায় চিকিৎসা করিবে। স্থ্যগ্রহণ অগ্নিও বিহ্যাদির দর্শন জন্ম চক্ষুর কিয়তি জন্মিলে সন্তর্পনাদি থিয়া ও শৈত্য ক্রিয়াদি প্রশস্ত এবং ভ্রিক্লার কাথ সায়ংকালে দেবন বিদেয়।

নিশাক্ষাত্রকলাপাকী-দিতামধুকদংযুত্ন। অভিগাতাক্ষিশুলদ্ধ নারীক্ষারেণ প্রণম্। ইৎকটাকুরজন্তদং প্রসো নেএপুরণম্॥

অভিঘাত জনিত চক্ষণেল হরিদ্রা, মৃত্যু, বহেড়া, আমলকী, হগীতকী, দাকহরিদ্রা, চিনি ও ষ্টিমধু এই সকল দ্রোর চুর্ণ নারীহ্রের প্রক্ষেপ দিয়া চক্ষুতে পূর্ণ করিবে, অথবা ইকড় নামক তুলাছুরের স্বায় চকুতে পূর্ণ করিবে।

নৈক্ষবং দক্ষে শুলী চ ম'তুলুঙ্গরসো গুড্গ। অক্টোদ্কাভ্যাং কর্ত্তনাং শুক্রপাকে ভদ্রন্য ॥

সৈন্ধবলবণ ২ নাষা, দেবদাক ও ভঠ প্রত্যেক ৪ মাষা, টাবালেবুর রদ গুত নারীজ্ম এবং জল প্রত্যেক ১২ মাষা; এই সমস্ত একতা মৃত্র অধিতে পাক করিয়া ঘন হইটো তত্বারা শুক্রপাক চক্ষরোগে অঞ্জন দিবে।

আঞ্জং হাত্তং কীরপাত্রং মধককে। পেলানি চ। জীবকবছকো চাপি পিষ্ট্রা সপির্বিপাচয়েও। সর্ব্বনে মাডিয়াতের সপিরেতৎ প্রশক্ততে॥

ছাগন্নত /৪ সের, গব্যত্ত্ব ১৬ সের।
ক্ষার্থ—ষ্টিমধু, উৎপল, জীবক, ঋষভক
প্রত্যেক ২ পল। যথানিয়মে দ্বত পাক করিয়া সেবন করিলে অভিঘাত জন্ম সকল প্রকার
চকুরোগ প্রশমিত হয়। বাতাভিষান্দৰচোক্তদ্বাতে মাক্সভপৰ্যয়ে। পূৰ্ব্বভক্তং হিতং সূৰ্পিঃ কীরঞ্চাপ্যথ ভোজনে॥

বাতাভিষ্যন্দে, বাতপর্যায়ে ও মহাতো-বাতরোগে ভোজনের পূর্নে ম্বত সেবন ও ভোজনের সঙ্গে গুল হিতকর।

বৃক্ষাদ্য্যাং ক্পিথে চ প্রদানে মহতাপি। সক্ষীরং কর্মটায়দে সিদ্ধান্য পি প্রেদ্ গতন।

বাদ্না, কয়েৎবেল ও বৃহৎপঞ্চমুলের (বিয়াদি পঞ্চমুলের) করে এবং ছগ্ধ (মৃতের সমান) ও কাক্ডাশুলীর রসে (মৃতের তিন গুল) মগাবিধানে মৃত পাক করিয়া সেবন করিলে আগ্রুক চক্ষরোগ উপশ্যিত হয়।

জাউধ্যল্মধীমন্তং রাজ্যেশধাবাজ্যুন্ম।
কোরোংপাতং শিবাহধ্যক্তাশেত ক্ষিত্রান্ শদান্
ক্ষেন্তালে কে তেওঁ শিবাবেল কি মন্দ্র ।

কিলি কিলি কিলিক ক্ষিত্রিক মৃ।)

অভিযান, অধীনন্ত, বক্তজ অর্জুন, শিবোৎপাত ও শিবাহণ প্রভৃতি নেত্ররোগে পুরাতন গুড় ধারা গ্রিগ্ধ করত শির্গাবেধ ক্রিয়া বোগনিবারেনের চেইট ক্রিবে।

্ অবিমণ্ লেগি চন্দু ও মন্তকের অদ্যভাগ যেন উৎপাটিত ও মাথত বলিয়া বোদ হয়। অজ্জুনরোগে শুক ভাগে শশরক্তের আয় রক্ত-বণ একটি বিন্দুর উৎপত্তি হয়। শিরোৎপাত রোগে চক্ষুর শিরা সকল অবেদন বা সবেদন ইয়া বারংবাব ভায়বর্ণ ও প্রাকৃতবর্ণ হয়। শিরাহ্য রোগে ভায়বর্ণ প্রগাঢ় অঞ্জনির্গম ও দক্তিকীশতা হয়)।

অন্নাধাৰিতশাস্তাৰ্থং কুষ্যাজেপান্ স্থনীতলান্। তৈন্দুকং তৈকলং সূপিজীৰ্থং বা কেবলং হিতম্। শিৱাৰাধং বিনা কাষ্যঃ পিজ্ঞানহুৱো বিধিঃ॥

আমাধ্যমিত-নেত্ররোগ-শান্তিজন্ম স্থাতিল প্রালেপ, তৈল্পুকন্বত (স্থাতে বাত-ব্যাদিতে উক্ত), ত্রৈফলন্বত কিংবা কেবল প্রাতন মৃত প্রায়োগ করিবে এবং শিরাবের বাতীত পিতাভিদ্যানের ন্যায় চিকিংদা করিবে। (অমাধু, বিত রোগে চকুর মধাভাগ ঈষৎ নীলবর্ণ ও প্রাস্তভাগ লোহিতবর্গ হইয়া পাকে এবং দাহ, শোথ ও প্রাব বিশ্বমান থাকে)।

সর্পিঃক্ষৌত্রাঞ্জনক স্থানিছরোৎপাত**ন্ত ভে**ষজম্। তদ্ধৎ সৈন্ধবকাশীশং স্বস্থাপিষ্টক পুজিতম্॥

শিবোৎপাত রোগে গ্রত ও মধুর সহিত সৌবীরাঞ্জন পেষণ করিয়া অঞ্জন দিবে। তত্ত্বৎ সৈন্ধব লবণ ও হিরাক্স নারীছক্ষে পেষ্ণ করিয়া অঞ্জন দিবে।

শিবংহরেইপ্রমণ কুষ্যাৎ কাণিতং মধুসংযুত্ম। মধুনা ত'ক্ষ শেলং বা কাশীশং বা স্মাক্ষিক্ষ।

শিরাহন নেত্রবোগে নাংগুড় ও মধু কিংবা রসাঞ্জন ও মধু অথবং হিরাক্স ও মধু থার। অঞ্জন দিবে।

त्र इक्क श्रमा शर्भः भड्कः छन् छन्। भारतर ॥

রণগুক রোগে বঙ্গ গুগ্ সেবন করিব। (চক্ষুর ক্ষগংশে অত্যন্ত বেননা উষ্ণ আব্যুক্ত স্কীবিদ্ধৰ গোলাকার নিন্ম ও গুকুবর্ণ আক্রতিবিশেষকে রণগুকু কহে)।

কাতক**ন্ত** স্বলং শাস্ত্র (জনুকং পাণ্যমের চ। কাংক্তে নিযুঠং ভাষান ক্ষতভান (ভিতৰণাত্র দ

নিম্মলীগল (জলপ্রাদানন ফল ।, শগ্রানাভি, গাবের জাঠি ও রোপা এই সকল জব্য স্তনত্থেব সহিত কাংখ্যপাতে ব্যন্ধ করিয়া চক্ত্ত অন্তন দিলে ব্যন্তক ও চক্ষ্ব রক্তবর্ণতা বিনষ্ট হয়।

শির্ষা বা হরেম্বজং জলোকোভিশ্চ লোচনাৎ। অক্ষমজ্ঞাঞ্জনং সায়ং গুষ্কেন শুক্তনাশনমূ॥

জোঁক বারা চক্ষ্ণিরা হইতে রক্তমোক্ষণ করিলে অথবা বহেড়া মজা নারীপ্রথম ঘর্ষণ করিয়া সায়ংকালে অঞ্জন দিলে এণগুক্র বিনষ্ট হটয়া থাকে।

একং বা পুণ্ডরীকঞ্চ ছাগীক্ষারাবদেচিতৃম্। রাগাঞ্চনেদনাং হস্তাৎ কতপাকাতয়াককাঃ ॥

উৎকৃষ্ট পুণ্ডনীককাষ্ট পেষিত ও বন্ধ্বণণ্ডে পোট্টনীবদ্ধ করিয়া ছাগ হধ্যে ভিন্নাইয়া রাখিবে। হয় যখন পীতবর্ণ হইবে, তখন ঐ হয় চক্ষুতে পরিধেচন করিবে। তাহাতে চক্ষুর রক্তবর্ণতা, অশ্রুপাত ও বেদনা এবং অক্ষিক্ষত, অক্ষিপাকাতায় ও অজকা বিনষ্ট হয়।

সমূদায় কৃষ্ণমণ্ডল গুরুাবৃত হইলে, ভাহাকে অক্ষিপাকাত্য় কহে। এবং গুদ্দ ছাগবিষ্ঠার আয় আকৃতিবিশিষ্ট অতিশয় বেদনাযুক্ত ঈবৎ লোহিতবর্গ মেদঃপদার্থ দারা কৃষণমণ্ডল আবৃত হইলে ভাহাকে অজ্কা কৃষণমণ্ডল আবৃত হইলে ভাহাকে অজ্কা

তৃথকং বারিণা যুক্তং শুক্রং হস্ত্যক্ষিপুরণাৎ ॥

শীতল জলে তুঁতে যিষয়া সেই জল চকুতে দিলে শুক্রবোগ নষ্ট হয়।

সমূছফেনদক্ষাও-ত্তৃসিধ্ধে সমাকিকৈ:। শিগ্রীজযুত্তবিভি: গুক্রী শিগ্রারণী।।

সমুদ্রফেন, কুরুটিডিয়ের গোসা, সৈন্ধব লবণ, মধু (কাহার মতে স্বর্ণমান্ধিক) ও শঙ্কিনাবীজ, এই সকল দ্রব্য শঙ্কিনার রসে পেষণ করিয়া বৃত্তি প্রস্তুত করিবে। এই বৃত্তি শুক্রবোগ-নাশিনী।

> ধাত্ৰীকলং নিম্বকপিথপত্তং যষ্ট্যাহ্বলোধং পদিবং তিলাশ্চ। কাথঃ স্থানিতো নৱনে নিষিক্ষঃ সক্ষপ্ৰকাৰং বিনিহস্তি শুক্ৰম্॥

আমলকী, নিমপত্র, করেৎবেলের পত্র, ঘষ্টিমধু, লোধ, খদির ও তিল, ইহাদের কাথ শীতলাবস্থায় নয়নে সেচন করিলে সর্মপ্রকার শুক্র বিনষ্ট হয়।

ক্ষপুন্নাগপত্তেণ পরিভাবিতবারিণা। স্থামাকাথামূলা বাথ সেচনং কুমুনাগহমু॥

নাগকেশর-পত্ত, শিলার কুটিত করির। তদ্বারা জল ভাবিত করিবে। সেই জলে অথবা শ্রামানতার কাথে চকু সেচন করিলে কুমুম বোগ (খেতবর্ণ চিচ্ছু) বিনষ্ট হয়।

দক্ষাওত্বকৃশিলাশ্ব-কাচচন্দনগৈরিকৈ:। তুল্যৈরঞ্জনবোগোহরং পূলার্কাদিবিলেধন:।

কুকুটভিষের থক্, মনছাল, শখনাভি, কাচ, চন্দন ও গেরিমাটী এই সকল দ্বব্য দমভাগে লইয়া তাহার অঞ্জন দিলে কুস্থম ও অর্মাদি চকুরোগ নষ্ট হয়।

শিরীববীক্তমরিচ-পিপ্সল'লৈক্ষবৈরপি। শুক্রে প্রাথবিণং কায়ামথবা দৈক্ষবেন চ ॥

শিরীযবীজ, ম<িচ, পিপুল ও দৈল্পব ইহাদের চূর্ণ অথবা কেবল দৈল্পব চূর্ণ, মধবাক্ত শলাকায় লাগাইয় তাহা গুক্লে দ্ব্ৰণ করিবে। ইহাতে গুক্ল বিনষ্ট হইবে।

বছশঃ প্লাশকুস্মস্বটনঃ প্রিভাবিত। জয়তাচিরাৎ । নজাইবোজবৃত্তিঃ কুস্মচয়ং দুকু চির্জম্পি ॥

ক: প্রার বীজ্চুণ পলানপুশের শ্বরদে সপ্তাহকাল ভাবনা দিয়া বন্তি প্রস্তুত করিবে। এই বৃত্তি প্রয়োগে দীর্ঘকালোৎপর কুম্বা আশু বিনষ্ট হয়।

দৈশ্ববিদলাকুদা-কটুকাশ্রানাভয়,। সতামরজসো বৃত্তিং পিপ্তা শুকৃবিনাগিনী॥

সৈম্বৰ লবণ, তিফলা, পিপুল, কট্কী, শহ্মনাভ ও তাত্ৰ ইহাদের চূণ পেষণ করিয়া বর্তি প্রস্তুত করিবে। ইহার অঞ্জন ব্যবহারে শুক্রবেগ নঠ হয়।

চন্দ্ৰহ সৈধাৰং পথা। পলাশভক্রোণিত্য। ক্রমবৃদ্ধমিদং চূৰ্বং শুক্রাম্মাদিবিবেগ্যম্ ॥

রক্তচন্দন ১ ভাগ, সৈম্বর লবণ ২ ভাগ, হরীতকী ৩ ভাগ, পলাপের আটা ৪ ভাগ, এই সকল দ্রব্য একত্র চূর্ণ করিয়া প্রধােগ করিলে শুকুরোগ ও স্বাধানি রোগ বিনষ্ট হয়।

শথক ভাগাশ্চরারস্ততোহজেন মনঃশিলা। মনঃশিলাজিং মরিচং মরিচার্জেন দৈজবম্। এতদুর্বাঞ্চনং শ্রেষ্ঠ শুকুরোন্তিমিরেষ্চ।

শজানাতি ৪ তাগ, মন:শিলা ২ তাগ, মরিচ > তাগ, দৈয়ব লবণ অর্জভাগ, এই সমু দার একত চূর্ণ করিবে। পরে মধুসিক্ত শলাকা দারা এই চূর্ণ সরণ কিংবা অরণ শুক্রে ঘর্ষণ করিবে। (পরে ত্রিফলার কাথে চক্ষু ধৌত করিবে।) ইহা নেত্রোগের বিশেষ হিতকর।

তাপ্যং মধ্কসারো বীজঞ্চাকন্ত সৈদ্ধবম্। মধুনাঞ্জনবোগাঃ স্থান্ডভারঃ গুক্রশান্তরে। স্বর্ণমাক্ষিক, মৌলসার, বহেড়ার মজ্জা ও সৈন্ধব লবণ, এই চারিটি দ্রব্যের যে কোনটী মধুর সহিত পেষণ করিয়া অঞ্জন দিলে শুক্র-রোগের শাস্তি হয়।

বটকীরেণ সংযুক্তং প্রক্ষং কপূর্রজং রজঃ। ক্রিপ্রমঞ্জনতো হস্তি শুক্রকাপি ঘনোরতম্॥

সৃদ্ধ কর্প্রচূর্ণ বটের আটার সহিত মিশা-ইয়া অঞ্জন দিলে ঘন এবং উন্নত শুক্রবোগ সম্বর নিবারিত হইয়া থাকে।

ত্রিফলামজ্ঞমুক্তনা মধুকং রক্তচন্দনম্। পূর্বং মধুদংমিশ্রং কতগুক্তাজক!স্মনুৎ ।

ত্তিফলার মজ্জা, গোরোচনা, ঘট্টমধু ও রক্তচন্দন, এই সম্দায় মধুব সহিত পেষণ করিয়া চক্তে পূরণ করিলে ক্তভক্ত, অজকা ও অঞ্পশমিত হা।

ভালত নারিকেলত তথেবারুজরত বা।
করারস্য চ বংশানাং কৃষা কারং পরিজভন্।
করভাত্তিকৃতং চুবং কারেব পরিভাবিতন্।
সপ্তকুলোগ্রকুরো বা প্রকৃত্তি কার্যেৎ "
এতজুরেজসাধ্যেন কুপেকরণন্ত্রন্।
বানি শুকাণি সাধানি তেবাং পরনমঞ্জনন্ ।

তালজ্ঞটা, নারিকেল মালা, ভেলা ও বংশ-করীর (বাশের কোড়) ইহাদের ভন্ম ভাব্য দ্রব্য সমান গ্রহণ করিরা মাট গুণ বা ষোল গুণ জলে পাক করিবে। অন্ধাবশেষ বা চহুর্থাংশাবশেষ থাকিতে নামাইয়া ২১ বার চাঁকিয়া পরিক্রত জল গ্রহণ করিবে। সেই জলে উষ্ট্রান্তি চূণ গা৮ বার ভাবনা দিয়া পুনর্ববার স্কন্ম চূর্ণ করিবে। অসাধা শুক্র স্বাভাবিক ক্রম্ম করিবার জন্ম এবং সাধ্য শুক্র উপশ্যের জন্ম এই চূর্ণ শ্রেষ্ঠ জানিবে।

ভাশুক্রহরা বর্তিঃ।

চন্দনং গৈরিকং লাক্ষা মালতীকলিকা সমা।
ব্রণগুক্রহরা বর্ত্তি: লোণিতস্য প্রদাদনী ।
ব্রক্তেইনন্দন, গেরিমাটা, লাক্ষা, মালতী-কলিকা, এই সমুদায় সমভাগে লইয়া আকাশকলে বা লাভিলকলে পেষণ করিয়া বর্ত্তি

প্রস্তুত করিবে। এই বর্ত্তি প্রয়োগ করিলে এণশুক্র বিনষ্ট এবং রক্ত পরিষ্কৃত হয়।

পুষ্পহরী বর্ত্তিঃ।

পলাশপুষ্পদ্ধরদৈর্গরণঃ পরিভাবিতম । করঞ্জনীজং তম্বর্জিট্ন স্থেপং বিনাশয়েৎ:।

করপ্রবীজ, পলাশপুশোর স্বরসে ৭ বার ভাবনা দিয়া বর্ণ্ডি প্রস্তুত করিবে। সেই বর্ত্তির অঞ্জন দিলে নেত্রপূষ্ণ (শাদা চিহ্ন) প্রশমিত হয়।

मखवर्दिः।

দত্তের স্তবরংহে গ্র-গ্রাপ্তপ্রে ভূবৈর। সংখ্যে জিক্তে গুলিকেইনম বিচপাণিকৈঃ। ক্ষতু এন্নপি ব্যাদিং নম্ভবর্তিনিব স্থয়েও।

হস্তী, শৃকর, উট্র, গো, অব, ছাগ ও গর্জন ইহাদের দস্ত, শুজানাভি, মুক্তা এবং সমুদ্রকেন প্রতাক সমভাগ; সর্বসমষ্টির চতুর্থাংশ মন্চি। এই সমুদার চূর্ণ জলে পেষণ করিয়া বৃত্তি, প্রস্তুত করিবে। এই বৃত্তি প্রয়োগ করিলে ক্ষতগুক্ত উপশ্যিত হয়।

হুখাহতী বর্ত্তিঃ।

ক একদা ফলং শছাং ক্রোষণং দৈন্ধবং দিতা।
ফেনো রদাঞ্জনং ক্ষোজং বিড়ঙ্গানি মনঃশিলা।
কুদুট্'ওকপালানি বাইরেষা ব্যপোহতি।
তিনিরং পটলাং কাচমন্ম শুক্রং তবৈব চ।
কঞ্রেশ্যবদুদ্ধ ইন্তি মলঞ্চান্ত:স্থাবতী।

নিশালীফল, শভা, ত্রিকটু, সৈন্ধব, চিনি, সমুদ্রফেন, রসাঞ্জন, বিদ্ধুন, মনছাল ও কুকুটাণ্ডের ত্বক্ এই সমুদায় জলে বাটিয়া বহি প্রস্তুত করত মধু মারা জ্ঞান দিলে চক্ষুর তিমির, পটল, কাচ, অম্ম, অর্ব্যুদ্ধ ও মল প্রভৃত আগু দ্বীভূত হয়। (ইহা পিন্তাহয় তিমিরে প্রশস্ত্র)।

চল্ডোদয়া वर्खिः।

হরীতকা বচা কুষ্ঠং পিপ্পলী মরিচানি চ।
বিভীতকস্য মজ্জা চ শশ্বনাভিম নঃশিলা ॥
সর্ব্বমেতৎ সমাহৃত্য ছাগক্ষীরেণ পেষয়েৎ।
নাশয়েৎ তিমিয়ং কভুং পটলাফ্যর্ক্য দানি চ ॥
অধিকানি চ মাংসানি যশ্চ রাজ্যে ন পশাতি।
অপি দিবার্ধিকং পুস্পং মাসেনৈকেন নশাতি।
বর্ত্তিশচনোদরা নাম নৃণাং দৃষ্টিপ্রসাদনী॥

হরীতকী, বচ, কুড়, পিপুল, মরিচ, বহেড়ার মজ্জা, শঙ্খনাভি ও মনছাল, এই সমুদার
ছাগহুয়ে পেষণ করিয়া বর্ত্তি প্রস্তুত করিবে।
ইহার অঞ্জনে চকুর কণ্ণ, তিমিব, পটল,
অর্কাদ, অদিমাণন, কুস্কম ও গাত্তান্ধতা প্রভৃতির নিবারণ এবং দৃষ্টির প্রসন্তা হয়।

बुरुफर स्नामशः २ विः।

রসাঞ্জন্ম থেলা চ । কুজনং সমন শিল্প।
শন্তানাতিঃ শিগুলাজং শক্রা চাত্র সপ্তমা।
এবা চক্রোদ্যা নাম বাইক্স্থিসাদনী।
হস্তাৎ পিচতুধ কঞ্জ তিমিরকাপথতি ॥

রসাঞ্জন, এলাইচ (পাঠান্তবে—শৈলজ), কুন্ধুম, মনছাল, শুজানাভি, শুজিনাবাজৈও চিনি, এই সমুশায় দ্ববে বাহি প্রস্তুত করিয়া চকুতে দিলে চকুঃ প্রসন্ন এবং পিছেও তিনিব প্রভৃতি রোগ নই হয়।

হরাতক্যাদিবর্তিঃ।

হরতিকা হরিছা চ পিল্লের লবণ নৈ চ।
ক্তুতিমিরজিন্টিন কচিং প্রিইছাটে।
হরতিকী, হরিছা, পিপুল ও পঞ্চলবণ এই
সমূলায়ের বর্তি ছারা চক্ষ্র কণ্ণ ও তিমির রোগ
বিনষ্ট হয়।

কুমারিক। বর্তিঃ।

জশাতিশ্বিলপুশানি ষষ্টিঃ পিশ্পলিত ডুলা:। জাতাপুশানি পদাশন্মরিচানি চ বোড়ন। এখা কুসুমিকা বর্ত্তিগতিং চকুনিবর্ত্তরেং ।

* রসাঞ্জনং দলৈলেয়মিতি যোগরত্বাকরপুতঃ পাঠঃ।

তিলফুল ৮০ টা, পিপুলের দানা ৬০ টা, জাতীফুল ৫০ টাও মহিচ ১৬ টা, এই সমুদায় একতা মৰ্দান করিয়া বর্ত্তি প্রস্তুত করিবে। ইহা বারা নষ্ট চক্ষুও পুনর্বার লব্ধ হয়।

দৃষ্টিপ্রদা বক্তিঃ।

ত্রিকলা কৃষ্টা ওবক্ কাশীসময়সো রক।
নালোৎপলং বিড্লানি চেনঞ্চ সরি হ'ং পতেঃ।
আজেন প্রদা পিষ্টা ভাবত্তে ভাজভাজনে।
সপ্তরাজভিতং ভূষা পিছা কাবেন বর্ত্তেং।
ক্রা দৃষ্টিপ্রদা বার্ট্রকানা ভিয়চকান।

ব্রিফলা, কুরুটাগুইক্, হীরাকস, লোহ-চুর্গ, নীলোংপলা, বিভূপ ও সমুদ্রফেন এই সমুদায় ভারপাতে পেহণ ও ছাগছতে সাত দিন ভাবনা দিলা পুন্ধাব ছাগছত মিঞ্জিত করত ংবি প্রস্তুত কবিবে। ইহা অন্দেরও দৃষ্টিপ্রদা

চন্দ্ৰাগ্ৰ: বহিঃ।

চন্দৰ্ভিফলাপ্য-প্ৰাশন্তক্ৰেণ্টি (১)
জলপিষ্টৈৰিয়ং অভিৰন্ধে (মিন্তুপ্তঃ)
পলাশন্তক্ৰোণি হং প্লাণ্ড পঞ্চন্দ উচি ইচিক্টঃ)

রক্তচন্দন, জিফলা, তুপারি ও প্লাশ-প্রম্পের রস এই সমনায় জলে পেষণ করিয়া বিত্তি প্রস্তুত করিবে। ইহার প্রয়োগে সকল প্রকার তিমির রোগ বিনষ্ট হয়।

ক্রাষণাল। বর্তিঃ।

ক্রাষ্ণং ত্রিদলা বভূং সৈদ্বালয়নগ্রন্থলা: । গ্রেদেপ্রেচ্ডক হুয়া বাউ: শস্তা কফাপ্রা

ত্রিকট়, ত্রিকলা, তগ্রপাছ্কা, সৈন্ধর, হরিতাল ও মনছাল এই সম্লায়ের বর্তি থারা চক্ত্র ক্লোদি দুরীক্ষত হয়।

ন্যুন্তুখা ব্র্তিঃ।

একগুণা মাগাধকা বিশুণা চ হয়)তকা সলিলপিয়া। বর্ত্তিরিয়ং নয়নস্থণা তিমিরাঞ্চণটলকাচাক্ষ্যরা॥ পিপুল ১ ভাগ ও হরীতকী ২ ভাগ একত্রে জলে পেষণ করিয়া বর্ত্তি প্রস্তুত করিবে। ইহার শারা তিমির, সর্ম্ম ও অঞ্রপাতাদি রোগ নিবারিত হয়।

চন্দ্রপ্রভা বর্তিঃ।

অপ্লনং বেতমরিচং পিপ্লনী মধ্যন্তিক।
বিজ্ঞাতকন্ত মধ্যন্ত শুখানাভিম নংশিলা।
এতানি সনভাগানি অজাক্ষারেণ পেবারং।
ভাষা গুলাং কৃতাং বর্তিং নেত্রেসু চ প্রণোজ্যেং।
অস্বানং পটলং কাচং তিনিরং রক্তরাজিকান্।
অপিমাংসাম্মনী চৈন সন্চ রাজ্রেন ন পশ্যতি।
বর্তিশুলপ্রভা নাম জাতাকাস্থি নাশ্যমং।

রদাঞ্জন, শজিনার বীজ, পিপুল, যৃষ্টিমধু, বহেড়ার মজ্লা, শজানাভি ও মনছাল, এই সমুদায় দ্রব্য সমভাগে লইয়া ছাগছারে পেদণ করিয়া ও ছালার শুকাইয়া বহি প্রস্তুত করিবে। ইহা দারা চক্ষের অর্ব্যুদ, পটল, কাচ, তিমির, রক্তরাজিকা, অধিমাংস, অন্ম ও রাত্যুদ্ধভা নিবারিত হয়।

(চক্ষর উপরে পদ্ধার মত যে মাংস জন্মে, । তাহার নাম অথা। অনিমাংসাথ্যে সেই মাংস ছল, মৃত্পোল ও বক্ষংসভেস আয় বর্ণবিশিষ্ট । হয়। একেবারে দৃষ্টিশক্তি নষ্ট হউলে, তাহাকে তিমিন, কাচ, নীলিকা বা লিক্ষ-নাশ কহেছ।

পঞ্চশতিকা বৰ্ত্তিঃ।

নালোৎপঞ্চপত্রশতং মৃদ্যাশতং বনশতক নিস্তাশং এতিয় । নালতাঃ কুথ্যশতং পিঞ্চলতিভুলশতক । পক্ষণতৈবতিবিভিতাঞ্জনং কুয়াং সক্ষাত্রকে নয়নে। তিমিরাঞ্জাচপট্লানাং নাত্রাপ্রঃ মাধ্যোপায়ঃ ॥

নীলোংপল পত্র ১০০ টা, মুগ ২০০টা, নিস্তব্ধ যব ১০০ টা, মালতীফুল ১০০ টা ও পিপুলের চাউল ২০০টা, এই সমুনায় একত্র পেষণ করিয়া বন্তি প্রস্তুত করিবে। ইহার অঞ্জনে তিমিরাদি নানারোগ নষ্ট হয়।

ব্যোষান্তা বক্তিঃ।

বোষে'ংপলাভয়াকু ঠ-তাকৈ বিক্তিঃ কৃতা হরেৎ। অর্ক্দং পটলং কাচং তিমিয়াম্ম'শ্রমিশ্রতিষ্॥

শুঠ, পিপুল, মবিচ, নীলোৎপল, হরী তকী, কুড় ও রদাঞ্জন, ইহাদের দ্বারা বর্ত্তি প্রস্তুত করিয়া অঞ্জন দিলে অর্ক্যুদ, পটল, কাচ, তিমির, অস্ম, অঞ্চপাত প্রভৃতি নেত্ররোগ উপশ্যিত হয়।

পিপ্লল্যান্ত। বর্ত্তিঃ।

গিপ্লীং সভগরে'বপলপাব'ং বর্ত্তকে সম্পূক্ষং সহরিছাম্। এত্যা সভতমঞ্জিতবাং বং কুপ্রস্মানিছতি চল্ট।

পিপল, তগরপাতকা, নীলোৎপলপত্র, যৃষ্টি-নধ্ও হরিদা ইহাদের বৃদ্ধি প্রস্তুত করিয়া সর্বনা অঞ্চন দিলে গ্রুড়েগ আয় দৃষ্টিশক্তি হয়।

তারকাদ্যা বর্তিঃ।

তারং তামং রসং নাগং কপুরং বপরং ৩৭।। রস্ঞানং কাংজেশখং হংসপাল্যা দ্রৌদন্য। বতিং ক্রাজনাদ্ধ ও সমস্তং নেত্রাময়য়॥

রোপ্যা, তাম, পারন, নাম, কপূর, ধপর, রসাজন, কাসা ও শুফ্র এই সকল দ্ব্যু গোয়ালেলতার রসে মদ্দন করিয়া বৃত্তি প্রস্তুত করিবে। এই বৃত্তি পারা অঞ্জন দিলে সমস্ত নেত্র রোগ নিবারিত হয়।

কোকিলা বাত্ৰঃ।

লোধাং•চুৰ্নিকূ্থ-তিফলাঞ্জনসংযুতা। ব্টিকা জল্পিটেখং কে;কিলা ভিলেবাপ্ছা।

ন্ত ঠ, পিপুল, মরিচ. লৌহচুর্ণ, সৈন্ধবলবণ, বহেড়া, আমলকী, হবীতকী ও সৌবীরাঞ্জন, ইহাদের বন্তি প্রস্তুত করিয়া জলের সহিত পেষণ করত অঞ্জন দিলে তিমির রোগ প্রশ্মিত হয়।

সোগতাঞ্জনম।

নিশাঘ্যাভয়ামাংসী-কুঠকুঞ্চা বিচু বিতা:।
সর্বনেত্রাময়ান্ ইস্থাদেতৎ সৌগতমঞ্জনন্ ।
হরিদ্রো, দারুহরিদ্রো, হরীতকী, জটামাংসী,
কুড় ও পিপুল ইহাদের চুর্ণ করিবে। ইহার
অঞ্জনে চকুরোগ নিবারিত হয়।

ত্রীণি কট্নি করঞ্জলানি দে রঞ্জন: সংগৈদ্ধবকণ। বিশ্বতরোর্বরূপস্ত চ মূলং বারিচরং দশমং প্রবদন্তি ॥ হস্তি তমন্তিমিরং গটলঞ্চ পিচিটশুক্রমণার্জ্নকণ। অঞ্জনকং জনরঞ্জনকঞ্চ দৃক্ চ ন নশুতি বর্ণশতঞ্ছ॥

শুঠ, পিপুল, মরিচ, করঞ্জা, হরিক্রা, দারুহরিদ্রা, সৈদ্ধবলবণ, বেলমূল, বরুণমূল ও শঙ্কানান্তি, এই সকল দ্রব্যের অঞ্জন প্রয়োগ করিলে ভিমির, পঠল, পিচুটিকাটা প্রভৃতি নেত্রেরাগ নিবারিত হয়। পরস্তু ইহাদের অঞ্জনে দীর্ঘকাল পর্যান্ত দৃষ্টি অব্যাহত পাকে।

নালোৎপলং বিড়ঙ্কানি পিল্লনা রক্তন্দেনম।
অঞ্চনং দৈশ্বকৈব সভান্তিমিরনাশনম।
নীলোৎপল, বিড়ঙ্ক, পিপুল, রক্তচন্দন,
রসাঞ্জন ও দৈশ্বৰ লবণ, ইহাদের ছারা অঞ্জন
লইলে সভাই তিমির রোগ বিনষ্ট হয়।

পত্রগৈরিককপূর্ র-যষ্টনীলেংপলাঞ্জনম।
নাগকেশরসংগৃত্তমশেষ তিমিরাপইন্।
তেজপত্ত, গোথিমাটি, কপূর, যষ্টিমধু,
নীলোৎপল, রসাঞ্জন ও নাগেশ্বর, ইহাদের
অঞ্জনে সর্ব্ব প্রকার তিনিবরোগ নিবারিত হয়।

নাগাৰ্জনা বর্তিঃ।

ত্রিফলাব্যোষ্দিক, খ-ষটিতুপর সাঞ্জনম্।
প্রপৌপ্তরীকং জন্তমং লেখেং তামং চতুর্কণ ॥
স্বব্যাণ্ডোনি সংচ্পা বর্তিঃ কাষ্যা নতামুনা।
কাগার্জ্জনেন লিপিতা স্তম্ভ পাটিলিপুত্রকে ॥
নাশিনী তিমিরাণাক পটলানাং বিশেষতঃ।
সন্তঃ প্রকোপং স্তম্ভেন ব্রিয়া বিজরতে ধ্রনম্ ॥
কিংশুক্সরসেনার পৈত্রং পূপাক রক্তাম্।
অঞ্জনারোগ্রতারেন আসন্তিমিরং জরেং ॥
চিরমান্ডাদিতে নেত্রে বস্ত্র্বেণ সংযুতা।
ভন্মীলয়ভাকৃক্তেব প্রসাদকাধিগক্তিত ॥
নভোহমুনেতি বা পাতঃ।

जिक्ना, जिक्रो, टेमक्रव नवन, यष्टिमधु, তুঁতে, রসাঞ্জন, পুণ্ডারয়া, বিড়ক্ষ, লোধ ও জারিত তাত্র, এই চতুর্দ্দাটি দ্রব্যের চর্ণ তগরপাত্মকার কাথে (পাঠান্তরে — শিশির জলে) পেষণ করিয়া বর্ত্তি প্রস্তুত করিবে। নারীলয়ে পেষণ করিয়া ইহার করিলে চকুর প্রকোপ, পট্দ ও তিমির রোগ; কিংশুক পুষ্পের স্বরসে ঘর্ষণ করিয়া অঞ্জন দিলে পিষ্ট পুষ্প (ফুলপড়া) ও চক্ষুর রক্তবর্ণতা; লোধের কাথে ঘর্ষণ করিয়া অঞ্জন দিলে আসর তিমির এবং ছাগমূত্রে ঘর্ণণ করিয়া অঞ্জন দিলে দীর্ঘকালের ছানিপড়া নিবাবিত হয়।

ত্রিফল'য তমধুবনাঃ পালাভ্যঙ্গঃ, শতাবরী মূল্পাঃ। চকুলাঃ সংক্ষেপান্ধর্যঃ ক্ষিতো ভিষণ,ভিরম্ন।

ত্রিফলা, পুরাতন গ্রন্ত, মধু, বর, পাদাভাঙ্গ, শতমূলী ও মুগ, এই গুলিকে বৈভাগণ সার্থ-রণতঃ চক্ষুণ্য বলিধা নিজেশ করিয়াছেন।

> নিহাং সদা বা ত্রিকলাম কচ্বিতাং মৃতপ্রগাঢ়াং তিমিরেহণ পিত্তরে। সমীরণে তৈলমুতাং কফায়কে মধুপ্রগাঢ়াং বিদধীত যুক্তিতঃ॥

পৈত্তিক ও রক্তজ তিমির রোগে অধিক পরিমিত ঘতের সাহত, বাতিক তি,মির রোগে তৈলের সহিত এবং শ্লৈগ্রিক তিমির রোগে অধিক পরিমিত মধুর সহিত ত্রিফলাচূর্ণ সেবন করিবে।

বশ্বঃ কাথোহণনা চূর্ণং ত্রিফলায়া (নবেনিতম্। মনুনা সপিষা বাপি সমস্ত চিমিরাপহম্।

ত্রিফলার কাথ, কল অথবা ত্রিফলার চূর্ণ,
মধুবা রতের সহিত দেবন করিলে সকল প্রকার তিমির রোগ বিনষ্ট হয়।

যক্তৈকলং চূর্নপথ্যবজ্ঞী সায়ং সমগ্রতি হবিম ধুজ্ঞান্।
সম্চাতে নেত্রগঠেরিকারৈ হুতির্যথা ক্ষীণধনো মনুবাঃ॥

কুপথা ত্যাগ করিয়া যে ব্যক্তি প্রতাহ সামংকালে স্বত মধুর সহিত ত্রিফলা চূণ সেবন করে, সে চক্ষরোগ হইতে বিমুক্ত হয়। সমূতং বা বরাকাশং শীলয়েৎ তিমিরাময়ী।

তিমিররোগী স্থতের সঙিত ত্রিফলার কাথ পান করিতে অভ্যাস করিবে।

জাতা রোগা বিনগুন্তি ন ভবন্তি কদাচন। ত্রিফলায়াঃ ক্যায়েণ প্রাতর্নয়ন্ধাবনাৎ॥

প্রতিদিন প্রাত্তঃকালে ত্রিফলার কাথে
চক্ষু ধ্যতি কালে উৎপন্ন চক্ষুরোগ বিনষ্ট হয়
এবং ভবিষ্যতেও কোন চক্ষ্রোগ হয় না।
জলগভূবৈঃ প্রাতবহণোহ ছাভি প্রপ্য মুখনক্ষ্য ।
নির্দায়কুদ্ধকি ক্পয়তি তিমিরাণি নামন্ত্র।

প্রাতঃকালে জলগণ্ডৰ বারা বারংবার মূণ্রপ্ন পূর্ণ করিয়া দেই গণ্ড্য জল বারা উত্তম ক্রপে চক্ষু ধৌত করিলে শঘ্য তিমির বোগ বিন্তু হয়।

ভুক্ত_ৰা পাণিচলং সৃষ্ট্ৰা চকুৰে'য**ং এদীয়তে ।** অভিনেটণৰ ভদ্বাৱি তিনিৱাণি ব্যপোহতি ॥

ভোজনানন্তর আচমন করিয়া হস্তের জল না মুছিয়া সেই হস্তসংলগ্ন জল চকুতে দিলে ভিমির বোগ প্রশামত হয়।

কুষ্ণান্তং তৈলম্।

দু গাবিড্সমধুনষ্টক নিজ্জন্ধন বিধৌষধৈঃ পয় দু দিদ্ধান্দং ছদলাাঃ। তৈলং নৃণাং তিমিরগুজ নিরে!কি**শু**ল-পাকাতায়ান জয়তি নস্তবিধৌ প্রমুক্তম্॥

ভিলতৈল /১ সের। ছাগত্থ /৪ সের।
কল্পনা—পিপুল, বিড়ঙ্গ, যষ্টিমধু, সৈদ্ধবলবণ
ও শুঠ প্রভাক ৪ ভোলা। এই ভৈলের
নম্ম তিমির, শুক্র, শিরঃশূল, অকিশ্ল ও চক্ষ্ঃপাক প্রভৃতি রোগে প্রয়োগ ক্রিবে।

পটোলাদ্যং য়তম্।

পটোলং কটুকাং দাবলীং নিদং বাসাং কলতিকম্।
ছরালভাং পপটকং ত্রায়ন্তীঞ্চ পলোন্মিতাম্।
প্রশ্নমনকানাঞ্চ কাবরেলবণেইন্ডসি।
পাদশেবে রসে তামিন্ যুতপ্রস্থং বিপাচয়েৎ।

ককৈ ভূ নিম্বকুটজ-মুন্তবাষ্ট্যাংহচন্দনৈঃ। সপিললীকৈন্তৎ দিলং চকুষ্যং গুক্রয়োহিতমু॥ ভাণকর্ণাকিশন্ত বঙ্,নুধরোগরণাপহ্য। কামলাকুষ্ঠবীসর্প-গওমালাপহং পরমু॥

মৃত /৪ দের। কাপার্থ—পটোলপত্র, কট্কী, দারুহরিন্তা, নিমছাল, বাসকছাল, ত্রিফলা, ছবালভা, ক্ষেতপাপড়া ও বলাড়ুমুর প্রত্যেক ১ পল, আমলকী /২ দের, জল ৬৪ দের, শেষ ১৬ দের। কজার্থ—চিরতা, কুড় চিছাল, মৃত্যু, ষষ্টিমধু, রক্তচন্দন ও পিপুল মিলিভ /১ দের। ইহা ছারা চক্ষের শুক্রাদি রোগ নপ্ত ধ্য এবং নাদা, কর্ণ, অক্ষিব্যু, ত্বক্ ও মুখ্বোগাদিতে অনেক উপকার দর্শে।

অজকাং পার্যতো বিদ্ধা স্বচ্যা বিশ্রার চোদকম্। রণং গোময়চূর্বেন পুরয়েং সর্পিয়া সহ।।

অজকা রোগে পার্সদেশ স্করী ধারা বিদ্ধ করিয়া রস নির্গত করিয়া ফেলিবে। পরে গোমস্ট্র্ণ সতের সহিত মিশ্রিত করিয়া ভদ্মাবা রণপূরণ করিবে।

নৈশ্বং বাজিপাদঞ্ গোরে চন্দম্বিতম্।
শেলুত্বাসংযুক্তং পূর্ণঞাজকাপহম্॥
(বাজিপাদোহধ্যুবঃ অখগন্ধামূল্মিতি কেচিং,
ব্যবহারশ্ব প্রেবিশ্বেতি কেটিংনা)

দৈক্ষৰ লবণ, অধেন গুৰ (কাহার মতে অবগন্ধামূল) ও গোরোচনা, চাল্টা থকের রস্ সহ পেষণ করিয়া চক্ষুতে পূর্ণ করিলে অজ্কানাম্ক রোগের শান্তি হয়।

শশকাদ্যং মৃত্যু।

শশক্ত কৰারে চ সর্পিব: কুড়বং পচেও।
বাইপ্রেপেণিওরীকতা কছেন পার্থা সমন্।
ছাগল্যা: প্রণাচ্ছুত্র-ক্ষতপাকাত্যরাজকা:।
ছাত্ত ক্রশবাদ্বাক দ্বোগানশেষ হ:॥

ন্বত /।। সের। কাথার্থ—শশকমাংস /১
সের, (চক্রদন্তর মতে শশক একটা)। জল /৮
সের, শেষ /২ সের, ছাগছয় /২ সের।
কন্তার্থ—য়ষ্টমধু ও প্রেরিয়া প্রত্যেক ৪
তোলা। ইহা চক্ষে পূরণ করিলে শুক্র,

চক্ষুক্ত, চকুপাকাভ্যয় **ও** অজ্কা প্রভৃতি রোগ নই হয় ।

হরিন্তা নিম্বপারণি পিশ্বলো মরিচানি চ।
ভন্তমুখ্রং বিড়ঙ্গানি সপ্তমং বিশ্বভেষজন্ ॥
গোমুত্রেণ গুড়ী কাষা। হাসসূত্রেণ চাঞ্চনম।
অরাংশ্চ নিগিলান্ হস্তি ভূতাবেশং তবৈল চ।
বারিণা (চিনিরং ইন্তি মধুনা পটলং তথা।
নক্তান্ধাং ভূজরাজেন নারীক্ষীরেণ পুপাকম্।
শিশিরেন পরিজাবম্যুবং পিচিটং তথা।

হরিদ্রা, নিধ্বণত্ত, পিপুল, মরিচ, নাগরমৃত্যা, বিভ্রুপ ও শুঠ এই সমুদায় দ্রুব্য গোমুত্রে
মর্দ্রন কবিষা গুড়িকা প্রস্তুত্ত করিবে। ঐ
গুড়িকা ছাগ্রমূত্রে পেষণ কার্য্য অঞ্জন দিলে
সর্ব্যপ্রকার জ্বন ও ভ্রাবেশ, জনের সহিত্ত পেষণ করিয়া অঞ্জন দিলে তিমিররোগ্য, মধুর সহিত্ত পেষণ করিয়া অঞ্জন দলে পটনরোগ্য,
ভূপরাজের বসে পেষণ করিয়া অঞ্জন দিলে
রাজ্যান্দ্রারোগ্য, নারাজ্যের পেষণ করিয়া অঞ্জন
দিলে পুপাকরোগ্য, শিশিরবিন্দ্রতে পেষণ
করিয়া অঞ্জন দিলে নেইলাব্য, অঞ্জন ও
পিচ্টি কাটা।নবারিত হয়।

সংগৃতোগর গ্রান্তকর স্বান্তর গঞ্পদ্ব ল'কারপ্রিত চনবাইনে, ছিডান্ বইনের্বিক্তি চান্ন প্রথাক্তম্যা প্রামলনিথাসন্তাপক্ত কঞ্জিং দুরা সন্ত্রিক ক্ষান্ত বিরক্তমন্ত্রে দিত্য ॥

মৃত কিঞ্নুক (কেচে।) আল্ভার জলে ভাবিত ও হযাতাপে পারশুষ কারয়া তাহা চুর্ণাক্ত করেব। পরে ঐ চুর্ণাক্ত ওৎসম ঘষ্টিনাহত করিয়া (এবং হুত্রধারা বান্ধিয়া) বর্ত্তি প্রত্ত করিয়া (এবং হুত্রধারা বান্ধিয়া) বর্ত্তি প্রত্ত করিয়া (এবং হুত্রধারা বান্ধিয়া) বর্তি প্রত্ত করিয়া প্রজাশিত করিবে। পরে সেই বর্ত্তির অম্মিশিধার উপর নিম্মল কাচাদি পাত্র ধারলে তাহাতে যে কজ্জল পড়িবে, তাহা ধারা অঞ্চন দান কাজলে তিমিরাদি নেত্ররোগ প্রশ্নিত হয়।

ভূমৌ বিশৃষ্টরাজ্লা অঞ্জনং শমনং তরো:। তিমিরকাচার্থহরং ধূমিকারাল্ট লাশনম্। ভূমিতে অঙ্গুলি ঘর্ষণ করিয়া তদ্যারা অঞ্জন দিলে তিমিরাদি রোগ দকল বিনষ্ট এবং ধুম দর্শন নিবারিত হয়।

ত্রিকলাভ্রসংহীব্ধস্পে জাচ্ছাগপয়সি গোমুত্রে। নাগং সপ্তনিধিক্তং করে:তি গরুড়োপমং চকু:।

অখিদগ্ধ দীসক ত্রিফলান কাপে, ভৃদ্ধরাব্দের মধ্যে, শুঠেন কাথে, মধুতে, মতে,
ছাগছন্দে ও গোমুত্রে ধথাক্রমে প্রত্যেকটিতে
৭ বার নিষিক্ত করিয়া ঐ দীসকের শলাকা
প্রস্তুত কবিন। পরে ঐ শ্রাকা প্রস্তর্গণ্ডে
ঘর্ষণ কবিয়া অঞ্জন করিলে, গরুড় সদৃশ
দৃষ্টিশক্তি হয়।

ভিদলস্থিত প্ৰথম স্থান্ত জানে চ
হবিষি চ বিষক্ষে আৰু আহত মৰ্গ্ৰে।
আহিন্নম ভপ্তং সপ্তধা সংগ্ৰেকং
আহিন্নম পশ্চাং কার্যেৎ ভজ্জাকাম ।
স্বিভূক্তকালে সংজ্ঞা বাজ্ঞা বা
ক্রকরিকসমেতাক্ষ্পোচ্চানেকিংন্।
আসিতসিহসম্পান্ স্কেব্যাভিচাতান্
হরতি নয়ন্বেলিক্সান্ সেবামান। শ্লাকা
(বিষং স্বিক্সান্ত ক্রক্তাহ গ্রু স্বিষ্টিং
শ্বিশায়ে।)

ত্রকলাকাপ, ভূঙ্গনাজের রস, বিষক্ত্রসা, বহু প্রত, ছাগছ্য ও মরু, এই সমুদায়ের প্রত্যে কাতে একখণ্ড উত্তপ্ত সাসক ৭ বার কার্যা নিষ্তিক করিয়া ভদ্ধার একটি শলাকা এপ্রত করিবে। ঐ শলাকা ঘ্যণ করিয়া স্থ্যোদ্য় কালে রসা-জনের সহিত অথবা কেবল ভাহারই অঞ্জন দিলে চক্ত্র খেতস্থ বা ক্কিন্ত রোগ, সান্ধ এবং বন্ধ গত রোগ ও কর্ক্রানি নিবাবিত হয়।

চিঞ্পিতারসং নিধায় বিগলে চৌড্ৰুব্রে ভাজনে মূলং তক্র নিঘুষ্টসৈন্ধবযুতং গৌলং বিশোষ্যাওপে। তচ্চুৰ্বং বিমলাল্লনেন সহিতং নেকাল্লনে শস্ততে কাচাপ্লাক্ত্রশিচিটে সভিনিরে আবঞ্চ নিক্ষাপয়েও॥

একটি ভাগ্রপাত্তে তেতুল পাভার রস রাথিরা সৈত্ত্বল লবণের সহিত গুঞ্জামূল ঘর্ষণ করিয়া রৌদ্রে গুক্ষ করিবে। সম্পূর্ণ গুক্ হইলে উহা চূর্ণ করিয়া সৌবীরাঞ্জনের মহিত অঞ্জন প্রয়োগ করিলে কাচানি নেত্ররোগের শাস্তি হয় এবং নেত্রস্তাব নিবারিত হয়। চিনাষ্ট্রযোগে দৈশ্বমমলং বিচুর্গা তেনাকি। সমমঞ্জনেন তিমিরং গচ্ছতি ব্যাদমাখ্যমিপ। চিত্রানক্ষত্রযুক্ত যন্ত্রীতিথিতে সৈন্ধব লবণ চুর্ণ করিয়া অঞ্জন প্রয়োগ করিলে বৎসরাতীত তিমির রোগও প্রশাসিত হয়।

দ্যাহশীরনিস্ হৈ চ্রিতং কণদৈশ্বন্।
তৎ ক্রতং সম্বতং ভ্রঃ পচেৎ ক্ষেতিং ক্ষিপেদ্যনে।
নিতে ত্রিন্ হিতনিদং সর্কজে তিনিরে২ঞ্জনন্।
বেণার মূলের কাণে পিপুল চূর্ণ ও দৈল্পর

লবণ প্রক্ষেপ দিয়া বস্তপূত করিয়া লইবে।
সেই কাথের সহিত ত্মত মিশ্রিত করিয়া
পুনর্কার পাক করিয়া ত্মন করিবে। শাতল
হইলে তাহাতে মধুমিশ্রিত করিয়া অঞ্জন দিলে
সর্কাপ্রকার তিমির রোগ বিনষ্ট হয়।

ধাত্রীরসাঞ্জনকৌছ-স্পিটিস্থ রস্ফ্রিয়া। পিজানিলাক্ষিরোগন্ধী তৈমিবাপ্টলাপ্যা।

আমলকীর কাপে রসাঞ্জন ও ম্বত মিশ্রিত করিয়া ঘনীভূত হওয়া পর্যান্ত পুনর্বার পাক করিয়া নামাইবে। শীতল হইলে তাহাতে মধুমিশ্রিত করিয়া রসক্রিয়া করিবে। ইংাতে পিত্তজ্ঞ ও বাতজ চক্ষ্রোগ এবং তিমির ও পটনরোগ নির্ভ হয়।

শৃঙ্গবেরং ভৃঙ্গরাজং যষ্টিতেলেন মিশ্রিতম্। নস্তমেতেন দাতব্যং মহাপটলনাশনম্॥

শুঠ ও ভূদরাজচুণ যৃষ্টিমধুনাধিত তেলের সংশ মিশ্রিত করিয়া নস্য গ্রহণ করিলে মহা-পটল নিবারিত হয়।

নিজনালে কফোড়তে যথাবিধিপুর্বকম্।
বিজ্ঞা দৈবকুতে ছিল্লে নেতাং শুক্তেন প্রয়েৎ ॥
তত্তো দৃষ্টের রূপের শলাকামাহরেচছনৈ:।
নয়নং সপিবাভ্যক্তা বরূপটেন বেষ্টরেং ॥
ততে গৃহে নিরাবাধে শরীতোভান এব চ।
উপ্পারকাসক্ষর থুপ্তীরনোৎকম্পানানি চ ॥
তৎকালং নাচরেদৃদ্ধং বন্তুণা মেহপীতবং।
ত্যেহাৎ ত্যাহাদুদ্ধং বেদুগো সেহপীতবং।
বারোভ্রাৎ ত্যাহাদুদ্ধং বেদুয়েদ্দি পূর্ববং।
দশরাত্তর সংয্যা হিতং দৃষ্টপ্রসাদনম্॥
পশ্চাৎ কর্মা চ সেবেত লগ্ মঞাপি মাত্ররা।
নাগাশ্চাবোহর্দ্ধং শোধো বৃদ্ধুদং কেকরাক্ষতা।

অধিমস্থাদয়*চাক্তে-রোগাঃ স্থান্ন স্তিবেধজাঃ। অহিতাচারতো বাংপি যথাবং তানুপাচরেং। কুজায়ামক্ষিরাগে বা ভুরো বোগান নিবোধ মে।

কফজন্ত লিঙ্গনাশে দৈবকুতচ্ছিলে যথাবিধি শলাকা প্রবেশ করাইয়া স্তন্ত্র্য ছারা নেত্র পূরণ করিবে। অনস্তর রূপদর্শন হইলে অল্লে মল্লে শলাকা উদ্ধৃত করিয়া চক্ষু ঘুতাক্ত ও বস্ত্রের পটীবারা বন্ধ করিয়া রোগিকে নির্জ্জন ও নিরুৎপাত গৃহে উত্তানভাবে শয়ন করাইয়া রাশিবে। তংকালে (সপ্তাহকাল) উদ্গার, কাসি, হাচি, পুতুকেলা ও কম্পনাদি ঘাহাতে না হয়, এরূপ সাবনানে থাকিবে এবং স্লেহ পীত ব্যক্তি যেরূপ আহারাচারাদির নিয়ম পালন করে, সেইরূপ করিতে ইইবে। তিন তিন দিন অস্তর বায়ুনাশক ক্ষায় স্বারা নেত্র গৌত করিবে এবং বাতক্ষে নাশার্থ নেতে সেদ দিবে। দশ দিনের পর দৃষ্টিপ্রাদক মৃত্র ঔষণাদি ব্যবস্থা করিবে। পথ্য—স্থু অয়। ছইবেধ জ্ঞাচকুতে রক্তবর্ণতা, **5োষ, অৰ্দ্য, শোথ,** বুৰ,দ, কেকর কত (টেরা চোখ্) ও অধিমস্থাদি অন্ত রোগ উৎপন্ন হয়। অহিতাচার জন্মও এ সকল রোগ জন্মির থাকে। যথাবিধি তাহাদের চিকিৎসা করিবে। नित्वत (वहना वा लोशिका निवादगार्थ किछ भग्न বোগ ব,লতেছি, শ্রবণ কর।

াস ব,লাতে।ছে, আ্বণা করে। ক্ষিত্রঃ সমুগু দুকা-ম্বকৈরিকশারিবাঃ। কুখা বেপাঃ এয়োক্তবল ক্ষারাগোপশান্তরে॥

দ্রবাঘাদ, যব, গোরমাটী ও অনস্তম্ন এই দকল দ্রব্য ছতের সাহত একত্র পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে চক্ষুংশূল ও চক্ষ্র রক্ত-বর্ণতা নিবারিত হয়।

পয়স্থাশারিবাপত্র-মঞ্জিগামধ্কৈবপি। অজাকারাখিতৈলে পিং ক্লোফং পথ্য উচাতে ।

ক্ষীরকাকোলী, অনস্তমূল, তেজপত্র, মঞ্জিষ্ঠা ও যৃষ্টিমধু এই সমূলায় ছাগছগ্রে বাটিয়া ও ক্ষয়ক্ত করিয়া নেত্রবোগে প্রলেপ দিবে। ভাহাতে নেত্র নিরাময় হয়।

বাতম্বসিদ্ধে পর্যাস সিদ্ধং সর্পিশ্চতুপ্ত গৈ। কাকোল্যাদিপ্রতীবাপং প্রযুপ্ত্যাৎ সর্পকর্ত্মন্ত্র শাস্যত্যেবং ন চেচ্ছ্লং বিশ্ববিষ্ঠ মোক্ষমেৎ। ততঃ শিরাং দংহচাপি মতিমান্ কীর্তিতং যথা॥ দৃষ্টেরত: প্রসাদার্থনঞ্জনে শৃণু বে শুভে ।
নেষশৃক্ষ পত্রাণি শিল্পীষধবরোরপি।
নালত্যাশ্চাপি তুলানি মুক্তাবৈদুর্থানেব চ ।
অক্সাক্ষীরেণ সংপিব্য তাত্ত্বে সপ্তাহ্মাবপেৎ।
প্রাণিধায় ত তছর্ত্তিং যোক্তায়ন্ত্রনং ভিষক ॥

সহিত যথা ভদ্রদার্কাদি বাতম দ্রব্যের বিধানে তথ্য পাক করিয়া সেই চথ্নের ও কাকোলানি গণের কল্কের সহিত গণানিয়মে মুক্ত পাক করিবে। 'সেই মুত নশুও পানাদি সকল কর্মে প্রয়োগ করি! ব। কিন্তু যদি ঘৃত প্রয়োগ ছারা বেদনার শান্তি না হয়, তাহা হটলে স্নেহ ও স্বেদ ছারা রোগিকে স্নিগ্ন ও স্বিন্ন করিয়া তাহার ললাটস্থিত শিরা বিদ্ধ বা দ্য করিবে। তৎপরে দৃষ্টিপ্রসাননার্থ মেষ-শিরীষপত্র, ধ্বপত্র, মাল্ডীপত্ত, শুলীপত্ৰ, মুক্তা ও বৈদুর্ঘ্য, এই সমুদায় দ্রব্য সমভাগে লইয়া ছাগত্রথে পেষণ করত তাম্রপাত্রে ৭ দিন বাখিবে। পরে তাহার বর্ত্তি প্রস্তুত করিয়া নেতে অঞ্জন দিবে

লোডোজং বিজমং ফেনং সাগরক্ত মনঃশিলা। মরিচানে চ ভদবর্ত্তিং কারয়েবাণি পর্ববং ॥

শ্রোতোঞ্জন, প্রবাল, সমুদ্রফেন, মন: শিলা ও মরিচ, এই দকল দ্রবা, পূর্ববং ফর্গাং ছাগঢ়কে পেনণ ও ১ সপ্তাহ তাম্রপাত্রে স্থাপন করিয়া বৃত্তি প্রস্তুত করিবে। এই বৃত্তিরও অঞ্জন প্রযোজ্য।

রদাঞ্জনং যুতং ক্ষেক্তং তালীশং স্বৰ্গনৈরিকন্। গোশকুজনসংখুক্তং পিত্যোপহতদৃষ্টয়ে।

রগান্ধন, ম্বন্ত, মধু, তালীশপত্র ও মর্ণ-গৈরিক, এই সকল জব্য গোমররদে পেষণ করিয়া তাহার বন্তি প্রস্তুত করিবে। সেই বন্তির অঞ্জন দিলে পৈত্তিক দৃষ্টিনাশ নিবারিত হয়।

নিনোৎপলনিঞ্জনং গোশকুজসগংযুত্য।
শুড়িকাঞ্চনমেতৎ স্থান্ দিনরাত্রাজনোহিত্য।
পাল্পের ও নীলোৎপলের কেশর গোময়রসে পেমণ করিয়া গুড়িকা করিবে। সেই
শুড়িকা ঘর্ষণ করিয়া তাহার অঞ্জন দিলে
দিবাদ্ধ্য ও রাজ্ঞান্ধ্য প্রশাষ্ট্য হয়।

নগী জশখ্ৰিকটু জ্ঞথাঞ্জনং
মনঃশিলা ছে চ নিশেংগৰাং বকৃৎ * ৷
সচন্দনেরং গুড়িকাথবাঞ্জনে
প্রশাসতে বাজিলিনম্পালাকাম ॥

প্রশাস্ত রাত্তিদিনেমপাশ্রতাম্ ॥
 ব্রতিক: সৈক্ষরতা স্বর্গত স্থান্ত

(নদীজ: সৈজবম্। শঝং শঝানভি:। অবঞ্নং রসাঞ্চনম্।)

সৈশ্বর (কেছ বলেন, স্রোভোইঞ্জন),
শব্ধনাভি, ত্রিকটু, রসাঞ্জন, মনঃশিলা, হরিজা,
দারুহরিজা, ছাগাদির গরুহ (পাঠাস্তরে উহাদের
বিচা) ও রক্তচন্দন, এই সমুদায় জব্য পেষণ
করিয়া শুড়িকা করিবে। এই শুড়িকার
অঞ্জনও রাজাান্ধা-দিবাদ্ধানাশক।

কণা ছাগ্ৰফুল্লধ্যে পৰা তদ্ৰসপেষিত।। অচির'দ্ধন্তি নক্তাদ্ধাং ওদ্ধং সৰৌদ্ৰমূৰণমূ॥

ছাগদের যক্তংখণ্ডের মধ্যে পিপুল স্থাপন করিয়া জলে উংস্থিম করিবে। পরে উহা উৎ-স্বেদাবশিষ্ট র.স পেষণ করিয়া বর্ত্তি প্রস্তুত করিবে। ঐ বর্ত্তির অঞ্জন রাআদ্মা-নিবারক। ঐক্তরেপ পক্ষ মরিচন্ত মধুর সহিত্ত অঞ্জনদ্ধপে প্রযোজিত হইলে রাজ্যাদ্যা নষ্ট ইইয়া থাকে।

> পচেৰ তু গৌধং হি যকুৰ এক্টিড: প্ৰপ্ৰিড: মাগ্ৰিকাভিন্তিনা। নিৰেনিড: ডদ্ যকুদক্তনেন চ নিহ'জি নকাক্যমংশ্লং খলু।

গোসাপের যক্কতের মধ্যে পিপুল নিছিত করিয়া পাক কারবে। ঐ যক্কৎ ভক্ষণ করিলে এবং ঐ পিপুলের অঞ্জন দিলে নিশ্চর রাজ্যান্ধ্য নিবারিত হয়।

দথা নিযুষ্টং মরিচং রাজ্যান্ধ্যাঞ্জনমূত্তমষ্। তামুলযুক্তং গজ্ঞোত-ভক্ষণঞ্ তদর্গস্থ ॥

দধির সহিত মারচ ঘর্ষণ করিল্লা অঞ্চন দিলে রাক্রান্ধ্য রোগ নিবারিত হয়। পানের সহিত জোনাকীপোকা সেবন করিলে রাজ্যান্ধ্য নিবারিত হইলা থাকে।

- শুফরীমংশুকারো নক্তান্ধ্যমঞ্জনতো নিহন্তি। তদ্বজ্ঞামঠটকণকর্গমলকৈকলোহঞ্জনার্মধুনা ॥

* শকুদিত্যপি পাঠঃ।

পুঁটিমাছের (অন্তর্গুমি দগ্ধ) ক্ষার মধুর সহিত অঞ্জন দিলে তথং হিন্দু, সোহাগা ও কর্ণমল প্রত্যেক মধুর সহিত অঞ্জন দিলে রাজ্যান্ধ্য রোগ প্রশমিত হয়।

কেশরাঝারিতং সিদ্ধং মংস্থাগুং হস্তি ভক্ষিত্য।
নক্তাদ্ধাং নিয়তং নৃণাং সপ্তাহাৎ পণ্যসেবিনাম।
কেশুরিয়া ও রোহিতমৎস্তের ডিম্ব কাঁজিতে
সিদ্ধ করিয়া সেবন করিলে এবং সপ্তাহকাল
যথারীতি পথ্য সেবন করিলে রাজ্যাদ্ধ্য রোগ
নিবারিত হয়।

ভঙ্গরাজতৈলম ।

ভূকরাজরসপ্রত্থে যহীমধুপালেন চ। তৈলক্ত কৃত্বঃ পকঃ সংজ্ঞা দৃষ্টিং প্রসংসঞ্জং । নক্তাদ্বলীপালিভয়ং সংস্কৌতন সংস্কঃ।

তিলতিল ৪ পল। ভূকরাজরদ ১ ১১র। কল্প-ষ্টিমরু ১ পল। এই তেলের নপ্তে দৃষ্টি প্রদান হয়।

গোমগ্নতৈশ্য।

গৰাং শকুৎকাশ্বিপক্মৃত্মং হিতঞ্চ তৈলং তিমিরেছু নম্ভতঃ ॥

তিমির রোগে গোময়ের কার্থে পক তৈলের নম্ম গ্রহণ করিলে উপকার হয়।

অভিজিতং তৈলম।

তৈলক্ত পচেৎ কৃত্বং মধুকক্ত পলেন কন্ধপিষ্টেন। আমলকর্মপ্রস্থা ক্ষার্প্রস্থেন সংযুহং কৃষা। অভিনিতং নামা তৈলং তিনিরং হক্তামুনিপ্রাক্তম্। বিমলাং কুরুতে দৃষ্টিং নষ্টামণ্যানয়েৎ তথং॥ (দৃষ্টিজের্।)

ভিলতৈল /> দের। আমলকার রদ /৪ দের, ছার /৪ দের। কজার্থ—যষ্টিমরু > পল। এই তৈল ব্যবহারে তি,মরাদে রোগ নষ্ট হইয়া দৃষ্টি পরিষ্কৃত হয়।

নৃপবল্লভং তৈলং মৃতঞ্চ।

জীবকর্ষভকে মেদে দ্রাক্ষাংগুমতী নিদিন্ধিকা বৃহতী।
মধুকং বলা বিডুকং মঞ্জিষ্ঠা শর্করা রামা॥
নীলোৎপলং খনংট্রা প্রাপে ডিরীকং পূন্দবা লবণম্।
পিপ্রলাঃ সর্কেবাং ভাগৈরক্ষাংশিকৈঃ পিষ্টেঃ ॥
তৈলং বা বদি বা সপিদ স্থা ক্ষীরং চতুগু পং পক্ষ।
আন্তেমনির্মিত্রমিদং তৈলং নূপবলভং সিদ্ধম্।
তিমিরং পটলং কাচং নক্তাক্যকার্কার্ক্ত, দং দিবাক্যক।
খেতক লিঙ্কনাশং নাশায়তি চ নীলিক:-বাক্ষম্।
ম্থন-সাদৌর্যক্ষাং পলিতকাকালজং হন্তক্তম্।
ম্থন-সাদৌর্যক্ষাং পলিতকাকালজং হন্তক্তম্।
ম্থনিকামকি:ভদং রোগং বাংগ্রহং শিরক্তেম্।
বর্গান-প্রাক্ষিজ্ঞো: সর্কান্চিরেন নাশায়তি॥
পক্তব্যং বৃড্বং তৈলং নপ্তার্থং নূপবলতে।
অকাংশৈ: শাণিকৈ: কল্পেরাগ্র ভ্লাবিতিলবং॥

তিলতৈল বা গ্রা গুত ১ সের। হ্রা
৪ গের। করার্থ—জীবক, প্রয়ন্তক, মেদা,
মহামেন, দ্রাক্ষা, শালপানি, কণ্টকারী, ার্হতী,
ঘটিমধু, বেডেলা, বিড়ঙ্গ, মঞ্জিপ্পা, চিনি, রাস্না,
নীলোৎপল, গোকুন, পুণ্ডরীককান্ত, পুনর্নবা,
সৈন্ধব ও পিপুল প্রত্যেক ॥• অন্ধতোলা।
এই তৈলের বা ন্থতের নন্তে তিমির, পটল,
রাত্রাকতা, কাচ ও দিবান্ধা প্রশৃতি নেত্ররোগ,
নীলিকা, ব্যঙ্গ প্রভৃতি ক্ষুদ্রোগ এবং শাস,
কাস প্রভৃতি নানা রোগ নিবারিত হয়।

ত্রিফলাদ্যং মৃতম্।

ত্রিফলাকাপকক্ষাভ্যাং সপয়স্বং শৃতং ঘৃতম্। তিমিরাণাচিরাক্তি শীতমেতদ্রিশামূখে ।

ন্বত /৪ সের। কাথার্থ—মিলিত **ত্রিফলা**/৮ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের, গব্যহ্মা /৪ সের। কক্—মিলিত ত্রিফলা /১

সের। সন্ধ্যার সময় এই ন্মৃত পান করিলে
তিমির রোগ নষ্ট হয়।

মহাত্রিফলাদ্যং স্বতম।

ত্রিকলারা রসপ্রস্থং প্রস্থং ভূকরসঞ্চ চ। বৃষস্য চ রসপ্রস্থং শতাব্যাল্চ তৎসময়। জ্ঞাকীরং গুড় চাাণ্চ জামনকা। রসং তথা।
প্রহং প্রহং সমাজ্ঞ সর্বৈরেজিয় তং পচেৎ ॥
কক্ষঃ কণা সিতা ক্রাক্ষা ত্রিকলা নীলমুৎপলম্।
মধুকং ক্ষীরকাকোলী মধুপনী নিদিন্ধিকা।
তৎ সাধুসিদ্ধং বিজ্ঞায় গুড়ে ভাঙে নিধাপরেৎ।
উদ্ধানমধ্যপানং মধ্যে পানক শস্তে॥
বাবস্তো নেত্ররোগান্তান্ পানাদেব পকষতি।
রক্তকে রক্তমুষ্টে চ রক্তে চাতিক্রতেহপি চ॥
নক্তাক্ষ্যে তিমিরে কাচে নীলিকাপটলার্ক্দে।
অভিযানেক্রিমিরে কাচে নীলিকাপটলার্ক্দে।
অভিযানেক্রিমিরে কাচে নীলিকাপটলার্ক্দে।
অভিযানেক্রিমিরে কাচে নীলিকাপটলার্ক্দে।
অভ্যানেক্রিমিরে কাচে নীলিকাপটলার্ক্দে।
অভ্যানেক্রিমির কাচে নীলিকাপটলার্ক্দি।
অবতের বাতপিত্রিভাগির কম্বাত্রিম্বির্কন্ন্।
গ্রদৃষ্টিকরং সজ্যে। বলবর্ণায়িবর্জন্ম্।
সববনেত্রামরং হল্যাৎ ত্রিফলান্তং মহদ্ মৃত্রম্॥

য়ত /৪ দের। কাণার্থ—নিলিত ত্রিফলা /২ দের, জল ১৬ দের, শেব /৪ দের জল ১৬ দের, শেব /৪ দের জল ১৬ দের বাদক পাতার রস /৪ দের (অথবা বাসকমূল /২ সেব, জল ১৬ দের, শেষ /৪ দের), শতমূলীর রদ /৪ দের, ছাগহন্ধ /৪ দের, গুলঞ্চ রস /৪ দের (অথবা পূর্ববিৎ কাথ /৪ দের), আমলকীর রস /৪ দের। করার্থ—পিপুল, চিনি, দ্রাকা, ত্রিফলা, নীলোৎপল, বৃষ্টমধু, ক্ষীরকাকোলী, গুলঞ্চ ও কণ্টকারী এই সমূলায় মিলিত /১ দের। এই মৃত্ত, ভোজনের পূর্বের মধ্যে ও ভোজনাম্ভে দেবন করিলে দর্ব্ব প্রকার নেত্ররোগ আন্ত বিনিই হয়। ইহা নেত্ররোগের অতি উৎকৃষ্ট ঔষধ এবং বল বর্ণ ও অগ্রের বর্দ্ধক।

ত্রৈফলং গুত্র।

ত্রিকলা জোদণং দ্রাক্ষা মধুকং কর্রোহিল।
প্রপৌজনীকং স্টকোনা নিড্নাং নাগকেশনম্ ॥
নালোৎপলং শারিবে থে চন্দনং রজনীবরম্।
কংবিকৈঃ পরসা তুলাং ত্রিগুণং ত্রিকলারসম্ ॥
ঘতপ্রস্থং পচেদেতং সর্কনেত্রকলাপহম্ ।
তিনিরং দেরমান্রাবং কারলাং কাচমর্কাদ্র্য ॥
বিসপং প্রদরং কন্তুং রক্তং খ্রম্থ্নেন্ চ।
খালিতাং পনিতকৈব কেশানাং পতনং তথা ॥
বিষয়ক্ষরমন্ত্রানি শুক্রকাশু ব্যপোহতি।
ক্রিয়েক্ষরমন্ত্রানি শুক্রকাশু ব্যপোহতি।
ক্রিয়েক্ষর বিধার রোগা নেক্রজা থে চ বয়ু জাঃ ॥

তান্ সর্বান্ নাশরত্যাশু ভাস্করন্তিমিরং যথা। ন চৈতস্মাৎ পরং কিঞ্চিদ্বিভি: কাশ্যপাদিভি:। দৃষ্টিপ্রসাদনং দৃষ্টং যথা স্তাৎ ত্রৈকলং স্বতম্॥

ঘৃত /৪ সের। কাথার্থ—তিফ্লা প্রত্যেক /২ সের, জল ৪৮ সের, শেষ ১২ সের; ছ্মা /৪ সের। কলার্থ—তিফ্লা, তিকটু, দ্রাক্ষা, ষষ্টিমধু, কট্কী, প্রথবীককান্ঠ, ছোটএলাইচ, বিড়ঙ্গ, নাগকেশর, নীলোৎপল, অনস্তম্ল, শ্রামালতা, রক্তচলন, হরিদ্রা ও দারহরিদ্রা প্রত্যেক ২ তোলা। ইহাতে তিমির, আম্রাব ও কাচাদি সর্বপ্রকার নেত্ররোগ এবং কামলা, বিস্পা, প্রদর ও কণ্ণু প্রভৃতি রোগ এবং কেশের থালিন্ডা ও পক্তা প্রভৃতি নিবারিত হয়। এই ঘৃত অপেক্ষা দৃষ্টিপ্রসাদক ঔষধ অতীব বিশ্ল।

ত্রিফলায়ত্য ।

ফলত্রিক'ভারুকধায়সিদ্ধং কন্দ্রেন যত্তীমধ্কক্ত যুক্তন্। সাপিঃ সমং কৌস্তাতুর্বভাগং হক্ত'ৎ ক্রিদেবং ভিমিরং প্রধৃদ্ধন্।

রত ১৪ সের। ত্রিফলার কাথ ১৬ সের,
শতমূলীর রস ১৬ সের; কল্প- যৃষ্টিমধু এক
সের। শতল হইলে মধু এক সের মিশ্রিভ
করিবে। ইহাতে ত্রিদোবজ তিমির বিনষ্ট হয়।
পিঞ্লী ত্রিফর। লাকা লোহচুর্গং সংস্করম্।
ভূকরাজরসে পিতং গুড়িকাজনমিষ্ডে।
অর্থা সতিমিরং কাচং কণ্ডং গুরুং বুনজুন্ম।

পিপুল, ত্রিফলা, ল্রাক্ষা, লৌহচুর্ণ ও দৈরুব লবণ, এই সমুদায় ভূক্ষরাজের রসে পেষণ করিয়া গুড়িকা প্রস্তুত করিবে। ঐ গুড়িকার অঞ্জনে অশ্বাদি নেত্ররোগ সকল নিংশেষরূপে দুবীভূত হয়।

অনকাং নেত্ররোগাংশ্য হস্তানিরবংশ্যতঃ॥

পুপাথাতাক জাসতোদধিকেনশম্ব-দিন্ধুখগৈরিক শিনামরিটেঃ সমাংগৈঃ। পিটেক মাকিকরদেন রস্থিরেয়ং হস্তামকাচতিমিরাজ্যুনবস্ধুরোগান্॥ পুশাকাশীস, রসাঞ্জন, চিনি, সমুদ্রফেন, শহানাভি, সৈদ্ধবলবণ, গেরিমাটী, মন:শিলা ও মরিচ, মধুর সহিত এই সমুদার পেষণ করিয়া প্রয়োগ করিলে অন্মাদি চকুরোগ নষ্ট হয়।

কৌস্বস্থ সর্পিনঃ পানৈবির্নেকালেপসেচনৈঃ। স্বাতুশীতেঃ প্রণময়েচ্ছক্তিকামঞ্জনৈততঃ॥

কৌন্তম্বত (দশ বর্ষের পুরাতন ম্বত) পান, বিরেচন, আলেপন ও অবদেচন রূপে ব্যবহার করিলে কিংব। সুস্বাহ্ন অথচ শীতল অঞ্জন প্রয়োগ করিলে শুক্তিকা নেত্রবোগ নিবারিত হয়।

(শুক্রমগুলে প্রাববর্ণ কিংবা মাংস বা বিজ্যকের স্থায় বর্ণদিশিষ্ট বিক্লসমূহ উৎপন্ন হইলে, তাহাকে শুক্তিকা কংহ।)

প্রবালমুক্তাবেদৃয্য-শন্ত্যশ্ষটিকচন্দনম্। স্বর্ণরক্ষতং ক্ষোদ্রমঞ্জনং শুক্তিকাপংম্॥

প্রবাল, মুক্তা, বৈদ্য্য, শঙানাভি, ফট্-কিরি, রক্তচন্দন, স্বণ ও রৌপ্য এই সম্পায় মধুর সহিত একত পেষণ করিয়া অঞ্জন দিলে শুক্তিকা নেত্রোগ প্রশ্নিত হয়।

শব্বঃ ক্ষোদ্রেণ সংযুক্তঃ কতকং সৈদ্ধবেন বা। সিতয়।প্রফেনো বা পৃথগঞ্জনমজ্জনে ॥

মধুর সহিত শৃত্যনাতি, সৈদ্ধবলবণের সহিত নিম্মণীফল ব। চিনির সহিত সমুদ্দেন পেষণ করিয়া অজ্জনিরোগে অজন দিবে।

পৈতং বিধিনশেষেণ কুন্যাদজ্জনশাস্তয়ে। বৈদেহী সিত্মন্ত্রিচং সৈক্ষবং নাগরং সমস্। মাজুকুক্সরসৈঃ পিষ্টমঞ্জৰং পিউকংপহম্॥

অর্জুন-রোগ শান্তির জস্ত পিতাভিষ্যন্দ রোগের চিকিৎসা করিবে। পিপুল, শজিনা-বীজ, দৈন্ধবলবণ ও শুঠ প্রত্যেক সম্ভাগে লইয়া ও টাবালেবুর রুসে পেষণ করিয়া অঞ্জন দিলে পিষ্টক নামক নেত্ররোগের শাস্তি হয়।

ভিজোপনাহং কফজং পিপ্পনীমধ্নৈদ্ধবৈঃ। বিলিখেলগুলাগ্ৰেণ প্ৰচ্ছয়েদা সমস্ততঃ॥

শৈষিক উপনাহ ত্রীহিম্থ অন্ত ধারা ভেদ করিয়া পিপুল চুর্ণ, মধু ও দৈন্ধব লবণ একতা

মিশ্রিত করত তাহা খারা ধীরে খীরে ঘর্ষণ করিবে। (ক্লফমণ্ডল ও দৃষ্টিমণ্ডলের সন্ধিস্থানে অন্ন বেদনা ও অন্ন পাক্ষুক্ত কণ্ড্বছল ধে গ্রন্থি জন্মে, তাহার নাম উপনাহ।)

> পথ্যাক্ষধাত্রীফলমধ্যবীকৈ-স্থিছোকভাগৈবিদ্যীত বর্ত্তিষ্। তরাঞ্জন্মেদক্রমতিপ্রগাঢ়-মক্ষোর্হরেৎ কষ্টমপি প্রকোপম ॥

হরীতকীমজ্জা তিন ভাগ, বহেড়ার মজ্জা হই ভাগ, আমলকীর মজ্জা একভাগ, জলে পেষণ করিয়া বর্ত্তি প্রস্তুত করিবে। মধুর সহিত্ত সেই বর্ত্তি পেষণ করিয়া অঞ্চন দিলে চক্ষুর প্রগাঢ় অঞ্চ ও কইকর প্রকোপ প্রশমত হয়।

প্রানের ত্রিকলাক থিং যথাদোষং প্রযোজয়েও। ক্ষোক্রেণাজোন পিঞ্চলা মিশ্রং বিধ্যেচ্ছিরাং তথা।

নেত্রপ্রাবে দোয বিবেচনঃ করিয়া অর্থাৎ পিত্ত-রক্তপ্রধান দোযে মধু সহ, বাত পিত্ত ও রক্ত প্রধান দোষে ঘত সহ, কফপ্রধান দোষে পিপুলচূর্ণ সহ, ত্রিফলার কাথ সেবন করিতে দিবে। এই সকল ক্রিয়ায় প্রশমিত না হইলে শিরাবেধ করিবে।

ভিদলামূতকাশাস-সৈদ্ধবৈঃ সরসাঞ্জনৈ। বস্ঞায়া জিমিএছে) ভিন্নে ভাৎ প্রতিসারণন্।।

ক্রিমিএছি রোগে ৪ পল (মিলিত) ত্রিফলার কাথ ও গোমুত্রে, মিলিত ১ পল হিরাকস
দৈর্ব লবণ ও রসাঞ্জন প্রক্ষেপ দিয়া প্রপাকে ঘন হইলে তদ্বারা রসক্রিয়া করিবে।
ক্রিমিগ্রন্থি ভিন্ন হইলে রসাঞ্জন ও মধু দারা
প্রতিসারণ করিবে। (যে রোগে বর্ম ও পক্ষমণ্ডলের সন্ধিতে নানাপ্রকার ক্রিমি জনিয়া ঐ
স্থানে কণ্ণ উৎপাদন এবং ক্রমশং বর্ম ও
শুক্রমণ্ডলের অন্তর্গত সন্ধিমধ্যে প্রবেশ করিয়া
চক্ষকে দ্বিত করে, তাহার নাম ক্রিমিগ্রন্থি।)

নিমেৰে নাসয়। পেন্ধং সপিস্তেন চ পুৰণম্। থেপয়িছা বিসগ্ৰন্থিং ছিন্তাণাক্ত নিৰ্মাশ্ৰয়ম্। পক্ষং ভিন্তা তু শপ্ৰেণ সৈন্ধবেনাবচুৰ্ণন্তে ॥ (সপিক্তিফলাসিন্ধমিতি কেচিদক্তে ত্বপক্ষিতাছে:। ইতি চক্ৰটাকা।) নিমেষরোগী নাসিক। ছারা ত্রিফলাসিক

ছাত বা কেবল ছাত পান ও চক্ষুতে ছাত পুরণ
করিবে। পকবিসগ্রন্থিতে স্বেদ প্রদান করিয়া

আন্ত ছারা নিরবশেষ ছেদন করিবে ও সৈন্ধব
চুর্ণ ছারা ছিদ্রমুখ পূরণ করিবে। (যে রোগে
চক্ষ্র পাতা ঘন ঘন সঞ্চালিত হয়, তাহার নাম
নিমেষ। অক্ষিবয়ের বহিন্দিকে শোথ ও
ভিতরদিকে ক্ষমুখবিশিষ্ট প্রাবস্ত্র বহুসংখ্যুক
ছিদ্র উৎপন্ন হইলে, তাহাকে বিসবয়া বা
বিসগ্রছি কহে।)

বন্ধ বিলেখং বহুশন্তব:চ্ছাণিতমোক্ষণম্।
পুন:পুনবিরেকঞ্চ পিঅরোগাতুরো ভবেং।
পিলা ব্রিম্নো বমেৎ পূর্বং শিরাব্যাং ক্রতেহস্তি।
শিলারসাঞ্জনব্যোষ-গোপিত্রেশ্চকুরপ্রয়েং।
(গোপিত্রস্থাপ্রাপ্রো গোরোচনয়া সর্বত্র ব্যবহারঃ)।

পিৰরোগে (ক্লিয়বয়ে) কর্কণ ছারা ব্যাহয় ঘর্ষণ করিয়া শোপিত মোক্ষণ করিবে এবং মানে মানে বিরেচক ঔষণ করিবে। পিন্বরো,গকে (39 **প্রদানাক্ত**র বমন করাইয়া করিবে। রক্তমোক্ষণানন্তর পরে শিরাবেধ মনঃশিকা, র্মাঞ্জন, ত্রিক টু গোপিত (জভাবে গোরোচনা) এই সমুদায় বারা অঞ্চন দিবে।

ছব্লিতালবচাদাক্স-ফ্রনারসপেবিতম। অভ্যারসপিষ্টং বা তগরং পিছনাশনম্॥

হরিতাল, বচ ও দেবদারু তুলসীর রসে পেষণ করিয়া কিংবা হরীতকীর কাথে তগ্র-পাছকা পেষণ করিয়া প্রতিসারণ করিলে শিবরোগ নষ্ট হয়।

ভাৰিতং বন্ধমূত্ৰেণ সম্বেহং দেবদাক্ষ চ। কাৰুমাচীফলৈকেন স্বতমুক্তেন বৃদ্ধিমান্। ধূপয়েৎ পিল্বোগাৰ্জং পতন্তি ক্ৰিময়োহচিরাৎ ॥

ম্বভাক্ত দেবদারত্ব ছাগমূত্রে ভাবনা দিরা এতিসারণ (ঘর্বণ) করিলে, অথবা বস্তাচ্ছানিত চক্ষুতে মৃতদিশ্ত একটি কাক-মাচীক্ষলের ধূপ প্রদান করিলে ক্রিমি সকল শীশ্র পতিত হইয়া পিবরোগ নিবারিও হয়। রসাঞ্জনং সর্জরেসো জাতীপূল্পং মন: শিলা। সমৃজ্জেনো লবণং গৈরিকং মরিচানি চ। এতৎ সমাংশং মধুনা পিষ্টং প্রক্রিরবর্তানি। অঞ্জনং ক্রেদকঞ্জুদ্বং পক্ষাণাঞ্চ প্ররোহণম্॥

রসাঞ্জন, ধুনা, জাতীপুষ্প, মনঃশিলা,
সমুদ্রফেন, সৈদ্ধবলবণ, গেরিমাটী ও মরিচ
এই সমুশার মধুর সহিত পেষণ করিষা
প্রক্রিয়বয় রোগে অঞ্জন দিলে ক্লেদ ও ক্পূ
নিবারিত এবং পঞ্জ সকল অন্ধ্রিত হয়।
(চকুর পাতার বহিদিক অল্প বেদনা ও
শোধস্ক্র এবং ভিতরদিক অভ্যন্ত ক্লিল্ল হইলে,
তাহাকে প্রক্লিয়ব্ম কহে।)

মন্তকান্থি চুলুক্যান্ত তুষোদলবণান্বিভ্ৰম্। ভাৰাপাক্ষেত্ৰনং ছুন্তং পিলে, প্ৰক্ৰিময় নি ॥

শুন্তক নামক জলজন্ত্বৰ মন্তকান্তি, ক্যাঞ্জ ও সৈন্ধবল্বৰ, এক এ ভাষপাত্ৰে বৰ্ষণ করিয়া অঞ্জন দিলে প্ৰক্লিয়ব্দ্ম পিৰ্বোগ প্ৰশ্নিত হয়।

তামপাতে গুহামূলং নিজ্থমরিচারিতম্। আরনালেন সংখ্টমঞ্জনং পিল্নাশনম্॥

চাকুলের মূল, সৈদ্ধবলবণ ও মণিচ এই সকল জব্য তামপাতে কাঁজির সহিত সপ্তাহ কাল ঘর্ষণ করিয়া নেতে অজন দিলে পিল-রোগ বিনষ্ট হয়।

হরিছে ত্রেফলা লোধ্রং মধুকং রক্তচকনম্।
ভূক্তরাজরলে পিষ্ট্রা যর্বরেলৌহভারনে ।
তথা তাত্তে চ সপ্তাহং কুষা বর্তিং রক্তোহখনা।
পিচ্চিটা ধুমদণী চ তিমিরোপহংহক্ষণঃ।
প্রাতনিগুল্লব্রিত্যং সর্পনেত্রাময়াপহ্ম ॥

হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, ত্রিফ্লা, লোধ, যৃষ্টিমধু ও রক্তচন্দন, এই সকল জব্য ভীমরাজের
রেদে লৌহপাত্রে ৭ দিন ও তামপাত্রে ৭ দিন
(কাহার মতে লৌহপাত্রে বা তামপাত্রে ৭ দিন)
ঘর্ষণ করিয়া বর্ত্তি অথবা চুর্ণ করেবে।
প্রতিদিন প্রাতঃ ও রাত্রিকালে এই বর্ত্তি বা
চুর্ণের অঞ্জন দিলে সর্বপ্রকার নেত্রগো
বিনষ্ট হয়।

মঞ্জিষ্টামধুকোৎপলোদ্ধিকফত্বক্রেব্যুগোরোচনা-মাংসীচন্দনশম্পত্তাগিরিমৃত্তালীশপুশাঞ্জনৈঃ। সক্রেবের সমাংশমঞ্জনমিদং শব্দং সদা চকুবোঃ কণ্ডুক্রেনমলাশ্রুশোণিতক্রজাপিবার্গ্রক্তকাপহন্। (বর্ত্তিরিয়ং চুণাঞ্জনংবা)।

মঞ্জিঠা, ষষ্টিমধু, নীলোৎপল, সমুদ্রফেন, দার্কচিনি, বেপার মূল, গোরোচনা, জটামাংসী, রক্ত চন্দন, শুখানাভি, তমালপত্র (কাহার মতে কেন্দ্র), গেরিমাটী, তালীশপত্র ও পুপাঞ্জন এই সমুদায় দ্রব্য সমভাগে একত্র পেষণ করিয়া অঞ্জন দিলে কণ্ণ, ক্লেদ, মল, অশ্রুপাত প্রভৃতি নেত্রোগ সকল নিবারিত হয়। এই অঞ্জন চন্দুরোগের উৎক্রই ঔষধ।

ভূষকন্ত পলং বেত-মরিচানি চ বিংশতিঃ। ত্রিংশতা কাঞ্জিকপলৈঃ পিষ্ট্রা তাত্রে নিধাপরেৎ॥ পিলানপিলান্ কুক্সতে বহববং থিতানপি। তৎসেকেনোপদেহাশ্রনক্তশোধাংশ্চ নাশরেৎ॥

তুঁতে ১ পল (অর্থাং আট তোলা), খেতমরিচ (শজনাবীজ) ২০ টি ও কাঁজি ৩০ পল একত্র পেষণ কবিয়া ভামশাত্রে রাখিয়া দিবে। ইহার অঞ্জন দিলে বছবর্ষোভেত পিষ-রোগ অপিষ্ক:প পরিণত হয় এবং ইহা খারা সেক দিলে উপদেহ (পিচুঁটি), অঞ্জ, কণ্ডু, শোধ প্রভৃতি নেত্রোগ সকল নিবারিত হয়।

যাপ্য: পক্ষোপরোধন্চ রোমোক্তরণলেধনৈ:।
বন্ধ ব্যাপচিতং লেখাং প্রবাস্থ ক্রিষ্টগোণিতন্॥
প্রকান্তন্ম বং রোম সহিকোকক্রেচ্ছনৈ:।
সংবংশেনোক্তরেক্ষ্টাং পক্ষরোমানি বৃদ্ধিমান্।
সক্ষর্কি দহেৎ পক্ষ তপ্তংহসলনাক্যা।
পক্ষরোপে পুনর্নৈবং কদাচিদ্রোমসম্ভব:॥

রোমোৎপাটন ও লেখনক্রিয়া দ্বারা পক্ষণত পীড়া যাপ্য রাখিতে চেষ্টা করিবে। বয়ের্র্রাম উপচিত হইলে লেখনক্রিয়া করিরা, উৎক্রিপ্ত শোলিত মোক্ষণ করিবে। সহিষ্ট্রাক্তির অন্তম্মুর্থ প্রবৃদ্ধ রোম সকলকে আন্তে আত্তে উৎপাটন করিবে এবং পক্ষরোম সকল চক্ষ্তে পতিত হইলে সল্লা দ্বারা উদ্ধার করিবে। পীড়িত পক্ষ সতর্কতার সহিত তথে শ্রণশাদা

খারা দগ্ধ করিয়া দিবে, তাহা হইলে পক্ষরোগে কথনও রোমোদ্ধর হইবে না।

উৎসঙ্গনী বছলকৰ্দ্দ্ৰম্বত্ব নী চ
শ্যাবঞ্চ বচ্চ পঠিত বৃত্ব বন্ধ্ৰবন্ধ ।
ক্লিঞ্চ পোথকিবৃত্তিত্ব বন্ধ্ৰ বচ্চ
কুত্তীকিনী চ সহ শক্ষাবলেখা ॥
প্ৰেমোপনাহনগণে চ নিদক ভেত্তো
গ্ৰন্থিক যা ক্ৰিমিক্তোহঞ্জননামিকা চ ॥

উৎসঙ্গপিড়কা, বহুলবম্ম, কৰ্দমব্ম, শ্রাবব্ম, বদ্ধব্ম, ক্লিনব্মা, পোথকিমুক্তব্ম, কুন্তীকিনী ও শর্করা ইহারা লেখন করার যোগ্য এবং শ্লেশোপনাহ, নগুণ, বিদগ্রন্থি, ক্রিমিগ্রন্থি ও অঞ্জন ইহারা ভেদনীয়।

(চকুর নীচের পাতার সূল, তামবর্ণ ও ক গুৰুক্ত পিড়কা হইলে তাহাকে উৎসঞ্চপিড়কা কছে। বহুলবম্মরোগে চক্ষুর পাতা অক্সমবর্ণ কঠিন পিড়কা ব্যাপ্ত হয়। চক্ষুর পাতা হুইটি অকস্মাৎ ভাম বা রক্তবর্ণ ২ইয়া কোমল, বেদনা-যুক্ত ও ক্লিন্ন হইলে, তাহাকে কন্দিমবন্ন কহে। বল্লের ভিতর বাহির হুই দিকু স্থাববর্ণ এবং বাণা ও শুশনিযুক্ত হইলে তাহাকে ভাববয় কহে। চকুর পাতায় কণ্ণ ও অলবেদনাযুক্ত শোপ হওয়ায় আদ চকু সমাক্রপে নিমীলন করা না যায়, তাহাকে বন্ধবয় কহে। চকুর বাহাদিক অল বেদনা ও শোথযুক্ত এবং ভিতরাদক অত্যস্ত ক্লিন্ন হইলে তাহাকে প্রাক্ররত্ম বিশা যায়। চক্ষর পাতার আব ও ক গুযুক্ত, গুরুভারবিশিষ্ট, সবেদন, রক্তসর্যপের স্থায় পিড়কা হইলে ভাহার নাম পোথকী। ব্যের প্রাস্তভাগে যে পিড়কা জন্মিয়া বিদীর্ণ হইয়া রদাদি স্লাব করে এবং আবার পূর্ব হইয়া উঠে, তাহার নাম কুছিকা। পাতায় উৎপন্ন সূল ও খনস্পর্শ যে পিড়কা জ্মিয়া সৃত্ম সৃত্ম বছাপড়কা ছারা আকীর্ণ হয়, তাহাকে বর্ম শর্করা কহে। নেত্রবর্মে অপাকী, কঠিন, স্থল, অল্লবেদন, কণ্ড্যুক্ত, পিচ্ছিল ও কুল আঁঠির মত যে গ্রন্থি জন্মে, তাহার নাম নেত্রবর্থে দাহ ও তোদ বিশিষ্ট

ভাষ্রবর্গ কোমল এবং অন্ন বেদনাযুক্ত স্ক্র পিড়কা জনিলে তাহাকে অঞ্জন কহে।)

ঘৃতদৈন্ধবচ্ৰেন কফানাহং পুনঃপুনঃ। বিলিপেন্ধঙ্গাগ্ৰেণ প্ৰচন্ধয়েবা সমস্ততঃ॥

কফানাহ রোগে মতের সহিত সৈদ্ধবচূর্ণ ঘর্ষণ করিয়া চক্ষুতে লেখন ক্রিয়া করিবে, অথবা মণ্ডলাগ্র জন্ত্র ঘারা চক্ষুর উপর প্রচছন করিবে। পটোলামলককাবৈরাশ্চোতনবিধিহিতঃ। ক্ষিত্রকর্মোনক্স রুদ্ধৈ পৌধ্বিনাশনঃ॥

পটোলপত্র ও আমলকীর কাথে অথবা তুলসীপত্র ও রস্থনের রসে পেষণ করিয়া আশ্চ্যোতন করিলে পোথকি নামক নেত্ররোগ বিনষ্ট হয়।

আনাহপিড়কাং বিশ্লাং তির্যাগ ভিরাধিনা দহেও। অশস্তবা বয় নায়া শুকাপোহর্ক্ দুমেব চ। মওলাগ্রেণ তীক্ষেণ মূলে ছিন্দ্যান্তিবক্ শনৈঃ॥

আনাহ পিড়কাকে খিন্ন করিয়া তির্যাণ্ডাবে ছেনন ও অনি ধাবা দগ্ধ করিয়া দিবে। নেত্রাশাং, বয়র্বোগ, শুদাশাং ও নেত্রার্বাদ্ধ প্রভৃতি নেত্রবোগ সকল তীক্ষ মণ্ডলাগ্র অস্ত্র-ধারা আন্তে সাত্তে সমূলে ছেনন করিবে।

(নেত্রবয়ে কাঁকুড়বীজ দদৃশ অল্ল বেদনাযুক্ত মহণ ও তীক্ষাগ্র পিড়কার নাম অর্শোবন্ধ বা নেতার্শ:। শুকার্শ: রোগে চকুর পাতার
ভিতর দিকে কর্কণ আবশ্য ও অতি, কঠিন
দীর্ঘাকার মাংসাম্কর জ্লো।)

সিকুপপিন্সলীকুষ্ঠ-পণিনীতিফলারসৈ:। হুরামণ্ডেন বর্ত্তি: স্থাৎ শ্লেমাভিব্যন্দনাশিনা। পোশকিবয়ে পিরোধ-ক্রিমিগ্রন্থিকস্থকে।

দৈশ্ববশ্বণ, পিপুল, কুড়, শালপাণি, চাকুলে, মুগানি ও মাষাণি ইহাদের সমভাগ চূর্ণ ত্রিফলার রসে ভাবনা দিয়া স্থরামণ্ডের সাহত বর্ত্তি প্রস্তুত করিবে। এই বর্ত্তিতে স্লেমাভিষ্যন্দ, পোথকী ও ক্রিমিঞ্ছি প্রভৃতি নেজরোগ প্রশমিত হয়।

শতশুক্রহরো গুগ্গুলুঃ।

অন্তঃস্বাষ্টিত্রিফলাকণানাং
চূর্ণানি তুল্যানি পুরেগ নিত্যমৃ।
সর্পিম ধুড্যাং সহ ভক্ষিতানি
শুরানি কাচানি নিহন্তি শীল্লম্॥
(পুরেগ গুগুগুলুনা, স চ সর্বাসমঃ।)

লৌহ, যষ্টিমধু, ত্রিফলা ও পিপুল এই সকলের চুর্ণ সমভাগ, সকল চুর্ণের সমান গুগ্গুলু; একত্র ক<িয়া মধু ও ঘৃত সহ সেবনে শুক্র কাচাদি নেত্রগোগ বিনষ্ট হয়।

নয়নামৃত্যু ৷

রসেক্ত জনগা তুলো হরে, দ্বিগুণমঞ্জনম্। স্ততুষ্যাংশকপুরমঞ্জনং নয়নামূতম্। তিমিরং পটলং কাচং শুজনমহিত্যানি চ। ক্ষাৎ পথানিনো হস্তি তথাক্তান্পি দৃগ্গদান্॥

পারদভম্ম ৪ ভাগ, দাঁদক ভম্ম ৪ ভাগ, রসাঞ্জন ৮ ভাগ, কপুর : ভাগ, এই দমুদায় একত্র পেষণ করিয়া অঞ্জন দিলে তিমির, পটল এভৃতি নেত্রোগ বিনষ্ট হয়।

সপ্তায়তলোহয়।

জিফলারজ আয়সঞ্চুর্ণং সংগ্রীমধুকং স্মাংশ্যুক্তম্।
মধুনা সহ সপিষা দিনাতে পুক্ষো নিম্পরিকার্মদেদিত ॥
তিমিরক্তরক্তরাভিকভ্-কণ্দান্দার্ক্তুদ্রোরদ হণুলান্।
পটলং সহরক্তকাচপিকং শমরত্যেব নিমেবিতঃ প্রয়োগঃ॥
নচ কেবলমেব লোচনানাং বিহিতো রোগনিবর্হণায় পুংসাম্।
দশনপ্রণোক্ষঠজানাং প্রশমে হেডুরয়ং মহাগদানাম্॥
পলিতানি বিনাশ্যেত্ত্বাগ্রিং চিরনস্তং কুক্তে রবিপ্রচন্তম্।
দিয়তাভুক্তপঞ্জরোপগৃতঃ কুউচ্লাভরণাক্ষ বামিনীমু॥

হারতানি চিরং নিবেবতে হসে।
পুরুষো যোগব রং নিবেবমাণ:।
মুখেন নীলোৎপলচার গদ্ধি।
শিরোক হৈরপ্রনমেচক প্রত্তৈ:।
ভবেচচ গুগ্রস্থা সমঞ্চ লোচনং
হথেনরো বর্ষণতঞ্চ জীবতি।

(সংগ্রংবৃষ্ণধৃত্য।)

জিফলা, যষ্টিমধু প্রত্যেক ১ ভাগ, লৌহ ৪ ভাগ, এই সমুদার জব্য শ্বত ও মধুর সহিত সাধংকালে সেবন করিলে তিমির, ক্ষত, কণ্ডু, রাত্র্যন্ধতা, পটল ও কাচ প্রভৃতি চক্রেগ, দম্ভরোগ ও কর্ণরোগ এবং অফাফ বিবিধ পীড়া নিবারিত হইয়া, বলবীর্য্যাদির বৃদ্ধি, মুখ মুগদ্ধি ও লোচন গুঞ্জের ভাষ তেজস্কর হয়।

नग्रनहत्त्राहरू।

ত্রিকট্ট ত্রিকলা শৃষ্ণী শটী রাস্থা মহৌষধম।
সাক্ষানীলোৎপলকৈব কাকোলী মধুবৃষ্টিকা ॥
বাট্যালকং কেশর্ম কটকারীদ্বাং তথা।
লৌহাল্রোঃ পলং দশ্বা ভাবরেদ্ বক্ষামাণকৈঃ ॥
ত্রিফলাকাথতৈকেন স্ক্রাজরসেন্ট।
ভাবরিয়া বটা কার্যা। বদর ক্রিমিতা শুষ্ণা।
যাবস্তো নেএরোগান্চ তান্ নিহন্তি ন সংশয়ঃ ॥
(অত্র সর্বাচ্বসমং লৌহাল্রম্।)

ত্রিকটু, ত্রিফলা, কাঁক্ড়াশৃঙ্গী, শটী, রাসা, ভঁঠ, জাক্ষা, নীলোংপল, কাকোলী, বৃষ্টিমধু, খেতবেড়েলা, নাগেশ্বর, বৃহতী ও কণ্টকারী মিলিত ২ পল; লোহ ১ পল, অত্র ১ পল; এই সমুদার একত্র মর্দন করিয়া যথাক্রমে ত্রিফলার কাথে, তিলতৈলে ও ভীমরাজের রসে লাবনা দিয়া কুল আঁটির স্থায় বৃটিকা প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ সেবনে সকল প্রকার নেত্রগোগ বিনষ্ট হয়।

নেত্রাশনিরসঃ।

অলং তাত্র: তথা লৌংং মান্ধিকণ রমাঞ্জনম্।
পাতনাযন্ত্রসংস্তন্ধং গন্ধকং নবনীতকম্ ॥
পালপ্রমাণ্ং প্রতে কং গৃল্পীয়াচচ বিধানবিং।
সর্ব্ববেকীকৃতং চূর্ণং বৈত্যৈঃ কুশলকণ্মভিঃ॥
ততন্ত ভাবনা কাষ্যা ত্রিকলাভূকরারকৈঃ।
ততঃ প্রক্ষেপচূর্ণক পিন্ননীমূল্যন্তিকা॥
এলা পুনর্বনা দাক্ষ পাঠা ভূকশঠা বচা।
নীলোৎপলং চন্দনক প্রক্ষুণ্ড দাপরেং॥
মাধ্যেকং প্রদাতব্যং যুত্তশ্রীমধুমন্দিতম্।
মাধ্যেকং প্রদাতব্যং যুত্তশ্রীমধুমন্দিতম্।
অনুপানং প্রবোজবাম্কেন বারিণা তথা।
ভাবতো নেত্ররোগাংশ্চ পানাদেব বিনাশরেং॥
সরক্রে রক্তপিত্তে চ রক্তে চক্ষুক্রেতহিপি চ।
নক্ষান্ধ্যে তিমিরে কাচে নীলিকাপটলার্ক্রেণ।
অভিব্যন্দেহধিনত্তে চ পিষ্টে চৈব চিরন্তনে।

নেত্রগোর সর্বের বাতপিত্তকফের চ। সর্বনেত্রাময়ং হস্তাদ বৃক্ষমিক্রাশনির্বা।

অত্র, তাত্র, লোহ, মান্দিক ও রসাঞ্চন এবং পাতন-যত্রে শোধিত নবনীতাখ্য গদ্ধক প্রত্যেক ১ পল পরিমাণে গ্রহণ করিয়া একত্র চূর্ণ করিবে। পরে ঐ চূর্ণ ত্রিফলার কাথে ও ভূঙ্গরাজের রসে ভাবনা দিয়া নিমলিখিত জবের চূর্ণ, ত্বত লবক ও মধু দারা মর্দ্দন করিয়া ১ মাষা পরিমাণে তাহাতে মিশ্রিত করিবে। পিপুল-মূল, যষ্টিমধু, এলাইচ, পুনর্মবা, দাকহরিজ্ঞা, আক্রাদি, ভীমরাজ, শঠী, বচ, নীলপত্ম ও চন্দন, সমস্ত দ্রব্য একত্র করিয়া লোহথলে লোহদণ্ড দারা মর্দ্দন করিবে। অমুপান—উষ্ণজ্বল। ইহা পান মাত্রেই সকল প্রকার নেত্ররোগ নিবারিত হয়। রাজ্যাদ্ধ্য, নেত্রে জ্বপড়া এবং বাত, পিত্ত, কফ জাত সকল প্রকার নেত্ররোগ বিনষ্ট হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

নেত্ররোগে পথ্যানি।

আংশ্যাতনং লজ্ঞনমঞ্জনঞ্চ থেপা বিরেকঃ প্রতিসারণঞ্চ।
প্রপ্রবং নক্তমস্থিমোকঃ
শক্তনিয়া লেপনমাজ্ঞাপানম্ ॥
দুল্যা যবা লোহিতশালয়ন্চ।
লাবো ময়ুয়ো বনকুকুটন্চ
কুর্মঃ কুলিকোহপি কপিঞ্জন্ত ॥
কোস্তং হবিবিজ্ঞকুকথ্যঃ
পেয়া বিলেশী লক্তনং পটোলম্ ।
বাব্যকুককোটককারবেয়ং
নবীনমোচং নবমুলকক্ষ ॥

পুনৰবামাৰ্কৰকাকমাটী-পদ্ধৰণাকানি কুমারিকা চ।
দ্রাক্ষা চ কুন্তবুক মাণিমন্থং লোএং বরা ক্ষোদ্রমূপানহত ।
নারীপরতদ্দনমিন্দ্রথওং তিজ্ঞানি সর্কাণি লঘুনি চাপি।
বিজ্ঞানতা পথ্যমিদং প্রযুক্তং যথামদং নেক্রগদান্ নিক্তি।

আন্চ্যোতন, উপবাদ, অঞ্জন, স্বেদ, বিরেচন, প্রতিসারণ, অক্ষিপূরণ, নহা, রক্ত-মোক্ষণ, শন্তক্রিয়া, প্রবেশন, গ্রন্তপান, পরি- বেচন, মনের স্থিরভা, পাদব্বের সেবা অর্থাৎ পাদব্যকে পরিষ্কৃত পরিচ্ছন্ন রাখা, মৃগ, যব, রক্তশালি; লাবপাখী, ময়ুব, বস্তকুরুট, কচ্ছপ, ফিঙ্গা, কপিঞ্জল ইহাদের মাংদ; দশবংসরেন পুরাতন মৃত, বস্তকুলণকলায়ের যুন, পেয়া, বিলেপী, রগুন, পটোল, বেগুণ, কাক্রোল, করলা, অচিরজাত মোচা, কচিমূলা, পুননবা, ভৃঙ্গরাজ, কাক্মাচী, শালিক শাক, মৃতকুমারী, দাকা, ধনে, সেন্ধবলবণ, লোধ, ত্রিকলা, মধু, পাহকা ব্যবহার, নারীছ্রা, রক্তচন্দন, কর্প্র, সমস্ত তিক্তর্য ও লবুদ্ব্য, এই সমস্ত নেত্ররোগে হিতক্র।

নেত্ররোগেঽপথ্যানি।

ক্রোধং শুচং মৈথুনমঞ্বান্ত্রিক্ত্রিন্তাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যাবিদ্যান্ত্রিক্তানিক্তানিক্

প্রজন্ধনং ছব্দিনমন্থপানং
মধকপুশাং দ্বি প্রশাক্ষ্ ॥
কালিকপিগাকেবিরুচকানি
মৎক্তং ফুরাং মাংসমজাক্ষলক ।
ভাত্বনমং লবণং বিদাহি
ভীক্ষং কটুনং গুরু চারপান্য্॥
নবো ন সেবেড চিভাভিলাধা
বোবেষু সর্কোর দুগাঞ্যের॥

ক্রোধ, শোক, ক্রীপ্রসঙ্গ, অঞাবেগ বায়ুবেগ মলবেগ মুত্রবেগ নিজাবেগ ও বমিবেগ ধারণ, স্ক্রবস্তু দর্শন, দস্তমার্জন, স্থান, রাত্রিকালে ভোজন, রৌদ্রস্বেন, তরলজ্বরা, প্লি ও ধুম-দেবন, চক্র্সেন, বিক্লভোজন, অধিক বাক্য-কথন, বমন, অধিক জলপান, মৌলফ্ল, দ্ধি, পত্রশাক, তরমুজ, তিলকক, অফুরিত ধায়াদি জনিত অয়, মংস্থা, স্থান, জাঙ্গলমাংস ভিন্ন অপর মাংস, ভান্থল, অয়দবা, লবণরদযুক্ত জ্বা, বিদাহিজবা, ভীক্ষত্রা, কটুদ্রবা, উষ্ণ জব্য এবং গুরুপাক অয়পানীয়, আরোগ্যার্থা ব্যক্তি চক্ষ্রোগে এই সমস্ত কদাচ ব্যবহার করিবেন না।

ইত্যায়ুর্বেদ-সংগ্রহে নেত্রোগাধিকারঃ।

অথ শিরোরোগাধিকারঃ।

অথ শিরোরোগ-নিদানম্।

শিরোরোগান্ত জায়তে বাতপিন্তককৈ স্থিতি:।
সন্নিপাতেন রক্তেন ক্ষমেন ক্রিমিভিন্তথা।
স্থ্যাবর্ত্তানতার্দ্ধাবন্তনকশন্ধকৈ:॥
বস্তানিমিত্তং শিরদো ক্ষমত
ভবন্তি তীবা নিশি চাতিমাত্তম্।
বন্ধোপতাপৈত তবেদিশেব:

শিরোংভিতাপঃ স সমীরশেন।
বভোক্ষসারচিতং ববৈব
ভবেচ্ছিরো ধুণাতি চাক্ষিনাসম্।
শীতেন রাত্রো চ ভবেছিশেবঃ
শিরোংভিতাপঃ স তু পিভকোশাব।।

শিরে ভবেদ্যক্ত কফোণ্দিগং
গুরু প্রতিষ্টকনতে। হিনপ ।
শুনাক্ষিকুটং বদনধ্যক্ত
শিরোহভিতাপঃ স কফপ্রকোপাং ॥
শিরোহভিতাপে ত্রিতয়প্রবৃত্তি
সর্কাণি লিক্ষানি সমৃত্ত্রন্তি ।
রকাহ্যকঃ পিত্রসমানলিকঃ
স্পর্নাসহত্বং শিরুসো ভবেচ্চ ॥
অতথ্যসালেম্সমীরণানাং
শিরোগতানামিহ সংক্ষরেণ ।
ক্ষ্মপ্রবৃত্তঃ শিরুসোহভিতাপঃ
কটো ভবেতগ্রক্তাতিমাত্রম্ ॥

সংস্থেদনচ্ছদ্দনধননকৈ-রস্থিমোকৈশ্চ বিবৃদ্ধিমেতি॥ নিম্বতাতে যক্ত শিরোহতিমারং मः छक्तामानः कृत्रहीत हे छः। वांगांक गाळ्य मनिनः मनुगः শিরে'হভিতাপঃ ক্রিমিভি: স খেরে:॥ স্থোদয়ং যা প্রতি মন্দরন্দ-ম क ভাবং রুক সমুপৈতি গাড়ম। বিবৰ্দ্ধতে চাংশ্বমতা সংহৰ স্থাপুরক্তে বিনিবর্ততে চ। गर्का प्रकर कहे हमर विकास সুষ্যাপ্ৰস্ত্ৰণ ভগদাহর্তি॥ (म'राष्ट्र इंडे'येर ११ मर्खाः সংগীতা গড়েস্ফ কজাং শ্রুতীর মান कर्तरि (रा अकिस) नि महापास প্রিভিং করেশতাশ্বে বিশেষ এক্ত ॥ গঙ্গা পাৰে ভ করে ভ কলা \$ 25 15 C (24 15 A 45 C 41 14 14 1 অন্তরণতং ভুমদাহরাপ্ত (म'त नक्षा थः [सद्धाः विक तम ।

বোদ বলে অং শির্মে বিক রম ।
বাসকারণার সনবার্থানে ।
বোসকারণার সনবার্থানৈ কু শিবত রমি ।
বোসকারণার সনবার্থানৈ কু শিবত রমি ।
কেরলার কারে বাজা গুটীরা বিবসের বলী।
মন্তার্রাজারকারি শিক্তার বিক্রার্থানি ।
মন্তার্বার্থানি বিল্লার বিল্লার ।
কর্মার্থানা তর্ত্তী, শ্রারার বিল্লার ।
কর্মার্থানা তর্ত্তী, শ্রারার ব্রবিন্তি লাক্পম্ ।
ক্রিকালার বিন্তারী নির্ধার স্বার্থিত লাক্পম্ ।
বির্বার্থানী বিল্লার বিন্তার প্রার্থানি স্বার্থানি ।
বির্বার্থানি তর্ত্তী শ্রারের ন্মারত প্রম্।
ব্রার্থানীত তৈর্ভার প্রার্থানির স্বার্থানি স্বার্থানি ।

শিরোরোগ একাদশ প্রকার যথা— বাতত, পিওজ, কফজ, ত্রিদোষজ, রক্তজ, ধাতুক্ষজ ও ক্রিমিজ এবং স্থ্যাবর্ত্ত, অনন্ত-বাত, অদ্ধাবভেদক ও শহাক। এই স্থলে শিরোরোগ শব্দে শিরোগত শ্লরপ পীড়া ব্রিতে হইবে।

বাত প্র শিরোরোগে, হঠাৎ মস্তকে বেদনা উপস্থিত হয়। সেই বেদনা রাত্রিকালে বাড়ে। বস্তাদি ছারা শিরোবন্ধন বা মস্তকে মেহস্বেদাদি প্রয়োগ করিলে বেদনার কতক উপশ্য হয়। পিত্তজ শিরোরোগে বোধ হয়, ধেন
মন্তক প্রজলিত অঙ্গারের হারা ব্যাপ্ত হইয়াছে
এবং চক্ষু ও নাসিকা দিয়াধ্ম নির্গত হইতেছে। শৈতাক্রিয়ায় এবং রাজি কালে ইহার
বিশেষ উপশম হয়।

ককজ শিরোরোগে মস্তক কফলিপ্ত, ভারাক্রাপ্ত, বন্ধবৎ ও হিমস্পর্শ হয়। এই রোগে অফিকুটে শোথ হটয়া থাকে।

সারিপাতিক শিরোবোগে উল্লিখিত বাতজানি ত্রিবিধ শিরোবোগেরই লক্ষণ সংঘটিত হইয়া থাকে।

রক্তত্ব শিরোরোগে, পিওজ শিরো বোগের সমস্ত লক্ষণ উপস্থিত হয় এবং উগ্র বেদনায় মস্তক স্পর্ণাস্থ ২ইয়া থাকে।

নত্তকত রক্ত বদা ক্রেমা ও বার্র অভিক্ষ হেতু ক্ষত শিরোরোগ উৎপা হয়। ইহা লাকণ যপ্তশালায়ক ও কইদান্য। স্বেদপ্রায়োগ, ব্যনকার্য, ধ্য ও নতা গ্রহণ এবং রক্তন্যাক্ষণ ক্রিলে, ইহাব রাক্ক ইইরা থাকে।

ক্রিমিজ শিরোরোগে মস্তকে স্টাবেণবৎ অতি যন্ত্রণা, ক্রিমির কামড়ানি, ভিতরে দপ্দানি এবং নাসিকা দিয়া সপূষ জলপ্রাব, এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়। ইহা অতীব কইনায়ক।

হ্ণাবির্দ্ত নামক শিরোরোগে, হুর্যোদয় কালে চক্ষ্: ও জ্রাতে অল্প অল্প বেদনা আরম্ভ হয এবং হুর্যা যত উপবে উঠিতে থাকে, বেদনাও তত বর্দ্ধিত হয়; এইরূপে মধ্যাহ্রুকালে বেদনার অতি প্রাবলা হইয়া থাকে এবং হ্র্যা পশ্চিমে যত নামিতে আরম্ভ করে, তদন্মুসারে বেদনাও ক্রমশঃ মন্দীভূত হইয়া সায়ংকালে নিসুত্তি পায়। এই রোগ জিনোযজ্ঞ ও অতি কষ্টপাধা।

অনস্তবাত নামক শিবোরোগে, বাতাদি দোষত্রয়, মঞ্চা নামক গ্রীবদেশস্থ শিরা**হয়কে** পীড়িত করিয়', গ্রীবার পশ্চাদ্**ভাগে অ**তি ভীব্র বেদনা উৎপাদন করে। এবং সেই বেদনা শীঘ্রই অক্ষি জ্র ও শঙ্খাদেশে বিশেষ-রূপে অবস্থিতি করে। ইহাতে গণ্ডপার্ষের কম্পন, হত্তাহ শুও নানাবিধ নেত্ররোগ উপ-স্থিত হয়। ইহাও ত্রিদোষোত্তব ব্যাধি।

কৃষ্ণ ভোজন, অধ্যশন, পূর্ববায় ও হিমসেবন, মৈথুন, মল-মুজাদির বেগধারণ, পরিশ্রম ও ব্যায়াম এই সকল কারণে কুপিত ও
বলবান্ বায়ু স্বয়ং অথবা কফসহায় হইয়া
মন্তকের অর্ধাংশ আশ্রম করত এক পার্শ্রের
মন্তা ক্র শঙ্কা কর্প অক্ষি ও ললাটে তীব্রবেদনা
উৎপাদন করে। এই রোগকে অর্ধাবভেদক
(আধ্কপালে) কহে। ইহার বেদনা অয়ায়্ৎপাদক অর্ণিকার্টের ঘর্ষণবং বা শস্ত্রাভাতভুলা তীব্র যম্পাদায়ক হইয়া থাকে। ইহা
প্রেরম্ম হইলে চক্ষু: অথবা কর্ণকে নই করে।

শঙ্ক নামক ভয়ন্বর শিরোরোগে রক্ত পিত্ত এবং বায়ু (ইহাতে কফেরও অমুবন্ধ থাকে) কুপিত ও পরম্পর মিলিত হইয়া শঙ্কালেশে অতি দারুশ বেদনা ও দাহ যুক্ত রক্তবর্ণ শোপ উৎপাদন করে। সেই শোপ বিষবৎ বেগবান হইয়া শীঘ্র মস্তক ও কঠকে নিরুদ্ধ করিয়া তিন দিনের মধ্যে রোগির জীবন নাশ করে। কিয়্ত যদি কুশল চিকিৎদক স্বারা চিকিৎদিত হইয়া রোগী তিন দিন জীবিত থাকে, তাহা হইলে রক্ষা পাইতেও পারে।

অথ শিরোরোগ-চিকিৎসা।

বংতিকে শিরসো রোগে ক্রেংখনান্ সনাবনান্। প্লারনুপনাহাংশ্চ কুর্যাঘাতামরাপহান্॥

বাত প্রধান শিরোরোগে প্রথমতঃ বাত-নাশক স্নেহ, স্মেদ, নহা, পান, আহার ও উপুনাহ প্রদান করিবে।

কৃষ্ঠমেরগুমূলক তেপাৎ কাঞ্চিকপেনিতন্। শিৰোহৰ্তিং নাশয়ত্যান্ত পুশাং বা মুচুকুন্দজন্।

কুড় ও এরওমূল একত্ত কাঁজিতে পেষণ করিয়া প্রদেপ দিলে অথবা পেষিত মুচুকুন্দ

পুষ্প ৰারা প্রলেপ দিলে সত্তরই শিরোরোগ নিবারিভ হয়।

পঞ্মূলীশৃতং ক্ষীরং নশুং দক্তাচ্ছিরোগদে।
বাতপৈত্তিক শিরোরোগে স্বল্লপঞ্চমূলদিদ্ধ
ছগ্ধ এবং বাতথ্যৈত্মিক শিরোরোগে বৃহৎপঞ্চমূল-দিদ্ধ ছগ্ধের নশু গ্রহণ করিবে।

শিরোবস্থিঃ।

আশিরো বারেলং চল্ল কুস্বাষ্ট্রাকুলম্চিত্রন্।
তেনাবেষ্ট্য শিরোগধন্তানামককেন লেপরে ।
নিক্তন্যাপবিষ্টমা তৈলৈঃ কোটফঃ প্রপ্ররেং।
ধারমেদক্রিকঃ শান্তেথামং যামার্দ্দনেব বা ॥
শিরোবন্তির্দ্ধান্তোষ শিরোরোগং মক্তবন্।
হন্মক্তাক্রিকশিরিকাদিতং মুর্দ্ধকম্পনন্।
(তিইলরিতি যথাবিধিসাধিতৈরিতি চক্রটাকা)

মস্তকবেষ্টনযোগ্য আয়ত (যে পরিমিত চন্দ্রে মস্তক বেষ্টন করা যায়, তৎপরিমিত) এবং ৮ অঙ্গুলি উন্নত একটি চন্দ্রাবেষ্টন স্বারা রোগির মন্তক বেষ্টিত কবিয়া চন্ম বেষ্টনের অধোভাগ মাষকলাইয়ের কর দারা প্রালিপ করিবে। পরে রোগিকে স্থিরভাবে বসাইয়া ঈষত্বত যথাবিদি সাদিত তৈল খারা মস্তক প্রপরিত করিবে। বাতিক শিবেবিবাগে. যে পর্যান্ত পীড়ার শান্তি না হয়, দে পর্যান্ত. পৈত্তিকে এক প্রহর এবং কক্জে অদ্ধপ্রহর মস্তকে তৈল ধারণ করাইবে। এই শিরোবস্তি দারা বাতিক শির:পীড়া মস্তককম্পন এবং হয় (চোয়াল), মন্তা (গ্রীবার পশ্চাৰতী শিরাহর), চক্ষু ও কর্ণের পীড়া প্রশমিত হয়।

পৈছে মুক্তং পন্নঃ দেকাঃ শীতা লেপাঃ সন্যবনাঃ। জীবনীয়ানি সপীংবি পানায়কাপি পিডফুৎ ॥ পিন্তান্মকে শিরোরোগে স্লিক্ষং সমাধিরেচয়েৎ। মুম্বীকাক্রিকলেশুণাং রাসঃ কারৈয় তৈরপি॥

পৈত্তিক শিরোরোগে ম্বতসেবন, হ্রথপান, শাতল দেক ও প্রেলেপ, নস্থ্য, জীবনীয়-গণ-সাধিত ম্বত ও পিত্তনাশক পানায় হিতকর। পৈত্তিক শিরোগোগে প্রথমতঃ রোগিকে মিথ করিয়া পরে কিস্মিদ্ধ ইক্ষর কাণে তেউড়ী চূর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া তাহা এবং ত্রিফলার কাথ বিরেচনার্থ সেবন করাইবে। তদ্বৎ তেউড়ীসিদ্ধ দ্বত ও হগ্ধ সেবন করাইয়া বিরেচন করাইবে।

শতধৌতম্ভাজ্যকঃ শীতবাভাদিদেবনম্। শীতস্পশীক্চ সংসেব্যাঃ সধা দাধার্ত্তিশান্তয়ে ॥

শিরোরোগে দাহ থাকিলে শতথোত ঘত মদ্দন ও শীতল বায় দেবন করিবে এবং কুমুদ ও উৎপলাদি শাতস্পর্শ দ্রব্য দকল দারা প্রাপে দিবে।

চন্দনেশীর্ষষ্ট্রাস্থ-বলাব্যাখনপে; ৎপলৈ:। ক্ষারপিষ্টে: প্রদেহ: স্তাচ্ছু তের্বা পরিষেচনম্॥ (শৃতৈরিতি চন্দনাদিকাঝৈ:। প্রস্তোত্ত চন্দনাদিশুতে: ক্ষারৈরিত্যাহা। চত্রাটাকা।)

রক্ত চন্দন, বেণার মূল, যষ্টমধু, বেড়েশা, ব্যাঘনখী ও নীলোৎপল এই সমুদান হুথের সহিত পেষণ করিয়া প্রবেপ দিলে অথবা উপরি উক্ত চন্দনাদি কাথ (মতাস্তরে চন্দনাদি-শৃত ছথা) ধারা পরিবেচন করিলে শিরোরোগের শাস্তি হয়।

মৃণ্যলবিদশালুক-চন্দনোৎপলকেশবৈঃ। বিদ্ধনীতৈঃ শিরো দিহাংৎ তদনমলকোৎপলৈঃ॥

পদ্মশ্ল, কচি মৃণাল, শালুক, রক্তচন্দন, ও পদ্মকেশর এই সম্দায় দ্বতের সহিত পেষণ করিয়া শিরোদেশে প্রলেপ দিলে অথবা আম-লকী ও নীলোৎপল বাটিয়া দ্বতসহ প্রলেপ দিলে শিরোরোগ নিবারিত হয়। যষ্টাহ্যচন্দনানতা-ক্রীর্মিক্ষ দুবং হিত্য

যষ্টিমধু, রক্তচন্দন, অনস্তমূল, ইহাদের কল্পে এবং চতুগুলি ছুগ্ধে সাধিত হাত ছারা অথবা শর্করা দ্রাক্ষা ও যষ্টিমধুর কল্পে এবং

নাবনং শক্রা-ছাক্ষ্মধুকৈবাপি পিত্রে॥

চতুগুৰ্ল ছথ্মে সাধিত মত মারা নস্ত গ্রহণ করিলে পিত্তজ্বারোধাগ প্রশমিত হয়।

ছক্পত্রশকরারাম্বা-নাবনং তণ্ডুলামুনা। ক্ষীরদর্গিহিতং নস্তং রদা বা জাঙ্গলাঃ গুভাঃ।

তেজপত্ত শর্করা ও রালা তণ্ডুলোনকের সহিত পেষণ ক্রিয়া নস্ত লইলে অথবা ক্ষীরোথ মতের নম্ম কিংবা জাঙ্গল মাংসরসের নম্ম লইলে শিরোরোগের শাস্তি হয়।

রক্তকে পিত্তবং সর্ববং ভোগনালেপসেচনম্। শীতোকরোশ্চ ন্যত্যাসো নিশেষো রক্তমোক্ষণম্॥

রক্তজ শিরোরোগে পিত্তজন্ত শিরো-রোগের চিকিৎসা করিবে। ইহাতে শীত-ক্রিয়ার পর উষ্ণক্রিয়া এবং উষ্ণক্রিয়ার পর শীতক্রিয়া ও রক্তমোক্ষণ অবশ্য করণীয়। কদকে লজ্পনং বেদোক্সক্রেটিয়া পাচনান্নকৈঃ। ভাক্তানপাড়া ধুমান্চ তীক্ষান্ত কর্নড়া হিচাঃ॥ অচ্ছক্ষ পায়বেং সর্পিঃ পুরাণং পেন্যেৎ ততঃ। মধক্সারেণ শিরঃ পিরক্তান্ত বিরোচ্যেৎ॥

শ্লৈষিক শিরোরোগে লভ্যন, স্বেদ এবং
ক্লক উষ্ণ ও আনক্ষপাচক দশমূলাদির স্বেদ
ও তীক্ষবীধ্য দুব্যের নশু, ব্ন ও কবল এই
সকল হিতকর। ইহাতে পুরাণ স্বত পান ও
স্বেদপ্রয়োগ ব্যবস্থেয়। স্বেদান্তে মৌলকার্চ চুর্ণ
উষ্ণজলে আলোড়িত কবিলা তাহার নশু
প্রয়োগ করিবে।

কৃষ্ণাব্দ শুদ্ধীমধুক-শহাহেরাৎপলপাকলৈ। জলপিষ্টেঃ শিরোলেপা সন্তঃ শুলমিবারণঃ॥

পিপুল, মুতা, শুঁঠ, ষষ্টিমধু, শুলফা, নীলোৎ-পল ও কুড় এই সম্দায় জলে পেষণ করিয়া শিরোদেশে প্রলেপ দিলে সম্ভট শূল বিনষ্ট হয়।

(मरामाज नटः कुष्ठः ननमः विश्वस्थिकम् :

লেপ: কাঞ্চিক্সং পিষ্টান্তলমুক্ত: শিরোহজিন্থ।
দেবদারু, তগরপাত্তকা, কুড়, জটামাংসী
ও প্রতি এই সমুদায় কাজির সহিত পেষণ
করত তৈলাক্ত করিয়া প্রালেপ দিলে শিরোরোগ বিনষ্ট হয়।

স'নপাতভবে কার্যা দে'বত্রয়হর' ক্রিয়া। সপিপোনং বিশেষেণ পুরাণস্থাদিশস্তি হৈ ॥

সানিপাতিক শিবোরোগে তিনোমন্ন ক্রিয়া করিবে। পরস্ত বোগিকে পুরাতন মত সেবন করিতে দিবে।

ত্রিকটুকপুদ্ধররজনীজীবকভুরস্বসগন্ধানাম।
কাথ: শিরোহন্তিজালং নাসাপীতো নিবারমতি।
ত্রিকটু, কুড়, হরিদ্রা, জীবক ও আর্থগন্ধা
ইহাদের কাথ নাসিকা দ্বারা পান করিলে
সকল প্রকার শিরোবোগ নিবারিত হয়।

নাগরকন্ধমিশ্রং ক্ষীরং নঞ্জেন যোজিতং পুংসাম্। নংনাদোষোভূতাং শিরোকজাং হস্তি তীব্রতরাম্॥

শুঠচূর্ণ ও মাষ' ও ছগ্ধ ১ পল একত্র মিশ্রিত করিয়া নস্ত লইলে সর্বনোধোতিত শিরোঝোগ নিবারিত হয়।

> নতোৎপলং চন্দনকৃষ্ঠযুক্তং শিরোকজায়াং সমূতঃ প্রদেহঃ। প্রপৌওরীকং ফ্রদারু কুষ্ঠং মন্ত্রাহ্বমেলা কমলোৎপলে চ॥ শিরোকভায়াং সমূতঃ প্রদেহো লৌহৈরকাপগ্রকচোরকৈন্চ॥

তগরপাত্তা, নীলোংপল, রক্তচন্দন ও কুড় এই সমুদার একত্র পেষণ করত ঘতাক্ত করিয়া প্রলেপ দিবে। অথবা পুগুরিয়া কান্ত, দেবলাক, কুড়, যন্তিমধু, এলাইচ, পল, নীলোং-পল, অওক, হোগলা, পলকান্ত ও চোরপুষ্পী এই সমুদার একত্র পেষণ করিয়া ঘতের সহিত প্রলেপ দিলে শিরোরোগ প্রশমিত হয়।

শারিবাদিলেপঃ।

শারিবে'ংপলকুঠানি মধুকণাচপেষিত্ন . স্পিত্রেলযুত্তা লেপঃ পুযাবস্থারিভিদ্যোল

অনস্কমূল, নীলোৎপদ, কুড় ও যষ্টিমধু কাঁজিতে পেষণ করিয়া স্বত ও তৈলের সহিত মিশাইয়া প্রলেপ দিবে। ইহাতে স্থ্যাবিত্ত ও অধাবভেদক শিহোরোগ প্রশমিত হয়।

স্থ্যাবৰ্ত্তবং বীজং তছ্ৰদেন হপেধিতম্। বেদনাৰাশনো লেপঃ প্ৰাৰেৰ্ডাৰ্ক্ডেনয়োঃ।

হুড়্হড়ের বীজ হুড়্হড়ের রুসে মন্দন ও পেষণ করিয়া শিরোদেশ প্রালপ্ত কবিলে সুধানের ও আধুকপালে উপশ্মিত হয়।

স্থ্যবৈদ্ধে বিধাত সং নক্তকর্থানি ভেষকন্।
পায়য়েৎ সঞ্জং সপিত্ব তিপুরাংশ্চ ভােুজয়েৎ ।
স্থ্যবির্ত্তে নস্যাদি ঔষণ এবং গুড়ের
সহিত ত্বত ও ত্বতপূর (শাভাবিশেষ) পণ্য

ত্য্যাবর্জে শিরাবেধে। নাবনং ক্ষীরসর্পিয়া। হিতং ক্ষীরস্থ চাভ্যাসপ্তাভ্যাকৈন বিরেচনম্ ॥ (কিংবা বিরেচন নিছ শিরোবিরচনম্।) স্থ্যাবর্ত্ত রোগে শিরাবেধ দারা রক্ত-মোক্ষণ করিবে ও ছথ্যোগ ঘুত দারা নস্য প্রয়োগ করিবে। প্রত্যুহ ছগ্ধ ও ঘুত সেবন এবং বিরেচক দ্রব্য সহ ছগ্ধ ও ঘুত দারা বিবে-চন (অথবা শিরোবিরেচন) দিবে।

কুত্মালপল্লবরসে প্রমঞ্জনি-ক্লুসিদ্ধনন্দীত্ম। নসোন কুয়তি নিতাং ক্যাবৈঠং ফুতুকারম্॥

সোন্দাল পত্রের রস > ৪ সের, আপাঙ্গ বীজ হই পল, নবনীত > ১ সের, একত্র পাক করিয়া নস্য গ্রহণ করিলে গুর্নিবার স্থ্যাবর্ত্ত-রোগ প্রশ্মিত হয়।

দশমূলীকৰায়স্থ সূপি সেল্লনসংযুতঃ। নসামন্ধাৰভেদমুণ প্ৰাণ্ডেই নিবে হৈছি ডিং ॥

দশম্বের ১ পল কাথে ঘত্র মাধ্য এবং সৈক্ষবলবন ১ মাধ্য প্রক্রেপ দিয়া নস্য লইলে অন্ধাৰভেদক ও স্থাব্যত নামক শিরোরোগ প্রশামত হয়।

শির্বাধ্যুলকর তৈরবপীয়ে আছে হোড হৈছে । অবস্থান্ড ছিডোবা স্যাক্ষ্যপ্রিলভি কুত, ॥

শিরীধবল প ও মূলার বাঁজ পেষণ করিয়া বজে নিম্পীজন করত রস গ্রহণ করিব, সেই রসের নস্য লইলে শিরোরোগ বিনষ্ট হয়। এইরূপে বচ ও পিপুলচুর্ণের নস্য লইলেও শিরোরোগ বিনষ্ট হয়।

ভুঙ্গরাজরসজ্ছাগ-কীর(স্করোইক তাপিতঃ। স্বারেডা নিহস্তাও নজেনৈর প্রয়োগরাট্ন

ভূঙ্গরাজের রস ও ছাগছগ্ধ সমভাগে লইয়া স্থ্যাতপে প্রতপ্ত করিবে। উফাবস্থায় ইহার নস্য লইলে স্থ্যাবর্ত্ত রোগের সহর শাস্তি হয়।

জাপলানি চ মাণসানি কারয়েছপনাংকম্। তেনাসা শামাতি বাাধিঃ স্থাবের্দ্ধঃ স্থারণাঃ॥ (অতা বৃদ্ধবেত্তোপদেশাদ্ বাতংরহবৈন্ধাংসম্থামত সৈদ্ধবং তৈলগ দ্বা উমেশ লেগঃ কা্যানী। চক্রনিকা।)

বাতহর দ্রব্য সহ জাঙ্গলমাংস সিদ্ধ কবিথা তৈল ও সৈদ্ধব লবণের সহিত উষ্ণ প্রেলেপ দিলে স্থানক স্থ্যাবস্ত রোগ প্রশমিত হয়। এম এব বিধিঃ বৃৎত্রঃ কার্যাশ্চাদ্ধাবভেদকে ॥

অর্জাবভেদক (আধ্কপালিয়া) রোগেও পূর্দ্বোক্তরূপ চিকিৎসা করিবে।

ক্ষীরপিষ্টেস্তিলৈঃ কেনো জীবনীয়ৈক শস্ততে ।

ছুগ্নের সহিত তিল অথবা জীবনীয় গণ পেষণ করিয়া স্বেদ দিলে স্থ্যাবর্ত রোগ নিবারিত হয়।

সশর্কারং কুকুমমাজ্যভূতিং ম**ন্ত**ং বিধেয়ং প্রনা**স্থ**েখ। জন্মাকণাক্ষিনিয়োহজমূতে দিনাভিত্তিজ্ঞভাতনে চ রোগে।

৪ মাধা চিনি ও ৪ মানা কুদ্ধম, ৪ তোলা ঘতে ভাজিয়া পুনর্কার ঘতে পেষণ করিবে। ঈষহ্রক কবিয়া উহাব নম্ম লইলে বাত্ত, রক্তর প্রভাত শিরোরোগ প্রশামিত হয়।

পিৰেৎ সনকৰং ক্ষাৰং নাৰং বা নারিকেলজম্। সুদীতেং বাপি পানীয়ং স্থিবা নত চন্তবাং ।

চিনিমিশ্রিত চ্গ্ন, নারিকেলজন, শাতন জল বা ঘৃত ইহাদের কাহাবও নম্ম লইলে ফুর্মাবর্ত্ত অর্কাব্রচনক শিরঃপীড়া প্রশমিত কুইয়া থাকে।

ভিনাত কলং সনলদং সংগীদ্রবণাধিত্য। তেন ক্স লেপয়েচ্ছীন্দর্ভদমণে, ছ'ত।

নিস্তব ক্ষণ্ডিল ও বেণাব মূল পেবিত এবং মধু ও সৈধাব লবণের সহিত মিলিত কবিয়, মন্তকে প্রদেশ দিলে অন্ধাবভেদক নিবারিত হয়।

স্বিভূক্তং তিলং কৃষ্ণং সমং কৃষ্ণা প্রপেষ্টেং।
নম্ভকশ্বনি পাত্রাসগভেদে বিনাশয়েং॥

সমপ্রিমিত বিভ্ন্ন ও ক্লঞ্জিল পেষণ ক্রিয়া ভাহার নশুলইলে আধ্কপালে বিন্ট হুইয়া পাকে।

> দগ্ধচুলীসৃত্তিকাচুৰ্ণ-মরিচচুর্ণরোঃ সমাংশং সিলিতং কুয়া**ৎ নশুস্।**

দক্ষ চুলীর মৃত্তিকা ও মরিচ চূর্ণ সমান অংশে মিলিত করিয়া তাহার নম্ম গ্রহণ করিবে।

অনম্ভবাতে কর্ত্তব্য: স্থ্যাবর্ত্তহিতো বিধিঃ। শিরাবেশত কর্ত্তব্যাহনস্তব্যতপ্রশাস্তরে। আহারত বিধাতব্যে বাতপিত্তবিনাশনঃ। অনস্তবাতে স্ধ্যাবর্ত্তের চিকিৎসা করিবে। ইহাতে শিরাবেদ এবং বাতপিক্ত-নাশক আহার হিতকর।

স্থাবর্ত্তে হিতং যং তচ্ছগ্মকে স্বেদ্যর্জ্জিতম্। ক্ষারসর্পিঃ প্রশংসন্তি নস্তঃপানক শহুকে॥ (নস্তঃপানং নাসিকয়া পানং কিংবা নস্তং পানক ॥)

শঙ্গক নাগক শিরোরোগে স্বেদক্রিয়া ভিন্ন পূর্য্যাবর্ত্তোক্ত সমস্ত চি,কংসা করিবে। ইহাতে প্রথোৎপন স্থতের নাসাপান (নাসিকা দারা পান , কিংবা নস্য ও পান প্রশস্ত।

দাকীহ'রছামজিষ্ঠা-স্নিরোগিরপালকম্। এতং প্রকেপনং কুষণক্তঞ্জক্যা প্রশান্তয়ে॥

দারহংরিজা, হরিদ্রা, মঞ্জিষ্ঠা, নিম্বপত্ত, বেণার মূল ও পত্মকান্ত এই সমূদায় জলে পেষণ করিয়া শঙ্গাদেশে প্রলেপ দিলে তৎস্থানের বেশনা নিবারিত হয়।

শতাবরীং কৃষ্ডিলন্থে মধুকং নালম্ৎপ্লম্।
দূর্কাং পুন্নবাঞ্চাপি লেপং সাংধ্বেচারছে।
শাততে য়েবেসকাংশ্চ কারসেকাংশ্চ নাতলান ।

শতমূলী, নিশ্বব ক্ষণ্ডিল, যষ্টিমধু,
নীলোংপল, দূর্বা ও পুননবা এই সকল দ্রব্য পেষণ ক্রিয়া মস্তকে প্রলেপ নিলে এবং নাতল জলের বা ছাগগুরুরে প্রিষেক ক্রিলে শিরো-বোগ প্রশ্মিত হয়।

करेकक कौदिनुकानाः महाकमा अतनप्रम्।

বট ও অথথাদি ক্ষীরিরক্ষের ছাল বাটিয়া মস্তকে প্রলেপ দিলে শুখাক রোগের উপশম হুইয়া থাকে।

ক্রেকিকাদম্বংশানাং শরাব্যাঃ কচ্ছপস্ত চ : রদৈঃ সংগৃংহণস্তাশ তদ্য শস্ত্রকদ**ন্ধিজাঃ**।

উদ্বান্তিক: শিবাঃ প্রাক্তো ভিন্যাদের ন তাড়য়েৎ ॥

বক, কলহংস, হংস, শরাইপক্ষী ও কচ্ছপ ইহাদের মাংসের রসপান ধারা রোগিকে পরি-পুর করিয়া তাহার শহ্মসন্ধির উদ্ধন্থ শিরাত্তম স্টিকা ধারা বিদ্ধ করিবে। কিন্তু কুঠারিকা ধারা পীডন করিবেনা।

গিরিকণীফলরসো মূলঞ্চ নস্যমাচরেও। মূলং বা বন্ধয়েও কর্ণে শীত্মং হস্তি শিরোব্যথাম্॥ অপরাজিতার ফলের বা মূলের রসের নস্য লইলে অথবা উহার মূল কর্ণে বান্ধিলে শির:-পীড়া আগগু প্রশমিত হয়।

গুঞ্জাকরঞ্জবীজঞ্চ তরোঃ কক্ষো জলে কৃতঃ। মরিটেভূ জরাজৈন্দ শীঘ্রং হস্তি শিরোব্যথাম॥

কুঁচ ও করঞ্জবীক জলে পেষণ করিয়া তাহার নদ্য লইলে শীঘ্র শিরঃপীড়া প্রশমিত হয়। মরিচ ও ভীমরাজের নদ্যেও উপকার হইয়া থাকে।

শিরঃকম্পেংমৃত(রাস্না-ব নাম্বেছপ্রসন্ধিভিঃ। ক্ষেত্রম্বাদি ব্যভয়ং শিরোবস্তিক্ষ শস্যতে॥

শিরঃকম্প রোগে গুলঞ্চ, রামা, বেড়েলা, মূত ও অগুরু প্রভৃতি স্থান্ধিদ্রব্য একতা পেষণ করিয়া তাহার প্রশেপ এবং বাতম মেহ-স্বেনাদি ও শিরোবস্তি প্রশস্ত।

ক্ষয়কে ক্ষমণাশয় কর্ত্তবোগ সংহণে। বিধিঃ। পানে নভো চ সর্পিঃ শুংধাতান্তম ধুরৈঃ শুভম্॥

ক্ষমজনিত শিরোরোগে রংহণ (পুষ্টি-কারক) বিধি ব্যবস্থেয়। বাতম মধ্রগণের সহিত গৃত পাক করিয়া সেই গৃত পান ও ভাহার নস্য ব্যবস্থা করিবে।

ক্রিমিকে বোণসনক্রাধ্ব-শিগ্রানীজন্দ নাবনম্। অজ্যানসূত্র নক্তং কর্ত্তবাং ক্রিমিকুৎ পরম্।

ক্রিমিজনিত শিরোরোগে ত্রিকটু, করঞ্জ-বীজ ও শজিনাবীজ ছাগমূতে পেষণ করিয়া নস্য লইবে।

আর্দ্রং যজুজিকাচুর্গ, চর্নিতং নরসারকম্। উভয়ে যোজিতং তক্ত গন্ধারগুতি শীর্থকক্॥

আর্দ্র শুক্তিচুর্ণ (পাঁকি চুর্ণ) ও নিশাদল একত্র মিলিত করিলে যে উগ্র গন্ধ হয়, সেই গন্ধের আঘান কইলে শিরংপীড়া বিনষ্ট হয়। পথ্যাক্ষধাতীরজনীশুড়্ গী-ভূনিঘনিখে সঞ্জঃ ক্ষায়ঃ। ভ্রশন্ত্রকর্ণাক্ষনিরোহর্জনুলং নিহন্তি নাসানিহিতঃ ক্ষণেন।

হ্রীতকী, বহেড়া, আমলকী, হরিদ্রা, গুলক, চিরতা ও নিম্নশত ইহাদের কাথে গুড় প্রক্রেপ দিয়া নাদাপান করিলে জ্র, শন্ম, কর্ণ, নেজ ও শিরোহর্দ্গ্ল (অর্ধাবভেদক) বিনষ্ট হইয়া থাকে। যতীমধুকং মাব: স্থাৎ তুর্যাংশন্ত বিবং ভবেৎ। তরোশ্চুর্নং ক্রুক্তঃ স্থাৎ তচ্চূর্নং সর্বপৌদ্মিতম্। নাসিকাভান্তরে স্থাতঃ সর্বাং শীর্ষব্যবাং হরে। দৃষ্টশ্রোগো যোগোহয়মনুভাবিভিরাদৃতঃ॥

স্ক্রচ্ণ ষষ্টিমধু ৵ ৽ আনা, স্ক্রচ্ণিত বিষ ২ • আনা একতা মিশ্রিত করিয়া একসর্বপ-পরিমাণে নস্য লইবে। এই নস্য বাবহারে সর্বপ্রকার শিরোরোগ প্রশমিত হয়।

অর্দ্ধনা ট্রানাটকেশ্বরঃ।

বরটোং টক্লণং গুদ্ধং পঞ্চাগসম্মিত্ম।
নবভাগং মরাচ্যা বিষ্ণাত্রহং মত্ম।
অভোন বটিকাং ক্ষা নসাং দক্ষাদ্ বিচক্ষণঃ।
শিরোবিকারান্ বিবিধান্ হন্তি লেমোত্রানপি।
কড়িতশা ২॥০ তোলা, সোহাগার থৈ
২॥০ তোলা; মরিচ ৪॥০ তোলা ও বিষ ১॥০
তোলা এই সমুদায় দ্রব্য স্তন্ত্য্যে মুদ্দন
করিবে। ইহার নস্যে শিরোরোগ বিনষ্ট হয়।

শিরঃশূলাদ্রিবজ্ররসঃ।

পলং রসং পলং গদং পলং লৌহং পলং রিস্থ।
গুগ স্থলোঃ পলতভারি ওদদং তিফলারজঃ ॥
কুগ মধু কণা গুলী গোক্ষরং ক্রিমনাশনম্।
দশমূলক প্রত্যেকং ভোলকং বস্থলোরি হন্ ॥
কাথেন দশমূলাক বথাবং পরিভাবরেং।
ঘূতবোগাং প্রকর্তা মায়িকা বটিকা শুভা ॥
ছাগীছ্রদানুপানেন প্রদা মধুনাথবা।
লিরংশূলান্তিভোগেরং চগুলাথেন ভাষিতঃ ॥
একলং দ্বন্ধ্বিক বিদেশজনিতং তথা।
বাতিকং পৈত্তিকং সর্বাং শিরোরোগং বিনাশরেং ॥

পারদ ১ পল, গন্ধক ১ পল, লোহ ১ পল, তেউড়ীমূল ১ পল, গুল গুলু ৪ পল, ত্রিফলা-চুর্ব ২ পল, কুড়, যষ্টিমধু, পিপুল, শুঁঠ, গোক্ষুর, বিড়ঙ্গ ও দশমূল প্রত্যেক ১ তোলা, এই সম্-দার একত্র মর্দন করিয়া দশমূলের কাথে ভাবনা দিয়া হতে মর্দন করিয়া ১ মাঘা প্রমাণ বটকা প্রস্তুত করিবে। অনুপান—ছাগছগ্ধ, জল বা মধু। ইহা সেবনে সর্বপ্রকার শিরো-রোগ নষ্ট হয়।

রসচন্দ্রকা বটী।

ত্রৈলোক্যবিজয়বীকং বীজনুম্প্রক্স চ।
কণ্টকারাবীজকক হিজ্জনবীজনেব চ॥
বীজক বৃদ্ধনারস্থানী গদকপারদৌ।
আর্ক্রবিটকা কায়া কলায়পরিমাণতঃ॥
এমা তোয়ামুপানেন প্রতিঃ গান্তা হিতাশিনা।
বিবল্প সকলোগন্ধ স্থিপাতং ক্লান্ত্রণানাতং শিলোরোগং মন্তান্তর্যাহন ।
ভামবাতং শিলোরোগং মন্তান্তর্যাহ গলগ্রহন্।
ভাহনীং লাপনং হতি সম্বৃদ্ধিং ভগলবন্॥
কানলাং শোনপাভূষং গনিসংশোজনাময়ান্।
বিচকা চল্লিবা নাম বাহুদেশেন জীবিতা॥

দিধিবীজ, ধুন্তুব্বজি, কণ্টকারীবীজ, ছিল্লবীজ, বন্ধারকের বীজ এবং তুল্যাংশ পারন ও গল্পক একতা করিয়া আদার রসে মন্দন করিবে। পরে মটর পরিমিত বটিকা করিয়া উঞ্চলল অনুপানে প্রাত্তকালে সেবন করিবে। ইহাতে সন্তপ্রকার প্রাত্তন রোগ, সন্মিপাত, আমবাজ, শিরোরোগ ও গ্রহণী প্রভৃতি শ্লোকোক্ত বোগ সকল বিনষ্ট হয়। এই বটিকা বাস্থানেরের নিম্মিত।

চন্দ্রকান্তরসঃ।

মৃত্ত গ্ৰাকং ত'ক্ষং ত'মং গকং সমং সম্ম। প্ৰত'কাবৈদিনং মদ্যাং ভক্ষেন্মানমাত্ৰক্ম। মধুনা ম'দ্ধতং সেবাং লৌহপাতে 'দনে দিনে। সপ্তাহাৎ তথ্য কভাদীন্ শিবোরোগান্ বিদাশয়েও॥

রসদিশ্ব, অল, লৌহ, তান ও গন্ধক, সমভাগে লইনা দিজের আঠায় মর্দন করত এক মাধা পরিমিত বটকা প্রস্তুত করিবে। ইহা মধুর সহিত লৌহপাত্রে মর্দন করিয়া এক সপ্তাহ দেশন করিলে স্থ্যাবর্ত্ত প্রভৃতি শিরোরোগ বিনষ্ট হয়।

মহালক্ষীবিলাদঃ।

লোহ্মজং বিষং মৃত্তং ফলতায়কট্তায়ম।
ধৃত্ত্বং বৃদ্ধনারঞ্চ বীজমিল্রাশনসা চ।
গোকুরক্ষয়টেঞ্ব পিশ্লনীসূলনেব চ।
এতৎ সর্কাং সমং গ্রাহ্ণ রসে ধৃত্ত্বরক্ত চ।

ভাবয়িত্বা বটী কার্য্যা বিশুঞ্জাফনমানতঃ। মহালক্ষ্মীবিলাসোহয়ং শিরোরোগবিনাশকঃ। (গোকুরবয়মিতি ব্লপত্রবৃহৎপত্রভেদাদ্ গোকুর-বয়ং গ্রাহ্মিতি চক্রটাকা)।

লৌহ, অভ্ৰ, বিন, মুভা, ত্রিফলা, ত্রিকটু, ধুভ্রাবাজ, বৃদ্ধদারবীজ, সিদ্ধিবীজ, স্বল্পত্র ও বৃহৎপত্র ভেদে হুই প্রকার গোক্ষুর ও পিপুলমূল, এই সকল দ্রব্য ধুভ্রার রসে ভাবনা দিয়া হুই রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা শিরোরোগ-বিনাশক।

যক্যাদ্যং হ্বতম্।

ষ্টীমধ্বলারাস্লা-দশ্মলাস্থ্যাধিত্য।
মধ্রৈক গৃতং বিদ্ধুদ্ধজক্রগদাপহয়।
যৃত্তিমধু, বেড়েলা, রাস্লা, দশম্ল, ইহাদের
কাথে এবং কাকোল্যাদি গণের কল্পে যথাবিধানে স্বত্ত পাক করিয়া সেবন করিলে
উদ্ধিক্রকাত রোগ নিবারিত হয়।

ময়ুরাদ্যং স্বতম ।

দশ্লাবলার স্থা-মধুকৈ শ্বিপলৈঃ সহ।
মগ্রং পক্ষপিঙা শ্ব-মক্থপাদাস্থা জিতম্ ॥
চলে পক্ত্যা চূতপ্রং তিম্মা ক্ষারসমং পচেং।
মধ্রঃ কাংকিক ককৈ: 'শরোরোগা কিতাপচম্ ॥
কর্ণনাসা কিজিহাস্য-গলরোগাবনাশনম্।
মধ্রঃতা মদং সার্পিরজ্জক্রগদাপহম্ ॥
আপুতিঃ কুরুটেডংসৈঃ শবৈশচাগি হি বৃদ্ধিমান্।
ককেনানেন বিপচেং সার্পিরজ্গাপহম্ ॥
দশ্ম্লাদিনা তুল্যো মগ্র ইহ গৃহতে।
অতে ভাক্তিমানেন মধ্রগ্রহণং বিছঃ ॥

- বিজ্কলৈবিতি বৃক্ষপুতঃ পাঠঃ।

ঘুত /৪ সেব। কাথার্থ—দশমূল প্রত্যেক তিন পল; বেড়েলা, রাস্না, যষ্টিমধ্ প্রত্যেক তিন পল, ময়ুরের পক্ষ, পিন্ত, অন্ত্র, য়কুৎ, চরণ ও মুখ পরিত্যাগ করিয়া অবশিষ্ঠ মাংস ৩৯ পল লইবে। এই সমস্ত দ্রব্য মোট ৭৮ পল, পাকার্থ জল ৭৮ সের শেষ ১৯॥• সের। কেহ কেহ বলেন, তরুণ ময়ুর ১ টাতে য়ত মাংস থাকে, তাহাই গ্রাহ্ন। পাকার্থ—জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। (বৃন্ধ বলেন—
দশমূল, বেড়েলা, রামা, নষ্টিমধু, ত্রিফলা প্রত্যেক
০ পল, ময়ুর ১টা, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের।)
ছগ্ধ /৪ সের। করার্থ—জীবক, অবভক, মেদ,
মহামেদ, কাকোলী, জীবকাকোলী, জীবকী,
নষ্টিমধু, মুগানী ও মাঝাণী এই জীবনীমদশক
প্রত্যেক ছই ভোলা। এই মৃত পানে শিরোরোগ ও অর্দ্ধিত প্রভৃতি নানা ব্যাবি নই হয়।
ময়ুরাত্ম মুবের নিম্নে ইন্দ্র, কুরুট, হংস ও
শশক ইহাদের মাংসেও মৃত পাক করা বাষ।
তত্তদেশ্বতও শিরোরোগাদি উর্জ্জক্রগত পীড়ায়
উপকার করে।

বৃহন্মায়ুরং মৃতম্।

শতং মর্রমাংসন্থ দশমূলবলাং জুলাম্।
দোণেহন্তমং পচেৎ কুরা তামিন্ পাদন্থিতে ততঃ ॥
নিবিচা পরসো দোণং পচেৎ কর হুতাচকম্।
প্রপৌগুরীকবর্গোক্তৈলীবনীরেশ্চ ভেবছৈঃ ॥
মেধাবৃদ্ধিন্ত্রিকরমূদ্ধিকজগদাপহম্।
মার্বমেতরিনিইং সর্বানিক্রং পরম্॥
মন্তাকর্শনিবেন্ত্রন্দ্ধিপ্রারনাশনম্।
বিষ্বাতামর্বাস-বিষ্মন্ত্রনাসন্ত্র।
(প্রপৌগুরীকবর্গাক্তিরিতি প্রপৌগুরীকমধ্কপির্লী-

(প্রশোশুরীকবর্গেট্রেরি,তি প্রপৌশু চন্দ্রনাৎপলৈরিত্যর্থ: । চক্রটাকা)।

খত ১৬ সের। কাথার্থ—তক্রণ-ময়ৄর মাংস ১২॥০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের; দশমূল ও বেড়েলামূল মিলিত ১২॥০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের; ছগ্প ৬৪ সের। কল্পার্থ—প্রপৌগুরীক, যষ্টিমধু, পিপুল, রক্ত-চন্দন, নীলোৎপল, জীবক, ঋষভক, মেন, মহামেন, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, জীবন্তী, ষ্টিমধু, মুগানী, মাধাণী, মিলিত /৪ সের। ইহাতে শিরোরোগ, কর্ণবোগ ও নেত্ররোগ শ্রেন্ত কর এবং মেধা বুদ্ধি ও শ্বতিশক্তি বর্দ্ধিত ইর।

শতাহ্বাদ্যং তৈলম্।
শতাহ্বরঞ্জন্তাগ্র-বক্রব্যামীফলৈ: শৃতম্।
তৈলং নস্যং মক্লংক্রেম-তিমিরোর্ছগদাপহন।

শুল্ফা, এরগুমূল, বচ, তগরপাত্নকা ও কণ্টকারীফল এই সমুদারের কল্পে যথাবিধি তিলতৈল পাক করিয়া নশু হইলে বাতিক ও শৈল্পিক তিমিত এবং শিরোরোগের শাস্তি হয়।

জীবকাদাং তৈলম্।

জীবকর্মন্তক্রাক্ষা-সিতামন্তিবলোৎপলৈ:। তৈলং নস্যং পরংপকং বার্তপিত্রশিরোগদে॥

জীবক, ঋষ্মক, দ্রাক্ষা, শর্করা, যষ্টিমধু, বেড়েলা ও নীলোংপল ইহাদের কল্পে এবং চতুগুণ হুয়ে যথাবিধানে স্থপাচিত তিলভৈল নস্থার্থ প্রয়োগ কবিলে বাতিক ও পৈতিক শিরোরোগ বিনষ্ট হয়।

বুহজ্জীবকাদ্যং তৈলম্।

জীবকৰছকে। ডাকো মধুকং মধুকং বলা।
নীলোৎপলং চন্দনঞ্ বিদারা শর্করা তথা।
তৈলপ্রস্থা পচেদেন্তিঃ শনৈং পর্যাস যড় গুলে।
জাকলস্য তু মাংসস্য তুল;র্ক্ষস্য রসেন তু ॥
সৈক্ষমেতভ্রবেল্লস্যং হৈলমন্ধাবভেদকম্।
ব্যাধিষ্যং কর্ণশূলক তিনিরং গলগুতি ঠকাম্ ॥
বাতিকং পৈ, ভক্ষেক শীন্বালাং নিয়ছতি।
দস্তচালং শিরংশুলমন্দিতক।পক্ষতি॥

তিলতৈল /৪ সের। জাপলমাংদ /৬।

পের, কাথার্থ—জন ১২ দের, শেষ /৮ দের।

হয় ২৪ দের। ককার্থ—জীবক, ঋষভক,

আক্ষা, মৌল ফুল বা ফল, যষ্টিমধু, বেড়েলা,
নীলোৎপল, রক্তচন্দন, ভূমিকুলাও ও চিনি
মিলিত /১ সের। এই সকল জব্যে যথাবিধি
তৈল পাক করিয়া লইবে। এই তৈল নস্তরূপে ব্যবহার করিলে অর্জাবভেদক, বধিরতা,
কর্ণশূল, তিমির, গলগুটিকা, বাতিক ও
পৈত্তিক শিরোবোগ, দক্ষচাল, শিরংশূল ও
অর্দ্ধিত প্রশমিত হয়।

অপামার্গ-তৈলম ।

অপামার্গকলব্যোব-নিশাক্ষবকরামটৈঃ। স্বিভূক্তং শৃতং মূত্রে তৈলং নস্যং ক্রিমিং ক্রয়েৎ ॥ অপামার্গবীজ, ত্রিকটু, হরিদ্রা, গাঁচুটী, হিং ও বিড়ঙ্গ ইহাদের কল্পে ও চতুগুল গোমুত্রে যথারীতি তিলতৈল পাক করিয়া নম্ম লইলে ক্রিমিজন্ত শিরোরোগ নষ্ট হয়।

প্রপোণ্ডরাকান্তং তৈলম।

প্রপৌওরীকমধুক-পিশ্বলীচন্দনোৎপলৈ:। সিদ্ধং ধাত্রীরদে তৈলং নম্পেনাভাঞ্জনেন বা। সর্বানুদ্ধিদান্ হস্তি পলিতানি চ শীলিতম্ ।

পুণ্ডরিয়াকান্ত, যৃষ্টিমধু, পিপুল, রক্তচন্দন ও নীলোৎপল ইহাদের কল্পে ও চতুগুণ আম-লকীর রদে তৈল পাক করিয়া নশু গ্রহণ করিলে উদ্ধাতত সম্দায় রোগ ও পলিতাদি নষ্ট হইয়া থাকে।

ষ্ডুবিন্দু,তৈণম্।

এরওমৃলং তগরং শতাহবা জীবভিরাস্থাসহসৈকবঞ্চ। ভূকং বিভক্ষং মধ্যষ্টিকা চ বিখৌষধং কৃষ্ঠিলন্ত তৈন্দ্ ॥ আজং পরভৈলবিমিলিতক চতুত্ত গৈ ভূজরসে বিপক্ষ। বড় বিন্দবো নাসিকরা বিধেয়া নিহন্তি শীঘং শিরসো বিকারান্ ॥ চাতাংশ্চ কেশান্ চলিতাংশ্চ দত্ত'ন্ দ্রক্ষমৃলাংশ্চ দৃচীকরোতি। ফুপর্ণদৃত্তিপ্রতিমঞ্চ চন্দ্র্নিবিজ্ঞা

ভিলতেল / ৪ দের। ছাগত্থ / ৪ দের, ভীমরাজের রদ: ৬ দের। কলার্থ— এরণ্ডমূল, ভগরপাত্তকা, গুলুফা, জীবস্তী, রালা, দৈরুব, গুড়ত্বক্, বিড়ঙ্গ, যষ্টিমর্ ও গুঠ মিলিত /> দের। এই দকল দুব্যে যথাবিধি তৈল পাক করিয়া দেই তৈলের নম্ভ গ্রহণ করিলে শিরো-রোগ দ্রীভূত এবং শিথিল কেশ ও দম্ভাদি দৃঢ় হইয়া দৃষ্টিশক্তি ও বাত্বল বর্দ্ধিত হয়।

७क्षारिजनम् ।

বিশুদ্ধ: তিনতৈলক তৎসমং কাঞ্জিকং ভবেং।
আরনালসমং ভূকজবং কৃষা প্রদাপরেং॥
মন্দায়িনা ততঃ পাচাং বাবং তৈলছিতং ভবেং।
তৈলমধ্যে প্রদাতবাং পিষ্টা গুঞ্জাপলক্ষম ॥
উত্তায় তৈলশেবন্ধ দিনৈকং তৎ তু রক্ষয়েং।
শিরোরোগেয় হুষ্টেরু অর্জনীরে হুদাক্রণে॥
জনাথকর্ণশীড়ান্চ নশান্তি নাত্র সংশয়ঃ।
গুঞ্জাতৈলমিতি গাতং দতং হস্তি শিরোবাধাম ॥

তিলতৈল /১ সের, কাঁজি /১ সের, ভীমরাজের রস /১ সের। করার্থ—কুঁচফল ২ পল বাটিয়া প্রদান করিবে। ইছা দারা শিরো-রোগ প্রভৃতি নানাবিধ পীড়ার উপশম হয়।

দশমূলতৈলয়।

দশ্যনকাশককাজাং নিশু গ্রীরসসংযুত্য । কটুতৈলং সমাদায় পচেৎ প্রশ্বং ইংলগ্ররঃ ॥ সম্লিপা গং হরেদেতজ্জিরোরোগং তবৈব চ। অভিস্কিকজ্ঞায়ান্ রোগান হস্তি ন সংশয়ঃ ॥

কটুটে তল ১৪ সের। কাথার্থ—দশমূল ১২।।
সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের; নিসিন্দাপত্র রস ১৬ সের। ককার্থ—দশমূল /১ সের।
ইহাতে শিরঃপীড়াদি নানাবিধ রোগ নই হয়।

मनगुनरिजनम् ।

দশমূলকাথককাভ্যাং তৈলপ্ৰস্থং বিপাচয়েও।
চতুগুণং পয়ো দহা শনৈমু দ্বিনা ভিবক্ ।
দশমূলমিতি থাতেং শোধং হস্তি হুদাকণম্।
নক্তেনাকালপ্লিতং ভ্রারোচকনাশন্য ।
অভ্যক্তেনব সর্বঞ্চ শিরংশূলং বিনাশহৈও ।

কটুতৈল /৪ সের। দশম্লের কাথ ১৬ সের। হয় ১৬ সের। করার্থ—দশম্ল /১ সের। ইহার নভে কেশের অকাল-পক্তা নিবারণ এবং অভাঙ্গে শিরঃশ্ল ও অর প্রস্থৃতি রোগের ধ্বংস হয়।

म्भगूलरेजनम् ।

দশম্লীকবারেণ অষ্টাককছসংযুত্য।
ক্ষীরঞ্চ বিশুগং দক্তা তৈলপ্রস্থং বিপাচরেৎ ।
শিরোহর্তিং নাশরেদেতদ্ ভাক্ষরন্তিমিরং যথা।
বাতশূলং পিন্তশূলং কফশূলং তিলোবজম্॥
পর্যাবর্ত্তমভিবান্দং জলদোবঞ্চ নাশরেং।
দশমূলমিদং তৈলং শিরোরোগনিস্থানম্॥

কটুতৈল /৪ সের। দশম্লের কাথ ১৬ সের, ছগ্ধ /৮ সের। কল্বার্থ—জীবক, শ্বন্তক, মেদ, মহামেদ, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, শব্দি, বৃদ্ধি প্রত্যেক ৮ তোলা। এই তৈল ব্যবহারে বাতজ পিত্তজ কক্ষজ ও ত্রিদোষজ শূল এবং স্থ্যাবর্ত্ত প্রভৃতি শিরোরোগ নই হয়।

সল্পশমূলতৈলম্।

দশমূলক থেকক ভাাং কটুতৈলং বিপাচয়েং। সল্লিপাতক ব্যাস-কাসান্ হস্তি ফ্লাক্থান্।

কটুতৈল /৪ সের। দশমূলের কাথ ১৬ সের। কল্পার্থ—দশমূল /১ সের। ইহাতে সান্নিপাতিক জ্বর, খা্স ও কাসরোগ উপশ্মিত হুইরা থাকে।

मधाममभगृलरेजनम् ।

দশ্যুনী করপ্লন্চ নিগু গু চ জয়ন্তিকা।
ধুন্ত রঃ ষ্ট্পনান্ ভাগান্ জনজোণে বিপাচয়েৎ ।
পাদশেষে রসে তৈলং কটু প্রস্থং বিপাচয়েৎ ।
তৎক্ষান্ দাপয়েৎ তত্ত্বে ভাগান্ ষ্ট্ডোলকান্ পৃথক ।
বাতলেমসমূজুতং শিরোরোগং বাপোছতি ।
কাসং পঞ্চবিধং শোধং জার্শজ্বমপোছতি ॥
দশ্যুলমিদং তৈলং শিরংকর্গান্ধিরোগন্থ ।
মন্তান্তক্ষান্ত্রিং লাগন্ত্র বিনাশয়েৎ ।
দশ্যুলমিদং তৈলম্থিত্যাং শিক্ষিতং পুরা।

কটুতৈল /৪ দের। কাথার্থ—দশমূল, করঞ্জবীজ, নিসিন্দাপত্র, জারন্তীপত্র, ধৃচূরাপত্র প্রত্যেক ৬ পল, জল ৬৪ দের, শেষ ১৬ দের। কর্মার্থ—উক্ত কাথ্যদ্রব্য সমস্ত প্রত্যেক ৬ ভোলা লইবে। ইহাতে শিরোরোগ, কাস, শেপ, জীর্ণজ্বর, নেত্ররোগ ও কর্ণরোগ প্রভৃতি নানা পীড়ার উপশম হয়।

বৃহদ্দশমূলতৈলম্।

দশম্লাশতং প্রাংগং তথা গুজু রকস্য চ।
শতং পুনর্গবারাশ্চ নিগু গুলু রকস্য চ।
শতং পুনর্গবারাশ্চ নিগু গুলু গুলু হ তথা ॥
থাতৈঃ ক্যামৈর্গিপ্তেই কটু হৈলাচকং ভিষ্ক ।
বাসা বচা দেবদার শতী রাজা সমষ্টিকা ॥
নরিচং পিললী শুন্তী কারবী কটু ফলং তথা ।
করম্প্রশিগ্র বুংঠুঞ্চ চিপা চ বনশিদ্বিকা ॥
চিত্রকক পৃথক্ ভাগান্দ্রা হৈবাং প্রলোগ্মতান্ ।
কৈমিকং সলিপাতোথং ন'তল্পেয়ান্তবং তথা ॥
কর্ণশূলং শিরংশূলং নেত্রশূল্প দারণম্।
নিহন্তি দশম্লাগাং ভিলমেত্র সংশ্রং ॥

কটুতৈল ১৬ সের। কাথার্থ— দশমুল ১২॥০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের; ধুত্রাপত্র ১২॥০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের, শেষ ১৬ সের, পের ১৬ সের; প্রনার ১২॥০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের; নিসিন্দাপত্র ২২॥০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। কলার্থ—বাসকম্লের ছাল, বচ, দেবদার শিস্তা, রামা, যষ্টি-মধু, মরিচ, পিপুল, ৬ স, রুষ্ণজীরা, কট্ফল, করপ্রবীজ, শজিনাছাল, কুড়, তেতুলছাল, বনশিম ও চিতামুল প্রত্যেক ৮ ভোলা। এই সকল জব্যে যথাবিদি তেল পাক করিয়া ব্যব্ধার করিলে সর্কদোধে এব কণ্শুল, শিরংশুল ও নেত্রশুল নিবারিত হয়।

त्रहम्भगृनरेजनम् ।

পঞ্চ পঞ্চ পলং নী হা প্রদ্যুলাযুদ্ধাৎ পৃথক্।
বিপাচয়েজ্জলন্তে চাওছাগাবলোয় হয় ॥
আর্ক্রিন্সা রমপ্রস্থাং নিও ভালত মন্যা ভবেৎ।
ক্রায়শং পঞ্চলাঞ্চ ক্রারকর্মনরপন্য ॥
সৈন্ধবঞ্চ ববক্ষারং তিব্তা চ নিশাষ্ত্রয় ।
তৌয়ঞ্চ বিপ্তপং দহা কঞ্জনসমং বিহুঃ ॥
সর্ক্রেভিঃ প্রচেৎ তৈবং নিরোরোগং ব্যপোহতি ।
উদ্ধাক্তজ্জরোগায়ং বাতলেখনগাপ হন্ ॥
একজে ছন্থকে চৈব তথেব সালিপাতিকে।
আন্ত্রাব্রভিন্নাগে চ শ্লাতে ॥
(স্ক্রিক্রিন্স্য)।

কট্তৈল /৪ সের। কাথার্থ—দশমূল প্রত্যেক ৎ পল, জল ৬৪ সের, শেষ /৮ সের; আদার রস /৪ সের, নিসিন্দাপত্রের রস /৪ সের। ক্লার্থ—পিপুল, পিপুলমূল, চই, চিতা-মূল, শুঠ, ত্রিকট্, জীরা, ক্লজারা, শেতসর্বপ, সেল্লব, যবক্ষার, তেউড়ী, হরিন্দ্রা ও দাক্ষহরিদ্রা প্রত্যেক ২ তোলা। পাকের জল /৮ সের। এই তৈল পান, অভ্যঙ্গ ও নত্তার্থ প্রযোজ্য। ইহাতে শিরোরোগ ও উদ্ধৃজ্ঞগত নানা পীড়ার শাস্তি হয়। ইহা প্রভাঞ্গ-ফলপ্রদ।

গহাদশমূল-তৈলম্।

मन्यूनश्रीनार्वः कन्याद्वारम् निश्राहरस्य । ८चन भाष'वर्षायम कडेटें इल! कक् भारतः ॥ জামার্রার্ডাকপ্তার-স্বন্দং ১৩ল ছল। ह কাষ্ট কৰ্।মূতা দাবেরী শৃতপুষ্পা প্রম্বা॥ শিগ্র পিপ্লিকা ভিক্তা করজা কুফ্রারকম। সিদ্ধার্থকং বচা এটা পিপ্রলা চিত্রকং এটা । দেবদার বলা রামা ক্যাবৈত্তককটকলম। নিগু গু চবিকা গৈরা প্রস্থিকং গুক্ষমূলকম্ ॥ যমানী জারকং কুঠমজমে: না চ ভাতকম। এতেষাং পলিকৈভাগৈবিপতেমতিমান ভিষক ॥ হত্তি প্রেমাণমভ্যঙ্গাৎ পানাৎ কাসং বাপেংহতি। निश्चि विविध:न् वाधि:न् कक्षवा ध्ममूखव'न् । শিরোমধ্যগতান রোগান শোখান হাঁও এণানপি। (দ্বিতীয় পিঞ্চলীশকেন পিপ্ৰলীমূলং গ্ৰাগমিতি রপ্রবলীকার:)।

কটুতৈল ১৬ সের। কাথার্থ—দশম্ল ১২॥ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের, গোড়ালেবুর রস ১৬ সের, আলার রস ১৬ সের, ধুতুরার রস ১৬ সের। কল্পর্থ—পিপুল (২ ভাগ), গুলঞ্চ, দারহরেদ্রা, গুল্ফা, পুননবা, শদ্ধনাছাল, কট্কা, করপ্পরীদ্ধ, রুঞ্জীরা, বেডসর্থপ, বচ, গুঠ, চিতামূল, শটা, দেবলাকা, বেডেলা, রালা, হুড্হড়ে, কট্ফল, নিসিন্দাণিত্র, চই, গেরিমাটা, পিপুলমূল (২ ভাগ), গুদ্ধুলা, বমানী, জীরা, কুড়, বন্ধমানী ও বিরুড়কমূল প্রত্যেক ১ পল। এই তৈল

ব্যবহারে কফ, কাস ও শিরোরোগ প্রভৃতি পীড়ার উপশম হইয়া থাকে।

ধুস্তুরতৈলম্।

পুস্ত রকাধকক্ষাভ্যাং কটুটভলং নিপাচয়েৎ। সন্নিপাভন্দরশ্রেখ-শোধনার্বাভিদাহনুৎ। কর্ণগ্রহরকান্তি-সন্ধ্রগ্রহনিশালম।

কটুতিল /৪ দের। ধুতুরাপত্রের কাথ বা রদ ১৬ দের। কল্পার্থ—ধুতুরাপত্র /১ দের। ইহা ব্যবহারে দান্নিপাতিক জ্বর, শ্লেমা, শোথ, শিরোরোগ, দাহ ও কর্ণরোগ প্রভৃতি পীড়ার উপশ্ম হয়।

কনকতৈলগু।

कनकाकत्वात्रक्ता वानाको देवल्याचिका ॥ নিও প্রপৃতিক ভাগী-নিকে তকপুননবাং ॥ বদরা বিজয়াপ এং আফলং বৃহতী তথা। 5িত্রকঞ্জ প্রাইম্লমগ্রিমারে, বাড্যক্ষ্ণ ্ত্রবন্ধভী গোমেই: 5 পানমারথধন্স চ। প্রত্যেকং দ্বিপনকৈষ'ং গুরু'য়া২ তৎক্ষণাদ্বি॥ জলদ্রেণে বিপক্তবাং যাবৎ পাদ'বশেষিত্র। প্রস্থক কটুতেলন্ড পাচয়েং ভারণ্ডিলা । দ্রবাংগ্যতানি নর্কাণি কব্দিত'নি প্রদাপথেই। চকু,শুলং শির,শুলং লীপদং মাংসরজভাষ্ 🛭 অমেব। তথ হাজ্লং বৃদ্ধিক গলগভক্ম। (बाबर वाधि तमून्त्रर कागर रुखि न गरबार । দুকায়াং প্রিটে বিনে) ক্ষতাং যাতে তৎক্ষণাৎ। ক্ৰক।খ্যমিদং তেলং কফরোগবুলান্তক্ষ্ম॥ (কটুভেল,শুভাত্র ভিনতেলভোতি স্থানোধ-সংগ্রহগুত: প্রেঠ.)।

কঢ়তৈল (মতান্তরে তিলতৈল) /8
সের। কাণার্থ—কনকধুত্রা, আকন্দমূল,
বেড়েলা, দ্রা, বাসকছাল, জয়স্তী, নিসিন্দাপত্র, ডহরকরঞ্জবীজ, বামুনহাটা, আঁকোড়ছাল, পুননবা, কুলপত্র, সিদ্ধিপত্র, বিল্মূল,
বৃহতী, চিতামূল, সিজমূল, গণিয়ারীমূল,
এরওমূল, তেউড়ীমূল, মঞ্জিল, রামবেগুণ,
সোন্দালপত্র প্রত্যেক ২ পল; পাকার্য জল

*৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। করার্থ—উক্ত কাথ্যত্বর সমস্ত মিলিত /১ সের। ইহা দ্বারা চকুঃশূল, শিরঃশূল, রক্তজ্ব ও মাংসজ শ্লীপদ, আমবাত, হুচ্ছুল, শোথ এবং বাধির্য্য প্রভৃতি পীড়ার শাস্তি হয়।

মহাকনকতৈলম্।

কনকতা রসপ্রস্থং প্রস্থং বর্ধাভূবন্তথা।
নিপ্ত প্রীম্বরসপ্রস্থং প্রস্থং বন্ধশক্ত চ।
পারিভন্তরসপ্রস্থং প্রস্থং বন্ধশক্ত চ।
তৈলপ্রস্থং সমাদার ভিষণ ব্রন্থাদ্ বিপাচরেৎ ।
ক্রেরেরিকার প্রস্তামরিচিসেন্ধনেং।
প্রন্বাক্ষটক-শেলুফ্ক্পিপ্লনীযুগৈং।
তৎ সাধ্সিদ্ধং বিজ্ঞায় গুল্তে প্রস্তামনিধাপরেং।
বাতরেমকৃতং সর্ক্মামবাতং ভগন্তরম্ ॥
সারপ্তেভবং রোগং শোধমান্ত বিনাশরেং।
বা কেন্দ্বন্ধায়ঃ সন্তি লৈমিকাং সালিপাভিকাং।
তান সর্কান নাশরভাগ্তি স্বান্তর ইনেশ্দিতং॥

কটুতিল /৪ দের। ধুতুরাপতের রস /৪ সের, পুনর্নবার রস /৪ সের, নিসিক্ষা-পতের রস /৪ সের, দশমুলের কাথ /৪ সের, পালিধার রস /৪ সের, বরুণছালের রস /৪ সের। করার্থ—শুঠ, মহিচ, সৈন্ধর, পুননবা, কাকড়াশৃঙ্গী, বহুবার ছাল, পিপুল ও গজপিপুল প্রত্যেক ৪ তোলা। ইহা ছারা আমবাত, ভগন্মর, শোথ ও শিরংশূল প্রভৃতি নানা পীড়ার উপশ্য হয়।

রুদ্রতৈলম।

কোলাকে গণ্ড্ৰু হ- লিগ্ৰ শক্ৰাশনত চ।

স্ব্যানজন্ত স্ব্যাত প্ৰাণাং স্বরদং পূথক্।

জন্ম - শ-শৃত্ববেকত রসং দ্বা সনং সনন্।
কটুতৈলত পাত্ৰত শোৰ্ষিকা পচেদ্ ভিষক্।
রজনীয়নমঞ্জিচা কট্মলং কুফজীরকন্।
ভিকটু পিল্লীনুলং শান্তিবে বে বিড়ক্মন্ ।
রাসা দাক বলা দিবং মৃত্তম্ব চন্দনং তথা।
প্রশু ভৌ স্কুই মৃক্ষাপামার্সমূলকন্।

* কথারেভ্যত্র জনজীতি পাঠান্তরম্।

ষরসন্তব্যবেতেষাং ককং দত্ত্ব। তু পার্দিকম্।
মুৎপাত্রে স্থান্টে চৈব পাচমেৎ তীব্রবহ্নিনা ॥
বলাসমূর্দ্ধগঞ্চৈব নাশরেৎ ত্রিদিনাদ্ প্রবম্।
মুধনাসাক্ষিরোগাংশ্চ কফশোণিতসংখবান্ ॥
শিরোরোগং সন্নিপাতং শ্লাপদং গলগগুকম্।
অভ্যন্তানাশয়েদেতান্ পানাৎ কাসং ব্যপোহতি॥
ক্ষুকালাগ্রিনা প্রোক্তং কৃত্রইঃলমিদং পুরা ॥

কটুতৈল ১৬ দের। জয়পাল, ঘলঘদিয়া,
ধৃত্রা, শজিনা, দিদ্ধি, হড্হড়ে ও আকল
প্রত্যেকের পত্রের রদ ১৬ দের; গোড়ালেব্র
রদ ১৬ দের (পাঠাস্তরে জয়স্তীপত্রের) ও
আনার রদ ১৬ দের। কস্কার্পান্তরে) ও
আনার রদ ১৬ দের। কস্কার্পান্তরে,
দারুহরিদ্রা, মজিহা, কট্ফল, রুফজীরা,ত্রিকটু,
পিপুলমূল, অনস্তমূল, গ্রামালতা, বিড়ঙ্গ, রামা,
দেবলাক, বেড়েলা, নিমছাল, মুত্রা, রক্তচলান,
কোলালিয়া, কুড়লিয়া, দিজমুল, মুর্নামূল,
আপাক্ষমূল, শুক্রমাপত, সিদ্ধি, হড্হড়েপত্র
ও আকল্পত্র মিলিত ৪ দের। ইহার
অভালে শিরোবোগ, মুগরোগ, নানারোগ ও
চক্রোগ প্রভৃতি বিবিধ পীড়া এবং পানে শ্বাস
ও কাদ রোগ নই ইয়।

তপ্তরাজতৈলয়।

ধুজুরং পৃতিকং পীতা জয়ন্তী সিজুবারকম।
শিরীষং হিজ্জাং শিত্র দুশ্দুলং সমং ভবেং ॥
প্রস্থং প্রস্থং সমাদায় কটুতিলং সমাশেকম।
জলজোণে বিপক্তবাং গ্রাফাং পাদাবশেষিত্র ॥
গোম্ত্রকাচকং দ্রা শনৈমূ ছিলিনা পচেং।
নদনং ক্রাবণং কুউমজাজী বিশ্বভেষজম ॥
কট্ফলং বরুণং মুন্তং হিজ্জাং বিশ্বনেন চ।
হলিতালজনাপুস্মমূতং কুলটা তথা ॥
কর্কটং চন্দনং শিত্র্রমানী ব্যাধপাদপি।
এতেবাং কাহিকৈর্তাগ্রেং সম্ভাগং প্রক্রমের ।
কর্বাজমিতি গ্রাভং মহাদেবেন নির্ম্নিক্রম্।
সন্নিপাতং মহাঘোরং শিরোরোগং মহোভ্রম্ ॥
শিরশ্লেং নেত্রেরাগং ক্রিশ্লক দারশম্।
ভবাং দাহং মহাঘোরং পেন্টেক্রন্ মহোভ্রম্ ॥

কামলাং পাঙ্রোগঞ্চ হলীমকমণীনসম্। ত্রেয়োদশসন্থিপাতং হস্তি সন্তো ন সংশয়ং॥

কটুতৈল /৪ দেব। গোমূত্র ১৬ দেব। কাথার্থ—ধুভূরা, ভহরকরঞ্জ, নাটা, জয়ন্তা, নিদিলা, শিরীয়, হিজল, শজিনা ও মিলিত দশমূল প্রত্যেক /২ দের, জল ৬৪ দের, শেষ ১৬ দের। কলার্থ—মদনফল, ত্রিকটু, কুড়, ক্লাঞ্জীরা, শুঁঠ, কট্ফল, বরুণছাল, মুতা, হিজল, বেলশুঁঠ, হরিতাল, জ্বাপুষ্প, বিষ, মনছাল, কাক্ড়াশৃলী, রস্তেচলান, শজিনাছাল, যমানী, বৈচমূল প্রত্যেক ২ তোলা। ইহা বারা শিরংশূল, নেত্ররোগ, জ্ব, দাহ, কর্ণশূল প্রভৃতি বিধিধ পীড়া নিবারিত হয়।

তপ্তরাজতৈলম্।

লবলান'ং রদপ্রস্থং শিগ্রু মুন্তু রয়ো**ন্ত**পা। বাসকন্ত বসপ্রস্থং তথা নিশু'ডিক'র্করে'। দশ্যলং রস্প্রত্তং করঞ্বলয়ে ছেপা। পুথগোটের প্রেদ্ধানাংভেলপ্রস্থ সংক্ষম ॥ কৰ, কণা বলা শুঠী পিপ্ললীমূলচিত্ৰকম্। কটফলং কনক চবাং জ'রকং শতপুণিকা ॥ পুন্নব। হরিদা চ দেবদার চ লাকলা। **७कालकर् १७ विमकः कुलक तक्या।** যু হার্ককীরজেপাল-মূলং নাগদলং তথা। निष्कर रेमकवर कोतर ठलनर निर्वा करशनम् । मतिहर मधुकर तक्षा गुक्रा वााधी वन्नवक्ष् । এতেষাং কাষিকৈ: কলৈ বিপচেৎ পাকবিদ ভিষক ॥ অভ্যন্ত্ৰাৎ গ্ৰৈপ্মিকং হস্তি পানাৎ কাসং ব্যপোহতি। খ্যপুঞ্চোদরং শূলং শিরোরোগং শ্রন্থরম্ ॥ শিরঃশুলং নেত্রশুলং কর্ণপুলঞ্চ দারণম্। ত্রয়োদশ সন্নিপা গ্রান্ বাভন্নেমগলগ্রহান্। একজং দ্বন্দ্রটেঞ্ব ভথৈব সালিপাতিক্য। मक्तंः भाषः निरुखात बदः भीरानस्य ह ॥ শ্লেমরোগং নিহন্তা ও ভাস্কর তিমিরং যথা। ত প্রবাজমিদং তৈলমুক্জকাগদাপত্য ।

সর্বপতৈল /৪ দের। নোয়াড়, শজিনা, ধুত্রা, বাসক, নিসিন্দা, আকন্দ, দশমূল, করঞ্জ ও বেড়েলা প্রত্যেকের রস বা কাথ /৪ সের। কন্ধার্থ—পিপুল, বেড়েলা, উঠ, পিপুল-

মূল, চিতামূল, কট্ফল, ধুতুরাবীজ, চই, জীরা, গুল্ফা, পুননবা, হরিদ্রা, দেবদারে, ঈশ্লাঙ্গলা, গুজমূলা, কুড়, জরালভা, রুষ্ণ জীরা, সিজ আঠা, আকল আঠা, জরপালমূল, নাগদনা, বিজ্ঞা, সৈন্ধব, যবক্ষার, রক্তচলান, শাজনামূল, নীলফ্রাদি, মরিচ, যষ্টিমধ্, রাম্বা, কাক্ডাশৃঙ্গী, কণ্টকারী ও বক্ষণছাল প্রত্যেক ছই ভোলা। ইহা ব্যবহারে ক্রেম্মজ নোগ, কাদ, শোথ, উদ্ব, শূল, উৎকট শিরোরোগ, নেত্রশ্ল ও কর্ণশূল গুড়াত বিবিধ পীড়ার উপশ্য হয়।

वृह्द किक्षिगीरेज्नम् ।

কিছিণাপ্রস্থানকক্ষ প্রত্থা সহচরস্য চ।
কৃষ্ণপুত্রকপ্রত্থা প্রেক্ষ প্রত্থা সিদ্ধারকম্ ॥
পচেৎ পারে জনং দ্বা পাদশেষ সমুদ্ধারে ।
তলপ্রত্থা বিপক্ষরাং ক্রবাণানানি দাপরে ॥
ধর্ষা কণা পরোদক গলকং কুইমেন চ।
সমুদ্রান্তা তপা শুলা কিছিলাবাজনর্কম্ ॥
রামা নধুরিকা নিশ্বী-মূলমান্ত্রমেন চ।
বিধমাধুকমঞ্জিতা-শোভাঞ্জনহচং তথা ॥
এবাং ক্ষম্বর্মেক পিত্রা চাত্র সমাবণে ।
নিহ্নি পুতিকর্গক কর্পন্তং সক্তৃক্ম্ ॥
কর্ণনালং কর্ণশেষ বাধিধাং দাশেশ তথা ।
শিরোরে গ্রাং নেত্ররোগং মন্তান্তর্থা গ্রহ্ম নিশ্বা ॥

কটুতৈল /৪ সের। কাথাথ—হড় ছড়ে /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ /৪ সের; ঝাঁটা /২ সের, জল ১৬ সের শেষ /৪ সের; কালধুতুরা /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ /৪ সের; কালধুতুরা /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ /৪ সের; নিসন্দা /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ /৪ সের; নিসন্দা /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ /৪ সের; কিসন্দা /২ সের, জল ১৬ সের, শেষ /৪ সের। করার্থ—ঘট্টমধু, পিপুল, মুতা, গন্ধক, কৃড়, হুরালভা, কাল্ডাশ্সী, হড় ছড়েবীজ, রুরানীজ, রামা, মৌরি, ঝাঁটীমূল, জিণ্লাজলামূল, বিষ, মৌলফল, মজিঙা ও শজিনাছাল প্রত্যেক ৪ ভোলা। এই তৈল ব্যবহারে প্তিকর্ণ, কর্ণপ্রাব, কর্ণনাদ, কর্ণ-শোধ, বধিরতা ও শিরোবোগ প্রভৃতি অনেক পীড়ার শান্তি হয়।

কুমারীতৈলম।

কুমায়া; সর্সে প্রস্তে ধন্ত,রুমা রুসে তথা। ভুক্তরাজনা চ রলে প্রস্তুত্বসমাযুক্তে । চড়:প্রস্থমিতে কীরে হৈলপ্রস্থং বিপাচয়েৎ। কলৈন ধকহীবের-মঞ্জিষ্ঠাভদ্রমুস্থকৈ:।। নথকপু রভক্তৈলা-জাব গ্রীপত্মকুষ্ঠকৈ: । মার্কবাসকতালীশ-সর্জ্ঞান্যাশসপ্রকৈ: । বিড্**ঙ্গণ**তপুষ্পাহ-গুকাগন্ধক'হন্তকৈ:। শোকসর রিকেলাভ্যাং কর্মানৈরিপ'চিতে॥ উত্তার্থা বস্তপত্তর গুড়ে ভাগেও সুপপিতে। जिलाजमथ ७ छक शालाहम् निविध हिषक ॥ ততন্ত্র তৈলমভ্যাক্ত সাক্ষাক্তের নিমেক্তিরের : শময়েদদ্বিতং গাচমস্থাপ্তস্ত শ্রেগদ্বি॥ তাল্যনানাক্ষিজাতন্ত্র শোসম্ভাহলামকম। হত্তগ্রগদক্ষ বা বাধিনাং কর্ণবেদ্নম ।

তিলতৈল / ৪ সের। গুতকুমারীর স্বরদ / ৪ দের, ধুভূরার রম ১৪ দের, ভুক্সরাজের স্বরদ ০৮ সের, হল্প ১৬ সের। কলার্থ— নষ্টিমধু, বালা, মঞ্জিছা, নাগ্ৰমূতা, নথী, কপূৰ, দাকু-চিনি, এলাইচ, জীবন্থী, পদ্মকান্ত, কুড়, ভঙ্গ-রাজ, বাসক, তালীৰপার, বনা, তেজপার, বিভুন্ন, ওল্ফা, অখগ্রু, এরওম্ল, অশোক, नां ब्रिक्न, अरहाक २ (छानाः वर्शाती छि পাক স্থাধা করিয়া ছাকিয়া, প্রিদ্ধত ব ধুপিত মুংপাতে মাটির নীচে তিরাত পুঁতিয়া রাথিবে। এই জৈল মন্তর্মপে ব্যবহার করিলে শিরোরোগ প্রভতি উর্দ্ধক্রগত বচ বিধ রোগের শান্তি হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

শিরোরোগে পথানি।

স্বেদো নসাং ধুমপানং বিরেকো लिश्रक्तित जानः नीर्ननिष्टः।

রক্তোন্মক্তিবঁহিকর্ম্মোপনাহো कोर्नर मिर्निः भानग्रः मष्टिकः मह সুষো ভদ্ধং ধ্যমাংসং প্রেটালং बिडा जीका दाखकः काइरवल्लम् । बाजः शाजी माजियः माजुनुकः তৈলং তক্রং কাঞ্চিকং নারিকেলম্।। প্রধা কৃষ্ঠং ভুক্সরাজঃ কৃষ্ণরী মুস্তোশিরং চল্লিকা গন্ধসার: কপুরঞ্গাভিনানেষ বর্গ সেবেশ মার্ক্তাঃ শীর্ষরোগে মুখ্যসম 🛊

(यम, नष्ट, भूमभान, िरइइन, अटनभन বমন, উপবাস, শিরোবন্থি, রক্তমোকণ, অগ্নি-ক্ষা, মস্তকে প্রালেপ ব্যবহার, পুরাতন গুতু मानिषाच s वहिंदधाच, युन्गाभिन्य, छ्य. ध्यरम्भक गाःम, श्रःहोन, मिक्रना, मुक्रा, বেভোশাক, করকা, অন্ম, আমলকী, দাভিম, ছোলক লেয়, দৈল, তক্ত, কাজী, নারিকেল, হ্বীত্রকী, কুড়, ভুঙ্গরাজ, গুড়াগারী, মৃতঃ, বেণাৰ মুল, এলাইচ, খেতচন্দ্ৰ ও ৰংপুৰ, এই সকল শিবোবোগিগণকে দোষা**ত্যা**রে श्रामाश कदित ।

भिरतारतारगश्मभगानि ।

करक अध्यातनान्त्र-भिष्ण देवस्य त्रश्यक्षनम्। क्रुवेनीत्रः विक्रकां श्रः मध्यविकामित्रङ्ख्या । দত্তকাঠং দিবানিদ্রাং শিরোরোগী পরিভাগেও।

হাচিবেগ, জুম্ভণবেগ (হাই), মৃত্তবেগ, अध्ययम्, निकारिक धन् भारत त्वर भारत ; অঞ্জন বাবহার, দৃঘিতজ্ল, বিরুদ্ধদ্রবা, সহ্-গিরি ও বিদ্যাগিরি সমুদ্রত নদীর জ্ল, দস্ত-ধাবন এবং দিবানিজ্ঞা, এই সকল শিরোরোগী পরিতাগি করিবেন।

ইত্যায়ুর্কেদ-সংগ্রহে শিরোরোগাধিকারঃ।

অথাসৃন্দররোগাধিকারঃ।

অথাস্ফররোগ-নিদানম্।

বিক্রমান্ত্রাধ্যশনাদজীপাদ পর্ভপ্রপাতাদতিমৈথুনাচে।

যানাধ্বশোকাদতিকর্বপাচে ভারাভিযাতাচ্ছরনাদিবা চ।

অস্পরো ভবেৎ সর্বঃ সাক্রমদিং সবেদনঃ।

তক্তাতিস্ত্রো দৌর্বলাং ক্রমো মুর্চ্ছা মদস্তরা।

দাহঃ প্রনাপঃ পাঙ্জং তন্ত্রা রোগাল্ট বাতজাঃ॥

তং প্রেম্মপিত্যনিলস্থিপাতৈলচ্তুপ্রকারং প্রদরং বদস্তি॥

আমং সপিচ্ছাপ্রতিমং সপাপু
পুলাকতোরপ্রতিমং কদাৎ তু ।
সপীওনালাসিতরক্তমুক্তং
পিন্তার্ভিযুক্তং ভূপবেলি পিন্তাং ॥
কুকারুণং কেনিলমরমরং
নাডারি বাহাৎ পিশিতোদকাভম্।
সকৌপ্রসাপিইরিভালবর্ণং
মক্তপ্রকাশং কুণপং ক্রিলোবাং।
তকাপাসাধ্যং প্রবদ্ধি তজ্জান
ন তত্র কুলাঁত ভিষক্ চিকিৎসাম্॥

মিলিত ক্ষীর মংখাদি বিরুক ভোজন, মঞ্চপান, অধ্যশন, অপকভোজন, গর্ভপাত, অতিমৈগুন, যানাবরোহণ, পথপর্য্যটন, শোক ও উপবাসাদি ধারা অতিকর্ষণ, ভারবহন, অভিযাত ও দিবানিদ্রা, এই সকল কারণে প্রদরে রোগ উৎপন্ন হয়। সকল প্রকার প্রদরেই অক্ষমণ্ট ও বেদনার সহিত প্রাব

স্রাবের আধিকা ইইলে দৌর্কলা ত্রম মুর্চ্ছা মত্তচা তৃষ্ণা দাহ প্রলাপ দেহের পাণ্ডুতা তক্রা ও আক্ষেপকাদি বাতজ পীড়া সকল উপ-স্থিত হয়।

প্রদের চারি প্রকার। যথা—কফন্স, শিন্তজ, বাভন্ধ ও তিলোয়ক।

কফঙ্গ প্রদরে অপকরসমূক্ত পিচ্ছিল পাণ্ড্-বর্ণ ও মাংসধাবন জলসদৃশ স্রাব নির্গত হয়।

পৈত্তিক প্রদরে পীত নীল ক্লফ বা বক্তবর্ণ, উক্ষপ্রাব, দাছ ও চিষ্চিমাদি বেদনার সহিত প্রবলবেগে নিঃক্রত হয়। বাতিক প্রদরে রুক্ষ অরুণবর্ণ ক্ষেনযুক্ত ও মাংস্থাবন-জলতুলা প্রাব, তোদাদি বাত-বেদনার সহিত অর অর নিঃস্ত হয়।

সান্ধিপাতিক প্রদরে মধু মত বা হরিতালবৎ বর্ণবিশিষ্ট অথবা মজ্জাত ও শবহুর্গন্ধী আব নির্গত হয়। ইহা অসাধ্য, স্তরাং চিকিৎসায় ফললাত হয় না।

অথাস্ফররোগ-চিকিৎসা।

দরা দৌবর্চলাকাজী মধুকং নীলমুৎপলম। পিবেৎ কৌত্রযুতং নারী বাতাস্থলরশীড়িতা॥

বাতস্থাদর-পীড়িতা নারীকে দ্বি ৬ তোলা, সৌবর্চন ১ মাষা, রুফজীরা, ষ্ট্রিমধু, নীলোৎপল প্রত্যেক ।• আনা, মধু॥• ভোলা একত্র মিশ্রিত করিয়া ২ ঘণ্টা অস্তর ২ তোলা মাত্রায় সেবন করিতে দিবে।

পিবেদৈশেরকং রক্তং শর্করামধুসংযুত্তন্। বাসকপ্রসং পৈতে ওড়্চা রসমেব বা ।

পিত্তজ রক্তপ্রদরে হবিণরক্ত (দশমূলের কাথে মর্দন করিরা) চিনি ও মধুর সহিত সেবন করিবে। অথবা বাসকের স্বরস কিংবা শুলক্ষের স্বরস চিনি ও মধুর সহিত সেবন করিবে।

রোহিতকামূলককং পাওরেহস্পারে পিবেৎ। জলেনামলকারীজ-ককং বা সসিতামধু॥ ধাতকাশ্চাক্ষমাত্রং বা আমলকা মধুক্রবম। কাকজাসুকমূলং বা মূলং কাপাদমেব বা। পাঙ্গদরশাস্তার্থং পিবেৎ তঙ্গবারিশা॥

পাপুপ্রদরে নিমোক করেকটি বোগ প্রারোগ করিবে। রোহিতক-(রয়না)-র্ক্লের মূল জলে পেষণ করিয়া মধু ও চিনি সহ, আমলকীর বীজ জলে পেষণ করিয়া মধু ও চিনি সহ, ধাইফুল কক্ষ ২ তোলা মধু সহ, আমলকীর কক্ষ ২ তোলা মধু সহ, কাকজ্জ্বার মূল
অথবা কার্পাসমূল তঞ্লোদক সহ সেবনীয়।

রস:ঞ্জনং তণ্ডুলিয়ক্ত মূলং ক্ষৌদ্রান্বিতং তণ্ডুলতোয়ণীতম্। ক্ষপুসম্বাং সর্ব্যভবং নিহন্তি কাসঞ্চ ভাগী সহ নাগারেণ ॥

রদান্ধন ও লালনটের মূল পৃথক্ পৃথক্ বা একত্র মধু ও তণ্ডুলোদকের সহিত দেবন করিলে সর্বপ্রকার রক্তপ্রদর প্রশানিত হয়। মক্তপ্রদরে খাস উপদ্রব দৃষ্ট হইলে এই যোগের সঙ্গে বামুনহাটা ও শুঠ মিপ্রিত করিবে।

কুশমূলং সমৃদ্ধৃত্য পেষয়েৎ তওুলাস্থা। এতৎ পীড়া হোৱারী প্রদর্গৎ পরিষ্চাতে।

কুশমূল তণ্ডুলোদকে পেষণ করিয়া পান করাইলে তিন দিবসের মধ্যে প্রদর হইতে রোগিণী মুক্তিলাভ করিবে।

কৌজবুতং ফলরসং কাঠোড়ুম্বরজং পিবেৎ। অসংদর্বিনাশায় সংক্রপয়েংগ্রুক ॥

মধুর সহিত কাঠছুমরের রস বেবন করিয়া চিনির সহিত ছগোল পথা করিলে রক্তপ্রদার বিন্তু হয়।

প্রদরং হরি বলায়া মূলং ছুদ্ধেন সংযুত পীত্র। কুশবাট্যালকমূলং তঞ্লসলিলেন রজ'থাম্॥

ছাগহন্ধের সহিত বেড়েলার মূল অথবা কুশমূল ও বেড়েলার মূল তওুলোদকের সহিত পেষণ করিয়া সেবন করিলে বক্তপ্রদর নিবারিত হয়।

গুড়েন বদরীচূর্ণ নোচমানং তথা পরং। পীতা লাক্ষা চ সন্মতা পৃথক্ প্রদরনাশনম্॥

গুড়ের সহিত কুলন্ত চুর্গ কিংবা কেবল গুয় বা কাঁচাকলা চুর্গ ভোলা অথবা মতের সহিত লাক্ষাচুর্গ সেবন করিলে প্রাদর্রোগ প্রশমিত হয়।

ভূম্যামলকচূর্বন্ত পীজং ভঙ্গবারিণা। দিনতথান্তরেশৈব ন্ত্রীরোগং নাশমেগুরুমু ॥ ভূমাামলকীর চূর্ণ তণ্ণুলোদকের সহিত সেবন করিলে ভিন দিবসের মধ্যে স্ত্রীরোগ সকল প্রশমিত হয়।

শর্করা মধুকং শুস্তী তৈলং দ্ধি চ তৎসম্ম। খজেন মণিতং পীতং হস্তাদ্বতাবিতং রজঃ।

চিনি, যষ্টিমধু, শুঠ, তৈল ও দণি এই সকল দ্রব্য একতা মথিত করিয়া পান করিলে বাত্রক প্রদর বিনষ্ট হয়।

মধুকং কৰমেকস্ত কৰৈকাঞ্চ সিভাং তথা। ভণ্ডলোদকসন্পিষ্টাং লোহিতে গ্ৰন্থর পিরেও॥

ষষ্টিমধু ২ তোলা ও চিনি ২ ভোলা ভঙুলোদকে পেষণ করিয়া পান করিলে রক্তপ্রদর নিবারিভ হয়।

বলা কক্ষতিকাথা যা ওস্তা মূলং সুচ্গিত্য। লোহিতপ্ৰদৰে গংলেচছক্ষামধুসংযুভ্য ॥

কক্ষতিকাখ্য বেড়েলার (গোরক্চাকুনের) মূল ক্লা চূর্ণ করিয়া মধু ও চিনির সহিত সেবন করিলে রক্তপ্রদর উপশ্যিত হয়।

গুচিপ্তান ব্যাঘনপ্তা ফুলম্ভর্দিগ্ভব্ম। নাতমুভ্রদণ্ডাত্ত কটাবশ্বং হরেদ্পক্।

উত্তরদেশুনী নক্ষত্রে বিশুদ্ধ স্থান হইতে উত্তর্দগ্রাত ব্যাহ্মনগাঁর মূল উঠাইয়া অস্থ্যদাপীভিতা নারীর কটাদেশে বন্ধন ক্রিয়া দ্লে হক্তপ্রদর প্রাণ্ডিত গ্রেষ

অংশাক্ষকলকাথ-শৃতং ছগং ক্ষীতলম্।
যথানলং পিবেৎ প্রাত্তীরাস্প্রনাশনম্।
(ষড়ক্সপরিভাষয়ার্জিণ্ডমশোকবন্ধলকাথং গৃহীয়া
তেন চতুপ্তিশিন ক্ষারং সাধানিত্যতি। বৃদ্ধান্ত কাথা
মতুদ্ধৈৰ ক্ষারসাধনপ্রিভাষয়া ব্যবহরস্তাতি চত্তীকা)।

অশোকছাল ২ তোলা, জল /১ সের, অবলিপ্ত /।।• সের থাকিতে /।।• সের ছথের সহিত মিশ্রিত করিয়া প্নঃ প কে ছথাবলৈ রাণিবে। (রুদ্ধ বৈভাগণ ক্ষীরসাধন পরি-ভাষাত্মারে অশোকছাল ২ ভোলা, ছথ ১৬ ভোলা, জল /১ সের; ছথাবলেষ থাকিতে নামাইবে; ইহা ব্যবহার ক্রিয়া থাকেন)। রোগির বলামুসাবে মাজা হিব ক্রিয়া প্রাতঃ-

কালে সেবন করিতে দিবে। ইহা বারা তীব রক্তপ্রদর প্রশমিত থাকে।

রক্তপিত্তবিধানের প্রবর্গংশ্চাপুগণাচরেও।
রক্তাতিসার বৃদ্ধান বক্তাশোবিও তথৈব চ।
তথ্যস্পরে বিশেষেণ কৃট্ডাস্টক ইব্যতে।
(রক্তপিত্তবিধানেনেতি অধোগতরক্তপিত্তবিধানেন
ইতি চক্রটীকা)।

রক্তপ্রদর রোগে অশোগ রক্ত,পিও, রক্তাতিমার ও রক্তাশের স্থায় চিকিৎসা করিবে। ইহাতে কুটজাষ্টক বিশেষ উপকারী।

অলাব্যুলচূর্ত শকরাসহিত্ত চ। মধুনা মোদকং কুলা খাদেৎ প্রদর্শাভয়ে॥

ভিতলাউয়ের বীজ চূণ ও চিনি সমভাগে লইয়ামধু সহ মোদক প্রস্তুত করিয়া সেবন করিলে প্রধের শাস্তিহ্য।

বংসাক্ষায়সভিতঃ বসভন্ম প্রোঞ্জিত্য। প্রদর্গত হাজি বেগেন সংক্ষান্ত নাত্র সংশয়র ॥

বাস'কৰ কাপ ও মধুসহ বৰ,সক্ত সেবন কবিলে অভিসহৰ প্ৰান্ত নষ্ট হয়। মূলক শ্বপুডায়া, পেষয়েই এছলামূমা। প্ৰাচ্চক্ষাক্তিয় মেডিবছং প্ৰশাস্থাই।

শরপৃথার (বননীলের) মূল তড়লোদকে পেষণ করিয়া ২ তোলা মাত্রায় পান করিলে অতিরিক্ত রক্তরাব নিবাধিত হয়।

मार्क्ता मि-काथः।

দানৌরসাঞ্জনবৃষ্ট্দাকরা এবিখ-ভল্ল তকৈরবকুতো মধুনা ক্ষায়ঃ। পীতো জনতাতিবলং প্রদরং সশ্লং পীতং সিতারপ্রিলেছিতনলৈ এবমু॥

দারহরেন্দা, রদাঞ্জন, বাদক, মুতা, চিরতা, বেলক্টঠ ও ভল্লাতক (কেহ বলেন কুমুদপুষ্ণা, ১ ভাগ) ইগাদের কাথে মধু প্রক্ষেপ দিয়া দেবন কারলে শ্বেত রক্ত প্রভৃতি সর্বপ্রকার সণ্ল প্রদর নষ্ট হয়।

উৎপলामिः।

কন্দং রক্তেৎপলন্তাম রম্ভকাপাসমূলকন্। করবারক্ত মূল।নি ওপা রক্তোড্রমূলকম্। বকুলসা তথা মূলং গন্ধমাতৃকজীরকে।
রক্তন্দনকলৈ সমভাগক কারছে ।
তপুলোদকসংপিষ্টং রক্তমূ হায় দ্পেরেং।
গোনিশ্লহরঃ প্রোক্ত উৎপলাদিন সংশারঃ ॥
(তপ্রলোদকেন গোলয়িফা পেরঃ)।

রক্তোৎপল, লালকাপাস, করবী, রক্তজবা ও বকুল ইহাদের মূল; গন্ধমাত্রা, জীরা ও রক্ত5ন্দন, এই সম্দায় সমভাগে তণুলোদকে পেষণ করিয়া সেবন করিলে রক্তমূত্র প্রভৃতি বছরিব স্থীবোধের শান্তি হয়।

ठन्मनामिष्ट्रंभ्।

চন্দ্ৰ নলকং লোগ্ৰন্থকং প্ৰকেশ্বন্ধ্নপ্ৰপ্ৰপাপি বিলগ্ৰ ভদ্ৰন্ত্ৰক শ্বনা ।

কালেকে পালেকি ভদ্ৰন্ত্ৰক শ্বনা ।
কালেকে পালেকি ভ্ৰতিক জন্ম কালেন্ধ্ৰ ।
কালেকে পালেকি বিলাখাতেকা চাল্লালিক ।
নালাকেলেন্ধ্ৰ সম্ভাবিতিক । নালাকেলেন্ধ্ৰ ।
চাতুলিকে শ্বনা চালাকেলেন্ধ্ৰ ।
চাতুলিকে শ্বনা কালেন্ধ্ৰ ।
চাতুলিকে শ্বনা কালেন্ধ্ৰ ।
চাতুলিকে শ্বনা কালেন্ধ্ৰ ।
বাত্ৰানিক শ্বনা ভালিক জিলিক্ৰ যথা ।
আমিন্তাৰ সম্ভাবিতিক ভালিক জিলিক ।
(এতানি চুলানি সমভাগানি এক কাল্য মাৰ্কচতুল্বিত ভ্ৰানিক কালিক মধুনা চাল্যালিক এক কাল্য মাৰ্কচতুল্বিত ভ্ৰানিক কালিক মধুনা চাল্যালিক আলিকে ।

রক্তচন্দন, জটামাংশী, লোধ, বেণার মূল, প্রাকেশর, নাগেশর, বেণান্ত ঠ, নাগরমূতা, চিনি, বালা, আক্নাদি, ইক্রম্ব, কুড় চির ছাল, শুঠ, আতইচ, ধাইফুল, রমাঞ্জন, আদ্রকেশী, জামের আটি, মোচরস, নীলোৎপল, বরা-ক্রাস্ত, ছোট এলাইচ ও দাড়িম ফলের ছাল, প্রত্যেক চুণ সমভাগ; একত্র মদন করিয়া লাইবে। মাত্রা—৪ মাধা। অকুপান—মধু ও তণ্ণাদক। ইহা সেবন করিলে চারিপ্রকার প্রদর, উৎকট বক্তাতিসাব, রক্তপিত ও রক্তার্শ প্রশাসত হয়।

পুষ্যাকুগং চুর্গ ।

পাঠা জন্মব্রেমে খাং শিলাভেদং রসাঞ্চনন্।
অবঠনী মোচরস: সমঙ্গা পলকেশরন্॥
বাহলীকাতিবিষা মৃত্যং বিখং লোগ্রং সগৈরিকন্।
ক্রিকলং মরিচং শুস্তী মুখীকা রক্তচন্দনন্॥
কট্মবংসকানস্তা ধাতকী মধুকার্জ্জন্ন।
প্রোণোজ্ত্য তুল্যানি প্রক্রুত্বিক কাররেং॥
ভানি কৌরেশ সংবোজ্য পাররেং তঙ্লাব্না॥
অফলরাতিসারের রক্তং যডোপবেশুতে।
দোবাগন্তকৃতা যে চ বালানাং তাংশ্চ নাশরেং॥
বোনিদোবং রক্লোদোবং খেতং নীলং সপীতকন্।
বীশাং প্রবাহ্নপার বচচ তং প্রস্থা নিবর্জরেং॥
চুর্ণং প্রাহুগং নাম হিত্যাক্রেরপ্রিতন্।
অ্বঠা দক্ষিণে খ্যাতা গুরুন্তান্ত তুলক্ষণান্॥

আক্নাদি, জাম আঁটির শস্তু, অাটির শহা, পাষাণভেদী, রদান্তন, অন্বৰ্চকী (দক্ষিণাপথে খ্যাত তরুবিশেষ, অভাবে লক্ষণা, তদভাবে আকুনাদি গ্রহণ করিৰে). মোচরস, বরাক্রান্তা, পদ্মকেশর, কুদ্ধুম, আত-ইচ, মুতা, বেলগুঠ, লোধ, গেরিমাটী, ত্রিফলা, মরিচ, শুঠ, জাকা, রক্তচন্দন, শোনাছাল, কুড়্চি ছাল, অনস্তম্ল, ধাইফুল, যষ্টিমধু ও অব্দুনছাল এই সমুদায় দ্রবা প্রানকতে সংগ্রহ করিয়া সমভাগে চূর্ণ ও মিশ্রিত করিবে। মাত্রা যথোপসূক্ত (এক মাধা হইতে ২ মাধা পর্য্যন্ত । অমুপান—মধু ও তণুলোগক। ইহাতে অস্থানর, অভিসার, যোনিদোষ ও রজোদোষ প্রশ্মিত ইয়।

পুকরলেহঃ।

নদাল্লনং গুড়া শৃষী চিত্রকং সধুষ্টিকন্।
ধান্ততালীশগায়ত্রী দিজীবং তিবুতা বলা ॥
দক্তী জ্যাবশক্ষাপি পলার্দ্ধক পৃথক্ পৃথক্।
চতুপানং মান্দিকতাসগত চ কিপেৎ ততঃ।
লাতীকোলনকক ককোলং মুখাকাপি চ।
চাতুর্জাতকথজ্নং কর্বমেকং পৃথক্ পৃথক্ ॥
প্রাক্ষিণা স্ক্রিয়া চ বিশ্বভাগে নিধা পরেং।
বাব কেবেরঃ শ্রীদঃ সর্ব্রোগক্লাক্ষঃ।
বাব বাব ক্রোলাঃ ভাব তত্তলাম্বনাশনঃ।
কর্পানং প্রোভাগং দেশকালাকুসারতঃ।

সর্বোপজবসংযুক্তং প্রদরং সর্বসম্ভবম্।

দক্ষকং চিরন্ধকৈ রক্তপিতং বিনাশয়ে ।

কাসদাসায়পিত শ কয়রোগয়শাপি বা ॥

সর্বরোগপ্রশমনো বলবপাথিবর্দ্ধনা ।
পুরুরাব্যো নেহবরঃ সর্বাব্যোপযুক্ষাতে ॥

রসাঞ্জন, বংশলোচন, কাঁক্ড়াশৃঙ্গী, চিতা, যষ্টিমধু, ধনে, তালীশপত্র, থদির, জীরা, রুষ্ণ-জীরা, তেউড়ী, বেড়েলা, দন্তী ও ত্রিকটু এই সকল দ্রব্য প্রত্যেক ৪ তোলা; উৎকৃষ্ট মধু ৩২ তোলা, জৈত্রী, লবঙ্গ, ককোল, দ্রাক্ষা, গুড়ুঙ্ক, এলাইচ, তেজপত্র, নাগেশ্বর ও থর্জুর প্রত্যেক ছই তোলা, একত্র সর্দান করিয়া স্লিগ্ন জাণ্ডে স্থাপন করিবে। এই লেহ সকলের শ্রেষ্ঠ ও সর্বারোগের বিনাশক। দেশ ও কাল বিবেচনা করিয়া অন্থপান প্রয়োগ করিবে। ইহাতে সকল প্রকার উপদ্রব সংযুক্ত প্রদর, বুলুজ ও চিরুজ রক্তপিত্র, কাল, খাল, অমুপিত্র ও ক্ষম প্রভৃতি রোগ বিনষ্ট হয়। এবং ইহাবল, বর্ণ ও অগ্রির বদ্ধক। সকল স্থানেই এই পৃদ্ধ লেহ প্রয়োগ করা যায়।

মধুকান্তবলেহঃ।

নপুকং চন্দনং লাকা রক্তোৎপলরসাঞ্জন্য।
কুপবীরপয়োমূলং বলংবাসকয়োন্তথা ॥
কোলমজ্ঞাপুলং বিবং পিচছা দাবলী চ ধাতকা।
কলেমজ্ঞাপুলং বিবং পিচছা দাবলী চ ধাতকা।
কাজস্কুকিশলয়ং কোমলং নলিনাগলম্।
শতমূলা বিদারী চ রক্তং লোহমত্রকম্ ॥
এবাং কোলনিতং চুর্বং দিগুণা সিতশকরা।
বরীরসভ প্রভার্কে পচেগ্রেলন বছিলা ॥
ঘনীভূতে কিপেচচুর্বং শীতীভূতে পলং মধু।
মধুকাল্ভবলেহোহয়ং মহাদেবেন ভাষিতঃ ॥
ছন্তরং প্রদরং হন্তি নানাবর্ণং সবেদনম্।
যোনিশূলং কুকিশুলং বন্তিশূলং ফ্রুসহম্ ॥
রঙ্গাতিসারং রক্তাশো রক্তপিতং চিরোভ্রম্।
মূত্রোগানশেষাংক্ত দাহং মোহং ব্মিং ভ্রম্।
নাশয়েরাত্র সন্দেহে। ভাষ্ণরন্থিররং যথা ॥

চিনি ৫২ ভোলা ও শতমূলীর রদ /২ সের একতা পাক করিবে। ঘনীভূত হইলে যষ্টিমধু রক্তচন্দন, লাকা, বক্তোৎপলের মূল, বদাঞ্চন, কুশমূল, বেণার মূল, বেড়েলার মূল, বাসকমূল, কুল আঁটির শস্তু, মূতা, বেলগুঁঠ, মোচরদ, দারুহরিদ্রা. ধাইফুল, অশোকছাল, দ্রাক্ষা, জবাফ্লের কুঁড়ি, কচি আমপত্র, কচি জামপত্র, কোমল পদ্মপত্র, শতমূলী, ভূমিকুশ্বাণ্ড, রৌপ্য, লোহ ও অল্ল প্রত্যেক ২ তোলা চুর্ণ প্রক্ষেপ দিয়া আলোড়ন করিবে। শীতল হইলে মধ্ ১ পল মিশ্রিত করিবে। ইহা দেবন করিলে নানারূপ প্রদর, যোনিশূল, কুক্ষিশ্ব, বস্তিশ্ব, রক্তাতিসার ও রক্তামাশর প্রভৃতি পীড়ার শাস্তি হয়।

श्रमताति (लोशः।

বংশকন্ত তুলাং সমাগ্ জলজোণে বিপাচয়ে ।
জন্তভাগান্পন্ত কৰায়মবতারয়ে ॥
বস্ত্পতে খনাভূতে ধনাগ্মানি দাপয়ে ।
সমসা শাসালং পাঠা বিবং মৃত্ত ধাতকা ॥
অকণা ব্যোমকং লোছং প্রত্যেকন্ত পলং পলম ।
কোলমারেং প্রযুগত কুশমূলং পরো জন্ত ॥
থেতং রক্তং তথা নালং পীতং প্রসমন্তর্ভাগাম্ ।
কুকিশ্লং কটাশূলং দেহশূলক সর্কাম্ ॥
প্রদানিরয়ং লোভো হত্তি রোগান্ প্রভ্রান্ ।
আনুঃপৃত্তিকর্তৈর বলবণীয়িবদ্ধন ॥

কুড় চিছাল ১২০০ সের, পাকার্থ জল ৬৪
সের, শেষ ৮৮ সের। এই কাথ ছাকিয়া
লইয়া পুনর্বার পাক করিবে। ঘনীভূত হইলে
নিমলিখিত দ্রব্য সকল প্রক্ষেপ দিবে। প্রক্রেপা
দ্রব্য যথা—বরাক্রান্তা, মোচক্রে, আকনাদি,
বেলগুঠি, মৃত্য, পাইফুল, আতইচ, অত্র ও লোহ
প্রত্যেক চুর্ণ ১ পল। মাত্রা—১ তোলা।
কুশমূল বাটিয়া জলে গুলিয়া ভাহার পহিত
এই ঔষধ সেব্য। ইহাতে নানাবিধ প্রদর,
কুক্ষিশূল ও ক্টাশূল প্রভৃতি নিবারিত হয়।

প্রদরান্তক-লোহয়।

লোহং ভাত্তং হ্রীতালং বঙ্গমত্রং বরাটিকা। ত্রিকটু ত্রিফলা চিত্রং বিড়ঙ্গং পটুগঞ্কম্। চবিকা পিশ্লনী শব্বাং বচা হব্বপালকম্।
শটা পাঠা দেবদাক এলা চ বৃদ্ধদারকম্ ॥
এতানি সমভাগানি সংচ্পা বটিকাং কুরু।
শর্করামধুসংযুক্তাং যুতেন ভক্ষরেৎ পুনঃ ॥
রক্তং খেতং তথা পীতং নীলং প্রদরমুভ্রম্ ।
কুক্শিলং কটাশূলং বোনিশূলক সর্বাপ্ন ॥
নন্দাগ্রিমরুচিং পাড়ং কুদ্রুভ্যখ্যক কাসক্ৎ।
অায়ুঃপৃষ্টিকরং বল্যাং বলবর্পপ্রসাদনম্ ॥
(পালকং কুঠম্)

নেই, তাম, হরিতাল, বঙ্গ, অল্ল, কড়িভন্ম, ত্রিকটু, ত্রিফলা, চিতামুলু, বিড়ঙ্গ, পঞ্চলবণ, চৈ পিপুল, শঙ্খভন্ম, বচ, হবুয়, কুড়,
শঠী, আক্নালি, দেবদারু, এলাইচ ও বুদ্ধারক,
এই সকলের সমভাগ চুর্ণেবিটী প্রস্তুত করিয়া
ছত, মধু ও চিনি সহ সেবন করিলে রক্ত,
খেত, নীল ও পীত প্রভৃতি স্তুত্তর প্রাদর,
কুন্দিশ্ল, যোনিশূল, মন্দাগ্নি, অরুচি ও খাস
প্রভৃতি রোগ উপশ্মিত হয়। ইহা পৃষ্টিকর
ও বলবর্ণ প্রসাদক।

লক্ষণালোহ্য ৷

লক্ষণায়া পলশতং কাশয়িত্ব বথাবিধি। কাথে পৃত্ত পুনা পকে খনীভূতে চ নিক্ষিপেং॥ অংশাকং কুশমূলক মধ্কং মধ্কং বলাম্। পঠিং বিষং পলোনানং লৌহং সক্সমং তথা॥ লক্ষণালৌহনামেদং ভেষজং কীগদাপ্তম্। জগতামুপকারায় দ্রাভাং প্রিনিদ্মিত্ম॥

লক্ষণামূল ১২॥০ সের, পাকার্থ জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। এই কার্থ ছাকিয়া পুনকার পাক করিবে। ঘনীভূত হইলে অশোকমূলের ছাল, কুণমূল, মৌলফ্ল, যৃষ্টিময়ু,
বেড়েলা, আক্নাদি ও বেলও ঠ প্রত্যেক ১ পল
এবং লৌহ ৭ পল, এই সম্নায় প্রক্রেপ দিয়া
যথাবিধি পাক সমাপ্ত করিবে। অর্দ্ধ ভোলা
মাত্রায় উষ্ণভূগ্ধ বা জলের সহিত সেবনীয়।
এই লক্ষণালোহ সেবন করিলে বিবিধ লীরোগ
প্রশামত হইয়া থাকে।

প্রদরান্তকরসঃ।

শুদ্ধস্তং তথা গদ্ধং শুদ্ধবৃদ্ধক্ পৃথক্ ।

থপরঞ্চ বরাটক শাণমানং পৃথক্ পৃথক্ ॥

তৃতীয়তোলককৈধ লৌহচূর্ণং ক্ষিপেৎ স্থবীঃ।
কন্সানীরেণ সংমদ্য দিনমেকং ভিষণ্ণর:।
অসাধ্যং প্রদরং হস্তি ভক্ষণানাত্র সংশয়ঃ॥
(শুদ্ধবৃদ্ধকরপ্যক্ষিত্যক্র গদ্ধতৃদ্যক রূপ্যক্ষিতি
বা পাঠঃ।)

পারদ, গদ্ধক, বঙ্গ, রোপা, খপা ও কড়ি-ভন্ম প্রত্যেক॥ তোলা, লোগ ও ভোলা, এই সম্দার ১ দিন স্বত্তুমারীর রসে মাড়িয়া বটকা প্রস্তুত করিবে। ইছা সেবন করিলে প্রদেব রোগ প্রশমিত হয়।

চক্দাংশুরসঃ।

রস্ক্রমরো বৃহ্ণ গজকং কল্পক সুনা।
মর্জারিকা বটাং বুয়াণ্ গুলাক্ত প্রমাণ্ডঃ ব জারকাপেন পীতোহয়ং রস্কল্যাংওসংজকঃ। জরায়ুদোষান্ধিলান্ যোনিশুলং ফ্যাক্রম্। যোনিক জ্বা আরোনাদং যোনিবিক্সেপ্যং তথা। নিরাক্রোতি সভাপং চল্যাংওদে হিনো যগা।

পারদ, গন্ধক, অল্ল, লৌহ ও বঙ্গ এই সমুদার সমান সমান লইরা স্বতকুমারীর রদ সহ মাজিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। অমুপান—জীরার কাপ। ইহা সেবন করিলে জরায়ুদোষ, যোনিশূল, যোনিকগু ও স্মরো-ন্মাদ প্রভৃতি পীড়ার শাস্তি হয়।

স্কাঙ্গত্নরঃ।

গগনং শোধিতং গ্রাহাং পলৈক্ষিষ্টকাসমন্।
টক্ষণং স্থাচ্চতুর্বাংশং শাণাগ্রিং জিকুগদ্ধিকন্।
কপুরং নগদকৈ জাতাকোবং জলং ঘনন্।
নাগে,বরলবকক কুঠং সজিফলং তবা ॥
জলেন বটিকা কাথা চাময়া শোবমেৎ তু তান্।
ক্রম্বং নাশহেৎ সর্কং সাজনর্দং সবেদনন্॥
ক্রম্বাটিকাল (রোগান্ মন্দাহিমতিদারণন্।
সক্ষর গ্রহণিকের রক্তপিতমরোচকন্।
কাসান পর্ক প্রভিশ্যারং বাসং ক্রমোগ্রেব চ॥

ইপ্তকের ন্থায় বর্ণস্ক্ত শোধিত অত্র > পল, সোহাগার থৈ ২ তোলা; দারুচিনি, এলাইচ, তেজপত্র, কর্পূর, বেণার মূল, জৈত্রী, বালা, মূতা, নাগেশ্বর, লবঙ্গ, কুড় ও ত্রিফলা প্রভাবে চারি আনা পরিমিত। জল সহ মদ্দন করিয়া (২ রতি মাত্রায়) বটিকা প্রস্তুত করত ছায়ায় শুদ্ধ করিবে। ইহা সেবনে অক্সমর্দ ও বেদনার সহিত সর্বপ্রকার প্রদর, বাত্রজ রোগ, অগ্রি মান্দ্রা, গ্রহণী ও কাস প্রভৃতি রোগ নিবারিত হইয়া থাকে।

শিলাজতুবটিক।।

শুদ্ধত্বং সমং গগং রক্তোৎপলদলন্তবৈ ।
কৌট্জেনান্তবা চাপি মন্দ্রেদ্ দিবদল্বম্ ॥
শিল'জতুপলান্তক্তী তাবতী সিতশকরা ।
মকন্তবা শিল্পান্তবি ধার্লী ককটাল্যা পলোলি লা ॥
শিল্পিকক্ষেণ্ডাল্ডাং পলং গুণােব কিলাতক্য ।
মধুনঃ পলসংযুক্তং বুল্যাদক্ষমান গুড়ান ॥
দ্যাদ্ধিসমূলয়ান পিবেলিবলি ভুক্ত এব বা ।
পা ভুক্তজ্বলাহ-ত্যকালোভগল্বনা ।
পুতিবিল্পিক্তাদি-দোষ্টেইস্বাদ্ধান ॥
পুতিবিল্পিক্তাদি-দোষ্টেইস্বাদ্ধান ।
পুতিবিল্পিক্তাদি-দোষ্টেইস্বাদ্ধান ।
ভান্ সর্বান্ স্তব্যং হস্তি সর্বাদ্ধানকা শিবা ॥
(চল্প্রভাক্তং শিল্পিজ্গোধনং কাষ্য্য ।)

পারদ ১ তোলা ও গন্ধক ১ তোলা, রক্তোৎপলপত্তের ও কুড়্চিছালের রদে ছই দিন মদান করিয়া তাহার সহিত লিলাঞ্ছু ৮ পল, চিনি ৮ পল, বংশলোচন, পিপুল, আমলা, কাকড়াশৃঙ্গী, কেটকারীর ফল ও মূল, গুড়ত্বক্, তেজপত্ত ও এলাইচ এবং মধ্ প্রত্যেক ১ পল মিশ্রিত করিয়া মদান করিবে। মাঞা—২ তোলা পর্যান্ত। অমুপান—দাড়িমের বদ, হুগ্ধ, প্রিমাংসরদ ও মুবাদিত জল। ইহাতে পাণ্ডু, অর্শঃ, ভগন্ধর ও প্রদ্ব প্রভৃতি বহু রোগের শাস্তি হয়।

রত্বপ্রভা বটিক।।

ষ্ঠং মৌতিকমত্রক নাগং বঙ্গক পিতৃত্বম্ । মাঞ্চিকং রক্তং বক্তং জৌহং তালক পর্পরম্ ॥ কদল্যাঃ কাকমাচ্যান্চ বাসকক্ষোৎপক্ত চ।

স্বর্মেন জরস্ত্যান্চ কপুরসলিলেন চ॥
ভাবরিদ্ধা যথানাস্ত্রমহোরাত্রমতঃপরম্।
সংসদ্যাতল্রিতঃ কুর্যাদ্ভিবগ্ গুপ্পামিতা বটাঃ ।
একৈকাঞ্চ প্রযুপ্পতি প্রতিরাশং বলাস্থনা।
উক্ষেন প্রসা বাপি কেশরাজরনেন বা॥
ইয়ং রত্নপ্রভানামী বটিকা সর্বসিদ্ধিদা।
সর্বস্তীরোগহন্ধী, চ বল্যা বুষ্যা রসায়নী।

ষ্বৰ্ণ, মুক্তা, অল্ল, সীদা, বঙ্গ, পিত্তল, ষ্বৰ্ণমাক্ষিক, রৌপা, হীরক, লৌহ, হরিতাল ও
পর্পর প্রত্যেক সমভাগে লইয়া কদলীমূল,
কাকমালী, বাদকছাল, স্থাদিফুল ও জয়ন্তীর
রসে এবং কর্পুরের জলে যথাবিদি ভাবনা
দিয়া এক দিবারাত্র জনবরত মর্দন করত >
রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। «বেড়েলার কাথ,
উষ্ণহ্য অথবা কেগুরিয়ার রদের সহিত্ত
প্রাতঃকালে দেব্য। এই বটিকা দেবনে সমস্ত
স্বীরোগের নাশ এবং বলবীর্যা, দির বৃদ্ধি হয়।

অশোক-ন্নতম্।

আশাক্ষণপ্রস্থাং তোয়াতক্বিপাচিত্য।
পাদছেন মৃত্যুহং জীরককাপসংযুত্যু ।
তত্ত্বাপু হলাকারং মৃতত্ত্বাং প্রদাপয়েং।
তত্বাপু হলাকারং মৃতত্ত্বাং প্রদাপয়েং।
তত্বাপু হলাকারং মৃতত্ত্বাং প্রদাপয়েং।
তত্ত্বাপু হলাকারং প্রস্তাহার পরাজ্বাং।
বিস্তাহারেশাক্ষণক মুখীকা চ শতাবরী ।
তত্ত্বায়কম্লক মুখীকা চ শতাবরী ।
তত্ত্বায়কম্লক ককৈরেভিঃ পলাদ্ধকৈ ।
শ্করারাং পলাস্তাহী সিদ্ধনীতে প্রদাপয়েং ॥
প্রাধ্যোগন তৎ সর্পিঃ শনৈম্বিলিনা প্রেণ ।
বিত্তং নীলং তথা কৃষ্ণ প্রদারং হবি মুক্তর্মু ।
ক্ষিশ্লং কটাশ্লং ঘোনিশ্লক সর্ব্বগ্নু ।
আরুংপৃত্তিকরং বৃধাং বলবর্ণপ্রশাদনম্ ।
বের্মেত্রং পরং সর্পিবিক্না পরিকার্তিক্ ।

গবস্থত / ৪ দের। কাথার্থ— অণোকমূলের ছাল /২ দের, জল ১৬ দের, শেষ /৪
দের। জীরা /২ দের, জল ১৬ দের, শেষ
/৪ দের। শালিতপুলোদক /৪ দের। ছাগ-

ছথ /৪ সের। কেণ্ডরিয়ার রদ /৪ সের।
করার্থ,—জীবক, অ্বভক, মেদ, মহামেদ,
কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, ঝ্লি, বৃদ্ধি, মুগানী,
মাষাণী, জীবন্তী, যষ্টিমধু, পিগালদার (অথবা
পিয়ালবীজ,), ফল্সাফল, রসাঞ্জন, যষ্টিমধু,
অণোকমূল, ডাক্ষা, শতমূলী ও লালনটের মূল
প্রত্যেক ৪ তোলা। পুষ্যানক্ষত্রে এই মুত্ত
পাক করিবে। পাকান্তে শাতল হইলে
চিন্ন সংগ্রে মিশ্রিত করিবে। এই মুত্ত
পান করিবে। পাকান্তে শাতল হইলে
চিন্ন সংগ্রে মিশ্রিত করিবে। এই মুত্ত
পান করিবে। পাকান্তে গাতল হইলে
চিন্ন সংগ্রে মিশ্রিত করিবে। এই মুত্ত
পান করিলে সর্বপ্রকার দোষজাত খেত ও
কৃষ্ণ প্রভৃতি প্রদর ও তজ্জনিত বিবিধ উপ
দ্রব, ক্ষেক্লি, কটাশ্ল, যোনিশূল ও মন্দামি
প্রভৃতি প্রশ্নিত হয়। ইহা আর্ব্রিক,
পৃষ্টিকারক, গুক্রবর্দ্ধিক এবং বর্ণপ্রসাদক।

অবোধাতং মূতম্।

স্থােধাৰথপাৰ্থামূতবৃষকটুকাপ্লকজনূপিয়ালাঃ শ্যোনাকোড়, স্বরাধ্যামধ্কতরুবলাবেতসং কেন্দুনীপৌ। রোহীতং পাত্রদারং বিধিবিহিতহাতং সক্রমেষাং তর্নণাং প্রত্যেকং বন্ধলং ভদ্যুগপ্লমাখলং কোদ্যিয়া ভিষণ ভি: ॥ ৰূপিং ছোণাশ্বসা তদ্দুচ্বিমলকটাঙেলপি পাদাবশেষং স্পি.প্রস্তুত্ব পাচাং প্রনক্শলিনা মন্দমন্দানলেন। প্রস্থং ধার্ত্রীরদানাং বিধিবিহিত্রজ্ঞপ্রস্থাকঞ্চ শালে-দ হ। তাকত কৰং মধুকমপি মংধাং পুপথজ্জনাকী। कौरछोकाश्वतीनाः कलमिश यूनमः कीतकाःकाशियुगाः त्रङ्गांथार ठन्मनः यर उपश्वसमलकां अनः गाविव। 5 ॥ অগোধাতাং মূতং মেতদ দেহং প্রাপ্যাস্তায়তে। ছত্তরং প্রদরং হ'ত নীলং রক্তং সৈতাসিত্য। যোলিশুলং কুকিশুলং ব্ভিশুলং অন্তঃসহয়। অঙ্গদাহং যোলিদাহম ক্ষিক্ত কিন্ত বঞ্চ য় বু ॥ মন্দদৃষ্টিমঞ্পাতং তিমিরং বাতসম্বর। আগ্মানানাংশুলম্মং বাতপিত্তপ্ৰকোপজিৎ ॥ অম'প্তঞ্চ পিত্তঞ্চ যোলিরোগং বিনাশরে। पृष्टिश्रमाप्रजननः यलवर्गाभिकात्रकम् ॥

ম্বত /৪ দের। কাথার্থ—বট, অশ্বথা, আর্ক্ন, গুলঞ্চ, বাদক, কট্কী, পাকুড়, জাম, পিয়াল, শোনা, যজ্ঞতুমুর, মৌল, বেড়েলা, বেত, গাব, কদম, রোহীতক ও পীতশাল ইহাদের প্রত্যেকের ছাল ২ পল, জল ৬৪ দের, শেষ ১৬ দের। শালিত পুল ধৌত করিয়া সেই জল /৪ সের,
আমলকীর রস /৪ সের। কর্জার্থ— যষ্টিমধু,
মৌলফুল, পিওপর্জ্র, লাকুহরিজা, জীবস্তীফল,
গান্তারীফল, কাকোলী, কীরকাকোলী, রক্তচন্দন, খেতচন্দন, রগাঞ্জন ও অনস্তম্ল
প্রত্যেক ৬ তোলা। একত্র মন্দারিতে পাক
করিবে। ইহা পান করিলে নানাবিধ প্রাদর,
যোনিশ্ল, কুক্ষিশূল, বস্তিশূল, গাত্রদাহ ও
যোনিদাহ প্রভৃতি নানাবিধ রোগ প্রশমিত
হুইয়া দিটি প্রায় এবং বল বর্ণ ও অগ্রি র্মি হয়।

সিতকল্যাণকং মৃত্য।

কুমুদং পগুকোশীরং গোধুমো রক্তশালরঃ !
মূল্যপর্ণী পয়স্তা চ কাশ্যরী মধুষ্টিকা ।
বলাতিবলয়েমু লমুৎপলং তালমন্তক্ম ।
বিদারী শতপুত্রী চ শালপর্ণী সজীরকা ।
কলং অপুষ্বীজানি প্রত্যাহং কদলীকলম্ ।
এষামর্জপলান্ ভাগান্ গব্যকীরং চতুগুর্পম্ ।
পানীরং বিশুণং দরা মৃতপ্রস্থং বিপাচহেং ।
প্রদরে রক্তগুল্মে চ রক্তপিত্রে হলীহকে ।
বহুরূপঞ্চ যৎ পিন্তং কামলায়াঞ্চ গোণিত্তে ।
আরোচকে অরে জীর্ণে পাঙ্রোগে মলে অমে ।
তক্ষণী যার্মপুল্যা চ যা চ গর্ভং ন বিশ্বতি ।
অহন্তবি চ প্রাণাং ভবতি প্রীতিবর্দ্ধনম্ ।

মৃত /৪ সের। গবাহ্য ১৬ সের।
কথার্থ—কুম্দপূল্প, পদাকান্ত, বেণার মূল,
গোধ্ম, রক্তণালি (দাউদখানি), মুগানী, কীরকাকোলী, গাভারীফল, বষ্টিমধু, বেড়েলামূল,
গোরক্ষচাকুলের মূল, নীলম্ব দি, তালের
মাতী, ভূমিকুমাও, শতমূলী, শালপাণি, জীরা,
ক্রিফলা, কাঁকুড্বীক ও কাঁচাকলা প্রত্যেক
৪ ভোলা। পাকার্থ জল /৮ সের। এই মৃত
পানে প্রদর, রক্তওলা, রক্তপিত, অরুঃ ও
মানে প্রদর, রক্তওলা, রক্তপিত, অরুঃ ও
মান প্রদ্ধিত বিনাই এবং পুশাহীনা মূব্তী শতুমৃতী হইনা থাকে।

বিশ্ববল্লভং স্বতম্।

কেশরাজন্ত নিক গুটা: শতাবর্যা: কুশন্ত চ।
বিদাযায়: স্বরসেনালি ছোলেন প্রসা তথা ।
ককৈদ ডি্মবিলালৈল বকৈলাকলতিকৈ: ।
মহতা পঞ্চমূলেন জাকাচল্লনচল্লকৈ: ।
নিশাদাক্রনিশাভ্যাঞ্চ বহ্নিনা লবগৈরপি ।
ভৌরসিত্তৈ: পচেৎ সর্পি: পাত্রে সুৎপরিনিশ্মিতে ।
নিশ্বরস্তনামেদং সূতং স্থীপদক্ষনম্ ।
বসাং রসায়নং সূব্যং বালানাঞ্জবর্জনম্ ॥

গ্রাঘত /৪ সের। কেশুরিয়া, নিদিন্দা,
শতমূলী, কুশ ও ভূমিকুলাও ইহাদের স্বরস
প্রত্যেক / সের, ছাগহ্য /৪ সের।
কল্পার্থ—দাড়িমফলের খোলা, বেলপ্ত ঠ, মুক্তা,
লবন্ধ, এলাইচ, হরীতকী, আমলা, বহেড়া,
বেলছাল, শোনাছাল, গাল্ভারীছাল, পাক্ষলছাল,
গণিয়ারি ছাল, দ্রাক্ষা, রক্তচন্দান, চাপাছাল,
হরিদ্রা, দাক্ষহরিদ্রা, চিতামূল ও পঞ্চলবণ
মিলত / সের। মুৎপাত্রে ঘণাবিদি পাক
করিবে। অন্ধ ভোলা হটতে > ভোলা মাত্রায়
উক্ত্রেরে সহিত দেবনীয়। এই মুত বলকর, রসায়ন, বৃষা, বালকদিগের অঙ্গপোষক
এবং বিবিধ স্বীবোগ-নাশক।

মুকাজিং ঘুতম্।

মুক্সমাবন্ধ নিযু হৈ রাস্তাচিত্রকনাগরে:। সিকং সপিধলীবিজ্ঞা সর্পিঃ শ্রেষ্ঠমস্থলরে।

ন্গ ও মাধকলাইরের কাথ এবং রালা, চিতা, তঠ, পিপুল ও বেলগুঠ, ইথাদের কব সহ যথাবিধানে য়ত পাকু করিবে। এই ঘুত অসংগরের শ্রেষ্ঠ ঔষধ।

রহচ্ছতাবরীঘৃতম্।

শতাবরীরসপ্রস্থং ক্ষোদরিশ্ববিশীড়রেং।

মৃতপ্রস্থসমাপুকং কীরং বিঙণিতং ভিষ্ক ।

অন্ত ক্ষানিমান দ্যাং স্থলোড় স্বরস্থিতান।

কীবনীয়ানি বাজ্ঞে যিটপান্নকল্বৈঃ।

স্বাংটা চাল্পপ্তা চ বলা নাগবলা তথা।

সালপনী পৃশ্বিপানী বিদানী শারিবাধ্যম্।

শর্করা চ সমা দেরা কান্মর্যাশ্য কলানি চ।
সমাক্সিজন্ত বিজ্ঞার তদ্যুতকাবতাররেং।
রক্তশিভবিকারের বাতপিত কৃতের চ।
বাতরক্তং করং খাসং হিকাং কাসক ছত্তরম্।
অসদাহং শিরোলাহং রক্তপিভসমূত্বম্।
অস্থ্যরং সর্বভ্বং মৃত্রকুক্তং স্থারণাম্।
এতান্ রোগাঞ্মরতি ভাস্ববিধিরং যথা।
(স্থুলোড্সুরসন্মিতানিতি প্রত্যেকং কর্মসন্মিতান্
ইতার্থং। চক্রটীকা।)

ঘত /৪ সের। শতমূলীর বদ /৪ সের।

হল্প /৮ দেব। কল্পথি—জীবক, শবভক, মেনা,
মহামেদা, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, শব্ধি,
হলি, ষ্টিমধ্, পদ্মকার্চ, রক্তচন্দন, গোক্ষ্র,
আল্কুনিবীজ, বেড্লা, গোরক্ষচাকুলে, শালপাণি, চাকুলে, ভূমিকুমাও, অনস্কমূল, খামাদ্ভা, গাড়ারীফল ও চিনি প্রভ্যেক ২ ভোলা।
এই ঘত ঘণাবিধানে পাক করিয়া দেবন
কিংলে সর্ব্রপ্রকার প্রদের, মৃত্রক্ত্রু, ক্ষয়, কাদ,
হিল্পা ও বাতরক্ত প্রভৃতি রোগ বিনষ্টাহয়।

হয়মারাদি তৈলম্।

হয়মারামূতানোব-সিক্লৈ সরসাঞ্জন: ।
ত্রিবৃদ্ধীনিশাভিন্চ পথাকিট্ফলম্প্রকৈ: ।
ইক্রবাকণিকাপাঠা-নাগকেশরটিত্রকৈ: ।
সিদ্ধং তৈলং নিহস্তান্ত যেনিকভূং হলাকণাম্ ।
তগাকুরক্ত সংবৃদ্ধিং শ্বরোঝাদক যেবিতাম্ ।
যোনিত্রপঞ্চ তৎক্রেনং তদশীংসি চ সর্কার্যা।
(তৈলম্ভ সার্কাং বৃদ্ধবৈত্যোপদেশাং ।)

সর্বপ তৈল ৪ (সের। কর্কার্থ—করবীর মূল, জ্বলং, ওঠ, শিপুল, মরিচ, সৈদ্ধবলবণ, রসাঞ্জন, তেউড়ীমূল, দন্তীমূল, হরিজা, হরীতকী, কট্ফল, মৃতা, রাথালশপার মূল, আক্নাদি, নাগেধর ও চিতামূল মিলিত /> সের। যথাবিধি পাক করিবে। এই তৈল যোনিতে মর্দান করিলে যোনিকত্ব, ভরাত্মরব্দি, স্বরোন্মাদ, বোনিকত্ব, যোনিকেদ ও বোন্তর্গা প্রশাসত হয়।

প্রিয়ঙ্গু कि তেলম্।

প্রিয়ক্থপন্যন্ত্যান্থ-কল্ডিকরসান্ধন:।

চন্দন্ধরমন্ত্রি-শতাহ্বাসর্জনৈদ্ধনৈ:।

ম্ত্রোচরসান্তা-বায়নীবিবালকৈ:।

ককৈ::করিকণাকুক্য-কাংকোলীমুগলৈভুপা।

গক্ষেব্যেন্চ নিথিলৈক্ষানীক্ষীরেণ মন্তন।

দাব্বীকাথেন চ পচেৎ তৈলং তিলসমূত্ত্বম্।
প্রিয়ন্ত্যানিদং তৈলং প্রদরং যোনিজান্ গদান্।

গ্রহণীমতিসারক হন্তাদ্ গর্ভন্ত রক্ষণম্।

তিলতৈল /৪ সের। ছাগছগ্ধ, দধির মাত ও দারুহরিদ্রার কাথ প্রত্যেক /৪ সের। করার্থ—প্রিয়পু, স্থাদমুল, যৃষ্টিমপু, হরীতকী, আমলকী, বহেছা, রদাঞ্জন, খেতচন্দন, রঞ্জনন, মঞ্জিষ্ঠা, শুলুফা, ধূনা, দৈরুব, মুন্তা, মোচরল, অনক্রমুল, কাকমাচী, বেল্ছাই, বালা, গজ্পিপুল, পিপুল, কাকোলী ও ক্লীর কাকোলী মিলিত /১ সের। কর পাক করিমা যথাবিধি গর্মন্তব্য পাক করিবে। এই ভৈল মন্দন করিলে প্রদর, খোনিব্যাপৎ, গ্রহণী ও অভিনার রেগেরে শান্তি হয়। ইহা উত্তম গভ্সান্তর্গক ।

शिक्षां कि देखलग्।

হিকুকাশীসসিদ্ধাধৈ শুদ্ধীপত্রক্চিত্রকৈ। সহসের জিফেনেন্টুকার রেরনিশাযুগৈ । বিপকং সার্থিং তৈলং পুন্সাংক্ষননং পরস্থ। রজাকুক্ষহরকাপি যোনিশূলনিস্দন্য।

সর্বপ তৈল /৪ সের। কন্ধার্থ— হিং, হিরাকস্, সৈয়বলবণ, শুঁঠ, তেজপত্র, চিতা-মূল, মুস্কবর, সম্জফেন, কপূর, যবকার, সাচিকার, সোহাগা, হজ্জি ও দারুহ্মিলা মিলত /১ সের। যথানিয়মে পাক করিবে। এই তৈল রজ্ঞপ্রতিক, ব্রজ্ঞানাশক ও যোনিশূল নিবারক। ইহা যোনিতে মর্কনীয়।

হুধাক হতৈলম।

বলারা: কেশরাজন্ত দুর্বারাক্ত ধবসা চ। পারিভন্তসা পদাসা ক্ষরদেব চ মন্ত্রমা । তভুলসা চ তোমেন লাক্ষায়া: সলিলেন চ।
কা প্রকেন তথা ককৈধ ত্রীধাক্তকমৃত্তকৈ: ॥
কাকোলীক্ষীরকাকোলী-জীবকর্বভকোৎপলৈ: ।
বাজিগুলাতুগাক্ষীরী-শিলাজতুরসাপ্রকৈ: ॥
বঙ্গীমধুকমপ্লিপ্তা-মুরামাংসীযবাসকৈ: ।
গন্ধজবৈশ্চ নিথিলৈ: পচেৎ তৈলং তিলোভবম্ ॥
ক্থাকরাভিধং তৈলমেতৎ প্রীগদস্পনম্ ।
বলাং রসায়নং ব্যুমায়ুয়াং স্মরদীপনম্ ॥

তিলতৈল /৪ সের। বেড়েলা, কেণ্ডরিয়া, দ্র্বা, ধাওয়া, পালিবা ও পদ্ম ইহাদের প্রত্যেক রের রস /৪ সের, দধির মাত, তণ্ডলঙ্গল, লাক্ষার জল ও কাজি প্রত্যেক /৪ সের। করার্থ—আমলা, ধনে, মৃতা, কাকোলা, ক্ষারকাকোলা, জীবক, শ্বভক, স্থাদিমূল, অশ্বগন্ধা, বংশলোচন, শিলাজতু, রসাঞ্জন, ঘষ্টি-মধু, মঞ্জিটা, মুরামাংসী, জটামাংসী ও ছ্রালভা, মিলিত /> সের। পাকশেষে গন্ধপাক করিবে। এই তৈল বিবিধ-স্ত্রীরোগনাশক, বলকর, রসায়ন, বাজীকারক, আয়ুদ্ধর ও কামোদীপক।

ল**ক্ষা**ণারিকঃ।

লক্ষণারাঃ প্লশতং চতুর্দ্রোণজলে পচেৎ।
পাদশেরে করায়েংমিন্ ক্ষিপেদ্ গুড়তুল'বর্ম্॥
ধাতকীং রোড়শপলাং মুস্তকং মধুকং বলাম্।
ফলত্রেং নিশাব্দুং জীরকং চন্দন্বয়ম্॥
অজমোদাং বমানীক বিল্লঞ্পলমানতঃ।
মাসাদৃদ্ধিত্ত সিজোহয়মিরিটঃ জীগদাস্তক্ৎ॥

লক্ষণামূল ১২॥০ সের। পাকার্থ জল ২৫৬
সের, শেষ ৬৪ সের, এই কাথে গুড় ২৫
সের গুলিয়া ভাহাতে ধাইফুল /২ সের এবং
মুডা, মষ্টিমধু, বেড়েলা, হরীভকী, আমলকী,
বহেড়া, হরিডা, দারুহরিডা, জীরা, খেতচলন,
রক্ষচন্দন, বন্যমানী, যমানী ও বেলগুঠ
প্রত্যেক ১ পল পরিমাণে প্রক্ষেপ দিরা আবদ্ধমুখ মুংপাত্রে একমাস রাণিবে। পরে কক্ষাংশ
ছাকিয়া ফেলিলেই অরিষ্ট প্রশ্বত হইবে। এই
স্মরিষ্ট বিবিধ স্ত্রীরোগ নাশক।

অশোকারিকঃ।

আশাক্সা তুলামেকাং চতুর্টোবে জলে পচেব।
পাদশেবে রসে পুতে শীতে পলশতব্যম্॥
দক্তাদ্ গুড়স্য ধাতক্যাঃ পলবাড়শিকং মতম্।
অজালীং মৃন্তকং গুতীং দার্ক্যুৎপলফলত্রিকম্॥
আমান্থি জীরকং বাসাং চল্লনক বিনিক্ষিপেব।
চুর্ণিয়িতা পলাংশেন হতো ভাগে নিধাপরেব।
মাসাদ্র্ভিক পীত্রনমস্পরক্ষাং জয়েব।
অরক রক্ষপিতাশো মন্দাগ্রিক্সরোচকম্।
মেহণোধারুচিহরন্ত্রপোক বিষ্ঠমংক্তিতঃ॥

অশোকছাল ১২॥ সের, জল ২৫৬ সের, শেষ ৬3 সের। এই কাথ ছাকিয়া লইয়া ইথাতে গুড় ২৫ সেব গুলিয়া দিয়া তাথাতে ধাইদুল ১৬ পল, ক্ষজীরা, মূতা, শুন্তী, দাক-ছরিদ্রা, রক্তোৎপলের মূল, হরাতকী, বহেড়া, আমনকী, আমের অাটিব শস্ত, জীরা, বাসক-মূলের ছাল ও রক্তান্দন ইহাদের প্রত্যেক ১পল চূর্ণ নিক্ষেপ করিবে! ভাণ্ডো মুখ বদ্ধ করিয়া ১ মান রাখিবে। পরে ছাকিয়া লইয়া উপস্কু (॥ পল) মাজায় দিবসে ২.০ বার সেবন করিলে, রক্তপ্রদর, রক্তন্ত ও রক্তাশঃ প্রভৃতি বিবিধ পীড়ার শাস্তি হয়।

পত্রাঙ্গাসবঃ।

পত্রাক্সং খদিরং বাস। শালালাকুমুমং বলা।
ভলাতকং সারিবে বে জবাকুম্মমফুট্ম ॥
আআছি দাবলী ভূনিত্ব আফুক্লজারকম্।
লোকং রসাঞ্জনং বিজং কেশরাজস্তুরং তথা ॥
কুমুমং দেবকুম্মং প্রত্যেকং পলস্মিতম্।
সব্বং স্চুর্গিতং কৃতা জাক্ষায়াং পলবিংশতিম্ ॥
যাতকীং বোড়শপলাং জনজোগন্ধরে ক্ষিপেং।
শর্করায়াস্তলাং দহা ক্ষোজস্যার্কভূলাং তথা ॥
একীকৃত্য ক্ষিপেন্ডাণ্ডে নিদ্ধান্মাসমাজকম্।
হস্তার্থং প্রদরং সর্বং বেভাক্ষণং সবেদনম্।
হস্তার্থং প্রদরং সর্বং বেভাক্ষণং সবেদনম্।
হস্তারং প্রাপ্তং তথা শ্রেদ্ মন্দায়িত্বসরোচকম্ ॥

বক্মকান্ঠ, খাদরকান্ঠ, বাসকছাল, শিমুল পুষ্পা, বেড়েলা, ভেলার মুটি, ভামালতা, অনস্ক-মূল, জবাপুষ্পের কুঁড়ি, আমের আঁটির শশু, দারুহরিন্তা, চিরতা, পোক্ত-টে ড়ী, জীরা, লোহ, রসাঞ্চন, বেলগুঠ, কেগুরিয়া, গুড়্ছক্, কুরুম ও লবক প্রত্যেক ১ পল; জাকা ২০ পল, ধাইকুল ১৬ পল, চিনি ১২॥০ সের, মধু ১৬।০ সের, জল .২৮ সের। এই সমস্ত দ্রব্য একত্র আবদ্ধমুণ পাত্রে এক মাস রাধিবে। উপযুক্ত মাত্রায় (২ তোলা) দিবলে ২।০ বার প্রবোজ্য। ইহা সেবন করিলে সর্ব্যপ্রদার প্রদর, বিশেবতঃ খেত ও রক্তপ্রদর এবং তৎসংস্কু বেদনা, জর, পাণ্ণ, শোথ, অল্প্লিমান্দা ও অক্রচি উপশ্মিত হইরা থাকে।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

-:*:----

যৎ পৰাং নদপথাঞ্চ রক্ত পিত্তেম্ব কীর্ত্তিতম্। প্রদরেহপি যথাদোষং তৎ ভন্নারী ভজেৎ তাজেৎ ।

রক্তপিত্ত অধিকারে যে সমস্ত পথ্যাপথ্য বর্ণিত হইয়াছে, প্রাদরবোগাক্রান্ত রমণীগণ দোসামুসারে ঐ সকল পথ্য সেবন এবং অপথ্য পরিত্যাগ করিবেন।

ইত্যায়ুর্কেদ-সংগ্রহেহস্পদররোগাধিকার:।

অথ যোনিব্যাপদ্ধিকারঃ।

অথ যোনিব্যাপন্নিদান্য।

বিংশতিব্যাপদো বোনেনিন্দিষ্টা রে'গদংগ্রহে। মিখ্যাচারেণ ভাঃ স্থীণাং প্রস্কৃত্তবাস্তিবেন চ। কায়ন্তে বীজদোষাচচ দেবাচচ শুণু হাঃ পুথকু।

অন্তপ্যুক্ত আহার বিধার, ছ্টরজ:, বীজ-দোষ ও প্রাক্তনকন্ম বণতঃ স্ত্রীলোকদিগের যোনিরোগ হয়। যোনিরোগ ২০ প্রকার।

অথ যোনিব্যাপচ্চিকিৎসা।

যোনিব্যাপংশু ভূমিচং শস্ততে কণ্ম বাডজিৎ। বস্তাভাঙ্গপরীবেক-প্রনেপাঃ পিচুধারণম্।

যোনিব্যাপদ্রোগে বার্নাশক চিকিৎসা, উত্তরবন্তি, অভ্যঙ্গ, পরিষেক, প্রলেপ ও পিচু-ধারণ (যোনিতে উপযুক্ত-তৈলাদিসিক্ত তুলা বা বস্ত্রথণ্ড ধারণ) হিতকর। বচোপকুঞ্কাজ'জ'-দুক্ষাবৃষকদৈশ্বন্। অভ্যোদাং যবক্ষারং চিত্রকং শক্বান্থিতম্। 'পিষ্টু'। প্রসন্নয়ালোড়া গাদেং তদ্ যুতভ্জিতিম। যোনিবাাপ্তিস দেশ-গুলাংশী বীনবৃত্তয়ে॥

বচ, জীরা, রুফ্জীর:, পিপুল, বাসকমূল, সৈন্ধব, ষমানী, ধবক্ষার, চিতামূল ও শর্করা, ইহাদের সমভাগে পেষিত কক ২ তোলা, /।০ পোয়া প্রসন্নাতে (মন্তবিশেষে) আলোড়িত করিয়া, ২ তোলা হতে সম্ভলন করিবে। ইহা সেবন করিলে যোনিব্যাপৎ, হুদ্রোগ, গুল্ম ও অর্শ: অচিবে নিবৃত্ত হয়।

হিংপ্ৰাকন্দন্ত বাঁতান্তা কোঞ্চমভ্যজ্য ধারয়েৎ। পঞ্চবন্দক্ত পিন্তান্তা শ্যামাদীনাং কন্দোন্তরা।

বাতজ যোনিরোগে কে**লেকড়ার কন্ধ**থতে ভাজিয়া ঈষত্বত অবস্থায় যোনিতে ধারণ
করিবে। পিত্তপ্রধান যোনিরোগে পঞ্চবক্রলের
কন্ধ ও কফজ যোনিরোগে শ্রামাদির কন্ধ
ধারণ করিবে।

ভড়ু চীতিকলাকজী- কাথৈক পরিক্ষেবন্। নতবার্ত্তাকিনীকুঠ-দৈক্ষবাসরদাক্ষতিঃ । তৈলাৎ প্রদাধিতাক্ষার্থ্য: পিচুর্বোনৌ ক্লাপহ:। পিতলানাত্ত বোনীনাং দেকাভাঙ্গপিচুক্রিয়াঃ। শীতাঃ পিন্তক্ষরাঃ কার্যাঃ সেহনার্থং স্থতানি চ ।

গুলঞ্চ, ত্রিফলা ও দন্তী ইহাদের কাথে যোনি সেচন করিবে। তগরপাছকা, বার্ত্তাকু, কুড়, সৈন্ধব ও দেবদাক্র ইহাদের করে ও চতুপ্ত গ জলে জৈলাপাক করিয়ো যোনিতে ঐ তৈলে সিক্তাপিচু ধারণ করিলে যোনিশূল নিবাহিত হয়। পিত্তপ্রধান যোনিরোগে পিত্তনাশক স্থণীতল পরিষেক অভ্যক্ষাও পিচুক্তিয়া বিধান করিবে এবং ঘৃত ছারা যোনি স্লিগ্ধ রাখিবে।

विष्यः वनामञ्जेषाः मर्वदः ऋक्षाकःभीवसम् । निभना मन्निटेटमारियः भटास्टाक्केटेमक्रदेवः । विक्रमा अपनिक्षां संगा वानिविद्याधिने ॥

কফছষ্ট যোনিরোগে রুক্ষ ও উষ্ণবীর্য্য ঔষধ প্রবাসে করিবে। পিপুল, মরিচ, মাং-কলাই, শুল্ফা, কুড় ও সৈন্ধব লবণ একত্র পেষণ করিয়া ভর্জনী অঙ্গুলির ভার বর্ত্তি প্রস্তুত করিবে। এই বর্ত্তি যোনিতে ধারণ করিলে যোনি বিশোধিত হয়।

মূৰিকমাংসসংযুক্তং তৈলমাতপভাবিতম্।
অভ্যক্ষাক্ষান্ত ৰোক্তৰ্শ কেন্ত্ৰয়ংসদৈশ্বন্ধ ।

ইন্দুরের মাংস (তৈলের চতুর্থাংশ) সংস্কুত তৈল সপ্তাহ কাল রৌজে ভাবিত করিয়া যোনিতে মর্দান করিলে কিংবা ইন্দুরের মাংস ও সৈন্ধব । লবণ এরগুপত্রে স্থাপন করিয়া ভন্নারা স্বেদ দিলে যোনি-ক্যা বিনষ্ট হয়।

গোপিছে নংক্তপিতে বা কৌনং মপ্তাহভাবিতম। গ্রোতমাং শোধনং কঞু-ব্লেবখোধনক তৎ ॥

গোপিংত অথবা মংগুপিতে হক্ষ মহণ পট্টবন্ত্ৰ সপ্তাহকাল ভাবিত করিয়া যোনিতে ধারণ করিবে। ইহা স্রোক্তঃশোধক, কণ্ডু ক্লেদ ও ধোণ নাশক।

ৰামিক্সাঃ পৃতিৰোক্সান্চ কৰ্ত্তব্যঃ খেদনো বিৰিঃ। শ্ৰু ক্ষমঃ কাৰ্যান্ততঃ ফেছ-পিচুভিন্তৰ্পণং গুৰেৰ । ৰ্বুমিনী ও পৃতিষোনিতে (বিপ্লুতা ও পরিপ্লুতা যোনিতে) স্বেদ দেওয়া কর্ত্ত্য। অনস্কর ক্রমণা স্নেহ-পিচু দারা সম্বর্গণ ক্রিয়া করিবে। (যে যোনিরোগে বায়ুর সহিত রক্ত মিশ্রিত শুক্র নিঃস্থত হয়, তাহার নাম বামিনী। বিপ্লুতা যোনিতে সর্বাদা বেদনা থাকে। পরিপ্লুতা যোনিতে মৈথুনকালে বেদনা বোধ হয়।)

শলকীজিঙ্গিনীজন্ব-ধবত্বক্পঞ্চবন্ধলৈ:। ক্বালৈ: সাধিত: স্বেহ: পিচু: শুদ্ধিসু তাপহ:॥

শন্ধকী, জিঙ্গিনী, জাম এবং ধবরক এই সমুদারের বন্ধল ও পঞ্চবজল ইহাদের চতুগুল কাথে সাধিত তৈল স্বারা পিচু ধারণ ক্রিলে বিপ্ল,ভাধ্য যোনিরোগ বিনষ্ট হয়।

কণিন্তাং বর্তিক। কুঠ-পিপ্ললার্কাএনৈন্ধবৈ:। বস্তম্তাকৃত। ধানা সর্বকে শ্লেমসুদ্ধিতম ॥ ত্রৈকৃতং শ্লেহনং শ্লেদ উদাবর্তানিলার্কির। তদেব চ মহাযোক্তাং প্রস্তায়াঞ্চ বিধীয়তে॥

কুড়, পিপুল, আকন্দ-পল্লব ও দৈশ্বব ছাগমুত্রে পেষণ করিয়া বর্ত্তি প্রস্তুত্ত করিবে। এই বর্ত্তি কর্ণিনীনামক যোনিরোগ বিনষ্ট করিয়া থাকে। শ্লেশ্বনাশক উষপেও উক্ত রোগের শান্তি হয়। উদাবর্ত্তাণ্য যোনিরোগে ও বাডজ যোনিরোগে ত্রিবৃৎমিশ্রিত শ্লেহ (অনুবাসন ও উত্তরবন্তিরূপে) ও শ্লেদ প্রশ্লোক করিবে। মহাযোনিতে এবং স্রস্তুত্ত যোনিতেও উপরোক্ত ক্রিয়া কর্ত্তব্য। (কফ ও রক্তবারা যোনিতে মাংসকন্দের স্তায় গ্রন্থি উৎপন্ন হইলে, তাহাকে কর্ণিনী কহে। উদা-বর্ত্ত ঘোনিরোগে ফেনমুক্ত রক্তঃ অভিকত্তে নির্গত হয়। অতি বিভৃত্ত যোনিকে মহা যোনি কহে)।

আংগোম 'ংসং সপদি বছধা গওপতীকৃতং যব তৈলে পাচ্যং দ্ৰবতি নিয়তং যাবদেতম সমাক। তবৈলাক্তং বসনমনিশং যোনিভাগে দধানা হক্তি বীড়াকরভগকলং নাত্র সন্দেহবুদ্ধিঃ। (এডমাংসং যাবদিতি পর্যুমাসাল্প ন দ্রবতি দ্রবতাং ন গচ্চতি ভাবদের গালনীয়মিতার্ক্তঃ। চক্রটাকা) ইন্দ্রের সজোসাংস খণ্ড খণ্ড ক্লরির।
তিলটেহলে পাক করিবে। মাংস সকল সম্যাগ্রকপে গলিয়া না ষাইতেই পাকশেষ করিবে।
এই তৈলে বন্ধ সিক্ত করিয়া যোনিতে সর্বদা
ধারণ করিলে লজ্জাজনক ধোনিকন্দ (প্যাদ্)
নিবারিত হয়।

গৈরিকান্ত্রান্থিকজন্ম: রক্তপ্তপ্রনকট্কলম্।
পূরমেদ্ যোনিমেতেবাং চূর্বিঃ ক্ষোন্তসমন্বিতঃ ॥
ত্রিকলারাঃ কথায়েও সক্ষোন্তেও চ সেচছেও।
প্রমানা যোনিকলেন ব্যাধিনা পরিমূচ্যতে ।

গেরিমাটা, আফ্রকেশী, বিড়ঙ্গ, হরিদ্রা, রসাঞ্জন ও কট্ফল এই সমুদায়ের চুর্ণ মধুর সহিত মিশ্রিত কবিয়া যোনিপূরণ করিলে, অথবা ত্রিফলার কাথে মধু প্রক্ষেপ দিয়া ভদ্মারা যোনি প্রকালন করিলে যোনিকন্দ বিনষ্ট হয়।

শতপুশ্পতেললেগান্বর বীদলজাৎ তথা । পেটিকামূলযোগ্যক্ত যোকিভিন্না প্রশামাতি ৮

শুল্ফা কিংবা বদরীপত্র তিলতৈল সহ পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে অথবা পোটকামূল (পেটারীমূল) পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে বিদীর্ণযোনি প্রশমিত হয়।

স্থ্যবীমূললেপেন প্রবিষ্টান্তর্বাহর্ভবেৎ। বোনিমূর্ববসাভ্যঙ্গান্ত্রিংস্তা প্রবিশেদপি॥

করলার মূল পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে অন্তঃপ্রবিষ্ট যোনি বহিগত হয় এবং ইন্দ্রের বসা মর্দন করিলে বহিগত যোনি স্বস্থানস্থ ইইয়া থাকে।

লোশ্ৰহুদ্বীক্লালেপো বে'নিদ্যুট হৈ করোতি চ। বৈভ্ৰম্লনিঃকাথ-কালনেন তথৈব চ। মুবিকাবাঞ্জলিবদা-শ্ৰক্ণং যোনিদাট দিষ্ট

লোধ ও ভিতলা উবীজ্ব পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে অথবা বেতম্লের কাথে প্রকাণ শন করিলে কিংবা ইন্দুরের ও বাহুড়ের বসা মন্দন করিলে ধোনির দুঢ়ভা সম্পাদিত হয়।

नहां मीरमाद्भामः कुंक्रः प्रतिहामि उरेबन ह । व्यवस्था इतिहा ह शाहीकत्रनपुरुषम् ॥ বচ, নীলোংপল, কুড়, মরিচ, অখাগন্ধা ও হরিদ্রা ইহাদিগকে সমভাগে পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে বা ইহাদের চুর্ণ খারা অবচুর্ণন করিলে খোনির দূঢ়তা সম্পাদন হয়।

পলাশোড়্মরকলং তিলতৈলসম্মিত্য । মধ্না মোনিমালিপা গাচীকরণমূভ্যম্ ॥

পলাশফল ও যজ্জুমুর, তিলতৈল এবং মধুর সহিত মন্দন করিয়া যোনিতে প্রলেপ দিলে যোনির দৃঢ়তা হয়।

মদকলমধুকপুরিপ্রিটং ভব্তি কামিনীজনক্ত। চিরগলিত্যৌবনক্ত চ বরাঙ্গমতিপাচং স্কুলারম্॥

কন্ত্রী, জায়ফল ও কপূর কিংবা ময়নাফল ও কপূর মধুর সহিত পেষণ করিয়া যোনিতে পূরণ করিলে, চিরবিগলিতযোধনা রমণীদেরও যোনি দৃত ও স্থকোনল হয়।

প্রপ্রথম বিষ্টাংক-মাল চীকু হ্মেছু তিম্। রবিপ্রমন্ত্রদা বা যোনিগ্র বিনাশনম্॥

পঞ্চপল্লব (আম, জান, কদ্বেল, টাবা-লেবুও বিল ইহাদের কচিপাতা), ষষ্টিমধুও মালতীর ফুল ইহাদের কলে মণোচিত মাত্রায় মৃত রোদ্রসন্তাপে কিংবা অগ্নি সন্তাপে (চতুর্গুণ জল সহ) যথারীতি পাক করিয়া ঘোনিমধ্যে ধারণ করিলে যোনির হুর্গ্ন নিবারিত হয়।

हेक्, क्वी क्व खीठभला छड़ भननिव यहेगरेट्सः । সঙ্কकोरेतर्वे खिरवानिगडा कुरुभनक्षनमे ॥

তিত্রলাউবীজ, দন্তীমূল, পিপুল, গুড়, ময়নাফল, স্থ্যাবীজ ও বাষ্ট্রমধু মিলিত ৮ মাধা মনসা সিজের আঠা ৮ মাধা, এই সমূলায় আগ্রতে পাক করিয়া বন্তি প্রস্তুত করিবে। এই বন্তি ধোনিতে প্রবেশ করাইলে রজঃ-প্রবৃত্তি হইয়া থাকে।

দকাজিকং জবাপুপাং ভৃষ্টং জ্যোতিমতীদলম্। দুৰ্মায়াঃ পিশ্বকং প্ৰাশ্ত বনিতা স্বাৰ্ত্তবং লভেং ।

কাঞ্জির সহিত পেষিত জবাপুষ্প, অথবা ঘুতভূষ্ট লতাফট্কীর পাতা, কিংবা দুর্কা ও ভণুসক্বত পিটক সেবন করিলে স্ত্রীলোকদিগের রক্তঃপ্রবৃত্তি হয়।

পীতং জ্যোতিশ্বতীপূপ-স্কিকোগ্রাসনং আহম্। শীতেন প্রসা পিষ্টং কুমুমং জনরেদ্ ধ্রবম্॥

লতাফট্কীর পুষ্প, স্বর্জ্জিকাকার, বচ ও পীতশাল এই সমুদায় শীতল হুগ্নে পেষণ করিয়া ৩ দিবল সেবন করিলে আর্ত্তিব নিঃস্তুত্ত হয়।

নফপুষ্পান্তকো রদঃ।

রংসন্দ্রগন্ধকং লৌহ-বঙ্গং দৌজাগ্যমের চ।
রক্তকান্ত্রতান্ত্রক প্রকং প্রক্রা ।
লাক্ষ্যেক্রক্রক সৃহত্য কাক্ষ্যান্তিক।
লাক্ষ্যেক্রক্রক সৃহত্য কাক্ষ্যান্তিক।
লাক্ষ্যেক্রক্রক সৃহত্য কাক্ষ্যান্তিক।
লাক্ষ্যেক্রক্রক সৃহত্য কাক্ষ্যান্তিক।
লাক্ষ্যেক্রক্রার্ল ব্যান্ত্রকং বলা।
এতেরাং স্বর্গন্তর্গাং বিরবারক পূথক পূথক ।
জীবস্তাং মধুকং দৃষ্টাং লবঙ্গং বংশলোচনাম্।
রাষ্ণাং গোক্ষ্রবাজক শাণমানং বিচূর্ণয়েও।
স্বর্গান্তর্গান্তর্গান্তর্গান্তর্গান্তর্গান্তর।
মান্দ্রিজা বটাং কুবান্নইপুশ্লবেশ্বিতে।
নাক্ষ্যান্তর্গান্তর্গান্তর্গান্তর।
অত্নলে ক্রেব্রোক্তাং বিশেষে চাম্মান্তর।
এতান রোগান্ নিহ্নান্ত ভাস্বরন্তিনিরং বর্ণা।

পারদ, গন্ধক, লোহ, বঙ্গ, সোহাগার থৈ, রৌপ্য, অল্র, তাম প্রত্যেক এক পল। এই সকল দ্রব্য গুলঞ্চ, ত্রিফলা, দন্তী, শেফালীপত্র, কণ্টকারী, দেবদাক, সৈন্ধবলবণ, কুড়, বুহতী, কাকমাচী, তগরপাছকা, তালীশপত্র, বেভাগ্র, গোকুর, বাদক ও বেড়েলা ইহাদের যথাসম্ভব কাথে বা স্বর্মে পৃথক্ ৩ বার ভাবনা দিবে। পরে জীবন্তী, যষ্টিমধু, দন্তী, লবঙ্গ, বংশলোচন, রামা ও গোকুরবীজ ইহাদের প্রত্যেক ॥০ তোলা পরিমিত চুর্ণ ইহার সহিত একত্র মিশ্রিত করিয়া প্রশচ ক্ষয়তী ও তুলসীর স্বর্মে ভাবনা দিয়া বটিকা করিবে। ইহা নইপুষ্প, নইগুক্র খুতুশুল ও যোনিশূল প্রভৃতির মহৌবন।

কলগ্নতম্

প্রিক্লাং বে সহচরে গ্রড়্চীং সপুন্নবাম্। গুকনাসাং হরিলে বে রালাং মেদাং শতাবরীম্॥ কনীরতা যুতপ্রস্থাং পচেৎ ক্লীরচতুপ্ত গম।
তৎ সিদ্ধাং প্রপিবেরারী যোনিশুলনিপীড়িতা।
পিঙিতা চলিতা যা চ নি:স্তা বিবৃতা চ যা।
পিঙামেনিক বিস্তা যঙ্গোনিক যা স্থাত।
প্রপদ্ধান্ত তু তাঃ স্থানং গর্ভং গৃহস্তি চাসকুৎ।
এতং কলম্বতং নাম যোনিদোবইরং পরম্।
(শুকনাসা চর্মকারপুটক ইতি চক্রটীকা)

জিফলা, নীলমিণ্ট ী, পীতমিণ্ট ী, গুলঞ্চ, প্রনবা, চম্মকার প্টক, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, বালা, মেলাও শতমূলী ইহাদের করেও চতু-গুণ ছগ্নে ৪ সের প্রত যথাবিধানে পাক করিবে। এই প্রত সেবন করিলে নোনিশ্ল নিবারিত হয়। পরস্ক পিণ্ডিতা চলিতা, বহি-গ্রা, অজ্যন্তর্গতা, পিত্তলা, শিথিলা যোনিও মণ্ডযোনি স্বাভাবিকতা প্রাপ্ত হয় এবং গর্ভোৎপত্তির ব্যাঘাত দুবীভূত হইয়া থাকে। (যে স্ত্রীর শ্বং হয় না, স্তন শ্বতি অল্ল উঠে, এবং মৈথুনকালে যোনি ধ্রম্পর্শ বোধ হয়, তাহার যোনকে যগুযোন কচে।)

ফলকল্যাণ-প্ৰত্য।

মঞ্জিতা মধুকং কুঠং ত্রিফলা শকরা বলা। (मना भग्ना कारकालो मृत्यदेकशावनकाम् ॥ অজমোদা হরিছে যে হিঙ্গুকং কটুরোহিণা। উৎপলः कुमूमः जाकाकाकारकारको उन्मनद्वयः॥ এতেষাং কাৰিকৈন্তাগৈয় তপ্ৰস্থং বিপাচয়েৎ। শতাবরীরদক্ষীরং মুতান্দেরং চতুগুর্ণাষ্। দর্পিরেভন্নর: পাড়া নিতাং স্ত্রীবু বুষায়তে। পুক্তান সম্ভন্যেরারী মেধাচ্যান্ প্রিয়দর্শনান্ ॥ যা চৈব: স্থিরগভা ভাদ যাচ বাজনয়ের, তম্। অৱায়ুবং বা জনয়েদ্ যা চ কন্তাং প্রাস্থতে ॥ যোনিদোষে রঞ্জোদোষে পরিস্রাবে চ শশুতে। अकावक्रमभाष्याः मन्त्रश्रहिनात्र्वम् ॥ নামা ফলমূতং ছেডদ্বিভাং পরিকীর্তিতম্। অতুক্তং লক্ষণাহলং ক্ষিপস্তাত চিকিৎসকাঃ ॥ জাবৰৎদৈক্বপায়া মৃত্যত তু গৃহাতে। অ'রণ্যগোময়েনা'প বহিন্দালা প্রদীয়তে ॥

জীবদ্বংসা গাভীর হ্র্মজাত হৃত /৪ সের-শতমূলীর রস ১৬ সের, হ্র্ম ১৬ সের। ক্র্মার্থ মঞ্জিল্লা, বিষ্টিমধু, কুড়, ফ্রিফ্লা, চিনি, বেড়েলা- मृत, (मना, कीत्रविनाती (कान कृष्ट्रिक्षणा), অশ্বপদ্ধামূল, বন্যমানী, হরিদ্রা, কাকোলী. হিন্দু, কট্কী, রজেৎপল, দারুহরিদ্রা, কীরকাকোলী, শ্বেভচন্দন, দ্রাকা, রক্তচন্দন ও লক্ষণামূল প্রত্যেক ২ ভোলা। বনঘ'টের আগুনে ৰথাবিধি পাক করিয়া এই ঘুত পান করিলে পুরুষের বলবীর্যাদি বর্দ্ধিত इव अवः खीलात्कत यानित्ना । अर्जनाय নিরাকত হইয়া আয়ুঃশানী, বলবান ও রূপবান্ পুত্র ভূমিষ্ঠ হয়।

সোমগ্নতম্।

निष्कार्थकः वहां उच्छी महाभूभी भूननेता।

পরস্থাময় যট্টাহ্রং কটকা চ ফলত্রয়মু॥ শারিবে রজনী পাঠা ভূকদারুহ্বর্চলাঃ। মঞ্জিষ্ঠা ভিফলা খ্রামা বুষপুষ্পং সগৈরিকম্। ধীম'ন্ পক্তা মুতপ্রং সমাও মন্নাভিমন্নিতম্। বিমাসগর্ভিণীং নারীং যথাসাত্রপযোজয়ে**ং।** যোনিছষ্টান্চ যা নাৰ্থ্যো রেভোছ্টান্চ যে নবাঃ। জীণাং পুংসাং কোষহরং মুত্মেতদ্মুভ্মম্ 🛊 বন্ধ্যাপি লভতে পুত্রং শূরং পণ্ডিতমানিন্দ্। জড়গদাদমূকত্বং পানাদেশপক্ষতি # সপ্তরাত্রপ্রবোগেণ নর: শক্তিধরো ভবেৎ। নাগ্রিদ হতি তদ্বেশ্ম ন বজ্রমুপহস্তি চ। ন তত্ৰ শ্ৰিয়তে বালো যত্ৰান্তে সোমসংক্ষিত্ৰ ॥ (কটুকা চ ফলত্রয়মিত্যতা কটুকৈলাফলত্রয়মিতি পাঠ: প্রাচীনসন্মত:। অত্র ফলত্রহং দ্রাক্ষা-কাশ্মরী-পর্বকাণি। খামা প্রিয়কু: শেষং হবোধন্। কৰার্থং প্রতি ২ ভোলা ৩ মাৰকম্। মন্ত্ৰত গায়তী। যদাহ । সুঞ্ত:--বত নোলীরিতো মন্ত্রে যোগের বেরু সাধনৈ:। সর্বাত্র গদিতা তত্র গায়ত্রী ফলসিছিল।।)

গব্যন্থত /৪ দের। করার্থ—খেতদর্থপ,
বচ, ব্রন্ধীশাক, শৃত্রপুলী, পুননবা, ক্ষীরকাকোলী, কুড়, যষ্টিমধু, কট্কী, প্রাক্ষা,
গান্ধারীকল, ফল্সাফল, শ্রামালতা, অনম্ভর্শ,
হরিষ্কা, আক্নাদি, গুড়স্বক্, দেবদাক, সচল
লবণ, মঞ্চিটা, ত্রিফলা, প্রিয়ন্থ, বাসকপুপা ও
গেরিমাটা, মিলিত /> সের। গর্ভসঞ্চারের
হিতীয় মাস হইতে আরম্ভ করিরা ছর্মাস

পর্য্যন্ত এই দ্বত সেব্য। ইহা দেবনে গর্ভের সমস্ত দোষ ও যোনিদোষ নিরাক্তত হইরা বলবীর্য্যাদি সম্পন্ন স্থলব পুত্র ভূমিষ্ঠ হয়।

নীলোৎপলোপীরমধ্কয়িট-দ্রাক্ষাবিদারীকুলপঞ্চন্টল: ॥
ভাজ্ঞীবনীরেণ্ড মুক্তং বিপকং শতাবরীকারসমুদ্ধমিশ্র ॥
ভক্ষ্করাপালমুক্তং প্রশন্তমন্তর্গরে মালক্তরক্তপিত্তে।
কীলে বলে রেক্ত্রি সংগ্রহুত্তে কুছেছ চ পিত্তপ্রভবে চ গুলো ॥
নীলোৎপল বেণার মূল, মৌলকুল বা ফল,
যৃষ্টিমধু, জাক্ষা ভূমিকুল্লাও, কুশাদি পঞ্চমূল ও
জীবনীয়গণ, এই সমূলায়ের ককে, শত্রমূলীর
স্বর্গে এবং যথোপমুক্ত তথ্যে যথাবিধি মুক্ত পাক
করিবে। পাকান্তে মৃত্তের চতুর্যাংশ চিনি মুক্ত
সহ মিশ্রিত করিবে। রক্তপ্রদর, বাতাবিক্য,

রহচ্ছতাবরীঘ্নতম ।

রক্তপিত্ত, ক্ষীণবল প্রহুষ্ট শুক্র ও কষ্টসাধ্য

পিত্তবো এই মূত অতি প্রশন্ত।

শতাবরীমূলতুলাকতত্র: সম্প্রশীড়রেং।
রসেন ক্ষীরতুলোন পচেং তেন মূতাচকম্।
ক্ষীবনীরৈ: শতাবনা মূখীকান্তি: পর্বকৈ:।
পিট্রে: পিয়ালৈক্যকাংশৈ বিষষ্টীন্দুকৈভিষক্ ॥
সিদ্ধানিত চ মধ্ন: পিয়ালাক পলাইকম্।
দরা দশপনকাত্র সি তায়াক্তবিমিপ্রতম্ ॥
রাহ্মণান্ প্রাণয়েং পূর্বাং লিছাং পাণিতলং ততঃ।
যোক্তস্ক্ ক্রেশোষয়ং ব্রাং পুংসবনক তং॥
ক্ষেক্ষাং রক্তপিতং কানং খাসং হলীমকন্।
কামলাং বাত্রক্তক বিসপং হচ্ছেরোগ্রহ্ম্।
উন্মাণানিনপন্মারান্ বাতপিতান্ত্রকান্ ক্রেং ॥

৫০ দেব শতমূলী নিম্পাড়িত করিয়া তাহার স্বরস ও তৎসমান হগ্ধ এবং জীবনীয়দশক, শতমূলী, দ্রাক্ষা, ফল্সা ও পিয়াল প্রত্যেক ২ তোলা ও যৃষ্টিমধু (কেহ বলেন, স্থলক কলজভেদে বিবিধ ঘটিমধু) ৪ তোলা এই সকল কল্প, ইহাদের সহিত ১৬ সের ঘৃত মধাবিধি পাক করিবে। পাক শেষ হইলে, নামাইয়া ঘৃত বজ্রে ছাকিয়া লইবে, শীতল হইলে তাহাতে ৮ পল মধু,৮ পল পিপুল

চুর্ণ ও ১০ পল চিনি মিশ্রিত করিবে। প্রথন মহঃ ব্রাহ্মণ ভোজন করাইয়া, পরে ২ তোলা পরিমাণে ঐ ত্বত রোগিকে পান করিতে দিবে। ইহা রজোহাই ও শুক্রদোয নাশক এবং শুক্রকর ও পুত্র প্রদ। ইহা দারা ক্ষত, ক্ষয়, রক্তপিত, কাস, শ্বাস, হলীমক, কামলা, বাতরক্ত, বিসর্প, হুদ্রোগ, শিরোরোগ, উন্মাদ ও অপশ্রারাদির নিবারণ হয়।

অথ বন্ধ্যা-নিদানম্।

ভেদা বন্ধ্যাবলানাং হি নবধা পরিকীর্ত্তিত ।
তত্তাদিবন্ধ্যা প্রথমা পাপকল্পবিনির্দ্মিতাঃ ॥
রক্তেন চ পূগগ দোবৈঃ সমব্যা পক্ষা ভবেৎ ।
ভূতদেবোপচারৈক তিলো বন্ধাঃ প্রকীর্তিতাঃ ।
পুমানপি ভবেদ্বন্ধ্যো দোবৈরেতৈক গুক্ততঃ ॥

বায়, পিন্ত, কফ, ত্রিদোষ, রক্তদোষ, ভূতগ্রহ, দেবগ্রহ, উপচার ও পাপকর্ম বশতঃ স্ত্রীলোকদিগের বন্ধ্যরোগ জন্মে। বন্ধ্যরোগ নম্ম প্রকার। এই সকল কারণে এবং হক্রদোষ বশতঃ পুরুষ্দিগেরও বন্ধ্যরোগ হয়।

অথ বন্ধ্যাচিকিৎসা।

পুষ্যোদ্ধ্তং শক্ষণায়ান্চক্রাকায়ান্ত, কভায়া। পিউং মূলং ভূমগুত-পাত্রতৌ তু পুত্রণম্॥

পুষ্যানক্ষত্রে উদ্ধৃত চক্রাক্সক্ষণার মূল ও দ্বতকুমারীর মূল পেষণ করিয়া হগ্ধ কিংবা দ্বতের সহিত ঋতুস্থানানন্তর তিন দিবদ দেবন ক্ষরিলে গ্রেণিৎপত্তি হয়।

কাথেন হয়পকায়াঃ সাধিতং সমৃতং পয়ঃ। ৰজুমাতাবলা পাঁড়া ধড়ে গৰ্ভং ন সংশয়ঃ।

অখগনার কাথে হয় পাক করিয়া তাহাতে মৃত প্রক্রেপ দিবে, শতুমানাতে ইহা সেবন করিলে নিশ্চয়ই গ্রহারণ হয়।

পিন্ধলী শূকবেরঞ্চ মরিচং কেশরং তথা। মৃতেন সহ পাতব্যং বন্ধ্যাপি লক্ততে স্বতম্। পিপুল, শুঠ, মরিচ ও নাগেশ্বর এই সমু-দায় পেষণ করিয়া মতের সহিত সেবন করিলে বন্ধ্যা ন্ত্রীও পুত্র প্রসৰ করে।

হ্বৰ্ণস্থ রূপ্যকন্ত চূর্ণে তামস্ত চাজাসংমিশ্রে। পীতে শুদ্ধে ক্ষেত্রে ভেষজযোগান্তবেদ্ গর্ভঃ ।

স্বৰ্ণ, রৌপ্য ও তাম ইহাৰের এতেয়কের ১ মাযা চূৰ্ণ ২ তোলা দ্বত সহ সেবন করিলে গভাশর বিশুদ্ধ হইরা গর্ভদঞ্চার হয়।

বলা সিতাচ্যা মধুকং বলা চ গুক্কং বটে'খং গজকেশরঞ। এতমধুক্দীরঘুতৈনিপীতং বন্ধ্যা স্বপুত্রং নিয়তং প্রস্তে॥

বেড়েলা, চিনি, যষ্টিমধু, রক্তবেড়েলা, বটের শুঙ্গ, নাগকেশর, এই সমুদায় মধুতে পেষণ করিয়া হগ্ধ ও গ্রত সহ সেবন করিলে বন্ধ্যা স্ত্রীদেরও পুত্র হইয়া থাকে।

কুরণ্টমূলং ধাতক্যাঃ কুমুমানি বটাছুরাঃ। নীলোৎপলং প্রোযুক্তমেতদ গভিপ্রদং ক্রম্॥

পীতনিক্টীর মূল, ধাইকুল, বটাঙ্কুর ও নীলোৎপল এই সমুদার জব্য ছথে পেষণ করিয়া ছথ্য সহ সেবন করিলে নিশ্চয়ই রম্নী-দের গ্রহাঞ্চার হয়।

ষ্ঠিবলা পিৰতি পাখপিঞ্চলং জারকেন সহিতং হিতানিনা। খেতরা বিশিপপুথারা যুঠং সা হতং জনরতাই নাজ্ঞা।

যে অবলা হরীতকী (বা পরেশ-পিপুল), জীরা ও শেতপূষ্প-শরপূষা। এই সমুদার দ্রব্য পেষণ করিয়া সেবন এবং হিতকর পথ্য ভোজন করে, তাহার নিশ্চয়ই সন্তান জন্মিয়া থাকে।

পত্রমেকং পলাশস্ত পিষ্ট্রা হুদ্ধেন গর্ভিনী। পীড়া পুত্রমবাপ্নোভি বীয়াবন্ধং ন সংশয়: । শুকরশিশীমূলং মধ্যং বা দধিকলস্য সপয়ক্ষর্। পীড়াথো ভবলিকীবীজং কন্তাং ন পুত্রে দ্রী।

পলাশের একটা পাতা ছথ্বে পেষণ করির।
দেবন করিলে বীর্যাবান্ পুত্র উৎপন্ন হয়।
শৃকশিষীমূল, করেৎবেলের মজ্জা ও ভবলিঙ্গীবীজ, একত্র ছথ্বে পেষণ করিয়া দেবন করিলে
রমণীদের গর্ভে কন্তানা জনিয়া কেবল পুত্রই
জন্মিয়া থাকে।

ক্ষা গুজৌ স্থানং বিলজ্যা দিবসান্তরে ততঃ প্রাতঃ।
স্থাম্বা দির্বায় দ্বা ভক্ত্যা সংপূল্য লোকনাথেশম্॥
বেতবলান্তিনু বৃষ্টিং কর্বং কর্বং পলন্ত শর্করারাঃ।
পিটে,কবর্ণজীবন্ধংসারা গোন্ত ক্ষেন ॥
সমধিকত্তেন পীতং নাত্র দিনে দেরমর্মস্থাক্ত।
কুর্ধিতে সহন্দমরং দন্তাদা পুরুষদরিধেক্তত্তাঃ॥
সমদিবদে গুভবোগে দক্ষিণপার্থাবলন্ধিনী ধীরা।
তাক্তর্যান্তর্মসঙ্গ প্রস্তারমনসোহতিবৃদ্ধধাতোঃ।
পুরুষতা সঙ্গমাত্রগান্তত্তে পুরুং ততাে নিরতম্॥

ঋতুর চতুর্থ যো নদোষরহিতা नाती দিবদে স্থান ও উপবাদ করিয়া পর্দিবস প্রতি:কালে সানান্তে সূর্যোর পূজা ও ব্রাহ্মণকে দান কবিয়া শ্বেতবেড়েলা মূল ২ তোলা, বৃষ্টি-মধু ২ ছই ভোলাও চিনি ৮ ভোলা একবর্ণা ও জীবিতবংসা গাভীর হুগ্নের সহিত মিশ্রিভ ক্রিয়া প্রচুর ম্বতের সহিত তাহা পান করি-থেন, অন্ত কিছু আহার করিবেন না। পরে স্বামিদহবাদের দিবদ পর্যান্ত অলপারমাণে কেবল গ্রন্থ ও অরমাত্র ভোজন করিয়া থাকি-বেন। পরে প্রশস্ত মুগাদিবদে পবিতাচার ও শুক্রবান স্বামীর সহিত সমত হইলে গভোৎ-পত্তি হটবে।

নোঠজাতবটক্ত প্রাপ্তত্তরণ পরে ওছে।
গুলে মানে তথা নোরসর্বপৌ দ্বিযোজিতে।
পুরাপীটো ক্রতাপরসভারাঃ পুত্রকারকৌ ॥
(ক্রতাপরসভারাঃ ইতি বাবৎ স্থাছং পুংবং বা গর্ভক্ত
ন বাক্তাভুতমন্তি তাবদেব ইনং কর্ম ক্যাছে। অঙ্গাতিব্যক্তিত্ত তৃতীয়ে মাদে ভবতীতি নাসম্বরং যাবং পুংসবনকম ক্যাদিতি ভাবঃ। ইনং কর্ম লিকপরাবৃত্তিকারকং ভবতীতি জ্ঞাপনার্গং ক্রতাপরগভারা ইড্যুক্তবিতি চক্রটাকা।)

গভাধানের ত্ই মাদের মধ্যে পুষ্যানক্ষত্রে গোগজাত বটবুক্কের জিশান কোণের শাখাস্থ ওক্ষাবয়, তুইটি মামকলাই ও তুইটি খেতসর্বপ দ্বির সহিত ভক্ষণ ক্ষরিলে পুত্র উৎপন্ন হয়।

नकागातीरम् ।

লক্ষণাহত্তিকৰ্ণাভ্যাং ত্ৰিকত্ৰয়সমৰ্য়াৎ। অৰগকাসমাবোগালৌহং পুংসৰনং মতমু॥ পুত্রোৎপত্তিকরং বৃষ্যং কন্তাস্তিনিবর্ত্তকৃ। কুশস্য বলদং শ্রেষ্ঠং সর্কাময়হরং পরস্ব।

লক্ষণামূল, হস্তিকর্ণপলাশমূল, ত্রিকটু,
ত্রিফলা, ত্রিমদ (বিড়ঙ্গ, চিতামূল, মূতা) ও
অর্থগন্ধামূল, প্রত্যেক > তোলা এবং লোহ
>২ তোলা, এই সমুদার একত্র মর্দ্ধন করিবে।
(মৃত ও মধুর সহিত সেবা। ঔষধসেবনান্তে
চিনির সহিত কিঞ্চিৎ হুগ্ধ পান করা কর্ত্তব্যু)।
ইহা সেবন করিলে ক্সাপ্রস্ব নিনৃত্ত হুইয়া
পুত্র উৎপর হয়। ইহা বিশেষ বলকারক।

কুমারকল্পদ্রসং মৃত্য।

পকাশক্ষাগমাংসদ্য দশমূল্যান্তথৈৰ চা জলমন্ত্রপং দহা কাথেন মুহুনাগ্রিনা॥ চতুভাগাবশেষ হ কাথং গুজাং প্রয়ত্তঃ। পব্যং প্রস্থায় দর্শির হ্রায়াৎ কুশলো ভিষ্কু॥ ক্ষীরং ঘূতসমং দ্যালারায়ণ্যা রসং তথা। তামে বা মুন্ময়ে পাতে তদেকত পচেচ্ছনৈ:॥ কুঠং শঠী চ মেদে ছে জীবকর্ষভকে) তথা। প্রিয়ঙ্গ তিফলা দাক পত্রমেধা শতাবরী॥ কাশ্মরী মধুকং ক্ষীর-কাকোলী মুস্তমুৎপলম্। कोवछी हन्मभटेकव कारकालो शाहितायुगम् ॥। (व इव है। लक्ष मृतः मृतक मत्र पुर्व कर्। বিদারীন্বয়মঞ্জিষ্ঠা পণিনীর্য়মেব চ 🛚 নাগপুপাং তথা দার-হরিটা বেপুকং তথা। জ্যোতিষভীভবং মূলং শব্ধিনী নীলিনী বচা।। অন্তক্ষণ ব্ৰুমং নিক্ষিপেৎ ততঃ। এতেবাং কাৰ্যিকং কৰং দহা গুভুদ্নে স্থী।। শুভনক্তবোগে চ সংপূজা গণনায়কম্। শক্ষরক মৃড়ানীক নমস্কুত্যাতিভজিত:॥ পাকং कृशां ९ अश्कृत विकानन् भन्न शृक्तकम् । সিদ্ধাতি কিপেৎ তত্র পারদং পরিনির্মালম্। युक्रीर्नः (माधिककाञः शक्तकः कार्षिकः स्राप्तः। ততঃ পুষ্পরদং তত্র প্রস্থার্দ্ধক বিনিক্ষিপেৎ। কাচসস্পূটকে বাক্ত-পাত্রে বা স্থাপয়েৎ স্থাই। পরাশরমূনি: ঐীতি-করণাবারিধিমূদা । বন্ধাময়বিনাশার শিশুকরজনং মৃত্যু। চকারাস্য প্রসাদেন জন্মবন্ধ্যা লভেৎ স্তম্। शामि कर्षकाः मार्थिन वा विश्वास मानतम्। অনুপানং প্রকুরীত পরকাগং বিশেষতঃ । পবাং বাপি পিবেং ক্ষীরং শীতং প্রযুগং তথা।

ত্তস্যাস্য স্থাসন্ধ্য গুণান্ শৃণু সমাহিত: ॥

অস্য প্রসাদাৎ বড়োহপি বন্ধায়াং জনরেৎ স্থতান্।
রক্ষোদেবেণ যা তুটা গুকুদোবেণ বাপি চ ॥

স্ত্রীভগস্থগদেনের পীড়িতা যা চ সর্বদা।

যা চ পূপাং ন বিন্দেত শতুনা পীড়িতা চ যা ॥
ভূষা ভূষা চ নশুন্তি স্থতা যাসাং মৃহত্ম, হ:।
ভানেকোরধ্যোগেণ মন্ত্রোগান বা পূনঃ ॥
ভানেকব্রত্যেগেন যাসাং পূরো ন জায়তে।
ভাসাং কামসমাঃ পুরা ভারত্তে চিরজাবিন: ॥

গবা ঘুত /৮ সের। কাথার্থ-ছাগমাংস /৬। • সের, দশমূল /৬। • সের, পাকার্থ জল ১০০ সের, শেষ ২৫ সের। ত্রা∕৮ সের, শত-মূলীর রস 🔑 সের। কন্ধার্থ—কুড়, শুঠী, মেদা, महारमना, जीवक, सर्वक, श्रिक्र्, जिल्ला, দেবদারু, তেজপত্র, এলাচ, শত্মূলী, গান্থারী ক্ষীরকাকোলী, মূতা, নীল-ফল, যৃষ্টিমধু, হুদি, জীবন্তা, রক্তচন্দন, কাকোলী, খামা-লতা, অনস্তমূল, খেতবেড়েলার মূল, শ্রপুঙ্খ-মুল, হিবিধ ভূমিকুমাও, মঞ্জিগা, চাকুলে, দারুহরিদা, শালপাণি, নাগেশ্বর, রেণুক, লভাফটকীমূল, শঙ্গপূজী, নীলবৃক্ষ, **45**, অন্তরু, গুড়ত্বক্, লবঙ্গ ও কুন্ধুন প্রত্যেক গুট তোলা। শুভ্দিনে দেবদেবীর পূজা করিয়া তাত্রময় বা মুমায় পাত্রে ইহা পাক করিনে। পাকান্তে শাহল হইলে পারদ, অল ও গ্রুক প্রত্যেক হুই তোলা, এবং মধু /২ সের মিশ্রিত তুই ভোলা পৰ্যান্ত। মাত্রা—২ করিবে। অমুপান—ছাগ হগ্ধ, অভাবে গবা হগ্ধ এক পোয়া। এই দ্বত পান করিলে জন্মবন্ধ্যা দ্রী পুত্রবভী হয়। যাহারা রজোদোষ, শুক্রদোব অথবা যোনিরোগে পীড়িত, 10 বারেই ষাহাদের রজ: হয় না, বা বজ:কালীন অত্যস্ত यञ्चला इत्र, किःवा वांतःवांत मखान इहेग्रा विनष्टे इम्न ध्वरः व्यत्नक खेरम, मञ्ज ও এত-যোগে যাহাদের পুত্র না জন্মে, এই মূত পানে ভাহাদের নানাবিধ স্ত্রীরোগ ও গর্ভদোষ নিবারিত হইয়া দীর্ঘজীবী, কলপ্তুলা ও বল-ৰীৰ্য্যাদিসম্পন্ন পুত্ৰ ভূমিষ্ঠ হয়।

গৰ্ভাজনকভেষজমাহ —

পিপ্ললীবিড়কটক্লণসমূর্বং যা পিবেৎ পরসা। ঋতুসময়ে ন হি ভক্তা গর্ভঃ সঞ্জায়তে কাপি ।

পিপূল, বিজ্ঞ্ব ও সোহাগা ইহাদের সমভাগ চূর্ণ ঋতুকালে ছগ্ধ দহ সেবন করিলে
রমণীদের গভোৎপাদিকা শক্তি বিনষ্ট হয়।
আরনালগরিপেষিতং তাহং বা জয়াকুলমমতি পুশিণী।
সংপ্রাণগুড়ম্টিসেবিনী সল্ধাতি ন হি গভ্যক্রনা।

খতুমতী কামিনীদিগকে, কাঁজি খারা পেষিত জয়াপুষ্প পুণাতন গুড়ের সহিত দেবন করাইলে তাহারা কখনও গঠগারে করে না।

প'ঠাপতাং কতুসাতা শীখাগর্ভং ন ধারয়েৎ 🛭

শতুষান করিয়া আক্নাদির পাতা বলে মদন করত দেবন করিলে রমণীদের গভোং-পত্তিভয় থাকে না!

ধাত্যজ্নাভয়াচূর্ণ চোয়ণীতং রজো হরে। শেলুচ্ছদ্মিশ্রশিষ্ট-**ভক্**ণঞ্চ ভদর্যক্র।

আমলকী, অর্জুনছাল ও হরীতকী ইং-দের চুর্ণ জলের সহিত ঋতুকালে সেবন করিলে, অথবা চাল্তের পাতা মিশ্রিত পিষ্টক সেবন করিলে রজোলোপ হয়, স্তবাং গভোৎপত্তি হয় না।

রসাঞ্জনং হৈমবাটা বয়.ছে। চুণীকৃতং শাতজালেন পীতম্। রজোবিনাশং নিয়তং করোতি শহাতে কা গ্রহমাগনস্য ॥

রদাঞ্জন, হরীতকী ও আমলকী এই তিনটি এব্য চূর্ণ করিয়া শাতল জল সহ সেবন করিলে নিয়তই রজোবিনট হয়, স্মৃতরাং গর্জোৎপত্তির আর সম্ভাবনা কি ?

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

পৃথক্ সর্কামলোথাস্থ যোনিব্যাপৎস্থ বিংশতে। বাতে পিতে ককে চোজিং বিধেয়ানি পৃথক্ পৃথক্ । যানি পথাক্ষপথানি তানি তানি যথামলম্। বোজয়েজজ্জিয়েচচাপি ক্রমেণ মতিমান্ ভিষক্॥

বার্, পিত্ত ও কফের পৃথক্ পথক্ রূপে যে সকল পথ্যাপথ্য নির্দ্দেশ করা হইয়াছে, বুদ্দিমান্ চিকিৎসক পৃথক্ পৃথক্ দোষজাত

বিংশতি প্রকার যোনিরোগে নোধান্থসারে সেই সেই পথ্য সেবন এবং অপথ্য বর্জ্জনের ব্যবস্থা করিবেন।

ইজ্যায়ুর্বেদ-সংগ্রহে যোনিব্যাপদ্ধিকারঃ।

অথ গভিণীরোগাধিকারঃ।

গভিণাা গর্ভতো রক্তং প্রবেদ্ যদি মৃত্যু হিং। ভন্নিরোধায় সা ত্রমুৎপলানিশৃতং পিরেও।

গভিণীর গর্ভ হইতে বারংবার রক্তস্রাব হইলে তাহা নিবাবণার্থ উৎপলাদিণের কল্কে হুগ্ধ সিদ্ধ করিয়া সেবন করিবে।

মধুকং শাক্ষরীক্ষ পরতা হ্রদাক চ।

অন্যান্তক: কৃষ্ণতিলান্তানবলী শতাবরী ॥

বৃন্ধাননী পরতা চ তথৈবাংপলশারিবা।

অনন্তশারিবা রালা পরা মধুকনেব চ॥

বৃহতীন্বকাশান্তলীরিশুক্রতা হুত্য।

পূথক্পণী বলা শিগ্রামুদ্ধের মধুন্তিকা ॥

শূকাটকং বিসং জাকা কশের মধুকং সিতা।

মাসেরু সপ্ত যোগাং হারদ্ধোকান্ত সপ্তম।

ব্ধাক্রমং প্রোক্রবার ব্রুপ্রাবে প্রোহ্তাঃ॥

ব্ধাক্রমং প্রোক্রবার ব্রুপ্রাবে প্রোহ্তাঃ॥

গভিণার প্রথম মাদে বক্তবাব হইলে ঘটিমধু, শাকবীজ, ক্ষীরকাকোলী ও দেবদারু (১), ছিতীয় মাদে রক্তবাব হইলে আমরুল, ক্ষতিল, মার্ল্লাই ও শতমূলী (২); তৃতীয় মাদে পরগাছা, ক্ষীবকাকোলী, উৎপল ও অনপ্তমূল (৩): চতুর্থমাদে অনস্তমূল, শামালতা, রাল্লা, বামুনংটো ও ঘটিমধু (৪); পক্ষম মাদে বৃহতী, কণ্টকারী, গান্তারীফল, বটাদি ক্ষীরের্কের বক্ষল ও শুলা এবং ঘৃত (৫); মন্ত মাদে চাকুলে, বেড়েলা, শজিনাবীজ, গোকুর ও ঘটিমধু (৬); মপ্তম মাদে

পানিকল, মূণাল, কিস্মিস্, কেন্তর, ষষ্টিমধু ও চিনি (৭), এই সমুদায়ের কল্প ছগ্ধ সহ সেবন করিতে দিবে।

কপিথ'্নববৃহতী-পটোলেক্স্নিদিন্ধিকাঃ। মূলনি ক্ষারসিন্ধানি দাপয়েদ্ ভিষণষ্টনে ॥

অষ্টম মাদে রক্তপ্রাব হইলে কদ্বেল, বেল, বৃহতী, ইকুও কণ্টকারী ইহাদের মূল এবং পল্তা, জ্ব্ব সহ পাক করিয়া সেবন ক্রিতে দিবে।

নবমে মধুকান্তা-পয়স্তাশারিবাঃ পিবেং। প্যস্তু দশমে শুঠা। শৃত্নীতং প্রশৃস্ততে ।

নবম মাদে রক্তপ্রাব ছইলে যৃষ্টিমধু, অনস্ত-মূল, ক্ষীরকাকোলী ও প্রামালতা এই সমুদার গুল্প সহ পাক করিয়া সেবন করিতে দিবে। দশম মাদে ভুঞ্জীসিক্ষ শীতল গুল্প সেবন করাইবে।

দক্ষীরা বা হিতা গুড়ী মধুকং দেবদাক চ।
এবমাপাায়তে গভগুৱা ক্ষক্ চোপশামাতি ॥
কুশকাশোকবুকাণাং মুলৈগোকুরকন্স চ।
শৃতং হৃদ্ধং দিতাবুক্তং গর্ভিণাাঃ শুলমুৎ প্রম্॥

শুঠ, যষ্টিমধুও দেবদারের সহিত দিক হ্রা গভিণী দেবন করিলে গভিন্ত শিশুর বলসঞ্চর এবং গভিণীর তীএ বেদনার শান্তি হয়। কুশ-মূল, কেশেমূল, এরওমূল ও গোকুর এই সম্পারের সহিত হগ্ধ সিদ্ধ করিয়া চিনি সহ সেবন করিলে গর্ভিশীর বেদনার শাস্তি হয়।

প্রথমে মাসি পর্ভে তু বদা ভবতি বেদনা।
চন্দনং শতপূম্পা চ শর্করা মদয়ন্তিকা ॥
এতানি সমভাগানি পিষ্টা তভুলবারিশা।
পায়রেৎ পয়সালোভা পভিশং মাত্রয়া ভিবক্ ॥
তথা তিলান্ পয়কঞ্ শালুকং শালিতভুলান্।
ক্রীরেণ পিষ্টা ক্রীরেণ সিতাক্রোক্রান্তিনে চ ॥
আলোভা পায়য়েয়ায়ীং ততঃ সম্পদ্যতে শুভদ্।
তিমান্ ক্রীরেণি দাতবাং ভোজনং ক্রীরসংযুত্ম॥

গর্ভের প্রথম মাসে গর্ভে বেদনা উপস্থিত হইলে খেতচন্দন, শুল্ফা, চিনি ও ময়নাফল সমান পরিমাণে লইয়া তড়লজলের সহিত বাটিরা হয়ে শুলিয়া গর্ভিণীকে পান করাইবে। অথবা তিল, পল্মকান্ত, শালুক ও শালিত ডুল এই সম্পায় দ্রব্য হয়ের সহিত পেখণ করিয়া চিনি, মধু ও হুংগ্রব সাহত মিশ্রিত করত পান করিতে দিবে, ইহা জীণ হুইলে হুগ্মার ভোজন করাইবে।

ষিত্রীয়ে মাসি গর্ভে তু যথ ছবতি বেদনা। ডদোৎপালক কম্মন্ত শৃক্ষাটককশেক্ষকম্॥ ততুলোদকপিষ্টন্ত পায়রেৎ ততুলামূনা। নিবার্থা গর্ভশূলক বিবং গর্ভং করেণতি চঞ

ষিতীর মাসে বেদনা উপস্থিত হইলে পদ্ম, পানিকণ ও কেণ্ডর তওুলোদকে পেষণ করিরা তওুলাদকে পেষণ করিরা তওুলাদকেরই সহিত সেবন করাইবে। ইহাতে গর্ভপূল নিবারিত হইরা গাভ স্থিরভাব প্রাপ্ত হইরা থাকে।

তৃতীরে কীরকাকোলী কাকোনামলকীফলম। পিইমুকোদকেনৈতৎ পাররেৎ গার্ভিনিং ভিষক্ ॥ পালারং পরসা জীর্নে ভোজয়েদমু গতিশীম। তথা পারোৎপালং কুঠং শালুকঞ্চ সমাংশিকম্ ॥ নিভাদকেন পিইনু জু কীরেণালোড্য পাররেৎ। ভেন শুলং নিবর্জেত ন গার্ভো বাধতে জবম ॥

শৃতীয় মাসে ক্ষীবকাকোনী, কাকোনী ও আমনকী একত্র পেবণ করিয়া উক্ষজনের সহিত গার্জনীকে পান করাইবে। কুধাকালে প্রথের সহিত শালি-তথুলের অন্ন ভোজন করিতে দিবে। ভজ্ঞা পদ্ম, নীলোৎপল, কুড় ও শালুক চিনির জলের সহিত পেষিত ও জ্ঞ্নে আলোড়িত করিয়া পান করাইবে। ইহা ছারা গর্জশূল নিবারিত এবং গর্ভ ব্যথারহিত হয়।

চতুর্থে তু বিধানজ্ঞ: পারয়েদিদমৌবধম্। পিট্টোৎপলক শালুকং কন্টকারী ত্রিকটকম্। বধাগিনাত্রো কালে গর্ভিণীং পরসা সহ। তথা গোকুরকং সিংহী বালকং নীলমুৎপলম্। পিট্টা ক্ষীরেণ পাতবাং গর্ভশূলনিবারণম্॥

চতুর্থ মানে উৎপল, শালুক, কণ্টকারী ও গোক্ষর এই সমুদার অথবা গোক্ষর, কণ্ট-কারী, বালা ও নীলোৎপল এই গুলি ছগ্নের সহিত পেষণ করিয়া পান করাইলে গঙ্গুল নিবারিত হয়।

পঞ্চম ম'সি গড়ে তু যদা ভবতি বেদনা।
তত্ৰ নীলেংপলং বারংং পিপ্ট্রা ক্ষারেণ পাচনম্ ।
ত্বতকৌ দ্রাবিতং পাঝা গঙ্গা চ ক্লজাং হরেং।
তথা নীলোৎপলং নারীং কাকোলাং সমভাগিকম্ ।
শীততোয়েন পিপ্ট্রা চ কারেণালোত্য পায়য়েং।
অনেন বিধিনা গর্ভঃ দ্বিরং স্যাণ ক্ষক প্রশামাতি ।

পঞ্চম মাসে বেদনা উপস্থিত ছইলে নীলোৎপল ও ক্ষীরকাক্লা হয়ে। সহিত পোষণ
করিয়া হয়, সত ও মধুর সহিত পান করিতে
দিবে। অথবা নীলোৎপল, স্বতকুমারী ও
কাকোলী সমজাগে শাতল জলে পেষণ ও
হয়ের সহিত আলোড়ন করিয়া পান করাইবে।
ইহাতে বেশনাদি নিবারিত ছইয়া গভ স্থিরভাব প্রাপ্ত হয়।

বটে মাসি যদা গতে দেশনা জায়তে তদ।
মাতৃপুক্ষ সা বীজানি প্রিয়কু চন্দনোৎপলম্ ॥
কীরেণ লোডা পাতবাং গডন্তন্বিরগন্ ॥
তথা পিয়ালবীজানি মৃষীকালাজশক্তবঃ।
এতৎ স্পীতলং কালে পীড়া চ হ্পমগুতে।

ষষ্ঠ মাদে গভবেদনা উপস্থিত ১ইলে টাবালেবুর বীজ, প্রিয়ন্ত্র, চন্দন ও উৎপল হুগ্নের সহিত পেষণ কার্য্যা সেবন করাইবে। অথবা পিয়াল বীজ, জাক্ষা ও বৈ-চূর্ণ পুলীতল জুলের সহিত মিশ্রিত ক্রিয়া পান ক্রিতে দিবে। ইহাতে ব্যথা নিবারণ হয়। নপ্তমে শতপুত্ৰীক মৃণালসহিতাং পিবেৎ। পিষ্ট্ৰা ক্ষীরেণ শূলার্জা গভিণা যা হুখার্থিনী ॥ কপিথক্রমুকামূলং সলাঞ্জং শর্করাযুত্র। শীতভোগ্নেন সংপিষ্টং ক্ষীরেণালোডা পার্য়েৎ। পীন্বা হস্ত্যবলা শীদ্রং শূলং গর্ভসমুদ্ভবম্॥

সপ্তম মাসে শৃত্যুলী ও পদ্মগুল বাটিয়া হগ্নের স'ইত পান করাইবে, কিংবা করেংবেল, স্পারি-মূল, থৈ ও চিনি শাতল জলের সহিত বাটিয়া হগ্নের সহিত সেবন করিতে দিবে। ইহাতে সম্বর গর্ভশূল নিবারিত হয়।

অষ্ঠমে তু যদা মাসি গর্গে ভবতি বেদনা।
তদা পিষ্টা তু ধস্তাকং পায়রেৎ তঙুলাম্বনা।
শূলং নিবর্দ্ধতে তেন গর্ভঃ সংখায্যতে স্তিধা।
এবং পলাশস্তাদলং স্থপিষ্টং সংশীয় তোয়েন স্পীতলেন।
অত্যন্তখোরাষ্ট্রমাসগর্ভ-বাপাডুরা যান্তি ক্রণং তরুণাঃ॥

অষ্টম মাধে বেদনা উপস্থিত হইলে ত গুলোদকের পহিত ধনে বাটিয়া দেবন করাইবে। অথবা সুনীতল জলে পলাশপত্র বাটিয়া পান করিতে ।দ্বে। ইহাতে গভবেদনা দ্বীকৃত হইবে।

গভিণ্যা নবমে মাসি গদা ভবতি বেদনা । এরগুমূলং ক'কোলীং পিষ্টা শীতে;দকেন চ ॥ পীত্বা শূলান্ত্রিমূচ্যেত তদা নারী ন সংশয়, ॥ তথা পালাশবীজঞ্চ সকাকোলীকুক্টেকম্। ভক্তেন বারিণা পিষ্টা গভেশুলং ব্যুপোহতি॥

নবম মাসে বেদনা উপস্থিত হইলে এর ও-মূল ও কাকোলী শাতল জলের সহিত অথবা পলাশবীক, কাকোলী ও সাটিমূল কাজির সহিত বাটিয়া সেবন করাইলে নিশ্চয় গর্ভণুল নিবারিত ইয়া থাকে।

অপবা দশমে মাসি বেদনা জ:য়তে যদা।
তদা নালোৎপলং যষ্টা-মধুকং মুদ্দাসংযুত্র ॥
সমিতকান্তসা পিত্র কারেণালোভ্য পায়য়েৎ।
দোবক নাশ্যেদের শূলং গর্ভসমূত্রবন্॥

দশম মাদে বেদনা উপস্থিত হইলে নীলোৎপল, যষ্টিমধু, মুগ ও চিনি জলে বাটিয়া হধ্যের সাহত ভোজন করাইবে, ইহাতে গর্ডের দোষ ও বেদনা নিবারিত হয়। তথা চৈকাদশে মাসি গতে ভবতি বেদনা।
মধুকং পামককৈ মুণালং নীলমুৎপলমু ॥
শীততোয়েন পিটু । তু কীরেণালোডা পায়য়েৎ।
তেনৈব বেদনাতীব নাশমায়াতি সত্ত্বমু ॥
ক্যারিকামুৎপলং কুঠং সমক্ষামূলকং সিতা।
পিবেদেকাদশে মাসি গভিণা শুলশাপ্তয়ে ॥

একাদশ মাদে বেদনা উপস্থিত হইলে যৃষ্টিমধু, পদ্মকান্ত, মৃণাল ও নীলোৎপল অথবা ভূমিকুমাও, উৎপল, কুড়, বরাক্রাস্তামূল ও চিনি এই সমুদায় শাতল জলে বাটিয়া হথে গুলিয়া দেবন করিতে দিবে।

সিতা বিদারী কাকেলোঁ তথা জারবিদারিকা। গুভিগা দ্বাদশে মংনি পিবেচছ্লন্মমৌষধম্॥

থানশ মাসে চিনি, ভূমিকুলাও, কাকোলী ও ক্ষীৰকাকোলী এই সমুদার বাটিয়া **ধাইলে** গভণ্য নিবারিত হয়।

কংশক্ষ্পাটক জাবনাং নিগোংপালের ওশতাবরাভিঃ। সিদ্ধং পয়ঃ শর্করণা বিভিন্নং সংস্থাপয়েদ্ধ ভবুদীর্শ্লন্ম।

কেণ্ডর, পানিফল, জীবনীয়-দশক, পদ্ম, নীলোৎপল, এরওমূল ও শতমূলী এই সমু-দায়ের কলে হগ্ধ পাক করিয়া চিনির সহিত সেবন করাইলে গভ ছির হয় এবং গভিণীর শূল বিনষ্ট হয়।

> ব নেকশৃক্ষ টিকগ্রমুৎপলং সমুক্তাগন্ধীমধুকং সশকরম্। সশুলাগভ্যাভূপীড়িতাক্ষনা পয়ে'বিমিশ্রং প্রসান্ধভূক্ (প্রেবং॥

কেন্দ্রর, পানিফল, পদ্মকেশর, নীলোৎ-পল, মুগানী ও যষ্টিমধু এই সমুদার জব্যের কবে সিদ্ধ হগ্ধ চিনির সাহত সেবন করিলে সশ্ল-গভস্রাব-পীড়িতা রমণীগণের রোগশান্তি হয়। রোগিণীকে হগান পথ্য করিতে দিবে।

মধুনা চ্ছাগছজেন কুলালকরকর্দমঃ। অবভাং স্থাপয়েদগর্ভং চলি ১ং পানযোগতঃ॥

হণ্ডিকা (ছাত্) নিমিত্ত কুন্তকারের করমান্দত মৃত্তিকা আনতোলা /৷• পোয়া ছাগত্ত্ব ও।• আনা মধুসহ সেবন করিলে চালিত গভ স্বস্থানস্থ হয়। গভেঁ গুৰু তু বাতেন বালানাঞাপি গুৰাতাম্।
সিতামধুককাশ্মধাৈহিতমুখাপনে পয়: ।
গভিশোৰে ডামগভা: প্ৰসহাল্য সদা হিতা: ।
(আমগভা ইতি হংসকুশ্দীনামণ্ডানীতি নিবদাস: ।)

বার্ থারা গর্ভ ও গর্ভিণী শুক হইতে থাকিলে পুষ্টির জক্ত যষ্টিমধুও গান্তারীফল সহ হগ্ম পাক করিয়া চিনির সহিত সেবন করিতে দিবে এবং হংসাদির ডিম্ব ও কুকুটাদির মাংস

রোমরাজী ভবেদ্ যক্ষা বামপাখে সমুক্রিতা। কল্পাং তক্ষা বিজানীয়াদ্ দক্ষিণেন তথা স্তম্॥

গভিণীর বামপার্গে রোমরাজি উথিত হইলে কন্তা এবং দক্ষিণ পার্গে ইইলে পুত্র জরো।

মধুকচন্দ্ৰোশীর-শারিব'পরপ্রেটকঃ। শর্করামধুসংযুক্তঃ ক্যুয়ো গভিত্তীকরে।

যষ্টিমধু, রক্তচন্দন, বেণার মূল, অনস্তমূল, পদ্মকাষ্ঠ ও ভেজপত্ত ইছাদের কাথে চিনি ও মধু প্রাক্ষেপ দিয়া পান করিলে গভিনীর জ্বর শাস্ত হয়।

চন্দনং শারিবা লোধ্রং মুখীকা শর্করাবিওন্। কাথং কৃষা প্রদন্তাচ্চ গর্ভিণীব্রশান্তরে॥

রক্তচন্দন, অনস্তম্ল, লোধ ও জাকা ইহা-দের কাথে চিনি প্রক্রেপ দিয়া পান করিলে গভিণীর জ্ব নিবাবিত হয়।

এরগুদি:।

এরওমূলমমূতা মঞ্জিটা রক্তচন্দনম্। দালপল্মুতঃ কাথে। গ্রিণ্যা করনাশন: ।

এরগুমূল, গুলঞ্চ, মঞ্জিটা, রক্তচন্দন, দেব-দারু ও পদ্মকাষ্ঠ ইহাদের কাণ পান করিলে গর্ভিনীর হুর নিবারিত হয়।

चा अक्षृष्ठः काषः त्वरत्वताकण्ड्र्षः। ष्यत्वन नौष्मारतः। शक्षिती श्रहनीः कृत्वः॥

আমছাল ও জামছালের কাথে থৈচুৰ্ণ এক্ষেপ দিয়া সেৱন কবিলে তৎক্ষণাৎ গর্ভিণীর গ্রহণী নিবারিভ হয়। পাঠালাঙ্গলিংহান্ত-ম্যুরকজটৈ: পুথক্। নাভিৰ্ভিভগালেপাৎ হুপং নারী প্রস্যুতে ॥ (লাঙ্গলীত্যক হুরুদেতি বা পাঠ: ।)

আক্নাদি, বিষলাঙ্গলী (পাঠান্তরে নিসিন্দা), বাসক ও অপামার্গ ইহাদের কোন একটির মূল পেষণ করিয়া নাভি বস্তি ও যোনিতে প্রলেপ দিলে নারীগণ স্থান প্রসব করে।

প্রবক্ষির'মূল-লেপগুৰু পূথক্ পূথক্। বাসামূলে ধ্বং তৰুৎ কটাবৃদ্ধ সূতে দেওমু।

পর্বকফল ব: শালপাণি মূল পেষণ ক।রয়া নাভি বস্তি ও বোনিতে গুলেপ দিলে অথবা বদেকের মূল কটাতে বন্ধন করিলে স্ত্রীগণ বিনাক্টে প্রদ্ব করিয়া পাকে।

পাঠারাপ্ত শিকা বেংনো বা নারা সংগ্রধাররেও। উরা অসবকালে তু সা স্থানে প্রক্রতে। তুরাস্থারিপিটেন নুলেন পরিলেবারেও। লাকল্যাশ্রেকাণ স্থাত ক্ষিপ্রমেতেন গভিনা।

প্রসবোর্থা স্ত্রী আক্নাদির মূল যোনিতে বাংগ করিলে নিরাপদে প্রসব করিয়৷ থাকে। অথবা কাঞ্জিক-পেষিত ঈশলাঙ্গলার মূল গতিনীর পাদ্ধরে লেপন করিলে সত্তর প্রসবকার্য্য সমাধা হয়।

ষ্ট্রেষকমূলেন নাভিব্স্তিভগালেপঃ কর্জনাঃ। গুহামুণা গেহধুমপানং গভাপকর্ণমুখ

বাসকের মূল পেষণ করিয়া নাভি, বস্তি ও গোনিতে প্রলেপ দিলে কিংবা কা,জর সহিত গৃহধুম সেবন করিলে সহকে প্রস্ব হয়।

মাতৃপুক্ত মূলানি মধুকং মধুসংমূতম্। মুতেন সহ পাতবাং হুগং নারী প্রস্তাত ॥

ছোলক লেবুর মূল ও যটিমধু, মধুর সহিত পেষণ করিয়া হত সহ সেবন করিলে গভি^{নী} অনায়াসে প্রসব করিয়া থাকে।

পুটনগ্ধসপকঞ্কমত্থমসীকুক্মসারস্থিতাঞ্জিতাকী। কটিতি বিশল্যা জায়তে গর্ভবতী মূচগর্ডাপি ॥ পুটদগ্ধ সর্পথোলস স্ক্র চূর্ণ করিয়া মধু সহ নেত্রে অঞ্জন দিলে অতি সম্বর মৃত্পভা গর্ভি-ণীরও প্রসব হয়।

পোতকীমূলকক্ষেন ভিলতৈলযুতেন বা। গে'নেরভান্তরং লিপ্ত1 সুপং নারী প্রস্থাতে।

পূঁই শাকের মূলের কন্ধ ভিলতৈল মিশ্রিত করিয়া তথারা যোনির এঅভ্যন্তর লিপ্ত করিলে গভিণী নিরাপদে প্রসব করিয়া থাকে।

শুহীকীরং তথা স্তোকং পর্তিণাং: শির্সি কিপেং। মৃত্যুর্ভং তদা কতে গতিলা রংলা ফত্যু 🏽

গভিশীর মস্তকে অল্ল মাত্রায় সিজের আটা। প্রদান করিলে গভন্থ মৃত সন্তান প্রস্ব হয়।

করিদমনদহনমূলং পিষ্ঠং, সলিলেন পাতনং সন্থাঃ। চিরম্চিরজং গড়ং মৃত্যমুত্ত বা নিপাত্রতি॥

নাগদনার মূল ও চিতামূল সমভাগে লইয়া ভলে পেষণ করিয়া ।• আনা মাত্রায় সেবন করিলে চিরজ, অচিরজ, মৃত বা জীবিত গর্ভ নিংস্কৃত হয়।

ব'তেন গভাগকে চ'ং একতিসময়েগণি বা। গভাং ন জনফেল'রী ভঙ্গাং শৃগু চিকিৎসিত্য ॥ কুটায়েমূৰলেনৈয়া কুড়া ৰাজ্যমূদুগলে। বিষয়ক শেনং পানং দেবেত প্রস্বাধিন'॥

বায় স্থারা গভের সংস্কাচ হেতু নিদিইকালে প্রাথন না হঠলে গভিলাকে উদ্পলে মুখল স্থারা বাস্ত কৃষ্টিত করিতে দিবে এবং বিষম অপন ও পান ব্যবস্থা করিবে।

প্রসবস্য বিলম্বে তু ধুপরেদভিতো ভগম। কুকসপন্য নির্মোকেন্তবা পিওীতকেন বা ॥

প্রসবকাল অতীত হইতে থাকিলে ক্লফ-সপের (কেউটে সাপের) খোলস খারা অথবা ময়নাফল খারা যোনির চতুস্পার্থে ধূম প্রয়োগ করিবে।

> কুকা বচা চাপি জলেন পিটা দৈরওতৈলা গলু নাভিলেপাৎ। হুখং প্রস্তিং কুক্তেংকনানাং নিশীভিতানাং বছভিঃ প্রমাদৈঃ॥

বছবিধ প্রমাদে (মৃত্গভানিতে) নিপীড়িতা গর্ভিনী, পিপুল এবং বচ জলে পেষণ করিয়া এরগুতৈবের সহিত নাভিত্তে প্রকেপ দিলে অনায়াসে প্রসব করিয়া থাকে।

কটুজুৰাহিনির্মোক-কৃতবেধনসর্বপৈঃ। কটুতৈকাদিতো ধুমো বোনেঃ পাতরতেংমরাম্॥

তিতলাউ, দর্পথোলস, ঘোষালভা, দর্মপ ও কটুতৈল এই সমুদায় জব্যের ধূম যোলিতে প্রদান করিলে অমরা (ফুল) নিপতিত হয়।

কচবেষ্টিতরা সুল্যা যুষ্টে কঠে মুখং পতভামরা। মুলেন লাঙ্গনিক্যাঃ সংলিপ্তে পাণিপাদে চ। অমরাপাতনং মজৈঃ পিপ্পন্যাদিরজঃ শিবেৎ ॥

কেশবেষ্টিত অঙ্গুলি থারা কণ্ঠদেশ ঘর্ষণ করিলে অথবা বিষলাঞ্চলীর মূল ২ন্ত পদে লেপন করিলে নিরাপদে ফুল পতিত হয়। পিপ্লস্যাদিগণের চুর্গ মন্ত সহ সেবন করিলেও অমরা (ফুল) নিপ্তিত হয়।

স্ত:য়া ক্ৰচ্ছিরোবস্তি-শূলং মৰুল্লসংজ্ঞ কৃ। গবক্ষারং পিবেৎ তত্র সপিষোঞ্চোলকেন বা। পিন্ধন্যাদিগণকাথং পিবেষা লবণাধিতমু॥

প্রস্বান্তে প্রস্থাতর হৃদয়ে, বস্তিতে ও শিরোদেশে ভয়ানক বেদনা ২ংলে তাহাকে মক্কল শূল কহে। এন নক্কশূলে স্বত বা উষ্ণজলের সাহত যবকাব বেবন করিলে কিংবা সৈদ্ধবের সহিত পিপ্রস্যাদিগণের কাথ পান করিলে ঐ শূলের শাস্তি হয়।

পারাবতশকৃৎ গীতং শংলিতভুলবারিণা। গর্ভপাতাস্তরোধে জু রক্ত্রাব্নিবারণম্॥

শালিত খুলোদকের সহিত পাররার বিষ্ঠা সেবন করিলে প্রস্বান্তে অতিরিক্ত রক্ত্সাব নিবারিত হয়।

হ্রীবেরাতিবিবামুম্বা-মোচশক্রৈ: শৃতং জলম্। দল্মান্যান্তে প্রচলিতে প্রদরে কুন্দিরক্রাপি॥

বালা, আতইচ, মুতা, মোচরস ও ইক্রয়ব ইহাদের কাথ সেবন করিলে প্রবিচলিত গর্ভ স্থিতিশীল হয় এবং কুক্ষিশূল নিবারিত হয়।

ইন্দুশেখররসঃ।

শিলাকজ্ঞ সিন্দুর-প্রবালায়ের জাংসি চ ।
মাক্ষিকক তথা তালং সমভাগানি মর্দ্ধির ॥
ভূকরাজন্য পার্থনা নিশু গু। বাসক্ষ্য-চ ।
ছলপ্রন্য প্রদান কুটজস্য চ বারিণা ॥
ভাবয়িখা বটাঃ কুডা কলায়পরিমাণতঃ ।
বথাদোবালুপানেন গর্ভিণীয়ু প্রবাজ্ঞরে ॥
গর্ভিণীনাং অরং ঘোরং খাসং কাসং শিরোকজম্ ।
সক্তাতিসারং গ্রহণীং বাস্থিং বক্ষেন্চ মন্দতাম্ ॥
আলস্যমপি দৌর্বলাং হ্ছাদের ন সংশ্যঃ ।
কলেরাণে সমর্জ্মেং ভগবানিন্দুশেগরঃ ॥

শিলাজতু, অল, ংসদিদ্র, প্রবাল, লোক, স্বর্ণমাক্ষিক ও হরিতাল প্রত্যেক সমভাগে একত্র মন্দন কবিয়া ভূঙ্গরাজ, অর্জুনছাল, নিদিন্দা, বাসক, স্থলপদ্ম, পদ্ম ও কুড়্চিছালের রসে ভাবনা দিয়া মটর প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা সেবন করিলে গর্ভিণীর জ্বা, খাস, কাস, শিরংপীড়া, হক্তাতিলার, গ্রহণী, ব্মন, ক্স্পান্মান্দ্য, আলগু ও দৌর্কাল্য নিরাক্ত হয়।

লবঙ্গাদিচুৰ্য্

লবঙ্গং টঙ্গণং মৃন্তং ধাতকী বিধ্বধান্তকম্।
জাতীকলং সক্ষকঞ্চ শতাহ্বা দাড়িনং তথা ॥
জীরকং সৈন্ধবং মোচং নালোৎপলরসাঞ্জনন্।
অক্রং বঙ্গককৈ সমঙ্গা রক্তচন্দনম্।
বিশ্বকাতিবিয়া শৃঙ্গী পদিরং বালকং সমন্।
ভূজরাজরসৈঃ প্লাব্যং জ্বেডিয়া দিনত্রম্।
ছাগীছেন্দেন মতিমান্ গ্রিনীমনুপানতঃ।
এতচ্চুৰ্বং প্রদাপরেৎ সংগ্রহগ্রহণিহরদ্।
নানাবর্ণস্তীসারং অরক্ষেণ নিবচ্ছতি।
জামরক্তাতিসারয়ং জ্বন্ণোধনিস্দনম্॥

লবল, সোহাগার থৈ, মুতা, ধাইফুল, বেলভাঠ, ধনে, জারফল, প্রেড্ণা, ভল্ফা, দাড়িমফলের ছাল, জীরা, দৈরুব, মোচরস, নীলফ্লিমুল, রুদাঞ্জন, অভ্র, বন্ধ, বরাক্রান্তা, রক্তদ্দন, ভাঠ, আতইচ, কাক্ডাশুলী, ধনিরকাত ও বালা প্রভ্যেক চুর্ণ সমভাগ; একতা মিশ্রিত করিয়া ভীমরাজের বনে ভিন দিন ভাবনা দিয়া আপ্লুত করিবে। অন্থপান—ছাগত্ব্ব। গর্ভাব্যাদ্ব সংগ্রহগ্রহণী, অতিসার ও আমরক্ত প্রভৃতি পীড়া হইলে এই ঔষধ প্রধােগ করিবে।

গর্ভচিন্ত।মণিরসঃ।

রসং তারং তথা লৌহং প্রত্যেকং কর্মাত্রকম্। কর্মায় তথা চাত্রং কপুরং বঙ্গত অকম্। ক্রান্তীফলং তথা কোষং গোক্ররঞ্পতাবরী। বলাত্রিকয়োম্লং প্রত্যেবং ভোলকং শুভম্। বারিণা বটিকা কাব্যা দিগুঞ্জাফলমানতঃ। সরিপাতং নিহস্তাঃশু স্থাণাকৈর বিশেষতঃ। গাঁ গুলা অরদাহঞ্জ প্রদর্গত ক্ষাম্।

রদিন্ত্র, রৌপা, লৌহ প্রত্যেক ২ ছই তোলা, অন্ত ৪ তোলা, কপূর্ব, বঙ্গ, তাম, কায়কল, কৈন্ত্রী, গোকুরবীজ, শতমূলী ও বেড়েলা এবং খেত বেড়েলা মূল প্রত্যেক ২ তোলা। জলে মর্দ্দ করিরা ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহাতে গর্ভবতী স্ত্রীর অব দাহ এবং প্রদর ও স্তিকারোগ উপশ্মিত ইইয়া পাকে।

शर्ङविलातमा तुमः।

রসংক্ষক তৃত্থক এছেং জন্ধীরম্পিট্ন। ডিভাবিতং তিকট্না দেৱং গুঞ্চাচত্ট্রন্॥ গভিণ্যা: শূলবিষ্টভ-জরাজীর্ণের্ কেবলম্। তৃত্যস্থানে যদি ত্বণিং চিস্তাম্বিরমঃ স্মৃতঃ॥

পারা, গন্ধক ও তুঁতে প্রত্যেক সমভাগ, গোড়ালেবুর রনে ও দিন মর্দন করিয়া ত্রিক-টুর কাথে ও বার ভাবনা দিয়া ৪ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা গর্ভিণীর ক্ষর, ক্ষজীর্ণ ও শুলাদি রোগে প্রযোজ্য। এই ঔষধ যদি তুঁতিয়ার পরিবর্তে স্বর্ণ দিয়া প্রস্তুত করা যাস, ভাহা হইলে ইহাকে গর্ভিন্তামণি রদ কহে।

গর্ভবিনোদরসঃ।

দেয়ং ত্রিভাগং ত্রিকটু চতুর্ভাগঞ্চ হিন্দুলম্। জাতীকোবং লবক্ষক প্রত্যেকক ত্রিকার্বিকম্। প্রবর্গমান্দিকটেঞ্ব গলার্দ্ধং প্রক্রিকটেঞ্চুর্ধঃ। জলেন মর্দ্ধরিদ্বাধ চণমাত্রা বটা কৃতা। নিহন্তি গর্ভিনীরোগং ভাস্করন্তিমিরং বধা।।

ত্রিকটু ৬ তোলা, হিঙ্গুল ৮ তোলা, জৈত্রী, লবঙ্গ প্রত্যেক ৬ তোলা, স্বর্ণমান্দিক ৪ তোলা, এই সমুদার জলে মর্দন করিয়া চণকপ্রমাণ বটকা করিবে। ইহাতে গর্ভিণীরোগ বিনষ্ট হুইয়া থাকে।

গর্ভপীযুষবল্লীরসঃ।

প্তং পদ্ধং তথা স্বৰ্ণ লোকং রজত্যান্দিকে ।

হরিতালং বক্ষভন্মাপালকং সমতাগিকম্ ।
ভাবনা পলু দাতবা। রসৈরেবাং প্রক পূষক।

ক্রা বাসা ভূকরাত্র-প্রত্য দুলকম্ ।

সপ্তথা ভাবরেকৈভো গুলামানাং বটাং চরেং ,
গ্রুপীস্ববল্যাগো গভিনীরোগ্রুৎ প্রঃ ।

+ রক্ষভ্যান্ধিক্রিতি বা প্রেঃ ।

পারা, গদ্ধক, স্বর্ণ, লৌহ, রৌপা, স্বর্ণনাক্ষিক (পাঠান্তরে রৌপানাক্ষিক), হরিতাল, বঙ্গ ও অভ্র প্রত্যেক সমভাগে লইয়া ব্রহ্মী, বানক, ভূঙ্গরাজ, ক্ষেত্রপাপ্ডা ও দণমূল ইহাদের রসে ৭ বার ক্রিয়া পৃথক্ ভাবনা দিয়া > রতি প্রমাণ বটকে ক্রিবে। ইহা সেবন ক্রিশে গর্ভিণীর জ্বাদি রোগ নই হয়।

গৰ্ভবিলাস-তৈলম্।

বিদারী দাড়িমং পত্রং ব্লুগনী চ কলত্রন্ন।
শৃক্ষাটকস্য পত্রক জাতীকু হুমনেব চ ।
বরী নীলোৎপলং পত্রং তৈলমেতেঃ পচেৎ হুধীঃ।
এতত্ব গর্ভবিলাসাধ্যং গত়লংস্থাপনং পরম্।
নিহন্তি গর্ভলুল্ক শোণিতক্রতিসংহ্রম্।
পরং ব্রাতরং তাতৎ কাশিরাজেন নিশ্বিতম্॥

তিলতৈল ১১ সের । কন্ধার্থ—ভূমিকুমাণ্ড, দাভিমপত্র, কাঁচা হরিন্তা, ত্রিফলা,
পানিফলপত্র, জাতীপুলা, শতমূলী, নীলোৎপল
ও পদ্মপুলা মিলিড ১৬ তোলা। এই তৈল
মর্দনে গর্ভপূল ও রক্তপ্রাবাদি নিবারিত হইরা
পতনোল্থ গর্ভও স্থিরভাব প্রাপ্ত হর।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

गर्डिगीत्त्रारा পथानि ।

শালরঃ বৃষ্টকা মুদ্যা গোধুমলাজশন্তরঃ।
নবনীতং যুতং ক্রীরং রসালা মধু শর্করা॥
পানসং কদলং ধাত্রী জাক্ষাম্রং স্বাছ্ন শীতলম্।
কন্ত্রী চন্দনং মালাং কপুরম্মুলেপনম্॥
চন্দ্রিকা স্থানমন্ত্রেসা মুচশ্যা হিমানিলঃ।
সন্তপণং প্রিরা বাচো বিহারশ্য মনোরমাঃ।
প্রিয়ন্তরকারপ্নেং গার্ভিগ্রোচা হিতং ভবেং॥

পালিধান্ত, ষ্টিকধান্ত, মৃগ, গোধ্য, থৈরের ছাতু, মাথন, গ্রন্ত, হ্রাধ, রসালা, মধু, চিনি, কাটাল, কদলী, আমলকী, কিদ্যিদ্, আন, মধুরুদ্রর, শাতলদ্রর, কন্ত,রী, চন্দন, মাল্যধারণ, কপুর, চন্দনাদি অফ্লেপন, জ্যোৎস্থা-স্বেন, স্থান, অভ্যঙ্গ, কোমল শ্যায় শ্যুন, শাতল বাষ্দ্রেন, সন্তর্পণক্রিয়া, প্রিয়বাক্য, মনোজ্ঞ বিহার ও ক্ষম অরপান, এই সমস্ত গার্ভণীগণের হিতক্ষনক।

शर्डिनीरत्नारमञ्जान ।

থেদনং বদনং কারং কলহং বিষমাশনম্।
গদায়াং নক্তসঞ্চারং চৌয্যকাপ্রিদর্শনম্।
গতিবাবংরনায়াসং ভারং প্রারেগং গুরু।
অকালজাগরপর্মং কঠিনোৎকটকাসনম্।
গেককোধন্তয়ায়েগ-বেগভাজাবিধারণম্।
উপবাসাধ্যতাকোন্তর্কারিকরি ভভোজনম্।
নক্তং নির্শনং ব্যক্তকুপেকাং মঞ্জমামিবম্।
উতানশ্যনং ব্যক্ত ব্রেয়ো নেক্ত্রি তৎ ত্যাজেং॥

শ্বেদন, বমন, কার্সেবন, বিবাদ, বিষম-ভোকন, অসাত্মাসেবন, রাজিতে বিচরণ, চৌহ্যাচরণ, অপ্রিম্ম দর্শন, অতিশন্ন মৈথুন, ব্যায়াম, ভারবহন, অতিশন্ন স্থানক পরিধান, রাজিকাগরণ, দিবানিলা, কঠিন স্থানে অথবা উৎকট ভাবে উপবেশন, শোক, ক্রোধ, ভন্ন, উবেগ, মলমুক্রাদির বেগধারণ, অভিলবিড বিষয়ের অপ্রাপ্তি, উপবাদ, পথশ্রম, ভীক্ষন্তব্য উষ্ণদ্রব্য গুরুদ্রব্য ও বিপ্তিদ্রব্য ভোজন, রাজিতে অভোজন, ছিন্দ্র ও কৃণদর্শন, মক্সপান, মাংসভক্ষণ, চিৎ হইয়া শয়ন এবং য়াহা বৃদ্ধা নারীগণের অনীপ্সিত, সেই সমস্ত বিষয় গর্ভিণী জীগণ পরিত্যাগ করিবেন।

অন্টমমাসমারভ্য গর্ভিণ্যা অপথ্যম্।

রক্ত ভিত্ত থা শুদ্ধি হিরা নাসভোহইনাং।
এতির্গর্ভ: প্রবেদান: কুন্দৌ শুরোদ্মিরেত রা।
গর্ভের অইম মাস হইতে রক্ত প্রাব, বমন
বিরেচনাদি থারা শোধন ও বস্তি ক্রিয়া প্রয়োগ
করিলে অপূর্ণ অবস্থাতে গর্ভ প্রাব হইয়া যায়,
অথবা গর্ভাশ্য মধ্যে গর্ভ শুদ্ধ কিংবা নই হয়।
অতথব ঐ সকল পরিত্যাগ করা কর্ত্তবা।

ধ্বস্তরিমতেনৈর সাধ্বাঞ্চাতশ্চ শান্তবিং। সম্প্রাপ্তে চাষ্ট্রমে মাসি মৈণুনং পরিবর্জন্তেং। বদি গচ্ছতি ভূর্ম্বেধাঃ কামমোহানচেতনঃ। বিপদ্মতে তদা গর্তো গর্ভিগী চ বিনশ্ততি। ক্ষমুকাদিবধিরো জায়তে কুক্ক এব বা ॥ অষ্টম মাস উপস্থিত হইলে তদবিধি মৈথুন পরিত্যাগ করা নিতাস্ক আবশুক, নতুবা গর্ভ নষ্ট ও গর্ভিণীর মৃত্যু হইবার সম্ভাবনা। অথবা অন্ধ, মৃক, বিধির বা কুজ সন্তান উৎপন্ন হইতে পারে।

ভঙ্গের নিভাং তিক্তান্ন-পটুবণক্ষায়কান্।

িক্ত প্রব্য, অন্নদ্রব্য, লবণরসমূক স্তব্য, কটুন্দ্রব্য এবং ক্যারদ্রব্যও প্রত্যুহ সেবন নিজি।

বাতলৈক ভবেদ্গত: কুক্সাকজড়বামন:। পিন্তলৈ: থালতী পিক: বিত্রী পাঙ্গু: কফাস্বভি:। অপথানিদমুদ্ধিটাং গ্ভিনানাং মহবিভি:।

বার্কারক দ্রব্য সেবন করিলে গর্ভন্ত সন্তান কুজ, অন্ধ, জড় ও বামন হয়। পিত্তকারক দ্রব্য সেবন ছার্। গর্ভন্ত সন্তান ইন্দ্রলুপ্ত রোগ-যুক্ত এবং কপিলবর্ণ হয়। কফকারক দ্রব্য সেবন ছারা গর্ভন্ত সন্তান থিত্র ও পার্থরোগ-যুক্ত হইয়া থাকে। অত্রব গর্ভিনীগণ এই সমস্ত পরিত্যাগ করিবেন।

ইত্যায়ুর্কেদ-দংগ্রহে গভিণীবোগাধিকার:।

অথ সৃতিকারোগাধিকারঃ।

অথ সৃতিকারোগ-নিদানম্।

ৰাব্য প্ৰজ্পিতঃ কুৰ্বাৎ সংক্ৰণ্য ক্ষবিং জ্ৰুত্ব।
প্ৰায় ক্ষিক্ৰয়েবিত-শূলং মঞ্চলগঞ্জকন্ ।
অসমৰ্দ্দো জৱঃ কম্পা: পিপাসা গুৰুগাঞ্জা।
শোখং শূলাভিসারে চ স্থৃতিকারোগলক্ষণন্ ।
মিৰোগচাৱাৎ সংক্লেণাৎ বিষমাজ প্ৰোজনাৎ।
স্থিকায়াশ্চ বে রোগা কারন্তে লাক্ষণাঃ স্থৃতাঃ ।
জ্বাভিসারশোধাশ্চ শূলানাহ্বলক্ষয়াঃ ।
ভ্ৰান্তিপ্ৰসেকাজাঃ কক্বাভাষয়োজ্বাঃ ।

কৃত্তসাধা। হি তে রোগা: ক্রীণমাংসবলাশ্রিতা: । তে সর্বে স্থতিকানামা রোগান্তে চাপাসক্রবা: ॥

প্রকৃপিত বায়, নবপ্রস্তা স্ত্রীর ক্রত-রক্তকে রুদ্ধ করিয়া হাদয় মন্তক ও বন্ধিদেশে মক্কর নামক শ্ল-বেদনা উৎপাদন করে। অন্ধর্মদি, অ্বর, কম্প, পিপাসা, গাত্রগৌরব, শোথ, শূল ও অতিসার এই গুলিকে স্তিকা রোগ বলিয়া জানিবে। অমুচিত আচরণ এবং যাহাতে বাতাদি দোষ সকল উৎক্লিপ্ত হয় এরপ কার্য্যকরণ, বিষমাশন ও অপক ভোজন বা অজীর্ণ সহে ভোজন, এই সকল কারণে প্রস্থার যে সকল রোগ জন্মে, তাহারা অতি ভয়ানক জানিবে। তাহাদের জর, অতিদার, শোথ, শুগ, আনাহ, বলক্ষয় এবং বাতশ্লেছেব তক্সা, অরুচি ও কফপ্রসেকাদি উপদ্রব সকল উপস্থিত হয়। জরাদি ঐ সমস্ত রোগ স্তিকা-ক্ষেত্রোৎপন্ন বলিয়া উহারা স্তিকারোগ নামে অভিহিত হইয়াথাকে।

প্রস্তার বল ও মাংস ক্ষীণ ছইলে, এই সকল রোগ রুজ্জান্ত ইয়া থাকে। পুর্ব্বাক্ত রোগ সকলকে স্থতিকা রোগের উপদ্রবও বলা যাইতে পারে, অর্থাং উহারা আপনাদের মধ্যে কোনটিকে প্রদানাভূত করিলা আপনার। তাহার উপদ্রব স্বরূপ হয়।

অথ সৃতিকারোগ-চািকৎসা।

স্তিকাবোগশাস্ত্যর্থং কুয়া;দ্বাতহরীং ক্রিয়ান্। দশনুলকুতকাথং কোকং দল্যাদ্ঘৃতাদ্বিত্ন ॥

স্থৃতিকারোগে প্রথমতঃ বাতনাণক ক্রিয়া ব্যবস্থা করিবে। ঈষহ্যাং দশমূলের কাথ ঘত-প্রাক্ষেপে সেবন করিতে দিবে।

त्रश्द्रीत्वतां पिः।

ঐবেরারপুরক্তচন্দনবলাধ্যাকবৎসাদনী-মুস্তোশীরঘবাসপপটবিষাকাধং পিবেৎ গর্ভিনী। নানাদোবসুতাতিসারকগদে রক্তক্তেটা বা ক্ষরে যোগোহয়ং মুনিভিঃ পুরা নিগদিতঃ সূত্যাময়ে শক্ততে॥

বালা, সোন্দাল, রক্তচন্দন, বেড়েলা, বনে, গুলঞ্চ, মুগ্রা, বেণার মূল, ছরালভা, ক্ষেত-পাপ্ড়া ও আত্টাচ, এই সম্পারের যথানিয়মে প্রস্তুত কাথ সেবন করিলে নানাদোষজ্ব অতী- সার, রক্তস্রাব, জ্বর ও স্থতিকারোগ প্রশমিত ইইয়া থাকে।

অয়তাদি।

অমূত নিগরসহচরভঞেৎকটপঞ্মূলজলশৃতম্। শাতং মধুসংযুক্তং নিবারয়তি স্তিকাতক্ষ্ম।

গুলঞ্চ, গুঠ, বিদ্টী, কৈবৰ্ত্ত মূতা, ইকড়-মূল, স্বন্ধ পঞ্চমূল ও মূতা ইহাদের কাথ মধু-প্রক্রেপে দেবন কবিলে স্থতিকারোগ প্রশমিত ইইয়া থাকে।

সহচরাদি।

সংচৰপুণরবেওনম্লং বিককতলাঞ্চলপ্ৰসমন।
ছলমএ সনৈদ্ধৰ স্পুত্ত সভোজারস্তিকারোগছনন।
বি টী. কুড, বেতসমূল, বইচমূল, দেবদার ও কুলপকলায় ইহাদের কাথে সৈদ্ধবলবণ ও হিং
প্রক্ষেপ দিয়া পান করিলে সক্ষই স্তিকা ও ভ্রুতি জর নিবারিত হয়।

সূতিকাদশমূলম্।

শালপণী পৃথিপণী বৃহতীষ্ঠ্যোক্বন্। দাসা অসার্কা বিষ-গুড্হী,নুগুকং তথা। নিহতি পৃতিকারোগং অরদাহসমৃত্তিন্।

শালপাণি, চাকুলে, বৃহতী, কণ্টকারী, গোকুর, নীলঝিণ্টা, গন্ধভাছলে, গুঠ, গুলঞ্চ ও মৃতা ইহাদের কাথ পান করিলে গ্রের ও দাংসংসূক্ত স্থাতকারোগ উপশ্যিত হয়।

সহচরাদি।

সহচরমুখ্যগুড়্চীভজোৎকটবিশ্ববালকৈঃ ক্ষিতম্। পেয়মিদং মধুমিশ্রং সঞ্জে'জরশূলমুৎ ক্তাঃ ॥

ঝিণ্টীমূল, মূতা, গুলঞ্চ, গদ্ধভাত্তল, গুঠ ও বাল: ইহাদের কাথ মধু প্রাক্ষেপে দেবন করিলে স্তিকারোগিণীর জব ও শুল নই হয়। সহাচরকৃতকাশঃ পিশ্লনীচূর্ণসংযুতঃ। দীপনো অরদোধাম-স্তৃতিকারোগনাশনঃ।

ঝিন্টীর কাথে পিপুলচূর্ণ প্রক্ষেপ দিরা সেবন করিলে জ্বর, আমদোষ ও স্তিকারোগ নিবারিত হর এবং অগ্নি প্রদীপ্ত হয়।

পীতকুরন্টকক্ষিতং বজনীপর্যুদ্বিতং পীতমপহরতি। স্বতিকারোগান্ সহস্রং তমূলং চর্কিতং তদ্ধং॥

সন্ধ্যার সময় পীতঝিণ্টীর কাথ প্রস্তুত করিয়া পরদিন প্রাত্তে সেবন করিলে অথবা পীতবিণ্টীর মূল চর্কণ করিরা রসপান করিলে স্থতিকারোগ নিবারিত হয়।

(मवनविवानिकाथः।

দেবদার বচা কৃষ্ঠং পির্মলা বিশ্বভেষ্ঠ ।
ভূনিস্বক্ট্ফলং মৃস্তং ভিজ্ঞা ধালা হরাতকী ॥
গজকুনগ সহংশেশ: গোকুরো ধ্ববাসক: ।
বৃহ হাতিবিবা চিছরা কর্কট: কৃষ্ণজীরক: ॥
সমভাগান্বিভেরেতঃ সিন্ধুরাম্বসংযুত্য ।
কাশম্বাবশেষত্ত প্রস্তাং পার্রেথ বিষয় ॥
শূলকাসন্ধরশ-মৃচ্ছাকম্পনিরোহন্তিভি: ।
বৃহুৎ প্রলাপত্ত দাহ-ভল্লাভীসারবান্তিভি: ॥
নহন্তি স্তিজারোগং বাতপিত্তক্ষোভ্রম্ ।
ক্ষাগো দেবদার্কাদি: স্ভারাং প্রমৌধ্য ॥

দেবদারু, বচ, কুড়, পিপুল, শুঠ, চিরতা, কট্ফল, মুতা, কটকী, ধনে, হরীতকা, গছ-পিপুল, কটকারী, গোক্তর, ছুরালভা, বহুতী, আতইচ, গুলঞ্চ, কাক্ডাশুলী ও কালজীরা ইহাদের কাথ করিবে। অন্তনাংশ অবশিষ্ট থাকিতে নামাইয়া সৈদ্ধব ও হিং প্রক্ষেপে সেবন করিলে সর্বাদোষজ এবং শূল কাসাদি নানাপ্রকার উপদ্রব্যুক্ত স্ত্তিকা প্রশমিত হয়।

বজ্রকাঞ্জিকম :

পিমলী পিমলীমূলং চবাং শুপ্তী যমানিকা।
জীৱকে যে হরিছে যে বিড়ং সৌবচ্চলং তথা ॥
এতৈরেবোবখৈঃ পিটেরারনালং বিপাচয়েছ।
এতদামহরং ব্যাং কফস্বং বহিন্দীপনম্॥
কাঞ্জিকং বক্সকং নাম গ্রীশামগ্রিবিবর্জনম্।

মকলশূলশমনং পরং ক্ষীরাভিবর্দ্ধনম্। ক্ষীরপাকবিধানেন কাঞ্জিকস্তাপি সাধনম্। (পিশ্নলাদিত্যব্যক্ত মিলিছা কর্বত্রং, কাঞ্জিকপ্ত শ্রাব একঃ, পানীয়নপাল্লমেবনেব প্রায়শো ব্যবহর্তি বৃদ্ধাঃ।)

পিপুল, পিপুলমূল, তৈ, শুঠ, যমানী, জীরা, রুষ্ণজীরা, হরিদ্রা, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, বিট্ ও সচল লবণ, এই সকল দ্রব্যের কল্পের সহিত হগ্নপাকের নিয়মান্ত্রসারে কাঁজি পাক করিবে, অর্থাৎ /১ সের কাঁজি, উক্ত পিপ্রল্যাদির কল্প (মিঃ ৬ ভোলা) সহ /৪ সের জলে পাক করিয়া /১ সেন অবশিষ্ট থাকিতে নামাইবে (চক্রপাণি-ক্রীরপাকবিধানান্ত্রসারে পাক করিতে বলেন)। ইহা আমহব, রুয়া, কফল্প, আগ্রুদ্রাপক্রকল্প্রনাশক এবং স্তিকা-নারীর আগ্র ও স্তন্ত্র বর্দ্ধক। স্তিকারোগ নাশে বজ্রতুল্য বলিল্লা ইহা বছকাজিক নামে অভিহিত। সকল কাজিক সেবা।

ভদ্রেৎকটাল্যবলেহঃ।

ভরে। ৭কট তুলাধাণে । দেশেনে বিনিকিপে। শকরায়াঃ পলজিংশত পূর্ণানীমানি দাপয়ে। দংসকং ধান্তকং মৃত্যুশীরং বিবনের চ। শাব্দলীবেষ্টককৈর পিয়লী মরিচানি চ ॥ বলা চাতিবলা মাংসা হারেরং সহরালভম্। এবাক পলিকৈউটিগন্ট্বিরেনং সমাচরেং ॥ সংগ্রহ্গহনীং হতি প্রতিকাক স্কৃত্তরাম্। বিকিক কুরতে দাপ্তং শ্লানাক্বিবক্ত্ ॥

গন্ধভাত্তা ১২॥ পের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। এই কাথে চিনি /৩৮ এবং ইক্রমর, ধনে, মৃতা, বেপার মৃল, বেলগুঁঠ, মোচরস, পিপুল, মরিচ, বেড়েলা, গোরক-চাকুলে, জটামাংসী, বালা ও হরালভা ইহাদের চূর্ণ প্রত্যেক ১ পল করিয়া প্রক্রেপ দিবে। ইহা সেবনে সংগ্রহগ্রহণী, শূল, জানাহ ও স্তিকাদি রোগ নষ্ট হইয়া জ্যিবৃদ্ধি হয়।

পঞ্চজীরকগুড়ঃ।

জীরকং হবুৰা ৰাজ্যং শতাহবা বদরাণি চ।

যমানী কুন্তিকো হিসু-পত্রিকা কাসমন্দিকন্ ।

পিরলী পিরলীমূলমজমোদাথ বাশিকা।

চিত্রকঞ্চ পলাংশানি তথাজ্ঞচ চতুপলম্ ।

কলেরকং নাগরক কুঠং দীপাকমেব চ।

গুড়দা চ শতং দন্তাদ্ ঘৃতপ্রস্থং তথৈব চ ॥
কারবিপ্রস্থাং শুকেন্য্ বিলা পচেং।

পঞ্চনীরক ইত্যেব স্তিকানাং প্রশানতে।

বিংশতিব্যাপলো গোনেং কাসং খাসং করং ক্ষমন্।

হলীমকং পাঙ্রোগং দৌর্গলীং মুত্রকুন্ত হান্।

হলি পানেশ্নত্রাং প্রপ্রায়তক্ষণাঃ।

ভপগোগাং প্রিয়ো নিত্যনল্লীমলব্জিভাঃ।

(কুন্তিকো রাজিকা)।

গুড় ১২। দের, গুড় সং দেব ও ছুগ্ধ সদ দের। এই সমস্ত প্রথমতঃ একজ পাক করিয়া ঘনীভূত করিবে, পরে ছোট কালজীরে, হর্ষা, ধনে ওল্ফা, বদরী, যমানী, রাই সর্ষপ, বংশপজ্ঞী, কালকাপ্রন্দে, পিপুল, পিপুল মূল, বন্যমানী, সর্ষপ ও চিতা প্রত্যেক ১ পল; এবং কেশুর, শুঠ, কুড় ও জীরা এই সকল প্রত্যেক ৪ পল। ইহাদের সক্ষাচ্ব প্রক্রেপ দিয়া নামাইবে। ইহা ব্যবহারে বিংশতি প্রকার বোনিব্যাপদ্, কাদ, খাদ, জ্বর, ক্ষা, হলীমক, পাণ্ডু, মৃত্রক্ষন্ত ও গাত্রদৌর্গন্ধা নিবারিত এবং অলক্ষী ও শরীরের মশ বিনষ্ট হয়। বিশেষতঃ ইহা স্থতিকারোগ ও গভার্থিজ্ঞীলোক্দিগের পক্ষে প্রশন্ত।

সোভাগ্যশুষ্ঠী।

কশেৰ-গৃশাটবরাটম্তঃ
বিজীরকং জাতিকলং সকোষন্।
লবকলৈলেরকনাগপুপাং
পত্রং বরাক্তং শটি ধাতকী চ ॥
এলা শতাহাং। ধনিকেজকুকা
সপিন্ধলী সোৰণকা সভীকঃ।
প্রত্যেকমেবামিহ কর্ষ্যাং
মহৌৰ্থীচূপিলালি চাষ্টো ॥

পদানি ত্রিংশং সিতপর্করারাঃ
প্রানি চাষ্টারপি সর্পিরশ্চ।
প্রস্থর্বরং কার্নিহ প্রযুক্তং
প্রচেম্বিক্তঃ পরমাদরেন ॥
খাদেনিদং কর্যমধার্ককর্ম
কর্মধার্ক, বাপি সমাক্ষ্য শস্তম্।
সোভাগাত্তী ক্ষিতা ভিষ্য্ ভিন্
রপ্লিপ্রদা স্থতিগ্নাপ্র চ ॥

কেশুরা, পানিফল, পদ্মবীজকোষ, মৃতা, জীরা, কৃষ্ণজীরা, জারদল, জৈত্রী, লবন্ধ, শৈলজ, নাগেশ্বর, তেজপত্র, গুড়ত্বক্, শটা, ধাইকুল, এলাইচ, শুল্লা, ধনে, গজপিপ্পলী, পিপ্পলী, মরিচ ও শতমূলী প্রত্যেক ৪ তোলা; শুঠচ্ব /১ সের, মিছবি ০০ পল, ঘুত /১ সের, গব্যহুগ্ধ /৮ সের যথানিয়মে পাক করিবে। মাত্রা—২ তোলা প্রয়ন্তঃ। ইহা সেবন করিলে হতিকারোগ নই হইয়া অগ্নির দীপ্তি হয়।

সোভাগ্যশুষী।

্মতান্তরে।)

তিকটু তিফলাজাজী চাতুজ্জাতকমু**ন্ত**কম্ काडीकायकनः श्राप्तः नगन्नः गडपूष्टिकाः । निका भारतकतः यमानीव्यस्टिका । শহাবরী তালমূলী লোধ্রং বারণপি**ললী** ॥ পিয়ালবাজমমূতা কপুরং চন্দনছয়ম্ কৰ্মপাণাজ্যতেষাং প্ৰক্ষ্যুণানি কারয়েৎ॥ নাগরদা চ চুণদা প্রস্তুদ্বয়মিতং ক্ষিপেৎ। यु अबहेलनः प्रजाद कौ दश्रहत्त्रः उथा ॥ সাদ্ধপ্রস্কাত প্রবায়ান্ততঃ কিপেং। দুঢ়ে 5 মূন্ময়ে পাত্রে বিপরেন্মুন্ত্র†গ্রিনা ॥ জ্ঞায়া পাকং ভিষকু তেষাং গুড়িকাং কারয়েৎ ভত:। ভক্ষেৎ প্রাতরূপায় অজাকীরং পিবেদ্যু॥ আমবাতং নিহন্তাত কাসং খাসং স্পীনসম্। এহণাময়পিতক রক্তপিতঃ করং কতম্। স্ত্রীরোগান বিংশতিকৈব তৎক্ষণাদের নাশয়েৎ। অহন্তহ্নি চ প্রাণাং স্তনদাঢ্য করং পরম। সৌভাগ্যজননং স্ত্রীণাং পুষ্টিদং ধাতুবর্দ্ধনম্ ॥

একটু, ত্রিফলা, ক্রফজীরা, গুড়ত্বক্, ভেজ-পত্র, এলাইচ, নাগেধর, মুতা, জৈত্রী, জারফল, ধনে, লবঙ্গ, শুল্ফা, নালুকা, মরনাফল, হমানী, বন্যমানী, ধাইজুল, শতমূলী, তালমূলী, লোধ, গছপিপ্পলী, পিয়ালবীজ, শুলঞ্চ, কপূর, চলন ও রক্তচন্দন প্রত্যেক চূর্ণ ২ তোলা; শুঠ চূর্ণ /৪ সের, ছভ /২ সের, ছগ্প /৮ সের, চিনি /৫ সের। অমুপান—ছাগছগ্ধ। ইহা সেবন করিলে, আমবাত, কাস, শাস, পীনস, গ্রহণী, অমুপিত্ত, ক্ষয়, ক্ষত এবং দ্রীলোকদিগের বিংশতিপ্রকার যোনিব্যাপদ্ প্রশমিত হয়। ইহাতে স্থীলোকের শুন দৃঢ়, পৃষ্ট এবং ধাতু বৃদ্ধিত হয়।

বুহৎদেভিগ্যশুষ্ঠী।

পুরুক্ত হৈ সমাদার চুর্ণয়হা বিধানত, । পলবোডনিকাং নীয়া কারে দশগুণে পচেং॥ ক্রবেণ পাক্ষ জিঃ স্থাদ হতপ্রতে চ ভাররেং। লগুপাক: প্রকন্তব্যো ন গরো মেদকের্থ ॥ শতাবর বিদারী চ মুবলী গোন্ধরো বলা। ছিল্লাসত্ত শতাহর চাজারকৌ ব্যোষ্ট্রিকৌ ॥ ত্রিস্থান্ধি যমানী চ তালীশং ক'রবা নিষিঃ। রামা পুরুরমূলক বাংশী দার শতাহ্বয়ম 🛭 শঠী মাংসী বচা মোচ-হক পত্ৰং নাগকেশরম। कोवस्त्री मिश्रिका यही हल्पनः तङ्ग्लनम् । ত্রিমিল্পং তোয়সিংহাস্ত-ধস্তাকং কটকলং ঘনম্। কণ্ডয়মিতং ভাগং প্রত্যেকং পট্রব্রিতম্। সর্বচর্ণাদ্দিগুণিতা প্রদেয়া সিত্শর্করা। যুক্তা পাকবিধানজো মোদকং পরিকল্পয়েৎ । শক্ষে ভাতে নিধায়াথ থাদেরিতাং যপাবলম। বীক্ষ্যাগ্রিবলকে ঠিঞ্চ নারীণাঞ্চ বিশেষতঃ ॥ কৌলাকুপানতঃ প্ৰাত্ত ক্ৰেবান সমস্চয়েৎ। ভদবর্ণাং বলামায়ধাং বলীপলিতনাশনম ॥ বয়দঃ স্থাপনং প্রোক্তমগ্রিদীপ্তিকরং পরম। বুষ্যাণামভিবুদাক বুদায়ন্মিদং এভমু ॥ বিশেষাৎ স্ত্রীগদে প্রোক্তং প্রস্থ তানাং যথামতম। বিংশতিবাগিদো যোনেঃ প্রদরং পঞ্চাপি চ (धार्मितामध्यकः श्रीभारः ताकारमध्यकः उ**था** । পাপদংসর্গজং দোবং নাশয়েরাতা সংশয়ঃ॥ আমধাতহরকৈব শিরঃশূলনিবারণম্। সৰ্বশ্লহরঞেব বিশেষাৎ কটিশূলমুৎ ॥ বীর্যাবৃদ্ধিকরং পু•সাং গুভিকাত্ত্বনাশন্য। বাতপিভককোতুতান্ হন্তঞান্ সল্লিপাতঞান্।

হস্তি সৰ্ব্বগদানেৰা শুৰ্জী সৌজাগাদায়িনী। সৌভাগাদায়িনী স্ত্ৰীণামতঃ সৌভাগাশুৰ্ভিকা।

বড় ভাঁঠে চুর্ণ /২ সের, অর্দ্ধন্মণ চুগ্নে পাক করিয়া পাকাম্বে ৪ সের ঘতে ভাজিবে। পাক যেন খর না হয় ৷ তদনস্তর উহার সহিত নিম্লিখিত চুর্ণ সকল মিশ্রিত ক্রিবে। যথা — শতমূলী, ভূমিকুখাও, তালমূলী, গোকুর, বেড়েলা, গুলঞের চিনি, গুলফা, সক্ষ জীরা, इन कौता, विकरें, हिजा, अलाहेंह, माक्रहिनि, তেজপত্র, যমানী, তালীশপত্র, भोति, तांत्रा, शृक्तमृत, वःमर्गाठन, दिवनांत्र, হুলফা, শ্রমা, জ্বটামাংসী, বচ, মোচরস, গুড়-ত্বক, তেজপত্র, নাগ্যকেশর, জীবস্তী, মেথী, যষ্টিমধু, চন্দন, রক্তচন্দন, বিড়ঙ্গ, বালা, বাসক, ধনে, কট্ফল, মূতা প্রয়েক দ্বা ৪ তোলা। সমস্ত চর্ণের বিশুণ চিনি। যথাবিধানে মোদক প্রস্তুত করিয়া প্রিক্ত ভাত্তে রাখিবে এবং যথোপযুক্ত নাত্রায় মধু সহ প্রয়োগ কবিবে। ইহা হতিকাদি বিবিধ রোগনাপক, বর্ণ-কারক, বলকর, আয়ুদ্ধর, বলীপলিভনাণক, বয়:স্থাপক, বুষা ও রদায়ন।

জারকাদ্য-মোদকঃ।

জারকন্ত পলান্তরে ওঠা ধান্তং পলএরম্।
শতপুলা যমানা চ কুফজীরং পালং পলম্ ।
কারং দ্বিপ্রস্থান্তং পাল্ড জান্তং পালম।
ঘু হন্তাপি পালান্তরে শনেমু দ্বিমান পচেৎ ॥
বাোবং ত্রিজাতককৈন নিড়ালং চবাচিত্রকম।
মুক্তরুক লবক্ষক পলাংশং সংগ্রুকজারং ॥
মন্দেন বহিনা পাত্রু মোদকং কার্ছেন্ ভিষক্।
সর্ব্ববোদ্বিকারাণাং নাশনং বহিনীপনম।
স্তিকারোগশমনং বিশেষাদ্ প্রহণীহ্রম॥

জীরা ৮ পল, শুঠ ১ পল, ধনে ৩ পল, শুল্ফা, যমানী ও ক্ষজ্জীরা প্রত্যেক ১ পল, হগ্ধ /৮ সের, চিনি /৬। সেব, স্বত্ত ৮ পল। মৃত্র অগ্নি-সম্ভাপে যথাবিধি পাক করিবে। প্রক্রেপার্থ—ত্রিকট্ট, শুড়স্থক, তেজপত্ত, এলা- ইচ, বিভঙ্গ, চই, চিতামূল, মুকা ও লবদ প্রত্যেক ১ পল। ইহা দেবনে স্থতিকা প্রভৃতি দর্মপ্রকার স্ত্রীরোগ ও গ্রহণী নষ্ট হইয়া অগ্নির দীপ্ত হয়।

সূতিকারিরসঃ।

রসং গন্ধং মৃত; নক মৃতত: মক তুলাকম।
চুর্নিতং মন্দিয়েদ্ যত্নাজেকপর্ণীরসেন চ॥
ছায়ান্ডখা গুড়ী কাষ্যা কলায়সদৃশী ততঃ।
মাজয়া কটুনা দেয়া স্তিকাতকনাশিনী।
অরতকাকাতিরা শোধায়া বহিদীপনী॥

পারদ, গন্ধক, অল্ল, তাম এই সম্দার সমভাগে কইয়া থুল্কুড়িব রৈসে মদন করত ছায়ার শুকাইয়া মটার প্রমাণ বটকা প্রস্তুত করিবে। অন্নপান—মাদার রস প্রস্তুত। ইহা সেবনে স্তিকারোগ, জ্বা, অক্লচি ও শোণাদিনই হইয়া অগ্নির দীপ্তি হয়।

সূতিকারিরসঃ।

(মভ;ভেরে।)

টঙ্গণং মু চ্ছতং স্তং গলকং হেম তারকম। জাতীফলং তথা কোবং লববৈশলা চ ধাতকী ॥ বংসকেন্দ্রবার পাঠ। শৃষী বিশালমোদিকা। শুড়ী প্রসারবারকৈনচতুগুঞ্জাপ্রমাণতঃ ॥ ভক্ষেৎ তন্ত্রান্তঃ প্রতিকাতক্ষণাস্তায়। জার্শিক্ষা তথা শোধং প্রহর্গানীহকাসন্ত ॥

সোহাগার থৈ, মুর্চ্ছিত পারদ, গন্ধক, স্বর্ণ, রোপ্য, জায়ফল, জৈত্রী, লবঙ্গ, এলাইচ, ধাইফুল, কুড়্চিছাল, ইন্দ্রখব, আক্নাদি, কাঁক্ড়াশুঙ্গী, শুঁত ও বনম্যানী ইহাদিগকে সমভাগে
চূর্ণ করিয়া গন্ধভাত্বলিয়ার রসে মর্দ্দন করিবে।
মাত্রা—৪ রতি। প্রাত্তকালে গন্ধভাত্বলিয়ার
রস অমুপানে সেবনীয়। ইহা দারা স্থতিকা,
স্বীর্ণজ্বর, শোধ, গ্রহ্ণী, প্রীহা ও কাস রোগ
নিবারিত হয়।

দূতিকাম্নে: রসঃ।

রদগন্ধকলোহালং জাতাকোবং স্থাচলন্।
সমাংশং মর্দ্ধিরং গলে চ্ছাগীচ্ন্ধেন পেবরেৎ ॥
গুঞ্জান্ধ্যপ্রমাণেন স্থতিকাতকলাশনঃ।
ক্রাতিদাররোগন্ধঃ কাদখাদানিদারন্থ।
স্তিকাথো রসো নাম ব্রহণা পরিকার্তিতঃ ॥

পারদ, গন্ধক, লৌহ, অল, জৈত্রী ও সচল লবণ, সমভাগে লইরা ছাগতৃথে মর্দন করিব। মাত্রা—২ রতি। ইহাতে স্তেকা, জ্বাভিসার, শ্বাস, কান ও অভিনার রোগ উপশ্যিত হয়।

রুংৎসূতিকাবল্লভে রসঃ।

ত্তং গকং মাজিকঞ্ ব্যোমেলুং হেম ওলেকম্।
বজতং ফ্লিফেন্ড জাতীকোবফলে তথা।
মৃত্তকন্ত বল্যালি শালালাঃ ব্যাসন চ।
ভাবছিছা বলাং ক্যাদ্ বিশুলাংবানগতঃ।
ক্তিকাবলভো নাম প্রযুক্তাংবাং মহান্রদঃ।
নিহল্যাং ত্তিকারোগন্ হ্ববাবং গ্রংগাগন্ধ।
অতীসারং স্থোবক নিকলাং বহ্দমন্তাম্।
জন্যদাও পৃথিক ক্তিং মেধাং ধৃতিং তথা।

পারদ, গদ্ধক, স্বর্ণমান্ধিক, অত্র, কর্প্ব,
স্বর্ণ, হরিতাল, রৌপ্যা, অহিফেন, জৈত্রা ও
ভায়ফল এই সম্পায় সমভাগে লইয়া মৃত্যা,
বেড়েলা ও শিমুলম্লের রনে ভাবন দিয়া ২
রতি প্রমাণ বটকা কবিবে। গথাযোগ্য অমুপানের সহিত প্রযোজ্য। ইহা সেবন করিলে
ফ্তিকারোগ, গ্রহণা, অভীদার, দৌর্বল্য ও
অগ্রিমান্ধ্য এই সকলের নিবৃদ্ধি এবং দেন্ধের
পৃষ্টিসাধনাদি ইইয়া থাকে।

রুহৎসূতিকাবিনোদরসঃ।

প্রঠা ভাগো ভবেদেকো ছো ভাগো মরিচপ্ত চ। পিরাল্যান্ট ত্রিভাগ জাদর্মভাগক রোমকম্ ॥ জাতীকোরপ্ত ভাগো ছো ঘো ভাগো তুথকপ্ত চ। সিন্ধুবারজনেনৈর মন্দ্রিদেক্যামতঃ। মধুনা সহ ভোক্তবাঃ স্তিকাতকনাশনঃ॥

ভাঠ ১ ভাগ, মরিচ ২ ভাগ, পিপুল ৩ ভাগ, পাংশু লবণ অন্ধ ভাগ, জৈত্রী ২ ভাগ ও তুঁতে ২ ভাগ; এই সমুদায় একতা নিসিন্দার রসে বা কাথে ১ গুছর মর্দ্দন করিবে। মধুর সহিত সেবা। ইহা ধারা স্থতিকারোগ প্রশ-মিত হয়।

সূতিকান্তকে। রসঃ।

রসাজগন্ধকং ব্যোবং স্বর্ণমান্তিকং বিবম্।
সর্বনেকীকৃতং চূর্ণং থানেজ্ঞিচতুষ্টুয়ম্।
স্তিকাগ্রহণীরোগং বহিন্দান্ত নাশরেং।
অতীসারক শমরেদ্পি বৈত্যবিস্ক্রিতম্।
কাসখাস'তিসারহার বাজীকরণ উভমঃ।

পারদ, গন্ধক, অত্র. ত্রিকটু, স্বর্ণমাক্ষিক ও বিষ সমভাগে ইহাদের চুর্ণ ৪ রাত পরিমাণে সেবন করিলে স্থতিকা, গ্রহণী ও কাস প্রভৃতি রোগ নিবাহিত হয়। ইহা উত্তম বাক্সীকরণ ঔষধ।

সূতিকাহরো রসঃ।

হিসুলং হরিতালক শ্রাভন্মারেশা রজ:।
ধর্ণরং ধূর্ত্রনীজক ব্যক্তর্মক উল্লাম্ ।
বিজ্ঞীতকক্ষারেশ ভবায়িকা বিধানত:।
মন্দ্রিকা নিদ্ধানত কলায়সদৃশীবঁটা:।
ব্যবদ্যোগ্রপ্রানেন প্রযুক্তেংহাং রসোভ্রম:।
নিহ্নাৎ স্তিকাতকান্ ব্যক্তিক্গণগানিব।।

হিল্ল, হরিতাল, শহাতত্ম, লৌহ, থপির, ধুকুরাবীজ, যবকার ও সোহাগার থৈ, এই সম্লান্ন সমানভাগে লইয়া বহেড়ার কাথে ভাবনা দিয়া মটর প্রমাণ বটকা করিবে। যথাযোগ্য অমপানের সহিত প্রযোজ্য। ইহা সেবন করিলে সমস্ত ক্তিকারোগ বিনষ্ট হয়।

সৃতিকাহরো রসঃ।

লবজং রসগজৌ চ বংকারং তথা একন্।
লৌহং তারং সীসক্ষ পলমানং সমাহরে ।
লাতীকলং কেশরাজং বরা ভূবৈলামুম্বকন্।
থাতকী প্রথম পাঠা শুসা বিষক্ষ বালকন্।
কর্মানক সংচূর্ণ সর্বাদেকত্র কাররেং।
বদরাছিপ্রমাণেন বটকাং কাররেছিবক্।

গন্ধালিকাপজরদৈরসুপানং প্রদাপরেং। সর্ব্বাতিসারশমনঃ সর্ব্বশ্লনিবারণঃ। স্তিকাহরনামায়ং স্তিকাং নাশরেদ্ ধ্রব্য ॥

লবন্ধ, পানদ, গন্ধক, যবক্ষার, অভ্, পৌহ, তাম ও সীসক প্রত্যেক ৮ তোলা; জায়ফল, কেন্ডর্কে, ত্রিফলা, ভীমরাজ, এলাইচ, মৃতা, ধাইফুল, ইল্রব, আক্নাদি, কাঁক্ড়াশুঙ্গী, বেল ও বালা প্রত্যেক ২ তোলা পরিমিত, একত্রে চূর্ণ করিয়া কুলেন আঁটির মত বটিকা প্রস্তুত করিবে। অনুপান—গন্ধ হাছলিয়া পত্রের রদ। ইহাতে স্কল প্রকান অহীদার, শূল ও স্তিকারোগ বিনষ্ট হয়।

মহাজবটী।

মৃতমন্ত্রক কৌহক কুন্টী তান্ত্রকং তথা।
রসগন্ধকটকক বক্ষারক্সনিকেন্।
প্রত্যেকং তোলকং গ্রাহ্যুবাং পদতোলকম্।
সর্ব্ব্যেকীকৃতং চূর্বং প্রত্যেকেন বিভাবরেং॥
গ্রাহ্মরসিংহাত্ত-নাগবল্যা রসেন চ।
চতুত্বপ্রধান্ত্রমানেন বটিকাং করেরছিবন্।
ব্যেক্তরেং সর্ব্বথা বৈদ্ধাং ক্ষারোগশান্তরে॥

জারিত অল্ল, লৌহ, মনঃশলা, তান্ত্র, পারদ, গল্পক, মোহাগা, যবক্ষার, ত্রিফলা প্রত্যেক সভোগা; মারচ ৫ ভোলা, ইহাদিগকে গিনেখাক, বাসক ও পানের রসে পৃথক্ ভাবনা দিয়া ৪ রতি প্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। ইহাতে স্থতিকারোগ নিবারিত হয়।

त्रमणार्क्त् लः।

অবং তাত্রং তথা লৌহং রাজপটং রসন্তথা।
গক্ষটক্ষরীচক ববকারং সমাংশকম্ ।
তথাত্র তালককৈব ত্রিকলায়ান্ট তোলকম্।
তোলককায়ুতকৈব বড়্ওঞ্চাপ্রমিতা বটা॥
ত্রীষ্ট্রন্সরকস্যাপি নাগবল্যা রদেন চ।
ভাবরেৎ সপ্তথা হত্তি অরকাসাকসংগ্রহম্।
স্তিকাতকশোধাদি-প্রীরোগক্ বিনাশমেৎ ।

অল্ল, তান্ত্র, লৌহ, রাজপট (বিরাট দেশীয় হীরক), পারদ, গন্ধক, সোহাগা, মরিচ, যব-ক্ষার, হরিতাল, ত্রিফলা ও বিষ প্রত্যেক > তোলা পরিমাণে কইয়া গিমেশাক ও পানের রসে ৭ বার মর্দ্ধন করিবে। পরিমাণ—৬ রতি। ইহাতে কাদ, জা, অঙ্গবেদনা ও স্থতিকা প্রভৃতি দর্মপ্রকার স্ত্রীরোগ বিনষ্ট হয়।

মহারসশার্দরুলঃ।

ভারকং পুটিতং তামং বর্গং গলক পারদম্।
শিলা টক্ষং ব্যক্ষারং জিফলাযাঃ পালং পলম্ ॥
গরলন্ত তথা গাঞ্জমন্বিংলিকসন্মিতম্।
ছগোলা পত্রকলৈ কাতিকোধলনককম্ ॥
মাংসা তালীপপত্রক মান্তিকক রসাঞ্জনম্ ।
এবাং দিকানিকং ভাগং দেয়কাপি বিচক্ষণৈ ॥
দ্ববে কিন্ধিং স্থিতে চুর্গং ম্রিচন্ত পলং ক্ষিপেং ।
ভাবনা চ প্রদাত্রা পুর্কাতেল রসেন চ ॥
নিহন্তি বিবিধান রোগান্ অ্রান্ দাহান্ ব্যিং ক্রিমা ।
তাতিসারককৈব বহিমালামরোচকম্ ।
বিশেষাদ গভিগ্রোগং নাশ্যেদ্বিরেণ্চ ॥

অল্ল, পুটিত তাম, বর্ণ, গন্ধক, পারদ,
মনংশিলা, সোহাগা, ধ্বক্ষার ও ত্রিফলা
প্রেকে: পল, বিন অর্দ্ধতোলা, দারুচিনি,
এলাইচ, তেজপত্র, জায়ত্রী, লবঙ্গ, জাটামাংসী,
তালীশপত্র, বর্ণনাক্ষিক ও রসাঞ্জন প্রত্যেক ৪
ভোলা প্রহণ করিয়া গিমেশাক ও পানের রসে
ভাবনা দিবে। এই সমস্ত ক্রব্য কিঞ্চিৎ জব
থাকিতে থাকিতে ৮ তোলা মরিচ চূর্ণ ভাহাতে
মিশ্রিত করিবে। এই ঔষদ প্রেবনে বিবিধ
রোগ, জ্বর, দাহ, বমি, ভ্রমি, অভিসার, অ্রিন মাল্য ও অরোচক রোগ বিনষ্ট হয়। বিশেমতঃ গভিলীরোগ ইহা দারা আত সত্তর উৎক্রম্ভরূপে উপশ্যিত হয়।

ভদ্ৰোৎকটাদ্যং ঘৃত্য।

সমূলপত্রশাপস্ত শতং ভজোৎকটত চ। বারিদ্রোণেন সংসাধাং স্থাপাং পাদাবশেষিত্র ॥ বৃতপ্রস্থা বিপক্তবাং গর্ভা দ্বা তু কাবিকম।
সব্যোবাং পিপ্পনীমূলং চিত্রকা জীরকা, তথা ।
পঞ্চমূলং কনিষ্ঠক রালৈরগুসমাম্বিতম।
বলাসিমূববকার-পর্ক্তিকার্কজীরকম্ ।
সিদ্ধনেতদ্ যুতং সন্ত্যো নিহন্তাৎ স্তিকাময়ান্।
গ্রহণীং পাত্রোগঞ্চ আশাংসি বিবিধানি চ।
অগ্রিক ক্রতে দীপ্তং প্রীগাং শুক্তবিশোধনম্ ।

ঘত /৪ সের। কাথার্থ—মূল পত্র ও শাখাব সহিত গন্ধভাত্তিরা ১০।০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। কথার্থ—ত্রিকটু, পিপুলমূল, চিতামূল, জীরা, স্বর পঞ্মূল, রামা, এরগুমূল, বেড়েলামূল, সৈন্ধব লবণ, যবকার, স্বর্জ্জকাকার ও ক্ষজ্জীরা প্রত্যেক ২ ভোলা। উহা সেবন করিলে স্থতিকারোগ, গ্রহণী, পার্ভ জন্ম নিরাক্তত হইয়া অমি দীপ্র ও স্থল বিশোধিত হয়।

ধাতক্যাদি তৈল্য।

বাতক্ধিবদভাক-ধাতীপুত্রধ্পনৈ: ।
নীলীনীপনতিনিত্ব-নিপুনীরদনাগরৈ: ।
প্রপ্রাপন্ত্ব-শ্রুপ্রেপ্রেপ্রিটিক: ।
ফ্রিক্ ক্লেক্লেল্ডাা ফ্রিক্কেক্লেনিলে: ।
কর্মে কেলেক্লেডাা ফ্রিক্কেক্লেনিলে: ।
ক্রেল্ডানেক্লেল্ডাা ক্লেক্লেক্লেনিলে: ।
ক্রেল্ডানেক্লেল্ডাা ক্লেক্লেক্লেক্লেডা।
প্রিট্র প্রেল্ডানেক্লেল্ডানিল্ডানেক্লেক্লেডা।
প্রিট্র প্রানন্দাং প্রত্পাতিনাতের্বেন ত্রনাং।
প্রত্থিয় প্রানন্দাং প্রত্পাত্তিন্নিম্বাশ্লিক্লিল্ডানিল্ডানিক্লেল্ডানিক্লিল্ডানিকলিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্লিল্ডানিক্লিল্লিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্লিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্লিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্ডানিক্লিল্ল

তিলতৈল / ৪ দের। আমলকীর রস ১৬ দের, ছাগছ্য্য ১৬ দের। করার্থ—ধাইকুল, ধাওয়াছাল, ধনে, আমলা, ধুতুরাফুল, ধূনা, নীলমূল, কদমছাল, তগরপাছকা, নিমছাল, পাতিলেবুর মূল, মূতা, উঠ, হরীতকী, পল্মন্ত্র, ভারজাল, তেজপত্র, শোনাছাল, করপ্রবীজ, তুলসীপত্র, জামছাল, বামুনহাটী, সমুলফেন, রিঠা, কুলউঠ, করেংবেল, পিপুল, ঘুতকুমারী ও কেশুর মিলিত /> দের। প্রা-

নক্ষত্রে যথাবিধি পাক করিবে। এই তৈক মৰ্দ্দন করিলে স্থতিকারোগের শান্তি হয়।

জীরকাদ্যরিষ্টঃ।

জীরকন্ত তুলাক্সং চতুজোণজনে পচে ।
দ্রোণগেবে কিপেৎ তত্ত তুলাত্তমনিতং গুড়ন ॥
ধাতকীং বোড়নগলাং শুক্তীক বিপলোমিতাম্ ।
জাতীকলং মুন্তক্ষ চাতুজ্জাতং বমানিকাম্ ॥
ককোলং দেবপুশাক পলমানেন নিক্ষিপে ।
মানং সংস্থাপা ভাঙে চ মৃত্তিকাপরিনিমিতে ॥
ততঃ ককান্ বিনিক্ত গুপাররেৎ ক্ষমত্ত্রা।
অরিষ্টো জীরকাত্যোহরং নিহন্তাং স্তিকামরান্ ।
গ্রহীনতিসারক তথা বছেক্ট বৈকৃত্যু ॥;

জীরা ২৫ সের, পাকার্থ. জল ২৫৬ সের, শেষ ৬৪ সের। এই কাথে গুড় ৩৭। পের, ধাইফুল ১৬ পল, শুঠ ২ পল ও ভায়কল, মূভা, গুড়ত্বক্, তেজপত্র, এলাইচ, নাগেশ্বর, ঘমানী, কাঁক্লা ও লবক প্রত্যেক ১ পল প্রাক্ষিপ্ত করিয়া আবৃত মুৎপাত্রে একমাস রাণিবে। পরে কল্প সকল টাকিয়া ফেলিবে। এই অরি-ষ্টের মাত্রা ২ তোলা। ইহা সেবন করিলে সমস্ত স্তিকারোগ, গ্রহণী, অতিদার ও অগ্নির বিকৃতি নিরাকৃত হয়।

সূতিকাকালনির্ভিলক্ষণম্।

প্রস্তা সাজনাসাল্ডে দৃষ্টে বা পুনরার্ভবে। প্রকানামহীনা ভাদিতি ধ্রম্ভবেম তম্।

প্রসবের পর দেড় মাস অতীত হইলে অথবা পুনর্কার ঋতুদর্শন হইলে হুতিকা কাল অতীত হইয়াছে বৃ,বাবে।

অথ পথ্যাপথ্যা ব্ৰথিঃ।

হৃতিকাপোরু রোগেরু বাতঞ্জোচিতানি চ। ভতদুরোগারুকুলোন পথ্যপথ্যনি নির্দিলেও ।

স্থাতিকাথা রোগে বাতিক এবং শ্লৈছিক অধিকারোক্ত পথ্যাপথ্য নির্দেশ করা ইইয়াছে, যেহেতু স্থাতিকাবোগ বায়ু ও শ্লেষ্মার অন্ত-বন্ধী হটয়া উৎপন্ন হয়।

ইত্যায়ুর্নেদ-সংগ্রহে স্থতিকারোগাধিকাব:।

অথ স্তনরোগাধিকারঃ।

অথ স্তন্রোগ-নিদানম্।
সকীরো বাপাছভো বা প্রাপা দোহা তনো বিরা:।
প্রদ্বা মাংসক্ষধিরং তনরোগার করতে।
পঞ্চানামণি তেহাং হি রক্ষকং বিজ্ঞাং বিনা।
সক্ষণানি সমানানি বাহ্বিজ্ঞাধিলকণৈ:।

বাতাদি দোষ, সগ্রন্ধ বা অগ্রন্ধ স্থনকে আশ্রন্ধ এবং রক্ত ও মাংসকে দ্বিত করিয়া স্তনরোগ উৎপাদন করে। পুরুর্ব বে ছয় প্রকার বিদ্রণি উক্ত হইরাছে, তন্মধ্যে রক্তজ বিদ্রধি ভিন্ন অপর পাঁচ প্রকার অর্থাৎ বাতজ, পিত্তজ, কফল, ত্রিদোষজ্ঞ ও আগন্তক বিদ্রধি, স্তনে উৎপন্ন হইরা থাকে। ইহাদের লক্ষণ পূর্ম্ম-লিখিত বাহ্যবিদ্রধি সকলের লক্ষণের স্তার জানিবে।

অথ স্তনরোগ-চিক্রিৎসা।

-:*:-

শোধং স্তনোখিতমবেক্ষ্য ভিষণ বিদ্যাদ্ যক্ষিমধাবভিহিতং বহুধা বিধানন্। আমে বিদ্যাতি তথৈব গতে চ পাকং ভক্তাঃ স্তনৌ সভত্তমেব হি নিদ্ৰ হীত ॥

ন্তনোথিত শোথে আম পচ্যমান ও পকা-বস্থা লক্ষ্য করিয়া বিজ্ঞধির প্রায় চিকিৎসা করিবে। পরস্থ স্তনম্বয় হইতে সর্বাদাই তথ্য গালিয়া ফেলিবে।

পিওছানি তু শীতানি দ্রব্যাণ্যত্র প্রযোজ্জে । জলৌকাভিইরেদ্রস্কাং ন স্তনাবুপনাহয়েং ।

স্ত বোগে ^ইতেবীয়া পিতন্ত ক্রব্য প্রয়োগ এব' ক্লৌকাষোগে রক্তমোক্ষণ বিষয়ে, কিন্তু স্তনম্বয়ে ক্লাচ স্বেদ প্রদান করিবে না।

লেপো বিশালামূলেন হস্তি পীড়াং অনেপিতঃম্।
নিশাকনকক ৰাজ্যাং লেপাং প্রোক্তঃ অনার্ভিছা।
(কনকভ ধুলু বুল্ক পত্রমিতি ভাবমিতঃ।)

রাধাণশার মূল পেষণ করিয়া প্রলেপ দিলে স্তনোথিত পীড়া এবং হরিদ্রা ও ধুতৃ-রার করের প্রনেশ দিলে স্তনরোগ নষ্ট ২য়।

লেপো নিহ**ত্তি** মূলং বন্ধ্যাককোটাভবং শীত্ৰম্। নিৰ্কাপ্য ত**ত্ত**নোহং সলিলে তথা পিবেৎ তত্ত ॥

বন্ধাককোটীমূল পেষণ করিয়া লেপ দিলে অথবা প্রতপ্তলোহ জলে ডুবাইয়া সেই জল পান কাংলে স্তনবোগ নিবৃত্ত হয়।

বুরুরমেপুকাম্লং চর্নিতমাক্তে বিধারিতং এয়তি। সপ্তাহাৎ গুনকীলং **গুরু**দৈকাপ্ততঃ কুরুতে॥

গোরক্ষচাকুলের মূল চর্মণ করিয়া মূথে ধারণ করিশে ভন্তকীলক (ভনবিজ্ঞান) নষ্ট এবং ভনত্তর বৃদ্ধি হয়।

মূবিকবস্থা শুক্রপজমহিৰমাংসচ্বদংযুত্যা। অভাসমন্বিভাগে কঠিনশীনতবৌভবতঃ॥

শৃকর, হস্তী, মহিব, ইহাদের মাংস চুণ ইন্দুরের বসা সহু মিশ্রিভ করিয়া প্রেথম খতুকালে) অভ্যক্ত ও মর্জন করিলে রমণীদের স্তনযুগল কঠিন ও স্থল হইয়া থাকে।

মহিৰীভবন গনীতং ব্যাধিবলোক্তা তথৈব নাগবলা। পিষ্টু। মৰ্জনযোগাৎ পীনং কঠিনং স্তনং কুকতে॥

মহিবী নবনীত, কুড়, বেড়েলা, বচ ও গোরক্ষচাকুলের মূল পেষণ করিয়া শুনে মর্দ্দন করিলে শুনধর কঠিন ও স্থল হইনা থাকে।

শ্রীপর্ণীতেলম।

শ্রীপণীরসক্ষাভাগে সিদ্ধং তৈলং তিলোছবস্থ।
তুলকেনৈৰ তৎ তৈলং জনজোপরি ধাররেং।
পতিতানুখিতৌ গ্রীণাং ভবেতাঞ্চ পরোধরে।
গান্তারীর স্বরসে ও কদ্ধে যথারীতি তিল তৈল পাক করিবে। উক্ত তৈলে তুলা ভিদ্ধাইয়া স্তনহয়ের উপর ধারণ কাইলে পতিত
ন্তান উথিত হয়।

কাশীশান্তং তৈলম ।

ক:শীণভুরগগন্ধাশাবরীগন্ধশিপ্পলীবিপক্ষেন। তৈলেন য'ন্তি ব'ন্ধিং শুনকর্ণবরাঙ্গলিসানি।

হিরাকদ, অশ্বগন্ধা, লোধ ও গভাপপ্রলা, ইহাদের করে ও চতুগুণ জলে যথানিয়মে তিলতৈল পাক করিবে। ইহা মন্দন করিলে স্তনশ্বর, কর্ণ, স্থীলিঙ্গ ও পুরুষাঙ্গ বৃদ্ধি প্রাপ্ত হুইয়া থাকে।

প্রথমতো তঙুলাজো-নহাং কুয়াৎ তনো ছিরো।
কামিনীগণ আশু শতুতে তঙুলোদকের
নহা লইলে কদাপি তানহয় পতিত হয় না।
গোমহিনাম্বতমহিতং তৈলং খামাক্তাঞ্ললিকচাভিঃ।
স্ক্রিকট্নিলাভিঃ সৃদ্ধং নহাং ত্রেনাথাপনং প্রস্থা।

গ্রাপ্ত ।। • সের, মাহিষপ্ত ।। • সের, তিল্টেল । • সের। ককার্থ—প্রিয়পু, লজ্জা:
বজী, বচ, শুঠ, পিপুল, মরিচ ও হরিদ্রা;
জল চঙুগুর্গ; যথাবিধানে পাক করিয়া নম্ভক্রপে ব্যবহার করিবে। ইহা শুন-উত্থাপনের
শ্রেষ্ঠ ঔষধ।

অথ স্তব্যত্নষ্টি-নিদানম।

শুক্ল ভিৰিবিধৈবলৈ ছু 'ছিদে 'বি: প্ৰাদ্যিতম্।
কীনং মাড়ু: কুমানন্ত নানারোগায় কলতে ॥
কবানং সন্তিলগানি স্বক্তং মাক্তনুষ্বিতম্।
কট্মলবৰ্ণং শীত-রাজীমং শিন্তসংজ্ঞিতম্ ॥
কক্তন্তং ঘনং তোরে নিমজ্জি স্পিচ্ছিলম্।
ছিলিকং ছল্পাং বিস্তাৎ সর্ক্তিকং তিলোবজম্ ॥
অত্তন্ত্রপামূনিকিপ্তমেকীভবতি পাণ্ডনম্।
মধ্রঞাবিবর্ণক প্রসন্ধং তৎ প্রশক্ততে ॥

বিবিধ গুরুপাক অর আহার হেতুদোষ সকল প্রকুপিত হইরা প্রস্তার স্তনহগ্ধ দুবিত করিয়া স্তন্তপায়ী বালকের নানারোগ জ্লা-ইরাথাকে।

বাতদ্মিত শুলু, কমায়রন-বিশিষ্ট ংয় এবং জলে ভাসে। পিতৃত্বই শুনত্ম কটু অনুবা লবণাখাদ এবং পীতবৰ্গ রেখায়ক্ত হয়। কন-ছই হয়, ঘন ও পিছিল, ইহা জলে ডুবিয়া বায়। ছই দোবের লক্ষণ দেখিলে ছিদোবজ ও ভিন দোবের লক্ষণ দেখিলে তিদোবজ জানিবে।

যে হয় জলে নিমগ্ন হইলে, জলের সহিত একীভূত হইরা যায় এবং যাহা পাণ্ণবর্ণ, মধুর, নিশান ও স্বাভাবিক বর্ণবিশিষ্ট, তাহা নির্দ্ধোয় ও প্রাশংসনীয়।

অথ শুমুত্বন্থি-চিকিৎস।।

বনকাপাসিকেকুণাং মূলং সৌবীরকেণ বা। বিদারীকক্ষং স্বরমা পিবেখা অভ্যবন্ধন্য। হক্ষেম শালিভঙ্কা-চূর্ণপানং বিবর্জরেও। অভ্যং সপ্তাহতঃ ক্ষার-সেবিভ্যান্ত ন সংশহঃ॥

বনকাপাদের মূল ও ইক্ষুল কাজির সহিত পেষণ করিয়া সেবন করিলে অথবা ভূমি-কুলাও মজের সহিত পান করিলে স্তম্ভর্তি হয়। জুর্মপথ্যা হইয়া কামিনীগণ শালি- ত পুলের চুর্ণ হ্রন্ধ সহ সপ্তাহকাল সেবন করিলে নিশ্চরই স্কুর্টির হইবে।

र्शतिक्वांपिर वागित्र वा शिरवर खळामा वृष्करमः।

হরিদ্রাদির (হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, চাকুলে, ইন্দ্রয়র ও সষ্টিমধু) কাথ অথবা বচাদির (বচ, মূভা, আতইচ, দেবদারু, শুঠ, শতমূলী ও অনস্তমূল) কাথ পান করিলে শুক্ত বৃদ্ধি হয়।

তত্র বাহারকে স্তব্যে দশমূলীজলং পিণে**ং**।

বায়ক ইক স্তনছগ্ধ দৃষিত হইলে দশমূলের কাথ রমণীদিগকে দেবন করিতে দিবে।

পিত্রপ্রতম্থাতার-প্রেটালং নিফচকনম্। ধার্টা কুমারক পিরেৎ কাথয়িকা স্বাধিনম্। (স্বাধিনমিত্যর স্বক্রমিতি বা পাঠঃ)।

পিওক ওক তানতথ্য দ্যত হইলে ওল্ঞ, শতমূলা, পটোলপএ, নিমপএ, রঞ্চন্দন ও অনস্তমূল, ইহাদের কাথ গাঞাকে (তত্ত-দানীকে) ও শিভকে সেবন করাইবে।

কদে বা ত্রিফল। মুস্ত। ভূমিদ্বং কটুরো;২৭ম । ভাগাবাকবচাপ থেঃ পিবেৎ সাভিবিষাঃ শৃতাঃ। পত্রৌ শুজবিশুদ্ধাগং মুক্তান্বরস্থানমী ॥

কথক কৃক স্তম্ম দূৰিত হইলে ত্রিফলা, মূত, চিরতা, কট্কা, বামুনহটি, দেবদাক, বচ, আক্নাদি ও আতইচ, ইহাদের কাথ পাত্রীকে পান করাইবে এবং মুদ্যায়য় পথা দিবে।

প্রসঙ্গাছিবহান্তর্মাহ—

স্তন্করোতি মধাং শীতং ম্থিতেন মাধ্বীমূলম্।
শ্ববংনস্থিতবন্ধন্ধকা সন্তাড়নান্ধি দ্বংতেন।
নশাত্যবল'দ্বের পতে। সংজঃ কুতোহ্থবা বোগৈঃ।
দক্ষৈ ভন্মভক্তং বিপ্রাহেশটো সিত্বলামূলম্।
পুরো ক্যাপিষ্টং দভ্যন্নিভ হৈবিং ভক্ষে।।

মাধবীলতার মূল ঘোলের সহিত পেংণ করিয়া পান করিলে কামিনীগণের মধ্য-দেশ (কটাদেশ) ক্ষীণ হয়। স্বামিকত্বক শ্ববন্ধন-রক্ষ্মারা বিতাড়িত হইলে কামিনীগণের স্বাভা-বিক অথবা অক্তরত পতিবিশেষ বিদ্রিত হয়। ব্রাহ্মণদিগকে ছগ্ধান্ন প্রদান করিয়া প্র্যা-নক্ষত্রে খেতথেড়েলার মূল উৎপাটন করিবে। পরে সেই মূল স্থাকুমারীর রসে পেষণ করিয়া ভক্ষা দ্রব্যের সহিত স্বামীকে দেবন করাইলে স্বামিব বিশ্বেষ দুরীভূত হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

স্তম্মান্তিতে বাতাদি দোষ বিবেচনাপূর্ব্বক তত্তকোষনাণক পথ্যাপথ্য এবং স্তনবিদ্রদ্ধি প্রভৃতি রোগে বিদ্রদ্ধি প্রভৃতি পীড়ার স্থায় পথ্যাপথ্য বিধান করিবে।

ই ত্যায়ুর্বেদ-সংগ্রহে স্তনশ্রেগাণিকারঃ।

অথ বালরোগাধিকারঃ।

অথ বালরোগ-নিদানম্

त। १५% विष्युः स्त्रारं सितन् बाटशमाञ्चयः । কামখর: কুণাঞ্চ: জাগদ্ধবিমাজ্যার ১১ 🛊 বিরো ভিন্নমলো বাল: কামলাপিত্রগোগব'ন। ्रकानुक्रकमकाऋः भिउद्वहेर शरः भिरन्। ककड्डेर शिवन कोत्रर लालावर क्षत्राजागवान् । নিজামিতো জড়: শূন-বক্তাক্ষক্রিন: শিশু:। भन् क दलकर कार मर्काक महानामा শিশেন্তীব্রামতীব্রাঞ্চ রোদনালকয়েক্সম । বুকুণকঃ ক্ষীরদোষাচ্ছিপুন'মক্ষিবয় নি। কায়তে তেন তল্পে কং কুরঞ্চ প্রবেশৃহ:। भिकः क्याहिलाहे। कि-कृष्ठेन: प्रावध्यपम् । প্রেলা নাক প্রভাগ জন্ত । ব ব্যের বিশ্বনক্ষন ॥ মাজুঃ কুমারো গভিণ্যাঃ শুক্তং প্রায়ঃ পিবরুপি। কাসাগ্রিসাদবনথু- ১ কাক। শারিক ভিন্ন । যুজাতে কোষ্ঠবৃদ্ধ্যা ৮ তমাহঃ পারিগভিক্ষ্ : রোগং পরিভবাগাঞ যুঞ্জাৎ তত্ত্ব্যালিপন্ম । ভালুমাংসে কফঃ ক্রুছঃ কুরুতে তালুকণ্টকম্: তেন তালুপ্রদেশসা নিম্নতা মৃদ্ধি জায়তে। তালুপাত: ভনছেব: কৃত্তাৎ পানং শকুদ বৰু। एए कि क् छे : छ तका और 1 ह्र त्वर : 1 विश्व ॥ বিদপস্থ লিলোঃ প্রাণ-নাশনো বস্তিশীৰজঃ। প্রবর্ণে মহাপ্র-নামা দেবে র্রোভ্ব: ॥ **্রাভ্যাং হনরং যাতি হুদ্যাবা গুদং এজে**ও। কুমরোগে চ কথিতে ছজ্পনাহিপুতনে । অরাষ্ট্রা ব্যাধ্যঃ সর্কের মহাস্ট্রো বে পুরেরিভাঃ। वानामार्थ्य कि ७३ विष्या । कुमानः मना ॥ **শণাহ যিক্তে বালঃ ক্ষণাৎ ত্রস্তাত রোদিতি**। নথৈদ জৈদ রিয়তি ধাক্রীসালানমেব বা ॥

উদ্ধানির ক্ষতে দক্ষ প্রাচ্থ ক্ষতি জুল্পতে।
করে। কিলতি দল্ভোজং কেনং ব্যতি চাসকুং॥
কানোততি নিশি কালাতি শ্নাকো ভিন্নবিট্লবত।
মাংসকোপিতগলিক ন চালাতি ব্যাপ্তান্য

শিশু, বাতহুই স্তন্ত পান করিলে বাতরোগাক্রান্ত, ক্ষীণস্থর ও ক্লাঙ্গ হয় এবং
ভাহার মল মৃত্র ও অধাবায় নির্গমনে ক্ষছুভা
হইয়া থাকে। পিত্ত-ছুই হুগ্ন পান করিলে ঘর্মা,
মলভেন, তুফা, গাত্রসন্তাপ, কামলা ও অন্তান্ত
পৈত্তিক রোগ উৎপন্ন হয়। কফ-ছুই হুগ্ন পান
করিলে, লালাক্রাব, লে, গ্রহক পীড়া, নিজ্রা,
জড়তা, হুবুতোলা এবং মুখ ও চক্ষুর স্ফীতভা
হন। বিদোধ-হুই হুগ্নপানে হুই দোবেন এবং
বিদোধহুই হুগ্ন পানে তিন দোষের লক্ষ্ণ উপস্থিত হয়। বালকেরা কথা কহিয়া রোগের
অবস্থা প্রকাশ করিতে পারে না, অতএব
ভাহাদের ক্রন্সন অনুসারে রোগের আধিকা
বা অল্লভা লক্ষ্য করিবে।

বিক্ত-ছগ্নপান হেতু শিশুর চক্ষ্র পাতায়
কুকৃণক (কোথ) নামক রোগ উৎপন্ন হয়,
ইহাতে নেএকণ্ড ও মুহন্মুহঃ আব হয়। বালক
কপাল চক্ষ্ ও নাসিক। ঘর্ষণ ক্ষরে, রৌজের
দিকে চাহতে বা চক্ষ্র পাতা উন্মালন
ক্রিতে পারে না।

গর্ভবতী জননীর স্থনহ্দ্দ অধিক পান করিলে কাস, অগ্নিমান্দ্য, বমি, তন্দ্রা, রুশতা, অরুচি, ভ্রম ও উদ্ধরবৃদ্ধি হইয়া থাকে। এই পীড়ার নাম পারিগর্ভিক বা পহিভব; চলিত ভাষার ইহাকে এঁড়েলাগা কহে। এই রোগে অগ্নিবৃদ্ধিকর ঔষধ প্রযোজ।

শিশুর তালুমাংদে কফ কুদ্ধ হইয়া তালু কণ্টক রোগ উৎপাদন করে। ইহাতে মস্ত-কের তালুপ্রদেশ বসিয়া যায় এবং অভ্যন্তর ভাগে তালুর অধঃপতন, স্কুলপানে শ্বেষ ও অতিকটে স্কুলপান হয়। তব্যতীত তরল মলভেদ, পিপাসা, চকু কও ও মুথে বেদনা, চুধ্ ভোলা ও ঘাড় ফুইয়া পড়া এই সমস্ত লক্ষণ উপস্থিত হয়।

শিশুদিগের ইডকে ও বৃত্তি দেশে রক্তপ্রাকৃতি ইহাপন্ন নামক এক প্রকার সান্নিপাতিক বিমর্পরোগ উৎপন্ন হয়, তাহা
প্রাণ-নাশক। মন্তকজাত বিদপ শুল্দেশ
দিল্লা হৃদ্যে এবং হুদর হুইতে গুত্তে আইসে।
এইক্লপ বস্তিজাত বিদপ্ত গুত্তদেশে, গুত্তদেশ
হুইতে হৃদ্যে ও হৃদ্য হুইতে মন্তকে গমন
করে। শিশুদিগের অজ্ঞান্তী ও অহিপূত্ন
নামে আর হুইটি রোগ হুইলা থাকে, উহাদের
লক্ষণ ক্ষুদ্রোগাধিকারে শিশুত হুইয়াছে।

পুর্ব্বে জ্বাদি যে সকল প্রথল বাধি উল্লিখিত হইয়াছে, বালকদেহেও সেই সকল হইয়া থাকে, তাহাদের লক্ষণও তথং।

পে: চন্দ্রংশাদি কারণে স্কলাদি নয় প্রকার গ্রহ বালক, দিগকে আশ্রের করিয়া থাকে। গ্রহ-পাড়িত বালক কথন উবিয় হয়, কথন ভয় পায়, কথন জ্রন্দন করে, কথন দক্ত নগাদি খারা ধান্তীকে বা আপনাকেই কামড়ায়, কথন উদ্দিকে চাহিয়া থাকে, কখন দাত কিড়িমিড়ি করে, কখন কোভায়, কখন হাই ভোলে, কখন জাভদ্দ করে, কখন বা দক্ত ও ওঠ কামড়ায় এবং বারংবার ফেন বমন করে, অতি কীণ হয়, রাজিতে বুমার না, ভাহার চকু: কীত, মল ভাঙ্গা ও স্বর ভগ্ন হয়, গাত্র দিয়া রক্ত ও মাংদের গন্ধ নির্গত হইয়া থাকে। পূর্বের ভার আর আহার করিতে পারে না। এই গুলি গ্রহপীড়িত বালকের সাধারণ লক্ষণ।

वर्थ वालरतांग- विकिৎमा।

ত্রিবিধঃ কৰিতো নালঃ কীরান্নোভরবর্ত্তকঃ। বাস্তাং ভাজ্যামন্ত্রীজ্ঞাং দুষ্টাভাং রোগসম্ভবঃ। কীরপজ্ঞোমধং ধাত্রাঃ কীরানাদক্ত চোভরোঃ। অন্নেন বা শিশো দেয়ং ভেষজং ভিষজা সদা॥

বালক ত্রিবিধ— গ্রন্ধনী, গ্রন্ধার্কীবী ও আর্কীবী। দূরিত গ্রন্ধারে বালকের স্বাস্থ্য ভাল হয় এবং নিন্দোষ গ্রন্ধারে বালকের স্বাস্থ্য ভাল থাকে। গ্রন্ধনী বালকের স্বাস্থ্য নষ্ট ধারীকে এবং গ্রন্ধার্কীবী বালকের স্বাস্থ্য নষ্ট হইলে শিশুকে ও ধার্ত্তীকে আর অরভোকী বালকের স্বাস্থ্য বিনষ্ট হইলে কেবল মাত্র বালককে ঔষধ সেবন করাইতে ক্রন্টার

माजबा नञ्चलका जोर निम्मातनेहर निर्माधनम् । সर्वर निवायारक वात्त स्रक्षत्र न निवायारक ॥

আবগুক বোধে শাত্রীকে ইচ্ছামন্ত লুজ্বন শেওয়াইতে পারা ২ায়, কিন্তু শিশুর পকে লুজ্বনাদি অনিইকর। বিশেষতঃ শিশুর অপর সমস্ত নিষেধ করা ঘাইতে পারে, কিন্তু শুক্ত কদাচ বারণ করিতে পারা যায় না।

সৌবৰ্ণং স্কুতং চূৰ্বং কুঠং মধু যুতং ৰচা।
মৎস্যাক্ষকং শৃথপুশী মধুস্পিঃ সকাঞ্চন্ম ।
অকপুশী মধু যুতং চূৰ্বিতং কনকং বচা।
সহেমচূৰ্বং কৈটবাং খেতা দুক্ষা যুতং মধু ॥
চহাবোহভিহিতাং আশা অন্ধাক্সমাপকাঃ।
কুমারাবাং বপুষে ধা-বলুষ্টিকরাঃ গুডাং ॥

কুড়, মধু, মৃত, বচ ও ফর্ণভাম (১) সোমগতা, (কাহার মতে রক্ষীশাক), শৃদ্ধাপুশা,
মধু, মৃত ও ফ্রেডিয় (২), ফ্রেডিগ্রা, বচ, মধু,
মৃত ও ফ্রেডিয় (৩), কট্ফল, ব্রেডিগ্রা, মধু,
মৃত ও ফ্রেডিয় (৪), এই চারিটি যোগ যথ

নিয়মে বালককে লেহন করাইলে ভাহার শরীর, বল, পৃষ্টি ও মেধা বৃদ্ধি হয়। যো বালোহচিরস্লাত: অভং ন গৃহাতি তভ্ত সহদৈব। ধানীমধ্যুতপথাককেনাঘধ্যেকিহনাম।

অন্নকালোৎপন্ন বালক স্তম্ম পান না করিলে আমলকী ও হরীতকীর চুর্ণ স্বত এবং মধুতে মিশ্রিত করিয়া বালকের জিহ্বায় ঘর্ষণ করিয়া দিলে স্তম্ম পান করে।

স্কন্তাভাবে পরশ্চাগং পব্যং বা তদ্পুণং পিবেৎ। ব্রুম্বন পঞ্চমুলেন স্থিরহা বা সিতাযুত্তম্ ॥

স্তনহথের অভাব ইইলে ছাগছগ্ধ পান করিতে দিবে। স্বন্ধ পঞ্চমুলের কিংবা শাং-পাণির সহিত গবাহগ্ধ সিঙ্ধ এবং ভাহাতে কিঞিং চিনি সংযুক্ত করিয়া বালককে সেবন করাইবে। ইহাও স্তক্তগ্রের স্থায় গুণকারক।

মৃৎপিঙেনাগ্নিতপ্তেন ক্ষীর্সিক্তেন সোক্ষণা। ফেন্ডেড্থিতাং নাভিং শোধস্তেনোপশামাতি ॥

বালকের নাভি উথিত হইলে (নাই উঠিলে) একখণ্ড মৃৎপিণ্ড অগ্নিতে সম্ভপ্ত এবং তাহা মুগ্নে নিষিক্ত করিয়া সেই এগ্নসিক্ত উন্মান্ত মৃৎপিণ্ড মারা নাভিতে স্বেদ দিবে, ভাহাতে নাভশোণ প্রশ্নিত হইবে।

নাভিপাকে নিশালোধ-প্রিয়সুমধুকৈ: শৃতম্। তৈলমভাঞ্জনে শস্তমেভিবিপোবচুর্ণনম্॥

বালকদের নাভিপাকে হরিদ্রা, লোধ, প্রিম্নস্থ ও ষ্টিমধু ইহাদের করে তৈল পাক করিয়া নাভিতে লাগাইবে, অথবা উক্ত দ্রব্য সকলের চুর্ণ ছারা নাভিদেশ পরিব্যাপ্ত করিবে।

ব্যোবশিবোগ্রারজনী-কক্ষং বা পীতমণ পরসা। উব্বং নিঃশেবং কুক্সতে পটুতাং বালক্ষ চাতান্তম্ ।

ত্রিকটু, হরীতকী, বচ ও হরিদ্রা ইহাদের কক হগ্ধ সহ সেবন করিলে বালকের কণ্ঠস্থ ক্রেমা নিঃশেষিত হয় এবং বালকের শরীরের পটুতা জন্ম।

সোমগ্রহণে বিধিবৎ কেকিলিথামূলমূজ্তং বন্ধম । জঘনেহথ কন্ধরাগ্রাং ক্ষপন্নত্যহিতুভিকাং নিয়তম । চন্দ্রগ্রহণ কালে মুক্তশিখ হইয়া (শিথা থুলিয়া) অপামার্গ্য উদ্ধৃত করত, তাহা বালকের কটাতে বা গলদেশে বন্ধন করিয়া দিবে। তদ্বারা অহিতুপ্তিকা (এঁড়েলাগা) গোগ প্রশ্মিত হইবে

সপ্তদলপুষ্পমন্নিচং পিষ্টং গোরোচনাসহিত্য। পীতং ত**ৰৎ** তঞ্জস্তক্ত্তো দক্ষপিষ্টকপ্রাশং॥

ছাতিমের পুশ্প, মরিচ ও গোরোচনা পেষণ করিয়া বালককে সেবন করাইলে অথবা পেষিত ভঙুল ও ভাত পত্র ছারা বেইন ও কুশের ছার। বন্ধন ও ভাহা আগতে দগ্ধ কারিয়া সেবন করাইলে আহিতুভিকা (এ'ড়ে-লাগা) রোগ বিনষ্ট ইইয়া গাকে।

শনামকে খুলু বিকা-বুকামবিচরোচনা:। নবনীতঞ্চামান্ত্র পাদেৎ তদ্বেগনাশনম্॥

দুখুবাকীটের বৃক্ক, মহিচ, গোরোচনা ও নবনীত, এই সকল দ্রথা এ হত্র মিশ্রিত করিয়া সেবন করাইলে বালকের ধনামক (নিনামা) রোগ বিনষ্ট হয়।

তৈল'ক শির্ভালুনি সপুণলাক সুখীভবং শীব্যু। দল্লা ব্যুনীচর্যে দত্তে নভোদনাম ক'ব্যু:।

বাপকের মন্তকের তাল তৈলাক্ত করিয়া তাতিম, আকন্দ ও সিজের আঠায় লিও করিবে, পরে হহিদ্রাচুর্গ প্রদান কবিবে, এইরূপ প্রক্রিয়ার দ্বারা অনামক বিনষ্ট হয়। লেহছেচ্চ ধনা বালং নবনীতেন লেপিতম্।

ক্টকপত্তরংসনোধর্তনঞ্ তদ্ধিতন্। বালকের গাত্তে নবনীত মাথাইয়। কুকুর ধ্রা লেহন করাইবে এবং পরে পুটকীপত্তের

রস ভারা শ্রীর মর্জন করিয়া দিবে।
তৈলভ ভাগনেকং মৃত্তভ ছৌ চ শিবিদলরসভ।
গব্যং পরকত্তও পিমবং দ্বা পচেৎ তৈলম্।

তেনাভাক: সততং রোগমনামকাখামুপহরতি ।

তৈল ১ ভাগ, গোমূত্র ২ ভাগ, শিদ্বীপত্র-রস ৩ ভাগ, গব্যহ্গ ৪ ভাগ; একত্র পাক করিবে। এই তৈল মর্গন করিলে শিশুর অনামক রোগ প্রশমিত হয়। আর্কতৃলকমাংকিরোমাণ্যাদার কেশরাঞ্চা।
স্বরসেনাক্তে বাত্র কুমা বার্ত্তিক হৈলাক্তাম্ ॥
ভক্ষাতকজ্ঞলাঞ্জিভলোচনযুগলেংপ্যলক্তা বালঃ।
কন্তমন্মকরোগং ক্ষপইতি ভূতাদিকঞাপি চ ॥

কেণ্ডরের স্বরসে বস্থাও : ব্লিড ক্রিয়া সেই বস্ত্রণওে আকন্দ তূলা ও মেষরোম রাশিয়া বর্ত্তি প্রস্তুত ক্রিবে। পরে ঐ বর্তি তৈলাক্ত এবং প্রজালিত ক্রিয়া আর্ত্তিত যথা নিরমে কজ্জল ক্রিবে। এই কজ্জলের অঞ্জন দিলে শিক্তদিগের অনামক বিনষ্ট ইইবে এবং ভূতাবেশাদি দুরীভূত ইইবে।

ভেষজং পূৰ্বব্দুদ্দিষ্টং নরণাং যজ্জর'দিয়। কায়াং তদেব বালাণাং মাত্রা চাত্র কনায়স'॥

জ্বাদি রোগে যে সমস্ত ঔষধ কথিত হটয়াছে, বালকদিগকেও সেই সেই ঔষধ সেবন করান যাইতে পাবে, কিন্তু মাত্রা অতি অল্ল হওয়া আবিশ্রক।

প্রথমে মাসি জাতস্য শিশে;তেরজরক্তিকা। অবলেকা তু বর্ত্তবা মধকীরসিতান্বতিঃ। একৈকাং বর্ত্তরেং তারদ্ যাবং সংবংসরো ভবেং। তদুদ্ধং মাষর্দ্ধিঃ সাদ্ে যাবদ্যোদ্ধাদিক।।

একমাস ব্যক্ষ বাদকের ঔষণের মাজা ১ রতি। তদৃদ্ধ ১ বংসর পর্যাস্ত প্রতিমাসে এক এক রতি বৃদ্ধি কংবে, অর্থাৎ ১ মাসে ১ রতি, ২ মাসে ২ রতি ইত্যাদি। মধু, তথ্য, শক্রা ও ঘত ইহাদের সহিত অবলেহরূপে ঔবধ প্রয়োগ করিবে। ১ বংসর ব্যসের পর ১৬ বংসর পর্যাস্ত প্রতি বংসরে এক এক মাধা কহিলা ঔষধের মাজা বৃদ্ধি করিবে।

ভদ্রমুস্তাদিঃ।

ভক্তপুত্তাভরানিদ-পটোলনগুকৈ: কৃতঃ।
কাপ: কোক: শিশোরের নিঃশেবজরনাশন:।
নাগরমুতা, হরীতকী, নিম্ন, পটোলপত্ত,
ষ্টিমধু, ইহাদের কাথ জবত্ত থাকিতে সেবন
করাইলে বালকদের জর নিঃশেষে দুর হয়।

হরিদ্রাদিঃ।

হরিদ্রাধ্বনত্তাহ্ব-সিংহীশক্রথবৈ: কৃত:। নিশেক রাতিসারম্ম: ক্রায়: ক্রন্ত:।

হবিজা, দাক্সহরিদ্রা, যষ্টিমধু চাকুলে (নিশ্চলের মতে-বাসক) ও ইন্দ্রব ইহাদের কাথ পান করিলে শিশুর জ্বা ও জাতিসার বিনপ্ত হয়। ইহা শুন্তাদাহনাশক।

शाडकार्गिः।

ধাতকানি**ৰধস্তাক-লোধেন্ত্ৰবৰালকৈ:।** লেহঃ কৌদেশ বালানাং অৱাভিসারবান্তিজিৎ॥

গাইফুল, বেলগুঠ, ধনে, লোধ, ইক্রঘন ও বালা এই সমুলায়ের চুর্ল সমভাগে মধুর সহিত লেহন করাইলে বালকের জ্বাভীদাব ও বমন নিবারিত হয়।

কর্কটাদিঃ।

কর্নটাতি বিষাওকী-ধাতক বিশ্বব্যেকম। মুক্তং মজ্জা চ কোলসা মধুনা সহ লেহারং । ২প্তি অপনত সাবং সূক্ষারং গ্রহণাগদ্ধ। ছন্দিং রক্ত স্থাতিং কাসং খ্যোগ পালাকৈ সংত্থা।

কাক্ডাশৃদ্ধী, আতইচ, শুঠ, ধাইফুল, বেলশুঠ, বালা, মুভা, কুলেন আঁটির মজ্জা, ইহাদের সমভাগচুণ মধু সহ বালককে অব-লেহন করাইলে জর, অভীসার, ভনিবাধ্য গ্রহণী, বমন, রক্তশ্রাব, কাস, শ্বাস ও পশ্চাক্ষজ রোগ নিবারিত ইয়।

বালচতুর্ভদ্রিক।।

খনকৃষ্ণারূপাশৃঙ্গী-চূর্ণং ক্ষোড়েণ সংযুত্য। শিশোক রাতিসারত্বং বাসকাসব্মীহর্ম॥

মৃতা, পিপুল, আতইচ ও কাক্ডাশুলী, ইহাদের চূর্ণ মধুর সহিত দেবন করাইলে বাদকের জ্বরাতীদার, খাস, কাদ ও বমন দুরীভূত হয়।

রজন্যাদিচূর্ণম্।

রজনী দারু সরলং শ্রেমসী বৃহতীব্যম্। পৃত্মিপনী শতাহ্বা চ লীচুং মাক্ষিকসর্পিবা । এহণীদীপনং হস্তি মারুতারিং সকামলাম্। অ্রাতীসারপাঞ্ছং বালানাং সর্বরোগজিৎ ।

হরিদ্রা, দেবদারু, সরলকাঠ, গজপিপ্পলী, বৃহতী, কণ্টকারী, চাকুলে, গুল্ফা এই সমুদার চূর্ণ ঘৃত ও মধুর সাহত লেখন করাইলে গ্রহণীর কার্য্যকারিতা শক্তি বৃদ্ধি হয় এবং জরাতীসার ও পাঞ্জ প্রভৃতি বাবতীয় বালরোগ বিনষ্ট হয়।

মিষিকৃষ্ণাঞ্জনং লাজা-শৃঙ্গামরি6মান্দিকৈ। লেহং শিশোবিধাতব্যক্ষ্যান্দিকাসম্বরাপহঃ॥

মৌরি, পিপুল, রসঞ্জিন, থৈ, কাক্ড়াশৃদ্ধী ও মরিচ, ইহাদের চুণ মধু সং লেংন করাহলে বালকের ব্যি, কাস ও জ্ব বিনষ্ট হয়।

> শূলীং সমুস্তাতিবিধাং বিচূর্ণা লেহং বিদ্যান্ত্রধুনা শিশুনাম। কাসজ্বজ্জালিভিন্তিভানাং সমাজিকাং বাতিবিধান্ত্রিকাম॥

কাক্ডাশৃঙ্গী, মৃতা ও আত্ইচ, ইহাদের চূণ মধু সহ লেখন করাইলে অথবা একমাত আতহচ চূণ মধু সহ লেখন করাইলে শিশুদের কাস, জার ও ছার্দ রোগ প্রশমিত হয়।

পিপ্ললীমরিচান:ক চুর্ণং সমধ্শকরম্। রসেন মাতুলুকস্ত হিক:চছন্দি:নবারণম্॥

পিপুল ও মরিচচ্ণ, চিনি মধু ও ছোলঙ্গ লেব্র রস সহ সেবন করাইলে বালকের হিকা ও বমন রোগ নিবারিত হয়।

পাঁতং পাঁতং বমেদ্যন্ত তত্ত্বং তত্মধুসাপিব। ছিব:ভাকীফলরসং পঞ্চলেঞ্চলেঞ্চলেং ।

যে শিশু স্তম্পান করিয়া বমন করিতে থাকে, তাহাকে বৃহতী ও কণ্টকারী ফলের রস অথবা পঞ্চকোল চুর্ণ, মৃত ও মধুর সহিত সেবন করাইবে।

আন্তাহিলাজসিজ্ব থৈলে হ: কৌন্তেণ ছর্জিন্থ ।
আমের আঁটির মজ্জা, থৈ ও সৈত্ধব একত্র
মধু সহ লেহন করিলে বমন নিবারিত হয়।

পেটাপাঠাম্বাক্ষয়াঃ সহকারবন্ধগতঃ কন্ধ: । ইত্যেকশন্চ পিডো বিধৃতো হারাভিতাবাদৌ । ছদ্যিতিসারজবেগং প্রবলং ধন্তে তদেব নিয়মেন ।

পেটারীমূল, আক্নাদিমূল, জ্বামছাল,
আমছাল এই সমুদায় পেষণ কার্য্ত্রা প্রত্যেককে
এক একটা পিণ্ডাকার করিবে, এই পিণ্ড
সকল সদরে, নাভিতে, হাত-পায়ের ও মন্তকের
ভালুতে ধারণ করিবে। ইহাতে ব্যন্ত অতাসাবের প্রবল বেগ নিরাক্বত হয়।

ওখ্যাও কুমারত সর্বাত্তামাতিসারিণঃ। বাত্রাং বিলঙ্গায়েন্দীমান্ দেহদেরোগ্যপেক্ষা। পঞ্চোকসিদ্ধারা পেয়াদিক প্রায়ারেরে।।

আমাতীসারগ্রস্ত স্তম্পায়ী শিশুর ধাত্রীকে দোলাদির বলাবল বিবেচনা কারয়া লজ্জন দিবে, অথবা পঞ্চকোলাসিক পেয়াদি -দেবন করিতে দিবে।

ক্ষারিক্স শিশোরামং গুজং দৃঃ । তুলারুণ্ম। মাসসুবং পিরেদ্ধান্ত্রী পিঞ্লাচুর্গদংযুত্ম।

ন্তন্ত্রপায়ী শিশুর আমাতিসার শুদ্ধ হইলে পাত্রীকে ।পপুলচুর্ণ সহ মাধকলায়ের যুধ সেবন করিতে ।দবে।

প্রৈবদ্রচাকেরী-কাক্ষাচাক্ষিপ্তজ্ঞ শিলো কথনা হাসার-মাণনং মৃদ্ধলেপন্য ঃ

কুল, আমকল, কাকমাচা, ক্ষেৎবেল ইছা-দের পত্র পেষণ করিয়া মন্তকে প্রলেপ দিলে শিশুদের ব্যন্ত অতীসার বিনষ্ট হয়।

সমঙ্গা ধাতকী পালং বয়ঃস্থা কচ্ছুরা তথা। পিট্টেরেটত্যবাগৃঃ স্যাদ্তীসারবিনাশিনী॥

বরাহক্রাস্তা, ধাইফুল, পদ্মকেশর, গুলঞ্চ ও শৃক্লিম্মুল ইহাদের কক্ষ সহ ধ্বাগূ প্রস্তুত ক্রিয়া দেবন ক্রাইলে বালকদের অভিসার নিবৃত্ত হয়।

কৰঃ প্ৰিয়ন্ত্ৰকালান্থি-মধামুক্তরসাঞ্জনৈ। কৌদ্রলীচঃ কুমারদা ছদ্দিভূঞাভিদারমুৎ ॥ মোচরদঃ সমন্ধা চ ধাতকী পদ্মকেশরশ্। পিষ্টেরেভেধ্বাগৃঃ স্যাদ্রকাতিদারনাশিনী॥

প্রিয়স্থ্, কুল আঁটির মজ্জা, মৃতা ও রসা-ঞ্জন ইছাদের কল্প মধুর সহিত লেহন করাইলে বালকদের বমন, পিপাদা ও অতীদার নিবৃত্ত হয়। মোচরদ, বরাহক্রাস্তা, ধাইফুল ও পল্প-কেশর ইহাদের কল্প সহ যবাগু প্রস্তুত করিয়া সেবন করাইলে বালকদের রক্তাতিসার নিবারিত হয়।

লেহলৈদিতাকৌড-তিলযন্ত্ৰ্যাহ্বকৰ্ষিতঃ। বালস্য ক্লম্যান্নিয়তং বক্তশ্বাবপ্ৰবাহিকাম্॥

তিল ও ষ্টিমধুর ককে তিলতৈল, চিনি ও মধুমিশ্রিত করিয়া লেহন করাইলে বালক-দিগের রক্তাতিদার (রক্ত আমাশ্য) দ্রীসূত ইয়া থাকে।

লাজা স্বাষ্ট্রমধুকং শক্রাক্ষোদ্রমের চ। তথুলোদকসংযুক্তং ক্ষিপ্রং হস্তি প্রবাহিকাম্॥

ুণ্চুৰ্, বৃষ্টিমধু চুৰ্ণ, চিনিও মধু এই সমু দায় তঞ্লোদকের সহিত পান করাইলে বালকদিগের প্রবাহিকা রোগ প্রশমিত হয়।

আকোঠমূলমথবা তঙ্লদলিলেন বটগমূলং বা। পীতং হস্তাতাদারং অহনীরোগঞ স্বারম্ ।

আঁকোড় গাছের অথবা বটের মূল পেষণ করিয়া ভণ্ণুলোদকের সাহত সেবন করিলে বালকের ত্র্মার অভিসার ও এহনা রোগ প্রশ্মিত হয়।

সিওজীরকসর্জচুর্ণং বিষদ,লাখাসুনি,আতং পীতম্। হস্ত্যামরক্তপুলং গুড়সাহতঃ বেতসর্জ্জো বা ॥ মরিচরহৌষধকুটজং বিশুরীকৃতমুন্তরোত্তরং ক্রমণং। গুড়তক্রযুত্তমেতদ্ গ্রহ্ণারে:বং নিহস্ত্যাপ্ত ॥

খেতজীরা ও ধুনা চুর্ণ বিলপত্রের রসের সহিত, অথবা খেতধুনার চুর্ণ গুড়ের সহিত সেবন করিলে, বালকদিগের আমরক্তজনিত বেদনা নিবারিত হয়। মরিচ ১ ভাগ, ওঁঠ ২ ভাগ ও কুড়্চির ছাল ৪ ভাগ, এই সকল দ্বব্য গুড় ও তক্রের সহিত পান করিলে শিশু-দিগের গ্রহণীরোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

বিষণক্রাপুমোচান্ধ-সিদ্ধমাজং পয়: শিশো:। সমাংসরকাং এইণীং গীতং ইস্তাৎ তিরাত্তত:॥

্বেশন্ত ঠ, ইন্দ্রবৰ, বালা, মোচগ্রস ও মৃতা এই সকল জব্য মিলিভ ২ ভোলা, ছাগত্বগ্ন /।• শোরা ও জল /> সের, শেষ ছগ্ধনাত্র অর্থাৎ /া• পোরা। ইহা পান করিলে তিনদিনে বালকের মাংস ও রক্ত সংযুক্ত গ্রহণী রোগ নিবারিত হয়।

ত্বদ্রাকীরসমো জমুত্তভ্রো রস: ॥

ছাগছথ ও জামছালের রগ সমভাগে মিশ্রিত করিয়া শিশুকে পান করাইলেও পূর্ববং গুণ দর্শে।

গুদপাকে তু বালান'ং পিডম্বীং কারয়েৎ দিয়াম্। রসাঞ্জনং বিশেবেণ পানালেপনয়োহিতম ।

শিশুদিগের গুছদেশ পাকিলে পিত্তন্ন ক্রিয়া করিবে। ইহাতে রসাঞ্জনের প্রলেপ ও রসাঞ্জন পান বিশেষ হিতকর।

আয়াতকাত্রজমূনাং স্বঃনাদার চূর্ণরেও। মধুনা লেহরেলালম তাসার্বিনাশনম্॥

আমড়াছাল, আমছাল ও জামছাল চুণ করিয়া মধুর সহিত লেহন করাইলে বালধ-দিগের অতিসার বিনষ্ট হয়।

কণোষণ্সিতাকোত-স্কেল্ফেল্ফেন্ট্রকবৈঃ ভূতঃ। মুক্তগ্রহে প্রায়েজনাঃ শিশুনাং লেহ উত্তমঃ।

পিপুল, মারচ, ১চ.ন, মধু, ছোট এলাইচ ও দৈন্ত্র ইহাদের লেহ প্রস্তুত কারয়া দেবন করাইলে বালকদের মৃত্রুছ নিবারিত হয়।

ম্বতেন সিমুবিথৈলা-হিন্দুভাগীরজো লিহন্। আন:হং বাভিকং শূলং জয়েৎ ভোয়েন বা শিশুঃ।

দৈশ্বৰ, খেলভুঠ, এলাইচ, হিন্তু, বাম্ন-হাটী ইহাদের চুৰ্ণ ন্বত সহ লেহন ক্রাইলে, অথবা জলের সহিত পান ক্রাইলে বালক-দিগের আনাহ ও বাতিক্শুল নিবারিত হয়।

হরীতকীবচাকুঠং ককং মাক্ষিকদংগৃত্যু। পীছা কুমারঃ গুঞ্জেন মুচাতে ভালুপাতনাৎ ॥

হরীতকী, বচ ও কুড় ইহাদের কল্প মধু-যুক্ত করিয়া স্তনজ্ঞাের সহিত পান করাইলে বালকগণ তালুপাতন রোগ হইতে মুক্তিলাভ করিয়া থাকে। মুখপাকে তুবালানাং দান্ত্রদারময়েরজঃ। গৈরিকং কৌশ্রদংযুক্তং ভেষজং দরদাঞ্জনম্। (আম্দার আন্তর্মপার্তঃ। অত্যে তু আন্তর্মাঞ্জিত্তাহাঃ। চক্রটাকা)।

শিশুনের মুখপাকে আত্রসার, লোইচ্র্ন, গেরিমাটী ও রসাঞ্জন এই সমুদায় মধু সহ পেষণ করিয়া প্রবেশ দিবে।

श्रद्धाः इत्तरक्षोत्तम् अभारक अत्यवस्य । प्रान्तीयहेल्डाः को डी-अज्यकोरेक्छभोभत्रम् ॥

অশ্বথ বন্ধল ও পত্র পেষণ করিয়া মধু সহ প্রান্তকী ও জাতীপত্র পেষণ করিয়া মধু সহ প্রান্তকী ও জাতীপত্র পেষণ করিয়া মধু সহ প্রান্তকা ও জাতীপত্র পেষণ করিয়া মধু সহ প্রান্তকা ও জাতীপত্র প্রান্তকার করিয়া মধু সহ প্রান্তকার বালকদের মুখপাক নিবঃরিত হইয়া থাকে।

সং জ্বারবসেন অনুদ্রস্থান স্তঃ।
কুত্রপৃথ্যিতি হি পাকং মুখলং বাল্যা চাৰের ॥
(জ্বারং প্রণিসভেবঃ);

পুটপাকবিধানে ক্তেতুলদীরস ও দিজ পত্র স একত করিয়া মুখপাকে ঘর্ষণ করিলে সংরই শিশুদের মুখপাক বিনষ্ট হয়।

লংবতিভিরিবলুর-রজঃ পুপারসাধিতম্। ফাতং করে'তি বংলানাং দ্ভাকেশরবনুখন্॥

লাব ও ভিত্তিরি পশ্কির মাংসচ্গ মরু মিশ্রিত করিয়া তথারা দক্তের মাড়ি অলে অলে ঘষণ করিলে অতি স্থলার দক্ত উদ্ভিন হয়।

দত্যেদ্রেদ্যেরোগেরু ন বালমতিযন্তরেং। সরবেবোপশাম্যন্তি জাতদন্তক্ত তে গদাঃ।

দক্ষেণ্ডের কালীন থালকদের যে সমস্ত রোগ হয়, তলিবারণার্থ বালকদিগকে আহা-রাদি বিষয়ে কোন রক্ম যম্বণা দেওয়া বিধেয় নহে, যেতেতু দক্ষোভের হইলে ঐ সকল রোগ স্বয়ংই নিব্র হয়।

পঞ্চলীকষায়েন সমূতেন পর: শৃতম্। সণ্সবেরং সঙ্ডং শীতং হিকাদ্দিতঃ পিবের। (স এ কাথার পাদিকং স্থতমন্তমাংশং বেতি চক্রটাকা)।

মং পঞ্মুলের কাথ / ১ সের, ছগ্ন /।• এক পোয়া, ঘুত প • পোয়া (বা ২ তোলা) একত্র করিয়া, হগ্গাবশেষ থাকিতে নামাইবে। ইহাতে যথোচিত শুঁঠচুর্ণ ও গুড় প্রক্ষেপ দিয়া যথামাত্রায় বালককে পান করাইলে হিকা রোগ নষ্ট হয়।

থবৰ-গৈরিকজ্ঞাপি চ্পানি মধুনা সহ।
লাচ্। অথমবাপ্নোতি ক্ষিপ্ন হিকান্দিতঃ নিশুঃ।
অত্যন্ত লোহিতবর্ণ গেরিমাটাচ্প মধু সহ
লোহন করাইলে হিকা-রোগে পীড়িত বালক
সম্বর স্থবাত করে।

চিত্রকং শৃঙ্গবেরক তথা দন্তী গ্রাক্ষ্যপি।
চূর্গং কৃষা তু সর্বেগং স্থাক্ষেনাসুনা পিলেও।
খাসং কাসমধ্যে হিকাং কুমারাগাং প্রণাশয়েও॥
(সবিবন্ধে বাতে কফেংয়া বেগোঃ)।

চিতামূল, শুঠ, দম্ভীমূল ও গোরক্ষকর্কটী এই সমুদায়ের চূর্ণ ঈষত্বক্ষ জল সহ পান করা-ইলে বালকদের শ্বাস, কাস ও হিকা বিনষ্ট ২ইয়া থাকে।

জাক্ষানোভয়াকুন্ধা-চূর্বং সক্ষৌত্রস্পিয়া। ল'চং খাসং নিহস্তাভি কাসঞ্চ তমকং তথা॥

দ্রাকা, ছরালভা, হরীতকী ও পিপুল, ইহাদের চূর্ণ ঘত ও মধু সহ লেহন করাইলে বালকদের কাস, খাস, হিক্কা ও তমকখাস সম্বর প্রশ্মত হয়।

পুষ্করাদিচুর্ণম্।

পুন্ধর;তিবিষাপূলী-মাগণীধ্যবাদকৈ:। ভচ্চুৰ্ণং মধুনা লীচং শিশুনাং পঞ্চকাদস্থ ॥

কুড়, আতইচ, কাক্ডাশৃঙ্গী, পিপুল ও ছরালভা ইহাদের চূর্ণ মধু সহ লেখন করাইলে বালকদের পঞ্চপ্রকার কাস নিবারিত হয়।

দাড়িমন্ত চ বীজানি জীরকং নাগকেশরম্। চূর্নিতং শকরাকৌদ্র-লীচং তৃক্ষানিবারণম্॥

দাড়িমের বীজ, জীরা ও নাগকেশর ইহাদের চূর্ণ চিনি ও মধু সহ বেছন করাইবে বালকদের পিপাসার শান্তি হয়। মাযুরপক্তমন্যুবিতং জলং তেন ভাবিতং পেয়ন্।

क्रभावः बटेका व्रज्ञान्य ज्ञानः व्यक्तः त्याविष्यु व्यक्ति ।

এক পল ময়্ব-পক্ষভন্ম ৬ পল জলে ভিজা-ইয়া পুন: পুন: ছাঁকিয়া পয়াযিত করিবে। পরে সেই জলে যঠাংশ বটকাঠভন্ম প্রক্ষেপ দিয়া ও বারংবার ছাঁকিয়া সেই জল পান বা মুখে ধারণ করাইলে পিপাদার নির্ত্তি হয়।

পিষ্টেশ্ছাগেন পরদা দাব্বীমৃত্তকগৈরিকৈ:।
বহিরালেপনং শক্তং শিশোর্নে নাময়াপহম ॥

দারুহরিন্রা, মৃতা ও গেরিমাটী ছাগহগ্ধ সহ পেষণ করিয়া চক্ষুর বাহিরে প্রবেশ দিলে বাদকের চক্ষুরোগ ভাল হয়।

মনঃশিলা শভানাতিঃ পিপ্লল্যোহন রসাঞ্জনম্। বর্ত্তিঃ ক্ষোদ্রেণ সংযুক্তা বালে সর্বাক্তিরোগনুৎ ॥

নন:শিলা, শৃথ্যনাভি, পিপুল ও রসাপ্তন এই সমুদায় একত্র পেষণ করিয়া বর্ত্তি প্রস্তুত করিবে। মধুসহ ঘর্ষণ করিয়া এই বর্তির অঞ্জন দিলে বালকদের স্ক্রপ্রকার নেত্ররোগ নিবাবিত হয়।

মাতৃ: স্বশ্বকট্নেহ-কাঞ্জিকৈভাবিতে। জয়েৎ। স্বেশনীপশিপোন্তপ্তো নেত্রাময়মলক্তকঃ॥

নাতার স্তনত্থা, কটুইতল ও কাঞ্জিক ইহাদের প্রত্যেকটির ধারা সপ্তাহকাল বণাক্রমে একধানা আল্তা ভাবনা দিয়া ও দীপশিধায় উত্তপ্ত করিয়া চক্ষুতে স্বেদ দিলে বালকদের চক্ষরোগ উপশ্যিত হয়।

শ্রুঠ[®]ভূকনিশাককঃ পুটপাকঃ সমৈ**ল**বঃ। কুকুণকেংশিকরোগেয়:ভল্তমান্চোতনং হিতম্॥

ভাঁঠ। ভূকরাজ ও হরিন্তা প্রত্যেক। তথানা, কৈন্ধব ৫ রতি; একত্র মর্দ্দন করিরা ভূমায়িতে পূটপাক-বিধানে পাক করিবে। পরে একথানা বন্ধথণ্ডে আবদ্ধ করিরা চক্ষুতে আম্চ্যোতন করিবে। তাহাতে কুকৃণক ও অক্তান্ত নেত্রবোগ নিবারিত হয়।

জিমিলাল লিলাদাবনী-লাকাকাক্দলৈরিকৈ।

চূর্ণাঞ্জনং কুকুণে ভাছিকুনাং পোৰকীবু চ।

স্বদর্শনাম্লচূর্ণাদঞ্জনং ভাৎ কুকুণকে।

(কুকুলক ইতি পাঠে কুকুলকন্ত্রনাগ্নিঃ, এডিমিন্
পূটপাক ইতার্ধঃ। চক্রটাকা।)

বিভূক, হরিতাল, মনঃশিলা, দাস্তংরিজা, লাকা ও স্ববিটার ইহাদের স্কুচ্ব শলাকা ষারা চক্ষতে অঞ্জন দিলে বালকদের কুকৃণক ও পোথকী রোগ বিনষ্ট হয়। স্থদর্শনামূল চূর্ণের অঞ্জন দিলেও কুকৃণক রোগ প্রশমিত হইয়া থাকে।

গৃহধুমনিশাকুঠ-রাজিকেক্রয়বৈঃ শিশোঃ। লেপস্তকেণ হন্ত্যাশু সিম্মপামাবিচচিকাঃ॥

গৃহঝুল, হরিদ্রা, কুড়, খেতসর্থপ ও ইক্ত-যব এই সমুদায় তক্তের সহিত পেনণ করিয়া প্রলেপ দিলে শিশুদের সিগ্ন, পামা ও বিচর্চিকা প্রশমিত হয়।

> বিঅক প্রপাণি চ ধাতকানাং জলং সলোধং গজপিঞ্চলী চ। কাথাবলেই। মধুনা বিমিশ্রেণ বালেম্ব গোজ্যাবভিদাধিতেম্ ॥

বেশ শুঠ, ধাইফুল, বালা, লোধ ও গজ-পিপ্ললী ইহাদের কাথ কিংবা অবলেহ মধু সহ সেবন করাইলে বালকদের অভীদার উপশ্যিত হয়।

সমক্ষাধ্যতকীলোধ-শানিবাভিঃ শৃতং জলম্। ছন্দ্ৰেহিপি শিংশাদে য়মতংসাৰে সমাক্ষিকম্॥

বরাহক্রান্তা, ধাইজুল, লোধ 'ও **অনস্তমূল** ইহাদের কাথ মধু সহ পান করাইলে বালকদের ছনিবার অতীসার নিবারিত হয়।

নাগর তিবিধান্ত-বালকে এখনৈ: শৃতম্। কুনারং পায়য়েং প্রাতঃ স্কাভীসারন শন্ম ।

ভূঠ, আত্রইচ, মুতা, বালা ও ইন্দ্রথ ইহাদের কাণ প্রভাতে পানু করাইলে বালকের স্ক্রিকার অভিসার বিনষ্ট হয়।

বিৰচ্ভকষায়েণ লাজালৈচৰ সৰ্পন্নাঃ। আলেনে না পায়নেদালং ছক্তিনারনাশিনীঃ॥

বেলশুঠিও আমের আটির মজ্জার অর্কণৃত কাথে চিনিও থৈ আলোড়ন করিয়া বালককে পান করাইলে বমন ও অতীসার নিবৃত্ত হয়।

शरहानामिः।

পটোলজিফলারিষ্ট-হরিদ্রাক্ষণিতং পিবেৎ। ক্ষতবাদর্পবিকোট-ক্ষরাণাং শাস্তরে শিশোঃ। পটোলপত্র, বহেড়া, আমলকী, হরীতকী, নিম্ব ও হরিদ্রা ইহাদের কাথ পান করাইলে বালকদের ক্ষত, বিদর্প, বিক্ষেটি ও জ্বরের শাস্তি হয়।

সারিবাদিঃ।

সারিবাতিললোগ্রাণাং কবারো মধুকস্য চ। সংস্থাবিশি মুখে শঙ্গে ধারনার্থং শিশোঃ সদা॥

অনন্তমূল, তিল, লোধ ও যৃষ্টিমধু ইহাদের কাথে মুথ প্রফালন করাইলে বালকদের মুথ-স্রাব (লালপড়া) নিবারিত হয়।

ছটমর: দিভিম 'জু: অস্ত: সংপিবত: শিশো:।
নদা প্রকৃপিত: শিন্ত: গুদং সমন্তিধ: বিতি ॥
তদা সংজারতে তক্র জলৌকে দরসন্মিত:।
ব্রণ: সদাহো বাকোমা তদাস্ত স্তাক্ষর: পর ।
ইরিত: পাতকং বাপি বচ্চন্তেন ভবেদ প্রবাদ।
ব্রণ: পাতকংজা নাম বার্ণি: প্রমদাকণ: ॥

কুৎসিত অন্নাদি ভোক্ষন ধারা বিক্রত
মাতৃত্তক্ত পান করিলে শিশুর দেহস্থ পিত্ত
প্রকুপিত হইরা গুহুদেশে উপস্থিত হয়।
তদ্ধারা ঐ স্থানে জোঁকের উদরসদৃশ এণ উৎপন্ন হর। ইহাতে দাহ, উত্তাপ ও প্রবল জর
হয় এবং মল, হরিত বা পীতবর্ণ হইরা থাকে।
এই পীড়ার নাম পশ্চারুজ। ইহা অতি
কষ্টদারক।

চন্দনং শারিবে ছে চ শঝিনীতি সমাষ্ট্তঃ। পশ্চারতে প্রলেপে!হর্মব্লেহস্ত শশুচে।

পশ্চাক্ষজ রোগে রক্তর্তন্তন, অনন্তমূল, শ্রামালতা ও শহাপুশ্লী ইহাদের প্রণেপ ও অবলেহ প্রশন্ত।

लवन-हर्इःमग्।

জাতীফলং জিদশপুস্পসম্বিত্ৰ জায়ক টলগযুতং চয়কৈ: প্ৰযুক্তম্ । চুৰ্ণানি মান্দিকসিতাসহিতানি গীঢ়ো সামাতিসায়ম্বিলং গুলু হস্তি শূল্ম্ ॥ জায়ফল, লবঙ্গ, জীরা ও সোহাগার থৈ ইহাদের সমভাগ চূর্ণ একত্র করিয়া চিনি ও মধুর সহিত অবলেহ করিলে আমাতিসার ও তক্জনিত শূলের শাস্তি হয়।

দাড়িম্ব চতুঃসমম্।

এত্দ্ধব্যচতুক্কেন্ দা ডিবীক্ষমধাগম্।
- পুটপকং পরঃপিষ্টং তদ্ দাড়িবচতুঃসমন্।
(পয়োহত চ্ছাগ্যাঃ, ত্যাতিসারনাশকভাং। পরঃশক্ষেহত জ্লবাচক্মিতি কেচিং।)

জার্মণ, শবঙ্গ, জীরা ও সোহাগার থৈ এই চাহিদ্রবা দাড়িমফলের মধ্যে পূরিয়া ও তাহা পূটপক করিয়া ছাগত্নগ্ধে কিংবা জলে পেষণ করিবে। অন্থপান—ছাগত্নগ্ধ। ইহা বয়স, অগ্নি ও বল বিবেচনা করিয়া ॥• রতি হুইতে ২ রতি প্রয়ন্ত মাত্রায় ব্যবস্থা করিবে।

বালকুটজাবলেহঃ।

মূলছচং বংসকস্যা পালমেকং ফুকুট্টিভম্।
আইভাগৈং জলং দৰা চতু ভাগাবেশেবিতম্॥
আতিবিয়া চ পাঠা চ জীরকং বিলমেন চ।
আত্রাক্তি শতপূপা চ ধাতকী মূল্ডকং তথা।
জাতীকলক সংচূণ্য নিকিপেৎ তত্র যত্নতঃ।
বালানামাম্পুল্লো রক্তমাবং ফুলাজপন্।
আপি বৈজ্ঞাতিভাক্তং জ্যোদেত্র সংশারঃ।

কুড় চিম্লের ছাল ৮ ভোলা, জল /১
সের, শেষ /। পোরা। আতইচ, আক্নাদি,
জীরা, বেলগুঁঠ, আমের আঁটির শস্তু, শুল্ফা,
ধাইফুল, মৃতা ও জায়ফল প্রত্যেক চুর্ণ।
আনা পরিমাণে তাহাতে প্রক্ষেপ দিবে।
ইহাতে শিশুদিগের আমশূল ও রক্তশ্রাব

শিবামোদক্ম।

শিবা ড'মলকী মুকা শতপুপা নিশাৰ্যম্। আ:অগুণ্ডা বলা বিশ্বং দেবপুশ্পং শতাবরী ॥ মূরা মধ্রিকা মাংসী বিদারী বিশক্তেবজম্ । অনন্তঃমলকী শ্যামা ভাগী করিকণা কণা ॥ চাতৃজ্জাতং চতৃবীজং চন্দ্ৰং রক্তচলৰম্।
মূলনী বাজিগলা চ বীজং গোকুরসম্ভবম্।
সর্বাণ্যানি তুল্যানি ভাক্ষা সর্বসমা মতা।
সিতা ডাক্ষামনা চৈবেত্যেতানি মধুনা সহ।
সংমন্ধ্য মোদকান্ কুছা মাষকপ্রমিতান্ ভিষক্।
একৈকমেষাং পরসা প্রাতঃ প্রাতঃ প্রযোজ্ঞেং।
বালানাং সর্ব্বরোগন্তং পৃষ্টিকৃদ্ বলবজনম্।
পরং বহিনকরং মেধ্যমাযুষ্যং গ্রহদোবসং।
ভগবত্যৈ সমৃদিতং শিবারে লোকমক্লম্।
এত্রোদকমীশেন যুগে ভগবতা কুতে।

হরীতকী, ভূঁইআমনা, মুনামুল, ভলফা, হরিদ্রা, দারুহরিছা, আলকুশাবীজ, বেড়েলা, বেলওঁঠ, লবন্ধ, শতমূলী, মুরামাংসী, মৌরি, ভটামাংসী, ভূমিকুল্লাণ্ড, শুঠ, অনস্তম্ল, আমলকী, শ্রামালতা, বামুনহাটী, গছপিপ্ললী. পিপ্ললী, গুড়ত্বকু, তেজপ ন, এলাইচ, নাগেশর, (मथी, हल्ला (हालिय , कुक्कीया, यमानी, খেতচন্দ্র, রক্তচন্দ্র, তালমূলী, অরগক্ষা ও গোক্ষরবীজ এই সকল দ্ব্য প্রত্যেক সমভাগ, সর্বসমান জাকা এবং জাকার সমান চিন। এই সমুদায় মধুর সহিত নাড়িয়া মোদক প্রস্তুত করিবে। মাত্রা ১ মাধা। প্রতিকালে প্রথাে সহিত এক এক মাতা সেবা। ইহা **ट्याल विकास अर्थ क्रिक्ट क्रिक्ट क्रिक्ट** শরীর পুষ্ট, বল বর্দ্ধিত ও অগ্নি প্রদীপ্ত হয়। ইহা মেধ্য, আয়ুষ্য ও গ্রহদোষনাণক।

দতোডেদগদান্তকঃ।

পিশ্বলাপিশ নীমূল-চব্যাচিত্রকনাগরৈ:।

অস্ত্রমোদাব্যানীভ্যাং নিশ্মা মধুকেন চ ॥

দাব্বদাব্বীবিড়কৈলা-নাগকেশরনারপ:।

শটাশৃদ্বীবিউর্বোমা শন্তায়োহেমনাক্ষিকে: ॥

বিধায় পয়সা পিটেবটিকা বলসন্মিতা:।

দস্তব্যেহভাবহুতো যোজয়েচ্চ প্রয়োগবিৎ ॥

প্রয়োগাদিস্য দস্তানাং হরয়োদ্গ্মতো গদা:।

অয়োগাদস্য দস্তানাং হরয়োদ্গ্মতো গদা:।

স্বয়াক্ষ্পাভিসারাদ্যা নিবর্ত্তপ্তেন সংশ্যা:॥

পিপুল, পিপুলমূল, চৈ, চিতা, ভাঁঠ, বন-ষমানী, যমানী, হরিদ্রা, ষষ্টিমধু, দেবদারু, দারুহরিদ্রা, বিভুল, এলাইচ, নাগেখর, মুভা, শঠী, কাক্ড়াশৃঙ্গী, বিট্লবণ, অত্র, শগুভন্ম, লোই ও স্বর্ণমাক্ষিক সমভাগে ইহাদিগের চুর্ণ জল দিয়া মর্দন করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটী করিবে। ইহা সেবনে বালকদিগের দক্তোদগম-জনিত জ্বাতিসার প্রভৃতি যাবতীয় পীড়া প্রশমিত হয়।

कुमातकलारिया त्रमः।

নিশুরং মৌজিকং হেম নোমায়ো হেমমাজিকম্।
কন্তাতারেন সংমদি কুগানুপামিতা বটাঃ ।
বটকাং বটকান্ধং বা ব্যোহবস্থাং বিবিচ্য চ।
কানে সিত্রা সাক্ষা বালেমু নিনিযোজ্যেও।
কুমরোণাং জ্বং খাসং ব্যাবং পারিগভিকম্।
গ্রহদোষাংশ্চ নিপিলান্ শুগুজাগুংং তথা ॥
কানলামতিসারক কুশতাং বহিবক্তম্।
রস্ত্রমারকল্যালে, নাশ্যেরাক্ সংশ্যা॥

দিন্ব, মুক্তা, স্বৰ্ণ, মত্ৰ, লৌই ও স্বৰ্ণমাজিক ইহাদিগকে স্বত্ৰুমানীর হসে মদন
করিয়া মুগেব স্থায় বটিকা করিবে। বয়স
ও অবহা বিবেচনা করিয়া এক বটী কিংবা
অন্ধবটা হগ্ধ ও চিনি সহ সবন করিতে
দিবে। ইহা সেবনে কুমাবদিগের জ্ব, শ্বাস,
বমন, পারিগভিক রোগ এ ড়েলাগ), স্তর্গাগ্রহণ, অভিদার, কার্ল্য ও অগ্রিক্তি প্রভাত
নিবারিত হয়।

বালরোগান্তকো রসঃ।

(রামেশ্বরসঃ।)

শাণং প্ততা শুদ্ধতা গদ্ধকতা চ তৎসমন্।

স্বৰ্গমান্ধিকতাপি চাৰ্দ্ধভাগং বিনিজিপেৎ ॥

ততঃ কজ্জলিকাং কৃষা লৌহপাতে দৃঢ়ে নবে।
কেশরাগতা ভূকতা নিপ্ত ভাগং পরস্থান্য ।

স্বানাক কাকনাচ্যান্চ গ্রীয়াহন্দরকতা চ।

স্বায়াবর্ত্তকশালিক-ভেকপণারসং ভবা ॥

খেতাপরাজিতায়ান্চ মূলং দৃত্যাদ্ বিচক্ষনা।

দেয়ং রসার্দ্ধভাগেন চূর্ণং মরিচস্থান্ম ॥

উত্তে শিলাময়ে পাতে লৌহদ্ভেন মদ্ব্রেং।
ভ্রমাতপদ্বেগ্রাদ্ বিচিকাং কার্যেদ্ ভিষক্॥

প্রমাণং সর্বপঞ্জেব বালানাং বিনিয়োজ্যে । হস্তি ত্রিদোবককৈ জ্বরমামং স্থারণম্ । কাসং পঞ্চবিধকাপি সর্বরোগং নিহন্তি চ। শিশুনাং বোগনাশায় নির্মিতে হয়ং মহারসঃ ।

পানা, গন্ধক প্রত্যেক ॥ ত অন্ধিতোলা, বর্ণমান্ধিক ২ মানা। উত্তমক্রপে কজ্জলী করিরা লোহপাতে কেশুরিরা, ভুঙ্গরে, নালিঞ্চ ও থুলকুড়ি এই সম্দারের ২নে ভাবনা দিয়া খেত অপরাজিতার মূল ২ মায়া ও মরিচ ২ মায়া উহার সহিত লোহদও বারা মর্দ্দন করিরা রৌদ্রে শুকাইয়া সর্বপাক্ষতি বাটকা করিবে। ইহাতে বালকের জ্বব, আম ও কাস প্রভৃতি রোগের শাস্থিত্য।

অখগন্ধাপুত্ন।

পাদক ধ্বংগদায়েঃ ক্ষারে দশস্কণে পচেং।

মুক্তং পেলং কুনারাণাং পুষ্টকুম্বন্দ্দিন্য।

মুক্ত /৪ সেনা, হুদ্ধ ১ মণ। কলার্থ—

অর্থাসন্ধা /১ সেনা। এই মুক্ত পানে বালকের
দেহ প্রস্তি বাল বালিকে হয়।

বালচাঙ্গেরায়তম।

চ'ক্ষোন্ধানে সপিভাগকারদমে পতে।
কপিথবােষ্ট্রকুথ-সমক্ষোৎপলবালকৈ: ॥
স ব্রধাতকানােচে ; সদ্ধং সক্ষাতিসার্ত্থ।
গ্রহণাং কুন্তরাং হ'ড বালানান্ত বিশেষতঃ ॥
অঞ্জাকারচাক্ষেরাধ্যুকো মুডাপ্রিপ্তণৌ, পাকাসাধনত্বেন চতুপ্ত গদ্রবস্তাংসর্গসিদ্ধাহাথ ইতি শিবদাসঃ।

ম্বত / ৪ দের, আমকলের রস ৴৮ দের, ছাগছ্য ৴৮ দের। করার্থ—করেংবেল, ত্রিকটু, দৈদ্ধর, বরাক্রাস্তা, নীলোৎপল, বালা, বেলঊঠ, গাইফুল ও মোচরদ মিলিত ৴১ দের। এই ম্বত পানে বালকের আত্সার ও গ্রহণী রোগ প্রশামত হয়।

অক্টমঙ্গলঘ্নতম্।

বচা কুঠং তথা ব্ৰহ্মী সিদ্ধাৰ্থকমথাপি চ। শাৰিবা দৈশ্ববৈধ্ব পিপ্ললী যুত্দইমন্ । মেধাং ম্বৃত্তমিদং দিছে পাতব্যক দিলে দিলে।
দৃদ্ধ্বতিঃ কিপ্রমেধাঃ কুমারো বৃদ্ধিমান্ ভবেৎ ।
ন পিশাচা ন রকাংদি ন ভূঠা ন চ মাতরঃ।
প্রভব্যি কুমারাণাং পিব হামন্তমক্রম্ ।

ম্বত /৪ সের। কলার্থ—বচ, কুড়, ব্রন্ধী, বেত সর্থপ, জনস্তমূল, দৈরব ও পিপ্পলী
মিলিত /১ সের। পাকার্থ—জল ১৬ সের।
এই বৃত পানে পিশাচ ও রাক্ষদ প্রভৃতি
নানাবিধ দৈব উৎপাত নিবারিত হইয়া বালকের বৃদ্ধি ও মেবা প্রভৃতি সংবর্ধিত হয়।

কুমারকল্যাণয়তম্।

শশ্বপুর্পা বচা ব্রহ্মী কুঠং বিকেলয় সহ।

দ্রাক্ষা সশক্ষা ওঠা জীবন্তী জীবকং বলা ॥

শটা তরালভা বিবাং দাড়িমং হ্রমা তিরা।

দুখং পুনর্মূলঞ সুক্ষেলা গজপিয়লী ॥

কোং ক্ষম্বান্ত স্থালৈ কারে ত্রিংশতুক্ত থি॥

এতং বুমারকল্যাণং যুতরত্বং ফ্থপ্রদ্ম।

বলবর্ণকরং ধ্র্যমন্ত্রপুত্তিবিক্ষনম্॥

ভারাস্ক্রাহানক্ষা-ক্রিমিনস্তান্পাপ্রম্।

সর্ববালাম্যহ্রং দেপ্তাভেদং বিশেষ্ডঃ॥

ন্বত /৪ দের। কাথার্থ—কণ্টকারী /৮
দেব, জল ৬৪ দের, শেষ ১৬ দের; তুর্ম ১৬
দের। করার্থ—শঙ্খপুশী, বচ, ব্রহ্মী, কুড়,
ব্রেফলা, দ্রাক্ষা, চিনি, শুঁঠ, জীবন্ধী, জীবক,
বেড়েলা, শটী, ত্রালভা, বেলশুঁঠ, দাড়িমফলের ছাল, তুলদী, শালপাণি, মৃত্যা, প্রুরমূল,
ছোট এলাইচ ও গজপিপ্ললী প্রত্যেক ২
তোলা। ইহা পানে বালকের দেহের পুষ্টি,
অগ্রির দীপ্তি, বলের বৃদ্ধি এবং দস্কোডেন-জনিত
পীড়াব ও অভান্ত ব্যাধির প্রশান্তি হয়।

পিপ্লল্যান্তং মৃত্যু।

পিশ্ললীধাতকী পুশ্প-ধাত্ৰীফলকশেক্ষভিঃ। বচামূৰ্ব্যমূত্ৰাপাঠা-কটুকাতিবিধাঘনৈঃ॥ জীবনাৱৈগুতিং সিদ্ধং শশুং দশনজন্মনি। ফুগোঞ্চেন যথামাত্ৰং পায়সৈতৎ প্ৰসায়বেং॥ ছত /৪ সের। কজার্থ—পিপুল, ধাইমুল, আমলকী, কেণ্ডর, বচ, মুর্কামূল, গুলঞ্চ, আক্নাদি, কট্কী, আতইচ, মুত্তা, মেদ, মহামেদ, জীবক, প্রত্তক, কাকোলী, ক্লীরকাকোলী, পদ্ধি, বৃদ্ধি, জীবস্তী ও ঘষ্টিমধু মিলিত /> সের। যথাবিধি পাক করিয়া জীবছফ হুরের সহিত এই দ্বত, দস্তোদামকালে শিশুদিগকে পান করাইলে দস্তোদ্ধেদ-জনত সমস্ত পীড়ার শাস্তি হয়।

কণ্টকারাম্ভম্।

কণ্টকায়া বৃহত্যকে ভানীবাসকরেরপি।
বরসেন তথা ছোগা-কীরেন বিপচেদ যুত্য ॥
ককৈ: করিকণ কুকা-মরিটেম ধ্কেন চ।
বচাগ্রন্থিকার্টা ভীরকেন চ।
বলাবিবোবগভাগক প্রাক্তনাড়িয়ন ক্রিভিঃ॥
সিদ্ধনেত্দ যুত্ত সন্তঃ নিশ্নাং খাসকাসকং।
অৱারেট্চকশ্লয়ং কক্ষুদ্ বলবছিকুৎ ॥

ঘত /৪ সের। কণ্টকারী, বৃহতী, বাম্নহাটী ও বাসকছাল ইহাদের স্বরস প্রায়েক
/৪ সের। ছাগীছ্য় /৪ সের। কলার্থ—
গল্পপ্রলী, পিপুল, মহিচ, ঘটিমধু, বচ,
পিপুলম্ল, জটামাংসী, চৈ, চিতাম্ল, রক্তচন্দন, মৃতা, গুলকা, খেতচন্দন, যমানী, জীরা,
বেজেলা, ভঁঠ, জাক্ষা, দাড়িমফলের ত্বক্ ও
দেবদারু মিলিত /১ সের। ঘণাবিধি পাক
করিয়া ঈরহ্য় হয় বালকদিগকে পান
করিতে দিবে। ইহাতে শিশুদিগের খান,
কাস, জর, শ্ল ও কফ প্রভৃতি নই এবং বল
ও অগ্ন বিভিত হয়।

नाकानिरेडनम्।

লাকারসসমং সিদ্ধং তৈলং মন্ত চতুও পিনৃ। রাষাচন্দনকুঠান্দ-বা জিপকানিশাবুগৈঃ । শতাহ্বাদানবস্তাহ্ব-মুর্কাভিজাহরেপুভিঃ। বালানাং অরক্তকাল্পসভ্যানার্কাবন্তিং ॥ ভিলভৈল /৪ সের, লাক্ষার কাথ /৪ সের,
দধির মাত ১৬ সের। ক্রার্থ—রাঙ্গা, রক্তচন্দন, কুড়, মুডা, অখগন্ধা, হরিজা, দারহরিজা, শুল্লা, দেবদারু, ষ্টিমধু, মুর্বাম্ল,
কট্ণী, রেণুক মিলিত /১ সের। এই ভৈল
মর্দনে বালকের জ্রাদির উপশম ও বলের
বৃদ্ধি হয়।

ব্যান্ত্রী-তৈলম্।

ব্যামীবাসক্বিৰণনাং কেশরাল্য চাষ্ট্র।
কাঞ্জিকেন তথা ককৈম্ অমোচরসাঞ্জনৈ:
লাভাকাদারুষ্ঠ্যাক্র-বলারানানিশাযুগৈ:
চন্দনন্ত্রমঞ্জিচা-প্রিরন্তুৎপলকেশরৈ:
শালপর্ণীপৃথিপণী-চাতুর্জ্জাতক্বালকৈ:
মুদঃ পাত্রে পচেৎ তৈলমরিষ্টেক্ষনবহ্নিনা।
নাসং কাসক ব'লানাং করে বহেন্দ্র বৈকৃত্ন্।
ব্যামীবৈলমিলং হস্তাৎ তুগ্গদান্ নিধিলানিদা।

তিলতৈল /৪ সের। কণ্টকারী, বাসক, বেণছাল ও কেণ্ডরিয়া ইহাদের প্রত্যেকের রদ /৪ সের, কান্ডি /৪ সের। করার্থ— মৃত্যা, মোচরল, রসাঞ্জন, শুলুফা, দেবদারু, বৃষ্টিমধু, বেড়েলা, রাম্মা, হরিজা, দারুহরিজা, খেইচন্দন, রক্ত্যন্দন, মঞ্জিলা, প্রিপ্রদা, শুড়ত্বক্, তেজপত্র, এলাইচ, নাগেখর ও বালা মিলত /১ সের। নিমকাঠের অগ্নিতে মৃতিকাপাত্রে এই তেল যথাবিধি পাক করিয়া ভাহা মর্দ্দন করিলে জর, আগ্নবিকৃতি, ছগ্রোগ, খাস ও কাস এভৃতি নিবারিত হয়।

मस्यूष्णी-रेजनम्।

শঝপূশীমহানিধ-বাসানামর্জ্নস্য চ।
বরসেনারনালেন লাকাভোরেন মন্তনা ॥
কবৈক গাড়িনীদার-নিশাব্গকলতিকৈ:।
চন্দ্রোলীরবালৈক শ্রীখন্তমধুকাষ্ট্রে:।
ভাষাশৈবালশেকালা-রক্তোৎপলরসাপ্তনি:।
গক্ষবৈদ্রুক নিথিলৈ: পচেৎ তৈলং তিলোৱবৰ্।
প্রোগাদস্য নশুন্তি বালানাম্থিলা গলা:।
কাছিমেধা ধৃতি: পৃষ্টবর্ধতে নাত্র সংশর:।

কল্যাণার কুমারাণাং কপদ্যী করণাকরঃ। সসজ্জেদং শঙ্খপুস্পী-তৈলং ভূবনমঙ্গলম্॥

তিলতৈল চারি /৪ দের। শহ্মপুশী, ঘোড়ানিম, বাদক ও অর্জুন ইহাদের রস বা কাথ প্রত্যেক /৪ দের। কাঁজি /৪ দের, লাক্ষার কাথ /৪ দের, দদির মাত /৪ দের। কলার্থ—দাড়িমকলের ত্বক্, দেবদারু, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা, হরীতকী, আমলকী, বহেড়া, রক্তান্দন, বেণার মূল, বালা, খেতচন্দন, ইছমধু মূতা, শ্রামানতঃ, শেবাল, শেকালিকাছলে, রক্তোংপলের মূল ও রসাঞ্জন মিলিত /১ দের। প্রিণেবে গদ্ধপাক করিবে। ইহাতে বালকদিগের সমস্ত পীড়া বিনষ্ট এবং কান্তি, মেরা ও প্রষ্টি বর্দ্ধিত হয়।

অরবিন্দাসবঃ।

অর্থনিন্দুনীবক ক'থাগাং নীলম্ৎপ্লম্।
মঞ্জিঠৈলবেলাম্পেনীরদ্বং শারিবাং শিবাম্ ॥
বিভাভকবচ্ধাত্রীঃ শঠাং হামাং সনীলিনীম্।
প্রেলং পর্পিটং পর্পিং মধুকং মধুকং মুর্ম্।
প্রমানেন সংগৃহ ছাকারাঃ প্রবিংশাত্র্য ।
ব ভকাং বেডিশ্পলাং জলান্টোগর কিপেং ।
ক্রায়ান্তরাং ভত্র ভুলাকং মাক্কিক্ত চ।
মানং স স্থাপ্রেদ্ভান্তে ম্ভিকাপ্রিমান্তিতে॥
বালানাং সক্রোগ্রেম্ন বনপ্রাথিবজনা।
অর্থিশাস্বং প্রেক্ত অধ্যামা গ্রহদাবকং ॥

পল, বেণার মূল, গান্ডারীফল, নীলোংপল, মঞ্জিটা, এলাইচ, বেড়েলা, জটানাংনী,
মূতা, অনম্ভগুল, হ্রীতকী, বহেড়া, বচ,
আমলকী, শান্তা, প্রামালতা, নীলমূল, পটোলপত্র, ক্ষেত্রপাপড়া, অর্জুন ছাল, মৌলফল,
বৃষ্টিমধু ও মূরানাংসী প্রত্যেক ১ পল, দাকা
২০ পল, ধাইফুল ১৬ পল, চিনি ১২॥০ দের,
মধু ৬০ দের, জল ২২৮ দের। এই সমুদার
আর্ত মৃত্তিকাপাত্রে এক মাদ রাণিয়া কক

গুলি টাকিয়া ফেলিবে। ইহাতে বালকদের নানা রোগের শান্তি এবং বল পৃষ্টি, অগ্নিও আয়ুং বৰ্দ্ধিত হয়। ইহা গ্রহদোষবিনাশক।

সর্বেবিধিস্নানম্।

মূরা মাংসী বচা বু ঠং লৈলেয়ং রজনীপ্রয়ম্। শটা চম্পরমুক্তক সর্কৌষ্ণিগণঃ স্মৃতঃ॥ সর্কোষ্ণাস্থ্য স্থানং ব'লানাং গদনাশন্ম। গাংবক্তঃশেমননাঃসুগাং কাপ্তিবদ্ধনম্॥

মূরামাংসা (একান্ধা), জটামাংসী, বচ, কুড়, শৈলজ, হরিদ্রা, দাক্রহরিদ্রা, শঙ্গী, চম্পক ও মূতা এট কয়েকটি দ্রব্যকে সর্কোষ্ণিগণ বলে। সর্কোষ্ণির জলে স্থান করাইলে বালকের ব্যাদিনিবৃত্তি, গ্রহাদির শান্তি, আয়ুর্বন্ধি ও লাবণ্যোংপত্তি হয়।

অথ পথ্যাপথ্যবিধিঃ।

---•) (•----

য়ং প্রথং বদপ্রথাক নুণানুক্তং অবংশি ।
ত ভ্রম্বিধেরমৌচিতা বি সোনাং তেরু গানতা ॥
পূর্বং প্রথানপ্রথাক মন্দানৌ যথ প্রকার্তিক।
ওচিতাং তে ভবেতাং হি বালানাং প্যারগর্ভিকে॥
অংগত্রাদিনাং প্রমান্ধান বর্গী বিতম্।
উ'চতা দ্ যোজায়েৎ তত্ত্ব কেনু গ্রংরোগিয়॥

মানবগণের জর অতিদার প্রভৃতি রোগে

বে সমস্ত পথাপথা লিখিত হইয়াছে,
বালকেরও জর অতিদার প্রভৃতি সমস্ত রোগে
জ্ঞানী বৈদ্য দেই সেই পথা ও অপথা উচিত
মাত্রায় প্রয়োগ করিবেন। বালকের পারিগভিক রোগ উপস্থিত হইলে পূর্কোক্ত মন্দাগ্রিঅপিকারোক্ত পথাপাও উচিত মাত্রায় প্রয়োগ
করিবেন। গ্রহুত্ব বালকগণকে আগন্তক
উনাদোক্ত পথা ও অপথা উচিত মাত্রায়
প্রযোগ্য।

इंजायुर्वन-मःश्राट् वानावाशाधिकातः।

অথ বিষাধিকারঃ।

অথ বিষ-নিদানম।

স্থাবরং জঙ্গমকৈব বিবিধং বিষম্চাতে।
মূলাপ্তাত্মকমাপ্তং স্তাৎ পরং দর্গাদিসম্ভবম্।
নিদ্রাং তল্লাং কমং দাইমপাকং লোহইবান্।
লোথকৈব্যতিসারঞ্ জঙ্গমং কুরুতে বিষম্।
ভাবরঞ্জরেং হিকাং দন্তংখং গলগ্রহম্।
কেনচ্ছল্যিক্টিখাসং মূর্ডাঞ্জ কুরুতে বিষম্।

বিষ ছুই প্রকার—স্থাবর ও জন্ম। মুলাদি বিষকে স্থাবর এবং স্থাদিসভূত বিষকে জন্ম বিষ বলা যার।

নিজা, তক্রা, ক্লান্তি, দাহ, অপাক. রোমাঞ্চ, শোথ ও অতিগার এইওলি জন্ম বিষের সাধান্য কার্য্য।

স্থাবর বিষে সামান্ততঃ এই সকল লক্ষণ উপস্থিত হয়। যথা — জব, হিকা, দস্তহর্ণ, গল-বেদনা, ফেন্থ্যন, স্থাক্তি, শ্বাস ও মুর্চ্ছা।

অথ বিষ-চিকিৎসা।

স্থাবরেণ বিষেণার্জং নরং যান্তেন ব'নয়েং।
বননেন সনং নাজি গতজ্ঞ চিকিৎসিতম্ ॥
বিষমতার্থান্তক তীক্ষ্ম ক্ষিতং যতঃ।
অতঃ সর্ববিষেণ্তাঃ পরিষেক্ত শীতলঃ ॥
উচ্চ্যাদ তৈক্যাদ বিশেষেণ বিষং পিডং প্রকোপয়েং।
বনিডং সেচয়েং তশ্মাচ্ছাতলেন জনেন চ ॥
পায়য়েয়ধুদ্র্পির্ভাগে বিষয়ং ভেষজং জাতন্।
ভোক্তন্ময়ন্তাং দিতাং বিষয়ং চিক্তা চ সম্বিতম্ ॥

স্থাবর বিষে পীড়িত ব্যক্তিকে বমন করা-ইবে। বমনের মত বিষ-নিবারক চিকিৎসা আর ঘিতীর নাই। বিষ স্থভাবতঃ অতি উষণ ও তীক্ষবীর্য্য, অতএব সর্ব্বেজ নীতল পরিষেক কর্ত্তব্য। বিষ উষ্ণতা এবং তীক্ষতার্থণ ঘারা পিন্তকে প্রকুপিত করে, অতএব ব্যনাস্তে শীতল জলের পরিষেক করিবে। বিষার্ত্ত রোগিকে মত ও মধুর সহিত বিষয় ঔষধ শীঘ্র সেবন করাইবে এবং চি.নিসংসূক্ত অমুরদ গাইতে দিবে।

যক্ত যক্ত চ দোষক্ত পশ্চেলিকানি ভূরিশঃ। তথ্য তথ্যেন্ধঃ ধুয়ান্ বিপরীতগুলৈ ক্রিয়ান্॥

বিষার্ভ রোগির বাং।দি যে যে দোনের লক্ষণ দৃষ্ট হইবে, সেই সেই দোমের বিপরীত গুণায়িত ঔষধ মারা চিকিৎসা করিবে।

সকৈরেবাদিতঃ সগৈ: শাখাদঠনা দেছিন:।
দংশদ্যোপনি ব্রীয়াদনিষ্ট:শচ্ছুরকুলে॥
ন ১চ্ছতি বিষং দেহম্পিট্রাভিনিবানিত্য।
দংক্ষংশ্যাথেকুতঃ যত্র বন্ধো ন জাংতে॥

দর্প দদি হতে বা পদে দংশন করে, তাহা হইলে তৎক্ষণাং দইস্থানের চারি অস্থাল উদ্ধে রজ্ম বা ব্যাদি বারা তাগা বাদ্ধিব। তাহাতে বিষ দেহব্যাপা হইতে পারিবে না। যে হুনে ত্রা বাদ্ধিবার উপায় নাই, তথার দুইস্থান অস্ত্র বারা চিরিয়া দাহ কার্যা দিবে।

মূলত্বৰূপঅপুশ্ব! দি বীজ্ঞেতি শিৱীষত। গাাং মূজেন সংগিল্পং লেপ:দ্ বিষহরং পর্যু॥

শিরীবেব মূল ছাল পত্র পুষ্প ও বীজ, একতা গোমুত্রে পেষণ করিয়া তাহার প্রলেপ দিলে বিষ নই হয়।

মূলং তঙুলবারিণা পিণতি থং প্রত্যালরাসম্ভবন্, নিম্পিটং প্রতিভদ্রোগদিবনে ওক্তাহিভীতিঃ কুতঃ। দর্শাদেব ফলা বদা দশতি তং মোহাম্বিতো মূলপন্ স্থানে ততা সাত্রবাধি নিয়তং বক্তাং যুমঞাচিরাৎ।

আবাঢ় মাদের ওভযোগ ও গুভনক্ষত্রাদি (পুয়াদি) যুক্ত দিনে শিরীযের মূল তণ্ণু-লোদকে বাটিয়া পান করিলে সর্পভন্ন নিবা-রিত হয়। যাদও সর্প মোহা, মৃত ধইয়া কথন ভাহাকে দংশন করে তাহা হইলে সেই সপ সেই স্থানেই আ, চরে মৃত্যুসুথে পতিত হয়। মন্তরং নিম্বপত্রাভ্যাং যে হণ্ডি নেষগতে রবৌ। অন্তর্মকং ন ভীতিঃ স্তাধিষাৎ তদ্যা ন সংশয়ঃ ॥

বৈশাধ মাসে মসূর কলাই একটি, ছইটি নিম্বপত্রের সহিত ভক্ষণ করিলে এক বংসর কাল সপ্তয় থাকে না।

ধ্বলপুন্ন্বজটরা তভুলজলপাঁতঃ। চ পুষাকে। অপসরতি গলু বিষধরোপাত্র স্থাসম্বংসরং পুংসাম্য।

পুষ্যানক্ষত্রে শ্বেতপুনর্বামূল ত গুলোদকে বাটিয়া খাইলে এক বৎসর পর্য্যস্ক সর্পের উপদ্রব থাকে না।

গৃহধুমো হরিছে দে সম্লং তঙুলীয়কম্। অপি ৰাহ্যকিনা দষ্টঃ পিৰেৎ দাধম্বভাগুতুম্।

সপে দংশন কহিলে, ঝুল, হরিদ্রা, দার-হরিদ্রা ও মূলসহ কাটানটে তওুলোদকে বাটিয়া তাহা দবি ও ঘতে আল্লুত করিয়া পান করিতে দিবে।

কু 'লক। মূলন্দোন কালদটো হেপি জাবতি।

ত গুলজলের সহিত কালিয়াক ছার মুলের নস্ত লইলে কালসপ্নিই রোগীও রক্ষাপার।

শিরীষপুশ্ধরদে ভারিডং মরিচং দিওম্। সপ্তাহং সপ্রষ্টানাং নবাপানাঞ্জনে হিওম্।

শজিনার বীজ, শিরীব পুলোর রদে ৭ দিন ভাবনা দিয়া তাহার নস্ত, পান ও অভ্যঞ্জন করিলে স্পাবিষ নষ্ট হয়।

শ্লেষণঃ কর্ণগ্রন্য ব্যানামিক্যা কৃতঃ। লেগো ইন্তাদ্ বিষয় গেবিং নুমূজদেচনং তথা।।

বাম হতের অনামিকা স্বংরা মুখের শ্রেমা অথবা কর্বের মল (গইল) সপ্রক্ত স্থানে লেপন করিলে কিংবা উহাতে নরমূত্র সেচন করিলে বিষ নই হয়।

टेमकावर भनिष्ठर कुलार निश्ववोक्तर समीकृत्य । भवुमार्थिकृष्टिर राजि विवर क्षावितकक्षमम् ॥

সৈন্ধৰ, মরিচ ও নিম্বীজ, স্নভাগে শইরা পেন্তি এবং গুত মধু সংসূক্ত করিয়া দেবন করিলে স্থাবর ও জঙ্গম উভয়বিধ বিবই নষ্ট হয়। বিপলং নতবুঠানাং গতকো দং চতুপালম্। অপি তক্ষকারীনাং পানমেতং ক্যাবহুম্।

তগরপাত্কা ও কুড় প্রত্যেত ১ পল, স্বত ও মধু প্রত্যেক ২ পল, এই সম্দার একত্র সেবন করিলে তক্ষকদপ্ত ব্যক্তিও স্বাস্থ্যলাভ করে।

বন্ধ্যাককোঁটলং মূলং ছাগমূত্ৰেণ ভ'বিতম্। নদাং কাঞ্জিকসংবৃক্তং বিধোপহতচেতসঃ॥

ফলরহিত কাঁক্রোলের মূল ছাগমূত্রে ভাবিত এবং কাঞ্জিতে পোনত করিয়া সপদষ্ট অচেতন ব্যক্তিকে তাহার নস্ত দিবে।

শপরাজিতামূলস্ক গতেন রগারতং বিষম্। পাংসাস্থাতিং হার মাংসগং কুঠচুর্তং ॥ অস্থিগং রগনাসূক্তং মেদে,গং কাকোলামূত্য্। মজ্ঞগং পিধানীসূক্তং চঙালাকনাসংযুক্তম্। শুলগং হস্তি কৌহতাং এখানেদ্রাপ্রাজিতা ॥

অপরাজিতার মূল মতের সহিত সেবনে জগ্যত বিষ, হয় সহ দেবনে রক্তগত বিষ, হুছুপুর্বের সহিত ভক্ষণে মাংসগত বিষ, হাংজাচুর্ব সহ দেবনে অন্থিয়ত বিষ, কাকোলীচুর্বের সহিত দেবনে মেলোগত বিষ, পিপুলচুর্বের সহিত দেবনে মজ্জগত এবং চণ্ডালীকল্মের সহিত সেবনে জ্জ্রগত ও রক্তগত বিষ নই করে। অভএব সর্বপ্রকার দংশনেই অপরাজিতা মূল দেবন্ত্রিবে।

বে হরিদ্রে শিলা তালং কুঙ্গুমং ম্প্তকং জলৈঃ। গুটিকা লেপমাত্তেণ বিষং হস্তি মহাছ ১ম ॥

হরিদ্রা, দারহরিদ্রা, মনঃ াণলা, হরিতাব,
কুদ্ধম ও মৃতা এই সম্দার জব্য ভবে পেষণ,
করিয়া শুটিকা করিবে। এই শুটিকা লেপন
করিলে ভংক্ষণাং বিষ্ণোয় নই ছইয়া থাকে।

য় চমধুনবনাতঃ পি**শ্ল**াশুন্ধবেরং মরিচমানি তু দ**ভাৎ স**প্তমং সৈঞ্চলে । যদি ভবতি সরোবৈত্তক্ষকৈবালি দক্তো-তগদ্বিহ থলু পীধা নিবিষ্য তৎজ্ঞান ॥

গ্নত, মধু, নবনীত, পিপ্লনী, ভাঠ, মবিচ ও দৈশ্বৰ, এই দাত্তি জ্বৰা একতা মৰ্দ্দন কৰিয়া সেবন করিলে তক্ষকদন্ট ব্যক্তিও তৎক্ষণাৎ নির্বিষ হইয়া থাকে।

নক্তমালকলং বোষেং বিষমূলং নিশাষয়ম্। সৌরসং পূস্পমাজং বা মৃত্রং বোধনমঞ্জনম্।

ডহরকরঞ্জ, ত্রিকটু, বিষমূল, হরিদ্রা, দার্কহরিদ্রা ও তুলসীমঞ্জরী, এই সকল দ্রবা ছাগমূত্রে পেষণ করিয়া তাহার অঞ্জন দিলে সর্পানষ্ট সংজ্ঞাহীন ব্যক্তির সংজ্ঞালাভ হয়।

জনেন লাক্লীকন্দ নতাং সপ্বিষাপহ্য। বারিণা উক্লণং পীত্রপবাকতা মলক্ষ ।

ঈশ লাকণার মূশ জলে বাটিয়া তাহার নশু লইলে, অথবা সোহাগার থৈ বা আক্-ন্দের মূল জলে পেষণ করিয়া পান করিলে সপ্রিব নষ্ট হয়।

সাতল'কলেন নেত্ৰাঞ্জনং কুছা সূপ বিষং নতাতি।

চম্মকষার ফল ঘ্রিলা নেত্রে অঞ্চন দিলে সপ্রিষ বিনষ্ট ২ইয়া থাকে।

বিষহরী বর্তিঃ।

ক্ষপাল্য মৃদ্ধানং ভাবরে ন্নিযুক্ত বেঃ।
এক্রিংশ ভিবারত্ব ততো বর্তিং প্রকল্পের ।
নতুবালালয়া সন্থা ততো নেত্রে প্রদাপয়েও।
সর্পান্তবিবং প্রতা সঞ্জীবয়তি মানবম্ম।

জরপাল-বীজের মজ্জা কাগ্জীলেবুর রসে
একুশবার ভাবনা দিয়া বর্ত্তি প্রস্তুত করিবে।
এই বর্ত্তি মুখের লালাতে ঘর্ষণ করিয়া সপ্রদিষ্ট
ব্যক্তির চক্ষে আঞ্জন জিলে বিষ দ্রীভূত হয়।
(ইহা দৃষ্টফল ভিষধ)।

পীতে বিষে জ্ঞাদ্ ব্যনক স্থাতে প্রকেহসেকাদি স্থাতিলক।

ষেব্যক্তি বিষ পান করিগছে, তাহাকে তৎকণং বনন করাইবে। বিষ স্বগ্ৰত হইলে শাতল প্রলেশ ও শাতল পরিষেক প্রয়োগ করিবে।

আগারধ্মমঞ্চিঠা-রজনীলবণোন্তমৈ:। লেপো কয়ত্যাপুৰিষং শোণিভ্ৰাৰণং ভ্ৰা ॥ ঝুল, মঞ্জিগা, হরিন্তা ও সৈদ্ধব; ইহাদের, প্রাণেপ দিলে এবং রক্তগোক্ষণ করিলে ইন্ত্রের বিষ নষ্ট হয়।

সোমবন্ধো>ষকর্ণক গো:জিহ্বা হংসপস্থাপি। রহুন্তো গৈরিকং লেপো নগদন্তবিষাপৃহ: । (অন্বকর্ণঃ শালভেদো গর্দ্ধভাণ্ডে। বা ।)

কট্ফল, অশ্বকর্ণ (শাল বিশেষ বা গর্দভাণ্ড), গোজিয়া, গোয়ালিয়া, হরিছা, দারুহরিছা গেরিমাটা, এই সমুদায়ের প্রলেপে নথবিষ ওদস্কবিষ বিনম্ভ হয়।

বিদে প্রকাশয়গতে পিঞ্চলীরজনাধ্যম্। মঞ্জিঠাঞ্চ সমং পিষ্ট্রা চোদকেন নরং পিরেং॥

পীতবিষ প্রকাশরগত হইলে পিপুর, গজ-পিপুলী, হরিদ্রা, দারুহরিদ্রা ও মঞ্জিরা, এই সকল দ্রুর সমভাগে লইয়া জলে পেহণ ক্রিয়া জলের সহিত্ই পান ক্রিবে।

য়, কাসমন্দলেত্রং বদলে নিজিপা কর্লে দুংকারম্। নতুলো দলাতি শীঘং করাত নিধং বুলিকানাং সং॥

কালকাদন্দার মূল চিবাইয়া রে/গির কর্ণে ফুংকার দিলে লুশ্চিকাবয় শান্ত নিবারিত ২য়।

উধ্ব প্রায়ুত্র (পি হৈকবেন সম্যিত্য। ব্লিচৰ জ বিষয় হাস্ত লেপ্লায় প্রবৃত্যায়কে ॥

উষ্ণ গ্ৰায়ত দৈশ্বন্যুক্ত করিয়া, দই-স্থানে লেপন করিলে বৃশ্চিক্বিষ নই হয়। দংশে আমণ্বিধিনা বৃশ্চিক্বিষ্ণ কুঠরপাদগুড়িকাং। পুরষ্পপুৰ্বনক্ছদ্মিৰ পিঞ্চা কুঠো লেপঃ॥

তুশসীর মূল বাটিরা গুড়িকা করিবে। সেই গুড়িকা র্ন্চিকদষ্ট স্থানে বুলাইলে বিষ নষ্ট হয়। র্ন্চিকদষ্ট স্থানে অগ্রে গুগগুলুর ধূন লাগাইয়া পরে ভাষাতে আকনপাত। প্রলেপবৎ দিলেও বিষ বিনষ্ট হয়।

কৃত্বকুনটীক্ৰটপললহ বিভালে: কুল্ছসন্মিলিটভা। কুভগুড়িক ভাষণতে বিদষ্টগোৰাশবটানি বৰ্গনিং ॥

কুদ্বম, মনঃশিলা, কাঁক্ড়ার মাংস, হরি তাল ও কুসুম ফুল, এই সকল দ্রব্য একট পেষণ করিয়া গুড়িকা প্রস্তুত করিবে। এ^ই গুড়িকা দইস্থানে বুলাইলে গোধা ও ক্বকলাস প্রশৃতির বিষ বিনষ্ট হয়।

জীরকন্ত কৃতঃ কন্ধো ঘৃতদৈদ্ধবদংযুতঃ। স্বাধ্যাকো বুন্দিকান্ধনাং প্রলেপো বেদনাপ্রা॥

জীরকের কল্প, মত ও সৈদ্ধব সংযুক্ত এবং ঈষত্যুক্ত করিয়া প্রালেপ দিলে কৃশ্চিকদংশের বেদনা নিবৃত্ত হয়।

লেপ ইব ভেকগরলং শিরীষ্বাজ্যে প্রতীপ্রাধিক্তি । এরতি গ্রলং ভাষমনিতা অলেপ্তত্ত ক্ষমন্দ্রিলিতা ॥

শিরীয়বীজ পেষিত এবং তাহা মনসা-সিজের আঠায় আগ্লুত করিয়া প্রলেপ দিলে অথবা আঁকোড়মূল ও কুড়ের কাণ বা কর ও দিন খাইলে ভেকের বিয় নই হয়।

মরিচম, ছীলধবালক নাধ্যতিব্যালিকা বিলে লপ ।

মবিচ, শুঠি, ব'লা ও নাগকেশব, ইহাদের প্রবেশ দিলে মক্ষিকাবিষ নষ্ট হয়।

ল'ল' বিষমপ্ৰয়তো মূলে মি'লং প্ৰটে'লৰ'লিকফোঃ .

প্টে।ল ও নালেব মূল বাটিয়া প্রলেপ দিলে লালাবিষ নিবাহিত ২গ়।

ৰচ হৈ জ্বিড্ড নি সৈক্ষাং গ্ৰহণিক্ষানী। প্ৰাঠা প্ৰতিবিধ নাম্ম কাশ্যানে বিনিদ্ধি শ্ৰ্। দশ্জনহদং গাড়া সৰ্কাচ্বিধং ক্ষেত্ৰ॥

বচ, হিন্ধু, বিভঙ্গ, দৈওব, গজপিগলী, আক্নাদি, আত্টিচ ও ত্রিকটু, এই দৃশালের কাথ বা কল্প সেবন কবিলো সকল কীটবিষ প্রশমিত হয়।

ক'চনষ্ট জিয়া; নকাং সমানাঃ স্থার্ডনৌকসংস্। কীটনষ্ট বিষেধ্য চিকিৎসাঁগ স্থায় জলোকা-বিষেধ্য ও চিকিৎসা জাঁনিবে।

শিরীষপ্ত ভু ব'জং বৈ জুড়ীক্ষীরেণ ঘষিত্য। ভল্লেপেন মহ'দেবি নশোও কুলুরজং বিষম্ ।

সীপের আঠার শিরীষবীজ ঘরিয়া ক্ষত-স্থানে প্রলেপ দিলে কুকুরের বিষ বিনষ্ট হয়।

পিষ্টভঙ্গাননাত্ত্ব ভক্ষিতং নেষলেশনকম্ : বুন্দুৱকা বিষহ হস্তি ন'ত্ৰ ক'বা! বিচ}ৱৰা! ॥

ত ওুল বাটিয়া তাহ'র মধ্যে মেধের লোগ পুরিয়া ভক্ষণ করিলে কুকুরের বিব নষ্ট হয়। ধুস্থ,রস্থ শিক্ষা পেয়া ক্ষীরেণ পরিপেষিতা। অক্ষেটিদ্য শিকা চাপি খবিষদ্বী প্রকার্তিতা।

ধুতুরা বা আফোটের মূল গ্রের সহিত পেষণ করিয়া পান করিংল কুকুরের বিষ নঠ হয়।

রজনীর্গ্মপত্তক্স-মঞ্জিষ্টানাগকেণরৈ:। শীতামুপিষ্টেষ্টালপঃ সজ্যো লুভাবিষং হরেৎ॥

হরিদ্রা, দাকুহরিদ্রা, বৃক্ষ কার্চ, মঞ্জিষ্ঠা ও নাগেষর, এই সমুগায় দ্রব্য শীতল জলে বাঁটিয়া প্রলেপ দিলে মাকড্যার বিধ নাই হয়।

অজিতাগদঃ।

বিভূস পাঠা বিফলাজনোদা বিস্তৃত্বি বহুলা জনগান কথা স্থাবি বংগা জনগান কথা সচিত্রকা ক্ষাজ্যতো নিধেয়া। ভূম্ম গ্রাং ভূম্মধ্যে চৈন প্রচ্ছা দত্ত পক্ষ্যুপ্রিক্তন্ত । নেধেত্যাল স্থাব্যজ্ঞান ন ং জেতা বিষ্ণান্তিতো বিনাম।।

বিভ্ন্স, আক্নানি, ত্রিফলা, বন্যমানী, হিন্ধু, তগরপাত্কা ত্রিকটু, পঞ্চলবে ও চিতান্স প্রতাক সমভাগে লইয় যথোপযুক্ত মধুর সহিত মাভিয়া একটি গোশুলমধ্যে রাখিয়া অপর একটি গোশুল ঘারা আচ্ছানিত করিবে। এইরপে একপক্ষ রাখিলে অগন প্রস্তুত হইবে। ইহা সেবনে স্থাবর ও জলম্ম সক্ষ প্রকার বিষ নিরাক্ষত হয়।

তাৰ্ফ্যাগদঃ।

প্রপৌঙরীকং হুরদার সৃষ্ট। ক'ল'ভূসাংগ কটুরে হিনী চ। স্টোণেযকধ্যামকপল্লক'নি প্রশাসভালীশস্ত্রনির্চিক'শ্চ। বুটন্লটেলাসিভসিগ্রবারাং শৈলেয়ক্ষেত্র তগরং প্রিয়স্কু। নোপ্রং হুলং ক'শনবৈরিকক্ষ সমাগবিং চন্দ্রসৈক্ষবঞ্চ।

> কজানি চূর্ব নি সমানি ক্সা শুক্ত নিদ্ধানিবুসংযুক্তানি। এযোহগদন্তান্দ্র ক্রি জাদিরে। বিধং নিহস্তাদ্পি তক্ষক্ষ।॥

প্গুরিয়া কার্চ, দেবদারু, মৃতা, কালিয়াকার্চ, কট্কী, গোঁটেলা, গন্ধত্প, পদাকার্চ,
প্রাগপুষ্প, তালীশপত্র, সাচিক্ষার, শোনাছাল,
এলাইচ, ধেত নিসিন্দে, শৈলজ, কুড়, তগরপাছকা, প্রিয়য়ু, লোধ, বালা, স্বর্ণগেরমাটা,
শুক্রজীরা, রক্ত্যন্দন ও সৈন্ধব লবণ প্রভ্যেক
চুর্ণ সমভাগ, একত্র মধুর সহিত মর্দন করিয়া
পূর্ববিৎ গোশৃঙ্গমধ্যে ১৫ দিন রাখিবে।
(মাত্রা ব্যবহার ১ তোলা!) ইহাতে বিহদোধ
নই হয়।

মূত্ৰসঞ্জীবনোহগদঃ।

পুকালবস্তাবেষকাক কেলেয়ার চন তথার ।
বাইমকং কুকুলং মাং সং সংস্থানিক কুই এন্ ॥
বৃহতানিরীয়াপুপাই বেইকগ্রেচারটা বিশাল ।
তর্ব কুপাকেশরশাবরক্ষনানিক ক্রিটার বিশাল ।
তর্ব কুপাকেশরশাবরক্ষনানিক ক্রিটার ক্রিটার ভিন্তার ।
তলন্ত্রাপার ক্রিটার ক্রিটার ক্রিটার ক্রিটার লা
শালাকরিবার ক্রিটার ক্রিটার ক্রিটার কর্মানিক ।
শালাকরিবার ক্রিটার ক্রিটার ক্রিটার কর্মানিক ।
শালাকরিবার ক্রিটার ক্রিটার ক্রিটার কর্মানিক ।
শালাকরিবার ক্রিটার ক্রিটার ক্রিটার ক্রিটার ভারতার ।
বের বিলেপনধ্যে প্রথম ক্রিটার ক্রিটার ভারতার ।
ভারতার ক্রিটার ক্রিটার

পিড়িংশাক, কৈবর্ত্যুতা, গেঁটেলা, সোরাষ্ট্রযুক্তিকা, শৈলজ, গোরোচনা, তিগরপাছকা,
গন্ধতুণ, কুলুম, জটামাংসী, নিসিন্দামপ্ররী,
এলাইচ, হরিভাল, চাকুন্দেবীজ, বুহতী,
শিল্পীমপুলা, ধুনা, কুমারিয়া লতা, রাখালশশা,
দেবদাক, পামকেশর, শাবর লোগ, মনঃশিলা,
রেণুক, জাতীপুলা, আকন্দপুলা, সর্যপ, হরিদ্রা,
দাকহরিদ্রা, হিং, পিপুল, লাক্ষা, বালা, মুগানী,
যৃষ্টিমধু, ময়নাকল, নিসিন্দা, সোন্দাল, লোগ,
অপামার্গ, বিয়ন্ধু, রায়া ও বিড়ক্ক, এই সমুদায়
দ্রব্য পুন্যানক্ষতে সংগ্রহ ও সমভাগে একত্র
পেশ্বণ করিয়া গুড়িকা গুলুত্ত করিবে। ইহা

দর্কপ্রকার বিষনাশক। আদ্রাণ, নস্ত, লেপন, ধারণ ও ধ্যগ্রহণ রূপে ইহা ব্যবহার্য।

কুলিকাদিবটিকা।

কুলিকং সপ্তপর্ণক কুঠং তোলকসন্মিতম্।
মাবনানং তথা দাক মন্দ্রেদকবারিণা।
সর্বপান্তাং বটাং করা যোজহেও প্রসা সহ।
অপি তক্ষকদষ্টক মৃতকলং হতপ্রম্।
খনং সঞ্জীবরেদাশ সর্বক্ষেকৃত্বিনাশিনী।
কুলিকাদিবটী হুপ্তি অবাংশ্চ বিষয়াংগুলা।

কালিয়াকড়ার মূল, ছাতিমমূলের ছাল এবং কুড় প্রত্যেক ১ তোলা, দাকমুজ ১ নানা, এই সমস্ত আবি ক্যুলের কাংগ মাড়িয়া সর্বপের স্থায় বটিকা করিবে। অনুপান—ছগ্ন। ইহা সেবনে বিদে মূতকল্প ব্যক্তিও পুনর্জীবিত হল। ইহা সর্বপ্রেকার বিষ ও বিষয়জ্ব বিনাশক।

ভামক্রটো রসঃ।

হতরাজন্ত তেটনেকং গন্ধক হা তদৈব চ।

অল্লাং কথা তেতো দেৱং তেটনেকং কান্তনৌহকম্ ॥
পরেক্রিনিগালনেক ভাবয়েচ্চ পৃথক্ পৃথক্ ।
বিশ্বোরহতীপ্রকী-সৌগন্ধিক ফদাড়িনৈঃ ॥

মর্কটা ক্ষামন্তপ্রায়া স্বর্মেন পৃথক্ পৃথক্ ।
একরন্তিকমানেন বটকাং কার্য্রেভিযক্ ।
বটামেকাং ভক্ষিহা পিবেচ্ছাতকলং ততঃ ॥
ভাবরদ্ধা র্যা নাম চাসাগ্যম্পি মাধ্যেৎ ।
কুল্ভ সুগ্রহক্ বিষং হৃত্তি ক্ছুত্রম্ ॥

পারদ, গন্ধক, কান্তলোহ প্রত্যেক ১ তোলা, অন্ন ২ তোলা, এই সকল দ্রবাকে রাখালশশা, রহতী, ত্রন্ধী, নীলোৎপল, দাড়িগ, আলকুশীবী প ও শুকশিষী ইহাদের রসে পূথক্ পূথক্ ভাবনা দিয়া একরতি প্রমাণ বটী প্রস্তুত্ত করিবে। ঔষধ সেবনের পর শীতল জল পান কর্ত্তর। ইহাতে কুকুর ও শৃগাল প্রভৃতির বিষ্ণ নই হয়।

ভীমরুদ্রো রসঃ।

(মহান্তরে।)

মনঃশিলালমরিটেদ কিশা দরদেন চ।
অপামার্গস্ত হেম্বত হয়মারশিরীবয়োঃ ॥
মূলৈক দ্রাক্তোয়েন বিষ্কাতাখুনা ততঃ।
শতশাভাবিটিঃ কুয়াদ বটিকা মূল্যাল্ডিঃ ॥
ব্যালদন্ত পীতবিষং নিরিলিয়েনটেতনম্।
পুনঃ সঞ্জীবয়েদের ভীমক দ্রাভিধো রসঃ॥

মনছাল, হবিতাল, মবিচ, দারুমুজ, হিন্তুল, আপাক্ষমুল, ধুতুরামূল, করবীমূল ও শিরীষমূল প্রত্যেক চুর্ব সমভাগ; ইহাদিগকে রুদ্রাক্ষ ও অপরাজিভার ফরসে ১০০ শতবার ভাবনা দিয়া মুগের ভারে বঁটা প্রস্তুত করিবে। সূর্পন্টকৈ কিংবা বিষপান করিয়া বিক্তান্তির ও অচেতন ব্যক্তিকে এই ওয়ন সেবন করাইলে ভাহার পুরুজ্জীবন লাভ হয়।

বিষবজ্ঞপাতে। রসঃ।

নিশাং সটক ক সঙ্গাতকো বং
তুথং সমাংশং কৃত্য নেবদাল্যা: ।
রনেন পিষ্ট্রা নিসবজপাতো
রসো ভবেৎ সক্রবিশাপহতা ॥
নিগেহতা সঞ্জাবছতি প্রযুক্ত।
নুমুখ্যোগেও চ কাল্যুইম ॥

হিন্দা, সোহাগা, জারত্রী ও তুঁতে ইহাদিগকে গোবালতার রসে পেষণ করিয়া ৪
মাষা পরিমাণে বটা প্রস্তুত করিবে। ইহা
মহযের মূত্র অন্তপানে সেবন কবিলে কালন্ট
ব্যক্তিও জীবিত হয়।

তণুলীয়ক মৃতম্।

তঙুলীয়কমূলেন গৃহধ্মেন চৈকত:। ক্ষীরেণ চ যুঙং সিদ্ধং সমস্তবিষরোগলুৎ ।

গবান্বত /> সের। ছম্ম /৪ সের। চাঁপানটের মূল প • পোয়া ও ঝুল প • অর্দ্ধ পোয়া
করার্থ প্রদান করিয়া যথাবিধি পাক করিবে।
এই ম্বত্ত পান করিলে সমস্ত বিষরোগ নিবারিত হয়।

শিখরিয়তম্।

শিখনিবরসেনৈর ককান্দ্রাচ দাড়িনম্। কুঠমেলালয়ং শৃঙ্গীং শিরীবমম্তং বচাম্॥ পরশৃ পারিভজক চন্দনং তগরং মুরাম্। পচেৎ সার্শিয়সলিলং মন্দমন্দেন বহিনা॥ সূত্রেভারিইস্থাতি নিশিলান্দিসজান্গদান্। সার্শতিক্ররং বোরং ভ্রাংশ্চ বিদ্যাংস্থলা॥

ম্বত ১০ সের। অপানার্গের রস /৪ সের।
করার্থ—দাভিম ফলের খোলা, বুড়, ছোট
এলাইচ, বড় এলাইচ, কাক্ডাশৃঙ্গী, শিরীবমুলের
ছ'ল, মিঠা, বচ, কোদালিয়া, কুড়ুলিরা,
পালিধাছাল, রক্তচন্দন, তগ্নপাত্কা ও মুবামাংসী মিলিত ১০ এফ পোয়া। জল না
দিয়া মথাবিধি পাক করিয়া এই মৃত সেবন
করিলে সমস্ত বিষয়োগ এবং সালিপাতিক ও
স্ক্প্রকাব বিষয়জর নিরাগিত হয়।

ষ্ট্রপশিচেছদি স্বতম্।

মতয়াং রোচনাং কুঠমনত তাং ত পাংপালন্।
নলবেতসমূলানি গা লং ফ্লোড তথা ॥
সক লিকাং সমজিঠ মনস্তাঞ্চ শত্রবাষ্।
শুলাট হং সমজাক প্রাকেশরনিতাপি ॥
বন্ধ কোলা প্রচেম স্পিঃ পারে। প্রাক্তছুপ্র পিন্না
সমাক্পার ব্রতীনি লিটি ত্রিমন্ বিনিজ্ঞিপের ॥
সাংক্লার ভিষক কোলাং কুডাজ্ঞানিবাপেরের ।
বিলামে হতি ছবিশি গাংকে মকুডানি চ ॥
পার্শাল্পির বিষয়ে সকার গাংকিলাল্য বিষয়ে সকার গাংকিলাল্য নিবাপের বিষয়ে সকার প্রচাম ॥
নাশ্যতাজনাভাল-পানব্ভিম্নাল্য বিষয়ে পর্ম্॥
সপ্রতীতাপুল্তানি-নির্দাহি বিষয়ে পর্ম্॥

ঘত /৪ দের। হগ্ন ১৬ দের। কল্পার্থ হরীতকী, গোলোচনা, কুড়, আকন্দপত্র, ফাদিমূল, থাগড়ামূল, বেতসমূল, মিঠা, তুলদীপত্র, ইল্মব, মান্তাই, অনন্তমূল, শতমূলী, পানিফল, বরাক্রান্তা ও পদকেশর মিলিত ১১ দের। বথাবিবে পাক কারয়া কল্পাল ছাকিয়া ফোলবে। শীতল হইলে ঘত তুলা মধু তাহাতে মিশাইয়া রাখিবে। এই ঔষধ ব্যবহার করিলে সর্বপ্রকার বিষরোগ বিনষ্ট হয়।

শিরীষারিষ্টম্।

পচেৎ তুলার্কং বিজেগে শিরীবস্থ জলে হ্বী:।
পাদশেষে ক্যায়েহন্মিন্ ক্ষিপেদ্ গুড়তুলাবয়ম্॥
কৃষ্ণপ্রিকসুক্টেলা নীলিনীং নাগকেশরম্।
রজন্তে) পলমানেন দ্যাদ্ত চ নাগরম্॥
মাসাদৃর্ক্ং জাতরসং স্থামাত্রং প্রযোজয়েং।
শিরীবারিষ্ট্রিল্ডাড্র বিশ্বাপ্রিনাশনম্॥

শিরীষ্টাল /৬। দের। পাকার্থ জল ১২৮ দের, শেষ ৩২ দের। এই কাথ জলে ২৫ দের। ওই কাথ জলে ২৫ দের গুড় গুলিয়া ভাহাতে পিপুল, প্রিয়য়ৄ, কুড়, এলাইচ, নীলমূল, নাগেশ্বর, হরিদ্রা, দায়াহিছে। ও শুঠ প্রভ্যেক ১ পল পরিমাণে নিক্ষেপ করিয়া আবৃত পাত্রে ২ মাস রাখিবে। এই অভিষ্ট বিষ্ণেষ্ট-নিবারক।

বিষোজ বিতেশ্য লক্ষণম্ ।

প্রসন্নদাবং প্রকৃতিভ্রণজুমনাভিকামং সমন্তাবিট্কম্। প্রসন্নবর্গে দিহ উভচেট্টং বৈজ্ঞোহবগচেছদবিষং মনুষ্যম্॥

রোগির বাতাদি দোষ ও রদাদি পাতু সকল প্রস্কৃতিস্থ, আহারে অভিলায, যথাযথভাবে মলমুত্রভাগ এবং বর্গ, ইন্দ্রিয় ও মনেব প্রদল্পতা হুইলে বিদ্যুত্রপাত হুইয়াছে, ব্রিবে।

অথ পথ্যাপথ্য-বিধিঃ।

বিষরোগে পথ্যানি।

অধিষ্টবৈদ্ধনং মহ-ক্রিয়া চহন্দিবিরেচনন্।
কন্দণং শোণিতাবৃষ্টিঃ পরিসেকোহবলাহনন্॥
হল্যাবরণং নঞ্জনং প্রতিসারণন্।
তদ্ধনিং প্রথমনং প্রতেপো বহিংকর্ম চ ।
উপাধানং প্রতিবিধং ধূপঃ সংজ্ঞাপ্রবোধনন্।
শালয়ঃ মাষ্ট্রকালচাপি কোরদুমাঃ প্রিয়ক্তবং ॥
মূল্যা হরেণবল্তিগা কোরদুমার প্রিয়ক্তবং ॥
মূল্যা হরেণবল্তিগা কোরদুমার বিদ্যানিষন্।
বাজাকুঃ কুলকং ধাত্রী নিশ্বাবং তর্তুলীরকন্।
মিঞ্কপালী জীবন্ধী স্থানবাধাংপ্রপোদিকা ॥
কালশাকং সলগ্রনং দাড়িনক বিক্তত্য।
প্রাচীনান্নকং প্রা ক্পিথং নাগ্রেকরন্॥

গোচছ!গনরম্জাণি তক্রং শীতাত্ব শর্করা।
আবিদাহীনি চালানি সৈন্ধবং মধু কুত্বন্ ॥
পশ্চিমোত্রবাতাশ্চ হরিদা সিত্তশনন্।
মূত্য শিরীমং কন্তুরী তিক্তানি মধুরাণি চ॥
থেমচুর্ণি বর্গোইয়ং যপাবত্বং য্পানিষ্ম।
বিষ্যোগ্রেম্বাধ্রিম্বাধ্যাধ্রিম্বাধ্রিম্বাধ্যাধ্রিম্বাধ্রেম্বাধ্রিম্বাধ্রিম্বাধ্রিম্বাধ্রিম্বাধ্রিম্বাধ্রিম্বাধ্রেম্বাধ্রিম্বাধ্রিম্বাধ্রেম্বাধ্রিম্ব

অরিষ্টাবন্ধন, বিষনাশক মন্ত্রক্রিয়া, ব্যন, বিবেচন, বিষাকর্ণা, রক্তাকর্ষণা, পরিষেচন, অবগাহন, স্নান, অদয় আবরণ, নস্ত, নেত্রাঞ্জন, প্রতিসারণ, উম্বর্তন, প্রধ্মন, প্রলেপন, অগ্নি-কম্ম. উপাধান, বিপরীত বিষ্পেরন অর্থাং স্থাবর বিষ ক'ড়ক অ,ক্রাস্ত ২ইলে জন্সন বিষ দেবন এবং জ্বন বিষ কর্ত্তক আক্রান্ত হটলে থাবর বিষ সেবন, পূপ, চেতনার উত্তেজক কার্য্য, শালিধান্ত, ষ্টিক্ধান্ত, কোদ্ৰব, কান্সনিধান্ত, মুগ, মটর কলার, তৈল, পুরাতন ও নৃতন খুত, ময়ব, তিত্তিরি, লাব, এণ (কুঞ্চমার). গোসাপ, ইন্র, শ্জাকুমাংস, বেগুণ, পলতা, আমলকী, রাজমান, নটেশক, বন্ধী, জীব্ছী, মুর্ণিণাক, পুইশাক, কাল্ণাক, লন্তন, দাঙ্মি, বিকল্পত (বইচি), পুরাতন আমলনী, ইরীতকী, কলেড্রেল, মাগ্রেশর, গোমুল, ছাগমুত, নরমূত, তক্ত, শীত;সু, দিনি, আবিলাহ ज्या, रेमकर, मधु, कूक्म, शन्तिम ७ डेहर्दत বাতাদ, হরিছা, খেডচন্দন, মৃতা, শ্রীষ, কন্ত্রী, তিক্দ্রা, মধুর্দ্রা ও স্বৰ্ণ, জ্ঞানী বৈগ এই সম্প্ত দ্ৰব্য অবস্থামুদাৱে ও বিষয়েন্ডনে সকল প্রকার বিষয়েগালেই প্রয়োগ ক্রিতে পারিবেন।

বিষরোগেই পথ্যান।

নে ধং বিক্ষাধ্যশনং ব্যব্যঃ
তঃক্লমায়াসম্পি প্ৰতিম্।
আন্ধ সৰ্বাং লবণক সৰ্বাং
ব্যাক নানাবিধনাস্তানি ॥
নিজাং ভয়ং ধুম্বিধিং কুধাক
বিষ্তুরো নৈব ভজেৎ ক্যাচিৎ ॥

কোধ, বিক্কভোজন, অধ্যশন, মৈথুন, তাম্লভক্ষণ, ব্যায়াম, পূর্ব বায়ু অথবা মত্যস্তবায়ু সেবন, অন্নদ্রব্য, লবণরসমূক্ত-দ্রব্য, স্থেদ ও বিবিধ বাসে দ্রব্য বিষ্যোগে

অহিতজনক। নিদ্রা, ভয়, ধ্মপান এবং কুবা হইলে আহার না করা, এই সমস্ত বিষ-রোগী পরিভ্যাগ করিবেন।

ই জায়র্কেদ-সংগ্রহে বিষাধিকার:।

অথ রসায়নাধিকারঃ।

বচ্ছরাব্যাধিবিধবংসি বয়ংগুভ করং তথা। চকুদাং বুংহণং বৃদাং ভেদছং তদুসায়নস্॥

যে ঔষধ, জরারূপ ব্যাধির নাশক (যাহ। সেবন করিলে শরীরে জরা উৎপন্ন ইইতে পারে না), বন্ধ:স্তম্ভক, নেত্রের হিতকর, শরীরের উপচায়ক ও শুক্রের জনক, তাহাকেই রুগায়ন ক**হে**।

দীর্থমায়ুঃ স্মৃতিং মেধামারোগাং তরুণং বয়ঃ। দেহেন্দ্রিয়বলং কান্তিং নরো বিক্রেন্ত্রসায়নাং ॥

রদায়ন সেবন করিলে মহুষ্য দীর্ঘ আয়ুং, শ্বাতি, মেধা, আরোগ্য, যৌবন, দেহ ও ইক্রিয়ের বল এবং কাস্কিলাভ করিয়া থাকে।

পূর্বেব বয়সি মধ্যে বা শুদ্ধকার: সমাচরেও।
নাবিগুদ্ধনার স্থা গুকো রাসায়নো বিধি:।
ন ভাতি বাস, সি রিটে রঙ্গবোগ ইবাপিত:।
(পূর্বেইতি বৌবনপ্রবেশ এব। মধ্য ইতি বৌবনশেষে। বালবৃদ্ধী ভূ রসায়নাবিবয়ো ভেষজবীযাসহতাৎ জ্বরাপ্রশারীরভাচে। চক্রটাকা।)

পূর্ম বয়দে (যৌবনের প্রারম্ভে) বা মধ্যবয়দে (যৌবনশেষে) রসায়ন সেবনীয়।
রসায়ন-সেবনের পূর্কে বমন বিরেচন ছারা
তদ্ধ-শরীর হওয়া আবশ্রক। যেরপ মলিন
বল্লে রং দিলে, তাহা প্ররঞ্জিত হয় না, সেই
রপ সমল দেহে রসায়ন সেবন করিলেও
কোন ফল হয় না।

গুড়েন মধুনা গুঠা। কৃষ্ণা লবণেন বা। দ্বে দে থালন সদা পথে। জীবেদ বৰণতং স্থী।

গুড়, মধু, গুঠ, পিপুল বা লবণ, ইহাদের কাহারও সহিত প্রতিদিন ২টি করিয়া হরীতকী দেবন করিলে, মহুষ্য প্রম স্থাথ একশ্ত বংসর বাচিয়া থাকে।

জরণান্তেংভয়ানেকাং প্রাণ্ডন্তে বে বিভীতকে।
ভূক্ত্বা তু মধুস্পিউটাং চন্তাযা মলকানি চ।
প্রবোজয়েৎ সমামেকাং ত্রিফলারা রসায়নম্।
জীবেদ্ বর্ধণতং পূর্থজন্তরাহব্যাধিকেব চ।

আহারের পারপাকান্তে ১টি হরীতকী, আহারের পূর্বে ২টি বহেড়া এবং আহারান্তে ৪টি আমলকী, দ্বত ও মধুর সহিত ভক্ষণ করিবে। এই ত্রিফলা-রসারন ১ বংসর কাল সেবন করিলে মন্ত্রম্য অজর ও ব্যাধিহীন হইয়া শত বংসর পর্যান্ত বাচিয়া থাকে।

ঋতুহরীতকী।

সিদ্ধাণকর প্রতী-কণামধুপ্ত ড়ৈ ক্রমাৎ।
ব্যাদিৰভারা সেবার রসায়নগুণৈবিশা।
(ব্যাহ্ম হ্রীতকী মা ৬, সৈদ্ধার মা ২; শরদি হ্রীতকী মা ৫, শর্করা মা ৪ খাতাং, শীতসকলং পেরন্।
হেমন্তে হ্রীতকী মা ৬, প্রতী মা ২, শিশিরে হ্রীতকী
মা ৩, পিয়লী মা ২, তপ্তজলং পেরন্।)

বর্ধাকালে দৈশ্ববের সহিত, শরৎকালে চিনির সহিত, হেমন্তে ওঁঠের সহিত, শীত-কালে পিপুলের সহিত, বসস্তকালে মধুর সহিত, গ্রীয়কালে গুড়ের সহিত, হরীতকী সেবন করিবে; ইহার নাম হরীতকী-রসায়ন বা শুত্হরীতকী।

তুর্নামধানকানজ্বরমপুত্রাপাঞ্তানেত্রোগান্ হিলাকুঠাতিসারভ্রমদক্ষনাজীণশ্লপ্রমেহান্। তৃষ্ণাশ্লাপ্রপিভ্রম্ববিতত্ত্বরারোচকানাংদাহান্ হল্লাদেতানবভাং মধুনি পরিগতা পুতনা চায়পিভ্র।

মধুর সহিত পুতনা হরীতকী (যাহার আঁটি বড়) দেবন করিলে অর্শঃ, শ্বাস, কাস, জ্বর, পাণ্ডু ও নেত্ররোগ প্রভৃতি শ্লোকো-ন্নিথিত পীড়া এবং জ্বা বিনষ্ট হয়।

বে মাসমেকং ব্রসং পিবন্তি দিনে দিনে ভূকরজঃসম্থম্। কীরাশিনত্তে বলবর্গফুজাঃ সমাঃ শতং জীবিভমাগ্রন্তি।

বে ব্যক্তি একমাদ কাল ভামরাজের স্বরদ পান ও হ্রগ্ধ পথ্য করে, সে ব্যক্তি বলবর্ণযুক্ত হুইয়া একশত বৎসর জীবিত থাকে।

মণ্ড্কপর্নাঃ স্বরদঃ প্রথেজ্যঃ
কারেন বহীরধুকন্ত চূর্ন।
রনো ভড়্চাংস্ত সম্লপুপাাঃ
কলঃ প্রযোজ্যঃ পলু শৃন্পুপাাঃ ॥
আঞ্জালাস্যরাশনানি
বলাগ্রিবর্ণস্বর্জনানি।
মেধ্যানি চৈতানি রসায়নানি
মেধ্যা বিশেবেণ ভ শৃন্পুপ্নী।

থ্লকুড়ির রদ, ছথেরে সহিত বাষ্টিমধুচ্র্ণ, মূল ও পূজা বিশিষ্ট গুলঞ্চের রদ এবং মূল ও পূজা বিশিষ্ট শহ্মপূজীর কল্প, এই যোগচতুষ্টর আর্:প্রদ, রোগনাশক, বল অগ্নি বর্ণ ও স্থর বর্জক, মেধাজনক এবং রদায়ন। ইহাদের মধ্যে শহ্মপূজী বিশেষ মেধ্য।

পীতাৰগন্ধা প্রদার্জনাসং হতেন তৈলেন ফ্রায়্না বা। কুলক্ত পুষ্টিং বপুরো বিধতে বালক্ত শক্তক্ত ব্রায়ুক্টাঃ ॥

্ অবগন্ধারাল্ড প্রে পরসা পিত্তে যুতেন বাতপিত্তে, তেনেন বাতে, উন্মোদকেন বাতককে ইত্যাছরিতি শিবদাসঃ।) অখগন্ধার চূর্ণ পিত্তপ্রধান ধাতৃতে হগ্ধ, বাতপিতে হাত, বাতে তৈল এবং বাতকফে ঈষত্বক জল সহ একপক্ষ কাল দেকন করিবে। ইহা ক্লণ শরীরের পুষ্টিসাধক।

> ধাত্রীতিলান্ ভূজরজোবিমিশান্ বে ভক্ষরেয়ুম ভূজা: ক্রমেণ। তে কুফকেশা বিমলেন্দ্রিশন্ত নির্বাধয়ো বর্গভং ভবেয়: ॥

আমলকী, ক্ষতিল ও ভূক্সরাজ এই তিনটি দ্রব্য একত্র পেষণ করিয়া রসায়ননিয়মে সেবন করিলে কেশ সকল ক্ষত্বর্গ ও ইন্দ্রিয় সকল বিমল এবং রোগী নীরোগ হইয়া নিরাপদে শতবর্ধ বাচিয়া থাকে।

বৃদ্ধদারকম্নানি শ্লন্ধণানি কারমেং।
শতাবর্থাা রসেনৈব সপ্তরাত্রাণি ভাবমেং॥
অক্ষমাত্রন্ত তচ্চুর্বং স্পিবা সহ ভোভমেং।
মাসমাত্রোপবোগেন মতিমান্ জায়তে নরঃ।
মেধাবী স্মৃতিমাংকৈব বলীপলিতর্ক্জিতঃ॥

বৃদ্ধনারকমূল সক্ষ চূর্ণ করিয়া শতমূলীর রদে ৭ দিন ভাবনা দিবে ঐ ভাবিত চূর্ণ ২ ভোলা (ব্যবহার ২ ভোলা) উপযুক্ত ঘুত সহ একমাস কাল সেবন করিলে বৃদ্ধি, মেধা ও শ্বতি শক্তি বৃদ্ধিত এবং বলী প্লিত বিনষ্ট হয়।

হত্তিকর্বরত্ব: থাদেৎ প্রাতক্ষণায় সর্পিব। ববেষ্টাহারচেটোহপি সহস্রায়ুর্ভবেরর: । মধাবী বলবান্ কামী স্ত্রীশতানি ব্রজ্ঞানে)। মধুনা ত্বত্ববেগঃ ভাদবলিঠা স্ত্রীসহস্রগঃ।

হস্তিকৰ্ণপদাশের মূল চূর্ণ প্রাক্ত:কালে মৃত সহ সেবন করিয়া স্বেচ্ছামতে আহারাদি করিলেও মেধাবী, দীর্ঘজীবী ও বলবান্ হইয়া শক্ত জ্ঞীতে সঙ্গম করিতে সমর্থ হয়। মধু সহ সেবন করিলে অশ্বের ন্তায় বলিও হইয়া সহস্র জ্ঞীতে রমণ করিতে পারে। ধাত্রীচূর্ণ্ত কংসং স্বরণগরিগতং ক্ষোদ্রসর্প্ত: সমাংশং

ধাত্রীচূর্ণক্ত কংসং ব্রসপরিগতং কৌত্রসর্পিঃ সমাংশং কুষ্ণামাণীসিতাইপ্রস্তব্তুমিদং স্থাপিতং ভন্মরাশে। বর্ধান্তে তৎ সমগন্ ভবতি বিপলিতো রূপবর্ণপ্রতাপৈ-নির্বাধির ছিমেধান্সভিবচনবসক্ত্র্বাসকৈরপতঃ ।

(বরসপরিগতমিতি আমলক্ষলসহপ্রবাসন ভাবি-তব্। ভাবনা চ একবিংশতিবার্য। কৌলসপিঃ সমাংশমিতি ধাত্রীচুর্ণাপেক্ষরা প্রত্যেকং সমভাগ-মিত্যর্থঃ)।

শানগকীর চুর্ণ ১৮ সের, আমলকীর স্বরদে একুশবার ভাবনা দিয়া, পরে তাহা মধ্ ১৮ সের, স্বত ১৮ সের, পিপুল চুর্গ ১১ সের, চিনি ১২ সের সহ মিশ্রিত করত একটি মৃৎপাত্রে রাথিয়া বর্যার প্রারম্ভে ভন্মরাশিতে স্থাপন করিবে:এবং বর্ষাস্তে উদ্ধৃত করিয়া যথাসাত্রায় সেবন করিলে বলী পলিত ও ব্যাধিবিহীন হইয়া কান্তি, বর্ণ, মেধা, স্মৃতি, বৃদ্ধি, তেজঃ; ধীরতা, বাগ্যিতা ও সম্বশুণে বিভূষিত হয়।

গুড়ু চাপামার্গবিড়ঙ্গণ্মিনী বচাঙরা কুঠণভাবরী সমা। ঘুডেন লীচা প্রকরেংছি মংনবম্ ব্রিভিদিনৈঃ লোকসংগ্রধারিণ্য।

গুলঞ্চ, অপামার্গ, বিড়ঙ্গ, শুঙাপুণ্পী, বচ, হরীতকী, কুড় ও শৃতমূলী, এই সমুদায় সমাংশে গুতের সহিত সেবন করিলে গুতি-শক্তি এত বৃদ্ধি হয় যে, তিন দিনে সহপ্র শোক কঠন্থ করিতে পারা যায়।

नाक्रवलीপनिष्ठयः शीनमदेवस्वर्धःकोमस्त्रम् । त्रस्तर्नीकरग्रदेशुनस्त्रः त्रम्।यनः ५ष्टिसननकः ॥

প্রভাষে জলের নহা লইলে মেচেহা, পীনস, স্থরবিক্ষতি ও কাসংখ্যা প্রশমিত হয়। ইহা রসায়ন ও দৃষ্টিশক্তি-বৰ্দ্ধক।

অন্তদঃ প্ৰস্তান্তক্তী রবাকসুদিতে পিবেৎ। বাতপিত্তগদান হয়। জাবেদ বধনতে নরঃ॥

ক্রের অন্ধ্রম /২ সের পর্যন্ত জল পান করিলে বাতিক ও পৈত্তিক রোগ সকল নষ্ট ইইরা মন্ত্রা শত বংদর পর্যান্ত জীবিত থাকে। কাদখাদাতিদারজ্বপিড়ককটাকুইকোঠপ্রমেহান্ ম্ত্রাঘাতোদরাশ:খরণুগলশির:কর্ণশ্লাক্ষিরোগান্। যে চাজে বাতপিভক্তজক্ষকৃতা ব্যাধর: সন্তি জ্বভো-ভাগেলভ্যানখোগাদপনরতি পর: পীত্রস্তে নিশারা:॥

ধারোঞ্চ গ্রান্থ্র অথবা চতুগুণ-জলসির গ্রাহ্য কিংবা জল অভি প্রাত্ত্বে পান করিলে কাস, ঝাস, অভিদার, জর, পিড়কা, কটীশূল, কুণ্ঠ, কোঠ, মেহ, মূত্রাঘাত, উদর, অর্শ:, শোথ, গলরোগ, শিরঃপীড়া, কর্ণশূল, অফ্লিরোগ এবং অস্তান্ত বাতদ্ধ, পিত্তদ্ধ, রক্তজ ও কফ্জ রোগ সকল নিবারিত হয়।

লোহগুগ্গুলুঃ।

অয়ঃ পনং গুগ গুলুমত্ত যোজাং পলত্তন্নং ব্যোষপলানি পঞ্চ। পলানি চাষ্ট্ৰো ত্ৰিফলারজন্চ কধ্যো নিহন্ যাত্যমন্ত্ৰমেব ॥

লোহ : পল, গুণ্, গুলু ৩ পল, ত্রিকটু মিলিত ৫ পল ও ত্রিফলা মিলিত ৮ পল, এই সমস্ত চুর্ণ একত্র মিশ্রিত করিয়া ২ তোলা পরিমাণে দেবন করিলে মনুষ্য - নীর্যজীবন লাভ করে।

নিঞ্জীকলঃ।

নিদ্ধি:। পিক্লাযোগিনীক্থিতম। নিগু জী-মূলচুৰ্মষ্টপলং গৃহীতা ষোড়শপলমধুমিশ্ৰিতং যুতভাওে কুতা শরাবেণ নিবিভলেপনং দত্তা মন্দ্রিতা মাসমেকং धंग्राम् श्राभारतः । তক্ষাসমেকং ভক্ষণমাত্রেণ নর: कनकवर्णा गुधपृष्ठिः मर्कारतार्गावविद्याः विशेन: मध्यमद्रश्यामिएक हन्त्रार्वः यानकोरवः, वक्ष-শুক্র: প্রশত্য কাম্ব্রিত্য কমে। ভব্তি। শাক্ষং বিহার যথেচ্ছরা ভোজান। ভচ্চুর্ণ গোমুত্রের সহ পামাবিচ চিকাদীনি যঃ পিব্তি इ छाष्ट्राप्तन क्षेत्रि নাডীব্রণগুলাশুললীহোদরাণি। ভদ্ধ ৰ্ণং তক্রেণ বঃ পিৰতি স সৰ্ব্যৱাগবিবজিতে। गुड्रपृष्टिवंदाह्वता वली-পলিতবজিতঃ প্রনবেগো দিবামুর্ত্তির্ভব্তি। মাসম্ম-প্রয়োগেণ পণ্ডিতন্ট ন সংশয়: ।

নিসিন্দাম্লের চূর্ণ /> সের ও মধু /২
সের একত্র মি শ্রুত করিয়া একটি ঘুতভাতও
রাধিবে এবং শরাব ধারা মুখ আবদ্ধ করিয়া
গাঢ়রূপে লেপন করিবে। অনস্তর ঐ ভাতও
এক মাদ কাল ধাঞ্ডরাশের মধ্যে স্থাপন কর
উদ্ধত করিয়া লইবে। এই চূর্ণ গোমূত্র
অথবা তক্রের সঙ্গে সেবন করিলে বছবিধ
রোগ ও বলীপলিত জ্বাদি দ্রীভূত হইর
বল, বীর্যা ও আরুঃ বিদ্ধিত হয়।

ভূঙ্গরাজাদিচুর্ণম্।

শ্বদ্ধীকৃতং ভূজরজক্ত চূর্ণং
তিলার্জককামলকার্জকক।
সন্পর্করং ভূজরতো ক্রট্রেরা
ন তক্ত রোগা ন জরা ন মৃত্যুঃ॥
কর্জং পশ্চেদ্ পমনরহিতো দ্রশকারসামী
মূকো বাগ্মী শ্রবণরহিতো দ্রশকারসামী।
নীরুঙ মর্জ্যো ভরতি পলিতী নালজীমূতকেশো
ক্রীর্ণা দন্তাঃ পুনরপি নবাঃ ক্রীর্গোরা ভরতি।
ভূজরাজ চূর্ণ ১ ভাগ, তিল অর্জ ভাগ,
আমলকী অর্জ্বভাগ এই সম্দায় একত্র নিশ্রিত
ক্রিরা চিনি বা গুড়ের সহিত সেবন করিলে
জরা ও বিবিধ রোগের শাস্তি হয়।

শ্রীমৃত্যুঞ্জয়তন্ত্রোক্তামৃতবর্ত্তিকা।

ত্রিফলা ত্রিকটু প্রসা গুড়ুচী রক্ত চিত্রক।। নাগকেশরচর্ণক শুক্সবেরং সমার্কবম্। সিক্ষবারো হরিছে বে শক্রাশনগুড়ফটো। এলা মধুৰূপণী চ বিভৃত্সকোগ্ৰগ'ৰাকা। চর্ণ প্রত্যেকমেতেষাং সমাদায় প্রস্থা কামরূপসমুভূতিভ**িড়ে প**কাশতা পলৈ:॥ সমষ্টিপ্রিশতী কাষ্যা বর্তিন্তেন সমানতঃ। চল ভারাবি হলে। চ পুরুরিত্বেইদেবতাম । স্কৃতী প্রজয়া প্রীতো বর্তিদেক দ্ব ভক্ষেৎ। অনুপানং প্রদাতবাং স'ললঞ্চ হুশীতলম । কট্মনবৰ্ণকৈব নাভিষ্যত্ৰং কলাচন। ষঃ প্রত্যহমিদং খাদেৎ কর্মমানং নিরন্তরম্ ॥ खासनामी धामार वा गुन्यामक कनः ७ तद । নষ্টবহিত্ত দীপ্ত; গ্লিবড়বানলসাইত: । ইষ্টাপি ভাষতী কাভিশ্চল্রিকেব নিশামুখে। কাশপুপারচঃ কেশাঃ শিধিক ঠমনোরমাঃ॥ পটলাবহতং চকুল ক্ষযোজনদর্শনম্। कत्राविद्यवाप्तरश्रंशि विश्वनिद्यार्गावतः ॥ निर्वाधिनिर्कतः भक्र्राव्यानारेकः वर्षा देव। দিনেশ ইব তেজন্বী কন্দৰ্প ইব রূপবান্ । সহস্রায়ুম হাসবো গন্ধব হব গায়ন:। ল্লীশতং রমতে নিতাং নাবসাদং বজতাসে । न छङ्गस्तारामः कान्तिर कामज्ञारी एरवमस्त्री । প্ৰাথমিক বপুস্কস্ত পুস্পমিৰ হকে মলম্ 🛚 জরাচয়ে: হজার্ণজ নগবেশ।দয়ো যথা। .প্ৰভবন্তি বলাছপ্ৰাদথ কলা ইবাস্থাৎ। হট্ট: পুষ্ট্ৰণ্ট পাপন্ন: শাস্তো ভবতি মানব: ।

 अथग्ठवर्षिकां नाम पृष्टुाक्षग्रम्(थापिठा । त्रमाग्रनानाः (आर्ष्टेशः प्रस्तवा)विनिष्ट्रमनो ॥

ত্রিফলা, ত্রিকটু, ব্রন্ধী, গুলঞ্চ, রক্তচিতামূল, নাগেশার, শুঠ, ভীমরান্ধ, নিসিন্দামূল,
হরিন্দা, দারুহরিন্দা, দিদ্ধি, গুড়ত্বক্, এলাইচ,
গান্তারীছাল, বিড়ক্ত ও বচ প্রত্যেক চুর্ণ ২
পল, কামরূপ দেশীর গুড় ৫০ পল। এই
সম্পায় একত্র মদ্দন করিয়া ৩৬০টা বর্তি
প্রস্তুত করিবে। আহারের পূর্বের বা সন্ধ্যার
সমন্ধ এক একটি ভক্ষণীর। অমুপান—
মুশীতল জল। অভিরিক্ত কটু অমু ও লবণ
রদ কদাচ সেবন করিবে না। এই ঔষধ
সেবন করিলে বল, বীর্ষা ও ইন্দ্রিয়ণক্তি প্রভৃতি
বর্দ্ধিত হয়।

শ্রীসিদ্ধ মোদকঃ।

ত্রিকটো ব্রিপলং চুর্ণং বিফলায়াঃ পলত্রাম। গুড়ুচাশ্চ বিভঙ্গানাং গ্রন্থিকপ্রস্থিপর্য়েও 🛊 রক্ত চিত্রাজ্যি, জং চুর্ণং গ্রাহ্যকাপি পুথক। अरहाकः विभावदेकसार शृङ्गीसामा हिमान नमः॥ ক মরূপোত্তবা গ্রাহা গুড়তারিত্রনা তপা। সর্ব্যমেকতা সংমূদ্ধি সমষ্টি ত্রেশতং শুভ্র ॥ মোদকং কারয়েদ্ধীমান্ সমভাগেন খড়তঃ। প্রভাহং প্রাভরেবৈতৎ পানীয়েনের ভক্ষয়েং॥ এবং नित्र**ञ्चतः कार्याः गःतदमतम**ङक्तितः। প্রথমে মাসি বাগ্যুক্তো দ্বিতীয়ে বলবর্ণবান ॥ ভূতীয়ে নাশয়েৎ কৃষ্ঠং খাসকাদৌ ভুরীয়কে। अकरम श्री श्रियदक गर्छ ह अलिटक्स्यः ॥ সপ্তমে কান্তিযুক্তত অষ্টমে বলবান ভবেৎ। নবমে চ শতায়ু: স্তাদ্ দশমে চ সরাবিত: । महोबन(यकोमान अमृत्भा चेंगान स्वर् । ইচ্ছাহারবিহারী স্থাৎ ততো দৈতারিপোঃ সমঃ॥ यह श्रित्रहिटा परी প्राप्तािक कल्लीविडम्। यूवा निवस्त्र डिटिंग् यावरकालक कौविडि । ভবস্থি নিম্মোহস্তাষ্ট্রে হান্চাপি পরিকীর্দ্ধিতা:। 🎒 সিদ্ধঃমাণকো হেব নিদ্ধাদিশু নিবেবিত: ॥ ত্রিকট্ট ৩ পল, ত্রিফলা ৩ পল, গুলঞ্চ,

/৬। । সের। এই সমুদার একতা মর্দন করিয়া

গেটেলা, রক্তচিতামূল

কামরূপ দেশীয় গুড়

বিভন্ন, পিপুন্যুল,

প্রত্যেক চুর্ব ২ পল,

সমভাগে ৬৬০ টা নোনক প্রস্তুত করিবে। প্রাভঃকালে জলের সহিত সেবা। ইহা এক বৎদর সেবন করিলে বিবিধ পীড়ার ধ্বংদ এবং বলবীর্যাদি বর্দ্ধিত হয়।

অফ্টাবক্ররসঃ।

রসরাজন্ত ভাগৈকং বিভাগং গন্ধকন্ত চ।
ভাগনেকং সংগ্রিত ভাগার্দ্ধিং রক্তন্য চ।
নাগং তাত্রং ধর্পরক বস্পকৈর সমাংশকন্।
প্রত্যেকং রক্তরাদ্ধিক সক্ষমেকত্র মন্দ্রিং ॥
বটাকুরমমের্থামং যামং কন্তরেসৈং সহ।
কুপাভ্যন্তরে সংস্থাপ্য ত্রিদিনং পাচয়েৎ স্থাঃ॥
দাড়িমীকুসমপ্রপাং জায়তে চাবিকলতঃ।
বলীপলিতবিধবংসি বলপুষ্টিকরং মহং॥
অংবোক্যন্তননং নেধা-কংন্তিকুজ্কুলবন্ধন্।
মতৌষ্ধবরবৈশ্তন্ত্রিক্তেপ নিশ্বিতম্।

পাবদ ১ ভাগ, গন্ধক ২ ভাগ, স্বণ ১ ভাগ, বৌপ্য অন্ধভাগ; সীদা, তামা, ধর্পর ও বঙ্গ প্রত্কে দিকি ভাগ; এই সমূদায় বটাঙ্কুরের রদে ১ প্রহর ও ঘতকুমারীর রদে ১ প্রহর মর্দ্দন করিয়া মকরধ্বজ প্রস্তুত করিবার নির্মান্দ্রনারে পাক করিবে। ইহা পাকাস্তে দাড়িমপুল্পের ভায় রক্তবর্ণ হইবে। (২ রতি মাজায় পানের রদের সহিত সেব্যা)। ইহা দারা বল বীর্যাদি বিদ্ধিত এবং শ্রীর পৃষ্ট হয়। ইহা প্রীক্ষত উংকুই ঔষব।

বসন্তকুত্বনাকরো রস:।

প্রবাদরসমৌজিকাথরমিদং চতুর্গাঞ্বপৃথক্ পৃথগণ খতে রজতহেমতো ঘাংশক।
ক্ষয়োভূজগবজকং ত্রিলবকং বিমন্দ্যাথিলং
ক্ষেভেংহনি বিভাবরেদ্ ভিষ্তিদং থিয়া সপ্তশং ॥
ক্রবৈর্ মনিশেক্জৈঃ কমলমালতীপুপাজৈঃ
পরংকদলিকন্দলৈম লিয়কৈণনাভূত্তিবৈঃ।
বসন্তক্তমাকরো রসপতিবিবরোগ্লিভঃ
সমন্তগদগভ্তবেৎ কিল নিজামুপানৈরম্ম।

প্রবাল, রদসিন্ত্র, মুক্তা, অত্র প্রত্যেক ৪ ভাগ; রৌপ্য, স্বর্ণ প্রত্যেক ২ ভাগ; লৌহ, দীদা, বঙ্গ প্রত্যেক ৩ ভাগ, এই দমুদায় একতা করিয়া বাদক, হরিন্দা, ইক্ল্, পদ্ম, মালভীপূষ্প ও কদলীমূলের রদে, হয়ে, চন্দন কাথে এবং মৃগনাভিতে যথাক্রমে ৭ বার করিয়া ভাবনা দিয়া ৪ রভি প্রমাণ বটিকা করিবে। দোদামুদারে অনুপান ব্যবস্থে। ইহা দেবন করিশে বিবিধ রোগের শাস্তি হয়।

दे इत्लोका हिन्द्रामणिः।

রদং বজং তেম ড'রং ড'মং তীক্ষুং মুভালকম। থে জিকং গন্ধকং শৃত্যং প্রবালং ভালকং শিলা॥ (अ'विङक मनः मर्द्यः मश्राहः मन्नदान्त्रम् । বৃহ্নিমূলকষায়েণ ভাতুত্বে দিনতায়ৰ ॥ নিও ভাশুরণ দ্রানৈবক্রাত ক্ষেদিন ধর্ম। অনেন প্রদেশতং পাতবর্ণরাটিকাম ॥ টঙ্গণং রবিত ক্ষন পিষ্ট্রা তক্ত মুখং লিপেৎ। क्षा ड छम्बर शाहार खंडनी टर विहर्नस्य ॥ চণত্লীং মৃতং কৃতং বৈক্রান্তং কৃতপ্রাদিকম। শেভাঞ্চনমনে: সর্বং সপ্ত গারান বিভাবয়েং ॥ বহিন্দক্ষায়েণ ভাবনাৰ্যমীছতে। थाः मः इक्ष्यः स्था । प्रकारिक्ला एकः । মাবাদ্ধেন নিহস্তাভি জরামৃত্যং ন সংশয়। বাতং বিজ্ঞানুপাঞ্জলগারজাতিদারান্ জয়েং स्ट्रिक्सीरकलाम्ब्राम्बर्वे दृष्टां लावः इलीसाम्बर्धा মুত্রাঘাতভগন্দরজ্বগণান স্বলাণি কুঠাঞ্জপ माधामाधाळवान् गर्मान् वस्टकान् मः मावशम् यात्रकः ॥

পানদ, হীরক, স্বর্ণ, বেশিরা, তান্ত্র, লৌহ, অন্ত্র, মুক্তা, গদ্ধক, শন্ত্র, প্রবাল, হরিতাল, মনছাল প্রত্যেক সমভাগ, চিতামূলের রসে ৭ দিন এবং আকলের আঠা, নিসিন্দার রস, ওলের রস ও সীজের আঠায় তিন তিন দিন ভাবনা দিরা তাহা পীতবর্ণ কড়ির অভ্যন্তরস্থ করিবে। অনস্তর আকলের আঠার সোহাগা মাড়িয়া তদ্ধারা কড়ির মুখ লিপ্ত করিবে। পরে ঐ কড়ি সকল ভাওমধ্যে স্থাপিত ও ভাত্তের মুখ কর্দ্ধ করিয়া বালুকায়ন্ত্রে পাক করিবে। শীতল হইলে চুর্ণ করিয়া উহার সহিত চুর্ণভূক্য রস-দিন্দুর ও রসিন্দুরের সিকি বৈক্রান্ত মিঞ্জিত

করিয়া শজিনার রসে ৭ বার ও চিতামূলের রসে ২ বার ভাবনা দিবে। মাজা—৬ রতি পর্য্যস্ত। ইহা সেবন করিলে বিবিধ বাতজ রোগ এবং বিদ্রধি, শ্ল, গ্রহণী, রক্তাভিসার ও মেহ প্রভৃতি জনেক রোগ বিনষ্ট হয়।

রহৎপূর্ণচন্দ্রসঃ।

দ্বিকৰং শুদ্ধাসূতক গদাকক দ্বিকাৰিকম। লোহতত্ম পলকৈকং জারিভাত্রং পলাংশিক্ষ ৰিতোলং ব্ৰছতকৈব বঙ্গভন্ম দ্বিকাৰ্ধিকম। অবর্ণ ভোলককৈব ভাষ্ণ কাংস্ক ভৎসম্ম कः ठीकनः कः भूष्यासना ज्**नक** के तकम् । কপুরিং ব্লিতা মুন্তং ক্ষং ক্ষং পৃথক পৃথকু॥ मर्दः थ्लाउटन किथा क्यात्रमितिम्बिरम्। ভাব্যিতা বরাতোয়ে: রবৃকাণাং রদৈত্তথা । এরগুপত্রৈ: সংবেষ্ট্য ধাক্সরাপৌ দিনত্রম্ । উদ্ধৃতা মন্দ্রিত। ত বটি চাং চণকপ্রমান্।। খাদেক বটিকামেকাং পর্ণপ্রেন সংযুতান। সক্রাধিবিমাশয়ে কাশিরাজেন মিলিভা। वला। द्रमाश्रमा वृष्ता वाकीकवर्गमूखमम्। অগ্রিধান্সমন্ত্রীর্ণক গ্রহণীং চিরজামপি। আগবাভময়পিত্রং জীর্ণজ্বমরোচকম্। আद्रमृतः क्ष्रीमृतः ऋकृतः পক্তिगृतकम् । কামশোকে ভবং রোগং প্রথেইং বহুমু ক্র্ বায়ং বছবিধং হস্তি ধ্বজন্তক্ষং বিশেষতঃ॥ মেধাঞ্চ লভতে রাজ্ঞি ভৃষ্টিপুরিসমন্বিভাষ্। বুদ্ধে'হপি ভক্লণশদ্ধী ত্ৰীৰু চাপি ৰুষায়তে। দষ্ট: সিদ্ধালা তেখ রসায়নবর: সূতঃ॥

পারদ ৪ ভোলা, গন্ধক ৪ তোলা, লোহ ৮ ভোলা, অল্ল ৮ তোলা, রূপা ২ তোলা, বঙ্গ ৪ ভোলা; অর্ণ, ভাল, কাঁসা প্রত্যেক ১ ভোলা; ভারফল, লবক, এলাইচ, গুড়ত্বক, জীরা, কর্পুন, প্রিয়ক্ত্ব, মুতা প্রত্যেক ২ ভোলা; এই সম্পায় একতা স্বতক্ষারীর রসে মাড়িয়া তিফলা ও এরণ্ডের রসে ভাবনা দিবে। অনস্কর ইতা এরণ্ডপত্তে বেষ্টিত করিয়া ৩ দিন শাস্ত্রালির মধ্যে স্থাপন করিবে। পরে তুলিয়া চণকপ্রমাণ বটিকা প্রস্তুত করিবে। পানের সহিত সেবা। এই ঔষধ বলকারক, রসারন, ব্যা ও উংক্ট বান্সীকরণ। ইহাতে অগ্নিমান্স্য, অজীর্ন, গ্রহণী, আমবাত ও অমপিত প্রভৃতি বিবিধ পীড়ার শাস্তি হয়।

बिगरानको विनाभत्रमः।

পলং বজ্ঞাত্রচর্ণসা তদর্কে) গব্দপারদৌ। তদদ্ধং বঙ্গভামাপি ভদ্দং ভারকং তথা। তৎসমং মাজিককৈব তদৰ্ম্য তাত্ৰভন্মকম। রসতুলাঞ্চ কপুরিং জাতীকোষকলে তথা ঃ नुक्रमात्रकरीकक वीकः वर्गकतमा ह। প্রত্যেকং কার্ষিকং ভাগং মুতস্ব্ং বিশাণকম্ । * निन्धिया विका कार्या विश्वश्लाकलमानडः । নিহন্তি সরিপাতোথান পদান হোরান ফদারণান ॥ গলেপানন্তবৃদ্ধিক তথাতীসার্মেব চ। কুঠমষ্টাদশবিধং প্রমেহান বিংশতিং তথা। লীপদং কক্ষণতোথং চিরজং কুলজং ওখা। নাড়ীরণং রণং ছোরং শুদাময়ভগন্দরম। অমেবাতং সর্ব্ধেপং ভিত্তান্তশ্বং গলগহম। উদরং কর্ণনাসাক্ষি-মুখ্যবরসামের চ। मर्क्तभूतः विकासूतः यौगाः वस्तिक्षनः। क मित्रीनमयकाषः श्वीतारो र्यकावकारः ॥ विकार প্রভারেকৈকাং খাদেরিতাং यथावनम्। অনুপানমিত প্রোক্তং মংস্পিষ্টং পরো দৃধি। বারিভক্তস্থরাসীধু-দেবনাৎ কামরূপধৃক্। ব্ৰদ্ধোচপি ভক্ষণস্পদ্ধী ন চ শুক্ৰস্বয়ো **ভবে**ৎ ॥ ন চ নিক্লম শৈথিলাং ন কেশানাঞ্চ প্ৰতা। নিতাং গচ্ছেচ্ছতং স্ত্রীণাণ মন্তবারণবিক্রমঃ॥ चिनकरग्राम्बे पृष्टिकांद्रएउ शिष्टिकख्या । (शक्तः श्रामात्रारकाश्यः नात्रापन महाचना ॥ রসো লক্ষীবিলাসোচয়ং ব্যস্তদেবেন নিশ্মিতঃ। व्यक्तांत्रांत्रमा जनते सक्ता की वृत्ता है।

অভ্র ৮ তোলা, গন্ধক ৪ তোলা, পারা ৪ তোলা, বন্ধ ২ তোলা, রূপা ১ তোলা, স্বর্ণমাক্ষিক ১ তোলা, তাম ॥• তোলা; কর্প্র,
কৈত্রী ও জায়ফল প্রত্যেক ৪ তোলা; বিদ্ধডুকবীজ, ধুত্রা বীজ প্রত্যেক ২ তোলা; স্বর্ণ১ ছোলা (পাঠান্তরে—মর্দ্ধ ছোলা) এই
সমুদায় (পানের রসে) মাজিয়া ২ রতি
প্রমাণ বটিকা করিবে। ইহা দেবন করিলে

বর্ণভাল শাণমানং নাগবলীজবৈদিনমিতি সারা-বলীধৃতঃ পাঠঃ।

সারিপাতিক অর, কুঠ ও প্রমেহ প্রভৃতি বিবিধ পীড়ার শাস্তি এবং বলবীর্যাদি বৃদ্ধি হয়। অমুপান—মাংসরস, হৃদ্ধ ও দুধি প্রভৃতি।

কার্শ্যহরলোহম্।

বে তপুনন বাদ ছী-বাজীগদা, এক এয়ে: ।
শতমূলীবলাযু জৈনে ভিলে । হিং প্রসাধিত মৃ ।
নিহন্তি নিয়তং কাশ্যমণি ভূকনমৈ: সহ ।
নাস্তানেন সমং লোহং সর্বানোগান্তকং মতম্ ।
দাপনং বলবর্ণ ধের বাদকোত্তমেত্রম্ ॥

খেত পুননবা, দস্তা, সশাসন্ধা, ত্রিকটু, ত্রিফলা, ত্রিমন, শতমূলী ও বেড়েলা দারা লোহকে পুট দিবে। দেই লোহ ভীমরাজের রস সহ সেবন করিলে কার্শনোশ এবং বল, ভাগ্নি ও বর্বের দীপ্তি হয়। ইহা রোগবিনাশক উত্তম ঔবধ ও রয়।

অমৃতার্ণবে: রদঃ।

প্রভন্ম চতুর্ভাগং লৌহভন্ম তথাইকম্।
আনভন্ম চ ষড় ভাগং পক্ষক চ পঞ্চমন্।
ভাবরেৎ ক্রিকলাকাবৈস্তংশর্কং ভ্রুইজর্টবিঃ।
শিল্পক্রিকট্রাকৈটি বিরেৎ সপ্তধা পৃষ্ক্।
সর্বাভ্রুকট্রাকৈটা গোলা প্রট্রিক্তিং পুরাইবৈঃ।
নিক্ষাক্রে স্থা খালেজ্বনমূত্রনিবারণম্।
ব্রক্ষায়ুং স্ভাচচতুর্গানে রসেংহ্রমূত্রিং।
কৌর্টক্স প্রাণি গুড়েন ভক্রেক্ত্য।

রদ্দিন্র ৪ ভাগ, লোই ভন্ম ৮ ভাগ, অভ্যন্ম ৬ ভাগ, গন্ধক ৫ ভাগ, ইহাদিগকে বিফলা, ভীমগ্রান্ধ, শঙ্গুনে, চিত্তা ও কট্কীর কাবে পৃথক ৭ বার ভাবনা দিয়া সকলের সমান শিপুণচূর্ণ ও পুরাতন গুড় মিশ্রত করিবে। মাত্রা—২ ভোলা। পীত-বিশ্টীপত্রের রস ও গুড় সহ এই অমৃতার্ণব সেবনে জরা ও মৃত্যু নিবারিত হয়।

মকরধ্বজে। রসায়নঃ।

স্বৰ্ণন্ত ভাগে) বঙ্গক মৌজিকং কাপ্তলোহকন্। জাতীকোৰফলে রূপ্যং কাংশুকং রুসসিন্দুরন্। প্রবালং কন্ধ্রী চন্দ্রমন্ত্রকভৈকভাগিকর।
বর্ণসিন্দ্রতো ভাগান্চহার: কল্লন্দের্থঃ ।
নাতঃ পরতর: শ্রেষ্ঠ: সর্ক্রোগনিস্পনঃ।
সর্ক্রোকহিতার্থার নিবেন পরিকার্তিতঃ ॥

স্বর্ণ ২ ভাগ; বঙ্গ, মুক্তা, কান্তলোহ, জায়কণ, জৈত্রী, রোপ্যা, কাংস্ত, রসদিন্দুব, প্রবাণ, কন্ত,রী, কর্প্বা ও অন্ত প্রত্যেক ১ ভাগ; স্বর্ণসিন্দুর ৪ ভাগ, এই সমস্ত একত্র করিয়া খলে মাড়িবে। রোগ সমস্ত নাশ করিতে ইহার ভুলা আর শ্রেষ্ঠ ঔষধ নাই।

न।लकर्थः त्रनः।

স্তকং গদ্ধকং লৌহং বিষং চিত্রকণলকন্।
বরাঙ্গনে কাম্পু-গ্রেছালানাগকেশনন্।
ত্রিকতারক ত্রিকলা শুলভার তবৈব চ।
এতানি সমন্তাগানি বিপ্তণো শুড় উচ্চতে।
সংমর্কা বটকং কুরা ভক্ষেচেপকে বিতম্।
কাসে খাসে ক্ষে গুলা প্রমেত্ বিষমজ্বে ।
হিকায়াং গ্রহণীদেশে শোপে পাঙ্ নৈরে তথা।
মৃত্রকুছ্কে মৃচ্গতে বাতরেগে চ দাক্ষণ।
নীলকটো রসো নাম একনা নির্মিতঃ পুরা।
অনুপানবিংশবেশ সর্করেগহরো ভবেং।

পারদ, গন্ধক, লৌগ, বিষ, চিতা, পদ্মকান্ত্র,
দাক্ষ্টিনি, রেণ্কা, মৃতা, পিপুনমূল, এলাইচ,
নাগকেশর, ত্রিকট্ট, ত্রিফলা, ত্রিমদ, ত্রিফলা
ও তাত্রভন্ম এই সকল দ্রব্য সমভাগ, বিগুল
গুড়, ইহাদিগকে একত্র মর্দ্দন করিয়া ছোলার
ক্রায় বটী প্রস্তুত করিবে। এই ঔষধ দেবনে
কাদ, শ্বাদ, ক্ষয়, গুলা, প্রমেহ ও মৃত্রক্রচ্ছু
প্রভৃতি নানা রোগ বিনষ্ট হয়।

महानीलकर्थः त्रमः।

পনৈকং নাগভন্মাথ ভাবরেৎ তিমিপিওত:।
তরাগং স্মৃতং বর্ণং তোলৈকং বাগি মিশ্ররেৎ ।
বিপলং ভন্মপ্তক্ত ত্রিপলং মৃত্যুক্তকম্।
ত্রিপলং লোহভন্মাথ সর্বান্সকত্র কার্য়েৎ ।
ভাবরেচ্চ পৃথক্ কন্তা ত্রন্ধা নিও ত্রিকা শমী।
মৃত্যী শতাবরী ভিন্না কোকিলাক্ত বীজকৈ: ।

মুখলী বৃদ্ধদারোহয়ির্ক্তবৈরেভিভিনয়র:।
ততঃ সংচূর্ণয়েৎ সর্বাং তুলামেকাদশাভিধম্ ॥
বর'বাোযান্দবন্ধ্যেলা-জাতীফললবঙ্গ কম্ ।
পূজরেদ্ বৃষপুপ্পাইজুনীলকঠং মধেবন্ধ্ ।
বিশ্বস্থা ভক্ষেদক্ত মৃত্যুলয়মনুমারন্।
ক্ষমেকাদশবিধং এইগাং রক্তপিত্তকম্ ।
বিবিধান্ বাতজান্ রোগাংকডারিংশচ্চ পৈছিকান্।
হতি সর্বাময়ানেব কামিনীনাং শতং জয়েৎ ॥
একবিংশতিরাআদ্ধাং প্রিহ'য়াং তাজেদিহ।
ব্যেপইহ'রচেটো হি কন্দপ্সদূশে নর: ॥
বেধারী বলবান্ আজো বহরান্ধা ভানপারাজ্যাঃ।
পূজাবিনী তথা নারী নৈব পূজং প্রক্রতে।
অসা প্রস্য মাহাস্মাং বেভি শুক্রাপর: ॥

দীপাভন্ম তিমিম্থপ্তর পিতে ভাবিত করিয়া ভাহার দহিত ১ তোল৷ জারিত স্ব মিশ্রিত করিবে। রসসিন্দুর ২ পল, অভ ৩ পল, লে'হ ৩ পল, এই সকল দ্রবাকে একতা করিয়া নিম্লখিত দ্বা গুলির রুসে ভাবনা मिट्ट। यथां—श्रृहकुमात्री, अभी, निमिन्ता, শমী, মুণ্ডিরী (মুড্মুড়ে), শতমূলী, গুলঞা, কুলেখাড়ার বীজ, ভালমূলী, বীজতাড়ক ও চিতা। পরে ভিকলা, ভিকটু, মুতা, চিতা, धनाइंड, कांब्रक्न ७ नवन थहं :) ज जवारक সমভাগে চুৰ্ণ কৰিয়া উক্ত দ্ব্যের সহিত মি. প্রত ক,রবে। বাদকপুষ্প ধারা মহাদেবের পূজা করিয়া এই ঔষধ ২ র,ত পরিমাণে সেধন কারবে। ইহাতে একাদশবিধ ক্ষয়, গ্রহণী, রক্তপিত্র এবং সর্ব্বপ্রকার বাতিক ও পৈতিক রোগ বিনষ্ট হয়। দেড় সপ্তাহ পর্যান্ত অপশ্য সমস্ত ভাগি করিবে, পরে যথেচ্ছ আহার ও বিহারাদি করিবে। এইরূপে মানব মেধাবী, বলবান, প্রাক্ত, বহুবাণা ও ভীমপংক্রম হয় এবং নারী পুত্রবর্তা হইয়া পাকে।

তাম্তসারলোহম্। অথ সাধ্যসাধনপরিমাণম্। নাগার্জনো মুখীক্রং শশাস থলোহশান্ত্রমভগ্যম্। তস্যাণস্য শ্বরে ব্যমেত্রিশাল্পরৈজ্ঞ মিঃ। মেৰে মুনিঃ স্বতন্ত্ৰস্থাপাকং ন প্ৰপঞ্চাদৰ্কাক্ ।
স্বৰহ প্ৰয়োগদোবাদূৰ্ভ্বক প্ৰভ্ৰৱোদশকাক ॥
তত্ৰান্ত্ৰসি পাচনীয়ে পঞ্চপলাদৌ ভ্ৰয়োদশপলকান্তে ।
লৌহাৰ ভিন্তপা ভিজ্ঞলা প্ৰাহ্মা বড় ভিঃ পলৈৱধিকা ॥
মানপপুটনন্থালীপাকান্ত্ৰিকলৈক ভাগসম্পান্তাঃ ।
ভিজ্ঞলায়া ভাগৰিতীয়ং প্ৰহণীয়ং লৌহপাকাৰ্থ্য ॥
সৰ্বভ্ৰায়:পুটনান্তাৰ্থিকাংশে শানাবসংখ্যাত্ৰ্য ।
প্ৰতিপলমেৰ ভিন্তণং পাজঃ কাল ৰ্থমাদেয়ম্ ॥
সপ্তপলালো ভাগে পঞ্চলশান্তেই স্থাং শানাবিদ্যা
ভালেইমো ভাগা প্ৰদ্ৰান্ত্ৰ স্থান কৰিবান্য ॥
ভত্ৰাইমো ভাগা শেষ, কাল্ভ বড়াই কৰিবান্য ॥
ভত্ৰাইমো ভাগা শেষ, কাল্ভ বড়াই ভাগাঃ ।
তেন হি মানপণ্টভ্ৰোপিকা ভ্ৰিমান্তি ॥

মুনীক্ত নাগাৰ্জন অতি জটিল পে:২-শাস্ত্রের যে উপদেশ দিয়াছেন, স্মরণ রাখিবার জ্ঞা তাহাই বিশদরূপে বর্ণন করিতেছি। নাগার্জ্ব মুনি নিজ তল্পে পাচে পলের নান এবং তের পলের অধিক লৌহ পাকের বিধান করেন নাই। তন্মগ্রে পার পদ হইতে তের পল পর্যায় যত লৌহ পাক করিতে হইবে, ভাষার (কৌংহর) ত্রিগুণ এবং অভি-রিক্ত ছয় পল ভিফলা গ্রহণ করিবে। ষ্টপ্ৰাধিক ত্ৰিগুণিত ত্ৰিফ্লা ভিন ভাগ করিয়া মারণস্থালীপাক-পুটপাকের জন্ম এক ভাগ রাখিবে (যথ:—৫ পল ক্রেই পাকার্থ স্থাপিত এক তৃতীগংশ ত্রিফলার পরিমাণ ৭ পল; ৬ পণ লৌহ পাকার্থ ভাপিত এক তৃতীয়াংশ ত্রিফলার পরিমাণ্ড পল ইত্যাদি।) উক্ত এক তৃতীয়াংশ ত্রিফলাপাকের প্রতিপলে তিন সের করিয়া জল দিবে: কিন্তু ৭ পল হইতে পঞ্জুৰ পল প্ৰায় প্ৰতি পলে উক্ত তিন সের ছ।ড়া আরও তিন সের হইতে ১১ সের পর্যান্ত অধিক জল দিতে ত্রুবে। কাথ এক্তেড করিয়া অইম ভাগ অবশিষ্ট রাণিবে। উক্ত অইভাগাবশিষ্ট কাথ থারা লৌহের মারণাদি কার্য্য করিবে। *

* পত্রী—লোহ ৫ পল, মারণাদিকপ্রত্মার্থ স্থাপিও এক তৃতীরাংশ ত্রিকলা ৭ পল, জল ২১ দের, অধিক জল /০ সের; মোট ২৪ সের; শেব /০ সের। লোহ ৬ পল, একতৃতীরাংশ ত্রিকলা ৮ পল, জল ২৪ সের, পাকার্থে তু ত্রিফলাভাগবিতরে শরাবসংখ্যাতন্।
প্রতিপলমপুনমং স্থাদধিকং হাভ্যাং শরাবাভ্যান্॥
তত্র চতুর্থো ভাগঃ শেবো নিপুলৈঃ প্রয়ন্তবা গ্রাহাঃ।
অয়সং পাক র্যহাৎ স চ সর্কাশাৎ প্রধানতমঃ॥
পাকার্থনশ্বনারে পঞ্চপলাদৌ ত্রোদশপলান্তে।
তুর্ধশরাব্ধিতয়ং পাদৈরেকাদিকৈর্ধিকম॥

ত্রিফলা তিন ভাগ করিয়া এক ভাগ ছারা মারণ পুটন ও স্থালীপাক করিতে বলা হইয়াছে এবং হুই ভাগ প্রধান পাকার্থ রাখিতে বলা হইয়াছে। প্ৰধান পাকাৰ্থ স্থাপত উক্ত ছই ভাগ ত্রিফলার কাথ প্রস্তুত করিবার জন্ম প্রতি পলে /১ সের জল দিবে, কিন্তু মোটের উপর ৴২ দের অধিক জল দিবে, চতুর্থ ভাগ অবশিষ্ট রাখিবে। লৌহের পাকার্থ ইহাই প্রধান কাপ (মুগা—পাচ পল লোহের প্রধান পাকার্থ স্থাপত ত্রিফলা এই ভাগের পরিমাণ ১৪ পর, অল ১৪ সের, আধক ৴২ শের, মোট ১৬ সের, শেষ /৪ সের ইত্যাদি)। এই প্রধান পাক নিম্পান্তর জন্ম যেমন লৌহে ার্ফলার কাথ দিবার বিধি আছে, তেমনি ১% দ্বার নিয়মও বলা হইতেছে। পাঁচ পল **২চতে তের পল প্যান্ত লোহের পা**ৰাৰ্থ প্রাত পলে /২ সের এবং যথাক্রমে এক পোয়া করিয়া व्याधक मिर्टे । , यथा-- त्वोह ६ भन, इस /२.• পোয়া। লোহ ৬ পল, হগ্ম ৴২॥ । সের। লোহ ৭ পল, হ্রা ২৮০ ইত্যাদি)।

অধিক /৪ সের, মোট ২৮ সের, শেব /৩।। সের, লৌহ ৭ পল, ত্রিফলা ৯ পল, জল ২৭ সের, অধিক /৫ সের, মোট ৩২ সের, শেব /৪ সের। লৌহ ৮ পল, ত্রিফলা ১০ পল, জল ৩০ সের, মোট ৩৬ সের, শেব /৪।। লৌহ ৯ পল, ত্রিফলা ১১ পল, জল ৩৩ সের, অধিক /৭ সের, মোট ৪০ সের, শেব /৫।। লৌহ ১০ পল, ত্রিফলা ১২ পল, জল ৩৩ সের, অধিক /০ সের, মোট ৪৪ সের, শেব /৫।।। সের। লৌহ ১১ পল, ত্রিফলা ১০ পল, জল ৩৯ সের, অধিক জল /৯ সের, মোট ৪৮ সের, শেব /৫।। সের। লৌহ ১২ পল, ত্রিফলা ১৪ পল, জল ৪২ সের, অধিক ১০ সের, মোট ৫২ সের, শেব /৬।।। সের। লৌহ ১০ পল, জল ৪২ সের, আধক ১০ সের, মোট ৫২ সের, শেব /৬।। সের। লৌহ ১০ পল, ত্রিফলা ১৫ পল, জল ৪২ সের, অধিক ১০ সের, মোট ৫৬ সের, লেব /৭ সের।

পঞ্চপলাদিমাত্রা তদভাবে তদত্মারতো গ্রাহ্য। চতুরাদিকমেকান্তং শক্তাব্ধিকং ত্রোদশকাৎ ॥

भक्ष भन इटेंटि **ब्रा**मान भन भर्गास लोह পাক করিবার এই সাধারণ বিধি। কিন্ত যদি প্রয়োজন হয়, তাহা হইলে পাঁচ পলের নান (অর্থাৎ এক পল হইতে চারি পল পর্যাস্ক) এবং ত্রয়োদশ পলের অধিক লৌহও পাক করিতে পারা যায়। (মথা—লৌহ > পল, दिश्ना ७ भन, बन / । (मत्र, अधिक /) (मत्र, মোট ১০ সের, শেষ /১। পোয়া। সৌহ ২ পল, ত্রিফলা ৪ পল, জল ১২ সের, অধিক দেছ দের মোট ১৩॥• দের শেষ ১॥৴• এ**কসে**র নয় ছটাক। লৌহ ৩ পল, ত্রিফলা ৫ পল, জল ১৫ সের, অধিক /২ সের, মোট ১৭ সের, শেষ /২০/ • ছই সের অর্দ্ধ পোয়া। লৌহ 8 পল. ত্রিফলা ৬ পল, জল ১৮ সের, অধিক /২॥• সের, মোট ২০**॥০ সাডে কুডি সের, শে**ষ ুখা/• ছই সের নয় ছটাক।) ইহাদের প্রধান পাক পূর্ব্বোক্ত বিধানে অর্থাৎ লৌহ > পল, विक्ना ७ थन, जन /७ (मत्र, अधिक /२ (मत्र, মোট 🕒 সের, শেষ 🖊 সের ইত্যাদি। 🛭 🕿 🕏 🗀 পাকের নিয়ম—এক পল লোহে হগ্ম /১.• পোৱা, হুই পলে 🗸 ॥• সের ইত্যাদি। আর ব্যাদেশ পলেব অবিক অর্থাৎ চতুর্দশ পল হইতে সাধারণ বিধি অমুসারে (পঞ্চপল হইতে ত্রয়োদণ পল পর্যান্ত পাকার্থ যে বিধি উক্ত হইয়াছে, তদম্বারে) পাক করিবে।

ত্রিকলাতিকটুক চিত্রককা গুলামক বিড় কচুণানি। জাতীকলঙা তাকোবৈশাককো ললকানান্। দিতকুক জীবনোর পি চুণান্তর সামানি হয়:। ত্রিকলাতিকটুবিড়কা নিয়তা অতে বথা প্রকৃতি ॥ কালায়দদোবহুতে জাতীকলাদেল বকাতত। কেপপ্রাপ্তানুর পং সর্বভোগত চেকাতৈঃ। কাল্তনামকমেকং নিংশেবং দোবমপহরতারনঃ। বিগুণাতিক লচভুক পমাজাং প্রাহ্ম ববা প্রকৃতি। বাদি ভেবজভুরবং জোকস্বং বা তথাপু চুণানান্। অরুমা সামাং সংখ্যাভুরোহজকে ভ্রোহলা। এবং ধাতুকুমারাং তৎ ক্রিতৌবধত বাবেন। সর্বত্রব বিধেরত জনক্ষিকট্যবংক্তাহংঃ।

অমুসারে লৌহ পাক বিধি করিয়া অবতরণ পূর্বকে পশ্চাল্লিখিত জব্য সক-লের চূর্ণ প্রক্ষেপ দিবে। প্রক্ষেপ্য দ্রব্য যথা— ত্রিফলা, ত্রিকটু, চিতা, কান্তকামক (মুগ্র বিশেষ), বিভঙ্গ, জায়ফল, জৈত্ৰী, এলাইচ, करकान, नवन, भागाजीता, कानजीता, এই मकलात भिलि इर्व (लोट्ड मभान पिट । ইহাদের মধ্যে ত্রিফলা ত্রিকট্ট ও বিভূঙ্গ অবশ্র প্রকেপ্য। অক্তাগ্র দ্রব্যের 59 বাতাদি প্রকৃতি বিবেচনা করিয়া প্রক্ষেপ দেওয়া যাইতে পারে। ত্রিফলা, ত্রিকট ও বিডক্স কাল-লোহের দোষ নাণ করে। काश्यक, देक्की, अलाहिंह, करकाल ७ नवरत्रत मार्था मकन ज्या छनि পाইलে मकन ज्यादावह श्राक्रिश मिरव: यनि कान खेवा शां उद्या ना যায়, তবে তৎপরিবর্তে ল্রদ্রবা গুলিরই কোন একটির বা সকলগুলির চুর্ণ (লোহের সমান) প্রকেপ দিবে। এক কান্তকামকই লৌহের সমস্ত দোষ নই করিয়া থাকে। পাকার্থ—বাতপ্রকৃতিতে লৌহের চতু ও ণ ঘত, পিত্রপ্রকৃতিতে তিন গুণ এবং ক্লপ্রকৃতিতে প্রিগুণ মুক্ত দিবে। প্রকেপা ডবোর মধ্যে সমস্ত গুলই পাওয়া ঘাটক, বা কতকগুলিই পাওয়া যাউক, মোট চূর্ণ লোহের সমান হওয়া উচিত। রোগির ধাতু অনুদারে উক্ত প্রকেপ্য ঔষধগুলির মধ্যে যাহা অমুপ্রোগী, তাহা দিবে না : পক্ষান্তরে-মাহা উপযোগী, তাহা অনুক্ত হইলেও প্রক্রেপ দিতে পার। যায়।

তি সাধা-সাধন-পরিমাণ-বিধিঃ।)

অথ লোহমারণ বিধিঃ।

কান্তাদিনোহমারণবিধানসর্বব্যুচ্যতে তাবং।

যক্ত কৃতে তল্লোহং পক্তব্যং তক্ত শুক্তদিবনে ।

সন্দলারকরাজিতনতভূজাগে শিবং সমজ্যর্চ্য।
বৈদিকবিধিনা বহিং নিধার হয়কটান্তর ॥

শ্বাৎ সিধাতি সর্বাং শ্বোরজন্মসিকরে কিম্পি চ।

শক্তাস্ক্রপং দ্যোগ বিধার সজ্যেবিণে গুণিনে ॥

मखाबा कर्षकातः अमानशृशानिमानम्यादिः। আদৌ তদশ্মসারং নির্ম্মলমেকান্ততঃ কুর্যাৎ॥ एक्य क्ठांत्रिक्विज्ञिज्ञिक्नाशितिकविकान्त्रिमःशादेतः। করিকর্ণচ্ছদমূলশতাবরীকেশরাজাখ্যৈ:॥ শালিক মূলকাশীমূলপ্রাবৃজ্জ ভুক্সরাজৈশ্চ। কি**ন্ত**া দম্মব্যং তদদপ্তক্রিয়লোহকারেল ॥ চিরঙ্গলভাবিতনির্মলশালাঙ্গারেণ পরিত আছোতা। কুশলাখাপিতভন্তানবরতমুক্তেন প্রনেন॥ বহুৰ্বাহ্মভালা বোদ্ধব্যা জাতু নৈব কুঞ্চিকয়া। মূলবণসলিলভাঞা কিন্তু স্বচ্ছাস্পংপুত্রা॥ দ্রব্যান্তরসংযোগাৎ স্বাং শক্তিং ভেবজানি মুঞ্জি। মলধূলীমৎ সর্ববং সর্বব্য বিবর্জ্জয়েৎ ভশ্ম'ৎ ॥ সন্দংশেন গুহার। তঃ প্রজালিতা গ্রিমধামুপনীয়। গলতি যথায়থমগ্রে তথৈব মুছ বর্দ্ধল্লেপুণঃ। তলনিহিতো দ্বমুগাকুললয়ং ত্রিফলাঞ্জে বিনিক্ষিপ্য। निर्दर्भ भारतम्बर (नवर जिक्नलाच्च तत्कक्त ॥ যনৌহং ন মৃতং তৎ পুনরপি পক্তবামৃত্তমার্গে। যন্ত্র মূতং তথাপি ডৎ তাক্তবামলৌহমেব ডৎ॥ তদত্র খনলৌহপাত্রে কালায়সমূলারেণ সকুণা। দ্বা বহুণ: সলিলং প্রকাল্যাকারমুদ্ধুতা 🛭 ভদয়: কেবলময়ে। গুঞ্চীকুত্যাথবাতপে পশ্চাৎ। (लोइनिनायाः भिरमानिभएउ२म्बनि वा उम्भारको ॥

অতঃপর কাস্তাদি লৌহের মারণবিধি বলা যাহার জন্ম পৌহ পাক করা যা**ই**তেছে। হইবে. তাহার রাশি অন্মনারে গুভদ্নি হির করিয়া লৌহের মারশযোগ্য স্থান, মৃত্তি গা ও অঞ্গারচুর্ণ একতা মিশ্রিত করত তন্ধারা লিপ্ত করিবে। পরে শিবদাতা শিবকে করিয়া বৈদিক বিধানামূদারে আগ্ন পুৰ্বক আছতি দিবে। ধৰ্ম হইতে সৰ্ববিশ্বকার মকল হয়; **অত**এব ধর্মসিন্ধির জন্ম **গু**ণী সম্ভষ্ট ব্ৰাহ্মণকে ষ্থাশক্তি দান এবং কৰ্মকারকে প্রসাদস্বরূপ পুগাদি দানে সম্মানিত ও সম্ভষ্ট করিয়া প্রথমে একখণ্ড পরিষ্কৃত লৌহ পূর্ব্বোক্ত ভূভাগের এক প্রাম্ভে স্থাপন করিবে। পরে (महे लोह, कुर्शतिका (कानील कुड़्ल), ত্রিফলা, খেতাপরাজিতা, হাড়যোড়া, হস্তিকর্ণ পলাশের মূল, শতমূলী, কেশরাজ (কেশুর্ত্তে), শালিঞ্মূল, কাশমূন, পুননবা, ভীমরাজ এই मकन प्रतात करक थांनश कविया पृष्टेकचा কশ্মকার ধারা দগ্ধ করাইবে। (এক্ষণে কিরূপ

অধির আল দিতে হইবে, তাহা বলা হইতেছে) শালকাঠের করলা কিছুদিন (একপক্ষ বা একমাস) জলে রাখিরা পরিষ্কৃত্ত
করিয়া লইবে। পরে দেই সকল করলা লোহেব চতুদ্দিকে স্থাপন পূর্বক প্রজালিত
করিবে; এবং এই সময় প্রদক্ষ কর্মকার স্থির
ও অনল্য ভাবে ভক্তা-(জাঁতা)-গ্নাপিত
বায়ু ধারা জাল দিবে। মাটি, লবণ ও জলসুক্ত
কঞ্চি (বংশশাখা) ধারা কদাচ জাল দিবে
না; তবে পরিষ্কৃত জল ধারা বোত ও শুদ্দ
কঞ্চি ধারা জাল দিতে পারা যায়। জব্যান্তরে
সংযোগ থাকিলে ঔষ্য সকলের শক্তির হাস
হয়। অতএব মলধূলিযুক্ত দ্ব্য সকল সর্ব্বত্র

ভদনন্তর সাভাশী দাবা উক্ত লোহণতের অগ্রভাগ অগ্নিমধ্যে স্থাপন করিবে। যেখন গেমন গলিতে থাকিবে, তেমনি তেমনি একটু একট আগাইয়া দিবে, আর গলিত লৌহের তলদেশে একটি উদ্ধার্থ অন্তুশ স্থাপন করিয়া তাহা গ্রহণ করিবে এবং পুর্ক্ষনিয়মে প্রস্তুতী-কুত ত্রিফলাকাথে নির্বাপিত করিয়া অবশিষ্ট কাথ স্থালীপাক ও পুটপাকের জন্ম রাখিবে। এইরূপ প্রক্রিয়ায় লৌহ মৃত না হইলে তাথা পুনর্কার উক্ত বীতিতে মারণ করিবে। এইরূপ পুন ধার কারলেও যাদ মৃত না হয়, তাহা হইলে বুঝিবে যে, উহা লৌহ নহে। তদনন্তর দুঢ় লোহপাত্রে (হামান্দিস্তায়) লোহদও দারা মুণের স্থায় ছোট ছোট চূর্ণ করিয়া বারংবার জলে দৌত করিবে ও অপ্রার সকল ত্যাগ করিবে। পরে অ্যা বা স্থাতাপে শুক করিয়া লৌহনিন্মিত থলে বা শিলায় অভাবে ক্রম্য প্রস্তারে (যে প্রস্তারের গুড়া না উঠে) মদ্দন করিবে।

(হতি লোহনীরণবিধি ।)

অথ স্থালীপাকবিধিঃ।

অধ কৃষায়োভাঙে দ্ব। ত্রিফলামু শেষমন্ত্রনা। প্রথমং স্থালীপাকং দত্তাৎ তৎক্ষাৎ তদতু ॥ গজকর্ণত্রমূলশতাবসীভূককেশরাজরসৈঃ। প্রায়ৎ স্থালীপাকং কুর্যাৎ প্রভোক্ষেকং বা॥

অনস্তর লৌহভাণ্ডে (কড়ায় বা লোহার হাড়িতে) লোহ ও নির্দ্ধাপণাবশিষ্ট ত্রিফলার কাথ (নির্মাপণ দময়ে কাথ কোন প্রকারে যদি নষ্ট হয়, তবে পুর্দ্বোক্ত বিধি অনুসারে वर्शा (लोह (भन, जिल्ला १ भन, जन २8 সের, শেষ /০ সের কাথ করিয়া লইবে।) একত্র পাক করিবে। পাক করিতে করিতে কাপ নিঃশেষ হইলে, বুনিবে, পাক শেষ হইরাছে। সেই সময় হস্তিকর্ণ পলাণের মূল, প্রমূলী, ভুসরাজ ও কেন্দুর্ত্তে প্রত্যেকের বা नगरंखन खारन পুনঃ পাক এই স্বর্গের মাতা ত্রিফলাকাথের সমান এবং রদ শেষ হইলেই পাক হইয়াছে জানিবে। উক্ত হাস্তকর্ণ প্লাশাদি স্কলের মধ্যে যদ কাহারও স্বরস্ না যায়, তবে উক্ত ত্রিফলাকাথবিধি অন্তুদারে কাথ প্রস্তুত করিয়া লইবে।

(ইতি স্থালীপাকবিধি ৷ ৷

অথ পূটপাকবিধিঃ।

হত্তপ্রমাণবদনং থকাং ইত্তকণ তিসমন্বান্।
কৃষা কটাংসদৃশং তত্ত্ করামং ত্র্যক ক'ন্টক ।
অন্তথনতরমৃদ্ধং ত্রিরং পরিপুরা দংনম'যোজান্।
পশ্চান্যসন্ধ্র গুলিরং পরিপুরা দংনম'যোজান্।
পশ্চান্যসন্ধ্র গুলুং প্রেরং পরিপুরা দংনম'যোজান্।
কিলাপুত্সকেশরশতাবরীকলমাণসহজরসৈং।
কল্পুরা লৌহলাতে মার্দ্রে বা লৌহমার্দ্রণাক্রাভ্যান্য ॥
তুলাভিবং প্রেরণতে সান্দ্রে বা লৌহমার্দ্রণাক্রাভ্যান্য ॥
তুলাভিবং প্রেরণতে তারে বজ্জানিশা দুরোভিং।
কাঠকরীবত্বৈত্তং সংছাত্যাহনিশাং দুহেং প্রাক্তং॥
এবং নবভির্মীভিতেশজরাক্রং প্রেরণ্ড প্রেরান্য ।
প্রত্যাক্রেরন্ত্রীলিটভবা ত্রিচতুরান্ বারান্ ॥
প্রতিপূটনং তং পিংবাং স্থালীপাকং বিধায় তথৈব তং

ভাদৃশি দৃশদি ন শিংব্যাদ্বিগলম্জনা তু যুজ্যতে বত্ৰ ॥ তদরক্তৃৰ্ণং পিষ্টং যুষ্টং খনস্ক্ষৰাননি শ্লক্ষ্ম। যদি রজনা নদৃশং ভাৎ কেতক্যান্তর্হি তক্তম্ম। পুটনে স্থালীপাকেহধিকৃতপুরুষে স্বভাবন্ধগথিগমাৎ। ক্ষিত্যশি হেলমৌবধ্যুচিত্যুপাদেরমন্তদ্পি॥

এক হন্ত গভীর, এক হন্ত মধ্যভাগ এবং এক হস্ত পরিমিত মুখভাগ (মুখ বর্ত্তলাকার হইবে) এরপ একটি গর্ত্ত খনন করিবে। সেই গর্ভের অর্দ্ধভাগ বনঘুঁটে, তুব ও কাঠ ধারা উত্তমরূপে পূর্ণ করিয়া অগ্নি জালিয়া দিবে। পশ্চাৎ লৌহচুর্ণ দকল ত্রিফলার কাথ এবং ভূকরাজ, কেণ্ডর্তে, শতমূলী, ওল, ভেলার কাথ (অস্ফু ইইলে त्रक्राच्यान), হস্তিকর্ণপলাশমূল ও পুননবা ইহাদের স্বর্গে পক্ষের মন্ত তরল করিয়া লৌহ বা মুংপাত্রে স্থাপন করিবে এবং একখানি শরা বা লৌহ-পাত্র খারা ঢাকিয়া যোড়ের মুখ তুষ পাট্-ছিন্নবন্ত্র-মিশ্রিত কদম খারা আলিপ্ত করিবে। পরে উহা সেই গর্ত্তের মধ্যে স্থাপন করিয়া তহুপরি বনঘুঁটে ও তুষাদি দিয়া গর্ত্ত পূরণ করিবে এবং অগ্নিসংযোগ করিবে। এইরূপে দিবায় বা রাত্রিতে ৪ প্রহর কাল রাখিলেই পুটপাক হয়। ত্রিফলা (কাথ) ভূঙ্গরাজ প্রভৃতি নয়টি দ্রব্যের প্রত্যেকটির বা সমূদায়ের যথাবিধি প্রস্তুত সরস বা কাথ স্বারা এক এক বার পুট দিবে। এইরূপ এ৪ বার পুট দিতে হটবে। প্রত্যেক পুটের পরই পুর্বকথিত প্রকারে স্থালীপাক করিয়া পেষণ করিবে। কিন্তু এরূপ পাত্রে মর্দ্দন করিবে, যাহা হইতে ঘর্ষণহেতু রক্ষ: (গুড়া) উথিত না হয়। সেই লোহচুর্ণ পেষ্ণ করিয়া ঘন অথচ ক্ষ বল্লে ছাকিয়া লইবে। যদি কেতকীপুসের त्त्रपू मनुन इस, जाहा इटेल (मट्टे लोह छेंद-ক্লষ্ট বলিয়া জানিবে। চিকিৎসকের ইহা শ্বরণ রাখা উচিত যে, যে রোগির জ্বন্ত লৌহ পাক করিতে হইবে, তাহার প্রকৃতি এবং যোগের প্রতি দৃষ্টি রাখিরা স্থালীপাকার্থ ও পুটপাকার্থ ভেষ্ক তাব্য সকল গ্রহণ করিতে হইবে। স্থালীপাক-পূটপাকার্থ কথিত ভেষজ দ্রব্য সকলের মধ্যে সমস্ত বা আংশিক দ্রব্য যদি বোগ ও রোগির প্রকৃতির অনুপরোগী হয়, তবে তাহা ত্যাগ করিতে হইবে এবং কথিত না হইলেও যাহা উপযোগী বোধ হইবে, তাহা গ্রহণ করিবে।

(ইতি পুটপাকবিধিঃ)

অথ পাকবিধিঃ।

অভ্যন্তকশ্মবিধিভির্বালকুণাগ্রীয়বৃদ্ধিভিরলকাম। লৌহন্ত পাক্ষধনা নাগাৰ্জনশিষ্ট্যন্তিদ্ধাঃ॥ লৌহারকুটভামকটাহে দৃতমুন্ময়ে প্রণমা শিবম্। তদয়ঃ পচেদচপলঃ কাঞ্জেদনন বহিংনা মৃত্না। निकिया जिल्लाकनम्पिटः यर उपयुज्य इक्षकः। मकाला लोहमया। पन्ता लग्नर मन्रशाहा । মৃত্যুমধাথরভাবৈঃ পাক্ষিবিধেণ্য বক্ষাতে পুংসাম। পিত্তসমারণরেম্মপ্রকৃত্যনং মধামপ্র সমঃ॥ অভ্যক্তদ্বির্নীহং স্পত্রেশ্বনযোগি মৃত্ মধ্যম্। উজ্বিতদর্বি থরং পরিভাষম্ভে কেচিদাচাযারঃ ॥ অত্যে বিহীনদলী প্রলেপম:পৃৎকরাকৃতি এবতে। মৃত্র মধামর্কচুর্বং সিকভাপুজোপমস্ত পরম্ ॥ ত্ৰিবিংখাহপি পাক ঈদুক সৰ্কেষ্ঃ গুণকুদেৰ নত বিফলঃ। প্রকৃতিবিশেষে সংক্রী গুণদোশে জনয়তীতাল্পম । বিজ্ঞায় পাকমেবং দ্রাগবভাষ্য ক্ষিতেই ক্ষণান কিয়ত: । বিশাসা তত্ৰ লৌহে ব্ৰিফল'দেঃ প্ৰক্ৰিপেচ্চ প্ৰ 🛭 যদি কপুরপ্রাপ্তি চ্বতি ভতো বিগলিতে ভত্নদরে। চ্ণীকু তম্মুরূপং কিপের বা ন যদি ভরাভঃ ॥ পকং ভদশ্মসারং স্করিব্যুঙস্থিতাভাবিরুক্ষতে। গোদোহনাদিভাতে নৌহভাণ্ডাভাবে সতি স্থাপান্॥ যদি তু পরিম তিহেকোয় তমাক্ষেতাধিকং ততোংস্থামিন। ভাতে নিধায় রক্ষেদভাব্যপথেগো হনেন মহান ॥ অয়সি বিশ্বকীভূতে বেহপ্রিফলায়তেন সম্পান্ত:। এতৎ ততো গুণোভর্মিতামুনা বেহনীয়ং তৎ ॥ অভ্যন্তক্ষপ্রস্কুতের্ভক্ষণময়দোংমূনৈর শংসন্তি। কেবলমপীদমশিতং জনয়তায়দো গুণানু কিয়ত:॥ অপবা বক্তবাবিধিদংস্ক ১কুকাজকচুর্ণমাদায়। লোহচতুর্থান্ধনমধিতিচতুঃপঞ্জণভাগম ॥ প্রক্রিপায়: প্রাথ্য পচেহুভাভ্যাং ভবেদ্রজো যাবং। ভাবমানাতুম্মতেঃ স্যাৎ ত্রিফলাদিজবাপরিনাণ্য ॥ হদমাপ্যায়কমিদমতিপিওকুদিদমেব কাস্তিবলঞ্চনন্য। স্তভ্ৰাতি ভূটকুণো প্ৰমধিকাধিকমাত্ৰরা কিপ্তম্।

মুনীন্দ্ৰ নাগাৰ্জ্জন কথিত এবং বহদৰ্শী, কৃতকর্মা, স্থাবৃদ্ধি মানবগণের ও অগম্য, লৌহ-পাকবিধি বালতেভি। শিবকে প্রণাম করিয়া লোহ পিত্তল বা ভাষ্ম নির্মিত অথবা দচ মুনায় পাত্রে কাষ্টের মৃত্র অগ্নি খারা উক্ত পুটিত লৌহ স্বিরভাবে পাক করিবে। প্রথমে পূর্ব্বপরি-মিত ঘত সহলোহ আলোভিত করিয়া যথা-পরিমিত হগ্ধ ও ত্রিফলাকাথ দিবে এবং লোহ-দাবর্বী (হাতা) দারা নাড়িতে থাকিবে। পাত্রে ঔষণ লাগিয়া গেলে তাহা হাতা দিয়া উঠাইয়া লইবে। মৃত, মধ্য ও খরত্ব ভেদে লীহের শেস পাক তিন প্রকার। মৃত পাক বায়ব, মধ্য পাক পিতের এবং খরপাক কফের পক্ষে হিতকর। অপিচ, ন্দাপাক পকেই উপযোগী। আচার্যাগণ ণাত্র বলেন—যে লোহ হাতাতে কদমের লাগিয়া থাকে, তাহা মৃত্পাক, যাহা কথন হাতায় লাগে, কখনও বা লাগে না, তাহা মধ্য-পাক; আর যাহা একেবারেই হাতায় লাগে না, তাহা খরপাক। মতান্তরে—যে লৌহ দব্বীপ্রলেপ ত্যাগ করে এবং ইছর মাটির মত হয়, তাহ: মৃত্পাক , অর্দ্ধ চূর্ণ, অন্ধ ইত্র-মাটির সদৃশ হইলে মধ্যপাক এবং বালুকা-রাশির ভায় হইলে খরপাক হয়। যাহা হউক, এই ত্রিণ পাকই গুণকর, কখনও বিফল হয় না। প্রকৃতিভেদে অতি অৱই তারতমা হয়। এইরপে পাক সম্পন্ন করিয়া শাঘ ভূমিতলে নামাইবে। এবং কিছুক্ষণ পরে অর্থাৎ ঈষত্বফাবস্থায় পুর্মপরিমিত ত্রিফলাদি চুর্ণ প্রক্ষেপ দিবে। যদি উৎকৃষ্ট কর্পুর পাওয়া যায়, তবে, লৌহ শীতল হটলে স্থানার্থ ও কান্তক্রামকের দোষহরণাথ উপযুক্ত-পরিমাণে তাহা মিশা-ইয়া লইবে। পাওয়ানা ঘাইলে গুণের কোন হানি হইবে না। এই প্ৰ লোহ • কান্তলোহ-নিশিত ভাতে

অভাবে পুৰাতন স্বতভাণ্ডে বা দুধি চুগ্ধাদির ভাতে রাখিবে। তাহা হইলে লৌহের ঘুত শুকাইবে না, স্বতরাং উহার রুক্ষতাও হইবে থদি ভাঁড় হইতে মৃত উচলিত হইয়া পড়িয়া বাইবার মত হয়, তবে সেই উচ্চলিত অধিক ঘুত অপর কোন ঘুতভাবিত ভাঙে াথিবে। পরে ইহা ঘারা উপকার হইতে পাবে। যদি লোহ শুষ্ক হইয়া যায়, ভাহা इटेल टेटा चाता सिध कतिरत। किछ यति স্বেহাভাবে লৌহ ক্লফ হয়, অথচ পাত্রোচ্চলিত পাওয়া না যায়, তবে ত্রিফলার কার্থ-কন্ধ ধারা অপর মত প্রস্তুত করিয়া ভদারা লৌহ স্নিগ্ধ করিবে। তবে, এই ত্রিফলা লে:হপাকোঞালত প্রশাস্ত । ইহা থারাই লৌহ স্বেহনীয়। **ক্**ফপ্রবান ধাত্র পক্ষে উক্ত পাত্রোচ্ছলিত মৃত সহ লোহের লেহন অভীব উপকারক। অধিক কি. কেবল মাত্র এই মতু সেবনেই. লোহদেবনের কতক ফল পাওয়া যায়।

অতঃপর লে'হ ও অত্র একত্র পাক করিবার বিধি বলা হইতেছে। অথবা শেষ কালে লোহের চতুর্থাংশ, অদ্বাংশ, সমান, দিগুল, ত্রিগুল, চতুগুল বা পঞ্চণ্ডল বক্ষামাণ বিধি অনুদারে সংস্কৃত অত্রচুণ মিশ্রিত করিয়া পূর্ববং পাক সমাধা করিবে। লোহ ও অত্র একত্র মিশ্রিত করিয়া মোট যত হইবে, ভাষা কেবল লোহ মনে করিয়া তংপরিমাণানুদারে যথাবিধি ত্রিফলাদির চূণ প্রক্ষেপ দিবে। এই ক্লপ মিলিত মিধা লোহ আপান্যন, পিভচ্ছি-নাশ্ব, কান্তিজনক ও বলবদ্ধক। ইহাতে ভ্ষা এবং ক্ষুণাজনিত বাধা নিবারিত হয়।

(হতি পাক্বি;বঃ।)

অথাভ্ৰক-বিধিঃ।

तृष्णञ्जमायकवश्रवश्चः। शादेककलाजकः तृषा । काश्रमात्रामृथनाक हुनैः मुद्रालन कुस्ती ॥ ভূমো দৃশদি চ পিষ্টং বাসংস্ক্ষাবকাশতলগলিতম্।
মভূকপর্শিকারাঃ প্রচুররসে স্থাপরেৎ ত্রিদিনন্ ।
উদ্ব্যু ভ্রেসান্থ পিংব্যাক্ষৈমভিকধান্তভক্ত ।
কক্ষোদান্তভামবচ্ছললেন প্রবঙ্গেন ।
মভূকপর্শিকারাঃ পূর্বরসেনের মোনকং কুয়াৎ ।
স্থালীপাকং পূটনকাইন্তরপি ভূকরাজাইন্তঃ ।
ভাড়াদিপত্রমধ্যে কুছা পিগুং নিধার ভন্তাগ্রো ।
ভাবকহের যাবনীলোংগ্রিদ্ শাতে স্থাচিরম্ ॥
নির্বাপরেচ্চ ছ্রেন কৃষ্ণং প্রক্ষান্য বারিগা ভদন্ ।
পিষ্ট্যা যুষ্ট্য বস্ত্রে চূর্বং নিশ্চক্রিকং কুয়াৎ ।

যে অভ্ৰ কুষ্ণবৰ্ণ এবং অভেকবপু: (অর্থাৎ ভেকের বর্ণের মত অত্রের কোন স্থান হরিত পীতাদি বৰ্ণাবশিষ্ট নহেi), তাহাকে বজ্ঞাত্ৰ এক একখান করিয়া স্তরগুলি খুলিয়া কাষ্টময় উদুখলে মুখল দার৷ (টে'কিভে) কুটিত করিবে। পদে শিলায় পুন: পেবণ করিয়া ঘন অথচ স্ঞা বস্তে এবং ঐ চুর্ণ মন্থকপণীর (থুল্কুড়ের) প্রচুর বদে তিন দিন ভিজাইয়া রাখিবে। উক্ত রস হইতে ব্সত্র উদ্ধৃত করিয়া হৈমস্তিক-ধান্ত-ভত্তের নিম্মল স্বচ্ছ অমু জল (কাঁজি) খারা যত্নপুর্ক নদন করত পুন্র্বার মঙ্ক-পণীর পূর্বারদ বারা মোদক (লাড়ুর মত) করিবে। ওম হইলে লৌংপাকবিধ অনুসারে পুর্বোক্ত ভূঙ্গরাজ কেশরাজানি দ্রব্য বারা স্থালীপাক ও পুটপাক করিবে। এইরূপে পুটাদি-শোষিত অভ্ৰপিও তা,ড্য়া (তেড়েতা) বা কেবুক (কেউ) পত্রের মধ্যে স্থাপিত করিয়া ভন্তান্থিতে (জীতা ধারা) ততক্ষণ দগ্ধ কারবে, যতক্ষণ অগ্নি নীলবৰ্ণ দৃষ্ট না হয়। দগ্ধ কর্ণানন্তর ওত্থে নির্কাপিত কবিয়া জল বারা ত্ত্ব প্রকালন করিবে। পরে পেষণ করিয়া বজ্ঞে ছাকিয়া উহা নিশ্চন্দ্রক করিয়া লইবে।

(इंडाजकनिधिः।)

অথ লৌহভক্ষণবিধিঃ।

সানাবিধকক্শাস্ত্যৈ পুষ্টো কাস্ত্যৈ শিবং সমজ্যক্তা। স্থবিশুদ্ধেহহনি পুণো তদম্ভমাদায় লৌহাপায় ॥ দশকুঞ্চলপরিমাণং শক্তিবয়োভেদমাকলয়া পুনঃ।
ইয়দধিকং তদধিকতরমিয়দেব ন মাতৃমোদকবৎ ॥
সমসস্থামলপাত্রে লৌহে লৌহেন মর্ক্রেম্ গাঢ়ম্।
দবা মধ্বসুলপং তদতু যুতং বোজয়েদধিকম্ ॥
বন্ধং গৃহাতি যথা মধ্বপুথবৃডেন প্রুমবিশিংবং।
ইদমিছ দৃষ্টোপকরণমেতদ্দৃষ্টস্ত মন্ত্রেণ বাহাছেন ॥
বিমর্দ্দো ভবতি ফড়স্তেন লোহবলরকা।
সনমকারেশ বলিভক্ষণময়সো ই মস্তেন ॥
ও অমৃতোভ্রায় বংহা। ও অমৃতে ই ফট্। ও
ননশভবক্রপণেয়ে মহামক্সেনাধিপতয়ে স্বরগুক্রবিদ্যানহাবায় ক'হা। ও অমৃতে হং ॥

নানাবিধ রোগের শাস্তি এবং দেহের পুষ্টি ও কান্তির জন্ম শুভদিনে শিবপূজা করিয়া লৌহরূপ অমৃত দেবন করিবে। সাণারণ মাত্রা—১০ ३।ত। কিন্তু বয়োবলাদি এতদশেকা অধিকতর 4 नुगन দেবন করা ঘাইতে পারে। মাভূমোদকবৎ সেবনের কোন বিশেষ নিয়ম নাই। সমতল মস্থ নিশ্মল লৌহপাত্রে উক্তবিধ লৌহভশ্ম রাখিয়া ভাহার অফুরূপ মধু এবং অপেকাক্সভ কিঞ্চিৎ অধিক মত দিয়া লৌহদণ্ড খাবা পুন:-পুনঃ এরূপভাবে মাড়িবে, যেন উক্ত লৌহ মধুর সহিত মিলিত হইয়া পক্ষের মত হয়। এইরূপে पृष्टे উপকরণ দকল বলা হইল; একণে অদৃষ্ট উপকরণ মন্ত্র সকল বর্ণন করিব। লৌহ মদন काल 'उं' इंड्रांहि 'खांहा' भग्नंष्ट, लोस्ट्र বলরকার্থ 'ওঁ' ইত্যাদি 'ফট্ পর্যান্ত, পূজার্থ 'ওঁ' ইত্যাদি 'স্বাহ্য' পৰ্য্যস্ত' এবং লৌহ সেবন কালে 'ওঁ' ইত্যাদি 'হুং' পর্যান্ত মূল্মন্ত পাঠ করিবে। জধ্ব তদমূতস'রঃ নারং বা কারমেবাফুপিবেং। ক'স্তক্রামকনমলং সঞ্চর্কা রসং পিনেদ্ দিনে নতু তৎ ॥ আচন্য তু ভাষুলং লাভে গ্ৰনারদ্ধিত্যুপ্যোজ্যয়। ৰাভুগেৰিটো নপোতিভাষী ৰাতিফিঁতভিটেৎ ॥ অত্যন্তবাত শীতা তপথানমাননেগরে।ধাদীন। জগ'চ্চ দিবানিদ্রামহিতকাকালভুক্তক ॥ বাভকুত: পিউকুত: সর্বান্ কটুয়ভিক্তকধায়কান্। ভৎকণবিনাশহেতুন মৈথুনকোপশ্রমান্ দুরে।।

এইক্সপে উক্ত 'অমৃতসার' (উক্তভাবে প্রস্তুত লৌংকে অমৃতসার কছে) নামক লৌহ সেবন করিয়া কিঞ্চিং নিশ্বল'জল বা

তথ্ব পান করিবে। অনস্তর লোহের দোষ-খোদাহীন কান্তকানক মূতা চৰ্বণ করিয়া তাহার রস পান কারবে, কিন্তু মৃতা পর শৃত-শীতল জল থাইবে না। তাহার বা হংসোদক খারা আচমন করিয়। কর্পুরের স্হত পান থাইবে। লোহদেবির অধিক ক্ষণ উপবেশন, আতভাষণ, অধিকক্ষণ দাড়ান, অত্যন্ত বায়ু আতপ ও শেত্যের সেবা, অখাদি-যান, স্নান, মলমুজাদির বেগধারণ, দিবানিজা, অহিত আহার, অকালভোজন, বাত ও পিত্র প্রকোপক আহার বিহার এবং কটু অম তিব্রু ও ক্ষার্বস অহিতক্র। লৌহ-দেবন কালে মৈথুন, কোপ ও পারশ্রম বিশেষরূপে ত্যাজ্য। অনিতং ওদর; পশ্চাৎ পত্তু ন বা পাটবং ছড়ুপ্রথতাম্। * আৰ্ত্তিৰতুৰ বালে কুজতি ভেকেৰামবাঞিকম্।

* পাটবস্তরপ্রভানিতি বা পাট:।

লৌহ সেবনান শ্বর মলন্বার দিয়া (অবিক সেবনে) ভাষা নিঃস্ত হউক বা না হউক, এবং ক্ষার উদ্রেক হউক বা নাই হউক, যদি শরীর আলস্থাদেরহিত অর্থাৎ স্বক্তন্স বোধ ২য় এবং অন্তর্কুজন হয়, ভাষা হইলে নিঃশঙ্ক-চিত্তে পৌহ সেবন কারবে।

অধনং পীরা পালারং নিশদদিধ্বারিরন্।
য়তসংপ্র্তমধীরাঝাংসৈবৈংকনৈ প্রায়:
উত্তমন্বরভূচরবিধিরমাংসং তপাজনৈশাদিকশ্।
অন্তদ্পি জলচরাগাং পৃথ্রোমাপেক্ষা জ্যায়: ।
মাংসালাভে সংক্তা অদোবলা: স্থুলস্ক্রণা প্রায়া: ।
মাংসালাভে সংক্তা অদোবলা: স্থুলস্ক্রণা প্রায়া: ।
মাক্রেরোহিতশক্লা দ্ধান্ত পললাঝনাত, নানা: ॥
শ্রুণাটককলকলেককললাকলতালনারিকেলাদ।
অক্তদিপি বচ্চ ব্রাং মধুরং পনসাধিকং জ্যায়: ॥
কেবুক্তাড়ককরীরান্ বার্তাকুপটোলফলদলশমটান্।
ম্ক্রম্প্রক্রমান্ শংসভি নিরামিবেবেতান্॥
শাকং প্রহেরমাথলং জ্যোকং ক্রেরে তু বান্তকং দ্তাৎ।
বিহিতনিবিদ্ধাদ্যপ্রধাসকোটিস্থিতং বিস্তাৎ ॥

(অতঃপর লোহ-সেবির ভোগনবিধি বলা যাইতেছে) লোহ-দেবনানস্তর প্রথমে কাঞ্চং চুগ্ধ পান করিয়া গুল্র, পরস্পর অসংলগ্ধ, স্থাসন্ধ, সম্বৃত্ত, শাল্যায়, বেহলম (শৃত্তে যাহারা

উড়িয়া বেড়ায়) পক্ষিমাংসের সহিত ভোজন করিবে। বৈহঙ্গম পক্ষিমাংদ ব্যতীত উৎকুই অর্থাৎ বাল-স্থবির-ব্যাধিতাদি বর্জিত উধর-ভূচর (লাব, ভিত্তির, শণক প্রভৃতি) ও বিষ্কির (কুরুটাদি) মাংস এবং ছাগও হরিণাদির ভোজনীয়। য়ৎস্থ অপেকা প্রভৃতি জলচা পক্রি সাংস মাংব না পাইলে (বা মাংসাহার অভ্যস্ত না থাকিলে) মাগুর, রুট, শোল निक्षिम दृश्य ७ खनाविष्ठ মংশ্র ভোজন করা হাইতে পারে। প্রভৃতি মংস্থা দগ্ধ করিয়া ভেজন প্রায় নাংসভোজনেরই ফল হয়। মংশ্র দকল গুণে মাংস অপেকা অতি অৱই পानिकन, (कड़त, कन्नी, जान, नान २४। নারিকেল এবং আম, কাটাল প্রভৃতি যে সকল দ্ব্যমধুররস ও শুক্রবর্দ্ধক, তাহা হিতকর। নিরামিষ ব্যঞ্জনার্থ—্যকর্ক, ত|ড়কের (তা,ড্যাতের) অম্বর, বাৰ্তাক, পটোল, পল্তা, শমঠ এবং মুগ্র, নস্র ও ইকুরস প্রশস্ত। শাক্মাত্রই লৌহ সেবির পরিত্যাঞ্চা; তবে ক্লচিবৰ্জনাগ অল্পারমাণে বেতো খাইতে পারে। এইরূপে যে সকল দ্রবের বিধান ও নিষেধ করা হইল, তব্যতীত স্থান্ত দ্রবা দকল মধামরূপে অগাৎ অধিকও নহে. অল্লণ্ড নহে, এরপ ভাবে ভোজন করিবে।

তপ্তত্বদানুপানং প্রায়: সারয়তি বদ্ধকোষ্ঠস্য। অনুপীতমস্থ্ বহা কোমলশন্তনারিকেলক্ত । যক্ত চন তথা সরতি স্ববক্ষারং জলং পিবেৎ কোঞ্চম্। কোঞ্চং ত্রিফলাকাশ্যনাথং ক্ষারং ততোহপাধিকন্।

লোছ সেবন করিতে করিতে কোট বদ্ধ হইলে উফ দ্ব্য পানেই প্রায় দান্ত পরিদ্ধার হয়। কিংবা কোমলশস্থ নারিকেলের জল পান করিলেও কোটভাদ্ধ হয়। এইরূপ মৃত্ ক্রিয়ায় কোট পরিদার না হইলে ঈষ্ডফ জলে ধ্বক্ষার প্রক্ষেপ দিয়া তাহা সেবন করিবে। ঈষ্চ্ফ ত্রিফলাকাথে যবক্ষার প্রক্ষেপ দিয়া পান ক**িলে আরও সহজে বিরেচন হয়।**

ত্রীণি দিনানি সমং স্থাদক্তি চতুর্থে তু বর্ধায়েৎ ক্রমণাঃ।
যাবচ্চাষ্ট্রমমাবং ন বন্ধরেৎ পুন রিভোহপ্যধিকম্।
আদৌ রক্তিবিভাং বিভাগবৃদ্ধা তু রক্তিকাতিভাম্।
রক্তিপঞ্চনং পঞ্চকমত উর্জং বর্জায়েরিয়তম্।
বাংসরিককল্পক্তে দিনানি যাবন্তি বর্জিতং প্রথমন্।
ভাবন্তি বর্ধাশ্যে প্রতিলোমং ব্রাসায়েৎ তদয়ঃ॥
ভেষষ্টমাবকের প্রাতম যিকজারমনীয়াং।
সায়ক ভাবদক্তো মধ্যে মায়বহং শেবম্॥
এবং ভদম্ভমান্ত্র কান্তিং লভতে চির্লিরং দেইং
সপ্তাহতরমাত্রাৎ সর্কার্ডা হন্তি কিং বহুনা॥

লোহদেবনের প্রথম তিন দিন সমান মাত্রায় (২ রতি) সেবন করিবে । চতুর্থ দিবস হইতে ষ্ঠ দিবৰ প্র্যান্ত ২ রাত রাজ। এইরূপে ৩ দিন অন্তর এক এক রতি বাড়াইয়া আট মাধা পথ্যস্ত করিবে। প্রথম বৃদ্ধির। দিবস ২ রতি, বিতীয় বৃদ্ধির দিবস ৩ রতি: বুদ্ধি করিবে। ইহার পর পাঁচ পাঁচ রতি কার্যা বাদ্ধ করিবে। এक दश्मद कान . লৌহ দেবন কারতে হইলে প্রথমে দেরপ ক্রে মাত্র বাড়াইয়া ৮ মাবা পর্যান্ত করা বংসর শেষেও প্রতিলোমভাবে হইয়াছে, সেইরপ মাতার ক্মশঃ কমাইবে। যে সময় আট সাধা মাত্রায় লৌহ দেবন করা হইবে, সে সময় একবারে সমস্ত না খাইয়া প্রাত:কালে ৩ মাধা, সায়াকে ৩ মাধা এবং মংনাকে ২ মাধা সেবন করিবে। এইরূপে অমৃতসার লৌহ দেবন করিলে কান্তি এবং দেহের চিরুইস্থৈগ্ হয়। অধিক কি তিন সপ্তাহ মাত্র সেবনেই সর্বপ্রকার রোগ নিবারিত হয়।

আংগ্যাভিরিহ নবত্যা সপ্তবিধিনা বধবেদাংগাতম্। অনাভিবিপ্যায়স শংশুভানস্কালমুরীতম্ । মুনির্চিত-গাল্পারং গড়া সারং ৩৩ঃ সনুষ্তা। নিববন্ধ বাক্বানামুপকৃতয়ে কোহপি বটকশ্ম।॥

বন্ধ্বর্ণের উপকারার্থ কোন অজ্ঞাতনামা স্থ্যিক্ত ষট্কশ্মা (চিকেৎসক) কর্তৃক মুনীক্ত নাগার্জ্জুনকৃত শাস্ত্রের সার সঙ্গলন পুর্মক এই সাত প্রকার লোহ পাকবিধি নকা ইটি আর্য্যালোকে অভ্রাস্ত এবং অপ্রসম্ভভাবে মগাবং কথিত হইল।

(ইতি লৌঃ-ভক্ষণবিষিঃ ৷)

অথ শিলাজতু-রসায়নম্।

হেমালাঃ স্থাসন্তপ্তাঃ অবিধি গিরিধাতবঃ।
জহাতং মৃত্র মুৎস্লাচ্ছং যক্সলং তচ্ছিলাজতু ॥
অনম্পাকৰায়ক কটুপাকি শিলাজতু ।
নাত্যক্ষীতং ধাতু ভালতু গুলুন্ত সম্ভবঃ ॥
হেমোহৰ রক্তাৎ ত'মাদ বরং কৃষ্ণায়সাদিপি ।
মধুরক স্তিক্তক জনাপুপ্নিভক য়ং ॥
বিপাকে কটুতিকক তৎ ক্রেণ্ডা নিম্নন্ ।
রাজতং কটুকং বেতং সাত্র শীতং নিপাতে ॥
তামাম্বিণকভাভং তীক্ষোকং পচ্যতে কটু ।
মং তু গুণ্ডলুসকাশং তিক্তকং লবণায়িতন্ ॥
বিপাকে কটু শীতক্ষ সর্ক্রেছং তদায়সম্ ।
গোমুত্রগন্ধঃ সর্ক্রেষাং সর্ক্রেক্স হে যৌগকং ॥
রসায়নপ্রয়োগ্র পশ্চমন্ত বিশিষ্যতে ।
বধাক্রমং নাতপিতে দ্বেম্মপিতে কফে তিরু ।
নশেবেশ প্রশান্তক্তে মলা হেমাদিধাতু লাঃ ॥

স্বৰ্ণাদি পাৰ্ববিভা ধাতু দকল ক্ৰ্যাসম্ভাবে গ্লিত হটয়া ক্ৰত হয়। তাহা ইইতে লাক্ষা সদৃশ, মৃত্, মৃত্ৰ ও স্বচ্ছ যে মল পদাথ বহিৰ্গত হয়, ভাহাকে শিলাজত निनाजन - जनम, जक्यांत्र, कर्ऐित्शाक এ ११ নাত্যুক্ত ও নাতিশীতল। ইহা স্বৰ্ণ, রৌপা. ভাম ও লৌহ এই চারি গাড়ু হইতে উৎপন্ন उनार्या कुष्यामा इका उ শিলাজভুই হয়। যে শিলাজতু মধুর, ঈষং-তেক্তে, জ্বাপুপ্সদৃশ এবং কটু-ভিক্ত-বিপাক, ভাহা স্বৰ্ণানঃক্ৰন্ত। ব্লোপ্য-ানঃক্ৰত শিলাজ ডু--শ্বেতবর্ণ, মধুরাবপাক ও লাতবীয়া। তায়নিঃক্রত শিলাজতু ময়্বকণ্ঠাত, তীক্ষোঞ (মভান্তরে ।তভোঞ্চ) ও কচুবিপাক। আর ্য विश्वास्त्र अर्थन्त्रम्न, छिक्, न्रनायिङ, কটুৰিপাক ও শাতল, তাহা লৌহান:ক্ৰত।

লোহজ শিলাজতুই সর্বশ্রেষ্ঠ। চারি প্রকার
শিলাজতুই গোমূত্রগন্ধ এবং সর্বকার্য্যে বিহিত,
কিন্তু রসায়ন কার্য্যে লোহজাত শিলাজতুই
প্রশন্ত। স্বর্ণাদিকাত চারিপ্রকার শিলাজতু
যথাক্রমে বাতপিত্তে, শ্লেমপিত্তে, কফে ও
তিনোদে প্রশন্ত মর্থাৎ বাতপিত্তে স্বর্ণজাত,
শ্লেমপিত্তে রৌপ্যজাত, কফে তামজাত এবং
সন্নিপাতে লোহজাত শিলাজতু উৎক্ট।

লৌহকিটারতে বংকা বিধুনং দক্ষতেহস্কনি।
তুণাত্যথ্যে কৃতং সর্পমধো গলতি তত্ত্বং ॥
মলিনং যদ্ভবেং তচ্চ কালয়েং কেবলান্তমা।
লৌহপাত্তের বিধিনা উদ্ধীত্তক সংহরেং ॥
বাতণিত্তকক্ষিত্ত নিয়ুটহন্তং হভাবিতম্।
বাংগাংককং পরং যাতি সক্রেকেকশোহণি বা ॥
প্রকিপোক্ষ্তমাবলেং পুনন্তং প্রকিপেক্সমে।
কেংকে সপ্তাহসতেন বিধিনা তন্ত ভাবনা ॥
তুলাং গিরিজেন জলে চতুন্ত লৈ ভাবনৌষধং কাল্যম্।
তহা কাথে পালংলে প্তোক্ষে প্রকিপেক্সমে ভূরং ॥
প্রের্কাক্রেন বিধানেন লোইহন্ত্বীকৃতৈঃ সহ।
তহ পাতং প্রমা দ্ভাদ্ শির্মায়ুং হ্পান্তিম্ ॥
শ্রাবাধিপ্রপ্ননং দেইনাচ কিরং পর্ম্।
মেধান্তিকরং ধঞ্জং কারাশী তহ প্রয়ের্জ্যেং ॥

(শিশাজভুর পরীকাবিধি বলা হইতেছে) ্য শিলাজতু অগ্নিতে নিকেপ করিলে নিধুম ভাবে দগ্ধ হইয়া লেটিমদের আয় হয় এবং পরে তাহা জলে ফেলিলে প্রথমে ভাসিতে পাকে এবং ক্রমণঃ স্তার মত গলিয়া নীচে পড়িয়া যায়, ভাহাই উৎক্লষ্ট। (শিলাঞ্ভুর শোধনবিধি) মলিন শোলাজতু উন্ফোদকে প্রকালিত করিয়া যথাবিদি লৌহপাত্রে স্থাপন পূৰ্বক উদ্ধন্থ পদাৰ্থ সংগ্ৰহ কৰিবে। যথাবিধি মথাং প্রথমে শিলাজতু কেবল জলে ধুইয়া অ গুরু, অড়হর, নিম্পাতা, যব, গুল্প ও গ্ৰাম্বত ছারা ধূপ দিবে, পরে শুক্ষ ও চুর্ণ করিয়া লৌহপাত্রে স্থাপনপূর্বক দশমূলের কাথ, ত্রিফলার কাথ বা কেবলমাত্র উঞ্চোদক সহ গুলিয়া প্রথর রৌদ্রে রাখিবে। রৌদ্রে রাখিবার সময় উহার উপরি সরের ভায় যে

পদার্থ উঠিবে, তাহাই অন্ত একটি কাচপাত্তে রাথিবে। এইরপে শিলাঞ্জ বাতহু, পিত্তন্ন ও কফন্ন দ্রব্যের প্রভাকটির বা সকলের কাথে সপ্তাহকাল ভাবনা দিলে শিলাজতুর বীর্যা বন্ধিত হয় ৷ দিবার নিয়ম)—শিলাজতু ইবছষ্ট প্রক্রিষ্ঠ করিবে এবং কাথ শুদ্দ হইলে পুন: অপর কাথে নিকেপ করিবে। मित्र किश्लिटे **छा**तना (मृद्धाः ह्या। প্রস্তুত করিবার নিয়ম)--- শিলাজতর সমান কাথ্য দ্রবা চুগুর্গ জলে সিদ্ধ করিয়া চতুর্থাংশ থাকিতে নামাইয়া ছাকিয়া লইবে। উক্ষা-বস্থায় তাহাতে শিলাজতু প্রক্ষেপ ও তাহা আলোড়ন পূর্বক শুফ করিয়া লইবে এবং পনশ্চ উক্তরূপে প্রস্তুত কাপ তাহাতে দিবে। করিবে। এইরপ স্থাহ কাল প্রস্তুত শিলাজতু ও জারিত লোহচুর্ণ (শিলা-জতুর চতুর্থাংশ লৌহভন্ম) একতা হুল্প সহ সেবন করিলে সুথকর দীর্ঘজীবন লাভ হয়। ङवा-वाधिविनानक. ইহা দেহের উৎকর দ্যতাসম্পাদক, মেধা ও শ্বৃতিশক্তির বর্ত্তক এবং ধন্ত। এই উষধ সেবন কালে হগ্ধ-প্রধান আহার করিবে।

প্রয়োগ: সপ্তমপ্রাহান্তর্যালকক সপ্তক: ।
নিদিন্তান্ত্রিবিধন্তক্ষ পরো মধ্যোহবরন্তথা ।
মাত্রা পলন্ত্র্কাপলং ক্যাৎ কথন্ত কনীয়সা ॥
শিলাজতুপ্রয়োগেষ বিলাহীনি গুরুতি চ ।
বর্জ্ঞারে সন্বকালক কুলখান্ পরিবর্জ্জারে ॥
প্রাংসি শুক্তানি রসাঃ সমুবাস্তোরং সম্ত্রং বিবিধাঃ ক্ষায়াঃ ।
আলোডনার্থে গিনিজন্ত শন্তাস্তে তে প্রয়োজাঃ প্রস্মীকা ক্যান্ ॥
(চরকোক্তশিলাজতুবিধানং সোপকারমেতে ॥)

শিলাজতুর তিনপ্রকার সেবনকাল নির্দিষ্ট হইয়াছে। যথা—সাত সপ্তাহ উৎকৃষ্ট প্রয়োগ, ৩ সপ্তাহ মধ্যম প্রয়োগ এবং এক সপ্তাহ অধম প্রয়োগ। ইহার মোত্রাও ত্রিবিধ। যথা— ১ পল উত্তম মাত্রা, অর্দ্ধপল মধ্যম মাত্রা এবং এককর্ষ অধন মাত্রা। শিলাজভু-সেবনকালে বিদাহী ও শুকুপাক দ্রব্য কুলথকলার (বাগভ্টমতে কাকমাচী এবং কপোত পরি-ত্যাজ্য) ত্যাগ করিবে। ছগ্ধ, শুকু, মাংসরদ, যুষ, জল, গোমৃত্র এবং নানাবিধ ক্ষায় সহ শিলাজভু আলোড়িত করিয়া সেবন করিবে।

শিবাগুড়িকা।

কালে তু রবিতাপাঢ়ো কুঞ্চার জং শিলাজতুপ্রবর্ম। ত্রিফলারসসংযুক্তং ত্যহঞ্চ ওচং পুন: ওচ্ছ। प्रमम्बद्ध **७** ए हा। तस वनायां छथा शक्तां वस মধকরসে গোমুত্তে ত্যহং তাহং ভাবরেৎ ক্রমশঃ। একাহং ক্ষীরেণ তু তৎ পুনর্ভাবয়েচ্ছুক্ষ্। সপ্তাহং ভাব্যং স্থাৎ কাৰেনৈবাং বৰালাভম্॥ कारकारला) रव स्माप विषातीयूग्राः गठावती खाका। জিযুগ্র্বভবীরা মৃতিতিকা জীরকেহংশুমত্যে চ ॥ রাসাপুষরচিত্রকদন্তীভকণাকলিকচব্যাকা:। কটুকা শুলীপাঠে তানি পলাংশিকানি কায্যাণি॥ অব্জোণে সাধিতানাং রমেন পাদাংশিকেন ভাব্যানি। গিরিজকৈবং ভাবিতশুদ্ধত পলানি দশ ষ্ট চ । দ্বিপল্ঞ বিশ্বমাগ্ধিকাকটুককর্কটাথাম্রিচানাম্। p4: পলक विषार्थाखालीगथलानि চহারि । বোড়েশ সিতাপলানি চড়ারি যুত্দা নাক্ষিক্দা'ষ্টো। তিলতৈল্যা বিপলং চুর্ণাদ্ধপলানি পঞ্চানাম্॥ ত্বকাৰিপত্ৰত্ত নাগৈলানাং মিশ্ৰয়িষী তু। গিরিজন্য যোড়শপলৈও ড়িকা: কার্যান্ততোহক্ষদমা:। তাঃ শুদ্ধা নবকুন্তে জাতীপুস্পাধিবাসিতে স্থাপ্যা:। তাসামেকা কালে ভক্ষ্যা পেয়াপি বা সতত্ৰ । কীররসা দাড়িমরসাঃ হুরাসবং মধু চ শিশিরভোয়ানি। আলোড়নানি তাসামমুপানে বা প্রশক্তমে। बीर्त नय त्रभावाक्रनीनिय् श्रृक्ष्णकी मार। मुखाइर यावप्रडः श्रदः छर्तिर मर्करः मामान्यम् ॥ ভুক্তাপি ভক্ষিতেয়ং যদৃচ্ছয়া নাবহেন্তরং কিঞ্চিৎ। নিক্লপদ্রবা প্রযুক্তা স্থ্যারকৈ: কামিভিল্চৈব॥ সংবৎসরপ্রবৃক্তা হস্তোষা বাতশোণিতং প্রবলম্। বছবাৰিকম্পি গাঢ়ং বন্দ্ৰাণঞ্চাত্যবাতঞ্ । জরবোনিওক্রদোবলীহার্শ:পাওুগ্রহণীরোগান্। ব্ৰথবমিগু**স্থা**নসহিকাকাসাক্ষ্তিবাসান্ । ब्बतः विकः कुकंर वाखार मनः कत्रः लावम्। **इन्नामाणकारते वमनाकिनिरत्नागमान् गर्वरान् ॥** जानाह्मजीमातः मारुभातः कामनोधास्रहाः । বকুদর্ব দানি বিজ্ঞান্তগন্দরং রক্তপিত্তঞ্চ ।

অতিকার্শাসতিয়োল্য বেদমধ দ্লীপদ্ধ বিনিহন্তি।

জংখ্রীবিবং সমৌলং গরাণি বহুপ্রকারাণি ॥

ময়ৌবিবিযোগান্ বিপ্রযুক্তান্ ভৌতিকাংগুধা ভাবান্ ।
পাপালক্ষ্যো চেয়ং শময়েদ্ গুড়িকা শিবা নামা ॥

বলা ব্যা ধঞ্চা কান্তিয়শংশুপ্রজাকরী চেয়ন্ ।
দক্তামুগবলভভাং জয়ং বিবাদে মুক্ছা চ ॥

শুমান্ প্রকৃষ্টমেধাস্থতিবৃদ্ধিবলান্বিতোহভুলশরীরঃ ।
পুষ্ট্যোকোহতিবিমলেন্দ্রিয়তেকোবলসম্পদ্ধপতঃ ॥

বলীপলিতরোগরহিতো জীবেচ্ছরদাং শতদ্বরং পুরুষঃ ।

সংবৎসরপ্রয়োগাদ্ দ্বাভ্যাং শতানি চন্ধারি ।

সর্বাময়ন্তিৎ কণিতং মুনিগণভক্ষাৎ রসায়নরহস্যম্ ॥

সম্দ্রভ্যাস্তমন্থনোখঃ

বেদঃ শিলাভ্যো>মূত্রদ্নিরেঃ প্রাক্।
থা মন্দরস্যাস্থাত্বা হিতায়
ভাস্তঃ স শৈলেষু শিলাজরূপী ।
শিবাঞ্জিকৈতি রসায়নযুক্তং গিরীশেন গণপতয়ে।
শিববদনবিনিগতা বস্মায়ারা তক্মাচিছ্বা গুড়িকেতি ।
(শৈবসিদ্ধান্তোকা শিবাঞ্জিকেরম্।)

शीयकाल कुकलोहकांड > अन उरकृष्ट শিলাজতু ত্রিফলার কাথে (শিলাজতুর সমান ত্রিফলা, জল চতুগুণি, শেষ চতুর্থাংশ ; এই রূপে দশমূলাখিরও কাথ করিবে), দশমূলের ' कार्य, खनस्थत्र कार्य, (तर्फ्नात कार्य, भन्-তার কাথে, যষ্টিমধুর কাথে এবং গোমুত্রে তিন তিন দিন করিয়া ক্রমশঃ ভাবনা দিবে, অনস্তর এक मिवन ছध्ध ভोवन। मिटव। कारकानग्रामि अन यथा—कारकानी, कारकानी, रमना, महारमना, विनाती, कीत्रविनाती (ভক্ল ও ব্লফ ভূমিকুমাও), শতমূলী, কিন্-मिन, अकि, वृकि, अवक्रक, क्रोभाश्मी, भूखिती, শাদা জীরা, কালজীরা, শালপানি, চাকুলে, রাসা, প্ররমূল (অভাবে কুড়), চিতামূল, पञ्जीभून, शक्तिश्रुन, हे अयर, देह, भूजा, करें की, কাক্ডাশুক্ষী, আক্নাদি, এই স্কল দ্ৰব্য প্রত্যেক এক পল, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। এই কাথ ধারা এক সপ্তাহ পূর্ব্বোক্ত বোল পল শিলাজতু ভাবনা দিবে। (এ স্থলে বক্তব্য এক দিনে উক্ত মাত্রায় সমস্ত কাৰ্থ প্রস্তুত করিয়া রাখিলে সাত দিনে তাহা পচিয়: নষ্ট হইতে পারে, ডজ্জার বুদ্ধ বৈষ্ঠগণ প্রভাহ কাথ

প্রস্তুত করিবার বিধি দেন। যথা--মিলিত कांट्कालां नि ८ भन (श्राट्याक > गांवा २ রতি), জল /৯ সের ১পল ৯ মাবা ১ রতি. শেষ /২ সের ১ কর্ষ ২ মাধা। প্রভাহ কাথ প্রস্তুত করিয়া ভাবনা দিবে।) এইরূপে ভাবিত ও শুর শিলাজত ১৬ পল, শুঠ পিপুল, কটুকী, কাঁক্ড়াশুলী ও মরিচ মিলিত ২ পল, (বাগ্ভটের মতে শুঠ প্রভৃতি প্রত্যেক ১৬ তোলা), ভূমিকুয়াও চুর্ণ ১ পল, তালীশ-পত हुर्व 8 भन, हिनि ১७ भन, यु 8 भन, मधु ৮ পन, जिनदेखन २ । भन: वः नाताहन. তেজপত্র, দাকুচিনি, নাগেশ্বর ও এলাইচ, ইহাদের মিলিত অর্দ্ধ পল, (বাগ্ভটের মতে বংশলোচনাদি প্রত্যেক অর্দ্ধ পল)। এই সমস্ত দ্রব্য এবং পূর্বোক্ত শিলাজতু ১৬ পল একত মিশ্রিত কার্যা ২ তোলা মাত্রায় গুড়িকা প্রস্তুত করিবে। উহা শুষ্ক করিয়া জাতীপুষ্প থারা অধিবাদিত নৃতন স্থাপন করিবে। এই গুড়িকা এক একটি (উপযুক্ত মাত্রায়) হগ্ন. মাংসরস, দাভি্মরস, হুরা, আদব, মধু, শিশির জল (বর্ফ) সহ সেবন করিবে। অমুপানার্থ এই সকল দ্রব্য व्यवस्थ । खेर्य कौर्ग रहेरन नगु कत्र, इन्न, জাঙ্গল মাংসরস ও মুদগাদিযুধ আহার করিবে। এইরণ নিয়মে সপ্তাহকাল আহার পরে সাধারণ নিয়মে আহার করিবে। আহ:-রের পর এই ঔষধ সেবন করিলেও কোন অনিষ্ট হয় না। স্থকুমার ও কামী পুরুষগণ নিঃশঙ্ক হুইয়া ইহা দেবন করিতে পারেন। এক বংসর শিবাগুডিকা সেবন করিলে প্রবল বছবার্ষিক বাতরক্ত, যক্ষা, উক্তম্ভ, অর, (यानिताय, अक्ताताय, श्रीश, व्यर्गः, शाकु, গ্রহণীরোগ, ত্রগ্ন, বমি, গুলা, পীনস, হিকা, কাদ, অক্চি, খাস, জর, খিত্র, কুঠ, বওতা, मन्दर्शांग, क्या, त्यांय, खेनान, সর্বপ্রকার মুখরোগ, নেত্রগোগ, শিরোরোগ, ষানাই, অতীসার, রক্তপ্রদর প্রভৃতি রোগ

বিনষ্ট হয়। এই গুড়িকা সেবনে মানব ব্রী,
শ্বৃতি, বৃদ্ধি, বল, অতুল শরীর, পৃষ্টি, তেজঃ,
ওজঃ, অতি নির্মানেন্দ্রিয়তা ও বল সম্পন্ন হয়।
এক বৎসর সেবনে বলীপলিত-রোগরহিত
হুইয়া ছুই শত বৎসর পর্যাস্ত জীবিত থাকে।
ছুই বৎসর সেবনে ৪শত বংসর পর্যাস্ত জীবিত
থাকে। এই প্রকারে সর্করোগনাশক মুনিগণের সেবনীয় শিবাগুড়িকা রদায়নের
বিবরণ কথিত হুইল।

পূর্ব্বে অমৃত্যন্থন কালে পর্ব্বতের শিলাপ্রদেশ হইতে বে ঘর্মা উদ্যাত হইরাছিল,
ব্রহ্মা জগতের হিতার্থ তাহাই শিলাজভুরূপে
পর্বত সকলে স্থাপন করিয়াছিলেন। মহাদেব গণেশকে এই শিবাগুড়িকা রসায়ন বলিয়া
ছিলেন। শিবের বদন হইতে নির্গত হওয়ায়
ইহার নাম শিবাগুড়িকা। শৈবসিদ্ধান্ত নামক
এন্থে এই শিবাগুড়িকা উক্ত ইইয়াছে।

মহাচন্দনাদি তৈলম্।

हन्मनः नालभगी ह भृद्रिभगी निविधिका । বুহতী গোকুর্ধেষ মুক্তাপণী বিদারিক। । অশ্বপন্ধা মাধপণী তথামলকমেব ৮। শির্ষং প্রকোশীরং সরলং নাগকেশরম । প্রসারণী তথা মুকা প্রিয়ঙ্গুৎপলবালকম্। वाद्यालकका जिवला भुगालः विवनालकम् ॥ शकानश्यात्मात्वराः (चळवां हो। सकः छ वा । জলজোণে বিপক্তবাং গ্রাহ্ণং পাদাবশেষিত্র । অজাকীরং তেলসমং শতমূলীরসাঢ়কে। লাক্ষারদং কাঞ্জিকঞ্চ দ্বিমস্ত তথৈব **চ**॥ হরিণচ্ছাগশশক-মাংসানাঞ্পুথক্ পৃথক্। চড়ঃপ্রস্থং বিনিকাধ্য তৈলাঢ়কং বিপাচয়েৎ ॥ विश्वाश्वसकत्कानः नथः गिलग्रत्कनत्रम् । পত्रः क्रांकः मृगालक इतिएक भातिवाद्यम् ॥ ब्राव्हादशनः नजः कृष्ठेः जिक्ना ह शक्रवकम् । মর্কা চ এছিপণী চ নলিকা দেবদার চ। সরলং প্রকোশীরং ধাতকী বিশ্বপোৰকা। ब्रमाञ्चनः मुखकक रेगञ्जकः वालकः वहां ॥ मक्षिष्ठा लाधमध्री कीवनीयः विषक्रकम् । শটেল্যা কুষুমকৈব পটাশী পদ্মকেশরম ।

রালা চ জাতিকোবঞ্চ বিশ্বকং স্থনীয়ক্ষ্।
পলার্কমেবাং প্রত্যেকং পেবয়িছা বিনিক্ষিপেৎ ॥
মহাস্থান্ধিতৈলক্ত গন্ধকাত্র প্রদীয়তে।
কাশ্মীরমদচন্দ্রাংক সিন্ধে পুতে বিনিক্ষিপেৎ ॥
যথালাভং শুভে পাত্রে সংগোপেন নিধাপরেৎ।
বাতপিত্তরং বৃষ্যং ধাতুপৃষ্টিকরং পরম্।
হস্তি যক্ষাণমত্যুগ্রং রক্তপিত্তমূরক্ষত্ম ॥
যেবাং ভূরিপরিশ্রনাদম্দিনং নশুন্তি দেহা মৃণাং
বে বা কামকলামুক্লতর্মনীসক্তে চ নিধ তিবং।
বে বা ব্যাধিবিশীগ্রামুপ্রতাজ্বাং পরং ভেষজং
বল্যং বৃষ্যত্মং তনুপ্রয়ক্ত শ্রীচদ্দনান্তাং মহৎ ॥

তিলতৈল ১৬ সের। কাথার্থ—রক্তচন্দন, শালপানি, চাকুলে, কণ্টকারী, বৃহতী, গোক্ষুর, মুগানী, ভূমিকুয়াণ্ড, অশ্বগন্ধা, মাধানী, আমলকী, শিরীষছাল, পদ্মকান্ঠ, বেণার মূল, সরল কাঠ, নাগেশ্বর, গন্ধভাছলে, মুর্বামূল, প্রিয়ন্থ্য, নীলোৎপল, বালা, বেড়েলা, গোরক্ষচাকুলে, পদ্মমূল, মূণাল, শালক মিলিত ৫০ পল, শেত-বেড়েলা ৫০ পল, পাকার্থ জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের; ছাগছগ্ধ, শতমূলীর রস, লাক্ষারস, কাজি, দধির মাত প্রত্যেকের মাংস ১৮ সের, ছাগা ও শশক প্রত্যেকের মাংস ১৮ সের,

প্রত্যেকের পাকার্থ জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের (পৃথক্ পৃথক্ কাথ)। কল্পার্থ—খেত-**ठन्मन, अध्य,** कॅंक्ना, नथी, देननज, नाराभन, তেজপত্ৰ, গুড়বক মূণাল, হরিকা, হরিদ্রা, শ্রামালতা, অনস্তমূল, রক্তোৎপল, তগরপাছকা, কুড়, ত্রিফলা, ফল্সা, মুর্বামুল (गैंटिना, नानुका, (भवनाक, मत्रनकार्ध, भग-কান্ত, বেণার মূল, ধাইফুল, বেলগুঠ, রুদাঞ্জন, মুতা, শিলারস, বালা, বচ, মঞ্জিষ্ঠা, লোধ, भोति, कीवनीयश्व, श्रियम्, बंही, धनाइह, কুত্বম, খটানা, পদ্মকেশব, রামা, জৈত্রী, ওঠ ও ধনে প্রত্যেক ৪ তোলা। মহামুগান লক্ষীবিলাস (বাভরোগোক্ত) তৈলের গ্রহ্বর ধার। এই তৈল পাক করিবে। পাকান্তে তৈল নামাইয়া ছাকিয়া কিঞিং কুম্বন নুগনাভি ত কপুর মিশ্রিত করিয়া রাখিবে। এই ভেল मकत्न बाङ्यका, बर्काश्व । वार्ताकवाम নিবারিত ২য়। ইহা বলজনক, পুষ্টিকারক ও 色面の原布し

ইত্যায়ুর্কেদ-সংগ্রহে রসায়নাধিকারঃ।

অথ বাজীকরণাধিকারঃ।

যদ্দ্রব্যং পুরুষং কুষ্যাদ্ বাজীব হারতক্ষম্। ভদাজীকরমাধ্যাতং সুনিভিভিষজাং বরেঃ।

যদ্ধারা গুরুষ রম্পক্রিয়ার অধ্যের স্থায় শামর্থ্য প্রাপ্ত হয়, তাহাকেই ভিষক্-দ্রেষ্ঠ মুনি-গণ বাঞ্চীকরণ নামে অভিহিত করিয়াছেন।

ব জীকরণস্থাবশ্যকত।।

অতিবারালীলো যোন চ বাজীক্রিয়ারতঃ। ধানভজনবাগ্নোভি স গুক্রক্ষয়হতুক্ষ্ । থাহার। বাজীকরণ ঔষধ দেবন করে না, অংগচ নিয়ত নৈথুনাগক্ত, তাহাদের অতিরিক্ত শুক্রক্ষয় হেতু ধবজভঙ্গ হয়।

চিন্তমা জনমা শুক্রং ব্যাধিভিঃ কন্ধকরণাও। ক্ষয়ং গচছাতানশ্লাৎ স্ত্রীণাঞ্চাতিনিবেদণাও॥

চিন্তা, জরা, ব্যাদি, শ্রমজনক কল্ম, উপ-বাস, অতিরিক্ত স্ত্রীসহবাস স্থারা গুক্রকয় হইয়া থাকে।

可罗历---

প্রানিঃ কম্পোহ্বসাদন্তন্ত কুণতা কীণতা চেল্রিরাণাং শোষোচ্ছ্বাসোপদংশজ্বপ্তদক্ষণদাঃ কীণতা সর্বধাতে। জারান্তে ছুর্নিবারাঃ প্রনপ্রিভবাঃ ক্লীবতা লিকভঙ্গো বংমাবশাভিযোগাদ ভজত ইহ সদা বংজিকর্মচাত্ত ।

বাজীকরণবিহীন হইয়া অতিরিক্ত কামিনী-দহবাস করিলে গ্রানি, কম্প. অবসমতা, ক্রশতা, ইন্দ্রিয়নৌর্মলা, শোষ, খাস, উপদংশ, জর, অর্শঃ, সর্ব্ববাতুক্ষীণতা ও বাতজ্বোগ সকল, এমন কি ধ্বজ্ভক্ষ পর্যস্ত জ্যািয়া থাকে।

নরো বাজীকরনে যোগান্ সম্যকশুদ্ধে। নিরাময়ঃ। সপ্তত্যক্তং প্রকুলীত ব্যাদৃদ্ধি যোড়শাৎ। আনুদ্ধমো নরঃ স্বাভিঃ সংযোগং কর্জুমুুুুু চ।

খোড়ণ বৎসা হইতে সপ্ততি বংসর মধ্যে স্কুণরীরে মথ্চ (বিদেনগদি স্বারা) শুক্তনেই বাজীকরণ করিলে মানব দীর্ঘায়ু ও রতিশক্তিস্পান হয় এবং বহুস্তাসসমে ক্রতকায়্য হইতে পারে।

নচ বে ষে'ড়গ'দকাক্ সপ্তা: প্রতান চ।
ধোল বৎসবেব ন্নেবয়ক বালককে এবং
সপ্ততিবংসবের উদ্ধবয়ক বৃদ্ধকে বাজীকরণ
ঔষধ সেবন করিতে দিবে না।

বিলাসিনামগ্বতাং রূপথোবনশালিনাম্।
নরাণাং বছভাষাগোং বিধিবাজাকরো হিতঃ ॥
স্বিরাণাং রিরংস্নাং রাণাং বালভামিজ্তাম্।
যোগিৎপ্রসঙ্গাৎ কাণানাং ক্লাবানামলরেত্সাম্।
হিতা বাজিকরা যোগাঃ প্রাণয়ন্তি বলপ্রদাঃ।
এতেহপি পুরুদেহানাং সেবাঃ কালাভ্যপক্ষরা॥

যিনি বিলাদপ্রিয়, ধনাতা ও রূপযৌবনসম্পন্ন, যিনে বছভার্যার পতি, যিনি বৃদ্ধ অওচ
রমণাকাজ্জী; যান কামিনীগণের বল্লভ হইতে
ইচ্ছুক; যিনি অতিরিক্ত স্ত্রীসহবাদে গুর্বল,
অথবা যিনি ক্ষীণগুক্র কিংবা ক্রীব হইন্নাছেন,
ভাহাদের পক্ষেই বাজীকরণ ঔষধ সমূহ বিশেষ
হিতকারী, প্রীতিকর ও বলপ্রদ। দেশ কাল
ও পাত্রান্থ্যাতে স্তম্পরীরেও বাজীকরণ ঔষধ
সেব্য।

বাজীকরণানি।

ভোজনানি বিচিত্রাণি প্রানানি বিবিধানি চ।
গীতং লোকাভিরামান্চ বচেঃ স্পর্নস্থান্তথা এ
কামিনী সাক্রতিলকা কামিনী নব্যোবনা।
গীতং ভোজননোজ্ঞক তামুলং মন্দিরাঃ প্রজঃ ॥
গলা মনোজ্ঞা রূপাণি চিক্রাণুপ্রেনানি চ।
মনসন্চাপ্রতীপ্রতো বাজাকুর্বান্তি মানবম্ ॥

রদনার ভৃপ্তিজনক অপত বলকারক বিবিধ আহারীয় ও পানায় দ্রব্য দেবন, শ্রুভিস্থপকর রমণীয় বাক্যালাপ, স্পর্শস্থ, তিলকণারিণী নব্যোবন: কামিনীসহ্বাদ, মনোহর সঙ্গীত, তাস্থ্লদেবন এবং মন্যপান, মনোজ্ঞ গদ্ধ দ্রব্য ও মাল্য ধারণ, বিভিন্ন চিত্র দিন, উপ্তানকেলি ও মান্সিক অপ্রতিঘাত বিষয় সকল বাজী-করণার্থ উৎক্ষা।

য়ং কি কলাবুলং লিগাং জাননং বৃংহণং গুরু। হৰণং মনসংক্রি স্কাং তদ্বস্যুম্চতে ॥

সে কোন আহারীয় দ্র। মধুর, স্নিগ্ন, আয়ুদ্র, পৃষ্টিকারক, গুরু ও মনের আহ্লাদ-দ্রুনক, তংশমুলায়ই রুধ্য বলিয়া জানিবে।

প্রস্তীলবংশংপতে) বস্ত্য জ্ঞারস্থিয়।
সাধিতে ভক্ষার্থ যন্ত সংগ্রেছং প্রমণ্শ ন্য ॥
(ক্ষারস্থিয়া ক্ষারেশ্যম্পীয়া মতু ক্ষারেজ মৃতকেভ্যেক্বদ্ধারঃ ক্ষার্থকলবন্যা সংযোগ বিশ্বস্থাদিতি
চণ্টীকা;)

ছাগবেব অপ্তকোষ্ট্র অন্ন পিপুলচ্র্ন ও লবনের সহিত ছাগ্লাপ দ্বতে ভাজিয়া সেবন করিলে শত প্রমন্তা কামিনীতে সঙ্গম করিতে সমর্থ হয়।

বস্তাঙ্সিদ্ধে প্রসি ভাবি এনসকুৎ তিলান্।
যঃ খালেৎ সানলো গচেছৎ প্রাণঃং শতনপুক্রবং ॥
(অস্ াদিভি সপ্তধা, যন্তালি বস্তনাংসপ্ত ক্ষারেল সহ
বিরোধো দ্বিতস্তবাদি তৎ সামাত্তবচন্দিবং পুনরপ্রাদরূপং বিভিন্ন ওবিষ্ণত্যা ন বিরোধনাহারিতি শিবদাসঃ)

ছাগলে। অওকোষের সহিত এক পাক ক্রিয়া সেই হান্ধে ভিলত গুল সাহবার ভাবনা দিয়া ভক্ষণ ক্রিলে শতস্ত্রীগম্নের সাম্থ্য জ্যায়া থাকে। যুতভূষ্টনাবৰিদলং ছগ্ধসিদ্ধঞ্চ শর্করাবিমিত্রন্। ভূজ্বা সদৈব কুঙ্গতে তঙ্গণীশতমৈধূনং পুরুবঃ।

মাধকলাই ম্বতে ভাজিয়া মুগ্ধে সিদ্ধ করিয়া তাহা চিনির সহিত ভক্ষণ কারলে রাতশক্তি বর্দ্ধিত হয়।

শতাবরীশৃতং ক্ষারং প্রপিবেৎ সিতরা যুত্র। রমমাণক্ত বিরতিং মুক্ততাং বাতি নেক্রিয়ন্॥

শতমূলী ২ ভোলা, ছগ্ধ /। পোয়া, জল /১ সের, শেষ /। পোয়া। ইহা চিনির সহিত পান করিলে রতিশক্তির রুদ্ধি হয়।

বৃদ্ধণালালিমূলত রসং শর্করয়া সমন্। প্রারোগাদ্ভ স্থাহাজ্যায়তে রেভসোহসুধি: ॥

প্রাচীন শিমূলর্কের মূলের রস সমপরি-মিত চিনির সহিত সপ্তাহকাল সেবন করিলে অত্যস্ত শুক্রার, কুহুর।

লবুশাঅলিম্লেন ড;লম্লং ফচ্পিতাম। স্পিষা প্রসা শীহা রভৌ চটকবদ্ ভবেৎ ॥

কচি-শিমুলের মূল ও তালমূলী একএ চূর্ণ করিয়া খত ও ছথ্ডের সহিত সেবন করিলে চটক পক্ষীর স্থায় রমণসাম্থ্য জন্মে।

চূৰ্বং বিদায়াঃ স্কৃতং স্বৰ্গেনৰ ভাবিতম্। সৰ্পিকৌদযুতং ল'চুৰ্বাস্তং গচ্ছেদ্ ব্যাস্থলাঃ।

ভূমিকুলাভের চুর্ণ ভূমিকুলাভের রসে ভাবিত করিয়া ছত ও নধুর সহিত লেহন করিলে শতক্রীগমনের সামর্থ হয়।

এবসামলকং চুর্নং স্বরসেনৈর ভাবিতম্। শর্করামধুস্পিভিত্বক্তিং লীচ্বা পয়ং পিরেৎ। এতেনালীভিবর্ষোহপি যুবের পরিক্ষাতে।

ক্রনপ আমলকীচুর্ণ, আমলকীর রসে ভাবিত করিয়া ন্বত চিনি ও মধুর সহিত লেহন করিয়া হ্যা পান করিবে। ভাহাতে অশীতি-ব্যায় বৃদ্ধও ভরণশেলা হয়।

বিদারীকলচূর্ণ মতেন পরসা পিরেৎ। উচ্চুম্বররসেনৈর বৃদ্ধোংপি তঙ্গণায়তে ॥

ভূমিকুমাণ্ডচূর্ণ মৃত হয় ও যজ্জুমূরের রস সহ সেবন করিলে বৃদ্ধও সূবার ভার সামর্থ্য প্রাপ্ত হয়। সপ্তধামলকীচুর্নামলকামুক্তাবিতম্। মতেন মধুনা লীচ্বা পিবেৎ কীরপলং নর:। বাজীকরণবোগোহয়মুক্তন: পরিকীর্দ্তিত:॥

আমলকীর চূর্ণ আমলকীর শব্বেসে সপ্তবার ভাবিত করিয়া দ্বত ও মধুর সহিত লেহন কিংবে এবং লেহনানস্তব অর্দ্ধপোয়া ছগ্ধ পান করিবে। বাজীকরপ্যোগের মধ্যে ইহা অতি উত্তম বলিয়া কথিত হইশ্বাছে।

স্বরং শুপ্তেক্সুরকয়োবীজং সমধুশক্রম্। ধারোকেন নরঃ পীড়া প্রসা ন ক্ষরং ব্রজেৎ ॥

আলকুশীবীজ ও কোকিলাক্ষবীজ চূর্ণ করিয়া নধু ও চিনির সহিত মিশ্রিত করত ধারোক্ষ হুগ্ধ সহ সেবন করিলে অত্যধিক স্ত্রীসঙ্গমেও শরীর ক্ষয় হয় না।

উচ্চটাচূৰ্মপোবং কীরেণোপ্তম্নুচাতে। শত'ব্যুচিটাচূৰ্বং পেয়মেবং স্বপূৰ্ণিনা॥

কৃতমূল চূর্ণ অথবা শতচূলীও কৃতমূল চূর্ণ ডগ্ধ সহ সেবন করিলে, স্ত্রী সহবাদে যথেষ্ট সুগলাভ হয়।

কৰ্ম মধুৰচূৰ্বভা মৃতকৌদ্ধনমন্বিতম্। পয়োহকুপানং যো লিফান্নিডানেগা সানা ভবেৎ ॥

ঘত ও মধু মিশ্রিত ২ তোলা ষ্টিমধু চূর্ণ হগ্ধ সহ নেবন করিলে প্রভূত কামবেগী হয়। গোকুরক: গ্রক: শত্ম্বী বানরিন: গ্রলাতিবলা চ। চুর্ণিদিং প্রদানিশি পেয়ং বস্তু গুড়ে প্রদান-তম্ভি ॥

গোক্র, কোকিলাক্ষবীজ, শতমূলী, আলকুশীবীজ, গোরকচাকুলে ও পীতবেড়েলা
ইহাদের চূর্ণ গৃগ্ধ সহ রাজিতে সেবন ক্রিলে
একশত রম্নীতে স্কৃম ক্রিতে সমর্থ হয়।

, আর্রাণি মংক্ষমাংসানি শক্ষরীর্বা হভর্জিতা:। তথ্যে সপিষি ষঃ থাদেৎ স গচ্ছেৎ স্তীবু ন ক্ষয়নু ।

সভোমাংস ও মংশু, বিশেষতঃ পুঁটিমংশু ঘতে ভাজিয়া সেবন করিলে প্রত্যুহ স্ত্রীসভোগ করিয়াও ক্ষীণশুক্ত হয় না।

> তাপিছধাতুনধুপারদলৌহচূর্ণং পধ্যাশিলাকতুবিড়ক মুডানি লিহুাৎ। একাপ্রবিংশতিদিনানি সদার্ক্ষিতোহপি সাশীতিকাহপি রময়েৎ এমদাং যুবেব।

যথাক্রমে একুশদিন স্বর্ণমাক্ষিক, পারদভন্ম ও লোহচূর্ণ মধুর সহিত লেহন করিলে
অথবা হরীতকী, শিলাজতু ও বিড়ঙ্গ ইহাদের
চূর্ণ মৃত সহ লেহন করিলে ভরাগ্রস্ত কৃদ্ধেরাও
যুবাদের মত স্ত্রীসম্ভোগে সমর্থ হয়।

অত্যন্তমুক্তকট্ তিক্তকবারময়ং কারঞ্চ শাকমধবা লবণাধিকঞ। কামা সদৈব রতিমানু বনিতাভিলাবী নো ভক্ষয়েদিতি সমস্তজনপ্রসিদ্ধিঃ।

যে ব্যক্তি কামী, বনিতাভিলাষী এবং দলা রতিমান, তাহার অত্যন্ত উষণ, কটু, তিক্ত, ক্যায়, অম এবং ক্ষার, শাক অথবা আধক লবণ ভোজন কর্ত্তব্য নয়।

নার্রাসংহ-চূর্ণম্।

শ াবরীরজঃপ্রস্থং প্রস্থং গোকুরকস্ত চ। বারাহা বিংশতিপলং গুড়্চাা: পঞ্বিংশতি: ॥ ভল্লাভকানাং দ্বাতিংশচ্চিত্ৰকন্স দলৈব তু। তিলানাং শোধিতানাঞ্ প্ৰস্থং দ্পাৎ স্চুৰ্ণিতম্। ক্রাষণক্ষ পলাক্ষয়ে শর্করায়াক সপ্ততি:। ম্যাক্রিকং শর্করার্দ্ধেন মাক্রিকাদ্ধেন বৈ যুত্র । শতাবরীসমং দেয়ং বিদারীকন্দঞ্জং রক্ষঃ। এএদেকাকৃতং চুর্ণং ঝিন্ধে ভাতে নিধাপয়েৎ ॥ প্ল'ৰ্দ্ধমুপযুঞ্জীত যথেপ্তঞ্চন্ত ভেজিনমু। নাদৈকৰূপযোগেন জরাং হতি কজানপি। বলীপালতথালিত্য-মে২পাগু,।চ,পীন্ধান্। হস্তাষ্টাদশ কুষ্ঠানি তপাষ্টাব্দরাণি চ। छत्रनद्वः मृजकृष्टः तृष्ठमाक श्लीमकम्। क्यरेक्व महावार्षिः शककामान् युगान्नगान् । অশীতিং বাতজান রোগাংকডাট্রংশচ্চ পৈত্তিকান্। বিংশতিং দ্বৈশ্বিকাংশ্চাপি সংস্টান্ সান্নিপাতিকান্। সৰ্বানশোগদান্ হস্তি বুক্ষমিন্সাশনিবথা । স কাঞ্চনাভো মৃগরাঞ্জবিক্রমস্তবঙ্গসমঞ্চাপানুবাতি বেগতঃ। ব্রীণাং শতং গচছাত সোহতিরেকং প্রকৃষ্টদৃষ্টিশ্চ বর্থা বিহঙ্গঃ। পুতान् मः वनायक्षीयान् नत्रिमः श्रिकाः खर्था । नात्रिमःहात्रकः हुर्गः मक्तरत्रागहतः नृगात्र ॥ বারা**হাৰন্দসংজ্ঞন্ত চম্মকারাসুকো মতঃ**। भिक्ता युष्टिशकात्या वदाश्लामवानिव ॥ শঙ্মূলী চূর্ণ /২ সের, গোকুরবীজ /২

শের, চুব্ড়ি আলু ৴২‼• সের, গুলঞ্ছ ২৫ পল,

ভেলা চূর্ণ /৪ সের, চিতামূল চূর্ণ / ১। • সের, তিলভঙ্গল /২ সের, ত্রিকটুচূর্ণ (মিলিভ) /১ সের, চিনি /৮৬০ সের, মধু /৪৫০ ছটাক, ত্বত হাক, ভূমিকুমাও চূর্ণ /২ সের। এই সমুদার একত্র করিয়া ঘৃতভাওে রাখিবে। মাত্রা—৪ তোলা। ইহা এক মাস সেবন করিলে অস্তাদশবিধ কুঠ, ভগন্দর ও মৃত্রকুদ্ধু প্রভৃতি নানাবিধ রোগ ও জরা দ্রাভৃত হইয়া বল, বীর্গ্য এবং ইক্রির শক্তির বৃদ্ধি হয়।

গুড়কুগাওক্র।

কুমাওকং পলশতং স্থিনং নিজুলাকৃতম্।
প্রস্থাওকং পলশতং স্থিনং নিজুলাকৃতম্।
থক্ষ হৃততৈলন্ত ত্লিংল্ডপ্তে নিধাপরে ।
বন্পত্রধান্তকংলাং-জীরকৈলাম্বরানলন্।
প্রস্থিকং চন্যান কে-পিপ্নলীবিশতেবজন্ ॥
শূলাটকং কলোক্ষ প্রন্থং তালমন্তকম্।
চূলীকৃতং পলাশক শুড়ন্ত তুলরা পচে ।
শাতীভূতে পলাশুলী মধুনং সংপ্রদাপরে ।
কলালাং বংগং প্রেচং নংগ্রীকরণমূত্রমন্।
প্রম্পাপ্র প্রস্তানাং যে চ স্থাং ক্ষীকরণমূত্রমন্।
প্রম্পাপ্র প্রস্তানাং যে চ স্থাং ক্ষীকরণমূত্রমন্।
কাসং স্থান ক্ষরে হিলাং পর্যান্তন্তম্যা
ডড়ুম্মাওকং খ্যাত্রম্বিভ্যাং সমুদ্ধেতক্ষরঃ ।
বঙ্কুমাওবং পাত্রং বিশ্বকুমাওক্ষরঃ ।

ষ্কৃ ও বীজ রাহত পুরাতন কুমাণ্ডশস্ত কিঞ্চিং কল দিয়া উংসির ও ক্ষোমবল্তে নিশ্পীড়ন করিবে। পরে রৌদ্রে শোষত ও শিলার পেষণ করিয়া সেই কুমাণ্ডশস্ত ১২॥• সের, ভজনার্গ দ্বত /২ সের, ভিলতেশ /২ সের, গুড় ১২॥• সের, কুমাণ্ডকল ১৬ সের। প্রকেপার্থ—গুড়ফ্ক, তেজপত্র, ধনে, তেলট্ট, জারা, ক্ষজারা, বড় এলাইচ, ছোট এলাইচ, চিতামূল, পপুলমূল, চই, গন্ধাপরলা, তাঁঠ, পানিফল, কেন্ডর, তালাম্কুর ও তালের মাতা প্রত্যেক ১ পল। শাতল হইলে মধু /১ সের মিশ্রিত করিবে। এই ঔষধ পৃষ্টিকর ক্রকনক ও কাসাদি বিবিধ রোগ নাশক।

রহচ্ছতাবরী-মোদকঃ।

শতাৰ্রী বৃদংষ্টাচ বলা চাতিবলা তথা। মকটাকুরবীজঞ্চ বিদারীকলজং রজ: ॥ এতানি সমভাগানি পলিকানি বিচ্পয়েৎ। তক্ষাচ্চতুগুণং দেয়ং ত্রৈলোকাবিজয়ারজঃ॥ এতদেকীকৃতং যাবৎ তদদ্ধং মাহিষং পয়:। ভাবনাত্তেণ দাতবাং শতাব্ধনা রসস্তথা। विनारा"ः अतम अष्ठः "में श्राप्तान उद्याप । গোলয়িঝ সিতাকৈব পাত্রে তামময়ে দুচে। পাচয়েৎ পাক। ববেতো মোদকং পরষ্ হিতম্। ক্ৰমণং ক্ৰফলা দত্ত ক্ৰিজাতং সৈন্ধবং শটী। ধন্তাকং বলেকং মুন্তং কন্তুরী গোন্তনী তুগা। बार्डीक विकलार भारती शदर वास्त्र लाखकार ॥ শতপুশी हत्। मातः । अशकु मलतक्रकम् । সরলং শৈলজং কুসুং (কুঠা) জাতীপুপাং ধ্যানির।॥ কট্ফলং কেশরং মেখা মধুকং হুরদার চ (দেব ছাড়কম্)। ^{বিষা} তাল শপত্রক গর্জুর রসগন্ধকৌ ॥ **इ.स.च. इ.स.च. क्यांबर क्यांबर कर्वनाव्य छम** । ४ অংলোডা ত্রেপ্রেন কপুরেণাধ্বাস্তে 🛊 কাঞ্চন রাজতে পাতে স্থাপ্তেন্ত্র ভ্রথরৈ। कर्मध्यागः कड्नाः कोद्रशास्त्रीभानद भलभ् ॥ প্রতির্ভাঙনকালে বা ভক্ষাে তু বিচক্ষণঃ। প্রমদ্পত্র ভরতে ন 5 গুরুক্ষাে ভবেং । ন তক্ত লিক্সেশ্লেলং গুরুষ:জননং প্রম্। क्रारंभव मश्ताशिंश अक्कामान् श्रृष्ठवान् ॥ বাৰজান পোওকাংকৈৰ কফজান সাল্লিগাতিকান্: अधाराम्य ⊈र्शनि वाष्ट्रतङामिका न b । श्रास्त्र हो श्रामर (नाबर लक्कोका हि निवर्षम्य । সকানশোগদান হতি বুক নক্রাণনিবথা।। ব্যাধীন্ কোষ্ঠগতান্তান্ জনাদন ইবাহ্রান্। নাতঃ পরতরং এেইং বৈছাতে বাজিকগ্রন্থ। স্ত্রীণাকৈবানপ্রভানাং চ্ক্লানাঞ্চেংন'ম্। ক্রাবানামজভারাণাং ভার্নানামলভেল্যান্। ওজভেজাসরং বুলিমারু: প্রাণং বিবর্দ্ধরে ॥

শতমুশা, গোকুর, বেড়েলা, গোরজ-চাকুলে, আলকুরাবীজ, কুলেখাড়া বীজ, ভূমি-কুয়াও প্রভ্যেক চুর্গ ১ পল, সিষ্চ্রণ ২৮ পল। মাহেলহয় ১৭॥০ পল, শতমুলার রস ১৭॥০ পল, ভূমিরুয়াডের রস /৪ সের, চিন ২৫ সের। এই সমুলায় একক তামপাতে পাক

করিবে। ঘনীভূত হইলে প=চালিখিত ড্রা সকল প্রক্ষেপ দিবে। প্রকেপ্য দ্রব্য—ত্তিকটু, বিফলা, দন্তী, গুড়ত্বক্, তেজপত্র, এলাইচ, দৈন্ধব, শ্ঠী, ধনে, বালা, মুতা, কন্ত,বী, ডাকা, বংশলোচন, জৈত্রী, জায়দল, জটামাংসী, তেজপত, নিসিন্দাপত, গুল্ফা, চৈ, দাক-হরিদ্রা, প্রিয়স্থ্র, লবন্ধ, সরলক্ষ্ঠি, শৈলভ, গুগ গুলু, জাতীপুষ্প, ধ্মানী, কট্ফল, নাগে-শ্বর, মেথী, যষ্টিমধু, দেবদারু, মৌরি, তালীশ-পত্র, পিণ্ডৰজ্জুর, পারদ, গন্ধক, রক্তচন্দন, তগরপাহকাও যবক্ষার প্রত্যেক ২ তোলা। পাক সম্পন্ন হইলে গুড়ুম্ক, তেজপত্ৰ, এলাইচ এবং কপূর্ব থারা হ্বাসিত কারবে । মাত্র:---২ তোলা পর্যান্ত। অৱপান—চ্গ্ন ২ পল। প্রাতে বা আহারের সময়ে সেবনীয়। ইহাতে শুক্রবৃদ্ধি, ধাতুপুষ্টি এবং কাদ ক্ষা কুষ্ঠ বাত-রক্ত প্রমেহ প্রভাত নানাবোগের শাস্তি হয়। ইহা কান্তিবৰ্কক এবং অনপতা ও চুৰ্বল, ক্লীব, অলগুক্র বা ক্লীপতেছা ব্যক্তিদের বিশেষ উপকারক।

রতিবল্লভে। মোদকঃ।

শক্রাশন্ত বীজানাং ্গানি পলপ্র চ। হ'বয়ঃ কুডবঞ্চিকং সিতাপ্রস্থং প্রগৃহ্য চ॥ শতাবরীরসপ্রস্থং তথা শফাশন্ত 5। গ্রামাজং পয়ঃ প্রস্থা ততঃ প্রস্থায়ং পচেং 🛭 ধাত্রীবিজীরকং মুক্তং হগেলাপত্রকেশরম্। আ্মন্তপ্ত। চাতিবলা হাল্মুরকণেক কম্॥ শুক্লাটকং ত্রিকটুকং ধাক্তমজঞ্চ বঙ্গকম্। भवा। क्षांका 5 कारकारना) शब्द्धाः कृतकः उचा ॥ क्ट्रेका मध्कः कुष्ठः अवत्रः मद्भिक्षयम्। যমানী চাজমোদা চ জীবন্তী গজাঁশপলী। প্রত্যেকং ক্রমেক্স চূর্ণিতানি ওভানি চ। কুড়বার্দ্ধং পাকশেষে মধুনঃ প্রক্রিপেৎ ততঃ ॥ মুগাওজং সকপুরিং যথালাভং বিনিক্ষিপেৎ। র্তিবল্ভনামায়ং দেবামানো মহারসঃ॥ প্রমোজস্বরো বল্যো বাতব্যাধিবিনাশন:। বাত পিতহরো বৃষ্যে । দৃষ্টিসন্দাপনঃ পর ॥

কবদামতানতার লোকদামতনিতি ক্থবোধ-সংগ্রহণ্ডঃ পাঠঃ।

পিত্তলেম্বান্তপিত্তা বিৰক্ত সাজরাপহ:।
পাতব্য এব মন্দায়ি-রোগাণাং ক্ষরহেতুক:।
ন ভবেলিক লৈখিলাং সৃদ্ধানাং পৃষ্টিবর্জনন্।
বস্তু গেহে সদা বহুবাঃ পড়াঃ হ্যাঃ কুমনোহরাঃ।
বসঃ সেবাঃ সদৈবায়ং মোদকো রতিবল্লভঃ॥

मिक्रिवौक हुर्व ৫ अन, श्रुड 8 अन, हिनि /२ দের, শতমূলীর রদ /৪ দের, দিন্ধির রদ /৪ সের, গ্রাহগ্ধ /৪ সের, ছাগহ্গ্ধ /৪ সের। প্রক্রেপার্থ - আমলা, জীরা, ক্রজনীরা, মূতা, গুড়ুত্বকু, এলাইচ, ডেড়পুত্র, নাগেশ্বর, আল-কুনাবীজ, গোরকচাকুলে, তালের আঁটির অসুর, কেওর, পানিমল, তিকটু, ধনে, অল্ল, বঙ্গ, হরাতকী, ডাক্ষ্য, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, পিওখন্জুন, কুলেখাড়াবীজ, কট্কী, মষ্টিমধু, कुफ, लदम, रमस्त, यरामी, दमगमानी, कौरही ও গ্রহাপ্রলী প্রত্যেক ২ ভোলা। পা**ক শে**ব হইলে মরু ২ পর মিলিত কারয়া মূগনাভি ও কপূর ধারা আধবাদেত করিবে। নাআ—।।• অন্ধতোলা ২ইতে > তোলা। ইহা সেবন কাংলে রঙাপিত প্রভৃতি অনেক রোগের শান্তি এবং বল বাঘাও রাতশাক্তর তাদি হয়। ইহা বাভাদি দেয়েত্রমাশক, দুষ্য ও দৃষ্টিশক্তি-সন্দাপক এবং বৃত্তপদ্মীকের বহু আদর্ণীয়।

কামেখরে: মেদকঃ। । তন্ত্রান্তরে ।

চূর্ণংশং গগনং থনান্ধবিদনং গলক কুষ্ঠামৃতা
মেনা মেটেরসো বিদানিম্বলা গোকুরককেগুরঃ।
ভারুকৈটৰ কলেককং যদনিকা ভালাকুরং ধাশুক্ম
ঘটা নাগবলা তিলা মধুরিকা জাভাকলং দৈশ্ধন্য।
ভাগী ককটশুককং ত্রিকটুকং জারন্ধাং চিত্রকম্
চাতুজ্জাভপুননবা করিকণা জাক্ষা শঠা কট্ফলম্।
শাল্ধলাজি কলত্রিকং কপিভবং বীজং সমং চূর্ণরেৎ
চূর্ণান্ধা বিজয়া সিতা বিগুণিতা মধ্বাজামিশুল্প তং ॥
ক্রীন্ধা প্রভিন্ধা কর্মধনা সেবা সতা সকলো
পেরং ক্রীরম্ন ক্রীয়াকরণে গুল্ভেহপায়ং কান্ধিনাম্॥

(বানাব্ছকর ২ত্যাদি গুণা: সমাঙ্মারিতমত্রক-নিত্যাদিনোক্তক কামেবরক্ত সমা:। অংশক্তুর্বো ভাগঃ কুঠাদিকবাজপযান্তচুর্ণানামংশমত্রকম্। অব্যাদ্ধং গন্ধকং, বিমলং নিম্মলম্। চুর্ণানা বিজয়েতি অব্যাদি-স্বাচ্বানাম্দা। যুত্মধুমোদকরণ্যোগ্যম্।)

কুড়, গুলঞ্চ, মেথী, মোচরদ, ভূমিকুলাও, তালমূলী, গোকুর, কুলেখাড়াবীজ, শতমূলী, কেণ্ডর, যমানী, তালাকুর, ধনে, গোরক্ষচাকুলে, তিলত গুল, মৌরি, জায়ফল, বাস্নহাটি, কাক্ড়াশুঙ্গী, জীরা, ক্লঞ্জীরা, চিতামূল, গুড়ত্বক্, তেজপত্র, নাগেশ্বর, পুনন্ব. গ্ৰুপিপ্ললী, দ্রাক্ষা, শুঠা, কট্ফল, নিমুলমূল, ত্রিফলা ও আলকুণীবীজ প্রত্যেক চুর্ণ সমভাগ, এই সমু-দায় চূর্ণের সিকি অভ্র, অভ্রের অর্দ্ধেক গন্ধক। এই সমুদায়ের অর্দ্ধেক সিদ্ধি। সর্বাসমৃষ্টির বিগুণ চিনি। উপযুক্ত পরিমাণে মৃত ও মধু সংগ্রন্ত করিয়া মোদক প্রস্তুত করিবে। নাত্র—সাহ তোলা। অমুপান—চগ্ন। সেবন করিলে বীধ্যবৃদ্ধি ও বীধ্যস্তম্ভ হয়।

মোক্রব। ইতি প্রসিদ্ধং ধ্বনক্তমৌধ্ধন্।

ঞাতীপল্লবনাগকেশরকণাককোলমজ্জাফলং ভানাকট্ফলণারিবাগুরুবচামুত্তং শটী মন্তকী। মাংদী শালালিধণতকী কটুলতাগোকুরমেধী বরী বীজং বানরি কোকিলাকে চ গুহা ধুর্ত্তঃ পরং পঙ্করু । কুঠফোৎপলকেশরক মধুকং গ্রীথওজাতীফলং हुन् कन्त्रतिना विभूषिनयुटा तद्य। श्रियकाः कनम् । জাবৰত্দবিষমূষণবরা এলা ঘটো ধ;ভাকং চানীচেপেদমুদ্রশোষশিপরং চাকারকরভং কচম্। ইন্দুং কুদ্ধুমনাভিজং সগগনং চূর্ণং সমং কারয়েৎ স্বৰ্ণ: তারভুজস্বসময়দা বন্ধ্ৰং তথা তাত্ৰকম্। মুক্তাশাস্থ্যতালকানি বিধিনা শুদ্ধং মৃতং যোজয়েৎ ত্যাংশং বিজয়াদলক বিমলং চুর্ণং ততো দাপয়েৎ। ভেষামন্ধাংশযুক্ত। বিমলতর্সিতা ক্ষৌদ্রমেবং সিতাংশং **ाशः यद्यः अत्मरः मृङ्ज्यम्हरेनल हिमिषिरियम ।** শীতে কিপ্তা চ চুৰ্ণং যুতপরিলুলিতং যট্টরেৎ তচ্চ দর্ব্যা মেচেছনোক্ত: হলেহো মুকর হতি মতঃ দেবাতাং দর্ব-

কাম্যং বামাপ্রমোদং সকলগদহরং রাজযোগ্যং প্রদিষ্টম্ ।
(অপরশুণা বৃহৎ কামেখরপ্রের। মজ্জ্বলন মাজুক্লমিতি প্রসিদ্ধং বণিগ্রের।মেবং মন্তক্তি, ওহা বদরীফলশস্তং, থুঙো ধুন্ত,রবীজং, চানীচোপঃ চোপটিনীতি

প্রসিদ্ধা কাঠবনূলং সিংহলাদী প্রসিদ্ধা সমৃদ্ধশোবঃ হিজলবীজা, শিপরং লবকা, আকারকরভা আকরকরা ইতি গাতিম, কচং বালা, ইন্দুঃ কপ্রিং, শান্তবো রসঃ।

জাতীপত্র, নাগকেশর, পিপুল, ককোল, মাজুফল, খ্রানালতা, কট্ফল, অনস্তমূল, অগুরু, বচ, মুভা, শটী, ক্রমিস্তকী, জটামাংসী, শিমুল-মল, ধাইফুল, কট্কী, গোকুরবীজ, মেথী, मञ्जूनी, व्यानकूमी वीक, कूलशाए। वीक, কুল আঁটির শশু, ধুতুরাবীজ, পদ্ম, কুড়, পদ্ম-কেশর, যষ্টিমধু, চন্দন, জায়ফল, ভূমিকুস্মাঞ্ড, তালমূলী, কদলী, প্রিয়ঙ্গু, জীবক, ঋবভক, ভুঁঠ, মরিচ, ত্রিফলা, এলাইচ, দারুচিনি, ধনে, ভোপচিনি, হিজলবীজ, লবঙ্গ, আকরকরা, বালা, কপুৰ, কুছুম, মৃগনাভি, অত্ৰ, স্বৰ্ণ, (त्रीभा, मीमा, यत्र, लोह, हीता, जाय, मुक्ना, রুদ্দিন্র ও হরিভাল এত্যেক সমভাগ, সিদ্ধি চূর্ণ সমুশায় চূর্ণের সিকি। সর্কাসমষ্টির অর্দ্ধেক সমান মধু। অলভল দিয়া চিনি, চিনির মৃত্ব অগ্নিতে পাক করিবে। লেহবং ইটলে ক্ষিত্র পুত্রিভিত করিয়া উপযুক্ত মাতায় প্রয়োগ করিবে। ইহা সেবনে বল বীয়া ও রতিশক্তির বৃদ্ধি এবং দেহের পুষ্টি হইরা 🕻

কামাগ্রিসন্দাপনো মোদকঃ।

কৰো রসো গন্ধকমত্রকঞ্চ ছিক্ষারচিত্রে লবণানি পঞ্চ। শটা যমানীম্বয়-কটিহারি-ভালীশপত্রাণাপরং দ্বিক্ধন্॥ জীরং চতুর্জাতলবঙ্গজাতী-कलक कर्य अग्रस्मयम् । সবুদ্ধপারং কটুকত্রয়ঞ্চ তথা চতুধৰ্ষমিতং নিবোধ ॥ थ्याक्ष्यी नधुनी करणक कवाः भृषक् शक बत्रो निमात्रौ । * ব্যৱন্তকর্ণেভবলাম গুণ্ডা-বীজং তথা গোকুরবীজযুক্ত ।। मरीक्षश्राज्यत्वः मर्गानः সমা সিতা কৌদ্রত্তঞ্ তুল্যশ্। करेबेक, त्नात्रथ (मामकः उ९ কামাগ্রিসন্দীপনমেত**ত্ত্ত**ৰ্ I

বুষ্যম্বত, পরতরং সঞ্তং ন দৃষ্ট-মেনং নিবেব্য মতুজঃ প্রমদাসহস্রম্ । গচ্ছর লিক্সশিথিলত্ববাপুরাচ্চ নাগাধিপং বিজয়তে বলতঃ প্রমন্তম্ 🛭 কান্ত্যা ছতাশনমপি শরতো ময়ুরান্ বাহং জবেন নয়নেন মহাবিহঙ্গম। বাভানশীতিম্প পিত্রগদং সমগ্রং লে:আথৰিংশতিকজঃ প্রম্যান্দাম **।** ছুর্ন:মকামলভগন্দরপাঞ্রোগ-মেহাতিসারক্রিমিহাদ্রাহণীপ্রদোষান। কাসজ্বখননপীনসপাগপুল-শুলায়পিভদহিতাং শিচরজান সমস্তান ॥ হয়া গদানপি চ তৎ পুমপতাকারি मर्कार्क् भ्रथाम्य मक्त्रिश्रधानि । বুষাং ৰলীপলিতহারি রসায়নং স্থাৎ 🎒 মূলদেবক থিতং পরমং: প্রশস্তম 💵

পারদ, গন্ধক, অভ্র, যবক্ষার, সাচিক্ষার, চিতামুল, পঞ্লবণ, শঠী, যমানী, বন্যমানী, াবড়ঙ্গ, তালীশপত্র প্রত্যেক ২ তোলা ; জীরা, গুড়ত্বক, ভেজপত্র, এলাইচ, নাগেশ্বর, লবন্ধ, জাগুফল ৫তোক ৪ তোলা; বিশ্বড়কবীজ, াত্রকট প্রত্যেক ৬ তোলা; ধনে, যষ্টিমধু, মৌরে, কেশুর প্রত্যেক ৮ তোলা; শৃত্যুলী ভাষকুয়াও, ক্রিফলা, হ,স্তকর্ণ পলাশ ছাল, গোরকচাকুলে, আলকুণাবীজ, গোকুর বীজ, প্রত্যেক ১০ তোলা, এই সমুদায় চুর্ণের সমান স্বীজ সাক্ষ্ণ। স্ক্স্মান চান। উপ-বুক্ত পরিমাণে হাত ও মধু ামশ্রিত করিয়া ২ তোলা কপুর খারা অধিবাদত করিবে। মাত্রা—॥• ভোলা হইতে ১ ভোলা। সচরাচর এরপ বৃদ্য ঔষধ দৈথিতে পাওয়া যায় না। ইহা সেবন করিলে অগ্নিমান্দ্য, গ্রহণী, অমপিত, অর্শ: ও মেহ প্রভৃতি বিবিধ রোগের ধ্বংস এবং বল, বীর্ঘা, অমি, ইক্রিয়শক্তি, কান্তি ও দৃষ্টিশক্তি প্রভৃতির বিশেষ বৃদ্ধি হয়।

यहन-(याहकः।

ত্রেলোক্যবিজয়াপত্রং সবীজং যুতভর্জিতন্। সমে শিলাভলে পশ্চাক্র্পিয়েণতিচিকণম্ । जिकरे जिक्ला मुक्ती कूर्छः निक्रवशास्त्रकथ्। শঠী তালীশপত্রঞ্ফ কট্ফলং নাগকেশরম্। যমানী চাজমোদা চ যন্ত্ৰীমধুকমেৰ চ। মেৰী জীরকযুগাঞ্চ গৃহীত্বা স্বল্লভৰ্জিত্য । यावस्त्राञानि हुनानि ভाবদেব তদৌষধন্। : তাবতোৰ সিভা দেয়া যাবভা৷ যাতি বন্ধনম্ 🛚 ঘুতেন মধুনা মিশ্রং মোদকং পরিকল্পয়েৎ। ত্রিহুগন্ধিসমাযুক্তং ক পুরেণাধিবাসয়েৎ। স্থাপয়েদ স্বতভাগে চ শ্রীমনাদনমোদকম। ভক্ষেৎ প্রাভক্ষায় বাতলেমনিবারণম্ । কাসন্থং সর্ব্বপুলন্মশামবাতবিনাশনম্। मर्कारकां गहत्रदेक छ ५ मः अह अह नी इत्र म् ॥ এতন্ত সততাভ্যাসাদ্ বৃদ্ধোহপি তরণায়তে। এতৎ কামগু বৃদ্ধার্থ:নারদপ্রতিপাদিতম্।। ব্ৰহ্মণঃ প্ৰমুখাৎ শ্ৰুৱা বাঞ্দেবো জগৎপতিঃ। তেন লক্ষং বরস্থীণাং বমতে যত্রনন্দনঃ।

ত্রিকট্, ত্রিফলা, কাঁক্ড়াশুঙ্গী, কুড়, সৈরূব, ধনে, শ্সী, ভালীশপত্র, কট্ফল, নাগেশ্বা, যোয়ান, বন যোয়ান, যষ্টিমধু, মেথী, জ্বিষ্ ভার্জিভ জাঁরা ও ক্লফজারা প্রত্যেক সমভাগ, সর্বসমান ঘৃতভার্জ্জত বাঁজসাহত সাজিচ্বা উপযুক্ত পরিমাণে চিনি ঘৃত ও মধু মিশ্রিত করিয়া মোদক প্রস্তুত কারবে। পরে গুড়ত্বক্, ভেজপত্র, এলাইচ ও কর্পুর ঘারা অধিবাসিত করিয়া প্রাত্যকালে ইহা সেবন করিলে বাতশ্বেজ্জ রোগ, কাস, শূল ও গ্রহণা প্রভাত বিবিধ রোগ নাশ ও বলবাঁধ্যাদের বৃদ্ধি হয়।

খণ্ডাত্রকম্।

পক্তরসদ্রোণঃ পাত্রং শুলুক্থন্তঃ।

যুত্রকং ততো গ্রাহং চতুর্বাংশঞ্চ নাগর্ম।

ডদক্ষং মরিচং প্রাক্তং তদক্ষা পিশ্বলী মতা।
তোরং পশুসমং দন্তাৎ সর্বব্যক্তর সংস্থিতম্।
বিপচেন্রুল্মরে পাত্রে বদা দ্ববীপ্রবেশনম্।
চুর্ণান্তেবাং ততো দন্তাৎ পত্রং পলচতুইরম্।

গ্রহিকং চিত্রকং * মৃত্তং ধ্যাকং জীরকর্ম।

জাবণং জাতিতালাশং চুর্ণমেবাং পলং পলম্।

ঘগলাকেশরাণাঞ্চ প্রত্যেক্ষ্প পলং তথা।

সিক্ষণীতে চ মধুনঃ প্রস্থং দ্বা বিষ্ট্রেং।

চিত্ৰক্ষিতাত চ্বামিতি বা পাঠ:।

তৎ সৰ্ব্বমেকত: কুদ্বা শুভে ভাণ্ডে নিধাপয়েৎ। ভোজনাদাৰত: খাদেৎ প্ৰমানং প্ৰমাণত: পচেছৎ কন্দর্প ধুলাক্ষো রাগবেগাকুলেন্দ্রিয়ঃ। শতং বাপি ভদ্ধিং বা রমেৎ জ্রীণাং পুমানয়ম। দংসেব্য ভেষজং ছেতদ্ বন্ধ্যায়াং জনয়েৎ সূত্ৰ। বীরং সর্বাপ্তণোপেতং শতারুক ভবেদয়ম্॥ মুতবৎসা চ যা নারী যা চ গর্ভোপঘাতিনী। সাপি হতে হৃতং সত্যং নারায়ণপ্রায়ণ্য ॥ বন্ধাপি লভতে পুত্ৰং ব্রহ্মেহপি তরুণায়তে। তুরক ইব সংক্ষো মাতক ইব বিজ্ঞা। मना (ভषञ्रमःरमवी ভবেনাঙ্গতবেগবান্। হাঁত্ত সর্কাময়ং যোরং কাসং খাসং ক্ষয়ং তথা। হুৰ্নামাজীৰ্ককৈব অমুপিতং কুদাক্ৰণম্। क्काः हर्षिक मृध्हाक **गुलमहे**निधः करत्र ॥ খণ্ড এক মিদং প্রোক্তং ভার্গবেণ বয়ন্তব।। বয়স্যা মেধামায়ুষ্যং স্বরপাপ্রিনাশ্নন্ 🛊 গ্রহরক্ষঃ পশ:চল্লনপ্রারে বিনাশনগ্র পাড়রোগং প্রেচ্ছ মৃত্রুছ্ছ নাশ্রেং। ৰশ্যা যোগৰন্তবেৎ পু॰সাং পুমান বশাশ্চ যোগিতাম। पृष्ठेः वातमध्यक् कथमञ् (वहात्रवा ॥

মুপক মধুরাত্র রস ৬৪ সেব, ।চ.ন /৮
সের, গবা গ্বত /৪ সের, ভাঁঠচুর্ল ৮ পল, মরিচ
চুণ ৪ পল, পিপুল চুর্ল ২ পল, জল ৮৮ সের,
এই সমুদায় একতা করিয়া বিধিপূর্ব্বক মৃৎপাত্রে
পাক করিবে। পরে হাতায় লাগে এরূপ
ঘনীভূত হইলে তেজপত্রচুর্ল ৪ পল । এরিটলা,
চিতামূল, (পাঠাস্তরে— চ) মৃতা, ধনে, জীরা,
ক্ষাজীরা, ত্রিকটু, জার্ফল, তালীশপত্র, গুড়স্বক,
এনাইচ ও নাগেশ্বর প্রত্যেক ১ পল প্রক্রেপ
দিবে। শীতল হইলে মধু /৪ সের মিশ্রিত
করিবে। মাত্রা—৮ তোলা (২ তোলা)।
আহারের পূর্বে সেবনীয়। ইহা সেবন করিলে
শ্বাস, কাসাদি বিবিধ রোগ নষ্ট এবং বল,
বীধ্য ও রতিশক্তি অত্যন্ত বিদ্ধিত হয়।

ত্রত্নরীগুড়িক।।

অত্রকং মাঞ্চিকং বন্ধং কান্তং হেম সমং সম্ম। স্বাদি সমভাগানি স্ত্যুক্তানি কাররেং ॥ গোলকক ভতঃ কুথা পকং নিচুলবারিণা। ভতস্তং পুটপাকেন স্বভ্যিষ্ঠা প্রয়ত্তঃ ॥ বাহে চাস্যাণি নিথা চ বন্ধু হা গুড়িকোন্তমা। তন্তরেচ্ছন্ত্রসংঘাতং বিবরোগাংশ্চ নাশরেং। অন্দেনৈকেন বন্ধু হা বয়ংতন্ধং করোতি চ। বনীপনিতহন্ত্রীয়ং গুড়িকা হুরহন্দরী।

অভ্র, স্বর্ণমাক্ষিক, হীরক, লৌহ, স্বর্ণ ও পারদ প্রত্যেক সমভাগে লইয়া হিজলের রসে মাড়িয়া পুটপাক করিবে। ইহা মুখে ধারণ করিলে বলবীর্ঘা বন্ধিত এবং বয়ঃ স্তম্ভিত হয়।

বান্ত্রীবটিক।।

বীজানি কপিকছুনাং কুড়বমিতানি বেদয়েছনকৈ:।
এছে গোভবছুকো তাবদ্বাবদ্ভবেদ্গাচ্ম্॥
ছগ্রহিতানি চ কুছা স্কাং সম্পেদয়েং তানি।
পিটিকায়া লঘুবটিকাং কুছা গলো পচেদাজো ।
বিভগিতশকলোপেতা বটিকাং শর্করমা লেপটা ।
বটিকা মান্দিকমধ্যে মজনযোগ্যে বিরলা হাপটা ॥
পক্টকনিতাভান্ত প্রতিত সামক ভকলেং।
অবেন শীঘ্রদাবী যো ঘল্চ সাহে পতিত্বরুজঃ॥
সোহপি প্রায়োতি স্বতে সামর্থামতিবাজিবং।
নানেন সদৃশং কিঞ্চিদ্রন্থ বাজীকরং পরম্॥

আলকুনীবীক্ত অন্ধনের ও গব্যহ্য /৪ সের

একত্র পাক করিবে। গাঢ় হইলে নামাইয়া
বীজগুলি খোদা রহিত করিবে এবং উত্তমরূপে পেষণ করিয়া ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র বটিকা করিবে।
পরে ঐ বটিকা সকল হতে ভাজিয়া দিগুণ
পরিমিত চিনিতে ফেলিবে; চিনি লিগু করিয়া
বটিকা সকল নিমজ্জনযোগ্য মধুপূর্ণ ভাণ্ডে
রাখিয়া দিবে। ইহার মাত্রা—২০০ তোলা;
ব্যবহার > তোলা। প্রতাহ প্রাত্রেও সন্ধ্যায়
সেবনীয়। ইহা সেবনে স্ত্রীসহবাসে অবসদৃশ
সামর্থ্য হয় এবং ধ্রক্তক্স নিবারিত হয়।

মশ্বথাজরসঃ।

রসগন্ধকরে প্রাহিং পলনেকং স্থলে ধিতন।

অবং নিক্তলকং দন্তাৎ পলার্দ্ধক বিচক্ষণঃ ॥

কপুরং লাণকং ৬ দন্তাদ্ বঙ্গক কোলমাতন।
ভাষাং ভোলার্দ্ধক তে নিঃশেষং মারিভং পুনঃ ॥

শাণকমিত্যত্র তোলকমিতি বা পাঠ:।

লৌহকথং স্থাপিক বৃদ্ধদারকজীরকম্।
বিদারীং শতমূলীক কুরবীজং বলাং তথা ॥
মর্কটা ভিবলাকৈব জাতীকোংফলে তথা ।
লবকং বিজয়াবীজং খেতসর্জ্ঞং বামানিকান্ ॥
শাণভাগান্ গৃহীকৈতানেকীকুতার পেষয়েং ।
গুল্লামন্ত ভোক্তব্যং কোফং ক্ষীরং পিবেনন্ত ॥
গৃহে যন্ত শতং নায়ো বিস্তান্তেহতিবাবায়িনং ।
ন তমা লিক্সশৈপিলামৌমধস্যাস্য সেবনাং ॥
ন চ শুক্রং ক্ষয়ং য'তি ন বলং হু'সতাং রজেং ।
কামন্ত্রপী ভবেন্নিতাং সৃদ্ধঃ বেড়েশবর্ষবং ॥
রমানেবরা বলো বাজীকরণ উত্তরং ।
রমঃ শ্রীমন্মথালোহাং মহেশেন প্রকাশিতা ॥
অস্য ভক্ষণম'রেণ কাঠং জাবাতি তৎক্ষণাং ।
নশ্যেদধ্যজভক্ষান্ত বিগোন যোগান্তান্প ॥

পারদ, গন্ধক, অন্ন প্রত্যেক ৪ তোলা।, কপুর অন্ধতোলা (পাঠান্তবে ১ তোলা), বঙ্গ ১ তোলা, তান্ত অন্ধ তোলা, লোহ ২ তোলা, বিন্ধড়ক বীজ, জারা, ভূমিকুল্লাণ্ড, শত্মূলী, কুলেখাড়াবাজ, বেড়েলা, আলকুলাবাজ, গোরক্ষচাকুলা, জানা, জায়ফল, লবঙ্গ, সিন্ধি বীজ, খেতপুলা ও মমানী প্রত্যেক অন্ধতোলা। এই সমুদায় জবা জলের সাহত মদ্দন করিয়া ২ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে। অন্ধ্রপান—স্বিহ্ন হয়। ইহা দেবন করিলো ধ্বজভ্লাদি রোগের শান্তি হইয়া বল বীশ্য ও রতিশক্তির কৃদ্ধি হয়

মকরধ্বজে। রসঃ।

বর্গনিষ্ঠ গ্রং হৃতং মন্দ্রেং বিক্রমন্থ ন রক্তকার্পানকু কুমে: কুমাবার্তিনিমন্দ্রেং । জন্ধ কার্তিনিমন্ত্রেং । জন্ধ কার্তিনিমন্ত্রা নবার্কিরণাপ্রমন্ত্রা । জাবলং মরিচং জাতিনিকরং কপুরিমা কুলোভনাং। লবলং মরিচং জাতিনিকরং কপুরিমা কুলোভনাং। লবলং মরিচং জাতিনিকরং কপুরিমা কুমা । লক্তপিটো রমো নাম আরেতে মকর্পরেজ্ঞ। লক্ত্রেরালুরং রিমা নাম আরেতে মকর্পরেজ্ঞ। জন্ত্রেরালুরং রিমাং মৃত্রাংসম্বাত্রম্ । ভক্তরেরালুরং রিমাং মৃত্রাংসম্বাত্রম্ । শৃত্রীতং সিভাযুক্তং কুমাং গোভব্যাজ্যকম্ । মধ্যজাং পিট্রম্পরং মঞ্চানি বিবিধানি চ ॥

করোতারিবলং পৃংসাং বলীপনিতনাশন:।
মেধার্থকান্ডিজনন: কামোদ্দীপনকুন্মহান্ ।
অভ্যাসাৎ সাধক: ব্রাণাং শতং জয়তি নিত্যশ:।
রতিকালে রতান্তে চ পুনঃ সেন্যো রসোন্তম:।
মানহানিং করোত্যাসাং প্রমদানাং স্থানিশ্চতম্।
কু ত্রমং স্থাবরবিবং জঙ্গমং বিষবারি চ ।
ন বিকারায় ভবতি সাধকানাক বৎসরাং।
মৃত্যপ্রয়ো যধাভ্যাসায়্ত্যুং জয়তি দেহিনাম।
তথায়ং সাধকেন্দ্রন্থ জরামরণনাশন:।

্জ্র গস্থানকং ব্যাবক্ষ্। বলং বিগুঞ্জক্ষ্।) এতদ্ধে পরিভাষামাংহ---যবহরেন গুঞ্জা স্যাদ্ বিগুঞো বল্ল উচ্যতে। ধরণঃ স্যাচচ্ছুম বিং বড়্ভিগ্রানমূচ্যতে।

শোধিত পুলাম্বর্ণিত ১ পল, পার্দ ৮ পল, : গন্ধক ২৪ পল, এই সমস্ত রক্তবর্ণ কার্পাস-পূজাও গুতকুমারীর বদে মাড়িয়া ধবজভঙ্গা-ধিকারোক্ত রহচ্চক্রেদের মকর ধর জ করিবাব প্রণালী অন্মূলরে পাক বোতলের উল্পংল্য রস ১ তোলা, লবঙ্গ, মাংচ ও জাগ্ৰুল প্ৰত্যেক ৪ তোলা, মুগনাভি ৬ মাধা এই সমুদায় একতা ১ুন্দর মাড়িয়া হুই র'ত হইতে চারি রতি পণান্ত পরিমাণে প্রয়োগ করিবে। পানের সহিত সেবা। পথা—সুমিগ্ধ মধুর কোমল মাংস, চিনিমিশ্রত হগ্ধ ও গ্রা গ্রত প্রভৃতি। ইহা দেবন করিলে অগ্নির রান্ধ, বলীপলিতাদির নিবারণ, ম্মরণশক্তি এবং কান্তির বুদ্ধি ও কামোদ্দাপন হয়। ইহ কামিনীগণের দর্শনাশের মহৌষণ। শর্ম প্রকার বিষ্টোর নিবারিত হয়।

মহেশ্বরসঃ।

রসং ভত্মীকৃতং কোলং পদকং শোধিতং সমস্।
পৌহং কথৰুয়ং ভাত্মমদ্ধকোলকসন্মিত্রন্।
ধ্বর্ণ জারিতং দক্তাচ্ছাণাদ্ধং স্থবিচক্ষণঃ।
অলং কথৰুয়ং দক্তাচ্ছাণাদ্ধং চন্দ্রচ্পকম্॥
শ্যামাবীজং বরাকৈব বলামতিবলাং তথা।
এলাঞ্চ শন্মপুপাঞ্চ শাণমানং বিনিক্ষিপেং॥
জলেন বটিকাং কৃতা গুঞামাত্রাং প্রদাপ্তেং।
সেবোদ্যা কন্দর্প-কপোভবতি মানবং॥

সহত্রং যাতি নারীণামুংসাংহা জায়তেহধিক:।
নিতাং স্থাসেবনাদ্ যন্ত্র কাণগুলো ভবেন্ধর:॥
মহাগুলী ভবেং সোহপি সেবনাদ্যা নাজ্যা।
মহাবলো মহাবুদ্ধিজায়তে ন'ল সংশয়ং॥
স্থলানাং কর্বকঃ শ্রেজা কৃণানাং পৃষ্টিকারকঃ।
রসো বিনাশয়েদ্রোগান্ সপ্তসপ্তাহভক্ষণাং॥

রস্দিশ্র ১ তেলা, গন্ধক ১ তেলা, লোই ৪ তোলা, তাম ॥০ স্ক্র তোলা, জারিত স্বর্থ ২ মাধা, অত্র ৪ তেলো, কর্পুর ২ মাধা; র্ক্ষদারক্রীজ, শতমূলা, বেড়েলা, গোরক্ষা-চাকুলে, এলাইচ ও শুআপুপ্লা (ভানকুনী), প্রত্যেক ৪ মাধা একত্র জলে মর্দ্ধন করিয়া ১ রতি প্রমান বর্তিকা কবিরে। এই উষধ সেবন করিলে মানর কন্মপ্রদশ ইইয়া সহস্র নম্বার প্রিভোধে সম্বে হয়। যে ব্যক্তি সভিরক্তি স্বীস্প্রমে ক্ষাণ্ডক ইইয়াহে, ইহা সেবনে সে আত বাল্যান্ হইবে। ইহাতে মহুষা বল্বান্ ও বাজমান্ হর। এই ঔষধ সেবন অহাত হল বাজে। শ্রীর স্বাভাবিক এবং ক্রশ্ব্যাক্তর শ্রার পুই ইইয়া থাকে।

গন্ধামূতরসঃ।

ভক্ষপুত্র দিধ গলং কঞ্চকাভিনিধর্নকে ।
কল্পান পাচানুদ্ধ্য মনুমানবা।
কলং পাদেজনামূল্য হ'ল প্রাচ্ছেত্র ন্দ্র ।
সমলং ভ্রমানক ছল্পান হয়ে। শুনং বিচ্বুত্রে ॥
ভর্মান ক্রিকলাচূর্য নক্রুত্রনা নিতা ভাবে ।
প্রিকা ভ্রাক্রেয়নকু নোকাকে জ্যানাধ্য ॥

পার্যভ্তা > ভাগ, গন্ধ ২ ভাগ (অভাবে হিপুলোণ রস ১ ভাগ ও শোনিত গন্ধক ২ ভাগ), একত্র ঘুতকুমানীর রসে মন্দ্র করিয়া মুর্যাম্যো জাসিত করিয়া শরুপুটে পাক করিবে। ২ রতি মাত্রায় গুড় ও মধুব সহিত সেবনীয়। ঔম্বনেবনাতে সমূল ভ্রম্বাজচুর্ব ১ ভাগ, ত্রেক্লাচুর্ব ১ ভাগ ও চিনি ২ ভাগ এই সমূল্য একত্র মিশ্রত করিয়া ভক্ষণ করিবে। ইহা সেবন করিলে জরা নিবারিত হুইয়াথাকে।

शृर्वहरका त्रमः।

স্তাভ্রনোহং সনিবাজতু স্যাদ্ বিড়ঙ্গতাপাং মধুনা যুভেন। সংমদ্যি সর্বং থলু পূর্ণচন্দ্রো মাষোহস্য বুব্যো ভবতি প্রযুক্তঃ॥

রসিন্দ্র, অত্র. লোহ, শিলাজতু, বিড্ন্ন ও স্বর্ণমাক্ষিক ইহাদিগকে মৃত ও মধুর সহিত মাড়িয়া > মাধা পরিমাণে প্ররোগ করিবে। ইহা বৃষ্য অর্থাৎ শুক্রবর্দ্ধক।

প্রীকামদেবরসঃ।

পারদং প্রমেকং স্যাদ্দ্রিপ্রং ওদ্ধগদ্ধক্য। রক্তকাপাসভোয়েন গৃষ্ট্ । কাচন্ত কুপ্যত: । নিক্ষিপ; টক্সণেনৈব মুখং তম্ম নিরোধয়েৎ। वानुकायश्रमशृष्टः दुश्क कुक्राक पृष्ट् ॥ আহোরাত্রং পচেদ্রো শাস্ত্রবিৎ কুশলো ভিষক। শীতে চাদায় পাত্রস্থং কুপিকান্তরন্থিত্স্। प्रतापन मभः तद्धः (माञ्चलः **ख्या यष्ट**ादर। ভক্ষেত্রাযমেকঞ্ মৃতেন মধুনা সহ 🛭 পশ্চাদ হ্রমং গুড়ফাজাং কুক্মেকুমপি শর্করাম। ক্রাক্ষাগর্জ্রমধুক-প্রভূতীনথ ভক্ষয়েং। ত্রিফলামধুন। শাস্তিং বাতি পিত্তং চিরোছবস্। নিগু ভিকারসেনাত্র ছর্কারবাতবেদনা। প্রশমং য'তি বেগেন নৃতনঞ্চ ব**পুর্ভবে**ৎ ॥ অর্দাণবিতহ্বমেন গুড়তে যতায়ং রস:। বন্ধ্যাপি চ ভবত্যেৰ জীবৰৎসা স্থপুত্ৰিকা। কামদেবন্ধে। সূতং কামিনাং কামদং দদা। বস্য প্রসাদতো বল্যো রম্যক রমতে প্রিরম্ ॥

পারদ > পল, শোধিত গদ্ধক ২ পল, রক্ত কার্পাসের রসে মদ্দন করিয়া একটি কাচকুপীর ভিতরে পূরিবে। পরে সোহাগাধারা তাহার মুখ বন্ধ করিয়া বালুকায়য়ে দৃঢ়রূপে স্থাপন করিবে। সমস্ত দিন ও রাত্রি আগ্রতে পাক করিয়া শীতল হইলে উদ্ভোলন করত দেখিবে যে, তাহার মধ্যে হিন্তুলের ক্যায় রক্তবর্গ ভত্ম রহিয়াছে। সেই ভত্মের ১ মায়া মৃত ও মধুর সহিত সেবন করিবে। ঔষ্ণ সেবনের পর হ্র্যা, গুড়, মৃত, কাজ্লী ইকু, চিনি, দ্বাক্ষা, খেজুর ও মৌলফল ভক্ষণ

করিবে। যদি পিতাধিক্য থাকে, তাহা হইলে ত্রিফলা ও মধুর সহিত সেবন করিবে। বাতবেদনাতে নিসিন্দা পাতার রস অনুপান। ইহাতে অতি সন্ধর সর্বরোগ বিনষ্ট হইয়া শরীর নৃতন হয়। অর্জাবর্তিত হুগ্নের সহিত এই রস পান করিলে বন্ধ্যাও জীবৰৎদা এবং স্পুত্রিকা হয়। কামীর কামদ এই কামদেব রস সেবন করিলে মানব বলবান্, রম্নীয় ও রতিশক্তিমান্ হয়।

কামিনামদভঞ্জনঃ।

শুদ্ধতং সমং গদ্ধং ত্যুহং কলারকন্তবৈ। । মর্দ্দিতং বালুকাবতে যামং সংপ্রকে প্রেচং ॥ রক্তাঙ্গস্ত ক্রবৈভাব্যং দিনেকস্ত সিতাযুত্য। যথেতং ভক্ষেচেক্তি কাময়েৎ কামিনীশ্তম॥

পারদ ১ পল ও গন্ধক ১ পল এই উভয় দ্বব্য স্থাদি প্রশেষ রসে ৩ দিন নাড়িয়া পূক্রবং বালুকাযন্ত্রে ১ ও হর পাক কারবে। পবে ঔষধ বাহির করিয়া লইয়া কুন্ধুমের দ্রবে এক দিন ভাবনা দিবে। উপস্কু মাত্রায় চিনর সহিত সেবনীয়। ইহাতে রতিশক্তিব র্দ্ধি হয়।

হর-শশাঙ্কঃ।

শংকল্যান্ত সাদার প্রক্রিনি কারমেৎ।
শুদ্ধগদ্ধনি তদ্রদৌন ভাবমেৎ।
শাসমাত্রপ্রাগেণ পুণু বক্টামি যে গুণা:।
মকরধ্বজরপোংগি শ্রীশতানন্দবর্দ্ধনা।
শতার্শ্চ ভবেনেবি বলীপলিতবজ্জিতা।
তেলকী বলসম্পন্নো বেগেন তুরগোপমা।
সততাং ভক্ষেদ্ যন্ত্র তক্ত মুতুর্ল জারতে।

শিম্লম্লের ছালচ্ব ও শোধিত গণক
চ্ব একত করিয়া শিম্লম্লের রসে ৭.৭,০
ভাবনা দিয়া উত্তমরূপে চ্ব করিবে। ইং
উপযুক্ত (২ মাষা) মাতায়, ত্বত ও মধ্ব
সহিত সেবনীয়; (উষ্পদেবনাক্তে ছ্যা > প্র
প্রে। এই ঔষ্ধ সেবন কাংলে বলাক
প্রিভাদি দ্বীভূত ও রাতশাক্ত সংব্ধিত

रुम এবং ইহাতে মন্তব্য তেজধী বলীয়ান্ ও দীর্ঘদীবী হইমা থাকে।

কামধেনুঃ।

গন্ধমামলকং চুৰ্বং ধাত্ৰীরস্বিভাবিত্য। সপ্তধা শাল্মলীভোৱেঃ শর্করামধুযোজিত্য। লীচ্বা চাত্রু পারং পানং প্রত্যহং কুরুতে তু যং। এতেনাশীতিবধাহপি শত্রধা রমতে প্রিয়:।

শোধিত গদ্ধক চুর্ণ ধ পল, স্থপক আমলকী চুর্ণ ধ পল একত্র করিয়া আমলকীর
রসে ও শিমূলমূলের রসে যথাক্রমে ৭ বার
করিয়া ভাবনা দিবে। পরে চুর্ণ করিয়া উপযুক্ত মাত্রায় (৪ মাধা পরিমাণে) চিনি ও মধুব
দহিত সেবনীয়। ঔবধ-সেবনাজ্যে কিঞ্ছিং
হুদ্ধ পেয়। ইহা হার: রতিশক্তি বর্জিত হয়।

স্পিন্দুরম্।

পলং রসেক্ত চ গ্রুকত হেমেন্টেপি কবং প্রিগৃত সমাক্। বটপ্ররেহিত রসেন য মং যামং বিম্নান্থ কুমাবিকারণ ॥ তৎ কাচকুপাং নিহিতং প্রমূর্থ প্রেচ্ছ বিশ্বিতঃ সিকতাপায়হে। ততো রজকোর্ছগত হেরমাং প্রগৃত্য যত্তাদক্ষণপ্রতং বং ॥ তদ্ যোজ্যেৎ সর্বগদেনু বীক্ষা যাতুং বলং বহিম্মান্থ বর্গত। রসায়নং বৃষ্যতর্ম্ভ বলাং মেধ্যিকান্তিক্ষরবর্ষনক॥।

পারা ৮ ভোলা, গন্ধক ৮ ভোলা, স্থা ২ ভোলা। এই সম্দার বটাঙ্কুরের রসে এক প্রহর ও মৃতকুমারীর রসে এক প্রহর মাড়িরা মকর্থকল প্রস্তুত করিবার নির্মান্ত্র্যারে বালুকা-যন্ত্রে পাক করিবে। কাচকুপীর উর্দ্ধ-ভাগগত লোহিতবর্ণ রক্ষ: সমস্ত গ্রহণীয়। ইহার নাম স্থা-সিন্দ্র। অমুপান-বিশেষের সাহত ইহা সকল রোগেই রোগির অগ্নি, বল, বয়স ও ধাতু অনুসারে প্রয়োগ করা যায়।

ইহা সেবন করিলে বল, বীর্য্য, অগ্নি, মেধা, কাস্তি ও রতিশক্তি প্রভৃতি বর্দ্ধিত ১য়। (মাত্রা—২ রতি)।

গোধুমাত্তং গ্ৰতম।

গে'ধুমাৎ তু পলণতং নিঃকাথা সলিলাচকে। পাদাৰণেষে পুতে চ দ্ৰবাণিমানি দাপয়েৎ ॥ গেবিমং যুঞ্জাতফলং মান্দ্রাকাপর্যক্ষ। কাকোলী ক্ষীরকংকেলো জানস্তা সণ্ডাব্রী॥ अवशका मशब्द्रा मशुकः क्राग्नः (निछा । ভলাতকন সভাপানি করেয়েৎ॥ युड्य १८५८मकः क्यातः मङ्ग हर् छ नम्। মুদ্ববিনা চ সিংদ্ধ তু দ্রবাণো তানি নিক্ষিপেৎ ॥ হগেল। পিশ্বলী ধান্ত-কপুরিং নাগ্রেশরম্। यथानाज्य निर्मिक्ता मिछी-क्कोप्टर भन्दिकम् ॥ দভেক্ষদভেনালে ডা বিধিনদ্ বিনিযোজয়েং। শংল্যাদনেন ভুঞ্জীত পিবেন্মাংসরসেন বা । কেবলপ্ত পিবেদস্য পলমাত্রং প্রমাণতঃ। ন চাস্ত লিক্সশৈথিলাং ন চ গুক্তকায়ো ভবেৎ ॥ বলাং পরং বাতহরং শুকুসংজননং পর্য। মূত্রকুছ্ছ প্রশান কর্মান ক্রেপি শহাতে। পলব্যং তদ্মীয়াদ দশরাত্রমতন্ত্রিতঃ । প্র'ণাং শতক ভজতে পীছা চ'ত্পিবেং পর; ॥ অবিভাশ নিশিষ্টকৈব গোধ্যাপ্তং রসংয়নম্। জলদেশিংক গোধ্যকাপত চেছ্ৰ আচক: ॥ যুপ্লতিকন্ত ভানে তু তণ্ডণ তালমস্তক্ষ্ ! कल्यावानमः मानः वृत्रात्मः मार्ट्डवाडः ॥

ঘৃত /৪ সের। কাথার্থ—গোধ্ম ১২॥০ সের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের। করার্থ—গোধ্ম, যুপ্তাত ফল (অভাবে তালের মাতী), মাষকলাই দ্রাকা, পরুষ ফল, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, ভীবন্তী, শতমূলী, অশ্বগন্ধা, পিশুন্ধর্জুর, যষ্টিমধু, ত্রিকটু, চিনি, ভেলার মূটী, আলকুণীর মূল বা বীজ প্রত্যেক সমভাগ (মিলিত /১ সের)। ছগ্ম ১৬ সের। ভুজারতে ঘৃত পাক করিরা পাকের কিঞ্ছিৎ অব্লিষ্ট থাকিতে কল্প দ্রব্য ইনিক্স। ফেলিয়া পুনর্বার পাক করিবে। পাক সিন্ধ হইলে গুড়ত্বক্, এলাইচ, পিপুল, ধনে, কর্পুর ৪ নাগেশ্বর কল্পন্রের মাত্রায় যথালাভ প্রক্ষেপ

দিবে। পশ্চাং চিনি সাত সেব ও মধু সাত সের প্রক্ষেপ দিয়া ইক্ষুণ্ড ছারা আলোড়ন করিবে। মাত্রা—২ জোলা। অনুপান— তথা। পথা—শালিভঙুলেব অন্ন ও মাংদের যুব প্রভৃতি। এই ঘৃত বলকারক, বায়ুনাশক, শুক্ত ও রতিশক্তি বর্দ্ধক এবং মুত্রক্ষুনাশক।

হুহুদখগন্ধান্বতম্।

व्यक्षकार्भना हर एकामगुष्ठतम् । পুণোহছনি সম'জতা সাধ্যেৎ একক্টিওম্ ॥ জোণেহস্তুসি গটেও তাবদ য'বং প দাবশেষিত্র। স্পিঃপ্রস্থং প্রেণ্ড তেন গণকারং চতুগু প্র্ কষারং ভাগাম*েনতা দত্য চন্দ্র হয়তা চ। কন্ধানি প্রক্রাপিষ্টানি ক্যমানানি লাপয়েৎ ৷ क्रांक्तालागुभद्रह्या एवं स्मर्टन एवं ठाव जीवकम् । স্থা ওপুৰিষ্ট কৰেলাং সধ্কৰেৰ চ।। मुद्राकार अभिभागी ह अत्युर ह्मानार ननाम । मात्राक्ष्मीर विकातीक क्या ममाग् विशाहरहर । মিতামাজিকয়োঃ শীতে গুট্নায়াৎ কৃত্ৰৌ পুৰক্। লাচ্য পাণিতলং ভুঞ্জাৎ পরিহারবিবর্জিতম্। कीलिक्याः भागस्य। तृष्टा ४,७१७४५७४ । হীনমাণসাধ্য যে কেটিৎ প্রারেদং মাত্রা মৃত্যু॥ ওয়ং স্কুলের (১৯৪১ এম কমিন্ট্রিয় চ। জভতে সুধ্যমন্বাদো জ্বাহতে নিগভন্তঃ। বৃদ্ধো বৃষায়তে স্থাপু নিভাং বোড্শনখনং। নারীণাঞ্চ শতুং গচেছর চ উলক্ষয়ো ভবেং । বন্ধাচলভতে পুত্রং বুদ্ধিমেধ;সম্বিত্য। মাসমাত্রপ্রয়োগেণ বলীপলিতন্ত্রমান্য ॥ থালিতাং তিমিরং বাধেন্ বাতিকান্ কফপিওজান্। भक्षकामान् करा योगः हिकाक विवयवत्र्या। হত্তি সকলে গদান শিশুম্বিভ্যাং নির্বিতং পুরা 🛭 (অত্র চছাগমাংসণ্ডৰয়ে জলছোণ্ডয়ং দ্বা চতু-ভাগাবশেষ: কার্যাঃ, তুলাদ্রব্য জলদ্রোণ ইতি বচনাৎ।)

মৃত /৪ সের। কাগার্থ— অবগন্ধা ১২॥।
সের, জল ৬৪ সের, শেব ১৬ সের; ছাগমাংস ২৫ সের, জল ১২৮ দের, শেব ৩২ সের;
ত্ত্ব ১৬ সের: কল্কার্থ—কাকোলা, কারকাকোলা, শাদ্ধ, বৃদ্ধি, মেদ, মহামেদ, জীবক,
আলকুনাবীল, শাবভক, এলাইচ, যষ্টিমধু,
তাকা, মৃগানী, মাবাণা, জীবস্তা, পিপুল,
বেড়েলা, শতমুলা ও ভূমিকুমাও মিলিত /১

সের। পাকের কিঞ্চিৎ শেষ থাকিতে কল ।
ভাকিয়া পুনর্বার পাক করিবে। পাক সিদ্ধে ।
শীতল হইলে চিনি /॥০ সের ও মধু /॥০ সের
মিশ্রিত করিবে। মাত্রা—২ :ালা। ইছা পান
করিলে বল বীশ্য ও ইক্রিয়শক্তি প্রভৃতির
অভিশয় রদ্ধি এবং কাস, ক্ষয় ও খাস প্রভৃতি
নানা পীড়ার শান্তি হয়। ইহা বলী-পলিতনাশক, মেধা ও রতিশক্তি বর্ষক।

রুহচ্ছতাবরায়তম্।

শতবৈষ্ঠাপ্ত মূল্যোধ রস্প্রস্থার মতন্।
তৎসমক ভবেৎ করিং স্তপ্রপ্ত বিপাচরেং।
জীবকর্গভকে) মেলা মহামেদা ত্রান্ধ চ।
কাকোলা করিক বে লী চ্ছান্ধা মুক্তং তথা ॥
মূল্যপণী মংবপণী বিধারা রস্তচন্দন্।
শকরেমেপুসংসূত্রং সিদ্ধং বিশ্বনের্ছিষক্ ॥
রক্তপিত্তবিকারেরু বাতরক্তগলেরু চ।
কাণভক্রেরু দাবেরং বাজীকর্মমূত্রম্ ॥
অক্লাহং শিরেনেরং অরং পিতসমূত্রম্ ॥
বেলাক্রক দাবের মুক্তি ভিল্পাল্য নাক্তঃ।
শতবিরীস্পিরিদ বলবর্গ হিন্দিন্ম্ ।
বেংপাদং স্থা কর্মান্ধ্রম্য ।
বেংপাদং স্থা কর্মান্ধ্রম্য ।
বিহারালাং ব্রেংগ্রাহ্রম্প্রস্রে।
বিহারালাং ব্রেংগ্রেহ্রমেপ্রস্করে।
বিভিল্পালাং স্থা কর্মান্ধ্রমেপ্রস্করে।
বিভিল্পালাং ব্রেংহ্রমেপ্রস্করে।

গত /৪ দের। শতমূলীর রস /৮ দের,
হয় /৮ দের। কলার্থ—জীবক, শ্বযভক, মেদ',
মহামেদা, কাকোলী, জীরকাকোলী, দ্রাহ্দা,
যষ্টিমধু, মৃগানী, মাষাণী, ভূমিকুলাও ও রক্তচলন মিলিত /> দের। পাকান্তে শাতল
হইলে চিনি ও মধু মিলিত /> দের প্রকেশ
দিবে। ইহা রক্তপিত, বাতরক্ত, অসদাহ ও
মৃত্রক্তাদি রোগ নাশক, এল বর্ণ ও আগ্রা
বর্দ্ধক, শুক্তকারক এবং উৎক্তই বাজীকরণ।

কামদেবগ্নতম্।

অবগন্ধাপলশতং তদর্জং গোক্ষ্রক্ত চ। শতাবরী বিদারী চ শালপণী বলা তপা॥ অবথস্ত চ শুঙ্গানি পদ্মবীজং পুনর্মবা। কাশ্মরীফলমেতৎ তু মাযবীজং তবৈব চ॥

পুৰগ্দশপলান্ ভাগাংশচতুর্কোণেহস্তমঃ পচেৎ **Б**क्र् की श्रीवर्णमञ्ज क्योग्रन्तकां ब्रह्म । मृष्टीका পधकः कुष्ठेर পिश्रली द्रञ्जठनमनम्। বালকং নাগপুপাঞ্ আয়গুপ্তাফলং তথা। নালোৎপলং শারিবে বে জীবনীয়ং বিশেষতঃ। পুথক क्षेत्रभटेकन गर्कत्रासाः প्रविषयम् ॥ রমস্ত পৌণ্ড কেক্ণানাচকং তত্র দাপয়েং। চত্ত গৈন প্রদা পুত্রস্থ বিপারেরেই। রক্তাপতং ক ১ক্ষাণং কামলাং ব'তংশাণিতমু। হলামকং তথা শোখং বর্তেনং বলক্ষ্য ॥ অরোচকং মুখ্য ছেং পর্যেশুনক নাশয়েং। এত ছাজাং প্রয়োজনাং বহুর খুঃপুরচারিণান্। প্রাণ্টেঞ্ব'নপ্ত্যুনাং তুকালান্তে দেহিন্স। ব বাৰামঃ ওজাপাং ভাগ নামহবেভদাম্॥ (अ) १ वर्षकतः क्षेत्रः हुसार (शहर तमाव्रम्)। **७५८७५७**४४८केव आहुः थ निवक्षसम्॥ भारतक्षर ७ ७ मध्य शूक्षारः जुल्ताः विनयन् । সংক্রোগনিনিক, ক্রন্তে (ম্নিক্রো ম্পা ক্রম: । ক্ষ্ণেৰ আঁত লাভিঃ স্কৃতি মু চ শপ্ত 🛊

সূত্ৰ পোৱা স্থাসী ১০০ শত পল, গোকুর ৫০ পণা, শতনুলী, ভূমেকুমাও, শালপাণি ও বেড়েল। প্রতাক ৫০ পলা, অব্যাধর শুলা, প্রারাজ, পুন্নরা, ফল ও নানকলাই আইহোক ২০ এলা, এই সমস্ত ২৫৬ সের ভাগে পাকি করিল ৬৪ সের পাকিটে 利利的证明 中国国一年中,门里利沙,重导, াশপুন, রাজ্যালীন, বাসা, নাগ্রেকশর, আল-कुनावीय, नारवारवन, आभागाजी, बनस्यून, भावक, अवज्ञक, Gam, क्यार्ट्सक, कारकाणी, ক্ষারকাকোনা, জাবস্তা, র্টম্বু, পান্ধ ও বৃদ্ধি প্রত্যেক ২ এলালা, চিনি ১৬ তোলা, ইকুবস ১৬ (नात्र, ध्राप्त ১৬ भारत। यथावित शांक করিয়া এং গ্রাব্হার ক্রিলে রক্তাপত ও ক্ষক্ষণ এড়াত বিবি রোগ নিবারিত এবং বল, বার্য্য, অ.ম, এ ৩৭ক্তি ও উৎসাহ বাদ্ধত ২য়। ইহা সকল ঋতুতেই দেবন করা যায়।

পল্লবসারতৈলম্।

ত্রিফলায়া রসপ্রস্থং ভূঙ্গরাজরসং তথা। শ্তাবরীরসং ক্ষীরং কুখাওক্ত রসং পুণক্॥ প্রস্থৈকং তিলতৈ লগু প্রদুদ্ধ গ্রিনা ভিষ্ক্ ।
লাক্ষারনাল দিয়া পু প্রস্থাং প্রস্থা নিপাচয়েও ॥
ককাং কণা নিণা দ্রাক্ষা বিফলা নীলমুৎপলম্ ।
মধুকং কীরকাকোলা প্রান্তক্ষ পলা পলম্ ॥
কপুরিক নথা গরনাগুজা বিরজা সমম্ ।
জাতীকোলা লবক্ষক প্রতিক্ষর্যাং পাছেও ॥
মহানাতহরং তৈলা মহাপিত্রিনাশনম্ ।
নেত্ররোগেণ্য সর্কের্ অপান্নারেরিনান্নয়ে ॥
বিছ্রিরণশোল্য মহদোবহরং পরম্ ।
শ্লবে গ্রস্থাননানাহক্ছেন্যান্নম্ ॥
গুলার গ্রস্থাননানাহক্ছেন্যান্নম্ ॥
গুলার হান্ত্রো মৃত্রোভ্রিনাশনম্ ।
প্রশন্ত গ্রহান্যান্ত্রিনাশনম্ ।
নামা পর্বানা্যাণ্য তৈলা বিস্তাপ্রয়ার ॥

তিলতিল ৪ দের। বিফলান রস /৪ সের, অভাবে মিলিত বিফল াত সের, জল ১৬ সের, দেয় /৪ সের। ভৃত্বরাজ্বস, শতমূলার রস, ত্থা, কুয়া ওবদ প্রত্যক /৪ সের, লাকা /৪ সের, জ্ল ১৬ সের, শেষ /৪ সের, কাজি /৪ সের। কলার্থ— পিপুল, হরীতকী, জাকা, বিফলা, নীলোংপল, যন্তিম্পু, কীরকাকোলী প্রত্যক ১ পল। গদ্মন্ত্রা ভলাক প্রত্যক ১ পল। গদ্মন্ত্রা ভলাক প্রত্যক ৪ তোলা। এই তেল মলনে বায় ও পিত্ত-জনিত বিবিধ পাড়ার শাভি হর। ইহা শুল, মৃত্রক্তমু, প্রান্ত ও ওাইনা প্রত্তি রোগে প্রযোগ।

মৃতসঞ্জাবনা হর:।

নবং গুড়ক সংগৃহ্য শংগ্রাকং প্রাণং তথা।
বাবরীস্থচনালার বদরীইচনেব চ ॥
প্রস্থং প্রস্থা আদাকর প্রান্থয় বিধ্যানির দ্বা আদাকর প্রান্থয় ।
লোধক কুড়বং দরা আদাকর প্রান্থয় ।
প্রথমে চালেকং দল্পা গুড়ং সংগোলেরং ফ্রাটা।
প্রথমে চালেকং দল্পা গুড়ং সংগোলেরং ফ্রাটা।
প্রথমে চালেকং দল্পা গুড়া করিব বাবরীইচম্ ॥
ক্রিটারে বদরাং দল্পা গুড়া করিব বাবরীইচম্ ॥
ক্রিমারে মার্কিক্রিটারে মার্কিলিবিংশতিন্।
মুক্রারে মো্ডিক্রিটারে মার্কিলিবিংশতিন্।
মুক্রারে মো্ডিক্রিটারে মার্কিলিবিংশতিন।
ক্রীমনে, বিধাতবাং স্ক্রিক্রিক্রিটারেলনে।
ভানীবাক্র প্রথমেরা মার্কিলিবিংশতি।
নক্ষ ব্যুলাং দল্পা কুন্তো চি গজক্ষবং॥

কুন্তমধ্যে নিধাতব্যং পূগঞ্চ দৈলবালুকম্। দেশের লবক্ত পদ্মকেশীরচন্দ্রম্। শতপুপা যমানী চ মারচং জারকছয়ম্। শটা মাংসা বগেলাচ জাতাফলং সমুস্তকম ॥ अञ्चली उथा एकी मन स्मयः हरूनम्। এযাকাৰ্পলান্ভ গান্ কৃট্যিকা বিনি কপেৎ॥ যথাবি ধপ্রকারেণ চালনং দাপয়েৎ সুধীঃ। त् क्रमान् मोजनः कृश উक्षत्त्रम् विधिवः स्त्राम् । এতন্মপ্তাং পিবেল্লিভাং যথ ধাতুবন্ধ:ক্রমন্। व्याद्ध भाजननः (पर-तः । कृष् वनवक्षनम् । भिषा विकृत वारा-अक्कृत वा उन ! गम् ! वलपृष्टिक ब्रोक्षय काम मन्त्र भन् भन् । দশ প্রথা রমে ইত্যানন্দ উপজাহতে। র ৭ তে জ মাং সংস্থা ধথা ভামপ্রাক্ম। নাতঃ পরতরং কিঞ্চিত গোৎস হপ্রদং মহৎ। ্নবাশ্বরৈয়ু দ্ধকালে গুজেন পরি নন্ধিতম্।।

নৃতন গুড় '২।। সের। বাব্লাছাল, কুল-ছাল ও চিকি-স্পার প্রত্যেক /২ সের, লোধ / ৷ ০ অর্দ্রমের, আদা / ৷ ০ এক পোয়, সমূদায়েব অই গুণ জল। প্রথমে জলে গুলিয়া পরে হথাক্রণে আল, বাব্লাছাল ও কুছাল উহাতে দি ক্ষপ্ত ক'র্য়া উভ্যক্তে মোশ্রত কণিবে। তৎপরে স্থপার ও লোগ প্রাক্ষপ্ত করিগ শবাব ধারা পাত্রের মুখ আচ্ছাদন ও উভ্যক্ষপে বন্ধন করিয়া ২০ দিন তদ্বস্থায় রাখিবে। অনস্ত্র মৃন্যঃ মৌছকঃ যন্ত্রে বা ময়ুশাখ্য যন্ত্রে মন্দ মন্দ অগ্নিতে উত্তপ্ত कहित्व। পরে পাত্রমধ্যে মুপারি, এলবালুক, (क्रवनांक, नवक, भाकांध, त्वंशांत मृन, तक-ठन्मन, **खन्**का, यमानी, मात्रठ, জीता, कुक-कादा, निं, कठायाःगी, खड़ब्क्, এलाहेठ, জायकन, मूजा, शिंदिना, क्रंठ, त्मथी, त्मोति क রক্তচন্দন প্রত্যেক ৪ তোলা কুটিয়া প্রকেপ কারবে। পরে যথাবিধি চুয়াইয়া হরে। উদ্ধত ধাতু ও বয়:ক্রম অনুসারে क्रिया नहेर्व। माळा वावका कवित्व। हेश त्मवन कावल বল, আ্মা, পুষ্টি, বাঁধ্য ও রাতশাক্ত প্রভৃতি বাৰ্দ্ধিত ও শরার অনুচ্ হয়। হহা অভিশয় এং মক্ত বিবেচনা কার্যা वर्णाष्ट्रमञ्जूष । বিবিধ রোগে প্রয়োগ করা যায়।

দশমূলারিকঃ।

পর্ণ্যৌ বৃহত্যো গোকণ্ট-বিলোহয়িমথনোহরলু:। পাটলা কাশ্মরী চেতি দশমূলমিহোচ্যতে। मगम्लानि कृक्ती । छात्रिः शक्षभरेतः शुवक्। পঞ্চ'বংশৎপলং কুয্যাচিচত্রকঃ পৌন্ধরং তথা।। क्यां विः मद्भवः (लाखः छुट्ट्र हो उदम्मा छत्रः। পলৈঃ যে।ড়শভিধ তি রবিসংগৈছে রালভা ॥ থদিরো নীজ্মার**ল্ড** পথাা চেতি পুণক পলৈ:। অষ্ট্রাজন্ত প্রতিঃ কুঞ্চং মঞ্জিষ্ঠা দেবদার চা বিড়ঙ্গ মধুকং ভাগী ক পিথে হৈন্ধঃ পুনন্বা; চবাং মাংদী প্রিয়**জুশ্চ দা**রিবা কুষণজীরকম্॥ ত্রিবৃতা রেণুকং রাম্বা পিপ্ললা ক্রমুকঃ শুসী। ভরিদ্রা শতপুপা চ পল্লক[,] নাগকে রম্ ॥ মুন্তমিল্যক শৃঙ্গী জীবকণ ছকে। তথা। মেদা চাক্তা মহ'মেদা ক'কোলো) ক'দ্বাবুদ্ধিকে॥ কুয়া'**ং পৃথ**গ দ্বিপালিকান পচেদ**র** ৯ণে জলে। চতুর্থাংশশৃতা নীতা মৃদ্ধান্তে সন্নিধাপরেং 🛭 ভঙঃ ষষ্টিপলা", দ্রাক্ষা", প চন্ন ধে চতুগু গে। ত্রিপাদ্রেশ্য: শীতঞ্জ প্রস্কারে শুঙা কিপের ৮ দাত্রিংশৎপলিকং ক্ষেক্তিং দত্য দ্ গুড়চতুঃশতম্। রিশশংপলানি ধ্তকাঃ ককে'লং জলচননম্। জাতীফলং লবক্ষদ ত্ব,গ্লাপত্রকশর্ম। পিন্নৰ চেতি সংচুৰ্বা ভাগেৰিপলিকৈঃ পূথকু॥ শানমাত্রাঞ্কস্তবুরা, সব্ধমেকত নিক্ষিপেং 🕫 ভূমে) নিখাতয়েদ্ভাও ততো জাতর্মা পিরের 🗉 কতকল ফল' কেন্তা রম' (নম্মলতা নায়েং ৷ গ্রহণীসরু'চা পূলা স্থাসক সভগলার গ্র বাতব্যা ধং ক্ষমা ছদ্দিং পান্তুরোগঞ কামলাম্ : কুষ্ঠান্তৰ্শাং দি মেখাংশ, মন্দাগ্ৰিমুদ্বাণি চ ॥ শকরানশারীং মৃত্রকুচ্ছেং ধাতৃক্ষয়ং জয়েৎ। কুশানাং পুষ্টিজননো বন্ধানাং পুত্রদঃ পরঃ। অরি**ষ্টো দশমূল'খ্যন্তেজ:ও**ক্রবলপ্রন: 🛭

দশমূল প্রত্যেক ৫ পল, চিতামূল ২৫ পল,
কুড় ২৫ পল, লোধ ২০ পল, গুলঞ্চ ২০ পল,
আম্লা ১৬ পল, তুরালভা ১২ পল, খদির,
বিড়ঙ্গ, হরীতকী প্রত্যেক ৮ পল; কুড়,
মাঞ্জ্ঞা, দেবদারু, বিড়ঙ্গ, যৃষ্টিমধু, বামুনহাটা,
করেংবেল, বংড়, পুন্নবা, চই, এটামাংনী,
িরফু, অনস্তমূল, কুফ্ডগীরা, তেউভী, বেণুক,
রাষা, পিপুল স্থপারি, ভী হরিজা, গুল্ফা,
পল্লকাঠ, নাগেশ্বর, মৃতা, ইক্রযব, কাঁক্ডাশুলী,
কীবক, প্রভক, মেদ, মহামেদ, কাকোলী,

ক্ষীনকাকোলী, ঋদ্ধি, বৃদ্ধি প্রত্যেক ২ পল।
পাকার্থ সমুলায়ের ৮ গুণ জল, শেষ চতুর্থাংশ
(দিকি)। জাক্ষা ৬০ বল, জল ০০ দের,
শেষ ২২॥০ সের। এই উভর কাথ একত্র
করিয়া মৃয়য় পাত্রে রাখিয়া ভাহাতে মধু /৪
সের, গুড় ৫০ দের, গাইফুল ০০ পল;
কাক্লা, বালং, রক্তচন্দন, জায়ফল, লবঙ্গ,
গুড়ত্বক্, এলাইচ, তেজপত্র, নাগেশ্বর,

পপুল প্রতেক ২ প ও মৃগন । ত । ত । তাল
মিশ্রিত কারয়া ঐ পাত্র এক মাস মাটিতে
পু তিয়া রাখিবে। পরে উহা ভূলিয়া প্রয়োজন
মত নির্মাণক নিক্ষেপ্ত করিয়া রসকে নির্মাণ
করিবে। ইহা গ্রহণা, অক্লাচ, বাতব্যাণি,
বাতুক্ষর ও নেহ প্রভৃতি মূলোক্ত রোগসমূহে
প্রয়োজ্য। ইহা অতিশয় পৃষ্টিজনক, বলকর,
শুক্রবর্দ্ধক ও কামোদ্দীপ দ।

ইত্যায়ুর্বেদ-সংগ্রহে বাজীকরণ বিকাশঃ।

অথ বীর্য্যস্তম্ভাধিকারঃ।

भूतराः जूलनेप्पतः उध्युक्तिः मश् उक्तरप्रः । स मुक्छि सर्वा नौथास्यकरकम् न मःशयः ॥

ওল অথব: তুলগার মূল পানের সহিত সেবন করিলে নিশ্চয় শুক্রস্ত হয়। চটকাওয় সংগৃথ নবনীতেন বেবায়ং। তেন লেপয়তঃ পাদৌ শুক্রস্তঃ প্রজায়তে। বাবার পাশতে ভূমিং ভ্রেছায়াং ন মুক্তি।

চড়ুই পাণীর ভিন্ন মাণনের সহিত পেবণ করিয়া উদ্ধানা পাদবয় প্রানপ্ত কনিলে বীর্ঘা-স্তম্ভ হয়। বভিক্রিয়ায় প্রবৃত্ত হইয়াযে প্রয়াম্ভ না ভূমি স্পর্শ করিবে, সে প্রয়াম্ভ বীর্ঘা আঞ্চন ইইবে না।

নালোৎপল্পিতপঞ্জকেশরমধূশকরাবলিক্ষেন। স্বরতে স্চিরং রহতে দৃঢ়লিকো নাভিবিবরেণ।

নালোৎপন, বেতপদ্মক্ষের, মধুও চিনি একত্র পেষণ করিয়া নাভিতে লেপন করিয়া রতিক্রিয়ায় প্রবৃত্ত হইলে বীর্যান্তভ হয়, স্থতরাং দীঘকাল লিক দৃঢ় থাকে।

অক্রিকরতঃ শুদ্ধী লবকং কুকুমং কণা।
জাতীকলং ছাতীপূপ্য চন্দনং কাবিকং পূপক্॥
চূর্ণয়েদহিফেনস্ত তান দত্তাৎ পলোক্মিতম্।
সাকামকীকৃতং মান-মাত্রং কৌলেন ভক্ষেৎ॥
তক্রতঃভকরং পুংসামিদমানক্ষরকম্।
নারীণাং প্রীতিজননং সেনেত নিশি কামুকঃ॥

আকাকর . ছঠ, লাক্স. ক্রুম. পিপুল জাতীফল, জাতীপুপ ও রক্তচন্দন প্রত্যেক চুর্গ তোলা, আহকেন ৮ তোলা। একত্র মাশ্রত করিয়া একমায়া মাত্রায় মধু সহ প্রত্যেহ রাহিকালে এবন করেলে শুক্তকস্তম্ভ হয় অর্থাৎ মৈথুনকালে সম্ভর বীর্যাধানন ১য় না, স্ত্রাং এই ঔষধ দেবনে পুদ্ধগণ রম্গী-দের প্রিয়ত্ম হইয়া থাকে।

মেনসা কৌদ্রযুক্তেন ৰরাহক্ত প্রলেপি হন্। সমাক্ষিকাং রতত্তেহপি স্তক্তাং ন বিমুক্তি ।

শৃকরের মেদ মধু দহ মি শ্রত করিয়া বিজে উপ্তর্ম ক। বে সঙ্গমান্তেও বিজের দৃঢ়ত। থাকে।

আজভুষ্টীকারং গবায়তং চরণযুগলেপেন। স্তম্ভয়তি পুরুষবীজং যোগোধয়ং ৰামিনাং সকলাম্।

ছাগীত্বর, উর্বাহ্যর ও গ্রাঘ্ত একত্র মিশ্রিত করত পাদবয়ে মদন করিয়া সমস্ত রাত্রি সঙ্গম করিলেও বীর্যাচাতি হইবে না।

সিকং কুস্থস্থতিলং ভূমিলভাচ্পমিঞ্জিং কুক্তে। চরণাভাঙ্গেন রভেবীখাস্তম্ভাদ্দৃদ্ং লিঙ্গম্ ॥

ভূমেলতা (কেচো) ওদ্ধ করিয়া চূর্ণ করিবে। এই চূর্ণ সহ কুমুন্ত তৈল পাক করিয়া পান্দ্রমে মদ্দন করিলে রাতকালে বীর্যান্তন্ত ও। লিঙ্গের দূঢ়তা হয়। কৃষ্ণামার্জারসব্যান্তিনু-সম্ভবাস্থিরতোক্সমে।
দক্ষিণে প্রিয়তে যেন তস্তাবীবাস্তান চ্যুতিঃ।
কালবিড়ালের বাম পায়ের হাড় দক্ষিণ
অক্ষেধারণ করিয়া রতিক্রিয়া করিলে বীধ্যচ্যুতি হয় না।

গোরেকোরতশৃক্ষত্বগ্ভবচূর্নে ধূপিতং বস্তম্। পরিধার ভজতে ললনাং নৈকণণ্ডো ভবতি হবার্ত্তঃ। (বঃ পুক্রবো নিরমেন একজীগামী স্তান্তরগমনে তু ধ্বজোপানং ন ভবতি স একণ্ড উচ্যতে। শিবদাসঃ।)

যে গক্ষর একশৃন্ধ উন্নত, তাহার সেই ।
উন্নত শৃংক্ষর ত্বক চুণ থারা বন্ধ ধুপিত করিবে।
সেই ধুপিত শ্বন্ধ পরিধান করিয়া রতিক্রিয়ায়
প্রবৃত্ত হইলে একাণ্ড ব্যক্তির ও বীর্যপোত হয়
না। (যে পুরুষ এক স্ত্রীতেই উপ্গত হয়,
অক্সন্ত্রীগমনে বাহার প্রজোধান না হয়,
ভাহাকে একাণ্ড কহে)।

নাগবল্ল্যান্তং চূর্ণম্।

নগেবলা বলা মূবং। গ্রাডাকে ফলনে মুরা। কপামার্গক্ত বাজক কাকোলাযুগলং তথা । ককোলোনারবস্তাগ্র্ব-বচালেচতানি ফর্লিয়েং। বীষ্যক্তরকরং বুবঃং চুর্গোচ্চসায়নম্॥

পানের মূল, বেড়েলামূল, মূর্রামূল, জেএী, জারফল, মুরামাংসী, আপান্ধ বীন্ধ, কাকোলী, ক্ষীরকাকোলী, কর্কোল, বেণার মূল, যষ্টিমধু ও বচ প্রভাবেকর চূর্ণ সমভাগে একত্র মিলিত করিবে। এই উষধ বীষ্যন্তন্তকর, বৃষ্য ও রসায়ন।

অৰ্জ্জকাদিবটিক।।

ম্লমজ্জকশ্ব্যান্তানিও থিকেশ্বাক্ষের।
জাতীফ্লং দেবপূপাং নিড্জং গলপিসলান।
চাতৃজ্জাতং তুগাক্ষাবামনতাং মুশলাং নরীম্।
বিদারীং গোক্ষং নাজকভোনতাযেন মন্দিরেও।
বাষ্যানাং বটাং কৃষা হারমেণ্ডেন যোজ্যেও।
বীষ্যান্তভক্ষী বৃষ্যা বটিকেয়ং একান্তিতা॥

বাবৃইতুলসাধ মূল, ডানকুনির মূল, নিসিন্দা- কিছু পূর্বের ছয়ের সহিত একটি বটা সেবন মূল, কেণ্ডার্ড মূল, জায়ফল, লবঙ্গ, বিজ্ঞ, করিবে। ইহা শুক্তস্তভকর ও রতিশক্তিবর্দ্ধক।

গ্ৰহ্মপিপ্লী, গুড়ত্বক্,তেজপত্ৰ,এলাইচ, নাগেশ্বর, বংশলোচন, অনন্তমুল, তালমূলী, শতমূলী, ভূমি কুমাও ও গোক্রবীজ এই সমুদার সমভাগে বাব লাব আঠার মদন করিয়া ১ মাবা পরিমিত বটা প্রস্তুত করিবে। অনুপান—কুরামও। ইহা বীগাক্তভকর ও ব্যা।

শ ক্রবল্লাভে রস।

রসগদ্ধকলোহাল-রোপাহেমণা নাজিকন্।
শাশমানের সংগৃহা তুগাকারার কার্মিকার্॥
পলগমাণ বিজয়া-বাককৈক র মক্তের।
বিজয়াবারিনা পশ্চাকারমানার বটাং চরের॥
একেকা ভক্ষপারেমা প্রেফার্ড প্রপ্রেনন ।
শ্রীশানবভা নাম রুয়ো বাজাকর প্রঃ॥
বাধান্তভ্রকরেশ্য এমন নুপ্র নামঃ।
গতে জগ্যরেশ শ্রান বাভারে যথপ্রসালত ॥

পালি, গলক, লাহ, জল, ত্রাপা, স্থাও স্থানাক্ষক প্রভাক দল অফ তেলা, বংশ জোচন ২ ভোলা এবং সিক্রিবীজচুণ ৮ তেলা, এই সমুদার সিচিত কাবে সাভ্যা ২ মাধা পরিমাণে বটা প্রস্তুত কাবেন। অনুপান—ত্রা অন্ধি পোছা। এই উষ্ধ সেন্নে বাষ্টিভাও রতিশ্ভিবর্জন হল।

काशिमाविक्षावर्गा तथः।

জাকারকরত। স্তৃত্তী জনসং কুসুগ্র কণান্।
তাতাফলক তৎকোল চলনা নামিক পুলব্।
হিসুলা গন্ধক শাগা ফানিফোন প্রোন্ত্র।
স্কলারেয়িতাং কুম্যাং সংস্কলোটিকা ভিষক্।
প্রসারে বিপ্রিটি তাইয়া শুক্র শুক্র ভকরো রস্ত্র।
বিস্তাব্য ক্ষিনীলাং বশাক্ষণ এব চা।

আকরকরা, শুঠ, লবঙ্গ, কুছুন, পিপুল, জায়ফল, জৈত্রী ও রক্তচন্দন প্রত্যেক ছুই ভোলা, হিঙ্গুল, গন্ধক প্রত্যেক ॥০ ভোলা এবং অহিফেন ৮ ভোলা; এই সমুদায় একত্র মাজিয়া ও রভি প্রমাণ বটী করিবে। শয়নের কিছু পূর্বের হয়ের সহিত একটি বটা সেবন করিবে। ইহা শুক্তস্তম্ভকর ও রভিশা ক্রবর্দ্ধক।

ইত্যায়ুর্বেদ-সংগ্রহে বীর্যান্তভাধিকার:।

অথ ধ্বজভঙ্গাধিকারঃ।

অথ ক্লৈব্যনিদানম্।

ক্লাবঃ **স্তাৎ স্থ**রতাশক্তন্মভাবঃ কৈনামূচ্যতে। ভচ্চ সপ্তবিধং প্রেক্তিং নিদানং ক্রন্ত কথাতে॥

মেথুনাক্ষম প্রক্রমকে ক্রীব কছে। ক্রী-সভোগে অপারগতাব। নামই ক্রেব্য। ক্রেব্য সপ্তপ্রকার। নিয়ে প্রভাকের উৎপত্তির কা । ও লক্ষণ লিখিত হইল।

েইছে ভাবৈরক্টেক্ত রিরং সেমে নিসি ক্তে। ধ্বজং পাত্তাবো নূপাং বৈবাং সন্প্রায়তে। দ্বারাসাম্ভায় পাটে রেবাং ওলান্যাং সূত্য ন

ভয়-,শাকানি কা নে এবং অক্সান্ত মান-বিক আগ্রান্তা হেওু সদ্মেত্ত্ পুক্ষদের মনে আঘাত লাগিলে অপবা বিশ্বেষভাজন গ্রার সহিত্যক্ষন কবিলো লিজ পাতত হয়, অর্থাৎ লিজেব উপানশাক্ত রাহত হইয়া ক্লাব্দ্ব উপস্থিতহয়। (১)

কটুকান্ত্রোঞ্চলবংশর(তম্পুত্র, গ্রেদ্বিতিঃ। পিত্যিজুঞ্জন্মান্ত্রি গ্রেবাং এক্সাৎ প্রজারতে ॥

অধিক মানার ক**়, অম. উঞ্চল্ব্য ও** লব্দ দেবনে পিওবৃদ্ধি হট্যা **ওজ্ঞান** এবং ভজ্জা ক্লীবন্ধ উপস্থিত হয়। (২)

অভিবাৰয়েশীলো যোন চ বাজী দিয়ার ৩:। অজভঙ্গমবাগোতি সাত্রশক্ষয়হেতুকন্।

যে ব্যক্তি আতার্ত্ত মেথুনাসক্ত ২থচ বাজীকরণ ঔষধ সেবন করে না, তাহার অতিরিক্ত শুক্রক্ষ হেওু ধ্বজ্ঞস্থ হয়। (৩)

মহতা মেচুরোগেণ চতুথী ক্লাবতা ভবেৎ ॥ উৎকট শিঙ্গরোগে (উপদংশাদিতে) প্রজভঙ্গ হয়। (৪)

বীখ্যবাহিশিরাচ্ছেদান্মহনাত্মন্তিভবেব ।
বীৰ্য্যবাহিনী শিরা ছিল্লা হইলে লিজের অস্কল্লমন (ধ্যজ্জুজ্জু) হয়। (৫) বলিনঃ কুন্মনসোনিরোধাদ্যজ্জনেত্য :।
বঠা কৈবাং পুড: ৩২ ৩ গুণ্ডপ্রশিক্ষিক । কামবেগে উত্তেভিত বলবান্ ব্যক্তি মেথুন না করিলে ভক্রতত বশ**ঃ ধ্বজভঙ্গ** উপস্থিত হয়। (৮)

জন্মপ্রস্থৃতি যথ ট্রেবাং সহতং ত্রি সপ্তমন্। অবংধাং সহজং রেবাং মন্ত্রেলতে বছরেও॥ । মন্ত্রেল্যু বাং বাংহিলির জ্ঞেন্থ।॥

জন্মাবনি বে বার্জ ক্রাব্য প্রাপ্ত হয়, তাথাকে সহজ ক্রাব্য ক্রাব্য বার্যাধিনী শিরাফেদ হর্ডা উৎপন্ন র্যাব্যত এবং সহজ ক্রৈব্য অসা (অব্যং ক্রাত্র্য ইথাদের প্রতি-কার হর না (৪)

অব ক্লেব্য-চিবিংখন।।

তাকংশ্রিক্তি সংযোগত কংলা তেওঁ বিধ্যায় । মুগ্যাত চকিৎসিতং হয়, ইলাকা, ইয়াভান্য ॥

সাধ্য ক্রাইছের (১,৯২১) ক্রাইতে **ইইলে** প্রথমতঃ হেত্রিপ্রাই জিলা, ক্রাই যে ক্রাইলে গ্রেক্স ক্রাইছে উপ্রত্ন ক্রাইছের ক্রাইলে ক্রাইছের ক্রাইলে প্রজ্ঞান ক্রাইছের ক্রাইলে প্রজ্ঞান ক্রাইছের ক্রাইছে

সমাতিলাে(পুরস্থা হাণাঞ্চালে সাবিতা সমসু। ভুক্তা ক্ষমহতি বাহাৰে মহলনিতা চুপ্রায়োগাণ॥

সমপাবিদিত নিস্তুপ ক্ষত্তিল ও গোকুর-বীজ চুব ছাগাঁও্ডে শিল কাল্যা শিত্য অবস্থার উহা মধুব সাহত সেবন ক'বল হুই ঔষধ-প্রয়োগভানত কৈবা নিবাবেত হয়।

যোগজনর ক্ষন্তাং সাথ এন স্বাধীনতং ইন্তি। ভন্নগোগ্ৰেক্ত ক্ষাভাগনো নোগণ ধ্বত ভক্ষনা ॥

ছুইলোক-এদন্ত ঔন্ধাদি ছান্ ধ্বজো-থান বন্ধ ইইলে ছোল দিয়া বিঙ্গ গোত করিবে অথবা গাভীর উন্নত প্রেশা চূপ ছারা লিঙ্গ প্রাল্প করেবে, ভাষাত্ত প্রস্তুন্ধ নিবারিত ইইবে। সপ্তাহং ছাগসন্লিলসংস্থং করন্তবারুণীমূলম্। গাড়োষর্ভনবিধিনা লিকস্তম্ভং স্বরতে কুরুতে ॥

রাথালশশার মূল ছাগমূত্রে সপ্তাহকাল ভাবনা দিয়া লিঙ্গে প্রলেপ দিলে রমণকালে লিঙ্গ দৃঢ় থাকে।

ভলাতকর্হতীফলনলিনীদলসিকুজরাজলশুকৈ: । মাহিষনবনীতেন করম্বিতঃ সপ্তদিনম্বিতৈঃ ॥ মূলে হয়গন্ধায়া মহিষীমলম্পিতং পূর্বম্প লিক্ষ্। ভবতি গ্যুক্তরাসভবলিকং ধ্রুবং পুনাম্॥

ভেলা, বৃহতীফল, পদ্মপত্র, সৈন্ধব লবণ ও জলশুক (শেওলা) মাহিষ-নবনীতের সহিত মিশ্রেত করিয়া তারা অখগন্ধার মূলে বৃংৎ ছিদ্র করত সপ্তাহকাল তন্মধ্যে রাখিয়া দিবে। অনন্তর মহিষীবিটা বারা লিঙ্গ উবর্তন করিয়া অখগদামূশ্য উক্ত ঔষধের প্রলেপ দিলে গদভলিঙ্গ সূদৃণ হিঙ্গ দৃঢ় ও বৃহৎ হয়।

কনকরসমত্পবস্তিতহয়গন্ধ মূলমিছ পয়ু বিতম্। মাহিষ্মিছ নবনীতং গতবীজে ওচ্চ ফলমধ্যে। গোময়গাঢ়োষ্টিতং পূর্বং পশ্চাদনেন সংলিওম্। ভব্তি হয়লিকসদৃশং লিকং কঠিনাক্সনাদয়িতম্।।

কনক ধুত্রার রসে উত্তমরূপে পেষিত অশ্বগদ্ধামূল মাহিব নবনীতের সহিত মিশ্রিত করিবে। অনস্তর ধুত্রা ফলের বীজ রহিত খোষার মধ্যে ক্র অশ্বগদ্ধার মূল পর্যাবিত করিয়া প্রথমতঃ সভঃ গোময় পারা কিঙ্গ উন্ধর্কন করিয়া এট উষধ লেপন করিবে। ইহাতে লিঙ্গ কঠিনাঙ্গনাদের স্থকর ও অশ্ব-লিঙ্গসদৃশ হয়।

অমৃতপ্রাশগ্নতম ।

চাগমাংসতুলাঞৈব বাজিগজাং ওথৈব চ।
কলজোনে বিপক্তবাং কুৰ্যাৎ পাদাবশেবিতম ॥
তেন পচেদ্ম্ব এপ্ৰস্থনজান্দীরং চতুপ্ত গম।
মৃষ্ঠনোর্থে প্রদাত বাংকুম্ফ বিকাধিকম্ ॥
বলামূল্য গোধ্মঞ্চাবগলা ভবামূতা।
গোক্ষ্য কলেঞ্চ তিকটু চ সধাক্তকম্ ॥
তালান্ধ্রং তৈকলক কল্পুরীবীজবানরী।
মেদে বে চ তথা কুঠং জীবকর্বভক্তে শানী॥

দাববী প্রিয়সু মঞ্জিষ্ঠা নতং তালীশপঞ্জম। এলাপত্রহচং নাগং জাতীকুমুমরেণুক্ম ॥ সরলং জাতিকোষক স্থামলোৎপলসারিবা। মূলং বিষষ্ঠ জীবতী ক্ষিবৃদ্ধী উভ্ৰের: ॥ প্রত্যেকং কর্ষমাত্রাণি পেষয়িত্ব। বিনিক্ষিপেৎ। বস্ত্রপূর্বে **স্থ**ীতে চ সিভাং **দন্ত**'চছরাব**ক্ষ**॥ কৰ্মাত্ৰং ততঃ থাদেহঞহন্ধানুপানতঃ। বুংহণীয়ং বিশেষেণ বলপুষ্টিকরং সদা ॥ প্রমেহান ধ্বজ্ভকাংক নাশয়েদ্বিকল্পতঃ। এতদ্ বৃষ্যকরং সপিঃ ক'শিরাজেন নির্দ্মিতম ॥ দৃষ্টং সিদ্ধফলং হেতেদ্বাজীকরণমুক্তমম। অমৃতপ্রাশনামেদং সর্কাময়নিস্দন্ম ॥ শিরে'রোগে নষ্টগুকে প্র'র নষ্ট'র্ডবাস্ত চ ৷ ন চ জুকুং করং যাতি বলং হাসং ন চ এজেং॥ দশ জাণাং রমেরিভামানন উপজায়তে ॥ কাসার্শ-**আমশুলম্নং বদ্ধকো**ষ্ঠহর পরম্। সিদ্ধায়তপ্রযোগেণ স্থিরং ভব্তি যৌধনম ॥

ত্বত /৪ সের। কাথার্গ -- ছার্গাংস ১২॥० দের, জল ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের , অশাগ্রু ১২॥০ সের, জ্বা ৬৪ সের, শেষ ১৬ সের; ছাগ**5গ্ধ ১৬ দেৱ, মুর্চ্ছার্থ কু**দ্ধম ৪ তোল'। করদ্রা--বেছেলা মূল, গোধ্ম, অবগরী, গুলঞ্চ, গোক্ষুর, কেশুর, ত্রিকট্ট, দনে, তালা-মুর, ত্রিফলা, মুগুনাভি, আলকুণা বীজ, মেদ, महारमन, कुड़, क्रीवक, भरडक, श्री, नाक-হরিদ্রা, প্রিয়ঙ্গু, মঞ্জিল, ভগরপাছকা, ভালীশ-পত্র, এলাইচ, (ভঙ্গপত্র, গুড়ুখুক্, নাগেশ্বর, জাতীপুষ্প, েণুক, সরলকাষ্ঠ, জৈত্রী, ছোট এলাইচ, উৎপল, অনন্তমূল, তেলাকুচার মূল, জীবন্তী, শক্ষি, বৃদ্ধি ও যক্তভুমুর প্রত্যেক ২ তোলা। পাকাত্তে শীতল হঠলে মৃত ছাকিয়া লইয়া তাহার সহিত্৴১ সের চিনি মিলিঙ कतिरत। भाषा-- २ जिला। बब्रुशीन-- उत्र ছ্য়। এই য়ুত বিশেষ পুষ্টিকর। ইহা সেব-করিলে প্রমেহ, ধ্বজভঙ্গ, শিরোরোগ, না গুকুতা ও আর্ভবহীনতা প্রস্তৃতি পাড়ার শাহি এবং বল শুক্র ও রতিশক্তির বৃদ্ধি হয়।

अ। यननानन-त्यानकम्।

সূতো গন্ধন্তথা লৌহং ত্রিদনং গুদ্ধনত্রকন। কপুরং দৈশ্ববং মাংসা ধাত্যেলা চ কটুত্রম্॥ ला डीरकारकनः भवः ननद्रः कीत्रकष्रम्। যৃষ্টিমধুবচাকু জং হরিফা দেবদ রুক্ম 🛊 ঐক্ষলং টঙ্গণং ভাগী নাগরং পুষ্পকেশরম্। শুঙ্গা তালীশপত্রঞ্জাকা(গ্রদ্ভিবাজকম 🛭 বলা চাহিবলা চোচং ধনিকেভকণা শটী। मञ्जलः ञ्लकः ५ का विकासः ह ग्रांवर्ता ॥ অকব'নবিন জঞ্চ গোক্ষুরং বৃদ্ধদারকম। देश लाक्ता निरूप प्राप्त अया स्मार अस्टर हिसक् ॥ শতবৈরারসং দয়। লক্ষ্চুর্ণং সমা:বেৎ। শালালামূলচূর্য চুর্ব্জিলুসমমাহরেও॥ চুৰ্।দ্বং বিজয়াচুৰ্ণ ,বঙ্কং ডঞ দাপয়েৎ। সক্ষেকত সংযে হা চছাগাঁকীরের পেষয়েৎ ॥ নে দেকার্থে 'সভা দেয়া প্রেক্ষোগ্যা ভ্রমা মধু। নাভিবাসক ধুমান্ত পাচয়েক্সকহিনা॥ **ठाडुड्डा डर मक्लु तर रेमक्त्यर मक्ट्रेड्स्य** । সংচুণ্য চ ৩০ে। দেয়ং হ্বাং কিঞ্জিধাপয়েৎ ॥ পাকং জ্ঞাহা কৰ্ম হং মোদকং পারকল্পরেং। ভূতনাৰে সুরপ্রে) রতিনাথে তথৈব চ 🛊 ছতভুক্তে গণনাথে মে।দকাগ্রাং নিবেদয়েও। মূলমন্ত : সমূচ্চাহ্য হতাশনে সমপরেৎ ॥ ক (ক্ষে র'ছতে কাচে মৃত্তুত্তে বা কিবপেয়েছ। প্রাত্রকালে ওচিভূমি হরগৌর'ং প্রপুরুরেং 🖟 ক:লা,নলভবং বাজং স্তিলং ছুতসংযুত্য, গ্রাকারং সিতাযুক্তমতুপেয়ক পায়সম্ ॥ विवास्थः अमारम ह भाषकः अतिरायदारः। ত্রিসপ্তাহপ্রে, াগেণ কামান্দো জায়তে নর:॥ কনে**অরো ভ**বেৎ তাবদ্ গাবন্ধারীং ন গচছতি। স সহস্রং বরারোহা রম্মত্যপি সোলাম:॥ ন চ লিঙ্গপ্ত শৈথিল্যং বেগবীয্যং বিবৰ্দ্ধয়েৎ। প্রমদাপ্রাণবাহল্যং মন্তবারণ বক্রমঃ। রামাবশুকরো রম্য উদ্বিক্তা ভবেন্নবুং। কামভুল্যা ভবেদ্ধপং স্বরঃ পরভ্তোপমঃ। থগতুল্যা ভবেদ্যন্তবু দ্বোহপি তরুণায়তে। অষ্টে:ভরং ভজেদ্ যস্ত ভবেৎ তহা হংধাপমম্॥ বা^য্য**্ৰাক্**করং শ্ৰেঙং জরামৃত্যু বনাশনম্। অপস্ম। রছরে। আদি-ক্ষা, নিলগদাপংম্॥

কাসং খাসং সশোধক ভগলারগুদাময়ন্।
আগ্নিনাল্যমতীসারং বিবিধং গ্রহণীগদন্ ॥
বছমূলং প্রমেহক শিরোরোগমরে চকন্।
হস্তি সর্কান্ গদান্ খোরান্ বাতপিত্তবলাসজান্।
বজ্যা চ মুতবৎসা চ নইপুষ্পা চ যা ভবেং।
বহপুত্রা জীবনৎসা ভবেদক্ত নিষেবণাং ॥
হরতে স্তিকারোগং বৃক্ষমিন্তাশনির্থা।
মোদকং মদনানক্ষং সর্করোগে মহৌধনন্।
কথিতং দেবদেবেন রাবণক্ত হিতাপিনা॥

পারদ, গন্ধক, লৌহ প্রত্যেক ১ ভোলা, অত্র ও তোলা, কপূর, দৈন্ধৰ, জটামাংসী, আমলকী, এলাইচ, শুঠ, পিপুল, মরিচ, জৈত্রী, জারফল, তেজপত্র, লবঙ্গ, জীরা, ক্ষঞ্জীরা, যষ্টিমধু, বচ, কুড়, হরিদ্রা, দেবদারু, হিজল-বীজ, সেহোগা, বামুন্হাটী, ভূঁঠ, নাগেশ্বর, কাক্ড়াশুস্কা, তালীনপত্র, দ্রাকা, চিতামুল, দস্তীবীব, বেড়েলা, গোরক্ষচাকুলে, গুড়ত্বক্, ধনে, গজপিপ্ললী, শটা, বালা, মুতা, ভাগুলে, ভূমিকুলাও, শতমূলী, আকন্মমূল, আলকুনবীজ, গোকুরবীজ, বিশ্বড়কবীজ, দিদ্ধিবীজ প্রত্যেক চূর্ণ এক ভোলা। এই সমুদায় চূর্ণ শতমুলীর রসে মদন করিয়া শুকাইয়া পুনর্কার চূর্ণ করিবে। পরে এই সমু-দায় চুর্ণের এক চতুর্থাংশ শিমূলমূল চুণ এবং শিম্লম্ল সহিত সম্দায় চূণের অংকেক সিাদ্ধ-চুণ, এই সমন্ত চুণ একতা করিয়া ছাগগুয়ে পেষণ কারবে। পরে সমুদায় চূর্ণের ছিগুণ চিান ছাগত্মে গুলিয়া পাক কারবে এবং যথাসময়ে উাল্লখিত চূর্ণ দম্ত প্রক্ষেপ করিয়া মৃত্ জ্বালে পাক সমাপ্ত কবিবে। পশ্চাৎ গুড়ত্বক্, তেজ-পত্র, এলাইচ, নাগেশ্বর, কর্গুর, দৈশ্বর, তিকটু, এই সমুদায়ের কি।ঞ্চৎ চূর্ণ এবং যুক্ত পরিমাণে ঘুত ও মধু ামাশ্রত করিয়া ছই ভোলা পরিমাণে মৌদক বান্ধিবে। অমুপান রতিকিশায় চিনি। —গৰাছগ্ধ ও চারতার্থতার নিামত্ত সন্ধাকালে মোদক দেবা। এই মোদক দেবন কারলে অপস্মার, কাস, শ্বাস, ক্ষম, অগ্নিমান্দ্য, প্রমেই ও বছমুএ

প্রভৃতি নানারোগের শাস্তি, ইন্দ্রিশক্তির আতি সুদ্ধি এবং ২য়া।, মূতবংসা, নটার্ত্তব ও স্থতিকা প্রভৃতি জীলোকদের ব্যাসি বিনষ্ট হয়। ইহা মণীগঞ্জনের সহৌধ্য

खङ्खांदनः (भावक्य।

বিদার কন্সকর চুর্ব চতুক্রণ লগবিত্য :
শার্থাট্রীয়ার শ্বিপার বালার পি সালুইসম ॥
সিতাপলিপারর দেশার দারের দার : বিদারেমর :
জাতামলার (এটা, বালার এক্সর প্রস্থিত লি ॥
ব্যানিক, এর লোক্তর বালার ক্রান্তর বালার ।
সিন্ধে পাকে প্রান্তর স্বান্তর ক্রান্তর বালার ।
সংবদ্ধরতি নামার ভারসোল্যান্তর বালার ।
ভারতার বিশ্বান ভারসোল্যান্তর সালার ।
নারীয়ার বোলারিছনে বালার সালার নিমানিক।
ব্যাধার ব্যাক্তর লাভিত্র বালার নিমানিক।
ব্যাধার ব্যাক্তর লাভিত্র বালার নিমানিক।

ভূমিকুলা ওচন ১০ পনা, শেওড়াবাজ ২ পলা, খে ৪ পনা, চিনি ১০০ পনা। এই সকল দ্বা একএ উপযুক্ত তথ্য সহ পাক কবিৰে। ঘন হঠলে আয়ো পাকে এলেকনা, দাকডিনি, এলাইচ, তেওপোতা, ০০৮, গোটলা, সমানী, গুঠ, পিপুল ও ২০০ এতে ক ১ পনা চুন প্রক্রেপ নিবে। তথ্যস্থন কবিলে শাক্ষাত, বলক্ষ্য, ভরা প্রভূতি, নবা, বাত হইয়া বলা বিলা ও রভিশাক্তি বাজত হইঃ। থাকে।

ত্রিকণ্টকালো মোদকঃ।

গোকুরেকুরবাজনি বাজিগন্ধ। শতাবরা।
মুখলা বানরারাজং ধর্টা নাগেবল, বলা ।
এযাং চুর্থা ছুগ্লিনিরা গ্রেমাজ্যেন ভুতিঃ হয়।
সিত্রা মোদকং করা জন্ম বাজাকরং পরম্॥
চুর্থান্টভুবং কারং গুডং চুর্গনমং গুডম্।
সর্বতেঃ স্বিগণে ওং প্রদেশ্বিবলং যথা।
বাজাকরাণি ভুরা ও সংগ্রুভ রুচিতো যতঃ।
ভক্ষাদ্ বছরু যোগেনু যোগে হয়ং প্ররো নতঃ॥

গোক্রবাজ, কুরেখাড়া বাজ, অবগন্ধা, শতমুলী, ভালমুলী, আলকুশাবাজ, ষ্টমধু, গোরক চাকুলে ও বেড়েলা প্রভাকে চুণ সমভাগ, এই সমুদায় চূর্ণ একতা করিয়া ৮ গুণ হথে সিদ্ধ ও তাহা চূর্ণ-পরিমিত স্থাতে ভর্তিত করিয়া সকলের বিশুল পরিমিত চিনির সহিত নিশাইয়া মোদক প্রস্তুত করিবে। আঘিবল বিবেচনা করিয়া (২ মাঘা হইতে ৪ মাঘা পর্যাস্ত) মাতা স্থির কারবে। ইহা বিশেব রুষ্য-কর। সমস্ত বাজীকর ঔষধ হইতে ইহা শ্রেষ্ঠ।

े छःदानन्तर्यागः।

চত্বারো ব্যোমভাগাস্তদন্ত্র নগদিতং ভাগের্থাক বসং ভাগেকং শঞ্বীজং কিছেমপি সূতং তংসম। সিদ্ধানা চাতুজ্জিতং সঞ্চলফান্ত্রকণা নগেরং দেবপুপাং জাতীপারক ভাগাস্ত্রমপি পুলচ্ সক্ষেক র চুর্গন্।। সক্ষিত্রকাল ভাগাস্ত্রম্পতি ইং মেনকীকৃতা চৈত্র অনুদেশ্যাং সম্ক্রা প্রসভ্মভিনবানন্ত্রমতার । যোগে। ব্রোক্রাপোত্রমিত নগ্রিশ্বন ক্রপ্রন্তর্বানন্দন্ত্র নিংশেষব্যাধিইত। দ্বিত্রকার্কাশ্রক ক্রপ্রত্র ।।

মত্র ৪ ভাগ, বঙ্গ গ ভাগ, রদ্দিনুর ১ ভাগ, এই তিনের স্থান ক্ষ্পুন্তার চুব, এলাইচ, তেজপ্র, নাগেষর, গুড়াফ্ক, জায়কল, মারচ, পিগুল, ভাঠ, লব্স ও জাতাপ্র এতেকে ২ ভাগ; সন্ত চুবের বিগুণ চিনে। এই সমস্ত একর মেলেত কর্মায় উপগুক্ত গ্লুভ সর্বার মাদক প্রস্তুত করিবে। অগ্লিবলামুসারে ইহা সেবন কার্মনে বলামুসারে ইহা সেবন কার্মনে বলামুসারে ইহা সেবন কার্মন

রসালা।

নপ্রেংছর্ক চক্ষাসদল্লমধুরং খণ্ডন্স চন্দ্রাতেঃ
প্রন্থ ক ক্ষোপলাক পাধা হবিদল গুঠাকেত্ব বিকান ।
প্রনাম্বচত্ত্বাল মানিচতঃ কর্মং লবক্ষং তথা
ধূমা গুরুপটো পানৈ কর্তলেনে আবা বিকারেরেং ।
মৃদ্ধাণ্ডে মুগনাভিচলন নসম্পৃতিহত্তকান্ধ্রিপতে
কপুরেণ স্থান্ধিকা তিনখিলং সংলোড্য সংস্থাপরেং।
স্থাপ্তি মুগ্রেম্বরেণ রচিত। হোষা রসালা স্বরং
ভোক্ত্ম আবানীপনী হুপক্রী কান্তেন নিতাং প্রিয়া॥

প্রস্তুর ক্রেটারপ্রক্ষর কর্মান ক্রামান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান ক্রামান ক্

ঈষদম্মধুর দ্ধি /৮ সের, চিনি /২ সের, মধু > পল, ম্বন্ত ৫ পল, শুঠ দ মাধা, এলাইচ ৪ মাধা, মরিচ ২ তোলা, লবক্ত ২ তোলা, এই সম্দায় উন্তমরূপে একত্র মিশ্রিত করিয়া পরিষ্কৃত বস্ত্র মাধা টাকিয়া মৃগনাভি ও চন্দনলিপত এবং অগুরু মারা ধূপিত মৃছাঙ্গে রাণিয়া কিঞ্চিং কপূর মারা সোগন্ধ্য সম্পন্ন করিবে। এই রসালা পান করিলে কামো-দ্দীণন হয়।

কামিনাদপত্নঃ।

কজনীকুতপুগদ্ধকশন্তো
স্থল্যনেব কনকন্ত হি বীজন্।
সন্ধ্যেৎ কনকতৈলযুতং স্তাং
কামিনীমদবিধুনন এবং ॥
থক্ত ব্যক্তমধ্যে সিত্যাক্তং
সেবিতং হয়তি মেহগদৌগান্।
বাল্যাদ্যে কির্বাং কমনীয়ং
দ্রাবণং নিধুবনে বনিতানান্।

গদ্ধক : তোলা, পারদ এক তোলা এই উভয় দ্বা মাড়িয়া উত্তমরূপে কজ্জলী করিয়া তাহার সহিত ধুত্রার বীজ চুর্ণ এক তোলা মিশ্রিত করত ধুত্বার তৈল দিয়া মর্দ্ধন করিবে। ইহার মাজা—২ রতি প্র্যান্ত । চিনির সাহত সেবা। ইহা সেবন করিলে মেহ রোগের শাস্তি, বীর্যান্ত রতিশক্তির বৃদ্ধি হয়।

সল্লচন্দ্রোদয়-মকরধ্বজঃ।

জাতীকলং লবক্ক কপুরং মরিচং তথা।
প্রত্যেকং তোলকং দহা স্বর্গত চ মাবকম্ ॥
প্রপ্তজং মাবমানক মক্তুলামথেশ্বরন্।
বন্ধতো মর্দ্ধরে থলে চতুক্ত ক্লাং বটাং চরেং ॥
এব চল্লোদয়ো নাম রমো বাজীকরং পরং।
হন্তি রোগানশেবাংশ্চ বলবীর্যায়িবর্দ্ধনং ॥
জারফল, লবক, কপূর ও মরিচ প্রত্যেক
১ তোলা, স্বর্গ প' আনা, মৃগনাভি প'
আনা, রসসিন্দ্র ৪।০ তোলা। এই সম্দার
এক্ত মাড়িরা ৪ রতি প্রমাণ বটিকা করিবে।
(অমুপান—মাখন ও মিছরী, অথবা পানের

রস প্রভৃতি)। ইহা সেবন করিলে নানাবিধ পীড়ার শাস্তি, বল বীর্যা ও অধির বৃদ্ধি হয়।

র্হচ্চন্দোদ্য-মকর্ধবজঃ।

পলং মৃত্র স্বর্ণদলং রসেক্রাৎ পলাষ্টকং বেডিশ গৰাকত। শোণৈ: সুকার্পাসভবপ্রসূথে: সর্বাং বিমদ্যাথ কুমারিকান্ডি: ॥ তৎ কাচকুম্ভে নিহিতং সুগাঢ়ে সংকর্ণটীভিদিবসত্রয়ঞ্চ। পচেৎ ক্রমাগ্রে সিকতাথায়ন্তে ততো রকঃ পলবরাগরমাণ্ ॥ সংগৃহ চৈত্ৰ পলং পলানি চহারি কপু ররজন্তথৈব। * জাতীফলং সোষণ্মিলপুষ্ণং কন্ত, রিকায়া ইহ শাণমেকম্। চল্লোদয়োগ্যং ক্ষিতোগ্স বলো **जुरक्तांश्रहितहीम्नमधानर्खी ।** মদোঝাদানাং অমদাশতানাং গৰ্বাধিকতং প্ৰথয়তাকাণ্ডে 🛭 যুতং ঘনীভূতমতীৰ হ্ৰশ্বং মুদ্দি মাংসাদি সমস্তকানি। মারারপিষ্টানি ভবন্তি পথন-স্থাননদায়ী সুপর পি চাতা। বলীপলিতনাশনস্তমুভূতাং বয়স্তম্ভনঃ সমস্তগদগভন: প্রচুররোগপঞ্চানন:। গুহেহপি গুহভূপতিভবতি যক্ত চল্লোদয়ঃ

শোধিত স্ক্র স্বর্ণপত্র ১ পল, শোধিত পারদ ৮ পল, এই উভয় একত্র উত্তররূপে মাড়িয়া তাহার সহিত গন্ধক ১৬ পল মিল্রিভ করিয়া কজ্জলী করিবে এবং রক্তবর্ণ কার্পা-সের পুশ ও ঘতকুমারীর রসে ভাবনা দিয়া মাড়িয়া শুন্ধ করিবে। পরে এই সমস্ত সমতল বোতলের মধ্যে স্থাপন করিয়া বোতলের মুখে একথগু খড়ি চাপা দিয়া বালুকাপূর্ণ হাঁড়ির মধ্যে ঐ বোতল উদ্ধুম্থে বসাইবে, বোতলের গলা পর্যান্ত বালুকাপূর্ণ থাকিবে। অনন্ধর

দ পঞ্চশরদর্পিতে। মৃগদৃশাং ভবেদ্ধলভঃ ॥

* সংগৃহ চৈতত্ত পলঞ্চ সম্যক্ ' পলঞ্চ কপু ব্যৱজন্তথৈবেতি পাঠান্তরম্।

আয়ুর্কোদ-সংগ্রহঃ।

ক্রমাগত ও দিন জ্বাল দিবে, ইহাতে বোতলের গলদেশে অকুণবর্ণ বে সমস্ত ঔষধাংশ সংলগ্ন হইবে, তাহা বাহির করিয়া লালবে। এই ঔষধ ১ পল. কপূর চুর্ণ ৪ পল (পাঠাস্তরে—কপূর-চুর্ণ ১ পল) এবং জায়ফল, পিপূল, লবল্প প্রত্যেকে ৪ পল, মুগনাভি॥• অর্দ্ধ তোলা, এই বমুদার একত্র মাড়িয়া লাইবে। ইহার মাজা ২ রাত, পানের সাহত সেবনীয়। পথ্য—য়ত, ঘনীভূত হুয়, মাংস ও পিষ্টক প্রভৃতি। ইহা মলোক্র প্রমাণাগের গর্ম নিবারণ ৪. গাহাদের প্রিয়তা লাভের অমোশ্ব ঔষধ। ইহা স্বনে নালাবেল গ্রোগ্রিন্ট হয়।

অনঙ্গ কুড়মাকরঃ

নিক্লপ ভন্ম সৌনর্গং মুন্তা কন্ত্রেকা তথা।
তালসক্ষ তথ সংখং তোলকৈকং প্রক্রায়েথ।
কন্তারসেন সংম্পা চতুও প্রামিতা বটা।
বটিকাং বটিকান্ধং লা নকরেগ্রেষ্ বোজেছে।
অনুপানাদিকং দক্ষাদ বৃদ্ধা দেখবল প্রন্।
অস্থাবীয়াপাতেন গুলুমেহাদিভন্তবা।
ক্রাবং ধ্রজভন্তক রেশাংক্তিও ভ্রুভ্রান্।
নাশ্রেদেব বিখাতে।গ্রহ্বরু ক্রম্বজিতঃ :

ষ্ণ, মৃক্তা, মুখনাভি ও হারভাগ প্রত্যেক
১ ভোগা। স্বতকুমানার রসে মন্দন কারেয়
৪ রাত পরিমাণে বচিকা প্রস্তুত্ত করিবে। মাত্রা
— অন্ধবটা হইতে একবটা প্রযুত্ত। দোষের
বলাবল বিবেচনা করিয়া অন্ধপান স্থির
করিবে। ইহাতে অবগান্তক্রক্ষয়-হেতুক ধ্রম্পভঙ্গ ও তজ্জনিত অন্ধান্ত রোগ সকল আন্ধানবারিত হয়।

সিদ্ধসূতঃ।

মুক্তাফলং শুদ্ধতাং হ্বৰণং রূপ্যমের 6 ॥
ববকারঞ্চ তৎ সক্ষং তোলকৈকং প্রকল্পরেও ॥
রক্তোৎপলপততে রেম দিয়েও পুজলীকৃত্য ।
মদিয়েচ্চ পুনদ বা গক্ষকং তদনস্তরম্ ॥
কিন্তা, বিক্তানিয়া সংনিক্ষণ বিব্যাসকম্ ।
বিক্তাবো পচেচ্ছাতে সিদ্ধান্ত ভাকরেও ॥

পঞ্চরজ্ঞিমাণেন মৃষ্লীলর্করান্থিতম্। শুকুর্দ্ধিং করোত্যের ধ্বজ্ঞক্ষ নাশয়েং॥ দুক্ষাং বপুরত্যর্থং বলযুক্তং করোতাসৌ। মূলাগর্ভং স্থৃতং ক্ষীরং শালয়ং বিশ্বমানিষম্॥ পারাবত্ত মাংসঞ্চ তিত্রিক সদা হিতঃ॥

মুক্তা, পারদ, স্বর্ণ, রৌপা, যবক্ষার প্রত্যেক ১ ভোলা, এই সমুদায় একত্র করিয়া রক্তোৎপলের পত্রের রসে মাড়িয়া পশ্চাং উহার সহিত গরুক ১ ভোলা মিশ্রিত করিয়া মাড়েবে; পরে ইহাদিগকে একটি বোভলে পুরিয়া ৩ প্রাহর প্রয়ন্ত বালুকাবন্ত্রে পাক করিবে। শতিলা হইলে উষধ বাহির করিয়া ভালমূলীর রস ও চিনির সহিত ও রতি পরিমাণে সেবন করিবে। পথা—মৃত, মুদ্গা, শালিধাল ও পারাবতের মাংস প্রভৃতি। ইহা সেবন করিলে স্বজ্ভঙ্গরোগ নত্ত হয়।

कार्यमाशकः।

সিতং পুনৰ্বংমূল শাখলীরসভাবিত্য।
শাঅলীসত্বনিষ্ঠাসং দতাৎ তত্ৰ সমং সমষ্ ।
গন্ধকং সক্ষ্পান ভক্তে চলাগন্তক্।
কর্পানং প্রকশত তত্র কারং পলবয়ন্।
করং চঙালিনাবোলোংগ্রেমাপাত তি সমতে।
নিবেধানিবন যাত ব্রধাৰ ক্রিকাব্রু॥

বেত পুন্নবার মূল চূর্ণ ২ পল শিমূল মূলের রদেও বার ভাবনা দিয়া তাথার সহিত মোচ-রস ২ পল ও গদ্ধক ৪ পল মিশ্রিত ক্রিয়া সমুলায় উত্তমক্ষপে চূর্ণ ক্রিবে। ৴া৽ এক পোয়া হুদ্ধের সহিত ৪ মাধা মাত্রায় দেব্য।

াসদ্ধালালা-কল্লঃ।

ভূকুমাণ্ডং ভালমূলী ব'এী চৈব পুনর্নবা।
সমস্তাগং সমাজতা ভাগার্জং গন্ধং তথা ॥
তদক্ষং পারদং ওদাং কজলাকৃতা নিক্ষিপে।
যেত্রপাক্ষলীতোমেন সন্তবা ভাবয়েও ততঃ ॥
মাহিবেণ চ মুন্ধেন তচ্চুব্ং ভাবয়েও পুনঃ।
ওকং তচ্চুব্ধেদ্ যদ্যানেহ্যেম্বুস্পিবা॥

অনেনামীতিববোহিপি শতধা রমতে প্রিয়া। উদ্ধলিক: সদা তিঠেৎ কামদেব ইব অরম্ ॥ জরাদিরোগনিন্মুক্ত: সংসারস্থসমগুতে। শাশমেকত্ত কর্ত্তগাং হুধমত্রামুপানকম্ ॥

ভূমিকুলাও, তালমূলী, আমলকী ও খেত
প্রর্বা প্রত্যেক সমভাগ, গল্পক অর্ধভাগ,
পারদ গল্পকের অর্ধ ভাগ (পারা ও গল্পকে
কজলী করিবে); এই সমুদায় একত্র মিশ্রিত
করিয়া খেত শিমুলের মূলের রদে ও মাহিষ
ছগ্রে যথাক্রমে ৭ বার করিয়া ভাবনা দিয়া
শুকাইয়া চূর্ণ করিবে। মাত্রা—৪ মাষা। অন্ধ্রু পান—ল্পত ও মধু। ঔষধসেবনাস্তে কিঞ্ছিৎ
ছগ্ন পান করা কর্ত্তবা। ইহাতে অত্যন্ত কামবেগল্প এবং জ্বাদি বোগ বিনষ্ট হয়।

পঞ্চারঃ।

রসের সমর এ শার্ম লিজেক ব্রং বিশেষ প্রধার বি বালং বিমনর । পূপক্ ভ্রোর কন্য লিকাং বিপ্রাং ২তো রসর পঞ্চলরে গ্রন্তর । বরোগ হর্ম দলসা প্রস্তুরের নীয়াতি বৃদ্ধির কুরাগ্রেক সন্ম্য । মংসারম্ভাং ভ্রমপ্রেমক প্রার্থ বিব্যাহিশ্যার সিদ্ধায় ॥

পারদ ও গদ্ধক শিমুলমূলের রসে পৃথক্ পৃথক্ ২১ বাব ভবেনা দিয়া কজ্জনী কারিয়া বাল্কাযন্ত্রে পাক করিবে। ইহার নাম পঞ্চ শর। মাজ্রা— ২ রতি, পানের সহিত সেবা। পথ্য—মাংস, মন্ত্র, পানস ও মাহিষদ্ধ প্রভৃতি। ইহা সেবন করিলে অভিশয় বীর্যুর্দ্ধি হয়।

शुक्राधवा ।

ংবজ্পুজালোই শালকং বঙ্গুচ্বং কনকংবজয়বটী শাৰ্মনানাবলী। মুডমধুসি চহুদ্ধং পুশাধ্মা রসেক্রো রময়তি শতরামা দীঘমাবুবসঞ্জ (কনকাদিকাথেন ভাবয়িধা যুতাদিভিযোজয়েং)।

গ্নাসনূব, গাঁসং লোহ, অভ্ৰ ও বঙ্গ এই সমুদায় এবা একৰে করিয়া ধুতূরা, সিদ্ধি, যষ্টিমধু, শিমুলমূল ও পানের রসে ভাবনা দিয়া ঘত, মধু, চিনি ও হুপ্নের সহিত মিশ্রিত করিয়া সেবনীয়। ইহাতে বৃতিশক্তি, আয়ুঃ ও বল বৃদ্ধিত হয়।

কামাগ্রিস্কাপনঃ।

পানপরিমিতজ্জাং প্রতকং গাজাতুলা; গালাকুনটিতুলাং ভাবিতং শৃক্রেরৈঃ। তদকু কনকবাঁজাতাবিতং সপ্তবারং তদন্ত সিতজ্জাত্তা ভূজারাভিত্চ সর্বম্॥ গুটিতমুপরি ভূজং কাচকপান্ত কিপুং বড্ছমুপরিপাচাং ব'লাকাব্যুকৈত ॥

এলগ্জাতীস্টটেক্স গ্রামদস্থিতিত সোষ্ট্রণ সাখগলৈস্থানোগলপ্রমাণং প্রতিদিনম্পিতং প্রতক্রথায় ক্তৈছে।
ওজংপ্রতিবিদ্ধান্তি বজুৎ সন্ধ্রিদ্দাপ্রনা
সক্ষাত্ত্বভাৱা রস্ক্রেন্ড কংক্রিদ্ধান্ত্রা

পাবদ, গলাগ, থিসুল, মনছাল প্রত্যেক
সলাগ, এই সম্পায় একতা মদ্দন করিয়া যথাক্রমে আদা, ধুতুরা-বীজ, শ্রেডলয়ন্তী ও ভূঙ্গরাজের রসে ক্রমশ: ৭ বার করিয়া ভাবদা
দিয়া কাচকুপীর অভান্তরস্থ করিবে এবং
বালুকাবল্পে ভাদন পাক করিয়া উষধ উন্ধৃত
করিয়া কইবে। পাে উহার সহিত সমানপারিমাণে এলাইড, জায়কল, কপূব, মুগনাভি,
পিপুল ও অখগন্ধা নাগ্রত করিয়া মদ্দন করিবে।
ম আ—২ রতি। প্রাভিক্রাণে সেবা। ইহা
সেবন করিলে ভল্পাং ও বল বৃদ্ধি, বিবিধ
রোগ নাশ এবং কামোদ্দাশন হয়।

इन्पना कि टेंडलया

জবানি চন্দনাদেশ্ত চন্দনং রস্কান্দনন্।
পত্তসমন্ধ কালায়া ওরকুকগগুরুতি চ ॥
দেহজ্ঞান সমরলঃ পারকং তু পিকোইপি চ ।
কপুরো মুগনাভিশ্চ লতাকন্ত, বিকাপি চ ॥
দিহলকঃ কুলুমং নবাং জাতীফলকম্ম চ ।
জাতাপত্তং লবসক স্কোলা মহতা চ সা ॥
ককোলফলকং তুক্ চ পত্তকং নাগকেশ্রম্ ।
বালকক্ষ তথোশীরং মাংসী দাক্সিতাপি বা ॥

মুরা কপুরক্কাপি শৈলেরং ভদ্রমুক্তকম্।
রেণুকা চ প্রিরকুক্ত জীবাসো গুগাগুলুগুণা।
লাকা নথক রালক ধাতকীকুহমং তথা।
এছিপর্ণক মন্ত্রিচা তগরং সিক্থকং তথা।
এতানি শাণমানানি ককীকুতা শন্তৈ গচেং।
তৈলং প্রস্থমিতং সম্যুগেতং পাত্রে গুড়ে কিপেং।
জনো ভবতি গুলাচা: ত্রীণামত্যন্তবলভঃ।
বন্ধ্যাপি লভতে গর্ভং বঙোংপি পুরুষায়তে।
অপুত্রঃ পুত্রমাপ্রোতি জীবেচ্চ শর্মাং শতম্॥
চন্দানাদি মহাতৈলং রক্তপিতং ক্ষরং অরম্।
দাহপ্রস্থেদদৌর্গন্ধা-কুষ্ঠং কঙ্ং বিনাশরেং।

তিলতৈল /৪ সের। কন্ধার্থ—খেতচন্দন. ব্ৰক্তন্ত্ৰ, ব্ৰুমকাষ্ঠ, কালিয়াকাৰ্ছ, ক্রুফাগুরু, দেবদারু, সরলকার্চ, পদাকার্চ, তুঁদ, কপূর, মৃগনাভি, লতাকস্তারী, শিলাবস, নৃতন কুকুম, জায়দল, জাতীপত্র, লবঙ্গ, হোট এলাইচ, বড এলাইচ, ককোল, গুড়ত্বক্, তেজপত্ত, वाना, (वणांत यन, क्लोभारती, দাকচিনি, মুরামাংসী, কপূর, শৈলজ, ভদ্রমুতা, সর্ল-নির্য্যাস, গুগ্ গুলু, বেণুক, প্রিয়ঙ্গু, नाका, नशी, धूना, धांटेकून, शिटोना, मिर्किन, ভগরপাতকা ও মোম প্রত্যেক ॥ তোলা। ৰথাবিধি পাক করিবে। এই তৈল মৰ্দন कतिल वन वीर्यानित वृक्ति, कारमामीभन, বন্ধ্যার গর্জেৎপত্তি এবং ক্লীবেরও পুরুষত্ব হয়। ইহাতে রক্ষপিত্ত, ক্ষয় ও জন প্রভৃতি রোগ নিরাক্বত হয়।

ভল্লাতকাছাতৈলম্ ।

ভন্নাতকবৃহতীফলদাড়িমফলবন্ধলদাধিতং কুরুতে। লিঙ্গং মন্দিনবিধিনা কটুতৈলং বাজিলিঙ্গাভন্।

ভেলা, বৃহতীফল, দাড়িম্বফলেব ত্বক্ ইহাদের কবে চতুগুণ জল সহ যথারীতি কটুতৈল পাক করিয়া লিঙ্গে মন্দন করিলে আর্থলিঙ্গ সদৃণ লিঙ্গ হয়।

অশ্বগন্ধ তৈলম্।

অৰগন্ধা বরী কুঠং মাংসী সিংহীকলান্বিতম্ । চতুগু গৈন হুগ্নেন ভিলতৈলং নিপাচয়েৎ। স্তৰ্নিঙ্গকৰ্ণপালিবৰ্দ্ধনং ক্ৰমণানিদম্॥

অধ্যান্ধা, শতমূলী, কুড়, জটামাংসী, বৃহতীফণ ইহাদের করে এবং চতুপ্তণি ছুগ্নে যথাবিহিত স্থাক তৈল মন্দন করিলে কিন্তু, স্তন ও কর্নপালি বিবর্দ্ধিত হয়।

কৃষ্ঠেলবালুকৈল।মৃত্তকথন্তাকমধুক্তত কৰল। । অপহরতি পুতিগলং রসোনমদিরাদিজং গলম্। কৌদ্রেণ বজিপুরহক্লীচাংধাবতিগলতুৎ ॥

মুখের স্বাভাবিক হুর্গন্ধ এবং রসোন ও মদিরাদি পান জন্ত হুর্গন্ধ নিবারণার্থ কুড়, এলবাল্ক, এলাইচ, মূভা, ধনে ও যষ্টিমধু ইহা-দের কাথের কবল গ রণ করিবে। অধােবাত-হুর্গন্ধ নিবারণার্থ টাবালেবুর ছক্ পেষণ করিয়া মধুর সহিত লেহন করিবে।

ইত্যায়র্কেদ-সংগ্রহে ধ্বজভঙ্গাধিকার:।

অথ ফিরঙ্গরোগাধিকারঃ।

ক্ষিরক্ষসংজ্ঞকে দেশে বহিলোনৈব যদ্ ভবেৎ। ভন্মাৎ ফিরক ইত্যুক্তো ব্যাধিব্যাধিবিশারদৈঃ।

ফিরঙ্গ দেশে এই রোগ বছল প্রিমাণে হয়, তজ্জ্ঞ বৈষ্ণগণ ইহাকে ফিল্লন্স রোগ বলিয়া থাকেন।

অথ ফিরঙ্গরোগ-নিদানম্।

গন্ধরোগঃ ফিরজোহয়ং জায়তে দেহিনাং প্রবম্। ফিরজিণোহঙ্গসংসগাঁৎ ফিরজিণা। প্রসঙ্গতঃ॥ ব্যাধিরাগস্তজো হেয দোষাণামত সংক্রমঃ। ভবেৎ ডল্লক্ষয়েৎ ভেষাং লক্ষণৈতিষ্কাং বরঃ॥ ফিরঙ্গ-রোগগ্রস্ত ব্যক্তির গাত্ত সংসর্গ কিংবা ফিরঙ্গিনীর সহবাস করিলে ফিরঙ্গ নামক এই গন্ধরোগ উৎপন্ন হয়। ইহা আগস্তুজ ব্যাধি। এই ব্যাধি উৎপন্ন হইলে দোষামুসাবে ইহার যথোক্ত বাতজাদি লক্ষণ স্থির করিবে।

ফিরঙ্গন্তিবিধো জেয়ো বাহ্য আভ্যন্তরন্তথা। বহিরস্কর্তবন্দাপি তেব!ং নিঙ্গানি চ ক্রনে॥

ফিরঙ্গ রোগ বাহা, আভান্তর ও বহিরন্তর্ভব এই তিন প্রকার হয়। ক্রমশঃ ইহাদের লক্ষণ লিখিত হইতেচে।

ত্রে বাহা: ফিরক: জাদু বিজ্যোটসদৃশোগলকণ্।
কৃটিতো এগবদৈছা: ধ্বসাধ্যোত্পি সাধ্যঃ ।
সন্ধিবাভান্তর: সাক্ষান্যতাত ইব ব্যথান্।
শোপক জনয়েদেব কইসাধ্যা বধৈ: মতঃ ।

তন্মণ্যে বাজ ফিবঙ্গ, বিক্ষোট সদৃশ, অল্ল বেদনাসূক্ত এবং ক্ষাত হইলে এণবং হয়। ইহা স্থাসাধা। মাভান্তর ফিরঙ্গরোগে আম-বাতের স্থায় সন্ধিবেদনা ও শোথ হয়। ইহা কইসাধ্যা (বহিরস্তর্ভব ফিরঙ্গে বাজ ও আভ্যন্তর উভদ্বধিধ ফিরঙ্গের শুক্ষণ সকল সংঘটিত হয়)।

অস্ঠোপদ্রবাঃ।

কার্শ্যং বলক্ষ্যো নাসা-ভক্ষো বছেণ্ট মলত। । অস্থিলোবোহস্থিবকৃষ্ণ ফিরস্থেন্ডবা অমী ॥

কুশতা, বলক্ষ্য, নাগাভন, অগ্নিমান্যা, অহিশোষ ও আন্থর বক্রতা, এই সকল ফিরঙ্গ রোগের উপদ্রব।

অস্ত সাধ্যত্বাদ্লকণম্।

বহিভবো ভবেৎ সাধো নবীনো নিরুপদ্ধর: ।
আভাষ্কস্ত কটেন সাধা: স্থাদ্যমামঃ: ।
বহিরন্তর্ভবো জীর্ণ কাণজোপদ্ধবৈষ্ঠ: ।
ব্যাপ্তো ব্যাধিরসাধ্যোহয়মিতার ছুর্নয়: পুরা ।
বাছ, নৃত্র সঞ্জাত এবং উপদ্রবশৃত্ত ফিরক্স সাধ্য । আভাস্তর ফিরক্স কইসাধ্য এবং
ক্ষীণ ব্যক্তির বহিরন্তভব ফিরক্স, উপদ্রব্যুক্ত
স্বীক্ষে ব্যাপ্ত ও পুরাতন হইলে অসাধ্য হয় ।

অথ ফিরঙ্গরোগ-চিকিৎসা।

ফিরঙ্গদংজ্ঞকং রেগেং রসকপূর্বদংজ্ঞকঃ।
অবগ্যং নাশয়েদেতদুচুঃ পূর্বচিকিৎসকাঃ।
লিখ্যতে রসকপূর-প্রাশনে বিধিক্তমঃ।
অনেন বিধিনা খাদেনুগে শেখং ন বিক্তি।

প্রাচীন চিকিংসকগণ বলিয়া থাকেন যে, রসকপূর ব্যবহার করিলে ফিরঙ্গ রোগ অবশু বিনষ্ট হয়। অতএব রসকপূর ব্যবহারের নিয়ম লিখিত হইতেছে, সেই নিয়মে রসকপূর ব্যবহার করিলে মুখে শোথ হয় না।

কর্প ররসঃ।

গোন্মচূর্বং সঞ্জ বিদ্যাহ কৃষ্ণকুৰ্পকান্।
ভন্মধ্য নিজিপেই সূতং চতুও প্রায়তং ভিষক্॥
ভইপ্ত ওটিকাং কুশেদ্ যথা ন দৃষ্ঠতে বৃহিঃ।
ক্ষেত্রক বিদ্যাহ তথা তামস্কা। সিলেই।
ভাস্তাং ভক্ষাই পশ্চাছোকায়নবশাংস্তাভেই।
ভাস্তাং ভক্ষাই পশ্চাছাকায়নবশাংস্তাভেই।
ভাসমা ত্রমধ্যাকার বিশেষ্য ব্যানিধ্যাম॥

মন্নদার একটি ছোট চুলি করিয়া তন্মধ্যে ৪ রতি পরিমিত পারদ দিনা মুখ এমনি ভাবে বন্ধ করিবে, যেন ভিতরের পারদ দেশা না যার, কিংবা উপরেও পারদ না থাকে। পরে তাহার উপরে লবঙ্গের গুড়া মাথাইয়া এরপ সতর্কতার সহিত গিলিয়া খাইবে, যেন দাতে না লাগে। ইহা সেবনের পর তাম্পুল খাইবে। এই ঔষধ সেবনকালে শাক, অম, লবণ, পরিশ্রম, রৌদ্র, পথপ্যাটন এবং স্ত্রীসঙ্গ পরিত্যাগ করিবে।

সপ্তশালিবটা।

পারদষ্টকমান: তাৎ খনিষ্টকসন্মিতঃ।
আকারকরত-চাপি গ্রাহ্ণস্টকবরােরিতঃ।
টক এয়ােরিতং ক্ষোদ্রং খন্সে সকাং বিনিক্ষিণেও।
সংমর্দ্ধা তপ্ত সকাত্ত কুষ্যাও সপ্তবটিভিষক্।
সংবালী ভক্ষণ্ডে প্রাভরেকৈকামসুনা বটাম্।
কর্জনেদয়লবর্ণং ফিরকত্ত্ত, নগাতি।

পারদ অর্দ্ধতোলা, খদির অর্দ্ধতোলা, আকরকরা ১ তোলা ও মধু দেড় তোলা; একত্র মাড়িয়া ৭টা বটা প্রস্তুত করিবে। এই বটকা প্রাতঃকালে জলের সহিত একটি করিয়া সেবন করিলে ফিরঙ্গ রোগ নই হয়। এই ঔষধ সেবনকালে অমু ও লবণ বর্জনীয়।

ধুমপ্রয়োগঃ।

পারদঃ কথনতেঃ স্থাৎ তাবানের হি গ্রুক: । তঞ্জাশ্চ ক্ষাত্রাঃ স্থারেষাং কুয়াৎ তু কজ্জান্ । তন্তাঃ সপ্তবটাং কুয়াৎ তাভিধু নং প্রয়োজনে । দিনানি সপ্ত তেন স্থাৎ ফিরস্কাপ্তো ন সংশয়ঃ ॥

পারদ ২ ভোলা, গন্ধক ২ ভোলা, কক্ষণী করিয়া বিভ্ন্পচূর্ণ ২ ভোলার সহিত একত্র মিশ্রিত করিবে। পরে ৭টা বটা প্রস্তুত করিয়া এক একটি ঘারা পুম প্রয়োগ করিলে সাত দিনে নিশ্চয় ফিরক্স রোগ নই হয়।

পীতপুপাবলাপি জ-রনৈষ্ট্রমমিতং রসম্। হস্তান্ত্যাং মর্দায়েও তা দে যাবং প্রতোন দৃগুতে। ডক্ত সংস্থোজনতাবেবং বাসরসপ্তকম। তাজেরবণময়ঞ্জ ফিরকস্তম্ত নগ্রতি।

পাত বেড়েলার পাতার বদ সহ আধ্তোলা পরিমিত পারদ হস্ত ধারা মন্দন করিবে: যথন দেখিবে পারদ আর হস্তে দৃষ্টিগোচর হয় না, তথন হস্ত ধারা পাণিষ্টেদ দিবে। লবণ ও অমু পরিত্যাগ করিয়া এইরূপ ৭ দিন করিলে ফিরঙ্গ রোগ নই হয়।

চূৰ্ব্যন্ত্ৰিপ্ৰজানি পথা নিখান্তৰ;ং শৈক। । থাতো চ ভাৰতী রাতী নিখানেডুণভাগিক। ॥ শাশমান্ত্ৰিদং চূৰ্বমন্ত্ৰীয়াদন্তনা সহ। ফিব্ৰস্থাং নাশয়ভোৱ ব'ফ্যাভ্যন্তরং তথা ॥

নিমপাতা চূৰ্ণ ৮ তোলা, হরীতকীচুৰ্ণ ২ ভোলা, আমলকী চুৰ্ণ ১ তোলা ও হরিদ্রা চুৰ্ণ অন্ধতোলা, এই সকল একত্র মিলিত করিয়া জলের সহিত অন্ধতোলা মাতায়, সেবন করিলে বাহা ও আভাস্তব কিংঙ্গ নষ্ট ইয়।

তে: পঠিনিজ্বং চূৰ্বং শাণমানং সমাজিকম্। ফিরঙ্গব্যাধিনাশার ভক্ষরেলণং ত্যুক্তেং । লবণং যদি বা ভাজ্যুং ন শক্ষোতি যদা জনঃ। দৈশ্ববং স তি ভুঞ্জীত নধুরং প্রনং হিত্নু॥

অর্জতোলা পরিষিত তোপচিনির চুর্ণ মধুর সহিত ভক্ষণ করিলে ফিরঙ্গ বিনষ্ট হয়। ইহাতে লবণ পনিতাগে করিবে, নিতাপ্ত অশ্ত হুইলে সৈদ্ধব খাইবে।

পারদ্ধ কর্ননাত্র, স্থাং তাব্রাক্তা তু গ্রাক্তন্।
তবেরাক্স পদির্ভেবাং কুলাং তু কজ্জান্।
রক্তনী কেশরক্রাটা গার্যুক্তা যদানিক।
চলন্দ্রিতহং কুলা বংশী নাংসা চ পারক্রা।
অন্ধর্কানিতং সকং চূর্ণ রহা চ নির্দ্ধাণে।
তথ সর্ববং মধুস্পি ভাগে রিপলাভাগে পুনক্ পুনক।
নান্দ্রেল্য তথা পালেল্যক্রানিজাতি নব্ধ।
তবং ক্রিক্রের্ডেগ্রুক্তাল্যাতি নহাবল।
অক্তাল্পি চির্ডাতেগ্রিপ্ প্রশানাতি নহাবল।
গভ্জুক্তরত পোশা। মুখ্লাক্তনি ভারতে।
বর্জির্ল্য ল্বণ্যেক্রিক্রিয়াতি নহাবল।

পারদ ২ তোলা, গদ্ধক ২ তোলা, একএ
কজলী করিয়া তাহাতে গদির ২ তোলা,
এবং হরিন্তা, নাগকেশন, ছোট এলাইচ, জারা,
ক্রুক্ষন্ধীরা, যুমানী, রক্তচন্দন, চন্দন, পিপুল,
বংশলোচন, জটামাংনী ও তেজপাতা প্রত্যেক
চুণ একভোলা, মধু অর্দ্ধপোরা ও মুঠ অন্দ পোরা, এই সমস্ত প্রব্য একএ মন্দন করিয়া এক ভোলা পরিমাণে দেবন করিবে। ইহাতে কিরক্ষ-রোগোল সন্দ প্রকার এণ ও অ্রান্ত চিরক্ষ মহাএণও অবশুই বিনাই হয়। ইহা ভক্ষণ করিলো মুণে লোথ হয় না। একুণ দিন লবণ পরিত্যাল করিবে।

ইত্যায়ুর্কেদ-সংগ্রহে কিরন্সরোগাধিকারঃ।

অথ মন্তিক-স্নায়ুরোগাধিকারঃ।

অতিরক্ষ সেবন, লঘুবা অন্ধ ভোজন, জাত মৈথুন, রাজিজাগরণ, বিষম উপচার, ধাতুক্ষয়, চিন্তা এবং শোকাদি ধারা অতিকর্ষণ ইত্যাদি কারণে মন্তিক ও সায়সমূহ ত্র্বল হইয়া ইন্দ্রিশন্তির ও মানাসক শক্তির দৌর্বলা প্রভাত বিবিধ রোগ উৎপাদন কবে, অতএব মান্তক ও সায়বিক দৌর্বল্য নিবারণের ক্ষেক্টি সিদ্দেশ্য বোগ লিখিত হইতেছে।

विद्यामिष्ट्रभग्।

বিবং মুক্তকমেলাঞ্চলনাং রক্তচলনম্।
মনানীমজনোদ আ তির্তাং চিত্রকং নিজ্ম ।
মম্পানজনোদ আ তির্তাং চিত্রকং নিজ্ম ।
মম্পান প্রসা সাদ্ধং প্রযুজ্যাৎ কাজিকেন বা ।
দেশনাদপ্ত মাতিকা সদাং প্রয়নিকা অপি।
প্রায়নে ক্রনাং হি তাক্তিক্তা যথাইয়ঃ ।

বেল উঠ, মুতা, এলাইচ, বেতচন্দন, রক্ত-চন্দন, যমানী, বনষ্ণানা, তেউড়া, চিতামূল, বিটলবণ, অন্ধ্যথা, বেড়েলা, পিপুল, বংশ-লোচন ও শিলাজভু, এই সমস্ত ছবা সমভাগে চুণ কবিয় উপযুক্ত মাত্রায় জল কিংবা কাঁজি সহ সেবন কবিলে মাস্তক্ষ্ম ও সায়বিক বোগ সমস্ত দুৱাভূত হয়।

অমৃতাদিম গুরম্।

জমুতা নিঅভূনিকো বহুতী বিশ্বভেষজম্।
রজতৌ মধুকং মুকা মজিটা মদভান্তনী ॥
তোরাধিবাদিনা তোরাপিল্লা তোরারিপ্রিম্।
এতানি সমভাগানি মভুবং বিশুবং ততঃ ।
কিটাদসভবে মুকে পজেনুমানি মথাবিধি।
ভড়ুত্বএপ্রনাশেন প্রযুজানাধুনা সহ ।
মাউজবোগনোগলান বাতাপিভককৈ কৃতান্।
বিনহন্তার সন্দেহা মভুরমম্তাদিকম্॥

শোণত মঙ্র ২৮ তোলা, পাকার্থ গোমূত ২৮ পল। আসর পাকে—গুলঞা, নিমছাল, চিরভা, বুংতী, শুঠ, হারজা, দাক্ষত্রিলা, যষ্টিমধু, মুর্বাম্ল, মঞ্জিলা, শতম্পী, পাক্ষলছাল, কাঁচড়া দাম ও লবঙ্গ প্রত্যেক চুর্ণ এক তোলা পরিমাণে প্রক্ষেপ দিবে। তুই ভোলা পরিমাণে মধুর সাহত সেব্য। ইহাতে মস্তিক্ষজাত বোগসমূহ বিনপ্ত হয়।

প্রকায়ত-লোহগুগ্ গুলুঃ।

রসগন্ধক তারাজ-মান্দিকাণাং পলং পলম্।
লৌহজ বিপলকাপি গুগ গুলোঃ পলস প্রকন্॥
মন্দিরেদায়সে পাতে দপ্তেনাপায়সেন চ।
কটুতৈলসমাযোগাদ্ যাম্বরমত ক্রিতঃ ।
নাষ্মাত্রপ্রেলিগেণ গলা মন্তিকসন্থবাঃ।
নাষ্যালা বাভজাতিনিগি বিন্তান্তি ন সংশায়ঃ ।
বং প্রকাম্তলীই প্রা গুগ গুনুন হরেদ্ গদ্ম্।
নাদৌ সঞ্চাত্তে দেহে মন্ত্রানাং কল্ভন্ন।

পারদ, গদ্ধক, রৌপা, অত্র ও স্বর্ণমাক্ষিক প্রত্যেক এক পল, লৌহ গৃই পল এবং গুগ্-গুলু ৭ পল, এই সমস্ত লৌহপাতে লৌহদণ্ড ধারা কটুতৈল সহ গৃই প্রহরকাল অনবরত মন্দন কার্যা এক নাষা পারমাণে (ভলের সাহত) সেবন কার্বে। এই ঔষব সেবন ক্রিলে মান্ত্রদস্তুত ও সায়ুজাত বিবিধ রোগের ধ্বংস হয়।

ত্রিবৃতাদি-মোদক্য।

ত্রিবৃত্তামমৃতাং জাক্ষাং জাতাকোবফলেহভয়ামৃ।
ভাবতাং মধুকং ভামামনস্তামিক্রবার্কাম্।
অন্ধান্দীবরং বহিং মধুকং মাগধাং মুরাম।
চবিকাং চোরপুশীক চন্দ্রপুরক চাক্রকাম্।
চুবাজিবু মানাং বিকয়াং গুলাং বাজবিবর্জিতাম্।
সতাং সক্ষত্তিবিতাং নিকুজেনবহিনা।
যধাশারং ভিষক্ পজ্বা মোদকং পারকল্প চ।
প্রস্থাৎ প্রসোধেন সায়াহে শাণমাত্রয়।
মাজিকে দার্কণে রোগে সায়ব্যে মাঞ্তোভবে।
পিত্রকে কক্ষে চাপি গ্রহণ্যাং বিকৃতেহনলে।
ক্রীবতায়াং অরে জার্পি হুটে রজসি রেত্সি।
প্রযোজাং দেবদেবাক্তং মোদকং তির্তাদিকম্।

তেউড়ী মুলের ছাল, গুলঞ্চ, লাক্ষা, জৈত্রী, জাহকণ, হরীতকী, জীবন্তী, যাষ্টিমধু, গুলানালতা, অনন্তমূল, রাখাল শশার মূল, মৃতা, নীলস্থ দির মুগ, চিতামূল, মৌলছাল, পিপুল, মুরামাংসী, চৈ, চোরপুজা, হালিম ও এলাইচ প্রত্যেক চুর্ণ সমভাগ, সিহিচুর্ণ সকলের চতুর্থাংশ এবং সক্ষন্তিও চিনি। দন্তীকাটের অমিতে যথাবিধি মৌদক প্রস্তুত করিবে। সায়ংকালে উষ্ণ গুলার সহিত অন্ধতোলা মাত্রায় সেব্য। ইংগ সেবনে মন্তিক্ষণ্ণ ও সাযুক্ষাত রোগসমুহ নিরাক্ত হয়।

রুহদ্ধাত্রীয়তম্।

ধাঁত্ৰীকলক শাক্ষলা দুহতা বাসকত চ।
শতাবথা নিদ্যাণত প্ৰত্যানেন চান্তদা ॥
ককৈ: ক্রিকণাকুঝা-ককোলককলেক্তি:।
থলিনীখদিরভাগে গভিকেন চ গভিনা ॥
গদাগদাভাগে গক্ষেন গোন্তকা গোণকভারা।
ঘনাঘনাগনাভাগে ঘনাঘনখনখনে ॥
প্রদা চ পর্যিক্যাঃ পজ্ব প্রত্যাহিত গুতুম।
প্রদা চ প্রাম্যাক্ষেন প্রাভরক্ষমানতঃ ॥
প্রদা চ প্রাম্যাক্ষেন প্রাভরক্ষমানতঃ ॥
প্রদা চ প্রাম্যাক্ষিন প্রাভরক্ষমানতঃ ॥
মান্তিজনিপ্রান্য ব্যাপনি প্রায়দোশসমূদ্রণন্।
রক্ষপিতং করং তৈ গং কামখাসানিলামবান্ ॥
উন্মানক ক্রমং মুক্তাং ধা এছেত্রিনকং নতং।
সপ্তাহ্মভাবহ্ত গং নিরাক্ষ্যার সংশ্রঃ ॥

গবন্ত /৬ দের। আমলকী, শিমূল-মূল, বৃহতী, বাদকছাল, শতমূলী ও ভূমিকুলাও প্রত্যেকের রস /৪ দের, গব্যপ্তর্ম /৬ দের। কল্পার্থ—গজপিপ্ললী, পিপুল, কক্ষোল, কেন্ডুর, ভালমূলী, খদির কাঠ, মটর কলাই, বনমূগ, পাক্ষলছাল, কুড, শজিনাছাল, দাক্ষা, অনন্ত-মূল, কাক্মাচী, মূতা, মাধাণী, দাক্ষচিনি ও চাপানটের মূল, মিলিত /> দের। যথাবিধি পাক করিয়া কিঞ্জিং উষ্ণগ্রের সহিত তৃই ভোলা পর্যান্ত মাত্রায় সেব্য। এই ম্বত দেবনে মস্তিক্ষলাত ও সাব্যক্ষ বিবিধ রোগ এবং

র ক্রপিত্ত, ক্রম্ম, ক্রেব্য ও কাদাদি নানা ব্যাধি নিবারিত হয়।

লক্ষীবিলাস-তৈলম।

শতাবৰ্ণা বিদাৰ্থ্যাশ্চ কদল্যা গোকুরস্ত চ। নারিকেনস্ত ধাত্রান্ত কুম্মাওস্তাম্বনা পুণক॥ মন্ত্রনা কাঞ্জিকেনাপি লাকায়া: সলিলেন চ। ছ'গেন পয়সা ক**ৰে:** শটীচম্পকমন্তুকৈ: ॥ বলাবিৰ্থেগন্ধাভিব ই'গা বাসকেন চন চন্দ্ৰখন্মঞ্জিষ্ঠা-ক্সামানস্তানিশ্যুপৈঃ । মধুকেন মধুকেন পদ্মকে! পলবালকৈ: यभाष्ट्री ह अमात्रवा शक्तमरेवास्त्रवासिकः ॥ একানজাং পুজ্যির। লক্ষ্মীন'রায়ণে। ওটি:। তৈলং তিলসমূজতং পচেন্মোনী জিতে লিয়াঃ॥ মন্তিকান্ স্নাযুজান থোৱান্ গ্রান্ মহাংক্চ বিংশতিন। বাতব্যাধীনশেষাংক মূর্চেছারাদাবপখৃতিমু॥ গ্রহণীং পাঞ্জাং শোখং বাবভাং ব'তনোশিভম। মচগভং র**কো**দোষং দোষং শু**ক্র**গতং তথা ॥ ৈতলং লক্ষীবিলাসাখাং নাশহিত্বান্ত বৈ বলম। পুষ্টিং কাস্তিং ধৃতিং মেধৃং জনমেপ্লাতা সংশয়ঃ॥

তিলতৈল /৪ সের। শতমূলী, ভূমিকুলাও, কদলী, গোকুর ও আমলকী সের: নারিকেল জল, কুমড়ার ভল, দধির মাত, কাঁজি, লাক্ষার জল ও ছাগ্-ত্রশ্ব প্রত্যেক /৪ সের। করন্তব্য—শ্রী চাঁপাফুল, মুতা, বেড়েলা, বেলছাল, অশ্বপন্ধা, বাসকছাল, শ্বেডচন্দন, রক্তচন্দন, মঞ্জিল, খ্রামালতা, অনস্তমূল, হরিলো, দাকু-र्विका, यष्टिम्यु, स्मोलकृत, भणकार्थ, स्मिन्न, বালা, যমানী ও গন্ধভাগুলে মিলিত 🗸১ সের। ক্রপাক শেষ হইলে গন্ধদ্রব্য পাক করিবে। এই তৈল ব্যবহারে মন্তিক ও স্নায়ুসম্ভূত বিবিধ পীড়া, বিংশতি প্রকার মেহ, বাতব্যাদি, মুর্চ্ছা, উন্নাদ, অপস্মার, গ্রহণী, ক্লীবভা, বাতরক্ত, মৃত্যুৰ্ভ, বজোদোষ ও গুক্ৰদোষ নিরাক্ত হইয়া বল, পুষ্টি, কান্তি, গুতি ও মেধা বন্ধিত হয়।

ইত্যান্তর্বেদ-সংগ্রহে মস্তিক-সারুরোগাধিকার:।

সমাগুমিদং পরার্দ্ধ। সম্পূর্বোধয়ং গ্রন্থঃ।

বর্ণাকুক্রমিক-সূচীপত্র।

•	<u> </u>	•		বিষয়।			পত্ৰান্ধ।
বিষয়।		9	1377	অ্জ†প্ঞকয়ত	•••	***	P 4 2
				অ:জিতাপদ	•••	•••	2390
অ"স	•••	•••	5.0	অজীর্ণকণ্টকরদ	•••	•••	৫৩৮
অংসফল ক	•••	•••	હ	অ সীর্ণহরীবটী	•••	•••	¢ % 8
অগস্তি (বকফুল)	•••	•••	; p.3	অজীর্ণারিরস	•••	***	488
অগ্ডিস্তর্ভব্দ	• • • •	•••	8 % •	অঞ্জন	•••	***	01.5
অগ্রিমোণক	•••	•••	a ; e	অঞ্নবিধি	•••	•••	>. 4 5
অগন্তাহরা তকী	• • •	•••	5.6	অঞ্ নভৈ রব	***	•••	8 • •
অন্তর	•••	•••	38€	অঞ্নশোধনবিধি	• • •	***	٠ : ٥
অওবৰাদি তৈলাদি	***	• • •	883	অ ঞ্জন 'দিগণ	***	•••	1:1
অপ্লিকরমূত	•••		689	অটক্লবক'দিৰ'প	•••	***	663
অগ্নির্মার:মাদক	• • •	•••	800	व्यष्ट्रंत	***	•••	२२१
অখিঃম'ররস	***	৬,১৯৬	201009	অণুতৈল	•••		4
অগ্নিয়ত	•••	***	689	অণুনটিক'বিধি	•••	***	२४४
অগ্নিহু ও রৈদ	***	•••	687	অভিবিষ'দি	• • •	•••	849
অপ্লিদমত্রণ,5.কিৎসা	•••	•••	>:>	অভিৰুদ্ধদোষাদির হ্রাদোপায়		•••	5.0
অগ্নিমাশ্যধাতুকরে নাড়ান্য	.લ	•••	૭ ૦૧	অভিবৃদ্ধদোধের লকণ	•••	•••	483
অধিমান্দানি চিকিৎনা	• • •	•••	€ २ 5	অভিবৃদ্ধাতুর লক্ষণ	•••	•••	*288
<u>ର୍ଗ୍ରିମ୍ବ୍ୟାନ୍ନିନ୍ନ</u>	•••	•••	€ ÷ €	অভিবৃদ্ধমলের লক্ষণ	• • •	***	** 8
অগ্নিম্নানির অপ্পা		•••	682	অভিসারনিদান	•••	• • •	84;
अधिम,न्साकित প्रभा	•••	***	684	অভিসারবারণরস	•••	•••	1 45
অন্মিশ্যাদিরে গাধিকরে	•••	•••	८२ ६	অভিসারসাধারণ্টিকিংসা		• •••	ម
অগ্রিমূপমভূর	•••	•••	PSR	অভিসারে অপথা	•••	•••	69.
অগ্নিমুখলবণ .	• • •	3. 7. 4	* 454	অভিসারে পথা	•••	• • •	89.
অগ্নিমৃথলোহ	•••	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	ર અ	অভিসারোপদ্রব-চিকিৎসা	•••	•••	৩৮৮
অগ্রিরস .	••• "	•••	687	অধ:পাতন	***	***	٠. ۽
व्यशिद्याद्विना .	'	• • •	2.59	অধিপতি	***	***	৩১
অগ্নিশ্নুরস	• •••	•••	820	অধে¦গতধমনী	•••	•••	৫৯
অঙ্গারকটেল	,	•••	805	অধ্বণে ্ধ-চি,কিৎসা	•••	***	€৮৩ ়
অঙ্গারকর্কটা	***	•••	२१७	অনঙ্গ কুথমা কর	,	•••	:5:1
অচিন্তাশক্তিরস	•••	•••	465	चनस्रम्	ţ	•••	2.5
অঙ্গলিকা	•••	•••	३०२६	অন্তঃপ্রায়ত অনিলারিরস	•••	•••	4 36
व्यक्रद्भाभाषिगर्दक		•••	186	অনুক্তস্থলে জব্যগ্রহণ	***	***	\$ b 8
অজাঞা; দিচুৰ		•••	847	अनुसन्धाः अनुमन्नी	• • •	***	:.>6
व्यक्तिभूत	•••	•••	৩৮৩	অন্তর্গামের চিকিৎসা	•••	***	७५२
1				ווירדועו גדט, אוגטר			

২		7	ৰণান্তক্ৰা	भेक मृहीপত ।			
्रियद्य।			পত্ৰাব্ধ।	বিষয়।	· •••	9	আৰু।
[‡] অন্তরায়ামের লক্ষণ	•••	•••	**>	অভ্যারণবিধি	•••	•••	٠,٠
অন্তালজী	•••	FH	\$•₹€	ৰুত্ৰত ি	•••	***	3003
অর	***	•••	293	অভ্ৰশেধন্বিধি	•••	•••	٠,٠
অন্নদ্রবশূলটি কিৎসা	•••	•	968	অত্যের অমৃতীকরণ	• • •	•••	٠:٠
অন্নদ্ৰলক্ষ	•••	•••	168	অমূতকল্পটা	•••	•••	48-
অক্তবীজের সাধারণশোধনবি	वि	•••	@7A	অমৃতকেলি *	•••	•••	२१२
অপক ও পক তক্রের গুণ	***	•••	₹€8	অমৃতপ্ৰাশয়ত	•••	63	9 5258
অণচী-চিকিৎসা	•••	•••	1:4	অমু ভপ্রাশাবলেহ	5'00	•••	829
অপচীলক্ষণ	•••	•••	P C 6	অমূতংটী	•••	•••	¢ 8 •
অপতন্ত্রকের চিকিৎসা	•••	•••	•5.	অমৃহভন্নতক	•••	•••	৯٩৩
অপতন্ত্রকের লক্ষণ	•••	•••	@b.	অমৃতহলাত কাবলেহ	•••	•••	90.
অপতানক লকণ	•••	•••	647	অম্বসঞ্জী	***	•••	चंद्र छ
অপতানকের চিকিৎসা	•••	***	•65	অমৃতলভাষ্ঠ্যত	•••	•••	6 9 8
অ পরাজিতধ্প	•••	•••	ও৮৩	অমৃতসারলোহ	•••	•••	7728
অপরান্তিতা (বেতপুস্পা ও	नोलभूना)	•••	<i>2</i> 4 2	অমৃতহরীতকী	•••	•••	৫৩৩
অপরাজিতাদিলেহ	•••	***	6.5	অমৃতাকুরলোহ	•••	•••	294
অপলাপ	•••	•••	• ર	অমুতাগুগ্রুলু	• • •	•••	२७।३१२
অপন্তম্ভ	•••	•••	७३	অমৃতাকুরবটা	•••	•••	2 • 8 8
অপস্মাররোগাধিকার	•••	•••	49.	অমৃতাদি	929,50	91290,20	12289
অপসার চিকিৎদা	•••	•••	৬৭১	অমৃতাদি গুগগুলু	•••	•••	₽ @9
অপন্মারের পশাপশাবিধি	•••	***	490	অমৃতাদি মঞ্র	•••	•••	2220
অপাক	•••	•••	હ	অমুতাপ্তায়ত	***	***	935
অপামার্গকারতৈল	•••	•••	:• ૧ ૨	অমুভাক্তাতেল	• • • •	***	a 5 w
অপামার্গ তৈল	801	•••	7778	অ১তার্ণ1	•••	••• 1	869,560
ष्यपूर्वमानिनो वनस	•••	•••	৮৩৯	অমৃতার্বর্স	•••	💩	9123P.0
অবপাটকা	•••	•••	1.81	অমৃতারিষ্ট	• • •	•••	8 છે છે
অববাহকচিকিৎসা	•••	•••	966	অমৃতাষ্ট্ৰক	•••	•••	હ ક€
অববাছকলকণ	•••	•••	944	অমুপিত্ত-চিকিৎসা	•••	•••	866
অধিপত্তিকরচূর্ণ	•••		334	অমুপিত্তনিদান	•••	•••	e હ હ
অভয়নৃসিংহরদ	•••	•••		অমুপিন্তনোগে ও পথ্য	•••	•••	2006
অভয়ামোণক	•••	. ***	18	অমপিন্তরোগে পথ্য	•••	•••	>4
অভয় লবৰ্ণ	***	•••	296 226	অমপিভান্তকমোনক "	***		* >>
অভয়ান্তবলেহ অভয়াবটা	•••	500	293	অমূপিত্রাস্তকরস	***	•••	644
व्यञ्जापण व्यञ्जाद <u>स्व</u> र्ग्यहर्ग	•••	•••	२৮8	অমন্ত্রের গুণ	~***	***	er
অভিন্তিভতৈল	•••	•••	> >>>	অয়বেডস	•••	***	380
অভিন্তাস বরচিকিৎসা	•••	***	996	অন্নবিশাস্ব	•••	***	2289
অভিক্ৰাসম্মানকণ	•••	•••	৩৭৪	অ্রিষ্টলকণ	***	166	२७४।७४२
প্ৰ	•••	•••	678	অকু:বিকা	***	•••	>.00
অন্তৰ্টিকা	***	***	890	অক্ট্রাপত্রৰ-চিকিৎসা	•••	•••	966
অক্সবিধি	•••	***	2222	অরোচক-চিকিৎসা	***	***	60.
অভভনারুপান	•••	***	٠٥٠ ا	অরোচক-নিশান	***	•••	•••

٠٠,

विंग्रं ।			পত্রাহ ।	विषय।		\$	া কাতা
অন্নোচকে অপথ্য	•••	•••	৬৩৪	অশ্বরী-চিকিৎসা	104		447
অরোচকে পথ্য	•••	•••	600	অশ্বরীনিদান	•••	***	₽ ₹.
অৰ্কতৈল	•••	***	०४६	অশ্বরীরোগে অপথ্য	111	•••	b 24
অৰ্কপুষ্পী	•••	•••	- :95	অশ্বরীরোগে পথ্য			P 24
অ্ক্মন:শিল'তৈল	•••		હત્યલ	অষ্টক টুরতৈল	•••	•••	990
অৰ্কমূৰ্দ্ভিরদ	•••	•••	87€	অষ্টবৰ্গ	•••	•••	203
অকম্লাদিধ্প	00:	***	67.0	অন্তম মাদ হইতে গভিণীর অ	পথ্য	•••	>>84
व्यक्तवर्ग े	•••	•••	४१६	অষ্টমঙ্গ লগু ড	•••	•••	3369
অৰ্কা দিগণ	•••	***	770	অষ্টাঙ্গধূপ	1**	•••	ও৮ং
অর্কে ধর	•••	•••	498	অষ্টাৰরস	•••		૯૨૨
অৰ্জ্জৰাদি বটিকা	•••	***	ऽ२ऽ२	अहे जल वन	***	•••	-
অৰ্জুন	•••	***	: 66	অষ্টাঙ্গ াবলেহ	•••	•••	৩৬
অৰ্জুনম্বত	•••	•••	b • @	অষ্টাঙ্গানলেহিকা	•••		٠.
অন্দিহ- চিকিৎসা	•••	•••	948	অষ্ট্রদশণতিক; প্রদারণীতৈল	***	•••	930
অধিতের সম্প্রতিপূর্বকলকণ	• • •	•••	৬৮৩	बहोमगाऋतो इ	***	•••	(6)
অন্ধন;ভানাটকে গর	•••	•••	2225	অষ্ট:বক্ররস	•••	• • •	116
অন্ধনার খারস	•••	•••	879	यशैना विंदर।	•••	•••	60
অৰ্ক, দচি।কংসা	•••	•••	6 :4	অষ্টালাকণ	•••	***	40
অৰ্ব্ৰ দলকণ	•••	•••	*75	অহণদর-চিকিৎসা	•••	•••	\$\$2
অ্থ্যমামূতাৰ	•••	•••	5) 2	অস্থপর-নিদান	•••	***	228
অৰ্শ-কুঠাররস	•••	•••	45:	অস্ব্রাগে প্রাপ্র	•••		::0
অৰ্শেনিদান	8.4	***	e • 9	অহিবিশেষের স্থান	•••	•••	ર
অশোরোগ-চিকিৎসা	•••	•••	4 • 3	অন্থির প্রয়োজন	•••	***	ર
অংশ:ব্র'গাধিকার	***	***	6.9	অন্থিদংখ্যা	***	•••	21
অংশ(রে:গে অপথ্য	•••	***	₫ ≎ ₫	অ ত্থকপ	***		a
অর্শেরোগে পথ্য	•••	***	8 < 3	অহিপ্তন	***	***	5 - 8
অৱজলপানের বিষয়	•••	***	₹89	অহিফেন	***	***	38
অলমুৰা চ্চাচ্ৰ	•••	•••	482	অহিফেন্বটিকা	***	***	
অলসক	•••	•••	> 4.	অহিফেন যোগ	400	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	
অনসক-চিকিৎসা	•••	***	. ৫৩৭	অ'হফেনশোধনবিধি 🤫	***)	Seew Vi	
অশে;ক	•••	•••	; b 8	অহি.ফনাসব	***	000	
ধণোকঘৃত :	•••	•••	2259		C 10	Saper or	Ar Care
অশোকারিষ্ট	•••	***	2200		717	1. 12. 19. The state of the sta	
অৰগন্ধা	•••	•••	. 300	অ'কড়	· ••• ",	***	201
অৰগন্ধ যুত	•••	201	>>0	আৰুনাদি 💨			246
ज्या १का टे डम ज्यानसम्बद्धाः	•••	4:010	•५२२१• <i>७</i> ७८७	আকন্দ (খেড ও লাল)	A STATE OF THE STA	•••	> 6 %
অখগন্ধ।দিধুপ অখগনাপ্তাক:এ	•••	4**	() b	আবেপের সামাক্ত লব্দণ	•••	•••	94.
অবসন্ধাপ্তাম হ অবসন্ধাপ্তাম হ	•••	***	120	শাখ বোট	***	394	4.4
भगना विष्ठे भगना विष्ठे	111	***		আগন্তব্যচিকিৎসা	***	***	999
∉ किंदी - इ.	***	•••	75-6	আগন্তম্বলকণ	•••	***	৩৭৫
শ্ৰিনীপুত-প্ৰাছ্ৰভাব	•••	***	ર	আগারধুমাস্তাতেল		***	20

8		বৰ্ণা	মুক্রমিক্	সূচীপত্ত।			
विषद्र।			পত্ৰাক।	विषय ।			পত্রাঙ্ক।
আ'কুর	•••	•••	२∙ ₡	আমবাতেশ্বর রস	•••	•••	96.
আচার	•••	•••	₹ 9 ৮	অ'মকুল	***	•••	? 0;
অ'ড়মাছ	•••	***	₹8.5	অ'মলকী	•••	•••	\$ \$ 8
আণিমশ্ম	•••	***	.8	च श्वकावत्वर	•••	•••	46.
অ'তইচ		•••	: 35	আমলক্যাদিগণ	• • •	•••	11>
আতা		***	46:	অংমলকাংদি চূৰ্ণ	•••		e k •
আত্রেয়প্রাচ্ভাব	•••	•••	•	অ'মাজীৰ্চিকিৎসা	•••	•••	(ર ≥
আদা		•••	: २ 0	আমাজীণাদি চিকিৎসাবিধি	***	•••	६२३
অ:দিতাপাকগুড়্চীতৈল	•••	•••	3.05	অ'মাঞ্চীৰ্ণেৰ লক্ষ্ণ	***	•••	4+2
আদিভাপাকটেল		• • •	৯৮৩	আমাতিসার চিকিৎসা	• • •	•••	81.
মাদিত্যরস		•••	৫৩৮	অ'ম'ি স'র্নিদ'ন	•••	•••	842
অ'গ্র'ন-চিকিৎসা	,		6 2.	অ মাণয়রোগলকণ চিবিৎসা			१७ ९
অ'খুনি লকণ		•••	٠.٠	অ'ম			1 8 8
ब नन्यो छ		•••	હેરુ	অ'এন'জ		•••	: > 3
অ'নন্দৈরবরস		,	860,00%	অ'স্তানিফ'ণ্ট		•••	৩৬.
ম'নকভেরবী ব টা	• • •	•••	8.0	হা*ামৰ নৰপ≘ৰ	•••	•••	180
গ'্নকে'দহ: স	•••	***	456 !	এ'হনা (অয়'টন)			:68
ম ন†রস	•••	• • • •	: 22	ज'र'यक <i>्शि</i> क		•••	b b q
ম'ন'হচিবিৎসা	•••	• • •	961	অংশুরেইদ'ৰ এরণ	•••	•••	:
ম্ন'হরে'লে প্রাপ্র	•••	•••	955, 9 58	अभ्यूदर्क एम इ निक्र कि	• • •	***	\$
ম'্ন'হলক ণ	•••	• • •	962	আ্নুকোদের লগাণ	•••	,,,	:
অনুপ্রাংসের লক্ষণ ও তেও	•••		ہود ج	चा≲ध र िम	•••	•••	٠: د
ম্পাং	•••	•••	: 9:	क ्रिश्रवादित व ्र		•••	৩৬১
<u>ब</u> फ़ि र		•••	18.	का देशमा विश्व	•••		: . a
মান্ত্র মান্ত্র	•••	***	હહ	অ;≲য়ধ্ত তৈ ল	•••		200
ন'ভ¦গুগ্ ওলু	•••		. S ÷	অংগ্য (মধু)	•••	•••	: 59
ম:ভ:ক্তুৰ		•••	985	অ'র্ব্রের স্বরূপ	• • •		و د
संब पास		•••	109	অ'ৰ্ক্তকগণ্ড	•,••	***	***
भूमक्ष निः द्दर्भावेक	•••	•••	900	आर्जकमापूनुक। बरलह	***	,	৬৩-
্ৰাজ্য ল'চিকিৎসা			30.	আনকল্ডা	•••	•••	: 93
Carles and		•••	950	অ'লৰুশা ,	***		: 58
म भेटिय अपूर्ण (. a c	य ्ह	***	•••	२८७
भारता है		•••	. > 0	গ'লুবে'খরা .		•••	₹•৮
মানপ্ৰতল 🐫			÷ 4 8	অব্সর্থসবার লক্ষণ	• • •	•••	: 5
ধান ও প্ৰভক্ষ		***	841	অ'শ্রপর কা	• • •	•••	৩ 🕏 ৯
ম্মপ্রামান্থকত্বর	مانتمناد .	•••	48.	. আহারাদির গড়িও পনিশান	• • •	•••	a :
ন্দ্রেট্র নির্বাধিক কর্মার কর্মার কর্মার কর্মার কর্মার কর্মার করে। ব্যক্তি কর্মার কর্মার কর্মার কর্মার কর্মার করে করে করে করে করে করে করে করে করে কর		•••	145	- oximina di sa 1111			
শানবা হালাকবন। না মবাভনিদান	•••	•••	985	2	3		
শান্যাভান্য,ন শাম্বাভা,রিবটিকা	•••	***	96.	_			
শাস্বাতে অপথ্য	***	•••	900	ইকু	***	***	<i>چ</i> ہے۔
আমবাতে পথ্য	•••	•••	900	डेग् नर्श	•••		∖ ଓଞ୍ଚ

							ŗ
বিষয়।		1	পত্ৰাস্ক।	বিষয়।		•	পত্ৰাক
কুরুসবিকারের গুণ	•••	•••	२७৯	উদাবর্গু-চিকিৎসা	•••	•••	9 6
हे अपूर्ण		•••	79.	উদাৰ্গুনিদান	•••	•••	9 •
চ্ছোভেদী রস (তিবিধ) •••	•••	494	উদাবৰ্জে অপথা	•••		96
ন্দুৰলাবটিকা	•••	•••	>• २ २	উনাবর্জে পণ্য	•••		96
न्द्रव ी	•••	•••	3.9.	উ ন্নত ্তিল			34
হন্দুরকাণী	•••	•••	549	উন্মন্তর স	•••	•••	8.
-দু েশগররস	•••	•••	7788	উন্মাদগজকেশরী	•••	•••	**
<u> स</u> ्नीम	•••	•••	552	উন্নাদগ কা কু শ	•••	•••	**
<u>লিপাছ্ডাব</u>	•••	***	2	উন্মাদ্চিকিৎসা		***	69
ল্বটা	•••	•••	₽87	উন্মাদ,নিদান		•••	66
<u>দ</u> ৰেন্দ্ৰ	• • •	• • •	ಅತಿ	ইন্ম'দপর্শক্তীরস	•••	•••	66
ल विश्वा	•••	•••	> + 4 @	উনাদভঞ্জনরস	•••	•••	**
- জন্ম বটা	•••	•••	690	উনাদ্রোগার্থকার	***		**
<i>म</i> ग्र	•••	•••	: ७೨	উন্মানরে: গু অপ্থ্য	•••	•••	99
<i>સ</i> ગુજ	• • •	•••	> • • •	উন্মান্তরেশ্যে পথ্য	•••		৬৬
রিমেদ।জ্য তেল	•••		2058	উপদংশ-টিকিংসা	***	•••	» (
রিবেটিক।	•••	• • •	: • २७	ॐेन्द्र#िक्त'न		•••	26
লিশমাছ	•••	•••	₹8₹	४० मर्डम अल्या	•••	• • • •	20
हेक गञ्च	• • •	•••	৬२৭	উপদংশে পথ্য	•••		46
	37			উপদ্ৰবলকণ	•••		•8
				উপধাতু	•••	•••	esis:
শল'ক্সনা	***	•••	> 5 •	উপধাতুর শোধনমারণপ্রকাব	• • •	***	٥.
	\$			টুপ্ৰিষ্মিক্লগুণ		• • • •	२१
5.5 6 5			२७8	উপবিষশেধনবিধি	***	***	৩:
ং-৩২ উৎ(কু*¦লক্ষণ	•••	•••	609	উপর ত্ন	***	***	৩:
উৎক্ষেপ্সম্ম		•••	94	উপর ত্বনিরূ পণ	•••	•••	२२
ং এক শ্ৰেম বৈপাল মূট ক	***		884	উপরত্বের সাধারণ শেংধনমার	प् निपि	";	9;
१८गणगष्ट्र क १८ शल ! मि	•••	•••	2250	উপরস	•••	***	२३
		•••	228	উপর্বসম্হের সাধারণণোধন	विध	***	٥,
ংপলাদিগণ	•••		889	উপোদিকাকার তৈল	•••	•••	٤• ۶
হৎপলাদিচ্ৰ জ্থাপন	***	,,,	9.8	উরঃক্ত,চিকিৎদা	•••	•••	.e b
	FT 8 . 6.8°			উরক্ষেত্রিদান	***	•••	er
জ্জ-যুত, অগ্লেড			248	উরোগ্রহচিকিৎসা	***	•••	٧.
অনুদ ্ভ-মুগু তঞ্জের ^{টুন্} কমঞ্জর)রস			. 936	উরোগ্র হনিদান	•••	•••	۶.
	•••		4 50	डे नी ब्राह्म	•••	***	৩৮১ ৪৪
ট দকষ্ট্পলকম্ব ত	***		299	i	*	•••	
টদয়ভ¦শ্বর স্ক্রান্ড	•••	***		উশীর; দিচুর্ণ	•••	•••	e 9
উদর-চিকিৎসা	•••	•••	** 5	উ-রিয়াসব	***	•••	e 9
উ দর্নিদ†ন	•••	•••	p#3	উশীর'ছাভৈল	***	•••	A.7
উদররোগে অপথ্য	***	•••	• 90	ট্ রীয়ত	•••	•••	२६
উদররোগে পথ্য	• • • •	•••	৮৭৩	উ রিহ ন্ধ			રહ

د

y			বণাসুক্র	মিক সূচীপত্ত।			
विषम् ।			পত্রাক।	विषय ।			পত্রাঙ্ক
উক মধুর দে†ৰ ও শীতল য	ष्त्र ७१	•••	101		3		
উ কোদক		•••	289				
	=			७क् लक	• • •	•••	२७
	©			ঔৰণ জব্যাস্থাহণ	***	***	२४
উ কী			৩৪	ঔষধপাক।ৰ যন্ত্ৰ	***	***	७३
ত্ৰনা উ ৰ্ব পাত্ৰ		••	9.8				
উক্তম্ভ চিকিৎসা	•••	,,,,	906		ব্য		
উক্তভ নিদান		•••	901		1.		
উক্তত্তাধিকার	• • •		901	কং সংগ্রীতকী	•••		64
উক্লন্তে অপথ্য	•••		18)	কইমাছ	•••	141	24
উ প্ততে পধ্য	***	•••	48.	কৰুভা দিচুৰ্	•••	•••	۳.
উৰক দিগণ		•••	2241452	क्रू हे	•••	•••	૨ ૨
উर्वा षिहुर्व	•••	•••	2.43	ককুঠশোধনবিধি	•••	•••	٠:
i.luX i				क्ट्रजी	•••	•••	२९
	=			কচ্ছপমাংস	•••	•••	₹ 8
भ 55वा		***	28	ক চছু প্যস্থ	•••	•••	251
भ ृ ट्रस्त उ.नः¦ ज ार्न		•••	२৮७	কচ্চ ি পকা	1.,	• • • •	↓• ₹
क्ष्ट्रतो उकी	•••	***	3399	ৰ জুর ক্ষম হৈ চল	•••	***	9 4
* *	•••	•••	: ઙ૨	क उड़ने करता विभ	•••	***	٠.
448 4	•••	•••	151	क अकीरगंडा	***	•••	24
				कक् डें बि	***	***	84
	9			কঞ্চ বলেহ	•••	***	87
			2 4 5	क्षंकी	e •••	• • • •	> 5
একবিংশতিক খগ্ওগু	5 >		-	क ऐक ना नि	***	***	•
একাদশশতিকা মহাপ্রসার		•••	9.3	कष्टकना निक्राय	4 • •	***	@92;8¢
এর ও (ও র ৬ রক্ত) এরওটেন	•••	•••	- 40 •	কট্ফলাদিপাচন	***	***	৩৫
এরওতেল মু র্ছে।	•••	•••	₹ 8 • ₹ 8₹	কট্কলাদিলেহ	•••	•••	ં
এরওসেগু ক		•••	950	কট্কলাপ্তাবৰেহ	***	•••	ى ي
এরধ্যদি		•••	:::82	কটাকত ন ণ	***	***	:
এলব্যলুক		***	: 20	কটুকাপ্তকোহ	•••	904	tr a
এল:দি এল:দি	•••		 F 14	क्ट्रेक हुनी.	•••	•••	- ೬
একাদিগণ		***	229	क्ट्रेक्शानिक:थ	,	•••	હહ
এলাদি গুড়িকা	•••	• • • •	493	क ट्रेटेडन प्रवृह्	•••	***	4.5
थनामिहर् न	•••	(rt 6.	१,७००।४७२	क्ट्रिक् । अ	`#++	•	
এলান্তমোদক	•••	•••	•44	क्ट्रेज्ञस्यत्र श्वन कर्गाः मि	***	***	Q.
এলাড়ারিষ্ট			:• २२	क्या.प			હહ હો
				क्यां विक्यां श्र क्यां विकृष	***	***	७। कर
•	3			কন্যাগচুণ কন্টকপঞ্চমূল		•••	» « د د
,			4.5	কণ্টকারী	•••	***	; « ; «
ওকোনকণ	•••	•••	11	কণ্টকারী য় ত		•••	ء. فددا دد
67	***	•••	२०७		•••	•••	
७ हे में छम् चेरता श्रीनशान	•••	***	2+89	ক'টকাৰ্য্যাদিকৰায়	•••	•••	, ৩৬
ওইরোগ-চিকিৎসা	•••		2 - 82	কণ্টকা ব্যাদিপাচ ন	444	***	ن ۍ ا

.

विषय ।			পত্ৰাক।	विवय ।		,	পতাৰ।
ক ঠগতরোগ নিদান	•••	•••	2-64	ক্ষেবিণ্সন্ত্রপাত্র্যর শীতা		ৎসা	ও৬৮
কণ্ঠরোগচি,কিৎসা	•••	•••	2.6F	क वहें, वज	***	•••	७२२
কণ্ঠশিরা শিরামাতৃকা	•••	•••	৩১	ক্ষলাগুঁ ড়ি	•••	•••	>94
কণ্ডর	•••	•••	₹8	कमल'लायू	•••	•••	2.9
ক্তুণ (রামকপুর)	•••	•••	:49	क्राइश्.वन	•••	•••	२••
क्षप्र	•••	•••	360	করকাজনের গুণ	15	•••	₹8•
क्रमतौ	•••	•••	166	क त्र <i>श</i>		•••	:00
*	•••	•••	२७१	ब त्रश्लाटिम	И	•••	2,522
কদলীদণ্ড (খেণ্ড)	•••	• • •	229	क्त्रक्षानि हुर्न	4	•••	670
কদ্স্যাদিয়ত		•••	ves	क्त्रक्षाकाय इ	•••	•••	496 96
	.,	>•	P 2 2 2 2 9	কর্ণী (শেত ও রক্ত)	•••	•••	>0.
	•••	•••	883	কর্মীরাক্স:তদ	•••	•••	are: 15 - 4a
কনকফুন্দুররস	•••	•••	\$83 63.	ক র্মচা	•••	•••	२•३
कनक्रव	•••	•••	958	कद्गीत	•••	•••	284
কন্দর্পদারতৈল	• •	•••	פושה	করেলা -	•••	•••	२७इ
কপদ্দকমারণবিধি			920	কৰ্কটাদি	***	•••	>>40
কর্ণদ্ধকরদ		•••	292	কৰ্কটাৰীলানিতুৰ্	•••	***	495
কপদ্দকশোধনবিধি		•••	931	ৰৰ্ণনোগ-চিকিৎসা	•••	•••	2+69
	•••	•••	1	কর্ণরোগাধিকার	***	***	2.66
কণিপাষ্টকচূৰ্ণ	•••	•••	877	কৰ্ণরোগে অপথ্য	•••	***	2.99
কপো <u>এপুট</u>	•••	•••	952	কর্ণরোগে পথা	•••		2 90
কফ:কভুরস	•••	•••	875	কৰ্ণশ্ৰোতোগভরোগ-নিদান		•••	2.65
কফ শুন্মচিকিৎসা	•••	•••	960	कर्मभ	•••		425
কফ গুলালালণ	•••	•••	900	কপুর	•••		160
ক্ষত্ৰকাস-চিকিৎসা	•••	•••	७•२	ৰপু রনালকা		•••	298
কক হকাদনিবান	•••	•••	4.2	কপু ১রদ	• • •		१५८ _१ ५२३
ৰফজগ্ৰহণীচিৰি ৎসা	•••	•••	898	कर्भ ब्रह्मज विश्व	•••	•••	٠٠٠,٠٠٠
ক্ষজগ্ৰহণা, নিদান	•••	•••	890	কপুরাদিচুর্ণ		***	894
কফএচছৰ্দ্দি-চিকিৎসা	•••	***	609	क्यू बाहिवर्ग	***	•••	289
	•••	•••	900	কপুরাষ্ঠ্র	•••	•••	2431813
	•••	•••	583	কলমীশাক -	***	•••	•
ক্ষত্ত্বালন্	•••		581	क्षाइ:म्	***	•••	२७५
ক্ষএশুল-চিকিৎসা	•••	•••	100	কলায়পঞ্জ-চিকিৎসা	•••	•••	*05
क्य अ मूललक न	•••		943	कलाग्रचक्षलकन	•••	•••	442
	•••			क्लाच्या	***	•••	444
ক্ষজহুদোগলক্ৰ		•••	٧				52
ব ক্ষরতিকিৎসা				किनानि	•••	***	16-
ক্ষরলক্ষ্	•••	•••	e#2	ৰূলিকাদিকবায়	***	•••	848
	•••	•••	44.	ক্ৰিকাদিগুড়িকা	•••		889
ক্ষপিত-চি ৰিৎ সা	• • •	•••	224	ক্ লিকা দিপাচন			
কক্সংশ্মন্বৰ্গ	•••	***	757		•••	•••	630
ক্ষোৰণসন্মিপাক্ত অনুচিকিৎসা		•••	৩৭২	ककविधि	***	***	240
ককোবণসন্ধিপাত অরলকণ		***	७१२	ক ঞ্ তক্রস	***		820 829

ь			বৰ্ণাসূক্	মিক সূচীপত্ত।			
विषय् ।			পত্রাঙ্ক।	विषय ।			পত্ৰাঙ্ক।
কলভা বটা	•••	•••	464	কাবাবচিনি	•••	•••	28৮
কল্যাণগুড়	•••	• • •	845	কামচারমভূর	•••	* ,*	8 9 ৬
কল্যাণ্ <i>হ</i> ন্দর্রস	•••	• • •	٥٠٠٠	ক'মদীপক	•••	•••	\$256
কলাগহন্দর'ভ	•••	• • •	8 6 9	কামদেবম্বত	•••	•••	:२•৮
कक्षानान्तवश	•••	•••	७२৮	<u>কামধেকু</u>	•••	•••	73.44
ক্ষায়রসের গুণ	•••	•••	69	কামধেত্রস	•••	•••	७ ४२
কন্ত ্রী	•••	•••	>80	কামরাঙ্গা	•••	•••	۲•۹
क र्जा अ	•••	•••	747	কামলা-চিকিৎনা	•••	•••	aab
কক্ষধর ট	•••	• • •	હ∉	ৰামলা-নিদান	•••	•••	CCF
কক্ষ	•••	• • •	:•૨૭	কামাগ্রিসন্দীপন কামাগ্রিসন্দীপন্মে!দক	•••	•••	:>:>
कारनीमाना न कारनीयान	•••	•••	२२৯	কান্যায়সকাপন্মে;দক কামিনীদ র্পত্ন	•••	•••	25.5
শ্বাংস্থ ও পিত্তলের শোধনমার	ণ্বিধি	• • •	۷٠١	কামিনীবিজ্ঞ;বণরদ	•••	•••	1919 1919
কাৰ্ড়াশ্সী	•••	•••	>=e	কামিনীমদভঞ্জন	•••	•••	. २. ७
কাৰ্রোল	•••	•••	: ११,२७७	কামেশ্রমেগ্রক	***	441	86017507
কাৰ্লা	•••	•••	>60	কায়কুল	•••	•••	250
क कू ज़	•••	•••	299	कांद्रद्यां विकास	***		392
কাঁড়েখিস কাঁজি	•••	•••	396	ক;রুণ্যুদ্রগররদ	•••		865
কাজ কাটাশিরীয	•••	• • •	200 200	কাপাস	•••		1 20
कं:हें:ल		• • •	282	কার্শা-চিকিৎসা		•••	v 5 •
ক্সো		•••	2:0	कः नी-निर्मान	•••	***	ەرى خ
ক্ৰেইটা		•••	. 298	কাশ হৰলোহ	•••	•••	1160
ক্ৰেমাচী		•••	290	क् षिक _{र्} र्व	••1	•••	\$ • ¢ %
কাকেলী	•••		3 3 2	कानका नित्स	•••	•••	251
कां(क का निवयंश	•••		009	কা লকুট	•••	***	२१७
কাকোল্যাদিগণ	•••	•••	\$\$ # ;	কালবিশেষে বিহিত্তলবিশেষ		•••	+ - 1
क्रांग औरलवू	•••	•••	२.9	ক'লবে'স্ম'ছ	•••	•••	ર ે ઇ લ
কান্ধায়নগুড়িকা	•••	•••	425	ক'লেমেখ	•••		. 35
ক্ৰান্ধায়ন মে'দক	•••		429	ক লশ ক	•••	••,	40;
কালিপুটতৈল	•••	•••	રહડ	ক)লাগ্রিভৈঃবর্দ	•••	•••	***
কাঞ্ন (লাল ও খেত)	•••		242	কালা গ্রিক্সন্তরস '	•••	•••	2.52
कांकनां निकाय	•••	•••	4:•:	কালান্তরপ্রাণহয়মর্ম ।		•••	৩৴
কাঞ্চনা লরস	•••	•••	دهه	<u>কাশ্ৰ্য্যাদিক্ষায়</u>	٠,	• • •	હ હ4
কাঞ্নার গুপ্তলু	•••	•••	2:4	কাস কুঠার	• • • •	•••	3. 0
কাঞ্লিক	•••	•••	₹७8	ক†সনিদান	•••	•••	٧
কাঞ্চনাদ্বশ্ব কাঞ্চনাভ্ৰৱস কাঞ্চনাৱ গুগ্ গুলু কাঞ্চিক কাঞ্চিকতৈল কাঞ্চিকতৈল কাঞ্চিকত্তিপলকম্বত	•••	•••	. 419	কাদরোগাধিকার	•••	•••	٠.٠
কাঞ্লিকবট্পলকম্বত	•••	•••	960	কাসরোগে অপণ্য	•••	•••	હ ેત
কাভ লামংস	•••	•••	." રક્રર	কাসরোগে পথ্য	•••	•••	હ્યું. હ
কাদস্তরী	for	•••	२७२	কাসলক্ষ্মীবিলাশ	•••	•••	6 ;5
काखरनोर	***	•••	२३१	কাসসংহারভৈরবরস	•••	***	* 9.4

_

`` •		বণ	া সুক্রমি	ক সূচীপত্ত।			
বিশ্ব ।			२८।इ।	বিষয়।			دار <u>ي</u> الد
কৃষ্ঠ			20,08	্রিমিরোগে অণ্ঞা	•••		6
কূৰ্চ শিৰোমশ্ম	•••	•••	د ۶	কিমিরোগে পথ্য		••	(
কুর্পর		•••	•8	ক্রিমিশত্রাদিকবায়	••	•••	,
কু কাটিকা			ea	ক্রিমিহর রস		• • •	
কুত!লবৰ্গ		••	२ 93	ক্রোষ্ট্রকর্শীর-চিকিৎসা	•••	• •	,
কৃষ্ণ তেউড়ী	•••		: €>	ক্ৰেষ্ট্ৰণীৰলকণ			,
কুন-মৃত্তিকা	•••	••	223	ক্লৈণ্য-চিকিৎসা			:
কু, খরু স		•••	2.5	दिवा-चिषाम	•••	•••	:
কুশ-সূপতিল কুশ-সূপতিল	••		208	কাথ বিধি	•••	•••	
কৃষ্ণসূপতিল কৃষ্ণসূপ্রিষ্ণোধন			৩ : ৭	कांचा (निक्रता-वावका	•••	• • •	
কুষণ ভ তিল			1.0	i			
कुक:श्रामापक कुक:श्रामापक	•••	•••	» A + B				
মূক, জনোগক কেউয়া ঠেকা	•••	•••	348	1	2		
কেওড়। কেওড়।			2~5	arm fet			
(কয় ্ পূল			2 ≥ 5	পঞ্জ-চিকিৎস। থঞ্জলক্ষণ	1,,,,	•••	1
ር ቀ-የ-3% ቀ-				্থ্যজনকণ থটিকা	•••	•••	
(4·5∢	•	•••	२७५	ুখাওক। 'খটাশা	••	***	
(करन (करन	• • •	•••	-	1	•••	•••	
•	•••		: 65	২ ড় গুৰ	•••	••	,
কৈবেজ্য গ্ৰ	•••	• • • •	108	্ খড়ি	•	•••	
কৈশ্যেরগুগ গুলু	•••	***	ካፈሕ	খণ্ডক ছেলোই	••	•••	•
কে:কিলাবৰ্ডি	•••		:•.5	খণ্ডকুখাওকাবলে ঃ	••	***	;
কেন্দ্ৰেশ্ব	•••	•••	· · ·	পত্তকুষা ভাবলেহ		••	(
কোদ্ৰবাদিনদ-চিক্তিপা	• •	••	16 C	গভাদিযুক্ত ছ্রমের শু-		••	•
কেলৈদিম গুৰ কাশ্য ক ঠিতল	•••	•	455	গণ্ডামলক্!	•	••	•
,কাশাতকাতেল কু:ছগতপেশীসংখ্যা	•		, ;	পণ্ড শ্ৰক	•	•	: •
	•••	***	×.	খদিরাদিক খে	••	• • •	•
কাঠগতস্বায়ুসংখ্যা কাঠাদিগতবা হ-চি কিৎ সা	•••	••	46	পদিরারিষ্ট	••	•••	;
কাঠাদিগতবাতলকণ কাঠাদিগতবাতলকণ	***	•••	٠٩٩ ७ ٩٩	খদিরাষ্ট্রক	•••	***	÷ •
काष्ट्रा भगड्या अलयन काष्ट्रिकायम्		•••	७२१	ধরগোস মাংস	•••	***	•
কাৰুটপুট ক	•••	•••	983	अद्भूक	•••	•••	3
भगापन प्र भगापन म	•••		683	থৰ্জ্জন	•••	***	2
ক্রমিকালান্স রস	•••		62.5	প্রজ্রাদি চূর্ণ খণ্র-মারশ্বিধি	•••	•••	4
ক্ষিণাতিনীগুড়িকা	•••		228		4	***	٠
কুমি শ্বর দ			225	থপরশেধনবিধি	•••	•••	૭
ক্ৰিজহুদ্ৰোগ-চিকিৎসা		•••	b 3	ধর্ণ রাত্মপান	•••	•••	
ক্রমি-নিদান	•••	•••	@ 8 >	ধর্পরীতুপ ক	•••	•••	4
ক্রমিবিনাশরস	•••	•••	440	খন্না মাছ	***	***	2
ঐমি ম্ লগররস	•••	•••	3 4 2	भरत्रत्र	***	•••	;
ক্ৰিকেশ্স-চিকিৎসা	•••	•••	aa.	'গ্ৰিশামাছ	•••	•••	ર
ক্রমিরোগাধিকার	•••	•••	683	থৰা-চিকিৎসা	•••	•••	b
ক্রমিরোগারিরদ				থজী-লক্ষণ	• • •	***	•

विष्या .		•	প্রাছ।	विषय ।			পত্রাক
ভুগ্ ভলুশোধনবি ধি	•••	•••	ace	গেরিমাটা	•	•••	\$ 51
ভগ্ভৰাদি লেপ	•••	•••	384	গৈরিকশোধনবিধি	•••	•••	9;
শুঞ্জাতৈল	•••	> •	0512226	গোঁড়ালেব	•••	•••	₹•
শুক্লাম্ব্যতৈল	***	•••	*>*	গোজিয়াশাক	•••	***	291
গুঞ্জাভদ্রস	•••	•••	903	শোজী তৈল	100		36
ও ড়কু ম †ওক	***	•••	2235	গোদস্তশোধনবিধি	•••	•••	19:
গুড় প্রশ্লী	•••	•••	411	গোছন্ধ	•••	•••	\$ 8
গুড়পিপলী স্বত	•••	•••	999	গোধুম	•••	***	२२
গুড়ম ভূর	•••	•••	100	গোধ্যাপ্ত মৃত	•••	•••	58.
€0.2 3	•••	•••	258	গোৰরপুট	100	***	৩১
₩ \$\$\$	•••	***	6071425	গোমর-তৈল	•••	***	> >>
শুড়, চী যুত	•••	•••	999	গোশুক্তগুণ	•••	•••	÷α
শুড়্চী তৈল	•••	•••	908	গোমেদ	•••	•••	20
গুড়্চাদি	•••	0101	obe;885	গোয়ালে লতা	•••	• • • •	: 9
अष्रामि कवांत	•••	•••	৩৫৯	গোরোচনা	••• .	•••	54
छड्डानि काथ	•••	•••	9 55	গোলাপজাম	***		
শুড় চ্যাদিগণ	•••	•••	2 %	গোকুর	• • •	•••	: 1
গুড্চানি যুত	•••	•••	5.5 *	গোক্রাদি গুটা	•••	•••	be
अफ्र्ह्यापि हुर्न	•••	•••	699	গৌড়ী	***	•••	ي ټ
গুড় চ্যাদি পাচন	•••	•••	516	গৌরাজ মৃত ও তৈল	•••	•••	20
শুড়,চ্যাদি বৰ্গ	•••	***	: 4 4	গৌরখটা	•••	• • •	* :
७ ५ ुठा मि लोह	•••	• • •	90.	अधिकांति देवल	***	•••	حا ي
खाएं व वक्ष ७ % व	•••	•••	√9 •	গ্রন্থিক-চিকিৎদা	• • • •	••	, * •
'ଓ ୩	•••	•••	a 3	গ্রহণক্ষণ	•••		* .
গুণ-ভী ব্যত্তি	•••	•••	285	গুৱাকৈ কৰায়	•••	•••	96
ন্তদ্র শ	• • •	•••	2002	গ্ৰহণাকপাট বস	•••	••,	866, EZ
গুন্দশ্ম	***	•••	10,	अस्तागरङ क रिका	•••	•••	٠ ٧
श्वास्त्र विश्व	• • •	•••	104	अहर्गन क्रम (बर्ट र	•••	***	+ 8
智元年	•••	•••	.14	গ্ৰহণীৰ জ্ঞৰূপ ট	•••		8 🄉
গুল্কংশ্ম	•••	••	હ .•	্বাহণা মহির তৈল			g •
६ चाक निम्न त्रम	***	•••	644		1 * *	•••	
গুন্ম-চিকিৎসা	•••	•••	8 48	গ্রহণীরে:গ-চিকিৎসা	•••	•••	₂₁ 4
গুলানিদান	•••	***	464	গ্রংগরোগনিদান	• •	**	p. 4
গুলাবজিলী বটক।	•••	***	95:	গ্রহণারোগাধিকার		• • •	ክጓ
গুলারাপাধিকার	***	•••	468	গ্রহণীরোগের পথ্যাপথ্য	•••		g •
গুলারোগে অপণ্য	•••	•••	425	अश्वी पर्कत्व हुर्व	***	•••	86
				, ,			
ভন্মরোগে পথ্য	***	•••	926	গ্ৰহণীশাৰ্দ্ধ লবটিকা	•••	***	84
গুলাপ দিলেরস	•••	***	928	গ্রীবেংশ্বগত অভিসংখ্যা	***	•••	۶
গুজনী-চিবি ৎসা	•••	•••	444	গ্রীবোদ্ধগত পেশীসংখ্যা	***	•••	÷
শুপ্রসী লক্ষণ	••	•••	954	গ্রীবোদ্ধপত সায়ুসংখ্যা	•••		२
গেটেলা	***		302	প্রীম্বর্ত্তা	•••		>

•				विषय ।			া স্বাক্তা
বিষয়।			পত্ৰাক্ষ।	ठन्मना नि हुर्ग	•••	bs	२ ১১२
			انجالها	চন্দৰাদি তৈলু	•••	» <u>؛</u>	A17578
ঘণ্টা পার ল	•••		. 300	চন্দৰাদি তৈলাদি	•••	•••	687
য•টাপাক্ললি	***	•••	220	ठन्मनापि लोश	•••	•••	852
यनहरू ना पि	•••	•••	060	চন্দৰাম্ম তৈল	•••	63	8,3.96
ানাদি কৰায় (শীতপূৰ্বজ্বরে) •••	• • •	< r8	চন্দনাত্মা বর্ত্তি	•••	•••	7 • 9 5
ণলঘসিয়া	•••	•••	299	ठन्मन मव	•••	•••	P 8 4
হুতপ্রয়োগের অবিবয়	•••	•••	200	ठ ल्कना	•••	•••	৮৩
যুক্ত বৰ্গ	•••	•••	260	চন্দ্রকান্ত রস	***	•••	2226
ভুমু র্জি	•••	•••	२३३	চল্ৰকান্তি রস	•••	•••	Pe b
হুতের নাম ও সাধারণ গুণ	•••	•••	215	চন্দ্ৰপ্ৰভা শুটা	•••	***	F-08
বাট কী-মু ত			209	চলপ্ৰভা শুড়িকা	•••	,	65
গাটকী- হুম		•••	₹8≽	চক্পপ্ৰভা বটিকা	•••	•••	FR
যাড়ানিম •	•••		252	চন্দ্রভাবর্ত্তি	•••		:• >
গারনুসিংহরদ	•••	•••	8.5	চলুপ্রভার্স	•••	• • •	2 • 9 1
হ'ম	• • •	•••	396	চলুপেগর রস	•••	•••	821
ন্ধাফল (কিন্তা)	•••	• • •	₹≎8	<u> हल्ल्य्</u> या क्रक्तम	•••	•••	e 5
				ह न्म ् श्चत्रम	•••	•••	3:39
			l	চন্দ্রানন রস	•••	***	24
!	5			চলামৃত রস	• • •	•••	**
·				हत्नाम्य वर्षि	•••	***	: • >
				ठवां नि कमाय	•••	•••	84
ক্রাখ্য-রদ	•••	•••	€ ₹ 5	চৰ্যাদি ঘুত	***	•••	وع
দি ব	•••	•••	8 • ₹	ह वाफ़िहुर्ग	• • •		હ ર
5 ক্ ৎকুঠাররস	•••	•••	442	চয়কপ্রাছভাব	•••	• •	
ড়:ই-মাংস	"	•••	२७৯	চরকোক্ত পঞ্চাশৎ মহাক্ষায়	• • •	***	5:
চণকাম	***	•••	282	টাদামা ≢	,		₹ 8
চঙেশররস		•••	340	টাগা	•••	**,	; b
5 তৃঃসম	•••	•••	3.30				
চত্.সম চুৰ্ণ	•••	•••	160	ठानाव रह	•••	***	ર૭
^{চ্তু} •সম মঞ্র	***	,	, - 100	চা	•••	***	રક
চতুঃসম লৌহ	•••		118	চা উল	• • •	•••	₹9
চতু:' স্বহ	•••	•••	475	চাকুন্দে		***	3.0
চতুর্ম ,	***	***	₹•₩				
টভুরা ষণ	•••	•••	250	চাকুলে	***	***	20
চতুর্দ্ধশাঙ্গ	•••	•••	91.	চাব্দেরী-যুত	•••	··· ¢	• 817 • 8
চতুভূ অরস	•••	•••	444	চাতুর্জা এক	•••	•••	2.8
চতুরা, খ রস			****	চাতুর্থকারি রল	***	•••	8 2
Б न्म न	•••	***	>88	,			
Бमानक्ष	•••	•••	8652	চাতুভদ্ৰক ও পাঠাদপ্তক	***	***	৩৩
ज्लिका णि	•••	•••	•12	চাতুর্ভদ্রকবায়		***	8 9
व्यम् षि काथ			883 000	চাতুর্ভলাবলেহিকা	***	111	96

>8		বৰ্ণা	সু ক্রমিব	চ সূচীপত্ত।			
विषय ।		4	পত্রান্ধ।	l l	<u> </u>	-	
চামার আংশু	•••	•••	269	বিষয়।			পত্রান্ধ
চা ম ার ক বা	• • •	•••	248	कर्षिनिमा न			
চামেলী	•••	.25	> + 3	ছর্দিরোগাধিকার	•••	•••	და სეე
গৰ্ভা	•••	•••	₹∘8	इक्टिशार्थ अथया	•••	•••	
টিকিৎসাপ্রকরণ	•••	•••	< ধৰ	ছদিরোগে পথ্য	•••		93
চি কিৎসালক ণ	•••	•••	৩৪২	ভ †গন্মত	•••	•••	રત
টকিৎসাপুত্র	•••	•••	৬৪৩	ए शिक् भि			? c
চিক্স ড়ীমাছ	•••	•••	≎88	ডাগমাং স		•••	* 3
हे हिट न	•••	•••	238	চাগলা ত্য য় •	•••	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	*,
চিত্ৰম'ছ	•••	•••	২৮৩	চ ্গী হ ধ			* *
চিত্ৰা	•••	•••	: 2 %	ছ'বে।হ্ৰ ছ'তিম	•••	•••	: ~
চিত্ৰকগুড়িকা	•••	•••	895	ছ।তথ ছাজ (মধু)			۰، داد
চৰক-মৃত	•••	6 - 4 16	40/664	क्षान (नवू) कृकुन्दर्श टेक्ट		•••	»:
চিত্রক-হৈল	•••	: - :	21:-42	ভূটুন্ন। তেজ ভোটএলাচ	*	•••	
চিত্ৰক ৷প্ৰানীয়ত		•••	▶ ₽1	জেডিঅনাচ ভেট্টেসে¦৵ ল (ক ^{টে} (ক'র)	• • • *	•••	* * *
জন্ম (* সন্ধাৰত উত্তৰ-হরণত্তকী	•••		۹۵.	্ছ'ল (ছ'লে) ল'ল ল' (ক'বক'র)	• •	••	. '
७.ज्ञप-२५: इ.पः। Бद्रक†ष्टि		•••	81 a	•	•	• • •	*
ठ्यकाम ठेडकामि स्टोर	•••	•••	mr.;	(ছ'লা ও য,বৰ ছ'' <u>ছু</u>		•••	২ ৭
চত্ৰকাল জোৰ চিত্ৰকা ন্তা যুত		Þ	: 0 0 .	(ভ'লাগান	***	***	٠.
চত্রকাপ্ত হুড চিত্রবিভাগ্রেক রস		•••	a :.	Œ	57		
চিনি ও ওড়েযুক্ত দ্ধির ভ ণ							
,০,৭ ভ ভড়বুক দাৰ্য ভঃ চিন্তামণি রস		ু সহ সেহতার	A P P 4 5	ক্র্টামাংস'	•••	* *	•
চিন্তামণি গণ চিন্তামণিচভূম _ু গ		***	ومع	্জ ুম ্বি	***	•••	
চিপ্ত চিপ্ত	•••		1000	জননার শুক্তাভাবে এবং ধার্ত্তী	র অভাবে	1 4 41	;
।০ল চি≩তা		•••	. 50	জনিষিশী কলাব 🛊	•••	•••	
।০৯ ০। 'চরস্থন নবনীত	•••	¥	-a•	জন;র	***	***	٠.
চিমস্ত নিৰ্বাচ চাৰিক কপুর		•••	:60	জবাফুল	• • •	•••	10
চুকাপাল ক	•••	•••	ર ં.	सम्बर्गाम सम्बर्गाम		•••	
	•••		183	জন্ব ্যাত্ত িল জন্মপশিল	• • •		******
চুক চু ৰক	•••	***	· : b-	জন্মপ্রীবটা ,	***	•••	u . دی
চুষকশোধনম;রণবিধি	•••	***	(0.2.9)	জয় গুড়িক া	***	•••	%
-	•••	***		अप्र: अष्ट्रका अप्र: विष्कृत	•••	•••	ত -
চ্ডামণি রস	••	,	89316#2	जर्म । जर्म	•••	• • •	2 %
ξ ⁴	***		*:>	জলপানবিধি	•••	•••	v 1
ह् र्निविष	•••	•••	• 44	জলপানের আব্লাকতা		•••	2 8
চূর্ণের পাকনিবেধ	•••	•••	च च ६	জ্ <i>লবেড</i> স		•••	: 8
ठूनिका गर्ग	•••	•••	693	জলশিরী যিকা	***		2.8
C 5	•••	•••	5 9 5	क ल्लापबाबिबम	• 4+		b !
চৈত্ৰস স্বত	•••	•••	496	कांज्यभारम्ब लच्च ७ छन	•••	•••	ə :
চোক (वर्गकोत्रोम्म)	•••	•••	; • ¢	জাতি (চামেলী)		•••	\$1
চ্যবন প্রাশ	•••	• • •	444	জাতীফলরস			8 9

		বৰ্ণ	া ুক্র মি	ক সূচীপত্র।			30
বিষয়।		۶,	417	विस्र।		. 9	到 客
आ ठी कला पिठुर्न			are	জরকেশরী	•••	***	8 7 8
জাতীফলাদিবটা		4551	. = d 8 .	অরশীবটিকা	•••	• • •	\$ 66
জাতীফলান্ত বৰ্গ			-40	জ্ব-চিকিৎসা-সাধারণাব্ধি	• • •	•••	€81
			1	ख त्रध्मटक ू	••	•••	ి సి
জাতীফ লান্তা বটিকা	•••	•••	8.63	অরন;গমগ্রচ্ণ	••	•••	49
ভু:ত ীফলান্তা বটা	••	••	: ar	জ্ রনূসিংহরস	•••	•••	山谷田
জাগাত মূত ও জৈল	• • •		~ 5 %	জন্বপূর্ব্যক্ষপ-চিকিৎসা	••	•••	÷6.8
<u>জ্যাপ্ত</u> িল			51	ভরপূর্ব্বলম্ব ণ	•••	•••	0.18
କ!• ୍	••		: 3	অরপ্রক্রপে নাডীগতিলক-		••	ა .
s ্ফর া ণ		•	:	ভ্ রতৈরবচূর্ণ		•••	৩ ৯৫
P I4	•		-•:	জরভৈ রবরস	• •	•••	8:1
লাল (কুদ্ৰুন)		• •	. " .	জ্বমাত্রকশরী রদ	•••	•••	820
क्ष ्रिक् षी	•••		-57	অ রলকণ	***	***	១៦ ^ព
জ[রি ৩ধাজুবণ	••	••	• • •	অর শুলহররস		• • •	800
জ্বাপুল গ্রাভ			: "	द्धवमध्या (थ	••	• • •	ಿ ಕ
D(4			; 5	অবহরীবলি	• •	•••	প • ৫
୍ . ଝ୍ରୀ ମ୍ୟାଜିକ	•••		رى. د .	অ রাস্থ শর্ম			8
জিলিশী				জ্বাতিসার-চিকিৎসা	• •	••	88
জিয়াপু া			£ •	ঘুরাতিমার-নিদান		•••	850
হিলিপী	•••		49	হুর:তিসারাধিকাব	•••	•••	85
জিহ্বাগত-মূ ৰ রে'গ-নিধান	•••	•••	. cs	এরতিদারের গ্রাপথাবিবি	***	•••	80
(कश्ताभती का	• • •	••	e 5	অবাধিক:র	***		৩ ১
জিস্কারোগ-ভিকিৎসা			4 €	জ্ব! গুক্রস			5 <
ভিস্তাখন্তের চিকিৎসা	••	•••	أثدي	खन्न: ^ह त-वज			7 *
জিহ্ব'শ্বপ্তের লক্ষণ	••		.	হুরার্ডবন			3.
এ শ্বক	'	• • • •	رده ـ	व्यवागीनवम्			
জীবকান্ত তেল			28		••		83
জীবনানন্দ!ভ	•••	• • •	४८ ६	হ্বরে যুতপ্রকরণ			80
জীবত্তী	• • •		-69	অ রে তৈলপ্রকরণ	••	•••	
ৰা বস্তাপ্তাম্বত	***		463	হরে পথাপধ্যবিধি		***	8 b 45
জীরক শ্ব ত	•••		280	অরের উপদ্রব	•••		
জীরকাদিনো বক	•••	•••	464	হ্বরোপদ্রবের চিকিৎসা	•••	***	હ ક
জীরকান্তামু ৩	• • •	• • •	\$008	হ্বালানবর>		**.	4 8
জীরকা দ্ম ূর্ণ	•••		867				
জীরকান্ত্রমাদক		• • • •	1140	7	N		
শীরক প্রতিষ্ঠি		•••	7768	य ँं ि		•••	ماد
জীরা (ত্রিবিধ)	• • •	• • •	7.5%	ঝিকা (গ্ৰাফল)		100	ર ૭
জীর্ণজন-চিকিৎসা	•••	•••	cre	ं क्या (अंत्रीयका)		• • •	,,
জৈত্ৰী 🎉	••.	•••	384		5		
জৈপালাদি কভিপন্ন দ্রব্যের	বিশেষ শে	াধন বিধি	234				
ম্বরকালকেতু	•••		8 2 8	টক্ষণ	•••	•••	۹۵
অরম্ভারপারী-শ্রস			8 २ ७	ট হ ণশুদ্ধি		•••	95

<i>>७</i>		বৰ্ণ	পু ক্রমিক	ক সূচীপত্ত।			
विषय् ।			পত্ৰ,ক্ষ।	विषग्र।	, ,	***************************************	পত্রাক
ট ঙ্কণাদিবটা	•••	•••	685	তরমূজ	• • •	•••	220
টাট্কামৎক্তের গুণ	•••	•••	₹8\$	তঙ্গণমনারি	***	•••	৩৯ :
ট াট্কামাং স	•••	•••	283	তলমূর্ত্ত		•••	5;
টাৰালেৰু	•••	•••	२०%	তলিভমাংস	•••	•••	₹ 90
টেক ্রামাছ	•••		283	া ভাষ		***	22-1220
টেপারী	•••	•••	1.68	্য ত্রপ্রা গ	•••	***	36
				ভাষের দেশি	•••	•••	: 22
	ড			ভাষের মারণবিধি		•••	٥. و
Contra to				তামেশ্বর বটা	•••		b b.
ভনর কলে ভনর কলে	•••	•••	188	তারক'ছা বঠি	•••	•••	300
प्रदेशका स्टब्स्	•••	•••	: 65	তাৰকেশ্বর	• • •	***	b.:
গান্কুনিম†ছ চ≀কুন	***	•••	રજજ	ত্রেকেশ্বর রস	•••	•••	r 3
ড ্নেম্বরশ্ব রাজ	•••	•••	557	তারম:ক্ষিক			v:
भूत -	•••	•••	269	, ভারমাকি কর মারণ বিধি		***	50
ज्यामाना द	•••	• • •	છેલં :	ভারমাকিকের শোধন বিধি	•••	•••	50.
	-			ভারামভুরগুড়	***		4৬
	19			ভাগিণহৈল ভাগিণহৈল	***		349
بد				তাক্ষ্যাগৰ		•••	229
७ ँ ७ ९	•••	• • •	ર્ શ્રેષ્ઠ	তাল	***		:
ँ ड़ो	***		78.	তালক্ষারণবিধি		•••	253
	-	•		তালকশোধনবিধি	***	***	\$11
	ভ			ভাতকেশ্বর	•••	•••	244,296
				ভালকেশ্বর রস	•••	•••	841666
ig.	••	•••	26.5	ত্ৰভেশ্ব			٠ د د د
ক্রেবটা	••,	•••	الأسط د ي د	' क' नंद कर व	•••	•••	مندو
ু র∓ বর্গা	***	,	3.01	তালমূলী	***	•••	: 95
ক্রমণ্ডুর	•••	•••	- 08	ভালী-পত্ৰ	•••	•••	: 4:
ক্রেদেবননিমিন্ত ক্রোরিষ্ট	•••	•••	81-9	जानीमापि रण		•••	896
^{ত্রনার} অবিষয়	•••	•••	₹0.0		4,		
গরপাতকা	•••		:84	তালীণাল্য চূৰ্ব ও গুড়িকা	•••	•••	400
咨	•••	***	481	তাৰুগতংৱাগ-ন্নদান	•••	•••	2.60
লাগুরোক্ত বৃংৎ কু টজাব	are		8 3 6	ভাৰুগভরোগ-চিকিৎসা		***	3000
আন্তরোক বৃহ রব সান্ত5		***	698	তিক্তক শ্বত	•••	•••	94.
প্রতিরোক হাসকুঠার র		.,,	હ ૨૨	তিক্ষরদের গুণ	***	***	4 8
व्यास्ट्रायाच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच्याच		••	٠٩৯	विक्रवहँगंगकं चुठ	***	•••	91.0
ভূপ ভূলীয় কযু ত			::90	ভিক্তাদিকৰার			
ভূগোরকর্মত ভূগোরকর্মত	%		₹69			***	७७२।८१ ३
	•••		1	ভিজ্ঞাদি পাচন	···	***	346
ক্ৰিক-চিকিৎস।	•••	•••	998	<u>তিভ্ৰণাউ</u>	•••	***	२७४
প্রথপ্নয়ন্ত্র প্রথপ্নয়ন্ত্র	•••	•••	490	তিৎকাক্রোল	•••	•••	344
खन्नामटेटन	•••			তিন্তিরি মাংস (কুক ও পৌ			

		ব	ণিকুক ি	মক সূচীপত্ত।			>9
विषम्र ।		•	পত্ৰাক।	विषय ।			পত্ৰান্ধ।
তিক্ৰাপ্ত মৃত	•••	•••	206	ভোপচিনি	•••	•••	2 < 9
তিনিশ (জাকুলগাছ)	***	•••	>>0	ত্রপাদিগণ		•••	24.
তি ন্তিড়ীপানক	• •••	•••	405	ভ্ৰেদশক	***	•••	640
হি ৰ্য্যক্পাত ন	***	***	७∙8	ত্রোদশাক গুণ গুলু	•••	***	\$≥8
ভিষাক্পাতৰ বস্ত্ৰ	•••	•••	७२१	<u>তারমাণাক্ত হুত</u>	***	•••	929
তিৰ্গণ্গত ধমনী	***	•••	8 •	্ৰিকটুক ক	•••	•••	>>>
িল	•••	•••	२२१	ক্ৰিক্টকান্তাবৰ্ত্তি	•••	•••	१५२
িলকালক	•••	•••	\$. 54 4	ত্রিকট্বাদিচুর্ণ	•••	***	666
হিলকুটা	•••	•••	२१क	ত্ৰিকট্ৰাদিলোহ	•••	•••	499
তিলতৈল মূৰ্চ্ছাৰিধি	•••	• • •	525	ত্ৰিকণ্টকান্ত যুত	•••	•••	P 20
ভিলভৈলের গুণ	***	•••	₹ € ⊅	ত্রিকণ্টকাপ্তায়ত তৈল ও যম		***	F80
তিলাদিকারবোগ	•••	•••	⊌ २७	ত্ৰিকণ্টকান্ত মোদক	•••	***	7570
তিলা ষ্টক	•••	•••	৯৩৩	ত্রিকত্রগান্তলৌহ	•••	***	647
তীকুমুপ রস	•••	•••	442	ত্রিকশ্লচিকিৎসা	•••	***	445
তীক্ষাগ্নি-চিকিৎসা	•••		6 2 %	ি কশুগলকণ	•••	•••	6 23
তু তে	***	•••	570	বিহাতক		•••	283
, তুঁতের শোধনবিধি	•••	•••	۷•۵	ত্রিদোষঙ-ক্রিমিজ-ক্সেগে-ক ত্রিদোষজগ্রহণী-চিকিৎসা		•••	▶• \$
তু দগাছ	***	•••	: * •		•••	•••	896
ঙুম্বা-ভৈল	•••	•••	256	`ত্রিদোষজগ্রহণী-নিদান ত্রিদোষজ্জার্দিচিকিৎসা	***	•••	896
তুলদী (শুক্ল ও কুঞ্চ)	***	•••	:50	•	***	•••	৬৩৭
তুলা-চিকিৎসা	•••	***	43.	ত্রিদোষঙ চছদিলকণ	***	•••	659
ভূগী-লক্ষণ	***	•••	44.	বিদোষজমেহ-চিকিৎসা	***	•••	P-0.7
ૄ ંક	•••	***	₹•8	ত্রিদোষ্ডশূল চিকিৎসা	•••	•••	463
তৃণক তৈ ল	•••	•••	267	ত্রিদোষজপুল-লক্ষণ ত্রিদোষজহুদোগ-চিকিৎসা	•••	•••	965
তৃণ-পঞ্মুল		•••	23.	दिम्।वज्ञराज्ञानाम्। दिम्।वन्।वन्नवःन्यः	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	***	876
তৃতীয়কজন্ম মহৌধধাদি	•••	•••	৫৮১	তিদোষণাবানলরস	•	•••	874
ভূষণানিদান	***	•••	48.	ভিদোৰহীনার স্থারস	***	•••	8.9
তৃক্ণরোগাধিকার	•••	•••	*8*	বিদোষাভিসার-চিকিৎসা	***	•••	869
তৃকারোগে অপথ্য	•••	•••	584	তিদোষাতিসারলকণ	***	***	869
ভূকারোগে পথ্য	•••	•••	988	ক্রিনেত্রাধারস	***		७ ३२ ०३
ভূফোপদ্রব-চিকিৎসা		•				•••	`
•	•••	***	9110	ত্রিপুর উ রব	***	•••	998
(উ তুন		•••	₹•₩	ত্রিপুরভৈরবরস	•••	***	960
ভেউড়ী (খেত ও কৃষ্ণ)	***	***	269	ত্রিপুরারিরস	***	•••	820
ভে ৰ পাত	•••	•••	283	ক্রিকলা	***	• • •	779
তেজবল	•••	•••	208	ত্রিকলাগুগ গুলু	0.00	•••	9241206
ভেনোৰভাগ্য যুত	•••	•••	450	ত্ৰিকলা খুত		•••	>>••
ভৈলপ্ৰকর্ম	•••	•••	802	ত্ৰিক লা দি	•••	•••	943
তেলবৰ্গ	•••	•••	२৫৯	ক্রিফল দিব বাছ	•••	•••	૭ ೬૭
ৈলম্চহাৰিধি "	•••	•••	२ ৯२	ভिक्तानि योग	•••	•••	F89
ভৈলের ক্ষমপ্রিরপণ		•••	419	विक्नाभिकोर	•••	•••	985

> b-		7	ণ াসু ক্রা	াৰী সূচীপত্ৰ।			
विवत्र।			পত্ৰান্ধ।	दिवद ।			পত্ৰান্ধ।
ত্ৰি কল াপ্ত	***	•••	447	দন্তবর্ত্তি	•••	•••	2.97
ত্রিফলান্ত যু ত	•••	••	46.6 833	দস্তবেষ্টগতরোগ-চিকিৎসা	• • •	•••	3.6.
ত্রিকলাম্ব তৈল	•••	•••	Peal3 . 02	দক্তবেষ্টপতরোগ-নিদান	• • • •	•••	2 - 82
ত্রিকলাম্পরিষ্ট	•••	•••	8 • 6	দন্তরোগাশনি চূর্ণ	•••	•••	3.08
তিক্লামপূর	•••	•••	>>>	मखी (मघु ७ वृह९)	•••	•••	:58
<u> ত্রিকলালোহ</u>	•••	485	11991990	দভীহরীতকী	•••	•••	132
ত্রিবিক্র মর স	•••	•••	₽ ₹8	पर्स्थारङ्ग ामास् य	•••	•••	2265
ত্ৰিবি ধপাত ৰ	•••	•••	٧٠8	म र् डाबिष्टे	•••	•••	432
ত্ৰিবৃতাদি ম্ব ত	•••	•••	>>6	দর্ভমূলাদি ক্যায়	•••	•••	૭ ୧७
ত্ৰিৰ্তাদি চূৰ্ণ	•••	•••	p. 2	দশনসংস্থার চূর্ণ	•••	•••	2.68
ত্রিবৃতা দিমোদক্	•••	•••	८७०):२२७	দশপাকবলাতৈল	•••	•••	90%
ত্রিশতী প্রসারণীতৈ ল	•••	•••	9.0	দশমূল	•••	•••	३२०।७७৯
<u>ত্রেফলম্বত</u>	•••	•••	22	म न्न्य अप	•••	•••	8271676
ত্ৰৈলোক্যচিন্তামণ	•••	•••	82512222	দশমূল ঘৃত	•••	•••	6:8
ত্রৈল্যেক্যচিন্তামণিরস	•••	•••	803	দশমূল তৈল	•••	5	2612226
<u>ত্রেলোক্যভূস্বরস</u>	•••	•••	440	प*.मूल ७ श्री	•••	•••	868
<u> তৈলোক্য হল্পররস</u>	•••	8•;	1640 000	দশমূলবট্পলকম্বুত	•••	•••	829/958
এাস্ কাত্র	•••	***	450	দশমূল হরীতকী	•••	• • •	rae
ত্যাহিকারিরস	•••	•••	8२€	দশমূলাক্স মুত	•••	•••	6181818
ক্রাৰণসন্নিপাতে যোগরাজ	•••	•••	৩৭৩	मनमूला विष्ठे	•••	•••	7570
ক্ৰ্যৰণাদিচূৰ্ ৰ	•••	•••	868	দশমূলী ক্যায়	•••	•••	৩৬৬
ক্র্যবর্ণাদিমপূর		•••	६२७	দশমূলী ভৈল		***	>-१२
ক্রাবণান্ত মূত	•••	•••	986	प्रशास	•••	•••	3-1
ক্রাষণা ন্তা কোহ	•••	•••	७८५ ५३५	দশাক লেপ	• • •	***	7+7+
ক্রমণাত্মাবর্ত্তি	•••		56: 1.22	দন্ত।	•••	***	₹\$•
				एक श ाइंडी 1	• • •	•••	į
	91			দাইল	***	•••	293
	থ			माউपथानि	•••	•••	२२६
war fr				: बाफ्नि	•••	• • •	₹•8
খুলকু ড়ি	•••	•••	399	দাড়িমাদি ক্ৰায়	***	•••	دهه
বৈকল	***	•••	4.5	লাড়িমালি চূর্ণ ।	•••	•••	603
থোড়	•••	•••	২৩৭	দাভিমাক্ত হত	•••	•••	৮ 8৩
				লাড়িমান্তা তৈল	• • • •	•••	4.5
	F			লাড়িস্বচতুঃসম	•••	•••	2206
				দাধিক স্বন্ত	***	•••	999
দণ্ডা পতানকের চিকিৎসা	•••	•••	447	দার্কচিনি			
দভাপতানকের লক্ষণ	• • • •	•••	927		•••	•••	28%
प्रि	•••	•••	₹€₹	निक्र ीक	***	•••	३०७२
দ্ধিবটা	•••	•••	722	দারস্ব প্রভৃতির শোধনবিধি	•••	•••	924
मधिवर्ग	***	•••	202	দারু বটুকলেপ	•••	•,••	427
দ্ধির মূল ও মাতের লক্ষ্ণ		•••	२६७	দারুহরিক্রা		-4	
দন্তশীভিত ইক্রনের খণ	•••	•••	409	न श्रन्था	***	•••	201

.

ত্বধ-যুত দু শ্বপ্রকরণ ত্বধ্বদী ভদ্ধবৰ্গ ছুগ্ধের সরের গুণ ٠٩٠ ভাদপাক হ্দোভূতনবনীত 200 900 ••• ₹8. वानगायम ছুমামাংস 825 **বিতীয়কফকেতৃর**স . 59. তরালভা 6 . 2

-

বিষয়।

मार्कीटिन

प्रार्खापि

शार्काणि कवाग्र

पार्व्यापि कार्थ

मार्क्यामि टेडन

দাৰ্ক্যাদিলৌহ

मान (मध्)

দাহরোগ-চিকিৎসা

দাহরোগ-লক্ষণ

দাহরোগাধিকার

priscates खन्ना

দাহোপত্ৰৰ-চিকিৎসা

দাহরোগে পথা

দাহাস্তকরস

षिन्ह्या

দীপিকা তৈল

ছরালভাদি ক্যায়

দুৰ্বাম্ভ তৈল ও যুত

দোষা

नामपूर्वी

দাস্তাদি

দ্বিতীয় সৈশ্ববাদ্মতৈল ১০২ই कल क अम 812 ছিলোবজাতিসার-চিকিৎসা 286 চষ্টজলের নির্দোষীকরণোপায় · · · দিপঞ্মলান্ত তৈল ... 946 দ্ৰম্পূৰ্ণা দিকবায় 60.018c.c ছিহরিদ্রাতা তৈল 499 দুৰ্বান্ত যুত দুৰ্বাভ তৈল 200 ...

306

>44

দ্বিতীয় সন্মিপাতভৈরব

968

দৃষ্ট প্রদাবর্তি 56.6 SAM খনে 222 দেখান ধ্যম্ভরি প্রাত্তাব 384 CHANTE 40 धमनी 338F मिवनार्वानि काथ 360 ধাইফুল F86 দেবদার্ব্বরিষ্ট £30 ধাওয়া (परपानी द्यार >>

ৰাতক্যাদি

20		্ ব					
विषय् ।	•	•	পতাৰ।	বিষয়।			পত্ৰান্ধ।
ধাতক্যাদি তৈক	•••	•••	2260		4		
ধাতু	•••	•••		ৰকুলতৈল	•••	•••	934
ধাতুগতবাত-চিকিৎসা	•••	•••	413	নকুলাজ্য মুত	•••	•••	93.
ধাতুগতবাত-লক্ষণ		***	997	नथ .	•••	•••	54.
ধাতুসমূহের মল	•••	•••	ee	નથી	***	***	>0.
ধাতুসমূহের সাধারণ মারণ	<u>ণাপার</u>	•••	***	নথীশোধনবিধি	•••	***	٥);
ধাতুসমূহের সংখ্যা ও নিরু		•••	~ २ ३६	নব ও পুরাতন মধুর গুণ	•••	***	२७४
ধাতৃপথাতাদিবর্গ	•••	•••	٤٠۶	নবকগুগগুলু	***	•••	V e •
ধাত্ৰীলকণ	***	***	26	নবক্ষায় গুগ গুলু	•••	***	2.2
ধাত্রীলোহ	•••	•••	601:00	नवकाधिक	•••	***	150
ধাত্ৰীষট্পলক মুত			926	নবকাৰিক গুগওসু	***	•••	26
	•••	•••	(9.	নবৰ্ম রহরীৰটা	•••	•••	%ک ا
শাত্যারিষ্ট	•••	•••		নব্ৰৱাকুণ	***	•••	0,60
থাত্ৰাদি	***	•••	b.9	নব্দ্যারিরস		***	৬৯৬
ধারাদিমারণোপযুক্ত পুট্র		•••	७२•	নবন্ধরে অপপ্য	***	•••	888
শ্না	•••	•••	296	नेवबद्र श्रथा	•••	***	888
ধাক্তক† নিহিম	•••	•••	663	নবৰ্বরেভসিংহ	***	•••	
ধান্তগোকুরকয়ত	•••	•••	P7P	নবঅরেভ কুশ	•••	***	٠ د ه
ধাক্তপঞ্জ ও ধাক্তভূক	***	***	823	নবজ্বরে রসপ্রয়োগবিধি	•••	•••	. ಇ
ধাক্তপটোল	•••	•••	૭૯ ક	ন্বনীত বৰ্গ	•••	***	₹00
ধাক্তবৰ্গ	•••	•••	२२4	নবমলিকা	***	***	76.
ধান্তশর্করা	•••		% ••	নব রন্ধু (শ্রেভ:)	•••	***	÷
শ হাস্ত্ৰতী	•••	•••	885	नवा अक्वांत्र	4 4 7	***	৩ ৬
ধাষ্ঠাত্রবিধি	***	***	٠:٠	मशायम हुर्ग	•••	•••	6 %
4,97°3	•••	•••	₹ 30 €	নয়নচন্দ্ৰ কৌহ	***	***	.1*
ধাৰম্ভর স্বত	***	•••	P. 8 8	ৰঙ্গণোপ্তৰ	•••	***	1
ধাৰ্নাগাৰ্	•••	•••	:43	নয়নহ্খাণর্ডি	***	***	: - ~
धारत्राकामि इक्केश	•••	•••	46.	নয়ৰা ইত	•••	***	::•
পু ত্রা	•••	•••	200	নরসারশোধনবিধি	•••	***	زې
धू वृत्र	•••	•••	२७४	नव्रिंग्स् हुर्		•••	22 m
प्र ्व टिल	•••	e	4812239	नद्राष्ट्रिटम	• • •	***	À 7
द्ख्रेव स्थाधनविधि	•••	•••	৩১৭	नन	• • •		: 5
ধ্তুরাদি	***	•••	430	नष्टेश्नाःस्य त्रम	•••	***	1.5
ধুকু , রাদি লেপ	•••	•••	245	নক্ত	•••	***	৬৬
धूनी	•••	•••	289	শশু বিধি	•••	•••	b
মূশ ধুনার তৈল	•••	4	403	নহু ভৈরব	•••	•••	8 • `
मूल भूल			266	নাকুলী (রাহ্বাভেদ)	•••	•••	្វ៩
	-		261	নাগদনা	•••	•••	>9
gg eret-f-f-	•••	•••		बागपून्त्री	•••	•••	29
ধুমপানবিধি	•••	•••	4.1	ৰাপৰ্য্যাস্তচূৰ্ণ	•••	***	257
प्रश्रद्धात्र	•••	•••	7557	ৰাগর ত্ব ত	•••	***	¢ • •
ধান্তলা থিকার	•••	•••	2525	[া] নাপরমূতা	***		>4

٠.

নাগরাদি নাগরাদিতৈল ও স্থত নাগরাদি মোদক নাগরাভূত্ নাগরাভূত্ নাগার্জ্জ্নপ্রোগ নাগার্জ্জ্নপ্রি নাগার্জ্জ্নবর্তি নাগার্জ্জ্নাত্র নাগার্জ্		•••	27.8 67.0 67.0 67.0 67.0 67.0 67.0 67.0 67.0	নাসারোগে পথ্য নিতম নিতানন্দ রস নিত্যোদিতরস নিদিক্ষিকাদি নিদিক্ষিকাদি ক্যার	•••	•••) • b • • • • ¢
নাগরাদিতৈল ও স্থত নাগরাদি মোদক নাগরাজচূর্ণ নাগার্জ্জ্নপ্রয়োগ নাগার্জ্জ্নবর্ত্তি নাগার্জ্জ্নাজ্ঞ নাগার্জ্জ্নাজ্ঞ	•••	••••	84.0 47.5 47.5 84.0	নিত্যানন্দ রস নিত্যোদিতরস নিদিক্ষিকাদি নিদিক্ষিকাদি কবার	•••	•••	> 3
নাগরাদি মোদক নাগরাজচুর্ব নাগার্জ্জুনপ্রয়োগ নাগার্জ্জুনবর্ত্তি নাগার্জ্জুনাজ নাগেখর	•••	•••	2 · > 8	নিত্যোদিতরস নিদিক্ষিকাদি নিদিক্ষিকাদি ক্যায়	•••	•••	
নাগরাত্যচূর্ণ নাগার্জ্জ্নপ্রয়োগ নাগার্জ্জ্নবর্জি নাগার্জ্জ্নাজ নাগেশ্বর	•••	•••	2.38 67F	निर्मिकामि निर्मिकामि क्वांब	•••	•••	6.5
নাগাৰ্জ্নপ্ৰয়োগ নাগাৰ্জ্নবৰ্ত্তি নাগাৰ্জ্জুনাজ নাগেশ্বর	•••	•••	2.28	निर्मिकामि क्वांब	•••		
নাগার্জ্কুনবর্ত্তি নাগার্জ্জুনাজ নাগেশ্বর		•••	- 1			•••	orelor
নাগার্জ্জুনাত্র নাগেশ্বর	•••	•••	- 1		***	•••	७३ २।७५
ন েগ্ ৰর	•••	•••		নিদিক্ষিকাবলেহ	•••	***	64
	•••		282	নিজাতন্ত্রা-চিকিৎসা	•••	***	•8
		•••	988	নি ন্দিতজ্ঞ	***	•••	₹8
নাটাকরঞ্জ	•••	•••	240	নিশিত হুশ্ব	• • •	•••	રહ
নাড়িকা বস্ত্র	***	•••	ઝરલ	নিম	***	•••	24
নাড়াপরী কা	•••	•••	૭૨৯	নি স্থা দি	•••	••• <	6 - (100
গড়াগমান। নাড়াপরীকাগুকার	•••	•••	૭૨৯	নিমাদি কবার	•••	•••	೦ಆ
নাড়াশরাক্ষাক্রকার নাড়ীপরী ক্ষাসম্বন্ধে সাধারণ		•••	৩২৯	निषापि <u>र्</u>	•••	•••	93
	जगर ्ग	•••	1	নিমাদিধূপ	•••	•••	**
নাড়ীপর্য্যার	•••	•••	८२৯	নিরামিব-মহামাবতৈল	•••		93
নাড়ীব্রং-6িকিৎসা	•••	***	884	নিক্ষপ্রকণ	•••		2 • 8
গড়ীত্রণ-নিদান	•••	•••	988	নিগু তাকর	•••	•••	-
নাড়ী এণা ধিকার	•••	•••	884	নিত ভাতৈল	•••	•••	339
নাড়ীত্ৰনে পথ্যাপথ্য	•••	•••	289		***	***	974l98
াড়ীস্পন্দন সংখ্যা	•••	* ***	૭૭૬	নিশ্বলীফল	•••	***	۹.
নাভিমন্ম	•••	•••	٥٥	विगारि ज्ञ	***	***	>••
নার সিংহচূর্ণ	•••	•••	2799	निगामम	***	***	21
নারা লা লেব্	•••	***	२••	নিশালৌহ	•••	***	41
নরোচম্বত	•••	•••	692	নিবিদ্ধধাতীর লক্ষণ	•••	***	:
শ্রাচচূর্ব	•••	***	962	নিষ্ঠীবন	•••	***	36
নাৰাচ রস	•••	•••	9451469	निमि न्स ा	***	***	24
নারায়ণ মুভ	•••	•••	34	নীল	•••	•••	2,
नात्रायन हर्न	•••	***	860,669	नीलकर्थ प्रम	***	***	221
-ারায় াতেল			402	नीमपूर्वा	***	***	24
ना त्रिरक्ल			209	নীলাও মন্তা	***	***	4
নারকেল থ ও	•••		11.	নীলিকা	•••	•••	3.4
ना त्रिरकलक्षात्र	•••	•••		নীলোৎপলাগ্রন্থত	***	***	224
नात्रिक्°िर्दे	100	•••	9.60	মুণেশাক (ছোট ও বড়)	•••	•••	24
	•••	***	993	নৃতনগুড়ের গুণ	•••	***	۶۰ ع
নারীমৃত	•••	•••	रं ४ १	নৃতনম্বতের বিষয়	w.d	•••	. 23
শারীহ্ম	•••	•••	₹৫•	ন্তন পুরাতন ধাষ্ঠ ববাদির			
नाम्(का	•••	• • •	268	নৃতন পুরাতন মধুর ভণ	***	***	₹4 88
নাসপাতি	•••	***	₹••	নূপবল্লভ	•••	***	5 e C
নাসারোগ-চিকিৎসা	•••	***	3.16	নৃপৰন্নভ তৈল ও ঘৃত নেত্ৰপদ্মীকা	***	•••	٠٠ س
नामाद्रांश-लक्ष	•••	***	>•18	নেত্ররোগ-চিকিৎসা	•••	F24	3.8
নাসারোগাধিকার নাসারোগে অপ্র	•••	•••	3.48	নেত্ররোগাধিকার	•••	***	3.1

22			বৰ্ণাসুক্ৰ	মিক সূচীপত্ত।			
বিষয়।			পত্ৰাক।	विषय ।	,	,	পত্ৰাঙ্ক
নেত্ৰরোগে অপথ্য	***	•••	>>∙€	পঞ্চাননম্বস লোহ	•••	•••	10
নেত্ররোগে পথ্য	•••	•••	23.6	পঞ্চায়ত পৰ্ম ট্রি	•••	•••	8 8
নেত্রসর্ব্বগতরোগ-নিদান	***	***	3.F.	পঞ্চামৃত বটী	•••	•••	e s
নে ঞাশনিরস	***	•••	22.0	পকামৃতরস	***	•••	4. 9, ba
ৰো য়াড়	•••	•••	२•२	পঞ্চায়তলোহ মন্ত্র	. •••	•••	4
স্ত ্যোধাদিচূর্ণ	•••	•••	⊬ ७३	পঞ্চামৃতকৌই গুগ্ গুলু	***	•••	> 4
ভগো ধাদিগণ	•••	•••	222	পঞ্চায়	•••	•••	₹•
স্থােধান্তবৃ ত	•••	•••	2289	পটোল	•••	•••	ર લ
ভৰুমাংস	•••	•••	₹8•	পটোলশুষ্ঠীয়ুত	•••	•••	١
700	•••	· •••	১০৩৭	পটোলাদি ৩৬৫,৬	عداده واهمو		
	9			পটোলাদি ক্যায়	•••		ه د د اده. ه د
পক ইকুরসের গুণ		•••	২৬৯	পটোলাদিগণ	***	•••	2.2
পঙ্গু-চিকিৎসা	•••	•••	366	পটোলাক্ত চুৰ্	•••	***	b 4
পকু-লক্ষণ			-	পটোলাক্স যুত	•••	2.	8 4307
শক্তাৰণ পঞ্ <i>ক</i> ৰ্ম	•••	•••	446	পট্টিয়া লোধ	•••	•••	2.5
गर्यन्त्र शेक्ष-स्वाग्न	•••	a.		প ালাসব	•••	•••	223
শ ক কোল	•••	4041	or • 20 •	श्रधाः जि	•••	***	حووري
	•••	•••	३२१ ७७७	পশ্যান কৰায়	•••	808	1866186
পঞ্কোলান্ত-যুত পঞ্চনীয়ক গুড়	•••	***	*•;	পথ্যাদি কাথ	•••	•••	ba
শক্ষাপ্ৰক ডড় পঞ্চিক্ত কৰায়	•••	•••	2582	প্ৰাদি গুগ্,গুলু	•••	***	68
শ ঞ্চত ক ৰাস পঞ্চতিক যু ত		•••	:•::8	পचारि हुन	•••	•••	8 4
শক্তিক যুত পঞ্চিক্ত যুত	•••	•••		পথ্যাদি পাচন	•••	***	৩৬
	•••	•••	***	अधारि हुर्ग	•••	•••	9 8
পঞ্চিক্তন্বতন্ত্ৰগ ্ ডপু	•••	•••	390	পখ্যাবটা	•*•	•••	>•6
পঞ্জুণমূল	•••	•••	V.5	পন্ম	•••	•••	24
পঞ্চনিত্ব	•••	•• 1	942	পন্মকান্ত যুত	•••	•••	94
পঞ্চৰিয়াদিচূৰ্ণ	•••	•••	664	পত্মকাঠ	•••	•••	> 8
পঞ্পল ঘুত	•••	***	986	পরভাক	•••	•••	7.
পঞ্চপল্লব	•••	•••	896	পদ্মবীজ	•••	•••	4
পঞ্বজুরদ	•••	•••	8•9	পত্মশ্	***	• • •	24
পঞ্চৰজ্ঞ	•••	•••	264	পথিনী	•••	•••	21
পঞ্চন্ত্ৰ কৰায়	•••	•••	⊘⊕8	পদ্মিনীকণ্টক		•••	>•/
१ क्ष्मूलीवलापि क्याग्र	•••	•••	869	পদ্মের নবপত্রাদি	•••	***	31
भक्ष्म् लापि	•••	•••	889	প্ৰসিকা	•••	•••	>•:
পঞ্মূল্যাদি কৰায়	•••	* ***	७६१	পরিণামশূল চিকিৎসা	•••	•••	~94
পঞ্ৰোপ	***	•••	€ 🌣	পরিণামশূল লক্ষণ	. •••	•••	94
পঞ্শতিকাবর্দ্তি	•••	•••	e 6 • ¢	পরিবর্তিকা	•••	***	2•:
পঞ্চপর	•••	•••	7575	পরিভাষা প্রকরণ	•••	•••	સ
প্ৰাৰৰ শুড়িকা	•••	•••	>•••	পর্মকাদি	•••	•••	৩
পঞ্চালন বটা	•••	•••	६२२ ६७8	পর্যকাদিগণ	***	***	>
প্রধানন রস	•••	6 4 4 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1 5 1	0 6.8 608	পূৰ্বভেম্বর	•••		8

;

648

292

পাৰ্সন্ধি

পাঞ্জুদনরস্

পাৎলাক্ষটা (পোলিকা)

: • 6 8

60

÷ 8		বণ	াসুক্রাম	ক দূচীপত্ত।			
विषत्र।			भटाइ ।	विश्व ।			পত্ৰাগ
পাৰ্বাদিগত অন্থিসংখ্যা	•••	•••	₹ 6	পিত্তসংশমন বৰ্গ	•••	,	2
শালভ শাক	•••	***	२७•	পিভাতিসার-চিকিৎসা	***	•••	8
शामिषा	•••	***	747	পি ন্তা তিসার-লক্ষ্	•••	***	8
<u>পান্তপতর্স</u>	•••	•••	€©≥	পিত্তের স্বরূপ	•••	•••	
পাবাণগৰ্ভ	•••	***	\$ • २७	পিত্তোৰণসন্নিপাত স্বর-নি	ি•ৎসা	•••	٠
পাৰাণব জ্ব স	•••	•••	≽ २७	পিত্তোৰণসন্নিপাত্তর-লক	9	•••	৽
পাষাণ্ডির	***	•••	⊬ २७	পিপুল	***	•••	:
পাবাণভেদান্ত চূর্ব ও স্বত	***	•••	৮२७	পিপুলমূল	•••	***	:
পাবাণভেদী	***	•••	300	পি স লী ৰও	•••	•••	>
পাৰাণান্ত স্বৃত	***	***	5 5 8	পিন্সলীম্বত	•••	999,6	ەزبەخ
পিড়কা নেপ	•••	***	¥80	পিপ্ললীবৰ্দ্ধমান	•••	***	b
পিড়িংশাক	•••	•••	248	পিঙ্গলা দি	***	•••	9
পি ওগর্জ্ র	•••	•••	२•६	পিশ্লাদিকবার	•••	•••	٠
পিতল	•••	***	478	পিপ্লন্যাদিগণ	***	•••	٥
পিত্তকাসাম্ভক রস	•••	•••	4.5	शिश्रनामि हुन	•••	***	٩
পিত্তজ্বাস-চিকিৎসা	•••	***	4.5	পিমল্যান্ত যুত	•••	8	٥٩,১:
পিভুক্তকাস-নিদান	***	•••	4.5	পিপ্লল্যান্ত চূৰ	•••	•••	*
পিত্তজ্ঞস্ম-চিকিৎসা	***	•••	929	পিঙ্গন্যান্ত তৈন	***	•••	¢
পিত্ৰগুষ লক্ষ্	•••	•••	969	শিপ্সন্যাম্মবলেহ	•••		٠
পিত্তজ গ্ৰহণী-চিকিৎদা	•••	•••	890	পিপ্ৰন্য স্থালোহ	***	••• \	4165
পিত্তৰ গ্ৰহণী-নিদান	***	•••	894	পিপ্লল্যান্তাবৰ্ত্তি	•••	•••	> •
পিত্তপ্ৰচ্ছৰ্দ্ধি-চিকিৎসা	•••	•••	930	পিপ্লল্যাস্থাসব	•••	• • •	8
পিত্তজচ্চদি লক্ষণ	•••	***	900	পিপ্লে শোল্মাছ	***	***	ર
পিত্তঙ্গতৃকা-চিকিৎসা	•••	***	48.	শি য়াল	•••	•••	÷
পিওজতৃকা-সক্ষণ	•••	•••	58.	পিয়াসাল	•••		21
পিত্তৰ প্ৰমেহ-চিকিৎসা	***	***	٠٠.	<u>শীতকচূর্ণ</u>	•••	•••	2+
পিত্তজপুৰ-চিকিৎসা	***	•••	900	शिक्रम न	•••	***	3
পিত্তসূল-লক্ষ্ণ	•••	•••	966	পীতজ্ঞলের পাককাল	•••	•••	ŧ
পত্তৰহুদ্ৰোগ-চিকিৎসা	***		۶	পীতভশ্মবিধি	•••	•••	9
পিডৰহজোগ-লকণ	•••	•••	b	পীযুৰবলীরস	***	***	8
পিত্তকর-চিকিৎসা	•••	***	ver	नी जू	***	•••	3
পিত্তব্য-লক্ষ্প		***	064	१ इंगाक	•••	***	₹,
পিন্তপ্রকৃতি লক্ষণ	•••	•••	82	र्थ विमाष	•••	•••	ર
পিত্তলেমগ্রহণী-চিকিৎসা	•••	*45,	896	পুটপাক বিধি	•••	•••	٠
ণিভঙ্গেমজন-চিকিৎসা	***		***	পুটপাকবিধি (অমৃতসার	लोर६व)	•••	221
পিত্তমেশ্বর বিশ্ব	•••	***		পুটপাক বিষমজ্বরান্তক জৌ	-	•••	8
পিন্তমেশূল-চিকিৎসা	***	***	965	পুগুরিয়া	•••	***	١
পিক্তমেশ্বহর অস্টাদশাল	•••	•••	٥٩.	পুনর্বা ভগ্তল্	•••	•••	91
প্রজেমাতিসার-চিকিৎসা	•••	***	84.	পুনর্বা তৈল	•••	111	R
পিন্তরেক্ষোবণ-সরিপাতকর-টি		***	990	পুনৰবাদি কাৰ	•••	***	j.
পিভয়েশোৰণসন্ত্ৰিপাতব্য ল			090	পুনৰ্বাদি চুৰ্			18617

वियत्र ।			পত্ৰাক।	বিষয়।			পত্রাক
পুনৰ্বাদি তৈল	•••	•••	3.0	প্রতিতৃণী-চিকিৎসা	•••	•••	4 e.
পুনর্বাদিসভূর	***	•••	442	প্রতিভূগা-নকণ	4.01	•••	53.
পুনৰ্বাদি-লেহ	•••	•••	128	প্রতিমাসে গর্ভের অবস্থা		•••	>
পুনৰ্বাদা মূত	•••		••6;396	প্রভাষীলা-চিকিৎসা	•••	•••	**
পুনৰ্ব'দানিশ্ৰক		•••	b • 9	প্রভাষ্ট্রন'-লব্দণ	•••	***	63
পুনৰ্বাভারিষ্ট	***	***	3 • 8	প্রভাগ্মান-চিকিৎদা	***	•••	57.
পুননবাষ্টক কাৰ	•••	***	525	প্ৰত্য'গ্ৰাৰ-লক্ষণ	•••	•••	٠ ه و
পুরন্দরবটা	•••	•••	***	প্রদরাস্তক রস	••,	••	>: >4
পুরাণগুড়ের গুণ	***	•••	२१•	এনরাস্তক লৌহ	•	***	>>>0
পুরাণকরে পথা	***	***	888	প্রদর্গরি জৌহ	•••	***	2256
পুরাতন মুভ	•••	•••	209	প্ৰদীপন (বিষ)		•••	225
शूक् तमृत	•••		>: 0	শুদীপন রস	•••	•••	689
পুঞ্জাবেহ	•••	•••	2228	প্রপৌওরীক'ন্ত মৃত	•••	•••	200
পুদরংদি চূর্ণ	•••	•••	1105	eপোওরীক ্তে তৈল	•••	\$ • 5	: 5 5 5 5 6
পুশ্বৰা	•••	•••	2579	প্রবাল	•••	***	255
পুস্পবর্গ		•••	>> •	প্ৰবাহিকা-চিকিৎসা	•••	•••	8 9 8
পু ন্দার†গ	•••	•••	-25	প্রবাহিকা-লক্ষণ	• • • •		8 5 8
পুষ্পরাঞ্জসারণী তৈল	•••	•••	1.1	প্রভাকরবটা	•••	***	b • 8
प्र भ रतस्त्री श्रीएक।	•••	•••	9.2	প্রভাব	•••	***	•
পুপাহরী বর্ত্তি	•••	•••	2.82	প্রমধ্যাত্তর	***	•••	84.
পুষাতুগ চুণ	***	•••	2248	প্ৰমেহ-নিদান		***	P-3 a
ชุ กขอ	***	•••	942	প্ৰমেহনিবৃত্তি লক্ষণ	•••	•••	P-52
পৃতিকাদি ক্ষ'য়	••	•••	410	প্রমের ি ড় ২1-চি কিৎসা	***	•••	৮ इ २
पूर्वकना विका			યજ્ઞ	প্ৰমেহণি ড়কা ধিকার	•••	•••	v ६ २
পূর্ব5ঞ্জন		•••	14.5	গ্ৰমেহ পিড়কা-লক্ষণ	• •	•••	<i>७</i> द २
পূৰ্ণচক্লোদর রস	***	•••	49 9	প্রমেহপিড়কার পথ্যাপথ্য	•••		res
পৃথ্যসারহৈল	***	***	244	প্রমেহমিহির হৈল	•••		७ ४ २
शृष्टिभर्गामि कम्य	•••	•••	843	প্রমেহরোগ-চিকিৎসা		***	649
পেলে	•••	•••	546	প্রমেহরে গা ধিকার		•••	ь २९
শেয়ারা	•••	•••	282	अध्यह्ताता व्यथमा	***		589
পেশী	•••	•••	२२	প্রমেহরোগে পথ্য	•••	•••	જક્
পৈছী	•••	•••	२७५	थापश्याप्त । पा थापश्याप्	•••	***	203
শোড়ামার্ছ	•••		÷ # 8	প্রলাপক-চিকিৎসা		***	098
পোন্তদানা	•••	***	>8•	প্রশস্ত জন		•••	289
পোন্তদানার তৈল	•••	•••	₹७•	প্ৰসঙ্গতঃ নাড়ীর অন্তবিধ ল	T		৩৩৬
পৌত্ৰি	•••	***	२७१	धनमञ्जः विषयास्त्र	***	•••	2260
প্রকৃতবাতলকণ	•••	•••	७३२	প্রসারণীতৈল		144	960
অকৃতি লঙ্কণ	•••	•••	8.	প্রসারণীসন্ধান	•••	***	466
শ্রচভেশর রস	•••	•••	۰ د د	অশারণান দান প্রস্থতার নিয়ম	***	***	38
শ্রতাপতপ্র রুস্ শ্রতাপমার্ক্ত ব্রুদ	***	•••	8+9	প্রস্তার নিয়মসম্বাব্ধি	141		٠ , ، ، ،

২৬		বণ	াসুক্রমি	ক সূচীপত্ত।			
विसन्न ।			পত্ৰাব্ধ।	वियत्र।			পত্ৰান্ত ৷
প্রাণদান্ত ড়িকা	•••	***	673	वक		***	:50
প্রাণব্লভ রস	•••	•••	6981496		•••	•••	ર ૭૭
প্রাণেশর রস	***	•••	8 • ७; ৪ ৬ १	वस्मकार्थ	•••	•••	381
থ্যিয় সূ	•••	•••	> ६२		•••	•••	હ ર ક
' প্রিয়ঙ্গ _ু াদি	•••	•••	ક્ષકુહ		•••		১৮৩
প্রিয়ন দি ও অম্ভাদিগণ	***	***	224	বকুলাপ্তাতেল	•••	•••	3-50
প্রিয়ন াদি তৈল	•••	•••	2259	বঙ্গ	•••	•••	٠;٠
মীংৰকৃচ্চিকিৎস।	4 ***	•••	894	বঙ্গভশ্ম'নুপান	•••	•••	4 % 4
भीव्यकृष्ट्रपत्र-निर्मान	•••	•••	৮ 98	व अप किंक	•••	•••	७७५
দীহৰকু দ্রোগাধিকার	•••	***	৮ ९ ४	বঙ্গের মারণ্বিধি	***	•••	*65
গ্রীহশার্দ্দ রস	***	•••	৮ ৭ ৯	বঙ্গেশ্বর		***	७ ७७
প্লীহা ও বস্কুৎবোগে পঞ্চাণ	 4 •••	•••	りりり	বচ	***	,	;>a
প্লীহান্তক রস	•••	•••	646	বচাদি কৰায়	•••	•••	864
গ্লীহারিস (ছিবিধ)	***	•••	F43	বচাদিগণ ও হরিজাদিগণ	•••	•••	224
প্লীহার্ণৰ রস	•••	•••	696	বচাদি চূৰ্ণ			99:
				व्यक्टेंडन	•••		94.
	হা			বক্তৰপাট রস	•••		368
				বজ্ঞকাঞ্জিক	• • •	•••	2280
কট্কিরী	•••	•••	२३४	বক্সবটকমভূর	•••		453
কণ্মশ্ব	•••	•••	હ	বল্লকার	•••	***	9221668
কলকল্যাণ খুত	•••	•••	2248	বট	•••		100
কল মুত		• • •	2208	বটকাবিধি	•••	•••	400
क्लिकानि क्वाय	***	***	689	বটাদিবর্গ	•••	•••	364
কলত্রিকান্ত চূর্ণ	•••	•••	હલ	ংটের মাংস	•••		२०৮
ফলব র্ত্তি	•••	•••	96.	২ড় এলাচ	•••		38 €
ফলুইমাছ		•••	₹8€	২ড়কাকুড়	•••		ર્વ્ય
कलमा	400	***	₹•8	বড় পাপরকুচি	***	***	598
কাৰ। কাৰিত (মা ংগ ড়)	***	•••	29.	বড় প্ৰাৰপ্ত	***	***	રક્રહ
কান্টবিধি	***	•••	२৮१				5 87
ক্রিক্রেরাগ-চিকিৎসা	•••	•••	2667	বড় মংস্ত	•••	•••	F69
क्तिज्ञाताश-निषान कित्रकाताश-निषान	•••	***	244.	বড়বাগ্নি রস	•••	•••	1-C A
ক্ষিত্রসংগ্রাগাধিকার ফিরস্করোগাধিকার	•••	***		ৰড়বায়ি লোহ	•••	•••	¢ ২ ৬
ক্ষিত্রসংগ্রাপের উপদ্রব			255.	বড়বানল চূৰ্	4	***	830,000
ক্ষিক্তরোগের সাধ্যক্তি লং	•••	•••	2552	বড়বাৰল রস		•••	626
	4-4 · · ·		१२२१	বড়বামুথ চূৰ্	***	***	8.4
क्षे क्ष हिनि	•••	•••	299	বড়বামুখরস	•••	•••	٠.
	•••	701	293	वड़ा	•••	***	રવક
क् नरनावा	•••	•••	>96	वड़ी	•••	•••	२१४
	ব			বংসকা দি	***	***	845
বংশপত্ৰী	•••	•••	390	वरमकापि काष	***	***	808
वरणरमाञ्च	•••	•••	340	বংসনাভ	***	•••	ફરર
			1				

..

					-		
विषम् ।		9	ा काळा	विषद्म ।		P	
বনকুকুট মাংস		•••	२७३	বজিবিধি অধ্যায়	•••	•••	96,
ব নমে শী		•••	252	ব তি মর্ম	000	***	٥٥
वनयमानी	•••	•••	254	বংেড়া	•••	•••	:48
বনহরিক্রা	•••	•••	209	বহিন্দস	***	•••	449
বক্তম্রগী	•••	***	4:5	বকে মশ্বসমূহ	•••	•••	৩২
বন্ধ্যা-চিকিৎসা	•••	•••	>>00	বাদরা	•••	•••	394
तका∣-निर्मान	•••	•••	2:00	र्व:भूलिक्ल	***	•••	328
বমনপ্রয়োগ	••••	•••	8 • •	বাশ	•••	•••	>64
বমনবিধি	•••	•••	69	বাইন মাছ	***	***	२इ७
বমনামৃত রূপ	•••	•••	901	বাগ্ভটপ্ৰাছৰ্ভাব	••	• • •	۲
বমনোপদ্ৰব-চিকিৎসা	•••	•••	966	বাচামাছ		•••	₹8¢
বরকের গুণ	•••	•••	₹8७	বাজীকরণ	•••	•••	2223
বরবটী	•••	•••	२२७	বাজীকরণাধিকার	• • •	•••	2230
বরাদি ভগ ভেগু	•••	•••	200	বাজীকরণের আবশুকতা	•••	•••	3336
বর ৃহপুট	•••	•••	७२३	বাতকউকচিকিৎসা	•••	•••	
বরুণ	•••	***	225	বা চকণ্টকলকণ	•••	•••	449
বৰণ শ্বত	•••	•••	४२ ०	বাতকুলাত্তক	•••	•••	690
বরুণাদি কবার	***	***	४ २२	বাতগঞাকুৰ	• • •	***	624
वक्र ना मिश्रन	•••	***	>:@	বাতগ জেন্দ্র সিংহ	•••	•••	983
वक्रगामि श्रुष्ठ	•••	•••	46	বাভঞ্জাস-চিকিৎস।	•••	***	
বরণাক্ত মুত	•••	***	৮ २ €	বাতজ্ঞাস-নিদান			** ••
বরুণ্প্য তৈম	•••	•••	७ २६	বাতজগুল-চিকিৎসা	•••	•••	950
ৰঙ্গণাম্ব্য লৌহ	•••	•••	P2 4		***		960
বৰ্ণক মৃত	•••	***	2.8.	বাতজগুল-ন,কণ		•••	89
वर्षाच्या	•••	•••	&	বাতজগ্ৰহণী-চিকিৎসা	***		89
বলাগভঁযুত	***	***	659	বাতজগ্ৰহণী নিদান	•••	•••	
বলাডুমুর		•••	390	বাতজছন্দি-চিকিৎসা	•••	***	60 60
বলাতৈল	•••	•••	1.1	বাতজছদ্দি-লক্ষণ	***	***	98
বলাদি চূৰ্	•••	•••	0 × 8	বাতজত্ঞা-চিকিৎসা	***	***	48
বল'জ্ঞ ছুত	•••	***	r.4	বাভঞ্জা-লক্ষণ	***	•••	96
रह्मां क	***	••• •	3+49	বাতজপুন-চিকিৎসা	•••	***	961
বলভক শ্বত	•••	•••	***	বাতজপুল-লকণ	144	•••	98:
বলীপঞ্মূল ও কণ্টকপঞ্মূল	•••	,	>4.	বাতলহুক্তোগ-চিকিৎসা	***	•••	46
वस्त वाषिरवाश			849	বাতজহুজোগ-লক্ষণ	y R#	•••	99
				ৰাভকাদিকৰে নাড়ীগতি লগ	րզ •••՝	***	96
বল্লাভারিট		* ***	. 863	বাত্ত্বর-চিকিৎসা		•••	981
বসস্তম্বদার রস	•••	404/464	•12242	বাত্ত্বর-লক্ষণ	•••	***	
বসস্তচন্যা	***	•••	36	বাতপিভগ্ৰহণী-চিকিৎসা	•••	•••	89
বসন্ততিলক রস্			630	বাতপিভন্ধর-চিকিৎসা	***	***	96
বসন্তমালতী রস	•••	•••	854	বাতপিত্তর-লকণ	•••	:	96
বন্তিবাত-চিকিৎসা	***	•••	*>>	বাতপিভশুল-চিকিৎসা	***	***	94
ব ন্তিৰাত-লক্ষ	•••	***	497	বাভপিভাতিসার-চিকিৎসা	***	•••	84

२৮ .		বৰ্ণ	<u>ৰিকুক্রি</u>	। ক সূচীপত্র।			
विवय ।		•	পত্ৰা ক ৷	विषय ।			পতাৰ ৷
বাতপি ভান্তকর ন	***	•••	824	বাস্ৰহাটা	:	•••	:00
বাডপিভোৰণ সন্ধিপাতৰর-		•••	৩৭ ৩	বাযুক্তারাপ্রেন্দ্র-তৈল	•••	•••	1.5
কাতপিভোষণ সন্নিপাতজ্ঞর-	লকণ	•••	ত৭২	বায়ুর স্বরূপ	•••	***	82
বাতপ্রকৃ তি লক ণ	•••	•••	85	বারিবর্গ	***	•••	२.७
ৰাতব্যাধি-চিকিৎসা	***	•••	*95	বারশীয়ম্ব	•••	•••	७२७
বাতব্যাধি-নিদান	•••	•••	496	বাৰ্দ্ত'কু-শুড়িকা	•••	•••	894
ৰাতব্যাধি-লক্ষণ	***	***	494	বালকুটজাবলেহ	• • •	•••	2260
ৰাতবাাধিতে অপথা	•••	•••	१२०	বালকের অন্নপ্রাশনসময়	***	•••	2.5
বাতবাাধিতে পথ্য	•••	•••	933	ব'লকের জন্মেত্রবিধি	•••	•••	58
বাতব্যাধির কৃষ্ণেসাধ্যতা	, •••	•••	હરુર	বালকের পরিচ্যাবিধি		•••	36
বাতবাধির সাধারণ-চিক্কিৎ		***	.999	বালকের শুন্তপানবিধি	•••		20
বাভৰ্যাখ্যখিকার	***	•••	•96	বালকের স্বভাবতঃ হিতকর			19
বাতরক্ত-চিকিৎসা	•••	***	958	বালচত্বভন্তিকা	441	•••	224.
বাতরক্ত-নিদান	•••	•••	980	বালচপুভারেকা বালচাঙ্গেরী ঘুত	•••		2289
ৰাতরক্তাধিকার	•••	•••	१२७	·		•••	242
বাতঃক্তান্তকরস	•••	•••	9:1	ন'ল যুন ও বৃদ্ধ ইকুর গুণ	•••		1187
বাভয়ক্তে অপৰা	***	•••	939	নালরোগ-চিকিৎসা		•••	
ৰাভরক্তে পথ্য	•••	•••	939	ব'লরোগ কিদান	***	•••	::44
ৰ্ভেরাজ তৈল	•••	•••	739	বালরোগাধিক'র	•••	•••	::49
বাজ্যন্ত্ৰপ্ৰহণী-চিকিৎসা	• • •	•••	896	বালরোগান্তক রস	***	***	::65
ৰাত্যৱন্ধৰর-চিকিৎসা	•••	***	***	বালরোগের পথ্যাপথ্য	• • •	***	22.9%
নাভারেম্বর লকণ	•••	***	. કહ	ন'লা	•••	***	26.
বাতরেমপুল-চিকিৎসা	•••	***	963	বালুকা	•••	***	25₩
বাতলেমহর অস্টাদশকে	•••	•••	৽ঀ•	বালকা বস্ত্র বালাগিদ বরংসর সীমা	•••	•••	७२२
বাতপ্রেম্মাতিসার-চিকিৎস।	***	•••	86.	वाला ५ वंद्रश्यत्र यामा नामक	***	***	>9 264
বাতলেখোৰণ-সন্নিপাত্তর- বাতলেখে বণ-সন্নিপাত্তরন		•••	৩ ৭ ৩	वागककाथ	•••	•••	
বাভদেশে জান বৰ্গ ৰাভদংশমন বৰ্গ	****	•••	242	नामका म	•••	•••	2.59
বাতহর উত্তলের বিশেষ মূর্জ্ছণ		•••	9	বাসাব্যাওগও	•••	***	699
বাত্ত্র ক্তলের বিচাৰ বৃত্তা বাতাতিদার-চিকিৎসা	্ণাৰ		866	বাসাগত	***	•••	698
ব্ভাভিদার-,চ কংশা বাভাভিদার-লক্ষণ	•••	***	866	বাসায়ত °	•••	•••	• 9 9
ব;তাতিশার-প্রমণ বংতাবিলেরু	***	***		বাসাচন্দন;স্ত তৈল	•••	•••	5 :8
	•••	•••	₹•9	বাসাদি		,,,	929
ৰাভাৱি	•••	•••	977	বাসাদি (চতুর্থকে)	•••		७ ►}
বাতারিগুগ্ ভণ্	•••	***	986	नामानि कवाश		•••	9931669
বাতারি রস	• • •	188	477	বাসাদি গুগ্গুলু		•••	266
বাতো ৰণ-স রিপাত-হর-চি	কৎসা	•••	৩৭১	বাসাল মুভ	•••	•••	ROP
বাভে:খণ-সন্নিপা তত্ত্ব-লক্ষণ			৩৭১	বাসাবলেহ	•••	***	466
বাদাম			₹∙₩	বাসাঞ্জ তৈল	•••	•••	364
वानही विका		***	32.B	বা দাস্ব রস	•••	•••	340
	-4,	•••		বাহকীভূষণ রস	•••	•••	**
বাৰ্লা	•••	•••	769	বাছায়ামের চিকিৎসা	•••	•••	***
व'ब्हें पूननी	•••	***	314	বাহ্যায়ের লক্ষ্ণ	•••	•••	**

1

Ĺ

		বর্ণাসুক্রমিক সূচীপত্র।					. 25	
विवन ।	পত্ৰাৰ।			चिंवत्र ।		পূ ক্লাৰ		
নিকুতিবিজ্ঞানীয় শারীয়		•••	46	বিপাক	•••	er # 4 1		
বিজ্ঞাকেশরী রস	•••	***	198	বিগাকের গুণ	***			
विक्रुकी	***	•••	206	বিৰুতা		***	>• ₹	
বিজয়চূৰ্ণ			458	বিভীতকাদি ক্বার	•••	•••	P	
বিজয়পথ টি	•••	•••	45516.8	বিমনভক্ষের অমুপান	•••	•••	٠.	
- বি জ য়বটা	•••	•••	615	বিশ্বস্তৃত্বি	•••	•••	•	
বি জয়ভৈ রৰ তৈল	•••	•••	168	বিশ্বাদি তৈল	•••	•••	رھ	
বিজয়ভৈরৰ রস	• •••		*:3	বিষ্ণেচন বিধি	•••	•••	•	
বজ্জারদ	,	•••	480	বিৰগৰ্ভ মুক্ত	•••	•••	٠.	
বিজয়া বটিকা		•••	6 4 8	বিশ্বভৈল	•••	6	٠٤,১٠٩	
ৰিটপ	. •••	***	98	विवश्वक	•••	•••		
ৰটু লবণ	•••	•••	181	বিৰাঞ্জন	•••	•••	200	
বৈভূপ	•••		300	বিৰাদি	***	•••	4	
বি ভূম যুত	•••	•••	448	विवापि कर!य	•••	***	*4	
विद्व टेंडन	•••	•••	448	বিশাদি যুক্ত	***	•••		
· ७ त्र-लोश	•••	•••	((3	विवापि हुन	• • •	>	:•;}≷ ₹	
ব্দুক্রাদি তৈল		•••	250	বিশ্বাস ন্ম্পন্হ	•••	•••	٥	
বৈভকাদি মোধক	•••	•••	166	বিশিষ্ট্রস্ব্যাঞ্চীরে বিশিষ্ট পা।			લહ	
विक्रमानितम लोश	•••	•••	982	বিশ্বচী-চিকিৎসা	•••	•••	41	
বৈদ্বসাদি লোহ	•••	•••	452/08.	নিশ্বচীলক প	• • •	•••	40	
বড়সান্ত চূৰ্	•••	•••	res	বিশ্ববাসভ হুত	***	•••	225	
বৈদ্যান্ত জোহ	•••	• • •	***	विश्वामि क्यात	•••	•••	૧૯ ૦ ,હ્	
বড়ক্সারিষ্ট	•••	V	26.	विरेचचत्रक्रम	***		902160	
বড় এহোপত্রব-চিকিৎসা	•••	•••	طوی	িখোদাপক ত্র	***	***		
বদমাজীৰ্ণ-চিকিৎসা	•••		4:.	বিষ	•••		વર	
বিদ্যানীৰ্শ-লক্ষণ	•••		qe.	বিষ্টি কিৎসা	•••		229	
বদারিকা	•••	•••	2.26	বিষ্ঠিন্দুক তৈল	•••	• • •	30	
बेमाजी शंका मिशन	***	•••	::0	বিশ তৈল	•••		201	
বিদারী মুত	•••		F1F	विष निषान		***	2296	
বিদায্যাদি তৈল	. •••	•••	2.60	বিষ্বক্রপাত রস	•••	***	5590	
বৈজ্ঞাধর যম	•••	•••	_ ৩২৩	विवयवत-जीर्ववत-किक्शा	***	***	روی	
বৈজ্ঞাধর রস	•••	850	9281665	বিষম্ভর লক্ষণ	•••	•••	৩৭	
বস্তু বিশ্বভরস	•••	3	829	বিষমজ্জরত্ব ভাগ্যাদি	•••		৩৭ঃ	
বস্ত্রধি-ভিকিৎসা			25	বিষম্পরাস্তক লৌহ	•••	•••	8 2 1	
रिज्ञिष-निष्धान		•••	. 229	বিষম;রণবি'ধ	•••		•2	
ব্যধিরোগ!ধিকার	•••	•	. 249	বিষমুক্তিককণ কণ	•••	***	2296	
विज्ञिषिरत्रारम् व्यथम			20.	বিষম্টিশোধনবিধি	***	•••	٠,١	
	••• ,	•••	-	বিষয়োগে অপথ	•••		2296	
বিজ্ঞাধিরোগে পণ্য বিজ্ঞান	•••	•••	954	বিষয়োগে পথ্য	***	4.5.	2296	
वि भू त्र 	•••	•••	91	বিৰশোধনবিধি	***			
ৰিন্দুস্ <u>ব</u> ত	•••	•••	F42		***	•••	926	
বিষ্যাবাসিখোগ	F14	•••	643	िव श्त्रीवार्डि	•••	***	224:	
বিপরীতমূলতৈল		•••	204	বিষাবিকার	***	•••	339	

৩ ০ বর্ণাপুক্র মিক সূচীপত্ত।							
वियत्र।		9	াত্ৰাস্ক ।	विषद्र।			পত্ৰাৰ ৷
ৰিবোজ বিভেন্ন গৰিল	•••	•••	3398	ব্ৰণকচ্ছ	•••	•••	3.82
বিষ্টকানীৰ্ণ ও সমশেবানীৰ্ণের	চিকিৎসা	•••	€9•	वृ वश्वक्रम	•••	.***	400
বিষ্টকাঞীৰ্ণ লক্ষণ	•••	•••	€७•	ব্ৰাক্ত শ্বত	***	•••	3.32
विकृ रेखन				वृष्टि क न	•••	•••	286
বিধান্দন তৈল	***	•••	200	इ श्कलनाषि देखन	•••	•••	env
বিদর্গ-চিকিৎসা	•••	***	20.0	বুংচ্চক্রামৃত রস	•••	•••	49.
বিদৰ্শনিদান:	•••	•••	3 • • 8	व् रक्ट <u>त्यां</u> प्रावर्खि	•••	***	3.85
বিদর্শরোগে অগণ্য		•••	3.33	व्शकत्यामग्र भकत्रथान	•••	•,••	2624
বিসর্পরোগে পথ্য	•••	•••	3.33	বৃহচ্চ ক্ৰমন্থাৰ	***	•••	80%
বিসর্পাধিকার	•••	•••	> • • b	বৃহচ্ছ ঃপুশ্প দি তৈল	•••	•••	101
বিস্টকা-চিকিৎসা	•••	***	હ હ હ	বৃহচ্ছতাৰরী মৃত	•••	2254122	4.56136
বিস্টিকাদিনিদান	•••	•••	400	্বৃহচ্ছতাবরী মভূর	•••	***	. 969
বিস্টিকার বিশেষ চিকিৎসা	. ,.	•••	6:5	বৃহত্ত ভাবরীমোদক	•••	•••	: २००
বিস্ফোট-চিকিৎসা			7 • 7 4	বহচ্ছাগলান্ত দুত	•••		92.
	•••	•••		वृश्कानम्नामि	•••	***	800
বিক্ষে ট্রিদান বিক্ষোট্রোগাধিকার	•••	•••	1•13 1•13	বৃংচ্ছামা খুত	•••	•••	-40
বিক্টোড়রোগা:বকার বিক্টোরোগে অপথ্য	•••	•••		तृश्च्युक्षमृताक्य देश्य	•••	414	8.518.4
	***	•••	•	वृह्छ्द्रश स्थापक	•••	***	4:5
বিন্দোটরোগে পধ্য বীব্দপুরাক্ত স্বভ	•••	•••	303B	বৃংচ্ছ সারাজ	•••	•••	433
वी डरम काफिक्टिक-िकिस्मा	•••	• • • •	**** ****	বুহজাতীকান্ত তৈল	•••		200
वोड्यम्बाषिक् किंगक्रग्	•••	•••	939	वृश्कीवकः श्रु ८ छन	***	144	2228
বীরতরাপ্ত তৈল	•••	•••	b44	বৃহজ্জীরকাদি মোদক	•••	•••	874
बीबटक	•••	•••	298	বুহজ্বচিস্তামণি			કર્ઙ
বীরত র্কাদি গণ	•••	•••	326	বৃহজ্জরচূড়ামণি			843
বীরভন্তার .	*	•••	689	বৃহন্দ্ররাম্ভক লৌহ	•••	•••	800
	•••	•••		वृह्जे	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •		209
वीद्यचत्र त्रम	•••	•••	*95	বৃহতী মশ্ম	•••	***	وو
वेर्ग	•••	•••	& ?	বৃহত্যাদিগণ	•••		2291492
ৰীৰ্যান্তভাধিকাৰ	***	•••	2922	वृश्य कर्षेषनामि	•••		دوق
वीर्र्यात्र ७१	•••	•••	9:0	वृद्द कल्फ्रांबी युड	***	111	•:•
বৃদ্ধগলাধর চূর্ণ	•••	•••	895	वृहद कनक प्रश्नित ज्ञा	•••	•••	8,95
वृष्णावक हुन	***	•••	348	वृहर कल्जू बोटेख्य १ तम	***	***	870
বৃদ্ধারাক্ত দৌহ	•••	•••	905	वृहर कांक्नाव्यक्ष	***	•••	690
বৃদ্ধি	***	***	7.05	.বৃহৎ কামচূড়'মণি রস	,,,,,	•••	F09
বৃদ্ধিবাধিকা বটিকা	***	***	>22	वृह्द कामोमाख रेटन	•••	***	e २०
ৰুদ্ধিরোগ-চিকিৎসা	***	***	3.4	वृहद किकिनी टेडन	•••	9.01	3338
বৃদ্ধিরোগ-নিদান	***	***	***	বৃহৎ কিয়াতাদি তৈল	***	***	88•
বৃদ্ধিরোগাধিকার	***	***	4.4	वृहद कृष्टेकावरमञ्	•••		884
বৃদ্ধিরোগে অপথা	•••	•••	>>4	বৃহৎ ৰুমাণ্ডাবলেহ	,	***	492
। वृश्चित्रारम भवा	•••	•••	eć «	वृहर बनित्र विका	•••	•••	3.45
'বুকীয়াবি	•••	***	44 \$	বৃহৎ পঞ্চপৰা স্বত	•••	•••	⊕98 °
বৃশ্চীয়ান্ত বিষ্ট	***		989	वृहद शक्षम्भाषि	•••		844
4				(Sea is Matta			

• 6